सोहँ महाराज शेर सिँघ विशनूं भगवान दी जै

निहकलंक हरिशब्द भंडार

बाईवां भाग

http://nehklankharshabad.com/

✪ तत्करा ✪

मिती–सम्मत	नाम	स्थान		पन्ना नं:
१७ भादरों शहिनशाही सम्मत ५	करनैल सिँघ दे गृह	कादराबाद	गुरदासपुर	०१
१७ भादरों शहिनशाही सम्मत ५	संपूरन कौर दे गृह	कादराबाद	गुरदासपुर	०२
१७ भादरों शहिनशाही सम्मत ५	सवरन सिँघ दे गृह	कादराबाद	गुरदासपुर	०३
१७ भादरों शहिनशाही सम्मत ५	बूड़ सिँघ दे गृह	कादराबाद	गुरदासपुर	०४
१७ भादरों शहिनशाही सम्मत ५	मस्सा सिँघ दे गृह	बल	गुरदासपुर	०६
१८ भादरों शहिनशाही सम्मत ५	अमराउ सिँघ दे गृह	बल	गुरदासपुर	०८
२१ भादरों शहिनशाही सम्मत ५	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	०६
पहली अस्सू शहिनशाही सम्मत ५	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	१०
	अजीत सिँघ दे बेनंती करन ते शब्द उचारया			१४
८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	१६
६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५	सवेरे साढे अड्ढ वजे	जेठूवाल	अमृतसर	२२
१२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५	ठेकेदार ठाकर सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	२५
१३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५	संगत दे नवित	गुरदासपुर		२५
१३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५	तेज भान दे घर	सई कैंप	जम्मू	२७
१४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५	चेला सिँघ दे घर	सई कैंप	जम्मू	३०
१४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५	नंदू शाह दे गृह	सई कैंप	जम्मू	३२
१४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५	गूड़ा राम दे गृह	सई कैंप	जम्मू	३३
१४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५	शिव सिँघ दे गृह	सई कैंप	जम्मू	३३
१४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५	कृपाल सिँघ दे गृह	सई कैंप	जम्मू	३५
१४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५	बीबी वीरो दे गृह	सई कैंप	जम्मू	३५

1 २२

१४	अस्सू	शहिनशाही सम्मत ५	प्रकाश सिँघ दे गृह	सई कैंप	जम्मू	३६
१४	अस्सू	शहिनशाही सम्मत ५	बीबी इंदरो दे गृह	सई कैंप	जम्मू	३६
१४	अस्सू	शहिनशाही सम्मत ५	लछमण सिँघ, कुलवंत सिँघ, खेम कौर दे गृह	सई कैंप	जम्मू	३७
१५	अस्सू	शहिनशाही सम्मत ५	वकील सिँघ अंगरेज़ सिँघ	सेई कलां	जम्मू	३६
१५	अस्सू	शहिनशाही सम्मत ५	दौलत राम दे गृह	कोटली	जम्मू	४०
१५	अस्सू	शहिनशाही सम्मत ५	प्रकाश चंद दे गृह	मघो वाली	जम्मू	४२
१५	अस्सू	शहिनशाही सम्मत ५	हंसराज दे गृह	मघो वाली	जम्मू	४३
१५	अस्सू	शहिनशाही सम्मत ५	देवी सिँघ दे गृह	मघो वाली	जम्मू	४४
१५	अस्सू	शहिनशाही सम्मत ५	लक्ष्मी दे गृह	सीड़	जम्मू	४५
१५	अस्सू	शहिनशाही सम्मत ५	गुरनाम सिँघ दे गृह	सीड़	जम्मू	४६
१५	अस्सू	शहिनशाही सम्मत ५	केसरी देवी दे गृह	राणी बाग	जम्मू	४८
१५	अस्सू	शहिनशाही सम्मत ५	चेला सिँघ दे गृह	जम्मू	जम्मू	४६
१६	अस्सू	शहिनशाही सम्मत ५	प्रकाश चंद दे गृह	जम्मू	जम्मू	५१
१६	अस्सू	शहिनशाही सम्मत ५	तेजा सिँघ दे गृह	जंडिआला गुरू	अमृतसर	५२
२०	अस्सू	शहिनशाही सम्मत ५	दलीप सिँघ दे गृह	जंडिआला गुरू	अमृतसर	५४
२०	अस्सू	शहिनशाही सम्मत ५	सवरन सिँघ दे गृह	जडिआला गुरू	अमृतसर	५८
२०	अस्सू	शहिनशाही सम्मत ५	सुरैण सिँघ दे गृह	जंडिआला गुरू	अमृतसर	५६
२०	अस्सू	शहिनशाही सम्मत ५	दीदार सिँघ दे गृह	शफ़ीपुर	अमृतसर	६१
२०	अस्सू	शहिनशाही सम्मत ५	सोहण सिँघ दे गृह	तरनतारन	अमृतसर	६२
२१	अस्सू	शहिनशाही सम्मत ५	हरनाम सिँघ दे गृह	पंडोरी	अमृतसर	६५
२२	अस्सू	शहिनशाही सम्मत ५	मक्खण सिँघ दे गृह	नौरंगाबाद	अमृतसर	६७

२२	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	५	करनैल सिँघ दे गृह	नौरंगाबाद	अमृतसर	७२
२२	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	५	मस्सा सिँघ दे गृह	नौरंगाबाद	अमृतसर	७३
२३	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	५	दारा सिँघ दे गृह	नौरंगाबाद	अमृतसर	७५
२३	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	५	ज्ञानी कुंदन सिँघ दे गृह	मालचक्क	अमृतसर	७७
२३	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	५	गुरनाम सिँघ दे गृह	कंग	अमृतसर	८१
२३	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	५	भाई नरैण सिँघ दे गृह	कंग	अमृतसर	८४
२४	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	५	सुखदेव दे गृह	कल्ला	अमृतसर	८६
२४	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	५	प्रीतम सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	९२
२४	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	५	बीबी प्यारो दे गृह	कल्ला	अमृतसर	९४
२४	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	५	गुरबख्श सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	९५
२४	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	५	करम सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	९६
२४	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	५	सरदारा सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	९६
२४	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	५	सरमुख सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	९७
२४	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	५	हरनाम सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	९७
२४	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	५	पूरन सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	९८
२४	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	५	प्रीतम सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	९८
२४	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	५	सवरन सिँघ, भजन सिँघ	कल्ला	अमृतसर	९८
२४	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	५	साधू सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	१००
२४	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	५	लाल सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	१००
२४	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	५	हरदीप सिँघ, गुरदयाल सिँघ	कल्ला	अमृतसर	१०१
२४	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	५	कुंदन सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	१०१
२४	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	५	हरी सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	१०२

3
२२

२४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५	सुखदेव राम दे गृह		कल्ला	अमृतसर	१०३
२५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५	सोहण सिँघ दे गृह		राम पुर	अमृतसर	१०६
२५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५	ऊधम सिँघ दे गृह		जलालाबाद	अमृतसर	१०८
२५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५	ज्ञानी गुरमुख सिँघ दे गृह		भलाई पुर डोगरा		१११
२६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५	गिरधावर सिँघ दे खूह उते		रुड़का कलां	जलंधर	११४
२७ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५	सुरजीत सिँघ ते दर्शन सिँघ		रुड़का कलां	जलंधर	१२३
२७ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५	नाजर सिँघ दे गृह		राजो के	जलंधर	१२५
२७ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५	लछमण सिँघ दे गृह		रुड़का कलां	जलंधर	१२६
पहली कत्तक शहिनशाही सम्मत ५	हरि भगत दवार		जेठूवाल	अमृतसर	१२८
२ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५	सुलक्खण सिँघ दे गृह		रुकना मूंगला	फ़िरोज़पुर	१४२
३ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५	गुरचरन कौर दे गृह		फ़िरोज़पुर		१४४
३ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५	सूबेदार राम सिँघ दे गृह		फ़िरोज़पुर छाउणी		१४७
४ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५	सोभा सिँघ दे गृह		वलूर	फ़िरोज़पुर	१५०
४ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५	कुलवंत कौर दे गृह	बसती	खलील	फ़िरोज़पुर	१५२
४ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५	हरी सिँघ दे गृह	बसती	खलील	फ़िरोज़पुर	१५३
४ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५	संपूरन सिँघ दे गृह	फिरोज़शाह		फ़िरोज़पुर	१५३
४ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५	कपूर सिँघ दे गृह सरब मालवा संगत नवित			मोगा	१५४
५ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५	कपूर सिँघ दे गृह मालवा संगत नवित			मोगा	१६३
	कपूर सिँघ दी वर्कशाप विच				१६८
५ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५	सरदारा सिँघ दे गृह		मनावां	फ़िरोज़पुर	१६९
५ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५	गुरबचन सिँघ दे गृह		उसमा	अमृतसर	१७०
६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५	अरजन सिँघ दे गृह		उसमा	अमृतसर	१७३

4 २२

६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ केशो राम दे गृह सरहाली जंडो की अमृतसर १७६

६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ मक्खण सिँघ दे गृह जौड़ा अमृतसर १७८

६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ अरजन सिँघ दे गृह माणक पुर अमृतसर १७६

६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ करनैल सिँघ, जरनैल सिँघ दे गृह राजो केअमृतसर १८१

७ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ बीबी दीपो दे गृह बासर के अमृतसर १८८

७ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ बीबी जीतो दे गृह बासर के अमृतसर १६०

७ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ हरबंस कौर दे गृह नारला अमृतसर १६१

१५ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ जमांदार किशन सिँघ दे नवित रसते विचअल्लड़पिंडी १६३

१५ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ जमांदार किशन सिँघ दे गृह अल्लड़पिंडी गुरदासपुर १६६

१५ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ जमांदार किशन सिँघ दे गृह रात साढे ६ वजे
अल्लड़पिंडी गुरदासपुर २००

१६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ सांझी राम दे नवित अल्लड़पिंडी गुरदासपुर २११

१६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ कुलवंत सिँघ दे नवित अल्लड़ पिंडी गुरदासपुर २१२

१६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ बावा सिँघ दे गृह अल्लड़ पिंडी गुरदासपुर २१४

१६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ हज़ारा सिँघ दे टिओबवैल उते बाबूपुर गुरदासपुर २१६

१६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ आसा सिँघ दे गृह बाबूपुर गुरदासपुर २१७

१७ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ मेला सिँघ सरपंच दे गृह बाबूपुर गुरदासपुर २२२

१७ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ हज़ारा सिँघ दे गृह बाबूपुर गुरदासपुर २२४

१७ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ चरन सिँघ दे गृह हेमराजपुर २२४

१८ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ बीबी शिंदरो दे गृह हेमराजपूर २२७

पहली मग्घर शहिनशाही सम्मत ५ हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर २२६

२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ५ हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर २३८

6 २२

6 २२

३ मग्घर शहिनशाही सम्मत ५ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	२४०
३ मग्घर शहिनशाही सम्मत ५ रात ढाई वजे	जेठूवाल	अमृतसर	२४१
१४ मग्घर शहिनशाही सम्मत ५ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	२४२
२२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ५ हरि भगत दवार जेठूवाल जसबीर सिँघ जलालाबाद दे नवित			२४३
२८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ५ ज्ञान चंद गांधी दे गृह	तलवाड़ा	हुशिआरपुर	२४५
२९ मग्घर शहिनशाही सम्मत ५ जीआ लाल दे गृह	तलवाड़ा	हुशिआरपुर	२४७
२९ मग्घर शहिनशाही सम्मत ५ जागीर सिँघ नरैण सिँघ	तलवाड़ा	हुशिआरपुर	२४८
२९ मग्घर शहिनशाही सम्मत ५ जुगिंदर सिँघ दे गृह	तलवाड़ा	हुशिआरपुर	२४९
२९ मग्घर शहिनशाही सम्मत ५ हज़ारा सिँघ दे गृह	पंज ढेरा	हुशिआरपुर	२५०
२९ मग्घर शहिनशाही सम्मत ५ रेशम सिँघ दे गृह	पंज ढेरा	हुशिआरपुर	२५१
३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ५ लाल सिँघ दे गृह	पंज ढेरा	हुशिआरपुर	२५२
३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ५ करतार सिँघ दे गृह	पंज ढेरा	हुशिआरपुर	२५३
३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ५ दयाल सिँघ दे गृह	डड्डां	हुशिआरपुर	२५४
३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ५ दरबारा सिँघ, राम सिँघ दे गृह	गालड़ी	हुशिआरपुर	२५६
पहली पोह शहिनशाही सम्मत ५ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	२५७
८ पोह शहिनशाही सम्मत ५ माई दुरगी दे नवित	गुजरात	गुरदासपुर	२६३
११ पोह शहिनशाही सम्मत ५ गुरचरन सिँघ दे गृह	जम्मू	जम्मू	२६४
१२ पोह शहिनशाही सम्मत ५ अजीत सिँघ दे गृह	जम्मू	जम्मू	२६६
१२ पोह शहिनशाही सम्मत ५ राम कौर दे गृह	जम्मू	जम्मू	२६७
१२ पोह शहिनशाही सम्मत ५ प्रकाश चंद दे गृह	जम्मू	जम्मू	२६८
१२ पोह शहिनशाही सम्मत ५ गुरदित सिँघ दे गृह	छंब	जम्मू	२६९

7 २२

7 २२

१३ पोह शहिनशाही सम्मत ५ हरि संगत	छंब	जम्मू	२७०
१३ पोह शहिनशाही सम्मत ५ फुम्मण सिँघ दे गृह	छंब	जम्मू	२७२
१३ पोह शहिनशाही सम्मत ५ परताप सिँघ, ईशर सिँघ, प्रकाश सिँघ दे गृह	दड़	जम्मू	२७२
१४ पोह शहिनशाही सम्मत ५ रणीआ राम, सेवा राम, प्यारा लाल दे गृह	कलोए	जम्मू	२७३
१४ पोह शहिनशाही सम्मत ५ सरदार सिँघ गुरनाम सिँघ दे गृह	सीड़	जम्मू	२७५
१४ पोह शहिनशाही सम्मत ५ देवी सिँघ दे गृह	मग्घोवाली	जम्मू	२७६
१५ पोह शहिनशाही सम्मत ५ प्रकाश कौर दे गृह	मघोवाली	जम्मू	२७७
१५ पोह शहिनशाही सम्मत ५ वकील सिँघ दे गृह	हंसा	जम्मू	२७८
१५ पोह शहिनशाही सम्मत ५ तेजभान दे गृह	सेई कैंप	जम्मू	२७६
१६ पोह शहिनशाही सम्मत ५ बेलू राम दे गृह	सई	जम्मू	२८१
१६ पोह शहिनशाही सम्मत ५ गुरे शाह दे गृह	सई	जम्मू	२८१
१६ पोह शहिनशाही सम्मत ५ नानक चंद दे गृह	सई	जम्मू	२८२
१६ पोह शहिनशाही सम्मत ५ शिव सिँघ दे गृह	सई	जम्मू	२८२
१६ पोह शहिनशाही सम्मत ५ लछमण सिँघ दे गृह	सई	जम्मू	२८३
१६ पोह शहिनशाही सम्मत ५ कृपाल सिँघ दे गृह	सई	जम्मू	२८४
१६ पोह शहिनशाही सम्मत ५ लछमण सिँघ दे गृह	सई	जम्मू	२८५
२६ पोह शहिनशाही सम्मत ५ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	२८७
२६ पोह शहिनशाही सम्मत ५ रात दे समें हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	२६३
पहला कारड कपूर सिँघ मोगा दे नाम हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	३०७
दूसरा कारड कृपाल सिँघ गोलेवाल दे नवित हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	३०८

तीसरा कारड केहर सिँघ रज़ीवाला फ़िरोज़पुर दे नवित	जेठूवाल	अमृतसर	३०८
चौथा कारड नाज़र सिँघ माड़ी दे नवित हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	३०८
पंजवां कारड माझा संगत दे नवित हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	३०९
छेवां कारड मालवा संगत दे नवित हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	३०९
सतवां कारड जम्मू संगत दे नवित हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	३०९
अट्ठवां कारड दुआबा संगत दे नवित	जेठूवाल	अमृतसर	३१०
नौवां कारड हरि संगत दी गोबिंद अग्गे अरदास	जेठूवाल	अमृतसर	३१०
२७ पोह शहिनशाही सम्मत ५ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	३२४
२८ पोह शहिनशाही सम्मत ५ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	३४४
२९ पोह शहिनशाही सम्मत ५ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	३४९
पहली माघ शहिनशाही सम्मत ५ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	३५२
१९ माघ शहिनशाही सम्मत ५ सरमुख सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	३५५
१९ माघ शहिनशाही सम्मत ५ जमांदार किशन सिँघ दे गृह	अल्लड़पिंडी	गुरदासपुर	३५७
२० माघ शहिनशाही सम्मत ५ बावा सिँघ दे गृह	अल्लड़पिंडी	गुरदासपुर	३५९
२५ माघ शहिनशाही सम्मत ५ सरब धरम समेलन ६ फरवरी १९७० राम लीला गराउँड दिल्ली			३६१
२६ माघ शहिनशाही सम्मत ५ चौथा धरम समेलन ७ फरवरी १९७० राम लीला गराउँड दिल्ली			३६१
२८ माघ शहिनशाही सम्मत ५ रेशम सिँघ दे गृह	मेरठ छाउणी	मेरठ	३६५
२९ माघ शहिनशाही सम्मत ५ लछमण सिँघ दे गृह	धनौरी	रोपड़	३६८
पहली फग्गण शहिनशाही सम्मत ५ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	३७१
२ फग्गण शहिनशाही सम्मत ५ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	३७४

8 २२

८ फग्गण शहिनशाही सम्मत ५ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	३७६
६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ५ हरि संगत नवित	जेठूवाल	अमृतसर	३७७
११ फग्गण शहिनशाही सम्मत ५ सुरजीत सिँघ दे नवित	जेठूवाल	अमृतसर	३७७
पहली चेत शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार	जेठुवाल	अमृतसर	३७८
२ चेत शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल (हरदेव सिँघ रुड़का कलां)			४००
३ चेत शहिनशाही सम्मत ६ चीफ इंजीनीअर आर० अैल० शरमा दे गृह जम्मू		जम्मू	४०३
४ चेत शहिनशाही सम्मत ६ चेला सिँघ दे गृह	जम्मू	जम्मू	४०८
४ चेत शहिनशाही सम्मत ६ फुमण सिँघ दे गृह	जम्मू	जम्मू	४०६
५ चेत शहिनशाही सम्मत ६ तेज भान दे गृह	सई खुरद	जम्मू	४१०
५ चेत शहिनशाही सम्मत ६ शिव सिँघ दे गृह	जम्मू	जम्मू	४११
५ चेत शहिनशाही सम्मत ६ लछमण सिँघ दे गृह	सई खुरद	जम्मू	४१३
६ चेत शहिनशाही सम्मत ६ अंग्रेज़ सिंघ दे गृह	जम्मू	जम्मू	४१४
६ चेत शहिनशाही सम्मत ६ वकील सिँघ दे गृह	सई कैंप	जम्मू	४१५
६ चेत शहिनशाही सम्मत ६ इंदरो देवी दे गृह	सई कैंप	जम्मू	४१५
६ चेत शहिनशाही सम्मत ६ रोशन लाल दे गृह	सई खुरद	जम्मू	४१५
६ चेत शहिनशाही सम्मत ६ देवा सिँघ दे गृह	जम्मू	जम्मू	४१६
६ चेत शहिनशाही सम्मत ६ कृपाल सिँघ दे गृह	जम्मू	जम्मू	४१६
६ चेत शहिनशाही सम्मत ६ गुरमुख सिँघ दे गृह	सई	जम्मू	४१७
६ चेत शहिनशाही सम्मत ६ करम सिँघ दे गृह	सई	जम्मू	४१७
६ चेत शहिनशाही सम्मत ६ पूरन सिँघ दे गृह	सई	जम्मू	४१८
६ चेत शहिनशाही सम्मत ६ राजा सिँघ दे गृह	सई	जम्मू	४१८
६ चेत शहिनशाही सम्मत ६ भगवान सिँघ दे गृह	सई	जम्मू	४१६

६ चेत शहिनशाही सम्मत ६	प्रकाश सिँघ दे गृह	सई कैंप	जम्मू	४१९
६ चेत शहिनशाही सम्मत ६	कुलवंत सिँघ दे गृह	जम्मू	जम्मू	४१९
६ चेत शहिनशाही सम्मत ६	गुरनाम सिँघ दे गृह	सीड़	जम्मू	४२०
८ चेत शहिनशाही सम्मत ६	हरजिंदर कौर दे नवित	फ़िरोज़पुर छाउणी		४२१
९ चेत शहिनशाही सम्मत ६	हरदेव सिँघ दे नवित	रुड़का कलां	जलंधर	४२६
१६ चेत शहिनशाही सम्मत ६	बीबी हरनाम कौर दे नवित	वेरका	अमृतसर	४२७
१८ चेत शहिनशाही सम्मत ६	ठेकेदार ठाकर सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	४२९
२० चेत शहिनशाही सम्मत ६	रछपाल कौर नाथेवाल दे नवित	जेठूवाल	अमृतसर	४३०
२० चेत शहिनशाही सम्मत ६	बीबी हरजिंदर कौर फिरोजपुर दे नवित हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	४३१
२२ चेत शहिनशाही सम्मत ६	सुरजीत कौर दे गृह	कलसीआं	अमृतसर	४३२
२३ चेत शहिनशाही सम्मत ६	दलबीर सिँघ दे गृह	कलसीआं	अमृतसर	४३४
२३ चेत शहिनशाही सम्मत ६	बाबे मोता सिँघ दे गृह	कलसीआं	अमृतसर	४३५
२३ चेत शहिनशाही सम्मत ६	दयाल सिँघ दे गृह	डल	अमृतसर	४३६
२३ चेत शहिनशाही सम्मत ६	मनी सिँघ दे गृह	सिधवां	अमृतसर	४३७
२४ चेत शहिनशाही सम्मत ६	समुंद सिँघ दे गृह	माड़ी	अमृतसर	४३९
२४ चेत शहिनशाही सम्मत ६	गंडा सिँघ दे घर	दुराजके	अमृतसर	४४०
२५ चेत शहिनशाही सम्मत ६	दलीप सिँघ दे गृह	गग्गोबूआ	अमृतसर	४४१
२५ चेत शहिनशाही सम्मत ६	मुखतार सिँघ दे गृह	गग्गोबूआ	अमृतसर	४४३
२५ चेत शहिनशाही सम्मत ६	गुरबखश सिँघ दे घर	गग्गोबूआ	अमृतसर	४४३
२५ चेत शहिनशाही सम्मत ६	करम सिँघ दे गृह	गॅग्गोबूआ	अमृतसर	४४४
२५ चेत शहिनशाही सम्मत ६	बीर सिँघ दे गृह	गग्गोबूआ	अमृतसर	४४४

10
२२

२५ चेत शहिनशाही सम्मत ६ जगीर सिँघ दे गृह गग्गोबूआ अमृतसर ४४५

२५ चेत शहिनशाही सम्मत ६ चंनण सिँघ दे गृह गग्गोबूआ अमृतसर ४४५

२५ चेत शहिनशाही सम्मत ६ करतार सिँघ दे गृह भोजीआं अमृतसर ४४६

३० चेत शहिनशाही सम्मत ६ भगत सिँघ इटारसी वाले दे
नवित हरि भगत दवुार जेठूवाल अमृतसर ४४६

पहली विसाख शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर ४४६

५ विसाख शहिनशाही सम्मत ६ रतन सिँघ दे गृह पच्ची बी बी गंगानगर ४५५

६ विसाख शहिनशाही सम्मत ६ तारा सिँघ दे गृह पच्ची बी बी गंगानगर ४५६

७ विसाख शहिनशाही सम्मत ६ गुरदयाल सिँघ दे गृह पच्ची बी बी गंगानगर ४५८

७ विसाख शहिनशाही सम्मत ६ जगीर सिँघ दे गृह रत्तेवाल ४६०

१३ विसाख शहिनशाही सम्मत ६ माझा संगत दे नवित वाढी दे दिन
हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर ४६१

१४ विसाख शहिनशाही सम्मत ६ माझा संगत दे नवित जेठूवाल अमृतसर ४६२

१५ विसाख शहिनशाही सम्मत ६ माझा संगत दे घर जाण समें
हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर ४६३

१७ विसाख शहिनशाही सम्मत ६ मालवा संगत दा खेतां विच इक्ठ रजोवाल दुआबा ४६४

१८ विसाख शहिनशाही सम्मत ६ मालवा संगत दे नवित रजोवाल दुआबा ४६६

२२ विसाख शहिनशाही सम्मत ६ गूड़ा राम जम्मू दी शादी नवित जेठूवाल अमृतसर ४६७
जमांदार साहिब अल्लड़पिंडी दे बेनंती करन ते ४६८

२३ विसाख शहिनशाही सम्मत ६ बाद दुपहिर गुरदासपुर संगत दे घर जाण तों पहलां
हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर ४६८

पहली जेठ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर ४७०

11
२२

१० जेठ शहिनशाही सम्मत ६ महिंगा सिँघ दे गृह	हरीपुर	जलंधर	४८०
११ जेठ शहिनशाही सम्मत ६ बीबी हरभजन कौर दे गृह	हरीपुर	जलंधर	४८६
११ जेठ शहिनशाही सम्मत ६ डाकटर पाल सिँघ दे गृह	दाऊद पुर	कपूरथला	४८६
११ जेठ शहिनशाही सम्मत ६ जुगिंदर सिँघ दे घर	फतहगड़	कपूरथला	४९१
१७ जेठ शहिनशाही सम्मत ६ ज्ञानी गुरमुख सिँघ दे गृह	भलाईपुर	अमृतसर	४९४
१८ जेठ शहिनशाही सम्मत ६ ऊधम सिँघ दे गृह	जलालाबाद	अमृतसर	४९६
२३ जेठ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	५०१
२४ जेठ शहिनशाही सम्मत ६ किशन सिँघ दे गृह	अल्लड़पिंडी	गुरदासपुर	५०४
२५ जेठ शहिनशाही सम्मत ६ दलीप सिँघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	५१३
२५ जेठ शहिनशाही सम्मत ६ प्यारा सिँघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	५१५
२५ जेठ शहिनशाही सम्मत ६ बलाका सिँघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	५१६
२५ जेठ शहिनशाही सम्मत ६ हज़ारा सिँघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	५१७
२५ जेठ शहिनशाही सम्मत ६ बाबूपुर घरों निकल के वापसी ते नज़दीक		गुरदासपुर	५१९
२५ जेठ शहिनशाही सम्मत ६ प्यारा सिँघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	५२०
पहली हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	५२३
२ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ प्यारी, हज़ारा सिँघ दी लड़की दी शादी समें हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	५३८
२ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार रात नूं	जेठूवाल	अमृतसर	५४०
३ हाड़ शहिनशाही सम्मत ६ गुरमुख सिँघ दे गृह	भलाई पुर	डोगरा	५४२
४ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	५४३
५ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	५४४
६ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	५४५

७ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर ५४६
८ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर ५४८
६ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर ५४६
१० हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर ५५१

११ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर ५५१
१२ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर ५५२
१३ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर ५५३
१४ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर ५५४
१५ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर ५५५
१६ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर ५५६
१७ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल दुपिहर इशनान दे समें ५५८

13
२२

१७ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार इशनान तों
बाअद मूंह मिठ्ठा करौण समें जेठूवाल अमृतसर ५६१
१७ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार घोड़े दी वाग गुंदण समें जेठूवाल ५६१

१७ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जलूस दरबार विच पुज्जण ते ५६२
१७ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार रात नूं जेठूवाल ५६७
१८ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार सवेरे व्याहां दे समें जेठूवाल ५८४
१८ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार रात नूं जेठूवाल ५८६
२६ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ शी आर अैल शरमा दे नवित धरम अरथ रोड सीनगर
कोठी नं० १०२ कशमीर ६०२
३० हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ लैफटीनैंट चेला सिँघ दे गृह जम्मू जम्मू ६१३
३१ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ सरदारा सिँघ गुरनाम सिँघ सीड़ जम्मू ६१५

३१ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ लछमण सिँघ दे गृह	सई कैंप	जम्मू	६१६
३१ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ बचन सिँघ दे गृह	सई कैंप	जम्मू	६१७
३१ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ कुलवंत सिँघ दे गृह	सई कैंप	जम्मू	६१८
३१ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ देवा सिँघ दे गृह	सई कैंप	जम्मू	६१८
३१ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ कृपाल सिँघ दे गृह	सई कैंप	जम्मू	६१९
३१ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ तेज भान दे घर	सई कैंप	जम्मू	६१९
३२ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ शिव सिँघ दे गृह	सई कैंप	जम्मू	६२१
३२ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ गूड़ा राम दे गृह	सई कैंप	जम्मू	६२१
३२ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ फुम्मण सिँघ दे गृह		जम्मू	६२२
पहली सावण शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	६२२
१४ सावण शहिनशाही सम्मत ६ कपूर सिँघ बराड़ दे गृह	मोगा	फ़िरोज़पुर	६२८
३० सावण शहिनशाही सम्मत ६ बीबी हरजिंदर कौर दे नवित	फिरोजपुर	छाउणी	६३२
पहली भादरों शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	६३४
२ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार दुपहिर नूं	जेठूवाल	अमृतसर	६४३
२ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार रात नूं	जेठूवाल	अमृतसर	६४४
५ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ हरी सिँघ ते पूरन सिँघ	सोहल	अमृतसर	६४७
६ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ महिंदर सिँघ दे गृह	सोहल	अमृतसर	६४९
६ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ करम सिँघ दे गृह	मीआं पुर	अमृतसर	६५१
६ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ बीबी बंती दे गृह	मीआं पुर	अमृतसर	६५२
६ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ अवतार सिँघ दे गृह	काउँके	अमृतसर	६५३
७ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ नरैण सिँघ दे गृह	गुमान पुरा	अमृतसर	६५६
७ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ जीत सिँघ दे गृह	गुमान पुरा	अमृतसर	६५७

७ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ हरनाम सिँघ दे गृह	गुमानपुरा	अमृतसर	६५८
७ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ मंगल सिँघ दे गृह	सारंगड़ा	अमृतसर	६५८
८ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ कारज सिँघ दे गृह	सारंगड़ा	अमृतसर	६६१
८ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ दलीप सिँघ दे गृह	मानांवाला	अमृतसर	६६३
८ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ चरन सिँघ दे गृह	मानांवाला	अमृतसर	६६४
८ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ धंनतो दे गृह	मानांवाला	अमृतसर	६६६
८ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ गुरदित सिँघ दे गृह	मानांवाला	अमृतसर	६६७
८ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ हज़ारा सिँघ दे गृह	छीना	अमृतसर	६६८
९ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ सुरिंदर सिँघ दे गृह	भुल्लर	अमृतसर	६७०
९ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ भाग सिँघ दे गृह	माहल	अमृतसर	६७२
९ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ हजारा सिँघ दे गृह	घनकपुर	अमृतसर	६७३
२० भादरों शहिनशाही सम्मत ६ जुगिंदर सिँघ दे गृह	इटारसी	मध्य प्रदेस	६७५
२१ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ भगत सिँघ दे गृह	इटारसी	मध्य प्रदेस	६७७
२२ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ टोपन राम दे गृह	इटारसी	मध्य प्रदेस	६७९
२३ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ हरदित सिँघ दे गृह	इटारसी	मध्य प्रदेस	६८०
२४ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ सुरिंदर सिँघ दे गृह	इटारसी	मध्य प्रदेस	६८१
२५ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ पारू मल दे गृह	इटारसी	मध्य प्रदेस	६८६
२५ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ सदर मल कौड़ा मल दे गृह	इटारसी	मध्य प्रदेस	६८७
२५ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ जसवंत सिँघ दे गृह	इटारसी	मध्य प्रदेस	६८८
२७ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ हरबंस सिँघ दे गृह	गुड़गाउँ	हरयाणा	६९३
२७ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ सेवा सिँघ दे गृह	गुड़गाउँ	हरयाणा	६९३
२८ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ रेशम सिँघ दे गृह	मेरठ छाउणी	मेरठ	६९४

२९ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ सरमैल सिँघ दे गृह	मेरठ छाउणी	मेरठ	६९७
२९ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ मुलख राज दे गृह	मेरठ छाउणी	मेरठ	६९८
२९ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ हंस राज दे गृह	मेरठ छाउणी	मेरठ	६९८
२९ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ प्यारा लाल दे गृह	मेरठ छाउणी	मेरठ	६९९
२९ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ हरभजन सिँघ दे गृह	दिल्ली		६९९
२९ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ गुरबलविंदर सिँघ दे घर	दिल्ली		७००
२९ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ चंदा सिँघ दे गृह	दिल्ली		७०२
२९ भादरों शहिनशाही सम्मत ६ कैपटन महिंदर सिँघ दे गृह	दिल्ली		७०२
पहली अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	७०५
सत्तां लांगरीआं दे नवित	जेठूवाल	अमृतसर	७१५
३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ गुरमुख दवारे नींह रक्खण समें	भलाई पुर डोगरा		७१७
३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ गुरमुख सिँघ दे घर	भलाई पुर डोगरा		७१९
५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ दरबार विच जसबीर सिँघ जलालबाद दे नवित	जेठूवाल	अमृतसर	७१९
११ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ सुखदेव सिँघ दे घर	कल्ला	अमृतसर	७२१
१२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ दर्शन सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	७२४
१२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ प्रीतम सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	७२५
१२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ जगीर कौर दे गृह	कल्ला	अमृतसर	७२५
१२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ गुरबख्श सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	७२६
१२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ प्यारो दे गृह	कल्ला	अमृतसर	७२७
१२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ करम सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	७२७
१२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ सरदारा सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	७२८

16
२२

१२	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	सरमुख सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	७२८
१२	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	हरनाम सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	७२६
१२	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	प्रीतम सिँघ दे घर	कल्ला	अमृतसर	७३०
१२	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	सवरन सिँघ हरभजन सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	७३०
१२	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	साधू सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	७३१
१२	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	लाल सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	७३१
१२	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	प्रीतम सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	७३२
१२	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	कुंदन सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	७३२
१२	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	गुरदयाल सिँघ दे घर	कल्ला	अमृतसर	७३२
१२	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	हरदीप सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	७३३
१२	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	मस्सा सिँघ दे गृह	नौरंगाबाद	अमृतसर	७३४
१३	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	मक्खण सिँघ दे गृह	नौरंगाबाद	अमृतसर	७३७
१३	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	करनैल सिँघ दे घर	नौरंगाबाद	अमृतसर	७३८
१३	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	दारा सिँघ दे घर	नौरंगाबाद	अमृतसर	७३६
१३	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	सोहण सिँघ दे गृह	तरनतारन	अमृतसर	७४०
१६	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	लाल सिँघ दे गृह	डल्लेवाल	जलंधर	७४२
१६	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	केहर सिँघ रुड़का दे नवित	डल्लेवाल	जलंधर	७४४
१७	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	करम दे घर	गुड़ा	लुध्याणा	७४४
१८	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	मेहर सिँघ दे घर	जगरायो	लुध्याणा	७४७
१८	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	महिंदर सिँघ दे घर	दाखां	लुध्याणा	७४७
१८	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	पाखर सिँघ दे गृह	मोही	लुध्याणा	७४८
१८	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	गुरनाम सिँघ दे घर	बुढेल	लुध्याणा	७४६

17
२२

१८	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	पलटू राम दे गृह	सुधार	लुध्याणा	७५२
१८	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	सरवण सिँघ दे घर	पक्खोवाल	लुध्याणा	७५३
१६	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	साधू सिँघ दे गृह	पक्खोवाल	लुध्याणा	७५५
१६	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	सरदारा सिँघ दे गृह	पक्खोवाल	लुध्याणा	७५६
१६	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	करम सिँघ दे गृह	पक्खोवाल	लुध्याणा	७५६
१६	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	भाग सिँघ दे गृह	पक्खोवाल	लुध्याणा	७५७
१६	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	बाऊ भगवान सिँघ दे गृह	पक्खोवाल	लुध्याणा	७५७
१६	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	बीबी भगवान कौर दे घर	पक्खोवाल	लुध्याणा	७५८
१६	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	मंगल सिँघ दे घर	पक्खोवाल	लुध्याणा	७५६
१६	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	नाज़र सिँघ दे घर	पक्खोवाल	लुध्याणा	७६०
१६	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	अमरीक सिँघ दे घर	भैणी	लुध्याणा	७६१
१६	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	धंना सिँघ दे घर	ढहि पई	लुध्याणा	७६३
२०	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	निरंजण सिँघ दे घर	नेड़े ऐगरीकलचर विदयाला	लुध्याणा	७६४
२१	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	हरचरन सिँघ दे गृह	चंदा सिँघ कलोनी	लुध्याणा	७६६
२२	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	लाल सिँघ दे घर	लुध्याणा	लुध्याणा	७६८
२२	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	सुरजन सिँघ दे घर	लुध्याणा	लुध्याणा	७६८
२२	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	मदन लाल दे घर	लुध्याणा	लुध्याणा	७७०
२२	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	मग्घर सिँघ दे घर	लुध्याणा	लुध्याणा	७७१
२२	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	गुरदेव सिँघ दे घर	लुध्याणा	लुध्याणा	७७१
२२	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	निरवैर सिँघ दे घर	लोको शैड	लुध्याणा	७७२
२२	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	हरनेक सिँघ दे घर	लुध्याणा	लुध्याणा	७७३
२२	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	समितरी देवी दे घर	लुध्याणा	लुध्याणा	७७३

18
२२

२२	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	सुखवंत कौर दे गृह	लुध्याणा	लुध्याणा	७७३
२२	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	हरबंस कौर दे घर	आरीआ महल्ला	लुध्याणा	७७५
२२	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	ज्ञान चंद दे घर	लुध्याणा	लुध्याणा	७७५
२२	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	महिंदर सिँघ दे गृह	योधा बसती	लुध्याणा	७७६
२२	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	भजन सिँघ दे गृह	योधा बसती	लुध्याणा	७७६
२२	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	रवेल सिँघ दे घर	लुध्याणा		७७७
२२	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	नछत्तर सिँघ दे घर	दुराहा	लुध्याणा	७७७
२३	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	गज्जण सिँघ दे घर	दुराहा	लुध्याणा	७७८
२३	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	जसवंत कौर दे गृह	दुराहा	लुध्याणा	७७९
२३	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	गुरनाम कौर दे गृह	दुराहा	लुध्याणा	७८०
२३	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	जगदीश सिँघ दे घर	अजनोध	लुध्याणा	७८०
२३	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	सी राम दे गृह	मकसूदड़ा	लुध्याणा	७८१
२३	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	हरी सिँघ दे घर	महिमा सिँघ वाला	लुध्याणा	७८२
२४	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	बलवंत सिँघ दे घर	गुजरवाल	लुध्याणा	७८४
२४	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	ठाणेदार हरचरन सिँघ	ट्टवां	लुध्याणा	७८५
२५	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	हरबंस सिँघ दे गृह	संगरूर		७८७
२६	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	तरलोक सिँघ दे घर	सनाम		७९२
२७	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	बीबी दलीपी दे गृह	सनाम		७९५
२७	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	शाम सिँघ दे गृह	बरनाला		७९६
२७	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	कपूर सिँघ बराड़ दे गृह	मोगा	फ़िरोज़पुर	७९७
२८	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	गुरबचन सिँघ दे गृह	सदा सिँघ वाला	फ़िरोज़पुर	७९९
२८	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	६	गुरदयाल सिँघ दे गृह	सदा सिँघ वाला	फ़िरोज़पुर	८०१

२८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ सीतल सिँघ दे घर	डगरू	फ़िरोज़पुर	८०१
२८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ चंद सिँघ दे गृह	डगरू	फ़िरोज़पुर	८०२
२८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ धंना सिँघ दे गृह	डगरू	फ़िरोज़पुर	८०२
२८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ मेला सिँघ दे गृह	डगरू	फ़िरोज़पुर	८०३
२८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ मल सिँघ दे घर	रजीआणा	फ़िरोज़पुर	८०३
२६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ केहर सिँघ दे गृह	रजीआणा	फ़िरोज़पुर	८०४
२६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ इन्द्र सिँघ दे गृह	कादर वाला	फ़िरोज़पुर	८०६
२६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ सोहण सिँघ दे घर	मुंडी जुमाल	फ़िरोज़पुर	८०८
३० अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ बगीचा सिँघ दे गृह	मुंडी जुमाल	फ़िरोज़पुर	८०६
३० अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ बीबी छिंदो दे गृह	मुंडी जुमाल	फ़िरोज़पुर	८१०
३० अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ थानेदार सरूप सिँघ दे गृह	ढ़ुंडी	फ़िरोज़पुर	८१०
३० अस्सू शहिनशाही सम्मत ६	मंड	फ़िरोज़पुर	८११
३० अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ सरदारा सिँघ दे गृह	मनावा	फ़िरोज़पुर	८१३
३१ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ बलवंत सिँघ दे गृह	तलवंडी जले खां	फ़िरोज़पुर	८१४
३१ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ करतार सिँघ दे गृह	शाहवाला	फ़िरोज़पुर	८१६
३१ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ जरनैल सिँघ दे गृह	शाहवाला	फ़िरोज़पुर	८१७
पहली कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ गुरदास सिँघ दे घर	शाहवाला	फ़िरोज़पुर	८१६
पहली कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ करनैल सिँघ दे गृह	शाहवाला	फ़िरोज़पुर	८२०
पहली कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	८२१
२ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ गुरदयाल सिँघ दे घर	मूधल	अमृतसर	८२६
२ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ विचितर सिँघ दे घर	मूधल	अमृतसर	८२८
२ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ पिशोरा सिँघ दे घर	वेरका	अमृतसर	८२६

21 २२

२ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ हरनाम कौर दे घर वेरका अमृतसर ८३०
२ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ सुरजीत सिँघ दे घर वेरका अमृतसर ८३१
२ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ गुरनाम सिँघ दे गृह वेरका अमृतसर ८३१
६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ दविंदर कौर दे नवित जेठूवाल अमृतसर ८३३
८ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ उतम सिँघ दे घर वैरोवाल अमृतसर ८३४
६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ उत्तम सिँघ दे घर वैरोवाल अमृतसर ८३७
६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ मासटर सोहण सिँघ दे घर रामपुर अमृतसर ८३६
१३ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ दीवाली वाले दिन जेठूवाल अमृतसर ८४०
१५ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर ८४१
१६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ साधू सिँघ दे घर बसती तेगासिँघ वाली फिरोज़पुर ८४२
२१ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ करनैल सिँघ राजोके वाले दे नवित जेठूवाल अमृतसर ८४४
२२ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ अजीत सिँघ बटाले वाले दे नवित जेठूवाल अमृतसर ८४४
२३ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ मिलखा सिँघ दी देह छुट्टण दे नवित
छच्ती बी बी गंगा नगर ८४६
२३ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ मिलखा सिँघ दे अरथी चुक्कण समें
छत्ती बी बी गंगा नगर ८४८
२३ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ रतन सिँघ दे गृह पच्ची बी बी गंगा नगर ८४६
२६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ अमीर चंद गुलाटी दे नवित जेठूवाल अमृतसर ८५०
पहली मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ रात नूं हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर ८५१
२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ काका गुरदेव सिँघ जेठूवाल दे सगण नवित
सवेरे जेठूवाल अमृतसर ८५८
२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ नंबरदार प्रीतम सिँघ दे घर जेठूवाल अमृतसर ८६१

५	मग्घर	शहिनशाही सम्मत	६	अजीत दे घर	बटाला	गुरदासपुर	८६२
६	मग्घर	शहिनशाही सम्मत	६	सुरजीत सिँघ दे घर	बटाला	गुरदासपुर	८६४
६	मग्घर	शहिनशाही सम्मत	६	बंता सिँघ दे गृह	पंज गराईआं	गुरदासपुर	८६५
६	मग्घर	शहिनशाही सम्मत	६	दर्शन सिँघ दे घर	नया शाला	गुरदासपुर	८६६
७	मग्घर	शहिनशाही सम्मत	६	दर्शन सिँघ दे गृह	नया शाला	गुरदासपुर	८६८
७	मग्घर	शहिनशाही सम्मत	६	महिंदर सिँघ दे घर	मांगा सराए	अमृतसर	८६८
८	मग्घर	शहिनशाही सम्मत	६	सुरजन सिँघ दे घर	मांगा सराए	अमृतसर	८७०
८	मग्घर	शहिनशाही सम्मत	६	दर्शन सिँघ दे घर	मागा सराए	अमृतसर	८७१
८	मग्घर	शहिनशाही सम्मत	६	बचन सिँघ दे घर	मांगा सराए	अमृतसर	८७१
८	मग्घर	शहिनशाही सम्मत	६	प्रीतम सिँघ दे घर	मांगा सराए	अमृतसर	८७१
८	मग्घर	शहिनशाही सम्मत	६	अजीत सिँघ दे गृह	मांगा सराए	अमृतसर	८७२
८	मग्घर	शहिनशाही सम्मत	६	जागीर सिँघ दे घर	मैणीआं	अमृतसर	८७३
८	मग्घर	शहिनशाही सम्मत	६	प्रीतम सिँघ दे घर	निज़ामपुर	अमृतसर	८७३
८	मग्घर	शहिनशाही सम्मत	६	गुग सिँघ दे घर	निज़ाम पुर	अमृतसर	८७५
१३	मग्घर	शहिनशाही सम्मत	६	गुरचरन सिँघ, सवरन सिँघ दे घर	ज़हूरा	हुशिआरपुर	८७६
१४	मग्घर	शहिनशाही सम्मत	६	माधा सिँघ दे घर	रामूवाला	फ़िरोज़पुर	८७६
१४	मग्घर	शहिनशाही सम्मत	६	गुरदयाल सिँघ दे घर	रामू वाला	फ़िरोज़पुर	८८०
१४	मग्घर	शहिनशाही सम्मत	६	करतार सिँघ दे घर	चड़िक	तहिसील मोगा	८८१
१५	मग्घर	शहिनशाही सम्मत	६	महिंदर कौर दे घर	चड़िक	तहिसील मोगा	८८३
१५	मग्घर	शहिनशाही सम्मत	६	कपूर सिँघ बराड़ दे घर	मोगा	मोगा	८८४
१५	मग्घर	शहिनशाही सम्मत	६	रछपाल कौर दे नवित	नाथेवाल	फ़िरोज़पुर	८८४
१६	मग्घर	शहिनशाही सम्मत	६	सुदागर सिँघ दे घर	नाथेवाला	फ़िरोज़पुर	८८६

22
२२

23
२२

१६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ नछत्तर सिँघ दे घर	नाथेवाला	फ़िरोज़पुर	८८७
१६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ प्रीतम सिँघ दे घर	नाथेवाल	फ़िरोज़पुर	८८८
१६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ प्रीतम सिँघ दे गृह	नाथेवाल	फ़िरोज़पुर	८८८
१६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ महिंदर सिँघ दे घर	नाथेवाल	फ़िरोज़पुर	८८६
१६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ जसवंत सिँघ दे घर	राजेआणा तहिसील मोगा		८६०
१६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ कुलवंत सिँघ दे घर	माड़ी	फ़िरोज़पुर	८६१
१७ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ नाज़र सिँघ, जागीर सिँघ दे गृह	माड़ी मुसतफ़ा		८६२
सारी संगत नवित			८६३
१७ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ बसंत कौर दे गृह	समालसर	फ़िरोज़पुर	८६४
१७ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ सुहावा सिँघ दे गृह	पंज गराईआं	फ़िरोज़पुर	८६५
१७ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ खेम सिँघ दे घर	कोटकपुरा	बठिंडा	८६७
१८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ भाई बुघर सिँघ दे घर	बरगाड़ी	बठिंडा	८६८
१८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ हरचंद सिँघ दे गृह	हरिराए पुर	बठिंडा	६००
१६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ मित सिँघ दे गृह	बहिमण दीवाना	बठिंडा	६०२
१६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ बीबी हरिजिंदर कौर दे गृह	शेख	बठिंडा	६०४
२० मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ धरमजीत कौर दे गृह	शेख़	बठिंडा	६०७
२० मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ परसिंन कौर दे गृह	शेख़	बठिंडा	६०८
२० मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ माया देवी दे गृह	शेख़	बठिंडा	६०६
२० मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ महिंदर कौर दे गृह	शेख रखाला	बठिंडा	६०६
२० मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ आत्मा सिँघ दे गृह	गदा डोब	बठिंडा	६१०
२० मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ तेजा सिँघ दे घर	सादक	फ़िरोज़पुर	६११
२० मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ सुलक्खण सिँघ दे गृह	मूंगला	फ़िरोज़पुर	६१२

२१ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ राम सिँघ दे गृह फ़िरोज़पुर ६१३
२१ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ कुलवंत कौर महिंदर सिँघ खलील बसती फ़िरोज़पुर ६१४
२१ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ गुरदीप सिँघ दे गृह तूत फ़िरोज़पुर ६१४
२१ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ करनैल सिँघ, अजैब सिँघ दे घर फ़रीदकोट शहर ६१६
२२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ गुरदेव सिँघ दे गृह फ़रीदकोट शहर ६१७
२२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ नछत्तर सिँघ दे गृह फ़रीदकोट शहर ६१८
२२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ रणजीत सिँघ दे घर फ़रीदकोट शहर ६२०
२२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ कृपाल सिँघ दे घर गोलेवाल बठिंडा ६२१
२२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ भान सिँघ दे घर गोलेवाल बठिंडा ६२४
२२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ हज़ूरा सिँघ दे घर गोलेवाल बठिंडा ६२५
२२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ निहाल कौर दे गृह गोलेवाल बठिंडा ६२६
२७ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ गुरमीत सिँघ दे गृह फराला जलंधर ६२६
२८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ चरन कौर दे गृह फराला जलंधर ६३१
२८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ मुणशा सिँघ दे गृह फराला जलंधर ६३३
२८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ चरनो दे गृह फराला जलंधर ६३४
२८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ साधू सिँघ दे घर फगवाड़ा कपूरथला ६३५
२८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ प्रीतम सिँघ दे गृह फगवाड़ा कपूरथला ६३६
पहली पोह शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर ६३७
४ पोह शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार रात नूं जेठूवाल अमृतसर ६४८
५ पोह शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार सवेर वेले जेठूवाल अमृतसर ६४८
६ पोह शहिनशाही सम्मत ६ गुरचरन सिँघ दे गृह जम्मू जम्मू ६५४
७ पोह शहिनशाही सम्मत ६ जीत सिँघ दे गृह जम्मू जम्मू ६५५

24 २२

७ पोह शहिनशाही सम्मत ६ राम कौर दे गृह	जम्मू	जम्मू	९५५
७ पोह शहिनशाही सम्मत ६ सधरो देवी दे गृह	दीवाना	जम्मू	९५६
७ पोह शहिनशाही सम्मत ६ गुरदित सिँघ दे गृह	छंब खास	जम्मू	९५७
८ पोह शहिनशाही सम्मत ६ संसार सिँघ दे गृह	खास छंब	जम्मू	९५९
८ पोह शहिनशाही सम्मत ६ ज्ञान चंद दे गृह	खैरोआली	जम्मू	९६०
८ पोह शहिनशाही सम्मत ६ ज्ञान सिँघ दे गृह	नवां चक्क	जम्मू	९६१
८ पोह शहिनशाही सम्मत ६ भाग सिँघ दे गृह	मलक कैंप	जम्मू	९६२
९ पोह शहिनशाही सम्मत ६ पूरन सिँघ दे गृह	मलक कैंप	जम्मू	९६३
९ पोह शहिनशाही सम्मत ६ रसाल सिँघ दे गृह	मनावर	जम्मू	९६४
९ पोह शहिनशाही सम्मत ६ साहिब सिँघ दे गृह	मनावर	जम्मू	९६६
९ पोह शहिनशाही सम्मत ६ तोती देवी दे गृह	नगिआल	जम्मू	९६६
९ पोह शहिनशाही सम्मत ६ शाहणी देवी दे गृह	छंब	जम्मू	९६७
९ पोह शहिनशाही सम्मत ६ फुमण सिँघ दे गृह	छंब	जम्मू	९६८
९ पोह शहिनशाही सम्मत ६ प्रताप सिँघ दे घर	दड़	जम्मू	९७०
१० पोह शहिनशाही सम्मत ६ ईशर सिँघ दे घर	दड़	जम्मू	९७२
१० पोह शहिनशाही सम्मत ६ प्रकाश सिँघ दे गृह	दड़	जम्मू	९७४
१० पोह शहिनशाही सम्मत ६ सेवा राम दे गृह	जिउड़ीआं	जम्मू	९७५
१० पोह शहिनशाही सम्मत ६ झंडू राम सिँघ दे गृह	जिउड़ीआं	जम्मू	९७६
१० पोह शहिनशाही सम्मत ६ सरदारा सिँघ दे गृह	सीड़	जम्मू	९७६
११ पोह शहिनशाही सम्मत ६ गुरनाम सिँघ दे गृह	सीड़	जम्मू	९७८
११ पोह शहिनशाही सम्मत ६ लछमी देवी दे गृह	सीड़	जम्मू	९७८
११ पोह शहिनशाही सम्मत ६ प्रकाश चंद दे गृह	मघोवाली	जम्मू	९७९

११	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	देवी सिँघ दे गृह	मग्घोवाली	जम्मू	९८०
१२	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	माया देवी दे गृह	मग्घोवाली	जम्मू	९८१
१२	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	दौलत राम दे गृह	कोटली	जम्मू	९८२
१२	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	शिव सिँघ दे गृह	सई खुरद	जम्मू	९८३
१२	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	तेज भान दे गृह	सई खुरद	जम्मू	९८५
१३	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	बेलू राम दे गृह	सई खुरद	जम्मू	९८७
१३	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	गुरा राम दे गृह	सई खुरद	जम्मू	९८८
१३	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	किशन लाल दे गृह	सई खुरद	जम्मू	९८९
१३	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	रवेला राम दे गृह	सई खुरद	जम्मू	९८९
१३	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	नानक चंद दे गृह	सई खुरद	जम्मू	९९०
१३	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	नंदू दे गृह	सई खुरद	जम्मू	९९१
१३	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	गूहड़ा राम दे गृह	सई खुरद	जम्मू	९९२
१३	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	सेवा सिँघ दे गृह	कीर पिंड	जम्मू	९९३
१३	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	चरन दास दे गृह	सई खुरद	जम्मू	९९४
१३	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	ज्ञान चंद दे गृह	सई खुरद	जम्मू	९९५
१३	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	राम चंद दे गृह	निकोवाल	जम्मू	९९६
१४	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	केसरी देवी दे गृह	सई खुरद	जम्मू	९९८
१४	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	अमरो देवी दे गृह	सई खुरद	जम्मू	९९९
१४	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	प्रेम चंद दे गृह	सई खुरद	जम्मू	१०००
१४	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	चेला सिँघ दे गृह	सई खुरद	जम्मू	१००१
१४	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	सरदारा सिँघ दे गृह	सई खुरद	जम्मू	१००३
१४	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	सोभा सिँघ दे गृह	सई कलां	जम्मू	१००४

26
२२

27
२२

१४	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	अंगरेज़ सिँघ दे गृह	सई कलां	जम्मू	१००४
१४	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	अंगरेज़ सिँघ दे गृह रात नूं	सई कलां	जम्मू	१००५
१५	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	देवा सिँघ दे गृह	सई कलां	जम्मू	१०१३
१५	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	बीबी राजो दे घर	सई कलां	जम्मू	१०१४
१५	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	अजीत सिँघ दे गृह	सई कलां	जम्मू	१०१५
१५	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	गुरमुख सिँघ दे गृह	सई कलां	जम्मू	१०१६
१५	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	पूरन सिँघ दे गृह	सई कलां	जम्मू	१०१७
१५	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	इंदर राम दे गृह	सई कलां	जम्मू	१०१७
१५	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	वकील सिँघ दे गृह	सई कलां	जम्मू	१०१८
१५	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	मंगल सिँघ दे गृह	सई कलां	जम्मू	१०१९
१५	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	प्रेमी देवी दे गृह	सई कलां	जम्मू	१०१९
१५	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	चूहड़ सिँघ दे गृह	सई कलां	जम्मू	१०१९
१५	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	लछमण सिँघ दे गृह	सई कलां	जम्मू	१०२०
१६	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	कुलवंत सिँघ दे गृह	सई कलां	जम्मू	१०२२
१६	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	बचन सिँघ दे घर	सई कलां	जम्मू	१०२२
१६	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	खेमो देवी दे गृह	सई कलां	जम्मू	१०२३
१६	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	पुंनू राम दे गृह	सई कलां	जम्मू	१०२४
१६	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	फरंगी राम दे घर	तरेवा कैंप	जम्मू	१०२४
१६	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	अनंत राम दे गृह	तरेवा	जम्मू	१०२५
१६	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	कृपाल सिँघ दे गृह	सई कलां	जम्मू	१०२६
१७	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	वीरो देवी दे गृह	सई कलां	जम्मू	१०२७
१७	पोह	शहिनशाही	सम्मत	६	देवा सिँघ दे गृह	सई कलां	जम्मू	१०२८

27
२२

१७ पोह शहिनशाही सम्मत ६	भाईआ देवी दे गृह	सई कलां	जम्मू	१०२८
१७ पोह शहिनशाही सम्मत ६	सेवा सिँघ दे गृह	सई कलां	जम्मू	१०२६
१७ पोह शहिनशाही सम्मत ६	बंती देवी दे गृह	सई कलां	जम्मू	१०२६
१७ पोह शहिनशाही सम्मत ६	बेला सिँघ दे गृह	सई कलां	जम्मू	१०३०
१७ पोह शहिनशाही सम्मत ६	वकील सिँघ दे गृह	हंसा	जम्मू	१०३१
१७ पोह शहिनशाही सम्मत ६	रणीआ राम दे घर	कलोए	जम्मू	१०३२
१७ पोह शहिनशाही सम्मत ६	सेवा सिँघ दे गृह	कलोए	जम्मू	१०३२
१७ पोह शहिनशाही सम्मत ६	प्यारा सिँघ दे गृह	कलोआ	जम्मू	१०३३
१७ पोह शहिनशाही सम्मत ६	लीला वती दे गृह	करन नगर	जम्मू	१०३४
२१ पोह शहिनशाही सम्मत ६	जसवंत सिँघ दे गृह	करतारपुर	अमृतसर	१०३५
२२ पोह शहिनशाही सम्मत ६	हरबंस सिँघ दे गृह	करतारपुर	अमृतसर	१०३६
२२ पोह शहिनशाही सम्मत ६	बंना सिँघ दे घर	करतारपुर	अमृतसर	१०३७
२४ पोह शहिनशाही सम्मत ६	जेठूवाल दरबार दे निवासीआं नवित जेठूवालअमृतसर			१०३८
२५ पोह शहिनशाही सम्मत ६	रात नूं	जेठूवाल	अमृतसर	१०३८
२६ पोह शहिनशाही सम्मत ६	सेवा सिँघ नूं पंज प्यारयां विच शामल करन समें			
	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	१०४२
२६ पोह शहिनशाही सम्मत ६	जलूस दे दरबार पुज्जण ते	जेठूवाल	अमृतसर	१०४३
२६ पोह शहिनशाही सम्मत ६	रात नूं साढे नौ वजे	जेठूवाल	अमृतसर	१०४४
२७ पोह शहिनशाही सम्मत ६	सवेरे पंजाब मंतरी			
	सतिनाम सिँघ बाजवा दे आउण ते	जेठूवाल	अमृतसर	१०७३
२७ पोह शहिनशाही सम्मत ६	हरि भगत दवार रात नूं	जेठूवाल	अमृतसर	१०७४
२८ पोह शहिनशाही सम्मत ६	हरि भगत दवार शादीआं समें	जेठूवाल	अमृतसर	१०८३

३० पोह शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार लोहड़ी समें	जेठूवाल	अमृतसर	१०८४
पहली माघ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	१०८६
३ माघ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	१०८८
४ माघ शहिनशाही सम्मत ६ ऊधम सिँघ दे गृह	जलालाबाद	अमृतसर	१०८९
५ माघ शहिनशाही सम्मत ६ लछमण सिँघ दे गृह	रुड़का कलां	जलंधर	१०९०
६ माघ शहिनशाही सम्मत ६ केहर सिँघ	रुड़का कलां	जंलधर	१०९१
६ माघ शहिनशाही सम्मत ६ गरदावर सिँघ दे गृह	रुड़का कलां	जलंधर	१०९२
७ माघ शहिनशाही सम्मत ६ डोगर सिँघ दे गृह	सुन्नड़ कलां	जलंधर	१०९३
७ माघ शहिनशाही सम्मत ६ प्रकाश कौर दे गृह	सुन्नड़ कलां	जलंधर	१०९४
७ माघ शहिनशाही सम्मत ६ प्रीतम सिँघ दे घर	जंडिआला	जलंधर	१०९५
७ माघ शहिनशाही सम्मत ६ पिंदर सिँघ दे गृह	जंडिआला	जलंधर	१०९५
७ माघ शहिनशाही सम्मत ६ उजागर सिँघ दे गृह	सरींह	जलंधर	१०९६
७ माघ शहिनशाही सम्मत ६ उजागर सिँघ दे गृह	सरींह	जलंधर	१०९६
७ माघ शहिनशाही सम्मत ६ प्रीतम सिँघ दे गृह	खेड़ा	जलंधर	१०९७
७ माघ शहिनशाही सम्मत ६ लाल सिँघ दे गृह	हेरां	जलंधर	१०९८
८ माघ शहिनशाही सम्मत ६ सरवण सिँघ दे गृह	हेर	जलंधर	१०९९
८ माघ शहिनशाही सम्मत ६ मनजीत कौर दे गृह	नूर पुर	जलंधर	११००
९ माघ शहिनशाही सम्मत ६ फकीर सिँघ दे गृह	मजीद पुर	जलंधर	११०२
९ माघ शहिनशाही सम्मत ६ महिंदर सिँघ, मुखतिआर सिँघ	हरनाम पुरा	जलंधर	११०३
१० माघ शहिनशाही सम्मत ६ प्यारा सिँघ दे गृह	बसती जांगला		११०५
१० माघ शहिनशाही सम्मत ६ जागीर सिँघ दे गृह	बसती शिकार पुर	जलंधर	११०६

29
२२

१०	माघ	शहिनशाही	सम्मत	६	ज्ञान सिँघ दे गृह	सुरखपुर कपूरथला	११०७
१०	माघ	शहिनशाही	सम्मत	६	दौलत सिँघ दे गृह	कपूरथला	११०९
११	माघ	शहिनशाही	सम्मत	६	गुरदयाल सिँघ दे गृह	कपूरथला	१११०
११	माघ	शहिनशाही	सम्मत	६	करतार सिँघ दे घर	कपूरथला	११११
११	माघ	शहिनशाही	सम्मत	६	अमर कौर दे गृह	कपूरथला	१११२
११	माघ	शहिनशाही	सम्मत	६	गुरबचन सिँघ दे गृह	अहिमदपुर कपूरथला	१११३
१२	माघ	शहिनशाही	सम्मत	६	जुगिंदर सिँघ दे गृह	अहिमदपुर कपूरथला	१११५
१२	माघ	शहिनशाही	सम्मत	६	फुम्मण सिँघ दे गृह	अहिमदपुर कपूरथला	१११५
१२	माघ	शहिनशाही	सम्मत	६	जीत सिँघ दे गृह	अहिमदपुर कपूरथला	१११६
१२	माघ	शहिनशाही	सम्मत	६	करम सिँघ दे गृह	अहिमदपुर कपूरथला	१११६
१२	माघ	शहिनशाही	सम्मत	६	प्रीतम सिँघ दे गृह	कोटली इबराहीम खां जलंधर	१११७
१२	माघ	शहिनशाही	सम्मत	६	बलजीत सिँघ दे गृह	जैतोवाली जलंधर	१११९
१२	माघ	शहिनशाही	सम्मत	६	हरभजन कौर दे गृह	कोटली थान सिँघ जलंधर	११२०
१३	माघ	शहिनशाही	सम्मत	६	गुरदयाल सिँघ दे गृह	चीमां कला जलंधर	११२१
१३	माघ	शहिनशाही	सम्मत	६	गुरदेव सिँघ दे गृह	दुसांझ खुरद जलंधर	११२१
१४	माघ	शहिनशाही	सम्मत	६	दर्शन सिँघ दे गृह	दुसांझ जलंधर	११२२
१४	माघ	शहिनशाही	सम्मत	६	संतोख सिँघ दे गृह	सोढीआं जलंधर	११२४
१५	माघ	शहिनशाही	सम्मत	६	लछमण सिँघ दे गृह	धनौरी रोपड़	११२५
१६	माघ	शहिनशाही	सम्मत	६	जगीर सिँघ दे गृह	रंगीलपुर रोपड़	११२६
१६	माघ	शहिनशाही	सम्मत	६	प्रीतम सिँघ दे गृह	राजो माजरा रोपड़	११२७
१६	माघ	शहिनशाही	सम्मत	६	हज़ूरा सिँघ दे गृह	गुराया जलंधर	११२८
१७	माघ	शहिनशाही	सम्मत	६	गुरदेव सिँघ दे गृह	नवां पिंड जलंधर	११३०

30
२२

१७ माघ शहिनशाही सम्मत ६	प्यारा सिँघ दे गृह	माडल टाऊन	जलंधर	११३१
१७ माघ शहिनशाही सम्मत ६	नगीना सिँघ दे गृह	माडल हाउस	जलंधर	११३४
१७ माघ शहिनशाही सम्मत ६	गुरदयाल सिँघ दे गृह	जलंधर		११३४
१८ माघ शहिनशाही सम्मत ६	प्यारा सिँघ दे गृह	जलंधर		११३६
१८ माघ शहिनशाही सम्मत ६	गुरनाम सिँघ दे गृह	सूरा नस्सी	जलंधर	११३७
१८ माघ शहिनशाही सम्मत ६	जरनैल सिँघ दे गृह	सगवाल	जलंधर	११३८
२१ माघ शहिनशाही सम्मत ६	बीबी जुगिंदर कौर दे नवित	जेठूवाल	अमृतसर	११४०
२७ माघ शहिनशाही सम्मत ६	रणजीत सिँघ दे गृह	गवाल टोली	फिरोंज़पुर छाउणी	११४१
२८ माघ शहिनशाही सम्मत ६	राम सिँघ दे गृह	गवाल टोली	फ़िरोज़पुर छाउणी	११४७
पहली फग्गण शहिनशाही सम्मत ६	हरि भगत दवार रात नूं	जेठूवाल	अमृतसर	११४८
१४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६	बसंत कौर दे सरीर छड्डण ते	मलूवाल	अमृतसर	११५२
१५ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६	बख़शीश सिँघ दे गृह	कादराबाद	गुरदासपुर	११५५
१६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६	सवरन सिँघ दे गृह	कादराबाद	गुरदासपुर	११५६
१६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६	संपूरन कौर दे गृह	कादराबाद	गुरदासपुर	११५७
१६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६	करनैल सिँघ दे गृह	कादराबाद	अमृतसर	११५८
१६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६	बूड़ सिँघ दे गृह	कादराबाद	अमृतसर	११५८
१६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६	अमराओ सिँघ दे गृह	बल	गुरदासपुर	११५९
१६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६	मस्सा सिँघ दे गृह	बल	गुरदासपुर	११६०
१६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६	मोहण सिँघ दे गृह	तारा चक्क	गुरदासपुर	११६१
१६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६	महिंदर सिँघ दे गृह	धीरा दईआ	गुरदासपुर	११६२
१७ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६	अवतार सिँघ दे गृह	माड़ी पनूआं	गुरदासपुर	११६३
१७ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६	रणधीर सिँघ दे गृह	माड़ी पनूआं	गुरदासपुर	११६४

31
२२

32
२२

१७	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	बीबी सुरिंदर कौर दे गृह		माड़ी पनूआं	गुरदासपुर	११६५
१७	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	विरसा सिँघ दे गृह		श्री हरिगोबिंद पुरा	गुरदासपुर	११६५
१७	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	करतार सिँघ दे गृह		भूंबली	गुरदासपुर	११६७
१७	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	जुगिंदर सिँघ दे गृह		डडवां	गुरदासपुर	११६८
१७	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	जागीर सिँघ दे गृह		सोहल	गुरदासपुर	११६९
१८	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	गुरचरन सिँघ दे गृह		पंडोरी	कपूरथला	११७१
१९	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	जुगिंदर सिँघ दे गृह		फतिह गड़	कपूरथला	११७१
१९	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	मुणशी राम दे गृह		बेगोवाल	हुशिआरपुर	११७२
१९	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	अरजन सिँघ दे गृह		सलीम पुर	हुशिआरपुर	११७३
१९	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	भगवान सिँघ दे गृह		ओड़ मुड़ टांडा	हुशिआरपुर	११७३
१९	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	अमरीक सिँघ दे गृह		सराई	हुशिआरपुर	११७४
१९	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	मेला सिँघ दे गृह		सराई	हुशिआरपुर	११७६
१९	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	हरभजन सिँघ दे गृह		बैहरम पुर	हुशिआरपुर	११७६
२०	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	तरसेम सिँघ दे गृह		खुरदन	हुशिआरपुर	११७८
२०	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	सविंदर सिँघ दे गृह		रूपोवाल	हुशिआरपुर	११७९
२०	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	धंना सिँघ दे गृह		कुल्लीआं	हुशिआरपुर	११८०
२०	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	खिआल सिँघ दे गृह		दसूहा	हुशिआरपुर	११८१
२०	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	वतन सिँघ दे गृह		शरीह पुर	हुशिआरपुर	११८२
२०	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	दयाल सिँघ दे गृह		डड्डां	हुशिआरपुर	११८२
२०	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	करतार सिँघ दे गृह		पंज ढेरा	हुशिआरपुर	११८३
२१	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	लाल सिँघ दे गृह		पंज ढेरा	हुशिआरपुर	११८४
२१	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	हज़ारा सिँघ दे गृह		पंज ढेरा	हुशिआरपुर	११८५

32
२२

33
२२

२१	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	राम सिँघ, दरबारा सिँघ, मंगा सिँघ दे गृह	गालड़ीआं	हुशिआरपुर	११८५
२१	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	जीआ लाल दे गृह	तलवाड़ा	हुशिआरपुर	११८७
२२	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	हरि संगत दे नवित	तलवाड़ा	हुशिआरपुर	११६०
२२	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	जागीर सिँघ दे गृह	तलवाड़ा	हुशिआरपुर	११६१
२२	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	जुगिंदर सिँघ दे गृह	तलवाड़ा	हुशिआरपुर	११६१
२२	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	रेशम सिँघ दे गृह	मकेरीआं	हुशिआरपुर	११६२
२२	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	बलवंत सिँघ दे गृह	मकेरीआं	हुशिआरपुर	११६३
२२	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	लाल चंद दे गृह	भीम पुर	गुरदासपुर	११६४
२३	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	कुशल्या देवी दे गृह	भीम पुर	गुरदासपुर	११६४
२३	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	देव राज दे गृह	भीम पुर	गुरदासपुर	११६५
२३	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	अजीत सिँघ दे गृह	कत्तोवाली	गुरदासपुर	११६६
२३	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	गुरचरन सिँघ दे गृह	कत्तोवाल	गुरदासपुर	११६८
२३	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	सरूप सिँघ दे गृह		गुरदासपुर	११६६
२३	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	बीबी बावी दे गृह	मह्राज	गुरदासपुर	१२००
२४	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	राज सिँघ दे गृह	मह्राज पुर	गुरदासपुर	१२०१
२४	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	महिंगा सिँघ दे गृह	सदा	गुरदासपुर	१२०३
२४	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	जरनैल सिँघ दे गृह	सदा	गुरदासपुर	१२०४
२५	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	चतुर सिँघ दे गृह	ओगरा	गुरदासपुर	१२०५
२५	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	ओगरा संगत नवित	ओगरा	गुरदासपुर	१२०७
२६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	गुरबख़्श सिँघ दे गृह	नौशहरा	हुशिआरपुर	१२०६
२६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	बूड़ सिँघ दे गृह	वजीर पुर	गुरदासपुर	१२१०

34
२२

२६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	दलीप सिँघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	१२११
२७	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	प्यारा सिँघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	१२१२
२७	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	रवेल कौर दे गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	१२१३
२७	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	दीदार सिँघ गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	१२१४
२७	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	हज़ारा सिँघ दे गृह	बाबुपुर	गुरदासपुर	१२१५
२८	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	आसा सिँघ बलाका सिँघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	१२१६
२८	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	भाग सिँघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	१२१७
२८	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	मेला सिँघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	१२१८
२८	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	संता सिँघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	१२१८
२८	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	करतार कौर दे गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	१२१९
२८	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	हज़ारा सिँघ दलीप सिँघ	बाबूपुर	गुरदासपुर	१२२०
२९	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	किशन सिँघ दे गृह	अल्लड़पिंडी	गुरदासपुर	१२२१
२९	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	बीबी धिआनो दे गृह	अल्लड़पिंडी	गुरदासपुर	१२२३
२९	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	बीबी चरनो दे गृह	अल्लड़पिंडी	गुरदासपुर	१२२४
२९	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	बीबी जीतो गृह	अल्लड़पिंडी	गुरदासपुर	१२२५
२९	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	बीबी दीपो गृह	अल्लड़पिंडी	गुरदासपुर	१२२६
३०	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	गुरमुख सिँघ दे गृह	शोहण	गुरदासपुर	१२२७
३०	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	गुरदेव सिँघ दे गृह	शोहण	गुरदासपुर	१२२९
३०	फग्गुण	शहिनशाही	सम्मत	६	हरभजन सिँघ दे गृह	जीऊ जुलाई	गुरदासपुर	१२२९
३०	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	धिरता सिँघ दे गृह	कलानौर	गुरदासपुर	१२३१
३०	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	६	बीबी सुखराज दे गृह	कलानौर	गुरदासपुर	१२३२
पहली	चेत	शहिनशाही	सम्मत	७	मंगल सिँघ दे गृह	फतूपुर	गुरदासपुर	१२३३

पहली चेत शहिनशाही सम्मत ७ गुलज़ार सिँघ दे गृह फतूपुर गुरदासपुर १२३४
पहली चेत शहिनशाही सम्मत ७ जुगिंदर सिँघ दे गृह फतूपुर गुरदासपुर १२३४
पहली चेत शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार रात नूं जेठूवाल अमृतसर १२३५
३ चेत शहिनशाही सम्मत ७ गुरमुख सिँघ दे गृह भलाईपुर अमृतसर १२४३
४ चेत शहिनशाही सम्मत ७ पाल सिँघ, फौजा सिँघ, शिंगारा सिँघ, सुच्चा सिँघ
महिंदर सिँघ, तरसेम सिँघ, हरभजन सिँघ, महिंदर सिँघ, गुरचरन सिँघ
गगड़ेवाल, भलाईपुर डोगरा अमृतसर १२४६
४ चेत शहिनशाही सम्मत ७ ऊधम सिँघ, गुलज़ार सिँघ, बलवंत सिँघ,
मुखत्यार सिँघ, धरमबीर जलालाबाद अमृतसर १२५०
४ चेत शहिनशाही सम्मत ७ सोहण सिँघ दे गृह रामपुर अमृतसर १२५१
४ चेत शहिनशाही सम्मत ७ उतम सिँघ, चंनण सिँघ दे गृह वैरोवाल अमृतसर १२५२

35
२२

४ चेत शहिनशाही सम्मत ७ सुरैण सिँघ, दलीप सिँघ, सवरन सिँघ, तेजा सिँघ,
गुलज़ार सिँघ, संतोख सिँघ, सुरैण सिँघ, त्रलोक सिँघ, गगड़ेआल शिंगारा सिँघ,
पल्खो के अेकल गंडा, बूटा सिँघ,जरनैल सिँघ सरली खुरद, संतो बंडाला
जिंदो बडाला, सवरनी बंडाला, अमर कौर बंडाला, धंनतो बंडाला, बंसो ठठीआं
कशमीरो तखतू चक्क जंडिआला गुरू अमृतसर १२५२
७ चेत शहिनशाही सम्मत ७ सुखदेव राज, प्रीतम सिँघ, जागीर कौर, करम सिँघ,
बीबी प्यारो, गुरबख़श सिँघ, सरदारा सिँघ, सरमुख सिँघ,
पूरन सिँघ, नाज़र सिँघ, तारा सिँघ, सवरन सिँघ, प्रीतम सिँघ,
दर्शन सिँघ, साधू सिँघ, गेजा सिँघ, मंगल सिँघ, जिंदर सिँघ,
प्रीतम सिँघ, हरी सिँघ, हरदीप सिँघ, दयाल सिँघ, कुंदन सिँघ,
हरनाम सिँघ, दरबारा सिँघ वरया, बीबी बीरो कैरो कल्ला १२५५

८ चेत शहिनशाही सम्मत ७ निरंजण दई दे गृह कल्ला अमृतसर १२५८

८ चेत शहिनशाही सम्मत ७ मस्सा सिँघ, मक्खण सिँघ, दारा सिँघ, करनैल सिँघ,
बीबी अजैब कौर बाठ, नराइण सिँघ कंग, गुरनाम सिँघ कंग, कुंदन सिँघ
माल चक, सोहण सिँघ माल चक, हरनाम सिँघ पंडोरी,
उजागर सिँघ खडूर साहिब, सवरन सिँघ फतिआबाद
नौरंगाबाद अमृतसर १२५८

९ चेत शहिनशाही सम्मत ७ सोहण सिँघ, संता सिँघ, सवरन सिँघ, करतार कौर, द
दलीप सिँघ, बसंत कौर, बली सिँघ कैरों, मखण सिँघ जौड़ा,
केसो राम जंडो की सरहाली, प्रीतम कौर साहब पुरा, महिंदर सिँघ बुग्गे,
संता सिँघ बुग्गे, जगीर सिँघ मुग़ल चक्क, करनैल कौर शफीपुर,
परताप सिँघ सुग्गा, प्रताप कौर भोजीआ तरनतारन अमृतसर १२६०

36

२२

36

२२

१० चेत शहिनशाही सम्मत ७ गुरबचन सिँघ, अरजन सिँघ, पूरन सिँघ, दीदार सिँघ जट्टा,
भगवंत सिँघ जट्टा, जुगिंदर सिँघ जट्टा, तेजा सिँघ चंबल,
पूरन सिँघ चंबल, चंनण सिँघ चंबल, निरंजण सिँघ चंबल,
अनोख सिँघ चंबल, मोहण सिँघ चंबल, हीरा नंद चंबल,
दलीध सिँघ चंबल, सज्जण सिँघ चंबल, रतन सिँघ चंबल,
गुपाल सिँघ मुंडा पिंड, अजीत सिँघ चोला साहिब फौजा सिँघ सरहाली,
दर्शन सिँघ दुरगापुर उसमा अमृतसर १२६६

११ चेत शहिनशाही सम्मत ७ महिंमद कौर, कशमीर सिँघ, दर्शन सिँघ, लाखना, काबल सिँघ,
बासरके, लछमण सिँघ, गोपाल कौर, भूरे, बीबी वीरो माड़ी
कंबको की, जीतो बासर के, राजो के अमृतसर १२६९

१२ चेत शहिनशाही सम्मत ७ बाबा मौता सिँघ, दलीप सिँघ, फुम्मण सिँघ, परताप सिँघ,
सुरजीत कौर, सेवा सिँघ, बीबी बीरो, बेबे भजनो, सॅजण सिँघ,
गुलाब कौर डल, दयाल सिँघ डल, गंडा सिँघ दुराजके,
करमो बरनाला, सुरजन सिँघ नूरपुर, मनी राम सिँधम,
मिलखा सिँघ माड़ी मेघा, समुंद सिँघ माड़ी मेघा, हरबंस कौर
नारला, साधू सिँघ झामके, दलीप सिँघ नूरपुर,
अमरीक कौर डलीरी कलसीआं अमृतसर १२७१

१३ चेत शहिनशाही सम्मत ७ मुखत्यार सिँघ, गुरबख़श सिँघ, करम सिँघ, जागीर सिँघ,
चंनण सिँघ, भजन कौर, करतार सिँघ भोजीआं, बीबी सेवी ठट्ठा,
वीरो बगिआड़ी, पूरन सिँघ सोहल, हीरा सिँघ सोहल,
महिंदर सिँघ सोहल, बचन सिँघ सोहल, गुरदीप कौर सोहल,
सुरजन सिँघ भुच्चर, गुरबचन कौर बगिआड़ी गगो बूआ १२७३

37 २२ 37 २२

१४ चेत शहिनशाही सम्मत ७ बीबी सुरजीत कौर, गुरदीप सिँघ, बलबीर कौर चेतन पुरा,
अवतार सिँघ काउँके समां सिँघ मोदे भरोभाल अमृतसर १२७५

१५ चेत शहिनशाही सम्मत ७ बीबी छिंदो, बीबी गुरबचन कौर दे गृह
मोदे धनौए अमृतसर १२७७

१५ चेत शहिनशाही सम्मत ७ सुरिंदर सिँघ, हज़ारा सिँघ छीने, गुरदित सिँघ मानावाला,
चरन सिँघ मानावाला, दलीप सिँघ मानावाला, तारा सिँघ मानावाला,
मंगल सिँघ सारंगड़ा, कारज सिँघ सारंगड़ा, संता सिँघ लेलीआं,
लछमी लेलीआ, जागीर कौर लेलीआं, दर्शन कौर लेलीआं,
कुलवंत कौर डेरी वाला, हरदेव कौर कलेर, बाहल सिँघ भंगम,
जुगिंदर कौर लोपो के भुल्लर अमृतसर १२७९

१६ चेत शहिनशाही सम्मत ७ नराइण सिँघ, अजीत सिँघ, सवरन सिँघ, हरनाम सिँघ,
भाग सिँघ माहल, बेला सिँघ माहल, हरबंस सिँघ अैस डी ओ अमृतसर,
हज़ारा सिँघ काउँके महिंदर सिँघ काउँके, करम सिँघ मीआंपुर,
बलवंत कौर धारड़, गुरमेज़ कौर मीआंपुर, सवरन कौर भुसे, आस
कौर बोपाराए, जगमोहण सिँघ बोपाराए, गुमानपुर अमृतसर १२८०

१७ चेत शहिनशाही सम्मत ७ गुरनाम सिँघ, अजमेर सिँघ, पिशौरा सिँघ, हरजीत सिँघ,
हरनाम कौर, जुगिंदर कौर, रतन कौर मूधल, गुरदयाल सिँघ मूधल,
हरबंस कौर मूधल, कुंदन सिँघ पंडोरी, हज़ारा सिँघ चेतन पुरा, गुरमुख
गुरमुख सिँघ चेतन पुरा हीरा सिँघ चेतन पुरा, हज़ारा सिँघ जेठूनंगल
वेरका अमृतसर १२८२

अजीत सिँघ दे बेनंती करन ते १२८४

१८ चेत शहिनशाही सम्मत ७ सुरजन सिँघ, महिंदर सिँघ, प्रीतम सिँघ, अजीत सिँघ,
बचन सिँघ, जसवंत कौर, चरन सिँघ, जगीर सिँघ मैणीआं, गिरधारा सिँघ
बलोआली, केसर सिँघ मैसम पूरा, चरन सिँघ मांगा सराए मांगा सराए १२८४

२० चेत शहिनशाही सम्मत ७ तारा सिँघ निरंजण सिँघ जमना नगर अंबाला १२८६

२१ चेत शहिनशाही सम्मत ७ लछमण सिँघ ते हरबंस सिँघ दे नवित सहारनपुर १२८८

२१ चेत शहिनशाही सम्मत ७ विशवा मित्र मेरठ, हंस राज मेरठ, जुगिंदर सिँघ फतिह गड़्ह,
निरंजण सिँघ अजितवाल, प्यारे लाल कलोए, सेवा राम कलोए,
रेशम सिँघ खहिरा मजा, जगजीत सिँघ सलीमपुर, गुरदीप सिँघ
दबुरजी, महिंदर सिँघ बसती गुजरां, संत सिँघ घगराली, मुलख
राज मेरठ, प्रेमी देवी झंडे, पूरन सिँघ मुंडिआणी, सरमेल सिँघ
दाऊदपूर, ज्ञान चंद मिरज़ापुर मेरठ शहर १२८६

38
२२

२२ चेत शहिनशाही सम्मत ७ गुरबलविंदर सिँघ चंद पुराणा, गुरचरन सिँघ ट्टवां, बूआ सिँघ
बलपुरीआ, माया दिल्ली, हरभजन सिँघ फेरूमान, अवतार सिँघ
चबेवाल, तरलोक सिँघ सनाम, सुरिंदर कौर दिल्ली हरि भगत दवार,
दर्शन सिँघ हरि भगत दवार, पी पी सिँघ किशन पुर,
हरभजन सिँघ दिल्ली, चंदा सिँघ नंगल राए, रतन सिँघ दिल्ली,
महिंदर सिँघ नयाशाला, पूरन सिँघ दिल्ली, सरूप सिँघ ढुडीके,
दर्शन सिँघ बागे, इंदर सिँघ सोनीपत, सतपाल हांडा फ़रीदाबाद,
राजा राम दिली, जगत सिँघ चमनाओ, हरि भगत दवार दिल्ली १२६१
२३ चेत शहिनशाही सम्मत ७ सेवा सिँघ दे नवित गुड़ागाउँ १२६३
२३ चेत शहिनशाही सम्मत ७ हरबंस सिँघ दे गृह गुड़गाउँ १२६४
२५ चेत शहिनशाही सम्मत ७ अवतार सिँघ, गुरदित सिँघ, कृपा सिँघ, महिल सिँघ,
गुरबचन सिँघ, सतवंत कौर, बसंत कौर सुखदेव सिँघ, मोहण सिँघ
कादीआं, अंमृत कौर लखनऊ, जुगिंदर कौर लखनऊ कानपुर १२६६
२७ चेत शहिनशाही सम्मत ७ देवदत दे नवित पटना १२६८
३० चेत शहिनशाही सम्मत ७ गुरमेज सिँघ, सूरत सिँघ, करतार दे गृह
शकूर बसती दिल्ली १३०१
३० चेत शहिनशाही सम्मत ७ भान सिँघ, सोहण सिँघ, जगतार सिँघ बीड़ अमीन, निरंजण सिँघ
फारम गुरू कुल थानेसर गुर मेज सिँघ थानेसर, बचन सिँघ चिबा,
मान सिँघ बोढी, संता सिँघ शरीफगड़्, बंता सिँघ मुगल माजरा
काला सिँघ कृसाणा, सरैण सिँघ कृसाणी, आसा सिँघ कृसाणी,
इंदर पाल सिँघ बबैन वरयाम सिँघ ठीकरी छंनां हज़ारा सिँघ रोहतक,
नानकपुरा करनाल १३०३

39
२२

३१ चेत शहिनशाही सम्मत ७ हरबंस सिँघ, संपूरन सिँघ, सौदागर सिँघ भठ माजरा, रणधीर
सिँघ हरनाया, अरजन सिँघ बलोचपुर, जरनैल सिँघ सतौड़ा, अजैब
सिँघ भेवा, जुगिंदर कौर भेवा, मोहण सिँघ गड़्ही लांगरी, महिंदर
सिँघ गड़्ही लांगरी, करतार सिँघ कौमी फारम, चानण सिँघ हरनौला
रण सिँघ जीत नगर, सुरजीत कौर जीत नगर, लखबीर सिँघ जीत
नगर, राज कौर खारे ठीकरी छंना करनाल १३०५

पहली विसाख शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल विच रात नूं १३०७

०२ विसाख शहिनशाही सम्मत ७ रूड़ सिँघ धुंन ढाया अवला, जगत सिँघ घणी की बांगर,
सरदूल सिँघ, बलसकंदर, हरभजन कौर भगवान पुरा,
हरि भगत दवार जेठूवाल १३१४

40
२२

२० विसाख शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार माझा गुरदासपुर संगत दे
वाढी कर के जाण समें जेठूवाल अमृतसर १३१५

३० विसाख शहिनशाही सम्मत ७ गुरबख़श सिँघ दे अंतम समें पगड़ी दा विहार
हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर १३१७

पहली जेठ शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार रात नूं जेठूवाल अमृतसर १३२१

१७ जेठ शहिनशाही सम्मत ७ हरजीत सिँघ दे पुत्र नवित जेठूवाल अमृतसर १३३१

१६ जेठ शहिनशाही सम्मत ७ कपूर सिँघ दे नवित जेठूवाल अमृतसर १३३१

२३ जेठ शहिनशाही सम्मत ७ चेला सिँघ, गुरचरन सिँघ, अजीत सिँघ, प्रकाशो देवी जम्मू, अमरो
देवी, सवरनो देवी, लील्हा वंती, बंती, वंती, राज सिँघ हमराज पुर,
राम कौर छंब, सदरो देवी दीवाना,जीवण सिँघ अंबा राए,
करमो देवी घगरेल, बाज़ सिँघ मद्धूआ जम्मू १३३४

२४ जेठ शहिनशाही सम्मत ७ गुरदित सिँघ, संसार सिँघ, फुम्मण सिँघ, भाग कौर, शाहणी देवी,
बीबी जीतो, बंती देवी, ज्ञान चंद खैरोवाल,खोजू राम, रोलू राम,
ज्ञान सिँघ नवां चक्क, भाग सिँघ मलक कैंप, पूरन चंद, भाग
सिँघ, रसाल सिँघ मनावर, इंदरों नगिआल, प्रकाशो देवी, तोती
देवी, परताप सिँघ दड़, ईशर सिँघ, प्रकाश सिँघ, झंडू राम
जौड़ीआ छंब जम्मू १३३६

२५ जेठ शहिनशाही सम्मत ७ गुरनाम सिँघ, सरदार सिँघ, जुगिंदर सिँघ, लछमी देवी,
हरबंस कौर, लछमी देवी मूसा चक्क, देवी सिँघ मग्घोवाली, हरी सिँघ,
प्रकाश चंद, ठाकर दास, जीतो देवी, प्रीतो देवी मेलू जिंदड़, दौलत
राम कोटली, रणीआं राम कलोए, खज़ान सिँघ रणबीर सिँघ पुरा,
सेवा सिँघ कीर, जागीर सिँघ कीर, भगत सिँघ कीर, कृष्ना देवी
बिरला, शाहणी देवी माजरा, संत सिँघ दीवान गड़
सीड़ जम्मू १३३८

२६ जेठ शहिनशाही सम्मत ७ तेजभान, शिव सिँघ, गूड़्हा राम, राम चंद, अमरो देवी,
चरन दास, सोभा सिँघ, केसरी देवी, प्रेम चंद, सरदार चंद, गुरा राम,
किशन लाल, रवेला राम, बलू राम, नानक चंद, नंदू राम, फकीर सिँघ,
पीरा राम, ज्ञान चंद, ईशर दास सई खुरद जम्मू १३४०

२७ जेठ शहिनशाही सम्मत ७ लछमण सिँघ, कुलवंत सिँघ, बचन सिँघ, भजन सिँघ,
सरैण सिँघ, अंगरेज़ सिँघ, वकील सिँघ, बंसो देवी, इंदर राम, देवा सिँघ,
धरम कौर, बिशन कौर, चूहड़ सिँघ, बचन सिँघ, धरमो देवी, पुंनूं
राम, रोशन लाल, गुरदेई, कृपाल सिँघ, संतो देवी, करम सिँघ,
गुरमुख सिँघ, अजीत सिँघ, करमो देवी, पूरन सिँघ, खेमो देवी, वीरो

देवी, बेला सिँघ, सेवा सिँघ, भाईआ देवी, बंती देवी, मंगल
सिँघ, चंनो देवी, राजा सिँघ, बाबू राम, बचनो देवी, प्यारी देवी,
फरंगी राम, साईं राम, अनंत राम, वकील सिँघ, तोती देवी,
प्रेमी देवी सई कला जम्मू १३४५

२८ जेठ शहिनशाही सम्मत ७ संत राम, प्रीतम सिँघ जाड़, प्यारी देवी बदीपुर
गोखले चक्क जम्मू १३४६
२६ जेठ शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर १३५१
३१ जेठ शहिनशाही सम्मत ७ कपूर सिँघ ते रणजीत सिँघ मोगा फ़िरोज़पुर १३५४
पहली हाढ़ शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार रात नूं जेठूवाल अमृतसर १३५७
०२ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ७ माता बिशन कौर, रणजीत कौर, अमरजीत सिँघ,
सुरजीत सिँघ, प्रीतम सिँघ, जगजीत सिँघ, गुरमीत सिँघ गुरचरन सिँघ,
हरभजन सिँघ, वरयाम सिँघ, पाल सिँघ, अमर सिँघ, जगमेल सिँघ,
मिलखा सिँघ, बचन सिँघ, दलीप सिँघ, संतोख सिँघ, साधू सिँघ,
ठाकर सिँघ, करतार कौर, नंती, गुपाल कौर, सुभाग वंती, चंनण
कौर, प्रीतम कौर, प्यारा सिँघ, रूप सिँघ, कुंनण सिँघ, भगत सिँघ
पिंड कीर जम्मू, सवरन सिँघ पिंड बाठ जेठूवाल अमृतसर १३६७
६ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार दुपहिर वेले जेठूवाल अमृतसर १३६८
६ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार रात नूं जेठूवाल अमृतसर १३७०
८ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार रात नूं जेठूवाल अमृतसर १३७१
१७ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार रात नूं जेठूवाल अमृतसर १३७२
१८ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार सवेरे शादीआं समें जेठूवाल अमृतसर १४००

42
२२

१८ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार रात नूं विहार समें जेठूवाल अमृतसर १४०४
१६ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार रात नूं जेठूवाल अमृतसर १४११
२० हाढ़ शहिनशाही सम्मत ७ बख़शीश सिँघ, करनैल, सवरन सिँघ, बूड़ सिँघ,
करम सिँघ, संपूरन कौर मस्सा सिँघ बलपुरीआ, अमराउ सिँघ बलपुरीआ,
रछपाल सिँघ सठिआला, तेजा सिँघ सठिआला,
प्रकाश कौर दिल्ली कादराबाद अमृतसर १४१४
२६ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ७ कपूर सिँघ रणजीत सिँघ मोगा फ़िरोज़पुर १४१६

पहली सावण शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार रात नूं जेठूवाल अमृतसर १४१७
३ सावण शहिनशाही सम्मत ७ सुभागवंती दे गृह जेठूवाल अमृतसर १४२२
५ सावण शहिनशाही सम्मत ७ जुगिंदर कौर तरिपत दे नवित जेठूवाल अमृतसर १४२३
१० सावण शहिनशाही सम्मत ७ अजीत सिँघ बटाला दी बेनती करन ते
हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर १४२८
१३ सावण शहिनशाही सम्मत ७ आतमा सिँघ, फौजा सिँघ, प्यारा सिँघ, दरबारा सिँघ,
जीवण सिँघ, दर्शन सिँघ, किशन सिँघ, प्रीतम कौर मैणीआं
गुरदयाल सिँघ, जगीर कौर, हरभजन सिँघ, गुरमेज कौर
मक्खण विंडी तारा सिँघ अमृतसर शहर
मलूवाल अमृतसर १४२६
१४ सावण शहिनशाही सम्मत ७ कपूर सिँघ दे गृह मोगा फिरोज़ पुर १४३२
१५ सावण शहिनशाही सम्मत ७ हरजीत सिँघ दे नवित जेठूवाल अमृतसर १४३४
१७ सावण शहिनशाही सम्मत ७ गुरदयाल सिँघ दे गृह मूधल अमृतसर १४३५
२१ सावण शहिनशाही सम्मत ७ जगजीत सिँघ दे नवित जेठूवाल अमृतसर १४३७

43
२२

२८ सावण शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल
कंम करन वाले गुरसिखां नवित १४४०

३० सावण शहिनशाही सम्मत ७ कपूर सिँघ दे गृह मोगा फिरोज़ पुर १४४१

पहली भादरों शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार रात नूं जेठूवाल अमृतसर १४४२

२ भादरों शहिनशाही सम्मत ७ टहिल सिँघ, गुलज़ार सिँघ, वरयाम सिँघ राम दुवाली
रूपोवाली अमृतसर १४४६

२० भादरों शहिनशाही सम्मत ७ कपूर सिँघ दे गृह मोगा शहर फ़िरोज़पुर १४५१

२३ भादरों शहिनशाही सम्मत ७ भगत सिँघ, हरदित सिँघ, जसवंत सिँघ, सुरिंदर सिँघ,
जोगिंदर सिँघ, चमन लाल, पटोला बाई, टोपन राम,
गुरमुख सिँघ पिंड कल्ला, महां सिँघ जबलपुर, शिंगारा सिँघ बड़ोदा,
मंगल सिँघ, जोगिंदर सिँघ, सरूप सिँघ भूपाल, संत सिँघ उजैन
इटारसी शहर मध परदेश १४५४

44
२२

पहली अस्सू शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार रात नूं जेठूवाल अमृतसर १४५७

०३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ७ मेला सिँघ दे गृह बाबूपुर गुरदासपुर १४७१

०४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ७ संगत नवित बाबूपुर गुरदासपुर १४७७

४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ७ किशन सिँघ दे गृह अल्लड़पिंडी गुरदासपुर १४७६

६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ७ हरदेव सिँघ दे नवित जेठूवाल १४८४

१४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ७ पंज वजे शाम ब्यास दरया दे कंढे १४८५

१४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ७ पाल सिँघ, हज़ारा सिँघ फतू चक्क, गुरचरन सिँघ ज़हूरा,
तख़त सिँघ ज़हूरा, गुरचरन सिँघ पंडोरी, चरन कौर ढिलवां,
सुरजीत कौर ढिलवां दाऊद पुर कपूरथला १४१६४

१५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ७ अरजन सिँघ, सोमराज सिँघ कालू वाला कोटला,
मुनशी राम बेगोवाल, भगवान सिँघ उड़ मुड़ टांडा, गुरमीत कौर कराला,
तारू सिँघ जंडीरे, महिंदर कौर सुसाणा, गुनाम कौर सुसाणा, राम सिँघ फतोवाल
गुरदेव कौर घदाला शेखां, अमरीक सिँघ सराईं, मेला सिँघ सराई,
भजन सिँघ बैरम पुर, तरसेम सिँघ खुरदां, सुरिंदर सिँघ रूपोवाल
सलीम पुर हुशिआरपुर १४६६

१६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ७ वतन सिँघ, खिआल सिँघ दसूहा, हरभजन सिँघ साहिब दा पिंड,
दयाल सिँघ डड्ड, लाल सिँघ पंज ढेरा, करतार सिँघ, हज़ारा सिँघ,
रेशम सिँघ, दरबारा सिँघ गालड़ीआं, मंगल सिँघ, राम सिँघ,
दलजीत सिँघ तलवाड़ा, नराइण सिँघ, जीआ लाल, आतम चंद,
ज्ञान चंद जगीर सिँघ, धंना सिँघ कुलीआ सरीह पुर हुशिआरपुर १४६६

45
२२

१७ अस्सू शहिनशाही सम्मत ७ जसवंत सिँघ, बंना सिँघ, हरबंस सिँघ, गुरनाम सिँघ सूरानसी,
प्रीतम सिँघ कोटली, इंबराहिम जरनैल सिँघ सगवाल, दर्शन कौर
पातड़ खुरद, नगीना सिँघ, प्यारा सिँघ हरदयाल सिँघ जलंधर,
गुरबचन सिँघ आहम पुर, जुगिंदर सिँघ, फुम्मण सिँघ, अजीत सिँघ,
तरसेम सिँघ, हरभजन सिँघ आदमपुर, जुगिंदर कौर बूले,
अजीत कौर जलपोत करतार पुर जलंधर १५०२

१८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ७ भगत सिँघ दी माता दे नवितदयाल गड़् कपूरथला १५०४

१८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ७ दौलत सिँघ, गुरदयाल सिँघ, करतार सिँघ, अमर कौर, किशन सिँघ
सुरखपुरा, प्यारा सिँघ जांगले, जगीर सिँघ शिकार पुर, सरूप सिँघ
टिंबा, मनजीत कौर नूर पुर, हरभजन कौर नूर पुर, करतार कौर
मजीद पुर, बसंत कौर कड़ाल कला, सुरजीत कौर गौसल, बनत कौर

दरया, अवतार सिँघ अहिमद पुर, धंन कौर ढिलवां, प्यार कौर

ढुडीआं बाज़ी साधू सिँघ मताब गड़ कपूरथला १५०५

१६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ७ लाल सिँघ, सवरन सिँघ, करतार सिँघ गाधरां, बचन कौर बोपाराए,

मल सिँघ ललीआं कलां, प्रेम सिँघ जमशेर खेड़ा, महिंदर कौर जमशेर

खेड़ा, प्रीतम सिँघ जडिआला, राम सिँघ शरीह, गुरदयाल सिँघ चीमां

कलां, लछमण सिँघ धनौरी, जगीर कौर बाहमणीआं

हेर जलंधर १५०६

२० अस्सू शहिनशाही सम्मत ७ लछमण सिँघ, गुरमेज सिँघ, सुरजीत सिँघ, जगीर कौर, केहर सिँघ,

केहर सिँघ, जुगिंदर सिँघ, भजन कौर, गरदावर सिँघ, करतार सिँघ, ऊधम कौर,

दर्शन सिँघ, आतमा सिँघ, करनैल सिँघ बिलगा, प्रकाश कौर सुंनड़ां,

समां कौर सुंनड़ां, छिंदो बिलगा, संपूरन कौर रुड़का, राम कौर सुंनड़ां

46
२२

रुड़का कलां जलंधर १५१२

२१ अस्सू शहिनशाही सम्मत ७ प्रीतम सिँघ, साधू सिँघ, हज़ूरा सिँघ गुराया, नछत्तर कौर

गुराया, बेअंत कौर धनेता, लाल सिँघ डलेवाल, प्रेम सिँघ, केसर

सिँघ, गुरदेव सिँघ नवां पिंड, साधू सिँघ सलार पुर, नसीब

कौर डविडारिहाणा, अजीत सिँघ जसवंत सिँघ भाम, गुरदेव सिँघ

दुसांझ खुरद, दर्शन सिँघ दुसांझ खुरद फगवाड़ा १५१७

२२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ७ गुरमीत सिँघ चरन कौर पिंदर सिँघ मनसा सिँघ राम सिँघ

प्रीतम कौर माल गहिला चरन कौर संतोख सिँघ सोढीआं गनेशा सिँघ

कोट कलां, हरभजन कौर कोटलीथान सिँघ, महिंगा सिँघ हरीपुर

मिलखा सिँघ सैला खुरद करतार कौर जमशेद खेड़ा, इकबाल सिँघ

जगपाल पुर, जुगिंदर सिँघ दौलत पुर फराला जंलधर १५२१

३० अस्सू शहिनशाही सम्मत ७ जोगिंदर कौर दे नवित जेठूवाल अमृतसर १५२४

पहली कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार रात नूं जेठूवाल अमृतसर १५२६

२ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार दीवाली दी रात नूं जेठूवाल अमृतसर १५३४

३ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ करतार सिँघ, ठाकर सिँघ, गुरा सिँघ, इंदर कौर बोहड़ू, गुरबचन कौर मलकपुर, चरनजीत कौर गमटाला, सरमुख सिँघ माल मंडी तरनतारन, नज़ामपुर अमृतसर १५३५

६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ संता सिँघ बाऊपुर दे नवित जेठूवाल अमृतसर १५३७

७ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ संता सिँघ दे नवित बाबूपुर गुरदासपुर १५३६

७ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ सारी संगत दे प्रशाद कराउण ते अल्लड़पिंडी गुरदासपुर १५४१

८ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ हरि संगत नवित बाबूपुर गुरदासपुर १५४३

१४ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ सोहण सिँघ मुंडी जमाल, इंदर सिँघ कादर वाला, मनांवा, हरनाम कौर तलवंडी नौ बहार, अनंत सिँघ उमरीआणा, सरदारा सिँघ केहर सिँघ रजीवाल, मल सिँघ रजीवाल, गुरदेव सिँघ रजीवाल, बलवंत सिँघ तलवंडी जले खां, चमकौर सिँघ मनावा, जरनैल सिँघ शाहवाला, गुरदास सिँघ, करतार सिँघ, निरंजण सिँघ, गुरबंस कौर चबा, करतार कौर रटौल, माधा सिँघ रामूवाला, गुरबचन सिँघ सदा सिँघ वाला, गुरदयाल सिँघ सदा सिँघ वाला मनांवा फ़िरोज़पुर १५४५

१५ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ कपूर सिँघ, करम सिँघ, सरवण सिँघ, हरदयाल कौर, गुरदीप सिँघ, गुरतेज सिँघ घल कलां अजैब सिँघ हरि राए पुर, सीतल सिँघ डगरू, मेला सिँघ, धंना सिँघ, चंद सिँघ, हरबंस सिँघ निधां वाला, गुरिंदर कौर दुनिआणा, महिंदर कौर चड़िक, नंद सिँघ थम्मण वाला, हरदेव कौर, दलीप सिँघ बदनी कलां, सुख राम चक्कर,

47
२२

गुरदयाल सिँघ रामूवाला, करतार सिँघ, नरैण कौर दीदारे वाला,
करतार सिँघ चड़्हिक, चंनण सिँघ, शाम सिँघ बरनाला
मोगा फ़िरोज़पुर १५४८

१६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ राम सिँघ दे घर जाण वासते केहर सिँघ, नाज़र सिँघ,
कृपाल सिँघ ने पातशाह जी नूं इशनान करवाया मोगा फ़िरोज़पुर १५५३

१६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ राम सिँघ ते घर तों बाहर नौ नौ दीवयां नाल
तिन्ने जंगजू पातशाह जी नूं मिलण ते फ़िरोज़पुर छाउणी १५५७

१६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ राम सिँघ गुरचरन कौर तारा सिँघ प्रीतम कौर मदरसा
मुखतिआर सिँघ कामल वाला सुरजीत सिँघ जगत पुर
जोगिंदर सिँघ बसती खलील, अरजन सिँघ हरी सिँघ महिंदर सिँघ
साधू सिँघ बसती तेगा सिँघ, तेज कौर वलूर संपूरन सिँघ
ईशर कौर फेरू शहर, गहिणा सिँघ कैलाश, गुरदीप सिँघ तूत
निरवैर सिँघ लुध्याणा गवाल टोली फ़िरोज़पुर छाउणी १५५६

१७ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ सुलक्खण सिँघ, कृपाल सिँघ, ज्ञान कौर, हज़ूरा सिँघ,
निहाल कौर गोले वाल अजैब सिँघ, राज सिँघ, इकबाल सिँघ, जिंद कौर
फ़रीदकोट, हरिजंदर कौर, परसिंन कौर माया शेखां बेअंत सिँघ लील,
नछत्तर सिँघ पंज गराईआ, रुकना मूंगला फ़िरोज़पुर १५६७

१८ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ सुलक्खण सिँघ दे गृह रुकना मूंगला फ़िरोज़पुर १५७३

१८ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ हरचंद सिँघ, प्रीतम कौर खिआली वाला, बखतावर सिँघ
खिआलीवाला, रूप कौर खिआली वाला, धंन कौर चक्क, फतिह सिँघ,
भाग सिँघ दबड़ी खाना, मल सिँघ अकालगड़्ह, साधू सिँघ गामी वाला,
कुंढा सिँघ वड़्हे इकबाल सिँघ बुढलाडा, मित सिँघ बैहिमण दीवाना,

48
२२

करनैल सिँघ मलूका, जगीर कौर खोखर, बुगर सिँघ बरगाड़ी,
सरदारा सिँघ छाजला कौड़ी रतीआं, कृपा सिँघ थेड़ी
हरिराए पुर बठिंडा १५७३

१६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ जफरनामा साहिब गुरूदवारे विच १५७७

१६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ जफरनामा गुरूदवारे दे उपर मंजी साहिब विच १५७८

१६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ गुरूदवारे तों बाहर निकल के सड़क उते शब्द चलिआ १५७६

१६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ गुरूदवारे तों लगभग तिंन कू फरलांग दूर सड़क ते १५८०

१६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ गुरूदवारे तों थोड़ी दूर चलदे चलदे
सड़क ते ही रुक के १५८१

१६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ सड़क ते चलदे चलदे गुरूदवारे तों थोड़ी ही दूर
रुक के फिर शब्द चल्या १५८१

49
२२

१६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ नाज़र सिँघ दे गृह लंगर छकण समें विहार होया
माड़ी मुसतफा फ़िरोज़पुर १५८२

१६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ नाज़र सिँघ, जगीर सिँघ, भाग सिँघ, कुलवंत सिँघ,
गुरदयाल कौर, बसंत कौर, समालसर, सुहावा सिँघ पंज गरांईआं,
करतार कौर, बिशन सिँघ पंज गरांईआ, खेम सिँघ कोटकपूरा, तारा सिँघ
गाजीआणा, नराइण सिँघ निहाल सिँघ वाला, गुरनाम सिँघ गालब
रण सिँघ सरदारा सिँघ रोडे माड़ी मुसतफा फ़िरोज़पुर १५८४

२० कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ बूड़ सिँघ, सौदागर सिँघ, पूरन सिँघ, महिंदर सिँघ,
गुलज़ार सिँघ, प्रीतम सिँघ, इंदर सिँघ, जुगिंदर सिँघ, बावा सिँघ रोडे,
प्रीतम सिँघ नाथेवाल, जसवंत सिँघ राजे आणा, बसंत कौर पतो
हीरा सिँघ नाथेवाल फ़िरोज़पुर १५८७

२१ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ नाज़र सिँघ, साधू सिँघ, मलकीअत सिँघ, मंगल सिँघ,
सरदारा सिँघ, करम सिँघ, भवगान कौर, सरवण सिँघ पल्खोवाल,
भगत सिँघ लताला, बलवंत सिँघ गुज़रवाल, हरजीत सिँघ लील, भाग सिँघ
बसराउ, गुरदयाल कौर बोपाराए, धंना सिँघ ढहि पई, हरी सिँघ
महिमा सिँघ वाला, बाबू सिँघ दद्दा हूर, नाहर सिँघ रकबा,
गुरदयाल सिँघ नंगल खुरद, पलटू राम ते चैंचल सिँघ सुधार,
हरबंस सिँघ संगरूर, गुरनाम सिँघ बुढेल, दरबारा सिँघ बाठ,
पाखर सिँघ मोही, गुरनाम सिँघ जनेतपुरा, बाबू सिँघ डेलों, अजमेर
सिँघ ते जगीर सिँघ घुंगराणा पक्खोवाल लुध्याणा १५८६

२२ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ नछत्तर सिँघ, भाग सिँघ, गज्जण सिँघ, गुरनाम कौर दुराहा,
काका सिँघ लिबड़ा, बग्गा सिँघ नत, महिंदर सिँघ झमट, गुरदेव सिँघ
ललहेड़ी, सी राम मकसूदड़ा, भजन सिँघ जीरख, दर्शन सिँघ,
जगदीश सिँघ अजनौध, गुरनाम सिँघ मुरिंडा, चैंचल सिँघ, ईशर कौर
ते उजागर सिँघ महौण बचन कौर ते मेजर सिँघ झमट बदोवाल
दुराहा लुध्याणा १५६५

२३ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ सुरजन सिँघ, निरंजण सिँघ, महिंदर सिँघ, गुरदेव सिँघ,
मदन लाल, मग्घर सिँघ, भजन सिँघ, लाल सिँघ, हरनेक सिँघ,
ज्ञान चंद, हरबंस कौर, कुलदीप कौर, मलकीअत सिँघ, रवेल सिँघ
लुध्याणा, सुखवंत कौर, हरचरन सिँघ लुध्याणा, महिंदर सिँघ दाखे,
करम सिँघ गुड़े, सरदारा सिँघ चोलेवाल, मुखतिआर सिँघ मुंडीआं,
बलवंत सिँघ संत कलोनी पटिआला, भजन सिँघ चुपकी, हरबंस सिँघ

51
२२

शेरपुर, सरवण सिँघ जमाल पुर, जुगिंदर सिँघ दाखे, शाम कौर
मंडिआणी जुगिंदर सिँघ तलवाड़ा, फूला राणी लुध्याणा १६००
२४ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ माछूवाड़ा साहिब गुरूदवारे विच विहार होया १६०४
२४ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ जगीर सिँघ, प्रीतम सिँघ ते सरजीतम सिँघ राजो माजरा,
सरूप कौर गोसलां, बचन सिँघ धिआन पुर, भजन सिँघ शेखूपुर,
मिहर सिँघ शेखू पुर, प्यारा सिँघ लखनौर, नत्था सिँघ बड़हेड़ी,
अमर चंद पंजकोहा, प्रिथी सिँघ चंडीगढ़, संत सिँघ ते गुरदेव सिँघ
माणक पुर, वीर सिँघ ते जेठा सिँघ बठलाणा, सुरजीत सिँघ ते
गुरदेव सिँघ घड़ूंआ, प्यारा सिँघ राज पुरा, सुरजीत सिँघ ते
गुरशरन सिँघ नंगल टाउन, जुगिंदर सिँघ लोटे कलोनी,
गुरनाम सिँघ ज़नेतपुर, सेवा सिँघ खरड़, सुरिंदर कौर पंजौर,
सवरन सिँघ बरकत पुर, हज़ारा सिँघ चूनी कलां, सुरजीत सिँघ जगतपुर,
गुरदेव कौर बसी, हरबंस कौर मोरिंडा, रंगील पुर रोपड़ १६१०
पहली मग्घर शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार रात नूं जेठूवाल अमृतसर १६१४
२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ७ हरचरन सिँघ धूता खुरद हुशिआर पुर, रणजीत कौर बरदबान
सवेरे विहार होया जेठूवाल अमृतसर १६२८
२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार रात नूं जेठूवाल अमृतसर १६२६
३ मग्घर शहिनशाही सम्मत ७ राम सिँघ दे गृह गवाल टोली फ़िरोज़पुर छाउणी १६३०
५ मग्घर शहिनशाही सम्मत ७ अजीत सिँघ बटाला, सुरजीत सिँघ, हुकम सिँघ, दलीप सिँघ ते
जसवंत सिँघ फैज़पुर, काशी राम, जीत सिँघ, चरन सिँघ ते भजन कौर
सुनईआ, बंता सिँघ ते करतार कौर पंज गराईं, मोहण सिँघ तारा चक्क,
विरसा सिँघ सी हरि गोबिंद पुरा, अवतार सिँघ माड़ी पनूआ,

51
२२

जसबीर सिँघ, जगीर सिँघ ते सोहण सिँघ भोले के, चंनन सिँघ ठीकरी, कशमीर सिँघ मान खैरे, करतार सिँघ वहीला, अजीत कौर बरदबान, हरचरन सिँघ गुजरात	बटाला	गुरदासपुर	१६३२
११ मग्घर शहिनशाही सम्मत ७ सैदपुर दे संत रसीला राम दे आउण ते पिंड विच	जेठूवाल	अमृतसर	१६३५
१२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार रात नूं	जेठूवाल	अमृतसर	१६३७
१४ मग्घर शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार रात नूं	जेठूवाल	अमृतसर	१६४१
१७ मग्घर शहिनशाही सम्मत ७ दलीप सिँघ, रतन सिँघ, सुच्चा सिँघ, जरनैल सिँघ, भान सिँघ, सुलक्खण सिँघ, जगजीत सिँघ, प्रीतम सिँघ ते हरजीत सिँघ, दरबार दे खेतां विच कंम करन वालिआ नवित हरि भगत दवार रात नूं	जेठूवाल	अमृतसर	१६४४
१८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार रात बारां वजे दिन दे पहले मिंट ही समां ००,०१	जेठूवाल	अमृतसर	१६४७
१६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ७ सोहण सिँघ दे गृह	शाह बुक्कर	फ़िरोज़पुर	१६५२
२२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार रात नूं	जेठूवाल	अमृतसर	१६५४
२४ मग्घर शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार रात नूं	जेठूवाल	अमृतसर	१६५६
पहली पोह शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार रात नूं	जेठूवाल	अमृतसर	१६५६
७ पोह शहिनशाही सम्मत ७ प्रीतम सिँघ रतन सिँघ दे नवित रात नूं	जेठूवाल	अमृतसर	१६६८
८ पोह शहिनशाही सम्मत ७ चेला सिँघ दे गृह	जम्मू	जम्मू	१६७१
६ पोह शहिनशाही सम्मत ७ राम रक्खी दे गृह	जम्मू	जम्मू	१६७३
६ पोह शहिनशाही सम्मत ७ गुरदित सिँघ, फुम्मण सिँघ, भाग सिँघ, पूरन सिँघ, ज्ञान चंद	छंभ	जम्मू	१६७४

52 २२

53
२२

६ पोह शहिनशाही सम्मत ७ ईशर सिँघ, परताप सिँघ दे गृह	दड़	जम्मू	१६७५
६ पोह शहिनशाही सम्मत ७ तेजभान दे गृह	सई खुरद	जम्मू	१६७६
१० पोह शहिनशाही सम्मत ७ भगत सिँघ दे नवित	कीर पिंड	जम्मू	१६७८
१० पोह शहिनशाही सम्मत ७ प्रकाश सिँघ	दड़	जम्मू	१६७९
१० पोह शहिनशाही सम्मत ७ शिव सिँघ दे गृह	सई	जम्मू	१६८१
१० पोह शहिनशाही सम्मत ७ राज सिँघ दे गृह	जम्मू शहर	जम्मू	१६८२
१० पोह शहिनशाही सम्मत ७ केसरी देवी दे गृह	राणी बाग	जम्मू	१६८३
१० पोह शहिनशाही सम्मत ७ सरदार सिँघ गुरनाम सिँघ दे गृह	सीड़	जम्मू	१६८४
११ पोह शहिनशाही सम्मत ७ धरम कौर दे गृह	डिगिआणा	जम्मू	१६८६
११ पोह शहिनशाही सम्मत ७ मनिसटर छॅजू राम दी बेनती ते विहार होया	डगिआणा	जम्मू	१६८७
११ पोह शहिनशाही सम्मत ७ लछमण सिँघ दे गृह	सई	जम्मू	१६९०
११ पोह शहिनशाही सम्मत ७ देवा सिँघ दे गृह सई कैंप वाले	पिंड बाड़ीआं	जम्मू	१६९१
११ पोह शहिनशाही सम्मत ७ बिशन सिँघ दे गृह	बाड़ीआ	जम्मू	१६९३
११ पोह शहिनशाही सम्मत ७ कृपाल सिँघ दे गृह	बाड़ीआं	जम्मू	१६९३
११ पोह शहिनशाही सम्मत ७ जम्मू संगत दे नवित जम्मू तों गुरदासपुर दे रसते विच		जम्म	१६९४
११ पोह शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	१६९६
२१ पोह शहिनशाही सम्मत ७ रतन कौर फराला दे नवित	जेठूवाल	अमृतसर	१६९७
२४ पोह शहिनशाही सम्मत ७ साधू सिँघ बसती तेगा सिँघ वाले नवित हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	१७००
२५ पोह शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार रात नूं	जेठूवाल	अमृतसर	१७०१

53
२२

२६ पोह शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार दिन दे ढाई वजे जेठूवाल अमृतसर १७०३
२६ पोह शहिनशाही सम्मत ७ लंगर दी नींह रक्खण समें जेठूवाल अमृतसर १७०६
२६ पोह शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार रात नूं जेठूवाल अमृतसर १७०७
२७ पोह शहिनशाही सम्मत ७ महिंदर कौर भुल्लर हांस मेहर सिँघ जगराउँ, आसा सिँघ खांघ,
पाल सिँघ ललीआं, सवरन सिँघ नंदापुर, हज़ारा सिँघ मनिआला,
कुंदन सिँघ शाहपुर थेड़ी, सुंदर सिँघ रोसे, जोगिंदर सिँघ महिरमपुरा,
सुरिंदर कौर कमोजहरा, सवरन कौर सैद पुर, गुरमीत कौर कराला,
जोगिंदर कौर गोलेवाल, माधो सिँघ चीमा, अरजन सिँघ माणक पुरा,
चंदा सिँघ दिल्ली, जीतो बाबोवाल, रजवंत अटारी, तारो छापा,
राम सिँघ गुरभेज कौर कहोरू, शिंदरो मलूवाल, शांती अमृतसर,
गुरबचन सिँघ अहिमदपुर, बलजीत सिँघ जेतेअली, दलीप सिँघ टांगरा,
रमेश चंदर फ़िरोज़पुर, ईशर सिँघ डडहेरी, बगीचा सिँघ मुंडी जमाल,
हरि भगत दवार सवेर वेले जेठूवाल अमृतसर १७२५
२७ पोह शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार रात वेले जेठूवाल अमृतसर १७२६
२८ पोह शहिनशाही सम्मत ७ सवेरे शादीआं समें जेठूवाल अमृतसर १७३५
२८ पोह शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार रात नूं जेठूवाल अमृतसर १७३६
२६ पोह शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दुआर रात दे समें जेठूवाल अमृतसर १७३८
पहली माघ शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार रात वेले जेठूवाल अमृतसर १७४०
७ माघ शहिनशाही सम्मत ७ राम सिँघ दे गृह गवाल टोली फ़िरोज़पुर छाउणी १७४१
१० माघ शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार संगत दे नवित धीरपुर दिल्ली १७४२
११ माघ शहिनशाही सम्मत ७ सेवा सिँघ दे गृह गुड़गाउँ १७४३
१२ माघ शहिनशाही सम्मत ७ हरबंस सिँघ दे गृह गुड़गाउँ १७४५

54
२२

१२ माघ शहिनशाही सम्मत ७ रतन सिँघ दे गृह दिल्ली १७४६
१२ माघ शहिनशाही सम्मत ७ पूरन सिँघ दे गृह दिल्ली १७४८
१२ माघ शहिनशाही सम्मत ७ सतिंदर पाल सिँघ दे गृह दिल्ली छाउणी १७४६
१३ माघ शहिनशाही सम्मत ७ सरमैल सिँघ दे गृह मेरठ छाउणी १७५१
२३ माघ शहिनशाही सम्मत ७ करम सिँघ दे गृह गुरबचन सिँघ दर्शन सिँघ नयाशाला,
जोगिंदर सिँघ डडवां, करतार सिँघ भूमली, प्रसिंन कौर फतहि नंगल,
बीरो फतिह नंगल, जगीर सिँघ सोहल, सरूप सिँघ गुरदासपुर, चरन
सिँघ नवां पिंड, जवंद सिँघ नवां पिंड, दुरगी नवां पिंड, गुरचरन
कौर नयाशाला नयाशाला गुरदासपुर १७५३
२४ माघ शहिनशाही सम्मत ७ गुरबचन सिँघ ते दर्शन सिँघ नयाशाला गुरदासपुर १७५८
२४ माघ शहिनशाही सम्मत ७ महिंगा सिँघ, करम सिँघ, जरनैल सिँघ देवां, गुरो राम कौर
चतुर कौर सॅदा, अजीत सिँघ, हमराज बंसो गज़नी पुर, सुलक्खणी
गज़नी पुर, दारा सिँघ गज़नी पुर, छिंदो मदीपुर, गुरमेज कौर
कठिआली करतारी दोरांगला महिंदर कौर काला नंगल
सद्दा गुरदासपुर १७६०
२५ माघ शहिनशाही सम्मत ७ चतर सिँघ, ज्ञान सिँघ, अतर सिँघ, लक्खा सिँघ, हरदीप सिँघ,
तरलोक सिँघ ओगरा, चरन सिँघ, प्रीतम कौर अंतोर, बचन सिँघ,
चरन सिँघ संतोख सिँघ सोहण सिँघ ज्ञानो सिमल सकोर, उजागर
सिँघ चेबे, गुरबख़श सिँघ, रतन कौर, नुशहरा बिशन सिँघ ओगरा,
दीपो उचा पिंड, अवतार सिँघ सिमल सकोर, लाल सिँघ, महिंदर
सिँघ धीरा दईआ, लालचंद भीमपुर, प्रकाश कौर पुंनी सालोवाल,
संसार सिँघ हमराज पुर ओगरा गुरदासपुर १७६६

55
२२

२६ माघ शहिनशाही सम्मत ७ दलीप सिँघ, प्यारी, दलीप सिँघ, दीदार सिँघ, संता सिँघ,
मेला सिँघ हज़ारा सिँघ, मुणशा सिँघ, आसा सिँघ, बलाका सिँघ,
प्यारा सिँघ, रवेल कौर, करतार कौर, मक्खण सिँघ, भाग सिँघ,
दर्शन कौर, नंती गंडा सिँघ, हज़ारा सिँघ बाबूपुर, बूड़ सिँघ,
महिंदर कौर वज़ीरपुर, वरखा सिँघ बाबूपुर, प्रीतो तलवंडी, अजीत सिँघ
कत्तोवाल, सवरनी सेखवां, गुरचरन सिँघ कत्तोवाल, बाबूपुर गुरदासपुर १७७२
२७ माघ शहिनशाही सम्मत ७ दीदार सिँघ दे घर दुपहिर नूं बाबूपुर गुरदासपुर १७७८
२७ माघ शहिनशाही सम्मत ७ मेला सिँघ दी बंबी उते बाबूपुर गुरदासपुर १७८२
२७ माघ शहिनशाही सम्मत ७ किशन सिँघ, प्रकाश कौर वकील सिँघ, वसण सिँघ, आशा सिँघ,
लाज कौर, हज़ारा सिँघ, सरूप सिँघ, सांझी राम गंडा सिँघ, धिआनो
चनो धंनी पूरो, गुलज़ार सिँघ, बंती अल्लड़पिंडी, दीपो दोसतपुर, बावी
दोसत पुर, गुरमुख सिँघ शोहण, गुरदेव सिँघ शोहण, अमरो रडिआणा,
दीपो छोड़, चरन कौर खुशी पुर अल्लड़पिंडी गुरदासपुर १७८२
२८ माघ शहिनशाही सम्मत ७ धिरता सिँघ, सुखराज कौर, सरदारा सिँघ, मंगल सिँघ फतूपुर,
जीतो सरजाचक, गुलज़ार सिँघ, समां सिँघ फतूपुर, रतन सिँघ कलानौर,
सुरिंदर सिँघ डेढ गवाड़, गुरमीतो रसूलपुरा, जोगिंदर कौर बलवंत
ट्टा, सुरजीत कौर शिकारमाशीआ, सविंदर कौर, दयाल कौर बोहड़
वाला भुगटाणा, दयाल सिँघ डेढ गवाड़, दलीप सिँघ, बलवंत कौर
दालम नंगल, पूरन कौर नवां पिंड, सुखराज सिँघ रहिमगड़,
कलानौर गुरदासपुर १७६४
२६ माघ शहिनशाही सम्मत ७ रणजीत सिँघ कलसीआं, तरिपत कौर दे प्रसाद कराउण ते
हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर १७६६

56
२२

57
२२

पहली फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार रात नूं जेठूवाल अमृतसर १८००

२ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ जोगिंदर सिँघ डेढ गुवाड़, मुणशा सिंघ बाबूपुर, परसिंन कौर
वरपाल, प्रीतम सिँघ मदी पुर, सुरजीत कौर धरम कोट, संसार सिँघ
जज़ा खुरद, हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर १८०६

२ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार रात नूं जेठूवाल अमृतसर १८०८

३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ हीरा सिँघ दे गृह अमृतसर १८११

५ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ तारा सिँघ दे गृह पच्ची बी बी गंगा नगर १८१३

६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ रतन सिँघ, सुखनिंदर सिँघ, मांह सिँघ, तारा सिँघ,
गुरदयाल सिँघ पच्ची बी० बी०, जगीर सिँघ रत्तेवाल, मलकीअत सिँघ बणवाली,
संतोख सिँघ वीह जैड, अजमेर सिँघ, लाभ सिँघ सजावल पुर,
सुरजीत सिँघ बणवाली प्रकाश सिँघ पच्ची बी बी गंगा नगर १८१६

७ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ रतन सिँघ दे गृह पच्ची बी बी गंगा नगर १८२०

८ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ सुलक्खण सिँघ दे गृह मूंगला फ़िरोज़पुर १८२४

६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ प्रीतम सिँघ दे गृह जंडिआला जलंधर १८२६

११ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ सुरजीत सिँघ दे नवित जेठूवाल अमृतसर १८२७

१४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ रणजीत सिँघ, मौता सिँघ कलसीआं नवित हरि भगत दवार
जेठूवाल अमृतसर १८२६

१५ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ कल्ला हरि संगत नवित कल्ला अमृतसर १८३०

१६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ गुरदयाल सिँघ दे गृह कल्ला अमृतसर १८३४

१६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ कुंदन सिँघ दे गृह कल्ला अमृतसर १८३५

१६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ सुखदेव राज दे गृह कल्ला अमृतसर १८३५

१६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ प्रीतम सिँघ दे गृह कल्ला अमृतसर १८३६

57
२२

१६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ गुरबख़श सिँघ दे गृह कल्ला अमृतसर १७३७
१६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ सरदारा सिँघ दे गृह कल्ला अमृतसर १७३७
१६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ सवरन सिँघ दे गृह कल्ला अमृतसर १७३८
१६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ प्रीतम सिँघ दे गृह कल्ला अमृतसर १७३८
१६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ हरदीप सिँघ दे गृह कल्ला अमृतसर १७३६
१६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ कुंदन सिँघ दे गृह मालचक्क अमृतसर १७४०
१६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ मान सिँघ दे गृह कंग अंमितसर १७४३
१६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ करनैल सिँघ दे गृह नौरंगाबाद अमृतसर १७४४
१६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ मक्खण सिँघ दे गृह नौरंगाबाद अमृतसर १८४६
१७ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ हरजीत सिँघ दे नवित जेठूवाल अमृतसर १८४७
३० फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ लीला वंती सी नगर नवित हरि भगत दवार
जेठूवाल अमृतसर १८४८
३० फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ अमीर सिँघ, भान सिँघ, ईशर सिँघ, वरयाम कौर, इंदर सिँघ
सुलक्खण सिँघ, दलीप सिँघ, रतन सिँघ, जरनैल सिँघ, हरजीत सिँघ,
कशमीर सिँघ, गुरचरन सिँघ, नाज़र सिँघ, नाज़र सिँघ जेठूवाल,
अमरीक कौर बलोवाल, चरन कौर, तिंपत कौर, जुगिंदर कौर, बंती,
बलविंदर कौर जेठूवाल, हरबंस कौर अल्लड़पिंडी, सुरजीत कौर सैदपुर,
बचनी बाउपुर हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर १८५०
पहली चेत शहिनशाही सम्मत ८ हरि भगत दवार रात नूं जेठूवाल अमृतसर १८५४
२ चेत शहिनशाही सम्मत ८ हरि भगत दवार सवेरे ऊधम सिँघ जलालाबाद
लाल सिँघ हेरां दे प्रशाद कराउण ते जेठूवाल अमृतसर १८७४
२ चेत शहिनशाही सम्मत ८ हरि भगत दवार रात नूं जेठूवाल अमृतसर १८७५

58 २२

१५ चेत शहिनशाही सम्मत ८ हरि भगत दवार	धीर पुर	दिल्ली	१८७६
१६ चेत शहिनशाही सम्मत ८ गुरमीत कौर रामदुवाली नवित	जेठूवाल	अमृतसर	१८७८
२७ चेत शहिनशाही सम्मत ८ अजीत सिँघ बटाला नवित	जेठूवाल	अमृतसर	१८७८
पहली विसाख शहिनशाही सम्मत ८ सवेर दे समें	जेठूवाल	अमृतसर	१८८०
पहली विसाख शहिनशाही सम्मत ८ रात नूं	जेठूवाल	अमृतसर	१८८२
८ विसाख शहिनशाही सम्मत ८ मालवा दुआबा संगत नवित	लाडोवाल	लुध्याणा	१८६५
१५ विसाख शहिनशाही सम्मत ८ गुरदासपुर दी संगत नवित	जेठूवाल	अमृतसर	१८६५
१८ विसाख शहिनशाही सम्मत ८ माझा संगत नवित	जेठूवाल	अमृतसर	१८६७
२२ विसाख शहिनशाही सम्मत ८ कुलवंत कौर बसती खलील दे प्रशाद कराउण ते हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	१८६६
२५ विसाख शहिनशाही सम्मत ८ निरंजण सिँघ दे बचनां ते	जेठूवाल	अमृतसर	१६००
२६ विसाख शहिनशाही सम्मत ८ जगजीत सिँघ दे नवित	जेठूवाल	अमृतसर	१६०२
२८ विसाख शहिनशाही सम्मत ८ बीबी गुरदर्शन कौर पट्टी, मेहर सिँघ अंबाला शहर, दे नवित		दिल्ली	१६०३
३१ विसाख शहिनशाही सम्मत ८ जसबीर कौर इटारसी, निवासी दे प्रशाद कराउण ते हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	१६०४
पहली जेठ शहिनशाही सम्मत ८ हरि भगत दवार रात नूं	जेठूवाल	अमृतसर	१६०५
५ जेठ शहिनशाही सम्मत ८ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	१६१८
१३ जेठ शहिनशाही सम्मत ८ दरबार निवासी दलीप सिँघ, रतन सिँघ, प्रीतम सिँघ, जरनैल सिँघ, सुलक्खण सिँघ, कशमीर सिँघ, कशमीर सिँघ, सतवंत सिँघ कलसीआं, गुरचरन सिँघ, भान सिँघ, हरभजन सिँघ	जेठूवाल	अमृतसर	१६२८

59
२२

१५ जेठ शहिनशाही सम्मत ८ दरबार निवासी जुगिंदर कौर दे नवित जेठूवाल अमृतसर १६३१
१८ जेठ शहिनशाही सम्मत ८ गुरदेव सिँघ घड़ूआ दे नवित जेठूवाल अमृतसर १६३३
१६ जेठ शहिनशाही सम्मत ८ राम सिँघ दे गृह गवाल टोली फ़िरोज़पुर छाउणी १६३४
२५ जेठ शहिनशाही सम्मत ८ गुरदेव सिँघ दे घर नवां पिंड जलंधर १६३५
२६ जेठ शहिनशाही सम्मत ८ जगीर सिँघ भड़ी नवित जेठूवाल अमृतसर १६३७

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

60
२२

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै।
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै।
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै।
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै।
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै।

✪ १७ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ५ करनैल सिँघ दे गृह पिण्ड कादराबाद ज़िला अमृतसर ✪

सम्मत पंज कहे नवें जुग दा तकणा अगम्म नज़ारा, नूरे नज़र नाज़रीन इक जणाईआ। पंझी पंझी गुरमुख बैठे होण विच पंज कतारां, कातब धर्म धार दा रूप बदलाईआ। शस्त्र धार नन्गीआं हथ्थ होवण कटारां, कंधे सज्जे उत्ते वड्याईआ। तन शृंगार होवे गल हारां, गुल सोहणा रंग रंगाईआ। तिक्खीआं कीतीआं होवण धारां, जल धार रूप दरसाईआ। पिच्छे बैठण सतवन्तीआं इक सौ पंझी नारां, नर नरायण हथ्थ विच फड़ के लैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। नर नरायण लिख के फड़या होवे सब दे हथ्थ, हथेली सज्जी उत्ते टिकाईआ। निगाह टिकाउणी प्रेम धार दी अक्ख, अक्ख नैण सके ना कोए बदलाईआ। मन कल्पणा कर के वस, दृष्ट इष्ट लैणा मनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गा के जस, सोहँ ढोला देणा सुणाईआ। तेरे नाम दा शब्द प्रेम सच, सति सच दा तूं ही नजरी आईआ। ज्यों भावे त्यों लैणा रख, हरि तेरी इक सरनाईआ। तूं साहिब सर्ब कला समरथ, दाता दानी धुरदरगाहीआ। इक्को वार आपणे नाम दी बख्श दे वथ, वस्त मंगण दी लोड़ रहे ना राईआ। बिन तेरी किरपा किछ ना आवे हथ्थ, ख़ाली झोली ना कोए भराईआ। फेर छुहा के नाल मथ्थ, मस्तक पंज वार जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत कहे जुग चौकड़ी खेल वेखी बड़ी, नित नवित ध्यान लगाईआ। कलयुग अन्तिम मूसा धार बन्नणी घड़ी, गुरमुख छाती नाल लगाईआ। हुक्म सुणना साढे तिन्न हथ्थ दी गढ़ी, काया काया विच्चों जणाईआ। जिस ने अन्तर आत्म तूं मेरा मैं तेरा तुक होवे पढ़ी, पढ़न लिखण दा झगड़ा गया मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। छाती उत्ते बन्ने घड़याल, घड़ी घड़ी नाल समझाईआ। प्रगट सिँघ प्रभू दा लाल, सेवा सच लए कमाईआ।

पिठ ते बद्धी होवे मृगशाल, शाला देवे माण वड्याईआ। दो हथ्थां वजावे ताल, ताड़ी धर्म धार समझाईआ। मुक्खों कहे समां वक्त वेखो हाल, माज़ी ध्यान ना कोए लगाईआ। करे खेल पुरख अकाल, अकल कलधारी आपणी कल वरताईआ। इक नौ साल दा होवे गुरमुख बच्चा लाल, निशाना सत्त रंग उठाईआ। उच्ची कूके करे हाल हाल, बौहड़ी बौहड़ी तेरी दुहाईआ। सब दे सिर ते कूके काल, काल नगारा रिहा वजाईआ। कलयुग जीवो सुरत लओ संभाल, सम्बल आया बेपरवाहीआ। शब्द गुरु दी करो भाल, सतिगुर शब्द खोजो थाउँ थाँईआ। दीन दुनी दा लभ्भो ओह दलाल, जो दिलदार नूर अलाहीआ। सब दा हल्ल करे सवाल, स्वामी हो के संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन सुहेले जगत विच्चों कर बहाल, दर ठांडे दए वड्याईआ।

२ ✪ १७ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ५ संपूरन कौर दे गृह पिण्ड कादराबाद ज़िला अमृतसर ✪ २

२२ सम्मत कहे खेल वेखणा प्रभ निरँकारी, हरि करता दए वखाईआ। जन भगतां साची करके आउणा त्यारी, त्रैगुण ममता डेरा ढाहीआ। प्रेम प्रीती चढ़ी होवे खुमारी, रंग आपणा आप रंगाईआ। गुलज़ार सिँघ बणया होवे मदारी, खेल करतब कलयुग दए वखाईआ। अद्धी पुद्धी अद्धी सिध्धी चाढ़ी होवे दाढ़ी, सिम्मत सिम्मत नाल बदलाईआ। खेल करे बड़ा नाल हुश्यारी, हुश्यार हो के दए जणाईआ। खोल्ह के आपणी जगत पटारी, पटने वाले दा लेखा दए समझाईआ। फेर विच्चों कढु के चार यारी, चौहां कूटां दए वखाईआ। फेर विच्चों माया रूपी कढ के नारी, नारी नरां दए दरसाईआ। फेर कढु के विच्चों भगत पुजारी, ध्यान भगतां वाला दरसाईआ। फेर वखा के खाली खारी, होका हक हक अलाहीआ। फेर वजा के ताली, नौ वार आपणा आप भवाईआ। फेर कहे मैं बन्द कीती जोत निरँकारी, पटारी विच्चों दए वखाईआ। फेर दृढ़ाए अक्खरां वाली धारी, चौंह जुगां दे नाम लेखे लिखे दए वखाईआ। फेर कढे कमाद वाली कांग्यारी, सड़ी फूकी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। समां कहे मैं फेर वेखां सिँघ गज्जण, गजा करके नौ गुरमुखां घरों आईआ। सच प्रेम दा दस्से मजन, पाप पापां मैल धुआईआ। ढाई रती नाल लै के आवे कज्जल, काली धार सोभा पाईआ। पन्ध मुका के आपणी मंज़ल, मजलस भगतां नाल रखाईआ। साफ़ सुथरा करके बदन, सील सन्तोख अन्दर इक टिकाईआ। काले रंग दा चरण विच लगा के पदम, पद यात्रा सब

दी सुफल कराईआ। नाम खुमारी विच हो के मग्न, मांगत हो के झोली डाहीआ। मुक्खों कहे प्रभू लगा लै अंगण, अंगीकार आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। समां कहे सतिगुर कज्जल होवे नेत्र धार, नैण नैण विच समाईआ। पंज प्यारे पावण हो त्यार, तरह तरह देवे वड्याईआ। पंज लिखारी सेवा करन नाल प्यार, सलाई सलाई नाल बदलाईआ। पंज दरबारी धूढ़ी ला के छार, मस्तक रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त दा ख़बरदार, ख़बर संदेशा धुर दा इक जणाईआ।

✪ १७ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ५ सवरन सिँघ दे गृह पिण्ड कादराबाद ✪

सम्मत कहे मैं भेव दस्सणे गोझे, गुज्झी रमज लगाईआ। जेहड़े हो गए प्रभू जोगे, ओह जुगीशर देणे बणाईआ। काया माटी रंग के चोग़े, चोले दीन दुनी बदलाईआ। रखणे पैण किसे ना रोज़े, नमाज़ां विच ना सीस झुकाईआ। माया भरने पैण ना बोझे, बोझल भार ना कोए उठाईआ। झगड़े मुका के बोदी बोदे, हुक्म धुर दा इक सुणाईआ। साचे हिरदे लैणे सोधे, बाहरों वंड ना कोए वंडाईआ। सतिगुर हो के चुक्कणा मोढे, प्रभ आपणी दया कमाईआ। जन भगत हो के ना पीवे कोए डोडे, पोसत दोस्त रहिण कोए ना पाईआ। कुछ लेख लिखाउणा कपूर सिँघ कोल जा के मोगे, नानक बाबर मुग़लीआ की दिती वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सम्मत पंज कहे कुछ लेखा दस्सणा अब्बू बकर, अवतर भेव खुलाईआ। मुहम्मदे दरीं दस्सणा दर, अर्जी अज़श्श पड़दा लाहीआ। की खेल करे नरायण नर, हरि करता धुरदरगाहीआ। सतिजुग साचे देवे वर, हज़रत आपणा आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत कहे मैं धार दस्सणी ओह अगम्मी दब्बी, जो दबदबा सब दे उत्ते पाईआ। जिस नूं मन्नदे रसूल नबी, पैग़म्बर सीस झुकाईआ। जिस दी खेल कदे ना होवे अद्धी, अध आत्म वेख वखाईआ। कूड़ कुड़यार दी रहिण ना देवे गद्दी, गदागर करे लोकाईआ। बीतदी जांदी चौधवीं सदी, सद्दे दे के रही सुणाईआ। वेख्यो धार प्रभू दी बग्गी, बग्ग बपड़यो आपणा रूप लओ बदलाईआ। जिथ्थे माण मिलदा जन भगत सुहेले पग्गी, पग चरण आपणे दए सरनाईआ। जिस लेखा मुकाउणा नूह नदी, नईया नौका नाम चलाईआ। ओह किसे कोलों लए कदे ना वढ्ढी, माया ममता वंड ना कोए वंडाईआ। जन भगतां नाता तुटया मच्छी

डड्डी, डण्डावत इक्को दिती जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल तेरा मेल उपर शाहरगी, शहिनशाह शाह पातशाह सतिगुर सतिगुर वाली इक्को नज़री आईआ।

✪ १७ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ५ बूड़ सिँघ दे गृह पिण्ड कादराबाद ✪

सम्मत पंज कहे मैं धुर दी सोच सोची, समझ साहिब दिती समझाईआ। गुरमुख सिँघ ने पुट्ठी पग्ग होवे पोची, आसा पिछली सोभा पाईआ। इक दिन पटका बध्धा सी रविदास चमारे मोची, पेच पेच उत्ते टिकाईआ। फेर प्रभ दा दर्शन कीता लोची, लोचण लोयण सोभा पाईआ। खुमारी विच हो के मदहोशी, हुश्यारी नाल दिता सुणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल जन भगतां करें कदों ताज पोशी, तख्त निवासी दया कमाईआ। जुग जुग आपणे नाम दी सिफ्तां वाली पढ़ाउंदां रिहों पोथी, संदेशा हुक्मी शब्द जणाईआ। सब नूं जंगम घड़ी वखाउँदा रिहों औखी, दीन दुनी ततां वाली दे सज़ाईआ। चार जुग दी आयू लँघ गई चोखी, चोखरां दी खल्ल लाह के आपणा झट लँघाईआ। दीन दुनिया कदों वेखें दोखी, दुखियां दर्द मिटाईआ। तेरे वरगी तेरी धार किस बिध होसी, हौसले नाल दे समझाईआ। तैनूं समझ ना सक्या कोई पंडत पांधा जोशी, जोतश विद्या विच ना कोए चतुराईआ। मैं कोई बचन नहीं करदा विच बेहोशी, सच सच दयां सुणाईआ। ओस वेले की कार करे जन कोसी, कोसी जन दा लेखा रविदास गया दृढ़ाईआ। किस बिध जगत जहान रोसी, रुस्सयां ना कोए मनाईआ। विद्या हथ्थ ना आवे विच्चों कोशी, कोशां विच काश तेरी समझ किछ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। सम्मत कहे पगड़ी बद्धी होवे पोच पाच, पेच सत्त सत्त टिकाईआ। विच छुपाया होवे इक चाक, टुकड़ा ढाई इंच वड्याईआ। नाल हिस्सा रखया होवे काच, वड्डा छोटा ना कोए जणाईआ। विच रखी होवे माचस माच जेहड़ी लावे आंच, अग्नी अग्ग जलाईआ। छब्बी पोह दी होवे रात, सुहञ्जणी खुशी बणाईआ। जल दी भरी होवे परात, पुरातन लेखा दए दृढ़ाईआ। विचकारे रखी होवे कलम दवात, लाल रंग नाल रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। समां कहे पगड़ी दे पेच होण सत्त, सति विच समझाईआ। ढाई विच रखणे पिप्पल दे पत्त, जिस नूं पूजे जगत लोकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा लिख के रखणा ख़त, खुशख़ती नाल वड्याईआ। इक तुपका खून दा कढ के रत्त, हिस्सा उपर दा देणा रंगाईआ। एह बचन

संदेशा पक्क, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सम्मत कहे मैं सब दा दस्सणा मुद्दा, मुद्दतां दा लेखा वेख वखाईआ। की संदेशा दिता बुद्धा, बोहड़ पीपल दए गवाहीआ। किस बिध जगत मिटे दुबदा, बुद्धी होवे सफ़ाईआ। अमृत जल मिले सुधासर सुधा, नीर सीर रूप वखाईआ। किस बिध भगत सुहेला होवे उग्घा, उग्घण आथण मिले वड्याईआ। सतिगुर आपणे नाम दा लैण ना देवे किसे भुग्गा, माया विच ना कोए हल्काईआ। मढ़ी मसाण ना पूजे गुग्गा, पीर फ़कीरां सीस ना कोए निवाईआ। करना पए कोई ना युद्धा, युधिष्टर नूं कृष्न गया दृढ़ाईआ। जिस वेले मेरा काहन आया उत्ते बसुधा, धरनी उत्ते सोभा पाईआ। ओस वेले दो जहां वरोले पाणी दा पाणी ते दूध दा दुद्धा, फुट्ट के दही दा रूप ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सम्मत कहे मैं सब दी दस्सणी साखी, सखीआँ वाला काहन गया दृढ़ाईआ। पैग़म्बरां पूरी कराउणी आखी, आख़र पड़दा लाहीआ। कलयुग मिटाउणी गुस्ताख़ी, शेख़ी शरअ वाली गंवाईआ। प्रभ नूं कहिणा जन भगतां कर राखी, रक्षक हो के वेख वखाईआ। गोबिन्द पन्थ प्रगटाया विच विसाखी, जन भगत बारां मास इक्को रंग रंगाईआ। जिन्हां नूं राय धर्म कदे ना देवे फाँसी, सज़ा सके ना कोए भुगताईआ। उन्हां लेखा मुक गया पंडतां वाला काशी, कंचन गढ़ दए वड्याईआ। मैं प्रभ नूं कहिणा सब दे अन्दर कर तलाशी, गृह गृह आपणा फेरा पाईआ। छाण पुण मदिरा मासी, मस्त दीवाने वेख वखाईआ। इक गल्ल कहिणी प्रभू पिछली कथा कहाणी छुडा दे कड़ी बासी, अगला आपणा हुक्म नाम वरताईआ। जेहड़ी अजे तक अक्खरां विच नहीं छापी, ओह शहिनशाह देणी समझाईआ। जिस नूं पढ़ के गुरमुख रहे कोई ना पापी, पतित पुनीत देणा कराईआ। सतिगुर पुश्त पनाह लग्ग जाए थापी, थपक थपक के आपणी गोद टिकाईआ। जिस दी जुग चौकड़ी कोई कर ना सके कापी, नकल अक्ल ना कोए वड्याईआ। तूं कदे नहीं आया सति सरूप हो के तत विच ख़ाकी, गुर अवतार पैग़म्बर भेज के आपणा हुक्म वरताईआ। हुण कलयुग बण वड प्रतापी, पारब्रह्म ब्रह्म आपणी दया कमाईआ। सब दी पूरी कर आसी, आहिस्ता आहिस्ता लेखा दे मुकाईआ। तेरा नूर जोत प्रकाशी, प्रकाश्त हो के वेख वखाईआ। कलयुग जीवां लाह उदासी, चिन्ता ग़म रहे ना राईआ। तेरे भगतां अन्तर तेरे नाम दी रहे हासी, हस्ती विच मस्ती दे चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तेरा शब्द होवे सच पोशाकी, पोश दी लोड़ रहे ना राईआ।

✪ १७ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ५ मस्सा सिँघ दे गृह पिण्ड बल ज़िला गुरदास पुर ✪

भाद्रों कहे पुरख अकाल धुर दे पिता, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी इक सरनाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण धार कर हित्ता, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी मेहर नज़र उठाईआ। दीन दयाल भेव चुका दे वडा निक्का, नर नरायण आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर धर्म दी धार कढु दे सिट्टा, साहिब सुल्तान नौजवान मर्द मर्दान आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर तेरा कदीमी कढु के बैठे चिट्ठा, सच संदेशा नर नरेशा इक्को इक रहे दसाईआ। तेरा खेल तकणा अगम्म अथाह मिट्ठा, सच स्वामी अन्तरजामी पर्दा आप उठाईआ। कलयुग जीवां कूड़ी क्रिया लेखा कर दे चिट्टा, दुरमति मैल धुआईआ। किसे नूं याद ना रहे पिछला समां जन्म कर्म दा पिच्छा, पश्चाताप विच ना कोए कुरलाईआ। परवरदिगार सांझे यार कर रिच्छा, रच्छक हो के वेख थांउँ थाँईंआ। समां सुहञ्जणा जो भविक्खतां विच मिथा, वार थित दे दृढ़ाईआ। दर दरवेश तेरे ठांडे दर मांगां आपणा हिस्सा, हस्ती तक नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। भाद्रों कहे किरपा कर मेरे भगवन्त, भागहीण वेख लोकाईआ। भरमे भुल्ले माया सन्त, कलयुग कूड़ी क्रिया दए दुहाईआ। आत्म मिले ना परमात्म धुर दा कन्त, सेज सुहञ्जणी ना कोए सुहाईआ। मानव गढ़ बणया हउमे हंगत, हँ ब्रह्म ना कोए समझाईआ। बोध अगाधा दिसे कोई ना पंडत, अनभव भेव ना कोए खुलाईआ। दर ठांडे तेरे मेरी इक्को मिन्नत, निउँ निउँ लागां पाईआ। सच दस्स दे की खेल होणा लहिंदी सिम्मत, समां समें नाल टकराईआ। मूसा वाल्यां पैणी चिन्नत, ईसा वाले संग रखाईआ। मुहम्मदी धार करनी इल्लत, शाह ईरान रिहा कुरलाईआ। जगत ख्वारी होवे ज़िल्लत, आबरू ख़ाक विच मिलाईआ। साहिब सतिगुर तेरी धार किस बिध मेटे जगत निन्दक, कूड़ कुड़यार डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर सुहञ्जणा सोभा पाईआ। भाद्रों कहे प्रभ दीन दुनी तेरी होई भागहीण, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। किस बिध झगड़ा होणा रूसा चीन, चैन लैण कोए ना पाईआ। की खेल होणा भारत खण्ड नवीन, बुद्धा लिख धार समझाईआ। क्यों अमरीका होणा ग़मग़ीन, इंग्लिस्तान नैणां नीर वहाईआ। किधर जाणी तेरी चार जुग दी शास्त्रां वाली तालीम, पड़दा देणा उठाईआ। तेरा खेल सदा कदीम, कुदरत दे मालक चलया आईआ। अगला मार्ग दस्स महीन, भेव अभेदा आप जणाईआ। किस बिध दीन दुनी बिन नैणां बदलणा सीन, सीन शीन दए गवाहीआ। पड़दा लाह दे रहिबर रहीम, रहमत आपणी इक कमाईआ। क्यों धरनी धरत धवल रोवे ज़मीन, असमानां गृह अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका

देणा धुर दा वर, दर आसा इक रखाईआ। भाद्रों कहे प्रभू तेरी आवे कवण बहार, भेव अभेद दे खुल्हाईआ। किस बिध जगत होवे ख्वार, ख़ालक ख़लक पए दुहाईआ। सदी चौधवीं की रफ़तार, किस बिध रफ़ता रफ़ता पन्ध मुकाईआ। की मुहम्मद नाल तेरी गुफ़तार, गुफ़त शनीद देणा जणाईआ। की ईसा मूसा करे गुफ़तार, बिन नेत्र लोचन नैण अक्ख उठाईआ। किस बिध सृष्टी दृष्टी करनी गिरफ्तार, हुक्मे अन्दर हुक्म बदलाईआ। भेव दस्स दे सांझे यार, चार यारी लागे पाईआ। चार कुण्ट वेख अंध अंध्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। भाद्रों कहे प्रभू की तकदे पैग़म्बर पीर, शरअ बग़ल विच टिकाईआ। की खेल होणा अख़ीर, आख़र पड़दा दे उठाईआ। किस बिध उम्मत पढ़ी जाए तकबीर, तदबीर आपणी दे जणाईआ। की होका देवे कबीर, सच दवारे कूक सुणाईआ। किस बिध कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणी लकीर, लाईन ऐन कर सफ़ाईआ। झगड़ा रहे ना शाह हकीर, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। सच दस्स किस बिध दीन दुनी बदलें तकदीर, धुर दा हुक्म आप वरताईआ। लेखा रहे ना ग़रीब अमीर, अमरापद इक जणाईआ। सब दी साफ़ होवे ज़मीर, ज़ामन इक्को नूर अलाहीआ। शरअ छुरी फड़े ना कोए शमशीर, शहिनशाह झगड़ा देणा गंवाईआ। तूं आदि अन्त दा पातशाह आत्मा तेरा वज़ीर, दूसर वुज़रा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप
७ हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच आपणा हुक्म वरताईआ। श्री भगवान कहे भाद्रों मैं भाण्डा ७
२२ भरम भनावांगा। निरगुण नूर जोत चमकावांगा। शब्द अगम्मी आवाज़ लगावांगा। दो जहानां आप उठावांगा। मर्द मर्दाना २२
आपणा वेस वटावांगा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पिछला नावां वेख वखावांगा। कलयुग जीवां बुद्धी होई कावां, कागों हँस आप प्रगटावांगा। लख चुरासी काया मन्दिर वेख गरावां, गृह गृह भीतर नूर चमकावांगा। हरिजन रहे ना कोई निथावां, बाहों पकड़ आप उठावांगा। सच संदेशा देवां नाल चावां, चाओ घनेरा इक रखावांगा। हउमें विच भरे कोई ना हावा, हाहाकार दा अन्त करावांगा। गुर अवतार पैग़म्बर जो शब्दी धार कीता दाअवा, मिसल सब दी वेख वखावांगा। क्यों कलयुग अन्तिम नाता तुटा पुत्तरां मावां, पिता पूत गोद सुहावांगा। क्यों नानक निरगुण चार जणाईआं लावां, चौथी मंज़ल सब दी पूर करावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर साचा इक वखावांगा। दर साचा इक वखाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। सतिजुग साचा राह चलाएगा। शब्द शब्द गुरु वडयाएगा। डंका इक्को नाम वजाएगा। राउ रंक रंग रंगाएगा। साध सन्त बंक सुहाएगा। जीव जंत सर्ब तराएगा। इष्ट देव इक मनाएगा। दीन मज़्हब ना वंड वंडाएगा। आत्म ब्रह्म पड़दा लाहेगा। निरगुण नूर जोत रुशनाएगा। शब्द नाद धुन सुणाएगा। भेद अभेदा आप खुल्हाएगा। चार वरन

दा सांझा मीत, एकँकारा इक्को नज़री आएगा। तूं मेरा मैं तेरा सारी सृष्टी गाए गीत, सोहँ ढोला आप सुणाएगा। सतिजुग साचे कर बख़्शीश, रहमत आपणी आप कमाएगा। धुर दा कलमा इक हदीस, हज़रतां तों परे आप पढ़ाएगा। सदी चौधवीं सब दी कर तस्दीक, लेखा सब दा लेखे लाएगा। अन्तिम इक्को पाए तारीख़, तवारीख़ आप बदलाएगा। जिस दे विच हक तौफ़ीक, सो करता कार कमाएगा। सब दी मनसा पूरी कर उम्मीद, मुद्दत तों विछड़े मेल मिलाएगा। कलयुग दा अन्त हुन्दा जाए करीब, लेखा सब दे हथ्थ फड़ाएगा। सतिजुग सच दे तरतीब, ताबयादारी इक समझाएगा। गफ्लत सोए कोए ना नींद, आलस निंद्रा सर्ब मिटाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण साचे नाम धुर दे कलमे दरस तमहीद, सिफ्तां विच सिफ्त सिफ्त सालाहेगा।

✪ १८ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ५ अमराउ सिँघ दे गृह पिण्ड बल ✪

सतिगुर शब्द सुहावी होवे रुत्ती, रुतड़ी सति रंग रंगाईआ। कलयुग अन्तिम दो जहान करे बुत्ती, बुतख़ान्यां कर सफ़ाईआ। तेरी सृष्टी रहे मूल ना सुत्ती, सुत्तयां लए जगाईआ। जेहड़ी गुर अवतार पैग़म्बरां भविक्ख्तां विच कथा कहाणी पुच्छी, पोशीदा पड़दा दे उठाईआ। सच धार शरअ चला सुच्ची, ला मज़्हब दया कमाईआ। जिस नाल तेरे नाम दी इक्को होवे रुची, रचना आपणी दे दृढ़ाईआ। मन कल्पणा रहे ना उग्घी, उगण आथण इक्को वज्जे वधाईआ। तेरी खेल कदे ना रुकी, रुकमणी कृष्न गया समझाईआ। दीन दुनी वेख दुखी, दुखियां दर्द मिटाईआ। ग़रीब निमाणे वेख भुक्खी, भुक्ख्यां भुक्ख गंवाईआ। भाग लगा जणेंदी कुख्खी, भगत सुहेले लै प्रगटाईआ। तेरी धार चले पंज मुखी, पंचम मीते हो सहाईआ। आत्म रहे कोई ना रुस्सी, रुस्सयां लै मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वास्ता तेरे अग्गे पाईआ। वास्ता तेरे अग्गे पावां, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। मेहरवान हो के दे ठंडीआं छावां, शहिनशाह शब्द नाम लगाईआ। ख़ाली रहिण ना पुत्रां मावां, पिता पूत गोद सुहाईआ। हँस बुद्धी बणा दे कावां, कागों हँस उडाईआ। हरिजन रहे ना कोए नथावां, दरगाह साची सच सुहाईआ। इक्को प्रीत पतिपरमेश्वर रावां, दूसर कन्त ना कोए हंढाईआ। चरण धूढ़ी तेरे इश्नान करावां, दुरमति मैल धुआईआ। आत्मा परमात्मा कंडा तराज़ू करदे सावां, साहिब सतिगुर आपणी दया कमाईआ। कलयुग अन्तिम भरे कोई ना हावा, हर हिरदा दे समझाईआ। तेरे चरण कँवल बलि बलि जावां, बलिहारी तेरी वड वड्याईआ।

गुर अवतार पैग़म्बरां पूरा कर दे दाअवा, दाइरा दीन मज़्हब तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर ठाकर तेरी सरनाईआ। सरनगति दे मालक स्वामी, सच तेरी वड्याईआ। सब दा नाता जोड़ दे बाहमी, ब्रह्मण क्षत्री शूद्र वैश रंग रंगाईआ। तेरे नाम दी इक्को होवे सलामी, सजदा सीस जगदीश झुकाईआ। मज़्हबां रहे ना कोए ग़ुलामी, शरअ ज़ंजीर देणी कटाईआ। सदी चौधवीं वेख बदइंतजामी, बन्दोबस्त ना कोए रखाईआ। रसना कूड़ करे कलामी, कायनात रही कुरलाईआ। किरपा कर धुर अमामी, अमाम अमामा तेरी सरनाईआ। तेरे नाम दी होई बदनामी, बदला दीन दुनी चुकाईआ। जो गुर अवतार पैग़म्बरां कोलों रह गई ख़ामी, ओह ख़ालक पूर देणी कराईआ। तूं आदि अन्त दा अन्तरजामी, घट स्वामी वेख वखाईआ। कूड़ी रैण वेख अंधेरी शामी, शमां सच दे चमकाईआ। तेरी बोध अगाधी दो जहाना होवे इक्को बाणी, बाण अणयाला तीर चलाईआ। अमृत रस धुर वरोले ठंडा पाणी, जगत सरोवर लोड़ रहे ना राईआ। तेरे धर्म दी धर्म होवे निशानी, चार वरन इक्को घर वसाईआ। साहिब सतिगुर हक बेनन्ती पारब्रह्म ब्रह्म मानी, मानव मानस मानुख लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा लेखा अगम्म आलीशानी, आलीज़ाह दर सजदा सीस झुकाईआ।

✪ २१ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ५ हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

सति पुरख सति दे मालक, सच तेरी वड्याईआ। तेरा खेल भगत जन याचक, यादव बंसी कृष्न गया दृढ़ाईआ। सन्त सुहेले तेरे सादक, साहिब सुल्तान तेरी वड्याईआ। आपणी धार दी आपे कर सिफ़ारश, कूड़ा संग ना कोए मिलाईआ। तेरा लहिणा देणा बड़ा अजे विच भारत, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। तेरे नाम दी लवे कोई ना आड़्हत, सति सच तेरा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सति कहे सति सतिवन्त, आदि जुगादि अख्वाईआ। मेरा मालक इक भगवन्त, दूजा नज़र कोए ना आईआ। दो जहानां अगम्मी कन्त, कन्तूहल इक अख्वाईआ। जिस ने उधारने नौ खण्ड पृथमी सन्त, सूफ़ीआं रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल खिलाईआ। सति कहे सति कदे ना मरया, जन्म मरन ना कोए वड्याईआ। जिस आदि जुगादि जुग चौकड़ी खेल करया, करनी दा करता बेपरवाहीआ। ओस जगत विच जीवण दा नवां जीवण धरया, जुगत दीन दुनी समझाईआ। चारों कुण्ट अंधेरा होणा घर घरया, कलयुग कूड़ कूके दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सति कहे मैं शब्दी धार, धार विच प्रगटाईआ। जन्म मरन जिस दे अख्त्यार, बेअख्त्यारी कीती जगत लोकाईआ। नवें जुग दा नवां खेल करना संसार, समां समें विच्चों बदलाईआ। लिख्त भविक्ख्त नेड़े आ के करे पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। तेरा खेल कलि कल्की अवतार, कलधारी तेरी वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति धर्म दी सदा करे साची कार, करनी दा करता कुदरत दा कादर इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे नौ रतीआं खाधा ज़हिर, नौ दिन आपणे बग़ल विच छुपाईआ। फेर कीती मेहर, मेहर नज़र उठाईआ। क्यों, जिस दा मालक सिँघ शेर, शरअ तों बाहर सोभा पाईआ। ओह आदि अन्त दे लहिणे देणे दए नबेड़, जगत विच ना कोए समझाईआ। साढे सैंती साल बुक्कणा वांग केहर, काया माटी रंग रंगाईआ। झगड़ा मुका के ज़बर ज़ेर, ज़ाहर ज़हूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। शब्द कहे जे रविदास सत्त रंगा सीस ना मारदा डण्डा, डण्डावत जगत ना कोए बदलाईआ। ज़हर खा के बचे कोए ना बन्दा, बन्दगी वाले बैठण मुख भवाईआ। एह खेल सूरा सरबंगा, जो सति सच दा मालक इक अख्वाईआ। दुःख दे थाँ भुक्ख दे थाँ देवे आपणा आप अनन्दा, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। वेख लओ सरीर हो गया ठंडा, अग्नी अग्ग रही ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच धाम सुहंदा, सुहंझणी रुत वड्याईआ।

✪ पहली अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

अस्सू कहे मैं आसा रखी, हरि रक्षक बेपरवाहीआ। कथा कहाणी विष्न ब्रह्मा शिव जेहड़ी दस्सी, पुरख अकाल दयाल दृढ़ाईआ। चार जुग समझ ना आई राग छत्ती, सिफ्तां विच ना कोए सलाहीआ। जे किसे ने बड़ा किहा प्रभ नूं किहा कमलापती, अग्गे भेव ना कोए जणाईआ। जे दया कीती अक्खरां वाली पढ़ाई पट्टी, सिफ्तां विच जणाईआ। जे मेहर कीती मज़्बां वाली चला के हट्टी, हटवाणे दिते उपजाईआ। जे खेल कीती जुग जुग निराली अच्छी, अच्छा आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दी धार सृष्टी वसी, बस्ती दीन दुनी बणाईआ। ओस दा खेल वेखणा अक्खीं, हरि करता आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव चुकाईआ। अस्सू कहे मेरी आसा अगम्म, अगम्म दयां दृढ़ाईआ।

प्रभू मेरा ते मेरा प्रभू होणा हम, हमसाजण नूर अलाहीआ। ना कोई माटी ना कोई चम्म, दृष्टी जगत ना कोए जणाईआ। ना कोई हरख़ सोग ग़म, चिन्ता चिखा ना कोए तपाईआ। ना कोई पवण स्वासी दम, दामनगीर ना कोए वड्याईआ। जो करना सो आपणा आपे कम्म, करनी करता कार कमाईआ। अस्सू कहे मैं कहिणा धन्न धन्न, धन्न तेरी सरनाईआ। जिन कोटां विच्चों भगत सुहेले वेखे थोड़े जन, बणी आप जणेंदी माईआ। प्रेम प्रीती अन्दर बन्नू के मन, मन मनका ल्या भवाईआ। बिना राग सुणा के कन्न, धुन अन्तर इक उपजाईआ। मैं ब्रह्मण्ड खण्ड छडे वेखे भगत प्रभू दे चन्न, चन्न नूर रुशनाईआ। जेहड़े नेत्रहीण होए अन्नू, निज लोचन नैण रहे खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। अस्सू कहे मेरी आसा लम्बी, सच दयां दृढ़ाईआ। सृष्टी दृष्टी वेखां कम्बी, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। सब दी हालत होणी मंदी, मंद भाग होई लोकाईआ। वासना रहे किसे ना चंगी, चारों कुण्ट कूड़ हल्काईआ। सिध्धी रहिण नहीं देणी डण्डी, डण्डावत सब दी देणी भुलाईआ। मन कल्पणा मुशटंडी, घर घर देणी फिराईआ। सति दी धार कर के रंडी, जगत दुहागण रूप नचाईआ। ओढण सीस तन रहे ना अंगी, अंगीकार ना कोए कराईआ। जेहड़ी मंग गुजरी ने गोबिन्द कोलों सी मंगी, जिस वेले गंगू नालों होई जुदाईआ। गोबिन्द मौत तेरे विछोड़े नालों चंगी, चंगी तेरी प्यार दुहाईआ। ११ २२
गोबिन्द खिच्च कटार नन्गी, सन्मुख हो के दिता वखाईआ। अजे ते गुजरी इक्को सरसा धार लँघी, कलयुग सारा बाकी नज़री आईआ। तेरा सूरबीर बहादर योद्धा इक्को जंगी, जिस नूं जन्मे अवर कोए ना माईआ। जिस वेले सदी चौधवीं लँघी, जग आवां चाँईं चाँईंआ। इके वार तेरयां भगतां दी आपणे सिर ते चुक्क के तंगी, दुःख सब दे दयां मिटाईआ। जेहड़ी चार जुग दी विछड़ी ओह आत्मा लवां गंढी, आपणी गंढ के फेर लवां तुड़ाईआ। आपणी धार रखां सदा ठंडी, अग्नी अग्ग ना कोए जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। गुजरी ने नौ वारी फेरी अक्खां दे उत्ते उँगल, आह कर के दिता सुणाईआ। गोबिन्द तेरे बिना कौण तेरयां आवे चुक्कण, कवण गोद उठाईआ। गोबिन्द किहा माता जिस वेले कलयुग अन्तिम आया मुकण, मुकम्मल वेस वटाईआ। शेर हो के आवां बुक्कण, भबक इक्को नाम लगाईआ। तेरयां भगतां तेरयां सिक्खां तेरयां प्यारयां पिच्छे आपणी कट के भुक्खण, दुःख भुक्ख सब दा दूर कराईआ। औखा रहे ना कोई कदी किसे टुक्कण, टुकड़े घर घर दयां पुचाईआ। सूरबीर बहादर बण के आवां उठण, आपणी लै अंगड़ाईआ। जिथ्थे गुर अवतार पैग़म्बर मूल ना पुज्जण, उथे जावां चाँईं चाँईंआ। जेहड़े विचार चार जुग किसे ना सुझण, उन्हां पड़दा दयां खुल्हाईआ। मेरे मेरे नालों कदे ना रुस्सण, एह रीती देणी बणाईआ। मेरे निशान्यों कदे ना उकण, चलण

चाँईं चाँईंआ। जे चलदे चलदे घुस्सण, अग्गे फड़ के लवां उठाईआ। कर प्यार चुक्कां कुच्छड़, गोदी आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। गुजरी ने तिन्न वार अक्खां ते मारी मुट्टी, आह आह आह कर सुणाईआ। गोबिन्द क्यों दुनिया साडे नालों रुट्ठी, संगी नज़र कोए ना आईआ। गोबिन्द किहा माता मेरी ओस नालों नहीं टुट्टी, जो टुटयां गंढ पवाईआ। शब्द रूप हत्थ मारया गुट्ट ते गुट्टी, नाता धुर दा ल्या बणाईआ। हुण लै जा एस जगत चों छुट्टी, लोकमात देणा तजाईआ। जिस वेले मेरी ते मेरे साहिब दी पोह फुट्टी, तेरा नूर दयां चमकाईआ। तूं फेर कदे जाणा नहीं लुट्टी, तेरा लुटेरा सब नूं लुट्ट पुट्ट खाईआ। गुजरी हौसला कर के उठी, चारों कुण्ट लई अंगड़ाईआ। गोबिन्द लाह के पैरों जुत्ती, चरण चरण उत्ते टिकाईआ। फेर चाढ़ के ताअ मुच्छीं, सूरबीर रूप बदलाईआ। गुजरी इक वार फेर पुच्छी, तैनूं दयां सुणाईआ। गुजरी रो पई भुब्बी भुब्बीं, हाए हाए कर सुणाईआ। गोबिन्द हत्थ ला के गोडीं, गुट्टने दिते दबाईआ। माता एह तेरी फुलवाड़ी निक्की जेही डोडी, गुल मैं फेर देणे खिलाईआ। ढाई सौ साल मैनूं कर लैण दे गोडी, सोहणा ज़ोर लगाईआ। ना मैं सन्यासी ते ना मैं जोगी, ना मैं रसीआ ना मैं भोगी, ना कोई साध सन्त ना कोई विजोगी, जद वेखें इक्को धार इक सलोकी, दूजा नज़र कोए ना आईआ। ना मैं पुस्तक ना शास्त्र वेद पुराण ना कोई पढ़न वाली पोथी, ना कोई अक्खरां वाली लिखाईआ। ना कोई मंज़ल ना कोई चोटी, अन्दर बाहर नज़र कोए ना आईआ। गुजरी जद तकें ते मैं भगतां दा सच्चा गोती, ओह मेरे माणक मोती, जिन्हां दी जगदी जोती, जिस जोती पिच्छे तुहाडा जोती जाता नज़री आईआ। जिहनूं कहिण सभदा मालक ते सभदा मोखी, ना कोई हरख ते ना कोई सोगी, जद वेखो ते तुहाडी चढ़या उत्ते चोटी, चोटिओ तुहाडे नालों चोटा बण के आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गुजरी किहा गोबिन्द भेव दस्स दे गुज्झा, क्यों गुंझल विच रखाईआ। गोबिन्द किहा माता इक मैं ते,इक मेरा प्रभू दोहां दा इक्को वसणा झुगा, झुगी नज़र कोए ना आईआ। जिस ने लेखा मुकाउणा चहुं जुगा, जुगती आपणे विच छुपाईआ। बिना किसे दी मदद तों आपे हो जाणा उग्घा, दो जहान करे रुशनाईआ। प्रगट हो बसुधा, सुध सब दी दए बदलाईआ। गुजरी किहा गोबिन्द की तूं ओने चिर नूं हो जाणा बुढ्ढा, मैनूं दे दृढ़ाईआ। गोबिन्द किहा मैं शब्दी धार ना लंगड़ा लूल्हा डुड्डा, वड्डा छोटा रूप ना कोए बदलाईआ। मेरे मालक दा मेरे नाल आदि तों लै के जुगां तक इक्को जेहा मुद्दा, मुद्दतां दा भेव ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। पहली अस्सू कहे मेरी आसा इक निराली, निराकार दृढ़ाईआ।

जन भगतो खेल दस्सां सुखाली, सुक्खी सांदी सर्ब समझाईआ। छब्बी पोह नूं सब दे मस्तक चढ़ी होवे लाली, लाल बिन्दी नाल वड्याईआ। नाल सहेली होवे काली, कलयुग रोंदी धार मारे धाहींआ। दोहां दी निरगुण धार करे दलाली, विचली आपणी कार कमाईआ। वेख्यो कोई हथ्थ ना आयो खाली, भेंटा कुछ दा कुछ चढ़ाईआ। भांवे हरयां पत्तयां दी लै आयो डाली, एह तुहाडे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। छब्बी पोह कहे पंज बणाउणे अनोखे रूप, जेहड़े गोदावरी विच बन्दे नूं गोबिन्द दिते समझाईआ। ओह होण प्रभू दे पूत, बिना पुरख अकाल तों सीस ना किसे निवाईआ। अन्दरों कढ के दूज, झगड़ा ज़ात पात मिटाईआ। लिख के देण तेरे हुक्म विच गए झूज, साडा ना कोई पिता ना कोई माईआ। सानूं सारी दुनिया लावे ऊज, बदमाश कहे लोकाईआ। असीं सृष्टी दा छड्डुया कूच, कूचा गली दिती तजाईआ। जिस ने दिता शरीर पंज भूत, ओसे दी झोली पाईआ। भावें पूत बणा भावें कपूत, एह तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच करनी कार कमाईआ। ओह छब्बी पोह कहिंदा ओह शब्द याद किसे नहीं कीता, पंज सौ साल समझ किसे ना आईआ। जिस वेले नानक नूं नानक दी दस्सी रीता, बिना जन्म तों बिना अक्खरां तों नानक नाम दिता पढ़ाईआ। ओस विद्याले विच ना कोई राम ते ना कोई सीता, ना कोई काहन कृष्न गीता, ना कोई ईसा मूसा मुहम्मद ना कोई चर्च मसीता, ना कोई मसला कुरान ईमान नज़री आईआ। जिस वेले निरगुण धार निरगुण निरगुण दा कीता टीका, टिक्का निरगुण निरगुण तांई लगाईआ। ओस वेले पता नहीं सी कि नानक जीअ धरना इक जीअ का, तन शरीर विच वड्याईआ। एह खेल बेवज़ीह का, वज़ाहत विच ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। अस्सू कहे मैं बड़ा खुशहाल, खुशीआं विच जणाईआ। सारे बण जाउ इक दे लाल, लाला पापा अवर ना कोए मनाईआ। बहि जाउ इक्को धर्मसाल, धर्म दवारा धुर दा नज़री आईआ। जिथ्थे ना कोई शाह ते ना कोई कंगाल, भगत भगवान मिल के दोवें झट लँघाईआ। इक्की अस्सू नूं दुआबे वाल्यो होणा सवाधान, सच संदेशा दयां सुणाईआ। छब्बी अस्सू सब ने लौणी मीज़ान, गुरमुख अंकड़यां विच जणाईआ। ढाई घंटे होणा फ़रमान, संदेशा अगम्म अथाहीआ। जिस विच छब्बी पोह दा लिख्या जाणा विधान, की वहिदत बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवणहारा दान, दाता दयावान अख्वाईआ।

✪ अजीत सिँघ दे बेनन्ती करन ते शब्द उच्चारया गया ✪

एस शरीर नूं कोई कहे चंगा कोई कहे माढ़ा, उँगलां सारे रहे उठाईआ। कोई कहे सतिगुरु कोई कहे लाड़ा, कोई कहे पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सोभा पाईआ। कोई कहे खेल करे ला अगम्मी खाड़ा, आपणी कार कमाईआ। कोई कहे एह भरया पंच विकार धाड़ा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। कोई कहे एह खेल बहत्तर नाड़ा, ततां वरगा तत सोभा पाईआ। कोई कहे एह फिरदा जंगल जूहां पहाड़ां, भज्जे थांउँ थाँईंआ। पर एह सारा खेल ओसे दा अपर अपारा, जिस अपरम्पर आपणी बणत बणाईआ। जेहड़ा अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहरा, ओह आपणी कार कमाईआ। दु:ख सुख दा जेहड़ा सहारा, रसीआ भोगीआ आपणी करनी विच आपणा आप रखाईआ। एह धार संसार विहार जुग जुग चलदी रही कारा, करनी करता आप भुगताईआ। भावें ताप होवे ते भावें उहनूं कहो बुखारा, भावें अग्नी तत जलाईआ। जे शब्द है ते शब्द गुरदवारा, दु:ख रोग ना लागे राईआ। जे जोत है जोत नूर उज्यारा, नूरो नूर डगमगाईआ। जे तत है ते जगत वाला खेल अपारा, ताड़ी दयो लगाईआ। एह हुक्म मन्नण दी धारा, सब नूं रिहा समझाईआ। इक दा इक नाल प्यारा, इक इक विच समाईआ। एस इक दा तुहाडे नाल विहारा, क्यों बैठे मुख भवाईआ। इक दा इक नाल प्यारा, इक इक नाल निभाईआ। एह कोई पूरन नहीं विभचारा, कुकर्मी कर्म कांड ना कोए वखाईआ। जो करे कराए सो करनेहारा, खुद मालक बेपरवाहीआ। सारी सृष्टी एसे दी स्त्री ते एसे दा पुरख ते एहो एस दी नारा, एहो मात पित भैण भाईआ। जेहड़ा अन्दर है गुप्त है ज़ाहर है (बाहरा,) हर घट वसया साहिब स्वामी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, । की पूरन कदी मरदा ! मरन विच ना आईआ। एह सड़दा ! सड़न विच ना आईआ। एह डरदा ! डरन विच ना आईआ। जिधर जावां उधर चढ़दा, योद्धा सूरबीर अख्वाईआ। एह खेल नरायण नर दा, शाह पातशाह आपणी कार भुगताईआ। तुहाडे पिच्छे सारे दु:ख झलदा, दुखियां दा दर्द आपणी झोली पाईआ। ते गोबिन्द दा बचन पूरा करदा, जो गुजरी नाल वायदा कर के ते घुट्ट नाल घुट्ट कर के माँ नूं गया समझाईआ। अज्ज एह खेल ना करदा, ग़रीबां निमाणयां गोद ना कोए टिकाईआ। आपणा खून तुहाडा रूप ना बणदा, दर्दी दर्द कवण अख्वाईआ। उफ़ हाए ना करदा, तुहाडे अन्दर वड़ के कवण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार भुगताईआ। जितना लग्गा दु:ख रोग सरीर, सरीर इक दिता जणाईआ। एह वी इक ख़ास तहरीर, तरीके नाल बणाईआ। जिस दा खेल बेनज़ीर, नज़र तों परे दए समझाईआ। जे मैं पातशाह ते तुसीं मेरे वज़ीर, ते दोहां दा मेला सहिज सुभाईआ।

जे मैं ही तुहाडा मालक अख़ीर, क्यों ना दुखड़े तुहाडे पहलों दयां मिटाईआ। थोड़ी जेही खेल कर के तुहाडी बदल देवां तकदीर, एह मेरी बेपरवाहीआ। जे झाड़ीआं पिच्छे लुक्या कबीर, ते ओहले लुक लुक झट लँघाईआ। जे बण गया पैग़म्बरां पिच्छे ख़मीर, आपणा रूप बदलाईआ। ते जे बदल गई तदबीर, तरीका ढंग रिहा सिखलाईआ। फिर दयो बाद अशीर, वाहवा प्रभू तेरी बेपरवाहीआ। जिस ने दु:ख विच सुख विच सब दी बदल देणी ज़मीर, ज़ामन आपणा आप कराईआ। एह कोई जंड नहीं करीर, जेहड़ा सड़ सुक्क के अग्नी विच दयो डाहीआ। एह कोई इट्टां पथ्थरां वाला मन्दिर नहीं जिहनूं कर के ताअमीर, फेर दयो ढाहीआ। एह कोई दीन मज़्ब दी नहीं जगीर, धन दौलत किसे दी नज़री आईआ। एह कोई कड़ाह पूड़ी खाण वाला नहीं खीर, टुकड़यां नाल झट लँघाईआ। एह दाता बेनज़ीर, जद चाहो तुहाडे वरगा तुहाडे विच समाईआ। पिछली सब दे उत्ते फेरनी लकीर, लाईन इक्को देणी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। दु:ख सुख रोग नहीं संताप, जगत वाली कार भुगताईआ। नाले अकाल ते नाले आप ते नाले पिता ते नाले बाप, ते नाले बच्चयां नूं कहे उफ हाए बौहड़ी मर के दए दुहाईआ। नाले पवित्र नाले पाक, नाले देवे सब दा साथ, नाले कहे फड़ो घुट्टो डक्को मेरी जान, बौहड़ी बौहड़ी कर के दए दुहाईआ। एह गोबिन्द दा वाक, गुजरी दा साक, दु:ख सुख सब दा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। नाले लभ्भा पुरख अकाल ते लभ गया बौरा, भोला भाला नज़री आईआ। सुध बुध विच हो जाए डोरा भौरा, सुरत रहे ना राईआ। कदी सस्से दा ला के होड़ा, हाहे दिती वड्याईआ। कदी ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमी असमान बणा के चौड़ा, घर वडा छोटा दिता समझाईआ। कदी पा के हाए लोहड़ा, जुग चौकड़ी दिते बदलाईआ। कदी दे के नाम थोड़ा थोड़ा, सारे दिते वरचाईआ। कदी बणा के जोड़ा जोड़ा, नारी स्त्री वंड वंडाईआ। कदी फड़ के नाम शब्द घोड़ा, पिठ सब दी दए ठुकराईआ। नाँ रखा के ब्रह्मण गौड़ा, आपणा भेव ना किसे समझाईआ। लभ्भो थल्ले उत्ते लाए पौड़ा, ना अन्दर दिसे ना बाहर दिसे, हाए बौहड़ी सारे कर के देण दुहाईआ। एथे दस्स किसे दा की जोरा, जोरू ज़र सारे रहे कुरलाईआ। जद वेखो ते नवें दा नवां नकोरा, नव नौ जोबन सोभा पाईआ। आदि तों लै के अन्त तक ना एह बुढ्ढा ते ना एह छोहरा, रूप रंग रेख विच ना कोए वड्याईआ। जिस दा मन्त्र सदा फोरा, फ़ुरने सब दे बन्द कराईआ। गुस्से विच दयो खां हनोरा, पासे लओ बदलाईआ। ते जे शब्द गुरु ते अग्गे उहदा घोड़ा, किधर भज्जोगे नट्ठो केहड़ी थाँईंआ। फेर वेखो ते सोहँ दुहरा, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। फेर वेखो ते अग्गों ला के मोड़ा,

आपणे वल्ल खिचाईआ। फेर वेखो ते फेर जोड़े दा जोड़ा, आत्म परमात्म सोभा पाईआ। फेर वेखो पावे लोहड़ा, तूं एधर ते मैं एधर, सब नूं दए भवाईआ। फेर वेखो खिच्च के डोरा, शब्दी डोरी तन्द बंधाईआ। एह सतिगुरु पता नहीं किधरों आ गया जिस दी नन्ती हो गई कंगरोड़ा, हड्ड मास दा खेल नज़र कोए ना आईआ। एह नहीं पता एह जन्म कर्म दे सब दी गोबिन्द दे प्रेमीआं दी कढण आया खोरा, आपणे आप नूं खोर खोर के खुरयां नूं खुरे तों फड़ के ल्या बचाईआ।

इह प्रीती बड़ी शैतान, शैतानी विच भज्जे चाँईं चाँईंआ। कहिंदी ज्ञानीआं नूं दे ज्ञान, ध्यानीआं नूं दे ध्यान, मानीआं नूं दे माण, ते खाण पीण वाल्यां नूं दे पीण खाण, ते ढिड्ड सभदे दे फुलाईआ। चुग़लां नूं दे कान, पापीआं नूं दे इश्नान, नाह धो के आपणा झट लँघाईआ। ते होर की सब कुछ मंगी जानी ए, जे भगतां नूं देणा ई ते प्रीती दान, होर कुछ ना मंग मंगाईआ। प्रभू कहे ओ कमलीए जो इक वेरां मेरा दर्शन पाण, जन्म मरन दी लोड़ रही ना राईआ। मेरा इक्को इक मकान, दूजा घर ना कोए वसाईआ। जिथ्थे कदे ना होवे कोई गुलाम, शरअ बन्धन ना कोए बंधाईआ। जदों किरपा
१६
२२
कीती ते कीती मेहर नाल असान, रोड़ा राह ना कोए अटकाईआ। जदों आया भगतां नूं खिच्च के लै गया विच्चों मैदान, मवाइदे पिछले पूर कराईआ। कदी नहीं कलामां वाला अक्खरां वाला दिता ज्ञान, सिफ्तां विच सिफ्तां ना कोए जणाईआ। जदों होया ते होया मेहरवान, मेहर निगाह नाल पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड दवार एकँकार जन भगतां दए टिकाईआ।
१६
२२

✪ ८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

विष्नूं विश्व धार हो जा हाज़र, हाज़री आपणी लै लगाईआ। तूं नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दा बणयों रिहों ताजर, वणज वपार आपणा नफा दे दृढ़ाईआ। धर्म दी धार रिहों सौदागर, भज्जया वाहो दाहीआ। हुक्म सुणाउंदा रिहों करीम कादर, की करता खेल खिलाईआ। क्यों नहीं सच कीता आदल, इन्साफ़ ना कोए वखाईआ। ग़रीब निमाणयां मिल्या किसे ना आदर, भुक्ख्यां भुक्ख ना कोए मिटाईआ। याद करना की पुकार कीती तेग़ बहादर, सीस धड़ नालों वक्ख कराईआ। जगत मज़्हब बणया कातिल, छुरी इस्लाम रूप कसाईआ। उस ने भेद खोल्ह्या बातन, पर्दा दिता चुकाईआ। जिस वेले कलयुग

अंधेरा होवे रातन, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। उस वेले आवे पुरख अबिनाशण, निरगुण निरवैर बेपरवाहीआ। गोबिन्द सूरा होवे साथन, सगला संग निभाईआ। जिस नूं कहिंदे ग़रीब निवाज़न, नवाज़िश करे थांउँ थाँईंआ। सच दी थापण आए थापण, धुर फ़रमाना इक उपजाईआ। दीन दुनी दा मेट के पापन, दुरमति मैल करे सफ़ाईआ। जुग चौकड़ी बदल के जापन, सिख्या इक्को दए समझाईआ। सच दवारे करके वासन, वसल आपणा इक वखाईआ। निरगुण नूर कर प्रकाशन, जोती जोत डगमगाईआ। खेल खेले पृथ्मी आकाशन, गगन मण्डल पड़दा लाहीआ। दो जहानां पा रासन, निरगुण सरगुण नाच नचाईआ। लेखा जाण भोग बिलासन, लख चुरासी खोज खुजाईआ। जिस दा हुक्म सारे वाचन, पढ पढ़ रहे सुणाईआ। ओह करे आपणा वड प्रतापन, बेपरवाह आपणा वेस वटाईआ। कूड़ी क्रिया करे नासन, नास्तिक रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। विष्नूं छेती आ गया अग्गे, कदम चुम्म के सीस निवाईआ। प्रभ वेख लै मेरे लेख बग्गे, काली धार ना कोए जणाईआ। तेरा नूर नुराना जगे, इक्को इक डगमगाईआ। तेरे अग्गे कोई ना वधे, वाधा नज़र कोए ना आईआ। मेरे दोवें हथ्थ बध्धे, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तेरे हुक्म अन्दर फिरीए भज्जे, जुग चौकड़ी वाहो दाहीआ। विसर ना जाईए कदे, कदीम दे मालक तेरी ओट तकाईआ। तेरी समझ ना सके आर पार हद्दे, अगम्म पड़दा ना कोए चुकाईआ। तेरी सरन इक्को लग्गे, लग मात्रा डेरा ढाहीआ। पुरख अकाल पिठ उत्ते मार के धफ्फे, सहिज नाल सुणाईआ। ओह विष्नूं मैथों लै के भण्डार दे गफ्फे, आपणी झोली लई भराईआ। निरगुण दी धार उत्ते वेख तीसरे सफ़े, जिस दा अंक ना कोए जणाईआ। उथे सब नूं मिलदे नफे, नुकसान वंड ना कोए वंडाईआ। एह खेल अलखणा अलखे, लख करोड़ कहिण कोए ना पाईआ। सच सच दे दस्से, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। लोकमात वेख मेरे भुक्खे रहिंदे बहुते बच्चे, पेट भर ना कोए रजाईआ। चार जुग दे मार्ग हो गए कच्चे, कच्ची धार तन्द वखाईआ। माया ममता मोह नस्से, भज्जे वाहो दाहीआ। मेरा नूर किते ना वसे, सच जोत ना कोए रुशनाईआ। तूं दस्स मेरे भण्डारे किथे रखे, जेहड़े अतोट अतुट जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। विष्नूं मार के उपर हथ्थ आपणी छाती, शहिनशाह दिता वखाईआ। एह वेख लेख कमलापाती, पतिपरमेश्वर तेरा नज़री आईआ। मैनूं दे के भण्डारा दाती, दाते दया कमाईआ। इक गल्ल अनोखी आखी, सहिज नाल समझाईआ। मैं सब दी करां राखी, वेखां थांउँ थाँईंआ। तूं थोड़ी थोड़ी मातलोक वंडणी चपाती, चारे खाणी झोली पाईआ। किसे नूं आउण ना देवीं शांती, सति विच ना कोए समाईआ। अन्दर भरम रहे भरांती, भाण्डा ना कोए भनाईआ। मैं अवतार

पैग़म्बर गुरु भेजां शब्द दे बणा जमाती, अक्खरां वाली कर पढ़ाईआ। आपणी मंज़ल दस्स के घाटी, थल्ले सब नूं दयां भवाईआ। सरीर तन दी दे दे खाटी, सेज सिंघासण उत्ते टकाईआ। नाम दी दे के पाती, अक्खरां विच वखाईआ। अन्त हुक्म दी दे के फाँसी, फ़ैसले दयां कराईआ। भेव रख पुरख अबिनाशी, पर्दा परदयां विच टकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। विष्नूं कहे आह मेरा मस्तक लै तक, प्रभ आपणी दया कमाईआ। जिस विच लेख लिख्या आपणे अगम्मे हथ्थ, शाही कलम ना कोए वड्याईआ। जुग चौकड़ी खेल होणा वक्ख वक्ख, धुर दा राह ना कोए दृढ़ाईआ। अवतार पैग़म्बर आउणे नट्ठ, गुरुआं गोद जणाईआ। कलमे नाम जाणे जप, सिफ्तां विच सालाहीआ। जोग अभ्आस करने तप, पूजा पाठ विच वड्याईआ। सरीर उत्ते झलणे कष्ट झट, सिर सके ना कोए उठाईआ। अन्तिम सारे पासा जाण वट, आपणा पन्ध मुकाईआ। तेरे भाणे अन्दर वस, सीस जगदीश झुकाईआ। तेरे कोलों मंगदे रहिण करके हथ्थ, झोली आपणी ख़ाली डाहीआ। तूं किरपा नाल देणी वथ, एह तेरी बेपरवाहीआ। सारी सृष्टी दा भार सकणा नहीं किसे चक्क, हिस्सा थोड़ा थोड़ा रखाईआ। अन्तिम सारयां जाणा अक्क, वास्ता तेरे अग्गे पाईआ। दीन दुनी दा पूरा देवे कोए ना हक, मंज़ल हक ना कोए पहुंचाईआ। सब ने तेरा मार्ग जाणा दस्स, ऊची कूक कूक सुणाईआ। कलयुग अन्तिम होवे प्रगट, पुरख अकाला धुर दा माहीआ। जिसने सब दा मेटणा फट्ट, दुखड़ा दए गंवाईआ। उसने धुर दा खोल्हणा हट्ट, हटवाणा आप हो जाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं नौ नौ वार दस्सया शब्दी धार ते शब्द सतिगुरु ते शब्द सरीर होणा जट्ट, जटा जूट रहिण कोए ना पाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दी ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां दी भुक्ख आपे लए कट, विष्नूं दूसर चले ना कोए चतुराईआ। छत्ती जुग नानक दस्सया नाल हठ, चौथे जुग चार वरन वंड वंडाईआ। चाली दिन एसे कारन खेल कीता अलग, वक्खरी आपणी कार कमाईआ। ना ज़िमीं रिहा ना असमान रिहा ना जगत रिहा ना जग, जीवण दाता हो के गुरमुखां हिरदे अन्दर डेरा लाईआ। जितना सरीर नूं चढ़दा सी तप, उतना गुरमुख अन्दर नाम लैंदे सी जप, प्यार प्यार विच्चों प्रगटाईआ। हाए जे सतिगुर साथ गया छड, जावांगे केहड़ी थाँईंआ। विष्नूं कहे मैं प्रभू तेरे चरणां दे विचकाहे तेरा निशाना रखदा सां गड्ड, जगत जहान दी अग्ग तेरे चरणां विच तपाईआ। पिच्छे हो के छडदा सां हस्स, बाहवां कच्छां विच रखाईआ। वेखो किस बिध आपणी खेल करे समरथ, दाता बेपरवाहीआ। जिस ने सतिजुग सब नूं देणी वथ, वस्त अमोलक इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। विष्नूं कहे मैं इक दिन अक्खां लईआं मीट, आपणा ध्यान बदलाईआ। जां तक्कया गुर अवतार पैग़म्बर

सारे करन उडीक, अक्खां चुक चुक वेखण थांउँ थाँईंआ। हाए उफ़ बौहड़ी ते किते आ ते नहीं गई तरीक, जिस विच तवारीख देणी बदलाईआ। विष्नूं कहे मैं वी डर गया उस दिन मैनूं कन्नों फड़ के किहा ग़रीब निमाणयां दी झोली पा दे भीख, भुक्खा रहिण कोए ना पाईआ। गोबिन्द दी भुक्ख दो जहानां दी करे तस्दीक, शहादत आपणे उत्ते भुगताईआ। गुरमुखो हुण तुहानूं वट्टणी नहीं पैंदी कसीस, तुहाडा ख़सम हो के सद आपणा संग रखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू सानूं वी दे बख़्शीश, बौहड़ी साडी झोली दे भराईआ। पुरख अकाल कहे नानक तूं क्यों किहा मैं नीचां दा नीच, नीचां विच समाईआ। भगत उधारना ग़रीबां नूं तारना मेरी सदा दी रीत, शाह सुल्तानां वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। विष्नूं कहे आप बण के रहीम रिज़क, राज़क मैनूं दिती वड्याईआ। जो जुग चौकड़ी रिहा झिजक, खुल्हा गफ्फा ना कदे वरताईआ। जे तूं किरपा करे अग्गे सतिजुग विच सब नूं दे दयां सिदक, सबूरी सब दे अन्दर वसाईआ। तेरा रहे कोए ना निन्दक, निंदिआ कूड़ ना कोए सुणाईआ। मेरी तेरे अग्गे मिन्नत, वास्ता रिहा पाईआ। तेरी रहिमत ते मेरी होवे हिम्मत, बख़िशिश धुर दी नाल रखाईआ। पर उठ के वेख लै ज़रा लहिंदी सिम्मत, समां तेरा गया आईआ। कंजूसां वांग सचखण्ड ना जावीं चिम्मट, लोकमात लै अंगड़ाईआ।
१६ क्यों तेरे भगत विछोड़ा सहि ना सकण मिन्ट, अन्तर झलण ना कदे जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा १६
२२ कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। विष्नूं कहे मैनूं दे दे भण्डारा होर, होर दा होर झोली पाईआ। नाल सतिगुर शब्द २२
दे तोर, तुरत आपणा हुक्म समझाईआ। जेहड़ा मिटावे कलयुग अंधेरा घोर, कूड़ी क्रिया करे सफ़ाईआ। सब दी अन्तर पकड़ डोर, शब्दी नाम तन्द जुड़ाईआ। मन कल्पना मेट के शोर, शरअ विच्चों बाहर रखाईआ। सब दा कारज जाए सौर, सौहरे पेईए वज्जे वधाईआ। जे प्रभू तूं तक ल्एं वारी इक ग़ौर, गहर गम्भीर दया कमाईआ। फेर मैं घर घर जावां बौहड़, दर दर पन्ध मुकाईआ। सब दी आसा मनसा पूरी करां लोड़, लुड़ींदे सज्जण होणा सहाईआ। तेरा नाता तेरे नाल जोड़, जोड़ी धुर दी आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच करनी कार कमाईआ। विष्नूं कहे जन भगतो वेख्या खेल तमाम, अक्खीं सब नूं दिता वखाईआ। गोबिन्द कीता नहीं अराम, आसण सिंघासण ना कोए वड्याईआ। अग्गे तों बणे ना कदे तुहाडा निमक हराम, जिस घर दा खाधा उसदा प्यो दादा सचखण्ड पहुंचाईआ। एह खेल बकायदा सी जुग जुगां दा, जुग चौकड़ी लेखा ना कोए मुकाईआ। सो वक्त सुहञ्जणा आंदा, वेला वक्त नाल मिलाईआ। जिसनूं समझे ना कोए पंडत पांधा, विद्या विच ना कोए चतुराईआ। सब दीआं आसा मनसा पूर

करांदा, पूरन हो के पूरन कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। जन भगतो तुहाडा साथी हो गया सच्चा, सच दयां दृढ़ाईआ। भावें तुसीं आपणा नाता समझो कच्चा, एह कंचन गढ़ दए वड्याईआ। जेहड़ा इक वार बणा ल्या बच्चा, गोदी विच्चों बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। जेहड़े मेरे भगत उहो मेरे रूप दा सच्चा, ते नूर इक्को नज़री आईआ। तुसीं इक दूजे नूं कहिणा अच्छा, निन्दण वाला गुरसिख इक दूजे नूं साहमणे कदे ना आईआ। तुसीं कोई मुसाफ़र नहीं चढ़न वाले उत्ते बस्सां, आए ते उठ जाईआ। तुहाडा साहिब इक समरथा, जो सब दा पिता माईआ। तुहाडा एथे इक ते अग्गे थाँ इक्ट्ठा, विछोड़े वाला राह ना कोए वखाईआ। जे सच पुच्छो ते गोबिन्द दे सीने विच तुहाडा लिख्या पट्टा, चार साहिबज़ादयां दा खून अक्खर रिहा बणाईआ। वेख्यो सतिगुरु दवारे कोए ना बणयो नाम कटा, जगत जीवण कम्म किसे ना आईआ। तुसां ते सिर्फ़ इक्को गाउणा सोहँ टप्पा, बाकी दो जहान दे टापूआं तों आपे पार कराईआ। क्यों तुहाडा पूरन परमेश्वर ते परमेश्वर नूं पहलां पप्पा, पप्पे दा पारब्रह्म ब्रह्म तुहाडे विच रलाईआ। आप भुक्खा रिहा ते तुहानूं देण आ गया गफ्फा, दुखियां दुःख दर्द गंवाईआ। एस दा इहो तुहानूं नफ़ा, अग्गे बिना सतिगुर तों लोकमात फेरा कोए ना पाईआ। पिच्छे गुस्से विच तुहानूं हो गया ख़फ़ा, अज्ज तों ओह वी लेखा दिता गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतो अज्ज तों तुहानूं कदे कहिणा नहीं बचन सख्त, सद प्रेम नाल बुलाईआ। याद रखयो एह वक्त, जुग चौकड़ी फेर हथ्थ किसे ना आईआ। बिना प्रभू तों किसे नहीं कहिणा भगत, कोझे कमल्यां गले ना कोए लगाईआ। तुसीं उत्ते फ़र्श मैं मालक उत्ते अर्श, अन्तर अमृत मेघ बरस तुहाडी मैल धुआईआ। क्यों, गुर अवतार पैग़म्बरां नूं वेख के मैनूं तुहाडे उत्ते आ गया तरस, चार जुग तुहाडा लेख ना कोए मुकाईआ। जेहड़ा आया ओह करके गया मेरे अग्गे अर्ज़, तेरे तेरी झोली पाईआ। जिस दे तुसीं ते ओसे नूं आया दर्द, दर्दीआं दुःख वंडाईआ। किशन सिंहां याद रखीं पन्द्रां कत्तक नूं सतिगुर दी बग़ल विच देणी करद, खब्बे हथ्थ नाल खब्बी बग़ल टिकाईआ। एसे करके तैनूं अज्ज आउणा प्या परत, होर दुःख ना कोए सताईआ। जन भगतो खेल होणा असचरज, छब्बी पोह वड्याईआ। इक्की बीबीआं ते इक्की होणे मर्द, वस्त्र सोहणे तन सजाईआ। घुट्टने टेके होण उत्ते फ़र्श, आहमो साहमणे सोभा पाईआ। नैण सतिगुर चरण करदे होण दरस, ज़िमीं उत्ते टकाईआ। हथ्थीं फड़े होण तीर तरकश, असमान वल्ल कमंद खिचाईआ। पंजे लिखारी आपणे हिरदे अन्दर करन सरच, ध्यान ध्यान विच टिकाईआ। पंज प्यारे जैकारा बोलण गरज, सारी संगत संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

सच करनी कार कमाईआ। पंजां लिखारीआं आपणी जोबन वाली बणाउणी हयाती, आपणा बल धराईआ। वारी वारी आपणा रजिस्टर लाउणा प्रभ दी उत्ते छाती, लाईनां पंज पंज अक्खरां विच रखाईआ। पंजां ने लिख के पट्टां उत्ते मारनी थापी, साहिब सतिगुर सानूं दिती वड्याईआ। साडी निंदिआ करे कोई ना पापी, असीं हरिसंगत दे भैण भाईआ। जेहड़ा साडे साहिब दी मन्ने ना आखी, उहदा दरस कोए ना पाईआ। फेर सारी संगत ने कहिणा साडी इक्को ज़ाती, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। ताली मारनी साडा रूह बुत होया पाकी, दुःख दर्द दिता गंवाईआ। फेर खुशी विच करनी हासी, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। पंजां लिखारीआं पंजां उँगलां दे लाउणे पंजे, हरिसंगत देणा वखाईआ। छब्बी पोह तों बाद इक्की दिन असीं सौणा नहीं उत्ते मंजे, सेज सुहञ्जणी धरन धरत सुहाईआ। एह लेखा द्वापर विच दस्सया सी संजे, दो जहानां अक्ख खुल्हाईआ। जिस वेले जगत नाम मुहाणे रहे ना वञ्झे, खेटा पार ना कोए लँघाईआ। सतिगुर शब्द धार कोई ना जम्मे, धुर दा हुक्म ना कोए सुणाईआ। चार जुग दे शास्त्र होणे निकम्मे, भार सके ना कोए उठाईआ। मोह रहिणा नहीं किसे पंम्मे, पारब्रह्म आपणी कार कमाईआ। एह खेल होणा प्रभू दी धार प्रभू दे समें, जिस नूं सके ना कोए बदलाईआ। गुरमुखो बड़े खेल होणे नवें, नवें जुग दी नवीं रीत देणी चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

२१ २२

विष्नूं कहे वाहवा देण वाले लारे, तेरी वडी वड्याईआ। असीं वी कढदे रहे हाढ़े, तूं इशारयां नाल परचाईआ। कदी आह लँघ जाण दयो जुग चारे, अग्गे जुगां विच होर दयां वड्याईआ। असीं दिनो दिन हुन्दे गए नकारे, आपणा बल ना कोए रखाईआ। भुक्ख्यां भुक्ख ना कोए निवारे, दुखियां दुःख ना कोए मिटाईआ। अन्त हो गए तेरे सहारे, साडी चले ना कोए चतुराईआ। जिस दिन गोबिन्द दे पेट होया सी अफारे, उस दिन विष्न ब्रह्मा शिव सारे रहे कुरलाईआ। कहिण वेखो खेल निरँकारे, निरगुण सरगुण भरम भुलाईआ। फेर असां हौसले छड दिते सारे, सब कुछ तेरी झोली पाईआ। तूं बड़ा बेदर्दी जो आपणा आप साड़ फूक के फेर आ गया दुबारे, दोहरी आपणी कार कमाईआ। तेरे खेल सदा सद न्यारे, निराकार तेरी वड्याईआ। विष्नूं कहे प्रभू तेरे चरण निमस्कारे, नमो नमो नमो सीस झुकाईआ। पर याद रखयो सवेरे पंज गुरमुख प्रशादा करना त्यारे, नहा धो के आपणी सेव कमाईआ। फेर भोग लगावे आ के विच दरबारे, सतिगुर बैठे आसण लाईआ। एह सारा सवेरे साढे अट्ठ वजे होवे विवहारे, विवहारी आपणी कार कमाईआ। फेर तुसीं खुशीआं विच रहो सारे, सारी उमर तुहाडा साथ ना कोए तुड़ाईआ। सतिगुर दे घर विच इक्को जिहे व्याहे कुँवारे, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा हुक्म सदा जुग चारे, जुग चौकड़ी चले तेरी रज़ाईआ।

✪ ६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ सवेरे साढे अठ्ठ वजे हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

विष्नूं कहे दीन दुनी दी बदल प्रकृती, परम पुरख दया कमाईआ। अन्तर धार बदल दे बिरती, जेहड़ी बिपर सुदामे मंग मंगाईआ। यकसूई कर दे सुरती निरती, निराकार हो सहाईआ। तेरयां भगतां तेरी सेवा जाए ना बिरथी, जो प्रेम प्यार विच कमाईआ। लहिणा देणा पूरा कर पृथ्मी प्रिथी, पृथ्म आपणा रंग रंगाईआ। दु:ख भुक्ख कट सृष्टी, श्रेष्ट आपणा नाम वड्याईआ। निरगुण नूर नज़र आ इष्टी, इष्ट देव आत्मा परमात्मा सोभा पाईआ। आत्म धार बण गृहस्ती, गृह मन्दिर सेज सिंघासण सोभा पाईआ। तेरयां भगतां लोड़ रहे ना स्वर्ग बहिश्ती, चरण कँवल दे सरनाईआ। सति धार जणा चार वरन सिख दी, सिख्या सिख इक उपजाईआ। जेहड़ी कलम चार जुग दे शास्त्र रही लिखदी, सो कलमा लेखा सब दा पूर कराईआ। तेरी पूजा रह जाए इक दी, एकँकार तेरी वड्याईआ। सदा बाज़ी होवे जित्त दी, हार हर हिरदिउँ देणी कढ्ढाईआ। धूढ़ मिले परम पुरख पुरखोतम पित दी, पतिपरमेश्वर तेरी इक सरनाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा तेरी नूर जोत होवे दिसदी, अंध अंधेर रहे ना राईआ। ममता कूड़ रहे ना विसदी, विषे विकारां डेरा ढाहीआ। प्रभू आसा पूरी कर दे गुरमुख जिस जिस दी, जिस तरह पिता पूत गोद सुहाईआ। तेरी याद सदा रहे नित दी, नवित आपणी कार कमाईआ। गुंझल रहे ना काया विच दी, विचला पड़दा देणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। विष्नूं कहे तेरा आदि जुगादि भण्डारा, वरभण्ड तेरी चतुराईआ। मैं सेवक सेवादारा, सेव स्वामी सच कमाईआ। जुग चौकड़ी खेल वेख्या सारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पन्ध मुकाईआ। मैं भरपूर कर ना सक्या संसारा, संसारी मेरी दए गवाहीआ। शंकर उँगलां नाल बण लिखारा, लेखा मैनूं रिहा समझाईआ। जिस वेले निरगुण धार पुरख अकाल आया दुबारा, दोहरी आपणी कार कमाईआ। सच दा मार्ग दस्से अपारा, अपार अगम्म अथाहीआ। सतिजुग सच सच करे पसारा, पसर पसारी वेख वखाईआ। सब नूं इक्को जेहा दए अधारा, आदम इक्को रंग रंगाईआ। चाकर सेवक बण पनिहारा, पारब्रह्म आपणी सेव कमाईआ। दीन दुनी विच वेखे विगसे वेखणहारा, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। सब दा सांझा कर प्यारा, प्रेम प्रीती नाल जुड़ाईआ। ग़रीब निमाणयां लेखे ला अहारा, भक्ख भोज लहिज फहिज इक्को

रंग रंगाईआ। सतिजुग सति चलदी रहे धारा, धर्म दी धार इक वखाईआ। जिस वेले छब्बी पोह सतारां हाढ़ दा आए त्यौहारा, साल बसाला इक्को हुक्म वरताईआ। पंज गुरमुख सदा त्यार करन भण्डारा, सेवा सति सच कमाईआ। अन्दर करे ना कोए हँकारा, हउमे विच ना कोए रखाईआ। लंगर पकाउण तों पहलां पंज वेर जरूर लाउणा जैकारा, बिन जैकारयों चपाती हथ्थ ना कोए सुहाईआ। ख़त्म होण तों बाद फेर एहो हुक्म दुबारा, जै जैकार देणा सुणाईआ। अज्ज तों एह भुल्लणा नहीं विवहारा, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। उस वेले ज़रूर हाज़र होवे निरँकारा, निरगुण आपणी दया कमाईआ। जन भगतो तुहाडा निखुट्ट ना जाए भण्डारा, भरपूर घर घर दए वखाईआ। हरि भगतां वेखे सच्चा दवारा, सच सिंघासण सोभा पाईआ। जिथ्थे निरगुण धार बैठा ओह चौवीवां अवतारा, जिस नूं गुर अवतार पैग़म्बर सीस निवाईआ। उस दा शब्द शब्दी शब्द इशारा, बिना शब्द तों दूजा राग ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। विष्नूं कहे साहिब सतिगुर दा जिथ्थे चलदा होवे लंगर, लांगरी सेवा प्रेम कमाईआ। हिरदे अन्दरों गावण चार मंगल, खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। कोई गंदी रखे ना उँगल, साफ़ सुथरे सोभा पाईआ। सतिगुर दे लंगर दा कोई मारे कदे ना चुग़ली चुग़ल, माढ़ा कहि ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। जो लंगर विच होवण सेवादार, सेवा प्रेम नाल कमाईआ। मुक्खों कुबचन सके ना कोए उच्चार, रसना फिक ना कोए रखाईआ। एह सब तों वडा विवहार, जिस नूं गुर अवतार पैग़म्बर थोड़ा थोड़ा थोड़ा करके गए चलाईआ। विष्नूं जोड़ के हथ्थ करे निमस्कार, सीस बन्दना विच निवाईआ। एह खेल सच्ची सरकार, हरि निरँकार आप वखाईआ। सतिजुग विच सति धर्म दा सति होणा विहार, विहारी आपणा हुक्म दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। विष्नूं कहे वेखो मेरे साहिब दा लगदा भोग, भोजन बिना भजन बन्दगी तों पार कराईआ। सब तों वड्डा एह योग, जिस दी जुगीशर बैठे ओट रखाईआ। एस दी सब तों वक्खरी मौज, जो मौजूद हो के दए प्रगटाईआ। जिस नूं लभ्भण चौदां लोक, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। जन भगतो सब नूं मिले ओह मोख, जिहनूं अटल पदवी कहि के सारे गाईआ। जिस गृह विच्चों इक वार छकया उन्हां दे देवे सन्तोख, सति धीर नाल मिलाईआ। भावें भगती करो जन्म कोटी कोट, बिना प्रभ किरपा मंज़ल चढ़न कोए ना पाईआ। तुहाडा प्रेम सतिगुर दा प्यार अतोट, शब्द दी धार खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी धार प्रगटाईआ। विष्नूं कहे वेखो साहिब दा सच पकवान, पक्की सब नूं दयां कराईआ। जिस गृह

विच्चों छक ल्या इक वार विच जहान, शक सहिंसा अग्गे रहे ना राईआ। जन भगतो मथ्थे टेकण नालों लंगर दी सेवा महान, महिमा अकथ कथ ना कोए दृढ़ाईआ। एह रीती सब तों वक्खरी दस्सी श्री भगवान, भाग हिस्सा आपणा तुहाडे विच पाईआ। थोड़ा जेहा इशारा दिता कृष्न काहन, सुदामे कन्न विच सुणाईआ। दलिद्रीआ जिस वेले आया मेरा मेहरवान, मेहरवान मेहरवान फेरा पाईआ। ग़रीब निमाणे कोझे कमले पार लँघाए विच जहान, जहालत विच अदालत आपणी इक लगाईआ। उस ने सुदामयां नाम दस्सणा ""सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,"" जिस नूं सुण के गुरु अवतार पैग़म्बर सारे सीस निवाण, बहुते त्रैलोकी नाथां नूं एह मिल्या नहीं दान, राम दी राम ने झोली ना कदे भराईआ। पैग़म्बरां नूं दस्स के शरअ वाला ईमान, अमल विच दिता फसाईआ। गुरुआं नूं दे के गद्दी दा दान, शब्दां दी सिफ्त विच लगाईआ। फेर संदेशा दे के इक जवान, गोबिन्द गोबिन्द आप प्रगटाईआ। जिस वेले आवां आप हो के सवाधान, सो स्वामी आपणा वेस वटाईआ। सतिजुग दा मार्ग फेर दस्सां महान, महिमा अकथ अकथ दृढ़ाईआ। चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश दीन मज़्हब ज़ात पात ऊच नीच राउ रंक शाह हकीर सतिगुर फ़कीर सब दा इक्को कर पकवान, पक्का नाता सब दे नाल जुड़ाईआ। जन भगतो गुरमुखो गुरसिखो वेखो किस बिध दे नाल तुहाडा बणाया विधान, विद्या समझ सके ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। विष्नूं कहे जन भगतो जम्मू नूं नौ छटांक नाल लै के जाणी मिशरी, मिसल गोबिन्द दए दुहराईआ। क्यों कलयुग दी धार चढ़ी सिखरी, सिख़र दी चोट वेख वखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां दी लौहणी बेफ़िकरी, फ़िकरा आपणा नाम सुणाईआ। जेहड़ी काहन खेल कीती ग़रीबां नाल मित्री, मित्र प्यारा सब दा नज़री आईआ। जेहड़ी पूजा हुन्दी रही जल धारा विच पित्री, सो पुरख अकाल पिछली रीती सारी दए मिटाईआ। तुहाडी आत्मा तुहाडे विच्चों नितरी, साफ़ सुथरी सोभा पाईआ। वेख्यो प्रभ दा प्यार ना समझयो जगत हट्ट वाली विकरी, पैसे वाली कीमत ना कोए रखाईआ। जन भगतो कलयुग दी धार अन्त लहिणा देणा मुकणा जगत मन्दिर छित्तरो छित्तरी, छत्ती जुग दा मालक नानक दए गवाहीआ। किसे वाच नहीं सकणी पत्री, पत्रका सके ना कोए समझाईआ। किसे समझ नहीं आउणी नाड़ बहत्तरी, बिना बहत्तर भगत जनां मिले ना कोए वड्याईआ। मुख विच्चों धाह लै सप्त ऋषीआं विच्चों वास्ता पाया अत्री, अतीत आपणा ध्यान लगाईआ। बिना प्रभू तों किसे झगड़ा नहीं मेटणा शूद्र वैश ब्राह्मण खत्री, झगड़ा कूड़ ना कोए मिटाईआ। जन भगतो विष्नूं कहे छब्बी पोह नूं सज्जे हथ्थ नाल सब ने बन्नृणी रखड़ी, सारयां दा नाता इक्को वार इक्को घर दए बणाईआ। अमीर चन्द ने पित्तल दी ल्याउणी तकड़ी, पासकू थोड़ा जेहा रखाईआ। नाल विछाउण वाली

ल्याउणी टाट दी तपड़ी, सवा गज़ लम्बाई चौड़ाईआ। इक लिखण वास्ते ल्याउणी फटड़ी, कीमत पचवंजे पैसे समझाईआ। इक कोल निक्की जेही बणाउणी टप्परी, सिंघासण लागे सोभा पाईआ। इक सूत दी रखणी अट्टड़ी, तेज कौर दुआबे विच्चों दए पहुंचाईआ। एह खेल प्रभू ने दस्सणी अच्छड़ी, अच्छी तरह वखाईआ। कोई शरीणी ज़ात साहिब सतिगुर दे चरण तों रहे ना पछड़ी, जो आ के सीस निवाईआ। ओह आत्मा कहे मैं उस परमात्मा कोल अप्पड़ी, जिथ्थे अनपढ़ां मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे गृह नक्षत्री, पर्दा ओहला आप उठाईआ।

✪ १२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ ठेकेदार ठाकर सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ✪

साहिब सतिगुर शब्द बहादर, सूरबीर अख्वाईआ। आदि जुगादी करनी दा करता कादर, कदीम दा लहिणा वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी निर्मल कर्म करे उजागर, जगत जीवण जुगत दए वड्याईआ। पार कराए जन्म कर्म दा डूँघा सागर, साहिब स्वामी आपणी दया कमाईआ। दो जहान श्री भगवान दरगाह साची देवे आदर, आदर्श आपणा इक रखाईआ। ठाकर सिँघ नाल मिला के सिँघ ठाकर, ठाकर सिँघ तिन्नां इका दर वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। तिन्ने ठाकर सिँघ तिन्ने रंग दे पाउण वस्त्र, चिट्टा सूहा पीला वेस वटाईआ। पिठ उत्ते बध्धा होवे इक इक शस्त्र, शरअ दी धार ना कोए रखाईआ। सच प्रेम दी अन्तर होवे हसरत, हासल ज़रब ना कोए वखाईआ। जीवण ज़िंदगी प्रभ दे चरण होवे बसरत, विछड़े मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। तिन्ने ठाकर सिँघ छब्बी पोह नूं सेवा करनी ख़ास, ख़ालस आपणा आप बणाईआ। नौ रंग दा साहिब सतिगुर दा बणाउणा लिबास, प्रेम प्रीती नाल रखाईआ। जिस दा रंग होवे वांग आकाश, नौ सितारे वक्ख वक्ख वक्ख वंड वंडाईआ। चन्द दी पूरी करनी आस, सूर्या आपणी छड्डे छवाईआ। मण्डल दी मण्डप वाली होवे रास, रस्ता रहिबर इक वखाईआ। सदी चौधवीं मिले शाबाश, शरअ दा बन्धन पूर कराईआ। वक्खरी निराली होवे पोशाक, पुश्त नौ रंग नाल लिखाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लिख्या होवे ख़ास, ख़ालस सब नूं दए जणाईआ। शंकर दी मूर्ती नज़री आवे नाल वांग कैलाश, पर्बत दा रूप सोभा पाईआ। ब्रह्मा चारे मुख खोल्ह चारों कुण्ट रखे आस, आसा आपणी इक वधाईआ। विष्नूं वस्त भण्डार उठाए साथ, थाल तली उत्ते टिकाईआ। इन्द्र जल दा लै के ग्लास, खवाज़े

नाल मिल के सीस निवाईआ। सब दे उत्ते पूरन दा पूरन होए प्रकाश, जोती जोत डगमगाईआ। ठाकरां दा ठाकर उत्ते होए विश्वाश, विषयां दा विषा गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणा हुक्म वरताईआ। छब्बी पोह कहे नौ रंग दे नौ होण पथ्थर, पंज चार सोभा पाईआ। नाल गोबिन्द दा होवे सथ्थर, यारड़ा सेज हंढाईआ। सोहँ लिख्या होवे अक्खर, हाहा सस्से विच छुपाईआ। बाहर बणया होवे चक्र, सुदर्शन सोहणा रूप दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा दए बणाईआ। छब्बी पोह कहे ठाकर सिँघ तिन्नां ठाकरां होणा मिलाप, पूरब लेखा लेख जणाईआ। जिन्नां दा दुरबाशे नाल साथ, ऋषीआं दी रेख फोल फुलाईआ। ओह सारे इक्ट्ठे करने आप, आप आपणी दया कमाईआ। तिन्नां कोलों करा के इक जाप, जगजीवण दाता दए वड्याईआ। त्रैलोकी तों बाहर जिन्नां दा साथ, तिन्नां दा त्रैगुण डेरा ढाहीआ। दुरबाशे दी मंग कृष्न दा वाक, काहनां दा काहन पूर कराईआ। लहिणा देणा चुकाए साख्यात, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ।

✪ १३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ संगत दे नवित गुरदास पुर ✪

जन भगतो तुहाडी लेखे लाई जन्म दी फ़कीरी, फ़िकरा इक्को नाम सुणाईआ। जीवण मरन दी कट दलगीरी, मंज़ल इक्को घर वखाईआ। तुहाडी ग़रीबी विच्चों बदल गई अमीरी, शहिनशाह दे सुत हो के घर शहिनशाह सोभा पाईआ। प्रभ दा खेल बेनज़ीरी, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जो याद कीता भगत धार धार कबीरी, काअबे तों परे अक्ख उठाईआ। निगाह मारी लालो दे कोल आउणा नानक दा पातशाह अख़ीरी, आख़र आपणी खेल खिलाईआ। जिस दा मेल ओस दी किरपा नाल होणा तकदीरी, तकदीर सब दी दए बदलाईआ। छब्बी पोह नूं भगत भगवान इक्को रंग देणा शहिनशाह हकीरी, पातशाह वज़ीरी माण वड्याईआ। सर्ब संगत सताई इंच दी ल्याउणी ओह ज़ंजीरी, जेहड़ी गोबिन्द ने इक्की साल दी आयू विच आपणे गल छुहाईआ। जिस दी धार हरिगोबिन्द ने दस्सी मीरी पीरी, पीर पीरां सोभा पाईआ। नाल दस्तार होवे कश्मीरी, जम्मू वाले वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा दए मुकाईआ। जन भगतो तुसीं आए भज्जे दौड़े, प्रेम प्यार विच वड्याईआ। मंज़ल ओस बौहड़े, जिथ्थे मिले धुरदरगाहीआ। तुहानूं चढ़ा के जाए आपणे पौड़े, अध विच ना कोए अटकाईआ। मेरे नाल तुहाडे बणाए जोड़े, जोड़ी धुरदरगाहीआ। तुहाडी काया

फल ना होवण कौड़े, मिट्ठा रस सब नूं दिता चखाईआ। जिस नूं चार जुग दे शास्त्र कहिंदे ब्राह्मण गौड़े, इहो तुहाडा पालक तुहाडा पिता माईआ। जेहड़ा आदि अन्त जीवत मरन अन्तिम बौहड़े, आपणे गले लगाईआ। वेख्यो आपणे मन ना करयो कौड़े, अन्दर वज्जदी रहे वधाईआ। तुहाडे जन्म जुग चौकड़ी साहिब सतिगुर नाल सदा नवें नकोरे, चुरासी विच ना कोए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। जन भगतो तुहाडा आउणा होया मंज़ूर, लेखा सब दा लेखे पाईआ। दरस करके इक हज़ूर, हाज़री आपणी लैणी लगाईआ। तुहाडा साहिब बड़ा मशकूर, खुशी विच आपणा रंग रंगाईआ। तुसीं समझयो ना कदे दूर, हर हिरदे बैठा डेरा लाईआ। चुरासी विच्चों नितरे वांग कपूर, सुगंधी धुर दा नाम भराईआ। तुहाडी प्रेम मुहब्बत वाली धार भरपूर, भाण्डा भरम भाउ भनाईआ। तुसीं हुण खुशी नाल घरां नूं जाणा ज़रूर, याद प्रभ दी नाल रखाईआ। सब दे तन माटी वजूद मस्तक ला के जावां ओह धूढ़, जिस दे नाल दुरमति मैल रहे ना राईआ। सब दी आसा मनसा करके पूर, देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत उधारना जिस दा दस्तूर, दरस दे के दरस कर के दरस दा दरस तरस विच रखाईआ।

२७ २७

२२ २२

✪ १३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ तेज भान दे घर सई कैंप जम्मू ✪

तेरां सौ सतासी रिषीओ आह लओ सगण छटांक नौं, बावन दी आसा नाल मिलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग ल्या भौं, भावना सब दी खोज खुजाईआ। सब ने तिन्न जुग ल्या सौं, आलस निंद्रा अन्त लैणा चुकाईआ। लेखा रिहा ना मैं हउँ, हँ हंगता दए तुड़ाईआ। जुग जन्म दे विछड़े पकड़े बाहों, पारब्रह्म आपणी दया कमाईआ। कलयुग अन्तिम करे न्यायों, न्याँकार इक अख्वाईआ। हरिजन कदे ना भुल्ले राहों, रस्ता बावस्ता आपणे नाल रखाईआ। पुरख अकाला बणके पिता मांओं, पूत सपूता गोद टिकाईआ। वक्त सुहञ्जणा वेखो नाल चाउ, चाउ घनेरा इक समझाईआ। साचा ढोला धुर दा गाओ, गहर गम्भीर होए सहाईआ। विछोड़ा होए ना धुरदरगाहो, दरगाह साची मेल मिलाईआ। फड़ के हँस बणाए कांउँ, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। सच साहिब दे लागे पाउँ, पारब्रह्म सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जो शाहो भूप वड शाहो, शहिनशाह शाह इक अख्वाईआ। तिस स्वामी बलि बलि जाओ, जो दो जहानां लए तराईआ। निथाव्याँ देवणहारा थांउँ, थान थनंतर इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी

कार कमाईआ। मिसरी कहे मैं लेखा जाणा पंडत मिसर, मैनूं विद्या विच भटकाईआ। बावन दा लहिणा गया ना विसर, याद इक्को इक सताईआ। जिस संदेशा दिता वेख के चोटी सिखर, सिखर चढ़ के खोज खुजाईआ। जिस वेले कलयुग चेला गुरु रिहा ना मित्र, सज्जण मित्र ना कोए अख्वाईआ। सृष्टी दृष्टी भरे चिक्कड़, कीचड़ भरी होवे लोकाईआ। चुरासी विच्चों सके कोई ना निकल, आवण जावण फंद ना कोए कटाईआ। सृष्टी धार होवे पित्तल, पतिपरमेश्वर सीस ना कोए निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करनी कार कमाईआ। मिसरी कहे मैं देवां आपणी मिसाल, मिसरा सके ना कोए समझाईआ। जिस वेले बावन अग्गे छोटी कन्या रखया थाल, वस्त वस्त विच रखाईआ। नैण रो के किहा बाल, बाली बुध विच जणाईआ। कुछ दस्स अगला हाल, हालत अगली दे जणाईआ। बावन हस्स के किहा कलयुग खेल अन्त महान, महिमा सिफ्त ना कोए सालाहीआ। सखीआँ दा दिसे कोई ना काहन, सीता सुरत राम ना कोए प्रनाईआ। पैग़म्बर दिसे ना कोए निशान, सुअम्बर सच ना कोए जणाईआ। गुरु देवे ना कोए ज्ञान, सतिगुर सति ना कोए मिलाईआ। ओस वेले प्रगट होवे श्री भगवान, हरि करता धुरदरगाहीआ। जेहड़ा तेरां सौ सतासी ऋषीआं खाधा पकवान, कच्चा पक्का पेट टिकाईआ। सारे खा के खुशी मनाण, चल्लण चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। मिसरी कहे जिस वेले रिषी आए कोल, बावन वल्ल ध्यान लगाईआ। बावन प्या बोल, की मिल्या बेपरवाहीआ। सारे ढिड्ड वजाण वांग ढोल, हथ्थ हथ्थ नाल मिलाईआ। बलि भण्डारा दिता खोल्ह, ते रिषी मुनी दिते रजाईआ। बिरधा तूं की करें मखौल, मैनूं समझ कोए ना आईआ। ओस हस्स के किहा आह वेखो आपणा तोल, मासा रत्ती ना कोए चढ़ाईआ। अन्दर निगाह मारो सब दे अन्दर पोल, प्रभ दा दरस कोए ना पाईआ। तुहाडा बणया ना कोए विचोल, विचला भेव ना कोए खुल्हाईआ। जंगलां विच तुहाडे नाल वज्जदा रोल, राम मिलण कोए ना पाईआ। तुसीं सर्ब अजे अनभोल, भाण्डा भरम ना कोए भनाईआ। की तुहाडी वस्त कोई एस वेले पई कोल, मैनूं दयो वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। बावन किहा की बलि दवारयों मिल्या सगन, सगला दयो जणाईआ। किस प्यार विच होवे मग्न, मस्ती नाम चढ़ाईआ। किस बिध मिटाओ अग्न, अग्नी तत जलाईआ। किस स्वामी मिलो सज्जण, मेला सहिज सुभाईआ। किस लेखे लाओ बदन, आपणा आप गंवाईआ। किस प्यार दी चाढ़ो रंगण, दुरमति मैल धुआईआ। क्यों पिन्डियों होए नग्न, क्यों धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। क्यों नहीं दीपक लग्गे जगण, अंध अंधेर ना कोए मिटाईआ। क्यों मेरे कोलों लग्गे संगण, मैनूं दयो समझाईआ। सारे

बोलण लग्गे बचन, साडे नेत्र नैण नैण शरमाईआ। साडे अन्दर नाद ना वज्जण, धुनी नाद ना कोए अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सारे कहिण साडे ख़ाली हथ्थ, हथेली उत्ते ना कुझ टिकाईआ। ना मिल्या पुरख समरथ, नेत्र दरस कोए ना पाईआ। निज नेत्र खुल्ही ना अक्ख, लोचन मिले ना कोए वड्याईआ। रसना नाल ना होवे जस, सिफ्तां विच सालाहीआ। जंगलां विच करके हठ, बैठे डेरा लाईआ। बल संदेशे उत्ते आए नठ्ठ, भज्जे वाहो दाहीआ। अस्वमेध यग्ग दा वेख इक्ठ, आपणी लई अंगड़ाईआ। खाधा पीता झट्ट, दक्षिणा हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। हुण पिच्छे चले हट, आपणा मुख भवाईआ। बावन ने रूप बदलया झट्ट, सरूप अनूप दरसाईआ। सारयां दे हिरदे लाया फट्ट, तीर अणयाला इक लगाईआ। जां तक्कयां ते सब दे वसे घट घट, बुढ्ढा बैठा डेरा लाईआ। जां इशारा करके झट्ट, जोत जगे लट लट, नूर नुराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। रिषी वेख होए हैरान, हैरानी अन्दर आपणा आप प्रगटाईआ। ब्राह्मण बड़ा शैतान, सानूं रिहा भरमाईआ। कुछ बोले ना नाल ज़बान, इशारे सिर नाल दृढ़ाईआ। साडे वल्ल ना करे ध्यान, उंगलां ज़िमीं उत्ते घसाईआ। साडे आवाज़ दिती विच कान, धुन दिती उपजाईआ। झट तीर मारया बाण, सोई सुरत उठाईआ। झट दे के नूर महान, अन्दर कीती रुशनाईआ। मुक्खों लग्गे गाण, तेरी बेपरवाहीआ। बावन ने आपणी गोदड़ी विच्चों कढ के दान, दाता हो के दिता वरताईआ। आह लओ नौ कूजे तुहाडा नौ खण्ड पृथ्मी दा पीण खाण, तृष्ना जगत वाली गंवाईआ। इक हुक्म दिता फ़रमान, फुरने विच दृढ़ाईआ। त्रेता द्वापर प्रभू दे घर रहिणा महिमान, सचखण्ड साचे डेरा लाईआ। कलयुग अन्त फेर बणना इन्सान, पंजां ततां वाला वेस वटाईआ। प्रगट होवे श्री भगवान, पारब्रह्म आपणा फेरा पाईआ। तुहाडी चुरासी विच्चों करे पहचान, बेपहचान आप जगाईआ। मिठ्ठा रस दे के पीण खाण, तुहाडी तृष्ना दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। रिषीआं किहा एह की सानूं दिती दात, सच दे समझाईआ। बावन किहा एह मेरी सौग़ात, जेहड़ी जुग जुग भगतां आप वरताईआ। जिस वेले कलयुग होई अंधेरी रात, एसे नाल तुहाडा नाता लए जुड़ाईआ। तुसीं ओस दे होए ओह तुहाडा बणया साक, सगन आपणा आप पवाईआ। तुहाडी इक्को करके ज़ात, जन्म जन्म दा गेड़ कटाईआ। एह मेरा मुख वाक, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। पूरा होवे पृथ्मी आकाश, शहादत गगन दए भुगताईआ। तुसां इक ते रखणा विश्वाश, जो विश्व दा लहिणा दए चुकाईआ। तुहाडा नूर कर प्रकाश, जोत आपणी डगमगाईआ। छोटी नंन्ही बच्ची दा होवे साथ, जन्म कर्म

दा लेखा नाल रखाईआ। दविन्दर सुनहरी रंग दी पहन पौशाक, छब्बी पोह नूं तुहाडा साथ बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। मिसरी कहे रिषीओ छब्बी पोह वक्त सुहाउणा, सोहणी खुशी बणाईआ। इक इक कूजा सब ने नाल ल्याउणा, ख़ाली विच्चों ना कोए जणाईआ। दूजा धार दा धर्म रखाउणा, दर दर मिले वड्याईआ। साहिब सतिगुर भेंट चढ़ाउणा, वक्त नौ दस सुहाईआ। इक इक दा रंग रंगाउणा, माया ममता मोह चुकाईआ। अगला लेखा फेर समझाउणा, पारब्रह्म पड़दा दए उठाईआ। हुण सब नूं एह प्रशाद करके वरताउणा, छोटा मोटा हिस्सा सब दी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दा नगर साचा इक सुहाउणा, सोहणा आपणा हुक्म वरताईआ।

३०
२२

✪ १४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ चेला सिँघ दे घर सई कैंप ✪

रिषीओ छब्बी पोह नूं लै के आउणी निशानी, निशाना पिछला नाल मिलाईआ। तुहाडी लेखे लग्गे भगती दी कुरबानी, भगवन आपणी दया कमाईआ। बावन धार लिखी होवे पेशानी, मस्तक सोभा पाईआ। सब दी होवे तरल जवानी, बिरध बाल इक्को रंग समाईआ। साहिब सतिगुर जाण जाणी, जानणहार वेख वखाईआ। इक कलम ल्याउणी नाल कानी, कायनात वेखे थाउँ थाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। रिषीओ मस्तक लिखे होण तिन्न अक्खर, बावन सोभा पाईआ। इक यारड़े दा होवे सथ्थर, सेज साढे तिन्न हथ्थ वड्याईआ। इक होवे नाल गोबिन्द पत्र, ताबयादारी जिस दे विच दए समझाईआ। ढाई रतीआं ल्याउणा अतर, जेहड़ा बलि बावन भेंट कराईआ। अन्तर पढ़ना सोहँ मन्त्र, रसना जेहवा ना कोए हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। रिषीओ इक ल्याउणा कुण्डल, कुण्डलीआं पिछलीआं वेख वखाईआ। जिस विच ढाई वार पए गुंझल, ढाई कदम दा लेख चुकाईआ। सोहणा रूप होवे सुन्दर, नैण बल अक्ख उठाईआ। नाल सार होवे कुंदन, कंचन वड वड्याईआ। लेखा जाणे नैण मूधन, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा घर वसाईआ। रिषीओ बावन धार मस्तक बद्धी होवे पट्टी, रंग चिट्टा सोभा पाईआ। दोहां सिरयां तों तिक्खी होवे कटी, नोकदार वखाईआ। सब ने इक्को जेही करके आउणा मती, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। केसर कोल रखणा इक इक रती, जो प्रभ दे अग्गे भेंटा देणी कराईआ। इक कच्ची रूई दी रखणी वट्टी, नौ इंच विच लम्बाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, बख्शणहार इक सरनाईआ। रिषीओ नौआं ने मस्तक ला के आउणा धूढ़ी, लाईनां तिन्न तिन्न बणाईआ। पिच्छे गिच्ची विच कीती होवे जूड़ी, सीस पग्ग ना कोए रखाईआ। मति अन्दर होवे ना मूढ़ी, मूर्खां कोलों पल्ला छुडाईआ। सवा सेर कुट्ट के ल्याउणी चूरी, चार घर मिल के लैण बणाईआ। मेरी रखणी विच हज़ूरी, हाज़र हो के सीस निवाईआ। मुक्खों कहिणा भुक्ख्यां दी भुक्ख करो दूरी, दर्दीआं दर्द मिटाईआ। ग़रीबां माण देणा ज़रूरी, एह तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। रिषीओ नौ ल्याउणे मणके उह, जेहड़े बावन तुहानूं दिते वखाईआ। जिहनां दे आर पार होवे लो, लोयण इक नाल तकाईआ। एह लेखा छब्बी पोह, पारब्रह्म प्रभ दए वड्याईआ। तुहाडे अन्दर रूप वसाउणा सो, हँ ब्रह्म आपणा घर बणाईआ। जगत नाता तोड़ के मोह, मुहब्बत इक्को नाल रखाईआ। चार जुग दे विछड़यां आपणे नाम विच लए प्रोअ, परोहतां दा झगड़ा दए छुडाईआ। इक दे इक रूप जाणा हो, इक दा इक्को घर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। रिषीओ इक इक जेब विच पा के ल्याउणी रस्सी, नौ नौ इंच लम्बाईआ। जेहड़ी बावन तुहानूं धार दस्सी, दहि दिशा ध्यान कराईआ। ओस कहिणा बिना प्रभू तों कोई कटे ना चुरासी चार लख अस्सी, गुर अवतार पैग़म्बर ओसे नूं सीस निवाईआ। सो पुरख अकाला कलयुग अन्त आए समर्थी, साहिब सतिगुर फेरा पाईआ। तुहाडा लेखा मुकावे हथ्थो हथ्थी, ओही निक्की रस्सी दए गवाहीआ। अग्गे प्रेम प्रीती धार होवे पक्की, पकवान खा के भगवान तुहाडा शुकर मनाईआ। नाल आटा ल्याउणा सवा वट्टी, वक्खरा इक्को थाँ बंधाईआ। विच रख के सूत दी अट्टी, तन्द मौली नाल जुड़ाईआ। फेर हिन्दसे लिख के छत्ती, तिन्न छे सोभा पाईआ। एह खेल कमलापती, पतिपरमेश्वर दए जणाईआ। लहिणा देणा सब दा वखावे अक्खीं, आख़र आपणा रंग रंगाईआ। इक गुरमुख प्रेम प्यार मुहब्बत वाली बणी होवे सखी, हार शृंगार जोबनवन्ता आप प्रगटाईआ। सताई पोह नूं एह खेल करनी अच्छी, अच्छी तरह दए जणाईआ। धर्म धार दी गोली सति सरूप विच फिरे नस्सी, नर नरायण आपणा पड़दा लाहीआ। चेला सिँघ ने फड़ी होवे हथ्थ विच लिखी पट्टी, जिस दा लेख होवे पटने वाला धुर दा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। रिषीओ वेख्यो आपणा राह, रस्ता इक वखाईआ। तुहाडा सगण बणे गवाह, शहादत इक भुगताईआ। तिन्नां गुरमुखां मस्तक ला के आउणी स्वाह, छब्बी पोह रैण सोभा पाईआ। मुक्खों कहिणा तूं ही पिता तूं ही माँ, दूजा नज़र कोए ना आईआ। ओम लिख्या होवे उत्ते सज्जी बांह, कपड़ तन ना

कोए छुहाईआ। तिन्नां गुरमुखां हथ्थ विच मूर्ती फड़ी होवे गां, उच्ची कढ्ढ के सब नूं देण वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, लहिणा देणा सब दा वेखे थांउँ थाँ, थान थनंतर हर घट फोल फुलाईआ।

✪ १४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ नंदू शाह दे गृह सई कैंप ✪

ऋषीओ बिना रिशवत तों प्रभ सद्दा, लालच जगत ना कदे वखाईआ। लाल रंग दा गाना सब ने होवे बध्धा, बन्धन अग्गे ना कोए रखाईआ। अन्तिम कहिणा परम पुरख परमात्म लद्धा, हरि दाता धुरदरगाहीआ। जो सच सरनाई लग्गा, लग मात्रा गया गाईआ। पिछला अग्गे संवारया अग्गा, अगला पन्ध मुकाईआ। बावन दा कौल कलयुग अन्तिम कीता नहीं दग़ा, लहिणा सब दा वेख वखाईआ। नाम खुमारी दे के मधा, मधुर धुन आपणा राग सुणाईआ। एह ओह सुहञ्जणी जगह, जिथ्थे सप्त ऋषी बहि के आपणा आसण गए लाईआ। मुक्खों नौ वार किहा साथों होईं ना कदे अलग्गा, वक्ख रहिण कदे ना पाईआ। आपणे प्यार दा देवीं मज़ा, मज़ाक विच ना कोए रखाईआ। सीस आवे कदे ना कज़ा, कत्ल करे ना कोए लोकाईआ। सद चलीए तेरी विच रज़ा, रहमत आपणी देणी कमाईआ। जिस दी समझे ना कोए वजह, वज़ाहत नाल दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सप्तस ऋषीआं कीती अर्ज़ोई, अर्ज़ इक सुणाईआ। तेरे दर बिन तेरी किरपा मिले ना ढोई, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। तेरा नाम दरोही दरोही, चहुं यारां गई सुणाईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम पत सब दी सी खोई, ख़ालस नज़र कोए ना आईआ। ओस वेले मुहब्बत विच आत्मा जाए मोही, मेला मेल ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सप्तस ऋषीआं मुट्ठी लै के राख, नव तन बदन सुहाईआ। मुक्खों दिता आख, आख़र ध्यान लगाईआ। जिस वेले सति धर्म दी रहे कोई ना शाख़, शनाख्त प्रभू ना कोए कराईआ। ओस वेले साहिब सतिगुर आउणा आप, आप आपणा फेरा पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्सणा जाप, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। सच सिंघासण बैठा साख्यात, सति स्वामी सोभा पाईआ। सप्तस ऋषीआं लेख दस्सया ते लेखा बिन कलम दवात, अक्खर अगला नाल वखाईआ। सम्मत शहिनशाही पंज छब्बी पोह दी होणी रात, राती रुतड़ी आप सुहाईआ। जिस वेले नौ रंग दी पहनी पोशाक, नव जोबन रूप बदलाईआ। जन भगतों सब ने मंगणी दात, प्रभ अग्गे झोली ढाहीआ। इक दा इक भेंटा करना

आप, माया ममता माया संग रखाईआ। असीं ओस वेले हाज़र हो के वेखांगे साख्यात, तुहाडे पिच्छे खलो के आपणी अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सच पोशाक दी सति सच भेंटा, इक इक सीस निवाईआ। सतिजुग विच इक दा इक होवे किसे ना बेटा, इक दा इक दए वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां दा रखे चेता, चेतन सब नूं दए कराईआ। एह गोबिन्द दा अन्तिम पुरी अनन्द दा लेखा, गुरमुखां गया जणाईआ। तुसीं मैनूं कहिंदे दस दशमेशा, दहि दिशा दा मालक धुरदरगाहीआ। मेरा पुरख अकाल मेरा नर नरेशा, नर नरायण इक अख्वाईआ। जिस ने खेल करना देश बदेशा, दो जहानां पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी रहे हमेशा, जुग जुग नित नवित आपणा खेल वखाईआ।

✪ १४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ गूढ़ा राम दे गृह सई कैंप जम्मू ✪

३३ ऋषीओ तुहाडी जन्म कर्म दी इक्को रासी, पिछली इक्को झोली पाईआ। इक्को दवार दे बणना वासी, इक्को घर ३३
२२ मिले वड्याईआ। इक्को पूरी करे सब दी आसी, इक्को तृष्ना दए गंवाईआ। इक्को परमेश्वर होवे साथी, दूजा संग ना २२
कोए निभाईआ। जेहड़ी बावन पुश्त पनाह दिती थापी, मेहर निगाह उठाईआ। संदेशा दिता जिस वेले आवे कमलापाती, पतिपरमेश्वर फेरा पाईआ। जन्म कर्म दे तार देवे पापी, पततां करे सफ़ाईआ। सो पूरा करना भविक्ख्त वाकी, वाकिफ़कार हो के खोज खुजाईआ। तुहाडा लहिणा देणा बाकी, बकायदा आपणा खेल वखाईआ। वक्त सुहाउणा सुहञ्जणी राती, छब्बी पोह रंग रंगाईआ। कथा कहाणी लए वाची, वाचक हो के फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आपणी धार दा बण प्रतापी, परत के आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ १४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ शिव सिंघ दे गृह सई कैंप जम्मू ✪

ऋषीओ तिन्नां पैरीं पा के आउणा खड़ावां, दूसर जोड़ा चरण ना कोए छुहाईआ। सच दवारे पुजणा नाल चावां, चाउ घनेरा इक वखाईआ। पुत्रां नाल प्यार करदीआ आउण मावां, रसना बुरा कहि ना कोए सुणाईआ। हउके विच भरे कोई

ना हावा, हाए कर ना कोए सुणाईआ। सब दा भार करना सावां, स्त्री मर्द इक्को रंग रंगाईआ। जन्म कर्म दा खारज होणा दाअवा, लेखा पूरब दए लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता आप अख्वाईआ। रिषीओ सच प्रेम दा जोड़ना रिश्ता, भगत भगत नाल वड्याईआ। कलयुग बदल देणा आहिस्ता आहिस्ता, सतिजुग सच्चा राह दरसाईआ। नेत्र नीर वहावे जबराईल फ़रिश्ता, नेत्र नैण अक्ख उठाईआ। सच त्यौहार लेखे लग्गणा प्रविष्टा, पारब्रह्म प्रभ दए माण वड्याईआ। दीन दुनी दा इक दरसाउणा इष्टा, इष्ट गुरदेव स्वामी सोभा पाईआ। मन रहे ना कोए भृष्टा, दुरमति मैल करे सफ़ाईआ। सब दा पक्का होवे निसचा, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। रिषीओ हर हिरदे देणा इशारा, शब्दी सतिगुर आप जगाईआ। माही वेखणा भगत दवारा, दुआरका वासी सोभा पाईआ। निरगुण धार दए नज़ारा, निरवैर नज़रीआ आप बदलाईआ। कलयुग कूड़ दस्से किनारा, कूड़ी नईया मेटे थांउँ थाँईंआ। सति दा सच होवे जैकारा, जै जैकार करे लोकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल जोती नूर करे चमत्कारा, चमक आपणी इक प्रगटाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप वखाए सच घर बाहरा, गृह मन्दिर इक्को इक वड्याईआ। करे खेल चव्ह्वीआं अवतारा, जिस नूं जन्मे कोई ना माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, सच मार्ग इक प्रगटाईआ। सच दा मार्ग दस्से राह, रहिबर इक्को नज़री आईआ। जिस नूं पैग़म्बरां लाशरीक किहा खुदा, खुदी तक्ब्बर डेरा ढाहीआ। जल्वागर नूर रुशना, आलमीन बेपरवाहीआ। जिस ने कूड़ी सफ़ा देणी उठा, मोह विकारा डेरा ढाहीआ। एका कलमा दए दृढ़ा, कायनात कुन करे पढ़ाईआ। एका सीस जगदीश सजदा दए समझा, साहिब सुल्तान पड़दा लाहीआ। इक्को दर होए अदा, अदाब इक्को इक जणाईआ। वाहिद नूर आप चमका, वायदा पिछला पूर जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, सच दवारे सोभा पाईआ। सच दवारा इक सुहञ्जणा, हरि सोभावन्त सुहाए। करे खेल दर्द दुःख भय भञ्जणा, पारब्रह्म बेपरवाहे। जो आदि जुगादी इक निरँजणा, जोती जाता डगमगाए। चार वरनां बणे सज्जणा, सगला संग रखाए। चरण धूढ़ी देवे मजना, दुरमति मैल धवाए। दीनां मज़्बां दस्से अगम्मी बन्दना, डण्डावत सजदा इक दरसाए। दूजा दर पए ना मंगणा, गृह गृह अलख ना कोए जगाए। सचखण्ड दवारा सब ने मंगणा, जिथ्थे निरगुण नूर जोत रुशनाए। शब्द अनादी नाद वज्जणा, धुन अगम्मी राग अलाहे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा आप उठाए। सच दा पड़दा खोल्हे आप, हरि वड्डा वड वड्याईआ। तूं मेरा मैं तेरा

करना जाप, आत्म परमात्म रंग रंगाईआ। त्रैगुण माया कूड़ कल्पना मेटे पाप, अग्नी अग्ग बुझाईआ। निरगुण सरगुण देवे साथ, सगला संग रखाईआ। जिस दा राह तकदे गए त्रिलोकी नाथ, लोआं पुरीआं बाहर अक्ख उठाईआ। सो सृष्टी दृष्टी मेटे संताप, सहिंसा रोग दए गंवाईआ। निरगुण धार प्रगट होवे लोकमात, धरनी धरत धवल करे रुशनाईआ। भगत सुहेले खोल्ह जाग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। दीन दुनी दा बदल समाज, समग्री इक्को इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पतित पापीआं करके पाक, पुनीत आपणे विच रखाईआ।

✪ १४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ कृपाल सिँघ दे गृह सई कैंप ✪

विष्नूं कहे मैं तक्कया खेल विशेष, विश्व दा पड़दा दिता उठाईआ। सिंघासण तक्कया उपर शेष, आसण अबिनाशण दिता टिकाईआ। धारा तक्की गणेश, शंकर रंग चढ़ाईआ। सेवा वेखी हमेश, जुग जुग जोग कमाईआ। सच दर दा बण दरवेश, दर ठांडे अलख जगाईआ। तूं मालक इक नरेश, नर नरायण तेरी सरनाईआ। कलयुग अन्तिम तेरा वेस, अवल्लड़ा सोभा पाईआ। भाग लग्गा माझे देस, दिसन्तर वज्जे वधाईआ। सच धार दा लिखा लेख, लेखा पिछला रिहा मिटाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर तेरे उतों होए खेत, सिर सक्या ना कोए उठाईआ। तेरा समझ ना सक्या कोए भेत, भूत भविक्ख्त काल दए गवाहीआ। मेरी नमो नमो आदेस, सीस जगदीश झुकाईआ। लहिणा तक दस दशमेश, तेरे चरण ध्यान रखाईआ। झगड़ा मुकणा मुल्ला शेख़, पैग़म्बर देण गवाहीआ। तेरा अगम्म इक संदेश, दो जहान वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा हुक्म शब्द बदेश, जिस दा नानक बेदी ध्यान लगाईआ।

✪ १४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ बीबी वीरो दे गृह सई कैंप ✪

विष्नूं कहे मेरी विशाल इच्छा, निरइछक तैनूं दयां जणाईआ। तेरे प्यार दी मिले भिक्खा, भिखक झोली देणी भराईआ। जेहड़ा पिछला समां मिथा, अन्त मिथण दिसे लोकाईआ। बाकी रिहा कोई ना हिस्सा, हिस्सेदारी ना वंड कराईआ। तेरा अगला दिसदा अगम्मी विशा, जिस दा पड़दा ना कोए उठाईआ। की खेल वरतणा दहि दिशा, दो जहानां दए दृढ़ाईआ।

की लेख अनोखा लिखा, पैग़ाम इक प्रगटाईआ। किस बिध कलयुग लौहणी विखा, विख अमृत रूप बणाईआ। झगड़ा मुकाउणा वड्डा निक्का, नर निरँकार हो सहाईआ। दीन दुनी दा बण के पिता, पतिपरमेश्वर सोभा पाईआ। धर्म दी धार केहड़ी रिता, रत रतूबत करे कवण सफ़ाईआ। मेरे साहिब तेरा हित्ता, हितकारी नज़री आईआ। जगत जीव ना रहे दुचिता, चेतन सब नूं देणा कराईआ। कलयुग आयों कारन जिस नविता, सधारण आपणा राह वखाईआ। जन भगतां हथ्थ रखणा पिट्ठा, पुश्त पनाह टिकाईआ। नाम रस दे के मिट्ठा, अग्नी अग्ग बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त अख़ीरी सब दा कढणा सिट्टा, सिट्टेबाज़ी जगत रहे ना राईआ।

✪ १४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ प्रकाश सिँघ दे गृह सई कैंप ✪

विष्नूं कहे प्रभ विश्व अधारी, आदि अन्त इक अख्वाईआ। जुग जुग जन भगतां पैज रिहा संवारी, नित नित होए सहाईआ। साचा देवे नाम अधारी, गुण निधाना दया कमाईआ। जिस दा राह तकदे पैग़म्बर गुर अवतारी, शंकर ब्रह्मा ध्यान लगाईआ। कलयुग अन्तिम आए उस दी वारी, वारस हो के वेख वखाईआ। चार जुग दा लहिणा वेखे ग़द्दारी, ग़दागर आपणा पन्ध मुकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे दुराचारी, दुरमति मैल धुआईआ। हउमें हंगता गढ़ तोड़े हँकारी, हँ ब्रह्म इक समझाईआ। भगत सुहेले जावे तारी, गुर चेले पार कराईआ। साचा बख्श प्रेम भण्डारी, भण्डारा धुर दा इक वरताईआ। निखुट ना जाए विच संसारी, अतोट अतुट आप कराईआ। लेखा जाणे आपणी धारी, धरनी धरत धवल सोभा पाईआ। जिस नूं मन्नया निहकलंक अवतारी, सो कलि कल्की आपणा वेस वटाईआ। कोटन कोटि कोट मेरी निमस्कारी, निउँ निउँ लागां पाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरण कँवल जावां बलिहारी, बलि बलि आपणा आप कराईआ।

✪ १४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ बीबी इन्द्रो दे गृह सई कैंप जम्मू ✪

विष्नूं कहे जन भगतो विश्व करो विचार, विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलाईआ। बिना साहिब सतिगुर तों कोई ना उतरे पार, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण वेख वखाईआ। मानस जन्म सके ना कोए संवार, चुरासी फाँसी ना कोए कटाईआ। मेला

मिले ना सच दरबार, दरगाह साची ना कोए वखाईआ। नाता कूड़ जगत संसार, माया ममता मोह हल्काईआ। जिस ने सृष्टी दृष्टी कीती गिरफ्तार, जगत शास्त्र सके ना कोए छुडाईआ। जिस उत्ते किरपा करे आप निरँकार, निरवैर होए सहाईआ। उस दा लहिणा देणा आवण जावण गेड़ा दए निवार, जूनी जून ना कोए भवाईआ। सो मालक ख़ालक प्रितपालक लए अवतार, सन्त सुहेले अंग लगाईआ। जिस नूं झुकदे गुरु अवतार, पैग़म्बर सजदा सीस झुकाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी तुहाडी पावणहारा सार, महासार्थी आपणा फेरा पाईआ। तिस चरण कँवल सदा निमस्कार, निमख निमख आपणा आप कटाईआ। जो कलयुग अन्तिम देवे नाम अधार, अदल इन्साफ़ इक कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीन दुनी दा बण सिक्दार, फ़रमाना धुर दा राणा इक सुणाईआ।

१४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ लक्ष्मण सिंघ, कुलवन्त सिंघ, खेम कौर दे गृह सई कैंप जम्मू

विष्नूं कहे मैं सलाह कीती नाल लच्छमी, लक्ष्मण सीता राम नाल मिल के खुशी बणाईआ। उठ खेल वेख दक्खण पच्छमी, लहिंदे आपणी अक्ख उठाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद जो धार दस्सी रसमी, जगत इशारे विच सुणाईआ। सब दा भेव चुकाउणा इस्मी, आज़म नाज़म इक प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। लच्छमी कहे मेरे साहिब विष्न, विश्व वेख वखाईआ। जो इशारा दे के गया कृष्न, अर्जन सैनत नाल दृढ़ाईआ। मैनूं अन्त लच्छण ओहो दिसण, चारों कुण्ट नज़री आईआ। माण रिहा ना किसे पितन, पिता पूत ना गोद सुहाईआ। प्रभू दा नाम टक्यां उतों लग्गा विकण, धर्म दी धार ना कोए जणाईआ। सृष्टी दृष्टी भरी विखण, अमृत रस ना कोए चखाईआ। कूड़ी क्रिया विच साध सन्त लग्गे लिटण, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। दीन मज़्हब लग्गे पिट्टण, नेत्र रो रो रहे कुरलाईआ। वेला वक्त आए ना कोए नजिठ्ठण, गुरु अवतार पैग़म्बर बैठे पल्लू छुडाईआ। साची सिख्या चार वरन मूल ना सिक्खण, अठारां बरन पई दुहाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी दिसे मिथण, दीप सत्त ना कोए चतुराईआ। माया ममता विच पिसण, बाहर सके ना कोए कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता आप समझाईआ। विष्नूं कहे लच्छमी ना कर तकरार, निम्रता विच सीस निवाईआ। ओह वेख पैग़म्बरां दा इकरार, इकरारनामा रिहा जणाईआ। जिस उत्ते साफ़ लिख्या अमाम अमामा आउणा सिक्दार, नूर नुराना नूर इलाहीआ।

जिस नूं सजदे करन सदा जुग चार, पैग़म्बर नबी रसूल सीस निवाईआ। उस दा खेल होणा अपार, अपरम्पर हो के आप कराईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करे ख्वार, खारी ममता सीस ना कोए उठाईआ। दीन दुनी वेखे दुराचार, विभचारीआं पड़दा दए चुकाईआ। प्रगट हो के आप निरँकार, निरवैर आपणी कार कमाईआ। सच संदेशा दे के अगम्म अपार, अलख अगोचर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म दवारा इक सुहाईआ। विष्नूं कहे वेख पैग़म्बरां लेखा लेख, अलिफ़ ये वंड ना कोए वंडाईआ। की संदेशा दिता दशमेश, गोबिन्द शब्दी बचन अल्लाईआ। किस बिध पारब्रह्म प्रभ करना आपणा वेस, जिस वेले वेसवा रूप होए लोकाईआ। साबत रहे ना कोए मुल्ला शेख़, औलीआ गौंस कुतब ना कोए वंडाईआ। पंडत पांधा दिसे कोई ना नेक, माया ममता मोह हल्काईआ। ग्रन्थी पन्थी फिरन भज्जे मारे पेट, पटने वाला नज़र किसे ना आईआ। हुक्म नाम बाणी दा कलयुग विच बज्झ जाए रेट, बिन पैस्सयां तों प्रभ दा नाम ना कोए ध्याईआ। चार जुग दे शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान हट्टां विच वेच, बाईबल तुरैत गुरु ग्रन्थ टकयां उतों विकाईआ। सति दा रहे कोए आदेस, सजदा सीस ना कोए निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, एकँकार आपणी कल वरताईआ। लक्ष्मण कहे मैं लहिंदी दिशा मारया ध्यान, बिना अक्खां अक्ख उठाईआ। मैनूं शरअ दिसी शैतान, शरीअत करे लड़ाईआ। साबत रिहा ना किसे ईमान, अमल हक ना कोए कमाईआ। दीन दुनी होई बेईमान, बेवा रूप ख़लक खुदाईआ। इस्म आज़म नज़र ना आया इस्लाम, आलीशान तेरा दर ना कोए सुहाईआ। माया ममता मोह वेख्या तूफ़ान, क्रिया कूड़ कुड़यार हल्काईआ। धुँधूकार होया ज़िमीं असमान, तारा चन्द दए गवाहीआ। चौदां तबक रोवण कुरलाण, हाए उफ़ तेरी दुहाईआ। साचा दिसे ना कोई मुसलमान, मुसलसल तेरा कलमा ना कोए जणाईआ। सदी चौधवीं वेख आण, हज़रतां दे हज़रत हज़ूर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। लक्ष्मण कहे फिर तक, हथ्थ पेशानी उत्ते रखाईआ। पुरख अकाला सब दा पूरा करे हक, हकीकत वेखे थांउँ थाँईंआ। अन्तिम लहिणा रहे ना विच शक, शकवा सब दा दए मिटाईआ। पैग़म्बर गए थक्क, मंज़ल मंज़ल कदम टिकाईआ। अग्गे हुक्म सुणना चाहुंदे यक, यकतरफ़ ध्यान रखाईआ। किस बिध परवरदिगार सांझा यार पिछली करनी करे फक्क, अगला हुक्म इक प्रगटाईआ। दीन मज़्हब तों बिना खोल्ह के आपणा हट्ट, नाम निधाना दए वरताईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई रहे कोई ना वट्ट, झगड़ा मज़्हब ना कोए लड़ाईआ। सब नूं जोती नूर दरसाए लट लट, शाह सुल्तान डगमगाईआ। इक्को नाम कलमा सारे लैण रट, रट्टा मुके कूड़ लोकाईआ। साचा लाहा लैण खट्ट,

खटका अवर ना कोए वखाईआ। जो मालक वसण वाला घट घट, जल्वागर नूर इलाहीआ। ओह लहिंदी दिशा मारन वाला फट्ट, फट्ड़ करे थांउँ थाँईंआ। लच्छमी पई हस्स, ताली बिन हथ्थां दिती वजाईआ। विष्नूं एह खेल पुरख समरथ, जो सब दा पिता माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी महिमा दस्सी अकथ, कथन तों बाहर कथा आपणी इक जणाईआ।

✪ १५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ वकील सिँघ अंग्रेज़ सिँघ दे गृह सेई कलां ✪

जन भगतो तुसां अन्दरों रहिणा सई, सही सलामत दए वड्याईआ। धर्म राए लेखा मंगे ना कढ्ढ के वही, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। तुहाडी एथे ओथे पति रही, पतिपरमेश्वर होए सहाईआ। कुछ हलूणा लग्गणा अगले साल मई, माह महिबूब दए दृढ़ाईआ। अग्गे धार चलणी नई, नव नौं चार वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक वरताईआ। सच हुक्म वरतणा एक, एकँकार आप जणाईआ। चार जुग दा लहिणा प्रभ दे होणा भेंट, भेंटा गुर अवतार पैग़म्बर चढ़ाईआ। धरनी धरत धवल दा ख़ाली होणा पेट, माया ममता मोह मिटाईआ। नवें जुग दी नवीं रीती बदलणी चेत, चातृक गुरमुख राह तकाईआ। कूड़ी क्रिया रणभूमी सौणा खेत, खेत्रपाल हाहाकार कर सुणाईआ। प्रभू ने दस्सणा आपणा भेत, पारब्रह्म हो के पड़दा लाहीआ। सचखण्ड दवारा सुहा के साचा खेत, दिशा आपणी आसण लाईआ। चार जुग तों वक्खरा वेस, भेखाधारी रूप बदलाईआ। राम नाम देवे संदेश, कलमा कलमा आप जणाईआ। आपणा हुक्म दस्स दशमेश, विशा विश्व दा इक प्रगटाईआ। लहिंदी धारों लिख बदेश, बदी दा पड़दा दए चुकाईआ। नेत्र रोणे मुल्लां शेख़, मुसायकां मसला हल्ल ना कोए कराईआ। कोटां विच्चों जन भगत सुहेले मिले टेक, टिक्का मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। दीन दुनी नालों बणना नेक, गुरमुख निक्का वडा आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। साची करनी करनी मात, मता आपणा आप पकाईआ। कलयुग वेखो अंधेरी रात, सच चन्द ना कोए रुशनाईआ। तुसीं प्रभू दी इक्को ज़ात, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। चरण प्रीती धुर दा नात, रिश्ता फ़रिश्ता ना कोए समझाईआ। पुरख अकाल ते इक्को विश्वाश, विश्व दा मालक इक अख्वाईआ। जिस दा नूर जोत प्रकाश, घर घर करे रुशनाईआ। ओह सदा सुहेला वसे पास, काया मन्दिर अन्दर सोभा पाईआ। सब ने मार के वेखणा झात, पड़दा अन्तर इक उठाईआ। राह तके शंकर उत्ते कैलाश, केशव आपणा

मेल मिलाईआ। तुहानूं मुफ्त दी शाबाश, बिना भगती भगत बणाईआ। ब्रह्मा अन्तिम कलयुग होया उदास, उदासी आपणे अन्दरों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। करनी कहे मैं बड़ी वड्डी, निक्कयों वड्डे दयां बणाईआ। मैं वेखणी चौधवीं सदी, सदमे वाले ध्यान लगाईआ। मैं लोकमात आउंदी कदी कदी, जिस वेले कदीम दा मालक दए वड्याईआ। कलयुग अन्तिम कढणी बदी, बदकार नज़र कोए ना आईआ। पिछली कीती करनी रद्दी, अग्गे धुर दा हुक्म सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां रहिण नहीं देणी गद्दी, गदागर होवे लोकाईआ। माया ममता वज्जण नहीं देणी अड्डी, कूड़ी क्रिया नाच ना कोए नचाईआ। जन भगतो प्रभ दे प्यार विच तुसीं सृष्टी बैठे छडी, नाता छड्डुया भैण भाईआ। वेख्यो किसे तों नाम दी ल्यो ना वढ्ढी, रिशवत रेशा ना कोए बणाईआ। तुहाडी जोत उस दवारे जगी, जिथ्थों सके ना कोए बुझाईआ। तुहाडी आत्मा परमात्मा ने आप लभ्भी, तुहानूं खोजण दी लोड़ रही ना राईआ। सब दी ममता रहे ना दब्बी, पर्दा पर्दे विच्चों खुल्हाईआ। एह नूर अलाही रब्बी, रब्बे आलम कहि के जिस नूं गाईआ। सच प्रीती प्रीतम नाल लग्गी, अग्गे सके ना कोए तुड़ाईआ। तुहाडी लेखे लावे इक इक हड्डी, हड्ड मास नाड़ी चम्म आपणे पेटे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, नाम खुमारी देवे मधी, मद दा रस ना कोए चखाईआ।

✪ १५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ दौलत राम दे गृह कोटली जम्मू ✪

विष्नूं कहे कलयुग होया अंधेरा घुप्प, साचा चन्द ना कोए रुशनाईआ। सदी चौधवीं गुर अवतार पैग़म्बर बैठे छुप, सन्मुख नूरी चमक ना कोए चमकाईआ। सृष्टी दी दृष्टी भरी नाल दु:ख, माया ममता मोह हँकार विच हल्काईआ। सच धर्म दी मौले कोई ना रुत, फल फुलवाड़ी ना कोए महकाईआ। नाता टुट्ट गया पिता पुत्त, साक सज्जण सैण नज़र कोए ना आईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप उज्जल होए किसे ना मुख, भगत भगवान मेल ना कोए मिलाईआ। अमृत जाम मिले किसे ना घुट, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रोवे मारे धाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म साचा मिले किसे ना सुख, सुखसागर विच ना कोए समाईआ। मात गर्भ लहिणा मुके ना किसे उलटा रुक्ख, चुरासी फाँसी गल ना कोए कटाईआ। फिरी दरोही मानस मानुख, मन मति बुध धीर ना कोए धराईआ। पर्दा ओहला रिहा कोई ना लुक, कलयुग कूड़ कुकर्म करे लोकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सब नूं भुल्ली तुक, सिफ्ती नाम गा के दुनी झट लँघाईआ। पुरख अकाल

दीन दयाल परवरदिगार सांझे यार तैनूं जाए कोई ना झुक, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ गुरदवार जगत सीस निवाईआ। आवण जावण पतित पावण पैंडा किसे ना जाए मुक, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज पन्ध ना कोए मुकाईआ। मेहरवान महिबूब कलयुग अन्तिम आप उठ, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आपणी दया कमाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां जन भगतां उपर तुट्ठ, चार कुण्ट दहि दिशा वेख वखाईआ। मन मनुआ ममता विच पाई फिरे लुट्ट, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर धीरज धीर ना कोए रखाईआ। तेरा प्यार एकँकार जगत जहान गया टुट्ट, टुट्टी गंढ ना कोए वखाईआ। कोटां विच तेरे सन्त सुहेले थोड़े मुट्ठ, जो निरगुण निरवैर तेरी ओट तकाईआ। तूं साहिब स्वामी अन्तरजामी अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म ब्रह्म पतिपरमेश्वर नूर अलाहीआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त शब्दी धार क्यों बैठा चुप्प, अनाद अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी कर शनवाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा सुरप्त राजे इन्द पुछ, जो इष्ट देव गुरु गुरदेव जगत अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। विष्नूं कहे दीन दुनिया अन्तर रिहा ना सति, सच विच ना कोए समाईआ। परम पुरख दी भुल्ली सब नूं मति, मनमति करे लड़ाईआ। झगड़ा पाया पंज तत, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई साची मंज़ल चढ़े कोई ना हस्स, हस्ती वेखे ना कोए बेपरवाहीआ। शास्त्र सिमरत

४१ २२ वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी पढ़ पढ़ गए थक्क, अक्खरां नाल अक्खर मिलाईआ। सति सरूप शाहो भूप अन्तर आत्म मिल्या किसे ना रस, रस्ता बावस्ता हो ना कोए वखाईआ। निज नेत्र जाग खुल्ही किसे ना अक्ख, दोए लोचन नैण प्रभ दा दरस कोए ना पाईआ। चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश रहे नट्ठ, चार कुण्ट दहि दिशा भज्जण वाहो दाहीआ। पुरख अकाले दीन दयाले मिल्या मेल ना किसे समरथ, सच दवारे दरस कोए ना पाईआ। जगत सन्यास वैराग त्याग जुगीशरां तपीशरां होया बस, मुनीश्र मुनी नज़र कोए ना आईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द अल्ला वाहिगुरु राम ओम हरीओम कृष्न जै जै रहे रट, ढोले सोहले जगत सुणाईआ। दीन मज़्ह्ब ज़ात पात ऊच नीच राउ रंक कढे कोई ना वट्ट, दूई द्वैत डेरा कोई ना ढाहीआ। साचा सच पले कोई ना हक, हकीकत पड़दा ना कोए उठाईआ। हर घट अन्दर रिहा शक, शिकवा सके ना कोए मिटाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले आदि निरँजण आपणी दीन दुनी तक, तकदीर सके ना कोए बदलाईआ। चार जुग दे नाम संदेशे अक्षरां वाले खत, गुर अवतार पैग़म्बर गए दृढ़ाईआ। अन्त कन्त भगवन्त तुध बिन रखे कोए ना पत, पतिपरमेश्वर होए ना कोए सहाईआ। सदी चौधवीं चौदां तबक रहे तक्क, चौदस चन्द ना कोए रुशनाईआ। निरगुण धार एकँकार परवरदिगार सांझे यार अमाम अमामा हो प्रगट, परगणा आपणा इक दरसाईआ। सम्बल

नगर साहिब स्वामी दस्स, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पन्ध मुकाया नस्स नस्स, अन्तिम अन्तष्करन वेख लोकाईआ। जुग चौकड़ी तेरे हथ्थ, साहिब समरथ तेरी बेपरवाहीआ। जन भगत सुहेले इक दवारे कर इक्ठ, गृह इक्को इक वड्याईआ। तेरा मन्दिर गुरदवार निरगुण धार जाए ना ढठ्ठ, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। जिथ्थे जोत अगम्मी जगे लट लट, दीवा बाती तेल ना कोए रखाईआ। शब्दी नाद अगम्मी सुणे नद, अनहद नादी नाद शनवाईआ। अमृत आत्म रस लए चट्ट, तृष्ना भुक्ख रहे ना राईआ। कलयुग जीवां जन्म कर्म दा लहिणा देणा कट, कटाक्ष आपणा नाम लगाईआ। सतिजुग सच धर्म दा मार्ग दस्स, दीन मज़्हब ज़ात पात वंड ना कोए वंडाईआ। हर हिरदे हरि अन्तर जाणा वस, हर घट मेला सहिज सुभाईआ। विष्नूं कहे मेरे विश्व दे मालक तूं मेरा मैं तेरा दो जहान गावे तेरा जस, सिफ्तां विच सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अलखणा अलख अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह बेपरवाही विच समाईआ।

✪ १५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ प्रकाश चन्द दे गृह मघोवाली जम्मू ✪

विष्नूं कहे तेरा विश्व रिहा डोल, विशाल विशा ना कोए समझाईआ। तेरे अवतार पैग़म्बर गुरुआं दा हुन्दा घोल, दीन दीन नाल टकराईआ। तेरा नूर नज़र ना आवे किसे सोल, सो स्वामी ध्यान लगाईआ। तेरा प्यार दिसे ना किसे कोल, सच रंग ना कोए रंगाईआ। कलयुग कूड़ा डंका वज्जया ढोल, तेरे नाम दे ढमक्के बैठे मुख छुपाईआ। निगाह मार ज़रा उपर धौल, धरनी वेख वखाईआ। सब दा पूरा होया कौल, इकरारनामे देण गवाहीआ। सच दवारा इक खोल्ह, ख़ालस आपणा घर प्रगटाईआ। निरगुण धार हो के मौल, मौला आपणा रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक हो सहाईआ। विष्नूं कहे तेरा विश्व विशा ना सक्या जाण, विशेष देणी वड्याईआ। मेरे मेहरवान भगवान, भगवन ध्यान लगाईआ। पिछला चार जुग दा रिहा ना कोए ईमान, दृष्टी इष्टी ना कोए समझाईआ। अन्त करे ना कोए कल्याण, कलमे वाला कायनात नजर कोए ना आईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा युद्ध करे घमसाण, शस्त्र माया ममता मोह रखाईआ। नेत्र नज़र ना आए कोई काहन, सखीआँ संग ना कोए निभाईआ। फिरी दरोही धुर दे नाम, राम राम ना कोए सहाईआ। निगाह मार अगम्मी अमाम, अमल वेख ख़लक ख़ुदाईआ। पैग़म्बरां संदेशा फ़रमान, शरअ छुरी कसाईआ। तूं वस के उपर असमान, ज़िमीं ज़मां दिता भुलाईआ। साहिब साहिब हो सवाधान, स्वार्थ

आपणा ना कोए रखाईआ। कलयुग जीव अन्त कुरलाण, कुरलाहट विच देण दुहाईआ। निगाह मार निगाहबान, निगाह आपणी इक रखाईआ। बिन तेरी किरपा होए ना कोए परवान, जगत परवाने कम्म किसे ना आईआ। लहिणा देणा चुका भगतां विच जहान, जहालत तेरी अदालत विच रहिण ना पाईआ। धुर दे नौजवाने मर्द मर्दान, मदद कर थांउँ थाँईंआ। विष्नूं कहे मेरा कहिणा कर परवान, परवानगी आपणी आपणे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन दूसर दिसे ना कोए निशान, निशाना निशानीआं विच्चों प्रगटाईआ।

✪ १५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ हँसराज दे गृह मघोवाली जम्मू ✪

विष्नूं कहे तेरी दुनिया दिसदी भुक्खी, मैं भुक्ख ना सक्या मिटाईआ। जगत वासना विच दुखी, कल्पणा रही कुरलाईआ। तेरी धार तों होई बेरुखी, मार्ग सच ना कोए अपणाईआ। मुहब्बत सच किसे ना उठी, प्यार प्रेम ना कोए बणाईआ। वस्त अमोलक गई लुट्टी, गृह ख़ाली नज़री आईआ। आत्म परमात्म तेरी रुट्ठी, सक्या ना कोए मनाईआ। मैं वेख्या चारे गुट्ठी, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण अक्ख खुल्ह़ाईआ। सारे तेरा नाँ गांदे बुल्ल्ह़ां बुट्टीं, हिरदे सक्या ना कोए वसाईआ। एसे कर के शब्दी धार टुट्टी, टुटयां गंढ ना कोए पवाईआ। सब दी चोग अन्त निखुट्टी, अमृत रस ना कोए चखाईआ। मैं वी जुग चौकड़ी तेरे हुक्म दी कीती बुती, बुतख़ान्यां सेव कमाईआ। अन्त वेख लै आपणी रुती, बिन तेरे ना कोए महकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कर गए छुट्टी, सच हुक्म ना कोए मनाईआ। धरनी धार होई विगुची, धर्म दवारा ना कोए वड्याईआ। मन वासना होई लुच्ची, लोइन अक्ख ना कोए खुल्ह़ाईआ। तेरे नाल रही किसे ना रुची, रचना वेख जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। विष्नूं कहे मेरा अन्न दाणा वेख मेहरवां, मेहरवान दया कमाईआ। गुर अवतारां पैग़म्बरां कीता ना कोए न्याँ, न्याँकारी नज़र कोए ना आईआ। माणस जीवां वंड वंडा के सूर गां, पशूआं पोश दिता लुहाईआ। मैं वेख होया हैरां, हैरानी मेरे अन्दर आईआ। अन्त अन्त कलयुग दयां सुणा, अणसुणत तेरे अग्गे शनवाईआ। कलयुग कूड़ा बदल दे समां, समाप्त कर बेवफ़ा जो तैनूं गए भुलाईआ। तेरा हुक्म होवे नवां, नव नौ चार दा पन्ध मुकाईआ। सच संदेश कहिवां, कहि कहि दयां दृढ़ाईआ। भगवन तेरी धार तेरे चरण बहिवां, पारब्रह्म तेरी सेव कमाईआ। आपणा सतिजुग सच कर दे रवां, हुक्म हाकम इक सुणाईआ। मैं तेरा

भण्डारा सब नूं इक्को जेहा देवां, द्वैत विच ना कोए रखाईआ। तेरा ढोला तूं मेरा मैं तेरा गवां, गा गा खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि सदा सद तेरी धार तेरे विच रहवां, वक्खरा अंग ना कोए रखाईआ।

✪ १५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ देवी सिँघ दे गृह मघोवाली जम्मू ✪

विष्नूं कहे मैं विश्व दी वेखी सुरती, लख चुरासी अन्तर निरन्तर ध्यान लगाईआ। मानव मनुष मानुख दी वेखी निरती, निराकार निरँकार आपणी सेव कमाईआ। किसे मेल ना दिसया अकाल मूर्ती, अकल कलधारी तेरी जोत ना कोए समाईआ। शब्द नाद सुणे ना कोए तूरती, तुरीआ तों परे मंज़ल चढ़न कोए ना पाईआ। दुनिया वणजारन होई गाँ सूर दी, दीन मज़्ह़ब पशूआं उतों करे लड़ाईआ। तेरी जोत नज़र ना आए अगम्मी नूर दी, नूर नुराने डगमगाईआ। कायनात कल्पना भरी कूड़ दी, जूठ झूठ मोह हँकार विकार हल्काईआ। किसे ख़बर नहीं तेरे अगम्मी शब्द दूत दी, जो दो जहानां नौजवाना तेरा हुक्म सुणाईआ। सार आई ना सार शब्द सपूत दी, पिता पूत पड़दा ना कोए उठाईआ। हुण घड़ी आई कलयुग अन्तिम कूच दी, कूचा गली लोकमात कर सफ़ाईआ। मंज़ल दस्स दे आपणे सच सूच दी, संजम इक्को इक दृढ़ाईआ। कूड़ वासना मन कल्पना रहे ना मूर्ख मुग्ध दूत दी, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण इक्को कर पढ़ाईआ। तेरी नाम सदा आवे इक्को चारों कूट दी, चार वरन इक्को ढोला गाईआ। हंगता रहे ना दीन मज़्ह़ब दूज दी, ज़ात पात लेख देणा चुकाईआ। कल्पना मेट के नीच ऊच दी, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक्को घर वसाईआ। आपणी मंज़ल हक दस्स मकसूद दी, रहिबर हो के नूर खुदाईआ। तेरी हद्द ना रहे महिदूद दी, वंडन वंड ना कोए वंडाईआ। मुहब्बत मिले इक्को परवरदिगार सांझे महिबूब दी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी इक सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। विष्नूं कहे वेख आपणी दीन दुनी दा खाता, जो ख़तो ख़िताबत नाल गुर अवतार पैग़म्बर गए जणाईआ। दीन मज़्ह़बां दा वेख अहाता, जो तेरे नाम दीआं वंडां रहे पाईआ। कलमे नाम दा वेख तमाशा, जो अल्ला वाहिगुरु राम कृष्न ओम गॉड तेरा नाद वजाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आत्म परमात्म तेरा देवे कोई ना साथा, सगला संग ना कोए रखाईआ। सारी सृष्टी मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ गुरदवार इट्टां पथ्थरां टेकदे माथा, अबिनाशी करते तैनूं सीस ना कोए झुकाईआ। तूं हर घट अन्दर वसया निरगुण नूर जोत प्रकाशा, निराकार तेरा दरस कोए ना पाईआ।

रसना जेहवा बत्ती दन्द अक्खरां वाली सारे पढ़दे गाथा, सिफ्तां वाले ढोले गाईआ। तेरा नूर ज़हूर किसे ना जाता, जोती जाते पुरख बिधाते तेरा मेल ना कोए मिलाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त चारों कुण्ट अंधेरी राता, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। नाता तुटा पिता पूत माता, भैण भाई साक सज्जण सैण संग ना कोए रखाईआ। विष्नूं कहे मेरी अन्त अख़ीर इक अरदासा, निरमाणता विच सीस निवाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल कलयुग विच सतिजुग बदल दे पासा, मार्ग अगला इक उपजाईआ। चार वरन अठारां बरन तेरा इक्को नाम गावण स्वास स्वासा, साह साह तेरी करन वड्याईआ। मेरी पूरी कर दे मनसा आसा, असल आपणा आप प्रगटाईआ। हउं सेवक जुग चौकड़ी दासी दासा, राज़क रिज़क रहीम तेरी सेव कमाईआ। आदि अन्त तेरा इक भरवासा, ओट जोत निरगुण इक रखाईआ। अगला भेव खोल्ह दे नाल खुलासा, ख़ालस आपणा पड़दा लाहीआ। विष्नूं कहे तूं साहिब सुल्तान पुरख समराथा, दीन दयाल इक अख्वाईआ। हो सहाई नाथ अनाथा, ग़रीब निमाणयां गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तेरा हुक्म पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतर मण्डल मण्डप सारे सीस निवाईआ।

✪ १५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ लक्ष्मी दे गृह पिण्ड सीड़ ✪

विष्नूं कहे मैं विश्व दा वेख्या चुक्क के पड़दा, भगवन तेरी ओट तकाईआ। जगत जहान चारों कुण्ट वेख्या सड़दा, त्रैगुण अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। बेशक मानव चार जुग दे शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान पढ़दा, खाणी बाणी अक्खरां विच तेरा सिफ्ती ढोला गाईआ। दरोही तेरी मंज़ल कोए ना चढ़दा, दरगाह साची सचखण्ड दवारे मिलण कोए ना आईआ। जीवत जीअ तेरे प्रेम प्यार कोए ना मरदा, मुर्दा मुरीद मुर्शद विच ना कोए समाईआ। किसे नूं पता नहीं कलयुग अन्तिम आपणे घर दा, साध सन्त सूफ़ी फ़कीर बेनज़ीर नज़र कोए ना आईआ। मैं तक्कया नज़ारा कलयुग कल दा, कलकाती आपणी कार कमाईआ। लख चुरासी जीव जंत लोकमात दल दा, दलिद्दर सब दे उत्ते पाईआ। आत्म सिंघासण साची सेजा कोई ना मल्ल दा, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। दवारा तेरा जाणे कोई ना निहचल धाम अटल दा, पदवी पद ना कोए रखाईआ। जिधर वेखां दूई द्वैती विछोड़ा सल दा, दीन मज़्हब ज़ात पात करे लड़ाईआ। तेरा भाणा सीस जगदीश कोए ना झलदा, गुर गोबिन्द देवे अन्त गवाहीआ। झगड़ा प्या काया माटी खल्ल दा, आत्म ब्रह्म ना कोए समझाईआ। अमृत रस मिले ना तेरे अगम्मी जल दा, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ कम्म किसे ना आईआ। किसे नूं पता नहीं अग्गे

घड़ी पल दा, पलकां दे पिच्छे किथे बैठा मेरा माहीआ। सच प्रकाश तेरा दीपक जोत वेख्या दिसे ना बलदा, काया माटी अन्दर साढे तिन्न हथ्थ ना कोए रुशनाईआ। चारों कुण्ट कूड़ कल्पणा सब नूं छलदा, माया ममता मोह हँकार विकार सर्ब हल्काईआ। तेरी आत्म धार ना कोई रलदा, जोती जोत ना कोए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। विष्नूं कहे मैं चारों कुण्ट तक्कया अंध, अंधेरा दीन दुनी नज़री आईआ। साचा भगत तेरा दिसे कोए ना चन्द, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। आत्म ब्रह्म माणे ना कोए अनन्द, निजानंद ना कोए समाईआ। कलयुग जीव कूड़ी क्रिया फसे विच गंद, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। आवण जावण किसे ना मिटे पन्ध, चुरासी गेड़ ना कोए कटाईआ। जगत आत्मा बिन परमात्मा होई रंड, सुहागी कन्त ना कोए हंढाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां मानव ज़ाती कीती खण्ड खण्ड, दीनां मज़्बां विच वंड वंडाईआ। सदी चौधवीं हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सारे पाउँदे डण्ड, डण्डावत बन्दना सजदा करन वाला नज़र कोए ना आईआ। तेरी मंज़ल महिबूब हकीकी कोई ना जावे लँघ, अधवाटे बैठे सारे मारन धाईंआ। तूं साहिब सुल्तान बख्शंद, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। किरपा निधान ठाकर स्वामी जन भगत सुहेले आपणे रंगण रंग, दुरमति मैल अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर कर सफ़ाईआ। मेरी अन्त अख़ीर बेनज़ीर विष्नूं कहे इहो मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त सूरे सरबंग, सति सतिवादी शब्द अनादी आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ १५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ गुरनाम सिँघ दे गृह सीड़ जम्मू ✪

विष्नूं कहे तेरी सृष्टी वेखी विच निंद्रा, आलस ग़फ्लत विच समाईआ। नज़र नूर आया ना साढे तिन्न हथ्थ अन्दर काया पिंजरा, जल्वा जल्वागर ना कोए चमकाईआ। साची धार दिसी ना बणबिन्दरा, काहन गोपी रंग ना कोए रंगाईआ। अमृत मेघ ना दिसया इन्द्रा, इन्द्रासण सिंघासण सारे रहे कुरलाईआ। तन वजूद काया माटी खुल्ल्या किसे ना जिन्दरा, बजर कपाट पड़दा ना कोए उठाईआ। रसना जेहवा गाउंदे सुखमन ईड़ा पिंगला, त्रै त्रै तेरी वंड वंडाईआ। किसे लेखा पार ना कीता दस उँगलां, पाँधी पन्ध ना कोए मुकाईआ। कलयुग अन्तिम ऐ प्रभू साधां सन्तां फ़कीरां पाईआं गुंझलां, गंढ सके ना कोए खुल्हाईआ। किसे कम्म ना आवण कन्न विच पाईआं मुन्दरां, सीस ख़ाक धूढ़ी जगत रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। विष्नूं कहे तेरी दीन दुनी वेखी जगत उदास,

उदासी वैरागी त्यागी बैरागी धीर ना कोए धराईआ। जगत जिज्ञासू कोई ना रिहा जाग, दिवस रैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। मानव बुद्धी हँस होई काग, काग वांग रही कुरलाईआ। त्रैगुण माया बुझी किसे ना आग, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। घर स्वामी अन्तरजामी जगे ना कोए चिराग़, दीपक लोचन नैण ना कोए रुशनाईआ। साचा मालक ख़ालक बणया ना कन्त सुहाग, जगत रंडेपा घर घर नज़री आईआ। रूह बुत होए कोई ना पाक, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। तेरी चरण धूढ़ी मस्तक मिले कोई ना ख़ाक, ख़ाकसार होई लोकाईआ। सच दवार एकँकार खोल्हे कोई ना ताक, पर्दा अन्तर ना कोए उठाईआ। सदी चौधवीं गुर अवतार पैग़म्बरां सब दा पूरा कर भविक्खत वाक, वाहवा तेरे नाम दी इक्को वज्जे वधाईआ। भगत सुहेले इक अकेले होणा भगतां साथ, सगले संगी बहुरंगी आपणी कार कमाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप सब तेरी गावण गाथ, गहर गम्भीर बेनज़ीर तेरा ढोला गाईआ। सीस जगदीश झुके माथ, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। बिन तेरी किरपा किसे कुछ ना आवे हाथ, गुर अवतार पैग़म्बर तेरे अग्गे झोलीआं डाहीआ। शंकर सीस निवावे बैठा उपर कैलाश, विष्नूं सांगोपांग बाशक तशका तेरा ध्यान लगाईआ। ब्रह्मा बिरहों वाले विच वैराग, पारब्रह्म प्रभ तेरा राह तकाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण धार ला भाग, भगवन आपणा रूप बदलाईआ। कूड़ क्रिया जगत मेट दाग़, दुरगतां दुरमति मैल धुआईआ। सब तों पिच्छों सब दे अख़ीर ते सब तों आउणा बाद, विवाद रहिण कोए ना पाईआ। सतिजुग साचा खेड़ा कर आबाद, अबादी भगतां नाल वधाईआ। तेरी गुरमुख हरिजन सन्त सुहेले सूफ़ी फ़कीर फुलवाड़ी महके अगम्मी बाग़, बाग़वान हो के वेख वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर बर्बाद, माया ममता जड़ उखड़ाईआ। तुध बिन दूजा साजण सके कोए ना साज, सज्जण मीत ना कोए अख्वाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु भविक्खतां विच शब्दी मार के गए आवाज़, कल्मयां विच कायनात सुणाईआ। सो साहिब सतिगुर सब दा बदल दए समाज, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को तेरा नाम ढोला गीत कलमा आवे आवाज़, इक्को राग सृष्टी दृष्टी अन्दर गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानव ज़ाती दीनां मज़्हबां विच्चों कर आज़ाद, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म पड़दा देणा उठाईआ।

✪ १५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ केसरी देवी दे गृह राणी बाग़ जम्मू ✪

विष्नूं कहे मैं दो जहान वेखी तेरी गली, कूचा कूचा फोल फुलाईआ। पैग़म्बर नज़र ना आवे कोई वली, वलीऐहद रूप ना कोए दरसाईआ। धुर दा नाअरा सुणया कोए ना अली, अल्ला अलाह तेरे विच ना कोए समाईआ। जां वेख्या मकबरयां उत्ते दीव्याँ विच पा के तेल दी पली, अग्नी अग्ग नाल मचाईआ। तेरा खेल वली छली, निरगुण धार समझ किसे ना आईआ। कलयुग अन्तिम सृष्टी कूड़ विकार विच दली, दलिद्रीआं दलिद्र ना कोए मिटाईआ। अमृत रस मिले कोई ना फली, सिंमल रुक्ख रहे लहराईआ। ताकत रही ना अड्ड सड्ड जलीं, जल थल महीअल पई दुहाईआ। तेरे नाम दी महकी कोई ना कली, कलाधारी तेरा कलमा कोए ना गाईआ। आत्म प्यार देवे ना कोए बली, बलि बावन रूप ना कोए वटाईआ। कूड़ विकारा सृष्टी सल्ली, सल्ल सके ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, साहिब सतिगुर तेरी वड वड्याईआ। विष्नूं कहे मैं वेखी सृष्टी अंधी, अंध अज्ञान ना कोए गंवाईआ। दीनां मज़्बां दी पई बन्दी, बन्दीख़ाना ना कोए तुड़ाईआ। रहिबर दस्स के गए मज़्बां वाली डण्डी, तेरी डण्डावत इक ना कोए जणाईआ। इक दूजे नालों तोड़ के आपणे नाल गए गंढी, नाता दुनिया विच रखाईआ। किसे नूं पौण ना दिती ठंडी, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। सूरबीर बहादर बण के जंगी, जगत जलाद रूप कसाईआ। मानव मानव दे के तंगी, तंगदस्त कीती लोकाईआ। तेरा नाम दस्स के साचा संगी, संगल शरअ वाले पाईआ। तेरी खेल प्रभू बहुरंगी, चार जुग समझ किसे ना आईआ। तूं निरगुण धार बड़ा ढंगी, आपणा भेव ना कोए खुल्हाईआ। सच वस्त थोड़्ही थोड़्ही कर के वंडी, नाम कल्मयां विच रखाईआ। कलयुग अन्तिम देवे ना कोए साचा अनन्दी, अन्तर रस ना कोए चखाईआ। धुर दी वस्त मिले ना मंगी, मांगत बैठे मारन धाईआ। सदी चौधवीं जांदी लँघी, हज़रत मूसा ईसा मुहम्मद बैठे राह तकाईआ। ग़मी ग़मखार मेट रंजी, रंज़श दीन दुनी रहे ना राईआ। तेरी धार निरँकार इक्को लग्गे सब नूं चंगी, चार जुग दा लेखा दए मुकाईआ। मन कल्पना ना रहे कोए फ़रंगी, दुतीआ भाउ ना कोए वखाईआ। लहिणा देणा चुका विच वरभण्डी, ब्रह्मण्ड मिले वड्याईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ सब नूं दस्स छन्दी, शहिनशाह आपणा पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तेरी आत्म सेज सुहाए इक पलँघी, पारब्रह्म ब्रह्म दर बैठा सोभा पाईआ।

✪ १५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ चेला सिँघ दे गृह जम्मू ✪

विष्नूं कहे मेरे अन्तर आई हैरानी, हैरत विच हरिजू दयां दृढ़ाईआ। मैं नौ खण्ड पृथ्मी जिस्म ज़मीर तक्कया इन्सानी, तत्व तत खोज खुजाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां दी वेखी निशानी, चार कुण्ट दहि दिशा ध्यान लगाईआ। दीनां मज़्बां दी वेखी तुग्यानी, जो दिवस रैण रही रुढ़ाईआ। शरअ शरीअत वेखी शैतानी, छुरी करद हथ्थ उठाईआ। मन मनसा वेखी अभिमानी, हँकार गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। शास्त्र पुराणां वेखी विद्वानी, विद्या विच विद्त ना कोए वखाईआ। अक्खरां वाली वेखी बाणी, बाण अणयाला तीर ना कोए चलाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती वेख्या वहिन्दा पाणी, अठ्ठ सठ्ठ फोलया थांउँ थाँईंआ। अलिफ़ ये दा लेखा वेख्या अञ्जील कुरानी, हकीकत हक ना कोए समझाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी दिसी जूह बेगानी, सत्त दीप सति धार ना कोए समाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले चारों कुण्ट दिसे हानी, सीस सके ना कोए उठाईआ। किस लेखे लग्गी गोबिन्द दी कुरबानी, करबला मुहम्मद दए गवाहीआ। मूसा बिन सलीव होया फ़ानी, ईसा फाँसी गल लटकाईआ। तेरा लेख वेख दो जहानी, ज़ाहर ज़हूर दयां दुहाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर गृह गृह अन्दर होई बेईमानी, बेवा रूप तेरी ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक आपणा भेव खुल्हाईआ। विष्नूं कहे प्रभ वेख आपणी दीन दुनी दी धार, निरगुण सरगुण खोज खुजाईआ। की कर के गए गुर अवतार, पैग़म्बर फेरा पाईआ। मज़्बां विच वंड दिता संसार, दीनां विच दीन दुनी रखाईआ। तेरा नाम कलमा खड़ग खण्डा बणा तलवार, जीव निमाणयां उत्ते गए चलाईआ। अल्ला वाहिगुरु राम बोल जैकार, सृष्टी दृष्टी दिती बदलाईआ। तेरा एका मार्ग किसे दस्सया ना अगम्म अपार, अलख अगोचर तेरा जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। चारों कुण्ट वेख हाहाकार, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहरवान महिबूब आपणा रंग रंगाईआ। विष्नूं कहे तेरीआं जुग जुग वेखीआं वंडां, निरगुण सरगुण आप वंडाईआ। निगाह मार विच नौ खण्डां, नव नौ आपणा पड़दा लाहीआ। धर्म दी धार विच दिसे कोए ना बन्दा, तेरी बन्दगी विच ना कोए समाईआ। आत्म मिले ना किसे परमानंदा, निजानंद ना कोए समाईआ। दीन मज़्ब रिहा कोए ना चंगा, चार वरन करे लड़ाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर पाया लोकमात विच दंगा, दग़े फ़रेबी विच तेरा नाम वड्याईआ। अन्तिम सब ने इक्को दस्सया कन्ढा, कलयुग अन्तिम कलि कल्की वेस वटाईआ। तूं किरपा निधान ठाकर स्वामी निगाह मार विच ब्रह्मण्डा, पुरीआं लोआं तों बाहर पड़दा दे उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक

ख़लक दे ख़ालक मख़लूक तेरी वड्याईआ। विष्नूं कहे मैं दस्सां की हालत, हालांकि गुर अवतार पैग़म्बर भज्जण थांउँ थाँईंआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर वड़ी जहालत, चार कुण्ट दहि दिशा पवित्र पाक ना कोए कराईआ। चार जुग तेरी साची समझी ना किसे इबादत, अक्खरां विच तेरा नाम वंड के वंडीआं मानव वालीआं पाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले कलयुग अन्त श्री भगवन्त लख चुरासी जीव जंत बदल दे आदत, अदल इन्साफ़ आपणा इक कमाईआ। तेरा लहिणा देणा गुर अवतार पैग़म्बरां दस्सया विच भारत, भेव भाउ आपणा देणा खुल्हाईआ। शरअ शरीअत दीन मज़्हब करे ना कोए शरारत, शायद दा लेखा देणा चुकाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म तेरी इक्को धार होवे रफ़ाकत, रफ़ीक तौफ़ीक आपणी देणी समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दवारा इक्को इक प्रगटाईआ। विष्नूं कहे तेरे नाम दा प्रभू वेख्या रौला, अल्ला वाहिगुरु राम ओम पई लड़ाईआ। कोई पारब्रह्म कहे कोई कहे मौला, डण्डावत बन्दना सजदयां विच वक्ख वक्ख सीस झुकाईआ। कोई कहे मुकन्द मनोहर लखमी नरायण सुन्दर साँवल सौला, घन्हईआ नईया इक चलाईआ। राम रूप सति सरूप सीता सुरती माण देवे उपर धौला, धरनी धरत वज्जदी रहे वधाईआ। कोई कहे आदि जुगादि नूर अलाही आलमीन अवला, यामबीन मेहरवान महिबूब महिबान बीदो बीख़ैरी या अल्लाह तेरी इक वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर घर साचा इक्को इक वखाईआ। विष्नूं कहे तेरे नाम दी वेखी शरारत, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग जुग वंड कराईआ। तेरी अक्खरां वाली वेखी अबादत, सिफ्तां विच तेरा नाम गुर अवतार पैग़म्बर गए गाईआ। तेरी महिमा नाल करदे गए सफ़ारश, सफे सफ़िआं नाल उलटाईआ। तेरा भेव किसे ना पाया चार जुग दे आरफ़, हरूफ़ां विच परूफ़ दे के पड़दा सक्या ना कोए खुल्हाईआ। विष्नूं कहे मेहरवान महिबूब आप आपणा आत्म परमात्म कर तुआरफ, पड़दानशीं पड़दा देणा उठाईआ। चार जुग दी पिछली बदल दे आदत, अदल इन्साफ़ आपणा इक रखाईआ। सच दवार तेरी इक सदाकत, सदा सद तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, विश्व दा लेखा देणा समझाईआ। विष्नूं कहे मैं दीन दुनी नूं तक्कया, तक्कया तेरा नूर अलाह। मैं खेल वेख्या मदीना मक्कया, जिथ्थे परवरदिगार बणिउँ खुदा। नबी रसूलां नाता वेख्या सक्या, साजण मीत जिथ्थे मुरार बणिउँ मलाह। सदी चौधवीं चार कुण्ट कूड़ कुड़यारा अंग्यारा मच्चया, अग्नी अग्ग सके ना कोए बुझा। मुहम्मद चार यारी नाल फिरे नट्ठया, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण पन्ध मुका। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर अमाम अमामा खेल आपणा इक्को दस्सया, दहि दिशा दए उलटा। जगत खेड़ा करना भट्ठया, अग्गे हो सके ना कोए बचा। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, करे खले साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वा। विष्नूं कहे मैं वेखे पैग़म्बर रसूल, कल्मयां विच ध्यान लगाईआ। कायनात दा तक्कया असूल, असल पड़दा इक चुकाईआ। सच वस्त कितों ना होए वसूल, वसल यार ना कोए कराईआ। मुला शेख़ मुसायक तेरा रस्ता गए भूल, रहिबर मिलण कोए ना पाईआ। कदम बोसी चरण कँवल मस्तक लाए कोए ना धूल, टिक्का ख़ाक ना कोए रमाईआ। किसे नज़र ना आए कन्त कन्तूहल, मालक ख़ालक आपणा नूर कर रुशनाईआ। साचा हुक्म दस्स माकूल, मुकम्मल आपणा भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दरगाह साची आपणी कार कमाईआ। विष्नूं कहे मैं वेखे पैग़म्बर नबी, नबी नूह ध्यान लगाईआ। तेरा राह तकण सभी, बिन नेत्र नैण अक्ख उठाईआ। लहिणा मुकणा चौधवीं सदी, सदमे विच सारे देण दुहाईआ। जिस उम्मत दी मेटणी बदी, बदीआं दा लेखा दए चुकाईआ। पिछली कीती करनी रद्दी, अग्गे आपणा हुक्म दृढ़ाईआ। एह खेल हुन्दा नौ सौ चौरानवे चौकड़ी बाद कदी कदी, कदीम दे मालक कुदरत दे कादर बेपरवाह आपणी कार कमाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा सृष्टी दृष्टी अन्दर वेख अग्ग लग्गी, आबेहयात अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा हुक्म आदि जुगादि जुग चौकड़ी धर्म दी धार मधी, माधव आपणा पड़दा देणा चुकाईआ।

५१
२२

✪ १६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ प्रकाश चन्द दे गृह जम्मू शहर ✪

विष्नूं कहे मैं तके भगत सुहेले मीत, जो मित्र प्यारा इक बणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गा के गीत, जीवण ज़िंदगी गए बदलाईआ। नाम विचोला रख के बीच, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। नाता तोड़ के मन्दिर मसीत, काया काअबा वेख वखाईआ। कलयुग कूड़ी छड के रीत, सतिजुग साचा इक अपणाईआ। पुरख अकाल वसा के चीत, मन ठगौरी दिती गंवाईआ। आपणी पवित्र कर के नीत, नीती धुर दी लई मनाईआ। काया होई ठंडी सीत, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। मेरी खुशी विच निकली चीक, उच्ची कूक दिता सुणाईआ। बिना भगतां तों प्रभू दे वसया ना कोए नज़दीक, दीन दुनी दूर दुराडा डेरा लाईआ। दीन मज़्हब इक दूजे दा दिसया शरीक, शरअ विच करे लड़ाईआ। हक रखे ना कोए तौफ़ीक, तोबा तोबा विच दुहाईआ। निगाह आई ईसा वाली सलीब, अन्त अख़ीरी सोभा पाईआ। सो सब दा वक्त आया करीब, करबले वाला दए गवाहीआ। लहिणा मुकावे अमीर ग़रीब, दीनां अनाथां दया कमाईआ। तेरा खेल होवे अजीब, अजब निराले

देणा दृढ़ाईआ। सृष्टी दी दृष्टी अन्दर दे तरतीब, तरह तरह आप समझाईआ। तेरे उपर अन्त उम्मीद, आसा गुर अवतार पैग़म्बर बैठे लाईआ। तेरे नाम कलमे दी इक्को होवे तम्हीद, सिफ्तां विच सारे ढोले गाईआ। सब दी पूरी कर वसीअत, वसल यार दे खुदाईआ। तुध बिन बख्शे ना कोए असलीअत, सच सुच ना कोए जणाईआ। कायनात दी बदल तबीअत, तबा तबीअत वेख वखाईआ। दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी मल्कीयत, लख चुरासी तेरा नूर नज़री आईआ। चार खाणी दी सच तूं वल्दीअत, वालद वालदा इक्को सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरे विच इक ऐहमीअत, तुध बिन दूसर दुतीआ भेद ना कोए मिटाईआ।

✪ १६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ तेजा सिँघ दे गृह जंडयाला गुरु ✪

विष्नूं कहे मैं तक्कया माझा, मज़ा प्रभ ने दिता चखाईआ। जिस ने आदि जुगादी साजण साजा, सज्जण दाता धुरदरगाहीआ। निरगुण निरवैर ग़रीब निवाज़ा, नर निरँकार नूर इलाहीआ। शाहो भूप वेख्या राजा, शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। जो जुग चौकड़ी बणया रिहा महाराजा, महिबूब अगम्म अथाहीआ। जिस ने संग रखाया नाल वाला बाजां, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द संग वखाईआ। जो लहिणा देणा वेखे दीन मज़्हब समाजा, चार जुग दा खोज खुजाईआ। भेव अभेदा जाणे जुग आदी आदा, अन्तिम पड़दा लाहीआ। धुन आवाज़ सुणाए शब्द अनादा, राग अगम्मा कर सुणाईआ। जिस दा खेल सब तों सादा, जगत जुगत ना कोए जणाईआ। लहिणा देणा वेखे सीता राम कृष्ना राधा, रहिबर खोजे थांउँ थाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। विष्नूं कहे मैं वेख्या माझे अगम्मा रंग, हरि करते दिता वखाईआ। मेरी मनसा पूरी होई मंग, मांगत झोली देणी भराईआ। मैनूं आया सच अनन्द, तृष्ना कूड़ दिती गंवाईआ। जां तक्कया सूरा सरबंग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती धार बैठ पलँघ, सेज सुहञ्जणी इक वड्याईआ। कलयुग मेटण आया पन्ध, पाँधी हो के फेरा पाईआ। दो जहाना आया लँघ, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जन भगत सुहेले रखे संग, सगला संग आप निभाईआ। निरगुण धार शब्द तरंग, निरवैर आप दौड़ाईआ। कोटन कोटि पार कर ब्रह्मण्ड, खण्ड चरणां हेठ दबाईआ। लहिणा वेखण आया जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। सन्त सुहेले चमकावण आया चन्द, गुरमुख नूर जोत रुशनाईआ। भगत सुहेला रहिण ना देवे कोए भागांमंद, जन्म कर्म दा लेख चुकाईआ।

चुरासी तोड़े आप फंद, बन्धन अवर कोए ना पाईआ। दीन दयाल बण बख्शंद, रहमत सच कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच साची कार जणाईआ। विष्नूं कहे मैं वेख्या आपणा प्रीतम मीत, मित्र प्यारा नज़री आईआ। काया होई ठांडी सीत, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। जिस ने चार जुग दी बदलणी रीत, रीतीवान इक अख्वाईआ। झगड़ा मुका के मन्दिर मसीत, आत्म अतीत देणा दृढ़ाईआ। लेखा रहे ना ऊच नीच, दीन मज़्ब ना वंड वंडाईआ। इक्को नाम करे बख्शीश, रहमत सब दी झोली पाईआ। इक्को कलमा दए हदीस, हज़रतां तों परे करे पढ़ाईआ। साहिब स्वामी हो के वसे चीत, मन चित ठगौरी रहिण कोए ना पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्से गीत, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। झगड़ा रहे ना हस्त कीट, राउ रंक इक्को रंग रंगाईआ। एह खेल होणा अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाईआ। माझे वाल्यो सोहँ सब दी लिख्या होवे उत्ते पीठ, ख़ाली रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। विष्नूं कहे मैं तक्कया साहिब स्वामी इक, एकँकारा नज़री आईआ। मेरी निगाह गई टिक, टिकटिकी इक्को विच रखाईआ। जिस ने हुक्म कीता विष्न ब्रह्मा शिव धार मेरा सिख, सिख्या सिख सहिज सुखदाईआ। जिस ने लेखा दिता लिख, अक्खर अक्खरां नाल जुड़ाईआ। ओस प्रगट करना आपणा भविख, भेव अभेद खुल्हाईआ। सब दे निरन्तर हो के विच, पर्दा अन्तर देणा चुकाईआ। जिस नूं लभ्भदे केते कित, नेत्र दरस कोए ना पाईआ। जन भगतां करे हित, माझे बैठा डेरा लाईआ। जिस ने पूजा हटाउणी पथ्थर इट्ट, सिल पाहन सीस ना कोए निवाईआ। चार जुग दे नामां दी गुर अवतार पैग़म्बरां कोलों अन्त अख़ीर कराउणी रिट, अग्गे रट्टा देणा मुकाईआ। सब दा लहिणा देणा पुरख अकाला दीन दयाला आपे लए नजिठ, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। विष्नूं कहे प्रभ मुश्किल कीती आसानी, एहसान मेरे सिर चढ़ाईआ। हुक्म दिता शाह सुल्तानी, अगम्म अथाह दृढ़ाईआ। ज़रा निगाह मारनी प्रानी, प्रानां तों परे ध्यान लगाईआ। जिथ्थे शरअ नहीं बेगानी, शरीअत वंड ना कोए रखाईआ। लिखण वाली नहीं कोए कानी, अक्खरां नाल ना सिफ्त सालाहीआ। इक्को नूर जोत नुरानी, नूर नुराना सोभा पाईआ। सो खेले खेल दो जहानी, निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। विष्नूं कहे मेरा पड़दा चुक्कणा प्रभ कीती मेहरवानी, मेरा मेरे विच्चों प्रगटाईआ। मैनूं याद आ गया मैं गोबिन्द तक्कया जिस दा खेल महानी, महिंमां अकथ अकथ दृढ़ाईआ। मैनूं नज़र आई उहदी इक्कीआं मणक्यां वाली गानी, जिस नाल इक्की हिस्से संगत दिती बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। विष्नूं

कहे गोबिन्द दी गानी इक्की धार मणका, मन का मणका दए बदलाईआ। झगड़ा मिटावे वजूद तन का, माटी ख़ाक डेरा ढाहीआ। लहिणा रहे ना राग कन्न का, रसना वाली ना कोए शनवाईआ। प्रकाश मिटे सूर्या चन्न का, निज जोत नूर चमकाईआ। एह लेखा साहिब सतिगुर धन्न का, धन्न धन्न वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। विष्नूं कहे गोबिन्द किहा दो तों बणा के इक, सरगुण तों निरगुण इक्की देणी वखाईआ। इक्को पिता ते इक्को पित, इक्को जम्मण वाली माईआ। इक्को वरन होणा सिख, चार वरन वंड ना कोए रखाईआ। आपणी उँगली नाल लेखा आपणे मस्तक विच दिता लिख, काग़ज़ कलम शाही हथ्थ ना कोए उठाईआ। एह मेरा धर्म धार दा भविख, भविक्ख्तां तों परे पढ़ाईआ। बिना प्रभू तों किसे दी लाहे कोई ना विख, विषा विकार ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। विष्नूं कहे गोबिन्द ने दो इक सिक्खी दा दस्सणा रूप, पोह छब्बी वड्याईआ। जेहड़ी फैलणी चारे कूट, नौ खण्ड खण्ड वड्याईआ। इक्को धागा होणा सूत, इक्को रंग रंगाईआ। इक्को माण देणा पंज भूत, तन वजूद इक सालाहीआ। अन्तर निरन्तर कूड़ी क्रिया कराउणा कूच, कूचा गली कर सफ़ाईआ। जन भगत सुहेले बणाउणे सपूत, पिता पूत गोद टिकाईआ। जन्म कर्म दा मेटणा दूख, दर्द रहे ना राईआ। इक्को देणा धुर दा सूख, सच संजम विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। विष्नूं कहे इक्की मणके आउणे विच्चों माझे देस, ब्रह्मा शिव वेखण चाँईं चाँईंआ। एह लहिणा गोबिन्द दस दशमेश, जो शब्दी धार समझाईआ। इक्कीआं सिक्खां ने करने पेश, वस्त्र सोहणे तन सजाईआ। इक्कीआं दे सिर ते सोंहदा होवे नाग शेष, पगड़ी उत्ते सत्त इंच सोभा पाईआ। पिच्छे खुल्ले होण केस, पिठ उत्ते टिकाईआ। हथ्थ विच लिख्या होवे दस दशमेश, सुनहरी अक्खरां रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त रहे हमेश, हमसाजण नज़री आईआ।

५४
२२

५४
२२

✪ २० अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ दलीप सिँघ दे गृह गुरु का जंडयाला ✪

विष्नूं कहे प्रभ गोबिन्द दिता भण्डारा, गोबिन्द झोली गोबिन्द भराईआ। जोती नूर दे चमत्कारा, पर्दा आपणा दिता उठाईआ। शब्द नाद दे धुन्कारा, अगम्मी राग सुणाईआ। मेरे वेंहदयां बख्श के भण्डारा, दो धारा थापी पुश्त पनाह लगाईआ। हस्स के किहा तेरा खेल विच संसारा, चण्ड प्रचण्ड दरसाईआ। बंस सरबंस वारना सारा, अंस प्रभ दी इक अख्वाईआ।

तन शरीर वजूद होवे वड श्रृंगारा, कल्गी तोड़ा सीस सुहाईआ। नीली धार होणा सवारा, नीला आपणा रंग रंगाईआ। चार वरन करना प्यारा, बरन अठारां जोड़ जुड़ाईआ। हिन्दू मुस्लिम देणा सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मेरा खेल दस्सणा न्यारा, पंज तत रंग रंगाईआ। मुच्छ दाढ़ी केस तेरा हिस्सा अपर अपारा, झोली लोकमात भराईआ। दामनगीर हो के नर निरँकारा, पल्लू आपणा नाल गंढाईआ। खेल दस्सया निरगुण धारा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। नैण बन्द करा दिता इशारा, अगम्मी आपणा खेल वखाईआ। गोबिन्द फेर आउणा पए दुबारा, सरगुण निरगुण रूप वटाईआ। मेरा होवे इक प्यारा, दूसर मीत ना कोए जणाईआ। दोहां दा इक होवे विवहारा, विवहारी दए समझाईआ। जोत शब्द धार धरनी होवे उज्यारा, उज्जल इक्को इक कराईआ। गुरसिख भगत बणाउणे इष्ट जणाउणा इक मेरा एकँकारा, इक इकल्ला भेव खुल्हाईआ। इक्को नाम होवे जैकारा, पुरख अकाल ओट इक दरसाईआ। लहिणा मुकाउणा तेई अवतारा, पैग़म्बरां लेखा झोली पाईआ। गुरुआं कायम कर मुनारा, धर्म दी धार इक समझाईआ। सब दा पालक बण परवरदिगारा, परवरिश करे थांउँ थाँईंआ। सीस नवावण ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमी असमान सूर्या चन्द सितारा, गृह निव निव लागण पाईआ। तेरा नूर मेरा ज़हूर शब्दी तूर जोती जोत होए उज्यारा, अंध अंधेरा दए गंवाईआ। तख्त निवासी बण सिक्दारा,
सिद्ध मार्ग इक प्रगटाईआ। नव सत्त बण वणजारा, वस्त अमोलक इक वरताईआ। हुक्म शब्द इक इशारा, शरअ तों बाहर दिता समझाईआ। गोबिन्द कर निमस्कारा, सीस जगदीश दिता झुकाईआ। झट नानक रूप कर पसारा, सन्मुख हो के सोभा पाईआ। दोए जोड़ किहा मेरे पतिपरमेश्वर यारा, यारड़ा सथ्थर गोबिन्द देणा हंढाईआ। जिस ने सतिलुज ब्यासा पार नहीं करना किनारा, नानक दी शाही दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक वरताईआ। विष्नूं कहे नानक माला दे मणके फेरे इकासी, पुट्ठे हथ्थ चलाईआ। फेर प्रभ नूं किहा मैं तेरी दासी, दासी हो के सेव कमाईआ। फेर उँगल कीती औह वेख तूं ईसा चढ़ाया फाँसी, सलीव गल लटकाईआ। झट गोबिन्द कीती हासी, ताली दिती वजाईआ। एह केहड़ी खेल तमासी, जो प्रभू रिहा कराईआ। नानक किहा अग्गे मार झाकी, गोबिन्द लै अंगड़ाईआ। तैनूं अमृत जाम दा बणाउणा साकी, धुर प्याला हथ्थ फड़ाईआ। फेर बंस सरबंस कोई रहिण नहीं देणा साथी, पिता पूत ना गोद सुहाईआ। अस्व रहे ना जिस दी चाल बांकी, नन्गी पैरीं भज्जणा वाहो दाहीआ। गोबिन्द हथ्थ मारया उत्ते छाती, खुशी नाल लई अंगड़ाईआ। नानक एह नानक तेरी घाटी, ते नानक दा नूर गोबिन्द नूर इलाहीआ। नानक किहा तेरे हिस्से इक प्याला बाटी, जिस विच अमृत लैणा बणाईआ। बाकी वस्तू दी करनी पए कोई

ना राखी, घर बाहर सारा देणा तजाईआ। गोबिन्द ने साढे तिन्न हथ्थ दी लै के लाठी, ज़िमीं ते ठुकराईआ। फिर हथ्थ पा के ज़ीना काठी, खब्बा ज़ोर ज़ोर हिलाईआ। फेर दो जहानां मंज़ल वेख के वाटी, निगाह असमानां उपर टिकाईआ। झट्ट नानक किहा गोबिन्द ज़रा आह वेख पाती, पत्रका दयां दरसाईआ। जेहड़ी मैं शब्द कहाणी आखी, माझे तेरा चरण टिके ना राईआ। पिछला पासा तक अन्त माझे दा रहिणा नहीं कोई साथी, नानक दए गवाहीआ। पुरख अकाल कीती हासी, इशारे दोहां नूं रिहा वखाईआ। नानक गोबिन्द एह मेरा हिस्सा बाकी, ते तुहाडा हिस्सा आपणे विच छुपाईआ। जिस वेले सृष्टी दी दृष्टी होई बेइख़लाकी, ख़लक खुदा गई भुलाईआ। गोबिन्द तेरयां सिक्खां विच पैणी बेइत्तफ़ाकी, सिख सिख नाल करे लड़ाईआ। नानक तेरी बाणी नाल मैल जाए ना काटी, पढ़न वाले देण दुहाईआ। नानक नेत्र मीट के गोबिन्द बाहों फड़ के किहा अग्गे वेखीए कलयुग अंधेरी राती, की समां रही बदलाईआ। गोबिन्द किहा एह खेल साहिब समराथी, जो सब दा पिता माईआ। नानक किहा मैं वी ओसे दी दासी, सेवा आदि दी सच कमाईआ। विष्नूं किहा मैं सुणया बचन अपारा, उँगलां कन्नां विच पाईआ। हैरान, हो गया किस तरह गोबिन्द आए दुबारा, चार जुग विच अग्गे गया मुड़ के फेरा कोए ना पाईआ। ओने चिर नूं पुरख अकाल मैनूं कन्नो फड़ के दिता इशारा, हलूणा दिता लगाईआ। एह योधा सूरबीर सिक्दारा, सुत दुलारा मेरा सोभा पाईआ। जिस वेले मैं कलि कल्की लवां अवतारां, एह मेरा संग रखाईआ। एह शब्द गुरु संसारा, । मैं नूर जोत उज्यारा, घर घर करां रुशनाईआ। दोहां दा प्रेम खण्डा होए होए दो धारा, दूजा शस्त्र हथ्थ ना कोए उठाईआ। गुरमुखां सच करां प्यार अगम्म अपारा, जिस नूं समझे कोए ना राईआ। सच दा खोल्ह के सच दवारा, भगत भगवान रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। विष्नूं कहे मैं वेख्या गोबिन्द धार रूप अति सुन्दरी, नैण नैण सोभा पाईआ। गोबिन्द हथ्थों लाह के मुन्दरी, उँगली विच भवाईआ। कलयुग अन्त मैं भगतां सन्तां दी बदल देणी कुण्डली, राशी आपणे नाल मिलाईआ। चार वरन बणा के जुंडली, रंग इक्को देणा चढ़ाईआ। एह दस्सणी ओह मुढली, जेहड़ी आत्म परमात्म दी रीती चली आईआ। एह धार चार जुग किसे ना बुज्झ लई, बुझारतां विच गुर अवतार पैग़म्बर फेरीआं गए पाईआ। अन्त अख़ीर प्रभ किरपा नाल मैनूं सुझ गई, समझ दिती समझाईआ। नानक किहा गोबिन्द औह वेख माझे वाल्यां दी बुध गई, नाता तेरे नालों तुड़ाईआ। गोबिन्द दी मुन्दरी उँगलीं उतों उड गई, वेंहदयां नज़र किसे ना आईआ। ओह माझे देस दी धरती पुज्ज गई, जिथ्थे पूजा करे लोकाईआ। गोबिन्द दी आशा एथे रुझ गई, ध्यान ध्यान विच्चों प्रगटाईआ। झट ओह मुन्दरी

लुक गई, नज़र कोए ना आईआ। नानक ओसे वेले आपणी भूरी चुक्क लई, कन्नी लई उठाईआ। खुशी विच किहा गोबिन्द तूं आया दर्दीआं दे दुःख लई, ग़रीबां होणा सहाईआ। औह वेख कलयुग औध पुग्ग गई, वेला वक्त दए गवाहीआ। तेरी आशा नहीं किसे जगत धार दुद्ध लई, वासना अवर ना कोए बणाईआ। तेरा खेल होणा मानव मानुख लई, ममता कूड़ मिटाईआ। सहारा होणा मात कुख्ख लई, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणी कार कमाईआ। गोबिन्द किहा मेरी मुन्दरी हो गई अलोप, सच दवारे मुख छुपाईआ। मैं वेख्या चौदां लोक, चौदां तबक नज़र ना आईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड दिते रोक, पड़दा सब दा दिता उठाईआ। वेखे किले कोट, महल्ल अटल फोल फुलाईआ। कितों नज़र ना आई किस उत्ते लावां दोष, किस नूं दयां सज़ाईआ। फिर थोड़े समें लई हो गया ख़ामोश, मुख ज़बान ना कोए हिलाईआ। फेर हथ्थ मारया उपर बदन पोश, सिर पैर तांईं फिराईआ। झट वेख्या इक ख़रगोश, जो भज्जया आवे चाँईं चाँईंआ। चरणां विच सुट्टी आपणी लोथ, डेरा दिता जमाईआ। गोबिन्द ने उहदे अन्दरों वेख्या इक कोश, जिस उत्ते लिख्या तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। मैनूं इक्को इक दी सोच, दूसर आस ना कोए वधाईआ। मेरी मनसा पूरी कर दे लोच, लोचा तेरे नाल बणाईआ। नाम खुमारी दे मदहोश, मधुर राग धुन शनवाईआ। गोबिन्द प्यार विच किहा तैनूं अग्गे दिता बहुत, सच मिली सरनाईआ। ख़रगोश किहा गोबिन्द मेरी इक बेनन्ती तेरा माझा जाए ना औंत, तेरा दर तेरे सोभा पाईआ। वेला दस्स ढईआ कि औंट, वक्त वक्त नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। गोबिन्द किहा वाह मेरे मेहरवान, की आपणा रूप बदलाईआ। क्यों भज्जया विच मैदान, चौपाइआं वाली छलांग लगाईआ। मैं वेख होया हैरान, की तेरी बेपरवाहीआ। झट ओह बण के नौजवान, आपणी लए अंगड़ाईआ। फेर रूप धर श्री भगवान, जोती जाता डगमगाईआ। फेर शब्द नाद धुन्कान, अगम्म दिती सुणाईआ। फेर पिट्ठ मारया हथ्थ माझा देस ओह स्थान, जिथ्थे भगत दवारा सोभा पाईआ। ज़रा वेख शहिनशाह सुल्तान, नूर नुराना नज़री आईआ। तेरयां गुरमुखां तों ओह तेरा फेर लै के देवां ओह दान, विचोला आपणा आप बणाईआ। तूं उँगली उत्ते पाउणा ओह फेर निशान, जिस निशाने नूं विष्न ब्रह्मा शिव वेखण चाँईं चाँईंआ। उत्ते गोबिन्द लिख्या होवे एह गोबिन्द दा ईमान, गोबिन्द गोबिन्द रंग रंगाईआ। गोबिन्द तेरे माझे वाले पहलों करां सवाधान, पिछला लेखा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच लहिणा दए चुकाईआ। गोबिन्द झट दोवें हथ्थ रखे उत्ते मथ्थे, साहमणे दिते वखाईआ। मैं छड दिते तेरे तीर भथ्थे, कमान कंधे ना कोए टिकाईआ। तेरा खेल वेखणा आपणी अगम्मी

अक्खे, जगत नेत्र बन्द कराईआ। तूं मेरे अन्दर वसें, मैं तेरे विच समाईआ। तूं मेरे पते दस्सें, मैं तेरा पड़दा लाहीआ। तूं मेरे वल्ल नस्सें, मैं तेरा राह तकाईआ। तूं रूप धरना सस्से, मैं होड़ा रंग रंगाईआ। हँ ब्रह्म सारी साडे दोहां दे विच वसे, सोहँ रूप सृष्ट सबाईआ। जेहड़े गुरमुख होणे बच्चे, सिर उहनां हथ्थ टिकाईआ। जिन्हां ते किरपा करनी ओन्हां नूं मरन विच्चों मरन पहलों दस्से, संदेशा सच सच सुणाईआ। फेर किरपा कर के रखे, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाण हकीकत हके, हक दा मालक इक अख्वाईआ।

✪ २० अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ सवरन सिँघ दे गृह जडयाला गुरु ✪

विष्नूं कहे मैं शब्द धार तक्कया गोबिन्द सपूत, सपुत्र उत्तर पूरब पच्छम दक्खण इक्को नज़री आईआ। जिस दा नूर नज़ारा चारे कूट, दहि दिशा पड़दा ओहला रिहा उठाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अवतार पैग़म्बर गुर रूप बदलदा रिहा पंज भूत, तन वजूद माटी ख़ाक सोभा पाईआ। अन्त करदा रिहा कूच, कूचा गली धरनी धरत धवल होका हक नाम सुणाईआ। वंडां वंडदा रिहा दीन मज़्हब ज़ात पात नीच ऊच, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई नाउँ प्रगटाईआ। भेव खोल्हदा रिहा आत्मा परमात्मा ताणा पेटा इक्को सूत, सूत्रधारी साहिब स्वामी अन्तरजामी इक्को इक अख्वाईआ। सो कलयुग अन्त लेखा मुकावे लहिणा देणा जूठ झूठ, माया ममता मोह विकार हँकार डेरा ढाहीआ। किरपा निधान साहिब सुल्तान हो के जाए तूठ, मेहरवान महिबूब आपणा रंग रंगाईआ। भगत सुहेले जुग जन्म जो प्यार मुहब्बत विच गए रूठ, मित्र प्यारा हो के आपणा मेल मिलाईआ। पावे सार नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप चार कूट, चार गुट्ठ लुक्या नज़र कोए ना आईआ। शब्दी धार हो त्यार नाम निधाना गाना बन्ने धर्म दे गुट्ट, गुर गुर धार आपणी इक प्रगटाईआ। गुरमुखां जन भगतां उज्जल करे लोकमात मुख, मुखीआ हो के दुखियां दु:ख दए गंवाईआ। सन्त सुहेला हो के लए पुछ, शाह फ़कीरां मेल मिलाईआ। साडा लहिणा देणा जाणे जिस कारन कटाई दाढ़ी मुच्छ, बोदी सीस जगदीश टिक्का गिरदा खोज खुजाईआ। साची वस्त नाम अमोलक दे के कुछ, कच्छ मच्छ दी आसा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक समझाईआ। विष्नूं कहे मैं वेख्या शब्दी सुत दुलारा, दूल्हा धुर दा नज़री आईआ। जिस दा रूप तेई अवतारा, पैग़म्बर नूरे चशम नूर रुशनाईआ। गुरु गुरदेव विच संसारा, इष्ट सृष्ट दृष्ट विच वड्याईआ। जिस

दी महिमा शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी जुग चारा, गीता ज्ञान ध्यान इक्को इक समझाईआ। सो शाहो भूप बण सिक्दारा, सच सुल्ताना सोभा पाईआ। जिस दा नूरे नज़र कलि कल्की अवतारा, कलि कलेश दस दशमेश संग मिटाईआ। चार कुण्ट वेखे विगसे पावे सारा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा भेव खुल्हाईआ। सदी चौधवीं जिस ने करना अन्त किनारा, मुहम्मद आशा दए वड्याईआ। ईसा लेखा जाणे वीहवीं सदी तकरारा, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। नानक गोबिन्द गोबिन्द धार प्रगट हो संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी भेव चुकाईआ। जिस दा भेव कागद कलम ना लिखणहारा, आदि अन्त कहिण कोए ना पाईआ। सो साहिब सतिगुर दीन दयाल पुरख अकाल परवरदिगार सांझा यारा, वेखणहारा थांउँ थाँईंआ। लहिणा देणा कलयुग अन्तिम मेटे अगम्म अपारा, अलख अगोचर आपणी कार कमाईआ। गोबिन्द गोबिन्द धार खेल करे विच संसारा, निरगुण निरगुण सरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सत्त रंग दी बन्हू सीस दस्तारा, माझे वाल्यां मजलस आपणी दए वखाईआ।

२० अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ सुरैण सिँघ दे गृह जंडयाला गुरु

विष्नूं कहे मैं कलयुग अन्तिम वेख्या कूड़न, कूड़ कुटम्ब दिसी लोकाईआ। सब दी दृष्टी होई मूढ़न, मूर्ख मुग्ध रूप दरसाईआ। प्रभ दी मंगे कोए ना चरण धूढ़न, गुरु अवतार पैग़म्बरां इष्ट सर्ब मनाईआ। फेर साहिब तक्कया हाज़र हज़ूरन, हरि करता धुरदरगाहीआ। योद्धा अगम्मी बीर सूरन, सति सतिवादी इक अख्वाईआ। जिस दा रूप अनूप पूरन, परम पुरख प्रभ वेस वटाईआ। कलयुग पन्ध मिटाए नेड़ दूरन, दूर दुराडा वेख वखाईआ। जन भगतां जन्म जन्म दा बख्श कुसूरन, मेहर नज़र नाल तराईआ। विष्नूं कहे अन्तिम खेल वेख होया मजबूरन, मजबूरी विच दुहाईआ। चार जुग दा लेखा दिसया अधूरन, अन्त सक्या ना कोए कराईआ। चार जुग दे शास्त्र दिसे मज़दूरन, मज़दूरी जगत वाली कमाईआ। प्रभ दा नाम करन मशहूरन, सिफ्तां विच सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता इक अख्वाईआ। विष्नूं कहे मैं कलयुग अन्त वेख होया उदास, उदासी मेरे अन्दर आईआ। मैनूं हुक्म दिता पुरख अबिनाश, अबिनाशी करते दिता दृढ़ाईआ। मेरा खेल वेख सर्ब गुण तास, गुणवन्ता आप जणाईआ। आदि अन्त सब किछ मेरे पास, देवणहार अगम्म अथाहीआ। प्रभ पूरन पूरन विच प्रकाश, पूरन पूर रिहा सर्ब ठाईंआ। पंजां ततां

दे शाबाश, शाह सुल्तान इक समझाईआ। फेर थल्लयों वखाया आकाश, आकाश दे नीचे धरनी धरत धवल वड्याईआ। जिधर तकां ओधर साथ, सगला संग निभाईआ। हुक्मी हुक्म रिहा आख, बिन अक्खरां कर पढ़ाईआ। सब दा पूरा करना भविक्खत वाक, लिखत शहादत दए भुगताईआ। हुक्म वरताउणा इक साच, सच सच वड्याईआ। धर्म दी धार वखा तमाश, खेल अगम्म देणा समझाईआ। विष्नूं कहे मेरा इक ते होया विश्वाश, विशा अवर ना कोए जणाईआ। ओस वेले मेरा भगवन मेरे साथ, पासा सक्या ना कोए बदलाईआ। मैनूं वखाई मण्डल रास, गोपी काहन नचाईआ। फेर सहिज दिता आख, शब्दी शब्द हुक्म दृढ़ाईआ। विष्नूं करीं ना पश्चाताप, चिन्ता ग़म ना कोए रखाईआ। कलयुग अन्त प्रगट होवां आप, आप आपणा फेरा पाईआ। जन भगतां बणां माई बाप, पिता पूत गोद सुहाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के जाप, मार्ग इक्को इक रखाईआ। सतिगुर शब्द धार दी दे के दात, वस्त अमोलक झोली आप टिकाईआ। चार जुग दा लेखा लिख्या नाल कलम दवात, निरगुण हो के खोज खुजाईआ। नवें जुग दा लहिणा देणा देवां साख्यात, सच स्वामी हो के फेरा पाईआ। पंजां ततां दी पंजां लिखारीआं कोलों करावां याच, यजुर वेद दए गवाहीआ। चरण कँवल बणा दासी दास, सेवक सेवा सच कमाईआ। बिना पुरख अकाल तों उन्हां दा दूजा रहे कोई ना माई बाप, भैण भाई दा नाता दए तुड़ाईआ। इक आत्मा इक परमात्मा इक बणा के साक, सज्जण इक अख्वाईआ। कलयुग होवे अंधेरी रात, साचा चन्द करां रुशनाईआ। रविदास चमारा प्रेम धार दी रखे प्रभात, अट्ठे पहर इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। विष्नूं कहे मैं वेख्या कलयुग अन्तिम वक्त वक्त थोड़ा, थोड़ा ध्यान लगाईआ। पुरख अकाल दा तक्कया निरगुण धार घोड़ा, दो जहानां भज्जे वाहो दाहीआ। शाह पातशाह तक्कया बांका छोहरा, शहिनशाह सच सिंघासण सोभा पाईआ। विष्नूं कहे मैं हुक्म सुणावां कोरा, जो धुर फ़रमाना श्री भगवाना रिहा दृढ़ाईआ। पंजां लिखारीआं प्रभ दा नवां बणाउणा जोड़ा, चरण कँवल वारी वारी पाईआ। अग्गे करना भाग मथोरा, मिथ्या दस्सणी सर्ब लोकाईआ। जिस कारन सस्से उपर लाया होड़ा, हाहे टिप्पी दिती वड्याईआ। जगत जहान नालों कर विछोड़ा, विछड़े आपणे नाल मिलाईआ। हरिसंगत प्रभ लई कुछ दान ल्याउणा थोड़ा थोड़ा, इक इक दाणा आपणे हथ्थ टिकाईआ। विष्नूं कहे सचखण्ड वास्ते सतिजुग धार मैनूं पई लोड़ा, बिना भगतां तों पूर ना कोए कराईआ। पंजां प्यारयां नौ हथ्थ दा ल्याउणा डोरा, डोरी सूत्र धार वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां लेखा मुकाए पंज विकार चोरा, चोरी चोरी सब ते दया कमाईआ।

६१
२२

६१
२२

✪ २० अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ दीदार सिँघ दे गृह शफ़ीपुर ज़िला अमृतसर ✪

विष्नूं कहे ब्रह्मा वेख गोबिन्द दा पूरन परगणा, प्रगट निरगुण धार कराईआ। जिस दी आसा रख के गया तती लोह उत्ते गुर अर्जना, अर्ज़ बेनन्ती आरज़ू विच समझाईआ। शब्दी धार अगम्मी सतिगुरु अगम्मी गरजणा, भय दो जहान रखाईआ। जिस नूं अग्गे हो किसे ना वरजणा, सारे बैठे सीस निवाईआ। उस दा हुक्म कदे ना परतणा, प्रतख आपणी कार कमाईआ। कलयुग अन्तिम भाणा वरतणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दी पूरी करनी शर्तना, शरअ दा लेखा देणा चुकाईआ। जन भगतां चिन्ता रोग मिटाए हरसना, हिरस हवस आपणी इक जणाईआ। कोटां विच्चों सन्त सुहेले दर्शन परसणा, पारस कंचन लोहा दए वखाईआ। अमृत मेघ अगम्मा बरसणा, निरगुण बूँद स्वांत टपकाईआ। जिस ने चार जुग दा लेखा नाँ कसवटी उत्ते परखणा, पारखू हो के फेरा पाईआ। उस दे अग्गे किसे ना अटकणा, अटक तों पार पए दुहाईआ। जिस ने दो जहान नौ खण्ड पृथ्मी झटकणा, झटका देवे थांउँ थाँईंआ। शब्दी धार खण्डा खड़कणा, पूरन गोबिन्द सच दृढ़ाईआ। दीन मज़्हब दा रोड़ा अटकणा, दुनी रोवे थांउँ थाँईंआ। धुर दा हुक्म चढ़ना कटकणा, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। मन कल्पणा विच सब ने भटकणा, शांतक सति ना कोए कराईआ। जम की फाँसी मनमुख जीवां लटकणा, चुरासी गेड़ ना कोए कटाईआ। दुखियां वंडे कोई दर्द ना, दीनां देवे ना कोए वड्याईआ। एह खेल करना मर्द मर्दाने मर्दना, मदद आपणी नाल रखाईआ। शरअ कसाई रहे करदना, कुदरत दा कादर करनी दा करता लेख मुकाईआ। सब दी कढ के चार जुग दी फ़रदना, लहिणा वेखे थांउँ थाँईंआ। कलयुग पुत्ती करे नरदना, नारद मुनी दए दुहाईआ। एह खेल करना असचरजना, अचरज लीला आप वखाईआ। इक्को सम्बल सुहाउणा परगणा, पटने वाला डेरा लाईआ। गुरमुखां होण ना देवे हर्जना, हर्ज आपणे घर टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक सुणाईआ। विष्नूं कहे गोबिन्द दा ब्रह्मा पूरन वेख गृह, घर इक्को सोभा पाईआ। जिथ्थे परम पुरख परमात्मा रहे, रहिबर बण के नूर इलाहीआ। जिस नूं याद करदे कोटन कोटि लख करोड़ी सै, गणती गणित ना कोए गणाईआ। जिस दे हुक्म अन्दर जुग चौकड़ी वहिण वहे, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग धार वहाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला सच सिंघासण आप बहे, तख्त निवासी डेरा लाईआ। जिस ने दीन दुनी करनी लै, लहिणा सब दा झोली पाईआ। इक दो जहान सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी होवे जै, जै जैकार आप कराईआ। जुग चौकड़ी पुरख अकाल आपणा नाम किसे नहीं कीता बै, हक फक ना कोए कराईआ। सारे रसना नाल गए कहि, कहि कहि जगत सुणाईआ। अन्त

प्रभ दी सरनी पए, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी एका है, दूजा नज़र कोए ना आईआ।

✪ २० अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ सोहण सिँघ दे गृह तरनतारन ✪

विष्नूं कहे मैं तक्कया अजब नज़ारा, निरगुण निराकार निरँकार दिता वखाईआ। कलयुग चारों कुण्ट अंध अंध्यारा, साचा चन्द ना कोए रुशनाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर होया धूंआँधारा, धुँदूकार ना कोए मिटाईआ। भुल्लया मार्ग गुर अवतारा, पैग़म्बरां भय ना कोए रखाईआ। चार बरन अठारां बरन, करन हाहाकारा, सांतक सति ना कोए वरताईआ। नेत्र रोवण ज़ारो ज़ारा, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला वेखणहार सर्ब संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी रिहा उठाईआ। वेखो खेल जगत दी धारा, धरनी धरत धवल धौल बिन नेत्र राह तकाईआ। नाल रलाए तेई अवतारा, त्रैगुण अतीता हुक्म सुणाईआ। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद होणा ख़बरदारा, सदी चौधवीं लए अंगड़ाईआ। नानक गोबिन्द दो जहानां पर्दा लौहणा सारा, सार शब्द इक प्रगटाईआ। किस बिध कलयुग कूड़ी क्रिया होवे पार किनारा, दर घर साचे मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर संदेशा इक सुणाईआ। विष्नूं कहे मेरे अन्तर आई हैरानी, हैरत विच जणाईआ। सति धर्म दी दिसे ना कोए निशानी, निशाना धर्म ना कोए उठाईआ। पंडत पांधे मुल्ला शेख़ जगत ग्रन्थी करन बेईमानी, बेवा रूप होई लोकाईआ। सच धार दिसे ना कोई ब्रह्म ज्ञानी, ब्रह्म विद्या ना कोए पढ़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप झगड़ा प्या अञ्जील कुरानी, शरअ सके ना कोए गंवाईआ। नाम निधाना मारे ना कोए कानी, अणयाला तीर ना कोए चलाईआ। कलयुग अन्त चार कुण्ट माया ममता कूड़ चढ़ी तुग्यानी, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हुक्म संदेशा इक सुणाईआ। विष्नूं कहे प्रभ वखाया कलयुग अन्तिम खेल, ख़ालक ख़लक दिता दृढ़ाईआ। झगड़ा प्या गुरु गुर चेल, चेला गुर ना कोए वड्याईआ। सच दवारे करे कोई ना मेल, आत्म परमात्म रंग ना कोए रंगाईआ। धर्म राए दी कटे कोई ना जेल, चुरासी फाँसी ना कोए कटाईआ। मैं हैरान होया एह प्रभ दा अचरज खेल, हरि करता आप खिलाईआ। आपे वस सर्ब नवेल, दर घर बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच दवारा इक दरसाईआ। विष्नूं कहे मैनूं शब्द अगम्मी अगम्मी आई आवाज़, अगम्म अगम्म जणाईआ। तेरा भेव खोल्हां राज़, पर्दा दयां उठाईआ। तक राह ग़रीब निवाज,

बिन नेत्र नैण नैण तकाईआ। जिसने कलयुग कूड़ी क्रिया बदल देणा समाज, सच समग्री सतिजुग इक वरताईआ। कूड़ी क्रिया धो के दाग़, दुरमति मैल करे सफ़ाईआ। अन्तर निरन्तर उपजावे इक वैराग, वैरी अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। अमृत रस निझर झिरना बूँद स्वांती दए स्वाद, अठ्ठ सठ्ठ लेखा दए चुकाईआ। मेहर निगाह नाल हँस बणाए काग, काग हँस रूप बदलाईआ। जोती दीप जलाए चिराग़, अंध अंधेर दए मिटाईआ। घर स्वामी मिले कन्त सुहाग, रंडेपा नज़र कोए ना आईआ। कलयुग जीवां आलस निंद्रा विच्चों खोल्ह के जाग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म दी धार इक दृढ़ाईआ। विष्नूं कहे प्रभ दिता इक संदेश, सति सच जणाईआ। निगाह मार माझे देस, देस देसांतर फोल फुलाईआ। निरगुण जोत नर नरेश, नूर नूराना सोभा पाईआ। जो आदि अन्त रहे हमेश, जन्म कर्म ना कोए रखाईआ। जिस नूं झुकण विष्न ब्रह्मा शिव गणेश, सुरप्त बैठा सीस निवाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर करन आदेश, निउँ निउँ लागण पाईआ। जिस दा मुच्छ दाढ़ी ना कोए केस, मूंड मुंडाया रूप ना कोए दरसाईआ। सो कलयुग बदलण लग्गा रेख, ऋषी मुनी समझ किसे ना आईआ। जन भगत सुहेले बणावे नेक, बदी अन्दरों दए गंवाईआ। जिन्हां कलयुग जीवां प्रभ दा नाम खाधा वेच, तिन्हां देवे आप सज़ाईआ। शब्द सतिगुरु दीन दुनी नूं मारे पेच, पेचीदा आपणी कार कमाईआ। अग्गे चले किसे ना पेश, पेशीनगोईआं देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। विष्नूं कहे प्रभ दा हुक्म अपारा, अपरम्पर आप दृढ़ाईआ। जगत वेखो तेई अवतारा, पैग़म्बर नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। गुर गुर वेखो सच दी धारा, धरनी धरत धवल ध्यान रखाईआ। साचा दिसे ना कोए मीत मुरारा, सज्जण संग ना कोए निभाईआ। चारों कुण्ट धुँदूकारा, अंध अंधेर ना कोए गंवाईआ। धर्म रिहा ना मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ गुरदवारा, विभचार कर्म करे लोकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी पढ़ के मन मिटे ना किसे विकारा, हंगता गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। कलयुग जीव विभचार होए चार कुण्ट दहि दिशा कुलखणी नारा, सुहागी कन्त ना कोए हंढाईआ। शब्दी हुक्म देवे सच्ची सरकारा, साहिब स्वामी आप दृढ़ाईआ। गोबिन्द अन्तिम उठ योधे सूरबीर मार ललकारा, नाम डंका इक वजाईआ। सरगुण कर ख़बरदारा, सदी चौधवीं सोया रहिण कोए ना पाईआ। पैग़म्बरां दे इक हुलारा, चौदां तबक कर शनवाईआ। चौदां लोकां तेरा इशारा, ऐशों इशर्त वेखण थांउँ थाँईंआ। सब नूं दस्सण कलयुग होणा अन्त किनारा, वेला वक्त दए गवाहीआ। हुक्म संदेशा देवे कलि कल्की चव्हींआ अवतारा, जिस नूं जन्मे कोई ना माईआ। जिस दा शब्द सुत गोबिन्द इक दुलारा, दूल्हा धुर दा नज़री आईआ। ओह वेखणहार

सर्ब संसारा, सृष्टी दृष्टी अन्दर खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि दाता बेपरवाहीआ। विष्नूं कहे मैं शब्द अगम्मी गोबिन्द तक्कया, तक्कया ज़ाहर ज़हूर। जिस फिरना मदीना मक्कया, काअबा हज़रतां वेखे ज़रूर। जिस दा हुक्म संदेशा पक्कया, कलयुग तोड़े अन्त ग़रूर। लेखा जाणे काया मट्टया, पंज तत मन पाए ना कोए फ़तूर। नौ खण्ड पृथमी फिरे नट्ठया, पन्ध मुकाए नेड़े दूर। सो स्वामी हर घट वसया, जोती जाता चमके नूर। जिस मेटणी रैण अंधेरी मस्सया, नाता तोड़ना कूड़ो कूड़। दीन मज़ूब दा रहिण ना देवे रट्टया, मानस मानव मानुख एका दस्से दस्तूर। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म जणाए टप्पया, किरपा करे आप ज़रूर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, जोती जाता ज़ाहर ज़हूर। विष्नूं कहे मेरे अन्तर दिती अगम्म विचार, विचर के दयां जणाईआ। किरपा करे आप निरँकार, निरवैर धुरदरगाहीआ। जोती जाता हो उज्यार, परवरदिगार वेस वटाईआ। जिस नूं कहिंदे सांझा यार, जल्वागर नूर इलाहीआ। कलयुग मेटे कूड़ कुड़यार, माया ममता मोह मिटाईआ। मन कल्पना करे गिरफ्तार, शब्दी डोरी तन्द बंधाईआ। आसा तृष्ना दए निवार, अमृत बूँद इक प्याईआ। धुर दा हुक्म सच्ची सरकार, सच संदेशा इक सुणाईआ। सदी चौधवीं अन्त कन्त भगवन्त लहिणा देणा दए निवार, लेखा अवर रहे ना राईआ। मुहम्मद सजदा सीस झुकाए नाल चार यार, कलमा कायनात विच जणाईआ। दरोही खुदा खुदा दे नबी मेरा रिहा ना कोए अख्त्यार, मुखत्यारनामा आपणी मोहलत गया पुगाईआ। मेरा मालक ख़ालक प्रितपालक प्रगट होया अमाम अमामा सिक्दार, सिक्दारी आपणे हथ्थ रखाईआ। असीं ओस दे बरखुरदार, चौदां सदीआं सेव कमाईआ। करदे रहे इंतज़ार, बिन नैणां नैण तकाईआ। सो आया आपणी धार, जोती जाता डगमगाईआ। जिस ने बदल देणा संसार, दीन दुनी ना कोए चतुराईआ। सतिगुर शब्द इक होणा उज्यार, चार कुण्ट करे रुशनाईआ। जिस दा खण्डा होणा दो धार, निरगुण सरगुण रंग रंगाईआ। सो वेला वक्त पहुँचया आण, आनन फ़ानन आपणी कार कमाईआ। जिस नूं झुकदे सर्ब गुरु अवतार, पैग़म्बर सजदयां विच सीस निवाईआ। तिस साहिब नूं मेरी नमो नमो नमो निमस्कार, नमस्ते कहि के सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी खेले खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ २१ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ हरनाम सिँघ दे गृह पंडोरी ✪

विष्नूं कहे शब्द गोबिन्द करे खेल उपर बसुधा, धरनी धरत धवल धौल वेख वखाईआ। जिस ने कूड़ी क्रिया मेटणी कलयुगा, जुग चौकड़ी पैंडा पन्ध मुकाईआ। जो संदेश दे के गया बुद्धा, बुद्धी तों परे ध्यान लगाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला होणा उग्घा, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। जन भगतां देवे आपणी सुद्धा, अन्तर निरन्तर पड़दा दए उठाईआ। अगला भेव खोलू के गुज्झा, माया ममता मोह मिटाईआ। निरगुण धार रहे ना लुका, लोक परलोक करे रुशनाईआ। जिस दा तीर निशाना कदे ना उका, दो जहानां आप वखाईआ। सदी चौधवीं मुहम्मद आपणा कढ के वखावे रुक्का, जिस उत्ते अलिफ़ ये वंड ना कोए वंडाईआ। तेरा परवरदिगार समझ ना आया मुद्दा, मुद्दत तों बैठा ध्यान लगाईआ। चार यारी संग रुज्झा, आमीन यामबीन तेरा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, हरि करता अगम्म अथाहीआ। विष्नूं कहे मैं शब्द गोबिन्द तक्कया नूर नुराना, जल्वागर नज़री आईआ। जिस दा कलमा हक पैग़ामा, चौदां तबक बाहर पढ़ाईआ। जिस दा खेल अगम्म अमामा, अमाम अमामां पड़दा लाहीआ। चारे कुण्ट दहि दिशा वज्जणा दमामा, निरगुण आपणा डंक सुणाईआ। जिस ने कलमा बदल देणा कलामा, कायनात दए वड्याईआ। रहमत रहीम करे रहमाना, रहिबर इक्को सोभा पाईआ। खेले खेल दो जहानां, पुरीआं लोआं फोल फुलाईआ। कलि कल्की पहर के जामा, जोती जाता डगमगाईआ। जिस नूं झुक झुक सजदयां विच करदे रहे सलामा, नेत्र लोचन नैण अक्ख शरमाईआ। ओह अन्तिम आवे विच मैदाना, पड़दा ओहला रहे ना राईआ। जिस ने नौ खण्ड पृथ्मी देखणे मानव होवे गुलामा, शरअ ज़ंजीर कटाईआ। योद्धा सूरबीर मर्द मर्दाना, बलधारी फेरा पाईआ। जिस ने सतिजुग मार्ग दस्सणा आसाना, इन्सानां अन्दर भेव खुलाईआ। मानुख रहे ना कोए बेगाना, दुतीआ भाउ ना कोए जणाईआ। सब दा इक्को होणा गाणा, तूं मेरा मैं तेरा ढोला राग अलाहीआ। इक्को मन्नणा साहिब सुल्ताना, शाह पातशाह इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता बेपरवाहीआ। विष्नूं कहे शब्द गुरु दा हुक्म संदेशा एक, एकँकार रिहा दृढ़ाईआ। जिस दी सब ने रखणी टेक, मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। सब दी बुध करे बिबेक, दुरमति मैल धुआईआ। हरि दरसावे नेतन नेत, निज नैण कर रुशनाईआ। धुरदरगाही बण के खेवट खेट, नईया नौका आप चलाईआ। आत्म परमात्म नाता दस्स के बेटी बेट, पिता पूत गोद उठाईआ। सच सिंघासण पुरख अबिनाशण जाए लेट, दर दवारा इक वड्याईआ। सो सुहञ्जणा करे देस, जिस दर आपणा फेरा पाईआ। राह तकण ब्रह्मा शिव महेष, गणपति गणेश, सुरप्त

नेत्र नैण नैण शरमाईआ। जिस निरगुण धार बदलया भेख, भेखाधारी रूप ना कोए समझाईआ। तिस साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी अन्त कन्त आदेस, बिना सीस सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। विष्नूं कहे गोबिन्द शब्द आदि अन्त दा मालक, जुग जुग खेल खिलाईआ। जो नित नवित बदले आदत, अदल इन्साफ़ इक कमाईआ। सति धर्म दी लावे अदालत, दर घर साचा इक वड्याईआ। आत्म परमात्म दस्स अबादत, नूर नूर विच चमकाईआ। कूड़ी क्रिया मेट अलामत, अमलां तों रहित करे नूर खुदाईआ। जद तक्को सही सलामत, हरि सज्जण सोभा पाईआ। जिस ने सदी चौधवीं कूड़ी क्रिया कराउणी बग़ावत, बगलगीर रहिण कोए ना पाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर देवे ना कोए ज़मानत, बरीख़ाना ना कोए जणाईआ। सच नाम दी मिले ना किसे न्यामत, अनरस रस ना किसे चखाईआ। जिस ने सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर ल्याउणी क्यामत, कायम मुकाम रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता अगम्म अथाहीआ। विष्नूं कहे शब्द गोबिन्द गोबिन्द इक अलख, अलख अलखणा खेल खिलाईआ। निरगुण नूर जोत प्रतख, पारब्रह्म प्रभ गुसाईंआ। जिस दा खेल आदि जुगादि सच, सति सच वड्याईआ। सो साहिब स्वामी पुरख समरथ, हरि करता फेरा पाईआ। जिस ने जुग चौकड़ी दीन मज़्ब कराए वक्ख, वक्खरा वक्खरा दर सुहाईआ। सो कलयुग अन्तिम करे आप इक्ठ, गुर अवतार पैग़म्बर देवण नाल सफ़ाईआ। सारयां इक्को नाम इक्को कलमा काया मन्दिर अन्दर लैणा रट, रट्टा जगत रहे ना राईआ। सच दवारा इक्को हट्ट, इक्को मन्दिर गृह सुहाईआ। इक्को वस्त अमोलक रख, रक्षक हो के आप वरताईआ। जो गुर अवतार पैग़म्बरां भविक्ख्त दिता दस्स, दहि दिशा खोज खुजाईआ। सदी चौधवीं पन्ध मुकाया लोकमात नस्स नस्स, बण पाँधी राहीआ। मुहम्मद नीर वरोले आपणी अक्ख, उम्मत उम्मती वेख वखाईआ। चार यारी पई गश, हवस होश ना कोए वड्याईआ। जिस परवरदिगार दा करदे रहे जस, सिफ्तां विच ढोले गाईआ। ओह अन्त कन्त परवरदिगार हो प्रगट, साडे परगणे फोल फुलाईआ। उधरों ईसा दा कलाक करे टक टक, घड़ी घड़याल रिहा खड़काईआ। मेरा गॉड गुड गाइड हो के आवे नट्ठ, जोती जाता पन्ध मुकाईआ। जिस दा कलमा सब ने लैणा रट, रुटीन रिटन इक समझाईआ। धर्म दी धार खोलणा हट्ट, दवारा इक्को इक वड्याईआ। दीन मज़्ब दा मेट के फट्ट, पट्टी देवे नाम बंधाईआ। पिछली करनी सब दी शब्दी गोबिन्द देवे ठप्प, मोहर आपणा नाम लगाईआ। पूरब लेखा पूरा कर पक्क, पारब्रह्म प्रभ आपणा भेव खुलाईआ। कलयुग देवे आपणा हक, हकीकत विच्चों झोली पाईआ। सतिजुग साचा जाए लग्ग, सदी चौधवीं लेखा अन्त चुकाईआ।

कलयुग जीव ना रहे कोई अल्पग, सरबग देवे माण वड्याईआ। दीन मज़्ब रहे ना कोए अलग, आत्म परमात्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक परवरदिगार सांझा यार सब दी मेटे हद्द, हदूद आपणी दए समझाईआ। सारे इक्को नाम लैणा जप, इक्को कलमा लैणा गाईआ। इक्को पुरख अकाला दीन दयाला मालक होए सभ, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस दी गुर अवतार पैग़म्बर बणे यद, यदी लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि आपणा पड़दा लाहीआ। विष्नूं कहे शब्द गुरु दी धार, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द नाल प्रगटाईआ। जिस दा खेल सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेस वटाईआ। सो कलि कल्की लए अवतार, जोती जाता करे रुशनाईआ। सम्बल बैठ धाम न्यार, निरगुण आसण इक सुहाईआ। शब्दी नाद धुन जैकार, अगम्म अथाह सुणाईआ। अमृत दे के ठंडा ठार, निझर बूँद स्वांत आप टपकाईआ। चारों कुण्ट वेख के हाहाकार, मानव मानुख मानस फोल फुलाईआ। किरपा करे आप करतार, कुदरत दा करता वेख वखाईआ। हुक्म संदेशा देवे आपणी धार, धरनी धरत धवल धौल जणाईआ। सारे हो जाओ ख़बरदार, सोया रहिण कोए ना पाईआ। गोबिन्द खण्डा खड़के अगम्म अपार, अपरम्पर स्वामी आप खड़काईआ। लहिणा देणा सब दा दए निवार, बाकी रहिण किछ ना पाईआ। जन भगतां पड़दा लाहे आपणी धार, धरनी धरत सुहाईआ। गोबिन्द सूरा सूरबीर बलकार, बलधारी आप जणाईआ। माझे वाल्यो छब्बी पोह नूं लै के आउणी इक तलवार, तिन्न तिन्न नाल लम्बाईआ। लेखा अगला दस्से आप निरँकार, की गोबिन्द खेल खिलाईआ। किस बिध मेटणा धूंआँधार, क्रिया कूड़ चुकाईआ। सति सच होए जैकार, धर्म धर्म नाल सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी इक इकल्ला पावे सब दी सार, महासार्थी आपणी खेल खिलाईआ।

६७
२२

✪ २२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ मक्खण सिँघ दे गृह नौरंगाबाद ✪

विष्नूं कहे मैं खेल वेख्या अक्खां, अक्खरां वाली लिख्त ना कोए बणाईआ। जिस वेले गोबिन्द सथ्थर लथ्था, यारड़ा सेज हंढाईआ। बिना हथ्थां तों टेक्या मथ्था, बिना सीस सीस झुकाईआ। आपणे पिट्ठ तों लाह के भथ्था, कमान दिती टिकाईआ। बिना रसना तों बचन कहि के सच्चा, सच दिता समझाईआ। हुण मैं तेरा तता वाला बच्चा, अन्तर निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। तेरी शब्दी धार नस्सा, दिवस रैण पन्ध मुकाईआ। तेरा लहिणा देणा पूरा कीता मसां, मुश्किल अग्गे

ना कोए रखाईआ। सद तेरे संग वसां, सगला संग बणाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण धार हो के नस्सां, नर नरायण मेल मिलाईआ। अक्खरां वाला लाईनां वाला सिफ्तां वाला कदे ना बदलां सफा, सफा सब दी वेख वखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल दे दे गफ्फा, वस्त अमोलक इक वरताईआ। पारब्रह्म पतिपरमेशवर खुशीआं नाल हस्सा, सच स्वामी दया कमाईआ। बिना हथ्थां तों पिठ ते मारया धफ्फा, आपणा रंग चढ़ाईआ। गोबिन्द तेरी धार मेरा होणा टप्पा, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। तेरे नूर दा होणा पप्पा, पारब्रह्म विच समाईआ। दोहां दा सांझा होणा मता, मति बुद्धी दी लोड़ रहे ना राईआ। तेरा लेखा अगम्मी तता, जिस नूं सम्बल कहे लोकाईआ। इस विच फ़र्क होवे ना रता, रंग रतड़ा दए गवाहीआ। मैं मालक कलमापता, पतिपरमशेवर वेस वटाईआ। तेरीआं होणीआं नहीं बाहवां लत्तां, हथेली बाज़ ना कोए टिकाईआ। आपणी जाणे मित गता, गति मित आपणे हथ्थ रखाईआ। बीज बीज्या आपणे वत्ता, वार थित समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर संदेशा इक सुणाईआ। विष्नूं कहे मैं तक्कया नाल अक्खीआं, आपणा नेत्र नैण उठाईआ। जिस वेले गोबिन्द भार होया वखीआ, पासा पासे नालों बदलाईआ। काहन वेखण आया जिस खेल खिलाया बिन्दरा बन सखीआँ, कृष्ना आपणा पन्ध मुकाईआ। ओस गल्लां दस्सीआं सच्चीआं, सच रिहा जणाईआ। वाह गोबिन्द तेरीआं प्रीतां पक्कीआं, अग्गे सके ना कोए तुड़ाईआ। तूं बच्चयां दीआं लाशां नीहां हेठां रखीआं, अन्दर वज्जदी रही वधाईआ। तेरी धार अर्जन बैठा लोआं ततीआं, तवी जगत दए गवाहीआ। दीन मज़्ब दीआं छडीआं हिस्से पत्तीआं, चारे वरन रंग रंगाईआ। अग्गे तों तेरीआं निक्कीआं निक्कीआं जगणीआं नहीं मोमबत्तीआं, पुरख अकाल तेरा नूर रुशनाईआ। दीनां मज़्बां वालीआं लिख्तां पक्कीआं, पटने वाले दयां सुणाईआ। छोटीआं छोटीआं नाम कलमे दीआं बणाउणीआं नहीं हट्टीआं, वक्खरी वक्खरी वंड वंडाईआ। तेरा मेला मेल पुरख समरथीआ, समरथ तेरी सरनाईआ। जिस दा जुग चौकड़ी सारे गाउंदे जसीआ, सिफ्तां विच सालाहीआ। तूं भरनीआं नहीं किसे दीआं चट्टीआं, चेटक अवर ना कोए रखाईआ। तेरा पुरख अकाल तेरे नाल मिलावे अक्खीआं, नेत्र इक इक जणाईआ। लख चुरासी आत्मा तेरीआं होणीआं बच्चीआं, बचया गोद उठाईआ। तेरीआं धारां गुरमुखां अन्दर लूं लूं होणीआं रचीआं, रचना इक अलाहीआ। चार जुग दे गुर अवतार पैग़म्बरां दीआं प्रीतां होणीआं कच्चीआं, अन्त रहिण कोए ना पाईआ। सब दीआं आशा फिरन नट्ठीआं, सदी चौधवीं दए दुहाईआ। उन्हां दीआं खाहिशां सम्मत शहिनशाही पंज छब्बी पोह ते होणीआं इक्ट्ठीआं, इक्टु इक्को दए वखाईआ। जिथ्थे अग्न कुण्ड दीआं बणनीआं भट्ठीआं, भठियाला बणे बेपरवाहीआ। गोबिन्द प्रभ ने तेरे उत्ते डोरां सुट्टीआं, सिट्टा अन्तिम दए वखाईआ।

सब दीआं तारां जाणीआं कटीआं, कटाक्ष आपणा नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। विष्नूं कहे जिस वेले गोबिन्द सथ्थर बदलया पासा, आपणी लई अंगड़ाईआ। मैं वेख्या पुरख अबिनाशा, संग बैठा सोभा पाईआ। उधरों राम करदा आ गया हासा, बनबासी पन्ध मुकाईआ। मैनूं चौदां साल प्या घाटा, सीता पिच्छे दिती दुहाईआ। आह वेखो गोबिन्द जिस दे पल्ले नहीं कोई आटा, कीड़ी आपणी सेव कमाईआ। दीन दुनी दा तोड़ के नाता, पुत्तरां आया भेंट चढ़ाईआ। मात पिता दा छड्ड के साका, सज्जण इक्को ल्या बणाईआ। अगला फेर वेख्या ख़ाका, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। कलयुग दिसी अंधेरी राता, अन्तिम चन्द ना कोए रुशनाईआ। सच रही ना कोई गाथा, अक्खरां वाली ना कोए वड्याईआ। सहाई होए ना कोए त्रैलोकी नाथा, राम नाम ना कोए सखाईआ। सीता सुरत साहिब कोए ना जाता, राम रंग ना कोए रंगाईआ। दीन दुनी दा बदलया पासा, सार पाश दए उलटाईआ। एह खेल वेख्या राम मुक्खों किहा अगम्मी बाता, बातन दिती जणाईआ। ओस वेले आउणा पुरख बिधाता, ब्रह्म पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जिस ने दो जहान वेखणा ख़ाका, लख चुरासी फोल फुलाईआ। गोबिन्द हुण तूं उस दा ततां वाला बच्चा फेर शब्दी धार होणा काका, कलि कालख मेट मिटाईआ। ओन तेरा तूं उस दा मन्नणा आखा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। हुण तूं अमृत दिता विच बाटा, फेर गुरमुखां अन्दर अन्तर देणा प्याईआ। तेरा लहिणा देणा ढाई सौ बरख दी वाटा, वाहवा वज्जणी फेर वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दी धार इक जणाईआ। विष्नूं कहे जद गोबिन्द होया भार पिट्ठ, निगाह उपर असमान टिकाईआ। धरती उत्ते गया लिट, रोड़े पथ्थर सेज सुहाईआ। जोती धार जोती टिक, शब्दी शब्द शनवाईआ। ओसे वेले मूसा ईसा मुहम्मद लै के आ गए इक चिट, जगत अक्खर ना कोए लिखाईआ। दोहथ्थड़ मार के पए पिट्ट, दरोही तेरा नाम खुदाईआ। गोबिन्द सुत्ता कंडयां विच लिट, सेज सुहञ्जणी ना कोए रखाईआ। ओस वेले प्रभ ने आपणा रूप दखाया इक, इक इक विच समाईआ। मुहम्मदा जिस नूं अमाम अमामा आया लिख, ओह लेखा दए जणाईआ। सच प्रीती करां हित, हितकारी हो के वेख वखाईआ। जिस दा खेल नित नवित, ओह आपणा पड़दा लाहीआ। मुहम्मद चरणां विच गया लिट, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। फेर खेल दस्सया अनडिठ, प्रभ पड़दा आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच पड़दा आप चुकाईआ। विष्नूं कहे प्रभ ने मुहम्मद दिता इलहाम, इलम तों बाहर जणाईआ। सुण अगम्म कलाम, कल्मयां बाहर पढ़ाईआ। वेख आपणा अमाम, जल्वा नूर रुशनाईआ। जिस झगड़े मेटणे तमाम, तमां दा डेरा ढाहीआ। बदल देणा नज़ाम, नौबत हक वजाईआ।

मज़्ब दा रहे ना कोए ग़ुलाम, शरअ ज़ंजीर कटाईआ। संदेशा देणा विच अवाम, इक्को नाम जणाईआ। जिस वेले चार जुग दे कलमे नाम होए बदनाम, बदी विच लोकाईआ। पिता पूत ना करे पछान, माता गोद ना कोए सुहाईआ। शाह सुल्तान होवण बेईमान, साध सन्त धीर ना कोए रखाईआ। शब्द सुणे ना कोए धुन्कान, अनरागी राग ना कोए जणाईआ। अमृत मिले ना पीण खाण, रसना रस ना कोए चखाईआ। जोती जगे ना कोए चराग़, गृह मन्दिर ना कोए रुशनाईआ। ओस वेले प्रगट होणा श्री भगवान, जोती जाता डगमगाईआ। गोबिन्द दा मेला होणा विच जहान, साचा आपणा रंग रंगाईआ। पूरन जोत पूरन विच समाण, मुहम्मदा समझ कोए ना पाईआ। जिस दा इक नाम इक कलमा इक देणा ज्ञान, हुक्म इक्को इक फ़रमाईआ। सदी चौधवीं वेखे मार ध्यान, मंज़ल पन्ध अग्गे ना कोए वधाईआ। माझा देश होवे प्रधान, प्रधानगी आपणे हथ्थ रखाईआ। जिथ्थे जगे जोत महान, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। भगत दवारा सोहे इक निशान, निशाना सत्त रंग तेरे ज़िमीं असमान दए वड्याईआ। चौदां तबक जिस नूं सीस झुकाण, झुक झुक लागण पाईंआ। ओह गोबिन्द दा होणा फेर अस्थान, जिथ्थे सब दा लेखा दए मुकाईआ। फेर मुहम्मद ने निउँ के कीता सलाम, सजदा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। विष्नूं कहे मैं वेख्या हो करीब, नेरन नेरा ध्यान लगाईआ। तक्कया खेल अजीब, ईसा बैठा ध्यान लगाईआ। उपर तक्कया ऐ ख़ुदा की होया जे मैनूं दिती सलीब, गल फाँसी दिती लटकाईआ। गोबिन्द दी वक्खरी वेखी तरतीब, तरीका ढंग इक दृढ़ाईआ। सिख सेवक मात पित साक सज्जण कोई नहीं नज़दीक, नेड़े नज़र कोए ना आईआ। इक्को सहारा तेरा लाशरीक, शरअ दे बन्धन गया तुड़ाईआ। माछूवाड़े सुत्ता उत्ते पीठ, निगाह तेरे विच रखाईआ। तूं सज्जण इक्को मीत, मित्र प्यारा नज़री आईआ। उस वेले पुरख अकाल मनाया तूं मेरा मैं तेरा इक्को घर दोवें वसनीक, दूजा गृह ना कोए वखाईआ। जिस वेले सदी बीसवीं गई बीत, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। फेर नवीं चलाउणी रीत, सब दा लेखा देणा मुकाईआ। पैग़म्बरो जेहड़ी तुसीं मैथों कलमे दी मंगणी भीख, ओह अन्तिम पूर देणी कराईआ। जेहड़ा कबाब भुन्न के खाधा उपर सीख, तिस दी सिख्या देणी चुकाईआ। झगड़ा मुकाउणा चर्च मन्दिर मसीत, मसला इक समझाईआ। सब नूं दस्सणा परवरदिगार सांझा यार पुरख अकाल वसदा चीत, काया मन्दिर डेरा लाईआ। बिना गोबिन्द तों गोबिन्द दी करे ना कोए प्रीत, प्रीतम नज़र कोए ना आईआ। गोबिन्द तूं पूरी पूरी करनी बख्शीश, पूरन पूरन वेस वटाईआ। जिस दा अन्तर इक अतीत, त्रैगुण लेख चुकाईआ। ओस वेले ईसा झुकाया सीस, सजदा इक जणाईआ। नक्क नाल कढ के लीक, लाईन दिती वखाईआ। प्रभू मैं वी ओस वेले गोबिन्द दी करां तस्दीक,

शहादत दयां भुगताईआ। जिस वेले सम्मत शहिनशाही पंज छब्बी पोह दा वक्त आया ठीक, ठाकर तेरा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। विष्नूं कहे गोबिन्द जिस वेले हथ्थ रखया उपर छाती, शहिनशाह वल्ल ध्यान लगाईआ। मूसा आ गया लै के पाती, पत्रका आपणे हथ्थ उठाईआ। मैं खेल वेख्या पिछली प्रभाती, जो वेला गया लँघाईआ। सथ्थर सेज हंढाए जिन मन्नी धुर दी आखी, आख़र रंग रंगाईआ। जिस दे अन्दर जोत अगम्मी बाती, बातन पड़दा रिहा खुल्हाईआ। मंज़ल चढ़ के घाटी, पैंडा ल्या मुकाईआ। फेर नज़र आई कलयुग अन्तिम वाटी, सदी चौधवीं वेख वखाईआ। झगड़ा पैणा ज़ात पाती, दीन मज़्हब करे लड़ाईआ। तेरयां मुरीदां दा कोई ना बणना साथी, संगी संग ना कोए रखाईआ। एह खेल बाज़ीगर नाटी, स्वांगी आपणा स्वांग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। विष्नूं कहे जिस वेले मूसा उठाया वरका, वारस इक्को नज़री आईआ। लेख लिखणा वेखो खेल प्रभू दे घर का, घर आपणा रंग रंगाईआ। राह तक्को इक दर का, जो दरगाह साची सुहाईआ। रूप वेखो नरायण नर का, जो नर हरि नूर अलाहीआ। सरोवर वेखो अगम्मी सर का, जो सब दी वेखे सफ़ाईआ। भय मन्नों इक हरि का, जो हुक्मे अन्दर भवाईआ। जिस लेखा मुकाउणा चोटी जड़ का, तत्व तत दए गवाहीआ। जिस दा नाम वहिण वहिणा हढ़ का, कूड़ी क्रिया दए रुढ़ाईआ। जिस नाता जोड़ना इक्को घर का, गृह मन्दिर इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि का मेला आप मिलाईआ। विष्नूं कहे मूसा नैण मीट के करदा हासी, हथ्थ कन्नां उत्ते टिकाईआ। एह खेल पुरख अबिनाशी, कुदरत दा कादर रिहा वखाईआ। गोबिन्द दा बिना गोबिन्द तों नज़र ना आया कोए साथी, माछूवाड़े सोभा पाईआ। की लेखा लिख्या विच मेरी पाती, पत्रका दए दृढ़ाईआ। जिस वेले कलयुग आए अंधेरी राती, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। शरअ दा रहे ना कोए जमाती, जुमला अक्खर ना कोए पढ़ाईआ। उस वेले आउणा कमलापाती, पतिपरमेश्वर फेरा पाईआ। पूरन पूरन जोत करे प्रकाशी, प्रकाशवान होवे नूर अलाहीआ। पिछली चार जुग दी कड़ी रहिण ना देवे बासी, अगला आपणा हुक्म जणाईआ। शब्द संदेशा इक्को आखी, आख़र पड़दा दए उठाईआ। नाले गोबिन्द वल्ल वेख के किहा गोबिन्द जेहड़ी सिक्खी बणाई तूं उत्ते विसाखी, एहदा विसाह रहे ना राईआ। सम्मत शहिनशाही पंज सारी धर्म दे मार्ग दे उतों जाणी पाटी, पटने वाले तेरी वड्याईआ। रस रहिणा ना तेरी अमृत बाटी, पुरख अकाला रिहा वखाईआ। गोबिन्द किहा मूसा मैं वी हथ्थ नहीं पाउणा फेर नीले वाली काठी, भथ्था पिठ्ठ ना कोए टिकाईआ। मेरा साथ देवे मेरा साथी, हरि करता धुरदरगाहीआ।

मैं इन्नां गुरमुखां भगतां सन्तां दी आपे करां राखी, चारे खाणी विच्चों वेख वखाईआ। अगली कथा कहाणी दस्सां साची, सच दयां दृढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम मेट अंधेरी राती, सतिजुग सच लैणा उपजाईआ। पिछला नाता रहिणा नहीं फुफ्फी ताई चाची, चकना चूर करां लोकाईआ। फड़ के गोबिन्द ने मूसा तों चिट्ठी वाची, पढ़ के दिती सुणाईआ। ओए कमल्यो तुहाडी मुक जाणी वाटी, वेखो प्रभ ने बिन अक्खरां तों थल्ले दिता लिखाईआ। अन्त सब दी करनी इक्को ज़ाती, आत्म ब्रह्म देणा समझाईआ। सब दा बण के पिता माती, पिता पूत गोद सुहाईआ। शंकर वेखे उत्ते कैलाशी, ब्रह्मा ब्रह्म ध्यान लगाईआ। विष्नूं सेवा करे साची, भज्जे वाहो दाहीआ। जिस वेले गोबिन्द पूरन पूरन विच जोत प्रकाशी, पूरन ब्रह्म ब्रह्म दृढ़ाईआ। एह खेल ज़रूर होणा लोकमाती, जिस नूं सके ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा धुर दी दाती, दाता दानी दया कमाईआ।

✪ २२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ करनैल सिँघ दे गृह नौरंगाबाद ✪

विष्नूं कहे राम कृष्न ईसा मूसा मुहम्मद गोबिन्द मिल्या इशारा, माछूवाड़ा वक्त सुहाईआ। अग्गे वेखो खेल अपारा, अपरम्पर स्वामी वज्जे वधाईआ। अमाम अमामा हो सिक्दारा, निरगुण नूर नूर अलाहीआ। कलि कल्की कर पसारा, वेस अवेसा आप वटाईआ। सच सुहा के इक दवारा, भगत दवारे दए वड्याईआ। जिथ्थे दीन मज़्ब दा रहे ना कोए अखाड़ा, ज़ाती वंड ना कोए वंडाईआ। फड़नी पए ना कोए तलवारा, खण्डा खड़ग ना कोए चमकाईआ। इक्को नाम दा बोल जैकारा, इक्को मेला धुरदरगाहीआ। इक्को सच सच वरतारा, वर्तमान लेखा दए समझाईआ। सब ने करनी निमस्कारा, झुक झुक सीस निवाईआ। बण के खिदमतगारा, ख़ादम हो के आपणा आप भेंट चढ़ाईआ। लहिणा देणा पूरा करना पूरब कर्म विचारा, पड़दे ओहले आप उठाईआ। धर्म दी धार बण सिक्दारा, वेखे थांउँ थाँईआ। चार कुण्ट दहि दिशा इक्को घर वसे घर बाहरा, गृह मन्दिर इक वखाईआ। इक्को इष्ट जीव जगत दी धारा, धरनी धरत धवल सोभा पाईआ। मैं शब्दी धार आउणा दुबारा, पुरख अकाले जोत विच समाईआ। दोहां दा खेल होणा निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी कारा, करनी करता कार कमाईआ। जन भगत सुहेले सन्त मेलणे गुरमुख कर त्यारा, गुर गुर गोद उठाईआ। सब नूं देणा इक अधारा, अदल इन्साफ़ सच कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप चढ़ाईआ।

७२
२२

विष्नूं कहे गोबिन्द बिन अक्खां अक्ख बदली, समां बदलदा दिता वखाईआ। सारे वेखो परवरदिगार इक अदली, इन्साफ़ इक कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर असीं आए पंज तत लई, ततां वाली वंड वंडाईआ। दीनां मज़्बां दे हक लई, हिस्से लए पाईआ। अन्त फेर प्रभ आपणे हथ्थ रख लई, रखया करे थांउँ थाँईंआ। एका नाम सुणाए धुर दे जस लई, जस वेद पुराणां सिफ्तां तों बाहर करे पढ़ाईआ। जोत प्रगटाए पतिपरमेश्वर आपणी पति लई, पति पतिवन्ता दया कमाईआ। निरगुण धार आवे भगतां दी रत लई, रत्न अमोलक आप उपजाईआ। खेल खेले सतिजुग सच लई, सच साजण धुरदरगाहीआ। क्यों कलयुग अन्तिम दीन दुनी मच्च गई, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। सच दवारयो दौड़ नस्स गई, पतिपरमेश्वर मिलण कोए ना पाईआ। सब दे अन्दरों गुरमति गई, मनमति बैठी डेरा लाईआ। अक्ल विद्या भट्ठ पई, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। प्रभ खेल खेलणा गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती अट्ठ सट्ठ लई, गुर अवतार पैग़म्बरां लेखा पूर कराईआ। जामा धारना दीन मज़्ब दे वट्ट लई, हद्द रहिण कोए ना पाईआ। शाहो भूप बणना जन भगतां दे हक लई, हक सब दा आपणे हथ्थ रखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां एह खेल अगम्मी तक लई, नज़र नज़रीआ दिता बदलाईआ। अग्गे गल्ल रही ना शक लई, शिकवे दिते मिटाईआ। एने चिर नूं बसुधा थल्लयों हस्स पई, धरनी ताली दिती वजाईआ। प्रभ ने आउणा भगतां दी यद लई, गोबिन्द आपणा रंग रंगाईआ। जेहड़ी सृष्टी दृष्टी प्रभ दा इष्ट छड गई, कूड़ी क्रिया विच हल्काईआ। सच धर्म दी मंज़ल टप्प गई, माया ममता विच कुरलाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां छड गई, नाता छड्डया पिता माईआ। कूड़ निशाने चारों कुण्ट गड्ड रही, गॉड नज़र किसे ना आईआ। झगड़ा प्या मास नाड़ी हड्ड लई, हिस्से ततां वाले पाईआ। कलयुग झूठ अंधेरी वग रही, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। प्रभ ने आउणा सिर्फ़ गोबिन्द पग्ग लई, माझे वाल्यो इक पग्ग तुसां भेंट कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल करनी सतिजुग साचे जग लई, जागरत जोत करे रुशनाईआ।

✪ २२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ मस्सा सिँघ दे गृह नौरंगाबाद ✪

विष्नूं कहे झट इक्ट्ठे हो गए भगत, माछूवाड़े रूप बदलाईआ। कबीर जुलाहा अगवाही करे फ़कत, रविदास चमारा संग रलाईआ। की खेल खेलया उपर धरत, धरनी धरत नाल रलाईआ। गोबिन्द हस्स के किहा ज़रा वेखो उपर अर्श, अर्शी प्रीतम की दृढ़ाईआ। मैनूं ना कोए सोग ना कोए हरख, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। जन भगतां निगाह मारी खेल

वेख्या मर्दाना मर्द, हरि करता आप समझाईआ। जिस दे अन्तर ग़रीब निमाणयां दर्द, दुखियां दुःख वंडाईआ। संदेशा मिल्या जन भगतो एस ने फेर आउणा परत, पतिपरमेश्वर नाल मिलाईआ। लेखा वेखे ख़ाकी फ़र्श, ज़िमी असमानां डेरा ढाहीआ। जिस ने झगड़ा मेटणा मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ चर्च, चरागाहां खोज खुजाईआ। तुहाडी सब दी मंज़ूर होवे अर्ज़, आरज़ू आपणे लेखे पाईआ। सब दे नाल सांझी करे ग़रज़, गरज़े कि वेला आपणा आप प्रगटाईआ। चार जुग दे सन्तां भगतां फेर फोल के वेखे फ़रद, चुरासी विच्चों पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच मालक इक अख्वाईआ। विष्नूं कहे जन भगतां तक्कया नाल ग़ौर, गहर गम्भीर ध्यान लगाईआ। गोबिन्द खेल वखाया अवर का और, अवरी आपणी कार कमाईआ। जिस वेले कलयुग कूड़ी क्रिया जन भगतो चलया दौर, दर दर आपणा फेरा पाईआ। साध सन्त बण गए चोर, ठग्गी यारी जगत कमाईआ। माण रहिणा नहीं किसे मढ़ी गोर, पीर फ़कीर देण दुहाईआ। माया धारीआं दे सिर ते झुलणे चौर, ग़रीबां होए ना कोए सहाईआ। फ़ुरना मन्त्र फुरे कोए ना फोर, मन कल्पणा कूड़ हल्काईआ। दुनिया दा धर्म अन्तिम होणा उत्ते ढोर, सूर गाँ वंड वंडाईआ। उस वेले साहिब सुल्तान श्री भगवान दी पैणी लोड़, लुड़ींदा सज्जण वेख वखाईआ। जिस ने तुहाडी सुरती आपणे नाल लई जोड़, ओह मेरा धुर दा माहीआ। तुसीं उस दा नाम कलमा खांदे भोर भोर, भोरा भोरा तुहाडी झोली पाईआ। हुक्मे अन्दर दिता तोर, शरअ तों परे कर सुणाईआ। याद रखयो सदी चौधवीं अन्तिम पैणा शोर, शौहर सके ना कोए मिलाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां सुरती शब्द बन्ने कोई ना डोर, तन्दन तन्द ना कोए बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि करता अगम्म अथाहीआ। विष्नूं कहे जन भगतां कीती अरदास, बेनन्ती इक सुणाईआ। साडे अन्तर इक विश्वास, जो विश्व दा रूप धराईआ। निरगुण धार होवे प्रकाश, जोती जोत रुशनाईआ। कुछ उस दी महिमा आख, गोबिन्द दे दृढ़ाईआ। गोबिन्द किहा ओह प्रगट होणा साख्यात, निरवैर पुरख इलाहीआ। मेरा उस ने देणा साथ, सगला संग बणाईआ। कलयुग मेटणी अंधेरी रात, सतिजुग चन्द चमकाईआ। सब दी पूरी करनी आस, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। साचे भगतां देणी शाबाश, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तुहानूं ज़रूरी वखावां खेल तमाश, वेला वक्त नाल वड्याईआ। जिस वेले शहिनशाही सम्मत पंज छब्बी पोह दी आई रात, रुतड़ी इक महकाईआ। भगतो तुसीं आउणा बण के जमात, एसे तरह रंग रंगाईआ। लेखा सुणना थल्ले आकाश, धरती उपर शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा इक समझाईआ। जन भगत कहिण गोबिन्द की तेरा खेल अगम्मा, अगम्मड़े दे दृढ़ाईआ। की प्रगट होवे

काया माटी चम्मा, चम्म दृष्टी नाल वड्याईआ। की दीन मज़्ब दी करे तमा, हिस्सयां वंड वंडाईआ। केहड़ी करनी केहड़ा करना कम्मा, कायनात की समझाईआ। केहड़ा नाम पवण स्वास जपाउणा दमा, दामनगीर पल्लू की फड़ाईआ। केहड़ी हद्द केहड़ा बन्ना, कवण गृह डेरा लाईआ। कि पुरख अकाल दा होवें चन्ना, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। विच्चों उठ के बोलया धन्ना, ज़ोर नाल सुणाईआ। क्यों अक्खरां लाया इक्को कन्ना, जिस दा भेव कोए ना पाईआ। गोबिन्द किहा मैं तेरा कहिणा मन्ना, मनसा पूर वखाईआ। हरख सोग मेट के ग़मा, चिन्ता चिखा जलाईआ। जिस वेले रूप धारया नवां, नव चार दा पन्ध मुकाईआ। जट्टा धन्नया विच जट्टां दे रहिवां, दूजा घर ना कोए बणाईआ। सम्बल आपणे आसण बहिवां, सिंघासण इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, दर ठांडे रंग वखाईआ। धन्ने किहा तूं साहिब वडा धनाढ, तेरी बेपरवाहीआ। की नवीं कढेंगा काढ, मैनूं दे समझाईआ। गोबिन्द किहा मैं चार जुग दे विछड़यां नाल लडावां लाड, पूरब जन्म दे मेल मिलाईआ। जिन्हां दा लेखा अवतार पैग़म्बरां गुरुआं साथ, सगला संग जणाईआ। भावें किसे ने राम कृष्न अल्ला वाहिगुरु सतिनाम जपया होवे जाप, वक्खरा वक्खरा नाम सुणाईआ। मैं अन्तिम सब दी रखां लाज, लज्यावन्त हो के वेख वखाईआ। भगतो भगत भगवान दा चलाउणा समाज, दीन मज़्ब रहिण कोए ना पाईआ। जिस बिध सृष्टी दी रचना रची आदि, ओसे तरह सतिजुग सच देणा लगाईआ। एका नाम होणा ब्रह्माद, विद्या ब्रह्म पढ़ाईआ। इक सरनाई सब ने जाणा लाग, चरण धूढ़ इक रमाईआ। इक दा नाम रस होणा स्वाद, रस इक्को इक चखाईआ। इक दी सुरती इक विच जाणी जाग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सति धर्म दा खेड़ा करना आबाद, कलयुग कूड़ कुटम्ब मुकाईआ। गोबिन्द किहा तुसीं सारे रख्यो याद, मेरी माछूवाड़े दी सेज दए गवाहीआ। सम्मत शहिनशाही पंज छब्बी पोह नूं मिलणी दाद, दाअवेदार इक्को हो आईआ। जिस ने सृष्टी दृष्टी दा बदल देणा समाज, समग्री इक्को इक वरताईआ। शब्द नाद धुन सुणाए अगम्मी अवाज़, रसना जेहवा बत्ती दन्द ना कोए हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे वाद विवाद, विख अन्दरों सब दे बाहर कढ्ढाईआ।

७५
२२

✪ २३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ दारा सिंघ दे गृह नौरंगाबाद ✪

विष्नूं कहे भगतां कीती अर्ज़ोई, गोबिन्द दिता जणाईआ। असीं चार जुग दे कोई कोई, विरले थोड़े नज़री आईआ।

सदी चौधवीं किस नूं मिले ढोई, मिले माण वड्याईआ। उस वेले सृष्टी दृष्टी जाणी मोही, ममता विच कुरलाईआ। कूड़ कल्पणा विच जाणी परोई, परा पसन्ती मद्धम बैखरी कम्म किसे ना आईआ। चारों कुण्ट जगत शरअ दी फिरनी दरोही, धर्म दी धार ना कोए वखाईआ। सब दी पति जाणी खोही, सिर हथ्थ ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गोबिन्द किहा जन भगतो तुहानूं भगती दा मिल्या दान, सिमरन जोग अभ्यास शब्द दा मिल्या ज्ञान, नाम धन समझाईआ। सदी चौधवीं कलयुग अन्त मेरा साहिब होवे मेहरवान, महिबूब अगम्म अथाहीआ। जन भगत सुहेले लए पहचान, जुग चौकड़ी विछड़े मेल मिलाईआ। एका शब्द संदेशा दे महान, तूं मेरा मैं तेरा करे पढ़ाईआ। धर्म वखा के इक निशान, सति दवारा इक सुहाईआ। जोती शब्दी देवे माण, अभिमान देवे मिटाईआ। सुरती सुरत दा बण के काहन, रंग आपणा दए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा घर इक वसाईआ। जन भगतो प्रभ ने दया करनी आप, आपणा रंग रंगाईआ। सोहँ शब्द दस्स के जाप, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै जैकार सुणाईआ। जिस नाल मेट के तीनों ताप, त्रैगुण लेखा दए गंवाईआ। नाता तुड़ा के कूड़ कुटम्ब साक, सज्जण इक्को दए मिलाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं करे पूरा भविक्खत वाक, वाकिफ़कार इक्को इक अख्वाईआ। रूह बुत करे पाक, नग़मा कलाम इक सुणाईआ। झगड़ा मिटावे ज़ात पात, दीन मज़्ह़ब ना वंड वंडाईआ। प्रगट होवे साख्यात, जोती जाता डगमगाईआ। चार जुग दे वेखे काग़ज़ात, शास्त्र सिमरत फोल फुलाईआ। धर्म धार दी आपणी वेखे लुग़ात, जिथ्थों नवां नवां नाम प्रगटाईआ। सब दी इक्खी करे जमात, इक्को घर वसाईआ। कलयुग मेटे अंधेरी रात, साचा नूर चन्द चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक वखाईआ। विष्नूं कहे भगतां अन्तर कीता विचार, विचर के दिता ना कुछ सुणाईआ। पुरख अबिनाशी हो उज्यार, जोती जाता डगमगाईआ। शब्द इशारे किहा धार, धरनी धरत धवल दृढ़ाईआ। वेखो सब दा पूरा होणा इकरार, कौल अगला दए जणाईआ। खेल करे आप करतार, कुदरत दा मालक नूर इलाहीआ। तुसां सारयां बणना बरखुरदार, सेवक हो के सेव कमाईआ। चार जुग दा लहिणा देणा उधार, कर्जा कमरूज चुकाईआ। इक सुहाउणा बंक दवार, इक्को दर वज्जे वधाईआ। भगत सुहेले लए उठाल, चारों कुण्ट मेल मिलाईआ। शब्द सतिगुर होए विच दलाल, विचोला इक्को सोभा पाईआ। जिन्ह़ झगड़ा मिटाउणा झटका हलाल, सिर सके ना कोए कटाईआ। दीन दुनी दा मंदा होवे हाल, हालत विगढ़े थाउँ थाँईंआ। खुशी मनावे अन्तिम काल, कलकाती वेख वखाईआ। पुछणहारा मुरीदां हाल, मुर्शद अगम्म अथाहीआ। तिस

दा सब ने सुणना इक अहिवाल, अहिल दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगवन भगती भाग सब दा फोल फुलाईआ।

✪ २३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ ज्ञानी कुंदन सिँघ दे गृह मालचक्क ✪

विष्नूं कहे गोबिन्द सेज सुहञ्जणी सथ्थर सुत्ता, शब्दी जोत धार समाईआ। पुरख अकाल सुहाई रुता, रुतड़ी आपणे रंग महकाईआ। नूर नुराना नौजवाना मर्द मर्दाना आया अबिनाशी अचुता, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा फेरा पाईआ। पंज तत वेख्या काया जुस्सा, तन पैरां ध्यान लगाईआ। हस्स के किहा वाह मेरया सुत्ता, सुत दुलारे दयां दृढ़ाईआ। प्रेम नाल तक्कया मुखा, बिन नैणां नैण खुल्हाईआ। तेरे कोल नहीं कोई टुक्कर सुक्का, वस्त हथ्थ ना कोए रखाईआ। गोबिन्द अगम्मी धार कढ के रुक्का, बिन अक्खरां दिता वखाईआ। ना कोई हरख सोग ना कोए दुखा, चिन्ता ग़म ना कोए सताईआ। इक्को साहिब सुल्तान तेरी ओटा, ओड़क चरणां सीस झुकाईआ। अबिनाशी करते मुहब्बत विच प्रेम जणाया बहुता, बहुरूपी ध्यान लगाईआ। निगाह मार वेख झुकदे चौदां लोका, चौदां तबक सीस निवाईआ। अवतार पैग़म्बर तेरा सुणन श्लोका, सोहला अगम्म अथाहीआ। कलयुग अन्तिम तेरे हथ्थ मौका, मुकम्मल दयां दृढ़ाईआ। गोबिन्द यारड़ा सेज अग्गे लाउणा इक्को ढईआ ढौंका, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा इक सुणाईआ। विष्नूं कहे गोबिन्द सेज सुहञ्जणी अगम्म, अगम्म मिले वड्याईआ। नाता तोड़ के माटी चम्म, चम्मदृष्टी डेरा ढाहीआ। पवण स्वास छड के दम, रसना जेहवा ना कोए हलाईआ। ना कोई हरख़ सोग ग़म, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। ना कोई बुद्धी ना कोई मन, मनसा मोह ना कोए रखाईआ। ना कोई सरवण सुणे कन्न, अवाज़ राज़ ना कोए जणाईआ। ना कोई सूर्या ना कोई चन्न, मण्डल मण्डप ना कोए वड्याईआ। ना कोई माया दौलत धन, ना कोई जणेंदी माईआ। ना कोई छप्पर ना कोई छन्न, महल्ल अटल ना कोए वखाईआ। जे कोई वेखे ना कोई घड़ी ते ना कोई पल, पलक दी झलक ना कोए दृढ़ाईआ। ना कोई दुखड़ा ना कोई सल्ल, सलल आपणा रंग रंगाईआ। विष्नूं कहे मैं जां तक्कया इक्को दीपक नूर जोत अगम्मा रिहा बल, बावन धार सीस निवाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला अन्तर रिहा रल, जोती जोत डगमगाईआ। फेर वेख्या गोबिन्द चरणां नज़री आया जल थल, महीअल इक्को रूप समाईआ। पर्बत टिल्ले वेखे अटल, समुंद सागर सीस निवाईआ। फेर निगह आ गया कलयुग कल, कलकाती दए दुहाईआ। सृष्टी दृष्टी

इष्टी सच सिंघासण रिहा कोए ना बल, मंज़ल हक ना कोए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। विष्नूं कहे मैं सेज वेखी वेखी कंडा ख़ार, ख़ालक ख़लक ख़लक जणाईआ। जिस ते सुत्ता पैर पसार, सच सिंघासण सोभा पाईआ। शब्दी धार करे गुफ़तार, गुफ़त शनीद शनवाईआ। तूं मेरा मैं तेरा तेरे सथ्थर लथ्था यार, यारड़ा सेज इक हंढाईआ। मैं तेरा बरखुरदार, खुद मालक नूर इलाहीआ। पुरख अकाले दीन दयाले खेल कीता अगम्म अपार, अलख अगोचर दिती वड्याईआ। हुक्म संदेशा दिता जा के गुरु अवतार, पैग़म्बर पन्ध मुकाईआ। मछूवाड़ा धाम न्यार, धरनी धरत धवल धौल वज्जे वधाईआ। सब ने तक्कया योद्धा सूरबीर बलकार, बलधारी खुशी वखाईआ। नूरी चमक चमक चमत्कार, जल्वा जल्वा रिहा दरसाईआ। तेरा लहिणा देणा कर्ज़ उतार, मकरूज़ लेखा दिता मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। विष्नूं कहे सेज वेखी सूलां सथ्थर, सत्ता सत्ता ना कोए वड्याईआ। मेरे नेत्र वगे अथ्थर, हन्झूआं हार बणाईआ। मैं चार जुग दे ठाकर तक्के पथ्थर, पाहन ध्यान लगाईआ। चार जुग दी विद्या तके अक्खर, जो निरअक्खर धार विच्चों प्रगटाईआ। सरगुण सरूप वेख्या वक्खर, चुरासी नैण खुल्हाईआ। फेर निगाह मारी उपर सिख़र, चोटी कोटी फोल फुलाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब दी बणाए बणतर, घड़न भन्नणहार अख्वाईआ। ओह गोबिन्द दे वड़या अन्तर, निरन्तर बैठा सोभा पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा पढ़ना मन्त्र, दूजी अवर ना कोए सिखलाईआ। जिस दे चरणां हेठ गगन गगनंतर, ज़िमीं असमान सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव इक खुल्हाईआ। विष्नूं कहे मैनूं सेज ने दिता आख, आख़र दिता दृढ़ाईआ। जेहड़ी गोबिन्द ने सिक्खी बणाई विसाख, वरन बरन मेल मिलाईआ। एह सदी चौधवीं अन्तिम होणी गुस्ताख़, गुस्से विच दुहाईआ। इन्हां गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती सुट्टणी आपणी राख, गोबिन्द दा हुक्म मन्नण कोए ना पाईआ। चारों कुण्ट होणी अंधेरी रात, साचा चन्द ना कोए रुशनाईआ। धर्म दी रहिणी नहीं कोई जमात, सच दी करे ना कोए पढ़ाईआ। सेज नूं सुणया नहीं गोबिन्द दा भविक्ख्त वाक, वाकिफ़कार नज़र कोए ना आईआ। किसे साध सन्त दा अन्दरों खुल्हणा नहीं ताक, अक्खर पढ़ पढ़ जगत करन वड्याईआ। फिरनी दरोही लोकमात, सांतक सति ना कोए कराईआ। हरि का नाम सके कोए ना वाच, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। किसे नूं समझ नहीं आउणी लेखा जिसत कि टांक, एका दूआ भेव ना कोए मिटाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया काम क्रोध लोभ मोह हँकार दे विकणा हाट, कीमत टक्यां वाली पाईआ। सच दवार एकँकार रहे कोई ना दास, दास्तान सके ना कोए समझाईआ। गोबिन्द सेज किहा

विष्नूं प्रभ उस वेले किरपा करे आप, आपणी दया कमाईआ। गोबिन्द धार प्रगटे साख्यात, दो जहानां वज्जे वधाईआ। दीन दुनी दा वेखे खेल तमाश, नव नौ चार फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, भेव अभेदा आप जणाईआ। सेज कहे विष्नूं वेख लै नेत्र खोल्ह, गोबिन्द धार जणाईआ। सृष्टी दृष्टी जाणी डोल, धीर रहे ना राईआ। सति वस्त रहिणी नहीं किसे कोल, कूड़ी क्रिया होणी हल्काईआ। कलयुग कल्पणा वजाए ढोल, डंका चार कुण्ट सुणाईआ। साधां सन्तां मारने रोल, रौला पए कूड़ लोकाईआ। गोबिन्द दी भुल्ले सब नूं पाहुल, रसना रस ना कोए चखाईआ। झगड़ा पैणा उपर धौल, धरनी धरत धवल दए दुहाईआ। जिस दा भेव जाणे कोई ना पंडत पांधा रौल, नछत्र गृह ना कोए जणाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला इक अगम्मी दस्से बोल, अनबोलत आपणा राग जणाईआ। आत्म ब्रह्म पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जावे मौल, मौला हो के आपणी कार कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अवतार पैग़म्बर गुरुआं पूरा करे कौल, वायदा आपणा तोड़ निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, घर इक्को इक वड्याईआ। सेज कहे मैं सच सुणावांगी, संदेशा अगम्म अपार। गोबिन्द राग अलावांगी, चार कुण्ट दहि दिशा कर उज्यार। अन्तिम एसे दा राह तकावांगी, जो धरनी धरत धवल सुत्ता पैर पसार। लख चुरासी आख सुणावांगी, उच्ची कूक कूक पुकार। माही धुर दा इक मनावांगी, जिस दे अन्तर नूर जोत उज्यार। गल्ल पल्लू पा वास्ता पावांगी, दिवस रैण हो के ख़िदमतगार। गोबिन्द गोबिन्द तेरी ओट तकावांगी, सदी चौधवीं सब कुछ होणा तेरे अख़्त्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी इक्को ओट रखावांगी। सेज कहे विष्नूं विश्व वेख धार, विशा समझ किसे ना आईआ। चार कुण्ट फिरदे पैग़म्बर गुरु अवतार, स्वामी आपणा हुक्म समझाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल करे सच्ची सरकार, करनी दा करता कुदरत दा मालक आपणा हुक्म वरताईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जिस ने कीते पार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा खेल वखाईआ। परवरदिगार सांझा यार जिस दा इक्को नूर जोत उज्यार, कलमा कायनात दृढ़ाईआ। सो वेस अनेका आपणे लए धार, धरनी धरत धवल देवे वड्याईआ। जिस सदी चौधवीं लहिणा देणा पूरब कर्ज़ देणा उतार, कातिल मक्तूल वेखे खलक ख़ुदाईआ। जिस नूं झुकदे पैग़म्बर कदमां विच हो के ख़िदमतगार, ख़ादम हो के आपणी सेव कमाईआ। सो लहिणा देणा मेटे लेखा जाणे सर्ब संसार, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। गोबिन्द सूरा नौजवाना मर्द मर्दाना हो के आवे नाल त्यार, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता, आपणा फेरा पाईआ। सच संदेशा नर नरेशा देवे एकँकार, इक इकल्ला

सच महल्ला सतिजुग साचा आप वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, धुर दा मालक इक अख्वाईआ। सेज कहे विष्नूं मेरे उत्ते सुत्ता गोबिन्द सूरा, सूरबीर अख्वाईआ। जो आदि जुगादी हाज़र हज़ूरा, हज़रतां तों परे बैठा सोभा पाईआ। जिस दा शब्द अगम्मी नाद तूरा, तुरीआ तों परे करे पढ़ाईआ। जिस दा जोत अगम्मी नूरा, नूर नूराना डगमगाईआ। जिस ने कलयुग कूड़ी क्रिया हूंझणा कूड़ा, कर्म कांड लेखा दए मुकाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ा, आत्म ब्रह्म दए समझाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां भविक्ख्त वाक् करे पूरा, पूरन परमेश्वर आपणी कार कमाईआ। पड़दा लाहे नेरन दूरा, दूर दुराडा इक्को घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक बेपरवाहीआ। सेज कहे विष्नूं मेरे उत्ते जगत वाले तत, तत्व दयां दृढ़ाईआ। जिस ने दीन दुनी दी बदलणी मति, मति मतांतर डेरा ढाहीआ। इक्को रूप दरसाउणा सति, सति सतिवादी रंग रंगाईआ। इक्को नेत्र खोलूणा अक्ख, ज्ञान नेत्र कर रुशनाईआ। इक्को सब नूं देणा हक, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को धीरज देणा जत, सति सन्तोख इक्को झोली पाईआ। इक्को नाम कलमा सब ने लैणा रट, रट्टे पिछले दए मुकाईआ। इक्को धर्म दवारा खोलूणा हट्ट, वस्त इक्को इक वरताईआ। इक्को तीर्थ दस्सणा तट, अठ्ठ सठ्ठ रहिण कोए ना पाईआ।
८० इक्को नाम गवईआ होणा भट्ट, इक्को राग नाद शनवाईआ। इक्को सति सरूप होणा जट्ट, धन्ना जट्ट दए गवाहीआ। जिस ८०
२२ ने दुरमति मैल सब दी देणी कट, कटाक्ष आपणा नाम लगाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी २२
होवे प्रगट, परगणा सम्बल नगरी इक सुहाईआ। गोबिन्द खेल करनी झट, झटके हलाल वाला रहिण कोए ना पाईआ। जेहड़ी दीनां मज़्बां दी सूर गाँ पाई वट्ट, एहदा लेखा देणा मुकाईआ। क्यों जो इस उत्ते इक दूजे नूं मारे सट्ट, सदमे विच वेखी ख़लक ख़ुदाईआ। साचा मार्ग सारे गए छड, हड्ड मास नाड़ी ख़ाली नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, दरगाह साची इक सुहाईआ। सेज कहे वेख विष्नूं खेल अख़ीरी, आख़र बिन अक्खरां दयां जणाईआ। पुरख अकाल गोबिन्द धार खेल होणा पातशाह वज़ीरी, वज़ारत दूजी नज़र कोए ना आईआ। कलयुग रेख बदलणी तकदीरी, तक्ब्बर डेरा ढाहीआ। आपणे हथ्थ रखणी तदबीरी, तरीका ढंग ना किसे जणाईआ। जो आसा रखी भगत कबीरी, काअब्यां तों परे अक्ख खुलाईआ। जो खेल दस्सी हरि गोबिन्द पीरी मीरी, निरगुण सरगुण धार वड्याईआ। किसे दा हक नहीं रहिणा मालक जगत जागीरी, शाह सुल्तानां ख़ाक रुलाईआ। जेहड़ी उच्च दे पीर गोबिन्द चौदां धार गल विच पाई ज़ंजीरी, चौदां तबक देण दुहाईआ। उस ने कलयुग दी बदल देणी पीढ़ी, सतिजुग सच सच

प्रगटाईआ। जेहड़ा माण मिल्या माछूवाड़े चरण कीड़ी, कर्म कांड दा लेखा दए मुकाईआ। जिस नूं सारे कहिंदे अन्तर मंज़ल गली भीड़ी, सतिगुर शब्द सहिजे पार कराईआ। सतिजुग अन्दर ना कोई मदि पीए ना कबाब खावे ना रसना लाए बीड़ी, तमाकू तमां रहिण ना पाईआ। गोबिन्द नाम खण्डा शमशीरी, शरअ सब दी दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा नर नरेशा एकँकारा इक्को इक जणाईआ। विष्नूं कहे सुण सेज सुहञ्जणी, सोभावन्त रमणीक। मैं खेल तकी आदि निरँजणी, जो थोड़ी समझ समझाई बाल्मीक। हनवन्त लेख जणाया अञ्जणी, पैग़म्बरां दस्सी हक तौफ़ीक। राम ने धूढ़ी दस्सी मजणी, कृष्न काहन ने रखी उडीक। ईसा वेख्या नूर इलाही अंगणी, मूसा जाणया हक हकीक। गोबिन्द करे ना किसे मछन्दणी, मछन्दगी विच बदले कदे ना नीत। जिस तेरे उत्ते आपणी आसा रखणी, बैठा लै के हक तौफ़ीक। हुण खेल वेख लै बदनी, आपणे वसा लै चीत। दुबारा जोत अकाल पुरख निरगुण धार जगणी, जिस दी करनी पए तस्दीक। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब दी आसा मनसा पूरी करे उम्मीद।

✪ २३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ गुरनाम सिँघ दे गृह पिण्ड कंग ✪

माछूवाड़ा सेज कहे मेरे उत्ते लग्गा भाग, विष्नूं विश्व दा मालक सोभा पाईआ। घर स्वामी मिल्या कन्त सुहाग, मेरा मालक धुरदरगाहीआ। मेरी सोई सुरती गई जाग, कंडा खार रिहा ना राईआ। जंगल जूह जगया चिराग़, जोती जाता करे रुशनाईआ। जिस ने कूड़ी क्रिया धोणा दाग़, दुरमति मैल करे सफ़ाईआ। कलयुग अन्तिम अग्न बुझाउणी आग, त्रैगुण तत ना कोए तपाईआ। सति धर्म दा मार्ग लाउणा साच, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक्को रंग रंगाईआ। दीन मज़्हब दा लहिणा देणा मेटणा हिसाब, गुर अवतार पैग़म्बर बैठे राह तकाईआ। जिस दे कोल बिन अक्खरां वाली किताब, निरअक्खर धार निरगुण निरवैर आप लिखाईआ। जिस दा सफ़ा जाण ना सके कोए बाब, सरगुण तों बाहर सिफ्त सालाहीआ। ओह खेल करे आप महाराज, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस ने कलयुग विच सतिजुग बदल देणा राज, कूड़ी क्रिया पन्ध मुकाईआ। झगड़ा मुका के रोज़ा नमाज़, सजदा सीस जगदीश इक वखाईआ। हुजरा हक वखाए महिराब, महिबूब मिले नूर इलाहीआ। साचा दस्सणा इक आदाब, अदब मज़्हब तों बाहर जणाईआ। दीन दुनी नूं दए ख़ताब, मुख़ातब करे जगत लोकाईआ। जिस नूं ईसा मूसा मुहम्मद लिख्या वाहिद, लाशरीक जल्वागर अगम्म अथाहीआ। जो आदि जुगादी सब दा

माई बाप, पिता पुरख अकाल अख्वाईआ। जिस ने जगत रोग मेटणा संताप, सहिंसा दुःख दए गंवाईआ। लख चुरासी अन्दरों कढणा पाप, पतित पुनीत दए जणाईआ। सब दा पूरा करना भविक्ख्त वाक, वाकिफ़कार आपणे विच्चों प्रगटाईआ। सदी चौधवीं साचे मण्डल पावे रास, जो संदेशा दे के गया राम विच बनबास, दसरथ बेटा नाम जणाईआ। करे खेल पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता धुरदरगाहीआ। जिस ने लहिणा देणा चुकाउणा पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर लेखा दए मुकाईआ। सो साहिब सुल्तानां नौजवाना प्रगट होवे आप, अन्तष्करन दीन दुनी वेख वखाईआ। जिस वेले दीन दुनी शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी भुल्ली जाप, रसना जेहवा बत्ती दन्द होए हल्काईआ। माण रिहा ना तीर्थ आठ साठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रोवे मारे धाईंआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ गुरदवारे जाण कांप, सति धर्म दी धार नज़र कोए ना आईआ। सज्जण मीत मुरार देवे कोई ना साथ, पिता पूत करे लड़ाईआ। साची मंज़ल मिले किसे ना वाट, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। सदी चौधवीं चारों कुण्ट होए अंधेरी रात, चौदस नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। मज़्बां दी साबत रहे ना कोए जमात, चार यारी पंज प्यारे रंग ना कोए रंगाईआ। धुर दी गाथा दी सुणे कोई ना बात, बातन पड़दा ना कोए उठाईआ। झगड़ा मेटे ना कोए ज़ात पात, ऊच नीच ना कोए गंवाईआ। सो सच संदेशा सेज कहे मैं रही आख, गोबिन्द मैनूं अन्दरों रिहा जणाईआ। रूह बुत रहिणा नहीं कोई किसे पाक, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। साची सच दी देवे कोई ना दात, दाता दानी नज़र कोए ना आईआ। मन कल्पणा विच सूफ़ी सन्त फ़कीर होणे गुस्ताख़, मुल्ला शेख़ मुसायक पंडत पांधे सांतक सति ना कोए वरताईआ। एह खेल वेखणा बाज़ीगर नाट, पुरख अकाला स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा नर नरेशा नर निरँकार इक्को इक जणाईआ। सेज कहे विष्नूं साबत रहिणा नहीं किसे इष्ट, इष्ट देव ना कोए मनाईआ। जो दस्स के गया दसरथ बेटा रामा वशिष्ट, भविक्ख्त पेशीनगोईआं विच्चों प्रगटाईआ। गुरु चेले दा सांझा होणा गृहस्त, धर्म दी धार रहिण कोए ना पाईआ। भैण भ्रा दा सांझा होवे इश्क, मुहब्बत सच ना कोए कमाईआ। सदी चौधवीं मुहम्मद दी पूरी होणी किशत, कृष्न काहन अर्जन गया दृढ़ाईआ। मंज़ल मिले ना किसे बहिशत, स्वर्गां संग ना कोए निभाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझे यार चार जुग दी पिछली वेखणी फ़रिस्त, लेखा सब दा मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक एका आपणी कार कमाईआ। सेजा कहे मैनूं गोबिन्द रिहा दस्स, सथ्थर यारड़ा इक हंढाईआ। मेरे अन्दरों खोल्ह के अक्ख, दो जहान अग्गे वखाईआ। तीर अणयाला मारया

कस, पड़दा अन्दरों दिता चुकाईआ। मेरा रिहा कुछ ना वस, वास्ता इक्को अग्गे पाईआ। जिस वेले कलयुग कूड़ी क्रिया होवे प्रगट, नव नौ अंधेरा छाईआ। सति धर्म दा रहिणा नहीं कोई हट्ट, जूठ झूठ वज्जे डंक शनवाईआ। साफ़ रहे ना कोए तीर्थ तट, किनारे देण दुहाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द सारे नाम लैण रट, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। प्रभ दे नाम तों हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई दी पैणी वट्ट, अल्ला वाहिगुरु ओम तत सति राम कृष्न विचोले हो के करन लड़ाईआ। मन वासना दीन दुनी चार कुण्ट पैणा नट्ठ, दिवस रैण भज्जे वाहो दाहीआ। सुरती शब्द लाए कोई ना सट्ट, आत्म ब्रह्म ना कोए समझाईआ। एह खेल करे अबिनाशी करता समरथ, जो हर घट अन्तर आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा इक्को इक सुणाईआ। सेज कहे मेरे उत्ते सुत्ता धुर दा माही, महिबूब इक्को नज़री आईआ। जिस ने सृष्टी दृष्टी दा बणना राही, रथवाही हो के सेव कमाईआ। विष्नूं तूं देणी अन्त गवाही, शहादत इक्को देणी भुगताईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम मेटणी शाही, शहिनशाह आपणा हुक्म जणाईआ। चार वरन अठारां बरन होणी तबाही, तारीक अंधेरा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप सोभा पाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर सारे वेखण चाँईं चाँईं, धरनी धरत धवल उपर फेरा पाईआ। बल रहिणा नहीं किसे बाहीं, बलि बावन लेखा गया जणाईआ। जिस कारन गोबिन्द बूटा पुट्टया काही, कलमे वाल्यां होए सफ़ाईआ। अज्ज सूलां सथ्थर सेज हंढाई, सोहणा बैठा आसण लाईआ। जो कुछ मैनूं रिहा समझाई, मैं तैनूं दिता दृढ़ाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण नूर जोत करे रुशनाई, जोती जाता एकँकारा इक्को सोभा पाईआ। गुरु गुरदेव स्वामी सब दा बणे रथवाही, लख चुरासी जीव जंत साध सन्त तन माटी खाक पंज तत काया वजूद महिबूब वेखे चाँईं चाँईंआ। एह खेल करना रब्बी नूर इलाही, जिस नूं हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद बैठे सीस निवाईआ। जिस दा वास्ता रहे पाई, दरोही दरोही तेरा नाम दुहाईआ। यामबीन तेरी तलकीन, नबी रसूलां तालबां तुलबिआं आपणा इलम देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण तेरा खेल बेपरवाही, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी तेरे हथ्थ वड्याईआ।

✪ २३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ भाई नरैण सिँघ दे गृह पिण्ड कंग ✪

विष्नूं कहे गोबिन्द सेजा रही कहि, बिन रसना जेहवा आख सुणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वहिण वहे, माया ममता मोह हल्काईआ। साध सन्त जिज्ञासू साबत कोई ना रहे, धर्म धार दी धीर ना कोए रखाईआ। घर घर अन्तर हउमे हंगता होए मैं, हँकारी गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। सच दवार कोई ना बहे, चारों कुण्ट सृष्ट दृष्ट हल्काईआ। दीनां मज़्बां इक दूजे नाल जाणा खहि, खैरखाह नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाला साची वस्त किसे ना दए, दीन दयाल ना दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, हरि करता नूर इलाहीआ। सेज कहे विष्नूं ओह वेख अगम्म नज़ारा, गोबिन्द धार जणाईआ। चारों कुण्ट हाहाकारा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। होए सहाई ना कोए गुर अवतारा, पैग़म्बर पल्लू ना कोए फड़ाईआ। फिरी दरोही विच संसारा, तोबा तोबा करे लोकाईआ। वरन बरन पावे कोई ना सारा, सिर हथ्थ ना कोए रखाईआ। चारों कुण्ट दिसे अंध्यारा, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। ओस वेले प्रगट होणा भगतां विच्चों भगत रविदास चमारा, जातहीण वड्याईआ। जिस ने लिखणा धुर दा शब्द अपारा, पंचम शब्द लिखारी संग वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करनी कार कमाईआ। सेज कहे मैं दस्सां खेल अपारी, अपरम्पर रिहा वखाईआ। लेखा मुकणा दो जहान विच संसारी, भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। निरगुण धार कलि कल्की होवे अवतारी, ब्राह्मण गौड़ा आपणी कल वरताईआ। जिस दे चार जुग सारे बणे रहे पुजारी, निउँ निउँ सीस जगदीश झुकाईआ। अन्तिम आउणी उस दी वारी, जिस दी वारता आए लिखाईआ। एका बोले नाम जैकारी, जै जैकार दए दृढ़ाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला लेखा जाणे धुर दरबारी, दरगाह साची पड़दा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा भेव आप चुकाईआ। सेज कहे विष्नूं औह वेख शंकर हथ्थ फड़ी त्रिशूल, खुशी नाल वखाईआ। सदी चौधवीं दुनिया जाणी भूल, भरम भरम विच भुलाईआ। प्रभ मिले ना किसे कन्त कन्तूहल, सुहागी कन्त ना कोए हंढाईआ। सति धर्म दा रहिणा नहीं कोई असूल, असल वसल ना कोए कराईआ। नाम बाणी दा पूजा पाठ दा साधां सन्तां पंडतां पांध्याँ लैणा महिसूल, मुल्ला शेख़ मुसायक न्याज़ां विच आपणा झट लँघाईआ। प्रभ दा भेव किसे नहीं दस्सणा माकूल, पड़दा सके ना कोए चुकाईआ। दीन दुनी दा लेखा समझे कोए ना अर्ज़ तूल, मतवाज़ी रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। सेज कहे मेरे उत्ते गोबिन्द आसण, सोहणा रंग रंगाईआ। मैं तक्कया पुरख अबिनाशण, जो

निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जिस दा आदि जुगादि प्रकाशण, ब्रह्मण्ड खण्ड रुशनाईआ। ओह सब दा लेखा आया वाचण, निरगुण दाता धुरदरगाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे पापण, दुरमति मैल धुआईआ। आत्म परमात्म दस्से साकण, पारब्रह्म ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। हउमें हंगता करे नासण, कूड़ा गढ़ तुड़ाईआ। अगला भेव खोल्ह के बातन, पर्दा दए चुकाईआ। सति धर्म दा देवे साथन, सगला संग बणाईआ। इक्को नाम कलमा दस्स के पाठण, इक्को एक करे पढ़ाईआ। इक्को तीर्थ इक्को ताटण, किनारा इक्को इक जणाईआ। इक्को गृह मन्दिर वखाए हाटण, वस्त इक्को इक वरताईआ। इक्को करे कराए पाकी पाकन, पतित पुनीत इक अख्वाईआ। इक्को बण के सब दा माई बापण, पिता पुरख अकाल होए अन्त सहाईआ। इक्को आत्म परमात्म होए ज़ातन, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को ढोला गीत सारे आखण, तूं मेरा मैं तेरा राग सुणाईआ। इक्को खेल होणा लोकमातन, धरनी धरत धवल धौल वज्जे वधाईआ। इक्को मण्डल पैणी रासन, गोपी काहन नाच नचाईआ। इक्को बन होणा बनवासन, सीता राम इक्को गृह आत्म परमात्म खेल खिलाईआ। इक्को मंज़ल होवे घाटण, पैग़म्बर इक्को घर जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सेज कहे मैनूं गोबिन्द देवे उतों थापी, थपक थपक जणाईआ। कलयुग मेटणे सारे पापी, पतित पुनीत देणे कराईआ। मेरा मालक आवे वड प्रतापी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जो सब दा बणे साकी, नाम प्याला जाम प्याईआ। मनुआ रहिण ना देवे आकी, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। सब दा पूरा करे भविक्ख्त वाकी, वाक्या वेखे थांउँ थाँईंआ। कलयुग मेट अंधेरी राती, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ। जीवण विच्चों जीवण बदल देवे हयाती, हर हिरदे करे सफ़ाईआ। एह खेल प्रभू प्रभ कमलापाती, पतिपरमेश्वर दया कमाईआ। परवरदिगार सांझा यार लेख मुकाए साख्याती, ओहला रहिण कोए ना पाईआ। जिस ने झगड़ा मेटणा काग़ज़ाती, अक्खरां वाले नाम ना कोए लड़ाईआ। सब दी मंज़ल इक्को दस्स के घाटी, घाटा सब दा पूर कराईआ। आत्म परमात्म धार होवे साथी, सगला संग निभाईआ। सब दी इक्को नज़री आए प्रभाती, भाण्डा भरम भनाईआ। सेज कहे गुर गोबिन्द बिन अक्खरां तों लिखी पाती, पत्रका आपणे हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वारस हो के नज़री आईआ। पाती कहे मेरा लिख्या लेख अपारा, बिन कलम शाही वड्याईआ। कलि कल्की लए अवतारा, जिस नूं जन्मे कोई ना माईआ। जिस दा होवे धाम न्यारा, सम्बल इक वड्याईआ। जोती नूर होवे उज्यारा, शब्दी नाद धुन शनवाईआ। एह खेल सच्ची सरकारा, हरि करता कार कमाईआ। जिस दी सब ने मस्तक धूढ़ी लाउणी छारा, मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। ओह कलयुग विच सतिजुग करे

उज्यारा, उज्जल आपणा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त इक अवतारा, जोती नूर नूर उज्यारा, शब्दी धार धार जैकारा, दूजा नज़र कोए ना आईआ।

✪ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ सुखदेव दे गृह पिण्ड कल्ला ✪

पुरख अकाल निरगुण धार, जोती जोत रुशनाईआ। पंज तत कर प्यार, काया माटी सोभा पाईआ। खेल मात कीता निरँकार, नाँ नानक दिता रखाईआ। धुर संदेशा दे के अगम्म अपार, अलख अगोचर दिता जणाईआ। शब्द अनादी दे धुन्कार, अगम्मी राग सुणाईआ। काग़ज़ कलम शाही कर प्यार, त्रैगुण लेखा दिता मुकाईआ। बोध अगाधा कर विचार, अक्खरां नाल वड्याईआ। शब्द शब्द गुरु शब्द सच्ची सच धार, धरनी धरत धवल उत्ते प्रगटाईआ। हुक्म संदेशा दे के आपणी वार, वारस गुरु एक इक्को इक जणाईआ। अंगद अमर रामदास बणे रहे लिखार, गुर अर्जन सोहँ रंग चढ़ाईआ। देह जोत शब्दी चलदी रही कार, करनी करता आप कराईआ। सति सति कर प्यार, सच सच नाल रखाईआ। गुरु गुरु गुरु अधार, गुरदेव स्वामी इक दृढ़ाईआ। हरिगोबिन्द कलम ना सक्या उठाल, हरिराए अंक ना जोड़ जुड़ाईआ। हरिकृष्न शब्दी सुरत ना सक्या संभाल, राग नाद ना कोए जणाईआ। तेग़ बहादर उपर हो कृपाल, नानक निरगुण जोत कीती रुशनाईआ। उस ने शब्दी शब्द लिखे बण दलाल, मारू राग सिफ्त सालाहीआ। गोबिन्द वेख्या नाल ख्याल, चौदां सौ तीस अंक फोल फुलाईआ। इक कन्ना बणाउणा विच दलाल, जिस ने पन्ना पन्ना देणा उठाईआ। एका जोत दस देह गोबिन्द सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक वखाईआ। जिथ्थे वसे शाह कंगाल, ऊच नीच ना कोए जणाईआ। अमृत जाम दए प्याल, रस निझर इक वखाईआ। झगड़ा मेट के काल महाकाल, दर ठांडे दए वड्याईआ। हुक्म संदेशा मन्ने पुरख अकाल, अकल कलधारी आप जणाईआ। गोबिन्द तूं मेरा शब्दी सुत दुलारा लाल, लालन एका रंग रंगाईआ। तेरा लहिणा लेखे लाउणा सन्तां भगतां बाल, बाल अवस्था आपणे लेखे पाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत करनी रुशनाईआ। संदेशा दे के दीन दयाल, आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा आप सुणाईआ। नानक गोबिन्द निरगुण जोती, जोती जोत रुशनाईआ। पुरख अकाल अन्दर चढ़या चोटी, चोट अगम्मी शब्द लगाईआ। सुरती रही मूल ना सोती, आलस निंद्रा दिती गंवाईआ। इक सुणा के सच सलोकी, सोहला सतिनाम

दृढ़ाईआ। जिस दी महिमा विच गुरु ग्रन्थ दी बण गई पोथी, रागां नादां नाल वड्याईआ। पुरख अकाला दीन दयाला आपणे प्रेम दा सदा मौज़ी, ठाकर हो के आपणी कार कमाईआ। आपणे शब्द दा आपे बण के खोजी, आपे आपणी करे सिफ्त सालाहीआ। जगत विकार दा रहे ना कोई रोगी, शब्द अणयाला तीर लगाईआ। जिस विच नाम भण्डारा भरया रस भरया जगत रसीआ भोगी, भस्मड़ आपणी कार कमाईआ। खेल खिलाया बण संजोगी वियोगी, करनी करता आपणा हुक्म वरताईआ। धार बदल के वेदी सोढी, सो सोहला इक उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। निरगुण जोत दस अवतार, अवतरी रूप वटाईआ। गुरु गुरु गुरदेव घर बाहर, काया माटी वज्जी वधाईआ। शब्द संदेशा दे अगम्म अपार, साढे तिन्न हथ्थ बंक सुहाईआ। रसना जेहवा गए उच्चार, बत्ती दन्द सिफ्त सालाहीआ। भाई गुरदास बण लिखार, लेखा गया वखाईआ। तत वजूद श्रृंगार, गुरु गुरदेव बेपरवाहीआ। नानक तों लै के गोबिन्द तक दस सरीर रहे ना विच संसार, वक्खरे वक्खरे आपणा रूप गए छुपाईआ। फेर किहनूं मन्नणा सिरजणहार, सिर हथ्थ कवण रखाईआ। नानक अंगद अमर रामदास अर्जन हरिगोबिन्द हरिराए हरिकृष्न तेग़ बहादर नानक दा रूप गोबिन्द देह हो गए ख़ाकी छार, ख़ाक विच तन ख़ाक रूप बणाईआ। निशाना रिहा ना कोए विच संसार, जिस निशाने उत्ते दीन दुनी झट्ट, लँघाईआ। एसे कर के गुर गोबिन्द ने अन्त किहा उच्चार, धुर संदेशा इक सुणाईआ। शब्द गुरु गुरु गुरु मन्नो अगम्म अपार, जो जन्म मरन विच कदे ना आईआ। उस शब्द नूं कहिंदे शब्द सार, जिस शब्द दी महिमा गुरु अवतार अक्खरां विच सतरां विच लाईनां विच सिफ्तां विच सालाहीआ। तन वजूद दी जगह इक नूं करो निमस्कार, जो इक जोत इक रूप इक इकल्ला आदि जुगादि अख्वाईआ। ओसे दा गुरु ग्रन्थ करे इज़हार, ओसे दी शास्त्र सिमरत वेद करन पुकार, ओसे दा अञ्जील कुरान बाईबल विच कीता प्यार, प्रेमी प्रीतम प्यारा इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा राह वखाईआ। गोबिन्द शब्द धार किहा मैनूं मन्नयो शब्द ग्रन्थ, ग्रन्थ गुरदेव नज़री आईआ। ओस मंज़ल नूं केहड़ा समझे विच्चों पन्थ, पन्थक वाले आपणी विद्या विच करन पढ़ाईआ। जिस मंज़ल नूं लभ्भ नहीं सके कोटन कोटि पांधे पंडत, सो मंज़ल गोबिन्द गया जणाईआ। पंजां ततां वाला गुरु ना मन्नयो क्योंकि पुरख अकाल लए अवतार अन्त, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। जिस ने तारने सारे भगत सन्त, गुरमुख गुर गुर आपणे रंग रंगाईआ। ओह आदि तों लै के अन्त तक गुर अवतारां पैग़म्बरां दा धुर दा कन्त, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्को नज़री आईआ। जिस ने लख चुरासी वेखणा जीव जंत, जागरत जोत बिन वरन गोत कर रुशनाईआ। ओस दी महिमा

कोई जाण ना सके मुल्ला शेख़ मुसायक पांधा पंडत, विद्या धार ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा इक सुणाईआ। गुर गोबिन्द किहा गुर सतिगुर मन्नणा इक्को इष्ट, पुरख अकाल नज़री आईआ। गुरु ग्रन्थ दी बाणी वाचण वाल्यां खोल्हे अन्दरों दृष्ट, दृष्टी दा दृष्ट कवण समझाईआ। जिथ्थे इशारा कीता राम तों वशिष्ट, विषयां तों बाहर दिता समझाईआ। जिथ्थे ना कोई स्वर्ग ना कोई बहिशत, इक्को निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। ना कोई अक्खरां वाली पढ़त लिख्त, ना कोई लेखा कलम शाही काग़ज़ नाल बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप वरताईआ। गुर गोबिन्द किहा सच, सति सच दृढ़ाईआ। गुरु कदे ना बणे काया माटी कच्च, जो जम्मे ते मर जाईआ। सतिगुर शब्द शब्द सतिगुर जो हर हिरदे जाए रच, लूं लूं विच आपणा रंग रंगाईआ। सब दी अन्दरों बदल देवे मति, बुध बिबेक दए वखाईआ। झगड़ा मुका के विकार तत, आत्म ब्रह्म दए समझाईआ। बहत्तर नाड़ ना उबले रत्त, तिन्न सौ सठ्ठ हाडी दुक्खां विच ना कोए भवाईआ। एसे कर के गुरु ग्रन्थ दी गाथा दिती दस्स, दहि दिशा दिता समझाईआ। एस तों पढ़यां सुणयां मार्ग मिलदा जिथ्थे मिले पुरख समरथ, ओस मंज़ल चढ़ के गुरमुखो दर्शन लैणा पाईआ। जे ऐवें ख़ाली टेकी जाओ मथ्थ, मथ्थे टेक्यां हथ्थ कुछ ना आईआ। जिंना चिर तुहाडे अन्दर नानक गोबिन्द नाम ना जाए वस, वास्ता जगत नालों तुड़ाईआ। ओनां चिर खुल्ल्हे ना अन्दरों अक्ख, निज नेत्र ना होए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द दे के गया वर, गुरबाणी बिना गुर शब्द बिना गुर धार बिना गुर प्यार बिना पुरख अकाल नज़र किसे ना आईआ। नानक किहा पढ़ पढ़ थक्का जगत, जगत विच दुहाईआ। बिना प्रभू प्यार तों बणया कोए ना भगत, भगवन मिलण कोए ना आईआ। गुरु ग्रन्थ दी बाणी सतिगुर दी धार शक्त, शख़्सीयत सब नूं दए वखाईआ। जो गोबिन्द ने लिख्या पुरख अकाल ने आउणा जोती जामा पाउणा शब्दी धार उपजाउणा उसे दे कोल वक्त, बाकी समझ किसे ना आईआ। भावें किन्ने सन्त महात्मा मुनीश्र तपीश्र ऋषीश्र सूफ़ी सन्त इक्ठे कर लओ उत्ते धरत, धौल धवल दे मालक दा भेव सके ना कोए समझाईआ। जिस दा खेल फ़र्श अर्श, ओह जाणे आपणी तरह तर्ज़, किस वेले आपणे हुक्म दे हुक्म नूं देवे वरज, किस वेले आपणा पिछला पूरा करे फर्ज़, अगला मार्ग ल्ए उपजाईआ। एस खेल दी उस गोबिन्द नूं ग़रज़, जेहड़ा दीन दुनी तों बाहर डेरा लाईआ। जिस ने ग़रीब निमाणयां वंडणा दर्द, दुखियां होणा आप सहाईआ। शरअ छुरी मेटे करद, कत्लगाह दा लेखा दए चुकाईआ। गोबिन्द ने पुरख अकाल अग्गे कीती अर्ज़, बेनन्ती कर के दिती सुणाईआ। तेरे कोल आदि जुगादि जुग चौकड़ी गुर अवतार

पैग़म्बरां दी फ़रद लहिणा देणा सब दा देणा थांउँ थाँईंआ। प्रभ नूं आपणा नाम बदलदयां आपणा राज बदलदयां आपणा समाज बदलदयां कदे ना होवे कुछ हर्ज, क्यों चुरासी दा मालक ख़लक दा ख़ालक आपणा हुक्म वरताईआ। ओह वेखणहारा कलयुग अंधेरा गर्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा राह इक वखाईआ। गोबिन्द किहा गुरु ग्रन्थ मन्नणा इक, सिख्या गया समझाईआ। जे गुरु ग्रन्थ मन्नोगे ते पुरख अकाल समझोगे इक, जो सब दा पिता माईआ। जिस दे विच चार जुग दे शास्त्र रहे दिस, सिफ्तां वाले सिफ्ती ढोले गाईआ। एह वी मेरे नाम दा हिस, हिस्सा जगत विच रखाईआ। शब्द गुरु कदे ना देवे पिठ, पासा सके ना कोए मात बदलाईआ। जे लभ्भणा ते लभ्भणा विच्चों सवा गिठ, लम्मा पन्ध ना कोए रखाईआ। नाले अगम्मी लिख के गया चिट, चिट्ठी धार नाल वड्याईआ। दुनिया पूजणे पथ्थर इट्ट, ग्रन्थां वड वड्याईआ। मैनूं ओह मिले जेहड़ा मेरा पूरा होवे सिख, सिख्या सिक्खी विच रखाईआ। मेरे पुरख अकाल दीन दयाल ने वेख लैणा साडा भविख, जो भविक्ख्तां विच उस दा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा राह इक दरसाईआ। गुरु ग्रन्थ कहे मैं करदा सिफ्त सलाह, गुर दस दस वड्याईआ। मेरे विच्चों तकणा ते लभ्भो इक मलाह, खेवट खेटा नज़री आईआ। जिस दा पुरख अकाला नाँ, नाउँ निरँकारा कर के सारे गाईआ। जो वसे हर घट थाँ, दो जहानां सोभा पाईआ। तिस दे बलि बलिहारी जां, जो जानशीन अवतार पैग़म्बर गुर आपणे लए बदलाईआ। उस ने अगला जुग करना रवां, रवानगी सब दे हथ्थ फड़ाईआ। ओह चौधवीं सदी दा अन्तिम समां, वक्त सुहञ्जणा दए सुहाईआ। सब ने वेखणा नाल चवां, चारों कुण्ट अक्ख खुल्हाईआ। बारां साल बाकी जिस ने बदलणी पवण हवा, आदम हव्वा दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव खुल्हाईआ। गुरु ग्रन्थ दी बाणी नाम निधान, कलयुग करे रुशनाईआ। अगला हुक्म श्री भगवान, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। जिस नूं अवतार पैग़म्बर गुर करन परवान, सिर सके ना कोए उठाईआ। दरगाह साची बैठे बाल अंञाण, आपणी आप ना लए कोए अंगड़ाईआ। तेरा खेल नौजवान, मर्द मर्दाने सोभा पाईआ। असीं चाहुंदे कलयुग अन्त सब दा बदल दे विधान, वाधा आपणा ना कोए घड़ाईआ। असीं सुणन वाले तेरा फ़रमान, संदेशे कलमे नाम दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा इक सुहाईआ। अगला मार्ग हो गया त्यार ते भगतां अन्दर गया लग्ग, लग मात्रा दा लेखा रिहा ना राईआ। ओह छड गए पिछली रीती जग, जागरत जोत विच समाईआ। भुल्ल गया काअबे वाला हज्ज, मन्दिर मसीत शिवदुआले मढ्ढ ना अक्ख उठाईआ। इक्को नूर वेख सूरे सरबग, सीस जगदीश

दिता निवाईआ। दीन मज़्हब दी टप्प के हद्द, हदूद इक्को वेख वखाईआ। जिथ्थे शब्द अनादी वज्जे नद, अनरागी राग सुणाईआ। दीपक जोत रिहा जग, जोती जाता करे रुशनाईआ। अगम्मा डंक रिहा वज्ज, तूं मेरा मैं तेरा रिहा समझाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी शब्दी धार दरस देवे रज्ज रज्ज, गृह मन्दिर पड़दा आप उठाईआ। ओह भगत सुहेले पिछली रीती गए तज, तज़करा भगतां दिता समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। पुरख अकाल दा शब्दी समाज, समझ शब्द रिहा दृढ़ाईआ। सति धर्म दा सति रिवाज़, सति सच विच्चों प्रगटाईआ। एह करके धुर दा काज, करनी करता दए वखाईआ। तुहाडे साहमणे वेखो सारे गाउँदे सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जिस दा लहिणा आदि जुगादि, जुग चौकड़ी कार कमाईआ। एसे धार नूं निरगुण निरगुण मार के गए आवाज़, अगम्म अगम्मढ़ी आह सुणाईआ। सो देवणहारा दात, दाता दानी दया कमाईआ। जिस ने कलयुग मेटणी अंधेरी रात, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ। एह प्रभू दा खेल तमाश, गोबिन्द सब नूं दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति वखाए आपणी मण्डल रास, गोपी काहन आपणी खेल कराईआ। सतिजुग दा सति वतीरा, वितकरा नज़र कोए ना आईआ। खेल खिलाए वड पीरन पीरा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर प्रभ आपणी दया कमाईआ। जिस दा नूरे नज़र बेनज़ीरा, जगत नेत्र नैण अक्ख वेख ना कोए समझाईआ। जिस रविदासे नूं गंगा दी धार दिता कसीरा, कुशल दा मालक किछ आपणा पड़दा लाहीआ। जन भगतां नाल जगत दा बदल देणा वरतीरा, वारता अगली इक समझाईआ। ना कोई खड़ग फड़े ना शमशीरा, चिल्ला तीर कमंद ना कोए उठाईआ। एका संदेश देवे शब्दी शब्द गुणी गहीरा, गहर गम्भीर भेव चुकाईआ। रातीं सुत्तयां दिने जागदयां अन्दरों बदल देवे ज़मीरा, बुध बिबेक कराईआ। जेहड़ी आशा रख के गया कबीरा, कबरां तों बाहर ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी बाणी बोध शब्द गुर धार अक्खरां देवणहारा धीरा, धीरज धरवास धर्म दी धुज दया कमाईआ।

गोबिन्द सेज कहे मेरा रूप घास फूस, मैं फूलन दिते तजाईआ। असीं तिनका तिनका बण गए ताणा पेटा सूत, स्वच्छ सरूपी आपणा रूप बदलाईआ। साडे उत्ते सुत्ता पुरख अकाल दा सुत्त, दुलारा इक्को नज़री आईआ। साडे गृह मौली रुत, रुतड़ी इक महकाईआ। असां हुण नहीं होणा चुप, वास्ता देणा पाईआ। क्यों साडे उत्ते होया खुश, यारड़ा आपणे नाल

मिलाईआ। किधरों बदल के आ गया रुख़, बण के पाँधी राहीआ। तेरे अन्दर नहीं कोई दुःख, दुःख दर्द ना कोए जणाईआ। सेज कहे मैं फेर वेख्या उस ने ता दिता मुच्छ, हस्स के किहा मुश्किल तुहाडी दूर कराईआ। जिस वेले मैं छड के आवां काया बुत, बुतख़ान्यां डेरा ढाहीआ। नाल लै के आउणा अबिनाशी अचुत, चेतन आपणी धार वखाईआ। तुहानूं गोदी लवां चुक्क, फड़ बाहों गले लगाईआ। सचखण्ड दवारे देवां सुट्ट, दरगाह साची आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र नाल तराईआ। सेज कहे मेरे अन्दर निक्के वडे कंडे, आपणा मुख भवाईआ। तिक्खी धार दिसदे दन्दे, अग्गे हो ना कदे बदलाईआ। सारे कहिण साडे भाग चंगे, साडे उत्ते सुत्ता धुर दा माहीआ। जिस दे खून नाल असां जाणा रंगे, रंग अगम्मड़ा दए चढ़ाईआ। सानूं लै जाणा ओस डण्डे, पत्तन आपणे लए बहाईआ। जिथ्थे लेखे लगदे मंदे, पतितां होए सहाईआ। साडे नैण रहिण ना अंधे, गोबिन्द तक्कीए चाँईं चाँईंआ। सानूं प्रकाश भुल्ल गए सूर्या चन्दे, नूर नुराना सोभा पाईआ। असीं ओह मंज़ल लँघे, जिस नूं पढ़न सुणन वाला पार ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला आप मिलाईआ। सेज कहे मैं बेनन्ती कीती इक, निम्रता विच सुणाईआ। गोबिन्द कुछ लेखा दे लिख, हिस्सा साडे नाल पाईआ। कौण अन्दर वड़या तेरे विच, जो सानूं करे रुशनाईआ। गोबिन्द किहा मेरा पित, पुरख अकाला बेपरवाहीआ। जो साचा करे हित, नित नवित दया कमाईआ। जिस नूं लभ्भदे कोटन कित, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी पढ़ पढ़ ध्यान लगाईआ। ओह किसे ना पए दिस, पूजा वाले रहे कुरलाईआ। ओह कमलीए सेजा, जे सतिगुर साख्यात मिल जाए ओह सब लहिणे देणे दए नजिठ, मेहर निगाह इक उठाईआ। मैं तुहाडे उत्ते गया लिट, एस दे बदले तुहानूं सचखण्ड दयां पहुंचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद मेला आप कराईआ। सेज कहे तेरा नाम चंगा कि दरस, सच दे समझाईआ। गोबिन्द किहा मैनूं मिल के मिटदी हरस, हवस रहे ना राईआ। मैं जिस उत्ते चाहवां कर देवां तरस, पापीआं पार कराईआ। नाम जपण वाले पता नहीं किन्ना चिर रहिणगे तड़प, सतिगुर नज़र कदे ना आईआ। नाम जपण वाले वेखदे रहिंदे वक्त, दरस करन वाले दरस कर के आपणा आप पार कराईआ। एहो नाम दा ते मेरे मिलण दा फ़र्क, फ़िकरे इक्को विच समझाईआ। साख्यात सतिगुरु छिन्न विच चढ़ा दए फ़र्श दे उतों अर्श, अर्श तों फ़र्श एह मेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वाहवा आपणा संग बणाईआ। सेज किहा गोबिन्द की चंगा तैनूं गाउणा, सिफ्तां राग अल्हाईआ। कि चंगा दर्शन पाउणा, निउँ के सीस निवाईआ। गोबिन्द

किहा मैं ओस नूं अंग लगाउणा, जिस दा मेला नाल धुरदरगाहीआ। जिन्हां नूं अजे विछोड़े विच रखाउणा, उन्हां नूं नाम भगती विच लगाईआ। किसे नूं वेद पुराण शास्त्र, किसे नूं अञ्जील कुरान कलमे, किसे नूं गीता ज्ञान, किसे नूं गुरु ग्रन्थ पढ़ाउणा, भगतां गुरमुखां नूं अन्दर वड़ के आपणा दरस वखाईआ। काग़ज़ कलम शाही वाला लेख नहीं हथ्थ फड़ाउणा, फड़ बाहों पार कराउणा, मंज़ल साची आप चढ़ाउणा, सचखण्ड दवार वसाउणा, जिथ्थे मेरा जोत नूर डगमगाईआ। सच पुछें सेजा, मेरे तों बाद फेर पुरख अकाल आउणा, ततां वाला गुरु नहीं किसे मनाउणा, जिस ने शब्द गुरु उपजाउणा, चार जुग दयां भगतां आप उठाउणा, साचा मार्ग इक दरसाउणा, बिना भगती तों भगवन आपे पार कराईआ। गोबिन्द ने किहा मैं आपणे गुरसिख नूं किसे मकतब विच पढ़ने नहीं पाउणा, विद्यार्थीआं वाला रूप नहीं दरसाउणा, उ अ इ स ह वाला टब्बर नहीं कोई बणाउणा, अलिफ़ ये पे वाला लेखा नहीं कोई लिखाउणा, कलम शाही नाल पट्टी वाला पटा नहीं कोई दृढ़ाउणा, जिस वल्ल मेहर कीती उस नूं पार कराउणा, एह गोबिन्द दी बेपरवाहीआ। मेरे पिच्छों किसे पढ़ना ते किसे सुनाउणा, किसे हस्सणा ते किसे गाउणा, सच पुछें गोबिन्द हथ्थ किसे नहीं आउणा, माछूवाड़े दी सेज दए गवाहीआ। सदी चौधवीं अन्त मेरयां सिक्खां मैनूं भुल्ल के मातलोक विच पछताउणा, पश्चाताप विच हाहाकार होए थांउँ थाँईंआ। गोबिन्द किहा अन्त अख़ीर पूरे पन्थ विच्चों इक सौ यारां सिक्खां ने गुरु ग्रन्थ दा भेव पाउणा, बाकी समझ किसे ना आईआ। ऐवें जम्मे ते जम्म के मरे चुरासी विच भवाउणा, चारे खाणी उत्भुज सेत्ज अण्डज जेरज वंड वंडाईआ। गुरु ग्रन्थ नूं मन्नणा ते पुरख अकाल नूं मनाउणा, एह गोबिन्द गया समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण नूर जोत जोत चमकाउणा, ।

✪ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ✪

विष्णूं कहे प्रभ ने गोबिन्द पिट्ठ लगाई थपकी, सेज सुंहजणी उत्ते दिती वड्याईआ। गोबिन्द तेरी खेल पूरी होई जप दी, अग्गे जाप करन दी लोड़ रहे ना राईआ। तेरी आसा पुन्नी तप की, तपां दा लहिणा दिता चुकाईआ। विष्णूं कहे मैनूं सेज भुल्ल गई बाशक सप्प दी, सांगोपांग नज़र कोए ना आईआ। एने चिर नूं गोबिन्द धार ब्रह्मण्डां खण्डां टप्प गई,

पुरीआं लोआं बाहर सोभा पाईआ। इक मंग मंगी दीन दुनी दे हक लई, हकीकत प्रभ नूं दिती जणाईआ। मैं प्रगट होवां ग़रीब निमाणयां दी रत लई, गुरमुख सन्त अमोलक हीरे लवां प्रगटाईआ। मेरी खेल होवे धीरज जत लई, सांतक सति दयां वरताईआ। मेरी विद्या होवे ब्रह्म मति लई, पारब्रह्म तेरा पड़दा लाहीआ। मेरी शब्द धार होवे दीन मज़्ब दी वट्ट लई, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। मेरी वस्त होवे चार वरन दे हट्ट लई, चार कुण्ट सच वरताईआ। मेरी जोत शब्दी धार होवे इक जट्ट लई, जटा जूट दा लेखा दयां मुकाईआ। मेरी खेल होवे तेरे स्वांगी नट लई, दूसर समझ कोए ना पाईआ। मेरी धार आवे तेरे पुरख समरथ लई, समरथ तेरा संग रखाईआ। मेरी निगाह होवे गुरसिक्खां दी निज अक्ख लई, निज नेत्र नैण खुल्हाईआ। पुरख अकाल मेरी लज्या रख लईं, रक्षक हो के वेख वखाईआ। अगला मार्ग अगम्म दस्स दईं, दहि दिशा आप जणाईआ। हरि हिरदे अन्दर वस जाईं, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मथ दईं, मसला पिछला रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। विष्नूं कहे प्रभू ने खुशी नाल गोबिन्द छाती लाया मुक्का, मुकम्मल दिता जणाईआ। मेरे शब्दी गोबिन्द सुत्ता, पुत पुत्र दयां वड्याईआ। आह वेख तेई अवतार पैग़म्बरां दा रुक्का, ईसा मूसा नाल रलाईआ। कलयुग अन्तिम तूं सब दा भन्नणा हुक्का, हुक्म मेरा चले बेपरवाहीआ। सब दा उज्जल करना मुखा, दुरमति मैल धुआईआ। धर्म दा गाना बंन्हणा गुट्टा, चार वरन सगन मनाईआ। गुरसिख पिछला मनाउणा रुट्ठा, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। दीन मज़्ब करना इक मुट्ठा, हिन्दू मुस्लिम सिख ना करे लड़ाईआ। सो मेलणा जो मेरी धारों हुटा, डोरी शब्द तन्द बंधाईआ। अमृत जाम प्याउणा घुटा, निझर रस इक चखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी कोई ना खावे कुट्ठा, मदिरा मास रसन ना कोए लगाईआ। भुक्खा रहे कोई ना टुक्का, विष्नूं देणा समझाईआ। गोबिन्द किहा मैं तेरी धारों उठा, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। लेखा रहिण नाँ देवां कोई लुका, फड़ बाहों सारे बाहर कढ्ढाईआ। जिस वेले तेरा हुक्म संदेशा पुज्जा, पूजा पिछली दयां चुकाईआ। अगला भेव खुल्हावां गुज्झा, पर्दा अवर रहे ना राईआ। पुरख अकाल तेरे बिन इष्ट रहे कोई ना दूजा, सीस जगदीश इक झुकाईआ। जिस दे पिच्छे मेरा परिवार झूजा, अजीत जुझार दए गवाहीआ। तिस दा मार्ग लाउणा उत्ते बसुधा, सुध सब दी देणी बदलाईआ। जेहड़ा गुर अर्जन संदेशा दिता बाबे बुढ्ढा, बिन रसना जेहवा समझाईआ। जेहड़ा नानक निरगुण धार कीती खेल उग्घा, उग्घण आथण देणा दरसाईआ। गोबिन्द ने किहा प्रभू तेरे नाम दा किसे नूं लैण नहीं देणा भुग्गा, कलयुग दी रीती देणी बदलाईआ। तूं मालक मैं सेवादार चहुं युगा, गुर शब्दी रूप वटाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां फिरां उडा, दीन दुनी खोजां थांउँ थाँईआ। अट्ठे

पहर रहां रुज्झा, घड़ी पल ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब स्वामी तेरी ओट रखाईआ। विष्नूं कहे सेज उत्ते पुरख अकाल गोबिन्द उत्ते रखया हथ्थ, हथेली नाल दबाईआ। तूं मेरा सथ्थर हंढाया सथ, यारड़ा इक मनाईआ। मैं देवां अगम्मी वथ, वस्त अगम्म वरताईआ। तेरे अन्दर वस, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा करना जस, दोहां दा ढोला सिफ्त सालाहीआ। तेरी पति लवां रख, रखया करां थाओं थाँईंआ। गोबिन्द प्या हस्स, वाह तेरी बेपरवाहीआ। पुरख अकाल किहा नाता होणा पक्क, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। गोबिन्द कहे मैनूं अजे शक, मेरा संसा दे मुकाईआ। किस बिध अवतार पैग़म्बरां कोलों मैनूं ले के देवें हक, सब किछ मेरे हथ्थ फड़ाईआ। पुरख अकाल पिछली लिस्ट फड़ाई झट्ट, फ़रिस्त दिती दरसाईआ। आह वेख सदी चौधवीं सदी वीहवीं उन्नां सब कुछ आपे जाणा छड्ड, पिछला इकरारनामा सोभा पाईआ। फिर गोबिन्द तूं धर्म निशाना इक दो जहानां देणा गड्ड, गॉड गुड गाइड कहि के सारे तैनूं सीस निवाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई रहिणा नहीं कोई अड्ड, बाहमी नाता देणा जुड़ाईआ। एह खेल करे पुरख समरथ, मेहरवान महिबूब मुहब्बत विच आपणी कार कमाईआ। विष्नूं कहे मैं गोबिन्द सेजा सुत्ते चरणी गया ढट्ठ, निउँ निउँ सीस निवाईआ। गोबिन्द ने इक दो तिन्न चार पंज छे गिणे सत्त अठ, पंज तत मनमति बुध तिन्नां दा मिल के पड़दा दिता चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल वेखे नस्स नस्स, बिन पाँधीउँ आपणा पन्ध मुकाईआ।

२४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ बीबी प्यारो दे ग्रह पिड्ड कल्ला,

विष्नूं कहे गोबिन्द अन्तिम दिती पाती, सेज सुत्ता ल्या उठाईआ। गोबिन्द तिन्न वार नाल लाई छाती, छत्र छाया मंगी बेपरवाहीआ। तेरा साथ होवे साख्याती, सगला संग रखाईआ। तेरी जोत मेरी हयाती, तेरा शब्द मेरी अगंवाईआ। पुरख अकाल मारी झाकी, पर्दा इक चुकाईआ। गोबिन्द औह वेख सदी चौधवीं अन्त अंधेरी राती, कलयुग अंधेरा छाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर रहिणा नहीं किसे दा साथी, अगला संग ना कोए बणाईआ। दीनां मज़्बां आपणे इष्टां दी मन्नणी नहीं आखी, अक्खरां वाली करन पढ़ाईआ। उस वेले किसे दी करे ना कोए राखी, रक्षक नज़र कोए ना आईआ। कलयुग सब दे अन्दर भर देणी गुस्ताख़ी, गुस्से विच सर्ब कुरलाईआ। रूह बुत नहीं रहिणा पाकी, कलमे वाले देण दुहाईआ। झगड़ा पैणा ज़ात पाती, जगह जगह होए लड़ाईआ। फिरनी दरोही पाताल आकाशी, कशमकश वेखणी थाउँ थाँईंआ। सति सच

दा रहिणा नहीं कोई ज़माती, विद्या हक ना कोए वड्याईआ। उस वेले वेखणा खेल तमाशी, निरगुण हो के फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। विष्नूं कहे पुरख अकाल ने दिता इक संदेस, बिन अक्खरां अक्खर जणाईआ। तूं मालक होवें नर नरेश, नर नरायण वेख वखाईआ। तेरा लेखे लग्गे मुच्छ दाढ़ी केस, केसगढ़ मिले वड्याईआ। हुण जाणा पैणा इक वेरां सचखण्ड देस, नाता ततां वाला तुड़ाईआ। दक्खण दिशा जा के वेख, गोदावरी कन्ढ्हा राह तकाईआ। जिथ्थे धर्म दी धार रहे हमेश, हम साजण रिहा समझाईआ। जिथ्थे नानक दी खुंडी भूरी खेस, ख़ालस पड़दा रिहा उठाईआ। ओह धरनी धरत विशेष, विष्नूं पिछली दए गवाहीआ। ब्रह्मा इथे लिख के गया लेख, अक्खां मीट ध्यान लगाईआ। शंकर चवर कीता केस, धूढ़ी खाक रमाईआ। कलयुग अन्तिम आउणा गुरु दशमेश, नंदेड़ आपणा फेरा पाईआ। जिस ने तन वजूद एथे जाणा छेक, नाता जगत नालों तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दवारा एकँकारा इक इकल्ला आप समझाईआ।

✪ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ गुरबख्श सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ✪

६५
२२

सेज कहे गोबिन्द ने अन्त आपणा हथ्थ लगाया नाल कड़ा, कड़ी जगत वेख वखाईआ। पुरख अकाल दा बणया धड़ा, दूजा संग ना कोए जणाईआ। मुक्खों किहा तेरा सहारा बड़ा, दूजी ओट रहे ना राईआ। कलयुग कूड़ा वेखा गढ़ा, जो धरनी रही खुदाईआ। पुरख अकाल किहा पहलों मेटणी जगत शरअ, शरीअत रहे ना राईआ। सम्मत शहिनशाही पंज दा आवे मेरा वर्‍ा, वरयाम तैनूं दयां बणाईआ। तेरे विच्चों कर के हरा, हरी हरि आपणा रंग रंगाईआ। सच दवारा खोल्ह के दरा, धुर दरबारा दयां सुहाईआ। शब्द संदेश सुणावां खरा, खरे खोटे परखणे थांओं थाँईआ। प्रभ दा रूप होवे अवतरा, नर नरायण वेस वटाईआ। गोबिन्द ध्यान मारया ज़रा, ज़र्रा ज़र्रा वेख वखाईआ। फिरी दरोही घर घरा, गृह मन्दिर ना कोए रुशनाईआ। ढहि के प्रभ दी सरनाई परा, सरनगति इक रखाईआ। तेरी धार मेटणा कलयुग कला, कलकाती देणे खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्दी धार देवे बला, बलधारी दया कमाईआ।

✪ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ कर्म सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ✪

गोबिन्द प्रभ नूं कीता आदेस, सेजे सीस निवाईआ। पुरख अकाल वखाया माझा देस, फेर आउणा चाँईं चाँईंआ। मेरी धार रहिणा हमेश, दूजा रूप ना कोए बदलाईआ। शब्दी शब्द देणा संदेश, शब्दी सतिगुर शब्द शनवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव होणा पेश, पेशीनगोई दए गवाहीआ। अवतार पैग़म्बरां आ के लैणा वेख, वेखण चाँईं चाँईंआ। तेरी समझ ना सके कोई रेख, रूप रंग ना कोए दरसाईआ। तेरा मेरा जोती शब्द होवे भेख, भेखाधारी वेखणी कूड़ लोकाईआ। जिस वेले कलयुग अग्गे चले ना किसे दी पेश, पेशीआं भुगतण सारे थांउँ थाँईंआ। अग्गे हस्स के किहा दस दशमेश, दहि दिशा अक्ख उठाईआ। मैं सब कुछ कीता तेरी भेंट, भेंटा आपणा आप कराईआ। अग्गे आवां बण के सब दा खेवट खेट, नईया नौका तेरा नाम चलाईआ। एह खेल करना सम्बल देस, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि एका एक, इक इकल्ला आपणी कार कमाईआ।

✪ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ सरदारा सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ✪

गोबिन्द किहा प्रभ हुण छडणा जंगल बेला, सेज सूलां लई हंढाईआ। अग्गे बण के शब्दी चेला, सतिगुर पुरख लैणा मनाईआ। दीन मज़्हब तों हो के वेहला, तेरे विच जाणा समाईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम आया वेला, लोकमात लवां अंगड़ाईआ। खेल करां सब तों नवेला, वक्खरी कार कमाईआ। मैं निरगुण नूर जगा के बिन बाती तेला, तेरा नूर करां रुशनाईआ। साचे भगतां बण के सज्जण सुहेला, मित्र प्यारा हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। गोबिन्द किहा मेरी अन्तिम इक अर्ज़ोई, अर्ज़ दयां सुणाईआ। औह वेख पैग़म्बर पाउँदे दरोही, तेरा नाम दुहाईआ। अवतार सोया रिहा ना कोई, उच्ची कूक कूक जणाईआ। सदी चौधवीं सब दी पति गई खोही, मालक नज़र कोए ना आईआ। धर्म दवार मिले किसे ना ढोई, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मढ रहे कुरलाईआ। अठसठ तीर्थ रही रोई, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नाल रलाईआ। बूँद स्वांती निझर किसे ना चोई, तृष्ना भुक्ख ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन अवर ना दीसे कोई, आदि अन्त दे मालक तेरा राह तकाईआ।

✪ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ सरमुख सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ✪

विष्नूं कहे झट कलयुग आ गया भज्जा, आपणा पन्ध मुकाईआ। गोबिन्द दा चरण पकड़या सज्जा, हस्स के रिहा सुणाईआ। मैनूं मेटण दी केहड़ी वजह, मैनूं दे सुणाईआ। क्यों छेती मिलणी सज़ा, हुक्म कवण दृढ़ाईआ। गोबिन्द ने किहा मैं पुरख अकाल दी चलणा विच रज़ा, जो संदेशे रिहा सुणाईआ। कलयुग किहा मैनूं अगली दस्स दे जगह, जिथ्थे आउणा वेस वटाईआ। नाल होवे सूरा सरबग्गा, पुरख अकाला नूर खुदाईआ। गोबिन्द किहा ओह वेखे उथे भगतां वधणा अग्गा, भगत दवारा नज़री आईआ। जिथ्थे गुर अवतार पैग़म्बर फिरे भज्जा, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। सब दे उपर इक्को होणा दब्बा, सिर सके ना कोए उठाईआ। इक्को नाम दी होवे गदा, भय सब नूं देणा जणाईआ। इक्को साजण होवे लद्धा, साहिब स्वामी वेख वखाईआ। जिस दे हुक्मे अन्दर दो जहान वेख बध्धा, तन्द सके ना कोए तुड़ाईआ। कलयुग खुशीआं दे विच नच्चा, घुंमर रिहा वखाईआ। गोबिन्द जे तूं वी पुरख अकाल दा बच्चा, ते मैं वी सारयां जुगां तों छोटा बच्चा ओसे दा नज़री आईआ। जिस तरह तूं लूं लूं विच रचा, मैं घर घर मन दे अन्दर डेरा लाईआ। मैं सारयां दी बदल देणी तबा, तबीअत दिती बदलाईआ। भावें कोई अल्ला कहे भावें कोई वाहिगुरु कहे भावें राम कहे भावें कृष्न कहे भावें ओम कहे मैं पार लँघण नहीं दिता, अध विच सारे दिते रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, मेहरबान महिबूब मेहर नज़र इक उठाईआ।

✪ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ हरनाम सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ✪

कलयुग किहा गोबिन्द वेख मैं बड़ा बलवान, बलधारी तैनूं दयां जणाईआ। मैं प्रभ दा सुत जवान, नौजवान इक अख्वाईआ। मैं अवतार पैग़म्बरां गुरुआं कोलों युद्ध कराया घमसाण, खण्डा खड़ग चिल्ला तीर कमान हथ्थ फड़ाईआ। तैनूं वी सवा दिता विच जंगल सुंझ मसाण, सेज कख्खां वाली वड्याईआ। प्रभ ने किड्डा वडा मैनूं दिता माण, मेहर नज़र उठाईआ। चार जुग दे शास्त्रां दा रहिण नहीं दिता ज्ञान, भरमां विच सारे दिते भुलाईआ। चारों कुण्ट भज्जा फिरे शैतान, शरअ शरअ नाल टकराईआ। इक पुरख अकाल दी मन्नां आण, दूसर सीस ना कदे निवाईआ। मेरा हक आप पहचान, बेपहचान तेरी बेपरवाहीआ। गोबिन्द किहा आह वेख हुक्म हुक्मरान, हुक्म संदेशा रिहा सुणाईआ। तेरे विच्चों सतिजुग करना प्रधान, एह जुम्मेवारी मेरी इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक दृढ़ाईआ।

✪ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ पूरन सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ✪

कलयुग कहे मैं गोबिन्द अजे हट्टा कट्टा, नौजवान नज़री आईआ। मेरा वक्त थोड़ा टप्पा, क्यों खड़ग खण्डा रिहा चमकाईआ। मेरा चार लख बत्ती हज़ार दा पटा, पटने वाल्या वेख वखाईआ। गोबिन्द कहे कलयुग तूं दीनां मज़्बां पवाया रट्टा, शरअ शरअ नाल लड़ाईआ। तूं मनुशां खवाया कट्टा वच्छा, सूर गाँ मनुक्खां मुख रखाईआ। जिधर वेखां उधर दिसे रट्टा, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। इस करके आवां नट्ठां, भज्जा वाहो दाहीआ। चार जुग दे नाम दी कीमत रहिणी नहीं कोई टका, टकयां पिच्छे हट्टां विच विकाईआ। मैं रूप धारना सिध्धा सादा जट्टा, जटा जूटां करां सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ।

✪ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ✪

कलयुग किहा गोबिन्द मैं खेल करां बड़ी अच्छी, अच्छी तरह जणाईआ। मनुषा नूं खवा के डड्डी मच्छी, गाँ वच्छी नाल दिता रजाईआ। मज़्बां दी बन्नृ के विच रस्सी, प्रभ तों हिस्से दिते वंडाईआ। मैनूं वेख के सब नूं पैंदी ग़शी, सिर सके ना कोए उठाईआ। गोबिन्द किहा तूं कथा कहाणी दस्सी सच्ची, सच दिता दरसाईआ। तेरी कल्पणा घर घर विच नच्ची, मैं वेखां थांउँ थाँईंआ। मेरा अगला हुक्म मेरे कमलापती, पतिपरमेश्वर रिहा सुणाईआ। किसे दी रहिण नहीं देणी हिस्सा पत्ती, इक्को राह देणा दरसाईआ। कलयुग बेशक तूं सब दी मारी मती, साबत नज़र कोए ना आईआ। कलयुग ताड़ी ला के हस्सया गोबिन्द औह वेख लै मैं गुर अर्जन बहा दिता उत्ते लोह तती, तेरे पिता दा सीस दिता कटवाईआ। तेरे पुत्रां उत्ते तरस नहीं कीता रती, नीहां हेठ दबाईआ। तूं सब कुछ वेख्या अक्खीं, मैं किड्डा योद्धा सूरबीर आपणी खेल वखाईआ। गोबिन्द निगाह प्रेम नाल उत्ते रखी, कलयुग वल्ल ध्यान रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा लेखा पूर कराए फ़र्क रहिण ना देवे रती, तोला विचोला इक्को बेपरवाहीआ।

✪ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ सवरन सिंघ, भजन सिँघ ने गृह पिण्ड कल्ला ✪

कलयुग किहा सुण गोबिन्द नौजवान, जोबनवन्ते दयां जणाईआ। मैं वी प्रभ दा छोटा सुत बलवान, चौथा जुग नाउँ

धराईआ। साबत रहिण नहीं दिता किसे दा ईमान, धर्म दी धार ना कोए वड्याईआ। चारों कुण्ट फिरे शैतान, शरअ विच करे लड़ाईआ। अवतारां पैग़म्बरां कोलों युद्ध कराया घमसाण, गोबिन्द खण्डा तेरे हथ्थ फड़ाईआ। तूं वी वेख्या विच मैदान, आपणा बल प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग कहे गोबिन्द मैं वी प्रभ दा अनोखा पुत्र, ओसे पिता मैनूं दिती वड्याईआ। मैं ओसे दी धारों आया उतर, मैनूं जम्मया नहीं किसे माईआ। सदा ओसे दा करदा शुकर, शुकराने विच सीस निवाईआ। अज्जे ते मेरा थोड़ा समां गया गुज़र, बहुता अग्गे नज़री आईआ। किसे दा चलण नहीं देणा कोई उजर, अर्ज़ सुणन कोए ना आईआ। मैं अजे साध सन्त बणाउणे चोर चुग़ल, निन्दक निंदिआ विच रखाईआ। अजे ते तेरा झगड़ा नाल मुग़ल, ख़ान ख़ाना नाल टकराईआ। फेर औह वेख मैं करदा उँगल, इशारे नाल दरसाईआ। तेरे पन्थ विच फेर पैणी गुंझल, गुज्झा भेव ना कोए खुलाईआ। तेरी रमज़ मूल ना बुज्झण, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग किहा गोबिन्द मैं प्रभ दा बलधारी, चौथा जुग अख्वाईआ। मैं झगड़ा पाउणा नर नारी, पिता पूत देणा लड़ाईआ। मैं घर घर करनी ख्वारी, दर दर फिरे दुहाईआ। भैण भ्रा लगा के यारी, यराने कूड़े देणे वखाईआ। सिक्खां मुरीदां गुरुआं पैग़म्बरां नाल करनी ग़द्दारी, सीस जगदीश ना कोए निवाईआ। एह मेरा खेल वेखणा सदी चौधवीं अन्तिम वारी, चौदां तबकां दयां हिलाईआ। मुहम्मद जिस दी करी इंतज़ारी, इस्म आज़म उस दा दयां समझाईआ। साबत रहिण नहीं देणी चार यारी, चौथे जुग सर्ब दुहाईआ। चेल्यां गुरुआं उत्ते करनी बेएतबारी, बेवा होवे सर्ब लोकाईआ। किसे ने किसे दी करनी नहीं वफ़ादारी, प्यार विच दातार मिलण कोए ना आईआ। मैं शरअ दी शरीअत विच सब दे हथ्थ फड़ाउणी कुहाढ़ी, दो धड़ करनी लोकाईआ। मैं तैनूं सजदा करां बन्दना करां कि डण्डावत करां जिस ने मुच्छ केस रखाई दाढ़ी, दाअवा इक्को नाल रखाईआ। गोबिन्द औह वेख मेरा पुरख अकाल ऐं वखाउँदा कलयुग अन्तिम कलयुग ने सारी दुनिया कटणी वांग हाढ़ी, हाढ़ा कढण वाला रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, सब दा लहिणा देणा चुकावे आपणी वारी, वारस हो के वेखे थांउँ थाँईंआ।

✪ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ साधू सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ✪

कलयुग कहे गोबिन्द मैं वी सूरबीर बहादर तकड़ा, तक्कड़ तोलां जगत लोकाईआ। दीनां मज़्बां पावां झगड़ा, झगड़ेलू करां लोकाईआ। अमीर ग़रीबां लावां रगढ़ा, बचया रहिण कोए ना पाईआ। गुर चेले फिरावां विच रोही रकड़ा, बेल्यां विच दुहाईआ। रौला पवावां प्रभू दे नाम अक्खरां, अक्खरां विच सर्ब कुरलाईआ। आप सब तों रहवां वक्खरा, जगत नेत्र नज़र कोए ना आईआ। तूं यारड़े दा हंढाया सथ्थरा, सेजा सुत्ता चाँईं चाँईंआ। मैं काहन दा खेल करा के विच मथरा, द्वापर दा लहिणा दिता मुकाईआ। अग्गे प्रभ दा रूप बण के अथ्थरा, ज़रीआ हो के मातलोक भज्जा चाँईं चाँईंआ। तूं वेख लै तेरे नाल मुहम्मदीआं दीआं लवा दितीआं टक्करा, टाकरा दिता कराईआ। मैनूं किसे दा नहीं कोई ख़तरा, क्यों मेरा पुरख अकाल मैनूं हुक्म रिहा सुणाईआ। मैं बड़ा चतुर सुघड़ स्याणा मेरे विच वडा नख़रा, दीन दुनी लवां भरमाईआ। आह वेख चौदां तबकां दा मेरे कोल ख़सरा, मुहम्मद नूं इक्को नम्बर विच छुपाईआ। जिस ने दीन दुनी पसारा पसरा, ओह पुश्त पनाह मेरी बैठा बेपरवाहीआ। मैं आया तेरे पत्तना, दर तेरे सीस निवाईआ। गोबिन्द किहा तैनूं मुड़न नहीं दिन्दा सक्खणा, कुछ लेखा दयां जणाईआ। जिस वेले आवे पुरख समरथना, कलयुग अन्तिम वेस वटाईआ। उस ने खोटा खरा परखणा, लख चुरासी फोले थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच्चा मालक धुरदरगाहीआ।

✪ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ लाल सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ✪

कलयुग कहे गोबिन्द मेरी वेख जोबन वाली हयाती, हया विच ना कोए रखाईआ। मैं सब दी भुलाउणी गाथी, गहर गम्भीर मिलण कोए ना पाईआ। मैं मन हँकारी बणाउणा हाथी, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया ढाउणी घाटी, घाटे विच रहे जगत लोकाईआ। झगड़ा पवा के ज़ात पाती, पतिपरमेश्वर दा खहिड़ा देणा छुडाईआ। सदी चौधवीं कर अंधेरी राती, अंध अंधेरा देणा वखाईआ। हथ्थ मार के उत्ते छाती, शहिनशाह अग्गे सीस निवाईआ। तूं मेरी करनी राखी, होणा अन्त सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ।

✪ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ हरदीप सिंघ, गुरदयाल सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ✪

कलयुग कहे गोबिन्द मैनूं खुदा ने दिता पैग़ाम, पैग़म्बरां तों परे दिता जणाईआ। किसे दे अन्दर वसण नहीं देणा नाम कलाम, कायनात साचे कर्म ना कोए कमाईआ। हिरदे रहे किसे ना नाम, अन्तर प्रेम ना कोए वधाईआ। सब नूं शरअ दे करना ग़ुलाम, ज़ंजीरी शरीअत वाली वखाईआ। जिधर वेखां उधर होए हराम, धरनी धर्म ना कोए रखाईआ। अवतार पैग़म्बरां दा रहिण नहीं देणा इंतज़ाम, बन्धन सारे देणे तुड़ाईआ। कलमे तों नाम कराउणा बदनाम, नाम नाल कलमा देणा टकराईआ। किसे दी रहिण नहीं देणी शान, इज्जत माण ना कोए वखाईआ। एह हुक्म श्री भगवान, धुर दे मालक दिता सुणाईआ। मैं झगड़ा पाउणा विच अवाम, साचा अमल ना कोए कमाईआ। तूं योद्धा सूरबीर बलवान, बलधारी इक अख्वाईआ। मैं वी ओसे दा रूप महान, निरगुण नूर नज़री आईआ। मेरा अन्त मेरा कन्त इक जाणे भगवान, दूजे समझ किसे ना पाईआ। गोबिन्द हस्स के वखाया औह तक साहिब दा निशान, जो सत्त रंग रिहा झुलाईआ। जिस ने बदल देणा विधान, हुक्म इक्को इक दृढ़ाईआ। कलयुग कहे मैं फेर मंगां दान, दाते अग्गे झोली ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नर हरि आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ कुंदन सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ✪

गोबिन्द सेजा किहा कलयुग ना कर इतना गरूर, हँकार विच ना कोए वड्याईआ। कलयुग अन्तिम आउणा हरि हज़ूर, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस ने मूसा मूँह दे भार सुट्टया उत्ते कोहतूर, ईसा फाँसी गल लटकाईआ। मुहम्मद नूं कर मजबूर, जगत झगड़ा कीता लड़ाईआ। गुरुआं नाल वेख क्या होया दस्तूर, तत्ती लोह उत्ते टिकाईआ। दिल्ली सीस लथ्था बिना कुसूर, तेग़ बहादर दए गवाहीआ। गोबिन्द दे बच्चिआं दा रिहा कोए ना नूर, चारे चौथे जुग तेरी झोली पाईआ। बेशक तूं कलयुग जीवां सुरती कीती मूर्ख मूढ़, निन्दक निंदिआ विच वड्याईआ। नाता जोड़या कूड़ो कूड़, कुकर्म विच फिरी दुहाईआ। पर जिस वेले पुरख अकाल दी तेरे मस्तक लग्गी धूढ़, तूं आपणी दलील जाणी बदलाईआ। ऐवें ना पा फ़तूर, फ़तवा दूसरयां उत्ते लगाईआ। बेशक तूं हक दा नाअरा लाउण वाला सूली चाढ़्या मनसूर, खल्ल शमस तबरेज़ लुहाईआ। अन्त तैनूं वी होणा पैणा मजबूर, मुश्किल वेख आपणी थाँईं थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, जुग जुग आपणी कल वरताईआ। गोबिन्द सेज कहे कलयुग ना कर हँकार, हउमे रूप वटाईआ। ओह

खेल वेख निरँकार, जो निरगुण दाता रिहा वखाईआ। जिस गोबिन्द लैणा उभार, शब्दी शब्द रूप बदलाईआ। जोती जाता हो त्यार, निरगुण लोकमात लए अंगड़ाईआ। कलि कल्की खेल करे करतार, कुदरत दा कादर इक अख्वाईआ। अमाम अमामां हो सिक्दार, वेस अनेका रूप वटाईआ। तेरी कलू मति करे ख्वार, हिकमत अग्गे चले ना राईआ। सदी चौधवीं सब दा लहिणा देणा दए उतार, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। ओह तक सतिजुग मार रिहा ललकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। मैं होया ख़बरदार, बेख़बरां दयां उठाईआ। दीन दुनी दा झगड़ा मेटणा तकरार, नाम दी इक्को तुक सुणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स के सब नूं यार, यारड़ा सथ्थर लेखे लाईआ। ज़रा होणा आप हुश्यार, हुश्यारी विच दरसाईआ। जिस नूं सारे कहिंदे कलि कल्की अवतार, सो कला सब दी दए बदलाईआ। जिस ने जल थल मईअल पाउणी सार, समुंद सागर टिल्ले पर्बत वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक ख़लक दा ख़ालक, आदि अन्त श्री भगवन्त आपणा हुक्म हुक्म विच्चों बदलाईआ।

✪ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ हरी सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ✪

गोबिन्द किहा खेल करे मेरा प्रभ मीत, साहिब सुल्तान दया कमाईआ। जिस ने सब नूं लैणा जीत, हार विच दिसे लोकाईआ। तेरा नाम दस्स के गीत, साचा कलमा देणा समझाईआ। एका छत्र झुल्ले (सीस) जगदीश, जगत दा मालक आपणी कार कमाईआ। कलयुग तेरी क्रिया जाणी पीस, सदी चौधवीं अन्त राह तकाईआ। सब दी नन्नी होणी पीठ, ओढण उपर ना कोए टिकाईआ। एह खेल करना अनडीठ, अनडिठड़ा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। गोबिन्द किहा कलयुग अन्तिम सब नूं होणा सदमा, दुक्खां विच दीन दुनी कुरलाईआ। तूं वी झुकणा प्रभ दे कदमां, कदमबोसी करके खुशी मनाईआ। जिस ने झगड़ा मुकाउणा काया माटी बदना, तन वजूद ख़ाक डेरा ढाहीआ। एका रंग रंगाउणा आहला अदना, ऊच नीच देवे माण वड्याईआ। जो याद करके गया कसाई सदना, छुरी जगत वाली सुटाईआ। रविदास मंगदा गया मंगणा, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। कबीर कहिंदा गया कलयुग अन्तिम आवे दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराईआ। जिस दा नेत्र नाम बलोवे अंजणा, काया कंचन गढ़ देवे वड्याईआ। जिस नूं गुर अवतार पैग़म्बर मन्नयां आदि निरँजणा, आदि दा मालक इक अख्वाईआ। सो खेल करे सूरा सरबंगणा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दा नाम नग़ारा वज्जणा, गोबिन्द डंक करे शनवाईआ। तेरा कूड़

कुड़यारा सृष्टी दी दृष्टी विच्चों भज्जणा, भय भउ इक वखाईआ। साची धूढ़ करा के मजना, दुरमति मैल करे सफ़ाईआ। करे खेल आपणी निरगुण धार जिस जोती जाता हो के जगणा, जागरत जोत बिन वरन गोत डगमगाईआ। जिस नूं खोजदे कोटन कोटि पदम पदमा, पद दा मालक हथ्थ किसे ना आईआ। जिस ने पिछला कीता रद्दणा, राधा कृष्न गया दृढ़ाईआ। जिस ने मार्ग लाउणा अगला, सीता राम दए दुहाईआ। पैग़म्बरां कायनात विच्चों वंञणा, वञ्झ मुहाणा रहिण कोए ना पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल एकँकार सन्त सुहेले लाउणे आपणे अंगणा, अंगीकार आप हो जाईआ। गोबिन्द किहा कलयुग तेरे अन्त श्री भगवन्त आपणा देणा इक अनन्दना, अनन्द अनन्द विच्चों वखाईआ। गोबिन्द नूर चमका के चन्दना, चन्द चांदनी इक दिखाईआ। ओस वेले कलयुग ने गोबिन्द अग्गे कीती बन्दना, दोए जोड़ सीस निवाईआ। मैं वी खेल वेखणा विच ब्रह्मण्डणा, वरभण्ड अक्ख खुल्हाईआ। जिस वेले पुरख अकाल दा वक्त होया सुहञ्जणा, सोभावन्त देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा दवारा इक्को मंगणा, मांगत हो के भिक्खक आपणी झोली अग्गे डाहीआ।

✪ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ सुखदेव राम दे गृह पिण्ड कल्ला ✪

सेज कहे गोबिन्द मेरा वक्त सुहाउणा, सो साहिब दिती माण वड्याईआ। प्रेम विच गाया अगम्मी गाणा, बिन रसना जेहवा दिता दृढ़ाईआ। निरगुण धार वेस वटाउणा, शब्दी आपणा नाउँ प्रगटाईआ। दो जहानां वेख वखाउणा, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। धुर दा हुक्म इक दृढ़ाउणा, पर्दा आप खुल्हाईआ। पुरख अकाल नाल मिलाउणा, विछोड़ा रहे ना राईआ। दोहां ने सांझा धाम बणाउणा, बाडी घड़त ना कोए घड़ाईआ। जोती दीपक जोत जगाउणा, बिन तेल बाती कर रुशनाईआ। कलयुग राती वेख वखाउणा, बण बण के पाँधी राहीआ। पड़दा ओहला आप उठाउणा, भेव रहे ना राईआ। नाम निधाना डंक वजाउणा, नव सत्त दए उठाईआ। सच मृदंग इक खड़काउणा, दो जहान करे शनवाईआ। सूरा सरबंग आप अख्वाउणा, आखर आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग कूड़ कुटम्ब मिटाउणा, लेखा वेखणा थांउँ थाँईआ। सतिजुग साचा राह चलाउणा, चारों कुण्ट वज्जे वधाईआ। निहकलंका खेल खलाउणा, अमाम अमामा फेरा पाईआ। धुर दा धाम इक वसाउणा, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। विष्न ब्रह्मा सीस निवाउणा, निउँ निउँ लागण पाईआ। चार जुग दे शास्त्र पन्ध मुकाउणा, चौथे जुग डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच

मेला आप मिलाईआ। सेज किहा गोबिन्द सुणाया राग, अनुरागी दिता जणाईआ। मैं सुणी अगम्मी आवाज़, मेरे अन्तर लई अंगड़ाईआ। की इस दे अन्दर राज़, पड़दा कवण खुल्हाईआ। मेरी अन्तर खुल्ह गई जाग, निंद्रा आलस रिहा ना राईआ। मेरा वडा होया भाग, मिली माण वड्याईआ। मैं सब कुछ दिता त्याग, आपणी रखी ना कोए चतुराईआ। आपणा आप ल्या साध, साधना विच सीस निवाईआ। फिर पुरख अकाला ल्या अराध, नाउँ निरँकारा इक वड्याईआ। फिर चरणी गई लाग, गोबिन्द सीस निवाईआ। ओस वखाया मैं बदल देणा समाज, दीन दुनी बदलाईआ। कलयुग रीती मेट देणा राज, रईयत कूड़ देणी गंवाईआ। सतिजुग साचे देणा ताज, तख्त निवासी वेख वखाईआ। अगला भेव खोल्ह के आग़ाज़, तैनूं दिता जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि करता नूर इलाहीआ। सेज कहे मैं सोई उठी, आपणी लई अंगड़ाईआ। मैनूं गोबिन्द फड़या दोहीं गुट्टीं, हलूणा दिता लगाईआ। ओह कमलीए, मैं हुण लै के चलया छुट्टी, आपणा खेल वखाईआ। वेखीं लोकमात ना जाईं लुट्टी, लुटेरा होणा कलयुग रूप कसाईआ। वेखीं मेरा नाँ कदे ना जपीं बुल्ल्हणा बुट्टीं, रसना रस ना कोए वखाईआ। मेरी लिव अन्दरों कदी ना टुट्टी, जेहवा गाउण वाल्यां हथ्थ कदे ना आईआ। हुण मेरी औध पग्गी, मेरा साहिब रिहा बुलाईआ। मैं खेल करनी जेहड़ी कीती नहीं किसे चहुं जुगीं, चौथा जुग वेख वखाईआ। क्यों कलयुग ने सब दी मलीन कीती बुद्धी, बुध बिबेक ना कोए वखाईआ। मन वासना विच सृष्टी रुझी, दृष्टी पड़दा कोए ना लाहीआ। रस आवे किसे ना दुद्धीं, माता सीर ना कोए चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सेज कहे मेरे उत्ते अन्त अख़ीर गोबिन्द पाया भार, सहिज दिता दबाईआ। उठ वेख मेरा निरँकार, कोझीए कमलीए तैनूं दयां दृढ़ाईआ। जिस नूं झुकदे गुरु अवतार, पैग़म्बर सजदयां विच आपणा आप मिटाईआ। धूढ़ी मस्तक लाउदे छार, टिक्के धुर दे रहे रमाईआ। दस्त बन्न्ह के कहिण तेरे नन्हे नन्हे बरखुरदार, वड्डा छोटा ना कोए बणाईआ। औह वेख मेरा आ गया पुरख अकाल, जोती जाता डगमगाईआ। दीना बंधप दीन दयाल, दयानिध दया कमाईआ। सेज कहे जां मैं तक्कया गोबिन्द नूं आ के किहा उठ मेरे लाल, लालन लए अंगड़ाईआ। सचखण्ड दवारा तेरी धर्मसाल, क्यों सूलां सथ्थर रिहा हंढाईआ। एह तेरी जुग जुग अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक अख्वाईआ। गोबिन्द हस्स के किहा मैं तेरा ते प्रभू गुरमुख मेरे लाल, ओन्हां आपणी गोद टिकाईआ। पहलां ओन्हां नूं संभाल, जो मेरे पिच्छे आया भेंट कराईआ। जो सरसे वहिण वहे हो गए कुरबान, तेरा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गोबिन्द कहे मेरे पुरख

१०४
२२

अकाला, अकल कलधारी दयां जणाईआ। जे मैं तेरा सच्चा बाला, बालक आपणी गोद उठाईआ। वसां तेरी धर्मसाला, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। मेरे हुक्मे अन्दर काल महाकाला, सिर सके ना कोए उठाईआ। मैं तोड़ां जगत जंजाला, त्रैगुण लेखा दयां मुकाईआ। हुण वेख लै मेरा हाला, तेरे पिच्छे यारड़े सेज सुहाईआ। आपणे गलों लाह के सुट्टी माला, मणके तेरी झोली पाईआ। मैथों नाम जपया नहीं जांदा बाहला, मिन्नतां विच सीस ना बहु निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, अलख अगोचर आपणी कार कमाईआ। गोबिन्द किहा मेरी सेज वेख लै अन्त, प्रभू दयां दृढ़ाईआ। निगाह उठाई श्री भगवन्त, बिन अक्खां अक्ख मिलाईआ। गोबिन्द हस्स के किहा हुण अगला दे दे मंत, मन्त्र दे समझाईआ। पुरख अकाल किहा जिस नाल पार उतरे जीव जंत, जागरत जोत होवे रुशनाईआ। गोबिन्द किहा तूं बण जा इक्को कन्त, कन्तूहल तेरी सरनाईआ। अबिनाशी करते किहा तेरा रूप बोध अगाधा पंडत, शब्दी शब्द शब्द समझाईआ। तेरा लहिणा देणा होणा कलयुग अन्त, अन्तष्करन वेखणा ख़लक ख़ुदाईआ। गढ़ तोड़ना हउमे हंगत, हँ ब्रह्म देणा समझाईआ। चार वरन बनाउणी इक्को संगत, सगला संग आप रखाईआ। गोबिन्द दूजे दा ना होणा मंगत,
१०५ भिच्छया लैण कदे ना जाईआ। खेल वखाउणा तैनूं आपणे पंचम मीते पंचम शहिनशाही सम्मत, समां समें नालों बदलाईआ। १०५
२२ निरगुण धार तेरी बणनी बणत, तत्तां वाला जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर २२
दा हुक्म इक जणाईआ। गोबिन्द कहे मैं छड्डां सेज सुहावी, प्रभू तेरी सरनाईआ। अग्गे मेरे उत्ते वरते तेरी कदे ना भावी, मेरा तत ना कोए कुरलाईआ। क्यों संदेसा दे के गया पंचम सतिगुर उत्ते रावी, वहिणां विच चरण छुहाईआ। गोबिन्द दी धार अन्तिम पुरख अकाल दे नाल होणी सावीं, कंडा तराज़ू इक्को तोल तुलाईआ। मेरे दीन दयाल तूं मेरा ढोला गावीं, मैं तेरा राग सुणाईआ। हुण तूं मैनूं बल दिता योद्धा सूरबीर बणा के बाहवीं, फेर शब्दी तेरी कल वरताईआ। कुछ याद कर ला की मिन्नत कीती पातशाही नावीं, तेग़ बहादर तेरे अग्गे झोली डाहीआ। मेरे दीन दयाल पुरख अकाल अग्गे वास्ते गुरुआं नूं कदे ना लोकमात लड़ावीं, झगड़े विच ना कदे फसाईआ। सतिगुरु तेरे दरवेश बणना मंगते बणना फ़कीर बणना तेरे दवारे उत्ते कोई करन नहीं आउदे लावी, दिहाढ़ी कर के आपणा झट ना कोए लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गोबिन्द कहे मैं सेज छड्डां जग, जगजीवण दाते दयां जणाईआ। निरगुण धार निरगुण निरगुण लैणा सद्द, सद्दा शब्द नाम जणाईआ। आदि अन्त तैथों रहवां ना कदे अलग्ग, वक्खरा घर ना कदे बणाईआ। खेल वेखां तेरा सूरे सरबग, शाह पातशाह तेरी वड्याईआ। माछूवाड़े दे जंगल विच मैनूं आपणा

हिस्सा लिख के दे दे अध, जिंना चिर लिख के ना देवें तेरी मेरी सुलहा ना कोए कराईआ। मैं दुलारे चारे नीहां हेठां दिते दब्ब, ख़ाली हथ्थीं तेरा राह तकाईआ। हुण तैथों किधर जावां भज्ज, मैं भजन बन्दगी दा डेरा दिता ढाहीआ। इक्को पुरख अकाल तेरा जैकारा लावां गज्ज, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। मैनूं अगला मार्ग दस्स, किस बिध कलयुग लेखा देणा मुकाईआ। अबिनाशी करता गोबिन्द वल्ल वेख के प्या हस्स, हस्ती हस्ती विच्चों प्रगटाईआ। गोबिन्द औह वेख माझे विच तेरा खेड़ा रिहा वस, जिथ्थे वसल मिले यार खुदाईआ। ओथे तूं ते मैं जोत शब्द दी धार आउणा नस्स, भज्जणा वाहो दाहीआ। गुर अवतार पैग़म्बरां सुणा सच, सच दयां दृढ़ाईआ। हुण छेती भन्न दे काया माटी कच्च, भाण्डा तत रहिण ना पाईआ। फेर मेरे विच जाणा रच, अगली रचना दयां वखाईआ। जिस धार नाल होणा प्रगट, कलि कल्की वेस वटाईआ। गोबिन्द प्रभ सरनाई गया ढह्, झुक झुक लागे पाईंआ। तेरी जोत जगे लट लट, अंध अंधेरा रहे ना राईआ। तूं वसें घट घट, हर घट रिहा समाईआ। क्यों दीनां मज़्बां पाई वट्ट, पटने वाला रिहा जणाईआ। पुरख अकाल सहिज नाल दिता दस्स, दस दशमेश दृढ़ाईआ। जे खेल ना करां वक्ख वक्ख, मैनूं बेअन्त कहि के सीस ना कोए निवाईआ। औह वेख गुर अवतार पैग़म्बर छोटयां छोटयां ख़ान्यां विच छड्डे रख, आपणे चरणां हेठ दबाईआ। जिस वेले चाहवां लोकमात नूं भेजां झट, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। ओह मेरा नाम मेरा कलमा आह ल्यो रट, एसे दे नाल रट्टा दयां पाईआ। जिस वेले चाहवां फेर लवां सद्द, नाता तत्तां वाला तुड़ाईआ। गोबिन्द वेख के होया गद गद, खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। फेर वेख्या भगत भगवान दी इक्को यद, दूजा नज़र कोए ना आईआ। किरपा कीती पुरख समरथ, आपणा पड़दा दिता उठाईआ। गोबिन्द अन्त कलयुग तेरा मेरा इक्को होणा जस, सिफ्तां तों बाहर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग चौकड़ी चलावणहारा रथ, बेपरवाह बेपरवाही नूर इलाही इक्को इक अख्वाईआ।

✪ २५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ सोहण सिँघ दे गृह पिण्ड राम पुर ✪

पुरख अकाल किहा गोबिन्द माझा तेरा अन्तिम अस्थान, भूमिका सोहणी मिले वड्याईआ। तेरे नाल होवां बण श्री भगवान, भगवन हो के आपणा संग रखाईआ। जिथ्थे झुकणे ज़िमीं असमान, दो जहानां सीस निवाईआ। दर्शन करन सीता राम, कृष्न काहन भज्जण वाहो दाहीआ। पैग़म्बर सजदयां विच करन सलाम, ईसा मूसा मुहम्मद धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। देवत

सुर करन प्रणाम, दर ठांडे अलख जगाईआ। कलयुग वेख होए हैरान, हैरानी अन्दर दए दुहाईआ। त्रैगुण रूप सर्ब पछताण, माया ममता मोह विकार हँकार विभचार सिर सके ना कोए उठाईआ। साचे नाम दा बणाउणा इक विधान, चार जुग दी रीती नीती देणी बदलाईआ। धुर दा शब्द संदेशा दस्सणा गाण, आत्म परमात्म पड़दा देणा उठाईआ। दीन दुनी दा सांझा बणाउणा मकान, मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मट्ठ वंड ना कोए वंडाईआ। अमृत रस अगम्मा देणा पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। चार वरन अठारां बरन इक्को घर सोभा पाउण, दूजा घर ना कोए दृढ़ाईआ। सीस जगदीश तेरे छत्र झुलाए आण, कल्गी तोड़े दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक समझाईआ। पुरख अकाल किहा साचा धाम होवे सुहञ्जणा, हरि सज्जण आप सुहाए। खेले खेल दर्द दुःख भय भञ्जणा, पारब्रह्म बेपरवाहे। जिस वेले सदी चौधवीं वेला लँघणा, मुहम्मद कूक कूक दए दुहाए। चारों कुण्ट कूड़ विकारा वहिण वगणा, अवतार पैग़म्बर गुर ना कोए अटकाए। धर्म धार सच दवार सब ने छडणा, जूठ झूठ होए हलकाए। काया माटी चढ़े कोए ना रंगणा, शब्दी शब्द ना कोए शनवाए। दर्शन मिले ना किसे मुकन्द मनोहर मदना, जोती नूर ना कोए चमकाए। झगड़ा पैणा आहला अदना, दीन मज़्हब दए लड़ाए। उस वेले सब ने पुरख अकाल दीन दयाल कलि कल्की अवतार सद्दणा, निहकलंका आपणा रूप बदलाए। तेरे नाल मिल के डंक दमामा वज्जणा, दो जहानां आप सुणाए। सब नूं इक्को दस्सणी बन्दना, सजदा सीस इक झुकाए। कलमा नबी रसूलां छडणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताए। गोबिन्द साचा थान होए अपार, अपरम्पर दयां जणाईआ। जिस नूं कहिणा हरि भगत दवार, भगवन आपणे रंग रंगाईआ। धुर दा नूर होवे उज्यार, शब्दी तेरा नाद सुणाईआ। जिस नूं सम्बल किहा पुकार, सो तन वजूद दए वड्याईआ। एह खेल कलयुग अन्तिम वार, सदी चौधवीं दए समझाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा रोवे ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। साचा रिहा ना किसे प्यार, दीन मज़्हब करे लड़ाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ गुरदवार मच्चे हाहाकार, सति सन्तोख ना कोए रखाईआ। साध सन्त करन विभचार, धान मलेशा रूप वखाईआ। ओस वेले कलि कल्की लए अवतार, निरगुण हो के आवां चाँईं चाँईंआ। तेरा मेला मेलां विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी सारे सीस निवाईआ। एह खेल जगत बुद्धी तों बाहर, शास्त्र सके ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणी कार कमाईआ। गोबिन्द किहा मेरे साहिब समरथ, सहिज तेरी सरनाईआ। चरण टेक के मथ, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। नेत्र मीट के अक्ख, निज नैण अक्ख खुल्हाईआ। सच

हकीकत दे हक, धुर दे हाकम बेपरवाहीआ। किस बिध कलयुग अन्तिम होवें प्रगट, पटने वाला मंग मंगाईआ। पुरख अकाल भेव खोलॄया झट, पर्दा अन्दरों दिता उठाईआ। मेरा जोती नूर जगे लट लट, काया वजूद नज़र कोए ना आईआ। तेरा रूप शब्द अगम्मी मेरे नाम दी लाए सट्ट, सिट्टेबाज़ी वेखे जगत लोकाईआ। साढे तिन्न हथ्थ सम्बल जावां वस, वास्ता तेरा मेरा इक्को नज़री आईआ। एह महिमा अकथना अकथ, जिस नूं सके ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद आपणा रंग रंगाईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द तूं मेरा मैं तेरा दास, सेवक सेवा रूप अख्वाईआ। की नूर नूर पृथ्मी आकाश, दो जहानां डगमगाईआ। तेरा सरूप पूरन पूरन प्रकाश, पारब्रह्म प्रभ पर्दा दए उठाईआ। सच दवारा घर साचे करे वास, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। जिथ्थे बाल्मीक रामा वशिष्ट लेखा लिख के गए ख़ास, हरिगोबिन्द ध्यान लगाईआ। नानक ने रखी आस, अन्तर अन्तर वेख वखाईआ। शंकर वेखे उपर कैलाश, ब्रह्मा चारे मुख भवाईआ। विष्नूं बैठा रिहा घाट, ओसे पत्तन डेरा लाईआ। प्रगट होणा तेरा होणा साथ, सगला संग बणाईआ। चार जुग दे विछड़े सन्त सुहेले चढ़ाउणे आपणे राथ, रथ रथवाही आप अख्वाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सोहँ दस्सणी गाथ, गहर गम्भीर बेनज़ीर पड़दा आप उठाईआ। ओस जगह तूं सतिजुग साचे भगत दवारे सब नूं देणा आख, हरी हरि आपणा रूप दरसाईआ। गोबिन्द किहा प्रभू एह पूरा ज़रूर करीं वाक, वाक्या आपणा वेख वखाईआ। पुरख अकाल किहा जिस वेले कलयुग होवे अंधेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां उत्ते रहे ना किसे विश्वास, विषयां विच दीन दुनी होए हल्काईआ। उस वेले निरगुण धार आवां आप, आप आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्तिम पूरी करे वाट, लहिणा देणा सब दी झोली पाईआ।

✪ २५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ ऊधम सिँघ दे गृह पिण्ड जलालाबाद ✪

शब्द गोबिन्द किहा मेरा भेव पाए कोई ना पोथा, पुस्तक सके ना कोए समझाईआ। कलयुग अन्तिम दीन दयाल नाल धोखा, पर्दा सके ना कोए चुकाईआ। जन भगतां दे के मौका, आपणा भेव दिता खुलॄाईआ। मार्ग दस्स के सौखा, राह इक्को दिता समझाईआ। पार करना जुग चौथा, जुगती आपणे विच छुपाईआ। शब्दी हुक्म वरतणा बहुता, हथ्थीं कार ना कोए कमाईआ। सति धर्म ना जाए औंता, सच सच दए प्रगटाईआ। हरि ख़ालक हो के खौंता, प्रभ मिल्या धुरदरगाहीआ।

जिस लई चार जुग साफ़ करदे रहे चौंका, वेद मन्त्र पढ़ पढ़ कर सफ़ाईआ। सो ब्राह्मण गौड़ा ओसे धाम पहुंचा, जिथ्थे ब्रह्म आपणा ध्यान लगाईआ। भगत दवार कर के सौंता, सोहणा रंग रंगाईआ। गोबिन्द कहे मेरा पूरा कर के ढईआ ढौंका, ढाल तलवार दा पन्ध मुकाईआ। साचे नाम चला के नौका, नईया इक्को दिती वखाईआ। पड़दा लाह के धुर दे शाहो का, शहिनशाह आपणा रंग रंगाईआ। खेल वखाए अगम्म अथाहो का, अलख अगोचर आपणी कार कमाईआ। पन्ध चुकाए वाहो वाहो का, वाहवा आपणा हुक्म वरताईआ। झगड़ा वेखे थल अस्गाहो का, समुंद सागर फोल फुलाईआ। लहिणा जाणे जगत पसाओ का, पसर पसारी पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गोबिन्द कहे मैं कहिणा इक सलोका, हरि सोहला दिता सुणाईआ। झगड़ा वेखणा (चौदां) लोका, परलोका पन्ध मुकाईआ। कलयुग अन्तिम भरे हौका, हाए उफ़ दुहाईआ। किस बिध खेल होणा इक दो का, निरगुण सरगुण वंड वंडाईआ। किस बिध प्रकाश होणा अगम्मी लो का, लोयण अक्ख खुल्हाईआ। किस बिध झगड़ा मुकणा दीन मज़्हब गरोह का, गृहा सब दा साफ़ कराईआ। किस बिध लहिणा पूरा करे माया ममता मोह का, मुहब्बत इक नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गोबिन्द कहे मैं आया आपणे धाम नगर, सम्बल सोभा पाईआ। जिहदी सद मतवाली पद्धर, यकसां सोभा पाईआ। मन ना पावे ग़दर, करे ना कोए लड़ाईआ। मेरी पूरी होई सध्धर, सदके वारी घोल घुमाईआ। पुरख अकाल कीता अदल, इन्साफ़ दिता जणाईआ। गोबिन्द दी धार पूरन आया बदल, पूरन पूरन रूप बदलाईआ। जिस विच गोबिन्द होवे कदे ना कत्ल, खण्डा खड़ग ना कोए चतुराईआ। हथ्थ ना आवे जगत कीत्यां यतन, यथार्थ आपणा भेव छुपाईआ। दवारे बहि के अगम्मे पत्तन, बैठा खेल खिलाईआ। जन भगतां सच संदेशा आया दस्सण, सहिज सहिज सुणाईआ। अन्दरों खोल्ह के अक्खण, मेला ल्या मिलाईआ। दवार जणा के वतन, घर दिता वखाईआ। जिथ्थे भगत भगवान वसण, तन मन्दिर दिता सुहाईआ। गोबिन्द दा गोबिन्द पूरा करना बचन, जो माछूवाड़े गया दृढ़ाईआ। हरिजन गुरमुख वेखणे आपणे रत्न, हीरे अमोलक खोज खुजाईआ। जिन्हां पिच्छे लथ्था सथ्थन, सथ्थर यार हंढाईआ। उन्हां दी करनी कथन, कथा वारता आप बणाईआ। सृष्टी आया मथण, नाम मधाणा हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। गोबिन्द कहे मैं शब्द गुरु दी धार, धरनी धरत धवल सुहाईआ। मेरा रूप अपार, अपरम्पर दिता बणाईआ। मेरा खेल न्यार, नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। मेरा अगम्म श्रृंगार, सोहणा रंग रंगाईआ। मेरा कौल इकरार, भुल्ल कदे ना जाईआ। संदेशा

देवे पुरख अकाल, दीन दुनी दा मालक धुरदरगाहीआ। माझे विच्चों नौ वेखणे लाल, जिन्हां दे सीस लाल रंग बंधाईआ। उन्हां दे गल विच बध्धा होवे रुमाल, पीला रंग सोभा पाईआ। हथ्थ विच होवे इक इक दुशाल, चिट्टे रंग विच वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, एह गोबिन्द दे दर दा पूरा करे सवाल, सवाल पिछले वेख वखाईआ। गोबिन्द कहे मैं शब्द गुरु बलकार, बलधारी इक अख्वाईआ। मेरा रूप अनूप निरँकार, निरगुण आप समझाईआ। मेरा गृह मन्दिर दवार, घर इक्को सोभा पाईआ। जिथ्थे नूर जोत उज्यार, जोती जाता डगमगाईआ। मैं ओस दा दुलार, जो सब दा पिता माईआ। ओह करे सच प्यार, प्रीतम धुरदरगाहीआ। ओह वेखे वेखणहार, पूरब लेखा गया दृढ़ाईआ। लेखा जाण सदा जुग चार, जुग चौकड़ी खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। गोबिन्द कहे मैं शब्द गुरु सच सच करां आदाब, सच सच विच समाईआ। मैनूं लहिणा याद आ गया ढाब, महा सिँघ वल्ल ध्यान लगाईआ। ओह मेरा फुल्ल गुलाब, महके थाउँ थाँईंआ। उस कीता मेरे नाल हिसाब, लेखा मेरे मस्तक विच टिकाईआ। बेनन्ती विच किहा मैनूं रखणा याद, यादाशत ना देणी भुलाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त बदले समाज, समग्री आपणी आप वरताईआ। सच धर्म दा करें राज, रईयत

११० २२

चार वरन उपजाईआ। गुरमुखां खोल्हणी जाग, निंद्रा देणी मिटाईआ। नेत्र रोदयां गोबिन्द दे चोले ते पै गया दाग़, महा सिँघ ने रसना नाल चुम्म के आपणी खुशी बणाईआ। अगम्म आया स्वाद, सुख सागर विच समाईआ। फेर खेल वेख्या उस तों बाद, बादशाह पातशाह आपणा रूप दरसाईआ। मस्तक ज़ंजीरी तकी जिस दी ढाई इंच लम्बाई प्यार दा साजण साज, महा सिँघ ने हथ्थ दिता लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव चुकाईआ। महा सिँघ ने किहा मैं तेरी मस्तक ज़ंजीरी चुम्मां, उठ के मुख दिता लगाईआ। माझे दा लेख पाड़ दे मेरे ला दे जुम्मा, जामन मैं तैनूं लवां बणाईआ। गोबिन्द दे हथ्थ विच सी इक कौड़ा तुंमा, मालवे दी रेत दा गवाह नज़री आईआ। उधरों नीले हलाया सुम्बा, पौड़ दिता उठाईआ। उधरों इक भुल्ला होया आ गया दुम्बा, भज्जया वाहो दाहीआ। उधरों उस थेह उत्ते बबर प्या सी भज्जया कुम्भा, नौ दिन दा पहले सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। गोबिन्द किहा महा सिँघ मेरे मस्तक वेख ज़ंजीरी, शरअ ज़ंजीरां रही कटाईआ। तेरा मेरा मेल होया तकदीरी, तदबीर आपणी लई बणाईआ। मैं पातशाह ते तूं सिख मेरा वज़ीरी, सहिज दिता सुणाईआ। कुछ मंग लै मीरी पीरी, तेरी झोली दयां भराईआ। महा सिँघ नक्क नाल कढ्ढ के लकीरी, गल वास्ता दिता पाईआ। नेत्र

वहा के नीरी, रो रो दिता सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। महा सिँघ ने किहा मेरा इक हाढ़ा, मिन्नत विच जणाईआ। क्यों नहीं अज्जे लेख पाड़ा, माझे वाल्यां लै तराईआ। गोबिन्द दोवें हथ्थ फेरे उपर दाढ़ा, फेर छाती उत्ते टिकाईआ। फेर हथ्थां उत्ते चुक्क के मुख चुम्मयां तूं मेरा धुर दा लाड़ा, सोहणा सोहणा नज़री आईआ। याद रख लईं माझे वाल्यां नूं फेर मंगणा पैणा मेरा वाड़ा, दर मेरे सीस निवाईआ। हुण मैं तेरे नाल कौल करदा विच उजाड़ा, फेर भगत दवारा सोभा पाईआ। महा सिँघ ने नौ वार कीती निमस्कारा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। गोबिन्द दे चरण विच लिख्या ओस वेले माझे वाले तेरी मस्तक ज़ंजीरी दा करन फेर शृंगारा, वास्ता तेरे अग्गे पाईआ। गोबिन्द ने उठ के पुरख अकाल नूं कीता इशारा, निगाह असमान उत्ते टिकाईआ। जे मैं आउणा फेर दुबारा, तूं मेरा संग रखाईआ। सच दस्स दे ओह केहड़ा दिवस ते केहड़ा दिहाढ़ा, कवण वेला वज्जे वधाईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द शब्दी शब्द इशारा, इशारे विच समझाईआ। सम्मत शहिनशाही पंज ते छब्बी पोह त्यौहारा, तेरा सोहणा रंग रंगाईआ। फेर तैनूं सारी दुनिया विच करना ज़ाहरा, एह मेरे हथ्थ वड्याईआ। पहला पिछला सब दा लौहणा उधारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त दा मालक इक अवतारा, अवतर आपणी कार कमाईआ।

✪ २५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ ज्ञानी गुरमुख सिँघ दे गृह पिण्ड भलाई पुर डोगरां ✪

गोबिन्द कहे प्रभ खेल खलाउणा यकीनी, हुक्म यक हक सुणाईआ। जिस नूं गुर अवतार पैग़म्बर करन तस्लीमी, तिलसमा अवर ना कोए जणाईआ। सजदा सीस झुका के कहिण अमीनी, बेपरवाह तेरी वड्याईआ। खेल दृढ़ाउणा नर मदीनी, मुद्दा मानव आप समझाईआ। ज़ात रहे ना कोए कमीनी, शरअ छुरी ना कोए कसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। गोबिन्द कहे दिता हुक्म यक्क, वाहिद आप सुणाईआ। वेखणा खेल समरथ, कल करता कार कमाईआ। चार जुग दा पिछला लैणा हक, हकीकत दए दरसाईआ। झगड़ा मेट के गुरु तत, शब्दी सतिगुर लए प्रगटाईआ। जिस ने दीन दुनी दी बदल देणी मति, मनमति रहे ना राईआ। धीरज देवे सन्तोख सति, सति सतिवादी वेख वखाईआ। नाम भण्डारा दरसा दे हट्ट, वस्त इक्को इक वरताईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कट, काम क्रोध लोभ मोह हँकार दए मिटाईआ। नाम अगम्मी मारे सट्ट, सोई सुरती जगत उठाईआ। कूड़ा खेड़ा

करे भट्ठ, भठियाला अग्नी आप तपाईआ। जिस पिच्छे गोबिन्द लेखे लाई रत्त, सो रुतड़ी दए सुहाईआ। खेल खिलाए कमलापति, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। गोबिन्द कहे मिल्या हुक्म अनोखा, हरि करते दिता दृढ़ाईआ। करना नहीं किसे नाल धोखा, मज़्ब वंड ना कोए वंडाईआ। तेरा लहिणा जुग चौथा, चारे वरन तेरी झोली पाईआ। गुरमुख अन्तर रहे कोए ना थोथा, दुरमति मैल देणी धुआईआ। पढ़ना पए किसे ना पोथा, आत्म ब्रह्म देणा समझाईआ। रखणा पए कोए ना रोज़ा, नमाज़ां विच ना सीस निवाईआ। सीस वधाउणा पए ना बोदा, जञ्ञू संग ना कोए बणाईआ। सब दा हिरदा जाए सोधा, वदी सुदी ना वेख वखाईआ। पड़दा लौहणा चौदां लोका, चौदां तबक भेव खुल्हाईआ। एका कलमा नाम सलोका, सोहला धुर देणा दृढ़ाईआ। तेरे हथ्थ अन्तिम मौका, मुकम्मल दयां जणाईआ। इक्को नाम चलाउणी नौका, नईया इक्को इक वखाईआ। तेरे विछोड़े विच गुरसिख भरे कोई ना हौका, हउमे देणी मिटाईआ। मेल मिलाउणा साचे शाहो का, शहिनशाह आपणे घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच पड़दा आप चुकाईआ। गोबिन्द कहे प्रभ दस्सी कहाणी अकथ, गम्भीर दिती जणाईआ। आह लै अगम्मी वथ, वस्त दयां वरताईआ। जिस कारन सथ्थर सुत्ता सथ्थ, यारड़ा सेज हंढाईआ। पिछला लेखा गया टप्प, अग्गे मिले वड्याईआ। पन्ध मुकाउणा नठ नठ, भज्जणा वाहो दाहीआ। सदी चौधवीं मारनी सट्ट, शब्दी खण्डा खड़ग खड़काईआ। दीन मज़्ब मेटणी वट्ट, वटणा लाउणा ख़लक खुदाईआ। इक दवारा खोल्हणा हट्ट, इक्को वस्त जगत वरताईआ। इक्को तीर्थ दस्सणा तट, किनारा इक सुहाईआ। इक्को कलमा लैणा रट, इक्को नाम वज्जे वधाईआ। चार जुग दा पिछला लहिणा देणा छड, अग्गे आपणा हुक्म वरताईआ। सूर गाँ करे कोए ना बध, छुरी फड़े ना कोए कसाईआ। इक्को नाम ढोला गावण सद, सदके वारी घोली घोल घुमाईआ। इक जैकारा बोलणा गज्ज, दो जहान वज्जे वधाईआ। एह खेल सूरा सरबग, हरि करता आप समझाईआ। सृष्टी दी दृष्टी मूल रहे ना कग, कागों हँस देणे बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। गोबिन्द किहा कहि प्रभू प्रभ सति, हरि सति दिता दृढ़ाईआ। जिस वेले आवां फेर वत, वतन बेवतनां वेख वखाईआ। ग़रीब निमाणयां रखां पत, पतिपरमेश्वर तेरी ओट तकाईआ। निज नेत्र खोल्ह के अक्ख, तेरा दर्शन दयां कराईआ। सच दवारे हो प्रतख, प्रगट आपणा आप कराईआ। लम्भयां किसे ना आवां हथ्थ, भावें खोजे जगत लोकाईआ। मेरी महिमा तेरा होवे जस, सिफ्ती सिफ्त नाल सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। पुरख अकाल कहे मैं करां किरपा, कलयुग अन्त दया कमाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणी बिपता, बिपरीत देणी गंवाईआ। मानस मानव मानुक्ख रूप बणाउणा साचे सिख दा, सिख्या इक दृढ़ाईआ। रविदास चमारा तेरा लेख होवे लिखदा, गुरमुख रंग रंगाईआ। फेर भेव खोल्हणा पंजां विच दा, पंचम कलम चलाईआ। झगड़ा मिटणा ऊच नीच दा, ज़ात पात ना कोए लड़ाईआ। एह खेल होणा ईसा वाली सदी बीस दा, बीस बीसा नाल मिलाईआ। जगत जहान होणा पीसदा, पुश्त पनाह हथ्थ ना कोए टिकाईआ। फेर खेल वखाउणा त्रैगुण अतीत दा, त्रैभवण धनी कार कमाईआ। लेखा पूरा करना जुझार अजीत दा, मुहम्मद रोवे मारे धाईआ। झगड़ा मुकणा मन्दिर मसीत दा, काया काअबा इक वखाईआ। गोबिन्द डंका वज्जणा तेरे गीत दा, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। समां समें विच्चों बीतदा, आपणा पन्ध मुकाईआ। वक्त सुहञ्जणा होणा अगम्मी हदीस दा, हज़रतां तों परे करे पढ़ाईआ। सदी चौधवीं राह उडीकदा, वेला वक्त दए गवाहीआ। जिस लेखा बदलणा चार जुग दी तवारीख दा, तारीख समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, पर्दा ओहला आप चुकाईआ। गोबिन्द कहे पुरख अकाल करे इशारा, सैनत रिहा लगाईआ। आउणा अन्त दुबारा, दोहरी धार चलाईआ। नूर कर उज्यारा, शब्दी शब्द शनवाईआ। सोहणा इक दवारा, भगत मिले वड्याईआ। आउण गुर अवतारा, पैग़म्बर सीस निवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बणे भिखारा, दर ठांडे अलख जगाईआ। ओह वेखणा अजब नज़ारा, नज़रीआ सब दा दए बदलाईआ। गोबिन्द निउँ के कीती निमस्कारा, सीस दिता झुकाईआ। कवण वेला कवण दिहाढ़ा, कवण थित वज्जे वधाईआ। पुरख अकाल शब्द जैकारा, एकँकार दिता सुणाईआ। सम्मत शहिनशाही पंज चले विच संसारा, हरि करता आप प्रगटाईआ। छब्बी पोह दा होए दिहाढ़ा, त्यौहार इक्को इक समझाईआ। भगत दवारे लग्गणा तेरा अखाड़ा, खड़ग खण्डा इक्को इक वखाईआ। साचे सन्तां देणा सच अधारा, गुरमुख गुर गुर गोद टिकाईआ। गुरसिक्खां कर प्यारा, प्रेमी प्रीतम वेख वखाईआ। सब ने इक्को बोलणा नाअरा, जैकारा इक जणाईआ। पुरख अकाल कहे गोबिन्द नौ नौ फ़ुट दा रखणा अधविचकार दाइरा, दाअवा बेदाअवा अगला दए समझाईआ। ओथे पंजां गुरमुखां दा होवे पहरा, जो पारब्रह्म नूं मिल के पारब्रह्म विच समाईआ। विच होए ना कोए ग़द्दारा, जो कल्पणा विच कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गोबिन्द कहे ओह सुहञ्जणी होणी रात, रुतड़ी आप महकाईआ। जन भगतो पाणी दी भरी होवे परात, साफ़ सुथरा सोभा पाईआ। लागे रखी होवे कलम दवात, काग़ज़ कोरा नाल टिकाईआ। नौ रखे होण काट, जिन्हां नूं कारड कहे लोकाईआ। इक

११३
२२

निक्की जेही कोल विछी होवे खाट, तकीआ सीस वल्ल सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गोबिन्द कहे मैं गुरमुख वेखणे हीरे, माणक मोती धुर दे नज़री आईआ। नौ ने नौ रंग दे बन्ने होण चीरे, माझे वाले आपणा रूप बदलाईआ। हथ्थां विच फड़े होण कमान तीरे, कमरकस्सयां नाल सुहाईआ। इक्की बीबीआं लाल रंगे होण लीड़े, दुपट्टे सीस उत्ते टिकाईआ। हथ्थीं बन्ने होण कलीरे, मुक्खों कहिणा मिलणा गोबिन्द माहीआ। सारी संगत नूं कहिणा भैण भ्रा वीरे, बिना नार कन्त तों दूजा हथ्थ ना कोए उठाईआ। पंजां मिस्तरीआं हथ्थ विच फड़े होण गडीरे, वस्त्र मोढ्यां उत्ते टिकाईआ। पंजां बीबीआं हथ्थ विच फड़े होण पीढ़े, लाल रंगले नज़री आईआ। अग्गे वधण धीरे धीरे, आहिस्ता आहिस्ता आहिस्ता कदम उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गोबिन्द कहे कलयुग ज़रूर वगणी आंधी, अंधेरा होवे लोकाईआ। माझे वाल्यां नौ तोले ल्याउणी चांदी, चन्द सूरज दए गवाहीआ। एह हिस्से आई चौधवीं सदी दी बांदी, बन्दनां विच दुहाईआ। अग्गे वास्ते ना कोए सूर खाए ना ढांडी, रसना मास ना कोए लगाईआ। कसम रहे ना किसे वछड़े देवण वाली माँ दी, चुपाया उत्ते धर्म ना कोए टिकाईआ। इक्को सहायता होवे शब्दी गोबिन्द छाँ दी, दूसर ओट ना कोए जणाईआ। इक्को वड्याई होवे पुरख अकाल दे नाँ दी, दूसर गीत ना कोए सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल अगम्म अथाह दी, जिस दा अर्थ अर्थात सके ना कोए समझाईआ।

✪ २६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ गिरधावर सिँघ दे खूह उत्ते पिण्ड रुढ़का कलां ज़िला जलन्धर ✪

गोबिन्द कहे गुर अवतार पैग़म्बर आए दुआबे, दोहरी धार गोबिन्द वेख वखाईआ। एह बचन सुणया सी नानक धुर दे बाबे, बाबत प्रभ दी सर्ब जणाईआ। इशारा कीता सी विच बग़दादे, बग़लगीर ना कोए रखाईआ। जिस वेले कलि कल्की आवे माझे, सम्बल आपणा डेरा लाईआ। बिना भगतां कोए ना जागे, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। कलयुग जीव हँस बणन कागे, बुद्धी काग वांग कुरलाईआ। हिरदे कोई ना आपणे साधे, साधना सके ना कोए कराईआ। प्रभ दी सरन कोए ना लागे, इष्ट इक ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गोबिन्द कहे प्रभ खेल खिलाउणा, हरि आपणी दया कमाईआ। नानक कहे भेव चकाउणा, पड़दा

आप उठाईआ। सच संदेशा इक दृढ़ाउणा, दृष्टी सृष्टी दए बदलाईआ। कूड़ी क्रिया डेरा ढाउणा, माया ममता मोह मिटाईआ। साचा मार्ग इक लगाउणा, रहिबर इक अख्वाईआ। तख्त निवासी तख्त सुहाउणा, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। निरगुण नूर जोत प्रगटाउणा, परगणा आपणा दए वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर पर्दा आप चुकाईआ। गोबिन्द कहे गुर अवतार पैग़म्बर पुज्जे, पूजनीक वड्याईआ। अगली रमज़ कोए ना बुज्झे, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। सारे संदेशे देंदे गुज्झे, अन्तर अन्तर दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं पैग़म्बर फिरदे लुके, अग्गे हो ल्ए ना कोए अंगड़ाईआ। सब दे पैंडे मुके, पाँधी पन्ध रिहा मुकाईआ। अग्गे दीन दुनी दे मेटणे दुखे, दर्दीआं दर्द आप वंडाईआ। भगत सुहेले गोदी चुक्के, चकना चूर करे लोकाईआ। चार जुग दे शास्त्र जो शब्द संदेसे देंदे रुक्के, रुख़स्त सब नूं दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। गोबिन्द किहा गुर अवतार पैग़म्बरो अन्तर मारो झाकी, पर्दा लओ उठाईआ। जिस दा लहिणा ओहो दस्सो बाकी, दूजा संग ना कोए रखाईआ। कलयुग वेखो अंधेरी राती, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। प्याला देवे कोई ना साकी, अमृत जाम ना कोए चखाईआ। साची चढ़े कोई ना घाटी, मन्दिर मिलण कोए ना पाईआ। सृष्टी दृष्टी होई उदासी, खुशी रंग ना कोए रंगाईआ। झट ईसा बोलया जिस कारन मैं चढ़या फाँसी, सलीब गल लटकाईआ। ओह तक्कया नूर जोत प्रकाशी, प्रकाश्त करे लोकाईआ। सब दी लाहे उदासी, चिन्ता दए गंवाईआ। नेत्र वेखे शंकर उत्ते कैलाशी, ब्रह्मा चारे मुख मुख उठाईआ। विष्नूं वेख के विश्व दी हासी, हस्ती आपणी दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। ईसा किहा मैं दस्सां असल, असलीअत दयां दृढ़ाईआ। गोबिन्द दा गोबिन्द करना वसल, साचा रंग रंगाईआ। आ के वेखे आपणी धार अक्खण, जग नेत्र ना कोए चतुराईआ। गुर अवतार पैग़म्बर लग्गे हस्सण, ताली दिती वजाईआ। कवण मेटे रैण अंधेरी मस्सण, कलयुग क्रिया कूड़ गंवाईआ। साडा कम्म ना आया यतन, यथार्थ दईए जणाईआ। किनारा दिसे कोए ना पत्तन, तट रहिण कोए ना पाईआ। औखा होया मातलोक वसण, शिवदुआले मट्ठ देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक जणाईआ। गोबिन्द कहे दुआबे वाले फब्बे, गोबिन्द कीड़ी धार वड्याईआ। सब दे सोहँ लिख्या होवे छाती गभ्भे, अक्खर इक दृढ़ाईआ। गुरमुखां इक दूजे दे घर सब ने देणे सद्दे, संदेशे देणे दृढ़ाईआ। छब्बी पोह नूं सब ने जाणा भज्जे, भजन बन्दगी जगत तजाईआ। भगत दवार विच वड़दयां सब दे मुख होण कज्जे, पल्लू सके ना कोए उठाईआ। खब्बे पासे होए स्त्री मर्द होवण सज्जे, जोड़ी जोड़ी रंग

रंगाईआ। नाल ढोल लावण डग्गे, डग्गा ढोल उत्ते लगाईआ। फेर जैकारा बोलण सभे, तूं मालक धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गोबिन्द कहे गुर अवतार पैग़म्बरो मारो हथ्थ छाती, छत्र छाया रहिण कोए ना पाईआ। ओह वेखो धुर दा कमलापाती, पतिपरमेश्वर सोभा पाईआ। जिस दी आदि तों अन्त तक इक्को ज़ाती, दीन मज़्हब ना वंड वंडाईआ। इक्को इलम दस्से सफ़ाती, दूसर करे ना कोए पढ़ाईआ। सदी चौधवीं मेटण लग्गा राती, कलयुग अंध अंधेर गंवाईआ। नवीं दस्सण लग्गा गाथी, करे सच पढ़ाईआ। धर्म दी खोल्ह्ण लग्गा हाटी, वणजारा नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गोबिन्द किहा मैं दस्सां खेल अपारा, अपरम्पर रिहा जणाईआ। सब ने लैणा इक हुलारा, हिरदे विच अंगड़ाईआ। दुआबे विच्चों इक गुरमुख लैणा कुँवारा, जिस दी आयू अठारां बीस विच रखाईआ। गल विच पावे नौ हारा, हरि हिरदे नाल जुड़ाईआ। छाती लाया होवे चन्न सितारा, सत्त्ा ज़िमीं असमान वाली समझाईआ। पैरीं लग्गा होवे गारा, जोड़ा चरण ना कोए छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गोबिन्द कहे दुआबे वाल्यो करनी जुगत, जुगती दयां दृढ़ाईआ। छोटी धार ल्याउणा मुक्ट, कीमत थोड़ी विच वड्याईआ। गोली धार पहनणा दरुस्त, सदी चौधवीं दए गवाहीआ। इस दे विच नहीं होणा सुस्त, सुत्तयां दिता उठाईआ। हथ्थ रखां उत्ते पुश्त, पनाह इक्को इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। गोबिन्द कहे वेखणा छब्बी पोह दा खेल, सच दयां वखाईआ। नाता जुड़ना गुरु गुर चेल, चेला गुर सरनाईआ। सब नूं इक्को वार चाढ़्ना तेल, सुहञ्जणी रुत आप वखाईआ। पुरख अकाला बण के सज्जण सुहेल, नाता बिधाता दए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। छब्बी पोह कहे होणा ख़बरदार, ख़बरां ख़बरां ख़बरां विच्चों जणाईआ। इकासी गुरमुख होणे ओह सिक्दार, जिन्ह्हां इकासीआं नूं गोबिन्द आपणी धूढ़ी आपणी हथ्थीं ख़ाक रमाईआ। अमृत वेले उठ के इकासी दिन करदे रहे दीदार, सन्मुख हो के सोभा पाईआ। अन्त ओह सरसे विच रोढ़े एका वार, बचिआं रहिण कोए ना पाईआ। ओन्ह्हां अन्तर आई विचार, विछोड़ा सह सकीए ना राईआ। गोबिन्द किहा शब्द दी धार, संदेशा इक जणाईआ। बच्चिओ हुण जाणा कोल पुरख अकाल, सचखण्ड डेरा लाईआ। जिस वेले होवां फेर दयाल, धरनी धरत धवल उत्ते वड्याईआ। तुहानूं आपणे ल्यावां नाल, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। सच संदेशा देवां शब्दी शब्द कमाल, अगम्म अथाह पढ़ाईआ। तुसां

सेवा करनी नाल ध्यान, निगाह निगाह विच रखाईआ। कमरकसे करने हो बलवान, बलधारी रूप प्रगटाईआ। छब्बी पोह वक्त लैणा संभाल, सम्बल देस समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। छब्बी पोह कहे औह ईसा आ गया करदा हासी, ताली खुशीआं वाली वजाईआ। ओह गोबिन्द एह मेरे पिछले साथी, संगी सोभा पाईआ। जिस वेले मैं चढ़या सी फाँसी, इहनां हन्झूआं धार वहाईआ। झट राम आ गया एह मेरे सेवक दासी, पूरब दयां जणाईआ। एह पंडत रहिंदे सी विच काशी, अक्खरां वाली वड्याईआ। इक दिन चरण धूढ़ मेरी लाई रस्ते दे विच वाटी, मिल के खुशी मनाईआ। मैं हस्स के किहा जिस वेले आवे कलयुग अंधेरी राती, तुहाडा मेरा राम होवे सहाईआ। तुसां फेर आउणा विच मानव ज़ाती, चुरासी विच ना कोए भवाईआ। ओनां इकासीआं दे हथ्थ विच होणी इक इक दाती, दत्तात्रे गया समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। छब्बी पोह कहे मेरा होणा वक्त रंगीला, रंगला माधव दए जणाईआ। पंजां गुरमुखां दुआबे विच्चों प्रभू नूं बणाउणा इक वसीला, विसल मार के सब नूं देणा जणाईआ। ओनां दा वस्त्र होवे पीला, रंग इक्को इक रंगाईआ। अन्दरों बदल के आण दलीला, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। हथ्थ विच लिख के फड़या होवे भगत दवार
११७ प्रभू दा इक कबीला, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा ११७
२२ हरि, सच दा पर्दा दए उठाईआ। छब्बी पोह कहे प्रभ दा सोहणा लाउणा तख्त, तख्त निवासी इक अख्वाईआ। जिस २२
ने सारी सृष्टी नूं पाउणा वखत, वक्खरी आपणी कार कमाईआ। ज़रा वेख्यो हलूणा मिलदा अगले अगस्त, अग्गा पिच्छा फेर दए समझाईआ। लाल सिँघ तूं बण के आउणा मस्त, वाल खुल्ले ते भूरी मोढे उत्ते अटकाईआ। अक्खीआं लाउणीआं उपर अर्श, ओ गोबिन्द ओ गोबिन्द ओ गोबिन्द मुक्खों कहि के देणा सुणाईआ। पर याद रखीं सवेर तों रखया होवे बरत, अन्न मुख ना कोए छुहाईआ। सारे दुआबे दी तेरे हथ्थ विच होवे फ़रद, वड्डा छोटा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। छब्बी पोह कहे गुरमुखो कोई ना आयो विच सोग, चिन्ता ना कोए रखाईआ। सब दा पूरा करना इक्को दिन जोग, जुगीशर तपीशर तुहाडे चरण ध्यान लगाईआ। तुहानूं वखाउणी ओह मौज, जेहड़ी मुजरयां विच्चों गोपीआं काहनां चार जुग हथ्थ ना आईआ। इक दूजे नाल किसे रखणी नहीं अदौत, प्रेम प्रीती विच वड्याईआ। सति धर्म दी चलाउणी रौंस, रस्ता इक उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी धार इक प्रगटाईआ। छब्बी पोह कहे हरिसंगत तुरन

लग्गयां सब ने पिच्छे हटणा ढाई कदम, हुक्म सुणना धुरदरगाहीआ। फेर आपणा ज़ोर नाल हिलाउणा बदन, बलहीण ना कोए अख्वाईआ। फेर आपणे अन्दर कहिणा असीं उस प्रभू दे रत्न, जेहड़ा रंग रतड़ा धुर दा माहीआ। फेर लल्कार मारनी कहिणा साडा अख़ीरी पत्तन, अग्गे अवर ना कोए जणाईआ। पुरख अकाला आया रखण, गोबिन्द वेखे अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर करनी कार कमाईआ। छब्बी पोह कहे मैं दस्सणा आपणा विधान, वायदा पिछला पूर कराईआ। नौ गुरमुख होण चतुर सुजाण, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। इक्की बीबीआं होण प्रधान, जो आपणी अक्ल बुद्धी तों परे प्रभ दा ध्यान लगाईआ। इक्कीआं ने फड़े होण कान, सज्जा हथ्थ नाल छुहाईआ। इक्की धुर दा ढोला गाण, जैकारा अगम्म अथाहीआ। इक्की मस्तक निशान वखाण, पीला रंग चढ़ाईआ। इक्कीआं कोल होवे इक इक निशान, जिस दा लेख कलि कल्की वेस वटाईआ। इक्कीआं बीबीआं कोल होवे किरपान, पुट्ठी कंधे उत्ते टिकाईआ। सारी संगत उत्ते प्रभ होए मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मार्ग इक समझाईआ। छब्बी पोह कहे मेरा लंगर वरते वजे अठ, अड्ड तत नाल वड्याईआ। सब दा प्रेम दा होवे इक्ट्ठ, वक्खरा नज़र कोए ना आईआ। इक दूजे नूं मिलणा नठ नठ, नाता समझणा भैण भाईआ। दीन मज़्ह़ब दी छडणी वट्ट, शरअ ना कोए लड़ाईआ। इक्को नाम लैणा रट, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै दा ढोला लाईआ। इक्को गाना बध्धा होवे सज्जे गिट्टे उत्ते लत्त, रंग नीला नज़री आईआ। भगत दवार विच वड़दयां सब ने उस उत्ते लाउणा हथ्थ, हथेली नाल दबाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां देणा दस्स, सुणो मालक धुरदरगाहीआ। ओह तक्कण आपणी अगम्मी अक्ख, बिन नेत्र नैण उठाईआ। साडा वायदा होया पूरा पक्क, हरि करता आप कराईआ। अन्तर रिहा ना शिकवा शक, शकाइत करन कोए ना पाईआ। नौआं गुरमुखां आपणा बध्धा होवे लक्क, कपड़ा तिन्न रंग रंगाईआ। मुक्खों कहिंदे आउण टक टक, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। भगत दवार, दे अग्गे इक खलोता होवे बण के भोला जट्ट, सांघा हथ्थ विच उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण छब्बी पोह की तेरी रास, सच दे जणाईआ। की खेल होणा ख़ास, प्रभ की वड्याईआ। केहड़ी वेखणी रास, मण्डल की सुहाईआ। पोह किहा सब तों उत्तम भगतां दी वेख्यो जमात, जेहड़ी चार जुग वेखण कोए ना पाईआ। ओह इक्को मन्नदे पिता मात, पुरख अकाल सीस निवाईआ। वक्ख वक्ख नहीं मारदे वाट, पाँधी हो ना पन्ध जणाईआ। आत्म परमात्म जाण के साथ, सगला संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे

खेल साचा हरि, सच दी धार इक वखाईआ। गोबिन्द कहे शब्द गुरु दा दाइरा, दाइम मुकाम मुकीम नज़री आईआ। कुछ झगड़ा पैणा काहरा, कायर होए लोकाईआ। प्रभ दा खेल होणा गहरा, गहर गम्भीर पड़दा आप उठाईआ। जन भगतो छब्बी पोह नूं सब ने करना मुशाइरा, खुशीआं वाला ढोला गाईआ। साहिब सतिगुर उत्ते पंजां किरपानां दा होवे पहरा, पहरेदार सोहणे नज़री आईआ। तेड़ उहनां दे होवे कछिहरा, धोती तम्बी ना कोए लगाईआ। उन्हां रहिणा उस विच दाइरा, जिस दा लेखा पिच्छे दिता लिखाईआ। ओन्हां विच्चों इक होवे बहिरा, जिस नूं बोला कहे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मार्ग इक वखाईआ। छब्बी पोह कहे जन भगतो वेखणा आपणा गृह, मन्दिर इक वड्याईआ। जिथ्थे साहिब स्वामी इक बहे, सिंघासण इक सुहाईआ। झगड़ा पए त्रैगुण त्रै, त्रैगुण अतीता दया कमाईआ। सारी सृष्टी कर के लै, लायक गुरमुख लए उठाईआ। जो राम वशिष्ट वशिष्ट राम नूं गया कहि, संदेशा इक जणाईआ। पुरख अकाला इक्को अन्तिम रहे, दूसर सीस ना कोए निवाईआ। इक्को सुहञ्जणा होवे थह, सिंघासण आसण जिथ्थे लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ।
११६ छब्बी पोह कहे दुआबे वाल्यो किसे दे आउणा नहीं विच दब्बा, दबाउ देवे ना कोए लोकाईआ। तुहाडा सति सरूप बग्गा, ११६
२२ काला दाग़ ना कोए वखाईआ। सब दा अग्गे वधणा अग्गा, बिना पूत तों ख़ाली रहे कोए ना राईआ। इक धार ल्याउणा २२
छब्बा, दो छे वंड वंडाईआ। उत्ते लेख लिख्या होवे हाए रब्बा, हिन्दसा अक्खर इक्को रंग रंगाईआ। सब नूं देणा गृह गृह सद्दा, सधना गया जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। छब्बी पोह कहे गोबिन्द दा खेल नहीं फ़रेब, जगत कूड़ ना कोए चतुराईआ। तिन्न वार दुआबे विच्चों खाधे सी सेब, गुरमुख भेंटा लै के जाईआ। लेखा हुंदा सी बिना कतेब, लहिणा तके बिन कलम शाहीआ। गोबिन्द दुआबे वाल्यां वास्ते कूजे दा सगन देंदा सी भेज, खुशी नाल भेंट चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा हुक्म वरताईआ। छब्बी पोह कहे मैं वेखणा ओह काम, जेहड़ा काम क्रोध मिटाईआ। पकड़ना ओह दाम, जो दामनगीर अख्वाईआ। इक दिन वशिष्ट नूं राम ने दिते बादाम, खुशीआं नाल हथ्थ फड़ाईआ। वशिष्ट ने किहा राम एह देणे ओस भगवान, जो भगतां रंग रंगाईआ। राम ने किहा एह खेल कलयुग महान, अन्तिम अन्त अन्त नज़री आईआ। वशिष्ट ने किहा मार ध्यान, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। उहदे भगत भगती विच परवान, परवाने आपणे लए बणाईआ। उन्हां दे कोलों दवाउणा एह दान, जो दीदा दानिस्ता नज़री आईआ। छब्बी पोह दा पूरा करना विधान, वादा

अगला फेर समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। छब्बी पोह कहे गोबिन्द भगतां गुरमुखां नूं देण लग्गा पदवी, अन्तर आपणे आसण लाईआ। सब दी आसा सद्द लई, दूर नेड़यों लई मंगाईआ। तुसीं जीउणा मेरे लई कि जग लई, मैनूं दयो जणाईआ। बहुतिआं दी आसा वध गई, स्त्री पुत्र धीआं वल्ल वेख वखाईआ। अजे खुशी जग विच नहीं रज्ज लई, आपणा रंग रंगाईआ। जो मंगदा सो आपणे हक लई, हक सब दा चलया आईआ। पंजां ने आसा रखी असां जीउणा गोबिन्द आपणी यद लई, गृह आपणे सोभा पाईआ। जे तैनूं लोड़ फेर सानूं सद्द लईं, सद्दा आपणा नाम सुणाईआ। गोबिन्द बिना अक्खरां तों एह आशा आपणे कोल रख लई, रक्षक हो के होए सहाईआ। ओधरों श्री भगवान दी वाज वज्ज गई, संदेशा इक जणाईआ। गोबिन्द एह की कहिंदे फेर लहिणा कद लई, कुदरत दा मालक आख सुणाईआ। गोबिन्द किहा इन्हां दी कल्पणा वध गई, माया मोह ममता रखाईआ। अन्त तेरी आशा रख लई, तेरी ओट तकाईआ। पुरख अकाल किहा मेरी प्रीती जिस नाल लग्ग गई, लग मात्रा डेरा देणा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गोबिन्द किहा ओह पंजे वेखे विच परवार, घर विच सेव कमाईआ। जल ढोंदे वारो वार, काया कुम्भ विच टिकाईआ। अद्धे रोंदे अध विचकार, अन्त नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल पावीं सार, सर्ब तेरी सरनाईआ। तूं आदि जुगादी एकँकार, अकल कल अख्वाईआ। पुरख अकाल किहा तुसां रहिणा त्यार, त्रैभवन धनी हो के दयां जणाईआ। कलयुग अन्तिम पावां सार, महासार्थी हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा हुक्म वरताईआ। पुरख अकाल किहा धुर दा हुक्म सुणो कोरा, कर्म कांड तों बाहर जणाईआ। तुसां उस वेले मेरी निशानी पाणी दा भरना दौरा, माटी काची नज़री आईआ। मैं आपणे अमृत दा उस विच सुट्टां कटोरा, रस दयां बणाईआ। जन भगतो तुहाडा मेरा साक हो जाए दोहरा, अग्गे सके ना कोए तुड़ाईआ। तुहाडा अमृत पहलों मैं चक्खां भोरा, फेर तुहानूं दयां प्याईआ। उधरों गोबिन्द दा हिणकण लग्गा घोड़ा, नीला सिर हिलाईआ। गोबिन्द वेख के आपणा जोड़ा, पैर दिता दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। पंजां किहा की तेरी होवे लग्न, साहिब दे समझाईआ। पुरख अकाल किहा मैं तुहाडी झोली प्रेम दा पाणा सगन, हिस्सा धुर दा नाल रखाईआ। कलयुग अन्तिम मेटां अग्न, त्रैगुण माया डेरा ढाहीआ। आह वेख लओ पूरब दा लेखा पूरब दा वज़न, हिसाब विच ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। छब्बी पोह कहे

मैं की जाणा वक्त गुज़रा, पिछली कहाणी की चतुराईआ। मैंनूं ऐं दिसदा सदी चौधवीं गुर अवतार पैग़म्बरां कोलों किसे दा अन्त नहीं सुधरा, बदी विच लोकाईआ। किसे ने वेख्या नहीं काया काअबा ते परम पुरख दा हुजरा, हुजतां करे लोकाईआ। मैं वेखणा चारे नुकरा, कूटां फोल फुलाईआ। बिना गोबिन्द तों प्रभ ने किसे नूं किहा नहीं पुत्रा, पिता पूत ना गोद टिकाईआ। अज्ज तक जोत सरूप शरीर विच कोई नहीं उतरा, बिना जन्म तों गुर अवतार पैग़म्बर वजूद ना कोए रखाईआ। सारे आपणी माता दे लख्ते जिगर बणदे रहे टुकड़ा, एसे करके टुकड़े टुकड़े दीनां मज़्हबां विच सब नूं गए कराईआ। सच पुच्छो पुरख अकाल ने इक सवाए आपणे नाम दा गोबिन्द दे हथ्थ विच पाया मुन्दरा, निशानी पिछली चली आईआ। क्यों एहदे विच बड़ीआं गुंझला, गुज्झा भेव दए समझाईआ। गोबिन्द हमेशा पंजां सिक्खां उत्ते आपणीआं पंज रखदा सी उँगला, पंजे पंजे नाल मिलाईआ। तुहानूं वड़ना पए ना विच किसे कुन्दरां, जंगलां विच ना कोए फिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा दए उठाईआ। गोबिन्द ने किहा गुरमुखो प्रभ दे नाम दी इक फ़कीरी, फ़िकरा पुरख अकाल जणाईआ। हथ्थ छुहा के छोटी उँगल नाल ज़ंजीरी, शरअ विच्चों शरअ दिती बदलाईआ। एह खेल बेनज़ीरी, कलयुग अन्तिम फेर दए समझाईआ। की लहिणा देणा गोबिन्द सेजा कीड़ी, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। अग्गे गली रहे कोई ना भीड़ी, राय धर्म ना दए सज़ाईआ। जन भगतो तुहाडी सतिजुग विच चलणी पीढ़ी, अवतार गुरु तुहाडा जस गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मार्ग इक वखाईआ। छब्बी पोह कहे मेरा मार्ग भगतां दा रस्ता, राहों घुथिआं दयां वखाईआ। पंजां सिक्खां ने दुआबे विच्चों कर्म कांड दा बन्न्ह के आउणा बस्ता, उच्चा नौ नौ उँगलां नज़री आईआ। ओह मुक्खों आवे हस्सदा, खुशी आपणे अन्दर प्रगटाईआ। रुख़ बदलया होवे नक्क दा, निशान काला उत्ते टिकाईआ। आपणीआं उँगलां दन्दां नाल आवे कटदा, मुख विच रखाईआ। खुशीआं नाल भज्जा आवे टप्पदा, टापू दा डेरा ढाहीआ। उहदा पासा नन्गा होवे इक पट्ट दा, सज्जा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी धार इक जणाईआ। छब्बी पोह कहे पंज गुरमुख बणे होण छत्रधारी, मुक्ट सीस उत्ते लगाईआ। हथ्थ फड़ी होवे कटारी, कटाक्ष आपणा रही वखाईआ। ओह खलोण भगत दवारे दी मंज़ल दूजी अटारी, मुख पहाड़ वल्ल जणाईआ। सब दी खुल्ही ते लम्बी होवे दाढ़ी, रूप अनूप वज्जे वधाईआ। छाती उत्ते लिख्या होवे साडी प्रभ दे नाल यारी, याराना अवर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। कलयुग कहे आह वेखो जगत दा रुपईआ, रुपा सोना

१२१
२२

वेख वखाईआ। जिस ने मार मिटाया भैणा भईआ, पिता पूत कीती जुदाईआ। जिस दे पिच्छे धर्म राए कढे वहीआ, चित्रगुप्त लेखा मंगे थांउँ थाँईंआ। जन भगतो तुहाडा आ गया धुर दा सईआ, हरि साहिब धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच पर्दा आप उठाईआ। रुपईआ कहे मैं नहीं कोई माया, माया वाला ना रूप वटाईआ। मैं हुक्मे अन्दर आया, हुक्मी सेव कमाईआ। मैं ग़रीबां नूं पातशाह बणाया, शहिनशाह ख़ाक विच रुलाईआ। मैं कलयुग साधां नूं भरमाया, आपणा बल वधाईआ। मेरे पिच्छे कलयुग जीवां वेसवा रूप वटाया, धीरज धर्म धार रही ना राईआ। एसे करके पुरख अकाल ने नौ दवारयां वास्ते नौ रंग दा आपणा वस्त्र सवाया, नव नौ पन्ध मुकाईआ। जिस दा लेखा इक इक नाल रखाया, इक इक ओसे दी भेंट कराईआ। गुरमुखो गुरसिखो जन भगतो छब्बी पोह कहे तुहाडा लहिणा देणा अग्गे रहे ना राया, राई रता रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मार्ग इक वखाईआ। छब्बी पोह कहे जन भगतो ज़बानों बोलणा नहीं किसे ने बुरा, बुरी मति ना कोए रखाईआ। वेख्यो भगत दवारे विच आ के होयो ना कोई निगुरा, भगत भगवान दा रूप जाणा समाईआ। एह लेखा लिख के गया गोबिन्द अनन्द पुरा, पुरीआं तों बाहर मिले मेरा माहीआ। छाती उत्ते हथ्थ मारया मैं उस दे नाल जुड़ा, दोए जोड़ के वास्ता पाईआ। जिस दे दवारयों गुरमुखो कोई नही मुड़ा, सच दवारे आपणी जोत विच समाईआ। फेर कढके बग़ल विच्चों छुरा, आपणे मस्तक विच टिकाईआ। फेर मन्त्र इक्को फुरा, तूं मेरा मैं तेरा दूजा राग ना कोए अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म प्रगटाईआ। छब्बी पोह कहे मेरा वेखो खेल रंगीला, रंगला दयां जणाईआ। जन भगतो सताई पोह नूं सब ने प्रभू नूं इक इक मारना तीला, तिनका निक्का निक्का हथ्थ उठाईआ। साहिब सतिगुर ने वस्त्र पाउणा नीला, नीले वाला वेस वटाईआ। अगला तुहाडा बणना वसीला, विश्व दा लेखा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। दुआबे वाल्यो तुहाडा इक्को इक दाअवा, दाअवेदार अख्वाईआ। उपर उठा लओ बाहवां, दोवें हथ्थ वखाईआ। कहि दयो प्रभू तेरे घर विच लग्ग गया साडा नांवां, अग्गे सके ना कोए कटाईआ। लाड लाडावां ज्यों पुत्रां मावां, गोदी गोद उठाईआ। तेरा भगत रहे ना कोए निथावां, एह तेरी बेपरवाहीआ। असां तेरे नाल आपणा वज़न करना सावां, कंडे इके लैणा तुलाईआ। तेरे दवारे जाईए नाल चावां, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। क्योंकि बुढ्ढयां नढ्ढयां प्रभ नाल लैणीआं लावां, नार कन्त इक्को मिल के वज्जे वधाईआ। दूर दुराडिउँ छड के आउणा आपणयां गरावां, खुशीआं नाल पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमाईआ। दुआबे वाल्यो आह वेखो सगनां वाली ठूठी, मुहम्मद रिहा वखाईआ। सदी चौधवीं शब्द धार दी गोली इक छोटी उँगल पाउणी अंगूठी, अंगूठा अगला तुहाडे हिस्से देवे लगाईआ। एह लेखा पोह सताई चार कूटीं, चार जुग दी वंड वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा दए उठाईआ। छब्बी पोह कहे मैं माण देवां अस्सू छब्बी, मेरी आसा पूर कराईआ। मेरी खाहश रही नहीं दब्बी, पड़दा दिता चुकाईआ। मैं टप्प गया पार हद्दी, हदूद दिती गंवाईआ। मैं वेखी चौधवीं सदी, अन्त अख़ीर ध्यान लगाईआ। पुरख अकाल रहिण नहीं देणी किसे दी गद्दी, चारों कुण्ट पए दुहाईआ। जन भगतो तुसां वी विकार जाणा छडी, हउमे गढ़ तुड़ाईआ। इक प्रीत ते इक्को नाल लग्गी, तोड़ इक्को दए निभाईआ। जिस दी जोत माझे विच जगी, दुआबे दा बण के तबी, अन्दरों रोग रिहा गंवाईआ। तुसां सारयां खुशी नाल वेखणा पोह छब्बी, छहिबर आपणा नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सब दी बुझावणहारा अग्गी, तत्व तत आपणे नाल रंगाईआ।

१२३ २२

✪ २७ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ सुरजीत सिँघ ते दर्शन सिँघ दे गृह पिण्ड रुढ़का कल्ला ✪

विष्नूं कहे मैं रैण सबाई सोच सोची, सच सच विच ध्यान लगाईआ। प्रभ किस बिध आसा मनसा पूरी करे लोची, लोचन नैण खुल्हाईआ। फेर याद आ गया इक दिन सिला घसाई रविदास चमार मोची, रम्बी आर दिती रगड़ाईआ। नाले हस्स के किहा, प्रभू अग्गे भगतां नूं देवीं आपणी रोज़ी, मेरे वांग भुक्खा रहिण कोए ना पाईआ। इक्को वार बणा लईं आपणे जोगी, जुगती आपणी इक समझाईआ। जन्म दा रहे ना कोए रोगी, चुरासी विच ना कोए भवाईआ। तेरे प्रेम दा होए भोगी, जगत भोग ना कोए वड्याईआ। सद चुक्कीं आपणी गोदी, गोदावरी वाला नाल मिलाईआ। तेरा खेल होणा वेदी सोढी, पातशाह तेरी सरनाईआ। चार वरन चुक्कणे मोढीं, मुढला पड़दा देणा उठाईआ। तेरा गुलशन वेखणा डोडी, गुल फुल्ल महक महकाईआ। पड़दा लौहणा चौदां लोकी, परलोक देणा समझाईआ। तेरा सुणना नाम सलोकी, सोहला इक दृढ़ाईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम घड़ी आवे औखी, जन भगतां होणां सहाईआ। किसे दा रहे कोई ना दोखी, नाता मुहब्बत देणा जुड़ाईआ। मंज़ल दस्सणी अगम्मी सौखी, इक्को नाम मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। विष्नूं कहे मैं फिरया सिध्धा सादा, भोला नाथ संग रखाईआ।

पुरख अकाल दीन दयाल इक्को लाधा, आदि अन्त दा मालक बेपरवाहीआ। ओस शब्द सुणाया बोध अगाधा, अगम्म कीती पढ़ाईआ। फेर सीता राम मारीआं वाजां, शब्दी हुक्म सुणाईआ। फेर संदेशा दिता कृष्न राधा, त्रैलोकी डेरा ढाहीआ। फेर ईसा मूसा मुहम्मद किहा आ जा, आजज़ हो के सारे सीस निवाईआ। फेर नानक गोबिन्द दर घर साचा लाधा, मिले माण वड्याईआ। फेर पुरख अकाल हो के अलाहिदा, निरगुण नूर कीता रुशनाईआ। फेर तख्त निवासी बण बाकायदा, शाह पातशाह सिंघासण इक सुहाईआ। फेर चार जुग दा वेख्या वायदा, वाहवा पड़दा दिता खुल्हाईआ। फेर सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चुरासी लख दा ल्या जाइज़ा, जाइज़ नाजाइज़ वेख्या थांउँ थाँईंआ। फेर भगतां वेख्या फ़ायदा, चार वरनां फोल फुलाईआ। फेर सब नूं किहा इक्को पुरख अकाल हैगा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। फेर हुक्म सुणाया कलयुग अन्तिम ढहेगा, ढईआ गोबिन्द वंड वंडाईआ। फेर शब्द गुरु कुछ कहेगा, कहि के कुछ जणाईआ। कोटां विच्चों भगत सुहेला कोई रहेगा, जिस रहमत आप कमाईआ। भाणा सिर ते साहिब वाला सहेगा, सति सच विच समाईआ। अन्तिम सच दवार बहेगा, दरगाह साची सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। विष्नूं कहे मैं रैण सबाई भज्जा नट्ठा दौड़ा, चलया वाहो दाहीआ। मैनूं मार्ग दिसया सौड़ा, भीड़ी गली दुहाईआ। जगत वेख्या कौड़ा, मिट्ठा रस ना कोए चखाईआ। फेर सस्से उपर तक्कया होड़ा, होका देवे धुरदरगाहीआ। विष्नूं कहे मैं निगह मारी भगत भगवान दा दिसया जोड़ा, जोड़ी आपणे नाल रखाईआ। दोहां दा सांझा दोहरा, तूं मेरा मैं तेरा राग अल्हाईआ। झगड़ा मुक्कया तोरा मोरा, तुरत आपणा मेल मिलाईआ। सब नूं जवाब दे के कोरा, कूड़ कुटम्ब दिता छुडाईआ। जन भगतां कर के भाग मथोरा, मिथ्या दस्सी लोकाईआ। प्रीत चंगी बणाई नालों चन्द चकोरा, जो रैण दिवस इक्को रंग रंगाईआ। गुरमुख उपजा के बांका छोहरा, शहिनशाह सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिस दी आदि अन्त लोड़ा, सो लोयण रिहा खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला आप कराईआ। विष्नूं कहे मैं रैण सबाई अन्दर बाहर तक्की, ताकत नाल ध्यान लगाईआ। खेल वेखी हकीकत हकी, हरि करते दिती दृढ़ाईआ। भगत सुहेले मेल मिल्या कमलापती, पतिपरमेश्वर जोड़ जुड़ाईआ। निरन्तर फ़र्क रहे ना रती, अन्तर मिल के वज्जे वधाईआ। फेर कराउणी पए किसे ना गती, दर घर साचे आप बहाईआ। एह खेल वेख्या अक्खीं, विष्नूं कहे आख़र दयां दृढ़ाईआ। छब्बी पोह नूं धार दस्सणी सची, सच नाल समझाईआ। सताई पोह नूं जेहड़ी जम्मू विच्चों गुरमुख बण के आवे सखी, सत्त रंग दा निशाना पुश्त उत्ते बंधाईआ। गोली तिन्न रंग लाउणी आपणी सज्जी वक्खी, चार

खब्बी नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुआबे वाल्यो सताई अस्सू प्रशाद वंडे आपणे हथ्थीं, रैण रैण विच्चों सोभा पाईआ।

✪ २७ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ नाजर सिँघ दे गृह पिण्ड राजो के ✪

धरनी कहे एथे गोबिन्द ढाई घंटे खेडया सी शिकार, शिकारी गुरमुख नाल रखाईआ। ओह भज्जे फिरदे सी नाल प्यार, प्रेम प्रीती नाल वाहो दाहीआ। नौ वार बुलाया जै जैकार, फ़तिह वाहिगुरु डंक सुणाईआ। फिर सौं गया पैर पसार, नौ मिन्ट आसण ल्या जमाईआ। फेर हस्स के किहा वाह मेरे दातार, तेरी बेपरवाहीआ। फेर तक्कया जोती नूर उज्यार, कलि कल्की सोभा पाईआ। शब्दी गोबिन्द खेल न्यार, आपणा रंग रंगाईआ। गुरमुख सोहणे जगत हो उज्यार, भगत रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। धरनी कहे गोबिन्द मारया नहीं कोई शिकार, बाज़ झपट ना कोए लगाईआ। फेर मेरे उत्ते कढी लकार, लाईन नौ इंच बणाईआ। फेर अमृत छिड़क के धार, सांतक सति वरताईआ। फेर अक्खर लिख के दो चार, चौवी दिते बणाईआ। फेर किहा आवे मेरा परवरदिगार, निरगुण दाता धुरदरगाहीआ। धरनी कहे मैं चरण चुम्म के किहा की वक्त की वेला कवण होवे बहार, मैनूं दे दृढ़ाईआ। गोबिन्द हस्स के किहा जिस वेले सम्मत शहिनशाही पंज पंचम चले शब्द लिखार, लेखा बेपरवाहीआ। तेरा लहिणा देणा दए निवार, नर नरायण फेरा पाईआ। सृष्टी दी दृष्टी मारे मार, खण्डा खड़ग इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। धरनी किहा क्यों बैठा पैर पसार, गोबिन्द दे जणाईआ। ना कोई थल्ले पलँघ नवार, सेजा तख्त ना कोए वड्याईआ। ना कोई दीआ बाती उज्यार, ना कोई सूर्या चन्द रुशनाईआ। बादल होया धूंआँधार, घनघोर घटा छाईआ। गोबिन्द हस्स के किहा धरनी जिस वेले कलयुग अन्तिम एह दिशा होई संसार, सच नूर ना कोए चमकाईआ। ओस वेले आउणा कलि कल्की अवतार, निहकलंका नाउँ धराईआ। जिस ने ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल दा खेडणा शिकार, शिकारी हो के आपणी कार कमाईआ। तेरा दर सुहावे आण, श्री भगवान सोभा पाईआ। तेरा लहिणा देणा कर परवान, परवाने गुरमुख संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरब लेख चुकाए आण, अगला आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ २७ अस्सू शहिनशाही सम्मत ५ लक्ष्मण सिँघ दे गृह पिण्ड रुढ़का कलां ✪

विष्नूं कहे मैं तक्कया भगत सुहेला, हरि सज्जण बेपरवाहीआ। जो आदि जुगादी इक अकेला, जुग चौकड़ी इक्को नज़री आईआ। जिस दा निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी धार होवे मेला, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। ओह अचरज खेल आपणी खेला, कलि कल्की वेस वटाईआ। जां तक्कां वसे धाम नवेला, गृह मन्दिर इक सुहाईआ। जिथ्थे ना कोई गुरु ना कोई चेला, तत वजूद ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सच दा हुक्म सुणो हरि स्वामी, हरि करता आप दृढ़ाईआ। खेले खेल अन्तरजामी, घट घट अन्तर फोल फुलाईआ। लेखा जाणे चार जुग दी सिफ्तां वाली बाणी, बाण अणयाला तीर चलाईआ। वरोलणहारा अट्ठ सट्ठ पाणी, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती पड़दा दए उठाईआ। अन्तिम लहिणा मुकाए चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। वेखणहारा धरत सरोवर पाणी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सच कहे मैं दस्सां खेल अपारा, हरि करता आप दृढ़ाईआ। इक्व्हे हो गुरु अवतारा, पैग़म्बर खुशी मनाईआ। चलो वेखीए सच विहारा, विवहारी आप दृढ़ाईआ। जिस नूं कहिंदे चौवीआं अवतारा, कलि कल्की फेरा पाईआ। ओस ने रंग रंगाउणा निरगुण धार हरि भगत दवारा, दोहरा आपणा खेल खिलाईआ। शब्द अनाद बोल जैकारा, अगम्मी राग दए सुणाईआ। धुर दा हुक्म देवे सच्ची सरकारा, सच करनी कार कमाईआ। पंजां गुरमुखां दरवाज़े अग्गे देणा पहरा, दुआबे वाले पंज पगड़ी लाल रंग रंगाईआ। पुट्ठीआं फड़ीआं होण कटारां, धार उपर नीचे बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला आप मिलाईआ। पंज पगड़ीआं देवे नंन्ही बच्ची दविन्दर, दुआबे वाल्यां सीस बंधाईआ। वेखण आए करोड़ तेतीसा सुरप्त इन्द्र, ब्रह्मा शिव अक्ख खुल्हाईआ। सब ने नेत्र खोल्हणी निन्दर, आसण ग़फ्लत ना कोए रखाईआ। मनसा मन रहे ना चिन्दन, चिन्ता चिखा देणी जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। विष्नूं कहे मैं वेखी होर कहाणी, प्रभू सहिज दिती दृढ़ाईआ। जिस दा भेव खोल्हे अगम्म बाणी, बाण अणयाला तीर लगाईआ। गुरदर्शन नौ ग्लास दुआबे वाल्यां देणा पाणी, भगत दवारे अग्गे हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। विष्नूं कहे सच दी बन्न्हणी धार, सच मिले वड्याईआ। एह खेल सच्ची सरकार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। निरगुण नूर जोत उज्यार, हरि करता कार कमाईआ। वेखे खेल सच्ची सरकार, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस नूं झुकदे

१२७
२२

गुरु अवतार, पैग़म्बर सजदयां सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद आपणा रंग वखाईआ। विष्नूं कहे चार गुरमुखां चौदां मिन्ट करना चौर, सदी चौधवीं राह तकाईआ। सारी संगत वल्ल वेखणा कर के ग़ौर नेत्र अक्ख ना कोए बदलाईआ। अन्तर मन ना पावे शोर, सुरती शब्द समाईआ। उन्हां मस्तक तिलक लगावे बलविन्दर कौर, केसर रती वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा रंग इक वखाईआ। विष्नूं कहे मैं विशा वेख्या विष्न ब्रह्मा शिव धार, धरनी धरत धवल सुहाईआ। दुआबे वाल्यां नौ लै के जाणे हार, कीमत बहुत ना कोए वखाईआ। गुरमुख सिँघ दे गल विच देणे डार, साढे नौ वक्त सुहाईआ। फेर वेख के चार चुफार, आपणा पासा लैणा बदलाईआ। संदेशा सुणना धुर दी धार, हरि करता आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। विष्नूं कहे मैं वेख्या खेल पूरब दक्खण पच्छम उत्तरे, उत्तर दयां जणाईआ। पुरख अकाला भगत बणाए पुत्रे, पिता पूत गोद सुहाईआ। लेखा लिख के देवे तुहाडे नालों अग्गे कदे ना मुकरे, विछोड़ा रहिण कोए ना पाईआ। जन्म मरन दे मेटे दुखड़े, आवण जावण पन्ध चुकाईआ। तुहाडे लेखे ला के सुक्के टुकड़े, विष्नूं माण दिता मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक दरसाईआ। विष्नूं कहे मैं लहिणा दस्सां देश दुआबा, दो आबा धार जणाईआ। जिस दा लेखा लिख के गया नानक बाबा, बावरा संसार समझ कोए ना पाईआ। कलि खेल खलाउणा पुरख अकाल जो सब दा दादा, पिता गोबिन्द जगत दृढ़ाईआ। जिस ने पूरा करना वादा, गुर अवतार पैग़म्बर नाल उठाईआ। भगत सुहेले कर अलाहिदा, जगत इलम तों खहिड़ा दए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। विष्नूं कहे मैनूं याद आ गई पुराणी झुग्गी, झौंपड़ी रही कुरलाईआ। मैं अन्तिम हो गई बुढ्ढी, औध गई विहाईआ। लत्तों हो गई डुड्डी, भज्ज ना सकां राईआ। मेरी मूर्ख हो गई बुद्धी, कलयुग जीवां दिती बदलाईआ। फेर रो पई भुब्बी भुब्बी, हउके हाए उफ़ सुणाईआ। मैं वेखी सुदी वदी, किशना शुक्ला पक्ख दुहाईआ। चौथे जुग साबत रही कोई ना गद्दी, धर्म दी धार ना कोए जणाईआ। किसे नूं समझ ना आई क्यों नानक चराई मज्झी, पाली आपणा रूप वटाईआ। मेरी चार जुग दी आसा अन्दर दब्बी, हाए बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। मेरे अन्तर अग्नी लग्गी, सके ना कोए बुझाईआ। वेखो सृष्टी करदी बदी, बुध मति रही ना राईआ। चारों कुण्ट विकार दी नदी, कलयुग वहिण दिता वहाईआ। मुहम्मद दी अन्तिम नेड़े आई सदी, सदमे दुःख सब नूं रही जणाईआ। धर्म निशाना बिना भगतां होर रिहा कोई ना गड्डी, धुर दा गाईड नज़र कोए

ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, हरि साची आस रखाईआ। विष्नूं कहे प्रभ दे दे अन्त दिलासा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सति तेरा होवे भरवासा, भाण्डा भरम देणा भनाईआ। सब दी पूरी करनी आसा, आसावंद तेरी सरनाईआ। साचा भेव खोलु खुलासा, पड़दा अन्तर रहे ना राईआ। इक्को इष्ट बण इक्को दर टिका माथा, इक्को नूर जोत रुशनाईआ। इक्को नाम जणा गाथा, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। मैं तेरा सेवक आदि तों दासी दासा, अन्तिम तेरी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतो तुहानूं दुद्ध दा दुद्ध प्याए अमृत जाम प्याए अगम्मी धुर दा बाटा, माया विच्चों बाहर कढाए देवे आपणा साथा, सगला संग वखाईआ।

✪ पहली कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

शब्द गोबिन्द किहा प्रभ वेखी तेरी सृष्टी, दीन दुनी कायनात फोल फुलाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझे यार साचा रिहा कोई ना इष्टी, इष्ट देव नज़र कोए ना आईआ। मेहरवान महिबूब साबत रही ना किसे दृष्टी, अन्तर निरन्तर निराकार भेव ना कोए चुकाईआ। चार जुग सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो गुर अवतार पैग़म्बरां धार लेख रही लिखदी, धुर शब्द अगम्म अथाह बेपरवाह तेरा हुक्म सुणाईआ। अन्त धार रही ना साचे हित दी, हितकारी जोत निरँकारी निरगुण निरवैर तेरे रंग ना कोए समाईआ। वेख खेल पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी नित दी, अलख अगोचर अगम्म अथाह पड़दा आप उठाईआ। प्रीत रही ना प्रीतम साचे सिख दी, सति सरूप शाहो भूप बिन रंग रूप तेरे विच ना कोए समाईआ। पूजा रही ना पृथ्मी आकाश इक दी, इक इकल्ले तेरा नूर ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। शब्द गुरु कहे गोबिन्द पुरख अकाल मैं वेखी तेरी कायनात, कलमा हक ना कोए जणाईआ। सच दवारे मिले कोए ना दात, दयावान नज़र कोए ना आईआ। नौ खण्ड पृथ्मी अंधेरी रात, सत्त दीप साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। आत्म परमात्म गाए कोए ना गाथ, गहर गम्भीर तेरे विच ना कोए समाईआ। निरगुण सरगुण वेख हालात, हालत विगढ़ी जगत लोकाईआ। तेरा देवे कोए ना साथ, सगला संग ना कोए बणाईआ। किसे कम्म ना आवे पूजा पाठ, बिन तेरी किरपा तेरा नूर ना कोए चमकाईआ। वेख खेल अलक्ख्णा अलाख, अलख अगोचर पर्दा आप चुकाईआ। मेरी अन्त कन्त भगवन्त सच दर अरदास, बेनन्ती इक दृढ़ाईआ। पूरा करदे भविक्खत वाक, वाक्या आपणा

हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर घर ठांडे मंग मंगाईआ। पुरख अकाल कहे सुण शब्द दुलारे मीत, सति सच दयां दृढ़ाईआ। आदि जुगादी धुर दी रीत, जुग चौकड़ी वेस वटाईआ। झगड़ा मेटां मन्दिर मसीत, काया काअबा इक दरसाईआ। झगड़ा रहे ना ऊच नीच, ज़ात पात ना कोए लड़ाईआ। धुर दा कलमा दस्स हदीस, हज़रतां तों परे करां पढ़ाईआ। पन्ध मुका के बीस बीस, इकीसा आपणा रंग रंगाईआ। एका छत्र झुलणा सीस, दूजा नज़र कोए ना आईआ। आत्म परमात्म साची दस्सणी प्रीत, पीआ प्रीतम देणा मिलाईआ। भेद खोलृणा काया बीच, नव दर डेरा देणा ढाहीआ। गृह वखा इक अनडीठ, घर मन्दिर देणा सुहाईआ। धर्म दी धार चाढ़ रंग मजीठ, दुरमति मैल देणी धुआईआ। सब दी आसा मनसा पूरी कर उम्मीद, मेल मेलणा सहिज सुभाईआ। जिस दी गुर अवतार पैग़म्बर कर के गए ताकीद, तकरीर तहरीर विच लिखाईआ। जिस दी आशा करे कुरान मजीद, सिफ्तां विच सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल कहे सुण शब्द गोबिन्द मार अगम्मी झाकी, झगड़ा दीन दुनी मुकाईआ। लेखा वेख पंज तत ख़ाकी, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। अमृत जाम दे के साकी, साख्यात करे रुशनाईआ। झगड़ा रहिण नहीं देणा काग़ज़ाती, अलिफ़ ये वंड ना कोए वंडाईआ। एका नाम दस्सणा सफ़ाती, ज़ाहर ज़हूर कर रुशनाईआ। निरगुण धार बण इमदादी, मेहर नज़र इक उठाईआ। आत्म परमात्म सब दी होवे शादी, शादिआने पंच शब्द धुन शनवाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सब ने लैणा अराधी, राधा कृष्न सीस निवाईआ। सुरत शब्द सच समाधी, सीता राम सीस झुकाईआ। धुर दा ढोला बोध अगाधी, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। करे प्रकाश तिन्न सौ सठ्ठ हाडी, नाड़ बहत्तर होवे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। धुर संदेशा इक सुणावांगा। भेव अभेदा आप खुलृावांगा। पर्दा ओहला शब्द चुकावांगा। कलयुग अन्तिम वेख वखावांगा। गुर अवतार पैग़म्बर नाल रलावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव उठावांगा। करोड़ तेतीसा सर्ब हिलावांगा। सुरप्त राजा इन्द दर बुलावांगा। हुक्म संदेशा अगला इक जणावांगा। सतिजुग साचा सवाधान करावांगा। आत्म दे के ब्रह्म ज्ञान, पर्दा अन्तर अन्तर उठावांगा। जा के मातलोक हो प्रधान, पुश्त पनाह हथ्थ टिकावांगा। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अज्ञान, अंध अंधेरा दूर करावांगा। सति धर्म झुला निशान, सत्त दीप रंग रंगावांगा। पड़दा खोलृ ज़िमीं असमान, ज़िमीं ज़मां आप हो जावांगा। संदेशा जणा बिना कान, नादी धुन शब्द शनवावांगा। अमृत दे पीण खाण, निझर झिरना इक झिरावांगा। अगम्म अगम्मड़ा बण अमाम, अमलां तों रहित खेल दरसावांगा। मज़्ब दा रहिण देणा नहीं

कोई ग़ुलाम, शरअ ज़ंजीर आप कटावांगा। निरगुण धार हो मेहरवान, महिबूब आपणी कल प्रगटावांगा। गुर अवतार पैग़म्बर जो दे के आए ब्यान, अन्तिम आसा सब दी पूर करावांगा। सदी चौधवीं वेख मार ध्यान, बिन अक्खां अक्ख उठावांगा। मुहम्मद होण लग्गा हैरान, हैरानी अगली दूर करावांगा। क्यों शरअ होई शैतान, धुरदरगाही पुछ पुछावांगा। क्यों कूड़ होया इस्लाम, इस्म आज़म इक जणावांगा। क्यों नूर होया बदनाम, बदी घर घर फोल फुलावांगा। अगम्मी कलमा दे कलाम, कायनात आप पढ़ावांगा। सब दा इक्को होणा अमाम, आमद विच खुशामद सर्ब मिटावांगा। इक्को दर सजदा होए सलाम, सीस जगदीश इक वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर पर्दा आप चुकावांगा। धुर पर्दा अन्तिम चुक्केगा। पुरख अकाला इक्को उठेगा। दीन दयाला कलयुग तुठेगा। कूड़ी क्रिया हर हिरदे विच्चों लुटेगा। नाम निधान नौजवान मर्द मर्दान हर घट अन्दर आपे सुट्टेगा। साचा नाम दे के दान, गृह साचे आपे झुकेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारे आपे तुठेगा। शब्द गोबिन्द किहा मेरे श्री भगवान, भगवन दयां जणाईआ। उठ वेख लै विच जहान, जहालत भरी लोकाईआ। सति रिहा ना विच इन्सान, पंज तत रिहा कुरलाईआ। तन वजूद होया हराम, हैरत विच दुहाईआ। तेरा नज़र ना आवे नाम, काम पड़दा ल्या पाईआ। तेरी बाणी नालों वद्ध शैतान, आपणा हुक्म रिहा वरताईआ। क्यों नहीं हुन्दा प्रभू सवाधान, आपणी लै अंगड़ाईआ। अक्खरां दा रिहा ना कोए ज्ञान, चार जुग दे शास्त्र देण गवाहीआ। साबत दिसे ना कोए ईमान, पैग़म्बर मुख छुपाईआ। उठ वेख नौजवान, जोधे आपणा पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। पुरख अकाल कहे गोबिन्द ओह कत्तक वेख कर्म, सच दयां दृढ़ाईआ। साबत रिहा ना कोए धर्म, धर्म दी धार ना कोए जणाईआ। सतिगुरु दे घर होए किसे ना जरम, जन्म ना कोए जणाईआ। जिधर तके ओधर भरम, भरमां भरी लोकाईआ। कूड़ हया जगत मेटया शरम, शरअ दए दुहाईआ। कोटां विच्चों भगत सुहेला विरला मेरी लगदा सरन, सरनगति हथ्थ किसे ना आईआ। ओह वेख शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान सारे पढ़न, पुस्तक हथ्थां विच उठाईआ। ज़रा निगाह मार लै तेरी मेरी मंज़ल मूल ना चढ़न, नौ दवारे पार ना कोए कराईआ। मन ममता विच सड़न, हउमे अग्नी तत जलण, काम क्रोध विच लड़न, सांतक सति ना कोए कराईआ। झगड़ा वेख वरन बरन, ज़ात पात दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा हुक्म वरताईआ। गोबिन्द किहा प्रभू की तेरा कत्तक कहिंदा, कहि के रिहा सुणाईआ। मैं ध्यान मारया जिधर नूं सूर्या लहिंदा, दिशा अक्ख

उठाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद खहिंदा, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। उम्मत उम्मतीआं डेरा ढहिंदा, ढईआ गोबिन्द वाला दए गवाहीआ। सच दवार कोए ना बहिंदा, मंज़ल तेरी मिलण कोए ना आईआ। औह वेख तेरे हुक्म दा वहिण वहिंदा, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। कत्तक कहे गोबिन्द मैं की कहिणा, कहि की दयां जणाईआ। अगले सम्मत सब कुछ वेखणा नैणां, नैणहीण ना रहे लोकाईआ। नबी रसूलां झगड़ा पैणा, पवण पाणी दए गवाहीआ। परवरदिगार ने लेखा लैणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। तख्त निवासी तख्त ते बहिणा, निरगुण आपणा नूर करे रुशनाईआ। उस दा भाणा सब नूं पैणा सहणा, सिर सके ना कोए उठाईआ। सब ने नेत्र नीर वहाउणा नैणा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। कलयुग जीवां लेखा पैणा देणा, जिन्हां खाधा सूर गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। कत्तक कहे गोबिन्द आपणी फोल के वेख किताब, जो बिना कुतबख़ाने रखाईआ। जिस दा लेखा जाणे कोए ना बाब, हिस्सा सके ना कोए समझाईआ। उस दे विच लैणा इक मित्र अहिबाब, महिबूब नूर इलाहीआ। जिस ने सब तों मंगणा जवाब, जवाबतल्बी लए कराईआ। जिस गुर अवतार पैग़म्बरां दिता ख्वाब, मुखातब हो के दए समझाईआ। जिस नूं सजदे करदे आदाब, नमस्ते सीस झुकाईआ। उस ने सब दी आपणे हथ्थ पकड़नी वाग, वाहवा आपणा हुक्म वरताईआ। एह लेख लिखाउणा छब्बी पोह ते पहली माघ, की करे नूर इलाहीआ। जिस ने कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणा दाग़, दुरमति मैल करे सफ़ाईआ। सतिजुग नूरी चन्द जगाए चिराग़, चरागाहां करे रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया मेट के आग, अग्नी तत बुझाईआ। घर मेल मिलाए कन्त सुहाग, बाहर खोजण कोए ना जाईआ। सतिजुग सति कर अदाब, अदब इक्को दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। कत्तक कहे गोबिन्द मैं की दस्सां, खुशी विच जणाईआ। प्रभू दा खेल वेख के हस्सां, हस्ती तक्क नूर इलाहीआ। जेहड़ा रूप बदलदा रिहा कच्छ मच्छां, जल अस्गाहां विच समाईआ। फेर लगा के बाहवां लत्तां, पंज तत डगमगाईआ। फेर कर के आपणी हत्ता, तन वजूद गया छुपाईआ। ओहले हो गया दीन दुनी दीआं अक्खां, नेत्र दरस कोए ना पाईआ। सो स्वामी सब दा सखा, सगला संग निभाईआ। जिस ने सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चलाया रथा, बण रथवाही कार कमाईआ। ओह वेस बदले पुरख समरथा, स्वामी अगम्म अथाहीआ। जिस ने सब नूं देणी नाम दी वथा, वस्त अमोलक इक वरताईआ। सतिजुग साची सच दस्स के कथा, कथनी दा झगड़ा देणा मिटाईआ। इक्को मार्ग देणा यथार्थ यथा, यदी आपणी कार कमाईआ। जिस

कारन गोबिन्द ने पिट्ठ उठाया भथ्था, चिल्ला तीर कमान संग रखाईआ। नाता छड के तत अठा, नौ दवार दा डेरा ढाहीआ। जोती नूर जगे लट लटा, निरगुण जोती जाता डगमगाईआ। अन्त लेखा मुकाउणा पथ्थर इट्टां, सिल पाहन पूजण कोए ना जाईआ। इक्को मार्ग दस्सणा सच्चा, सति सच दरसाईआ। तन वजूद काअबा मक्का, मकबरयां दा झगड़ा देणा मुकाईआ। सच सरीर वजूद दस्सणा मन्दिर मट्ठा, शिवदुआला इक दृढ़ाईआ। इहो गुरुदुआरा हका, जिस दी अमरदास दए गवाहीआ। अग्गे फ़र्क रहे ना रता, रत्न अमोलक हीरे गुरमुख लए प्रगटाईआ। जिन्हां दे अन्तर देवे नाम दी सत्ता, सति सतिवादी रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी सरनाईआ। कत्तक कहे गोबिन्द याद कर पिछला वक्त, बेवक्त दयां दृढ़ाईआ। की संदेशा दिता जगत, जागरत जोत कर रुशनाईआ। गुरमुखां तों बणाउणे भगत, भगवन नाल मिलाईआ। आत्म परमात्म नाता जोड़ना मेरी शर्त, शरअ दा लेखा देणा चुकाईआ। मैं अर्श तों आवां उत्ते फ़र्श, फ़ैसला हक सुणाईआ। ग़रीब निमाणयां उत्ते कर के तरस, मेहर नज़र इक उठाईआ। जिस कारन आयों परत, पतिपरमेश्वर नाल मिलाईआ। भाग लगा दे उपर धरत, धरनी धौल धवल राह तकाईआ। सब दी पूरी कर दे शर्त, शहिनशाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। पूरब रहे किसे ना कर्ज़, मकरूज़ देणा चुकाईआ। इक्को नाम ते इक्को तर्ज़, इक्को ढोला देणा सुणाईआ। तेरे मिलण दी इक्को ग़रज़, दूजी आस ना कोए रखाईआ। तेरा खेल होवे असचरज, शास्त्र सिमरत वेद पुराण समझ किछ ना पाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां वंड दर्द, दीनां अनाथां हो सहाईआ। तूं योद्धा सूरबीर मर्दाना मर्द, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। कत्तक कहे मेरा कर्म सतिगुर शब्द धार चंगा, सति सच दृढ़ाईआ। कुछ लेख लिख्या जिस वेले छड्डया पुरी अनन्दा, अनन्द जगत वाला तजाईआ। संदेशा सुणया पुरख अकाल संदा, वेला सँध्या दए गवाहीआ। गोबिन्द तेरा नाम धार गंगा, गोदावरी जमना सुरस्ती तेरा चरण छूह के झट लँघाईआ। तेरा प्रेम प्यार बन्दगी वाला बन्दा, बन्धन रहे ना राईआ। अन्त पुरख अकाल लाउणा अंगा, अंगीकार इक अख्वाईआ। जिस कारन तैनूं इक्कीआं दन्दयां वाला बख्श्या कंघा, दो इक दा जोड़ जुड़ाईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम आया कन्ढा, चारों कुण्ट अंधेरा छाईआ। जगत जहान होया रंडा, आत्म सेज ना कोए सुहाईआ। तेरयां सिक्खां तेरे दवारे करना दंगा, झगड़े विच कुरलाईआ। साबत रहिणा नहीं दाल मण्डा, प्रेम प्रीती रंग ना कोए रंगाईआ। गुरदवारां विच कुकर्म होणा गंदा, नारी नर इक दूजे वल्ल तकाईआ। तेरा भय नहीं रहिणा अन्तिम खण्डा, खड़ग कम्म किसे ना आईआ। गोबिन्द हस्स के किहा एह वी खेल प्रभू तेरे संगा,

तेरी बेपरवाहीआ। इक मंग अगम्मी मंगां, दोए जोड़ सीस निवाईआ। जे तूं आपणा सुत बणाया अग्गे नूरी बणाईं चन्दा, दो जहान करां रुशनाईआ। आपणे नाल पाईं गंढा, निरगुण सरगुण सके ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वस्त अमोलक इक वरताईआ। गोबिन्द किहा मेरे साहिब स्वामी अन्तर, अन्तष्करन दयां बदलाईआ। तेरा खेल वेखणा निरन्तर, निरँकार तेरी वड्याईआ। जिस वेले गोबिन्द धार नाम चलया मन्त्र, मंतव तेरी झोली पाईआ। फेर बणावां आपणी नवीं बणतर, रूप अनूप प्रगटाईआ। हथ्थ उठाउणा कोए ना शस्त्र, चिल्ला तीर कमान खड़ग ना कोए सुहाईआ। तन पहनां कोए ना वस्त्र, कल्गी तोड़ा ना कोए चतुराईआ। वेखां खेल गगन गगनंतर, ब्रह्मण्ड खण्ड पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे झोली डाहीआ। गोबिन्द किहा जिस वेले कलि होवे अंधेरा, कलि कल्की वेस वटाईआ। शब्दी सतिगुर मारां फेरा, वेखां तेरी ख़लक खुदाईआ। तूं गुरु ते मैं चेरा, पुरख अकाल तेरी बेपरवाहीआ। नाउँ गाउणा तेरा मेरा, मोरा तोरा भेव रहे ना राईआ। झगड़ा रहे ना मन्दिर देहुरा, मसीत चर्च ना कोए वड्याईआ। इक्को सस्से उपर लाउणा होड़ा, निरगुण सरगुण कार कमाईआ। हाहे टिप्पी जोड़ जोड़ा, हँ ब्रह्म तेरी वड्याईआ। आत्म परमात्म दोहां दी पूरी होवे लोड़ा, लोड़ींदा सज्जण मिल के वज्जे वधाईआ। कलयुग अन्तिम भगत भगवान दा रहे जोड़ा, गुर चेले बैठण मुख छुपाईआ। एह समां वक्त मेरे ढईए तों बाद थोड़ा, थोड़ा थोड़ा समझाईआ। चारों कुण्ट फेर के घोड़ा, नीले वाले नीले तों परे दिता दरसाईआ। उस वेले प्रभू दीनां मज़्हबां नूं जवाब देणा कोरा, गुर अवतार पैग़म्बरां देणा सुणाईआ। अग्गे तुहाडी रहे ना लोड़ा, कलयुग अन्तिम होए सफ़ाईआ। मैं इक्को सुत दुलारा तेरा बांका छोहरा, शहिनशाह तेरा हुक्म सुणाईआ। जिस दे अग्गे चले किसे ना ज़ोरा, ज़ोरू ज़र सीस झुकाईआ। सब दी शब्दी धार आत्म पकड़ां डोरा, डौरु डंक तेरा नाम वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच मिले सरनाईआ। गोबिन्द कहे प्रभू मेरा इक्को दाअवा, दाअवे नाल जणाईआ। तेरे नाल तराज़ू करना सावां, सच सच तेरी सरनाईआ। कलयुग जीवां हँस बणावां कावां, कागों हँस उडाईआ। लाड लडाउणा ज्यों पुत्रां मावां, पिता पूत गोद उठाईआ। गुरमुख चुक्कणे आपणीआं बाहवां, भुजां लवां सुहाईआ। निरगुण धार हो के आवां, शब्दी रूप बदलाईआ। अन्तिम सब दे नाल लैणीआं लावां, आत्म परमात्म संग रखाईआ। गुरमुख वेखणे नाल चावां, चाओ घनेरा इक जणाईआ। सदा रखणीआं ठंडीआं छावां, छहिबर आपणा नाम लगाईआ। बिन भजन बन्दगीओ पार करावां, चुरासी विच ना कोए भवाईआ। कलयुग सागर पार करावां, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता अगम्म अथाहीआ। कत्तक किहा गोबिन्द कवण वक्त सुहञ्जणा, सच दे दरसा। की खेल करे दर्द दुःख भय भञ्जणा, प्रभ दाता बेपरवाह। जिस वेले कलयुग समां लँघणा, कवण नूर होवे रुशना। कवण बणे साचा सज्जणा, दुरमति मैल दए धवा। गोबिन्द किहा कत्तक एका शब्द गुरु ने गज्जणा, तत्तां वाला गुरु रहे कोए ना। जिथ्थे पुरख अकाल दा जोती दीपक जगणा, ओह सम्बल सुहावे थां। साढे तिन्न हथ्थ नगारा वज्जणा, डंका इक्को दयां जणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दाता बेपरवाह। गोबिन्द कहे कत्तक ओह होणी रुत सुहाउणी, सोहणी मिले वड्याईआ। पुरख अकाले जोत जगाउणी, निर्मल नूर नूर रुशनाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां आस पूर कराउणी, पूरन ब्रह्म जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया आप मिटाउणी, मेटणहार वेख वखाईआ। सदी चौधवीं लेखे लाउणी, मुहम्मद आसा दए दुहाईआ। सदी वीहवीं खेल खलाउणी, ईसा नैणां रिहा तकाईआ। मूसा धार आप जगाउणी, मुसलसल आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सम्मत शहिनशाही पंज कहे जग आया कत्तक महीना, महा मंत ग्रन्थ सके ना कोए समझाईआ। जिस वेले खेल वेखणा लोक तीना, त्रैगुण अतीता दए जणाईआ। कुछ झगड़ा होणा रूसा चीना, चार कुण्ट कुण्ट कुरलाईआ। कलयुग ठांडा करे कोए ना सीना, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। हरि का नाम रिदे कोए ना चीना, चिन्ता चिखा दूर ना कोए कराईआ। सृष्टी दृष्टी होए ग़मगीना, ग़मखार ना मिले धुर दा माहीआ। रंग चाढ़े ना कोए नवीना, नव नौ चार पन्ध मुकाईआ। सच संदेशा दिता गोबिन्द जिस वेले हथ्थ रखया उपर ज़ीना, पाखर पहली वार नीले उत्ते टिकाईआ। जगत जीव जहान धर्म दी धार होणा कमीना, शाह शाहकार रूप ना कोए धराईआ। कोटां विच्चों गुरमुख मिले ना कोए नगीना, जिस उत्ते निगाह गोबिन्द लए टिकाईआ। उस वेले मेरे साहिब आउणा प्रबीना, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा फेरा पाईआ। जिस प्रगट होणा उत्ते ज़मीना, धरनी धरत धवल धौल करे रुशनाईआ। जिस दी इक्को मंज़ल ते इक्को जीना, इक्को मन्दिर दए वखाईआ। जिथ्थे झगड़ा नहीं नर मदीना, आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सम्मत पंज कहे मैं आया मातलोक जग, जगत दयां जणाईआ। बिना शब्द गुरु तों किसे नहीं बुझाउणी अग्ग, अग्नी तत ना कोए गंवाईआ। मंज़ल मिलणी नहीं उपर शाहरग, शहिनशाह दरस कोए ना पाईआ। बिना मुर्शद मुरीदां करना हज्ज, काया काअबे मिले ना नूर इलाहीआ। जिस ने चार जुग दे अवतार लैणे सद्द, पैग़म्बरां जोड़ जुड़ाईआ। सच दस्सो तुसां मिल के रहिणा कि अड्ड,

वक्खो वक्खरा दर सुहाईआ। ओस वेले सब ने कहिणा प्रभू आपणा धर्म निशाना गड्ड, गाईड गौड गुड इक्को नज़री आईआ। साडी रही ना कोई हद्द, दीन मज़्ब गए तजाईआ। तूं विश्व धार विश्व तेरी यद, आदि अन्त इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। कत्तक कहे सम्मत पंज अन्त मार लै झाकी, मातलोक ध्यान लगाईआ। सम्मत पंज किहा आह वेख मेरे कोल गोबिन्द वाली पाती, पत्रका दयां वखाईआ। जिस दा लेख लिख्या उपर छाती, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नजर कोए ना आईआ। प्रभू जिस वेले कलयुग अन्तिम बण के आवें कमलापाती, पतिपरमेश्वर रूप वटाईआ। मैं शब्द गुरु तेरा होवां साथी, सगला संग बणाईआ। दोहां ने इक दूजे दी मन्नणी आखी, आख़र इक्को रंग रंगाईआ। जेहड़ा पन्थ सजाया इक सत्त पंज छे दी वसाखी, अन्त मैनूं एह वी विसर जाईआ। मेरी मंज़ल चढ़े कोए ना घाटी, दर तेरा ना कोए सुहाईआ। फेर दोहां ने खेल करना लोकमाती, मता शब्द जोत पकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अंधेरी राती, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ। सच सुनेहड़ा देणा आखी, धुर संदेशा नाम सुणाईआ। जन भगतो पुरख अकाला दीन दयाला आदि जुगादि सब दा साथी, सगला संग बणाईआ। जिस दा इक दवारा इक हाटी, वणज वणजारा इक हो जाईआ। इक्को नाम भण्डारा देवे दाती, दयावान आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा पर्दा आप उठाईआ। पाती कहे की मेरे विच लिख्या, अक्खर देण गवाहीआ। गोबिन्द गोबिन्द दिती सिख्या, गोबिन्द गोबिन्द जणाईआ। बिना गोबिन्द तों गोबिन्द करे किसे ना हितया, गोबिन्द मेल ना कोए मिलाईआ। कलयुग अन्तिम खेल अबिनाशी अचुतया, पारब्रह्म प्रभ आपणी कार कमाईआ। सदी चौधवीं पैंडा जांदा मुक्कया, मुकम्मल पैग़म्बर ध्यान लगाईआ। लेखा रहिण नहीं देणा जगत लुक्या, हुक्म धुर दा इक सुणाईआ। इक्को योद्धा सूर उठया, शब्द गुरु बलधारी नज़री आईआ। जो प्रभ दे हुक्म अन्दर जुटया, जटां जूटां करे सफ़ाईआ। लहिणा मुकाए ईसा मूस्या, मुहम्मद लेखा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सच हुक्म सुणो प्रभ स्वामी, हरि करता आप जणाईआ। पुरख अकाला अन्तरजामी, पर्दा रिहा चुकाईआ। सतिजुग दी सच्ची बाणी, बाण अणयाला तीर लगाईआ। झगड़ा मुकणा चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज लेखा रहे ना राईआ। अमृत देणा ठंडा पाणी, निझर झिरना इक झिराईआ। सतिगुर शब्द कहे जन भगतो वेखणा खेल महानी, हरि करता आप दृढ़ाईआ। मंज़ल रहे ना किसे रुहानी, रूह बुत देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा घर वसाईआ। कत्तक कहे जन भगतो दस्सां इक विचार, विचर के दयां सुणाईआ। खेल

करे हरि दातार, दयावान वड्याईआ। सब ने रहिणा हुश्यार, मन ममता मोह गंवाईआ। करना इक प्यार, एकँकार सच्ची सरनाईआ। शब्द गुरु सिक्दार, जुग जुग हुक्म मनाईआ। सदी चौधवीं करे ख़बरदार, बेख़बरां आप उठाईआ। पुरख अकाल दा लग्गणा इक दरबार, दरबारी सोहणे सोभा पाईआ। ओनां दे गल विच तिन्न तिन्न पाउणे हार, तिन्नां रंगां रंग रंगाईआ। लाल रंग लग्गा होवे बिन्दी रूप दस्तार, मस्तक साहमणे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग इक रंगाईआ। कत्तक कहे दरबारी पंजे किसे आयो विच ना दब्बे, दबदबा नज़र कोए ना आईआ। भगत सुहेले बण के सभे, सभा आपणी लैणी बणाईआ। इक्को नूर जोत जगे, जागरत जोत होवे रुशनाईआ। सारयां रहिणा इक दूजे दे सज्जे खब्बे, अग्गे कदम ना कोए टिकाईआ। नाम डोरी विच रहिणा बध्धे, पीआ प्रीतम ध्यान रखाईआ। वेख्यो छब्बी पोह दी रैण भगतां मिलदे मज़े, मज़ाक होवे जगत लोकाईआ। एह लेखा दस्सणा थोड़ा जेहा अज्जे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि सच दा हुक्म इक वरताईआ। हुक्म कहे मैं हुक्म अगम्मा, मन मति बुध ना कोए चतुराईआ। किसे जनणी कुख्ख विच्चों ना जम्मा, तन वजूद ना कोए रखाईआ। ना कोए लालच ना कोए तमां, तमन्ना विच ना कोए दुहाईआ। ना कोए हरख सोग ग़मा, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। मैं तकदा कवण वेला मेरे पुरख अकाल दा आवे समां, समाप्त होवे कूड़ लोकाईआ। झगड़ा मेटे काया चम्मा, चम्म दृष्टी डेरा ढाहीआ। इक्को नाम पवण स्वास जणाए दमा, दामनगीर आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर पर्दा आप उठाईआ। पर्दा कहे मैं जाणा उठ, लोकमात रहिण ना पाईआ। साहिब सतिगुर जाणा तुठ, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जिस ने दस्सणी आत्म परमात्म इक्को तुक, तूं मेरा मैं तेरा सच पढ़ाईआ। अन्तिम बदल के आपणा रुख़, रस्ता अवर रिहा जणाईआ। पुरख अकाला जम्मया किसे ना कुख्ख, जनणी गोद ना कोए टिकाईआ। उलटा गर्भ ना होया रुक्ख, दस दस मास ना अग्न तपाईआ। पंज भूत ना बणया मनुक्ख, हथ्थ पैर ना कोए वड्याईआ। पिता गोद ना बैठा पुत्त, तन वजूद ना कोए रखाईआ। आपणी आप सुहाई रुत, रुतड़ी आप महकाईआ। कर प्रकाश अबिनाशी अचुत, चारों कुण्ट करे रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया मेट के दुःख, दर्दीआं होए सहाईआ। जन भगतां उज्जल कर के मुख, दुरमति मैल धुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सम्मत पंज कहे मैं पिछा दिता छड, अग्गे दयां जणाईआ। जन भगतो धर्म दी धार कूड़ी क्रिया नालों हो जाओ अड्ड, वक्खरा घर सुहाईआ। जिथ्थे दीन मज़्हब दी नहीं कोई हद्द, ओह दवारा इक्को सोभा

पाईआ। इक दूजे नूं लओ सद्द, सदके वारी घोली घोल घुमाईआ। खुशीआं विच गाओ सद, तूं मेरा मैं तेरा इक्को धुर दा राग अलाईआ। नाम खुमारी पीओ मदि, मधुर धुन सुणो चाँईं चाँईंआ। छब्बी पोह नूं हरिसंगत आउणा सज, सज्जण वेखणा धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सम्मत शहिनशाही पंज कहे पंजां गुरमुखां कोल होवे पंचम धार, प्रपंच नज़र कोए ना आईआ। ओनां दी छाती ते लिख्या होवे संसार, संसारी भण्डारी सँघारी वेखण थांउँ थाँईंआ। ओह चलण विच इक कतार, अग्गे पिच्छे कदम ना कोए उठाईआ। खब्बा हथ्थ रखया होवे उपर दस्तार, नौ ग्यारां कदम चल के फेर हेठां लैण कराईआ। मुक्खों कहिण सथ्थर वेख्या यार, यारड़ा गया हंढाईआ। एह खेल सच्ची सरकार, हरि करता आप वखाईआ। लहिणा चुकणा भगत दवार, भगवन आपणा पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। छब्बी पोह कहे मैं देणी शाबाश, धुर दा हुक्म सुणाईआ। पंजां गुरमुखां अन्दर रखी होवे आस, प्रभ मिलणा धुरदरगाहीआ। ओनां दी इक्को होवे ज़ात, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। हथ्थ विच फड़ी होवे कलम दवात, काग़ज़ कोरे नाल सुहाईआ। एहदा लेखा दस्सणा छब्बी पोह दी रात, रैण भिन्नड़ी दए गवाहीआ। क्यों पुरख अकाल प्रगट होया लोकमात, धरनी धरत धवल वेस वटाईआ।
१३७ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सम्मत कहे मैनूं १३७
२२ आया याद पिछला वेला, वक्त नाल जणाईआ। निरगुण धार की खेल खेला, कलयुग अन्तिम लए अंगड़ाईआ। की लहिणा २२
होणा गुरु गुर चेला, चेला गुर धार देणी समझाईआ। सदी चौधवीं अन्तिम वेखणा मेला, वेखणहार नूर इलाहीआ। मित्र दिसे ना कोए सज्जण सुहेला, संगी संग ना कोए निभाईआ। पंजां गुरमुखां गल विच पाईआं होण हमेलां, घुंगरू फड़ के देण छणकाईआ। मुक्खों कहिण कलयुग अन्तिम जाणा धर्म राए दी जेला, बिना शब्द गुरु तों होए ना कोए सहाईआ। एह संसार कूड़ी क्रिया दा बेला, जंगल जूह नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। हुक्म कहे प्रभ हुक्म अपारा, अपरम्पर रिहा जणाईआ। जिस ने खेल करना विच संसारा, सहिंसा अवर रहे ना राईआ। निरगुण धार लए अवतारा, जोती जोत डगमगाईआ। खेले खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर धुरदरगाहीआ। जो गोबिन्द दे के गया इशारा, अगम्मी रमज़ नाल जणाईआ। माझे विच्चों उन्नी गुरसिख जिन्हां सज्जे खब्बे बन्न्हीआं होण दस्तारां, दस्त लाल रंग रंगाईआ। ओह मारन धुर दा नाअरा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। एहो नूर अगम्मी चव्हीवां अवतारा, अमाम अमामा सोभा पाईआ। जिस नूं अवतार पैग़म्बर गुर करदे निमस्कारा, सजदयां विच सीस झुकाईआ।

ओह खेल करे न्यारा, निराकार आपणा पड़दा लाहीआ। जिस दा रूप बदलया दुबारा, सरगुण निरगुण आपणा खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा दए दृढ़ाईआ। सम्मत पंज कहे मैं सच दृढ़ावांगा। जन भगतो दृढ़ विश्वास, आप करावांगा। ज़रा वेख्यो उपर पृथ्मी आकाश, अकल कलधारी नाल रलावांगा। तुसीं ओस दे ओह तुहाडा रहे दास, दासी दास रूप जणावांगा। आत्मा परमात्मा वसणा इक दूजे दे पास, पासा दिवस रैण ना कदे परतावांगा। जन भगतो तुहानूं प्रभ दी करनी ना पए तलाश, जंगलां जूहां विच्चों बाहर कढावांगा। जो मालक तुहाडा ख़ास, ख़ालस तुहाडे घर वखावांगा। जिस नूं झुकदे पृथ्मी आकाश गगन गगनंतर लेख मुकावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुहाडे लेखे लावे स्वास स्वास, साह साह साचा रंग रंगावांगा। छब्बी पोह कहे कत्तक तूं दस्सी नहीं कहाणी, क्यों बैठा मुख छुपाईआ। की प्रभू ने नवीं दस्सणी बाणी, जेहड़ी चार जुग ना किसे लिखाईआ। समझणी नहीं विच्चों किसे चार खाणी, अक्ल बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। जन भगतो इक्को वार तुहानूं अमृत आत्म देणा पाणी, निझर झिरना देणा झिराईआ। आत्मा परमात्मा बणा के हाणी, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। तुहाडा झगड़ा रहिण नहीं देणा जिस्मानी, जिस्म ज़मीर देणा बदलाईआ। मंज़ल दस्स इक आसानी, असल वसल देणा कराईआ। गुरमुखो गुरु पिच्छे गुरसिख नूं देणी ना पए कुरबानी, सतिगुर शब्द सदा सदा सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जद देवे ते गुरमुखां नूं प्रेम दी निशानी, निशाना धर्म दा दए झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। छब्बी पोह कहे कत्तक क्यों आलस निंद्रा विच सोया, सुत्तया लै अंगड़ाईआ। पुरख अकाल आदि अन्त नवां नरोआ, नर नरायण इक्को रूप समाईआ। जिस दा बीज किसे ना बोया, जम्मण वाली कोए ना माईआ। आपणे वरगा ओह आपे होया, दूजा रूप ना कोए दरसाईआ। जिस ने खेल करना परे त्रैलोआ, त्रैलोकी नाथ झुक झुक लागण पाईंआ। जगत जहान अन्तर ध्यान जाणा मोहया, मुहब्बत आपणे नाल रखाईआ। दूजा दिसे अवर ना कोया, द्वैती वंड ना कोए वंडाईआ। एका शब्द धागे जीव जहान जाणा परोया, परोहतां दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। छब्बी पोह कहे कत्तक की कर्म कांड दा झगड़ा, जुग जुग ग्रन्थां दिता सुणाईआ। कुछ भेत दस्स अगला, की प्रभ जू खेल खिलाईआ। वेखीं बणीं ना बपड़ा बगला, बाहरों रूप वखाईआ। फिरीं ना जूहां जंगलां, टिल्ले पर्बत खोज खुजाईआ। बज्झ ना जाईं शरअ वाले संगला, नाता जाणा तुड़ाईआ। क्यों नानक नीती दस्स के गया हो के कंगला, ग़रीब निमाणा आपणा वेस वटाईआ। जगत

१३८
२२

जहान रहे ना अंधला, नेत्र लोचण नैण अक्ख खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा नर नरेशा इक्को इक सुणाईआ। कत्तक कहे मैं वेख्या दीन दुनी दा कित्ता, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। साचा नज़र ना आया हित्ता, हितकारी रूप ना कोए दरसाईआ। माण हँकार विच्च वेख्या वड्डा निक्का, हउमे गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। अमृत रस ना मिल्या मिट्ठा, विख कूड़ भरी लोकाईआ। साचा दर किसे ना डिट्ठा, धर्म दवार रहे कुरलाईआ। पुरख अकाल नूं छड के सृष्टी मन्नदी पथ्थर इट्टां, पाहनां सीस निवाईआ। अन्त सब दा काग़ज़ कोरा ते लेखा चिट्टा, प्रभ दे लेखे विच कोए ना आईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर सब दा कढणा सिट्टा, सिट्टेबाज़ी दा लहिणा सब दी झोली पाईआ। क्यों छब्बी पोह नूं गुर अवतार पैग़म्बरां दे जरम कर्म दा लै के आउणा चिट्ठा, दीन मज़्ब दा लेखा देणा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच पड़दा ओहला दए उठाईआ। छब्बी पोह कहे कत्तक कुछ दस्स दे होर, अग्गे तो अग्गे ध्यान लगाईआ। कत्तक कहे मैं की दस्सां जिधर तक्कां सारे दिसण चोर, ठग्गी प्रभ दे नाल कमाईआ। रसना नाम जपदे अन्तर कठोर, काम क्रोध लोभ मोह हँकार विच हल्काईआ। सुरती शब्द सके ना कोए जोड़, आत्म परमात्म रंग ना कोए रंगाईआ। मन वासना काम कल्पणा स्त्री पुरुष की जगत वाली लोड़, लोड़ींदा साजण हथ्थ किसे ना आईआ। कत्तक कहे सदी चौधवीं दे मनुशां नालों चंगे ढोर, जो खा पी के प्रभ दा शुकर मनाईआ। छब्बी पोह किहा दस्स होर, होर दे समझाईआ। कत्तक कहे जन भगतां प्रभू जाणा बौहड़, बौहड़ गले लगाईआ। इक्को मंज़ल इक्को दवारा इक्को नाम लगा के पौड़, पारब्रह्म प्रभ आपणा घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला ल्ए मिलाईआ। पोह कहे सम्मत शहिनशाही पंज पंच, पंचम दे समझाईआ। सृष्टी वेखणी काया कंच, कंचन गढ़ फोल फुलाईआ। की धर्म दा वेखणा मंच, की कूड़ी क्रिया सिंघासण रही जमाईआ। जां तक्कया सति दी धार रही कोई ना अंश, बंस सरबंस ना कोए वड्याईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा जिस मन हँकारी कीता कंस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वर दाता इक अख्वाईआ। कत्तक कहे औह कलयुग आ गया नट्ठा, आपणा पन्ध मुकाईआ। सब नूं करदा ठट्ठा, ठुट्ठा रिहा वखाईआ। भावें कोई अवतार पैग़म्बर गुर प्रभ दा बण के आया पट्ठा, आपणा बल धराईआ। मैं सब दा लेखा मुकाउणा इक्ट्ठा, इकट्ठयां दयां जणाईआ। जा के वेखो दीन मज़्बां विच पाया रट्टा, झगड़ा सके ना कोए चुकाईआ। धूढ़ी ख़ाक छार उडदी घट्टा, अंध अंधेर सके ना कोए मिटाईआ। ओह मुहम्मदा वेख लै तेरी सदी चौधवीं दा पूरा होण वाला पटा, पटने वाला दए गवाहीआ। तुहाडे

सारयां दे बदले इक्को शब्द गुरु दा वट्टा, तत्तां दा लेखा देणा मुकाईआ। तुहाडी कीमत पै गई हट्टां विच टका, टकयां उत्ते तुहाडा नाम विक के तुहाडा रूप गया बदलाईआ। ज़रा वेखो वड़ के विच तत अट्ठा, नौ दवारे खोज खुजाईआ। सब दा चीथड़ पुराणा फटा, अन्तर रंग ना कोए रंगाईआ। ना कोई सिख्या रही ना कोई धर्म धार दी मता, मनमति चारे कुण्ट होई हल्काईआ। ना कोई धीरज रही ना कोई जता, सति सन्तोख ना कोए वखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो आपणी दुनिया वेखो रता, रत्न अमोलक हीरा नज़र कोए ना आईआ। किधर गए तुहाडे राग छत्ती छता, शहिनशाह मेल ना कोए मिलाईआ। किधर गए सपारे तीस बतीस बता, बत्ती दन्द सिफ्त सालाहीआ। किधर गए ध्याए दस अठा, अट्ठ दस नाल वड्याईआ। किधर गए सलोक चार लख सतारां हज़ार अठारां पुराण कीत्यां इक्ट्ठा, इकट्ठयां दा रूप नज़र कोए ना आईआ। क्यों किधर गया तुहाडा मार्ग वखा, वक्खरी वक्खरी कार कमाईआ। अन्तिम वेखो सारे आपणीआं अक्खां, बिन अक्खां नैण उठाईआ। बाहरों तुहानूं सारे टेकदे मथ्था, झुक झुक लागण पाईंआ। क्यों तुहाडा नूर ज़हूर किसे अन्दर नहीं वसा, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। माझे वाल्यो छब्बी पोह नूं इक्की हथ्थ दा लै के आउणा रस्सा, रस्ता सब दा साफ़ दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मार्ग इक जणाईआ। कत्तक कहे छब्बी पोह औह बलि बावन दी वेख धार, रिषीआं नाल जणाईआ। करां ख़बरदार, संदेशा देवां धुरदरगाहीआ। की कृष्न कीता विचार, काहन अर्जन गया दृढ़ाईआ। कुरूक्षेत्र खोल्ह् किवाड़, पड़दा दिता उठाईआ। उन्नी इक्की दे अधार, बीस विच्चों गया छुपाईआ। सरगुण तों ज़ीरो सिफ़र रूप संसार, करतार सिफ़रे विच समाईआ। जिस खेल करना अपार, अपरम्पर आपणा वेस वटाईआ। कलि कल्की लए अवतार, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। गोबिन्द शब्द होवे सिक्दार, धुर फ़रमाना हुक्म जणाईआ। पूरब लेखा लए उधार, पिछला खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। कत्तक कहे कृष्न हलाई आपणी उँगल, चक्र सुदर्शन नाल घुमाईआ। फेर आपणा अंगूठा लग्गा चुम्मण, चूस चूस दिता वखाईआ। फेर जामे नूं पा के गुंझल, वट दिता चढ़ाईआ। फेर मस्ती विच लग्गा ऊंघण, नैण बन्द कराईआ। फेर हन्झू लग्गा पूंझण, नैणां नीर कर सफ़ाईआ। फेर बण के मधुसूदन, सिर आपणा दिता हिलाईआ। फेर भेव खोल्ह् के गूझण, अर्जन दिता उठाईआ। औह वेख गोबिन्द दे बच्चे लग्गे झूजण, कलयुग अन्तिम दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। कत्तक कहे मैं वेखे रिषी तेरां सौ सतासी, बलि बावन ध्यान लगाईआ। जिन्हां दा लेखा पुरख अबिनाशी, कलयुग अन्तिम मेल मिलाईआ। ओह बण के दास दासी, सेवक सेवा

सच कमाईआ। ओधरों कृष्न ने आपणे कन्न ते मारया आपणा हाथी, सहिज नाल हिलाईआ। कुण्डल हिलया ते बचन दस्सया साची, सच दिता दृढ़ाईआ। कृष्न ओह वेख जिस वेले राम बणया बनवासी, त्रेता दए गवाहीआ। ओस कुण्डल वल्ल मारी झाकी, जो पिछला पूरब सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव खुल्हाईआ। कुण्डल किहा कृष्न मैनूं हथ्थ लाया, ला के दिता हटाईआ। मैं वेखी त्रैगुण माया, ममता रही वखाईआ। मैं वेख्या उस दा छाया, चारों कुण्ट नज़री आईआ। मैं हन्झूआं नीर वहाया, रो के दिता वखाईआ। प्रभू एह की खेल रचाया, तेरी बेपरवाहीआ। कृष्न ने हस्स के मुक्खों अल्हाया, सहिजे दिता दृढ़ाईआ। वेख कुरुक्षेत्र विच तेरा पड़दा पाया, पड़दा सके ना कोए उठाईआ। कौरव पांडव युद्ध कराया, युधिष्टर दुर्योधन दए गवाहीआ। याद रखीं जिस वेले कलयुग अन्तिम आया, काहन दा काहन फेरा पाईआ। पूरब रिषीआं लेख चुकाया, कुण्डल बावन वाला मंग मंगाईआ। कृष्न किहा अगला खेल बेपरवाहया, बेपरवाही विच समाईआ। दूजा कुण्डल उहदे नाल दयां रलाया, पूरब जोड़ी जोड़ जुड़ाईआ। ओस वेले अर्जन दे साथी युधिष्टर दे मन्नण वाले आखी फेर जन्म लैण पाया, धरनी एसे सोभा पाईआ। ओसे कारन हरिसंगत इर्दगिर्द डेरा लाया, दूर नेड़ा वंड ना कोए वंडाईआ। कुण्डल दे नाल कुण्डल लैणा मिलाया, वद्ध घट्ट ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा आपणा हुक्म वरताईआ। सच दा हुक्म वरते ज़रूर, ज़रूरत सब दी वेख वखाईआ। इक्को मालक इक्को शब्द गुरु हज़ूर, हज़ूरीए गुर अवतार पैग़म्बर नज़री आईआ। जो सर्ब कला भरपूर, भरपूर रिहा सर्ब ठाईआ। जिस दा आदि जुगादि दस्तूर, जुग चौकड़ी नीती चली आईआ। नाता तोड़ना कूड़ो कूड़, सच सुच्च दए प्रगटाईआ। जन भगतो छब्बी पोह नूं सारी संगत ने लाउणी इक वारी मस्तक धूढ़, धूढ़ी टिक्के ख़ाक सब नूं दए रमाईआ। दर आया कोई गुरमुख रहे ना मूर्ख मूढ़, चतुर सुघड़ सुचज्जे दए बणाईआ। इक्को वार बख्श के अन्तर आत्म दा नूर, अंध अंधेरा देणा मिटाईआ। जन्म जन्म दा कर्म कम दा बख्श के कसूर, कर्म कांड दा लेखा देणा ढाहीआ। क्यों आदि तों लै के अन्त तक जुग चौकड़ी शब्द गुरु सर्ब कला भरपूर, दूजे दर मंगण कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी बेनन्ती कर मंज़ूर, मंज़ूरी विच सब दी मंज़ल दए वखाईआ।

✪ २ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ सुलखण सिँघ दे गृह पिण्ड रुकना मूंगला ज़िला फिरोज़ पुर ✪

शब्दी गोबिन्द वेख महीना कत्तक, कारतक ध्यान लगाईआ। पंचम वक्त सुहेला आया जगत, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। सन्त सुहेले वेख भगत, भगवन भेव खुल्हाईआ। पिछला लहिणा पूरी कर शर्त, शरअ ज़ंजीर कटाईआ। फिरी दुहाई उत्ते फ़र्श, धरनी धरत धवल कुरलाईआ। तूं मालक आली अर्श, आलीशान तेरी सरनाईआ। सदी चौधवीं कर तरस, रहमत आप कमाईआ। उठ वेख शहिनशाही बरस, सम्मत पंचम गया आईआ। निरगुण धार तेरा खेल उपर धरत, धवल दे वड्याईआ। शरअ छुरी रहे ना करद, कलमा रूप ना कोए कसाईआ। कूड़ी क्रिया मेट अंधेरा गर्द, अंध अज्ञान गंवाईआ। ग़रीब निमाणयां वंड दर्द, दुखियां हो सहाईआ। सच बेनन्ती अर्ज़, आरज़ू दिती जणाईआ। जुग चौकड़ी वेख फ़र्द, पूरब पड़दा आप उठाईआ। जोधे सूरबीर मर्दाने मर्द, मदद तेरी मंग मंगाईआ। आपणा खेल दस्स असचरज, अचरज आपणी कार कमाईआ। सब दी पूरी होवे ग़रज़, मनसा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहर नज़र आप उठाईआ। गोबिन्द शब्द कहे कत्तक दस्स दे भेद, भेव रहे ना राईआ। की लेखा चारे वेद, विद्या तों बाहर ब्रह्म पढ़ाईआ। की खेल अछल अछेद, वल छल कार कमाईआ। पड़दा लाह दे एकँकार एक, इक इकल्ला भेव रहे ना राईआ। जिस दी सब ने रखणी टेक, टिक्के धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। बुध करे बिबेक, दुरमति मैल धुआईआ। हर घट लए वेख, लख चुरासी खोज खुजाईआ। जोती जाता धार के भेख, भेखाधारी रूप वखाईआ। जिस दा मुच्छ दाढ़ी ना कोए केस, मूंड मुंडाए ना वंड वंडाईआ। नाता जोड़े नाल दस दशमेश, दहि दिशा कर रुशनाईआ। शब्द संदेशा दए विशेष, विषयां तों बाहर समझाईआ। ओस दे अग्गे होणा पेश, जो पेशतर गया जणाईआ। जिस झगड़ा चुकाउणा विष्न ब्रह्मा शिव महेष, महिखासुर लेखा रहे ना राईआ। दो जहान वेखणा देस परदेस, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी कल वरताईआ। मालक बण के इक नरेश, नर नरायण हुक्म जणाईआ। जिस नूं झुकदे अवतार पैग़म्बर अनेक, अणगिणत सीस निवाईआ। सो भगतां करे हेत, हितकारी हो के वेख वखाईआ। अन्दर वड़ के दस्से भेत, मन्दिर कुण्डा दए खुल्हाईआ। सगला संग बणाए हमेश, हमसाजण नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि करता दया कमाईआ। सतिगुर शब्द वक्त सुहेला सुहञ्जणा वेख मात, कत्तक राह तकाईआ। चार जुग दी पिछली याद कर बात, बातन पड़दा इक खुल्हाईआ। राम वशिष्ट गए आख, धुर संदेशा अगम्म अथाहीआ। कृष्न काहन दस्सया त्रैलोकी नाथ, नाथ अनाथां होए सहाईआ। मूसा किहा प्रगट होए साख्यात, जल्वागर नूर इलाहीआ। ईसा कहे मैं ओसे दी ज़ात,

जो सदी बीसवीं फेरा पाईआ। मुहम्मद कहे मैं ओसे दा मंगां साथ, जो सदी चौधवीं अन्त कराईआ। नानक सरगुण निरगुण धार गया आख, निहकलंक कलि आपणा फेरा पाईआ। गोबिन्द बचन सुणाया साच, सति सच दृढ़ाईआ। जिस वेले मालवे देस कटी रात, भूमी भूमिका सोभा पाईआ। शब्द अगम्मी जणाई बात, पर्दा आप चुकाईआ। डल्ला वेख्या साथ, गुरमुख संग निभाईआ। लेखा लिख्या बिन कलम दवात, काग़ज़ शाही ना कोए चतुराईआ। मैं खेल वेखणा साख्यात, सन्मुख हो के नज़री आईआ। झगड़ा रहिण नहीं देणा दीन मज़्हब ज़ात पात, पतिपरमेश्वर आप समझाईआ। शब्द अगम्मी गया आख, आखर दिता दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर पर्दा आप चुकाईआ। गोबिन्द शब्द संदेशा दिता सति, सति सति दृढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम खेल पुरख समरथ, पारब्रह्म प्रभ आपणी कार कमाईआ। धर्म दी धार चलाए रथ, रथ रथवाही इक्को नज़री आईआ। वस्त अगम्मी इक्को दे के वथ, ख़ाली झोली सर्ब भराईआ। धुर हकीकत दस्स दे हक, पर्दा दए उठाईआ। गोबिन्द सज्जी बांह उलारी मुट्ठी मीटी हथ्थ, उँगली सज्जी लई दबाईआ। जिस वेले आत्म परमात्म होया जस, प्रभ सिफ्ती सिफ्त सालाहीआ। भगतां अन्तर जावे वस, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। खेल करे हस्स हस्स, हस्ती आपणी लए प्रगटाईआ। ओस वेले शब्दी धार मैं वी आवां नस्स, जोती जाते ना होए जुदाईआ।
१४३ साचा अमृत देवां रस, निझर आप झिराईआ। निज नेत्र खोल्ह के अक्ख, प्रतख गुसाँईं दयां मिलाईआ। सन्त सुहेला रहे १४३
२२ कोए ना वक्ख, गुरमुख गुर गुर जोड़ जुड़ाईआ। फेर धरती ते हथ्थ मारया झट, ज़ोर नाल खड़काईआ। मेरे भगत सुहेले २२
जाणे वस, शब्दी धार मिले वड्याईआ। फिर कंगण लाह के दिता रख, ढाई इंच मिट्टी हेठ दबाईआ। फेर बोल जैकार अलख, अलख दिता समझाईआ। जिस वेले आवां वत, वतन आपणे सोभा पाईआ। गुरमुखां रखां पत, पतिपरमेश्वर नाल मिलाईआ। धीरज देणा सति, सतिजुग राह जणाईआ। सम्मत शहिनशाही होवे पंज, पंच मिले वड्याईआ। हरख सोग रहे ना रंज, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। छब्बी पोह मालवे वाल्यां धर्म दी धार चढ़ना जंञ, दुलारे लाड़े सोहणे सोभा पाईआ। नेत्र नीर किसे ना वहाउणा अंञ, हन्झू धार ना कोए वहाईआ। गोबिन्द दा कंगण गुरमुख ल्यावण पंज, सवा धार वंड वंडाईआ। उपर लेख होवे मञ्झ, भाई मञ्झ सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, आदि जुगादि साचा देवे संग, सगला संगी बहुरंगी निरगुण निरवैर निराकार निरँकार आपणी कार कमाईआ।

३ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ गुरचरण कौर दे गृह फ़िरोज़पुर शहर

गोबिन्द शब्द किहा कलयुग क्यों पाए आपणे झेड़े, झगड़ा दीन दुनी रखाईआ। आत्म परमात्म आए कोई ना नेड़े, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। सति धर्म दे चढ़े कोई ना बेड़े, मंज़ल हक ना कोए पुचाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक पंज तत उजड़े खेड़े, सति सरूप शाहो भूप रंग ना कोए रंगाईआ। चार वरन अठारां बरन दीन मज़्हबां दिते गेड़े, ज़ात पात दए दुहाईआ। मीत रहे ना गुरु गुर चेरे, मुरीद मुर्शद ना कोए वड्याईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मानव ज़ाती फिरे अंधेरे, निरगुण नूर चन्द ना कोए चमकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पैग़म्बर होए बथेरे, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। सदी चौधवीं शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी भेव खोल्हे ना तेरे मेरे, अन्तष्करन ना कोए बदलाईआ। धरनी धरत धवल धौल धूंआँधार दिसे जगत वेहड़े, अंध अंधेर ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। कलयुग कहे गोबिन्द मैं दस्सां हथ्थ बद्धी, बन्दना सजदा कर के सीस निवाईआ। ओह वेख मुहम्मद वाली चौधवीं सदी, सदमा घर घर नज़री आईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर पंज तत रहिण देणी नहीं कोई गद्दी, गदागर करे लोकाईआ। चार जुग दी पिछली करनी कीती रद्दी, रहिबर हो के राह अगला दए वखाईआ। साध सन्त जीव जंत मुला शेख़ मुसायक पंडत करदे बदी, विकार हँकार विभचार कुकर्म विच लोकाईआ। माया ममता कूड़ कुड़यार वहिण वहिन्दा नदी, नईया नौका नाम उपर ना कोए चढ़ाईआ। काया मन्दिर गृह माटी निरगुण धार जोत किसे ना जगी, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। शब्द नाद धुन अगम्मी आवाज़ किसे ना वज्जी, बिन कन्नां राग ना कोए सुणाईआ। अमृत रस धार निझर किसे ना लभ्भी, बूँद स्वांती इक इकांती ना कोए चुआईआ। मैं वेख्या काया माटी तिन्न सौ सठ्ठ हड्डी, नाड़ बहत्तर फोल फुलाईआ। सच प्रीत पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कलयुग जीव किसे ना लग्गी, अन्तर निरन्तर मेल ना कोए मिलाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नौ सत्त सरगुण तत वजूद अग्ग लग्गी, सांतक सति ना कोए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता अगम्म अथाहीआ। गोबिन्द किहा कलयुग की करें खेल न्यारा, निरन्तर दे जणाईआ। कलयुग कहे मैं हुक्म मन्ना सच्ची सरकारा, शाह पातशाह सीस निवाईआ। गोबिन्द किहा औह वेख तेई अवतारा, निरगुण नूर जोत इलाहीआ। कलयुग किहा मैं सब दा करना पार किनारा, पुरख अकाल दीन दयाल मेरी पुश्त पनाह हथ्थ लगाईआ। गोबिन्द किहा औह वेख मूसा ईसा हज़रत मुहम्मद नूर उज्यारा, जल्वागर नूर इलाहीआ। कलयुग किहा मैं सब दा करना पार किनारा, लोकमात रहिण ना पाईआ।

गोबिन्द किहा औह वेख नानक गोबिन्द जोत उज्यारा, जोती जोत डगमगाईआ। कलयुग किहा एह खेल मेरे साहिब सच्ची सरकारा, करनी दा करता आप कराईआ। चार कुण्ट दहि दिशा मैं चलण देणा नहीं किसे दा चारा, चार कुण्ट करां हल्काईआ। मेरे कोल अन्त श्री भगवन्त दिता मुखत्यारा, हुक्म हासल इक्को दिता सुणाईआ। हर घट अन्दर जूठ झूठ करां पसारा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार दयां टिकाईआ। माण रहे ना किसे पैग़म्बर गुरु अवतारा, एह मेरी बेपरवाहीआ। झगड़ा पावां अल्ला वाहिगुरु ओम राम कृष्न जै जैकारा, दीन मज़्हब शरअ शरीअत विच टकराईआ। जिस दी याद करदे गए कलि अन्तिम प्रगट होए कल्की अवतारा, निहकलंक कल आपणी आप धराईआ। तिस स्वामी अन्तरजामी सच दा करां निमस्कारा, निउँ निउँ लागां पाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। गोबिन्द किहा कलयुग क्यों चार वरन रौला, धीरज धीर ना कोए धराईआ। साचा रूप दिसे कोई ना मौला, पारब्रह्म ब्रह्म रंग ना कोए रंगाईआ। कलयुग किहा ओह वेख गोबिन्द आपणा माछूवाड़े दा कौला, इकरारनामा सोभा पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल जोती जामा पहने उपर धौला, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। अन्तिम सब दा भार करे हौला, मेहरवान महिबूब मेहर नज़र इक उठाईआ। तत वजूद काया माटी किसे नज़र ना आए चोला, चोजी प्रीतम आपणी कार कमाईआ।
१४५ २२ सतिगुर साचा साचे नाम दा दस्से बोला, अनबोलत आपणा राग अल्लाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप एका शब्द सुणाए ढोला, गीत संगीत इक वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर संदेशा इक सुणाईआ। कलयुग कहे गोबिन्द मेरे सतिगुर मार झाकी, शब्दी धार दयां जणाईआ। सदी चौधवीं साबत रिहा ना कोई बन्दा ख़ाकी, ख़ालस नज़र कोए ना आईआ। मन मनुआ सब दे अन्तर होया आकी, अक्ल बुद्धी दी चले ना कोए चतुराईआ। बन्द कुआड़ा खोले कोए ना ताकी, निरन्तर पड़दा ना कोए उठाईआ। चारों कुण्ट कूड़ी क्रिया अंधेरी राती, सति सच चन्द ना कोए चमकाईआ। बिन अक्खरां वेख अगम्मी पाती, जो पत्रका प्रभ ने दिती फड़ाईआ। की वस्त अमोलक निरगुण धार दिती दाती, दयावान दया कमाईआ। मैं हुक्म मन्ना धुर दी आखी, आख़र आपणी कार कमाईआ। मेरे विच नहीं कोई गुस्ताख़ी, गुस्सा गिला ना कोए रखाईआ। मैं कूड़ विकार माया ममता लोकमात खोल्ही हाटी, वणजारा इक्को नज़री आईआ। तन वजूद रहिण नहीं दिता कोई पाकी, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, धुर दा नाम अगम्म अथाहीआ। कलयुग कहे गोबिन्द मेरी पुश्त पनाह लगा थापी, थापणा देणी चाँई चाँईआ। मैं साबत रहिण नहीं दिता कोई जापी, कलयुग जीव जंत साध सन्त दिते भुलाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण

अञ्जील कुरान खाणी बाणी मेट सके ना अंधेरी राती, मेरा पर्दा ना कोए उठाईआ। तीर अणयाला मारया काती, कत्लगाह वेख लोकाईआ। गुरु अवतार पैग़म्बरां दे हुन्दयां मंज़ल चढ़े कोए ना साची, हकीकत हक वेखण कोए ना पाईआ। दीन दुनी पढ़ पढ़ थक्की किताबी, काया काअबा नज़र किसे ना आईआ। साबत रहिण नहीं दिता इश्क हकीकी मजाज़ी, मज़ा कूड़ दिता चखाईआ। सजदा सच ना रिहा अदाबी, डण्डावत बन्दना कम्म किसे ना आईआ। मंज़ल मिले ना किसे महिराबी, महिबूब दरस कोए ना पाईआ। साबत रिहा कोए ना हाज़ी, हुजरा हक ना कोए सुहाईआ। इष्ट सति ना कृष्ना राधी, सीता राम ना कोए चतुराईआ। तुहाडे मुरीद सिख तुहाडे नालों कीते बाग़ी, प्रेम प्यार मुहब्बत नाता दिता तुड़ाईआ। एह लेखा जो नानक लिख के गया बग़दादी, बग़लगीर रहिण कोए ना पाईआ। चार जुग दा नाम सदी चौधवीं रहे ना कोए इमदादी, सगला संग ना कोए रखाईआ। वेख मेरी अन्तिम बाज़ी, बाजां वाले ध्यान लगाईआ। बुद्धी किसे दी रहे ना बोध अगाधी, अनुभव दृष्टी सके ना कोए खुल्हाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल मैनूं सब दा बणाया गाडी, गुर अवतार पैग़म्बर छोटे छोटे हिस्से मज़्हबां वाले रखाईआ। मैं पवित्र रहिण दिती नहीं किसे दी बाडी, माया ममता विच हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक उपजाईआ। गोबिन्द किहा कलयुग अग्गे हो जा चुप, बचन कहिण कोए ना पाईआ। तेरा प्रकाश जाणा छुप, कूड़ अंध रहे ना राईआ। पुरख अकाल दीन दयाल इक उठाउणा आपणा सुत , शब्द दुलारा सोभा पाईआ। जिस ने जूठ झूठ कढणा कुट्ट, कूड़ कुकर्म करे सफ़ाईआ। कलयुग साची बदले रुत, रुतड़ी इक्को नाम महकाईआ। तेरा लहिणा देणा जाणा मुक, मुकम्मल रिहा सुणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सृष्टी दृष्टी अन्दर पढ़नी तुक, सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ। चार वरन अठारां बरन सब दा उज्जल करना मुख, दुरमति मैल धुआईआ। धरत धवल दी सुफल करनी कुख्ख, भगत सुहेले आप उठाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, चेतन सुरती दए कराईआ। पड़दा ओहला रहे ना लुक, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। सति सच जीव जहान बदल जाणा रुख़, रुख़सत कूड़ कल्पना दए कराईआ। इक्को रूप नव सत्त दिसे मनुक्ख, मानव मानस मानुख वंड ना कोए वंडाईआ। झगड़ा रहे ना तन वजूद पंज भूत, शरीर बेनज़ीर रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत जाम हर घट अन्तर देवे घुट, रसना चक्खण दी लोड़ रहे ना राईआ।

३ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ सूबेदार राम सिँघ दे गृह फ़िरोज़पुर छाउणी

तिन्न कत्तक कहे वाह आ गया राम, सीता सति नाल वड्याईआ। ओह प्रगटया काहन, राधा आपणे रंग रंगाईआ। मूसा पहुँचया आण, सजदा सीस इक झुकाईआ। ईसा आ के करे सलाम, साहिब तेरी बेपरवाहीआ। पैग़म्बर मुहम्मद दए पैग़ाम, संदेशा अगम्म अथाहीआ। नानक निरगुण सरगुण खेल महान, महिमा कथ कथ दृढ़ाईआ। गोबिन्द चिल्ला लै कमान, तीर तरकश कंध टिकाईआ। मुक्खों हस्स के किहा खेल श्री भगवान, हरि करता आप कराईआ। जोती जाता हो मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। शब्द संदेशा दिता भेव खुल्हाया दो जहान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गोबिन्द कहे मैं फड़या कमान तीर, तरकश वेख वखाईआ। संदेशा दिता बेनज़ीर, नज़र नज़रीआ दिता बदलाईआ। ओह वेख कलयुग अख़ीर, आख़र दयां दृढ़ाईआ। चारों कुण्ट शरअ ज़ंजीर, बन्धन सके ना कोए तुड़ाईआ। बदल सके ना कोए तकदीर, तदबीर विच कदे ना आईआ। फेर होका दिता कबीर, कूक कूक दिता सुणाईआ। रविदास पाटे चीथड़ वखा के लीर, नैण अक्ख उठाईआ। नामे नेत्र वहाया नीर, हन्झूआं हार बणाईआ। शमस तबरेज़ मन्न के इक्को पीर, खल्ल खलड़ी दिती गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। कत्तक कहे मैं वेख्या इक्को करता, वारता धुरदरगाहीआ। ना जीवत ना मरदा, जीवण मरन ना रूप वखाईआ। आदि जुगादी मालक साचे घर दा, गृह मन्दिर डेरा लाईआ। जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण रूप धरदा, धरनी धरत धवल वेख वखाईआ। आदि जुगादि शब्द खण्डा धार हो के लड़दा, झगड़ा करे थांउँ थाँईंआ। निरवैर निरअक्खर धार हो के अक्खर पढ़दा, संदेशा नाम कलमा जणाईआ। नित नवित आपणा भाणा जरदा, सीस जगदीश निरगुण सरगुण आप झुकाईआ। जिस खेल करना कलयुग कलि दा, कल काती वेख वखाईआ। जो सति सरूप वेस वटाए अछल अछल दा, वल छल आपणी कार कमाईआ। लहिणा देणा जाणे जल थल दा, महीअल वेखे थांउँ थाँईंआ। जिस दा दीपक जोत अगम्मी बलदा, चार कुण्ट बैकुण्ठ करे रुशनाईआ। जो गुर अवतार पैग़म्बर घल्लदा, हलक्यां विच वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। कत्तक कहे राम आया नट्ठा, कृष्न पन्ध मुकाईआ। पैग़म्बर हो इक्ट्ठा, गुरु गुर सीस निवाईआ। लेखा कोई जाण ना सके आईजन तथा, यथार्थ समझ कोए ना आईआ। लोचन वेख ना सके अक्खा, नैण ना कोए उठाईआ। प्रभू भेव ना दिता रता, रत्न अमोलक हीरे माण वड्याईआ। अन्तिम आपणे नाल पकावे मता, मशवरा अवर ना कोए रखाईआ। जिस ने चार जुग चलाया

रथा, निरगुण सरगुण बण रथवाहीआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण चलाई कथा, अञ्जील कुरान राह वखाईआ। सो पुरख अकाला फिरे नट्ठा, दीन दयाला भज्जे वाहो दाहीआ। सदी चौधवीं सब दा वेखे पट्टा, पारब्रह्म प्रभ पड़दा लाहीआ। जिस विच दीन मज़्ब दा रट्टा, चारों कुण्ट नजरी आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता वड वड्याईआ। गोबिन्द कहे मैं तीर दी वेखी मुखी, मुख ब्रह्मा ध्यान लगाईआ। सृष्टी विच कोई ना सुखी, विष्नूं विश्व दिता दृढ़ाईआ। कूड़ कुड़यार धार अज्जे ना मुकी, शंकर फड़ के दिता समझाईआ। ममता जड़ गई ना पुट्टी, अवतार पैग़म्बर गए फेरीआं पाईआ। निरगुण धार मूल ना उठी, शास्त्र सिमरत वेद पुराण कर पढ़ाईआ। अमृत रस मिल्या ना घुटीं, अट्ठ सठ तीर्थ पन्ध चुकाईआ। उठ सकी ना सुरती सुत्ती, हलूणा हक ना कोए लगाईआ। सुहञ्जणी होए कोए ना रुतीं, रुतड़ी रुत ना कोए महकाईआ। झगड़ा प्या पंज तत बुतीं, बुतख़ाने देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच पर्दा आप चुकाईआ। गोबिन्द कहे मैं तीर दा वेख्या निशाना, निशाना आपणा इक रखाईआ। मैनूं नजरी आया कृष्ना कान्हा, घनईया आपणा रूप दरसाईआ। जिस ने कीता खेल महाना, त्रैलोकी नाथ वड वड्याईआ। उस ने हुक्म संदेशा दिता अर्जन जाणी जाणा, भेव अभेदा इक खुल्हाईआ। फेर प्रभास तक्कया जिथ्थे सुंञ मसाणा, नगर खेड़ा नज़र कोए ना आईआ। जिथ्थे बधक मारया निशाना, चरण कँवल कँवल टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा रंग रंगाईआ। गोबिन्द कहे बधक दा तीर अपारा, तुरीआ समझ कोए ना पाईआ। उहनूं घड़या नौ नौं वारां, अग्नी भट्ठी विच तपाईआ। उहदी मुखी बणाई पेंदू नाम सुन्यारा, पिंजर तन वजूद हंढाईआ। जिस दी अन्तर हुन्दी इक विचारा, विचर के सके ना किसे सुणाईआ। जे किरपा करे आप निरँकारा, निरगुण होए सहाईआ। मेरी सेवा लए विच दरबारा, घर साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर साचा इक वखाईआ। सुन्यार कहे मैं मुखी घड़या घाड़, घाड़त दए जणाईआ। ओह दिन सी सतारां हाढ़, जिस वेले कुठाली रंग रंगाईआ। नौ वार सुहागा उत्ते फेरया प्रेम दी धार, नेत्र नैण नैण चमकाईआ। जे मंज़ूर करे निरँकार, करतार बेपरवाहीआ। ओस दा बधक नाल सी प्यार, गवांढी नावें घर दा नज़री आईआ। ओह पहुँचया ओस बाज़ार, खुशीआं विच पन्ध मुकाईआ। अग्गों हस्स के किहा सुन्यार आ यार, मेरे पास आसण लै लगाईआ। आह वेख मेरा हथियार, तेरे तीर दी मुखी दयां बणाईआ। ओने चिर नूं कृष्न ने अन्दर दिता हुलार, मूर्ती आपणी दिती वखाईआ। एहदी मुखी तीर उत्ते चाढ़, नौ वार देणी दबाईआ। एस आउणा विच उजाड़, जूह फेरा

पाईआ। मैं सौणा चरण पसार, आप आपणी लै अंगड़ाईआ। एह खेल होणा विच संसार, संसारी समझ कोए ना आईआ। तेरा लहिणा देणा पूरा करे करतार, कुदरत दा मालक पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। बधक किहा तैनूं तीर फड़ावां हथ्थीं, हथ्थ दिता टिकाईआ। सुन्यार किहा मैं मुखी लावां चार मासे नौ रत्ती एह मेरी वंड वंडाईआ। अगली कथा कहाणी सची, सच दयां समझाईआ। तेरा मेल होणा नाल ओस सभापती, जिस नूं सारे सीस निवाईआ। तूं खेल वेखणा अक्खीं, अक्खरां तों बाहर मेरी पढ़ाईआ। जिस ने प्यार कीता नाल सख़ी, सखीआँ दा काहन सोभा पाईआ। ओह तेरा राह रिहा तकी, नेत्र लोचन नैण अक्ख उठाईआ। सज्जणा मैं तैनूं करदा पक्की, सच विच जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। तीर कहे मेरे उत्ते चढ़ गया कंचन रूप अपारा, अपरम्पर स्वामी दिती वड्याईआ। मेरे अन्दर आया इशारा, सैनत रिहा लगाईआ। तेरा खेल होणा न्यारा, निरँकार आप कराईआ। की बधक करे बेचारा, विचर के सके ना कोए समझाईआ। एह खेल सच्ची सरकारा, करनी दा करता आपणे हथ्थ रखाईआ। जां वक्त सुहंजणा आए विच संसारा, लहिणा देणा दए मुकाईआ। बधक चलया विच उजाड़ा, साथी आपणे नाल लिआईआ। कृष्न सुत्ता चरण पसारा, आप आपणी सोभा पाईआ। ओस मारया तीर करारा, पदम कदम विच जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। तीर मारया बधक, मृग नैण जग जाण। खेल प्रभू दा अधिक, कराए आप भगवान। हुक्म देवे सख्त, मेट सके ना कोई विच जहान। सुहञ्जणा होया वक्त, खेल होया महान। पूरी होई शर्त, राम निगाहवान। लेखा मुक्कया फ़र्श, खुशी ज़िमीं असमान। नेड़े आया निधड़क, बल सूरबीर बलवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच हुक्म इक सुणाईआ। तिन्न कत्तक कहे बधक आ गया कोल, दब्बे दब्बे पैर टिकाईआ। सुरती होई अनभोल, भेव सक्या ना कोए खुल्हाईआ। जां वेख्या आ के उपर धौल, लोचन दोए दोए राह तकाईआ। कृष्न हस्स के प्या बोल, फ़रमाना इक जणाईआ। आ तोलां तेरा तोल, तराज़ू आपणा आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। बधक वेख होया हैरान, हैरानी अन्तर आईआ। एह काहन श्री भगवान, कृष्न कृष्न सोभा पाईआ। मैं मूर्ख बड़ा नादान, तीर निशाना दिता लगाईआ। नेत्र हन्झू लग्गा वहाण, छहिबर इक लगाईआ। कृष्न ने पकड़ के कान, हलूणा दे के ज़ोर नाल लगाईआ। आह वेख तेरा लेखा विच जहान, तैनूं दयां दृढ़ाईआ। तीर दी मुखी उहदे मस्तक छुहाई नाले दिता दान, दया आप कमाईआ। एस तीर दे नाल गोबिन्द ने ग़रीबां दी रखया करनी महान,

मेहर नज़र इक उठाईआ। एस तीर दा लेखा नाल होवे विष्नूं भगवान, भगवन आपणा संग बणाईआ। शब्द गुरु योद्धा सूर होवे बलवान, बलधारी इक वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। कृष्न किहा बधक उठ वेख मार झाकी, पड़दा दयां उठाईआ। आह वेख गोबिन्द साकी, सच प्याला अमृत जाम प्याला रिहा प्याईआ। औह वेख अंधेरी राती, साचा चन्द रिहा चमकाईआ। वेस वटा के कमलापाती, पतिपरमेश्वर सोभा पाईआ। आपणी खेल देवां दाती, दाता हो के दया कमाईआ। कलयुग अन्त तेरा जन्म होवे साख्याती, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। एह जेहड़े तेरे नाल साथी, उहनां मानस देही मिले वड्याईआ। तूं मन्नणी मेरी आखी, निम्रता विच सीस झुकाईआ। मेल मिलावे कमलापाती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। पूरा करे मेरा वाकी, वाकिफ़कार धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। कृष्न किहा बधक अन्तर ना कर रंज, रंजश दी लोड़ रही ना राईआ। कृष्न ने नेत्र दबा के किहा अग्गे वेख सम्मत शहिनशाही पंज, पंज धार तों परे दृढ़ाईआ। जिस वेले कोई मुहाणा रिहा ना वञ्झ, पत्तन पार ना कोए कराईआ। दीन दुनी होणी अंध, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। दीन दयाल होणा बख्शंद, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। तेरे साथीआं नूं पाउणा तन्द, जोड़ी आपणे नाल जुड़ाईआ। साहिब सुल्तान हो बख्शंद, सच सिंघासण सोभा पाईआ। ओस वेले उहदयां सन्तां भगतां दी छब्बी पोह नूं चढ़ के आउणी जंञ, लाड़े सारे नज़री आईआ। गोबिन्द ने गोबिन्द दी धार वेखणा रंग, रंगत इक्को दए वखाईआ। तख्त निवासी तख्त दे उत्ते बैठ के एहो तीर तैथों लैणा मंग, सज्जे हथ्थ नाल सज्जे हथ्थ देणा फड़ाईआ। फेर ज़रूर कलयुग अन्त सृष्टी विच होवे जंग, जगह जगह होवे लड़ाईआ। अगला लेखा छब्बी पोह नूं दए वंड, भेव सारा दए खुल्हाईआ। जिस ने खेल खेलया पुरी अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के छन्द, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। सो स्वामी लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आवे लँघ, सच दवारा इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे विच वरभण्ड, वरभण्डी आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ ४ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ सोभा सिँघ दे गृह पिण्ड वलूर ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

धरनी कहे मेरा सुहावा देस, दिशा मिले वड्याईआ। घर स्वामी मिले नरेश, नर निरँकार दया कमाईआ। जिस संदेशा

शब्द दिता दशमेश, गुर गोबिन्द गया दृढ़ाईआ। उठ वेख आपणे खेत, चारों कुण्ट हरयावल छाईआ। एह प्रभू दा साचा हेत, परम पुरख आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। गोबिन्द कहे मैनूं आई अगम्मी ख़बर, पुरख अकाल दिता जणाईआ। थोड़ा समां कर सबर, सिदक आपणा वेख वखाईआ। फेर बणा के भेजां शेर बब्बर, निरगुण हो के आपणा संग रखाईआ। झगड़ा मुकावीं मढ़ी गोर कबर, मकबरयां डेरा ढाहीआ। मेरा नाम सुणावीं धुन मधुर, मधसूधन पड़दा आप चुकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया देवीं बदल, सतिजुग सच सच समझाईआ। दीनां मज़्हबां दा तेरे हथ्थ होवे अदल, इन्साफ़ इक कराईआ। शरअ करे कोई ना कत्ल, मक्तूल रूप ना कोए वटाईआ। सच वखाउणा मेरा वतन, बेवतनां दया कमाईआ। बिन तेरे लेखे लग्गे किसे ना यतन, यथार्थ मेरा गृह ना कोए वखाईआ। तूं सब नूं दस्सणा इक्को पतन, पिता पुरख अकाल इक जणाईआ। भगत सुहेले उपजाउणे रत्न, अमोलक हीरे मात प्रगटाईआ। जिन्हां दी लज्जया आउणी रखण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सच दवारे धुर दे वसण, दरगाह सच मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। धरनी कहे मेरा होया भाग उग्घा, उदे असत मिले वड्याईआ। प्रभ किरपा कीती उत्ते बसुधा, मेरी सुध दिती बदलाईआ। जिस पार करना कलयुगा, चौथे जुग डेरा ढाहीआ। मानव ज़ाती इक्को दस्सणा मुद्दा, जो मुद्दत दा मालक सोभा पाईआ। अगला भेव रहे ना लुका, ओहला अन्दरों देणा चुकाईआ। तन वजूद साफ़ कर के जुस्सा, ज़मीर देणी बदलाईआ। कूड़ी क्रिया मेट के गुस्सा, अमृत मेघ देणा बरसाईआ। भगत सुहेला सन्त रहे कोई ना रुस्सा, फड़ बाहों गले लगाईआ। बसुधा कहे मेरा पिछला पैंडा मुका, मुकम्मल दयां जणाईआ। मैं गोबिन्द धार तक्कया पुरख अकाल दा सुत्ता, दिलदार इक्को नज़री आईआ। जिस ने मार्ग जीवण जुग जगत दस्सणा उच्चा, उच्च अगम्म अथाह दया कमाईआ। प्रेम प्यार दस्सणा सुच्चा, संजम इक समझाईआ। उज्जल कराउणा गुरमुख मुखा, दुरमति मैल धुआईआ। भाग लगाए जननी कुख्खा, मेहर नज़र इक टिकाईआ। जन्म कर्म दा मेट दए दुखा, दर्दीआं दर्द रहे ना राईआ। घर उपजावे साचा सुखा, सांतक सति सति वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण धार कदे ना होवे जुदा, हर घट अन्तर आपणा मेल मिलाईआ।

✪ ४ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ कुलवन्त कौर दे गृह बस्ती खलील ✪

धरनी कहे मैं दिवस रैण घुंमां, भज्जां वाहो दाहीआ। जन भगतां पैर चुम्मां, जुग जुग आपणी सेव कमाईआ। पंडत पांधे छडां शेख़ मुल्ला, मुसायकां संग ना कोए रखाईआ। मैं चरणी धूढ़ लावां बुल्ल्हां, जो प्रभ दा नाम ध्याईआ। गृह वेखां ओस कुला, जो कुल भगत भगवान रूप वटाईआ। ओथे मिले स्वामी सुल्हकुला, सहिज दा मालक दया कमाईआ। जिस दी याद विच तड़फदा रिहा बुल्ला, फ़िकरे शहिनशाही गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे मैं आदि जुगादि नट्ठी, भज्जी वाहो दाहीआ। चार जुग दी वेखी खट्टी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग फोल फुलाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दी वेखी पट्टी, जो अक्खरां विच सतरां गए समझाईआ। नाम कलमे दी वेखी हट्टी, ग्रन्थ शास्त्र देण गवाहीआ। धार तकी अट्ठ सट्ठी, तीर्थ तट किनारे पड़दा लाहीआ। साची वस्त कितों ना मिले रती, नाम भण्डारा दात ना कोए वरताईआ। चारों कुण्ट विछोड़ा होया कमलापती, पतिपरमेश्वर मेल ना कोए मिलाईआ। बेशक मानव गाउंदे दन्द बत्ती, रसना जेहवा हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे मैं जुग जुग रही भज्जदी, भजन बन्दगी वाले वेख वखाईआ। पुरख अकाल रही लभ्भदी, गुर अवतार पीर पैग़म्बरां भार उठाईआ। बिरहों वैरागण हो के रही सद्द दी, होका हक हक जणाईआ। तेरी खेल नहीं चंगी लगदी, सच स्वामी लैणा मिलाईआ। क्यों मैनूं वणजारन कीता सारे जग दी, चुरासी लख जूनी मेरे उत्ते टिकाईआ। क्यों खेल कराई अग्ग दी, चार कुण्ट रही तपाईआ। क्यों वंड वंडाई दीन मज़्हब हद्द दी, मन्दिर मसीत रहे कुरलाईआ। सच खेल दस्स आपणी यद दी, विश्व पर्दा दे चुकाईआ। नाम खुमारी दे के मदि दी, धुन अगम्मी राग सुणाईआ। मैं खोजदी तैनूं कद दी, जुग चौकड़ी गए विहाईआ। घड़ी सुलखणी कर अज्ज दी, आप आपणा रंग रंगाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल बिन तेरे चरण कँवल किते ना सजदी, सोभावन्त सोभा पाए कोए ना थाँईआ। मैं मारी शर्म हया लज्ज दी, नैण सकां ना कोए उठाईआ। मेरे उत्ते झगड़ा प्या खेल होई मास नाड़ी हड्ड दी, मानव मानव फोल फुलाईआ। मैं तेरे प्यार मुहब्बत विच तेरा इक्को धर्म निशाना गड्डदी, मेरे गॉड होणा सहाईआ। हँस बुद्धी ना रहे कलयुग जीव कग्ग दी, गुरमुख गुर गुर लै उपजाईआ। ओह वेख तेरी सदी चौधवीं लँघदी, मंज़ल मंज़ल पन्ध मुकाईआ। हुण खेल दस्स आपणे अनन्द दी, अनन्दपुरी वाला नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल वखा आपणे नूरी चन्द दी, चन्द चांदना इक चमकाईआ।

✪ ४ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ हरी सिँघ दे गृह बस्ती खलील ✪

किरपा करे जोत रब्बी, राबता अवर ना कोए रखाईआ। मेरी मनसा पूरी होए सभी, दर घर सच मिले वड्याईआ। सच वस्त अमोलक लभ्भी, खोजण दी लोड़ रही ना राईआ। पुरख अकाल जोत जगी, अंध अंधेरा रिहा गंवाईआ। जिस लेखे लाउणी पैग़म्बरां वाली सदी, सदमे सब दे देणे गंवाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणी बदी, बदला चुकाए थांउँ थाँईंआ। मैं भगतां दे चरणां हेठ दब्बी, भार आपणे सीने टिकाईआ। क्यों उहनां दी प्रीत ओस नाल लग्गी, जिथ्थों सके ना कोए तुड़ाईआ। सतिजुग सति पुरख निरँजण दी चलणी गद्दी, बाकी नज़र कोए ना आईआ। धुर दे नाम दी लए कोए ना वढ्ढी, रिश्वत हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। ना कोई खाए मच्छी डड्डी, डण्डावत इक्को देणी जणाईआ। ना कोई झगड़ा मास हड्डी, तन वजूद ना कोए लड़ाईआ। इक्को धार दस्सणी बग्गी, बग बपड़े लैणे तराईआ। इक्को मंज़ल दस्सणी पदी, पतिपरमेश्वर इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। धरनी कहे मेरा हौला होणा भार, भारद्वाज गया जणाईआ। कलि कल्की लए अवतार, कलेश दए मिटाईआ। पैग़म्बरां पावे सार, अमाम नूर इलाहीआ। सब नूं करे दस्तबरदार, हुक्म धुर दा इक सुणाईआ। सति सच बणा सरकार, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। शब्दी गुरु बणा मुखत्यार, हुक्म इक्को इक सुणाईआ। सृष्टी दृष्टी पैज दए संवार स्वार्थ आपणा ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब नूं दए आधार, अदल इन्साफ़ इक कमाईआ।

✪ ४ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ संपूरन सिँघ दे गृह फ़िरोज़शाह ✪

धरनी कहे मेरी आसा पुन्नी, प्रभ दिती माण वड्याईआ। कलयुग अन्त पुकार सुणी, मेहर नज़र इक उठाईआ। वड दाता बण के गुणी, वस्त अमोलक आप वरताईआ। नाम शब्द दी दे के धुनी, सोई सुरती लई उठाईआ। भगत सुहेले

मात चुणी, हरिजन आपणे रंग रंगाईआ। भाग लगा के साची कुल्ली, काया बंक दवार वेख वखाईआ। प्रेम प्रीती वस्त दए अनमुली, अनमुलड़ी दौलत झोली पाईआ। लेखा मुकाया जाप रसना बुल्ल्हीं, हिरदे वस के अन्तर आत्म रंग रंगाईआ। गुरमुख आत्म रहे ना भुल्ली, फड़ बाहों आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। धरनी कहे मेरे उत्ते भगत सुहंदे, सच ध्यान लगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ गाउँदे छन्दे, शहिनशाह मिल के आपणी खुशी बणाईआ। बाहरों दिसदे तत्तां वाले बन्दे, अन्दर निरगुण जोत रुशनाईआ। छड के रसन विकार गंदे, हरि सिमरन विच ध्यान रखाईआ। नेत्र नैणहीण होए ना अंधे, सच नेत्र ल्या खुल्हाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल बख्शंदे, मेहर नज़र इक उठाईआ। चुरासी विच्चों करके चंगे, चार वरनां विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। सदा सुहेला वस के संगे, सगला संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक दया कमाईआ। धरनी कहे मैं वेखे भगत प्यारे मीत, पुरख अकाल दिता जणाईआ। जिन्हां दी सब तों वक्खरी प्यारी रीत, सतिजुग साचा राह तकाईआ। खहिड़ा छड गए मन्दिर मसीत, काया काअबा ध्यान लगाईआ। जिथ्थे साहिब वसे अनडीठ, हरि करता डेरा लाईआ। आत्म परमात्म बणाए प्रीत, प्रीतम हो के मेल मिलाईआ। काया करे ठांडी सीत, अग्नी तत बुझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ गा के गीत, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। अट्ठे पहर वसे चीत, मन चित ठगौरी रहे ना राईआ। झगड़ा मुका के हस्त कीट, ऊच नीच इक्को घर वसाईआ। साचे नाम दी दे के भीख, भुक्ख्यां झोली दए भराईआ। एका छत्र झुल्ले सीस, दो जहान वज्जे वधाईआ। करे खेल आप जगदीश, जगदीश्र दाता धुरदरगाहीआ। लख चुरासी परखे नीत, वरन बरन खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी भगत सुहेला साचा मीत, मित्र प्यारा एकँकारा इक्को नज़री आईआ।

✪ ४ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ कपूर सिँघ दे गृह
सर्ब मालवा संगत नवित मोगा ✪

नानक बाबर दिती दात, दानी हो के दया कमाईआ। लेखा लिख्या बिन कलम दवात, काग़ज़ शाही ना कोए वड्याईआ। संदेसा दिता वेख प्रभू खेल तमाश, परवरदिगार रिहा जणाईआ। मैं दीन ना तकां ज़ात, मज़्हब ना वंड वंडाईआ। जो

परवरदिगार रिहा आख, सो संदेसा दयां जणाईआ। बिन अक्खरां वाला वाक, बिन हरफ़ हरूफ़ पढ़ाईआ। सिख्या मिले बिना उस्ताद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। नानक किहा सुण बाबर, तेरी बाबत गया जणाईआ। शब्द संदेसा देवे करता कादर, कुदरत दा मालक बेपरवाहीआ। तेरा कर्म होवे उजागर, मेहर नज़र उठाईआ। तूं धर्म दा बण सौदागर, वणज वपारा इक दृढ़ाईआ। सच दवारे मिले आदर, आदर्श इक वखाईआ। कूड़ी क्रिया विच ना होवीं पाग़ल, माया ममता मोह हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सतिगुर नानक हथ्थ मारया आपणी उत्ते पेशानी, उँगली त्रै त्रै जणाईआ। फिर मंज़ल दस्सी रुहानी, बाहर अन्दर कीती रुशनाईआ। भेव खोल्ह जिस्मानी, ज़मीर दिती बदलाईआ। जोत दस्सी नुरानी, अंध दिता मिटाईआ। तीर मारया कानी, सोई सुरत जगाईआ। छड दे बेईमानी, क्रिया कूड़ तजाईआ। वेख आबेहयात पाणी, निझर दिता झिराईआ। सुण कलमा धुन्कानी, वाहिद लाशरीक दृढ़ाईआ। वेख ओस दी मेहरवानी, जो मेहरवान अख्वाईआ। तेरी शाही अन्तिम होणी फ़ानी, फनाह फिल्ला दिसे लोकाईआ। याद कर करबले वाली कुरबानी, हसन हुसैन नीर वहाईआ। वेख मुहम्मद वाली जवानी, की संदेसा रही दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। बाबर अन्तर खुल्ही अक्ख, छिन भंगर दया कमाईआ। नूर वेख प्रतख, नानक निरगुण सरगुण विच समाईआ। हकीकत लभ्भी हक, हउमे दिती मिटाईआ। ध्यान होया यक, वाहिद वेख वखाईआ। चरणी गया ढठ्ठ, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। कलमा रिहा रट, यामबीन तेरी वड्याईआ। नूर नुराना तेरा सच, जल्वागर रुशनाईआ। नानक पुश्त पनाह रख के हथ्थ, हलूणा दिता लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। नानक निरगुण दिती दात, सरगुण नानक संग मिलाईआ। बाहर धूढ़ी लाई ख़ाक, मस्तक आप छुहाईआ। मैं बरदा तेरा चाक, निउँ निउँ लागां पाईआ। नानक हस्स के किहा एह मेल तेरा इत्फ़ाक, इतफ़ाक्या मेल मिलाईआ। तेरा लहिणा देणा हिसाब, धुदरगाहों झोली पाईआ। वेखीं भुल्ल ना खाईं कबाब, इक्की दिन दिता समझाईआ। नौ वार रोज़ करया करीं आदाब, रोज़ा रख के झट लँघाईआ। पाक पवित्र रखणा मिज़ाज, हउमे गढ़ ना कोए बणाईआ। इक ख़ुदा दी रखणी याद, जो वाहिद नूर इलाहीआ। कुछ लेखा दस्सणा विच बग़दाद, बग़लगीर सर्ब कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पड़दा ओहला आप चुकाईआ। नानक हथ्थ रखया पुश्त पनाह, मेहर नज़र उठाईआ। बाबर बख्श तेरे गुनाह, कूड़ी क्रिया विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। मार्ग इक रिहा वखा, नेत्र

लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। वस्त अमोलक झोली पा, सति सति वंड वंडाईआ। अन्तिम अन्त दिता जणा, संदेशा सुणना धुरदरगाहीआ। तेरा लहिणा देणा चुक्के विच जहां, लोकमात रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। बाबर कदमबोसी करके गया झुक, कदमां सीस निवाईआ। अन्तर आपणा दस्सया दुःख, दुखड़ा दिता दृढ़ाईआ। नानक पड़दा रहे ना लुक, सच देणा समझाईआ। किस बिध मेरा पैंडा जावे मुक, होवे अन्त तबाहीआ। कवण योद्धा सूर पवे उठ, बलधारी लए अंगड़ाईआ। जेहड़ी दात दिती सत्त मुट्ठ, मुट्ठी खोल्ह के दे वखाईआ। बाबर खुशी नाल फड़ ल्या गुट्ट, हथेली नाल दबाईआ। सतिगुर नानक हो के चुप, अक्खां मीट ध्यान धराईआ। पुरख अकाल कोलों ल्या पुछ, सच संदेशा दे दृढ़ाईआ। श्री भगवान सुणाई अगम्मी तुक, धुर फ़रमाना इक जणाईआ। जिस वेले नानक तेरी धार मेरा शब्दी सतिगुर आवे सुत , गोबिन्द नाउँ धराईआ। इस दी जड़ अख़ीरी देवे पुट, बच्चे नीहां हेठ दबाईआ। मुहम्मद धार जाणी टुट्ट, टुटयां ना कोए गंढाईआ। उम्मती उम्मत होणा दुःख, दर्दीआं दर्द ना कोए वंडाईआ। मेरा भाणा ना जावे रुक, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। फेर गोबिन्द तत सरीर छड के जाणा उठ, लेखा तत्तां वाला चुकाईआ। झगड़ा रहे ना माटी बुत, बुतख़ाने जाए तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा इक सुणाईआ। पुरख अकाल किहा नानक सुण संदेश अथाह, अलख अगोचर हो के दयां दृढ़ाईआ। बाबर दे समझा, की बाबल कार कमाईआ। जिस वेले सृष्टी दृष्टी भरी गुनाह, पवित्त पाक ना कोए कराईआ। कायनात भुल्ले नाम खुदा, खुदग़रजी घर घर डेरा लाईआ। साचा कलमा रहे ना कोए अदा, अदब मज़्हब ना कोए जणाईआ। ओस वेले खेले खेल बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। गोबिन्द दुलारा लए उठा, योद्धा सूरबीर प्रगटाईआ। अन्तिम लहिणा देणा देवे पूर करा, करनी दा करता वेख वखाईआ। ओस दे अग्गे करे इक दुआ, दोए जोड़ मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा इक खुल्हाईआ। पुरख अकाल किहा नानक नानक नानक तेरी जोती अन्तिम धार दस, दशमेश मिले वड्याईआ। किसे दा रहे किछ ना वस, वास्ता प्रभ दे अग्गे पाईआ। नौजवाना आवे नस्स, लोकमात लए अंगड़ाईआ। तीर अणयाला मारे कस, शाह सुल्ताना बल प्रगटाईआ। अन्तिम एस दा खेड़ा करे भट्ठ, लोकमात रहिण ना पाईआ। फेर आपणा सरीर जावे छड, नाता जगत तत हंढाईआ। मेरी जोत धार जाए वस, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। फिर सदी चौधवीं होवे प्रगट, निरगुण निरगुण आपणी कार कमाईआ। सति धर्म दा खोल्ह के हट्ट, दीनां मज़्हबां झगड़ा दए मुकाईआ। एह खेल कराउणा पुरख समरथ, दीन दयाल पड़दा रिहा चुकाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। पुरख अकाल किहा नानक सुण संदेसा अगम्म अथाह, हरि करता आप दृढ़ाईआ। चारों कुण्ट निगाह उठा, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण वेख वखाईआ। तेरी मेरी इक सलाह, मशवरा अवर ना कोए जणाईआ। शब्दी शहादत देवां भुगता, गवाही गुरु गुर दृढ़ाईआ। मैनूं कहिंदे जल्वागर खुदा, पैग़म्बर कल्मयां विच सिफ्तां विच आयतां विच शरायतां विच गाईआ। मैं खेलां खेल दो जहां, जहालत वेखां थांउँ थाँईआ। तूं बाबर दे समझा, हुक्म संदेशा नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर नानक बाबर कीता इशारा, सैनत नाल दृढ़ाईआ। सुण संदेशा परवरदिगारा, खुद खुदा की जणाईआ। तेरा लेखा मुकणा विच संसारा, लोकमात रहिण ना पाईआ। गोबिन्द आवे प्रभ दा सुत दुलारा, योद्धा सूरबीर अख्वाईआ। जिस दा खण्डा होवे दो धारा, कूड़ी क्रिया करे सफ़ाईआ। ग़रीब निमाणयां दए सहारा, कोझे कमल्यां गले लगाईआ। बाबर खुशी विच कीती निमस्कारा, सीस दिता निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। बाबर नानक चरण कीती निमस्कार, निउँ निउँ लागा पाईआ। उहदे नाल सी राजपूत सरदार, योद्धा सूरबीर अख्वाईआ। ओस नानक दी धूढ़ी लाई छार, रसना चरण चुम्म के खुशी मनाईआ। नेत्र रो कीती पुकार, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। जे बाबर दिता तार, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मैं वी मंगता तेरे दरबार, दर तेरे अलख जगाईआ। मैं दर्शन करना चाहुंदा गोबिन्द सुत दुलार, जो सूरबीर अख्वाईआ। भावें आउणा पए दूजी वार, लोकमात फेरा पाईआ। किरपा कर नानक ढहि प्या तेरे दवार, दर तेरे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। नानक बाबर कीता सजदा, सीस सीस निवाईआ। मैं तेरा नफ़र बरदा, सेवक सेव कमाईआ। भिखारी तेरे दर दा, भिक्खक झोली डाहीआ। आसा इक रखदा, मनसा दयां जणाईआ। मेरे अन्तर कोई दस्सदा, नानक सेवा लै कमाईआ। सच सच खेल तेरे जस दा, सिफ्तां विच वड्याईआ। तूं लहिणा देणा देणा हक दा, हकीकत तेरे दर सोभा पाईआ। तेरे कोल भण्डारा बुधि मति दा, वस्त अगम्म वरताईआ। मैं पुतला पंज तत दा, गुनाहां भरया नज़री आईआ। बाबर फेर चरण ढहुदा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। नानक सतिगुर कीती मेहरवानी, हथ्थ सीस दिता टिकाईआ। तेरी आशा ना रहे नादानी, दिती माण वड्याईआ। इक्को शब्द तुक गाणी, बाबर दयां समझाईआ। जिस दर ते कलमा मंगे पाणी, रहिबर प्यास बुझाईआ। पैग़म्बर ना कोए निशानी, तत ना कोए वखाईआ। देणी ना पए कुरबानी, सीस धड़ ना कोए कटाईआ। ओह खेल शाह सुल्तानी, हरि

सच सच समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। बाबर फेर कीता अदब, नानक सीस निवाईआ। सद मेरी करनी मदद, सतिगुर तेरी ओट तकाईआ। जगत मेटणा तशदद्, झगड़ा रहे ना राईआ। झगड़ा चुकाउणा एका दूआ अदद, अदालत हक कमाईआ। नानक आपणे चरणां दा वखाया पदम, बाहर नैण दरसाईआ। उस लम्मा पै के चुम्म लए कदम, कदीम दा लेखा दए मुकाईआ। हलूणा आया बदन, सुरत रही ना राईआ। दीपक लग्गा जगण, अंध अंधेर गंवाईआ। नानक निरगुण धार हो के मग्न, सच संदेशा इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। बाबर अन्तर आया प्यार, प्रेम प्रीती विच सीस निवाईआ। गलों लाह के जड़ाऊ हार, साढे तिन्न दा नानक चरणां भेंट कराईआ। फेर धूढ़ी ला के छार, उँगलां कन्नां विच पाईआ। उच्ची कूक किहा पुकार, या अलाह तेरी वड्याईआ। मेरे पैग़म्बरां दे सिक्दार, साहिब तेरी सरनाईआ। मुक्खों हस्स के किहा मैं तेरा बरखुरदार, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। आह मुहब्बत दा उधार, तेरे चरणां भेंट चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नानक हार फड़ाया हथ्थ, बाबर दिता जणाईआ। एह मैं की करनी वथ, तेरी तोहे भाईआ। बाबर झुक गया झट, सीस कदमां विच टिकाईआ। एह आपणे कोल रख, मैं अज्ज सेवा की कमाईआ। तूं शहिनशाह अलख, दो जहान सोभा पाईआ। मैं भिखारी मंगण वाला भख, दर दरवेश नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। नानक किहा मैं की करना तेरा हार, हिरदा आपणा वेख वखाईआ। मैं छड्डया तन श्रृंगार, वस्त्र तन ना कोए छुहाईआ। मैं फिरां जंगल जूह उजाड़ पहाड़, चक्की तेरे दर चलाईआ। मैं आसा छड्डी पुरख नार, पुरख अकाल इक मनाईआ। मैं छड दिता घर बाहर, गृह मन्दिर कूड़ तजाईआ। मैं हुक्म मन्नां सच्ची सरकार, जो देवे धुरदरगाहीआ। लै आपणी वस्त संभाल, मेरे कम्म किसे ना आईआ। बाबर फिर किहा तूं पातशाह मैं कंगाल, नानक तेरा बरदा नज़री आईआ। तेरा जोती नूर जलाल, जल्वागर रुशनाईआ। मैं तेरे कदमां दिता संभाल, मैनूं लोड़ रही ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। बाबर फेर टेक्या मथ्था, सीस सत्त वेरां रगढ़ाईआ। ओस दे अन्दरों आवाज़ आई सुण अगम्मी कथा, कलमा हक जणाईआ। गोबिन्द धार आउणा यथार्थ यथा, सरगुण आपणा वेस वटाईआ। जिस कल्गी तोड़ा सुहाउणा सोहणा अच्छा, अच्छी तरह समझाईआ। जिस ने तेड़ सुहाउणा कच्छा, कछिहरा दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अकाल बणाउणा आपणा बच्चा, पूत सपूता इक प्रगटाईआ। बाबर

अन्तर आई विचार, निरन्तर वेख वखाईआ। गोबिन्द सूरबीर सिक्दार, योद्धा इक अगम्म अथाहीआ। जिस दा तन वजूद शृंगार, माटी ख़ाक ख़ाक वड्याईआ। तक्कया नाल प्यार, नैण अक्ख खुल्हाईआ। फिर नानक अग्गे कीती पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। एह गोबिन्द दे गल देणा डार, अमानत तेरी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नानक किहा बाहर होर वेख नज़ारा, नज़र नैण उठाईआ। की खेल करे परवरदिगारा, बेपरवाह अगम्म अथाहीआ। की मुहम्मद देवे सहारा, लोकमात दया कमाईआ। औह तक्क सदी चौधवीं अन्त किनारा, नईया नौका पार ना कोए कराईआ। फेर वेख गोबिन्द धार आउणा दुबारा, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। सम्बल नगर करे मज़ाहरा, हुक्म संदेशा इक सुणाईआ। तेरा ओस दे नाल अधारा, दीन दयाल रिहा जणाईआ। मेरा वेख अगम्म इशारा, तैनूं दयां दृढ़ाईआ। तेरे नाल जो राजपूत तेरा सरदारा, हौलदार सोभा पाईआ। हुण इस दे कर हवाला, सांभ के रखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। बाबर ने हार ओस नूं दिता फड़ा, सहिज नाल उठाईआ। मुक्खों किहा तेरा शुकर बड़ा, बड़े दी बड़ी वड्याईआ। नानक किहा गोबिन्द दी निशानी होणी कड़ा, बाबर तेरा बाबल रिहा जणाईआ। जिस ने फेर कलयुग अन्तिम दीन दुनी दा मेटना धड़ा, मज़्हब रहिण कोए ना पाईआ। सच दवारे होवे खड़्हा, दरगाह साची आप सुहाईआ। सब नूं फड़ाया होवे लड़ा, पल्लू आपणा गंढ पवाईआ। जिस वेले खेल करे नरायण नरा, कलयुग अन्तिम वेस वटाईआ। जगत जुग मेटे शरीअत शरअ, शाह पातशाह आपणी कार कमाईआ। सब दा फोले मन्दिर गृह घरा, साढे तिन्न हथ्थ पड़दा आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। बाबर किहा मैं नानक अन्जाण, समझ किछ ना आईआ। तूं मेरी सेवा कीती परवान, मेहर नज़र टिकाईआ। हथ्थ फड़ाई नौजवान, जो तैनूं सीस निवाईआ। अगला खेल जाणे तूं आपे आप महान, मोहे समझ ज़रा ना आईआ। नानक हस्स के किहा एह हुक्म मेरे मेहरवान, महिबूब रिहा समझाईआ। जिस वेले पुरख अकाला प्रगट होवे विच जहान, गोबिन्द योद्धा सूर नाल रलाईआ। ओस वेले उस नूं जन्म ज़रूर मिले इन्सान, गुरमुख सोहणा नज़री आईआ। लहिणा देणा पूरा होवे (जहान), जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच पर्दा आप चुकाईआ। नानक किहा बाबर की तैनूं समझाउणा, समझ दी लोड़ रहे ना राईआ। गोबिन्द तेरा अन्त कराउणा, गद्दी तों गदागर दए बणाईआ। आपणा तन वजूद सच रूप भेंट चढ़ाउणा, गुर अर्जन नाम धराईआ। तेग़ बहादर सीस कटाउणा, दिल्ली दवार वज्जे वधाईआ। गोबिन्द पुर

अनन्द तजाउणा, एह मेरा खेल अगम्म अथाहीआ। मात पित बंस सरबंस वार वखाउणा, वारता आपणी आप जणाईआ। माछूवाड़ा सेज सहाउणा, सथ्थर यारड़ा इक हंढाईआ। पुरख अकाल इक मनाउणा, दूसर सीस ना किसे झुकाईआ। फिर आपणा आप तजाउणा, साढे तिन्न हथ्थ डेरा ढाहीआ। सचखण्ड साचा इक वसाउणा, जोती जोत जोत मिल जाईआ। फेर पुरख अकाल मनाउणा, अबिनाशी करता संग रखाईआ। कलि कल्की वेस वटाउणा, अमाम अमामा नाउँ धराईआ। शब्दी धार संग रखाउणा, गोबिन्द गोबिन्द जोड़ जुड़ाईआ। सम्बल नगर इक वसाउणा, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे वधाईआ। बाबर लहिणा पूर कराउणा, नानक निरगुण दए गवाहीआ। सम्मत शहिनशाही पंज वक्त सुहाउणा, वदी सुदी ना कोए रखाईआ। राजपूत सपूत फेर उठाउणा, लोकमात जन्म दवाईआ। ओस दा वेला वक्त वडयाउणा, मेहर नज़र नाल तराईआ। पूरब कर्ज़ा आपे लौहणा, मकरूज लेखा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। बाबर किहा मेरे हज़ूर, हज़ूरीए नानक सीस निवाईआ। मेरे बख्श लईं कसूर, कसम खा के सीस झुकाईआ। मैनूं शरअ ना करे मजबूर, कलमे वाली दुहाईआ। मेरा पार उतारना पूर, बेड़ा मञ्झ ना कोए रुढ़ाईआ। मैं निउँ निउँ लावां चरणां धूढ़, ख़ाकी ख़ाक रमाईआ। जे मेरा किहा पूरा करना गोबिन्द ज़रूर, ओसे दी झोली पाईआ। जेहड़ा तेरा होणा नूर, नूर नूर रुशनाईआ। सच जणाए दस्तूर, दस्त आपणा दस्त उठाईआ। शरअ मेटे कूड़, क्रिया दए गंवाईआ। ओस दा संग एस नूं देणा जरूर, जिस नूं हार दिता फड़ाईआ। एसे कारन लहिणा देणा होया सिँघ कपूर, कपूर दा नूर दिता चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। नानक किहा खेल होणा नाल फेर कपूर, सिँघ मिले वड्याईआ। लेखा मुकावे सर्ब गुणां भरपूर, बेपरवाह अगम्म अथाहीआ। जिस दर सारे मंगण धूढ़, गुर अवतार पैग़म्बर ध्यान लगाईआ। जो चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, दुरमति मैल कर सफ़ाईआ। एका बख्श के आपणा नूर, नूर नुराना चन्द चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। नानक कहे गोबिन्द लहिणा, सच सच सच समझाईआ। शहिनशाही सम्मत पंज अन्तिम अन्तिम पए देणा, लेखा लेखे विच जणाईआ। भगत भगवान वखाए आपणे नैणा, नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पोह छब्बी थित समझाईआ। छब्बी पोह नूं खेल खिलाउणा, हरि ख़ालक दया कमाईआ। मालवे वाल्यो सोहँ मथ्थे विच लटकाउणा, मटक नाल आउणा चाँईं चाँईंआ। प्रभ दे घर सब ने बण के जाणा पराहुणा, पूरन आसा नाल रखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाउणा, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। इक्की गुरमुखां सवा हथ्थ पल्लू पग्ग पीले रंग

रंगाउणा, गोबिन्द रंग देणा चमकाईआ। इक्की बीबीआं पीला मस्तक तिलक लगाउणा, नाल गोबिन्द लिखणा चाँईं चाँईंआ। इक्की गुरमुखां सज्जा हथ्थ सीस टिकाउणा, खब्बा कन्न उत्ते रखाईआ। इक्की बीबीआं हथ्थ विच सोहँ महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान दी जै लिख के उठाउणा, साढे तिन्न हथ्थ लम्बाई विच समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। छब्बी पोह कहे मैनूं प्रभ ने देणी शाबाश, जन भगतां नाल वड्याईआ। सब दी पूरी करनी आस, निरासा नज़र कोए ना आईआ। इक्की गुरमुखां हथ्थ विच फड़या होवे नीले रंग दा बणा आकाश, सितारे सत्त सत्त चमकाईआ। इक्की बीबीआं होवण इक्को जात, ढोला इक्को गावण धुर दा माहीआ। इक्की गुरमुखां करदे आउणा अदाब, दोवें हथ्थ मस्तक उत्ते टिकाईआ। इक्की बीबीआं ढोले गावण पुरख अकाल तूं ही माई बाप, नाता कूड़ दिता छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। छब्बी पोह कहे इक्की गुरमुख मारदे आवण ताली, ज़ोर ज़ोर लगाईआ। इक्की बीबीआं सिर चुन्नी लै के काली, कलयुग कूड़ी क्रिया देण दबाईआ। इक्की गुरमुख दिने मसालां आवण बाली, सज्जे हथ्थां विच टिकाईआ। इक्की बीबीआं हथ्थ विच फड़ के थाली, ज़ोर ज़ोर नाल खड़काईआ। इक्की गुरमुख जगत जिज्ञासू बणे होण हाली, आप आपणा वेस बदलाईआ। इक्की बीबीआं सिर ते चुक्कया होवे पाणी, बरतन वडा छोटा ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। छब्बी पोह कहे मेरा दिवस होणा उग्घा, उगण आथण मिले वड्याईआ। मालवे वाल्यो इक ल्याउणा बुड्ढा, जेहड़ा रोज़ प्रभ नूं गालां कढ के आपणा झट लँघाईआ। सौंदा होवे उत्ते बसुधा, खटीआ खाट ना कोए रखाईआ। नाल ल्यावे कोरा कुज्जा, माटी बरतन सोभा पाईआ। इक बीबी आवे जेहड़ी पूजदी रही गुग्गा, सेवीआं थाल भराईआ। नाल कटोरा होवे दुद्धा, मज्झ गाँ ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी दी कार कमाईआ। छब्बी पोह कहे मालवे वाल्यो नौ बणे होण मलाह, खेवट खेटा रूप बणाईआ। जेहड़ी गोबिन्द कपूरे नूं दे के गया सलाह, उस दा पर्दा देणा खुल्हाईआ। काग़ज़ दी बेड़ी काने दा चप्पू लैणा उठा, कलयुग दी नईया देणी वखाईआ। विच पंज पंज तिनके रखणा घाह, सुक्का गिल्ला ना कोए वड्याईआ। विचली चोटी ते लिख के रखणा खुदा, खुद मालक तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। छब्बी पोह कहे इक्की बीबीआं दे हथ्थ विच होवे इक इक मोमबत्ती, जो शमां रूप बदलाईआ। उन्हां विच्चों किसे दा मरया होवे ना पती, सुहागणां मिल के खुशी मनाईआ।

१६२
२२

किसे दे अन्दर वा ना होवे तत्ती, हउमे रोग ना कोए सताईआ। जन्म दीआं होवण जती, बिना पती तों अक्ख ना कदे मिलाईआ। मस्तक लिखी होवे पट्टी, पटने वाला धुर दा माहीआ। ओनॄां दी ज़ात होवे जट्टी, दूसर संग ना कोए रखाईआ। सब दी कन्नी तों कमीज़ होवे फटी, साबत नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा इक सुणाईआ। छब्बी पोह कहे पंज गुरमुख बणे होवण पारसी, पारस लोहा सोना कंचन रूप बदलाईआ। इक इक तुक पढ़दे होवण फ़ारसी, आलमां फ़ाज़लां तों परे पढ़ाईआ। कृष्न दी करदे होवण आरती, दीपक थाल विच टिकाईआ। मुहब्बत रखदे होण इक यार दी, एकँकार इष्ट मनाईआ। उनॄां दी आयू होवे इक धार दी, वड्डा छोटा ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। छब्बी पोह कहे मैं याद कराउंदा पिछली बीती, कथा कहाणी रिहा दृढ़ाईआ। नौआं गुरमुखां साफ़ कर के आउणा नीती, पगड़ी पुट्ठी सिध्धी सीस बंधाईआ। लाल निशान लाउणा खब्बे हथ्थ दी उँगली चीची, अग्गे वास्ते भगतां विच चीचक दा रोग रहे ना राईआ। अन्दरों बदल के आउणा नीती, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। आत्मा परमात्मा लग्गी होवे प्रीती, प्रीतम मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। छब्बी पोह कहे प्रभ दी जोत जगी, जगत होई रुशनाईआ। पंजां बीबीआं सीस ते पा के आउणी सग्गी, परांदा लाल रंग रंगाईआ। लहिणा मुकणा चौधवीं सदी, सदमा मुहम्मद देणा वखाईआ। पिछली रहिणी नहीं कोई गद्दी, गदागर होवे लोकाईआ। प्रभ दे नाल भगतां प्रीत होवे लग्गी, अग्गे सके ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। छब्बी पोह कहे मेरा रहे कोई ना रोसा, रुस्सयां लवां मनाईआ। पंजां गुरमुखां बन्नॄ के आउणा भोथा, एह रीती पिछली देणी वखाईआ। पंजां बध्धा होए लंगोटा, तेड़ कछहिरा ना कोए सुहाईआ। पंजां बीबीआं लाया होवे लाल रंग दा गोटा, सीस दुपट्टा दए वड्याईआ। सज्जे हथ्थ दा रंगया होवे पीला पोटा, अंगूठा लाल रंग सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। छब्बी पोह कहे मेरा वक्त सुहाना, सोहणिओ दयां जणाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन भगत सुहेले बण के आउणा आप पराहुणा, आपणा पन्ध मुकाईआ। मन हँकार ना किसे रखाणा, हउमे विच ना कोए वड्याईआ। दर ओस प्रभू दे जाणा, जिथ्थे साची जगॄा मिले वड्याईआ। दरगाह साची जिस पुचाणा, सचखण्ड दवार टिकाईआ। आदि अन्त दा लेख मुकाउणा, मुकम्मल लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण

१६२
२२

नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहिणा देणा आदि जुगादि नित नवित चुकाए विच दो जहानां, अवतार पैग़म्बर गुर विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर नर जन बचया रहिण कोए ना पाईआ।

✪ ५ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ कपूर सिँघ दे गृह
मालवा संगत नवित मोगा ✪

पुरख अकाल अगम्मी डंका, धुर शब्द नाम जणाईआ। संदेशा देवे आदि अन्ता, हरि करता बेपरवाहीआ। जिस दा खेल जुगा जुगन्ता, निरगुण सरगुण कार कमाईआ। कलयुग अन्तिम बंस सुहाए बंका, साढे तिन्न हथ्थ मिले वड्याईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगता, हँ ब्रह्म इक जणाईआ। मेल मिलावे साची संगता, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए रखाईआ। बोध अगाधा बुद्धी तों परे हो के पंडता, निष्अक्खर अक्खर धार दए जणाईआ। सब दी लाहवे ममता, चिन्ता हउमें रोग मिटाईआ। जन भगत सुहेले देवे साचा निशचा, धीरज धीर धराईआ। अग्गे सतिजुग मार्ग लग्गणा इस दा, गुर अवतार पैग़म्बर बैठण सीस निवाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप सतिजुग रूप होणा साचे सिख दा, सिख्या साहिब सुल्तान पुरख अकाल इक जणाईआ। इष्ट मन्नणा गोबिन्द धार अगम्मे पित दा, परमेश्वर इक्को सोभा पाईआ। झगड़ा रहिणा नहीं दीन मज़्हब हिस दा, ज़ात पात वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दा लेखा आदि जुगादि कोई ना लिखदा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी सिफ्तां कर कर सिफ्त सालाहीआ। सो जुग जुग धार आप नजिठ्ठदा, कलयुग वेखे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक उपजाईआ। साचा हुक्म शब्द अकाल, हरि करता आप दृढ़ाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु नाल, त्रैगुण लहिणा रिहा उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सुरत संभाल, सोई सुरती आप जगाईआ। लेखा वेखो जीव जहान, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। साचा इष्ट रिहा ना कोए इन्सान, दृष्ट विशेष ना कोए बणाईआ। भय रिहा ना सीता राम, कृष्न काहन ना कोए वड्याईआ। पैग़म्बरां भुल्लया पैग़ाम, सजदा हक ना कोए रखाईआ। मन्त्र फुरे ना सतिनाम, चारों कुण्ट पई दुहाईआ। वाहिगुरु मन्ने कोई ना आण, गोबिन्द सीस ना कोए निवाईआ। सृष्टी दृष्टी होई बेईमान, माया ममता विच हल्काईआ। शरअ छुरी बणी जहान, कत्लगाह दिसे लोकाईआ। सदी चौधवीं साबत रिहा ना किसे ईमान, मुल्ला शेख़ मुसायक नेत्र नैणां नीर वहाईआ। चारों कुण्ट दिसे वैरान,

वैरी घर घर मन मनुआ डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच पड़दा आप उठाईआ। पुरख अकाल कहे हुक्म अगम्मा देणा मात, लोक परलोक आप जणाईआ। कलयुग मेटणी अंधेरी रात, सुहञ्जणी सतिजुग सच चन्द रुशनाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर रखणे साथ, निरगुण धार निरगुण रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं खेल वखाउणा साख्यात, पर्दा ओहला मात चुकाईआ। वेखो जो दस्स के आए मेरे नाम दी गाथ, कलमा कायनात पढ़ाईआ। तुहाडे उत्ते रिहा ना किसे विश्वाश, विषयां भरी लोकाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मड्ड हुन्दा घात, गुरदवारे कूड़ कूड़ हल्काईआ। आत्म परमात्म जुड़े किसे ना नात, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। सति धर्म दा निकले ना कोई वाक, लेख सिफ्त ना कोए सालाहीआ। जिधर तक्को साध सन्त कलयुग होए गुस्ताख़, सांतक सति ना कोए वरताईआ। साची मंज़ल चढ़े कोई ना घाट, अधवाटे बैठे मारन धाहीआ। रूह बुत पैग़म्बरो होया किसे ना पाक, अवतारो पतित पुनीत ना कोए जणाईआ। मानस जाती इक्को ज़ात, क्यों दीन मज़्ब करे लड़ाईआ। सच दा रिहा ना कोए इख़्लाक, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। तुहाडी उम्मत होई गुस्ताख़, चारों कुण्ट कूड़ दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर फ़रमाना इक आप जणाईआ। पुरख अकाल कहे मेरा हुक्म अगम्म अपार, अनदृष्ट दयां जणाईआ। सब दा लहिणा देणा मुकाउणा विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी लए उठाईआ। झगड़ा रहे ना गुरु अवतार, पैग़म्बर वंड ना कोए वंडाईआ। साची सिख्या देणी सिखाल, आत्म परमात्म भेव खुल्हाईआ। काया मन्दिर सच्ची धर्मसाल, काअबा इक्को नूर इलाहीआ। जिथ्थे वसे परवरदिगार, पारब्रह्म जोत रुशनाईआ। शब्द नाद धुन शृंगार, अनहद नादी नाद शनवाईआ। अमृत झिरना निझर ठंडा ठार, अग्नी तत तपाईआ। त्रैगुण माया ना सके साड़, हउमे रोग ना कोए जलाईआ। तत रहे ना बहत्तर नाड़, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक वखाईआ। पुरख अकाल कहे अवतार पैग़म्बर गुर खेल वेखो अपरम्पर, अगम्म दयां जणाईआ। भेव चुकाउणा सब दा अन्तर, अन्तष्करन वेखणा थांउँ थाँईंआ। सतिजुग सच चलाउणा मन्त्र, नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप इक्को इक पढ़ाईआ। चार वरन बणा के बणतर, हरिजन साचे लैणे उपजाईआ। झगड़ा मेट गगन गगनंतर, ज़िमीं असमानां डेरा ढाहीआ। सच संदेशा दे के अगम्मा सन्तन, सति सतिवादी करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर करता अगम्म अथाहीआ। गुर अवतार पैग़म्बर लोकमात देणी दात, हरि सतिगुर आप दृढ़ाईआ। झगड़ा मेट दीन मज़्ब ज़ात पात, ऊच नीच ना कोए वखाईआ। चार जुग तुसां लेखा लिख्या नाल कलम दवात, काग़ज़ शाही जोड़ जुड़ाईआ। मेरे हुक्म

शब्द संदेश नूं नाम कलमा बाणी आए आख, अक्खरां विच अक्खर जोड़ जुड़ाईआ। मेरा दरस कराया ना किसे साख्यात, सति सरूप ना कोए जणाईआ। जुग जुग सारे तुहाडा लहिणा रहे वाच, वाचक हो के करन पढ़ाईआ। ऐस वेले आपणयां दीनां मज़्बां विच मारो झाक, पड़दा अन्तर अन्दर उठाईआ। साची दिसे ना कोई गाथ, प्रेम प्रेम ना कोए पढ़ाईआ। तुहाडा देवे कोई ना साथ, गुर चेले बैठे मुख भवाईआ। मुर्शद मुरीदां रिहा कोई ना साथ, नातवां हो के पल्लू लओ छुडाईआ। सदी चौधवीं आपणा आपणा लेखा वेखो हिसाब, पर्दा पर्दे विच्चों उठाईआ। की लेखा लिख्या पिछला पहला हिस्सा ते पहला बाब, बाबत तुहाडी की जणाईआ। कलयुग अन्त जिस वेले पुरख अकाला दीन दयाला प्रगट होवे आप, जोती जाता जोत करे रुशनाईआ। सब दा लेखा जाणे लहिणा देणा पूरब जाप, जगजीवण दाता आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। धुर फ़रमाना देवे पुरख अकाला, अकल कलधारी आप जणाईआ। सतिजुग मार्ग दस्सणा सुखाला, रहिबर हो के देणा दृढ़ाईआ। आत्म परमात्म मन मणका फेर के माला, मार्ग इक्को देणा समझाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक साढे तिन्न हथ्थ वस सच्ची धर्मसाला, गृह मन्दिर देणा जणाईआ। जिथ्थे नाद धुन शब्द अगम्मी वज्जे धुन्काना, रसना जेहवा बत्ती दन्द दी लोड़ रहे ना राईआ। अमृत रस निझर झिरना बूंद स्वांती कँवल नाभी मिले महाना, अट्ठ सट्ठ तीर्थ गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती भज्जण दी लोड़ रहे ना राईआ। घर दीपक जोत जोत कर नुराना, बिन तेल बाती कमलापाती अंध अंधेरा दए गंवाईआ। सच भूमिका दस्स अस्थाना, सेज सुहञ्जणी इक वखाईआ। जिथ्थे पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जोती जाता नौजवाना, स्त्री मर्द रूप ना कोए वटाईआ। जिस नूं झुकदे ज़िमीं असमाना, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल लागण पाईआ। जिस दर तों अवतार पैग़म्बर गुरु दरवेश हो के मंगण दाना, ख़ाली झोलीआं अग्गे डाहीआ। पुरख अकाल जुग जुग देवे आपणा नामा, नाम नामां झोली पाईआ। किसे नूं किहा सुणा दे मात रामा, किसे नूं कृष्न कृष्न नाल परचाईआ। किसे अल्ला दा दे पैग़ामा, पैग़म्बरां करी पढ़ाईआ। किसे नूं भेव खुल्हा के सतिनामा, सति सति दिता जणाईआ। किसे नूं वाहिगुरु दे निशाना, निशाना धर्म वाला दरसाईआ। चार जुग प्रभ आपणा लाउंदा रिहा बहाना, पूरन भेव ना किसे खुल्हाईआ। बेअन्त करके सारयां गाया ओस दा गाणा, गा गा के आपणा शुकर मंनाईआ। हुक्मे अन्दर मन्नदे गए भाणा, सिर सक्या ना कोए उठाईआ। दीनां मज़्बां वंड वंडाना, मानव मानव नाल टकराईआ। साचा रंग ना किसे चढ़ाणा, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई इष्ट मन्नण थाउँ थाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। पुरख अकाल कहे अवतार

पैग़म्बर गुरु चुक्क लओ पड़दा, सचखण्ड निवासी हो के दयां जणाईआ। ध्यान मारो उत्तर पूरब पच्छम दक्खण लहिंदा चढ़दा, बिना अक्खां अक्ख उठाईआ। दीन मज़्ब तुहाडा वेखो लड़दा, अल्ला वाहिगुरु राम नाम खण्डा खड़ग खड़ग खड़काईआ। मेरी मंज़ल हकीकी साचे दर कोई ना चढ़दा, दरगाह साची मिलण कोए ना आईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द सिख मुरीद तुहाडा पढ़दा, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। क्यों नहीं लोकमात विच कलयुग जीव तरदा, नईया पार ना कोए लगाईआ। क्यों इशनान मिले ना साचे सरोवर गृह सर दा, सरोवर सच ना कोए नहाईआ। क्यों लेखा चुक्कया अट्ठ सट्ठ जल दा, थल पई दुहाईआ। आपणा आपणा लेखा वेखो चौधवीं सदी कलि दा, कलयुग की की कार कमाईआ। माण रिहा ना तुहाडी शब्दी धार गल्ल दा, अक्खरां अक्खरां वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। अवतार पैग़म्बर कहिण असां आपा आप तक्कया, तक्की ख़लक ख़ुदाईआ। फिरे मदीने मक्कया, मन्दिर मस्जिद फोल फुलाईआ। मानव साचा कोई ना लभ्भया, हउमे रोग ना कोए मिटाईआ। माया ममता विच तपया, पंडत पांधा मुल्ला शेख़ बणया कसाईआ। असीं हैरान हो गए किथ्थे गया साडा नाम जपया, जो कलमा ख़ुद ख़ुदा तेरा आए जणाईआ। साचा खेड़ा कोए ना वसया, साढे तिन्न हथ्थ वज्जी ना कोए वधाईआ। मानव इक दूजे दी करन हत्या, मज़्ब मज़्ब नाल लड़ाईआ।

१६६

२२

एह लड़ना पैग़म्बरां अवतारां गुरुआं दस्सया, सांतक सति ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण करनी दे करते तेरा कीता रिहा हो, दूजी अवर ना कोए चतुराईआ। चारों कुण्ट वध्या धरो, दरोही दरोही नाम ख़ुदाईआ। सच दी रही कोई ना लो, निज लोचण नैण ना कोए खुल्ल्हाईआ। गुरु चेले टुट्टा मोह, पिता पूत पई लड़ाईआ। हुण असीं वी तेरे जोगे गए हो, अग्गे हुक्म ना कोए सुणाईआ। साथों सब किछ लै खोह, आप आपणे विच टिकाईआ। सानूं अगला हुक्म दस्सणा सम्मत शहिनशाही पंज ते छब्बी पोह, वदी सुदी ना कोए रखाईआ। तेरे दर ते सब दा इक्को होवे गरोह, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। तूं निरगुण धार असीं सरगुण रूप रहे ना दो, दूआ एके विच समाईआ। साचे नाम दे धागे लैणे परो, परहोतां दी लोड़ रहे ना राईआ। सतिजुग साचा बीज देणा बो, हर हिरदे आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। छब्बी पोह नूं दस्सणा रस्ता, हरि करते देणा समझाईआ। पिछला चार जुग बन्नउणा बस्ता, वस्त्र बन्धन आपणा इक समझाईआ। सब नूं एका धार करना वाबस्ता, वक्खरा रहिण कोए ना पाईआ। तेरा भगत सुहेला वेखणा हस्सदा, तेरी हस्ती विच समाईआ। सचखण्ड दरगाह साची तेरा सिफ्त सालाही इक्को नाम जस दा, दूजा

राग ना कोए अल्लाईआ। ओहो माण मातलोक देणा हक दा, मानव मानस आप समझाईआ। तेरा हुक्म होवे सच दा, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। लेखा चुकाउणा काया माटी कच्च दा, कंचन गढ़ देणी वड्याईआ। तेरा भगत दवारा इक्को होवे वसदा, जिथ्थे ज़ात पात दीन मज़्ब वरन बरन ना कोए रखाईआ। निशाना देणा अन्तर अक्ख दा, दिव्य नेत्र आप खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। पुरख अकाल कहे मेरा मार्ग होणा एक, इक इकल्ला दयां दृढ़ाईआ। सब दी साची होणी टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ ख़ाक रमाईआ। सतिजुग बुध करां बिबेक, दुरमति कूड़ी मैल धुआईआ। आत्म परमात्म दस्सां हेत, पारब्रह्म ब्रह्म जोड़ जुड़ाईआ। सतिजुग विच मुल्ला शेख़ पंडत पांधा ग्रन्थी मेरा नाम खाए कोई ना वेच, कीमत हट्टां विच पवाईआ। सब नूं सांझा दस्सणा इक्को देस, जिस सचखण्ड विच दिसे धुरदरगाहीआ। शब्द गुरु गुर प्रगट होणा आदि अन्त दा इक दशमेश, योद्धा सूरबीर अख्वाईआ। जिस ने चार वरन करने नेक, निक्कयां वड्डयां गले लगाईआ। लालच रहिण नहीं देणा किसे दा पेट, माया ममता मोह गंवाईआ। मन कल्पणा सारी जन भगतां करनी प्रभू दे भेंट, चरण कँवल टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। पुरख अकाल कहे शब्द गोबिन्द गोबिन्द शब्द सूरा होवे जग, जग जीवण दाता नाल रखाईआ। पैग़म्बरां दा पूरा करे हज्ज, हाजत अवर रहे ना राईआ। अवतारां पार करा के हद्द, हदूद आपणी दए वखाईआ। गुरु गुरदेव स्वामी सद्द, सद्दा इक्को इक समझाईआ। कलयुग अन्तिम रिहा लँघ, सदी चौधवीं दए गवाहीआ। अग्गे खेल सूरा सरबग, हरि करता आप कराईआ। कलयुग मेटे अंधेरा अंध, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ। आत्म परमात्म बख्शे धुर अनन्द पुरी अनन्द वाला नाल मिलाईआ। जन भगतां साचे सन्तां पावे ठंड, अग्नी तत अन्तर बुझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला धुर दा छन्द, आदि जुगादि गुर अवतार पैग़म्बरां रीती चली आईआ। आत्मा परमात्मा होवे पाबन्द, बन्धन सके ना कोए तुड़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणा भेख पखण्ड, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। दीन दयाल बण बख्शंद, रहमत रहीम रहमान आप कमाईआ। छब्बी पोह जुग चौकड़ी सारे मंगदे गए मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। गोबिन्द आपणी धार लाए अंग, अंगीकार इक अख्वाईआ। मालवे वाल्यो खुशीआं नाल मार के आउणा पन्ध, ग़मी संग ना कोए रखाईआ। जुग जन्म दी टुट्टी लैणी गंढ, अग्गे सके ना कोए तुड़ाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छे गए हंढ, कलि कल्की वेस ना मात वटाईआ। जिस दे अवतार पैग़म्बर गुरु संग, सगला संग वखाईआ। सब दा खुशी होवे बन्द बन्द, बन्दगी इक्को करनी धुर दे माहीआ। मन चाउ होवे वेखणा ओह गोबिन्द नूरी चन्द, जो दो जहान करे रुशनाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी दीन मज़्ब विच कदे ना होया पाबन्द, मालक ख़ालक प्रितपालक इक्को आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ कपूर सिँघ दी वर्कशाप विच ✪

हरि भगत हरि का रूप, हरि हिरदे विच समांयदा। शरीरक नाता पंज भूत, तन वजूद वंड वंडांयदा। आप वसे आपणी कूट, जग नेत्र नज़र कोए ना पांयदा। दिसव रैण वेखे सच झूठ, काम क्रोध लोभ मोह हँकार फोल फुलांयदा। चार जुग विच बिना प्रभ दी किरपा तों अजे तक बणे ना कोए सपूत, सच विच ना कोए समांयदा। मन मति बुद्धी वाले सारे गए ऊत, चुरासी फाँसी गल लटकांयदा। अगली किसे ना आई सूझ, पिछली समझ ना किसे समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमांयदा। भगत भगवान इक्को राह, अन्तर अन्तर वेख वखाईआ। भगवन नूं देवे ना कोए सलाह, जगत अक्ल बुद्धी कम्म किसे ना आईआ। अवतार गुरु पैग़म्बर जिस दे बण ना सके गवाह, शहादत सके ना कोए भुगताईआ। ओस नूं की कोई सके समझा, जेहड़ा हर घट रमया बेपरवाहीआ। जिस वेले चाहे पतित पापीआं दए तरा, रिषीआं मुनीआं ख़ाक मिलाईआ। ओह दाता बेपरवाह, अगम्म अथाह इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। भगत भगवान ना कोई मुंडा ना कोई कुड़ी, तन वजूद ना कोए वखाईआ। भगत भगवान रखे वासना कदे ना बुरी, बुरी होवे जगत लोकाईआ। ओह कल्पणा सदा निगुरी, सतिगुर विच ना कदे समाईआ। प्रेम विच ना कदे जुड़ी, जो नेत्र नैण रही तकाईआ। एसे कर के गोबिन्द ने छड्डी अनन्दपुरी, पुर अनन्द गया तजाईआ। एसे कर के शेर सिँघ दी काया रुढ़ी, तन वजूद ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। शेर सिँघ ना कोई तन वजूद माटी ख़ाकी, भगवान भगत वेख वखाईआ। आदि अन्त दा बण के साकी, जाम प्याले रिहा प्याईआ। उहनूं की कोई समझावे बाती, अक्ल विच की दृढ़ाईआ। जिस ने चार जुग गुर अवतार पैग़म्बरां तन दा बणा के साथी, फेर विछोड़ा दिता कराईआ। अगली खेल किसे समझ ना आई बाकी, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। जिस वेले चाहे जिधर चाहे ओधर बणा लए आपणे साथी, अन्दर वड़ के आपणा रंग रंगाईआ। क्यों एह खेल पुरख अबिनाशी, तत्तां वाला जीव समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला आप मिलाईआ। भगत

भगवान इक्को सेज, आत्म परमात्म सोभा पाईआ। जिथ्थे देवे जोती तेज, नूर जोत रुशनाईआ। शब्द संदेशा देवे भेज, अगम्म नाद सुणाईआ। उथे एह दो अक्खां ना सकण वेख, जिथ्थे बैठा आपणा रसीआ रस चखाईआ। पुज्ज ना सकण चार वेद, पुराण पर्दा ना कोए खुल्हाईआ। की होया जे दुनिया वाले दुनिया रहे वेख, दुनिया दी ममता विच दुनिया दी महिमा विच आपणा आप गंवाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला जिस ने आपणी करनी अज्ज तक नहीं दिती किसे अग्गे वेच, वणजारा नज़र कोए ना आईआ। जद आया ते रख के आपणी सेध, निशाने आपणे गया चलाईआ। पुरख अकाल सच्चा सतिगुरु नहीं कोई बक्करी भेड, वाड़े विच फड़ के जिथ्थे कोई चाहे ओथे बन्द कराईआ। एह ओस प्रभू दी खेड, जो जुग जुग आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद वसे आपणे अगम्मे देस, दिशा लख चुरासी जीव जंत साध सन्त सब दी वेख वखाईआ।

✪ ५ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ सरदारा सिँघ दे गृह मनावां ✪

१६९ तन वजूद होण सब दे पवित्र, घर मिले सच वड्याईआ। पवण वासना जाए निकल, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। १६९

२२ किरपा करे स्वामी मित्र, हरि करता धुरदरगाहीआ। मानस जन्म गुरमुख जित्तण, लख चुरासी डेरा ढाहीआ। दूसर हट्ट २२

कदे ना विकण, कीमत अवर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा रंग रंगाईआ। तन ख़ाकी मिटे रोग, चिन्ता ग़म रहे ना राईआ। घर रहे ना सोग, कूड़ कुड़यार डेरा ढाहीआ। दे के दरस अमोघ, तृष्ना दए मिटाईआ। सुरत शब्द संजोग, मेला सहिज सुभाईआ। सिर रहे किसे ना बोझ, कंधा भार ना कोए उठाईआ। पेट रहे कोई ना सोज, दुःख दरदां डेरा ढाहीआ। सदा सुहावी होवे मौज, मजलस इक रखाईआ। जो पिछले होए फ़ौत, अजूनी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द शब्द गुरदेवा, देव आत्मा वेख वखाईआ। अमृत रस देवे अगम्मा मेवा, अमिउँ रस आप चुआईआ। लेखे लाए ज़बान रसना जेहवा, गुणवन्ता गुणवान दया कमाईआ। घाल थाएं पाए गुरमुखां सेवा, सेवक सेवा सच कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि दाता दया कमाईआ। तन वजूद सुख होवे सरीर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अन्तर रहे कोई ना पीड़, दर्दी दर्दीआं दर्द वंडाईआ। नेत्र वहावे कोई ना नीर, हन्झू अक्ख ना कोए गिराईआ। मन मति बुध होए ना कोए दिलगीर, सांतक सति दए वरताईआ।

गृह रहे ना कोए फ़कीर, शहीद शरअ ना कोए वखाईआ। हाकन डाकन कट ज़ंजीर, पसू प्रेतां डेरा ढाहीआ। शब्द नाम मार लकीर, पिछला लेखा दए चुकाईआ। बच्चा रोवे ना कोए खार शीर, दोधी दन्द ना कोए दुहाईआ। किरपा करे बेनज़ीर, मेहर नज़र इक उठाईआ। बंस सरबंस बदल देवे तकदीर, तहरीर तकरीर विच जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तर देवे साची धीर, धीरज धर्म धार बणाईआ।

५ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ गुरबचन सिँघ दे गृह पिण्ड उसमा ज़िला अमृतसर

सतिगुर शब्द कहे मेरे शहिनशाह सुल्तानी, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जल्वागर नुरानी, परवरदिगार सांझे यार तेरी वड्याईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित तेरी खेल महानी, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी कार कमाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर महिबूब मुहब्बत विच कर मेहरवानी, महिबान बीदो बी खैर या अलाह तेरी इक सरनाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप चार कुण्ट दहि दिशा वधी बेईमानी, बेवा रूप होई लोकाईआ। धुर दा कलमा साचा नाम हिरदे वसाए कोई ना बाणी, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। चार वरन अठारां बरन दिसे शरअ शैतानी, शरीअत विच्चों असलीअत ना कोए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे गोबिन्द नूर अपारा, परम पुरख तेरी सरनाईआ। निरगुण नूरी नूर कर उज्यारा, जोती जोत डगमगाईआ। तेरा शब्द नाद धुन जैकारा, इक्को इक अगम्म अथाहीआ। माण रिहा ना गुरु अवतारा, पैग़म्बर मिले ना कोए वड्याईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर हाहाकारा, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। भेव अभेदा खोल्ह किरपा कर आप निरँकारा, निरगुण निरवैर दया कमाईआ। सदी चौधवीं वेख खेल परवरदिगारा, बेऐब पड़दा आप उठाईआ। अमाम बण सिक्दारा, हुक्म हुक्म विच्चों जणाईआ। चौथे जुग तेरी करदे रहे इंतजारा, ध्यान ध्यान विच्चों लगाईआ। तेरा खेल वेखणा कलि कल्की अवतारा, निहकलंक तेरी वड्याईआ। कूड़ी क्रिया मेट अखाड़ा, माया ममता मोह विकार दे गंवाईआ। झगड़ा मिटा पुरख नारा, नर नरायण दया कमाईआ। तुध बिन अवर ना कोए सहारा, सतिजुग मीत ना कोए अख्वाईआ। धर्म दी धार होवे जैकारा, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। गोबिन्द तेरा इक्को सुत दुलारा, दो जहानां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब स्वामी अन्तरजामी आपणी दया कमाईआ। शब्द

गुरु कहे पुरख अकाल तेरा लेखा बेपरवाह, पतिपरमेश्वर बेपरवाही विच समाईआ। भेव अभेदा अछल अछेदा दे खुल्हा, ख़ालक ख़लक पर्दा इक उठाईआ। तेरा वक्त सुहञ्जणा आदि निरँजणा जोती जाते गया आ, पुरख बिधाते भेव रहे ना राईआ। जो भविक्ख्तां विच लिख्तां विच निरगुण सरगुण आए दृढ़ा, लेखा लिख के कलम शाहीआ। गुर अवतार पैग़म्बर सारे रहे सुणा, बिन रसना जेहवा शब्दी शब्द शब्द प्रगटाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले असीं निरगुण बणीए सच गवाह, शहादत इक भुगताईआ। सब दी कबूल कर दुआ, सीस जगदीश इक निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। शब्द गुरु कहे पुरख अकाले सज्जण, साहिब तेरी सरनाईआ। साचा रिहा कोई ना मजण, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। प्रेम प्रीती विच करे कोई ना भजन, बन्दगी बन्दा ना कोए कमाईआ। झगड़ा प्या साढे तिन्न हथ्थ काया माटी बदन, बदला सके ना कोए चुकाईआ। शाह सुल्तान करे कोई ना अदल, इन्साफ़ हक ना कोए कमाईआ। पिता पूत करे कत्ल, कत्लगाह बणी लोकाईआ। साचा मिले ना किसे वतन, बेवतन होई लोकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर तेरा राह तक्कण, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। माण रिहा ना मदीना मक्कण, काअबे नूर ना कोए चमकाईआ। पंडत पांधे सारे नट्ठण, अठसठ तीर्थ देण दुहाईआ। साची चाढ़े कोई ना रंगण, नाम खुमारी ना कोए रखाईआ। तेरे दवारे सारे मंगण, दर ठांडे अलख जगाईआ। किरपा कर सूरे सरबंगण, पतिपरमेश्वर दया कमाईआ। सच दवार सुहा आपणा अंगण, अंगीकार आप हो जाईआ। आत्म ब्रह्म दे अनन्दन, निजानंद आपणा रस चखाईआ। मेरी डण्डावत सजदा बन्दन, नमों नमों कर के सीस झुकाईआ। सदी चौधवीं आत्म परमात्म पा गंढण, शब्दी डोरी तन्द बंधाईआ। तेरा खेल सूरे सरबंगण, साहिब सुल्तान मेहरवान तुध बिन अवर ना कोए कराईआ। अन्त अख़ीरी वेख आपणी मंज़ल, मज़ल चुक्के कूड़ लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नजर कोए ना आईआ। शब्द गुरु कहे मेरे प्रभ स्वामी, समां कलयुग वेख वखाईआ। घट निवासी अन्तरजामी, लख चुरासी फोल फुलाईआ। तेरे नाम होई बदनामी, कलमा कायनात ना कोए दृढ़ाईआ। शरअ ज़ंजीर पाई गुलामी, बन्धन सके ना कोए तुड़ाईआ। जगत सन्त साध होए कामी, क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए तजाईआ। नाता जोड़े कोई ना बाहमी, ब्राह्मण क्षत्री शूद्र वैश रंग ना कोए रंगाईआ। किरपा कर साहिब सुल्तानी, हरि सज्जण हो सहाईआ। साची मंज़ल कर असानी, रहिबर आपणा राह वखाईआ। देणी पए ना कोए कुरबानी, कातिल मक्तूल रूप ना कोए वटाईआ। इक्को साहिब सतिगुर तेरी होवे मेहरवानी, महिबूब तेरी आस रखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया चारों कुण्ट चढ़ी तुग्यानी, जीवां जंतां साधां सन्तां रही रुढ़ाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दरगाह साची सचखण्ड दवार एकँकार तेरी ओट तकाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरे परम पुरख प्रभ संगी, संगदिल दयां जणाईआ। कलयुग जीवां पुश्त पनाह पिट्ठ होई नन्गी, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। टुट्टी धार जाए ना गंढ़ी, नाता सके ना कोए जुड़ाईआ। परमात्म आत्म तुध बिन होई रंडी, सुहागी कन्त ना कोए हंढाईआ। चारों कुण्ट भेख भखण्डी, सति सच ना कोए समाईआ। दीनां मज़्बां वेख डण्डी, डण्डावत बन्दना सजदा तेरा गए भुलाईआ। हर घट अन्तर वासना होई गंदी, पतित पुनीत नज़र कोए ना आईआ। माया ममता लाई पाबन्दी, हउमे गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। साचा मिले ना किसे अनन्दी, सुख सागर ना कोए समाईआ। साची मंज़ल किसे ना लँघी, दरगाह साची सचखण्ड दवार मुकामे हक मिलण कोए ना आईआ। मैं जिधर तकां सृष्टी होई अंधी, लोचन नैण ना कोए खुल्हाईआ। फिरी दरोही विच वरभण्डी, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। चढ़े चन्द ना कोए नौचन्दी, नूर ज़हूर ना कोए रुशनाईआ। सदी चौधवीं जांदी लँघी, मुहम्मद आसा दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर इक्को आस रखाईआ। सतिगुर शब्द कहे पुरख अकाल खेल वेख अगम्मा, अगम्मड़े देणा दृढ़ाईआ। क्यों झगड़ा पाया माटी चम्मा, चम्म दृष्टी दे बदलाईआ। क्यों दीन मज़्ब रखाई तमां, लालच अवतार पैग़म्बरां झोली पाईआ। कलयुग अन्तिम सब दा मेट के सोग ग़मा, चिन्ता हरख रहे ना राईआ। सतिजुग मार्ग दे दे नवां, नव नौ चार दा पन्ध मुकाईआ। दीन मज़्ब दा रहे ना बन्ना, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। इक्को नूरी तेरा जोत चन्द चमके चन्ना, चारों कुण्ट करे रुशनाईआ। शब्द सुणा दे बिना कन्नां, अनहद नादी नाद वजाईआ। जो आसा रख के गया जट्ट धन्ना, सदी चौधवीं पूर कराईआ। जो लहिणा देणा लेखा लिख्या नानक धार चौदां सौ तीस पन्ना, पनिशमैंट सब नूं दए सज़ाईआ। पूरा लेखा कर दे गोबिन्द कन्ना, कायनात दे दृढ़ाईआ। तेरा खेल श्री भगवना, भगवन जुग जुग नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चिन्ता रोग मिटावे ग़मा, ग़मी दा प्यार इक्को देणा जणाईआ।

जगत दशहरा दहिसर रावण, राम राम दुहाईआ। राम नालों दहिसर नूं बहुते गावण, एह प्रभ दी बेपरवाहीआ। जिस दा लेखा नाल बावन, निरगुण धार अगम्म अथाहीआ। जिस दा हिसाब गुरु ग्रन्थ दी धार इकावन, पंज इक सोभा पाईआ। जिस दा भेव जगत जुग दामन, पल्लू जगत वखाईआ। रावण दा भेव ना कोए आया समझावण, कवण राम कवण रावण

रावण राम की वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक समझाईआ। रावण राम कदे ना मरदा, मरन विच कदे ना आईआ। जिस नूं राम मारया ओह रावण सचखण्ड दवारे वड़दा, सच सच विच समाईआ। जिस रावण पिच्छे राम रिहा लड़दा, ओह रावण राम रूप पहलों आया प्रगटाईआ। जे रावण एह खेल ना करदा, फेर आदि दी रीती जुग जुग पूर ना कोए कराईआ। एह खेल ओस अगम्मे घर दा, जिथ्थे राम ते रावण बैठे सोभा पाईआ। जगत विहार मन मति बुद्धी विच चलदा, द्वैत सब दे विच टिकाईआ। भारत वाल्यां आपणा माण रखया इक गल्ल दा, आपणी लै अंगड़ाईआ। अंदाज़ा नहीं लाया ओस दे बल दा, जिस त्रेता जुग दिता बदलाईआ। जगत जिज्ञासूआं विचार चलदा, जीव जंत सलाह पकाईआ। साडा राम अवतारी अयुध्या मल्लदा, सिंघासण सोभा पाईआ। सब दे अन्दर सल्ल क्यों सीता नूं रावण छलदा, सतवन्ती सति गंवाईआ। एसे गुस्से विच भारत रावण जलदा, असल भेव ना कोए खुल्हाईआ। सच सच सच रावण ते राम इक्को दवारे पलदा, दूजा दर ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक पड़दा दए चुकाईआ।

१७३ २२

✪ ६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ अर्जन सिंघ दे गृह पिण्ड उसमा ✪

सतिगुर शब्द चले जग धार, निरगुण निरँकार आप चलाईआ। दृष्टी बदल देवे संसार, संसारी भण्डारी सँघारी चले ना कोए चतुराईआ। लहिणा देणा पूरा करे गुरु पैग़म्बर अवतार, अवतरी आपणा हुक्म वरताईआ। दो जहानां पावे सार, महासार्थी हो के वेख वखाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा होए उज्यार, जोत उजाला इक कराईआ। सब दा लहिणा देणा पूरब वेखे वेखणहार, पड़दा पड़दयां विच्चों चुकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कल्पना दए निवार, माया ममता मोह मिटाईआ। सति धर्म दा सति कराए जैकार, चारों कुण्ट वज्जे वधाईआ। सच दा मालक बण सिक्दार, सति साची कार कमाईआ। सब दे कोलों आपणे हथ्थ लए अख्त्यार, मुख़तारनामे सब दे पूर कराईआ। अगला हुक्म सच्ची सरकार, एकँकारा आप दृढ़ाईआ। एका दर इक्को सारे करो निमस्कार, सजदा बन्दना वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को जैकारा नाअरा लावो अगम्म अपार, अलख अगोचर आप दृढ़ाईआ। दीन मज़्हब दा रहे ना कोए हँकार, ज़ात पात ना वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द इक्को होवे पूजा, सिल पाहन पूजण कोए ना पाईआ। इष्ट रहे कोई ना दूजा, पुरख अकाल सारे सीस निवाईआ। प्रभू भेव खुल्हाए गूझा, पर्दा ओहला दए

उठाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया भाण्डा करके मूधा, वस्तू सतिनाम हथ्थ फड़ाईआ। जो ध्यान धर के गया बुद्धा, सदी चौधवीं राह तकाईआ। पुरख अकाला प्रगट होवे उत्ते बसुधा, धरनी धरत धवल वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां पैंडा जाणा मुका, मुकम्मल दए दृढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया भन्नणा हुक्का, हुक्म आपणा इक सुणाईआ। चार वरन सुणे दुखा, दर्दीआं दर्द गंवाईआ। सच निशान दए पंच मुखा, पंचम मीता सहिज सुभाईआ। सत्त रंग कराए उग्घा, उगण आथण मिले वड्याईआ। पूजा रहे किसे ना गुग्गा, मढ़ी मसाण ना कोए चतुराईआ। नमों नमों करे दुर्गा, अष्टभुज सीस जगदीश झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। शब्द गुरु कहे एका नाम होवे प्रचलत, सतिजुग सच मिले वड्याईआ। जो होए सहाई हलत पलत, दो जहानां वेख वखाईआ। मालक बणे ख़ालक ख़लक, मख़लूक आपणा हुक्म जणाईआ। दीन मज़्हबां नालों तोड़ के तुअलक, नाता आत्म परमात्म दए समझाईआ। वेखे खेल उपर फ़लक, असमानां परे नूर इलाहीआ। जोती जाता देवे झलक, नूर नुराना डगमगाईआ। खेल खेले उपर अर्श, फ़र्श आपणी कार कमाईआ। ग़रीब निमाणयां उत्ते करे तरस, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगतां लहिणा देणा मिलणा सम्मत शहिनशाही पंज बरस, बरसी धुर दी लए मनाईआ। मन कल्पना मेटे हरस, हवस अगली दए समझाईआ। झगड़ा मुका के मन्दिर मसीत चर्च, चरागाहां करे रुशनाईआ। गुरमुखां पिछला रहिण ना देवे कर्ज़, मकरूज़ लेखा दए मुकाईआ। सदी चौधवीं आपणा पूरा करे फ़र्ज़, पैग़म्बरां दए दृढ़ाईआ। जो मुहम्मद कीती अर्ज़, आरज़ू सब दी वेख वखाईआ। खेल करे योद्धा सूरबीर मर्दाना मर्द, मदद मंगण कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा रंग रंगाईआ। शब्द गुरु कहे सच वक्त सुहाउणा, सोहणी रुतड़ी मिले वड्याईआ। छब्बी पोह परम पुरख आप मिलाउणा, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। भगत भगवान रंग चढ़ाउणा, निरगुण धार उतर कदे ना जाईआ। सच संदेश इक सुणाउणा, अगम्म अथाह पढ़ाईआ। निरगुण पुरख अकाला इक्को इष्ट रखाउणा, दूसर सीस ना कदे निवाईआ। हुक्म संदेशा इक सुणाउणा, फ़रमाना अगम्म अथाहीआ। माझे वाल्यां नौ गुरमुखां आपणा रूप बदलाउणा, स्त्री मर्द समझ किछ ना पाईआ। मस्तक सूहा रंग चढ़ाउणा, बिन्दी लाल नीली वड्याईआ। खब्बे नेत्र उत्ते सितारा चन्द बणाउणा, रंग हरे नाल वड्याईआ। गंगा धार विच रखाउणा, ब्राह्मण बरोहत ना कोए दृढ़ाईआ। गोबिन्द लेखा पूर कराउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। शब्द गुरु कहे विद्या वाला रहे ना कोए पुजारी, रसना जेहवा ना कोए वड्याईआ। किरपा करे आप जोत निरँकारी, निरगुण निरवैर वेख वखाईआ।

चार वरन अठारां बरन इक्को इष्ट होणा अधारी, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को सीस जगदीश होवे निमस्कारी, नमों नमों सारे कहिके आपणी खुशी बणाईआ। इक्को दर होवे दरबारी, अस्थान भूमिका सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला आप मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे इक्को होवे गुरुदुआर, मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मट्ठ जग इक्को रूप नज़री आईआ। इक्को नाम होवे जैकार, नौ खण्ड पृथ्मी इक्को ढोला गाईआ। इक्को शब्द होए अधार, पूजा पाठ इक वखाईआ। इक्को कलमा होए प्यार, कायनात दए समझाईआ। इक्को दिसे परवरदिगार, वाहिद लाशरीक नूर अलाहीआ। इक्को होए सच्ची सरकार, शाह पातशाह शहिनशाह धुरदरगाहीआ। इक्को नाम होवे जैकार, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडा इक वखाईआ। शब्द गुरु कहे लोकमात होवे इक्को गाथा, सिख्या इक्को इक समझाईआ। किरपा करे साहिब समराथा, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। होए सहाई नाथ अनाथां, ग़रीब निमाणयां गोद टिकाईआ। वस्त अमोलक देवे वाथा, साढे तिन्न हथ्थ आप वरताईआ। झगड़ा मेटे अंधेरी राता, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ। पुरख अकाल सब ने मन्नणा पिता माता, जो आदि जुगादी धुर दी माईआ। आत्म परमात्म जुड़ना नाता, सुरती शब्दी मेल मिलाईआ। शब्द अगम्मी सुणना नादा, अनहद नादी राग सुणाईआ। अमृत रस देणा बूँद स्वांता, निझर झिरना दए झिराईआ। पुरख अकाला दीन दयाला दरस दिखाए इक इकांता, सचखण्ड निवासी आपणा नूर जोत कर रुशनाईआ। कलयुग खेले खेल बहुबिध भांता, पतिपरमेश्वर आपणी कल वरताईआ। जन भगतां नज़री आए साख्याता, स्वच्छ सरूपी शाहो भूपी पर्दा दए उठाईआ। जन्म जन्म दा कर्म कम दा पूरा करे घाटा, नाम निधाना श्री भगवाना आत्म झोली दए भराईआ। झगड़ा मेटे दीन मज़्हब ऊच नीच ज़ात पाता, पतिपरमेश्वर आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर गुर अवतार पैग़म्बरां वेखे खाता, दरगाह साची आप उठाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर सब दा पूरा करना भविक्ख्त वाका, पेशीनगोईआं आपणे लेखे लाईआ। धरनी धरत धवल धौल पूरी करे आसा, आकाश पाताल निरासा रहिण कोए ना पाईआ। सम्बल करके आपणा वासा, सम्मत शहिनशाही पंज दए वड्याईआ। जन भगतां दे के इक भरवासा, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। पंजां गुरमुखां माझे वाल्यां खुशीआं विच करना हासा, छब्बी पोह भज्जणा वाहो दाहीआ। नाल कलयुग दा करदे आउण तमाशा, आप आपणी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान पुरख अबिनाशा, अबिनाशी करता करनहार इक अख्वाईआ।

६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ केशो राम दे गृह सरहाली जंडो की

सतिगुर शब्द कहे प्रभ दीन दुनी बदल दे तरीका, कलयुग तारीक अंधेरा दे मिटाईआ। लहिणा देणा वेख लख चुरासी जीव जंत जीअ का, चार वरन अठारां बरन फोल फुलाईआ। झगड़ा मुका काया माटी साढे तिन्न हथ्थ सीं का, तन वजूद माटी ख़ाक करे ना कोए लड़ाईआ। आपणा मार्ग दस्स नीकण नीका, नर निरँकार निरवैर आपणी दया कमाईआ। आत्म परमात्म साचा बण मीता, पारब्रह्म ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। पर्दा खोल्ह अठारां ध्याए गीता, भगत भगवान आपणा रंग रंगाईआ। तेरा अमृत रस मिले बूँद स्वांता, कलयुग कूड़ी अग्नी तत बुझाईआ। लहिणा देणा पूरा कर बनवासी राम सीता, सुरती शब्द समाईआ। जिस कारन पैग़म्बरां याद कीता मूसा ईसा, मुहम्मद ध्यान लगाईआ। जिस आशा विच नानक गोबिन्द खेल तक्कया इक अनडीठा, अनडिठे पड़दा दे उठाईआ। जिस कारन गोबिन्द फोलण नहीं दिता अंगीठा, हाडी तन ना कोए उठाईआ। सो स्वामी साची दस्स दे रीता, साचा मार्ग इक प्रगटाईआ। दीन दुनी झगड़ा रहे ना मन्दिर मसीता, शिवदुआला मट्ठ वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को गृह नज़री आईं त्रैगुण अतीता, त्रैभवन धनी आपणा भेव देणा खुल्हाईआ। तेरा नाम पदार्थ इक्को लागे मीठा, सच संदेशा देणा दृढ़ाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश काया रंग चढ़या मजीठा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर उतर कदे ना जाईआ। निरगुण धार निरँकार सब दी बदल अन्दरों नीता, नीतीवान दया कमाईआ। झगड़ा रहे ना हस्त कीटा, ऊच नीचां इक्को घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच साची दया कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ सतिजुग मार्ग दस्स विशाल, विशा कूड़ रहिण ना पाईआ। सब दी इक्को होवे धर्मसाल, गुरदवार इक्को वज्जे वधाईआ। जिथ्थे सोहण शाह कंगाल, अमीर ग़रीब वंड ना कोए वंडाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सब दी कर संभाल, सोई सुरत आप उठाईआ। वस्त अमोलक दे सच्चा धन माल, नाम ख़ज़ीना इक भराईआ। आत्म परमात्म वज्जे तेरा ताल, ज़ात पाती वंड ना कोए वंडाईआ। आ के वेख मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां हल्ल कर सवाल, जो भविक्ख्तां विच तेरा राह तकाईआ। सति धर्म दी बदल दे चाल, कूड़ कुकर्म दा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ आपणा मार्ग दे दे सच, सतिजुग सच मिले वड्याईआ। झगड़ा रहे ना काया माटी कच्च, कंचन गढ़ दे सुहाईआ। सब नूं देणा धीरज जति, सति सन्तोख विच समाईआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत, नाड़ी नाड़ी ना कोए कुरलाईआ। माया ममता मेटणी अग्ग, आसा तृष्णा देणी गंवाईआ। सृष्टी दृष्टी वेख जग, जगजीवण दाते तेरी ओट तकाईआ। दर्शन

दे उपर शाहरग, नौ दवारे पन्ध मुकाईआ। बिन मक्के काअब्यों करा हज्ज, हुज़रा काया हक सुहाईआ। जिथ्थे मिले पुरख समरथ, हरि करता धुरदरगाहीआ। जैकारा बोले इक अलख, अलख अगोचर आप सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर रहे कोई ना वक्ख, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, प्रभ तेरी इक सरनाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ सच सुच दी दे दे दात, दयावान दया कमाईआ। कलयुग मेट अंधेरी रात, कूड़ी क्रिया पन्ध मुकाईआ। सतिजुग सच वखा प्रभात, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। तेरे नाम दा झगड़ा अल्ला वाहिगुरु राम कृष्न रहे ना काग़ज़ात, कलमा इक्को देणा जणाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म सब दा बण साक, सज्जण इक अख्वाईआ। जीवां जंतां साधां सन्तां खोल्ह ताक, पर्दा अन्दरों दे उठाईआ। निरगुण सरगुण पूरा कर भविक्ख्त वाक, जो अवतार पैग़म्बर गुरु गए जणाईआ। साची मंज़ल दवारा वखा इक्को घाट, पत्तन इक्को नज़री आईआ। सदी चौधवीं मेट वाट, मुहम्मद आशा दए दुहाईआ। तेरा खेल पुरख अबिनाश, दो जहानां वेख वखाईआ। सतिजुग साची पा रास, बिन गोपी काहन नाच नचाईआ। इक्को नूर होवे प्रकाश, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। इक्को पूजा होवे पाठ, इक्को ढोला नाम कलमा सिफ्त सालाहीआ। इक्को मन्दिर होवे माठ, गुरदवार इक्को इक जणाईआ। शब्द नाद धुन राग, अनरागी देणा सुणाईआ। इक्को मेला होवे कन्त सुहाग, पतिपरमेश्वर लैणा मिलाईआ। कलयुग अन्त भगवन्त दीन दुनी दी खोल्ह जाग, आलस निंद्रा दे मिटाईआ। तेरे नाम दा उपजे इक वैराग, वैरी अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। आत्म जोत जगा चिराग़, घर अंधेरा रहे ना राईआ। धुर दा शब्द सुणा नाद, अनादी नाद सुणाईआ। अमृत रस दे स्वांत, निझर झिरना इक झिराईआ। काया खेड़ा कर आबाद, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे वधाईआ। विशा रहे ना कूड़ विवाद, विख अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। मनुआ मन ना रहे गुस्ताख़, बुध मति देणी समझाईआ। जो गुर अवतार पैग़म्बर गए आख, आख़र लेखा सब दा पूर कराईआ। किरपा कर पुरख अबिनाश, अबिनाशी करते तेरी ओट तकाईआ। सतिजुग सच कर प्रकाश, धरनी धरत धवल धौल होए रुशनाईआ। मानव मानस मानुख तेरा नाम जपण स्वास स्वास, साह साह तेरी सिफ्त सालाहीआ। इक्को रंग रंगा पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर वज्जे वधाईआ। सति धर्म दा साचा होए समाज, मज़्ह्ब वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, साची मंज़ल वखा घाट, दवारा इक्को इक सुहाईआ।

✪ ६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ मक्खण सिँघ दे गृह पिण्ड जौड़ा ✪

सतिगुर नानक जोत आदि अन्त, जुग जुग वेस वटाईआ। खेल खिलाए श्री भगवन्त, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जिस दा हुक्म जुगा जुगन्त, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सीस निवाईआ। सो साहिब स्वामी धुर दा कन्त, निरगुण निरवैर इक अख्वाईआ। जिस दा एक दा इक्को मंत, आत्म परमात्म राग अगम्म अथाहीआ। जिस नूं जपदे साध सन्त, भगत भगवान इष्ट मनाईआ। जो तोड़े गढ़ हउमे हंगत, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। बोध अगाधा बण के पंडत, साची सिख्या दए समझाईआ। हरिजन कदे ना होवे चिन्त, सोग रहिण कोए ना पाईआ। सदा सदा सद सारे प्रभ दी जोत शब्द दी धार अग्गे करदे मिन्नत, मिन्नतां वाला गुरु ना कोए मनाईआ। इक्को पुरख अकाल दी हिम्मत, जो जुग जुग खेले खेल थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। नानक सतिगुर दिन्दा नाम दान, गृह गृह झोली पाईआ। मिलणा श्री भगवान, अबिनाशी करते धुरदरगाहीआ। जिस दा हुक्म सदा फ़रमान, जुग चौकड़ी चले वाहो दाहीआ। जेहड़ा पंज तत बणया इन्सान, मन मति मोह ना कोए रखाईआ। ओस दा शब्द गुरु बलवान, डंक वजाए थांउँ थाँईंआ। धर्म झुलाए निशान, निशाना कूड़ दए गंवाईआ। सृष्टी दृष्टी पाए आण, इष्टी इक्को वेख वखाईआ। गुरमुखां करे सवाधान, गुरसिक्खां लए उठाईआ। शब्द तीर अणयाला निशान, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। जिस दी महिमा सदा महान, सिफ्तां विच सिफ्त सालाहीआ। ओहो गुरु आदि अन्त तक प्रधान, जो सुत दुलारा पुरख अकाला नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। जो निरगुण नानक धार, सो निरगुण नूर जोत जोत रुशनाईआ। ओह सदा सदा सद सब दी पैज दए संवार, वेला वक्त ना वंड वंडाईआ। जिस वेले आवे लोकमात हो उज्यार, जोती जाता डगमगाईआ। जेहड़ा चल आवे दरबार, दरगाह साची दए पुचाईआ। जिथ्थे इक्को नानक इक्को एकँकार, इक्को पुरख अकाल इक्को परवरदिगार सांझा यार सोभा पाईआ। कोई वक्ख वणज ना करे वपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। नानक निरगुण सदा तारे, तारनहार इक अख्वाईआ। नानक निरगुण जोत निरँकारे, तत वजूद ना कोए वड्याईआ। नानक निरगुण खेल अपारे, सदी चौधवीं वेस वटाईआ। नानक निरगुण शब्द जैकारे, धुन अगम्मी राग सुणाईआ। नानक निरगुण सर्ब निमस्कारे, पुनह पुनह सीस निवाईआ। नानक वास्ते इक्को जेहे जुग चौकड़ी चारे, अग्गा पिच्छा वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता बेपरवाहीआ। नानक फ़र्क ना जोती

धार, सच सच दृढ़ाईआ। हुण दा खेल नहीं किसे पुरख नार, तत वजूद ना कोए चतुराईआ। ओहो शब्द गुरु धुन्कार, रागी राग सुणाईआ। जिस ने पिच्छे तारे ओह हुण वी देवे तार, एह प्रभ दी बेपरवाहीआ। नानक दे दर उत्ते फ़र्क नहीं इक दूजे दा नहीं उधार, वंडी वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। जे नानक दा रखया इष्ट, इष्ट देव इक अख्वाईआ। हुण खेल करे मालक सृष्ट, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस ने सदा खोल्ह्णी दृष्ट, दिशा आपणी दए वखाईआ। झगड़ा मुका के स्वर्ग बहिशत, सच दवारा इक जणाईआ। जिथ्थे शास्त्र सिमरत नहीं कोई लिख्त, अक्खरां वाली ना कोए पढ़ाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म जोती धार मिलत, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। मन कल्पणा नहीं कोई इल्लत, आलम इलम ना कोए चतुराईआ। जिस नूं निरगुण धार सतिगुर शब्द अन्तर देवे सिदक, भरोसा योग तन वजूद दए बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि अन्त अन्त आदि जुगा जुगन्त इक्को रूप सर्ब गुण सालस इक्को रूप बणाए ख़ालस, इक्को आलस निंद्रा विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। नानक निरगुण तारे तां, जे तमा दयो गंवाईआ। पुरख अकाल बणे पिता माँ, जे हुक्म मन्नो चाँईं चाँईंआ। दोहां दी इक्को मंज़ल दोहां दा इक्को थाँ, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। आदि जुगादि जग करन न्याँ, अदालत हक हक कमाईआ। जे हुण नानक दा दस्सया भुल्ले नाँ, ते नानक पल्लू ना कदे फड़ाईआ। जे नानक धार जावो समा, आपणा आप जाउ मिटा, मन मति मोह गंवाईआ। फेर निरगुण नानक पुरख अकाल हुण वी होवे सहा, ओहो जोत ओहो शब्द शब्दी धार लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी, पतिपरमेश्वर पतित उधारी जोत निरँकारी, निराकार एका एक अख्वाईआ।

✪ ६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ अर्जन सिंघ दे गृह माणक पुर ✪

सतिगुर शब्द मार्ग दस्सणा एक, सतिजुग सच सच राह दृढ़ाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल होवे टेक, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक लगाईआ। ज़ात पात दीन मज़्ब झगड़ा रहे ना किसे देस, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप इक्को रंग रंगाईआ। नाम अगम्मा धुर फ़रमाना चार वरन मिले इक संदेश, साहिब स्वामी अन्तरजामी आप सुणाईआ। मानव मानुख मानस सच दवारा इक्को लैण वेख, गृह मन्दिर इक्को वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा

हुक्म इक वरताईआ। सतिजुग साचा होवे मातलोक, नव नौ चार पन्ध मुकाईआ। आत्म परमात्म सुणावे सच सलोक, सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ। सच दवार दी बख्शे मौज, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। सुरती शब्दी करे खोज, पर्दा अन्तर दए उठाईआ। बुद्धी तों परे करे बोध, अज्ञान अंधेरा दूर कराईआ। अगला भेव खोल्हे गोझ, हरि करता शहिनशाहीआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई इक्को देवे जोग, इक्को कलमा नाम जणाईआ। इक्को रसना होवे भोग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिजुग साचा धरनी उत्ते देवे धर, हरि करता बेपरवाहीआ। नाम भण्डारा दे के वर, मेहरवान दया कमाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात ऊच नीच इक्को जेहा कर, करनी करता कार कमाईआ। निरभउ चुकाए भय डर, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। आत्म सरोवर नुहाए साचे सर, अठसठ तीर्थ लोड़ रहे ना राईआ। पड़दा लाहे चोटी जड़, आत्म ब्रह्म दए जणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सब ने विद्या जाणी पढ़, शास्त्र सिमरत लेखा अवर ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच दवारा इक प्रगटाईआ। सतिजुग साचे देणा माण, हरि करता दया कमाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया तोड़ अभिमान, माया ममता मोह मिटाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर दे ज्ञान, आत्म ब्रह्म देणा समझाईआ। अमृत रस पीण खाण, रसना गुण ना कोए वड्याईआ। शब्द नाद देवे धुन्कान, अनादी नाद सुणाईआ। गृह मन्दिर सुहाए आण, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे वधाईआ। भेव मुकाए ज़िमीं असमान, लोक परलोक पर्दा आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सतिजुग साचा धरना उपर जगत, जागरत जोत कर रुशनाईआ। सन्त सुहेले प्रगटाउणे भगत, भावना अन्दरों फोल फुलाईआ। निरगुण धार दे के दरस, कूड़ कल्पना देणी मिटाईआ। जगत वासना रहिण नहीं देणी हरस, कूड़ी दए खपाईआ। माण दवा के उपर फ़र्श, अर्श जोती मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा एकँकारा इक इकल्ला आप खुल्हाईआ। सतिजुग कहे मेरा वक्त होणा सुहावणा, हरि सोहणी बणत बणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप इक्को नाम जपावणा, दूजा राग ना कोए अल्हाईआ। पुरख अकाला हरि सज्जण इष्ट मनावणा, दूसर सीस ना कोए झुकाईआ। घर मन्दिर दीपक इक जगावणा, अंध अंधेरा दए गंवाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म भेव खुल्हावणा, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। सच सरोवर सच दवार अगम्मा होवे नहावणा, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ लेखा दए चुकाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला साचा पकड़े दामना, दामनगीर दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, हरि दाता बेपरवाहीआ। सतिजुग

कहे प्रभ किरपा करे अपार, अपरम्पर दया कमाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मात निवार, ममता मोह दए गंवाईआ। साची सिख्या इक सिखाल, साचा पड़दा आप उठाईआ। झगड़ा रहे ना शाह कंगाल, ऊच नीच इक्को रंग रंगाईआ। सच दवारा वखा सच्ची धर्मसाल, काया काअबा इक वड्याईआ। गृह मन्दिर बैठ करे संभाल, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। सन्त सुहेले लए भाल, भगत भगवान रंग रंगाईआ। जिन्हां पोह ना सके काल, महाकाल ना भय वखाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। अन्त कन्त भगवन्त साचे सन्त करे संभाल, सम्बल बहि के खेल खिलाईआ। जिस नूं झुकदे गुरु अवतार, पैग़म्बर सीस निवाईआ। सो कलि कल्की लए अवतार, जोती जाता डगमगाईआ। एथे ओथे दो जहानां निरगुण सरगुण पावे सार, सच स्वामी अन्तरजामी वेखणहारा थांउँ थाँईंआ। चुरासी विच्चों गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत लभ्भ के आपणे लाल, लाल गुलाला आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त निरगुण सरगुण करे सदा प्रितपाल, प्रितपालक ख़ालक मालक इक्को धुरदरगाहीआ।

६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ करनैल सिंघ, जरनैल सिँघ दे गृह पिण्ड राजो के

सतिगुर शब्द पुरख अकाल कीता सजदा, दरगाह साची सचखण्ड दवारे सीस निवाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मैं तेरा बरदा, परवरदिगार सांझे यार तेरी सरनाईआ। मैं सदी चौधवीं खेल वेख्या घर घर दा, लख चुरासी जीव जंत साध सन्त फोल फुलाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द मानव तैनूं याद करदा, हिरदे विच ना कोए वसाईआ। साची मंज़ल कोए ना चढ़दा, अधवाटे बैठी कूड़ लोकाईआ। इश्नान करे ना कोई तेरे सरोवर सर दा, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। सरन चरण कोए ना पड़दा, धूढ़ी ख़ाक ना कोए रमाईआ। मैं हैरान हो गया की खेल नरायण नर दा, की कल रिहा वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे रिहा सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभू मैं सब दे अन्दर मारी झाकी, निरन्तर वेख वखाईआ। साचा मिले कोई ना साथी, सगला संग ना कोए बणाईआ। चारों कुण्ट अंधेरी राती, निरगुण नूर ना कोए रुशनाईआ। मनुआ मन्ने किसे ना आखी, कल्पणा कूड़ रही कुरलाईआ। पैग़म्बर करे कोई ना राखी, अवतार सीस हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जीवण विच्चों बदले ना किसे हयाती, आबे हयात ना कोए प्याईआ। दीन मज़्हब दा झगड़ा मुक्कया ना काग़ज़ाती, चार जुग दे शास्त्र रहे लड़ाईआ। मेरे अन्तर अगम्मी धार भाखी,

पारब्रह्म दयां जणाईआ। जेहड़ी गोबिन्द सिक्खी बणाई इक सत्त पंज छे उत्ते वसाखी, शब्दी धार नाल प्रगटाईआ। उहदी रहे ना सच जमाती, नाता प्रेम रहे तुड़ाईआ। साची मंज़ल तेरी चढ़े कोई ना घाटी, सच दवारे मिलण कोए ना आईआ। उठ वेख पुरख अकाल पुरख अबिनाशी, मेहरवान मेहरवान मेहरवान महिबूब आपणी दया कमाईआ। साचे मण्डल गोपी काहन पाए कोई ना रासी, धर्म धार ना कोए जणाईआ। मैं सब दी वासना अन्दर वड़ के वाची, वाचक वेखी जगत लोकाईआ। मैनूं तेरे दर ते आवे हासी, हस्स के दयां सुणाईआ। साबत रिहा ना कोई पंडत काशी, कलयुग कला दिती वरताईआ। मुल्ला शेख़ पुछे कोए ना वाती, वातावरन बदलया जगत लोकाईआ। रूह बुत होए कोए ना पाकी, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं वेख्या मदीना मक्कया, काअबे हुजरे फोल फुलाईआ। भज्जया मन्दिर मट्ठया, शिवाले पड़दा लाहीआ। तेरे प्रेम कोई ना रत्तया, रत्न अमोलक हीरा रूप ना कोए बदलाईआ। मैं हो गया हक्का बक्कया, हैरानी मेरे अन्दर आईआ। वाहवा तेरा खेल पुरख समरथ्थया, वड दाते तेरी बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं घर घर पाया रट्टया, सांतक सति ना कोए जणाईआ। आपणा नाम बज़ारां विच वेचिआ नाल टकयां, कीमत ग्रन्थां वाली पाईआ। पैग़म्बरां पूरा होण लग्गा ठेक्या, पटने वाला दए गवाहीआ। तेरा खेल अलख अलखया, लख सके कोए ना राईआ। तूं आपणा भेव किसे ना दस्सया, चारे जुग बेअन्त बेअन्त बेअन्त कहि के तैनूं गए गाईआ। चारों कुण्ट वेख जगत जहान जाए मच्चया, त्रैगुण अग्नी तत तपाईआ। नाम बीज कोई ना वतया, तन वजूद हरा सिंच ना कोए कराईआ। कलयुग खेल बाज़ीगर नटया, स्वांगी आपणा स्वांग जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दवार एकँकार दर तेरे अलख जगाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरे महिबूब, मुहब्बत विच दयां जणाईआ। तेरा धाम आलीशान अरूज, अर्श फ़र्श तेरी वड्याईआ। आपणी मंज़ल वेख मकसूद, महिबान बीदो बीख़ैर या अलाह तेरी सरनाईआ। मैं दर तेरे मौजूद, हाज़र हो के रिहा जणाईआ। दरोही कलयुग कूड़ी क्रिया सदी चौधवीं कर नेस्तोनाबूद, जड़ धरनी धरत धवल दे उखड़ाईआ। माया ममता करे कूच, कूचा गली कर सफ़ाईआ। जिस कारन गोबिन्द बच्चे गए झूज, अजीत जुझार देण गवाहीआ। दीन दुनी विच्चों कढ दे दूज, इक्को आपणा रंग रंगाईआ। पुरख अकाले तेरी होवे पूज, सिल पाहन पाथर सीस ना कोए निवाईआ। कूड़ विकार हँकार काया मन्दिर अन्दर हूंझ, शब्दी धार कर सफ़ाईआ। सब दी निर्मल कर बुध, श्रेष्ट आपणा रंग रंगाईआ। तुध बिन अवर लए कोई ना सुध, बसुधा दए दुहाईआ। सृष्टी करनहारी युद्ध, झगड़े विच दिसे मात हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरे पुरख अकाले, साहिब तेरी वड्याईआ। फल रिहा किसे ना डाले, पत टहिणी सिंमल रूप लहराईआ। वेख खेल आपणा हाले, हालत विगड़ी जगत लोकाईआ। दीन दुनी दे बदल गए चाले, चारों कुण्ट रही कुरलाईआ। तेरे नाम दी घाल कोई ना घाले, काम क्रोध लोभ मोह हँकार घर घर डेरा लाईआ। सब दा अन्तिम हल्ल कर सवाले, मेहरवान प्रभ आपणी दया कमाईआ। जो शब्द संदेशा दे के गया नानक सतिगुर बाले, अगम्म अथाह आप दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तेरी वज्जे नाम वधाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ मैं वेखी तेरी भजन बन्दगी, हर घट अन्तर फोल फुलाईआ। वस्त मिले ना किसे अनन्द दी, निजानंद परमानंद विच ना कोए समाईआ। लिव छुट्टे ना कूड़ कुड़यारे गंद दी, अमृत रस ना कोए चखाईआ। समझ आए ना किसे ब्रह्म हँ दी, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। जोत नज़र ना आए तेरे गोबिन्द चन्न दी, चारों कुण्ट अंधेरा छाईआ। मेरी आसा साहिब सुल्तान इक्को मंग मंगदी, मांगत हो झोली डाहीआ। दीन दुनी खेल वेख भुक्ख नंग दी, दुखियां दर्द ना कोए गंवाईआ। सुत शब्द धार कोई ना गंढदी, अन्तर निरन्तर रंग ना कोए चढ़ाईआ। चारों कुण्ट त्यारी जंग दी, झगड़े विच सर्ब दुहाईआ। वेख खेल आपणी वरभण्ड दी, ब्रह्मण्ड खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर आसा पूर कराईआ। पुरख अकाल कहे सुण शब्द मेरे दुलारे, दूले धुर दे दयां दृढ़ाईआ। औह वेख तेई अवतारे, दर बैठे सीस निवाईआ। तक्क हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद बणे भिखारे, ख़ाली झोलीआं अग्गे डाहीआ। गुरु धार वेख वणजारे, वणज इक्को इक समझाईआ। सब दे लहिणे देणे पूरे करने विच संसारे, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। करनी खेल आप निरँकारे, निरगुण निरवैर हुक्म वरताईआ। जिस ने पन्ध मुकाउणे जुग चारे, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लेखा दए चुकाईआ। सतिजुग साचे दए हुलारे, सति सतिवादी आप उठाईआ। हुक्म देवे सच्ची सरकारे, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच साची कार कमाईआ। पुरख अकाल किहा सुण अगम्मी शब्द सुत , सति दयां समझाईआ। एह खेल अबिनाशी अचुत, चारे कुण्ट खोज खुजाईआ। कलयुग विच सतिजुग सुहाउणी रुत, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। पवित्र करने काया बुत, बुतख़ान्यां करे सफ़ाईआ। तूं वी मेरी धारों जाणा उठ, निरगुण धार लै अंगड़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जड़ देणी पुट्ट, धरनी धरत धवल रहिण ना पाईआ। फेर सवाधान हो के लईं पुछ, निउँ निउँ सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दरगाह सच दयां जणाईआ। शब्द सुत दया धार, दया

कमावांगा। खेल कर संसार, कूड़ी क्रिया मेट मिटावांगा। शब्द जोत अगम्म अपार, नूर ज़हूर चमकावांगा। कूड़ी क्रिया कर गिरफ्तार, शब्दी डोरी तन्द बंधावांगा। हुक्मे अन्दर रख पैग़म्बर अवतार, गुरु गुरदेव इक जणावांगा। काली रैण मेट के धूंआँधार, नूरी जोत चन्द चमकावांगा। सति सच दा कर जैकार, कलमा इक्को नाम पढ़ावांगा। धर्म दी धार तेरा प्यार, पिता पूत गोद सुहावांगा। एका रंग रंगा के पुरख नार, नर नरायण डंक वजावांगा। सतिजुग सच होए अधार, उदर आपणे विच्चों प्रगटावांगा। एह खेल अलख अगोचर करे अगम्म अपार, अपरम्पर आपणी कार कमावांगा। जो कहि के गए पैग़म्बर गुरु अवतार, भविक्ख्त सब दे वेख वखावांगा। पेशीनगोईआं रखां आपणे नाल, नित नवित आपणा खेल खिलावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मार्ग आप वखावांगा। सतिगुर शब्द कहे प्रभ साचा मार्ग ला दे जग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। त्रैगुण माया बुझा दे अग्ग अग्नी तत ना कोए तपाईआ। नूरी दरस दे उपर शाहरग, नौ दवारे डेरा ढाहीआ। तेरा खेल सूरे सरबग, काया मन्दिर अन्दर वेख वखाईआ। बिन काआबिओ करा दे हज्ज, हुजरा इक्को इक सुहाईआ। दीन मज़्हब दी मेट दे हद्द, मानव मानस मानुख इक्को रंग रंगाईआ। सारे पुरख अकाल तेरी यद, तूं इक्को जम्मण वाली पिता माईआ। क्यों तेरी आत्मा तैनूं गई छड, लोकमात होई पराईआ। धर्म निशाना
१८४ १८४
२२ २२
इक्को गड्ड, चार कुण्ट दए हिलाईआ। सन्त सुहेले आपणे सद्द, भरम सब दा मेट मिटाईआ। तेरा नूर तैथों रहे ना कदे अलग्ग, वक्खरा दर ना कदे समझाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले औह वेख कलयुग जीव बणे कग्ग, हँस रूप ना कोए प्रगटाईआ। जगत प्याले पी के मद, नाम खुमारी ना कोए रखाईआ। बाहरों बणे बगढ़े बप, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे धुर दा वर, सच साची खेल खिलाईआ। पुरख अकाल कहे शब्द सुत औह वेख नज़ारा, नज़रीआ दयां बदलाईआ। कलयुग अन्तिम करां किनारा, लोकमात रहिण ना पाईआ। सतिजुग सच होए वरतारा, विशेष विद्या इक पढ़ाईआ। जिस नूं मन्नण गुरु अवतारा, पैग़म्बर सीस निवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव ना कोए उजरदारा, सारे निउँ निउँ लागण पाईआ। तूं बणया मेरा बरखुरदारा, बदी कलयुग देणी गंवाईआ। सतिगुर रूप होणा ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर करनी रुशनाईआ। औह वेख कुछ झगड़ा पैणा विच काहरा, मुहम्मद इशारे नाल समझाईआ। नौ सौ वर्ग मील दा होणा दाइरा, कायम मुकाम रिहा दृढ़ाईआ। एह खेल प्रभू दा गहरा, शास्त्र सिमरत ना कोए समझाईआ। कलयुग वखाए आपणी लहिरा, लहिर लहिर विच्चों दरसाईआ। जिस दी सिफ्त कोई कर ना सके अक्ल बुद्धी विच शाइरा, शहिनशाह रिहा जणाईआ। कोई होवे ना दार पहरा, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। कलयुग कूड़ कुकर्म होया बहिरा, हरि का नाम सुणन ना पाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरी बन्दना, प्रभ डण्डावत सीस निवाईआ। किस बिध कूड़ी क्रिया करे खण्डना, बिन खड़ग खण्डा चमकाईआ। सच देवे अनन्दना, अनन्दपुरी वाला नाल मिलाईआ। किस बिध कलयुग कूड़ा वंञणा, साहिब स्वामी देणा समझाईआ। सदी चौधवीं अन्तिम लँघणा, लोकमात रहिण ना पाईआ। कवण सेज सुहाए पलँघणा, आसण सिंघासण कवण रखाईआ। कवण चाढ़ें आपणी रंगणा, रंगत इक रंगाईआ। किस बिध तेरा नगारा वज्जणा, डंका शब्द करे शनवाईआ। कलयुग गढ़ हँकारी भज्जणा, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। सतिजुग साचा किस बिध लग्गणा, लोकमात लए अंगड़ाईआ। की खेल होणा काया माटी बदना, साढे तिन्न हथ्थ देणा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। पुरख अकाल कहे मेरे सुत दुलारे एह मेरा इकबाल, इकबाली गुर अवतार पैग़म्बर लैणे कराईआ। वेखो लोकमात आपणी धर्मसाल, सच दवारे फोल फुलाईआ। जल्वा रिहा ना कोए जलाल, नूरी नूर ना कोए चमकाईआ। झगड़ा तक्को शाह कंगाल, ज़ात पात पई दुहाईआ। आत्म परमात्म मिले किसे ना नाल, पारब्रह्म ब्रह्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। सच दस्सो तुसीं किस दी कीती संभाल, सम्बल बहि के मंग मंगाईआ। पुरख अकाला बण दलाल, दलाली धर्म धार जणाईआ। कलयुग बदल के आपणी चाल, चाल निराली इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कलयुग अन्त बदलावांगा। बण के धुर दा कन्त, सेज सुहञ्जणी इक सुहावांगा। सतिजुग चाढ़ के अगम्मा रंग बसन्त, बसन बनवारी हो के वेख वखावांगा। साचे नाम दा दे के मंत, मन्त्र इक्को इक जणावांगा। बोध अगाधा बण के पंडत, बुद्धी तों परे आप समझावांगा। हउमे गढ़ तोड़ के हंगत, हँ ब्रह्म आप वखावांगा। चार वरन बणा के संगत, सगला संग वखावांगा। गुरमुख किसे दर ना होवे मंगत, भगत भगवान जोड़ जुड़ावांगा। जो संदेशा दे के गया शब्दी धार अंगद, अंगीकार इक अख्वावांगा। सब दा लहिणा देणा चुकावां नकद, उधार अग्गे ना कोए जणावांगा। शब्द संदेशा देवां सख्त, धुर फ़रमाना आप जणावांगा। धरनी कर के सुहेला वक्त, सुहञ्जणा आप बदलावांगा। इक्को तेरी शब्द गुरु दी शक्त, शक्ती सब दी खिच्च वखावांगा। कलयुग विच सतिजुग इहो होवे फ़र्क, फ़िकरा इक्को नाम दृढ़ावांगा। पिछला लहिणा सब ने करना तरक, तुरत अगला राह दरसावांगा। फिरे दरोही फ़र्श अर्श, ज़िमीं असमानां रंग चढ़ावांगा। ग़रीब निमाणयां उत्ते कर के तरस, रहमत हक हकीकत आप कमावांगा। खेल वेखणा एसे बरस, सम्मत सम्मती पड़दा लाहवांगा। छब्बी पोह खेल असचरज, अचरज लीला आप वरतावांगा। गुर अवतार पैग़म्बरां लै के आउणा

धर्म दी फ़रद, फ़ैसले हको हक सुणावांगा। इक जैकारा दो जहानां बोलणा गरज, ग़रज़ सब दी वेख वखावांगा। योधा सूरबीर बण मर्दाना मर्द, मुद्दा इक्को इक दरसावांगा। शरअ छुरी कसाई बणे कोई ना करद, कातिल मक्तूल पन्ध मुकावांगा। पुट्ठी सिध्धी कर के नरद, नर नरायण भेव खुल्हावांगा। झगड़ा मेटणा मसीत चर्च, चरागाहां जोत प्रगटावांगा। ग़रीब निमाणयां वंड के दर्द, दुखियां आपणी गोद उठावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म दवारा इक दरसावांगा। धर्म दवार इक दरसाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। पुरख अकाला वेस वटाएगा। जोत ज्वाला अग्न बुझाएगा। पूजा माला मणका फोल फुलाएगा। साची धर्मसाला वेख वखाएगा। कौण शाह कवण कंगाला, अन्तर आपणा भेव चुकाएगा। कलयुग तोड़ त्रैगुण जंजाला, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहेगा। जिस दा अवतार पैग़म्बर गुर भविक्खतां विच दे के गए अहिवाला, सो स्वामी खेल खिलाएगा। लेखा जाण काल महाकाला, मेहरवान आपणी कल वरताएगा। फल रहे किसे ना डाला, सिंमल रुक्ख जगत लहराएगा। जन भगतां करे आप संभाला, सम्बल बहि के वेख वखाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सचखण्ड सच इक वडयाएगा। सतिगुर शब्द कहे मेरी इक अर्ज़ोई, प्रभ अर्ज़ दयां सुणाईआ। तेरा भगत सुहेला सन्त विरला कोई कोई, कोटां विच्चों नज़री आईआ। बाकी मिले किसे ना ढोई, ढोलक छैणे रहे खड़काईआ। दीन दुनी दी सुरती सोई, शब्द हलूणा ना कोए लगाईआ। बौहड़ी तेरा नाम दरोही, हाए हाए कर सुणाईआ। अमृत रस देणा चोई, निझर झिरना इक झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दवार तेरी सरनाईआ। धर्म दवार दा बण के मंगता, मांगत झोली डाहीआ। पुरख अकाल मेट दे ममता, मोह विकार कर सफ़ाईआ। गढ़ रहे ना हउमे हंगता, निवण-सु-अक्खर धार इक जणाईआ। सति सरूप बणा लै आपणी जनता, जीव जंत रहे कुरलाईआ। इक्को इष्ट देव स्वामी मना लै आपणी मन्नता, दूसर सीस ना कोए झुकाईआ। पूरब कर्म दी रहे कोई ना चिन्ता, हरख़ सोग ग़म देणा गंवाईआ। मैं दर तेरे ठांडे करदा मिन्नता, निउँ निउँ लागां पाईआ। इक तेरे विच शब्दी धार हिम्मता, हौसला अग्गे देणा वधाईआ। लेखा मुकाउणा मुहम्मद वाली सुंनता, साहिब सतिगुर तेरी बेपरवाहीआ। सतिजुग विच सीस कोई ना होवे मुन्नदा, मुच्छ दाढ़ी ना कोए कटाईआ। इहो भण्डारा तेरे गुण दा, जो गोबिन्द गया वरताईआ। झगड़ा मिटाउणा पाप पुन्न दा, पुनह पुनह आपणा भेव देणा दरसाईआ। तूं मालक ख़ालक कुल दा, कुल आलम तेरा नज़री आईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरा जीव जहान भुलदा, अभुल्ल तेरे अग्गे वास्ता पाईआ। तेरा नाम इक्को मुल्ल दा, अनमुलड़ी दात देणी वरताईआ। तेरा अमृत कदे ना डुल्हदा, शीरख़ार

बच्चे पी के ख़ुशी मनाईआ। तेरा भगत भगवान बूटा कदे ना हुलदा, पत्त टहिणी फूल फल देणा वखाईआ। तेरा धर्म निशाना झुलदा, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तेरी वज्जे सच वधाईआ। पुरख अकाल कहे मेरे बच्चे नन्हे, शब्दी शब्द जणाईआ। सच फ़रमान मेरा मन्ने, मन मनसा दूर कराईआ। करना प्रकाश पंज तत तन्ने, वजूद महिबूब देणा दरसाईआ। लेखा मुकाउणा गोबिन्द वाले कन्ने, कायनात पड़दा देणा चुकाईआ। लहिणा देणा पूरा करना धन्ने, जो जगत गया समझाईआ। लोकमात जीव रहिण नहीं देणे अन्ने, निज नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। शब्द सुणाउणा बिना राग कन्ने, अनहद नादी नाद वजाईआ। भेव खुलाउणा चौदां सौ तीह अंक नानक शब्द धार सिफ्तां वाले पन्ने, परम पुरख पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे वज्जदी रहे वधाईआ। शब्द कहे मेरे साहिब मेट दे दुःख, दुक्खां भरी लोकाईआ। धरनी सफल करदे कुख्ख, रोग रहे ना राईआ। भगतां उज्जल कर मुख, दुरमति मैल धुआईआ। बीर बेताल्यां जड़ पुट्ट, पवण मसाणां डेरा ढाहीआ। मवक्कल जाण उठ, भय ना कोए रखाईआ। तेरे नाम दी इक्को सुणी होवे तुक, तुख्म तासीर देणी बदलाईआ। दीन दुनी दा बदल दे रुख़, मार्ग सच सच जणाईआ। पड़दा ओहला रहे ना लुक, भेव अभेद देणा खुल्हाईआ। जन भगत सुहेले उठा लै सुत, दुलारे आपणी गोद टिकाईआ। कूड़ी क्रिया कल्पना पैंडा जाए मुक, अग्गे अवर ना कोए वधाईआ। सब दे अन्दर दे दे सुच, संजम इक जणाईआ। तेरी धार मानस मानुख, आत्म परमात्म वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पड़दा देणा उठाईआ। साचा पड़दा दे लाह, लहिणा सब दी झोली पाईआ। खेवट खेटा बण मलाह, नाम नईया नौका इक वखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर बणा गवाह, शहादत इक्को वार देणी भुगताईआ। सतिजुग सच लै प्रगटा, परगणा आपणा इक जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया दे मिटा, मिट्टी ख़ाक ना कोए उडाईआ। ओह वेख पैग़म्बर करन दुआ, वास्ता तेरे अग्गे पाईआ। तूं महिबूब हकीकत वाला खुदा, खुदी तक्बरी देणी गंवाईआ। अमाम अमामा तेरी इक सरना, सरनगति इक जणाईआ। वाहिद कलमा कायनात पढ़ा, संदेशा इक्को इक जणाईआ। मेरे मेहरवान मेहरवां, मेहर नज़र उठाईआ। जहां तहां हो सहा, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। दुखियां दुःख दे गवा, दर्दीआं दर्द वंडाईआ। तूं दाता बेपरवाह, बेअन्त तेरी सरनाईआ। तूं शहिनशाह पातशाह, दो जहान सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देणी माण वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरी अन्त अपील, अपरम्पर दयां जणाईआ। मनसा मन ना कोए दलील, कल्पना कलि ना कोए जणाईआ। सब दा लेखा पूरा कर जो कृष्न

नाल भील, भीलणी नाल राम दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच रंगत रंग चढ़ाईआ। सतिगुर शब्द कहे तेरे नाम दी होवे जै, जैकार कर सुणाईआ। भगतां अन्तर दुःख कोई ना रहे, रहिबर हो के देणा मिटाईआ। जो तेरा भाणा सहे, सहिज सुख सागर विच समाईआ। अमृत धार अन्तर वहे, कूड़ी क्रिया दए रुढ़ाईआ। साचा नाम वहाए नै, नाउँ निरँकारा इक प्रगटाईआ। सच सिंघासण जाणा बहि, आत्म सेजा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त तेरी शक्ती शवै, शिव ब्रह्मा विष्न सारे बैठे सीस निवाईआ।

✪ ७ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ बीबी दीपो दे गृह पिण्ड बासर के ✪

सचखण्ड निवासी धुर अमाम, पैग़म्बर सीस निवाईआ। तेरा हुक्म अगम्म कलाम, अलिफ़ ये होए पढ़ाईआ। मुकामे हक हक सलाम, सरन सरन तेरी सरनाईआ। सदी चौधवीं वेख अवाम, माया ममता विच हल्काईआ। झगड़ा दिसे तमाम, तमा तमन्ना ना कोए गंवाईआ। हुजरयां विच हुन्दा हराम, मस्जिद रही कुरलाईआ। शरअ ने कीता गुलाम, ज़ंजीर सके ना कोए तुड़ाईआ। तेरा नाम होया बदनाम, बदी विच बदी वेख ख़लक खुदाईआ। साची मंज़ल मिले ना कोए असान, मेहरवान महिबूब तेरा दरस ना कोए कराईआ। हकीकी पीए कोई ना जाम, कूड़ी क्रिया मात हल्काईआ। जिधर तक्कीए उधर शाम, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। पैग़म्बर कहिण असीं निउँ निउँ करदे सजदा, परवरदिगार तेरी सरनाईआ। साचा रिहा कोई ना बरदा, बदी वेखी थांउँ थाँईंआ। मालक रिहा ना कोई घर दा, बेवतन होई लोकाईआ। तेरी मंज़ल कोई ना चढ़दा, दरगाह साची दरस कोए ना पाईआ। बेशक रसना जेहवा कलमा कायनात मानव पढ़दा, रसना जेहवा बत्ती दन्द हिलाईआ। अमल सिफ्त विच कोई ना करदा, गरिफ्त कूड़ होई लोकाईआ। वहिण वहे हँकार हड़ दा, माया ममता रही कुरलाईआ। इश्नान मिले ना सरोवर सर दा, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। पैग़म्बर कहिण ओह वेख तेई अवतार झुकदे, निउँ निउँ सीस निवाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा कलयुग कूड़ कुड़यारे बुक्कदे, सति धर्म ना कोए जणाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर कूड़ी क्रिया जड़ पुट्ट दे, पटने वाला नाल रलाईआ। नाम निधाना आबेहयात घुट दे, निझर झिरना इक झिराईआ। धुर फ़रमाना शब्द संदेशा आपणे सुत

दे, सुत दुलारा इक उठाईआ। भेव चुका दे काया मन्दिर मानव मानुक्ख दे, मानस आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड साचे इक्को आस रखाईआ। पैग़म्बर कहिण हकीकत दे दे हक, लाशरीक तेरी सरनाईआ। अवतार कहिण टेकदे मस्तक मथ, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, साहिब तेरी वड्याईआ। पढ़ पढ़ सृष्टी गई थक्क, तेरी मंज़ल चढ़न कोई ना पाईआ। तेरे चार जुग दे शास्त्र टकयां उतों विकदे हट्ट, करता कीमत ना कोए पाईआ। सदी चौधवीं सब दा खेड़ा दिसे भट्ठ, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। तेरा खेल बाज़ीगर नट, स्वांगी आपणा स्वांग रिहा वरताईआ। परवरदिगार महिबूब मुहब्बत विच दीन दुनी दी मैल कट, कटाक्ष आपणा नाम लगाईआ। ... ... गुर अवतार पैग़म्बर देण गवाहीआ। साचा मार्ग एकँकार इक्को दस्स, इक इकल्ले दया कमाईआ। आत्म परमात्म होवे तेरे वस, पारब्रह्म ब्रह्म पड़दा देणा चुकाईआ। पिछला लहिणा देणा लेखा सारे दईए छड, झगड़ा अग्गे ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। पैग़म्बर कहिण प्रभ सच झुला निशाना, निशाना अवर ना कोए जणाईआ। अवतार कहिण श्री भगवाना, भगवन तेरी बेपरवाहीआ। गुरु सतिगुर कहिण मेरे मेहरवाना, मेहर नज़र इक उठाईआ। कलयुग लोकमात बदल दे ज़माना, ज़ामन आपणा आप जणाईआ। सब दा इक्को जेहा होवे माणा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। एका गृह मन्दिर होवे दर सुहाना, सच दवारा वज्जे वधाईआ। इक्को सब दा होवे पीणा खाणा, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। इक्को नाम धुन शब्द नाद कलमा कायनात होवे गाणा, सजदा सीस जगदीश झुकाईआ। इक्को हुक्म संदेश होवे फ़रमाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा अवर ना कोए अख्वाईआ। पैग़म्बर कहिण साडी मंज़ूर कर दुआ, दोए जोड़ सीस निवाईआ। नूरी जल्वागर खुदा, खुदी तक्ब्बरी दे मिटाईआ। माया ममता ना रहे वबा, असल वसल देणा यार खुदाईआ। तेई अवतार बैठे सीस झुका, निउँ निउँ लागण पाईआ। तेरा इक्को नाम लईए ध्या, ध्यान ज्ञान इक समझाईआ। चार वरनां अमृत जाम प्या, रस इक्को इक वखाईआ। ऊच नीच ज़ात पात झगड़ा दे मिटा, काया माटी मिट्टी ख़ाक मिले वड्याईआ। दस गुर कहिण तेरा दो जहान वज्जे डंका, नाउँ निरँकारा इक्को इक सुणाईआ। राउ रंक शाह सुल्तान इक्को घर बहा, दूजा घर ना कोए वखाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले आपणा इष्ट दे दृढ़ा, दृष्ट सब दी दे खुल्हाईआ। ओह वेख की राम वशिष्ट कलयुग अन्तिम संदेशा गए जणा, जानणहार तेरी सरनाईआ। कलि कल्की वेस वटा, निहकलंका रूप अनूप दरसाईआ। अमाम अमामा आप अख्वा, धुर दा कलमा इक समझाईआ। जोती

जाते पुरख बिधाते परवरदिगार सांझे यार बेपरवाह, पर्दानशीं पर्दा दे उठाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु तेरे गवाह, शहादत शब्द नाम भुगताईआ। कलयुग विच सतिजुग प्रभू ज़रूर देणा ला, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त निरगुण सरगुण दो जहानां होणा सहा, सहायक नायक इक्को इक तेरी ओट रखाईआ।

७ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ बीबी जीतो दे गृह पिण्ड बासर के

सतिगुर शब्द शब्द सतिगुर, सतिगुर आप निरँकार अख्वाईआ। जिस दा ना कोई दीन ना कोई मज़्हब, ज़ाती वंड ना कोए वंडाईआ। आपणे आप दा आपे करे अदब, सीस जगदीश आप झुकाईआ। जुग चौकड़ी आपणा चुक्के आपे कदम, कुदरत कदीम आपणा हुक्म वरताईआ। खेल वेखे तन वजूद माटी ख़ाक बदन, शरीर बेनज़ीर फोल फुलाईआ। जन भगतां चाढ़े साची रंगण, रंगत आपणा नाम वखाईआ। गुरमुख दूजे दर ना जाए मंगण, सब दी झोली दए भराईआ। सदा सुहेला रखे आपणे अंगण, अंगीकार आप अख्वाईआ। सन्त सुहेले साची मंज़ल लँघण, जगत पाँधी पन्ध मुकाईआ। भगत भगवान इक्को दर वसण, दर घर साचा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक मनाईआ। शब्द सतिगुर सतिगुर शब्द दीन, दुनी वेख वखाईआ। जिस नूं सारे रहे चीन, रसना गा गा शुकर मनाईआ। सो साहिब सदा प्रबीन, पारब्रह्म दृढ़ाईआ। होए ना किसे अधीन, सीस ना कदे झुकाईआ। झगड़ा समझे ना कोए नर मदीन, स्त्री पुरुष वंड ना कोए वंडाईआ। सदा आपणे नाम दी करे तलकीन, धुर संदेशा इक सुणाईआ। जिस नूं सजदयां विच करन आमीन, महिबूब नूर खुदाईआ। उहदी सब तों वक्खरी तालीम, जुग जुग गुर अवतार पैग़म्बरां करे पढ़ाईआ। सो लेखा जाणे धरनी धवल ज़मीन, ज़ाहर ज़हूर आपणी कल धराईआ। भगत सुहेला रहे ना कोए ग़मगीन, ग़मी खुशी विच बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मार्ग इक प्रगटाईआ। शब्द गुरु गुर शब्द स्वामी, साहिब इक अख्वाईआ। जिस दी सिफ्तां वाली बाणी, जो हर घट अन्तरजामी लख चुरासी वेख वखाईआ। अमृत निझर झिरना देवे ठंडा पाणी, बूँद स्वांती इक टपकाईआ। आत्म परमात्म मिलाए हाणी, जोड़ी धुर दी जोड़ जुड़ाईआ। लेखा वेखे चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल करे मेहरवानी, मेहर नज़र इक उठाईआ। भगतां मंज़ल दस्स आसानी, आप आपणा मेल कराईआ। देणी पए ना

१६० २२

किसे कुरबानी, करबल्यां विच ना कोए भवाईआ। साचा नाम दे के दानी, दयावान होए सहाईआ। गुरमुख रहे ना कोए अभिमानी, माया ममता गढ़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सर्ब जीआं दा जाण जाणी, जानणहार इक अख्वाईआ।

✪ ७ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ हरबंस कौर दे गृह पिण्ड नारला ✪

सतिगुर शब्द कहे सुहञ्जणी होई मिती, सम्मत शहिनशाही पंज पंच वड्याईआ। प्रभ दा खेल नित नविती, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा वेस वटाईआ। जुग जुग गुर अवतार पैग़म्बरां खेल दस्से निक्की निक्की, हिस्सया विच दीन दुनी वंड वंडाईआ। सति सच भगत भगवान सन्त गुरमुख बणा सिक्खी, धुर दा मार्ग इक समझाईआ। धर्म दी धार रख तिक्खी, दो धारी आपणा हुक्म वरताईआ। अमृत धार दे मिठ्ठी, रस अगम्मी इक चुआईआ। सदी चौधवीं हज़रत दे हथ्थ फड़ाए चिट्ठी, मुहम्मद तों मोहर दिती लगाईआ। तेरी उम्मत कामल मुर्शद धरती रहे टिकी, टिक्का मस्तक ख़ाक रमाईआ। जिस वेले परवरदिगार खेल करे दो इक दा इक्की, इकीसा जगदीशा आपणी कार कमाईआ। शरअ कूड़ कुड़यार विच तेरी जाए विकी, कीमत उम्मत ना कोए रखाईआ। कलमे वाली रसना होणी फिक्की, वाअज़ जाइज़ ना कोए जणाईआ। ओस वेले परवरदिगार सांझे यार खेल करनी अनडिठ्ठी, जिस नूं जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। झगड़ा मिटाउणा पथ्थर इट्टी, इष्ट देव स्वामी इक्को नज़री आईआ। माण रहिण नहीं देणा जटा जूट लिटी, तन भबूत ना कोए रमाईआ। ओस वेले जन भगतां ढाई मुट्ठां ल्याउणी मिट्टी, हद्द घविंड वाली नज़री आईआ। जिस दे नाल हाहे उत्ते पाउणी टिप्पी, होड़ा सस्से उत्ते टिकाईआ। छोटी जेही पकाउणी टिक्की, नौ मिन्ट अग्ग विच तपाईआ। जिस दी धार जाणी लिखी, पिछला पड़दा दए उठाईआ। जगत वेखण मुनी ऋषी, रखीशर ध्यान लगाईआ। छब्बी पोह होणी सुहञ्जणी थिती, वार वारता दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। मिट्टी कहे मेरा लेखा मुहम्मद नाल तअलुक, ताबयादारी दयां जणाईआ। मैं वेखां खेल उपर फ़लक, अर्श अज़ां ध्यान लगाईआ। की खेल होणा विच ख़लक, ख़ालक मख़लूक की हुक्म सुणाईआ। किसे नूं पता नहीं जगत जहान विच पलक, की पुरख अकाला दीन दयाला आपणा हुक्म वरताईआ। इन्द्र अमृत जल ल्यावे विच कलस, आपणा पन्ध मुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सारे आवण रसक, दूर दुराडा रहिण कोए ना पाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर होवण मस्त, ख़ुमारी अगम्म अथाह चढ़ाईआ। दीन दुनी

दी जिस मेटणी हसद, द्वैत दूई डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सम्मत कहे शहिनशाही शाहो भूप, शहिनशाह वड्याईआ। जिस दा हुक्म चारे कूट, दो जहान ना कोए उलटाईआ। कलयुग मेटणहारा जूठ झूठ, कूड़ी क्रिया पन्ध मुकाईआ। सतिजुग सच उपजाए पूत, पिता पुरख अकाल दया कमाईआ। शब्द शहाना उठाए दूत, दुतीआ भाओ दए मुकाईआ। सृष्टी दृष्टी एका ताणा पेटा बणाए सूत, सूत्रधारी होए सहाईआ। कूड़ कल्पना लोकमात कराए कूच, कूचा गली करे सफ़ाईआ। पिछला हुक्म चार जुग दा कर मनसूख़, शब्द संदेशा इक दृढ़ाईआ। कर प्रकाश चारे कूट, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण करे रुशनाईआ। भेव रहे ना काया पंज भूत, अन्तर निरन्तर नाद शब्द धुन शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच नाल वड्याईआ। सम्मत कहे मैं वेखणा जंगल जूहां कुन्दरा, टिल्ले पर्बत फोल फुलाईआ। पुरख अकाला जोत सरूपी अति सुन्दरा, जिस दा रूप रंग रेख ना कोए दृढ़ाईआ। जिस दा लहिणा देणा लेखा लिख सके कोई ना उँगला, कलम शाही ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत पंज कहे मिट्टी होवे ढाई मुट्ठी, वद्ध घट्ट ना कोए रखाईआ। गुरमुख धार होवे ना रुट्ठी, प्रेम प्रीती विच समाईआ। सच प्रीत होवे ना टुट्टी, मुहब्बत इक वड्याईआ। सुरती होवे ना सुत्ती, शब्द नाद शनवाईआ। मंज़ल होवे उच्ची, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। खेल रहे ना लुकी, उगण आथण वज्जे वधाईआ। उम्मत उम्मती लेखा जाए मुकी, मुकम्मल आपणी कार कमाईआ। हरिसंगत रहे ना दुखी, दुखियां दर्द गंवाईआ। भगत सुहेले उज्जल कर मुखी, दुरमति मैल धुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच साची कार कमाईआ। मिट्टी कहे मेरे साथ होवे खोपरे वाली ठूठी, अधा हिस्सा वंड वंडाईआ। मनी सिँघ नाल ल्यावे चार चार दी अंगूठी, पिछला लेखा मुहम्मद वाला दयां दृढ़ाईआ। पत्रका लिखी होवे जिस दा लेख होवे सृष्ट सबाई झूठी, बिन सतिगुर साचा नज़र कोए ना आईआ। निगाह मार चार कूटी, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा दए दृढ़ाईआ। अंगूठी दा लेख होवे अल्लाह, अक्खर वड वड्याईआ। सेवा करे इक इकल्ला, मुहम्मद दा मीज़ू सोभा पाईआ। नाल फड़ाउंणा इटारसी वाला मुसल्ला, जो भगत सिँघ पिच्छे लै के आईआ। लोटा भरया होवे जला, सज्जे हथ्थ विच टिकाईआ। पिट्ठ ते बद्धी होवे खल्ला, रूप अनूप दरसाईआ। नाअरा लाउंदा आवे अल्ला अल्ला, मुक्खों अकबर कहि के गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल

साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सम्मत पंज कहे जन भगतो दस्सणी सच प्रीत, प्रीतम इक मनाईआ। छब्बी पोह नूं प्रीतम सिंघ दी आत्मा हरि भगत दवारे पहुंचे ठीक, ठाकर आपणा रंग रंगाईआ। जिस ने तूं मेरा मैं तेरा गाउणा गीत, सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ। दरगाह साची सचखण्ड हो वसनीक, गृह मन्दिर लैणा सुहाईआ। सदा सदा सद सति विच रहे अतीत, त्रैगुण पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता बेपरवाहीआ। सम्मत कहे मैं देवां सति संदेशा, सँध्या सरघी ना कोए वड्याईआ। जन भगतो सब दा जन्म जन्म दा लेखा, पुरख अकाला वेख वखाईआ। कर्म कांड दा रहे ना कोए भुलेखा, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। सति सच कराए हेता, हितकारी दया कमाईआ। सब दा सति पुरख निरँजण होवे नेता, निराकार निरँकार आपणा हुक्म समझाईआ। सदी चौधवीं पैग़म्बरां पूरा होवे ठेका, अग्गे हुक्म ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जोती जामा धार के भेसा, भेख अवल्लड़ा इक इकल्लड़ा आपणा आप रखाईआ।

१६३ २२

✪ १५ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ जमांदार किशन सिंघ दे नवित रस्ते विच पिण्ड अलूड़पिण्डी ✪

नानक प्यार जाए ना बिरथा, बिरथी सर्ब लोकाईआ। लेखा मूल जाए ना सिरसा, गोबिन्द धार दए गवाहीआ। लेखे लग्गे शब्द धार विरसा, वारस हो के वेख वखाईआ। राम दी पूरी करे हिरसा, हवस पिछली नाल मिलाईआ। कृष्न दा कृष्न धार दरसा, काहन काहन रंग रंगाईआ। मूसा लेख वेख धिर दा, कोहतूर राह तकाईआ। ईसा नूर वेख मेहर दा, वास्ता करे ख़लक खुदाईआ। मुहम्मद दरस पाया शेर दा, शहिनशाह इक्को बेपरवाहीआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब दा लेख नबेड़दा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण लख चुरासी गेड़ा गेड़दा, आत्म परमात्म आपणा हुक्म समझाईआ। मालक ख़ालक बणया रिहा देर दा, दूर दुराडा धुरदरगाहीआ। कुछ लेखा बाकी अन्त समें नदेड़ दा, दस्म धार दस दस विच जणाईआ। जिस दे हुक्म नूं हुक्म विच कोई ना छेड़दा, शरअ शरअ ना कोए बदलाईआ। ओह लेखा जाणे तत वजूद अंधेर दा, ओह आत्म खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। नानक लेखा मूल ना विसरे, विसरे सृष्ट सबा। पुरख अकाला धुर दा मित्रे, वड दाता बेपरवाह। जोती धारों आपे निकले, जिस नूं जन्मे कोई ना मां। आपणी सिख्या आपे सिख लए, निरअक्खर

विच्चों अक्खर आप प्रगटा। हुक्म संदेशा धुर दा लिख लए, अवतार पैग़म्बर गुरु कर रुशना। सब दे अन्तर निरन्तर विच रहे, शब्दी जोती रूप वटा। लेख भविख सच कहे, संदेशा दए अगम्म अथाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि कादर नूर अलाह। नानक लेखा चार कुण्ट, सृष्ट दृष्ट जणाईआ। निगह मार के विच बैकुण्ठ, पुरख अकाल ल्या मनाईआ। खेल वेख के काग भसुंड, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। जगत जहान वेख के जिज्ञासू झुंड, मन मति बुध पड़दा लाहीआ। निगह मार के नैण मुंद, नैण मधारी अंग लगाईआ। प्रेम प्रीती बिना नासका सुंघ, दो जहानां खुशी बणाईआ। आपणे वस्त्र सारे टंग, चोला पिट्ठ उत्ते उलटाईआ। फेर बैठ के उत्ते खुंड, निगाह इक विच टिकाईआ। फेर वेखे सागर समुंद, आकाश पाताल खोज खुजाईआ। फेर वेखे मुख गुंग, जो कुछ कहि सकण ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। नानक किहा मूल रहे ना बाकी, बाकायदा आपणा हुक्म वरताईआ। वेखणहारा लख चुरासी जिस्म ज़मीर ख़ाकी, ख़ालक ख़लक नूर इलाहीआ। जिस दा खेल सदा जुग चार आदी, आदम हवा जिस दी सेव कमाईआ। विष्न ब्रह्मा जिस दी आबादी, देवत सुर आपणा रंग रंगाईआ। कुछ आसा रख के गई अजीत, जुझार दी दादी, गुजरी गुजरा समां रही जणाईआ। कुछ लेखा नानक विच बग़दादी, बग़लगीर हो के गया दृढ़ाईआ। जिस वेले कलयुग विच किसे साध सन्त दी थिर ना रही समाधी, साधना विच ना कोए वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बर रिहा कोए ना गाडी, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। नाम बाणी दा राग बदल देण ढाडी, सुर बेसुर ताल वजाईआ। फेर खेल वेखणी जो कृष्न किहा यादव यादी, याददाशत इक दृढ़ाईआ। फेर पड़दा लौहणा जिस भेव खुल्हाया आदी, अन्त अन्तिम इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। नानक दा लेखा लालो दे दवार, लहिणा समझ कुछ ना आईआ। अन्तर अन्तर दे खुमार, खुशी ग़मी इक्को रंग वखाईआ। संदेशा दे के वारो वार, नौ वार पड़दा दिता चुकाईआ। मेरा कर्ज़ा तेरा उधार, लहिणा दोहां दा सांझा इक्को घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक नूर इलाहीआ। पन्द्रां कत्तक कहे मैं तकदा कद दा, कदीम दा वेख वखाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा रिहा लभ्भदा, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप अक्ख उठाईआ। समां समें नाल गया लँघदा, घड़ी घड़ी नाल बदलाईआ। मैं आसा मंगां रिहा मंगदा, मांगत हो के झोली डाहीआ। मैनूं लेखा याद आ गया सरसे वाले जंग दा, पोह पुनह पुनह सीस निवाईआ। गोबिन्द तिन्न वार नीले तों उतर के तंग आपणी हथ्थीं कसदा, तिन्न वार कमरकसा खिच्च

के आपणे तन बंधाईआ। नाल पुरख अकाल वल्ल वेख के हस्सदा, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। नीला चार कुण्ट नठदा, प्रदक्खणा लै के आपणी खुशी बणाईआ। शब्दी हुक्म होया गोबिन्द जिस वेले कलयुग वेला होया भट्ठ दा, भठियाला कूड़ कुकर्म अग्नी डाहीआ। साची कोए ना हद्द होया टप्पदा, दरगाह साची मिलण कोए ना पाईआ। प्रकाश रहे ना निज नेत्र अक्ख दा, जगत सन्त ना कोए चतुराईआ। कलयुग अग्नी वांग होया मघदा, दीन मज़्हब करे लड़ाईआ। माण रहिणा नहीं प्यो पुत वाली पग्ग दा, चारों कुण्ट फिरे दुहाईआ। काया मन्दिर अन्दर दिसे कोए ना सतिगुर शब्द सद्दा, रसना पढ़ पढ़ सारे ढोले जगत सुणाईआ। ओस वेले खेल होणा सूरे सरबग दा, शाह पातशाह शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पन्द्रां कत्तक कहे गोबिन्द आपणी लै अंगड़ाई, निगाह ज़िमीं असमान उठाईआ। पुरख अकाल तेरी बेपरवाही, तेरी तेरे विच वड्याईआ। तूं मेरा मैं तेरा मेरी शहादत देणी भुगताई, गवाह तैनूं लवां भुगताईआ। मेरा लेखा ना मिटे राई, फ़र्क रहिण कोए ना पाईआ। मैं नहीं चाहुंदा कि मातलोक विच कोई रहे कसाई, जीवां उत्ते छुरी ना कोए उठाईआ। चार वरन अठारां बरन हिन्दू मुस्लिम वेखां ईसाई,
१६५ ज़ात पात वंड ना कोए वंडाईआ। क्यों तूं सब दा मालक इक धुरदरगाही, दरगाह साची दे मालक लोकमात एहो रीती १६५
२२ देणी चलाईआ। पुरख अकाल एह संदेशा दिता शहादत इक पाई, पारब्रह्म आपणी दया कमाईआ। ईसा उठ के दिती दुहाई, २२
बौहड़ी बौहड़ी कर सुणाईआ। मुहम्मद नैणां नीर वहाई, सदी चौधवीं राह तकाईआ। पुरख अकाल किहा सुणो हुक्म अगम्म अथाही, अलख अगोचर हो के दयां दृढ़ाईआ। जिस वेले कलमे नाम वाले होए शुदाई, शरअ दी करन लड़ाईआ। ओस वेले लोकमात आवां चाँईं चाँईं, चाओ घनेरा सब नूं दयां सुणाईआ। ईसा गोबिन्द धार तेरा लेखा दए मुकाई, लहिणा आपणा झोली पाईआ। ओस वेले गोबिन्द दे कोल वीह गुरसिख जिन्हां ने धूढ़ी मस्तक लाई शाही, चरणी ढहि के आपणा आप मिटाईआ। गोबिन्द थापी पुश्त पनाह टिकाई, टिक्के आपणे लए बणाईआ। खुशी विच किहा जिस वेले मैं आवां ते नाल मेरा माही, महिबूब हो के फेरा पाईआ। फेर लहिणा वेखणा जो नानक लालो दिती वड्याई, वाहवा आपणी कार कमाईआ। ओ गुरसिखो तुसां ओस वेले मेरे पहरेदार होणा थांउँ थाँईं, किरपाना तलवारां कंध्याँ उत्ते टिकाईआ। फेर वेखी धरनी धरत धवल जो मेरी धारों जाई, ते जगत दी माई रही अख्वाईआ। गुरमुखां हस्स के किहा गोबिन्द वेखीं किते कर ना जाईं जुदाई, तूं सतिगुरु असीं चेले वड्डा छोटा ना कोए रखाईआ। गोबिन्द दोवें कर के बाहीं, आपणे हथ्थां दी गलवकड़ी पाई, गुरसिखो तुसीं मेरे साहिब ते मैं तुहाडा राही, पाँधी बण के राह तकाईआ। ओन्हां ने फेर किहा सतिगुरु कौण भरे गवाही, लेखा कवण जणाईआ।

गोबिन्द ने पंज उँगलीआं इके वार उठाई, फेर छाती नाल लगाईआ। पंज प्यारे तुहाडे सेवादार जेहड़े जट्ट झीवर ते छींबे नाई, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। पंज लिखारी तुहाडा लेख वेखण चाँईं चाँईं, मस्तक बिन्दीआं लाल रंग रंगाईआ। फेर गोबिन्द ने सज्जे चरण नाल पुट्टी खाई, निशान डूँघा दिता लगाईआ। जिस वेले मेरे सतिगुर ने रीत सतिजुग चलाई, सच सच वड्याईआ। फेर लोकमात दी बदल देणी शाही, शहिनशाह आपणा हुक्म सुणाईआ। अग्गे प्यो मरे तों पुत नूं पग्ग सीस बन्नूदे ते माण मिलदा धी जवाई, घर दी रीती रीती विच बदलाईआ। फेर खेल करना पुत मरे ते प्यो नूं मिले वड्याई, एसे कर के पहलों लिख्त दिती कराईआ। अगला लेखा रात नूं सुणना चाँईं चाँईं, जेहड़ा नानक दब्ब के आपणी बग़ल विच गया रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेखणहारा थांउँ थाँईं, थान थनंतर गगन गगनंतर खोज खुजाईआ।

✪ १५ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ जमांदार किशन सिँघ दे गृह ✪

अर्जन वेख लै जो संदेश दिता बुड्ढे बाबे, बाबे बुड्ढे दिता जणाईआ। खेल वखाया किस बिध प्रभ प्रगट होवे देस माझे, महाराज आपणी खेल खिलाईआ। गुरसिख मेले विच्चों दुआबे, दुहरी आपणी कार कमाईआ। किस बिध मालवे वाले रखे लागे, दूर दुराडे जोड़ जुड़ाईआ। किस बिध जम्मू वाले होण सांझे, सगला संग बणाईआ। किस बिध खेल करे विच काअबे, आपणा हुक्म वरताईआ। किस बिध वजाए आपणे अगम्मी वाजे, शब्दी नाद सुणाईआ। किस बिध सूरा सतिगुर गाजे, गरज आपणा नाम रखाईआ। किस बिध खेल कराउणा उत्ते वाघे, पुरी घनक घनक वड्याईआ। अर्जन फेर हत्थ जोड़ किहा एह खेल ओस प्रभू डाहढे, जिस नूं डण्डावत कर के सीस निवाईआ। जो धर्म निशाने गाडे, हुक्म आपणा इक सुणाईआ। जो मेहर करे ते धोवे दुरमति मैल दाग़े, पापां करे सफ़ाईआ। गुर अर्जन दोवें हत्थ जोड़ झुक गया आगे, आगमन विच सीस निवाईआ। पर पहलों खेल वेखणा गोबिन्द वाले बाज़े, बाजां वाला फेरा पाईआ। बुड्ढे किहा कुछ इस तों दस्स आगे, उँगलां कन्नां विच पाईआ। अर्जन किहा जिस वेले साध सन्त नहीं जाणे साधे, साधना रहिण कोए ना पाईआ। फल रहिणा नहीं धर्म दे बागे, फल फुल्ल ना कोए महकाईआ। कलयुग नींद विच्चों कोई ना जागे, ग़फ़्लत पड़दा ना कोए उठाईआ। अर्जन फेर चुप हो गया ध्यान धरया गोबिन्द दा सरूप ते कन्ढा नज़र आया ढाबे, जिस दी महा सिँघ दए गवाहीआ। फेर बुड्ढे ने किहा अर्जन नूं मार के दाबे, गुरुआं कुछ होर दे समझाईआ। ओस किहा बाबा ओस ने सारी सृष्टी तोलणी नाम

दे छाबे, शहिनशाह तराज़ू इक उठाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर जिस नूं अराधे, अराधना विच लोकाईआ। जिस दे भविक्खतां विच लैंदे आए खवाबे, पेशीनगोईआं विच पेशतर रहे जणाईआ। जिस दे नाम दी नानक वजाई रबाबे, सारंगा कंधे उत्ते टिकाईआ। ओस वेखणे डूँग्घे खाडे, दीन मज़्ह्ब दे गढ़े फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। बाबे किहा अर्जन सतिगुरु की लालो दे अन्दर नानक मारी फूक, फ़ुरना दिता बदलाईआ। ओह वी पंज भूत, तन वजूद नजरी आईआ। ओह वी काया कलबूत, हड्ड मास नाड़ी सोभा पाईआ। ओह वी ताणा पेटा सूत, दूजा रूप ना कोए दरसाईआ। गुर अर्जन किहा बाबा जिस वेले सतिगुर साचा होए मौजूद, जो चाहे दए कराईआ। मेहर दी निगाह नाल कर के महफ़ूज़, गोद आपणी लए बिठाईआ। बाबे किहा की भगती दा असल देवे कि सूद, कि कुल दा कुल लेखा दए मुकाईआ। अर्जन ने निगाह मारी तक्कया ओ बाबा अजे ते गोबिन्द दे बच्चे जाणे झूज, अजीत जुझार नजरी आईआ। बाबे किहा सतिगुरु क्यों सतिगुर विच हुन्दी ना कोई दूज, दूआ दे समझाईआ। गुर अर्जन किहा बाबा जिस वेले निरगुण तों सरगुण दी हुन्दी वेखी पूज, ओनां चिर द्वैत ना कोए मिटाईआ। बाबे किहा अर्जन सतिगुर एह कूड़ा कवण देवे हूंझ, करे सर्ब सफ़ाईआ। गुर अर्जन किहा मेरा पुरख अकाल दीन दयाल ग़रीब निमाणयां दे
१६७ २२ हन्झू देवे पूंझ, आपणे गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा आपणा खेल वखाईआ। बाबे बुढे किहा सतिगुर की सतिगुर उत्ते वी आवे बुड़ापा, मैनूं दे समझाईआ। की सतिगुर वी जोड़े नाता, जगत विच लोकाईआ। की सतिगुर दा वी कोई खाता, कर्मां कांडां विच आपणा झट लँघाईआ। की सतिगुर दा वी कोई अहाता, चार दीवारी वंड के आपणा हिस्सा लए बणाईआ। गुर अर्जन किहा बाबा नहीं ओह पुरख पुरख समराथा, जो आदि अन्त अख्वाईआ। बाबे किहा की ओह माला फेरे कि करे पूजा पाठा, कि अक्खीं मीट ध्यान लगाईआ। गुर अर्जन किहा ओह आदि तों अन्त तक सर्ब दा राखा, ते सब दा पिता माईआ। बाबे किहा फेर तूं क्यों चौंकड़ा मार के मारें अवाज़ा, मुट्ठी बन्द रखाईआ। गुर अर्जन किहा बाबा मैं डरदा मन्नदा ओस दा आखा, हुक्मे विच ना होए कोताहीआ। मैं ते उहदा निक्का जेहा काका, जिस नूं नाम खिलौणयां नाल रिहा खिलाईआ। इक उस दा भविक्खत दस्सां वाका, पर याद रखीं जीवत जीअ रसना जेहवा ना बाहर सुणाईआ। क्यों ओस प्रभू ने कलयुग अन्त आपणयां भगतां दीआं पूरीआं करनीआं आसा, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। उन्हां दा सब दे उतों उड जाणा भरवासा, भरोसा इके उत्ते रखाईआ। जिस दीआं गुर अवतार पैग़म्बर निक्कीआं निक्कीआं शाखां, शाह पातशाह मेरा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुलाईआ। गुर अर्जन किहा बाबा वेख मेरा मस्तक, बुढ्ढे ध्यान ल्या लगाईआ। जां तक्कया सम्मत शहिनशाही पंज ते महीना कत्तक, थित वार पन्द्रां नज़री आईआ। नज़ारा तक्कया ते वेख्या सुहञ्जणा वक्त, घड़ी घड़ी दए गवाहीआ। पेशीनगोईआं वेखीआं ओस ने पूरी करनी शर्त, जो शरअ दए बदलाईआ। फेर याद आ गया राम ने विछड़न लग्गयां की संदेशा दिता सी भरत, पुठीं पैरीं चल के भराते नूं दिता सुणाईआ। तेरे राम दा राम जिस ने कलयुग आउणा परत, पत्रका लिखणी नहीं नाल किसे कलम शाहीआ। खेल करना असचरज, अचरज लीला आपणी दए दृढ़ाईआ। जन भगतां पुट्ठी सिध्धी करके नरद, नर नरायण आपणा रंग चढ़ाईआ। पर मैनूं याद आ गया नानक ने फेर लालो तों लैणी ओह करद, जिस ने कातिल मक्तूल देणे मुकाईआ। गुरमुखो इक वार खड़का दयो खण्डे नाल खड़ग, टक टक आवाज़ सुणाईआ। तुहाडा एथे ओथे होण नहीं देणा हर्ज, जिस तरह तुसीं मेरे पहरेदार एसे तरह मैं होवां सहाईआ। कदी बेड़ा होण नहीं देणा ग़रक, मलाह बण के बेपरवाह बण के बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। क्यों आदि तों लै के अन्त तक पैग़म्बरां नाल मेरी शर्त, जिस दी शरअ ना कोए बदलाईआ। जद वेखो अर्श ते फ़र्श, तरस भगतां उत्ते कमाईआ।
१६८ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल वखाईआ। बाबे किहा अर्जन मेरे अन्दर वज्जदी चोभ, १६८
२२ चुभकां रही लगाईआ। की कोई नाम सूआ रिहा एं खोभ, मैनूं दे जणाईआ। सतिगुर अर्जन किहा बाबा एथे पा दे भोग, २२
अग्गे शब्द ना कोए सुणाईआ। बाबे किहा मैनूं सतिगुर नाल बचन करन दा रोग, एह सके ना कोए मिटाईआ। मैं प्रभ दी भगती ते तेरा कीता जोग, जुगती ना मंग मंगाईआ। अर्जन इक मैं जेहड़ा निमस्कार नौ वार करदा रोज़, नौ दवारे तेरी झोली पाईआ। मेरे जिस्म दी तैनूं होवे सोच, बाबा बुढ्ढा फिरे चाँईं चाँईंआ। गुर अर्जन किहा बाबा सदी चौधवीं गुर अवतार पैग़म्बरां दा मुरीदां सिक्खां नालों होणा वियोग, वियोगी हो के मारन धाहीआ। जिधर वेखणा घर घर दिसदा सोग, खुशी विच खुशी ना कोए प्रगटाईआ। सिर्फ़ प्रभू ने आपणे भगतां नूं देणी मौज, मौजूद हो के रंग रंगाईआ। गुरमुखो तुसीं गोबिन्द दी फ़ौज, फ़ौजदार तुहाडा शहिनशाहीआ। वेखणा खेल लोक परलोक, दो जहान ध्यान लगाईआ। अज्ज तों अवतार पैग़म्बरां गुरुआं नूं पै जाणी सोच, सोच विच नैण लैण उठाईआ। की खेल होणा पुष्कर करौच, कलि कल्की की कल वरताईआ। जिथ्थे किसे नहीं सकणा पहुंच, पंजे ला के सारे बेठै पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गुर अर्जन किहा बाबा सम्मत शहिनशाह पंज दा आउणा कत्तक पन्द्रां, इक पंज रंग रंगाईआ। माण रहिणा नहीं मसीतां मन्दिरां, गुरदवार मढ्ढ ना कोए चतुराईआ। जोग रहिणा नहीं जूहां कन्दरां,

टिल्ले पर्बत फिरे दुहाईआ। प्रकाश रहिणा नहीं किसे दे अन्दरां, नूरी जोत ना कोए चमकाईआ। अन्तर खुल्ल्हे किसे ना जन्दरा, कुंजी हथ्थ ना कोए रखाईआ। कुछ लहिणा कृष्न दा बन बिन्दरा, बिन्दी वाल्यां दए समझाईआ। कुछ लहिणा सुरप्त इन्द्रा, इन्द इन्द्रासण ध्यान लगाईआ। कुछ देणा लहिणे दा जो नानक वखाया विच निंद्रा, अंगद अंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच लेखा पूर कराईआ। बाबे किहा गुर अर्जन ओह सिख केहड़े होणे समाजी, सच दे जणाईआ। गुर अर्जन किहा उन्हां दीन मज़्ब तों होणा बाग़ी, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। इक पुरख अकाल नूं मन्नणा इमदादी, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। उन्हां दी धार होणी सादी, साधां तों अगला घर देणा वखाईआ। सदी चौधवीं सुरती होणी जागी, आलस निंद्रा देण मिटाईआ। ते पुरख अकाल उन्हां दा बण के हाजी, लोकमात हज्ज करन आवे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। जन भगतो गोबिन्द गुरु ते गोबिन्द गुरु चेला, ते लेखा पूर कराईआ। आपस विच किरपान दा किरपान नाल कर दयो मेला, सतिगुर तुहाडी ओट रखाईआ। एह जुग जन्म दा मेला, विछड़यां मेला रिहा कराईआ। तुसीं मेरे ते मैं तुहाडा सज्जण सुहेला, नाता इक्को ल्या रखाईआ। रावी दा कन्ढा ते कलयुग दा बेला, ते जगत दा सुहेला तुहाडा दिसे माहीआ। जे सच पुछो अदि तों अन्त तक ते जुग चौकड़ी अकेला, इक इक नाल सदा करदा आया कुड़माईआ। हुण सारयां तों हो के वेहला, चौहु जुगां दे विछड़े लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। सतिगुर कहे मैं शब्द गुर शब्द गुरदेवा, आत्मा गुर शब्द शब्द गुर आत्मा परमात्मा गुर शब्द शब्द गुर परमात्मा, परम पुरख शब्द शब्द गुर आत्मा धर्म धर्मातमा, धर्म दी धार एकँकार इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गुरमुखो इक याद रखयो बोली, सच नाल दयां जणाईआ। रात नूं संगल लक्क नाल बन्न्हे सदी चौधवीं दी गोली, नाल पंज प्यारयां दी होवे टोली, दोहां हथ्थां नाल ताली देणी वजाईआ। सब ने दाढ़े लैणे खोल्ही, खुल्हा खेल वखाईआ। इक गुरसिख जिस ने पाउणी रौली, ऊची कूक कूक दए दुहाईआ। बोलणा नहीं हौली हौली, हुक्म दिता सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गुरमुखो किते थक्के ते नहीं, सच देणा सुणाईआ। किसे दी पिच्छे चोण वाली ते नहीं महीं, ध्यान पिच्छे ना कोए रखाईआ। किसे दी पाणी विच धरी ते नहीं कही, सुरती आपणी रिहा उलटाईआ। किसे दी कोई चीज गवाच ते नहीं गई, सोचां विच आपणा आप डराईआ। किसे दा लेखा

देण वाला ते नहीं रह गया उत्ते वही, अन्दर लेखा रिहा बणाईआ। किसे दी वस्त किसे कोल ते नहीं पई, जो अमानत आए टिकाईआ। वेख्यो अज्ज दी रात सतिगुर दे लेखे पाउणी सही, सही सलामत आपणा आप कराईआ। जिस दे बच्चे दी सीढ़ी अजे होई नहीं बही, ओह तुहाडी खुशी रिहा मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुहाडे प्रेम दा सदा नशई, मस्ती विच हस्ती विच अर्शी हो के फ़र्शी हो के प्रेम प्यार दा ग़रज़ी हो के मिले चाँईं चाँईंआ।

✪ १५ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ जमांदार किशन सिँघ दे गृह रात साढे नौ वजे पिण्ड अल्लड़पिण्डी ✪

पंज प्यारे फड़ लओ संगल, सगला संग वखाईआ। गुरमुखो प्रभ नूं लभ्भण जाणा नहीं कदे विच जंगल, पिछली रीती दिती बदलाईआ। तुहाडे घर विच होवे चारमंगल, खुशी काया अन्दर वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया ज़हिर गंदल, जड़ हेठों देणी पुटाईआ। हुण ईसा मूसा मुहम्मद दा वेखणा दंगल, वेला वक्त दए गवाहीआ। सदी चौधवीं नहीं देणी लँघण, पैंडा सब दा देणा मुकाईआ। सब ने इक्को करनी बन्दन, बन्दगी इक जणाईआ। सच दवारे सारे आ के मंगण, ख़ाली झोली अग्गे ढाहीआ। पुरख अकाला सब नूं लाए अंगण, अंगीकार इक अख्वाईआ। सच नाम दी चाढ़े रंगण, रंगत इक रंगाईआ। वेखण आवे खेल त्रैलोकी नंदन, राम रामा फेरा पाईआ। जुग चारे वंञण, वञ्झ मुहाणा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा इक सुणाईआ। संगल कहे मैं शरअ ज़ंजीर, शरीअत दयां दृढ़ाईआ। पैग़म्बरो वेखो होई अख़ीर, आख़र पर्दा लाहीआ। अवतारो तक्को बेनज़ीर, नज़र नैण उठाईआ। गुरु गुरदेव वेखो गहर गम्भीर, की आपणी कार कमाईआ। जो सृष्टी दी बदलण आया ज़मीर, दृष्टी दीर्घ रोग गंवाईआ। भगत वेखो नाल कबीर, कबरां तों बाहर रिहा समझाईआ। खण्डा खड़ग तक्को शमशीर, शहिनशाह रिहा चमकाईआ। पातशाहां दी रहिणी नहीं जागीर, हकूमतां हुक्म ना कोए मनाईआ। दीन दुनी बदल देणी तकदीर, तदबीर अग्गे ना कदे समझाईआ। पातशाह कदे बणे फ़कीर, फाका कट के झट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा खेल आप वखाईआ। पंज प्यारे संगल खिच्चो, खिचो बेपरवाहीआ। मुक्खों कहो सब कुछ कढणा तेरे विच्चों, क्यों बैठा प्रभू लुकाईआ। बण के धुरदरगाही मितो, मित्र प्यारा हो के क्यों बैठा पड़दा पाईआ। साडी हद्द वध गई वित्तों, वितकरे नाल दईए जणाईआ। जे किरपा ना करें तां असीं सिख नहीं रह सकदे चितों, चेतन सब नूं दे

कराईआ। लिखारीओ धुर दा लेख लिखो, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। अग्गे वास्ते ज़ात पात विच ना किसे भिट्टो, ऊच नीच ना कोए जणाईआ। जे तुसीं कुरबान नहीं हो सकदे मैं कुरबान होया तुहाथों विटो, आपणा आप तुहाडे भेंट कराईआ। तुहाडा लेखा छुडाया पथ्थर इट्टों, बिना पुरख अकाल तों सीस ना किसे निवाईआ। इक इष्ट इक उत्ते टिको, दूसर टिक्का मस्तक ना कोए छुहाईआ। प्रभू प्यार विच विको, कीमत हट्ट ना किसे पवाईआ। वेख्यो मूँहों बणे रिहो ना मिट्ठो, अन्दरों विख रूप दरसाईआ। खुशी नाल उस साहिब दी सेजे लिटो, जो सिंघासण तुहाडी आत्म सेजा रिहा बणाईआ। कलयुग अन्त कांजी वाला दुद्ध हो ना फिट्टो, रूप सच देणा दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पंज प्यारयो खिच्चो नाल ज़ोर, ज़ोर आपणा लओ लगाईआ। एह धुरदरगाही चोर, डाकू बणया बेपरवाहीआ। पिछली कढ लओ खोर, चार जुग दा लहिणा लओ मुकाईआ। जे तुसीं फड़ नहीं सके मैं तुहाडे हथ्थ विच फड़ाई डोर, जगत वाला पल्लू ना कोए गंढाईआ। ना एह टुट्टे ते तुहाडी प्रीती निभे तोड़, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। भगत भगवान नूं इक्को जेही लोड़, वद्ध घट्ट ना कोए रखाईआ। तुहानूं नहाउण नहीं देणा किसे तलाब जौहड़, तीर्थां उत्ते ना कोए भवाईआ। मालक हो के जाए बौहड़, बौहड़ गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लहिणा रिहा मुकाईआ। संगल कहे होर करो अग्गे, ज़ोर नाल खिचाईआ। बण जाओ शेर बग्गे, आपणा बल वधाईआ। जिस ने गुर अवतार पैग़म्बर आपणी धारों कढे, लोकमात दिते भवाईआ। नाम कलमे वाले लगा के डग्गे, डौरु डंक दिते खड़काईआ। झगड़ा पा के मास नाड़ी हड्डे, तन वजूद दिते लड़ाईआ। हुण चढ़ गया ओह तुहाडे अड्डे, अड्डी दा ज़ोर ला के लओ खिचाईआ। एह मौका मिल्या नहीं किसे अग्गे, संगल बन्नृ ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव चुकाईआ। संगल कहे पंज प्यारयो मैं बड़ा शरारती, शरअ विच दीन दुनी दिती लड़ाईआ। लिखारीओ मेरा लेखा लिखो इबारती, दीन दुनी देणा पलटाईआ। कदे सतिगुर मन्नयो ना सफ़ारशी, बिना देख्या मन ना कोए टिकाईआ। विचोला बणिओ ना कोए विच आढ़ती, हट्टां विच ना तोल तुलाईआ। सदा इक हकूमत इक सरकार दी, दूजा नज़र कोए ना आईआ। हुण खेल वेख्यो पैग़म्बरां वाले परवरदिगार दी, पारब्रह्म प्रभ की आपणी कार कमाईआ। गुर गद्दी नहीं रहिणी किसे गदार दी, गदागर होए लोकाईआ। सेवा मंज़ूर ख़िदमतगार दी, जो ख़ादम हो के प्रभ नूं सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। संगल कहे मैनूं खिच्चो, पिछला ज़ोर लगाईआ। तुहाडी पूरी होवे इच्छो, आपणा रंग चढ़ाईआ। पिच्छे

प्रभू दे पढ़दे आए किस्से, किस्मत लओ बदलाईआ। जग नेत्र किसे ना दिसे, दहि दिशा अंधेरा छाईआ। जन भगतां आया हिस्से, हिस्सा आपणा लओ वंडाईआ। लुक ना जाए किते, कितिआं दा मालक दो जहानां आपणा मुख छुपाईआ। सोहणी वार वेखो थित्ते, पन्द्रां कत्तक रुत सुहाईआ। जिस दे लेख गुरु अवतार पैग़म्बरां लिखे, लेखे बिन कलम शाहीआ। सब दा लहिणा देणा आप नजिठ्ठे, वेखणहारा आपणी अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक हो आईआ। संगल कहे मैं भेव दस्सणा सगला, संगीओ दयां जणाईआ। की खेल होणा अगला, पर्दा दयां उठाईआ। गुरमुख रहे ना कोए बपड़ा बगला, हँस रूप लैणा बदलाईआ। इक्को रंग रंगाउणा शाह कंगला, शहिनशाह दए वड्याईआ। जेहड़ा मस्तक लाया चन्दना, चन्दन वास सर्ब महकाईआ। निज आत्म दे के निज नंदना, निज नैण करे रुशनाईआ। किसे दवारे पए ना मंगणा, झोली सब दी दए भराईआ। वक्त नाल लैण वाल्यो सब कुछ तुहानूं वंडणा, आपणे विच ना रखे लुकाईआ। जन्म जन्म दा टुट्टा नाता गंढणा, वेखो गंढ तुहाडे हथ्थ फड़ाईआ। वेस वटा के विच वरभण्डणा, ब्रह्मण्ड दए समझाईआ। जिन्हां गुरमुखां चमकाईआं खण्डणा, प्रचण्ड रूप दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। संगल कहे पंज प्यारे मैनूं छड्डो, धरनी दयो लटाईआ। इक धर्म निशाना गड्डो, जिस नूं वेखे सर्ब लोकाईआ। तुसां रहिणा नहीं अड्ड अड्डो, घर इक्को देणा सुहाईआ। आपणा भार सतिगुर उत्ते लद्दो, आप हौले भार चलो चाँईं चाँईंआ। कूड़ी क्रिया विच ना बज्झो, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक्को थाँ बहि के सजो, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। शेर वांगू गज्जो, भय अन्दरों देणा कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। संगल कहे मैनूं क्यों चौधवीं सदी दी गोली लक्क नाल बन्न्हया, की मेरी वड्याईआ। जिस वेले मुहम्मद ने परवरदिगार दा हुक्म मन्नया, मिन्नतां विच कीती दुहाईआ। नाले तक्कया उपर चन्नया, चौदां तबक वेख वखाईआ। किस बिध तेरा हुक्म जाए डन्नया, परवरदिगार देणा डराईआ। ओसे वेले हुक्म मिल्या जिस वेले गोबिन्द ने इक लाया कन्या, मुक्ता समझ किसे ना पाईआ। फेर तेरा बेपरवाह आया भन्नया, लोकमात चाँईं चाँईंआ। जिस चौधवीं सदी नूं तूं जणया, नाम जगत वाला रखाईआ। ओह मेरा आदि दा खेल ते जुग जुग दा देण वाला धन्नया, जो तेरी झोली पाईआ। मुहम्मद अक्खां मीट के हो गया अन्नयां, चारों कुण्ट चक्र ल्या लगाईआ। ए मालक ख़ालक प्रितपालक तेरा केहड़ा छप्पर ते केहड़ा छन्नया, सानूं दे दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा इक सुणाईआ। परवरदिगार

किहा मुहम्मद सालिहबू, सहिज दयां दृढ़ाईआ। जिस बुत विच होवे रूह, रूह बुत नाल वड्याईआ। उस विच आवां हूबहू, जिस नूं सम्बल कहि के गोबिन्द जाणा गाईआ। फेर झगड़ा मुकावां मैं ते तूं, भावें तुहमत दए लोकाईआ। मुहम्मद ने नौ वार किहा हूं, हूं हूं कर सुणाईआ। फेर खुशी होया लूं, लूं लूं लई अंगड़ाईआ। फेर अन्दरों आवाज़ आई अल्ला हू हू, हक दिता दृढ़ाईआ। मुहम्मदा जिस वेले पैग़म्बर नहीं रहिणे गुरु, चेला गुरु करे लड़ाईआ। धुर दा हुक्म किसे ना फुरू, फ़रमांबरदार ना कोए अख्वाईआ। चारों कुण्ट होवे दुड़ू दुड़ू, धुर दा धर्म ना कोए समझाईआ। दीनां मज़्बां बेड़ा रुढ़ू, चप्पू नाम ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा इक सुणाईआ। मुहम्मद किहा मेरे परवरदिगार मेरी ख्वाहिश, ख़सम ख़समाने दे जणाईआ। चौधवीं सदी मेरी आस, आहिस्ता आहिस्ता देणी वखाईआ। परवरदिगार किहा तूं मेरे नूर दी इक शाख़, शरअ विच वड्याईआ। कलमे दी दे शाबाश, हुक्म दिता सुणाईआ। अन्त ज़रूर देणा साथ, सगला संग बणाईआ। बण के पुरख अबिनाश, आपणा रूप लवां बदलाईआ। शंकर समझ ना सके उपर कैलाश, ब्रह्मा ब्रह्म ना कोए दृढ़ाईआ। विश्व दा रहे ना कोए विश्वाश, विषयां विच जगत लोकाईआ। निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, जल्वागर डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। मुहम्मद किहा मेरे माज़ुज़ला, ज़ाहर ज़हूर तेरी वड्याईआ। मेरे इललिल्ला, तेरे इक्को नज़री आईआ। मेरी बिसमिल्ला, बिसवा हिस्सा तेरी झोली पाईआ। परवरदिगार किहा मुहम्मद ओह वेख गोबिन्द तीर कमान चिल्ला, तरकश कंध रिहा उठाईआ। चौदां तबक वेख हिल्ला, ज़िमीं असमान दए हिलाईआ। तेरा चौदां सदीआं पूरा करावां छिला, छैल छबीला हो के वेख वखाईआ। ख़बरदार कदी ना होवीं ढिल्ला, धुर दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। मुहम्मद दा रंग हो गया पीला, थर थराहट विच थरथराईआ। तक्कया असमान नीला, प्रकाश वेखे जो प्रकाश विच समाईआ। कन्न विच उँगलां पाईआं मेरे परवरदिगार तूं मेरा वसीला, वसल अवर ना कोए रखाईआ। धुर फ़रमान मिल्या ओह वेख चौधवीं सदी अन्त सब मेरा इक कबीला, किबले अज़ दयां दृढ़ाईआ। मुहम्मदां इक जाम पी ला, तेरे अन्तर दयां टिकाईआ। जिस वेले सब दा बण के आवां वसीला, मालक नूर इलाहीआ। अग्गे चल्ले ना कोए दलीला, दिल्ली तख्त देणा हिलाईआ। मुहम्मद ने हथ्थ विच फड़ के तीला, फेर दन्दा हेठ दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। मुहम्मद किहा मेरे काले ज़वी, यक तेरी वड्याईआ। की तेरी तरजीह, तरतीब दे दृढ़ाईआ। परवरदिगार किहा मेरा खेल वसीह, हद्द हदूद ना कोए रखाईआ। झट नेड़े आ गया मसीह, मसला आपणा अग्गे टिकाईआ। मेरे मालक

तेरी सनद उत्ते लिख्या सदी वीह, वीह दे अग्गे इकीह, इक्की दा एका इक्को नज़री आईआ। मेरी बोल ना सके जबीं, ज़बान ज़िबाह कीती खुदाईआ। तूं मालक या मुबीन, मेहरवान तेरी वड्याईआ। तूं मालक आदि कदीम, कुदरत दा कादर सोभा पाईआ। सानूं आपणा दे यकीन, भरोसा दे समझाईआ। परवरदिगार किहा उस वेले मेरी चार जुग तों वक्खरी होवे तालीम, हुक्म संदेशा इक सुणाईआ। मेरा मार्ग होवे अज़ीम, आलीशान रिहा जणाईआ। शरअ विच वंडी ना होवे ज़मीन, धरनी धरत धवल धौल इक्को रंग रंगाईआ। इक्को माण नर मदीन, मुद्दा आत्म देणा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। मुहम्मद किहा मेरा तख़्नासिद्ध, साहिब तेरी सरनाईआ। की तेरी होवे बिध, बदी दा डेरा ढाहीआ। चार जुग गुर अवतार पैग़म्बरां नाल तूं रखी ज़िद, हिस्सयां वाली वंड वंडाईआ। आपे सलाहें ते आपे दएं निन्द, एह तेरी बेपरवाहीआ। सच दस्स सदी चौधवीं किस बिध मेटें सगली चिन्द, चिखा दएं बुझाईआ। परवरदिगार किहा मुहम्मदा ओस वेले अमाम बण के आवां विच हिन्द, तेरी बिन्द गोबिन्द नाल रखाईआ। फेर ज़रूर प्रकाश करां पार सिन्ध, जोती शब्दी धार खेल खिलाईआ। तुहाडी उम्मत निक्की जेही टिंग, चुरासी विच्चों दयां समझाईआ। मुहम्मद दे नेत्र वग पए हिंझ, हन्झूआं धार बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। मुहम्मद किहा मेरा मोज़ल हके आदाब, आदाब नाल सीस झुकाईआ। किस बिध सूफ़ीआं देवें ख़ताब, खुद आपणा रंग रंगाईआ। सच वखावें महिराब, महिबूब हो के वेख वखाईआ। परवरदिगार बिना अक्खरां तों खोल्ह किताब, बिना कुतबखान्यां दिती दृढ़ाईआ। मुहम्मद आह वेख इक मालक इक जनाब, जनाबे आली इक्को सोभा पाईआ। फेर उस वेले नानक वजाउँदा आउणा रबाब, मन्त्र सतिनाम दृढ़ाईआ। फेर ओह वेख ग़रीबां वाला जहाज़, बेड़े रिहा भराईआ। फेर ओह वेख लालो दा हिसाब, तैनूं दयां वखाईआ। फेर ओह वेख सब कुछ मैं आपे आप, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस वेले दीन दुनी दा वध्या पाप, लक्क विच संगल पा के सब दी शरअ आपणे नाल बंधाईआ। रूह बुत दिसणा नहीं कोई पाक, पापी पतित दिसे लोकाईआ। मुहम्मद ने किहा ऐ मेरे मालक की खेल करें साख्यात, सच दे समझाईआ। खुद ख़ुदा किहा आह लै आबेहयात, बूँद ढाई तेरे मुख चुआईआ। जिस वेले इन्सान होवे हैवानात, हैवानां वाला रूप गए बदलाईआ। असलीअत रही विच ना नबाताप, नबीआं मुके पढ़ाईआ। कलमे विच ना रहे जज़बात, जाइज़ हुक्म ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। मुहम्मद किहा ऐ ख़ुदा की नानक ज़रूर आउणा रबाबी, रब्बीउल देणा जणाईआ। की उस दा प्यार हकीकी होवे कि मिजाज़ी, शरअ देणी

दृढ़ाईआ। परवरदिगार किहा ओह होणा बोध अगाधी, बुद्धी तों परे पढ़ाईआ। प्रीती होणी मेरे नाल लागी, लग मात्रा दा डेरा ढाहीआ। उस नूं सुणाउणा इक्को रागी, राग आपणा देणा गंवाईआ। ओस सब कुछ जाणा त्यागी, त्रैगुण डेरा ढाहीआ। फिरना हो वैरागी, चारों कुण्ट वाहो दाहीआ। ग़रीब निमाणयां नाल मिल के होवे राज़ी, राज़क रिज़क रहीम हो के दए वड्याईआ। लालो दे नाल प्रेम वाली लाउणी बाज़ी, आप आपणी दया कमाईआ। उस दे नाल इक होणा हाजी, जेहड़ा रूप लए बदलाईआ। नाले शरअ दा होणा काज़ी, कसम खा के नानक सेव कमाईआ। अन्दरों अपराधी होणा ग़ाज़ी, दूई द्वैत विच दुखदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। मुहम्मद किहा नानक रबाब की गाउणा, कहि की सुणाईआ। परवरदिगार किहा मुहम्मदा ओस कहिणा इक्को पुरख अकाल मनाउणा, दूसर लोड़ रहे ना राईआ। तीर्थ तट पए ना नहाउणा, जंगलां विच ना कोए भवाईआ। अग्नी तन ना पए तपाउणा, जल धार ना कोए वड्याईआ। कन्न पाड़ ना मुन्दरा पए पाउणा, गृह मन्दिर ना कोए तजाईआ। इक्को सीस जगदीश झुकाउणा, दूजा इष्ट ना कोए रखाईआ। नाल ग़रीबां प्यार वधाउणा, एह नानक आस रखाईआ। तेरी शरअ दा शरअ नाल टकराउणा, एह मेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। मुहम्मद अक्खां लईआ मीट, धरे ध्यान अल्ला। नज़री आया हस्त कीट, सदी चौधवीं सृष्टी भरी गुनाह। पैग़म्बरां तुटी प्रीत, उम्मत बणे ना कोए मलाह। मुहम्मद दी निकली चीक, हथ्थ छाती उत्ते टिका। अन्दर सुणी हदीस, कलमा हक खुदा। खेल वेख बीस, चौधवीं लग्गे ढाह। तक नाल नीझ, नेत्र नैण खुल्हा। वेख अगम्मी रसीद, जिस दे बदले पटा दिता फड़ा। सदी चौधवीं रखीं उडीक, अन्तिम आवां नूर खुदा। सम्मत शहिनशाही पंज तरीक, तरीके नाल दिती दृढ़ा। सम्बल धाम दा हो के वसनीक, कर आवे नूर रुशना। जिस दा होवे ना कोए शरीक, शरक्त पिछली दए मिटा। ओस दे विच होवे हक तौफ़ीक, हुक्म धुर दा दए सुणा। दीन मज़्हब ना रहे फ़रीक, फ़िरकादारी दए गंवा। मानस मानस कर रफ़ीक, एका रंग दए रंगा। फेर मुहम्मद दे अन्दर फ़ुरना फुरया कुरान मजीद, नाअरा हक दा दिता ला। तेरी सिफ्त तेरी तम्हीद, तेरी महिमा सिफ्त सुणा। मेरी तेरे उत्ते उम्मीद, आसा मनसा पूर करा। मुहम्मद गलों लाह के कमीज़, दोए जोड़ कीती दुआ। मैनूं तेरे वेखण दी रीझ, धरती उत्ते आपणा फेरा पा। की लैणा महिराबां वाली विच्चों मसीत, मसला आपणा दे समझा। परवरदिगार किहा मुहम्मदा लिख वसीअत, वसले यार इक खुदा। जेहड़ा सब दी बदल दए तबीअत, ताबया विच लए रखा। इक्को नाम दी दए अहिमीअत, आप आपणा हुक्म सुणा। सब दी बदल देवे नीअत,

निगहाबान हो रहमा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। मुहम्मद कहे मैं वेखणा नज़ारा अज़ू, अजब देणा दृढ़ाईआ। खुदा ने किहा पहलों कर वुज़ू, हथ्थ मूँह धो के नक्क कन्न साफ़ कराईआ। फेर इक कर रज़ूह, आपणी रज़ा दयां समझाईआ। नानक धार इक ते दस गुरु, एह मेरी बेपरवाहीआ। उन्हां तों बाद फिर कलयुग होणा शुरू, चारों कुण्ट अंधेरा छाईआ। सब दा बेड़ा आपणी करनी विच रुढ़ू, तुहाडा ज़ोर रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा दए उठाईआ। मुहम्मद किहा मैं मन्ना तेरी ताबयादारी, तांबा हथ्थ विच उठाईआ। सदा सदा सद रहे यारी, याराना देणा निभाईआ। परवरदिगार किहा सदी चौधवीं उम्मत होणी ग़द्दारी, सुन्नत कम्म किसे ना आईआ। मैं होणा जोत नूर उज्यारी, नूर नुराना डगमगाईआ। वेखां विगसां सृष्टी सारी, दीन दुनी खोज खुजाईआ। करां खेल वांग मदारी, वल छल आपणी कार कमाईआ। जेहड़ी काया तुसां मेरे हुक्म नाल श्रृंगारी, मज़्बां वाली वंड वंडाईआ। एस दा होणा अन्त किनारी, अन्तिम रहिण कोए ना पाईआ। मुहम्मद ने झट हथ्थ विच फड़ लई बहारी, धरती उत्ते झाड़ू दिता लगाईआ। प्रभू सदी चौधवीं पुरख कि नारी, मालक मैनूं दे समझाईआ। परवरदिगार किहा ओह मेरी जोत उज्यारी, रंग रूप ना कोए दरसाईआ। अन्त ओस दी गोली होणी कन्या कुँवारी, कायनात मिले वड्याईआ। ना मुच्छ ना दाढ़ी, राम कृष्न दा लेखा दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, ओस नूं बणन ना देवे किसे दी लाड़ी, लाड़ा नज़र कोए ना आईआ। मुहम्मद किहा सदी चौधवीं नूर उजाला, नूर नुराने दिता जणाईआ। जिस वेले अंधेरा होया कलयुग काला, कल काती दिसी लोकाईआ। सति लभ्भे किते ना भाला, खोज्जयां हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। सति धर्म दा निकले दिवाला, ख़ाली काया महल्ल वेख वखाईआ। लेखा रहे ना किसे माला, जप जप ना कोए वड्याईआ। किरपा करे दीन दयाला, दयानिध आपणी कार कमाईआ। जगत शरअ तोड़ जंजाला, संगल आपणे लक्क बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। मुहम्मद किहा ओस संगल दा की असूल, असल देणा समझाईआ। किस नूं होए कबूल, कबरां विच पैग़म्बर जाणे समाईआ। धुर दा हुक्म मिल्या माकूल, मुकम्मल दिता दृढ़ाईआ। जिस वेले तुहाडा शरअ दा लैण आया मसूल, चुंगीख़ाने फोल फुलाईआ। अगला दस्सण आया रूल, रौला दीन मज़्ब मिटाईआ। सब नूं करना पए कबूल, सिर सके ना कोए उठाईआ। जिस दी मस्तक लाउंदे धूल, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। ओह कदे ना जावे भूल, अभुल नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ।

मुहम्मद किहा संगल दी की वजह, सगले संगी दे समझाईआ। खुदा किहा तुहानूं मिले कोए ना जगह, जगह बजगह होवे लड़ाईआ। तुहाडा रहे कोए ना दब्बा, भय भउ ना कोए जणाईआ। चारों कुण्ट होवे हाए तोबा हाए रब्बा, बौहड़ी बौहड़ी कर कुरलाईआ। सृष्टी आर पार ना होवे फिरे विच गभ्भा, कन्ढा नज़र कोए ना आईआ। बिना भगतां तों साची रहे कोए ना सभा, मलेछ होवे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा इक उठाईआ। मुहम्मद दी निगाह बदली अचानक, अक्खीं मीट ध्यान लगाईआ। नज़री आया नूरी नानक, सरगुण रंग चढ़ाईआ। खेल वेख्या भयानक, चार कुण्ट कुरलाईआ। किसे दी दिसी ना कोए स्याणप, मूर्ख मूढ़ां वज्जे वधाईआ। धर्म दी धार ना कोए अमानत, अमल हक ना कोए कमाईआ। धुर दी देवे ना कोए ज़मानत, चुरासी पार ना कोए वखाईआ। चारों कुण्ट अंधेरी शामत, शमा नूर ना कोए रुशनाईआ। सुच दिसे ना सच सही सलामत, जूठ झूठ करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। मुहम्मद नज़री आया नानक लालो मीत, परवरदिगार दिता वखाईआ। इस तों अग्गे प्रभू दी रीत, मन्दिर मसीत पन्ध मुकाईआ। मुहब्बत विच वसे चीत, चातृक आपणे लए बणाईआ। आत्म परमात्म दस्स के गीत, मन्त्र सतिनाम समझाईआ। निमाणे वेख ग़रीब, मेहर नज़र उठाईआ। खेल इक अजीब, अजब रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पड़दा ओहला रिहा उठाईआ। जिस वेले नानक नानक पहुँचया दवार, बाला मर्दाना संग रखाईआ। काज़ी मुल्ला सी उन्हां दा यार, मसले प्रेम वाले सुणाईआ। नानक दा बण के ख़िदमतगार, दूरों निउँ निउँ सीस झुकाईआ। अन्दर हुन्दा सी हँकार, मन वासना ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। नानक जिस वेले लालो दे घर आया, वज्जी सच वधाईआ। धन्न गुरु गुर साचा पाया, मिली माण वड्याईआ। काज़ी हस्स के बचन सुणाया, लोटा वुज़ू वाला हथ्थ उठाईआ। ओए लालो क्यों नहीं भेंट चढ़ाई माया, सतिकार विच सति ना कोए कराईआ। लालो ख़ाली हथ्थ वखाया, एह देण वाला आया बेपरवाहीआ। मांगत हो के झोली अग्गे डाहया, भुक्ख्यां देणा रजाईआ। काज़ी दे अन्दर गुस्सा आया, अन्दरे अन्दर दलील बणाईआ। नानक किहो जेहे घरां दे विच फेरा पाया, जेहड़ा सके ना पेट भराईआ। ओधरों लंगढ़ा लूला चल के आया, सदा उच्ची उच्ची सुणाईआ। कोए नानक दरस दए कराया, मेरा लेखा दए मुकाईआ। काज़ी ने किहा ओए कमलया, ओह ते भुक्ख्यां नंगिआं ने गुरु बणाया, वड्डयां घर मिले ना थाँईंआ। लंगड़े किहा मैं ज़रूर चल के नानक दा दर्शन पाया, दूरों निउँ के सीस निवाईआ। लालो ने झट ओस नूं गोद उठाया, छाती नाल लगाईआ।

पिच्छों काज़ी नट्ठा आया, उस बांह लई खिचाईआ। फड़ के पिच्छे मूँह वखाया, अगला घर दिता वखाईआ। एथे अग्गे हाल दुहाया, क्यों तूं रौला दिता पाईआ। नानक मेहर निगाह उठाया, तक्कया चाँईं चाँईंआ। एह वी किसे माँ दा जाया, जो चल के मेरे दवारे आईआ। काज़ी किहा तूं केहड़ा इहनूं दिता रजाया, बिना रबाब तों तेरी की वड्याईआ। ओस लूले किहा नानक किते इहनूं वी दे सज़ाया, जो तैनूं गया भुलाया। नानक हस्स के किहा आपणा कीता आपे लए पाया, आपणे नाल हंढाईआ। लालो फेर किहा सतिगुर नानक क्यों एह बचन सुणाया, तेरा बचन ना बिरथा जाईआ। मैं एस दा दर्द वंडाया, तेरे अग्गे वास्ता पाईआ। नानक किहा एह बचन मुड़े ना राया, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। बिना तेरे तों इहनूं सके ना कोए बख्शाया, बख्शिश करन कोए ना आईआ। लालो नैणां नीर वहाया, रो के दिती दुहाईआ। नानक अन्तर ध्यान लगाया, ढाई सकिंट ज़बान ना कोए हिलाईआ। फेर हस्स के किहा लालो जिस वेले तेरा जन्म दवाया, लोकमात होवे रुशनाईआ। मेरा पुरख अकाल होवे आया, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। तेरा सदा होवे सहाया, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। एह काज़ी तेरी झोली पाया, एस नूं एस लूले वाली मिले ज़रूर सज़ाईआ। तूं एस नूं लईं तराया, वास्ता प्रभ दे अग्गे पाईआ। लालो दा थोड़ा जेहा अन्दरों दिल कम्बाया, मन ल्या डुलाईआ। नानक ने हौसला फेर वधाया, सहिज दिता दृढ़ाईआ। लालो चिन्ता ना कर एहदा अन्त दुःख अक्खीं वेखण ना पाया, तेरा हथ्थ लग्गे ना राईआ। एसे कारन काज़ी दा कुलवन्त नाम प्रगटाया, परगणे ओसे ल्या वसाईआ। नानक दा लेखा पूर कराया, लालो आपणे नाल रखाईआ। दुःख ना करे जिस माँ ने जाया, पूरब जन्म दा दाता इक्को धुरदरगाहीआ। नाले अग्गे वास्ते मार्ग लाया, सतिजुग सच सच वरताईआ। पुत मरया हरबंस कौर ने अक्खीं ना नीर वहाया, खुशी खुशी नाल चिखा दिता चढ़ाईआ। जे पहलों पन्द्रां कत्तक दा लेखा ना हुन्दा लिखाया, अज्ज दिन्दा ना कोए गवाहीआ। सतिजुग दा रंग रंगाया, रंगत पिछली दिती मिटाईआ। एसे कारन गुरमुख माझा मालवा दुआबा जम्मू विच्चों मंगवाया, जो चल आए चाँईं चाँईंआ। उन्हां सति धर्म दा दस्तारा गुरसिख सीस सजाया, पुत मरे तों पिता खुशी लए मनाईआ। नाले अगला जन्म फेर बदलाया, हरिसंगत मेला मेलया सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दी करनी कार कमाईआ। कुलवन्त कहे वेख मैं आ गया चाचा, चलाकी नाल दयां जणाईआ। पिछले जन्म मैं लुंगी बन्न्हदा सां लाचा, कन्नी लाल रंग रंगाईआ। मुहम्मद नाल रखदा हुन्दा सां नाता, नमाज़ पढ़ के खुशी बणाईआ। मैं वेख्या पिछला आपणा खाता, हँकार दी मिली सज़ाईआ। मैं आपणीआं दस्सां बातां, बातन पड़दा दयां उठाईआ। मैं कदे पिच्छे हुक्म नहीं सी मन्नया आखा, सतिकार नाल सिर ना किसे झुकाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। कुलवन्त कहे मैं आ गया पन्द्रां कत्तक दी रैण, भज्जया चाँईं चाँईंआ। दुआबे वाल्यां दी वेखणी रसैण, जेहड़े मेरे लई लै के आईआ। दविन्दर कौर वेखणी धर्म दी भैण, जो बरतन हथ्थ लए उठाईआ। सच संदेशा आया कहिण, कहि के दयां सुणाईआ। भैण भ्रा गुरमुखो इक दूजे दे पिच्छे पाए कोई ना वैण, नैणां नीर वहाईआ। किसे साध सन्त नूं थालीआं ग्लास छन्ने कोई ना जाए देण, वस्त्र भेंट ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। कुलवन्त कहे दुआबे वाल्यां मैनूं होण नहीं दिता उदास, मेरी आसा पूर कराईआ। जन भगतो सारे इक दूसरे नूं दयो शाबाश, खुशीआं नाल सुणाईआ। इक दूजे नूं दयो आख, हुक्म धुरदरगाहीआ। किसे दे मरन पिच्छों किसे नूं देणा नहीं थाली ग्लास, गढ़वी हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। तुहाडे बरतनां विच कोई खा ना जावे मास, तुहाडी कीती कम्म किसे ना आईआ। जे इक प्रभू दी आस, भरोसा इक रखाईआ। ओसे ते रखो विश्वाश, विशा अवर ना कोए जणाईआ। जिस दा नूर जोत प्रकाश, आत्म परमात्म रंग रंगाईआ। इक्को वार सब ने कर लैणा याद, याददाशष्त लैणी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। जन भगतो मरन तों पिच्छों किसे ने चुक्कणी नहीं सुआह, सुआह रूप लोकाईआ। वेखो पंज लिखारी गवाह, मथ्थे तिलक रहे वखाईआ। बिन्दी होणी नहीं बेवफ़ा, हिन्दी लिखण वाला दए गवाहीआ। टेडी पगड़ी उलटी लई करा, रीती सिद्ध कराईआ। जिन्हां पंज पंज पंज पंज किरपानां दितीआं खड़का, खड़ग खड़ग नाल टकराईआ। जिन्हां पंज पंज पंज पंज पग्गां दितीआं बन्हा, चौथे जुग कीती सफ़ाईआ। जिन्हां पंजां चन्दन तिलक ल्या लगा, तिलकणबाज़ी तों पार कराईआ। जिन्हां गुरमुखां हथ्थ उत्ते लंगर ल्या खा, ओह माण ताण गए मिटाईआ। जिन्हां लंगर विच हिस्सा ल्या पा, ओह सारे बण गए भैण भाईआ। जिन्हां अरदासा ल्या सुधा, हथ्थ जोड़ के सीस निवाईआ। सच पुछो उहनां किशन सिँघ नूं ल्या बचा, मग्घर दा महीना रोवे मारे धाहीआ। एसे कारन सारे लए सदा, इक्ट्ठे कीते चाँईं चाँईंआ। भगतो तुहाडी रज़ा विच खुदा, सज़ा दे नाल करे तबाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पन्द्रां कत्तक कहे मैनूं कहिंदे पन्द्रां, अध विच वड्याईआ। गुरमुखो कदी लभ्भण नहीं जाणा विच मन्दिरां, मसीतां विच ना फोल फुलाईआ। खोजणा नहीं विच्चों कन्दरा, टिल्ले पर्बत ना पन्ध रखाईआ। सद इक्को दवारा मंगणा, मांगत हो के झोली डाहीआ। जो देवे धुर अनन्दना, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। कुछ लेखा लहिणा गोबिन्द वाला अनन्दना, इटारसी दी धरती दए गवाहीआ। जिथ्थे खेल खिलाया सी राम चन्दना, चन्द

सूरज देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पन्द्रां कत्तक कहे मैं सब नूं देवां असीस, असल दे असल वेख वखाईआ। जन भगतो तुहाडा प्रेम नाल जगदीश, जगत दा मालक खुशी बणाईआ। सारे आ गए टप्प के लीक, लाईन पिछली आए बदलाईआ। सुहञ्जणी होए तरीक, तारीख तवारीख नाल रखाईआ। सब दी सांझी होवे प्रीत, प्रीतम इक्को लैणा मनाईआ। पंज प्यारे इक गावण गीत, शब्द शब्द सच सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा सच आप वरताईआ। पन्द्रां कत्तक कहे ब्रह्मण्ड खण्ड झुके, झुकया ज़िमीं असमान। जन भगतां कूड़ कुड़यारे पैंडे मुके, मुक्कया कूड़ जहान। भव सागर पार होवण सुक्के, अग्गे आए ना कोए अटकाण। सचखण्ड दवारे जाण सुच्चे, सतिगुर साचा होए मेहरवान। मंज़ल पौड़े चढ़न उच्चे, जिथ्थे मिले श्री भगवान। उज्जल करन मुखे, सचखण्ड दवारे मिले अमाम। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान।

किशन सिँघ बग़ल विच दे दे करद, खब्बे अंग छुहाईआ। सज्जे नाल वंडे दर्द, दर्दीआं दर्द वंडाईआ। मर्दाना बण मर्द, मदद करे थांउँ थाँईंआ। हरिसंगत दी मंज़ूर कर अर्ज़, तेरा जीवण दिता वधाईआ। वेख खेल असचरज, दुआबे विच्चों वस्तू तेरे घर मंगाईआ। एह पिछला लहिणा ते पिछला कर्ज़, लेखा दिता वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। करद कहे मैनूं कहिंदे छुरी, रसना नाल गाईआ। मैनूं सारे कहिंदे बुरी, कसाईआं हथ्थ फड़ाईआ। मैनूं सारे कहिंदे निगुरी, सीस ना किसे झुकाईआ। सच पुछो मैं अनन्द पुरों तुरी, भज्जी वाहो दाहीआ। ढाई दिन सरसे विच रुढ़ी, सिर्फ़ नौ कदम पन्ध मुकाईआ। फेर मैनूं चुक ल्याई ठठिआरां दी इक कुड़ी, खब्बे हथ्थ उठाईआ। मेरी पथ्थरां नाल अग्गों धार मुड़ी, तिक्खी फेर ना किसे कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। छुरी कहे मेरा लेख दस्से ना कोए कतेब, कातब ना कोए लिखाईआ। मैं करदी नहीं फ़रेब, झूठी गल्ल सुणाईआ। मेरे नाल उस कन्या तों लै के गोबिन्द ने कटया सी इक सेब, टोटे चार दिते कराईआ। फेर पा के विच जेब, बाहर ल्या कढ्ढाईआ। फेर वेखे चारे वेद, कोई इस दी दए सफ़ाईआ। फेर तक्कया खेल भरया भेद, भुजां लई उठाईआ। पहलों एहदी सेवा लावां एह फिरे विच देग, तेग़ दी फतिह नाल लड़ाईआ। फेर घसाई उत्ते रेत, पासे दिते बदलाईआ। फेर सुट्टी विच खेत, हुक्म दिता जणाईआ। जिस वेले पुरख अकाल बदल

के आवे भेस, आपणा फेरा पाईआ। मैनूं वी प्रगट करे माझे देस, गोबिन्द ढाई उँगलां दस्तारा दिता उठाईआ। फेर तेरा अगला बणे लेख, पिछला दए चुकाईआ। तैनूं भेजणा मुहम्मद वाले देस, धुर दा हुक्म सुणाईआ। तूं जा के कटीं मुल्ला शेख़, शरअ दी करीं सफ़ाईआ। फेर छब्बी पोह नूं आ के होवीं पेश, पेशीनगोई अगली दईं दृढ़ाईआ। संग रहीं हमेश, हमसाजण अख्वाईआ। छुरी कहे जिस वेले गोबिन्द ने पहले दिन गुरमुखां तों रखाए केस, मैनूं चरणां हेठ दबाईआ। मेरा उदों दा बकाया लेख, अज्जे तक ना कोए मुकाईआ। मैं वी भगतो तुहाडे नाल मिल के उस प्रभू दी वेखणी खेड, जो खिलाड़ी हो के आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त दा मालक एक, एकँकार एका नज़री आईआ।

२११ २२ ✪ १६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ सांझी राम दे नवित अल्लड़पिण्डी ✪ २११ २२

संगल ज़ंजीर तोड़ दे शरअ, शरीअत धुर दी इक समझाईआ। राम दा लेखा पूरा कर दो अक्खर मरा, दो अक्खर कन्ने नाल बदलाईआ। निगाहवान निगाह मार लै ज़रा, ज़र्रा ज़र्रा वेख वखाईआ। सच दवार दरसा दे दरा, दर दरबारा इक जणाईआ। कलयुग खेल वेख लै बड़ा, बड़ा छोटा दए दुहाईआ। चारों कुण्ट कलेश पड़ा, पढ़ी पुस्तक कम्म किसे ना आईआ। अवतार पैग़म्बरां बणया धड़ा, हिस्सा नाम कलमा रिहा वखाईआ। गोबिन्द धार वेख लै कड़ा, कंगण हथ्थ नाल वड्याईआ। सदी चौधवीं तक लै जड़ा, जड़ चेतन फोल फुलाईआ। किरपा कर नरायण नरा, नर तेरी इक सरनाईआ। मानव रुक्ख दिसे कोए ना हरा, फल फुल्ल ना कोए महकाईआ। धुर दा हुक्म सुणा दे खरा, खोटे खरे वेख वखाईआ। सच दवार वखा दे दरा, घर मन्दिर इक जणाईआ। तेरा दरस दीदार होया परा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी सार कोए ना पाईआ। सब दी आसा मनसा पूरा कर दे वरा, वरयाम तेरे हथ्थ वड्याईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आदि अन्त निरगुण धार छड़ा, पत्नी संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वर दाता बेपरवाहीआ। तेरी खेल वेखणी ताज़ी, ताज तख्त दे मालक देणी वखाईआ। ग़रीबां उपर होवीं राज़ी, राज़क रिज़क रहीम दया कमाईआ। कलयुग अन्त खेल दे बाज़ी, बाज़ां वाला नाल मिलाईआ। गुरमुख रहे कोए ना पाजी, पज़ल कर सर्ब लोकाईआ। लहिणा पूरा कर दे माज़ी, पूरब लेखा दे चुकाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं वेख अराज़ी, जो धरनी धरत धवल वंड वंडाईआ। शरअ शरीअत मन्दिर वेख पंडत काज़ी, ग्रन्थी पन्थी फोल फुलाईआ। धुर धर्म दे तक आपणे

हाजी, हुजरे पड़दा सच उठाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल दीन दुनी तक लै बाग़ी, मन ममता विच हल्काईआ। जगत सन्त करन उपाधी, अपराधां विच कुरलाईआ। किस वेले होवे कलू कल बर्बादी, चारों कुण्ट पए दुहाईआ। जन भगतां थोड़ी रहे अबादी, आबादकार देणे बणाईआ। जो खेल वेख्या गुर अवतार पैग़म्बर ख़वाबी, पड़दा देणा उठाईआ। जो संदेशा दिता नानक रबाबी, हुक्म संदेशा अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। प्रभू वेख लै बण के दीन दुनी दा राजा, रईयत तक ख़लक खुदाईआ। जिस दा आपे साजण साजा, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाईआ। जिस दे अन्दर नाम वजाया वाजा, अनहद नादी नाद सुणाईआ। जिस दा खेल कीआ मुथाजा, लालच विच ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, घर सच मिले सरनाईआ। तेरी सरनगति सहारा, साहिब तेरी वड्याईआ। तेरा चरण मित अधारा, चरणोदक देणा प्याईआ। तेरा वार थित दिहाढ़ा, कत्तक आपणा रंग रंगाईआ। तेरा धर्म धार अखाड़ा, गुर अवतार पैग़म्बर दिते घुलाईआ। तेरा खेल बहत्तर नाड़ा, नारी पुरुष वेख वखाईआ। तेरा गुरमुख धुर दा लाड़ा, लाड़ी मौत ना कोए प्रनाईआ। तेरा मंगण आए वाड़ा, दर ठांडे सीस झुकाईआ। मिन्नत विच कढदे हाढ़ा, हौका लै के रहे सुणाईआ। सच दा रंग चाढ़ दे गाड़ा, गहर गम्भीर उतर ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ १६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ कुलवन्त सिँघ दे नवित अल्लड़ पिण्डी ✪

गुरसिख तक्क आपणे बेटे, पिता पूत ध्यान गाईआ। तेरी शब्द दुशाल लपेटे, दूजा वस्त्र ना कोए वड्याईआ। सेज सुहञ्जणी धुर दी लेटे आसण मिल्या अगम्म अथाहीआ। जिस प्रभू नूं लभ्भदे गए केते, कोटन कोटि फेरीआं पाईआ। जिस दा नाम जगत जग वेचे, अक्खरां नाल कर लिखाईआ। जिस दे नाम बाणी दे पेचे, पेचीदा आपणी कार कमाईआ। ओह खेल आदि अन्त दे वेखे, जुग चौकड़ी ध्यान रखाईआ। सब दा लेखा लावे लेखे, जो जन रहे सरनाईआ। चरण दवार रखे साया हेठे, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। पुरख अकाल तक्क आपणी नईया, नौका नाम ध्यान लगाईआ। वेख खेल आपणा सईआ, साहिब सुल्तान दया कमाईआ। जन भगतां धर्म राए कढे ना वहीआ, लेखा मंगे ना कोए गुनाहीआ। विछोड़ा होए ना साजण भईआ,

भाण्डा भरम देणा भनाईआ। तेरा दवारा इक्को रहीआ, दूजा रहिण कोए ना पाईआ। जिस कारन बुल्हे गाया थईआ थईआ, पैर ज़िमीं नाल रगढ़ाईआ। गोबिन्द दा पूरा होया पिछला ढईआ, ढौंके विच दिता लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। पुरख अकाल तक आपणे नढ्ढे, नाढू ध्यान लगाईआ। प्यार नाल बोल दे डड्डे, डण्डावत बिना सीस निवाईआ। तैथों रहिण कदे ना अड्डे, वक्खरा घर ना कोए वखाईआ। धर्म निशाने जाण गड्डे, घर घर तेरी वज्जे वधाईआ। तेरी शब्द धार दे सद्दे, सदके वारी घोल घुमाईआ। जो सरन सरनाई साची लग्गे, सीस चरणां उत्ते रखाईआ। ओनां दी लाज रखणी पग्गे, चोटी मेला सहिज सुभाईआ। रहिण बपड़े मूल ना बग्गे, हँस देणे बदलाईआ। तेरा नूर नुराना नूर जगे, जागरत जोत करे रुशनाईआ। भगत सुहेले होण सजे, साजण सोहणा नाल मिलाईआ। गुरमुखां हथ्थ उठाउणे आपणे खब्बे, सज्जा खब्बे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच बख्शे इक सरनाईआ। पुरख अकाल वेख लै आपणे गुणी, गुण निधान नज़री आईआ। सच पुकार इक सुणीं, अणसुणत दईए दृढ़ाईआ। भगत सुहेले साचे चुणीं, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। सतिगुर शब्द दी शब्द होवे धुनी, धुन आत्मक राग अलाहीआ। सतिगुर शब्द कहे पंजां गुरसिक्खां छब्बी पोह नूं बणना मुनी, मुख पट्टी नाल लुकाईआ। उत्ते हिन्दसा लिख्या होवे उन्नी, एका नांयां जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। पंज मुनी होण मानव, दिल्ली गुरमुख वंड वंडाईआ। नाल पंज होवण दानव, दैंता वाला रूप दरसाईआ। पंज गुरमुख ढोले गावण, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। इक बणया होवे रावण, दहिसर आपणा रूप जणाईआ। इक अमृत बरखे सावण, छहिबर नाम जणाईआ। इक कोल हिन्दसा होवे इकावन, बावन गुरु ग्रन्थ दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे पंज उच्चे लम्मे होण मुंडे, गुरमुख धर्म धार वखाईआ। ओह बणे होण गुंडे, शस्त्र हथ्थां विच टिकाईआ। मुछहिरे होण कुंढे, कुण्डल कन्नां विच लटकाईआ। सिर तों मुन्ने ना होवण चुंडे, केस दशमेश नाल वड्याईआ। दोहां दे हथ्थ विच होवण खूंडे, ज़ोर ज़ोर ज़िमीं नाल ठुकराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे इक्की बीबीआं बंधे होण मुंडासे, माझे विच्चों लए अंगड़ाईआ। मुख विच पाए होण पतासे, अद्धा अन्दर बाहर रखाईआ। हथ्थ विच फड़े होण कासे, बग़लीआं मोढे उत्ते लटकाईआ। करदीआं आउण हासे, हस्ती वेखणी बेपरवाहीआ। मुख होए ना किसे उदासे, तिउड़ी मस्तक ना कोए रखाईआ। मुक्खों कहिण गुर अवतार पैग़म्बर

२१३
२२

छड्डे चाचे, पिता पुरख अकाल मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं वेखणी भगतां शादी, शादिआने वजाईआ। दीन मज़्ब तों मिलणी आज़ादी, अज़ल दी मंज़ल देणी मुकाईआ। हरिजन आत्म जाणी साधी, सिदक सबूरी नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे सतिगुर बध्धा होवे गाना, मौली तन्द जोड़ जुड़ाईआ। पंजां गुरमुखां हथ्थ विच फड़या होवे इक इक काना, सवा हथ्थ नाल लम्बाईआ। सब दा ज़िला वक्ख वक्ख होवे बेगाना, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। इक इक चीथड़ कोल होवे पुराणा, खब्बे कंधे उत्ते टिकाईआ। हथ्थ विच लिख्या होवे अन्तिम सब ने जाणा विच मसाणा, थिर रहिण कोए ना पाईआ। जम्मू वाल्यां सीढ़ी दा बणा के ल्याउणा इक बबाणा, सोहणा रूप वखाईआ। उत्ते लेख लिख्या होवे विष्नूं भगवाना, जैकारा सच धार दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां लेखे लाए आणा जाणा, जानणहार जानी आपणी दया कमाईआ।

✪ १६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ बावा सिँघ दे गृह पिण्ड अल्लड़ पिण्डी ✪

सतिगुर शब्द कहे प्रभू गुर अवतार पैग़म्बर वेख आपणे राहक, रहिबर हो के ध्यान लगाईआ। जेहड़े तेरे नाम दे बणे गाहक, सौदा जगत विच कराईआ। अन्त मिट गए विच ख़ाक, लोकमात नज़र कोए ना आईआ। नाता मज़्ब दा जोड़ के साक, सज्जण गए अख्वाईआ। अन्त संदेशा गए आख, अक्खरां विच लिखाईआ। कलयुग अन्त पुरख अकाला आवे आप, आप आपणा फेरा पाईआ। दीन दुनी दा मेटे संताप, हउमे रोग गंवाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के जाप, जगजीवण दाता होए सहाईआ। चुरासी विच्चों भगत सुहेले थोड़े राख, रखया करे थांउँ थाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच पर्दा आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभू वेख आपणा सम्बल, संभल फेरा पाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर बैठे कर तहम्मल, चिरीं विछुन्ने ध्यान लगाईआ। आपणी करनी उत्ते कर अमल, इलम आलमां डेरा ढाहीआ। गुरमुख बूटा ख़ाली रहे ना सिंमल, पत्त टहिणी देणी महकाईआ। दर साचे आई मिलण, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। विछोड़े विच कोए धायल ना होवे इल्लण, उच्ची कूक ना कोए सुणाईआ। कूड़ी क्रिया पार करनी जिलण, गिला गुस्सा ना कोए रखाईआ। तेरे हुक्मे अन्दर दो जहान हिल्लण, करवट सके ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरे प्रभू निरँकारी, निरवैर तेरी सरनाईआ। जेहड़े भगत तेरे पुजारी, पूजणयोग देणी वड्याईआ। मातलोक ना जन्म लए दूजी वारी, सचखण्ड सच देणी सरनाईआ। तेरे तेरे उतों बलिहारी, बलिहार तेरी वड्याईआ। अन्तर आत्म परमात्म तेरी यारी, याराना अवर ना कोए जणाईआ। कुछ लेखा दस्सणा क्यों दुःख लग्गा पिछले जन्म दे वली कंधारी, हुक्म हुक्म देणा दृढ़ाईआ। रावी कन्ढे सोलह फग्गण सच दिहाढ़ी, तिवहारी दए समझाईआ। इस दे नाँ दी बदली कीती सी किसे अर्ज़ नहीं कीती लिखारी, क्यों कंधारी तों कौडा दिता लिखाईआ। एह वी खेल न्यारी, जिस दा भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ धुर दे महिबूबे, महिरम धुरदरगाहीआ। तेरी रमज़ कोए ना बूझे, बुझा दीपक ना कोए जगाईआ। तेरे इशारे सदा गूझे, गुणवन्त तेरी वड्याईआ। भेव खुल्हा दे दूजे, दुतीआ रहे ना राईआ। कूड़ी क्रिया भाण्डे कर के मूधे, मुद्दत दे विछड़े होणा सहाईआ। तेरी इक मंज़ल इक्को मकसूदे, मकसद सब दा हल कराईआ। गुरमुख तेरे उतों झूजे, उस दा लेखा आपणे घर लगाईआ। तेरे खाते गहर गम्भीर डूँग्घे, सागर समुंद सार ना कोए आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर दरबार तेरी सरनाईआ। सतिगुर शब्द कहे तेरा धर्म होवे धरवास, धिर धुर दी आप जणाईआ। तेरा प्रेम होवे प्रकाश, अंध अंधेरा दे गंवाईआ। तेरा आत्म तेरे साथ, विछोड़े विच विछड़ ना जाईआ। गुरमुखां देणा सगला साथ, साहिब तेरी सरनाईआ। हरिजन कदे ना होवे उदास, चिन्ता अन्दरों देणी मिटाईआ। जो गुरमुख गुरसिख हरिजन हरि भगत पुज्जा तेरे पास, उस नूं पिच्छे रोए ना कोए लोकाईआ। झूठा नाता माई बाप, भाई भैण साक सज्जण नार कन्त ना कोए वड्याईआ। जिस उत्ते किरपा करे आप, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल उपर आकाश प्रकाश दो जहान रखाईआ।

✪ १६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ हज़ारा सिँघ दे टिऊबवैल उत्ते पिण्ड बाबूपुर ✪

पुरख अकाल तक लै आपणी धौल, धर्म दवारे वेख वखाईआ। वेख लै आपणे कौल, इकरारनामे पड़दा लाहीआ। हिरदे हरि किसे ना गया मौल, मौला रूप ना कोए वखाईआ। भुल्ल गई गोबिन्द खण्डे अमृत पाहुल, पौली कीमत रही किसे ना राईआ। तेरी दीन दुनी होई अनभोल, सुत्ती ख़लक खुदाईआ। साचा तोले कोए ना तोल, वज़न वजूद ना कोए कराईआ। सब दा पूरा करदे बोल, जो बोलणवाले बोल के गए जणाईआ। तेरा खेल सदा अनमोल, भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। सदी चौधवीं मार रोल, रौला वेख कूड़ लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच फ़रमाना इक जणाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ वेख मानस देही मनुक्ख, पंज तत अन्दर ध्यान लगाईआ। जेहड़ा तेरा उलटा रुक्ख, मात गर्भ दिता लटकाईआ। उस दी तृष्ना मेटे कोए ना भुक्ख, हउमे रोग ना कोए गंवाईआ। सुफल करे ना जनणी कुख्ख, धन्न जणेंदी बणे ना कोए माईआ। सच दुलारा रिहा कोए ना सुत , अपराधी बैठे डेरा लाईआ। अन्तिम आप आपे पुछ, आपणा हुक्म सुणाईआ। कवण तैनूं रिहा झुक, सजदा सीस जगदीश दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे वेख अवतार पैग़म्बर गुर आपणे पराहुणे, परा पसन्ती मद्धम बैखरी जो तेरा नाम आए सलाहीआ। रागां विच सुणाए गाणे, धुनां विच करी शनवाईआ। कलयुग अन्तिम किथे बहाउणे, धाम अवल्लड़ा दे जणाईआ। पलँघ गलीचे किथे विछाउणे, बिस्तरयां होए सफ़ाईआ। केहड़ी कूट दिशा टिकाउणे, टिक्के मस्तक नाल लगाईआ। केहड़ी धार विच उडाउणे, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण वेख वखाईआ। केहड़ी दिशा विच लड़ाउणे, ईसा मूसा मुहम्मद करे लड़ाईआ। केहड़ी जगह उत्ते नचाओणे, घूँगट देणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच आपणा हुक्म सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे वेख आपणे भगत सन्त जग मीत, मित्र प्यारे ध्यान लगाईआ। कवण चले साची रीत, सच स्वामी इष्ट जणाईआ। कवण छड्ड के मन्दिर मसीत, काया काअबे तेरा ध्यान लगाईआ। कवण तेरा होया अज़ीज़, खादम हो के सेव कमाईआ। किस नूं आई सच तमीज़, तमा तमन्ना गया मिटाईआ। किस दी करनी साची रीझ, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। किस गृह लँघणा दहिलीज़, दर मन्दिर देणी वड्याईआ। किस बिध बीजणा बीज, सतिजुग फुलवाड़ी आप महकाईआ। पुरख अकाल किहा मेरी आदि जुगादि वक्खरी रीत, रीतीवान दए सुणाईआ। जन भगतां बख्शे सच प्रीत, प्रीतम हो के जोड़ जुड़ाईआ। साचे नाम दी कर बख्शीश, रहमत धुर दी झोली पाईआ। काया करके ठंडी सीत, अग्नी तत बुझाईआ। उन्हां सोहँ महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै गाउणा गीत, ढोला इक्को इक दृढ़ाईआ। झगड़ा मिटाउणा मन्दिर मसीत, काया काअबा कर रुशनाईआ। रहमत सच होवे बख्शीश, बख्शणहार होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग चलाए रीत, रीतीवान दया कमाईआ।

✪ १६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ आसा सिँघ दे गृह पिण्ड बाबूपुर ✪

गुरमुख किहा छड़या नाल रला लै रंडा, रविदास ने दिती गवाहीआ। दोहां दी इक्को मंज़ल इक्को पौड़ी इक्को डण्डा, डण्डावत इक्को सीस निवाईआ। इक्को तन वजूद ख़ाकी बन्दा, माटी पंज तत वड्याईआ। पिछला खेल सूरा सरबंगा, हरि करता आप समझाईआ। इन्हां दोहां दा रूप हुन्दा सी पंडा, पंडत पिछले "नैणू" "मानू" नाम जणाईआ। बैठदे सी गंगा कन्ढा, आपणा आसण लाईआ। सब नूं मारदे सी फंदा, गले सुट के देण वखाईआ। यातरीओ कुछ भेंटा दे दयो नहीं ते तुहाडा पिता हो जाऊ अन्धा, नैणहीण अख्वाईआ। फेर हरी ओम तत सति सुणाउंदे छन्दा, गायत्री मन्त्र नाल दुहाईआ। फेर जनेउ दा फड़ के तन्दा, चप्पयां नाल फिराईआ। फेर लै के जल चंगा, चुलीआं देण वखाईआ। फेर अक्खां मीट के लैण अनन्दा, माला हथ्थां विच भवाईआ। फेर इक इक पैर करके नन्गा, उँगलीआं वारो वार हिलाईआ। फेर धोती नूं बन्नण दा करन धन्दा, पेचे लक्क नाल छुहाईआ। फेर हथ्थ विच फड़ के डण्डा, उठ के वेखण गंगा माईआ। फेर बोदी नूं वाह के नाल कंघा, हथ्थां विच लैण उडाईआ। फेर लागे रखया उँगल नूं ला के थंदा, नासां विच फराईआ। फेर दूजे ब्राह्मणां दी करन निन्दा, ऐवें पोथीआं रहे उठाईआ। फेर तुलसी नाल वखावण जल चंगा, कच्चे तन्द नाल सुहाईआ। फेर करके मूँह विंगा, नक्क मरोड़ के देण वखाईआ। जजमानों तुसीं दानू मानू दीआं टिंगां, आह वेखो साडे पत्रे रहे समझाईआ। तुहाडा प्यो दादा सानूं दाणयां दीआं चढ़ाउंदां रिहा टिंडा, हिस्सा साडी झोली पाईआ। फेर बोलण वांग बिंडा, टिर टिर कर सुणाईआ। फेर सौं जाण विच निन्दा, घुराड़े मार देण डराईआ। फेर गुस्से विच कहिण साडे बिना तुहाडी नहीं मिटणी चिन्दा, चिन्ता ना कोए गंवाईआ। इक दूजे नूं कहिण एह मेरे नालों बख्शिंदा, बारां रासी कुण्डली विच फसाईआ। दूजा कहे एह परोहत बड़ा छिन्दा, जजमान सारे सिफ्तां विच सलाहीआ। फेर वखावण हथ्थ विच फड़ के जिंदा, बिना कुंजी तों उँगलीआं उत्ते भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच पड़दा आप चुकाईआ। गुरमुख किहा छड़या रंडा रला लै नाल, रवी पिछला ध्यान लगाईआ। माया वाला वखावे जाल, जंजाल विच दुहाईआ।

एह पंडत मस्तक तिलक लगा के त्रशूली रखण नाल, लाईनां तिन्न तिन्न खिचाईआ। आसण ला के सब नूं कहिण असीं गंगा माई दे दलाल, विचोले नज़री आईआ। रेख विच मेख मारन नूं कमाल, कर्म जरम दईए बदलाईआ। साडे मथ्थे लग्गे ना कोए चण्डाल, राजे राणे सानूं सीस निवाईआ। जे किसे कोल मोतीआं दा थाल, साडी झोली दयो भराईआ। जे कोई घरों आया कंगाल, साथों अगला परोहत लओ मनाईआ। जिस दी कमाई हलाल, ओह सानूं दयो फड़ाईआ। जिस दे घर हुन्दा नहीं बाल, आओ तिलक दईए लगाईआ। कुछ आपणे घर दा दस्सो हाल, की तुहाडे घर होई कुड़माईआ। कुछ साडी गढ़वी विच दयो डाल, एह गढ़वी गंगा माई दी सेव कमाईआ। ओह वेखो लहर ने मारी उछाल, माता सानूं रही सुणाईआ। ओ पंडिओ तुसीं काहदे दलाल, जजमानां कोलों खिच के कुछ अजे ना मेरी झोली पाईआ। जे तुसीं हुण दक्षिणा ना दिती घर जादयां नूं होउ बुरा हाल, घरवाली हाए हाए कर कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गुरमुख किहा छड़या रंडा सद लै नेड़े, पिछला लेखा दयां जणाईआ। तुसीं दोवें वसदे सो रविदास दे खेड़े, गवांढी पिछले सोभा पाईआ। कदी कदी चक्र मारदे सी विच वेहड़े, मोढा मोढे नाल लगाईआ। सब नाल करदे सी हेरे फेरे, आपणी कर चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गुरमुख किहा कुछ पिछला दस्सां लहिणा, रवी राह जणाईआ। सोलह कत्तक नूं रवी दे पिण्ड दीआं दोवें सकीआं भैणां, गंगा गईआं चाँईं चाँईंआ। इन्हां दोहां तक्कयां नाल नैणां, सैनत नाल ल्या बुलाईआ। आ जाउ तुहानूं दस्सीए बहिणा, ओह गंगा माई रही जणाईआ। तुसां सानूं की कुछ देणा, असां अग्गे भेंटा देणी कराईआ। दूजे किहा बेशक एह एहदीआं लगदीआं भैणां, सानूं लाह के दे देण आपणा गहिणा, इहो वडी चतुराईआ। फेर अग्गे की कहिणा, कहिण दी लोड़ रहे ना राईआ। दूजे किहा मेरी कुण्डली कहिंदी इन्हां दे तन शरीर दा बुरज ढहिणा, साड़ सती नज़री आईआ। जिस दिन चन्द्रमा नूं लग्गणा ग्रहणा, इन्हां दीआं अक्खीआं आपणी जोत जाण तजाईआ। दूजे ने किहा इन्हां दे घर दा कोठा ढहिणा, थल्ले आ के लत्तां लैण भनाईआ। दूजे ने किहा इन्हां दे सिर उत्ते घुम्म जाणा टटिहणा, उस कुलहिणे ने इन्हां दा घर देणा गंवाईआ। ओह रो पईआं डरदीआं नीर वहाया नैणां, हन्झूआं हार बणाईआ। इन्हां बोदी ते हथ्थ मार के किहा बीबीओ राणीओ एह भाणा पैणा सहणा, सके ना कोए बचाईआ। झट दोहां ने किहा साडीआं पत्रीआं कहिण एह बण गईआं डैणां, डराउणीआं नज़री आईआ। इन्हां दा साक किसे नहीं लैणा, व्याह दा सगन ना कोए मनाईआ। चंगीआं होवण मन्दिरां विच जा के खड़कावण ढोलक छैणा, आपणा झट लँघाईआ। फेर किहा ओह जमना सुरसती गंगा

नाल कहे तरबैणा, तईआ ताप इन्हां नूं दए सताईआ। इन्हां एस जगत विच नहीं रहिणा, बिना ब्राह्मणां तों सके ना कोए बचाईआ। इक कहिंदा जे चंगीआं होण इक वार सानूं तकण आपणयां नैणां, आपणा मन लैण बदलाईआ। फेर इन्हां नूं एह दु:ख वाला भाणा पए ना सहणा, हरी ओम तत सति कर के लईए बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गुरमुख किहा छड़या रंडे नाल कर मिलाप, पिछला लेख समझाईआ। दोहां ने किहा जे साडे चरण छूहो तुहानूं कदे ना चढ़े ताप, गंगा माई दी जै कर के दईए सुणाईआ। जे साडे नाल व्याह करो तुहाडा उतर जाए पाप, दूशणा रहिण कोए ना पाईआ। जिस तरह असीं पवित्र ते तुहानूं कर दईए साफ़, जल गंगा नाल नुहाईआ। वेखो किड्डा सोहणा घाट, पत्तन इक वड्याईआ। आह वेखो तुहाडे पूरबले जन्म दा काट, असीं सांभ सूत के रखया तुहानूं दईए पढ़ाईआ। पिछल्यां दी छड दयो वाट, घर परत कोए ना जाईआ। जे घर गईआं तुहानूं सप्प डस्सणा रात नूं उपर खाट, फनीअर शी शी कर के आपणा डंग दए लगाईआ। तुहाडी ज़िंदगी अज्ज दा दिन ते अज्ज दी रात, सवेरे चिता विच देण जलाईआ। ओह रो पईआं हाए साडया बाप, की वेला गया आईआ। इक कहिंदा हथ्थों लाह के दयो छाप, तुहाडा भय दईए मिटाईआ। दूजे किहा इन्हां दा जन्म दा लेखा गया पाट, मेरी पत्री रही जणाईआ। दूजा कहे छेती करो मेरे चरण लओ चाट, रसना मुख विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। फेर जोड़ दयो दोवें हाथ, निउँ के सीस निवाईआ। दूजे किहा झट बण जायो दासी असीं बण जाईए दोवें दास, सोहणा मिल के झट लँघाईआ। फिर गोपी काहन बण के पाईए रास, पैर अग्गे पिच्छे टिकाईआ। एह साथ गंगा माता दा घाट, सोहणा सुहञ्जणा सोभा पाईआ। ओने चिर नूं उथे रविदास चमारा आ गया लै के चम्यारां वाली जमात, हौली हौली पन्ध मुकाईआ। नेड़े आ के किहा पंडत जी अज्ज एथे कटणी रात, रैण बसेरा झट लँघाईआ। उन्हां बीबीआं किहा एह साडी आ गया विच्चों जात, जुत्तीआं गंढण वाला फेरा पाईआ। एहदे कोल करीए बात, जे सानूं लए बचाईआ। पंडतां मारया हाथ, इशारे नाल किहा मुख एधर लओ बदलाईआ। एह अछूत असीं ब्राह्मण दोहां दा होए कदे ना साथ, संगी संग ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। रविदास ने रख दिती कोल रम्बी आर, आह कर के आसण ल्या लगाईआ। पंडत जी सानूं पापां दा बड़ा लग्गा भार, हौला दयो कराईआ। ब्राह्मण किहा पहले गंगा विच्चों नहा वारी दो चार, साफ़ आपणा आप कराईआ। फेर दूरों कर निमस्कार, परोहत जी कहि के सीस निवाईआ। पंडतां नूं मिलणा मंज़ल बड़ी दुष्वार, शूद्र मिलण कोए ना पाईआ। तूं ज़ात दा चम्यार, ढोरां खल्ल लुहाईआ। हो ना जाईं नराज़, सति

दईए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच पर्दा आप उठाईआ। रविदास सुण के हो गया चुप्प, अक्खीं मीट ध्यान लगाईआ। ओधरों लग्गी डाहढी धुप्प, अग्न वाग तपाईआ। ओथों ब्राह्मण पए उठ, पंज कदम ते डेरा लाईआ। उथे मन्दिर दी सी गुट्ठ, दिशा दक्खण वाली वड्याईआ। दोहां ने आपणा बणाया जुट्ट, मोढा मोढे नाल लगाईआ। इक दूजे दे हत्थ रहे घुट्ट, मुट्ठीआं इक दूजे नाल दबाईआ। जे हत्थ आ जावे अज्ज साडे एह लुट्ट, फेर समझीए किरपा कीती गंगा माईआ। एहदे चंगे बणीए पुत्त, पुत्त सोहणी सेव कमाईआ। जे कोई चंगा शाहूकार आवे उस नूं लईए लुट्ट, कुछ हिस्सा माता दी भेंट कराईआ। फेर हौली हौली हिलावण लग्गे आपणे बुट, जाप पाप वाला कमाईआ। फेर दोहां ने दोहां बीबीआं दे फड़ लए गुट्ट, अक्खां मीट के रहे सुणाईआ। तुहाडी ज़िंदगी दी डोरी ना जाए टुट्ट, गंढ ब्राह्मण ब्रह्मा नाल पवाईआ। तुसीं दोवें जाउ उठ, पंज वार प्रदक्खणा लओ चाँईं चाँईंआ। फेर दोहां दा बण जाए दो दो दा जुट्ट, जोड़ी गंगा मईआ दए बणाईआ। तुसीं कदे ना जायो रुठ, इक्ठे रह के झट लँघाईआ। जे बचन ना मन्नया अज्ज रात नूं तुहाडा रहिणा नहीं काया बुत, शरीर जाणा तजाईआ। हुण के असीं ब्राह्मण होए खुश, तुहानूं लईए बचाईआ। उनां बीबीआं किहा ओह साडे पिण्ड दा वीर उस तों लईए पुछ, संदेशा देवे जा के साडे पिता माईआ। ब्राह्मण कहिण कर जाओ चुप, रसना जेहवा ना कोए हिलाईआ। ओह ते चम्यारां दा पुत्त, ब्राह्मणां घर वड़न ना पाईआ। इक ने डले तिन्ने फेर दिते सुट्ट, इक तिन्न पंज गिण के दिते वखाईआ। वेखो तुहाडा जामा बदलया मनुक्ख, धर्म राए तों ल्या बचाईआ। एस तों लांभे जाईए लुक, अग्गे चलीए चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। पंडतां किहा साडी ला लओ चरण धूढ़ी, नक्क ज़िमीं उत्ते तिन्न वार घसाईआ। असीं चुक्कीए गंगा जल तुसीं चक्क लओ साडी फूहड़ी, साथ सोहणा लईए बणाईआ। सब दी आसा गंगा माता कीती पूरी, चलो तुहानूं पूरीआं दईए खुआईआ। नाले दर्शन करीए शिवां दी हज़ूरी, शिव मन्दिर डेरा लाईआ। बिना पंडतां तों दुनिया कूड़ी, सच विच ना कोए समाईआ। कल्ल जजमान तों ठग्गी सी मज्झ बूरी, अज्ज माता ने चोवण वालीआं सानूं दितीआं चाँईं चाँईंआ। तुसीं चल के कुटिओ चूरी, चूरमा लैणा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। जिस वेले उठ के ब्राह्मण तुरे, कदम इक दो तिन्न उठाईआ। दोहां दे अन्दर फुरने फुरे, सुरत लई अंगड़ाईआ। नी असीं ज़रूर रविदास नूं पुछीए कुड़े, की सानूं दए जणाईआ। दोहां दे अन्दरों दिल मुड़े, भज्ज के आईआं चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा

आप खुल्हाईआ। बीबीआं किहा वे रविदास, कुछ सानूं दे समझाईआ। साडे अज्ज मुकण वाले स्वास, बिना ब्राह्मणां तों सके ना कोए बचाईआ। एह सानूं लै के चले साथ, कहिण असीं होईए सहाईआ। साडा पूरा हुन्दा वाक, बत्ती दन्द देण गवाहीआ। साडे नाल जोड़ो नात, पती पत्नी रूप वटाईआ। असीं डरदीआं कुछ कहि नहीं सकीआं वाक, हां विच हां दिती मिलाईआ। तूं घर जा के दस्सीं साडे बाप, माँ नूं देणा जणाईआ। तुहाडीआं धीआं नूं अज्ज चढ़ना सी ताप, मौत उन्हां दी नेड़े आईआ। पंडतां ने उन्हां दे सिर ते रखया हाथ, लोकमात लईआं बचाईआ। आपणे नाल बणा के साक, नाता ल्या जुड़ाईआ। एह सुण अनोखी बात, रविदास लई अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। रविदास दे अन्दर आई हासी, हस्स के दिता वखाईआ। इन्हां बीबीआं नूं पता नहीं इन्हां दी माँ साडी माँ दे मामे दी धी ते मासी, रिश्ता पिछला नज़री आईआ। रविदास निक्के हुन्दयां इन्हां दी माँ तों तिन्न वार दुद्ध पीता सी विच ग्लासी, छटाकां दो ढाई टिकाईआ। ओह उठ के बणया साथी, नाल तुरया बण के राहीआ। ब्राह्मणां कोल पुज्ज के इक गल्ल आखी, आख के दिता सुणाईआ। पंडतो इन्हां दी ज़िंदगी दी की साखी, मैनूं दयो समझाईआ। पंडतां अन्तर भय आया मुक्खों निकले ना कोए बाती, गल्ल सके ना कोए समझाईआ। ओन्हां दोहां किहा चम्यारा असीं बड़े पापी, हत्यारे रूप बदलाईआ। सानूं देहु मुआफ़ी, गुस्ताख़ी ना कोए रखाईआ। सानूं भुल्ल गई चलाकी, तेरा दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। रविदास किहा पंडतो की तुहाडा ज्ञान, पढ़ के दयो जणाईआ। क्यों बदल गया ध्यान, निगाह निगाह विच्चों उलटाईआ। अन्दर वड़ गया शैतान, शोर दिता मचाईआ। पंडत वेख होए हैरान, हैरानी विच दुहाईआ। सानूं सौगंद ओस काहन, जो गोपीआं गया हंढाईआ। असीं उस नूं विचोला बणा के आपणी पत्री विच्चों इन्हां दोहां दा मंग्गया दान, ओन साडी झोली दितीआं पाईआ। पर तैनूं वेख के साडे नैण शरमाण, साडे अन्दर मच्ची दुहाईआ। जे सच पुछें तूं वी साडा जजमान, जजमान कहि के तेरी करीए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। रविदास किहा आपणी नीती लओ बदला, सीस दयो झुकाईआ। आपस विच बणो भैण भ्रा, दूसर अक्ख ना कोए उठाईआ। ओन्हां दोहां किहा निक्कयां हुन्दयां दी साडी मर गई माँ, माता नजर कोए ना आईआ। फेर एहदा होया व्याह, उस वी कीती जगत जुदाईआ। हुण घर विच ना कोए नारी ना कोए गां, गउ माता नज़र कोए ना आईआ। इक छड़ा इक रंडा दोहां नूं मिले कोई ना थाँ, सुख सच ना कोए वखाईआ। रविदास किहा ओस प्रभू दा जपो नाँ, जो

सब दा पिता माईआ। ब्राह्मणां किहा हुण करनी नहीं हां, साडा नाता जगत नालों देणा तुड़ाईआ। रविदास ने दोहां दी फड़ के बांह, हलूणा दिता लगाईआ। अक्खां उठाओ उत्ते असमां, नेत्र नैण खुल्हाईआ। आपणा तिलक दयो मिटा, उँगलां नाल घसाईआ। फेर मंगो मंग करो दुआ, ख़ाली झोली दयो वखाईआ। मुक्खों कहो तूं दाता बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। सानूं आपणे विच समा, जीवण दी लोड़ रहे ना राईआ। जिस वेले लोकमात आप जावे आ, जोती जाता वेस वटाईआ। सानूं फेर देवीं थाँ, चरण कँवल सरनाईआ। हुण असीं माँ महिटर फेर मरे ना साडी माँ, सदा साडा संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। रविदास किहा एह खेल प्रभू दा बड़ा, वडे वड वड्याईआ। मैं धुर दा लेख पढ़ा, बिना अक्खरां दिता जणाईआ। तुसां लोकमात जन्म लैणा चेतन जड़ा, तन वजूद रंग रंगाईआ। एसे तरह फेर इक विआहया होणा ते इक छड़ा, जोड़ी दोहां दए वखाईआ। पुरख अकाल आप सुहाए दरा, गृह इक्को इक जणाईआ। दीन दुनी दी बदल के शरअ, ब्राह्मण दा ब्रह्म दए प्रगटाईआ। ध्यान धरयो ज़रा, ज़रा ज़रा विच्चों वेख वखाईआ। एसे कर के गुरमुख ने बचन सुणाया खरा, रविदास पिछला लेखा पूर कराईआ। दलीप सिँघ इहनां नूं पाणी दा भर के देंदा सी घड़ा, गंगा विच्चों आप उठाईआ। मिट्टी दा खोद के रखदा सी गढ़ा, जिस विच रोज़ नवें थाँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी इक अवतरा, अवतर आपणा फेरा पाईआ।

सतिगुर लहिणा कदे ना मुकदा, जुग जुग खेल अपार। जन भगतां गोदी चुकदा, माण वड्याई देवे विच संसार। सच देवे जाप आपणी तुक दा, आत्म परमात्म कर प्यार। झगड़ा मिटावे कूड़े दुःख दा, दुखियां दुःख निवार। वेला वक्त सुहञ्जणा करे सुख दा, सुख सागर आप बणे करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक एकँकार।

✪ १७ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ मेला सिँघ सर्पंच दे गृह पिण्ड बाबूपुर ✪

इक नाल इक दी कीती बदली, सिफ़रा विच्चों दिता उडाईआ। पुरख अकाल बण अदली, इन्साफ़ भगतां नाल कमाईआ। मेला सिँघ दी ज़िंदगी सी दिहाढ़ा अज्ज लई, अज़ल भज्जे वाहो दाहीआ। नाँ बदल के लज्जया रख लई, रखया कीती

थांओं थाँईंआ। नानक दी धार विचोली सद्द लई, सदके वारी घोल घुमाईआ। कौडे ने इक वार तक्कया सी तपी होई अग्ग लई, अग्नी वेख वखाईआ। फेर भय आया प्रभ जदों आवे आवे भगतां दी यद्द लई, यके बाद दीगरे फेरा पाईआ। जन्म कर्म दी मेटण हद्द लई, हरि आपणा रंग रंगाईआ। नाम चोगा माणस कग लई, हँस रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। नाम बदली दा दिता बदला, बदला रिहा चुकाईआ। लेखे ला के जगत रीती भौं मरला, मरजीवत रूप वखाईआ। अन्तष्करन विच कढण ना दिता तरला, मिन्नत विच सीस ना कोए निवाईआ। आपणा हुक्म सुणा के परला, मौत परलो तों ल्या बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। नाम बदलया बदलया जन्म, जन्म दिती वड्याईआ। कर्म बदलया बदलया कर्म, किरपा कीती करते करीम बेपरवाहीआ। मिटया भरम, भुलेखा भरांत रिहा ना राईआ। सच बख्श के शरन, साहिब देवे सरनाईआ। दु:ख दर्द सारे डरन, दलिद्दर डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक वरताईआ। नाम बदलया बदला चुकाया आप, बदी दा बद वेख वखाईआ। कर्म मिटाया धर्म दा थापण थाप, दया दयावान वरताईआ। कूड़ दा कूड़ रिहा ना पाप, झूठ दा झूठ डेरा ढाहीआ। चिन्ता रोग ना रिहा संताप, सति सति विच मिलाईआ। किरपा करे साख्यात, साहिब स्वामी होवे सहाईआ। जिस नूं जन्म बख्श्या कर्म बख्श्या धर्म बख्श्या जा के विच पहली वार कमाद, नानक दा लेखा लेखे विच्चों प्रगटाईआ। ओसे कमाद दे रस तों आई याद, जो गुरमुखां रावी कन्ढे रस चखाईआ। ओसे कारन ल्या राख, रखया कीती प्रभ आपणी दया कमाईआ। रिग रोग ना रहे राइग संताप, सति सच विच समाईआ। लेखे ल्या तूं मेरा मैं तेरा जपया जाप, आत्म परमात्म रंग चढ़ाईआ। निरगुण सरगुण हो के देवे साथ, सरगुण आपणा भेव खुल्हाईआ। सज्जण सुहेला बण के वसे पास, पासा सके ना कोए बदलाईआ। दु:ख दर्द मिटाए संताप, संसा दए चुकाईआ। वाकिफ़ होवे आपणे वाक्यात, वायदा सारा पूरा कराईआ। मेला सिँघ प्रभ मिलण दी दे के दात, मल अन्दरों दए कढ्ढाईआ। तन सरीर होवे शांत, अग्नी अग्ग बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, सद आपणी दया कमाईआ।

✪ १७ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ हज़ारा सिँघ दे गृह पिण्ड बाबूपुर ✪

धरनी कहे मैं फिरां पैर दब्बे, हौली हौली आपणा कदम उठाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर साथ छड गए हब्बे, हुब्बे वतन दा लेखा गए मुकाईआ। मेरे संस्कार मेरे अन्दर दब्बे, बौहड़ी बाहर सके ना कोए कढ्ढाईआ। चारों कुण्ट वा तत्ती वगे, लू अग्नी रही तपाईआ। मेरे उत्ते दीन मज़्ब दी हद्दे, एका रंग ना कोए रंगाईआ। मानस पसूआं दे धर्म उत्ते वंडे, सूअर गाँ पई दुहाईआ। मेरी शर्म हया रही ना लज्जे, पर्दा दूई ना कोए चुकाईआ। फिरी दरोही काअबे हज्जे, हकीकत नज़र किसे ना आईआ। मेरा साहिब सुल्तान किसे ना लभ्भे, लबां उत्ते सारे ज़बान रहे फिराईआ। मेरे रोंदी दे बैठ गए घग्गे, ऊची कूक कूक जणाईआ। जगत सन्त करदे दग़े, कलयुग धोखा चारों कुण्ट नज़री आईआ। पुरख अकाल सरन कोई ना लग्गे, सीस जगदीश ना कोए झुकाईआ। मानस मानव बड़े वड्डे वड्डे, हँकारी गढ़ जणाईआ। धर्म दा धर्म निशान कोई ना गड्डे, गाईड गॉड ना कोए मिलाईआ। दीपक जोत कोई ना जगे, चारों कुण्ट अंधेरा छाईआ। मेरे उत्ते वहिण वहिंदे तीर्थ तट किनारे नदे, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती सार कोए ना आईआ। मानस माण रखदे घोड़ा टट्टू गधे, पंछीआं नाल चतुराईआ। आत्म ब्रह्म दा ल्ए कोई ना मज़े, मज़ाक कूड़े विच लोकाईआ। साहिब सुल्तान दी चले कोई ना रज़े, राज़क रिज़क रहीम इष्ट ना कोए रखाईआ। मेरे वल्ल दूरों वेखदी कज़े, कज़ा आपणी अक्ख खुल्हाईआ। दोवें हथ्थ अगम्मी बध्धे, बन्दना विच सीस झुकाईआ। जुग चौकड़ी लख चुरासी खा मेरी धार कदे ना रज्जे, सांतक सति ना कदे समाईआ। सदी चौधवीं पुरख अकाल हुक्म दिता यदे, यदी आपणी कार कमाईआ। चार कुण्ट जीव जंत बहु वधे, वधीक दी तारीख देणी बदलाईआ। सिर्फ़ भगतां नूं मिलणा पदे, पतिपरमेश्वर दए वड्याईआ। जेहड़ा लोकमात आउँदा कदे कदे, कदीम दे विछड़े मेल मिलाईआ। धुर फ़रमान दे के सद्दे, होका हक हक सुणाईआ। करे खेल सूरा सरबगे, पारब्रह्म अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरी आसा मनसा मेरे अन्तर विच्चों कढे, काढ आपणी अगली मेरे नाल मिलाईआ।

२२४
२२

✪ १७ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ चरण सिँघ दे गृह पिण्ड हेमराजपुर ✪

कत्तक कहे मैं वेखे कर्म कांडी, कन्ढा दीन दुनी ध्यान लगाईआ। दीन मज़्ब खावे सूर ढांडी, अमृत रस ना कोए चखाईआ। मन कल्पना सुरती सब दी बांधी, बन्दना सीस जगदीश ना कोए कराईआ। वड्याई रही ना किसे नाँ दी, कलमा

कायनात ना कोए चतुराईआ। इज्ज़त रहे ना पिता पूत माँ दी, भाई भैण करे लड़ाईआ। शोहरत रही ना पवित्र थाँ दी, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ रहे कुरलाईआ। कलयुग जीव बुद्धी होई काँ दी, हँस रूप ना कोए वखाईआ। सत्तया रही ना सतिगुर छाँ दी, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। ताकत रही ना किसे बांह दी, सूरबीर ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। कत्तक कहे मैं वेखां चार कुण्ट तकदा, तकदीर ना कोए बदलाईआ। गृह मिले ना कोए हक दा, हकीकत भेव ना कोए खुलाईआ। जगत जहान भरया शक दा, शिकवा सके ना कोए गंवाईआ। मुरीदां पैज कोए ना रखदा, मुर्शद होए ना कोए सहाईआ। प्रकाश मिले ना किसे निज नेत्र अक्ख दा, आख़र मंज़ल ना कोए चढ़ाईआ। भाग नखुट्टया रसना वाले जप दा, जेहवा चले ना कोए चतुराईआ। कूड़ कुड़यारा जहान वेख्या तपदा, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। माया ज़हिर भरया नागनी सप्प दा, सति सरूप ना कोए समाईआ। नौ दवारे मंज़ल कोए ना टप्पदा, कूड़ विकार ना कोए गंवाईआ। आत्म परमात्म नाम कोए ना जपदा, सोहँ रूप ना कोए समाईआ। सथ्थर यार कोए ना घत्तदा, चारों कुण्ट फिरी दुहाईआ। झगड़ा प्या काया माटी मट्ट दा, तन वजूद करे लड़ाईआ। कोई खेल मुकाए ना तीर्थ अठसठ दा, घर सरोवर इक नुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। कत्तक कहे मैं वेख्या दीन दुनी दा अन्दर, अन्तष्करन फोल फुलाईआ। पवित्र होया कोए ना मन्दिर, मनसा मन ना किसे तजाईआ। बजर कपाटी तुट्टा ना जन्दर, टेडी बंक पार ना कोए कराईआ। अंधेर मेटया ना किसे कन्दर, अंध अंधेर ना कोए मिटाईआ। प्रकाश लभ्भे ना सूर्या चन्द्र, नूरी जोत ना कोए रुशनाईआ। आत्म करे कोई ना बन्दन, परमात्म सीस ना कोए झुकाईआ। खेल वेख्या सूरे सरबंगण, की करता कार कमाईआ। हाहाकार कराए विच वरभण्डण, ब्रह्मण्ड देण दुहाईआ। साची मंज़ल कलयुग जीव मूल ना लँघण, कदम कदम ना कोए बदलाईआ। कूड़ी क्रिया तुट्टे बन्धन, शब्दी डोर ना कोए पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। कत्तक कहे मैं वेख्या चार चुफेरा, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। उत्तर पूरब पच्छम दक्खण दिसे अंधेरा, अंध आत्म ना कोए रुशनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया पाया घेरा, जीव सके ना कोए तुड़ाईआ। झगड़ा मुके ना मेरा तेरा, ममता मोह ना कोए गंवाईआ। भरमां ढाए कोए ना डेरा, हउमे रोग ना कोए जलाईआ। सूरबीर दिसे ना कोए दलेरा, कलयुग अन्त लए अंगड़ाईआ। सदी चौधवीं लेख मुकावे केहड़ा, सारे बैठे सीस निवाईआ। नौ सत्त डुब्बदा जाए बेड़ा, खेवट खेटा पार ना कोए कराईआ। लख चुरासी आवे

गेड़ा, जम की फाँसी ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। कत्तक कहे मैं वेख्या दीन दुनी रोंदी, नैणां नीर वहाईआ। साची सेज मूल ना सौंदी, कंडा खार चुभे लोकाईआ। अमृत सरोवर ना कोए नुहाउंदी, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। आत्म परमात्म गीत कोए ना गाउंदी, धुर दा ढोला अगम्म अथाहीआ। पुरख अकाला मीत ना कोए मनाउँदी, लख चुरासी जगत यार हंढाईआ। साची रुत्त ना कोए सुहाउंदी, थित मिले ना कोए वड्याईआ। कलयुग जीवां बुद्धी होई काउँ दी, हँस माणक मोती चोग ना कोए चुगाईआ। वड्याई रही ना किसे थाँ दी, थनंतर अन्तर रहे कुरलाईआ। वेखी खेल अगम्म अथाहो दी, बेपरवाह आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। कत्तक कहे मैं वेखे भगत प्यारे, प्रेमी प्रभ सरनाईआ। गुरमुख वेखे गोबिन्द दुलारे, दूले धुर दे नज़री आईआ। गुरमुख तके नाम वणजारे, इक्को हट्ट खोज खुजाईआ। सन्त तके लैण हुलारे, दर साचे सोभा पाईआ। जिन्हां मिल्या मेल मीत मुरारे, मित्र प्यारे जोड़ जुड़ाईआ। ओह चढ़ गए उस महल्ल मुनारे, जिथ्थे पौड़ी डण्डा अगम्म अथाहीआ। अमृत रस पीवण जल धारे, निझर झिरना इक झिराईआ। नाद शब्द सुणन धुन्कारे, अनहद नादी नाद वजाईआ। जोती जोत होवण उज्यारे, जोत जोत समाईआ। किरपा करे आप निरँकारे, निरँकार दए वड्याईआ। सचखण्ड साचे आप वाड़े, वाहवा आपणे घर बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। कत्तक कहे मैं वेख्या साहिब सुहाना, समें नाल वड्याईआ। जिस दा शब्द नाम तराना, तुरीआ तों परे पढ़ाईआ। मंज़ल इक महाना, जिथ्थे वसे नूर इलाहीआ। जोती नूर नूर नुराना, तन वजूद ना कोए रखाईआ। जोती धार श्री भगवाना, शब्दी आपणा डंक वजाईआ। कलयुग अन्तिम पहर के आपणा बाणा, बानी हो के वेख वखाईआ। कोटां विच्चों जन भगत आप पहचाना, बेपहचान दया कमाईआ। साचा दे के नाम निधाना, गुण निधान दए वड्याईआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान हो मेहरवाना, मेहर मुहब्बत नाल मिलाईआ। गुरमुख साचे सन्त जन दे के धुर दा दाना, दानशमंद दए बणाईआ। धर्म दवार दरस टिकाणा, घर आपणा इक वखाईआ। गुरमुखो होयो ना कोए बेग़ाना, वक्खरी वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवाना, शहिनशाह शाह पातशाह पारब्रह्म प्रभ आपणी कार कमाईआ।

सतिगुर शब्द शब्द शब्द नगारा, डंका शब्द वजाईआ। शब्द सतिगुर सतिगुरु मीत मुरारा, प्यार मुहब्बत सदा रखाईआ। जुग चौकड़ी देवणहार सहारा, नित नवित आपणी खेल खिलाईआ। जन भगतां बेड़ा पार करदा रिहा किनारा, नईया लोकमात ना कदे डुबाईआ। एह हुक्म देणा दुबारा, दोहरी धार समझाईआ। नौ मग्घर नूं किशन सिँघ दे नाल अजीत सिँघ बणना सी धुर दा लाड़ा, लोकमात जाणा सी तजाईआ। एसे कारन शब्दी हुक्म दिता इशारा, पन्द्रां कत्तक दी थित दिती समझाईआ। ओस वेले भेत दस्सांगा सारा, साहिब सतिगुर हो के पड़दा आप उठाईआ। एसे कारन अज्ज आउणा प्या एस दुआरा, दुआरका वासी कृष्न पिछली दए गवाहीआ। एस दा जन्म सी पिछला घर ठठिआरा, अर्जन दा मीत पिछला सोभा पाईआ। इक्की साल रिहा कँवारा, फिर आपणा आप गया तजाईआ। फेर ओहो आयू आई विच संसारा, वेला वक्त दए गवाहीआ। किरपा करे आप निरँकारा, निरवैर होए सहाईआ। जन्म विच्चों जन्म बख्श के दुबारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। एस खुशी विच छब्बी पोह नूं तन पहन के आउणीआं दो तलवारां, दो मिन्ट आपणा खेल देणा वखाईआ। अग्गे लम्मी उमर ते उच्चीआं बहारां, उच्च अगम्म अथाह दए सरनाईआ। पिच्छों भगतो तुहाडीआं सब गाउंदे रहिण वारां, सिफ्तां विच सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चौवीआं अवतारा, सरगुण दी धार चौथे जुग लेखा सब दा पूर कराईआ।

✪ १८ कत्तक शहिनशाही सम्मत ५ बीबी शिन्दरो दे गृह पिण्ड हेमराजपूर ✪

धरनी कहे मेरे अन्तर लग्गी धड़कण, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। मेरी आसा लग्गी भटकण, भाण्डा भरम ना कोए भनाईआ। प्रभ दर्शन नूं लग्गी तरसण, तृखावन्त हो कुरलाईआ। तक्कण लग्गी उपर अर्शन, बिना नैणां अक्ख खुलाईआ। किरपा कर योधे मर्दन, सूरबीर तेरी सरनाईआ। सब दा पूरा करदे कर्ज़न, मकरूज लेखा पूर कराईआ। मेरी बेनन्ती सुण अर्जन, अर्जन गोबिन्द दए सलाहीआ। तूं सिरजणहार सरजण, सिर सिर रिज़क सबाईआ। पुद्दी सिध्धी करदे नरदन, नर नरायण बेपरवाहीआ। शरअ छुरी रहे ना करदन, कज़ा दिसे ना कोए लोकाईआ। कातिल मक्तूल खेल ना होवे करदन, कत्लगाह दा डेरा ढाहीआ। ग़रीब निमाणयां वंड दरदन, दुखियां हो सहाईआ। सदी चौधवीं पूरी कर शर्तन, शरअ दे बदलाईआ। कलयुग भाण्डे साफ़ कर बरतन, दुरमति मैल धुआईआ। तेरे विछोड़े विच लग्गी तड़फण, रो रो दयां दुहाईआ। मैनूं चाल भुल्ल गई मटकण, निमाणी हो के सीस निवाईआ। चारों कुण्ट जूठ झूठ लग्गा खड़कण, खण्डा नाम ना कोए

खड़काईआ। तेरे मिलण दी माया ममता पाई अटकण, अग्गे हो ना कोए कढ्ढाईआ। मैनूं बिरहों दुःख लग्गा रड़कण, कंडा खार रिहा चुभाईआ। मेरा स्वास लग्गा लटकण, रास मण्डल ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। धरनी कहे हाए मेरया अब्बा, मीआंजान तेरी सरनाईआ। मेरे मस्तक लग्गा धब्बा, क्रिया कूड़ ना कोए गंवाईआ। सच धर्म दी रही कोई ना सभा, मलेछ होई लोकाईआ। तेरे हुक्म दा दिसे कोई ना बध्धा, बन्दन सच ना कोए कमाईआ। आपणा अक्खर वेख दद्दा, जो दाइरे दीन दुनी बणाईआ। अग्गे वेख धद्धा, जो धर्म दा नाता तुड़ाईआ। अग्गे वेख नन्हा, जो नानक दए गवाहीआ। अग्गे वेख पप्पा, पूरन पूरन ब्रह्म बेपरवाहीआ। अग्गे वेख फफ्फा, फुल्ल फुलवाड़ी साची नज़र कोए ना आईआ। अग्गे वेख बब्बा, बाहरों न्हाती धोती दीन दुनी अन्दरों बणी कसाईआ। अग्गे वेख भब्बा, भरम भुलेखा कढ अन्तर निरन्तर ना कोए जणाईआ। अग्गे वेख मम्मा, मालक ख़ालक पड़दा आप उठाईआ। अग्गे वेख यय्या, याद तेरी गए भुलाईआ। अग्गे वेख रारा, राम बनवासी दए गवाहीआ। अग्गे वेख लल्ला, लाल रंग रंग ना कोए रंगाईआ। अग्गे वेख वावा, विष्नूं तेरे नाम दी दए दुहाईआ। अग्गे वेख ड़ाड़ा, ड़ाड़ मिटे ना सृष्ट सबाईआ। अग्गे वेख तरतरा, त्रीया रूप त्रैगुण अग्न ना कोए बुझाईआ। तैनूं आदि जुगादि सारे कहिंदे अवतरा, अवतारी बेपरवाहीआ। कलयुग मेरी सुंजी सेज सुहावे कोए ना विस्तरा, आसण सिंघासण ना कोए लगाईआ। गोबिन्द छड गया खण्डा खड़ग शस्त्रा, शस्त्रधारी तेरी ओट तकाईआ। दीन दुनी मैनूं खेल दिसे तेरा मसख़रा, बेपरवाह तेरी बेपरवाहीआ। मैं तेरी महिमा सुणदी रही विच अक्षरा, अक्खर देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, साहिब तेरी वड्याईआ। धरनी कहे मेरे मालक किरपा कर जल्दी, जल थल महीअल दए दुहाईआ। चारों कुण्ट अग्ग बलदी, कुकर्म पाप रिहा तपाईआ। किसे धार ना सुझे हल्ल दी, हालत विगढ़ी जगत लोकाईआ। मैं खेल दस्सां कल दी, कलमे वाले रोवण मारन धाईआ। की हालत होणी मज़्बां वाले दल दी, दलिद्री बैठे डेरा ढाहीआ। तेरा भाणा तेरी धार झलदी, झलक आपणी दे बेपरवाहीआ। हुण खेल छड दे छल दी, अछल अछल आपणा रंग रंगाईआ। मैं दर दवारा तेरा मल्लदी, मालक तेरी इक सरनाईआ। किसे नूं ख़बर नहीं घड़ी पल दी, पलकां दे पिच्छे बहि के आपणा नूर दे चमकाईआ। मैं भुक्खी प्यासी तेरे प्रेम वाली गल्ल दी, दिवस रैण ध्यान लगाईआ। मेरे वेंहदयां वेंहदयां सदी चौधवीं चलदी, अन्त अख़ीरी रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडा इक सुहाईआ। धरनी कहे मेरे धुर दे मालक पिता पुरख बापू, बाप आप अख्वाईआ। शरअ छुरी चल्ले ना कोए चाकू, चाकर

तेरी होए लोकाईआ। हुक्का पीए ना कोए तमाकू, तमा कूड़ देणी गंवाईआ। आत्म परमात्म दस्स दे साकू, सज्जण इक्को देणा वखाईआ। बिन तेरी किरपा पति कोए ना राखू, रक्षक नज़र कोए ना आईआ। मैं कोटन वार निमस्कार कर के आखूं, ढहि ढहि सीस निवाईआ। झगड़ा मेट दे ज़ात पातू, वितकरे वाल्यां वितकरे दे गंवाईआ। तूं सब तों बड़ा अफ़लातू, फ़लासफ़र वडा नज़री आईआ। तूं सब तों वड्डा मुशताकू, खैरख़ाह धुरदरगाहीआ। गुर अवतार पैग़म्बर तेरे निक्के जिहे काकू, बच्चे बचपन वाले नज़री आईआ। तूं आदि जुगादि निरगुण धार सरगुण डाकू, लुटेरा अगम्म अथाहीआ। तुध बिन मेरी मंज़ल कोए ना काटू, पैंडा पन्ध ना कोए मुकाईआ। मैं घुंमदी वांग लाटू, दहि दिशा सेव कमाईआ। मेरा बदलण वाला हुण टापू, टप्पा तेरा नाम दुहाईआ। धुर दा हुक्म तुध बिन कौण थापू, थापण देवे सर्ब थाँईंआ। तेरा फ़रमान कौण छापू, छापाख़ाना ना कोए वड्याईआ। तूं मालक धुर दा आदू, अन्त तेरी सरनाईआ। धरनी कहे जिस वेले गोबिन्द ने चरण रखया सी कोल दादू, देहुरे तों पंज कदम पिच्छे टिकाईआ। हस्स के किहा कलयुग अन्त बिना पुरख अकाल तों होणा नहीं कोए आगू, जिस दी आज्ञा गुर अवतार पैग़म्बर सीस निवाईआ। जो दीन मज़्हब सर्ब त्यागू, त्रैगुण अतीता दया कमाईआ। सृष्ट सबाई विच्चों इक्को जागू, जागरत जोत करे रुशनाईआ। एका हुक्म करे लागू, धुर फ़रमाना आप समझाईआ। जन भगतां नाल मिलाए बाज़ू, बाज़ां वाला जोड़ जुड़ाईआ। सृष्टी तोले नाम कंडे तराज़ू, त्रैलोकी नाथ वेख वखाईआ। धरनी कहे मेरे परम पुरख मेरी इहो आरज़ू, अर्ज़ दयां जणाईआ। मेरा कारज संवार तूं, तुध बिन अवर ना कोए दसाईआ। आदि अन्त इक निरँकार तूं, निरवैर तेरी वड्याईआ। कूड़ी क्रिया जगत शरअ निवार तूं, तूं मेरा मैं तेरा इक्को रंग वखाईआ। मेरी पुकार सच हू, नाअरा हक खुदाईआ। पवित्र करदे बुत रूह, रहिबर नूर इलाहीआ। तूं आदि अन्त दा इक्को सतिगुरु, साहिब तेरी वड्याईआ। बिन तेरी किरपा सतिजुग कदे नहीं होणा शूरू, शरअ सके ना कोए बदलाईआ। तेरा मन्त्र इक्को फुरू, फुरने सब दे दे उलटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तेरी धार सच्चा सतिगुरु, गुरु शब्द इक अख्वाईआ।

पहली मग्घर शहिनशाही सम्मत ५ हरि भगत दवार जेठूवाल

सचखण्ड दवार खेल सूरे सरबगे, हरि करता कार कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव निरगुण धार आओ अग्गे, आगमन विच वेखो बेपरवाहीआ। तेई अवतार हुक्म संदेशे सद्दे, सद भावना फोल फुलाईआ। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद वेखो हथ्थ

२२६
२२

बध्धे, सजदा सीस जगदीश झुकाईआ। नानक निरगुण गोबिन्द धार सजे, सूरबीर सुल्तान सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा इक सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मारो झाकी, हरि करता आप दृढ़ाईआ। अवतार तक्को जिस्म ज़मीर ख़ाकी, तन माटी फोल फुलाईआ। पैग़म्बर हकीकी जाम तक्को साकी, साख्यात दए दृढ़ाईआ। नानक गोबिन्द धार पूरी करो आखी, आख़र बिन अक्खरां इक जणाईआ। सति धर्म दा रिहा कोए ना साथी, सगला संग ना कोए निभाईआ। मंज़ल चढ़े कोए ना घाटी, सच दवारा सोभा कोए ना पाईआ। चारों कुण्ट वेखो अंधेरी राती, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता अगम्म अथाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव तक्को जग, सो पुरख निरँजण आप दृढ़ाईआ। तेई अवतार वेखो उपर शाह रग, हरि पुरख निरँजण रिहा समझाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद वेखो आपणी हद्द, एकँकार रिहा समझाईआ। नानक गोबिन्द वेखो भज्ज, आदि निरँजण नूर करे रुशनाईआ। सृष्टी दृष्टी शब्द सुणे ना कोए नद, अबिनाशी करता रंग ना कोए रंगाईआ। कूड़ विकार सके कोए ना कढ, श्री भगवान मिलण कोए ना आईआ। धुर दा मार्ग सारे गए छड, पारब्रह्म ब्रह्म रंग ना कोए रंगाईआ। धर्म निशाना दो जहानां सके कोए ना गड्ड, क्रिया कूड़ ना कोए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा इक सुणाईआ। सच संदेशा सुणो अगम्म अथाह, हरि करता आप दृढ़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव वेखो नैण उठा, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। तेई अवतार धरो ध्याँ, चारो कुण्ट फोल फुलाईआ। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद वेखो मेहरवां, की हुक्मी हुक्म प्रगटाईआ। नानक गोबिन्द दयो जणा, धुर फ़रमाना धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर प्रभ चरण दवार अकट्ठे, हरि करता आप सुहाईआ। आपणे आपणे वेखो पटे, पटने वाला नाल मिलाईआ। जिस दीन मज़्हब दे मेटणे रट्टे, रट्टा कूड़ दए गंवाईआ। इक्को रंग रंगाउणा काया पंज तत मट्टे, रूप अनूप इक दरसाईआ। वणजारा इक दो जहानां होणा हट्टे, नव सत्त वेख वखाईआ। जिस दा इक्को मन्त्र नाम दीन दुनी जपे, जगजीवण दाता दए वड्याईआ। त्रैगुण माया अग्नी तत मूल ना तपे, अमृत मेघ इक बरसाईआ। माण मिलणा सरगुण धार इक पप्पे, पारब्रह्म प्रभ आपणा पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बरो इक्को करो ध्यान, अगम्म अथाह जणाईआ। की पेशतर कीता ब्यान, भविक्ख्तां विच सुणाईआ। कलि कल्की होए मेहरवान, अमाम अमामा नूर इलाहीआ। निरगुण नूर जोत जगे महान, अंध अंधेरा दए मिटाईआ। शब्द

नाद धुन धुन्कान, अगम्म आप सुणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट तुफ़ान, माया ममता दए गंवाईआ। सच संदेशा देवे दो जहान, निरगुण सरगुण आप समझाईआ। सदी चौधवीं बदल देवे विधान, वाधा आपणे हथ्थ रखाईआ। लहिणा पूरा कर के काहन, घनईया नईया पार कराईआ। लेखा वेख के सीता राम, सुरती शब्दी वंड वंडाईआ। हुक्म संदेशा दे अगम्म पैग़ाम, बिन अलिफ़ ये करे पढ़ाईआ। झगड़ा मेट दीन दुनी तमाम, तमअ तमन्ना दए गंवाईआ। हउमे हंगता कलयुग रहिण ना देवे हराम, बेईमान बेवा रूप चारों कुण्ट दए खपाईआ। शरअ छुरी ना रहे शैतान, शरीअत वंड ना कोए वंडाईआ। प्रगट हो के योद्धा सूरबीर बलवान, मर्द मर्दान आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर जिस नूं सीस झुकाण, झुक झुक लागण पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। पुरख अकाल कहे सारे वेखो अग्गा, पिच्छा नज़र कोए ना आईआ। नौ खण्ड पृथ्मी केहड़ी पवित्र जगह, पाक पवित कवण समझाईआ। किस गृह मन्दिर देवे सद्दा, प्रेम प्रीती मंग मंगाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप धाम केहड़ा लभ्भा, लाभदायक दयो जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दी धार इक जणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो वेखो दीन दुनी दी धार, लख चुरासी फोल फुलाईआ। सति रिहा ना विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी लओ अंगड़ाईआ। क्यों सृष्टी दृष्टी होई ख्वार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान सके ना कोए विचार, खाणी बाणी रंग ना कोए रंगाईआ। नव सत्त धूंआँधार, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। मुरीद मुर्शद करे ना कोए प्यार, चेला गुर रंग ना कोए समाईआ। सारे वेखो निगाह मार, निगाहबान रिहा समझाईआ। किसे दा रिहा ना कुछ अख्त्यार, भय भाउ ना कोए समझाईआ। जेहड़े दीनां मज़्बां दे मुखत्यार, मुखतारनामे लओ उठाईआ। धरती रोवे नाल भार, पापां भरी रही कुरलाईआ। किरपा कर हरि निरँकार, निरवैर तेरी सरनाईआ। कलि कल्की हो त्यार, कलि कलेश दए मिटाईआ। माया ममता मोह कर गिरफ्तार, बचया रहिण कोए ना पाईआ। तेरे नाम दा होवे इक जैकार, जै जैकार करे लोकाईआ। इक्को चरण होवे निमस्कार, डण्डावत बन्दना सजदा सीस झुके सर्ब लोकाईआ। इक्को होवे मन्दिर दवार, इक्को इष्ट वज्जे वधाईआ। इक्को तख्त सोहे सच्ची सरकार, शाह पातशाह शहिनशाह इक्को सोभा पाईआ। इक गुरु गुरदेव इष्ट होवे इक होवे जैकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहर नजर इक उठाईआ। उधरों कलयुग आ गया पुरख अकाल नूं कहे सलाम, नमस्ते तेरी सरनाईआ। निरगुण धार जोत अमाम, निरवैर तेरी वड्याईआ। मैं तेरा सुत बलवान, योद्धा इक अख्वाईआ। जिस ने घर घर वाड़्या हराम,

पंज तत चोला बचया रहिण कोए ना पाईआ। तेरे अवतार पैग़म्बर कर ना सके इंतज़ाम, बन्दोबस्त ना कोए रखाईआ। मैं कलमे वाले कीते शैतान, मुल्ला शेख़ काम क्रोध हल्काईआ। कूड़ वासना कीते ग़ुलाम, शरअ ज़ंजीर ना कोए कटाईआ। मेरे मालक मेरे साहिब कुछ मैनूं दे इनाम, दर तेरे झोली डाहीआ। तेरा नाम कीता बदनाम, बदीआं विच लोकाईआ। मैं ढंडोरा देंदा शरेआम, चारों कुण्ट सुणाईआ। सूरबीर बण के पहलवान, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण भज्जां चाँईं चाँईंआ। सति धर्म दा रहिण नहीं दिता सीता राम, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। माण रिहा ना राधा काहन, बंसरी नाम धुन ना कोए सुणाईआ। अल्ला दा देवे ना कोए पैग़ाम, सजदा सीस ना कोए झुकाईआ। हिरदे रिहा ना किसे सतिनाम, वाहिगुरु तेरा जाप गए भुलाईआ। सारी सृष्टी वेख तमाम, तमा विच हल्काईआ। मैं पुरख अकाल तेरे चरण करां प्रणाम, निउँ निउँ लागां पाईआ। मैं तेरा सुत नौजवान, डंका कूड़ दिता वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं तेरा सुत दुलारा नढ्ढा, नौजवान नज़री आईआ। मैं कूड़ निशाना गड्डा, चारों कुण्ट दयां वखाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मेरा अड्डा, माया ममता विच हल्काईआ। मेरे उत्ते नहीं किसे दा दब्बा, मैं सारे लए डराईआ। अवतार पैग़म्बर कोई नहीं छड्डा, गुरुआं नाल कीती लड़ाईआ। मेरा खेल वेख लै हब्बा, हम साजण पड़दा लाहीआ। मेरे वरगा सुत दुलारा अग्गे कोई नहीं वधा, लायक नज़र कोए ना आईआ। मैं पवित्र रहिण नहीं दिती कोई जग्ग़ा, तीर्थ तट रहे कुरलाईआ। दीन मज़्हब बणा के हद्दा, तेरे तेरे नाल दिते लड़ाईआ। चौधवीं सदी चौदां तबक वजाउणा डग्गा, डौरु तेरा देणा सुणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया फड़ के डब्बा, निरगुण सरगुण देणा खड़काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरी खेल रुहानी, रूह बुत जणाईआ। सब दे अन्दर वाड़ के बेईमानी, धर्म दी धार दिती भुलाईआ। शरअ ज़ंजीर जणा जगत शैतानी, शाह दिते लड़ाईआ। साचा रहिण दिता नहीं कोई दानी, लोभ लालच विच सर्ब हल्काईआ। पर इक डर आया जेहड़ी गोबिन्द बच्चयां दिती कुरबानी, बाले नीहां हेठ दबाईआ। मेरे सीने लग्गी कानी, तीर अणयाला दिता चलाईआ। मैनूं उस दा दिसे कोए ना सानी, साहिब तेरी बेपरवाहीआ। मैं हैरान हो गया कलयुग कहे जिस जुझार नूं दिता ना पाणी, ख़ाली पिड्ड भवाईआ। माछूवाड़े दी सेज माणी, सथ्थर यार हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। पुरख अकाल कहे कलयुग ओह वेख गोबिन्द आया, सूरबीर सोभा पाईआ। जिस दे भय विच भज्जे त्रैगुण माया, त्रैलोकी नाथ बैठे सीस निवाईआ। जिस दी पंज तत नहीं

काया, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जिस दा मालक बेपरवाहया, बेपरवाही विच समाईआ। शब्दी धार रूप धराया, धरनी धरत धवल वज्जी वधाईआ। जिस ने इक्को ढोला गाया, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस दी सब दे उपर छाया, सिर सके ना कोए उठाईआ। जिस दे सरोवर तीर्थ जगत नहाया, तट किनारे पन्ध मुकाईआ। जिस नूं वाहवा करके सब ने गाया, वाहिगुरु तेरा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। कलयुग कहे प्रभू एह तेरा गोबिन्द सूरा, सूरबीर नज़री आईआ। जोती जोत अगम्मी नूरा, नूर नुराना डगमगाईआ। शब्द अनाद अनादी तूरा, तुरीआ तों परे करे पढ़ाईआ। निरगुण सरगुण सर्ब कला भरपूरा, भरपूर रिहा सर्ब ठांईआ। आदि जुगादी हाज़र हज़ूरा, हज़रतां तों परे कर पढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया हूंझे कूड़ा, माया ममता मोह गंवाईआ। गुरमुखां दे के चरण धूढ़ा, टिक्के मस्तक नाम रमाईआ। चतुर सुघड़ बणा के मूर्ख मूढ़ा, हँस काग रूप जणाईआ। पन्ध मुका के नेड़ा दूरा, घर घर विच रिहा जणाईआ। तेरा नाम कर मशहूरा, मशवरा तेरे नाल रखाईआ। जिस दा बचन ना होवे अधूरा, धुर दे हुक्म नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। गोबिन्द कहे कलयुग आह वेख मेरी खड़ग, खण्डा नाम चमकाईआ। वेख खेल नधड़क, हौसला नाल वधाईआ। सदी चौधवीं रहिण नहीं देणी रड़क, चौदां तबकां वेखां चाँईं चाँईंआ। दीन दुनी दी मेटणी भड़क, माया ममता मोह मिटाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल मेरी पूरी करनी शर्त, शरअ कूड़ देणी बदलाईआ। जो वादा कीता उत्ते अर्श, फ़र्श वेखे चाँईं चाँईंआ। दोहां दी इक्को जेही ग़र्ज़, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। योद्धा सूरबीर बणा के मर्दाना मर्द, निरगुण नूर ल्ए चमकाईआ। सब दी पूरी करे कीती अर्ज़, आरज़ू वेखे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। कलयुग कहे गोबिन्द मैं वेख्या तेरा खण्डा, दो धारा नज़री आईआ। भय देवे ब्रह्मण्डा, ब्रह्मण्ड रिहा कुरलाईआ। झगड़ा मुकावे जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज डेरा लाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे हद्दा, हदूद इक्को इक वखाईआ। नव सत्त देवे सद्दा, हुक्म संदेशा अगम्म अथाहीआ। जिस दे नाल विष्न ब्रह्मा शिव आवे भज्जा, निरगुण बण के पाँधी राहीआ। तेई अवतार होवे खब्बा सज्जा, राम कृष्न रंग रंगाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद होवे बज्झा, नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। तेरा खेल सूरे सरबंगा, दो जहान वेखण चाँईं चाँईंआ। कलयुग सिरों आवे नन्गा, ओढण सीस ना कोए रखाईआ। धर्म तेरे दवारे मंगा, दर तेरे वास्ता पाईआ। तेरा इक्को सुत दुलारा चंगा, चार वरन जिस दी सरनाईआ। लेखा रहे ना किसे पंडा, मुल्ला शेख़ ना वंड वंडाईआ। सति

धर्म दा सति देणा अनन्दा, अनन्द पुर वाले अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। सब दी टुट्टी पाउणी गंढा, गंढणहार जोड़ जुड़ाईआ। कलयुग कूड़ा मेटणा गंदा, सतिजुग सच धर्म वरताईआ। गुरमुख नेत्रहीण रहे कोए ना अन्धा, निज नेत्र लोचण नैण ना कोए खुल्हाईआ। अमृत रस देणा ठंडा, निझर झिरना बूँद स्वांती कँवल नाभ टपकाईआ। जो लेखा दस्सया गोबिन्द वैरागी बन्दा, बिन भजन बन्दगी आप दृढ़ाईआ। पुरख अकाल चाढ़ना नूरी चन्दा, चन्द चांदना कर रुशनाईआ। जिस वेले मुहम्मद वेला लँघा, सदी चौधवीं रोवे मारे धाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। कलयुग कहे मैं वेखी अगम्म किताब, बिन हरफ़ हरूफ़ पढ़ाईआ। जिस दे विच जुग चौकड़ी हिसाब, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग हिस्से वंड वंडाईआ। उस दा लेखा नहीं कोई अक्खरां विच काव, कविता रूप ना कोए जणाईआ। सिफ्तां वाला नहीं कोई नाम, महिमा वाली ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि दाता बेपरवाहीआ। कलयुग कहे उस दा लेखा अगम्म अथाह, हरि करता आप दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं अन्तिम खेल बेपरवाह, पारब्रह्म परवरदिगार आप कराईआ। जिस नूं कहिंदे जल्वागर खुदा, नूर नुराना डगमगाईआ। अमाम अमामा आवे वेस वटा, जोती जाता पुरख बिधाता आपणा खेल खिलाईआ। जिस दी समझे समझ कोए ना रा, रहमत विच आपणी कार कमाईआ। ओह लहिणा देणा लेखा जाणे थांउँ थाँ, थान थनंतर खोज खुजाईआ। जिस झगड़ा मिटाउणा सूर गां, सति दा धर्म धर्म इक वखाईआ। इक जपाउणा नाँ, नाउँ निरँकारा इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। कलयुग कहे मैं वेख्या खेल अपारा, अपरम्पर दिता वखाईआ। जिस वेले तेरे विच होया धूंआँधारा, सच चन्द ना कोए चमकाईआ। माण रिहा ना पैग़म्बर गुर अवतारा, तरह तरह नाल लड़ाईआ। पिता पूत ना करे प्यारा, मात गोद ना कोए सुहाईआ। सति धर्म दा कायम रिहा ना कोए दवारा, दुर्गा इष्ट इष्ट कुरलाईआ। अठ्ठ सठ तीर्थ रोवे वहिण वहावे धारा, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती मीढी सीस ना कोए गुंदाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी पढ़ पढ़ थक्के संसारा, सुरती शब्द ना कोए जुड़ाईआ। नूरी चन्द निरगुण जोत ना कोए चमत्कारा, अंध अंधेर ना कोए मिटाईआ। शब्द नाद धुन सुणे ना कोए धुन्कारा, अनहद नादी नाद ना कोए शनवाईआ। उस वेले पुरख अकाल आउणा चौवीआं अवतारा, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। नाद शब्द सतिगुरु गोबिन्द होणा दुलारा, दूल्हा धुर दा सोभा पाईआ। नाम खण्डा लै दो धारा, दुहरी कार कमाईआ। गुरमुखां करे प्यारा, मनमुखां दए सज़ाईआ। ज़ाहरा ज़हूर होवे विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी

वेखण चाँईं चाँईंआ। जिस ने दीन दुनी दी बदल देणी धारा, धरनी धरत धवल धौल इक्को डंक वजाईआ। कलयुग कहे मैं करां निमस्कारा, निउँ निउँ लागां पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। कलयुग कहे किताबां विच लेखा लिख्या उह, जो भविक्खतां विच जणाईआ। जिस दा भेव खुल्हणा छब्बी पोह, सम्मत शहिनशाही पंज नाल वड्याईआ। जोत शब्द धार निरगुण निरगुण खेल दो, दूआ एके विच समाईआ। जिस ने अवतार पैग़म्बरां कोलों सब कुछ लैणा खोह, ख़ाली हथ्थ दए वखाईआ। दीन दुनी नालों कर निरमोह, वास्ता जगत नाता तुड़ाईआ। सचखण्ड दवारे मेरे विच मिल के जाओ सौं, सुत्तयां फेर ना कोए उठाईआ। सतिजुग सति धर्म दी सति सतिवादी करे लो, लोयण भगतां आप खुल्हाईआ। मन कल्पणा कूड़ी क्रिया हउमें अन्दर रहे ना बो, बदी दा डेरा देणा ढाहीआ। ईसा मूसा मुहम्मद हुक्म देवे ना को, उम्मत उम्मत ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग कहे मैं किताब विच वेख्या हो मुखातब, लिख्या लेख इलाहीआ। परवरदिगार सब दा करना तुआकब, पिछला पिछा वेख वखाईआ। लहिणा देणा वेखणा सर्ब मुनासब, बचया रहिण कोए ना पाईआ। हुक्म वरताउणा हुक्म मुताबक, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर दीन दुनी रहिणा मूल नहीं साबत, सिदक सबूरी ना कोए हंढाईआ। लेखा मुकणा जगत सुन्नत हजामत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धर्म दी धार इक प्रगटाईआ। कलयुग कहे मैं वेखी अगम्म कलाम, बिन अक्खरां लेख लिखाईआ। जिस दे उपर नूरी अमाम, अमलां तों बाहर सोभा पाईआ। जिस दे पैग़म्बर होए ग़ुलाम, चाकर हो के सेव कमाईआ। ओह खेल करे तमाम, तमन्ना कूड़ी दए मिटाईआ। हुक्म संदेशा दए पैग़ाम, पैग़म्बरां तों परे करे पढ़ाईआ। मुहब्बत विच महिबूब होए मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। सति धर्म दा सांझा होए विधान, हुक्म संदेशा इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। किताब कहे मैं आई कदी ना विच कुतबख़ाना, कुतब पढ़न कोए ना पाईआ। वेख्या नहीं कोए महवख़ाना, जाम मुख ना कोए लगाईआ। मैं खेल दस्सणा श्री भगवाना, जो भगवन आपणी कार कमाईआ। जन भगतो सुणयो नाल ध्याना, सोई सुरत उठाईआ। जिस नूं मन्नदे सीता रामा, कृष्न कान्हा निउँ निउँ लागण पाईआ। ओह पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार नौजवाना, सूरबीर धुरदरगाहीआ। उस लहिणा देणा लेखा वेखणा दो जहानां, गुर अवतार पैग़म्बरां कोलों मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। कलयुग कहे मैं आखां आख़र इक बात, बातन दयां जणाईआ।

जन भगतो इक्की मुल्लां दी बण के आउणा जमात, अक्खर अलिफ़ ये हथ्थ उठाईआ। फिरना आकड़ नाल मज़ाज, तमन्ना जगत वल्लो बदलाईआ। पुट्ठे हथ्थ दा करना अदाब, सिध्धा सीस ना कोए झुकाईआ। बदी विच देणा जुआब, एह खेल रब्बी बेपरवाहीआ। छब्बी पोह दी होवे रात, भिन्नड़ी नाल मिलाईआ। फेर लेखा दस्सणा की नानक संदेशा दिता विच बग़दाद, बग़ली गल विच लटकाईआ। जेहड़ा हुजरा होवे महिराब, महिबूब कवण रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। कलयुग कहे मैं छब्बी पोह नूं आवांगा। आपणा पिछला हाल सुणावांगा। भेव अभेदा अगम्म खुल्हावांगा। चारे वेद खोज खुजावांगा। पुराण अठारां रंग रंगावांगा। छे शास्त्र वंड वंडावांगा। गीता ज्ञान खोज खुजावांगा। बाल्मीक सच प्रीत पड़दा लाहवांगा। अञ्जील कुरान वेख तौफ़ीक, तुरैत तुरत आप समझावांगा। खाणी बाणी भेव दस्स के ठीक, ठाकर इक्को इक मनावांगा। गुर अवतार पैग़म्बर दस्स तारीख, तवारीख आप जणावांगा। क्यों दीन मज़्हबां विच बणे शरीक, शिरक्त सब दी आख समझावांगा। मैं आपणी दस्सणी हक तौफ़ीक, हुक्म धुर दा इक अलावांगा। सदी चौधवीं कोई रहिण नहीं देणा किसे दा मीत, पिता पूत नाल लड़ावांगा। अल्ला वाहिगुरु नाम सति राम कृष्न मुहब्बत विच गाए कोई ना गीत, अन्दर वड़ के सर्ब भुलावांगा। झगड़ा पवा के मन्दिर मसीत, शिवदुआले मट्ठ गुरदवार डंक वजावांगा। साधां सन्तां बदल के नीत, सूफ़ीआं माया मोह विच फसावांगा। झगड़ा पा के हस्त कीट, शाह सुल्तानां नाल लड़ावांगा। करां खेल इक अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमावांगा। हँकारीआं वढ्ढां पीठ, दुष्टां आप डरावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी साची कार वखावांगा। कलयुग कहे मैं छब्बी पोह आउणा ज़रूर, ज़रूरी दयां जणाईआ। भरया होवां नाल ग़रूर, गुरबत विच अंगड़ाईआ। क्यों मैं लहिंदी दिशा पाउणा फ़तूर, फ़तवा सब दे उत्ते लाईआ। पैग़म्बरां कर देवां मजबूर, मजबूरी विच दुहाईआ। शरअ दा शरीअत विच ला कसूर, साबत रहिण कोए ना पाईआ। अक्ल बुद्धी करे मूर्ख मूढ़, चतुर सुघड़ देणे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। कलयुग कहे मैं छब्बी पोह नूं बणना नहीं किसे दा सका, मित्र मित्रां देणा जणाईआ। मक्का मदीना लाउणा धक्का, पैग़ाम अगम्म इलाहीआ। झगड़ा पाउणा बूरा कक्का, कलाम पिछली वेख वखाईआ। भारत खेल वेखणा अक्खां, अक्खां वाल्यो दयां दृढ़ाईआ। दुनिया सड़नी बिन कक्खां, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। क्योंकि मेरा प्रभ दे नाल कौल इकरार पक्का, ना कोए तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। मैं सब दी अक्खीं पाउणा घट्टा, जगत नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। गुरमुखो पंजां ने सीस ते दस्तारा बन्न्ह के आउणा खट्टा, खटका अग्गे

रहे ना राईआ। चारों कुण्ट पैणा रट्टा, रिटन रुटीन विच सके ना कोए समझाईआ। पंजां गुरमुखां ने कन्नी बन्ह के ल्याउणा इक इक टका, टका कीमत प्रभ तों भुल्लयां कोई ना पाईआ। पंजां गुरुमखां ने मस्तक ला के आउणा घट्टा, मिट्टी ख़ाक नाल रमाईआ। पंजां ने हथ्थ विच फड़ के ल्याउणा पटने वाले दा पटा, गोबिन्द नाल वड्याईआ। पंजां ने छाती उत्ते ला के आउणा ठप्पा, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। पंजां ने मथ्थे उत्ते लिख्या होवे पप्पा, पूरन पारब्रह्म चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। पुरख अकाल कहे कलयुग हुण कर बस्स, बस्ता लै बंधाईआ। कलयुग प्या हस्स, ताली बिन हथ्थां दिती वजाईआ। प्रभू ने पहलों गोबिन्द नूं कहिणा आपणे शब्दी घोड़े तंग कस, कसम नाल लै अंगड़ाईआ। फेर मैनूं बांका रूप दस्स, नौजवाना सोभा पाईआ। फेर मेरे वल्ल वेखे खोल्ह के अक्ख, नैण नैण उठाईआ। फेर प्रेम प्यार दी तकणी लै तक, निगाह निगाह विच्चों बदलाईआ। फेर मैं कहां गोबिन्द मेरा तेरा पूरा होया हक, बाकी बाकायदा दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। झट कलयुग दे नेत्र आ गया अथ्थर, बिन नैणां नीर वहाईआ। मैनूं दिसदा छब्बी पोह नूं गोबिन्द दा ओह सथ्थर, जेहड़ा यारड़े गया हंढाईआ। जिस नूं गुरमुख चार चुक्कण हथ्थण, सूरबीर सोहणे सोभा पाईआ। ओन्हां ने मुख नाल खाधा होवे मक्खण, बुल्लां नाल छुहाईआ। हिरदे विच हरि दा रूप हो के वसण, विषा विकार बाहर कढ्ढाईआ। आपणा आपणे विच रचण, लूं लूं विच समाईआ। भाग लगा के काया कंचन, गढ़ धुर दा लैण वड्याईआ। फेर खुशीआं दे विच हस्सण, मुक्खों कहिण गोबिन्द तेरी बेपरवाहीआ। पुरख अकाल नाल आपणा पूरा कर लै बचन, जो माछूवाड़े सेज सुहाईआ। तेरा इक्को दवारा ते इक्को वतन, बेवतनां लै मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणी कार कमाईआ। कलयुग कहे मैं दस्सणी होर इबारत, पुट्ठे अक्खरां विच लिखाईआ। इक छेड़नी होर शरारत, शरअ शरअ वाल्यां नाल टकराईआ। इक बदलणी होर वज़ारत, झगड़ा पए लोकाईआ। इक वेखणी डूँग्घी ग़ारत, जिथ्थे लख चुरासी रोवे मारे धाईआ। इक पैग़म्बरां वखाउणी ज़िआरत, ज़रा फ़र्क रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म दवारा इक खुल्हाईआ। कलयुग कहे मैं सब नूं लाउणा धब्बा, अन्त मेरी चतुराईआ। उम्मतीआं भुला देणा अब्बा, अम्मी समझ कोए ना आईआ। अग्गे वधण नहीं देणा अग्गा, सदी चौधवीं दए दुहाईआ। अख़ीर कर के सब नाल दग़ा, फ़रेब विच देणा फसाईआ। मैनूं इस विच आउंदा बड़ा मज़ा, जे मज़्हब नाल मज़्हब करे लड़ाईआ। जिस दी समझ सके ना कोए वजह,

पड़दा सक्या ना कोए उठाईआ। चार जुग सब नूं रखया विच मधा, मुद्दा हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। जगत जहान कूड़ी क्रिया विच बध्धा, बन्धन सके ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण नूर जोत साहिब सतिगुर सूरा सरबगा, साहिब सुल्तान इक्को नज़री आईआ।

२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ५ हरि भगत दवार जेठूवाल

मग्घर कहे पुरख अकाल दा इक्को मुद्दा, मुद्दत तों सक्या ना कोए समझाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु भेजदा रिहा उत्ते बसुधा, धरनी धरत धवल धौल खेल खिलाईआ। नाम निधाना देंदा रिहा गफ्फा, बोध अगाध बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। लेखा बदलदा रिहा एका दूजा, दीन मज़्हब वंड वंडाईआ। खेल खलाउंदा रिहा सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुगा, कर्म कांड दा सगला संग बणाईआ। निरगुण सरगुण कराउंदा रिहा युद्धा, खण्डा खड़ग तरकश तीर कमान फड़ाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर हो के उग्घा, उगण आथण करे रुशनाईआ। साचे नाम दा लैण देवे कोए ना भुग्गा, हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। निरगुण धार शब्द संदेशा जो बिन अक्खरां दिता रुक्का, बिन शाही लेख जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। मग्घर कहे मेरा साहिब सतिगुर सुल्ताना, परवरदिगार बेपरवाहीआ। जिस नूं झुकदे ज़िमीं असमानां, दो जहानां सीस निवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मंगदे दाना, गुर अवतार पैग़म्बर झोलीआं डाहीआ। नाम संदेशा सुणदे बिना काना, अनहद नादी नाद जणाईआ। अमृत रस पींदे बिना पीणा खाणा, झिरना अगम्म अथाह झिराईआ। निरगुण दीआ बाती जोत जगाए महाना, कमलापाती अगम्म अथाहीआ। अक्खर वक्खर समझा के आपणा गाणा, गहर गम्भीर पड़दा दए उठाईआ। जुग चौकड़ी हो प्रधाना, नाम प्रधानगी इक रखाईआ। दीन मज़्हब बणा निशाना, निशाने जगत वक्त झुलाईआ। लेखा जाण सीता रामा, राधा कृष्न काहन कुड़माईआ। ईसा मूसा मुहम्मद दे पैग़ामा, हज़रत हज़ूर लए समझाईआ। नानक गोबिन्द दे तराना, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। शास्त्र सिमरत जणा के वेद पुराणा, विद्या दा विद्दत रूप प्रगटाईआ। कलमा कायनात पुराणा, अञ्जील अज़ल दा लेख ढाहीआ। ग्रन्थ पन्थ खेल महाना, महिमा मेहरवान समझाईआ। सदी चौधवीं सारे होए हैराना, हैरानी विच दुहाईआ। सति सरूप किसे

मिले ना श्री भगवाना, पारब्रह्म प्रभ दरस कोए ना पाईआ। चारों कुण्ट शरअ शैताना, कूड़ी क्रिया रही कुरलाईआ। काया मन्दिर ना सोहे मकाना, गृह वज्जे ना कोए वधाईआ। कलयुग जीव होया दीवाना, बुध बिबेक ना कोए बणाईआ। मानव मानव वैरी बणया इन्साना, मुहब्बत सच ना कोए रखाईआ। हउमे हंगता बध्धा गाना, हँकार विकार करे लड़ाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर आत्म अन्तर दिसे ना कोए ज्ञाना, अंध अज्ञान ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। मग्घर कहे मैं दस्सां हाल अनोखा, हरि करता आप दृढ़ाईआ। सृष्ट सबाई होवे धोखा, भेव सके कोए ना पाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण रसना जेहवा जिस ने पढ़या पोथा, वाचक हो के झट लँघाईआ। अगला मार्ग किसे ना सोचा, बुद्धी तों परे ना कोए पढ़ाईआ। आदि अन्त पुरख अकाल दा इक्को नाम ते इक्को सलोका, सोहला ढोला इक वड्याईआ। इक संदेशा चौदां लोका, चौदां तबकां इक पढ़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पैग़म्बरां दिता मौका, हिस्सा दीन दुनी वंडाईआ। मार्ग किसे ना मिल्या सौखा, दीनां मज़्बां कीती लड़ाईआ। कलयुग वक्त बीत्या चोखा, चोखर रूप होई लोकाईआ। साफ़ ना होया तन माटी कोठा, पंज तत वज्जी ना कोए वधाईआ। नाम जपया रसना जेहवा बुल्लां होंटा, रागा नादां विच गाईआ। अन्तर निरन्तर शब्द नाद ना सुणया होका, हुक्म मिल्या ना बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म दवारा इक वखाईआ। मग्घर कहे जन भगतो सुणो हुक्म फ़रमान, धुर करता आप दृढ़ाईआ। सिमरो सिमरो श्री भगवान, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। अन्तर वेखो मार ध्यान, काया काअबा पड़दा लाहीआ। मिले महिबूब नौजवान, नूर नुराना नज़री आईआ। जो आदि अन्त दा काहन, सीता सुरती राम प्रनाईआ। जिस दा मन्त्र सतिनाम, सति सति दए समझाईआ। सो खेल करे महान, महिमा अकथ कथ दृढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे निशान, निशाना धर्म इक झुलाईआ। सम्मत सम्मती लेखा जाणे जीव जहान, जागरत जोत डगमगाईआ। जिस ने छब्बी पोह नूं बदल देणा विधान, गुर अवतार पैग़म्बर सारे वेखण चाँईं चाँईंआ। झगड़ा मुकणा हिन्दू मुस्लमान, सिख ईसाई वंड ना कोए वंडाईआ। सब दा इक्को होणा हुक्मरान, पारब्रह्म परवरदिगार नूर इलाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदल देणा निज़ाम, नौबत नाम हक सुणाईआ। शरअ दा रहे ना कोए गुलाम, शरअ ज़ंजीर शमशीर देणा कटाईआ। साची मंज़ल दस्स असान, रहिबर हो के दए दृढ़ाईआ। घर स्वामी ठाकर मिले आण, गृह मन्दिर अन्दर वज्जे वधाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सोहँ ढोला सारे गाण, सतिजुग सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी धुन वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक

नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी जुग चौकड़ी नित नवित वेखणहारा लख चुरासी जीव जंत साध सन्त विच जहान, जागरत जोत बिन वरन गोत पारब्रह्म पतिपरमेश्वर एको एकँकार नज़री आईआ।

३ मग्घर शहिनशाही सम्मत ५ हरि भगत दवार जेठूवाल

महिन्दर सिँघ केहर सिँघ दोवें पिछले कान्हा काकू, बिक्रमी सतारवीं ध्यान रखाईआ। दोवें जन्म कर्म दे डाकू, सद लुट्टण जांदे राहीआ। कोल रखदे सी चाकू, नौ इंच लम्बाईआ। जिस दिन गोबिन्द दा घोड़ा वड़या नहीं विच तमाकू, कदम आपणा ल्या बदलाईआ। एह ओधर आ गए वेख के किहा किड्डा सोहणा बापू, गोबिन्द चरणां दूरों सीस निवाईआ। गोबिन्द हस्स के किहा मैं ते मालक निक्के जिहे टापू, टप्पा अक्खरां वाला सुणाईआ। जगत मज़्ब दा बण के साकू, सगला संग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गोबिन्द किहा तुसीं करदे की कर्म, की तुहाडी वड्याईआ। की तुहाडा धर्म, की कार कमाईआ। दोहां दे नेत्र आई शरम, नैणां नीर वहाईआ। अन्तर किहा सानूं जीवण नालों चंगा मरन, की सतिगुर दईए सुणाईआ। पता नहीं शायद अज्ज एह सानूं आया फड़न, शाह सवारा कदम उठाईआ। कि साडे नाल आया लड़न, सानूं दए सज़ाईआ। अन्दरे अन्दर लग्गे डरन, भय भओ विच दुहाईआ। निउँ निउँ लग्गे चरण, सीस सीस झुकाईआ। मिन्नतां लग्गे करन, साडा हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गोबिन्द किहा सतिगुर कदे ना मारे, मारनहार ना रूप वटाईआ। सरन आया जग तारे, देवे माण वड्याईआ। हुण तुहाडा तन नहीं रहिणा विच संसारे, नाता कूड़ देणा तुड़ाईआ। जिस वेले आवां फेर दुबारे, लोकमात वेस वटाईआ। तुहाडा जन्म होवे उज्यारे, लोकमात मिले वड्याईआ। तुहाडी सुरती आप संभाले, सम्बल बहि के वेख वखाईआ। सद आपणे रखे नाले, सगला संग जणाईआ। इक वेरां ज़रूर मरन दे विच्चों बचा लए, बचपन आपणी झोली पाईआ। एह खेल सतिगुरु निराले, निराकार आप कराईआ। गुरमुखां पिच्छे घाल घाले, एसे कारन अज्ज बणाया पाँधी राहीआ। तिन्न वार होया बज़ार दे विचकाले, आपणा रुख़ बदलाईआ। गुरमुखां कर के सास सुखाले, सहिजे ल्या बचाईआ। जेहड़े खेल रात वखाले, सो वेखे आप चाँई चाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गोबिन्द किहा इक वेर लवां तार, मेहर नज़र उठाईआ। इक्की दिनां पिच्छों फेर होणी हार, लोकमात ना कोए चतुराईआ। किरपा कर के फेर पैज देवां संवार,

सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। ढाई वजे फेर लेखा दस्सां अपार, लहिणा लिखाउणा नाल कलम शाहीआ। अगला संकट देवां टाल, दु:ख दर्द ना लागे राईआ। सम्बल बहि के करां संभाल, एह मेरी बेपरवाहीआ। जे किशन सिँघ ना बणदा दलाल, दलीप सिँघ ना देंदा गवाहीआ। अज्ज एह रहिणे नहीं सी लाल, मानस जन्म जांदे तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ।

✪ ३ मग्घर शहिनशाही सम्मत ५ रात ढाई वज्जे हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

अगला लेखा लेख धुर दा, धुर दा मालक दया कमाईआ। वेखो खेल पूरे सतिगुर दा, जो सुत्तयां लए तराईआ। जिस दा भाणा कदे ना मुड़दा, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। जो वाली रिहा अनन्द पुर दा, पुरीआं तों बाहर सोभा पाईआ। ओह सदा सद गुरमुखां नाल तुरदा, तुरत आपणा कदम उठाईआ। जिस वेले गुरमुखां जीवण होवे रुढ़दा, अग्गे हो के लए बचाईआ। जिस दे कोल घाटा नहीं थुड़ दा, सच भण्डार दए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सतिगुर पूरा जन्म जन्म दा जाणू, कर्म कर्म खोज खुजाईआ। जो गुरमुखां रंग माणू, माया ममता मोह मिटाईआ। तीर अणयाला मारे बाणू, तिक्खी मुखी धार वखाईआ। जम की चुकाए काणू, नेड़ कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। इक्की दिन नूं तन माटी लग्गणी सी चोट, चोटी सीस दु:ख वखाईआ। तन रहिणी नहीं सी जोत, जोती जाता दया कमाईआ। जिस दी सोच कोई ना सक्या सोच, समझ ना कोए समझाईआ। ओह शब्दी धार आसा पूरी कीती लोच, लोचन अक्ख खुल्हाईआ। साहिब सतिगुर नेड़े आण ना देवे मौत, मोहर आपणा नाम लगाईआ। गुरसिख ना होवे फ़ौत, फ़तवा धर्म राए दरसाईआ। पिछली सेवा कीती बहुत, गोबिन्द चरण सीस झुकाईआ। मन विच्चों कढ के खोट, आसा इक बणाईआ। पिछला प्रेम भण्डारा अतोट, अतुट दिता वरताईआ। अग्गे जीवण दी देवे मौज, मेहर नज़र उठाईआ। किरपा निधान गया पहुंच, पूजनीक धुरदरगाहीआ। ना हरख रहे ना सोग, चिन्ता दु:ख गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपे लए रोक, दूसर हथ्थ ना कदे फड़ाईआ।

✪ १४ मग्घर शहिनशाही सम्मत ५ हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

मग्घर चौदां धर्म प्रविष्टा, धर्म दी धार आप वखाईआ। सब दा इक्को दस्स के इष्टा, इष्ट देव दए समझाईआ। भगत भगवान दा होवे निसचा, निहचल धाम दए समझाईआ। साचे खून दा जोड़ के रिश्ता, रिश्ता कूड़ा दए गंवाईआ। काहन दा लेखा पूरा कर के आहिस्ता आहिस्ता, आसा पूरब झोली पाईआ। जेहड़ा साहिब सतिगुर नहीं दिसदा, बिन अक्खां अक्ख दए खुल्हाईआ। ओह रूप धार एकँकार इक दा, इक इकल्ला ल्ए अंगड़ाईआ। आदि अन्त दो जहानां जित्त दा, हार विच कदे ना आईआ। साहिब सुल्तान हो के दिसदा, दहि दिशा करे रुशनाईआ। तन वजूद काया माटी हट्ट कदे ना विकदा, विकरी जगत ना कदे लगाईआ। पिछला लेखा सब दा मिटदा, अगला आपणा हुक्म सुणाईआ। झगड़ा रिहा ना रविदास चमारे इट्ट दा, भगत दवारा दए गवाहीआ। सति विच सतिवादी हो के टिकदा, टिक्का आपणा नाम लगाईआ। कूड़ा नाता तोड़या विच दा, विच्चों आपणा आप प्रगटाईआ। गुरमुख रूप रहे सदा सिख दा, सिख सतिगुर सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला ल्ए मिलाईआ। चौदां मग्घर कहे मेरा मज़मून, मज़ा धुर दा रिहा दरसाईआ। शब्दी धार बदल कानून, कायदा बाकायदा आप समझाईआ। मन मनसा ना रहे फ़रऊन, फ़ारस दा लेखा दए मुकाईआ। लेखा लिख अगम्मे खून, खूनी धार दिती बदलाईआ। प्यार मुहब्बत वंडे ना जगत परचून, हट्ट धर्म दा इक खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा आपणा हुक्म वरताईआ। चौदां मग्घर कहे पुरख अकाल सति दा बणे सका, नाता कूड़ दिता तुड़ाईआ। भगतां प्रेम दा दे के फक्का, फ़िकरा अगला दए मिटाईआ। राय धर्म नूं दे के धक्का, दर दवारयों बाहर रखाईआ। साचे भगतां वेख नाल अक्खां, आखर अक्ख खुल्हाईआ। केहड़ा वजूद सड़ना नाल कक्खां, ईंधन अग्नी विच जलाईआ। उस दा लेखा पिच्छे रखा, अग्गे दए ना कोए वड्याईआ। काया माटी भाण्डा कच्चा, काची वंग जगत लोकाईआ। साहिब सतिगुर दा पिछला इकरार पक्का अग्गे वाहिदा पक्का, पक्की धुर दी आप कराईआ। कूड़ विकार रहे ना रता, रती रत्त ना कोए जलाईआ। हुक्म संदेशा यथार्थ यथा, यदी आपणा आप दृढ़ाईआ। इक सौ इक्यासी दा लेखा मुकाया सब दा इक्ठा, कृष्न नैणां नाल वखाईआ। इक दो दा अगला लिख के पटा, पटने वाला होए सहाईआ। बाकी माईनस वाला बटा, फिग्गर सके ना कोए बणाईआ। जगत वासना मेट के रट्टा, राईट लेखा दिता लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। चौदां मग्घर कहे मेरा दिहाढ़ा अतीत, अती सुन्दर सोभा पाईआ। मैं

सति धर्म दी वेखणी रीत, रीतीवान दए वड्याईआ। छब्बी पोह नौआं बीबीआं पहाड़ी गाउणा गीत, जम्मू विच्चों जमां लए कराईआ। सब दे गल विच होवे तवीत, लम्मा छाती उत्ते लटकाईआ। साड़ी अंगी वस्त्र होवे ठीक, तन वजूद सोभा पाईआ। मुक्खों कहिण साडी प्रभ दे नाल प्रीत, प्रीतम इक्को ल्या मनाईआ। लीलावन्ती होवे उन्हां दे बीच, मस्तक बिन्दी लाल रंग रंगाईआ। सताई पोह नूं एह शहादत देवण ठीक, शहिनशाह आपणा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। चौदां मग्घर कहे नौ गुरमुख बणे होण कौरू, कुरुक्षेत्र दए गवाहीआ। सूरबीर बहादर बण के पावण खौरू, शस्त्र हथ्थां विच चमकाईआ। नाल इक वजावण डौरु, डंका ज़ोर ज़ोर लगाईआ। मुक्खों कहिण कलयुग अन्तिम केहड़ा बौहड़ू, काहन कान्हा फेरा पाईआ। सताई पोह पूरब जोड़ जोड़ू, लुड़ींदा धुरदरगाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया रोहढ़ू, वहिण वहिणां विच वहाईआ। सच प्रेमी आपणे नाल तोरू, जिस दी राम कृष्न बलि बावन दए गवाहीआ। बाकी अवर रहे कोए ना जोरू, ज़र दा लहिणा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। चौदां मग्घर कहे मेरी सुहञ्जणी होवे रीती, रती फ़र्क रहे ना राईआ। सतिगुर बदले कोए ना नीती, निगाह नैण ना कोए उठाईआ। कृष्न दी पिछली आसा पूरी कीती, अग्गे तृष्ना दिती गंवाईआ। इक्को जोड़ी रहे जीती, भगत भगवान वज्जे वधाईआ। खून दा लेखा नाल चीची, गोबिन्द दी बग़ीची आपणे रंग रंगाईआ। सति धर्म विच सति दी प्रीती, सति विच पूर कराईआ। पिछली पिच्छे जग बीती, अग्गे जगत गुरदेव होए सहाईआ। जगत वासना कूड़ कल्पना रहे ना मीठी, मिठ्ठा रस ना कोए चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धर्म दी धार बदल देवे नीती, नीतीवान आपणा आप बदलाईआ।

✪ २२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ५ हरि भगत दवार जेठूवाल जसबीर सिँघ जलालाबाद दे नवित ✪

किरपा करे प्रभ बेनज़ीर, नज़र मेहर इक उठाईआ। जन भगतां बदल देवे तकदीर, तदबीर आपणे हथ्थ रखाईआ। जन्म मरन वेख आदि अख़ीर, अन्त अन्तष्करन फोल फुलाईआ। लेखा जाणे गहर गवर गुणी गहीर, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दी सिफ्त सलाह करदा गया कबीर, काया काअबे विच वड्याईआ। सो शाह सुल्तान पीरन पीर, पारब्रह्म प्रभ होए सहाईआ। जेहड़ा भैण भ्रावां तों विछड़ना सी वीर, पिता नालों होणी सी जुदाईआ। तन चोला छडणा सी चीर,

वस्त्र कूड़ ना कोए हंढाईआ। दुःख दर्द होणी सी पीड़, रोग सके ना कोए गंवाईआ। धीरज धरे ना कोए धीर, धरवास धर्म ना कोए रखाईआ। बल लेखा शाह हकीर, शहिनशाह दए दृढ़ाईआ। पोह सत्त सति अन्त होणा सी जसबीर, सुत महिन्दर कौर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा इक खुल्हाईआ। जसबीर सिँघ जगत नाता जाणा सी टुट्ट, टुट्टी गंढ ना कोए पवाईआ। ऊधम सिँघ कोलों विछड़ना सी छोटा सुत, रिश्ता जगत ना कोए वखाईआ। दरगाह साची जाणा सी पुज्ज, जिथ्थे मंज़ल बेपरवाहीआ। जिस दा भेव अभेदा गुज्झ, सके ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। जसबीर सिँघ बल दवारे वासी, सतिजुग साचा दए गवाहीआ। महिन्दर कौर हुन्दी सी दासी, सेवा धर्म विच कमाईआ। जिस दा इक काका ते इक हुन्दी सी काकी, दो दो रंग रंगाईआ। इक दिन तन पहन पोशाकी, मग्घर बाई खुशी मनाईआ। हस्स के किहा दूजी दासी, वेख भैण चाँईं चाँईंआ। उस अन्दर मारी झाकी, प्रभू ध्यान रखाईआ। आई अगम्मी आवाज़ी, संदेसा शब्द अथाहीआ। उस वेले उस बच्चे दा अन्त होणा सी सत्त पोह दी राती, थित नौ दस वड्याईआ। नेत्र रो के दासी बचन दिता आखी, मुक्खों कहि सुणाईआ। तेरी कम्म ना आवे किसे चंगी सोहणी पुशाकी, वस्त्र की वड्याईआ। तेरे सुत दे रह गए पन्द्रां दिन बाकी, प्रभ मेरा रिहा जणाईआ। उस हथ्थ मारया उत्ते छाती, नैणां नीर दिता वहाईआ। एह बड़ी औखी घाटी, विछोड़ा सहि सके ना राईआ। पुकार कीती अग्गे कमलापाती, पतिपरमेश्वर अग्गे सीस निवाईआ। प्रभू भगवन मेरी करीं राखी, सहायता विच तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। दूजी दासी कीती अरदास, बेनन्ती दिती जणाईआ। प्रभू मेरी वी पूरी कर आस, दर तेरे सीस निवाईआ ,। एस दा सुत रहे एस दे साथ, तेरी बेपरवाहीआ। मैनूं तेरे उत्ते विश्वाश, विष्न ब्रह्मा शिव तैनूं सीस निवाईआ। तेरा खेल पृथ्मी आकाश, दो जहानां वज्जे वधाईआ। बख्शिश विच दे दे दात, दाते दानी झोली भराईआ। शब्द अगम्मी आई अवाज़, धुर सुनेहड़ा इक सुणाईआ। दोहां दी बेनन्ती दोहां दा काज, दो दो धार सोभा पाईआ। सति सतिजुग रखां लाज, कलयुग फेर डुबदा तारां जहाज़, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पूरब लेखा वेख वखाईआ। शब्द किहा दोहां इक धार, संदेशा इक सुणाईआ। कलयुग खेल करे करतार, हरि निरँकार अगम्म अथाहीआ। तुहाडा जन्म फेर होवे संसार, संसारी भण्डारी देण गवाहीआ। कलि कल्की लए अवतार, हरि करता वेख वखाईआ। तेरे दो सुत फेर होणे विच संसार, जगत संग बणाईआ। एह वस्त्र शहादत

देण अपर अपार, अपरम्पर दिता सुणाईआ। दूजी दासी दा विहार, तेरा संग बणाईआ। एह खेल अगम्मी करतार, कुदरत करता आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। शब्द अगम्मी किहा प्रभू दी निरअक्खर धार लिख्त, कलम शाही वंड ना कोए वंडाईआ। पूरब लहिणा महिन्दर कौर दा नाल तृप्त, बल धार दए गवाहीआ। वेख ना सके जगत दृष्ट, नेत्र नैण ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धुर शब्द कहे धुर दी खेल महानी, महिमा अकथ अकथ जणाईआ। कोई समझे ना जीव प्रानी, पुराण शास्त्र ना कोए वड्याईआ। पुरख अकाला जाण जाणी, जुग चौकड़ी खेल खिलाईआ। आदि जुगादी धुर दा दानी, दयावान इक अख्वाईआ। भविक्ख्त विच अनदृष्ट जणाए बाणी, बोध अगाध आपणा हुक्म वरताईआ। भेव अभेदा जाणे चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे एह वस्त्र नौ महीने अठारां दिन रखणे सांभ, तन नाल ना कोए छुहाईआ। फेर हुक्म मिलणा संदेशे वाला बाद, बातन आपणा भेव खुल्हाईआ। ऊधम सिँघ नूं कहिणा रखणा याद, दिन सके ना मूल भुलाईआ। जिस दा खेड़ा होणा फेर आबाद, उजड़या दए वसाईआ। मिती अज्ज दी थित रखणी याद, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। अन्त अख़ीरी दिन मार के ल्याउणा ज़रूर इक काग, कागों हँस दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे शब्दी धार हुक्म अमृत रस सीर, परा पसन्ती मद्धम बैखरी बैठे सीस निवाईआ। पहली पोह ल्याउणी तस्वीर, सोहणा रूप वखाईआ। दोवें हथ्थ जोड़े होण जसबीर, बच्चा नन्हा नज़री आईआ। सिर ते लाल होवे चीर, चीरा साढे तिन्न गज़ लम्बाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अग्गे किसे होण ना देवे दिलगीर, दर्शन दा वीर दर्शन दा पीर पार कराईआ।

✪ २८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ५ ज्ञान चन्द गांधी दे गृह तलवाड़ा ✪

गुर अवतार पैग़म्बर झुकदे, सचखण्ड साचे सीस निवाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल साडे पैंडे मुकदे, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी इक सरनाईआ। कलयुग जीव जगत जहान भरे दुःख दे, दुखियां दर्द ना कोए गंवाईआ। झगड़े मुकण ना उलटे गर्भवास रुक्ख दे, नौ अठारां पन्ध ना कोए मुकाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरे भाणे कदे ना रुकदे, ना कोई मेटे

मेट मिटाईआ। असीं खेल वेखीए तेरे शब्द दुलारे सुत दे, सो पुरख निरँजण देणा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर करन सजदा, निव निव सीस निवाईआ। हउँ सेवक तेरा बरदा, परवरदिगार तेरी सरनाईआ। साडा लहिणा मुकणा लोकमात घर दा, धरनी धरत धवल धौल ना कोए चतुराईआ। जगत जहान खेल वेख्या हँकारी गढ़ दा, हउमे हंगता ना कोए मिटाईआ। रसना जेहवा जगत जहान जीव पढ़दा, हिरदे तेरा नाम ना कोए वसाईआ। महिबूब मंजल तेरी कोई ना चढ़दा, सच दवारे मिलण कोए ना आईआ। एह तेरा खेल नरायण नर दा, नर हरि तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे अलख जगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर निमस्कार कर बन्दना, बन्दगी विच जणाईआ। तेरा खेल सूरे सरबंगणा, शाह पातशाह शहिनशाह तेरी बेपरवाहीआ। मुरीद मुर्शद रिहा कोई ना अंगणा, चेला गुर ना कोए चतुराईआ। आत्म ब्रह्म मिले ना अनन्दना, परमानंद ना कोए समाईआ। सदी चौधवीं सब नूं पई चिन्दना, चिन्ता चिखा ना कोए बुझाईआ। तेरा नाम नाम नहीं निन्दना, निंदिआ विच दुहाईआ। अमृत धार वहे ना सागर सिन्धना, लहर लहर ना कोए टकराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पैग़म्बर ख़ाली करदे झोली, दर ठांडे सीस निवाईआ। हउँ दरवेश तेरे दर दी गोली, पारब्रह्म प्रभ तेरी ओट तकाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त आपणे नाम दी दस्स दे बोली, अनबोलत राग जणाईआ। सच दवारा एकँकारा इक्को खोली, ख़ालक ख़लक मेल मिलाईआ। नव सत्त इक तराज़ू तोलीं, तोलणहार दया कमाईआ। काया माटी ख़ाक रंग दे चोली, चोजी प्रीतम हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, हउँ मांगत मंग मंगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर करन अरदास, सेवक सेवा विच सीस निवाईआ। लख चुरासी मण्डल पा रास, गोपी काहन खेल खिलाईआ। काया तत कट बनबास, सीता राम रंग रंगाईआ। इलाही नूर कर प्रकाश, अंध अंधेरा दे मिटाईआ। सति सति दा तेरा जाप, वाहवा वज्जे हक वधाईआ। कलयुग कूड़ रहे ना पाप, पतित पुनीत दे कराईआ। जो भविक्ख्तां विच लिख्तां विच इष्ट तेरा आए आख, संदेशा दीन दुनी जणाईआ। सो खेल कर साख्यात, पारब्रह्म प्रभ तेरी ओट तकाईआ। झगड़ा मेट दे दीन दुनी मज़्ह्ब ज़ात पात, तन वजूद वंड ना कोए वंडाईआ। सब दा पूरा लेखा कर भविक्ख्त वाक, वाक्या वेख थाउँ थाँईंआ। तेरा नूर जोत होवे प्रकाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सति दवारे आस रखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर करन बेनन्ती, निव निव सीस निवाईआ। बोध अगाधे धुर दे पंडती, पारब्रह्म ब्रह्म

पड़दा दे उठाईआ। तेरे नाम दी होवे इक्को पंगती, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। गढ़ तोड़ दे हउमे हंगती, हँ ब्रह्म इक समझाईआ। काया चोली चाढ़ रंग बसन्ती, बसन बनवारी हो सहाईआ। सदी चौधवीं जाए लँघदी, मुहम्मद वेखे थांउँ थाँईंआ। तेरी सेज सुहावी होवे पलँघ दी, जल्वागर नूर इलाहीआ। धार रहे ना द्वैत कंध दी, कूड़ क्रिया देणी खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी तेरे हथ्थ वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बर करन डण्डावत, दर ठांडे सीस निवाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कढ बग़ावत, मेहर नज़र इक उठाईआ। सच मुहब्बत कर सख़ावत, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। तेरे नाम दी मिले न्यामत, रसना रस ना कोए चखाईआ। तूं आदि अन्त जुगा जुगन्त सही सलामत, साहिब तेरी सरनाईआ। तेरी महिमा सदा महानत, अगम्म अथाह वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बर तेरे अनजानत, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। कलयुग चले ना कोए स्याणप, बुद्धी अक्ल ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मांगत हो के मंग मंगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण, कहि कहि रहे जणाईआ। तूं आदि जुगादी साक सज्जण सैण, साहिब सुल्तान धुरदरगाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेख वहिण, वहिंदी धार वहे लोकाईआ। एका नाम निरगुण धार दे रसाइण, रसीआ रस इक चखाईआ। मन मनसा आवे चैन, चार कुण्ट ना कोए हल्काईआ। सृष्टी दृष्टी अन्तर निरन्तर नाता जोड़ भाई भैण, पिता पुरख अकाल दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा लेखा पूरा कर लहण देण, पूरब झोली दे पाईआ।

✪ २६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ५ जीआ लाल दे गृह तलवाड़ा ✪

राम दा लेखा राम जुग त्रेता, तरीआ त्रै तत्व तत वेख वखाईआ। कलयुग खेल राम राम दे नेता, निरगुण निरवैर निरँकार अगम्म अथाहीआ। लहिणा देणा वेखे सचखण्ड धुर दे देसा, धर्म दी धार भेव अभेद खुल्हाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी जुग चौकड़ी कदे ना भुल्ले चेता, चेतन सब नूं दए कराईआ। पूरब लेखा लहिणा जल धार विच खेता, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश समझ कोए ना पाईआ। लेखा जाणे हुक्म संदेशा धुर फ़रमाना एका, इक इकल्ला पड़दा देणा उठाईआ। भगत उधारना जुग चौकड़ी जिस दे कोल ठेका, ठाकर साहिब सतिगुर धुरदरगाहीआ। अन्तर निरन्तर वेखे आपणा बेटा, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ।

राम कहे मेरा खेल राम रमईआ, रमता रमता जगत चलाईआ। त्रेता द्वापर कलयुग वेखी चलदी नईया, नौका वञ्झ मुहाणे फोल फुलाईआ। सज्जण मीत संगी वेखे सईआ, सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण संग वखाईआ। बंसरी खेल काहन वेख्या घनईया, रघुपति रूप अनूप बदलाईआ। कलयुग अन्त सच स्वामी हो के पावे आपणी सहीआ, सही सलामत आपणी कार कमाईआ। पूरब लेखा धर्म दी धार कढ्ढ के वहीआ, लहिणा पिछला दए चुकाईआ। खुशी मनाए धरनी धरत धवल धौल जगत दृष्टी मईआ, सृष्टी समझ कोए ना आईआ। सताई पोह इक दा लेखा भेंटा करना इक रुपईआ, इक दे नाल इक दए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लाल जीआ जीआ लाल राम दा लेखा राम राम हो के दए चुकाईआ।

✪ २६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ५ जागीर सिँघ नरैण सिँघ दे गृह तलवाड़ा ✪

गुर अवतार पैग़म्बर वेखण आपणे ख़ाके, नकशा गुज़शता हथ्थ उठाईआ। लेख वेखदे भविक्ख्त वाके, पेशीनगोई जो पेशतर आए सुणाईआ। आपणा आप तक्कया दीन दुनी दे तसव्वर होए चाचे, पिता नज़र कोए ना आईआ। प्रभ दा नाम हिस्सयां विच आए बांटे, हद्द हदूद जगत बणाईआ। सदी चौधवीं अन्त सारे बण गए कांटे, कटाक्ष अणयाला तीर ना कोए चलाईआ। सेज सुहञ्जणी रही कोई ना खाटे, विस्तर सिंघासण ना कोए वड्याईआ। तन वजूद सरीर माटी ख़ाक चोले सब दे पाटे, लीरो लीर जामा नज़री आईआ। सरोवर तट रिहा ना घाटे, जल धारा वहिण ना कोए वड्याईआ। अमृत जल रिहा किसे ना बाटे, रसीआ रस ना कोए चखाईआ। सब दी मंज़ल होई अधवाटे, हकीकत हक ना कोए वखाईआ। चारों कुण्ट फिरन नाठे, भज्जण वाहो दाहीआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले तक्कण माठे, चर्चा अन्तर खोज खुजाईआ। आत्म ब्रह्म करे कोई ना पाठे, अनुभव पड़दा ना कोए उठाईआ। जिधर वेख्या चारों कुण्ट पए घाटे, नफ़ा नाम ना कोए जणाईआ। निरगुण नूर जोत नज़र ना आई किसे ललाटे, शमअ नूर ना कोए रुशनाईआ। मंज़ूर होए ना किसे टेके माथे, मस्तक धूढ़ी ख़ाक ना कोए रमाईआ। हैरान होए की खेल करे प्रभ आपे, पतिपरमेश्वर दया कमाईआ। निरगुण नूर जोत कर प्रकाशे, कलयुग अंध अंधेरा दए गंवाईआ। भगत सुहेला वसे भगतां साथे, भगवन आपणा संग निभाईआ। साढे तिन्न हथ्थ चला के काया माटी राथे, रथ रथवाही आपणी कार कमाईआ। कोटां विच्चों थोड़िआं लभ्भ आपे, आख़र आपणा रंग रंगाईआ। भेव खोल् के बातन बाते, बेवतनां वतन दए दरसाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दरस्स के जापे, जगजीवण दाता

दए वड्याईआ। चार वरन अठारां बरन सब नूं बहा इक अहाते, भूमिका इक्को इक वड्याईआ। लेख मुकाए मढ़ी गोर जल ना अग्नी काठे, वहिणा धार ना कोए वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बर वेखण खेल अगम्म साचे, हरि साचा सच जणाईआ। अग्गे सब ने लग्गणा इक दे आखे, आख़र आपणा हुक्म वरताईआ। तुसीं मातलोक दे रहिणा नहीं राखे, रखया छडणी जगत लोकाईआ। आबेहयात अमृत धुर दा पीणा इक्को कासे, कसम सौगंद दा झगड़ा देणा मुकाईआ। मेहरवान महिबूब मुहब्बत विच धुर दी धार जणाए साख्याते, सख़ा सहेला दया कमाईआ। हुक्मे अन्दर हुक्म हुक्मी संदेशा सारे लैण वाचे, वाचक नज़र कोए ना आईआ। छब्बी पोह सब ने सुहञ्जणी करनी राते, रुतड़ी रुत नाल महकाईआ। बण के आउणा प्रभू दे लाडले काके, वड्डा छोटा ना कोए अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त चौकड़ी जुग भरवासे, जगत जीव ईश जगदीश वेख वखाईआ।

✪ २६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ५ जुगिन्दर सिँघ दे गृह तलवाड़ा ✪

गुर अवतार पैग़म्बर कहिण लोकमात मिल्या सद्दा, सधना सैण कबीर रवी दे मालक दिता जणाईआ। लोकमात सब ने आउणा आपणी धार भज्जा, भजन बन्दगी पूजा पाठ पिछला नाल लिआईआ। तीर तरकश खण्डा खड़ग चिल्ला कमान कोल होवे कोई ना गदा, गदागर हो के आउणा चाँईं चाँईंआ। धरनी उत्ते आपणे धर्म धार दी वेखणी जगह, जगह बजगह फोल फुलाईआ। फेर सच दस्सणा किस दा वध्या अग्गा, की अगला लेखा बेपरवाहीआ। इक दूजे नाल करयो ना दग़ा, दीन मज़्हब मुख रखाईआ। मानव अन्तर वेखणा निरन्तर उपर शाहरगा, शहिनशाह आपणा हुक्म सुणाईआ। मन बुद्धी वेखणी कवण होई कग्गा, काग वांग कुरलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर खेल होया मधा, कलयुग अन्तिम फिरी दुहाईआ। हुक्मे अन्दर मुरीद मुर्शद चेला गुरु कवण होवे बध्धा, बन्दगी विच मुछन्दगी इक रखाईआ। सब दे कोल होवे इक इक डब्बा, ख़ाली जगत जहान देणा खड़काईआ। ऐलान करना माण रिहा ना मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ गुरदवारे अड्डा, अग्गे ऐंड मिलण कोए ना पाईआ। फेर नज़री आवे धर्म निशान गड्डा, गॉड गाईड बण के दए वखाईआ। आपणी रस धार आपणा लैणा सब ने मज़ा, मज़ाक मुज़िर देणा जणाईआ। फ़ैसला हक करना इक दा हुक्म इक दी चलणा विच रज़ा, राज़क रिज़क रहीम इक अख्वाईआ। जिस दी चार जुग ब्यान कर ना सके कोई वजह, बेअन्त कहि के पल्लू आए छुडाईआ। ओह खेल

करे आपणा हब्बा, दूजा संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म कर्म दा लेखा चुकाए जुगिन्दर सिँघ बग्गा, बग बपड़ा गुरमुख हँस रूप बदलाईआ।

२५०
२२

✪ २६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ५ हज़ारा सिँघ दे गृह पिण्ड पंज ढेरा ✪

गुर अवतार पैग़म्बर कहिण लोकमात मारीए झाकी, बिन नेत्र लोचन नैण अक्ख प्रतख खुल्हाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप समुंद सागर रही कोई ना बाकी, टिल्ले पर्बत चोटी बैठे ध्यान लगाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा अंधेरी राती, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा पारब्रह्म ब्रह्म सब नूं भुल्ली गाथी, गहर गम्भीर बेनज़ीर नज़र किसे ना आईआ। नाम वणजारा धर्म रिहा किसे ना हाटी, कलयुग कूड़ी क्रिया होई हल्काईआ। जगत जिज्ञासू सन्त फ़कीर मंज़ल अगम्म चढ़े कोए ना घाटी, पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझे यार मिलण कोए ना आईआ। वस्त अमोलक काया गोलक सच दिसे कोई ना दाती, दयावान हो के अगम्म अथाह धार ना कोए वखाईआ। जगत वासना रसना जेहवा रही कोई ना साची, बत्ती दन्द कल्पणा विच हल्काईआ। अमृत सच सरोवर सुरत सवाणी कोई ना नहाती, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। की खेल करे प्रभ अलखणा अलाखी, अलख अगोचर आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण वेखीए धरनी धरत धवल धौल लोकमात, मात्र भूमी ध्यान लगाईआ। सदी चौधवीं क्यों होई अंधेरी रात, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। सब दा पैंडा क्यों अन्तिम मुकी वाट, अग्गे अवर ना कोए वड्याईआ। सेज सुहञ्जणी दिसे कोई ना खाट, सच सिंघासण वज्जे ना कोए वधाईआ। सब दा चीथड़ जगत वासना गया पाट, पीत पीतम्बर सीस ना कोए सुहाईआ। झगड़ा वेखीए दीन दुनी समाज, मज़्ह्ब तुअजब विच कुरलाईआ। शरअ शरीअत धर्म दा रिहा कोई ना राज, रईयत रहम ना कोए कमाईआ। जो हुक्म संदेशा दे के आए बोध अगाध, बुद्धी तों परे मात पढ़ाईआ। तिस दा लहिणा देणा किस बिध मुके आज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा मालक पड़दा लाहीआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण क्यों आवे अन्त किनारा, नईया बैठी पन्ध मुकाईआ। की खेल करे परवरदिगारा, निरगुण धार नूर इलाहीआ। जिस नूं झुकदे पैग़म्बर अवतारा, गुरु गुरदेव सीस निवाईआ। सो खेल खेले खेलणहारा, ख़ालक ख़लक दए समझाईआ। इक्को

नाम बोल जैकारा, इक्को कलमा दए दृढ़ाईआ। इक्को दस्स धर्म दवारा, पर्दा अन्दरों दए उठाईआ। इक्को दर होवे निमस्कारा, दूसर इष्ट ना कोए मनाईआ। जिस नूं सारे कहिंदे आए कलि कल्की निरगुण धार चव्वीआं अवतारा, अमाम अमामा अगम्म अथाहीआ। सो लेखा जाणे सृष्टी दृष्टी सर्ब संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी बैठे सीस निवाईआ। जल थल महीअल पुरी लोअ आकाश पाताल पावे सारा, गगन गगनंतर खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा नूर ज़हूर जोत जोती धारा, रंग रेख नज़र कोए ना आईआ।

२६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ५ रेशम सिँघ दे गृह पंज ढेरा

गुर अवतार कहिण वेखीए आपणी लोकमात धरनी, नेत्र अक्ख उठाईआ। पुरख अकाल खेल किस बिध करनी, करता की की कार कमाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी इक दी लागे सरनी, सरनगति इक जणाईआ। इक्को आयत तुक सब ने पढ़नी, तुख्म ताअसीर दए बदलाईआ। इक्को मंज़ल आत्म परमात्म मिले चढ़नी, दूजा राह ना कोए वखाईआ। नेत्र खोल्ह के हरनी फरनी, निज नैण करे रुशनाईआ। झगड़ा मेट के वरनी बरनी, ज़ात पात वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर ठांडा इक प्रगटाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण वेखीए जगत निशाना, निशाना पूरब साथ रखाईआ। की हुक्म श्री भगवाना, कल करता की दृढ़ाईआ। की खेलीए खेल विच जहाना, जहालत पिछली दए मिटाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर किस बिध वरते आपणा भाणा, भावी सब दे सिर ते नज़री आईआ। निरगुण धार पहर के बाणा, जोती जाता वेस वटाईआ। चार कुण्ट हो प्रधाना, नव नौ चार हुक्म वरताईआ। शाहो भूप बण सुल्ताना, सति धर्म इक प्रगटाईआ। लेखा जाण सीता रामा, कान्हा कृष्ना खोज खुजाईआ। पैग़म्बरां कर पहचाना, गुरदेव स्वामी होए सहाईआ। इक्को नाम नाद तराना, तुरीआ तों परे दए दृढ़ाईआ। खेल खेल विच जहाना, ख़ालक ख़लक आप समझाईआ। जिस नूं सारे करन सलामा, सजदयां विच सीस निवाईआ। सो मेहरवान महिबूब अमामा, नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। कायनात कलमा दस्स अगम्म कलामा, कुदरत कादर दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना, भाग भगवत सब दा लेखे पाईआ।

२५१
२२

✪ ३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ५ लाल सिँघ दे गृह पिण्ड पंज ढेरा ✪

राम कहे सुण कृष्न अनादी अगम्म आवाज़, धुर दा काहन रिहा सुणाईआ। जिस दा भेव अगम्मा अवल्लड़ा राज़, अनोखा दस्से ना कोए जणाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी दीन दुनी दा बदलदा आया रिवाज, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग हुक्म वरताईआ। जिस ने अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दिता राज, दीनां मज़्हबां बख्शी शहिनशाहीआ। नाम भण्डारा अगम्म अथाह दिती दात, कलमा कायनात जणाईआ। मानव ज़ाती वंड के विच ज़ात पात, मनुष मनुषां नाल टकराईआ। आपणी महिमा सिफ्त सालाह दस्स के उत्ते काग़ज़ात, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी अक्खरां विच वड्याईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला कलयुग अन्त श्री भगवन्त सृष्टी दृष्टी वेखे हालात, लख चुरासी जीव जंत साध सन्त फोल फुलाईआ। चार वरन अठारां बरन नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप धरनी धरत धवल धौल वेखे अंधेरी रात, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण नूर नुराना चन्द ना कोए चमकाईआ। हुक्म संदेशा धुर फ़रमाना शब्द अगम्मा देवे आप, आप आपणी कार कमाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण वेखो मार झात, झाकी इक्को इक दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। राम किहा कृष्न सुण अगम्मी आवाज़, राम दा राम रिहा जणाईआ। सीस पहनणा नहीं कोई ताज, मुक्ट बैण नैण ना कोए मटकाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर वाहिद बदलण लग्गा राज, रईयत दो जहान इक बणाईआ। चार जुग दा बदल देणा समाज, समग्री जोत इक्ग्री इक वरताईआ। नाम निधान सुणाए आपणा नाद, बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द ढोला गाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर सारे होए लाजवाब, सिर सके ना कोए उठाईआ। किसे नूं पता नहीं की खेल होणा कलयुग तों बाद, सतिजुग किस बिध लोकमात लए प्रगटाईआ। किस धार मानव ज़ाती करे आबाद, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड ना कोए वंडाईआ। निर्मल कर्म उजागर कर के धोवे दुरमति मैल दाग़, पतित पुनीत करे सफ़ाईआ। किसे तों मंगे ना कोए इमदाद, साथी संग ना कोए जणाईआ। इक्को वार एकँकार हर हिरदे अन्दर देवे आपणी याद, याद साडी दए भुलाईआ। नाम संदेशा दे के बोध अगाध, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। जिस नूं कहिंदे आए मोहन माधव माध, मधुर धुन आपणी राग सुणाईआ। झगड़ा रहिण ना देवे जगत जिज्ञासू सन्त साध, साधना सच विच समझाईआ। हँस रूप बणाए कलयुग जीव काग, सोहँ हँसा रूप दृढ़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव अवतार पैग़म्बर गुर देवत सुर पकड़ के आपणे हथ्थ वाग, हुक्मे अन्दर सर्ब भवाईआ। इक्को नाम कलमा इक्को डण्डावत बन्दना इक्को सजदा दस्से आदाब, निमस्कार नमों नमों इक्को सीस जगदीश सर्ब निवाईआ। इक्को पूजा होवे पुरख अकाल श्री महाराज,

परवरदिगार इक्को नूर रुशनाईआ। त्रैगुण माया तत कल्पणा बुझाए आग, सांतक सति सति वरताईआ। काया मन्दिर अन्दर सरोवर वखाए इक तालाब, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ लोड़ रहे ना राईआ। मेहरवान हो के महिबूब अन्दरों पड़दा चुक्के नकाब, नूर नुराना नूरी जोत करे रुशनाईआ। घर ठाकर स्वामी करता मिले आप, बाहर लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। पुस्तक पढ़नी पए ना कोई किताब, कुतबख़ाने वंड ना कोए वंडाईआ। किरपा कर के आपणयां भगतां दर्शन देवे साख्यात, स्वच्छ सरूपी शाहो भूपी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। राम किहा कृष्न सुण अगम्म आवाज़, बिन कन्नां कन्न लगाईआ। लेखा देणा पए हिसाब, प्रभ मंगे थांउँ थाँईंआ। जिथ्थे ना कोई सवाल ना जवाब, जवाब तल्बी विच सारे सीस निवाईआ। अन्त कन्त भगवन्त सुणे सर्ब फ़रयाद, सानूं फ़ारग़ दीन दुनी नालों कराईआ। की खेल होणा आपणा पिछला लेखा वेख रिग वेद कहे विच्च पंज धारा दी आब, दो आब मूसा की गया दृढ़ाईआ। की संदेशा दिता नानक विच बग़दाद, बग़लगीर ख़ुद ख़ालक मालक इक रखाईआ। किस बिध गोबिन्द आपणे अंगीठे लाई आग, चिखा जगत विच जगाईआ। ओह खेल करे हरि करता प्रभ वाहिद, आप आपणा हुक्म वरताईआ। क्यों अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दे हुन्दयां वध गया पाप, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी पूजा पाठ सिमरन जोग अभ्भास कलयुग जीवां पवित्र ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीन दुनी वेखणहार हालात, हालांकि आपणा रूप अनूप आपणे विच्चों प्रगटाईआ।

✪ ३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ५ करतार सिँघ दे गृह पंज ढेरा ✪

कृष्न सुण के खुशीआं दे विच हस्सया, आपणी हस्ती दिती बदलाईआ। राम की राम संदेशा दस्सया, राम राम राम दुहाईआ। मैं सब कुछ वेखां अक्खीआं, अक्खरां तों परे मेरी पढ़ाईआ। मैं छड्डीआं बिन्दरा बन दीआं सखीआँ, गोकल रासां रंग ना कोए रंगाईआ। आत्म धार परमात्म कर के पक्कीआं, नूर जोत विच वड्याईआ। झगड़ा मुका के जगत जहान सतीआं, सति दा रस्ता दिता दरसाईआ। हिस्सा छुडा के दीन दुनी दीआं पत्तीआं, पतिपरमेश्वर इक्को दिता वखाईआ। जिस ने कलयुग कूड़ कुड़यार बुझाउणीआं बत्तीआं, इक्को नूर करे रुशनाईआ। दीन मज़्ब दीआं रहिण नहीं देणीआं हट्टीआं, हट्ट वणजारा इक्को इक खुल्ह्हाईआ। नाम दीआं वक्खरीआं वक्खरीआं पढ़न नहीं देणीआं पट्टीआं, पटने वाला गया समझाईआ।

बिरहों वैराग गुरमुख सन्त सुहेले अन्तर आत्म जाण फट्टीआं, फट्ट निराला इक लगाईआ। पिछलीआं डोरां सब दीआं जाण कटीआं, अग्गे पल्लू शब्द नाम बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। कृष्न कहे राम मैं वेखां अगम्मी तख्ती, तख्त निवासी रिहा वखाईआ। जिस दे हुक्म विच जुग जुग सदा आई सख्ती, हुक्मे अन्दर आपणा हुक्म बदलाईआ। ओह आदि अन्त दा इक व्यक्ति, निरवैर निराकार निरँकार जल्वागर नूर इलाहीआ। ओह काहनां दा काहन प्रीतम अर्शी, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। चार जुग दे शास्त्र उस दी सिफ्त धार दी निक्की जेही पर्ची, प्राचीन दा लेखा वेखे चाँईं चाँईंआ। कलयुग अन्त निरगुण धार बण के दरसी, समदरसी हो के आपणा वेस वटाईआ। तत्तां वाला गुरु नहीं होणा फर्जी, जो जम्मे ते मर जाईआ। जिस नूं अवतार पैग़म्बर गुर भविक्ख्तां विच सारे गए वरजी, पेशीनगोईआं विच ओसे दा राह तकाईआ। ओह होवे सब दा दर्दी, दीनां अनाथां दीन दयाल दया कमाईआ। छुरी शरअ रहिण ना देवे करदी, कत्लगाह रूप ना कोए दरसाईआ। माया ममता मोह विकार हँकार मेटे अंधेर गर्दी, सति धर्म दा साचा राह इक चलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप इक्को पुरख अकाल तूं मेरा मैं तेरा तुक होवे पढ़दी, आत्म परमात्म परमात्म आत्म मिल के वज्जे वधाईआ। एह खेल ओस काहन दी आपणे घर दी, जो काहनां दा काहन नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, समें दी धार विच करे कदे ना जल्दी, जल थल महीअल समुंद सागर टिल्ले पर्बत डूंग्घी कन्दर आपणा हुक्म वरताईआ।

२५४
२२

✪ ३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ५ दयाल सिँघ दे गृह पिण्ड डड्डां ✪

कृष्न कहे राम वड्याई रही ना किसे मुक्ट, सीस जगदीश ना कोए निवाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया रीती होई उलट, सति धर्म सृष्टी दृष्टी गई भुलाईआ। सिफ्ती अक्खर कर ना सकण दरुस्त, समाज राज ना कोए बदलाईआ। सुरत सवाणी होई सुस्त, नाम कलमे ना कोए उठाईआ। धुर दा नाम वंडे कोई ना मुफ्त, चारों कुण्ट पई दुहाईआ। पर्दा खुल्ल्हे ना किसे अंगुशत, भेव अभेद ना कोए जणाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ कर सके कोई ना मुक्त, लख चुरासी जम की फाँसी ना कोए कटाईआ। अन्त अखीर सब दी पुज्जी मुहलत, पारब्रह्म प्रभ आपणा हुक्म वरताईआ। चार जुग दी पिछली रहे कोई ना शोहरत, शहिनशाह शाह पातशाह आपणी कार कमाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा दीन दुनी होई अंध घोरत, सच

प्रकाश ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। कृष्न किहा राम हिरदे वसे ना किसे रमईया, काहन नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वहिण वहे नईया, नौका नाम ना कोए जणाईआ। प्यार रिहा ना भैण भईआ, पिता पूत ना कोए वड्याईआ। मित्र प्यारा रिहा कोए ना सईआ, सज्जण संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पर्दा ओहला आप चुकाईआ। राम किहा कृष्न खेल वेख त्रेते नाल द्वापर, पूरब ध्यान लगाईआ। प्रभ दे भाणे अन्दर रहे कोई ना चातर, अक्ल बुद्धी ना कोए वड्याईआ। कलयुग अन्त कलि कल्की आउणा आपणी ख़ातर, ब्रह्मण गौड़ा वेस वटाईआ। जिस ने सब दा लेखा मुकाउणा लग मात्र, बचया रहिण कोए ना पाईआ। भेव अभेदा खोल्हे बातन, पर्दा अन्दरों दए चुकाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश बणा के साकन, बरन अठारां जोड़ जुड़ाईआ। नाम संदेशा दे के पातन, पतित पापी लए तराईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म जोड़ के नातन, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। जिस नूं कलि कल्की सारे आखण, शास्त्र सिमरत वेद पुराण रहे जस गाईआ। ओह झगड़ा मेटे ज़ात पातन, दीन मज़्हब वंड ना कोए वंडाईआ। सदी चौधवीं मेट अंधेरी रातन, सतिजुग सच करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म दवारा इक प्रगटाईआ। राम किहा कृष्न औह वेख अगम्मी रथ, महासार्थी ध्यान लगाईआ। जेहड़ी अर्जन जणाई गथ, अठारां ध्याए दए गवाहीआ। जिस नूं समझ ना सके कोई सच, वाचक वाच पड़दा ना कोए उठाईआ। ओस खोल्हणी अगम्मी अक्ख, निज नेत्र लोचण नैण दिव्य करे रुशनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदल दए मति, सतिजुग सच राह वखाईआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। निरगुण धार हो प्रगट, पारब्रह्म प्रभ आपणा वेस वटाईआ। जो वसणहारा घट घट, दर ठांडा इक सुहाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान वेखे नस्स नस्स, दो जहानां आपणा पन्ध मुकाईआ। जिस दा सिफ्तां विच भविक्ख्तां विच अक्खरां विच गाया जस, नाम कल्मयां विच वड्याईआ। सो लूं लूं अन्दर रिहा रच, रचना आपणी दए जणाईआ। कलयुग अन्त भाग लगा काया माटी कच, कंचन गढ़ दए वड्याईआ। भगत सुहेले रहिण ना देवे वक्ख, गुर चेले आपणे रंग रंगाईआ। धुर दा खेल करे बाज़ीगर नट, स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। की होया जे सृष्टी दृष्टी विच आपणा इष्ट गई छड, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कूड़ी क्रिया कर्म कांड दी देवे कट, कटाक्ष आपणा नाम लगाईआ। धरनी धरत धवल धौल धर्म दवारा एकँकारा इक्को खोल्ह के हट्ट, वस्त अमोलक अगम्म अथाह आप वरताईआ। एका रूप सति सरूप शाहो

भूप दीन दुनी कायनात देवे दस्स, मानव मानुख मानस इक्को रंग रंगाईआ। उत्तर पूरब पच्छम दक्खण दूर नेड़े रहे कोई ना वक्ख, वक्खरा घर ना कोए बणाईआ। सब दी अन्तर निरंतर अनदृष्ट दृष्टी विच खोल्हे अक्ख, अक्खरां तों बाहर दए समझाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता पतिपरमेश्वर हो प्रतख, साख्यात सन्मुख आपणा दरस दिखाईआ। इक जैकारा सर्ब संसारा आत्म परमात्म धारा दो जहानां होवे जस, जिस्म ज़मीर बेनज़ीर अन्दरों दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समरथ, धर्म धार दी महिमा अकथ, कथनी तों बाहर दए वड्याईआ।

✪ ३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ५ दरबारा सिंघ, राम सिँघ दे गृह पिण्ड गालड़ी ✪

ईसा कहे मेरे इलाही यार मूसा, मुक्षत्री दे कराईआ। क्यों कायनात वक्त होया मनहूसा, कलमा हक ना कोए वड्याईआ। की धार बदलणी छब्बी पोह सूसा, वस्त्र कवण कवण वड्याईआ। की धार बदलणी रूसा, हुक्म मिले अगम्म थाहीआ। की कलमे दी बदलणी पूजा, पूजनीक इक अख्वाईआ। इष्ट रहिणा नहीं दूजा, भाउ दुतीआ दए मिटाईआ। फड़ के हथ्थ विच कोरा कूज़ा, माटी बरतन रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। ईसा कहे मूसा यार मुसाहिब, मसला दे समझाईआ। क्यों साडी करनी होई ग़ायब, दुनी नज़र कोए ना आईआ। की असीं कर नहीं सके पूर फ़राइज़, फ़र्ज आपणा सच कमाईआ। हुक्म मन्न नहीं सके जाइज़, जाइज़ा लै ना सके लोकाईआ। शरअ विच ना सुणी हदाइत, हदीस हद्द ना कोए दृढ़ाईआ। यार ख़ुदा ने सानूं बख़्शिश नहीं कीती अनाइत, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। असीं पूरब पिछले ओस दे नाइब, हुक्मे अन्दर सीस निवाईआ। की अगला खेल करे अजाइब, अजब लीला की वरताईआ। सच ओह प्रगट होणा वाहिद, लाशरीक नूर इलाहीआ। जिस ने बदल देणा कवाइद, कानून कायदा इक दृढ़ाईआ। हक फ़रमाना करना राइज, रईयत रूह बुत दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। ईसा किहा हज़रते मूसा मसीह, मुसलसल दे दृढ़ाईआ। की ख़ुदा दा ख़ुद सेहन होणा वसीअ, सहिरा नूर जोत करे रुशनाईआ। की फ़रमान अन्दर कलमे दी करे तरजीह, तबीअत सब दी दए बदलाईआ। की हुक्म सुणा दए नूर रब्बी, रबीउल सानी दए गवाहीआ। सच मेरी बीतदी बीसवीं सदी, सद्दे दे के रिहा जणाईआ। उफ़ हाए साडी रहिण नहीं देणी गद्दी, गदागर चारों कुण्ट दए बणाईआ।

झट जेब पाकट विच्चों पिछली लिख्त कढी, कढ के दिती वखाईआ। जिस वेले इक नूर इलाही जोत जगी, दो जहान वज्जे वधाईआ। धार रहिण नहीं देणी कोई कूड़ कुड़यार विच बग्गी, जगत बगला बपड़ा वेखे थांउँ थाँईंआ। आतश सारे होवे लग्गी, नीर रस ना कोए भराईआ। आशा धार होणी दीन दुनी गधी, भार ममता मोह उठाईआ। झट हत्थ विच फड़ के डब्बी, माचस मसल के दिती टिकाईआ। इशारा करके वल्ल नूह नदी, हत्थ मस्तक उत्ते रखाईआ। फेर वेख्या सब दे अन्दर नज़र आई बदी, रूह बुत पाक ना कोए वखाईआ। झट प्रकाश तक्कया नौजवान नढ्डी, रूप सोहणा वेख वखाईआ। जिस पब्ब चुक्क के ज़ोर नाल मारी अड्डी, मुक्खों कहि के दिता सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा इक सुणाईआ। ईसा कहे मूसा छड दे तसबी, की मुतअसुब रही दृढ़ाईआ। मूसे किहा ईसा औह वेख मुहम्मद आउणा जिस धार चलाउणी विच अरबी, अरेब ईरा इराज़ोन नज़री आईआ। खेल होणा ओस दा शर्ती, शरकन वज्जे वधाईआ। जिस ने सूरां दा बणना दर्दी, अर्ज़ी खुद खुदा दे अग्गे रखाईआ। चौदां सदीआं ओस दी चलणी मर्ज़ी, मरीज़ बणनी जगत लोकाईआ। ओस राम वाली धार कलमा वेखणी पढ़दी, उँगलां कन्नां विच पाईआ। एह वी खेल होणा फ़र्ज़ी, फ़ज़ल रहमत हत्थ ना किसे फड़ाईआ। अन्त अख़ीर होणी अंधेर गर्दी, चारों कुण्ट अंधेरा छाईआ। मैनूं ऐं दिसदा मूसा कहे ओस आउणा जिस दी धार नज़र ना आए चोटी जड़ दी, चेतन समझ किसे ना आईआ। जिस दी आसा कल्पणा विच कदे ना मरदी, मुरदयां मुरीद ना कोए अख्वाईआ। ओस दा कलमा कल्मयां तों बाहर रूहे रवां होणी पढ़दी, आत्मा ईमान इक बणाईआ। एह खेल ओसे दे घर दी, जेहड़ा आपणे घर विच बैठा बण के सब दा पिता माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धार वहाए अमृत आपणे सर दी, सरोवर इक्को इक वखाईआ।

✪ पहली पोह शहिनशाही सम्मत ५ हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

गुर अवतार पैग़म्बर निरअक्खर धार विच्चों वेखो आपणे अक्खर, बिन अक्खां अक्ख खुलाईआ। जिस ने तुहानूं कीता वक्खर, सिफ्तां वाले ढोले सिफ्त सालाहीआ। माण दवाया इट्टां पथ्थर, पाहन पूजस सिल लोकाईआ। बिरहों नेत्र नीर वरोले कोए ना अथ्थर, हन्झूआं हार ना कोए बणाईआ। दीन मज़्ब जणाई कसर, हदूद कलमा नाम वंड वंडाईआ। तन वजूद बणा के आपणे रत्न, रत्न अमोलक मात प्रगटाईआ। शब्दी धार तुहाथों कराया यतन, यथार्थ आपणा हुक्म वरताईआ।

पिच्छे सब दा इक्को दस्स के वतन, अग्गे बेवतन कार कमाईआ। खेल खला के करौच दीप लखण, पुष्कर रंग रंगाईआ। हुक्मे अन्दर सारे लग्गे नट्ठण, भज्जे वाहो दाहीआ। आपणे नाम दा दस्स के पतण, पत्तरयां उत्ते कीती लिखाईआ। अन्त ओड़ काया कफ़न, लेखा जगत चुकाईआ। मढ़ी गोर हो के दफ़न, अग्नी तत तत जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि करता बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैग़म्बर आपणे वेखो अक्खर रंग, रंग रतड़ा आप जणाईआ। सेज सुहावी उठो पलँघ, निरगुण धार लओ अंगड़ाईआ। सदी सदीवी रही लँघ, बीस बीसा हुक्म वरताईआ। निगह मारो विच नव खण्ड, नव दर खोजो थांउँ थाँईंआ। सृष्टी दृष्टी होई रंड, इष्टी कन्त ना कोए हंढाईआ। फिरी दरोही विच ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड देण दुहाईआ। एका उपजे कोई ना छन्द, सुरती शब्द ना कोए समाईआ। निझर मिले ना परमानंद, निजानंद ना कोए चतुराईआ। आपणी आपणी वेखो मज़्बां वाली कंध, कंधा कंधे नाल छुहाईआ। निशान तक्को तारा चन्द, चौदां तबक वंड वंडाईआ। किस बिध जगत जहान टुट्टी गंढ, नाता धर्म ना कोए रखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सब ने मारया पन्ध, पाँधी हो के फेरा पाईआ। अन्त अख़ीर शाह हकीर क्यों रसना जेहवा लाए गंद, अमृत रस आबेहयात मुख ना कोए चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच संदेशा इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर क्यों अक्खरां नाल पाई मेरी वंडे, हिस्से जगत वाले जणाईआ। क्यों वक्खरे वक्खरे मार्ग राह दस्से डण्डे, डण्डावत इक ना कोए जणाईआ। क्यों दीन मज़्ब जणाए धन्दे, रसना जेहवा बत्ती दन्द सिफ्त सालाहीआ। क्यों मूंड मुंडाए सीस कराए नन्गे, केस मुछ दाढ़ी सोभा पाईआ। क्यों मानव नाल कीते जंगे, गुर अवतार पैग़म्बर हो के शस्त्र हथ्थ उठाईआ। क्यों तीर कमान तरकश कंध्याँ उत्ते टंगे, क्यों खण्डा खड़ग आए खड़काईआ। सारे निगह मारो मानव जाती इक्को मेरी धार रंगे, दूजा नज़र कोए ना आईआ। तुसां शरअ विच बन्दयां नाल लड़ाए बन्दे, बन्दगी मेरी विच रखाईआ। सच दस्सो सदी चौधवीं मुरीद कि सिख केहड़े तुहाडे पार लँघे, सचखण्ड दयो जणाईआ। निगह मारो जेरज अंडे, उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो आपणे नाम दा सब ने करना हिसाब, अंकड़े आपणे विच्चों प्रगटाईआ। मेरी बिना अक्खरां तों वेखो किताब, कुतबख़ाने कदे ना कोए छपवाईआ। जिस दा आदि अन्त दा इक्को बाब, सफ़ा वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को मन्दिर रहे विच महिराब, महिबूब इक्को इक टिकाईआ। जिस विच इक्को सजदा इक्को आदाब, इक्को नमों नमों डण्डावत बन्दना सीस निवाईआ। इक्को शब्द सतिगुरु महाराज, इक्को जोती जाता नूर इलाहीआ। इक्को

नाद धुन अवाज़, इक्को राग अनुराग सुणाईआ। इक्को रस इक्को स्वाद इक्को इक दए चखाईआ। इक्को अल्ला इक्को वाहिगुरु इक्को राम इक्को कृष्न ओम दा गॉड, गाईड दूजा नज़र कोए ना आईआ। इक्को नूर जोत दा आदि, इक्को प्रकाश अन्त अख्वाईआ। इक्को खेल अगम्म तमाश, इक्को दाता बेपरवाहीआ। इक्को मण्डल पावे रास, इक्को गोपी काहन नचाईआ। इक्को खेल सीता राम बनबास, इक्को निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। सारे आपणी आपणी करो याच, याचक हो के ध्यान लगाईआ। आपणी करनी लैणी वाच, वाचक हो के फोल फुलाईआ। क्यों तुहाडे हुन्दयां कलयुग होई अंधेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। तेई अवतारां दी उठो जमात, सन्मुख हो के लओ अंगड़ाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद वेखो आपणी कलास, बिन हरफ़ हरूफ़ पढ़ाईआ। नानक गोबिन्द शब्द दयो अवाज़, अगम्मी राग दृढ़ाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला अन्तिम मंगे जुआब, जुआबतल्बी विच अकट्ठे ल्ए कराईआ। दीन मज़्हब लोकमात वेखो आपणा बाग, जो बग़ीचा बाग़बां हो के आए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच सुनेहड़ा इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो आपणी आपणी वेखो पुस्तक, विद्याला धर्म दवार जणाईआ। जिस दे विच इक दी उस्तत, निंदिआ रूप ना कोए दरसाईआ। जद तुहाडा सारयां दा इक्को मुरशद, आपणा आपणा रस्ता आए दृढ़ाईआ। मेरे नाम दी करके उल्फ़त, महिमा विच सिफ्त सालाहीआ। तुहानूं किसे नूं मिली नहीं कोई फ़ुरसत, वेहला वक्त ना कोए जणाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नव सत्त कोई धो नहीं सक्या दुरमत, पापां करी ना किसे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर संदेशा इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो आपणा आपणा लेखा वेख्यो भविक्ख्त, कातब संग ना कोए रखाईआ। भेव अभेदा वेख्यो भविक्ख्त, जो पेशीनगोईआं आए दृढ़ाईआ। जिस विच दस्सया सब दा इक्को होणा इष्ट, दूसर सीस ना कोए निवाईआ। परवरदिगार सांझा यार पुरख अकाला खोल्हे दृष्ट, दीनन आपणी दया कमाईआ। झगड़ा मुकावे स्वर्ग बहिशत, सच दवारा इक दरसाईआ। जिथ्थे लेखा नहीं टांक ते जिसत, इक्को नूर जोत रुशनाईआ। नज़र आए ना कोए निन्दक, सारे सिफ्ती सिफ्त सालाहीआ। उठो करो आपणी हिम्मत, हौसले लओ वधाईआ। क्यों कलयुग अन्तिम होई चिन्नत, चिन्ता चिखा जलाईआ। मनुआ मन करे इल्लत, आलमां इलम दिते भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हुक्म अगम्मा इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर इक दूजे नूं करन इशारा, बिन सैनत सैनत लगाईआ। असीं सारे जोत नूर दी धारा, तत नज़र कोए ना आईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु बण के विच संसारा, तन वजूद हंढाईआ। नाम दस्स के आए अक्खरां विच बण लिखारा, कागज़ कलम शाही

जोड़ जुड़ाईआ। संदेशा दे के आए कलयुग अन्त कलि कल्की आए चौवींआ अवतारा, जिस नूं जन्मे कोई ना माईआ। ओह लेखा जाणे सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण आपणी कारा, करनी करता आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर सारे करन सलाह, दरगाह साची सच सुहाईआ। की संदेशा देवे अगम्म खुदा, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। सानूं वक्खरे वक्खरे लोकमात भेजे जुदा, जुज़ आपणा वंड वंडाईआ। आपे नाम कलमा रिहा पढ़ा, आयत शरायत समझाईआ। आपे मार्ग दिता दृढ़ा तत्तां वाली वंड वंडाईआ। आपे दीन मज़्ब इस्लाम इस्म दा पड़दा दिता चुका, ख़सम हो के हुक्म वरताईआ। आपे हुण लेखा मंगे थांउँ थाँ, सारे इक्ट्ठे लए बुलाईआ। हुण दस्सो किस बिध करीए हां, हां विच हां मिलाईआ। क्यों पुरख अकाला सब दा पिता ते सब दी माँ, दूजा नज़र कोए ना आईआ। दरोही साथों वंड पवाई सूर ते गां, धर्म पशूआं उत्ते बणाईआ। उस दा खेल बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। छोटे छोटे सानूं मार्ग दस्स के राह, दीनां मज़्बां विच फसाईआ। आप करदा रिहा चाअ, चाउ घनेरा इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक प्रगटाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर सारे इक दूजे वल्ल तक्कण, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। वेखो खेल सूरे सरबंगण, की करता कार कमाईआ। सब तों लेखा लग्गा मंगण, बचया रहिण कोए ना पाईआ। पड़दा ओहला रहे कोई ना जगन, जगत जागरत जोत करे रुशनाईआ। संदेशा देवे उपर गगन, गगनंतर पड़दा लाहीआ। जिस दा नाम दमामा डंक अगम्मा लग्गा वज्जण, अनहद वाजे निउँ निउँ लागण पाईआ। तुरीआ पद ओथे कोई वेखे ना अक्खण, निज नैण ना कोए चतुराईआ। काहन लभ्भे कोई ना खाण मक्खण, रामा धनुष ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, दरगाह सच सच वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बर सारे इक दूजे नूं रहे आख, बिन रसना जेहवा बोल जणाया। असीं झगड़ा पाया हड्ड नाड़ी मास, तन वजूद हंढाया। जेहड़ा तन भस्म होवे राख, गोरां विच दबाया। उफ़ जे अज्ज तक्कीए उपर आकाश, निरगुण नूर जोत रुशनाया। जिस दा आदि अन्त प्रकाश, जुग जुग वेस वटाया। गुर अवतार पैग़म्बर बणा के दास, सेवा विच लगाया। असीं मंग ना सके इक्को दात, झोली इक ना कोए वखाया। जे नाम दिता कलमा दिता अवतार बणाया पैग़म्बर बणाया गुरु बणाया थपकी दी दे शाबाश, शबे रोज़ हुक्म सुणाया। हुक्म विच किहा मैं तुहाडा पिता पुरख अबिनाश, ना मरे ना जाया। तुसीं सूरबीर बहादर जाओ जाग, लोकमात राह वखाया। नाम नाल नाम दा करयो त्याग, अक्खरां अक्खरां जोड़ जुड़ाया। छोटी छोटी डोरी मज़्बां पवा के वाग, तन्दी तन्द दिती समझाया। साडे अन्दर दे के वास, धुंन अगम्मी नाद

२६० २२

वजाया। अमृत दे स्वाद, बिन रसना रस चखाया। जोत कर प्रकाश, अंध अंधेर मिटाया। सच दे धरवास, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। अवतार पैग़म्बर गुरुओ मैं तुहाडा बाप, पिता पुरख अकाल नाउँ रखाया। आह लओ मेरा कलमा आह लओ मेरा जाप, रसना जेहवा दयो जपाया। एसे नाल सृष्टी होवे पाक, पतित पुनीत कराया। फेर उसे नूं दे के जवाब, अगला हुक्म फेर सुणाया। फेर हुक्म संदेशा दे के बोध अगाध, बुद्धी तों परे पढ़ाया। शब्द अगम्मी दे अवाज़, संदेशा इक सुणाया। जिस वेले कलयुग अन्त होए अंधेरी रात, नूरी चन्द ना कोए चमकाया। धर्म रहे ना लोकमात, धौल दए गवाहया। बच्चयों फेर आवांगा आप, आपणा फेरा पाया। मेहरवान महिबूब हो के करां सब नूं पाक, दुरमति मैल धवाया। निरगुण धार खोल् के ताक, सरगुण पड़दा देणा चुकाया। ज्यों भावे त्यों लवां राख, एह मेरी बेपरवाहया। इक याद रखयो बात, बातन सब नूं दयां सुणाया। हुक्मे अन्दर सब ने जाणा जाग, सोया रहिण कोए ना पाया। जिस वेले कलयुग जीवां हँस बुद्धी होई काग, सोहँ हँसा माणक मोती चोग ना कोए चुगाया। काया मन्दिर अन्दर दीपक जोत ना जगे चिराग़, बिन तेल बाती ना कोए रुशनाया। धर्म रहे ना किसे समाज, इष्ट गुरदेव जाण भुलाया। साधां सन्तां लग्गणी आग, अमृत मेघ ना कोए बरसाया। ओस वेले तुहाडे हथ्थों दीनां मज़्बां छुट्टणी वाग, शाह सवारा नज़र कोए ना आया। मैं खेल खेलणा निरगुण धार देस अगम्मे माझ, सम्बल आपणा चरण टिकाया। जिस दा आदि अन्त ना कोए हिसाब, सम्मत वंड ना कोए वंडाया। लभ्भां विच्चों ना किसे नाभ, कँवली कँवल ना कोए खुल्हाया। निरगुण धार हो महाराज, महिबूब हो के वेस वटाया। सारा लेखा मंगां हिसाब, निरअक्खर धार विच्चों अक्खर फोल फुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि करता नूर इलाहया। गुर अवतार पैग़म्बरो सुणो अगम्म तालीम, तुलबिआं दयां दृढ़ाईआ। जेहड़ी तुसां कीती तक्सीम, वंडन वंड वंडाईआ। मैं किरपा करां हो के रहीम, रहमत हक कमाईआ। इक्को रंग रंगा के धरनी उत्ते ज़मीन, ज़मीर सब दी दयां बदलाईआ। मैनूं सारे सजदा करन ते कहिण आमीन, लाशरीक तेरी बेपरवाहीआ। महल्ल अटल आलीशान वखावां इक अज़ीम, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिथ्थे आदि तों वसां कदीम, कुदरत दा मालक हो के डेरा लाईआ। ओह वक्त सुहञ्जणा सब ने समझणा ग़नीम, ग़नीमत तुहाडे हथ्थ फड़ाईआ। मार्ग अक्खां तों परे होणा महीन, महीना पोह दए गवाहीआ। जिस ने लेखा तुहाडा मंगणा प्राचीन, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे करे पढ़ाईआ। तुसीं इक दे अन्त इक रूप होणा अधीन, इक दा इक्को मालक नज़री आईआ। सब दा लेखा हुक्मे अन्दर लैणा छीन, अग्गे इक मज़्ब ते इक्को दीन, इक्को इस्म इक्को जिस्म इक्को किस्म नर मदीन, दूजा रूप ना कोए दरसाईआ। इक्को रसना

२६१
२२

जेहवा ज़बीन, ढोले गावे सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो सुणो अगम्म फ़रमान, हरि करता आप दृढ़ाईआ। एकँकार इक मारो ध्यान, एक एका वेख वखाईआ। इक्को शब्द सतिगुरु बलवान, योद्धा सूरबीर नज़री आईआ। जिस दा खेल दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड सीस निवाईआ। ओह प्रगट होवे विच जहान, जहालत कूड़ी दए गंवाईआ। संदेशा देवे इक हुक्मरान, हुक्म हाकम इक जणाईआ। तुसीं सब ने आपणयां अक्खरां दी ला के आउणी मीज़ान, गिणती गणित विच जणाईआ। तुहाडे किन्ने शिश सिख गए विच मसाण शमशान, किन्ने मुरशदो मुरीद मकबरयां विच दबाईआ। किन्ने छड के ज़िमीं पहुंचे उपर मेरे असमान, इस्म आज़म वेख वखाईआ। किन्ने शास्त्र सिमरत पार होए पढ़ के पुराण, किन्ने गीता ज्ञान नाल तराईआ। किन्ने हकीकी मंज़ल पाई पढ़ के बाईबल अञ्जील कुरान, सजदयां विच सीस निवाईआ। किन्ने गा के गए सतिनाम, सचखण्ड आए चाँईं चाँईंआ। किन्ने वाहिगुरु गा के मिले श्री भगवान, आपणा बल प्रगटाईआ। एह लेखा छब्बी पोह नूं मंगणा मंगे ओह नौजवान, जिस दी नौबत नाम आए खड़काईआ। जो आदि अन्त दा मालक सब दा मेहरवान, महिबूब इक अख्वाईआ। पर याद रखयो लेखा लिखणा नहीं नाल कलम शाही ते बोलणा नहीं नाल ज़बान, शब्दी धार शब्द विच शब्दी वंड कराईआ। तुहाडा लेखा ओथे जिथ्थे अक्खरां दा नहीं ज्ञान, अलिफ़ ये ऊड़ा ऐड़ा ए बी सी वाली नहीं पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो सब ने इकठ्ठयां जाणा आ, आह भरन कोए ना पाईआ। तुहाडा भगत दवारे बिना भगतां तों होए ना कोई गवाह, शहादत सके ना कोए भुगताईआ। इक्को मार्ग इक्को मंज़ल इक्को पौड़ी डण्डा इक्को चल के आउणा राह, रहिबर इक्को इक समझाईआ। इक्को ढोला इक्को सोहला इक्को कलमा इक्को गीत इक्को नाम अनमोला लैणा गा, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। वेख्यो मैनूं कोई ना किहो वाहिगुरु कोई ना किहो खुदा, राम कृष्न दा नाम ना कोए सुणाईआ। सब ने कहिणा तूं दाता बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। जितने नाम उपजे कलमे उपजे गुर अवतार उपजे ओह सारे आपणे विच लै समा, समें दे मालक समां दे बदलाईआ। सब दी साहिब हो के पकड़ ला बांह, बाज़ू आपणे हथ्थ उठाईआ। असीं तेरा इक्को जपांगे नाँ, दूजा इष्ट ना कोए वखाईआ। इक्को सीस देवांगे निवा, झुक झुक लागां पाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पर्दा ओहला आप खुल्हाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो छब्बी पोह आउणा, समां तुहाडा सोभा पाईआ। पुरख अकाले तख्त सुहाउणा, सोहणा रंग रंगाईआ। नौ रंग दा वस्त्र तन छुहाउणा, पोशाक ख़ाक ना कोए वड्याईआ। जिस वेले जन भगतां इक इक रुपईआ

हथ्थ उठाउणा, तुहाडे आउण दा सतिकार दए वखाईआ। ओस वेले सब ने सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै गाउणा, ढोला अगम्म अथाहीआ। फेर तुहानूं इक धार बहाउणा, वडा छोटा ना कोए रखाईआ। बिना गोबिन्द तों सीस ताज ना किसे टिकाउणा, टिक्का मस्तक ना कोए लगाईआ। बिना शब्द गुरु तों सतिगुरु ना किसे अख्वाउणा, तत्तां वाली ना कोए वड्याईआ। गोबिन्द दा लेखा माछूवाड़े दा पूर कराउणा, साढे तिन्न हथ्थ दी सिड़्ही दए गवाहीआ। जिस वेले गुरमुखां कंध्याँ उपर उठाउणा, चारों कुण्ट लैण फिराईआ। सारयां ने मुक्खों कहिणा तत्तां वाला गुरु नहीं कदे मनाउणा, बिना पुरख अकाल तों सीस ना किसे निवाईआ। अगला लेखा गुरमुखो फेर समझाउणा, जो गोबिन्द पुरख अकाल नाल मिल के आपणे विच गया छुपाईआ। पूरन दा लेखा पूरन प्रकाश विच कराउणा, दीन दुनी दुनी दीन विच इक चमकाईआ। इक दा इक इक दा इक पराहुणा, इक दे घर इक्को आवे ते इक नूं मिल के वज्जे वधाईआ। इक ने इक नूं आपणे घर वसाउणा, सेज सुहञ्जणी इक बणाईआ। जगत जहान जगत वासना पराहुणा, थिर रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस ने ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान शब्दी धार शब्द दे हुक्म विच हिलाउणा, हुलीआ सब दा दए बदलाईआ।

✪ ८ पोह शहिनशाही सम्मत ५ माई दुरगी दे नवित गुजरात ✪

सतिगुर शब्द सच गवाह, शहादत आदि अन्त भुगताईआ। जुग चौकड़ी वेखणहारा थांउँ थाँ, नित नवित फोल फुलाईआ। सन्त सुहेले जन भगत मंज़ल चढ़दे वेखे राह, रहिबर हो के पड़दा आप उठाईआ। अन्तर निरन्तर निरगुण सरगुण जाणे आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा एकँकारा आपणा भेव खुल्हाईआ। दीन दयाल दयानिध ठाकर सदा सद पकड़नहारा बांह, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। इथे उथे दो जहानां हकीकत विच्चों करे हक न्याँ, लाशरीक वाहिद आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सच कहे मैं आदि अन्त सच, प्रभ सच दिती सरनाईआ। जुग चौकड़ी भाग लगावां काया माटी कच्च, कंचन गढ़ इक सुहाईआ। जन भगतां लूं लूं अन्दर जावां रच, साढे तिन्न करोड़ दए गवाहीआ। अग्नी तत वजूद ना जावां मच्च, सांतक सति सरूप समाईआ। मन कल्पणा विच ना जावां नच्च, नव दवार ना उठ उठ धाईआ। मेरा लेखा नाल पुरख समरथ, जो पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जो जुग जुग जन भगतां पैज ल्ए रख, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दीन दुनी नालों कर वक्ख, गृह मन्दिर

देवे माण वड्याईआ। साख्यात दरस देवे प्रतख, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा भेव खुलाईआ। सच दवार दे के हकीकी हक, प्रतख आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सच कहे मैं सच दी धारा, धरनी धरत धवल धौल दृढ़ाईआ। मेरा मालक एका एकँकारा, अकल कलधारी नूर खुदाईआ। जिस दा खेल जुग चौकड़ी विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी वेखण चाँईं चाँईंआ। सो भगत सुहेला इक इकल्ला वेखे विगसे पावे सारा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। जन भगत सुहेले गुरु गुर चेले लै के जाए आपणे दवारा, द्वारकावासी जिथ्थे बैठे सीस निवाईआ। चरण कँवल देवे धर्म प्यारा, प्रेम प्रीती इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म दी धार इक समझाईआ। सच कहे मेरी धार कदे ना होवे मुरदी, मुरीद मुर्शद देण गवाहीआ। एह खेल सच्चे सतिगुर दी, जो सति दा मालक इक अख्वाईआ। जिस दी खेल अनन्द पुर दी, पुरीआं लोआं तों बाहर सोभा पाईआ। ओह खेल जाणे हाज़र हज़ूर दी, हज़रत आपणी कार कमाईआ। मंज़ल मुका के पन्ध नेड़े दूर दी, लेखा वेखे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। सच कहे भगत धार वेखी दुरगी, दुर्गा अष्टभुज ध्यान लगाईआ। सच दवार अन्त तुर गई, तुरत पिछला पन्ध मुकाईआ। सच प्रीती विच जुड़ गई, नाता अग्गे ना कोए तुड़ाईआ। सचखण्ड दवारे पुज्ज गई, पूजा लेखे लई लगाईआ। हक प्रीती विच रुझ गई, रुची पिछली दिती बदलाईआ। बेशक लोकमात विच्चों तत्तां वाली जोत बुझ गई, अन्त निरगुण जोत विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, जन भगतां सदा सुध लई, सुदी वदी वंड ना कोए वंडाईआ।

✪ ११ पोह शहिनशाही सम्मत ५ गुरचरण सिँघ दे गृह जम्मू ✪

अवतार पैग़म्बर गुर करन त्यारी, त्रैगुण अतीते लैण अंगड़ाईआ। शब्दी धार बोल जैकारी, ढोला गावण अगम्म अथाहीआ। निरगुण नूर जोत वेख निरँकारी, निराकार खुशी मनाईआ। सारे होए ख़बरदारी, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। इष्ट गुरदेव स्वामी इक दे होणा पुजारी, पूजा पाठ देणी बदलाईआ। जिस नूं कहि के आए कलि कल्की अवतारी, निहकलंका नूर इलाहीआ। ओह खेले खेल परवरदिगारी, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। सचखण्ड दवार दरगाह साची हक दी करे सिक्दारी, हकीकत पड़दा आप उठाईआ। सब ने मन्नणी इक दी ताबयादारी, तबा तबीअत लैणी बदलाईआ। सदी चौधवीं चौदां लोक चौदां

तबक नेत्र वेखण नैण उग्घाड़ी, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर सारे होवण सवाधान, नूर नूर विच्चों प्रगटाईआ। इक्को निगाह करन ध्यान, बिना अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। इक्को इष्ट वेख श्री भगवान, पारब्रह्म प्रभ सीस झुकाईआ। इक्को शब्द शब्द गुरु ज्ञान, इक्को कलमा अगम्म अथाहीआ। इक्को खेल नौजवान, इक्को नूर नुराना सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर आपणा आपणा पासा रहे परत, प्रतिनिध इक्को वेख वखाईआ। साडी भविक्खतां दी पूरी होण लग्गी शर्त, शरअ शरीअत दए गवाहीआ। असीं वेखीए उत्ते अर्श, अर्शे आअज़म नूर इलाहीआ। जिस ने खेल करना उपर धरत, धरनी धवल धौल दए वड्याईआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना बण के मर्द, मुद्दा आपणा दए दृढ़ाईआ। शरअ छुरी कसाई मेटे करद, कत्लगाह वेखे लोकाईआ। सब दी बेनन्ती अरदास मंज़ूर करे अर्ज़ आरज़ू ख़ाहिश पिछली झोली पाईआ। इक्को नाम निधान कलमा दे के तर्ज़, इक्को शब्द नाद धुन करे शनवाईआ। पारब्रह्म प्रभ वेस वटा असचरज, अचरज लीला आप कराईआ। आसा मनसा तमन्ना ख्वाहिश पूरी करके ग़रज़, लेखा वेखे थांउँ थाँईंआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर वंडे दर्द, दीनां अनाथां दुखियां होए सहाईआ। साडे कोलों पूरब मंगे फ़रद, गुर अवतार पैग़म्बर इक दूजे रहे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर सारे होवण खड़े, बल आपणा आप प्रगटाईआ। दीन मज़्हब दे छडणे पैणे धड़े, हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। सरगुण इक्को धार इक्को अक्खर नाम पढ़े, इक्को विद्या विद्याले तों बाहर दए जणाईआ। इक्को मंज़ल मानव जाती चढ़े, मार्ग राह इक्को इक दरसाईआ। इक्को दवार एकँकार एका खड़े, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता अगम्म अथाहीआ। गुर अवतार पैग़म्बर आपणा आपणा वेखण लेखा, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जिस विच परम पुरख दा दिसे वेसा, निरगुण नूर जोत इलाहीआ। मुछ दाढ़ी ना कोए केसा, मूंड मुंडाया ना रूप धराईआ। जिस नूं झुकदे ब्रह्मा शिव महेशा, गणपति सीस निवाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु करन आदेसा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। ओह खेल करे हमेशा, आदि अन्त जुगा जुगन्त कार कमाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त नूर नुराना बणे नेता, निरगुण आपणी कार कमाईआ। पिछला पूरब माज़ी याद रखे चेता, पास्ट भुल्ल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैग़म्बर चारों कुण्ट रहे तक्क, तकवा इक ध्यान लगाईआ। की

संदेशा मिल्या हक, हुक्म शब्द बेपरवाहीआ। जिस विच शरअ दा होवे कोई ना शक, शिकायत करन कोए ना पाईआ। सारे लोकमात रहे तक, बिना अक्खां अक्ख उठाईआ। की खेल करना यक, यके बाद दीगरे ना कोए पढ़ाईआ। सब दा करन लग्गा इक्ठ, एका दर लए बुलाईआ। झगड़ा रहे ना कोई वक्ख, वक्खरा गृह ना कोए सुहाईआ। जगत दी धार बदल के अक्ख, प्रतख आपणी कार कमाईआ। जिस नूं मालक ख़ालक कहि के आए सच, सति विच सिफ्त सालाहीआ। सो साहिब स्वामी हो प्रगट, परगणा इक्को इक जणाईआ। जिथ्थे इक्को वस्त इक्को हट्ट, इक्को वणज वणजारा नूर अलाहीआ। जोत प्रकाश कर लट लट, अंध अंधेर दए गवाहीआ। धुर संदेशा दे के घट घट, सोई सुरत जगत उठाईआ। दीन मज़्हब दी मेट के वट्ट, वटणा नाम दा दए लगाईआ। झगड़ा रहे ना तत अठ, अप तेज वाए पृथमी आकाश मन मति बुध वंड ना कोए वंडाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण एह खेल वेखणा पुरख समरथ, सो स्वामी आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि निरगुण धार कदे ना होवे वक्ख, वक्खरा जुज़ ना कोए रखाईआ।

२६६ २२

✪ १२ पोह शहिनशाही सम्मत ५ अजीत सिंघ दे गृह जम्मू ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण वेखीए आपणा अगम्मी सफ़ा, जो सिफ्तां विच सिफ्त सालाहीआ। जिस विच्चों की लाभ होया नफ़ा, नफ़ी क्रिया कूड़ कराईआ। केहड़ी धारा दस्सी दीन मज़्हब दफ़ा, हुक्म हुक्म विच्चों प्रगटाईआ। क्यों परवरदिगार होया ख़फ़ा, खुफ़िया आपणा खेल कराईआ। साडी करनी करन लग्गा रफ़ा, रफ़ता रफ़ता आपणी धार वखाईआ। दीन दुनी जगत रोग विच्चों दे ना सके शफ़ा, हउमे हंगता रोग गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण वेखीए अगम्मा बाब, बिन पत्रिका पत्र फोल फुलाईआ। की ओस दे विच्चों होया लाभ, वस्त मिली की बेपरवाहीआ। की सजदा दस्से आदाब, बन्दना डण्डावत सीस निवाईआ। की महल्ल दस्से महिराब, महिबूब नूर इलाहीआ। क्यों साथों मंग्गया जवाब, पिछली कीती वेख वखाईआ। शाहो भूप बण नवाब, नौबत आपणा नाम वजाईआ। झगड़ा मुका के इश्क हकीकी मज़ाज़, मज़ा आपणा रिहा चखाईआ। दीन दुनी दा बदलण लग्गा रिवाज, समाज आपणा इक समझाईआ। क्यों साडा मज़्बां दा उजड़न लग्गा बाग़, बगीचा रहिण कोए ना पाईआ। इक्को शब्द अगम्मी दे के आवाज़, पिछले कलमे रिहा बदलाईआ। किसे भुन्न नहीं खाणा कबाब,

काअब्यां विच ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर फ़रमाना इक जणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण की हुक्म उत्ते अर्शा, अर्शी प्रीतम रिहा दृढ़ाईआ। खेल वेखे धरनी फ़र्शा, ज़िमीं ज़मां फोल फुलाईआ। सब नूं इक्को पा के पर्चा, प्राचीन दा लेखा वेख वखाईआ। जिस साहिब दी करदे आए चर्चा, चर्चा गिरज्जयां विच दुहाईआ। जिस दे नाम दा कलमे दा लैंदे रहे ख़र्चा, जगत खा के झट लँघाईआ। ओह लेखा पूरा करे चार जुग दा हर्जा, हर्जाना आपणा आप वखाईआ। जिस दे कोलों सति दा ल्या कर्ज़ा, मकरूज़ हो के सीस निवाईआ। ओह सब दा बदलण लग्गा दरजा, तरतीब इक्को इक दृढ़ाईआ। किसे दा रहिण नहीं देणा कोई जरगा, जगह जगह खोज खुजाईआ। इक्को सूरबीर मर्दाना बण मर्दा, मुद्दत दा लेखा वेख वखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर जिस दा बणे रहे बरदा, सेवक हो के सेव कमाईआ। सरगुण हो के करदे रहे अर्ज़ा, निरगुण हो के सीस झुकाईआ। ओह खेल करे असचरजा, अचरज लीला आप वरताईआ। जन भगत सहेल्यां वंडे दरदा, दीनां अनाथां दया कमाईआ। साडीआं चार जुग दीआं वेखे फ़रदां, पर्दा ओहला आप उठाईआ। जो नाम कलमा कायनात रिहा पढ़दा, आयत शरायत शरअ विच समझाईआ। जवान इन्सान हो के रिहा लड़दा, तत्तां वाली वंड वंडाईआ। मंज़ल हकीकी रिहा चढ़दा, महिबूब हक खुदाईआ। वेखो खेल की की करदा, कुदरत दा मालक नूर इलाहीआ। जिस दा पल्लू लख चुरासी जीव जंत फड़दा, सूफ़ी सन्त फ़कीर सीस निवाईआ। ओह सब दीआं पूरीआं करे ग़रज़ां, ग़रज़े कि आपणी कार कमाईआ। राग नाद वेखे तर्ज़ां, अनाद धुनां खोज खुजाईआ। रोग सोग चिन्ता दुःख वेखे मरज़ां, मरीज़ तके जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे दरगाह साची सचखण्ड दवार आपणे घर दा, गृह मन्दिर अन्दर निरगुण धार एकँकार आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ १२ पोह शहिनशाही सम्मत ५ राम कौर दे गृह जम्मू ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण असीं आदि इक दा नूर, जोती जोत जोत रुशनाईआ। एका इक दा नाम करीए मशहूर, मशवरा इक्को इक बणाईआ। पिच्छे जो वक्ख रहे दूर दूर, दीनां मज़्बां वंड वंडाईआ। अग्गे मार्ग दस्सीए इक ज़रूर, ज़रूरी धुर दा हुक्म सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर इक्को नाम करीए मंज़ूर, मंज़ल इक्को सोभा पाईआ। मनुआ मन करे ना कोए फ़तूर, कूड़ी क्रिया फ़तवा दईए थांउँ थाँईंआ। हउमें हंगता गढ़ तुट्टे ज़रूर, ग़रूर गुरबत अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ।

इक्को साहिब स्वामी नज़री आए हज़ूर, जो हज़रतां देवे माण वड्याईआ। इक दूजे उत्ते लाईए ना कोए कसूर, सारे मिल के वज्जे वधाईआ। प्रभू भण्डारा सदा भरपूर, देवणहार अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण इक्को दईए पैग़ाम, संदेशा धुरदरगाहीआ। इक्को जणाईए नाम, नाउँ निरँकारा इक वड्याईआ। इक्को समझाईए ग्राम, सचखण्ड साचा दरगाह साची सोभा पाईआ। इक्को वखाईए मकान, महल्ल अटल वज्जे वधाईआ। इक्को गाईए गान, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। इक्को खेल खेलीए महान, जीव जगत जहान मिले वड्याईआ। इक्को प्रभ दा नाम मंगीए दान, दाता दानी दए वरताईआ। पिछला झगड़ा छडीए तमाम, मज़्ब दी तमन्ना रहे ना राईआ। इक्को सच हुक्म इस्लाम, इस्म आअज़म नूर इलाहीआ। जिस दा कलमा अगम्म कलाम, कायनात करे पढ़ाईआ। सो वेखीए अमामां अमाम, जो अमलां तों रहित डेरा लाईआ। जिस सदी चौधवीं मेटणी अंधेरी शाम, शमां नूर जोत करे रुशनाईआ। सब दा लेखा मंगे तमाम, वेखणहारा थांउँ थाँईंआ। जो एका रंग रंगाए आम अवाम, मिहबान महिबूब आप अख्वाईआ। ओस ने सच्चा सच दसाउणा इक क्याम, क्यामगाह इक्को गृह नज़री आईआ। अग्गे वास्ते कोई ना करे किसे बदनाम, बदी दा डेरा देणा ढाहीआ। इक धर्म इक झुल्ले निशान, नौजवान निगाहबान इक्को नज़री आईआ। सारे करीए परवान, परम पुरख प्रभ बेपरवाहीआ। जिस दा लख चुरासी जीव जगत जहान, विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगवन आपणा रंग रंगाईआ।

✪ १२ पोह शहिनशाही सम्मत ५ प्रकाश चन्द दे गृह ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण सब दा सांझा इक्को थाँ, थान थनंतर वेख खुशी मनाईआ। सब दा इक्को पिता इक्को माँ, पुरख अकाल परवरदिगार पारब्रह्म नूर इलाहीआ। इक्को गृह मन्दिर दिसे हक मकां, दर दवार इक्को सोभा पाईआ। इक्को सब दा सच्चा नाँ, नाम नाम विच सालाहीआ। इक्को अमृत रस अगम्मा जाम, बूँद स्वांती इक टपकाईआ। इक्को खेल करे तमाम, जिस नूं मण्डल मण्डप सीस झुकाईआ। इक्को हुक्म संदेशा शब्द पैग़ाम, कलमा अक्खरां वाला इक दृढ़ाईआ। इक्को आदि अन्त जुगा जुगन्त करे इंतज़ाम, बन्दोबस्त विच बन्धन देवे सब नूं पाईआ। इक्को हुक्म संदेशा देवे मनाए आपणी आण, आनन फ़ानन आपणी कार कमाईआ। इक्को लेखा मंगे आपणे मुरीदां सिक्खां दी लाओ मीज़ान, अंकड़े हिन्दसे अक्खरां

विच समझाईआ। इक दे बरदे इक दे रहीए ग़ुलाम, ग़ुलामी दीन मज़्हब रहे ना राईआ। सृष्टी दी दृष्टी अन्दर इक दी देईए पहचान, जो ज़ात पात ना वंड वंडाईआ। इक दा इक समझाईए निशान, जो निशाने पिछले दए बदलाईआ। जिस दा खेल सदा दो जहान, दोहरी धार निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। सो खेल करे श्री भगवान, हरि करता आपणी कार कमाईआ। ओस दी धूढ़ी मंगीए दान, मस्तक टिक्के ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण बेनन्ती करे परवान, परम पुरख प्रभ आपणी दया कमाईआ।

✪ १२ पोह शहिनशाह सम्मत ५ गुरदित सिँघ दे गृह छम्ब जम्मू ✪

अवतार पैग़म्बर गुर मंगण दान, दरगाह साची सचखण्ड झोली आपणी डाहीआ। सो पुरख निरँजण किरपा कर मेहरवान, महिबूब मेहरवां तेरी सरनाईआ। हउँ बाल अंजाणे नढ्ढे जगत नादान, दो जहान तेरी बेपरवाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग खेल वेख्या महान, महिमा तेरी अकथ सिफ्त सिफ्ती विच सालाहीआ। नाम शब्द कलमा दे के आए ज्ञान, निरअक्खर धार विच्चों अक्खर लोकमात प्रगटाईआ। दीन मज़्हब धर्म इस्लाम झुला के आए निशान, तारा चन्द दए गवाहीआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर सारे होए हैरान, परेशानी विच दुहाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चौदां लोक चौदां तबक तेरी मन्ने कोई ना आण, सजदा सीस जगदीश ना कोए झुकाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा हर हिरदे दिसे शैतान, मन कल्पणा विच कूड़ लोकाईआ। प्रकाश रिहा किसे ना भान, सूर्या चन्द रोवे मारे धाहींआ। तेज़ धार ना रही खड़ग खण्डा किरपान, गोबिन्द गुर दए गवाहीआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सर्ब पछताण, ईसा मूसा मुहम्मद वेखण थांउँ थाँईंआ। सरगुण निरगुण करे ना कोए परवान, परम पुरख परमात्म तेरा मेल ना कोए मिलाईआ। अमृत अगम्मा रस मिले ना पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख ना कोए मिटाईआ। जिधर तक्कीए नव सत्त जीव जंत साध सन्त होए नादान, निज नेत्र लोचन नैण दिव्य अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर दरगाह साची रहे तक, बिन नैणां नैण उठाईआ। हकीकत रही कोई ना हक, सति सच ना कोए चतुराईआ। नाड़ बहत्तर सब दी उबले रत, अग्नी पंज तत जलाईआ। धीरज सन्तोख रिहा ना यत, साध सन्त काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। भगत भगवान रखे कोई ना पत, पतिपरमेश्वर मिलण कोए ना आईआ। मन कल्पणा सृष्टी दृष्टी रही

नरस्स, इष्ट गुरदेव स्वामी सीस ना कोए झुकाईआ। साचा मार्ग आवे किसे ना हथ्थ, काया गृह मन्दिर करे ना कोए रुशनाईआ। झगड़ा प्या तत अठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध करे लड़ाईआ। नौ दवार करे कोई ना वक्ख, दसवां दर ना कोए खुल्हाईआ। निझर मिले किसे ना रस, रस्ता तेरा गए भुलाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले परवरदिगार साडा रिहा कोई ना वस, वास्ता तेरे अग्गे पाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक होई बस, बस्ता सारे रहे बंधाईआ। तूं साहिब सतिगुर आदि जुगादि वसें घट घट, लख चुरासी अन्दर डेरा लाईआ। दीन दुनी द्वैत दूई कढ दे वट्ट, शरअ हद्द ना कोए रखाईआ। भाग लगा दे काया माटी मट्ट, साढे तिन्न हथ्थ होवे रुशनाईआ। शब्द अगम्मी मार सट्ट, सोई सुरत दे उठाईआ। सच सति खोल्ह एक हट्ट, सतिगुर साचा राह चलाईआ। तुध बिन अन्त कन्त भगवन्त कोई ना रखे पत, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा मालक बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू साडे अन्तर आई हैरानी, हैरत विच दुहाईआ। लेख रिहा ना किसे पेशानी, मस्तक धार ना कोए वड्याईआ। चारों कुण्ट शरअ शैतानी, छुरी बणी नाम कसाईआ। विद्याहीण होए विद्वानी, विद्वत रूप ना कोए दरसाईआ। तेरा नाम अणयाला मारे तीर कोई ना कानी, कायनात पड़दा ना कोए उठाईआ। भरमे भुल्ली चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज रही कुरलाईआ। माण रिहा ना किसे अक्खर शब्द बाणी, कलमा हक ना कोए सुणाईआ। अमृत रस रिहा ना ठंडा पाणी, आबेहयात ना कोए पिलाईआ। तेरा खेल शाह सुल्तानी, शहिनशाह दो जहान वेख वखाईआ। तन वजूद शरीर माटी ख़ाक पंज तत पुतले तेरी दे के गए कुरबानी, गुर अवतार पैग़म्बर रहे सुणाईआ। कलयुग अन्त अन्त कर मेहरवानी, महिबूब आपणी दया कमाईआ। सतिजुग साचे सच धर्म दी दे निशानी, निशाने कूड़े मात बदलाईआ। इक्को तेरी मंज़ल होवे रुहानी, रूह बुत कर सफ़ाईआ। लेखा लिख दे नाल कलम कानी, कायदा कानून आपणा दे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्णूं भगवान, सब दी मंज़ल कर आसानी, असल विच वसल यार आपणा दे नूर खुदाईआ।

✪ १३ पोह शहिनशाही सम्मत ५ हरिसंगत छम्ब जम्मू ✪

अवतार पैग़म्बर गुर सुणो हुक्म पुरख अकाल, अकल कलधारी आप जणाईआ। दयानिध ठाकर हो के दीन दयाल, मेहरवान आपणा हुक्म वरताईआ। सचखण्ड दरगाह साची वेखो धर्मसाल, दवारा एकँकारा इक्को इक जणाईआ। बिन नेत्र

लोचण नैण विचार करो ख्याल, अन्तरीव अन्तर आपणा ध्यान लगाईआ। सम्मत शहिनशाही पंजवां साल, पंचम लेखा खोज खुजाईआ। सब नूं बदलणी पैणी आपणी चाल, रीती नीती लैणी बदलाईआ। धुर दा खेल वेखणा हाल, हालत सब दी दए जणाईआ। निगह मारो वेखो महाकाल, काल की आपणी कल वरताईआ। सृष्टी उत्ते जो घाल के आए घाल, घालणा विच आपणा आप लगाईआ। चार कुण्ट होई बेहाल, धीरज धीर ना कोए धराईआ। शब्दां अक्खरां विच मेरा दे के आए अहिवाल, हालांकि आपणी कार कमाईआ। जगत विचोले बण दलाल, सृष्टी मानव आए समझाईआ। सो खेल खेले वाली दो जहान, ब्रह्मण्ड खोज खुजाईआ। पिछली सब नूं छडणी पए आण, हुक्म इक्को इक सुणाईआ। सचखण्ड दवार करो परवान, परम पुरख सीस निवाईआ। फेर तुहानूं देवां शब्द बबाण, अगम्मी आपणा इक वखाईआ। जो सब नूं इक्ठ्ठा करे देवे धर्म दा दान, इक्को रंग रंगाईआ। हुक्म मन्नणा हुक्मरान, सारे इक्को वार सीस निवाईआ। वक्त सुहञ्जणे पहुंचणा विच जहान, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। पहलां नूर तकणा सूर्या चन्द भान, प्रकाश अगम्म अथाहीआ। फेर विष्न ब्रह्मा शिव तकणे बिना असमान, असल आपणा नैण उठाईआ। फेर इन्द्र ख्वाजा मारना ध्यान, वेखण सीस निवाईआ। फेर गोबिन्द तकणा नौजवान, सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। फेर तकणा पूरन पूरन जोत रूप भगवान, लोकमात नूर रुशनाईआ। फेर तुहाडी अन्त दक्षिणा गुरमुखां दा इक इक रुपईआ दान, चरण भेंट प्रभ दी इक्को वार कराईआ। अग्गे वास्ते हरि भगत तुहाडे नाल सर्ब मिल जाण, वक्खरा रहिण कोए ना पाईआ। सब दा इक्को होणा नाम, इक्को ढोला लैणा गाईआ। इक्को संदेशा होवे पैग़ाम, इक्को हक पढ़ाईआ। इक्को मन्दिर होवे मकान, गृह इक्को सोभा पाईआ। इक्को धर्म होवे निशान, निशाना सत्त रंग वखाईआ। पुश्त पनाह ते वेखणा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पिट्ठ सब दी हथ्थ टिकाईआ। निरगुण धार वेखणा निगाहबान, निरवैर होए सहाईआ। जो खेल तकदे उपर असमान, सो धरनी धरत धवल देणा जणाईआ। जेहड़े मंगण वाले दान, दाता दानी दए वखाईआ। ओह सारे इक्ठ्ठे होवण इक दरसण विधान, वाधा अवर ना कोए बणाईआ। साहिब सतिगुर सीने नाल लग्ग के पावण सारे माण, छाती उत्ते राती छब्बी पोह सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त दा कमलापाती पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा खेल वखाईआ।

✪ १३ पोह शहिनशाही सम्मत ५ फुम्मण सिँघ दे गृह छम्ब जम्मू ✪

अवतार पैग़म्बर गुर हुक्म सुणो जोत निरँकारी, निरँकार निराकार रिहा सुणाईआ। शब्दी धार होणा ख़बरदारी, खौफ़ ख़तरा ना कोए रखाईआ। आपणा पूरा कराउणा कौल इकरारी, इकरारनामा जो आए लिखाईआ। कलयुग अन्त कलि कल्की आई वारी, निहकलंक आपणा खेल खिलाईआ। सारे दीन मज़्हब दी छड्डओ तकरारी, झगड़ा तत रहिण ना पाईआ। धुर दे नाम ते होए ना बेएतबारी, इतमिनान आपणा लैणा कराईआ। इक हुक्म इक चले सिक्दारी, सिक इक्को इक रखाईआ। शरअ कोई ना किहो हमारी, आपणी आप ना कोए वड्याईआ। सब ने कहिणा खेल प्रभू तुम्हारी, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। इक नूर इक दर करनी निमस्कारी, सजदा सीस इक झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच गृह दरसाए इक दरबारी, दरगाह साची सोभा पाईआ।

✪ १३ पोह शहिनशाही सम्मत ५ प्रताप सिंघ, ईश्र सिंघ, प्रकाश सिँघ दे गृह पिण्ड दड़ जम्मू ✪

२७२
२२

गुर अवतार पैग़म्बर कहिण झगड़ा छडीए सूर गाँ वच्छी, विश्व इक्को रंग वेख वखाईआ। आत्म धार प्रभ दी जोत आदि जुगादि अच्छी, अच्छी तरह देईए दृढ़ाईआ। कोई ना खावे डड्डी मच्छी, डण्डावत बन्दना इक्को दईए दरसाईआ। सारे वेखीए चार कुण्ट दहि दिशा अग्नी मच्ची, अमृत मेघ आबेहयात बूँद ना कोए बरसाईआ। पंज तत वजूद रिहा कोई ना तपी हठी, हठ ना कोए जणाईआ। नाम दान रिहा ना रती, रत्न अमोलक हीरा रूप ना कोए बणाईआ। गंगा गोदावरी होवे किसे ना गती, गति मित ना कोए समझाईआ। सब नूं विछोड़ा होया कमलापती, पतिपरमेश्वर मेल ना कोए मिलाईआ। निरगुण नूर जगे कोई ना बत्ती, बातन पड़दा ना कोए खुल्हाईआ। साहिब स्वामी दरस पाए कोई ना अक्खीं, आख़र रंग ना कोए रंगाईआ। सच काहन दी बणे कोई ना सखी, निरगुण वज्जे ना कोए वधाईआ। सब दा लेखा वेखो किस बिध मुकदा हथ्थो हथ्थी, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। इक दूजे दा रिहा कोई ना पक्खी, संगी संग ना कोए जणाईआ। साथों पति जाए ना रखी, पतिपरमेश्वर होए सहाईआ। दीन दुनी आपणी हद्द टप्पी, जगत टापूआं पई दुहाईआ। आत्म ब्रह्म पढ़ी किसे ना पट्टी, पटने वाला दए सुणाईआ। सब दी डोरी जाणी कटी, तन्द सके ना कोए जुड़ाईआ। पुरख अकाल खेल करनी हकी, हकीकत दा मालक दया कमाईआ। सारे इक्को वार कर लओ पक्की, यकीन भरोसे नाल समझाईआ।

इक्को आवाज़ कढ्ढो इक्वी, ढोला इक्को राग गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर वेखो आपणी माला मणके तसबी, मुतअसब विच्चों ध्यान लगाईआ। रसना जेहवा विद्या वेखो हिन्दी उर्दू फ़ारसी अरबी, इंक इंगलस्तान ध्यान लगाईआ। क्यों सूर गाँ दी खाधी चरबी, चरागाहां देण दुहाईआ। किसे नूं समझ ना आई आपणे घर दी, गृह मन्दिर पड़दा ना कोए उठाईआ। आत्मा परमात्मा ढोला कोए ना पढ़दी, सुरती शब्द ना कोए समाईआ। वेखो खेल कलयुग कल दी, कालख टिक्के रिहा लगाईआ। कीमत पई ना गोबिन्द वाली इक गल्ल दी, जो पंचम पंचम गया दृढ़ाईआ। समझ आई किसे ना जल दी, जो अमृत रस भराईआ। खेल वेखी ना राजे बल दी, बावन दए गवाहीआ। जेहड़ी धार हुक्म संदेशा रही घलदी, जुग जुग नाम सुणाईआ। ओह खेल करे अछल अछल दी, वल छल आपणा हुक्म वरताईआ। मंज़ल जणाए इक अटल दी, पद पदवी इक समझाईआ। जिथ्थे जोत अगम्मी बलदी, दीवा बाती तेल ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक समझाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर जगत जीव जहान वेखो तुरदे, तुरत आपणा ध्यान लगाईआ। क्यों बिना नाम तों होए मुरदे, मुरीद मुर्शद वेखो थांउँ थाँईंआ। क्यों शौह दरया जांदे रुढ़दे, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। की भेव हुन्दे पूरे सतिगुर दे, सति सति विच्चों समझाईआ। की लहिणे लेखे अनन्द पुर दे, गोबिन्द गोबिन्द दए वड्याईआ। क्यों ना मेल हुन्दे अगम्मी धुर दे, धुर मस्तक लेख ना कोए वखाईआ। क्यों कलयुग जीव रूप बणे ठग्ग चोर दे, माया ममता मोह विच हल्काईआ। क्यों खेल होए अंधेरे अंध घोर दे, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। क्यों जगत जहान जीव तुहानूं हथ्थ जोड़दे, निउँ निउँ सीस निवाईआ। सदी चौधवीं घर घर तुसीं क्यों नहीं जा के बौहड़दे, बौहड़ी बौहड़ी करे ख़लक खुदाईआ। क्यों तुहाडे प्रेम प्याले भरे कौड़ दे, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। ज़रा ध्यान धरो नाल ग़ौर दे, गहर गम्भीर अक्ख खुल्हाईआ। लेखे वेखो मन कल्पणा शोर दे, शौहर हो के रिहा जणाईआ। की अन्तिम तुसीं लोड़दे, लोड़ींदे सज्जण दयो सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, खेल करे आपणे ज़ोर दे, जोरू ज़र दा झगड़ा दए मुकाईआ।

✪ १४ पोह शहिनशाही सम्मत ५ रणीआ राम, सेवा राम, प्यारा लाल दे गृह कलोए जम्मू ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण पिछली धार छडी, छुट्टी जगत लोकाईआ। धर्म निशाना इक्को गड्डीं, गॉड तेरी बेपरवाहीआ।

सब दी वेख ला भविक्ख्तां वाली सदी, सदमे विच सर्ब दुहाईआ। तेरा खेल कदी कदी, कदीम दे मालक नज़री आईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दी फ़सल रबी, ख़रीफ़ वंड ना कोए वंडाईआ। धुर दा हुक्म कर यदी, यदिप आपणी कार कमाईआ। चारों कुण्ट वेख कूड़ कुड़यार वहिण नदी, नौका नाम ना कोए वखाईआ। साडी सब दी पूरी होई गद्दी, गदागर हो के देईए सुणाईआ। साडी आशा भविक्ख्तां वाली जाए ना रद्दी, पूरी पूरन देणी कराईआ। दीन दुनी दे अन्दरो कढ बदी, बुद्धी बिबेक कर सफ़ाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा जगत अग्नी लग्गी, हउमे हंगता रही जलाईआ। तेरी जोत प्रकाश किते ना जगी, निरगुण नूर ना कोए रुशनाईआ। झगड़ा मेट दे मास नाड़ी हड्डी, चम्म दृष्टी दे बदलाईआ। जुग आयू हो गई बड्डी, बड़ेपा सब दे सिर ते छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वाहवा तेरी इक वड्याईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण बदल दे आपणा रस्ता, पगडण्डी रहिण कोए ना पाईआ। शरअ दा वक्खरा रहे कोई ना बस्ता, पुस्तक वंड ना कोए वंडाईआ। खेल खला फ़रसा अर्शा, अर्शी प्रीतम हो सहाईआ। सब दा पूरब लाह कर्ज़ा, मकरूज हो के दे चुकाईआ। सब दा इक्को जेहा कर दरजा, ऊच नीच ना कोए वखाईआ। तेरे नाम दी इक्को होवे चर्चा, चर्च चरागाहां कर सफ़ाईआ। इक्को एकँकार तेरी सिफ्त दा होवे पर्चा, प्राचीन दा झगड़ा देणा

२७४ २२ मुकाईआ। अन्त अख़ीर साडा पूरा कर दे ख़र्चा, खा खट्ट तेरा शुकर मनाईआ। सब दी बेनन्ती इक्को अर्ज़ा, आरज़ू दिती सुणाईआ। तूं योद्धा सूरबीर मर्दाना मर्दा, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट दे अंधेर गर्दा, धूंआँधार मेट लोकाईआ। भेव खोल्ह दे आपणे घर दा, क्यों बैठा पड़दा पाईआ। जो भगत सुहेला विछड़यां चिर दा, चिरी विछुन्ने लै मिलाईआ। तेरा दवारा इक्को थिर दा, आदि अन्त सोभा पाईआ। जिथ्थे गुरमुख गुरसिख कदे ना विछड़दा, विछोड़ा अग्गे रहे ना राईआ। ग़रीब निमाणा गल लगा भरया चिक्कड़ दा, दुरमति मैल कर सफ़ाईआ। तेरा खेल वेखणा साजन साचे मित्र दा, मित्र प्यारे हो सहाईआ। तेरे नूर विच्चों नूर होवे निकलदा, एका जोत डगमगाईआ। अन्त लेखा दस्सणा सिखर दा, चोटी पड़दा देणा उठाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण जम्मू वाल्यां इक डण्डा ल्याउणा किक्कर दा, साढे तिन्न हथ्थ होवे लम्बाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां कदे ना विसर दा, विसरयां विछड़यां आपणा मेल मिलाईआ।

✪ १४ पोह शहिनशाही सम्मत ५ सरदार सिँघ गुरनाम सिँघ दे गृह सीड़ ✪

गुर अवतार पैग़म्बरो हकीकी बण जाओ सच मुरीद, मुर्शद इक्को एकँकार मनाईआ। दीन मज़्ब दी रहे ना कोए तरतीब, मानव ज़ाती वंड ना कोए वंडाईआ। लेखा रहे ना अमावस ईद, पूरनमा पूरी खेल ना कोए खिलाईआ। इक्को मार्ग सब दा होवे होवे इक्को सीध, सिद्ध साधक नज़र कोए ना आईआ। भविक्खतां वाली लिख्तां वाली इष्टां वाली पूरी करो उम्मीद, आसा आसा नाल मिलाईआ। अगला खेल तक्को अजीब, अजब निराला आप वखाईआ। ज़ात पात उत्ते मारो लीक, लाईन पिछली दयो गंवाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई शरअ दा रहे ना कोए शरीक, लाशरीक इक्को नज़री आईआ। इक दी मन्नो सच तौफ़ीक, तोबा तोबा कर के सीस दयो झुकाईआ। जिस ने शास्त्र सिमरत वेद पुराण लेख लिखाया अञ्जील कुरान मजीद, मसला आपणा आप समझाईआ। जिस दी अक्खरां विच कलम शाही नाल कीती तम्हीद, सिफ्तां विच सिफ्त सालाहीआ। अल्ला वाहिगुरु राम ओम कृष्न दे नाम दी लई रसीद, लेखा आपणा आपणे नाल जुड़ाईआ। सो साहिब सुल्ताना नौजवाना मर्द मर्दाना जिस दी करदे रहे उडीक, पेशीनगोईआं विच पेशतर गए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर वेखो अगला रंग, पिछली रंगत ना कोए वड्याईआ। सच सिंघासण तक्को पलँघ, पतिपरमेश्वर नज़री आवे इक्को नूर इलाहीआ। जिस दे कोलों नाम कलमे आए मंग, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग झोली डाहीआ। ओह हुक्म देवे सूरा सरबंग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। दीन मज़्ब दा करयो कोई ना जंग, झगड़ा ज़ात ना कोए रखाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म सब नूं दस्सो इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाओ छन्द, संसा अवर रहे ना राईआ। इक्को नूर चमके अगम्मी चन्द, रैण अंधेरा रहे ना राईआ। सब दा अन्त अखीर पूरा होवे पन्ध, मंज़ल आपणी डेरा लैणा लाईआ। जिथ्थे द्वैत रहे ना कंध, दूई वंड ना कोए वंडाईआ। अक्खर शरअ ना पावे डण्ड, डण्डावत सजदा ना कोए वखाईआ। जमना धार वहे ना गंग, सुरस्ती गोदावरी ना लहर टकराईआ। रसना जेहवा बोले कोई ना बत्ती दन्द, अक्खरां वाली ना होए पढ़ाईआ। इक्को एक एकँकारा वेखणा संग, सगला साथी जो अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त निरगुण सरगुण दात देवे वंड, झोली अगम्म अथाह बेपरवाह आप भराईआ।

✪ १४ पोह शहिनशाही सम्मत ५ देवी सिँघ दे गृह मग्घोवाली ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण धरनी धरत धवल धौल कम्बी, थरथराहट विच दए दुहाईआ। बौहड़ी मेरे उत्ते अनगिणत साध सन्त फ़कीर होए डंभी, सति सच नज़र कोए ना आईआ। नाम बाणी कलमे वाले होए पखण्डी, धुर दी धार ना कोए रखाईआ। सच वस्त मिले कितों ना मंगी, जूठ झूठ वज्जी वधाईआ। मेरी पिठ होई नन्गी, ओढन सीस ना कोए टिकाईआ। मेरे अन्तर आई तंगी, दुखी हो के रही सुणाईआ। पवित्र धार रही ना जमना सुरस्ती गंगी, गोदावरी रोवे मारे धाहींआ। कूड़ कुड़यारा मेरी पाड़ दिती अंगी, अंगन अंग ना कोए सुहाईआ। मींढी सीस रही ना कंघी, धूढ़ी ख़ाक ना कोए रमाईआ। सुरत निरत रही ना चंगी, किरतघण होई लोकाईआ। वरभण्ड विच पई भंडी, ब्रह्मण्ड रहे कुरलाईआ। कलयुग जीवां दृष्टी होई अंधी, निज नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। चारों कुण्ट द्वैत कंधी, हउमे गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। दीन मज़्हबां पाई फंदी, फंदन विच्चों बाहर ना कोए कराईआ। सदी चौधवीं जांदी लँघी, समां समें नाल टकराईआ। जगत सुहागण धार होई रंडी, कन्त मिले ना बेपरवाहीआ। विद्या रही ना हिरदे पंडी, पंडत पर्दा ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण धरनी वेखो रोंदी, नैणां नीर वहाईआ। दिवस रैण मूल ना सौंदी, दुक्खां विच रही कुरलाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ फिरे भौंदी, गुर अवतार पैग़म्बरां राह तकाईआ। खेल वेखे जुगां चौंह दी, चारों कुण्ट नैण उठाईआ। क्यों कलयुग जीवां हँस बुद्धी होई काउं दी, कूड़ काग वांग कुरलाईआ। क्यों हंगता वधी हउँ दी, हँ ब्रह्म ना कोए समझाईआ। लज्जया रही ना पिता मांओं दी, पूत गोद ना कोए सुहाईआ। वड्याई रही ना कलमे नाउँ दी, नेत्र लोचन अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। सिफ्त रही ना वाहिगुरु वाहो वाहो दी, वायदा पूर ना कोए कराईआ। क्यों खेल विगढ़ी पंज तत काया गराओं दी, गढ़ी सच ना कोए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण वेखो धरनी वाल खुल्ले, मींढी सीस ना कोए गुंदाईआ। चारों कुण्ट अग्नी तत उबले, पवण ठंड ना कोए वरताईआ। कलयुग मैल पापां मूल ना धुले, आबेहयात हथ्थ किसे ना आईआ। की दुहाई दिती बुल्ले, बुल्लां तों पिच्छे हुक्म सुणाईआ। मेरा मालक महिबूब जद आवे काया कुले, कुल मालक नूर इलाहीआ। सच दवारा एको खुल्ले, दो जहान वज्जे वधाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां अग्ग रहिणी किसे नहीं चुल्हे, हाण्डी अवर ना कोए चढ़ाईआ। लख चुरासी जीव जंत चारे खाणी इक तराज़ू तुले, तोलणहारा आप तुलाईआ। दरगाह साची सचखण्ड दवार कीमत पाए मुल्ले, अमोलक

२७६
२२

आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा पड़दा लाहीआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण वेखो धरती मारे आह, हाए हाए कर सुणाईआ। मेरी कबूल कर दुआ, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। मेरे अमामां अमाम खुदा, खुद मालक नूर इलाहीआ। मेरे नालों ना हो जुदा, वक्खरा गृह ना कोए सुहाईआ। मेरी अदब नाल अदा, अदल देणा कमाईआ। तेरे नाम दी इक्को सुणां सदा, आवाज़ इक्को अगम्म अथाहीआ। सदा चलां तेरी विच रज़ा, राज़क रिज़क रहीम तेरी सरनाईआ। आपणे प्रेम प्यार दा दे दे मज़ा, मज़ाक रहे ना कूड़ लोकाईआ। सब दे सिर ते कूकदी कज़ा, चारों कुण्ट नज़री आईआ। निरगुण धार वेखीं देवीं ना दग़ा, धोखा करीं ना बेपरवाहीआ। मेरा सतिजुग विच वधा दे अग्गा, भगतां नाल कर कुड़माईआ। तेरा रूप नूर इलाही बग्गा, बग़ावत मेट ख़लक खुदाईआ। सति सच दा बन्नृदे तग्गा, डोरी आपणा नाम रखाईआ। मालक ख़ालक रहिवीं सदा, सद तेरा ध्यान लगाईआ। चार जुग तेरी समझी किसे ना वजह, भेव सक्या ना कोए खुल्हाईआ। किसे ने बाप किहा किसे ने किहा अब्बा, पिता पुरख अकाल तेरी वड्याईआ। तुध बिन सति धर्म दा निशान नौ खण्ड पृथ्मी किसे ना गड्डा, छत्र सीस ना कोए झुलाईआ। जो गुर अवतार पैग़म्बर आया लोकमात पा के गया वट्टा, हिस्सा तेरा नाम जणाईआ। हुण सब दा पूरा कर दे पट्टा, पटने वाले दे वड्याईआ। किसे दा लेखा रहे ना पैसा टका, कीमत पूरब दे चुकाईआ। सच दवार दा खोल्ह दे इक्को हट्टा, वणजारा इक्को इक अख्वाईआ। झगड़ा रहे ना चूंकि चुनांचि अलबत्ता, अक्खरां वाली ना कोए लड़ाईआ। तेरे हुक्म दी होवे फ़त्ता, सिर सके ना कोए उठाईआ। धरनी कहे मेरा पूरा कर दे मता, मत्लब आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तेरा नाम निधाना सच्चा, सच दे मालक सति सच तेरी सरनाईआ।

✪ १५ पोह शहिनशाही सम्मत ५ प्रकाश कौर दे गृह पिण्ड मघोवाली जम्मू ✪

गुर अवतार पैग़म्बरो लेखा मुकाउणा धोती तहिमत कच्छा, कच्छ मच्छ रहे कुरलाईआ। झगड़ा गवाउणा सूर गाँ वच्छा, पशू धर्म ना कोए धराईआ। इक्को मार्ग सच दा वेखो अच्छा, अच्छी तरह दृढ़ाईआ। लख चुरासी जीव जंत परम पुरख दा बच्चा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। इक्को नाम कलमा सच्चा, सच दा मालक इक अख्वाईआ। तन शरीर रहे कोई ना कच्चा, लोकमाती माटी ख़ाक वखाईआ। निगह मारो ज़रा रता, निगाहबान रिहा समझाईआ। तुहाडा सब दा पूरा होवे

मता, मन मति बुध ना कोए चतुराईआ। मनुआ आपणी धार फिरे नट्ठा, भज्जे वाहो दाहीआ। तुहानूं सब नूं कीता इक्ट्ठा, हुक्म इक्को इक सुणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सब ने गाउणा टप्पा, सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी एको सता, सत्ता सब दी दए बदलाईआ।

✪ १५ पोह शहिनशाही सम्मत ५ वकील सिँघ दे पिण्ड हँसा जम्मू ✪

अवतार पैग़म्बर गुर वेखो सच रिहा किसे ना अन्दर, काया कूड़ कपट हल्काईआ। पवित्र दिसे ना कोई तन मन्दिर, नाद धुन शब्द ना कोए शनवाईआ। अंधेरा मिटे ना डूंघी कन्दर, निरगुण नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। बज़र कपाटी तुट्टे किसे ना जन्दर, पढ़ पढ़ थक्की जगत लोकाईआ। मनुआ दहि दिश उठ धावे बन्दर, सुरती शब्द ना कोए बंधाईआ। परमात्म लावे किसे ना अंगन, आत्म अंगीकार ना कोए अख्वाईआ। साध सन्त सूफ़ी फ़कीर भिखारी बण के दर दर मंगण, कलयुग कूड़ कल्पणा रही कुरलाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक चढ़ी किसे ना रंगण, पंज तत सोभा कोए ना पाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म देवे कोई ना अनन्दन, निजानंद रस ना कोए चखाईआ। मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाए कोई ना चन्दन, तिलक ललाटी नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो क्यों मातलोक होई बदनामी, बदी घर घर डेरा लाईआ। शरअ सच ना रही कलामी, कलमा कायनात ना कोए वड्याईआ। संदेशा मिले ना धुर पैग़ामी, पैग़म्बर होए ना कोए सहाईआ। क्यों फिरी दरोही विच इस्लामी, इस्म आज़म नज़र कोए ना आईआ। क्यों अवतार गुरुआं भुल्ली बाणी, बाण अणयाला तीर ना कोए चलाईआ। क्यों शास्त्र सिमरत वेद पुराण पड़दा लाहे ना चारे खाणी, बुध बिबेक ना कोए कराईआ। अमृत रस निझर झिरना मिले किसे ना ठंडा पाणी, जगत तृष्ना कूड़ ना कोए बुझाईआ। क्यों सुघड़ सुचज्जी बणे ना कोए सवाणी, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। सारे वेखो चार कुण्ट हो के निगाहबानी, बिन नैणां नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक दया कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो क्यों दीन दुनी भुल्ली, मार्ग सच ना कोए रखाईआ। भाग लग्गा ना काया कुल्ली, अग्नी तत रिहा जलाईआ। अमृत रस मिल्या ना चुली, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रही कुरलाईआ। सुरत निरत किसे ना खुल्ली, पर्दा अन्दरों ना कोए चुकाईआ। मालक मिल्या ना सुल्हकुली, साहिब सतिगुर

अगम्म अथाहीआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप माणस ज़ाती रुली, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। नाम कंडे धर्म तराज़ू कोए ना तुली, तुलाह नज़र कोए ना आईआ। सारे वेखो आपणी दीन दुनी, मज़्बां कौमां विच ध्यान लगाईआ। नाम कलमा ओढन सीस रही ना चुन्नी, सीस जगदीश हथ्थ ना कोए रखाईआ। सब दी ख़ाली होई साढे तिन्न हथ्थ काया कुंनी, अमृत रस ना कोए भराईआ। सच दा रिहा कोई ना ऋषी मुनी, जोगीशर तपीशर रूप ना कोए दरसाईआ। सृष्टी रसना जेहवा नाम जपदी बुल्ल्हीं, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। मस्तक छार धूढ़ी लाए कोए ना धूली, टिक्के नाम ना कोए रमाईआ। तुहाडी धर्म दी धार होई मामूली, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सारे गए भुलाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला लोकमात होण ना देवे बेअसूली, असल आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग अन्त तुहाडे नाम कलमे दी सब दे कोलों करनी वसूली, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त दा इक कन्त कन्तूहली, मालक ख़ालक नज़री आईआ।

✪ १५ पोह शहिनशाही सम्मत ५ तेजभान दे गृह सेई कैंप जम्मू ✪

२७६ २२

अवतार पैग़म्बर गुर अन्तिम मारो आपणा गेड़ा, निरगुण निराकार रूप दरसाईआ। धरनी धरत धवल धौल वेखो आपणा खेड़ा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार रिहा जणाईआ। नाम कलमा दस्स के आए जेहड़ा, हरफ़ां विच जगत पढ़ाईआ। क्यों धर्म दी धार प्या झेड़ा, झगड़े विच लोकाईआ। मेरा गृह मन्दिर दिसे किसे ना नेड़ा, दूर दुराडा पन्ध ना कोए मुकाईआ। सृष्टी दृष्टी तुसीं क्यों नहीं करदे मेहरा, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। साबत रिहा कोई ना चेरा, मुरीद वज्जे ना कोए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर क्यों नहीं काया मन्दिर अन्दर वड़दे, मंज़ल साढे तिन्न हथ्थ मुकाईआ। साचे गृह क्यों नहीं चढ़दे, निरगुण आपणा रंग रंगाईआ। प्यार क्यों नहीं करदे तुहाडे बरदे, प्रेम प्रीती विच ना कोए समाईआ। दर खुल्हण ना मेरे घर दे, बजर कपाटी ना कोए तुड़ाईआ। तुसीं केहड़ी गल्लों डरदे, सच दयो सुणाईआ। वेखो खेल कलयुग कल दे, की आपणी कल वरताईआ। तुहाडे माण रहे ना बल दे, शस्त्र हथ्थ ना कोए उठाईआ। रस रहे ना अमृत जल दे, रसना रस ना कोए चखाईआ। आपणे सवाल दस्सो हल दे, हालत दीन दुनी लओ तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, शब्द संदेशा इक जणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो क्यों विगढ़ गया नज़ाम, नौबत हक ना

कोए वजाईआ। किधर कलमा गया कलाम, नाम नाम ना कोए शनवाईआ। हकीकी मिले किसे ना जाम, अमृत रस ना कोए चखाईआ। सारे उठ के वेखो तमाम, तमा तमन्ना विच कूड़ लोकाईआ। कूड़ी क्रिया कीता ग़ुलाम, बन्धन सके ना कोए तुड़ाईआ। जिन्हां तुहानूं सीस झुकाया डण्डावत बन्दना कीता सलाम, निउँ निउँ लागे पाईआ। क्यों ना पार होए विच जहान, जहालत विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। हुक्म संदेशा सुणो बिना कान, बिन अक्खरां रिहा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैग़म्बर इक दूजे नूं रहे आख, सहिज सहिज सुणाईआ। की हुक्म देवे साख्यात, हरि करता धुरदरगाहीआ। आपणे आपणे वेखीए काग़ज़ात, जिथ्थे लेखा बिना कलम शाहीआ। दीन मज़्हब दी नहीं जमात, अक्खर वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को नूर जोत तअलकात, इक्को शब्द नाम कलमा सिफ्त सालाहीआ। की दईए अन्त अख़ीर ब्यानात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर इक दूजे नूं आखण, शब्दी राग जणाईआ। दीन दुनी सच दा रिहा कोई ना साथन, सगला संग ना कोए बणाईआ। लेखे लग्गे ना किसे दी पूजा पाठन, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। फेर सारे कहिण साडा पूरा होणा भविक्ख्त वाकन, वाक्या प्रभ आपणी कार कमाईआ। साची मंज़ल चढ़े कोई ना घाटन, सच दवारे मिलण कोए ना पाईआ। एह प्रभ दा खेल पृथ्मी आकाशन, गगन गगनंतर खेल खिलाईआ। जिस ने कलयुग मेटणी अंधेरी रातन, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ। ओह सब दा लेखा जाणे बातन, पर्दा आप उठाईआ। हुक्मे अन्दर लग्गा वाचण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडा चले कोई ना चारा, चारों कुण्ट कूड़ दुहाईआ। सब दा आया अन्त किनारा, अन्तष्करन बदलया जगत लोकाईआ। शब्दी नाद ना कोए धुन्कारा, नादी नाद ना कोए शनवाईआ। एह खेल हरि करतारा, कुदरत दा मालक आप कराईआ। जिस नूं कागद कलम ना लिखणहारा, गुर अवतार पैग़म्बर बैठे सीस निवाईआ। झुक झुक करन निमस्कारा, सजदा डण्डावत बन्दना सोभा पाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी जोती जाता हो उज्यारा, उजरत मंगे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा मालक बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण असीं करना की, कीमत कहिण कोए ना पाईआ। हां विच हां जी विच कहीए जी, निउँ निउँ सीस निवाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तूं कलयुग उखेड़नी नींह, सतिजुग सच राह चलाईआ। अमृत धार बरसणा मींह, मेघला मिले ना कोए वड्याईआ। चार जुग दी धारा बदलणी नींह, रस्ता इक्को इक वखाईआ। तेरा खेल सदा वसीअ, पैमान्यां विच नाप ना कोए वखाईआ।

सति धर्म दी देणी तरजीह, तरतीब आपणे विच छुपाईआ। साडे कोल चार जुग दी पट्टेदारी दी रसीद, बिन अक्खरां नज़री आईआ। सो सब दी आसा मनसा पूरी करनी उम्मीद, आमद विच तेरा राह तकाईआ। साहिब स्वामी घट निवासी तेरी हक नसीहत, असलीयत विच्चों जणाईआ। सदी चौधवीं सब दी बदल दे तबीअत, तबी हो के वेख वखाईआ। तेरे नाम दी होवे इक अहिमीअत, इक्को वज्जे वधाईआ। दूई शरअ ना रहे शरीअत, शाह सुल्तान तेरी सरनाईआ। लख चुरासी जीव जंत चारे खाणी दी इक्को होवे वलदीयत, वल्द वाल्दा तूं ही नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी हुक्म धार असलीअत, असल विच्चों असल आप प्रगटाईआ।

✪ १६ पोह शहिनशाही सम्मत ५ बेलू राम दे गृह सई जम्मू ✪

गुर अवतार पैग़म्बर शब्द संदेशा, सुणना चाँईं चाँईंआ। तुहाडे पिता परम पुरख दा वेसा, बाप पिता रूप बदलाईआ। सब दा खेल वेखे धार अनेका, अनक कलधारी आपणी दया कमाईआ। तुहाडा परवान करे मथ्था टेका, सजदा सीस निवाईआ। अग्गे वास्ते सब ने इक्को करना एका, इक इक दी आस रखाईआ। पिछला पूरा होणा लेखा, लिख्त भविक्ख्त दए गवाहीआ। जुग चौकड़ी जो निरगुण धार सरगुण नाम वेचा, कीमत मज़्हबां हट्ट विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा सांझा करे देसा, गृह इक्को मात वड्याईआ।

✪ १६ पोह शहिनशाही सम्मत ५ गुरे शाह दे गृह सई जम्मू ✪

पैग़म्बर अवतार गुर सुणो हुक्म अमामी, हरि अमाम आप दृढ़ाईआ। कलयुग अन्त दीन मज़्हब दी होणी नीलामी, बोली जगत ना कोए सुणाईआ। ढंडोरा दयो कायनात अवामी, पैग़ाम इक इलाहीआ। शरअ मुकणी तमामी, तारीक अंधेरा रहे ना राईआ। इक्को कायम होणी कलामी, कलमा कुल मालक जणाईआ। अन्त वार दी अन्त ल्यो सलामी, सलामा अलैकम कहि के शुकर मनाईआ। इक याद रखयो निशानी, निशाना धुर दा इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान करे मेहरवानी, मेहरबां मेहर निगह उठाईआ।

२८२
२२

✪ १६ पोह शहिनशाही सम्मत ५ नानक चन्द दे गृह सई ✪

अवतार पैग़म्बर गुर सुणो सच रसूल, रसूललिल्ला रिहा जणाईआ। हुक्म जानणा माअकूल, मुकम्मल आप दृढ़ाईआ। तुहाडे प्यार विच बदलणा असूल, असल वसल इक समझाईआ। सब नूं ख़ाक मिले अगम्मी धूल, धूढ़ी जगत माण वड्याईआ। लेखा रहिणा नहीं अर्ज तूल, मुसतत्तील वंड ना कोए वंडाईआ। परवरदिगार सांझा यार इक जणाए कानून, कायदा बाकायदा आप दृढ़ाईआ। इक्को कलमा समझणा मज़मून, मजमूआ अवर ना कोए वखाईआ। लेखा मुकणा नुक्ता नून, अलिफ़ ये हद्द ना कोए रखाईआ। धुर दा कलमा वन्डया जाए ना विच परचून, हिस्सेदारी ना कोए रखाईआ। अगला खेल करना नामालूम, अमाम अमामां धार जणाईआ। सदी चौधवीं मेटणा मज़लूम, मुलज़म वेखणे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पैग़म्बर अवतार गुर सुणो पैग़ाम अल्लाह, आलमीन इबनुल आप जणाईआ। आपणा मशवरा दस्सयो सलाह, सुलहाकुल अग्गे टिकाईआ। किस बिध सब दा इक्को होणा राह, रहिबर होवे नूर इलाहीआ। तुहाडी कबूल करे दुआ, दो आलम होए सहाईआ। सारे सजदा करो नाल चा, वज्जे हक वधाईआ। इक नूर इक ज़हूर इक खुदा, खुद मालक इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा लेखा जाणे आदि अन्त जुग चौकड़ी मुद्दा, मुद्दत दा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ।

✪ १६ पोह शहिनशाही सम्मत ५ शिव सिँघ दे गृह सई ✪

पैग़म्बर अवतार गुर तक्को जगत गोर, मानव ख़ाकी ख़ाक समाईआ। सति सच दी रही कोई ना डोर, तन्दी तन्द ना कोए बंधाईआ। तुहाडा रिहा कोई ना ज़ोर, ज़ोरावर होई लोकाईआ। सिख मुरीद होए चोर, ठग्गी मुर्शद गुरूआं नाल कमाईआ। चार कुण्ट वेखो दौड़, भज्जो वाहो दाहीआ। अमृत रस होया कौड़, साचा सुख ना कोए समझाईआ। अठसठ तीर्थ होया जौहड़, सरोवर सर ना कोए वड्याईआ। ग़ौर नाल तक्को ब्रह्मण गौड़, गवड़ आपणी खेल खिलाईआ। मालक हो के रिहा बौहड़, बौहड़ी बौहड़ी सुणे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण धार अवर का और, औरत मर्द रूप नज़र कोए ना आईआ।

✪ १६ पोह शहिनशाही सम्मत ५ लक्ष्मण सिँघ दे गृह सई जम्मू ✪

सप्त सुऋषी कहिण साडा एथे हुन्दा सी धूआं, धूढ़ी नौ साल तपाईआ। नौ हथ्थ ते दक्खण वल्ल हुन्दा सी कूआं, जल पाणी नाल भराईआ। कुल्ली दा सतारां हथ्थ ते हुन्दा सी बूहा, पच्छम वंड वंडाईआ। इक दिन खेल कीता प्रभ ऊहां, निरगुण चमक दिती चमकाईआ। भेव दस्सया परे पूरीआं लोआं, लोयण नैण इक्को इक खुल्ह्हाईआ। वेख्यो रिहो कोई ना सोया, सुत्तयां दिता जगाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त अंधेर होया, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। दीन दुनी धार बणी टिब्बा टोया, संभल कदम ना कोए टिकाईआ। सच धर्म जाए खोहया, कूड़ कुड़यार वज्जे वधाईआ। मानव रहे ना कोए नरोआ, नर नरायण मिलण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सप्त सुऋषी कहिण अत्री दे अन्दर लाई आग, अग्नी अग्ग जलाईआ। उठ वेख कल समाज, सहिज दिता दृढ़ाईआ। साबत रहे ना कोई साध, सिदक सबूरी ना कोए रखाईआ। हिरदे हरि रहे ना याद, रसना गावे जगत लोकाईआ। आत्मक धुन सुणे कोई ना नाद, अगम्मी राग ना कोए जणाईआ। कलमा मिले कोई ना वाहिद, वाहवा रंग ना कोए रंगाईआ। खेड़ा तन दिसे ना कोए आबाद, जंगल जूह होए लोकाईआ। ओस वेले खेल करना प्रभ आप, पारब्रह्म प्रभ आपणा वेस वटाईआ। जिस दा चार जुग सब ने करना जाप, सिफ्तां विच अक्खरी ढोले गाईआ। ओह खेल वेखे निरगुण धार जगत तमाश, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। जोती जाता हो के प्रगटे साख्यात, सखा सुहेला इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। ख़बर सुणी भारद्वाज, धुर करते दिती दृढ़ाईआ। उठ वेख खोल्ह्ह आंख, अक्खरां तों परे पढ़ाईआ। जिस वेले कलयुग जीव हँस बुद्धी होई काग, माया ममता मोह विच हल्काईआ। दुरमति मैल कोई धो ना सके दाग़, पापां भरे लोकाईआ। अगम्मी शब्द दी सुणे ना कोए आवाज़, अक्खरां पढ़ पढ़ आपणा झट लँघाईआ। ओस वेले खेल करे प्रभ जो मालक जुगादि आदि, अन्त आपणा फेरा पाईआ। नाम संदेशा देवे बोध अगाध, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। आत्म परमात्म दा बणा के समाज, तन वजूद दा नाता दए तुड़ाईआ। भेव अभेदा खोल्ह्ह के आग़ाज़, सुरत शब्द शब्द सुरत विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सप्त ऋषी कहिण साडे अन्दर दिता हलूणा, सहिज नाल हिलाईआ। साडा बन्द हो गया रसना नाल कूणा, जेहवा सके ना कोए हिलाईआ। फेर प्रकाश कीता दूणा, अंध अंधेरा दिता मिटाईआ। फेर वखाया मेरा नाम वन्डया जाए विच परचूनां, हट्ट छोटे छोटे जणाईआ। फेर भेव

खोल्ह्या सब ने अन्तिम हो जाणा ऊणा, भरया रहिण कोए ना पाईआ। दीन दुनी उत्ते कलयुग कूड़ी क्रिया दा होणा टूणा, नाम कलमा चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। रिषी कहिण साडे अन्दर आई हैरानी, उठ के लई अंगड़ाईआ। बेनन्ती विच किहा प्रभू कर मेहरवानी, भेव अभेद खुल्ह्हाईआ। निरगुण नूर जोत चमका के इक नूरानी, झलक झलक विच्चों प्रगटाईआ। रिषीओ ओस वेले मंज़ल रहिणी नहीं कोई रुहानी, रूह बुत करे ना कोए सफ़ाईआ। सब ने अक्खरां वाली बाणी पढ़नी ज़बानी, ज़िबह मन ना कोए कराईआ। अक्ल विद्या नूं कहिण विद्वानी, बुद्धी नाल चतुराईआ। जेहड़े प्रभ दे अक्खर विकणे दवानी नाल चवानी, ओन्हां नूं सतिगुर मन्न के सीस निवाईआ। अमृत रस मिले किसे ना पाणी, निझर रस ना कोए चखाईआ। सब ने निउँ के किहा साडे मालक असमानी, की इस्म तेरी चतुराईआ। पुरख अकाल किहा मैं आदि अन्त दा इक नूर जगत जुग दा माली, मालक इक अख्वाईआ। ओस वेले लख चुरासी वेखां फल पत्त डाली, चारे खाणी खोज खुजाईआ। रिषीआं किहा की सानूं दस्सें निशानी, निशाना सच जणाईआ। शब्द अगम्मी धार किहा जिस वेले बलि बावन दी खेल होवे विच जहानी, रिषी तेरां सौ सतासी सोभा पाईआ। ओन्हां नूं फेर देणी ज़िंदगानी, जीवण जीवण विच बदलाईआ। चार जुग दी सहिज सहिज सब दी रखां नाल कहाणी, कथा अगली देवां बणाईआ। ओन्हां नूं जन्म देवां कर्म देवां धर्म देवां सरन देवां एहो करां मेहरवानी, मेहरवान हो के सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। ओन्हां दे दवारे चल के आवां ते आपणी जोबन वाली दस्सां जवानी, बिरध बाल रूप ना कोए वटाईआ। सम्मत शहिनशाही पंज कलयुग कूड़ी क्रिया दी होवे तुग्यानी, लहर सके ना कोए बदलाईआ। साचिआं भगतां ते हो के आप कुरबानी, अग्गे कुरबान होण दा लेखा दयां मुकाईआ। ओन्हां नूं आउण ना देवां हानी, सचखण्ड सच दवारे लै के जावां चाँईं चाँईंआ। विष्न ब्रह्मा शिव अवतार पैग़म्बर गुर ओन्हां नूं रस्ते विच देण आपणा अमृत पाणी, निझर रस देण चखाईआ। ओह इक गावण तूं मेरा मैं तेरा धुर दी बाणी, दूजा राग ना कोए अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी दा दाता दानी, देवणहार इक अख्वाईआ।

✪ १६ पोह शहिनशाही सम्मत ५ कृपाल सिँघ दे गृह सई जम्मू ✪

सप्त सुरिख कहिण असीं तक्कीए लोकमात, जोत अधारी अक्ख खुल्ह्हाईआ। की सच होई अंधेरी रात, अंध अंधेरा

छाईआ। साची दिसे ना कोए जमात, सति विच ना कोए समाईआ। अगला लेखा वेखीए खात, पर्दा अन्दरों इक उठाईआ। वाक्या की खेल करे पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता आपणी कार कमाईआ। निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, वेखे विगसे थांउँ थाँईंआ। लेखा मुकाए साख्यात, सखा सखाई धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्टी दा लहिणा वेखे वाक्यात, वाक्या आपणा नूर कर रुशनाईआ।

१६ पोह शहिनशाही सम्मत ५ लक्ष्मण सिँघ दे गृह सई जम्मू

सप्त सुरिख कहिण साडी पूरब आसा मनसा, ममता जगत ना कोए जणाईआ। आत्म परमात्म सोहँ धार होवे हँसा, काग कूड़ ना कोए कुरलाईआ। भगत भगवान दा सोहे इक बंसा, सरबंस मिले माण वड्याईआ। हउमे गढ़ रहे ना हंगता, हँ ब्रह्म भेव खुल्ाईआ। शब्द गुरदेव होवे धुर दा पंडता, जगत विद्या ना कोए चतुराईआ। तत शरीर वजूद करनी पए कोई ना मन्नता, माटी ख़ाक ना सीस निवाईआ। झगड़ा रहे ना तन वजूद माटी चम्म का, ज़ाती वंड ना कोए वंडाईआ। लेखा रहे ना हरख सोग ग़म का, चिन्ता चिखा दए गंवाईआ। भाव कल्पणा रहे कोए ना मन का, मन का मणका आप भवाईआ। खेल वखाए इक्को हरि जन का, हरि करता धुरदरगाहीआ। शब्द वड्याई रहे ना कोए कन्न का, अगम्मी नादी धुन आप उपजाईआ। प्रकाश वेखणा इक चन्न का, जो निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। जो नित नवित साजन होवे हम का, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। सहारा कदे लए ना दम का, दामन अवर ना कोए फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सप्त सुरिख कहिण धरनी धरत धवल धर्म दा मारया धौंसा, धौल रही जणाईआ। मेरा पूरा होया अन्तर निरन्तर शौंका, तृष्ना तृप्त रही ना राईआ। नूर तक्कया नाम सुणया निरँकार नाउँ का, निराकार आप जणाईआ। झगड़ा मुक्कया पिता मांओं का, पारब्रह्म प्रभ आपणी गोद उठाईआ। लेखा रहे ना कलयुग दाउ का, कूड़ कुटम्ब ना कोए चतुराईआ। डंका वज्जणा वाहो वाहो का, हरि करता आप सुणाईआ। हुक्म चलणा एका शाहो का, शहिनशाह आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सप्त सुरिख कहिण असीं वेखीए धुर नज़ारा, धर्म दी धार जणाईआ। जिस दा दे के गए इशारा, सैनत शब्द इक लगाईआ। सो खेल करे निरगुण निरवैर निराकारा, निरँकार अगम्म अथाहीआ। जिस नूं कहिंदे

चवीआं अवतारा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। अमाम अमामां वड सिक्दारा, दो जहानां इक अख्वाईआ। सुहञ्जणा करे इक दवारा, भगत भगवान दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। ऋषी कहिण वेखीए पारब्रह्म प्रभ ठाकर, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस दा नाम निधाना डूँग्घा सागर, गुर अवतार पैग़म्बर गए तारीआं लाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी योद्धा सूरबीर बहादर, लख चुरासी हुक्मे विच फिराईआ। जिस नूं रसना जेहवा बत्ती दन्द पैग़म्बरां किहा करीम कादर, कुदरत दा मालक नूर इलाहीआ। सो कलयुग कूड़ी क्रिया जगत अंधेरा मेटे बादल, निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। मन मनुआ कोई रहिण ना देवे पागल, काग वांग जगत कूड़ ना कोए कुरलाईआ। धर्म स्वामी हो के करे आदल, इन्साफ़ आपणे हथ्थ रखाईआ। लेखा मुकावे मक्तूल कातिल, कत्लगाह दा डेरा ढाहीआ। जन भगतां भेव खोल्ह के बातन, पर्दा निरन्तर दए चुकाईआ। कलयुग कूड़ क्रिया मेट के रातन, सति सच करे रुशनाईआ। ऋषी मुनी जिस नूं झाकण, गुर अवतार पैग़म्बर ध्यान लगाईआ। ओह सब दा लहिणा देणा देवे बाकन, बचया रहिण कोए ना पाईआ। सच दवारा खोल्ह के हाटन, गृह इक्को इक सुहाईआ। लेखा जाण पृथ्मी आकासन, गगन गगनंतर फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा दाता वड वड्याईआ। सप्त सुऋषी कहिण असां धरनी उत्ते तक्कया उह, जो निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जिस दा आदि जुगादि भगतां नाल मोह, मुहब्बत हरिजन संग रखाईआ। नाम दृढ़ाए सोहँ सो, सो स्वामी होए सहाईआ। कूड़ क्रिया गुरमुखां कोलों लए खोह, शब्दी हुक्म इक वरताईआ। दग़ा फ़रेब करे ना धरोह, मेहर नज़र इक उठाईआ। जिस आत्म नाल परमात्म हो के जावे छोह, लख चुरासी गेड़ा दए कटाईआ। जगत जहान नालों कर निरमोह, मुहब्बत आपणे विच रखाईआ। जिस ने लेखा देणा जन भगतां छब्बी पोह, वदी सुदी ना वंड वंडाईआ। घर प्रकाश कर के लो, लोयण आपणा इक खुल्हाईआ। भेव रहे ना एका दो, दूआ एके विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सप्त सुऋषी कहिण असीं वेखीए जोत शब्द दी धार, तत वजूद नज़र कोए ना आईआ। शब्दी नाम धुन जैकार, अगम्म अथाह अथाह वड्याईआ। जिस दा लेखा कागद कलम ना लिखणहार, शाही चले ना कोए चतुराईआ। सो खेल करे करतार, कुदरत दा कादर दया कमाईआ। पूरब लहिणा लए पहचान, साडा लेखा वेख वखाईआ। ओसे धरनी पहुँचया आण, जिथ्थे धूंणीआँ गए तपाईआ। साडी मनसा कर परवान, परम पुरख वेख वखाईआ। भारद्वाज करे चरण ध्यान, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। अत्री कहे मेरे भगवान, तेरी वड वड्याईआ। खेल करया

२८६
२२

विच जहान, वेस अवल्लड़ा आप प्रगटाईआ। जिस नूं सके ना कोए पहचान, नेत्र अक्ख ना कोए समझाईआ। योद्धा सूरबीर बण बलवान, बलधारी वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा रंग रंगाईआ। सप्त सुरिख कहिण साडी पुन्नी आस, नरासा रहिण कोए ना पाईआ। जन भगतां देईए शाबाश, जिन्हां मिल्या सहिज सुभाईआ। हर हिरदे रखे वास, गृह मन्दिर जोत रुशनाईआ। अंधेरी कन्दर करे प्रकाश, नेत्र लोयण अक्ख खुल्हाईआ। अन्तिम वेखे पुछे वात, होए आप सहाईआ। देवे नाम दी दात, दाता सहिज सुखदाईआ। झगड़ा मेट के ज़ात पात, आत्म ब्रह्म इक समझाईआ। सब दा पूरा कर भविक्खत वाक, लेखा लेखे विच्चों लगाईआ। साडा सब दा करके साथ, सगला तोड़ निभाईआ। बिन सीस तों टेकीए माथ, चरण कँवल सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सप्त सुरिख कहिण खुशीआं नाल जाईए दस्स, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। जिस दा चार जुग गाया जस, ढोले सिफ्तां विच सालाहीआ। जिस दा नाम बाणी माणदे रस, रसना जेहवा राग अल्हाईआ । सो पुरख अकाला साहिब समरथ, निरगुण धार वेस वटाईआ । खोज्जयां किसे ना आवे हथ्थ, जूह जंगल देण दुहाईआ। जन भगतां किरपा करे आप, आप आपणा रंग रंगाईआ। आत्म दा परमात्म बण के बाप, गोद सुहञ्जणी इक सुहाईआ। तूं मेरा मैं तेरा करना जाप, दूजी विद्या अवर ना कोए पढ़ाईआ। सति सच दा जोड़ के नात, नाता आपणे नाल रखाईआ। इक्को मंज़ल पौड़ी चढ़ा के घाट, दरगाह साची दए दसाईआ। आवण जावण दी मेटे वाट, झगड़ा चुरासी रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा पूरा करे भविक्खत वाक, वाकिफ़कार आदि अन्त जुगा जुगन्त इक अख्वाईआ।

✪ २६ पोह शहिनशाही सम्मत ५ हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

सचखण्ड निवासी वेखे खेल कलयुग कल दी, कलि कल्की वेस वटाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर करो जल्दी, दरगाह साची हुक्म सुणाईआ। लोकमात वेखो अग्ग बलदी, चार कुण्ट सके ना कोए बुझाईआ। ताकत रही ना किसे मल्ल दी, बाहू बल ना कोए चतुराईआ। मन कल्पणा हो गई छल दी, अछल अछल गए भुलाईआ। चंगयाई रही ना साढे तिन्न हथ्थ तत खल्ल दी, हड्ड मास नाड़ी दए दुहाईआ। आत्म परमात्म धार कोए ना रलदी, सुरती शब्द ना कोए समाईआ।

२८७
२२

सदी चौधवीं कदे ना टल्दी, परवरदिगार रिहा दृढ़ाईआ। गोबिन्द खेल सदा अटल दी, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता नूर अलाहीआ। सचखण्ड निवासी कहे गुर अवतार पैग़म्बर जागो, सच दवार लओ अंगड़ाईआ। हुक्म मन्नो कन्त सुहागो, धुर फ़रमाना अगम्म अथाहीआ। निरगुण धार हो के भागो, लोकमात वेख वखाईआ। क्यों तुहाडे सिख मुरीद हँस होए कागो, मन ममता विच हल्काईआ। दीन मज़्हब दा झगड़ा त्यागो, एका दस्सो नाम खुदाईआ। सब दे अन्दर वड़ के हिरदे साधो, साधना इक्को देणी जणाईआ। प्रभ ठाकर आदि अन्त दीन दुनी दा माधो, मधुर धुन राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सचखण्ड निवासी कहे मेरा फ़रमाना, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। तेई अवतारां उठ जाणा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद वेखणा खेल दो जहानां, चौदां तबक ना कोए चतुराईआ। दस गुरु तक्को नाम वञ्झ मुहाणा, नौ खण्ड पृथमी फोल फुलाईआ। सति दा रिहा कोई ना बाणा, भाणा मन्ने ना कोई बेपरवाहीआ। सारी सृष्टी रसना जेहवा गाउंदी गाणा, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि दाता बेपरवाहीआ। सचखण्ड निवासी कहे गुर अवतार पैग़म्बर वेखणा वक्त, नव दस जणाईआ। पहुंचणा धरनी उपर जगत, धवल नूर रुशनाईआ। हुक्म सुणना एका फ़कत, फ़िकरे पिछले देणे भुलाईआ। तुहाडी सब दी पूरी करनी शर्त, शरअ ज़ंजीर देणी कटाईआ। जो वाली उपर अर्श, सो फ़र्श होए सहाईआ। भविक्खतां लिख्तां दा लौहणा कर्ज़, मकरूज लहिणा देणा दए चुकाईआ। नाम कलमे दी बदल देणी तर्ज़, इक्को ढोला देणा समझाईआ। आत्मा परमात्म सांझी ग़रज़, दूजा इष्ट ना कोए रखाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म वंडे दर्द, ईश जीव वज्जे वधाईआ। मज़्हब छुरी रहे ना करद, कसाई कज़ा ना रूप जणाईआ। इक्को वार मन्न के अर्ज़, आरज़ू सब दी वेख वखाईआ। आदि अन्त दा जुगा जुगन्त दा पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्को सूरबीर मर्दाना मर्द, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस ने गोबिन्द हथ्थ फड़ाई खड़ग, ओह नाम खण्डा रिहा चमकाईआ। सब दी पूरी करनी पिछली लिख्त पढ़त, लेखा अवर रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर इक्को वार मारो छाल, शाला मिले वड्याईआ। तुसीं चार जुग दे प्रभू दे लाल, बाले नढ्ढे सोभा पाईआ। मेरे नाम दे जगत दलाल, अक्खरां वाली कर के आए पढ़ाईआ। काया मन्दिर दस्स के आए धर्मसाल, साढे तिन्न हथ्थ वज्जी वधाईआ। झगड़ा पा के आए काल महाकाल, नौ दस विच समझाईआ। सदी चौधवीं करे ना कोए संभाल, वेखो दीन मज़्हब करे लड़ाईआ। फल रिहा

ना किसे डाल, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई रहे कुरलाईआ। त्रैगुण माया तोड़े ना कोई जंजाल, अल्ला वाहिगुरु राम हरी ओम तत सति होवे ना कोए सहाईआ। जेहड़ी घालणा आए घाल, अन्त लेखे ना कोए लगाईआ। फल दिसे ना दीन मज़्ब दे डाल, सिंमल रुक्ख जगत लोकाईआ। अनहद नादी धुन वज्जे ना कोए ताल, अगम्मी राग ना कोए सुणाईआ। पहलों आपणे आपणे सिख मुरीद लैणे भाल, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ गुरदवार खोज खुजाईआ। फेर सब दा दरसणा हाल, पर्दा रहे ना राईआ। सब दी इक्को बेनन्ती इक्को होवे सवाल, दूजी आवाज़ ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो उठ के होणा सवाधान, साधना अवर ना कोए जणाईआ। आपणयां आपणयां अक्खरां दा वेखो ज्ञान, जो काग़ज़ां उत्ते आए लिखाईआ। जिस नूं रसना नाल जेहवा नाल बत्ती दन्दां सारे गाण, पढ़ पढ़ सरवणां रहे सुणाईआ। निगह मारो सचखण्ड दवारे कोई ना मिल्या आण, दरगाह साची जोत ना कोए रुशनाईआ। मैं कलयुग अन्त होया हैरान, हैरानी विच समझाईआ। किधर सिख्या गई वेद पुराण, अञ्जील कुरान की चतुराईआ। बाणी अणयाला मारे कोई ना बाण, बन्ना हद्द ना कोए तुड़ाईआ। इक गोबिन्द दे के गया फ़रमान, संदेशा शहिनशाहीआ। जिस वेले माछूवाड़े दी सेजे सुत्ता नौजवान, सथ्थर यारड़ा इक हंढाईआ। चिल्ला खिच्च के तीर कमान, तरकश आपणा ल्या हिलाईआ। हस्स के किहा दस्स मेरे मेहरवान, महिबूब बेपरवाहीआ। कलयुग अन्त किस बिध खेल करें जहान, जहालत कूड़ी दएं कढ्ढाईआ। असीं गुरु अवतार पैग़म्बर तेरी मज़्बां वाली चलाउंदे रहे दुकान, परचून तेरा नाम हट्ट विकाईआ। मैं निउँ के करां प्रणाम, बिन चरणा सीस झुकाईआ। तूं घनईया काहनां दा काहन, जिस नूं सीता राम राम कहि के सीस झुकाईआ। जो निरगुण सरगुण खेले खेल महान महिमा अगम्म अथाहीआ। सानूं दे के थोड़ा थोड़ा दान, गुर अवतार पैग़म्बरां मातलोक दिता परचाईआ। असीं खुशीआं विच लग्गे गाण, ओम राम कृष्न अल्ला सतिनाम वाहिगुरु कहि के तेरी सिफ्त सालाहीआ। तेरी सच्ची इक दस्सी ना किसे पहिचाण, तेरा नूर इक ना कोए रुशनाईआ। साडे पिच्छे जीव तेरा वक्खरा वक्खरा नाम गाण, तेरे नाम दी पई लड़ाईआ। आह लै मेरा चिल्ला आह लै मेरा कमान, भथ्था फड़ के दिता सुटाईआ। जे मैं गोबिन्द तूं भगवान, क्यों ना मेहरवान दा रूप वटाईआ। मेरे वास्ते ना कोई हिन्दू ना मुसलमान, सिख तेरी साबत सूरत दिती समझाईआ। इक तेरी मन्ना आण, दूसर सीस ना किसे झुकाईआ। इक तेरा प्रेम मेरा पीण खाण, दूजी आस ना कोए तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद देवे माण वड्याईआ। पुरख अकाल ताड़ी मार के हस्सा, खुशीआं नाल जणाईआ। गोबिन्द शब्द गुरु आदि अन्त

दा मेरा बच्चा, जो तेरे विच समाईआ। तेरी काया दा भाण्डा कच्चा, अन्त रहिण जग ना पाईआ। तैनूं खेल वखावां बिना अक्खां, इक नूर कर रुशनाईआ। तेरा रूप धरावां सच्चा, सच विच वड्याईआ। सुणना मेरा पता, पत्तनां दे मालक दयां जणाईआ। जिस वेले सति धर्म रिहा ना रता, चारों कुण्ट अंधेरा छाईआ। माण रहिणा नहीं गुरु दसां, दस दशमेश रिहा दृढ़ाईआ। उस दी धार ओसे विच वसां, वास्ता इक्को नाल रखाईआ। बिना लत्तां बाहवां तों नस्सां, चार कुण्ट भज्जां वाहो दाहीआ। पिछली डोरी सब दी कटां, कटाक्ष आपणा नाम लगाईआ। चार जुग दा ख़त्म कर के पटा, पटने वाला इक्को तेरा हुक्म सुणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट के घट्टा, सतिजुग साचा राह वखाईआ। झगड़ा मुका के तत अठा, आत्म ब्रह्म दयां दृढ़ाईआ। दीन दुनी नूं कढ के विच्चों मनमता, धर्म दवारा इक समझाईआ। कोटां विच्चों तेरा भगत लभ्भां जो तेरे विच होवे रत्ता, रत्न अमोलक नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे सीस निवाईआ। सचखण्ड निवासी कहे गुर अवतार पैग़म्बर चारों कुण्ट लाउणा चक्र, चक्रवरती वेखणे थांउँ थाँईंआ। आपणे नाम बाणी दा वेखणा अक्खर, कलमे खोज खुजाईआ। की मुल्ला शेख़ पंडतां दा होया हशर, विद्वानां की चतुराईआ। की लेख लिखदे विच नसर, सहिज देणा समझाईआ। सदी चौधवीं दी पैग़म्बरो वेखणी रचन, पड़दा नकाथ लैणा उठाईआ। ओह गोबिन्द इक पुरख अकाल दा मन्नणा बचन, जो बच्चे नीहां हेठ दबाईआ। फेर वेखणा सचखण्ड दवार मेरा वतन, जिथ्थे वसे धुरदरगाहीआ। सब दा इक्को दवारा ते इक्को पत्तण, दीन मज़्ह्ब दी वंड ना कोए वंडाईआ। अग्गे चलणा नहीं किसे दा यतन, यथार्थ दयां दृढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम निरगुण जोत अग्गे सब नूं आवां रखण, रखया करां थांओं थाँईंआ। पिछली डोरी आवां कटण, कटाक्ष आपणा नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता वड वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बर इक दूजे नूं मारन हलूणा, जोती धार रहे जगाईआ। रसना नाल किसे नहीं कूणा, जेहवा जगत ना कोए हिलाईआ। नाम कलमे दा करना नहीं कोई टूणा, जादू मज़्ह्ब ना कोए वखाईआ। अक्खरां वाला वक्ख वक्ख लिखणा नहीं मज़मूना, धुर दा नाम वंड वंडाईआ। फेर कलयुग वेखणा कवण जीव नाम विहूणा, हर इक दे अन्दर वड़ के काया मन्दिर खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर हुक्म इक जणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर शब्दी धार मारन हुजां, हलूणे रहे लगाईआ। वेखो प्रभ दा खेल गुज्झा, चार जुग दे शास्त्र ना सके समझाईआ। जिस दे विच भेव नहीं कोए दूजा, एका एकँकार नज़री आईआ। सब दा मालक ते सब दा एहो मुद्दा, मुद्दत दे विछड़े लए मिलाईआ। जिस ने माण दवाया जो मनुश ज़ाती विच

सब तों बुढ्ढा, जन भगतां होवे सहाईआ। खेले खेल उपर बसुधा, धरनी धरत धवल धौल वेख वखाईआ। एका आपणा नाम कराए उग्घा, उगण आथण सारे सीस निवाईआ। एका प्रभू दा दवारा होवे झुग्गा, चार वरन इक शनवाईआ। एका पौड़ा होवे उच्चा, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई इक्को मंज़ल दए टिकाईआ। एका आत्म होवे सुच्चा, मन कल्पणा विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। जिस तरह पुरख अकाल ने गोबिन्द नूं किहा आ मेरया पुत्ता, उस नूं आपणी गोद उठाईआ। गोबिन्द गुरसिक्खां नूं किहा ओ बच्चयो तुहानूं छाती नाल घुट्टां, आपणे बच्चे नीहां हेठ दबाईआ। फेर शब्दी धार हो के उठां, पुरख अकाल नाल रलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जड़ पुट्टां, पटने वाला आपणी दए गवाहीआ। सूरबीर मर्दान हो के फुट्टां, फुट्ट दीन दुनी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। जोती धार नालों कदे ना टुट्टां, टुटयां लवां मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर सचखण्ड दवारे होवण त्यार, छब्बी पोह थित वेख वखाईआ। सारे कौल करो इकरार, वाहिदे विच वड्याईआ। दीन मज़्हब दा छडीए तकरार, झगड़ा तन रहे ना राईआ। मज़्हबां दी खाए कोए ना खार, ख़ालस रूप लैणा प्रगटाईआ। हुक्म तों होए कोई ना बाहर, नमस्ते सलामालैकम कहि के डण्डावत विच सीस झुकाईआ। इक प्रभू नूं करनी निमस्कार, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। सारे हो के खबरदार, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जिधर वेखण उधर हाहाकार, मक्के काअबे पई दुहाईआ। साचा मिले ना किसे मीत मुरार, सज्जण संग ना कोए निभाईआ। इक दूजे वल्ल तक्कण करन इशार, सैनत शब्द लगाईआ। बौहड़ी क्यों साडे नाम कलमे हुंदयां साढे तिन्न हथ्थ सब दी होई उजाड़, पत्त टहिणी फल फुल्ल हरि का नाम नज़र कोए ना आईआ। त्रैगुण माया अग्नी सब नूं रही साड़, तृष्ना तृखा ना कोए गंवाईआ। जिधर वेखीए काम क्रोध लोभ मोह हँकार लग्गा अखाड़, साध सन्त बचया नज़र कोए ना आईआ। कलयुग सब नूं पीड़ी जांदा आपणी दाढ़, बचया रहिण कोए ना पाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां किहा ओ गोबिन्द, जिस ने माझे वाल्यां दा लेखा बेदावे वाला दिता पाड़, एसे तरह दीन दुनी विच्चों बदी दे कढ्ढाईआ। तेरा पुरख अकाल तेरे नाल, दोहां दा इक्को हुक्म ते इक सवाल, दूजा खेल ना कोए वखाईआ। आत्म परमात्म दा बण दलाल, शब्द गुरु होए सहाईआ। अक्खरां वाली घालणी ना पए कोए घाल, माला मणके ना कोए चतुराईआ। मेहर निगह नाल तोड़ के जगत जंजाल, शरअ शरीअत दे गंवाईआ। जिस तरह आप किहा आ के वेख मुरीदां हाल, मुर्शद धुरदरगाहीआ। यारड़े दा सथ्थर हंढाया सुत्ता खुशीआं नाल, आपणा आसण लाईआ। ओसे तरह वेख तेरे बच्चे सारे कंगाल, तेरा राह तकाईआ। चार कुण्ट उत्तर पूरब पच्छम दक्खण करदे फिरदे भाल, बौहड़ी कितों ना मिले गोबिन्द माहीआ। जिन्हां ते किरपा

करें उन्नां नूं सुत्तयां ल्एं उठाल, आलस निंद्रा विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहरवान महिबूब मुहब्बत विच समाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण वेखो आउदा जांदा वेला, वक्त दए वड्याईआ। गोबिन्द दा बचन पूरा होणा इक्को रूप होवे गुरु चेला, चेला गुरु विच समाईआ। सतिगुरु सारी दुनिया नालों वेहला, गुरमुखां नाल नाता सदा रखाईआ। क्यों ओह रहिंदा साढे तिन्न हथ्थ दे जंगल बेला, नौ दवारयां विच अन्दर वड़ के करे सफ़ाईआ। गोबिन्द दा सिख प्यार दे इम्तिहान विच कदे ना होवे फ़ेला, हिन्दसा इक्को नज़री आईआ। क्यों जिस दा पुरख अकाल सज्जण सुहेला, मित्र नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण आपणा आप लईए संभल, सम्बल वेखणा धुरदरगाहीआ। ओढण नाल लैणा नहीं कोई कम्बल, तकीआ लेफ ना कोए रखाईआ। जिस नूं कहिंदे नूर इलाही अव्वल, आलमीन अगम्म अथाहीआ। ओस दा नज़ारा तकणा उपर धवल, जो धुर दा मालक जोती जाता डगमगाईआ। जिस दी धार अमृत पवल, निझर रस चखाईआ। जिस ने माण वड्याई दिती दुष्ट दमन, दामन आपणा इक वखाईआ। हुण सब ने वेखणा ओस दा चमन, बग़ीचा फुल्ल फुलवाड़ी गुरमुख सोहणे नज़री आईआ। उस दा भेव जाणे कवण, बुद्धी ना कोए चतुराईआ। अमृत मेघ बरसे सवण, साँवल सुन्दर काहन कान्हा इक वड्याईआ। जिस ने भगतां मेटणा अवण गवण, चुरासी पन्ध मिटाईआ। सब नूं आपणे विच करके दमन, दमां दा लेखा आपणे विच टिकाईआ। एह खेल स्वामी पवण, आदि जुगादि रीती चली आईआ। गुरमुखां ने इक निक्की जेही तपाउणी भट्ठी ते तुहानूं अग्गे वास्ते करना पए ना हवन, अहूती धुर दा नाम तुहाडी काया मन्दिर विच देणी टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण जन भगतो असीं आउण वाले मातलोक, लोको लोको लोको दईए सुणाईआ। असीं सुणाउण आउणा इक सलोक, सोहला ढोला धुरदरगाहीआ। जिस प्रभू दे भाणे नूं सके कोई ना रोक, गुर अवतार पैग़म्बर सारे सीस निवाईआ। ओस दी तक्कण इक्को निर्मल जोत, जो आदि तों अन्त ते जुगा जुगन्त आपणा नूर नूर विच्चों प्रगटाईआ। जिस नूं लभ्भदे कोटी कोट, अनगिणत बैठे ध्यान लगाईआ। सोचां रहे सोच, समझ विच ना कोए चतुराईआ। जो सब नूं देवे मौज, मजलस आपणे नाल रखाईआ। गुरमुखो ओस ने तुहाडी तुहाडे विच्चों करनी खोज, ख्वाजा खिजर भज्जे वाहो वाहीआ। हुण एना लेखा बहुत, अगला अग्गे दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाम खुमारी करे मदहोश, मधुर धुन अगम्मी राग सुणाईआ।

✪ २६ पोह शहिनशाही सम्मत ५ रात दे समें हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

जन भगतो सच वधाई, गुर अवतार पैग़म्बर रहे जणाईआ। जुगां पिच्छों सुहञ्जणी रुती आई, हरि दिती माण वड्याईआ। चार वरन बणा के भैण भाई, एका रंग रंगाईआ। प्रभ बण के धुर दा माही, गोबिन्द आपणी गोद सुहाईआ। पिछला लहिणा रिहा मुकाई, पूरब कर्ज़ रहे ना राईआ। लेखा जाणे शहिनशाही, सम्मत पंज दए गवाहीआ। जेहड़ा गोबिन्द बूटा पुट्टया काही, ओह कलमा रिहा बदलाईआ। सब नूं बणा के पाँधी राही, भगत दवारे जोड़ जुड़ाईआ। देवणहार सर्ब वड्याई, वड्डा निक्का रंग रंगाईआ। सिर देवे ठंडीआं छाईं, कलयुग अग्नी तत बुझाईआ। मालक ख़ालक हो के साँईं, साहिब सुल्ताना वेस वटाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर दर्शन करना चाँईं चाँईं, चाओ घनेरा इक दरसाईआ। जो सब दा दाया दाई, दाअवेदार अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मेला लए मिलाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण असीं आए नाल उत्शाह, उस्तत कर के दईए जणाईआ। जिस नूं कहिंदे रहे पातशाह, सो शहिनशाह वेख वखाईआ। दीन दयाला दया रिहा कमा, मेहर नज़र उठाईआ। जन भगतां बख्श के सर्ब गुनाह, पिछला लेखा रिहा चुकाईआ। छब्बी पोह आत्म परमात्म सच दा कर व्याह, निकाह निरगुण धार पढ़ाईआ। लोक लज्जया ना कोई हया, हयाती सब दी दए बदलाईआ। कर्म कांड दा लेखा कर के रफ़ा, रफ़ाकत निरगुण धार जणाईआ। आपणा बिन अक्खरां वाला कढ के सफ़ा, सफा मलेछ दए मिटाईआ। जन भगतां दे के नाम दा गफ्फ़ा, गुफ़ा भँवर दा डेरा ढाहीआ। चार जुग दा पिछला नफ़ा, मुनाफ़ा सब दी झोली पाईआ। जिस उत्ते दीन मज़्हब दी लग्गे कोए ना दफ़ा, कानून जनूंन ना कोए रखाईआ। लाल काला कर के मथ्था, दुरमति मैल धुआईआ। धुर दा नाता कर के पक्का, पक्की गंढ पवाईआ। परवरदिगार बण के हका, हकीकत आपणी इक समझाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडा रिहा कोई ना शका, शिकवा दिता गंवाईआ। असीं सारे कहिंदे अच्छा, अच्छी प्रभू तेरी वड्याईआ। जिन्नां पहरेदारां तेड़ पाया कच्छा, पंज चक्र दवाले देण लगाईआ। बाकी सारी संगत कहे प्रभू भगत तेरा बच्चा, मालक पारब्रह्म अख्वाईआ। पंजां लिखारीआं जेहड़ा धागा गल विच पाया कच्चा, फड़ के दयो वखाईआ। गुरमुखो प्रीती विच फ़र्क रहे ना रत्ता, रत्न अमोलक रूप बदलाईआ। लहिणा देणा मुकाउणा हथ्थो हथ्था, जिन्नां हथेली लई रंगाईआ। जिन्नां तूं मेरा मैं तेरा गाई कथा, कथनी नाल वड्याईआ। जिन्नां ने कन्नी बध्धा टका, भिच्छया पिछली झोली पाईआ। जिन्नां हथ्थ विच फड़या वच्छा, ग्वाले कृष्न नाल मिलाईआ। जिन्नां ने लेख लिखे उत्ते गत्ता, शाही नाल चतुराईआ। उन्नां दा साथी नानक तपा, निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाईआ। जिन्नां दे नाल रिहा पप्पा, पूरन ब्रह्म समझाईआ।

जिन्हां ताली लाई दो हथ्थां, हरि गोबिन्द साथी सोभा पाईआ। जिन्हां ने मस्तक लाया घट्टा, नाथ नाथां विच्चों प्रगटाईआ। जिन्हां गोबिन्द फड़या पटा, ब्राह्मण पटने वाले समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण सानूं होए चाओ घनेरे, घनईया विच्चों उठ के दए जणाईआ। मैं सखीआँ वेखां चार चुफेरे, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। मैं फिरया त्रैलोकी दे वेहड़े, भज्जया वाहो दाहीआ। मैं गया सभना दे डेरे, पड़दे फोले थांउँ थाँईंआ। मैं तके दीन दुनी दे झेड़े, झगड़े विच लोकाईआ। जुग वेखे केहड़े केहड़े, केहड़े दयां जणाईआ। लख चुरासी विच्चों चढ़या कोई ना बेड़े, बेड़ी काग़ज़ां वाली दए गवाहीआ। फेर मैं तके निउँ निउँ गुरु गुर चेरे, चेल्यां ध्यान लगाईआ। सारे करदे मेरे मेरे, हउमे विच लड़ाईआ। फेर मैं फिरया नौ खण्ड पृथमी दीन दुनी दे उत्ते बनेरे, कदम सहिज सहिज टिकाईआ। फेर मैं वड़ गया कुन्दरां विच अंधेरे, गुफा मानव खोज खुजाईआ। फेर मैं चढ़ गया उत्ते वछेरे, पाखर नीले उत्ते टिकाईआ। फेर कर के हेरे फेरे, गुरसिख दिते भुलाईआ। फेर पुरख अकाल दे हो के नेड़े, निगह ज़िमीं असमान तजाईआ। फेर कर के वड्डे जेरे, यारड़ा सूलां सथ्थर सेज हंढाईआ। फेर ला के जंगल विच डेरे, माछूवाड़े सोभा पाईआ। फेर पुरख अकाल ने कीती मेहरे, मेहरवान समझाईआ। ओ गोबिन्द मेरे सुत दलेरे, तेरी वड वड्याईआ। तूं आ जा मेरे खेड़े, खिड़की जगत जहान तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण असीं तक्कया बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। बौहड़ी जिस नूं कहिंदे रहे खुदा, खुद मालक नूर इलाहीआ। जिस दे अग्गे करदे रहे दुआ, सजदयां विच सीस निवाईआ। ओह होया नहीं बेवफ़ा, मेहर नज़र उठाईआ। ओह पंजां दी डोरी बन्न्ह के आपणी बांह, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। इन्हां दा ना कोई पिता ना कोई माँ, पुरख अकाल आपणी गोद सुहाईआ। चार जुग जिन्हां दा रहिणा नाँ, ओह गुरमुख बैठे सोभा पाईआ। प्रभू दे भगत कहि दयो हां विच हां, दूजा नज़र कोए ना आईआ। मैनूं सदा मिलण दा चाअ, चाओ घनेरा इक रखाईआ। जुगां पिच्छों भगतो भगवान आउंदा किसे दे दाअ, नेत्र नैण दरस कोए ना पाईआ। सृष्टी देखो दृष्टी देखो हँस बुद्धी होई काँ, काग वांग कुरलाईआ। किसे ने सूर खा ल्या किसे ने खा लई गां, दोहां नूं मिले सज़ाईआ। जिन्हां गोबिन्द दा ल्या नाँ, ओह गोबिन्द शब्द गुरु वड्याईआ। तेई अवतारां किहा वाह वाह, तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण असां थोड़ी वेखी भगतां दी आबादी, गिणती अंकड़यां विच नज़री आईआ। अज्ज खुशीआं नाल वेखीए शादी, आत्मा परमात्मा मिल के वज्जे वधाईआ। ओ भगतो हुण शर्म हया काहदी,

शेर बुक्कया थांउँ थाँईंआ। तुहाडा सब दा मालक ते सब दा गाडी, गाईड इक्को नज़री आईआ। ज़रा निगह मारो अजीत जुझार दी जेहड़ी दादी, गुजरी की गई समझाईआ। जिस कारन तेग़ बहादर लाई समाधी, अन्तर अन्तर खोज खुजाईआ। कृष्न मार के गया आवाज़ी, राधा इक दृढ़ाईआ। राम राम दी तुक अनोखी आखी, सीता सुरत विच समझाईआ। जिस वेले कलयुग जीव हो गए पापी, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। सच्चा लभ्भणा नहीं कोए साथी, धुर दा संग ना कोए रखाईआ। रसना जेहवा सारी दुनिया पढ़ेगी गाथी, माला मणके हथ्थां विच फिराईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण दे बणनगे पाठी, पाठशाला विच टल्ल खड़काईआ। जगत जहान चलावण हाटी, वणजारे आप आपणा दरसाईआ। राम किहा सीता दुरमति मैल नहीं जाणी काटी, गोबिन्द किहा कटाक्ष तीर ना कोए लगाईआ। ओस वेले मेरा अमृत हथ्थ आवे किसे ना बाटी, रस निझर ना कोए झिराईआ। इक भण्डारा मेरे भगत दा गुरचरण कौर जट्टी उठ के वखावे लस्सी दी चाटी, अग्गे आवे चाँईं चाँईंआ। जिस ने इक दी मन्नी आखी, इक्को मन्नया पिता माईआ। ओ गुरमुखो एह दिन ते एह प्रभाती, जगत विच वेखे खेल लोकाईआ। एह ओस प्रभू दी काकी, जिस ने माछूवाड़े विच कीड़ी दा पकवान करके परवान जन्म जन्म विच्चों बदलाईआ। ओस काहन दी रासी, जेहड़ा मन्नण विच अबिनाशी, वासी घर घर दा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब सतिगुर वड वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण असीं वेखण आए अज्ज भगतां दा होणा निकाह, ते सूई नक्का नाल लिआईआ। हरफ़ हरूफ़ अक्खर बणाए गवाह, शहादत कलमां वाली भुगताईआ। जम्मू वाल्यो काने दी कलम दयो वखा, जेहड़ी मुहम्मद ने नौ वार दन्दां हेठ दबाईआ। फेर करके हक दुआ, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। हुक्म मिल्या अल्लाह, अलाही नूर समझाईआ। जिस वेले अमाम अमामा बण के जावां आ, आनन फ़ानन खेल खिलाईआ। कुदरत दा कादर आप अख्वा, आख़र आपणा हुक्म वरताईआ। जिस नूं कहिंदे खुदा, खुद मालक हो के फेरा पाईआ। ऐ मालक मेरे ख़ालक मैं भेंटा दयां चढ़ा, की तेरी सेवा की न्याज़ां विच तेरे अग्गे टिकाईआ। हुक्म होया ओ मुहम्मदा ज़रा नैण उठा, चौदां तबक दयां वखाईआ। जिस वेले तेरी उठण लगी सफ़ा, सफ़े पिछले दयां परताईआ। तैनूं इस उम्मत विच्चों नहीं नफ़ा, नुकसान हथ्थां उत्ते रखाईआ। सदी चौधवीं भेव नहीं रहिणा छुपा, आह छाप अल्ला वाली दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। मुहम्मद ने किहा तेरी खेल चंगी, अलज़विते दुआ नूरे नुज़ू नीज़ाले सना, सर कदमे अदमे झुका, बालिसतिवल ज़ोखमल जोखू मेरे शहिनशाह, शाहे मर्ज़ी मेहरे ज़बीं जुनीसे ज़ख़सो यके यकां निज़गाने नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

२६६

२२

किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि आपणा खेल खिलाईआ। मुहम्मद हथ्थ मारया उत्ते गर्दन, मुंडी दिती निवाईआ। याद आ गया की कृष्न संदेशा दिता अर्जन, कन्नां विच सुणाईआ। की खेल खिलाया जिस वेले उँगली ते उठाया गवर्धन, आपणी कार कमाईआ। ओह कलयुग अन्त काहन दे काहन दा खेल होणा असचरजन, आपणी लीला दए वरताईआ। सब नूं करे अनपड़दन, पड़दा रहे ना राईआ। गुर अवतार करे मर्दन, मर्द मर्दाना बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म दवार इक प्रगटाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण ओ किड्डी चंगी रात, सुत्तयां दयां जगाईआ। किड्डी चंगी जमात, भगतां सूफ़ीआं सोभा पाईआ। चंगी प्रभू दी बात, सोहँ इक्को पट्टी जणाईआ। मैं वेखां मार के झात, चारों कुण्ट निगह उठाईआ। फेर वास्ता पा के किहा जन भगतो झगड़ा रखो ना ज़ात पात, जे मिलणा धुर दे माहीआ। एह गोबिन्द दी सिख्या ख़ास, जो ख़ास ख़ालसा बणाईआ। जिंना चिर इक ते ना रखो विश्वाश, विषयां तों सके ना कोए बचाईआ। ओह बवन्जा अक्खरी ते बवन्जा पत्ते ताश, ते बावन ने एह जगत खेल चलाईआ। किसे नूं बिना पुरख अकाल तों मिली नहीं कदे दात, जो आया सो मंग के आपणा झट लँघाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां दा पूरा होणा वाक, पूरब दा लेखा दए समझाईआ। सब दी पुन्नी आस, वेखणहारा थांउँ थाँईंआ। जिन्हां दे हथ्थ विच फड़या आकाश, सत्तां असमानां तों परे डेरा लाईआ। जिन्हां सिर ते पाणी चुक्कयां उन्हां जन्म जन्म दी बुझा लई प्यास, थाली खड़काण वालीआं अग्गे भुक्ख रहे ना राईआ। जेहड़े मार के आए वाट, दूर दुराडे बण के पाँधी राहीआ। हज़रत ईसा कहे उन्हां नूं जगह मिलणी उपर टाप, टोपी हैट ना कोए चतुराईआ। हज़रत मूसाउल सलाम कहे मेरे पैग़म्बरां दे पैग़म्बर दा पूरा हो गया खाट, खटीआ निक्की जेही नज़री आईआ। ऐ जन भगतो तुहाडे पिछले जन्मां दा पूरा हो गया पाठ, अक्खरां दी होए ना कोए पढ़ाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो सन्मुख हो गई तुहाडे टाक, वाक कर के आए चाँईं चाँईंआ। ओह तुहानूं सब नूं देण आया शाबाश, दुआबे वाल्यां दा छब्बा दए गवाहीआ। आह देखो शंकर तकदा उतों कैलाश, जिस विच जोत दा प्रकाश, सदा उहदे रहीए साथ, सीने लग्ग के झट लँघाईआ। ब्रह्मा कट के आया वाट, विष्न खोल्ह के ताक, भण्डारा देवे चाँईं चाँईंआ। इन्द्र लै के पाणी दा ग्लास, ख्वाजा ज़ोर नाल रिहा आख, कूक कूक सुणाईआ। गोबिन्द सुत्ता कट के आपणी वाट, मंज़ल पन्ध मुकाईआ। ओ जिस वेले फेर आवां मेरा पुरख अकाल होवे साथ, दोवें मिल के झट लँघाईआ। एसे कर के साढे तिन्न हथ्थ नूं सम्बल किहा ख़ास, जिस विच आपणा डेरा लाईआ। इक दा होण लग्गा प्रकाश, नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा आपणा हुक्म सुणाईआ।

गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभ आपणी करे मेहरे, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जन भगतो सृष्टी दे व्याह हुन्दे सवेरे, चार जुग दी रीती चली आईआ। ते शादी करन कराउण वाले रहिंदे विच अंधेरे, आत्मा परमात्मा दा दरस कोए ना पाईआ। सारयां उठ के मुक्खों कहिणा आत्मा परमात्मा दे साचे फेरे, तत्तां वाला गुरु जगत कन्त ना कोए हंढाईआ। जो आया सो चढ़ गया बेड़े, दरगाह साची सोभा पाईआ। सतिगुर मिल्या सिँघ शेरे, शहिनशाह नूर इलाहीआ। जिस ने आपणे पा लए घेरे, पल्लू लए बंधाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर चल्ल के आए भगतां दे डेरे, पुज्जे चाँई चाँईआ। सारे हस्स के कहिण अन्त होणे नहीं कदे नखेड़े, गुरमुख विछड़ कदे ना जाईआ। गुरमुखो बैठ जाओ नाल जेरे, जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज दा लहिणा दिता मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर हथ्थ करो खड़े, बिन हथ्थां हथ्थ उठाईआ। जेहड़े तुसां मेरे नाम दे अक्खर पढ़े, सो सहिज नाल दयो सुणाईआ। जेहड़े दीन मज़्ह़ब दे घाड़न घड़े, तन वजूद माटी वंड वंडाईआ। जेहड़े अग्नी विच सड़े, आपणा आप गंवाईआ। जेहड़े मकबरयां विच पड़े, मिट्टी ख़ाक डेरा लाईआ। सच दस्सो अन्त गए केहड़े घरे, घराना कवण सुहाईआ। सतिगुर शब्द कदे ना मरे, आपणा आप ना कदे मिटाईआ। सारे भय विच बैठे डरे, सिर सके ना कोए उठाईआ। इक गोबिन्द किहा अग्गे इक ते इक तों दो ते निशानी मेरे दो कड़े, कूड़ कुड़यार दा लेखा दिता मुकाईआ। ऐ मेरे पुरख अकाल दीन दयाल आ तैनूं वखावां जेहड़े गुरमुख तेरे पौड़े चढ़े, चढ़दे लहिंदे दक्खण पहाड़ वेख चाँई चाँईआ। इन्हां पैणा नहीं किसे ज़ात पात दे गढ़े, डूँग्घी डल्ल ना कोए सुटाईआ। इहनां उत्ते इक्को सतिगुरु शब्द शब्द किरपा करे, कृपाल हो के आपणे अंग लगाईआ। ऐ मेरे मालक जिस नूं तूं आप फड़ें, वारस हो के सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। फिर ओह क्यों ना लोकमात विच तरे, जिस नूं तारनहारा आपणे कंध टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गुर अवतार कहिण सारे हिसाब वाले बस्ते, पुस्तकां बंध बंधाईआ। असीं चल्ले आकाशां पातालां तों बाहर दे रस्ते, भज्जे चाँई चाँईआ। पुरी लोअ खण्ड ब्रह्मण्ड वेखे वसदे, कोटन कोटि सोभा पाईआ। नौ गृह वेखे नच्चदे, भज्जण थांउँ थाँईंआ। लारे तके गोबिन्द वाली अक्ख दे, जो माछूवाड़े डेरा लाईआ। जिस दर्शन कीते प्रभू प्रतख दे, जल्वागर नूर अख्वाईआ। फेर सुख माणे सेज वाली कक्ख दे, यारड़ा सथर हंढाईआ। फेर रंग वेखे आपणी रत दे, जो रत्न अमोलक हीरे रही बणाईआ। फेर सहारे वेखे आपणी पति दे, पतिपरमेश्वर दए वड्याईआ। फेर निशान वेखे फट्ट दे, घाउ डूँग्घे सोभा पाईआ। फेर गुर अवतार पैग़म्बर वेखे नच्चदे, भज्जण वाहो दाहीआ। खुशीआं

विच टप्पदे, आह मिलणा धुरदरगाहीआ। जिस नूं जुग चौकड़ी रहे लभ्भदे, खोज्जयां हथ्थ किसे ना आईआ। नाअरयां जैकारयां विच रहे सद्द दे, कलामां विच पा दुहाईआ। रस्ते दस्सदे रहे शाह रग दे, नौवां दवारयां बाहर समझाईआ। पड़दे लाहुन्दे रहे चौथे पद दे, मंज़ल कूड़ क्रिया गंवाईआ। वाजां मार रहे सद्दे, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई कहो चाँईं चाँईंआ। वणजारे बणे रहे मज़्हबां वाले जग दे, दीन दुनी वंड वंडाईआ। अंग्यारे बणे रहे शरअ वाली अग्ग दे, अग्नी तत जलाईआ। आबेहयात प्याले प्याउंदे रहे मध दे, नाम खुमारी इक समझाईआ। हिस्से पाउंदे रहे मास नाड़ी हड्ड दे, तन वजूद वंड वंडाईआ। तेरे नाम दे प्रभू अल्ला राम कृष्न सतिनाम वाहिगुरु दे झण्डे रहे गड्ड दे, आपणा डंक वजाईआ। पर तेरा राह तकदे रहे कद दे, भविक्खतां विच गए सुणाईआ। खेल होणे सूरे सरबग दे, जो शहिनशाह अख्वाईआ। सूफ़ी फ़कीर हो के रहे नच्चदे, मान सिँघ बुल्ले दा रूप हो के वास्ता लए पाईआ। ओह गुर अवतार पैग़म्बर मनुषां वांगू वणजारे रहे पग दे, काम क्रोध विच आपा आप समाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग गए लँघदे, आपणा पन्ध मुकाईआ। प्रभ असीं वी रहे संगदे, उच्ची कूक ना कोए सुणाईआ। किसे ने खेल कीते जमना किनारे माण बख्शे गंग दे, तट्टां दे वड्याईआ। तेरे नाम नूं बन्नृ बन्नृ के रहे टंगदे, किलीआं नाल लटकाईआ। पूरे रस नहीं दिते किसे नूं अनन्द दे, सुख विच सुख ना कोए वखाईआ। जो गुर अवतार पैग़म्बरां किहा उस ने हिस्से पाए दीनां मज़्हबां विच कंध दे, कंधे नाल कंधा ना कोए मिलाईआ। ओह मुहम्मद वेख आपणे निशान तारे चन्द दे, चन्द चांदनी की समझाईआ। सदी चौधवीं दिन जांदे लँघदे, पोटयां उत्ते लेखे लए गिणाईआ। हुण वणजारे रह गए इक दो चार डंग दे, डंगर खाण वाल्यो तुहाडा होए कोए ना सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणी कार कमाईआ। तेई अवतार कहिण नमों नमों नमों, निमस्कार प्रभू सरनाईआ। पैग़म्बर कहिण शमों शमों शमों, शबे रोज़ तेरी वड्याईआ। दस गुरु कहिण तमों तमों तमों, स्वास स्वास तेरा नाम ध्याईआ। पुरख अकाल कहे ओ बच्चयो ते चार जुग दे वणजारयो जे मेरा हुक्म मन्नों, दीन मज़्हब दा झगड़ा दयो मुकाईआ। ते ना कोई खुशी ते ना कोई ग़मों, सिख मुरीदां तों पल्लू लओ छुडाईआ। ना कोए जनणी बण के कुख्खों जम्मो, ते ना कोए होए जणेंदी माईआ। ते ना कोए नेत्र रोवे छम छमों, सीता राम ना कोए रखाईआ। ना कोए रथ चलाए बणो, रासां हथ्थां विच हिलाईआ। ना कोए फाँसी चढ़ाए फड़ के कन्नो, सलीब नाल लटकाईआ। ना कोए मुहम्मदा शरअ विच डंनो, जल्वागर इक नूर इलाहीआ। ना कोए निरगुण सरगुण इक धार जाणो तनो, गोबिन्द खण्डा ना कोए चमकाईआ। चार जुग दा खेल कीता प्रभ ने संन्हो संन्हो, आदि अन्त ना कोए समझाईआ। हुण दस्सो किस नूं

संवारो ते किस नूं डंनो, आपो आपणे गुरमुख दयो वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। तेई अवतार कहिण असीं आए विच लोक मिरतू, मिरतक हो के आपणा आप गंवाईआ। ओ प्रभू तेरा खेल वेख्या पिरतू, प्रितपाल तेरी वड्याईआ। तूं चार जुग दा फिरतू, जुग जुग भज्जें वाहो दाहीआ। तूं जगत वासना दा हिरसू, हवस विच सारे दिते लड़ाईआ। तूं नाम कलमे दा किरसू, कंजूस हो ना किसे वरताईआ। जे असीं तेरे पैग़म्बर अवतार गुरु फिरकू, ते फिरके बणाण वाला तूहें नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पैग़म्बर कहिण असीं आए चल्ल के बिना कदमां, कदीम दे विछड़े दईए जणाईआ। सजदा करीए नाल अदबां, अदाब विच वड्याईआ। वेखीए सूरबीर मर्दां, गुरमुख खोज खुजाईआ। जिन्ह्रां दीआं पूरीआं होईआं अर्ज़ां, अर्ज़ आपणे लेखे पाईआ। जन्म कर्म दीआं मेटीआं दरदां, दुखियां दुःख रहे ना राईआ। शरअ दीआं करद बणाईआं करदां, कत्लगाह विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। जिन्ह्रां दे हथ्थां उत्ते फड़ाईआं फ़रदां, ओह साथी कृष्न दे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गुरु दस कहिण इक जोत प्रभ आउंदे, आ के खुशी मनाईआ। इक पुरख अकाल प्रभ ध्याउंदे, दूजा नाम ना कोए वड्याईआ। इक सचखण्ड दवार सुहाउंदे, सोहणा रंग रंगाईआ। इक्को तेरा दर्शन पाउंदे, दूसर अक्ख ना कदे मिलाईआ। प्रभ चरणी सीस निवाउंदे, निउँ निउँ लागण पाईंआ। गल पल्लू वास्ता पाउंदे, बेनन्ती रहे सुणाईआ। असीं बथेरा दीन मज़्हब नूं रहे भुलाउंदे, खण्डा खड़ग चमकाईआ। फेर वी तेरी ओट रहे तकाउंदे, ओड़क तूं ही सब दा पिता माईआ। हुण सारे इक्ठे हो के दर तेरा सुहाउंदे, सोहणा रूप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैग़म्बरो आओ अगली करो सलाह, सुल्हकुल जणाईआ। किस नूं मन्नो मलाह, बेड़ा कौण कंध उठाईआ। केहड़ा चंगा राह, सच दयो समझाईआ। केहड़ा चंगा नाँ, जिस नूं गा के झट लँघाईआ। सारे कहिण साडी इक दे अग्गे दुआ, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जो मालक मेहरवान बेपरवाह, महिबूब नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो तक्को इक्को अक्ख, बिना अक्खां अक्ख उठाईआ। वेखो खेल प्रतख, पारब्रह्म करे गुसाँईंआ। जिस ने मार्ग दस्सया वक्ख वक्ख, ओहो रिहा जणाईआ। सब दा सांझा इक्को हक, हकीकत दए गवाहीआ। पिछली कीती डोरी डोरी बन्न्हण वाल्यो लेखे विच दयो कट, कटाक्ष धुर दा नाम लगाईआ। इक भगत दवार ते इक प्रभू दा हट्ट, हट्टी वाला गुलाटी दए गवाहीआ।

तकड़ी नूं पासकू रखया जेहड़ा तोले घट्ट, घाटा पिछला पूर कराईआ। नानक सतिगुर सब नूं साची तोलणी गया दस्स, तेरा तेरा राग अल्हाईआ। भगतो तुहाडा सब दा लहिणा पूरा कीता हक, पिछला पूर्ब रिहा ना राईआ। अग्गे जगत ठगौरीयों जाणा बच, ठग्गां हथ्थ कोए ना आईआ। एह काया माटी कच्च, सिर सके ना कोए उठाईआ। जिस अन्दर मनुआ रिहा नच्च, वासना नौ दवार हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू करीए की गल्ल, गलवकड़ी इक दूजे नाल पाईआ। तेरा चार जुग दा छल, अछल छलधारी समझ कोए ना आईआ। जे तारन लग्गा तार दिते बावन हो के दवारे बलि, दिती माण वड्याईआ। खेल करके विच कल, कलि कल्की वेस वटाईआ। बैठ के निहचल धाम अटल, अटल हुक्म जणाईआ। गुरमुखो वेखो अमृत सब दे उत्ते बरसदा जल, ओह पिछला घनईया रिहा वरताईआ। तुहाडे उत्ते दुःख रहे ना मारूथल, अस्गाहां विच्चों पार लँघाईआ। की हो गया जे तुहाडा मालक हो के वाहुण वाला हल, ते हल वाह के कूड़ी जड़ दए उखड़ाईआ। जिथ्थे चाहे उथे लए ठल्ह, अग्गे पिच्छे ना कोए कराईआ। ओह जिस दे हथ्थ विच लोटा ते मुसल्ला बद्धी खल्ल, इटारसी वाल्यां दा पिछला भाई आ। प्रगट सिँघ नूं मिलणा फल, ईसा मूसा दा कलाक सब नूं दए वखाईआ। ताड़ी वजा के आपणा दस्स हल्ल, कूक कूक सुणाईआ। ओह गुलज़ार सिँघ अग्गे आवे चल, कलयुग दा करतब दे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर वेखो चढ़दे, लहिंदे दक्खण पहाड़ ध्यान लगाईआ। सारे इक्को ढोला पढ़दे, तूं मेरा मैं तेरा रहे गाईआ। इक्को कन्त सुहागी वरदे, दूजी करी ना कोए कुड़माईआ। दुनी वाली मौत कदे ना मर्दे, भगत भगवान मिल के वज्जे वधाईआ। इन्हां इश्नान करने इक्को सर दे, तीर्थ तट दा डेरा ढाहीआ। काया मन्दिर अन्दर वड़दे, जगत दवारे पल्लू आए छुडाईआ। दर्शन करन नरायण नर दे, निज नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। वासी हो गए आपणे घर दे, घराना कूड़ा गए छुडाईआ। एह ना जम्मदे ना मर्दे, प्रभ आपणी गोद रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गोबिन्द कहे मैं सेजा सुत्ता छेती, आपणा आसण लाईआ। फेर प्रभ दा हो के भेखी, कथा दिती दृढ़ाईआ। पुरख अकाल ने हुक्म कीता गोबिन्द तैनूं फेर वेखणी पए आपणी खेती, राखा हो के फेरा पाईआ। लद्द जाणे केत केती, कोटन कोटि पन्ध मुकाईआ। उस वेले नानक दी धार जोत निरँकार सब दा रूप धरे बेटा बेटी, पिता पूत गोद सुहाईआ। जन भगतां दी चार जुग दी वेखे नेकी, निक्के वड्डे लए मिलाईआ। जिन्हां ने आपणी आत्मा परमात्मा दे घर वेची, ओह

गोबिन्द दे साथी ते गोबिन्द दे राहीआ। एह धुर दी आदि अन्त दी लेखी, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। जिस वेले गोबिन्द पहली वार गुजरी तों नहाता सी केसीं, वाल हथ्थां विच फड़ाईआ। दो हथ्थां दी ताड़ी मार के किहा मैं आदि अन्त दा परदेसी, इक घराने डेरा कदे ना लाईआ। वेखीं मैनूं प्यार विच कदे ना वेची, किसे होर ना हथ्थ फड़ाईआ। मेरे उत्ते देवीं कदे ना खेसी, बाल्यां वांग चाँईं चाँईंआ। हथ्थ फेर के किहा माता मैं इक्को वार तेरे अग्गे भुगतणी पेशी, फेर हथ्थ कदे ना आईआ। किते माण विच मार ना बहीं शेखी, कि मेरा बच्चा वड्डा वड्डा सोभा पाईआ। ते मेरा खेल खुशीआं विच वेखीं, नैणां नीर ना कदे वहाईआ। गुजरी खुशी दे विच लेटी, आसण ल्या सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। माता गुजरी हस्स के किहा आओ मेरे लाल, छाती लवां लगाईआ। गोबिन्द ढाई कदम पिच्छे मारी छाल, हलूणा ला के ताली दिती वजाईआ। आपणे अग्गे मार के लकार, खुशी विच सुणाईआ। माता तेरा मेरा जगत वाला नहीं प्यार, लालसा विच कदे ना आईआ। मैं ते मंज़ल चढ़नी दुष्वार, मेरा साहिब रिहा वखाईआ। पंज प्यारे मुक्खों कहि दयो गुरमुक्खों कोए ना बणिओ ग़द्दार, एह गोबिन्द गया दृढ़ाईआ। सिर ते कदे ना कूके काल, महाकाल बैठा सीस निवाईआ। सब दी करे सदा प्रितपाल, प्रितपालक हो के वेख वखाईआ। ओह निक्के निक्के जिस दे बाल, बचपन आपणे नाल निभाईआ। जे कोई सौं गया ते उस नूं साथी फड़ के दयो उठाल, सोया रहिण कोए ना पाईआ। ना कोए शाह ते ना कोए कंगाल, गुरमुखो इक्को जिहे सोभा पाईआ। जिन्हां दा इक प्रभू दलाल, विचोला होर ना कोए रखाईआ। मस्तक चाढ़ के रंग गुलाल, टिक्के धुर दे दिते लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर इक दूजे नूं लावण पोटे, हौली हौली हिलाईआ। जिस ने साथों कराए मनुषां दे मज़्बां दे विच टोटे, हिस्सयां दे विच वंड वंडाईआ। आपणे नाम नूं खरे बणा के खोटे, टकसाल जगत वाली चलाईआ। हथ्थां विच फड़ा के लोटे, वुज़ूआं विच टिकाईआ। पाणी दे विच दे के गोते, तीर्थां विच नुहाईआ। हथ्थां विच फड़ा के सोटे, गुर अवतार पैग़म्बर दिते लड़ाईआ। तेड़ बन्न्हा के भोथे, नाद नाच दिते कराईआ। मार्ग दस्स के औखे, हुक्म इक सुणाईआ। पढ़ा के सिफ्ती पोथे, सोहणे दिते जणाईआ। असीं देंदे आए होके, हुक्म मन्नो धुरदरगाहीआ। सानूं गुर अवतार पैग़म्बर बणाया नाल मौके, पिच्छे होर दा होर हुक्म चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। पैग़म्बर कहिण सानूं पढ़ा दिती अरबी, इलम आलमां तों बाहर जणाईआ। साथों विका दिती गऊ दी चरबी, ओ जम्मू वाल्यो तिन्ने गऊआं सानूं दयो वखाईआ। साथों शरअ बणा के

करदी, कत्लगाह विच दुहाईआ। साडी उम्मत कलमे रही पढ़दी, अल्ला हू अकबर दा नाअरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण जगत झगड़े मन के, मन का मणका ना कोए भवाईआ। वेखण प्रकाश सूर्या चन्द दे, अन्दर दी रीती चली आईआ। कोटन कोटि बच्चे गए जण के, मात पिता रूप बणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण दुहाई भगत गया कोए ना बण के, जिंना चिर प्रभू सिर हथ्थ ना टिकाईआ। एह खेल पंज तत तन के, तन वजूद दी करे ना कोए सफ़ाईआ। जन भगतो सुण लओ नाल कन्न दे, जिन्हां हथ्थ कन्नां उत्ते लए रखाईआ। सतिगुर शब्द गुरमुखां नूं कदे ना जाए डंन के, जद आवे ते लै के पार लँघाईआ। सब दे बेड़े जावे बन्न्ह के, भार आपणे कंध उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मार्ग इक दरसाईआ। अवतार कहिण पैग़म्बर कहिण असीं मणके वेखे इक्की नौं, पिछली नज़री आईआ। एह गुरमुख उह, जिन्हां दा पूरब जन्म सोभा पाईआ। ओह सरगुण तों सरगुण आए हो, निरगुण निरगुण रंग रंगाईआ। जिस वेले गोबिन्द पहली वार सिख्या दा रूप दस्सया इक दो, इक्की आपणे रंग रंगाईआ। उसे दी गानी नाल गए छोह, बांका छोहरा रूप बण के दरस दखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण चार जुग तों थित वार रहे तकदे छब्बी पोह, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सब दे कोलों सब कुछ लए खोह, आपणा हुक्म वरताईआ। असीं इक्त्ठे बण के आए गरोह, भज्जे चाँईं चाँईंआ। इस दा भेव ना जाणे को, कोटन कोटि बैठे ध्यान लगाईआ। बिना भगतां तों किसे अन्दर ना होए लो, लोयण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। जिधर वेखो सारे रहे रो, हाए बौहड़ी मिल्या ना धुर दा माहीआ। जिस दी आत्मा परमात्मा नाल जाए छोह, अन्त शहिनशाह विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडे अन्दर आई हैरानी, हैरत विच जणाईआ। आदि तों लै के अन्त तक जुग चौकड़ी सतिगुर शब्द दी सदा शैतानी, शरअ विच सारे दिते लड़ाईआ। आपणी सदा वेखे इक्को जेही जवानी, गुर अवतार पैग़म्बर बाल जवान बुढ्ढे बणाए अन्त कबरां विच सवाईआ। जद करे ते आपणयां भगतां उत्ते मेहरवानी, मेहरवान महिबूब हो के आपणे गले लगाईआ। सदा देवे अमृत रस ठंडा पाणी, जगत तृष्णा भुक्ख गंवाईआ। जिन्हां गुरमुखां दे हथ्थ विच इक इक काना कानी, कायनात देण हिलाईआ। सारी दुनिया दिसदी फ़ानी, अन्त नज़र कोए ना आईआ। ओ गुरमुखो तुहाडी लेखे लग्गे इक इक चवानी, जो पल्ले बन्न्ह के आपणा झट लँघाईआ। तुहाडे पिच्छे दिती गोबिन्द गुरु कुरबानी, करबले दा लेखा मुहम्मद रिहा दरसाईआ। जन भगतो तुहाडी इक्को मंज़ल रुहानी,

रूह बुत दा मेला ल्या मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण असीं वेखणा खेल मदारी, आए चाँईं चाँईंआ। ओ गुरमुख अग्गे ल्या पटारी, पटने वाले दा लेखा दे समझाईआ। जिस दी सोहे मुछ ते दाढ़ी, केसां नाल वड्याईआ। उस ने गुरमुखां दी आत्म बणाई लाड़ी, लाड़ा इक्को धुर दा माहीआ। सचखण्ड दवारे जांदा वाड़ी, मन्दिर इक्को इक सुहाईआ। सब दी सेजे सौंदा इक्को वारी, जोती जाता हो के वेख वखाईआ। गुरसिखो तुहाडी अज्ज धार ना रहे कुँवारी, मालक हो के लए प्रनाईआ। सारे गुरमुख बैठे बैठे मस्तक धूढ़ लाओ छारी, एह पहलों सारे गए भुलाईआ। नौ वार चरण रगढ़ के ख़ाक उत्ते तुहाडे थल्ले फेरां बहारी, सतिगुर हो के आपणी सेव कमाईआ। हुण तुहाडी आई वारी, भावें गालां कढो भावें दयो वड्याईआ। एह कल्ल नूं दस्सांगा जिस वेले नौ बीबीआं गीत गाउणगीआं पहाड़ी, किस तरह पहाड़ां विच्चों कढ के भगत दवारे दयां बहाईआ। ज़रा हुण खेल वेख्यो कलयुग दी माया नारी, आपणा लेखा दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। गुरमुख चारे बणे कान्ही, काहन राम वेख वखाईआ। पैग़म्बर कहिण दुनिया फ़ानी, अन्त रहे ना कोए खुदाईआ। गुरुआं किहा कूड़ जिस्मानी, तन वजूद ना कोए वड्याईआ। जो छड के गया आपणी जवानी, बिरध बाल ना वंड वंडाईआ। सब ने आसा रखी लेखा लिख्या बिना कलम कानी, कायनात जणाईआ। जिस वेले दीन दुनी विच वधी बेईमानी, बेवा सृष्टी दृष्टी नज़री आईआ। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ पाक रिहा ना पाणी, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। साध सन्त दी मंज़ल ना रहे रुहानी, शास्त्र पढ़ के झट लँघाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां नूं आउणी हानी, सिख मुरीद कलमे जाण भुलाईआ। उस वेले पुरख अकाल परवरदिगार सांझे यार करनी खेल अगम्म महानी, महिमा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सीढ़ी कहे मैं बन्न्हा सेहरा, सेहरा सीस गुंदाईआ। जन भगतो गोबिन्द दा वक्त सदा सद नेड़ा, दूर दुराडा पन्ध ना कोए मुकाईआ। जिस दा साढे तिन्न हथ्थ विच वेहड़ा, सम्बल सोभा पाईआ। ओह सब दा बन्न्हू के बेड़ा, आपणे कंध टिकाईआ। तत्तां वाले सरीर दा छड के झेड़ा, झगड़ा रिहा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। ओ गुरमुखो सतिगुर कदे ना करे बेईमानी, शब्द गुरु इक वड्याईआ। एह सरीर जगत निशानी, जो जुग जुग आपणी खेल खिलाईआ। तुहाडे वेंहदयां हो चलया जे फ़ानी, आपणा आप छुपाईआ। जाण दे पिच्छों ना बिरध ना बाल लभ्भे ना लभ्भे जवानी, जोबन रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ।

वेखो गुरमुखो शब्द गुरु पंज तत विच चलदा फिरदा ते तुरदा, तुहाडे साहमणे नज़री आईआ , हुण वेंहदयां वेंहदयां हो चलया जे मुर्दा, चारे कान्नी लैण उठाईआ। क्यों अकाल पुरख दा भाणा कदे ना मुड़दा, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। बिना सतिगुर शब्द तों शब्द नाल कोए ना जुड़दा, जोड़न वाला ज़ोर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। ओ जन भगतो जे तत्तां वाला जाए मर, ते ख़ुशी लओ मनाईआ। पूरन गया ते फेर काहदा डर, मज़े नाल आपणा झट लँघाईआ। जे मैं सतिगुर होया तुहाडे अन्दर जावांगा वड़, एह मेरी बेपरवाहीआ। जिथ्थे होवोगे उथे जावांगा खड़्, राती सुत्तयां लवां जगाईआ। जे तुसीं मेरे नाल पओगे लड़, हथ्थ जोड़ के वास्ता पाईआ। क्यों तुसीं मेरा रहिण वाला घर, तुहाडे बिना दर ना कोए सुहाईआ। तुसीं मेरा देण वाला वर, वर दाता तुहाडा इक्को माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। जन भगतो जे सतिगुरु जीउँदा जागदा, ते सब नूं दए समझाईआ। जे सतिगुरु रूप होवे शब्द अगम्मी अवाज़ दा, लेखा दए बणाईआ। जे सतिगुरु होए सारी सृष्टी दी दृष्टी दे समाज दा, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। जे सतिगुरु होवे ओह मालक उस अगम्मी राज दा, जिथ्थे रईयत दो जहान सोभा पाईआ। जे सतिगुरु होए आदि दा, अन्त होए सहाईआ। जे सतिगुरु होए खाण पीण वाला रोटीआं, ते मढ़ी मसाणां समाध दा, ते फेर मढ़ीआं गोरां विच डेरा लाईआ। गुरमुखो तुसीं बूटा फलया उस बाग़ दा, जिस नूं गोबिन्द गया लगाईआ। पारसीआं दे कोल सी दीपक इक चिराग़ दा, सब नूं करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल इक जणाईआ। जन भगतो जे सतिगुरु जाए लुक, अक्खीं नज़र ना आईआ। फेर दुनिया दा प्यार जाए मुक, मुहब्बत विच ना कोए वड्याईआ। ख़ुशी विच वंडे कोए ना दुःख, दर्दीआं दर्द ना कोए वंडाईआ। गोदी लए कोए ना चुक्क, अमृत सीर ना कोए प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणी कार कमाईआ। जन भगतो पूरन दा सरीर गया छुट, तन नज़र कोए ना आईआ। तत्तां वाला नाता गया टुट्ट, गंढ ना कोए पवाईआ। पंजां लिखारीआं ने गाने बन्ने गुट्ट, बांह कढ के देण समझाईआ। जन भगतो तुसीं उस प्रभू दे पुत्त, जिस ने साडी सेवा लिखण उत्ते लाईआ। तुसीं आउंणा नहीं मात गर्भ उलटे रुख, जननी जणे कोए ना माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आपणे उत्ते पाईआ। पर्दा पा के हो गया ओहले, जन भगतो पूरन देह दा कीता विहार, अन्त दा समां दिता दरसाईआ। हरिसंगत इक्ठी होई ख़ुशीआं खिड़ी बहार, गुलशन आपणा गुल महकाईआ। भगत

दवारे सोहणा लग्गा दरबार, दरबारी देण गवाहीआ। पता नहीं एस सरीर दा अन्त किथे होए किथे देण साड़, गुरमुख विहार करन कोए ना जाईआ। किरपा कर के तुहाडे साहमणे कीती कार, करता आप भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी नज़र इक उठाईआ। जन भगतो तुहाडे प्रेम दी बण गई अर्थी, सोहणी सेज सुहाईआ। अग्गे सिक्खी जाणी परखी, वेख्यो भुल्ल रहे ना राईआ। हुण चढ़ाउणा नहीं उत्ते कोई चरखी, देगां विच सुटाईआ। इक्को निंदया कराउणी आपणे घर दी, एह मेरी खेल बेपरवाहीआ। जेहड़ी आत्मा परमात्मा वरदी, कन्त कन्त कन्तूहल हंढाईआ। ओह वाज सुणे ना कदे कन्न दी, मन विच हल्काईआ। तत्तां वाली खेल सदा तन दी, जुग चौकड़ी चली आईआ। सब तों वक्खरी धार गोबिन्द चन्न दी, चन्द सतारे देण गवाहीआ। जेहड़ा हुक्म संदेशा शब्द घलदी, जोत निरँकारी इक अख्वाईआ। उस ने सफा मेटणी कलि दी, कलकाती दए मिटाईआ। एह कथा कहाणी बलि दी, बावन रिहा समझाईआ। ओ गुरमुखो किसे नूं ख़बर नहीं घड़ी पल दी, ते गुरु दी मौत दी समझ किसे ना पाईआ। जितनी खेल सम्मत पंज विच छल दी, छल विच सारे दिते भुलाईआ। एह धार वकारी दल दी, चारों कुण्ट दिती भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। जन भगतो वेखो नौ फ़ुट दा दाइरा, सोहणा नज़री आईआ। पंजां गुरमुखां दा पहरा, उठ के दयो वखाईआ। जिन्हां दे तेड़ कछहिरा, गोबिन्द रंग रंगाईआ। जिन्हां विच्चों इक बोला जिस नूं कहिंदे बहिरा, एह ओह रिछ जिस दी जून गोबिन्द दे प्रशाद दिती बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी आपणी खेल वखाईआ। गुरमुखो प्रेम विच पैण नहीं देणी फुट्ट, फुट्टयां जोड़ जुड़ाईआ। अग्गे वास्ते किसे निमस्कार नहीं करनी अग्गे आ के नौ फ़ुट, दूरों सीस देणा झुकाईआ। मेरा वेखो बज्झा गुट्ट, पंज लिखारी देण गवाहीआ। लग्गी प्रीत ना जाए टुट्ट, टुटया लवां जुड़ाईआ। जे मैं तुहानूं इक वार कहि दिता पुत्त, ते पिता हो के मुख ना कदे भवाईआ। भावें नराज रहो भावें रहो खुश, एह वी तुहाडे हथ्थ वड्याईआ। तुहाडे पिच्छे भावें कटणी पए भुक्ख, भुक्खा रह के झट लँघाईआ। फेर वी तुहानूं उस जोती नूर दी रखणा विच कुख्ख, जिथ्थे दए ना कोए सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल खिलाईआ। जिस वेले सतारां हाढ़ छब्बी पोह दा होए विहार, सोहणा रंग रंगाईआ। कपूर सिँघ केहर सिँघ नाज़र सिँघ कृपाल सिँघ एह होणगे मेरे नाल पहरेदार, सदा सेव कमाईआ। नौ फ़ुट दे अन्दर जे कोई आए करे निमस्कार, इन्हां मिले सज़ाईआ। इन्हां मंग मंगी सी जिस वेले मोगे दा कीता सी विहार, खुशीआं विच चल्ल के आपणा दिन मनाईआ। कोई बीबी सतिगुर दे कोल आ के गल्ल

ना करे नाल ज़बान, कलाम नाल बचन ना कोए सुणाईआ। दूरों मन्दिरां मस्जिदां शिवदुआले मट्ठां वांगू कर जाया करो सलाम, निउँ निउँ आपणा झट लँघाईआ। पर याद रखयो सतिगुरु कदे नहीं हुन्दा बदनाम, बदी विच कदे ना आईआ। उस दे कोल आपणी आप पहचान, दूसरे दी पहचान अक्ख ना कदे टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जे एह हुक्म गुरमुखो तुहानूं परवान, ते बाहवां लओ उठाईआ। जन भगतो सुणो नाल चाअ, चाउ नाल जणाईआ। जे कोई गुस्सा रोस ते गिला दयो सुणा, खुशी नाल उठाईआ। जे चाहो ते भुल्ल लओ बख्शां, एह अक्खर दयां मिटाईआ। क्यों नानक दा बाबर दे नाल जेहड़ा बणे गवाह, ते बाबर दा सरदार कपूर सिँघ नज़री आईआ। जिस ने गल विच हार दिता पहना, नानक दी गोबिन्द झोली पाईआ। एसे पिच्छे सारे बख्शे जाणे गुनाह, लेखा आपणे विच टिकाईआ। जो आदि तों अन्त तक अकाल पुरख सब दा पिता ते सब दा माँ, बालक सारे आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। एह हार कहे मैं गोबिन्द दी ओह निशानी, जो कपूर सिँघ ल्या के गल विच पाईआ। मेरी प्रभू दे अग्गे बेनन्ती ज्यों मुकद्दमा दीवानी, पिछला दूर दा चलया आईआ। इक दे पिच्छे बाकीआं दी लेख लेखणी मिट जाए कानी, कायनात विच नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। कपूर सिँघ जे तूं ना होवें विचोला, बचया रहिण कोए ना पाईआ। ना कोई पड़दा ते ना कोए ओहला, सच दिता सुणाईआ। इक्को शब्द इक्को ढोला, इक्को राग अलाहीआ। तुसीं मेरे साहिब ते मैं तुहाडा गोला, जुग जुग सेव कमाईआ। की हो गया जे बदल के आ गया एस विच चोला, काया माटी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एह तुहाडा खुशीआं वाला होला, ते खुशीआं रंग रंगाईआ। गोबिन्द कहे मेरा माछूवाड़े दा सिंघासण, सोहणा रंग रंगाईआ। मेरा जोत नूर प्रकाशन, दो जहान रुशनाईआ। मेरा खेल पृथ्मी आकाशन, दीन दुनी वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रंग इक रंगाईआ। चार कहार चुक्क लओ जगत बबाण, बबाण दी लोड़ रहे ना राईआ। गुरमुख दर आए परवान, परम पुरख दए वड्याईआ। सब दा इक्को जेहा माण, वडा छोटा ना कोए रखाईआ। जेहड़े गोबिन्द दे मीत दातरीआं वाले आए किरसान, कूड़ी क्रिया करन सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल पार कराईआ। गुर अवतार पैग़म्बर आ जाउ अगली करीए गल्ल, आसण उत्ते डेरा लाईआ। विछोड़ा होए घड़ी ना पल, पलकां दे पिच्छे दए समझाईआ। सब दा सांझा पूरब इक्को जेहा फल, वद्ध घट्ट ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे

खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर फोलो आपणे पोथे, पुस्तक खोज खुजाईआ। दस्सो किन्ने बहुते ते किन्ने चोखे, चोखरां विच्चों पार लँघाईआ। किन्ने सच दवारे सचखण्ड पहुंचे, प्रभ जोत विच समाईआ। किन्ने जगत जहान गए औंते, मिली माण ना कोए वड्याईआ। किन्ने ख़सम हंढा के गए खौंते, सोहणी सेज सुहाईआ। किन्ने काया माटी साफ़ करके गए चौंके, सुथरा आपणा आप बणाईआ। किन्ने प्रेम प्यार विच गाउंदे गए नाल शौंके, रसना जेहवा बत्ती दन्द हिलाईआ। किन्ने बणां विच गए सौं के, कितने धूंणीआँ गए तपाईआ। कितने चुरासी विच गए भौं के, चारे खाणी वंड वंडाईआ। कितने तूं ही तूं ही गए गाओ के, सोहणा राग अलाईआ। कितने रूप बणा के गए काउं के, मुख विष्टे नाल भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच देवे माण वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडी किताब उत्ते नहीं कोई अक्खर, अक्खरां वाली ना कोए पढ़ाईआ। अख़ीरी तेरी सेज ते तेरा सथ्थर, गोबिन्द आया हंढाईआ। छड के पाहन पथ्थर, तेरी ओट तकाईआ। साचा यथार्थ दस्स के यतन, यथा तेरा रंग रंगाईआ। दरस पा के अक्खण, पड़दा आया खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण सच छब्बी पोह दी आई रात, रुतड़ी इक महकाईआ। गुरमुख सिँघ फड़ लै लाल कलम दवात, काग़ज़ कोरे हथ्थ उठाईआ। नौ कारड लै कर हाथ, सोहणी वंड वंडाईआ। वखा दयो जल वाली परात, परातन पड़दा दे चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। परात कहे मेरे विच भरया पाणी, सच दयां सुणाईआ। जन भगतो भगवान दी तुहाडे लई बाणी, जुग जुग चली आईआ। आत्मा दा बणे हाणी, परमात्मा वेख वखाईआ। झगड़ा मुका के चारे खाणी, इक्को रंग रंगाईआ। गुरमुखो गुरमुख बणे सवाणी, जोबनवन्ती सोभा पाईआ। धुर दे मालक दी बण के राणी, दरगाह साची बहीए चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ।

३०७
२२

पहला कारड कपूर सिँघ मोगा दे नाम :

लेखा लिखो उपर काट, कारड उत्ते लिखाईआ। कपूर सिँघ जन्म कर्म दी मिटी वाट, पन्ध रिहा ना राईआ। नानक दा लेखा चुक्कया बाबर वाला साथ, सगला संग निभाईआ। तेरा गृह होया पाक, अन्दर वज्जी वधाईआ। जन्म लैणा ना

पए फेर लोकमात, झगड़ा दिता मुकाईआ। ज़रूर बच्चे दी बख्शांगा दात, ख़ाली झोली दयां भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ।

✪ दूसरा कारड कृपाल सिँघ गोले वाल दे नवित : ✪

कृपाल सिँघ तेरे उत्ते किरपा करनी, किरती पिछला नज़री आईआ। हरबंस कौर जेहड़ी पोह महीने सी मरनी, फेर जोड़ी तेरे नाल बणाईआ। प्रेम विच छोंहदे रहिणा चरणी, जगत माण मिले वड्याईआ। किसे दी तुक कन्नां थाणीं नहीं सुणनी, सूरबीर बहादर हो के आपणा बल धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ।

✪ तीसरा कारड केहर सिँघ रजीवाला फ़िरोज़पुर दे नवित : ✪

केहर सिँघ पढ़ ल्या इक कायदा, कलमा अगम्म अथाहीआ। प्रेम बख्श्या जाए बाकायदा, अन्दर वज्जदी रहे वधाईआ। सतिगुर शब्द नालों कदे ना होवें अलाहिदा, मेहर नज़र नाल तराईआ। मन बुद्धी विच कदे ना ल्या जाए जाइज़ा, अक्ल चले ना कोए चतुराईआ। तुहाडा आत्मा परमात्मा दा होया मुआहिदा, शिरक्त सके ना कोए बदलाईआ। तुहाडा तुहानूं होया फ़ायदा, देवणहार दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा दए लिखाईआ।

✪ चौथा कारड नाज़र सिँघ माढ़ी मुसतफ़ा दे नवित : ✪

चौथा कारड लिखणा सिँघ नाज़र, माढ़ी मुस्तफ़ा वेख वखाईआ। गुरमुख बणया रहिणा आजज़, निरमाणता विच सरनाईआ। प्रेम विच मन करे कदे ना साज़श, कूड़ चले ना कोए चतुराईआ। दयावान दयानिध ठाकर करे नवाज़श, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। तूं आदि अन्त तों जुगा जुगन्त सतासी जन्म दा आशक, प्रेम प्रीती प्रभ दे नाल रखाईआ। जिस वेले शंकर गल विच रखदा सी तशक ते बाशक, नौ वार धूणी उस दी आप तपाईआ। सच दी सच विच सदा अमानत, जो सतिगुर आए प्रनाईआ। जेहड़े कानपुर तों बणके आए दैंत रूप राक्श, एह उस वेले दे तेरे पिछले भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा अक्खर इक पढ़ाईआ।

✪ पंजवां कारड माझा संगत दे नवित : ✪

पंजवां ख़त वाचणा माझा संगत, शब्द गुरु जणाईआ। जिस वेले नानक ने लैहिणे नूं लाया सी अंग ते बणाया सी अंगद, अन्दर वड़ के इक दिता समझाईआ। सतिगुरु शब्द ते शब्द गुरु दा प्रेम प्रेम दी धार पंगत, वड्डा छोटा ना कोए बणाईआ। नाम भण्डार किसे दवारयों नहीं जाणा लैण बणके मंगत, झोली किसे अग्गे ना डाहीआ। मैं तेरी पुरख अकाल कोल बणाई सनद, लेखा दिता लिखाईआ। जिस वेले कलयुग आवे अन्त, पुरख अकाला फेरा पाईआ। गुरमुखां बणाए बणत, भगतां रूप दरसाईआ। झगड़ा मिटा के स्वर्ग बहिशत जन्नत, सचखण्ड साचे आप बहाईआ। आत्मा परमात्मा दा बण के कन्त, सच स्वामी ल्ए प्रनाईआ। माझे वाल्यो तुहाडा सदा प्रेम रहे बेअन्त, बेपरवाही विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा घर दरसाईआ।

✪ छेवां कारड मालवा संगत दे नवित : ✪

छेवां कारड मालवे वाल्यो गोबिन्द दी धार दा पैणा मुल्ल, गोबिन्द शब्द गया जणाईआ। सब दी इक्को ज़ात ते इक्को कुल, कुल मालक वेख वखाईआ। अमृत धार जाए ना डुल्ह, रस काया अन्दर टिकाईआ। सति फुल्ल जाए ना हुल्ल, सिंमल रूप ना कोए वखाईआ। साचे कंडे जाणा तुल, तक्कड़ नाम वाले तुलाईआ। ओह वेखो सिंघासण दे कोल बलदी चुल्ह, त्रैगुण माया रूप बदलाईआ। तुसीं गुरमुख बणिओ हरिजन अगम्मे फुल्ल, फुल्ल फुलवाड़ी मात महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

✪ सत्तवां कारड जम्मू संगत दे नवित : ✪

जम्मू संगत धरो ध्यान, शब्द सच जणाईआ। बावन दा लेखा होए परवान, परवाने गुरमुख रूप बणाईआ। सति दा सच नाल माण, अभिमान रहे ना राईआ। इक्को रंग बिरध बाल जवान, इक्को गृह दए वखाईआ। इक्को धर्म धार निशान, झुलदे चाँईं चाँईंआ। तुहाडा झगड़ा मुक्कया ज़िमीं असमान, अर्श फ़र्श डेरा ढाहीआ। सचखण्ड सारे होए परवान, पारब्रह्म आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ।

✪ अठवां कारड दुआबा संगत दे नवित : ✪

अठवां कारड धर्म दी धार सुणो दुआबा, दोहरी धार लगाईआ। तुहाडी मंग मंग के गया बुड्ढा बाबा, गुरु अर्जन सीस निवाईआ। जम्मू वाल्यां जेहड़ा ल्यांदा पत्तर तांबा, एसे दे उत्ते उस वेले दी लिखाईआ। जिस वेले मस्तक उँगली लाई सी कृष्न राधा, खुशीआं नाल छुहाईआ। कलयुग अन्त पुरख अकाल हँस बणाए कागा, कागों हँस उडाईआ। गोबिन्द दी धार खेल खेलणा आर पार वाघा, वहिन्दा वहिण वहाईआ। कुछ गोबिन्द लेखा लिख्या उपर ढाबा, महा सिँघ समझाईआ। हुण मैनूं कहिंदे सतिगुर वाला बाज़ां, बाज़ रिहा उडाईआ। फेर शब्द गुरु हो के लुकणा नहीं विच समाधां, अग्नी मद्व तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग रंगाईआ।

✪ नौवां कारड हरिसंगत दी गोबिन्द अग्गे अरदास : ✪

नौवां कारड गोबिन्द तेरे अग्गे अरदास, हरिसंगत रही जणाईआ। तूं मालक स्वास स्वास, साह साह तेरे विच टिकाईआ। आपणा नूर दे प्रकाश, अंध अंधेर रहे ना राईआ। पूरा कर भविक्ख्त वाक, कलयुग कूड़ी क्रिया दे खपाईआ। पंज दरबारी अग्गे आओ बण के साथ, हथ्थ हथ्थां विच मिलाईआ। गुरचरण सिँघ अग्गे आवे जिस नूं वज्जा काठ, गोबिन्द दा चोर सोभा पाईआ। कोरा भाण्डा प्यारो ल्यावे ते गुरमुख सिँघ पग्ग विच्चों कढे चाक, टुकड़ा कच्च दा बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ।

३१० २२

कोरा भाण्डा ल्याओ ज़रूर, कपूर सिँघ दे हथ्थ फड़ाईआ। कपूर सिँघ इस दे उत्ते लिखे पुरख अकाल इक हज़ूर, हज़ूरीए गुर अवतार पैग़म्बर सोभा पाईआ। जिस दा आदि अन्त सच दस्तूर, चेला सिँघ अक्खर दए बणाईआ। केहर सिँघ लिखे झगड़ा मेट दे कूड़, कूड़ क्रिया दे खपाईआ। मेला सिँघ चरणां दी लै के धूढ़, उत्ते अंगूठा दए लगाईआ। गुरदर्शन कौर लिखे भगत भगवान इक दूजे दे मज़दूर, जुग जुग सांझी सेव कमाईआ। जे भगत ना होवण ते भगवान दा ना कोए बेड़ा ते ना कोए पूर, वञ्झ मुहाणा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल वखाईआ। कोरा भाण्डा कहे जिन्नां दे हथ्थ विच लिख्या नर नरायण, इक्को रंग वखाईआ। मैं सब नूं आया कहिण,

चारों कुण्ट दयां जणाईआ। जन भगतो नाता रखयो भाई भैण, मात पिता पुरख अकाल रखाईआ। जो आया जो जम्मया तिस नूं खा गई लाड़ी मौत डैण, बचया कोए रहिण ना पाईआ। छब्बी पोह सारे जागो खुशीआं विच मनाओ रैण, रैण भिन्नड़ी नाल मिलाईआ। तुहाडे विच ना कोई दूजी ज़ाती ते ना कोई तरफ़ैण, तीजा नज़र कोए ना आईआ। नाम कुठाली विच्चों तुसीं इक बणे रसैण, रस्ता सब नूं दिता वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। जन भगतो वेखो कच्चा भाण्डा, सीस उत्ते सोभा पाईआ। मेरे विच ना कोए सूर खायो ना ढांडा, मच्छी मास ना कोए चतुराईआ। मैं हरि भगत वेखणा इक्को बच्चा जनणी माँ दा, चारों कुण्ट सोभा पाईआ। जेहड़ा भरोसा रखे इक दे नाँ दा, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर तुहाडा ढोला गावण वाह वाह दा, तेरी इक सरनाईआ। सत्तरंगा कहे मेरा इक होर मित्र, गुरमुखो तुहानूं दयां जणाईआ। मैं किड्डा सोहणा ते ओह डण्डा किक्कर, आपणे रंग वखाईआ। डल्ले दा हथियार जेहड़ा भरया चिक्कड़, त्रिशूल शंकर दए हिलाईआ। बिना सतिगुर शब्द डण्डे तों शंकर ब्रह्मा शिव कोए ना चढ़े सिखर, त्रिशूल वाला कम्म किसे ना आईआ। वेखो सारे एसे विच्चों आए निकल, छाती उत्ते बैठे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा पड़दा दए उठाईआ।
किक्कर दा कहे डण्डा, ओ सतरंगे तेरी की वड्याईआ। सत्तरंगा कहे मैं बड़ा चंगा, जो साफ़ सुथरा सोभा पाईआ। मैं नहाउंदा विच गंगा, हरी ओम हरी ओम कहि के आपणा राम मनाईआ। ओ तैनूं तिक्खा तिक्खा कंडा, हथ्थ ना कोए छुहाईआ। तेरीआं जट्ट किरसाण पाउंदे वंडां, हलां विच फसाईआ। मैनूं फड़दा कोई चंगा बन्दा, जेहड़ा प्रभ दा नाम ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल वखाईआ। डण्डा कहे मैं किक्कर दा सोटा, सोहणा नज़री आईआ। मैं वेखणा खरा खोटा, हिरदे सब दे फोल फुलाईआ। मैं फोलणा काया कोठा, सब दे बजर कपाटी दे कुण्डे दिते तुड़ाईआ। मैं चारे कुण्ट ठोकां, ज़ोर नाल दबाईआ। सत्तरंगया बाहमणां, तूं माला दे मणके फराउंदा उत्ते पोटा, पोटयां विच हिलाईआ। मैं फिट्टा वांग वेख झोटा, आकड़ के दयां जणाईआ। ओ हुण किसे नूं पिछला नाम जपण नहीं देणा चोखा, अक्खीं मीट ना ध्यान धराईआ। ओ ब्राह्मणा मैं पढ़न नहीं देणा पोथा, जा सिंघासण ते बहि जा ते माला दे मणके लै हिलाईआ। मैं ते भगतां नूं जट्ट बण के इक नाम दस्सणा सौखा, तूं मेरा मैं तेरा ढोला लैणा गाईआ। ना कोई गुस्सा ना कोई गिला ते ना कोई रोसा, जे कोई रुस्सया बाबे नंदू वांगू लवां ढाहीआ। क्यों एह छम्ब वाल्यां ने ल्यांदा जेहड़े देवीआं दीआं जगाउंदे सी जोतां, पहाड़ां वाली कहि के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल

वखाईआ। सत्तरंगा कहे क्यों ओए मोटया जट्टा, तैनूं दयां समझाईआ। तूं घाह खोतण वाला उतों वट्टां, ब्राह्मणां नाल करें चतुराईआ। छेती कर पहलां मैनूं दक्षिणा देहु पंज टका, मेरी पत्तरी रही समझाईआ। नहीं ते नौ गृह घर विच पा देणगे रट्टा, राहू केतू भज्जे आउण चाँईं चाँईंआ। मंगल बणया नहीं किसे दा सका, शनिच्चर ने सारे दिते रुलाईआ। ओह वेख भगवान आ गया चढ़या उत्ते कच्छा मच्छा, आपणा डेरा लाईआ। किक्कर दा कहे डण्डा, जा ओए पंडता, मैनूं हथ्थ लाया जम्मू वाली माई मसां, जेहड़ी दूरों आ के प्रभ दा दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। किक्कर दा सोटा कहे ब्राह्मणां छड दे अड़ी, अड़या अड़ी दी लोड़ रहे ना राईआ। हुण ना नछत्र रहे ना घड़ी, घड़ी पल समझ कोए ना पाईआ। कलयुग जीवां विद्या बहुती पढ़ी, पढ़ पढ़ थक्की जगत लोकाईआ। जां मैं वेख्या साधां सन्तां मंज़ल पौड़ी कोए ना चढ़ी, पूजा करन वाल्या अग्गे पुज्जण कोए ना पाईआ। जिधर तकां कूड़ कल्पना विच सृष्टी सारी सड़ी, सोहणा रंग ना कोए रंगाईआ। चुरासी विच्चों कोई ना करे बरी, बुरयाईआं रूप ना कोए मिटाईआ। ब्राह्मण कहे ओए डंडया हरी हरी हरी, हरि हिरदे मैं आपणे ल्या वसाईआ। मैं वेख तपस्सया किन्नी करी, काले तों नीला नीले तों पीला पीले तों चिट्टा चिट्टे तों सूहा सूहे तों कंचन कंचन तों लाल रंग रंगाईआ। किक्कर दा डण्डा कहे जा ओए ऐंवें सत्तां घरां दा लँघदा रिहा बूहा, हौली हौली आपणा पैर टिकाईआ। मैनूं ऐं जापदा तूं बन्दगी करन वाला चूहा, घर घर ठोकरां खाईआ। ओए इक मन्न लै शब्द गुरु सब दा सूहा, इक्को वार लख चुरासी खोज खुजाईआ। डण्डा कहे जे सच्चा सतिगुरु पाक कर दए सब दीआं रूहां, काल महाकाल चित्तर गुप्त धर्म राए लेखा गुरमुखां सके ना कोए वखाईआ। ब्राह्मण कहे ओह मेरे बदन नूं लग्ग गया लूहा, कलयुग अग्नी दिती तपाईआ। उए कोई लिखारीओ तुहाडे कोल है कूआ, जिथ्थों पाणी लै के आपणी तपश लवां बुझाईआ। हाए मैनूं अग्गों दिस प्या हऊआ, किड्डा मोटा नज़री आईआ। हाए औह वेख माया राणी आ गई बहूआ, ब्राह्मण बोदी रिहा हिलाईआ। उच्ची कहे मैं तुहाडा गुरु आं, ओए मैं तुहाडा गुरु आं, ओए जन्म कर्म दे दुखड़े दयां गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच देवे माण वड्याईआ। सत्तरंगा कहे हुण बण जाईए भ्रा, भावी सब ते नज़री आईआ। वड्डे छोटे दा माण दईए गंवा, ज़ात पात ना वंड वंडाईआ। इक दे अग्गे करीए दुआ, वास्ता लईए पाईआ। जेहड़े गुरमुख बावा आदम ते बणे माई हवा, उन्हां नूं नाल लईए मिलाईआ। मर्दाने ते बाले नूं बणाईए गवाह, नानक लेखा समझाईआ। ऐलीशाह ने मन्नया इक खुदा, उहनूं लईए रलाईआ। जिन्हां पंजां ने फ़ारसी दा अक्खर ल्या गा, पारसी रूप धराईआ। सब नूं इक्को थाँ लईए बहा, वड्डा

छोटा ना कोए अख्वाईआ। किक्कर दा डण्डा कहे ओए ब्राह्मणा किते ला ना जाईं दाअ, मैनूं भोला जट्ट समझ के लालच विच फसाईआ। हुण किक्कर दा डण्डा कहे औह मेरे साथी ने इक सांघा ल्यांदा उठा, तेरीआं दोहां लत्तां विच लए अड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणी कार कमाईआ। जट्ट कहे ओ ब्राह्मणा तेरा मेरा हो जाए मिलाप, गलवकड़ी लईए पाईआ। इक्को पुरख अकाल मन्नीए बाप, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सोहँ जपीए जाप, जो चार जुग दे गुर अवतार पैग़म्बर आए गाईआ। दूई दा रहे ना विच पाप, दुरमति मैल धुआईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश प्रभू दे भगत प्रभू दे साक, दूजा रूप ना कोए दरसाईआ। ब्राह्मण कहे ओए भोलया अजे भगतां विच थोड़ा थोड़ा सुराख, साफ़ नीती ना कोए अपणाईआ। किक्कर दा डण्डा कहे ओए सहुरया, मेरा साहिब सब नूं कर देवे माफ़, जो इक वार सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। सत्तरंगा कहे प्रभू अचरज खेल खलाउणा ए। मेहरवान महिबूब पड़दा लौहणा ए। धर्म धार दी एक (पूज,) एक दूज मटाउणा ए। सच प्यार दी दे के सूझ, सुत्तयां आप उठाउणा ए। सतिगुर शब्द भेज के दूत, दीन दुनी दा राह वखाउणा ए। झगड़ा मेट के काया कलबूत, काया काअबा इक प्रगटाउणा ए। जिधर तक्कण ओधर मौज़ूद, पुरख अकाला नज़री आउणा ए। पिछला खेल कर मौकूफ़, अगला हुक्म हक आप चलाउणा ए। गुर अवतार पैग़म्बर जिस दा देण आए सबूत, साबत उस ने आपणा आप जणाउणा ए। जिस नूं करदे फिरदे साड़ फूक, सो सतिगुर इक प्रगटाउणा ए। जिस दी सिफ्त कर ना सकण हरूफ़, अक्खर मात ना किसे वडयाउणा ए। अज्ज तों मिट गई जगत कूड़ी छूत, छुरी शरअ ना कोए चलाउणा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताउणा ए। प्रभू विष्नूं कि लक्ष्मी, कि नरायण रूप वटाईआ। दक्खण वसे कि पच्छमी, कि उत्तर पूरब डेरा लाईआ। घिउ खावे कि मखणी, सच देणा समझाईआ। की भगतां दी पैज रखणी, रखया करे थांउँ थाँईंआ। की दुनिया धार वेखणी सक्खणी, चारों कुण्ट फोल फुलाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बरो मैं सब दा पुराणा वतनी, वतन दा मालक सोभा पाईआ। तुसीं आए वारो वारी दीनां मज़्बां दी पत्तनी, पत्तन ते बैठे राह तकाईआ। किसे ने शोरा खाधा किसे ने चटनी, चेटक रसना वाला जणाईआ। सच दवार तों खट्टी उस ने खटणी, जो खटका दूजा दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। अवतार पैग़म्बर कहिण क्यों सूर्या चन्द आए उत्ते छाती, आपणा पन्ध मुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव हुक्म मन्नण कमलापाती, पतिपरमेश्वर वेख वखाईआ। क्यों इन्द्र मंग के बूँद स्वांती, कलस आपणा रिहा जणाईआ। क्यों

ख्वाजा खिज़र मीर दा पीर वेखे आबेहयाती, जो बिन नैणां अक्ख उठाईआ। क्यों नौ गृह बदलदे प्रभाती, प्रभू देणा समझाईआ। क्यों गोबिन्द सेजे सुत्ता जंगल विच प्रभासी, आपणा आसण लाईआ। क्यों पूरन जोत पूरन विच प्रकाशी, पर्दा देणा खुल्हाईआ। असीं सारे कट्ठे आए दूर दुराडे कट के वाटी, वटना मल के चले चाँईं चाँइ:आ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा आपणा हुक्म वरताईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बरो लैणा तक, तकीआ पीठ ना कोए लगाईआ। धुर दा हुक्म हुक्म विच्चों सति, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। तुहाडे नाल कौल इकरार कीता यक, लेखा लिख्या बिन कलम शाहीआ। कलयुग अन्त रहे ना सच, धरनी धार ना कोए वड्याईआ। काया माटी कच्च, ठीकर साफ़ ना कोए वखाईआ। मनुआ मन जाए नच्च, नौ दवार होए हल्काईआ। निज नेत्र खुल्ह्वे किसे ना अक्ख, दिव्य नैण ना नूर रुशनाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो तुसां आपणे मज़्हबां दा करना पक्ख, सांझा रंग ना कोए रंगाईआ। सब मानव मनुष करने वक्ख, कलमे मेरा नाम पढ़ाईआ। तन वजूद हिस्से लैणे कट, मुच्छ दाढ़ी जोड़ जुड़ाईआ। छोटा बौणा अग्गे आवे नट्ठ, छब्बी छब्बी इंच पिछला ऋषीआं लेखा दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म दी धार इक प्रगटाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो आह वेखो बच्चा निक्का मासूम, छोटा कद्द दा नजरी
३१४ २२ आईआ। एहदा लेखा किसे नहीं मालूम, शास्त्र सिमरत ना कोए समझाईआ। आदि अन्त तों प्रभ दा कानून, आदि तों ३१४ २२
अन्त तक ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। इहनूं पता नहीं अलिफ़ की ते नून, हमज़ा की समझाईआ। एह मुहम्मद दे नज़दीक हट्टी करदा हुन्दा सी परचून, नौ वार मुहम्मद निमक लै के एहदे कोलों खाईआ। फेर हत्थ नाल किहा हलूण, सीस दिता दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा पर्दा दे चुकाईआ। मुहम्मद ने हत्थ लाया एस दी ठोडी, खुशी नाल वड्याईआ। एस ने हत्थ लाया उस दी गोडीं, सजदा सीस झुकाईआ। उस ने पुच्छया तूं कोई साधू कि जोगी, कि सूफ़ी फ़कीर सोभा पाईआ। एस ने किहा मैं उस खुदा दा मौजी, जो खुद मालक आपणयां बच्चयां गोदी विच टिकाईआ। जो राज़क रिज़क रहीम बण के देवे रोज़ी, बिना रोज़यां नमाज़ां तों पार लँघाईआ। इस दे साथी हुन्दे सी जिन्हां ने काले निशान लगाए गोडीं, पूरब विछड़े जोड़ जुड़ाईआ। जेहड़े बणे सोढी, ओह वी मिलदे रहे चाँईं चाँईंआ। जिन्हां ने किरपानां धरीआं मोढीं, उन्हां लहिणा रिहा मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो आओ बैठीए उत्ते मंजे, धरती उत्ते सोभा पाईआ। कलयुग जीव वेखीए काणे गंजे, नेत्रहीण खोज खुजाईआ। नाले मैनूं वखा आपणे बन्दे, बन्दगी वाले दयो दृढ़ाईआ। मुहम्मद कहे

ऐ खुदा मैनूं वेख लैण दे सब दे तम्बे, खुल्ल्या पड़दा लवां उठाईआ। जिन्नां खाधे दुम्बे, गऊआं खल्ल लुहाईआ। पाणी भरया विच कुम्भे, घड़े कच्चे नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच पड़दा दे उठाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू तेरी मंजी वेखी मौजूद, सोहणी नज़री आईआ। जिस दा मालक इक महिबूब, मुहब्बत विच वड्याईआ। वसे आलीशान अर्श अरूज, तख्त निवासी डेरा लाईआ। मंज़ल दस्स मकसूद, पड़दा दए चुकाईआ। मिटावण आया दूज, दुतीआ भाउ गंवाईआ। सब नूं देवे सूझ, आत्म परमात्म पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर खोल्ल्ण आपणा वरका, वरका वरका फोल फुलाईआ। प्रभू की भेव दस्सीए आपणे घर का, घर घर पई लड़ाईआ। अमृत मिले ना साचे सर दा, सरोवर मैल ना कोए धुआईआ। साडे कोलों कोई ना डरदा, भय सारे बैठे चुकाईआ। बेशक जगत जहान विद्या पढ़दा, पढ़ पढ़ पार ना कोए कराईआ। सानूं इयों जापदा जेहड़ा जम्मया चुरासी विच मरदा, तेरे दर ना कोए पहुंचाईआ। तूं आपे सब दा घाड़न घड़दा, विष्न ब्रह्मा शिव आपणी खेल खिलाईआ। तूं मालक चोटी जड़ दा, तेरा रूप अगम्म अथाहीआ। बिन तेरी किरपा कोई ना तरदा, गुर अवतार पैग़म्बरां तेरी आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण, ओ प्रभू ना मंग साथों लेखा, लेखा नज़र कोए ना आईआ। दाता बण के पा ल्या भरम भलेखा, की तेरी बेपरवाहीआ। याद कर लै बावन वाला कुण्डल ते पिछला चेता, बलि दवारा दए गवाहीआ। कृष्न काहन वाला ठेका, कुरुक्षेत्र रिहा कुरलाईआ। ओह अल्ला वाला नेता, उँगली अंग लगाईआ। गोबिन्द शब्द किसे ना वेचा, माझे वाले देण सुणाईआ। सवा तिन्न फ़ुट दी किरपान कर दयो भेंटा, धर्म धार दृढ़ाईआ। अजे सतारां गज़ दा मारया नहीं पेचा, कमर वंड ना कोए वंडाईआ। सत्त रंग तुहाथों रंगाया उच्चेचा, उच्च दा पीर रूप बदलाईआ। पंजां लिखारीआं जोड़ा ल्यांदा आपणे मेचा, उँगलां वंड ना कोए वंडाईआ। सब दी बदल देणी जन्म कर्म दी रेखा, ऋषीआं मुनीआं तों परे आप दृढ़ाईआ। सतिगुर शब्द शब्द शब्द गुरु दा बेटा, दूजी जन्मे कोए ना माईआ। ओ जन भगतो अज्ज होणी जे नीलामी, मातलोक दा चुकणा जे ठेका, गुर अवतार पैग़म्बर बोली देवण आए चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। माझे वाल्यो दे दयो चण्डी, जो चण्डालां करे सफ़ाईआ। वेखो दुहाई पई विच वरभण्डी, ब्रह्मण्ड रहे कुरलाईआ। अन्दरों कढे ना कोए वासना गंदी, सुरत शब्द ना कोए मिलाईआ। सतिगुर शब्द नूं कलयुग गुरुआं बणाया पखण्डी, आप सतिगुरु बण के बैठण थांउँ थाँईंआ। पुरख

अकाल नूं बणा के दुहागण नार रंडी, आप कुल मालक बण के जगत रहे अख्वाईआ। जिस वेले शब्द सतिगुर ने सब दे अन्दर वड़ के नौ दवारे दी हद्द लँघी, पड़दा दिता उठाईआ। उथे माया राणी दी लग्गी मंडी, तोले बैठे तक्कड़ उठाईआ। कोई कहे अल्ला राणी चंगी, कोई कहे दुर्गा धुर दी माईआ। कोई कहे मुहम्मद तोड़े फंदी, मूसा करे सफ़ाईआ। ओम तत सति देवे अनन्दी, कोई कहे सीता राम दुहाईआ। कोई कहे राधा कृष्न चाढ़े रंगी, इक्को रंग रंगाईआ। कोई कहे सतिनाम वाहिगुरु गाओ छन्दी, संसा रोग मिटाईआ। जां वेख्या ते अक्खरां वाला नाम ते सिफ्तां वाली डण्डी, डण्डावत विच मनौत आपो आपणी रहे कराईआ। परमात्मा दे नाम तों लवाई पाबन्दी, पाबन्द आपणा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। चण्डी कहे मैं खेलणी होली, हौली हौली सुणाईआ। उच्ची कूक के पावां रौली, दो जहान दृढ़ाईआ। अग्गे सतिजुग नाम दी होणी बोली, सारे इक्ठे होवो थांउँ थाँईंआ। पिच्छों पाए कोई ना रौली, झगड़ा ना कोए रखाईआ। अवतारो पहलों तुसीं करायो बौहणी, आपणी अवाज़ दयो सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। पुरख अकाल कहे शब्द सतिगुर हो जा सवाधान, सब नूं दे जणाईआ। इक्को हुक्म ते इक फ़रमान, इक्को इक समझाईआ। इक्को नाम कलमा होवे कलाम, इक्को ज्ञान होवे पढ़ाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ हो जाओ सवाधान, सोया रहिण कोए ना पाईआ। गोबिन्द दा खण्डा कदे नहीं प्या विच म्यान, जिंना चिर दुश्मणां दी करे ना मात सफ़ाईआ। तुहाडे दुश्मण पंज तत्तां विच पंज नौजवान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नज़री आईआ। जिन्हां दा चढ़ गया तुफ़ान, शाह सुल्तानां रिहा रुढ़ाईआ। सुणो हुक्म अगम्मी फ़रमान, फुरने सब दे वेख वखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर सारे इक्ठे होवो बोली दयो विच जहान, इक दो तीन, तीन लोक दा खेल प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू साडी बोली ज़ीरो, जोर नाल सुणाईआ। अग्गे सुणो पैग़म्बर पीरो, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे दयां जणाईआ। तुसीं चार जुग दे हीरो, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मिली माण वड्याईआ। अन्त वेखो अख़ीरो, की कलयुग खेल खलाईआ। तुहाडा मज़ूब मिलख रहे ना जगीरो, उम्मत संग ना कोए निभाईआ। ओ बधका ल्या दे कमान नाल तीरो, सज्जे हथ्थ नाल फड़ाईआ। इक वार कहि दे गुरमुखो मेरे वीरो, पुरख अकाल सब दा पिता माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा रंग रंगाईआ। तीर कहे मेरी चार माशे ते नौ रत्ती दी मुक्खी, कंचन रंग रंगाईआ। जिस ने बधक धार कृष्न कीता सी दुखी, पदम विच चरण कँवल निशान टिकाईआ।

जिस दे पैर नहीं सी जुत्ती, चमड़ी मास आपणी आप रिहा कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। तीर कहे मैं जिस वेले चरण कृष्न दे लग्गा, लग्न लई लगाईआ। उस ने खुशी नाल मैनूं दब्बा, उँगलां विच दबाईआ। मेरे मूँह विच्चों निकलया हाए रब्बा, जो दुआबे वाले छब्बे उत्ते आए लिखाईआ। फेर उस ने मैनूं थोड़ा जेहा दब्बा, झटके नाल हिलाईआ। मैनूं नज़री आया अग्गा, द्वापर तों बाद कलयुग लोकमात लए अंगड़ाईआ। इक गऊआं दा पाली ते फेर मनुषां ने खाणा वच्छा कट्टा ढग्गा, सच नाम ना कोए (कमाईआ)। हँस बुद्धी होई कग्गा, सच नाम ना कोए ध्याईआ। कृष्न ने किहा इस दी ख़ास कोई वजह, तैनूं दयां जणाईआ। मैनूं बड़ा आया मज़ा, रस बिन रसना दिता चखाईआ। कृष्न ने किहा तेरी होर होर चंगी जगह, शब्दी धार सुणाईआ। जिस वेले गोबिन्द आया सूरा सरबग्ग, नानक जोत करे रुशनाईआ। तेरे नाल ओस ने दुष्टां नूं देणी सज़ा, कमंद खिच्च के तीर दए चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। तीर किहा फिर अग्गे की कार, मैनूं दे सुणाईआ। कृष्न किहा जिस वेले होवे अंध अंध्यार, चारों कुण्ट अंधेरा छाईआ। फिर प्रगट होवे कलि कल्की अवतार, निहकलंका रूप धराईआ। जिस नूं समझे ना कोए संसार, संसारी भण्डारी सँघारी उस दी छाती ते बैठे देण गवाहीआ। तीर कहे मैं ओस दा करां इंतज़ार, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। कृष्न ने किहा तेरा बधक नाल प्यार, ओसे हत्थ फड़ाईआ। उहदा कर्ज़ा ते मेरा उधार, लहिणा पुरख अकाल चुकाईआ। सो वेला जगत पहुँचया आण, सम्मत शहिनशाही पंज आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। तीर कहे गुरमुखो उपर हत्थ उठा लओ खब्बे, हत्थ हत्थ वड्याईआ। जिस दे विच्चों परम पुरख मिलण दी रेखा लभ्भे, ढाई चक्रां विच नज़री आईआ। ओह हुन्दी तरफ़ तरफ़ दी गभ्भे, शास्त्र सक्या ना कोए समझाईआ। जिन्हां पढ़या ओह बैठे राह विच अधे, अगला पन्ध ना कोए मुकाईआ। जन भगतो प्रभ मिलण दा मौका मिलदा कदे, जुग चौकड़ी राह तकाईआ। प्रभू नूं जदों वेखो अछल छलधारी सब नाल करदा दग़े, फ़रेबां विच आपणा झट लँघाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर लिख के गए पटे, सदीआं विच वंड वंडाईआ। अन्त सब दा लेखा ठप्पे, मोहर इक्को नाम छुहाईआ। जन भगतां नाते कर के पक्के, गुरमुख आपणी गोद सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद देवे माण वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू असीं पुतले पंज तत ख़ाकी, अन्त ख़ाक विच समाईआ। तेरे नाम दी समझ ना सके चलाकी, चार जुग अक्खरां विच भरमाईआ। प्रेम प्याले दा बण के साकी, जाम दिते मुख लगाईआ। इक नूं इक दूजे नालों कर

के आकी, आका हो के आपणा हुक्म सुणाईआ। वंड के निक्की निक्की वाटी, झगड़े दिते पवाईआ। रसना दे बणा के पाठी, अक्खर दिते सुणाईआ। आप बण के योद्धा सूरबीर हाठी, सचखण्ड बैठा डेरा लाईआ। धन्न भाग जे कलयुग अन्त तूं सब दी मन्न के आखी, आख़र आपणा फेरा पाईआ। जन भगतां दी करें राखी, नाम चिल्ला तीर इक्को तरकश कंध उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। गुरमुखो सज्जा हथ्थ नाल दयो जोड़, जोड़ी आप बणाईआ। भगतां दी रीती एसे तरह निभदी तोड़, जो प्रभ राती सुत्तयां शब्द विच समझाईआ। इस मंज़ल नूं कोई ना सक्या बौहड़, जगत रीती विच जगत वंड वंडाईआ। गुरमुखो कलयुग अंधेरा घोर, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। सतिगुर शब्द बन्नृ के डोर, चोरी चोरी तुहाडे अन्दर डेरा लाईआ। जिन्नृां ने चौदां चौदां मिन्ट कीता चौर, चौदां तबकां ना रही माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। दोवें हथ्थ कहिण प्रभू साडी बेनन्ती, बिनै इक सुणाईआ। माण कढ दे हउमे हंगती, हँ ब्रह्म जणाईआ। तेरे नाम दी पढ़ीए इक्को पंगती, जेहड़ी पंचम गुरु बाबे बुढे गया समझाईआ। जिस विच रीती दस्सी कारज अनन्द दी, चौथी लांव गया समझाईआ। ओह खेल होई सूरे सरबंग दी, गुरमुख आत्मा लई प्रनाईआ। जोत अकालण खुशीआं विच प्रेम प्यार फिरे वंडदी, सब दी झोली पाईआ। जेहड़ी इक इक वस्त ल्यांदी प्रभ दे नाम गंढ दी, ओह टुट्टी लए गंढाईआ। हुण वारी आ गई जे गुरमुखो इक्की जैकारे लाउणे धार उपजे सोहँ छन्द दी, रसना जेहवा गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच विच्चों प्रगटाईआ। गुरमुखो हथ्थ कर लओ थल्ले, आराम नाल बैठो चाँईं चाँईंआ। तुहाडी दात तुहाडे पावां पल्ले, पल्लू आपणी गंढ बंधाईआ। चार जुग पिच्छों तुहाडी होणी बल्ले बल्ले, सृष्टी ढोल्यां विच सुणाईआ। तुसीं कदे ना जाणिओ असीं इकल्ले, तुहाडा साथी धुरदरगाहीआ। तुसीं ओस प्रभू दे दर मल्ले, जिथ्थे गुर अवतार पैग़म्बर बैठे सीस निवाईआ। भावें तुहाडे उत्ते किन्ने होण हल्ले, सूरे हो के आपणा बल लैणा प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू ओह आ गया कलयुग, कल काती रूप वटाईआ। किधरों गया पुज्ज, आपणा पन्ध मुकाईआ। वेखो मोटे डण्डे दा मारदा हुज्ज, सब नूं रिहा जगाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले चढ़या कुद्द, भज्जे चाँईं चाँईंआ। मैं धर्म दा रहिण नहीं दिता मुढ, सब नूं रिहा सुणाईआ। मैं फड़ के इक्को विच रुग्ग, खा पी के आपणी खुशी बणाईआ। कलयुग सृष्टी खावे पीवे घिउ ते दुद्ध, कलयुग कहे मैं साधां सन्तां दी सुरती खा पी के आपणा झट लँघाईआ।

फेर मारन डहि प्या ढुड्ड, हाए हाए हाए मेरी दुहाईआ। क्यों मेरा कुझ लेखा लिख के गया बुद्ध, तेईवां अवतार गया सुणाईआ। जिस वेले विद्वानां विच रही ना सुध, अक्ल चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं आया तेरे दरबार, सोहणा रूप बणाईआ। मैनूं चंगी लग्गे तेरी कटार, तेज़ धार चमकाईआ। मैनूं बड़ा खेल चंगा लग्गे विच संसार, जो आपणी किरपा नाल वरताईआ। मैं बड़ा होया हुश्यार, विद्या तेरी मोहे भाईआ। मैं झगड़ा पवा के पुरख नार, पिता पूत दिता लड़ाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां दा रहिण नहीं दिता प्यार, नाता विधाता ना कोए जुड़ाईआ। सदी चौधवीं मेरा सब कुछ अख्त्यार, मुखत्यारनामे सब दे फोल फुलाईआ। ऐ मेरे मालक तेरे नाम नहीं दो चार, अनेक तेरे सिफ्तां वाले ढोले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। कलयुग कहे मैं बड़ा बड़ा उडीकदा, चिरी विछुन्ना ध्यान लगाईआ। मैं दूर दुराडा बहि बहि चीकदा, हाए हाए कर सुणाईआ। आपणे अन्दर नकशे उलीकदा, जगत वंडां वंड वंडाईआ। किस वेले वेला आवे उस तारीख दा, जिस दा तरीका गोबिन्द गया समझाईआ। प्रभ ने झगड़ा मुकाउणा ऊच नीच दा, इक्को रंग वखाईआ। प्यार दस्सणा साचे मीत दा, नाता जोड़ना दूर नज़दीक दा, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। वक्त सुहञ्जणा करना तस्दीक दा, शहादत शब्द गुरु भुगताईआ। लेखा पूरा करना उम्मीद दा, जो आसा मनसा गुर अवतार पैग़म्बर गए रखाईआ। पड़दा फोलणा जगत जिज्ञासू नीत दा, नीतीवान हो के खोज खुजाईआ। फेर मार्ग आउणा सतिजुग साची रीत दा, रस्ता इक वखाईआ। मेला करना भगत भगवान प्रीत दा, प्रीतम इक्को दए वड्याईआ। झगड़ा मुकाउणा कुरान हदीस दा, हज़रतां तों परे दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच पड़दा आप उठाईआ। सतिगुर धार दी होवे सिक्खी, सिख्या जगत गुरु जणाईआ। दीन दुनी जाणी मिथी, भाण्डा भरम भनाईआ। छब्बी पोह दी वेख के मिती, सम्मत शहिनशाही पंज नाल मिलाईआ। किसे दी आसा रहे ना दो चित्ती, इक्को रंग रंगाईआ। जिस वेले कबीर लुक्या सी विच खिती, ख़ता आपणी दिती दृढ़ाईआ। निरगुण धार बणया हिती, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पड़दा ओहला दए चुकाईआ। पड़दा कहे मैं रहिंदा ओहला, नकाब दए चुकाईआ। कर प्रकाश उपर धौला, धरनी सोभा पाईआ। निरवैर हो के रूप मौला, मेहरवान वेस वटाईआ। आपणा पूरा करे इकरार कौला, कँवल नैण खोज खुजाईआ। जन भगतां भार करे हौला, गठड़ी गठड़ी भार ना कोए बणाईआ। आपणा हुक्म वरते तौला, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणी खेल वखाईआ। खेल कहे मैं होणा ज़रूरी, हरि करता आप कराईआ। सब दी आसा करनी पूरी, पूरन ब्रह्म रिहा दृढ़ाईआ। कलयुग क्रिया मेटणी कूड़ी, हउमें हंगता रोग गंवाईआ। जम्मू वाल्यो हाज़र कर दयो जो कुट्ट के ल्यांदी चूरी, चारे घर सोभा पाईआ। जेहड़ा तुहाडा मज़दूर करदा मज़दूरी, भुक्खे नूं दयो रजाईआ। मिले प्रकाश जोत नूरी, अंध अंधेरा दए गंवाईआ। इधर गुलाटी दी वेखो फूहड़ी, आपणा रंग रंगाईआ। नाथां दी तक्को चूड़ी, जो कन्नां विच लटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा पड़दा लाहीआ। पड़दा कहे मैं पर्दे विच्चों वेखे गुरमुख हीरे, रत्न अमोलक नज़री आईआ। जिन्हां ने हथ्थीं बन्ने कलीरे, सगन धुर दे मात मनाईआ। हरिजन सारे उन्हां दे वीरे, नज़र अपुठी ना कोए कराईआ। जिन्हां ने लाल बध्धे चीरे, पीले पल्लू आए रंगाईआ। जिन्हां दे तुरले कढे अख़ीरे, सवा हथ्थ लम्बाईआ। जिन्हां हथ्थां विच फड़े पीड़े, त्रेता जुग देवे गवाहीआ। जिन्हां दे लाल रंग दे लीड़े, प्रभ सोहणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। सब दी पूरी करे आस, आसा रहिण कोए ना पाईआ। जिन्हां नूं पाणी मिल्या विच ग्लास, गुरदर्शन हथ्थ फड़ाईआ। इन्हां दी बावन वेले दी बुझी प्यास, तृष्ना अग्गे रहे ना राईआ। जिन्हां ने मस्तक लाई राख, त्रिशूल निशान बणाईआ। ओह लेखे लग्गे जमात, शंकर लहिणा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। जेहड़े गुरमुख इक्की नाल ग़रीब, ग़ुरबत गए मिटाईआ। अग्गे मिले सब नूं सच तरतीब, तरीका इक समझाईआ। अन्दरों साफ़ करके नीत, जग देवे माण वड्याईआ। इक्को परम पुरख दी प्रीत, दूजा इष्ट ना कोए दृढ़ाईआ। जिन्हां गोबिन्द गाया गीत, रंग रत्तड़ा धुर दा माहीआ। जिस सोहँ मारी चीक, लेखा लेखे पाईआ। जिन्हां नौबत वजाई ठीक, एह गोबिन्द खोज खुजाईआ। जेहड़े घरों करके आए बन्द भीत, ओह जगत वासना गए मुकाईआ। जेहड़े मुख धो के बणे अज़ीज़, आजज़ हो के झट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। जेहड़े बण गए चार काहनी, धुर दा काहन दए वड्याईआ। धर्म धार दे बण इश्नानी, इश्नान इक्को इक वखाईआ। मंज़ल चढ़ रुहानी, प्रभ मिल के वज्जे वधाईआ। मंज़ल कटणी ना पए जिस्मानी, पड़दा असमानी आप चुकाईआ। प्रभ दा नूर वड नुरानी, ज्ञान ध्यान दा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग चढ़ाईआ। जिन्हां दा वेस औरत मर्दां, सांझा रूप धराईआ। एह खुसरे करदे रहे सी अर्ज़ां, हरि गोबिन्द अग्गे सीस निवाईआ। नौ दिन गाउंदे रहे सी नाल तर्ज़ां, नच्च के जगत वखाईआ। उसदे कौल इकरार दा दिता कर्ज़ा, पूरब

झोली पाईआ। प्रभ कोल सब दीआं फ़रदां, लेखा वेखे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण असीं आए भज्जे दौड़े, धुर दा पन्ध मुकाईआ। चलो वेखीए ब्राह्मण गौड़े, जिस दी सिफ्त आए सुणाईआ। जो वेखे मिट्ठे कौड़े, लख चुरासी फोल फुलाईआ। जन भगतां अन्दर बौहड़े, बौहड़ी करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण सानूं मिली अगम्म इत्लाह, मुतला दिता कराईआ। छब्बी पोह नूं जाणा आ, आह सर्द ना कोए भराईआ। हुक्म देवे हक खुदा, खुद मालक आप दृढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणी वबा, हउमे रोग देणा गंवाईआ। सब नूं इक जपाउणा नाँ, नाउँ निरँकारा इक समझाईआ। सब दा बण के पिता माँ, गुरमुख गुर गुर गोद टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडा अस्तीफ़ा, सच नाल जणाईआ। आपणे प्यार दा दे वज़ीफ़ा, सचखण्ड बहि के झट लँघाईआ। अग्गे बथेरीआं कीतीआं तेरीआं तरीफां, सिफ्तां विच सालाहीआ। लिख के आए तम्हीदां, ढोल्यां विच गाईआ। करके आए ताकीदां, हुक्मे विच सुणाईआ। धन्न भाग जे साडीआं पूरीआं करें उम्मीदां, पिछला लेखा रहे ना राईआ। गुरमुखां ने आपणे अग्गे मारीआं लीकां, पिछली लाईन गए बदलाईआ। पंज पंज रोड़े फड़ के हस्त कीटा, ऊचा नीचा वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे वज्जे वधाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण असीं गाईए धुर दे दोहरे, दुहरा तेरा नाम वड्याईआ। जेहड़े गुरमुखां पंज पंज सुट्टे रोड़े, रोड़ी सक्खर दए गवाहीआ। जिस वेले एमनाबाद नानक सुत्ता वछा के दुहरे, भूष्ण नाल सुहाईआ। एह चुभे सी विच मौरे, तन दिता रगड़ाईआ। उस हस्स के किहा जिस वेले मेरी धार गोबिन्द चढ़े घोड़े, नीले उत्ते वड्याईआ। गुरमुख सरसे विच रोड़े, आपणी खेल खिलाईआ। शस्त्र दी थाँ हथ्थ विच फड़ के रोड़े, पाणी विच डुबाईआ। बचन कीता तुसीं रहिणा नवें नकोरे, तत्ती वा ना लागे राईआ। जिस वेले पुरख अकाल नाल आवां बण के बांका छोहरे, शहिनशाह नाल चुतराईआ। तुहानूं मेलां नाल ज़ोरे, आपणा बल वधाईआ। साची पैणी लोड़े, लोहड़ा पए लोकाईआ। शब्दी धार चढ़ के घोड़े, घुम्मे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। गुरमुखां पंज पंज रोड़े दिते सुट्ट, जगत हद्द दिती टपाईआ। पंज तत काया जिस वेले गई छुट्ट, धरनी दी भेंट कराईआ। आप गोबिन्द बबान विच जाणा उड, पुरीआं लोआं पन्ध मुकाईआ। हक खुदा नूं कहिणा गॉड गुड, वाहवा तेरी वड वड्याईआ। नाले हस्स के कहिणा सानूं करना प्या नहीं युद्ध, करी ना

कोए लड़ाईआ। खुशीआं विच ख़ाली हथ्थ सचखण्ड गए पुज, आपणा पन्ध मुकाईआ। हुण प्रभू किथे जाएंगा लुक, सानूं दे समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कोल गए नहीं रुक, धर्म राए ना कोए अटकाईआ। साडी पिछली मंज़ल गई मुक, पन्ध रिहा ना राईआ। सतिजुग गया त्रेता गया द्वापर गया हुण आया कलयुग, जुगां दे विछड़े लए मिलाईआ। आपणे बणा लए सुत , दुलारे गोद उठाईआ। की होया जे बच्चे गए रुस्स, फड़ बाहों लै मनाईआ। रातीं सुत्तयां घर घर जा के पुछ, अन्दर वड़ के लै उठाईआ। भुक्ख्यां नूं दे टुक्क, दुखियां दुःख गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक टिकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण ओ प्रभू तेरा वसदा रहे झुग्गा, भगत दवारा नज़री आईआ। जेहड़ी बीबी पूजण वाली गुग्गा, सेवीआं थाल दए वखाईआ। जेहड़ा गाल्हां कढदा बुड्ढा, भौं ते सौं के झट लँघाईआ। ओह इहो पुराणा बुड्ढा, जो हर इक दे अन्दर वड़ के बैठा डेरा लाईआ। बिना सिंघासण तों सुत्ता, आसण सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल वखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण सानूं थाल दयो परोस, पड़ोसी सारे इक्ठे आईआ। साडा रहे कोई ना रोस, इक्को रंग देणा रंगाईआ। मज़्बां वाला मिटा दे जोश, अमृत सीर दुद्ध प्याईआ। सब दे हिरदे दे सोध, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। प्रभू आपणे प्यार दा ला दे भोग, भोगीआं अन्दर कर सफ़ाईआ। तेरे नाम दा होवे जोग, जोगीआं दा लहिणा दे चुकाईआ। तेरा इक्को किला सुहाए कोट, कुटीआ काया कर सफ़ाईआ। कलयुग जीव आल्हणिउं डिग्गे बोट, फेर सके ना कोए बचाईआ। शब्द नगारे दी ला दयो चोट, चोटी चढ़ के दे हिलाईआ। जिन्हां बीबीआं दी इक्को गोत, ओह गौतम दे गवांढी सोभा पाईआ। जिन्हां दे कोल मसालां एह खेलां खेडदे सी रोज़, गोबिन्द नाल आपणा संग बणाईआ। खण्डे धार धर्म दी फ़ौज, फ़ौजदार वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक आप हो आईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू चल जगत दी करीए तलाशी, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। अवतार कहिण गंगा जमना गोदावरी सुरस्ती कि जाईए पहलों काशी, मन्दिरां मढ्ढां खोज खुजाईआ। पैग़म्बर कहिण चलो वेखीए नमाज़ी, जो रोजे रख के झट लँघाईआ। सतिगुर कहिण चलो वेखीए जिन्हां दी अन्दर लग्गी समाधी, सुन्न समाध विच समाईआ। शब्द गुरु किहा याद रखो की संदेशा दे के गया नानक विच बग़दादी, बग़ली कंधे उत्ते लटकाईआ। सदी चौधवीं कहे कोई रहिणा नहीं किसे दा गाडी, हुक्म हक ना कोए सुणाईआ। उस वेले ठग्गां चोरां बदमाशां दी वधणी आबादी, मन मति करे लड़ाईआ। झगड़ा पाउणगे मुल्ला काज़ी, ग्रन्थी पन्थी वंड वंडाईआ। धर्म दा दिसणा नहीं कोई साथी, सगला संग ना कोए रखाईआ। सतिगुर दी मन्ने कोई ना आखी,

गोबिन्द देवे अन्त सज़ाईआ। सब दा पूरा करके भविक्ख्त वाकी, वाक्या आपणा दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडी केहड़ी मर्ज़ी, मरीज़ होई लोकाईआ। प्रभ तूं सानूं जिस्म दी दिती वरदी, खाण पीण दिता समझाईआ। असीं तेरे नाम दे बण के ग़रज़ी, ढोले आए गाईआ। ऐ भगवान ऐ ख़ुदा तेरे पिच्छे तेरी दुनिया लड़दी, की तेरे विच वड्याईआ। क्यों नहीं खेल मुकाउंदा चोटी जड़ दी, जड़ चेतन दे समझाईआ। वेख खेल कलयुग हढ़ दी, चारों कुण्ट वहिण वहाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर बणे कोए ना दर्दी, हाए उफ़ बौहड़ी करे लोकाईआ। अन्त खेल नरायण नर दी, नर हरि तेरी इक सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा मेला लए मिलाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू साडा पा दे भोग, अन्त दे कराईआ। आपणा कर संजोग, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। हउमें कढ दे रोग, दुखियां दुःख मिटाईआ। चिन्ता रहे ना सोग, चिखा ना कोए जलाईआ। इक्को दे दे मौज, आपणा नाम वड्याईआ। सच दवारे जाणा पहुंच, दरगाह साची सोभा पाईआ। की खेल करना अग्गे पुष्कर करौच, लखण दीप पए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पर्दा ओहला देणा चुकाईआ। पुरख अकाल कहे की पुछणा, शब्द गुरु गुरवाक। पर्दा ओहला रहे ना लुकवां, पूरा करना भविक्ख्त वाक। जेहड़ीआं सुखदे रहे सुक्खणां, ओह लेखा वेखणा आज। कूड़ी क्रिया मलेछ उठणा, संदेशा दे के गया भारद्वाज। प्रभ दा भाणा कदे ना रुकणा, आदि जुगादि दा सच रिवाज। जन भगतो मार्ग पए किसे ना घुसणा, जोबन जवानी लग्गे ना दाग़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ी क्रिया बदल देवे समाज। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभ तेरे नाम दा कीता बड़ा ख़र्च, खा ख़र्च के झट लँघाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ बणाए चर्च, मस्जिदां विच वंड वंडाईआ। गुरदवारयां विच बैठे परत, फिर फिर फेरा पाईआ। तेरी इक सांझी धरत, असीं हिस्से आए वंडाईआ। कलयुग अन्त खेल असचरज, अचरज लीला दे वरताईआ। की तैनूं मेरी पई ग़रज़, पर्दा देणा उठाईआ। पुरख अकाल किहा मैं आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण भगतां दा वंडां दर्द, भगवन हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सच दा हुक्म सुणो फ़रमाना, फरमांबरदारो दयां सुणाईआ। अगला खेल होणा महाना, मेहरवान वेख वखाईआ। छब्बी पोह समां सुहाउणा, सोहणी रुतड़ी नाल महकाईआ। अन्त सब ने इक्को शब्द गाणा, रसना जेहवा सिफ्त सालाहीआ। प्रभू तेरा भगत सद रहे विच तेरे भाणा, सिर सके ना कोए उठाईआ। धुर दे दर मिले माणा, ममता मोह चुकाईआ। जिन्हां गाया अन्तिम जाणा

ना विच मसाणा, उन्हां बख्शे इक सरनाईआ। तेरा गुरमुख ना होए पुराणा, जुग चौकड़ी ओहो चलया आईआ। कीड़ी दा रूप बणया मस्ताना, लाल सिँघ हाए गोबिन्द हाए गोबिन्द कहि के दए सुणाईआ। सच दर होए परवाना, पारब्रह्म वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद पड़दा दए चुकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू जन भगतां दे दे छुट्टी, आपणी दया कमाईआ। असीं वेख ल्या तेरी प्रेम धार ना टुट्टी, जुग चौकड़ी चली आईआ। इन्हां नूं लोड़ रही ना मंज़ल पार करनी पए नौ दवार त्रिकुटी, सहिस दल विच ना कोए भवाईआ। दस्म दुआरी छोटी छोटी पहु फुट्टी, सूरज चन्न करन रुशनाईआ। जिथ्थे तेरी जोत धार बहु रुती, निरगुण नूर नूर चमकाईआ। उथे इक प्यार ते इक्को खुशी, इक्को वज्जे वधाईआ। जन भगतो सारे ताअ दयो मुच्छीं, प्रभ मिल्या बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण कलि वेखणा खेल अपारा, अपरम्पर दए वखाईआ। कृष्न दा उधारा, द्वापर जुग गवाहीआ। कलयुग दा पसारा, माया ममता नाल रलाईआ। चौधवीं सदी दा जैकारा, गोली रंग रंगाईआ। तेरां सौ अठासीवां रिषी रूप न्यारा, आपणा आप आया बदलाईआ। दोहां दा प्यार होणा संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी वेखण चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा हुक्म वरताईआ। छब्बी पोह कहे गोबिन्द दे हथ्थ गोबिन्द धार अंगूठी, गोबिन्द रंग रंगाईआ। मनी सिँघ कोल गिरी दी ठूठी, अल्ला हू अकबर नाअरा रिहा सुणाईआ। झगड़ा पैणा चारे कूटी, अग्गे सके ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द धार बण के दूती, दो जहानां खोज खुजाईआ।

✪ २७ पोह शहिनशाही सम्मत ५ हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

सतिगुर शब्द विच सारे हो जाओ मग्न, मगरला लेखा दयो मुकाईआ। त्रैगुण माया बुझाओ अग्न, तत्व तत ना कोए जलाईआ। हरि भगत सीस दिसे किसे ना नग्न, ओढण हरि का नाम जणाईआ। घर घर अन्दर जोती दीपक जगण, अंध अंधेर मिटाईआ। काया माटी झूठा समझो बदन, बदी तों लैणा बचाईआ। आत्म परमात्म मिलण दा करना यतन, यथार्थ मनुशा जन्म वड्याईआ। साहिब सतिगुर दे बणना रत्न, अमोलक हीरे सोभा पाईआ। ओह जिस ने तुहानूं फेर खड़ना उस वतन, जिथ्थों बेवतन होई लोकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां दस्सया पत्तन, पत्रका धुर दा नाम सुणाईआ। भेव खुल्हा के

उत्तर पूरब पच्छम दक्खण, दिशा धर्म दी इक जणाईआ। उच्ची कूक पुकार किहा कलयुग अन्तिम कलि कल्की आवे रखण, अमाम अमामा नूर इलाहीआ। जो वसे घट घटन, हर घट रिहा समाईआ। सोई सुरती लावे सट्टन, आलस कूडी दए गंवाईआ। मन कल्पणा आवे नथ्थण, डोरी धुर दी हथ्थ उठाईआ। कलयुग कूड़ा लोकमात विच्चों आवे कढण, धरनी उत्ते रहिण कोए ना पाईआ। सच दा नाम आवे वंडण, वस्त इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। अवतार कहिण प्रभू साडी अन्तिम लोकमात दी आरती, दीपक गगन थाल वखाईआ। तेरे खेल अग्गे चले ना कोए सफारशी, सिफ्तां विच्चों सिफ्त ना कोए सालाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा नाम चलदा रिहा आरज़ी, जुग जुग रूप बदलाईआ। किसे समझ ना आई तेरे शब्द सार दी, शहिनशाह तेरी बेपरवाहीआ। जिस वेले नानक रबाब वजाई निरँकार दी, तूं ही तूं ही राग अल्हाईआ। जिस वेले गोबिन्द धार वेखी खड़ग खण्डे सार दी, निक्की तिक्खी रूप दरसाईआ। उस वेले खेल होई एकँकार दी, इक इकल्ला कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। अवतार कहिण असीं दीपक वेखीए बलदे, सोहणा रंग रंगाईआ। जेहड़े तेरे नाम संदेशे रहे घल्लदे, जुग जुग मात सुणाईआ। धर्म सिंघासण रहे मल्लदे, सच दवारे डेरा लाईआ। पड़दे खोल्हदे रहे अटल दे, सचखण्ड दवारा इक जणाईआ। असीं खेल वेखदे रहे कल दे, की कलयुग कार कमाईआ। साडे कौल इकरार वेले बलि दे, बावन नाल दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। तेई अवतार कहिण सीता राम ते राम सीता, सब दा इक्को नज़री आईआ। धुर दे नूर नूर दा मीता, तन वजूद ना कोए चतुराईआ। जिस दा खेल आदि मध नीकन नीका, जुग चौकड़ी ना कोए समझाईआ। सद प्रेम दी दस्से प्रीता, प्रीतम हो के वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण चला के रीता, लोकमात वेख वखाईआ। आपणा रूप दस्स अनडीठा, जुग जुग पड़दा पाईआ। कोटां विच्चों किसे गुरमुख चाढ़ के रंग मजीठा, धुर दा नूर दए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। अवतार कहिण खेल वेखणी न्यारी, निरँकार तेरी वड्याईआ। कद्दे होए कलयुग अन्तिम वारी, सदी चौधवीं दए गवाहीआ। मुहम्मद छड के आया चार यारी, ईसा मूसा ख़ाली हथ्थ वखाईआ। राम कृष्न करन ना कोए प्यारी, प्रीआ रूप ना कोए जणाईआ। नानक गोबिन्द छड्डी दुनिया सारी, बिना गुरमुखां हथ्थ किसे ना आईआ। जां तक्कीए तेरा धुर दरबारी, दरगाह साची अक्ख उठाईआ। उथे इक्को नूर जोत उज्यारी, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जन भगतो भगतां विच ना कोए मर्द ते ना कोए नारी, बच्चे प्रभू दे सारे सोभा पाईआ। जुग चौकड़ी पिच्छों आउंदी इक

दी वारी, अनेक दा इक्को रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। अवतार कहिण गुरमुखो जगत श्रृंगार कूड़ी माया, गुरमुख नेत्र अक्ख ना कोए भवाईआ। जोबन जवानी चार दिन दी छाया, मुड़ के हथ्थ किसे ना आईआ। जिन्हां भगतां प्रभू दा गीत गाया, रसना नाल वड्याईआ। ओन्हां मुड़ के जन्म कदे ना पाया, चुरासी विच ना कोए भवाईआ। ओन्हां दा इक्को दाई दाया, सतिगुर नानक गया जणाईआ। जिन्हां इक पुरख अकाल मनाया, गुर गोबिन्द होए सहाईआ। जिन्हां इक्को राम प्रनाया, ओह सीता सुरती दर ते साचे बैठी सोभा पाईआ। जिन्हां इक्को काहन हंढाया, सो राधा आपणे रिदे तों बाहर बैठी डेरा लाईआ। उस प्रभू ने ब्रह्मण्ड खण्ड रचाया, धरनी धरत धवल धौल आकाश सुहाया, जल थल महीअल ओह आपणी कार कमाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे रहिण ना देवे राया, राउ रंक इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। अवतार कहिण जन भगतो तुसीं सारे इक्को गोती, दूजा नज़र कोए ना आईआ। बाहरों तन ना वेख्यो अन्दरों वेख्यो प्रभ दी जोती, घट घट अन्दर सोभा पाईआ। निगाह आपणी जगत विहार विच कदे ना करयो खोटी, सब नूं जानणा भैणां ते माईआ। ते भगतां आउणा सब तों उत्ते चोटी, कबीर जुलाहा दए गवाहीआ। जिथ्थे लभ्भदे कोटन कोटी, खोज्जयां हथ्थ किसे ना आईआ। वेखो खेल प्रभू दी अनोखी, निराली आप जणाईआ। क्यों गवाही देवे रविदास चमारा मोची, गुरमुख आपणी रीत चलाया। पंज लिखारीआं दुनिया उठाणी सोती, सुत्तयां लए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। अवतार कहिण जन भगतो इक्को वार झाती लओ मार, वेला अन्त अन्त जणाईआ। कदी तक्कयो ना किसे दी नार, हार श्रृंगार विच सब नूं जानणा भैण ते माईआ। तुसीं सारे बध्धे विच प्यार, प्रेमी प्रीतम इक्को लैणा मनाईआ। जिस ने सृष्टी दी रचना रची संसार, संसारी भण्डारी सँघारी बैठे सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। अवतार कहिण जम्मू वाल्यो दे दयो जेब विच पाई रस्सी, हथ्थ उपर लओ उठाईआ। जेहड़ी सगनां वाली वस्त मिशरी कूजा सांभ के रखी, ओह एथे दयो टिकाईआ। जेहड़ी चेला सिँघ दे हथ्थ विच पट्टी, हथ्थ दयो फड़ाईआ। वेख्यो किसे दी भरयो कोए ना चट्टी, बिना शब्द गुरु तों होए ना कोए सहाईआ। जद वस्त मंगो ते मंगो नाम दी रती, दूजी कम्म कोए ना आईआ। जे प्रीती पाओ ते इक नाल पक्की, जो आत्म परमात्म दा मेला मेले सहिज सुभाईआ। जद धर्म कमाओ ते जन्म दे रहो जती, दूसर अक्ख ना कोए तकाईआ। फड़ा दयो मोमबत्ती, जेहड़ी लै के आए चाँईं चाँईंआ। ओह किथे जे जम्मू वाल्यो तुहाडा हिन्दसा छत्ती,

छत्तीआं जुगां दी नानक देण आया गवाहीआ। दुआबे विच्चों आ जावे सूत दी अट्टी, मौली तन्द बंधाईआ। गुलाटी एथे रख दे फट्टी, सच नाल दृढ़ाईआ। जन भगतो सब ने कलयुग कूड़ी क्रिया दी हद्द जाणा टप्पी, छलांग नाम वाली लगाईआ। इक्को मन्नणा पुरख अकाल कमलापती, जेहड़ा आदि अन्त जुगा जुगन्त आत्म परमात्म सब दा पिता माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। अवतार कहिण एह साडा मिसरी कूजा, बावन मंग मंगाईआ। किसे दे अन्दर इष्ट रहे ना दूजा, दुतीआ भाउ मिटाईआ। जिस ने तुहाडा प्रेम करना उग्घा, नाभी रस चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। अवतार कहिण असीं आए चरोके, पिछला पन्ध मुकाईआ। जां धरनी तकी इक दूजे नाल हुन्दे धोखे, धर्मी धर्म ना कोए वखाईआ। जिधर वेखीए पढ़दे पोथे, रसना वाले ढोले गाईआ। दुहाई सचखण्ड दवारे कोई ना पहुंचे, कलयुग जीव रहे कुरलाईआ। बिना प्रभू तों सारे दिसणे औंते, पुत पोतरे कम्म किसे ना आईआ। बाहरों दिसदे सब दे भाण्डे पोचे, अन्दरों करे ना कोए सफ़ाईआ। मन विकार विच खोटे, ज्ञानी विद्वानी प्रभ दा दरस कोए ना पाईआ। जिन्हां पिच्छे गोबिन्द बच्चे जिगर करा के गया टोटे, छोटे नीहां हेठ दबाईआ। ओह भम्बल भूसे खांदे सागर जगत विच लैंदे गोते, पार किनारा ना कोए वखाईआ। जिधर तक्कण इक दूजे नाल हुन्दे धोखे, सच दा राह ना कोए चलाईआ। प्रभू दा भाणा कोए ना रोके, सारे रहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। पैग़म्बर कहिण या ख़बरा ज़बू या विशका नवी याबचा ज़ूअ चाने नूरे नज़ा निज़ामे हक नूर इलाहीआ। सतिगुरु गुरदेव कहे मेरा दाता बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। जिस दा आदि अन्त जुगा जुगन्त इक्को मार्ग ते इक्को राह, मंज़ल इक्को इक समझाईआ। उस नूं किसे राम कृष्न अल्ला वाहिगुरु किहा खुदा, खुद मालक सब दा पिता माईआ। चहुं जुगां विच सारे होए जुदा, जुज़ आपणा वंड वंडाईआ। नाम कल्मयां दी पई अदा, वक्ख वक्ख करी पढ़ाईआ। अन्त करन सर्ब दुआ, सजदयां विच सीस झुकाईआ। साडे मालक प्रितपालक धुर दे ख़ालक निरगुण नूर जोत कर रुशना, कलयुग अंधेर दे मिटाईआ। तैनूं मन्नया इक अलाह, इक अल्ला आलमीन तेरी सरनाईआ। जिधर वेखीए सृष्टी भरी गुनाह, पतित पुनीत पापां मैल ना कोए धुआईआ। सानूं ऐं जापदा सदी चौधवीं सारयां हो जाणा अन्त फ़नाह, बचया रहिण कोए ना पाईआ। इक वार मेहरवान हो के आपणे चरणां दे पनाह, निउँ निउँ सीस निवाईआ। पैग़म्बरां दा लेखा चुक्के बावा आदम ते माई हव्वा, हज़रत ईसा ना कोए वड्याईआ। पिछला लेखा दयो पड़वा, गऊ दी मूर्ती वेखे चाँईं चाँईंआ। इक वार आपणी तार सितार फेर वजा, नानक रबाबी नूर बण इलाहीआ।

तैनूं भगत उधारन दी सदा अदा, जुग जुग वेस वटाईआ। कलयुग अन्तिम फेर आ, आपणा फेरा पाईआ। असीं तक्कीए ओह मलाह, जो खेवट खेटा नाम रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा दए उठाईआ। पैग़म्बर कहिण माझे वाल्यो सत्त रंग दी दे दयो पग्ग, मुहम्मद राह तकाईआ। वेखणा खेल जग, जगत जुगत समझाईआ। अग्नी लग्गी अग्ग, चारों कुण्ट दुहाईआ। बिना भगतां तों दीपक किसे घर नहीं जाणा जग, जम्मू वाले देण गवाहीआ। कलयुग जीव होए कग्ग, सोहँ हँसा नाम रहे भुलाईआ। कूड़ी क्रिया दी पींदे मदि, नाम खुमारी ना कोए चढ़ाईआ। खांदे मच्छी डड्ड, सूरां गऊआं वंड वंडाईआ। आत्मा परमात्मा नालों हो गई अड्ड, सके ना कोए मिलाईआ। दरगाह साची लए कोए ना सद्द, पुरख अकाला अंग ना किसे लगाईआ। जन भगतो तुसीं सारयां दी पार करनी हद्द, इक्को हदूद वेखणी चाँईं चाँईंआ। जिथ्थे प्रेम प्रीती जाए बज्झ, प्रीतम इक्को नज़री आईआ। आत्म परमात्म रहे ना कोए अलग्ग, वक्खरा घर ना कोए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब सुल्तान वड वड्याईआ। पैग़म्बर कहिण सत्त रंग दी पग्ग दा बन्न्हणा इक मंडासा, आपणा बल प्रगटाईआ। जिन्हां दे मुख विच ल्या पतासा, बग़लीआं गल लटकाईआ। हथ्थ विच फड़या कासा, एह नानक बग़दाद विच आया सुणाईआ। जिस वेले कलयुग दा पुरख अकाल वेखण आया तमाशा, निरगुण हो के फेरा पाईआ। सम्बल करना वासा, गोबिन्द नाल वड्याईआ। जोत नूर होवे प्रकाशा, कलि कल्की नाउँ धराईआ। निरगुण धार जोत दए भरवासा, अमाम अमामा फेरा पाईआ। लेखे ला भगतां स्वासा, साह साह आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। पगड़ी कहे मेरे सत्त रंग, सोहणे नज़री आईआ। मुहम्मद नच्चदा बण मलँघ, डौरु आपणा डंक वजाईआ। मेरी सदी चौधवीं वी रही लँघ, वेला अन्तिम दए दुहाईआ। अन्तिम सौणा मिले किसे ना पलँघ, सुखआसण ना कोए वड्याईआ। सब ने भज्जणा पैरीं नंग, नस्सणा वाहो दाहीआ। किसे ने दुलदुल दा कसणा नहीं तंग, ऐलीशाह रोवे मारे धाहीआ। धुर दे नाम दा वहिण वहिणा गंग, चारों कुण्ट दए रुढ़ाईआ। खाणा मिलणा तीजे डंग, चुल्ल्हा घर ना कोए तपाईआ। नाम दा कलमे दा किसे नहीं होणा संग, संगी संग सारे जाण तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सत्त रंग कहिण असीं सोंहदे उस सीस, जो सीस आपणे लेखे लाईआ। जिस नूं मन्नदे सर्ब जगदीश, जगदीश्र बेपरवाहीआ। जिस दा कलमा इक हदीस, करे हक पढ़ाईआ। देवे धुर तौफ़ीक, तोहफ़े झोली पाईआ। ओह सब दी पूरी करे उम्मीद, तृष्ना दए चुकाईआ। ग़फ्लत खोल्हे नींद, नेत्र लोचण नैण करे रुशनाईआ।

काया करे सीत, अग्नी तत बुझाईआ। वेखे मन्दिर मसीत, काअब्यां खोज खुजाईआ। मुहम्मद बैठा रख के उडीक, सदी चौधवीं राह तकाईआ। जिस ने शरअ दे उत्ते सच हुक्म दी फेरनी लीक, लाईन नाम दी देणी लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। नानक गोबिन्द कहे इक्को मन्नणा पुरख अकाल, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जो सब दा दीन दयाल, दया निध सहिज सुखदाईआ। वसे काया माटी धर्मसाल, साढे तिन्न हथ्थ डेरा लाईआ। दस्स के नाम सुखाल, हिरदे करे सफ़ाईआ। कलयुग होए कंगाल, त्रैगुण तोड़ जंजाल, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। जन भगतो एसे तरह तुहाडे अन्दर दीपक देणे बाल, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। प्रभू कदी नहीं वेखदा कवण शाह कवण कंगाल, ग़रीब निमाणयां आपणे गले लगाईआ। जुलाहिआं चम्यारयां आपे पुछे हाल, नाईआं आपणा रंग चढ़ाईआ। ग़रीबां होए प्रितपाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। हुण सारे वेला वक्त लओ संभाल, गया फेर हथ्थ ना आईआ। जुग चौकड़ी पिच्छों परम पुरख दा कदे वजदा ताल, जुग जुग सरगुण वेस वटाईआ। अग्गे वेखणा खेल हाल, माज़ी दा झगड़ा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, । नानक गोबिन्द कहे साडी साची सिख्या, सिख चार वरन अख्वाईआ। जिस दा अक्खर कोई नहीं लिख्या, ओह मालक धुरदरगाहीआ। एह सृष्टी दिसदी मिथ्या, अन्त रहिण कोए ना पाईआ। ओ जन भगतो किसे नाल लग्ग के कोई ना जावे भिट्टया, आत्म हर घट अन्दर इक्को नूर इलाहीआ। जेहड़ा सतिगुर दवारे विक्या, कीमत आपणी गया चुकाईआ। एह भगतां वांगू मन होवे टिक्या, लोक लज्जया परे हटाईआ। क्यों ज़िंदगी विच्चों जीवण दा मिलदा सिट्टया, जिस सिर सतिगुर हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। गोबिन्द किहा मेरी गोबिन्द गोबिन्द धार, गोबिन्द रंग रंगाईआ। मेरा खेल नाल अकाल, परम पुरख सरनाईआ। मैं किसे माता दी कुख्ख दा बणना नहीं बाल, जम्मण वाली अवर कोए ना माईआ। मैं इक्को मंज़ल चढ़ना जिथ्थे मिले दीन दयाल, दयानिध दया कमाईआ। सृष्टी दी दृष्टी विच मार्ग दस्सणा सुखाल, सिध्धा राह वखाईआ। जिथ्थे खुशीआं नाल प्रभू दे दवारे नच्चण टप्पण शाह कंगाल, राज राजान वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को मन्दिर इक्को मकान, इक्को नूर श्री भगवान, इक्को जोत शाह सुल्तान, इक्को दिसे रंक राजान दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस दी सिफ्त करन चार वेद अठारां पुराण, शास्त्र ढोले गीत गाण, गीता महिमा करे महान, सिफ्तां नाल भरी अञ्जील कुरान, गुरु ग्रन्थ उसे दी दए सफ़ाईआ। जेहड़ा मालक कुल जहान, लख चुरासी देवे दान, विष्न ब्रह्मा सेव कमाण, सूर्या चन्द चमकण भान, धरनी धरत धवल चरण धूढ़ी मंगे दान, जल थल महीअल

राह तकाण, बिना अक्खां अक्ख उठाईआ। आत्मा सखी एसे दा राह तके ओस काहन, जो घनईया नईया नाम वाली लए चढ़ाईआ। मेहरवान हो के पकड़े बहीआ, सतिगुर हो के आपणा संग निभाईआ। उथे धर्म राए ना कढे बहीआ, चित्रगुप्त ना लेख चुकाईआ। उथे सीस झुकाउंदी अष्टभुज देवा मईआ, निउँ निउँ लागे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नानक किहा गोबिन्द वेख अगम्म नज़ारा, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। कलयुग दा अन्त होवे किनारा, नईया पार ना कोए कराईआ। धुर दे नाम दा रिहा ना कोए सहारा, कायनात देवे ना कोए वड्याईआ। झगड़ा प्या गुरु अवतारा, पैग़म्बर करन लड़ाईआ। पुरख अकाल खेल अपारा, अपरम्पर स्वामी रिहा कराईआ। गोबिन्द किहा धुर दी धार नाल मैं वी फेर आवां दुबारा, शब्दी आपणा डंक वजाईआ। खण्डा खड़ग म्यान विच रखा इक तलवारा, चिल्ला तीर कमान तरकश ना कोए उठाईआ। जिधर जावां इक आत्मा परमात्मा दा ला आवां जैकारा, जुग जन्म दे विछड़े लवां मिलाईआ। साचे गुरमुखां दा ला के अखाड़ा, दीन दुनी दे झगड़े दयां उठाईआ। इक प्रभू बणा के धुर दा लाड़ा, लख चुरासी ओसे नाल प्रनाईआ। जिस दे अग्गे गुर अवतार पैग़म्बर जुग जुग कढदे हाढ़ा, हथ्थ जोड़ के वास्ता पाईआ। ओह खेल करे विच संसारा, साहिब सुल्ताना वेस वटाईआ। फेर सुणावां इक जैकारा, ढोला अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। गोबिन्द कहे मैनूं याद आई दुष्ट दमन दी रीत, पूरब दयां जणाईआ। जिस दा लेखा कोई नहीं सक्या उलीक, अक्खरां विच ना कोए दृढ़ाईआ। शहादत विच करे ना कोए तस्दीक, कलम शाही ना कोए चतुराईआ। अग्गे होए ना कोए नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। इक दी इक नाल प्रीत, इक्को राह तकाईआ। उस वेले दुष्ट दमन खुश हुन्दा सी सुण के पहाड़ी गीत, पहाड़ां विच रह के आपणा झट लँघाईआ। जम्मू वाल्यो तुहाडे कोल एहो उम्मीद, आसा पिछली नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जम्मू वालीआं बीबीआं गाउणा इक गीत, पहाड़ी राग अलाईआ। गुरमुखो जेहड़ा ल्यांदा इक इक दाणा, ओह सुट्ट के दयो वखाईआ। दुष्ट दमन ने गोबिन्द दी धार विच एसे कर के मंग्गया इक दाणा, आपणा हुक्म सुणाईआ। फेर जोती जोत समाणा, तन सरीर देणा गंवाईआ। फेर उडना बिना बिबाणा, दो जहान पन्ध मुकाईआ। फेर आउणा विच जहानां, शब्दी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी साची खेल वखाईआ। जम्मू वालीआं बीबीआं गाउणा नाल चाअ, खुशीआं विच वड्याईआ। शब्द गुरु मन्नणा मलाह, बेड़ा पार दए कराईआ। इस ज़िंदगी दा कोई नहीं वसाह, अन्त रहिण कोए ना पाईआ। दुनिया पापां

भरी गुनाह, अन्दर करे ना कोए सफ़ाईआ। तुहाडा किसे दा सहाई होया नहीं जे पिता माँ, भाई भैण कम्म किसे ना आईआ। साक सबंधीआं नूं पीण खाण दा दाअ, ते माया विच सर्ब हल्काईआ। ओ गुरमुखो कलयुग कूड़े नाते छड के इक्को पुरख अकाल लओ मना, दूजा हिरदे ना कोए वसाईआ। ओसे दी मुहम्मद कीती दुआ, हमद विच ढोला गाईआ। ओसे नूं ईसा मूसा सीस गए झुका, निउँ निउँ लागे पाईआ। ओसे दी नानक रबाब लई वजा, सतिनाम दा ढोला गाईआ। ओसे नूं वाहिगुरु आख के गोबिन्द जैकारा दिता लगा, फ़तिह दा डंका इक सुणाईआ। ओसे नूं सदा सदा दिता भविक्ख्तां विच गा, गहर गम्भीर तेरी बेपरवाहीआ। जद आवें निरगुण नूर जोत कर रुशना, जोती जाता हो के वेस वटाईआ। गुरमुखां दी पकड़नी बांह, सूफ़ीआं अंग लगाईआ। भगतां लईं उठा, सोया रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी धार इक समझाईआ। गाउण गाणा नाल प्रीत, मल्ल सिंघ सगन करदे भेंटा, पूरब लेख चुकाईआ। जन भगतो सारे सज्जा हथ्थ रखो उत्ते आपणे पेटा, सहिज नाल दयो दबाईआ। मुक्खों कहो हरिजन प्रभू दा बेटा, दूजा मात पित ना कोए अख्वाईआ। पिछले जन्म दा सारे करो चेता, चार जुग दा लहिणा वेख

३३१ वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखो ठेका, ठेकेदारी कवण कमाईआ। तुहाडा सति किसे ना वेचा, कूड़ी क्रिया ३३१

२२ करे कवण कुड़माईआ। कवण मारे माया ममता पेचा, हउमे हंगता नाल लड़ाईआ। कवण देवे त्रैगुण माया सेका, अग्नी २२

तत जलाईआ। गोबिन्द किहा चार वरन कर लओ एका, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैशां वंड ना कोए वंडाईआ। पुरख अकाल मन्नो जो आदि अन्त रहे हमेशा, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। जिस दा सचखण्ड साचा देसा, दरगाह साची सोभा पाईआ। ओह कृपाल हो के दयाल हो के शब्द गुरु दा जुग जुग करे वेसा, अवतार पैग़म्बर गुरु आपणा रूप बणाईआ। फिरे लोकमात परदेसा, भज्जे वाहो दाहीआ। जिस ने बख्शे मुच्छ दाढ़ी केसा, मूंड मुंडा के बोदी दिती वखाईआ। जिस ने तन वजूद कटा के मुहम्मद जणाया लेखा, कलमा हक पढ़ाईआ। जो निरगुण धार सरगुण बदले रेखा, ऋषीआं मुनीआं दए दृढ़ाईआ। सो खेल करे प्रभ धार अवल्लड़ा वेसा, कलयुग वेखे वेसवा रंग लोकाईआ। माया विच मायाधारी दा पेशा, पेशीनगोई वेद व्यासा दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा आपणा हुक्म वरताईआ। गोबिन्द कहे मैं माछूवाड़े सुत्ता, सोहणी सेज हंढाईआ। पुरख अकाल ने किहा पुत्ता, शब्दी शब्द उठाईआ। मैं हस्स के किहा मैं तैनूं की पुछां, की मंग मंगाईआ। फेर ताअ दे के मुच्छां, आपणी लई अंगड़ाईआ। फेर दुबारा हुक्म देवें कलयुग दी जड़ पुट्टां, एसे करके बच्चे नीहां हेठ दबाईआ। तेरे नालों कदे ना टुट्टां, ओह गुरमुख टुटयां लवां जुड़ाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गोबिन्द कहे मेरा होए वक्त सुहाउणा, सोहणी रुत सुहाईआ। संदेशा देवे दो जहान पाउणा, शब्दी शब्द दृढ़ाईआ। ओस वेले मैं सुणना ओह गाउणा, जेहड़ा डल्ले नूं मालवे विच समझाईआ। ओह टिल्लयां वाल्यो रेता वाल्यो तुहानूं बागां विच बहाउणा, सहिज नाल सुणाईआ। उजड़या खेड़ा फेर वसाउणा, एह मेरी बेपरवाहीआ। हुण सब कुछ भेंट कराउणा, ख़ाली हथ्थ ताली दिती वजाईआ। पुरख अकाल इक मनाउणा, जो धुर दा पिता माईआ। ओसे नूं ओसे दा रूप हो के नाल ल्याउणा, दोहां नूं जन्मे कोए ना माईआ। ओह जोत धार मैं शब्द गुरु अख्वाउणा, डंका इक्को नाम वजाईआ। गोबिन्द किहा जे शरीर कर के आवां चन्द दिन दा पराहुणा, फेर हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। मालवे वालीआं बीबीआं गाणा गाउणा नाल प्रेम, राग घोड़ीआं विच अलाईआ। हिरदिउँ कहिणा असीं प्रभू दे नाल रखणा नेम, दूजी आस ना कोए रखाईआ। जिस ने तपस्सया कीती उस दा पिछला कुण्ट हेम, जलधारा सीस विच पवाईआ। उस दा सदी चौधवीं दा अन्त होणा जे टैम, जिस्त टांक वंड ना कोए वंडाईआ। गुरमुखो रहिणा हुण कैम, कायम मुकाम दए समझाईआ। ज़रूर करे रहम, रहमत दा मालक इक अख्वाईआ। वेख्यो दुनिया तों डर के ना जायो सहिम, हौसले लैणे वधाईआ। ते अन्दरों कढणा वहिम, कदे मिले ना नूर इलाहीआ। बिन नेत्र वेखणा उस ईसाई सैण, जो सज्जण इक अख्वाईआ। तुहाडे विच रहिण नहीं देणा कोई तरफ़ैण, वरन बरन दा डेरा ढाहीआ। मज़्हब दा झगड़ा नहीं देणा पैण, कलमा वंड ना कोए वंडाईआ। तुहाडा निशाना गोबिन्द दे नाल ऐन दा ऐन, नुक्ता ग़ैन ना कोए समझाईआ। सब नूं समझणा भाई भैण, ठग्गी चोरी यारी ना कोए कमाईआ। तुहाडे कोल नाम दी रसैण, जिस नूं सके ना कोए चुराईआ। तुहाडे साहमणे कलयुग माया राणी होणी शुदैण, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। छत्रधारीआं खावे हो के डैन, घर घर फेरे पाईआ। जिस वेले बाल्मीक ऋषी ने लिखी सी रमाइण, राम दी शहादत राम तों बिना दिती पाईआ। जिस वेले अर्जन दा कृष्न ने खोल्ह्या सी नैण, निज नेत्र कीती रुशनाईआ। अठारां ध्याए विच लग्गा कहिण, हुक्म विच सुणाईआ। जिस वेले कलयुग दा वगया वहिण, अर्जना फेर मैं काहन ते मेरा काहन फेरा पाईआ। सब दा लहिणा चुकावे देण, देवणहार इक हो जाईआ। जिस नूं कहिंदे कामधेन, ओह गुरमुखां दे अन्दर अमृत रस दए भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। ओ जन भगतो एह अस्सू दा सगण, जम्मू वाल्यां संग मालवे गंढ पवाईआ। सच प्रेम दी चाढ़्हो रंगण, रंगत कूड़ी दयो गंवाईआ। वेख्यो कदी किसे दवारे ना जायो मंगण,

बिना प्रभू दे झोली ना कोए भराईआ। जगत नेत्र मीट ना होयो अंधन, अक्खीआं मीट ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगतो एह सगण पाउणा ओस दी झोली, जो झूला नाम झुलाईआ। जेहड़ी चढ़ी नहीं कदी किसे दी डोली, तत्तां वाला कन्त ना कोए हंढाईआ। जद सुणे ओस प्रभू दी बोली, शब्दी राग आपणे विच वसाईआ। जद खेले उस दे प्रेम दी होली, आपणा आप दए कटाईआ। जद तुले उस दे कंडे दी बण के तोली, तुलहा अवर ना कोए रखाईआ। ओह वक्त पहुँचया बावन दा लेखा ते कलयुग अन्त होली, हौला भार सब दा दए कराईआ। पहलों सारे इक वार ज़ोर नाल पाओ रौली, प्रभू लोहड़ा की रिहा पाईआ। फिर हथ्थ मारो उपर डौली, पहलवान बण के दोवें हथ्थ उठाईआ। फेर पैरां नाल कुट्टो धौली, धरनी दयो हिलाईआ। फेर छेती उठो तौली, ताली दयो लगाईआ। प्रभू दे नाम दी करनी बौहणी, खुशीआं दिन वज्जे वधाईआ। हुण तुहाडी इक्को वार पक्क जाए हाढ़ी साउणी, रबी ख़रीफ़ वंड ना कोए वंडाईआ। आपणे काया कँवल दी सतिगुर अग्गे डाह दयो कौली, अमृत रस दे भराईआ। तुसीं गोबिन्द दे सारे बण गए पाहुली, खण्डा धार विच तराईआ। कृष्न दी धार वेखो सौली, सोहणा रंग चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल खिलाईआ। सब ने उच्ची देणा होका, हुक्म सुणो बेपरवाहीआ। सिख सिख नाल करे कोए ना धोखा, गुर गोबिन्द गया समझाईआ। पुरख अकाल दा सब ने बणना पोता, इक्को घर वज्जे वधाईआ। झगड़ा छडणा चौदां लोका, चौदां तबक ना कोए चतुराईआ। तूं मेरा मैं तेरा सब ने गाउणा इक सलोका, सोहँ ढोला नानक गया लगाईआ। पुरख अकाल नूं मिलणा नाल शौका, मन चाउ घनेरा इक जणाईआ। जन भगतो तुहाडे अन्दर जुग जन्म दीआं जोतां, एह बीबीआं जोतां वालीआं देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। सगन कहे मैं प्या पुराणा, पुराण भविक्ख्त दए मेरी गवाहीआ। गरड़ विच लेखा लिख्या मुहाणा, नावें कांड विच समझाईआ। वेद व्यासे किहा वरतणा भाणा, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। राम ने दस्सया बीआबाना, सीता तांईं सुणाईआ। राधा हलूणा दिता कृष्ना कान्हा, अन्तर निरन्तर हिलाईआ। मूसा कर ध्याना, कोहतूर अक्ख खुलाईआ। ईसा पहर के जामा, हक आवाज़ सुणाईआ। मुहम्मद सुण कलामा, सदी चौधवीं राह तकाईआ। नानक हुक्म संदेशा दिता महाना, निहकलंक रुशनाईआ। गोबिन्द किहा कल्की आवे विच जहाना, सम्बल डेरा लाईआ। सब दा संदेशा होया परवाना, परम पुरख वेख वखाईआ। निगह मार के दो जहानां, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमानां खोज खुजाईआ। चारों कुण्ट दिसे वैराना, फल फुल डाली ना कोए महकाईआ। आत्मा परमात्मा

३३४
२२

गाए ना कोए तराना, तुरीआ तों परे पन्ध ना कोए मुकाईआ। जां तक्कया गुरसिख गुरसिख नूं समझे बेगाना, मित्र मीत ना कोए सखाईआ। एसे करके गुरमुखां दे हथ्थ विच फड़ाया काना, कायनात देणा समझाईआ। सज्जे पट्ट तों पड़वा के पजामा, इक टंगी रखी लोकाईआ। तूं ही माई बाप गवा के गाणा, पीर पैग़म्बर दिता समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गोबिन्द कहे मुहम्मद दा पिछला खेल ज़रूर, ज़रूरत वेले जणाईआ। जिस वेले उस तक्कया नूर, नूर नूर विच्चों चमकाईआ। अन्दर प्या फ़तूर, फ़तवा आपणे अन्दर लगाईआ। फेर रज़ा कर मंज़ूर, सजदा सीस झुकाईआ। फेर वेख्या खुदा नेड़े कि दूर, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जां तक्कया ते वेख्या हाज़र हज़ूर, जोती जाता सोभा पाईआ। फेर वखाया एह उम्मत एह सुन्नत कूड़ो कूड़, अन्त रहिण कोए ना पाईआ। फेर वखाया मुहम्मदा चरणां ला धूढ़, धूढ़ी मस्तक ख़ाक रमाईआ। मुहम्मद ने आसा कीती आपणा आप कीता चूर, कदमां विच सुटाईआ। ऐ मालक वाहिद तेरा नाम करां मशहूर, कलमा कलमे विच्चों समझाईआ। खुदा ने किहा ज़रा मचा दे फ़तूर, हुक्म इक सुणाईआ। फेर थापी मारी ते भर दिता ग़रूर, ग़ुरबत नाल वड्याईआ। चौदां सदीआं तेरा तपदा रहे तन्दूर, अग्नी जगत वाली डाहीआ। जिस वेले अन्त होया ते फेर आवां ज़रूर, अमाम अमामा फेरा पाईआ। जिस ने मालवे विच्चों ल्यांदा सूर, साधू सिंघ नौ दिन मुहम्मद दे नाल रह के पिछले जन्म विच आपणा झट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। मालवे वाल्यो अजे तक क्यों नहीं गाया गाणा, बचन दयो सुणाईआ। सताई पोह कहे शब्द गुरु दी धारा, धर्म धार वड्याईआ। अगम्मी अगम्म मिले इशारा, अगम्म अगम्मड़ा आप जणाईआ। अलख अगोचर दए नज़ारा, निरगुण धार नूर इलाहीआ। सारे वेखे गुर अवतारा, पैग़म्बरां नाल मिलाईआ। चारों कुण्ट अंध अंध्यारा, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। धुर दा नाम ना कोए उज्यारा, उजरत सके ना कोए चुकाईआ। दीन मज़्हब वध्या हँकारा, हउमे गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। योद्धा सूरबीर बण के मारो लल्कारा, लोकमात लओ अंगड़ाईआ। अगला हुक्म दस्सो संसारा, फ़रमाना अगम्म अथाहीआ। सारे कहिण प्रभू निमस्कारा, दोए जोड़ सीस निवाईआ। असीं मातलोक नहीं जाणा दुबारा, तन वजूद जगत हंढाईआ। कलयुग अन्तिम चले किसे ना चारा, चारों कुण्ट पई दुहाईआ। अमृत रस मिली ना ठंडी ठारा, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। सारे तेरे अग्गे कढदे हाढ़ा, गल पल्लू सीस निवाईआ। पुरख अकाल जोती जामा धार बण जा लाड़ा, लख चुरासी आत्म लै प्रनाईआ। इक्को पुरख अकाल दी सृष्ट सबाई नारा, नर नरायण वज्जे वधाईआ। सच दी धार कर प्यारा, पीआ प्रीतम वेख वखाईआ। साचे भगतां चढ़ां

३३४
२२

दे आपणे खारा, खारी सीस लै उठाईआ। गुरमुख इक्को वार मंगण तेरा वाड़ा, बण के पाँधी राहीआ। फेर उन्हां दा होई सहाई विच जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, टिल्ले पर्बत समुंद सागर फोल फुलाईआ। हरिजन भरया रहे कोए ना चिक्कड़ गारा, दुरमति मैल देणी धुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव खुल्हाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडे जोड़े हथ्थ, हथेली हथेली नाल मिलाईआ। तूं पुरख अकाल समरथ, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। सब दी जाणें मित गत, लख चुरासी विच समाईआ। झगड़ा मेट दे पंज तत, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई करे ना कोए लड़ाईआ। इक्को तेरा नाम लैण जप, इक्को कलमा दे सुणाईआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत्त, साढे तिन्न हथ्थ ना पए दुहाईआ। हर घट हिरदे अन्दर वस, निरगुण डेरा लाईआ। प्रभू साडी हो गई बस, तेरे अग्गे वास्ता पाईआ। चार जुग दे ग्रन्थां तेरा गाया जस, सिफ्तां विच सालाहीआ। कलमा नाम बाणी दा दिता रस, तेरे मिलण दा रस्ता आए वखाईआ। अन्त अख़ीर तेरे उत्ते दिता छड, छड्डी सर्ब लोकाईआ। जगत जहानों हो के अड्ड, धुर दी जोत विच समाईआ। सब दी कीती भावें इक्को वार देवें रद्द, आपणा हुक्म वरताईआ। असीं होईए गद गद, खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। तेई अवतार तेरी यद, मूसा ईसा मुहम्मद तेरी रुशनाईआ। नानक गोबिन्द इक्को जोत गई जग, जामे दस जगत हंढाईआ। अन्त शब्द गुरु किहा गज्ज, ज़ोर नाल सुणाईआ। दीन दुनी विच इक्को तेरा काअबा ते इक्को तेरा हज्ज, हकीकी मालक इक्को नज़री आईआ। इक्को नूर इलाही रब्ब, आलमीन कहि के जिस नूं सीस निवाईआ। पता नहीं क्यों दीन मज़्हब दी पाई हद्द, मनुश मनुश विच वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू तेरी लोड़ा, लोहड़ा प्या लोकाईआ। चढ़ के आ जा शब्दी घोड़ा, घोड़ीआं गावण वालीआं राह तकाईआ। भगत भगवान दा बणा लै जोड़ा, जोड़ी आपणे रंग रंगाईआ। तेरा रूप ना काला ना गोरा, अक्ख नैण ना कोए शरमाईआ। तूं जदों आवें ते भगतां दे अन्दर वसें वांग चोरा, सन्मुख नज़र कोए ना पाईआ। आपणे प्रेम दीआं पा लै डोरा, जम्मू वाल्यां दा धागा दए गवाहीआ। सरसे उपर लाया होड़ा, निरगुण सरगुण धार समझाईआ। हँ ब्रह्म तेरा नवां नकोरा, आत्मा ना मरे ना जाईआ। तेरा शब्द गुरु सदा बांका छोहरा, दो जहान फिरे चाँईं चाँईंआ। अन्त वेख कलयुग अंधेर घोरा, साचा नूर ना कोए रुशनाईआ। तेरा असीं नाम वंड के आए भोरा भोरा, राम कृष्न अल्ला वाहिगुरु सतिनाम झोली पाईआ। उन्हां दी आपस विच पै गई खोरा, खैह खैह करन लड़ाईआ। तेरा धर्म वन्डया उपर ढोरा, सूर गाँ सोभा पाईआ। मेहरवान महिबूब हो के लोकमात पाया मोड़ा, मुड़ आपणा वेख वखाईआ। अग्गे वक्त रह गया थोड़ा, थोड़े तों

थोड़ा पड़दा दे चुकाईआ। तेरे हुक्म भाणे अन्दर कोई अटका ना सके रोड़ा, नानक रोड़ी सक्खर गया जणाईआ। तेरा अमृत रस ना होवे कौड़ा, निम्म रूप ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण तैनूं वेखीए काया मन्दिर काअबे, गुरदवारा साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाईआ। जो भेव खुलाया सतिगुर अर्जन बुढ्ढे बाबे, पर्दा पर्दे विच्चों उठाईआ। पुरख अकाल अन्तिम आउणा देस माझे, सम्बल नगरी डेरा लाईआ। अगम्मी नाम वजाए वाजे, अन्त लहिणा ना कोए रखाईआ। सब दे नाते करे सांझे, दीन मज़्हब डेरा ढाहीआ। जन भगत रहिण ना वांझे, मेला मेले सहिज सुभाईआ। नाम नाम दे फेर के मांजे, अन्दरों करे सफ़ाईआ। हरिजन रहिण पींदे खांदे, जगत चलदयां पार कराईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला रहे गांदे, गा गा खुशी मनाईआ। लोड़ रहे ना किसे पंडत पांधे, सगण गुरमुखां दी झोली आप पाईआ। लख चुरासी जीव आवण ते रहिण जांदे, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज विच फिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू दे दे हयात आबा, अब्बा तेरा राह तकाईआ। लेख वेख कृष्ना राधा, राम सीता की दृढ़ाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद दा तक वायदा, इकरारनामा दए गवाहीआ। नानक गोबिन्द किहा कदे ना होए अलैहिदा, वक्खरा घर ना कोए बणाईआ। शब्द गुरु किहा पुरख अकाल हैगा, निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। जन भगतो जे कीमत नाल लभ्भो दो जहानां नालों महिंगा, धन दौलत नाल हथ्थ किसे ना आईआ। जो उस दा भाणा सहिंदा, हुक्मे विच सीस निवाईआ। सच पुछो प्रेम विच उस दे काया मन्दिर अन्दर बहिंदा, आपणा डेरा लाईआ। मुहम्मद ने किहा महिबूब कदे ना मिले चढ़दा लहिंदा, मशरक मग़रब वंड ना कोए वंडाईआ। जां तक्कया ते ज़िमीं असमानां दा इक्को पैंडा, चौदां तबक होई रुशनाईआ। फिर वेख्या वहिण वगे नैं दा, आबेहयात रूप वटाईआ। फेर ठकोरया विच्चों रोग कढ्ढ्या हउमे दा, हंगता दिती गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण असीं वेखणा सांझा समाज, सतिजुग दी रीती सोभा पाईआ। की खेल होणा कलयुग तों बाद, चार कुण्ट वज्जे वधाईआ। इक परम पुरख दा होणा राज, रईयत इक्को रूप दरसाईआ। इक्को नाम वज्जणा नाद, धुन अनादी इक दृढ़ाईआ। सब ने जाणा जाग, सुत्ता रहिण कोए ना पाईआ। सुणो हुक्म आवाज़, शब्दी बोल जणाईआ। दुआबे वाल्यो तुसां गीत गाउणा सुहाग, अग्गे आउणा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणी कार कमाईआ। गीत गाउणा नाल खुशी, खुशीआं विच वड्याईआ। प्रभ दे नाल लाउणी रुची, मन कल्पणा देणी गंवाईआ। आत्मा करनी सुच्ची, दुरमति

मैल धुआईआ। भाग लगाउणा पुत्ती, मिले माण वड्याईआ। धार रहे ना दूजी, दुतीआ भाउ गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पुरख अकाल कहे सतिजुग साची वेखो रीती, सच सच विच समझाईआ। सब दी सांझी इक्को प्रीती, भाईचारा इक वखाईआ। जेहड़ा खून गोबिन्द ने कढ्या विच्चों चीची, चिरी विछुन्ने रिहा मिलाईआ। भगत राम कृष्न दी बग़ीची, सूफ़ी सन्तां नाल सुहाईआ। साची धार गावण मीठी, ढोला अगम्म अथाहीआ। खेल तक्कण अनडीठी, जिस नूं जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। आपणी कमाई लैण कीती, पिछला लेखा संग रखाईआ। की खेल वेखणी बीती, अगली अग्गे दे समझाईआ। सब ने साफ़ रखणी नीती, हिरदे हरि जू लैणा वसाईआ। कानपुर इटारसी वालीआं बीबीआं गाओ इक गीती, राग सोहणा इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पुरख अकाल कहे वेखो वक्त सुहाणा, सब नूं दयां वखाईआ। इक्को गाउण गाणा, इक्को रंग रंगाईआ। गुरमुखो तुसीं प्रभू दे घर बण के आए पराहुणा, आपणा पन्ध मुकाईआ। इक्को घर विच कुड़ी ते मुंडा सब ने व्याहुणा, सौहरे पईए वंड ना कोए वंडाईआ। अग्गे वास्ते इक दूजे नूं बुरा नहीं किसे तकाउणा, गुरमुख समझ के झट लैणा लँघाईआ। मुड़ के फेर जगत नहीं आउणा, जगत वासना मिले ना कोए वड्याईआ। भैण भाई मात पिता संग नहीं किसे निभाउणा, झूठे नाते वेखो नेत्र रोवण मारन धाहीआ। आपणा बीज आपणे हत्थीं बोणा, गुर सतिगुर सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतो तुहाडे सांझे हो गए रिश्ते, दूई रही ना राईआ। सच पुच्छो तुहाडे कोलों डरदे फ़रिश्ते, ज़बराईल अज़राईल बैठे सीस निवाईआ। तुहाडे नूर अगम्मी दिसदे, हिरदे इक रुशनाईआ। जन भगत दूजे हट्ट कदे ना विकदे, टकयां वाली कीमत ना कोए रखाईआ। जे तुसीं बच्चे इक दे, ते इक नूं लओ मनाईआ। जे तुसीं सीर पीते माता वाली छाती हिक्क दे, रसना मुम्मा मुख लगाईआ। फेर क्यों दुक्खां विच पिटदे, कल्पणा विच कुरलाईआ। तुहाडे खैहड़े छुडा दिते पथ्थर इट्ट दे, इक्को नूर जोत नाल दिता मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा आपणा हुक्म वरताईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण अगला खेल अवल्ला, अवल्ल इक जणाईआ। जन भगतां दा भारी वेख्या पल्ला, बंधी गंढ ना कोए खुलाईआ। जिस नूं कहिंदे अलाह अल्ला, अलीहैदर नाअरा लाईआ। उस नूं वेखणा वसा के महल्ला, पिछली रीती दिती मिटाईआ। पूरब जन्म दा दे के फला, भुक्ख्यां दिता रजाईआ। दस्स के निहचल धाम अटला, पैंडा दिता मुकाईआ। जिथ्थे करे कोए ना हल्ला, हिन्दू मुस्लिम सिख ना कोए लड़ाईआ। मालक इक ते

हुक्म देवे इकल्ला, अकल कलधारी आपणी कल वरताईआ। खेल करे धरनी उपर थला, जल थल खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा आपणा हुक्म वरताईआ। अवतार पैग़म्बर कहिण गुर गोबिन्द दस्स कोई कहाणी, की कहावत जगत जणाईआ। ओ क्यों नहीं जुझार नूं दिता पाणी, ख़ाली हथ्थ भवाईआ। की खेल विच नानक बाणी, रागां विच वड्याईआ। किस बिध पार होए प्राणी, प्राणपत मिल के ख़ुशी मनाईआ। गोबिन्द किहा मैं इक्को दस्सी निशानी, निशाना सति समझाईआ। जेहड़ा सतिगुर कदे ना होवे फ़ानी, मढ़ीआं गोरां विच डेरा कदे ना लाईआ। जद चाहे भगतां उत्ते करे मेहरबानी, मेहर नज़र नाल लए तराईआ। ओस दे अग्गे देणी पए ना कोए कुरबानी, सिर्फ़ नमस्ते कर के सीस निवाईआ। दो जहान आए कदे ना हानी, नेत्र अक्ख ना कोए शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। गोबिन्द किहा गुर अवतार पैग़म्बरो औह वेखो देस माझा, सम्बल खोज खुजाईआ। सारे सुणो इक आवाज़ा, हुक्म अगम्म अथाहीआ। इक्को वेखो धुर दा राजा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दे अग्गे ना कोई सवाल ते ना जवाबा, जुआब तल्बी विच सारे लए बुलाईआ। हुण कौल इकरार करना पैणा ते छडणा पैणा काअबा, हुजरयां सीस ना कोए झुकाईआ। पिछला पूरा करे खुआबा, ख्वाजा खिज़र राह तकाईआ। अग्गे नूं नाम दे के सादा, साध बिना साधना दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। गोबिन्द कहे गुर अवतार पैग़म्बरो सारे तक्को दो बीबीआं बदली चोली, अग्गे हो के लओ अंगड़ाईआ। इक शब्द धार दी गोली, जोगिन्दर सोभा पाईआ। राज कुमारी प्रहलाद दे वेले खेडी सी होली, खुशीआं आपणा रंग इक वखाईआ। दोहां दा लेखा गोबिन्द नाल जिस ने शब्द धार पाई रौली, अन्तर निरन्तर दिता समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो वेखो रूप अनूप सरूप, सुरत शब्द समाईआ। वेखो शहिनशाह शाहो भूप, नाता धुरदरगाहीआ। वेखो चारे कूट, हरिजन बैठे डेरा लाईआ। छड के जूठ झूठ, इक्को पुरख अकाल मनाईआ। सब ने छड जाणा गुरमुखो पंज तत दा कलबूत, हार शृंगार कम्म किसे ना आईआ। आपणे सतिगुर नूं आपणे विच समझो मौजूद, अन्दर बैठा वेखे चाँईं चाँईंआ। जो गुर अवतार पैग़म्बर आया ओह वी कर के गया कूच, कूचा गली रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा खेल वखाईआ। गोबिन्द कहे माझे वालीआं बीबीआं गीत गाउणा सुहञ्जणा, सच रंग रंगाईआ। इक्को धूढ़ ते इक्को मजणा, इश्नान इक्को कर वखाईआ। इक्को सतिगुर

३३८
२२

साचा मंगणा, जो देवे माण वड्याईआ। इक्को सहिजे सौणा पलँघणा, जिथ्थे सुत्तयां ना कोए उठाईआ। इक्को डण्डावत करनी बन्दना, सीस जगदीश इक झुकाईआ। जगत जहान विच्चों सब ने वंञणा, वञ्झ मुहाणे कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा भेव खुल्हाईआ। सगण कहे मैं रिहा आदि तों आदि, आदि आदि जणाईआ। मैनूं खा सक्या कोए ना सन्त साध, गुर अवतार पैग़म्बर ना कोए वरताईआ। मैं सब दी सुणदा रिहा अवाज़, सिफ्तां वाली सिफ्त सालाहीआ। सारे पुरख अकाल नूं मन्नदे रहे बाप, पिता पूत सेव कमाईआ। सिफ्तां वाला करदे रहे जाप, कल्मयां विच गाईआ। जोड़दे रहे नात, सुरत शब्द मिलाईआ। रूह बुत करदे रहे पाक, आबेहयात वखाईआ। खोल्हदे रहे ताक, निज नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। करदे रहे भविक्ख्त वाक, सारे गए सुणाईआ। कलयुग अन्तिम झगड़ा पैणा ज़ात पात, दीन मज़्हब कुरलाईआ। हिरदा किसे ना रहे साफ़, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। अपराधीआं करे ना कोए मुआफ़, दुष्टां पार ना कोए लँघाईआ। हँस बुद्धी होणी काग, हउमे रोग दुहाईआ। माया ममता लग्गणा दाग़, कपड़ कूड़ करे ना कोए सफ़ाईआ। सोया सके ना कोए जाग, वुज़ू बांग ना कोए चतुराईआ। झगड़ा मिटे ना काया हाड, नाड़ी चम्म ना कोए समझाईआ। अन्त सब दा उग्घड़ना पाज, पर्दा सके ना कोए लुकाईआ। पुरख अकाल ने देणा इक्को कोरा जवाब, जवाब तल्बी विच सारे बैठण सीस निवाईआ। सब नूं इक्को सजदा दस्स के अदाब, डण्डावत बन्दना इक दृढ़ाईआ। हुक्म देणा हो के महाराज, शहिनशाह आपणी कार कमाईआ। सीस जगदीश रख के ताज, ताजां वाला तख्त दए उलटाईआ। प्रगट हो के देस माझ, सम्बल रुत सुहाईआ। सगण कहे मैं उस दे कोल जा के बणना प्रशाद, किरपा विच्चों किरपा मेरी झोली पाईआ। एह दात मिलणी छब्बी पोह तरिपत दी पिछली ज़िंदगी तों बाद, अगला जन्म आपणे हथ्थ रखाईआ। जेहड़ी कांग्यारी वखाई विच्चों कमाद, फोकट रूप दरसाईआ। ओह दस्से भगतो मन्नो इक वाहिद, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणी कार कमाईआ। सगण कहे मैं दस्सां बावन दी धार, धर्म दवार जणाईआ। मेरा भगतां नाल प्यार, तेरां सौ सतासी रिषी इक किशी नाल वड्याईआ। जिस दा रूप अनूप रिहा दिसी, राजकुमारी उठ के दए वखाईआ। जोगिन्दर गोबिन्द दी धार सिक्खी, सिख्या सच विच वड्याईआ। जन भगतो गुरमुख ख़ून नाल तुहाडी प्रीती जाए लिखी, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। जेहड़ी घविंड दी हद्द दी आंदी मिट्टी, जगतार सिँघ एथे दे टिकाईआ। ओह टिक्की जेही टिक्की, मिट्टी नौ मिन्ट सड़ के दए गवाहीआ। सस्से दा बण के होड़ा हाहे दी बण के टिप्पी, टीका टिप्पणी विच्चों गुरमुखो तुहानूं बाहर कढ्ढाईआ। जिन्हां ने गाना बध्धा गिट्टीं,

दुआबे वाले ब्यासा दी धार विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। दो इक दी सुण लओ सिक्खी, सच दए समझाईआ। छब्बी पोह धुर दी मिती, मित्र प्यारा नाल लिआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच आपणा रंग रंगाईआ। मिट्टी कहे मैं आई विच्चों घविंड, सिँघ शेर दा दर्शन पाईआ। गुरमुखो मैं फिरना तुहाडे काया विच पिण्ड, साढे तिन्न हथ्थ भज्जां चाँईं चाँईंआ। तुसीं उस प्रभू दी जिंद, जेहड़ा ज़िंदगी नवीं सब दी झोली विच पाईआ। तुसीं शब्द गुरु दी बिन्द, ना मरे ना जाईआ। तुहाडा झण्डा झुलणा विच हिन्द, सत्तरंगा आपणा रंग दए चमकाईआ। अजे ढाई साल थोड़ी थोड़ी होणी निन्द, फेर झगड़ा इक्को वार देणा पाईआ। क्यों एह खेल सूरे मरगिंद, मेहरवान वेख वखाईआ। सारे बिना अथ्थरूआं तों इक धार वहाओ हिंझ, बौहड़ी बौहड़ी कर के रौला दयो पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मिट्टी कहे वेखी खेल अजीबी, अजब दयां जणाईआ। गुरमुखो तुहाडे अन्दरों कढणी ग़रीबी, ग़रीब निमाणयां होए सहाईआ। जेहड़ी दीनां मज़्बां दी होई बेतरतीबी, तरीका इक्को दयां दृढ़ाईआ। वेखो तुसीं दूर दुराडे बण गए नज़दीकी, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। किसे ने जाणा नहीं मन्दिर मसीती, पुरख अकाल दा इक्को घर वेख वखाईआ। हुण छड दयो पहली कहाणी बीती, अगला समां वेखो चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। जन भगतो एह सगण रखणा तुहाडे अन्दर, घर घर दयां टिकाईआ। खोल्ह् देणा बजर कपाटी जन्दर, कुंजी जगत ना हथ्थ फड़ाईआ। मनुआ मन भवे ना बन्दर, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। अंधेरी गुफ़ा विच्चों कढ के कन्दर, काहन देणा मिलाईआ। तुहाडा सोहणा सुहाउणा अंगण, आपणा चरण छुहाईआ। किसे दवारे किसे नहीं जाणा मंगण, झोली किसे अग्गे ना डाहीआ। आह वेखो गोबिन्द दी धार गुरमुखां दे शकंगण, सोहणी गंढ पुआईआ। इक्को सजदा इक्को बन्दन, इक्को डण्डावत करनी दे समझाईआ। हुण झगड़ा पैणा विच वरभण्डण, ब्रह्मण्ड दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे कुछ वेला आउणा सख्त, सख्ती नाल समझाईआ। इक अकाल दा कायम रहिणा तख्त, इट्टां पथ्थरां वाला रहिण कोए ना पाईआ। जिथ्थे माया दी करे कोई ना बचत, गोलकां सके ना कोए भराईआ। अक्खरां विच बणाए कोए ना बजट, हिन्दस्सयां वंड ना कोए वंडाईआ। सतिगुरु घर विच कदे नहीं गिणी जाए अज्ज किन्नी होई वट्टत, माया नाल मायाधारी देणे रुढ़ाईआ। वेखो केहड़ा आउणा ओह वक्त, वक्त वेला दए गवाहीआ। कोई कायम रहसी शख्स, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। एह खेल वरताउणा वाली अर्श, फ़र्शां ते पए दुहाईआ। नज़र आउणा नहीं कोई चर्च, चरागाह दिसे लोकाईआ। भगतां

दा वंडे भगवान आप दर्द, दुखियां दा दुःख गंवाईआ। तुसीं बेनन्तीआं रोज़ करो ते सतिगुरु दी तुहाडे अग्गे इक अर्ज़, इक्को वार सुणाईआ। सारयां बोलणा ज़ोर नाल गरज, बिना प्रभू तों सीस ना किसे झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा रंग रंगाईआ। सताई पोह कहे मैं वजाउण आया डौरु, ओए डंका इक सुणाईआ। जन भगतो उठ के पाओ खौरू, ओए सोया रहिण कोए ना पाईआ। वेखो इक्को तुहाडा पाहरू, ओए ख़बरदार सब नूं रिहा कराईआ। तुहानूं वड़न नहीं देणा मसाणां विच गोरू, ओए कबरां तों बाहर तुहाडा मन्दिर सचखण्ड सोभा पाईआ। प्रभ दा शब्द आदि अन्त दा बांका छोहरू, जिस तुहाडे नाल कीती कुड़माईआ। जिस वेले चाहोगे ओस वेले बौहड़ू, वेखे थांउँ थाँईंआ। जिस नूं कहिंदे ब्राह्मण गौड़ू, ओह वेखो आपणा रूप वटाईआ। तुहाडी इक्को मंज़ल ते इक्को पौहड़ू, इक्को पौड़े दए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। सताई पोह कहे ओह प्रभू वड्डया चलाका, की जुग जुग कार कमाईआ। दीनां मज़्बां दा खिचदा रिहों ख़ाका, इन्सानां अन्दर वंड वंडाईआ। आप बणया रिहों मसूम काका, गुर अवतार पैग़म्बरां दिती वड्याईआ। जणां के नाम वालीआं वाजां, सिफ्तां विच सालाहीआ। इक्को गोबिन्द इशारा दिता मैं संभल के आवां सम्बल दे रहां देस माझा, संभल आपणा कदम टिकाईआ।

३४१ सच दवारे बहि के दो जहान दीआं पकड़ां वागां, वागी हो के भगतां कलयुग विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। माण रहे ना सन्त ३४१

२२ साधां, सति विच ना कोए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा २२

हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे पुरख अकाल दा इक्को गुण, गुणवन्ता दए जणाईआ। जन भगतो सज्जे खब्बे हथ्थ दीआं मुट्ठां मीट के बणा लओ घसुन्न, इक दूजे नाल दयो टकराईआ। कोई रहिणा नहीं रिख मुन, पैग़म्बरां दा डेरा ढाहीआ। भगवान ने आपणे भगत लैणे चुण, मेहर नज़र इक तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच देवे माण वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण वेखी अगम्म घाटी, लोकमात ध्यान लगाईआ। सताई पोह सुहाई राती, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। सब दा इक्को संदेशा इक्को लेख पाती, पत्रका नाल चतुराईआ। जन भगतां पूरी होए आसी, आहिस्ता आहिस्ता असल आपणा रूप दरसाईआ। सब दी बख्श देवे गुस्ताख़ी, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। इक्को समझा के सच्ची बाती, बातन दा पड़दा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सताई पोह कहे मैं तक्कया धुर दा माही, जो ममता मोह मिटाईआ। मैं तक्कया धुर दा राही, जो रहिबर थांउँ थाँईंआ। मैं तक्कया धुर दा शहिनशाही, शाह पातशाह इक्को अख्वाईआ। मैं

तक्कया नूर इलाही, जोत जोत रुशनाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर जिस दी देंदे रहे गवाही, शहादत कल्मयां विच भुगताईआ। ओह भज्जया आया बण के राही, आपणा पन्ध मुकाईआ। जिन्हां गुरमुखां नूं पिच्छे चलाया कदम ढाई, ढईए दा झगड़ा दिता चुकाईआ। अग्गे रही कोए ना खाई, डूँघी कन्दर ना कोए चतुराईआ। जन भगतो सच दवारे दए बहाई, फड़ बाहों आप टिकाईआ। एह छब्बी पोह दी सब नूं मिले वधाई, वाधे विच वाधा दए कराईआ। घर नूं जाणा चाँईं चाँईं, खुशीआं रंग रंगाईआ। गुरमुख गुरमुख नूं समझणा तूं मेरा धर्म धार दा भाई, ते सानूं जम्मण वाली पुरख अकाल इक्को माईआ। जे शब्द सतिगुर बचन मंज़ूर ए हस्स के दयो वखाई, खुशीआं रंग रंगाईआ। सारे कहो चाची ताई, कम्म किसे ना आईआ। मासी फूफी तोड़ कोए ना जाई, बिना सतिगुर शब्द तों होए ना कोए सहाईआ। नाता कूड़ा दिसे नार कन्त इक दूजे नूं समझण धार पराई, मढ़ी मसाणां बैठे मुख भवाईआ। सतिगुर पूरा कदे ना करे जुदाई, आदि अन्त आपणा साथ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सतिगुर शब्द कहे ओ गुरमुखो तुसीं चढ़ गए ओस खारे, जिथ्थे मंज़ल बेपरवाहीआ। तुहाडी मंज़ल मुक गई जगत दवारे, धुर दा कन्त इक मनाईआ। ओह सगण जेहड़ा अस्सू दा रखया संभाले, हरिसंगत तेरी झोली पाईआ। जन भगतो तुहाडे विच्चों अजे डोलदे बाहले, मन सारयां लैणा टिकाईआ। भाणा वेखण नूं बणो ना काहले, हौली हौली समें नाल वरताईआ। सद रहिवां तुहाडे आले दवाले, आपणा आप ना लवां छुपाईआ। सब दे हल्ल करां सवाले, बचया रहिण कोए ना पाईआ। बेशक छब्बी पोह दा दिन सताई दी रात तुसीं बड़े कटे पाले, ठंड विच आपणा झट लँघाईआ। ज़रूर फल लगावांगा तुहाडे काया डाले, अमृत रस चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण जन भगतो तुहाडा वेख के खेल अनोखा, सब ने खुशी मनाईआ। प्रभ नूं मन्नण विच कदे नहीं होया धोखा, ते सतिगुर शब्द पल्लू ना कदे छुडाईआ। जिस मार्ग दिता सौखा, सिध्धा राह जणाईआ। पढ़ना पए कोई ना पोथा, पुस्तक बग़ल ना कोए टिकाईआ। लभ्भणा पए कोई ना कोठा, अन्दर वड़ ना ध्यान लगाईआ। मणका फेरना पए ना उत्ते पोटा, गिणती गणित ना कोए गिणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाओ नाल शौंका, शौकीन हो के मिले तुहाडा माहीआ। जे तुहाथों साफ़ नहीं हुन्दा काया चौंका, ते आपे करे सफ़ाईआ। तुहानूं हुण पता नहीं आपणे नाल मिलावण दा बणाया मौका, मौके नाल सारे लए मिलाईआ। गोबिन्द जागया ला के ढौंका, नूर अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण गोली गावे इक शब्द, पुरख अकाल शब्द इक वड्याईआ। झगड़ा रहे कोई ना मज़्हब, दीन

दुनी ना वंड वंडाईआ। जन भगतो इक दूजे दा करना अदब, प्यार विच समझाईआ। जे तुसीं मेरे वल्ल आओगे इक कदम, कोटां जन्मां दा लेखा दयां मुकाईआ। तुसीं समझयो ना एह काया बदन, तत्तां वाला जगत हंढाईआ। एस विच बहि के पुरख अकाल करे अदल, इन्साफ़ आपणे हथ्थ रखाईआ। एहो जामा गोबिन्द दा आया बदल, बदली करे जगत लोकाईआ। सतिगुर शब्द नूं कर सके कोई ना कत्ल, खण्डा खड़ग ना कोए उठाईआ। तुहानूं लै के जावां ओस वतन, जिथ्थे मिले बेपरवाहीआ। तुहाडा इक्को किनारा ते इक्को पत्तन, इक्को बेड़ा कंध उठाईआ। तुसां इक मन्नणा बचन, बिना पुरख अकाल तों सीस ना किसे निवाईआ। जिथ्थे भगत भगवान वसण, ओह दवारा तुहाडा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। जन भगतो किते बैठे ते नहीं थक्के, थकावट विच नींदर आईआ। मैं तुहानूं लै के जावां जन भगतो मदीने मक्के, काअब्यां विच फेरा पाईआ। जिथ्थे कलमे दे वजदे फक्के, अल्ला हू अकबर ऐली हैदर नाअरा लाईआ। फ़कीर बण के मंगदे टके, बग़लीआं हथ्थां विच टिकाईआ। ओह मुरीद कदे ना हुन्दे पक्के, जेहड़े मुर्शद दा राह गए भुलाईआ। भावें कोई काअबे वसे, सतिगुरु दे अग्गे पिच्छे नट्ठे, जिंना चिर साहिब ना हिरदे वसे, मिले ना कोए वड्याईआ। आओ हुण कौल इकरार करीए इक्ट्ठे, गुर चेला वंड ना कोए वंडाईआ। पुरख अकाल कोलों मंग मंगो असीं भगत ना रहीए कच्चे, कच्चयां तों पक्के दे बणाईआ। चुरासी विच ना खाईए धक्के, आवण जावण दे कटाईआ। तेरे बिना पति कोई ना रखे, पतिपरमेश्वर तेरी इक सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा खेल वखाईआ। जन भगतो आओ चलीए विच गिरजे, फिरीए चाँईं चाँईंआ। पहलों साफ़ करो आपणे हिरदे, कल्पणा बाहर कढ्ढाईआ। फेर खेल वेखीए अगम्मी पिर दे, जो प्रीतम इक अख्वाईआ। तुसीं नहीं जाणदे खेल चार जुग पिछले चिर दे, कलयुग अन्तिम जोड़ जुड़ाईआ। हुण मिले कदी ना विछड़दे, सचखण्ड दवारे दयां पुचाईआ। बेशक तुसीं भरे लिबड़े गारे चिक्कड़ दे, हथ्थीं धो के तुहाडी दुरमति मैल करां सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणी कार कमाईआ। भगतो आओ चलीए विच मट्ठां, शिवदुआले खोज खुजाईआ। फिरीए तीर्थ तट्टां, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती वेख वखाईआ। वेखीए तत्तां अट्ठां, गृह मन्दिर फोल फुलाईआ। वेखीए नाम बाणी दे हट्टां, कल्मयां की पढ़ाईआ। सब दा माता पिता इका, इक्को इक अख्वाईआ। ओ गुरमुखो फेर दीन मज़्ह़ब दा झगड़ा काहदा रट्टा, सब कुछ आपणे हथ्थ रखाईआ। जुग जुग खेल पुरख समरथा, आपणी दया कमाईआ। एसे कर के गोबिन्द ने माण वड्याई दिती सिखा, सिख सिख्या विच्चों समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। पोह सताई कहे मैं की सुणावां, सुणाउण दी लोड़ रही ना राईआ। मैं की गावां, गाउण दी लोड़ रही ना राईआ। कोटन बच्चे जम्मदीआं मावां, भगत गोदी ना कोए उठाईआ। जदों मर्दे सारे भरदीआं हावा, हाए हाए कर सुणाईआ। गुरमुखो तुहाडे बिना सच नहीं कोई टिकाणा, धुर दा साथी नज़र कोए ना आईआ। दीन दुनी फिरदी वांग कावां, काग वांग कुरलाईआ। तुहाडा ओस प्रभू दे दर ते नावां, जिथ्थों सके ना कोए तुड़ाईआ। तुसां नहीं आशा कीती प्रभू ने आपणे आप तुहाडे नाल लै लईआं लावां, आत्मा परमात्मा नाल प्रनाईआ। हुण दोहां दा प्यार हो गया सावां, अग्गे सके ना कोए तुड़ाईआ। जे भज्जोगे अग्गे हो के आवां, पहरेदार हो के लवां अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सताई पोह कहे मैं हो गया चुप, कहिण कुछ ना पाईआ। जेहड़े बण गए प्रभू दे पुत्त, ओह ओस दी गोद विच समाईआ। ओह निकल गए विच्चों अंधेरे घुप, कलयुग पन्ध मुकाईआ। उन्हां सिध्धा सचखण्ड वल्ल कर ल्या रुख़, चलण चाँईं चाँईंआ। जिथ्थे ना कोई सुख ते ना कोई दु:ख, इक्को रंग वखाईआ। जन भगतो तुसां फेर आउणा नहीं किसे माँ दी कुख्ख, रक्त बूँद ना जोड़ जुड़ाईआ।
३४४ इक वार फेर खुशीआं विच सारे जाओ उठ, सोहँ ढोला गाईआ। सुत्ता रहिण नहीं देणा कोई विच गुद्द, सहिजे नाल हलूणे ३४४
२२ दिते लगाईआ। भावें किन्ने बाहर वाले रजाईआं लओ घुट्ट, पर्दे आपणे उत्ते पाईआ। एह सौण वाली नहीं रुत, सुत्तयां २२
रिहा जगाईआ। सब नूं आपणी गोदी चुक्क, हलूणयां नाल हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ।

✪ २८ पोह शहिनशाही सम्मत ५ हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

जम्मू संगत केसर ल्याउणा रती ढाई, ढईआ गोबिन्द वेख वखाईआ। सच दवारे सति सच कुड़माई, नाता कूड़ ना कोए रखाईआ। मस्तक तिलक देणा लगाई, तेजभान सेव कमाईआ। शब्द शहादत दए गवाही, सन्मुख हो के दए समझाईआ। जन भगतो हिरदे कूड़ ना रखणा राई, ममता देणी मिटाईआ। सौहरे पईए खेल धी जवाई, प्रभ दा इक्को आत्मा सोभा पाईआ। सच दवारे सीस देणा निवाई, चरण कँवल सरनाईआ। सोहणी रुत सुहञ्जणी आई, फल फुलवाड़ी आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जम्मू वाल्यो दे दयो पग्ग कश्मीरी, कच्छ

मच्छ दा लेख मुकाईआ। हिरदे रहे ना किसे दिलगीरी, निरन्तर अन्तर वज्जे वधाईआ। गुरमुखो झगड़ा छडणा ग़रीब अमीरी, इक्को रंग वेखणा चाँईं चाँईंआ। एह आशा रख के गया हरि गोबिन्द जिस ने धार चलाई मीरी पीरी, पीर पीरां रंग रंगाईआ। इक दवार इक्को प्रभू दी चले पीढ़ी, जुग चौकड़ी रीती चली आईआ। जिस प्रहलाद तारया बण के कीड़ी, सो सति सरूप देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। जम्मू वाल्यो आटा दे दयो सवा सेर, बलि बावन मंग मंगाईआ। प्रभ करता करे मेहर, मेहरवान सरनाईआ। शब्द गुरु सहाई धुर दा केहर, भबक इक्को इक दृढ़ाईआ। कटया जाए चुरासी गेड़, चारे खाणी ना कोए भवाईआ। आत्म परमात्म वसे नेड़, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। लहिणा देणा दए नबेड़, पूरब लेखा रहे ना राईआ। भाग लगा के काया खेड़, अन्दरों पर्दा दे चुकाईआ। फ़र्क रहे ना ज़बर ज़ेर, नूर नूर रुशनाईआ। आदि जुगादि दा दाता शब्द गुरु गुर शेर, सिँघ रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सवा सेर आटा रिहा हस्स, खुशी नाल जणाईआ। जन भगतो प्रभ दा गाउणा इक्को जस, इक्को दाता सिफ्त सालाहीआ। जो हर घट अन्दर रिहा वस, लख चुरासी डेरा लाईआ। अमृत धार देवे रस, निझर झिरना इक झिराईआ। अणयाला तीर मारे कस, मुखी धार शब्द वड्याईआ। दुरमति मैल देवे कट, पापां करे सफ़ाईआ। सिर ते रखे आदि जुगादी हथ्थ, समरथ बेपरवाहीआ। साढे तिन्न हथ्थ काया चलाए रथ, हड्ड मास नाड़ी रंग रंगाईआ। निज नेत्र खोल्ह के अक्ख, अंध अंधेरा दए मिटाईआ। दर्शन देवे हो प्रतख, जोती जाता डगमगाईआ। जन भगतो तुहाडी रीती चार जुग तों वक्ख, सोहणा मार्ग इक समझाईआ। वरनां बरनां इक दवारे जाणा वस, जगत वंड ना कोए वंडाईआ। सब दा सांझा इक्को जेहा हक, हकीकत नाल दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सवा सेर आटा कहे इक रुपईआ ल्यावे जीआ लाल, राम दा लेखा दयां मुकाईआ। जन्म जन्म विच बणदा रिहा बाल, कर्म कम संग रखाईआ। लहिणा देणा वेखणा माज़ी हाल, भेव अभेद रहे ना राईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। आसा मनसा वाला सवाल, ख़ाहिश ख़ाहिश विच्चों बदलाईआ। कदे पोह ना सके काल, महाकाल रूप दरसाईआ। सतिगुर शब्द विचोला जुग जन्म दयां विछड़यां लए भाल, वेखे थांउँ थाँईंआ। जन भगतो तुहाडा सगण इक रुपईआ जिथ्थे ना कोई शाह ते ना कोई कंगाल, वड्डे छोटे इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। जम्मू वाल्यो वेखो अक्ख खोल्ह, बावन आया चाँईं चाँईंआ। पुरख अबिनाशी रूप इक्को पोल, सति सरूप सोभा पाईआ। शब्द अगम्मी

रिहा बोल, अनादी धुन जणाईआ। चेला सिँघ जेहड़ीआ पंज वस्तू ल्यांदीआं कोल, गुरदर्शन कौर दी झोली देणीआं पाईआ। हरिसंगत सदा रहिणा अडोल, ना कोई डोले डोल डुलाईआ। चार जुग शब्द दी धार वज्जणा ढोल, ढोलक छैणा ना कोए खड़काईआ। गोबिन्द वेखण वाला घोल, दंगल पैणा चाँईं चाँईंआ। जिस दा लेखा कोई ना जाणे पंडत पांधा रौल, नछत्र ग्रह वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। पगड़ी कहे मैं सत्त रंग दी दस्तार, दस्त दस्त मिले वड्याईआ। मेरे अन्दर प्रीती ओस निरँकार, जो जोती जोत जोत रुशनाईआ। मैनूं लेखा दस्सया जो वजाउँदा रिहा सतार, सति सति आवाज़ सुणाईआ। मेरा खेल होया इक वार, जनक दवारे सोभा पाईआ। जिस वेले राम ने धनुष ल्या सी उठाल, खुशीआं रंग रंगाईआ। सीता पाउण लग्गी सी हार, सत्ते रंग इक दूजे नाल दिते जुड़ाईआ। उन्हां कीता हाल हाल, कूक कूक सुणाईआ। हुण असीं निक्के निक्के रुमाल, छोटे छोटे वेख वखाईआ। राम ने निगह मारी उपर असमान, बिन नैणां नैण उठाईआ। फेर वेख्या राम ने राम, जो राम दा मालक इक अख्वाईआ। ओस संदेशा दिता धुर पैग़ाम, शब्दी शब्द जणाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त आया विच जहान, चारों कुण्ट अंधेरा छाईआ। अक्खरां दा रहे ना कोए ज्ञान, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। मदिरा मास सारे खाण, रसना कूड़ कूड़ हल्काईआ। हिरदे हरि ना मूल वसाण, काया मन्दिर ना कोए रुशनाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात मानव मानव इक दूजे नूं बुरा तकाण, संगी संग ना कोए रखाईआ। तेज रहे किसे ना भान, सूर्या चन्द ना कोए रुशनाईआ। शब्द सुणे कोए ना कान, ढोले कूड़े गावे जगत लोकाईआ। धर्म दा देवे कोए ना दान, जगत लुटेरे सोभा पाईआ। पंडत पांधे होण बेईमान, मुल्ला शेख़ मुसायक तसबी कूड़ी गल लटकाईआ। विद्या वाला रहे ना कोए विद्वान, पाठी संग ना कोए निभाईआ। हरि दी करे ना कोए पहचान, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ गुरदवारे सारे सीस निवाईआ। राम कहे मैं वेख होया हैरान, हैरानी मेरे अन्दर आईआ। ओने चिर नूं सीता कर दिती प्रणाम, चरणां सीस झुकाईआ। मेरे साहिब सच्चे भगवान, तेरी ओट तकाईआ। तूं होणा निगाहबान, मेहर नज़र उठाईआ। राम ने आपणे पकड़ के कान, हलूणा दिता लगाईआ। कमलीए मैं फिरना बीआबान, जंगलां विच भज्जां वाहो दाहीआ। अगला खेल होणा महान, अन्दरे अन्दर सुणाईआ। मेरा साथी रावण नौजवान, पल्लू तेरा लए उठाईआ। फेर फड़ना तीर कमान, चिल्ला आपणे कंध उठाईआ। युद्ध करां घमसान, हनवन्त नाल वड्याईआ। लंकापती मारां झगड़ा मुकावां ज़िमीं असमान, हुक्म मन्नां बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। पग्ग कहे मेरे सत्ते रंग, सति दी धार जणाईआ। आदि अन्त तों गुर अवतार पैग़म्बरां मंगी

मंग, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दए गवाहीआ। जिस वेले कोए रहे ना संग, सगला संग ना कोए निभाईआ। सीस ओढण करे नंग, पड़दा सके कोए ना पाईआ। कलयुग नच्चे बण मलंग, डौरु घर घर डंका लाईआ। सृष्टी दृष्टी होवे अंध, नेत्र नैण ना कोए खुल्हाईआ। आवण जावण मुके किसे ना पन्ध, सच दवारे सोभा कोए ना पाईआ। ओस वेले भगत भगवान दा सांझा होणा छन्द, तूं मेरा मैं तेरा दोहां ने ढोला लैणा गाईआ। पतिपरमेश्वर ने आत्मा परमात्मा दा करना कारज अनन्द, तन वजूद दा हिस्सा जगत वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। पगड़ी कहे मैं सब दे सिर ते पाउणा भगत पड़दा, सति सति समझाईआ। जो परम पुरख दा होवे बरदा, पतिपरमेश्वर सीस निवाईआ। भेव खोल्हणा ओस दे घर दा, गृह मन्दिर दयां वखाईआ। रंग रंगाउणा नरायण नर दा, नर हरि आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पगड़ी कहे मैं सब दे उत्ते आउणा सीस, छत्रधारी नज़र कोए ना आईआ। मालक दस्सणा इक जगदीश, जगदीश्र बेपरवाहीआ। जो लेखा जाणे बीस इकीस, इकीस इकीसा नूर इलाहीआ। जिस दा इक्को नाम कलमा हदीस, हज़रतां तों परे करे पढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम जाणा बीत, लोकमात रहिण ना पाईआ। सत्त रंग पगड़ी कहे जन भगतो तुहाडी सतिजुग वाली रीत, चार वरन लैणी अपणाईआ। तुहाडा विचोला इक इक मीत, परम पुरख अख्वाईआ। सब ने साफ़ रखणी नीत, काम क्रोध लोभ मोह हँकार देणा तजाईआ। तुहाडी काया रहे ठांडी सीत, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। तुहाडा खहिड़ा छुट्ट गया मन्दिर मसीत, शिवदुआले मट्ठ वंड ना कोए वंडाईआ। हुण सारी संगत इक प्रेम दा गा लओ गीत, शब्द शब्द विच्चों वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। जन भगत इक्को वार कुड़म कुड़म करो कुड़माई, कुड़मेटा बंस सोभा पाईआ। लैण देण दी आसा तृष्ना देणी तजाई, अन्दर मंग ना कोए मंगाईआ। नाता रखणा भैण भाई, घर साचे वज्जे वधाईआ। खुशीआं मंगल लैणा गाई, सोहला अगम्म अथाहीआ। कलयुग माया झूठा लालच कम्म किसे ना आई, धन्न दौलत ना कोए चतुराईआ। शाह सुल्तान ख़ाली हथ्थ जांदे राय धर्म दए सज़ाई, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। तुसां मिल के सतिजुग दी रीती चलाई, ज़ात पात दा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। गुरमुखो शादी दे शादिआने, जगत सके ना कोए वजाईआ। जिस दे कारन गुर अवतार पैग़म्बरां दिते ब्याने, नाम वसीके उत्ते गए लिखाईआ। ओह बदल गए जमाने, समां आपणा ढंग बदलाईआ। अग्गे हुक्म वरतणा श्री भगवाने, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जगत विहार दे रहिणे नहीं

महिमानख़ाने, गृह इक्को वज्जे वधाईआ। इक्को रंग रंगाउणे रंक राउ राणे, दर इक्को सोभा पाईआ। गुरमुखो सब ने बणना सुघड़ सुचज्जे स्याणे, मन मति देणी गंवाईआ। गुर गोबिन्द दस्स के गया पुरख अकाल दे मन्नणे भाणे, ओट इक्को इक तकाईआ। घर बाहर छड के बंस सरबंस वार के माछूवाड़े सुत्ता दे के बांह सरहाणे, सथ्थर यारड़ा इक हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा रंग रंगाईआ। ओ गुरमुखो होया व्याह, पाया हरि निरँकार। भगतां दे भगत गवाह, शहादत देण पैग़म्बर गुरु अवतार। सतिजुग साचा सब दा होवे राह, रहिबर होवे परवरदिगार। इक्को दर होवे दुआ, सजदा इक होवे निमस्कार। जिस नूं कहिंदे रहे ख़ुदा, ख़ुद मालक सांझा यार। ओह कलयुग दा कल रिहा बदला, सतिजुग सच करे उज्यार। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण वाह वाह, करोड़ तेतीसा फूलन बरखे आपणी धार। इन्द्र सेवा रिहा कमा, अमृत छिड़के अपर अपार। वक्त सुहञ्जणा गया आ, नाता तुटे कूड़ संसार। गुरमुखो जे तुहाडा सब दा इक प्यार, ते सारे बाहवां लओ उठाल। गुरसिख हो के बणिओ ना कोए बुरयार, रसना नाल फिका बोल करयो ना कोए गुनाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद बख़्शणहार दीदार। अठाई पोह कहे मेरा दो अट्ठ दा समां, सरगुण तत्तां विच वड्याईआ। धर्म संदेशा धुर दा कहिवां, कहि के दयां सुणाईआ। सतिजुग मार्ग चलणा नवां, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप वज्जे वधाईआ। अग्गे वक्त नहीं रिहा लम्मा, पैंडा आपणा पन्ध मुकाईआ। ना कोई हरख़ सोग रहे ग़मा, जन भगतो अन्दरों चिन्ता देणी कढ्ढाईआ। लैण देण दी किसे नहीं करनी तमा, लालच विच कोए ना आईआ। तुहाडे कोलों सति दी धार करनी रवां, भगत जगत विच प्रगटाईआ। मोह विकार दा ला के तुहाडे अन्दर बन्ना, हद्द पिछली देणी गंवाईआ। वेख्यो हरिजन हो के बणिओ कोए ना अन्न्हा, नेत्रहीण ना कोए अख्वाईआ। संदेशा सुणो बिना कन्नां, हिरदे अन्दर आपणे खोज खुजाईआ। ओ किसे कम्म नहीं आउणा माटी चम्मा, चम्म दृष्टी लैणी बदलाईआ। याद कर लओ पैसे पिच्छे गोबिन्द दे बच्चे फड़ाए ब्राह्मण हो के पंमां, धन्न दौलत कम्म किसे ना आईआ। तुहाडे कोल प्रभ दे नाम दा धना, खाउ खरचो निखुट्ट कदे ना जाईआ। राय धर्म ना देवे डंना, चित्रगुप्त ना लेख जणाईआ। एहो विवहार दस्सया गुरु ग्रन्थ चौदां सौ तीह अंक दा पन्ना, चौथी लांव प्रभ अबिनाशी नूं मिल के आपणा मन्दिर लओ सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत वेखे आपणे चन्ना, चन्न सूरज तों परे खोज खुजाईआ।

✪ २६ पोह शहिनशाही सम्मत ५ हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभू तेरयां भगतां मंगी लोहड़ी, लोआं पुरीआं तों बाहर ध्यान लगाईआ। किशन सिँघ हाल दुहाई कीती बौहड़ी, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। दात विच मंगण भगत भगवान दी बणी रहे जोड़ी, नाता आत्म परमात्म रखाईआ। सोहँ धार मिट्ठा रस दे गुड़ रोड़ी, रोड़ा कूड़ रहे ना राईआ। पिच्छे देंदा रिहों भोरी भोरी, हुण झोली दे भराईआ। साध सन्त तैनूं लभ्भदे चोरी, अन्दर वड़ ध्यान लगाईआ। भगतां आपणे नाल बन्नृ लै डोरी, अग्गे सके ना कोए तुड़ाईआ। मन कल्पणा वल्लों मोड़ीं, मूर्ख मूढ़ आप समझाईआ। साडी मंग बहुती थोड़ी, खुशीआं नाल मंग मंगाईआ। वेखीं दर आए किसे ना होढ़ीं, करवट आपणी ना आप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण जन भगत मंगदे मुराद चंगी, लोड़ींदे सज्जण देणी पाईआ। साडी पिट्ठ रहे ना नन्गी, मेहर नज़र हथ्थ उठाईआ। दुःख भुक्ख रहे ना तंगी, सुख सागर विच समाईआ। नेत्र अक्ख रहे ना अंधी, लोचन देणा खुल्हाईआ। आत्म धार रहे ना रंडी, कन्त सुहाग होणा सहाईआ। पिछली टुट्टी जाए गंढी, अग्गे सके ना कोए तुड़ाईआ। मन वासना रहे ना मंदी, मोह ममता परे तजाईआ। सिर झुके किसे ना डम्बी, पखण्डी संग ना कोए निभाईआ। दीन मज़्हब दी रहे ना कोए पाबन्दी, शरअ ज़ंजीर देणे कटाईआ। झगड़ा मुकाउणा जेरज अंडी, उत्भुज सेत्ज खहिड़ा देणा छुडाईआ। नाम मुहाणा देणा वञ्झी, संसार सागर पार कराईआ। आत्म सेज सुहाउणी मंजी, सिंघासण आपणा आप वड्याईआ। दूई दी धार रहे ना कंधी, हउमे रोग देणा गंवाईआ। भगत भगत दा बणाउणा सतिसंगी, गुरमुख गुरमुख जोड़ जुड़ाईआ। निझर रस देणा अनन्दी, अनन्द आपणा इक वरताईआ। वासना मूल रहे ना गंदी, दुरमति मैल देणी धुआईआ। पिछली पिच्छे जेहड़ी लँघी, अग्गे आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणी खेल खिलाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण गुरमुख लोहड़ी मंगदे नाम निधान, तेरी सरनाईआ। अगला हुक्म दस्स पैग़ाम, हज़रतां दे हज़रत कर पढ़ाईआ। मंज़ल मार्ग होए आसान, रहिबर राह देणा जणाईआ। शरअ ज़ंजीर रहे ना कोए ग़ुलाम, ग़ुरबत अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। इक्को कलमा दे कलाम, कायनात दे समझाईआ। इक्को महिबूब होवे मेहरवान, मुहब्बत विच समाईआ। इक्को रस पीण खाण, इक्को गंढ देणी जणाईआ। इक्को रंग महल्ल अटल महान, बेपहचान देणा जणाईआ। तेरा लेखा नौजवान, जुग जुग सब दी झोली पाईआ। कलयुग अन्तिम मार ध्यान, ज्ञानी ध्यानी बैठे मुख भवाईआ। पवित्र होया ना कोई कर इश्नान, अट्ठ सट्ठ सारे देण दुहाईआ। पुस्तक पढ़ पढ़ थक्का जहान,

तेरा दरस कोए ना पाईआ। किरपा कर के जन भगतां आपे मिल आण, मिलणी आपणे नाल कराईआ। कोझयां कमल्यां कर परवान, चिक्कड़ भरे गोद उठाईआ। साडे सिर कर एहसान, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। प्रभू भगत नाले तेरे मंगते नाले तेरे महिमान, दोवें रूप दरसाईआ। नाले बुढे नढे बण अंजाण, रो रो कुरलाईआ। साडी झोली पा दे भगती दा दान, जगत लोहड़ी मंग ना कोए मंगाईआ। रसना मंगे ना पीण खाण, पान सपारी ना रस चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण जन भगत लोहड़ी मंगण कोए ना आया, पिछला जुग दए गवाहीआ। कलयुग खेल वेख बेपरवाहया, बेपरवाही विच समाईआ। हरिजन जो आपणे रंग रंगाया, रंग रतड़ा घर बहाईआ। ओह छड के जगत माया, झोली नाम अग्गे डाहीआ। दे वस्त जेहड़ी तोहे भाया, भाव भावनी ना कोए रखाईआ। माया ममता मोह तजाया, रजो तमो सतो संग ना कोए रखाईआ। आपणी काया चरणां भेंट चढ़ाया, तेरा तेरी झोली पाईआ। नाम भण्डारा देहु वरताया, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगतां रल के शोर मचाया, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। प्रभू किहनूं कहें पराया, नाता जाएं तुड़ाईआ। जो तेरे दर ते आया, ख़ाली परत मुख ना कोए भवाईआ। सच भण्डारे नाल दे रजाया, तृष्ना तृखा गंवाईआ। जुग चौकड़ी पिच्छों लोड़ींदे सज्जण लोहड़ी मंगण तेरा हरिजन आया, भगत सुहेला पिछला पन्ध मुकाईआ। वस्त अगम्म दे वरताया, अमोलक आपणी झोली भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। पुरख अकाल कहे मेरी लोहड़ी सदा अनडिट्ठी, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। एह जगत रसना स्वाद नालों मिट्ठी, रसना चक्ख कहिण किछ ना पाईआ। ना एह आकाश मिले ना धरती वाली विच्चों मिट्टी, खोज्जयां हथ्थ किसे ना आईआ। ना एह काली ना एह चिट्टी, सूहा वेस ना कोए वटाईआ। ना एह वड्डी ना एह निक्की, जवानी रूप ना कोए दरसाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश ना हिन्दू मुलसमान ईसाई सिक्खी, तन वजूद ना कोए रखाईआ। ना कोई दो इक सरगुण निरगुण रूप दरसाए मन चिती, ठगौरी खेल ना कोए खिलाईआ। कलम शाही नाल ना जाए लिखी, कागज जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। जुग चौकड़ी जिस नूं मेहरवान हो के दिती, किरपा निधान झोली आप भराईआ। ओसे लोहड़ी दी धार दी हाहे उत्ते बणी टिप्पी, जिन्हृ आत्मा दिती प्रगटाईआ। जिस आत्मा ने परमात्मा नाल मिल के अनेक ज़बानां दी बणाई लिप्पी, इलम आलमां तांईं जणाईआ। साधां हथ्थ फड़ा के चिप्पी, दर दर दिता भवाईआ। शरअ ज़ंजीर पवा के गिच्ची, गुर अवतार पैग़म्बर दिते बंधाईआ। सृष्टी दे मथ्थे घसा दिते पथ्थरां इट्टी, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ गुरदवार रगड़ाईआ। इक थाँ कदे ना टिकी, जुग चौकड़ी

भज्जी वाहो दाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दुहथ्थड़ मार के पिटी, रो के दिता सुणाईआ। माटी ख़ाक विच लिटी, आपणा रूप बदलाईआ। फिर वास्ता पा के मंगी चिट्ठी, दोए जोड़ सीस निवाईआ। मुक्खों हस्स के बात कीती मिट्ठी, नैणां नीर वहाईआ। फेर तक्कया बिट बिटी, अक्ख ना कोए झमकाईआ। प्रभू किरपा कर दात दे दे दातार आपणी टिप्पी, जिस उत्ते टीका टिप्पणी रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण की भाव प्रभू तेरी लोहड़ी, सच दे समझाईआ। पुरख अकाल किहा मैं आपणी आपणे नाल बणा के जोड़ी, आप आपणा मेल मिलाईआ। आपणी वस्त आपे दे के थोड़ी, आपणी झोली आप भराईआ। आपणी खेल आप तोरी, तुरत आपणी कार कमाईआ। जिस दा रूप नारी नर ना जोरू जोरी, जोरू नज़र कोए ना आईआ। जोबनवन्ती ना बांकी छोहरी, मेंढी सीस ना कोए गुंदाईआ। हिरदा कपट ना दिसे कठोरी, ममता मोह ना कोए हल्काईआ। हाए उफ ना करे बौहड़ी, दुखी हो ना कदे कुरलाईआ। इक्को वर इक्को दर इक्को घर मेरा रही लोड़ी, सच लोड़ी नूं लोहड़ी दिता बणाईआ। एह रीती विष्न ब्रह्मा शिव ने तोरी, निरगुण कोलों निरगुण मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। लोहड़ी कहे मैं सारे वेखे मंगते, मंगे जगत लोकाईआ। जुग चौकड़ी गए लँघदे, समां समें विच्चों बदलाईआ। मैं खेल वेखदी रही ओस अनन्द दे, जो अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जिस दर तों सारे गए मंगदे, गुर अवतार पैग़म्बर झोलीआं डाहीआ। ओह लोहड़ी प्रभू इहनां भगतां वंड दे, जिन्हां तेरी आस रखाईआ। जे पिच्छे विछड़े ते अग्गे गंढ दे, नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। शौह दरया जगत विच्चों बेड़ा बन्नू दे, फड़ आपणे कंध उठाईआ। जेहड़े तैनूं भगवन करके मन्नदे, उन्हां आपणा रंग रंगाईआ। सच प्रेम दा साचा धन दे, मन मनसा कूड़ गंवाईआ। फिक्के बोल ना सुणीए कन्न दे, चुग़ली निंदिआ ना कोए चतुराईआ। जे किरपा करें ते दर्शन करीए गोबिन्द तेरे चन्न दे, अंध अंधेर रहे ना राईआ। जेहड़े कूड़े नाते तन दे, जगत जाईए तजाईआ। अन्दरों लेखे मुका दे ग़म दे, चिन्ता चिखा बाहर कढ्ढाईआ। मेल मिला लै हँ ब्रह्म दे, पारब्रह्म आपणे विच मिलाईआ। जन भगत जुग चौकड़ी जदों जम्मदे, जम्म के मंगते तेरे अग्गे झोली डाहीआ। सच बख़्शीश आपणा रूप ब्रह्म दे, पारब्रह्म सरनाईआ। लेखे रहिण ना जन्म कर्म दे, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। भुलेखे कढ दे अन्दरों भरम दे, हउमे हंगता रहे ना राईआ। आपणे घर विच आपणा जरम दे, जन भगतां भुल्ल जावे जम्मण वाली माईआ। सदा पुजारी रहिण तेरे चरण दे, दूसर सीस ना कदे निवाईआ। भय चुका दे डरन मरन दे, चुरासी गेड़ कटाईआ। तेरे हो के तेरे ढोले पढ़नगे, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सरनाई सरन दे, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ।

✪ पहली माघ शहिनशाही सम्मत ५ हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

शहिनशाही सम्मत पंज कहे मेरे मेहरवान दी माघी, मग्न आपणे विच कराईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु बण के रागी, अनरागी राग सुणाईआ। तूं ही तूं कहिंदे वडभागी, भगवन तेरी बेपरवाहीआ। तेरा खेल जुगादि आदी, अन्त तेरा तेरे विच समाईआ। साडी चतुराई काहदी, कुल मालक तेरी वड्याईआ। असीं सिफ्त करदे रहे तेरे नाँ दी, नाउँ निरँकारा इक जणाईआ। तेरा शब्द गुरु गुरदेव अनादी, नाद धुन सानूं तत्तां विच सुणाईआ। असीं तेरे चार जुग दे सेवक चाकर लागी, दर दर घर घर अलख जगाईआ। तेरा हुक्म नसीहत डाहढी, डण्डावत बन्दना दिती दृढ़ाईआ। नित नवित बणा के गाडी, रस्ता मार्ग इक समझाईआ। दीन मज़्हब दी वधा अबादी, अदब आपणा इक सिखाईआ। सीता राम बणा के कृष्न राधी, अल्ला नाम सतिगुरु वाहवा कीती चतुराईआ। असीं खेल वेख्या तेरयां भगतां दी तेरे नाल होई शादी, शादिआने सारे रहे वजाईआ। तूं मोहन माधव माधी, मधुर धुन आपणी दे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण आत्म परमात्म हुन्दा वेख्या नकाह, नकाब अन्तर रही ना राईआ। असीं सारे ओस समें दे बणा लए गवाह, हुक्म आपणा इक जणाईआ। सानूं अनभोल, सुत्तयां नूं आपणी धार विच्चों कढा के ला ल्या दाअ, दाइरयां विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। ऐ मालक बेपरवाह, की आपणी कल वरताईआ। सानूं शब्द संदेशा दिता सुणा, कलमा हुक्म अगम्म अथाहीआ। छब्बी पोह नूं सब ने जाणा आ, लेखा आपणा बग़ल उठाईआ। भगत दवारे पहुंचणा नाल चाअ, चाओ घनेरा इक समझाईआ। जां पन्ध मार के आए वेख्या सुहञ्जणा थाँ, थानंतर मिली वड्याईआ। जिथ्थे सब दा इक्को पिता इक्को माँ, दूजा नज़र कोए ना आईआ। इक्को नाम निधाना रहे गा, ग़रीब अमीर ना वंड वंडाईआ। इक्को रंगण रहे रंगा, चार वरन ना कोए चतुराईआ। फेर हुक्म दिता अगम्म अथाह, सहिज नाल दृढ़ाईआ। जन भगतो तुहाडी आत्मा लई प्रना, परम पुरख शब्द संदेशे विच जणाईआ। असीं इक दूजे वल्ल रहे तका, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। ना कोई नाम कलमा ल्या दृढ़ा, पूजा पाठ ना कोए कराईआ। हस्सदे हस्सदे खुशी नाल किहा गुरमुखो मैं तुहाडा कीता व्याह, आत्मा परमात्मा आपणे रंग रंगाईआ। सदा सुहेला हो के देवां ठंडी छाँ, अग्नी अग्ग ना लागे राईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब कुछ सानूं दिता वखा, सद्दा दे के आप बुलाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण असीं बण के गए सज्जण सुहेले मीत, मित्र प्यारे रूप बदलाईआ। झगड़ा अन्दर ना रखया चीत, ठगौरी संग ना कोए लिजाईआ। खेल वेख्या अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाईआ। साहिब तक्कया अतीत, त्रैगुण बाहर सोभा पाईआ। जन भगतां कहे बच्चयो गाउ सोहँ गीत, गोबिन्द रंग रंगाईआ। ना कोई वेखी मन्दिर मसीत, मड्ढ नज़र कोए ना आईआ। सब तों वक्खरी निराली रीत, रीतीवान दिती दृढ़ाईआ। जन भगतो करयो इक प्रभू दी प्रीत, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। इक्को कलमा इक हदीस, हज़रत इक्को इक पढ़ाईआ। नेड़े आवे ना शरअ अबलीस, शैतानी सूर ना कोए कमाईआ। साडी सब दी असलीअत, असल असल विच्चों प्रगटाईआ। आपणी अन्त दी वेखो वसीअत, जो लेखा बिना कलम शाहीआ। कलयुग रहिणी नहीं कोई मलकीअत, मालक नज़र कोए ना आईआ। अन्त होणी सब दी इक वलदीअत, वाइदे नाल समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा रंग रंगाईआ। सम्मत पंज कहे मेरा प्रेम मता माघ, मजन इक कराईआ। धोवे दुरमति दाग़, पापां करे सफ़ाईआ। जो साहिब सरनाई गया लाग, चरण कँवल वड्याईआ। शब्द सुणाए नाद, अगम्मी राग अलाहीआ। सन्त बणाए साध, साधना इक समझाईआ। अन्तर रहे ना सवाल जवाब, कल्पणा कूड़ दए खपाईआ। झगड़ा मुका इश्क हकीकी मिज़ाज, तबीअत आपणे नाल मिलाईआ। सति सच सुणा नाद, पर्दा पर्दे विच्चों उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि दाता अगम्म अथाहीआ। सम्मत पंज कहे मेरा माघ सोहणा चंगा, चार कुण्ट वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बर फिरे पैरीं नन्गा, सच दवार बैठे थांउँ थाँईंआ। निरगुण धार करके संगा, सगला संग वखाईआ। नेत्र रहे कोई ना अन्धा, लोचन इक खुल्हाईआ। शब्द गुरु किहा (रिहा) कोई ना बन्दा, जो बन्दगी बन्दयां रिहा दृढ़ाईआ। लख चुरासी भार उठाए आपणे कंधा, बाहू बल इक प्रगटाईआ। अनक बिधी आपणा रख के ढंगा, चाल निराली इक समझाईआ। जो ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल लँघा, गगन गगनंतर डेरा ढाहीआ। झगड़ा मुका के जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। उस दा दरस नसीब होवे ना जमना सुरस्ती गोदावरी गंगा, नेत्र रो रो मारन धाईआ। चुली भर सके कोई ना पंडा, अमृत हथ्थ किसे ना आईआ। बिन सतिगुर शब्द किसे ना वंडा, दूसर नज़र कोए ना पाईआ। जो आया सो गा के गया छन्दा, ढोला सिफ्तां वाला गाईआ। तन वेस कराया धोती बोदी तम्बा, मुछ दाढ़ी केस कछिहरे नाल वड्याईआ। किसे समझ ना आई प्रभ दा केहड़ा वेस चंगा, कवण रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर,

सद आपणा खेल खिलाईआ। अवतार पैग़म्बर कहिण गुर, सिफ्तां विच सालाहीआ। जिस वेले दर्शन पाया स्वामी धुर, धुर मस्तक भगतां वेखे चाँईं चाँईंआ। ख़ाली कोई ना जाए मुड़, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। अन्तर आत्म नाल जाए जुड़, बाहर वंड ना कोए वंडाईआ। प्रेम प्यार दी रहे कोई ना थुड़, थुड़े थिड़क्यां लै समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच शब्द इक सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर कहिण गुर शब्द जणाया चुप चपीते, समझ किसे ना आईआ। हुक्म दिता धुर दे मीते, मतलब आपणा इक समझाईआ। वेखो फल आपणे कीते, चारे जुग ध्यान लगाईआ। तुसां मेरे नाम दे सिफ्तां वाले कीते टीके, हरफां विच वड्याईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ गुरदवार इक्ट्ठे कीते, ठेके इट्टां पथ्थरां नाल वड्याईआ। नाम कलमा बाणी पढ़ के रहे जीते, जीवण युगत विच समझाईआ। सिफ्तां विच कीती तमहीदे, नज़मां विच जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण असीं वेख्या खेल अगम्मा, आगमन विच वड्याईआ। जिस झगड़ा मिटाया माटी चम्मा, चम्म दृष्टी दिती बदलाईआ। मार्ग दस्स के नवां, नव नौ चार दा डेरा ढाहीआ। धर्म दी धार बदल के समां, संमण सब दे दिते कढ्ढाईआ। सब ने हो के आउणा रवां, भज्जणा वाहो दाहीआ। किसे नहीं भरोसा दमां, जीवण जुगत ना किसे समझाईआ। खेल वखा के हरख सोग ग़मा, चिन्ता चिखा विच वड्याईआ। झगड़ा पा के कल्पणा मना, मनसा संग रखाईआ। फेर हस्स के किहा गोबिन्द चन्ना, चन्न तेरी रुशनाईआ। शब्दी धार गुरु गुर जणां, जण जणेंदी बणया माईआ। दीन मज़्ह्ब दा मेटणा बन्ना, हद्द हदूद रहे ना राईआ। जेहड़ा गोबिन्द लाया कन्ना, पर्दा पर्दे विच समझाईआ। एहो फ़र्क रहिणा पुरख अकाल दा शब्द धार दा विच सरीर तना, जिस नूं समझे कोए ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी दया कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण क्यों गोबिन्द लाया कन्ना, डण्डा दस दस धार बदलाईआ। वेख के अन्तिम कन्ढा, कलयुग नैण उठाईआ। प्रभ दा खेल कोई कर ना सके पंजां तत्तां वाला बन्दा, गुर अवतार पैग़म्बर ना कोए चतुराईआ। हुण मैं कीता खण्डे नाल जंगा, युद्धां नाल लड़ाईआ। फेर फिरां विच ब्रह्मण्डां, शब्दी धार सहिज सुखदाईआ। दो जहानां निरगुण धार बदल के लँघ, पुरी लोअ खोज खुजाईआ। जनणी कुख्ख किसे ना जम्मा, रक्त बूँद ना मेल मिलाईआ। पवण स्वास लवां ना दमा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। रसना नाल किसे नूं कहिणा नहीं अंमढ़ी अंमा, गोदी गोद ना कोए टिकाईआ। दीन मज़्ह्ब दा होणा नहीं कोई तमा, तामस तृष्ना देणी गंवाईआ। इक्को साहिब दा हुक्म मन्नां, पुरख अकाल इक चतुराईआ। मेरा उहदा निरगुण धार सरगुण फ़र्क होवे इक कन्ना, मुक्ता

३५४
२२

वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। गोबिन्द कहे मेरे कन्ने दा भाव आह, आमद विच सरनाईआ। मेहरवान मेरे विच समा, समग्री आपणी विच टिकाईआ। जोती जाता हो के जोत जगा, नूर ज़हूर कर रुशनाईआ। पुरख अकाल हो के शब्दी नाद वजा, अनरागी राग सुणाईआ। सांझा मन्दिर इक सुहा, हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। सच सिंघासण इक विछा, सोभनीक इक सुहाईआ। सद मिल के आपणा झट लघा, एका दूआ ना कोए चतुराईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द एह कन्ना तेरा मेरा गवाह, शहादत निरन्तर दए भुगताईआ। इस नूं समझ सके कोई ना राअ, पर्दा पर्दानशीन ना कोए उठाईआ। गोबिन्द किहा वाह वाह, वाहो वाहो वाहिगुरु तेरी सरनाईआ। पुरख अकाल फड़ के बांह, बाजू दिता हिलाईआ। जिस वेले सृष्टी दृष्टी होई काँ, काग वांग कुरलाईआ। मात पुत इक दूजे वल्ल लैण तका, भैण भईआ अक्ख बदलाईआ। ओस वेले दोहां ने जाणा आ, धुर दा फेरा पाईआ। एह कन्ना कामल मुर्शद दा सदा सदा गवाह, शहादत शरअ तों बाहर भुगताईआ। दोहां नूं मिल के करनी पए ना कोए दुआ, सजदे विच ना सीस निवाईआ। चेला गुरु इक रूप हो के दईए वखा, वक्खरा घर ना कोए जणाईआ। शब्द जोत दा इक्को होवे राह, रहिबर इक्को नूर इलाहीआ। गोबिन्द झट छाती उत्ते हथ्थ दिता टिका, सीना ज़ोर नाल दबाईआ। वेखीं किते प्रभू ला ना जावीं दाअ, अछल छलधारी आपणी कार कमाईआ। जे दोवें फेर आईए ते सूर गाँ दा झगड़ा दईए मुका, पशूआं उत्ते धर्म ना कोए टिकाईआ। इक तेरा इक मेरा रह जाए नाँ, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जेहड़ा साडी दोहां दी चरण धूढ़ी लए नहा, जुग जन्म दी दुरमति मैल धुआईआ। पुरख अकाल ने हां विच मिलाई हां, हस्स के दिता सुणाईआ। ओस वेले आत्मा परमात्मा परमात्मा आत्मा दोहां दा सांझा होणा नाँ, मेरी इकल्ले दी चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्णूं भगवान, खेल करे अगम्म अथाह, अथाह आपणी कार कमाईआ।

✪ १६ माघ शहिनशाही सम्मत ५ सरमुख सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण वेख्या परम पुरख दा समाज, कलयुग अन्त श्री भगवन्त पड़दा दिता उठाईआ। सचखण्ड दवारे जोती जाते हो के गए जाग, बिन नेत्र लोचण नैण अक्ख प्रतख खुल्हाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर जोती जगदा वेख्या चराग़, बिन तेल बाती कमलापाती करे रुशनाईआ। श्री भगवाना नौजवाना मर्द मर्दाना

एकँकार तक्कया सुहाग, लख चुरासी चारे खाणी अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज रिहा प्रनाईआ। शब्द स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी आत्म परमात्म पकड़े वाग, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा जोड़ जुड़ाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता सति सतिवादी आपणी साजण साज, सज्जण मीत मुरार परवरदिगार सांझा यार आपणी खेल खिलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे राज, सतिजुग साचे लावे भाग, सति सतिवादी आपणी कार कमाईआ। त्रैगुण माया पंज तत मोह विकार बुझाए आग, अमृत मेघ आबेहयात इक बरसाईआ। धुन अगम्मी नाम अनादा सुणाए आपणा नाद, अनरागी धुर दा राग जणाईआ। गुरमुख गुरसिख सन्त सुहेले भगत भगवन्त वेखे साध, चार कुण्ट खोजे थांउँ थाँईंआ। जिस नूं ओम राम कृष्न अल्ला वाहिगुरु किहा गॉड, नमस्ते डण्डावत बन्दना करके सीस झुकाईआ। ओह हर घट अन्तर निरन्तर हो विस्माद, बिस्मिल हो के आपणी खेल खिलाईआ। सच संदेशा दे के बोध अगाध, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण तक्कया नूर अलाह, हरि करता बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं वेखे सर्ब गुनाह, लख चुरासी फोल फुलाईआ। भेव अभेदा अछल अछेदा दए खुल्हा, पड़दा ओहला रहिण कोए ना पाईआ। जिस दे अग्गे नमों नमों करदे दुआ, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। सो लेखा मंगे थांउँ थाँ, थान थनंतर वेखे चाँईं चाँईंआ। सदी चौधवीं नाउँ निरँकारा एकँकारा दृढ़ा के आपणा नाँ, नाम निधाना इक समझाईआ। आत्म परमात्म बण के पिता माँ, पूत सपूते आपणी गोद टिकाईआ। सचखण्ड दवार दरगाह साची दस्स अवल्लड़ा थाँ, हकीकत हक हक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ दा हुक्म निराला, निरवैर आप जणाईआ। हुक्म संदेशा देवे जोती धार पुरख अकाला, अकल कलधारी आपणी कार कमाईआ। सति सच जणाए बिन छप्पर छन्न धर्मसाला, दवार इक्को इक प्रगटाईआ। जिथ्थे पोह ना सके काल महाकाला, चित्रगुप्त धर्म राए दए ना कोए सज़ाईआ। फेरनी पए कोई ना माला, तीर्थ तट इश्नान ना कोए कराईआ। एका मार्ग दस्स सुखाला, तूं मेरा मैं तेरा दए जणाईआ। सतिजुग साची सति धर्म दी चलके चाला, चार कुण्ट करे रुशनाईआ। जिस दा गुर अवतार पैग़म्बर सरगुण निरगुण दे के गए अहिवाला, सिफ्तां विच सिफ्त सालाहीआ। सो योद्धा सूरबीर प्रगट हो मर्द मर्दाना, निरगुण निरवैर लए अंगड़ाईआ। आत्म बोध शब्द स्वामी दस्स के गाणा, अनबोलत आपणा राग जणाईआ। सति धर्म सच झुला निशाना, कूड़ निशाने दए मिटाईआ। इक महल्ल अटल दरसाए सच मकाना, जिथ्थे बिन तेल बाती निरगुण नूर करे रुशनाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी परवरदिगार सांझा यार राम रामा हो प्रधाना,

परम पुरख आपणा हुक्म वरताईआ। सति संदेशा नर नरेशा शब्दी धार दे दो जहानां, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी कार कमाईआ। जिस नूं झुकण ज़िमीं असमाना, चौदां लोक चौदां तबक सबक सिख्या विच दृढ़ाईआ। सो लेखा जाणे दीन दुनी जगत जुग जहाना, जहालत वेखे बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर नूरी जोत पहर के जामा, निरगुण धार करे रुशनाईआ। जन भगत सुहेले गुर चेले कर परवाना, परम पुरख प्रभ आपणा रंग रंगाईआ। आत्म धार दे के ब्रह्म ज्ञाना, विद्या ब्रह्म ब्रह्म जणाईआ। जिस नूं समझ सके ना कोए इन्साना, अक्ल बुद्धी ना कोए चतुराईआ। काग़ज़ कलम शाही कर ना सके कोए ब्याना, अक्खरां वंड ना कोए वंडाईआ। सो खेल करे श्री भगवाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता शहिनशाहीआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण वेखणा अगम्म नज़ारा, नज़रीआ सके ना कोए जणाईआ। की खेल करे करतारा, कुदरत दा मालक धुरदरगाहीआ। निरगुण सरगुण पावे सारा, महासार्थी आपणी कार कमाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता हो चौवीआं अवतारा, पर्दा ओहला दए चुकाईआ। मुरीद मुर्शद मेहरवान महिबूब हो के पावे सारा, दीन दुनी कलमा कायनात खोज खुजाईआ। रहमत विच मुहब्बत विच इलाही देवे इक इशारा, ऐशो इशर्त लेखा दए मुकाईआ। भेव खुल्ह्हाए दया कमाए मुहम्मद महिबूब नाल चार यारां, यराना कूड़ रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त निरगुण नूर जोत इक अवतारा, अवतर निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा वेस वटाईआ।

✪ १६ माघ शहिनशाही सम्मत ५ जमांदार किशन सिँघ दे गृह पिण्ड अल्लड़पिण्डी ज़िला गुरदास पुर ✪

सतिगुर शब्द कहे पूरन तत होया परवाना, परम पुरख दिती वड्याईआ। मेरा मैनूं मिल्या टिकाणा, संभल सम्बल डेरा लाईआ। खेल कर विष्नूं भगवाना, भगवन आपणी कार कमाईआ। धुर दा नाम दे तराना, तुरीआ तों अग्गे तर्ज़ समझाईआ। ब्रह्म रिहा ना कोए बेगाना, पारब्रह्म विच मिलाईआ। धर्म दी धार सच निशाना, जीव जहानां रिहा वखाईआ। मेहरवान हो मेहरवाना, मेहर नज़र इक उठाईआ। कलमा दे धुर फ़रमाना, कायनात रिहा समझाईआ। जो आदि जुगादी पहरे बाना, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। सो योद्धा सूरबीर मर्द मर्दाना, मेहरवान लए अंगड़ाईआ। चारों कुण्ट मार ध्याना, दहि दिशा पड़दा लाहीआ। धरनी धवल वेख ज़िमीं असमाना, दो जहानां खोज खुजाईआ। चुरासी विच्चों एका तत पहचाना, रत्त

आपणे रंग रंगाईआ। सति सच कर प्रधाना, देवे माण जगत वड्याईआ। मन्दिर वेखे अगम्म मकाना, सच दवारे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे पूरन तत तत प्रभ लेखे, जगत लेख ना कोए वड्याईआ। जिस गृह वसे नर नरेशे, नर नरायण डेरा लाईआ। कूड़ भरम ना रहे भुलेखे, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। जोती धार कर के वेसे, विश्व बैठा डेरा लाईआ। माण वड्याई दे एके, एकँकार रंग चढ़ाईआ। निरगुण धार बख्श के टेके, सरगण धूढ़ मस्तक रमाईआ। नाता जुड़या पिता पुरख अकाल सुत दुलारे गोबिन्द बेटे, दूजा अवर ना कोए वखाईआ। दो जहानां खेवट खेटे, बेड़ा ब्रह्मण्ड रिहा चलाईआ। जुग चौकड़ी बचन रखे चेते, चेतन हो ना कदे भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच देवे माण वड्याईआ। सतिगुर शब्द (कहे) पूरन तत जोत उज्यारा, उज्जल एका एक कराईआ। पूरब जन्म जन्म उधारा, लेखा लेखे विच्चों प्रगटाईआ। शाह पातशाह सच्ची सरकारा, शहिनशाह इक वड्याईआ। जिस नूं झुकदे पैग़म्बर गुर अवतारा, विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाईआ। जिस दा आदि अन्त इक जैकारा, नाम ढोला सिफ्त सालाहीआ। सो जुग जुग आवे वारो वारा, नित नवित आपणा वेस वटाईआ। जिस दा करदे गए इशारा, भविक्ख्तां विच दृढ़ाईआ। सो कलि कल्की अवतारा, सम्बल बैठा डेरा लाईआ। साढे तिन्न हथ्थ मुनारा, मुनी मुनीश्र हथ्थ किसे ना आईआ। जिस दी धर्म धार दीवारा, चारों कुण्ट रंग रंगाईआ। किल्ला कोट इक अपारा, अपरम्पर स्वामी ल्या बणाईआ। जगत खेल वखा के नौ दवारा, दसवीं धार राह चलाईआ। इस तों अग्गे कर किनारा, सूर्या चन्द चरणां हेठ दबाईआ। त्रै पंज ना कोई इशारा, नाद धुन ना कोए वजाईआ। निरगुण नूर कर उज्यारा, जोती जाता सोभा पाईआ। निरगुण धार बोल जैकारा, आत्म परमात्म रिहा सुणाईआ। संदेशा दे गुर अवतारा, पैग़म्बरां रिहा उठाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेख संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे पूरन तत तत दा वेता, वितकरा नज़र कोए ना आईआ। जिस दा नूर अगम्मी नेता, निराकार निरँकार सोभा पाईआ। सो सरगुण धार करे हेता, हितकारी हो के वेख वखाईआ। गोबिन्द प्यार कर के चेता, चेतन सब नूं रिहा कराईआ। सहाई होवे सदा हमेशा, आदि अन्त ना कदे भुलाईआ। जोती धार बण नरेशा, शब्दी शब्द करे अगंवाईआ। अगम्म अथाह दे भेता, पर्दा अन्तर इक उठाईआ। लेखे लाए गुरु अर्जन वाली तत्ती सीस पई रेता, रावी रवादार ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे पूरन

तत मेरा अधार, सिंघासण आसण इक सुहाईआ। दोहां मेला इक करतार, कुदरत कादर रंग रंगाईआ। साचा मन्दिर सच दवार, द्वारकावासी जिथ्थे सीस निवाईआ। महल्ल अटल उच्च मिनार, महिबूब मुहब्बत विच वड्याईआ। खेल वेख सच्ची सरकार, सति सच वज्जे वधाईआ। जिस नूं मन्नण पैग़म्बर अवतार, गुरु गुरदेव राह तकाईआ। सो खेल करे अपार, अपरम्पर आपणा हुक्म वरताईआ। एका जोत जोत जगे निरँकार, साढे तिन्न हथ्थ नूर रुशनाईआ। जिस दा अन्त ना पारावार, बेअन्त आप हो आईआ। सो मेला मेले मेलणहार, विछोड़ा अग्गे रहे ना राईआ। जन भगतां करे प्यार, मेहर नज़र इक उठाईआ। जो सेवा करन दिवस रैण दिवस दो चार, घड़ी पल आपणे लेखे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे पूरन तत भगत विचोला, भगवन जिस विच नज़री आईआ। प्रेम प्रीती खेले होला, रंग रतड़ा रंग रंगाईआ। माण बख्शे उपर धौला, धवल मिले वड्याईआ। सब दा पूरा करे कौला, कँवल नैण दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सति सरूप अवल्ल का अवल्ला, अवल्ल आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ २० माघ शहिनशाही सम्मत ५ बावा सिँघ दे गृह पिण्ड अल्लड़पिण्डी ज़िला गुरदास पुर ✪

पूरन तत प्रभू दा घर, घराना गुर अवतार पैग़म्बर गए समझाईआ। जिस गृह पारब्रह्म दा सर, पतिपरमेश्वर अमृत सति भराईआ। निरगुण सरगुण मिले वर, आत्म परमात्म खोज खुजाईआ। धन दौलत वेखे जोरू ज़र, ज़र्रा ज़र्रा खोज खुजाईआ। लहिणा देणा जाणे नारी नर, निराकार साकार पड़दा आप उठाईआ। साची पौड़ी आप चढ़, मन्दिर सच इक वड्याईआ। भेव खोल्ह के चेतन जड़, सुरती शब्दी वेख वखाईआ। ना जीवत ना जाए मर, आदि अन्त एका रंग समाईआ। जगत जिज्ञासू सके कोई ना फड़, खोज्जयां हथ्थ किसे ना आईआ। मेहरवान महिबूब मेहर आपे कर, करनी करता कार कमाईआ। सच दवार एकँकार आपे खड़, दर घर साचा इक वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक वखाईआ। पूरन तत प्रभू गृह मन्दिर, सच सुहञ्जणा सोभा पाईआ। अट्ठे पहर खुल्ह्‌ा रहे जन्दर, कुंजी हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। प्रकाश कर अंधेरे कन्दर, जोती जाता डगमगाईआ। नाम निधाना प्रगटा मन्त्र, तूं मेरा मैं तेरा सच पढ़ाईआ। भेव अभेदा खोल्ह निरन्तर, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। अग्नी अग्ग बुझा

बसन्तर, अमृत मेघ मेघ बरसाईआ। धर्म दी धार बणा बणतर, सम्बल आपणा रंग रंगाईआ। खेल वेखे गगन गगनंतर, ज़िमीं असमानां खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक वखाईआ। पूरन तत प्रभू प्रभ दवारा, द्वारकावासी सीस निवाईआ। अष्टभुज भुज निमस्कारा, देव देवआत्मा राह तकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव वेखण नैण उग्घाड़ा, बिन लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। पैग़म्बर सजदा करन वारो वारा, बिन कदमां सीस जगदीश झुकाईआ। गुर गुर धूढ़ी लावण छारा, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। सूफ़ी सन्त बण भिखारा, दर बैठे झोलीआं डाहीआ। भगत भगवान इक्को होवे जैकारा, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। एह खेल सच्ची सरकारा, हरि करता आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मार्ग इक दरसाईआ। पूरन तत तत सिंघासण, सिँघ शब्द जोत तेज रूप वड्याईआ। बराजे साहिब पुरख अबिनाशण, करनी करता सोभा पाईआ। अगम्मी शब्द अगम्मी आवाजण, अगम्म धार प्रगटाईआ। निरवैर निराकार खोल्ह के राज़ण, निरँकार पड़दा लाहीआ। सच दवार दा कर के साधन, सद भावना विच समाईआ। जिस नूं चार जुग अवतार पैग़म्बर गुर अराधण, सो सम्बल बैठा डेरा लाईआ। जिस दा खेल मोहन माधव माधन, मधुर धुन राग सुणाईआ। जिस दा पूजा पाठ पाठण, रसना जेहवा बत्ती दन्द सालाहीआ। जिस दा लेखा बाहर आण बाटण, गर्भ वास ना डेरा लाईआ। सो खेल करे समराथन, समरथ आपणा हुक्म वरताईआ। जिस नूं निहकलंक कलि कल्की सारे आखण, अमाम अमामा सिफ्त सालाहीआ। जो आदि जुगादी धुर दा बापण, पिता पुरख अकाल वड्याईआ। सो कलयुग अन्त मेटे अंधेरी रातन, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ। जिस दा शब्द शब्दी धार भाषन, भाषा दीन दुनी बदलाईआ। अन्त संदेशा आया आखण, आत्म परमात्म राग दृढ़ाईआ। जन भगत सुहेले लख चुरासी विच्चों वरोले माखण, मेहरवान आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा राह इक वखाईआ। पूरन तत गुरु गुरदेवा, देव देवा आत्मा रूप समाईआ। सच घराना सदा निहकेवा, निहचल इक्को इक वखाईआ। जिस दी सिफ्त कर ना सके जेहवा, ज़बान उल्फ़त विच ना कोए वड्याईआ। जिस दा नाम अगम्मी मेवा, अमृत रस रस चखाईआ। सो साहिब स्वामी अलख अभेवा, अचरज आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच नाम दा मस्तक लावे थेवा, मस्ती आपणी आप रखाईआ।

✪ २५ माघ शहिनशाही सम्मत ५ सर्ब धर्म सम्मेलन ६ फरवरी १९७० राम लीला गराउंड दिल्ली ✪

क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश सिख ईसाई मुस्लिम जैनी हो जाउ धर्म धार दे झण्डे हेठ इक्ट्ठे, वक्खरा रहिण कोए ना पाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा दीन मज़्ब ज़ात पात झगड़े विच फिरो ना नट्ठे, अन्तर आत्म परमात्म इक्को लैणा मनाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर परवरदिगार सांझा यार पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सब नूं आपणे रंग रत्ते, रंग रतड़ा इक्को एक अगम्म अथाहीआ। सति धर्म दी विश्व जाणो सते, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी आपणा आप लओ बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा रंग वखाईआ। फोरथ वर्ल्ड वेखो कानफ़रंस, दिल्ली दवारे सोभा पाईआ। महात्मा दी आत्मा तुसीं सारे अंस, दूजा नज़र कोए ना आईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप गुरु अवतार पैग़म्बर ईसा मूसा हज़रत मुहम्मद नानक गोबिन्द जो मार्ग गए दस्स, सर्ब सृष्टी दृष्टी अन्दर लओ रखाईआ। इक दूजे दा प्रेम प्यार मुहब्बत विच गाओ जस, द्वैत अन्दरों दयो कढ्ढाईआ। साध सन्त सूफ़ी फ़कीर अचारीए धर्म निज नेत्र अन्दर खोल्हो अक्ख, पड़दा भेव दा देणा मिटाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर धर्म सटेज ते वेखो प्रतख, लुक्या रहिण कोए ना पाईआ। अग्गे वास्ते हिरदे अन्दर आपणा इरादा कर लओ पक्क, इक दूजे वल्ल बुरी निगह ना कोए उठाईआ। जो मज़्ब उत्ते मज़्ब दा करे शक, ओस दा शकवा सारे इक्ट्ठे हो के दयो गंवाईआ। धर्म दी पालणा धर्म दी अवस्था करना धर्म दा पर्चार करना धर्म ते चलणा सारयां दा हक, वक्खरी वंड ना कोए वंडाईआ। सब दा मालक ख़ालक प्रितपालक पुरख अकाल दीन दयाल समरथ, दूजा नज़र कोए ना आईआ। वेखो ग़रीबां दी सहायता करन वाला तुहाडे साहमणे जगजीवण राम बैठा सज, सारे भारत नूं एकता दे रंग विच रंग प्रधान मन्त्री मित्र रिहा बणाईआ। अग्गे वास्ते प्रण कर लओ तुहाडा सब दा सांझा इक्को हक, दीन मज़्ब दा झगड़ा मातलोक धरनी धरत धवल धौल भारत खण्ड योरप एशीआ विच रहिण कोए ना पाईआ। बिना धर्म तों होर कुछ नहीं जे सच, बिना सच तों सति पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा घर घर, सन्त कृपाल जी मुनी सुशील जी सारयां दा बैठे कर इक्ठ, देस देसांतरां दे अचारीए धर्म दे आगू बैठे डेरा लाईआ।

✪ २६ माघ शहिनशाही सम्मत ५ चौथा धर्म समेलन ७ फरवरी १९७० राम लीला गराउंड दिल्ली ✪

विश्व धर्म समेलन सत्त फरवरी कुण्ट चार, दहि दिशा रिहा जणाईआ। धरनी धरत धवल उत्ते साधां सन्तां सूफ़ी फ़कीरां

ऋषीआं मुनीआं दे सब ने सुणे विचार, जो विचर के गए जणाईआ। धर्म संदेशा अज्ज दिहाढ़े दरगाह साची मुकामे हक सुणया ओस परवरदिगार, जो जल्वागर नूर इलाहीआ। जिस दी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेई अवतार हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद नानक गोबिन्द सिफ्तां विच सिफ्त कर के गए इज़हार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान गुरु ग्रन्थ साहिब दी बाणी ओसे दा जस गाईआ। भविक्खतां विच लिखतां विच इष्टां विच दृष्टां विच रसना जेहवा बत्ती दन्द बोल के गए निरगुण शब्द दी सरगुण शब्द धार, तत विच्चों तत लैणा प्रगटाईआ। सदी चौधवीं अन्त अखीर बेनज़ीर लाशरीक परवरदिगार सांझा यार एकँकार निराकार प्रगट होवे विच संसार, जोती जाता पुरख बिधाता आपणा रूप लए प्रगटाईआ। जिस ने सति धर्म सच नाम सच कलमा कायनात दुनिया वर्ल्ड सृष्टी दी दृष्टी दे अन्दर करना उज्यार, ज़ात पात दीन मज़्ह्ब दा पड़दा देणा उठाईआ। सारे आलम वाले हो जाओ ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर दयो सुणाईआ। जिस नूं मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ लभ्भदे गुरदवार, सो मालक ख़ालक प्रितपालक तुहाडा मीत आदि दा अन्त तक कदीम दा कुदरत दा कादर तुहाडे विच बैठा सोभा पाईआ। जिस दी सदा सदा नित नवित करदे रहे उडीक, वेखदे रहे अक्खरां ते हिन्दस्सयां वाली तारीख, जिस दा मार्ग शाहरग तों उत्ते वसया सन्तां किहा बारीक, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जिस दी चार जुग सब ने कीती तस्दीक, रसूल शहादत गए भुगताईआ। सो तुहाडी आसा मनसा ज़रूर पूरी करे उम्मीद, दरगाह दा मालक अर्शां दा मालक फ़र्श उत्ते आपणा नूर जोत करे रुशनाईआ। क्यों ओस ने सब दा पूरा करना भविक्खत वाक, बन्द किवाड़ी दा अन्दरों खोल्ह्णा ताक, आत्म परमात्म दा देणा साथ, तन वजूद माटी खाक दा झगड़ा देणा मुकाईआ। कोई हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई पारसी बोधी जैनी रहिण नहीं देणा उदास, हउमे हंगता कूड़ी क्रिया काया मन्दिर अन्दर करनी आप सफ़ाईआ। जिस दा कलमा सच अदाब, निमस्कार नमस्ते इक्को देणी दृढ़ाईआ। हुण एथे शरअ दा शरीअत वाला कोई होणा नहीं हिसाब, आलमां दा इलम प्रेम दा देवे ख़िताब, नाम दे रसूल सब ने कलमा करना कबूल, कायनात आहला आज़म एका एक नूर करे रुशनाईआ। जिस दी गोबिन्द दए शहादत, बदल देणी मन कल्पणा दी इबादत, सब नूं दस्सणी इक्को सदाकत, ल्याकत धर्म वाली जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। फ़ोरथ वर्ल्ड कानफ़रंस दस्से सर्ब अवाम, दीन दुनी जणाईआ। सब दा मालक पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अल्ला राम वाहिगुरु कृष्न गॉड जिस ने बण के आउणा अमाम, अमाम अमामा फेरा पाईआ। ओस झगड़ा मेटणा कूड़ कल्पणा दा तमाम, तमांम्ह कूड़ी देणी (गंवाईआ)। कलयुग रहिण नहीं देणी अंधेरी शाम, सन्तो महातमो महापुरुषो सति धर्म दा जुग देणा बदलाईआ।

ओ तुसीं बिरध नहीं होणा क्योंकि तुहाडा मालक तुहानूं करे जवान, जोबनवन्ती हयाती लैणी हंढाईआ। उहदा इक धर्म ते इक इस्लाम, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। जो आया सो लै के जायो इक दूजे दा सच प्यारा, प्रेम प्रीती विच आपणा आप बंधाईआ। वेख्यो आपणे मन दे अधीन हो के बण ना जायो अवारा, कपलणा विच भज्जो वाहो दाहीआ। ज़रा आत्मा दा रस माणो परमात्मा दा रस माणो फेर वेखो की नज़ारा, जेहड़ा नज़र तों परे बेनज़ीर दए वखाईआ। ज़रा इक दे सारे बण के वेखो ताबयादारा, अधीन हो के मस्कीन हो के सजदा करो ओस खुदा, जो सब दा पिता माईआ। एह ओसे दा सच्चा दरबारा, जिथ्थे वसे आप निरँकारा, शहिनशाहां दा शहिनशाह पातशाहां दा पातशाह, बेअन्त ते सांझा मीत मुरारा, मित्र सारे लए बणाईआ। हुण झगड़े वाला किसे बन्ने रहिण ना दयो अखाड़ा, कूड़ी क्रिया जगत वेसवा नाच ना कोए नचाईआ। सारे बण के भाई चारा, इक दूजे नूं मिलण वास्ते दोवें हथ्थ लओ उठाईआ। झूठयां कामीआं क्रोधीआं लोभीआं हँकारीआं विभचारीआं कुकर्मीआं भृष्टाचारीआं नूं दूरों करो निमस्कारा, डण्डावत कर के इक्को वार पल्लू लओ छुडाईआ। नाले सारयां नूं बोलो असीं आत्मा ओह साडा परमात्मा दोहां दा साचा प्यारा, विछोड़ा नज़र कोए ना आईआ। जे तुसीं ना उठे सारी दुनिया विच सृष्टी कायनात विच विज्ञान ने कर देणी हाहाकारा, हक हक दा नाअरा ना कोए लगाईआ। इहो प्रेम प्रीती मुहब्बत दा सारे करो मुज़ाहरा, खुशी नाल दो हथ्थां दी ताली दयो वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सुणो सत्त फरवरी वाली बात, दिल्ली दवार दयां सुणाईआ। की खेल हुन्दा दरगाह साची अज्ज दी रात, वेला वक्त दए गवाहीआ। अवतार पैग़म्बर गुरु सारे इक्ठे बैठे लोकमात वल्ल मारन झात, बिना निगाह तों निगाह उठाईआ। जेहड़ा असीं शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान लेखा लिख के आए नाल कलम दवात, काग़ज़ां उत्ते शहादत आए पाईआ। अज्ज उस नूं ओह भुल्ल गई दीन मज़्हब वाली जमात, दुनिया अक्खर पढ़ के झगड़ा दुनिया विच पाईआ। जिंना चिर खुदा मेहरवान महिबूब तूं आप ना आयों साख्यात, प्रगट हो के आपणा रूप दरसाईआ। ओनां चिर झगड़ा नहीं मुकणा ज़ात पात, दीन मज़्हब करदा रहे लड़ाईआ। साध सन्त सूफ़ी फ़कीर सब वेखो दीन दुनी अन्दर दा वाक्यात, काया मन्दिर साचे काअबे विच खोजो चाँईं चाँईंआ। प्यार मुहब्बत विच सारे बण जाओ इक दे दास, दासी हो के सेव कमाईआ। ओह काहन ते तुसीं गोपी तुहाडी सुरत शब्द नाल पाए रास, अल्ला हू अन्ना हू इक्को रंग वखाईआ। वाहिद अमृत पीओ ते पीओ आबेहयात, आपणी ज़िंदगी लओ बदलाईआ। तुहाडे घर ओह धन ओह सूरज महिताब, जिस दी लाईट संन मून समझ किसे ना आईआ। वेखो अज्ज कोई सन्त महात्मा कर के ना जायो आऊट वाक, आपणा पल्लू

लओ छुडाईआ। प्यार नाल कहो धर्म समेलन चौथे विच साडा सारयां दा होया इत्फ़िाक, निफ़ाक वाला नज़र कोए ना आईआ। इहो बेनन्ती इहो आरज़ू इहो अरदास, विश्व धर्म दे बानीओ सारे पुरख अकाल नूं दयो सुणाईआ। तुहाडा गुरु वसे तुहाडे आस पास, दूर दुराडा नज़र कोए ना आईआ। आउण वाल्यो गुरमुखो प्रेमीओ प्यारयो प्रभू दे भगतो सन्तो तुहानूं अख़ीरी देवां शाबाश, जेहड़े बैठ के अन्तर आत्मा परमात्मा दा जस सुण के आपणी खुशी बणाईआ। अग्गे वास्ते सब दा सांझा इक्को पिता ते इक्को मात, क्योंकि, आत्मा जगत माता किसे सरीर विच ना कदे टिकाईआ। इक्को दीन इक्को मज़्हब इक्को ज़ात इक्को नाम कलमा ते इक्को गाथ, तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला लैणा गाईआ। फेर आपणे आप नूं लैणा वाच, समझो एह ओस दा खेल तमाश, जो ख़लक दा ख़ालक दीन दुनी दा मालक जल्वागर नूर रुशनाईआ। उहो सदा सदा वाहिद, एकँकार ओसे नूं सारे कहि के गए गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवे माण वड्याईआ। सत्त फ़रवरी कहे मेरा इक्को इक संदेशा, सर्ब नूं दयां सुणाईआ। मुनी सुशील कुमार सन्त किरपाल सिँघ सारयां इक्ठे रहिणा एसे तरह हमेशा, विछोड़ा नज़र कोए ना आईआ। सारयां दा इक्को वेस ते इक्को देसा, विछोड़ा अग्गे ना कोए रखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर इहो दस्स के गए आपणा जुग जुग बदल के वेसा, काया दे पुतले दए बदलाईआ। भावें कोई मुल्ला मुसायक शेखा, पंडत पांधा ग्रन्थी पन्थी हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई इक्को रंग रंगाईआ। सब दा प्यार ते आत्मा परमात्मा दा हेता, इहो जगत विच वड्याईआ। तुसीं हुण आ गए ओह भूमी विच ओस रण खेत विच जिथ्थे कलयुग दी कूड़ी क्रिया करनी खेता, नाम दा खण्डा हथ्थ विच लैणा चमकाईआ। याद कर लओ गुर अवतार पैग़म्बर भविक्ख्तां विच सब नूं करा के गए चेता, नानक दा शब्द कलमा अगम्म अथाहीआ। प्यार मुहब्बत करन वाला पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्को नर नरेशा, नर नरायण कहि के जिस नूं सारे सिफ्त सालाहीआ। हरिसंगत प्रेमी प्यारयो आउण वाले गुरमुखो कल नूं इस तों वड्डा तुहाडे उत्ते होर जुम्मेवारी दा ठेका, मुनी होरां दी खुशी देणी बणाईआ। जेहड़ा कोई प्यार पिच्छे घर छड के आए ओह वी कल्ल नूं एस राम लीला दी गराउंड विच आ के सन्तां दी कर देणा भेंटा, ते सन्तां दा संग बणा के चलणा चाँईं चाँईंआ। क्योंकि तुहाडा सब दा मालक इक्को पुरख अकाल दीन दयाल जो हर घट वसया उहो तुहाडा नेता, शाह पातशाह शहिनशाह उहो नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण निरगुण निरगुण सरगुण निरगुण सरगुण एकँकार इक इकल्ला परवरदिगार सांझा यार आत्म परमात्म परमात्म आत्म एका आपणा रंग दए वखाईआ। २७ माघ राम लीला गराउंड धर्म समेलन चौथे आत्मा परमात्मा दिता सद्दा, होका हक धर्म वाला सुणाईआ।

दीन मज़्ब ज़ात पात ऊच नीच राउ रंक दीआं छड दयो हद्दां, माया ममता मोह हँकार विभचार कुकर्म भृष्टाचार अन्दरों देणा कढ्ढाईआ। सन्त जन सूफ़ी फ़कीर जेहड़े बैठे चढ़ के चौथे पदा, सम्मेलन विच आपणा रंग देण वखाईआ। किसे दा झगड़ा रहिण ना देणा काया माटी नाड़ी मास हड्डा, तन वजूद दा बाहरों लेखा देणा मुकाईआ। एस धरनी धरत धौल धवल उत्ते मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मट्ठ गुरदवार ते इक्को भगत दवारा होवे जगा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई पारसी बोधी जैनी इक्को मंच उत्ते होवे सजा, ते इक्को रूप साहमणे बैठे सारे नज़री आईआ। संसार विच प्यार विच विचार विच सारे बदल जाउ पिछला पिच्छे तों समझ लओ केहड़ा साडे आउणा अग्गा, आगमन विच इक धर्म नूं सारे दयो वधाईआ। क्यों तुहाडा प्रभू परवरदिगार सांझा यार पुरख अकाल दीन दयाल सदा वसदा तुहाडी उत्ते शाह रगा, सन्तां दी सिख्या बिना धुन आत्म राग दे विच ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग चढ़ाईआ। चौथा समेलन इक दूजे नूं देवे दावत, मुनी ते मुनीजन इक्ठे बैठे सोभा पाईआ। अज्ज फ़ैसला कर लओ सब ने अन्दरों कढ के जाणी अदावत, अन्दर बाहर वैर विरोध रहिण किसे ना पाईआ। प्रभू दा खेल होण वाला जे भयानक, अचानक आपणी कार कमाईआ। जिंना चिर धर्म ने स्यासत दी दिती ना ज़मानत, संसार नूं सके ना कोए बचाईआ। प्रेम दी प्रेम दीनां मज़्बां नूं सांझी दे दयो न्यामत, वक्खरा रहिण कोए ना पाईआ। जे सन्तां महात्मा दे हुन्दयां विकार हँकार दी संसार दे काया मन्दिर अन्दर रह गई अलामत, फेर नाम किते हथ्थ ना आईआ। सारे इक्ठे हो उस परमात्मा खुदा वाहिगुरु अल्ला गॉड तों मंगो इक सखावत, जो इक सुखन नाल दीन दुनी सारी लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सब दा मालक पारब्रह्म पतिपरमेश्वर, सन्तां दे अन्तर निरन्तर सन्मुख सब दे सोभा पाईआ।

✪ २८ माघ शहिनशाही सम्मत ५ रेशम सिंघ दे गृह मेरठ छाउणी ✪

अवतार पैग़म्बर गुर लोकमात तक्कया, चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप ध्यान लगाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर सति धर्म दी रही कोई ना सतया, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी धुन ना कोए सुणाईआ। प्रभू प्रेम प्यार भगती विच दिसे कोई ना रत्तया, रत्न अमोलक हीरा रूप ना कोए दरसाईआ। मन ममता कूड़ वासना जीव जहान फिरे नस्सया, अट्ठे पहर भज्जे वाहो दाहीआ। सच दवार साढे तिन्न हथ्थ अन्दर होई रैण अंधेरी मस्सया, निरगुण नूरी जोत

चन्द ना कोए रुशनाईआ। कलयुग सदी चौधवीं वेख के खिड़ खिड़ा के हस्सया, ताली दो हथ्थां वाली लगाईआ। साध सन्त जगत फ़कीर सूफ़ी माया ममता डस्सया, अमृत विख रूप बदलाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार लूं लूं अन्दर रचया, साढे तिन्न करोड़ दए गवाहीआ। मन कल्पणा विच अमीर ग़रीब नच्चया, सांतक सति ना कोए कराईआ। दीन मज़्हब इक दूजे दी करदे हत्या, हितकारी नज़र कोए ना आईआ। आबेहयात अमृत रस मिले किसे ना रस्या, हउमे तृष्ना रोग ना कोए मिटाईआ। चारों कुण्ट प्या रट्टया, झगड़ा होवे थांउँ थाँईंआ। जीव जहान खेल बाज़ीगर नटया, कलयुग स्वांगी आपणी कल वरताईआ। नाम अणयाला तीर जाए कोई ना खिच्चया, बजर कपाटी पड़दा ना कोए उठाईआ। सच दवारे लाहा किसे ना खट्टया, खटका दिसे कूड़ लोकाईआ। मदि प्याला विभचार पीता गट्टया, हरस हवस नाल वधाईआ। फिरी दरोही सरोवर तीर्थ तट्टया, तट किनारे रोवण मारन धाहींआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता बेपरवाहीआ। समां कहे मेरा कलयुग सोहणा मीत, कलकाती रंग रंगाईआ। जिस दीन दुनी दी बदल दिती नीत, नीतीवान ना कोए चतुराईआ। झगड़ा पवा के हस्त कीट, ऊचां नीचां रिहा लड़ाईआ। खेल वेख के नाम हदीस, हज़रतां रिहा जणाईआ। जो वेला पिच्छे गया बीत, गुर अवतार पैग़म्बर किस दी देण सफ़ाईआ। अग्गे झगड़ा मेटणा मन्दिर मसीत, शिवदुआले मठ्ठ गुरदवार रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर संदेशा इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण तक्कया जगत जहान, चुरासी अन्दर खोज खुजाईआ। मानव ज़ाती ख़ाली होया मकान, साढे तिन्न हथ्थ वज्जी ना कोए वधाईआ। रूप बणाया भूमी शमशान, शमां नूर ना जोत रुशनाईआ। अक्खरां वाला पथ्थरां वाला लैंदे ज्ञान, निरअक्खर सक्या ना कोए पढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण सुणदे कान, धुन अनादी नाद ना कोए जणाईआ। चारों कुण्ट फिरन इन्सान, मन कल्पणा भज्जण वाहो दाहीआ। आत्म परमात्म करे ना कोए परवान, परम पुरख मिलण कोए ना पाईआ। सति धर्म दा रिहा ना कोए निशान, निशाने दीन दुनी बदलाईआ। करे खेल श्री भगवान, हरि करता अगम्म अथाहीआ। गुर अवतार पैग़म्बरां दे भविक्ख्तां दा लेखा वखाए विच जहान, हज़रत मुहम्मद नाल रलाईआ। सदी चौधवीं अन्त वेख तुफ़ान, शौह दरया वहिण वहाईआ। केहड़ा अवतार पैग़म्बर लोकमात जाए बचाण, निरगुण धार लओ अंगड़ाईआ। दरगाह साची सचखण्ड दवारे सारे निउँ निउँ सीस झुकाण, बिन चरण कँवल चरणां सीस टिकाईआ। तूं साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी मेहरवान, महिबूब तेरी वड्याईआ। सानूं ऐं जापदा साडा अन्त अख़ीरी वक्त पहुँचया आण, अनक कलधारी तेरा भेव कोए ना आईआ। सचखण्ड दवारे सारे होए असीं हैरान, हैरानी अन्दर तेरा नाम दुहाईआ।

साबत रिहा ना किसे ईमान, धर्म दी धार ना कोए जणाईआ। चारों कुण्ट फिरे शैतान, शरअ छुरी बणी जगत कसाईआ। तेरा नूर नज़र आए ना कोए अमाम, आलम इलम ना कोए चतुराईआ। असीं दीन दुनी कायनात वेखी शान, अन्दर वड़ के मन्दिर चढ़ के खोज खुजाईआ। तेरा दरस मूल ना पाण, मंज़ल मिले ना बेपरवाहीआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द ढोले सारे गाण, वाहवा करके झट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दवारा इक समझाईआ। पैग़म्बर कहिण हक खुदा वक्त नज़दीक, नूरी नजर नैण उठाईआ। तेरे विच इक तौफ़ीक, मेहरवान महिबूब तेरी वड्याईआ। तेरी रख के आए उडीक, सदी चौधवीं अन्त जणाईआ। तूं परवरदिगार लाशरीक, शहिनशाह नूर इलाहीआ। साडा कलमा करे तस्दीक, शहादत रसूल आए भुगताईआ। जिस दी सिफ्त करे कुरान मजीद, तीस बतीसा नाल मिलाईआ। सो कलयुग कूड़ी क्रिया गफ्लत विच्चों खोल्ह दे नींद, आलस निंद्रा दे मिटाईआ। तेरे उपर इक उम्मीद, आमद विच तेरा राह तकाईआ। तेरी सिफ्त तेरी तम्हीद, तेरा राग अल्हाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया उत्ते मार दे लीक, लाईन ऐन इक वखाईआ। दरोही तेरे नाम दी मारदे चीक, चीक चिहाढ़ा पए लोकाईआ। खेल वेखणा करौच दीप, लखण नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, पड़दा ओहला दए चुकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण तक्कया जगत जहान काया मन्दिर, काअबा हुजरा साढे तिन्न हथ्थ वेख वखाईआ। प्रकाश दिसे ना अंधेरी कन्दर, दीपक जोत ना कोए रुशनाईआ। मन कल्पणा नस्से वांग बन्दर, दहि दिशा उठ उठ धाहीआ। अन्तर खुल्हा के जन्दर, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। मानस ज़ाती होई पसू ढोर डंगर, जो प्रभ नूं गए भुलाईआ। नौ दवारे मूल ना लँघण, सुखमन ईड़ा पिंगल पन्ध ना कोए चुकाईआ। हउमे हंगता ढाहे कोई ना कंधन, दूई द्वैत ना कोए मिटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाए कोए ना छन्दन, आत्म परमात्म ना कोए सुणाईआ। इक पुरख अकाल नूं करे कोई ना बन्दन, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ गुरदवारे सारे सीस निवाईआ। अबिनाशी करता लाए किसे ना अंगण, धर्म दी गोद ना कोए बहाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर इक्को मंग मंगण, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। प्रभू डंका नाम वजा मृदंगण, सोई सृष्टी सुरत शब्द जगाईआ। सदी चौधवीं अन्त अखीर ना देवीं लँघण, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। पिछली कीती करनी खण्डन, खड़ग खण्डा चण्ड प्रचण्ड नाम उठाईआ। तुध बिन कोई ना दस्से इक्को बन्दन, बन्दगी डण्डावत सजदा इक्को देणा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण की करे खेल मौला, पारब्रह्म प्रभ दाता धुरदरगाहीआ। जिस दा नाम इक अव्वल अवल्ला, आलमीन नूर इलाहीआ। ओस ने सब दा पूरा करना

कौला, इकरारनामा वेख वखाईआ। झगड़ा पवा के धरनी धरत धवल उपर धौला, दीन दीन नाल टकराईआ। दुष्ट हँकारीआं करके भार हौला, हरिजन गुरमुख सन्त लए प्रगटाईआ। शाह सुल्तानां मूधा करके कौला, कासे बग़ली हथ्थ फड़ाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा शब्दी धार पए रौला, रौणक कलयुग दए वखाईआ। फिरे दरोही कोना कोना, गोशा गोशा दए गवाहीआ। सुख दी नींद मिले किसे ना सौणा, विस्तर ना कोए हंढाईआ। जीव जगत जहान हिलाउणा, बेख़बरां ख़बर कराईआ। जिस कारन पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझे यार आउणा, ओह वेला वक्त दए वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया विच संसार चार दिन दा पराहुणा, चौथे जुग दी अन्तिम होए सफ़ाईआ। सतिजुग साचा धर्म धार लोकमात बहाउणा, सच दवारा इक वखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल समां समें विच्चों प्रगटाउणा, जिस समें दी समझ किसे ना आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान पढ़ ना किसे समझाउणा, भविक्ख्त लिख्त बिन अवतार पैग़म्बर गुरु दूसर सके ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा खेल ओसे ने कराउणा, करनी करता इक अख्वाईआ।

२६ माघ शहिनशाही सम्मत ५ लक्ष्मण सिँघ दे गृह पिण्ड धनौरी ज़िला रोपड़

गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभ सृष्ट सबाई कर दे सुखी, सुख आत्म परमात्म इक जणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप रहे कोए ना दुखी, ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां आपणे गले लगाईआ। भाग लगा दे जनणी कुख्खी, हरिजन जम्मण थांउँ थाँईआ। तेरे प्रेम दी सब दे अन्तर होवे रुची, रसना जेहवा ढोला सिफ्त सालाहीआ। पंज तत काया कर दे सुच्ची, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। सच सुहञ्जणी कर दे रुती, रुत आपणे नाल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभ दे दे इक सहारा, साहिब स्वामी दया कमाईआ। चार वरन होए तेरा प्यारा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को नाम दस्स जैकारा, नौ खण्ड पृथ्मी तेरा राग अल्लाईआ। एको मन्दिर दस्स दवारा, गृह इक्को सोभा पाईआ। इक्को अमृत दे ठंडा ठारा, कलयुग अग्नी तत बुझाईआ। इक्को दीप कर उज्यारा, जोती जाते कर रुशनाईआ। इक्को लग्गे तेरा सच अखाड़ा, सुरती शब्दी गोपी काहन नचाईआ। इक्को नज़री आए धुर दा लाड़ा, लाड़ी मौत सके ना किसे प्रनाईआ। पुरख अकाल तेरे अग्गे हाढ़ा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तेरा खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर दे वड्याईआ। चारों कुण्ट अंध अंध्यारा, सच जोत

ना कोए रुशनाईआ। सच स्वामी तेरे चरण कँवल निउँ निउँ निउँ निमस्कारा, सजदयां विच सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभ वेख लै आपणी कायनात, दीन दुनी खोज खुजाईआ। हर हिरदे अन्दर मार लै झात, बिन निगह नैण नैण इक उठाईआ। जिधर तक्कीए अंधेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। झगड़ा प्या ज़ात पात, ऊच नीच हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई करे लड़ाईआ। भविक्ख्तां विच लिख्तां विच असीं सब नूं आए आख, नाम संदेशयां विच जणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त प्रगट होवे साख्यात, जोती जाता पुरख बिधाता डगमगाईआ। आत्म परमात्म सब दा जोड़े नात, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के गाथ, गहर गम्भीर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण किरपा कर प्रभू परमात्म, परम पुरख तेरी सरनाईआ। निरगुण धार बण साथण, सगला संग निभाईआ। हउँ सेवक दासी दासन, जुग जुग तेरी सेव कमाईआ। कलयुग सृष्टी मन कल्पणा होई पापण, पतित पुनीत देहु कराईआ। सब दा सांझा करदे जापण, जगजीवण दाते तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, साहिब सुल्तान तेरी सरनाईआ। पुरख अकाल शब्द जणाउंदा ए। दीन दयाल दया कमाउंदा ए। अगम्म संदेश इक प्रगटाउंदा ए। जोती जामा धार के वेस, वेख वखाउंदा ए। जो लेखा लिख के गया दस दशमेश, पूर कराउँदा ए। घट निवासी नेतन नेत, निज घर आपणा पड़दा लाहुदा ए। जन भगतां कर के हेत, जुग जन्म दे विछड़े मेल मिलाउंदा ए। निरगुण सरगुण कर के खेड, ख़ालक ख़लक वेख वखाउंदा ए। जोती धार प्रकाश कर के तेज, नूर नुराना डगमगाउंदा ए। लहिणा पूरा कर के चारे वेद, शास्त्र सिमरत वेद पुराण खोज खुजाउंदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच संदेशा इक सुणाउंदा ए। सच संदेशा इक सुणावांगा। निरगुण नूर जोत प्रगटावांगा। वरन गोत डेरा ढाहवांगा। हिरदा सोध सच प्रगटावांगा। नाम बणा के बोध, बुद्धी तों परे शब्द सुणावांगा। खेल वेख के लोक परलोक, सच सलोक इक सुणावांगा। प्रभ दा भाणा सके कोए ना रोक, होका हक हक जणावांगा। कलयुग कूड़ी क्रिया ढाह के किला कोट, सच दवारा इक प्रगटावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडा इक सुहावांगा। दर ठांडा इक सुहाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। कोटन कोटि जीव उठाएगा। चढ़ चोटी नाद वजाएगा। सुरती सोती आप हिलाएगा। लख चुरासी विच्चों माणक मोती गुरमुख आपणे रंग रंगाएगा। जोती जोत सरूप

३७० २२

हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा इक सुणाएगा। सच संदेशा इक सुणावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव महेष उठावांगा। देवत सुर नाल रलावांगा। गण गंधरव अक्ख खुल्ह्यवांगा। गुर अवतार पैग़म्बर संग रलावांगा। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अडम्बर, सतिजुग सच राह चलावांगा। सर्ब कला भरतम्बर, पारब्रह्म अख्वावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर ठांडा इक वखावांगा। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण वेख लै आपणी धरती, धवल ध्यान लगाईआ। प्रभ मालक धुर दे अर्शी, प्रीतम बेपरवाहीआ। खेल कर फ़र्शी, आपणा फेरा पाईआ। चारों कुण्ट अंधेर गर्दी, सच सच ना कोए सुणाईआ। पिता पूत रिहा ना दर्दी, भाई भाई करे लड़ाईआ। नार कन्त उत्ते पावे अर्ज़ी, साचा संग ना कोए रखाईआ। वेख खेल कलयुग कलि दी, कलकाती होए कसाईआ। वड्याई रही ना तीर्थ तट अठसठ जल दी, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रोवे मारे धाईंआ। तेरी जोत बिन वरन गोत पुरख अकाल कोए ना बलदी, चारों कुण्ट अंधेरा छाईआ। फिरी दरोही काम क्रोध लोभ मोह हँकार दल दी, चार वरन अठारां बरन सब दे उत्ते छाईआ। खेल तक कलयुग छल दी, कपट विकार हँकार होया थांउँ थाँईंआ। भटकणा मिटे ना किसे मन दी, ममता मोह ना कोए चुकाईआ। आसा पूरी कर दे प्रभू गोबिन्द गुजरी वाले चन्न दी, माछूवाड़ा दए गवाहीआ। आवाज़ सुणे ना किसे कन्न दी, कलम हरफ़ ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण तक्क लै आपणी दीन दुनी दा नज़ारा, बेनज़ीर नज़र उठाईआ। मेरे शहिनशाह शाह पातशाह इसतग़फारा, परवरदिगार बेपरवाहीआ। हकीकत हक ना कोए जैकारा, नाअरा नाम ना कोए लगाईआ। सृष्टी भुल्ल गई तेरा दवारा, सचखण्ड मिलण कोए ना आईआ। जो संदेशा दे के गए पैग़म्बर गुर अवतारा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों बाहर जणाईआ। सो खेल वेख विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी बैठे सीस निवाईआ। तुध बिन दूजा अवर ना कोए आत्म परमात्म करे प्यारा, प्रीतम हो के मेल मिलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर किनारा, नईया नौका आपणा नाम जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर तेरे नाम दा इक इशारा, सैनत शब्द धार लगाईआ।

✪ पहली फग्गण शहिनशाही सम्मत ५ हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

पुरख अकाल कहे फल्गुण अन्दर गुर अवतार पैग़म्बर मेरे नाम दा खाओ हक फ़रूट, फुटकल रहिण कोए ना पाईआ। सब दा सांझा इक्को होवे मार्ग रस्ता रूट, वक्खरा राह ना कोए चलाईआ। निगाह मारो चारे कुण्ट, दहि दिशा अक्ख उठाईआ। दीन दुनी तक्को जूठ झूठ, हरि हिरदा फोल फुलाईआ। सच दा नज़र आए ना कोए पूत, पिता पुरख अकाल ना कोए मनाईआ। सुहञ्जणी होए कोए ना रूत, रुतड़ी बसन्त ना कोए महकाईआ। झगड़ा प्या काया पंज भूत, सांतक सति ना कोए वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप वेखो करके कूच, कूचा गली तन वजूद फोल फुलाईआ। सति धर्म दा ताणा पेटा रिहा कोए ना सूत, सूत्रधारी पड़दा दयो उठाईआ। क्यों जगत तृष्ना वधी भूख, कूड़ी क्रिया कल्पणा विच हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि करता अगम्म अथाहीआ। फल्गुण कहे प्रभ नाम दा चक्खो रस, बिन रसना रस वखाईआ। दीन दुनी वेखो नस्स नस्स, निरगुण बण के पाँधी राहीआ। मनुआ रिहा किसे ना वस, सांतक सति ना कोए कराईआ। निज नेत्र खुल्ल्हे कोई ना अक्ख, प्रतख मिले ना किसे गुसाँईंआ। अमृत लए कोई ना चख, तृखा तृप्त ना कोए कराईआ। शब्द नाद वज्जे ना सट्ट, सोई सुरत ना कोए उठाईआ। निरगुण जोत जगे लट लट, अंध अंधेर ना कोए मिटाईआ। भाग लग्गे ना काया मट्ट, साढे तिन्न हथ्थ दुहाईआ। वणजारा मिले किसे ना हट्ट, वस्त अगम्म ना कोए वरताईआ। फिरी दुहाई तीर्थ तट, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रही कुरलाईआ। नेत्र रोंदे मन्दिर मट्ठ, उच्ची कूकण मारन धाहींआ। दीन मज़्हब दी मेटे कोई ना वट्ट, सच गृह ना कोए वखाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द नाम कलमा सारे रहे रट, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। सृष्टी दृष्टी होई बहुमत, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर सब दी वेखो मित गत, गहर गम्भीर रिहा जणाईआ। क्यों तन वजूद नाड़ बहत्तर उबले रत्त, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। चार कुण्ट रिहा ना सच, दहि दिशा कूड़ दुहाईआ। माया अग्नी दुनी रही मच्च, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। चार वरन अठारां बरन सके कोई ना बच, बचपन प्रभ दी झोली पाईआ। सुणो हुक्म कमलापति, पतिपरमेश्वर आप जणाईआ। जुग चौकड़ी भविक्ख्त वेखो पेशीनगोईआं वाले ख़त, जो अक्खरां नाल वड्याईआ। क्यों दरगाह साची बैठे सथ्थर घत, लोकमात तक्को ख़लक खुदाईआ। हकीकत रही कोई ना हक, हुक्म मन्ने ना कोई बेपरवाहीआ। काया खेड़ा सब दा होवे भट्ठ, कलयुग अग्नी तत तपाईआ। जोग अभ्यास रिहा किसे ना हठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक इक

अख्वाईआ। फल्गुण कहे गुर अवतार पैग़म्बर प्रेम प्रीती बरसो फूल, फलीभूत दए कराईआ। नूर तक्को कन्त कन्तूहल, जो मालक ख़ालक धुरदरगाहीआ। जिस दा आदि अन्त नाम असूल, दूजी धारा ना कोए वखाईआ। मेहरवान महिबूब चरण कँवल दे के धूल, धर्म दवारा इक दरसाईआ। जिस दा सति सच असूल, असलीअत आपणा आप प्रगटाईआ। नाम कलमा दे माकूल, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। जिस दा सच भँगूढ़ा रहे झूल, हुलारा दो जहानां बाहर वखाईआ। उस दा ना कोए अर्ज ना कोए तूल, वंडण वंड ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति सच समझाईआ। फल्गुण कहे गुर अवतार पैग़म्बर प्रेम बरसाउ बरखा, बिध रहिण कोए ना पाईआ। चिन्ता रोग रहे ना हरखा, हउमे गढ़ देणा तुड़ाईआ। सम्मत शहिनशाही पंज अगम्मा बरसा, बरखुरदारां इक दृढ़ाईआ। जो कौल कीता गोबिन्द उत्ते सरसा, शहादत शब्द गुरु भुगताईआ। मेरा ढईए दा पूरा होवे अरसा, अर्शी प्रीतम नूर जोत करे रुशनाईआ। प्रगट होवे उपर फ़र्शा, फ़ैसला ज़िमीं असमान मुकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां पूरीआं करे ग़रज़ां, गहर गम्भीर दया कमाईआ। चार जुग दीआं लेखे लावे कीतीआं अर्ज़ां, बेनन्ती आपणी झोली पाईआ। नव नौ चार दीआं कढ के फ़रदां, लेखा वेखे थाउँ थाँईंआ। ग़रीब निमाणयां वंडे दरदां, कोझयां कमल्यां गले लगाईआ। जन भगतां होण ना देवे हर्जा, हर्जाना आपणे विच्चों पूर कराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग देवे पिछला कर्ज़ा, मकरूज़ पिछला देवे चुकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे अंधेर गर्दा, गर्दिश वेखे जगत लोकाईआ। योद्धा सूरबीर बण मर्दाना मर्दा, बिन मदद वेस वटाईआ। शब्दी गोबिन्द नाल रखावे बरदा, बन्दगी आपणी इक समझाईआ। शरअ छुरी कत्ल करे किसे ना करदा, कातिल मक्तूल दा लेखा दए मुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा इक्को नाम कलमा ढोला आत्म परमात्म होवे पढ़दा, दूसर राग ना कोए अलाईआ। शब्द सुणाए लहिंदा चढ़दा, दक्खण पहाड़ वज्जे वधाईआ। सतिजुग साचा कारज करदा, विष्न ब्रह्मा शिव चले ना कोए चतुराईआ। अवतार पैग़म्बर गुर फिरे डरदा, सिर सके ना कोए उठाईआ। खेल होया नरायण नर दा, निरगुण आपणी कार कमाईआ। जेहड़ा ना जम्मे ना मरदा, चुरासी वंड ना कोए रखाईआ। ओह मालक बण के आपणे घर दा, घराना दीन दुनी वेख वखाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख फड़दा, जन भगत गोद टिकाईआ। लेखा जाणे दर दर दा, धुर दरवेशी फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो फल्गुण कहे वेखो फूल माला, मणका नज़र कोए ना आईआ। माज़ी लेखा छडो देखो खेल हाला, हालत बदली जगत लोकाईआ। पैग़म्बरो हुक्म सुणो उस खुदा तुआला, जिस तालब सारे लए कराईआ। चारों कुण्ट अंधेरा काला, दीआ बाती

ना कोए रुशनाईआ। संदेशा दे के गया नानक निरगुण सरगुण बाला, शब्द शब्द विच समझाईआ। कलयुग अन्तिम खेल करे पुरख अकाला, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस दीआं घालदे रहे घालां, जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। जिस दे अग्गे करदे रहे सवाला, बेनन्ती आरज़ू इक दृढ़ाईआ। जो लेखा जाणे सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, दरगाह साची इक वड्याईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर आपणी बदल देवे चाला, चलाकी ख़ाकी बन्दा समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। फल्गुण कहे सुहञ्जणी रुती, हरि करते मेरी महकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर खेल वेखो काया बुतीं, बुतख़ाने फोल फुलाईआ। सृष्टी गूढ़ी नींद सुत्ती, तुहाडा नाम कलमा सके ना कोए उठाईआ। मन कल्पणा होई दुखी, दर्दीआं दर्द ना कोए वंडाईआ। भाग लग्गे किसे ना कुख्खी, भगत जन्मे ना कोए माईआ। अमृत पीए कोए ना घुटी, निझर रस ना कोए चखाईआ। वेखो तुहाडे मुरीदां सिक्खां दी तुहाडे नालों अन्तर धार तुटी, दोहां मिल के वज्जे ना कोए वधाईआ। फल्गुण रुत सुहञ्जणी तुसीं सारे कर लओ छुट्टी, छुटकारा जगत वल्लों पाईआ। क्यों दीन दुनी जांदी लुट्टी, कलयुग लुटेरा फड़ सके कोए ना राईआ। सारे आपणीआं मीटो मुट्ठी, पंजे उँगलां लओ दबाईआ। फिर हथ्थ लगाओ गुट्टीं, इशारे नाल दबाईआ। फेर चरणां विच वेखो जुत्ती, जोड़ा कवण सुहाईआ। क्यों दुनिया तुहाडे हुन्दयां राहों घुथ्थी, मार्ग मिले ना बेपरवाहीआ। क्यों मति होई पुट्ठी, पुट्ठे लटकण वाल्यां समझ रही ना राईआ। क्यों जाप करदे बुल्ल्हां बुटीं, अन्तर दरस कोए ना पाईआ। क्यों अभ्भास करदे नौ दवारे बाहर त्रैकुटी, ईड़ा पिंगल सुखमन राह तकाईआ। क्यों सुरत सवाणी सोई ना उठी, निरगुण धार ना लए अंगड़ाईआ। फल्गुण कहे ओह वेखो मेरी शाख़ चार कुण्ट विच फुट्टी, रंग आपणा रही वखाईआ। एह खेल रहिणी नहीं लुकी, पड़दा सके कोए ना पाईआ। सब ने गाथा गाउणी दो तुकी, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच रंग आप रंगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण केहड़ी तेरी रुत, की सानूं रिहा सुणाईआ। अग्गे कर जा चुप्प, प्रभ दा भेव कोए ना आईआ। जिस दुलारा बणाया गोबिन्द सुत, जनणी इक अख्वाईआ। ओह निरगुण धारों आपे उठ, जोती नूर करे रुशनाईआ। ओहला रहिण ना देवे किसे गुट्ठ, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण फोल फुलाईआ। लख चुरासी विच्चों पहले भगत कर के इक्ट्ठे इक मुट्ठ, मुट्ठी आपणी विच बंधाईआ। फेर सृष्टी दृष्टी लए लुट्ट, लुटेरा हो के खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण फल्गुण तेरी वेखी खुशबू, महक महक विच्चों खोज खुजाईआ। ओह मालक वेख जिस ने तैनूं

बख्श्या रूह, रूह बुत वज्जी वधाईआ। फल्गुण कहे असीं ओसे दे सारे नूर हूबहू, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जेहड़ा वसया मानव ज़ाती साढे तिन्न करोड़ लूं लूं, लोयणां तों पिच्छे बैठा नज़री आईआ। ओस दी महिमा सिफ्त चार जुग करदे रहे नाल मूँह, मुख मन्त्रां नाल सालाहीआ। ओहो सतिगुर ओहो शब्द गुरु, गुरदेव स्वामी इक अख्वाईआ। जिस दा नाम मन्त्र कलमा कायनात इक्को फुरू, फुरने सब दे बन्द कराईआ। आपणी करनी करनों कदे ना मुड़ू, हुक्म देवे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। फल्गुण कहे गुर अवतार पैग़म्बर वेखो खेल अपारा, अपरम्पर दयां जणाईआ। जिस नूं कहिंदे रहे चवीआं अवतारा, जोती जाता वेस वटाईआ। सब नूं दए अधारा, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। दो जहानां बण सिक्दारा, हुक्म आपणा इक दृढ़ाईआ। धर्म दी धार खोल्ह दवारा, गृह इक्को इक सुहाईआ। एका नाम शब्द जैकारा, चारों कुण्ट दए सुणाईआ। एका ब्रह्म कर प्यारा, पारब्रह्म जोड़ जुड़ाईआ। एका नेत्र लोचण नैण खोल्ह सच्ची सरकारा, सरगुण निरगुण फोल फुलाईआ। सांझा बण के परवरदिगारा, परम पुरख होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सद आपणा रंग वखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण फल्गुण आया वक्त सुहेला, सुहञ्जणी रुत सुहाईआ। प्रभ करे खेल अकेला, अकल कलधारी आपणी कल वरताईआ। जन भगतां कर के मेला, विछड़े जोड़ जुड़ाईआ। निरगुण सरगुण बण के सज्जण सुहेला, सति सतिवादी वेख वखाईआ। एका रंग रंगा गुरु गुर चेला, चेला गुरु विच समाईआ। अचरज खेल प्रभू कल खेला, ख़ालक ख़लक वेखे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, दो जहान वेखे जंगल बेला, निरगुण धार सरगुण नालों हो के वेहला, दिवस रैण अट्ठे पहर घड़ी पल आप आपणी कार कमाईआ।

✪ २ फग्गण शहिनशाही सम्मत ५ हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

फल्गुण कहे गुरु अवतार पैग़म्बरां आपणा हथ्थ रखया उत्ते सीस, सीस जगदीश निवाईआ। फेर पुश्त पनाह वेखी पीठ, करवट आपणे विच्चों बदलाईआ। फेर मुख विच उँगल पा के मारी चीक, उच्ची कूक दिता सुणाईआ। फेर छाती दी कर तस्दीक, पिस्तान अन्दर आप दबाईआ। फेर चरण कँवल तक मीत, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। फेर चार जुग दे शास्त्र वेखे ठीक, जो ठाकर गया लिखाईआ। फेर लम्मे पै के मारी लीक, लाईन नक्क नाल बणाईआ। फेर अमृत रस

३७४
२२

पीता ला के झीक, तृष्ना तृप्त कराईआ। फेर हो के ठांडे सीत, साह साह नाम वड्याईआ। फेर सृष्टी दी वेखी नीत, मुरीद गुरसिख खोज खुजाईआ। फेर विचार आया चीत, चेतन आपणा आप कराईआ। बौहड़ी चार जुग मन कल्पणा सके ना जीत, भय भउ ना कोए वड्याईआ। झगड़ा मुका ना सके हस्त कीट, ऊच नीच ना रंग रंगाईआ। फेर बोल के नाल जीभ, ज़बान नाल दिता दरसाईआ। कलयुग अन्तिम किसे दा बदले ना कोए नसीब, निस्बत सके ना कोए कढ्ढाईआ। फेर तकी दीन मज़्ब तरतीब, जो तरह तरह बणाईआ। फेर खेल वेख्या अजीब, पुरख अकाला की कार कमाईआ। फेर झगड़ा तक्कया अमीर ग़रीब, वड्डा छोटा करे लड़ाईआ। फेर तक्कया कुरान मजीद, जिस दा मसला हल्ल ना कोए कराईआ। फेर तक्कया ईद बकरीद, नमाज़ रोज़ा खोज खुजाईआ। फेर तक्कया जो गुरु गुरदेव होए शहीद, शहादत आपणी गए भुगताईआ। फेर तक्कया ला के नीझ, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। फेर तक्कया कवण दूर कवण नज़दीक, गृह गृह कवण सुहाईआ। जां ग़ौर नाल तक्कया इक्को परमात्मा इक्को आत्मा सच्ची प्रीत, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सारे हो गए भय भीत, सिर सके ना कोए उठाईआ। त्रैगुण तों बाहर त्रैगुण अतीत, त्रैभवण इक अख्वाईआ। जिस लेखा मुकाउणा ऊच नीच, राउ रंकां इक्को रंग रंगाईआ। जो सब दे भीतर सब दे बाहर सब दे बीच, इक इकल्ला खेल खिलाईआ। जिस दे जुग चौकड़ी गए बीत, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। सो साहिब करे बख्शीश, रहमत आपणा नाम वरताईआ। साचा कलमा दस्स हदीस, हज़रतां तों परे करे पढ़ाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण सानूं इक इक उम्मीद, आसा आसा विच्चों रखाईआ। जिस दी सिफ्त कीती तमहीद, तरह तरह वड्याईआ। जो आदि अन्त ना होए पलीत, पतित पुनीत लए तराईआ। जो सब दी बदल दए तबीअत, तबीअत आपणे नाल मिलाईआ। मूसा ईसा मुहम्मद वेखे वसीअत, बिन अक्खरां अक्ख खुल्हाईआ। जिस ने सांझी करनी इक वलदीअत, इक्को बणना पिता माईआ। उस दी हक नाम अहिमीअत, आहला अदना रंग रंगाईआ। धर्म दी धार दस्से इन्सानीअत, हैवान इन्सान रूप वटाईआ। सब दी वेखणहारा बदनीअत, बदी अन्दरों खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर, फल्गुण कहे, हथ्थ रखण आपणे गोडे, घुटने रहे हिलाईआ। फेर निगह मारी उत्ते चोटी बोदे, केसाधारी खोज खुजाईआ। फेर सूरबीर बहादर वेखे योधे, जो अंग अंग गए कटाईआ। फेर तक्के चार जुग दे अरदासे सोधे, वदी सुदी भेव चुकाईआ। फेर तके प्रभ दा भाणा कोए ना रोके, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर देंदे होके, भविक्ख्तां विच सुणाईआ। उस दे सोहणे लग्गे मौके, मुकम्मल आपणी कार कमाईआ। साचे मार्ग दस्स

के सौखे, जन भगत लए उठाईआ। हरिजन रहे कोए ना विच धोखे, भाण्डा भरम भरम भनाईआ। गूढ़ी नींद रहे ना सोते, सुत्तयां लए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काया माटी भाण्डे अन्दरों पोचे, प्राचीन दा लेखा अन्दरों दए मिटाईआ।

८ फग्गण शहिनशाही सम्मत ५ हरि भगत दवार जेठूवाल

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण वेखी कबर मढ़ी, मकबरयां शमशानां फोल फुलाईआ। दीन दुनी मरी बड़ी, अनगिणत गणित ना कोए गणाईआ। अग्नी अग्ग विच सड़ी, तन वजूद गई मिटाईआ। विद्या जगत शास्त्र बड़ी पढ़ी, अक्खरां नाल सिफ्त सालाहीआ। खेल खेलया दु:ख सुख दी घड़ी, वक्त वेला दए गवाहीआ। नाच नचाया पंज तत काया गढ़ी, कल्पणा हवस नाल मिलाईआ। तन लिबास रखाया ज़री, ज़र ज़ेवर नाल चतुराईआ। जग फेरा पाया घर घरी, गृह गृह डेरा लाईआ। मन विकार कीता अड़ी, हउमे रोग संग रखाईआ। वासना रखी बहत्तर नड़ी, नाड़ी नाड़ी दए गवाहीआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण बिना प्रभ किरपा आत्मा सचखण्ड दवार कोए ना वड़ी, दरगाह सच ना कोए सुहाईआ। बिना शब्द गुरु तों शस्त्र नहीं कोई छड़ी, खण्डा खड़ग ना कोए चतुराईआ। किसे कम्म ना आवे हुक्का नड़ी, हाकम मिले ना धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर कहिण असीं वेखे जगत तालाब, तीर्थां खोज खुजाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ मसीतां विच्चों महिराब, महिबूब नज़र कोए ना आईआ। डण्डावत बन्दना निमस्कार हुन्दे वेखे आदाब, सजदयां सीस झुकाईआ। गृह दर हुन्दे वेखे आदाब, माण माण विच्चों प्रगटाईआ। खिल्लत तके खताब, खुद मालक होए सहाईआ। जगत जुगीशर वेखे तपीशर भोगी वेखे राज, जोगी जुगत नाल दृढ़ाईआ। गुरमुख हँस वेखे मूर्ख बुद्धी वेखे काग, काग वांग कुरलाईआ। दीपक जोती वेखे चराग़, चारों कुण्ट कुण्ट रुशनाईआ। मन कल्पणा वेखे मज़ाज, सुरती अन्दर खोज खुजाईआ। सति सवाल वेखे जवाब, जवाब तल्बी विच खुदाईआ। काया मन्दिर वेखे कँवल नाभ, निज लोचन फोल फुलाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर वेखे करदे इमदाद, सिफ्तां वाली सिफ्त सालाहीआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द वेखे जो रहे अराध, सिमरन पूजा विच वड्याईआ। बुद्धी तों परे वेख्या बोध अगाध, अगम्म अथाह समझाईआ। दीन दुनी तक्कया समाज, दीनां मज़्बां फोल फुलाईआ। शाहो भूप तक्कया नकाब, शहिनशाह बेपरवाहीआ। जां खेल तक्कया निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण करे आप, दूजा नज़र कोए ना आईआ।

शाह पातशाह शहिनशाह बण के बाप, देवणहार वड्याईआ। जिस दवारे पतित जाण कांप, पुनीत सीस झुकाईआ। त्रैगुण डस्सणी ना डस्से सांप, अक्खां अक्ख उठाईआ। ओह खेल करे साख्यात, साहिब सुल्तान नूर इलाहीआ। पूरा कर भविक्ख्त वाक, लेखा चुकाए थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग अन्तिम वेखे वाट, पैंडा दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ।

९ फग्गण शहिनशाही सम्मत ५ हरिसंगत नवित हरि भगत दवार जेठूवाल

अवतार पैग़म्बर गुर कलयुग अन्तिम नेत्र नीर वहावण हंझे, हन्झूआं धार वहाईआ। जगत सिंघासण दीन दुनी दे वेखण मंजे, खटीआ खाट फोल फुलाईआ। धर्म दी धार विच दिसण मूल ना बन्दे, बन्दगी विच बन्दना ना कोए कराईआ। जग नेत्र नैणहीण होए अंधे, निज अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। माया ममता विच होए गंदे, हउमे रोग ना कोए गंवाईआ। भज्जे फिरदे उत्भुज सेत्ज जेरज अंडे, चारे खाणी राह तकाईआ। किते अमृत रस मिले ना शब्दी धार खण्डे, कलयुग खण्डन होई लोकाईआ। टुट्टी जन्म जन्म ना कोए गंढे, तन्दी तन्द ना कोए बंधाईआ। अन्तिम सब दी जवानी हंढे, बुढेपा बिरध नज़री आईआ। सदी चौधवीं दिसदी कन्ढे, पार किनारा ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। अवतार पैग़म्बर कहिण वेख्या खेल गुर गुर दीनां, दीन मज़्हब फोल फुलाईआ। साची रुत बसन्त दिसे ना फल्गुण महीना, माह मास रिहा तकाईआ। जिधर तक्कीए मन कल्पणा विच जीव होया कमीना, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। बिना भगतां तों ठांडा होए किसे ना सीना, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण धार दए तालीमा, तस्लीम आपणा आप कराईआ।

११ फग्गण शहिनशाही सम्मत ५ सुरजीत सिँघ दे नवित हरि भगत दवार जेठूवाल

सतिगुर शब्द गुरु गुरदाता, देवणहार अख्वाईआ। पुरख अकाल अकल कलधारी सब दा पिता माता, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। कलयुग अन्त मेटे अंधेरी राता, रुतड़ी आपणा नाम महकाईआ। सर्ब जीआं बण ज्ञाता, गहिर गम्भीर वेख

वखाईआ। नव सत्त खेले खेल तमाशा, चार कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। किरपा करे पुरख अबिनाशा, अबिनाशी आपणी कार कमाईआ। सच दवारे करके वासा, सचखण्ड इक वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच देवे माण वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा खेल अतीत, त्रैगुण बाहर जणाईआ। भगतां संग प्रीत, प्रभ प्रीतम मेल मिलाईआ। सदा रख अतीत, त्रैगुण डेरा ढाहीआ। हिरदे वस चीत, चेतन सुरती आप कराईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के गीत, गहिर गम्भीर पड़दा लाहीआ। गुरमुखां वसे बीच, काया मन्दिर अन्दर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जन भगतां करे आप अतीत, शहादत शब्द गुरु भुगताईआ।

✪ पहली चेत शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद झुके, नानक गोबिन्द नाल मिलाईआ। साडे सब दे पैंडे मुके, मुकम्मल दईए जणाईआ। वेखणा खेल अबिनाशी अचुते, पारब्रह्म ध्यान लगाईआ। जिस दी दो जहान सुहञ्जणी होणी रुते, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। सन्त सुहेले उठाए सुत्ते, जन भगत लए जगाईआ। देस देसांतर अन्तर पुच्छे, दूर नेड़ा वंड ना कोए वंडाईआ। साचे मार्ग करके सुच्चे, अन्तर दृष्टी दए खुल्हाईआ। फड़ बांहों गोदी चुक्के, मेहरवान महिबूब आपणा रंग रंगाईआ। चार वरनां अन्तर निरन्तर कोए ना दुखे, दर्दीआं दर्द वंडाईआ। जो चार जुग दे भुक्खे, तिन्नां तृष्ना दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म सुणाईआ। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद वेखण ला के निगाह, नानक गोबिन्द संग रखाईआ। धरनी धरत धवल धौल उत्ते कवण सुहञ्जणी जगह, अन्त मिले माण वड्याईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझा यार होवे उग्घा, गॉड गाईड रूप दरसाईआ। जो संदेशा दे के गया राम कृष्न वेद व्यासा बुद्धा, भविक्खतां विच आपणा राग अलाईआ। उस दा खेल वेखणा जिस दा आदि अन्त तों किसे समझ ना आया मुद्दा, मुद्दतां तों सारे राह तकाईआ। ओह प्रगट होवे गहर गम्भीर बेनज़ीर उत्ते बसुधा, धरनी धरत धवल धौल करे रुशनाईआ। सच दवार एकँकार खोल्ह के उच्चा, ऊच नीच दा झगड़ा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद कहे परवरदिगार इक्को गाईड, दो जहानां सोभा पाईआ। जिस दा मार्ग रस्ता वाईड, नैरो रूप ना कोए जणाईआ। दीन मज़्ब दी पकड़े कोए ना साईड, सिध्धा इक्को राह चलाईआ। ओहले

रहे ना कदे बिहाईन्ड, सन्मुख हो के सोभा पाईआ। जिस ने योरप एशीआ वेखणी लैंड, लैंड मारक खोज खुजाईआ। शब्द संदेशा हुक्म करे सेंड, चार कुण्ट कुण्ट जणाईआ। सदी चौधवीं करके एंड, इडैकस वेखे थांउँ थाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद कहे मेरे विलज़ुज़जा, लाउल ज़मलाज़ूर नूर इलाहीआ। काइज़ेकमली यके उसतू तानज़ी मुनज़बीते चशमे चा ज़खतो ज़ू आहला नूर खुदाईआ। मुखताबी नूरे रबी आहला तबी, जमानेशबी ख़ज़ोने नबी, नज़रे न्याज़ मुहम्मदे रज़ा, मोज़ुनवी ज़केज़वा मुहम्मदे रज़ा, पैग़म्बरे सदा अदाबे अल्ला, आलमीन नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। मुहम्मद कहे नानकु निमस्कार, गोबिन्द डंक वजाईआ। ईसा कहे नूरे इज़हार, ज़ाहर ज़हूर रुशनाईआ। ईसा कहे ज़खनेबलु ताज़िखतेज़लु बख्शे रूह, रहमते रहमान अमाम बेपरवाहीआ। गोबिन्दे गज़ी, नानके वज़ी शहिनशाह अज़ीं ज़कलव जमू शहराए हज़ू, शरीइते तज़ू, तालबे, तज़िबू आलमे आलम आहला अदना वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा इक सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु गुरदेव करदे सजदा, साहिब सुल्तान सीस निवाईआ। मेहरवान महिबूब लेखा वेख सब दा, पूरब फोल फुलाईआ। चार जुग तेरा नाम कलमा सरगुण हो के रिहा रटदा, रसना जेहवा ढोला गाईआ। तैनूं मालक बणाया घट घट दा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान खाणी बाणी दए गवाहीआ। तेरा खेल वेख्या दीन मज़ब दी हद्द दा, चार कुण्ट दहि दिशा दीन दुनी कुरलाईआ। तेरा नूर तक्कया उपर शाहरग दा, जिथ्थे दीपक अगम्मी जगदा, धुन अनादी शब्द वज्जदा, अनरागी राग अलाईआ। भगत सुहेले सन्त साजण सद्द दा, गुरमुखां गुर गुर जोड़ जुड़ाईआ। तेरा इक जैकारा सुणना हक अलख दा, लख पातालां आकाश तेरा ध्यान लगाईआ। बिन तेरी किरपा ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल कोए ना वसदा, वसनीक नज़र कोए ना आईआ। तेरा भेव निज नेत्र लोचन नैण अक्ख दा, प्रतख आपणा पड़दा लाहीआ। जगत वणजारा करदे पुरख अकाल आपणे हट्ट दा, हटवाणे सारे देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सद आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण ओह आ गया नूर अलाह, आलमीन वड्याईआ। जल्वागर नूर खुदा, खुदी तक्बर वेख ख़लक खुदाईआ। तेरे तेरे नालों होए जुदा, आत्म परमात्म मेल ना कोए कराईआ। मन कल्पणा कूड़ी क्रिया हउमे हंगता वधी वबा, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। तेरे नाम दी सारे लाउंदे सदा, रसना जेहवा ढोले गाईआ। दरोही तेरा दर किसे ना लद्धा, गृह मन्दिर महिबूब मिलण कोए ना जाईआ। सदी चौधवीं किसे समझ

ना आवे की खेल तेरा की वजह, वजूहात ना कोए दृढ़ाईआ। क्यों जगत जिज्ञासूआं अन्दरों बदली तबा, तबीब रंग ना कोए रंगाईआ। तूं मालक ख़ालक पारब्रह्म सब दा इक अब्बा, अम्मी आपणा रूप दरसाईआ। तेरा सचखण्ड दवारा मुकामे हक इक्को अगम्मी जगह, दूजा दर ना कोए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच पर्दा आप उठाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण आपणी धार धार प्रभ भेजी, भजन बन्दगी लोड़ रहे ना राईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी जगत रसना बुद्धी विच पंजाबी हिन्दी की करे अंग्रेज़ी, लैंगूएज कम्म किसे ना आईआ। बिन तेरी किरपा कोई ना सवें आपणी सेजी, सिंघासण सच ना कोए सुहाईआ। बिन तेरे सारे होए परदेसी, देस नज़र किसे ना आईआ। कलयुग अन्त कूड़ी क्रिया बदल दे रेखी, ऋषीआं मुनीआं देहु समझाईआ। आपणे दवारे सब दी मंज़ूर कर लै पेशी, पेशवा सारे रहे सुणाईआ। निरगुण धार जोत निरँकार नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप वेखी, वख्यान करन दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण आ गया वक्त सुहञ्जणा, सोभावन्त सुहाए। की खेल करे दर्द दुःख भय भञ्जणा, प्रभ दाता बेपरवाहे। जिस नूं नौ खण्ड पृथ्मी लभ्भणा, बुद्धी अन्दर वेखण थांउँ थाएँ। उस ने दर दर घर घर आपे वंञणा, वञ्झ मुहाणा ना कोए रखाए। आत्म परमात्म परमात्म हो के सद्दणा, संदेशा शब्द नाम दृढ़ाए। इक इक दी चाढ़े रंगणा, दुतीआ भाउ मिटाए। इक्को दस्स डण्डावत बन्दना, सजदा सीस जगदीश इक झुकाए। इक्को नाम निधान पा के अंजणा, निज नेत्र अक्ख खुल्हाए। इक्को स्वामी लावे अंगणा, कन्त सुहाग नूर अलाहे। झगड़ा मेट के काया माटी बदना, तत्व तत ब्रह्म दृढ़ाए। सच नगारा इक्को वज्जणा, डंका शब्दी शब्द सुणाए। जन भगत सुहेले जगत सागर लँघणा, दीन मज़्हब ना कोए अटकाए। एह खेल सूरे सरबंगणा, हरि करता आप जणाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाए। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण असीं बोलीए हक हकीकत, सच सच रहे सुणाए। तेरी मिले ना किते असलीअत, असल वसल ना कोए जणाए। नाम कलमे दी रही ना कोए अहिमीअत, दीन दुनी होई हलकाए। किरपा निधान मेहरवान आत्म परमात्म इक्को दस्स वलदीअत, दूजा नज़र कोए ना आए। तेरा नूर तेरी शख्सीयत, शरअ ज़ंजीर देणा कटाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा मार्ग इक खुल्हाए। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू वेख लै आपणी कायनात, वर्ल्ड खोज खुजाईआ। बिन अक्खां मार झात, बिन कदमां कदम उठाईआ। अन्दरों खुल्ल्हया किसे ना ताक, चार जुग दे शास्त्र सारे रहे वाच, अक्खरां सिफ्त सालाहीआ। रूह बुत किसे ना होया पाक, पतित पुनीत ना कोए जणाईआ। सदी चौधवीं

अंधेरी रात, नूरी चन्द ना कोए रुशनाईआ। साची दस्स आपणी गाथ, कलमा अगम्म अथाहीआ। तूं साहिब पुरख समराथ, तेरे हथ्थ वड्याईआ। हउँ सेवक तेरे नाथ, शहिनशाह सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण ओह वेखो कलयुग फिरे भज्जा, भज्जे वाहो दाहीआ। हथ्थ उठावे सज्जा, सब नूं रिहा जणाईआ। मुरीदां मुर्शदां कोलों कराया इक दूजे नाल दग़ा, गुरु चेले दिते लड़ाईआ। मैं प्रभ दे हुक्म दा बध्धा, बदी विच दुनिया दिती फसाईआ। कोटां विच्चों मैनूं भगत सन्त कोए ना लभ्भा, जो प्रभ दे विच समाईआ। दुहथ्थड़ मार के किहा उफ़ खुदा हाए रब्बा, खुदी विच तक्की जगत लोकाईआ। जिधर जावां ओधर कूड़ कुड़यारा अड्डा, धर्म दी धार ना कोए वखाईआ। मैं सब नूं देवां सद्दा, कूक कूक जणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो तुहाडे नाम कलमे दा खड़कदा सुणे कोए ना डब्बा, कलयुग डौरु आपणा रिहा खड़काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। कलयुग कहे गुर अवतार पैग़म्बरो मैं हथ्थ मारां उत्ते छाती, ललकार के दयां जणाईआ। कूड़ क्रिया दी ला चवाती, दीन दुनी दिती जलाईआ। तुहाडी मन्ने कोए ना आखी, चेले मुरीद गए मुख भवाईआ। तुहाडी अक्खरां वाली पाती, सुण के मिलण कोए ना आईआ। सब तों औखी मंजल मेरी घाटी, अन्त चढ़न कोए ना पाईआ। उठो वेखो अंधेरी राती, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। मुहम्मदा निगह मार लै तूं मेरा इक जमाती, जुमला अक्खर दयां सुणाईआ। चौदां सदीआं जेहड़ी उम्मत दी करदा रिहा आबपाशी, आबेहयात मेहर मेहर बरसाईआ। अवतार देंदे रहे अमृत बूँद स्वांती, झिरना निझर निझर प्रगटाईआ। गुरु गुरदेव सुणाउंदे रहे अगम्मी गाथी, सिफ्तां विच सिफ्त सालाहीआ। अन्त अन्तष्करन दी धार किसे ना भाखी, भाख्या भेव ना किसे खुल्ह्हाईआ। मातलोक विच आए अन्त सचखण्ड दे वासी, वास्ता जगत नालों तुड़ाईआ। चार कुण्ट गुर अवतार पैग़म्बर करे कोए ना राखी, रक्षक नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कहे एह ज़रूर मेरी गुस्ताख़ी, ग़ुस्सा गिला ना कोए जणाईआ। मैं सब दी उलट दिती बाज़ी, बाज़ां वाला दए गवाहीआ। क्यों मेरा पुरख अकाल परवरदिगार मेरे ते राज़ी, राज़क रहीम दया कमाईआ। मैं बण के योद्धा सूरबीर वड्डा ग़ाज़ी, ग़ज़ब दी आपणी कार कमाईआ। जगत सन्यासी बैरागी त्यागी, आपणा आप सके कोए ना साधी, साधना विच ना कोए सफ़ाईआ। बेशक रसना जेहवा बत्ती दन्द दीन मज़्ह्ब नाम कलमे रहे अराधी, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। दरोही बिना भगतां तों पुरख अकाल नाल होवे ना किसे शादी, शादिआने ना कोए वजाईआ। कलयुग कहे मेरा अन्त अख़ीर गुर अवतार पैग़म्बरो कोई लभ्भ लओ आपणा इमदादी, जिस दी आमद विच बैठे राह तकाईआ। मैं प्यार मुहब्बत दा नाता रहिण

नहीं दिता हकीकी ते मजाज़ी, पूरब झगड़ा दिता चुकाईआ। बेशक दुनिया दी बहुती वधी अबादी, अणगिणत होई लोकाईआ। किसे दा मीत बणया ना धुर दा ढाडी, सोई सुरत ना कोए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण, कलयुग मुक्खों बचन कहि ना मंदा, सति सति दृढ़ाईआ। सानूं समझीं मूल ना बन्दा, बन्दगी वाला रूप दरसाईआ। असीं ओस नूर दा चन्दा, जो चन्द नूर करे रुशनाईआ। कलयुग अग्गों कढ के आपणे दन्दां, हस्स के दिता वखाईआ। मैनूं इक डर जिस वेले गोबिन्द दा वेखदा खण्डा, भय विच सीस निवाईआ। फेर पुछो मैं सब तों उत्तम श्रेष्ट चंगा, चार कुण्ट वड्याईआ। मैं पंडत पांधे भुलाए उत्ते गंगा, गोदावरी जमना सुरस्ती वहिण वहाईआ। सन्तां अन्दर रहिण नहीं दिता अनन्दा, परमानंद विच ना कोए समाईआ। साची मंज़ल दरगाह सच कोए ना लँघ, ईसा मूसा मुहम्मद दयो गवाहीआ। गोबिन्द ने सीस तों कढ के कंघा, नौ वार गोदावरी विच भवाईआ। मेरे ढईए तों बाद जगत जहान हो जाणा रंडा, सुहागी कन्त ना कोए हंढाईआ। अन्तर आत्म किसे नहीं होणा ठंडा, अग्नी तत तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण कलयुग वेख ज़िमीं असमान, उपर नीचे ध्यान लगाईआ। कलयुग कहे मैं छडे सीता राम, राधा कृष्न ना वेख वखाईआ। पैग़म्बरो तुहाडा सुणां ना कदे कलाम, उँगलां कन्नां विच पाईआ। नानक गोबिन्द तुहाडा वेख ल्या इंतज़ाम, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। किसे विच ना रिहा सतिनाम, सति दी धार ना कोए दृढ़ाईआ। हकीकी सुणे ना कोए पैग़ाम, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे करे ना कोए पढ़ाईआ। मैनूं ऐं जापदा तुसीं सारे मेरे वरगे उस प्रभू दे ग़ुलाम, जो कायनात दा दुनिया दा सृष्टी दा दृष्टी दा वर्ल्ड दा मालक इक अख्वाईआ। तुहाडे हुन्दयां वेखो मैं कीती अंधेरी शाम, शमां नूर ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पर्दा पर्दे विच्चों उठाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण कलयुग कहिंदा की, की रिहा जणाईआ। सारे आखण हुण सम्मत आ गया वीह, हज़रत ईसा दए गवाहीआ। मुहम्मद कहे सदी चौधवीं जिस दी मैं आ गया रख के नींह, लोकमात मात लगाईआ। जिस ख़ुदा दी हकीकी विच कर के आया तशरीह, नबीआं नबीआं विच सुणाईआ। उस दा खेल होणा वसीह, मज़्हब पैमाने विच नाप ना कोए कराईआ। जिस दी धार ना खरीफ़ ना रबी, सद इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। कलयुग खुशीआं नाल दूरों खलो के मारी ताली, ख़ुदा तुआला की जणाईआ। वेखो खेल माज़ी हाली, नेत्र खोल्हों चाँईं चाँईंआ। तुहाडे कलमे

दीपक जोत किसे अन्दर नहीं बाली, बाला मर्दाना दए गवाहीआ। नानक बग़दाद विच दस्स के आया निक्की जेही बात सुखाली, सहिज नाल दृढ़ाईआ। जिस वेले सदी चौधवीं रैण अंधेरी होवे काली, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। उस वेले प्रगट होणा इक समरथा ते इक जोत अकाली, वाहिद वाहिद नज़री आईआ। मैं सुणया मज्झीआं दा पाली, उस दीन दुनी दे मालक ने नौ खण्ड पृथ्मी मानव ज़ाती आपणे अग्गे लैणी चलाईआ। कोई हिरदा रहिण नहीं देणा ख़ाली, जिस अन्तर निरन्तर निरगुण जोत ना करे रुशनाईआ। किसे दी रहिण नहीं देणी दलाली, विचोला नज़र कोए ना आईआ। झगड़ा मेट ज़िमीं असमानी, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। जां तक्कया सब दा नाता जोड़े बाहमी, इक्को रंग रंगाईआ। शब्द तीर मार के कानी, कायनात ल्ए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल खिलाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण कलयुग ना कर आपणा ज़ोर, जोरू ज़र दुहाईआ। कलयुग कहे अवतार पैग़म्बरो तुहाडे सिक्खां मुरीदां खाधे पशू ते ढोर, तत्तां खल्ल लुहाईआ। आत्म परमात्म नाता सके कोए ना जोड़, जोड़ी धुर ना कोए बणाईआ। ऐस वेले इस दी सब नूं लोड़, इक दा इक नूर रुशनाईआ। जेहड़ा शब्द डण्डे नाल सब दे अन्दरों कढ दए खोर, झगड़ा दूई रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां कलयुग दी सुण के साखी, सचखण्ड निवासी ध्यान लगाईआ। जोती धार जामा बदल नूर जोत पोशाकी, बेपहचान फेरा पाईआ। ख़बरदार सारे सुण लओ इक्को बाती, बातन दयां जणाईआ। वेखो आपणी आपणी भविक्ख्तां दी पिछली पाती, बिना अक्खरां खोज खुजाईआ। सदी बीसवीं किसे दा रहिणा नहीं कोई साथी, सगला संग ना कोए बणाईआ। सदी चौधवीं मन्नणी नहीं किसे दी आखी, आख़र मुहम्मद गया दृढ़ाईआ। नानक निरगुण सरगुण बोल के बचन सतिनाम दी साती, सति सति विच्चों प्रगटाईआ। गोबिन्द छड के कलम दवाती, धुर संदेशा इक दृढ़ाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला कलयुग अन्तिम आवे जिस ने मेटणी सब दी वाटी, अगला पन्ध मुकाईआ। आत्म परमात्म जोड़ के नाती, नर नरायण वेख वखाईआ। सच जैकारा बोल अलाखी, अलख अलखणा दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, निरगुण धार नूर रुशनाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण सम्मत चढ़ गया छे, शहिनशाह वड्याईआ। सम्मत पंज कहे मेरा वेखो अमृत बरसे मेंह, मेघला सेव कमाईआ। जिस नूं ख़ुदा गॉड अल्ला वाहिगुरु राम कृष्न कहिंदे दयो देव, देव देवते सीस निवाईआ। ओह इक इकल्ला आदि अन्त जुगा जुगन्त सदा रहे, रहिबर इक्को इक अख्वाईआ। जद तक्को भगतां दे काया मन्दिर बहे, बाहरों नज़र किसे ना आईआ। जिस ने कलयुग दी क्रिया करनी लै,

लाईन पिछली दए मिटाईआ। चारों कुण्ट दे के भय, भय भञ्जण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। पुरख अकाल कहे तेई अवतार होवो सूरबीर, आपणा बल प्रगटाईआ। क्यों तुहाडे मन्नण वाले नहीं धरदे धीर, धीरज धार ना कोए जणाईआ। राम जी किथे गया तेरा धनुष ते तीर, सीता सुरती ना संग रखाईआ। कृष्ना किथे गया कौरव पांडव वाला वहीर, अठाई कशूणीआं वंड ना कोए वंडाईआ। मूसा ईसा मुहम्मद किधर गई कलमे वाली तकरीर, बेनज़ीर ना कोए मिलाईआ। नानक गोबिन्द क्यों नहीं पौड़ी चढ़दे अख़ीर, जो सतिनाम वाहिगुरु दा ढोला गाईआ। सच दस्सो केहड़ा पैग़म्बर ते केहड़ा गुरु केहड़ा अवतार ते केहड़ा पीर, किस नूं सीस झुकाईआ। केहड़ा इष्ट केहड़ी तस्वीर, केहड़ा रूप रहे समझाईआ। केहड़ा शहिनशाह केहड़ा वज़ीर, हकूमत हुक्म कवण जणाईआ। केहड़ा खण्डा केहड़ा शस्त्र केहड़ा शमां नूर करे रुशनाईआ। सारे कहिण असीं होए प्रभू दिलगीर, सच सच समझाईआ। जेहड़ी साडी दीनां मज़्बां वाली लकीर, फ़कीर साबत नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कहे मैं सब दी बदल दिती ज़मीर, अन्दर वड़ के कूड़ी क्रिया दिती भराईआ। तुसीं किसे दी बदल नहीं सकदे तकदीर, तहरीर विच आपणा हुक्म लिखाईआ। झट आवाज़ मार लई नेड़े आ कबीर, कबरां दा झगड़ा दे मुकाईआ। क्यों ग़रीब निमाणयां हुन्दी पीड़, बिरहों रोग सताईआ।

३८४ उस ध्यान धरया चौदां सौ तीह पन्ना ते किसे सार ना पाई गुरु अर्जन वाली बीड़, बीड़ा धर्म ना कोए उठाईआ। प्रभ दा ३८४

२२ भेव किसे ना जाणया गहर गम्भीर, गुजरी दा लाल करे शनवाईआ। बिना शब्द गुरु तों किसे दा बजर सके कोए ना चीर, २२

चीरे सारे सीस ते बैठे टिकाईआ। बिना सतिगुर तों अमृत बख्शे कोए ना नीर, अठ्ठ सठ देण दुहाईआ। क्यों मुहम्मद ने शरअ विच रखे खंजीर, कृष्न भगवान गऊआं दा पाली हो के बणां विच फिरया चाँईं चाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म सुणाईआ। सारे कहिण सम्मत सोहणा चढ़या, महीना चेत । इक्को कलमा पढ़या, नाम अबिनाशी अचुत। जो सच दवारे खड़्या, पिछला पैंडा गया मुक। जो दीन मज़्ब नाल लड़या, ओह बैठा ढुक्क। जेहड़ा ना जन्मे ना मरया, ना हरख़ सोग दुख। जिस गुर अवतार पैग़म्बर घाड़न घड़या, अर्श तों फ़र्श उत्ते दिता सुट्ट। अन्तर धार हो के निरन्तर वरया, बणा के आपणा सुत। फेर शरअ ज़ंजीर विच जड़या, ना कोए पड़दा ना कोए ओहला लुक। वक्खो वक्खरा कलमा सब दे अग्गे धरया, ते सिफ्तां वाली सुणाई तुक। एसे कारन जगत जहान विच पुरख अकाल अजे तक आपणा रूप साख्यात कदे ना धरया, धरनी धरत धवल रो रो रही सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। सम्मत छे कहे मैं वेखे छे घर, घराने

खोज खुजाईआ। खोल्हणे ओह दर, जिथ्थे दरबान नज़र कोए ना पाईआ। वेखणे ओह सर, जिस सरोवर कोए ना नहाईआ। वेखणे ओह गृह ओह मन्दिर ओह दर, जिस नूं वरन कोए ना आईआ। जां निगाह मारी निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण इक दूजे दे अन्दर गए वड़, रूप अनूप नज़र कोए ना आईआ। किस नूं छड्डां ते किस नूं लवां फड़, गलवकड़ी किस दे नाल पाईआ। किस दे नाल रहिवां ते किस दे नाल जावां मर, नाता दीन दुनी तुड़ाईआ। जां निगाह होई नर नरायण तक्कया नूरी जोत नर हरि, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। मैं दर्शन कीता गया तर, तुरत आपणा पन्ध मुकाईआ। फेर तक्कया मातलोक विच दीन दुनी नाम कलमा रही पढ़, अक्खरां पथ्थरां नाल जणाईआ। त्रैगुण माया विच रही सड़, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। हालत वेख के डिग्गा दड़, बौहड़ी बौहड़ी दुहाईआ। भज्जयां नट्ठयां किसे बन्हाए कोए ना लड़, पल्लू गंढ ना कोए रखाईआ। फेर गया डर, वास्ता प्रभ दे अग्गे पाईआ। कृपाल आपणी किरपा कर, तेरी इक सरनाईआ। उस शब्द संदेशा दिता दस्सया नाल इशार, सैनत नाल समझाईआ। सारे वेखो सम्बल मेरा घर, जिस नूं सारे आए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक साची कार कमाईआ। सम्मत कहे मैं की दस्सां आपणी रीत गति मित, मित गति प्रभ दी दयां जणाईआ। ओस ने खेल वेखणा पंज तत, तत्व तत खोज खुजाईआ। फेर निगह पै गई उस नूं तक्कां ओह वेखो जेहड़ा बैठा सथ्थर घत, गोबिन्द बेपरवाहीआ। इक यारड़े वल्ल अक्ख, निगाह लई टिकाईआ। फेर हस्स के किहा ज्यों भावे त्यों लैणा रख, तेरी बेपरवाहीआ। मेरे ख़ाली हथ्थ, पुरख अकाल तेरी दुहाईआ। अबिनाशी करते किहा झट, शब्दी हुक्म जणाईआ। गोबिन्द तेरी धार होवां प्रगट, दो जहान करां रुशनाईआ। सूरबीर बण के जट्ट, डण्डा सत्तरंग उठाईआ। दीन मज़्हब दी डोरी देवां कट, एह मेरी बेपरवाहीआ। झगड़ा मेटां ज़ात पात, ऊच नीच एका रंग रंगाईआ। इक दा इक दस्सां सति, सति सतिवादी भेव खुल्हाईआ। जिस वेले फेर आवां वत्त, वतन नवां लवां बणाईआ। गोबिन्द प्या हस्स, छाती उत्ते हथ्थ टिकाईआ। ओ मेरे विच वस, होवे ना कदे जुदाईआ। मेरी लग्गी रहे अक्ख, प्रतख तेरा नूर नज़री आईआ। मैं गावां तेरा जस, सिफ्तां सिफ्त सालाहीआ। पुरख अकाल जोती धार आया नट्ठ, भज्जया वाहो दाहीआ। तेरा मेरा सद इक्ठ, ना कोए तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। मैं सदा शब्द गुरु दा देवां साथ, तत्तां वाले नाते दयां तुड़ाईआ। गोबिन्द किहा सति सच दस्स, मेरे धुर दे माहीआ। की धार देवें रस, अमृत की चखाईआ। पुरख अकाल किहा ईसा मूसा मुहम्मद तेई अवतार दस गुरु एह आदि मेरे नूर दी रत्त, रती रत्त विच समाईआ। अन्त कन्त भगवन्त हो के सब दी रखां पत, पतिपरमेश्वर हो के वेस वटाईआ। पिछला लेखा सब

दा देवां ठप, ठप्पा आपणा नाम लगाईआ। वसां घट घट, चुरासी अन्दर डेरा लाईआ। नवीं धार विच धर्म दा खोल्ह के हट्ट, सच भण्डारा दयां वरताईआ। इक्को सब दा कमलापति, पतिपरमेश्वर नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। कलयुग कहे सम्मत छे तूं मारना उच्चा नाअरा, कूक कूक सुणाईआ। याद कर लै मेरा अजे बारां साल होर पाहरा, चारों कुण्ट फिरना चाँईं चाँईंआ। कलयुग जीव फिरन आवारा, धर्म दी धार ना कोए रखाईआ। भावें किन्नां कढो हाढ़ा, मन्नण विच कदे ना आईआ। सब नूं चबावां आपणीआं दाढ़ां, दाढ़ां हेठ रखाईआ। एह मेरी धुर दी सरकारा, हरि करते सेवा दिती लगाईआ। झगड़ा पा के पुरख नारा, नार कन्त दिते लड़ाईआ। नाता तोड़ के यार यारां, पिता पूत बणाउणे कसाईआ। मेरीआं फेर सब ने गाउणीआं वारां, वारता देणी सुणाईआ। उस वेले दुनिया विच भावें किन्नीआं होण अख़बारा, सति दी ख़बर ना कोए जणाईआ। कलयुग किहा जिंना चिर आवे ना धुर दा लाड़ा, हरि करता बेपरवाहीआ। सच दर दिसे ना किसे अखाड़ा, दरगाह सच ना कोए सुहाईआ। जिस ने किरपा कर के नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप बणाउणा भाईचारा, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई पारसी बोधी लैणे मनाईआ। फेर आपणे हुक्म दा शब्द दा नाम दा कलमे दा चार कुण्ट दे के पाहरा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी कार कमाईआ। मानव मानस मनुष होवे कोए ना बाहरा, दूर दुराडा नज़र कोए ना पाईआ। कुछ याद कर लओ हुण झगड़ा पैणा विच काहरा, मुहम्मद मूसा नाल करे सलाहीआ। क्यों एह खेल होणा दुबारा, धुर दी धार जणाईआ। कलयुग कहे ओए सम्मत छे बस्स कर यारा, अगली गल्ल ना अज्जे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। सम्मत छे कहे मैं आया लोकमात, मात्रा भूमी वेख वखाईआ। हुक्म संदेशा देणा आज, अज्ज दी रात राती रुतड़ी आप सुहाईआ। दीन दुनी दे संगीओ बण जाउ इक जमात, इक्को रंग समाईआ। सब दा मालक इक अबिनाश, करता धुरदरगाहीआ। जिस दे पिच्छे सीता राम कटया बनवास, गोपी काहन रास रचाईआ। मूसा मूँह दे भार डिग्गा साफ़, कोहतूर दए गवाहीआ। हज़रत ईसा जिस गल विच पाए फास, आपणा आप लटकाईआ। मुहम्मद पी के आबेहयात, ढाई घुट्टां झट लँघाईआ। नानक निरगुण सरगुण वेख के खेल तमाश, बेअन्त कहि के गया गाईआ। गोबिन्द करके इक अरदास, फ़तिह डंका दिता सुणाईआ। जिस वेले मेरा पुरख अकाला आवे आप, आप आपणा फेरा पाईआ। शब्द गुरु ते सब दा बणे बाप, आत्म परमात्म नूर इलाहीआ। सृष्टी दी दृष्टी अन्दरों कढे पाप, पतित पुनीत दए कराईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के जाप, सोहँ ढोला इक सुणाईआ। इहो खेल वेखणा ख़ास, गुर अवतार पैग़म्बर रहे दृढ़ाईआ। बिना

प्रभू दी किरपा तों उस वेले कोई नहीं होणा पास, पास आउट ना कोए कराईआ। भावें कोई योरपीन लेटे उपर ग्रीन ग्रास, सोहणा रंग रंगाईआ। बिना भगतां तों मिलणी नहीं किसे शाबाश, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। एह लेखा पिच्छे नहीं सी ते हुण लिख्या जांदा नाल कलम दवात, शाही कानी दए गवाहीआ। किसे नूं किसे ने करना नहीं मुआफ़, लेखा देणा थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सम्मत कहे ओ विष्न ब्रह्मा शिव देव गुरु गुरदेव, देवतिआं सुणाईआ। तुहाडी किथे गई सेव, की पूजा वंड वंडाईआ। की आसा महादेव, मैनूं दयो दृढ़ाईआ। की खेल होणा निहकेव, निहचल की जणाईआ। की गुज्झा रखया भेव, पड़दा दयो उठाईआ। की रस चखणा मेव, बिन रसना दए चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आपणे हथ्थ रखाईआ। सवाधान होवो सूर्या चन्द, हरि चन्द चन्द जणाईआ। की खेल दस्सया गोबिन्द अन्त पुरी अनन्द, शब्दी शब्द धार दृढ़ाईआ। जिस वेले मेरे ढईए दा मुक्कया पन्ध, अगला बरस बरस उपजाईआ। मेरे मालक दा मेरे साहिब दा इक्को होणा छन्द, इक्को रंग रंगाईआ। जो सब दी टुट्टी लए गंढ, आपणे नाल मिलाईआ। खुशी कर के बन्द बन्द, बन्दना इक समझाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आकाशां पातालां जाए लँघ, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा छड के इक दवारे इक सेज ते इक पलँघ, दूजा आसण सिंघासण ना कोए वड्याईआ। शब्द अगम्मा बोल जणाए अगम्मे दन्द, बत्ती दन्द ना सिफ्त सालाहीआ। जिस ने दूई द्वैती ढाउणी कंध, कन्ढी बैठा डेरा लाईआ। कूड़ी क्रिया कर के खण्ड खण्ड, खण्डा नाम देणा खड़काईआ। साचा प्रेम देणा वंड, हर हिरदे आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आपणे विच छुपाईआ। सम्मत छे कहे मैं आया सोहणा, सब नूं दयां जणाईआ। जगत जहान पैणा रोणा, नैणां नीर वहाईआ। दुरमति दाग़ किसे नहीं धोणा, पापीआं पुनीत ना कोए कराईआ। नेत्र खुल्ल्हे किसे ना लोयणा, निज अक्ख ना कोए खुल्ल्हाईआ। आत्म सेज किसे ना सोणा, सुहञ्जणी रुत ना कोए वड्याईआ। आत्म परमात्म ढोला किसे ना गाउणा, मन बुद्धी करे ना कोए चतुराईआ। साचा काया खेड़ा नगर किसे ना वसाउणा, साढे तिन्न हथ्थ रंग रंगाईआ। बिना भगतां प्रभ दा दरस किसे ना पाउणा, पौण पाणी देण दुहाईआ। साचे घर ना किसे बहाउणा, दर दवार ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, पर्दा पर्दे विच्चों चुकाईआ। सम्मत छे कहे आओ गुर अवतार पैग़म्बर सारे करीए सलाह, मता इक पकाईआ। कलयुग कहे मैनूं बणाओ गवाह, शहादत दयां भुगताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण ना ना, इशारे रहे वखाईआ। तेतीस करोड़ कहे बौहड़ी सारी दुनिया भरी गुनाह,

अन्तर निरन्तर ना कोए सफ़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी कलमा कहे सानूं किसे ना वसाया विच दमां, दामनगीर ना कोए अख्वाईआ। सानूं जपदे रहे काया माटी बण के चम्मा, चम्म दृष्टी विच प्रभ दा इष्ट ना कोए मनाईआ। हुण सानूं ऐं जापदा पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझे यार ने बदल देणा समां, नवां आपणा रंग रंगाईआ। किसे दा लोभ लालच कूड़ी क्रिया दा रहिण नहीं देणा तमां, तामस अन्दरों देणी कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सम्मत कहे आओ बैठो इक दवार, मजलस इक लगाईआ। करीए सच पुकार, निउँ निउँ सीस निवाईआ। असीं ख़ादम तेरे ख़िदमतगार, सेवक सेवा विच समाईआ। करदे रहे इंतज़ार, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। कलि कल्की लै अवतार, अमाम अमामा वेस वटाईआ। नूरी जोत कर उज्यार, अंध अंधेर रहे ना राईआ। सो वेला वक्त वेख ल्या विचार, विचर के दईए सुणाईआ। किरपा कर आप करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। सृष्टी दृष्टी दुनिया कर ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर पहुंचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। धुर दा हुक्म सुणो सुणाए साहिब सति मीत, मित्र प्यारा दृढ़ाईआ। सब ने रखणा चीत, चित वित ठगौरी ना कोए जणाईआ। पुरख अकाल बदलणी रीत, रीतीवान पड़दा लाहीआ। झगड़ा मुका के मन्दिर मसीत, काया काअबा इक जणाईआ। जिथ्थे बैठा रहे अतीत, त्रैगुण डेरा ढाहीआ। भेव रखे ना ऊच नीच, ज़ात पात ना कोए वखाईआ। इक्को आदि अन्त दा गीत, आत्म परमात्म दए पढ़ाईआ। काया कर के ठांडी सीत, अग्नी तत बुझाईआ। साचा कलमा हक हदीस, हज़रतां तों परे करे पढ़ाईआ। चार जुग दी मेट के लीक, लाईन अगली दए वखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां करनी तस्दीक, शहादत इक भुगताईआ। पुरख अकाल तेरे उत्ते उम्मीद, आसा इक जणाईआ। साडे कोल दीन मज़्हब दे पटे वाली रसीद, हथ्थो हथ्थ वेख वखाईआ। तेरे हुक्म नाल तेरे नाम दी कीती तम्हीद, सिफ्तां विच सालाहीआ। तेरी बख्शिश विच्चों कीती बख्शीश, रहमत नाम वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे अलख जगाईआ। पुरख अकाल कहे सुणो हुक्म धुर फ़रमाना, फ़ुरन्यां तों बाहर जणाईआ। सब नूं मन्नणा पैणा भाणा, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। तख्त निवासी रहे कोए ना राणा, राउ रंक खोज खुजाईआ। खेल होणा विच जहानां, नव सत्त पड़दा लाहीआ। शब्दी धार हुक्म मेहरवाना, महिबूब इक सुणाईआ। सम्मत छे विच रूसा चीना निगाह तेरे विच टिकाणा, अक्ख अक्ख ना कोए मिलाईआ। ईसाई मुस्लिम सांझा रहे ना खाणा, मुहम्मद ईसा खोज खुजाईआ। झगड़ा पए विच पठाणां, पुठ्ठी लहर आप वहाईआ। भारत खण्ड खेल महाना, भाग दसवां

दए हिलाईआ। जो लेख लिख्या विच स्कन्द पुराणा, उस दा लहिणा पूर कराईआ। शब्दी शब्द उडा बिबाणा, दो जहानां वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा हुक्म वरताईआ। सम्मत कहे खेल वेखणा विच अरेब, अरब दयां जणाईआ। कूड़ दा होणा फ़रेब, झगड़े विच लोकाईआ। मुहम्मद दी भविक्ख्त वाली कतेब, बिन अलिफ़ ये रही समझाईआ। कलमा कलमे उतों देणा वेच, कीमत सके ना कोए चुकाईआ। हक खुदा ने मारना पेच, पेशीनगोई विच दुहाईआ। उथे नबी रसूलां पैग़म्बरां मुल्लां शेख़ां चलणी नहीं कोई पेश, पेशवा होए ना कोए सहाईआ। एह खेल वरतणा देश बदेश, बदेशां दए जणाईआ। शंकर गल विच हलाए नाग शेष, बाशक रिहा उठाईआ। रूप बदलया जिस गणेश, सो पर्दा रिहा चुकाईआ। जिस राम कृष्न बणाए दर दरवेश, पैग़म्बर सजदयां विच सीस झुकाईआ। गुरु गुरदेव करन आदेस, नमों नमों विच वड्याईआ। सो धार के आवे भेख, जोती जाता फेरा पाईआ। जिस दा मुच्छ दाढ़ी ना कोए केस, ना कोए मूंडे मूंड मुंडाईआ। आदि जुगादि सदा रहे हमेश, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सम्मत छे कहे मेरा साहिब स्वामी, मित्र प्यारा नज़री आईआ। आदि अन्त दा अन्तरजामी, अन्तष्करन वेखे थांउँ थाँईंआ। जिस दी सिफ्तां वाली सरगुण धार अक्खरां विच बाणी, सतरां विच लिखाईआ। ओह मालक ख़ालक प्रितपालक जीव प्राणी, पुराण अठारां तों बाहर करे पढ़ाईआ। जिस दी अञ्जील कुरान निशानी, पैग़म्बर गए दिखाईआ। जिस दा नानक बणया बानी, गोबिन्द करी अगंवाईआ। ओह अन्त सब दी लए कुरबानी, करबला लेख चुकाईआ। मेहरवान हो के करे आपणी मेहरवानी, महिबूब हो के खोज खुजाईआ। सब दा मस्तक वेखे पेशानी, पर्दा पर्दे विच्चों चुकाईआ। मंज़ल तके रूहानी, रूह बुत दा पड़दा लाहीआ। शब्दी धार दए जवानी, जोबनवन्त अख्वाईआ। प्रगट धार नूर असमानी, जिस्मानी नूर दए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सम्मत छे कहे मेरा शब्द धार मुज़ाहरा, मुश्किल हल्ल कराईआ। वेखे चार कुण्ट दा लहरा, लहर लहर नाल टकराईआ। सृष्टी विच्चों नौ उजड़ने वडे शहरा, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण खोज खुजाईआ। कलयुग विद्वान होणा बहिरा, धुर दा नाम सुणन कोए ना पाईआ। जो मज़्बां वाला दीनां वाला इस्लामां वाला निक्का निक्का दाइरा, हिस्सयां वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्मा हरि, हरि हिरदा वेख वखाईआ। सम्मत छे कहे मैं वेखणा चढ़दा लहिंदा, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण फोल फुलाईआ। किस कूटे कलयुग वहिन्दा, की आपणी कार कमाईआ। कलयुग कहे मैं ईसा मूसा मुहम्मद वेखणा खहिंदा,

खार खार विच दुहाईआ। जगत मुनारा वेखणा ढहिंदा, सिर सके ना कोए उठाईआ। सब नूं एह सम्मत पैणा महिंगा, कौडी कीमत ना कोए चुकाईआ। अग्गे मुके किसे ना पैंडा, पाँधी पन्ध विच कुरलाईआ। जिस कारन भेंटा चढ़ाउंदे रहे गैंडा, बुद्धी तों परे समझाईआ। खेल वेखदे रहे जल धार वाली नैं दा, वहिणां विच वहाईआ। माण वध्या मैं दा, हउमे विच लड़ाईआ। डर रिहा ना सतिगुर भय दा, सीस सके ना कोए झुकाईआ। हुण वक्त आ गया लै दा, लहिणा मुकणा थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हुक्म संदेशा इक सुणाईआ। हुक्म संदेशा अगम्म अपार, अपरम्पर रिहा जणाईआ। की जगत खेल होणा संसार, संसारी भण्डारी सँघारी वेखे थांउँ थाँईंआ। जगत जुगत विच हाहाकार, भगती भुगत ना कोए चतुराईआ। मीत रहे ना कोए ग़मखार, सज्जण संग ना कोए निभाईआ। पिता पूत करे ख्वार, भैण भाई भाई लड़ाईआ। चारों कुण्ट हाहाकार, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। एह खेल सच्ची सरकार, हरि करता रिहा समझाईआ। मुहम्मद नूं छडने पैणे चार यार, मीत इक्को इक मनाईआ। जिस दा सचखण्ड दवार, धरनी धरत धवल धौल अर्श फ़र्श इक्को रंग रंगाईआ। सो प्रगट हो के बोले इक जैकार, धुर दा नाम अल्लाईआ। जिस नूं सके कोई ना मार, मर जीवत ना रूप मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सम्मत छे कहे गुर अवतार पैग़म्बर करो अदला, अदल इन्साफ़ जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया चुका दे बदला, बदी दूर कराईआ। सब दी सांझी इक्को होवे मंज़ला, मंज़ल इक दरसाईआ। इक्को ढोला गीत नाम होवे ग़ज़ला, इक्को राग अल्लाईआ। इक्को महल्ल अटल साढे तिन्न हथ्थ दा बंगला, बाग़ी मन रहे ना राईआ। प्रभू मित्र बण जाए रंगला, रंग रतड़ा धुर दा माहीआ। शरअ ज़ंजीर मिटा दए संगला, छुरी करद ना कोए उठाईआ। भेव खोल्ह देवे अगला, की सतिजुग धार समझाईआ। पवित्र करके कूड़ा काग बगला, हँस रूप जणाईआ। फिर फिरना पए ना जंगला, टिल्ले पर्बत ना वेख वखाईआ। काया मन्दिर अन्दर करे चार मंगला, अनादी धुन उपजाईआ। साची उस नूं करे बन्दना, डण्डावत सजदा सीस निवाईआ। जिस छड्डुया पुरी अनन्दना, अनन्द अनन्द विच समाईआ। उस सम्बल दवारे लँघणा, जिथ्थे सके ना कोए अटकाईआ। जिस दा सति धर्म दा कंगणा, कंधी वेख वखाईआ। कलयुग मेट के पन्धना, पाँधी सतिजुग लए जगाईआ। संदेशा देंदिआ मूल ना संगणा, हुक्म इक दृढ़ाईआ। सब ने इक्को दवारा मंगणा, जिथ्थे वसे बेपरवाहीआ। लेखे लाउणा तत पंजना, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म सुणाईआ। सम्मत छे कहे वेखो हज़रत ईसा दा कलाक, टक टक आवाज़ लगाईआ। जिस ने हुक्म

विच हुक्म कीता लाक, ताला दिता लगाईआ। फेर फड़ के मिट्टी ख़ाक, हथ्थां विच उडाईआ। ओह महीना सी विसाख, नौ दिन देण गवाहीआ। फेर तक के उपर रात, चन्द तारे रिहा समझाईआ। सुणो मेरी इक बात, तुहानूं दयां दृढ़ाईआ। बिना बुद्धी तों लैणा वाच, वाच कलाक दए दरसाईआ। जिस वेले परवरदिगार ज़ाहर ज़हूर आवे आप, आप आपणा फेरा पाईआ। मैं उस नूं कहां बाप, ओसे नूं सीस झुकाईआ। तुसीं निक्की निक्की शाख़, टहिणी टहिणी नाल दरसाईआ। ओह दाता अलखणा अलाख, अगोचर अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा इक सरनाईआ। हज़रत ईसा किहा मेरा हक हकूक, मुहम्मद किहा यक यक यक अख्वाईआ। मूसा किहा तलज़ने ज़े ज़बा ज़े ज़मा ज़म तराईआ। खुदा किहा मेरा नूर हूबहू, रूबरू सब दे करे रुशनाईआ। मेरा कलमा धार गुरु, शब्द शब्द दृढ़ाईआ। जिस वेले शहिनशाही सम्मत छे होणा शुरू, शरअ दी शरीअत दयां बदलाईआ। इक नवां मार्ग तुरू, तुरत दयां दृढ़ाईआ। दूर दुराडयां पुराणयां साथीआं फिरन वाल्यां दे अन्दर फ़ुरना फुरू, फ़ुरने विच वड्याईआ। धुर दा हुक्म कदे ना मुड़ू, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। कूड़ी क्रिया बेड़ा रुड़ू, कलयुग शौह दरया रुढ़ाईआ। जिस उत्ते किरपा कीती ओह दूर नेड़े वसण वाला आपे जुड़ू, किसे नूं जोड़न दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

३९१
२२

किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि देवे माण वड्याईआ। सम्मत छे कहे मैं देवां सच संदेशा, सद वारी जणाईआ। जिस दा किसे नहीं लिख्या लेखा, कलम शाही ना कोए चतुराईआ। ओह सब दा कढे भरम भुलेखा, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। पड़दा रहिणा नहीं विच बिदेशा, योरप एशीआ इक्को रंग वखाईआ। भगत तारना जिस दा पेशा, पेशतर सब नूं गया समझाईआ। ओस दी सारे करदे वेटा, इंतज़ारी विच राह तकाईआ। जिस दी सेवा विच गोबिन्द बच्चे चाढ़ के गया भेंटा, खेवट खेटा आपणा रंग रंगाईआ। ओस कोल कलयुग अन्त दा गुर अवतार पैग़म्बर दिता ठेका, बोली सके ना कोए वधाईआ। जिस ने सब दा करना एका, इक्को रंग देणा वखाईआ। दो जहानां बण के नेता, निज नेत्र फोल फुलाईआ। सतिजुग साची वस्त दे के वेता, वितकरा कूड़ा देणा गंवाईआ। दीनां मज़्बां मेट के भेदा, भाण्डा भरम देणा भनाईआ। भावें जट्ट होवे हल्ल वाहे विच खेतां, मूसा दे के गया ईसा नाल दुहाईआ। ओस ने मारना आपणे नाम दा पेचा, कलमा कायनात बंधाईआ। दीन दुनी विच खेडे खेडां, खिलाड़ी हो के फेरा पाईआ। ओह कोई याली नहीं कोई पाली नहीं चारे गऊआं अते भेडां, कि हाकां सूरीआं तांईं लगाईआ। उस ने सब नूं मारना ठेडा, धक्के नाल देणा हटाईआ। भगत कर के आपणे जेडा, दरगाह देणी वड्याईआ। किसे दी चाढ़नी पए ना देगा, भेंटा विच ना सीस निवाईआ। सब दा

सांझा कर के लेखा, अगली लिख्त देणी जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। कलयुग कहे मेरे रहिंदे दिन बाकी, सम्मता तैनूं दयां सुणाईआ। मैं लड़ाउणे बन्दे ख़ाकी, ख़ालसा ख़ालस रहिण कोए ना पाईआ। मैं अन्त ते अख़ीरी औखी घाटी, मंज़ल चढ़न कोए ना पाईआ। मेरी धार बड़ी डाहढी, प्रभ डाहढे दिती समझाईआ। जिस वेले अमरदास डिग्गा सी विच खाडी, हथ्थ खुड्डयां विच टिकाईआ। गोडयां भार हो के कीता यादी, अक्खां मीट वास्ता पाईआ। मैं सतिगुरु दा पाँधी, आपणा पन्ध मुकाईआ। ना कोई कृष्न ते ना कोई राधी, सीता राम ना कोए चतुराईआ। मेरी धार सिध्धी साधी, साधना तेरे उत्ते टिकाईआ। इक आई अगम्मी आवाज़ी, शब्द दिता सुणाईआ। तूं सदा रह राज़ी, राज़क रिज़क रहीम तेरी झोली दए भराईआ। पर फेर वेखीं मुल्ला काज़ी, तेरी धार नूं देण सज़ाईआ। फेर अमरदास दी सुरती जागी, अन्तर लई अंगड़ाईआ। चारों कुंठ उठ के भागी, वेख्या थांउँ थाँईंआ। जां निगाह मारी प्रभ दे नालों सब दी आत्मा बाग़ी, मंज़ल चढ़न कोए ना पाईआ। जिधर वेखे उधर नाराज़ी, मुहब्बत विच ना कोए समाईआ। फेर तक्कया काअबे दा बणया कोए ना हाजी, हुजरा हक ना कोए वखाईआ। कलयुग दी वेखी आबादी, पृथ्मी उत्ते दीन दुनी दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा पड़दा लाहीआ। सम्मत छे कहे प्रभू किस बिध होवे अमन, मैनूं दे जणाईआ। कलयुग कहे मेरा कूड़ कुड़यार दा सोहणा मजन, चारों कुण्ट नज़री आईआ। जिंना चिर प्रभू गुर अवतार पैग़म्बरां शब्द गुरु ना कढे संमण, फेर प्रगट होए गोबिन्द धार आवे ना दुष्ट दमन, दमां तों बाहर करे पढ़ाईआ। कलयुग नूं मेटे कवण, किस विच चतुराईआ। रोंदी फिरदी हवा पवण, अड्ड सड्ड पाणी दए दुहाईआ। की लेखा लिख के गया बल दवारे बावन, शहादत इक भुगताईआ। भगत बणा के जामन, समझ गया समझाईआ। प्रभ दा खेल वेखणा आमूनों साहमण, सोहणा रंग रंगाईआ। ओस वेले पत्री वाच सके कोई ना बाहमण, ब्रह्म विद्या ना कोए चतुराईआ। सृष्टी ते होए तमां तामन, तमां ना कोए गंवाईआ। कूड़ी क्रिया होवे कामन, काम वासना कूड़ हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, धुर दा मालक दया कमाईआ। कलयुग कहे मैं बड़ा लम्बा चौड़ा, सूरबीर अख्वाईआ। मेरे वास्ते मंगां मंगदे गए आउणा ब्राह्मण गौड़ा, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। पैग़म्बर लाउंदे गए पौड़ा, चौदां तबकां वंड वंडाईआ। गुरु गुरदेव वेखदे गए नाल गौरा, निगाह निगाह विच्चों उठाईआ। पर कम्म किसे दा मूल ना सौरा, सौहरे पईए रहे कुरलाईआ। जां खेल तक्कया अवर का औरा, औरत मर्द रंग ना कोए रंगाईआ। जो आया सो नाम दा बणया बौरा, कलमे विच कुरलाईआ। सति दवारे बण के भौरा, गूंज आपणी

गया सुणाईआ। कलयुग अन्त सुणे कोए ना शोरा, शौहर बांका नज़र कोए ना आईआ। सारे कहिण पुरख अकाल दीन दयाल निरगुण धार चढ़ के आउणा उपर घोड़ा, रासां आपणे हथ्थ उठाईआ। सच पुछो किसे नूं ख़बर नहीं जे भोरा, भोरी भोरी वंड के सारे हिस्से गए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक उपजाईआ। सम्मत छे कहे मेरा दाता, गहर गम्भीर अख्वाईआ। जो सर्ब कला कल ज्ञाता, गुणवन्त वड्याईआ। सब दा पिता माता, सब दा भैण भाईआ। सब दा बणे राखा, नित नवित सहाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां दस्स के जाचां, निक्के निक्के हिस्से वंड वंडाईआ। झगड़ा पा के काया माटी काचा, तत तत नाल ठुकराईआ। सब दा डूंघा रख के खाता, आपणे विच छुपाईआ। नाम कलमे दीआं निक्कीआं निक्कीआं दस्स के बातां, बेवतन कर के दिता समझाईआ। दीन दुनी दा खेल सार पाशा, नरद पुड़ी सिध्धी वखाईआ। आप सचखण्ड बैठ के सब दा वेखदा रिहा तमाशा, निगाह निगाह विच्चों बदलाईआ। संदेशा देंदा रिहा ख़ासा, हुक्म हुक्म प्रगटाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट करे आपा, आपणे विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। पुरख अकाल कहे कढो आपणे पोथे, पूरब खोज खुजाईआ। तेई अवतार दस्सो प्रभ दा भाणा कौण रोके, अग्गे हो कवण अटकाईआ। पैग़म्बर बोलो की तुहाडे अन्तर आई सोचे, समझ नाल समझाईआ। गुरु गुरदेव दस्सो की आसा मनसा लोचे, लोचन तों परे की रुशनाईआ। शब्द गुरु दस्सो किस बिध सब दे हिरदे सोधे, सुदी वदी ना वंड वंडाईआ। सारयां हस्स के किहा प्रभू असीं तेरे सरगुण रूप जोधे, अवतार पैग़म्बर गुरु नाम प्रगटाईआ। तेरा नाम अगाध बोधे, बुद्धी तों परे आप समझाईआ। अन्तिम हो गए तेरे जोगे, जुगती नाल दृढ़ाईआ। पिछले चार जुग भोगे, भोगी बण के आपणा आप दरसाईआ। हुण सब दे ख़ाली वेख लै बोझे, पाकट जेब नाम कलमा नज़र कोए ना आईआ। भावें मूंड मुंडाए सीस रखाए केस बोदे, मुच्छ दाढ़ी नाल चतुराईआ। हुण तेरी किरपा सारे हो गए गोझे, अक्ल चले ना कोए चतुराईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु सब भार डिग्ग पए गोडे, वास्ता प्रभ दे अग्गे पाईआ। उँगली रख के उत्ते ठोडे, सोचां विच सोच समाईआ। काया भाण्डे कोई ना पोचे, अन्दरों करे ना कोए सफ़ाईआ। बिन तेरे पूरी करे कोई ना लोचे, लोचण नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। भाग लगा दे काया कोठे, कुटीआ कर सफ़ाईआ। तेरे पिच्छे गोबिन्द ने भेंटा चढ़ाए जिगर दे टोटे, गुरमुख टुटयां लए जुड़ाईआ। वेखीं लेखे कदी ना उत्ते पोटे, गिणती गणित गणाईआ। साथों आपणे आप जाण ना सोधे, पवित्र रूप ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। सम्मत छे कहे महिन्दरो बीबी जंडयाले वाली ल्या दे नरेल, जो शब्द विच समझाईआ।

३६३
२२

किशन सिँघ चुन्नीआं फड़ा दे लावीं ना देर, वेला वक्त समझाईआ। किरपा करे सिँघ शेर, भबक नाल भबक इक लगाईआ। पिछला लहिणा दए नबेड़, लेखा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा खेल खिलाईआ। किशन सिँघ शब्दी धार सीस लैण दे चुन्नीआं, आपणा आप जणाईआ। जेहड़ीआं आसां रखीआं ऋषीआं मुनीआं, सुनेहड़ा रिहा सुणाईआ। भावें ताने देवे दुनिया, हाहाकार करे लोकाईआ। प्रभ दाता गुण गुणीआ, देवणहार सरनाईआ। एह लेखा सम्मत उनीआं, उनीसा वंड वंडाईआ। जिस फ़रयादां धुर दीआं सुणीआं, सुणनहार दया कमाईआ। जिस नूं याद करदीआं बुल्लीआं, रसना मुख विच हिलाईआ। जिस दी भेंटा चाढ़दे फुल्लीआं, पतास्सयां भोग लगाईआ। सो वसे काया कुलीआं, काअब्यां डेरा ढाहीआ। प्रभू दे दर आईआ रूहां कदे ना रुलीआं, आप आपणे विच समाईआ। फलदार कदे ना हुल्लीआं, पतझड़ ना कदे जणाईआ। किसे दीआं चुक्कणीआं पैण ना जुल्लीआं, सतिगुर ओढण सीस टिकाईआ। जिन्हां दा मालक इक ओह, ओह कदे ना डुल्लीआं, डुलावण वाला रूप ना कदे दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। चुन्नी कहे मैं धर्म धार दा लीड़ा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग राह तकाईआ। मेरे मालक हुक्म दिता पीरन पीरा, संदेशा इक सुणाईआ। सच धार दा कर वरतीरा, हक हक वखाईआ। जिन्हां बहिणा नहीं किसे रंगले पीढ़ा, कन्त जगत ना कोए चतुराईआ। नेत्र वहाउणा नहीं नीरा, विछोड़े विच ना आह लगाईआ। सति सच दा चुक्क के बीड़ा, बेड़ा आपणा लैणा तराईआ। बेशक दुनिया दा राह भीड़ा, गुरमुखां तत्ती वाअ ना लागे राईआ। एह वक्त अन्त अख़ीरा, आख़र दयां दृढ़ाईआ। जिस साहिब दे सिर ते चीरा, चीरे वाला धुर दा माहीआ। जिस दे हथ्थ नाम शमशीरा, खण्डा रिहा खड़काईआ। ओह देवणहारा धीरा, धर्म धार दरसाईआ। किशन सिँघ बण गया वीरा, सिर कपड़ दिता टिकाईआ। तृप्त जुगिन्दर दा पहला दर तेरा, वितकरे विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। भावें रहिणा पए वांग फ़कीरा, भुक्खी रह के झट लँघाईआ। सिर सब तों रखणा नीवां, ऊचा ऊच ना कोए अख्वाईआ। सच पुछो गुरमुखां वास्ते सत्त रंग मनमुखां वास्ते साढे तिन्न हथ्थ दी सीवां, बाकी धन्न दौलत कम्म किसे ना आईआ। पुत्र धीआं नाल किसे दा बणया नहीं जीणा, कन्त नाल भगवन्त मिलण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सम्मत छे कहे हुक्म देणा योरप, युकती नाल दृढ़ाईआ। हरि आसा मनसा सब दी पूरत, पूरन विच समाईआ। जद सौवोंगे हाज़र हज़ूरत, मालक धुरदरगाहीआ। जल्वा वखा के नूरो नूरत, अन्दर करे रुशनाईआ। नाता तोड़ के कूड़ो कूड़त, धर्म दी धार इक प्रगटाईआ। चतुर सुघड़ बणा मूर्ख मूढ़त, कोझयां कमल्यां गले

३६४
२२

लगाईआ। सर्ब कला भरपूरत, वेखे थांउँ थाँईंआ। जिस नूं कहिंदे रब्ब दी सूरत, ओह रसूलां दा रसूल सब दा माहीआ। जिस ने मिस्टर बैरन करना मशहूरत, मशवरे नाल दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण असीं होईए सारे मग्न, इक ध्यान लगाईआ। जे प्रभू प्यारयां नूं देवे सगण, गुरमुखां झोली पाईआ। अन्दरों लाए आपणे नाल लग्न, लग मात्रा दा डेरा ढाहीआ। राती सुत्तयां दिने जागदयां ओह दीपक वांग जगण, अंध अंधेर रहे ना राईआ। जे योरप विच्चों बैरन आया सद्दण, सदा नाम दा दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। नरेल कहे मेरी मस्त मस्त जवानी, जोबनवन्त अख्वाईआ। हरबंस कौर जो लै के आई कलम दी कानी, कल्सीआं वाली दए फड़ाईआ। एह उस प्रभू दी निशानी, जो निशाने सब दे दए बदलाईआ। जिस ने बख़्शणी मंज़ल इक रुहानी, रूह बुत करे सफ़ाईआ। अमृत धार बख़्श के पाणी, सर सरोवर देणा नुहाईआ। हुण पिच्छे तों अगली बदल देणी बाणी, बाण अणयाला तीर चलाईआ। झगड़ा मुकाउणा चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। काना कहे मेरी कलम हुन्दी सी पुराणी, पुराणां वेदां विच लिखाईआ। कलयुग अन्तिम मैनूं अन्तिम आई हानी, हाणी संग ना कोए रखाईआ। मेरी सार किसे ना जाणी, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। मेरे अन्दर आई हैरानी, मैं रो के दिता सुणाईआ। ओ प्रभू बिन तेरे मेरे उत्ते करे ना कोए मेहरवानी, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। कानी कहे मैं दस्सां सच विचार, विचर के दयां जणाईआ। मैनूं घड़ना नाल प्यार, रात अज्ज दी खुशीआं नाल सुणाईआ। मेरा दो चेत नूं करना विहार, वास्ता रही पाईआ। मेरा लेखा लिखणा दूजी वार, सफा सफे विच्चों बदलाईआ। एह हुक्म सच्ची सरकार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जितनी लिख्त हरबंस कौर ने लिखी सी ओह दोबारा जुगिन्दर कौर ने लैणी उतार, काग़ज़ कलम उत्ते चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। कलम कहे मैनूं घड़ देवे रविदास, गुरमुख हथ्थ फड़ाईआ। मेरे नाल सिर्फ़ पंज वेरां ""सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै"" लिखणा ख़ास, अग्गे अक्खर ना कोए बणाईआ। मैं सादी मेरी जंगलां विच अबादी ते गुरमुखां दे लेखे लाउणे स्वास, साह साह नाल तराईआ। मैं भज्जणा नहीं आकाश, मैं जाणा नहीं कैलाश, मैं वेखणा नहीं प्रभास, मैं लभ्भणी नहीं दवात, मैं तकणे नहीं काग़ज़ात, मैं चाहुंदी मैं वेखां भगतां दी इक जमात, जो ज़ात पात दा झगड़ा गए मुकाईआ। एसे करके शब्द गुरु ने मैनूं कीता साख्यात, पूरन सिँघ ने कीती नहीं कोई बात, रातीं

सुत्तयां दिती दात, दिने जागदयां दए वखाईआ। गुरमुखो तुहाडी मंज़ल ते तुहाडा पूरा करना घाट, चुरासी दी रहे अग्गे ना वाट, मिले मेल कमलापात, जो पतिपरमेश्वर तुहाडा धुर दा माहीआ। आओ सारे इक्ट्ठे मिल के इक्ट्ठा बणाईए समाज, दीन दुनी दा बदल दईए रिवाज, इक्को नाम दे चढ़ीए जहाज, जिस नूं चलाउण वाला धुरदरगाहीआ। इक्को मन्नीए बाप, इक्को बणीए ज़ात, इक्को रखीए आस, इक्को बणीए प्रकाश, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। कलम कहे मेरे नाल लिखणा नाल ज़ोर, सज्जी उँगली नाल दबाईआ। खब्बा हथ्थ कन्न विच पा अन्दर वेखणा नाल ग़ौर, गहिर गम्भीर ध्यान लगाईआ। मुक्खों कहिणा सतिगुरु तेरे उत्ते डोर, दूजा नज़र कोए ना आईआ। मेरे अन्दर रहिण ना पंज चोर, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। नारीअल कहे मैं वेखणा पुरख नारा, नर नरायण समझाईआ। मैं वेखणा जगत श्रृंगारा, तत्तां नाल वड्याईआ। मैं वेखणा दीन दुनी दीआं धारां, धरनी धरत खोज खुजाईआ। मैं वेखणा सज्जण मीत यारां, सुहेले रंग रंगाईआ। मैं वेखणीआं वर्ल्ड दीआं अख़बारां, सज्जे खब्बे ध्यान लगाईआ। फेर लगाउणा हक दा नाअरा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। ख़बरदार हो जाउ सवाधान हो जाउ अटैनशन हो जाउ औह आया औह आया औह आया जो सब दा यारा, यारी यारां नाल निभाईआ। औह आया औह आया औह आया दुबारा, सरगुण तों निरगुण रूप वटाईआ। औह आया औह आया औह आया जिस दा भगतां उत्ते पहरा, पहरेदार हो के होका देवे चार जुग दा राखा लख चुरासी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। औह आ गया जिस ने आत्मा परमात्मा दा दिता इशारा, इशारे नाल पार कनारा, दए कराईआ। औह आया, औह आया, औह आया जिस दा आदि तों अन्त गुर अवतार पैग़म्बरां तक्कया नज़ारा, सजदयां विच डण्डावत बन्दना विच सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण वाहवा हक खुदा, खुदग़रज़ वेखी तेरी खुदाईआ। ख़ुदा कहे क्यों होए मेरे नालों जुदा, जुज़ आपणा वंड वंडाईआ। पैग़म्बर कहिण तेरे उतों होए फिदा, आपणा आप मिटाईआ। ख़ुदा किहा मेरा मार्ग इक्को सिध्धा, लाईन ऐन दिती लगाईआ। तुसीं क्यों अवतारां नाल कीतीआं ज़िद्दां, झगड़े आए पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। अवतार पैग़म्बर आखण प्रभू तूं बड़ा झगड़ालू, सानूं झगड़यां विच रखाईआ। कलयुग कहे, नहीं, मेरा साहिब बड़ा दयालू, जो मेरी पुश्त पनाह हथ्थ टिकाईआ। बौहड़ी डराउँदा, क्यों नानक जम्मया घर कालू, जिस कौडे वरगिआं दिता बदलाईआ। फेर दस्स के इक्को पुरख अकाल अन्त

सब नूं संभालू, जो गोबिन्द धार सम्बल डेरा लाईआ। उस दा हुक्म संदेशा शब्द होणा चालू, चाल निराली इक रखाईआ। भावें तपदी होवे रेत बालू, अग्नी अग्ग अग्ग रूप बदलाईआ। ओह गुरमुखां दे उत्ते दे के लाल सालू, सौहरे पईए इक्को रंग वखाईआ। उहनूं उहदी किरपा तों बग़ैर कोई ना पा लऊ, भावें पालण चढ़े लोकाईआ। जे किरपा करे बैरन वरगिआं नूं खवा के कच्चे आलू, अन्दरों पड़दा दए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। कलम कहे मैं बड़ी छेती छेती तुरदी, चार जुग दा पन्ध मुकाईआ। पर बौहड़ी मैं सार नहीं पाई उस सच्चे सतिगुर दी, जो शब्द गुरु अख्वाईआ। मैनूं जिधर चाहे लिखारी मैं उसे तरफ़ मुड़दी, भज्जां वाहो दाहीआ। मैं काग़ज़ दे नाल जुड़दी, आपणा मेल मिलाईआ। पर जे सच पुछो ते मैं पाणी दे वहिणां विच रुढ़दी, ते रुढ़दी नूं पार ना कोए लँघाईआ। चार जुग किसे अवतार पैग़म्बर गुरु मैनूं जीवत नहीं कीता ते मैं रही मुरदी, मुरदयां विच रह के आपणा झट लँघाईआ। मेरे अन्दर इक आसा रही फुरदी, फ़ुरन्यां विच सुणाईआ। मैनूं खाहश इक नूर दी, जो नूर नुराना डगमगाईआ। जिस दी आवाज़ शब्द अगम्मी इक तूर दी, तुरीआ तो परे करे पढ़ाईआ। जो जीवण ज़िंदगी लेखे लावे गुरमुखां मूढ़ दी, ग़रीबां होए सहाईआ। कलम कहे मैं प्यासी रही उस दे चरण धूढ़ दी, जो धूढ़ी टिक्के ख़ाक रमाईआ।
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सम्मत कहे मेरा चढ़या महीना चेत्र, चतर्भुज अगंवाईआ। मेरा पहला होणा पेपर, सच दयां सुणाईआ। मैं जाणा अरब देश दे खेत्र, सोहणी वंड वंडाईआ। पहला हिस्सा वंडाउणा उन्नी सौ एकड़, जिथ्थे मता लैणा पकाईआ। फेर उन्नी सौ मील विच करके छेकड़, छक्के सब दे देणे छुडाईआ। फेर करके वडी हैंकड़, हथ्थ हिक्क उत्ते टिकाईआ। फेर खोल्ह के आपणा नेत्र, दीन दुनी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। चेत्र कहे मैं चढ़ गया महीना, आपणा रूप बदलाईआ। सब नूं आउण लग्गा पसीना, थर थर आपणा आप रहे कम्बाईआ। कुछ मसला बणन लग्गा चीना, चीन के सके ना कोए समझाईआ। झगड़ा पैणा नर मदीना, एहदा भेव ना कोए खुल्हाईआ। जिस कारन पाखर पाई अस्व ज़ीना, ज़ीना पौड़ी सीढ़ी वेखे हक ख़ुदाईआ। फेर लेख वेखणा मुल्क तीना, त्रैगुण रंग रंगाईआ। जिथ्थे वज्जे हँकारी बीना, बिनै कर सीस ना कोए निवाईआ। जल मिले ना पाणी मीना, सांतक सति ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। कलम कहे मैं बड़ी काहली, ओ गुरमुख काहल्यो दयां जणाईआ। मैं बड़ी घालणा घाली, चार जुग दे शास्त्र लिखे चाँईं चाँईंआ। मैनूं किसे ने ना बणाया साली, नाता गया ना कोए जुड़ाईआ। मैं फिर फिर थक्की

चार कुण्ट भाली, चार जुग वेख वखाईआ। मैनूं इक दिन अचानक सुफ़ना आया, कलम कहे नी कमलीए औह वेख जट्ट हाली, जो हालत सब दी रिहा बदलाईआ। कोई नहीं मंगदा विच दलाली, विचोला अवर ना कोए रखाईआ। जो आई सो दर तों कदे ना जाए ख़ाली, ख़ाली झोली दए भराईआ। जिस नूं कहिंदे जगत दा वाली, ओह वारस हो के फेरा पाईआ। कानी कहे जां मैं अग्गे होई नेड़े हो के तक्कया कन्नां नाल सुणया बहुते उस नूं कढदे गाली, गाहक विरला वेख वखाईआ। नी कमलीए मैं खुशी विच खलो के असमानां वल्ल दो हथ्थां दी मारी ताली, खुदा तुआला तेरी बेपरवाहीआ। इक सवाल इक जवाब फेर वेख्या गुर अवतार पैग़म्बर उसे दे सवाली, सवालां विच आपणी आसा रहे प्रगटाईआ। फेर तक्कया चोटी हिमाली, हिमालीआ दे पिच्छे दवालीआ सब दा रिहा कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, ...। कलम कहे मैं भन्नी दौड़ी, आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं वेखी दीन मज़्ब दी पौड़ी, डण्डे डण्डे हथ्थ उठाईआ। असीं अन्दर वड़ के वेख्या केहड़ी धार मिट्ठी कौड़ी, रस कवण चखाईआ। जां तक्कया सब दे अन्दर प्रभ दी आस थोड़ी, बौहड़ी बौहड़ी करे लोकाईआ। मेरी आसा कहे ना दौड़ीं, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। कलम कहे प्रभू मेरा कर दे हिसाब, अंकड़े वेख वखाईआ। पुरख अकाल कहे ओ कमलीए मेरे कोल अक्खरां वाली नहीं किताब, ए बी सी डी अलिफ़ ये ऊड़ा ऐड़ा वंड ना कोए वंडाईआ। मेरा इक्को हिस्सा इक्को बाब, बिना पन्नयां तों मेरी सिफ्त सालाहीआ। इक्को वार कर दे आदाब, बिना सजदयां सीस झुकाईआ। मेहरवान हो के देवां मात ख़ताब, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। ओथे ना कोए सवाल ना कोए जुआब, जुआबतल्बी विच सारे बैठे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा रंग रंगाईआ। चेत्र कहे मैं आया चार्तक, तृखा प्यासा जगत। मिले मैनूं सति सांतक, उत्ते शाह रग। प्रभू दा बणां याचक, नाता तुट्टे कूड़ा जग। सदा होवां अस्तिक, रहां ना बगला बप। प्रीती करां इक्को वास्तक, जो साहिब सूरा सरबग। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, शब्द अगम्मी वजा नद। कलम कहे मैं लिख लिख भरे कुतबख़ाने, मेरी वड वड्याईआ। मैं जदों आई ते आई हथ्थ बेगाने, मेरी सेवा होई पराईआ। मैं गुरुआं दी महिमा कीती ते शब्द गुरु दे लिखे गाणे, अक्खरां नाल सालाहीआ। सेवा कीती प्रभ दी नाल बहाने, जुग जुग आपणी कार कमाईआ। कलयुग अन्तिम मेरे लेख लेख नूं देवण ताहने, दीन मज़्ब मज़्ब नाल टकराईआ। मेरे झूठे दिसण यराने, कूड़ नाल समझाईआ। मैं रो के किहा प्रभू मेरे लेख होए पुराणे, प्राणी निउँ निउँ ना सीस निवाईआ। झट

हुक्म दिता श्री भगवाने, भगवन दिता दृढ़ाईआ। तूं सवाधान हो लोकमात विच जहाने, जहालत कूड़ी देणी गंवाईआ। लेख लिख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाने, जिस तों अग्गे होर ना कोए पढ़ाईआ। उथे टुट्ट जांदे पैग़म्बरां वाले यराने, गुरु गोद ना कोए उठाईआ। मुक जांदे जगत जीवण दे दाणे, तृष्ना तृखा मिटाईआ। रस ना रहिंदे पीणे खाणे, नव नौ चार डेरा ढाहीआ। सिर्फ़ मिलदा की कमलीए भगत भगवान दा मेल जिथ्थे सदा इक्को रंग इक्को जोबन जवानी माणे, बुड़ेपा नज़र कोए ना आईआ। ना कोई ताअना ना कोई मेहणा ना कोई दए उलामे, ठोकर जगत ना कोए लगाईआ। कलम हस्स पई प्रभू वल्ल नस्स पई, प्रभू जो तूं किहा सो मैं वेख्या गुर अवतार पैग़म्बर तेरे जुग जुग (निक्के निक्के बाल अंञाणे), हुक्म विच सेवक सेव कमाईआ। तन वजूद दे बदल के आउंदे बाणे, बाणी नाम कलमा तेरा सुणाईआ। फेर वेखां सारे तेरे विच समांणे, वक्खरा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। कलम कहे मैं लिखणा लेख नहीं उत्ते तख्ती, तख्त निवासी रिहा जणाईआ। जिस ने करनी सब दे उत्ते सख्ती, सख्त हुक्म दृढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया आई कमबख्ती, माया ममता रही कुरलाईआ। क्यों मेरा मालक आया अर्शी, फ़र्शी सोभा पाईआ। जो सदा सदा आत्म दरसी, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। ओस ने भगतां दी छेवें घर मनाई बरसी, सोहणा रंग रंगाईआ। जीवण दाता बण के दर्दी, दुखियां दुःख मिटाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण असीं लिख के दईए अर्ज़ी, दरख़ासत प्रभ दे अग्गे टिकाईआ। साडे मालक ख़ालक जो चाहें सो अग्गे कर आपणी मर्ज़ी, सारे इक्को वार सीस झुकाईआ। असीं नाम कलमा दे के आए फ़र्ज़ी, जो जुग जुग गए बदलाईआ। तूं पुट्टी सिध्धी कर नरदी, दीन दुनी तेरे हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेहर नज़र कर दे धुर दे स्वामी, सारे रहे जणाईआ। तूं आदि जुग जुगादि दा दानी, दाता इक अख्वाईआ। साची मंज़ल दे असानी, रहिबर हो के वेख वखाईआ। बेशक तेरा लेख लिखदी कलम कानी, कायनात विच सिफ्त सालाहीआ। जिस दी कीमत पैसा धेला नहीं कोई दवानी, दीवानी दा मुकदमा चार जुग दा मेरा चलया आईआ। तेरे अवतार पैग़म्बर गुरु सारे हो गए फ़ानी, उन्हां दा तत ना कोए वखाईआ। मेरे लेख दी अजे तक रही निशानी, शास्त्र सिरमत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी दए गवाहीआ। मैं चाहुंदी हुण इक्को वार आपणयां भगतां उत्ते कर दे मेहरवानी, घर घर मंगण दी लोड़ रहे ना राईआ। क्यों कलयुग कूड़ी क्रिया दी चढ़ी तुग्यानी, दीनां मज़्हबां रही रुढ़ाईआ। सम्मत छे कहे मेरी अर्ज़ जगदीश इक मानीं, स्वार्थ मेरा पूर कराईआ। तेरयां भगतां आए किते ना हानी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग मेट अंधेरी शामी, शमां नूर जोत तेरी रुशनाईआ।

✪ २ चेत शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल (हरदेव सिँघ रुढ़का कलां) ✪

सप्तस ऋषी बैठे उत्ते तट किनारा गंगे, आपणा आसण लाईआ। ओथे आ गए तिन्न अंधे, नैणहीण दरसाईआ। काया वल्लों सूरबीर चंगे, सोभनीक सोभा पाईआ। अत्री वेख्या आपणे कन्ढे, घाट उत्ते ध्यान लगाईआ। उन्हां दे हत्थ विच फड़े डण्डे, चलण चाँईं चाँईंआ। झोली विच दिसे मंडे, टुकड़े सुक्के सोभा पाईआ। ढाई दिन दे ठंडे, अग्नी सेक ना कोए वखाईआ। नाल खाण नूं गंढे, दूजी वस्त ना कोए जणाईआ। पन्ध करके आए लम्बे, मील नौ नौ दरसाईआ। कदमां कदमां विच हंभे, ज़ोर बल ना कोए रखाईआ। सर्दी नाल कम्बे, दन्दीआं रहे वजाईआ। ओधरों आ गया इक उदासी जो वसे विच चम्बे, वासी पहाड़ी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल खिलाईआ। तिन्न अंधे बैठे तट किनारे, गंगा सोभा पाईआ। अत्री वेखे एह नज़ारे, रिषी आपणा ध्यान लगाईआ। ओने चिर नूं चम्बे वाला आ गया बैठा पैर पसारे, आपणी लई अंगड़ाईआ। इन्हां दुखड़े पए भारे, नेत्रहीण नैण ना कोए रुशनाईआ। की करन विचारे, विचर के सके ना कोए समझाईआ। दु:ख भुक्ख दे मारे, फिरदे वाहो दाहीआ। जगत शायद बणे कदे नहीं लाड़े, लाड़ी नार ना कोए प्रनाईआ। दर दर घर घर मंगदे वाड़े, ख़ाली झोली अग्गे ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। तिन्ने अंधे आपणी रख के सोटी, आसण ल्या लगाईआ। हत्थ मार के बोदी, आपणी खुशी बणाईआ। ओधरों आ गया इक जोगी, बीन रिहा सुणाईआ। ओधरों आ गया इक भोगी, जो वेसवा रिहा हंढाईआ। ओधरों आ गया इक संजोगी, जो धर्म विच समाईआ। ओधरों आ गया पंडत हत्थ लौंदा गोडीं, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। ओधर ध्यान मारया अत्री खेल वेख्या घरोगी, पर्दा पर्दे विच्चों उठाईआ। नाले हस्स के किहा प्रभ ठाकर बड़ा मौजी, वेखो मजलस रिहा बणाईआ। जेहड़ा सदा अगाध बोधी, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। दस्स नाम सलोकी, सोहला इक सुणाईआ। उस दी मंज़ल औखी, चढ़न कोए ना पाईआ। जगत विद्या विच पढ़ा के पोथी, अक्खरां विच भरमाईआ। अन्त मिले किसे ना मोखी, मुक्त जुगत गए समझाईआ। सौदा होवे किसे ना रोखी, रोकड़ वही ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। अन्ने कहिण आओ खाईए टुक्कर,

टुकड़े बाहर कढ्ढाईआ। ओधरों आ गया परोहत शुकर, सहिज नाल सुणाईआ। तुसीं किधरों आए फिरदे पूरब कि उत्तर, कि पच्छम दक्खण वंड वंडाईआ। तुसीं किस माँ दे पुत्र, जम्मण वाली कवण अख्वाईआ। किस ने चुक्कया कुच्छड़, गोदी लाड लडाईआ। ओह तिन्ने लग्गे झुकण, निउँ निउँ सीस निवाईआ। मुक्खों लग्गे थुक्कण, थू थू रहे सुणाईआ। की सानूं लग्गा पुछण, क्यों दुखड़े रिहा प्रगटाईआ। साडा अन्त अख़ीर लग्गा मुकण, लोकमात रहिण ना पाईआ। अत्री लागों लग्गा उठण, आपणी लई अंगड़ाईआ। चम्बे वाला लग्गा बुक्कण, ज़ोर नाल सुणाईआ। हुण क्यों पिच्छे लग्गा लुकण, सन्मुख वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। चम्बे वाले दा नाँ सी बलका, बाली कहि के सारे गाईआ। ओह उमर ज़ात दा हलका, वड्डी वड ना कोए वड्याईआ। उस ने अंध्याँ नाल पा ल्या तुअलका, छिन्न छिन्न जोड़ जुड़ाईआ। नेत्रहीणो प्रभ दा खेल सदा छल का, अछल अछाली कार कमाईआ। तुहाडा मेल मिलाया दल का, इक्खे लए कराईआ। कुछ सवाल लभ्भो हल्ल का, क्यों वक्त रहे गंवाईआ। नहीं भरोसा कल का, घड़ी पल होए ना कोए सहाईआ। वेखो वहिण वगदा जल का, गंगा धार दृढ़ाईआ। एथे निवास हुन्दा सी बलि का, बावन खोज खुजाईआ। लाहा लओ जन्म के फल का, फली भूत भूत कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे
४०१ खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। अंध्याँ किहा साडा इक्को अंध अंधेरा, सति सच जणाईआ। इक्को सञ्झ ४०१
२२ सवेरा, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। इक्को चुरासी गेड़ा, नित नित भवाईआ। इक्को नगर खेड़ा, सरगुण तत हंढाईआ। २२
इक्को बैठे कर के जेरा, तृष्ना तृखा ना कोए वधाईआ। आपे मालक करे नबेड़ा, हरि करता धुरदरगाहीआ। ओने चिर नूं पंडा आ गया ओहने तिन्नां दे मूँह ते मारया इक इक लफेड़ा, थप्पड़ दिता लगाईआ। तुहानूं पार लँघवे केहड़ा, गुरु गुरदेव कवण अख्वाईआ। आह वेखो मेरे गल विच जञ्जू वाला जेड़ा, जेहड़ा सब नूं रिहा बंधाईआ। तुहाडा वक्त आ गया नेड़ा, पड़दा दयां उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। तिन्ने अंधे बोले नाल ज़ोर, ज़ोर ज़ोर सुणाईआ। उच्ची उच्ची पाया शोर, शौहर इक्को लैणा मनाईआ। जिस दे हथ्थ असाडी डोर, तन्द सके ना कोए तुड़ाईआ। सानूं पंडता नहीं तेरी लोड़, तेरे अग्गे ना झोली डाहीआ। असीं उस तट गए बौहड़, जिथ्थे रविदास दा मीत मिले धुर दा माहीआ। जिस नूं कहिणा ब्राह्मण गौड़, जन्मे कोए ना माईआ। लेख मुकावे मढ़ी गोर, काया कबरी डेरा ढाहीआ। लहिणा देवे अवर का और, औरत मर्द वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म सुणाईआ। पंडत किहा मेरा नाँ नाथ जगन, जगमग जोत जगाईआ। मैं प्रभू भगती विच

मग्न, अट्ठे पहर माया विच समाईआ। वेखो मेरा साफ़ सुथरा बदन, मस्तक तिलक ललाट जगाईआ। फेर आपणा आप करे नग्न, खुशीआं विच जणाईआ। बिन मेरे तों पार मूल ना लँघण, नईया जगत विच डुलाईआ। आओ तुहानूं लावां अंगण, आपणे घर वसाईआ। फेर जजमानां घर जावां मंगण, शाह सुल्तानां खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव चुकाईआ। अंधे कहिण सानूं ना चढ़ा गुस्सा, ऐंवे रिहा सताईआ। असां की करना तेरा जुस्सा, तत्तां वेख ना खुशी मनाईआ। इक सब तों विच्चों बुढ्ढा, ओह ज़ोर नाल दृढ़ाईआ। वेख मैं लत्तों थोड़ा डुढ्ढा, हौली हौली पन्ध मुकाईआ। फेर खुशीआं दे विच कुद्दा, उछल के दिता जणाईआ। सानूं गंगा माता लैण देवे ना किसे तों भुग्गा, हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। नाले हथ्थ विच हिलाया चुग्घा, डण्डे नाल डराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। ब्राह्मण किहा अंध्या मूल हो ना हलका, क्यों बचन कुबचन सुणाईआ। मेरे कोल लोटा गंगा जल का, तेरी करे तबाहीआ। विछोड़ा होवे सल का, प्रभू नालों जुदाईआ। मेरा बचन कदे ना टल्दा, सच दयां समझाईआ। बिना पंडतां तों कदे कोई नहीं फलदा, फलीभूत ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पर्दा ओहला दए चुकाईआ। बुढ्ढे अंधे किहा सुण लै मेरा गाउणा, तैनूं दयां सुणाईआ। मैं प्रभू इक मनाउणा, दूजा नज़र कोए ना पाईआ। जिस इक्को रंग रंगाउणा, इक्को गृह वड्याईआ। इक्को सीस झुकाउणा, इक्को अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव खुल्हाईआ। बुढ्ढे किहा पंडता तूं क्यों होया हल्काया, सानूं वढ्ढ वढ्ढ खाईआ। ओने चिर नूं अत्री कोल चल के आया, दोहां रिहा सुणाईआ। क्यों ऐवें झगड़ा पाया, वाधू करो लड़ाईआ। ओधरो शब्द अगम्मी आपणा हुक्म सुणाया, धार धार विच्चों प्रगटाईआ। दोहां दा लेखा प्रभ आपणे हथ्थ विच रखाया, तट किनारा दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव चुकाईआ। सुणया शब्द अगम्मी एक, एक इक सुणाईआ। सारे मस्तक दयो टेक, मथ्थे धूढ़ लगाईआ। आपणा आप लओ वेख, अन्तर ध्यान लगाईआ। केहड़ा सच्चा देश, कवण मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा इक समझाईआ। अंधे किहा मैं प्रभू नूं आख सुनाउणा, अणसुणत दयां जणाईआ। एस पांडे नूं जन्म ज़रूर दवाउणा, मानस मानस विच्चों प्रगटाईआ। साडा संग एस नाल रखाउणा, वेखीए चाँईं चाँईंआ। एहदा लहिणा देणा मुकाउणा, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। पुरख अकाल किहा अंधे कर लै इंतज़ारी, शब्द शब्द सुणाईआ। कलयुग अन्त एस दी आउणी वारी, वारस हो के लवां

प्रगटाईआ। तेरी आसा पूरी करां संसारी, साह साह वेख वखाईआ। धुर दा हुक्म रखां बरकरारी, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। तुहाडी होवे पिता पूत दी यारी, यराना यराने विच्चों बणाईआ। रसना बोल बोल ना जावे ख़ाली, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। एहदी आयू रखां ना बाहली, बहुती अवर ना कोए वधाईआ। तूं प्रेम नाल इस नूं संभाली, तेरी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। अंधे किहा सेवा करां ज़रूर, आपणी सेव कमाईआ। पुरख अकाल किहा मैं वेखां हाज़र हज़ूर, हर अन्तर खोज खुजाईआ। पैंडा अजे दूर, कल कलेश पर्दा उठाईआ। जिस वेले दीन दुनी होई मग़रूर, हउमे गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। उस वेले आपणी जोत दा दे के नूर, ज़हूर दयां वखाईआ। तूं होणा मेरा मशकूर, मुश्किल अन्त तेरी हल्ल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक उपजाईआ। बुढ्ढे किहा की वक्त सुहञ्जणा आउणा, प्रभू दे समझाईआ। पुरख अकाल किहा तुहानूं मात जन्म दवाउणा, मातलोक मिले वड्याईआ। पूरब लेखा पूर कराउणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। एसे पंडे नूं तेरे घर विच हलकाउणा, बिरथा बचन मूल ना जाईआ। फेर आपणे नाल मिलाउणा, जोत जोत विच समाईआ। आपणे हथ्थीं बिबाण बिठाउणा, आपणे अंग टकाईआ। दरगाह साची धाम सुहाउणा, सचखण्ड रंग रंगाईआ। अन्तिम लहिणा देणा मुकाउणा, लेखा रहे ना राईआ। खुशीआं वाला वक्त खुशीआं विच लँघउणा, ग़मी दी वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंँघ विष्नूं भगवान, पंडत दा लेखा हरदेव जन्म पूर कराउणा, पूरब दा पूरब झोली पाईआ।

✪ ३ चेत शहिनशाही सम्मत ६ चीफ़ इंजीनीअर आर० ऐल० शरमा दे गृह जम्मू ✪

अवतार पैग़म्बर गुरु डण्डावत बन्दना करन सलाम, बिना सीस सीस जगदीश झुकाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझे यार वेख दीन दुनी अवाम, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चार कुण्ट दहि दिशा फोल फुलाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सच धर्म दा रिहा ना कोए इंतज़ाम, बन्दोबस्त सके ना कोए कराईआ। सृष्टी दृष्टी अन्तर निरन्तर दीन दुनी देवे ना कोए हक पैग़ाम, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे करे पढ़ाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द तेरा सिफ्तां वाला सारे जपदे नाम, आत्म परमात्म परमात्म आत्म मेल ना कोए मिलाईआ। निगह मार मानव मानस मानुख साढे तिन्न हथ्थ मुनार, काया मन्दिर धुर दा काअबा निरगुण निराकार वेख वखाईआ। सति सतिवाद दा रिहा ना कोए निशान, मन

कल्पणा होई शैतान, शरअ मज़्हब दीन दुनी करे लड़ाईआ। तेरी मंज़ल महिबूब हकीकत विच मिले ना किसे असान, असल वसल यार तेरा दरस कोए ना पाईआ। जो नाम कलमा दे के आए पैग़ाम, हरफ़ हरूफ़ अक्खर अक्खरां नाल जुड़ाईआ। सो कलयुग अन्त होए बदनाम, श्री भगवान तेरा भय ना कोए रखाईआ। सचखण्ड दवार एकँकार निरगुण धार असीं सारे होए हैरान, हैरानी अन्दर जोत नुरानी नूर नूर रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण की दस्सीए कथा कहाणी, विचरण दी लोड़ रही ना राईआ। नेत्र रोवे अठ्ठ सठ तीर्थ पाणी, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रोवे मारे धाहीआ। प्यार रिहा ना शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरानी, खाणी बाणी रंग ना कोए रंगाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म आत्म परमात्म मिले कोए ना हाणी, निरगुण निरगुण मेल ना कोए मिलाईआ। मन कल्पणा कूड़ी क्रिया जगत वासना होई शैतानी, सति सन्तोख धीरज धीर ना कोए रखाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा शाह सुल्तान करन बेईमानी, बेवा रूप वेख ख़लक ख़ुदाईआ। तेरा जल्वा उपर असमानी, किरपा कर धुर दे बानी, शाह पातशाह शहिनशाह तेरी आस रखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरे नाम दी सिफ्त करदे रहे विच जगत जहानी, जहालत विच अदालत तेरा हुक्म वखाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक करदे आए कुरबानी, माया ममता मोह विकार हँकार नाता जगत तुड़ाईआ। बौहड़ी दरोही तेरा नूर नज़र ना आए जगत जुगत नूरानी, निरगुण नेत्र लोचन नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। किरपा निधान ठाकर स्वामी भेव खुल्हा आलमे ज़ावदानी, भगत सन्त कन्त अन्त भगवन्त आपणा रंग रंगाईआ। तेरा ज़हूर मंज़ूर होवे पेशानी, अंध अज्ञान अन्दरों दे कढ्ढाईआ। रसना जेहवा सिफ्त सालाह अक्खरां विच तेरी करे कलामी, निरअक्खर धार निरगुण धार दए दृढ़ाईआ। सति धर्म दी सच धार बख्श इक निशानी, जिस विच दीन मज़्हब ज़ात पात वंड ना कोए वंडाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक सब दा दिसे फ़ानी, जिस दी शरअ उत्ते दीन दुनी हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई बैठे रूप बदलाईआ। तेरा खेल आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण लख चुरासी चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सद आपणा भेव खुल्हाईआ। अवतार पैग़म्बर कहिण किरपा कर मेहरवान महिबूब ख़ालक, ख़लक आपणी वेख वखाईआ। तूं आदि जुगादी सचखण्ड निवासी धुर दा मालक, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्को नज़री आईआ। निरगुण धार निरवैर निराकार निरँकार आपणी लगा सच अदालत, अदल इन्साफ़ आपणे हथ्थ रखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अलामत, अल्ला दा नूर ज़हूर कर इक रुशनाईआ। सदी चौधवीं अवतार पैग़म्बर गुरु जिस दी देण ज़मानत तिन्हां दा

लहिणा देणा थांउँ थाँईंआ। भगत भगवन्त तेरी आदि अन्त दी अमानत, मध आपणा संग रखाईआ। तेरा खेल सदा सही सलामत, जीवन मरन रूप ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु कहिण तेरा इक सहारा, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। कलयुग नईया भव सागर कोई करे ना पार किनारा, वञ्झ मुहाणा कम्म कोए ना आईआ। आदि निरँजण जोत उजाले निरगुण नूर कर उज्यारा, चार कुण्ट दहि दिशा अंध अंधेरा दे उठाईआ। तेरा जोत प्रकाश इक कलि कल्की होवे अवतारा, अवतरी आपणा फेरा पाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर जो दे के गया लारा, भविक्खतां विच लिख्तां विच इष्टां विच दृष्टां विच आपणा भेव खुल्हाईआ। जो लहिणा देणा पूरा कर दे विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी बैठे सीस निवाईआ। अमाम अमामा बण सिक्दारा, मुल्ला शेख़ मुसायक नबी रसूलां पैग़म्बरां लेखा दए मुकाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म दस्स सच दी धारा, धर्म धार दा मार्ग इक उपजाईआ। झगड़ा मेट दे ज़ात पात ऊच नीच शाह कंगाला, राउ रंक दवार बंक वंड ना कोए वंडाईआ। जन भगतां आपणे नाम दी दे अगम्मी माला, मन का मणका आपे दे भवाईआ। अमृत रस निझर सरोवर दे उछाला, अछल छलधारी आपणी दया कमाईआ। जो आसा रख के गया संधू बाला, बाल्मीक बटवारा नाल मिलाईआ। सप्तस ऋषी कहिण निरगुण नूर जोत उजाला, जिस दा पड़दा लाह के गया कृष्न ग्वाला, गोपाल स्वामी हो के आपणी दया कमाईआ। जिस दी कार कमाउंदा रिहा दसरथ बेटा रामा, सीता सति सुरत शब्द शब्द प्रनाईआ। जिस दा हज़रत मूसा दिसया उजाला, कोहतूर ज़हूर रुशनाईआ। जिस दा हज़रत ईसा दिता हवाला, बाप इक्को नूर इलाहीआ। जिस नूं किहा मुहम्मद ख़ुदा तुआला, तारीक अंधेरा दए गंवाईआ। जिस नूं नानक निरगुण सरगुण गाया अन्तर मार उछाला, सिफ्तां विच सालाहीआ। जिस दीआं गोबिन्द घालीआं घालां, बच्चे नीहां हेठ दबाईआ। सो खेल करे करनेहारा दीन दयाला, दयानिध आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडी सब दी घस गई अन्त मणक्यां वाली माला, तसबी मुतस्सब विच रोवे मारे धाईआ। तुध बिन त्रैगुण तोड़े ना कोए जंजाला, जागरत जोत बिन वरन गोत ना कोए रुशनाईआ। सच दवार खोल्ह सच्ची धर्मसाला, जिथ्थे क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। चरण प्रीती साची रीती इष्ट देव स्वामी मार्ग दस्स सुखाला, दर तेरा नज़री आईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ चर्चा हथ्थ ना आए भाला, रसना जेहवा बत्ती दन्द पढ़यां मिलण कोए ना पाईआ। सदी चौधवीं कलयुग कूड़ी क्रिया दाग़ मेट के काला, कलि कल्की आपणा रंग रंगाईआ। चार जुग दे शास्त्र तेरीआं सिफ्तां वालीआं देंदे रहे मिसाला, नाम कलमा ढोले गा गा शुकर मनाईआ। तेरा आदि अन्त दा हल्ल होया ना किसे कोलों

सवाला, सवाली दर बैठे सीस निवाईआ। थोड़ा थोड़ा कलि कल्की अवतार अवाम दे के गए अहिवाला, भेव अभेदा सक्या ना कोए खुल्हाईआ। तेरी जाणे ना कोए आदि जुगादि जुग चौकड़ी अवल्लड़ी चाला, चाल निराली बेमिसाली आपणे विच छुपाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण पारब्रह्म पतिपरमेशवर साडा इक्को मन्न सवाला, सवाली हो के सारे सीस निवाईआ। भाग लगा दे काया माटी तन वजूद साढे तिन्न हथ्थ खाला, ख़ालक ख़लक मख़लूक आपणा मेल मिलाईआ। शब्दी सतिगुर सतिगुर शब्द आत्म परमात्म बण दलाला, विचोला बण के ओहला अन्दरों दे चुकाईआ। इक्को नाम इक्को कलाम इक्को कलम रंग चाढ़ दे बाहला, लालन हो के आपणी दया कमाईआ। तेरा नूर ज़हूर सीस झुकाए अष्टभुज ज्वाला, शस्त्रधारी धर्म धार दरसाईआ। किरपा कर किरपन मीत पुरख अकाला, अतीत आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। अवतार पैग़म्बर कहिण गुरदेव स्वामी मेहरवान महिबूब, दर तेरे अलख जगाईआ। तेरा मन्दिर आलीशान अरूज, अर्श फ़र्श तेरी वड्याईआ। तेरी मंज़ल इक मकसूद, महिमा अगम्म अथाहीआ। किरपा कर के दीनां मज़्हबां मेट दे हदूद, हज़रत हज़ूर बेनज़ीर इक्को नज़री आईआ। जिधर तकण सन्मुख हो के मौजूद, मौजूदा प्रगट हो के आपणा हुक्म वरताईआ। गुरमुख सन्त सुहेले सूफ़ी जन भगत कर महिफ़ूज, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। कूड़ी क्रिया कलयुग गली विच्चों कर जाए कूच, चार वरन अठारां बरन रहिण कोए ना पाईआ। सच दवार दी सब नूं दे सूझ, बुद्धी तों परे आपणी दस्स पढ़ाईआ। हर हिरदे विच्चों कढ के दूज, दुतीआ भाओ रहे ना राईआ। इक्को गृह इक्को मन्दिर इक दवार कुटीआ दस्स दे कूट, नव नौ चार दा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण धर्म दा होवे जुग, जुगती शब्द नाम जणाईआ। भगत सुहेले सृष्टी दुनिया कायनात वर्ल्ड विच्चों लैणे चुग, ज़ात पात दीन मज़्हब वंड ना कोए वंडाईआ। जन भगतां अन्तर निरन्तर मन कल्पणा करनी शुध, सुदी वदी दा प्रविष्टा ना कोए मिलाईआ। कामी क्रोधी लोभी हँकारी उज्जल कर वांग निर्मल दुद्ध, सीर शीर मुख आपणे नाम चुआईआ। जो धर्म धार दी सिख्या दे के आया बुद्ध, संदेशा धर्म धर्म जणाईआ। जो तेरी अन्तर विशेष विद्या वाली ज़ाती शुद्ध, ब्रह्म ब्राह्मण इक दृढ़ाईआ। तेरा भेव रहे ना लुक, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। हरिजन आपणे दुलारे बणा सुत, सुत्तयां लै उठाईआ। दर तेरे जावण झुक, अवर सीस ना कोए निवाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सूफ़ी सन्त फ़कीर तेरे प्यारे सुत, सुत दुलारे रंग रंगाईआ। कुछ लहिणा देणा वेख की बाकी कलयुग कुझ, कोझयां कमल्यां पड़दा लाहीआ। सतिगुर शब्द कहे आप आपणी धारों उठ,

चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। मेरा प्यार अमृत घुट, बिन पीत्यां खुमारी दए चढ़ाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो मेरा भण्डारा कदे ना जाए निखुट, जुग चौकड़ी जगत वरताईआ। सदा सुहञ्जणी रखां रुत, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। भाग लगा के काया माटी बुत, बुतख़ाने करां सफ़ाईआ। लहिणा देणा जन्म कर्म दा सब दा वेखां हो के चुप, उच्ची कूक ना कदे सुणाईआ। जिस वेले वक्त जाए पुज्ज, समां समें नाल टकराईआ। फेर भेव खोल्हां गुझ, एह धुर दी बेपरवाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर गया पार अन्तिम आया कलयुग, चौकड़ी आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा खेल अगम्मा कर आप, आपणी दया कमाईआ। नित नवित खेल तमाश, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। कलयुग वेखां अंधेरी रात, चारों कुण्ट फोल फुलाईआ। झगड़ा प्या ज़ात पात, दीन मज़्हब करे लड़ाईआ। पूरब लेखा दस्सां साख्यात, सहिज नाल समझाईआ। जिथ्थे झगड़ा नहीं कोए समाज, हद्द हदूद ना वंड वंडाईआ। इक्को आत्म परमात्म काज, नाता धुर दा जोड़ जुड़ाईआ। शब्द गुरु गुरदेव मारे आवाज़, सोई सुरती सुरत जगाईआ। पढ़नी पए ना कोए नमाज़, गायत्री मन्त्र नाम सिफ्त सालाहीआ। वजाउणा ना पए कोए साज, ढोलक छैणा ना कोए खड़काईआ। राती उठ ना पैणा जाग, तीर्थ तट ना कोए भवाईआ। जिस वेले किरपा करे प्रभ आप, मेहर नज़र उठाईआ। फड़ हँस बणावे काग, दुरमति मैल धुआईआ। लेखा आपणे हथ्थ रखे वाहिद, वाहवा आपणे विच समाईआ। अगला खेल करे जायज़, जाइज़ा लै के ख़लक खुदाईआ। धुर दा हुक्म करे राइज, राजा राणा सीस निवाईआ। जन भगतां करे हमाइत, हम साजण हो के वेख वखाईआ। पूरी करे शरअ शरीअत विच शरायत, शरअ विच असूल हुक्म हुक्म विच बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे सोहणा वक्त सुहावा, वधी इक वधाईआ। भाग लग्गा थावां, थनंतर सोभा पाईआ। जिथ्थे रहिंदा सी इक बावा, मछन्दर चेला आपणा डेरा लाईआ। इकासी दिन तपाउदा रिहा एथे आवा, आवागवण दा ध्यान रखाईआ। बाहवां बल रखे सावां, हथ्थ त्रिशूल उत्ते रखाईआ। रोज़ प्यार करे नाल कावां, टुकड़े मंग के आप खवाईआ। कदे हस्स के कहे प्रभू प्यार करे वांग पुत्रां मावां, आप आपणी गोद उठाईआ। इक दिन हौके दे विच भरया हावा, हाए कर दिता सुणाईआ। मैं दरस किस बिध पावां, मिले मेल धुर दा माहीआ। फेर ध्यान धरया जे काहन मिल जाए चारदा गावां, बंसरी धुंन सुणाईआ। फेर उच्चीआं करके बाहवां, हथ्थ जोड़ के सीस निवाईआ। प्रभू मैं तैनूं किथों पावां, लम्भयां हथ्थ किछ ना आईआ। केहड़ी कूटे जावां, भज्जां वाहो दाहीआ। केहड़े वेखां ग्रावां, गली कूचे राह तकाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल वखाईआ। शब्द अगम्मी दिता फ़रमान, सच संदेश जणाईआ। हुण छडणा पए जहान, तन वजूद तजाईआ। फेर किरपा होवे महान, महिमा अगम्म अथाहीआ। किरपा करे श्री भगवान, मेहर नज़र उठाईआ। जन्म लैणा पए विच एस अस्थान, इन्सान इन्सान रूप बदलाईआ। प्रभू देवे आत्म जोती ज्ञान, अज्ञान अंधेर मिटाईआ। उच्ची कुल होवे महान, ब्राह्मण रंग रंगाईआ। शरमा एसे करके होया परवान, पूरब जन्म दा लहिणा झोली पाईआ। बैरन आया जो बण प्रधान, पिछला साथी दए समझाईआ। एह विद्या विच हुन्दा सी बड़ा महान, अक्ल बुद्धी नाल चतुराईआ। मज़ाक विच हुन्दा सी शैतान, अक्खर उँगला उत्ते लिखाईआ। इस ने मंगगया इक दान, प्रभू अग्गे झोली डाहीआ। मैं वेखणा तेरा निशान, की जुग जुग निशाने रिहा बदलाईआ। शब्द गुरु कहे फिर आउणा पए जहान, सरगुण रूप बदलाईआ। की करें पहचान, की तेरे विच वड्याईआ। इस निउँ के सीस निवा कीती प्रणाम, बन्दना बन्दना विच जणाईआ। ब्राह्मण घर एस दा जन्म हुन्दा सी दास भगवान, लेखा ईसा तों बाद समझाईआ। पिछला लहिणा मेला मिल्या आण, पड़दा अवर रिहा ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पारब्रह्म पतिपरमशवर आपणा रंग रंगाईआ।

✪ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ६ चेला सिँघ दे गृह जम्मू ✪

काल कहे सुण कलयुग काती, कत्लगाह दे समझाईआ। मैं वेखां जगत अंधेरी राती, चारों कुण्ट फोल फुलाईआ। तेरा धर्म दा बणां साथी, सगला संग निभाईआ। जेहड़ी चार जुग गाथी, पूरब पूरी देणी कराईआ। चुरासी करे कोई ना राखी, गल फाँसी देणी लटकाईआ। धर्म दी रहे कोई ना दासी, सेवा सच ना कोए कमाईआ। मण्डल पवे किसे ना रासी, गोपी काहन मुख भवाईआ। सब दा लहिणा वेखणा बाकी, पड़दा पड़दे विच्चों चुकाईआ। झगड़ा वेखणा तन ख़ाकी, वजूद माटी करे लड़ाईआ। मनुआ मन करे आकी, अकबर लेखा देणा वखाईआ। मैनूं कथा सुणा साची, सच सच समझाईआ। किस बिध प्रकाश होवे प्रभाती, नूर चन्द रुशनाईआ। की संदेशा दिता काहन कृष्न प्रभासी, बधक बध कराईआ। की राधा रखी आसी, आपणी मंग मंगाईआ। की राम मारी काती, सीता संग वड्याईआ। की रावण आपणी आसा आखी, अन्तर गया दृढ़ाईआ। सो खेल वेखणा जगत तमाशी, दीन दुनी पड़दा देणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। काल कहे कलयुग प्रेम दा दे इशारा, ऐशो इशर्त वेख

जगत लोकाईआ। कूड़ क्रिया मार नाअरा, बिन रसना जेहवा गाईआ। मैं करां खेल विच संसारा, दहि दिशा फोल फुलाईआ। हर हिरदे पावां सारा, महासार्थी हो के भज्जां चाँईं चाँईंआ। मानव मानव आए हारा, सिर सके ना कोए उठाईआ। तेरा होवे अन्त किनारा, पाँधी पन्ध रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। कलयुग कहे ओह काल हमारे सज्जण, कल की दयां समझाईआ। किसे दा होण ना देवे मजन, धूढ़ी ख़ाक ना कोए रमाईआ। मानव ज़ाती प्रभ नूं लभ्भण, सन्मुख दरस ना कोए कराईआ। चारों कुण्ट लगाई अग्न, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। सुरती लग्गे ना विच भजन, बन्दगी बन्दयां विच्चों कढ्ढाईआ। बिन ओढण सीस फिरदे नग्न, पर्दा सके ना कोए टिकाईआ। काली धार होया बदन, बदी दा बदला ना कोए चुकाईआ। सवाधान हो के वेख विच अदन, निगाह नैण नैण उठाईआ। कल कल्पणा लग्गी वगण, अंध अंधेर वहाईआ। कलयुग कहे काल दोहां दा इक्को दवार पैणा सगण, नाता धर्म जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति प्रेम दी चाढ़ रंगण, रंगत विच आपणा रंग रंगाईआ।

४०६ २२

✪ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ६ फुम्मण सिँघ दे गृह जम्मू ✪

काल कहे कलयुग वेखीए टाईम वक्त, गति व्यक्ति खोज खुजाईआ। की खेल करना एह जगत, जुगती जगह जगह बणाईआ। किस बिध सब दी पूरी करनी शर्त, जो गुर अवतार पैग़म्बर बन्धन पाईआ। की संदेशा दिता राम विछोड़े विच भरत, भारत विच दुहाईआ। निगह मार के उपर अर्श, अर्शी प्रीतम वेख वखाईआ। जिस वेले लेखा रिहा ना स्वर्ग नरक, दीन दुनी होई हल्काईआ। नेत्र रोवे धरनी धरत, धवल दए दुहाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां पूरी करनी अर्ज़, प्रभ आपणा पड़दा लाहीआ। जोती जाता आवे उत्ते फ़र्श, फैसला हक सुणाईआ। लेखा वेखां सम्मत शहिनशाही आपणे बरस, बरसी सब दी फोल फुलाईआ। जन भगतां उपर करके तरस, रहमत आपणा नाम वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। काल कहे कलयुग की पकाउणा मता, मति बुध की चतुराईआ। की तैनूं अगला कुछ पता, पतिपरमेश्वर की कार कमाईआ। मैनूं भेव खोल्ह दे रता, संसा अन्दर रहे ना राईआ। कलयुग दोवें जोड़ के हथ्थां, नेत्र मीट ध्यान लगाईआ। फेर टेक के मथ्था, पल्लू गल विच रिहा वखाईआ। नीर वहा के अक्खां, हन्झूआं हार बणाईआ। एथे अवतार पैग़म्बर गुरु हो गए लखां, नित नित आपणा फेरा पाईआ। अन्त सड़ गए विच कक्खां,

तन वजूद ना कोए रखाईआ। कौल इकरार कर गए पक्का, वाअदयां विच सुणाईआ। इशारा दे के गए मदीना मक्का, काअब्यां विच दुहाईआ। आसा रख के गए बूरा कक्का, लोचन अक्ख खुल्हाईआ। दस्स के गए चेतन सत्ता, सति सतिवादी बेपरवाहीआ। जिस नूं लभ्भदे कोटन लखां, खोज्जयां हथ्थ किसे ना आईआ। ओह साहिब पुरख समरथा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जिस चलाए चौदां हट्टा, तबक सबक पढ़ाईआ। वसे घट घटां, चुरासी विच समाईआ। वेखे तीर्थ तट्टां, खोजे थांउँ थाँईंआ। सो इक सुणाए टप्पा, हँ ब्रह्म करे पढ़ाईआ। उस ने मनसूख करना सब दा पटा, पटने वाला नाल मिलाईआ। कीमत रहे ना किसे टका, कौडी कौडी हट्ट विकाईआ। फेर धरनी उत्ते उडणा घट्टा, मिट्टी ख़ाक दए वखाईआ। शब्द शब्द दी मार के सट्टा, कातिल मक्तूल दा लेखा दए मुकाईआ। उस दा हुक्म होणा सच्चा, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। काल किहा कलयुग धुर दा बचन होवे ना कच्चा, कच्चा तन्द ना कोए वखाईआ। कलयुग अग्गों किहा अच्छा, एह उसे दी बेपरवाहीआ। जिन खेल खिलाया मच्छां कच्छां, जल धारा विच रहाईआ। जिस जोड़ जुड़ाया आत्म परमात्म परमात्म आत्म नता, नाता इक वखाईआ। सो लेखा जाणे अड्ठ तत्तां, तत्व तत खोज खुजाईआ। बिन उस दी किरपा कोए ना होवे मता, सलाह सलाह ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हर हिरदे अन्दर वसा, वसणहार इक अख्वाईआ।

५ चेत शहिनशाही सम्मत ६ तेज भान दे गृह सई खुरद जम्मू

कलयुग कहे मेरा समां बीत्या बहुता, बहुती गिणती विच जणाईआ। काल तूं क्यों रिहा सोता, सुत्ता ना कोए जगाईआ। जगत जहान वेख रोता, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। सच धर्म दी आवे किसे ना सोचा, दीन दुनी हल्काईआ। निज नेत्र खुल्ल्हे किसे ना लोचा, लोचन अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। कूड़ी क्रिया विच मारया गोता, पार किनार ना कोए वखाईआ। प्रभ मिले ना मीत धुर दा खौंता, ख़सम कसम नाल ना कोए हंढाईआ। अन्तर सब दा होया औंता, दुहागण रूप ख़लक खुदाईआ। किसे साफ़ ना कीता काया चौंका, ब्राह्मण ब्रह्म ना कोए वड्याईआ। उठ वेख गोबिन्द दा पूरा होया ढईआ वाला ढौंका, सदी चौधवीं दए गवाहीआ। दीन दुनी खेल वेखणा नाल शौंका, चारों कुण्ट फोल फुलाईआ। सोहणा सुहञ्जणा बणे मौका, वेला वक्त नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। काल कहे मैं कलयुग जागा, आलस निंद्रा रिहा ना राईआ। मैं हुक्म मन्ना कन्त सुहागा, जो मालक धुरदरगाहीआ।

सृष्टी दृष्टी अन्दर वेखां दुरमति दाग़ा, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। कवण हँस कवण कागा, कवण क्रिया कूड़ विच हल्काईआ। कवण मेला सीता राम कृष्न राधा, सुरती शब्द कवण समाईआ। कवण सुणे अगम्मी नादा, धुन आत्मक राग शनवाईआ। कवण खेल साचे सन्तन साधा, सति सति विच वड्याईआ। तक्कया प्रभ दा हुक्म अगम्मी डाहढा, डण्डावत सब दी रिहा बदलाईआ। जिस नूं कहिण अल्ला वाहिगुरु राम कृष्न ओम गॉडा, सो गाईड इक्को इक उपजाईआ। जिस दा चम्म मास ना कोए हाडा, तत्व तत ना कोए रखाईआ। नेत्र नैण किसे ना लाधा, जगत अक्खीआं वेखण कोए ना पाईआ। जिस ने सृष्ट सबाई साजण साजा, सज्जण बण बेपरवाहीआ। जिस कलयुग विच सतिजुग करना वाधा, वदी सुदी दा पन्ध मुकाईआ। सच मन्दिर सुहाउणा महिराबा, महिबूब इक्को नज़री आईआ। उस नूं भय भउ काहदा, जो सब नूं रिहा डराईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां पूरा करे वायदा, मुवायदा पिछला वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। कलयुग कहे काल की कुझ करना, की तेरी चतुराईआ। काल किहा मैं पहलों प्रभ अबिनाशी सीस झुकाउणा चरणां, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। फेर हुक्मी घोड़े चढ़ना, भज्जां चाँई चाँईंआ। पुष्कर दीप वड़ना, आपणा कदम टिकाईआ। निरगुण हो के लड़ना, सरगुण पए दुहाईआ। मेरे अग्गे किसे ना अड़ना, सिर सके ना कोए
४११ उठाईआ। प्रभ दा भाणा सब नूं पए जरना, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। मानस जन्म पए हरना, चुरासी विच दुहाईआ। ४११
२२ कोटां विच्चों गुरमुख विरले तरना, जिस प्रभ देवे माण वड्याईआ। बाकी सब ने धर्म राए दी फाँसी चढ़ना, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा खेल आपे करना, करनी दा करता इक हुक्म वरताईआ। २२

✪ ५ चेत शहिनशाही सम्मत ६ शिव सिँघ दे गृह जम्मू ✪

कलयुग कहे की काल तेरा इरादा, सति सच समझाईआ। सब दा वेख पूरा पूरब वायदा, वाहिद हुक्म की सुणाईआ। जिस ने दीन मज़्हब कीते अलाहिदा, मानव मानव वंड वंडाईआ। ओह किस बिध सृष्टी दा लए जाइज़ा, जाइज़ नजाइज़ वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। काल कहे कलयुग ओह देवे शब्द इशारा, शरअ तों बाहर समझाईआ। योद्धा सूरबीर बण बलकारा, बलधारी रिहा दृढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम होवे किनारा, कायनात वेख वखाईआ। जो गुर अवतार पैग़म्बरां दिता लारा, भविक्खतां विच समझाईआ। उन्हां दा पूरा करे

खसारा, लेखा वेखे थांउँ थाँईंआ। दीन मज़्हब दा तके दाइरा, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। कुछ संदेशा देवे विच काहरा, कहर वरते विच लोकाईआ। कलयुग सुण लै हो ना जाईं बैहरा, शब्दी धुन शनवाईआ। परवरदिगार होणा ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। कलयुग कहे काल की तेरी अन्त दलील, दिलबर प्यारे दे जणाईआ। काल कहे मैं वेखी जगत दलील, हर घट अन्दर वेख वखाईआ। सच दवारे करे ना कोए अपील, अपरम्पर स्वामी मिलण कोए ना पाईआ। जो संदेशा दे के गया अर्जन भील, कृष्न विचोला विच रखाईआ। इशारा कीता बसन बनवारी नील, नील कंठ की की कार कमाईआ। जिस सारी सृष्टी करनी ज़लील, दलील विच ना कोए समझाईआ। मन ममता वेखे कुचील, पंज तत फोल फुलाईआ। धर्म दी धार ना रहे सुशील, सोभावन्त ना कोए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। काल कहे कलयुग तूं मचा दे जगत दंगा, दंगल वेख वखाईआ। फेर हुक्म देवे सूरा सरबंगा, साहिब सुल्तान दया कमाईआ। मैं वेखां तेरा अन्तिम कन्ढा, कन्ढी बैठा डेरा लाईआ। मेरा लेखा समझे कोई ना बन्दा, बन्दगी वाले रहे कुरलाईआ। धर्म विच रहिण दिता नहीं कोई चंगा, सति विच ना कोए समाईआ। भावें कोई वस्त्र पावे भावें फिरे नन्गा, धूढ़ी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। पवित्र जल रहिण नहीं दिता गंगा, गोदावरी जमना सुरस्ती मिल के मारे धाहीआ। झगड़ा पा के धोती बोदी तहिमत जञ्जू तम्बा, चार कुण्ट दिता लड़ाईआ। कलयुग खेल वेख के जगत जिज्ञासू कम्बा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। दूर दुराडी वेखे अष्टभुज जिस नूं कहिंदे देवा अम्बा, अम्बड़ी कहि के सारे गाईआ। भय विच सारे तकदे पुरख अकाल दीन दयाल ल्यादां अगम्मी डण्डा, डण्डावत सब नूं दए समझाईआ। जेहड़ा प्रगट कीता विच्चों छम्बा, धार धार विच्चों उपजाईआ। उस ने खेल करना प्रभू संधा, सँध्या सरघी इक्को रंग वखाईआ। कलयुग जीव रहिण नहीं देणा कोए गंदा, जो कूड़ी क्रिया विच हल्काईआ। लहिणा देणा पूरा करना जो गोबिन्द ने सरसे विच नौ वार धोता कंघा, नौ खण्ड पृथ्मी दा लेखा गया जणाईआ। जो इशारा कीता मुहम्मद ने तारा चन्दा, चन्द सितार देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत सुहेला धुर दा संगा, सगला संग इक अख्वाईआ।

✪ ५ चेत शहिनशाही सम्मत ६ लक्ष्मण सिंघ दे गृह सई खुर्द जम्मू ✪

कलयुग कहे मैं अंधेरा कीता विच रवि शशा, सहँसर नाउँ प्रभ दे दिते भुलाईआ। काल कहे मैं वेख खिड़ खिड़ हस्सा, भरमे भुल्ली जगत कूड़ लोकाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा उठ उठ नस्सा, भज्जां वाहो दाहीआ। जीवां जंतां साधां सन्तां तकां अक्खां, कवण प्रभ दा दर्शन पाईआ। जां वेख्या सच प्रेम कोए ना रत्ता, रत्न अमोलक हीरा रूप ना कोए दरसाईआ। मन हँकार विच जीव जंत तपा, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। इक दूजे दी करन हत्ता, हत्या विच सर्ब कुरलाईआ। वासना विच वधी मनमता, गुरमति सारे गए भुलाईआ। सच धर्म दा रिहा कोए ना हट्टा, वस्त नाम ना कोए विकाईआ। कलयुग कहे कूड़ी क्रिया छाणे घट्टा, धरनी धरत धवल दुहाईआ। माण रिहा ना तीर्थ तट्टां, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रही कुरलाईआ। साबत रहीआं ना किसे दीआं लटां, जटा जूट रोवण मारन धाहीआ। गुर अवतार पैग़म्बरां पूरा होया पटा, पटनेवाला वेख वखाईआ। अन्तिम सब दी पिठ ते लग्गा ठप्पा, कालख दाग़ ना कोए धुआईआ। सृष्टी ज़ीरो नाल ज़ीरो हो गई बटा, हिन्दसा अंकड़ा वंड ना कोए वंडाईआ। चार जुग दे शास्त्रां कीमत रही ना टका, दर दर हट्टो हट्ट विकाईआ। प्रभ दा खेल बाज़ीगर नटा, स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। कलयुग अन्त चीथड़ पुराणा सब दा फटा, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। सब दा खेड़ा होया भट्ठा, वज्जे नाम ना सच वधाईआ। लहिणा मुक्कया अट्ठ सट्ठा, मन्दिर मठ ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। काल कहे मैं वेखी कलयुग अंधेरी रैण, भिन्नड़ी रंग ना कोए रंगाईआ। झगड़ा प्या मात पित भाई भैण, मुहब्बत विच ना कोए समाईआ। नाता तुट्टया सज्जण सैण, सगला संग ना कोए निभाईआ। कूड़ी क्रिया वगे वहिण, किनारा पार ना कोए दिसाईआ। नुक्ता मेटे कोए ना ग़ैन, ऐन रूप ना कोए दरसाईआ। सृष्टी प्रभ तों होई तरफ़ैन, आत्म परमात्म मेल ना कोए कराईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द सिफ्ती ढोले सारे कहिण, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। लख चुरासी मुके ना किसे दा लहिणा देण, आवण जाण पन्ध ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। कलयुग कहे वेखो खेल जगत, जगजीवण दाता रिहा वखाईआ। सति दी रही कोई ना शक्त, शख्सीअत विच ना कोए समाईआ। बिना प्रभू तों मेला मिले ना किसे भगत, भगवान मिलण कोए ना पाईआ। ना कोए मंज़ल चढ़े रुहानी अर्श, फ़र्श पन्ध ना कोए चुकाईआ। चारों कुण्ट अंधेरा गर्द, नूरी चन्द ना कोए रुशनाईआ। ग़रीब निमाणयां वंडे कोए ना दर्द, कोझयां कमल्यां गोद ना कोए उठाईआ। एह खेल प्रभू असचरज, बुद्धी अक्ल समझ सके ना राईआ। योद्धा सूरबीर बण

मर्दाना मर्द, मदद अवर ना कोए रखाईआ। कलयुग कूड़ कल्पना पा तशदद्, तसबी माला मणके दिते ठकराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म दवारा इक समझाईआ। काल कहे मैं होया काहला, जल्दी जल्दी पन्ध मुकाईआ। कलयुग तेरा समां रहे ना बाहला, उनती विच ना कोए चतुराईआ। प्रभ ने हुक्म दिता सुखाला, सच संदेसा इक दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं रहे ना कोए दलाला, विचोला रूप ना कोए जणाईआ। दीन दुनी दी बदल देणी चाला, हुक्म संदेसा इक मनाईआ। जिस दा अवतार पैग़म्बर गुर दे के गए अहिवाला, सिफ्तां नाल सालाहीआ। ओह खेल करे निराला, निराकार रूप धराईआ। कुछ लेखा वेखे पार हिमाला, पर्बत उठ उठ वेखण थांओं थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वसणहार सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, धर्म दवार एकँकार इक इकल्ला आपणा हुक्म वरताईआ।

६ चेत शहिनशाही सम्मत ६ अंग्रेज़ सिंघ दे गृह जम्मू

काल कहे चित्रगुप्त लेखा रिहा कर, दिवस रैण हिसाब लगाईआ। चौंती सौ खरब वेखे घर, दीन दुनी फोल फुलाईआ। जिन्हां विच्चों इक लख ग्यारां हज़ार प्रभ दा फड़न लड़, दूसर संग ना कोए रखाईआ। झगड़ा तके सीस धड़, साढे तिन्न हथ्थ पड़दा लाहीआ। फेर निगाह हेठां उपर कर, ज़िमीं असमानां खोज खुजाईआ। की संदेसा देवे हरि, हरि शब्दी शब्द सुणाईआ। जिधर तके आवे डर, भय भउ जगत दुखदाईआ। मुंह दे भार डिग्गा दड़, सुरत रही ना राईआ। की घाड़न रिहा घड़, प्रभ दाता बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं क्यामत वहे हढ़, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। झगड़ा मुके चोटी जड़, चेतन आपणा पड़दा लाहीआ। सृष्ट सबाई रही सड़, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। पुरख अबिनाशी खेल कलयुग कपट छल, अछल छलधारी आपणा हुक्म वरताईआ। लेखा वेखे जल थल, महीअल खोजे थांओं थाँईंआ। दीन दुनी रही हल्ल, कदम कदम ना कोए टिकाईआ। पता नहीं हुक्म मिले किस घड़ी किस पल, पुरख अबिनाशी शब्द संदेस सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दा मालक दया कमाईआ।

४१४
२२

✪ ६ चेत शहिनशाही सम्मत ६ वकील सिँघ दे गृह सई कैंप जम्मू ✪

चित्रगुप्त लेखा करे छेती छेती, दिवस रैण सेव कमाईआ। मानव ज़ाती वेखे बदी नेकी, निक्के वडे खोज खुजाईआ। शाह सुल्तान वेखे सेठी, ग़रीब निमाणे फोल फुलाईआ। किस रखी प्रभ दी टेकी, टिक्के मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। कवण आत्मा सच सिंघासण लेटी, सुख आसण डेरा लाईआ। कवण धर्म धार दी बणी बेटी, पिता पुरख अकाल मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किसे दी रहिण ना देवे शेख़ी, शेख़ मुल्ला मुसायक पंडत वेखे थांओं थाँईंआ।

✪ ६ चेत शहिनशाही सम्मत ६ इन्द्रो देवी दे गृह सई कैंप जम्मू ✪

चित्रगुप्त कहे मैं करां की हिसाब, लेखा लिख लिख जणाईआ। नौ करोड़ नड़िनवें सफ़े दी मेरी भर गई किताब, अंक अंक दिते बदलाईआ। अग्गे प्रभ दे कोलों होणा लाजवाब, बेनन्ती विच सीस निवाईआ। प्रभू कलयुग जीव तेरा दिसे ना कोए मुहताज, लोड़वंद ना कोए दरसाईआ। सब दा अन्दरों विगड़या मज़ाज, मज़ाक विच हल्काईआ। अगला हुक्म दे जनाब, सच साहिब मिले गुसाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। चित्रगुप्त कहे मैं वेख होया हैराना, हैरत विच जणाईआ। जिधर तकां तेरा तेरे नालों बेगाना, साचा संग ना कोए वखाईआ। पैमाइश दा रिहा ना कोए पैमाना, नाप पाप ना कोए कराईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया घर घर भरया ख़ाना, ख़ालस रूप ना कोए दरसाईआ। मानव रूप होए हैवाना, इन्सान आपणा आप बदलाईआ। कोटां विच्चों थोड़े जन जेहड़े तेरा गाउंदे गाणा, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। सच दस्स मेरे सुल्ताना, साहिब बेपरवाहीआ। किस बिध मिटे कूड़ निशाना, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान शाह सुल्ताना, सति दा आपणा खेल वखाईआ।

✪ ६ चेत शहिनशाही सम्मत ६ रोशन लाल दे गृह सई खुरद जम्मू ✪

चित्रगुप्त कहे प्रभ तेरी बेपरवाही, बेपरवाही विच समाईआ। कलयुग जीवां लेखा लिखे कोए ना शाही, काग़ज़ चले ना कोए चतुराईआ। पाँधी भुल्ले तेरे राही, साची मंज़ल चढ़न कोए ना पाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु देण गवाही, शहादत

शब्द गुरुदेव भुगताईआ। कूड़ी क्रिया पार करे कोए ना खाई, ख़ालस रूप ना कोए दरसाईआ। जिधर तकां हाल दुहाई, बौहड़ी बौहड़ी विच कुरलाईआ। जो नानक लेखा लिख्या हथेली उत्ते कलाई, कलमा मुहम्मद वाला बदलाईआ। गोबिन्द बूटा पुट्ट के काही, ढाई उँगलां जड़ हेठों वक्ख कराईआ। तेरा हुक्म हक ख़ुदाई, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सदी चौधवीं नेड़े आई, अन्त लेखा दए मुकाईआ। जहन्नम विच दे सज़ाई, नर्कां रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, हरि सज्जण इक अख्वाईआ।

✪ ६ चेत शहिनशाही सम्मत ६ देवा सिँघ दे गृह जम्मू ✪

चित्रगुप्त कहे मैं वेखां वक्त अख़ीरी, बिन अक्खां ध्यान लगाईआ। मैनूं नज़र आए ओह ज़ंजीरी, जो दो सत्त वंड वंडाईआ। जिस ने सर्ब सृष्टी करनी दिलगीरी, धीरज धीर ना कोए धराईआ। किसे दी रहिणी नहीं मीरी पीरी, पीरां दा पीर हुक्म वरताईआ। झगड़ा मुके शाह हकीरी, शहिनशाह आपणी कार भुगताईआ। नेत्र सब दे वहिणा नीरी, नैण नूर ना कोए चमकाईआ। लेखा वेखणा प्रहलाद वाली कीड़ी, कलयुग अग्नी थक्कय तपश दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पिछले लेखे उत्ते मार लकीरी, लाईन अगली दे वखाईआ।

✪ ६ चेत शहिनशाही सम्मत ६ कृपाल सिँघ दे गृह जम्मू ✪

चित्रगुप्त कहे मैं वेखां अग्गा पिछा, पच्छम दक्खण ध्यान लगाईआ। किस दी करे प्रभ रिच्छा, मेहर नज़र उठाईआ। किस दी पूरी होवे इच्छा, निरइच्छत होए सहाईआ। किस दा लेख धुर दा लिखा, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। किस प्रभू नूं दिती पिट्ठा, सन्मुख हो ना दर्शन पाईआ। किस दा लहिणा देणा चिट्ठा, दुरमति मैल ना कोए रखाईआ। किस ने इष्ट रखाया पथ्थर इट्टा, तत्तां सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, की आपणा पड़दा लाहीआ। चित्रगुप्त कहे मैं फोला वरका वरका, चुरासी चुरासी फोल फुलाईआ। कोई भगत मिले प्रभू घर का, जो घर बैठा दर्शन पाईआ। इश्नान करे साचे सर का, सरोवर गुरचरण मिले सरनाईआ। दरवाज़ा खोल्ले आपणे दर का, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। झगड़ा मुकाए जोरू ज़र का, रंग इक्को वेख वखाईआ। नाता जोड़ नरायण नर

का, नरक स्वर्ग दा डेरा ढाहीआ। लेखा रखे ना मज़्हब शरीअत शर का, ज़ाती वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को अक्खर होवे पढ़दा, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। चित्रगुप्त कहे मैं उस दी सरनी पड़दा, निउँ निउँ लागां पाईंआ। बाकी दा लेखा कलम अग्गे धरदा, धरनी धरत धवल सके ना कोए छुडाईआ। एह इशारा अगम्मी हरि दा, हुक्म संदेसयां विच सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत सुहेले आपे वरदा, वरयाम हो के आपणी कल वरताईआ।

४१७

२२

४१७

२२

✪ ६ चेत शहिनशाही सम्मत ६ गुरमुख सिँघ दे गृह सई जम्मू ✪

चित्रगुप्त कहे मैं तक्कया लख चुरासी, जूनी मानव खोज खुजाईआ। अवतार जिन्हां दी पाउंदे रासी, धरनी रंग रंगाईआ। जिस धार विच ईसा चढ़या फाँसी, फ़ैसला गया सुणाईआ। मुहम्मद महिबूब कथा आखी, अलिफ़ ये जोड़ जुड़ाईआ। नानक गोबिन्द दिती पाती, संदेशयां विच सुणाईआ। कलयुग होणी अंधेरी राती, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। धर्म दी सुणे कोए ना बाती, कूड़ी क्रिया जगत हल्काईआ। उस वेले खेल करे पुरख अबिनाशी, अबिनाशी करता आपणा हुक्म वरताईआ। भगत सुहेले बणा के साथी, सगला संग रखाईआ। चित्रगुप्त अणगिणत होणे पापी, तेरी कलम दए दुहाईआ। सो वक्त पहुँचया साची, सच संदेशा इक सुणाईआ। झगड़ा मुक्कया करोड़ लाखी, अरबां विच शनवाईआ। दो अरब कूड़ कुड़यारां आबादी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हर घट हिरदे अन्दर बण के वासी, वेखणहारा थांउँ थाँईंआ।

✪ ६ चेत शहिनशाही सम्मत ६ कर्म सिँघ दे गृह सई जम्मू ✪

काल कहे चित्रगुप्त कुछ लेखा दस्स, अन्त की हिसाब लगाईआ। की लहिणा जीव जंत, जगत दे समझाईआ। की लेखा साध सन्त, भगत भगवान की वड्याईआ। की लहिणा हउमे हंगत, हँकार विकार देणा समझाईआ। की लेखा बहिशत जन्नत, स्वर्ग की वखाईआ। की लहिणा लैणा निन्दक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। काल कहे चित्रगुप्त कद मेरी आवे वारी, मैनूं दे जणाईआ। क्यों तूं सब तों वड्डा लिखारी, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। कदे ना करें ग़द्दारी, मनमुख हो ना मुख भवाईआ। सदा प्रभ दी मन्ने सिक्दारी, गुर अवतार

पैग़म्बर तेरी धार सक्या ना कोए बदलाईआ। मेरी तेरे नाल यारी, प्रीती सच निभाईआ। मैं सब नूं करां ख्वारी, बचया रहिण कोए ना पाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कीते छारी, तन ख़ाक विच मिलाईआ। मेरे अग्गे किसे दा ज़ोर ना चले मूंड मुंडाए मुच्छ दाढ़ी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कल आपणी कार वरताईआ।

६ चेत शहिनशाही सम्मत ६ पूरन सिँघ दे गृह सई जम्मू

चित्रगुप्त कहे कलयुग क्यों प्या चारों कुण्ट शोर, शौहर नज़र किसे ना आईआ। कलयुग किहा तक लै नाल ग़ौर, गहरी अक्ख खुल्हाईआ। सारी दुनिया हो गई होर, होर दा होर रूप बदलाईआ। प्रभ दर तों हो गई चोर, सन्मुख बैठ ना दर्शन पाईआ। फिरन अंधेरे घोर, भज्जण वाहो दाहीआ। जिन्हां दी प्रभ साचे नूं लोड़, ओह लुड़ींदे साजन लए मिलाईआ। ओन्हां उत्ते ला के आपणे नाम दी मोहर, मोहरी सब दे दिते वखाईआ। धुर दा हुक्म अन्दर तोर, तुरत आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग जन्म दे विछड़े जोड़, जोड़ी भगत भगवान आप बणाईआ।

६ चेत शहिनशाही सम्मत ६ राजा सिँघ दे गृह सई जम्मू

चित्रगुप्त कहे कलयुग मैं वेखां हो चुकन्ना, कन्ना गोबिन्द वाला ध्यान लगाईआ। पुरख अकाल दा हुक्म मन्ना, जो संदेशा धुरदरगाहीआ। जिस दा इक्को नूर अगम्मी चन्ना, सरगुण धार करे रुशनाईआ। सिफ्त भरी चौदां सौ तीस पन्ना, अंक अंक नाल वखाईआ। सिफ्त वड्याई दिती धन्ना, कोझे गल लगाईआ। भगतां रहिण ना देवे अन्ना, निज लोयण करे रुशनाईआ। जिन्हां नूं आपणी धारों जणा, बणे धन्न जणेंदी माईआ। ओन्हां तारे विच्चों छप्पर छन्नां, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। ज़ात पात दा मेट के बन्ना, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भाग लगाए हरिजन माटी तनां, अग्नी तत तत बुझाईआ।

✪ ६ चेत शहिनशाही सम्मत ६ भगवान सिँघ दे गृह सई जम्मू ✪

कलयुग कहे काल प्यारे, प्रेम वड वड्याईआ। ओह वेख गोबिन्द दे दुलारे, जो शब्द रहे सुणाईआ। नींह उखड़े जग सारे, इट्ट पथ्थर ना कोए चतुराईआ। फिरे दरोही विच जंगल जूह उजाड़े, महल्ल अटल ना कोए वखाईआ। मिन्नतां विच सारे कढण हाढ़े, निउँ निउँ सीस निवाईआ। जगत कूड़ी क्रिया लग्गे अखाड़े, गृह गृह पए दुहाईआ। लहिणा तक्कण पंचम धाड़े, धड़ा काम क्रोध लोभ मोह हँकार ल्या बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति दी मंज़ल आप उसारे, चोटी जड़ रंग रंगाईआ।

✪ ६ चेत शहिनशाही सम्मत ६ प्रकाश सिँघ दे गृह सई कैंप जम्मू ✪

काल कहे मैं पूरब पूरब दा भुक्खा, भुक्खे भुक्ख ना कोए गंवाईआ। कृष्न अठारां कशूणीआं मैनूं टुक्कर दे के रुक्खा, मेरी आसा ना तृप्त कराईआ। मैं सुक्खणा रिहा सुक्खा, प्रभ अग्गे वास्ता पाईआ। मैनूं बणा आपणा लाडला पुत्ता, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। जगत जहान कर उग्घा, देहु माण वड्याईआ। जेहड़ा तेरे नाम दा लैंदे भुग्गा, ओनां दाढ़ां हेठ दबाईआ।
४१६ ४१६
२२ २२
जेहड़ा सीस तैनूं ना झुका, उस दा लेखा दयां मुकाईआ। जिस ने गाया नहीं मुखा, उस नूं ख़ाक विच मिलाईआ। मैं ताअ देवां मुच्छां, चारों कुण्ट लवां अंगड़ाईआ। जगत विकारीआं फड़ फड़ पुछां, देवां अन्त सज़ाईआ। जेहड़ा तेरे दर होवे झुका, उस नूं झुक के आपणा सीस देवां निवाईआ। मेहरवान महिबूब मैनूं तृष्ना दा बड़ा दुक्खा, मेरी तृखा देणी गंवाईआ। मैं कूड़ कुड़यारे जनणी दी रहिण नहीं देणे विच कुख्खा, काया गर्भ विच डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर तेरे सीस मेरा झुका, झुक झुक लागां पाईंआ।

✪ ६ चेत शहिनशाही सम्मत ६ कुलवन्त सिँघ दे गृह जम्मू ✪

चित्रगुप्त कहे मैं चुरासी दा करन वाला जोड़, हिन्दसा हिन्दसे नाल मिलाईआ। लेखा रखणा अग्गे ब्राह्मण गौड़, जो मालक बेपरवाहीआ। जिस ने कलयुग दी पूरी करनी दौड़, अगला पैंडा देणा मुकाईआ। सतिजुग साचा देणा तोर, तुरत आपणा हुक्म वरताईआ। अंधेरा मेट के घोर, सच नूर करे रुशनाईआ। लेखा चुका के ठग्ग चोर, जन भगतां लए उपजाईआ। ओसे दे हथ्थ विच डोर, जो सब दा पिता माईआ। इक वार करा के सृष्टी दा घोल, दीन दुनी देणी हिलाईआ। फेर

कंडे तोल के तोल, नाम वज़न देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी करनी दस्स अनमोल, अमोलक आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ ६ चेत शहिनशाही सम्मत ६ गुरनाम सिँघ दे गृह सीड़ जम्मू ✪

कलयुग कहे प्रभू दे हुक्म अन्दर बध्धे, बन्दना विच काल महाकाल सीस निवाईआ। मातलोक आईए उस दे सद्दे, जो शब्द संदेशा नाम सुणाईआ। मानव मानस हँस कीते कग्गे, कलकाती आपणी कल वरताईआ। किसे समझ ना आवे की होणा अग्गे, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी पड़दा सके ना कोए उठाईआ। शाह सुल्तान इक दूजे नाल करन दग़े, पिता पूत पई लड़ाईआ। सृष्टी त्रैगुण माया विच दग़े, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला निरगुण जोत किसे ना लभ्भे, चार कुण्ट दहि दिशा भज्जण वाहो दाहीआ। दीन मज़्हब ज़ात पात तोड़े कोए ना हद्दे, दरगाह साची सच दवार ना कोए वखाईआ। जिथ्थे शब्द अगम्मी इक्को वज्जे, अनहद नादी धुन सुणाईआ। दीपक जोत इक्को जगे, जिस विच अवतार पैग़म्बर गुरु सारे रहे समाईआ। झगड़ा दिसे ना मास नाड़ी हड्डे, पंज तत ना कोए लड़ाईआ। जिस ने जुग जुग धर्म निशाने गड्डे, धरनी धरत धौल उपर कीती रुशनाईआ। ओह खेल करे सूरा सरबगे, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। कलयुग कहे उस दा हुक्म सिर मथ्थे, सीस सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। कलयुग कहे मैं वेखां दूर नेड़ा, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण ध्यान लगाईआ। झगड़ा प्या काया खेड़ा, मनुआ मन करे लड़ाईआ। शास्त्र सिमरत करे ना कोए नबेड़ा, सांतक सति ना कोए वरताईआ। चुरासी चुक्के किसे ना गेड़ा, रसना जेहवा पढ़ पढ़ थक्की लोकाईआ। जगत जहान पार करे कोए ना बेड़ा, समुंद सागर सार किसे ना पाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप बिन सतिगुर शब्द होया अंधेरा, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। मानव मानव करे झेड़ा, दीन दीन नाल टकराईआ। बिन पुरख अकाल दीन दयाल करे कोए ना मेहरा, महिरवान महिबूब दरस कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा वेख वखाईआ। कलयुग कहे चित्रगुप्त लेखा कर कर गया थक्क, सदी चौधवीं ध्यान लगाईआ। जो अवतार पैग़म्बरां किहा सो हुक्म होणा सच, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। भाग लग्गणा नहीं किसे काया माटी कच्च, कंचन गढ़ ना कोए सुहाईआ। मन कल्पणा विच दीन दुनी रही नच्च, सच धर्म दा कदम ना कोए उठाईआ। नाड़ बहत्तर

घर घर उबले रत्त, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। कलयुग जीवां भुल्ली गुरमति, गुरबत अन्दर होए हल्काईआ। जो आसा रख के गया अवतार पैग़म्बर गुरु पुरख अकाला हकीकत वेखे हक, शाह सुल्तान दया कमाईआ। सो प्रगट हो समरथ, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। कलयुग कहे मेरा खेड़ा करे भट्ठ, मेरा अन्तर मारे धाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। चित्रगुप्त कहे कलयुग प्रभ जोत धार वेख कलि कल्की, जो कलेश दए मिटाईआ। जिस दा इक्को समां सञ्झ सवेरा सरघी, सुबह शाम वंड ना कोए वंडाईआ। ओह ग़रीब निमाणयां बणे दर्दी, जन भगतां होए सहाईआ। कूड़ी मेटे अंधेर गर्दी, धुर दा हुक्म इक उपजाईआ। खेल तकणी नरायण नर दी, जो नर हरि आपणी रिहा समझाईआ। सब दा लहिणा देणा मुकावे जल्दी, जल थल महीअल खोज खुजाईआ। किसे ख़बर नहीं घड़ी पल दी, पलकां ओहले बैठा की आपणी करनी रिहा जणाईआ। आसा पूरी करनी बावन बल दी, बल दवारा दए गवाहीआ। जेहड़ी सृष्टी भरी कपट छल दी, अछल छलधारी सब दा डेरा ढाहीआ। इक्को मंज़ल दस्से निहचल धाम अटल दी, जिथ्थे वसे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कूड़ कल्पणा मेटे काम क्रोध लोभ मोह हँकार दल दी, कूड़ दलिद्दर दए गंवाईआ।

✪ ८ चेत शहिनशाही सम्मत ६ हरजिन्दर कौर दे नवित फ़िरोज़पुर छाउणी ✪

नारद कहे मेरी पुन्नी आस, निरासा रही ना राईआ। मैनूं याद आ गया वेला वक्त ख़ास, सुहञ्जणा सच सच सुहाईआ। मैं फिरदा सां उदास, जोती धार वाहो दाहीआ। नड्डुया विच भरवास, हथ्थ बोदी उत्ते टिकाईआ। अन्तर अन्तर करदा रिहा हास बिलास, खुशीआं विच जणाईआ। उधरों कृष्न आ गया पास, आपणा पन्ध मुकाईआ। दर्शन होया साख्यात, मिल के वज्जी वधाईआ। नारद कहे मैं अग्गे पिच्छे मारी झात, सज्जा खब्बा वेख वखाईआ। मैं अगम्मी पैंदी वेखी रास, बिन गोपी काहन वज्जे वधाईआ। मैं सहिज नाल दिता आख, घनईए तांईं दृढ़ाईआ। मैनूं वी रख साथ, आपणा संग बणाईआ। उस सहिज नाल किहा नारदा सुण मेरा वाक, तैनूं दयां दृढ़ाईआ। जुग जुग खेल तमाश, प्रभ साचा रिहा कराईआ। अज्ज तेरी पूरी करां आस, मेहर नज़र उठाईआ। तूं तकणा उपर बैठ दरख़त दी शाख़, बिन नैणां नैण उठाईआ। मेरा होणा घात, बधक तीर चरण छुहाईआ। एह खेल कराउणा आप, मेरी बेपरवाहीआ। नारद किहा कांप, निउँ के सीस निवाईआ।

मेरे कोल नहीं कलम दवात, जो लिख के दयां टिकाईआ। कृष्न किहा एह छोटा जेहा हालात, की सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। नारद बहि गया दरख़त उपर चढ़, चोटी जड़ दे मध आसण लाईआ। इक टंगा गया खड़्, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। कृष्न कृष्न किहा पढ़, सिफ्तां विच सालाहीआ। उधरों बधक तीर कमान ल्या फड़, मुखी चार माशे नौ रत्ती वाली सुहाईआ। अन्तर ज़ोर हँकार भर गढ़्, चिल्ला दिता खिचाईआ। चरण कँवल वज्जा तड़, आर पार रंग रंगाईआ। कृष्न हस्स के किहा हुण आ जा मेरे दर, दर दवार खुल्हाईआ। बधक आ के गया डर, भय विच नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। बधक आ के कीता क्यास, हैरानी विच दुहाईआ। कृष्न मंग्गया पाणी दा ग्लास, लम्भयां हथ्थ कितों ना आईआ। ओधरों अठारां साल दी गुजरी आ गई ख़ास, मटकी सिर उत्ते उठाईआ। ना ओह वेला दिन सी ना रात, सूर्या अन्दर बाहर नज़री आईआ। उहदी क्षत्रीआ वाली ज़ात, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। उस नेड़े आ के दिता आख, प्रेम विच सुणाईआ। की तुहानूं किसे नूं लग्गी प्यास, मैं पाणी दयां प्याईआ। बधक रो के दिता आख, नैणां नीर वहाईआ। ओह कृष्न दा तीर वेख साख्यात, जो घाउ चरणां विच लगाईआ। गुजरी भुल्ल गई अगली वाट, ध्यान हिरदे विच रखाईआ। मटकी रख उत्ते मिट्टी माट, धरती उत्ते टिकाईआ। पाणी दा भर ग्लास, बधक हथ्थ फड़ाईआ। बधक कृष्न चरण डिग्गा सपाट, बलहीण रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। कृष्न ने पाणी ल्या पी, जो बधक दिता फड़ाईआ। खुशी नाल किहा जी, जीवण तेरा लेखे विच रखाईआ। उतों नारद बोलया काहन जी आख्या की, मैनूं देणा सुणाईआ। एस विचारी कन्या दे जीवण दे दिन रहिंदे वीह, तूं जीऊंदी रह किस तरह दिता सुणाईआ। की पिछली तोड़न लग्गों लीह, मार्ग रिहा बदलाईआ। एह वी कन्या किसे दी धी, जो तेरी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। कृष्न किहा ध्यान धर चरणां, नारद दयां जणाईआ। जिस नूं मिल गई मेरी सरना, ओह मेरे विच समाईआ। शरीर छड के ज़रूर पऊ मरना, वीह दिन तों वद्ध आरज़ू ना होर लँघाईआ। ओने दिन इक अक्खर पऊ पढ़ना, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। ओधरों बधक ढहि प्या उत्ते चरणा, बौहड़ी बौहड़ी कर सुणाईआ। जे इस कन्या नूं खड़ना, मेरी हाल दुहाईआ। मैं वी एहदे नाल चाहुंदा मरना, जो इक्ट्ठे मिल के तेरी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। नारद किहा बधका मैं सुणदा तेरीआं बातां, उपर नज़र किसे ना आईआ। प्रभू दीआं जुग जुग दीआं गाथां,

मैं आपणे विच समाईआ। ज़रा निगाह मार एस कन्या दा नाता पिछला नाल देवी लाटा, अष्टभुज रूप दरसाईआ। इस दे होर साथी जिन्हां दा एस वेले रूप वाखा, वक्खरी वक्खरी जूनी वंड वंडाईआ। इन्हां दा पिछला खेल तमाशा, सति विच दरसाईआ। इक दुर्गा नाल साधू करदा हुन्दा सी रोज़ बातां, बचन प्रभ दे सदा गाईआ। इक बण के दासी दासा, सेवक सेवा रूप जणाईआ। इक संख वजाउंदा सी नादा, धुन आवाज़ सुणाईआ। तिन्नां दा लेखा पूरा वेख वायदा, दर तेरे सोभा पाईआ। इहनां फेर होणा अलहिदा, सगला संग ना कोए जणाईआ। भगत उधारना प्रभू दा कायदा, कदीम तों चलया आईआ। इहनां दा अगला लै जाइज़ा, पर्दा दे खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। कृष्न किहा नारदा ओह वेख संसार, दूर दुराडा दयां जणाईआ। कलयुग वेख धार, चारों कुण्ट अंधेरा छाईआ। इन्हां जन्म लैणा फेर एका वार, इक इक नाल दरसाईआ। बधक नाल नाता जोड़ां अपार, भेव अभेदा आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस नूं बुद्धी विच सके ना कोए विचार, विचर के सके ना कोए जणाईआ। किरपा करां अपर अपार, अपरम्पर हो के होवां सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। नारद किहा ऐ मेरे भगवान, सच दे समझाईआ। किस बिध तेरी होवे पहचान, इहनां पर्दा कवण उठाईआ। एह जन्म लैण जूनी विच इन्सान, पंजां तत्तां रंग रंगाईआ। कृष्न किहा आह मेरे चरण मार ध्यान, बधक लाल रंग नाल रंगाईआ। आपणे खून दा एस नूं देवां दान, इसदे खून विच्चों खून लवां उपजाईआ। जिस कन्या ने पाणी दिता इस दा मेला मेलां आण, आप आपणा रंग रंगाईआ। एह खेल होणा विच जहान, वेला वक्त दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। नारद किहा कृष्न हुण एस कन्या दी आयू उमर साल अठारां, थोड़े दिन अग्गे पिच्छे वधाईआ। जिस वेले फेर आवे दुबारा, की एसे उमर विच फेर पार कराईआ। बधक ने रो के कढुया हाढ़ा, गल पल्लू वास्ता पाईआ। किरपा कर मेरे मुरारा, मेहर नज़र उठाईआ। इस दा लेखा जगत रहे संसारा, बाल जवानी अवस्था बिरध देणी वखाईआ। कृष्न ने उँगल नाल दिता इशारा, मुक्खों ना कुछ सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। नारद बोलया नाल ज़ोर, ज़ोर नाल सुणाईआ। बीबी राणीए रो के पा दे शोर, कूक कूक दे जणाईआ। कहो, मेरे भगवान मेरा तेरे उत्ते ज़ोर, डोरी तेरे हथ्थ फड़ाईआ। जे इस जन्म विच बाल अवस्था रिहों तोर, अगले जन्म विच मेरी आयू देणी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। कृष्न कर गया चुप्प, मुक्खों बचन ना कोए सुणाईआ।

उस वेले ना छाँ रही ना धुप्प, सँध्या अंधेरा दिता पाईआ। अंधेरा होया घुप, चारों कुण्ट सुंञ मसाण नज़री आईआ। नारद फेर ल्या पुछ, ओह वलीए छलीए कुछ दे दृढ़ाईआ। जे आखें ते दूजा चरण देवां घुट्ट, तेरी सेव कमाईआ। मैनूं गुस्सा चढ़दा जे मेरा टाहणा गया टुट्ट, तेरी छाती उत्ते डिग्गां चाँईं चाँईंआ। तैनूं जफ्फी विच लवां घुट्ट, रुस्से नूं लवां मनाईआ। जिंना चिर इहनां नूं कहें ना आपणे पुत, ओनां चिर हथ्थ ना परे हटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। कृष्न किहा नारदा मैं मर्यादा दा पक्का, निरगुण तों सरगुण रूप बदलाईआ। बिना भगती तों बणया नहीं किसे दा सका, सद भगतां उत्ते दया कमाईआ। जिन्हां मेरे उत्ते भरोसा रखा, ओन्हां होवां सदा सहाईआ। नाले दर्शन देवां नाल अक्खां, सन्मुख हो के सोभा पाईआ। बिना प्यार तों भावें लभ्भदे फिरन कोटन लखां, खोज्जयां हथ्थ किसे ना आईआ। मैं खुश हुन्दा भगतां दी वेख कुली कक्खां, महल्लां विच डेरा कदे ना लाईआ। ज्यों भावें त्यों समें नाल रखां, एह मेरी बेपरवाहीआ। उठ वेख तैनूं दस्सां, पर्दा दयां खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद किहा भगवन आपणा दस्स इरादा, की तेरी बेपरवाहीआ। तूं ही प्यो तूं ही दादा, कुल तेरी नज़री आईआ। तेरा भगत तेरी राधा, सद तेरे विच समाईआ। हुण भरम भुलेखा काहदा, पर्दा दे उठाईआ। कुछ बचन कर वाहिदा, हुक्म दे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। कृष्न किहा नारदा अक्खां मीट के मार चीक, रो के दे सुणाईआ। फेर वेख समां नज़दीक, कलयुग अन्तिम नेड़े आईआ। जुग चौकड़ी बदलणी रीत, मार्ग इक दरसाईआ। लख चुरासी परख के नीत, भगत सुहेले लैणे प्रगटाईआ। नाम दस्स हदीस, सोहला देणा जणाईआ। छत्र झुला के सीस, जगदीश लैणा अखवाईआ। सदी चौधवीं नाल बीस, बीस बीसा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा इक उठाईआ। नारद अक्खां मीट धरया ध्यान, दोवें हथ्थ बोदी उत्ते टिकाईआ। प्रभू बख़्शया इक ज्ञान, पर्दा दिता खुल्हाईआ। कलयुग अन्तिम हो के निगाहबान, भगतां होए सहाईआ। धर्म वखा निशान, निशाना दिता दृढ़ाईआ। भेव खोल्ह महान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद ने तक्कया अजब नज़ारा, लीला बेपरवाहीआ। रो के किहा ज़ारो ज़ारा, नैणां नीर वहाईआ। भगवन तेरा खेल अपारा, अपरम्पर तेरी बेपरवाहीआ। बेशक एस कन्या नूं जन्म देणा दुबारा, आयू जोवन अवस्था तों अग्गे नज़र कोए ना आईआ। किरपा कर इस दे जन्म दे विच्चों जन्म दा कर उधारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कृष्न ने किहा

जिस वेले साची धार होवे कलि कल्की अवतारा, निहकलंका नाउँ प्रगटाईआ। बख्शे बख्शणहारा, दाता धुरदरगाहीआ। सब कुछ उसदे अख्त्यारा, मुखतारनामे साडे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा पड़दा लाहीआ। नारद किहा इस दा किस बिध लहिणा मुके मात, काहन दे दृढ़ाईआ। कृष्न ने हथ्थ ते रख के हाथ, तली तली नाल दबाईआ। फेर जणाया साफ़, कहि के दिता सुणाईआ। औह वेख खेल पुरख अबिनाश, करनी करता आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा हुक्म वरताईआ। नारद कहे किस बिध खुल्ले भेव अपारा, समझ की समझाईआ। कृष्न किहा ओह आदि अन्त दा जानणहारा, जुग जुग वेख वखाईआ। जिन्हां दा दुर्गा नाल प्यारा, अष्टभुज दी सेव कमाईआ। हुण बधक दा सहारा, भरवास बैठे डेरा लाईआ। फेर होणा खेल अपारा, कलयुग अन्तिम जन्म दवाईआ। जिस वेले एस कन्या दे जन्म दा आया अन्त किनारा, लेखा वीह दिन बाकी सोभा पाईआ। फेर शब्दी धार साधू दा साधू रूप दासी दा गोली रूप वखावां अपर अपारा, धुर दा हुक्म इक जणाईआ। पर्दा खोल्ह के अन्दर बाहरा, गुप्त ज़ाहर दयां वड्याईआ। ओह मंगे मंग अपारा, प्रेम प्रीती झोली अग्गे डाहीआ। पहली चेत दा होए दिहाढ़ा, सोहणी रुत सुहाईआ। बधक ने उस दिन फेर वी रोणा ज़ारो ज़ारा, पूरब लेखा ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। सब नूं दे सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। किरपा करे आप निरँकारा, निरवैर होए सहाईआ। हरजिन्दर दा वीह चेत नूं नाता तुटणा सी जगत जहान विच संसारा, स्वास स्वास ना कोए रखाईआ। नारद ने खूब खुशी विच दिता पहिरा, पहरेदार हो के दिता सुणाईआ। किरपा कर आप करतारा, किरती हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। जुगिन्दर तृप्त पिछले दुर्गा दे साथी, अष्टभुज नाल वड्याईआ। उहो रूप दरसाया जिस दे नाल लहिणा मुकणा सी जगत जीवण हयाती, आख़र आपणा रंग रंगाईआ। एसे कारन बिना सद्दयां पुछयां मारी वाटी, जन्म दा लहिणा जन्म विच्चों झोली पाईआ। ना कोए संदेशा ना कोए पाती, बिना पत्रिका होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे अज्ज मैं खुशी विच लावां छलागां, भज्जां चाँईं चाँईंआ। मेरे अन्दर प्रेम दीआं ताघां, खुशीआं विच वज्जी वधाईआ। चारों कुण्ट तूं ही तूं ही ढोला गांदा, गा गा रिहा सुणाईआ। बिना मेरे तों भगतां नाल प्रेम ना कोए वधांदा, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती देण गवाहीआ। रावी दा कन्ढा बहुत कुछ सुणांदा, उच्ची कूक कूक अल्लाईआ। बिना प्रभू तों जन्म जन्म अज्ज दा दिवस वीह चेत दा वक्त चुकांदा, चुकन्ना करके दए सुणाईआ।

चित्रगुप्त नूं हिलांदा, धर्म राए नूं रिहा उठाईआ। लाड़ी मौत नूं डराउँदा, काल दर तों दुरकाईआ। जिस भगत सिर भगवन आप सिर हथ्थ टिकांदा, सिरजणहार होए सहाईआ। उस नूं जिंना चिर चाहे आयू जगत भुगतांदा, दूसर सके ना कोए तुड़ाईआ। शब्दी खेल एसे करके पहलों आप समझांदा, ताकि भरम भुलेखे विच रहे कोए ना राईआ। बेनन्ती काग़ज़ शाही नाल करांदा, अर्ज़ आरज़ू वाली बणाईआ। तैनूं मेहरवान हो के आप बख्शदा काहन कोलों बख्शाउंदा, नारद संग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मरन तों पहलों जिस नूं बचाउँदा, बचपन आपणी झोली पाईआ।

६ चेत शहिनशाही सम्मत ६ हरदेव सिँघ दे नवित पिण्ड रुढ़का कलां

हरदेव कहे मेरी आत्मा ठंडी सीत, जगत तृष्ना रही ना राईआ। मेरा जन्म होया अतीत, त्रैगुण नाता ल्या तुड़ाईआ। आत्मा परमात्मा गा के गीत, सोहँ सो विच गया समाईआ। खेल वेख्या अगम्म अनडीठ, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। जिथ्थे इक प्रभू साचे करन प्रीत, गुर अवतार पैग़म्बर सन्त भगत बैठे सोभा पाईआ। मेरी खुशी विच निकल गई चीक, ज़ोर नाल सुणाईआ। अग्गों हस्स के किहा मनजीत, गलवकड़ी लई पाईआ। तेरी करदे सां उडीक, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। धन्न भाग जे मिल्यों मीत, मिल के खुशी बणाईआ। लोकमात दीन दुनी दी बदलणी रीत, गोबिन्द गोबिन्द गया समझाईआ। आह वेख बिना लाईन तों वज्जी लीक, निशाना जगत ना कोए जणाईआ। जिथ्थे वसे लाशरीक, परवरदिगार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। हरदेव कहे मैं छड्डुया जगत कूड़ थाँ, सृष्टी दिती तजाईआ। नाता तोड़ के भैण भ्रा, प्रभू दर आया चाँईं चाँईंआ। मैनूं रोवे ना कोए मेरा पिता माँ, मेरा दुःख ना कोए रखाईआ। मेरी उस प्रभू ने पकड़ी बांह, जो आदि अन्त भगतां गोद उठाईआ। मेरी जगत वासना रही ना काँ, हँस गुरमुख ल्या उपजाईआ। तिस साहिब सतिगुर तों बलि बलि जां, जो होया आप सहाईआ। नित दर्शन रिहा पा, छुट्टी जगत लोकाईआ। अमृत रस लवां खा, तृष्ना भुक्ख दिती मिटाईआ। मेरे अन्तर सदा चाअ, प्रभ मिल्या बेपरवाहीआ। जो अस्व उत्ते ल्ए टका, पाखर ज़ीन नाल वड्याईआ। सिर रखे ठंडी छाँ, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला दए मिलाईआ। हरदेव कहे मैं वेख्या खेल निराला, निरगुण जोत विच समाईआ। सतिगुर शब्द दीन दयाला, सद आपणा संग रखाईआ। मैं अन्त अख़ीर करां इक

सवाला, सच दयां सुणाईआ। मेरे सतिगुर दे घोड़े दा होवे इक दुशाला, रंग नीला नज़री आईआ। सवा सौ इस तों वद्ध घट्ट लग्गे ना धन माला, उत्ते नाँ हरदेव देणा लिखाईआ। इहो मेरी भगती इहो मेरी माला, इहो मेरी करनी कमाईआ। मैं मात पिता तों आपणा हिस्सा नहीं मंग्गया बाहला, भरावां नाल वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मैनूं वसाया उस सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, जिथ्थे गुरमुख भगत, बिना सृष्टी जगत, बिन शरीर बूँद रक्त, निरगुण जोत जोत विच समाईआ।

✪ १६ चेत शहिनशाही सम्मत ६ बीबी हरनाम कौर दे नवित पिण्ड वेरका ज़िला अमृतसर ✪

भीलणी कहे मैं आपणी दरसां रुची, रचना प्रभ दी दयां जणाईआ। मेरी ज़ात हीण नहीं उच्ची, ब्राह्मण रूप ना कोए दरसाईआ। प्रभू प्यार विच कटदी सां बुत्ती, बुतख़ाने विच वेख वखाईआ। इक दिन वैराग विच मैं बड़ी होई दुखी, राम राम दिती दुहाईआ। झट आ गई मुसाफ़र इक बुढ्ढी, लम्बे लम्बे कदम उठाईआ। लक्कों सी कुब्बी, सिध्धी कमर ना कोए रखाईआ। प्रेम नाल कोल पुज्जी, सहिज नाल पुछ पुछाईआ। नी तेरी किद्धर गई बुद्धी, क्यों रो के मारें धाईआ। भीलणी कहे मैं डिग्गी उत्ते बसुधी, धरती उत्ते आसण लाईआ। बौहड़ी मैं उस नूं लभ्भां जेहड़ा फिरे चहु जुगी, जुग जुग वेस वटाईआ। मैनूं हथ्थ ना आवे किसे वदी सुदी, किशना शुक्ला पक्ख खोज खुजाईआ। ओधरों उड के आ गई इक घुग्गी, घूं घूं अवाज़ सुणाईआ। झट पहुंच गई इक गुंगी, बिना जबान तों इशारे रही वखाईआ। उस दे कोल जल कटोरी कुंगी, साफ़ सुथरा नज़री आईआ। रसना लावे बूँद बूँदी, हौली हौली मुख चुआईआ। फेर उच्ची सारी कूंदी, कूक दिती दुहाईआ। बौहड़ी मैनूं आस उस सतिगुर दी, जो सब दा पिता माईआ। जिस दी धार आदि शुरू दी, शहिनशाह इक अख्वाईआ। बुढ्ढी किहा उस दी वाग मुहब्बत वाली मुड़ू, आपणा फेरा पाईआ। भीलणी किहा की जिस वेले मेरी ज़िंदगी दा बेड़ा रुढ़ू, उस वेले होए सहाईआ। कुब्बी ने किहा औह वेख इशारा देंदा ध्रू, धर्म दी धार जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद आपणी कार कमाईआ। कुब्बी किहा भीलणी नी मेरे भाग सोते, सुत्तयां ना कोए जगाईआ। तूं प्रभू प्यार विच खावें गोते, मैं आस ना कोए रखाईआ। मेरे नेत्र नैण रोते, हन्झू देण दुहाईआ। घर विच बथेरे पुत्त पोते, परिवार इक्कीआं वाला समझाईआ। मेरे सोहणे तिन्न टोटे, लखते जिगर वंड वंडाईआ। मेरे भाग खोटे, प्रभू मिलण दी आस ना कोए बणाईआ। भीलणी रो के किहा असीं सारे कमले कोझे, सुरत विच ना कोए चतुराईआ। होईए

उस दे जोगे, जो जुगीशरां दए वड्याईआ। जगत रस बथेरे भोगे, भुक्ख रही ना राईआ। माया ममता भरे बोझे, हउमे विच दुहाईआ। अन्तर अन्तर कोए ना सोधे, पवित्र पाक ना कोए कराईआ। फेर डिग्ग पई भार गोडे, होश लई भुलाईआ। फेर धरती ते वज्जे मोढे, कंधे ज़िमीं नाल टकराईआ। फेर उठी निकले हौके, हा हा कर सुणाईआ। फेर पिछा वेख्या भौं के, जल्वा तक्कया अगम्म अथाहीआ। शब्दी हुक्म दिता कुब्बीए हुण जाणा जन्म कर्म विच सौं के, भीलणी राम नाल चतुराईआ। माण छडणे मैं हउँ के, हँकार देणा तजाईआ। खेल वेखणे प्रभ भाउ के, भावना इक दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। कुबी दा नाँ सी ज़ीना, जिउणी कहि के सारे गाईआ। भीलणी मिलण दा सी चेत महीना, प्रविष्टा सोलह सोभा पाईआ। जुग त्रेता सी तीना, तीन लोक वेख वखाईआ। अन्त बचन इक कीना, रसना नाल सुणाईआ। की कदे मैनूं वी मिलेगा दाना बीना, मेहरवान बेपरवाहीआ। शब्द आवाज़ आई तेरा ज़रूर होवे ठंडा सीना, अग्नी तत बुझाईआ। लेखा जाणे जल मीना, चातृक खोज खुजाईआ। त्रेते पिच्छों द्वापर खेल होणा प्रबीना, पारब्रह्म प्रभ वेस वटाईआ। फेर कलयुग होणा नाबीना, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। शब्दी शब्द किहा अन्त अख़ीरी सुण बात, नाद धुन शनवाईआ। जिस वेले कलयुग होए अंधेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। फेर जन्म लैणा पए मात, मानस मानव रूप वटाईआ। पुरख अबिनाशी पुछे वात, निरगुण धार खोज खुजाईआ। बिरध अवस्था देवे साथ, अन्त आपणा रंग रंगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के गाथ, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। अन्त दर्शन देवे आप, आप आपणा फेरा पाईआ। जन्म कर्म दा लहिणा लेखा पूरा कर हिसाब, बिन अक्खरां अक्ख दए खुल्हाईआ। झगड़ा रहे ना राय धर्म काग़ज़ात, चित्रगुप्त ना लेख लिखाईआ। आत्म परमात्म जोड़ के नात, पारब्रह्म ब्रह्म मेला लए मिलाईआ। जो शब्दी धार जीणी नूं दिता आख, बिन जेहवा नाम जणाईआ। सो कलयुग अन्तिम पूरा करे साख्यात, साहिब सतिगुर दया कमाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सच दवार दी दे के दात, सचखण्ड आप सुहाईआ। त्रेते जुग दी पूरी करके आस, कलयुग अन्तिम हरनाम कौर दा लेखा आपणे लेखे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहिणा चुकाए सोलह चेत दी रात, भिन्नड़ी रुत नाल मिलाईआ।

★ १८ चेत शहिनशाही सम्मत ६ ठेकेदार ठाकर सिंघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ★

सती कहे मैं रही सुती, सुरती लई अंगड़ाईआ। मेरे जन्म दी पूरी होई ना बुत्ती, बुतख़ाना गई तजाईआ। मेरी ख़त्म ना होई रुची, जगत ख्वाहिश ना कोए मिटाईआ। मैं दूर दुराडा वेखां उच्ची, नेरन नेरा ध्यान लगाईआ। सदा सुहञ्जणी होए कोए ना रुती, रुत बसन्त ना कोए महकाईआ। जगत दवारे रही रुस्सी, रुस्सयां सके ना कोए मनाईआ। मैं आसा रखां तन जुस्सी, तत्तां नाल कुड़माईआ। आपणयों निशानयों मूल ना उकी, निगाह निगाह विच टिकाईआ। जीव जीव करके दुखी, दुःख आपणा इक वखाईआ। मेरी आत्मा होई ना सुखी, सागर पार ना कोए कराईआ। बौहड़ी गई लुट्टी, हाए उफ़ दुहाईआ। मैनूं अजे तक मिली ना छुट्टी, बन्धन अग्गे ना कोए तुड़ाईआ। मेरी दरोही चारे कूटी, कुटम्ब वेखां थांओं थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद आपणी दया कमाईआ। सती कहे मैं उठी जागी बोली, अनबोलत आवाज़ जणाईआ। निगह मारी उपर धरनी धरत धवल धौली, ज़िमीं ज़मां खोज खुजाईआ। मेरी रुतड़ी रुत्त हक ना मौली, बहार प्यार ना कोए वखाईआ। कीमत पई ना पौली, जगत वणजारन हट्ट चलाईआ। मिल्या शगण ना तन्द मौली, मेहर नज़र ना कोए उठाईआ। मैं इकरार करां कौली, कँवल दयां जणाईआ। इक दो इक पाउंदी रही रौली, कूक कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सती कहे मैं गई सत, अग्नी अग्ग तपाईआ। काया अन्दर रही तप, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। मेरे अन्तर रिहा ना जप, रसना रस ना कोए चखाईआ। मेरे ख़ाली दिसण हथ्थ, ज़र दौलत ना कोए वड्याईआ। जां मैं निगह खोली परत के वेख्या पलक, अक्ख नैण नेत्र इक उठाईआ। पुरख अबिनाशी तक्कया समरथ, पारब्रह्म धुरदरगाहीआ। जिस दा नाम भण्डारा हट्ट, वणज इक कराईआ। वसे घट घट, चुरासी विच समाईआ। मैं चरणी डिग्गी झट्ट, निउँ के सीस निवाईआ। मेरा पिछला लेखा कट, अग्गे दर्द देणा मिटाईआ। मैं बंस परिवार नूं जावां छड, नाड़ी हड्ड ना कोए तपाईआ। वजूद विच्चों हो के अड्ड, तेरे हुक्मे सीस निवाईआ। फेर लँघां कदी ना हद्द, दर दवार दयां तजाईआ। प्रभू किरपा कर दे अज्ज, सुलखणी घड़ी सोभा पाईआ। मैं दूर दुराडी जावां भज्ज, जिथ्थे भजन बन्दगी वाला नज़र कोए ना आईआ। तेरी तेरी धार भगतां वाली यद, यदी आपणा मेल मिलाईआ। मैं सुणया तूं मेरा मैं तेरा छन्द, ढोला अगम्म अथाहीआ। मेरा माण रिहा ना जग, जागरत जोत होई रुशनाईआ। मैंनूं लग्गी जोत धार दी अग्ग, अग्नी अग्ग तपाईआ। सच सरनाई रही ढट्ठ, निउँ निउँ सीस निवाईआ। किरपा कर साहिब समरथ, तेरी बेपरवाहीआ। पुरख अकाल किहा नीवें नैण जावीं

नस्स, पिछा परत ना अक्ख बदलाईआ। डण्डावत बन्दना इक्को वार कर लै हस्स, हस्ती वेख बेपरवाहीआ। सिफ्तां विच तूं मेरा मैं तेरा गावीं जस, दूसर अवर ना कोए चतुराईआ। सती कहे मेरा अन्त जैकारा अलख, अलख अगोचर दयां सुणाईआ। मैं जिस दवारे रही सां वस, अज्ज छड के भज्जां वाहो दाहीआ। अन्त अख़ीर टेक के मथ्थ, धूढ़ी चरण ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तर आत्म निरन्तर देवे आपणा रस, रस्ता बावस्ता हो के इक्को इक जणाईआ।

२० चेत शहिनशाही सम्मत ६ रछपाल कौर नाथेवाल दे नवित हरि भगत दवार जेठूवाल

काल कहे मैं सब नूं ग्रस्या, गृह गिरा सब दी खोज खुजाईआ। जुग चौकड़ी फिरां नस्सया, नित नवित भज्जां वाहो दाहीआ। कलयुग वेख अंधेरी मस्सया, मेरे अन्तर वज्जी वधाईआ। जो मार्ग अवतार पैग़म्बर गुरु दस्सया, दहि दिशा गए भुलाईआ। आत्म परमात्म नाम किसे ना जपया, अजपा जाप ना कोए जणाईआ। पंज तत अंग्यार जीव तपया, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। जिस शरीर दी होवे हत्या, अन्तर मेल ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। काल कहे मैं वेखे नेती नेत, नेरन दूर खोज खुजाईआ। जून अजूनी वेखे प्रेत, जन्म जन्म विच दुहाईआ। पूरा होवे किसे ना लेख, बौहड़ी रोवण मारन धाईआ। राह तक्कण अगम्मी देस, कवण वेले प्रभ आवे शहिनशाहीआ। सो रुत्त सुहञ्जणी वेख वीह चेत, चेतन हो के ध्यान रखाईआ। प्रभू तेरयां नाल मेरा हेत, हितकारी हो के मेल मिलाईआ। दुःख दर्द मिटा कलेश, कूड़ कल्पना बाहर कढ्ढाईआ। तेरी शब्दी धार दस दशमेश, दूजा नज़र कोए ना आईआ। गुरमुखां बख़्श मुच्छ दाढ़ी केस, भगवन आपणा रंग रंगाईआ। सवाली दर ते होए पेश, घर ठांडे मंग मंगाईआ। तूं आदि अन्त दा एक, एकँकार नूर इलाहीआ। कूड़ी क्रिया अग्न ना लावे सेक, तत्व तत देणा बदलाईआ। लेखा मुका जिंन प्रेत, पसू देव रूप वखाईआ। सब दा अन्तिम कर दे खेत, खेत्र पाल दए दुहाईआ। तेरा सब तों वक्खरा निराला वेस, भेख समझ कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। काल कहे प्रभू वेख्या तेरा भेत, अवल्लड़ी चाल चलाईआ। याद आई अर्जन वाली रेत, जो अग्नी तत तपाईआ। बिन किरपा किसे मिले ना आपणा देस, घर सज्जण ना कोए जुड़ाईआ। किरपा कर जन भगतां बदल दे

लेख, जन्म जन्म विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक प्यार इक संदेश इक नरेश हो के आप जणाईआ।

✪ २० चेत शहिनशाही सम्मत ६ बीबी हरजिन्दर कौर फ़िरोज़पुर दे नवित हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

पूरब जन्म कर्म दा बंस सोढी, हरि गोबिन्द रंग रंगाईआ। अन्तर आत्म जिस सोधी, वदी सुदी दा डेरा ढाहीआ। सिर ते रखदा हुन्दा सी बोदी, उँगलां नौ नौ लम्बाईआ। वेस धरया हुन्दा सी जोगी, वस्त्र गेरू रंग छुहाईआ। इक दिन हरि गोबिन्द अखाड़े दी करदा सी गोडी, आपणा बल वधाईआ। एह खेल प्रीतम चोजी, खुशी नाल वखाईआ। चढ़दयों आ गया जिस नाँ सी मौजी, खुशी विच आपणा राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। मौजी आया वेखण हरिगोबिन्द बलवान, आपणा पन्ध मुकाईआ। शरारत विच बड़ा हुन्दा सी शैतान, वेस आपणा रूप बदलाईआ। नेड़े आ के कपड़े पा के कन्या बण गया नौजवान, मुख घुंगट उत्ते रखाईआ। कोल आ के बोलया नहीं नाल ज़बान, ज़ोर नाल सज्जी खब्बी बांह दिती हिलाईआ। हौली हौली लग्गा गाण, खुशीआं विच सुणाईआ। जे हरिगोबिन्द बड़ा जवान, मेरा भेख दए समझाईआ। अन्दरे अन्दर कर ध्यान, मता रिहा पकाईआ। झट हरिगोबिन्द पहुँचया कोल आण, हथ्थ बोदी उत्ते रखाईआ। की सतिगुर नूं समझें अंजाण, वेस लड़कीआं वाला वखाईआ। अग्गे निगह मार ध्यान, तैनूं दयां जणाईआ। तैनूं ज़रूर कन्या बणना पए धरती उत्ते निशान, गोबिन्द थपकी दिती लगाईआ। उस रो के हथ्थ लाया उत्ते कान, वास्ता दिता पाईआ। हरिगोबिन्द हो मेहरवान, मेरी भुल्ल दे बख्शाईआ। हरिगोबिद किहा मेरा बचन निकलया विच्चों ज़बान, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। तैनूं फेर ज़रूर जामा मिले इन्सान, कन्या वाला रूप धराईआ। जिस वेले प्रगट होए श्री भगवान, जोती जाता अगम्म अथाहीआ। तेरा मेला मेले विच जहान, जहालत कूड़ी अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। चरण प्रीती बख्श के दान, धूढ़ी टिक्का ख़ाक रमाईआ। जन्म जन्म विच्चों कर परवान, परवाना आपणा दए वखाईआ। एह खेल होणा महान, अकल कलधारी आप कराईआ। बिना निगाह तों वेखे मार ध्यान, अन्तर आपणा पड़दा लाहीआ। ज़िंदगी विच्चों ज़िंदगी बख्श श्री भगवान, भाग अगला दए बणाईआ। सुहाग दा दे निशान, कन्न बुंदयां नाल वड्याईआ। बुंदयां वाली कन्या जिस शब्द सुणया महान, अगम्मी राग अलाईआ। एह हरिगोबिन्द दी सेवा करदी सी रोज़ विच मकान, नौ वार दिन विच झाड़ू फेर के आपणी खुशी बणाईआ। उस वेले ओह वी उथे पहुंची आण, जिथ्थे हरिगोबिन्द खेल रिहा

कराईआ। हुक्म दिता संदेशा दिता दोवें इक दूजे दी करो पहचान, हथ्थ कन्नां उत्ते रखाईआ। तुहानूं दोहां नूं ज़रूर मिले भगवान, जोती जाता अगम्म अथाहीआ। सच दी सच देवे निशान, मेहरवान हो सहाईआ। बलविन्दर राजिन्दर हरजिन्दर दो दा इक लेखा जुड़या आण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ।

✪ २२ चेत शहिनशाही सम्मत ६ सुरजीत कौर दे गृह पिण्ड कल्सीआं ✪

काल कहे चित्रगुप्त कुछ लेखा लिख कलम कानी, कायनात लख चुरासी खोज खुजाईआ। कलयुग कहे प्रभ मेरे उत्ते कीती मेहरवानी, मेहरवान महिबूब आपणी दया कमाईआ। राय धर्म अन्तर आए हैरानी, हैरत विच हथ्थ पेशानी उत्ते टिकाईआ। शंकर दूर दुराडा वेखे मार ध्यानी, निगाह निगाह विच्चों बदलाईआ। महाकाल कहे की लेखा चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज पड़दा देणा उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे चार जुग दी वेखो शब्द अकथ कहाणी, अवतार पैग़म्बर गुरु गुरदेव देण गवाहीआ। पुरख अकाल कहे सारे तक्को की हुक्म शाह सुल्तानी, शाह पातशाह शहिनशाह की जणाईआ। सति धर्म दा रिहा कोए ना दानी, नौ सत्त नौ दवार रही कुरलाईआ। अन्तर निरन्तर होए कोए ना ब्रह्म ज्ञानी, आत्म परमात्म ब्रह्म विद्या ना कोए जणाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर दिसे ओह निशानी, जिस दा निशाना गए तकाईआ। अठ्ठ सठ तीर्थ नेत्र रोवे गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती पाणी, अमृत रस रस ना कोए भराईआ। सृष्टी दृष्टी अन्तरगत किसे ना पुणी छाणी, शाम अंधेरा गृह ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच संदेशा इक सुणाईआ। काल कहे चित्रगुप्त वेख चारों तरफ़, बिना निगाह नैण नैण उठाईआ। की लेखा बदलया अलिफ़ ये हरफ़, हरूफ मसरूफ़ कवण कराईआ। केहड़ी सदी सदीवी आया बरस, वक्त बेवक्त खोज खुजाईआ। की आसा रखी ईसा विच चर्च, चरागाहां ध्यान लगाईआ। की मुहम्मद तक्कया उत्ते अर्श, चौदां तबक देण गवाहीआ। की मूसा किहा जिस वेले मूँह दे भार डिग्गा फ़र्श, कोहतूर तूर जणाईआ। की नानक निरगुण धार कीती अर्ज़, खाहश तमन्ना इक जणाईआ। की गोबिन्द पूरा समझया फर्ज़, फैसला हक हक दृढ़ाईआ। की निरगुण सरगुण वंडे दर्द, दीन दयाल दया कमाईआ। शब्द गुरु किहा काल महाकाल खेल असचरज, जोग जुगत भेव कोए ना पाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला नौ सौ चौरानवे चौकड़ी दी पिछली वेखे फ़रद, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग ध्यान लगाईआ। जिस ने शरअ छुरी रहिण नहीं देणी करद, कत्लगाह वेखे जगत लोकाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे अंधेरा गर्द, गर्दिश विच ब्रह्मण्ड खण्ड भवाईआ। जन भगतां होण ना

देवे हर्ज, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। काल तेरा पूरा करे खरच, कलयुग कूड़ कुड़यारे जीव जंत तेरी झोली पाईआ। तूं बेमुखां खा के जाणा परच, प्राचीन दा लेखा पूर कराईआ। अग्गे होर ना रखीं हरस, हवस ना अवर वधाईआ। शब्द गुरु गुरदेव करे तरस, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जेहड़ी गोबिन्द माछूवाड़े लाई शर्त, पुरख अकाल गंढ पवाईआ। सो लहिणा पूरा करना उपर धरत, धरनी धवल धौल देणी वड्याईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार आउणा परत, पतिपरमेश्वर नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। काल कहे चित्रगुप्त की मेरा दस्स लहिणा, लेखा दे दृढ़ाईआ। संदेशा राय धर्म नूं कहिणा, कहि के देणा समझाईआ। अगले बरस मैं नहीं बहिणा, चार कुण्ट भज्जणा वाहो दाहीआ। नाल रखणी लाड़ी मौत डैणा, पल्लू पल्लू नाल जुड़ाईआ। मुहम्मद मूसा नाल खहिणा, अदन दे पार पए दुहाईआ। सब ने नेत्र नैणां नीर वहाउणा नैणां, सांतक सति ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच संदेशा इक समझाईआ। काल कहे चित्रगुप्त छेती लिख दे नाल चालाकी, चाकर हो के सेव कमाईआ। मैं मौत प्याला प्यावां बण के साकी, चार कुण्ट वेख वखाईआ। तन वजूद बन्दा वेखां ख़ाकी, जो ख़ालक नूं भुल्ल के बैठा मुख भवाईआ। शाह सुल्तान रहिण ना देवे आकी, हँकारीआं गढ़ तुड़ाईआ। जो गोबिन्द दे के गया शब्द अगम्मी पाती, पत्रका पुरख अकाल लिखाईआ। निरगुण धार नर नरायण इक्को होणा साथी, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस ने कलयुग विच सतिजुग बदल देणी हयाती, जीवण जुगत जुगत दृढ़ाईआ। रैण अंधेरी मेट के राती, निरगुण नूर चन्द करे रुशनाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां पूरी करे आसी, तृष्ना तृखा दूर कराईआ। दो जहानां निरगुण सरगुण पावे रासी, मण्डल मण्डप खेल कराईआ। चौथे जुग दी अन्तिम वेखे घाटी, तट किनारा खोज खुजाईआ। सब दी पूरी कर के वाटी, अगला पन्ध दए मुकाईआ। मेहरवान महिबूब सच दस्से कथा कहाणी साची, सति सति जणाईआ। त्रैगुण बुझाए आंची, रजो तमो सतो ना कोए जलाईआ। काल चित्रगुप्त दोवे जोड़ के हाथी, बैठा सीस निवाईआ। धुर दा खेल पुरख समराथी, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण धार जोत प्रकाशी, परम पुरख परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म नूर नूर रुशनाईआ।

✪ २३ चेत शहिनशाही सम्मत ६ दलबीर सिँघ दे गृह पिण्ड कल्सीआं ✪

काल कहे मैं जुग जुग चार कुण्ट दहि दिशा भज्जया, नित नित आपणी सेव कमाईआ। लख चुरासी गुर अवतार पैग़म्बर खा खा मूल ना रज्जया, तृखा तृष्ना तृप्त ना कोए कराईआ। डौरु डंक जगत जहान हो के वज्जया, रामा कृष्ना दए गवाहीआ। पैग़म्बरां खुशीआं दे नाल सद्दया, ईसा फाँसी गल लटकाईआ। मुहम्मद देखी आर पार दी हद्दया, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक दरसाईआ। करबले रह गई ना किसे दी लज्जया, अली फरज़ंद रहे कुरलाईआ। गोबिन्द धार खण्डा वढ्ढुया, सीस धड़ वक्ख वखाईआ। इक निशाना दो जहानां गड्डुया, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। शाह पातशाह कोए ना बचया, सूफ़ी सन्त फ़कीर ओहले रहिण कोए ना पाईआ। सदी चौधवीं मैं बचन करां सच्चया, सति सतिवादी इक सुणाईआ। कूड़ कुड़यारा जो नौ खण्ड पृथमी नच्चया, घट घट अन्दर डेरा लाईआ। माया ममता विच जीव जहान मच्चया, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। मैं चाहुंदा सब दी अन्त अख़ीर करां हत्या, हत्यारे दुष्ट दयां खपाईआ। जेहड़ा प्रभ दे नाम होवे रत्तया, भगत भगवन रूप दरसाईआ। सति धर्म दी होवे इक सत्तया, सति पुरख निरँजण इक मनाईआ। कूड़ी क्रिया मेट के रट्टया, रटण इक्को नाम लगाईआ। सच सरनाई होवे ढट्टया, पुरख अकाला इष्ट मनाईआ। झगड़ा छड के पथ्थर इट्टया, पाहन सिला दूर कराईआ। आत्म परमात्म दवारे होवे विक्या, विकार हँकार विभचार डेरा ढाहीआ। पूरब दा लेखा होवे लिख्या, धुर मस्तक खोज खुजाईआ। साची सिख्या होवे सिख्या, सोहँ ढोला गाए चाँईं, चाँईंआ। मन वासना विच्चों होवे जित्तया, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। झगड़ा मुका के वडयां निक्कयां, बिरध बाल जवाना वेख वखाईआ। सच प्यार दा बण के मित्तया, मित्र प्यारा हो के दयां दरसाईआ। काल कहे मैं लख चुरासी खावां पुरख अकाल मेरी इहो इच्छया, निर इच्छत तेरे अग्गे रखाईआ। सच हुक्म दी पा दे भिच्छया, खाली झोली दे भराईआ। सिर तेरे चरण कँवलां उत्ते सिट्टया, धूढ़ी मस्तक ख़ाक रमाईआ। जिस दीन दुनी नूं तूं किहा मिथ्थया, सारी मथ के दयां वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। काल कहे मैं लख चुरासी ग्रसां, गृह गृह वेख वखाईआ। दीन दुनी वेख वेख हस्सां, मानव मानव खोज खुजाईआ। सृष्टी दृष्टी वेखां अक्खां, पर्दा पर्दे विच्चों चुकाईआ। साचा भगत कोए ना मिले विच्चों कोटन लखां, अणगिणत दिसे लोकाईआ। कथा कहाणी प्रभू साची दस्सां, कहि के दयां सुणाईआ। कलयुग रैण अंधेरी वेख मस्सा, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। सब दे ख़ाली दिसदे हथ्था, नाम वस्त हथ्थ किसे ना आईआ। जगत बणजारे फिरदे हट्टां, भज्जण वाहो दाहीआ। तेरा अमृत रस मिले ना तीर्थ तट्टां, गंगा गोदावरी जमना

सुरस्ती मारे धाईंआ। सब दा चीथड़ पुराणा अन्तिम फटा, ओढण सीस ना कोए रखाईआ। मैं चाहुंदा सब दा लेखा कटां, कटाक्ष तेरा हुक्म लगाईआ। दीन दुनी ज़ीरो विच ज़ीरो कर दयां बटा, हिन्दसा अंकड़ा रहिण ना पाईआ। किसे दी कीमत रहे ना टका, मायाधारी दयां खपाईआ। कूड़ कुड़यार कर इक्ट्ठा, शौह दरया रुढ़ाईआ। मैं तेरा सूरबीर दुलारा हट्टा कट्टा, योद्धा इक्को इक अख्वाईआ। करां खेल बाज़ीगर नट्टा, स्वांगी हो के आपणा स्वांग वरताईआ। इक्को थापी मारां उपर पट्टां, पटने वाला नाल मिलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप समुंद सागर तेरा टप्पां, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्बत ना कोए अटकाईआ। जगत विकारीआं मारां सट्टां, धरनी धरत धवल उत्ते लिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच धार दी बख्श के सत्ता, सति सतिवादी आपणी दया कमाईआ।

✪ २३ चेत शहिनशाही सम्मत ६ बाबे मोता सिँघ दे गृह पिण्ड कल्सीआं ✪

४३५ तेई चेत धर्म दी धार, सति सच समझाईआ। पहला अक्खर करना सुधार, सुध शुद्धी विच वड्याईआ। पाल सिँघ ४३५
२२ चौवी चेत नूं छड्डया संसार, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। तेई चेत दा तेई कट के चौवी दा अक्खर देणा डार, अग्गे भुल्ल २२
रहे ना राईआ। किरपा करे आप करतार, हरि करता धुरदरगाहीआ। पुराणा चन्दोआ देणा उतार, उपर नज़र कोए ना आईआ। उस दा निक्का जेहा हिस्सा ल्या पाड़, भगत दवारे भगत सिंघासण उत्ते टिकाईआ। हुण अगला हुक्म होणा की खेल खेलणा सतारां हाढ़, नवीं नवीं धार प्रगटाईआ। शेर सिँघ रिहा नहीं तत्तां दा यार, लेखा तन दिता गंवाईआ। अग्गे करनी अगम्मी कार, जिस नूं सके ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। तेई चेत कहे मेरी कर दयो दरुस्ती, दरुस्त दयां जणाईआ। कलम कानी करनी फुरती, फुरतीला अंग बणाईआ। जेहड़ी धार अकाल मूर्ती, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। उस दी मंज़ल ना नेड़ ना दूर दी, इक्को रंग समाईआ। सतिगुर शब्द विच लिख्त रहिण नहीं देणी कूड़ दी, मन मति ना कोए चतुराईआ। जिथ्थे बख्शश इक्को धूढ़ दी, टिक्के धुर दे नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। चन्दोआ कहे मेरा मेरा होया पुराणा, मेरी मैं रही ना राईआ। मेरा वेखण वाला बाणा, ज़री ज़र सोभा पाईआ। मैं वेखदा रिहा खेल महाना, आपणी निगाह टिकाईआ। चौदां साल सुणदा रिहा गाणा, अगम्मी धुन महाराज

शेर सिँघ दे अन्दर वज्जदी रही वधाईआ। मेरे थल्ले सौं के नौ वार बदलया सरहाणा, सरहाणा पैंद वल बदलाईआ। फेर वेख्या मार ध्याना, ज़िमीं असमानां खोज खुजाईआ। जां तक्कया गोबिन्द धार पूरन ब्रह्म ज्ञाना, दूजा नज़र कोए ना आईआ। इहो भविक्ख्तां दा निशाना, निशाना निशाने उत्ते टिकाईआ। जोत जोत रूप निरगुण धार महाना, महिमा अकथ अकथ समझाईआ। चन्दोआ कहे मैं उपर तणया थल्ले चरणां विच करदा रिहा प्रणामा, निउँ निउँ यारां लख वार सीस निवाईआ। फेर वेख्या वरतदा उस दा भाणा, भाणे विच आपणी कार कमाईआ। छड्ड के जगत जहाना, जोत जोत विच समाईआ। प्रगट हो के विष्नूं भगवाना, डंका नाम दिता वजाईआ। मेरा चीथड़ वेख पुराणा, प्राण अधारी मेरा होया सहाईआ। हुण दुःख दलिद्र इन्हां दा सारा लाहणा, वेला वक्त दए गवाहीआ। इक दिन तिन्न वार मेरी कन्नीआं तणीआं सिँघ माणा, उत्तर पूरब पच्छम गंढ दवाईआ। फेर दक्खण मुख करके खाधा सी खाणा, उगलां पंज मुख लगाईआ। फेर मंजा डाह के साणा, सिर पैंद उत्ते टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेव आप आपणे विच छुपाणा, बाहरों समझ कोए ना पाईआ।

४३६ २२

✪ २३ चेत शहिनशाही सम्मत ६ दयाल सिँघ दे गृह पिण्ड डल ✪

कलयुग कहे काल उठ महाकाल दे धर्म भुयंगी, भुजा आपणी बल धराईआ। तूं चुरासी लख दा योधा सूरबीर जंगी, बहादर इक्को इक अख्वाईआ। आपणी तेज़ कटार कर नन्गी, नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप दे चमकाईआ। तेरा राह तके गोबिन्द वाली चण्डी, चण्डाल रूप होई लोकाईआ। सब दी वासना होई गंदी, अन्तर अमृत रस ना कोए वखाईआ। सृष्टी दी दृष्टी होई नन्गी, ओढण नाम सीस ना कोए टिकाईआ। सदी चौंधवी जांदी लँघी, मुहम्मद वेखे चाँई चाँईंआ। चार कुण्ट दहि दिशा मन कल्पणा होई पखण्डी, सति दा राह ना कोए वखाईआ। आत्मा परमात्मा बिना होई रंडी, शब्द सुहागी कन्त ना कोए हंढाईआ। प्रीआ प्रीतम लावे ना किसे कार अंगी, अंगण अंग ना कोए लगाईआ। अमृत मिले ना जमना सुरस्ती गोदावरी गंगी, अठसठ तीर्थ रोवण मारन धाईआ। कलयुग जीव जंत साध सन्त होए डम्बी, ब्रह्म विद्या ना कोए पढ़ाईआ। धरनी धरत धवल धौल थर थराहट विच कम्बी, धीरज धीर ना कोए धराईआ। झगड़ा प्या काया माटी चम्मी, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। कलयुग कहे काल उठ वेख कलकाती, कर्म कांड खोज खुजाईआ। झगड़ा प्या दीन मज़्हब ज़ात पाती, आत्म ब्रह्म ना

कोए समझाईआ। चार जुग दी धार वेख कागज़ाती, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी खोज खुजाईआ। साचा इलम हथ्थ ना आए सफ़ाती, अक्खरां वाली सारे करन पढ़ाईआ। सतिगुर शब्द दा बणे ना कोए जमाती, मंज़ल हक ना कोए वखाईआ। जीवण विच बदले ना किसे हयाती, ज़िंदगी ज़िंदा ना कोए कराईआ। साचे मण्डल वेखे कोए ना रासी, बिन गोपी काहन रास रचाईआ। जिधर तके दीन दुनी मधरा मासी, नाम खुमारी मस्ती हथ्थ किसे ना आईआ। धर्म दा रिहा कोए ना साथी, सति दा संग ना कोए निभाईआ। सच दवार दी चढ़े कोए ना घाटी, हरि का दरस कोए ना पाईआ। मैं चाहुंदा कलयुग मेट अंधेरी राती, सतिजुग सच होवे रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया कोलों कर खुलासी, वाग इक्को ख़सम हथ्थ फड़ाईआ। बिन तेरे तत्तां वाले बन्धन दी बन्द करे ना कोए खुलासी, तन वजूद नाता ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, साचा हुक्म इक सुणाईआ। कलयुग कहे काल मेरा बणा लै संग, सगला संग रखाईआ। नौ खण्ड पृथमी नच्च बण मलंग, डौरु घर घर डंक वजाईआ। सब नूं हैरान कर दे दंग, दंगा करे जगत लोकाईआ। सदी चौधवीं करा दे इक जंग, दीन दुनी बचया रहिण कोए ना पाईआ। कूड़ कुकर्म दे खण्डे नाल कर दे खण्ड खण्ड, सिर धड़ ना कोए चतुराईआ। इहो आसा इहो मनसा कलयुग मेरी एहो उमंग, मनसा आपणी दयां समझाईआ। मेरा चार लख बत्ती हज़ार समां बड़ा लम्बा ना जाए लँघ, बिना कूड़ कुकर्म तों होए ना कदे सफ़ाईआ। मैं वेख कराया अंधेरा अंध, गोबिन्द दे बच्चे नीहां हेठ दबाईआ। तूं सब दा लेखा राय धर्म तों मंग, चित्रगुप्त हिसाब वखाईआ। फेर सब दी सुत्तयां जागदयां वढ्ढ कंड, खण्डा खड़ग खड़ग चमकाईआ। वेखीं किते सदी चौधवीं ना जाए लँघ, मुहम्मद दी आसा पूर कराईआ। कलयुग कहे धुर दे काल आपणे प्रेम दा कस तंग, आसण आपणा आप बणाईआ। उत्तर पूरब पच्छम दक्खण चारे कूट जाए लँघ, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। इक्को हुक्म मन्नणा शाह पातशाह शहिनशाह सूरे सरबंग, जो पुरख अकाल दीन दयाल धुर दा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साहिब सुल्तान सूरा सरबंग, सद हुक्मे विच रखाईआ।

✪ २३ चेत शहिनशाही सम्मत ६ मनी सिँघ दे गृह पिण्ड सिद्धवां ✪

चित्रगुप्त कहे कलयुग दा लेखा कीता हिसाब, हिन्दसा हिन्दसा वेख वखाईआ। मेरी लिखण वाली भर गई सारी किताब, ख़ाली सफ़ा नज़र कोए ना आईआ। राय धर्म देणा चाहे अज़ाब, बल आपणा रिहा जणाईआ। क्यों किसे दा कबूल

ना होया सजदा अदाब, नमस्ते नमो ना कोए वड्याईआ। माया ग़फ्लत विच्चों खुल्ही किसे ना जाग, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। चार वरन अठारां बरन लग्गी आग, अमृत मेघला मेघ ना कोए बरसाईआ। मिल्या मेल ना मोहन माधव माध, धुन बंसरी नाम ना कोए सुणाईआ। जीव जंत हँस बुद्धी होए काग, दिवस रैण काग वांग कुरलाईआ। किसे खेड़े लग्गा ना भाग, भगवन मिलण कोए ना आईआ। दुरमति मैल धोवे कोए ना दाग़, पापां करे ना कोए सफ़ाईआ। बौहड़ी बौहड़ी सारा करे समाज, सांतक सति ना कोए वरताईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु आउंदे रहे इक दूजे तों बाद, यक्के बाद दीगरे आपणी सेव कमाईआ। सच संदेशा दे के गए अहिलाद, हुक्म हुक्म विच्चों जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि करता अगम्म अथाहीआ। चित्रगुप्त कहे मेरी लिख लिख थक्की कानी, कायनात कर्म खोज खुजाईआ। चारों कुण्ट दिसे हानी, दहि दिशा ना कोए वड्याईआ। हिरदे वसया ना किसे कलमा बाणी, नाम निधाना अणयाला तीर ना कोए लगाईआ। आत्म परमात्म होई ना जाण जाणी, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। खोजी वेखी तकी चार खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। सरगुण धार निरगुण भुल्लया प्राणी, प्राणपति प्रभ मिलण कोए ना पाईआ। एसे कारन सृष्टी होणी फ़ानी, फ़ैसला हक हक सुणाईआ। काल बल धारना इक जवानी, जोबनवन्ते लैणी अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। काल कहे मैं सूरबीर बांका, चित्रगुप्त दयां जणाईआ। दीन दुनी दा वेखां ख़ाका, नकशा फोलणा ख़लक खुदाईआ। जगत विकारी खोल्हां ताका, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। जिस ने साहिब प्रभू नहीं जाता, मिल्या मेल ना धुरदरगाहीआ। उन्हां दी मिट्टी उडावां ख़ाका, बचया रहिण कोए ना पाईआ। लहिणा देणा रहे ना बाका, हिसाब तेरे हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। चित्रगुप्त कहे काल आह वेख मेरी लकीर, महाकाल दए समझाईआ। दीन दुनी वेखी शाह हकीर, बिरध बाल खोज खुजाईआ। तके सूफ़ी सन्त फ़कीर, बग़लीआं बग़लां विच टिकाईआ। शरअ मज़्ब तके ज़ंजीर, छुरी वेखी रूप कसाईआ। अन्त सारे होए दिलगीर, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। हउमे सब दे अन्दर पीड़, बिरहो रोग ना कोए कढ्ढाईआ। बदल सके ना कोए तकदीर, तदबीर सच ना कोए जणाईआ। कलयुग वेला अन्त अख़ीर, अवतार पैग़म्बर गुरु देण गवाहीआ। किसे दी रहिण नहीं देणी मिलख जागीर, शहिनशाह शाही देणी बदलाईआ। सदी चौधवीं अन्त निरगुण धार करना तूं वहीर, भज्जणा वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं

भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो शब्दी धार करे तामीर, अख़ीर अन्त लेखा दए मुकाईआ।

✪ २४ चेत शहिनशाही सम्मत ६ समुंद सिँघ दे गृह पिण्ड माढ़ी ✪

कलयुग कहे प्रभू साचे भगतां दे सुमति, समग्री नाम सति वरताईआ। काया त्रैगुण तपे ना अग्नी तत, अमृत मेघ देणा बरसाईआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत्त, रत्न अमोलक हीरे लए प्रगटाईआ। धीरज अन्दर दे सन्तोख जत, जागरत जोत कर रुशनाईआ। मन कल्पणा रहे मूल ना हठ, हउमे हंगता देणी मिटाईआ। विकार विभचार देणा कट, कटाक्ष धुर दा नाम लगाईआ। सुरती शब्दी मार के सट्ट, सोई साहिब लैणी उठाईआ। दहि दिशा ना जाए उठ उठ नट्ठ, घर मन्दिर इक वखाईआ। जिथ्थे रहे पुरख समरथ, हरि करता सहिज सुखदाईआ। बिरध बाल दोहां दी पूरी करनी आस, तृष्ना तृखा देणी गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहर निगाह इक टिकाईआ। मन कल्पणा ना होए शोर, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। अंध अंधेरा मिटे घोर, पर्दा पर्दे विच्चों उठाईआ। वस्तू घर वड़े ना चोर, निन्दक निंदिआ ना कोए समझाईआ। सच मुहब्बत विच देवे जोड़, जोड़ी बिरध बाल बणाईआ। जगत प्रीती निभे तोड़, तुटयां लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच स्वामी होए सहाईआ। राय धर्म कहे मैं सृष्टी दा वेख्या धर्म, धर्म दवारे खोज खुजाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर प्या भरम, भाण्डा भरम ना कोए भनाईआ। जगत जिज्ञासू सिद्ध होवे किसे ना कर्म, कर्म कांड विच भुलाईआ। नेत्र रोवे वरन बरन, चार अठारां दए दुहाईआ। सच मिले कोए ना सरन, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। सुफल होवे ना जन्म मरन, चुरासी पन्ध ना कोए मुकाईआ। रसना ढोले सारे पढ़न, हिरदे हरि ना कोए टिकाईआ। हकीकी मंज़ल मूल ना चढ़न, दर घर सच ना कोए सुहाईआ। जिधर तकां शास्त्रां नाल लड़न, कलमा नाम नाल टकराईआ। भेव खुल्ल्हे ना चोटी जड़न, चेतन जड़ ना कोए समझाईआ। नेत्र खुल्ल्हे ना हरन फरन, साध सन्त नेत्र नैण ना कोए चतुराईआ। माया राणी पाणी सारे भरन, सीस जगदीश ना कोए निवाईआ। कूड़ कुड़यार दवारे खड़्हन, सच गृह ना वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। राय धर्म कहे चित्रगुप्त लेखा लिख्या की, बिन कलम शाही समझाईआ। काल कहे मैं वेखणा लख चुरासी जीअ, जगत सन्त खोज खुजाईआ। झगड़ा मेटणा साढे तिन्न हथ्थ

सींअ, रविदास चमारा दए गवाहीआ। नाता तोड़ के पुत्र धी, मात पित लेखा देणा मुकाईआ। कूड़ी कल्पणा कुकर्म बीज के बी, बीआबान वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर हुक्म इक सुणाईआ। काल कहे चित्रगुप्त मैं उठया, राय धर्म बल धार। हुक्म देवे अबिनाशी अचुतया, पारब्रह्म सच्ची सरकार। चारों कुण्ट शेर हो के बुक्कया, भबक मारी इक ललकार। जो जीव प्रभ दे राहों घुथिआ, अन्तिम फड़ फड़ करां ख्वार। जिस वेले मुहम्मद दा पैंडा मुक्कया, सदी चौधवीं आवे हार। नबी रसूलां अन्तर होवे दुख्या, हाहाकार करे संसार। धुर दा भाणा कदे ना रुक्या, ना कोए मेटे मेटणहार। प्रभ ने गेड़ चलाउणा पुट्ठया, उलटी वहे धार। जिस दा नाता आत्म परमात्म तुट्टया, लख चुरासी होवे ख्वार। काल कहे मैं अन्त अख़ीर सब नूं पुच्छया, आवाज़ अगम्मी उच्ची मार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त नित नवित शाह पातशाह शहिनशाह परवरदिगार सच्ची सरकार।

✪ २४ चेत शहिनशाही सम्मत ६ गंडा सिँघ दे घर पिण्ड दुराजके ✪

महाकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बर सारे दयो सबूत, बेसबर सबर नाल जणाईआ। इशारा करो जो पाक पूत कलबूत, कलमा नाम नाल वड्याईआ। जिथ्थे प्रकाश पंज भूत, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। आत्म परमात्म होवे सूझ, समझ तों परे समझ समझाईआ। काया काअबा दस्सो आहला अर्श अरूज, प्रीतम अर्शी वेख वखाईआ। जेहड़े सिख मुरीद मात कीते महिफ़ूज, शब्द इशारे लओ उठाईआ। जिथ्थे नज़र ना आए द्वैत दूज, दुतीआ भउ ना कोए रखाईआ। इक्को मंज़ल होवे मक्सूद, गृह इक्को वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कवण दवारे देवे वर, सति सच सच वरताईआ। महाकाल कहे राय धर्म चित्रगुप्त, खुफ़िआ भेव रहे ना राईआ। चार जुग प्रभ दा नाम जुग चौकड़ी मिल्या मुफ्त, कीमत करता ना कोए रखाईआ। क्यों दीन दुनी होई एस दे उलट, मार्ग रस्ता गई भुलाईआ। किसे हथ्थ धरे कोए ना पुश्त, पुश्त पनाह ना कोए जणाईआ। क्यों सदी चौधवीं सारे हो गए सुस्त, आलस निंद्रा विच कुरलाईआ। पीआ प्रीतम मिले किसे ना मुरशद, मुरीद मुर्दा गोर ना कोए समाईआ। आपणी आपणी सारे करदे उल्फ़त, सिफ्तां विच सिफ्त वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। महाकाल कहे अन्त सुणनी नहीं फरयाद, हुक्म हकीकत वाला दृढ़ाईआ। जिस ने दीन दुनी खेड़ा कीता आबाद, लख चुरासी वंड

वंडाईआ। दीन मज़्ब बणाए समाज, अवतार पैग़म्बर गुर सेव कमाईआ। सो खेल करे निरगुण सरगुण साजण साज, भेव अभेदा आप छुपाईआ। सदी चौधवीं रच के काज, नबी रसूलां करे कुड़माईआ। वीहवीं सदी दा हिस्सा देवे भाग, ईसा झोली ख़ाली वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे सृष्टी बुद्धी होई काग, हँस रूप ना कोए दरसाईआ। निज नेत्र खुल्ही किसे ना जाग, आलस कूड़ कूड़ कुरलाईआ। साचे बेड़े चढ़े ना कोए जहाज़, नईया नौका पार ना कोए कराईआ। गुर अवतार पैग़म्बर निरगुण सरगुण करे ना कोए अहिलाद, सिर हथ्थ ना कोए रखाईआ। जिधर तक्कण दिसे वाद विवाद, दु:ख रूप भरी लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म दवारा इक जणाईआ। महाकाल कहे मैं वेखां ग़रीब निवाज़ा, निरइच्छत खेल खिलाईआ। जिस ने सरगुण साजन साजा, विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाईआ। जिस दा नाम अगम्मी वाजा, अनहद नादी नाद दृढ़ाईआ। जिसनूं गाउंदे विच रागां, सिफ्तां विच सालाहीआ। उस दा खेल अन्तिम होणा विच देस माझा, मजलस भगतां नाल बणाईआ। आत्म परमात्म नाता जोड़ के सांझा, सज्जण मीत इक अख्वाईआ। मेला मेले शब्दी धार गोबिन्द वाला बाजां, बाज़ी आपणे हथ्थ रखाईआ। भेव अभेदा खोल्हे सन्तां साधां, सूफ़ी फ़कीरां वेख वखाईआ। लहिणा देणा जाणे कृष्ना राधा, सीता राम भेव ना राईआ। अल्ला आलमीन वेखे रोज़े नमाज़ा, सजदयां अक्ख खुल्हाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक परवरदिगार सांझा यार आपणा पूरा करे वायदा, वाहवा आपणी कार कमाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर अलाहिदा, हरिजन साचे लए प्रगटाईआ। कलयुग विच सतिजुग लाए बाकायदा, पतिपरमेश्वर आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, लख चुरासी जीव जंत सब दा लए जाइज़ा, जाइज़ आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ २५ चेत शहिनशाही सम्मत ६ दलीप सिंघ दे गृह पिण्ड गगोबूआ ✪

पुरख अकाल कहे अवतार पैग़म्बर गुर आपणी दस्सो अन्त ख़ाहिश, दलील दलील विच्चों प्रगटाईआ। मुरीद सिख शिश आपणे करो तलाश, नव सत्त खोज खुजाईआ। पंज तत काया माटी वेखो ख़ाक, ख़ालस पड़दा दयो उठाईआ। जिस जिस दा लेखे लग्गा स्वास, पवण पवणां विच वड्याईआ। उस दा लहिणा देणा लिखो बिना कलम दवात, निरअक्खर धार दयो दृढ़ाईआ। झगड़ा मेट के ज़ात पात, दीन दुनी दा लहिणा दयो चुकाईआ। जिस दी चुरासी विच्चों खुल्ही जाग, जागरत

जोत बिन वरन गोत नज़री आईआ। जो हँस बुद्धी बणया होवे काग, कलयुग कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। तुहाडे नाम कलमे नाल जिस मेटी अंधेरी रात, निरगुण नूर जोत चन्द चमकाईआ। शब्द सुणया होवे अनाद, अनहद नादी धुन उपजाईआ। साधना विच जेहड़ा बणया होवे साध, सति सति विच समाईआ। जो बिन रसना जेहवा रिहा होवे अराध, अजपा जाप विच समाईआ। उस दी उच्ची कूक दयो आवाज़, संदेशा दयो सुणाईआ। पड़दा ओहला रहे कोए ना राज़, राज़क रिज़क रहीम रिहा जणाईआ। जिस मुरीद उत्ते मुर्शद दा नाज़, इशारा दयो कराईआ। जिस गुरसिख उत्ते सतिगुर नाम दा ताज, सो फड़ के लओ उठाईआ। जिस दा सति विच दीन मज़्ह़ब आबाद, ओह गुर अवतार पैग़म्बर उठ के लओ अंगड़ाईआ। जिस दा मातलोक विच चलदा सति जहाज़, सो आपणा चप्पू लओ उठाईआ। जिस दे कारन मन्नदे इक वाहिद, इष्ट देव इक रखाईआ। जो आपणा आपणा हुक्म कीता आइद, आदत इबादत विच बदलाईआ। उस दा वेला वक्त सुहञ्जणा वेखो शायद, समां समें विच्चों प्रगटाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार धुर दा हुक्म देवे जाइज़, जाइज़ा लैणा ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि करता बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैग़म्बर वेखो आपणे सिख मुरीद, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। किस दी मिली होई दीद, दीदा दानिस्ता देणा जणाईआ। केहड़ी मंज़ल रखी सीध, मार्ग कवण राह तकाईआ। कवण गफ्लत सुत्ता नींद, आलस विच आपणा आप खपाईआ। सारे वेखो सदी चौधवीं रही बीत, मुहम्मद नेत्र नैण उठाईआ। हकीकत वाली रही ना ईद, ईदुल फ़ितर ना कोए चतुराईआ। ईसा कूक के मारे चीक, बौहड़ी बौहड़ी तेरी दुहाईआ। मूसा कहे रही ना कोई तौफ़ीक, तोबा तेरा नाम खुदाईआ। नानक गोबिन्द कहे सति धर्म दी मिटी लीक, लाईन ऐन ना कोए वखाईआ। प्रभू असीं सारे करीए तस्दीक, शहादत इक भुगताईआ। मित्र रिहा ना कोए रफ़ीक, सज्जण संग ना कोए बणाईआ। झगड़ा प्या हस्त कीट, ऊच नीच दए दुहाईआ। मन कल्पणा सके कोए ना जीत, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी पढ़ पढ़ थक्की लोकाईआ। बिन तेरी किरपा होए ना कोए अतीत, त्रैगुण डेरा कोए ना ढाहीआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी दस्सीए असीं ठीक, ठाकर तेरे अग्गे सीस निवाईआ। किरपा कर जगत जगदीश, जगदीश्र तेरी इक सरनाईआ। बिन तेरे साचा कलमा धुर दा नाम देवे ना कोए हदीस, हज़रतां तों परे करे ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सब दी काया कर ठांडी सीत, अग्नी तत तत बुझाईआ।

✪ २५ चेत शहिनशाही सम्मत ६ मुखतार सिँघ दे गृह पिण्ड गग्गोबूहा ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण, प्रभू तूं आदि जुगादि खिलाड़ी, जुग जुग खेल खिलाईआ। असीं सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तक्कीए दिन दिहाढ़ी, ओहला नज़र कोए ना आईआ। तेरा हुक्म मन्ने राय धर्म चित्रगुप्त काल महाकाल मौत लाड़ी, सिर सके ना कोए उठाईआ। लख चुरासी जीव जंत सदी चौधवीं पक्की दिसे हाढ़ी, हाढ़ा कढ के दईए सुणाईआ। माण रहिणा नहीं मूंड मुंडाए मुच्छ केस दाढ़ी, बल धार ना कोए अख्वाईआ। फिरे दरोही जंगल विच उजाड़ पहाड़ी, पर्बत रहे कुरलाईआ। लग्गे अग्ग बहत्तर नाड़ी, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। सृष्टी दिसे विच झाड़ी, महल्ल अटल ना कोए सुहाईआ। कलयुग वखावे डूँघी खाड़ी, पार किनारा ना कोए वखाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा सब दी किस्मत होई माढ़ी, अस्मत सके ना कोए बचाईआ। कोटां विच्चों जन भगत तके तेरे पुजारी, जो तेरा नाम ध्याईआ। उन्हां मिले सच्ची सिक्दारी, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। मेहरवान महिबूब बिन तेरे धुर धर्म दी दिसे कोई ना यारी, यराना कूड़ जगत लोकाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर साडी इक इक निमस्कारी, नमो कहि के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहरवान महिबूब मेहर नजर इक उठाईआ।

✪ २५ चेत शहिनशाही सम्मत ६ गुरबख्श सिँघ दे घर पिण्ड गग्गोबूहा ✪

लाड़ी मौत कहे मैं सोई सवाणी उठी, उठ लई अंगड़ाईआ। खोल्ह के वेखी आपणी सज्जी मुठी, हथेली वल्ल ध्यान टिकाईआ। निगह पाई जगत लोकाई दिसी लुट्टी, लुटेरा कलयुग भज्जे वाहो दाहीआ। सब दी आसा रोई उच्ची उच्ची, कूक कूक सुणाईआ। प्रभ दे नाल दिसे किसे ना रुची, बिन भगतां संग ना कोए रखाईआ। मैं आवाज़ मार के इक गल्ल पुछी, काल मैनूं दे जणाईआ। उस इशारा कीता चित्रगुप्त लेखा रिहा चुक्की, भार आपणे कंध टिकाईआ। फेर खोल्ह के खब्बी मुट्ठी, मैं उँगलां दितीआं हिलाईआ। फेर हथ्थ पाया दोहां गुट्टीं, ज़ोर नाल दबाईआ। फेर अन्दरों अक्ख पुट्टी, पलक लई बदलाईआ। जां वेख्या दीन दुनी होई दुखी, दुखियां दर्द ना कोए मिटाईआ। जनणी सुफल ना होई कुख्खी, भगत जणे कोए ना माईआ। इक गल्ल मैं धर्म दवारे पुछी, सहिज नाल सुणाईआ। की गल्ल सृष्टी दृष्टी प्रभ प्यार नालों टुट्टी, टुटयां ना कोए जुड़ाईआ। झट ईसा किहा खलक खुदा राह तों घुथ्थी, मंज़ल हथ्थ किसे ना आईआ। अग्गे गल्ल रही दो तुक्की, बहुती वंड ना कोए वंडाईआ। सब दी मति होई पुट्ठी, अक्ल बुद्धी ना कोई चतुराईआ। वेखीं आपणे निशान्यों

कदे ना उकीं, तीर अणयाला लैणा चलाईआ। प्रभ दा हुक्म मिलण वाला कमलीए पैरीं पावीं ना जुत्ती, भज्जीं वाहो दाहीआ। पहलों वेखीं मुहम्मद दी मासी फुफ्फी, आपणी निगह बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दवार कदी ना रुस्सीं, हस्स हस्स आपणी सेव कमाईआ।

✪ २५ चेत शहिनशाही सम्मत ६ कर्म सिँघ दे गृह पिण्ड गग्गोबूहा ✪

लाड़ी मौत कहे मैं आपणा वक्त सुहाउणा, आपणी सोहणी रुत बणाईआ। तन श्रृंगार अगम्म कराउणा, बिन वजूद रंग रंगाईआ। वस्त्र सति सति रंगाउणा, सच नाल वड्याईआ। नेत्र कज्जल धार वखाउणा, अक्ख प्रतख वेख वखाईआ। मैंडी सीस सीस गुंदाउणा, सोहणी वंड वंडाईआ। सालू सिजल वाला टकाउणा, ओढण मुहम्मद दए फड़ाईआ। ईसा गोडीं हथ्थ लगाउणा, मूसा उँगली नाल हिलाईआ। सब दा ध्यान इक कराउणा, सहिज नाल सुणाईआ। तुसीं सुणाओ मैनूं इक गाउणा, जो कल्मयां बाद पढ़ाईआ। मैं क्यामत रूप वटाउणा, क्यामगाह देणी जणाईआ। तुहाडे मुरदयां वेख वखाउणा, जो कबरां विच दबाईआ। तुहाडे मुरीदां राह तकाउणा, जिन्हां कलमा भुल्लणा खुदाईआ। खुद आपणा फेरा पाउणा, हुक्म देणा धुरदरगाहीआ। चौदां तबक हिलाउणा, चौदस चन्द ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दा हुक्म इक सुणाउणा, अणसुणत सब नूं दयां सुणाईआ।

✪ २५ चेत शहिनशाही सम्मत ६ बीर सिँघ दे गृह पिण्ड गग्गोबूहा ✪

लाड़ी मौत कहे धुर दा हुक्म सच्ची सरकार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। मैं हुण छेती जल्दी होवां त्यार, आपणा आप आप उठाईआ। मेरा युद्ध होणा बिना खण्डे तलवार, बिना तीर तरकश करां लड़ाईआ। बिना शस्त्रां तों मेरा वार, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। मैं अवतार पैग़म्बर गुरु छड्डे सँघार, तत्तां वाला रहिण कोए ना पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर अन्त मारदी रही इक ललकार, सूरबीर मूँह दे भार सुटाईआ। कलयुग कूक दस्सां पुकार, नौ सत्त सुणाईआ। कलयुग जीव हो जाओ त्यार, त्रैभवन धनी आपणा हुक्म सुणाईआ। मैनूं सद्दण वाला आपणे विच दरबार, घर साचा इक वखाईआ।

हुक्म देवे बिना भगतां तों किसे दा करना नहीं विचार, विचर के दए सुणाईआ। मैं खुशी नाल करनी निमस्कार, निउँ निउँ सीस निवाईआ। प्रभू जो उपज्या सो देवां सँघार, धरनी धरत धौल उत्ते मिटाईआ। जुग बदली पिच्छों मेरी आउंदी वार, जिस वेले मेरा साहिब आपणी चलाए सच रज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेले खेल अगम्म अपार, अलख अलखणा आपणी कार कमाईआ।

४४५
२२

✪ २५ चेत शहिनशाही सम्मत ६ जगीर सिँघ दे गृह पिण्ड गग्गोबूहा ✪

लाड़ी मौत कहे मैं वेखी ध्यान विच धरती, धरनी खोज खुजाईआ। मैं मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ पुज्जी चर्री, चरागाहां वेख वखाईआ। चार जुग दे शास्त्र वेखे प्रभ दे नाम दी पर्ची, प्राचीन दा लेखा वेख वखाईआ। मेरी निगाह विच अवतार पैग़म्बर गुरुआं दी नज़र आई अर्ज़ी, जिस विच आरज़ू गए जणाईआ। जिस वेले पुरख अकाल दीन दयाल सृष्टी होवे खुदग़रज़ी, तेरी ग़रज़ ना कोए रखाईआ। उस वेले ज्यों भावें त्यों करीं आपणी मर्ज़ी, मेहरवान आपणा हुक्म वरताईआ। दीन मज़्ब दा पुराणा चीथड़ सीवें बण के दरज़ी, ज़ात पात दी दरज़ रहिण कोए ना पाईआ। खेल वेख वखावीं आपणे घर दी, गृह मन्दिर कर रुशनाईआ। मैं तेरे हुक्म अन्दर रहवां डरदी, जुग चौकड़ी सीस निवाईआ। जिस वेले धार वधे कपट छल दी, कूड़ी क्रिया होए हल्काईआ। ओस वेले तेरी आसा मैनूं प्रभू घल्लदी, लोकमात राह दरसाईआ। मैं खेल करां घड़ी पल दी, पलक विच ख़लक दयां मिटाईआ। तेरे हुक्म दी घड़ी किसे तों ना टल्दी, टल्लीआं खड़काउण वाला रहिण कोए ना पाईआ। बचा सके ना धारा अट्ठ सट्ठ जल दी, तीर्थ तट ना कोए सरनाईआ। मैं अन्तिम खेल वेखणी कलयुग कलि दी, जो कालख टिक्का सब नूं रिहा लगाईआ। मैनूं याद आ गई कथा बल दी, जो बावन गया सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी खेल निहचल धाम अटल दी, अटल तेरा नूर नज़री आईआ।

✪ २५ चेत शहिनशाही सम्मत ६ चन्नण सिँघ दे गृह पिण्ड गग्गोबूहा ✪

लाड़ी मौत कहे मैं हुक्म दे विच पाबन्द, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सेव कमाईआ। मेरा मालक ख़ालक इक ख़ावंद,

पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जिस ने लख चुरासी खाण दा मैनूं बख्श्या अनन्द, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी मेरी झोली पाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं तन वजूद रहिण ना दिता बन्द, बन्दगी वाले सन्त फ़कीर जन भगत खा के खुशी मनाईआ। कोटन कोटि जुग चौकड़ी गए लँघ, नौ सौ चौरानवे दए गवाहीआ। मेरा अज्जे ना मुक्कया पन्ध, अन्त अख़ीर ना कोए कराईआ। मैनूं शंकर दी इक सुगंध, शंका रहिण कोए ना पाईआ। चार कुण्ट नहीं डरी सारी सृष्टी करदी रही दंग, हैरानी विच कुरलाईआ। मैनूं अन्त संदेशा इक दे के गया गुजरी दा चन्द, गुर गोबिन्द धुर दा माहीआ। उठ निगाह मार जिस वेले कलयुग कूड़ी क्रिया दी ढहिणी कंध, गढ़ हँकार रहिण ना पाईआ। इक दा इक ने गाउणा छन्द, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। ओस वेले हुक्म देणा सूरे सरबंग, शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहीआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मानव मानव होणा जंग, जगह जगह पए दुहाईआ। जिस कारन मैं छड्डुया पुरी अनन्द, सदी चौधवीं सफा सब दी देणी उठाईआ। तूं सब दी वढुणी कन्ढु, भज्जणा वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिधर तकें निरगुण तेरे संग, सगला संगी बहुरंगी आपणा खेल वखाईआ।

✪ २५ चेत शहिनशाही सम्मत ६ करतार सिँघ दे गृह पिण्ड भोजीआं ✪

पुरख अकाल कहे मेरा शब्द शब्द दुलारा, दूल्हा धुर दा नज़री आईआ। सो पुरख निरँजण करे जिस प्यारा, हरि पुरख निरँजण देवे माण वड्याईआ। एकँकार बण सहारा, आदि निरँजण करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता कर उज्यारा, श्री भगवान होए सहाईआ। पारब्रह्म पावे सारा, मेहरवान मेहर निगाह टिकाईआ। हुक्मी हुक्म करे वरतारा, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। जिस दा खेल सदा जुग चारा, निरगुण सरगण कार कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दए सहारा, सद सद आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वडा वड वड्याईआ। पुरख अकाल कहे मेरा सतिगुर शब्द स्वामी, साहिब सुल्तान अख्वाईआ। आदि जुगादि दा अन्तरजामी, तख्त निवासी नूर इलाहीआ। सच दरगाह शब्द धार दरबानी, निरअक्खर अक्खर धार समझाईआ। खेले खेल चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड वंडाईआ। लेखा जाणे त्रैगुण माया पंज तत प्राणी, पारब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। जिस दा आदि अन्त जुगा जुगन्त बणया कोए ना सानी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, शाह पातशाह

सच्चा शहिनशाहीआ। पुरख अकाल कहे मेरा सतिगुर शब्द पूरा, सूरबीर अख्वाईआ। जुग चौकड़ी हाज़र हज़ूरा, नित नवित वेस वटाईआ। साचे नाम दी वजाए तूरा, तुरीआ तों परे आप समझाईआ। कूड़ी क्रिया हूंझे कूड़ा, हउमे रोग मिटाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ा, भेव अभेद इक खुल्हाईआ। पन्ध मुकाए नेड़ दूरा, काया मन्दिर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक नूर इलाहीआ। पुरख अकाल कहे मेरा सतिगुर पूरा शब्द आदि जुगादि एक, जुग जुग वेस वटाईआ। सच दी देवे टेक, टिक्का मस्तक नाम रखाईआ। करे सर्ब बिबेक, दुरमति मैल धुआईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म खोल्ह के भेत, पर्दा अन्दरों दए उठाईआ। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अग्नी तत बुझाईआ। सचखण्ड वखावे अगम्मी देस, जिथ्थे निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पुरख अकाल कहे मेरा शब्द आदि अन्त दा करता, करता पुरख दए वड्याईआ। ना जीवे ना मरदा, मर जीवत रूप ना कोए दरसाईआ। उहदा कोई ना जाणे हरसा, जुग चौकड़ी कोटन कोटि गए विहाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग उस दा हल्ल करे कोए ना पर्चा, प्राचीन दा भेव ना कोए खुल्हाईआ। इक शब्द संदेसा दिता गोबिन्द जिस वेले चरण छुहाया विच सरसा, सहिज नाल सुणाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले खेल वेखणा कलयुग कल दा, निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। उहदा भेव अभेदा होणा अछल अछल दा, शाह पातशाह शहिनशाह आपणा वेस वटाईआ। जिस दा वासा निहचल धाम अटल दा, दरगाह साची सचखण्ड दवारे निरगुण जोत करे रुशनाईआ। मेरा विछोड़ा होए ना घड़ी पल दा, सद इक्को रंग समाईआ। जिस खेल वेखणा जल थल दा, महीअल खोज खुजाईआ। ओस दा भाणा कदे ना टल्दा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर संदेसा इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द आदि अन्त इक बलवान, बलधारी इक अख्वाईआ। जिस नूं झुकदे ज़िमीं असमान, कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड सीस निवाईआ। जिस दी महिमा सिफ्त सारे गाण, गा गा शुकर मनाईआ। तख्त निवासी नौजवान, ना मरे ना जाईआ। सो लेखा जाणे जीव जहान, लख चुरासी खोज खुजाईआ। जिस दा अवतार पैग़म्बर दे के आए पैग़ाम, भविक्ख्तां विच दृढ़ाईआ। सो सूरबीर अन्तरजामी सब दी करे पहचान, बेपहचान आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा मालक इक इलाहीआ। पुरख अकाल कहे मेरा शब्द गुरु शब्दी धार सच खण्डा, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जो पावे सार कोटन कोटि ब्रह्मण्डा, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाईआ। जिस दा भेव कोई ना जाणे मंदा चंगा, हरि का रूप ना कोए वड्याईआ।

ओह तत्तां वाला नहीं बन्दा, वजूद सबूत ना कोए कराईआ। इक्को मालक ख़ालक प्रितपालक जो आदि अन्त दए अनन्दा, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। पुरख अकाल कहे मेरा सतिगुर शब्द बहादर, सूरबीर अख्वाईआ। जिस जोत जगाई सतिगुर तेग़ बहादर, दिती दो जहान वड्याईआ। धर्म दी धार बण के चादर, अनाथां होया सहाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया रोढ़ के डूँघे सागर, गहर गम्भीर इक प्रगटाईआ। साचे धर्म दा कर के आदर, इन्साफ़ इक जणाईआ। झगड़ा मुका के मक्तूल कातिल, लेखा तन वजूद छुडाईआ। जिस दा नूर अगम्मा साबत, गोबिन्द इक अख्वाईआ। उस ने दीन दुनी दी बदल के आदत, गुरमुख गुरसिख लए प्रगटाईआ। पुरख अकाल दी इक्को करनी इबादत, दूसर सीस ना कोए निवाईआ। ऊचां नीचां इक्को दे ल्याकत, बुद्धी समझ विच समझाईआ। दीन दयाला तुहाडा मालक, ज़ात पात ना वंड वंडाईआ। सतिगुरु शब्दी धार आदि अन्त दा सालस, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। तुसां गुरसिख गुरमुख बणना ख़ालस, ख़ालसा रूप जणाईआ। वेखो कलयुग माया विच ना करयो आलस, ग़फलत विच आपणा आप भुलाईआ। बिना गोबिन्द दे फेर किसे नहीं देणी ज़मानत, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। मेरे नाम दी करयो ना कोए ख्यानत, सहिज नाल गया दृढ़ाईआ। गुरसिखो सिख नाल कदे ना करयो अदावत, तुहाडे पिच्छे बच्चे नीहां हेठ दबाईआ। पन्थ ख़ालसा मेरा सही सलामत, जिस दा राखा पुरख अकाल दिता बणाईआ। मेरी धार नहीं बनावट, सच सच वड्याईआ। मैं सेवा करदा कदी ना आवां विच थकावट, गोबिन्द शब्द विच जणाईआ। अन्त कलयुग आउणी अंधेरी रात, चारों कुण्ट अंधेरा छाईआ। वेख्यो माया विच भुल्ल के कोई छड्ड ना जायो साथ, सगला संग रखाईआ। अगला खेल करना पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता आपणी कार कमाईआ। जिस दी जोत विच मेरा सदा रहिणा वास, विछोड़े वाली वंड ना कोए वंडाईआ। सदा सद होवे प्रकाश, अंध अंधेर गंवाईआ। गुरमुखो जगत धार विच संसार प्यार विच किते भुल्ल ना जायो मेरा विश्वाश, विषयां विच आपणा आप दबाईआ। मैं आदि जुगादि जुग चौकड़ी शब्द सतिगुरु ख़ास, जन्म मरन विच ना आईआ। मैनूं आपणे विच्चों करयो तलाश, बाहर लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। ख़ालसा मेरा रूप आप, मैं सद ख़ालसे विच समाईआ। तुहाडा सब दा पुरख अकाल माई बाप, जिस दी गोदी दिता टिकाईआ। जद याद करोगे साख्यात, प्रगट हो के वेख वखाईआ। आत्म परमात्म कदे टुट्टे ना नात, नाता धुर दा इक बंधाईआ। सो शब्द गुरु जो हर घट रखे वास, वास्ता इक्को नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक दवारा इक

मंज़ल इक घाट, इक्को गृह मन्दिर पुरख अकाल जो आदि जुगादि दा देवे साथ, जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा खेल वखाईआ।

✪ ३० चेत शहिनशाही सम्मत ६ भगत सिँघ इटारसी वाले दे नवित हरि भगत दवुार जेठूवाल ✪

चेत कहे मेरा अन्त दिहाढ़ा मुक्कया, मुक्कया जगत विहार। प्रभ खेल करे अबिनाशी अचुत्तया, चेत्र चतुरथ रूप सरकार। भाग लगावे काया बुत्तया, बुतख़ाने पावे सार। कलयुग जीव वेखे राहों घुथ्थया, मन मंज़ल चढ़े ना कोए दुष्वार। दिन दिहाढ़े जाए लुट्टया, जगत गुरदेव ना कोए पहरेदार। पुरख अकाल गुर अवतार पैग़म्बर कोलों पुछिआ, धर्म धार होवे हुश्यार। कलयुग दा वेला अन्तिम पुज्जया, नेत्र नैण वेखो उग्घाड़। जिस ने भेव चुकाउणा एका दुज्जया, एका रंग रंगे करतार। जो जीव प्रानी रिहा सुत्तया, सच मिले ना कोए प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच्ची सरकार। चेत कहे अन्त मैं वी गया मुक, मुक्ती दयां जणाईआ। सब ने पढ़नी इक्को तुक, सोहँ ढोला धुरदरगाहीआ। भगत धार रहे ना दुःख, दर्दीआं दर्द गंवाईआ। सतिगुर गोदी ल्ए चुक्क, फड़ बाहों गले लगाईआ। भगत सुहेले भगत बणा के सुत, अपराधी ल्ए तराईआ। जो दर दवार गया झुक, तिस राय धर्म ना दए सजाईआ। पर्दा ओहला रहे ना लुक, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। चेत्र कहे मैं अन्त अख़ीरी पुरख अकाल कोलों सब दी मंगदा सुख, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। मेरा उज्जल करे मुख, दुरमति मैल रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत भगत सिँघ भगवान वखाए आपणा इक सुख, जिस सुख विच दुःख सारे जाण समाईआ।

✪ पहली विसाख शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

विसाख कहे मैं वसदे खेड़े गया आ, जन्म विच ख़ुशी मनाईआ। पुरख अकाले सीस निवा, चरण कँवल सरनाईआ। नमस्ते विच दुआ, सजदे विच दुहाईआ। तूं दाता बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। तूं जल्वागर ख़ुदा, रब्बी नूर इलाहीआ। तैनूं सारे रहे गा, रागां नादां विच शनवाईआ। तूं वसें हर घट थाँ, जल थल महीअल रिहा समाईआ। तूं सब दा पिता माँ, लख चुरासी गोद टिकाईआ। तूं सब दा आत्म परमात्म धुर दा नाँ, नाउँ निरँकारा इक अख्वाईआ। तेरा खेल अगम्म

अथाह, अलख अगोचर तेरी बेपरवाहीआ। मैं गल विच पल्लू पा के वास्ता रिहा पा, पाउँ सीस निवाईआ। की कलयुग अन्तिम लावें दाअ, आपणी कार कमाईआ। भेव अभेदा दे खुल्हा, पर्दा सच उठाईआ। कवण तेरा राह रिहा तका, तकवा इक जणाईआ। कवण इशारे रिहा करा, सैनत अगम्म लगाईआ। किरपा कर मेरे मेहरवां, महिबूब तेरी सरनाईआ। मेरे अन्तर आवे चा, चाओ घनेरा इक रखाईआ। तेरा खेल वेख्या झगड़ा पाया सूर गां, मानव मानव नाल टकराईआ। दीन मज़्हबां वंड वंडा, हिस्से टुकड़े दिते कराईआ। अक्खरां वाले जपा के नाँ, सिफ्तां विच वड्याईआ। जुग जुग सतिगुर शब्द बदल के वेस अवेस वटा, रूप अनूप दरसाईआ। अन्त सब नूं हकीकत दा दे के पटा, बेमुन्यादां मुन्याद आपणे विच छुपाईआ। वक्खरो वक्खरा दस्स के टप्पा, टापूआं विच कीती पढ़ाईआ। सब नूं किहा मैं तुहाडा पक्का, मीत इक अख्वाईआ। फेर ओसे नूं दे के धक्का, अगली कल वखाईआ। विसाख कहे मेरी दरोही की संदेसा मुहम्मद नूं दिता विच मक्का, बिना काअबे आप जणाईआ। वेख नज़ारा मेरा यक्का, यक दयां दृढ़ाईआ। जिस वेले तेरा तेरे विच्चों थक्का, थकावट विच दुहाईआ। उस वेले कलमे दा मुल्ल रहिणा नहीं टका, कीमत ना कोए चुकाईआ। नाता रहिणा कोई नहीं सका, मुहब्बत विच ना कोए समाईआ। सदी चौधवीं लाया ठप्पा, इशारे नाल वखाईआ। उस वेले इक्को माण वड्याई मिलणी जो नानक निरगुण सरगुण धार अक्खर होणा पप्पा, पूरन पूरन ब्रह्म जणाईआ। जिस दा हुक्म चार जुग मूल ना छप्पा, छन्दां विच ना कोए जणाईआ। जिस खेल खिलाया कच्छां मच्छां, जलधारा वहिण वहाईआ। उस खेल वखाउणा दो जहान अक्खां, नैण नैण दरसाईआ। लेखा पूरा करना गोबिन्द दी सेज माछूवाड़े कक्खां, कंडयां लैणा सवाईआ। करनैल सिँघ उठ के बोल दे सब अच्छा, कंडा हथ्थ देणा टिकाईआ। मुक्खों कहि दे मैं गोबिन्द तेरा ओह बच्चा, जेहड़ा नौ वार भुल्ल के फेर सरन विच आईआ। बाकी दस्स दे परवार ओह बचा, वड्डे छोटे लै उठाईआ। जिस कारन वट्ट के ल्यांदा रस्सा, हथ्थ विच देणा फड़ाईआ। जेहड़ा पकवान धुर दा पक्का, अग्गे दयो टिकाईआ। जेहड़ा वस्त्र सांभ के रखा, चरण दयो छुहाईआ। जेहड़ा दुःख सब नूं रहिंदा मट्ठा मट्ठा, सारे हथ्थां नाल दयो सुटाईआ। प्रभ वेखणहार बच्चा बच्चा, बुढ्ढे नढ्ढे खोज खुजाईआ। पिछला बचन करना सच्चा, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। जिस वेले माछूवाड़े विच्चों गोबिन्द ने पहली वार पुटीआं अक्खां, नैण जगत उठाईआ। ओह इहनां सभना दा इक जथ्था सी इक्ठा, निउँ के सीस निवाईआ। गोबिन्द ने हस्स के किहा इक गाओ मेरा टप्पा, शब्द नाम सुणाईआ। विच्चों पंजां ने हथ्थ मारया उत्ते मथ्था, ठोकर नाल जणाईआ। तूं ते सुत्ता आप उत्ते कक्खां, की सानूं दएं वड्याईआ। असीं सुणया सी तूं लड़ाउंदा इक नूं नाल लखां, अज्ज साथी नज़र कोए

ना आईआ। क्यों फिरदा जंगल बेले वट्टां, भज्जया वाहो दाहीआ। गोबिन्द फेर खोल्हीआं अक्खां, निगाह कीड़ी वल्ल टिकाईआ। फेर नज़र आया इक सखा, दूर दुराडा भज्जया वाहो दाहीआ। ओह नेड़े पहुँचया मसां, आपणा पन्ध मुकाईआ। उस दीआं चढ़ गईआं नसां, नेत्र रो के दिता वखाईआ। गोबिन्द किहा आपणा दस्स पता, कवण भैण ते कवण भाईआ। उस ने प्यार विच किहा बचन रता, सहिज नाल सुणाईआ। गोबिन्द मैं कोई मर्द नहीं नौजवान नहीं सूरबीर बलवान नहीं मैं कँवारी कन्या ते तेरा छोटा जेहा बच्चा, जंगल विच तेरी याद कर के भज्जा चाँईं चाँईंआ। मेरा इक नाता जिस दे सिर उत्ते ताज धरया सी आपणयां हथ्थां, ओह मेरा मासी दा पुत्तर भाई सोभा पाईआ। मैं चाहुंदी उस नूं वेखां नाल अक्खां, नैण नैण दरसाईआ। गोबिन्द शब्द किहा एह खेल अगम्मा तैनूं इक दस्सां, सच नाल सुणाईआ। ओह वेख कलयुग अन्त आउंदा नस्सा, भज्जे वाहो दाहीआ। उस दा वेख पता, जो पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस ने मेरा खेल कराउणा हो समरथा, समरथ दए वड्याईआ। फेर उस नूं इक वार टेंकी मथ्था, मस्तक चरणां उत्ते छुहाईआ। तेरा वीर तेरे नाल मिलावे बिध रखे आपणयां हथ्था, सति सच सच जणाईआ। बाकी भरावां दा बणा के संग इक्ठा, बंस सरबंस दए जणाईआ। खहिड़ा छुडा के पथ्थर इट्टां, घर इक्को इक दए वखाईआ। धुर दा बण के आप पिता, पतिपरमेश्वर होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। विसाख कहे मैं दस्सण आया पिछली कहाणी, सहिज नाल समझाईआ। माछूवाड़े दी खेल पुराणी, आह कंडा निक्का जेहा दए गवाहीआ। इहो शब्द दी धार इहो गोबिन्द दी बाणी, बाण अणयाला तीर लगाईआ। इहो सारे प्राणी, जो पुराणे विछड़े नज़री आईआ। इहो सब दा जाण जाणी, जानणहार दया कमाईआ। बीबी महिन्दरो ओह वस्त ल्याउणी, खुशीआं तुक गाणी, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। महिन्दरो देदे वस्त्र चिट्टे, नरायण सिँघ तेरे सीस टिकाईआ। कंघा देदे जिस दे निकलणे होर सिट्टे, कंगण गोबिन्द कुंदन सिँघ रंग रंगाईआ। गुलज़ार सिँघ दे काके दे देदे आपणी हथ्थीं हिस्से, झोली दे भराईआ। ओह कलीरे कढ दे दो जेहड़े सतिगुर हट्ट विके, नरायण सिँघ एह दोवें इक इक जुगिन्दर तरिप्त दे बंधाईआ। दो सेब फड़ा दे मिट्ठे, कुंदन सिँघ एह वी जुगिन्दर तरिपत दी झोली पाईआ। अग्गे नूं इहनां नूं हिरस रहे ना किते, फल बच्चयां वाले आदि तों लै के अन्त तक झोली पाईआ। बलविन्दर नारीअल लै आ जिस दे नाल इहनां सारयां दे लेख जाणे लिखे, हथ्थ दे फड़ाईआ। पंज पतासे किथ्थे, जेहड़े गोबिन्द ने ओदों छुपाए ते ऐस वसाखी हथ्थ फड़ाईआ। एह संदेसे विच किसे संदेसे नहीं लिखे, शब्द विच थाँ थां तों लए मंगाईआ। किसे समझ नहीं आउंदी मुनी रिखे, साध

सन्त ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार भुगताईआ। करनैल सिंहा एह कंडा तेरा बड़ा तिक्खा, गोबिन्द दे कन्न विच चुभ्भया ते पासा दिता बदलाईआ। ते गोबिन्द ने हस्स के किहा ओ वाह मेरया निक्या जेहा सिखा, कंडे नूं सिख बणा के फिर छाती नाल लगाईआ। फेर ऊड़ा ओंकार वाला लिख के फेर उस दा लेख लिखा, ते दु:ख सदा लई दिता मिटाईआ। हस्स के किहा ओ मैं भुल्लयां होइआं गुरसिक्खां नूं फेर वी ना देवां पिछा, एह मेरी बेपरवाहीआ। जिस ने इक वार मेरे मिलण दी रख लई इच्छा, सद इच्छा पूर कराईआ। मैनूं जद वेखोगे तां वसां दहि दिशा, घट घट अन्दर आपणा डेरा लाईआ। ओ गुरमुखो जद पीओगे ते मेरा रस मिठ्ठा, कड़वा रूप ना कोए बदलाईआ। सदा खेल करांगा अनडिठा, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जन भगतां दा इक्को वार जन्म कर्म दा लेखा करके चिट्ठा, दुरमति मैल दिती धुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। विसाख कहे ओ गुरमुखो तुहाडा विसाखी दा मेला, वसाह के दिता वखाईआ। जेहड़ा प्या सी विच जंगल बेला, आसण सूलां सथ्थर सेज हंढाईआ। जिस ने इक्को रंग समझाया सी गुरु गुर चेला, चेला गुर इक जणाईआ। ओह धुर दा बण के सज्जण सुहेला, घर मिल्या अगम्मा माहीआ। सदा समझ लओ उस दा गुरमुखां नाल इक्को जेहा वेला, घड़ी पल वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। जन भगतो तुहाडा अन्न दान ते भगत भगवान दा भोजन, रस इक्को इक वखाईआ। जिस वेले नानक दी धार ने ख़त्म कीते सी योजन, गणतीआं गणित ना कोए गिणाईआ। उस वेले इक्को नूं होया रोशन, ज़िमी असमान नज़र कोए ना आईआ। जोत दी धार विच मिल के जोत दी धार नानक लग्गी सोचन, नानक तत्तां वाला संग ना कोए रखाईआ। पुरख अकाल ने अन्तर आपणी दिती लोचन, लोचा इक समझाईआ। जिस वेले कलयुग कूड़ कुड़यारा वेख्या बहुतन, धर्म दी धार ना कोए रखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर मूल ना रोकण, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। माण रहे ना किसे सलोकण, अक्खर अक्खर ना कोए चतुराईआ। फिर सब ने याद करना प्रगट होवे पुरख अकाल जोतन, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। अन्न कहे मैं आया प्रभू दवारे, सीस जगदीश निवाईआ। मेरी कबूल करीं निमस्कारे, दर तेरे वास्ता पाईआ। मैं भुक्ख्यां भरां भण्डारे, ग़रीबां संग रखाईआ। कोई करे ना कारे, कलयुग सतिजुग विच बदलाईआ। सांझे करके भाईचारे, झगड़ा दूई देणा चुकाईआ। तेरा खेल अगम्म अपारे, हरि करते वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देणी माण वड्याईआ। रस्सा

कहे मैनूं ल्यांदा वट्ट, सोहणी बणत बणाईआ। मैं वेखे किरसान जट्ट, सूरबीर अख्वाईआ। बिरधां वेख्या हठ, सके ना कोए डुलाईआ। नवां घरां दे जेहड़े मरे ओह सारे फिरन बेपत, पति ना कोए रखाईआ। वडे छोटे हो के रहे नस्स, भज्जण वाहो दाहीआ। बोल के दस्सण सच, सच सच सुणाईआ। असीं वसदे रहे विच काया माटी कच्च, आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। रस्सा कहे मैं इक्को वार बणाउणा रस्ता, प्रभ देवे माण वड्याईआ। जन भगतां घर वेखणा वसदा, खुशी खुशी अन्दरों प्रगटाईआ। मैं मालक बणना हज़ार अस्सी इक लख दा, बचया रहिण कोए ना; पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल वखाईआ। रस्सा कहे गुरमुखो इक्को वार सब बीर बताले देणे बन्ह, खुशीआं गंढ पवाईआ। तुहाडे वड़ सके ना कोई विच तन, गल फाँसी देवे लटकाईआ। जेहड़े प्रभू दे बण गए चन्न, ओह चन्न दयां चमकाईआ। ज़रा सुण लओ खोल्ह के कन्न, सीस दूसर अग्गे ना कदे झुकाईआ। जे इक नूं लओगे मन्न, सो मालक इक्को नज़री आईआ। क्यों ओह सब नूं देवणहारा डंन, सारे दर दे मंगते ते सारे बैठे सीस निवाईआ। जो घड़या सो देवे भन्न, एह उहदी बेपरवाहीआ। ना कोई खुशी ते ना कोई ग़म, जन भगत सदा इक्को रंग रंगाईआ। विसाख कहे मैं वास्ता पाउणा, पवण पाणी नाल मिलाईआ। गुरमुखो नौ दिन सिर्फ़ रात दे बारां वजे उठ के महाराज शेर सिँघ गाउणा, फेर दुःख नेड़ कोए ना आईआ। उस वेले माँ ने बच्चा नहीं कोई रुआउणा, हां हूं ना कोए जणाईआ। किसे ने हथ्थ सीस उत्ते नहीं लाउणा, अक्खां उँगला नाल ना कोए दबाईआ। मूँह ते पला किसे नहीं पाउणां, घुंड कढ ना कोए जणाईआ। पैर उँगलां नाल नहीं छुहाउणा, शब्द सच सच सुणाईआ। उँगल सज्जे हथ्थ दी नाभी उत्ते रखाउणा, सोहणी बणत बणाईआ। खब्बी उँगल कन्न विच पाउणा, हथ्थ मस्ती नाल उठाईआ। ज़रूर साहमणे हो के दरस दिखाउणा, एह मेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आयां सब नूं पार कराउणा, दुखियां दा दुःख दलिद्रीआं दलिद्र दए गंवाईआ।

सतिगुर शब्द कहे प्रभू मैं भगतां दा विचोला, विचर के दयां सुणाईआ। मैं सब दे अन्दर वड़ के रात दे बारां वजे तेरा गावांगा ढोला, गुरसिख बचया रहिण कोए ना पाईआ। क्यों सच दा सच भण्डारा खोल्हा, दे दे आपणी खुशी बणाईआ। बिन तेरी किरपा कोई बण ना सके पूरा तोला, धुर दा तोल ना कोए तुलाईआ। मेहरवान महिबूब तूं आदि जुगादि सब दा

मौला, निरगुण निरवैर इक अख्वाईआ। मन कदे ना हटे पौणो रौला, एह इस दी सदा चतुराईआ। जे तूं वसणहारा सब दे काया चोला, गुरमुखां दे अन्दर डेरा लाईआ। फेर होर किस दा बोलणा बोला, किस नूं देण सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे क्यों भगतां अग्गे डाहें अड़िक्का, पूरा करन कोए ना पाईआ। वेख कोई बुड्ढा ते कोई निक्का, कोई उस वेले जन्म लै के रो के दाई नूं दए सुणाईआ। कोई विछौणे उत्ते लिटा, कोई विश्या विच आपणा आप लुभाईआ। किसे दे पेट विच होवे दर्द खिड्डा, रो रो मारे धाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभू जे रात दे बारां वजे मर गई किसे दी माँ, उस नूं गवांढी देण रवाईआ। ओह गुरसिख किस तरह करे हां, जे उहदा पुत मरे ते ओह क्यों ना मारे धाईंआ। किस तरह करे वाह वाह, जे घर चोर लग्गण ते वेख के रौला देवे पाईआ। जे किसे दी उस वेले सूणी होई मज्झ गां, तेरे नालों ध्यान उहदे विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सद आपणे रंग रंगाईआ। शब्द गुरु कहे बारां वजे सिर्फ़ इक सौ यारां सकण उठ, बाकी अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। उन्हां विच्चों सतारां दी ज़रूर उँगली पैर नाल जावे जुट, बेवसी विच वस ना कोए चलाईआ। सत्त अक्खां उत्ते छुहाउण पुठ, फेर पछोताण विच आपणा आप डुबाईआ। ते जे समझें वड्डे बिरध बाल कोझे कमले जन भगत मेरे सारे पुत, ते फेर सुत्तयां सब नूं आपणा दरस दे कराईआ। जेहड़ी दात मंगण वाली सी उस तों बैठे रहे चुप, बिना मंग्गयां झोली दे पाईआ। क्यों तेरे भगत सदा तेरी गोदी विच रह के खुश, ते राती जगा के क्यों दएं तड़फाईआ। जे दरस देणा जदों चाहें उठा लै फड़ के गुट्ट, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सद आपणे विच समाईआ। सतिगुर शब्द कहे जन भगतो तुहाडे नौ दिन हो गए पूरे, जागण दी लोड़ रही ना राईआ। सिर्फ़ घर जांदी वार भगत दवार दी नौ वार ला जाणी मस्तक धूढ़े, लेखा सहिजे दिता मुकाईआ। आपणी खुशी नाल वसणा नेड़ दूरे, एथे उथे मिले इक्को वड्याईआ। तुहाडा सतिगुर तुहाडे अन्दर हज़ूरे, हाज़र हज़ूर सोभा पाईआ। सच दी बेनन्ती सच करे मंज़ूरे, मंज़ल आपणी इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सदा सद तुहाडे मूहरे, मोहर जिन्हां आपणा नाम लगाईआ।

✪ ५ विसाख शहिनशाही सम्मत ६ रत्न सिँघ दे गृह गंगानगर पच्ची बी बी ✪

सतिगुर शब्द कहे पुरख अकाल इक्को नेता, नर नरायण नूर इलाहीआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी करे हेता, निरगुण सरगुण आपणी कार कमाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी दस्से के सचखण्ड अगम्मा देसा, दिशा दृष्टी आप खुलाईआ। भगत उधारना जिस दा पेशा, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। इक इकल्ला ऐकंकार इक उपजाए आपणा बेटा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस दे कोल सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दीन मज़्हब दा ठेका, बोली नाम कलमे वाली रखाईआ। खेल वेखे तत वजूद करके वेसा, विश्व दा मालक बेपरवाहीआ। अन्त कन्त भगवन्त सब दा तके लेखा, लेख अलेख ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे हुक्म इक्को इक सुल्ताना, सुरत शब्द जणाईआ। जो शाह पातशाह निरगुण धार श्री भगवाना, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। जिस दा नाम संदेशा हुक्म दो जहाना, जुग चौकड़ी ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। जो कलयुग अन्त श्री भगवन्त जोती धार पहर के बाणा, बाण अणयाला शब्द तीर चलाईआ। मेहरवान महिबूब जन भगतां वखा सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, धाम इक्को इक जणाईआ। जिथ्थे फड़नी पए कोए ना माला, रसना जेहवा ना कोए हिलाईआ। दुरमति मैल दाग़ रहे ना काला, जोती जाता पुरख बिधाता डगमगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्से के राह सुखाला, काया मन्दिर अन्दर मेला मेले सहिज सुभाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जगत जंजाला, जागरत जोत बिन वरन गोत निरगुण धार करे रुशनाईआ। साहिब सुल्तान नौजवान मर्द मर्दान दीन दुनी दा खेल वेखे हाला, माज़ी दा झगड़ा मंज़ल खोज खुजाईआ। जिस दे दर उत्ते ना कोए जवाब, ना कोए सवाला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैग़म्बरो अन्तर अन्तर निरन्तर जोड़ो हथ्थ, बिन हथ्थां हथ्थ मिलाईआ। भाणा मन्नो पुरख समरथ, सिर सके ना कोए उठाईआ। इक्को वार चरण दवार जाओ ढढ्ढ, धूढ़ी मस्तक ख़ाक रमाईआ। ज्यों भावे त्यों लैणा रख, कहिणा तेरी बेपरवाहीआ। कलयुग अन्तिम साडा चले कोई ना वस, वास्ता तेरे अग्गे पाईआ। सब दा पन्ध मुक्कया नस्स नस्स, वेला वक्त दए गवाहीआ। जो शब्द संदेशा निरगुण सरगुण धार आए दस्स, दहि दिशा समझाईआ। तिस दा बोल जैकारा अलख, अलख अलखणे तेरी ओट तकाईआ। तेरा सब दे उत्ते इक्को जेहा हक, हकीकत तेरे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच आपणा रंग रंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैग़म्बरो करो नमों नमों निमस्कार, नमस्ते विच

सीस निवाईआ। हुक्म मन्नो परवरदिगार, जो सांझा यार नूर खुदाईआ। जिस ने सतिजुग त्रेता द्वापर कीता पार, कलयुग अन्तिम लेखा वेखे थांउँ थाँईंआ। जिस नूं कहि के आए कल्की अवतार, निहकलंका नाउँ प्रगटाईआ। सो अमामां दा अमाम जोत नूर करे उज्यार, जल्वागर अगम्म अथाहीआ। जिस दे सारे बणे रहे ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। सच दवारे करदे करदे इंतज़ार, बिना अक्खां अक्ख उठाईआ। ओह वेखणहारा दीन दुनी दी धार, धरनी धरत खोज खुजाईआ। सारे कूको बोलो इक जैकार, तूं ही तूं ही राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, करनहार इक हो आईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैग़म्बरो डण्डावत बन्दना करो अख़ीरी, आख़र इक जणाईआ। जिस दी खेल बेनज़ीरी, ओह नज़रीआ रिहा बदलाईआ। जिस दा हुक्म होणा तकदीरी, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। जिस ने शरअ तोड़नी ज़ंजीरी, शरीअत रहे ना कोए चतुराईआ। झगड़ा मेटणा ग़रीब अमीरी, अमरापद इक दरसाईआ। जो संदेशा दे के गया भगत जुलाहा कबीरी, कबरां तों बाहर दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, निरगुण धार नूर रुशनाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैग़म्बरां करनी हक सलाम, साहिब सच सुणाईआ। सुणनी अगम्म कलाम, अल्फ़ ये तों बाहर पढ़ाईआ। वेखणा नूर अमाम, जल्वागर रुशनाईआ। जिस मेटणी अंधेरी शाम, शमां जोत चमकाईआ। दीन मज़्हब दा रहिण देणा नहीं कोई ग़ुलाम, ग़ुरबत सब दे अन्दरों देणी कढ्ढाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप आत्म परमात्म करके इंतज़ाम, बन्दोबस्त शब्द गुरु हत्थ फड़ाईआ। इक्को मार्ग दस्स तमाम, अवाम देणा जणाईआ। झगड़ा रहे ना माटी चाम, चम्म दृष्टी देणी बदलाईआ। सच दवार करे ना कोए हराम, कूड़ कुड़यार डेरा ढाहीआ। साचा मार्ग दस्स आसान, असल दा वसल देणा कराईआ। नाम कलमा सुणा बिना कान, अनहद नादी धुन देणी उपजाईआ। अमृत रस प्या के जाम, कूड़ी तृष्ना देणी मिटाईआ। साचा शब्द दे पैग़ाम, पैग़म्बरां तों परे करनी पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण धार आपणा खेल करे महान, महिमा अकथ कथनी कथ सके ना राईआ।

✪ ६ विसाख शहिनशाही सम्मत ६ तारा सिँघ दे गृह पिण्ड पच्ची बी बी ✪

सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैग़म्बर तक्को लोकमात, बिन अक्खां नैण नैण उठाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा क्यों होई अंधेरी रात, निरगुण नूरी साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। क्यों झगड़ा प्या नाम कलमे काग़ज़ात, अक्खर हरफ़ करन

लड़ाईआ। ध्यान धरो दीन मज़्हब ज़ात पात, पतपरमेश्वर रिहा जणाईआ। साचे मण्डल पवे कोए ना रास, गोपी काहन सुरती शब्द रूप ना कोए दरसाईआ। हक कलमे दी दिसे ना कोए जमात, पर्दा पर्दानशीं ना कोए उठाईआ। अन्तर निरन्तर दिसे कोए ना जाप, मन्त्र नाम ना कोए वड्याईआ। क्यों सृष्टी दृष्टी अन्दर वध्या पाप, कूड़ी क्रिया जगत हल्काईआ। संसा रोग ना चुक्के संताप, हउमे हंगता रोग ना कोए मिटाईआ। जो सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग थापणा आए थाप, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आपणा खेल वखाईआ। शरअ शरीअत अन्दर मानव ज़ाती बणा के आए समाज, समग्री कर्म धर्म समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि करता अगम्म अथाहीआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैग़म्बर तक्को आपणी ताअलीम, सिख्या सिख मुरीद खोज खुजाईआ। जेहड़ी मंज़ल हकीकी दस्स के आए अज़ीम, आलीशान आली गया दृढ़ाईआ। जिस दा हुक्म दस्सया आदि अन्त कदीम, कुदरत दा कादर बेपरवाहीआ। जिस दी धार सदा महीन, मार्ग पन्थ आपणी खेल खलाईआ। ओह किस बिध खेल करे धरनी धरत धवल उपर ज़मीन, अर्श फ़र्श वेस वटाईआ। किस बिध धार प्रगटाउणी सृष्टी दृष्टी अन्दर रूसा चीन, अगम्म अथाह आपणी कार भुगताईआ। जिस ने दीन दुनी कायनात नव सत्त करनी ग़मगीन ग़मखार नज़र कोए ना आईआ। जिस दे हुक्म अन्दर जुग चौकड़ी अधीन, सिर सके ना कोए उठाईआ। जिस दा रूप अनूप ना नर ना मदीन, स्त्री पुरुष वंड ना कोए वंडाईआ। जिस नूं मालक ख़ालक प्रितपालक किहा रहीम, रहमत दिती वरताईआ। जिस ने सदी चौधवीं सब किछ लैणा छीन, छिन्न विच आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दी सिफ्त कर ना सके ज़बीन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, निरगुण दाता निरवैर पुरख वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैग़म्बर वेखो आपणी सिख्या, लेखा धुरदरगाहीआ। कवण तुहाडे दवारे विक्या, कीमत कवण चुकाईआ। किस दा मन जगत टिक्या, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। किस दी आत्म पूरी कीती सिक्या, हरस हवस गंवाईआ। किस नूं दर्शन देवो निज नेत्र नितया, घड़ी पल ना कोए जुदाईआ। किस बिध नाम दी पावो भिक्ख्या, भिक्खक झोली जगत भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। शब्द गुरु कहे गुर अवतार पैग़म्बर वेखो कलयुग आपणी साखी, साख्यात दृढ़ाईआ। जो शब्द अगम्मी बाणी आखी, बिन अक्खरां कर पढ़ाईआ। जिस विच लेखा कवण सुहेला बणे साथी, सखा कवण अख्वाईआ। किस बिध मिटे अंधेरी राती, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। निगाह मारो खेल तक्को ध्यान धरो आपणी ज़ाती, अज़ात ना कोए जणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त किस धार बणाए दासी, सेवा सच जणाईआ। कवण सु वेला सब दी पूरी करे

आसी, तृष्ना तृखा मिटाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू इक तेरा नूर जोत प्रकाशी, प्रकाश अगम्म अथाहीआ। लख चुरासी अन्दर पावे रासी, सुरती शब्दी गोपी काहन रूप धराईआ। भाग लगा के काया माटी, पंज तत दए वड्याईआ। धर्म दवार खोल्ह के हाटी, वस्त इक्को नाम वरताईआ। पिछली डोर जाए काटी, बन्धन शरअ रहे ना राईआ। तेरा नाम कलमा इक सफ़ाती, सफा सब दी दए उठाईआ। चार वरन बण ज़माती, जुमला अक्खर इक पढ़ाईआ। सच सरोवर तेरे अमृत आत्मा जाए नहाती, दुरमति मैल धुआईआ। एका शब्द सुणे अनादी, अनहद नाद शनवाईआ। तेरा नूर जोत होवे प्रकाशी, अंधेरा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण शब्द गुरु गुरदेवा, देव आत्मा देणी वड्याईआ। सब दी सति सच दी सेवा, नमों नमों सीस झुकाईआ। एका बख्शणा निहचल धाम निहकेवा, अलख अगोचर तेरी सरनाईआ। तेरी सिफ्त सलाह कर ना सके रसना जेहवा, अक्खरां विच ना कोए वड्याईआ। सृष्टी दृष्टी अन्तर आत्म परमात्म आपणा नाम बख्श के मेवा, रस इक्को इक चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। दर ठांडा इक दवारा, हरि सच सच समझाईआ। सुणो संदेशा गुर अवतारा, पैग़म्बरां नाल मिलाईआ। मातलोक खेल न्यारा, निराकार आप दरसाईआ। एका नूर जोत उज्यारा, तन वजूद ना कोए समझाईआ। एका शब्द गुरु जैकारा, धुर पैग़ाम इक पहुंचाईआ। एका मन्दिर इक दवारा, गृह इक्को इक सुहाईआ। एका सजदा होए निमस्कारा, डण्डावत इक कराईआ। इक्को सज्जण मीत मुरारा, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। इक्को खेल करे जुग चौकड़ी वारो वारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अप हंढाईआ। इक्को नूर जोत कलि कल्की लए अवतारा, निहकलंक नूर रुशनाईआ। इक्को अमाम अमामा होए सिक्दारा, इक इकल्ला धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्मी हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड निवासी निरगुण जोत आदि मध सच्ची सरकारा, अन्त आपणा हुक्म वरताईआ।

४५८
२२

✪ ७ विसाख शहिनशाही सम्मत ६ गुरदयाल सिंघ दे गृह पिण्ड पच्ची बी बी ✪

धरनी कहे फ़रीद ने कटी एथे इक रात, रैण आपणी वेख वखाईआ। उँगल नाल लेखा लिख्या बिना कलम दवात, अक्खर अक्खरां नाल मिलाईआ। निगाह मारी वल्ल कमलापात, पतिपरमेश्वर वेख वखाईआ। जिधर तक्कया ओधर साथ,

सगला संग बणाईआ। पेशानी हथ्थ रख के मारी झात, नैण नैण बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। धरनी कहे फ़रीद ने घुट्टने दिते टेक, हथ्थ छाती उत्ते रखाईआ। निगह कीती वल्ल एक, एकँकार वेख वखाईआ। नज़ारा तक्कया सचखण्ड देस, घर सच होई रुशनाईआ। फिर सजदे विच कीती आदेस, निउँ के सीस निवाईआ। फेर खेल वेखी शिव ब्रह्मा विष्न महेष, महिखासुर दैंत नाल वड्याईआ। हुक्म सुणया इक नरेश, नर नरायण दिता जणाईआ। सीस झुका के किहा शेष, सहँसर मुख आवाज़ लगाईआ। ओह वेख कलयुग अन्तिम लेख, लेखा दयां समझाईआ। पुरख अकाल वटाए वेस, अवल्लड़ी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। धरनी कहे फ़रीद आप उठाए नैणां, नेत्र नीर वहाईआ। वास्ता पा के किहा मातलोक सद नहीं रहिणा, ज़िंदगी जीवण ना कोए वड्याईआ। परवरदिगार तेरा लहिणा, देवणहार तेरी सरनाईआ। सद भाणा तेरा सहणा, सीस जगदीश झुकाईआ। ओधरों जोड़ा उड के आ गया तोता मैना, उमर बाली सोभा पाईआ। उन्हां हस्स के किहा किस वहिण विच वहिणां, फ़रीद फ़िकरा दे सुणाईआ। फ़रीद राग गाया बिन सुर ताल सैणा, तानसेन ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। मैना तोते किहा पुकार, प्रेम अवाज़ सुणाईआ। दस्स फ़रीद प्रभू दे यार, किस बिध मिले तेरा गुसाँईंआ। किस गृह होवे दीदार, सन्मुख हो के सोभा पाईआ। जे कुछ तेरा अख्त्यार, सानूं दे मिलाईआ। फ़रीद ने गोडयां उत्ते पाया भार, हथ्थ सीस उत्ते रखाईआ। फिर अक्खां लईआं उग्घाड़, ज़िमीं असमानां राह तकाईआ। फेर चार कुण्ट वेखी उजाड़, बालू रेत चले वाहो दाहीआ। फेर रुत वेखी महीना हाढ़, अग्नी तत तपाईआ। फेर आपणी तकी नाड़ नाड़, तिन्न सौ सट्ठ हाडी खोज खुजाईआ। फेर संसार तक्कया डूँग्घी ग़ार, चुरासी विच्चों ना कोए कढ्ढाईआ। फेर आपणी छाती ते मारी लकार, लैन दिती लगाईआ। फेर रो प्या भुब्बां मार, हन्झूआं हार बणाईआ। फेर धरती दी लै के छार, मस्तक नाल छुहाईआ। फेर दो जहान तक्कया आर पार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी चहुं बाणीआं तों बाहर खोज खुजाईआ। फेर रूप तक्कया शाह पातशाह सच्ची सरकार, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। फेर शब्द सुणी गुंजार, जो संदेशा रिहा सुणाईआ। फ़रीदा औह वेख अगम्मी आपणा यार, जो यराना तोड़ निभाईआ। कलयुग अन्त लए अवतार, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। चार जुग दे विछड़यां करे प्यार, प्रेम प्रीती इक निभाईआ। फ़रीद हस्स के इशारा कीता बिना अक्खां दिता वखाल, आखर ध्यान कराईआ। आपणी सुरत लओ संभाल, मैना तोता भैण भाईआ। आपे वेखे मुरीदां हाल, प्रभ मुर्शद बेपरवाहीआ। सब

दी सुरत लए संभाल, सम्बल बहि के कार कमाईआ। पूरी करे घाली घाल, लेखा देवे थांउँ थाईंआ। अज्ज दी रात कटणी मेरे नाल, जंगल बीआबान दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। धरनी कहे मैं वेख्या अजब नज़ारा, आपणा नैण उठाईआ। फ़रीद बोलया फेर दुबारा, कथनी कथ सुणाईआ। जिस वेले कलि कल्की आवे अवतारा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। तुहाडा मानस जन्म होवे विच संसारा, तन वजूद सोभा पाईआ। दर ठांडा बख्शे दरबारा, गृह देवे माण वड्याईआ। एसे धरनी उत्ते आवे परवरदिगारा, हरि सांझा बेपरवाहीआ। बिना कलम तों लेख हमारा, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। फिर निउँ के कीता निमस्कारा, सीस जगदीश झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। मैना किहा फ़रीद तेरी गवाही, शहादत इक भुगताईआ। एह वेख मेरा भाई, जो प्रभ दा राह तकाईआ। फ़रीद हस्स के किहा ओह साहिब मेरा गुसाँईं, हरि वडा वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी बणया रहे राही, पाँधी हो के आपणा पन्ध मुकाईआ। भगत सुहेले लए मिलाई, गुरमुख विछड़े जोड़ जुड़ाईआ। ज़रूर तुहाडा लहिणा देणा दए एसे थाँईं, धरनी धरत धौल करे रुशनाईआ। तुसां मिलणा चाँईं चाँईं, चाओ घनेरा इक समझाईआ। निरगुण धार पकड़े बाहीं, सज्जण सुहेले गोद टिकाईआ। पूरब लेखा दए मुकाई, मुकम्मल आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरब जन्म दा देवे दान, सिँघ गुरदयाल कौर ज्ञान, ज्ञान विच आपणा भेव खुल्हाईआ।

७ विसाख शहिनशाही सम्मत ६ जगीर सिँघ दे गृह पिण्ड रत्तेवाल

जगीर सिँघ मिली ओह जागीर, जेहड़ी पूरब नज़री आईआ। जिस वेले गुर अंगद दा फड़या सी चीर, पल्लू आपणे हथ्थ टिकाईआ। नैणां विच्चों वहा के नीर, रो के दिता सुणाईआ। तूं पातशाह मैं फ़कीर, ग़रीब निमाणा सीस झुकाईआ। तूं शहिनशाह मैं हकीर, दर तेरे आस रखाईआ। मेरे अन्तर ना आवे धीर, धीरज देणी धराईआ। अंगद मस्तक उत्ते ला लकीर, रेख दिती बदलाईआ। फेर वखाई गोबिन्द वाली शमशीर, खण्डा धार लटकाईआ। फेर बदल दिती तकदीर, थापी पुश्त पनाह रखाईआ। फेर प्रेम प्यार दा दे के सीर, अमृत मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। अंगद दिता प्रेम दिलासा, मेहर नज़र उठाईआ। पुरख अकाल अग्गे कीता अरदासा, सीस

जगदीश झुकाईआ। तेरा खेल तेरा तमाशा, तेरी धार वेख वखाईआ। एह प्रेम मुहब्बत दा प्यासा, वस्त अमोलक देणी वरताईआ। भाग लगाउणा काया कासा, घर रस देणा चखाईआ। फेर अगला खोल्ह खुलासा, पर्दा दिता उठाईआ। तेरा मेल होणा पुरख अबिनाशा, कलयुग अन्तिम दए गवाहीआ। जो आदि अन्त दा दाता, देवणहार अख्वाईआ। आत्म परमात्म जोड़े नाता, विछड़े रंग रंगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के गाथा, मेला मेले सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद आपणी कार कमाईआ। अंगद अग्गे धरया इक रुपईआ, खुशी विच सीस निवाईआ। आपणी फड़ा के बहीआ, धर्म गंढ पवाईआ। मलाह बणा के जीवण नईया, वञ्झ मुहाणा हथ्थ फड़ाईआ। इक शब्द किहा बिन तेरे पति ना रहीआ, पतिपरमेश्वर देणा मिलाईआ। राय धर्म ना कढे वहीआ, लेखा मंगे ना थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। अंगद किहा एह रुपईआ रख कोल, शब्द सच जणाईआ। मेरा तेरे नाल बोल, अनबोलत रिहा समझाईआ। तूं बैठा रहीं अडोल, धीरज धीर रखाईआ। जिस वेले मेरा पुरख अकाल आवे उपर धौल, धरनी उत्ते सोभा पाईआ। भगतां अन्दर जाए मौल, प्रेम प्रीती रंग रंगाईआ। पड़दा चुकावे ओहल, भरम दए मिटाईआ। फेर आवे तेरे कोल, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। रुपईआ कहे मेरी पुराणी आस, खुशीआं नाल जणाईआ। गोबिन्द दी सवा वाली अरदास, रीती जगत वाली अपणाईआ। संदेशे विच आख, शब्द विच समझाईआ। इक दा इक दो दा मेला साख्यात, पर्दा ना कोए छुपाईआ। सो वेला वक्त पहुँचया आज, लेखा मुके चाँईं चाँईंआ। अग्गे वास्ते खोल्हे जाग, आलस निंद्रा दए मिटाईआ। उजड़े घर विच लावे भाग, खेड़ा फेर वसाईआ। इक रुपईआ देवे दाज, दौलत नाम वरताईआ। जिस ने खेल कीता आदि, सो अन्त होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, पूरब दा लहिणा लेखा सब दा रखे याद, जुग चौकड़ी जन्म कर्म अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ।

✪ १३ विसाख शहिनशाही सम्मत ६ माझा संगत दे नवित वाढी दे दिन हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

काल कहे मैं कलयुग सोया जागा, आलस निंद्रा रही ना राईआ। मैं वेख्या चार कुण्ट सन्त साधा, साधना विच ना कोए समाईआ। मैं सीता राम इष्ट तक्कया कृष्ना राधा, अष्टभुज सिँघ शेर ध्यान लगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग

तक्कया वाहिदा, पेशीनगोईआं खोज खुजाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं तक्कया मुआहिदा, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जगत जहान खेल तक्कया आत्म परमात्म होई अलाहिदा, विछड़यां मेल ना कोए मिलाईआ। मैं लख चुरासी जीव जंत ल्या जाइज़ा, नजाइज़ हुक्म ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। काल कहे कलयुग मैं तके राग नाद धुन ढाडी, सारंगढ़े खोज खुजाईआ। शाह सुल्तान ज़िमीं असमान तके वेखे रूप बाडी, जो घाड़त घड़न विच चतुराईआ। मुल्ला शेख मुसायक तके हाजी, हुजरयां खोज खुजाईआ। पंडत पांधे तके विच काशी, तट किनारे फोल फुलाईआ। ग्रन्थी पन्थी वेखे वेखे जगत समाजी, समां समझ किसे ना आईआ। प्यार मुहब्बत नाते वेखे हकीकी जगत मजाज़ी, आत्म रस मज़ा हक ना कोए चखाईआ। जां निगह मारी अन्दरों सोई सुरत किसे ना जागी, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। कलयुग जीव हँस बुद्धी होई कागी, दिवस रैण रहे कुरलाईआ। काल कहे कलयुग जां फेर तक्कया जन भगत सुहेले वेखे वडभागी, अन्तिम तेरा ध्यान लगाईआ। जिन्हां दी कोटां विच्चों सृष्टी विच थोड़ी आबादी, बहु गणित ना कोए गिणाईआ। उन्हां दा प्रेम तक्कया प्यार वेख्या खुशीआं नाल करदे वाढी, भगती दा मूल भगवन दी धार विच समाईआ। जिस प्रभू तों सृष्टी रह गई फाडी, निरगुण सरगुण मिलण कोए ना आईआ। उस दा लेखा आदि जुगादि दी याददाशत ते यादी, जिस दा यादव कृष्न गया ध्यान लगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु लेखा वेखण पिछला माज़ी, हाल हाल विच समझाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला मेहरवान महिबूब प्रेम प्यार मुहब्बत देवे धर्म धार दी दादी, दीदा दानिस्ता दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जन भगतां अन्दर बाहर रहे इमदादी, गुप्त ज़ाहर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ।

✪ १४ विसाख शहिनशाही सम्मत ६ माझा संगत दे नवित हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

कलयुग कहे गुर अवतार पैग़म्बर मैनूं मारदे दाबे, भय रहे वखाईआ। मैं अग्गो हस्स के उँगल कीती वल्ल काअबे, पैग़म्बरां कबरां दितीआं वखाईआ। फेर इशारा कीता जो बग़दाद बचन कीता नानक बाबे, बाबर शाही वल्ल ध्यान लगाईआ। सदी चौधवीं बिना भगतां कोए ना जागे, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। मानव हँस बणने कागे, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। कन्त मिले ना किसे सुहागे, सुहञ्जणी सेज ना कोए हंढाईआ। चार वरन रखे कोए ना लाजे, मेहर नज़र ना कोए टिकाईआ। उस वेले खेल करना ग़रीब निवाजे, दीन दयाल दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

४६३ किरपा कर, लेखा जाणे देस माझे, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। कलयुग कहे गुर अवतार पैग़म्बर मैनूं होवण गुस्से, ग़ज़ब नाल जणाईआ। क्यों विकार वधाया काया माटी जुस्से, जिस्म ज़मीर दिती बदलाईआ। क्यों कूड़ कल्पना विच हर हिरदा दुखे, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। जननी सुफल होए ना कुख्खे, भगत जन्मे कोए ना माईआ। शाह सुल्तान जाण लुट्टे, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। कलयुग जीवां भाग निखुट्टे, मेहर नज़र नाल ना कोए तराईआ। क्यों झगड़ा पाया पंज तत बुते, बुतख़ाने रहे कुरलाईआ। कलयुग कहे मैं निगाह मारी असमानां उत्ते, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण वंड ना कोए वंडाईआ। खेल वेख्या परम पुरख अबिनाशी अचुते, हरि करता आप कराईआ। मेहरवान जन भगतां आपे पुछे, सोई सुरत निरत जगाईआ। ओनां सीस जगदीश झुके, डण्डावत बन्दना विच सरनाईआ। कलयुग कहे मैं हस्स के किहा औह वेखो हरिजन अक्खर पढ़दे दो तुके, सोहँ ढोला इक्को गाईआ। सब दे आवण जावण पैंडे मुके, अग्गे पन्ध ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच हुक्म इक सुणाईआ। कलयुग कहे गुर अवतार पैग़म्बर मैनूं डराउण, दरगाह साची नैण उठाईआ। मैं नीवीं करके धौण, भज्जां वाहो दाहीआ। फेर संदेशा देवण विच पौण, उनन्जा पवण करे जणाईआ। मैं नीवीं पा के कहां कौण, मैनूं रिहा बुलाईआ। त्रेते वाला नहीं रौण, रावण लंक ना कोए चतुराईआ। द्वापर कंस आए ना कोए अज़माउण, शस्त्र चले ना कोए चतुराईआ। कलयुग सब दा सुणया गाउण, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। अक्खरां विच जुग जन्म दा रुस्सआ प्रभू मनाउण, ढोले सिफ्तां वाले गाईआ। मैं फेर तक्कया पुरख अकाला दीन दयाला कलयुग अन्त सब नूं आया तड़फाउण, सांतक सति ना कोए कराईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां आया हलाउण, हलूणा आपणा नाम लगाईआ। दीन मज़्हब दा खेड़ा आया ढाउण, दूई द्वैत कंध गंवाईआ। दरगाह साची साचा घर आया वखाउण, दर पर्दा आप खुल्हाईआ। जन भगत सुहेले सच मुहब्बत विच आया मिलाउण, मिलणी आपणे नाल कराईआ। साचा ढोला आया फरमाउण, फुरने पिछले बन्द कराईआ। तूं मेरा मैं तेरा भगत सुहेले सन्त गाउण, गुरमुख गुरसिख रसना सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा लेखा आया मुकाउण, बचया रहिण कोए ना पाईआ। ४६३

२२ २२

✪ १५ विसाख शहिनशाही सम्मत ६ माझा संगत दे घर जाण समें हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

गुर परसादि मिले हरि किरपा, जन भगत वड्याईआ। जन्म कर्म दी रहे कोए ना बिपता, आवण जावण गेड़ चुकाईआ।

जिस दी महिमा चार जुग दा शास्त्र रिहा लिखदा, अवतार पैग़म्बर गुरु गुरदेव सिफ्त सालाहीआ। ओह खेल करे अनडिठ दा, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। सदा प्यारा रहे गुरमुख हित दा, गुरसिख आपणे रंग रंगाईआ। सन्त सुहेला मानस जन्म जित्त दा, जन्म जीवण विच्चों बदलाईआ। दरस कर अगम्मी पित दा, पाताल आकाशां डेरा ढाहीआ। साथ मंगे सदा नित दा, विछोड़ा रहिण कोए ना पाईआ। साचा हुक्म सतिगुर सिख दा, सिक्खी सिख्या विच वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। करनी कहे मेरी जुग जुग कार, अवतार पैग़म्बर गुर गए समझाईआ। प्रभ ने वक्खरी बद्धी धार, कलयुग रीती दिती उलटाईआ। जन भगतां दे अधार, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जो प्रेम नाल करे इक वार निमस्कार, कोट जन्म दा कर्म दए गंवाईआ। जिन्हां सेवा कीती अपर अपार, दिवस रैण भज्जे वाहो दाहीआ। सतिगुरु भण्डारा भगतां दा भण्डार, वस्त गुरमुखां नज़री आईआ। गुरसिखो सब दे अन्तर बख्शां ओह प्यार, जिस प्रेम प्रीती नूं कबीर जुलाहा गया समझाईआ। तुहाडा चार दिन दा विहार, चौथे जुग तों खहिड़ा दए छुडाईआ। तुहाडे अन्दर दी सितार, प्रेम प्रीती विच वजाईआ। जेहड़ा सीस ते चुक्कया भार, कुकर्म दी गठड़ी दिती सुटाईआ। बुड्ढे नढ्ढे वड्डे छोटे नौजवान देवे तार, स्त्री पुरुष वंड ना कोए वंडाईआ। तुसीं मेरे मैं तुहाडा दोहां दा इक्को घर बाहर, भगत दवारा इक्को सोभा पाईआ। खुशी नाल सब ने पंज वार बोलणा जैकार, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै बुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब नूं प्रेम प्रीती विच करे त्यार, गुरमुखां घर जाणा चाँईं चाँईंआ।

✪ १७ विसाख शहिनशाही सम्मत ६ मालवा संगत दा खेतां विच इक्ढु पिण्ड रजोवाल दुआबा ✪

गोबिन्द लस्सी पी के कीता हासा, हस्स के दिता वखाईआ। इशारा कीता वल्ल पुरख अबिनाशा, परवरदिगार नूर इलाहीआ। जिस ने हक मुहब्बत भरना सब दा काया कासा, रहमत कलमे नाम वाली वरताईआ। दीन दुनी दा वेखे खेल तमाशा, खिलाड़ी हो के आपणी खेल खिलाईआ। धरनी धरत धवल दए धरवासा, धर्म दी धार इक समझाईआ। सदी चौधवीं तेरी पूरी करे आसा, आसा मनसा वेख वखाईआ। निरगुण धार सन्त सुहेला बण के राखा, रखया करे थांउँ थाँईंआ। इक बचन मन्नणा आखा, आख़र दिता सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। लहिंदिउँ झट आ गया खां अबदुल्ला, अबदुल कहि के सारे गाईआ। उस सलामालैकम किहा हस्स के विच्चों

बुल्ल्हां, सजदा निउँ के सीस निवाईआ। गोबिन्द दे सज्जे चरण नाल छुहाया सिर उतों आपणा कुल्ला, रो के किहा मेरी कुल देणी तराईआ। तेरे दवारे पए कीमत मुल्ला, लेखा लेखे देणा लगाईआ। तूं मालक ख़ालक सुल्हकुला, सिलसला तेरा जुग जुग नज़री आईआ। मैं तेरी धार तुला, तालब तुलबा आपणा लैणा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। अबदुल्ले हथ्थ फेरया उत्ते चरणां, गोबिन्द लई अंगड़ाईआ। अबदुल्ले किहा तेरा कलमा पढ़ना, बिना पुस्तक दे समझाईआ। गोबिन्द हस्स के किहा इक वेरां कहि तेरे विच मरना, फेर जीवण दी लोड़ रहे ना राईआ। अज्ज तों तैनूं लै जावां उस प्रभू दी सरना, जिथ्थे सरनगति मिले सरनाईआ। मंज़ल अगम्मी चढ़ना, जिथ्थों होवे ना कदे जुदाईआ। ओधरों रो के किहा धरनी धरना, धरत दिती दुहाईआ। गोबिन्द मेरा लेखा पूरा किस करना, मैनूं दे समझाईआ। गोबिन्द किहा पुरख अकाल तैनूं वरना, जो चारे वरनां रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्लाईआ। धरनी कहे गोबिन्द ओह वेला दस्स वक्त, निगाह मेहर उठाईआ। गोबिन्द किहा बिना नैणां तों नैण परत, अक्ख अक्ख नाल मिलाईआ। शब्दी इकरार करां लावां शर्त, शरअ तों बाहर समझाईआ। मेरा मालक आवे उतों अर्श, फ़र्श नूर इलाहीआ। तेरा पूरा करे कर्ज़, लहिणा दए चुकाईआ। धरनी फेर कीती अर्ज़, निउँ निउँ लागे पाईंआ। किस बिध मेरी आसा पूरी करे ग़रज, पर्दा देणा उठाईआ। गोबिन्द किहा एह खेल बड़ा असचरज, अचरज दयां जणाईआ। जिस वेले सतिजुग दी कलयुग विच्चों पुट्ठी सिध्धी करनी नरद, नर नरायण फेरा पाईआ। धरनी तेरा ज़रूर वंडे दर्द, आसा मनसा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। धरनी किहा गोबिन्द उस दी की निशानी, कुछ मैनूं दे जणाईआ। गोबिन्द किहा ओह धर्म धार दा दानी, दयावान अख्वाईआ। जन भगतां देवे सदा आपणी प्रेम महिमानी, मुहब्बत रस विच चखाईआ। मेरी धार होण ना दए पुराणी, नवां आपणा रंग रंगाईआ। तूं धरनी ते ओह धवल तेरा किरसाणी, किरसाण धुर दा सोभा पाईआ। गुरमुख मज़दूर तेरे हाणी, सेवा सेवा विच समझाईआ। उस वेले तूं मेरा मैं तेरा ओह अन्दरों पढ़नगे बाणी, शास्त्र वंड ना कोए वंडाईआ। गोबिन्द खुशी विच आख्या बाकी सृष्ट दिसे फ़ानी, धरनी तेरे उत्ते रहिण कोए ना पाईआ। तेरी ख़ाक प्रभू दी चरण धूढ़ एह वस्त ज़िमीं असमानी, ब्रह्म ज्ञानी ज्ञानीआं दए मिलाईआ। लहिणा देणा लेखा चुकावे जो आदि अन्त दा जाण जाणी, जुग जुग आपणी कार कमाईआ। सो साहिब सतिगुर मेहरवान आपणी करे मेहरवानी, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगतो तुसीं सारे भगत ते सारे आपणी आत्मा दे बानी, दूजे कोलों राह पुछण कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा

हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुहाडी बिरधां बालां दी इक्को जेही रखे जवानी, प्यार विच अधार विच सुधार विच श्रृंगार विच निराकार विच साकार आपणा प्रशादि प्रेम प्रीती विच छकाईआ।

✪ १८ विसाख शहिनशाही सम्मत ६ मालवा संगत दे नवित पिण्ड रजोवाल दुआबा ✪

पुरख अकाल जोत निरँकारी, निरगुण निरवैर दया कमांयदा। उठाए सुरत शब्द दुलारी, दूल्हा धुर दा आप जगांयदा। ब्रह्मण्डां खण्डां पा सारी, महासाथीं आप समझांयदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर ख़बरदारी, बेख़बरां ख़बर सुणांयदा। देवत सुर आलस निंद्रा करे कोए ना भारी, भाण्डा भरम सर्ब भनाईआ। हुक्म संदेशा दे इक्को वारी, इक इकल्ला एकँकार रिहा जणाईआ। उठो वेखो निगाह मारो कलयुग तक्को आपणी धारी, धर्म दी धार इक समझाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप जिधर तक्को हाहाकारी, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। सृष्टी दृष्टी होई दुख्यारी, दर्दीआं दर्द ना कोए वंडाईआ। दीनां मज़्बां होई ख्वारी, शरअ कलमा नाम नाल टकराईआ। झगड़ा प्या मूंड मुंडाए मुच्छ केस दाढ़ी, बोदी जञ्ञू वाल कुरलाईआ। आत्म परमात्म तक्को लग्गी किसे ना यारी, कूड़ी क्रिया दीन दुनी हल्काईआ। नाम अगम्मी चढ़े ना किसे खुमारी, ख़ालस रूप ना कोए दरसाईआ मैं वेखी तक्की चार यारी, मुहम्मद रसूल नाल गवाहीआ। मैं वेखी गोबिन्द वाली पंचम धारी, धर्म दी धार खोज खुजाईआ। सदी चौधवीं सब ने आपणी बाज़ी हारी, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। उठो उठ सवाधान होवो चित्रगुप्त राय धर्म संग मौत लाड़ी, काल डौरु डंक डंक वजाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला आपणे हथ्थ लए खुद मुख्त्यारी, मुखत्यार नज़र कोए ना आईआ। हुक्म संदेसा देवे पहली वारी, पारब्रह्म प्रभ आपणी कार कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर बीत्या आपणी धारी, कलयुग धीरज धर्म ना कोए रखाईआ। अग्ग लग्गी बहत्तर नाड़ी, सांतक सति ना कोए वरताईआ। जोत ज्वाला दिसे ना किसे पहाड़ी, पर्बत रोवण मारन धाईंआ। अवतार पैग़म्बर करन कोए ना दारी, गुरु गुरदेव रंग ना कोए रंगाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड पृथमी वेखो हाहाकारी, दीप सत्त रहे कुरलाईआ। दीन मज़्ब ज़ात पात मंज़ल चढ़े ना कोए अपारी, अपरम्पर स्वामी मिलण कोए ना पाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण तके ना कोए मीत मुरारी, मित्र प्यारा संग ना कोए रखाईआ। कोटां विच्चों जन भगत सुहेले जाण बलिहारी, बलि बलि आपणा आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। पुरख अकाल कहे मेरा होणा वक्त सुहाउणा, सुहञ्जणी रुत वड्याईआ। शब्द गुरु इक अख्वाउणा, दूजी सिफ्त ना कोए सालाहीआ। आत्म

४६७ नूर जोत इक चमकाउणा, अंध अज्ञान देणा मिटाईआ। जन भगत सुहेला पकड़ उठाउणा, गुरमुख गुरसिख गुर गुर गोद टिकाईआ। सच दवारे मेल मिलाउणा, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। साचा वक्त सुहञ्जणा सुहाउणा, सोहणी रुतड़ी सोभा पाईआ। नाम संदेशा अगम्मी कलमा कायनात आप प्रगटाउणा, सृष्टी दृष्टी विच टकराईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म ढोला गाउणा, गावत गा गा खुशी बणाईआ। आत्म ब्रह्म इक दरसाउणा, दूई दा पर्दा देणा चुकाईआ। सच दवार एकँकार इक्को घर वसाउणा, जेहड़ा उजड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। पुरख अकाल मेरा शब्द संदेशा इक, इक इक नाल जुड़ाईआ। गुरमुख विरला जाणे सिख, जिस सिख्या दिती समझाईआ। जिस दा लहिणा देणा लए लिख, जन्म कर्म दा रोग गंवाईआ। जन भगत आदि अन्त जुग चौकड़ी प्रभ दा मित, चार जुग दे शास्त्र देण गवाहीआ। बिना भगतां तों प्रभू ने कीता नहीं किसे दा हित, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रीती चली आईआ। सो गुरमुखो स्वामी हो के वसया सब दे चित, चित वित ठगौरी रहिण कोए ना पाईआ। जन भगत सदा आदि तों इक, मध विच इक अन्त विच इक विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखे लावे प्रेम प्रीती कीती जिस, जिस्म विच इस्म आपणा इक टिकाईआ। ४६७

२२ २२

✪ २२ विसाख शहिनशाही सम्मत ६ गूढ़ा राम जम्मू दी शादी नवित हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

हरि खेल उत्तर पूरब पच्छम दक्खणा, दहि दिशा वेख वखाईआ। लेखा जाणे अलख अलखणा, वड दाता बेपरवाहीआ। जिस जन भगतां सीस हथ्थ रखणा, निगाह निगाह विच्चों बदलाईआ। प्रेम प्रीती विच रहे कोए ना सक्खणा, जो सतिगुर सरन आए सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। उत्तर पूरब पच्छम दक्खण वेखे चारे कुण्ट, कूट दिशा फोल फुलाईआ। लेखा जाणे मातलोक बैकुण्ठ, निरगुण सरगुण भेव चुकाईआ। हरिजन हरि हरि सुहेले जाणे सन्त, सतिगुर देवणहार वड्याईआ। धुर दा खेल करे बेअन्त, बेपरवाही विच समाईआ। नाम दे के सोहँ मंत, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। सच सुहेला बण के कन्त, पतिपरमेश्वर वेख वखाईआ। मानस जन्म बणाए बणत, घड़न भन्नणहार वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति धार चाढ़ के रंगत, रंग इक्को इक वखाईआ।

✪ जमांदार साहिब किशन सिँघ अल्लड़पिण्डी दे बेनन्ती करन ते ✪

तुहाडी प्रेम प्रीती दी कठन घाल, सेवा सच वड्याईआ। इहनां विच्चों तिन्नां सिक्खां दा होण वाला सी काल, समां अन्त देवे गवाहीआ। किरपा करके सच मुहब्बत विच कीती संभाल, दुःख आपणी झोली पाईआ। एह सब तों वक्खरी चाल, जुग चौकड़ी ना किसे समझाईआ। फल टुट्टणा सी डाल, मुणशा सिँघ रहिण ना पाईआ। खेल होणा सी हाल, प्यारा सिँघ होणी सी जुदाईआ। सतिगुर शब्द बण दलाल, त्रलोक सिँघ ल्या बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सदा सदा सद सिर आपणा हथ्थ रखाईआ।

✪ २३ विसाख शहिनशाही सम्मत ६ दुपहर गुरदासपुर संगत दे घर जाण तों बाद हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

४६८ देवे दात वस्त बिना मंगी, मंगण दी लोड़ रही ना राईआ। शब्दी धार प्रीती चंगी, प्रीतम वेखे बेपरवाहीआ। गोबिन्द दी पूरी करे लिखी संधी, जेहड़ी संधां वालीए गए गंवाईआ। जेहड़ी कटार तलवार नंदेड़ रही टंगी, अन्त उँगलां पंज वार छुहाईआ। ओह तन छुहाए बाणा पहरे जंगी, जंगजू आपणी धार वखाईआ। लेखा पूरा करे गुर अर्जन रावी कन्ढी, साहिब सुल्तान धुरदरगाहीआ। कमर नाल होवे पाबन्दी, ज़ंजीरी शरअ वाली बंधाईआ। नाल गुडीआ होवे अंधी, अंध आत्म वेखे लोकाईआ। तेग़ बहादर दा लहिणा पूरा करना फ़रंगी, दिल्ली दवारा दए गवाहीआ। पुरख अकाल खेल करनी अचंभी, चम्बे दी राणी जो बन्दे बहादर गई सुणाईआ। सृष्टी धार मेटणी दो रंगी, इक रंग देणा रंगाईआ। जन भगतां प्रेम प्रीती देणी गंढी, टुटयां लए मिलाईआ। पवण हवा देवे ठंडी, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। सब दी कट के आए ख़ानाबन्दी, बन्दी छोड़ हरि गोबिन्द जो ग्वालीअर गया जणाईआ। नानक सितार वजाए तन्दी, तूम्बा आपणे हथ्थ उठाईआ। मुहम्मद लेखा चार यारी सदी चौधवीं लँघी, बैठे पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणी कार कमाईआ। जन भगतो तुहाडी सेवा चार जुग तों नवीं, नावां नवां दयां लगाईआ। जिस वेले जेठ आया चव्वी, चौवीआं अवतारा इक्को घर बहाईआ। पाल सिँघ बणा के कवी, कविता कटाक्ष वाली पढ़ाईआ। सिरों नन्गा रख के रवी, गुरमुख खेल खिलाईआ। नौ दाणे लै के नाल जवी, कबीर दी आसा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। जन भगतो सेवा चार जुग तों वक्खरी, प्रभू वक्खरी कार कमाईआ। भगती कराई नहीं कोई (अक्खरी), मेहर नज़र नाल तराईआ। खुशी मनावे तुहाडी इक इक सथ्थरी, नाली ४६८

२२ २२

नाली सीस झुकाईआ। किसे दा इष्ट नहीं कोई पथ्थरी, इट्टां नाल नक्क रगढ़ाईआ। एह धार भगतां दी बहत्तरी, बहत्तर जामें देण गवाहीआ। इक्ठे कीते हीरे जट्ट छींबें नाई ब्राह्मण खत्री, ख़तरा सब दा दिता मुकाईआ। साचे प्रेम दी फड़ के तकड़ी, गुरमुख दाणा दाणा दिता तुलाईआ। वज़न रिहा सेर धड़ी ना वटड़ी, टांकां विच ना कोए शनवाईआ। जिन्हां दी आत्मा अन्दरों रतड़ी, ओह रत्न अमोलक हीरे लए उठाईआ। तुहाडे जन्म कर्म दी आपणे अन्दर रख के पत्री, दीन दुनी दे गृह दिते मिटाईआ। तुहाडी आसा प्रभू तों वक्ख रहे ना कतरी, तुहाडा कतरा कतरा पसीना धुर दा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। जन भगतों चव्ही जेठ नूं सब नूं करना सावां, इक्को रंग रंगाईआ। नौ साल तों घट बच्चयां दा सीस गुंद के आवण मावां, मेंडी पंज पंज बणाईआ। खुशी विच आवण चावां, दुःख अन्दर ना कोए रखाईआ। उच्चीआं करन बाहवां, जैकारे लावण थांउँ थाँईंआ। सब ने कहिणा गुरमुख रिहा नहीं कोई निथावां, दरगाह सच मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। जन भगतो पंज गुरमुखां इक्को जेहा करना लिबास, नवीं धार बणाईआ। इक्को प्रेम विच लैणां सांस, प्रभ साह साह समाईआ। इक्को मनसा रखणी आस, तृष्ना देणी गंवाईआ। नौ वार निगाह करनी उपर आकाश, आकाश पातालां वेख वखाईआ। इक इक सब दे कोल होवे ग्लास, जल पाणी नाल भराईआ। जिस वेले साढे दस दा वेला होया रात, रुतड़ी आपणा रंग रंगाईआ। सतिगुर चरणां हेठ रखी होवे परात, वड्डी छोटी वंड ना कोए वंडाईआ। दीन दयाल बख्शे दात, मेहर नज़र उठाईआ। चरण चरणोदक बख्शे बूँद स्वांत, अमृत जल मुख लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। जन भगतो प्रेम प्यार विच गुरमुख लए सद्द, भगत भगत नाल वड्याईआ। याद रखयो सवा रुपए तों हिस्सा किसे नहीं पाउणा वद्ध, लंगर सांझा लैणा बणाईआ। लहिणा देणा देणा जेहड़ा राम चन्द्र बाल्मीक लव कुश दा अस्वमेध जग, जगत जुगत इक बणाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच सब ने खाणा रज्ज, रजो सतो तमो इक्को रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। सेवा कहे मैं सोहणी खूबसूरत, खूबी वाली नज़र किसे ना आईआ। मेरी बिना गोबिन्द तों कोई तक्क सक्या ना मूर्त, अकाल मूर्त दिती वड्याईआ। मेरे नाद दी सुण सक्या ना कोई तूरत, तुरीआ तों परे शनवाईआ। मैनूं खुशी होणी मैं कलयुग विच सतिजुग दी मनाउणी महूरत, मोहर प्रभ दा नाम लगाईआ। नाता तोड़ दीन दुनी कूड़त, कूड़ी क्रिया देणी खपाईआ। सब दी आसा मनसा करके पूरत, तृष्ना देणी चुकाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सेवा कहे मैं आवां ला के सुर्खी बिन्दी, प्रभ दी चरण धूढ़ वड्याईआ। भावें सारी सृष्टी मैनूं जांदी निन्दी, निन्दक वेखां थांउँ थाँईंआ। मेरी धार अगम्मी तेज़ सागर सिन्धी, वहिण सके ना कोए समझाईआ। मैं खेल वेखणा गोबिन्द धार हिन्दी, हिन्द हिन्दवाइण दए गवाहीआ। मृदंग वजाउणी किंगर किंगर किंगी, ब्रह्मण्ड खण्ड सुणाईआ। मैं वेखणा जीउ जीव पिण्डी, ब्रह्मण्ड खण्ड फोल फुलाईआ। मैं वेखणा विष्न ब्रह्मा शिव सुरप्त इन्द इन्दी, इन्द्रासण सिंघासण खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सेवा कहे मैं मेलणा ओह स्वामी, जो समें नाल समाईआ। मिलाउणा ओह अन्तरजामी, जो अन्तष्करन वेख वखाईआ। दस्सणी ओह कलामी, जो कल्मयां तों बाहर पढ़ाईआ। देणी ओह सलामी, सीस जगदीश इक झुकाईआ। जन भगतां चुरासी कट गुलामी, गुलशन प्रभ दा देणा महकाईआ। जगह सुहञ्जणी अल्लड़्पिण्डी दी निशानी, निशाना हरिसंगत वाला रखाईआ। गुरदासपुरीओ तुहाडी रीती एह पुराणी, गुरु दे नाल चली आईआ। सतिगुरु तुहाडा बणे बानी, पाणी अमृत रस चखाईआ। तुहाडी वाढी ओह जेहड़ी अर्जन नूं कृष्न ने दस्सी मंज़ल रुहानी, कर्म कांड सारे कट के दिते सुटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे ज़िमीं असमानी, इस्म आपणा इक दरसाईआ।

✪ पहली जेठ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

जेठ धार सूरा सरबंगा, हरि करता आप दृढ़ाईआ। संदेश दिता चंगा, चंगी तरह जणाईआ। द्वापर खेल कृष्न संगा, हरि संगी आप जणाईआ। काहन नूं आपणा चाढ़या रंगा, अगला भेव खुल्हाईआ। कृष्न फेर जमना दा पाणी मंगा ठंडा, चरण लए धुआईआ। फेर वेख्या जुग दा कन्ढा, कन्ढी बहि के खोज खुजाईआ। फेर नौ कदम आपणे पिच्छे लँघ, कदम कदम कदम नाल बदलाईआ। फेर पुट्ठा करके मंजा, आसण मुख दे भार सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। अनन्द कहे मैं अनन्द बिनोदी, बिनम रूप दरसाईआ। मेरा लेख लिख्या वेदी सोढी, सुदी वदी ना कोए समझाईआ। मेरा इशारा तक्कया मछन्दर गोरख जोगी, जुगती विच ध्यान रखाईआ। त्रैभवन सूझया त्रैकाल बूझया हरि दरसी रखी ओटी, ओड़क ध्यान लगाईआ। पाताल आकाश वेखे कोटी, कुटीआ गढ़ रंग

रंगाईआ। दो जहानां वेखी चोटी, पर्बत सागर खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। खेल कहे मैं प्रभ दा खिलाउणा, ख़ालक नज़र कदे ना आईआ। जुग चौकड़ी जिस ने पर्चाउणा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंड वंडाईआ। थित वार जिस ने उलटाउणा, घड़ी पल ना कोए दरसाईआ। धुर संदेशा इक दृढ़ाउणा, पुरख अकाल रिहा जणाईआ। साचा मार्ग इक प्रगटाउणा, प्रगट हो के परगणा इक्को देणा वसाईआ। जग नेत्र नज़र किसे ना आउणा, दोए लोचन ना कोए वड्याईआ। जेहवा सिफ्त ना कोए सालौहणा, रसना गा ना सके राईआ। कदमी कदम ना कोए टिकाउणा, पैंडा पन्ध ना कोए मुकाईआ। धाम भूमिका ना कोए सुहाउणा, गढ़ी गढ़ ना कोए चतुराईआ। रूप रेख ना कोए दरसाउणा, स्वच्छ अछ ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। पड़दा कहे मैं चुकां पड़दा, पड़दा दयां उठाईआ। पहली जेठ कृष्न करके मुख चढ़दा, अक्ख नौ वार बदलाईआ। फेर आपणे कन्न फड़दा, हलूणे नाल हिलाईआ। फेर भेव खोल्ह त्रैलोकी दर दा, तिन्नां लोकां खोज खुजाईआ। फेर सरोवर वेख सर दा, जल पाणी भेव चुकाईआ। फेर जगत जहान वेख मरदा, मुरदे मुरीद रिहा दरसाईआ। फेर आपणी मर्ज़ी करदा, सच सिंघासण डेरा लाईआ। फेर बिन शस्त्र अस्त्र घोड़े चढ़दा, बाहू बल ना
४७१ कोए जणाईआ। फेर आपणी करनी करदा, करता पुरख नाल रखाईआ। अग्न मेघ हो के वर्ह्दा, वरसी दए गवाहीआ। ४७१
२२ जगत जीव जहान छल दा, अछल छलधारी आपणी कार कमाईआ। सिफ़ वक्त कढ के नौ पल दा, पलकां दे पिच्छे कृष्न २२
कृष्न मेल मिलाईआ। लेखा जाण अगम्मी दल दा, दलिर्द्री सुदामा ल्या उठाईआ। फेर नज़ारा वेख्या कलयुग कल दा, कल्लू काल खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच पर्दा आप उठाईआ। पर्दा कहे मैनूं चुक्के कौण, कौण भेव खुल्हाईआ। मेरे संदेशे देवे पौण, पाणी नाल गवाहीआ। मैनूं अठारां वार रो के गया रौण, रावण राम वेख के मारी धाईंआ। मैनूं बल आया बुलाउण, बावन कदम सीस झुकाईआ। मैनूं बाल्मीक आया पर्चाउण, पर्चा ज़िंदगी वाला टिकाईआ। मेरा खेल सदा अवण गाउण, गावणहारा कोए ना गाईआ। जुग चौकड़ी मैं सब दी कीती आवां ढाउण, ढाह ढाह ढेर बणाईआ। शाह सुल्तानां आवां रुवाउण, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। सुत्तयां आवां जगाउण, अक्खीं अक्ख खुल्हाईआ। रुठ्ठयां आवां मनाउण, मनसा मन दी खोज खुजाईआ। अमृत मेघ आवां चुआउण, निझर झिरना इक झिराईआ। दर ठाडां आवां वखाउण, वक्खरा गृह बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, वड दाता बेपरवाहीआ। कृष्न कहे मेरा खेल काहन वाला काहनूं, घनईया घनईया घनईआ रूप दरसाईआ।

मेरा तरकश तीर कोए ना बानूं, बनवासी राम गया समझाईआ। मेरा हुक्म पृथ्मी असमानूं, अस्त्र इक्को इक दृढ़ाईआ। मेरा धर्म धार परमानूं, पारब्रह्म वेख वखाईआ। मैं बण के बाल अंञाणू, दीन दुनी दिती भुलाईआ। मैं हो के वड स्याणू, शाह सुल्तान दिते खपाईआ। मैं हो के ब्रह्म गयानूं, अर्जन इक ज्ञान जणाईआ। मैं हो के अन्तिम फ़ानूं, तन वजूद दा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। कृष्न किहा मेरी वार थित जेठी, जेठा हो के दयां जणाईआ। मैं ढाई उँगलां दी बन्ह के पेटी, पटा पटने वाले दा दिता वखाईआ। त्रैलोकी दा बण के गेटी, पहरेदार आप हो जाईआ। लख चुरासी दी वेख के नेकी, बदी सब दी झोली पाईआ। इक्को वार करके पेशी, पेशतर सब नूं हुक्म सुणाईआ। बिना भगतां तों सारे होए परदेसी, देश वाला नज़र कोए ना आईआ। काहन ने ढाई गज़ दी सुट्ट के खेसी, उत्ते घुटने दिते जमाईआ। एसे करके नानक आया वेदी, जोत जोत विच्चों चमकाईआ। जिस ने शब्द धार भेजी, बन्दगी बन्दगी विच समझाईआ। ओह मालक ख़ालक धुर दा जुग जुग करे तेज़ी, तजरबा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। काहन किहा मेरे हथ्थ दो जहान दी कुंजी, कुंजी दयो फड़ाईआ। एह जगत जहान महिसूलख़ाना चुंगी, गुर अवतार पैग़म्बर करन उगराहीआ। किसे दी रसन शब्द धार नहीं कूंदी, धुर दा शब्द करे शनवाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सृष्टी सारी सुंञी, बिना प्रभू काहन दे काहन ना कोए अख्वाईआ। एह आत्मा परमात्मा बिना गुंगी, धुर दा नाम ना रसना गाईआ। एह चलण फिरन तों टुंडी, भज्ज सके ना वाहो दाहीआ। इस दे अन्दर मन वासना गुंडी, सृष्टी दृष्टी कीती हल्काईआ। ओसे वेले कृष्न ने आपणे चरणां हेठों फड़ के ख़ाक दी चूंडी, आपणे बुल्हां उत्ते घसाईआ। उहदे हथ्थ विच होवे खूंडी, खुद मालक नूर खुदाईआ। ख़बर सुणे ना किसे हां हूं दी, हरि आपणा हुक्म वरताईआ। धार चला के मैं तूं दी, तूं मैं आपणा रंग रंगाईआ। उहदे कोल सिफ्त ना होवे किसे मूंह तूं दी, शब्द धार शनवाईआ। उहदी खेल प्रकाश रूप लूं लूं दी, साढे तिन्न करोड़ दए गवाहीआ। उथे खेल नहीं कोए अठारां कशूणीआं खूह दी, अठाई लख ना वंड वंडाईआ। उथे कोई मिन्नत नहीं सुणनी धू दी, सीस सीस ना कोए निवाईआ। कोई चतुराई नहीं किसे गुरु दी, हथ्थां वाली बन्दन ना कोए बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा दए उठाईआ। कृष्न कहे मेरा ओह लोहे दा हथियार, करनाल वाला दयो वखाईआ। ओह चाकू नहीं ओह शब्द दी धार, जेहड़ा पिछला ल्या छुपाईआ। नौ वार लिख्या, धरनी, जिस वेले तेरे उत्ते आवे मेरा निरँकार, खुद मालक फेरा पाईआ। ओह मेरी वस्तू

ल्यावे आपणे दरबार, जिस दा लेख ना कोए समझाईआ। एह कुंजी जिस दे नाल खोल्ह्दा सी आपणे घर दा बार, जिस विच जोती धार डेरा लाईआ। ओह भगतां दा प्यार, ओह यारां दा यार, ना ओह पुरख ना ओह नार, ना ओह तन करे शृंगार, ना ओह वाज़ां देवे मार, जन्म मरन दा रूप ना कोए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। कृष्न किहा मैं वेखणी रैण अंधेरी मस्सा, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। कौरव पांडव बन्न्ह के रस्सा, रस्ता सब दा बन्द कराईआ। फेर मार के हथ्थ उत्ते हथ्थां, ताली दिती लगाईआ। मेरी सुणदे रहिणगे चार जुग कथा, कहाणी दिती दृढ़ाईआ। फेर बोलया यथार्थ यथा, सहिज नाल सुणाईआ। फेर निउँ के टेक्या मथ्था, हथ्थ अक्खां उत्ते रखाईआ। कलयुग अन्त मेरा आया पुरख समरथा, काहनां दा काहन फेरा पाईआ। उहदा खेल होणा तत अट्ठा, नौ दर ना कोए जणाईआ। उस ने भगत बणाउणा बच्चा, बचपन आपणी झोली पाईआ। जो कोई भगती विच रह गया कच्चा, कंचन गढ़ दए सुहाईआ। क्यों ओह आदि अन्त दा सच्चा, सच विच समाईआ। हर हिरदे अन्दर वसा, वसणहारा धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। कृष्न ने वेख्या चार चुफेर, पहली जेठ मिली वड्याईआ। जिधर तक्कया उधर अंधेर, साचा नूर ना कोए चमकाईआ। फेर निगह मारी भीलणी दे नज़र आ गए बेर, राम दी दिती दुहाईआ। फेर अग्गा वेख्या नज़र आया शेर, भबक नाम वाली सुणाईआ। फेर वेख्या ओह करदा जावे मेहर, मेहर नज़र उठाईआ। जिस दा लेखा समझे कोए ज़बर ना ज़ेर, ज़र्रा भोरी भेव कोए ना पाईआ। जां फेर वेख्या ओह दूर दुराडा नेड़, नेरन नेरा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा रंग वखाईआ। कृष्न फेर वेख्या मारया पंजां वल्ल ध्यान, हथ्थ गिची उत्ते टिकाईआ। फेर किहा तुसीं मेरे जवान, सूरबीर सोभा पाईआ। अर्जन ने खिच्च के कमान, चिल्ला दिता वखाईआ। भीम गुरज हिलाई उत्ते असमान, चक्र नौ दिते घुमाईआ। युधिष्टर करके प्रणाम, सीस दिता निवाईआ। करन सहिदेव नकुल दी कर पहचान, अड्डी ज़िमीं उत्ते टिकाईआ। पंजां दा फ़रमान छेवां नाल अंञाण, जिस दी समझ ना कोए समझाईआ। फेर कृष्न ने किहा मेरे दर ओह परवान, जेहड़े परवाने बण के मेरे विच समाईआ। युधिष्टर ने झोली डाही कुझ मंग ल्या नाल खाण, रसना दे चखाईआ। ओह पंजे फल कर दयो दान, सिंघासण उत्ते दयो टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। कृष्न किहा युधिष्टर आह लै तेरा आम, मैं तेरी अम्मी अंमढ़ी दा जाया तूं। चारे पांडो कर परवान फड़ाया ओह निशान, जिस दे विच बुत ते रूह। निगह मारी वेख्या भगत भगवान,

होया हूबहू। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला दए कराईआ। युधिष्टर नूं किहा आह लै अम्ब दा फल मेवा, धुर दा दयां खवाईआ। आह चारे फड़ लओ मेरे प्रेम दा रस ते तुहाडी परवान होई सेवा, सेवा सच दे लेखे लाईआ। इक्को तुहाडा इष्ट इक गुरदेव इक्को देव देवा, आत्मा परमात्मा परमात्मा आत्मा इक्को नज़री आईआ। पंज वार कहो मेरे काहन दा काहन दाता अलख अभेवा, कथनी कथ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। काहन कहे एह वार थित जेठ महीना पहली, पहलों दिता जणाईआ। औह वेखो राणीआं महाराणीआं निकलदीआं विच्चों महलीं, महलां दे विच्चों समझाईआ। अर्जन नूं किहा अर्जन ढाई कदम मेरे पिच्छे टहिलीं, कदम कदम विच्चों बदलाईआ। युधिष्टर कर ना लवीं अनगहिली, समां गया हथ्थ ना आईआ। अग्गे करदे आपणी तन वाली थैली, चरण धूढ़ एहदे विच टिकाईआ। जो चाहें मेरे कोलों लै लईं, दूजा दुआरा मंगण दी लोड़ रहे ना राईआ। चपेड़ मार ज़ोर दी एह गल्ल कहि लई, सारी सृष्टी वेहली, वाहवा कहि के सीस दिता निवाईआ। फेर किहा प्रभू जे तुट्ठा फेर वी भगतां मेलीं, मिलणी आपणे नाल कराईआ। कृष्न किहा औह मेरा काहन आदि अन्त दा बेली, बेल्यां विच भगतां होए सहाईआ। फेर पंज चुलीआं रखीआं उत्ते हथेली, पिछली रसम पूरी दिती कराईआ। फेर हस्स के किहा युधिष्टरा याद कर जद बणे आत्मा परमात्मा दी बणे चेली, दूजा चेला नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। अर्जन किहा मेरे काहन, कुछ दे समझाईआ। कृष्न ने लत्त मारी औह वेख मैदान, मुरदयां दा भरया सोभा पाईआ। अर्जन बण के नादान, नैणां नीर चलाईआ। उहने ज़ोर दा खिच्चया कान, हलूणा दिता लगाईआ। छेती कर कर चरण ध्यान, धूढ़ी मस्तक नाल छुहाईआ। इक्को वेख निगाहबान, बिना काहन तों काहन नज़र कोए ना आईआ। फेर दो हथ्थड़ मारी, एथे उए अर्जना, औह वेख कलयुग शैतान, शरअ दा रूप बदलाईआ। फेर एथे मारया औह वेख असमान, असमानां तों परे मेरा माहीआ। जिस वेले आवे नौजवान, बण के दाता धुरदरगाहीआ। उहनूं सारी दुनिया कहे बेईमान, ख़ावंद गुरमुख विरला लए बणाईआ। अर्जन ने सुट्ट के तीर कमान, गल पल्लू ल्या पाईआ। कृष्न ने दोए जोड़ के चरण वखाए आह वेख बाल अंञाण, निगाह निगाह विच रखाईआ। ओह सदा मेहरवान, धुर दा मालक धुरदरगाहीआ। जिस ने लख चुरासी वेखणी आण, आप आपणा फेरा पाईआ। साडा लेखा पूरा करना जो कर रहे फ़रमान, फ़ुरने सब दे खोज खुजाईआ। अवतारां पिच्छों पैग़म्बरां दी चलाउणी दुकान, दुनिया विच आपणा नाम वंड वंडाईआ। फेर गुरु करने प्रधान, सतिगुरु आपणा हुक्म सुणाईआ। फेर शरअ दा

४७५
२२

जंग करना घमसान, युद्ध मज़्ब मज़्ब वाला वखाईआ। फेर प्रगट होणा आण, आप आपणा वेस वटाईआ। जिस नूं धर सके ना कोए विच ध्यान, मसव्वर तसव्वर ना कोए कराईआ। सारी दुनिया करनी हैरान, हैरत विच सब नूं दए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा उठाईआ। पहली जेठ कहे कृष्न सिरों लाह ल्या मुक्ट, हथ्थ दोवें उत्ते टिकाईआ। नाले हस्स के किहा वाह मेरे काहन तेरी बेपरवाही दी जुगत, जुगती समझ किसे ना आईआ। हुण तूं मुक्ती देण लग्गा मुफ्त, कीमत ना कोए रखाईआ। जेहड़ा युद्ध विच झूजे ते रहे चुस्त, धनुष बाण कंध्याँ उत्ते टिकाईआ। उहदी अन्दरों लग्गी होवे सुरत, सुरती तेरे विच टिकाईआ। जे ओह तक लए आपणी मूर्त, महूरत तेरा नाम जणाईआ। नाता तुट जाए दुनिया कूड़त, सच घर मिले वड्याईआ। पार हो जाए मूर्ख मूढ़त, अक्ल बुद्धी ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला आप कराईआ। कृष्न ने नौ वार ज़िमीं उत्ते चरण झस्से, ताली छाती उत्ते लगाईआ। नाले नेत्र बाण कस्से, अक्ख अक्ख विच्चों उठाईआ। नाले वेखे द्वापर वाले पटे, की समां दए गवाहीआ। फेर कन्नीउँ खोलू यशोधा वाले टके, नौ ख़ाक विच रुलाईआ। फेर उहनूं पुट्ठे कदम टप्पे, अग्गे कदम ना कोए रखाईआ। खुशीआं विच किहा प्रभू तेरे मेरे कौल पक्के, इकरार इक्को वार समझाईआ। ओह कलयुग निशाने तके, दूर दुराडा खोज खुजाईआ। खेल वेख मदीने मक्के, मकबरा चरणां वाला बणाईआ। फेर सुणे नाम दे टप्पे नाम सति शनवाईआ। फेर जाण वाहिगुरु फ़ते, फ़तवा सब दे उत्ते लगाईआ। फेर धूढ़ी भर के लप्पे, असमान वल्ल उडाईआ। जिस वेले कलयुग समां टप्पे, टप्पा इक्को सोभा पाईआ। काहन ने किहा मेरा काहन प्रकाश होवे नाल पप्पे, पूरन प्रभ चतुराईआ। इक्को वार इक नाल कीते मते, मति सांझी ना कोए रखाईआ। फेर युधिष्टर नूं मार के धफ्फे, ज़िमीं उत्ते लिटाईआ। गर्दन उत्ते हथ्थ रखे, सहिज नाल दबाईआ। युधिष्टर तूं मेरा मैं तेरा दोवें इक्को नाम जपे, सोहँ दिता सुणाईआ। फेर लिख्या लेख उत्ते गत्ते, गतमित आपणे विच छुपाईआ। फेर कढ के खून रते, रती मस्तक उत्ते छुहाईआ। भगत पाए प्रभू दे खते, ख़तरा सब दा दिता मुकाईआ। जिथ्थों मिलदे प्रेम दे गफ्फे, गुफा विच वड़न दी लोड़ रहे ना राईआ। साडे जन्म कर्म करे रफ़े, रस्ता इक्को दए वखाईआ। जो आवे सो खट्ट के जाए नाम दे नफे, नुकसान विच ना कोए रखाईआ। काहन किहा युधिष्टर इक वार मैनूं हो ख़फ़े, गुस्से नाल मथ्थे वट चढ़ाईआ। युधिष्टर किहा काहन मेरा शरीर अग्नी वांग तपे, तपश ना कोए बुझाईआ। ओह भगत नहीं जेहड़ा भगवान दी करनी उत्ते हस्से, सति कर मन्नणा मेरी रीती चली आईआ। फेर पा के हथ्थ उत्ते नक्के, लकीर नौ वार खिचाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। जेठ कहे मैनूं सारया कीता वाधू, गिणती विच ना कोए रखाईआ। पर मैनूं याद आ गया गोबिन्द ने बचन सुणया सी पिट्ठ पिच्छे दादू, दाअवे नाल दृढ़ाईआ। हुण इट्ट पथ्थर ते फेर मेरे पुरख अकाल दे नाम दा चलणा जादू, जादव बंसी कृष्न दए गवाहीआ। उहदी किरपा तों बिना रहिणा नहीं कोई साधू, साधना विच ना कोए जणाईआ। उहदा शब्द होणा इक आगू, आगमन करे ख़लक खुदाईआ। जो ब्रह्मण्ड खण्ड जगत जहान दीन दुनी त्यागू, त्रैगुण दा डेरा ढाहीआ। अग्गे नवीं साजणा साजू, सज्जण हरि भगत लए प्रगटाईआ। खण्डा खड़ग तीर तरकश कमंद चुक्के किसे ना बाजू, बाजां वाला दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा सच इक प्रगटाईआ। जेठ कहे मेरी थित सुहावणी, सोहणी सोभा पाईआ। जिस वेले शुरू कीता सी राग मुंदावणी, मुद्दा प्रभ दा वेख वखाईआ। इशारा कीता सी बल बावणी, नानक बाबर गया जणाईआ। कलयुग अन्त रुतड़ी ओह आवणी, जिस वेले अवण गवण ना कोए कटाईआ। सचखण्ड दवारे देणी नहीं किसे ने जामणी, जमां तों सके ना कोए छुडाईआ। दीन दुनी होणी विकार विभचार दी पराहुणी, धरनी उत्ते सोभा पाईआ। सच प्रीती किसे ना लावणी, धुर दा रंग ना कोए रंगाईआ। खेल होणी तीर्थ तट नहावणी, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। साची मंज़ल किसे ना पावणी, पारब्रह्म ना कोए दरसाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया चमके दामणी, दामनगीर ना कोए दरसाईआ। विद्या रहिणी नहीं ब्राह्मणी, ब्रह्म ना पड़दा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। जेठ कहे जन भगतो आपणी सज्जे हथ्थ नाल फड़ो ज़बान, ज़िबह आपणा आप कराईआ। उस प्रभू तों होवो कुरबान, जिस दी कुरबानी दे के गुर अवतार पैग़म्बर खुशी बणाईआ। नेत्र मीट धरो ध्यान, साहिब वेखो धुरदरगाहीआ। बुद्धी विच ना रहो अंञाण, मनमति झगड़ा दयो गंवाईआ। सति सच करो परवान, परवाने बण के दयो वखाईआ। नाम अमृत करो पान, जगत पान ना मुख चखाईआ। हुक्म मन्नो इक ख़समान, सेवो सिमरो धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर मेला लए मिलाईआ। जेठ कहे उँगल रखो उपर आपणी शाह रग, पहले पोरे नाल दबाईआ। जगत कूड़ा समझो जग, माया ममता विच कुरलाईआ। तृष्ना वासना वेखो अग्ग, चार कुण्ट रही जलाईआ। दीन दुनी तक्को हद्द, हदूद कूड़ी सोभा पाईआ। इस तो अग्गे वेखो वध, सुरती शब्द विच समाईआ। घर तक्को पुरख समरथ, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जो लहिणा देणा पूरा करे हक, हकीकत वेखे थांओं थाँईंआ। घर चलदयां मंज़ल ना जाणा थक्क, पैंडा पन्ध लैणा मुकाईआ। प्रीती विच सथ्थर लैणा घत, अथ्थर नीर ना कोए वहाईआ।

आपे रखणहारा पत, पतिपरमेश्वर होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। जेठ कहे मेरी किथे ओह कड़ाही, जिस विच चुरासी नजरी आईआ। ओह पोणी दयो फड़ाई, जिस नाल गुरमुख बाहर लैणे कढ्ढाईआ। प्रशाद उन्हां मुख लगाई, जो खा के खुशी बणाईआ। जगत हारां नाल चतुराई, सोहणे तन रंगाईआ। पाणी घट्ट घुट प्याई, अमृत रस चखाईआ। एह वी अर्जन ने दिती सी दुहाई, वराट रूप वेख के मारीआं धहींआ। ओह फल दयो टिकाई, दुआबे वाले चारे अग्गे आईआ। अग्गे गुरमुख बणे कोए ना राही, मंज़ल भुल्ले ना धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। अर्जन कहे मैं अर्ज़ कीती सी निक्की, लकीर नक्क नाल कढ्ढाईआ। कृष्न ने नौ वार लिख के इक्की, फेर दिती मिटाईआ। फेर धार वखा के तिक्खी, इशारे नाल जणाईआ। धौण फड़ के फेर वखाई सिक्खी, सच दिता सुणाईआ। अर्जन ने आपणे अन्दर लेखणी लिखी, कलम शाही ना कोए लगाईआ। नाले याद कर लई मिती, पहली जेठ वज्जी वधाईआ। फेर वेखी थिती, सम्मत शहिनशाही रंग रंगाईआ। फेर कृष्न वखाई चिट्ठी, दूरों दिती पढ़ाईआ। फेर जणाई टिप्पी, हाहे उत्ते सुहाईआ। फेर वस्त अगम्मी दिती, दूरों दिती वरताईआ। फेर धार जणाई चिट्टी, नूर जोत रुशनाईआ। फेर बाणी सुणाई मिट्ठी, तुं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। फेर तक्कया बिटबिटी, अक्ख अक्खां विच रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप वखाईआ। रंग कहे मैं रंग रूप, बिन रेखा सोभा पाईआ। मैं आदि अन्त दा पूत, सच सरूप विच समाईआ। मेरा लहिणा चार कूट, दहि दिशा विच वड्याईआ। मैं कदे ना जावां ऊत, प्रभ सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। मैं सदा सुहावां रूत, जुग जुग रुत्त महकाईआ। मैं भाग लगावां बूत, बुतख़ाने वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक फेरा पाईआ। रंग कहे मैं रंग रंगीला, रतड़ा इक अख्वाईआ। मेरा आदि अन्त दा इक वसीला, वसल यार वाला समझाईआ। मेरा अम्बर नूर नीला, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। मेरा सति सति कबीला, गुर अवतार पैग़म्बर सोभा पाईआ। मेरा निरगुण धार जीणा, सरगुण रूप मरन कदे ना आईआ। मेरा लहिणा पार लोक तीना, त्रैगुण ना सके समझाईआ। मेरी शहादत नहीं जल मीना, चन्द चकोर ना कोए वड्याईआ। मैं कोई लहिणेदार नहीं कमीना, कोझा कमला ना रूप दरसाईआ। मेरा आदि अन्त तों साफ़ सीना, हिरदा इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा रिहा चुकाईआ। जेठ कहे कृष्न ने सज्जे हथ्थ ते वढ्ढी दिन्दी, दन्दां नाल दबाईआ। मुखो किहा कलयुग सृष्टी अंधी, जग नेत्र ना कोए रुशनाईआ। धोती

तहिमत पहिनण तम्बी, ताअबेदारी ना कोए समझाईआ। जोत अकालण ना मिले अंमढ़ी अम्मी, पिता पूत ना गोद उठाईआ। फेर फिरके पैरी नन्गी, चरण कंडयां उत्ते टिकाईआ। फेर वेखके पवण ठंडी, साह साह विच मिलाईआ। फेर तक्कया औह सूरबीर प्रभ दा नूर योद्धा जंगी, बहादर इक्को नज़री आईआ। जिस ने दीन दुनी इक्ठी करनी वंडी, ज़ात पात दा लेखा दए मुकाईआ। चरण दवार दरसाए जमना गंगी, सुरस्ती गोदावरी धूढ़ छार रमाईआ। खुशी विच किहा पंज छे दी आयू लम्बी, समां समें नाल ठुकराईआ। ओस वेले धरनी कम्बी, थर थराहट विच दुहाईआ। कान्हा बिना तेरे काहन तों दुनिया होणी डम्बी, सति सरूप ना कोए वखाईआ। मेरी आसा मंग रही मंगी, मांगत हो के झोली डाहीआ। कलयुग अन्तिम ओह धार निरँकार आवे जेहड़ी मात कुख्ख ना जम्मी, गर्भवास ना कोए रखाईआ। जेहड़ी किसे नूं कहे ना अंमा मंमी, अब्बाजान ना कहि बुलाईआ। खेल होवे इक नवीं, नव चार ना कोए जणाईआ। अर्ज़ अर्ज़ोई इक मन्नीं, मनसा दिती समझाईआ। सुणया बचन कन्नीं, संदेसा सहिज सुभाईआ। धरनी रो पई छम्म छम्मी, छहिबर हन्झूआं वाली लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। धरनी धर्म दा दए दिलासा, सीतल सच जणाईआ। प्रभू प्रेम प्यासा, जुग जुग वेस वटाईआ। पूरी करे आसा, तृष्ना दए गंवाईआ। खाली भरे कासा, वस्त अगम्म वरताईआ। उहदा खेल अलखणा अलाखा, लख सके कोए ना राईआ। ओह आदि तों जोती जाता, जोती जोत नूर रुशनाईआ। तैनूं दुनिया कहिंदी धरती माता, धवल तेरी चतुराईआ। पर तूं वी उसनूं मन्नणा आपणा बापा, पिता पुरख अकाल सीस निवाईआ। ओह वेखे ज़रूर कलयुग खेल तमाशा, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। तेरी मंज़ल पूरी करे वाटा, अगला पन्ध रहे ना राईआ। पर याद रखीं इक वेरां गोबिन्द अमृत देण आवे बाटा, जगत रस चखाईआ। फेर निरगुण नूर कर प्रकाशा, अंध अंधेरा दए गंवाईआ। सम्बल करके आपणा वासा, वास्ता इक्को नाल जणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु जो चार जुग दीआं शाखां, शनाखत करे चाँईं चाँईंआ। सति धर्म दा बण के राखा, तेरी रखया करे देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वर दाता इक अख्वाईआ। जेठ कहे मेरी थित वार वारता अनोखी, वक्ख वक्ख समझाईआ। मेरी धार लिखी किसे ना पोथी, पुस्तक सके ना कोए समझाईआ। जुग बीते कोटन कोटी, काल गए विहाईआ। जो अवतार पैग़म्बर गुरु आया सो खा के गया रोटी, रसना रस चखाईआ। निरगुण धार रिहा कोए ना जोती, पंज तत तत समाईआ। दीन मज़्हब मानव वंड धर्म धार दे दोषी, दुश्मण नाम नाम समझाईआ। अक्खर विद्या जगत पढ़दा कोशी, सिफ्तां विच सालाहीआ। पुरख अकाला दीन दयाला बिना ज़बान तों सदा रखे ख़ामोशी,

शब्द शब्द नाल जणाईआ। तन माटी वजूद सोहे कोए ना पोशी, पोशीदा आपणा नाम रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा मालक दया कमाईआ। दया धार प्रभ आ गया, अचन अचेत अचल्ल। निरगुण नूर जोत जगा गया, गहर गम्भीर अछल अछल। लख चुरासी भरम भुला गया, जन भगत उधारे घड़ी पल। चार कुण्ट वेख वखा गया, लेखा जाणे महीअल जल थल। कूड़ कुड़यारा डंक वजा गया, हउमे हंगता विकार उठा के दल। राउ रंक भुला गया, निहचल धाम बैठ अटल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमा गया। करनी कार कमावण आया, जेठ जलन्दा मीत। भेव अभेद खुलावण आया, हरि साचा त्रैगुण अतीत। जन भगत सुहेले मेल मिलावण आया, शब्द गुरदेवा हो के बीच। दर साचे आप बहावण आया, पर्दा लाह साहिब अनडीठ। भेव अभेद खुलावण आया, आत्म परमात्म दरस्स के गीत। अंध अंधेरा गवावण आया, गृह मन्दिर जगा के दीप। सच मार्ग समझावण आया, सतिजुग साची रीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, लेखा मुका के हस्त कीट। हस्त कीट ना राउ रंका, ना कोए राज रजान। साहिब सति स्वामी दवार बंका, इक्को परम पुरख मेहरवान। चरण प्रीती साची संगता, संगल शरअ कटाण। गढ़ तोड़ हउमे हंगता, हँ ब्रह्म दए ज्ञान। संसा लाह के मन का, मनसा मेटे शैतान। रस रहिण ना देवे कन्न का, अन्तर अन्तर बख्शे ध्यान। कर प्रकाश अगम्मी नूर चन्न दा, लेखा मुकाए कोटन भान। लहिणा झोली पाए जन भगतां वाले दम दा, दामनगीर हो श्री भगवान। लेखा रहे ना हरख सोग ग़म दा, चिन्ता चिखा मिटे जहान। पिछला वेला गया लँघदा, अग्गे हुक्म फ़रमान। जगत लेखा होणा तंग दा, गृह गृह होए हैरान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि साचा वड मेहरवान। कृष्न कहे मैं दिता इक संदेसा झट, युधिष्टर झटके नाल उठाईआ। जिस वेले सम्मत शहिनशाही जाए टप्प, टापू वेख जगत लोकाईआ। माया डसनी डस्से सब नूं सप्प, ज़हिर कहर वरताईआ। पैग़म्बरां फल जाणा पक्क, सदी सदीवी दए गवाहीआ। खेल करना पुरख समरथ, हरि वडे वड वड्याईआ। शब्दी धार पा के नथ्थ, सृष्टी बन्ने थांउँ थाँईआ। किसे दे रहे किछ ना हथ्थ, जोरू ज़र ना कोए चतुराईआ। सति धर्म दा सथ्थर विछ जाए सथ्थ, कूड़ कूड़ वज्जे वधाईआ। एह खेल वेखणा प्रभू नाल अगम्मी अक्ख, बिन नैणां नैण तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। कृष्न किहा जिस वेले सम्मत शहिनशाही छे आवे, आवत आवत आवत खुशी मनाईआ। सतारां हाढ़ थित सुहावे, रुतड़ी रुत महकाईआ। प्रभू चरण धूढ़ी हरिसंगत नहावे,

दुरमति मैल गंवाईआ। तूं ही माता पिता गावे, खुशीआं राग जणाईआ। गुरमुख इक दूजे नूं हस्स हस्स बुलावे, गिला अन्दर रहे ना राईआ। हरिसंगत नौ प्रदक्खणा लै के नौ दवार दा डेरा ढावे, नव नौ खुशी मनाईआ। आत्म परमात्म इक्को प्रीतम रावे, जो रव रिहा सर्ब ठाईंआ। जूठे झूठे छड के दाअवे, माया ममता मोह मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा आप जणाईआ। सतारां हाढ़ कहे मैं आउंदा आउंदा भज्जा, भाजड़ वेखां जगत लोकाईआ। हरिसंगत पूरन अक्खर लिख्या होवे हथ्थ सज्जा, हथेली लाल लाल नाल छुहाईआ। अग्गे दस्सणी एस दी वजह, भेव भेव विच्चों खुलाईआ। सब दे खब्बे हथ्थ विच होवे काग़ज़ चिट्टे रंग दा बग्गा, काना साढे तिन्न हथ्थ लम्बाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद आपणा रंग रंगाईआ। चिट्टा काग़ज़ नौ दस इंच धार होवे, तूल अर्ज़ वड्याईआ। गुरमुख साढे तिन्न घंटे कोए ना सोवे, सोहणा वक्त दए समझाईआ। विराग विच कोए ना रोवे, नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पारब्रह्म प्रभ अलख अभेवे, भेव अभेद सके कोए ना पाईआ।

चिट्टे वस्त्र काला ठप्पा, जन्म जन्म जन्म कर्म गंवाईआ। जिस दी मिरतू होणी सी लड़ के सप्पा, महीना जेठ लँघण ना पाईआ। उस दा लहिणा देणा लेखा पूरा कीता पूरब जन्म दा बचन होया सच्चा, रामदास गुर दए गवाहीआ। बाल अवस्था बाली बच्चा, बचपन बचपन विच्चों बणाईआ। भाण्डा भज्जण नहीं दिता कच्चा, मेहर नज़र नाल तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमीत सपुत्री जन्म दान फेर दिता, दे के आपणी दया कमाईआ।

✪ १० जेठ शहिनशाही सम्मत ६ महिंगा सिँघ दे गृह पिण्ड हरीपुर ज़िला जलन्धर ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ बेनज़ीरी, निरगुण निरवैर नज़र सब दी दे बदलाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले साडा वक्त अख़ीरी, परवरदिगार सांझे यार दईए जणाईआ। शब्दी धार अन्दर लेखा लिख तहरीरी, शाह हकीरी वेख वखाईआ। चार जुग दी शरअ तोड़ ज़ंजीरी, कलयुग कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। सतिजुग साचा धर्म होवे तामीरी, धरनी धरत धवल

धौल वज्जे वधाईआ। अमृत रस बख्श दे सीरी, आबेहयात नीर प्याईआ। किसे दी रहे ना मीरी पीरी, पारब्रह्म प्रभ आपणा हुक्म वरताईआ। जो आसा रख के गया कबीरी, कबरां तों बाहर सुणाईआ। दीन दुनी मेट दिलग़ीरी, दीन दयाल होणा सहाईआ। दीन मज़्हब रहे ना किसे जगीरी, मालक इक्को सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण बेनन्ती अरदास प्रभू अन्त, अन्तष्करन वेख ख़लक खुदाईआ। तूं साहिब स्वामी भगवन्त, भगवन तेरी बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी तेरा खेल बेअन्त, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। ध्यान लगाउंदे गए सन्त, साजण हो के खोज खुजाईआ। पतिपरमेश्वर बण के कन्त, कन्त कन्तूहल पड़दा दे उठाईआ। दीन दुनी दा गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दे समझाईआ। बोध अगाधी बण के पंडत, विद्या अगम्म देणी जणाईआ। मानव ज़ाती तेरी संगत, शब्दी धार मेल मिलाईआ। लेखा पूरा कर दे पुरख अकाले विच आपणे सम्मत, समां समें विच्चों बदलाईआ। हउमे रोग रहे ना चिन्त, क्रिया कूड़ देणी गंवाईआ। तेरे नाम कलमे दा रहे कोए ना निन्दक, दुरमति दुराचार ना कोए वड्याईआ। मनुआ करे कोए ना इल्लत, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। इक्को शब्द गुरदेव सतिगुर होवे हिम्मत, हौसला इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण अन्त कन्त संदेशा, शहिनशाह सुणाईआ। तूं जुग जुग रहें हमेशा, नित नवित आपणा खेल खिलाईआ। भेव खुल्हा दे सचखण्ड अगम्मे देसा, पड़दा थिर रहे ना राईआ। झगड़ा मुका दे पंडत मुल्ला शेखां, इक्को नूर देणा चमकाईआ। आपणे हथ्थ रख आपणा लेखा, विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाईआ। सतिजुग साचे रहे कोए ना भरम भुलेखा, भाण्डा भरम देणा भनाईआ। दीन मज़्हब दा देणा किसे नहीं ठेका, ठाकर हो के आपणा हुक्म वरताईआ। तूं आदि अन्त दा एका, एकँकार तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण अन्त अख़ीरी कहिणा, शब्दी धार सुणाईआ। तेरा खेल वेखणा बिन नैणां, नैन नैन रुशनाईआ। तेरा भाणा सब ने सहणा, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा बुरज़ ढहिणा, हउमे हंगता होए सफ़ाईआ। कूड़ी क्रिया वहिण वहिणा, चार कुण्ट दुहाईआ। बिन तेरे दिसे कोए ना साक सैणा, सज्जण मीत ना कोए अख्वाईआ। सदी चौधवीं नाता तुटणा भाई भैणां, पिता पूत ना गोद सुहाईआ। चारों कुण्ट अंधेरी रैणां, निरगुण जोत ना कोए रुशनाईआ। सब दा पूरब परम पुरख प्रभ देणा, दे दे खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडा लेख अगम्मी तक्क, तकवा अन्त रखाईआ। हकीकत झोली पा दे हक,

लाशरीक तेरी सरनाईआ। साडे सब दे ख़ाली हथ्थ, पल्लू गंढ ना कोए बंधाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरे नाम दा चलाया रथ, हुक्म संदेशे मात सुणाईआ। महिमा दस्सी अकथ, भेव अभेदा इक प्रगटाईआ। अन्तिम साडी होई बस, बस्ते सब ने लए बंधाईआ। दो जहानां आपे नस्स, नव सत्त खोज खुजाईआ। सब किछ फड़ाया तेरे हथ्थ, तेरा तेरे अग्गे टिकाईआ। वेखीं सदी चौधवीं अग्गे ना जावे टप्प, टापूआं वाले देण दुहाईआ। कौल इकरार पूरा होया पक्क, पक्की गंढ ना कोए खुल्हाईआ। तूं साहिब स्वामी समरथ, बेअन्त तेरी सरनाईआ। झट गोबिन्द प्या हस्स, सचखण्ड आपणी ख़ुशी बणाईआ। दीन दयाल वेख लै अक्ख, अक्ख मेरे नाल मिलाईआ। लख दा लख रिहा ना कक्ख, कक्ख लख ना कोए जणाईआ। जो मार्ग आया दस्स, दहि दिशा शनवाईआ। उस दा लए कोए ना रस, रस्ता भुल्लया ख़लक ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर पर्दा आप चुकाईआ। गोबिन्द कहे मेरी वेख हथेली, बिन हथ्थां हथ्थ जणाईआ। तुध बिन अवर कोए ना बेली, बेल्यां जंगलां विच आया सुणाईआ। तेरी खेल सदा नवेली, निरँकार तेरी चतुराईआ। गुरमुख मेरे मेरे नाल मेलीं, मिल के विछड़ कोए ना जाईआ। औह तक लै नानक टोपी सेली, सरगुण रही समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वस्त अमोलक इक वरताईआ। गोबिन्द किहा मेरा इक इशारा, बिन सैनत दयां जणाईआ। औह वेख आपणा किनारा, नईया डोले थाउँ थाँईंआ। किसे दा रिहा ना कोए सहारा, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। सिख सिख नूं कहे ग़द्दारा, गोबिन्द दा भय ना कोए जणाईआ। मेरे पुरख अकाल दीन दयाल मैं तेरा सुत दुलारा, शब्द शब्द अख्वाईआ। निरगुण धार हो दुबारा, दोहरी आपणी कार कमाईआ। नव सत्त पावां सारा, महासार्थी हो के तेरा रथ चलाईआ। लहिणा देणा पूरा करके जुग चारा, चौथा जुग फोल फुलाईआ। तेरे प्यार दा इक्को होवे दवारा, द्वारका वासी जिथ्थे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दवार दया कमाईआ। गोबिन्द किहा मैं दस्सां भेव अवल्ला, अगम्म अथाह जणाईआ। पुरख अकाल वेख लै पल्ला, कन्नी गंढ ना कोए बंधाईआ। तेरा नूर इलाही अल्ला, आलमीन तेरी बेपरवाहीआ। मेरा कौल इकरार निहचल धाम अटला, दूजी भूमिका ना कोए दरसाईआ। अन्त तेरे दवारे खला, ख़ालक ख़लक रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं अन्त करावां हल्ला, हुक्म इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वर आपणा इक जणाईआ। पुरख अकाल कहे गोबिन्द प्रेम विच लए अंगड़ाई, मुहब्बत विच वड्याईआ। जेहड़ा बूटा पुट्ट के आयों काही, कायनात जड़ उखड़ाईआ। शब्दी खेल जगत पए दुहाई, हाहाकार लोकाईआ। कलयुग बदल देवे शाही, शहिनशाह

४८२
२२

आपणा हुक्म सुणाईआ। सब दी मंज़ल पूरी करे जो चार जुग दे राही, पैंडा पन्ध मुकाईआ। धुर संदेशा देवे थांउँ थाँईं, थान थनंतर खोज खुजाईआ। सच खेल वेखणा चाँईं, चाउ घनेरा इक दृड़ाईआ। मेला मिलणा धुर दे माही, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच पर्दा इक उठाईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द माछूवाड़ा कर लै याद, पूरब दयां जणाईआ। जिस धार ल्या अराध, हिरदे हरि वसाईआ। भेव पा के बोध अगाध, बुद्धी तों परे कीती शनवाईआ। उस दा लहिणा वेख आज, थित वार दए समझाईआ। भगती धार बदल समाज, समग्री नाम इक वरताईआ। तख्त निवासी पहन के ताज, ताजां वाले दए खपाईआ। तेरा पूरन करके काज, करनी करता वेख वखाईआ। जेहड़ी मैं प्रेम विच कटी रात, रुतड़ी इक महकाईआ। इक कीड़ी वाली सौग़ात, पदार्थ दुआबे विच भराईआ। गोबिन्द होर वेख बिन अक्खरां वाली किताब, बिन कुतबख़ाने फोल फुलाईआ। सचखण्ड दी तक्क महिराब, महिबूब रिहा दरसाईआ। जिस विच्चों अगम्मी निकले अवाज़, रसना जेहवा ना कोए सुणाईआ। उहदा पंजवां हिस्सा ते पंजवां बाब, पंजवीं सतर सतर समझाईआ। जिथ्थे नहीं कोई आवाज़, धुन नाद ना कोए शनवाईआ। इक्को बैठा प्रेमी तेरा साध, सन्त सुहेला नज़री आईआ।
४८३ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। गोबिन्द ४८३
२२ कहे मैं शब्दी ध्यान धरया, जगत बुद्धी ना कोए चतुराईआ। खेल वेख्या नरायण नरया, नर हरि दिता दरसाईआ। जेहड़ा २२
दादू दे देहुरे दादू दा साथी गोबिन्द चरण लग्ग के तरया, नौ वार सीस झुकाईआ। गोबिन्द उस नूं बाहों फड़या, फड़ बाहों गले लगाईआ। ओह झट गोदी दे विच वड़या, गलवकड़ी गल विच पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा पिता पूत दा ढोला पढ़या, खुशी राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणा हुक्म सुणाईआ। गोबिन्द कहे दादू दा संगी जिस दा नाँ सारे कहिंदे वाधू, वाहवा खेल खिलाईआ। नौ कोल रखदा सी सदा काजू, नौ साल ना मुख लगाईआ। बन्न्हदा सी नाल सज्जे बाज़ू, बाज़ां वाले आस तकाईआ। जिस वेले आवे मेरा साहिब मेरा बण के आगू, आगमन विच राह तकाईआ। उहदे नाम दा मेरे उत्ते होवे जादू, जादव बंस दा पिछला नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच पर्दा आप चुकाईआ। गोबिन्द आ गया नाल प्यार, प्रेम विच वड्याईआ। वाधू ने करके निमस्कार, नौ काजू अग्गे दिते टिकाईआ। गोबिन्द दे सहार, फड़ बाहों ल्या उठाईआ। उस हस्स के किहा वाह यारां दे यार, तेरी यारी बेपरवाहीआ। जे तुद्धा मैनूं आपणी मंज़ल चाढ़, दर आपणा इक सुहाईआ। गोबिन्द इशारा कीता अजे ज़िंदगी वेख होर दिन चार, जुग चौथे समझाईआ। जिस वेले खेल करे मेरा करतार, हरि करता

धुरदरगाहीआ। मैं शब्दी धार आवां विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी बैठण सीस निवाईआ। तेरा लहिणा देणा कर्ज़ा देवां उतार, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। वाधू किहा मेरे नाल कर वायदा, सच सच सुणाईआ। दादू किहा गोबिन्द कदे ना होवें अलाहिदा, वक्खरा घर ना कोए सुणाईआ। गोबिन्द किहा मैं अन्तर लवां जाइज़ा, जाइज़ आपणी कार कमाईआ। तैनूं मरना पए ते दुःख होवे हैज़ा, तन वजूद दए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। वाधू किहा मैं मरना तेरी हुक्म दी धार, मरना मृत रहे ना राईआ। जावां सच सच्चे दरबार, दरगाह साची सोभा पाईआ। करके निमस्कार, मथ्था चरणां उत्ते घसाईआ। गोबिन्द थपकी दिती वार दो चार, हथ्थ पुश्त पनाह टिकाईआ। तेरा लेखा अगम्म अपार, आपणे विच छुपाईआ। जन्म लैणा पए विच संसार, आउणा चाँईं चाँईंआ। एह खेल हरि करतार, करनी दा करता रिहा शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। गोबिन्द किहा की आउणा चाहें मात, जन्म जन्म बदलाईआ। वाधू किहा तूं ही पिता तूं ही मात, हउँ बालक इक अख्वाईआ। तेरा तेरे दर होवे साथ, सगला संग बणाईआ। गोबिन्द किहा मैं शब्द गुरु मेरा खेल अगम्म समाज, समझ सके कोए ना राईआ। तत्तां वाली तेरी पूरी करां आस, ख्वाहिश ख्वाहिश विच समाईआ। तेरा लहिणा देणा रख के आपणे हाथ, हथ्थो हथ्थ चुकाईआ। जोड़ जुड़े नाल पुरख समराथ, धुर साहिब होए सहाईआ। मेरे नाम दा धुर दे शब्द दा अगम्मी नादां दा वजदा होए नाद, नाद नाद शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा संदेशा इक सुणाईआ। गोबिन्द किहा सच निभावां प्रीत, प्रीतम हो के दयां जणाईआ। जिस वेले सदी जावे बीत, चौधवीं वेस वटाईआ। पुरख अकाला दस्से गीत, ढोला अगम्म अथाहीआ। सृष्टी दृष्टी बदले रीत, रीतीवान होए सहाईआ। सति सच दी बख्श प्रीत, प्रीतम हो के वेस वटाईआ। तेरा पिता होवे सुरजीत, सिँघ सिंघ नाल वड्याईआ। चोली चाढ़ रंग मजीठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। वाधू किहा की कीता कौल इकरार, इक वार सुणाईआ। गोबिन्द कीता इशार, माछूवाड़े दिता वखाईआ। कीड़ी दा दे उधार, भरम दिता चुकाईआ। जिस वेले एह आवे विच संसार, लोकमात वज्जे वधाईआ। दो धार विच धार होवे उज्यार, दो दोआबा मेल मिलाईआ। काया काअबा इक वखाल, महल्ल अटल करे रुशनाईआ। उस वेले सुरत लैणी संभाल, सम्बल वसे धुर दा माहीआ। जिस नूं पोह ना सके काल, महाकाल सीस निवाईआ। ओह खेल करे कमाल, कलि कल्की नाउँ प्रगटाईआ। कूड़ी क्रिया तोड़

जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच आपणा हुक्म सुणाईआ। गोबिन्द किहा शब्द गुरु गुरदेवा, आत्मा देव जणाईआ। साचा नाम अमृत मेवा, रस इक्को इक वखाईआ। जिस नूं चक्ख ना सके जेहवा, बत्ती दन्द ना कोए वड्याईआ। ओह मिले धाम निहचल निहकेवा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। गोबिन्द किहा तेरा मेरा कौल इक इकरारा, अक्ल बुद्धी तों बाहर जणाईआ। शब्दी हुक्म दे इशारा, सहिज नाल सुणाईआ। तेरा हो के तेरी पावां सारा, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। सुत दा सुत बणा दुलारा, सूत्रधारी खोज खुजाईआ। तेरा नाम होवे गुर अवतारा, सिँघ अक्खर संग रखाईआ। दुआबे वाल्यां नाल वरतारा, पूरब पिछला जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला आप मिलाईआ। साचा मेला मिल्या मिलाप, हरि करता आप कराईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण अन्त अन्त तेरा इक्को जाप, आख़र अख़ीर नज़री आईआ। कूड़ी क्रिया मेट संताप, हउमे रोग रहे ना राईआ। दीन दुनी दी दृष्टी कर पाक, पतित पुनीत आप कराईआ। तूं सब दा माई बाप, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। झगड़ा रहे ना कोए ज़ात, मज़्हब दीन ना कोए लड़ाईआ। मानव मानव कर इत्फिाक, मेला मेल सहिज सुभाईआ। सब दा पूरा कर भविक्ख्त वाक, वाहवा तेरी इक सरनाईआ। सतिजुग साचा खुल्ल्हा रहे ताक, दर इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण तेरा वक्त सुहञ्जणा, सोभावन्त रमणीक। पुरख अबिनाशी आदि निरँजणा, तेरे हथ्थ हक तौफ़ीक। कलयुग कूड़ा मात वंञणा, दूजा रहे ना कोए शरीक। सतिजुग साचा धरनी लग्गणा, किरपा कर त्रैगुण अतीत। तेरा दीपक जोत जगणा, खेल दस्स अनडीठ। सब नूं धूढ़ी करा मजणा, अन्तर रहे ना कौड़ा रीठ। पुरख अकाल धुर दे सज्जणा, चाढ़ रंग मजीठ। झगड़ा रहे ना माटी बदना, बदी दी अन्दर रहे ना रीत। ममता विच पए ना तपणा, काया करदे ठांडी सीत। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण तेरा इक्को नाउँ सब ने जपणा, धुर दा कलमा हक हदीस। जन भगत सुहेला साथ रखणा, झगड़ा रहे ना ऊच नीच। जिस दा खेड़ा सदा वसणा, सो तेरे चरणां होवे वसनीक। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, तेरा खेल सदा सद सदा सद, आपणा नाम करें बख़्शीश।

✪ ११ जेठ शहिनशाही सम्मत ६ बीबी हरभजन कौर दे गृह पिण्ड हरीपुर ज़िला जलन्धर ✪

भोला नाथ आया उतों कैलाश, काली जटा जूट वखाईआ। सदा ला पुरख अबिनाश, अलख अलख दिता सुणाईआ। नेत्र मीट तक्क प्रकाश, परा पसन्ती तों परे वेख वखाईआ। त्रिशूल सुट्ट के तक्कया आकाश, मण्डल मण्डप खोज खुजाईआ। फेर वेख्या हर घट वास, लख चुरासी रिहा समाईआ। चरण प्रीती जोड़ के नात, मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। मेरी रही कोई ना लाश, तन तत ना कोए दरसाईआ। मैं शब्द धार दा दास, दासी दास सेव कमाईआ। इक इक कर विश्वास, विषय तेरा नाम अपणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, हरि तेरी बेपरवाहीआ। शंकर कहे मैं वेख अगम्मा सुख, आपणी खुशी बणाईआ। सृष्टी वेख के दुःख, हैरत विच आपणा आप भुलाईआ। इक सत्त दी धार मरदे विच कुख्ख, जन्म पूर ना कोए कराईआ। इक इकत्ती अध विच्चों जांदे टुट्ट, टुटयां गंढ ना कोए पवाईआ। दो सङ्ग जननी घर जम्मदे सुत, पुत्र धी ना वंड वंडाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल मैं इक्को वार रिहा पुछ, निउँ के सीस निवाईआ। पिच्छे काल बीते चौकड़ीआं नाल जुग, समां समें विच्चों बदलाईआ। मैनूं समझ नहीं आई की खेल तेरा कुझ, करनी दे करते देणा दरसाईआ। मैं रखी नहीं कोई बुध, अक्ल वाली ना कोए चतुराईआ। दर ठांडे जावे झुक, निउँ निउँ सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सच तेरी सरनाईआ। पुरख अकाल किहा भोले नाथ वेख्या तेरा जोग, जटा जूट दयां जणाईआ। दीन दुनी दा वेख्या सोग, चिन्ता विच कुरलाईआ। पंज तत सरीर दे विच नौ सौ नड़िनवे करोड़ दा रोग, मेट सके कोए ना राईआ। किसे आया नहीं विच बोध, धनंतर इशारे नाल समझाईआ। खोज थक्के चौदां लोक, पैग़म्बर तबक्यां विच सबक पढ़ाईआ। मैं बहि के आपणी विच मौज़, खेल धुर दा रिहा खिलाईआ। एह मेरी धर्म धार दी फ़ौज, शंकर तेरी वी करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, भेव अभेदा इक खुल्हाईआ। शंकर मस्तक धर के हथ्थ, अक्खीं मीट ध्यान लगाईआ। वाह पुरख समरथ, तेरी बेपरवाहीआ। मैनूं इक्कीवां हिस्सा दिता दस्स, जिस नाल लख चुरासी लेखा देवां मुकाईआ। पुरख अकाल होर खोल्ही अक्ख, पड़दा दिता चुकाईआ। उठ वेख प्रतख, साहिब इक गुसाँईआ। जिस दा गाउणा जस, सिफ्तां विच सालाहीआ। सब तों बैठा वक्ख, गृह मन्दिर इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि हरि करता बेपरवाहीआ। शंकर निउँ करी निमस्कारी, नमों सीस निवाईआ। पुरख अकाल शब्द अगम्मी चपेड़ मारी, तन वजूद दिता हिलाईआ। निगह मार नौ सौ नड़िनवें करोड़ धर्म धार दी बीमारी, हिकमत विच समझ

विच किसे ना आईआ। मैं खेल करां ब्रह्म बणा संसारी, भण्डारी विष्नूं नाल बणाईआ। शंकर तूं जांदा सँघारी, सँघारन वाल्या अन्त तूं वी रहिण ना पाईआ। मेरा खेल वक्खरा वक्खरी कारी, करनी दा करता हो के आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग अन्त सतिजुग सच बण दरबारी, दरबार आपणा देणा लगाईआ। इक्को हुक्म इक्को शब्द इक्को नाम इक्को कलमा दस्स जैकारी, जै जैकार देणी कराईआ। जिस नूं अवतार पैग़म्बर गुरु मन्नण सच सिक्दारी, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, मेहरवान मेहर नज़र इक उठाईआ। शंकर किहा मेरा ना सवाल ना जवाब, कहिण किछ ना पाईआ। तूं आदि अन्त दा मालक हो के करें राज, रईयत वेखें आपणी शहिनशाहीआ। जगदीश तेरे सीस सुहञ्जणा ताज, तख्त निवासी तेरी वड वड्याईआ। चार जुग सारे होए अपाहज, लंगड़े लूल्हे सोभा पाईआ। जिधर तकां ओधर दिसे दाग़, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। कोटन कोटि अवतार पैग़म्बर गुरु जग के गए चराग़, शमां नूर रूप समाईआ। अन्त इक्को दिसे वाहिद, दूजा रूप ना कोए दरसाईआ। पता नहीं की खेल करे शायद, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा दे उठाईआ। पुरख अकाल किहा शंकर हुक्म संदेशा देवां नाल प्यार, प्रीतम हो के दयां जणाईआ। सतारां हाढ़ नूं हो के आवीं त्यार, त्रिशूल पुट्ठी पिट्ठ उत्ते लटकाईआ। अक्खां नूं मली होवे छार, मस्तक लाल रंग रंगाईआ। कुशा कंध्यॉं उत्ते चुक्की होवे रखया होवे भार, भारद्वाज संग मिलाईआ। अन्तर खुल्ही होवे जाग, आलस निंद्रा ना कोए वड्याईआ। शब्द अगम्मा गाउणा राग, अनरागी दए सुणाईआ। जिस वेले वज्जे आवाज़, दस बीस वक्त समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। शंकर किहा मेरे साहिब सुल्तान, तेरी वड वड्याईआ। मेरे उत्ते होया मेहरवान, मेहर नज़र टिकाईआ। मेरा अग्गे गया ध्यान, पर्दा दिता चुकाईआ। मेरा साथी नौजवान, ब्रह्मा वेख वखाईआ। विष्नूं नाल करे परवान, तिन्ने आईए चाँईं चाँईंआ। दर भिखारी मंगीए दान, निउँ के सीस झुकाईआ। नाले तेरी करीए कल्याण, तेरा नाम सिफ्त सालाहीआ। फेर देवांगे सच ब्यान, जो आदि तों सानूं दिता समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। पुरख अकाल किहा शंकर पैरीं आउणा नन्गी, कदम कदम नाल बदलाईआ। मुन्दरा कन्न विच होवे टंगी, टंग सज्जी सत्त रंग विच वखाईआ। सेली गल विच होवे गंढी, वल नौ नौ पवाईआ। पिट्ठ पिच्छे होवे चण्डी, चण्डालका रूप दरसाईआ। मुख विच्चों बाहर होवे दो दन्दी, काले रंग विच दरसाईआ। सीस वाही होवे ना कंघी, ख़ाक छार विच जणाईआ। मस्तक रेखा होवे चन्दी,

चन्द रूप चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। शंकर हथ्थ फड़या होवे कासा, कसम तेरा नाम खुदाईआ। जल पाणी भरया होवे विचों ब्यासा, गुरमुख लै के आवे चाँईं चाँईंआ। सवा सेर दा होवे आटा, दुआबे वाल्यां वंड वंडाईआ। मालवे वाल्यां ल्याउणा बाटा, धात लोहे वाली चतुराईआ। माझे वाल्यां वस्त्र ल्याउणा पाटा, ढाई गज़ लम्बाई चुड़ाईआ। जम्मू वाल्यां ल्याउणा छाता, काला काल रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक हुक्म सुणाईआ। शंकर त्रिशूल नाल बद्धी होवे टाकी, हिस्से इक सत्त वखाईआ। गर्दन ते बद्धी होवे बाटी, बाटा गोबिन्द वाला दृढ़ाईआ। ढाई गज़ दी होवे लाठी, सोहे लोहे नाल चतुराईआ। बिन अंधेरयों होवे बाती, बत्ती नूर नूर चमकाईआ। ओम होवे उपर छाती, छत्रधारी वेख वखाईआ। ढाई इंच दी होवे ग्लासी, दन्दां विच अड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। पुरख अकाल किहा शंकर तकणा इक नज़ारा, ब्रह्मा विष्न नाल मिलाईआ। इक्की इक्की गुरसिक्खां माझा मालवा दुआबा जम्मू तिन्न रंग दीआं बन्ह्णीआं होण दस्तारां, दस्त तिन्न रंग रंगाईआ। तिन्ने रंग रंगीआं होण तलवारां, तैलेवीव दा लेखा यौरोशलम समझाईआ। एह हुक्म सच्ची सरकारा, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। शंकर पंज प्यारयां दा वेखीं रूप, अक्ख पुट्ठी आप बदलाईआ। जेहड़े प्रभ दे बण के आउणे दूत, दुतीआ भाउ गंवाईआ। ओन्ह्णां दे गल विच अट्टी होवे इक इक सूत, मुहम्मद लेखा मंगे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल खिलाईआ। सुण हुक्म पुरख अकाले, अकल कलधारी आप जणाईआ। पंजां प्यारयां सज्जे हथ्थ दे अंगूठे करने काले, काली चरणां विच सीस निवाईआ। हथ्थां विच दीपक होण बाले, बाला मर्दाना सेव कमाईआ। आउणा सच सच्ची धर्मसाले, धर्म दवार इक वड्याईआ। जिथ्थे वसण शाह कंगाले, शहिनशाह आपणा पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक हुक्म सुणाईआ। शंकर पंज लिखारी तकणे, तकणे नाल ध्यान, हरि करता आप जणाईआ। ओन्ह्णां दी वक्खरी होवे शान, शहिनशाह आपणा रंग वखाईआ। मस्तक उत्ते बद्धी होवे किरपान, नौ इंच विच लम्बाईआ। कंधे रखया होवे धनुष कमान, कमान सत्त रंग चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। पुरख अकाल किहा शंकर वेखीं किस बिध बदल देवां बुध, दीन दुनी बदलाईआ। हाढ़ सतारां रात बारां भगतां दा भगतां नाल हुक्म नाल करावां युद्ध, रसना जेहवा नाल लड़ाईआ।

माझा मालवा दुआबा जम्मू इक दूजे नूं पैण कुद्द कुद्द, डरावे देण थांउँ थाँईंआ। पड़दा ओहला रहे ना लुक, सन्मुख सब नूं देणा जणाईआ। फेर सृष्टी दी सृष्टी दा बदल देवां रुख़, दीन दुनी करां हल्काईआ। अगला लेखा उह दस्सां जिस नूं जुग चौकड़ी सारे रहे पुछ, पुच्छयां अंक ना इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी सुहाए आप रुत, सुत दुलारे आपणे नाल मिलाईआ।

११ जेठ शहिनशाही सम्मत ६ डाकटर पाल सिँघ दे गृह
पिण्ड दाऊद पुर ज़िला कपूरथला

शंकर कहे मैं आवां केहड़े राह, रहिबर हो के देणा समझाईआ। चार जुग दे अवतार पैग़म्बर गुरु ल्यावां गवाह, शहादत तेरे नाम वाली भुगताईआ। तन ते राख मलां कि स्वाह, साहिब सुल्तान देणा समझाईआ। केहड़ा जपदा आवां नाँ, ओअँ हरीअँ तत सति राम कृष्न अल्लाह सतिनाम वाहिगुरु की चतुराईआ। कवण सुहञ्जणा वेखां थाँ, थान थनंतर ज़िमीं असमान ब्रह्मण्ड खण्ड फोल फुलाईआ। किस बिध उच्ची कूकां कर के बांह, दो जहानां करां शनवाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला तूं ही पिता तूं ही माँ, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। विष्न ब्रह्मा नाल ल्यावां चाअ, खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। नगर खेड़ा वेखां ग्रां, धाम सम्बल फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। पुरख अकाल किहा सुण शब्द अगम्मी भोले नाथ, जटा जूट दयां जणाईआ। निरगुण धार तेरा होवे साथ, गुर अवतार पैग़म्बर ब्रह्मा विष्न नाल मिलाईआ। सीस झुकाउणा पुरख समराथ, धूढ़ी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सब ने गाउंदे आउणा गाथ, जो आदि अन्त दी इक पढ़ाईआ। पिच्छा परत ना वेखणा उपर कैलाश, केशव आपणा हुक्म वरताईआ। फेर लख चुरासी जीव जंत साध सन्त दी वेखणी लाश, तन माटी फोल फुलाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल दी तकणी रास, मण्डल पड़दा इक उठाईआ। दीन दुनी दा झगड़ा वेखणा ज़ात पात, की मज़्हब मज़्हब नाल लड़ाईआ। फेर कलयुग तकणी अंधेरी रात, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। शंकर कहे मेरे स्वामी, पुरख अकाल परवरदिगार तेरी सरनाईआ। आदि अन्त दे अन्तरजामी, जुगा जुगन्तर तेरा खेल वेख वखाईआ। चार जुग

दे शास्त्र तेरी सिफ्तां वाली बाणी, वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान अक्खरां नाल अक्खर मेला मेलया सहिज सुभाईआ। तेरा फ़रमाना कलमा कायनात शाह सुल्तानी, शहिनशाह हुक्म हुक्म विच्चों प्रगटाईआ। चार जुग दे अवतार पैग़म्बर गुर मेरे नाल करन ध्यानी, निगह निगह विच्चों उठाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सदी चौधवीं वेखीं आपणी धर्म निशानी, सृष्टी दृष्टी अन्दर फोल फुलाईआ। फिर हैरत विच सब दे अन्दर आवे हैरानी, परेशानी विच सारे देण दुहाईआ। जिन्हां सिक्खां मुरीदां दे पिच्छे दे के गए कुरबानी, तन वजूद माटी ख़ाक मिलाईआ। नाम निधाना दे के गए बण के दानी, शब्द अगम्मी दात वरताईआ। आबेहयात अमृत रस बख्श के गए पानी, पतिपरमेश्वर तेरा जाम प्याईआ। ओह दीन दुनी चारों कुण्ट दहि दिशा करे बेईमानी, बेवा रूप होई लोकाईआ। कलयुग अन्त नव नौ चार दिसे फ़ानी, अन्त रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, भेव अभेदा इक अख्वाईआ। पुरख अकाल कहे सुण शंकर हुक्म मेरा अगम्म, अगम्मढ़ी कार कमाईआ। दीन दुनी दा झगड़ा वेखणा काया माटी चम्म, चम्म दृष्टी विच दुहाईआ। चार कुण्ट हरख सोग चिन्ता ग़म, ग़मखार मिले किसे ना माहीआ। माया ममता हउमें हंगता वधी तम, चित तृष्ना तृखा ना कोए बुझाईआ। सदी चौधवीं बेड़ा सके कोए ना बन्न्ह, पैग़म्बर बैठे मुख भवाईआ। कलमा कायनात आवे ना कम्म, हू हू नाअरा सारे रहे लाईआ। धरनी धरत धवल धौल बिन नेत्र रोवे छम्म छम्म, शमां दीपक जोत ना कोए रुशनाईआ। निरगुण नूर प्रकाश चढ़े जोत कोए ना चन्न, सूर्या चन्द दए दुहाईआ। भगत सुहेला जनणी दए कोए ना जण, लोकमात मिले ना कोए जणेंदी माईआ। अन्तर निरन्तर कूड़ कल्पना वधी सब दी मन, बुध बिबेक ना कोए वखाईआ। त्रैगुण माया अग्नी लग्गी तन, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। भाण्डा भरम भेव जगत विद्या सके कोए ना भन्न, भ्रांन्त दूर ना कोए कराईआ। करे खेल श्री भगवंन, हरि करता आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। शंकर सारयां मिल के आउणा बण के संग, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आप जणाईआ। फिर अवतारां कहिणा जिस कारन गोबिन्द छड्डुया पुरी अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों वखाईआ। फिर खेल जणाउणा क्यों मुहम्मद बख्श्या निशान तारा चन्द, चन्द सतार मिली वड्याईआ। फेर पड़दा लौहणा किस बिध सदी चौधवीं जावे लँघ, अन्त लोकमात रहिण ना पाईआ। फेर वेखणा किस बिध पैग़म्बर सूफ़ी नच्चदे वांग मलंग, मुतहिरा कंध्याँ उत्ते टिकाईआ। फेर वेखणा नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप दीन दुनी दा जंग, मज़्हब मज़्हब विच टकराईआ। एह खेल सूरा सरबंग, सन्मुख सब दे दए वरताईआ। शंकर कहे मेरा खुशी होवे बन्द बन्द, रोम रोम वज्जे वधाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे लख चुरासी पवण स्वासी दम, दामनगीर हो के आपणा खेल खिलाईआ।

✪ ११ जेठ शहिनशाही सम्मत ६ जुगिन्दर सिँघ दे घर पिण्ड फ़तहगढ़ ज़िला कपूरथला ✪

पुरख अकाल कहे शंकर खेल वेखणा उपर धरत, धरनी धरत धवल खोज खुजाईआ। निगह मारनी उपर अर्श, आलीशान रिहा समझाईआ। ब्रह्मा विष्न तेरे नाल वंडण दर्द, दर्दी हो के वेख वखाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु गुरदेव वेखणी फ़रद, चार जुग दा लेखा फोल फुलाईआ। साहिब सुल्तान नौजवान मर्द मर्दान सब दी आसा मनसा पूरी करनी पूरब वेखणी ग़रज़, गृह मन्दिर खोज खुजाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग होण देवे कोए ना हरज, हरि जू आपणा पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, हरि करता नूर इलाहीआ। शंकर कहे प्रभू मेरे मेरा कवण होवे लिबास, बिन तत तत वड्याईआ। की खेल वेखां पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर खोज खुजाईआ। किस दवारे होवे रास, किस मण्डल सोभा पाईआ। कवण दवार होवे जोत प्रकाश, निरगुण नूर नूर चमकाईआ। विष्न ब्रह्मा पूरी करनी आस, भेव अभेद इक खुल्हाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु होवण साथ, सगला संग बणाईआ। दरगाह साची सच दवार निरगुण धार सर्ब करन अरदास, बेनन्ती बिनै इक जणाईआ। तूं करनी दा करता कुदरत दा मालक प्रगट होवें आप, आप आपणा भेव चुकाईआ। सारे तेरा गावण जाप, तूं मेरा मैं तेरा दूजा राग ना कोए अल्हाईआ। पुरख अकाल कहे मैं खेल वखावां भेव खुल्हावां कलयुग अंधेरी रात, रैण भिन्नड़ी इक समझाईआ। झगड़ा रहे ना शंकर ते कैलाश, कला कल आपणी इक वरताईआ। मेरा लेख लिख्या नहीं कलम दवात, शास्त्र सके ना कोए जणाईआ। उस दा भेव खोल्हां बहु भांत, बातन भरम रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता वड वड्याईआ। पुरख अकाल कहे शंकर गल होवे बाशक तशका, तशक मिले वड्याईआ। बिना अक्खां तों वेखणा रस्ता, रहिबर इक्को दए वखाईआ। मुख सिफ्त सालाही आवे हस्सदा, हस्ती तक बेपरवाहीआ। ढोला गाउण इक्को जस दा, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। नूर तकणा अगम्मी अक्ख दा, दोए लोचन डेरा ढाहीआ। सच दवारा वेखण वसदा, जिथ्थे निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। राग सुणना शब्द अगम्मी नद दा, अनहद नादी आप वजाईआ। जिथ्थे इक्को दीपक होवे जगदा, जागरत जोत डगमगाईआ। उथे लेखा नहीं धूंणीआँ वाली अग्ग दा, ख़ाक तन ना कोए रमाईआ। मेरा राह तकणा सूरे सरबग

दा, शहिनशाह पड़दा दए उठाईआ। तैनूं खेल वखाउणा लख चुरासी कलयुग जग दा, जगजीवण दाता पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। शंकर प्रेम प्रीती विच झुकाया सीस, नमों नमों सरनाईआ। मेरे साहिब साहिब जगदीश, जगदीश्र तेरी बेपरवाहीआ। तेरा खेल बीस इकीस, एकँकार तेरी वड्याईआ। मेरा झगड़ा मुकाया राग छत्तीस, नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दा डेरा ढाहीआ। मेरा अन्तिम रिहा बीत, थिर रहिण कोए ना पाईआ। तूं शाह सुल्ताना इक अतीत, त्रैगुण तों बाहर सोभा पाईआ। उच्ची कूक मारी चीक, नेत्र नैण नीर वहाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त तुध बिन करे कोए ना हक तस्दीक, शहादत हक ना कोए भुगताईआ। अवतार पैग़म्बर गुर सारे करन तेरी उडीक, सचखण्ड बैठे दरगाह साची सारे राह तकाईआ। मेहरवान महिबूब लख चुरासी परख नीत, घट घट अन्दर फोल फुलाईआ। झगड़ा प्या मन्दिर मसीत, काअबे रो रो मारन धाईआ। अठ्ठ सठ पाणी करे कोए ना ठांडा सीत, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। सदी चौधवीं रही बीत, मुहम्मद वेखे नैण उठाईआ। हज़रत ईसा आपणी वेखे लीक, सदी बीसवीं नाल गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। शंकर किहा मेरे शाह पातशाह शहिनशाह, शाह सुल्तान तेरी वड्याईआ। नमस्ते विच सीस झुका, जुग जुग तेरी सेव कमाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पन्ध मुका, मुकम्मल आपणी कार कमाईआ। वेला वक्त पहुँचया आ, आमद विच वज्जे वधाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु नेत्र नैण रहे उठा, बिना अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। की खेल करे हरि करता आप खुदा, खुद मालक नूर इलाहीआ। जिस दे उतों सारे होए फ़िदा, फ़ैसला हक दए सुणाईआ। सब दी कबूल करे दुआ, दो जहानां वेख वखाईआ। कलयुग विच सतिजुग देवे ला, मार्ग आपणा इक दरसाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स नाँ, निरगुण धार इक समझाईआ। सरगुण पड़दा देवे उठा, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर सारे मन्नण इक रज़ा, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। पुरख अकाल कहे शंकर अन्त रखणा चाओ घनेरा, घड़ी पल नाल वड्याईआ। कलयुग चार कुण्ट तकणा अंधेरा, सच नूर ना कोए रुशनाईआ। मानव बन्न्हे कोए ना बेड़ा, नईया शौह दरया पार ना कोए कराईआ। वरनां बरनां प्या झेड़ा, शरअ ज़ंजीर ना कोए कटाईआ। भाग लग्गे किसे ना खेड़ा, काया महल्ल ना कोए रुशनाईआ। सच धर्म दा दिसे ना कोए वेहड़ा, कूड़ी क्रिया होई हल्काईआ। पुरख अकाल परवरदिगार सांझे यार निरगुण धार तेरा अगम्मी फेरा, फिरत वेखी जगत लोकाईआ। साबत रिहा कोए ना चेरा, मुरीद गए मुख भवाईआ। इक्को इक

सुहा दे वेला, वक्त आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच संदेशा इक सुणाईआ। शंकर आउणा पैर दब्बे, आपणी पिठ्ठ बदलाईआ। हुक्म संदेशे सुणने हब्बे, हमसाजण दए जणाईआ। एह वक्त मिलदा कदे कदे, कदीम दा मालक आप सुणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया रहिण नहीं देणे दग़े, जगत फ़रेब ना कोए वखाईआ। तेरे दोवें हथ्थ होवण बध्धे, डण्डावत करके सीस निवाईआ। तन मूल पाउणे नहीं झग्गे, कपड़ा ढाई गज़ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा इक समझाईआ। शंकर आउणा लोकमात, मता विष्न ब्रह्मा पकाईआ। सतारां हाढ़ सुहञ्जणी रात, सम्मत शहिनशाही छे वड्याईआ। पिठ उत्ते बद्धी होवे कलम दवात, जिस दा रूप ना कोए दरसाईआ। निमस्कार करनी निउँ निउँ उस अगम्मे नाथ, जो त्रिलोकी नाथ दए वड्याईआ। नाम निधाना गाउणा बण के भाट, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। पिछली पिच्छे छडणी वाट, अगला हुक्म सुणना चाँईं चाँईंआ। खेल खेले पुरख अबिनाश, हरि करता धुरदरगाहीआ। सब दी पुछणहारा वात, वातावरन वेखे खलक खुदाईआ। जिस ने झगड़ा मेटणा ज़ात पात, दीन दुनी दा पड़दा लाहीआ। प्रगट होणा साख्यात, साहिब स्वामी भेव ना राईआ। तेरा लहिणा देणा पूरा करना बन्द खुलास, बन्दी तोड़ होए सहाईआ। अग्गे बदल देवे समाज, समग्री इक्को इक वरताईआ। दीन दुनी दा बदल देवे राज, रईयत वेखे चाँईं चाँईंआ। जिस दे चार जुग मुहताज, दूर दुराडे बैठे अक्ख उठाईआ। ओह साहिब सुल्तान मर्द मर्दान नौजवान शब्द अगम्मी मार अवाज़, सोई सुरती सब दी दए उठाईआ। अन्तर निरन्तर रहे कोए ना नाराज़, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। झगड़ा मेटे शरअ नमाज़, वुज़ू रंग ना कोए वखाईआ। शंकर दोए जोड़ के हाथ, वास्ता देणा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सच आपणा हुक्म वरतावांगा। निरगुण नूर जोत चमकावांगा। शब्द अगम्मी नाद वजावांगा। सो पुरख निरँजण खेल वखावांगा। हरि पुरख निरँजण पड़दा लाहवांगा। एकँकार वेस वटावांगा। आदि निरँजण जोत चमकावांगा। अबिनाशी करता हो के वेख वखावांगा। श्री भगवान डंक वजावांगा। पारब्रह्म प्रभ आपणी धार वखावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव सर्ब उठावांगा। इन्द इन्द्रासण करोड़ तेतीसा नाल हिलावांगा। गण गंधर्ब किन्नर यशप राग सुणावांगा। अवतार तेई भेव खुलावांगा। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद नाल मिलावांगा। नानक गोबिन्द जोत चमकावांगा। कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड फोल फुलावांगा। शब्द शब्द दी ला के चोट, चोटी चढ़ के वेख वखावांगा। इक्को पुरख अकाल दी दस्स के ओट, ओड़क इक्को विच मिलावांगा। कलयुग कूड़ी क्रिया रहे ना खोट, खोटे खरे वेख वखावांगा। जंगल जूहां विच वेखां लंगोट, रिषीआं मुनीआं फोल फुलावांगा। त्यागी

वैरागी सब दी वेखां सोच, समाजी पड़दे आप चुकावांगा। जेहड़े भगत सुहेले प्रभ नूं रहे लोच, तिन्हां निज नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हावांगा। जिस प्रभू दी माणदे मौज, मजलस तिन्हां विच रखावांगा। लख चुरासी विच्चों गुरमुख सन्त सुहेले चंगे थोड़े बहुत, बहु गिणत ना कोए चतुरावांगा। जेहड़े मिले प्रभ दी जोत, जोत जोत विच समावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे लोक परलोक, दो जहान श्री भगवान परवरदिगार सांझा यार एकँकार कल आपणी इक प्रगटावांगा।

✪ १७ जेठ शहिनशाही सम्मत ६ ज्ञानी गुरमुख सिँघ दे गृह पिण्ड भलाई पुर ज़िला अमृतसर ✪

विष्न ब्रह्मा शिव कहिण निरगुण धार जोत निरँकारी, निराकार निरवैर तेरी सरनाईआ। जुग चौकड़ी आदि पुरख अपरम्पर स्वामी वेखी तेरी खेल न्यारी, शाह पातशाह शहिनशाह तेरी बेपरवाहीआ। सरगुण सरगुण बणया रिहा पुजारी, पूजा तन वजूद इष्ट जणाईआ। खेल हुन्दा रिहा पैग़म्बर गुर अवतारी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणी खेल खिलाईआ। साहिब सुल्तान नौजवान मर्द मर्दान तेरी कोए ना पावे सारी, साहिब सुल्तान पर्दा पर्दे विच्चों ना कोए उठाईआ। अक्खर धार तेरे सिफ्तां वाले बणे रहे पुजारी, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान रागां नादां विच ढोले गाईआ। निरगुण जोत बिन वरन गोत, तेरी सरन चरण करे ना कोए निमस्कारी, पाहन पाथर सिल पूजस वेखी जगत लोकाईआ। पढ़ पढ़ रसना जेहवा सारे रहे उच्चारी, उस्तत तेरा नाम जणाईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी तेरी मंज़ल मिली ना इक वारी, एकँकार तेरी ओट ना कोए तकाईआ। कलयुग अन्त दो जहान सृष्ट दृष्ट होई दुख्यारी, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी सांतक सति ना कोए कराईआ। चार कुण्ट दहि दिशा मानव मानव होई ख्वारी, ख़ालस तेरा रूप ना कोए दरसाईआ। मन कल्पणा विच दीन दुनी हँकारी, ज़ात पात दीन मज़्हब करे लड़ाईआ। तेरे नाम दी झगड़यां वाली लग्गी अखाड़ी, अल्ला वाहिगुरु राम ओम हरी ओम तत सति करे लड़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण साडी आशा कलयुग अन्तिम वेख हारी, हरि हरिजू सीस निवाईआ। आत्म ब्रह्म पारब्रह्म बिन तेरे करे कोए ना दारी, अन्तर निरन्तर मेल ना कोए मिलाईआ। तेरे प्यार अन्दर आई इक विचारी, विचर के दईए सुणाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले निरगुण नूर जोत कर उज्यारी, पारब्रह्म प्रभ आपणा खेल खिलाईआ। जिस दी गुर अवतार पैग़म्बर भविक्ख्तां विच कर के गए इज़हारी, रागां नादां विच दृढ़ाईआ। जिस दी सारे मन्नण ताबयादारी, सीस जगदीश ना कोए उठाईआ। सब दा लहिणा देणा वेख पा सारी, महासार्थी आपणी कार

कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। पुरख अकाल कहे विष्न शिव सुण ब्रह्म, ब्रह्माद दयां जणाईआ। आदि जुगादि मेरा इक्को धर्म, सति सच दी बाण समझाईआ। लख चुरासी मेरी धार तों लए जरम, आत्म मेरा नूर इलाहीआ। जगत करनी बणा के कर्म, कांडां विच खेल खिलाईआ। दीन मज़्ज़ब बणाया भरम, ज़ातां विच कीती लड़ाईआ। झगड़ा पा के माटी चर्म, सृष्टी दृष्टी दिती बदलाईआ। जो आए मेरी सरन, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। नाता तोड़ के जन्म मरन, मर जीवत रूप समझाईआ। मालक बण के तरनी तरन, निरगुण जोत विच समाईआ। ओह मंज़ल साची चढ़न, दरगाह साची सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, सच संदेशा इक सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बिन सीस जगदीश झुके, सचखण्ड सीस निवाईआ। पुरख अकाले सब दे पैंडे मुके, अन्तिम वेख थांउँ थाँईंआ। तेरा भाणा कदे ना रुके, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। सृष्ट सबाई कलयुग अन्तिम दुक्खे, दर्दीआं दर्द ना कोए वंडाईआ। जीव जहान वेख भुक्खे, आत्म रस ना कोए चखाईआ। भाग लग्गा किसे ना कुख्खे, भगत जन्मे कोए ना माईआ। मानव ज़ाती उलट रुक्खे, गेड़ा गेड़ा ना कोए पवाईआ। भाग लग्गे ना काया पंज तत बुत्ते, बुतख़ाने पई दुहाईआ। सानूं इयों जापदा गुरु अवतार पैग़म्बर पुरख अकाल तेरी जोत विच सुते, धरनी धरत धवल धौल उत्ते लवे ना कोए अंगड़ाईआ। आपणयां मुरीदां सिक्खां शब्द गोदी कोए ना चुक्के, फड़ बाहों गले ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। पुरख अकाल कहे विष्न ब्रह्मा शिव तुहाडी सच सुणां अरदास, बेनन्ती आपणी झोली पाईआ। मेरा खेल अगम्म तमाश, जुग चौकड़ी समझ किसे ना आईआ। कलयुग अन्तिम पावां रास, निरगुण निरगुण गोपी काहन नचाईआ। वेला वक्त दस्सणा ख़ास, थित वार दयां दृढ़ाईआ। सतारां हाढ़ सब ने बणाउणा साथ, संग इक्को इक जणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाउणी गाथ, ढोला अगम्म अथाहीआ। सोहणी सुहञ्जणी सुहाउणी रात, रुतड़ी आपणी इक महकाईआ। शंकर पिठ्ठ ते बन्न्ह के लिआउणी कलम दवात, जो जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। तैनूं खेल वखावां साख्यात, भेव अभेद आप खुल्लाईआ। चार जुग सिर्फ़ मेरे नाम दी हुन्दी रही अरदास, मेरा दरस कोए ना पाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु गा के गए गाथ, सिफ्तां वाले ढोले जगत सुणाईआ। मैनूं मन्न के गए पुरख समराथ, सचखण्ड दा वासी धुरदरगाहीआ। दीन मज़्ज़ब विच्चों मैं किसे ना आया हाथ, सन्मुख हो ना मेल मिलाईआ। जुग जुग जद किरपा कीती जन भगतां दिती दात, ज़ात पात ना कोए वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मेरी चलदी आई शाख, शनाख़त आपणे हथ्थ रखाईआ। मेरा

खेल पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर आपणी कार कमाईआ। तुसां तिन्नां बिना हथ्थां तों जोड़े हाथ, नमों नमों सीस झुकाईआ। ब्रह्मा तेरी विद्या होवे पास, चारे वेद ना कोए चतुराईआ। विष्नूं तेरा धर्म दी धार भण्डारा होवे ख़ास, ख़ालस आपणी कार कमाईआ। तिन्नां ने मेरा नाम गाउणा बण के भाट, बिन रागां राग अल्ाईआ। मंज़ल मार के आउणा वाट, भगत दवार पहुंचणा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। शंकर कहे मेरे प्रभू प्रभ नाथ, अनाथां होएं सहाईआ। जे शब्द अगम्मी दिता आख, आख़र सीस झुकाईआ। तेरे चरण कँवल निरगुण धार जोड़ीए नात, नाता इक्को नाल जुड़ाईआ। साडी सब दी पुच्छी वात, वास्ता तेरे अग्गे पाईआ। तूं साहिब स्वामी कमलापात, पतिपरमेश्वर तेरी बेपरवाहीआ। असां भगत दवार आ के जन भगतां लई मंगणी दात, ख़ाली झोली आपणी डाहीआ। ग़रीब निमाणयां पुछ वात, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। धर्म दी धार चला साच, सच दी करनी कार कमाईआ। प्रकाश कर काया माटी काच, कंचन गढ़ दे वड्याईआ। तेरा खेल अलखणा अलाख, अलख अगोचर तेरी बेपरवाहीआ। असां तिन्नां सचखण्ड दवारयों तेरी चरण धूढ़ दा लै के आउणा प्रशाद, तेरी किरपा किरपा नाल रखाईआ। तूं मालक ख़ालक आदि दा आदि, अन्त तेरी वड वड्याईआ। असीं चाहुंदे तूं जन भगतां बणा याद, आपणा रंग रंगाईआ। तेरयां गुरमुखां खेड़ा रहे आबाद, लोकमात उजड़ ना जाईआ। अन्दर वड़ के खोल् जाग, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। चार जुग तैनूं लभ्भदे रहे सन्त साध, हुण भगतां प्रगट हो के आपणा दरस दिखाईआ। सतिजुग तेरा वेखणा चाहुंदे बगीचा बाग़, फुल्ल फुलवाड़ी अगम्म महकाईआ। जिधर जाईए ओधर तेरे नाम दा वज्जे नाद, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर बर्बाद, बेपरवाह हुक्म सुणाईआ। सतिजुग साचा कर आबाद, गुरमुख साचे विच टिकाईआ। हर हिरदे अन्दर हो विस्माद, बिस्मिल आपणी कार कमाईआ। झगड़ा मुका दे इश्क हकीकी ते मिजाज़, मिसल आपणी इक समझाईआ। जिस नूं समझे बुद्धी अक्ल ना कोए दिमाग़, अनभव आपणी कार कमाईआ। गृह गृह दीपक जोत जगा चिराग़, काया चरागाहां अन्दर होए रुशनाईआ। हरिजन हँस बणा काग, दुरमति मैल धुआईआ। किसे दा रहे ना सवाल जवाब, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। तेरे दवारयों सब नूं होवे लाभ, गुर अवतार पैग़म्बर बैठण सीस निवाईआ। जेहड़ा अमृत झिरना झिरदा दस्स के आए कँवल नाभ, सो बूँद स्वांती मेहर नजर नाल प्याईआ। जेहड़ा नूर दस्सदे आए सूर्या चांद, काया अन्तर करे रुशनाईआ। सो पड़दा लाह दे जन भगतां बन्धनां तों कर अज़ाद, सति सरूप आपणा दरस दखाईआ। राती सुत्तयां दिने जागदयां सतिगुर शब्द हो के मार आवाज़, तत्तां वाले गुरु दा झगड़ा दे मुकाईआ। पुरख अकाले नवीं साजणा साज, अवतार पैग़म्बर गुरु

जिस दी भविक्खतां विच दे के गए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सुणो शब्द त्रैगुण अतीत, त्रैभवण आप जणाईआ। आदि जुगादी धुर दी रीत, नित नवित खेल वखाईआ। जुग चौकड़ी खेल खेलया ठाकर दुआरा मन्दिर मसीत शिवदुआले मट्ठ गुरदवारयां वंड वंडाईआ। अन्त लेखा सब दा तुसां करना तस्दीक, शहादत वक्ख वक्ख भुगताईआ। सच दवारे कवण होया वसनीक, वसणहार कवण हो जाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर की रखण उम्मीद, आसा की जणाईआ। किस दी सिफ्त कीती तौहीद, भेव अभेद खुल्हाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण प्रभू असीं सारे तेरे अज़ीज़, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। बिना तेरे नाम कलमे तों किसे ना आई तमीज़, सति सच ना कोए बणाईआ। पर सानूं जुग चौकड़ी पिच्छों इहो आई रीझ, जो निउँ के दईए दृढ़ाईआ। औह वेख भविक्खतां तेरी सदी चौधवीं रही बीत, बीसवीं आपणा पन्ध मुकाईआ। दो जहान तेरे नाम दा इक्को गावे गीत, दूजा नाम ना सिफ्त सालाहीआ। इक्को कलमा होवे हदीस, इक्को तेरी हक पढ़ाईआ। तिन्नां रो के मारी चीक, कूक कूक दिता सुणाईआ। बौहड़ी तेरी सारे करन उडीक, चार जुग दे शास्त्र देण गवाहीआ। कलयुग अंधेरा बदल दे तारीक, तारीख आपणी दे समझाईआ। लख चुरासी बदल दे नीत, नीतीवान फेरा पाईआ। तेरे दर ते मंगदे भीख, भिक्खक हो के झोली ढाहीआ। चरण कँवल तेरे सीस, जगदीश इक टिकाईआ। लेखा वेख बीस इकीस, गोबिन्द धार धार दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। पुरख अकाल कहे विष्न ब्रह्मा शिव रखणा याद, नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों समझाईआ। सच दा मार्ग करां आबाद, धरनी धरत धवल धौल दयां वड्याईआ। गुरमुखां दी गुरमुख सिँघ नाल बणावां मुन्याद, मुन्यादी आपणा नाम कराईआ। तिन्न अस्सू नवीं साजणा साज, सच सच दा खेल वखाईआ। नौ गुरमुख लगा के राज, राजन राज हुक्म वरताईआ। पन्द्रां पन्द्रां आपणी धार लाध, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। निरगुण धार हो विस्माद, वेखां चारों कुण्ट थांउँ थाँईंआ। फेर हुक्म सुणावां जिस ने बदल देणा समाज, समां समें विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सद आपणा हुक्म सुणाईआ। गुरमुख दुआरा पन्द्रां पन्द्रां वंद, इक पंज समझाईआ। हरिसंगत तूं मेरा मैं तेरा गा के छन्द, खुशी खुशी लैणी मनाईआ। आत्म धार प्रेम प्यार सोहे पलँघ, सेज सुहञ्जणी इक चतुराईआ। अन्दर निशान बणाउणा तारा चन्द, लहिंदी दिशा वेख वखाईआ। अगला खेल सूरा सरबंग, समां समें नाल दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जन भगतां भगत दुआर सुहाउणा, देवे

माण वड्याईआ। रविदास चमारा गुरमुख रंग रंगाउणा, सिँघ सिंघ वज्जे वधाईआ। दूजा हुक्म हुक्म फेर समझाउणा, समझ समझ विच्चों बदलाईआ। सच दा मार्ग सतिजुग इक रखाउणा, सति सति नाल कुड़माईआ। ब्रह्म ब्रह्म दा पड़दा लाहुणा, ब्रह्म मति इक उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणी कार कमाईआ। गुरमुख सिँघ नूं दे के दाद, शब्द शब्द नाल वड्याईआ। फेर बणाउणी भगत दवारे सच समाध, जोगिन्दर तृप्त जिस विच जाण समाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल निरगुण धार रखणी लाज, सरगुण आपणी कार कमाईआ। जिथ्थे लेखा मुकणा कलयुग लूले़ लंगड़े अपहाज, बलहीण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दी करनी कार कमाईआ। शंकर कहे मैं कलम दवात ल्याउणी, थित सतारां हाढ़ समझाईआ। की साहिब खेल खिलाउणी, निरगुण निरवैर दे दृढ़ाईआ। पुरख अकाल किहा मैं नवीं लिख्त लिखाउणी, जिस नूं गुर अवतार पैग़म्बर समझ सक्या कोए ना राईआ। नवीं नवीं धार प्रगटाउणी, विष्न ब्रह्मा शिव सब ने निउँ निउँ लग्गणा पाईआ। इक्की धामां वंड वंडाउणी, जिन्नां सतिजुग सच सच करनी रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। शंकर तेरी कलम दवात भरी होवे नाल स्याही, स्याह रूप ना कोए दरसाईआ। कलम बणाउणी जेहड़ा गोबिन्द बूटा पुट्टया काही, कायनात नात विच्चों प्रगटाईआ। लहिणा देणा पूरा करना जो माछूवाड़े सिफ्त सालाही, महिमा कथ कथ सुणाईआ। जो संदेशा दिता पाँधी राही, रहिबर हो के आप दृढ़ाईआ। पुरख अकाला बण के धुर दा माही, महिबूब हो के मुहब्बत विच आपणी कार कमाईआ। जन भगतां लख चुरासी जम दी फाँसी कटे फाही, राय धर्म ना दए सज़ाईआ। लेखा लिखणा इक्को वार दूजी लोड़ रहे ना राई, रहमत आपणी आप कमाईआ। जन भगत सुहेले पार उतारे फड़ के बांहीं, बल आपणा इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर संदेशा इक समझाईआ। शंकर किहा मेरी कलम दवात की होवे वडी निक्की, साहिब दे समझाईआ। पुरख अकाल किहा सरगुण धार निरगुण दूआ एका बण के होवे इक्की, इक्को वार जणाईआ। जिहदी धार नोक होवे तिक्खी, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। पुरख अकाल सतिजुग सच धर्म दी तेरे नाल लिख के बणाउणी सिक्खी, सिख सतिगुर रूप समाईआ। नाल ल्याउणी गोबिन्द वाली ओह चिट्ठी, जिस दा अक्खर नज़र कोए ना आईआ। जिस विच लख चुरासी इक्को रूप दस्सया हाहे उत्ते टिप्पी, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस नूं वेख के कलयुग दी धार आसा पिट्टी, रो रो रो कुरलाईआ। अग्गे नूं खहिड़ा छुट्टणा दीन दुनी दा पथ्थर इट्टीं, काग़ज़ां सीस ना कोए निवाईआ। सतिजुग दी धार सतारां हाढ़ दी होणी

मिती, मित्र प्यारा दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक दया कमाईआ। शंकर कहे दवात ऊणी होवे कि भरी, मेरा भरम देणा चुकाईआ। पुरख अकाल किहा इस गल्ल तों मूल ना डरीं, डर तेरा दयां चुकाईआ। तूं चरण कँवल निगाह करीं, नेत्र नैण नीर वहाईआ। अमृत धार वहे सरी, सरोवरां लेखा दे मुकाईआ। एह खेल नरायण नर हरी, हरि करता आप कराईआ। जिस दी धार कदे ना मरी, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। उस दी सरनी सच दवार परीं, धूढ़ी चरण ख़ाक रमाईआ। दीन दयाला इक्को वरीं, वर दाता अगम्म अथाहीआ। तेरी खेल होवे खरी, ख़ैरख़ाही विच समझाईआ। शंकरा तैनूं करके बरी, तेरा लेखा दए मुकाईआ। अग्गे सतिजुग धार नवीं उठावे खड़ी, खड़ग खण्डे दी लोड़ रहे ना राईआ। मेरी इक्को तुक लैणी पढ़ी, तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ। फेर अन्त अख़ीरी मंज़ल चढ़ीं, चढ़ के मिलणा नूर इलाहीआ। तेरी पिछली सेवा बड़ी, अग्गे तों लेखा दे बदलाईआ। ख़ुशीआं विच निमस्कार करीं, करते अग्गे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीन दुनी दा लेखा कलयुग अन्तिम रहिण ना देवे शरी, दीन मज़्हब ज़ात पात ऊच नीच दा झगड़ा दए चुकाईआ।

१८ जेठ शहिनशाही सम्मत ६ ऊधम सिँघ दे गृह पिण्ड जलालाबाद

विष्नूं कहे विश्व धार दा होवे मेरा बाणा, बाणी खाणी तों बाहर दयां दृढ़ाईआ। दर्शन करां पुरख अकाल धुर दे राणा, दो जहानां रईयत वेखां थाँईं थाँईंआ। नाम निधान अगम्म बिन रसना गावां गाणा, निरगुण निरगुण सिफ्त सालाहीआ। सच संदेशा देवां धर्म धार महाना, महिमा अकथ कथ सुणाईआ। जुग चौकड़ी तों वक्खरा पुरख अकाल पहिरया बाणा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जिस भगतां दा लेखे लाउणा इक इक दाणा, दाता दानी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। विष्नूं कहे मेरा होवे धर्म दी धार लिबास, जग नेत्र नज़र ना आईआ। पुरख अकाल दए शाबाश, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मैं सच संदेशा देवां आख, बिन अक्खरां अक्खर दृढ़ाईआ। वेखो खेल प्रभू तमाश, शिव ब्रह्मा ध्यान लगाईआ। निरगुण नूर नूर प्रकाश, जोती जाता डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। विष्नूं कहे मेरा खेल होणा अलखणी, अलख अगोचर दए वड्याईआ। मेरी धार चलणी दक्खण पच्छमी, पश्चाताप विच दुहाईआ। कलयुग

कूड़ी क्रिया करनी सक्खणी, सखावत प्रभ दा नाम दरसाईआ। दीन दुनी धार मच्चणी, अग्नी अग्ग अग्ग लगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु पति रखणी, वेखणहार थांउँ थाँईंआ। लेखा जाण यथार्थ यथणी, यदी आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। विष्नूं कहे मेरा होवे सति सरूप, सति सति विच समाईआ। महिमा प्रभ दस्सां अनूप, भेव अभेद खुल्हाईआ। फिर के चारे कूट, दहि दिशा वेख वखाईआ। प्रभ चरण चरण दवार बण अवधूत, दूती हो के कार कमाईआ। सति सच दा समझ सति सपूत, पिता पूत खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। विष्नूं कहे लख चुरासी धार मेरी चोली, चेला प्रभ दा रंग रंगाईआ। अगम्म अगम्मढ़ी बोल बोली, अनबोलत राग सुणाईआ। निरगुण धार रुतड़ी होवे मौली, सरगुण सरगुण वज्जे वधाईआ। खेल वेखणा उपर धौली, धरनी धरत धवल चतुराईआ। नव सत्त पावे रौली, नव नौ चार दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा हुक्म वरताईआ। विष्नूं कहे विश्व धार होवे प्रकाश, विशेष विष्न दए जणाईआ। पार कर कर आकाश, धवल धौल धर्म धार बणाईआ। जुग जुग दी पूरी कर आस, आस आसा विच समाईआ। सेवक सेवादार बण दास, दासी दास रूप समझाईआ। इक इक दी प्रगट कर ज़ात, ज़ात अज़ाती डेरा ढाहीआ। मंज़ल मंज़ल दस्स घाट, घाटी पिछली रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। विष्नूं कहे शंकर सतारां हाढ़ आउणा, हस्स हस्स दयां जणाईआ। पूरब लेख सर्ब चुकाउणा, चुकन्ना हो के ध्यान लगाईआ। दीन दयाल हुक्म सुणाउणा, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। शाहो भूप खेल खिलाउणा, शहिनशाह आपणी कार कमाईआ। पैग़म्बरां संग रखाउणा, मूसा ईसा मुहम्मद नाल वड्याईआ। सदी चौधवीं वास्ता पाउणा, निउँ निउँ सीस निवाईआ। पुरख अकाल जे मेरा वक्त मुकाउणा, अन्तिम अन्त देणा कराईआ। धर्म धार दी गोली लच्छमी रूप दरसाउणा, जगत वस्त्रां नाल सुहाईआ। नक्क काला निशान लगाउणा, कलयुग दी रीती देणी मिटाईआ। हथ्थ संख इक फड़ाउणा, वड्डी छोटी ना कोए लम्बाईआ। मस्तक लाल रंग रंगाउणा, दूजा रंग ना कोए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दी धार इक दरसाईआ। विष्नूं कहे उठ ब्रह्मा खोल्ह मुखड़े चार, काल अन्त लए अंगड़ाईआ। वेख पैग़म्बर गुर अवतार, नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। शास्त्र सिमरत वेद कर विचार, जो चारे आया अल्हाईआ। सच दिसे ना कोए दीवार, चारों कुण्ट अंधेरा छाईआ। निगाह मार विच संसार, पर्दा पर्दे विच्चों उठाईआ। जिधर तके धूंआँधार, निरगुण नूर ना कोए रुशनाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। ब्रह्मा कहे विष्नूं मैं ब्रह्मवेता, ब्रह्म ब्रह्म मेरा रूप दरसाईआ। मेरा इक दा इक नेता, बिन नेत्र नूर रुशनाईआ। जिस दे नाल जुग चौकड़ी हेता, जोती जोत मिल मिल वज्जे वधाईआ। ओह वसे सचखण्ड साचे देसा, दरगाह साची सोभा पाईआ। झट शंकर उठ के बोलया ब्रह्मा तेरा मेरा पूरा हो गया ठेका, लेखा अन्त रिहा ना राईआ। अग्गे पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा शब्दी धार बणा के बेटा, धुर संदेसा इक सुणाईआ। भगत सुहेला जो धुर सिंघासण लेटा, सुत्तयां लए उठाईआ। कुछ याद कर लै नव नौ चार दा चेता, चेतन हो के वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी बदली करना जिस दा पेशा, पेशतर सब नूं रिहा दृढ़ाईआ। जो आदि अन्त रहे हमेशा, जीवण मरन विच ना आईआ। उस ने साडा सब दा पूरा करना लेखा, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। उठ वेख ओह गोबिन्द धार धारी केसा, केसव आपणा खेल खिलाईआ। जिस नूं कहिंदे दस दशमेशा, ओह दस्म दी धार नूर दरसाईआ। कलयुग अन्तिम कर के वेसा, वेसवा वेखे जगत लोकाईआ। खेले खेल दो जहान देस बदेसा, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त दा मालक एका, एकँकार इक अख्वाईआ।

२३ जेठ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल

विष्नूं कहे मेरे निरँकारा, नर निरँकार तेरी सरनाईआ। सचखण्ड निवासी एकँकारा, अकल कलधारी तेरी बेपरवाहीआ। जोती धार करां निमस्कारा, बिन सीस सीस झुकाईआ। कलि कल्की तेरा अवतारा, जुग चौथे वज्जे वधाईआ। तेरा सोहे इक्को इक बंक दवारा, दवार बंक वज्जे वधाईआ। तेरी चरण धूढ़ मेरा भण्डारा, पतिपरमेश्वर तेरी इक सरनाईआ। कलयुग अन्त बण वरतारा, श्री भगवन्त दयां वरताईआ। तेरे भगतां कर प्यारा, प्रीतम प्रेमी वेख वखाईआ। जेहड़े दिवस रैण करदे कारा, करनी करते कार कमाईआ। निउँ निउँ नमों नमों करां निमस्कारा, नेत्र वेखां चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। विष्नूं कहे प्रभू सति प्रेम दी चाढ़ दे रंगत, रंगण इक रंगाईआ। दर भिखारी बैठा मंगत, दरवेश सीस निवाईआ। निगाह मारी जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। मानव ज़ाती मिल्या कोए ना पंडत, बुद्धी तों परे करे ना कोए पढ़ाईआ। नव नव चार गढ़ तोड़ हउमे

हंगत, हँ ब्रह्म ना कोए दरसाईआ। दर तेरे मेरी मिन्नत, धूढ़ी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। तेरे भगतां जन्म जन्म दी रहे कोए ना चिन्त, कर्म कर्म दा लेखा देणा मुकाईआ। सति सच दी देणी हिम्मत, हौसला इक्को इक वधाईआ। मन करे कोए ना इल्लत, सुरती शब्द विच समाईआ। सदी चौधवीं ख्वारी होवे कोए ना ज़िल्लत, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिस दवारयों भगत भगवान खावे निमक, धुर दी गंढ पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल कहे सुण विष्नूं विश्व धार, विष्न दयां जणाईआ। मेरा नूर ज़हूर अपार, अपरम्पर स्वामी आप दृढ़ाईआ। जोती धार चौवीआं अवतार, शब्दी धार डंक शनवाईआ। जिस दी महिमा कागत कलम ना लिखणहार, सिफ्तां विच ना सिफ्त सालाहीआ। सो खेल करे अगम्म अपार, अलख अगोचर आपणी कार कमाईआ। जन भगत सुहेले लए उठाल, निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। सम्बल बहि के पावे सार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। उठ वेख कर विचार, पर्दा पर्दे विच्चों हटाईआ। भगत सुहेले सेवादार, जो सच दवारे सेव कमाईआ। दिवस रैण करदे कार, किरती किरत कमाईआ। ख़ादम हो के ख़िदमतगार, ख़ालस आपणा रूप दरसाईआ। तिन्हां लेखा लिखां आपणी धार, दूसर अवर ना कोए जणाईआ। नाम प्याला देवां प्याल, निझर झिरना इक झिराईआ। गुरमुख बणा के धुर दे लाल, लालन आपणे गृह वसाईआ। अन्त पोह ना सके काल, महाकाल ना कोए चतुराईआ। चित्रगुप्त लेख ना सके वखाल, राय धर्म ना दए सज़ाईआ। किरपा करां हो के दीन दयाल, नाथ अनाथां वेख वखाईआ। कलयुग अन्त अवल्लड़ी चाल, निराली इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। पुरख अकाल कहे विष्नूं सुण लै हुक्म यक्का, यक दयां दृढ़ाईआ। मेरा भगतां नाल नाता पक्का, जो जगत पकवान सेव कमाईआ। अन्त कन्त ना देवे धक्का, दरगाह सच मिले वड्याईआ। नाम भण्डारा दे के रता, रत्न अमोलक हीरे लए उपजाईआ। चरण धूढ़ी दा झोली पा के फक्का, फक कलयुग कूड़ी क्रिया दए वखाईआ। जन्म कर्म दा लहिणा देणा करके रफ़ा, रफ़ाकत आपणे नाल रलाईआ। सच दवारे सति धार दी शफ़ा, साहिब सुल्तान वखाईआ। प्रेम प्यार दा दे के दो जहानां नालों नफ़ा, नुकसान जीवण रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। विष्नूं कहे मैं भगत सुहेले वेखां अक्खीं, बिन नेत्र लोचन नैण नैण नैण उठाईआ। जिन्हां दी साहिब सुल्तान पहलों पति रखी, रक्षक होवे थांओं थाँईंआ। अन्तर दे प्रेम दी रती, रत कूड़ी दिती सुकाईआ। सति धर्म बणा के सखी, काहन बंसरी नाम जणाईआ। वस्त अमोलक दे अणचक्खी, बिन रसना रस समझाईआ। निरगुण

जोत जगा के बत्ती, अंध अंधेर करे रुशनाईआ। आत्म परमात्म मेल मिला के कमलापती, पति रखे थांओं थाँईंआ। जिन्हां सेव कमाई प्रेम प्रीती विच हथ्थीं, ओन्हां हथेली उत्ते टिकाईआ। मंज़ल जगत जहान दी टप्पी, टापूआं विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। मंज़ल मिले हकीकत हकी, हरि करता आप दवाईआ। जन भगत सुहेला रहे कोए ना शकी, शहिनशाह आपणा रंग रंगाईआ। कलयुग अन्तिम सृष्टी जाए मथी, गुरमुख गुर गुर ल्ए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत शब्द दी धार खेल सच्ची, सति सच विच समझाईआ।

२४ जेठ शहिनशाही सम्मत ६ किशन सिँघ दे गृह पिण्ड अल्लड़पिण्डी ज़िला गुरदास पुर

चौवी जेठ दिवस सुभागा, भगवन भाग समझाईआ। खेले खेल प्रभ ग़रीब निवाज़ा, मेहरवान दया कमाईआ। किरपा निधान साजण साजा, साहिब सुल्तान बेपरवाहीआ। शब्दी धार विचों किहा गोबिन्द आपणा सुत तोहे निवाज़ा, थित इक्को इक वड्याईआ। नाम सुणाया अगम्म रागा, रागां तों बाहर कीती पढ़ाईआ। शब्द वजाया शब्द अनादा, शब्दी शब्द सुर हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। चौवी जेठ गोबिन्द सुत निवाज, हरि करते दिती वड्याईआ। नौ दाणे दिते खाज, गंदम चने तों बाहर जवी हथ्थ फड़ाईआ। दुःख भुक्ख तेरा समाज, समग्री दिती दृढ़ाईआ। फेर शब्द दी मार अवाज़, शब्द विच समझाईआ। औह वेख बगीचा बाग़, बाग़बान दरसाईआ। औह वेख तेरे बंस दा बुज्झया चराग़, तत्तां वाला नज़र कोए ना आईआ। औह वेख मेरे चार जुग दे साध, बाले धुर दे दयां वखाईआ। क्यों गोबिन्द तूं नौ साल दा जिस वेले तेग़ बहादर दा सिर तों लथ्था ताज, जगत वाली नज़र कोए ना आईआ। एह उस दे साथी जिन्हां दे अन्दर आया सी वैराग, नैणां रो के नीर वहाईआ। अट्ठे पहर रो के करन याद, अन्दरे अन्दर ध्यान लगाईआ। पुरख अकाल दिती दाद, मेहर नज़र उठाईआ। तेग़ बहादर कीती अरदास, सीस दिता झुकाईआ। कुझ नहीं मेरे पास, प्रभ तेरा तेरे हथ्थ फड़ाईआ। पुरख अकाल किहा मैं शाह पातशाह दो जहानां करां राज, रईयत निरगुण निरगुण आप बणाईआ। तेग़ बहादर गोबिन्द तेरा सुत नहीं मैं आपणा सुत ल्या निवाज, आयू वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। तेग़ बहादर किहा एह मेरा सज्जण मीत, गोबिन्द राह तकाईआ। गोबिन्द किहा मैं नौ साल दा नव नौ चार तों बाहर मेरी

तारीख, भेव सके ना कोए खुल्हाईआ। मैनूं उस प्रभू दी उडीक, जो पुरख अकाल मेरा पिता माईआ। नाले हस्स के किहा खुशी विच मेरा पारब्रह्म प्रभ मैनूं बख्श दए ओह चीज़, जेहड़ी हथ्थ किसे ना आईआ। फिर लाह के गलों कमीज़, रौला दिता पाईआ। नेत्र रो के किहा मैं तेरा अज़ीज़, छोटा नन्हा वेख वखाईआ। फिर खड़् गया विच दलीज़, अन्दर बाहर चरण रखाईआ। खुशी विच मार के चीक, चीक चिहाढ़ा दिता पाईआ। फिर मार के अग्गे लीक, दोवें हथ्थ दिते उठाईआ। प्रभू तेरा मेरा नहीं कोई शरीक, शिरक्त विच कदे ना आईआ। बिना कलम तों पुरख अकाल कर तस्दीक, शहादत आपणी दे भुगताईआ। तेग़ बहादर दे जो दिसदे तैनूं मीत, इहनां मित्रां आपणे नाल मिलाईआ। श्री भगवान हस्स के किहा ठीक, ठाकर हो के जोड़ जुड़ाईआ। गोबिन्द तेरा दसवां जामा ते इहनां दे सिर ते मेंढी दस होवे ते नौ साल तों घट्ट उमर तेरी पिछली दस्सण प्रीत, प्रीतम हो के मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। गोबिन्द किहा क्यों मेंढी होवे दस, मैंडे साहिब देणा जणाईआ। पुरख अकाल किहा ओह गोबिन्द तूं पंजां दे पैणा वस, पंज प्यारे तेरी धार रखाईआ। मैं फेर खेल वेखणा वत, वतन बेवतन हो के आपणी कार कमाईआ। तेरी लेखे ला के रत, रत्न अमोलक लैणे प्रगटाईआ। तेरी धार दा खोल्ह के हट्ट, वस्त अमोलक देणी वरताईआ। इक्ट्ठे कराउणे झीवर छींबे नाई जट्ट, ज़ात पात दा डेरा ढाहीआ। गोबिन्द नौ साल दा नौ वार खुशीआं विच गया टप्प, नौ दाणे जवी दे खा के दन्दां हेठ दबाईआ। फिर ज़िमीं दे उते दिते सट्ट, ज़िमीं असमान वल्ल वेख वखाईआ। फेर पंजे उँगलां लईआं तक, पंज प्यारा नज़र कोए ना आईआ। फेर मुख विच पाईआं झट, रसा चूस के आपणा रस बणाईआ। फेर पुरख अकाल शब्द अगम्मी मारी सट्ट, ज़िमीं असमान वल्ल वेख वखाईआ। चपेड़ मारी टक टक, टकयां दा झगड़ा दिता मुकाईआ। फेर खोल्ह के वेख्या अक्ख, प्रतख मिल्या बेपरवाहीआ। गोबिन्द पुठी पैरीं प्या नट्ठ, भज्जया वाहो दाहीआ। नाले मारया पट्ट ते हथ्थ, ललकार के दिता सुणाईआ। मैं तेरा पुत रहां तेरे विच, सति सच विच समाईआ। मेरे प्रभू एह भाण्डा तेरा काया दा बण जाणा कच्च, तन वजूद रहे ना राईआ। श्री भगवान किहा ओह मेरे दुलारे कुझ शक, नेड़े आउणा चाँईं चाँईंआ। गोबिन्द गुस्से विच किहा पहलों मेरा दे दे हक, हकीकत मेरी झोली पाईआ। फेर हथ्थ रखया उत्ते नक्क, सहिज नाल दबाईआ। पुरख अकाल रखणी पति, परमेश्वर तेरा राह तकाईआ। कौल इकरार कर ला पक्क, नौ साल दी आयू मेरी दए गवाहीआ। ओह तत्तां वाला पिता तेग़ बहादर गया छड, सीस कटार नाल कटाईआ। मेरा सरीर तन वजूद माता पिता दी रत्त, मेरा नूर तेरी रुशनाईआ। मैं चाहुंदा अग्गे वास्ते तेरा होवे साथ, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द तेरी नौ साल दी उमर, अम्बर वेख थांओं थाँईंआ। गोबिन्द खुशीआं विच पाई घुंमर, नच्च के दिता वखाईआ। आपणे अंगूठे लग्गा चुम्मण, जीभ दन्दां हेठ दबाईआ। फेर इशारे नाल सब दी चोटी लग्गा मुन्नण, बचया रहिण कोए ना पाईआ। फिर हथ्थों कड़ा लाह के कंगण, उँगलां विच पवाईआ। फेर बांह दी पा के झुम्बल, झट दिती खुल्हाईआ। फेर चारों कुण्ट लग्गा सुंघण, गुरमुख वेखे थांओं थाँईंआ। फेर उँगल रख के उत्ते बुल्लण, ज़ोर नाल दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द मेरा खेल जुग जुगी, आपणी कार कमाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं देवां सुधी, सुध आपणे नाल रखाईआ। खेल करावां परे बुद्धी, बुध मन ना कोए चतुराईआ। लाड लडावां विच युद्धी, शस्त्र शस्त्रां नाल टकराईआ। गोबिन्द खुशी विच पाई लुड्डी, कदम कदम नाल बदलाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल चार जुग गुर अवतार पैग़म्बर जगत वासना विच खेल कराउँदा रिहा गद्दीआं वाली दे के गुड्डी, नाम जगत वाला समझाईआ। मैं तेरा सुत दुलारा बिना तेरे शब्द तों कोई धार नहीं करनी उग्घी, आपणा नाम ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गोबिन्द किहा प्रभू मैं चार जुग दा बेटा सुणदा रिहा कन्नीं, अगम्म आवाज़ बेपरवाहीआ। तूं दाता बड़ा धनी, देवणहार अख्वाईआ। जिस नूं नाम दिता ईमान दिता मातलोक बेड़ा आया बन्न्ही, जगत जुगत विच चतुराईआ। ओह दीनां मज़्बां दी वासना चार जुग दी काया गुडीआ वांग अन्न्ही, अक्खीं वेखण कुछ ना पाईआ। मेरी इक अर्ज़ोई मन्नी, दर तेरे सीस झुकाईआ। जिस वेले तूं मेरा होवें तनी, इक घर विच रह के दोवें झट लँघाईआ। उस वेले मेरयां सिक्खां दा आपणे भगतां दा बेड़ा बन्न्ही, कलयुग दी माया पोह सके ना राईआ। दीन्हां मज़्बां विच मायाधारी सोहणी बणनी चन्नी, जगत शृंगार दए कराईआ। काम वासना विच सब दी आसा जाणी डंनी, बचया रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहर नज़र उठाईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द एह गुडीआ समझ ना अंधी, नेत्रहीण अख्वाईआ। एह काम वासना विच नहीं गंदी, जगत तृष्ना ना कोए हल्काईआ। एह कलयुग दी धार सोहणी सुचज्जी चंगी, भगती वाल्यां लए प्रनाईआ। एह हो जाए इक टंगी, लंगड़ी लूल्ही करे लोकाईआ। इहने दीनां मज़्बां दी तोड़ देणी डण्डी, अग्गे चले कोए ना चाँईं चाँईंआ। इहने सिर तों हो जाणा नन्गी, रंडी कन्त ना कोए हंढाईआ। उस वेले मैं होवां ते तूं होवें भगत सुहेले होवण संगी, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सब दी आत्मा करां ठंडी, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। गुडीआ कहे क्यों गोबिन्द मेरे नाल कीता धक्का, हाए उफ़ दुहाईआ। मेरा कौल इकरार पक्का, जुग चौकड़ी चलया आईआ। मेरा मुहम्मद यार बणाया सका, चार यार देण गवाहीआ। जिस वेले तेग़ बहादर ने सी फ़रंगीआं वल्ल तका, उँगली हथ्थ उठाईआ। जिस वेले नानक सतिनाम सितार दा राग दस्सा, मेरी सिफ्त आवाज़ सुणाईआ। जिस वेले हरि गोबिन्द ग्वालीअर विच लिखा पटा, पटने वाले आपणी कार कमाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां सहाई हो के रखा, रखया करी थांउँ थाँईंआ। सच पुछें मैनूं सब ने टेक्या मथ्था, मेरे अग्गे सीस निवाईआ। मेरा खेल यथार्थ यथा, मैं सच दयां समझाईआ। जिस वेले ब्रह्मा ने पहली वेर सुणाई चार वेद दी कथा, मेरी मूर्ती बणा के अग्गे लई टिकाईआ। मैं उस दे नाल पा ल्या रट्टा, अग्गे हो के कीती लड़ाईआ। मखौल विच कीता ठट्ठा, चार मुख वाल्या तूं इक मुख दी सार की पाईआ। सीस उतों हिला के छत्ता, मुक्खों किहा मैं छत्रधारी देणे रुलाईआ। ब्रह्मा टड के वेख्या मेरे वल्ल अक्खां, मैं ताड़ी दिती लगाईआ। मैं लुक गई विच कक्खां, लभ्भयां हथ्थ फेर ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गुड्डी कहे मैं कोई नहीं कोझी कमली, कमलापात दए वड्याईआ। मैं बुद्धहीण नहीं यमली, मूर्ख मति ना कोए रखाईआ। मैं नहीं कोई गोरी काली सवली, रंगत रंग ना कोए दरसाईआ। मेरा नूर इलाही अवल्ली, आलमीन वड्याईआ। मैं जुगां पिच्छों जद आवां धवली, जुग जुग दयां उलटाईआ। शाह सुल्तानां हथ्थ फड़ा दयां बग़ली, बग़लगीर रहिण कोए ना पाईआ। चार जुग लँघदयां लँघदयां मेरी बोदी वध गई, बोदी जञ्जू दा झगड़ा देणा मुकाईआ। मेरी प्रीत इक नाल लग्ग गई, लग मात्रा दा डेरा ढाहीआ। हुण आई मैं कलयुग जग लई, जुग आपणा फेरा पाईआ। मैं भज्जी फिरदी चार कुण्ट अग्ग लई, नट्ठां वाहो दाहीआ। बौहड़ी मेरी टंग भज्ज गई, सिर धड़ होई जुदाईआ। पर मैनूं इक खुशी मैं उस दी भेंटा चढ़ गई, जिस दा बेटा गोबिन्द माहीआ। जिस सच दवारे सद्द लई, आपणा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुड्डी कहे जन भगतो तक्को मेरी धार, सच दयां सुणाईआ। मेरे वांग सब कुछ आपणे साहिब तों दयो वार, तन वजूद दी लोड़ रहे ना राईआ। मैं जगत अंधी जोबनवन्ती मुटयार, वेखो सोहणे वाल वधाईआ। साफ़ सुथरे कपड़े डार, अंगी अंग नाल छुहाईआ। मैं सदी चौधवीं दी मुटयार, जोबनवन्ती रंग वखाईआ। मैं भज्जी नट्ठी चार कुण्ट वेख्या संसार, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। पर मैनूं मेरे साहिब वरगा लभ्भया नहीं कोई यार, मीत नज़र कोए ना आईआ। मैं फेर वेख्या गोबिन्द वरगा नहीं कोई सूरबीर योद्धा सच्ची सरकार, सच सेव ना कोए कमाईआ।

मैं फेर तक्कया आपणी कर विचार, विचर के दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर पर्दा आप उठाईआ। गुडीआ कहे मैं सीस विच वाहुणी कंघी, कंघा गोबिन्द दए समझाईआ। जेहड़ी सृष्टी होई बहुरंगी, बहुमत विच कुरलाईआ। अफ़ीमी पोसती हो गई भंगी, मध पान विच समाईआ। सीस तों हो गई रंडी, कन्त सुहाग ना कोए हंढाईआ। मज़्हबां दी पै गई डण्डी, प्रभ मिले ना धुर दा माहीआ। चार कुण्ट होई अंधी, अंध अंधेरा ना कोए गंवाईआ। मैं वेले नाल मूल ना संगी, शर्म हया दिता मिटाईआ। होका देवां विच वरभण्डी, ब्रह्मण्ड दयां सुणाईआ। वेख्यो गुरमुखो बिना पुरख अकाल तों मंनिउ ना कोए पखण्डी, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। मेरे मुख विच है नहीं दन्दी, बिना ज़बान दयां सुणाईआ। मैं वेखो सीतल धार हो गई ठंडी, सीस जगदीश भेंट कराईआ। एहदी आदि तों धार आदि तों खेल चंगी, चंगी तरह सुणाईआ। जिस वेले दुर्गा दे हत्थ फड़ाई सी चण्डी, गुडीआ कहे ओह मेरे तन वजूद छुहाईआ। फेर आप साहमणे बाणा पहर के जंगी, अष्टभुज दिता वखाईआ। नी तूं मेरी धारों जम्मी, जम्मण वाली कोए ना माईआ। तेरा तन नहीं कोई चम्मी, चम्म ना कोए वखाईआ। कौल कर ना हरख़ ना ग़मी, चिन्ता विच कदे ना आईआ। मेरा खेल जद वेखे ते वेखे खेल नवीं, जुग जुग आपणी कार कमाईआ। सच दा हुक्म सति मन्नी, संदेशा इक दृढ़ाईआ। झट गुडीआ बोली मैं जगत वास्ते अन्न्ही, नेत्रहीण दुखदाईआ। पर मैं इक्को तकां आपणा पिता मंमी, अम्मी इक्को इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा खेल वखाईआ। गुडीआ कहे पुरख अकाल गुर अवतार पैग़म्बरां देंदा रिहा दात, जुग जुग हुक्म वरताईआ। युद्ध कराउण तों पहलों वखाउंदा रिहा तमाश, आपणा पड़दा लाहीआ। रूप धरदा रिहा पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर रंग रंगाईआ। पहलों शस्त्रधारी हो के सचखण्ड आपणा वखाउंदा रिहा लबास, खड़ग तरकश नाल वड्याईआ। फिर हुक्म मनाउँदा रिहा ख़ास, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर पर्दा आप चुकाईआ। गुडीआ कहे जुग जुग गुर अवतार पैग़म्बरां दे के आपणी झलक, निशाना इक समझाईआ। फेर ओहले हो के पलक, आपणा आप लुकाईआ। फेर झगड़ा पा के ख़लक, दीन दुनी नाल टकराईआ। फेर अमृत दे के कलस, सच सच वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणी कार कमाईआ। गुडीआ कहे युद्ध होण तों पहले चार जुग करदा रिहा कार, हरि करता बेपरवाहीआ। सच सचखण्ड आपणे चरणां उत्ते पवाउंदा रिहा प्रेम दी धार, विष्न ब्रह्मा शिव इन्द कुबेर नाल मिलाईआ। सब तों कराउंदा रिहा निमस्कार, हुक्म विच दृढ़ाईआ। फिर दरसाउंदा रिहा आपणा रूप साकार, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ।

फेर मारदा रिहा मार, खड़ग खण्डा चमकाईआ। फेर वसदे रिहा उजाड़, चार कुण्ट दुहाईआ। गुडीआ कहे मेरी दुहाई मेरे बचन दा करयो एतबार, बेएतबारी ना कोए जणाईआ। पंजे गुरमुख चरणां उत्ते जल दयो डार, सोहणा रस बणाईआ। साहिब सुल्तान होण लग्गा त्यार, त्रैगुण अतीता आपणी कार कमाईआ। प्रगट होण लग्गा परवरदिगार, सांझा यार नूर इलाहीआ। लेख मुकण लग्गा जुग चार, चौथा दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। गुड्डीआ कहे गुर अवतार पैग़म्बरो विष्न ब्रह्मा शिव अवधूतो, दौड़ो भज्जो थांउँ थाँईंआ। वेखो आपणा गली कूचो, कूचा कूचा फोल फुलाईआ। अन्दर वेखो पंज भूतो, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश फोल फुलाईआ। सोझी करो चार कूटो, कुटीआ रहिण कोए ना पाईआ। फेर आपणयां कोलों पूछो, पुछो चाँईं चाँईंआ। उठो हज़रत ईसा मूसो, मुहम्मद नाल चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण सानूं अमृत लैण दे चख, बिन रसना रस चखाईआ। वेख लैण दे अलखणा अलख, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। निरगुण धार लैण दे तक, जोती जोत जोत रुशनाईआ। चरण झुक लैण दे सच, सच सच मिले वड्याईआ। हुक्म मन्न लैण दे कमलापति, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस दा चार जुग चलाया रथ, रथवाही बण के सेव कमाईआ। कहि के आए पुरख समरथ, हरि वड्डा वड वड्याईआ। ओह लोकमात होए प्रगट, प्रगट हो के आपणी कार कमाईआ। कूड़ क्रिया मेट के हद्द, धर्म दवारा इक सुहाईआ। गोबिन्द दी लज्जया लए रख, नौ साल दे बाले देण गवाहीआ। जिस दा नाता होया पक्क, कच्ची तन्द ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभ दा खेल अपार, अपरम्पर आपणी कार कमाईआ। जन भगतां बण के पहरेदार, रच्छया करे थांउँ थाँईंआ। तलवार रख के सीस चम्यार, दुखड़ा सब दा दए मिटाईआ। जन भगतो हो जाणा हुश्यार, हुश्यारी नाल सुणाईआ। प्रभ दा मेल हुन्दा नहीं जुग चौकड़ी चार, नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों आपणा रंग रंगाईआ। अग्गे शब्द दी करनी कार, शब्दी हुक्म वरताईआ। खण्डा खड़के विच संसार, खण्ड ब्रह्मण्ड देण दुहाईआ। सृष्टी रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। तुसां करना बैठ दीदार, सन्मुख हो के सोभा पाईआ। जिस गोबिन्द बणाया दुलार, दुलारे गोबिन्द आपणी गोद टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण पुरख अकाल की तूं जंग जू बहादर, सूरबीर अख्वाईआ। पुरख अकाल कहे मैं करता करीम कादर, कुदरत आपणा हुक्म चलाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो तख्त निवासी हो के करां आदल, इन्साफ़ सब नूं दयां जणाईआ।

तुसीं दीनां मज़्बां दे बणे कातिल, नाम शस्त्र मेरा हथ्थ उठाईआ। आपणा पड़दा खोल्ह के वेखो बातन, भेव रहे ना राईआ। कवण संगी ते कौण साथण, कवण मेला लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। पुरख अकाल कहे औह वेखो प्रभ दा खेल न्यारा, हरि हरि आप कराईआ। मुख लै के तिक्खी धारा, दन्दां हेठ दबाईआ। सृष्टी दा लग्गे अखाड़ा, खण्डा खड़के थांउँ थाँईंआ। एह वेखो खारे चढ़दा लाड़ा, आपणी कार कमाईआ। जेहड़ा आ गया दुबारा, जल थल महीअल कार कमाईआ। अमृत रहे ना किसे दवारा, खण्डा धुर दा विच फिराईआ। झगड़ा मुक जाए इट्टां पथ्थर गारा, इक्को नूर होए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच पड़दा आप चुकाईआ। गुरमुखो सतिगुर शब्द करे मेहरवानी, मेहर नज़र उठाईआ। खण्डा रख आपणी पेशानी, तिक्खी धार धार विच फिराईआ। किसे नूं देणी ना पए कुरबानी, करबले वांग ना कोए कुरलाईआ। प्यास्सयां लभ्भणा पए ना पाणी, अमृत रस मुख चुआईआ। प्रभ दे नाल तुहाडी सदा जवानी, बुढापे विच कदे ना आईआ। एह शब्द गुरु दी बाणी, बाण निराला तीर चलाईआ। जिस नूं लभ्भदे उत्ते असमानी, ओह सन्मुख तुहाडे सोभा पाईआ। प्रभ नूं मिलणा मंज़ल रुहानी, इस तों अग्गे ना कोए रुशनाईआ। झगड़ा मुक जाए चारे खाणी, पैंडा दिता मुकाईआ। इक्को आया धुर दा बानी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। खड़ग कहे मैं हो गई पुट्ठी, पुट्ठी मति जगत लोकाईआ। बौहड़ी सृष्टी जाणी लुट्टी, लुटेरा बणया धुर दा माहीआ। शृंगार रहिणा नहीं किसे बुती, मेंढी सीस ना कोए रखाईआ। सुख वेखणा नहीं किसे माँ पुत्ती, पती कन्त होए जुदाईआ। सदी चौधवीं जेहड़ी दुनिया सुत्ती, सुत्तयां ना कोए उठाईआ। ओ गुरमुखो तुहाडी धार सिर्फ़ दो तुकी, सोहँ पढ़ के झट लँघाईआ। तुहाडी आत्मा आपणे परमात्मा तों नहीं जे लुकी, अन्दर वड़ के तुहाडी सेज हंढाईआ। तुहानूं दिवस रैण फिरदा चुक्की, चुकन्ना हो के फिरे थांउँ थाँईंआ। भावें तुसीं आपणे साहिब तों किन्ने हो गए दुखी, दुक्खां विच झट लँघाईआ। ओह फेर वी तुहाडा उज्जल करे मुखी, नूर जोत रुशनाईआ। जे सतिगुर दे हुन्दयां तुसीं फेर आ जाउ कुख्खी, पहरेदार बण के की चतुराईआ। चुरासी दी जड़ जाए पुट्टी, मेहर नज़र नाल तराईआ। ओह तुसीं ज़रा गाने बन्न्हे गुट्टीं, आपणी लओ अंगड़ाईआ। तुसीं हुण लुकिओ खां आपणी गुट्टीं, फड़ बाहों बाहर कढ्ढाईआ। जे तुहाडी टुट्ट गई ते मेरी नहीं जे यारी टुट्टी, टुटयां नाल जुड़ाईआ। तुसीं मैनूं गाया बुल्ल्हां ते बुट्टीं, मैं अन्दर वड़ के वेख वखाईआ। वेखो अजे पौह ते नहीं फुट्टी, वेखणा किस तरह चार कुण्ट होवे रुशनाईआ। तुहानूं ते आपणे नाल रखया रुक्खी रुक्खी, बहान्यां नाल आपणे नाल चलाईआ। अजे

पिता हो के रखया नहीं कोई सुखी, सुख दे विच ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी हो के वेख वखाईआ। तलवार कहे कुछ मेरी तल्ब, ख़ाहिश दयां समझाईआ। जन भगतो सृष्टी भावें किन्नी हो जाए अरब खरब, हिन्दस्सयां विच लिख सके कोए ना राईआ। ते भगत कोटां विच्चों इक नूं दे के जरब, गिणती प्रभ दी दए वधाईआ। इहो खेल प्रभ दा असचरज, जुग जुग आपणा पड़दा लाहीआ। जे तुसीं सूरबीर बहादर बणना योधे मर्द, इक पुरख अकाल नूं सीस निवाईआ। जो आदि तों अन्त तक लै के वंडे तुहाडा दर्द, आत्मा दा परमात्मा हो के लए मिलाईआ। तुहानूं कोहे ना शरअ वाली छुरी करद, करता सिर तुहाडे हथ्थ टिकाईआ। तुसां सिर्फ़ हथ्थ जोड़ के बेनन्ती करनी अर्ज़, प्रभ तेरी ओट रखाईआ। फिर सतिगुर पूरा शब्द हो के आवण जावण दे गेड़यां विच्चों तुहानूं लवे वरज, राय धर्म चित्रगुप्त नेड़ कोए ना आईआ। सच कर मन्नणा जिस ने पंज वार सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जैकारा लाया गरज, ओह ग़रज़ आपणी पूर कराईआ। क्यों उस दे कोल जुग चौकड़ी दी फ़रद, पिछला कीता भुल्ल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। चौवी जेठ कहे प्रभू मैनूं क्यों बणाया जेठा, सच दे समझाईआ। गोबिन्द किहा उस दिन मैनूं मन्नया सी पुरख अकाल दा बेटा, दूजा पिता ना कोए रखाईआ। कमलया मैनूं मिल्या भगतां दे उधारन दा ठेका, गुरमुख आपणे संग रखाईआ। ज़रा याद कर लै पिछला चेता, चेतन हो के अक्ख खुल्हाईआ। सतारां सौ बत्ती जिस वेले मैनूं मिल्या सी मेरा नेता, निरगुण धार नूर रुशनाईआ। उस मेरे हथ्थ मारया सी उत्ते केसा, केस गढ़ दिता सुहाईआ। फेर किहा तूं मेरा दस दशमेशा, दहि दिशा तेरी वड्याईआ। मैं रहां ते तूं रहें मेरे नाल हमेशा, वर दे के मेरी झोली दिती भराईआ। एसे दिन गोबिन्द कहे मेरी बदल गई सी रेखा, मेरा गृह मिल गया सी सचखण्ड देसा, दरगाह साची सोभा पाईआ। मैनूं मिलण आए सी विष्न ब्रह्मा शिव शंकर जो सेवा करन नर नरेशा, नर नरायण कार लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। चौवी जेठ कहे इक होर करां बेनन्ती, बिनै दयां सुणाईआ। जिस वेले गोबिन्द ने आसा रोकी सी सिक्खां दे मन दी, मनसा आपणे विच छुपाईआ। उस वेले खेल वरताई सी सवा रुपईए अन्न दी, भण्डारा इक्को वार चखाईआ। नाले हस्स के किहा गुरमुखो जणनी अनेक बच्चे जणदी, सतिगुर इक्को वार जम्म के सब नूं बच्चे लए बणाईआ। क्यों सतिगुर नूं लोड़ नहीं दूजे तन दी, स्त्री पुरख ना कोए रखाईआ। एह खेल श्री भगवन दी, जो आदि अन्त आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे

खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। लंगर कहे मेरी कीमत कोई ना जाणिओ जग, कीमत सके ना कोए चुकाईआ। मैं गुरमुखो सड़दा उत्ते अग्ग, आपणा आप दयां तपाईआ। फेर प्रेम नाल तुहाडे कोल आवां भज्ज, फेर आपणा तन तुहाडे अग्गे टिकाईआ। ते मैनूं खाओ रज्ज, ते बचया शूकरां अग्गे सुटाईआ। मैं कमल्यो तुहानूं दस्सां इक चज्ज, सहिज नाल सुणाईआ। वेख्यो कदी खुदा परमात्मा नूं लभ्भओ ना मक्के मदीने वास्ते हज्ज, हाज़र हज़ूर तुहाडे अन्दर बैठा धुर दा माहीआ। इक प्रेम प्यार मुहब्बत विच जायो बज्झ, बन्धन इक्को नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। लंगर कहे मेरी धार सवा रुपईआ, रुपा सोना चांदी ना कोए जणाईआ। जिस वेले आपणी पूजा आपे कीती सी दुर्गा मईआ, आपणी भेंटा आपणे अग्गे टिकाईआ। फेर आपणी ज़बान दी कढ के वहीआ, लेखा नाखुन नाल लिखाईआ। जिस वेले बुल्ले ने गाया सी दईआ दईआ, धाह मार के दिता सुणाईआ। लंगर कहे जिस वेले गोबिन्द ने मंग मंगी सी ढईआ, नौ दाणे खा के प्रभ दा शुकर मनाईआ। उच्ची बांह कढ के बहीआ, बाजू दिता वखाईआ। इक्को राम ते इक्को रमईआ, हर घट नज़री आईआ। इक्को काहन इक्को घनईया, जो घर घर सोभा पाईआ। इक्को सज्जण इक्को सैण इक्को सईआ, साहिब सुल्तान इक अख्वाईआ। फेर खुशी विच किहा उस ने चार जुग दा बदल देणा रवईआ, रवादार रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। लंगर कहे जिस वेले गोबिन्द चढ़या सी नैणां दी चोटी, देवी देव खेल खिलाईआ। उस वेले आपणे अग्गे इक प्रशादा रख के रोटी, भोग दिता लगाईआ। फेर पुरख अकाल अग्गे किहा प्रभू तोट ना आवे तोटी, अतुट्ट देणा वरताईआ। भावें खा के जाण कोटन कोटी, भुक्ख्यां देणा रजाईआ। याद रखीं तेरा भगत मेरा सिख खावे किसे दी ना बोटी, मास शराब ना मुख रखाईआ। उहदे किसे कम्म नहीं आउणी पढ़ी पोथी, मेरा खण्डा ना होए सहाईआ। जेहड़ी आवाज़ मारी सी तेग़ बहादर ने आउंदे वाले टोपी, भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच रंग इक वखाईआ। रोटी कहे जिस वेले रविदास मेरा करदा सी टुकड़ा, हथ्थां नाल बणाईआ। वेखदा सी पूरब उत्तरा, पच्छम दक्खण नैण उठाईआ। हथ्थ वजाउंदा सी ज्यों डण्डे खड़कावे सुथरा, सोहणा ताल बणाईआ। फेर कर के उपर मुखड़ा, प्रभ नूं वेखे चाँईं चाँईंआ। आ यार मेरा मेट जा दुखड़ा, अन्दर वड़ के खेल खिलाईआ। पुरख अकाल कहे ओ चम्यार मेरे पुत्रा, एह मेरी बेपरवाहीआ। हुण तूं चमड़े दीआं करदा कुतरा, रम्बी ज़ोर नाल दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। पर्दा

५११
२२

कहे रविदास गया उत्ते गंगा, गंगोतरी वेख वखाईआ। सिरों बहि के नन्गा, निगह जल विच टिकाईआ। अग्गों पुरख अकाल बण गया ओह बन्दा, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। हस्स के किहा तूं मेरा मैं तेरा चम्यारा गा छन्दा, मैनूं दे सुणाईआ। फेर मेरे चरणां उत्ते घसा के तिक्खा कर लै रम्बा, आर पदम विच चुभाईआ। रविदास उस वेले कम्बा, नैणां नीर वहाईआ। पुरख अबिनाशी आपणे रंग रंगा, मेहर नज़र उठाईआ। कढ के शब्द धार दा खण्डा, सीस उत्ते दिता फिराईआ। रविदास औह वेख कलयुग दा अन्त कन्ढा, रावी राह तकाईआ। जिस वेले कोई पंडत रहिणा नहीं पंडा, जगत विद्या ना कोए चतुराईआ। उस वेले आउणा सूरा सरबंगा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस ने छडणा पुरी अनन्दा, अनन्द नाल उसे दा जोड़ जुड़ाईआ। सदी चौधवीं वक्त लँघ, अन्त अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। रविदास किहा मैं कलयुग वेखां घाट, अन्तर अन्तर खोज खुजाईआ। पुरख अकाल किहा औह तक बटवारे दी पिछली मुकी वाट, अग्गे तेरा मेल मिलाईआ। तुसां दोहां ने मेरे बणना भाट, सिफ्तां विच सालाहीआ। फेर होर दस्सां सज्जण साक, गुरमुख नाल रलाईआ। फेर पंजां लिखारीआं दे हथ्थ फड़ा के कलम दवात, कलमा नवां दयां समझाईआ। जेहड़ा चार जुग दा मेरे नाम दा प्या इखतलाफ़, झगड़ा सब दा दयां मिटाईआ। रविदास किहा प्रभू उस वेले किस करें मुआफ़, मैनूं दे समझाईआ। पुरख अकाल किहा रवी जेहड़ा तूं मेरा मैं तेरा करे जाप, सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ। उनां नूं बच्चे बणावां आप, आपणी गोद टिकाईआ। रवी किहा की दर्शन देवे साख्यात, भेव अभेद खुलाईआ। श्री भगवान किहा सम्मत शहिनशाही छे चौवी जेठ दी होवे रात, वायदा तेरे नाल कराईआ। झट रवी दे अन्दरों निकली लाट, नूर जोत रुशनाईआ। ओह भुल्ल गया तीर्थ आठ साठ, गंगा माई गुरचरणां विच सोभा पाईआ। फेर किहा ओ प्रभू तूं पा के भरम भरांत, मैनूं जलधारा विच फिराईआ। ते जलधारा विच प्रगटें आप, ऐंवें दूज्जयां दएं वड्याईआ। अग्गे वास्ते एह कदे ना करीं बात, भगत औझड़ राह फिराईआ। प्रगट हो के दर्शन देवीं ते रखीं आपणे साथ, सगला संग बणाईआ। की तैनूं लभ्भण उत्ते आकाश, जिथ्थे वेखण कोए ना जाईआ। की तैनूं खोजण विच भरवास, जंगलां विच दुहाईआ। की तैनूं जलधारा विच्चों वेखण किथे साडा बाप, समुंद सागर डेरा लाईआ। इक्को बचन ते इक्को कर वाक, कौल इकरार इक रखाईआ। जिस वेले प्रगट होवें दर्शन देणा बण के कमलापात, पतिपरमेश्वर हो के आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। रविदास किहा पंज लिखारी की करन लिख्त, लिख्त देणा समझाईआ। श्री भगवान किहा ओह नाता मेरा प्रेम दस्सण ऐ मानव तेरा पुरख अकाल नाल

होवे इश्क, इश्क माशूक दा डेरा ढाहीआ। धुर दा नाअरा लिखण जिस नूं सुण के मैथों विछड़े जाण खिसक, नेड़ रहिण कोए ना पाईआ। सतारां हाढ़ मस्तक लग्गा होवे तिलक, सम्मत छे नाल समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणी खेल खिलाईआ। चौवी जेठ कहे क्यों आए अल्लड़पिण्डी, अल्लड़ जवाना दे दरसाईआ। गोबिन्द कहे औह चौवी जेठ जेहड़ी गुरमुखां दी संगत अजे खिण्डी, ओह अग्गे लैणी मिलाईआ। सब दे मस्तक सुहाग दी लाउणी बिन्दी, कन्त कन्तूहल लैणा प्रभ हंढाईआ। झगड़ा रहिण नहीं देणा एशीआ योरप हिन्दी, नव सत्त वेख वखाईआ। धुर दे नाम वजाउणी किंगी, मृदंग शब्द लैणा उठाईआ। पूजा रहिण नहीं देणी लिंगी, शिव झगड़ा रहे ना राईआ। जेहड़ी सृष्टी प्रभ नूं रही निन्दी, निंदिआ विच समाईआ। उन्हां दी किसे कम्म नहीं आउणी जिंदी, राय धर्म दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। हुक्म कहे प्रभू पहर के जंगी बाणा, बाणी खाणी वेख वखाईआ। निरगुण धार बण के धुर दा राणा, रईयत दो जहान वेखे थाउँ थाँईंआ। जिस ने हुक्म शब्द वरताणा, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। जन भगतो तुहाडा लेखे ला के पीणा खाणा, आउणा आपणी झोली पाईआ। होए सहाई माण निमाणा, निताणयां दए वड्याईआ। सब ने खुशीआं विच खुशीआं विच जैकार लगाउणा, ढोला धुरदरगाहीआ। गुरसिखो ना कोई नवां ते ना कोए पुराणा, प्रभ दर ते आए ते इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि सब दा जाणी जाणा, जानणहारा जुग जुग आपणी दया कमाईआ।

✪ २५ जेठ शहिनशाही सम्मत ६ दलीप सिँघ दे गृह बाबूपुर ज़िला गुरदास पुर ✪

कलयुग कहे मैनूं ख़बर संदेशा मिली ख़बर, हुक्म धुर दा इक सुणाईआ। भय जणाया जाबर जबर, ज़बरदस्त नैण उठाईआ। चार कुण्ट मढ़ी गोर वेख कबर, मकबरयां पन्ध मुकाईआ। संदेशा दिता नाल धुन मधुर, प्रीतम प्रेम विच शनवाईआ। नव सत्त पा ग़दर, गदागर कर लोकाईआ। क्यों मेरे नाम दा रिहा कोए ना कदर, कुदरत भुल्ली जगत लोकाईआ। तेरे उत्ते करां मेहर नज़र, नदरी नदर उठाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं पूरी होवे सध्धर, सदा इक्को देणी लगाईआ। चारों कुण्ट दहि दिशा होवे पद्धर, एका रंग देणा रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणा हुक्म

सुणाईआ। कलयुग कहे मेरे अन्दर वज्जा नगारा, नौबत नाम सुणाईआ। मेरे आकाश दा तुटा सतारा, सिआरा बणया पाँधी राहीआ। ज़िमीं असमानां इक इशारा, बिन सैनत आप दृढ़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दे हुलारा, नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। आलस मेट गुरु अवतारा, पैग़म्बरां पड़दा लाहीआ। सब दा लेखा लेखे विच्चों विचारा, विचला भेव खुल्हाईआ। उठो वेखो कलि कल्की अवतारा, अवतर आपणा हुक्म मनाईआ। जो निरगुण धार आया दुबारा, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। शब्द सतिगुरु शब्द जैकारा, शब्द नाम सिफ्त सालाहीआ। सब नूं करे ख़बरदारा, खुआब पिछले वेख वखाईआ। अन्त अख़ीर मन्ने किसे ना हाढ़ा, हाढ़ सतारां दए वड्याईआ। धुरदरगाही रूप धरना धरनी धरत धवल उपर लाड़ा, सेहरा सीस जगदीश सुहाईआ। जन भगतां मंगण आउणा वाड़ा, ख़ाली झोली दे भराईआ। नूरी रंग चाढ़ना गाड़ा, गढ़ हउमे इक तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। कलयुग कहे मैं सुणी अगम्म सुणाउणी, हरि करता आप जणाईआ। प्रभ अचरज़ खेल रचाउणी, रचना वेखे थांउँ थाँईंआ। धर्म दी धार धार प्रगटाउणी, प्रगट हो के धुर दे माहीआ। गुर अवतार पैग़म्बरां जोती जोत आप प्रनाउणी, परम पुरख आपणे लड़ बंधाईआ। सति सच दी डोली इक रखाउणी, चारे जुग कहार उठाईआ। मुख वखाई रुपईआ इक रखाउणी, सोहणा सगन मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। कलयुग कहे खेल करे बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। पैग़म्बरां नाल होवे नकाह, नकाब मुख ना कोए टिकाईआ। जन भगत सुहेले बणाए गवाह, जिन्हां छब्बी पोह आपणे रंग रंगाईआ। अवतारां अन्तर नाल रला, जोड़ा जोड़ी जोड़े सहिज सुभाईआ। गुरुआं आपणे रंग रंगा, रंगत चाढ़े धुरदरगाहीआ। सब नूं इक सिंघासण लए बहा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। अन्तर प्रेम प्रीती बख़्श के चा, चाओ घनेरा इक दृढ़ाईआ। नारी रूप सर्ब दरसा, दर्शन देवे अगम्म अथाहीआ। धुर दा सगन लए मना, मानव समझ कोए ना पाईआ। पड़दा ओहला दए चुका, दीन मज़्ब दा मुख घूँगट रहे ना राईआ। हाढ़ सतारां तेई अवतारां हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद दस गुरुआं आपणी सेजे लए लिटा, आप आपणे अंग लगाईआ। रात सुहाग दए विखा, सुहञ्जणी सोभा पाईआ। दीन मज़्ब पईए दए छुडा, सौहरा सईआ साहिब सतिगुर इक्को घर नज़री आईआ। अग्गे सब नूं मन्नणी पए रज़ा, सिर सके ना कोए उठाईआ। पुरख अकाला बण गवाह, आप आपणी कार कमाईआ। खेले खेल खुद खुदा, ख़ुदी तक्ब्बरी डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दा मार्ग लए लगा, लग्न आपणे नाल रखाईआ।

✪ २५ जेठ शहिनशाही सम्मत ६ प्यारा सिँघ दे गृह बाबूपुर ज़िला गुरदास पुर ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण इक्ठे बणना इक प्रभू दी नारी, नर नरायण जो अख्वाईआ। जुग चौकड़ी जिस दी खेल दस्सदे रहे संसारी, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी कार कमाईआ। ओह कलयुग अन्त श्री भगवन्त शाह पातशाह शहिनशाह बण सिक्दारी, सिर सिर आपणा हुक्म मनाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात दी तोड़ के यारी, यराना आपणे नाल लगाईआ। महल्ल अटल बख्श अटारी, सचखण्ड साचा इक सुहाईआ। जिथ्थे जगे जोत निरँकारी, निरगुण निरवैर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला आप मिलाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण सब दा इक्को होणा कन्त, हरि करता वड वड्याईआ। पतिपरमेश्वर वेखणा भगवन्त, भगवन जोत नूर रुशनाईआ। जिस ने सानूं वक्ख वक्ख कलमे दस्से मंत, चार जुग लोकमात विच भवाईआ। वंड वंडाई विच जीव जंत, अक्खरां वाली दस्स पढ़ाईआ। तन वजूद बणाउंदा रिहा बणत, शरअ शरअ विच्चों प्रगटाईआ। खेल कराउंदा रिहा अगणत, गिणती गिण ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि दाता इक अख्वाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडा सांझा इक्को ख़सम, प्रभ ख़समाना इक अख्वाईआ। जिस दा मुछ दाढ़ी वाला नहीं जिस्म, मूंड मुंडाया नज़र कोए ना आईआ। आदि जुगादी इक्को इस्म, इस्म आज़म नूर इलाहीआ। साडी वक्खरी रहिण नहीं देणी किस्म, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड ना कोए वंडाईआ। शब्द दी धार चलाउणा मिशन, जोत नूर कर रुशनाईआ। साडे लागी बणाउणे शिव ब्रह्मा विष्न, सोहणी सेव कमाईआ। अग्गे पिच्छे सारे दिसण, दहि दिशा भज्जण वाहो दाहीआ। पुरख अकाल दीन दयाल एका सेजा सब नूं आउणा मिलण, दूसर पलँघ ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण माही आउणा साडे गृह, घर मन्दिर इक सुहाईआ। सच सिंघासण आपणे बहि, सुख आसण डेरा लाईआ। प्यार मुहब्बत इक्को दए, देवणहार दया कमाईआ। धुर संदेशा इक्को कहे, कहि कहि रिहा सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो तुहाडा दीन मज़्हब ना रहे, लोकमात जो वंड वंडाईआ। मेरे नाम कलमे दी शै, सो शाह सुल्तानां आए वरताईआ। उठो वेखो अन्त इक्को मेरे नाम दी जै, जै जैकार करे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण माही नूं मिलणा केहड़े शौक, शौकीन कवण अख्वाईआ। जगत वेस वेखे बहुत, बहु गिणती खोज खुजाईआ। तन वस्त्रां वाले गए औंत, अन्त रहिण ना पाईआ। किस बिध रीझाईए आपणा खौंत, हरि करता धुरदरगाहीआ। किस मंज़ल

जाईए पहुंच, आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। अवतार पैग़म्बर कहिण पहलों करीए इक सलाह, मता आपणा आप बणाईआ। उस दे अग्गे करीए दुआ, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। तूं परमात्मा हक खुदा, खुद मालक इक अख्वाईआ। सब नूं ल्या प्रना, परम पुरख आपणे अंग लगाईआ। साडा दीन मज़्ब दा झगड़ा देणा मुका, सौंकणां वाली करीए ना कोए लड़ाईआ। मिल के जपीए इक्को तेरा नाँ, नाउँ निरँकारा इक्को सिफ्त सालाहीआ। तूं साडी पकड़ी बांह, बाहमी नाता ल्या जुड़ाईआ। सदा रखीं ठंडी छाँ, द्वैत दी अग्न ना लागे राईआ। तेरे चरण कँवल बल जां, बलिहारी सीस निवाईआ। अवतार पैग़म्बर कहिण तेरा चरण कँवल इक थाँ, साहिब तेरी सरनाईआ। नारी कन्त श्री भगवन्त प्रभ आपणी आप लई हंढा, आपणा संग रखाईआ। दरगाह साची सचखण्ड विच तुध बिन दूजा कोई ना, नेत्र नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दवारे होईं सहा, सहायक तेरी ओट तकाईआ।

५१६ २२

✪ २५ जेठ शहिनशाही सम्मत ६ बलाका सिँघ दे गृह बाबूपुर ज़िला गुरदास पुर ✪

अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभ इक्को कमलापती, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। जिस ने आपणे नाल मिलाई ज़ाती, ज़ात आपणे विच रलाईआ। इक्वी बख्श के सच दी दाती, दाते दानी झोली दिती भराईआ। साडी पुछी वाती, चार जुग दे इक्को घर टिकाईआ। सच प्रेम दी बख्श सौग़ाती, आसा तृष्ना दिती गंवाईआ। गृह मन्दिर जगा के बाती, नूर ज़हूर दिता वखाईआ। सानूं सब नूं इक खुशी खुशीआं विच कटी वाटी, पिछला पन्ध रहे ना राईआ। दीन दयाल दया करनी हाढ़ सतारां राती, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। सब नूं लगाउणा आपणी नाल छाती, शहिनशाह गुर अवतार पैग़म्बर आपणी सेज सुहाईआ। इक गृह दे बण के वासी, दर इक्को वज्जे वधाईआ। लोकमात वांगूं मौत दी मिले कोए ना फाँसी, नाता कूड़ ना कोए वखाईआ। सचखण्ड दवारे इक्को जोत प्रकाशी, प्रकाश आपणा इक रखाईआ। साडी सब दी पूरी करे आसी, तृष्ना अवर रहे ना राईआ। साचा काहन बण के साडे नाल पावे रासी, सखी काहन रूप दरसाईआ। धुर दी धार प्रेम प्यार करे भोग बिलासी, नूर नूर नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वडा वड वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडा इक्को होवे मालक, आदि अन्त इक अख्वाईआ। जिस नूं कहिंदे

आए ख़ालक, निरगुण धार नूर इलाहीआ। जिस दे बणे रहे बालक, नन्हे बच्चे रूप धराईआ। जिस दी सृष्टी दस्सदे रहे हालत, सिफ्तां विच सिफ्त सालाहीआ। जिस नूं कहिंदे आए करे सच अदालत, अदल इन्साफ़ आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस दी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बणे रहे अमानत, अमन नाल आपणा झट लँघाईआ। सो स्वामी सच गृह देवे इक न्यामत, वस्त इक्को इक वरताईआ। जिस नाल दीन मज़्ह्ब दी रहे ना कोए बग़ावत, बग़लगीर सर्ब जणाईआ। चरण धूढ़ी दे सख़ावत, झोली सब दी दए भराईआ। इक दूजे दी करे ना कोए मज़ाहमत, झगड़ा दुनी ना कोए वखाईआ। साचे गृह पिछली करे ममानत, हुक्म संदेशा इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण शरअ दी साडे अन्दर रहे ना कोए अलामत, दीन वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि सही सलामत, साहिब सुल्तान इक अख्वाईआ।

✪ २५ जेठ शहिनशाही सम्मत ६ हज़ारा सिँघ दे गृह बाबूपुर ज़िला गुरदास पुर ✪

गुर अवतार पैग़म्बरो सतारां हाढ़ आवे रात सुहाग, सुहाग भरी वेस वटाईआ। निरगुण धार सब ने जाणा जाग, जागरत जोत इक रुशनाईआ। तेई गुरमुखां दे हथ्थ विच होण चराग़, चौमुखीए आपणा रूप दरसाईआ। तेई बीबीआं होण साध, साधना धुर दी इक समझाईआ। तेई गुरमुखां वजाउणा नाद, धुन इक्को इक सुणाईआ। तेई बीबीआं हथ्थ विच फड़या होवे लिख के गॉड, फ़िगर इंगलिश विच जणाईआ। तेई गुरमुखां उच्ची कूक के देणी बांग, ज़ोर ज़ोर नाल सुणाईआ। तेई बीबीआं केस खुल्ल्हे गल विच पाए होण नाग, आप आपणा वेस वटाईआ। तेई गुरमुखां सब तों वक्खरा गाउणा राग, शब्द पुरख अकाल सुणाईआ। तेई बीबीआं इक खेड़ा करना आबाद, मिल के बैठण चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक दया कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण हाढ़ सतारां सुहञ्जणी होणी रुत, रुत मिले वड्याईआ। तेई गुरमुखां गोबिन्द दे बणना सुत , सुत दुलारे नज़री आईआ। तेई बीबीआं मस्तक लिख्या होवे चुप्प, मुख विच्चों करन ना कोए लड़ाईआ। तेई गुरमुखां उपर नीचे इक इक कीती होवे मुच्छ, वट्ट ज़ोर नाल चढ़ाईआ। तेई बीबीआं नौ साल दे बच्चे गोदी चुक्क, बाज़ू ख़ुशीआं नाल उठाईआ। तेई गुरमुखां हथ्थ विच फड़या होवे सुक्का टुक्क, भुक्खे नन्गे रूप जणाईआ। तेई बीबीआं लाल रुमाल बध्धे होण सज्जे गुट्ट, गंढ तिन्न तिन्न पवाईआ। तेई गुरमुखां चार कुण्ट फिरना उठ, दहि दिशा सेव कमाईआ। तेई बीबीआं खुल्ही छडी होवे गुत्त, वाल चोटी

उत्ते बंधाईआ। तेई गुरमुखां प्रेम प्यार दी भरी होवे मुट्ठ, मुट्ठी ज़ोर नाल दबाईआ। तेई बीबीआं इक दूजी नूं लैण लुट्ट, वस्त वस्त नाल बदलाईआ। तेई गुरमुखां लाल कीते होण बुट्ट, बुल्ल्ह सोहणे रंग रंगाईआ। तेई बीबीआं आपस विच कीते होण जुट, बाज़ू बाज़ू नाल बंधाईआ। तेई गुरमुख प्रभ दे उतों करन सुट्ट, टके पंज पंज सुटाईआ। तेई बीबीआं नैणां तों होण खुश, कज्जल धार विच वखाईआ। तेई गुरमुख प्रभ धूढ़ी लैण सुच, मस्तक विच लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण तेई गुरमुखां गाउणा इक तराना, धर्म राग सुणाईआ। तेई बीबीआं हथेली चुक्कया होवे खाणा, वस्तू तिन्न तिन्न रखाईआ। तेई गुरमुखां ग़रीबी पहरया होवे बाणा, लीरो लीर नज़री आईआ। तेई बीबीआं हथ्थ विच फड़या होवे काना, कायनात वखाईआ। तेई गुरमुखां मन्नया होवे भाणा, निउँ निउँ सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण तेई गुरमुखां हथ्थ होवे गंडासा, शस्त्रधारी सोभा पाईआ। तेई बीबीआं कोल लिख्या होवे गोबिन्द साका, सिध्धा पुट्ठा रूप जणाईआ। तेई बीबीआं जेवर पाया होवे सज्जी नासा, छोटा वडा ना कोए वखाईआ। तेई गुरमुखां दन्द कढ के करना हासा, कलयुग देणा वखाईआ। तेई बीबीआं सिर ते ओढया होवे छाता, छत्रधारी रहिण कोए ना पाईआ। तेई गुरमुखां करदे आउणा धुर दा पाठा, मणका माला इक सौ इक इक बणाईआ। तेई बीबीआं जोत जलावण निकलण लाटां, दूर दूर रुशनाईआ। तेई गुरमुखां चुक्की होवे इक खाटा, वार वार बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण तेई गुरमुख प्रभ नूं आप नहाउण, खुशीआं नाल वड्याईआ। तेई बीबीआं गीत सुहागी गाउण, खारे चढ़या धुर दा माहीआ। तेई गुरमुख जाञीं जगत सदाउण, हार श्रृंगार विच चतुराईआ। तेई बीबीआं वस्त्र सोहणे पाउण, सच प्रेम वधाईआ। तेई गुरमुख सच प्रेम दे घोड़े सर्ब दुड़ाउण, भज्जण चाँईं चाँईंआ। तेई बीबीआं धर्म दी वाग गुंदाउण, नाता धर्म दा भैण भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला आप मिलाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण जन भगतो पहलों तुहाडा होया ब्याह, लोकमात खुशी बणाईआ। एसे कारन तुहानूं बणाउंदे गवाह, शहादत देणी भुगताईआ। सचखण्ड दवारे पुरख अकाल साडे नाल करे निकाह, नकाबपोश पड़दा लाहीआ। तुसीं सारे करो दुआ, सीस जगदीश अग्गे झुकाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले सब नूं आपणी नारी लै बणा, कन्त कन्तूहल तेरी वड्याईआ। सेज सुहञ्जणी लै सुहा, सच सिंघासण आप बिठाईआ। द्वैत दुनी रहे ना कोए वबा, मज़्हब दीन ना कोए रखाईआ। सारे तैनूं

करन वाह वाह, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण जन भगतो प्रभ दे चरण कँवल करना सलवारना, सीस उपर हथ्थ ना कोए रखाईआ। मन हँकारी विच्चों मारना, हउमे हउँ रहे ना राईआ। जिस ने सब नूं फड़ फड़ तारना, त्रैगुण लेखा दए मुकाईआ। उस ने कलयुग काल संवारना, कल करता खेल खिलाईआ। माण वड्याई देवे सतारां हाढ़ना, सोहणा रंग रंगाईआ। खुशीआं वाली खुशी वेखणी बहारना, आपणा आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा हुक्म सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण तेई गुरमुखां प्रभ नूं बन्नणा सेहरा, सेह आपणी कार कमाईआ। अग्गों नज़र ना आवे चेहरा, चिन्न्ह रूप ना कोए दरसाईआ। भगत दवार सुहाउणा खेड़ा, बेड़ी कंध उठाईआ। कलयुग अन्तिम दे के गेड़ा, सतिजुग सच दए लगाईआ। दीन मज़्हब मुका के झेड़ा, गुर अवतार पैग़म्बर लए प्रनाईआ। भरम भरांत दा कर निखेड़ा, निरगुण आपणा रंग रंगाईआ। साहिब हो के करे मेहरा, मेहर नज़र उठाईआ। एह खेल नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों इक वेरा, फेर लोकमात ना कदे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। तेई जांझी होण घोड़ सवार, वागां हथ्थ विच उठाईआ। तेई बीबीआं होवण पहरेदार, तलवारां कंध्याँ उत्ते टिकाईआ। तेई गुरमुख बोलण जैकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। तेई बीबीआं फुल्ल बरसावण वरखा धार, मेघला रूप जणाईआ। एह खेल सच्ची सरकार, हरि करता आप समझाईआ। विहार होवे सतारां हाढ़, थित अवर ना कोए वधाईआ। जन भगतो सब ने हो के आउणा त्यार, त्रैगुण दा डेरा ढाहीआ। भगत दवार पहुंचणा बण के चार चार, चार यारी दा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, कलयुग अन्त चौवीवां अवतार, अवतरी आपणा हुक्म वरताईआ।

२५ जेठ शहिनशाही सम्मत ६ बाबूपुर घरों निकल के वापसी ते घरों नज़दीक ही ज़िला गुरदास पुर

किरपा करे श्री भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। बाबूपुर अल्लड़पिण्डी घर घर पक्के पकवान, पंझी जेठ खुशी बणाईआ। साहिब सतिगुर पंज गुरमुख नाल लै के मंगण आए दान, इक इक फुलका झोली देणा पाईआ। अचार गंढा नाल नूं देणा खाण, होर वस्त ना कोए उठाईआ। मेहरवान होए मेहरवान, मेहर नज़र नाल तराईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। जन भगतो भगवन बणे दर भिखारी, मांगत हो के दर मंगण आईआ। लोक लज्जया लाह के सारी, आपणी आप छडे वड्याईआ। तुहाडे गृह वेख जाए बलिहारी, बलि बलि आपणा आप कराईआ। सब ने भिच्छया पाउणी ढहि के चरण दवारी, धूढ़ी ख़ाक लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। भिच्छया मंगे परम पुरख प्रभ राती, दर दर अलख जगाईआ। मुक्खों कहे खैर पाउ मैं तुहाडा साथी, जुग जुग दा चलया आईआ। अग्गे मुश्किल रहे ना वाटी, चुरासी पन्ध चुकाईआ। तुसीं मेरे ते मैं तुहाडी ज़ाती, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जो खैर पाए सो हथ्थ मारे उत्ते प्रभ दी छाती, उँगलां पंज छुहाईआ। एह अचरज खेल तमाशी, हरि करता आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सच दा बण के साकी, सज्जण धुर दा इक अख्वाईआ।

५२० ५२०
२२ २२

✪ २५ जेठ शहिनशाही सम्मत ६ प्यारा सिँघ दे गृह बाबूपुर ज़िला गुरदास पुर ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण साडा शगन दा होया विहार, जन भगतां गंढ पवाईआ। धुर दा नाता जुड़या नाल निरँकार, घर साचे वज्जी वधाईआ। खुशी विच खा के गंढा अचार, खुशीआं रहे मनाईआ। भुक्ख्यां कर जा पार, दुखियां दुःख गंवाईआ। अग्गे जे भगत जन्मे जन्मे तेरी धार, धुर दी धार विच्चों प्रगटाईआ। दर दर ना करें ख्वार, घर घर ना कदे भवाईआ। अगला कर कौल इकरार, धुर दा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण शगन प्या रावी कन्ढ्ढ, रवी दए गवाहीआ। खेल वेखे सूर्या चन्दा, सितार अक्ख टिकाईआ। वेस धर वासी पुरी अनन्दा, अनन्द आपणा इक जणाईआ। उस ने खेल दस्सया पिछला लहिणा जो गोबिन्द नाल संगा, सगला संग वखाईआ। जिस वेले पुरी अनन्द छड्डुया ते गुरमुखां हथ्थ फड़ाया टुकड़ा अचार ते कच्चा गंढा, भोजन माता गुजरी आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण सत्तर सिक्खां ने लै के दान, झोली लई भराईआ। नाले किहा गोबिन्द तेरा पकवान, सानूं दए रजाईआ। चारों कुण्ट मार ध्यान, वेखण नैण उठाईआ। फेर आउणा नहीं एस अस्थान, पुरी अनन्द ना कोए सुहाईआ। माता गुजरी शब्द सुणया बिना कान, कन्नां विच जणाईआ। छत्ती जुग दा जगत ज्ञान, नानक निरगुण

सरगुण दए दृढ़ाईआ। खेले खेल श्री भगवान, हरि करता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण जिस वेले पुरी अनन्द छड्डया, छडी आसा जग। गोबिन्द मुख ते पड़दा पा के गज्जया, वड बण सूरा सरबग। पुरख अकाले रखीं लज्जया, मैं तेरा नूरी अगम्मा चन्द। जिस कारन मैनूं लोकमात सद्दया, नाम दमामा वजा मृदंग। उस विच ना पवे भंगया, ख़ुशी करना बन्द बन्द। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा इक सुणाईआ। पुरख अकाल कीता इशारा, शब्द नाल समझाईआ। गोबिन्द तेरा वेख्या जगत भण्डारा, बिन नैणां नैण उठाईआ। अज्ज ख़ाली होए दवारा, दर नज़र किछ ना आईआ। ज़रा इस दी कर विचारा, विचर के दे जणाईआ। इक हलूणा ज़ोर दी मारा, गोबिन्द नूं दिता हिलाईआ। जोती जोत दा दे चमत्कारा, नूर कीता रुशनाईआ। गोबिन्द किहा पुरख अकाल मेरी निमस्कारा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जिस वेले सतारां सौ छपंजा कीता सी पन्थ त्यारा, सिख समाज बणाईआ। बणया सी वरतारा, आपणी दया दया वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर आपणा हुक्म वरताईआ। गोबिन्द किहा प्रभू मेरे विच इक वारी इक छिन्न आया सी हँकार, मैं बोल के दिता सुणाईआ। गुरसिखो मैं तुहाडा दातार, देवणहार बेपरवाहीआ। पुरी अनन्द दे भरे भण्डार, राणे महाराणे सीस निवाईआ। खिच्च के नन्गी तलवार, कटार दिती चमकाईआ। सब नूं देवां सँघार, शतरू रहिण कोए ना पाईआ। फेर हथ्थ मार उत्ते दस्तार, कल्गी दिती हिलाईआ। मैं रूप सच्ची सरकार, निरगुण सरगुण रंग रंगाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल झट तूं उस वेले मेरे उत्ते पाया भार, शब्द शब्द नाल दबाईआ। नाले हस्स के किहा गोबिन्द तूं पुरी अनन्द दा चार दिन दा मुख्त्यार, अन्त भण्डारा रहिण कोए ना पाईआ। मैं झट नौ वार चरणां ते कीती निमस्कार, फिर फिर सीस झुकाईआ। प्रभू तूं फेर ल्या उठाल, फड़ बाहों गले लगाईआ। ज़िमीं तों चुक के इशारा कीता औह वेख कलयुग अन्त काल, चारों कुण्ट नगार लगाईआ। फेर वखाया औह वेख मेरे भगत दुलारे लाल, लाल आपणे रंग रंगाईआ। बिन मेरी किरपा मेरयां भगतां नूं कोई ना सके खवाल, अवतार पैग़म्बर गुरु ना कोए वड्याईआ। आदि जुगादि दा मैं दलाल, विचोला इक अख्वाईआ। सचखण्ड मेरा सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक उपजाईआ। जिथ्थे मंगते शाह कंगाल, देवणहार धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। गोबिन्द औह वेख कलयुग अन्त नज़ारा, सच दयां वखाईआ। तैनूं छडणा पए पुरी अनन्द दवारा, अनन्द पुरी रही कुरलाईआ। एह खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर आप समझाईआ। संदेशा देवां शब्द दी धारा, धार धार विच्चों प्रगटाईआ। जिस

वेले कलि कल्की बण के आवां अवतारा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। खेल करां अपर अपारा, अपरम्पर हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि करता इक अख्वाईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द गुर अवतार पैग़म्बर कोई ना कहे मैं दाता दानी, दाता इक्को इक अख्वाईआ। तुसीं सारे मेरे नाम दी पढ़दे बाणी, शब्द शब्द नाल सालाहीआ। मैं मालक चारे खाणी, लख चुरासी मेरा नूर रुशनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव हुक्मे अन्दर भरन पाणी, सेवक हो के सेव कमाईआ। आदि जुगादि जुग मेरी मेहरवानी, मेहर नज़र नाल तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा आप उठाईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द सोहणा वक्त सुहञ्जणा आउणा विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी वेख विखाईआ। मैं निरगुण नूर करां उज्यारा, जोती जाता वेस वटाईआ। कलि कल्की लए अवतारा, अवतरा आपणा फेरा पाईआ। सतिजुग रीती मात संसारा, धुर दा राह इक प्रगटाईआ। किसे दे अन्दर रहे ना कोए हँकारा, साध सन्त ना कोए चतुराईआ। जन भगतां दवारे बणां आप भिखारा, भिक्खक हो के मंग मंगाईआ। इक निशानी तेरी रखां पुरी अनन्द दा अन्त गंढा ते अचारा, शहादत सच देणी भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म दी धार इक समझाईआ। गोबिन्द कहे गंढा अचार दा वड्डा आचरण, सच सच सुणाईआ। जिस खाधा तिस लेखा मुक्कया जीवन मरन, चुरासी फाँसी ना कोए लटकाईआ। झगड़ा मुक्कया वरन बरन, ज़ात पाती ना वंड वंडाईआ। गुरमुख साची मंजल चढ़न, जिथ्थे मिले धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। गंढा अचार कहे साडा मेल होया नाल रोटी, तिन्नां मिल के वज्जी वधाईआ। तेई गुरमुखां तेड़ बद्धी होवे धोती, लांगढ़ पिच्छे तांईं खिचाईआ। तेई बीबीआं हथ्थ विच फड़ी होवे सोटी, नौ नौं हथ्थ लम्बाईआ। तेई गुरमुखां पढ़दे आउणा पोथी, पुस्तक हथ्थ विच उठाईआ। तेई बीबीआं गल विच गानी पाउणी मोती, चिट्टे रंग नाल सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। गोबिन्द कहे हुक्म संदेशा ख़ास, धुर दा इक जणाईआ। पंजां दरबारीआं सुणनी अगम्मी बात, बातन पड़दा आप खुल्हाईआ। सब दे कोल पंज पंज होण काट, जेबां विच लुकाईआ। साढे बारां वजे देणे सतारां हाढ़ दी रात, लड़ाई पिच्छों सफ़ाई दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक मनाईआ। गोबिन्द कहे पंजां दरबारीआं खुल्ही छड्डी होवे दाढ़ी, मुच्छां वट्ट चढ़ाईआ। इक्को जेही सर्ब होवे त्यारी, त्रैगुण दा डेरा ढाहीआ। लाल नोक कीती होवे कटारी, उँगलां नौ नौं रंगाईआ। ओन्हां नाल होण पंज पुजारी, समान पूजा वाला उठाईआ। इक

५२२
२२

गुरमुख कोल होवे कुत्ता शिकारी, जो शरअ दी करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच मेला लए मिलाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडा शगन सुहावा, सोहणी खुशी बणाईआ। साडा प्रभ दे नाल दाअवा, दाअवे नाल जणाईआ। जन भगतां आपणे दवार ला के नावां, नव नौ चार दा डेरा ढाहीआ। सब दा भार कर लै सावां, वद्ध घट्ट ना कोए वखाईआ। तेरे नाल लैणीआं लावां, चौथे घर वज्जे वधाईआ। घरों सतारां हाढ़ नूं पुत्रां दा मुख मिट्ठा करके आवण मावां, गुड़ शकर नाल चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत सुहेला रहिण देवे ना कोए निथावां, दरगाह साची सचखण्ड घर आपणे आप बहाईआ।

५२३

२२

✪ पहली हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण सचखण्ड करीए त्यारी, निरगुण तों बाहर खेल खिलाईआ। हुक्म मन्नीए पुरख अकाल इक निरँकारी, नर नरायण नर हरि जणाईआ। सति सतिवादी हो के सति दा करीए श्रृंगारी, सति सरूप वेस बणाईआ। सच दवार सच दी मंज़ल चढ़ीए खारी, ख़ालस आपणा आप रखाईआ। बिन नेत्र नैण सच प्यार बणाईए कज्जल धारी, आप आपणे विच्चों प्रगटाईआ। थान थनंतर सोहे अगम्म अपारी, पृथ्मी आकाश ना कोए चतुराईआ। रवि ससि ना कोए उज्यारी, एका निरगुण नूर जोत जोत रुशनाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड महल्ल अटल ना कोए अटारी, गगन गगनंतर ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, हरि वडा वड वड्याईआ। अवतार पैग़म्बर कहिण गुर आउंदा वक्त सुहेला, सचखण्ड मिली वड्याईआ। एका रूप बणना गुरु गुर चेला, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सति सति दा होणा मेला, जोत जोत जोत प्रनाईआ। धुरदरगाही लाड़ा तकणा इक अकेला, अकल कलधारी नूर इलाहीआ। जेहड़ा जुग चौकड़ी हथ्थ ना आया दो जहान जंगल बेला, पृथ्मी आकाश खोज ना कोए खुजाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी लख चुरासी नालों हो के वेहला, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण मेला मिलणा प्रभू प्रभ कन्त, हरि स्वामी सोभा पाईआ। सब ने इक्को गाउणा मंत, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाहीआ। चार जुग दी नाम कल्मयां वाली छडणी बणत, दीन मज़्हब छडणी

जगत चतुराईआ। इक्को बोध अगाधा पुरख अकाला मन्नणा पंडत, जो शरअ तों बाहर करे पढ़ाईआ। जिस झगड़ा मिटाउणा उत्भुज सेत्ज जेरज अण्डज, चारे खाणी पन्ध मुकाईआ। सतिजुग सच बणाए बणत, सति सतिवादी पड़दा लाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म बणा के संगत, सगला संग वखाईआ। हउमे गढ़ तोड़ के हंगत, हँ ब्रह्म इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, निरगुण दाता नूर इलाहीआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण साडा आउणा इक स्वामी, साहिब सुल्तान बेपरवाहीआ। जो आदि अन्त दा अन्तरजामी, घट निवासी धुरदरगाहीआ। जिस दी चार जुग सिफ्तां वाली गा के आए बाणी, निरअक्खर अक्खर धार विच प्रगटाईआ। सो खेल करे मालक ख़ालक दो जहानी, सरगुण निरगुण आपणी कार कमाईआ। अवतार पैग़म्बर झगड़ा मेट ज़िमीं असमानी, असल आपणा आप समझाईआ। जेहड़ा लेखा लिख्या नाल कलम कानी, कायनात दए दरसाईआ। हर घट अन्तर बण के जाण जाणी, जानणहार दया कमाईआ। सब दे उत्ते करे मेहरवानी, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जिस नाम कलमे दी दे के आए कुरबानी, जगत विच दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच आपणा हुक्म वरताईआ। तेई अवतार कहिण असीं सोहणा वक्त सुहाउणा, सुहञ्जणी रुत वड्याईआ। पैग़म्बर कहिण असीं कलमा नूर इलाही गाउणा, अलिफ़ ये ना कोए वड्याईआ। गुर दस कहिण इक्को नाम ध्याउणा, दूसर लोड़ रहे ना राईआ। पुरख अकाल कहे मैं सब दा पिछला वक्त चुकाउणा, चार जुग दा लेख रहे ना राईआ। सतिजुग साचा मार्ग लाउणा, राह इक्को इक प्रगटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म निरगुण निरगुण सब ने गाउणा, गाणा गा गा ख़ुशी बणाईआ। दीन मज़ब ज़ात पात दा झगड़ा सर्ब मिटाउणा, मिट्टी ख़ाक ना कोए उडाईआ। सांझा कन्त श्री भगवन्त निरगुण नूर जोत प्रनाउणा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी दी लोड़ रहे ना राईआ। ज़िमीं असमानां वक्त चुकाउणा, ब्रह्मण्ड खण्ड दा डेरा ढाहीआ। दरगाह साची सच गृह इक्को घर सुहाउणा, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। जिथ्थे पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार सांझा यार बण के आउणा, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। साडा चार जुग दा भविक्ख्त करे परवाना, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर नाम इक जणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण हरि आवे दूल्हन दूल्हा, निरवैर रूप वड्याईआ। जिस उत्ते वरखा होवे फूलन फूला, सत्त रंग चतुराईआ। सतिजुग साचा मार्ग दस्से रूला, असूल इक समझाईआ। चार जुग दा कौल इकरार जेहड़ा नहीं भूला, अभुल्ल दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभ आउणा कमलापती,

पतिपरमेश्वर दया कमाईआ। असां सब ने बणना सती, सति सतिवन्ती रूप धराईआ। झगड़ा रखणा नहीं कोई रती, रत्ती रत ना कोए तपाईआ। निरगुण नूर वेखणा अक्खी, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। तेई अवतारां बणना सख़ी, सुख़न पिछला पूर कराईआ। पैग़म्बरां इक्को ख़ावंद खट्टी लैणी खट्टी, खटका जगत चुकाईआ। गुरुआं पढ़नी इक्को पट्टी, पटने वाला दए समझाईआ। पिछली आसा सब ने जाणा छड्डी, तृष्ना रहे ना राईआ। जेहड़ी खेल खिलाई मास नाड़ी हड्डी, तन वजूद वंड वंडाईआ। ओह दीनां मज़्हबां वाली छड देणी गद्दी, माण अभिमान रहे ना राईआ। मुहम्मदा होका दे दे मेरी बीतदी चौधवीं सदी, सदमे विच दुहाईआ। परवरदिगार ने पिछली कीती करनी रद्दी, इरादा आपणा ल्या बदलाईआ। अगला खेल करे यद्दी, यदी आपणी कार कमाईआ। सानूं सब नूं निरगुण धार बणा के काया नड्ढी, निरवैर लए प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, मेहरवान बेपरवाहीआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बरो मैं लाड़ा इक अनोखा, सच दयां सुणाईआ। किसे नाल करां कोए ना धोखा, भरम भुलेखा रहे ना राईआ। मेरे ब्याह विच मेरे नकाह विच पढ़या जाए कोए ना पोथा, अक्खरां वाली ना कोए पढ़ाईआ। पाणी जल दा भरया जाए कोए ना लोटा, वुज़ूआं विच ना कोए चतुराईआ। अरदासा जाए कोए ना सोधा, हवन अग्न ना कोए तपाईआ। संदेश जणाया जाए कोए ना लोका, सलोकां विच ना कोए पढ़ाईआ। उच्ची कूक दए कोए ना होका, सौहरे पईए ना कोए समझाईआ। इक्को निरगुण निरगुण धार मिलण दा रखणा शौंका, दूजा वेस ना कोए वखाईआ। नव नौ चार पिच्छों निरगुण धार मिलदा मौका, मुकम्मल बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण असीं वेखणा ओह ख़ावंद, जिस नूं ख़सम कहे लोकाईआ। जिस दे हुक्मे होए पाबन्द, बन्धन सके ना कोए तुड़ाईआ। जिस ने निशान दिते तारा चन्द, चौदां तबक तबक समझाईआ। जिस ने नानक निरगुण धार करया अनन्द, कारज आपणा इक दृढ़ाईआ। उस दे नाल जाईए हंढ, सद आपणा मेल मिलाईआ। पहलों सारे इक्त्ते हो के दीन मज़्हब दी खोल्हीए गंढ, दुतीआ नज़र कोए ना आईआ। फेर वेखीए साहिब बख़्शंद, जो मालक शहिनशाहीआ। जिस ने भेव खुल्हाया ब्रह्म हं, हँ ब्रह्म समझाईआ। उस दवारे जाईए लँघ, जिथ्थे दीन मज़्हब दी मंज़ल रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच संदेशा इक सुणाईआ। पुरख अकाल कहे मेरी निरगुण धार जोती, जोत जोत रुशनाईआ। जुग बीते कोटन कोटी, कुटीआ मेरी समझ किसे ना पाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर मातलोक मंज़ल चढ़ के आए चोटी, तन वजूद वज्जी वधाईआ। गुज़ारा कीता खा के रोटी, तृष्ना तृखा अमृत जल बुझाईआ। मेरी निरअक्खर धार दी पढ़ के पोथी, अक्खर

५२५
२२

सिफ्तां वाले सुणाईआ। जिस नूं गा गा गुज़ारा करदे जीव लोकी, लोक परलोक राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो तुसां हुक्म अनोखा मन्नणा, सच दयां दृढ़ाईआ। प्रगट होणा नूरी चन्नणा, चन्न नूर रुशनाईआ। संदेशा सुणना बिना कन्नणा, अनबोलत राग दृढ़ाईआ। दीन मज़्ह़ब दा भाण्डा भन्नणा, भरम देणा गंवाईआ। झगड़ा छडणा माटी चम्मणा, तन वजूद ना कोए लड़ाईआ। हरख सोग ना रखणा ग़मणा, चिन्ता चिखा ना कोए तपाईआ। नाम कलमा ना रखणा तमणा, तामस देणी मिटाईआ। सब ने आपणा आपणा बेड़ा बन्नणा, भार आपणे कंध उठाईआ। तन वजूद तों बिना आपणा नूर रंगणा, रंगत रंगणी इक्को माहीआ। सच दवार मूल ना संगणा, जगत हया ना कोए चतुराईआ। झगड़ा रिहा ना स्वास दमणा, दामनगीर हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। पुरख अकाल कहे सारे हो जाओ ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। संसारी भण्डारी सँघारी होवो हुश्यार, आलस निंद्रा ना कोए वखाईआ। खेल करे आप निरँकार, हरि करता वड वड्याईआ। जिस ने सतिजुग त्रेता द्वापर कीता पार, कलयुग अन्तिम लए अंगड़ाईआ। सब दा लहिणा देणा लए विचार, पूरब लेखा फोल फुलाईआ। दीन दुनी दा झगड़ा विच संसार, शरअ शरीअत करे लड़ाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर वेखो निगह मार, बिन नैणां नैण तकाईआ। सच दा रिहा ना कोए प्यार, प्रीती प्रेम ना कोए वधाईआ। ख़ादम रिहा ना कोए ख़िदमतगार, ख़ालस रंग ना कोए चढ़ाईआ। चारों कुण्ट धूंआँधार, निरगुण नूर ना कोए रुशनाईआ। बेशक लख चुरासी ब्याह करे संसार, सच रूप ना कोए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। पुरख अकाल कहे निरगुण धार दया कमावांगा। जोती जोत डगमगावांगा। बिन वरन गोत खेल खिलावांगा। पूरब सब दी समझ सोच, आपणी झोली पावांगा। जो भविक्ख्तां विच रखी आसा लोच, लोचन नैणां नाल वखावांगा। जुग बीते कोटी कोट, कोटन आपणा हुक्म वरतावांगा। अवतार पैग़म्बर गुरु निरगुण धार बणा के धुर दी गोत, दीन मज़्ह़ब दा डेरा ढाहवांगा। नाम सुणा के इक सलोक, पिछले कलमे सर्ब मिटावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक प्रगटाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभ साचा हुक्म सुणाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। सदी चौधवीं वेख वखाएगा। सदी बीसवीं पर्दा आप उठाएगा। गोबिन्द लहिणा पूर कराएगा। हाज़र हज़ूर नूर रुशनाएगा। आसा पूर वेख वखाएगा। जिस दे बणदे रहे मज़दूर, सो सेवा सब दी झोली पाएगा। कलयुग अन्तिम प्रगट होए ज़रूर, कलि कल्की वेस वटाएगा। सब दा तोड़ माण ग़रूर, निरगुण नूर जोत चमकाएगा।

५२७
२२

इक्को नाम कर मशहूर, ब्रह्मण्ड खण्ड आप सुहाएगा। पन्ध मुका के नेड़ा दूर, घर इक्को इक वखाएगा। जिथ्थे जोत जोत दा नूर, दूजा नज़र कोए ना आएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच मेला आप मिलाएगा। सच मेला मेल मिलावांगा। निरगुण नूर नूर रुशनावांगा। ज़ाहर ज़हूर दया कमावांगा। आसा मनसा पूर आप अख्वावांगा। कलयुग कूड़ो कूड़ कूड़ मिटावांगा। साची बख्श चरण धूढ़, चतुर सुघड़ मूढ़ आप उठावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म दवारा इक दरसावांगा। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडी इक अर्ज़ोई, बेनन्ती इक जणाईआ। पुरख अकाल परवरदिगार तेरा नाम दरोही, दो जहान दुहाईआ। तुध बिन अवर ना दीसे कोई, निरगुण नज़र कोए ना आईआ। सदी चौधवीं सृष्टी दृष्टी अन्दरों रोई, रो के दए दुहाईआ। सुरती उठी किसे ना सोई, सतिगुर शब्द ना कोए मिलाईआ। आत्म जाए कोए ना मोही, मुहब्बत विच ना कोए रखाईआ। जिधर तक्कीए बिन तेरे मिलदी कोए ना ढोई, दरगाह बहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बरो वेखो आपणी धरती, ध्यान मातलोक लगाईआ। किसे नूं मिले ना प्रीतम अर्शी, साचा मेला ना कोए मिलाईआ। सदी चौधवीं तुहाडी अक्खरां वाली पर्ची, पर्चा अग्गे ना कोए जणाईआ। झट खोल्हो बस्ते ते वेखो आपणी अर्ज़ी, जिस विच आरज़ू आप सुणाईआ। कलयुग अन्त खेल होणी इक्को नरायण नर दी, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस दे कोलों सब दी आशा डरदी, सिर सके ना कोए उठाईआ। जिस नूं लख चुरासी वरदी, वर इक्को इक वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। तेई अवतार कहिण इक दूजे नूं किस नूं कहीए चंगा, चंगा नज़र कोए ना आईआ। ना कोई पंडत रिहा पंडा, ना कोई शास्त्र सिफ्त सालाहीआ। ना कोई सुहागी रिहा रंडा, कन्त कन्तूहल ना कोए हंढाईआ। ना कोई अमृत रस रिहा ठंडा, जल धार ना कोए वहाईआ। ना कोए लहर दिसे गंगा, गंगोतरी मारे धाईआ। ना कोई सूर्या ना कोई चन्दा, मण्डल मण्डप ना कोए वड्याईआ। ना कोई बन्दगी वाला दिसे बन्दा, चारों कुण्ट दुहाईआ। मन वासना विच होया गंदा, कूड़ कुकर्म विच कुरलाईआ। जो आदि तों अन्त तक प्रभू दा साचा छन्दा, सो सके कोए ना गाईआ। साची मंज़ल कोए ना लँघ, पढ़ पढ़ थक्की लोकाईआ। किसे ने चूड़ा पा ल्या किसे ने पाईंआ वंगां, कोई कंगण हथ्थां विच लटकाईआ। आत्म सेज सुत्ता कोए ना आपणे मंजा, सेज सुहञ्जणी ना कोए हंढाईआ। किसे ने केस वधाए किसे ने वाह ल्या कंघा, कोई बोदीआं रिहा हिलाईआ। किसे पाया तम्बा, कोई कछिहरे रिहा सुहाईआ। जां वेख्या बिना प्रभू तों सारयां दा सीस

५२७
२२

दिसदा नन्गा, ओढण उपर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच स्वामी वेख वखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो वेखो आपणी धरनी धवल धरत, धर्म दी धार वखाईआ। तुसीं जा के फेर ना आए परत, सुत्तयां ना कोए उठाईआ। की करदे उत्ते अर्श, जोत जोत विच मिलाईआ। सृष्टी बिहबल होए उत्ते फ़र्श, फैसला हक ना कोए सुणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कीता ग़रक, बाहर सके ना कोए कढ्ढाईआ। तुहाडे नाम कलमे कर गए तरक, पल्लू गंढ ना कोए रखाईआ। ज़रा उठो वेखो आपणी भविक्खतां वाली फ़रद, जो शरअ तों बाहर आए दृढ़ाईआ। की प्रभ ने खेल करना असचरज, अचरज लीला की वरताईआ। सदी चौधवीं पुट्ठी करनी नरद, नर नरायण फेरा पाईआ। सब दा वंडे दर्द, दुखियां होए सहाईआ। तुहाडी शरअ दी तोड़े करद, कत्लगाह दा लेख मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर इक्को इक दरसाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो क्यों कलयुग होया झेड़ा, झगड़ा कवण मुकाईआ। क्यों धर्म दा दिसे ना खेड़ा, कूड़ होया हल्काईआ। क्यों हक ना करो नबेड़ा, दूई द्वैत डेरा ढाहीआ। क्यों चारों कुण्ट होया अंधेरा, सच चन्द ना कोए रुशनाईआ। क्यों सिक्खां मुरीदा उत्ते नहीं करदे मेहरा, मेहर नज़र टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वर दाता इक अख्वाईआ। गुरु अवतार पैग़म्बर आपणे आपणे कढ के वेखणे पटे, की पूरब हुक्म लिखाईआ। जां तक्कया सब दा लहिणा देणा मुक गया विच बटे, अग्गे अवर ना कोए वधाईआ। जेहड़े दीन मज़्हब दे पाए रट्टे, झगड़े विच रखी लोकाईआ। ओह हुण साडे लेखे जाणे कटे, कायम अग्गे ना कोए कराईआ। चारों कुण्ट फिरदे नट्ठे, भज्जण वाहो दाहीआ। हुण करीए की इक दूजे नूं कहिण काया भज्जे सब दे मट्टे, तन वजूद रिहा ना राईआ। जेहड़े पैग़म्बर अवतारो गुरुओ सुणा के आए प्रभ दे नाम दे टप्पे, टापूआं विच जणाईआ। उस दे उत्ते इक्को प्रभ दे लग्गण लग्गे ठप्पे, ठप्पा इक्को इक वखाईआ। हुण हो जाईए सारे इक्ट्ठे, पिछला लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सति सच सच सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण करीए हक इक्ठ्ठ, इक्को रंग रंगाईआ। पिछला खेड़ा हुन्दा दिसे भट्ठ, अग्गे रहिण कोए ना पाईआ। पुरख अकाल दी चरणी जाईए ढट्ठ, निव निव सजदा सीस निवाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, दर तेरे मंग मंगाईआ। सदी चौधवीं सब दे ख़ाली हथ्थ, झोली ख़ाली अग्गे टिकाईआ। असीं पिच्छे रहे वक्ख वक्ख, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरी सेव कमाईआ। अग्गे ज्यों भावे त्यों लैणा रख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। इक्को तेरा नाम कलमा लईए रट, पिछला रट्टा दईए चुकाईआ। सानूं समझ आ गई तूं वसें घट घट, हर घट अन्तर तेरा नूर रुशनाईआ।

तूं सब दा इक्को जेहा करें पक्ख, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मार्ग देणा वखाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बरो इक्को मारो झाकी, झलक दयां वखाईआ। लख चुरासी मेरा रूप ख़ाकी, जल्वागर नूर रुशनाईआ। मैं सब दा सांझा साकी, प्याला नाम जाम प्याईआ। अग्गे रिहा कोए ना आकी, जो घड़या सो भन्न वखाईआ। तुसीं मेरे नाम दे पाठी, पढ़ पढ़ आए सुणाईआ। दीन मज़्ब दी खोल्ह के हाटी, सौदा जगत विच विकाईआ। चार दिन दी कट के राती, थिर रहिण कोए ना पाईआ। किसे नूं कथा सुणाई किसे नूं कलमा धार आखी, अक्खरां विच बदलाईआ। सब दे कोलों कराई गुस्ताख़ी, गुस्सयां विच कीती लड़ाईआ। मेरा खेल अलखणा अलाखी, कोई लख ना सक्या राईआ। तुहाडी इक्को नूर विच्चों वक्खरी वक्खरी कीती ज़ाती, जुमले अक्खर कर पढ़ाईआ। किसे नूं अमृत वेला दस्सया किसे नूं दस्सी प्रभाती, किसे नूं सँध्या दिती सुहाईआ। किसे नूं किहा करनी बन्द खुलासी, किसे नूं चुरासी गेड़ समझाईआ। किसे नूं किहा सचखण्ड दा वासी, किसे नूं दरगाह दए जणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो तुसीं आपणे प्रभू दी समझ नहीं सके चलाकी, की जुग जुग कार कमाईआ। हुण अन्तिम सब दी मुकणी वाटी, पन्ध रहिण कोए ना पाईआ। अग्गे वास्ते इक्को रखणा नाती, साचा संग बणाईआ। इक मंजल चढ़ना घाटी, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। तुसीं धरनी उत्ते जो दीन मज़्ब दे बणे अलाटी, अन्त फैसला दिता कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो छड दयो जगत समाज, समग्री इक वरताईआ। इक्को हुक्म ते इक्को राज, रईयत इक अख्वाईआ। इक्को सीस ते इक्को ताज, साहिब सुल्तान रखाईआ। इक्को शब्द ते इक आवाज़, सृष्टी दृष्टी अन्दर दृढ़ाईआ। इक्को रखणहारा लाज, सिर आपणा हथ्थ दरसाईआ। जिस नूं कहि के आए सम्बल प्रगट होवे देस माझ, मजलस भगतां नाल रखाईआ। दो जहानां करे राज, हुक्म आपणा इक दृढ़ाईआ। उस दा सारा खोल्हो राज़, जो कलमे गया पढ़ाईआ। जिस पढ़ाई नमाज़, सजदयां विच सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, जुग चौकड़ी आपणी कार कमाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बरो वेखो आपणा आपणा कायदा, कानून विच जणाईआ। किस बिध नाल होए अलहिदा, प्रभू नूं दयो समझाईआ। की सब ने कीता वायदा, पड़दा दयो उठाईआ। की दीन दुनी दा तुसीं ल्या जाइज़ा, अंकड़यां विच दयो गिणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणी कार कमाईआ। तेई अवतार कहिण प्रभू साडी इक्को बात, बातन दईए जणाईआ। तेरे हुक्म अन्दर जो आए आख, अक्खरां वाली कर पढ़ाईआ। भावें प्यार समझो ते भावें समझो फ़साद,

एह तेरी बेपरवाहीआ। तेरा खेल अन्त आदि, जुग जुग वेख वखाईआ। असीं तैनूं रहे अराध, तुध बिन दूजा ना कोए ध्याईआ। जो बणाया सो तेरे हुक्म दा समाज, आपणी दस्सी ना कोए चतुराईआ। जो गाया तेरे नाम दा राग, रागणीआं विच समझाईआ। जो सुणाया तेरे शब्द दी अवाज़, अगम्मी अगम्म दृढ़ाईआ। जो वजाया तेरे प्रेम दा नाद, अनादी कीती शनवाईआ। जो वड्याआ बोध अगाध, बुद्धी तों परे कीती पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। पैग़म्बर कहिण तेरा नाम कलमा नाअरा लाया हक, हकीकत विच जणाईआ। तेरे वल्ल ल्या तक, तकवा इक्को इक रखाईआ। फैला के दोवें हथ्थ, मंग मंगी थांओं थाँईंआ। जे तूं आपणी दिती वथ, झोली दिती भराईआ। असीं गाया सच, सच आए सुणाईआ। जे तूं साडा भाण्डा भन्नया काया कच्च, लोकमात आए तजाईआ। तेरी जोत विच गए रच, तेरे नूर विच समाईआ। अन्तिम रख के आए इक्को आस, आसा दईए सुणाईआ। सदी चौधवीं तेरा नूर ज़हूर होवे प्रकाश, अमाम अमामा फेरा पाईआ। तेरी याद विच आपणे लेखे लाया स्वास, साह साह तेरी कीती वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। गुरु गुरदेव कहिण तेरे हुक्म दा कीता खेल, ख़लक ख़लक दृढ़ाईआ। तेरे शब्द दा कीता मेल, नाम नाम समझाईआ। जोत जगा बिन बाती तेल, गृह मन्दिर कीती रुशनाईआ। तैनूं दस्स के सज्जण सुहेल, पुरख अकाल आए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मार्ग देणा दरसाईआ। पुरख अकाल कहे पिछली छडो कहाणी, कहिण दी लोड़ रही ना राईआ। मैं वेखी चारे खाणी, चारे बाणी फोल फुलाईआ। वेखे तीर्थ तट अठ्ठ सठ्ठ पाणी, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती पड़दा लाहीआ। परा पसन्ती मद्धम बैखरी चार जुग दी वेखी बाणी, अक्खरां अक्खरां जोड़ जुड़ाईआ। मंज़ल तकी जिस्म ज़मीर रुहानी, नौ दवारे पन्ध मुकाईआ। नाम कलमा तक्कया तक्की ज़बान कलामी, शब्द शब्द वाली शनवाईआ। बाल बुढेपा तक्कया तक्की जगत जवानी, गोबिन्द खोज खुजाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो तुहाडी तक्की मेहरवानी, जो मेहर आए कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो पिछली छडो कथा, कहि के की जणाईआ। हुक्म सुणो यथार्थ यथा, यदी दयां दृढ़ाईआ। निज नेत्र वेखो अक्खां, नूर जोत रुशनाईआ। जो आदि जुगादी सखा, सज्जण मीत अख्वाईआ। जिस नूं सारे टेकदे मथ्था, मस्तक सीस झुकाईआ। साहिब पुरख समरथा, निरगुण नूर धुरदरगाहीआ। जुग चौकड़ी फिरे नठ्ठा, भज्जे वाहो दाहीआ। ओह सब नूं करके इक्ठा, हुक्म इक सुणाईआ। दीन मज़्हब दा छड दयो रट्टा, झगड़ा रहे ना राईआ। सब दा पिछला पूरा होया पटा, पटने वाला दए

५३०
२२

सफ़ाईआ। इक्को याद कर लओ टप्पा, सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो छड दयो पिछला ख्याल, अन्तष्करन रहिण ना पाईआ। बण जाउ धुर दे लाल, लालन वेख वखाईआ। मन्नो इक दलाल, विचोला नूर इलाहीआ। जो जल्वागर जलाल, अंध अंधेरा दए मिटाईआ। सारे कन्नां नूं हथ्थ लाओ ना कोए झटका खाओ हलाल, सूर गाँ वंड ना कोए वंडाईआ। सतिजुग साची चले चाल, चाल निराली आप समझाईआ। सब दा हल्ल होए सवाल, सवाली मंगो थांओं थाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो पिछला छड दयो झेड़ा, झगड़ा रहे ना राईआ। सतिजुग सच धर्म दा वसे खेड़ा, काया खिड़की दयो खुल्हाईआ। धरनी धरत धवल दा खुल्हा होवे वेहड़ा, दीन मज़्हब दी रहे ना कोए लड़ाईआ। नाता छुट जाए तेरा मेरा, तूं मेरा मैं तेरा सारे गाईआ। कलयुग कूड़ मिट जाए अंधेरा, सतिजुग नूर करे रुशनाईआ। इक्को रूप दिसे गुर चेरा, चेला गुर इक रूप दरसाईआ। सारे वड्डा कर लओ जेरा, ज़ेर ज़बर दा झगड़ा दयो मुकाईआ। सतिगुर शब्द सिंघ शेरा, भबक इक्को इक सुणाईआ। पिछला लेखा सब दा होवे ढहि ढेरा, धर्म दी धार इक वड्याईआ। इक दूजे दे आ जाउ नेड़ा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। आपणा मिल के सारे बन्न्हो बेड़ा, बेड़ी जगत ना कोए डुबाईआ। पुरख अकाला करे हक नबेड़ा, हक हक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण तेरा खेल अपारी, अपरम्पर बेपरवाहीआ। सारी सृष्टी दिसे दुख्यारी, दुःख दर्द ना कोए कटाईआ। कलयुग अन्तिम आई तेरी वारी, वारस हो के वेख वखाईआ। प्रगट कर जोत निरँकारी, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। एह आसा सब हमारी, हम साजण दईए जणाईआ। प्रगट हो कलि कल्की अवतारी, निहकलंक तेरी सरनाईआ। हउ सेवक तूं मालक पति पतिवन्ता हउ नारी, दर तेरे सीस झुकाईआ। साडी धार अजे कुँवारी, चार जुग ना किसे प्रनाईआ। ना मुच्छ दिसे ना दाढ़ी, ना मूंड कोए मुंडाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण असीं बणीए तेरी लाड़ी, लाड़ा इक्को नज़री आईआ। सुख वेखीए सतारां हाढ़ी, वदी सुदी ना वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच सच्ची आस रखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभ सब नूं लै प्रना, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। घर इक्को लै वसा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु दा झगड़ा दे मुका, इक्को नूर जोत रुशनाईआ। दीन मज़्हब दा हिस्सा ना कोए वखा, वंडन वंड ना कोए जणाईआ। तेरे अग्गे सीस दईए झुका, जगदीश तेरी सरनाईआ। साडा चार जुग दा पिछला वेख रुक्का, जो बिन अक्खरां दिता दृढ़ाईआ। अन्तिम सब दा पैंडा

मुका, अग्गे होर ना कोए वधाईआ। असीं चाहुंदे साडा मालक तूं इक अबिनाशी अचुता, प्रभ अबिनाशी अख्वाईआ। साडी सब दी बणा दे सुहञ्जणी रुता, रुत आपणे नाल महकाईआ। सतारां हाढ़ साडा अन्तर निरन्तर कर दे सुच्चा, संजम आपणा इक जणाईआ। भेव रहे कोए ना लुका, ओहला अन्दरों देणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा फेरा पाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण आपणी नार बणा लै जल्दी, वक्त वक्त विच्चों बदलाईआ। प्रभू कला मेट दे कलयुग कल दी, कलकाती दे खपाईआ। धार मेट दे काम क्रोध दल दी, दलिद्रीआं डेरा ढाहीआ। खेल मुका दे कपट छल दी, अछल छलधारी हो सहाईआ। बिन तेरी किरपा दर कोए ना मल्लदी, घर सच ना कोए सुहाईआ। किसे नूं ख़बर नहीं घड़ी पल दी, की पलकां दे पिच्छे बहि के करे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला आप कराईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण करदे वक्त सुहञ्जणा, सोभावन्त श्री भगवान। तूं मालक आदि निरँजणा, जोती जाता नौजवान। दाता दानी दर्द दुःख भय भञ्जणा, पतिपरमेश्वर नूर महान। सब दे नेत्र पा दे आपणे नाम दा अंजणा, अवतार पैग़म्बर गुर मंगदे दान। चरण धूढ़ चाढ़ दे रंगणा, मिले खुशी ज़िमीं असमान। इक्को वार प्रभू तों ही मंगणा, दूजा अवर ना कोए निशान। सदी चौधवीं मूल नहीं संगणा, बोलीए बिना ज़बान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किरपा कर धुर दे काहन। धुर दे काहन किरपा करदे, गुर अगतार पैग़म्बर कहिंदे आपणा इक्को सब नूं वर देहु, झगड़े मुक जाण चढ़दे लहिंदे। शब्द स्वामी धुर दा दर दे, दीन मज़्हब रहिण ना खहिंदे। सचखण्ड दवारा आपणा गढ़ दे, मन्दिर मसीत शिवदुआले जुग जुग रहिंदे ढहिंदे। जोती धार आपणा लड़ दे, इक्ठे हो के सच दवार तेरे बहिंदे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे चरणी पैंदे। पुरख अकाल कहे सारे रहो त्यार, त्रैगुण तों बाहर जणाईआ। सतारां हाढ़ करो इंतज़ार, अग्गे अवर ना कोए वधाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सब दा लहिणा देणा दए उतार, मकरूज कर्ज़ ना कोए रखाईआ। तुसीं जोबनवन्ते जोबन विच करना हार श्रृंगार, धर्म दा सगन मनाईआ। उच्ची कूक के कहिणा इक्को वार, तूं मालक धुरदरगाहीआ। मैं पावां सब दी सार, सार शब्द नाल समझाईआ। वखावां इक दवार, जिस दर मिले वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बरों आपे कन्त आपे भतार, पीत पीतम्बर आप सुहाईआ। आपे विचोला बण संसार, तुहाडा मेला लवां मिलाईआ। तुसां सब ने आउणा भगत दवार, दवारा इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाईआ। हाढ़ सतारां सब ने आउणा नाल चाअ, चाओ घनेरा इक जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मिलाउणे विच्चों राह, रहिबर रिहा दृढ़ाईआ। अन्त बणाउणे जगत

गवाह, भगवन भगत भगत वखाईआ। एह आदि तों विष्न ब्रह्मा शिव तुहाडा सुधाया साह, थित घड़ी पल वंड वंडाईआ। चारे वेदां विच लेखा लिख ना सक्या राअ, ब्रह्मा ब्रह्म ना कोए जणाईआ। सिर्फ़ शब्द अगम्मी दिता सुणा, लिखण दी लोड़ रहे ना राईआ। जिस वेले नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग गए विहा, आपणा पन्ध मुकाईआ। उस वेले प्रगट होवे बेपरवाह, हरि करता धुरदरगाहीआ। तुहाडा झगड़ा दए मुका, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। सच दवार सब नूं लए प्रना, पतिपरमेश्वर आपणा घर वखाईआ। भगत सुहेले नाल रला, इक्को दर दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा पड़दा लाहीआ। गुर अवतार पैग़म्बरो शंकर मारे आवाज़, शिव रिहा सुणाईआ। मेरी भोले दी खुल्ही जाग, नाथ रिहा दृढ़ाईआ। ब्रह्मा आवे विच समाज, समग्री हथ्थ उठाईआ। विष्नूं वेखणा एह काज, भज्जणा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सच संदेश सुणाईआ। शंकर कहे मेरे हथ्थ होणी त्रिशूल, पर्दा रहे ना राईआ। ब्रह्मा कहे मैं हुक्म दस्सणा माकूल, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। विष्नूं कहे मैं विश्व दा कराउणा इक असूल, नियम नियम विच्चों बदलाईआ। पुरख अकाल कहे मैं कदे ना जावां भूल, सब दा लेखा झोली पाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु कहिण साडा इक कन्त कन्तूहल, दूजा नजर कोए ना आईआ। सतिजुग कहे सब ने प्रभ दे चरणां दी लाउणी धूल, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। हाढ़ सतारां जिस वेले भगतां दी भगतां नाल लड़ाई होवे तेई बीबीआं बरसाउणे प्रभ दे उतों फूल, बरखा इक लगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां सच पंघूड़ा लैणा झूल, हुलारा इक्को नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच रंग आप वखाईआ। फूल कहिण साडी बिखरे पत्ती पत्ती, पतिपरमेश्वर सेव कमाईआ। गुरमुखो सब नूं नाम मिलणा अगम्मी रती, जिस दा वज़न ना कोए जणाईआ। उस वेले सब ने आपणा हथ्थ सज्जा रखणा मस्तक मथ्थी, झगड़े दे पिच्छों खुशी मनाईआ। फिर जोत अकालण फिरे नट्ठी, भज्जे वाहो दाहीआ। हरिसंगत उच्ची अवाज़ लगाउणी इक्ट्ठी, सच जैकारा देणा सुणाईआ। पंजां प्यारयां मुहम्मद दी गलों लाह के अट्ठी, असमान वल्ल देणी वखाईआ। तेई बीबीआं मथ्थे तों चुप वाली लाह के पट्टी, चरणां हेठां लैणी दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। करनी कहे मैं वेखणा करनी करता, करता पुरख ध्यान लगाईआ। जेहड़ा आदि अन्त नहीं मरता, मर जीवत ना रूप वटाईआ। जो निरगुण हो के परता, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं पूरीआं करे शर्तां, भविक्ख्त वेखे थांउँ थाँईंआ। बेनन्तीआं सुणे अर्ज़ां, ख़ाहिशां खोज खुजाईआ। सब दीआं पुट्ठीआं करे नरदां, नर नरायण बेपरवाहीआ। औरतां रूप बणा के मर्दां,

मर्द मर्दाना खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच वर, सच करनी कार कमाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण जिस वेले साडा पती सानूं प्रणावे, हरि करता दया कमाईआ। हरिसंगत तूं मेरा मैं तेरा ढोला गावे, नौ वार सिफ्त सालाहीआ। धर्म धार दी गोली नौ चक्र प्रभ दे चार कुण्ट लगावे, भज्जे वाहो दाहीआ। विष्नूं वेख वेख बिगसावे, ख़ुशीआं राग अलाईआ। लच्छमी कपड़े रंग रंगावे, लाल लाल चतुराईआ। सच स्वामी खेल खिलावे, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। सब दे पूरे करे दाअवे, दाअवेदार वड वड्याईआ। चार गुरमुख पहरेदार होण शब्द सिंघासण चार पावे, चारों कुण्ट सोभा पाईआ। मुख स्वाह नाल भरे होण बणे होण बावे, बावा आदम सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणा खेल खिलाईआ। खेल कहे मैं प्रभ दा खेल खिलाउणा, ख़बर किसे ना आईआ। सतारां हाढ़ दे बारां वजे वक्त सुहाउणा, सोहणा रंग रंगाईआ। पंजां प्यारयां चरण कँवलां उत्ते सीस झुकाउणा, नाल खड़ग नोक छुहाईआ। पंजां दरबारीआं धुर दा ढोला गाणा, गा के देणा सुणाईआ। शिकारी ने आपणा कुत्ता फड़ के भज्ज के अग्गे आउणा, पटा गल विच रखाईआ। पंजां लिखारीआं उठ के लिख वखाणां, बैठा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणा खेल कराईआ। खेल कहे मैं होणा विच जग, जगत दयां वखाईआ।

भगत सुहेले वेखां उपर शाह रग, नौ दवारे डेरा ढाहीआ। सन्त सुहेले सद, गुरमुख जोड़ जुड़ाईआ। गुरसिक्खां मिलां अग्गे वध, वायदा पिछला पूर कराईआ। सब ने बणना विश्व यद, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। गुरमुख रहिओ कोए ना कग, हँस लैणे प्रगटाईआ। त्रैगुण पोह ना सके अग्ग, अमृत मेघ देणा बरसाईआ। सब ने ताड़ी वजाउणी गज्ज, जैकारा देणा लगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां इक्को करना हज्ज, हज़ूर इक मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर सारे खोलू़ण अक्ख, बिन नैण नैण उठाईआ। प्रभू नूर प्रतख, जोत जोत रुशनाईआ। रहिण ना देवे वक्ख, सब नूं लए प्रनाईआ। जिस दा गाया जस, अन्त दए वड्याईआ। सच दवारे लए रख, दरगाह आप सुहाईआ। नाम दस्स अलख, अलखणा आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव चुकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण सब दी इक्को होणी बोली, अनबोलत राग सुणाईआ। सब दी इक्को होणी चोली, बिन तत्तां वेख वखाईआ। सब दी इक्को होणी डोली, चारे जुग कहार उठाईआ। सब दी इक्को सूरत होणी मोहणी, मोहण माधव वेख वखाईआ। सब दी इक्को होवे रोणी, बिरहों विछोड़े विच कुरलाईआ। सब दी इक्को होवे सौणी, पतिपरमेश्वर सेज हंढाईआ। सब दी इक्को आसा होवे पराहुणी, दूसर घर ना कोए वखाईआ। जोती जोत

५३४
२२

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी धार दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडी आवे सुहाग रात, भिन्नड़ी रैण वड्याईआ। इक्को होवे ज़ात, इक्को विच समाईआ। इक्को होवे गाथ, इक्को हक पढ़ाईआ। इक्को होवे जमात, इक्को रंग रंगाईआ। इक्को जोड़े नात, इक्को घर वसाईआ। इक्को देवे दात, देवणहार इक अख्वाईआ। इक्को पुछे वात, इक्को होवे सहाईआ। इक्को पति लए राख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणा घर वसाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण घर वेखणा पुरख अबिनाशी, गृह मन्दिर इक सुहाईआ। जिथ्थे ना कोई मण्डल रासी, सूर्या चन्द ना कोई रुशनाईआ। ना कोई सँध्या ना कोई प्रभाती, घड़ी पल ना वंड वंडाईआ। ना कोई दिवस ना कोई राती, वार थित ना कोई रखाईआ। ना कोई पूजा ना कोई पाठी, इष्ट देव ना कोए मनाईआ। ना कोई मंज़ल ना कोई घाटी, ना कोई पाँधी पन्ध चुकाईआ। ना कोई सज्जण ना कोई साथी, मीत मुरार ना कोई अख्वाईआ। ना कोई तृष्ना ना कोई आसी, ना कोई वासना विच हल्काईआ। जां तक्कया इक्को नूर जोत प्रकाशी, दूजा नज़र कोए ना आईआ। फेर वेख्या घनकपुर दा वासी, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। फेर वेख्या जो करे बन्द खुलासी, खुलासा आपणा आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु कहिण असीं दईए इक संदेशा, शब्द शब्द विच सुणाईआ। साडा सतारां हाढ़ रोज़ दा लेखा, सतारां दिवस मंग मंगाईआ। नौ शब्द लिखे जाण हमेशा, विच्चों दिन ना कोए भुलाईआ। लिखारीआं रखणा चेता, चेतन सुरती आप समझाईआ। लिखण तों पहलां पीला कपड़ा रखणा हेठा, सवा सवा गज़ लम्बाई चौड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा मेल मिलाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण दो लिखारी लिखण ज़रूर, सतारां दिन चतुराईआ। असीं अगला भविख दस्सणा ज़रूर, जो पिच्छे चार जुग आए छुपाईआ। मुहम्मद कहे मैं भेव खोल्हणा केहड़ी बहिश्तीं मिले हूर, हुलीआ दयां जणाईआ। मूसा कहे मैं दस्सणा की जल्वा कोहतूर, नूर नूर रुशनाईआ। ईसा कहे मैं बोलणा क्यों फाँसी चढ़या हो मजबूर, सलीब गल लटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच पड़दा दए उठाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण असीं कर देणी मन्यादी, मन्याद मुकी थांउँ थाँईंआ। सतिगुर शब्द करनी बर्बादी, बदी दा झगड़ा देणा मुकाईआ। जो संदेशा दे के गई अजीत जुझार दी दादी, गुजरी गोबिन्द गोबिन्द विच सुणाईआ। कदी ते प्रभ दे भगतां दी वधेगी अबादी, लोकमात वज्जे वधाईआ। पुरख अकाल किहा जिस वेले निरगुण धार दी निरगुण धार नाल होवे शादी, शरअ तों बाहर शादिआने दयां वजाईआ। ओस वेले विष्न ब्रह्मा शिव बण के आउणगे लागी, सेवादार सेव कमाईआ। धुर

दे भगतां दी भगती होवे जागी, सुरती सुरत विच्चों उठाईआ। दीन दयाला होवे रागी, अनरागी राग सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण सतारां हाढ़ नूं पंज गुरमुख ओह चाहीदे जिन्हां ने आपणे सिर दी लाई होवे बाज़ी, बाजां वाला होए सहाईआ। जे सरीर छुट्ट जाए फेर वी होण राज़ी, चिन्ता ग़म अन्दर ना कोए रखाईआ। जे सारी सृष्टी हो जाए बाग़ी, ओह फिर वी प्रभ नूं सीस निवाईआ। ओहनां दा लिबास ते ज़िंदगी होवे सादी, प्रेम दी साधना विच आपणा आप छुपाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण जन भगतो भगत दवारे दओगे की सौगात, सच दयो सुणाईआ। माझा मालवा दुआबा जम्मू जेहड़े मिल के बणने बरात, बराती रूप वटाईआ। उन्हां नाल बचन करना अज्ज तों अधी रात, रुतड़ी नाल रखाईआ। याद रखो लिखारीओ पंजां कोल इक इक वक्खरी वक्खरी होवे कलम दवात, दूसर हिस्सा ना कोए पाईआ। कूड़ कल्पना कल होणी वफ़ात, वफ़ादार लैणे उठाईआ। माझा मालवा दुआबा जम्मू वक्ख वक्ख करयो प्रशाद, वंड वंड के देणा वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। अवतार पैग़म्बर कहिण गुर, सति सति सुणाईआ। जन भगतो तुहाडा भगती दा ओह अनन्द पुर, जो पुरी अनन्द वाला गया समझाईआ। कोटन कोटि इस सृष्टी विच्चों जाणे तुर, थिर रहिण कोए ना पाईआ। तुहाडा नाता जुड़या धुर, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। तुसीं उस प्रभू नाल गए जुड़, जिथ्थों सके ना कोए तुड़ाईआ। शौह दरया नहीं जाणा रुढ़, शौह नाल मिल के शौह विच समाईआ। इक्को ताल ते इक्को सुर, सुरत शब्द विच रखाईआ। सच पुछो तुहाडे पिच्छे आया मुड़, मुड़ के फेरा पाईआ। ओह वड़ गया सम्बल दी विच कुड़, कूड़ कुड़यारां नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म रिहा वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बण के आउणा लागी, सेवादार अख्वाईआ। तुहाडी धार होवे सादी, सच नाल मिलाईआ। याद रखयो कोए ना होवे बाग़ी, अन्तर सके ना कोए बदलाईआ। तुहाथों लेखा मंगणा जुआबी, जुआबतल्बी लैणी कराईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां नूं पुछणा क्यों तुहाडे हुंदयां तुहाडे सिख मुरीद करन ख़राबी, लोकमात विच कुरलाईआ। अणगिणत वध गई आबादी, आबाद होया नज़र कोए ना आईआ। क्यों सब दा सांझा दिसे कोए ना वागी, वागां मोड़ ना कोए घुमाईआ। किसे ने इश्क कमाया हकीकी किसे कमाया मिजाजी, सब दी तन दे नाल कुड़माईआ। आत्म परमात्म निरगुण धार ना किसे अराधी, राधा कृष्न दए दुहाईआ। जो आया सो आया बण के पाँधी, सधरां विच आपणा झट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अगला पर्दा दए खुल्हाईआ। प्रभू अगला खोल्ह दे पर्दा, पर्दे विच्चों उठाईआ। क्यों नहीं तेरी मंज़ल कोए चढ़दा, चढ़ के दरस कोए ना पाईआ। जगत जहान अक्खरां

वाली सारी विद्या पढ़दा, सिफ्तां विच सालाहीआ। क्यों नहीं तेरा बणया बरदा, बन्दीख़ाना दए तुड़ाईआ। क्यों नहीं दरस करदा तेरे घर दा, गृह मन्दिर सीस निवाईआ। पुरख अकाल किहा मैं सब नूं आदि अन्त आया छलदा, अछल छल आपणा खेल खिलाईआ। कुझ लेखा याद जो वायदा कीता बल दा, बावन अक्ख मिलाईआ। उस दा लहिणा कलयुग अन्तिम फल दा, फलीभूत दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल कराईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू दस्स आपणा तिवहार, विवहार दे समझाईआ। केहड़ा पुरख ते केहड़ी नार, केहड़ा नूर लवे प्रनाईआ। केहड़ा मन्दिर केहड़ा मुनार, किस महल्ल लए टिकाईआ। केहड़ा दर केहड़ा दरबार, किस गृह वज्जे वधाईआ। सच स्वामी किरपा कर आप निरँकार, निरवैर देणा सुणाईआ। पुरख अकाल किहा नौ सौ चुरान्वे चौकड़ी जुग पिच्छों आई मेरी वार, वारता दयां सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर साहिबानो मेरयां भगतां तों जाओ बलिहार, बलिहारी बलिहार कहि के आपणी ख़ुशी बणाईआ। जिन्हां नूं चार जुग दा विछड़या मिल्या यार, यराना इक नाल लगाईआ। इक दी बण गए सारे नार, दूजा घर ना कोए वसाईआ। सारयां ने बोल्यां इक जैकार, आपणे कलमे देणे भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, पूरब लहिणा देणा चुकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण जन भगतो प्रभू तुहाडे गाउंदा गीत, गोबिन्द नाल मिलाईआ। असीं मन्दिर छड्डे छड्डी मसीत, काअब्यां डेरा ढाहीआ। हुक्म मन्नया त्रैगुण अतीत, त्रैभवन दिता सुणाईआ। जो तुहानूं करे बख्शीश, रहमत नाम नाम वरताईआ। उहदा आदि तों इक्को कलमा इक्को हदीस, इक्को दए जणाईआ। सब दा इक्को दर ते झुके सीस, सजदा इक्को इक वखाईआ। तुहाडी साडी सांझी हो गई रीत, रीत प्रभ ने दिती बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला लए मिलाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण असां कहिणा अन्त अख़ीरी, आख़र दईए जणाईआ। जन भगतो सच दवार इक्को रूप ग़रीबी अमीरी, जिथ्थे अमरापद मिले वड्याईआ। तुहाडी सब तों उत्तम फ़कीरी, जो फ़िकरा सोहँ ढोला रहे गाईआ। इक्को गृह पातशाह वज़ीरी, आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। झगड़ा रहे ना शाह हकीरी, हकीकत दा पड़दा दिता उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच विच समाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण साडी पूरब आशा, आशा विच रखाईआ। खेल करे पुरख अबिनाशा, अबिनाशी करता धुरदरगाहीआ। सम्बल करे वासा, सच दवार इक निरगुण नूर होवे प्रकाशा, जोती जाता डगमगाईआ। जन भगतां दए भरवासा, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। साचे मण्डल पावे रासा, गोपी काहन आपणा खेल वखाईआ। लेखा जाणे पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतर

फोल फुलाईआ। कलयुग उलटाए विच हासा, हस्ती सब दी दए मिटाईआ। सतिजुग बणा के दासी दासा, सेवक सेवा इक दरसाईआ। पूरा कर के मुख वाका, गुर अवतार पैग़म्बरां भविक्ख्त दए भुगताईआ। दीन दुनी दा सांझा कर के इख़लाका, इक इकल्ला रंग रंगाईआ। अन्दर वड़ के खोल्ले ताका, बजर कपाटी पड़दा दए उठाईआ। धुन शब्द सुणाए नादा, नादी नाद वजाईआ। निरगुण नूर करे प्रकाशा, निरगुण नूर डगमगाईआ। सच दवारे कर के वासा, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण वेख्या अस्थान, थनंतर मिले वड्याईआ। जिथ्थे मेला भगत भगवान, भगवन रंग रंगाईआ। सुरती शब्द गोपी काहन, सीता राम सुरत शब्द विच समाईआ। सच दा मिले दान, दाता दानी झोली दए भराईआ। जन भगतो सुण लओ ला के कान, पड़दा अन्दरों देणा उठाईआ। सूरबीर मर्द बणो जवान, आपणी आप लओ अंगड़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जगत वेखो शैतान, शरअ करे लड़ाईआ। बिना प्रभ दी किरपा तों साबत रहिणा नहीं किसे दा ईमान, अमल छड्डे जगत लोकाईआ। प्रभ दा इक्को हुक्म लैणा मान, मन मनसा देणी गंवाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु जिस दा दे के गए फ़रमान, फ़ुरन्यां विच सुणाईआ। सो प्रगट होया वाली दो जहान, निरगुण सरगुण आपणी खेल वखाईआ। ओस ने भगतां दी कीती पहचान, बेपहचान मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भाग हिस्सा सब दा झोली पाईआ।

५३८
२२

✪ २ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ प्यारी, हज़ारा सिँघ दी लड़की दी शादी समें हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

परवरदिगार कहे मेरा खेल निराला, ख़लक समझ कोए ना आईआ। नित नवित अवल्लड़ी चाला, जुग चौकड़ी वेस वटाईआ। सिफ्ती दस्स के नाम सुखाला, जगत मार्ग इक उपजाईआ। धुर दे नाम दी दे के माला, मन मनका जगत भवाईआ। कलयुग अन्त दृढ़ा सच्ची धर्मसाला, सचखण्ड इक दरसाईआ। जिथ्थे भगत भगवान रहे ख़ुशहाला, ख़ुशी ख़ुशी नाल मिलाईआ। शब्दी सुत दुलारा होवे लाला, लालन इक्को सोभा पाईआ। जिस दा दीपक होवे बाला, निरगुण नूर डगमगाईआ। उस दा दे के अन्त अहिवाला, हालत अगली इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। परवरदिगार कहे मैनूं सारे कहिंदे आमीन, अमन विच सीस निवाईआ। मेरी सिख्या लए तालीम, हरफ़

हरूफ़ जगत पढ़ाईआ। नूरी अलाह कर तस्लीम, तसबी माला सिफ्त सालाहीआ। लेखा वेखण बाहर नर मदीन, नर नरायण नज़री आईआ। मालक इक कदीम, कुदरत दा करता डगमगाईआ। पैग़म्बरां दे के आया यकीन, प्रगट होए अमाम अमामा सहिज सुखदाईआ। जिस नूं सारे करन तस्लीम, सिर सके ना कोए उठाईआ। करता बण रहीम, रहमत आप कमाईआ। खेल खेले उत्ते ज़मीन, असमानां फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा पड़दा लाहीआ। परवरदिगार कहे मेरा लेखा अगम्म अमाम, अमल नज़र कोए ना आईआ। मैनूं झुक झुक सजदे करन सलाम, निउँ निउँ लागण पाईंआ। कलमा पढ़दे नाम, सिफ्तां विच सालाहीआ। जुग चौकड़ी बीते विच जहान, आपणा पन्ध मुकाईआ। सदी चौधवीं होई शरअ शैतान, शरीअत विच कुरलाईआ। धुर संदेशा सुणे ना कोए कान, अन्तर अगम्म ना कोए पढ़ाईआ। चारों कुण्ट दिसे हराम, हैरत विच दुहाईआ। नव नौ चार दिसे शाम, शमां दीप ना कोए जलाईआ। पैग़म्बर होए बदनाम, बदी दा डेरा कोए ना ढाहीआ। सब दा वक्त पहुँचया आण, सदी चौधवीं अक्ख उठाईआ। शरअ दे ज़ंजीर कट रहे ना कोए गुलाम, पैग़म्बर देण दुहाईआ। तेरा तेरे कोल होवे इंतज़ाम, बन्दोबस्त तेरे हथ्थ फड़ाईआ। असीं बाले नढ्ढे अंञाण, दो जहान सार ना पाईआ। गा के सिफ्तां वाले गाण, आपणा झट्ट लँघाईआ। हुण निउँ निउँ करीए सलाम, सजदा सीस झुकाईआ। साडा झगड़ा मेट तमाम, तमां दा लेखा दे मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। परवरदिगार पैग़म्बर तेरे मतीह, मुतला कलमा नाम कराईआ। रो के कहे मसीह, मसला तेरे हथ्थ फड़ाईआ। तेरा खेल वसीह, समझे कोए ना राईआ। तूं आदि अन्त दा तबीअ, तबीअत सब दी दे बदलाईआ। दो जहान तेरी फसल खरीफ रबी, रबीउल तेरे हथ्थ वड्याईआ। सजदे करदे सारे नबी, रसूल सीस झुकाईआ। हुक्म सुणा दे यदी, यक इक दृढ़ाईआ। वेख चौधवीं सदी, सदमे विच दुहाईआ। मुल्ला शेख़ मुसायक करन बदी, बदन दा झगड़ा रहे पाईआ। तेरे नाम दी लैंदे वढ्ढी, कलमे हट्टो हट्ट विकाईआ। अग्गे रहिण ना देणीं किसे दी गद्दी, गदागर दे बणाईआ तेरा हुक्म वहिण जिस नूं कहिंदे नूह नदी, जगत अक्खरां सार ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म देणा सुणाईआ। पैग़म्बर कहिण साडे मौला मौलान, मुश्किल हल्ल कराईआ। कर दे इक ऐलान, ऐलानीआ दे जणाईआ। तेरे कदमां रखी अञ्जील कुरान, तुराइत तुरत अग्गे टिकाईआ। जगत छड्डया ईमान, भरोसा तेरे नाल रखाईआ। तेरा नाम सिफ्त इस्लाम, साहिब सुल्तान तेरी सरनाईआ। तेरी इक्को होवे कलाम, कलमा गाईए चाँईं चाँईंआ। शरअ दा रहे ना कोए गुलाम, ग़ुरबत अन्दरों देणी कढ्ढाईआ। तूं ख़ावंद इक अमाम, ख़समाना बेपरवाहीआ। तेरा तारा चन्द निशान,

तेरी झोली विच टिकाईआ। तूं सब नूं कर परवान, मेहर नज़र उठाईआ। सब कुछ कीता दान, तेरे कदमां विच रखाईआ। साडा नूर ज़हूर तेरी धुर दी बेगम नौजवान, नूर नुराने अंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल वेख ज़िमी असमान, इस्म आपणा इक दरसाईआ। पैग़म्बर कहिण तेरे कदमां होवे कदमबोसी, सजदा सीस झुकाईआ। तेरा कीता सब किछ होसी, हसन हुसैन रो के गए सुणाईआ। शाह अली बैठ के गोदी, कीती इक दुआईआ। जिस वेले धार बदल गई वेदी सोढी, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। उस वेले फल रहिणा नहीं उम्मत दी डोडी, डूंगर आपणी कार कमाईआ। झगड़ा मुकाउणा जञ्ञू बोदी, बुद्धी तों परे बोध दए समझाईआ। मज़्हब दा रहे कोए ना रोगी, रघुपति इक्को नज़री आईआ। भेस दा दिसे कोए ना जोगी, जुगत इक्को इक समझाईआ। माया दा रहे कोए ना लोभी, ममता साध ना कोए चतुराईआ। प्रभ करे खेल अनोखी, निरवैर वेस वटाईआ। पढ़नी पए कोए ना पोथी, पुस्तक झगड़ा दे चुकाईआ। इक्को नाम सुणा सलोकी, सोहला धुर दा इक उपजाईआ। चरणां हेठ दबा के त्रैलोकी, त्रैगुण दा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। पैग़म्बर कहिण परवरदिगार साडा बणना ख़सम, मालक धुरदरगाहीआ। मकबरयां विच्चों जिस लेखे लाउणी भस्म, भस्मड़ आपणा रंग रंगाईआ। जिस दी खा के आए कसम, किस्म सब दी वेख वखाईआ। झगड़ा रहिण नहीं देणा जिस्म, जिस्म ज़मीर दए बदलाईआ। आपणा इक्को दस्से इस्म, इस्म आज़म नूर इलाहीआ। सूफ़ी ओसे दा रूप दिसण, चारों कुण्ट सोभा पाईआ। साडी आसा पूरी करे इच्छन, निरइच्छत दया कमाईआ। धुर कलमे दी पा के भिच्छन, भिक्खक झोली दे भराईआ। उस दा लेखा भगत लिखारी लिखण, लिख लिख लेख बणाईआ। जिस वेले कलयुग आया मिटण, मिट्टी घट्टे विच उडाईआ। अवतार गुरु सब आपणा पिछला लेखा सिट्टण, अग्गे कंध ना कोई उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सब दा लेखा दस्स दे मिथन, थिर इक्को इक आप अख्वाईआ।

✪ २ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल रात नूं ✪

सतिगुर शब्द होए कलधारी, कलि कल्की कार कमाईआ। भूत भविक्ख्त पावे सारी, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। जागरत जोत करे उज्यारी, अंध अंधेर मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा खेल वखाईआ। सतिगुर शब्द शब्द बहुरंगा, अनरंगत रंग वखाईआ। धुर दी धार बण सूरा सरबंगा, सच आपणा डंक वजाईआ। दीन

दयाल हो बख्शंदा, बख्शिश रहमत इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच अनन्दा, अनन्द आपणा इक प्रगटाईआ। सतिगुर शब्द शब्द बहुभांती, भरम विच ना आईआ। उत्तम श्रेष्ट निरवैर ज़ाती, निराकार दरसाईआ। आदि अन्त दा बण साथी, नित नवित वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा राह चलाईआ। सतिगुर शब्द शब्द शब्द गुर साचा, सच देवे वड्याईआ। लहिणा चुका के जीऊ पिण्ड काचा, कंचन गढ़ इक सुहाईआ। जिस अवतार पैग़म्बर गुरु वेख्या तमाशा, निरगुण सरगुण हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच आपणा हुक्म सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा भेव निराला, गोझ समझ किसे ना आईआ। जुग चौकड़ी अवल्लड़ी चाला, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। नाम मार्ग जगत सुखाला, सिख्या इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची बैठ सच्ची धर्मसाला, धर्म दवार इक वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा खेल सदा विवहारी, विवहार विच वड्याईआ। मेरा मेल नूर निरँकारी, जोत जोत संग रखाईआ। मेरी कार सदा जुग चारी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच नाम इक समझाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं साचा राम रामा, राम मेरी चतुराईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं साचा धुर दा कान्हा, काहन काहन रुशनाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं धुर दा इक अमामा, अमलां तों बाहर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वजाउणहारा इक दमामा, दो जहानां आप सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा डौरु डंका, जगह जगह शनवाईआ। सुहावे इक बंका, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। उठावे राउ रंका, शाह हकीरां आप जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेव खुल्हाए धुर दे सन्ता, सति आपणा आप जणाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं शहिनशाह सिक्दारी, पातशाह अख्वाईआ। लख चुरासी मेरी प्यारी, पीआ प्रीतम हो के वेख वखाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु मेरी नारी, नर नरायण हो के आप प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर फ़रमान देवे सरकारी, सार शब्द शब्द शनवाईआ।

३ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ गुरमुख सिंघ दे गृह भलाई पुर डोगरां

सतिगुर शब्द कहे मैं वेख्या जगत जहान, गुर अवतार पैग़म्बरो खोज खुजाईआ। सति धर्म ना मिले निशान, सच विच ना कोए समाईआ। आत्म दा रिहा ना कोए ज्ञान, परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं वेखी दीन दुनी दी धार, गुर अवतार पैग़म्बरो खोज खुजाईआ। साचा दिसे ना कोए मीत मुरार, मित्र प्यारा संग ना कोए रखाईआ। पति पतिवन्त दिसे ना कोए नार, नर नरायण ना कोए प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं दीन मज़्ब दी धार तकी, तकवा हथ्थ ना कोए रखाईआ। सृष्टी दृष्टी हो गई शकी, शिकवा अन्दरों ना कोए गंवाईआ। प्रभ मिले किसे ना हकी, हकीकत रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब सुल्तान धुर समरथी, समरथ आपणा हुक्म वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं वेख्या जगत खेल, गुर अवतार पैग़म्बरो खोज खुजाईआ। आत्म परमात्म करे कोए ना मेल, मिलणी जगदीश ना कोए कराईआ। धर्म दा रिहा ना कोए सुहेल, सज्जण मीत ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं वेखी जगत जगत दी कार, करनी करता हो के ध्यान लगाईआ। साचा सोहे ना कोए दवार, साढे तिन्न हथ्थ ना कोए चतुराईआ। चारों कुण्ट धूंआँधार, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं वेख्या दीन दुनी दा कम्म, गुर अवतार पैग़म्बरो वेख वखाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर ग़म, ग़मख़ार यार ना कोए मिलाईआ। झगड़ा वेख के काया माटी चम्म, चार कुण्ट कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति दा पर्दा आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं तक्कया दीन दुनी दा राह, गुर अवतार पैग़म्बर पड़दा आप उठाईआ। साचा दिसे ना कोए मलाह, चार वरन कंध ना कोए उठाईआ। सीस जगदीश सके ना कोए झुका, चरण धूढ़ ख़ाक ना कोए रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं तकी दीन मज़्ब वाली करनी, अन्दर वड़ के फोल फुलाईआ। झगड़ा मेटे कोए ना वरनी बरनी, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक रंग ना कोए रंगाईआ। नेत्र लोचन नैण अक्ख खोले ना हरनी फरनी, जोत नूर प्रभ दा दरस कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा पर्दा आप

उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं तके महल्ल मुनारे, गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ फोल फुलाईआ। सति धर्म दे वज्जण ना मूल नगारे, नौबत नाम ना कोए शनवाईआ। चारों कुण्ट धूंआँधारे, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन जन भगतां पाए कोए ना सारे, सरनगति विच सरन ना कोए रखाईआ।

✪ ४ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

सतिगुर शब्द कहे प्रभ करे खेल अपारा, अप वाए तेज पृथ्मी आकाश खोज खुजाईआ। निरगुण सरगुण पावे सारा, तन वजूद माटी ख़ाक फोल फुलाईआ। आत्म परमात्म वेखे वेखणहारा, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा घर इक सुहाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ पड़दा चुक्के ओहला, निरगुण निरवैर लए अंगड़ाईआ। धुर दा नाम दए अनमोला, अनमुलड़ी वस्त आप वरताईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्से ढोला, सोहँ शब्द इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ आदि करनी करता, करनहार अख्वाईआ। भेव खोल्ले साचे घर दा, दरगाह सच सच दरसाईआ। जिथ्थे नूर नरायण नर दा, बिन तेल बाती होए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ दा खेल काया अन्दर, बजर कपाटी गृह इक्को इक सुहाईआ। कर प्रकाश डूँघी कन्दर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। बजर कपाटी तोड़े जन्दर, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ दा खेल तन शरीर, काया माटी वज्जे वधाईआ। अमृत रस बख्शे नीर, निझर झिरना अगम्म झिराईआ। अन्तर बदल देवे ज़मीर, ज़ेर ज़बर दा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर मस्तक वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ दा खेल काया गढ़, बंक दवार इक सुहाईआ। जिस मन्दिर जाए चढ़, दर दवार सोभा पाईआ। हउमें तोड़ हँकारी गढ़, भेव अभेदा दए खुल्लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ दा खेल काया भीत, भीतर आप जणाईआ। साचा काअबा दस्स मसीत, मन्दिर साढे तिन्न हथ्थ वड्याईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के गीत, गोबिन्द शब्द नाम पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा मालक दया कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे काया मन्दिर अगम्म अस्थान, अबिनाशी करता सोभा पाईआ। तख्त निवासी नौजवान, नर निरँकारा वेख वखाईआ। जोती नूर जगे महान, दीपक अवर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे काया अन्दर खेल बहु भांत, भेव रहे ना राईआ। छोटे छोटे अन्तर प्रांत, हिस्से हिस्सयां विच वंडाईआ। निरगुण धार खेल साख्यात, सरगुण जगत विच दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच पर्दा दए उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे काया अन्दर गुरु चेला, सतिगुर शब्द शब्द जणाईआ। आत्म परमात्म होए धुर दा मेला, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। एथे ओथे बण के सज्जण सुहेला, दो जहानां सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां रंगे रंग नवेला, निरगुण आपणी दया कमाईआ।

✪ ५ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

५४४
२२

सतिगुर शब्द कहे विष्न खोल्ह अक्ख, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। भगवान रूप वेख प्रतख, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। जिस दी सदा बोलदे आए अलख, नाअरा अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो खेल रिहा खिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे विष्न वेख पिच्छे आपणी पलक, बिन नेत्र नैण उठाईआ। जोती धार तक झलक, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जिस ने सृष्टी दृष्टी देखणी ख़लक, ख़ालक ख़लक पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे विष्न वेख आपणे नैण, बिन नैण नैण दरसाईआ। मैं सच संदेशा आया कहिण, कहि के दयां सुणाईआ। अन्तिम सब दा चुकणा लहिणा देण, पूरब लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे ब्रह्मा वेख चार मुख ज्ञाता, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। ब्रह्म रूप ना किसे पछाता, पारब्रह्म प्रभ मिलण कोए ना पाईआ। साची देवे कोई ना दाता, धर्म दा दान ना कोए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे ब्रह्मा शब्द जणा चार मुख, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण आवाज़ सुणाईआ। संदेशा दे कवण दवार बैठा लुक, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। जिस दे कोल आदि जुगादि दा सुख, निरगुण

सरगुण आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गृह सच इक समझाईआ। सतिगुर शब्द कहे ब्रह्मा वेख ब्रह्म ज्ञान, विद्या विद्दत होई लोकाईआ। साचा धर्म दस्स निशान, निशाने कूड़े जगत गंवाईआ। सच दवार कर प्रधान, जिथ्थे पारब्रह्म ब्रह्म मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा संग रखाईआ। सतिगुर शब्द कहे उठ शंकर वेख रहे ना शंका, शहिनशाह शाह शाह जणाईआ। कवण सुहाए दवार बंका, बंक दवारी कवण अख्वाईआ। नाम वजाए धुर दा डंका, राउ रंकां दए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा मेल मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे शंकर वेख दीन दुनी दी बदी, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। क्यों झगड़ा प्या तन वजूद जगत गद्दी, गुरु गुरदेव गुर वेख वखाईआ। लेखा जाण धर्म दी सदी, सदी चौधवीं अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच मेला ल्ए मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे शंकर भोले नाथ, शम्भू ध्यान लगाईआ। बिन तेरे दिसे कोए ना साथ, सगला संग ना कोए वखाईआ। कलयुग अन्तिम मेटे कोए ना वाट, वटणा मले ना कोए लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे पुरख समराथ, स्वामी अन्तरजामी मेहरवानी कर के आपणी दया कमाईआ।

✪ ६ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल दरबार विच ✪

ब्रह्मा कहे तेरी शब्द धार सुरस्ती, सो पुरख निरँजण तेरी वड्याईआ। तेरा नूर अगम्मी हस्ती, हस्त कँवल तेरी बेपरवाहीआ। सच प्यार मुहब्बत दी मस्ती, मस्त मतवाला रूप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। ब्रह्मा कहे प्रभ सुरस्ती तेरा सति, सति विच वड्याईआ। तेरा खेल अगम्मी तत, तत समझ किसे ना आईआ। मेहरवान पुरख समरथ, साहिब सुल्तान तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दर मिले वड्याईआ। ब्रह्मा कहे प्रभ सुरस्ती सति दा संग, सति विच समाईआ। सच मुहब्बत अनोखा रंग, रंगत नज़र किसे ना आईआ। दीन दयाल साहिब बख्शंद, बख्शिश तेरी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर आपणा मेल मिलाईआ। शंकर कहे मेरे कमलापती, तेरी तेरे हथ्थ वड्याईआ। निरगुण सरगुण धार बख्श के पार्बती, पारब्रह्म ब्रह्म मेला ल्या मिलाईआ। जिस दा भेव ना जाणे

कोए रती, रत्न अमोलक वस्त आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब समर्थी, समरथ तेरे हथ्थ वड्याईआ। शंकर कहे पार्बती तेरी धार पर्बत चोटी, चटाण पथ्थर देण गवाहीआ। जिस दा प्रकाश अगम्मी जोती, जोत जोत विच्चों रुशनाईआ। जिस दी कल तेरी धार अगम्मा मोती, मति बुद्धी ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दर आप सुहाईआ। भोला नाथ कहे प्रभ पार्बती परा पसन्ती मद्धम बैखरी वेखी धार, शब्द नाद शनवाईआ। साचा खेल सच्ची सरकार, सच दिती माण वड्याईआ। घर सच कर प्यार, मेल मेलया सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सद आपणे गृह वसाईआ। विष्न कहे धुर दी लच्छमी अगम्मा लच्छण, शास्त्र सिमरत समझ कोए ना पाईआ। जिस दी अगम्म अथाह अक्खण, निज नेत्र लोचण नैण वेख वखाईआ। सच प्यार सति प्रदक्ख्ण, प्रतख मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साची आस रखाईआ। विष्नूं कहे प्रभ तेरा शब्द संदेश, संदेशा धुरदरगाहीआ। जो कहि के गया गोबिन्द दस दशमेश, दहि दिशा वेख वखाईआ। जिस वेले साहिब आवे प्रभ एक, एकँकार फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, विष्न कहे धर्म धार दी लच्छमी खुल्ल्हे होवण केस, केशव आपणा हुक्म वरताईआ। विष्न कहे लच्छमी नव गृह नव होण फूल, सीस सीस सुहाईआ। लाल वस्त्र होवण नाल असूल, असल असल विच्चों प्रगटाईआ। शंकर दी गड्डी होवे त्रिशूल, मुखी तिन्न तिन्न उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त दा कन्त कन्तूहल, कलि कल्की खेल खिलाईआ।

✪ ७ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल विच ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण विष्न ब्रह्मा शिव अग्गे बणे कदी नहीं लागी, लोकमात ना सगन मनाईआ। पुरख अकाल बणया नहीं कन्त सुहागी, जुग जुग अवतार पैग़म्बर गुर भेज के आपणा हुक्म वरताईआ। निरगुण धार खेल करे वड राजन राजी, शाह पातशाह शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण विष्न ब्रह्मा शिव आउणा इक दवार, सोहणा संग बणाईआ। लेखा दस्सणा सर्ब संसार, संसारी भण्डारी सँघारी पड़दा लाहीआ। की खेल खिलाउँदा रिहा पुरख अकाल, जुग चौकड़ी

आपणी कार भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण विष्न ब्रह्मा शिव सोहणी करनी कार, भज्जणा वाहो दाहीआ। हुक्म मन्नणा सच्ची सरकार, शाह पातशाह आप सुणाईआ। दर दवार कर निमस्कार, सीस जगदीश लैणा झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हुक्म सति सति सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण ब्रह्मा शिव विष्न, विश्व खेल खिलाईआ। चार जुग दा तुसां दस्सणा मिशन, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पड़दा लाहीआ। किस बिध प्रभ दे नाम जगत वणजारयां हथ्थ विकण, कीमत हट्टो हट्ट पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच आपणा हुक्म सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण की करोगे सेव, विष्न ब्रह्मा शिव देणा समझाईआ। की रस खाओगे मेव, अमृत की चखाईआ। की गुण गाओगे रसना जेहव, सिफ्तां विच सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच मेला लए मिलाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण की पिछली खेल रैहंदी, विष्न ब्रह्मा शिव की जणाईआ। की दिशा वेखो लहिंदी, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण फोल फुलाईआ। की लच्छमी हथ्थीं लावे मैहन्दी, पुट्ठे सिध्धे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण की दिवस सुहाउणा आउणा, हाढ़ सतारां थित वड्याईआ। की प्रभ ने खेल खिलाउणा, ख़ालक ख़लक आपणा हुक्म वरताईआ। की निरगुण धार सति सरूप प्रनाउणा, पतिपरमेश्वर आपणे अंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच खेल इक वखाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण की पुरख अकाला उठया, विष्न ब्रह्मा शिव लए अंगड़ाईआ। की साहिब सुल्ताना तुठ्ठया, पारब्रह्म प्रभ होए सहाईआ। की सत्त रंग दा गाना बन्न्या गुट्टया, पंज प्यारे गंढ पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण असीं खोल्हणा पड़दा, विष्न ब्रह्मा शिव दईए जणाईआ। तुसां खलोणा दक्खण लहिंदा चढ़दा, पहाड़ वंड ना कोए वंडाईआ। अमृत लैणा प्रभ चरण सरोवर सर दा, कलस इक इक भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, पड़दा लाहे आपणे दर दा, गृह मन्दिर वेख वखाईआ।

मूसा कहे मैं जल्वा तक्कया, तक्कया कोहनूर। खुद खुदा वेख्या समरथया, सुल्तान हाज़र हज़ूर। प्रकाश होया पिच्छे अक्खीआं, निरगुण दरस होया ज़रूर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दिता धुर दा वर, मेरी आसा आशा पूर। मूसा कहे जल्वा दिता नूर नुराना, आपणा आप दरसाईआ। दूसर रहे ना कोए बेगाना, इक्को मेला ल्या मिलाईआ। मेरे अन्तर नाद शब्द शब्द दा तराना, सोहँ राग दिता दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा पर्दा दिता उठाईआ। मूसा कहे मैं तक्कया इक अलाह, नूर ज़हूर ज़हूर रुशनाईआ। जिस पैग़ाम धुर दिता सुणा, सलल इक समझाईआ। तूं मेरा नूर चलणा मेरी विच रज़ा, दूसर आस ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला ल्या मिलाईआ। ईसा कहे मैनूं चाढ़ दिता सलीव, फाँसी गल लटकाईआ। मैं नज़ारा तक्कया अजीब, अजब दिता दरसाईआ। खुद खुदा वेख्या करीब, करीम करता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लेखा जाण शाह ग़रीब, गहर आपणा हुक्म वरताईआ। ईसा कहे मेरे गल विच पाया रस्सा, रास प्रभ ने हथ्थ उठाईआ। मैं अन्तर खिड़ खिड़ा के हस्सा, हस्ती तक्की बेपरवाहीआ। तन वजूद तेरा लेखे लाया अच्छा, अच्छी तरह दिता सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद आपणा रंग वखाईआ। ईसा कहे जिस वेले फाँसी मैं चढ़या, चढ़दी दिशा ध्यान लगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा कलमा पढ़या, सोहँ ढोला राग अलाईआ। सच दवार तक्कया घरया, दरगाह साची नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच प्रकाश अगम्मा करया, नूर जोत जोत रुशनाईआ। मुहम्मद कहे मेरा लेखा मुफ़ाद, मुफ़ास बेज़ीन ना ज़ोर जुवाईआ। नाम कलमा शब्द अहिलाद, तालीम ताज़ीम सोभा पाईआ। मेरे वजूद आई आवाज़, बांग सदा दिती सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दिता साचा वर, मैं अन्दरों गया जाग, जगत निंद्रा ना कोए रखाईआ। मुहम्मद किहा मेरा मिल्या मीत अहिबाब, मेहरवान नूर इलाहीआ। हक हकीकी बण अहिबाब, सच रबाब दिती वजाईआ। सजदा दस्सया आदाब, नमों सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दिता साचा वर, सच हुक्म इक सुणाईआ। मुहम्मद कहे मेरे अन्दर नूर अलाह, आलीशान दिती वड्याईआ। चौदां तबक बण मलाह, बेड़ा खेवट कंध उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा अल्ला हू अन्ना हू सोहँ शब्द दे सलाह, सहिज सहिज नाल दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण

५४८
२२

नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, निरगुण नूर इक अलाह, दोइम नज़र कोए ना आईआ।

✪ ६ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

मूसा कहे मेरा मुसाहिब, मिलज़ी आपणा हुक्म वरताईआ। जेहड़ा जगत निगाह ग़ायब, अक्ख वेखण कोए ना पाईआ। ओह खेल करे अजीब अजाइब, अजब आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर साचा इक लुभाईआ। मूसा कहे मेरा मलजेवित इक, इक इकल्ला सोभा पाईआ। जिस दा नूर कोहतूर रिहा दिस, बुलंदी सके ना कोए समझाईआ। ओह अन्तर हो के मेरे विच, विचला भेव दिता खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म समझाईआ। मूसा कहे मेरा मालक खुद खुदा, खुदी तक्बरी ना कोए रखाईआ। जिस दा इक्को हुक्म इक सदा, सदा वतन बेवतनां आप जणाईआ। जिस दी अगम्म अथाह अदा, अदाब इक्को इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच वर, सच संदेशा इक सुणाईआ। ईसा कहे मेरी असलीअत, असल दयां जणाईआ। परवरदिगार मेरी वलदीअत, जिस ने मरियम मवज़ू लई प्रनाईआ। दूसर जाणे ना कोए अहिमीअत, मसला हल ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। ईसा कहे मेरे साहिब दी हक रज़ा, हकीकत विच रखाईआ। सलीब दिती नहीं सजा, सच दी धार दिती प्रगटाईआ। प्यार मुहब्बत दा दे के मज़ा, मज़ाहमत कीती कूड़ लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा मार्ग इक दरसाईआ। ईसा कहे मेरा मेरे कीता एहसान, पुश्त पनाह दिती वड्याईआ। जगत खेल कर महान, पर्दा पर्दे विच्चों चुकाईआ। सिफ्ती सिफ्त बण बलवान, बलधारी खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग ल्या रंगाईआ। मुहम्मद कहे मेरे खुदा खेल कीआ मुनासब, करनहार वड्याईआ। आलीज़ाह बण के आसफ, असल असूल दिता दृढ़ाईआ। मुनसफ़ बण मुनासब, फ़ैसला हक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच आपणा खेल वखाईआ। मुहम्मद कहे मैं वेखी अगम्मी दीद, ज़ाहर ज़हूर दिती जणाईआ। मेरी मनसा पूरी कीती उम्मीद, तमन्ना ख़ाहिश आपणे नाल मिलाईआ। बरख़ुरदार बणा अज़ीज़, सिर साहिब हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती धार दे तमीज़, कलमा कलमे विच्चों समझाईआ। मुहम्मद किहा तक्कया जल्वा नूरी, नूरे नज़र वड्याईआ। पैग़ाम सुणया ज़रूरी, ज़र्रा ज़र्रा दिता समझाईआ। कलमे नाल करनी मशहूरी,

सिफ्तां वाली सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा नज़रे आए हज़ूरी, हज़ूर हज़रत धुर दा माहीआ।

✪ १० हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

अवतार कहिण प्रभ ने भेव रखया गुज्झा, भविश भविख समझ किसे ना आईआ। सानूं भेजदा रिहा उत्ते बसुधा, धरनी धरत धवल धौल प्रगटाईआ। पंज तत काया कराउँदा रिहा युद्धा, तरकश खण्डा शस्त्र हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अवतार कहिण प्रभ जुग चौकड़ी रखया पड़दा, भेव सक्या ना कोए खुल्हाईआ। मानव मानव रिहा लड़दा, सांतक सति ना कोए कराईआ। भेव पाया ना किसे धुर घर दा, जगत ख़ानाजंगी विच दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक वरताईआ। अवतार कहिण पारब्रह्म प्रभ रखया ओहला, आदि अन्त ना कोए जणाईआ। सानूं बख्श के काया चोला, पंज तत माटी ख़ाक दिती वड्याईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ शब्द जणा के ढोला, राग अगम्मी इक दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक समझाईआ। गुर कहिण प्रभ दी धार आदि अन्त अनोखी, अलखणा लख सके कोए ना राईआ। जिस अक्खरां वाली बणा के पोथी, पुस्तक सिख्या वाली दरसाईआ। ख़बर दे के लोक परलोकी, सलोक सोहला सच समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव छुपा के आपणी विच जोती, जोती जाता आपणा हुक्म वरताईआ। गुर कहिण पुरख अकाल खेल न्यारा, निराकार आप कराईआ। सानूं बख्श के सिफ्ती नाम सहारा, लोकमात दिती वड्याईआ। होर दस्स अगम्म जैकारा, तूं मेरा मैं तेरा राग दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाईआ। गुर कहिण प्रभू पाए कोई ना भेत, भेव कहिण कोए ना आईआ। बख्शिश विच्चों बख्शिश होया करके जाण हेत, नाम मुहब्बत प्यार शब्द वड्याईआ। दस्स के जाण नेतन नेत, नर नरायण अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। भगत कहिण प्रभ दा समझे कोए ना भाउ, जगत भगती विच फसाईआ। जुग चौकड़ी आप चले अवल्लड़े राहो, रस्ता दीन मज़्हब कलमे वाला बदलाईआ। हुक्म संदेशयां विच दस्से मेरा नाँ गाओ, कथनी कथ कथ दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म दवार इक वड्याईआ। भगत कहिण प्रभ दी जाणे कोए

ना रीत, जुग जुग आपणा खेल खिलाईआ। बैठा रहे त्रैगुण अतीत, त्रैभवन धनी दर साचे सोभा पाईआ। किसे हथ्थ ना आए मन्दिर मसीत, काअबे मठ रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वखाईआ। भगत कहिण प्रभ दा जाणे कोए ना लेख, कातब कलम ना कोए चतुराईआ। जुग चौकड़ी अवल्लड़ा वेस, नित नवित खेल खिलाईआ। वसणहारा सचखण्ड साचे देस, लोकमात निरगुण सरगुण कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि एका एक, एकँकार इक अख्वाईआ।

५५१

२२

११ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल

अवतार कहिण असीं रहे विच भय, हुक्म भँवरी विच भवाईआ। नाम संदेशा आए कहि, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। अन्तिम सानूं कर के लै, नाम निशान दिता मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच आपणा हुक्म वरताईआ। अवतार कहिण असीं रहे डरदे, सिर सक्या ना कोए उठाईआ। नाम निधान रहे पढ़दे, धुर फ़रमान अगम्म अथाहीआ। लोकमात भाणा रहे जरदे, सिर सक्या ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक वड वड्याईआ। अवतार कहिण असीं रहे विच भौ, भय विच सीस निवाईआ। जगत नाम दा दे के गउँ, लालच सिफ्तां विच समझाईआ। संदेसा दे के आपणा नाउँ, लोकमात दिता दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गुरु कहिण असीं सुणदे रहे संदेश, सँध्या प्रभाती वंड ना कोए वंडाईआ। लिखदे रहे लेख, सिफ्त सिफ्तां विच सालाहीआ। करदे रहे आदेस, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। गुरु कहिण असीं सुणदे रहे ख़बर, फ़रमाना अगम्म अथाहीआ। करदे रहे सबर, सति सन्तोख विच वड्याईआ। भाणा मन्नदे रहे जबर, सिर सक्या ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल इक कराईआ। गुरु कहिण असीं सुणदे रहे शब्दी बात, बातन ध्यान लगाईआ। खेल वेखदे रहे कमलापात, पतिपरमेश्वर की हुक्म वरताईआ। सिफ्त सालाही गाउँदे रहे गाथ, पढ़ पढ़ राग अल्लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। भगत कहिण भगवन तक्कया धुर

दा बाप, पिता पुरख अकाल अख्वाईआ। निरगुण निरगुण बण के सज्जण साक, नाता आत्मा परमात्मा जोड़ जुड़ाईआ। सोहँ शब्द दे के गाथ, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेले साहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा नाम इक दरसाईआ। भगत कहिण प्रभ भगती देवे जोग, जुगती आपणे हथ्थ रखाईआ। निरगुण धार कर संजोग, मेला मेले सहिज सुभाईआ। दर्शन दे अमोघ, अगम्म आपणा पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कटणहारा हउमे रोग, हँ ब्रह्म पड़दा दए चुकाईआ। भगत कहिण प्रभ आदी मीत मुरारा, अन्त संग रखाईआ। निरगुण नूर जोत उज्यारा, सरगुण तत दए वड्याईआ। कलि कल्की लए अवतारा, खेल खेले बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगवन हो के भगतन आपणा रंग चढ़ाईआ।

✪ १२ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

अवतार कहिण भगत दवार होणा क्याम, सतारां हाढ़ सोभा पाईआ। पैग़म्बर कहिण खेल करना अगम्म अमाम, अमल तों बाहर आपणा हुक्म वरताईआ। गुर कहिण झगड़ा मुकणा तमाम, धार पिछली दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण पंजां लिखारीआं इक इक ल्याउणा अशटाम, सवा रुपईआ वंड वंडाईआ। साडा लेखा लिख्या जाए बनाम, नाम नाम नाल मिलाईआ। भेव चुकणा ज़िमीं असमान, दो जहान खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार भुगताईआ। अवतार कहिण लेखा शब्द होवे तहरीरी, तारीख तवारीख दए गवाहीआ। पैग़म्बर कहिण झगड़ा मेटणा शाह हकीरी, फ़कीरी धुर दी इक समझाईआ। गुर कहिण शरअ दी दिसे ना कोए ज़ंजीरी, बन्धन बंध ना कोए बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अवतार कहिण असां लेख लिखाउणा सच्चा, सच सच सुणाईआ। पैग़म्बर कहिण हुक्म रहिण नहीं देणा कच्चा, कच्चा तन्द ना कोए वखाईआ। गुरु कहिण एका शब्द गुरदेव मन्नणा धुर दा बच्चा, दूजा अवर ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा आप उठाईआ। अवतार कहिण पहलों लिखारीआं देणा इकबाल, मुक्खों कहि के देण जणाईआ। असीं आदि अन्त दे तेरे बाल, जगत मात पित ना कोए वड्याईआ। आ वेख मुरीदां हाल, मुर्शद बेपरवाहीआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच आपणी धार प्रगटाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण फेर साडा लिखणा हिसाब, निस्बत समझ कोए ना पाईआ। पहला अक्खर पहला बाब, अंक हिस्सा पहला जोड़ जुड़ाईआ। जिस कारन नानक वजाई रबाब, रबीउल दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप वखाईआ। अवतार पैग़म्बर कहिण लेखा शब्द गुरु इतहास, इतमीनान नाल नाल दृढ़ाईआ। की खेल करे पुरख अबिनाश, अबिनाशी आपणी कल वरताईआ। प्रगट हो के प्रिथवी आकाश, गगन गगनंतर खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच गृह इक वखाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण साडा होया अन्त ब्यान, अग्गे हल्फ़ लैणा उठाईआ। पिछली शरअ छड्डी शैतान, शरीअत विच ना कोए लड़ाईआ। नाता तोड़ के दीन मज़ूब ईमान, अमन दा मालक इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान लेखा जाण जीव इन्सान, कूकर सवान वेखे थांओं थाँईंआ।

५५३
२२

✪ १३ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

राम कहे सुण कृष्न, कृष्न दयां दृढ़ाईआ। हज़रत ईसा मूसा मुंहमद मैनूं दिसण, जोती धार सोभा पाईआ। नानक गोबिन्द गुरदेव दस बणे सिक्खण, मित्र प्यारे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। राम कहे कृष्न की खेल करे करतार, हरि करता वड वड्याईआ। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद मैनूं दिसण नाल, वक्खरा नज़र कोए ना आईआ। नानक गोबिन्द रूप दस्स पुरख अकाल, अकल कलधारी विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वरताईआ। राम किहा कृष्न की करे भगवन्त, भगवन खेल खिलाईआ। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद इक्को दिसे संगत, सगला संग बणाईआ। नानक गोबिन्द धार दिसे बाहर जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी वड्याईआ। राम कहे कृष्न जुग चौकड़ी बीते, बातन पड़दा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। राम कहे कृष्न की हरि हरि खेल करना, करता की वड्याईआ। जिस मेट के वरनां बरनां, ज़ाता पाता देणा मिटाईआ। सच दवार दी दस्स के सरना,

सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। राम कहे कृष्न की खेल करना कान्हा, काहन देणा जणाईआ। कृष्न किहा साडा देस होया बेगाना, मालक नज़र कोए ना आईआ। जगत जुग चीथड़ होया पुराणा, गंदगी परे देणी सुटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। राम कहे कृष्न कथा की कहाणी, कहि के दयां जणाईआ। पैग़म्बरो एह खेल जुग पुराणी, चौकड़ी चली आईआ। बिना प्रभू किरपा करे ना कोए सावधानी, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेत आप रखाईआ। राम कहे कृष्न साथों लेख लिखाउण लग्गा, इष्टाम इष्ट वाले मंगाईआ। चारों कुण्ट फिरे भज्जा, दहि दिशा फोल फुलाईआ। साडा वधे कोए ना अग्गा, अग्गे दा लेखा दिता मुकाईआ। साहिब सुल्तान बण सूरा सरबगा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब नूं चलाए आपणी विच रज़ा, राज़क रिज़क रहीम आपणी दया कमाईआ।

✪ १४ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

अवतार पैग़म्बर गुरु कहिण अकबाले हू, इकबाल अक्ल बुद्धी तों बाहर जणाईआ। जिस दा हुक्म हाकम बुत रूह, रूहे रवां दए वड्याईआ। जिस दा नूर ज़हूर नूरी हूबहू, हर हिरदे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वर दाता इक अख्वाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण खेल करे खुदा तुआला, तुअलुक सब दा वेख वखाईआ। पावे सार अदना आहला, अमीर ग़रीब खोज खुजाईआ। लहिणा देणा वेखे माज़ी हाला, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच हुक्म इक वरताईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण रब्बी नूर अलाह, एकँकार इक वड्याईआ। शब्दी कलमे दिती सच सलाह, सिफ्त सिफ्त विच्चों प्रगटाईआ। नव नौ चार दा बण मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दस्सणहारा धुर दा राह, रहिबर अगम्म अथाहीआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण शब्द संदेशा कलमा देवे नाल वज़ाहत, वजूह वसल दा झगड़ा रिहा मुकाईआ। चार जुग दे जो बणे रहे राहक, दीन मज़्हब हक फक्क ना कोए वखाईआ। अलिफ़ ये दे बणे रहे गाहक, अक्खर अक्खरां मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा सच

घर, जो सच दे बणे रहे साहित, सहिज नाल खोज खुजाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण दस्से नाम कलमा अगम्म, मज़मून मंज़ल पिछली रिहा चुकाईआ। धुर दा हुक्म बणा कानून, काएनात दा कायदा दे उलटाईआ। प्यार मुहब्बत विच बणना दस्से ममनून, निव निव सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण साडा बणना इक कबीला, किबले अर्ज़ दए वड्याईआ। नूरी अल्ला अलाह बण वसीला, वस्त अमोलक इक वरताईआ। पंजां प्यारयां सज्जी हथेली निशान लाउणा पीला, पलकां दे उत्ते चरण धूढ़ी लैणी लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण खेले खेल न्यारी, अगम्मढ़ी कार कमाईआ। पैरां तों नन्गे होण पंज पुजारी, पूजा जुग जन्म दी झोली पाईआ। पंजां लिखारीआं कज्जल पाउणा इक धारी, सूत्र पंज पंज लम्बाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण सब दा पूरा होणा वायदा, वाहवा वज्जे वधाईआ। अग्गे रहिणा नहीं कोई अलहिदा, अल्ला राम वाहिगुरु वंड ना कोए वंडाईआ। एका हुक्म सब ने मन्नणा बाकायदा, निउँ निउँ लागण पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुग चौकड़ी सब दा अन्तर लए जाइज़ा, नाजाइज़ कार ना कोए कमाईआ।

✪ १५ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

भगवन दे थाँ माण दवाया भगौती, भगवती आपणा हुक्म वरताईआ। काज रचाया अदौती, झगड़यां विच वड्याईआ। खेल खिलाया बनौटी, लोकमात राह चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करनहार अख्वाईआ। भगवन थाँ भगौती कराई पूजा, सिल पाहन संग मिलाईआ। इष्ट इष्ट दा रूप दूजा, दुतीआ भाउ जगत लोकाईआ। आपणा भेव रखाया गुज्झा, चार जुग समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अन्दर हुक्मी हुक्म बदलाईआ। भगवन थाँ भगवती कीती सिद्ध, साधना समझ किसे ना आईआ। चण्डी चंडिका बणा के ज़िद, ज़ेर ज़बर विच रखाईआ। अछल छल आपणा कारज करके सिद्ध, सिद्धांत जगत वाला वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। भगौती होई मात प्रधान,

पृथम रूप दिता दरसाईआ। एह सब तों वडा खेल श्री भगवान, अछल छलधारी आप कराईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु बणा बलवान, तन वजूद घाउ एसे नाल लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच पर्दा आप चुकाईआ। भगवन थाँ भगवती होई प्रगट, प्रगट आपणा आप कराईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां बदलदी रही करवट, निरगुण सरगुण धार हिलाईआ। मार्ग पैंडा राह दस्सदी रही मरघट, आप आपणा बल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल इक वखाईआ। भगौती कहे मेरा नाम अनोखा, शक्ती जोत गुर गए समझाईआ। मैं प्रगट होणां समें अनुसार जगत मौका, मुकम्मल आपणा हुक्म दरसाईआ। मैं खेल खिलावां जगत जीव खउ का, भउ विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। भगवती कहे मेरा नाता नाल भवानी, भुजां बाहवां नाल वड्याईआ। मेरी गोबिन्द नाल निशानी, निशाना गोबिन्द गया समझाईआ। जिस ने बच्चयां दी लई कुरबानी, कर हथ्थां नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा आदि जुगादि घर, गृह आपणा आप प्रगटाईआ। भगौती कहे मैनूं झुकदे रहे सीस, जगत जीव ध्यान लगाईआ। मेरे पिच्छे भुल्ल गया इष्ट जगदीश, जगदीश्र भय ना कोए रखाईआ। मेरी धार जगत जवारी रीत, जुग जुग आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। भगौती कहे मेरा रूप जगत धात, मानव रंग ना कोए रंगाईआ। मैं जुग जुग हिस्से वंडे प्रांत, दीन दुनी वेख वखाईआ। भरम भुलेखे पाए भरांत, भाण्डा भरम ना कोए भनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्णूं भगवान, भगौती कहे मेरी लेखे लाउणी गोबिन्द वाली ओह रात, जिस रात तन नालों लाह के माछूवाड़े प्रभ चरणां विच टिकाईआ।

✪ १६ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण सौणा नहीं सोलह हाढ़ दी रैणा, सचखण्ड सच धार विच आपणा आप प्रगटाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल दा मन्नणा शब्द अगम्मी कहिणा, जिस नूं दो जहान सुणन कोए ना पाईआ। अन्त अख़ीर सति सच दा लहिणा, लहिणेदार दए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल इक प्रगटाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण रैण सबाई जागणा, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। चार जुग दा पिछला

कीता त्यागणा, त्रैगुण दा लेखा रहे ना राईआ। आप आपणा आप साधणा, दुतीआ भउ देणा मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण अज्ज दी रैण ना होए आलस, दरगाह साची असल दईए जणाईआ। असां सब ने रूप धारना ख़ालस, ख़ाकी तन वंड ना कोए वंडाईआ। जगत शरअ बणे ना कोए सालस, विचोला मज़्हब ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण भिन्नड़ी रैण आवे सदा, सदके वारी घोल घुमाईआ। करे खेल पुरख समरथा, साहिब स्वामी वड वड्याईआ। जिस दा चार जुग नाम कलमे विच सिफ्ती खेल खेलया यथार्थ यथा, यदी आए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण अज्ज दी रैण विष्न ब्रह्मा शिव उठणा, निरगुण धार धार विच्चों लैणी अगंड़ाईआ। सब ने प्रभ दी चरण धूढ़ धोणा मुखड़ा, सति सरूप इक्को सोभा पाईआ। नेत्र खोल्ह वेखणा साडा पैंडा अन्तिम मुकणा, चार जुग दी शरअ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण विष्न ब्रह्मा शिव होश संभालो, सम्बल वेखणा बेपरवाहीआ। दो जहान निरगुण धार बिन सरगुण रूप भालो, ज़िमीं असमानां तों परे खोज खुजाईआ। इक संदेशा नानक धार देणा लालो, लाल रंग दा मस्तक कर के मस्तक नानक ल्ए लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण रैण सबाई सुणना गीत, सचखण्ड गृह वज्जे वधाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल दो जहान बदल देणी रीत, रीतीवान आपणी कार कमाईआ। सति धर्म दा मार्ग ला के ठीक, रास्ता बरास्ता इक्को देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग वेख अंधेरा तारीक, तारीख तवारीख पिछली दए बदलाईआ। अवतार पैग़म्बर कहिण रैण सबाई चंगी, गुरु गुरदेव दए समझाईआ। गोबिन्द पिछली कढणी संधी, जेहड़ी सँध्या वेले पुरख अकाल समझाईआ। संदेशा दिता कलयुग अन्त आवे सूरा सरबंगी, शाह सुल्ताना धुरदरगाहीआ। ओस वेले तेई गुरमुखां आपणी पिट्ठ करनी नन्गी, पुश्त उत्ते गोबिन्द लैणा लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। रैण कहे मेरे हथ्थ जोड़े, दो जहानां सीस निवाईआ। जिस वेले पुरख अकाला साहिब सतिगुर शब्दी धार चढ़े घोड़े, अगम्म अगम्मड़ा वेस वटाईआ। उस वेले विष्न ब्रह्मा शिव सारे होवण कोले, नेरन नेरा सीस निवाईआ। पंज गुरमुख बच्चे बाल अवस्था रंग दे होण गोरे,

हथ्थ गोडयां उत्ते टिकाईआ। पंजां गुरमुखां पिट्ठ ते बध्धे होण जोड़े, तला बाहर सोभा पाईआ। तेई गुरमुख बणे होण ढोरे, बुद्धी समझ ना कोए चतुराईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं वर पाउणा जेहा लोड़े, लोड़ींदा सज्जण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल करे दोहरे, दूए दा एका रूप दरसाईआ।

✪ १७ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल दुपिहर इश्नान दे समें ✪

सचखण्ड सच दवार सच धार होई सवाधान, एका एक रूप दरसाईआ। तेई अवतार कहिण वेखो धुर दा राम, राम राम रूप वड्याईआ। पैग़म्बर कहिण तक्कीए इक अमाम, जल्वागर नूर इलाहीआ। गुर दस कहिण साडा शहिनशाह सुल्तान, पुरख अकाला बेपरवाहीआ। जिस दे जुग चौकड़ी गाउँदे आए गाण, सिफ्तां विच सिफ्त सालाहीआ। ओह नव नौ चार पिच्छों सब दा बदलण लग्गा विधान, पिछली रेखा रिहा बदलाईआ। सतिगुर साचा सच कर परवान, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों बाहर रिहा समझाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता साडा सब दा इक्को बण के काहन, काहन कान्हा रंग रंगाईआ। धन्न भाग सचखण्ड सख़ीआँ करे परवान, साख्यात आपणी कल धराईआ। जोती धार तक्कीए लोकमात खेल महान, महासार्थी आपणी कार कमाईआ। लहिणा देणा चुकाए तेई अवतारां आण, आण आपणी इक मनाईआ। धर्म दे खारे चढ़ के नौजवान, सूरबीर सुल्तान पड़दा दए उठाईआ। तेई गुरमुख कराउण इश्नान, इशारा सचखण्ड समझाईआ। तेई बीबीआं गावण गाण, गीत सुहागी सतिगुर पूरा धुर दा माहीआ। इस ने दो जहानां बणना हुक्मरान, नाम संदेसा इक दृढ़ाईआ। सतिजुग सच बणाए विधान, ज़ात पात दीन मज़्हब दा डेरा ढाहीआ। जिस वेले अनन्द कारज होया करन विच जहान, सृष्ट सबाई एका खेल खिलाईआ। पंज गुरमुख लाड़े लाड़ी नूं सदा कराया करन इश्नान, दूसर भेख ना कोए बणाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै बोलण नाल ज़बान, मुक्खों कूक कूक सुणाईआ। दरगाह साची सचखण्ड होवण परवान, परवाने गुरमुख आपणे घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। अवतार पैग़म्बर कहिण साडा आया सगन दिहाढ़ा, जोती जोत वज्जे वधाईआ। असीं तक्कीए धुर दा लाड़ा, जिस लाड़ी जोती धार लैणी प्रनाईआ। सब नूं बणाए सति सच दी नारा, नर नरायण आपणी दया कमाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग मातलोक अवतार पैग़म्बर गुर रिहा कुँवारा, प्रगट साख्यात हरि कन्त ना कोए हंढाईआ। किरपा निधान ठाकर

स्वामी अचरज खेल कीआ दुबारा, सरगुण निरगुण रूप बणाईआ। तेई अवतार कहिण साडी निमस्कारा, नमो नमो सीस झुकाईआ। धन्न वड्याई साडा लेखा पूरा कीता जिस नूं कहिंदे चौबीसा कल्की अवतारा, अवतर आपणी कल वरताईआ। जिस लोकमात विच्चों शब्दी घल्ली अमृत धारा, सचखण्ड दिती पहुंचाईआ। सानूं कर के ठंडी ठारा, ठाकर आपणा रंग रंगाईआ। साडा खुशीआं दा विवहारा, विवहारी हो के आपणा आप समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कीते ख़बरदारा, लागी दीन दुनी उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच पड़दा आप उठाईआ। अवतार पैग़म्बर कहिण जो सरगुण धार नहाता केसी, केसगढ़ दा लेखा पूर कराईआ। जो वायदा कीता दस दशमेशी, दीन दयाला पुरख अकाला झोली रिहा पाईआ। उहने खेल अगम्मी सति सरूपी वेखी, जिस नूं वखावणहारा दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती धार असीं अग्गे रहिणा नहीं परदेसी, परदेस दा झगड़ा दिता मुकाईआ। सेवा करनी करनी नाल नेकी, दुतीआ भाउ दिता मिटाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सच दवारे रिहा वेखी, वेखणहारा जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। सौहरा पईआ आपे बण के बेटा बेटी, नार कन्त आपणा रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण असीं सगण मनाईए सच, सच मिली वड्याईआ। साडा लेखा मुकणा अज्ज, घड़ी सुलखणी सोभा पाईआ। असां गीत सुहागी सुणने रज्ज, बिन कन्नां कन्न लगाईआ। धन्न वड्याई जे साहिब स्वामी अन्तरजामी सानूं मातलोक ल्ए सद्द, शब्द संदेशा इक सुणाईआ। असीं आईए भज्ज भज्ज, सगन मनाउण थाँईं थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा रूप दरसाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण सानूं चढ़या तेल अपारा, अपरम्पर दिता चढ़ाईआ। जोती धार किरन किरन कर श्रृंगारा, रूप अनूप दिता समझाईआ। नूर नुराना मार चमत्कारा, जोबन सोहणा दिता बणाईआ। सति सरूप बणा के नारा, मेला मेले सहिज सुभाईआ। नाम निधाना कज्जल पा के धारा, बिन नैण नैण मटकाईआ। सोहणा सीस बणा रंग चढ़ा अपारा, अपरम्पर आपणा पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडे नानक दादक दो जहान, सोहणी खुशी मनाईआ। सच झूठ दा दोवें लै के आए दान, झोली सब दी रहे भराईआ। झूठे सच्चे गाउंदे गाण, गा गा रहे सुणाईआ। कौड़े मिट्ठे खा पकवान, मन आत्मा रहे भरमाईआ। असीं हो गए हैरान, हैरानी विच सुणाईआ। केहड़ा रखीए दान, कवण अंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण दो जहान ल्याए साडे वस्त्र, सोहणा रंग रंगाईआ। जगत श्रृंगार ल्याए

शस्त्र, शस्त्र नाल वड्याईआ। फेर वेख्या अन्तर, अन्तश खोज खुजाईआ। प्रभ दा खेल निरन्तर, निरवैर रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडे आए सूट, सोहणा रूप दरसाईआ। लै के आए उत्तर पूरब पच्छम दक्खण चारे कूट, बचया रहिण कोए ना पाईआ। पंज विकारी नाल रलाए दूत, हँकारी संग बणाईआ। जां असां कपड़े फोले विच्चों निकली दीन मज़्ह्ब दी छूत, ज़ात पाती आपणा रंग बदलाईआ। असां हस्स के किहा इन्हां वस्त्रां नालों चंगी प्रभ चरणां दी धूढ़ी विभूत, विभूती धुर दी सोभा पाईआ। हुण असीं लोकमात विच्चों कर के आ गए कूच, कूचे गली तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम आप वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण चार जुग दी वासना साडा आया जेवर, जगत सुन्यार घड़ाईआ। प्रभ दा नाम कलमा साडे बण गए जेठ देवर, इशारे इशारे नाल बदलाईआ। दीन मज़्ह्ब दी शरअ बण गई साडे सगनां वाले तेवर, त्रैगुण नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच आपणा हुक्म वरताईआ। अवतार पैग़म्बर कहिण गुर गुरु गुर सतिगुर दीख्या, देख्या अगम्म अपार। जिस दा भविक्ख्तां विच लेख लिख्या, कलम शाही कर त्यार। जिस ने सृष्टी दस्सी मिथ्या, थिर रहे ना कोए संसार। सो खेल खेले रूप धर के वड्डा निक्कया, निरगुण नूर जोत उज्यार। जिस दा लेख कदे ना मिटया, ना कोए मेटे मेटणहार। अन्त अख़ीर सब दा कढे सिट्टया, सिट्टेबाज़ी दस्स संसार। जिस शेर सिंघ दे निशान लगाया गिट्टया, पूरन विच पूरन जोत कर उज्यार। सब दा बण के मितया, पिता पुरख अकाल। जगत जहान वेख्या, हो के नदरी नदर निहाल। गोबिन्द बणा के बेटया, धरनी धरत सुहाए सच्ची सरकार। बण के खेवट खेटया, बेड़ा चलाए दो जहान। जेहड़ा नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दा लेखा आपणे विच लपेटया, ओह सब नूं दए वखाल। निरगुण धार कर के हेतया, सम्बल खेल करे कमाल। छड के जंगल जूह उजाड़ पहाड़ रेतया, साढे तिन्न हथ्थ वसे दीन दयाल। सचखण्ड दवारे खोल्ह के भेतया, गुर अवतार पैग़म्बर कहिण सानूं ल्या उठाल। पिछला भविक्ख्त कराया चेतया, चेतन कर के सवाधान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वड दाता मेहरवान। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर गाउंदे, गा गा खुशी बणाईआ। सुर नर फुल्ल बरसाउंदे, विष्न ब्रह्मा शिव भज्जण चाँईं चाँईंआ। जोती धार सीस निवाउंदे, बिन सीस सीस सरनाईआ। दूर दुराडे राह तकाउंदे, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जो वेला वक्त सुहाउंदे, सो गुरमुख प्रभ दा रूप जणाईआ। सो सन्मुख दर्शन पाउंदे, दरस दीदार नूर इलाहीआ। धुर दा लाड़ा विच

बहाउंदे, चारों कुण्ट घेरा पाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दा लेखा पूर कराउंदे, अगला भेव रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण गुरमुख सारे ला लओ चरण धूढ़ी, बैठे बैठे ध्यान लगाईआ। तुहाडी साडी आसा होवे पूरी, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। तुहाडा हज़ूर बैठा तुहाडी विच हज़ूरी, हज़रत देण गवाहीआ। साडे अनन्द कारज दी भगतो दे दयो मंज़ूरी, हथ्थ दोवें उपर उठाईआ। जिस वेले सचखण्ड आओगे आपणे व्याह दी तुहानूं सब नूं नाम दी खवावांगे चूरी, चार जुग दा झगड़ा पिछला मुकाईआ। जेहड़ी मंज़ल समझो दूरी, ओह नेरन नेरा नज़री आईआ। एह सृष्टी वेखो कूड़ी, सगला संग ना कोए बणाईआ। तुहाडे प्रेम दी तुहाडी झोली ज़रूर पए मज़दूरी, शहिनशाह लेखा सब दा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म सब नूं दए सरूरी, सरूर आपणा आप चढ़ाईआ।

✪ १७ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल इश्नान तों बाद मूँह मिठ्ठा कराउण समें ✪

५६१
२२

गुरमुख प्यार सदा रस मिठ्ठा, घृत खण्ड गवाहीआ। जेहड़ा चार जुग किसे नहीं डिठ्ठा, गुर अवतार पैग़म्बर सिफ्तां विच सुणाईआ। मेहरवान हो के पुरख अकाल सन्मुख किसे नहीं दिता , हथ्थो हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। शब्द संदेशे विच सुणा के चिठ्ठा, सब दे हथ्थ गया परचाईआ। धुर दा लेखा मातलोक किसे ना लिखा, ना कोए लेखणी दए गवाहीआ। सिर्फ़ नौ वार गोबिन्द ने किहा ओह गुरमुख मेरया सिखा, सिँघ तेरी चतुराईआ। जिस वेले आवे मेरा पुरख अकाल पिता, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। ओह तुहाडा अन्न खा के रुक्खा मिस्सा, मिसल दो जहान दए बणाईआ। तुहाडे प्रेम प्यार दा आपणे अन्दर रखे मिठ्ठा, मिठत तुहाडे विच्चों प्रगटाईआ। जन भगतो तुहाडा लेखा सब दा कर के चिट्टा, चिट्टे उत्ते आपणे चिट्टे दी मोहर लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा सब दा पूर कराईआ।

✪ १७ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल घोड़े दी वाग गुंदण समें ✪

ज़ीन पाखर चरण धरया रकाब, हरि कृष्न रकाब गंज जणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं करना अदाब, सीस सिलसिले

वार निवाईआ। खेल करना परम पुरख प्रभ आप, आपणी धार प्रगटाईआ। जिस नूं सब ने मन्नया बाप, पिता पुरख अकाल खुद खुदाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के जाप, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। दो जहानां खेल करना साख्यात, पर्दा ओहला रहे ना राईआ। अवतार पैग़म्बरां पूरा करना भविक्ख्त वाक, गुरु गुरदेव राह तकाईआ। झगड़ा मेटणा ज़ात पात, दीन मज़्ब दी शरअ गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा आप हुक्म वरताईआ। सतिगुर अर्जन किहा बुड्ढे बाबे, निरगुण शब्द जोत समझाईआ। निगह मार विच काअबे, करबले तों परे अक्ख उठाईआ। पुरख अकाल खेल खिलाउणा धरनी धरत धवल उत्ते वाघे, रावी दए गवाहीआ। जोती शब्दी धार चरण धर विच रकाबे, भगवन आपणा हुक्म वरताईआ। सम्बल सुहाउणा देस माझे, सोहणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ।

✪ १७ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल जलूस दरबार विच पुज्जण ते ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण वेख्या खेल कमलापाती, जोत शब्द धार दो जहान वज्जी वधाईआ। धरनी धरत धवल धौल भगत सुहेले जिस दे बणे बराती, बरादरी आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। दीन मज़्ब दा झगड़ा छड्डुया लेखा मुक्कया ज़ात पाती, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला गाया गाथी, आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस दी सिख्या आए समझाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा मुकी सब दी वाटी, पैंडा पन्ध रिहा ना राईआ। ख़ुशी होणी हाढ़ सतारां राती, सम्मत शहिनशाही छे दए गवाहीआ। हुक्म मिलणा पृथ्मी आकाशी, गगन गगनंतर आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म समझाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण सचखण्ड दवारे साडी शादी, नकाह नकाह निरगुण जोत नूर कराईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर लोकमात होणी बर्बादी, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। जो संदेशा दे के गई अजीत जुझार दी दादी, गुज़री गुज़रया हाल सुणाईआ। कलयुग अन्त बिना श्री भगवन्त रहिणा नहीं कोई गाडी, गाईड नज़र कोए ना आईआ। इक्को शब्द गुरु गुरदेव सब दा बणना ढाडी, लख चुरासी अन्दर वड़ के नाम सोहला दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण वेखे धर्म धार दे जांञी, जञ्झू बोदी टिक्का मुच्छ दाढ़ी केस वंड ना कोए वंडाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई धर्म दी धार बरात सांझी, दीन मज़्ब रूप ना कोए दरसाईआ। जिस ने खेल खेलणा झगड़ा मुकाउणा रुपा चांदी, तारा

५६२
२२

चन्द वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण सुणो अगम्म फ़रमान, फ़ुरन्यां तों बाहर जणाईआ। शब्द संदेशा दए श्री भगवान, हरि भगवन बेपरवाहीआ। जिस दा लेखा ज़िमी असमान, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाईआ। ओह सब दी करे पहचान, बेपहचान पर्दा आप उठाईआ। जिस ने विष्न ब्रह्मा शिव वल्ल कीता ध्यान, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। सारे होवो सवाधान, सृष्टी दृष्टी वेखो थांउँ थाँईंआ। अवतारो आपणयां प्रेमीआं दी लाओ मीज़ान, लेखा लिख के दयो जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। धुर फ़रमाना अगम्म अथाह, हरि करता आप दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं हाढ़ सतारां धुर दा साह, थित वार मिले वड्याईआ। भगत सुहेले बणन गवाह, हरिजन साचे नाल मिलाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर हरि कन्त सुहागी ल्ए प्रना, परम पुरख आपणे कंठ लगाईआ। दीन मज़्ब दा झगड़ा मुके थांउँ थाँ, नौ खण्ड पृथ्मी इक्को हुक्म वरताईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म ढोला सब ने लैणा गा, ज़िमीं असमानां इक्को रंग अल्लाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान वेखे थाँ थाँ, थान थनंतर खोज खुजाईआ। सति स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी परवरदिगार सांझा यार सब दी पकड़े बांह, बाज़ू आपणे हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद आपणा खेल वखाईआ। अवतार कहिण साडी रीती वेखी बेदी, वेदी वेद शास्त्र फोल फुलाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला बण के भेदी, पड़दा अन्दरे अन्दर उठाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो लेख लेखणी लेखी, लिख लिख आए समझाईआ। अन्त लोकमात बण परदेसी, बेवतन हो के आपणा वतन तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पुरख अकाल कहे विष्न ब्रह्मा शिव धर्म दवारे बणना लागी, थित हाढ़ सतारां वज्जे वधाईआ। दस बीस अन्तर निरन्तर सुरती सब दी होवे जागी, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। निरगुण जोत परम पुरख जोत नाल होवे शादी, शादिआना धर्म देणा वजाईआ। सचखण्ड विच प्रभ भगतां दी थोड़ी जेही आबादी, आबादकार सन्त सुहेले सोभा पाईआ। सारे निगाह मार के वेखो दीन दुनिया अवतार पैग़म्बर गुरुआं तों हो गई बागी, भय भउ ना कोए रखाईआ। अनहद शब्द दा बणे कोए ना रागी, पुस्तक पढ़ पढ़ झट लँघाईआ। धुन आत्मक शब्द दा बणे कोए ना ढाडी, ढोलक छैणे रहे खड़काईआ। मन कल्पणा जावे किसे ना साधी, साध सन्त रहे कुरलाईआ। चार जुग दा खेल वेखणा माज़ी, पड़दा हाल दए चुकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप कोई करयो ना मूल नाराज़ी, राज़ी निराकार निरँकार रिहा सुणाईआ। वेखो कलयुग सब तों वड्डा

ग़ाज़ी, ग़रज़ सब दी मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म सुणाईआ। पुरख अकाल कहे सुणो हुक्म फ़रमाना, फरमांबरदारो दयां जणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं मन्नणा भाणा, सिर सके ना कोए उठाईआ। सदी चौधवीं कलयुग अन्त श्री भगवन्त आपणा खेल खिलाउणा, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा जीव जगत जहान रवाउणा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। झगड़ा मेटणा वेद पुराणां, अञ्जील कुरान शरअ दए गवाहीआ। इक्को परम पुरख परमात्म परवरदिगार धुर दा गॉड सब ने गाणा, दूजा इष्ट नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण असीं परम पुरख तेरी जोत जोत दी नारी, नर नरायण तेरी सरनाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों निहकलंक आई कल तेरी वारी, कलि कल्की वेस वटाईआ। अमाम अमामा तेरी सिक्दारी, सिर सके ना कोए उठाईआ। लख चुरासी तेरी पनहारी, पुनह पुनह सीस निवाईआ। असीं चार जुग तेरे नाम दी दस्सदे आए कारी, जुग जुग सिफ्तां विच सिफ्त सालाहीआ। तूं खेल खिलाउंदा रिहों निरगुण जोत बण मदारी, मुद्दा आपणा ना किसे समझाईआ। थोड़ी जेही मस्ती दे के नाम खुमारी, आप आपणा रंग चढ़ाईआ। दीनां मज़्हबां दी कराउंदा रिहा त्यारी, त्रैगुण अतीता आपणी धार समझाईआ। मानव मानव मानव असीं करदे रहे खुआरी, तेरी शरअ दे नाम लड़ाईआ। तेरा हुक्म खण्डा बणदा रिहा कटारी, अल्ला वाहिगुरु नाम सति राम राम युद्ध जंग जगत बणाईआ। तेरी कला चलदी रही अपारी, अपरम्पर समझ किसे ना आईआ। अन्त वेखी सृष्टी सारी, दृष्टी अन्दर ध्यान लगाईआ। मंज़ल चढ़े ना कोए दुष्वारी, दरगाह सच सच टिकाणा नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मार्ग देणा वखाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बरो हंढाउणा साहिब सुहागी कन्त, कन्तूहल बेपरवाहीआ। जिस दा इक्को नाम इक्को मंत, इक्को कलमा दए पढ़ाईआ। इक्को साध इक्को सन्त, सूफ़ी इक्को रंग रंगाईआ। इक्को धार जीव जंत, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। इक्को आदि इक्को अन्त, इक्को मध वेख वखाईआ। इक्को बणाए तुहाडी बणत, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तत शरीर वजूद दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा राग अलाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण जिस्म छड्डया ख़ाकी, तन वजूद रिहा ना राईआ। दीन मज़्हब छड्डी जमाती, झगड़ा मुक्कया ख़लक खुदाईआ। पवण स्वासी छुट्टी हयाती, साह साह ना कोए वड्याईआ। इक्को बख्शिश दे अगम्मी दाती, दयावान तेरी सरनाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु बणा दे जमाती, नाम अक्खर इक पढ़ाईआ। कल्मयां वाली रहे ना गाथी, अक्खरां जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। निरगुण धार बण जा साथी, सगला संग आप निभाईआ। तूं साहिब

पुरख समराथी, प्रभ दाता धुरदरगाहीआ। जेहड़ी भविक्खतां विच तेरी कथा आखी, कहि के आए सुणाईआ। सब दी अन्तिम कट के वाटी, वटणा मले चाँईं चाँईंआ। मंज़ल रहे कोए ना घाटी, मार्ग इक्को देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पर्दा ओहला दए चुकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो खावो इक दवारे कसम, गुरुआं किस्म रहे ना राईआ। तुहाडी कम्म आई कोई ना भस्म, तन वजूद ना कोए चतुराईआ। इक्को मेरा अगम्मी इस्म, आज़म जल्वागर नूर इलाहीआ। मैं खेल वेखणा उत्तर पूरब पच्छम, दक्खण आपणी कार कमाईआ। बिना भगतां तों सच दवारे मूल कोए ना वसण, वसल मिले ना धुर दे माहीआ। पुरख अकाला दीन दयाला कलयुग कूड़ी क्रिया निरगुण धार जड़ आया पुट्टण, पटने वाला नाल मिलाईआ। सतिजुग साचा खोल्हे हट्टण, दवारा इक्को इक वखाईआ। जिथ्थे तूं मेरा मैं तेरा सारे ढोला रटण, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। पुरख अकाल दे चरणां उत्ते सीस सुट्टण, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ रहे ना कोए चतुराईआ। कलयुग खेल वेखण बाज़ीगर नट्टण, सतिजुग साचा लैणा प्रगटाईआ। जिथ्थे सन्त सुहेले हस्सण, गुरमुख गुर गुर वज्जे वधाईआ। निज नेत्र खोल्ह के अक्खण, लोचण नैण करन रुशनाईआ। चुरासी विच्चों वरोल के मक्खण, हरिजन आपणी गोद टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा पड़दा लाहीआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभ असीं होईए वडभागी, निउँ निउँ दर ते सीस निवाईआ। इक्को बणना रागी, नाम संदेशा दे सुणाईआ। दीन मज़्हबां दी मेट के वाटी, वायदा सब दा पूर कराईआ। साडे सिख मुरीद साथों हो गए बाग़ी, मन मनका ना कोए भवाईआ। सब दी काया हो गई दाग़ी, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। हउमे हंगता बणी कागी, माणक मोती तेरा नाम चोग ना कोए चुगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण अन्त अख़ीरी हो जाणा निकाह, नाता बिधाता आपणे नाल जुड़ाईआ। जिस नूं सतिगुर नानक किहा चौथी लांव ते चौथी मंज़ल दा ब्याह, उस दा लेखा पूर देणा कराईआ। चौदां सौ तीह पन्ना जिस दी शहादत देवे ते गुरु अर्जन होवे गवाह, कलम शाही वंड ना कोए वंडाईआ। गोबिन्द ने माछूवाड़े पुरख अकाल नाल सतारां हाढ़ दा मिथ्या सी साह, सोहणी रुत बणाईआ। मेरे दीन दयाले पुरख अकाले जोत सरूपी जावीं आ, आमद आपणी आपणे विच छुपाईआ। चार वरन अठारां बरन दा झगड़ा देवीं मुका, दीन मज़्हब दा अग्गे डेरा ढाहीआ। जे तूं आप इक ते तैनूं कहिंदे इक खुदा, खुद मालक धुरदरगाहीआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई क्यों दिती वंड वंडा, ते नाम सिफ्त इक सालाहीआ। मेहरवान महिबूब मुहब्बत विच फेरा जावीं पा, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। गोबिन्द किहा मैं जिधर तकां तूं मेरा मैं तेरा सृष्टी दी दृष्टी गाउंदी होवे नाँ, दूजा

राग ना कोए अल्लाईआ। ना कोए सूर खाए ना कोए गां, मध पान रस ना कोए चखाईआ। उत्तर पूरब पच्छम दक्खण सारे पवित्र होवण थाँ, हर हिरदे अन्दर करन सफ़ाईआ। तूं पिता ते तूं ही माँ, हरिसंगत ने ढोला देणा गाईआ। गुरमुखो धुर दा मालक खुद खुदा, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित सदा करे सच न्याँ, न्याँ विच आपणा नाम जपाईआ। जे तुसीं प्रभू दे प्यारे गोबिन्द दे दुलारे दोवें हथ्थ दयो उठा, खुशीआं विच ढोला लओ गाईआ। वेख्यो हँस बुद्धी ना बणिओ काँ, काग रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच कारज आप कराईआ। जन भगतो वेखो कारज करता, कल की की खेल खिलाईआ। जेहड़ा ना जम्मदा ना मरदा, जम्मण मरन विच ना आईआ। मालक हो के सचखण्ड साचे घर दा, दरगाह साची सोभा पाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु आपणी जोत आपे वरदा, कन्त नार आप अख्वाईआ। जिस लेखा मुकाउणा लहिंदा चढ़दा, दक्खण पहाड़ फोल फुलाईआ। भावें सारा जहान होवे सड़दा, गुरमुखां अमृत देणा बरसाईआ। सच दवारे सन्त सुहेला तरदा, भवजल विच ना कोए रुढ़ाईआ। जन भगतो सब दा खोल्ह देणा पड़दा, पड़दा अन्दरों देणा चुकाईआ। जेहड़ा सेहरा सीस उत्ते धरदा, मुख कलयुग कोलों लुकाईआ। एह तुहाडी जोती धार वरदा, आत्म परमात्म संग वखाईआ। वेख्यो लहिंदी दिशा किस तरह अग्ग दा भांबड़ मच्च दा, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। मुहम्मद मलंग हो के नच्चदा, चार यारी संग रखाईआ। जो सदी चौधवीं राह तकदा, इक तकवा बेपरवाहीआ। उस दा लहिणा देणा हक दा, हकीकत वेख वखाईआ। जिस धर्म डोला ल्यांदा सति सच दा, सति सच प्रनाईआ। एह मुड़ आपणे देस कदी नहीं वत दा, वतन बेवतन दोवें वेख वखाईआ। लाड़ा नहीं हड्ड मास नाड़ी रत दा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। अग्गे वेख्यो खेल सारे जग दा, जगह जगह पए दुहाईआ। तुहानूं माण मिलणा तिन्न रंग पग्ग दा, त्रैगुण दी धार तलवार दस्त दए गवाहीआ। बड़ा सोहणा विहार होणा अज्ज दा, अज्ज दी घड़ी मिले वड्याईआ। तुसीं लंगर छको ते पुरख अकाल अवतार पैग़म्बर गुरुआं सद्द दा, शब्दी शब्द इक दृढ़ाईआ। फेर सांझा दोहां दा नाता बज्झदा, बन्धन इक रखाईआ। जिस चौथे पद नूं सन्यासी वैरागी त्यागी साधू सन्त फ़कीर सूफ़ी लभ्भदा, उस पद दी हद्द तुहाडे अन्दर दिती मुकाईआ। जिस नूं वास्ते पा पा डण्डावतां कर कर सजदयां विच जंगल जूह उजाड़ पहाड़ां विच जंगजू जगत जिज्ञासू लभ्भदा, ओह तुहाडे सन्मुख सोभा पाईआ। हुण कोई भेत नहीं रखणा अज्ज ते कल्ल दा, इक्को रंग देणा वखाईआ। वेख्यो एसे साल विच तुहाडा साहिब किवें गज्जदा, खबर थाँ थां दए पहुंचाईआ। शब्द दा अगम्मी गोला बिना गोल अंदाज़ तों वज्जदा, जिस दी वजह समझ कोए ना पाईआ। किसे ने कहिणा भाणा होया रब्ब दा, यामबीन तेरी बेपरवाहीआ। किसे

ने कहिणा कूड़ कुड़यारा दगदा, फ़रेब मिले सज़ाईआ। पर साहिब सतिगुर ने कहिणा एह खुशी दा समां ओस पुरख समरथ दा, जो लम्भया हथ्थ किसे ना आईआ। जिस वेले चाहे दो जहान लख चुरासी मथ दा, मथण नाम मधाणा शंकर हथ्थ फड़ाईआ। किसे दा माण नहीं रहिणा कक्ख दा, शाह सुल्तानां कासे हथ्थां विच फड़ाईआ। गुरमुखो तुहाडा नज़ारा होणा कज्जल वाली अक्ख दा, जिस अक्ख उत्ते प्रतख मिले गुसाँईआ। हुण चंगा नहीं रहिणा वक्ख दा, इक्को घर इक्को दर ते इक्को वर ते इक्को माही मिल के वज्जे वधाईआ। क्यों तुहाडा दवारा धर्म दी धार सच दा, जिथ्थे भगत जन बैठे सोभा पाईआ। तुसां व्याह ते वेखणा उस कमलापति दा, माझा मालवा दुआबा जिस नूं पतिपरमेश्वर कहि के सारे आए गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जुग चौकड़ी ज्यों भावे त्यों रखदा, रखणहार सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ।

✪ १७ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल रात नूं ✪

५६७ धर्म धार दी लक्ष्मी संख विच उठ के मारे फूक, आवाज़ अगम्म सुणाईआ। शंकर भोले नाथ कोल आ के मार कूक, ५६७
२२ उच्ची कूक कूक सुणाईआ। ख़बर हो जाए चारे कूट, ख़ाली कुटीआ रहिण कोए ना पाईआ। निरगुण धार उठो दूत, सति २२
सरूपी आप जगाईआ। लख चुरासी वेखो काया भूत, पंज तत फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच हुक्म इक सुणाईआ। सुण शंकर भोले नाथा, क्यों नहीं लई अंगड़ाईआ। चरण कँवल पहलों टेक माथा, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। फेर माझे वाल्यां दा वखा दे वस्त्र पाटा, ढाई गज़ लम्बाई चुड़ाईआ। दुआबे वाल्यां दा वेख लै आटा, सवा सेर अन्न तकाईआ। किथ्थे मालवे वाला बाटा, पिड़ु दे बदलाईआ। केहड़ा जम्मू वाल्यां दिता छाता, छत्रधारी दे उत्ते दे लगाईआ। फेर वेख पृथमी आकाशा, उपर नीचे ध्यान लगाईआ। औह वेख गुर अवतार पैग़म्बरां दीआं आसा, आहिस्ता नाल अक्ख खुल्हाईआ। जेहड़े कलयुग करदे हासा, दन्दीआं दन्द वखाईआ। हुक्म सुण सतारां हाढ़ दी राता, जटा जूट दे हिलाईआ। भोलया मुकीआं पिछलीआं वाटां, अगला हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। भोले नाथ गल तेरे विच सेली, सब नूं दे सुणाईआ। सद्द लै विष्नूं ब्रह्मा बेली, उच्ची आवाज़ इक लगाईआ। क्यों नहीं धरती होई वेहली, मनमुखां नाल लदाईआ। क्यों नहीं विष्नूं खेल खेली, आपणा छल प्रगटाईआ। ब्रह्मा किथे तेरी धार नवेली, आत्म नज़र किसे ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, अचरज खेल आप कराईआ। ओह तैनूं कहिंदे जगत सँघारी, ...। ... ... घर घर रिज़क पहुंचाईआ। किथे ब्रह्मा तेरी जोत उज्यारी, जोती जाता पुछ पुछाईआ। तिन्ने रल के करो निमस्कारी, सन्मुख हो के सोभा पाईआ। किधरों आ गई तेरी सतारां हाढ़ी, बाहां चुक्क के कहो बौहड़ी तेरी दुहाईआ। औह वेख गुर अवतार पैग़म्बर बण के लाड़ी, सोहणा रूप चढ़ाईआ। फेर तक्कया तेरी भगतां नाल यारी, यराना मातलोक रखाईआ। जां वेख्या तेरी धार आपणी आप कुँवारी, कन्त भगवन्त ना कोए हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म सुणाईआ। शंकरा किथे तेरी त्रशूल, छेती दे समझाईआ। की बचन ग्यों भूल, भबूत ख़ाक रमाईआ। प्रभ दा अर्ज़ ना जाणें तूल, कीमत बाज़ी वंड वंडाईआ। जुग जुग बदलण वाला असूल, असल आपणे हथ्थ रखाईआ। की विष्नूं तैनूं होया वसूल, चौथे जुग दे दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप सुणाईआ। ओ ब्रह्मे केहड़े तेरे चार मुख, चारों कुण्ट दे वखाईआ। एह सृष्टी भरी सारी दुःख, आत्म ब्रह्म ना कोए समझाईआ। सुफल होई किसे ना कुख्ख, मिले माण ना जणेंदी माईआ। कलयुग वेख अंधेरी रुत, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। इन्हां भगतां कोलों पुछ, तेईआं क्यों नहीं दीपक लए जगाईआ। एह लेखा मूल नहीं जाणा छुट, जो लिखारीआं कोलों दिता लिखाईआ। भावें किन्ने बहो लुक, लुक्या रहिण कोए ना पाईआ। तुसीं पंजां तत्तां वाले बुत, प्रभ दाता नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा घर वखाईआ। ओ शंकरा किथे तेरा बाशक तशक नाग, तन डंग लगाईआ। तेरे हथ्थ सृष्टी फड़ाई वाग, क्यों सँघारी दिती भुलाईआ। जेहड़े प्रभ नूं भुल्ल के हो गए काग, क्यों नहीं फड़ फड़ दए सज़ाईआ। औह वेख गोबिन्द दा उडदा बाज़, बाजां वाला वेख वखाईआ। ब्रह्मा चार वेद तों परे दा सुण लै राग, मुख चारों कुण्ट भवाईआ। आह वेख जिस पातशाह पहनया ताज, मालक दो जहान अख्वाईआ। विष्नूं की वरतावे प्रशाद, घर घर रिज़क सबाईआ। किस दा हुक्म ते किस दा राज, रईयत कवण रूप दरसाईआ। किस दी धार ते किस दी औलाद, मात पित कवण अख्वाईआ। किस दा शब्द हुक्म सुणो आवाज़, कवण राह दरसाईआ। किस दा लख चुरासी बगीचा बाग़, मालक कवण रूप वटाईआ। क्यों नहीं तेई बीबीआं जगाए चिराग़, उठ के भुल्ल लओ बख्शाईआ। एह कोई कलयुग दा नहीं रिवाज, सतिजुग धार राह बणाईआ। इस विच प्रभ दा नहीं कोई मुफ़ाद, भगतां दए माण वड्याईआ। जिन्हां पोह ना सके कलयुग त्रैगुण अग्नी आग, ममता मोह ना कोए हल्काईआ। अन्तिम सब दी मुकी मुन्याद, मुन्यादी ब्रह्मा विष्न शिव रहे कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी धार प्रगटाईआ। तिन्ने कट्ठे हो गए

बण गए सच्चे याचक, याद फेर कराईआ। क्यों सृष्टी होई नास्तिक, मुक्खों बचन दयो अल़ाईआ। की हुक्म सुणना वास्तक, वास्ता इके नाल पाईआ। क्यों नहीं मन कल्पणा होई सांतक, सति सति विच समाईआ। दीन दुनी काम वासना होई आशक, प्रभ प्रेम ना कोए प्रगटाईआ। बिना भगतां तों दिसे ना कोए उपाशक, सीस जगदीश ना कोए निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक वखाईआ। पुरख अकाल कहे शंकर की तेरे अन्तर शंका, शरअ तों बाहर जणाईआ। भय भयानक दा वजा दे डंका, डौरु हथ्थ फड़ाईआ। ओह तुहानूं इक दिता इंनां जेहा तिनका, ओम रूप प्रगटाईआ। निशान वखाया जोती चिन्ह़ का, चित्तर ना कोए दरसाईआ। हुण खेल नहीं कोई दिन का, रैण अंधेरी कलयुग आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल़्हाईआ। ब्रह्मा तूं वी दस्स दे भेदा, भेव भाउ खुल़्हाईआ। किथे गए चारे वेदा, विद्या शास्त्र ना कोए चतुराईआ। रस्ता मिले ना किसे सेधा, मार्ग इक ना कोए दरसाईआ। क्यों दीन दुनी दा बदलया मेधा, आत्म ब्रह्म ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव चुकाईआ। किथे गया आत्म ब्रह्म, ब्रह्म वेते की चतुराईआ। केहड़ी नीती केहड़ा कर्म, की कलयुग जीव रहे कराईआ। केहड़ा धरनी उत्ते धर्म, सच सच दे समझाईआ। तेरे ब्रह्म दे क्यों बण गए जगत वरन, तत्तां वाली वंड वंडाईआ। इक दी क्यों नहीं पै गए शरन, इक इष्ट ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पर्दा ओहला दे चुकाईआ। क्यों विष्नूं बणया नहीं दर्दी, दीन दुनी वेख वखाईआ। चारों तरफ़ सृष्टी मरदी, भुक्ख दुःख नाल कुरलाईआ। क्यों नहीं खेल दस्सी मैनूं कलयुग कल दी, कद रिहा वरताईआ। धी माँ नूं वेख छल दी, पिता पूत नाल लड़ाईआ। गुरु सिख दी प्रीती निभे ना घड़ी पल दी, विछोड़ा होया थांओं थाँईआ। क्यों नहीं शंकरा तेरी गढ़वी भरी जल दी, ऊणी क्यों रखाईआ। ब्रह्मा तेरी धारा क्यों नहीं फल दी, विकार हँकार बाहर कढ्ढाईआ। सृष्टी दी आत्म परमात्म नाल क्यों नहीं रलदी, की तेरा भय गई मिटाईआ। किथे तेरी खेल गई वल छल दी, अछल छल ना कोए कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद आपणी कार कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव खड़े तिन्ने, तिन्न लोक सेव कमाईआ। दस्सो किन्ने बीते जुग ते तुसां वेखे किन्ने, की की कार कमाईआ। नहीं ते निउँ के कर दयो बिनै, सीस जगदीश झुकाईआ। प्रभू असीं ते इहो जाणदे तेरी जोत दा छिन्न ए, छोटा रूप अपणाईआ। प्रेम प्यार विच आपणा आप बैठे विंन्हे, आर पार तेरी धार रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। शंकर ओह केहड़ी बद्धी तेड़ कुशा, कुशा दीप वेख वखाईआ। प्रभ तों केहड़ा भेव छुपा, क्यों छुप छुप झट लँघाईआ। ओ विष्नूं

की तेरा भण्डारा मुका, भुक्ख्यां ना सके रज़ाईआ। ओ तैनूं पता नहीं कि प्रभ दा नाम दो तुका, चार मुख वाले चारे अक्खरां दा वेला रहिण ना पाईआ। बच्चू करयो कोए ना गुस्सा, जुग चौकड़ी तुहाडी सेव दयां बदलाईआ। किसे नूं धफ्फा मार किसे नूं मुक्का, ओ ब्रह्मा किसे नूं कहां मेरया पुत्ता, सृष्टी देणी चलाईआ। खुशी विच चरण धूढ़ी दी सुट्ट के तुहाडे सिर तों मुट्ठा, मुट्ठी भर सृष्टी चुरासी लख जून तुहाडे हथ्थ फड़ाईआ। आप फेर लुक जावां आपणी उस गुट्ठा, जिथ्थों मेरी किरपा बिना तुसीं वेखण कोए ना पाईआ। तुहानूं पता नहीं मेरे भगत ते खावण टुक्कर सुक्का, किथे भण्डारे रखे छुपाईआ। एसे दुःख विच उन्हां दी इक इक हेठां हो गई मुच्छा, क्यों भुक्खे रह के झट लँघाईआ। हुण याद कर लै पंजां प्यारयां ने गाना बन्ह दिता नाल गुट्टा, सत्त रंग दा सति दयां वखाईआ। हुण कोई राकश नहीं जेहड़े लाल करनगे बुल्ल्ह ते बुट्टां, गुरमुखां नूं प्रेम विच दिता रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। ब्रह्मे की कहिंदा तेरा वेद अथरबण, क्यों रो के अथ्थरू रिहा वहाईआ। की संदेशा दे के गया कृष्ना अर्जन, वेले अन्त सुणाईआ। मेरे काहन ने कोई चुक्कणा नहीं उँगलीं उत्ते गवर्धन, जगत विच ना कोए चतुराईआ। ओह जद आवे दो जहानां करे मर्दन, सोया रहिण कोए ना पाईआ। ग़रीब निमाणयां वंडे दर्दन, दुखियां आपणे गले लगाईआ। आपणा पूरा करे फ़र्जन, नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों कलि कल्की वेस वटाईआ। एसे करके अवतार पैग़म्बरां गुरुआं लाई शर्तन, शरअ तों बाहर गए समझाईआ। जेहड़े दुआबे वाल्यां प्रेम विच भेंटा करने बरतन, उन्हां नूं ख़रीदण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। ब्रह्मे की कहिंदा अथर्बण दा ऐड़ा, ऊड़े तों परे सुणाईआ। ओ विष्नूं, किस तरह सृष्टी तों छुट्टे खहिड़ा, खेड़ा वसदा नज़र कोए ना आईआ। शंकरा तैनूं सारे कहिंदे भैड़ा, क्यों शाह सुल्तानां दी करें सफ़ाईआ। पुरख अबिनाशी तुहाडीआं करनीआं दीआं दो जहान वेखे पैड़ां, बिना खुरे तों खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा पड़दा लाहीआ। भोले सवाधान हो के उठ, आकाश दे उत्ते लै अंगड़ाईआ। कलयुग वेख सब दे बुत, बुतख़ाने खोज खुजाईआ। हुण रहिण नहीं देणा चप्प, चुप चपीते ताड़ी देणी खुल्हाईआ। औह क्यों हो गया अंधेरा घुप्प, कन्न विच मुन्दरां पाईआं देण दुहाईआ। जगत विकार पाई लुट्ट, लुटेरा बणया कलयुग भज्जे वाहो दाहीआ। की तैनूं नहीं आया दुःख, मनमुखां करें सफ़ाईआ। अज्ज वेला ई झुक के लै पुछ, कूड़ कुड़यार रहिण कोए ना पाईआ। जे नहीं कोल ते होर मंग लै कुछ, ख़ाली झोली दयां भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म हुक्म विच्चों सुणाईआ। ब्रह्मा कहे प्रभू तूं बड़ा दयाल, दयालू सदा

अख्वाईआ। पर बौहड़ी तेरी समझ नहीं आउंदी चाल, जुग चौकड़ी अवल्लड़ी चाल चलाईआ। मैं वी आपणा आप ना सकां संभाल, क्यों, जां तक्कया ते सम्बल बैठा धुरदरगाहीआ। जिस दा जोती जल्वा नूर जलाल, दो जहान करे रुशनाईआ। जिस ने मेट देणा झटका हलाल, हर हिरदे करे सफ़ाईआ। आपणे हथ्थ विच फड़ के काल महाकाल, चारों कुण्ट सेवा देणी लगाईआ। इस तरह जुग जुग वजाए ताल, तलवाड़ा आपणा नाम खड़काईआ। जे मेहर करे पापीआं अपराधीआं जावे तार, मेहर नज़र इक उठाईआ। हुण कोटां विच्चों भगतां दी आ गई वार, वारस आपणे रिहा बणाईआ। सच दा कर प्यार, प्रेम प्रीती इक बणाईआ। राती सुत्तयां अन्दर कर गुफ़तार, गुफ़त शनीद करे शनवाईआ। अग्गे वेख्यो तुहाडे साहिब दी किस तरह चलदी तेज़ रफ़तार, रफ़ता रफ़ता सारे दए उठाईआ। हुक्मे अन्दर सारे कर गिरफ्तार, पाबन्दी नाम वाली वखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर बण जावे इक्को वार उसदी नार, नर नरायण ल्ए प्रनाईआ। जिथ्थे इक्को इक एकँकार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। आपे जवान ते आपे मुटयार, बुढापा वेस ना कोए वखाईआ। आपे अन्दर ते आपे बाहर, आपे भज्जे चाँईं चाँईंआ। आपे सहेली आपे अकेली आपे भैण भाई ते आपे साक सज्जण करे प्यार, आपे खेल आपणे रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणी आपणी बणत बणाईआ। शंकर औह वेख प्रभू दी शान, शहाना रूप दरसाईआ। बण के आउंदा सखीआँ दा काहन, जिन्नां दा तन वजूद वेखण कोए ना पाईआ। ओह खुशीआं विच ओसे दा गीत गाण, जिस नूं सारे आए गाईआ। ओसे दा दर्शन करके आपणा मन रिझाण, जिथ्थे मन दी अवस्था नज़र कोए ना आईआ। बच्चयो तुहानूं उसे दी नहीं पहचान, जो तुहाडा पिता माईआ। पुछे की तुहाडी जगत विच आण, की भय रहे दृढ़ाईआ। क्यों शरअ बण गई शैतान, घर घर करे लड़ाईआ। क्यों मानव ज़ाती होए वैरान, वैरी पंज बैठे अन्दर डेरा लाईआ। किधर गए तुहाडे निशाने वाले बाण, की अणयाले तीर चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण प्रभू असीं तेरे पुजारी, पूजा विच समाईआ। तेरी वेखी खेल न्यारी, निरगुण धार तेरी रुशनाईआ। तेरी किरपा नाल निगह सचखण्ड मारी, ओथे मारू राग ना कोए सुणाईआ। जिधर वेखीए तेरे चरणां तों जाण बलिहारी, बलि बलि सीस निवाईआ। किसे हिरदे अन्दर नहीं ग़द्दारी, गदागर ना कोए दरसाईआ। जिधर तक्कीए उधर तेरा नूर तेरा ज़हूर तेरा रूप शृंगारी, इक्को रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग इक रंगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण प्रभ सानूं फिर लैण दे विच ब्याह, सेवा करीए नट्ठीए भज्जीए चाँईं चाँईंआ। नाले वेखीए पैग़म्बरां दा किस तरह हुन्दा नकाह, बिना नकाब

तों नकाब वाला लए प्रनाईआ। उस दे केहड़े बणन गवाह, शहादत देण भुगताईआ। जिस दे सिंघासण दे पहरेदार ते सेवादार ओह जिन्हां मुख नूं मली स्वाह, सूत्रधारी आपणा खेल वखाईआ। जिस ने सब दा सांझा बणाउणा राह, रहिबर हो के सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नाले उसे नूं किहा खुदा, खुद मालक आपणा जोत नूर करे रुशनाईआ। जिस ने मज़्ब दी मेटणी वबा, अदा पिछली दए गंवाईआ। इक नाम दी करके सत्ा, सद्दा घर घर देणा जणाईआ। आपणा फर्ज करके अदा, जन भगत सचखण्ड दए बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा मेल मिलाईआ। अवतार कहिण विष्न ब्रह्मा शिव छेती करो छेती, चारों कुण्ट वेखो नैण उठाईआ। वेखो जेहड़ा प्रभू मातलोक विच बण गया परदेसी, की परदेसक ख़बरां रिहा सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण साडे कन्न फड़ी औह बौहड़ी ओह आदि जुगादि दा भेती, दूर दुराडा वेखे थांउँ थाँईंआ। हुण ओह वेखण गया दीनां मज़्बां वाली नेकी, की निक्के वड्डे कार कमाईआ। सानूं इक्को पता ओह इक्को आप ते इक्को उहदा पुत शब्द पलेठी, दूजा जम्मण वाला नज़र कोए ना आईआ। शहिनशाहां दा शाह पातशाहां दा पातशाह ते धर्म ख़ज़ाने दा सेठी, नाम दा भण्डारा आपणे हथ्थ उठाईआ। उस ने आपे लाड़ा बणना नारी बणना ते आपे बणना बेटा ते बेटी, ते आपे आपणा घर लैणा प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, की सचखण्ड कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण ओ ब्रह्मा विष्न शिव चारों कुण्ट मारयो नज़र, बिना अक्खां अक्ख उठाईआ। पता नहीं की साडे उत्ते होण लग्गा फ़ज़ल, रहमत हक कमाईआ। मुहम्मद बोलया बौहड़ी सृष्टी उत्ते आउण वाली अज़ल, इहो मेरी दुहाईआ। दीनां मज़्बां विच कर के पज़ल, किसे नूं पलीत ते किसे नूं पाक दिता समझाईआ। अल्ला वाहिगुरु राम ओम सतिनाम दी दस्स के ज़ज़ल, अक्खरां विच परचाईआ। ते इक दूजे दी मारन नहीं दिती नकल, वक्खरा वक्खरा अक्खर पढ़ाईआ। जिहनूं बणाया उहनूं आख्या तूं मेरा असल, वसल तेरे नाल रखाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई बणा के फ़सल, रबी ख़रीफ़ दा झगड़ा दिता पाईआ। वक्खरी वक्खरी बणा के नस्ल, हिस्से मानुख ज़ाती दिते कराईआ। ते कोटां विच्चों जुग जुग आपणे प्रगटा के भगत सुहेले रत्न, अमोलक आपणी गोद टिकाईआ। ते गुर अवतार पैग़म्बर कहिण हुण भावें किन्ने करीए यतन, यथार्थ साडा हुक्म रहे ना राईआ। क्यों असीं मातलोक विच्चों आ गए सचखण्ड दे वतन, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिथ्थे इक्को गृह ते इक्को मन्दिर ते इक्को पत्तन, दूजा घाट ना कोए दरसाईआ। इक्को नाम ते इक्को कलमा रटण, रट्टा होर ना कोए समझाईआ। जिथ्थे सन्त सुहेले लाहा खट्टण, ओह दर रिहा दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ।

विष्न ब्रह्मा शिव कहिण गुर अवतार पैग़म्बरो इक दूजे दीआं बण जाओ सखी सहेलीआं, अंक अंक नाल जुड़ाईआ। दीनां मज़्बां तों हो जाओ वेहलीआं, झगड़ा रहे ना राईआ। गलवकड़ीआं पाओ विछड़े बेलीआं, जो मालक इक अख्वाईआ। ओसे नूं मिल के साडीआं लेखे लगदीआं सेलीआं, जो सिर ते हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कर कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण तूं मालक नर नरेशे, तेरी सति सरनाईआ। की मातलोक विच्चों दए संदेशे, फ़रमाना इक प्रगटाईआ। जिथ्थे जुग चौकड़ी बीत गए केते, कोटन कोटि काल विहाईआ। तेरा किसे नहीं पाया भेते, अन्त कहिण कोए ना आईआ। सानूं इक्को शब्द चेते, जो नानक गया समझाईआ। उस लालो नूं किहा सी जिस वेले वाड़ खाएगी खेते, राखा नज़र कोए ना आईआ। माता कच्चे करावण पेटे, सति धर्म ना कोए वखाईआ। भाई भैण दी सेजे लेटे, कलयुग कूड़ कूड़ कुरलाईआ। पिता कन्या दा मास वेचे, कीमत टक्या वाली पाईआ। गुर अवतारां रहिणे नहीं कोई लेखे, पैग़म्बरां ना कोए चतुराईआ। उस वेले पुरख अकाल वटाउणा भेसे, भेखाधारी रूप दरसाईआ। ना उहदी मुच्छ दाढ़ी ना केसे, ना कोई मूंड मुंडाईआ। सिर्फ़ एह नाल रखे दस दशमेशे, जिस नाल दहि दिशा करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण अवतार पैग़म्बर गुरुओ गुरदेवो औह आ गया हलकारा, शब्दी रूप वटाईआ। तुहानूं प्रनावण वाला पिच्छे गया दुबारा, दुआरकावासी आपणी लओ अंगड़ाईआ। अग्गे ते तुसीं हंढा के आए तत्तां वालीआं नारां, विषयां विच आपणा झट लँघाईआ। पुरख अकाल नूं मन्नदे आए भतारा, पतिपरमेश्वर कहि के सीस निवाईआ। दूरों दूरों करदे रहे निमस्कारा, नेड़े हो सेव ना किसे कमाईआ। अक्खरां विच दस्स के आए इज़हारा, सिफ्तां विच सालाहीआ। मिन्नता दा बणा के पुजारा, पूजा विच आए दृढ़ाईआ। पथ्थर इट्टां दा बणा के मुनारा, पुरख अकाल आए वखाईआ। जिस दीआं दीनां मज़्बां वाले ढाह देंदे दीवारा, निशाना देण मिटाईआ। लेखा लिखदे विच अख़बारा, ख़बरां घर घर वखाईआ। हुण वेख्यो अग्गे दा नज़ारा, नज़रीआ सब दा दए बदलाईआ। तुसीं चार जुग दीआं मुटयारां, अज्जे तक खावंद हथ्थ कोए ना आईआ। सिर्फ़ तत्तां वाले सरीर दा कर के शृंगारा, सोहणा रूप वखाईआ। हुण एथे तेई ते तिन्न छब्बी ते दस छत्ती ते नानक दे छत्ती जुग दीआं बद्धीआं पईआं कतारां, कतारां दा मालक सोभा पाईआ। जिस ने रहिण नहीं देणी दोफाड़ा, इक्को रंग देणा रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा मेल मिलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण गुर अवतार पैग़म्बरो आ गई सतारां हाढ़ दी तारीख, तवारीख पिछली रिहा मिटाईआ। तुहाडी भगत सुहेले करदे उडीक, बैठे राह तकाईआ। सुहाग दे गाए गीत, खुशीआं रंग रंगाईआ।

छड के शिवदुआले मट्ठ ते मन्दिर मसीत, गुरदवारयां आए तजाईआ। सारे कहिंदे असीं प्रभू दी वेखणी रीत, की आपणी कार कमाईआ। किस बिध जोती धार करे प्रीत, प्रीतम आपणा जोड़ जुड़ाईआ। साचा कलमा दस्से हदीस, हज़रतां तों परे करे पढ़ाईआ। लेखे लाए ऊच नीच, राउ रंक इक्को घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो औह आउंदा जे फ़रमाना, शब्दी शब्द सुणाईआ। सब नूं मातलोक पैणा जाणा, आपणा आपणा धर्म उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाउणा गाणा, गा गा शुकर मनाईआ। वेख्यो प्रभ ने हथ्थ नहीं आउणा किसे पलँघ गलीचे पैंद ते सरहाणा, दुशाल्यां वाली सेज ना कोए हंढाईआ। पहले उहदयां भगतां दा दर्शन पाणा, जो बैठे आसण लाईआ। फेर कहिणा तेरा नूर जोत निमाणा, हँकार विच ना कोए चतुराईआ। साडा दीन मज़्हब होया पुराणा, पुराणे चीथड़ माझे वाल्यां दे देण गवाहीआ। फेर तक्कया नौ खण्ड पृथ्मी दा किरसाणा, ते दो जहानां हल चलाईआ। टिल्ले पर्बत समुंद सागर लोआं पुरीआं फिरदा विच वाहणा, भज्जे चाँईं चाँईआ। जद किरपा करे ते जुग दा अन्तिम वेखे जिस वेले जीव होया निमाणा, निताणयां खोज खुजाईआ। हुक्मे विच हुक्म देवे ते सृष्टी कहे वरत गया भाणा, प्रभ दा भेव कोए ना पाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जोती धार पहर के बाणा, बाण अणयाला तीर चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर आउंदे जोती धार, विष्न ब्रह्मा शिव वेख वखाईआ। वेखो बणे इक कतार, अग्गे पिच्छे ना कोए चतुराईआ। गल वेखो ओह फुल्लां दे हार, जेहड़े हार हर हिरदे विच फुल्लां दी महक देण महकाईआ। आए ओस दवार, जिथ्थे बैठा धुरदरगाहीआ। ओसे दा रूप ओसे दा शृंगार, ओसे दे विच समाईआ। इक दूजे नूं करो निमस्कार, दर दवार मिले माण वड्याईआ। ओ यारां दे यार, यराने पिछले वेख वखाईआ। की लेखा नाल सिरजणहार, जो सिर सिर रिज़क सबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा लेखा दए वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव औह वेखो निरगुण धार आपणे साथी, जोती जोत रुशनाईआ। कोई दिसदा नहीं ऐराप्त हाथी, दक्खण दिशा वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को प्रेम प्यार ते मुहब्बत वाला साकी, सच प्याला जाम रिहा प्याईआ। सचखण्ड दरगाह साची दी खोल्ह के ताकी, पर्दा दिता उठाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर सब दी मन्न के आखी, भविक्ख्त पिछला पूर कराईआ। आप चढ़ के चिट्टे अस्व घोड़े राकी, पाख़र जीन सुहाईआ। जेहड़ी हरदेव सिँघ दी पोशाकी, ओह दुशाला सिंघासण उपर टिकाईआ। भगतो तुहाडी मेट के पिछली वाटी, वटणा आपणे तन छुहाईआ। अज्ज सुहाग भरी राती, रुतड़ी गुर अवतारां पैग़म्बरां नाल महकाईआ। सब दी इक्को कर के ज़ाती, दीन मज़्हब दा झगड़ा रहे ना राईआ। लेखा मुक

गया तन वजूद ख़ाकी, ख़ाक नूं ख़ाक विच रुलाईआ। जिस दा इक्को नूर इक्को जोत प्रकाशी, प्रकाशवान हो के वेखे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करो आराम, सिंघासण लओ लगाईआ। तेई अवतारां दी अग्गे निमस्कार, कृष्न राम रमईआ सीस निवाईआ। पैग़म्बरां कीती सलाम, सजदे विच वड्याईआ। गुरुआं कीती प्रणाम, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। साडा पूरन होवे काम, पूरन साहिब तेरी बेपरवाहीआ। तूं साहिब सच्चा सुल्तान, शहिनशाह अख्वाईआ। पुरख अकाल कहे मैं आदि दा हुक्मरान, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। पंजे लिखारीओ आपणे अदालती कढ लओ अशटाम, हथ्थां विच सब नूं दयो वखाईआ। वेखो अवतारां दे होण लग्गे ब्यान, पैग़म्बरां दा सुणना पैग़ाम, दस गुरु की लिखाण आपणी आशा देणी प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण साडा ब्यान होवे कलम बन्द, बन्दश अवर ना कोए रखाईआ। असीं सचखण्ड दवारयों मार के आए पन्ध, पाँधी बण के भज्जे वाहो दाहीआ। साडे बोलण वाले नहीं ज़बान ते दन्द, तेरा हुक्म शब्द शनवाईआ। अज्ज तों असीं दीन मज़्हब दा झगड़ा छड्डुया ते करना नहीं जंग, लड़ाई तेरे हथ्थ फड़ाईआ। पंजां लिखारीआं दे रूबरू साडा हो जाए तेरे नाल कारज अनन्द, अनन्द तेरे विच्चों आईआ। तेई अवतार हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद दस गुरु सारे कट्ठे हो के गाईए इक्को छन्द, तूं मेरा मैं तेरा ते दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिधर वेखीए तूं साडा नूर ते असीं तेरे चन्द, चन्द नूर तेरा रुशनाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले तेरे अग्गे साडी सब दी इहो मंग, साडी झोली देणी भराईआ। जेहड़ा नाम कलमा सानूं तूं पिच्छे दिता वंड, तेरयां भगतां दे साहमणे तेरयां कदमां विच सुटाईआ। असीं चाहुंदे अग्गे सारी सृष्टी नूं चाढ़ दे इक्को रंग, इक्को इष्ट देणा वखाईआ। तेरे चरणां दी धूढ़ अट्ठ सट्ठ तीर्थ ते उत्तम श्रेष्ट चंग, जिथ्थे विष्न ब्रह्मा शिव नहा नहा खुशी मनाईआ। असीं पिण्डे तों हो जाईए नंग, तेरे अग्गे दुहाईआ। कोई मार ना सकीए दम, दामनगीर तेरी इक सरनाईआ। क्यों हुण असीं छडदे झगड़ा माटी ते चम्म, तेरी जोत विच तेरा रूप समाईआ। ना कोए खुशी ते ना कोए ग़म, चिन्ता रही ना राईआ। ना कोए भेख करीए ना कम्म, ना डौरु डंक खड़काईआ। जो घड़या सो देवीं साहिब तूं भन्न, भन्न्‍णहार सब किछ तेरे हथ्थ फड़ाईआ। इक बेनन्ती ज़रूर मातलोक विच आपणयां भगतां दा बन्ही मन, मनसा बाहर ना कोए हल्काईआ। वेखीं चुगली वाले रहिण ना देवीं किसे दे कन्न, गुरसिख दी निंदिआ गुरसिख ना कोए सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण असीं दस्स के आए बिना सतिगुरु दे नाम तों चंगा नहीं जे कोई धन, ओह धन देणा वरताईआ। क्यों कलयुग चोर डाकू बथेरे ते लावण वाले संन्‍,

साध सन्त इहो चोरी रहे कमाईआ। प्रभू कोई स्त्री बणदा कोई नार बणदा कोई वाईफ़ असीं बण गए तेरी ओह रंन, जेहड़ी शर्म हया विच आपणा आप तेरे विच छुपाईआ। हुण किरपा कर के सब दा बेड़ा लवीं बन्न्ह, तेरा तेरी झोली दिता सुटाईआ। जेहड़ा तेरे चरण झुक जाए उहनूं कोई सके ना डंन, चुरासी दा लेखा देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडा ब्यान हल्फ़ी, तस्दीक भगतो देणे कराईआ। साडे गल नहीं कोई अल्फ़ी, अलिफ़ रूप नन्गे सोभा पाईआ। तूं साडा शरफ़ी, क्षत्रीया तेरी ओट तकाईआ। नाले तेरीआं मिन्नतां कीतीआं नाले तैनूं किहा मालक अर्शी, अर्शी प्रीतम तेरे ढोले गाईआ। ओए सानूं उडीकदयां उडीकदयां ओह वक्त आ गया ते तूं आयों उपर धरती, धरनी उत्ते सोभा पाईआ। हुण बण जा सब दा इक्को निध परती, एह पंजां लिखारीआं दी पत्रका दए गवाहीआ। भगतो तुहाडे साहमणे लेख लिखाया शर्ती, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला लए मिलाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू तेरा मुखत्यारनामा तेरे अग्गे दिता रख, मज़्बां दा झगड़ा दिता मुकाईआ। असीं हो के लखों कक्ख, तेरे अग्गे सीस निवाईआ। इक हुक्म सच्चा दस्स, की आपणा खेल भुगताईआ। पुरख अकाल किहा जोती मेरे नूर वल्ल तक्क, तकवा इक रखाईआ। जे तुहानूं अजे शक,

दरगाह साची नूं पिच्छे भज्जो चाँईं चाँईंआ। जे हुक्म मन्नणा यक, सीस जगदीश देणा निवाईआ। फेर वेला ना आवे हथ्थ, नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों आवे बेपरवाहीआ। तुहाडा सब दा लहिणा देणा देवे ठप्प, ठप्पा आपणा नाम लगाईआ। जेहड़ा चार जुग दा नाम दिता रफ़, जगत वसीक्यां ते काग़ज़ां उत्ते दिता लिखाईआ। उस दा बदल दिता मति, हुक्म संदेशा इक सुणाईआ। क्यों प्रभ दी जोत जिस दी उबले कदे ना रत, अग्नी अग्ग ना कोए वखाईआ। सौण वाल्यो कुझ नहीं आउणा हथ्थ, नैण खोल्ह्हो आपणी लओ अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा मेला रिहा कराईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण अशटाम उत्ते लायो मोहर, मोहरा नाम बणाईआ। अज्ज तों आपणे हुक्म अन्दर सानूं तोर, तुरत आपणी सेव समझाईआ। जेहड़े बणे सां बांके छोहर, लोकमात धराईआ। जेहड़े असीं वंडां पा के आए सां सूर गाँ ते उत्ते ढोर, मज़्बां विच टकराईआ। नाले दस्स के आए सां आउणा ब्राह्मण गौड़, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। सानूं एह नहीं सी पता तूं सब दी पट्टी कर देणी चौड़, चार जुग दा लेखा देणा मुकाईआ। किसे ने राम किहा किसे ने कृष्न किसे ने अल्ला किसे ने सतिनाम वाहिगुरु दा मारया फौड़, होके दे दे दृढ़ाईआ। ते केहड़ा तूं किथ्थों प्रभू गुर अवतार पैग़म्बरां दे विच्चों काया तौड़, जेहड़ा कच्चा ठीकर अन्त भन्न वखाईआ। ज़रा हुण असां कीता गौर, जिस

वेले तूं गहर गम्भीर दिता समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा पूर कराईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो तुसां वक्त ल्या संभाल, सम्बल आ के वेख वखाईआ। किते करनी ना पई भाल, खोजणा प्या ना बण के राहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव नाल दिता वखाल, सोहणा रंग बणाईआ। अग्गे सतिजुग दी चले चाल, कलयुग दा लेखा देणा मुकाईआ। जे कोई अखीरी है सवाल, मैनूं दयो सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां निउँ के कीता प्रणाम, इक्को वार सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा रखणा आपणे घर, दूजा घर ना कोए वखाईआ। लच्छमी कहे मैं प्रभू दी दासी, जुग जुग सेव कमाईआ। जगत माया मेरी रासी, पूजा विच सर्ब सीस निवाईआ। जन भगतां दस्सां खेल तमाशी, सहिज नाल सुणाईआ। तेरा खेल पृथ्मी आकाशी, गगन गगनंतर तेरी रुशनाईआ। मेरी इक अर्ज़ोई, मेरे साहिब तेरा भगत धर्म राए दी चढ़े कोई ना फाँसी, राय धर्म ना दए सज़ाईआ। लेखे ला के सब दी अज्ज दी राती, रुतड़ी आपणे नाल इक महकाईआ। तूं सब दा सांझा कमलापाती, पतिपरमेश्वर नूर इलाहीआ। भावें मैनूं सारे करदे हासी, ज़बान दुनी वाली चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। लच्छमी कहे मेरे वेख लओ नौ दवारयां वाल्यो नौ फूल, सब नूं रही दरसाईआ। प्रभू भगत बण के जगत वासना विच जायो कोए ना भूल, कूड़ा जोबन कम्म किसे ना आईआ। सतिगुर चरण प्रीती इक असूल, नियम इक सुणाईआ। सब कुझ ओथों हुन्दा वसूल, जिस दी वसूली किसे वही खाते उत्ते ना जाए लिखाईआ। लहिणा देणा मिले माकूल, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल वखाईआ। गुरमुखो आह वेख लओ आ गई प्रेम धार बुनाइण, बुन्याद सब दी दए बणाईआ। हरिसंगत विच बुरा उठाए कोए ना नैण, कुँवार कन्या रही समझाईआ। सुनेहड़ा दए सतारां हाढ़ दी रैण, भिन्नड़ी इक सुणाईआ। सच दा भण्डारा सच दा नाम सच दा गहिण, साचे तन छुहाईआ। तुहानूं घर बैठयां नूं प्रभू मिल गया ओह रसैण, जेहड़ी खोज्जयां हथ्थ कदे ना आईआ। इक दूजे नूं समझयो ना कोए त्रफ़ैण, भगत भगतां मिलणा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा पड़दा लाहीआ। लच्छमी कहे मैं वेखी जोत निरँकारी, निरगुण नूर रुशनाईआ। जिस दा लेखा बन्द विच पटारी, रुढ़के वाले देण गवाहीआ। एह खेल शब्द दी न्यारी, बुद्धी तों परे आप जणाईआ। जिस नूं अक्ल ना करे विचारी, मन मनसा ना कोए दरसाईआ। पंजे उठ खलोवो दरबारी, किरपानां उपर लओ उठाईआ। साडी प्रभ दे नाल सदा त्यारी, चारों कुण्ट रहीए चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। जन भगतो आह वेख लओ गुरमुखां ल्यांदा सगण,

शब्द विच समझाईआ। किसे दे हिरदे लग्गे कोए ना अग्न, बुद्धी तों परे कार कमाईआ। जिन्हां गुरमुखां दे दीपक जगण, लोकमात होए रुशनाईआ। उन्हां दा सड़े कदे ना बदन, तामस विच ना कोए वखाईआ। इक्को प्रभ दे नाल होवे लग्न, अन्तर अन्तर ध्यान रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव चुकाईआ। लच्छमी कहे एह गिरी, खोपा कौडीआं नाल वड्याईआ। एह प्रभू दी प्रीती निरी, हरिसंगत रही समझाईआ। पर गुरमुखो मिलदी चिरीं चिरीं, चिरीं विछुंन्यां लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म सुणाईआ। लच्छमी कहे एह माझा मालवा दवाबा जम्मू दा दरम्यान, सोहणा सोभा पाईआ। जिथ्थे फिरे मेरे काहनां दा काहन, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस नूं झुकदे ज़िमीं असमान, ब्रह्मण्ड खण्ड सीस निवाईआ। ओह आ गया भगतां नूं सगण पाण, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दा बण जजमान, फिरे थांओं थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पर्दा ओहला दए चुकाईआ। गिरी कहे मैनूं कहिंदे खोपरा, वेखो मेरे जुट्ट दा जोड़ बणाईआ। गुरमुखो भगत भगवान रहे कोए ना ओपरा, रविदास दा कसीरा दए गवाहीआ। तुहाडा साहिब सुल्तान जद तक्को ते जगत जहान छोकरा, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। कदे ना समझयो एह माटी दा लोथड़ा, खुशीआं विच तुहानूं गिरीआं बादाम छुहारे दए खवाईआ। तुहाडे पिच्छे वेखो किड्डा फड़या टोकरा, आपणे हथ्थ उठाईआ। तुहाडा धर्म दवारा करके मोकला, रस्ता इक्को दए चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हुक्म देवे धर्म धार दे नौकरां, विष्न ब्रह्मा शिव आप सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण प्रभू तेरे शगण बड़े बहुते, मैहन्दीआं रंग रंगाईआ। पर असीं इक्को चाहुंदे तेरे भगत भव सागर विच खाण ना गोते, वहिंदी धार ना कोए वहाईआ। सब नूं तार देवीं जेहड़े तेरा नाम जपदे ते लाउंदे जट्टां वाले जोते, जोतरा आपणे नाम लगाईआ। क्यों ओह तेरे पिच्छे गोबन्द ने भेंट कराए जिगर दे टोटे, टुटयां ल्या जुड़ाईआ। कदी आपणे प्यार विच रखीं ना खोटे, सदा खोट्टयां खरे बणाईआ। तैनूं मिलण विच तेरयां प्यारयां नूं कोए ना रोके, रुकावट कोए ना आईआ। जिन्हां बीबीआं सज्जे नक्क नाल पाए कोके, एह गोबिन्द दी सेवा पिच्छे आईआं कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। लच्छमी उठ कर अरदास, बेनन्ती इक सुणाईआ। प्रभू सदा वसीं भगतां पास, तेरे नालों ना होवे जुदाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां दा ब्याह होया ख़ास, निकाह तेरे नाल पढ़ाईआ। की अजे वज्जे नहीं साढे बारां रात, लिखारीओ दयो सुणाईआ। माझे मालवे दुआबे जम्मू वाल्यो हो जाउ गुस्ताख़, आपणा बल लओ प्रगटाईआ। मुखो कढो ग़ुस्से वाले वाक, इक दूजे नूं दयो सुणाईआ। इन्हां तों पिच्छों पंजां दरबारीआं

ने पंज पंज कढणे काड, जिन्हां दा लेखा नाल गोबिन्द सच्चे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक वखाईआ। भगतो तुहाडी लड़ाई ने लड़ाउणे चार कूट, ज़रा ज़ोर दयो लगाईआ। मेल मेलणा जूठ झूठ, क्रोध क्रोध नाल टकराईआ। इक शब्द गुरु दा हुक्म वाला जूत, चौथे जुग दए खड़काईआ। लेखा वेखे ताणा पेटा सूत, सूत्रधारी खोज खुजाईआ। कूड़ी क्रिया कराउणा कूच, कूचा गली कर सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जन भगत बणा के आपणे पूत, पिता पुरख अकाल गोद सुहाईआ। जन भगतो सारे ढको अक्खीं, अक्खां पोटयां नाल दबाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर इक रूप बण जाए सख़ी, सति विच समाईआ। अंगी नाल किसे दी नन्गी नहीं वक्खी, हथ्थ पैर वेखण कोए ना पाईआ। हाढ़ महीना फड़े कोए ना पक्खी, गर्मी सके ना कोए सताईआ। सच प्यार विच बण के सच्ची, सच विच्चों प्रगटाईआ। सोहणा रूप दरसावे पड़दा लाहवे विच्चों नज़री आवे सुनक्खी, घूँगट आप उठाईआ। जेहड़ी जोबनवन्ती नक्क ते बहिण नहीं देंदी मक्खी, दीन मज़्ज़ब दी गल्ल सहि सके ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। नी वेखो प्रभ दी नार सुहागण, सोहणा रूप बणाईआ। पीआ दे वैराग विच फिरे वैरागण, बौहड़ी बौहड़ी दुहाईआ। जिस ने मैनूं कीता वड भागण, वड भागी आपणे नाल मिलाईआ। मैं हैरान होई गुरमुख हँस बणाए कागण, कागों हँस उडाईआ। जेहड़े साढे बारां वजे तक जागण, पिछला लेखा आए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। जोत कहे मैनूं सारे कहिंदे कोझी कमली, प्रभ कमला कन्त हंढाईआ। मैनूं कहिंदे राम दी सीता यमली, जिस नूं राम रावण गया उठाईआ। मैनूं कहिंदे सारे कँवली, बौरी खुल्ल्हे केस गल विच पाईआ। जां तक्कया मेरा माही प्रेम प्रीती दा अमली, अमलां तों रहित नज़र कदे ना आईआ। जद आया ते भगतां दे दम लई, आप आपणा फेरा पाईआ। जां प्रगटया जुग चौकड़ी कम्म लई, कोझयां गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। नार कहे मेरा वेखो मथ्था, पेशानी सोभा पाईआ। जिथ्थे धूढ़ी लग्गे पुरख समरथा, ख़ाकी ख़ाक रमाईआ। इथे इक हरफ़ तूं मेरा मैं तेरा होवे कथा, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। मैं खुशीआं विच नट्ठां, भज्जां वाहो दाहीआ। दीन मज़्ज़ब दा मेटां रट्टा, घट्टा सब दे सिर विच पाईआ। जे किसे मेरे साहिब दा पुछणा पता, भगतां दे दवारे धुर दा माहीआ। जिस दे कोल ना कोए गाँ ना कोए वच्छा, कटयां सीस ना कोए कटाईआ। अज्ज सब दा पिछला पूरा करके पटा, ते पटने वाले दिती वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखाईआ। मैनूं कहिंदे कमली

ने खोल्ह लई गुत्त, बुरा शगन मनाईआ। मैं हो गई खुश, क्यों प्रभ ने कलयुग दा लेखा देणा चुकाईआ। फेर मैं चलां टुप टुप, सहिज सहिज पैर उठाईआ। मैं जां वेख्या ते आपणयां भगतां विच बैठा लुक, लुक्यां नूं आपणे नाल मिलाईआ। मैं चार कुण्ट तक्की कमल्यो मेरे साहिब बिना दिसे अंधेरा घुप, चन्द दा चन्द ना कोए रुशनाईआ। मैं इक्को लभ्भदी इक्को गुज़री दा पुत्त, जिस नूं दूजी जन्मे कोए ना माईआ। जिस दे गुरमुख इक मुठ, दहि दिशा विच सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हाल समझाईआ। मैनूं कहिंदे एह जोबनवन्ती मस्ती, आपणी लए अंगड़ाईआ। पर मैं वेखणी सब दी हस्ती, सूरबीर देणे उठाईआ। जे मन्नणा ते इक्को प्रीतम अर्शी, दूजा अंग ना कोए लगाईआ। क्यों मैं सदा वसनीक उसे दे घर दी, जिथ्थे इक्को जोत नूर रुशनाईआ। मैं नार नरायण नर दी, जो मालक धुरदरगाहीआ। मैं तां याद करदी सां पर दी, कदे आवे मेरा माहीआ। क्यों ओह सदा भगतां दा दर्दी, दुखियां दुःख गंवाईआ। किन्ने चिर पिच्छों गुर अवतार पैग़म्बरां दी मंज़ूर कीती अर्ज़ी, अशटाम उत्ते दस्ख्त लए कराईआ। मैं बड़ी कोझी कमली हो के रही डरदी, लुक लुक आपणा झट लँघाईआ। पर मैनूं इक दुःख जदों दो जहानां नाल प्यार करे ते मैं विचे विच सड़दी, सौंकणा वाला रूप बणाईआ। जे मैं चंगी होवां प्रभ दा भाणा मन्नदी, जो करे सो मन्न के शुकर मनाईआ। क्योंकि एह खेल आदि जुगादि इक्को हरि दी, जो हर हिरदे रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। वेखो केहड़ी नार निकली विच्चों डोली, सति सच नूं प्रगटाईआ। जिस नूं निमस्कार करे सदी चौधवीं दी गोली, सीस चरणां उत्ते रखाईआ। हुण सारे गुरमुख पाउ रौली, वेखो की प्रभ दी बेपरवाहीआ। चुरासीआं विच्चों थोड़िआं जिहां भगतां दी रुत मौली, मौला हो के आपणे गुल खिलाईआ। देवे माण वड्याई उपर धौली, धरनी धरत धवल धौल सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक वखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण सानूं मिल गया पति पतिवन्त, दाता बेपरवाहीआ। जिस ने कलयुग करना अन्त, कूड़ी रैण देणी मिटाईआ। भगत बणा के सन्त, गुरमुख लैणे जगाईआ। जन्म कर्म दी मेट के चिन्त, सांतक सति देणा समझाईआ। आपणी महिमा दस्स बेअन्त, बेअन्त आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण पंज प्यारे ल्या दयो पाणी, ग्लास इक्को नज़री आईआ। रविदास चमार कितों पढ़दे बाणी, सतरां नौ नौ सुणाईआ। साडा झगड़ा मुक जाए चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज हुक्म ना कोए सुणाईआ। असीं हुण बण गए ओस साहिब दी राणी, जिस दी रईयत दो जहान अख्वाईआ। अक्ख रही कोए

ना काणी, दीन मज़्ब वंड ना कोए वंडाईआ। जद वेखो ते सुघड़ सुचज्जी सवाणी, सच तख्त ते बैठी सच दे मालक नाल आपणा अंग छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक चढ़ाईआ। वेखो चढ़या रंग ज़रूर, चरण नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल गया ना भूल, अभुल्ल बेपरवाहीआ। जिस नूं कहि के आए चार जुग कन्त कन्तूहल, सो अन्त लए प्रनाईआ। सब दा सांझा कर असूल, सोहँ ढोला दिता सुणाईआ। चरण प्रीती बख्श के धूल, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा वेस वटाईआ। वेस वटा के आ गया स्वामी, समां दए गवाहीआ। जिस नूं कहिंदे अन्तरजामी, जुग चौकड़ी खेल खिलाईआ। जिस दी शब्द शब्द गुरबाणी, नाम नाम समझाईआ। ओह लेखा जाणे जीव प्राणी, लख चुरासी वेख वखाईआ। कलयुग सब दी पिछली वेखे कहाणी, लेखा फोले थांओं थाँईंआ। आपणी करके तरल जवानी, नौजवाना आपणा हुक्म सुणाईआ। सारी सृष्टी करके फानी, अडोल अडुल आपणा आप धराईआ। जन भगतो अज्ज तों तुहाडी मंज़ल पूरी कीती रुहानी, रूह बुत करी सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण असीं बण गए नार सुचज्जी, सोहणा रूप धराईआ। जन भगतो तुहानूं मिलण आए अज्जी पज्जी, भज्जे वाहो दाहीआ। वेखो किडी सोहणी संगत सजी, सज्जण बैठा धुरदरगाहीआ। तुहाडे वसे उपर शाह रगी, रघुपति दाता बेपरवाहीआ। जिस ने लेखा पूरा करना चौधवीं सदी, सदमा घर घर दए दरसाईआ। जिस नूं कहिंदे मुहम्मद दी वगणी नूह नदी, ओह नदीआं दे वहिण दए वहाईआ। औह वेखो लहिंदी दिशा अग्ग लग्गी, अग्गे हो ना कोए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रूप दरसाईआ। ओह पंज प्यारे कहिण धुर दीए राणीए पाणी ते पी ला, की दुपट्टा सिर टिकाईआ। गुरमुखो ओह वेखो कलयुग भगत दवारे बाहर बैठा , निउँ निउँ सीस झुकाईआ। मूँह ते हथ्थ फेर के कहे मैं हो गया हीणा, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। जे अज्ज हुक्म मिल जाए ते मैं जावां विच चीना, चीन वाल्यां दयां उठाईआ। मेरा फेर ठंडा होवे सीना, एशीआ ते योरप देणा लड़ाईआ। जे दुनिया ना लड़े ते मैं शहिनशाह दा पुत कमीना, ते मेरी चौथे जुग दी बुद्धी कम्म किसे ना आईआ। मैं तकदा कुझ खेल करना विच अस्सू महीना, मास सोहणा सोभा पाईआ। जेहड़ा गुरमुखां ने बहि के अज्ज वहाया पसीना, हड्डीआं पसलीआं विच्चों कढ्ढाईआ। पर फिर वी चंगा इन्हां नूं मिल गया दाना बीना, जो मालक इक अख्वाईआ। मैं जाणया शायद इहो राम रहीमा, रहमत रिहा कमाईआ। मैं तकदा जिस भगतां दा अमृत पीणा, मुख बुल्ह्लां नाल छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा घर वसाईआ।

५८२
२२

गुरमुखो तुहाडा अमृत बड़ा ठंडा, ठंडा यख नज़री आईआ। ओह वेखो कलयुग दा कन्ढा, कन्ढी बैठे ध्यान लगाईआ। याद कर लओ इक बचन भुल्ल गया सी गोबिन्द दा बन्दा, बहादर माधो दास मिली सज़ाईआ। हुण वक्त ओस नालों वी चंगा, चंगी तरह दृढ़ाईआ। जिस ने इक्को वार खहिड़ा छुडा देणा जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज पन्ध मुकाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत विच रहिण नहीं देणा कोई गंदा, गंदगी दे कीड़े गंदगी विच देणे सुटाईआ। मैं कोई उगराहुण नहीं आया तुहाथों वसूली वाला चन्दा, चन्द सूरज सारे बैठे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। भगतो तुसीं आंहदे होवोगे एह निक्की जेही मुन्नी, कन्ना मन्ना कुरल कर के झट लँघाईआ। कदी सिर तों लहि जावे चुन्नी, सौहरयां पेक्यां दी शर्म हया गंवाईआ। आंहदे होवोगे अक्ल दी गुंनी, सीणे परोणे दी जांच ना किसे सिखाईआ। हथ्थां नाल आटा कदे ना सके गुंन्ही, तौण सके ना कदे बणाईआ। जदों वेखीए पता नहीं कदों दी तिआही झट पाणी ला लए बुल्ल्हीं, आपणे अन्दर लँघाईआ। किडी मोटी झट विच शकल लए बदलाईआ। नी की वेख्या बाहरों होर अन्दरों होर नवीं नकोर दिसे काया कुल्ली, मालक आपणा रूप धराईआ। जद वेखो ते भगतां दे चरणां विच रुली, रुल के आपणा झट लँघाईआ। फेर वेखो सुल्हकुली, सब दा मेला रही मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतो किस ने मेरा सिर तों लाह ल्या लीड़ा, बड़े शैतान नज़री आईआ। मैं भज्ज के बहि जावां विच आपणे पीढ़ा, किते कोई चुक्क के भज्ज ना जाईआ। नी किथे मेरा धर्म दीए गोलीए कलीरा, हथ्थ दे फड़ाईआ। मैनूं लभ्भ लैण दे केहड़ा भगत ते केहड़ा साचा वीरा, ते वीर जी कुँवारी कहि के दयां सुणाईआ। मेरा ओह भ्रा जेहड़ा प्यो माँ मरन तों अक्खां विच ना वहाए नीरा, सतिगुर दा भाणा मन्न के फुल्लां दी वरखा लए कराईआ। उहदा साफ़ ते सुथरा चीरा, ओह गोबिन्द दा सिख सोभा पाईआ। क्यों अग्गे सतिगुर दा वरतीरा, वितकरा रहिण कोए ना पाईआ। भावें तुसीं कहो प्रभू दी नारी ते फिरदी वांग फ़कीरा, फ़िकरे कल्मयां वाले गाईआ। रहां वांग हकीरा, मेंढी विच ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। भगत कहिण क्यों पींदी पाणी दे घुट, प्यासीए सानूं दे समझाईआ। नाले सांभ के अबिनाशी अचुत, ते सोहणी सेज हंढाईआ। सदा रहें आप उस नाल खुश, गलवकड़ी इक्को पाईआ। ओए असीं मर गए लोकमात विच भुक्ख, सुक्के टुक्कड़े हथ्थां विच वखाईआ। दस मास साड़ के मात दी अग्न विच कुख्ख, पुट्ठे दिते लटकाईआ। किसे नूं धी बणा दिता किसे नूं बणा दिता पुत्त, खुशी जगत वाली वखाईआ। आप सब तों बैठी लुक, सचखण्ड साचे डेरा लाईआ। असीं चार जुग इक इक जणा के आउँदे रहे ते

डरदे रहे कर चुप्प, उच्ची कूक ना कोए सुणाईआ। हुण असीं सारे भगत इक्ठे हो गए जे साडे गल वी घुट्टें असीं जाणा रुस्स, वेख्यो किस तरह पए लड़ाईआ। पर असीं चाहुंदे साडे विच्चों अज्ज ई कढ दे फुट्ट, द्वैत दा झगड़ा दे मुकाईआ। प्रभू प्यार ना जावे टुट्ट, गंढ इक्को इक पवाईआ। जे तूं प्रभू दे प्यार दी कीती लुट्ट, साडी झोली देणी भराईआ। इक विच्चों कहिंदा ओए भगता ज़नानी दी मति हुन्दी पिच्छे गुत्त, गिच्ची विच रखाईआ। दूजा कहिंदा नहीं ओए हुण सतिजुग ने बदल ल्या रुख़, पिछली रीती दिती मिटाईआ। सारे स्त्री पुरुष उस प्रभू दे पुत, जो आपणी गोद टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा नाम जपाईआ। भगत कहिण वेखो पी गई ग्लास, गला ल्या फुलाईआ। साडी बुझा दे प्यास, क्यों रही तरसाईआ। दुक्खां दा सारा करदे नास, सिर सब दे हथ्थ टिकाईआ। तूं तेई अवतारां पैग़म्बरां ते गुरुआं दी दात, जोती नूर नारी रूप प्रगटाईआ। ते तेरा पती ते ख़ावंद प्रभ आप, आपणा रंग वखाईआ। जिधर तक्कीए सदा साडे होवे साथ, सगला संग बणाईआ। साडी सब दी मिट जाए वाट, दोहां मिल के लेखा देणा मुकाईआ। असीं पहुंचीए उस घाट, जिथ्थे घाटा रहे ना राईआ। वाह मेरे प्रभू तेरी तेरे दवारे मिलदी दात, दाते इक्को वार देणी वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। पंजे दरबारी कहिंदे साडे काटां उत्ते चाढ़

दे लिख्त, लेखे नाल सुणाईआ। अन्त प्रभू दा पूरा हो जाए भविक्ख्त, सब दा लेखा देणा मुकाईआ। सब दा इक्को हो जाए इष्ट, इष्ट इक मनाईआ। जे साहिब सतिगुर खोल्ह देवे सब दी दृष्ट, अन्दरों पड़दा दए उठाईआ। जे रामा कहि के गया राम वशिष्ट, विषयां दा डेरा ढाहीआ। जे तेरे हुन्दयां वी ना आया सिदक, फिर किथे जाए लोकाईआ। जे तूं सच्चा ते सच दा दस्स इश्क, क्यों प्रीती कूड़यां नाल लगाईआ। जन भगतो जे प्यार मंज़ूर नहीं बेशक उठ के विच्चों जाउ खिसक, खिसक्यां दी लोड़ रहे ना राईआ। भगत दवारे कोई नहीं चाहीदा निन्दक, गुरमुख सोहणे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सोहणा रूप दरसाईआ। तख्त निवासी सीस पहनया ताज, ताजां वाले तेरी वड्याईआ। तेरा जुग जुग चलदा रिहा राज, हुक्म शहिनशाहीआ। कलयुग अन्तिम बदल दिता समाज, समग्री नाम वरताईआ। हर घट अन्तर हो विस्माद, विश्व आपणा पड़दा लाहीआ। भाग लगा दे देस माझ, सम्बल कर रुशनाईआ। जिस खेल खिलाई आज, सो अन्त रिहा वखाईआ। शब्द नाम वजा के नाद, नादी धुंन सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच लेखा लेखे लाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडी पूरी हो गई पूजा, वेला वक्त सरनाईआ। दुतीआ भाउ रिहा ना दूजा, दूआ रूप ना कोए दरसाईआ। पिछला कासा कीता मूधा, नैण मूंद

दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच रंग लए रंगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण चरण कँवल सलवारना, सतिजुग रीत बणाईआ। भगत भगवान सदा तारना, इक इक रंग वखाईआ। पंज विकारा विच्चों मारना, ममता मोह मिटाईआ। दरगाह साची घर साचे सचखण्ड वाड़ना, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। लेखे ला के पुरख नारना, नर नरायण होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस ने सब तों वक्खरा छब्बी पोह नूं खेल विचारना, जिस दी नव नौ चार जुग समझ किसे ना आईआ।

✪ १८ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल सवेरे व्याहां दे समें ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण सुहाग रात होई सुहञ्जणी, प्रभ दिती माण वड्याईआ। साडा नेत्र तक के अंजणी, नैण नैण मिलाईआ। चरण धूढ़ी दे के मजनी, दीन मज़्ब दी मैल दिती लाहीआ। निरगुण धार दस्स निरँजणी, निराकार ल्या मिलाईआ। सति दवार दा बण के सज्जणी, सज्जण रंग वखाईआ। झगड़ा मुका के बदनी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार भुगताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण मिल्या प्रभ अबिनाशी कन्त, रैण वज्जदी रही वधाईआ। असीं महिमा करदे रहे अगणत, सिफ्तां विच सालाहीआ। नज़ारा तकदे रहे बेअन्त, बेपरवाह आपणी कार कमाईआ। जिस मात बणाए भगत सन्त, गुरमुख गोद उठाईआ। देवे नाम निधाना मंत, सोहँ ढोला करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण हाढ़ सतारां रैण होई सुहावी, सोहणा रूप दरसाईआ। लेखे लग्गी सब दी लावी, चौथा जुग पूर कराईआ। साडी धार कोझी कमली बावी, बवरी लई प्रनाईआ। आपणे नाल करके सावीं, साची सेजे लई टिकाईआ। हुक्म संदेशा दिता नार सुहागण एका कन्त रावीं, दूसर अक्ख ना कोए उठाईआ। फिर चुक्के आपणी बाहवीं, भुजां उत्ते टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा राग सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण साडे सगन लगाया बुल, पहली रैण खुशी मनाईआ। इक्को मालक समझणा कुल, कुल मालक इक अख्वाईआ। पिछली रीती जाणी भुल्ल, अभुल्ल दिता दृढ़ाईआ। प्रेम प्रीती सेज ते सुट्टे फुल्ल, फूलन सेजा उत्ते लिटाईआ। फेर मुहब्बत विच गया भुल्ल, रूप रंग ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण सेजे सुत्ता पुरख अबिनाशी, अंगीकार आप कराईआ।

प्रेम प्यार दी दस्स के रासी, मण्डलां उपर खेल खिलाईआ। चार जुग दी पूरी कर के आसी, आसा आपणी नाल मिलाईआ। दीनां मज़्बां विच्चों होई बन्द खुलासी, बन्दी छोड़ दया कमाईआ। झगड़ा मेट के जगत स्वासी, रसना नालों कीती जुदाईआ। इक्को नूर जोत प्रकाशी, कन्त सुहागी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होया सहाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण तिन्न वार बदली रात करवट, पती पतिवन्त कार कमाईआ। असीं अंगड़ाई लई झट पट, पटने वाला दिता हिलाईआ। उठो वेखो वसया घट घट, घर घर डेरा लाईआ। जिस दा नाम रहे रट, रट्टा जगत रिहा मुकाईआ। दीन मज़्ब दी डोरी दिती कट, कटाक्ष आपणा नाम वखाईआ। मार्ग दस्स के इक सच, साची मंज़ल इक चढ़ाईआ। झगड़ा मेट के माटी कच्च, साडी जोत धार लई प्रनाईआ। साडे अन्दर गया रच, लूं लूं विच समाईआ। अग्गे विछोड़े विच ना सकीए बच, बचपन एसे दी झोली पाईआ। इक्को ख़ावंद मन्नणा हक, पाबन्द हो के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण सानूं लाया नाल छाती, छत्रधारी दया कमाईआ। सीतल हो गए मिल के कमलापाती, पति परमेश्वर आपणी गोद उठाईआ। चरण चरणोदक दिता बूँद स्वांती, दीन मज़्ब दी अग्नी दिती बुझाईआ। आपणे घर बणा के हयाती, हया शर्म दिता मिटाईआ। सानूं सौणा मिल्या नहीं सारी राती, गल्लां कर कर झट लँघाईआ। बड़े चिरां पिच्छों मुकी वाटी, नव नौ चार पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा संग रखाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण साडे तन ना कोए लिबास, अल्फ़ आपणा रूप दरसाईआ। चरण प्रीती दे विश्वाश, विषयां विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। खेल करे उपर आकाश, धरनी धरत धवल दिता वखाईआ। साढे बारां सद्द के आपणे पास, पासा दीन दुनी बदलाईआ। इक प्यार विच कीता वाक, हुक्म दिता सुणाईआ। शब्द अगम्मी दस्स के बात, बातन पड़दा दिता खुल्हाईआ। तुहाडा लेखा रिहा ना ज़ात पात, पुरख अकाल नूर नज़री आईआ। माझा मालवा दुआबा जम्मू चौदां किलो वंडा के प्रशाद, चौदां तबक दिते हिलाईआ। इक्को हुक्म मन्नणा वाहिद, दूजा इष्ट ना कोए बणाईआ। तुहाडा लेखा मुक्कया इक दूजे तों बाद, बावजूद आपणा हुक्म सुणाईआ। फेर असां कीती फ़रयाद, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तेरी सेजे नींद ना आवे सदा रहीए जाग, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। तेरे प्यार दी वजाउंदे रहीए रबाब, नानक निरगुण धार सुणाईआ। सानूं खुशी होई दीन मज़्ब तों होए आज़ाद, आज़ादी विच तेरा दर सुहाईआ। जे तूं सच स्वामी जाएं बराज, तेरे सुत्तयां तेरी सेव कमाईआ। चार जुग तों वक्खरी तेरी सतारां हाढ़ दी रात, भिन्नड़ी आपणा रंग वखाईआ। साडी शहादत होई नाल कलम दवात, पंज लिखारी देण गवाहीआ। भगत भुल्लदे

नहीं जेहड़े चढ़ के आए बरात, जांञी लाड़े नाल वड्याईआ। सानूं इक ख़ुशी ते इक्को अन्तर खाहिश, ख़ालस दईए सुणाईआ। तूं सदा वसणा साडे पास, विछोड़ा नज़र कोए ना आईआ। तेरी जोत तेरा प्रकाश, तेरी नज़रे नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा रंग रंगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण साडे रखया हथ्थ उत्ते पुश्त, हलूणा दिता लगाईआ। ज़रा हो जावो हुण चुस्त, हुश्यारी विच दृढ़ाईआ। अग्गे लेखा करना दरुस्त, दरुस्ती सब दी आपे वेख वखाईआ। जेहड़ा नाम मिलदा रिहा मुफ्त, मुफ्तीआं झोलीआं आए पाईआ। सुहा के आए उरस, असमानां राह तकाईआ। खेल खेलदे आए नारी पुरुष, जगत नार कन्त हंढाईआ। हुण हुक्म सुणना तुरत, तुरीआ तों परे आप जणाईआ। जिस नूं कहिंदे आए अकाल मूर्त, ओह तुहाडा खसम खसमाना बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा दर सुहाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण जिस वेले शाह सुल्तानां आया अग्गे, आपणा रूप प्रगटाईआ। साडे सीने धड़कण लग्गे, बेवसी विच दुहाईआ। जिस वेले चरण रखया शब्द सिंघासण उपर मंजे, मंज़ल आपणी पन्ध मुकाईआ। प्यार विच किहा तूं मेरा मैं तेरा गा के छन्दे, सोहणा राग दृढ़ाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर हुण तुसीं तत्तां वाले नहीं बन्दे, रस लिंगां ना कोए वखाईआ। मल मूत्र वाले नहीं गंदे, विष्टा वंड ना कोए वंडाईआ। शस्त्र पहरे नहीं चण्ड प्रचण्डे, कमंद कंध ना कोए उठाईआ। दीन मज़्हब कोए ना वंडे, ज़ात पात ना कोए जणाईआ। इक्को घर दे कुफ़ल खोल्ह दिते जिंदे, ज़िंदगी ज़िंदगी विच्चों बदलाईआ। करया खेल विच हिन्दे, हरि करते बेपरवाहीआ। जिस नूं कलयुग जीव रहे निन्दे, निंदिआ विच दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण जिस वेले असीं साहिब नूं वेख्या अक्खीं, आपणी अक्ख लई मटकाईआ। उस ने हथ्थ रखया साडी वक्खी, सुत्तयां दिता हसाईआ। फेर बोल जैकारा अलखी, अलख अलखणे विच दृढ़ाईआ। तुसीं इक प्रभू दी सखी, इक्को सेज लैणी हंढाईआ। तुहाडा फ़र्क रिहा ना रती, रत दा झगड़ा दिता गंवाईआ। प्यार करना कमलापती, पतिपरमेश्वर अंग लगाईआ। जिस दी दरगाह साची वसी, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। जिस ने लेख मुकाउणा लख चार अस्सी, असल आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण असीं वेख्या नूर जोत उज्यारा, नज़र लई बदलाईआ। प्रभू कीता सच प्यारा, करवट करवट विच्चों बदलाईआ। दे के शब्द हुलारा, झूला दिता झुलाईआ। बोल के सच जैकारा, मेला ल्या मिलाईआ। असां कीती निमस्कारा, चरणां उत्ते सीस झुकाईआ। अबिनाशी करते फेर किहा दोबारा, दोहरा हुक्म सुणाईआ। तुहाडा मालक इक निरँकारा, निरवैर नूर खुदाईआ। झगड़ा छड दयो

पथ्थर इट्टां गारा, अक्खरां वाली ना रहे लड़ाईआ। मेरा वेखो सर्ब पसारा, पसर पसारी हो के रिहा जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादारा, सेवक हो के सेव कमाईआ। तुहाडा सब दा इक्को घर बाहरा, दर इक्को दिता वखाईआ। तुहाडा लेखे लाया इक श्रृंगारा, सोहणा मोहणा रूप वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणा संग रखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडे कोल आ गया सच्चीं, सच दईए दृढ़ाईआ। असीं शर्म विच अक्ख ना पट्टी, फेर पटने वाले दिता उठाईआ। हुण शक रिहा ना रती, शिकवा दयो गंवाईआ। साहिब सुल्ताना श्री भगवाना तुहाडा लहिणा देवे हथ्थो हथ्थी, हथेली लाल रंग रंगाईआ। एह बचन सुण के लच्छमी खिड़ खिड़ा के हस्सी, ताली मथ्थे उत्ते लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा राह चलाईआ। लच्छमी हस्स के किहा वेखो खेल पुरख समरथ, विश्व धार दृढ़ाईआ। जिस ने मैहन्दी नाल रंगे मेरे हथ्थ, जगत रूप दरसाईआ। महिमा जणाए अकथना कथ, जिस नूं लिख सके कोए ना राईआ। जो जुग चौकड़ी चलावे रथ, नानक निरगुण सरगुण आया समझाईआ। ओह मालक कमलापति, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। तुहाडे कोल आ गया वत, वतन आपणा इक सुहाईआ। झगड़ा मुका के काया रत, नूर जोत विच समाईआ। तुहाडा रिहा कोए ना तत, तत्व झगड़ा दिता चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेख वटाईआ। लच्छमी कहे मेरे संख दी आवाज़, गुर अवतार पैग़म्बरां रही हिलाईआ। मेरे संख दी आवाज़, सुख़न प्रभ दा नज़री आईआ। मेरे संख दी आवाज़, धुंन दो जहान शनवाईआ। मेरे संख दी आवाज़, दो जहान रही उठाईआ। मेरे संख दी आवाज़, गोबिन्द शब्द बाज़ उडाईआ। मेरे संख दी आवाज़, साहिब सुल्तान सुण के खुशी बणाईआ। मेरे संख दी आवाज़, तख्त निवासी सीस निवाईआ। जिस दे सीस उत्ते ताज, ताजां वाले दए मिटाईआ। जिस दा इक्को होणा राज, रईयत होवे जगत लोकाईआ। सति धर्म चलाउणा रिवाज, कलयुग क्रिया कूड़ मिटाईआ। मुख़ातब हो के देणा ख़ताब, खता सब दी वेख वखाईआ। मित्र प्यारा बण अहिबाब, मेहरवान होए सहाईआ। सति धर्म दा बदल देणा समाज, समग्री सति सति वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो तुहाडा पूरा करना काज, अनन्द आपणे नाल रखाईआ। मेरे संख दी आवाज़, सुहागी रैण दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा पड़दा लाहीआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण हरि पाया कन्त सुहागी, सुहागी कन्त घर राम जीउ। जिस दे विष्न ब्रह्मा शिव लागी, सेवक सेवा करन गुणवान जीउ। भगत सन्त समाजी, गुरमुख गुरसिख संग निभाउण जीउ। प्रेम प्यारे शब्द धार मारन आवाजी, धुन नाद शनवाई जीउ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वैराग जीउ।

वैरागी सतिगुर डिट्ठड़ा, गहर गम्भीरा मीत। जिस दा बोला मिट्ठड़ा, नाम सुणाए गीत। वसे सदा चीतड़ा, चाढ़े रंग बसीठ। जोती धारो नितरा, स्वामी ठांडा सीत। आदि जुगादि कदे ना विछड़ा, सचखण्ड दा वसनीक। जिस सोहँ शब्द सुणा के फ़िकरा, सतिजुग सच बणाई रीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साची देवे भीख। घर स्वामी सहिज सुख, पाया कन्त भतारा। दर्शन पाया अगम्म मुख, होया नूर दीदारा। लेखा पिछला गया चुक्क, हरि मिल्या कन्त भतारा। कूड़ा नाता गया टुट्ट, सुणया शब्द नज़ारा। दीन मज़्हब दी रही ना फुट्ट, सचखण्ड वेख आए एकँकारा। जिस दा नाम अगम्मा अमृत घुट, दो जहानां ठंडा ठारा। जिन भगत बणाए साचे सुत, नाल रलाए गोबिन्द शब्द दुलारा। चार जुग दयां विछड़यां ल्या पुछ, वेखे विगसे पावे सारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सहारा। धन्नभाग गुर देख्या, दीख्या होई अपार। जिस पाई साची भिख्या, भिच्छया नाम विचार। बख़्शी सच प्रीतया, प्रीतम सिरजणहार। साडा पिछला लेख बीतया, अग्गे मार्ग दिता सुखाल। सतिजुग चलाउणी साची रीतया, एका रंग रंगाउणा शाह कंगाल। लख चुरासी अन्तर पवित्र करे नीतया, नेत्र आपणा खोल्ह कमाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सानूं कीता सब बहाल। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण हरि पाया कन्त सुहेला, स्वामी सहिज सुखदाई जीउ। जिन जोती धार कीता मेला, संजोगी रूप दरसाई जीउ। इक्को घर बहा गुरु गुर चेला, दर साचा इक वड्याई जीउ। रंग नवेले वसया, वसणहार गोपाल। जिस सतिजुग मार्ग दस्सया, दीनां बंधप दीन दयाल। कलयुग मेटे रैण अंधेरी मस्सया, सतिजुग साचा देवे नाम मशाल। सन्त सुहेला आवे नस्सया, खेले खेल मात कमाल। जो हर हिरदे अन्दर वसया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दी सुरत रिहा संभाल। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण आया देस सम्बल, संभल खेल खिलाईआ। जिस नूं दो जहान लभ्भण, खोजण थांउँ थाँईंआ। ओह मूर्त गोपाल मदन, मध सूदन नूर इलाहीआ। जिस दे दीपक जोती जगण, गुर अवतार पैग़म्बर जुग जुग कर के गए रुशनाईआ। अन्त ओसे दी सरनी लग्गण, जिस नूं कन्त सुहागी कहि के गाईआ। नाता तोड़ के माटी बदन, बदला दीन दुनी बदलाईआ। सच दवारा लगा के सगण, सगला साथी इक प्रनाईआ। खुशीआं नाल सारे वसण, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। दिन दी वारता फेर रैण नूं दस्सण, किस बिध प्रभ नाल हस्स के ख़ुशी बणाईआ। नच्चण कुद्दण टप्पण, टप्पे देण सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, सच आपणी कार भुगताईआ।

✪ १८ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल रात नूं ✪

अवतार पैग़म्बर गुर जोती नार कहे पुरख अकाल नाल हुन्दा रिहा हासा, हस्स हस्स खुशी बणाईआ। तेरा की खेल लख आकाश आकाशा, भेव अभेदा दे खुल्ाईआ। झट जोती धार दी पा के रासा, कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड दिते हिलाईआ। फेर शाहो भूप बण शाही पहन लिबासा, सुल्तान मेहरवान हुक्म सुणाईआ। सुणो जिस साहिब दीआं करदे आए बातां, अक्खरां हरफ़ां विच वड्याईआ। लोकमात मारदे आए वाटां, जुग जुग पन्ध मुकाईआ। जगाउँदे आए हवनां विच लाटां, दीपक घृत दरसाईआ। सुणाउँदे आए सिफ्त अगम्मी गाथा, गा गा शुकर मनाईआ। उस दा खेल वेखो हुण साचा, सच आपणा हुक्म वरताईआ। सृष्टी उत्ते सतिजुग विच रहे कोए ना चाचा, पिता पुरख अकाल इक्को सोभा पाईआ। तुहाडा लहिणा देणा पिछला वाचा, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। अवतार पैग़म्बर कहे जोती नारी मैं हस्स के कीता मखौल, वाह प्रभू तेरी बेपरवाहीआ। उस झट इशारा कीता उत्ते धौल, धरनी दिती वखाईआ। औह वेखो सब दा पूरा कीता कौल, इकरार आपणे नाल निभाईआ। इक्को दस्स अगम्मा बोल, अनबोलत राग सुणाईआ। नाम दे कंडे धर्म दा तोल के तोल, तराज़ू शब्द गुरु हथ्थ टिकाईआ। जोती जाता हो के गया मौल, मौला आपणा हुक्म वरताईआ। किसे नज़र ना आवे गोरा ना चिट्टा ना काला ना सौल, साँवल सुन्दर समझ कोए ना पाईआ। तुहाडे सब दे नाल मार के रौल, रोल आपणा ना किसे समझाईआ। वेखो भगत दवारा दिता खोल्, खुल्ा दर इक दरसाईआ। जिथ्थे दीन मज़्हब ज़ात पात दा वज्जे कोए ना ढोल, ढोला प्रभ दा सारे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव चुकाईआ। जोती नार कहे मैं खिड़ खिड़ हस्सी, हस्ती तकी शहिनशाहीआ। फिर मैं इरद गिरद चारे कूटां नस्सी, भज्जी वाहो दाहीआ। फिर हौका भरया किस दे प्रेम विच फसी, जो फैसला, हक सुणाईआ। जां निगाह बदली उसे दे चरणां उत्ते झुकदे लख चार अस्सी, दो जहान बैठे सीस निवाईआ। फिर तक्कया उस दे भगतां दी बस्ती वसी, दूजा खेड़ा सोभा कोए ना पाईआ। फेर मैनूं वेख के पै गई गशी, हाए उफ़ दिता सुणाईआ। फिर याद आ गया एह ते पिछली कथा कहाणी पक्की, जो भविक्खतां विच आए दृढ़ाईआ। ज़रूर एसे कर के डोर गई कटी, कटाक्ष प्रभ ने दिता लगाईआ। फेर वेख्या गोबिन्द वखा दिती पट्टी, पटने वाले दिती वखाईआ। फेर मैनूं खुशी आई मट्ठी मट्ठी, प्रेम रस रस प्रगटाईआ। फेर मुहब्बत आई कट्ठी, मैं आपणा आप ल्या दबाईआ। फेर साहिब सतिगुर वल्ल नट्ठी, भज्जी वाहो दाहीआ। मैं हस्स के किहा वे प्रभू तूं पातशाह कि शहिनशाह मैनूं मातलोक बणा दिता जट्टी, जट्टां दे वस पाईआ।

पुरख अकाल ने किहा ओह कमलीए मैं एसे कर के तुहाडा लेखा पाया नट्टी, पौं आपणे शब्द हथ्थ रखाईआ। जिंना चिर तुसां मैनूं नहीं बणाया कमलापती, पतिपरमेश्वर हो के तुहानूं अजे गोद ना कोए टिकाईआ। तुहाडी निक्की निक्की लोकमात मैं जगाउंदा रिहा मोमबत्ती, बुतख़ान्यां विच रखाईआ। क्यों मुहम्मदा तूं मुहम्मद कि फत्ती, कि फ़तवे वाला सोभा पाईआ। उस सच्ची कहाणी दस्सी, दस्स के रिहा जणाईआ। ओने चिर नूं ईसा बोलया आह वेख मेरे गल विच रस्सी, बिन तेरे तों रस्ता नज़र कोए ना आईआ। मूसा किहा मेरी भज्ज गई काया मट्टी, मटक मटक चलण वाली तोर रही ना राईआ। नानक गोबिन्द किहा तेरी बणया कोए ना सख़ी, सख़ी सुख़न तोड़ ना कोए निभाईआ। धन्न भाग जे हुण खेल वखाया अक्खीं, आख़र आपणी कार कमाईआ। अग्गे भगतां नूं भगती कराउंदा रिहा कुल्ली कक्खीं, जंगलां विच भवाईआ। तपाउंदा रिहों अग्नी वाली भट्ठी, ईंधन नाल चतुराईआ। दस्सदा रिहा माला मणक्यां वाली रट्टी, दिवस रैण ध्यान लगाईआ। हुण खेल अनोखा कथा कहाणी अच्छी, अच्छी तरह दिता दृढ़ाईआ। जिस आत्मा नूं इक वार प्रेम नाल कहि ल्या आ मेरी बच्ची, बच्चयां वांग गोद उठाईआ। ओह तेरे सचखण्ड दवारे वसी, वास्ता तेरे नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। जोती नार कहे अज्ज मेरे स्वामी हथ्थ ला दिता उत्ते मेरी ठोडी, उँगल सहिज नाल छुहाईआ। मैं सिर दे ल्या विच गोडीं, नेत्र नैण शरमाईआ। चरण रखया उत्ते मेरी मोढी, सहिज नाल दबाईआ। जां नेत्र खोल्हया मैं बैठी विच गोदी, गोदावरी दे कन्ढे वाला गोबिन्द दए गवाहीआ। फेर वेख्या ना मैं सवाणी ना मेरे सीस ते मेंढी ते ना सीस ते दिसी बोदी, मूंड मुंडाया वेस ना कोए कराईआ। जां मालक तक्कया निरगुण धार जोती, जोती जाता नज़री आईआ। मैं आपणा आप उसे दी गोती, ओसे विच्चों प्रगट के ते ओसे विच आपणा झट लँघाईआ। ना कोई पढ़नी पई पोथी, पुस्तक बग़ल ना कोए टिकाईआ। मैं सोच कीती बहुती, ध्यान ध्यान विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी ख़ुशी बणाईआ। जोती नार कहे पुरख अकाल कीती निक्की जेही शरारत, शरअ चार जुग दी दिती वखाईआ। आह वेख आपणी अक्खरां वाली इबारत, की सबक रही पढ़ाईआ। आह वेख इट्टां पथ्थरां वाली इमारत, रूप मेरा नज़र कोए ना आईआ। आह वेख नाम कलमे वाली आड़्हत, हट्ट धर्म ना कोए चलाईआ। आह वेख मेरा खेल विच भारत, खण्ड ब्रह्मण्ड दयां दरसाईआ। थोड़ा जेहा इशारा दिता नारद, बोदी हिलाउंदा आ गया चाँईं चाँईंआ। प्रभू जे तेरी जोती स्त्री उत्ते कोई चाहीदी गारद, ते मैं सूरमा पहरेदार बड़ा अख्वाईआ। क्यों तूं सब तों वड्डा लारड, मैं तेरे दो जहान दा लैंड लॉर्ड नज़री आईआ। क्यों तेरे पंजां दरबारीआं ने तेरी भेंटा कीते पंज कारड, पंज पंज

तेरे हथ्थ फड़ाईआ। उन्हां उत्ते तूं दस्सया नारदा तूं वसणा केहड़ी विच वारड, कवण घराने डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। नारद कहे प्रभू मैं कोई नौकरी करनी ए चंगी, चंगी तरह दयां सुणाईआ। भावें मैनूं बहुती होवे तंगी, तंगी कट के खुशी बणाईआ। पर इक गल्ल याद कर लै आपणी जोती राणी नूं दस्स दे जे किते अचानक हो जाए रंडी, बिना नारद तों होर ना किसे प्रनाईआ। क्यों तूं दाता जुग जुग गुरुआं अवतारां पैग़म्बरां नूं इक इक नार ज़रूर वंडी, ते मेरा हिस्सा अजे तक रखया छुपाईआ। मेरा जीअ करदा इस चहु जुगां दी धार नूं चुक्क लवां आपणी कंधीं, मोढुयां उत्ते लवां टिकाईआ। फेर पै जावां तेरे भगतां दे भगत दवारे दी डण्डी, डण्डावत करके सब नूं सीस निवाईआ। पर याद कर लै आपणी घर वाली नूं दस्सदे जे नारद नाल जाणा ते गल कदे ना पावे अंगी, मटक नाल चले चाँईं चाँईंआ। फेर वेखीं मेरी बोदी दी हवा आउँदी ठंडी, ते जदों हिलावां उनन्जा पवण अक्खा शरमाईआ। पर होर गल्ल उहनूं कहि देवीं सिध्धी पुट्ठी ते दोवें धारां दी वाहवे कंघी, ऐवें सिध्धा चीर कढ के ना देवे वखाईआ। होर दस्सां किते सुत्ती ना रहे उत्ते पलँघी, सुख आसण डेरा लाईआ। मैं चाहुंदा उहनूं उथे सवावां जेहड़ी कल भगतां ने चुक्की सी अलाणी मंजी, ते सुक्के टुकड़े खवा के ग़रीबां विच देवां रलाईआ। पर जे किते गुरसिक्खां दी लग्गी होवे मंडी, उथे
५६१ २२ जा के दयां वखाईआ। ओ गुरमुखो गुरसिखो जे तुहानूं पसंद है ते कीमत मैनूं दयो चंगी, मैं रज्ज पुज के ब्राह्मण आपणा ५६१ २२
झट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। जोती नार कहे ओ ब्राह्मणा ना कर गुस्ताख़ी, झट गौतम अक्ख खुल्हाईआ। उस किहा कमलया मंग लै माफ़ी, हथ्थ बन्न्ह सीस निवाईआ। नारद किहा मेरा खेल दो जहानां दी साखी, सख़ावत दयां दृढ़ाईआ। ओ मैं तेरी मन्नां कि उस प्रभू दी आखी, जो अक्खरां तों बाहर करे पढ़ाईआ। वेखीं मैनूं कदी ना कहीं पापी, मैं पतित पुनीत बण के प्रभ दी सेव कमाईआ। मैं जदों करां ते इक्को इक दा पाठी, पाठशाला आपणे अन्दर इक टिकाईआ। धन्न भाग जे मेरी मुक गई वाटी, पैंडा रिहा ना राहीआ। ते मैनूं इक अमृत बूंद मिली जिस वेले गोबिन्द ने रस भरया सी विच बाटी, जगत विसाखी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग चमकाईआ। बोदी कहे ओ प्रभू दीए राणीए, धर्म दीए सवाणीए, सच सच सुणाईआ। इधर वेख अग्गे तूं रूप धरदी रहीउँ ब्राह्मण खत्री ते बाणीए, ईसाई मुस्लिम पारसी वंड वंडाईआ। नी इक अक्ख नाल वेखण वालीए अक्खों काणीए, दीन्हां मज़्हबां तों आपणा मुख छुपाईआ। तूं चढ़ के बैहंदी रहीउँ लहिंदे चढ़दे दक्खण पहाड़ जगत बिरछ दीए टाहणीए, प्रभ दा नाम वक्खरा वक्खरा रागां विच सुणाईआ। बणदी रही एं पवण स्वासी

मसाणीए, कबरां मढ़ीआं रंग रंगाईआ। भरदी रहीउँ पाणीए, अट्ठां सट्ठां खेल खिलाईआ। जे हुण कुछ करे तां जाणीए, की आपणी कल वरताईआ। मैनूं ऐं दिसदा एह खेल अगम्म महानीए, जिस दी समझ किसे ना पाईआ। साडी छोटी छोटी दस्सदे आए निशानीए, निशाना इक दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव चुकाईआ। जोती नार कहे एह ब्रह्मण पखण्डी कर जा चुप, बोल कबोल ना कोए सुणाईआ। नारद किहा गुस्से ना हो अम्बड़ीए मैं तेरा पुत्त, लाडां नाल मैनूं गोद लै टिकाईआ। उस किहा वेख कलयुग अंधेरा घुप्प, नूर नज़र कोए ना आईआ। नारद किहा बीबी राणीए किते तुहाडा पैंडा ते नहीं गया मुक, अग्गे राह ना कोए वखाईआ। ओन्हे गुस्से विच किहा मूर्खा परे हो के लुक, क्यों तुहमतां रिहा लाईआ। नारद कहिंदा मैनूं इहो दुःख, मेरे पुरख अकाल तों बिना निक्के निक्के नाँ सारे आए जपाईआ। सृष्टी दे मानव नूं किसे गल नाल लाया नहीं घुट्ट, गलवकड़ी इक्को वार पाईआ। जोती रो पई बिन नैणां फुट्ट फुट्ट, एह फुटकल कीती तेरे माहीआ। नारद ढिल्ले करके बुल्ल्ह ते बुट्ट, मूंह दिता बदलाईआ। बीबीए राणीए हुण खोल्ह दे गुत्त, मेंढी क्यों मेंढी उत्ते चढ़ाईआ। एस मेंढी दीआं तिन्न धारां ते त्रिलोकी विच आप बैठा लुक, एह गुत्त करनी लच्छमी नूं पहले दिन आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। पुरख अकाल कहे मैं कीता थोड़ा थोड़ा चोल्ह, चोले सर्ब बदलाईआ। हौली जेही बोलया बोल, अनबोलत राग सुणाईआ। जोती धारी आ गई कोल, नेड़े हो के सीस निवाईआ। मैं सहिज नाल मारी धौल, चरणां उत्ते मूंह दे भार सुटाईआ। नी चार जुग दे लेखे दस्स दे बोल, जो लिख लिख जगत जणाईआ। ओह कहिंदी प्रभू तेरा खेल सदा गोल, एसे करके गोल धरती दिती बणाईआ। जिधर वेखीए उधर रविआ होवे मौल, मौला हो के रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा संग वखाईआ। जोती नार कहे मेरा सोहणा रूप सुहावणा, सोभा विच वड्याईआ। मैं ते इक्को कन्त हंढावणा, दूजी सेज ना वेखण पाईआ। इक्को ढोला गावणा, गा गा खुशी वखाईआ। इक्को इष्ट मनावणा, जो मेरा मालक धुर दा माहीआ। इक्को चरण धूढ़ी न्हावण न्हावणा, दूसर जल ना कोए वरताईआ। इक्को पीणा इक्को खावणा, तृष्ना अग्न बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। झट बोल प्या नारद, की किहा, हैं, मैनूं दे सुणाईआ। सच दस्स प्रभू चंगा कि मैं, मेरे तों चंगी प्रभ ने शकल ना कदे बणाईआ। नी हौली जेही कहि दे मुक्खों तैं, फिर मालवे वाले सारे देण गवाहीआ। जोती नार किहा ना कर कैं कैं, काग वांग कुरलाईआ। उस किहा मैं प्रभू नूं जाणा लै, मातलोक दा राह वखाईआ। जिथ्थे सारे मन्नदे उहदा भय, भउ विच सीस निवाईआ। उथे

वखाउणा भगतां दा गृह, जिथ्थे गुरमुख सोहणे सोभा पाईआ। जे प्रभू ना आया ते तेरा सचखण्ड जाए ढह, बिना साहिब तों सचखण्ड कम्म किसे ना आईआ। हुण वेखीए किस तरह कलयुग अन्तिम वहिंदी नैं, नाउँ निरँकारा हड़् वगाईआ। नी जोती राणीए चार जुग नूं खाणीए आपणे अन्दरों करदे कै, दीन मज़्हब सारे बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। धुर दी राणी किहा ओ मुनी, जी की रिहा सुणाईआ। नारद किहा अजे तूं ओह गल्ल नहीं सुणी, जो सुण के भज्जे वाहो दाहीआ। अज्जे प्रभ ने खेल करना इक दे नाल नौ जोड़ के जिस नूं कहिंदे उन्नी, मुस्लिम सुन्नी डेरा ढाहीआ। जोती कहे वेख ओ कमलया की मेरा मालक सब तों वडा खूनी, खूंखार नजरी आईआ। नारद किहा ना बीबा जुग उलटाउणा उस दे वास्ते मामूली, मामले सब दे साफ़ कराईआ। ओह कदे नहीं करदा बेअसूली, असल आपणा हुक्म वरताईआ। पर याद रख लै तुहाडे नाम कमल्यां दी करे वसूली, लेखा पिछला सर्ब कढ्ढाईआ। क्यों ओह जाणदा अर्ज़ ते तूली, तूल अर्ज़ आपणे विच छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति दी समझ रिहा समझाईआ। पुरख अकाल कहे ओए नारद पांधे, बोदी दे हिलाईआ। सच दस्स कलयुग जीव की खांदे, भेव अभेद दृढ़ाईआ। नारद कहे प्रभू मैनूं इयों दिसदा जेहड़े तूं बणाए पशू ढांडे, ओनॄां मुख विच रखाईआ। तेरा नाम मूल नहीं गांदे, राग जगत वाले सुणाईआ। जदों कोई भीड़ पए फिर तैनूं अल्ला वाहिगुरु राम सतिनाम कृष्न देवा इष्ट देवा दुर्गा कहि के ध्याउंदे, झोलीआं तेरे अग्गे डाहीआ। ते जे ओनॄां नूं खुशी रखें ते फेर आपणे पुट्ठे पैर तैनूं वखाउंदे, तेरे चरणां दी लोड़ ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार भुगताईआ। पुरख अकाल कहे पंडता किते झूठ ते नहीं मारया, सच दे सुणाईआ। प्रभू तूहीएं दस्स अज्ज तक तेरे बिना किसे गुर अवतार पैग़म्बर ने भगत रूप नहीं किसे ने तारया, सिख मुरीद सारे आए बणाईआ। बिना भगतां तों तेरा नाम नहीं किसे उच्चारया, अक्खरां विच कीती ना किसे लिखाईआ। तेरा लेखा नहीं किसे विचारया, मन बुद्धी रही हल्काईआ। मैनूं इक याद आ गई जिस वेले तूं मुहम्मद नूं तारया, गुस्से नाल डराईआ। ओस वेले ओनॄे निगह मारी उत्ते चन्द सितारया, एसे करके तारा चन्द निशान दिते जणाईआ। फिर नौ वारी ओनॄे आपणा सीस तेरे चरणां उतों वारया, सजदे कर कर के धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। फिर कूक पुकारया, उफ हाए दुहाईआ। तूं मेरा परवरदिगारया, जल्वागर नूर इलाहीआ। जिस वेले आवें विच संसारया, कलि कल्की वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा राह वखाईआ। नारद कहे प्रभू कलयुग जीव बड़े चलाक, चलाकी तेरे नालों वद्ध रखाईआ। अमृत वेले उठ के नहा के हुंदे पाक, तेरी पूजा

करके सब नूं देण सुणाईआ। कूक के दस्सण साडा अन्दरों खुल्ह गया ताक, पड़दा रिहा ना राईआ। सानूं धुर दे शब्द दी आउंदी डाक, चिट्ठी रसैण हलकारा तैनूं कहि रहे सुणाईआ। जिस वेले हुन्दी अंधेरी रात, फिर वेखण चारों कुण्ट थांउँ थाँईंआ। मन कल्पणा हो जांदी जिवें नार कमज़ात, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। तेरे अग्गे अरदासे करदे बेनन्तीआं करदे प्रभू कितों माया दी मिल जाए दात, कोई सुख चंगा साडी झोली दे भराईआ। एसे करके पढ़दे रहे रहिरास, अरदास सोध के झट लँघाईआ। पुरख अकाल किहा वाह नारदा शाबाश, सच दिता दृढ़ाईआ। नारद किहा प्रभू जे किते मैनूं भेजें हुण लोकमात, ते धरती माता वेख वखाईआ। जेहड़ी कोई चंगी होवे रूप शृंगारन ते मैं लै के आवां साथ, तेरे सचखण्ड विच सोहणीआं सवाणीआं दे रूप दयां दरसाईआ। मेरा जीअ करदा मैं पिछल्यां जुगां दे वंडे दा इक्को वार बण जावां कमलापात, पती हो के आपणी खुशी बणाईआ। पुरख अकाल ने इशारा दिता बिना हाथ, हथेली ना कोए वखाईआ। नारद झट टेक्या माथ, मस्तक चरणां उत्ते छुहाईआ। फेर वेख्या स्त्री मर्द सब प्रभू दी ज़ात, दूजा रूप ना कोए दरसाईआ। फेर वेख्या झगड़ा काग़ज़ात, जो नाम हिस्से रिहा वंडाईआ। फेर निउँ के तक्कया नाल इत्फ़िाक, नज़र नज़र विच्चों बदलाईआ। जां मातलोक मारी झाक, झाकी इक उठाईआ। साचे भगतां दी नज़री आई जमात, जो इक्को राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणी धार वखाईआ। नारद कहे वाहवा किड्डी सोहणी सवाणी, चार जुग दी जोती राणी नज़री आईआ। पर मेरे वरगा इहनूं होर कोई लभ्भणा नहीं हाणी, दो जहानां नज़र कोए ना आईआ। मैं पढ़ानी तूं मेरी मैं तेरा मैं तेरा तूं मेरी बाणी, बाण निराला तीर तेरे हिरदे दयां लगाईआ। तेरे भगवान ने बणाई चारे खाणी, ते आपां दोवें रल के चारे खाणी दईए मिटाईआ। फेर मैं होवां ते तूं होवें ते मैनूं प्यावें ठंडा पाणी, ते मैं गट गट पी के तेरे वल्ल अक्ख उठाईआ। ते तूं मैनूं कहिणा नारदा तूं सब दा जाण जाणी, जानणहार अख्वाईआ। मेरा जीअ करदा मैं तेरी बण जावां पंडताणी, मत्थे तिलक लगा के फिरां चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणा भेव खुल्हाईआ। झट आ गया पुरख अकाल, जोती जोत कर रुशनाईआ। जोती नार ने कीता सवाल, सहिज नाल दृढ़ाईआ। प्रभू एह तेरा किडा चंगा बाल, बड़ी सेव कमाईआ। कदी मैनूं माता कहे कदी कहे उठ के चल मेरे नाल, ते दोवें रल के झट लँघाईआ। तूं मेरी दीन ते मैं तेरा दयाल, दोवें मिल के वज्जे वधाईआ। मेरा प्रेम ते तेरा प्यार सच्ची धर्मसाल, इस तों चंगा सचखण्ड नज़र कोए ना आईआ। तूं मैनूं ना मारीं ते मैं तैनूं ना मारां ते ना कोई काल रहे ना महाकाल, बिना साथों दूजा नज़र कोए ना आईआ। ते असीं प्रभू नूं कहीए जाह कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड भाल, लख पातालां आकाशां

५९५
२२

विच आपणा डेरा लाईआ। फेर साडा कदे विंगा ना होवे वाल, मिल के वज्जदी रहे वधाईआ। जे किते साडी पूरी हो जाए दोहां दी चाल, प्रभू विचारा की करे आपणी चतुराईआ। मेरे कोल सुगंध सुगंध नाल धन माल, ख़ज़ाने बोदी हेठ दबाईआ। ते मैं बड़ा सूरबीर बलवान योधा इक अख्वाईआ। मैं इक वेरां इक सखी मंगण गया कोलों काहन, ओहने हीं हीं कर के दिता वखाईआ। वेख वे आह लेखा तूं ब्राह्मण ते मैं जजमान, ते मेरे इड़क्के आया ते सारे लेखे दउँ मुकाईआ। अज्ज उहो काहन ना रिहा इन्सान, तूं बण गई जोत नूर महान, ते मैं पंडत तेरा पती रूप सोभा पाईआ। आ मैनूं पहलों करा इश्नान, अमृत जल दे सुटाईआ। फेर मेरे चरणां दा धर ध्यान, नेत्र अक्ख ना कोए खुलाईआ। फेर मेरी विद्या दा सुण ज्ञान, मैं तैनूं दस्सां बिना नारद तों दूजा प्रभ नज़र कोए ना आईआ। फेर तेरी मेरी आपे हो जाए जाण पछाण, इक दूजे नूं तक्कीए चाँईं चाँईंआ। तूं वी चार जुग दी कुँवारी ते मैं वी चार जुग दा बलवान, बिना शादी तों दोवें रोंदे फिरदे मारदे धाईंआ। धन्न भाग जे वक्त पहुँचया आण, प्रभ ने मेला दिता मिलाईआ। झट शब्द गुरु आ गया सुणो हुक्म फ़रमान, परवरदिगार रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा नाम समझाईआ। नारद कहिंदा उए शब्द गुरु ना तेरा तन ना वजूद, वेख्या नज़र किसे ना आईआ। ऐवें चार जुग कहिंदा रिहों सचखण्ड वसे उच्च अरूज, मुहब्बत दा मालक बेपरवाहीआ। ना मंज़ल लभ्भी ना पाया हक महिबूब, मुकम्मल गृह ना कोए वखाईआ। जेहड़े गुर अवतार पैग़म्बर गए ओह वी कर दिते नेस्तोनाबूद, जड़ नज़र कोए ना आईआ। मैनूं इयों जापदा तूं आदि तों लै के अन्त ते मध तक ऊत दा ऊत, उत्तम श्रेष्ट रूप ना कोए दरसाईआ। लख चुरासी बणा के पंज भूत, विष्न ब्रह्मा शिव सेव दिती लगाईआ। फेर तन वजूद दस्स के झूठ, नाते दिते तुड़ाईआ। जो आया सो करके गया कूच, चार जुग दे गली कूचे ख़ाली रहे कुरलाईआ। इक बचन मेरे कोलों पूछ, मैं ब्राह्मण दयां समझाईआ। दस्स ब्राह्मणा आपणे विच्चों मूख, मुख नाल सुणाईआ। ब्राह्मण कहे शब्द गुरु ओए तेरयां अवतारां पैग़म्बरां नूं मज़्ब दी लग्गी रही भूख, ओह भुक्खे बण के सारी दुनिया आए खाईआ। इहो मैनूं दूख, दिलबर यार ना कोए मिलाईआ। मैं रो के मारी कूक, कूक कूक दिता सुणाईआ। मैं किहा पुरख अकाल जे मैं शब्द गुरु होवां ते तेरा दो जहान देवां फूक, क्यों जेहड़े तैनूं गए भुलाईआ। ओए तेरे हुन्दयां क्यों कलयुग जीव सुत्ते घूक, आलस निंद्रा ना कोए मिटाईआ। तूं क्यों फिरदा चारे कूट, भज्जें वाहो दाहीआ। नाम जपण वाल्यां दे अन्दरों अजे नहीं गया जूठ झूठ, मैं सच दयां सुणाईआ। प्रभ दा बणया नहीं कोई सपूत, पुत पोतरे सारे रहे हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं ठीक बड़ा बलकारी, सूरबीर अख्वाईआ।

पर मेरे उत्ते हुक्म इक निरँकारी, बिना हुक्म तों कदम ना कोए टिकाईआ। जिस हुक्म दे विच ब्रह्मा विष्न शिव वगारी, गुर अवतार पैग़म्बर निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पर सच दस्सां जदों प्रभू किरपा करे मैं भगतां नूं ज़रूर आवां तारी, तारनहारा हो के दया कमाईआ। सच पुछें मातलोक विच्चों प्रेमीआं दी सिर ते चुक्क के खारी, दो जहानां पार कराईआ। जिथ्थे मेरे साहिब दी जोत होए उज्यारी, उथे जावां चाँईं चाँईंआ। बण के दर दा दरबारी, निउँ निउँ सीस निवाईआ। आह सांभ आपणे भगत तेरे चरणां तों बलिहारी, तेरे अग्गे टिकाईआ। पुरख अकाल कहे इहो मेरे मीत इहो मेरे सज्जण इहो मेरे करते इहो मेरी नारी, ते नर नरायण इक्को सोभा पाईआ। ते सदा सदा सद इक्को नाल रखां यारी, यराने कूड़े सर्ब तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा सच इक प्रगटाईआ। शब्द गुरु कहे पंडता तूं बड़ा देवी देवा, देव आत्मा तेरा रूप दरसाईआ। नारद कहिंदा नहीं उए तूं मैनूं कहि तूं बड़ा अलख अभेवा, लख ना लख्या जाईआ। शब्द सतिगुरु ने चपेड़ मारी जाह मूर्खा प्रभू दे भगतां दी जा के कर सेवा, बिना सेवा तों फल मिलण कोए ना पाईआ। नारद हस्स के किहा गुरु जी मेरी कोई नहीं रसना जेहवा, मैं की दयां सुणाईआ। केहड़ा रस ते केहड़ा मेवा, की चक्ख के खुशी मनाईआ। मैनूं ऐं दिसदा जिथ्थे मेरा साहिब वसे उही निहचल धाम निहकेवा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा घर वखाईआ। नारद किहा शब्द गुरु दस्स शब्द वडा कि जोती, कि जोत विच वड्याईआ। शब्द कहे एह गल्ल कही अनोखी, की दयां सुणाईआ। नारद कहिंदा ओए शब्द गुरु तूं जदों प्रगट होवें कदी नन्गा ते कदी तेड़ बन्नॄ धोती, कदी बोदी रख के मुक्ट सीस टिकाईआ। कदी मुच्छ दाढ़ी कटा के सूरत बणाएं आपणी खोदी, मुहम्मद दए गवाहीआ। कदे बण के प्रीतम चोजी, गोबिन्द रूप दरसाईआ। तैनूं की कहिण लोकी, वलीआ छलीआ सब नूं धोखे विच फसाईआ। किसे नूं पढ़न लाया पढ़ाई पोथी, आपणा भेव ना कोए खुल्हाईआ। किसे नूं पगड़ी किसे दे सीस ते रखाई टोपी, किसे दे बोदे दिते कटाईआ। किसे नूं ख़ाक विच रुलाया किसे नूं चाढ़ दिता चोटी, चोटया क्यों सारी दुनिया दिती भुलाईआ। किसे दी गुर अवतार पैग़म्बरां कोलों कराई बोटी बोटी, धनुष बाण शस्त्र खण्डे हथ्थ फड़ाईआ। किडी खेल कीती होछी, बच्चे बच्चयां नाल दिते लड़ाईआ। नारद कहे जे किते रविदास चमार मैनूं आर फड़ा दए मोची, प्रभू तेरा नक्क विंन्‍ॄ के नकेल देवां पाईआ। पर एह मेरी गल्ल थोथी, मैं प्यार विच सुणाईआ। झट जोती राणी ने हथ्थ रख ल्या उत्ते ठोडी, हाए मेरे पती नूं रिहा डराईआ। नारद किहा नहीं मईआ एह ते गल्ल साडी घरोगी, घर विच रल मिल के एसे तरह झट लँघाईआ। नहीं ते ओह वेख लै नामा छींबा ते धोबी, ओह

वी प्रभ दी जोत विच समाईआ। फेर लेट के चरणां विच ते सिर रख ल्या विच गोदी, हस्स के दिता वखाईआ। नौ वार सिर मार के हलाई बोदी, ताड़ी दिती लगाईआ। फेर भज्ज के चढ़ गया जोत नार दी मोढीं, हथ्थ सीस उत्ते टिकाईआ। नाले किहा मंमी हो ते नहीं गई औखी, मेरा भार सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। पुरख अकाल कहे सारा दिन सचखण्ड हुन्दी रही खुशी, साढे तिन्न घंटे वज्जदी रही वधाईआ। पूरन सिँघ सुत्ता नहीं सी ते लग्गी सी उस दवारे रुची, जिथ्थे आपणा नूर नूर विच रलाईआ। जिस दी खेल अजे नहीं मुकी, मुकम्मल आपणी कार भुगताईआ। आवाज़ सुणदी रही दो तुकी, तूं मेरा मैं तेरा इक्को नाद शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। नारद कहे प्रभू मेरी इक अरदास निक्की, सन्मुख हो के दयां सुणाईआ। गोबिन्द ने किहा मेरी सिक्खी इक्की, इक इकीस तेरी वड्याईआ। पर ओह वी कथा कहाणी नहीं कोई लिखी, तेरे सहारे गया तजाईआ। सो वेला वक्त पहुँचया मिती, मित्र प्यारे वेख वखाईआ। सोहणी सुहाउणी करदे रुती, रुतड़ी रंग रंगाईआ। जेहड़ा सरीर हो जाणा सी मिट्टी, उहनूं बख्श दे वड्याईआ। जन्म कर्म दी रेखा करदे चिट्टी, काला दाग़ धुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। नारद कहे प्रभू तेरे शरीर उत्ते हुन्दा सी चन्दन चन्दोआ, सोहणा नज़री आईआ। मैनूं ऐ दिसदा तेरा शरीर ना रिहा जिहनूं कहिंदे सी शेर सिँघ ते शेर सिँघ मोया, ते शेर सिँघ रूप प्रगटाईआ। फेर सचखण्ड विच्चों लै के आया ढोआ, जन भगतां झोली पाईआ। इस दा भेव ना जाणे कोआ, कूक कूक ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। चन्दोआ कहे मेरा चीथड़ पुराणा, लोकमात नज़री आईआ। शेर सिँघ तन रिहा ना, जिस दे उत्ते सोभा पाईआ। ओए जन भगतो जग करयो कोए ना माणा, हँकार विच ना कोए वड्याईआ। वेखो जेहड़ा छत्र करदा सी उत्ते श्री भगवाना, आपणा बल प्रगटाईआ। अज्ज ओह तुहाडे दर ते होया निमाणा, आपणा अंग अंग रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार भुगताईआ। चोला कहे मेरे विच रही कोए ना ताकत, सारे गुरमुख वेखो हथ्थ लगाईआ। ना अक्ल रही ना ल्याकत, बुद्धी कम्म किसे ना आईआ। मैं आया सां जिस दी बाबत, ओह मातलोक गया तजाईआ। भगतो मेरी करो सफ़ारश, तुहाडे अग्गे सीस निवाईआ। जे ओह करे सच अदालत, इन्साफ़ इक वखाईआ। मैनूं बणा देवे आपणी अमानत, चरणां विच टिकाईआ। पंज प्यारे इस दी दयो ज़मानत, निव के सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। चन्दोआ कहे मेरा वक्त चुक्क गया अख़ीरी, आख़र दयां जणाईआ। अग्गे किसे दी

रहिणी नहीं पीरी फ़कीरी, माण ताण ना कोए रखाईआ। शरअ दी टुट्ट जाणी ज़ंजीरी, कड़ी कड़ी दए गवाहीआ। बेशक प्रभू दे मिलण दी गली भीड़ी, औखा राह दिसे लोकाईआ। पर याद कर लओ भगत तारया सी रूप धार के कीड़ी, फिर निक्कयों वड्डा आप बणाईआ। तुहाडी रहिण नहीं देणी दिलगीरी, दिलां दा मालक हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म सुणाईआ। चोला कहे मैं विक गया उस हाट, जिस दर मिले मूँहों मंग्गया तोट रही ना राईआ। मिट गई मेरी वाट, पैंडा दिता चुकाईआ। मिट गई मेरी ज़ात, आपणा आप गंवाईआ। वेखो अठारां हाड़ दी रात, सम्मत शहिनशाही छे दए गवाहीआ। जन भगतां बख्श्या साथ, सगला संग बणाईआ। करया खेल कमलापात, पतिपरमेश्वर होया सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। चोला कहे प्रभू मेरा अन्त अख़ीरी होया विहार, तेरे चरण मिली सरनाईआ। मैं चाहुंदा इक्की भगत जन कर त्यार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। ओह अन्दरों होण संगत दे सेवादार, द्वैत वाला नज़र कोए ना आईआ। ओनां दे सीस बन्नू दस्तार, एह इक्की देण गवाहीआ। आप बण यारां दा यार, याराना तोड़ निभाईआ। पहलों माझे विच्चों कर विचार, फौजा सिँघ मलूवालों लैणा उठाईआ। फेर मंगल सिँघ होवे हुश्यार, सारंगढ़े वाला संग बणाईआ। नरैण सिँघ कर ख़बरदार, पुर गुमान वज्जे वधाईआ। मोता सिँघ दे उधार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कुंदन सिँघ बख्श प्यार, मालचक्क जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। चोला कहे मालवे कर ध्यान, मेहर नज़र उठाईआ। जरनैल सिँघ कर परवान, राम सिँघ नाल मिलाईआ। साधू सिँघ दे ज्ञान, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जागीर सिँघ होवे बलवान, हरबंस सिँघ मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। चोला कहे दुआबे वेख आपणा रूप, दोहरी धार समझाईआ। तारू सिँघ बणा सपूत, अर्जन सिँघ संग वखाईआ। लाल सिँघ बणा सूच, हेरां पिण्ड देणी वड्याईआ। प्रीतम सिँघ भाग लगा पंज भूत, प्रीतम सिँघ जंडयाले वाला नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा पूर कराईआ। चोला कहे जम्मू चाढ़ दे रंग, आपणी दया कमाईआ। तेज भान दे अनन्द, लक्ष्मण सिँघ मिल के वज्जे वधाईआ। अंग्रेज़ सिँघ चमका चन्द, देवी सिँघ होवे रुशनाईआ। गुरदित सिँघ तेरे नाम दा होए पाबन्द, सिर पंजां हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सद आपणा रंग रंगाईआ। चोला कहे मेरा रूप चन्दोआ, बिन चन्दन वास महकाईआ। तेरे जोगा होआ, दूजा नज़र कोए ना पाईआ। मैं जगत जहान मोआ, गुरमुख आपणे लैणे प्रगटाईआ। प्रकाश होवे त्रै लोआ, पुरीआं लोआं वज्जे

वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। चन्दोआ कहे मेरे साहिब सतिगुर महाराज, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। इक्कीवीं दस्तार अमरजीत सिँघ दे सिर ते रख दे ताज, तख्त निवासी दया कमाईआ। तेरा सतिजुग दा बणे समाज, समग्री इक वरताईआ। जेहड़ा झगड़ा पए कोई ना बाद, बाद दा लेखा देणा गंवाईआ। मंगूपूरों जो आई सौगात, मनजीत भज्जी चाँईं चाँईंआ। एह शब्द गुरु वजाए नाद, संदेशा आया सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग इक वखाईआ। चन्दोआ कहे इक्की गुरमुखो सतिगुर बणन दी रखणी कदे नहीं आस, भगवन रूप ना कोए बणाईआ। इक्को शब्द गुरदेव सब दे वसे पास, मालक हर घट थाँईंआ। पूरन विच पूरन जोत प्रकाश, बिना पूरन तों दूजा नज़र कोए ना आईआ। कन्नां विच सुणयो ना किसे दी बात, झगड़े विच कूड़ लोकाईआ। मेरा ठग्गां चोरां नाल साथ, बदमाशां विच वड़ के झट लँघाईआ। काहनां गोपीआं अन्दर वड़ के पावां रास, एह मेरी बेपरवाहीआ। नमाज़ीआं विच बहि के पढ़ां नमाज़, सजदा सीस झुकाईआ। शाह सुल्तानां विच सीस ते रखां ताज, शाह पातशाह हो के आपणा हुक्म सुणाईआ। जद चाहोगे दिन रात मारां आ आवाज़, हुक्म हुक्म विच्चों प्रगटाईआ। पिच्छे जे सुत्ते रहे ते हुण पैणा जाग, आलस निंद्रा लैणी गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

५६६
२२

कर, सद आपणा खेल वखाईआ। चन्दोआ कहे प्रभ दा खेल सदा बहु भांती, मैं जुग जुग सेव कमाईआ। निरगुण सरगुण खेल करे दिवस राती, जुग जुग फेरा पाईआ। जगत साक सनबंध बणाए मात पित भैण भाई पिता पूत ताई चाची, फुफ्फी मासी नाल वड्याईआ। ते ओन्हां दी फेर करे राखी, जिन्हां पुत तों हो के पिता रूप बणाईआ। इहो औखी मंज़ल ते औखी घाटी, जेहड़ी चार जुग समझ किसे ना आईआ। साहिब दीन दयाल जिस नूं चाहे कोझे कमले नूं देवे दाती, भुक्खे नन्गे नूं दाता दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। इक्की भगत जन हो जाउ खड़े, खड़े दोवें हथ्थ कराईआ। मुक्खों कहो प्रभू असीं इक्को अक्खर पढ़े, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। तेरे शब्द बेड़े चढ़े, जगत नईया नौका दिता तजाईआ। इक्को जाणा तेरे घरे, दूजे मन्दिर ना कोए वड्याईआ। तैनूं होण नहीं देणा परे, पलकां दे पिच्छे लैणा छुपाईआ। जे तूं साडे अवतार पैग़म्बर गुरु वरे, क्यों साथों करें जुदाईआ। असीं अग्गे नहीं रहिणा छड़े, आत्म तेरे हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। चोला कहे पंजे प्यारे जोड़ो हथ्थ, सीस जगदीश निवाईआ। पंज लिखारी लिखो पुरख समरथ, इहो पिता इहो माईआ। पंजे दरबारी चरण जाओ ढट्ठ, मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। पंजे पुजारी चरण लओ चट्ट, रही ना माण वड्याईआ।

कुत्ते वाला शिकारी भजन सिँघ आवे नस्स, पिछली भुल्ल रहे ना राईआ। इक्कीआं दा वेखो सथ, सोहणा दिता बणाईआ। छब्बी पोह फिर होर मिलणी वथ, जो सब दी झोली पाईआ। अज्ज तों जिस तरह गुरमुखो तुहानूं दर्शन होवण ओह लिख के रखणा ते आ के देणा दस्स, ते फेर प्रभू दे दर्शनां दा लेखा लैणा पाईआ। वेख्यो मैं इक ते तुहानूं मिलदा किस तरह नस्स नस्स, रातीं सुत्तयां लवां उठाईआ। पर याद कर लओ प्रभू दे विहार विच प्यार विच सतिकार विच दरबार विच अग्नी विच ना जायो मच्च, हसद विच कोए ना आईआ। बाहर दा खेल काया कच्च, काची वंग भन्न वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, पतिपरमेश्वर अगम्म अथाहीआ। सतारां हाढ़ कहे प्रभू चार जुग तेरी चलदी रही गड्डी, नाम दे पईए दिते लगाईआ। इक गल्ल पुछां वड्डी, गल पल्लू वास्ता पाईआ। ओह केहड़ी धार जिस नाल सृष्टी बद्धी, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। ओह केहड़ी आवाज़, जिस नाल गुर अवतार पैग़म्बरां बख्शें गद्दी, लोकमात माण ताण वधाईआ। पुरख अकाल किहा एह सारी खेल मेरयां चरणां हेठ दब्बी, बिना किरपा तों नज़र किसे ना आईआ। पर एह दात बख्शदा कदी कदी, सदा हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। जिस दी प्रीत प्रीतम नाल लग्गी, सो प्रीतम विच समाईआ। जन भगतो हुण उहो दात तुहाडीआं पिट्ठां उत्ते बद्धी, क्यों गोबिन्द दिता लिखाईआ। अग्गे गोबिन्द दा दर्शन करदे सी अक्खीं, साहमणे हो के खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। जन भगतो गोबिन्द बहि गया तुहाडी उत्ते पिट्ठ, पिठू मज़्ब दे दिते लाहीआ। जेहड़ी साधां ने मंज़ल दस्सी सवा गिट्ठ, ओह बिना नाप तों दिती मुकाईआ। तुहाडे कोल इक्को मेरे नाम दी चिट, चिट्टी धार विच्चों पार लँघाईआ। कदी ना पूजिओ पथ्थर ते इट्ट, इट्टां पथ्थरां वाला गुरु कम्म किसे ना आईआ। जे चंगा कम्म एह ना हुन्दा ते ज़रूर मारदा कोई छिक, एह जगत दी रीती पिछली चली आईआ। पर मैनूं ऐं जापदा सारे प्रभू दे दवारे गए विक, कीमत आपणी गए मुकाईआ। जन भगतो सज्जा हथ्थ मारो उत्ते हिक्क, असीं प्रभू दे भगत ते ओह साडा भगवन सोभा पाईआ। साडे अन्दर मारे सदा खिच्च, विच वड़ के आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती नारी दी फेर आ गई वारी, चार जुग दी खुशी बणाईआ। प्रभू साहिब हुण करीए अगली त्यारी, त्रैगुण तों बाहर खेल खिलाईआ। जिस तरह मैं तैनूं लग्गी प्यारी, प्रेम विच आपणा प्रेम वधाईआ। मैं चाहुंदी मेरे नालों चंगी तेरी तेरयां भगतां नाल होवे यारी, बिना भगतां तों यराना कम्म किसे ना आईआ। बिना सहिब कन्त तों सृष्टी सर्ब कुँवारी, आत्म सेज ना कोए हंढाईआ। मैं सदके घोली वारी, आपणा आप घोल घुमाईआ। वेखीं किते वितकरा ना पावीं मुच्छ केस ते

दाढ़ी, मूंड मुंडाया हिस्सा ना कोए रखाईआ। मैं चाहुंदी जो तेरे चरण करे निमस्कारी, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। उहो तेरे सचखण्ड विच आ के प्रेम दी दए बहारी, बहार रुत आपणी दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा घर वसाईआ। नारद कहे मेरा इक्को होका, हुक्कयां वाल्यो दयां सुणाईआ। प्रभू दा खेल जुग चौकड़ी धोखा, अछल छल सब दे नाल कराईआ। एसे तरह वक्त लँघ गया बहुता, नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग लँघाईआ। हुण गोबिन्द दा पूरा कर के ढईआ वाला ढौंका, आपणी लई अंगड़ाईआ। रविदास दा साढे तिन्न हथ्थ लेखा पूरा कीता औंटा, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। अन्त अख़ीर सब दा मालक ख़सम ख़ावंद बण के खौंता, अवतार पैग़म्बर गुरु लए प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। नारद कहे जन भगतो इक्की पगड़ीआं लओ बन्न्ह, जुगिन्दर कौर देणीआं वरताईआ। मनजीत ने नाल तुरना कहिणा धन्न धन्न, प्रभू तेरी बेपरवाहीआ। सब ने बोलणा हरिसंगत दा बेड़ा लैणा बन्न्ह, सतिगुर आपणे कंध उठाईआ। कोई मन्दिर वसे ते कोई भावें वसे छन्न, सब नूं इक्को घर बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक चढ़ाईआ। पगड़ी कहे मैनूं सारे कहिंदे पग्ग, पग्ग कहि के मैनूं पाग़ल दिता बणाईआ। मैं वेख्या सारा जग, जुग जुग सेव कमाईआ। मैं जिस दे सिर ते आई उहदे अन्दर वेखी दीन मज़्ह्ब दी अग्ग, सांतक सति ना कोए कराईआ। मैं भज्ज के चली गई मक्के मदीने दा करन हज्ज, हाजीआं वेख वखाईआ। जिन्हां दे सिरां उत्ते कुल्ले रहे सज, कुल मालक ना कोए सीस निवाईआ। ओन्हां दे अन्दर द्वैत सब नालों वद्ध, आबेहयात ना कोए प्याईआ। मैं सारे दिते छड, भज्जी वाहो दाहीआ। इक भगत सुहेला ल्या लभ्भ, उस नूं दिता सुणाईआ। मैनूं लै चल उथे जिथ्थे नहीं कोई हद्द, हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। मैं सब तों वक्खरी रहां अलग्ग, वक्खरा घर सुहाईआ। जिथ्थे सारे भगत होण होवे कोए ना कग, हँस गुरमुख सोभा पाईआ। नाम खुमारी पी के मध, मधुर धुन राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद दिती माण वड्याईआ। पग्ग कहे जन भगतो प्रभ ने कीती बड़ी मेहरवानी, मेहर नज़र उठाईआ। जिस दे भगत सदा निशानी, जुग जुग सोभा पाईआ। आदि जुगादि बणया रिहा बानी, सदा सदा सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पिछली रीती चुक्की पुराणी, अग्गे आपणा हुक्म वरताईआ। जिस जोती धार अवतार पैग़म्बर गुरु बणा लए महाराणी, राउ रंक रिहा ना राईआ। सो जन भगतां सच दवारे खवा महिमानी, तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। नारद कहे प्रभू जेहड़ी खेल कीती आदि, मैनूं दे सुणाईआ। मैनूं आ गया याद, याददाशत ना कदे भुलाईआ। जुग चौकड़ी

जगत वस्तूआं दा वरताउँदा रिहा प्रशाद, प्रशादे खवा के सब दे झट लँघाईआ। पर आपणे नाम दी प्रगट हो के साख्यात हरिसंगत कर के वंडी कदे नहीं दात, इक इक नूं चोरी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। नारद कहे प्रभू अज्ज प्रशाद दे दे उह, जो आदि झोली पाईआ। जेहड़े गुरमुख आउण छब्बी पोह, ओनां दे अन्दर वज्जदी रहे वधाईआ। सब दे हथ्थ विच लिख के फड़या होवे सोहँ सो, सुनिहरी अक्खरां विच सोभा पाईआ। तेरे चरणां दा होवे मोह, नाता दीन दुनी तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच नाम देणा वरताईआ। साचा नाम दे दे गफ्फा, आपणी गंढ खुलाईआ। ऐवें ना होवीं ख़फ़ा, ग़ुस्से विच सुणाईआ। ज़रा हुण बदल दे आपणा पिछला सफ़ा, अग्गा दे दृढ़ाईआ। अजे तक भगतां नूं महिसूस हुन्दा असीं अजे तक कोई नहीं कीता वाधा, वाधा नज़र कोए ना आईआ। हुण इनां दे अन्दर वड़ के इनां दी आत्म नूं मारना जफ्फा, गलवकड़ी विच्चों निकल कोए ना जाईआ। इक्को तेरा गावण टप्पा, टापूआं दा डेरा ढाहीआ। इक्को पा दे सब दे उपर छप्पा, सिर सके ना कोए उठाईआ। जेहड़े तैथों ओहले हो के मारदे गप्पां, गपौड़ीआं रहे सुणाईआ। उनां दे गल्ल विच पा दे नाम दा पटा, पटे वाला कुत्ता दए गवाहीआ। बिना तेरे तों दूजे नाल होवे कदे ना मता, मति मतांतर दा डेरा ढाहीआ। जे तूं अमृत वरताया सी नाल लप्पां, हुण बुकड़े दे भराईआ। पीणा पए ना नाल कप्पां, रसना जेहवा ना मुख हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच वस्त झोली पाईआ। पुरख अकाल कहे मेरा प्रशाद सदा प्रशादी, परस परस परसाया। तरसदे रहे कृष्ना राधी, रामा सीता राह तकाया। पैग़म्बर झोलीआं रहे आडी, नेत्र नैण उठाया। गुर गुर गाउंदे रहे बण के ढाडी, सिफ्तां विच सालाहया। मैं इक ख़बर सुणाई साची, सहिज नाल दृढ़ाईआ। जिस वेले आप आवां ते दीनां मज़्बां तों देवां आज़ादी, झगड़े सर्ब मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति दी धार बख्श के सांझी, सांझीवाल भगत जन बणाया।

६०२
२२

✪ २६ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ श्री आर ऐल शरमा दे नवित धर्म अरथ रोड कोठी नं० १०२, श्रीनगर कश्मीर ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ पाया कमलापती, पतिपरमेश्वर पारब्रह्म धुरदरगाहीआ। जिस ने आदि अन्त दी कथा कहाणी दस्सी सच्ची, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आपणा भेव खुलाईआ। दरगाह साची सचखण्ड दवारे निरगुण जो कबूल

कर के सखी, सखावत धुर दा नाम आपणा आप वरताईआ। दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल वेख्या बिना अक्खीं, नेत्र लोचन ना कोए वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो नाम भण्डारा देंदा रिहा रती, रत्न अमोलक धुर दा हीरा साडी झोली पाईआ। सरगुण धार लोकमात विच गा के गाथी, रसना जेहवा बत्ती दन्द सिफ्त सालाहीआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी धुर दी धार आखी, आख़र निरअक्खर धार विच्चों मात प्रगटाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी पुरख अबिनाशी अन्त वेखे कलयुग अंधेरी राती, दो जहान नौजवान मर्द मर्दान फोल फुलाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला जन भगतां अन्तर आत्म रिहा वाची, निरंतर हो के पर्दा आप चुकाईआ। सज्जण सुहेला इक इकेला सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर सब दी पूरी करे आसी, आहिस्ता आहिस्ता मेला मेलया सहिज सुभाईआ। जिधर तक्कीए चार कुण्ट दहि दिशा इक्को नूर जोत प्रकाशी, प्रकाशवान मेहरवान महिबूब नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा इक सुहाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण वेख्या सच घर सुहञ्जणा, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। प्रभ पाया आदि पुरख निरँजणा, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जिस दे चरण कँवल कर के धूढ़ी मजणा, आपा आप कीती सफ़ाईआ। ठाकर पा के धुर दा सज्जणा, मीत ल्या पाईआ। जिस दे पिच्छे जगत जहान दीन तजणा, ज़ात पात दा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दवारे वेखे चाँई चाँईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ पाया साहिब सुहेला कन्त, ख़समाना धुरदरगाहीआ। जिस दा जाण ना सके आदि अन्त, बेअन्त कहि के झट लँघाईआ। सो महिमा दस्से अगणत, लेखा लिख सके कोए ना राईआ। जिस दे ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ अनन्त, कलम शाही दस्से ना कोए चतुराईआ। जिस नूं ध्याउंदे लख चुरासी जीव जंत, साध सन्त भगत सुहेले सीस निवाईआ। सो साहिब सतिगुर सच दवारे एकँकार एका नाम दस्स के मणीआ मंत, मन्त्र अन्तर निरन्तर दिता जणाईआ। साडी दीन मज़्हब दी मेट के चिन्त, द्वैत अग्नी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ पाया सति स्वामी, साहिब सुल्तान दिती वड्याईआ। ख़ावंद तक्या अन्तरजामी, ख़ुद मालक नूर इलाहीआ। जिस दी मंज़ल इक रुहानी, रूह बुत तों परे करे शनवाईआ। जिस नूं लभ्भदे उपर असमानी, सो हर घट रिहा समाईआ। जिस दे चार जुग दे शास्त्र सिफ्तां वाली बाणी, बाण अणयाला तीर लगाईआ। सो मालक ख़ालक प्रितपालक दो जहानी, जोती जाता पुरख बिधाता अगम्म अथाहीआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त करे सावधानी, आलस निंद्रा ग़फ़लत विच सोया रहिण कोए ना पाईआ। जिस ने झगड़ा मेटणा

जिस्म ज़मीर जिस्मानी, जिस्म ज़मीर आपणा आप समझाईआ। सति धर्म विच रहिण ना देवे ग़ुलामी, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। लेखा जाणे चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। मेहरवान महिबूब हो के मुहब्बत विच देवे आबेहयात पाणी, अमृत इक्को रस चखाईआ। दीन दुनी दा बण के जाण जाणी, जानणहार इक अख्वाईआ। झगड़ा मेट के वेद पुराणी, अञ्जील कुरानी लहिणा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच मालक बेपवाहीआ। अवतार पैग़म्बर कहिण ठाकर पाया इक ख़ावंद, ख्वाहिश अवर रही ना राईआ। जिस दे हुक्म अन्दर हो पाबन्द, पाबन्दी दीन मज़्हब वाली गंवाईआ। जिस दा निशान तारा चन्द, चौदां तबक देण गवाहीआ। सो सुणाए आपणा अगम्मी छन्द, सोहँ ढोला धुरदरगाहीआ। जिस दी चार जुग करदे आए मंग, भविक्ख्तां विच ध्यान लगाईआ। सो साहिब सूरा सरबंग, हरि करता वेस वटाईआ। जिस ने गोबिन्द तों छुडाया पुरी अनन्द, अनन्द आपणा इक जणाईआ। शस्त्र खण्डा करा के जंग, जगत विच दिती वड्याईआ। अगला लेखा करके कलमबन्द, पर्दा परदयां विच छुपाईआ। जिस दे हुक्म अन्दर सदी चौधवीं रही लँघ, मुहम्मद उठ के लए अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण साडा वसया सच महल्ला, महिफ़ल प्रभ दे नाल रखाईआ। मालक मिल्या इक इकल्ला, जोती जाता धुरदरगाहीआ। जिस दा खेल जलां थलां, महीअल आपणी कार कमाईआ। जो लख चुरासी अन्दर रला, आत्म परमात्म हो के सोभा पाईआ। जिस ने शब्द संदेशा घल्ला, सुनेहड़ा अगम्म अथाहीआ। जिस दा हुक्म कदे ना टला, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। सो कलयुग अन्तिम धर के आपणी कला, कलकाती दए खपाईआ। चारों कुण्ट बोल के हल्ला, शब्दी धार इक उठाईआ। जो गोबिन्द दस्स के गया डल्ला, सहिज सहिज सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभ पाया बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। जिस दा लेखा अगम्म अथाह, अगोचर कहिण कोए ना आईआ। जेहदी चार जुग दी सिफ्त सालाह, अक्खरां विच वड्याईआ। सो लहिणा देणा जाणे थांउँ थाँ, थान थनंतर फोल फुलाईआ। वेखणहारा मानव ज़ाती साढे तिन्न हथ्थ ग्रां, मास नाड़ी भेव रहे ना राईआ। जिस दा चार जुग अक्खरां विच हरफ़ां विच हरूफ़ां विच जपदे आए नाँ, दीन दुनी दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवार इक सुहाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभू पाया पुरख समरथ, मिल के वज्जी वधाईआ। जिस चार जुग चलाया रथ, रथवाही हो के सेव कमाईआ। जिस कोल अगम्मी वथ, भण्डारा बेपरवाहीआ। जिस दे पिच्छे

गोबिन्द बैठा सथ्थर घत, माछूवाड़े सेज सुहाईआ। उस ने खेल करना वत, बेवतनां वेखे थांउँ थाँईंआ जिस दे लेखे लग्गी अजीत जुझार दी रत, बच्चे नीहां हेठ दबाईआ। सो जोती जाता हो प्रगट, पर्दा ओहला दए जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया देवे कट, कटाक्ष आपणा नाम लगाईआ। सतिजुग साचा अंगड़ाई ल्ए झट्ट, आलस निंद्रा अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा इक सुहाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ पाया एकँकार, इक इकल्ला सोभा पाईआ। जिस दा खेल विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी सेव कमाईआ। जिस दा रूप तेई अवतार, ईसा मूसा मुहम्मद नूर इलाहीआ। जिस दा दस गुरु जोत चमत्कार, उजाला कीता थांउँ थाँईंआ। सो पुरख अकाला धुर दा परवरदिगार, सांझा यार इक्को इक अख्वाईआ। सचखण्ड बणा सानूं आपणी नार, भतार हो के इक्को सेव कमाईआ। असीं मिल के गाया मंगलाचार, तूं मेरा मैं तेरा नूर इलाहीआ। दीन मज़्हब दा झगड़ा दिता वसार, विसरी वस्त पराईआ। दर ठांडा कर दरबार, सजदा इक्को सीस झुकाईआ। जिस दा लेखा कागत कलम ना लिखणहार, शास्त्र सिमरत कहिण कोए ना पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर जिस दे बणे रहे पनहार, जगत किनारे परगणे उत्ते आपणी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा एकँकारा इक इकल्ला आप वखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभ पाया मुहब्बत विच पारब्रह्म मुबाइन, महिबान बीदो बीख़ैर या अलाह नूर इलाहीआ। जिस दा रूप आदि अन्त ऐन दा ऐन, रेख सक्या ना कोए बदलाईआ। जो मालक ख़ालक सज्जण सैण, जोती जाता पुरख बिधाता इक अख्वाईआ। जिस ने दीन मज़्हब विच सानूं बणा दिता तरफ़ैन, तरफ़दारी विच नाम कलमा यारी दिती वखाईआ। हुक्म संदेशे दिन्दा रिहा बिना आपणे साइन, दसख्त नज़र कोए ना आईआ। कुछ लेखा लिख के गया बाल्मीक विच रमाइण, राम दा राम बेपरवाहीआ। कुछ अर्जन कृष्न लग्गा कहिण, कहि के दिता दृढ़ाईआ। कुछ करबले दा लेखा हसन हुसैन, मुहम्मद दी धार दए गवाहीआ। कुछ अर्जन ने तक्या नैण, तत्ती तवी सोभा पाईआ। तेग़ बहादर दे के लहण देण, लेखा अगला गया सुणाईआ। गोबिन्द किहा पुरख अकाला दीन दयाला अन्त प्रगट होवे जिस वेले कूड़ी क्रिया वहे वहिण, सति धर्म दवारा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दवारा इक वड्याईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण घर पाया गृह एक, महल्ल अटल वज्जी वधाईआ। जिथ्थे इक्को इक टेक, दूजा इष्ट नज़र कोए ना आईआ। त्रैगुण माया ना लग्गे सेक, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। भेव रहे कोए ना भेत, अभेव आपणा दए खुल्हाईआ। तन माटी ख़ाक ना होवे खेत, मढ़ी गोर ना कोए दबाईआ। जद तक्कीए

हरि करता नेतन नेत, बिन नेत्र सोभा पाईआ। सद दर्शन लईए पेख, पेखत आपणी ख़ुशी बणाईआ। जिस दी शब्द सतिगुर बदल देवे रेख, अप वाए तेज पृथ्मी आकाश आपणी कार कमाईआ। नाम कलमा धरनी धरत धवल जगत देस, निरअक्खर धार विच्चों अक्खर अक्खर प्रगटाईआ। खेल खिलाए मूंड मुंडाए रंग रंगाए मुच्छ दाढ़ी केस, केसगढ़ दा लेखा पूर कराईआ। जिस दा खेल पंडत पांधे वाच ना सकण मुल्ला शेख़, आपणा हुक्म आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दवारा धुर दरबारा इक्को इक सुहाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण सानूं बणा धुर दी सवाणी, सोहणा रंग दिता रंगाईआ। पतिपरमेश्वर बणा के अगम्मी राणी, मेल मेलया सहिज सुभाईआ। जोत धार बण के जोत दी राणी, रंग महल्ल अटल दिता चढ़ाईआ। जिथ्थे ना कोए शब्द ना कोए बाणी, ना कोए कलमा सिफ्त सालाहीआ। ना कोए अमृत ना कोए पाणी, अबेहयात ना कोए बरसाईआ। ना कोए वेद पुराण शास्त्र ना कोए घाड़त घड़े चारे खाणी, विष्न ब्रह्मा शिव दूर दुराडे सीस निवाईआ। मेहरवान महिबूब साडे उत्ते कीती मेहरवानी, मेहरवान मेहरवान मेहरवान आपणी दया कमाईआ। सति धर्म दी दे के निशानी, निशाना आपणा दिता वखाईआ। जिस दे पिच्छे दे के आए कुरबानी, शस्त्र खण्डा कमान कंध उठाईआ। सो लेखा मुका जगत अवामी, आम दा खहिड़ा दिता छुडाईआ। साडा झगड़ा मुका जिस्मानी, अवतार पैग़म्बर इक्को रंग वखाईआ। जिस नूं समझे ना कोए जीव प्राणी, प्राणपति समझ कोए ना पाईआ। विद्या वाले विद्‌वानां दी चले ना रीत पुराणी, सचखण्ड चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवार गृह इक्को इक वखाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण सानूं मिल्या गहर गम्भीरा, गुणवन्त बेपरवाहीआ। जिस ने कलयुग बदल देणा वतीरा, वातावरन दए बदलाईआ। जिस ने लेखे लाया रविदास दा इक कसीरा, कबीर जुलाहा दए गवाहीआ। नामे दा दुद्ध पी के सीरा, भोग लगाया चाँईं चाँईंआ। सो साहिब स्वामी बण के पीरन पीरा, पारब्रह्म प्रभ आपणा फेरा पाईआ। सदी चौधवीं सब दी अन्दरों कढ देवे दिलगीरा, दिल दलील दए बदलाईआ। शरअ शरीर तोड़ ज़ंजीरा, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। लेखा मुका के ग़रीब अमीरा, फ़कीरां फ़िकरा इक्को दए समझाईआ। जिस कारन गोबिन्द धरनी उत्ते मुखी छुहाई तीरा, तीर तरकश दिती वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सुहेला इक अकेला आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण सानूं बणा दे नार सुलखणी, सुख सागर विच समाईआ। सानूं खेल वखाई उत्तर पूरब पच्छम दक्खणी, चारे कुण्ट राह तकाईआ। हुक्म संदेशा दे के अलख अलखणी, अगम्म अथाह करे पढ़ाईआ। जिस ने सब दी पति रखणी, पतिपरमेश्वर दए खेल जणाईआ।

गुरमुख धार नहीं रखणी सक्खणी, जन भगत लए उपजाईआ। गुरसिख रहे ना कोए बेवतनी, वतन आपणा इक समझाईआ। जो सतिगुर दवारे आए पत्तनीं, नईया नौका नाम चलाईआ। सेवा लगाए जिस दे चरण झस्से लच्छमी, धर्म दवार वेखणा चाँईं चाँईंआ। सतिजुग दी खेल करनी रसमी, रिवाज काज आपणा इक रचाईआ। शंकर दी धार वेख भस्मी, भस्मड़ हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर संदेशा इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर धार बण के इक जोती, दीन दुनी रहे सुणाईआ। जन भगतो प्रभ दे बण जाओ इक्को गोती, गौतम बुद्ध दए समझाईआ। किसे दी आत्म रहे ना सोती, सोई सुरत लैणी उठाईआ। जिस नूं लभ्भदे कोटन कोटी, सो काया कुटीआ अन्दर डेरा लाईआ। जिस दे नाम नाल दुरमति मैल जाए धोती, पतित पुनीत बणाईआ। अन्तर वासना रहे ना खोटी, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। सो मालक ख़ालक वेखे आपणी चढ़ के चोटी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण जन भगतो वेखो कलयुग अंधेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। उठो वेखो मारो झात, चारों कुण्ट नैण उठाईआ। साचा देवे कोए ना साथ, सगला संग ना कोए निभाईआ। चार जुग दे अक्खरां वाली गाथ, पढ़ पढ़ थक्की मात लोकाईआ। अन्तर आत्म मिले किसे ना शांत, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। नाम भण्डारा बख्शे कोए ना दात, दातार हो ना कोए वरताईआ। साचे मण्डल वेखे कोए ना रास, गोपीआं काहन शब्द ना कोए मिलाईआ। साचे मन्दिर होए ना कोए प्रकाश, अंध अंधेर ना कोए मिटाईआ। शब्द नाद धुन सुणे ना कोए आवाज़, नादी नाद ना कोए शनवाईआ। पढ़ पढ़ थक्के पंजे वक्त नमाज़, वज़ूआं बांग विच कराईआ। परवरदिगार दा खोल्हे ना कोए राज़, अक्खां बोध ना कोए जणाईआ। सदी चौधवीं जाओ जाग, जागरत वेला इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण उठो साध सन्त फ़कीर, निरगुण धार लओ अंगड़ाईआ। बिरहों विछोड़े विच नेत्र नैण वहाओ नीर, हन्झूआं हार बणाईआ। आपणी बदल लओ तकदीर, तदबीर धुर दा शब्द दए जणाईआ। जिस दी नज़र ना आए कोए तस्वीर, मुसव्वर खिच्च ना कोए वखाईआ। तिस स्वामी अग्गे आपणी दस्सो पीड़, जो पीआ प्रीतम हो के वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द हो के बन्न्हे बीड़, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। सदी चौधवीं नौ खण्ड पृथमी पैणी पीड़, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। जिस ने लज्जया रखी द्रोपती लहण नहीं दिते चीर, चिरी विछुन्ने लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वर दाता इक अख्वाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण जन भगतो प्रभ वेखो

इक्को मीत, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। जिस दा राम अल्ला वाहिगुरु ओम तत सति गाउंदे गीत, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द इलाहीआ। सो सच दा मालक बैठा अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। जिस दा खेल सदा अनडीठ, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर हुक्म इक उपजाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण सुणो साडा हुक्म फ़रमान, फ़ुरन्यां तों बाहर जणाईआ। हुक्म मन्नणा इक श्री भगवान, जो भगवन धुरदरगाहीआ। जिस दा सति सच निशान, दो जहानां आप झुलाईआ। जिस नूं असां मन्नया काहन, सो लख चुरासी गोपी लए हंढाईआ। जिस नूं गाया कहि के सीता राम, सुरती शब्द शब्द समझाईआ। जिस ने ईसा मूसा मुहम्मद पैग़ाम सुणाया विच जहान, अलिफ़ ये कीती पढ़ाईआ। कलमा दस्स के अञ्जील कुरान, ईमान आपणा इक समझाईआ। नानक गोबिन्द कर प्रधान, डंका फ़तिह दिता वजाईआ। सदी चौधवीं मेट के शरअ शैतान, शरीअत इक्को इक दरसाईआ। जिस दी लख चुरासी मन्ने आण, सिर सके ना कोए उठाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण असीं ओसे दे बाल अंञाण, बाली बुध ना कोए चतुराईआ। नाम कलमे दिते विच जहान, कायनात विच दुनी दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दरबारी इक एकँकारी इक इकल्ला आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण जन भगतो सूफ़ी सन्त फ़कीरो इक्को परवरदिगार कर दयो सजदा, सीस जगदीश झुकाईआ। वेखो खेल आपणे घर दा, घर घर विच होए रुशनाईआ। नज़ारा तक्को नरायण नर दा, जो नारी नर रूप दरसाईआ। जिस झगड़ा मुकाउणा कलयुग कल दा, कालख टिक्के दए धुआईआ। लहिणा देणा लेखा पूरा करना राजे बल दा, जो बावन आया दृढ़ाईआ। तेरां सौ सतासी रिषीआं धाम दस्सया निहचल अटल दा, अटल पदवी इक दरसाईआ। अठासीवां रिषी हुक्म नाल शब्दी धार रलदा, भेव अभेद ना कोए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा जाणे कशप वाली डल दा, पर्दा पर्दे विच्चों चुकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण जन भगतो मन्नो एका गुर, सतिगुर शब्द शब्द अख्वाईआ। जिस दा लेखा होवे धुर, धुर मस्तक फोल फुलाईआ। सतिनाम वजाए सुर, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। शौह दरया जाए कोए ना रुढ़, चुरासी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। जो जा के आया मुड़, मुड़ आपणा हुक्म वरताईआ। उस दा मन्त्र नाम कलमा जाणा फ़ुर, फ़ुरने सब दे बन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा वेख वखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण भगतो उठो वेखो मारो झाकी, लोचन नैण अक्ख उठाईआ। पतिपरिमेशवर तक्को कमलापाती, पारब्रह्म अगम्म अथाहीआ। जीवण ज़िंदगी बदल देवे हयाती, जन्म जन्म विच्चों

बदलाईआ। मंज़ल चाढ़े धुर दी घाटी, घाटा पिछला पूरा कराईआ। आत्म परमात्म बण के साथी, सगला संग वखाईआ। सदी चौधवीं सारे मन्न लओ आखी, बिना अक्खरां करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग इक रंगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण वेखो सच्चा सज्जण, सतिगुर इक अख्वाईआ। जो पर्दे आए कज्जण, ओढण सीस नाम टिकाईआ। जिस नूं कहिंदे अकाल मूर्त गोपाल मदन, मधुसूदन नाम धराईआ। जिस दे खण्ड ब्रह्मण्ड सूर्या दीपक जगण, कोटन कोटि करे रुशनाईआ। सो कलयुग अन्तिम करे अदल, इन्साफ़ आपणे हथ्थ रखाईआ। कूड़ी क्रिया शरअ करे कत्ल, कातिल मक्तूल आपणा हुक्म वरताईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश सच दवारे बणा के रत्न, अमोलक आपणी झोली पाईआ। प्रभ मिलण दा माणस देही यतन, यथार्थ इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण साडी इक अर्ज़ोई, बेनन्ती इक सुणाईआ। प्रभ बिन अवर ना कोई, सच सच सुणाईआ। सृष्टी दी दृष्टी अन्दरों रोई, बिन नैणां नीर वहाईआ। सोई सुरत ना उठाए कोई, आलस निंद्रा दए मिटाईआ। मुहब्बत विच ना जाए मोही, प्यार प्यार विच ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच वर, सच दा मेला आप कराईआ। गुर अवतार पैग़बर कहिण हरि पाया कन्त सुहागी, सहिज सुहेला मीत दूहला। जिस अन्तर दिता इक वैरागी, बण साहिब कन्त कन्तूहला। हउमे हंगता सारी भागी, दीन मज़्ह्ब दा झगड़ा भूला। इक्को नाम कलमा रहे अराधी, लहिणा दरगाह सच वसूला। जिस खेल करया आदी, सो जुगादी कदे ना भूला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे हुक्म माकूला। अवतार पैग़म्बर गुर विलज़ते वज़ीअ ज़लमीनो ज़गाह अर्शे नज़ाअ, ख़ाके गखोश, कलमे नज़ी, तज़ीने नवित कशे नज़ाअ मुहब्बते नवूअ रसूले अज़ाअ, कनिस्ते वनूअ दस्ते दुआ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच पर्दा आप चुकाईआ। पर्दा चुक्के सच महिबूब, मुहब्बत विच वड्याईआ। जिस दा आलीशान अरूज, अर्श फ़र्श धुरदरगाहीआ। जो सब नूं करे नेस्तोनाबूद, आलमे जवाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा लहिणा दए चुकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण एह धरनी धरत धरत वड भाग, सच मिली वड्याईआ। जिथ्थे भगत भगत चराग़, भगवन नूर नूर रुशनाईआ। सन्त सन्त समाज, समग्री सच वरताईआ। हँस हँस काग, गुरमुख गुर गुर गाईआ। बिरहो बिरहो वैराग, पंचम पन्ध मुकाईआ। सोई सुरती गई जाग, आलस निंद्रा रही ना राईआ। आसा मनसा पूरी होई तांघ, अनदृष्ट दृष्टी दिती गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार

भुगताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण एथे सप्त रिषी कट के गए रात, आपणी ख़ुशी बणाईआ। भारद्वाज ने रखी आस, अत्री नाल सुहाईआ। उठ वेख पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर ध्यान लगाईआ। कलयुग अन्तिम मार झात, झाती आपणी इक समझाईआ। जिस वेले चेला गुरु इक दूजे दी पुछे कोए ना बात, वातावरन बदले लोकाईआ। सच धर्म दी करे कोए ना बात, बातन पड़दा ना कोए खुल्हाईआ। मेरा पूरा होणा वाक, वाक्या दए सुणाईआ। एथे खेल होणा इत्फ़ाक, इत्फ़ाकीआ आए बेपरवाहीआ। जिस ने प्रगट प्रसिद्ध करनी ब्राह्मण ज़ात, ब्रह्म आपणा पड़दा लाहीआ। शब्द संदेशा दे के आए साच, सच देणा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवार इक खुल्हाईआ। भारद्वाज कहे एह मेरी धर्म निशानी, निशाना इक वखाईआ। खेल करे शहिनशाह सुल्तानी, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस वेले सृष्टी जुग चौकड़ी दिसी फ़ानी, फ़नाह फिला वेखे धुरदरगाहीआ। सो पुरख निरँजण निरगुण धार खाए प्रेम रस महिमानी, वस्त अमोलक आपणी आप वरताईआ। उत्तर पूरब पच्छम दक्खण चारे दिशा होए वैरानी, वैरी घर घर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सुनेहड़ा इक समझाईआ। भारद्वाज किहा एह धरती सोहणी कछप दी कश्मीर, कछ मछ देण गवाहीआ। जिथ्थे आवे पीरन पीर, पैग़म्बर नूर इलाहीआ। जिस ने खेल करना अख़ीर, आख़र कुदरत कादर वेख वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप समुंद सागर विरोले नीर, धरनी धरत धवल पर्दा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। भारद्वाज कहे धरनी धरत धवल सुहाउणा, सोहणी रुत वड्याईआ। जोती जाते खेल खिलाउणा, ख़ालक ख़लक समझ कोए ना पाईआ। भगत भगवन्त आप उठाउणा, भगवन आपणा पड़दा लाहीआ। शब्दी नाद धुन सुनाउणा, बिन कन्नां कर शनवाईआ। प्रेम प्याला रस प्याउणा, अंमिउँ रस चखाईआ। माणक मोती गुरमुख आप बणाउणा, सोहँ हँसा चोग चुगाईआ। पिछला लेख पूर कराउणा, अग्गे देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा रंग वखाईआ। भारद्वाज कहे अत्री ब्राह्मण होणा ब्रह्म, पारब्रह्म दया कमाईआ। जिथ्थे उपजाउणा साचा धर्म, धर्म दवारा इक समझाईआ। उस दा पिछले जन्म दा होणा कर्म, राजा बल दए गवाहीआ। लेखा लहिणा पूरा करना प्रण, प्राणपत दए समझाईआ। सहारा दे के इक्को चरण, चरणोदक इक प्याईआ। झगड़ा मेट के मरन डरन, चुरासी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। एथे उस वेले इक्को ढोला पढ़न, तूं मेरा मैं तेरा दूजा राग ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव चुकाईआ। भारद्वाज किहा सुण ऋषी, रेखा दयां जणाईआ। जिस वेले सच

धर्म दी रहे कोए ना सिक्खी, सिख्या जगत सर्ब तजाईआ। उस वेले शहिनशाही सम्मत छे तेरे धर्म दी होणी मिती, मित्र प्यारा वेख वखाईआ। पिछली कथा कहाणी जाणी लिखी, पूरब लेखा दए दृढ़ाईआ। जिथ्थे सतिगुर परमात्म आत्म मिल के पैणी इक्की, सरगुण निरगुण जोड़ जुड़ाईआ। उस वेले कढ के वेखीं बिना अक्खरां वाली चिट्ठी, जिथ्थे हरफ़ हरूफ़ ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा लेखा दए जणाईआ। अत्री कहे मैं चिट्ठी अज्ज वाची, वाचक हो के ध्यान लगाईआ। निगाह मारी तक्या खेल तमाशी, तमाशा बेपरवाहीआ। निरगुण नूर जोत प्रकाशी, बिन चन्द सूर्या करे रुशनाईआ। मैं होर मारी झाती, निगह निगह विच्चों बदलाईआ। तन तक्कया वजूद ख़ाकी, तत्व तत सोभा पाईआ। जिस दा मेला परमात्म आत्म बणया साथी, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा पड़दा लाहीआ। अत्री कहे जिस वेले मैं अक्खर इक पढ़या, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। मंज़ल उस अगम्मी चढ़या, जिथ्थे मेला साहिब स्वामी धुरदरगाहीआ। मैं भय विच भउ विच डरया, निउँ के सीस निवाईआ। औह वेख जिथ्थे निरगुण निरवैर निराकार निरँकार भगत सुहेले रिहा वरया, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, पूरब लहिणा देणा चुकाईआ। अत्री कहे जां मैं
६११ खोल्ह के वेख्या अक्ख, अक्ख उठाईआ। जेहड़ा भगतां तों कदे ना होया वक्ख, वक्खरा गृह ना कोए वसाईआ। जुग ६११
२२ चौकड़ी पैज लए रख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलयुग खेल करे सच, सच दा मालक फेरा पाईआ। अत्री किहा २२
भगतां दे लूं लूं अन्दर रिहा रच, साढे तिन्न करोड़ दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक फेरा पाईआ। अत्री कहे मैं भगत सुहेला तक्या नाम लीला वन्ती, वतन आपणे सोभा पाईआ। जिस दे अन्दर इक्को रंग बसन्ती, बसन्त रुत मिले वड्याईआ। गढ़ रिहा ना हउमे हंगती, हँ ब्रह्म पड़दा दिता चुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा पढ़ के पंगती, पंजां दा लेखा दिता मुकाईआ। सति धर्म दी मिल के संगती, सगला संग बणाईआ। जिथ्थे मेल मिलावा जोत अन्ती, अन्त कन्त भगवन्त आपणे विच मिलाईआ। आशा रहे ना फेर तन दी, चुरासी विच्चों चारे कन्नीआं लईआं छुडाईआ। मुक्खों आवाज़ निकले धन्न धन्न दी, धन्न तेरी बेपरवाहीआ। खेल मुक जाए संसार वाले ग़म दी, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। इक्को आशा होवे उस राम दी, जो राम रमया हर घट थाँईंआ। इक्को तांघ होवे उस भगवान दी, जो भगवन भगतां लए मिलाईआ। इक्को तमां लए उस भगवान दी, जो मेहरवान हो के बंस सरबंस पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर

कहिण प्रभ भगतां देणा माण, अभिमाण देणा मिटाईआ। आपणा बख्श के ताण, निताणयां होणा सहाईआ। अमृत रस दे के पीण खाण, निझर झिरना बूँद स्वांत देणा चुआईआ। जोती नूर दस्स महान, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। इक्को दीआ बाती कमलापाती तेरा नज़री आवे विच दो जहान, दूजा नज़र कोए ना आईआ। धन्न भाग जे किरपा कीती आण, आण आपणी इक समझाईआ। एथे ओथे निरगुण सरगुण करीं ध्यान, ध्यान ध्यान विच्चों प्रगटाईआ। साडा लेखा करीं परवान, (परवाने) आपणे इक बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा घर इक वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभ होणा आप सहायक, सगला संग निभाईआ। तूं स्वामी आदि नायक, नरायण तेरी वड्याईआ। तेरा कलमा हक हमाइत, हम साजण लैणा बणाईआ। साचा सच कर अनाइत, बख्शिश कर धुरदरगाहीआ। कोझे कमले बणा लायक, मूर्ख मुग्ध अंग लगाईआ। भारद्वाज अत्री दा पूरा कीता आयत, कौल इकरार पूर कराईआ। तेरा हुक्म मन्नीए जाइज़, नाजाइज़ कार ना कोए कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, सच नाम नाम वरताईआ। पुरख अकाल कहे मेरा जुग जुग खेल अवल्ला, समझ कोए ना पाईआ। वेस अनेक करां जोती धार इकल्ला, कल आपणी आप वरताईआ। कलयुग अन्त शब्दी धार रला, तन वजूद रूप ना कोए दरसाईआ। दो जहानां खेल खेलां घड़ी पला, पल पल आपणा हुक्म वरताईआ। जिस ने ऐड़े तों अक्खर सिफ्त विच बणाया अल्ला, आलमीन आपणी कीती वड्याईआ। घर वखावे निहचल धाम अटला, जिथ्थे निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। सृष्टी नाल कर के वल छला, दृष्टी विच्चों दर तों बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग इक रंगाईआ। पुरख अकाल कहे भिन्नड़ी रैनड़ीए उठ वेख खेल अपारा, अपरम्पर रिहा जणाईआ। कलयुग जीव सुत्ता विच संसारा, नेत्र लोचन नैण ना कोए उठाईआ। सो जोती जाता पुरख बिधाता हो उज्यारा, नूर नुराना डगमगाईआ। जिस दा गोबिन्द दे के गया इशारा, सम्बल वसे धुरदरगाहीआ। तिस गृह मन्दिर निरगुण दीआ बाती कमलापाती इक्को इक दसाए चमत्कारा, चमक चमक विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। भिन्नड़ी रैण कहे मैं निउँ निउँ लागां पाउं, चरण कँवल सरनाईआ। मेरे अन्तर आया चाओ, वज्जी सच वधाईआ। जन भगतो तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला गाओ, आदि अन्त दा गीत प्रभ इक्को गया समझाईआ। इहो गोबिन्द ला के गया दाओ, दस दशमेश आपणा हुक्म समझाईआ। गुरमुखां कहि के वाहो वाहो, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। सो कलयुग अन्तिम खेवट खेटा बणे मलाहो, बेड़ा कलयुग अन्तिम पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा

साचा वर, सच स्वामी इक अख्वाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण साडी अन्त अरदास, बेनन्ती इक सुणाईआ। प्रभू सद वसीं भगतां पास, भगवन आपणी गोद टिकाईआ। गुरमुख कदे ना होवे उदास, गुरसिख लैणा तराईआ। सूफ़ी तेरी शाख़, शनाख़त आपणी देणी समझाईआ। अमृत प्या के आबेहयात, ज़िंदगी ज़िंदगी विच्चों प्रगटाईआ। नाम धुन वजा के नाद, अगम्मी राग सुणाईआ। सीता कटे ना कोए बनवास, राम रामा जोड़ जुड़ाईआ। पैग़म्बर जिस दी करके गए वज़ाहत, सिफ्तां विच सालाहीआ। तूं मालक इक्को वाहिद, वाहवा तेरी वज्जदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। पुरख अकाल किहा गुर अवतार पैग़म्बर निरगुण खेल खिलावांगा। जोती जाता पुरख बिधाता हो के, नूर नुराना नूर प्रगटावांगा। सच निवासी पुरख अबिनाशी दो जहानां दाता हो के, नाम निधाना इक वरतावांगा। पारब्रह्म ब्रह्म नाल छोह के, ईश जीव दा रंग रंगावांगा। दस्म दुआरी विच्चों खलो के, नूरी जोत जोत रुशनावांगा। हउमे हंगता सारी खोह के, सच सुच्च इक वरतावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगावांगा। दीन मज़्ब दा पन्ध मुकावांगा। अंध अंधेर कूड़ मिटावांगा। शब्द गुरु शेर बुकावांगा। भय भउ सर्ब दरसावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवार इक खुल्हावांगा। सच दवार इक खुल्हाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। ईश जीव भरम मिटाएगा। अमृत रस जल प्याएगा। तूं मेरा मैं तेरा मार्ग दस्स, मानव ज़ाती इक्को राह वखाएगा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पन्ध पिछला मुक्कया नस्स नस्स, सतिजुग आपणा राह तकाएगा। जन जगत सुहेला प्रभ दवारे जाए वस, वास्ता आपणे नाल रखाएगा। जन भगतां लेखे ला के अज्ज दी रात, रुतड़ी धर्म धार महकाएगा। फेर जन्म लैणा पए ना वत, बेवतनां आपणे वतन पहुंचाएगा। जोती धार मेला करके सति, सति सति विच मिलाएगा। प्रभ दा नाम इहो ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या इक पढ़ाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निझर धार दे के रस, रस्ता आपणा आप खुल्हाएगा।

६१३
२२

✪ ३० हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ लैफ़टीनैंट चेला सिँघ दे गृह जम्मू ✪

पुरख अकाल कहे अवतार पैग़म्बर गुर तक्को ज़िमीं असमान, बिन नेत्र लोचन नैण अक्ख उठाईआ। पर्दा खोल्ह के वेखो दो जहान, जागरत जोत बिन वरन गोत जगाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त धरो ध्यान, अन्तर अन्तष्करन खोज खुजाईआ। मुरीद शिश तक्को हो मेहरवान, महिबूब मुहब्बत विच अक्ख खुल्हाईआ। कवण साचा कलमा नाम गाए

गाण, हिरदे हरि कौण वसाईआ। कवण अमृत रस पीए खाण, कवण जगत तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। कवण वेखे धर्म निशान, निशाना दीन मज़्ब बदलाईआ। कवण जाणे धुर दा काहन, जो लख चुरासी गोपी आत्म रिहा हंढाईआ। कवण लभ्भे अगम्मा राम, जो सीता सुरत सर्ब प्रनाईआ। कौण पढ़ के कलमा कलाम, कायनात विच्चों पल्लू रिहा छुडाईआ। कवण गा के सतिनाम, सति सति विच समाईआ। कवण पी के वाहिगुरु जाम, अमृत गोबिन्द रस चखाईआ। सुणो संदेशा इक फ़रमान, फरमांबरदारो रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैग़म्बरो तक्को दीन मज़्ब जगत ज़ाती, जुगती नाल दयो दृढ़ाईआ। क्यों नहीं मिलदा किसे नूं अमृत बूंद स्वांती, निझर झिरना अंमिउँ रस ना कोए चुआईआ। क्यों तुहाडे हुंदिआ होई कलयुग अंधेरी राती, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। क्यों भुल्ली परम पुरख दी गाथी, रसना जेहवा बत्ती दन्द सिफ्त ना कोए सालाहीआ। क्यों सृष्टी दृष्टी अन्दर तुहाडी मन्ने कोए ना आखी, आख़र अक्खरां करन पढ़ाईआ। क्यों आत्म परमात्म सब नूं भुल्ली साखी, साख्यात तेरा दरस कोए ना पाईआ। क्यों धर्म दवारे कूड़ कुड़यारा विके विच हाटी, सच तराज़ू कंडा नाम हथ्थ ना कोए उठाईआ। क्यों मंज़ल चढ़े कोए ना घाटी, दरगाह साची मिलण कोए नाँ आईआ। उठो वेखो ग़ौर करो हर हिरदे अन्दर मारो झाती, काया मन्दिर फोल फुलाईआ। तुहाडा नाम जप के क्यों मेल नहीं होया कमलापाती, पतिपरमेश्वर मिलण कोए ना आईआ। की संदेशा दिता सँध्या प्रभाती, भाण्डा भरम भरम भनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर संदेशा इक सुणाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बरो तक्को दीन दुनी दी हद्द, हदूद आपणी वेख वखाईआ। मज़्बां वाली तक्को यद, यदी पड़दा देणा उठाईआ। जुग चौकड़ी केते गए लद, नव नौ चार दए गवाहीआ। की ढोला गाया सद, शब्द नाम जणाईआ। किथे राग गया नाद गया अनहद, धुन आत्मक ना कोए वड्याईआ। आपणी दुनी वेखो जग, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ हउमे लग्गी अग्ग, हंगता रही जलाईआ। क्यों शास्त्र सिमरत वेद पुराण पढ़न वाले होए कग, हँस रूप ना कोए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर पर्दा आप चुकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर वेखो अन्तिम अन्त किनारा, नईया डोले थांउँ थाँईंआ। साचा देवे ना कोए सहारा, खेवट खेटा रूप ना कोए प्रगटाईआ। सति धर्म दा लाए कोए ना नाअरा, धर्म जैकार ना कोए वखाईआ। चारों कुण्ट दीन दुनी मनमति होई दुराचारा, दिव्य दृष्ट ना कोए खुल्हाईआ। मन मनुआ होया अवारा, चारों कुण्ट दहि दिशा भज्जे वाहो दाहीआ। साचा देवे कोए ना पाहरा, बाहों फड़ ना कोए जगाईआ। कलयुग

अन्त अख़ीर आख़र कोए कर लओ चारा, चौथा जुग चारे खाणी चारों कुण्ट करे तबाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर धर्म इक दरसाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर निगह करो मातलोक, अलोकिक आपणा ध्यान लगाईआ। प्रभ दा भाणा सके कोए ना रोक, ना कोए मेटे मेटे मिटाईआ। जिस प्रगट कीती इक्को जोत, जोती जोत जोत रुशनाईआ। झगड़ा मिटावे वरन गोत, गौतम दी आसा दए गवाहीआ। सति सच सुणा सलोक, ढोला इक्को इक दृढ़ाईआ। जिस नूं लभ्भदे कोटी कोट, सो कोट काया कंचन गढ़ दए वखाईआ। जिस दा भाणा कोए ना सके रोक, रुकमणी अर्जन गया सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। पुरख अकाल कहे अवतार पैग़म्बर गुर वेला वक्त लओ संभाल, सम्बल वेखो बेपरवाहीआ। जिस ने त्रैगुण तोड़ना जगत जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सति सच बणा के धर्मसाल, धर्म दवारा इक्को दए प्रगटाईआ। जिथ्थे वसण शाह कंगाल, ऊच नीच ना कोए वखाईआ। इक्को नाम भण्डारा दे के धन माल, सच ख़ज़ीना आप वरताईआ। आ के पुछे मुरीदां हाल, गोबिन्द दाता अगम्म अथाहीआ। कलयुग विच सतिजुग बदल देवे चाल, चाल निराली इक रखाईआ। लख चुरासी विच्चों गुरमुख सन्त भगत सुहेले लए उठाल, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। जिस दा देंदे आए अहिवाल, संदेश्या विच सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित एथे ओथे दो जहानां करनहारा प्रितपाल, प्रितपालक ख़ालक इक अख्वाईआ।

६१५
२२

६१५
२२

✪ ३१ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ सरदारा सिँघ गुरनाम सिँघ दे गृह पिण्ड सीड़ ज़िला जम्मू ✪

शंकर कहे प्रभू सानूं लाग दे दे नाल चाअ, चाओ घनेरा इक जणाईआ। असीं करीए वाह वा, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। हुक्म संदेशा दे सुणा, शब्द अगम्मी अवाज़ लगाईआ। लख चुरासी झोली दे भ्रा, ख़ाली हथ्थ ना कोए वखाईआ। मैं दीन दुनी करां सफ़ा, सफ़ारश दी लोड़ ना कोए रखाईआ। दर ठांडे मंग लई मंगा, मांगत हो के झोली डाहीआ। वास्ता पा के करां दुआ, निउँ के सीस झुकाईआ। मेरे मेहरवान मेहरवां, मेहर नज़र उठाईआ। मैं ब्रह्मण्ड खण्ड वेखां तेरां थाँ, ज़िमीं असमान खोज खुजाईआ। बख़्शिश विच दे दे जेहड़े खांदे सूर गां, सब दा लेखा दयां चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। शंकर कहे प्रभू मज़दूरी पा दे मेरी झोली,

झूला प्रेम देणा झुलाईआ। मैं परवान करां तेरी बोली, सच दी धार देणी सुणाईआ। जेहड़ा सति चढ़ के आया तेरी डोली, उस नूं वेखां चाँईं चाँईंआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटां रौली, रोवण वाला नज़र कोए ना आईआ। साडी आसा तेरी सेवा विच बणी रही पराहुणी, घर तेरे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे धुर दा वर, वर दाते दया कमाईआ। शंकर कहे प्रभू असीं सेवा कीती चंगी, एसे करके मंग मंगाईआ। वस्त्र दे दे अगम्मी जंगी, जंगजू आपणी दया कमाईआ। खेल वेखीए शमीना फ़रंगी, फ़ारस दा भेव खुल्हाईआ। ओढण सीस दे दे पुश्त होवे ना नन्गी, आपणी दया कमाईआ। पिछली हथ्थ फड़ा दे संदी, जो बिन अक्खरां आपणे कोल रखाईआ। दीन दुनी दी वासना कढीं गंदी, कूड़ कुड़यारा डेरा ढाहीआ। मैं चाहुंदा जेहड़ी आत्मा तैनूं भुल्ली ओह सदा सद रंडी, सुहागण रूप ना कोए दरसाईआ। मैं बेनन्ती करनी करनी उस कन्ढी, जिस कन्ढे दी ख़बर किसे ना पाईआ। किरपा निधान तेरी किरपा नाल सदी चौधवीं जांदी लँघी, भज्जे वाहो दाहीआ। हुण मेटणी दीन मज़ूब दी पाबन्दी, पाबन्द आपणा इक कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, सतिगुर साहिब सदा बख्शंदी, बख्शिश आपणी दे वरताईआ।

✪ ३१ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ लक्ष्मण सिँघ दे गृह सई कैंप ज़िला जम्मू ✪

शंकर कहे प्रभ लाग लैणा नहीं सोना रुपा, धन दौलत कम्म किसे ना आईआ। मैं इक्को मंग मंगां मुखा, बिन रसना जेहवा कहि कहि सुणाईआ। चौथे जुग मेरी दूर करा दे भुक्खा, कलयुग ख़ाहिश दे मिटाईआ। धरनी सुफल करा दे कुख्खा, लख चुरासी मेरी झोली पाईआ। मैं कूड़ कुड़यारयां टुक्कर खावां रुक्खा, अन्त आपणी खुशी बणाईआ। झगड़ा मिटा देवां पंज भूता, तन वजूद डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। शंकर कहे लाग लैणा नहीं माया ममता, मोह जगत ना कोए जणाईआ। मैं वेखणा चाहुंदा तेरा सम्मती सम्मता, सम्मत शहिनशाही चतुराईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच बण मंगता, मंगां चाँईं चाँईंआ। जो तेरे नाम बिना भुक्खा नन्गता, उस दा लेखा दयां गंवाईआ। अन्तिम वेला जाए लँघदा, कलयुग कूड़ रिहा कुरलाईआ। प्यार दे दे आपणे रंग दा, रंगत इक्को इक चढ़ाईआ। मैं वक्त सुहावां धौल उत्ते लड़ाई जंग दा, जंगजू हो के हुक्म वरताईआ। लेखा पूरा करावां पुरी अनन्द दा, जो गोबिन्द आस धराईआ। खून धार लेखा मुके अस्व तंग दा, दुल दुल ऐली सीस निवाईआ।

झगड़ा रहे ना मानव वाली वंड दा, दानव देव देव मिटाईआ। जो तन वजूद ख़ाकी मानस रिहा जम्मदा, तत्व तत रूप वटाईआ। लेखा पूरा करां दम दा, दामनगीर हो के खोज खुजाईआ। झगड़ा मेटां माटी चम्म दा, चम्म दृष्टी दयां गंवाईआ। इक्को लेखा होवे तेरे ब्रह्म दा, पारब्रह्म मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। शंकर कहे लाग दे दे आपणा अगम्म अनमोल, वस्त दस्त फड़ाईआ। धर्म कन्ढे तराज़ू तोल, जगत तुले दी लोड़ रहे ना राईआ। मेरे अन्तर निरन्तर मौल, मौला हो के दया कमाईआ। फेर मैं हुक्म संदेशा देवां उपर धौल, धरनी धरत धवल दृढ़ाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं वखावां पूरा होया कौल, इकरारनामा सब दे अग्गे टिकाईआ। लहिणा चुकावां जगत पांधे रौल, गृह नछत्र डेरा ढाहीआ। सदी चौधवीं पूरा करां बोल, मुहम्मद बैठा सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच सच विच समाईआ। शंकर कहे लाग दे दे चरण विभूत, धूढ़ी धूल ख़ाक रमाईआ। फेर मैं वेखां चारे कूट, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण फोल फुलाईआ। हर हिरदे अन्दर वेखां जूठ झूठ, तन वजूद पड़दा आप चुकाईआ। लहिणा मेटां पंज भूत, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। दहि दिशा फिरां बण अवधूत, दुतीआ भाओ रहिण ना पाईआ। सब दी मंज़ल पूरी होई दस्सां इक मकसूद, मसला दीन दुनी हल्ल कराईआ। पुरख अकाल होणा मौजूद, मौजूदा हो के वेख वखाईआ। कलयुग करां नेस्तोनाबूद, जड़ रहिण कोए ना पाईआ। किरपा कर मेहरवान महिबूब, मेहर नज़र इक टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जो उपज्या सो जाए झूझ, बचया रहिण कोए ना पाईआ।

✪ ३१ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ बचन सिंघ दे गृह सई कैंप ज़िला जम्मू ✪

शंकर कहे लाग दे दे नाम दा खण्डा, खड़ग अगम्म फड़ाईआ। बख़्शिश करदे चण्ड प्रचण्डा, परब्रह्म प्रभ दया कमाईआ। मैं रहिण ना देवां बिना बन्दगी तों कोए बन्दा, बन्धन कूड़ा दयां तुड़ाईआ। मूर्ख रहे कोए ना अन्धा, अज्ञानीआं करां सफ़ाईआ। दोज़ख़ दा दोहरी धार खोलॄ के जिंदा, कुंजी मेरे हथ्थ फड़ाईआ। लख चुरासी जिस दे अन्दर टंगा, राय धर्म नाल मिलाईआ। पुरी लोअ आकाश पाताल लँघ, तबक चौदां पन्ध मुकाईआ। कलयुग अन्त अख़ीर वेखां कन्ढा, कन्ढी बहि के ध्यान लगाईआ। क्यों तेरा खुशीआं नाल होया कारज अनन्दा, अनन्द सानूं देणा वरताईआ। दर दरवेश हो के मंगा, मांगत हो के झोली

ढाहीआ। बेशक कलयुग समां लम्बा, बहुत्यों थोड़ा दयां कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एह खेल तेरा साहिब सदा बख्शंदा, बख्शिश आपणी नाल कराईआ।

३१ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ कुलवन्त सिँघ दे गृह सई कैंप ज़िला जम्मू

शंकर कहे लाग विच दे दे कमंदा तीर, तीर अणयाला हथ्थ फड़ाईआ। मैं कलयुग करां अख़ीर, आख़र तेरी सेव कमाईआ। कूड़ कुड़यारा कट ज़ंजीर, शरअ शरअ विच्चों बदलाईआ। सति धर्म करा तामीर, जूठा झूठा पन्ध मुकाईआ। साहिब स्वामी तेरे हुक्म दी होए तदबीर, तरीका इक दृढ़ाईआ। खेल करां बेनज़ीर, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। सच विच रहिण ना देवां ख़मीर, झूठा पन्ध दयां मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तूं शहिनशाह मैं ख़ादम तेरा वज़ीर, हुक्म मन्न के ख़ुशी बणाईआ।

३१ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ देवा सिँघ दे गृह सई कैंप ज़िला जम्मू

शंकर कहे लाग दे दे नाम कटार, दो धारी सोभा पाईआ। झगड़ा मेट देवां चार यार, यारी जगत वाली तुड़ाईआ। सति धर्म दे अधार, सच तेरा इक प्रगटाईआ। मज़्ह्बां दी रहे कोए ना खार, ख़ालस तेरा ब्रह्म समझाईआ। तेरे चरण कँवल बलिहार, बलिहारी सीस निवाईआ। तूं साहिब सच्चा दातार, दातार तेरी वड्याईआ। निउँ निउँ करां निमस्कार, निव निव सीस झुकाईआ। सब दा लहिणा देणा पूरा कर उधार, कर्ज़ा मकरूज़ दे चुकाईआ। तेरा राह तकदे रहे जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अक्ख उठाईआ। धन्न भाग जे आई तेरी वार, वेला वक्त ख़ुशी बणाईआ। लेखा पूरा करा साहिब सच्ची सरकार, हुक्म आपणा इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ।

✪ ३१ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ कृपाल सिंघ दे गृह सई कैंप ज़िला जम्मू ✪

शंकर कहे लाग दे दे सब तों उतम श्रेष्ट चंगा, चंगी तरह मंग मंगाईआ। जटा जूट दी धार तेरा चरण कँवल होवे गंगा, जमना सुरस्ती गोदावरी रूप समाईआ। लेखा पूरा करदे कौल सुरस्ती वाला ब्रह्मा, ब्रह्मादिक ध्यान लगाईआ। मैं कोई कीती नहीं तमां, तामस वाली आस ना कोए जणाईआ। जेहड़े कलयुग जीव होए जमूां, जमां दे वस देणे पाईआ। हुण वेख लै आपणा समां, साहमणे हो के सीस निवाईआ। अग्गे वक्त रहे ना लम्मा, लम्हा लम्हा ध्यान लगाईआ। तेरा जुग बदल जाए नवां, चौकड़ी लेखा दयां मुकाईआ। दर दवारे तेरे कहवां, कहि कहि रिहा सुणाईआ। शंकर कहे प्रभू हुण ना करीं मनूां, अग्गे हो ना कोए जणाईआ। मैं माया ममता रहिण नहीं देणा बन्ना, बन्धन कूड़ा देणा तुड़ाईआ। मेरा साथ हो गया नाल गोबिन्द चन्ना, जो चन्न तेरा रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तेरे हुक्म अन्दर फिरां भन्ना, भज्ज भज्ज आपणी सेव कमाईआ।

✪ ३१ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ तेज भान दे घर सई कैंप ज़िला जम्मू ✪

शंकर कहे धुर दे लाग दी भिच्छया पा दे ख़ैर, ख़ैरखाह हो के दया कमाईआ। मेहरवान हो के करदे मेहर, मेहरवान तेरी सरनाईआ। सूरबीर बहादर योधा बण के केहर, भबक अगम्म शब्द सुणाईआ। दो जहानां विच रहे कोए ना ग़ैर, कूड़ कुड़यारा लेखा देणा मुकाईआ। तेरा लेखा पूरा होवे सवा पहर, पहरेदार नज़र कोए ना आईआ। आसा पूरी करदे लाहौर शहर, शहिनशाह आपणी कार भुगताईआ। शंकर कहे मेरा किसे दे नाल नहीं वैर, बिना भगतां तों मेल ना किसे मिलाईआ। कलयुग कूड़ी कल्पना वेख ज़हिर, ज़हिरीलापन वेख घर घर लोकाईआ। कूड़ कुड़यारी तक लहर, काम क्रोध नाल टकराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे साचा वर, सच आसा इक रखाईआ। शंकर कहे भिच्छया पा दे देदे आपणा मूल, मुल्ल कीमत ना कोए लगाईआ। मालक बणे कन्त कन्तूहल, करते लेखा देणा चुकाईआ। लहिणा चार जुग दा नहीं जाणा भूल, अभुल्ल पड़दा देणा उठाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर बदलया तेरा असूल, वारी कलयुग अन्तिम आईआ। सब दा लेखा कर वसूल, वसल यार भगतां देणा वखाईआ। तेरा हुक्म इक माकूल, ना कोए मेटे मेटे मिटाईआ। दीन दुनी दा बदल दे असूल, असलीअत आपणी इक समझाईआ। जो तेरा नाम करन कबूल, कबर मढ़ी तों बाहर रखाईआ।

मुहब्बत विच रखणा मशगूल, सिफ्तां नाल सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा इक रखाईआ। शंकर कहे देदे लाग, लग मात्रा रूप रेख ना कोए वखाईआ। तेरी सृष्टी जाए जाग, दृष्टी अन्दरों देणी खुल्हाईआ। दुरमति मैल धो दाग़, पतित पुनीत दे कराईआ। त्रैगुण कूड़ी मिटा आग, तृष्ना अग्न ना कोए जलाईआ। सति दीपक जला चराग़, चारागाहां कर रुशनाईआ। सति धर्म दा बदल दे समाज, कलयुग कूड़ी रीती रहे ना राईआ। जिधर तकां सारे तेरे होण मुहताज, मुफ़िलस हो के झोली ढाहीआ। दीन दुनी ते तेरे हुक्म दा होवे राज, रईयत वेखां खलक खुदाईआ। तेरा नाम निधाना होवे बोध अगाध, बुद्धी तों परे परे पढ़ाईआ। भगत सुहेला तेरा होवे साध, गुर चेला रूप दरसाईआ। तेरे नाम दी होवे इक आवाज़, तूं मेरा मैं तेरा ढोला धुरदरगाहीआ। क्यों अवतार पैग़म्बरां गुरुआं तेरे नाल कीता अनन्द काज, अनन्द तेरे विच रखाईआ। अग्गे सृष्टी दा बदल दे समाज, समग्री आपणी इक वरताईआ। जो आशा रख के गया रिषी भारद्वाज, दुतीआ धार देणी मिटाईआ। शहिनशाह शाह बण नवाब, नौबत आपणा नाम सुणाईआ। कूड़ कल्पना कर बर्बाद, बर्बादी होवे थांउँ थाँईंआ। सति धर्म कर आज़ाद, बन्धन नज़र कोए ना आईआ। जो सरन सरनाई प्रभू जाए लाग, लग मात्रा दा डेरा ढाहीआ। अन्दर बख्श के सच वैराग, वैरी अन्दरों देणे कढ्ढाईआ। आपणे प्रेम दी वजा रबाब, धुंन सतार शब्द शनवाईआ। तैनूं सब ने मन्नया गुरु महाराज, राज राजाना वड वड्याईआ। जगत जगदीश तेरे सीस ते ताज, तख्त निवासी सोभा पाईआ। तेरा सुहञ्जणा देस माझ, सम्बल आपणा नूर चमकाईआ। शंकर कहे छब्बी पोह नूं नौ सौ नड़िनवे गुरमुखां दे हथ्थ विच होवे फुल्ल गुलाब, नौ सौ नड़िनवे नदी धार आपणा आप रुख़ बदलाईआ। सब ने रस बुलां नाल लाउणा लुआब, मिठ्ठत धुर दा नाम भराईआ। बवन्जा गुरमुखां हथ्थ विच फड़ी होवे नवीं किताब, जेहड़ी सतिगुर हुक्म नाल छपवाईआ। नौ गुरमुखां मुख ते पाई होवे नकाब, नेत्र नैण ना कोए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। शंकर कहे मैं लागी किड्डा वड्डा, दर तेरे सोभा पाईआ। मैं धर्म निशाना गड्डा, गाईड हो के गॉड तेरी करां रुशनाईआ। झगड़ा चुकावां माटी हड्डा, रक्त बूँद वेख वखाईआ। तेरे भगत बणावां हँस कग्गा, काग हँस रूप दरसाईआ। मैं चाहुंदा नौ खण्ड पृथ्मी लग्गण अग्गां, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। कथा कहाणी सच्ची दस्सां, दस्स दस्स के दयां सुणाईआ। छब्बी पोह नूं इक सौ इक गुरमुखां पीलीआं बद्धीआं होवण पग्गां, लाल बिन्दी मस्तक विच रंगाईआ। फेर खेल दस्सां अगम्मी जग्गा, जिथ्थे जगत दी पए दुहाईआ। शंकर कहे जम्मू वाल्यां ख़ाली ल्याउणा इक डब्बा, जो नारद हथ्थ देणा फड़ाईआ। जिस दे पिच्छे लिख्या होवे अक्खर बब्बा, बाबल वेखे धुर दा

माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दा लेखा जाणे हब्बा, हमसाजण हो के वेख वखाईआ।

✪ ३२ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ शिव सिँघ दे गृह सई कैंप ज़िला जम्मू ✪

हुक्म लाग देवे तख्त निवासी, तख्त नशीन दया कमाईआ। इक्को तक नूर जोत प्रकाशी, प्रकाश होवे थांउँ थाँईंआ। जिस नूं कहिंदे घनकपुर वासी, ओह घनईया बेपरवाहीआ। उस दी मन्नणी पैणी आखी, आख़र संदेशा इक सुणाईआ। सब दा लेखा पूरा कर दे बाकी, बाकायदा आपणी सेव कमाईआ। शंकर इक्को वार वेख लै खोल्ह के ताकी, पर्दा दो जहान उठाईआ। जेहड़ा प्रभ दा नाम जाम पींदा नहीं साकी, साख्यात दे सज़ाईआ। कलयुग अन्तिम कर सके कोए ना राखी, रक्षक नज़र कोए ना आईआ। हुण हथ्थ मार उपर छाती, छत्रधारी देणे मिटाईआ। इक्को हुक्म कमलापाती, पतिपरमेश्वर रिहा सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर रिहा कोए ना साथी, सगला संग गए तजाईआ। जन भगतां देणी बूँद स्वांती, अंमिउँ अमृत इक चखाईआ। लख चुरासी धर्म राए दी हवालाती, बन्दीख़ाने बन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरख अबिनाशी अबिनाश आपणी कार कमाईआ।

✪ ३२ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ गूढ़ा राम दे गृह सई कैंप ज़िला जम्मू ✪

धुर दा हुक्म सच तख्मीना, तख्त निवासी आप जणाईआ। जो वरते आसमां ज़मीना, ज़मे ज़ाहरे ज़हूर खुदाईआ। पैग़म्बर तस्लीम करन आमीना, अमल ख़लक खुदाईआ। अस्व सोहे पाखर ज़ीना, ज़ीना सीढ़ी वेखे जगत लोकाईआ। जन भगतां ठांडा करे सीना, सीना ज़ोरी दए वखाईआ। लख चुरासी कर अधीना, विष्न ब्रह्मा शिव हुक्म वरताईआ। कोटां विच्चों हरिजन कढ नगीना, कीमत आपणे हट्ट रखाईआ। झगड़ा मेट के नर मदीना, आत्म ब्रह्म दए समझाईआ। भेड़ भेड़ के रूसा चीना, चीना छड़े जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त दा इक रहीमा, रहमत आपणी आप वरताईआ।

✪ ३२ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ६ फुम्मण सिँघ दे गृह ज़िला जम्मू ✪

शंकर वस्त लै नाम दी धार, धरनी धरत धवल वेखण कोए ना पाईआ। जिस नाल लहिणा देणा मुके संसार, संसारी भण्डारी सँघारी तुहाडी आसा पूर कराईआ। चारों कुण्ट रहे ना धूंआँधार, अंध अंधेरा अन्त मिटाईआ। सति सच होवे जैकार, वज्जे इक्को पुरख अकाल वधाईआ। तूं लख चुरासी दा दाअवेदार, अन्तिम सब नूं ख़ाक मिलाईआ। उठ वेख हो हुश्यार, सम्बल नैण टिकाईआ। की संदेशा देवे करतार, धुर करता अगम्म अथाहीआ। जिस नूं लभ्भदे रहे जुग चार, सो लहिणा देणा रिहा मुकाईआ। हिम्मत नाल हौसले वाला करना वार, वारता पिछली देणी मिटाईआ। त्रैगुण तों परे रहे त्यार, आप आपणा बल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, करे करावे करनेहार, करता आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ पहली सावण शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

सो पुरख निरँजण कहे शंकर सचखण्ड दवारा वेख ठीक, ठाकर आपणी दया कमाईआ। हरि पुरख निरँजण कहे जिस दी करदे गए उडीक, जुग चौकड़ी बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। एकँकार कहे जिस दी मन्नदे रहे हदीस, हुक्म हुक्म विच शनवाईआ। आदि निरँजण कहे जिस दी निरगुण जोत सदा अतीत, नूर नुराना नूर रुशनाईआ। अबिनाशी करता कहे जो आदि जुगादी साचा मीत, मित्र प्यारा बेपरवाहीआ। श्री भगवान कहे जो मिटावणहारा जुग जुग लीक, लाईन ऐन आपणी इक समझाईआ। पारब्रह्म कहे जिस दी ब्रह्म धार सच प्रीत, प्रीतम धुरदरगाहीआ। अवतार पैग़म्बर गुर जिस दी करन तस्दीक, शहादत शब्द कलमा नाम भुगताईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी सब दी आसा मनसा पूरी करे उम्मीद, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त परखे नीत, चारे खाणी पड़दा आप उठाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान मजीद, गीता ज्ञान चारे खाणी पड़दा आप उठाईआ। परमात्म आत्म ब्रह्म पारब्रह्म निरगुण धार निरगुण वेखे वलदीअत, वलद वालदा खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। शंकर सुण हुक्म अगम्म अथाह, अलख अगोचर आप सुणाईआ। पर्दा ओहला दयां चुका, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। धुर संदेशा दयां सुणा, अनबोलत राग अल्हाईआ। जिस नूं अवतार पैग़म्बर गुर राम अल्ला वाहिगुरु कहिंदे आए खुदा, खुद मालक नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर,

सच हुक्म इक वरताईआ। पुरख अकाल किहा शंकर कलयुग लेखा वेख अख़ीर, अन्तष्करन तक ख़लक ख़ुदाईआ। चार कुण्ट शरअ ज़ंजीर, दीन मज़्ब बन्धन ना कोए तुड़ाईआ। अट्ठ सट्ठ नेत्र रोवे नीर, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रोवे मारे धाईंआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ लथ्थे चीर, चीरा सीस ना कोए टिकाईआ। साध सन्त होए दिलगीर, भगत भगवान ना कोए मिलाईआ। शाह सुल्तान दिसण कीर, कीट हस्त ना कोए वड्याईआ। अल्फ़ी पाटी दिसे फ़कीर, फ़िकरा हक ना कोए सुणाईआ। सूफ़ीआं बन्ने कोए ना धीर, गुरमुख गुर गुर गोद ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच हुक्म इक सुणाईआ। पुरख अकाल कहे शंकर की मंगणा कलयुग अन्त, अन्तिम देणा जणाईआ। शंकर किहा मेरे भगवन्त, भगवन तेरी बेपरवाहीआ। मैं दर भिखारी मंगत, चाकर रूप दरसाईआ। पुरख अकाल कहे मेरा भण्डारा अनन्त, नखुट कदे ना जाईआ। शंकर कहे मेरी झोली तेरा लख चुरासी जीव जंत, पूरब लहिणा चलया आईआ। पुरख अकाल कहे नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग मेरा सुणया नहीं नाम मंत, पूरा नाम ना किसे दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच आपणा हुक्म सुणाईआ। पुरख अकाल किहा शंकर पहलों तक लै मेरा नूर नूरी, नूर नुराना नज़री आईआ। फेर मस्तक ला लै चरण धूढ़ी, धूढ़ी टिक्का ख़ाक रमाईआ। फेर नाम दी मस्ती लै ज़रूरी, ज़रूरत आपणी पूर कराईआ। फेर झोली डाह के मंग मज़दूरी, गल पल्लू वास्ता पाईआ। नक्क नाल लीक कढ के कहि दे मेरा दुनिया नाल नाता नहीं कूड़ी, कूड़ा नाता ल्या तुड़ाईआ। शंकरा जेहड़ा तेरा इष्ट मन्नदे उन्हां नूं कहि दे मूर्ख मूढ़ी, चतुर सुघड़ नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पुरख अकाल किहा सुण धुर दा अगम्म असूल, असलीअत दयां जणाईआ। इक्को हुक्म कर कबूल, दूसर ओट ना कोए रखाईआ। कलयुग अन्त ना जाणा भूल, अभुल रिहा सुणाईआ। चरण कँवल ला धूल, धरनी धरत धवल धौल दे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। शंकर होणा ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। नाल मिलाउणा ब्रह्मा ब्रह्म दा यार, यारी यारां नाल निभाईआ। विष्नूं नूं कहिणा होए त्यार, विश्व दा लेखा हथ्थ उठाईआ। हुक्म मिलणा सच्ची सरकार, फ़रमाना दए धुरदरगाहीआ। लख चुरासी पाउणी सार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज बचया रहिण कोए ना पाईआ। औह वेख मुहम्मद रोंदा ज़ारो ज़ार, सदी चौधवीं ध्यान लगाईआ। ईसा कूक के कहे पुकार, सदी बीसवीं मेरी दुहाईआ। मूसा कहे मेरे परवरदिगार, जल्वा नूर कोहतूर तेरी रुशनाईआ। नानक कहे उतरया आपणी धार, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। गोबिन्द कहे सम्बल

होया उज्यार, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जिस ने कलयुग करना अन्त खुआर, दो जहानां फोल फुलाईआ। नाम खण्डा अगम्म कटार, तरकश तीर कमान ना कंध उठाईआ। सब दा लहिणा देणा लए विचार, विचरण दी लोड़ रहे ना राईआ। कलि कल्की लए अवतार, कल कलेश दए मिटाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर रहे ना धूंआँधार, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। भगत सुहेले कर प्यार, पारब्रह्म ब्रह्म पड़दा दए उठाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारयां शब्दी डोरी करे गिरफ्तार, बचया रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पुरख अकाल किहा शंकर कलयुग अन्त अन्त ना संगीं, सगला भेव खुल्हाईआ। निधड़क हो के मंग मंगीं, मंगदयां लज्जया रहे ना राईआ। शब्द कटार करनी नन्गी, तिक्खी धार धार वहाईआ। जेहड़ी सृष्टी हो गई अंधी, नेत्र लोचन नैण दयां खुल्हाईआ। जेहड़ी वासना हो गई गंदी, अन्दरों बाहर देणी कढ्ढाईआ। जेहड़ी दीनां मज़्बां विच हो गई बहुरंगी, इक्को आत्म ब्रह्म देणा समझाईआ। इक ढोला गाउणा छन्दी, इक्को ढोला सिफ्त सलाहीआ। इक हुक्म दी होए पाबन्दी, दूजा बन्धन ना कोए रखाईआ। उठ वेख सदी चौधवीं जांदी लँघी, भज्जे वाहो दाहीआ। रविदास चमारा आपणी पुट्टी सिध्धी करे रम्बी, जो ढोरां खल्ल लुहाईआ। उठ उठ वेखे गुर अर्जन रावी कन्ढी, कन्ढा आर पार ध्यान लगाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त रहिण देणा नहीं कोई पखण्डी, कूड़ कुड़यारा नज़र कोए ना आईआ। जेहड़ी आत्मा परमात्मा बिना रंडी, राय धर्म हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। शंकर कहे प्रभू मेरीआं आदि आदि दीआं मंगां, आसा इक दृढ़ाईआ। बौहड़ी किवें दर तेरा लँघां, कदम सचखण्ड टिकाईआ। की गीत गावां छन्दा, कहि के की सुणाईआ। की प्रेम करां अनन्दा, किस रस विच समाईआ। की माढ़ा कहां कि चंगा, की तेरी बेपरवाहीआ। तूं साहिब सूरा सरबंगा, शहिनशाह इक अख्वाईआ। जुग चौकड़ी अवतार पैग़म्बर गुरु तेरे नाम दा ला के आए चन्दा, तारा चन्द निशान दए गवाहीआ। तूं रूप धरदा रिहों सरगुण पंजां तत्तां वाला बन्दा, आपणी बन्दगी कर के झट लँघाईआ। तूं इधर उधर फिरदा रिहों मानस वांग दो टंगा, कदम कदम नाल बदलाईआ। बौहड़ी हुण पिछला समां लँघ, वेला वक्त रिहा जणाईआ। तूं जोत सरूप तेरा खेल बहुरंगा, रंग रेख ना कोए वड्याईआ। हुण ना कोए तेरा वस्त्र ना कोए तीर तलवार तुफंगा, तरकश नज़र कोए ना आईआ। ना कोए भथ्था टिकाए कंधा, ना कोए अस्व पाखर ज़ीन डेरा लाईआ। ना कोए दीन मज़्ब दीआं वंडां, ना कोए अक्खरां विच नाम बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। शंकर कहे मेरी आशा इक पुराणी, पुराण वेद कहिण ना

पाईआ। पुरख अकाल कर मेहरवानी, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। तूं आदि जुगादी बड़ा दानी, दाता इक अख्वाईआ। तेरा खेल ज़िमीं असमानी, गगन गगनंतर वज्जे वधाईआ। तेरी मंज़ल इक रुहानी, रूह बुत तों परे शनवाईआ। तेरा खेल नौजवानी, मर्द मर्दानी वड वड्याईआ। मैं चाहुंदा मैनूं दे दे इक निशानी, निशाना सब नूं दयां वखाईआ। उठो वेखो जिस दे पिच्छे गोबिन्द बच्चयां दी दे के गया कुरबानी, करबला विच हसन हुसैन शहीद कराईआ। ओह सब दे नाल करे नाफ़रमानी, हुक्म आपणा इक प्रगटाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड दे आवे विच मैदानी, पुरी लोअ दा डेरा ढाहीआ। जिस दा आदि अन्त कोए ना सानी, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल इक वरताईआ। शंकर कहे प्रभू कोई माण रिहा ना गंगा, जटा जूट ना कोए वड्याईआ। मैं तन भबूती ख़ाक रमावां नन्गा, पोशन भूषन सोभा कोए ना पाईआ। मेरे वेंहदयां जुग चौकड़ी लँघ, आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं हुक्म संदेशा सुणां तेरा जिस नूं झुकदे सूर्या चन्दा, मण्डल सीस निवाईआ। मैनूं याद आ गया जिस वेले गुर गोबिन्द मंग्गया कंघा, इक्की दन्दे वंड वंडाईआ। तूं माण बख्श के पुरी अनन्दा, अनन्द आपणा दिता वखाईआ। जोती धार हो के उस दी काया मन्दिर अन्दर लँघ, महल्ल अटल कीती रुशनाईआ। अन्दर कुफल खोल्ह के जंदा, ज़िंदगी आपणे लेखे पाईआ। पिठ उत्ते धर्म दा ला के पंजा, पंज प्यारे दिते प्रगटाईआ। अमृत रस दे के ठंडा, अग्नी तत बुझाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश चारे वरन पा के गंढा, झीवर छींबे नाई जट्ट जोड़ जुड़ाईआ। फिर हुक्म संदेशा दिता जिस वेले गोबिन्द तेरा ढईआ लँघ, आपणा पन्ध चुकाईआ। उस वेले धर्म दा सिर होणा नन्गा, ओढण सीस ना कोए रखाईआ। कलयुग साध होणा गंदा, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। किसे ने धोती तहिमत बन्न्हणी किसे ने पाउणा तम्बा, जगत वंडां वंड वंडाईआ। कोटां विच्चों लभ्भणा नहीं कोई बन्दगी वाला बन्दा, जो बन्धन कट के प्रभ दे विच समाईआ। शंकर कहे मैं उस वेले मंग मंगणी जे दाता एं ते मैनूं बख्श दे सत्त रंग दा डण्डा, जो डण्डावत सब नूं दए कराईआ। साढे तिन्न हथ्थ होवे लम्बा, सीआं सब दी पूर कराईआ। भेव खुल्हाए हँ ब्रह्मा, पारब्रह्म पड़दा दए चुकाईआ। उस दा रूप होए अचंभा, जिस दी सिफ्त ना कोए सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मालक दया कमाईआ। शंकर किहा बख्श दे सत्त रंग दा डण्डा, डाहढे तेरे हथ्थ वड्याईआ। मैं बन्न्हां जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज लेखा दयां मुकाईआ। मैं भय जणावां विच ब्रह्मण्डां, लोआं लोचन अक्ख बन्द रहिण ना पाईआ। मैं सदी चौधवीं अन्तिम वेखां कन्ढा, चार यारी नाल दुहाईआ। मैं लेख वेखां तेग़ बहादर संदा, जो बिन अक्खरां माछूवाड़े गया दृढ़ाईआ। मैं तेरा निरगुण धार तकां साहिब

स्वामी तेरा खण्डा, जिस नूं लुहार तरखाण ना कोए घड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। पुरख अकाल किहा शंकर सत्त रंग दा डण्डा बड़ा बहादर, तेग़ बहादर गया जणाईआ। जेहड़ा धर्म दी बण के चादर, ग़रीब निमाणयां उत्ते रिहा छाईआ। जिस दा हुक्म मेट ना सके करीम कादर, हरि करता शहिनशाहीआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों खुद खुदा गॉड देवे आदर, संदेशा इक सुणाईआ। सत्त रंगया चार जुग दीन मज़्ब दा रहिण नहीं देणा बाडर, हद्दां वाली वंड ना कोए रखाईआ। जिस वेले पुरख अकाल आवे ते तूं वी मातलोक होणा उजागर, उजाला करना थाउँ थाँईंआ। तेरे प्यार विच मेरे भगत होण सौदागर, वणज वेखां चाँईं चाँईंआ। जिस वेले तख्त ते बैठ के करां सच दा आदल, उस वेले विष्न ब्रह्मा शिव सारे तैनूं सीस निवाईआ। सत्त रंगया शरअ दा रहिण नहीं देणा कोए कातिल, मक्तूल दा झगड़ा देणा मुकाईआ। गुरमुखां दे अन्दरों पड़दा खोल्हणा बातन, नूर नुराना करीं रुशनाईआ। जिस नूं सारे कहि के गए पुरख समराथन, समरथ धुरदरगाहीआ। तेरा सदा उस दे नाल साथन, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच भेव आप चुकाईआ। सत्त रंगा कहे शंकरा पहलों मेरे प्रभ नूं कर निमस्कार, फेर मेरा ध्यान लगाईआ। मैं उस प्रभू दा यार, जेहड़ा विछड़ कदे ना जाईआ। आदि तों लै के अन्त तक सदा रहवां त्यार, आलस निंद्रा ना कोए रखाईआ। मैं हथ्थ नहीं आया किसे पैग़म्बर गुर अवतार, विष्न ब्रह्मा शिव दूरों सीस निवाईआ। मैं सब नूं सचखण्ड बैठा कर देवां ख़बरदार, डंका नाम वाला शनवाईआ। ओह मैनूं वेख के संग मुहम्मद रोवे चार यार, चारों कुण्ट हिलाईआ। तोबा तोबा करदे रोंदे धाहां मार, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। चौदां तबक भज्जण वारो वार, पाँधी हो के पन्ध मुकाईआ। मैं उन्हां नूं हस्स के किहा वेखो मेरा अगम्मा यार, परवरदिगार नूर इलाहीआ। जिस दे कलमे आए उच्चार, सिफ्तां वाली कर पढ़ाईआ। ओह शहिनशाह शाह पातशाह दरगाह साची दा सिक्दार, सिर सिर हुक्म सुणाईआ। मैं उस दा पहरेदार, जुग चौकड़ी आलस निंद्रा विच कदे ना आईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु भेजदा रिहा वारो वार, वारस हो के हुक्म सुणाईआ। अन्त एसे दे भय विच बणा के उस दी नार, सचखण्ड दवार दिते बहाईआ। शंकरा तूं की जाणें मेरी सार, समझ कोए ना पाईआ। मैं सति जोत दी धार, सत्त रंग रंग प्रगटाईआ। मरां जम्मां ना विच संसार, जुग चौकड़ी समां ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। शंकर कहे सतरंगे सुण लै मेरे मीत, मित्रा दयां जणाईआ। जिंना चिर तूं साडा साथ ना दिता सारी सृष्टी गाउणा नहीं सोहँ गीत, हरी ओम तत सति इष्ट अन्दरों ना कोए कढ्ढाईआ।

बिन तेरे कलयुग बदलणी नहीं रीत, कलयुग कूड़ी क्रिया पन्ध ना कोए मुकाईआ। सतिजुग साचा उठणा नहीं अतीत, त्रैगुण पन्ध ना कोए मुकाईआ। झगड़ा मुकणा नहीं ऊच नीच, ज़ात पात दा लेखा ना कोए मुकाईआ। इष्ट छुटणा नहीं मन्दिर मसीत, शिवदुआले मट्ठ ना कोए तजाईआ। बिन तेरी किरपा इक पढ़नी नहीं किसे हदीस, हज़रत सारे देण गवाहीआ। सत्तरंगा कहे शंकरा, मेरे साहिब ने मेरे विच बख़्शी इक तौफ़ीक, जो तोहफ़े घर घर दए पहुंचाईआ। जिस वेले मैं निगाह करां जिस दे बणे होण फ़रीक, ओह रफ़ीक बण के देण वखाईआ। मेरा साहिब जदों चाहवे सब दे अन्दर बख़्श देवे आपणी प्रीत, प्रीतम हो के प्रेम वधाईआ। जिस दी आत्मा उसे परमात्मा दा गाउणा गीत, सोहँ अवर ना कोए पढ़ाईआ। पर इक दुःख, सत्तरंगा कहे, मैं सचखण्ड वसदा धाम अगम्मे अनडीठ, जिथ्थे जग नेत्र वेखण कोए ना जाईआ। मेरा प्यार नहीं किसे पथ्थर ईंट, चिक्कड़ गारे ना कोए चतुराईआ। मैं उस दी सहायता करदा जेहड़ा मेरे प्रभ नूं मन्ने ठीक, ठाकर सहिजे दयां मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सत्तरंगा कहे मेरे विच प्रभू दी ख़ूबी, ख़ूबसूरती निरगुण जोत दिती चमकाईआ। मैं फिरना शरकण ग़रबन शमालन जनूबी, चारों कुण्ट वाहो दाहीआ। मैं इष्ट तकणा मुहब्बत विच महिबूब वाला महिबूबी, अन्तर निरन्तर फोल फुलाईआ। मंज़ल वेखणी इक मनसूबी, जिथ्थे जल्वागर नूर रुशनाईआ। जिन्हां पिच्छे अजीत जुझार दी काया झूजी, रण भूमी खेल खिलाईआ। उस गोबिन्द दी रमज़ किसे ना बूझी, बुज्झया दीपक ना कोए जलाईआ। सृष्टी खोजदी विच बुद्धी, अक्ल नाल चतुराईआ। उस दी ढूंडदी विच्चों युद्धी, शस्त्र शस्त्रां नाल टकराईआ। सत्तरंगा कहे गोबिन्द दी मंज़ल सब तों उच्ची, उच्च अगम्म दिती बणाईआ। जिथ्थे धार सदा सुच्ची, संजम दी लोड़ ना कोए वखाईआ। मैं उस दे प्यार दी सदा करां बुती, बुतख़ाने वेख वखाईआ। मैनूं इयों दिसदा मेरे मालक दी हुण आउंदी जांदी रुती, रुतड़ी पिछली देणी बदलाईआ। इक वार साहिब तों पुच्छी, निउँ के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वडा वड वड्याईआ। पुरख अकाल किहा शंकर सत्तरंग की कहिंदा, मैनूं दे सुणाईआ। फेर कन्नों फड़ के किहा उठ वेख दिशा लहिंदा, की मुहम्मद राह तकाईआ। क्यों कलमा उठ उठ बहिंदा, भज्ज भज्ज रिहा वखाईआ। की मानव मानव नाल खहिंदा, तन तन नाल टकराईआ। ओह वेख मकबरयां वाला बुरज ढहिंदा, काअबा रोवे मारे धाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक होए सहाईआ। शंकर कहे मैं आपणी उठाई निगह, बिन नैणां अक्ख खुल्हाईआ। मैनूं रस्ता दिसया सिध्धा, जिस दी कुतब सतार दए गवाहीआ। दो सौ पैंठ डिगरी विच सिध्धा,

निशाना धुर दा सोभा पाईआ। जिथ्थे खेल होणा इका, वाहिद आपणी कार भुगताईआ। जिस दा गुर तेग़ बहादर इशारा दिता सी उठ वेख दयाले सिखा, मतीदास गवाहीआ। ओथे ज़रूर बणनी कलयुग दी अन्तिम चिक्खा, अग्नी सेक ना कोए बुझाईआ। जेहड़ा गोबिन्द दा लेख सस्से वाला किसे ना लिखा, ओह छब्बी पोह नूं देणा लिखाईआ। जेहड़ा अजे तक बुद्धी दे हट्ट नहीं विका, अक्ल विच सक्या ना कोए समझाईआ। उस दा लेख दस्सणा खंडयों तिक्खा ते वालों निक्का, निक्कयों वडा वड वड्याईआ। कुझ भेत खोलणा की गोबिन्द ने पंज प्यारयां मस्तक लाया टिक्का, जिस दी शहादत ग्रन्थ ना कोए भुगताईआ। की गोबिन्द ने हुक्म सुणाया कि सतिजुग विच चलणा प्रभू दे नाम दा सिक्का, दूजी मोहर ना कोए रखाईआ। फिर हस्स के किहा ताली मार के किहा उस वेले पुरख अकाल इक्को होणा सब दा पिता, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जिस दा नाम रस होणा अगम्मी मिट्ठा, शकर गुड़ ना कोए चतुराईआ। मंज़ल मार्ग दस्सणा इक्को चिट्टा, रंगत रंग कूड़ बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग अन्तिम शब्दी सतिगुर हो के कढे सिट्टा, सिट्टेबाज़ी वेखे खलक खुदाईआ।

✪ १४ सावण शहिनशाही सम्मत ६ कपूर सिँघ बराड़ दे गृह मोगा ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

चौदां सावण कहे मैं फिरया चौदां लोक, तबक सबक वेख वखाईआ। नाम कलमा सुणया सलोक, सोहला धुरदरगाहीआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ दा भाणा कोए ना सके रोक, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। आदि जुगादि पुरख अकाल एका ओट, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस दा खेल जुग चौकड़ी कोटन कोट, बेअन्त अन्त कहिण ना पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आया विच किसे ना सोच, समझ विच ना कोए समझाईआ। जिस दी भविक्खतां विच सारे करदे आए लोच, लोचन नैण अक्ख खुलाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला वेस वटाए मातलोक, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी कार कमाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, दो जहानां नौजवाना मर्द मर्दाना करे रुशनाईआ। नाम खुमारी दे करे मदहोश, मधुर धुन अगम्म सुणाईआ। चौदां लोक कहिण असीं होए ख़ामोश, ज़बां सके ना कोए हिलाईआ। जिस मंज़ल ते असीं ना सके पहुंच, सो मंज़ल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। चौदां सावण कहे कहे मैं वेख्या दीन दुनी दा चौदस चन्द, चांदनी नज़र कोए ना आईआ। चारों कुण्ट अंधेरा अंध, सच नूर ना कोए चमकाईआ। अन्तर मिले ना किसे अनन्द, आत्म परमात्म विच ना कोए समाईआ। तूं

मेरा मैं तेरा गाए कोए ना छन्द, पढ़ पढ़ थक्की जगत लोकाईआ। मिले मेल ना सूरा सरबंग, शाह पातशाह शहिनशाह होए ना कोए सहाईआ। सदी चौधवीं रही लँघ, भज्जे वाहो दाहीआ। कलयुग कूड़ वज्जे मृदंग, चार वरन रिहा सुणाईआ। माया ममता मोह विकारा नच्चे वांग मलंग, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण आपणी कार कमाईआ। अमृत धार वही किसे ना गंग, गोदावरी जमना सुरस्ती रोवे मारे धाईंआ। गुर चेला मुरीद मुर्शद बणे कोए ना संग, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। आवण जावण लख चुरासी मेटे कोए ना पन्ध, चित्रगुप्त दा लेख ना कोए चुकाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी चाढ़े कोए ना रंग, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। पूरब लेखा करे कोए ना खण्ड खण्ड, खण्डा खड़ग नाम ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। चौदां सावण कहे मेरे अन्तर आई हैरानी, हैरत विच दुहाईआ। मैं जुग चौकड़ी खेल तक्कया महानी, अवतार पैग़म्बर गुर ध्यान लगाईआ। अक्खरां वाली सुणी बाणी, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान जगत वड्याईआ। दीन दुनी दी मंज़ल तकी रुहानी, रूह बुत खोज खुजाईआ। दीन मज़्ब सति धर्म दी धरनी धरत तकी निशानी, निशाने जगत वंड वंडाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग धर्म धार दी किसे करे ना कोए मेहरवानी, मेहर नज़र ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। चौदां सावण कहे मैं सुणया शब्द अनोखा, अगम्म अगम्मड़े दिता सुणाईआ। जिस दे विच नहीं कोई धोखा, भरम विच ना भरम भुलाईआ। शब्दी धार संदेशा निरगुण जोता, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जिस दा भाणा किसे ना रोका, चार जुग दे रुक्के देण गवाहीआ। सो जुग चौकड़ी जाणे आपणा मौका, मुकम्मल आपणी कार कमाईआ। मैं उच्ची कूक के देवां होका, हुक्म सुणावां धुरदरगाहीआ। बेनकाब होवण चौदां लोका, चौदां तबक अक्ख उठाईआ। उठो वेखो मार्ग सौखा, सहिज नाल सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा आप सुणाईआ। चौदां सावण कहे मैं दस्सां अगम्मी बात, बातन दयां जणाईआ। की खेल कमलापात, पतिपरमेश्वर की आपणा हुक्म सुणाईआ। मैं सोहणी सुहञ्जणी रात, भिन्नड़ी आपणे नाल महकाईआ। जन भगत सुहेले पुछ के वात, वातावरन दिता बदलाईआ। जीवण ज़िंदगी बख्श के दात, दातार आपणा रंग वखाईआ। लहिणा देणा वेख लोकमात, पाताल आकाशां डेरा ढाहीआ। निरगुण धार हो के साथ, सगला संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच आपणी कार कमाईआ। चौदां सावण कहे गुर अवतार पैग़म्बरो परम पुरख दी मेहरवानी, मेहर नज़र उठाईआ। शब्दी धार बख्श ज़िंदगानी, जीवण आपणे लेखे पाईआ।

पढ़नी पई ना अक्खरां वाली बाणी, ढोले गीत ना कोए शनवाईआ। लेखा मुक्कया दो जहानी, एथे ओथे दया कमाईआ। झगड़ा चुक्कया चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज डेरा ढाहीआ। जुग चौकड़ी झगड़ा चुक्कया दीवानी, चुरासी लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। चौदां सावण कहे मेरा सोहणा सुहावणा दिहाढ़ा, दिवस वज्जी वधाईआ। जिस ने जाणा सी विच भरवास जंगल उजाड़ा, मढ़ी मसाणां डेरा लाईआ। कूड़ क्रिया दा वज्जणा सी नग़ारा, नौबत दुनी वाली सुणाईआ। नाता टुटणा सी सज्जण मित्र यारा, साक सज्जण सर्ब तजाईआ। प्यार रहिणा नहीं सी पुत्र धीआं मात पित सहारा, सगला संग तजाईआ। नार कन्त देणा नहीं सी अधारा, जीवण जगत ना कोए वड्याईआ। दीन दुनी विच्चों होणा सी किनारा, वेला वक्त दए गवाहीआ। तिस दा शब्द गुरु गुर बण वणजारा, होका दे के गया सुणाईआ। बेख़बरां करे ख़बरदारा, आलस निंद्रा विच्चों उठाईआ। बिना साहिब सतिगुर दूजा अवर ना कोए सहारा, बख्शणहारा नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाला सब किछ करनेहारा, करनी दा करता बेपरवाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव जिस दे सेवादारा, दर बैठे सीस निवाईआ। ओथे शंकर करे की विचारा, धूढ़ी मस्तक ख़ाक रमाईआ। राय धर्म चित्रगुप्त दूर दुराडे रोवण ज़ारो ज़ारा, जग नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जम का दूत नेत्र अक्ख ना सके उग्घाड़ा, रहिबर राह ना कोए दरसाईआ। जिस उत्ते किरपा करे आप करतारा, हरि करता होए सहाईआ। उस दा जन्म विच्चों जन्म दए दुबारा, आप बणे जणेंदी माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला आप कराईआ। चौदां सावण कहे मैं सच दस्सां अग्गे हज़ूर, हरिजन हरि जणाईआ। दिवस दिहाढ़े लहिणा मुकणा सी सिँघ कपूर, काया कपड़ देणा तजाईआ। नाता तुटणा सी ज़रूर, तन वजूद माटी ख़ाक संग ना कोए वखाईआ। मैं हैरान होया किस बिध फेर बख्श्या नूर, नूर नूर विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक वखाईआ। चौदां सावण कहे हरि भगत जाणा सी प्रभ दा सुत दुलारा, प्रभ आपणी दया कमाईआ। सच दस्सां की अगम्मी होया इशारा, बिन सैनत सैनत लाईआ ,। सुत दे घर सुत अजे सुत होणा दुलारा, लारा पिछला पूर कराईआ। अगला जन्म जन्म तों बाहरा, बिध नाल लेखा दिता चुकाईआ। दरगाह साची सचखण्ड खण्ड सच सच (दवारा), हरिजन सच्ची सरनाईआ। जिथ्थे झुकदे पैग़म्बर गुर अवतारा, विष्न ब्रह्मा शिव सीस निवाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मंगण वारो वारा, दर ठांडे झोलीआं डाहीआ। सद देवणहार इक दातारा, दयावान दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म दवार इक वखाईआ।

चौदां सावण कहे मैं वेखां चारे कूट, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण ध्यान लगाईआ। जिधर तक्कया उधर जूठ झूठ, सच सुच रूप ना कोए दरसाईआ। फेर वेख्या किस बिध प्रभ भगत उधारया पूत, पिता पुरख अकाल हो सहाईआ। जां निगाह मारी आत्म परमात्म एका धागा एका सूत, दूजा नज़र कोए ना आईआ। मैं सहिज नाल गया चूक, निम्ह्रीं निम्ह्रीं अवाज़ सुणाईआ। शब्दी शब्द किहा ओह वेख नौ खण्ड पृथमी सुत्ती घूक, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला मेले सहिज सुभाईआ। सावण कहे मैं चौदां आया जग, सम्मत शहिनशाही छे दए वड्याईआ। जिस ने बंस सरबंस तों होणा सी अलग्ग, वक्खरा आपणा घर सुहाईआ। उस नूं खुशी दा बन्न्हा तग, तन्दन प्रभ दा नाम सुणाईआ। जिस दा सरीर जलणा सी विच अग्ग, चिखा जगत वाली तपाईआ। उस दा मेल नाल सूरे सरबग, साहिब सतिगुर आपणे रंग रंगाईआ। पिछले जन्म दी मंज़ल गया लँघ, अगला जन्म सतिगुर हत्थ वड्याईआ। तेती साल ना जाए वंञ, खुशी खुशी नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा जोड़ जुड़ाईआ। नवीं आरज़ू आयू बख्शी तेती साल, चौदां सावण दए गवाहीआ। नवें जन्म दा जोबनवन्ता होवे बाल, घर गृह वज्जे वधाईआ। पिछली लिख्त पढ़नी ते रखणी मात संभाल, सम्बल दा मालक दए जणाईआ। जिस ने लेखा चुकाया काल महाकाल, भय भयानक होया सहाईआ। सो बख्शे सच्चा धन माल, मालक हो के झोली पाईआ। जन्म जन्म दी लेखे ला के घाल, कर्म कम दा मूल वखाईआ। अन्तिम अन्त कर संभाल, मेला मेलया सहिज सुभाईआ। सतिगुर शब्द बण दलाल, अजमेर सिँघ दिता दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा पूर कराईआ। चौदां सावण कहे मेरी नमो नमो निमस्कार, नमस्ते कहि के सीस निवाईआ। मेरा अज्ज दा विहार, नौ सौ चौरानवे चौकड़ी दी खुशी नाल वड्याईआ। मेरी मुहब्बत दी बहार, बसन्त तों परे सोभा पाईआ। मेरे साहिब दी गुलज़ार, फुल्ल फुलवाड़ी आपणा रंग वखाईआ। खेल वेख सच्ची सरकार, सच कहाणी दयां सुणाईआ। जन भगतां भगतां लए उबार, चुरासी विच्चों खोज खुजाईआ। जन्म मरन तों कर के बाहर, दर घर साचे दए वड्याईआ। लेखा लहिणा पूरा कर संसार, संसारी भण्डारी सँघारी दा कर्ज़ा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा इक वखाईआ। चौदां सावण कहे मेरी बेनन्ती अन्त, अन्तरीव दयां जणाईआ। किरपा करी साहिब भगवन्त, श्री आपणी दया कमाईआ। आत्म दा मालक बण के कन्त, कन्तूहल आपणे अंग लगाईआ। आपणी खेल दस्स कला अनन्त, अनन्त आपणी कार कमाईआ। जन भगत उधार गुरमुख धुर दा सन्त, गुरसिख आपणा जोड़ जुड़ाईआ। हरख सोग रिहा

ना चिन्त, ग़मी ग़मखार दिती गंवाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक दी बणा के बणत, घड़नहार आपणा रंग रंगाईआ। लहिणा देणा लेखा पूरा कर के अन्त, अन्त आत्मा पंज तत विच रखाईआ। जेहड़ी वस्त चार जुग मिली नहीं किसे साध सन्त, सतिगुर शब्द हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। चौदां सावण कहे मेरी अन्त अन्त अर्ज़ोई, अर्ज देवां सुणाईआ। तूं कोटां विच्चों प्रभ दर परवान होई, जो परवाना धुर दा नज़री आईआ। बिना पुरख अकाल तों मिले किसे ना ढोई, ढोआ ज़िंदगी हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। पैग़म्बर कहिण साडी दरोही, तोबा तोबा कर सुणाईआ। जिन्हां भगतां आत्मा सदा नरोई, मरन विच मरन ना कोई बदलाईआ। अवतार कहिण जो आत्मा ओसे दी होई, ओह वेखणहारा थांउँ थाँईंआ। गुर कहिण निरगुण जोत जोती जाते दी लोई, लोयण नेत्र दए गवाहीआ। जिस नूं चौदां सावण कहे अज्ज नेत्र अक्ख कोए ना रोई, जलधार ना वहिण वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा पर्दा आप चुकाईआ। चौदां सावण कहे मेरी अरदास, अर्ज दयां सुणाईआ। सतिगुर शब्द शब्द दी पावे रास, गोपी काहन आपणा खेल वखाईआ। मेहरवान हो के बख्शे पवण जगत स्वास, साह साह आपणा खेल खिलाईआ। लहिणा देणा पूरा करे पृथ्मी आकाश, धरनी धरत धवल धौल दी गोद सुहाईआ। जन्म विच्चों जन्म बदल दे आज, अज्ज दी थित थित नाल वड्याईआ। जेहड़ी विधवा होणी सी राज, राज तख्त उत्ते फेर दिता बहाईआ। अग्गे पूरा करे ज़रूर काज, जो करनी करता पिच्छे गया लिखाईआ। पहले आपणे भगत दी रखी लाज, भगवन हो के होया सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नवें जीवण दा नवां साजण साज, सज्जण हो के अगली खुशी खुशी विच्चों दए वखाईआ।

३० सावण शहिनशाही सम्मत ६ बीबी रजिन्दर कौर दे नवित फ़िरोजपुर छाउणी

तीजी पत्रका तीजा अंक, रजिन्दर अन्तष्करन विच्चों समझाईआ। पूरब लेखा सीता सपुत्री जनक, जन भगत भेव खुल्हाईआ। जिस दा लेखा पूरा कराए वासी पुर घनक, घनईया राम धुरदरगाहीआ। जीवण जगत बणाई बणत, कर्म दिती वड्याईआ। हुक्म संदेशा कुमार सन्त, सहिज नाल सुणाईआ। जिस वेले कलयुग आवे अन्त, सदी चौधवीं संग रखाईआ। आत्म परमात्म होणा मंत, मन्त्र इक अल्हाईआ। साहिब सुल्ताना श्री भगवाना आदी कन्त, गहर गम्भीर नूर खुदाईआ। जिस

६३३
२२

लेखा चुकाउणा विच्चों जीव जंत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जनक सपुत्री चलदी पगडण्डी, भज्जे चाँईं चाँईंआ। सहेलीआं संग हस्स के कढे दन्दी, खुशीआं रंग वखाईआ। फेर घुट्ट के गल तैनूं लाया मुक्खों किहा चंगी, ठोडी फड़ के दिती हिलाईआ। फेर मख़ौल विच हलूण के किहा तूं रंडी, रंडेपा तेरे संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। सहेली किहा मेरा नहीं नहीं कोई कन्त, रंडेपा रूप ना कोए दरसाईआ। सीता निगह मारी वेख्या खेल बेअन्त, बेपरवाह दिता जणाईआ। सुणया अगम्मी छंत, ढोला धुरदरगाहीआ। किस दी करां मन्नत, किस अग्गे सीस झुकाईआ। मेरे अन्दर रही नहीं हिम्मत, हौसला दिता मिटाईआ। अचानक आई चिन्त, चिखा रही जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, की आपणी कल वरताईआ। सीता किहा मैं दिता की सराप, मेरी राम दुहाईआ। सहेली किहा मेरा राम करे मुआफ़, तेरे राम सरनाईआ। सीता किहा मेरा नहीं कोई जुआब, जुआबतल्बी मंग ना कोए मंगाईआ। सहेली किहा ओह सब किछ आपणे आप, जो राम रमया हर घट थाँईंआ। सीता किहा की मैं कीता पाप, तैनूं सुख़न दिता सुणाईआ। रंडी वरगा नहीं कोई संताप, दुःख दर्द ना कोए अख्वाईआ। सीता सिर पैर तांईं गई कांप, रो के नैणां नीर वहाईआ। आत्मा परमात्मा दा कीता जाप, सति सरूप विच समाईआ। झट धुर शब्द ने दिता आख, संदेशा अगम्म अथाहीआ। ओह वेख खेल अलखणा अलाख, जिस दा लेखा ना लख्या जाईआ। जो सब दा माई बाप, पिता पुरख अकाल वड्याईआ। जिस वेले त्रेता द्वापर लँघया इन्हां दा लेख लिखे जगत इतिहास, अक्खरां विच वड्याईआ। कलयुग अन्त करे कराए आप, आप आपणा वेस वटाईआ। उस वक्त इस दा जन्म होवे विच मात, धरनी धरत धवल सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। तीजी चिट्ठी त्रेता द्वापर कलयुग तीजे जुग दी धार, सहिज सहिज सहिज सुणाईआ। जो शब्द गुरु गुर शब्द दिता अधार, बिना उदर तों आप जणाईआ। सो लहिणा देणा लेखा पूरा करे करतार, कुदरत दा करता कादर नूर इलाहीआ। सीता दा बचन ना जाए हार, सहेली अकेली रंग रंगाईआ। रंडी दा रंडेपे वाला वार, रहिबर हो के वेख वखाईआ। जन्म कर्म कर्म जन्म तों बाहर, बाहर आपणा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। सतिगुर शब्द किहा सीता अन्तर आई विचार, अन्तष्करन ध्यान लगाईआ। कलयुग खेल वेख्या संसार, चारों कुण्ट कूड़ दुहाईआ। फेर सहेली उत्ते निगाह लई मार, नेत्र लोचन अक्ख उठाईआ। फेर प्रेम विच कीता प्यार, गलवकड़ी आपणे हथ्थ वखाईआ। फेर प्रभ दे

६३३
२२

अग्गे कीती पुकार, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। जे एस दा जन्म होणा आउणा दूजी वार, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। मेला मेलणा सच दवार, दर दरबार इक सुहाईआ। जिस कन्त दी बणे नार, तन वजूद तत समाईआ। ख़सम ख़समाने ओह मरन नहीं देणा भतार, रंडेपा जगत ना कोए वखाईआ। उस वेले शब्द गुरु ने सीता नाल कीता उपकार, बचन बचन नाल मिलाईआ। पूरा करां ज़रूर कौल इकरार, वायदा वायदे विच रखाईआ। एसे कारन एह खेल होया अपार, जिस दा भेव कोए ना पाईआ। जे रजिन्दर ना हुन्दी ते लहिणा हुन्दा ना विच संसार, रणजीत नूं सकदा ना कोए बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं पूरा कीता कौल, आपणा तोड़ निभाईआ। खेल वखा के उपर धौल, धर्म दिता निभाईआ। जे गुरसिख ना जावे डोल, सतिगुर सदा सदा सहाईआ। सहेली दा सहिज सुभाओ दा बोल, अनबोलत पूर कराईआ। जिस नूं समझे कोए ना पंडत पांधा रौल, शास्त्र सिमरत वेद पुराण कहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तीजे अंक दा लेखा पूरा करन आया कौल, गृह मन्दिर मन्दिर आ के अन्दर ख़ुशी बणाईआ।

✪ पहली भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

जोती नार कहे मेरा सच दा होया ब्याह, वाहवा वज्जी वधाईआ। दीन दयाले दया लई कमा, कामल मेहर नज़र उठाईआ। प्रेम संदेशा दिता सुणा, अगम्म अथाह अथाहीआ। साडे अन्दरों बदल सुभा, साहिब दिती वड्याईआ। चरण कँवल ल्या बहा, दर दवार सुहाईआ। निरन्तर दिती इक इतलाह, इतआदक आप जणाईआ। मन्नो सच दी सलाह, साहिब सुल्तान दृढ़ाईआ। सजदा सीस दयो झुका, डण्डावत बन्दना इक वखाईआ। मुहब्बत विच सारे करो हां, नांह ना कोए दरसाईआ। धूढ़ी ख़ाक लओ रमा, रहमत विच सुणाईआ। इक्को धार कहिणा पिछला लेखा दिता गवा, दीन मज़्हब रिहा ना राईआ। झगड़ा मुकाओ सूर ते गां, ढोरां खल्ल ना कोए लुहाईआ। इक्को जपणा सब ने नाँ, निरँकारा सिफ्त सालाहीआ। खुशी विच कहो वाह वाह, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। तुध बिन अवर ना कोए खुदा, खुदी तक्ब्बरी देणी गंवाईआ। सच कलमे दी लाओ सदा, अदा अवाज़ इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे सच वर, सच सच हुक्म सुणाईआ। जोती नार कहे मेरे साहिब ने दिती सलाह, सहिज नाल सुणाईआ। शरअ दा घूँगट देणा लाह,

मुख पड़दा रहे ना राईआ। नार सुहागणे उच्ची कर दे बांह, बाज़ू इक वखाईआ। दो जहानां दस्सदे इहो पिता ते इहो माँ, दूजा नज़र कोए ना आईआ। इक्को दे चरणी बलि बलि जा, सीस जगदीश इक निवाईआ। इक्को रहिबर इक्को वेखणा राह, रस्ता अवर ना कोए अपनाईआ। इक्को प्राणपत इक्को शाही शहिनशाह, पातशाह इक अख्वाईआ। इक्को सजदा इक दुआ, इक्को मंग मंगाईआ। इक्को आदम इक हव्वा, इक्को नूर अगम्मी माईआ। इक्को मालक दिलरुबा, जो रबाब सितार रिहा वजाईआ। इक्को आलम आलमान उल्मा, आलमीन अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक जणाईआ। जोती नार कहे प्रभ दिता इक संदेशा, सँध्या सरघी ना कोए वड्याईआ। जुग चौकड़ी तक्को वेसा, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। तन वजूद तक्को पेशा, पेशीनगोई दए गवाहीआ। मालक तक्को इक नरेशा, नर नरायण इक वड्याईआ। जिस नूं कहिंदे आए रहे हमेशा, ओह तुहाडा बणया माहीआ। सारे कहि दयो इक्को धार दीन मज़्ह्ब दा छड्डुया पेशा, हिसाब वंड ना कोए रखाईआ। झगड़ा रिहा ना मूंड मुंडाए धारी केसा, तत्तां रंग ना कोए रंगाईआ। लेखा रहे ना मुल्लां शेखां, शकल प्रभ देणी बदलाईआ। सब ने मन्नणा इक्को नेता, नर नरायण नूर इलाहीआ। जिस दे अन्दर तुहाडा भेता, भेव ना कोए खुल्हाईआ। चार जुग दा सारे कर लओ चेता, चेतन रिहा कराईआ। तुहाडा देस रिहा ना जिस गए विच परदेसा, आपणा पन्ध रखाईआ। पिता पूत नज़र ना आए बेटी बेटा, संगी संग ना कोए बणाईआ। सारे कहो इक्को खेवट इक्को खेटा, ख़ालक ख़लक इक अख्वाईआ। इक्को प्रेम इक्को हेता, मुहब्बत इक रखाईआ। जिस दे वसे सचखण्ड देसा, देस देसन्तर डेरा ढाहीआ। ओह कलयुग अन्तिम आपणा खेल करे उच्चेचा, ऊच अगम्म बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर हुक्म इक उपजाईआ। जोती नार कहे मेरे साहिब ने दिती सिख्या, प्रेम शब्द जणाईआ। ओह वेख जेहड़ी सृष्टी दस्सी मिथ्या, मथण वाला कवण अख्वाईआ। चार जुग दा लेख वखाया लिख्या, जो लेखा कलम शाहीआ। फेर धर्म वखाया कूड़ दवारे विक्या, हट्ट सच ना कोए चलाईआ। मनसा मन किसे ना टिक्या, धर्मी धर्म ना कोए जणाईआ। फेर दीन मज़्ह्ब दा वखाया हिस्सया, पर्दा पर्दे विच्चों चुकाईआ। फेर लेखा दस्सया मित्र प्यारे मितया, जो मेहर नज़र नाल तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हुक्म इक्को इक सुणाईआ। जोती नार कहे मैं सहिज नाल बोली, निम्रता विच सुणाईआ। सदके तैथों घोली, वारी आपणा आप वार कराईआ। क्यों कलयुग अन्त नहीं बदली चोली, चोले वाल्या देणा समझाईआ। सानूं सति सच दी चाढ़ के डोली, अनडोलत आपणे घर बहाईआ। साडा वास्ता

साडी पिछली कथा ना फोलीं, वरका जुग वाला उलटाईआ। असीं जाणया तेरा शब्द गुरु तेरे नाम दा ढोली, ढोलक जगत साडे गल विच पाईआ। असीं तेरे सिफ्त दी सिफ्तां वाल्या पा के आ गए रौली, रौणक मनां नाल बणाईआ। जुग चौकड़ी खेल खिलाया हौली हौली, सहिज सहिज दृढ़ाईआ। साडा वास्ता वेखीं हुण करी ना तौली, जल्दी जल्दी कार भुगताईआ। सानूं कुछ वेख लैण दे उपर धौली, धर्म दी धार ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हक संदेशा इक जणाईआ। जोती नार कहे मैं बिना सीस तों कीता सजदा, कदमबोसी बोस्सयां विच रखाईआ। बण के रूप दासी दास बरदा, सेवक चाकर वेस वटाईआ। मैं प्रेम विच पुच्छया माही मैनूं भेत दस्स दे आपणे घर दा, जो जुग चौकड़ी ल्या लुकाईआ। तत्तां वाला गुरु अवतार पैग़म्बर तैथों रिहा डरदा, भाणा मन्न के सीस निवाईआ। किसे नूं किहा सीस निवा लहिंदा किसे नूं किहा चढ़दा, चढ़दीआं कलां वाले तेरी समझ किसे ना पाईआ। किसे नूं किहा मेरा अक्खरां वाला नाम रहीं पढ़दा, मातलोक मकतब विच सारे पढ़ने दिते पाईआ। किसे नूं दस्सया मेरा रूप नरायण नर दा, नर हरि बेपरवाहीआ। अन्त फ़ैसला दे दिता मैं मातलोक होवां कलयुग कल दा, कलकाती वेख वखाईआ। जेहड़े गुर अवतार पैग़म्बर रिहों घल्लदा, हुक्मी हुक्म सुणाईआ। ओह सिफ्त सुणांदा रिहा तेरे महल्ल अटल दा, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। जोती नार कहे आपणे घर दा दस्स दे घेरा, जिथ्थे रह के झट लँघाईआ। इक वार आपणे नाल लगा दे गेड़ा, मुड़ के फिरन दी लोड़ रहे ना राईआ। किड्डा वडा लम्मा वेहड़ा, सहिज नाल सुणाईआ। मेहरवान कर दे मेहरा, मेहर नज़र उठाईआ। पुरख अकाल किहा मेरी जोत तक लै धार केरा, इक्को वार इक समझाईआ। जिथ्थे कदे ना होवे नबेड़ा, आदि अन्त कहिण कोए ना आईआ। मेरा सति सरूप मेरा वेहड़ा, चार दीवार छप्पर छन्न कोए ना छाईआ। मेरी धार विच रहिणा करके वड्डा जेरा, जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज नज़र कोए ना आईआ। जिथ्थे ना प्रकाश ना अंधेरा, चन्न सूर्या ना कोए चमकाईआ। मेरे प्यार विच मार लै फेरा, मुहब्बत विच फिरन दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। जोती नार कहे मैनूं संदेशा दिता होर, सहिज नाल सुणाईआ। ओह वेख अंधेरा घोर, कलयुग दयां दृढ़ाईआ। मन मनसा होई चोर, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। शब्द प्रीती गए तोड़, सुरती सति ना कोए मिलाईआ। जगत वासना रहे दौड़, कलयुग जीव भज्जण वाहो दाहीआ। दीन मज़्हब सके कोए ना मोड़, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जगत साध बणे चोर, ठग्गां पई दुहाईआ। धुर दा नाम किसे ना कोल, वस्त सच ना कोए वरताईआ।

सिफ्ती ढोले रहे बोल, अनबोलत राग ना कोए सुणाईआ। फिरी दुहाई उपर धौल, धर्म दी धार ना कोए वखाईआ। पूरब करे किसे ना कौल, इकरार समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर संदेशा इक सुणाईआ। पुरख अकाल किहा मेरा गृह तकणा तकणा चारे कूट, कुटीआ आपणी फोल फुलाईआ। मेरा खेल तकणा तकणा जूठ झूठ, जो कलयुग काया भरम भुलाईआ। मेरा धर्म तकणा मोह विकारा तकणा पूत, पिता पुरख अकाल ना कोए मनाईआ। मेरा खेल तकणा सति धर्म करके गया कूच, कूचा गली रोवे मारे धाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। जोती धार कहे मेरे साहिब हथ्थ जोड़े, जोड़ी तेरे नाल बणाईआ। अगम्म अगम्मड़े चढ़ घोड़े, वागां निरगुण हथ्थ उठाईआ। कलयुग जीव वेखे मिट्ठे कौड़े, कूड़ी क्रिया फोल फुलाईआ। मोह विकार कोए ना होड़े, सस्से दा होड़ा दए दुहाईआ। आत्म परमात्म कोए ना जोड़े, दीन दुनी मेल ना कोए मिलाईआ। कुछ याद कर लै नानक धार किहा जिस वेले सेजा सुत्ता रोड़े, कंकरां सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वर साचा इक वखाईआ। जोती धार कहे मेरे धरनापति, पति तेरी सरनाईआ। सानूं साची सिख्या दिती मति, मति मतांदर डेरा ढाहीआ। साडी दीन मज़्हब नाल उबले रत्त, रत्ती रत्त दिती सुकाईआ। आपणी आप जणा के मित गत, गतमित आपणी आप बणाईआ। सच दवारे करके हित, हितकारी ल्या प्रनाईआ। तेरा हुक्म मन्नीए नित, नवित तेरी सेव कमाईआ। तूं सब दे आवें चित, चित ठगौरी रहे ना राईआ। तूं स्वामी मालक पित, पतिपरमेश्वर वड वड्याईआ। साडी इक बेनन्ती आपणे भगत सुहेले खिच्च, शब्दी शब्द शब्द मिलाईआ। वक्त सुहञ्जणा सुहञ्जणी करदे थित, थित वार वज्जे वधाईआ। तैनूं खोजदे गए केते कित, कोटन कोटि ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साडा खहिड़ा छुडाउणा पथ्थर इट्ट, पाहन रूप ना कोए बणाईआ। जोती धार कहे मेरा झगड़ा रहे ना अक्खर, आखर दयां सुणाईआ। मेरा इष्ट रहे ना पथ्थर, इट्टां वंड ना कोए वंडाईआ। मेरी ज़ात रहे ना टक्कर, शरअ रहे ना कोए लड़ाईआ। मेरी शरीणी रहे खण्ड ना शकर, जगत रस ना कोए चखाईआ। मेरा भाग रहे ना वक्खर, हिस्सयां वंड ना कोए वंडाईआ। मेरी वड्याई रहे ना सतर, लाईनां रंग रंगाईआ। मेरा संदेशा रहे ना पत्र, पत्रका जगत पढ़ाईआ। मेरा गृह रहे ना नछत्र, हिस्सयां रंग चढ़ाईआ। इक्को तेरे प्रेम दा प्रभू प्रीतम होवे असर, असलीअत इक समझाईआ। तेरे प्यार विच अग्गे सारे करीए बसर, विस्तर इक्को सेज हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती नार कहे सानूं बख्शीं सिदक सबूरी, प्याला सबर जाम प्याईआ। इक नूर तक के नूरी, नूर

नुराने विच समाईआ। दर बरदी बण हज़ूरी, हज़ूर अग्गे सीस झुकाईआ। मैं तेरी करां मज़दूरी, मांगत हो के झोली ढाहीआ। कलयुग शरअ मेट के कूड़ी, क्रिया कुकर्म देणी गंवाईआ। बुद्धी रहे कोए ना मूढ़ी, मूर्ख मुग्ध देणे तराईआ। इक्को चरण बख़्शणी धूढ़ी, टिक्के ख़ाक रमाईआ। मैं चाहुंदी प्रभू दिने जागदयां रातीं सुत्तयां तेरा शब्द तेरे नाम दी करे मशहूरी, लख चुरासी अन्दर आवाज़ सुणाईआ। तैनूं लभ्भदी फिरे मंज़ल कोहतूरी, तुरीआ तों परे ध्यान लगाईआ। पर इक किरपा करीं मेरे वल्ल वट्टीं कदे ना घूरी, गुस्से नाल डराईआ। जे मैं तेरा रूप तूंहे मेरा नूरी, नूर नुराना सोभा पाईआ। मेरे कसूर नूं सदा समझीं बेकसूरी, कसर अशारीए नाल देणा उडाईआ। निगह मार लै किस बिध कलयुग पाउणी फ़तूरी, फ़तवा की लगाईआ। की मति होणी हूड़ी, बुद्धहीण कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वर आपणा आप जणाईआ। जोती नार कहे मैं होवां तेरी सुलखणी, सोहणी सोभा पाईआ। मेरी झोली रहे ना सक्खणी, भगतां प्रेम नाल भराईआ। मेरी मुहब्बत उन्नां नाल रखणी, जेहड़े तेरा ढोला गाईआ। मैं तेरा रूप अलख अलखणी, जन्म मरन विच ना आईआ। जे प्रभू तूं मैनूं बणाया पत्नी, पतिपरमेश्वर हो के देणा वखाईआ। जेहड़े तेरे भगत सुहेले कलयुग हो गए बेवतनी, उन्नां नूं आपणे वतन देणा पहुंचाईआ। मैं आ गई तेरे पत्तनी, कन्ढे बैठी सोभा पाईआ। मेरे साहिबा उन्नां दी पति रखणी, जो तेरा नाम ध्याईआ। मैं ओह सखी नहीं जिसने काहन नूं खवाई मक्खणी, दुद्धां धार वहाईआ। मैं तत्तां वाली नहीं जो तेरे अग्गे नच्चणी, नेत्र नैणां अक्ख मटकाईआ। मैं ते इक जाणदी तेरा मेरा कौल ते तूं पूरा रहीं उत्ते बचनी, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। मेरे महिबूब तेरी सदी चौधवीं कदे नहीं टप्पणी, टापूआं दे टप्पे देणे गंवाईआ। मैं नैण उग्घाड़ के तकणी, किस वेले तेरे भगतां दी हाढ़ी पक्कणी, हाढ़ा कढ के दयां सुणाईआ। तेरे भगतां दी बस्ती वसणी, सच दवारे बहि के ख़ुशी वखाईआ। मैं खेल तकणा आपणी अक्खणी, बिन अक्खां अक्ख खुल्लाईआ। जे तेरा हुक्म पूरा ना होवे ते मैं मर जावां नक्क डोब के विच चप्पणी, जगत कहाणी पिछली चली आईआ। फेर तेरी कथा कहाणी किसे नहीं रटणी, तेरा ढोला कोए ना गाईआ। जे तूं लाड़ा बणया शृंगार कीता ला के वट्टणी, सोहणा रूप दरसाईआ। मेरा वास्ता मेरे महिबूब ज़रूर कलयुग दी जड़ पुटणी, पटने वाला तेरा सोभा पाईआ। फेर मैं ख़ुशीआं दे विच तेरी हस्ती तक के हस्सणी, हस्स हस्स के दयां वखाईआ। मैं फिरां उत्तर पूरब पच्छमी, दक्खण वाहो दाहीआ। तेरी खेल वेखणी रसमी, कलयुग रसमो रिवाज देणा बदलाईआ। मैनूं तेरी सुगंद ते तेरी कसमी, कसम खा के रही दृढ़ाईआ। तेरे चरणां दी धूढ़ लाउणी भस्मी, भस्म कर दे कूड़ लोकाईआ। तूं इक्को नज़र आवें इस्मी, आज़म तेरा नूर खुदाईआ। मानव ज़ाती

तेरी किस्मी, किस्म सब नूं देणी समझाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले झगड़ा मेट दे जिस्मी, जिस्म ज़मीर अन्दरों देणी बदलाईआ। तूं मालक आदि जुगादि दा मिशनी, मिशन आपणा देणा चलाईआ। की करे राम ते कृष्नी, की पैग़म्बर सिफ्त सालाहीआ। इक्को तेरी धार दो जहानां दिसणी, दूजा नज़र कोए ना आईआ। तूं मेरा सतिगुर ते मैं तेरी सिखणी, सिख सतिगुर विच समाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों तेरी लेख लेखणी पंजां लिखारीआं लिखणी, गोबिन्द दे के गया गवाहीआ। तेरे वैराग विच मैं सारी दुनिया पिटणी, दुहथ्थड़ मार के दयां सुणाईआ। वे मेरे प्रभू तेरे हुन्दयां मैनूं सारे करदे टीका टिप्पणी, मूर्ख मूढ़ उँगलां रहे उठाईआ। बेशक मैं तेरे नालों वड्डी ते तेरे नालों निकणीं, तेरे विच समाईआ। मैनूं आपे दस्स दे मैं चार जुग दी धार तेरे वास्ते कितनी, की मेरी वंड वंडाईआ। बिन तेरी किरपा तेरे दर सुरती किसे ना टिकणी, टिक्कयां वाले रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच वर, सच दवारे आस रखाईआ। जोती धार कहे मेरे मालक करां की बेनन्ती, बिनै की सुणाईआ। कलयुग घर घर वेख महंती, दर दर डेरे लाईआ। गढ़ बणया हउमे हंगती, हँ ब्रह्म ना कोए समझाईआ। पंडत पांधे खांदे पंगती, रसां मुख भराईआ। तृष्ना पूरी होई ना अन्न दी, विष्नूं रिहा कुरलाईआ। इक गल्ल याद कर लै गुज़री गोबिन्द चन्न दी, जेहड़ा तेरे अन्दर वास्ता पा के गया सुणाईआ। जिस वेले सृष्टी चोर हो गई कन्न दी, चुग़ली निन्दयां विच सुणाईआ। उस वेले जनणी भगत होणी कोई नहीं जणदी, सांतक सति ना कोए समाईआ। तृष्ना वधणी तम दी, तामस विच कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। जोती धार कहे मैं नार सुहागण चंगी, सच साहिब सेव कमाईआ। जो मंग अगम्मी मंगी, सो मंग दयां समझाईआ। जिस वेले कल काती वासना होई गंदी, मंद भाग दिसे लोकाईआ। साची मंज़ल चले कोए ना डण्डी, डण्डावत बन्दना ना कोए दरसाईआ। सृष्टी नेत्र हो जाए अंधी, प्रभ दा दरस कोए ना पाईआ। कलयुग अन्तिम आवे कन्ढी, सदी चौधवीं नाल रलाईआ। मन वासना होवे पाखण्डी, दुतीआ भाउ वधाईआ। सदी चौधवीं जाए लँघी, वेला वक्त अन्त समझाईआ। पुरख अकाल खेले खेल साहिब बख्शंदी, बख्शणहार दया कमाईआ। गोबिन्द धार कर के नन्गी, पर्दा ओहला दए चुकाईआ। जन भगतां सीस दस्तार जाए रंगी, लाल गुलाला रंग वखाईआ। करनैल सिँघ फड़ा दे हथ्थ बन्नी, बन्दना कर के सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। पगड़ी कहे मेरा रंग लाल गुलाला, गोबिन्द हथ्थ वड्याईआ। मेरा साहिब सदा प्रितपाला, प्रितपालक इक अख्वाईआ। जिस दा नाम सति सुखाला, सहिज सहिज दृढ़ाईआ। जन भगतां तोड़ के कूड़ जंजाला, जागरत जोत करे

रुशनाईआ। लेखा जाण के माझी हाला, अग्गे आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे रंग रंगाईआ। पगड़ी कहे धर्म दी धार दे दयो खद्दर, माँ पुत्त हथ्थ उठाईआ। जिस ने सृष्टी दृष्टी करनी पद्धर, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्वाईआ। जन भगतां आसा मनसा पूरी करे सध्धर, सदमा रोग रहिण ना पाईआ। कलयुग अन्तिम चारों कुण्ट पाए ग़दर, गदागर करे लोकाईआ। जन भगत इक्ठ्ठा कर के टब्बर, शब्दी रस्सा डोरी हथ्थ उठाईआ। सदी चौधवीं कर के अदल, इन्साफ़ लए कमाईआ। कलयुग विच सतिजुग जाणा बदल, बदला देवे शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच वर, सच करनी कार कमाईआ। पगड़ी कहे मैं लाल इक, इक दिती वड्याईआ। इक दे नाल इक्की लैणे लिख, शब्दी शब्द हुक्म लिखाईआ। छब्बी पोह मर्यादा दस्सणी किस बिध बणदा सिख, सिख सतिगुर विच समाईआ। जिस वल्ल कदे ना होवे पिठ, पिछा दे ना मुख भवाईआ। जेहड़ा पैंडा सवा गिठ, मेहर नज़र नाल पार कराईआ। घर वस अबिनाशी अचुत, चेतन सुरती दए कराईआ। सच सुहञ्जणी कर के थित, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। भाग लगा के काया बुत, बुतख़ाने करे रुशनाईआ। जो लेखा लेख पिछला सीस चुक्क के लिआया गुरमीत सिँघ सुत्त, सुत दुलारे गुरमुख आप उपजाईआ। कुछ रस लगाउणा मुख, काले जामन दयो फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। पगड़ी कहे मेरा प्यार नाल रस्से, जो रस्ता रिहा वखाईआ। जिस ने सृष्टी करनी बेवसे, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। कूड़ी क्रिया गंढ कसे, बिन सतिगुर शब्द ना कोए खुल्हाईआ। चारों कुण्ट करके रैण अंधेरी मस्से, धुर दा चन्द चन्द दए छुपाईआ। जेहड़ा तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला जपे, जगजीवण दाता दए मिलाईआ। इक्को वड्याई मिलणी पूरन अक्खर पप्पे, पारब्रह्म रंग रंगाईआ। झगड़ा रहे ना चूंके चुनांचे अलबत्ते, फ़िकरे सब दे दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच वर, सच मेला लए मिलाईआ। जोती नार कहे मैं करां इक अरदास, बिनै बेनन्ती इक जणाईआ। वाह मेरे साहिब गुणतास, गुणवन्त तेरी वड्याईआ। जन भगतां रहिणा साथ, सगला संग बणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्सणी गाथ, ढोला अगम्म अथाहीआ। तूं दीन दयाला रघुनाथ, रघुपति तेरी सरनाईआ। तैनूं लभ्भणा पए ना पृथ्मी आकाश, जन भगतां अन्दर डेरा लाईआ। सच स्वामी हो के करना वास, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। भरम मेटणा ख़ास, पहली भाद्रों इहो मंग मंगाईआ। बिना भगतां तों तेरी चले कोए ना साख, शनाखत वाला नज़र कोए ना आईआ। पर इक गल्ल याद कर लै पहली अस्सू नूं पंजां प्यारयां कोल होवे इक इक ग्लास, जल पुड्डे पासे भराईआ। पंजां दरबारीआं कोल होण नौ नौं पत्ते ताश, नहिले तों अग्गे हथ्थ ना कोए उठाईआ।

पंजां लिखारीआं कोल पुट्ठा फड़या होवे इक इक चाक, चाकू मुख खुल्ले नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। जोती नार कहे प्रभू मैं तेरी कोझी कमली, बुधहीण अख्वाईआ। तूं मेरा साहिब अमली, अमलां तों रहित कार खुदाईआ। मैं यथा यथार्थ यमली, यादाशत ना कोए जणाईआ। सिर्फ़ आई ते आई तेरे कम्म लई, काज आपणा देणा समझाईआ। जे आई ते आई भगतां दे दम लई, दामनगीर लैणा बणाईआ। जे आई ते आई तेरे नाम लई, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। जे आई ते आई अगम्मे राम लई, जिस राम नूं जन्मे कोए ना माईआ। जे आई ते आई सोहणे शाम लई, जिस शाम दी शमा ना कोए बुझाईआ। जे आई ते आई उस अमाम लई, जिस दा भेव पैग़म्बर ना सके खुल्लाईआ। जे आई ते आई उस भगवान लई, जो भगतां दए वड्याईआ। जे आई ते आई जगत जहान इन्सान लई, दीन मज़्हब दा डेरा ढाहीआ। जे आई ते आई आत्म परमात्म मिलाण लई, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। जे आई ते आई इक पहचान लई, जो बेपहचान धुर दा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच संदेशा इक सुणाईआ। जोती नार कहे तेरा सत्तरंगा वेख के डरदी, लुक लुक झट लँघाईआ। हौक्यां विच मरदी, हाए हाए सुणाईआ। मैनूं समझ ना आई तेरे घर दी, की बेपरवाह बेपरवाही विच समाईआ। मैं सिफ्त कीती सी नरायण नर दी, रागां विच सुणाईआ। मैनूं समझ नहीं सी पल दी, की आपणा हुक्म वरताईआ। मैनूं छोटा जेहा पता सी किस तरह तेरी धार राजे बल नूं छलदी, बावन हो के खेल खलाईआ। मैनूं पता नहीं सी की कीमत पावें गल्ल दी, जो अवतार पैग़म्बर गुर मुक्खों सहिज नाल उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे धुर दा वर, धुर दे मालक हो सहाईआ। प्रभू तेरा सत्तरंगा बड़ा मोटा, जगत जहान नज़री आईआ। जिस दे हुक्म नाल असां संसार कीता टोटा टोटा, टुकड़यां वंड वंडाईआ। जिस तों डरदयां तेरे नाम नूं दस्स के खरा ते खोटा, दोवें राह चलाईआ। जिस तों डरदयां माला मणक्यां घसाया पोटा, पोटे पोटे दिती दुहाईआ। जिस तों डरदयां खेल खलाया चौदां लोका, चौदां तबकां कार कमाईआ। जिस तों डरदयां नाम सुणाया विच सलोका, अक्खरां विच सालाहीआ। जिस तों डरदयां तेरे हुक्म दा दिता होका, हौका हक हक इलाईआ। जिस तों डरदयां सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा संभालया मौका, मुकम्मल तेरी सेव कमाईआ। जिस तों डरदयां दीन दुनी नाल कीता धोखा, मानव मानव नाल टकराईआ। जिस तों डरदयां वक्खरा वक्खरा साफ़ कीता चौका, हिस्से काया वाले वंडाईआ। जिस तों डरदयां तेरा भाणा मन्नया नाल शौका, सिर सक्या ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी

वड्याईआ। प्रभू तेरा सत्तरंगा उठे नाल बल, बलधारी ल्ए अंगड़ाईआ। जिस ने कलयुग मेटणा छल, छलीए तेरी कार कमाईआ। जिस ने वरोलणे अठसठ जल, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती बचया रहिण कोए ना पाईआ। जिस ने फोलणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ थल, सरोवर अस्गाह पड़दा लाहीआ। जिस ने कूड़ी क्रिया लौहणी खल्ल, छुरी कसाईआं हथ्थ फड़ाईआ। जिस ने चारों कुण्ट तेरे हुक्म नाल उठाणे दल, रूसा चीना चीना रूसा नाल लड़ाईआ। जिस ने जगत चुरासी नूं देणा फल, कर्मां वाला झोली पाईआ। जिस प्रभू अवतार पैग़म्बरां दा मसला करना हल्ल, भविक्ख्त गुरुआं वाले वेख वखाईआ। जिस ने भगतां अन्दर जाणा रल, रल मिल आपणा झट लँघाईआ। वखाउणा निहचल धाम अटल, दरगाह साची इक सुहाईआ। जिथ्थे तेरा दीपक दीआ अगम्म जोत रिहा बल, अग्नी अग्ग ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच वर, साहिब तेरे हथ्थ वड्याईआ। सत्तरंगा कहे ओ जोती धार मैं कोई नहीं वाधू, वादल रूप ना कोए वखाईआ। मेरा लेखा समझा के गया गोबिन्द कोल दादू, दाअवे नाल दृढ़ाईआ। जिस वेले अवतार पैग़म्बर गुरुआं तों मानव ज़ाती नहीं आउणी काबू, मन कल्पणा विच कुरलाईआ। उस वेले मेरा पुरख अकाल आपणी कला सब नूं सांभू, साहिब सतिगुर बेपरवाहीआ। भय विच चारों कुण्ट लग्गणे लांबू, अग्नी सके ना कोए बुझाईआ।
६४२
२२
रहिणा नहीं कोई नाढू, सिर सके ना कोए उठाईआ। चौदां तबकां दो जहानां सदी चौधवीं अन्त अख़ीर इक्को निशाना गाडू, गाईड हो के गॉड आप अख्वाईआ। कोई रहिण नहीं देणा कूड़ी क्रिया वाला साधू, साधना सब दी दए कराईआ। गुर अवतार पैग़म्बर जगत इष्ट होणा नहीं कोई आगू, नेड़े नज़र कोए ना आईआ। जिस वेले सत्तरंगा उठया ते सृष्ट सबाई अन्दरों जागू, जुगती नाल रखाईआ। प्रभ ने शस्त्र फड़ना नहीं कोई बाज़ू, बाजां वाला गया समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सच आपणा खेल वखाईआ। सत्तरंगा कहे मेरे विच नहीं कोई ताकत, ताकतवर दी ओट रखाईआ। मेरे विच नहीं कोई ल्याकत, लायक बण ना कोए चतुराईआ। मैं प्रभू तों मंग मंगी तेरे भगतां नाल मेरी होवे रफ़ाक्त, सोहणा संग बणाईआ। जिस वेले दुनिया उत्ते आवे आफ्त, चारों कुण्ट अंधेरा छाईआ। मैं प्रगट होवां ते तेरयां भगतां दी बाबत, बाबल तेरी सेव कमाईआ। तेरे हुक्म नूं करां साबत, सच दयां वरताईआ। दीन दुनी दी बदल के आदत, तेरा इष्ट दयां मनाईआ। तेरे कलमे दी होवे वाहिदत, वाहिद तेरा नाम ध्याईआ। मेरे गोबिन्द दे शहादत, तेरा सूरबीर अख्वाईआ। इक्को तेरी होवे इबादत, दूजा नाम ना कोए पढ़ाईआ। सृष्टी दृष्टी दा होवे मालक, मालक नूर नूर इलाहीआ। प्रभू मैं सत्तरंगा तेरे धर्म दा सालस, सालसी जगत विच कमाईआ। मैं चाहुंदा इक तूं होवें इक

तेरा भगत होवे ख़ालस, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जो कोई मेरे हुंदयां जूठयां झूठयां दी करे सफ़ारश, मुख तोड़ के दन्द भनाईआ। जे तेरे नाम दे हुन्दयां कोई होर लिखावे इबारत, कलम शाही ना कोए चतुराईआ। बिना तेरे प्यार तों होवे ना कोए ज़मानत, ज़ामनी अवर ना कोए जणाईआ। मेरी तेरे नाल इक हमाकत, हमसाजण लैणी निभाईआ। प्रभू मैं इस कर के आया कि तेरयां भगतां दी मेरे विच होवे शनाखत, समझ समझ विच प्रगटाईआ। तेरा रूप दस्सां वास्तक, वायदा पिछला पूर कराईआ। गुरमुख होवे कोए ना नास्तिक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच वर, सच सच नाल मिलाईआ। सत्तरंगा कहे मैं तेरा इक दुलारा, दो जहानां देणी वड्याईआ। चारों कुण्ट देवां पाहरा, सेवक हो के सेव कमाईआ। मैं उहदे शाह रग ते वज्जणा जेहड़ा तूं मेरा मैं तेरा ना लावे नाअरा, आत्म परमात्म राग अलाईआ। इक्को गृह इक्को मन्दिर दस्सणा दवारा, जिथ्थे द्वारकावासी सीस झुकाईआ। जिथ्थे झुकण पैग़म्बर अवतारा, गुरु गुर रंग वखाईआ। मेरी नमो नमो निमस्कारा, डण्डावत बन्दना सजदे विच सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा आदि अन्त जुगा जुगन्त साचा दवारा, दूजा दर नरायण नर नज़र कोए ना आईआ।

✪ २ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल दुपहर नूं ✪

धरनी कहे मेरी आसा होई सवाधान, निंद्रा कल रही ना राईआ। मैं उठ के लग्गी तकाण, बिन अक्खां अक्ख खुलाईआ। वेख्या ज़िमी असमान, चारों कुण्ट फोल फुलाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु मंगदे दान, दासी हो के झोलीआं डाहीआ। जिस बदल दिता विधान, तरमीम करीम आप कराईआ। झुला दिता सच निशान, धर्म निशाना इक प्रगटाईआ। सन्त सुहेले भगत बणा नौजवान, जोबन आपणा रंग रंगाईआ। सूरबीर बण पहलवान, दो जहान दे बन्ने भज्जे चाँईं चाँईंआ। किसे दी रहिण नहीं देणी शान, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। खेल वेखदे सूर्या भान, चन्द सितार ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मार्ग इक रखाईआ। सूर्या कहे मैं तक्कया सूरबीरा, धरनी उत्ते ध्यान लगाईआ। जिस दी चरण छोह मंगदे अवतार पैग़म्बर गुर पीरा, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। जो शरअ कटे ज़ंजीरा, कड़ी कड़ी नालों बदलाईआ। रूप धर के बेनज़ीरा, नजर सब दी रिहा बदलाईआ। धर्म दी धार बंधा चीरा, चीर दुफाड़ दा लेखा रिहा मुकाईआ। दो जहानां चुक्क के बीड़ा, पहलवान आपणा बल धराईआ। चार जुग दी जोती धार नार

बणा बहाई उत्ते पीढ़ा, रंगला गृह इक वखाईआ। जिस दे ओढण सीस देणा सत्त रंग दा लीड़ा, पोह छब्बी वंड वंडाईआ। इक मार्ग बणाउणा भीड़ा, गुरमुख विरला लँघ के खुशी बणाईआ। इक लक्कों बन्ह के ल्याउणा कीड़ा, लम्मीआं टंगां वाला सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। धरनी कहे मैं वेख्या नाल फुरती, फुरतीला रूप बणाईआ। जिस दा खेल आपणी आप जुगती, जुग चौकड़ी हुक्म वरताईआ। कलयुग अन्दर सतिजुग करनी दरुस्ती, दुरसत आपणा हुक्म सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर धार वेखणी पुश्ती, पुश्त दर पुश्त फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे प्रभ वेख्या पहलवान उत्ते खड़ा पब्बां, पंजां सहिज नाल दबाईआ। सदी चौधवीं दे मुक्खों निकलया हाए रब्बा, यामबीन तेरी बेपरवाहीआ। मेरे उत्ते पैण लग्गा दब्बा, सिर सकां ना कोए उठाईआ। मैं वेखणा की लेखा कबरां विच हड्डां, मकबरयां की दुहाईआ। किस बिध जगत जहान छडां, छुट्टे कूड़ लोकाईआ। चारों कुण्ट उठ उठ भज्जां, भज्जां वाहो दाहीआ। साहिब स्वामी धुर दा लभ्भा, पर्दे ओहले जगत चुकाईआ। नाम खुमारी लवां मधा, मधुर आपणी धुन बणाईआ। जिस दे हुक्म अन्दर गुर अवतार पैग़म्बर विष्न ब्रह्मा शिव बध्धा, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। उस ने कदम चुक्या सज्जा, साजण हो के दया कमाईआ। शेर रूप हो के गज्जा, गज हाथी देण दुहाईआ। जो खेल करदा जन भगतां नाल मिल के आपणी वजह, वजूहात ना किसे दरसाईआ। आपणी धार विच वेखे आपणा मज़ा, मज़ाक दस्से जगत लोकाईआ। जिस ने सब नूं देणी अन्तिम सज़ा, बचया नज़र कोए ना आईआ। सो लेखा जाणे आपणी रज़ा, राज़क रहीम अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा आप चलाए अग्गा, अग्गे किसे दी लोड़ रहे ना राईआ।

६४४
२२

✪ २ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठवाल रात नूं ✪

दो भाद्रों त्रेता खेल कीता, प्रभ आपणा हुक्म वरताईआ। राम ने पाणी मंग्गया कोलों सीता, सुत्ती लई उठाईआ। औह वेख कृष्न धार लिखाउणी गीता, भगतन देणी वड्याईआ। औह तक कलयुग अन्तिम नीता, मानव ज़ाती फोल फुलाईआ। औह वेख अवतार पैग़म्बर गुरुआं पैंडा बीता, वेला वक्त सोभा पाईआ। औह तक लेखा ऊचा नीचा, नीचां ऊचां वेख वखाईआ। औह वेख मेरा राम सब दा प्यारा मीता, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। औह तक चार जुग दा लहिणा देणा कीता, लेखा

खोज खुजाईआ। औह वेख देवे रस मीठा, अगम्मा आप वरताईआ। औह तक जिस वेले सब ने दे जाणी पीठा, पुश्त हथ्थ ना कोए टिकाईआ। औह तक आख़री गोबिन्द वाला अंगीठा, अग्नी अग्ग जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। दो भाद्रों कहे राम पाणी हथ्थ विच फड़या, फड़ के निगाह टिकाईआ। फेर तक्कया मैं किस मंज़ल ते चढ़या, वसया केहड़ी थाँईंआ। फेर वेख्या मैं किस जगत विच अड़या, बन विच साथी नज़र कोए ना आईआ। फेर वेख्या राम ने राम दा ढोला पढ़या, तूं मेरा मैं तेरा दूजा संग ना कोए निभाईआ। फेर तक्कया मैं पंजां तत्तां विच्चों मरया, तत वजूद ना कोए वखाईआ। फेर वेख्या मैं उस दी सरनी पड़या, जिस दी परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे पढ़ाईआ। फिर तक्कया निरभउ तों भय विच डरया, सहिज विच हथ्थ छाती ते टिकाईआ। फिर तक्कया जगत जहान डूँग्घा गड़या, जिस लख चुरासी लई दबाईआ। फेर उठया राम राम दे नाल लड़या, राम तेरे राम दी राम दुहाईआ। पुरख अकाल ने किहा ओह राम छड़या, तेरी सीता संग ना कोए रखाईआ। किस वहिण विच हड़्या, जगत धार समाईआ। फेर राम ने राम दे चरणां उत्ते सीस धरया, धर के खुशी मनाईआ। राम ने किहा राम औह वेख अड़या, सहिज नाल सुणाईआ। मैं ज़रूर भन्नां जो घड़या, घड़न भन्नणहार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। राम फड़या ग्लास हथ्थ, बरतन माटी हथ्थ उठाईआ। फेर तक्कया पुरख समरथ, दाता बेपरवाहीआ। फेर नज़र आया गोबिन्द सुत्ता विच सथ, सूलां सेज हंढाईआ। फेर नेत्र वहा के अथ्थ, हथ्थ मस्तक उत्ते रखाईआ। फिर निगह मारी विच काया नाड़ी मास हड्ड, बिना राम तों पिंजर कम्म किसे ना आईआ। फेर जाणया एह सब कुझ जाणा छड्ड, सगला संग ना कोए रखाईआ। तन नालों होणा अड्ड, घर मन्दिर देणा ढाहीआ। फेर वेख्या पुरख अकाल सुणाया सद, ढोला अगम्म अथाहीआ। ओह वेख राम आपणे राम दी हद्द, हदूद हदूद विच्चों समझाईआ। जिस वेले अवतार पैग़म्बर गुरु सारे जाणे लद, तत्तां वाला रहिण कोए ना पाईआ। सीता सवाणी जाए छड्ड, अंगी अंग ना कोए कराईआ। फेर धर्म निशाना देवां गड्ड, इक्को इक प्रगटाईआ। प्रगट होवां झब्ब, मालक बण के बेपरवाहीआ। तुहाडे लेखे पूरे करां सभ, सबब नाल आपणा मेल मिलाईआ। पुरख अकाल ने राम नूं राम दा आपणा वखाया कद्द, जिस दा आकार ना कोए जणाईआ। खुशी विच गया वध, बेअन्त बेपरवाहीआ। सूरबीर हो के गया गज्ज, भय ज़ोर नाल जणाईआ। फेर ब्रह्मण्ड खण्ड वखा के पंजां तत्तां वाले कोल पंज बैठकां लईआं कढ, राम ने राम नूं दिता डराईआ। राम चरणी गया लग्ग, की प्रभू खेल वरताईआ। पुरख अकाल ने किहा जिस वेले आवां विच जग, जागरत

जोत कर रुशनाईआ। भगत सुहेले लवां लभ्भ, खोजां चाँईं चाँईंआ। नाम खुमारी दे के मध, मधुर धुन राग सुणाईआ। राम तुहाडे सब दे इष्ट वाले धर्म राए दा होणा वग, मैं भगतां दा राखा इक्को नज़री आईआ। गुरमुख रहिण नहीं देणा कोए कग्ग, कागों हँस उडाईआ। उस वेले कलयुग दी अग्नी लग्गणी अग्ग, चारों कुण्ट तपाईआ। धुर दे राम ने राम तों ग्लास फड़ ल्या झट, पाणी आपणे हथ्थ वखाईआ। फेर किहा राम उस वेले भगतां उत्ते अमृत देणा सट्ट, धुर दा मेघ बरसाईआ। जुग चौकड़ी दे लेखे देवां कट, जन्म मरन रहे ना राईआ। कीमत पा के आपणे हट्ट, खरीददार बणां थांउँ थाँईंआ। लोकमात विच्चों सचखण्ड दवारे देवां सट्ट, फड़ बाहों आप उठाईआ। राम ने राम नूं टेक्या मथ्थ, एह तेरी बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी तूं चलावणहारा रथ, रथवाही इक अख्वाईआ। मेरे साहिब इक गल्ल दस्स, झोली डाह के मंग मंगाईआ। दस्स तूं होवें कि भगत होण तेरे वस, पड़दा देणा उठाईआ। राम ने किहा राम उस वेले किसे दा चले कोए ना वस, अक्ल बुद्धी ना कोए चतुराईआ। ओह मेरा ते मैं उहनां दा लवां रस, रस्ता इक्को लैणा बणाईआ। ओह मेरे अन्दर ते मैं उन्हां दे अन्दर जावां वस, दूजे घर ना कोए वड्याईआ। ओह मेरे ते मैं उहनां दा गावां जस, इहो मेरी सिफ्त सालाहीआ। बाकी कीती करनी सब दी हो जाए रफ, रफ़ता रफ़ता लेखा दए मुकाईआ। अन्त मलेछां दी उठणी सफ, सफ़ गोबिन्द शब्द धार विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला आप मिलाईआ। राम किहा राम पाणी ग्लास थोड़ा ऊणा, भरया नज़र कोए ना आईआ। फड़ मोढिउँ दिता हलूणा, ज़ोर नाल दबाईआ। सीता तूं नहीं मुक्खों कूणा, कहि के दिता सुणाईआ। एहदा रस अजे अलूणा, मिट्ठा रूप ना कोए प्रगटाईआ। राम किहा मेरे राम इयों दिसदा जिस वेले कलयुग तपणा धूणां, धूंआँधार होणी लोकाईआ। पाप वधणा दूणा, पतित होए लोकाईआ। जगत होवे तेरे नाम विहूणा, साचा नाम ना कोए ध्याईआ। तेरे गुरमन्त्र नूं जगत समझे टूणा, जादूआं वाली दुहाईआ। एह लेखा नामालूमा, समझ ना कोए समझाईआ। धुर दे राम किहा ओह राम मेरे मासूमा, उठ नैण अक्ख खुल्हाईआ। कलयुग विच मैं ओन्हां भगतां दे मुखड़े चूमां, जिन्हां नूं बुरा कहे लोकाईआ। राम किहा वाह ओए प्रभू सूमा, बिना इक भगत तों तूं तारन दी हिम्मत ना कोए रखाईआ। धुर राम किहा राम जे मैं किरपा करां इक तों बणा देवां हजूमां, इक्ठे भुक्खे नन्गे सर्ब कराईआ। जिस वेले चाहवां ते आपणे भगतां दे अन्दर घूमां, घुंमण घेरी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। जदों चाहवां मैं मिट्ठा कर देवां तुंमा, कुड़त्तन विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। सृष्टी दे वेंहदयां उन्हां दे विच गुम्मां, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा हुक्म वरताईआ। राम किहा, राम,

की दो भाद्रों रह जाऊ याद, सच दे सुणाईआ। धुर राम किहा मैं मालक अन्त ते आदि, जुग जुग मेरी बेपरवाहीआ। तैनूं पंजां तत्तां वाली दिती दाद, जिस वेले चाहां उस वेले खोह के आपणी झोली पाईआ। मैं दो जहानां करन वाला राज, लख चुरासी आपणी रईयत भुल्ल कदे ना जाईआ। उस वेले तुहाडे सारे बदल देणे समाज, समग्री आपणा नाम वरताईआ। सन्त भगत बणा के साध, गुरमुख लैणे उठाईआ। इक्को दस्स के आपणा राग, वैराग अन्दर देणा रखाईआ। जिथ्थे ना कोए सवाल ना जवाब, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। ना कोए तन्द सतार रबाब, ना कोए किल्ली ल्ए भवाईआ। इक्को इक उपजा के नाद, शब्द धुन देणी सुणाईआ। जन भगतां सन्मुख हो के आप, आपणा मेला लैणा मिलाईआ। लेखा रहिण नहीं देणा पुन्न पाप, इक्को रंग देणा रंगाईआ। सो ओह वेला वक्त लहिणा देणा लेखा पूरा कीता आप, राम दा राम भुल्ल कदे ना जाईआ। जन भगतो तुहाडी एसे कर के खोल्ह़ी जाग, आलस निंद्रा विच्चों बाहर उठाईआ। बैठकां कढण दा राम ने राम नूं दस्सया सी रिवाज, प्रभास विच सुत्ता आप जगाईआ। एसे कारन ओह खेल कीती कीती साख्यात, भरम रिहा ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, एसे कर के सौण नहीं दिता तक अद्धी रात, जब तक पिछला लेखा ना झोली पाईआ।

✪ ५ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ हरी सिंघ ते पूरन सिंघ दे गृह पिण्ड सोल्ह़ ✪

गुरसिख कदे ना होवे ग़रीब, जिस अन्तर गोबिन्द दया कमाईआ। सतिगुर शब्द सदा रखे चीत, चित वित ठगौरी रहिण कोए ना पाईआ। त्रैगुण तों होवे अतीत, त्रैभवण धनी दया कमाईआ। काया होवे ठांडी सीत, कलयुग अग्नी तत ना कोए तपाईआ। मन कल्पणा बदल जाए नीत, कूड़ी क्रिया कूड़ मिटाईआ। साहिब स्वामी मिले इक्को मीत, मित्र प्यारा धुरदरगाहीआ। जिस दे छत्र झुल्ले सीस, जगदीश इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा नाम वर, भेव अभेदा अन्तर खुल्ह़ाईआ। ग़रीब होवे ना कदे गुरसिख, जिस सिख्या सतिगुर भाईआ। जन्म कर्म तों बाहर लेखा देवे लिख, सतिगुर दाता धुरदरगाहीआ। जिस दा अन्तर आत्म इष्ट इक, एकँकार सीस निवाईआ। सो साहिब सुहेला बणे अगम्मा पित, मीत मुरारा इक अख्वाईआ। जिस दी किरपा नाल सृष्टी दृष्टी जाए जित्त, नौ दवार दा डेरा ढाहीआ। सच दवार जाए विक, कीमत सतिगुर घर पाईआ। जिस मंज़ल ते चढ़े कोए मुन ना रिख, गुरमुख मिले माण वड्याईआ।

जिस दी झोली पए नाम दी भिक्ख, भिच्छया देवे बेपरवाहीआ। उस दी पूरी मनसा इच्छ, निरइच्छत होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा नाम वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। ग़रीब ना होवे गुरसिख सच्चा, सच मिले वड्याईआ। बेशक काया माटी भाण्डा कच्चा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश नज़री आईआ। अन्दर वसे पुरख समरथा, निरगुण नूर जोत इलाहीआ। जो हभ किछ हो के परमात्म देवे वथा, वस्त अमोलक नाम वरताईआ। चुरासी विच्चों रखे दे के हथ्था, राय धर्म ना दए सज़ाईआ। सच दवारा खोल्ह के हट्टा, गृह आपणा इक समझाईआ। जिथ्थे कीमत सोना रुपा पए कोई ना टका, जगत माया ना कोए चतुराईआ। इक्को एकँकार सिर रखे आपणा हथ्था, मेहर नज़र उठाईआ। आदि तों अन्त तक सिख सदा सतिगुरु दा बच्चा, शब्द गुरु आपणी गोद उठाईआ। जो साढे तिन्न करोड़ लूं लूं अन्दर रचा, रचना आपणी दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा नाम वर, वस्त इक्को इक वरताईआ। गुरसिख ग़रीब होवे ना कदे कंगाल, कौडी हट्ट ना कदे विकाईआ। जेहड़ा शब्द गुरु दा लाल, ओह गुरसिख गोबिन्द गोद उठाईआ। एथे ओथे बणे दलाल, विचोला होवे सभनीं थाँईआ। नाता तोड़ के काल महाकाल, मेहर नज़र इक टिकाईआ। आत्म परमात्म रखे नाल, विछोड़ा अन्त रहे ना राईआ। लै जाए सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, जिथ्थे इक्को नूर जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा नाम वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। गुरसिख ग़रीब होवे ना जग, जागरत जोत शब्द गुरु रुशनाईआ। जगत तृष्ना मिटे अग्ग, हउमें रोग गंवाईआ। हँस बणे कग, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। सतिगुर दरस करे उपर शाह रग, माया ममता मोह चुकाईआ। शब्दी राग सुणे अनहद, नाद आप सुणाईआ। एका इक दी बणे यद, बंस इक्को इक सुहाईआ। सतिगुर सिख सिख सतिगुर कदे ना होवे अड्ड, सतिगुर गोबिन्द गया जणाईआ। ओह सदा सदा सद लडावे लड, गुरमुखां बण के पिता माईआ। कूड़ी क्रिया कर देवे रद्द, अग्गे मार्ग इक चलाईआ। सच दवारे लए सद्द, सदा हुक्म नाम शनवाईआ। गुरमुख सतिगुर मंज़ल चढ़ना भज्ज, विष्न ब्रह्मा शिव अग्गे दिसण सीस निवाईआ। सचखण्ड दवारे जाणा सज, जिथ्थे सज्जण मिले नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच वर, सच संदेशा नर नरेशा नर हरि आपणा इक सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन डण्डावत, निव निव सीस झुकाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म तेरी वेखी बनावट, लख चुरासी रंग रंगाईआ। सानूं अन्तिम आई थकावट, दर ठांडे दईए दृढ़ाईआ। कलयुग जीवां अन्दर आई जहालत, बुध बिबेक ना कोए कराईआ। नौ खण्ड पृथ्मी दिसे ना कोई सच अदालत, सत्त दीप हुक्म हाकम ना कोए सुणाईआ। जिधर तक्कीए कूड़ बनावट, कूड़ी

क्रिया नाल समझाईआ। धर्म दी धार ना रही अमानत, अमल रिहा ना जगत लोकाईआ। चारों कुण्ट अंधेरी शामत, शमां दीप ना कोए जलाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले परवरदिगार सांझे यार कर सख़ावत, सखी सुख़न इक निभाईआ। कल्पना कूड़ मेट अलामत, अलाह इक्को नूर नूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण प्रभू वेख लै आपणी दुनिया, ख़ालक ख़लक खोज खुजाईआ। नूर रिहा ना ऋषीआं मुनीआं, सति सच ना कोए समाईआ। विद्वान रिहा कोए ना गुणीआं, अन्तर भेव ना कोए चुकाईआ। कलयुग सिर उत्ते रहिण नहीं दितीआं चुन्नीआं, नपड़द मेरी दुहाईआ। भाग लग्गे ना साढे तिन्न हथ्थ काया कुलीआं, दीपक दीआ ना कोए जलाईआ। माया ममता मोह विकार विच कान्हा तेरीआं सखीआँ रुलीआं, सांतक सति ना कोए कराईआ। बिना हरि के नाम तों जगत लाल करदा बुल्ह़ीआं, धुर दा रंग ना कोए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण प्रभ आपणी वेख लै सृष्टी, श्रेष्ट नज़र कोए ना आईआ। साबत रिहा कोए ना इष्टी, ईश जीव पई दुहाईआ। धर्म दा रिहा ना कोए गृहस्ती, नेत्र नैण सर्ब तकाईआ। झगड़ा तक लै दोज़ख़ बहिश्ती, पैग़म्बर कूक कूक सुणाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप साबत रिहा कोई ना सिदकी, सबूरी अन्दर ना कोए टिकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आपणी पूजा करा लै इक दी, एकँकार तैनूं दईए जणाईआ। कलयुग कूड़ी काया वेख लै विकदी, कीमत टकयां वाली पाईआ। किसे नूं ख़बर नहीं परमात्म तेरे मित दी, मित्र प्यारे तेरा प्रेम ना कोए निभाईआ। जिस दा लेख चार जुग कलम शाही रही लिखदी, कातब बण के कीती वड्याईआ। अन्त कल तेरी निशानी जांदी मिटदी, मेटणहारे साडी दुहाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहे साडी आशा पुरख अकाल तेरे दवारे पिटदी, रो रो दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल कर दे आपणी वार थित दी, जिस दी थित वार जुग चौकड़ी समझ किसे ना आईआ।

६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ महिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड सोल्ह़ ज़िला अमृतसर

जोत धार कहे मैं चार जुग भज्जी नट्ठी, अवतार पैग़म्बर गुरु रूप प्रगटाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तेरी बणी रही पट्ठी, निमाणी हो के सेव कमाईआ। दीन मज़्ह़ब तपाउंदी रही भट्ठी, अग्नी तत्तां विच प्रगटाईआ। तेरा खेल दस्सदी

रही हठी, सति सरूप बेपरवाह बेपरवाही विच समाईआ। नाम कलमा रही रटी, ढोले सिफ्तां वाले रहे गाईआ। अक्खरां वाली पढ़ाउंदी रही पट्टी, लेखा लिख कलम शाहीआ। जगत वणजारन चलाउंदी रही हट्टी, दर दवार मात खुल्हाईआ। महिमा सिफ्त दी लिखाउंदी रही फट्टी, लाईनां सतरां विच वखाईआ। दस्सदी रही वसया घट घटी, घट अन्तर बैठा डेरा लाईआ। भाग लगावे काया मट्टी, साढे तिन्न हथ्थ पंज तत तेरे कदमां उत्ते सिर रही सट्टी, नैण अक्ख ना कोए उठाईआ। जुग चौकड़ी खट्टी खट्टी, खटका मूल रिहा ना राईआ। सिफ्त कीती बिना भट्ट भट्टी, ढोले राग जणाईआ। निरगुण हो के जगदी रही निक्की जेही वट्टी, बुतखाने कर रुशनाईआ। मेरे साहिब सुल्तान मैं सृष्टी कर ना सकी इक्ट्ठी, इक रंग ना कोए रंगाईआ। वक्ख वक्ख बन्ह्ी गट्ठी, भार जगत वाला उठाईआ। अन्त उलटी गेड़ दे लट्ठी, चार जुग दा झगड़ा दे मुकाईआ। कथा कहाणी इक दस्सी, दहि दिशा देणी पढ़ाईआ। लेखा जाण चार लख अस्सी, चुरासी भेव रहे ना राईआ। जन भगतां राय धर्म गलों लाह रस्सी, फाँसी गल ना कोए लटकाईआ। कलयुग मेट अंधेरी मस्सी, नूर चन्द इक कर रुशनाईआ। तेरी बस्ती इक्को होवे वसी, दूजा गृह नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। जोत धार कहे मैं चार जुग भज्जी दौड़ी, नट्ठी वाहो दाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लाई पौड़ी, डण्डा तेरा नाम लगाईआ। बेअन्त तेरी बेअन्त खेल मुझे ना औड़ी, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। साचे मार्ग सृष्टी चले थोड़ी, धर्म दी धार ना कोए बणाईआ। कलयुग काया होई कौड़ी, अमृत रस ना कोए चखाईआ। सदी चौधवीं सके कोई ना होड़ी, होका दे के दयां सुणाईआ। मेरी आयू रह गई थोड़ी, लोकमात ना कोए चतुराईआ। अग्गे भगत भगवान दी होवे जोड़ी, जोड़ी दो जहान बणाईआ। मेहरवान महिबूब आपणी वस्त दे दे भोरी, भोरे विच पैण दी लोड़ रहे ना राईआ। तेरे अग्गे नहीं कोई ज़ोरी, निउँ निउँ के सीस झुकाईआ। मैं चार जुग दी बांकी छोहरी, वलीए छलीए तेरा भेव कोए ना पाईआ। कलयुग अन्तिम मेरी बौहड़ी, रो रो के दयां सुणाईआ। साहिब सतिगुर बण भोरी, अन्तर आत्म खोज खुजाईआ। एस वेले तेरी लोड़ी, लुड़ींदे सज्जण हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। जोत धार कहे मैं फिर फिर थक्की, थकावट विच दुहाईआ। मैं चार जुग दी अक्की, अक्ल बुद्धी तों परे दयां सुणाईआ। मैं लख चुरासी तकी, वेखां थांउँ थाँईंआ। तेरा प्यार करे कोई ना हकी, हकीकत सच ना कोए समझाईआ। दीन दुनी होई शकी, शिकवा सके ना कोए मिटाईआ। किरपा कर पुरख समर्थी, तेरे अग्गे वास्ता पाईआ। आपणा दरस दे निज नेत्र नैण अक्खी, अक्ख प्रतख आप खुल्हाईआ। मैं तेरे घर दी

६५० २२

सखी, सुख़न सच रही सुणाईआ। तूं साह पातशाह शहिनशाह नाम दा लखी, तोट नज़र कोए ना आईआ। तेरे चरण कँवल सरनाई ढट्ठी, धूढ़ी मस्तक ख़ाक रमाईआ। सदी चौधवीं जांदी टप्पी, टप्पा आपणा दे पढ़ाईआ। भाग लगा दे काया मट्टी, गृह मन्दिर होए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां अन्दर सदा वसीं, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। जोती नार कहे मैं वेख्या चार चुफेरा, कुण्ट बैकुण्ट ध्यान लगाईआ। दिसया अंध अंधेरा, जोत नूर ना कोए चमकाईआ। वसया कोई ना खेड़ा, घर मन्दिर ना वज्जे वधाईआ। बन्नया किसे ना बेड़ा, संसार सागर पार ना कोए कराईआ। भरमां ढाया किसे ना डेरा, हउमें रोग ना कोए चुकाईआ। स्वामी दिसे ना नेरन नेरा, गृह मन्दिर ना कोए रुशनाईआ। मैं वास्ता पाउंदी सतिगुर शब्द शब्द गुर शेरा, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। अगला समां दस्सदा तेरा, तीर्थ तट रहे कुरलाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म ला ना देरा, ब्रह्म तेरी आस रखाईआ। भेव खोल्ह दे तूं मेरा मैं तेरा, आत्म परमात्म परमात्म आत्म मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग रंगा दे सञ्झ सवेरा, दुतीआ भओ रहे ना राईआ।

६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ कर्म सिँघ दे गृह पिण्ड मीआं पुर

पुरख अकाल कहे मैं वेखां कलयुग कल, जोती धार नार दृढ़ाईआ। जो चार कुण्ट दहि दिशा वध्या छल, अछल छलधारी फोल फुलाईआ। नेत्र वरोलां अट्ठ सठ जल, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती भेव रहे ना राईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर लहिणा दस्सां बावन बल, बल धारी आप सुणाईआ। जिस कारन अवतार पैग़म्बर गुरु देवां घल, संदेशा नाम शब्द शनवाईआ। ओह खेल तकां बैठ उपर धाम निहचल अटल, सचखण्ड साचे आसण लाईआ। क्यों जगत जहान कूड़ी क्रिया गया रल, माया ममता मोह विच हल्काईआ। हरि का नाम सिमरे घड़ी ना पल, पलकां पिच्छे प्रभ नज़र किसे ना आईआ। अन्तिम सब नूं देवां फल, लेखा वेखां थांउँ थाँईंआ। सदी चौधवीं धुर दा हुक्म जाए कदे ना टल, अटल आप सुणाईआ। लख चुरासी पावां डूँघी डल, समुंद सागर टिल्ले पर्बत देण दुहाईआ। शब्द अगम्मी भेज के दल, कूड़ दलिद्दर दयां गंवाईआ। अन्त अख़ीर लेखा जाणां जल थल, महीअल पड़दा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड निवासी आपणा हुक्म सुणाईआ। जोती नार धार मैं वेखां जगत जहानां, निरगुण सरगुण भेव चुकाईआ।

योद्धा सूरबीर बण बलवाना, बलधारी वेस वटाईआ। कलि कल्की पहरया जामा, नूर नूर कर रुशनाईआ। खेल खिलावां बण अमामा, पैग़म्बरां पन्ध मुकाईआ। धुर दा डंक वजा दमामा, दो जहानां दयां डराईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां ज़िमीं असमानां, आपणा रंग रंगाईआ। हुक्म सुणावां गोपी कान्हा, सीता रामा नाल मिलाईआ। कलयुग मेट अंधेरी शामा, शमां नूर इक चमकाईआ। लेखा तकां साढे तिन्न हथ्थ ग्रामा, काया खेड़ा खोज खुजाईआ। अन्तिम वरत आपणा भाणा, भावी सब नूं दयां वखाईआ। शाहो भूप बण के राणा, रईयत खोजां चाँईं चाँईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरि भगत सुहेला वेख निमाणा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ शब्द दस्स के गाणा, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह हक हक शनवाईआ। पुरख अकाल किहा जोती नार धार मैं वेखां जगत, सृष्टी दृष्टी इष्टी फोल फुलाईआ। निरगुण धार जामा पहिरया फ़कत, फ़िकरा इक्को इक सुणाईआ। चार जुग दी आपणी विच छुपा के शक्त, शक्तीशाली इक अख्वाईआ। सन्त सुहेले प्रगटा भगत, भगवन आपणा रंग रंगाईआ। लेखे ला के बूँद रक्त, तन वजूद दए वड्याईआ। कलयुग अन्त सुहा के वक्त, वेला आपणे रंग रंगाईआ। लेखा जाणे अर्श फ़र्श उपर धरत, धरनी धवल धौल भेव रहे ना राईआ। योद्धा सूरबीर बण मर्दाना मर्द, मुद्दा आपणा इक दृढ़ाईआ। शरअ छुरी तोड़ के करद, कत्लगाह दा लेखा दए मुकाईआ। चार वरन अठारां बरन ग़रीब निमाणयां वंडे दर्द, दुखियां आपणी गोद उठाईआ। कलयुग मेट अंधेरा गर्द, सतिजुग सच करे रुशनाईआ। झगड़ा मेटे मन्दिर मस्जिद चर्च, शिवदुआले मढ्ढ ना कोए चतुराईआ। गुरमुखां मनसा पूरी कर के हरस, हवस कूड़ी बाहर कढ्ढाईआ। जोती धार दे के दरस, जन्म मरन दी तृखा दए बुझाईआ। अमृत मेघ बूँद स्वांत निझर झिरना बरस, कँवल नाभी आप खुल्हाईआ। गृह मन्दिर अन्दर सच स्वामी आवे परत, पतिपरमेश्वर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सच जैकारा बोले इक्को गरज, ग़रज़ दो जहानां पूर कराईआ।

✪ ६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ बीबी बंती दे गृह पिण्ड मीआं पुर ज़िला अमृतसर ✪

पुरख अकाल किहा जोती नार धार मैं अन्त सब किछ करना, करनी करता इक अख्वाईआ। लख चुरासी मेरे हथ्थ जीणा मरना, गेड़े विच विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर भय भउ विच डरना, देवत सुर सीस सके

६५२
२२

ना कोए उठाईआ। हुक्मे अन्दर शब्दी अगम्मी ढोला सब ने पढ़ना, रसना जेहवा बत्ती दन्द सिफ्त सालाहीआ। हरि भगत दवार गृह मन्दिर अन्दर दरसाउणा इक घरना, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा इक खुल्हाईआ। इक्को निमस्कार करना प्रभ दे चरणा, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर्म कांड ने झड़ना, सतिजुग सति सति वरताईआ। माया ममता मोह हँकार विकार हड़्हना, डोरी नाम शब्द बंधाईआ। परवरदिगार सांझे यार दी इक्को दिसे सरना, सरनगति इक रखाईआ। नेत्र लोचन नैण निरगुण धार दरस कर सर्ब ने तरना, हरिजन बेड़ा शौह दरया ना कोए रुढ़ाईआ। मंज़ल अगम्मी चढ़ना, पुरी लोअ आकाश पाताल अग्गे हो ना कोए डराईआ। कलयुग अन्तिम खेल करे नरायण नरना, नर हरि आपणा हुक्म वरताईआ। झगड़ा मेटे दीन मज़्ब ज़ात पात वरना बरना, अन्तर आत्म पड़दा इक चुकाईआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी भाणा सब ने जरना, जगत जरवाणा सीस ना कोए उठाईआ। सच सुच सच दा मार्ग धरना, घड़न भन्नणहार आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। नव सति सति स्वामी आपे खड़्हना, सन्मुख हो के दो जहानां नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा वेखे धरनी धरत धवल धौल उपर धरना, धरनापति हो के पड़दा आप उठाईआ।

✪ ६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ अवतार सिँघ दे गृह पिण्ड काउंके ✪

पुरख अकाल कहे मैं सब किछ जाणा, जानणहार इक अख्वाईआ। जुग चौकड़ी वरतावां आपणा भाणा, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। योद्धा सूरबीर बण मर्द मर्दाना, हुक्म इक्को इक सुणाईआ। कलयुग अन्तिम जोत सरूप पहन के बाणा, बाण अणयाला तीर चलाईआ। तख्तों लाह के राजा राणा, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स के गाणा, ब्रह्म पारब्रह्म मेला देणा मिलाईआ। सचखण्ड दवारा एकँकारा दस्स इक निशाना, निशाने पिछले दूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी वड वड्याईआ। पुरख अकाल कहे मैं करां खेल अपार, अपरम्पर आप दृढ़ाईआ। लेखा जाण सर्ब संसार, संसारी भण्डारी सँघारी पड़दा दयां चुकाईआ। सब दा लहिणा देणा वेखां इक्को वार, एकँकार होके पड़दा आप चुकाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप रहिण देवां ना धूंआँधार, निरगुण नूर करां रुशनाईआ। माया ममता मोह विकार कूड़ी क्रिया मेट हँकार, हउमे हंगता गढ़ दयां तुड़ाईआ। सच दवारे सद्द गुरु अवतार, पैग़म्बरां नाल मिलाईआ। भगत सुहेले नेत्र लोचन नैण कर उज्यार, अक्ख प्रतख खुल्हाईआ। हुक्म संदेशा

देवां आपणी धार, शब्दी शब्द शब्द शनवाईआ। उठो सारे करो विचार, विचरण दी लोड़ रहे ना राईआ। क्यों सृष्टी दी दृष्टी अन्दर होई खुआर, खूनखार जगत लोकाईआ। धुर दा नाम कलमा अन्तर निरन्तर सके ना कोए उच्चार, आचरण सच ना कोए जणाईआ। कूड़ वासना सारे होए गिरफतार, बन्धन सके ना कोए तुड़ाईआ। धर्म दी मौले ना कोए बहार, बसन्त रुत ना कोए महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर हुक्म इक सुणाईआ। पुरख अकाल कहे मैं वेखां खेल सृष्ट सुबाई जग, जग जीवण दाता हो के फोल फुलाईआ। क्यों आत्म परमात्म इष्ट गई छड, नाता जुड़या कूड़ लोकाईआ। क्यों तिन्न सौ सट्ठ हाडी लग्गी अग्ग, नाड़ बहत्तर दए गवाहीआ। सति दवारा कोई ना सके लभ्भ, गृह मन्दिर ना मिले वड्याईआ। मन वासना सारे रहे भज्ज, सुरत शब्द ना कोए समाईआ। पिछली कीती शब्दी सतिगुर कर देणी रद्द, अग्गे हुक्म हुक्म प्रगटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा अवतार पैग़म्बर गुरुआं गाउणा छंद, सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर बोलणा गज्ज, बिना रसना जेहवा जेहवा रसन हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म दी धार इक प्रगटाईआ। पुरख अकाल किहा दया कमावांगा। दीनां अनाथां वेख वखावांगा। सगला साथा आप निभावांगा। सतिजुग राथा मात चलावांगा। झगड़ा मेट के ज़ाता पाता, पतिपरमेश्वर इक दृढ़ावांगा। कलयुग रहिण ना देवां अंधेरी राता, सतिजुग चन्द इक रुशनावांगा। दीन दुनी दा बण के दाता, नाम भण्डारा इक वरतावांगा। सब दा बण के पिता माता, लख चुरासी गोद उठावांगा। निरगुण धार हो के राखा, सरगुण सेवा सच कमावांगा। भेव खोल्ह अलखणा अलाखा, अलख अगोचर आपणा रंग रंगावांगा। कलयुग अन्तिम मेट के वाटा, कूड़ी क्रिया पन्ध चुकावांगा। जन भगतां पूरा कर के घाटा, काया रोग सर्ब गवावांगा। धुर दी धार सिर उपर इक्को छाता, छत्रधारी हो के वेख वखावांगा। पूरी मनसा कर के आसा, मनसा पूर करावांगा। निरगुण नूर कर प्रकाशा, अंध अंधेर कूड़ मिटावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर साचा इक वखावांगा। गृह मन्दिर इक उपजावांगा। दीआ बाती डगमगावांगा। अनहद नादी शब्द सुणावांगा। ब्रह्म ब्रह्मादी वेख वखावांगा। हँस कागी काग हँस बणावांगा। जिन्हां भगतां सोई सुरती जागी, जागरत जोत विच रुशनावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच वर, सच दा पड़दा आप उठावांगा। सच पड़दा आप उठाएगा। दयानिध दया कमाएगा। जन भगतां कारज कर के सिद्ध, सिद्धमार्ग इक रखाएगा। मन मनुआ अन्तर विध, अणयाला तीर नाम चलाएगा। कूड़ी क्रिया मेट के चिन्द, ज़िंदगी आपणे लेखे लाएगा। जो लहिणा देणा लिख्या वेद रिग, अथर्बण पूरी

आप कराएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन पार कराएगा। हरिजन प्रभू दा मीत, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। काया करे ठांडी सीत, अग्नी तत बुझाईआ। अन्तर निरन्तर परख के नीत, मेहरवान होए सहाईआ। जोती धार वसे चीत, ठगौरी मन रहे ना राईआ। चरण कँवल बख्श प्रीत, प्रीतम आपणे घर वसाईआ। पिछला लेखा पिच्छे गया बीत, अग्गे गुरमुखां दए वड्याईआ। सतिगुर कदे ना देवे पीठ, पुसत पनाह हथ्थ टिकाईआ। मिठ्ठे कौड़े करे रीठ, अमृत नाम रस चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि साहिब सहिज सुखदाईआ। हरि साहिब सच्चा सुखदायक, सिरजणहार गोपाल। आदि जुगादी नायक, मेहरवान मेहरवान मेहरवान। कलयुग होए सहायक, दाता श्री भगवान। गुरमुख बणाए लायक, देवे नाम निधान। झगड़ा मिटाए माटी ख़ायक, जोती नूर नूर रुशनान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे दरस दरस नौजवान। देवे दरस दरस प्रभ ठाकर, हरि वडा वड वड्याईआ। हरिजन पार कराए कलयुग सागर, नईया नौका नाम चढ़ाईआ। एथे ओथे दो जहानां देवे आदर, अदर्श आपणा इक वखाईआ। निर्मल कर्म कर उजागर, दुरमति मैल दए धुआईआ। हरिजन कलयुग कल्पणा विच कदे ना होवे पाग़ल, बुध बिबेक आप कराईआ। भाग लगा के काया गागर, गहर गम्भीर दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच वर, सच पर्दा आप चुकाईआ। सच पर्दा आप चुकाउंदा ए। साहिब सतिगुर दया कमाउंदा ए। नौ दवारे पन्ध मुकाउंदा ए। ईड़ा पिंगल सुखमन डेरा ढाहउंदा ए। कँवल कँवल कँवल उलटाउंदा ए। कँवल नाभी रस चुआउंदा ए। शेष सहँसर मुख खुल्हाउंदा ए। ब्रह्म ब्रह्मादी राग सुणाउंदा ए। दीआ बाती आप जगाउंदा ए। नूर नुराना डगमगाउंदा ए। घर साचा इक वखाउंदा ए। जिस गृह आपणा आसण लाउंदा ए। तख्त ताज इक वडयाउंदा ए। शाहो भूप भूप अख्वाउंदा ए। सति सरूप रूप वटाउंदा ए। महिमा अनूप कोए ना भाउंदा ए। अन्तिम कलयुग करना कूच, कूचा गली साफ़ कराउंदा ए। जन भगतां बणा के आपणा ताणा पेटा सूत, सूत्रधारी वेख वखाउंदा ए। गुरमुख गुरसिख बणा के आपणे सपूत, सुत दुलारे गोद उठाउंदा ए। जन्म जन्म दा कर्म कर्म दा चारों कुण्ट रंग रंगाउंदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंज तत तत काया भूत, भूतक हो के वेख वखाउंदा ए।

✪ ७ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ नरैण सिंघ दे गृह गुमान पुरा ज़िला अमृतसर ✪

पुरख अकाल कहे मैं तकां लख चुरासी, जोती नार धार समझाईआ। साचे मण्डल पावे कोए ना रासी, सुरत शब्द गोपी काहन रंग ना कोए रंगाईआ। दीन दुनी कूड़ कल्पना होई मधरा मासी, मस्त खुमारी नाम ना कोए चढ़ाईआ। धर्म धार दी रहे किसे ना आसी, कूड़ क्रिया जगत हल्काईआ। आत्म परमात्म बणे कोए ना दासी, पारब्रह्म ब्रह्म सेव ना कोए कमाईआ। चार वरन अठारां बरन नव सत्त करे हासी, हस्ती तके ना कोए बेपरवाहीआ। मैं पूरी करां अवतार पैग़म्बर गुरुआं आखी, आख़र आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं उम्मत रसूलां नबीआं करे कोए ना राखी, ईसा मूसा मुहम्मद नेत्र रोवे मारे धाईंआ। रामा कृष्ना बणे किसे ना साथी, सगला संग ना कोए निभाईआ। अमृत हथ्थ आवे ना गोबिन्द बाटी, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वेख वखाईआ। कलयुग जीव साची मंज़ल चढ़े कोए ना घाटी, पैंडा पन्ध ना कोए मुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा पढ़े कोए ना गाथी, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान पढ़ पढ़ झट लँघाईआ। धुर दी धार समझे कोए ना भविक्ख्त वाकी, पेशीनगोई सब दी दयां जणाईआ। कलयुग मेट अंध अंधेरी राती, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ। करे खेल अलखणा अलाखी, अलख अगोचर धुरदरगाहीआ। जिस दा रूप सदा बहुभांती, कलि कल्की वेस वटाईआ। सच धर्म दी खोल्हे हाटी, हटवाणा इक्को नज़री आईआ। झगड़ा मेटणा ज़ाती पाती, दीन मज़्हब करे ना कोए लड़ाईआ। हुक्म संदेशा देवे कमलापाती, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जिस दा खेल बाज़ीगर नाटी, स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि साहिब बेपरवाहीआ। पुरख अकाल कहे मैं तकणा जगत जहान, जहालत वेखां थांउँ थाँईंआ। दीन दुनी दा तकां ईमान, धर्म दी धार खोज खुजाईआ। मानव रसना जेहवा वेखां ज़बान, अन्तर निरन्तर फोल फुलाईआ। सृष्टी दृष्टी तकां मार ध्यान, भेव अभेदा इक खुल्हाईआ। पड़दा लाह के साढे तिन्न हथ्थ मकान, काया काअबा खोज खुजाईआ। सदी चौधवीं कलयुग अन्त की करे जगत इन्सान, इन्सानीअत वेखां थांउँ थाँईंआ। शब्द अगम्मी मार के बाण, अणयाला तीर इक चलाईआ। प्रगट हो के योधा सूरबीर बलवान, बलधारी कार कमाईआ। धर्म चला के इक निशान, निशाने दो जहान बदलाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर सीस झुकाण, विष्न ब्रह्मा शिव निउँ निउँ लागण पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि सच्चा सहिब सुखदाईआ। पुरख अकाल कहे मैं तकां दीन दुनी दा लहिणा, लख चुरासी खोज खुजाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं मन्नां कहिणा, जो कूक कूक गए सुणाईआ। सब नूं भाणा पैणा सहणा, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। कलयुग अन्त वखाउणा

नैणां, हरिजन नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। नाता तुटणा भाई भैणां, साक सज्जण सगला संग ना कोए रखाईआ। जो आसा रखी बाल्मीक विच रमाइणा, राम दा राम वेख वखाईआ। जो हुक्म संदेशा दिता काहन कृष्न युधिष्टर दी सैना, सैनापत आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। पुरख अकाल कहे मैं वेखां दीन दुनी दा लेखा, जो जुग चौकड़ी अवतार पैग़म्बर गुर गए जणाईआ। निरगुण धार करके वेसा, रूप अनूप आप प्रगटाईआ। प्रकाश करके सम्बल देसा, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। निरगुण धार करके हेता, सरगुण देवे माण वड्याईआ। आदि पुरख भुल्ले कदे ना चेता, चेतन सब नूं दए कराईआ। अमाम अमामा बण के नेता, पीर पैग़म्बरां वेख वखाईआ। जिस ने गोबिन्द सुत दुलारे लए भेंटा, चारे आपणे रंग रंगाईआ। ओह बण के खेवट खेटा, धुरदरगाही आया धुर दा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे दो जहान वसणहारा सचखण्ड साचे देसा, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमी असमानां खोज खुजाईआ।

✪ ७ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ जीत सिँघ दे गृह पिण्ड गुमान पुरा ज़िला अमृतसर ✪

पुरख अकाल कहे जोती नार धार वेख लै आपणी अक्खां, अक्खरां वाली जगत पढ़ाईआ। दीन मज़्हब दे तक लै पक्खां, जो नाम कल्मयां वंड वंडाईआ। सिख मुरीद तक लै लक्खां, अरबां खरबां विच गणित गणाईआ। किसे दी कीमत रही ना कौडी कक्खां, काया माटी कम्म किसे ना आईआ। कलयुग अन्त अख़ीर सिर्फ़ आपणे भगत रखां, जो इक्को मेरा नाम ध्याईआ। जिन्हां दा इष्ट बण गया पथ्थर वट्टे इट्टां, सिल पूजस पाहन सीस निवाईआ। उन्हां दीआं सचखण्ड दवारे दिसण कोए ना चिटां, पास हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। वेख बावरीआं होईआं लिटां, जटा जूट रोवण मारन धाईंआ। राय धर्म दे खाते, सिट्टां, सिट्टा सब दा वेख वखाईआ। शब्दी हुक्म नाल जुग चौकड़ी जित्तां, एह मेरी बेपरवाहीआ। मेरीआं समझ सके कोए ना वार थितां, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। क्यों आदि तों अन्त अन्त तों आदि मैं सब दा पिता, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। इक्को सुत दुलारा लाडला निक्का, जो गोबिन्द आपणे संग रखाईआ। जिस दा सतिजुग विच पूरन प्रकाश दा चलणा सिक्का, मोहर लग्गे थांउँ थाँईंआ। तूं मेरा मैं तेरा सतिगुर शब्द चिट्ठी रसैण देणा दो जहान चिट्ठा, ब्रह्मण्डां खण्डां आप वरताईआ। आपणा खेल जगत जहान आप नजिट्ठा, दूसर संग ना कोए रखाईआ। जो मंज़ल पिछली ते लेखा

सवा गिड़ा, जन भगतां मेहर नज़र नाल पार लँघाईआ। एथे ओथे करां हित्ता, हितकारी हो के दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि पुरख अपरम्पर स्वामी इका, एकँकार इक अख्वाईआ।

७ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ हरनाम सिँघ दे गृह पिण्ड गुमानपुरा ज़िला अमृतसर

पुरख अकाल कहे मेरा हुक्म हुक्म अबिनाश, बिनस कदे ना जाईआ। सतिजुग दी धार लेख होवे पूरन प्रकाश, मोहर इक्को नाम लगाईआ। जिस नूं अवतार पैग़म्बर गुर सारे करन पास, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। वरते वरतावे पृथमी आकाश, गगन गगनंतर आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। पुरख अकाल कहे हुक्म हुक्म समराथे, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। निरगुण सरगुण होवे साथे, सगला संग बणाईआ। जोती नार धार सर्ब आखे, अनबोलत बोल जणाईआ। तेरा खेल प्रभू प्रभ साचे, सच तेरी वड्याईआ। धर्म धार दे तेरे नाते, नर नरायण बन्धन इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पुरख अकाल कहे शब्द अणयाला तीर गया छुट, कमंद इक्को इक खिचाईआ। लेखा जाणे अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। भगत सुहेले दुलारे उठाए सुत , अपरम्पर आपणे रंग रंगाईआ। छब्बी पोह नूं पूरन प्रकाश दी मोहर लग्गी होवे सब दे सज्जे उत्ते गुट्ट, लाल रंग रंगाईआ। अग्गे भाग ना जाण निखुट्ट, भगवन देवे माण वड्याईआ। चरण प्रीत ना जाए टुट, टुटयां लए जुड़ाईआ। गलवकड़ी पा घुट्ट, आत्म परमात्म संग वखाईआ। दीन दुनी दी रहिण ना देवे फुट्ट, मज़्ब दी वंड ना कोए वंडाईआ। सच सुहञ्जणी सुहा के रुत, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पर्दा रहिण ना देवे लुक, ओहला सब दा दए चुकाईआ।

७ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ मंगल सिँघ दे गृह पिण्ड सारंगढ़ा ज़िला अमृतसर

कलयुग कहे मेरे साहिब सतिगुर हज़ूर, श्री भगवान सीस निवाईआ। मेरी आसा मनसा पूरी कर ज़रूर, शाह पातशाह शहिनशाह तेरी इक सरनाईआ। मैं निउँ निउँ मस्तक लावां धूढ़, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। निगाह मार लै मैं सृष्टी दृष्टी रंग

चाढ़या गूढ़, कालख टिक्के दिते लगाईआ। चतुर सुघड़ बणा के मूर्ख मूढ़, माया ममता विच फसाईआ। कोई रहिण नहीं दिता योधा बीर सूर, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। सारे तैथों कीते दूर, गृह मन्दिर वेखण कोए ना आईआ। अवतार पैग़म्बर कीते मजबूर, वेखण थांउँ थाँईंआ। साचा बेड़ा नज़र ना आवे कोए पूर, पूरन ब्रह्म ना कोए समझाईआ। सब दी बुद्धी कीती चूर, मन ममता मोह हल्काईआ। साधां सन्तां अन्दर भर ग़रूर, हँकार विच दिती वड्याईआ। की होया जे सूली चढ़या मनसूर, तत्तां खल्ल लुहाईआ। की होया जे जल्वा तक्कया कोहतूर, मूसा मसीह कीती रुशनाईआ। सदी चौधवीं तक मैं रहिण नहीं दिता हक नूर, हकीकत पड़दा ना कोए उठाईआ। तेरा कलमा होया मफ़रूर, खोज्जयां हथ्थ किसे ना आईआ। जिधर वेखें ओधर कलयुग कहे मेरा नाम मशहूर, तेरा नाम ना कोए ध्याईआ। तूं सचखण्ड बैठा रिहों दूर, दूर दुराडा आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, साहिब तेरी इक सरनाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं तेरा सुत दुलारा, जुग चौथा नज़री आईआ। आपणा प्रगट कर बलकारा, बलधारी दयां जणाईआ। चार कुण्ट वेख हाहाकारा, सांतक सति ना कोए वरताईआ। नाम भुलाया पैग़म्बर गुर अवतारा, अवतरी तेरी सार कोए ना पाईआ। तेरे नाम दा आत्म परमात्म लाए कोए ना नाअरा, नर नरायण तेरे विच ना कोए समाईआ। तेरा रूप अनूप वेखे कोए ना अगम्मी लाड़ा, जोती धार नार ना कोए सेव कमाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले मेरा तेरे अग्गे हाढ़ा, हौका भर के सीस निवाईआ। मैनूं खुशी नाल सदी चौधवीं अन्त वेख लैण दे इक अखाड़ा, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप नाल मिलाईआ। जिस दा खेल शुरू होणा दिवस सतारां हाढ़ा, वदी सुदी वंड ना कोए वंडाईआ। मैनूं अग्नी ला लैण दे घर घर बहत्तर नाड़ा, हउमे हंगता रोग जलाईआ। मैनूं फिर लैण दे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, टिल्ले पर्बत समुंद सागर फोल फुलाईआ। मैनूं तक लैण दे मर्द नारा, स्त्री पुरुष खोज खुजाईआ। मेरे मेहरवान महिबूब अजे ते हुण होणा मुज़ाहरा, ज़ाहरा रूप वटाईआ। माँ पुत्र नाल करे प्यारा, पिता कन्या वल्ल तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच देणी माण वड्याईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरी हथ्थ मार दे उत्ते छाती, छत्रधारी दया कमाईआ। वेख लै अवतार पैग़म्बर गुरुआं दे हुन्दयां कीती अंधेरी राती, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। तेरी पढ़े कोए ना गाथी, धुर दा नाम ना कोए ध्याईआ। झगड़ा प्या ज़ात पाती, दीन दुनी रही कुरलाईआ। सच दी करे कोए ना राखी, खण्डा हथ्थ ना कोए चमकाईआ। तूं सब दा पूरा करना भविक्ख्त वाकी, पेशीनगोई तेरे अग्गे टिकाईआ। जो कथा कहाणी गोबिन्द माछूवाड़े आखी, सो पुरख अकाले तेरे अग्गे टिकाईआ। बेशक मेरी मुकणी अन्तिम वाटी, लोकमात पन्ध रहे ना राईआ।

पर मेरे साहिब परमात्म मैं वी चार कुण्ट किसे गृह जगण नहीं देणा दीवा बाती, महल्ल अटल ना कोए सुहाईआ। जगत झगड़ा पैणा ज़रूर गोबिन्द वाली विसाखी, वसाह के सतिगुर शब्द दए लड़ाईआ। जिस वेले मेरी मुके वाटी, वाटां सब दीआं दयां मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरी पिठ ते मार दे थपकी, हथ्थ पुश्त पनाह रखाईआ। आह वेख मैं पौड़ी बणाई पप दी, दीन दुनी दिती चढ़ाईआ। जेहड़ी रसना जेहवा तैनूं जपदी, ढोले सिफ्तां वाले गाईआ। ओह जंगल जूहां विच फिरे लभ्भदी, खोज्जयां हथ्थ किसे ना आईआ। मैं खेल कीती तेरे सबब दी, सभनां दिता भुलाईआ। अन्दर वड़ के दस्सया बूँद स्वांती ना कमल्यो किसे लभ्भदी, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। तुहाडी रहिणी हो जाए परमात्म नालों अड्ड दी, वक्खरा घर बणाईआ। एसे कारन प्रभू कलयुग दुनिया तैनूं छडदी, तेरा संग ना कोए रखाईआ। मेरी आशा हिस्सेदार अन्तिम अध दी, गोबिन्द गोबिन्द गया जणाईआ। जिस वेले कल्पणा वधी जग दी, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। तृष्ना लग्गणी अग्ग दी, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। कलयुग जीवां बुद्धी होणी कग्ग दी, हँस रूप ना कोए वखाईआ। बाहरों मूर्त होणी बगले बप्प दी, अन्तर नूर ना कोए चमकाईआ। पुत दी आसा होणी पिता दे रत्त दी, कत्लगाह बणे लोकाईआ। रच्छया करनी नहीं किसे ने पति दी, पतीबरता रूप ना कोए वटाईआ। वड्याई होणी मनमत्त दी, गुरमत्त सारे जाण भुलाईआ। तेरी जोत खेल होणी शक दी, शिकवा सके ना कोए गंवाईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरी इक्को आवाज़ हक दी, धुर दे हाकम दयां सुणाईआ। दुनिया नूं लज्जया होणी कूड़े नक्क दी, तेरी लज्जया ना कोए रखाईआ। उस वेले सदी चौधवीं होणी टप्पदी, चौदां तबक टापूआं विच आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं तेरा सुत छोटा, नन्हा बच्चा नज़री आईआ। भावें तेरे किन्ने नाम जपण कोटन कोटां, फिर वी तैनूं मिलण कोए ना पाईआ। मैं सब दे अन्दर मन मनुआ कीता खोटा, खरा रूप ना कोए दरसाईआ। साबत रहिण नहीं दिता किसे दा लंगोटा, सति विच ना कोए समाईआ। जिस कारन गोबिन्द वारे जिगर दा टोटा, बाले नींहां हेठ दबाईआ। उस दी धार विच गुरसिख मारे कोए ना गोता, लहर विच लहर ना कोए समाईआ। मेरे साहिब सुल्तान वेख लै मैं किडा संभालया मौका, मुकम्मल दयां जणाईआ। किसे नूं चढ़न नहीं देंदा तेरे नाम वाली नौका, कन्ढी बैठी ख़लक खुदाईआ। डर रहिण नहीं दिता तेरे भउ का, भय विच सीस ना कोए झुकाईआ। प्यार रहिण नहीं दिता पिता मांओं का, भैण भाई संग ना कोए वखाईआ। मेरा खेल वेख जो लाया कलयुग दाओ का, दाअ आपणा दयां दरसाईआ।

पवित्र गृह रहिण नहीं दिता साढे तिन्न हथ्थ ग्राउँ का, मन्दिर अन्दर ना कोए सफ़ाईआ। रूप बदलया साध सन्त सुभाओ का, सति विच ना कोए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वर दाते तेरे अग्गे झोली डाहीआ। कलयुग कहे प्रभू मेरी अन्त वेख लै खेल, ख़ालक दयां जणाईआ। साचा रहिण नहीं दिता कोई सज्जण सुहेल, मित्र मीत ना कोए अख्वाईआ। गुरु चेल करे कोई ना मेल, मेला हरि जगदीश ना कोए वखाईआ। तेरा भेव सदा नवेल, अक्ल बुद्धी समझ किसे ना आईआ। मैं सदी चौधवीं उम्मत उम्मती सारे करने फ़ेल, खेल सब दा वेख वखाईआ। अन्तिम लेखा होणा धर्म राए दी जेल, बन्धन सके ना कोए कटाईआ। मैनूं तेरी सेवा विच मेरे स्वामी कदे नहीं मिलदी वेहल, दिवस रैण तेरी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति दवारे आस रखाईआ। कलयुग कहे पुरख अकाल मैं तेरा सुत सोहणा, जोबनवन्ता नज़री आईआ। जिस ने कूड़ी क्रिया दा मुख धोणा, सति सच देणा गंवाईआ। किसे दा खुल्ल्हण नहीं देणा तीजा लोयणा, लोचण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। तेरे घर दा बणन देणा नहीं कोए पराहुणा, दरगाह सच मिलण कोए ना आईआ। आपणा खेल करना अनहोणा, परवरदिगार
६६१ तेरी ओट तकाईआ। सदी चौधवीं सब नूं फड़ फड़ कोहणा, ज्यों बक्करा हथ्थ कसाईआ। चारों कुण्ट पए रोणा, उत्तर ६६१
२२ पूरब पच्छम दक्खण तेरा नाम दुहाईआ। गूढ़ी नींद पए किसे ना सौणा, सुत्तयां लवां जगाईआ। फेर तेरी चरणी छोहणा, २२
सीस जगदीश देणा निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी किरपा नाल मैं सब दे अन्दर बीज कूड़ दा बोणा, फुलवाड़ी घर घर देणी महकाईआ।

✪ ८ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ कारज सिँघ दे गृह पिण्ड सारंगढ़ा ज़िला अमृतसर ✪

कलयुग कहे प्रभू मैं तेरा सुत बलकारी, जोबनवन्ता इक अख्वाईआ। जगत जहान खेल कीती न्यारी, निरँकार निरवैर तेरी ओट तकाईआ। जूठ झूठ दी फेर बहारी, सच सुच्च हर हिरदिउँ दिता कढ्ढाईआ। हउमे रोग लगा बीमारी, तन वजूद पाई दुहाईआ। झगड़ा करा के नर नारी, स्त्री मर्द दिते लड़ाईआ। पिता पूत दी कर ख्वारी, भाई भाईआं नाल टकराईआ। सच दी रहिण नहीं दिती यारी, यार यारां दग़ा कमाईआ। पवित्र रहिण नहीं दिती कोई अटारी, महल्ल अटल रहे कुरलाईआ।

गुर दर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मड्ढ माया ममता फिरे विभचारी, कुकर्म आपणा इक जणाईआ। साची मंज़ल धर्म दी चढ़े कोए ना खारी, ख़ालस रूप ना कोए वखाईआ। मैं साहिब सतिगुर तेरे चरणां दा पुजारी, पूजस पूजस सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं तेरा प्यारा पुत्र, दर ठांडे दे वड्याईआ। मुहब्बत विच चुक्क लै कुच्छड़, गोद आपणी लै टिकाईआ। मैं तेरी सेवा विच सारी सृष्टी कीती भुक्खड़, सांतक सति ना कोए कराईआ। अग्गे झगड़ा पाउणा पच्छम पूरब उत्तर, दक्खण रंग रंगाईआ। कोई शाह सुल्ताना लुक्या रहिण देणा नहीं विच नुक्कर, चारे कुण्टां फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं तेरा पूत सपूत बड़ा चलाक, चलाकी इक वखाईआ। दीन मज़्ब कोई रहिण नहीं दिता पाक, रसूल पैग़म्बर रोवण मारन धाईंआ। घर घर विच रिहा ना कोए इत्फिाक, निफ़ाक विच दुहाईआ। नाता जुड़या रहे नाँ सज्जण साक, सगला संग ना कोए निभाईआ। तेरे अवतार पैग़म्बर गुरुआं दा मेरी करनी कारन होणा नहीं पूरा भविक्ख्त वाक, पेशीनगोई पेशवा जो गए सुणाईआ। सति सच दा रहिण ना दिता इख़लाक, ख़ालक तेरी ख़लक दिती लड़ाईआ। कूड़ क्रिया खोल्ह के ताक, पड़दा सब दा दिता उठाईआ। जिधर वेखो ओधर अंधेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। सचखण्ड दवारा सचखण्ड निवासी परवरदिगार सांझे यार मैनूं दे ख़िताब, मुख़ातब हो के दे जणाईआ। मैं खेल खेलणा मक्का मदीना काअब, काअब्यां रंग रंगाईआ। मुहम्मद दा पूरा करना खवाब, सदी चौधवीं वेख वखाईआ। उम्मत उम्मती मिलणा अज़ाब, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। मेरे मित्र प्यारे अहिबाब, मुहब्बत विच तेरे कदमां सीस निवाईआ। तूं शहिनशाह शाह आली जनाब, शहिनशाह तेरी इक सरनाईआ। जो नानक संदेशा दे के गया बगदाद, शब्द अगम्मा इक दृढ़ाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त नूर नुराना आवे आप, आप आपणा वेस वटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्से जाप, धुर दा ढोला सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं सूरबीर सुल्ताना, वड्डा इक अख्वाईआ। धर्म दा रहिण नहीं दिता निशाना, कूड़ दा डंक दिता वजाईआ। जगत जहान कर दीवाना, बुध सुध दिती भुलाईआ। चारों कुण्ट दिसे वीराना, वैरी घर घर डेरा लाईआ। तेरे नाम दा रिहा ना कोए मस्ताना, मस्त खुमारी नाम ना कोए चढ़ाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक होया बेईमाना, बेवा रूप होई लोकाईआ। मैं खुशीआं विच गावां तेरा सिफ्त तराना, तरह तरां सुणाईआ। वेखणा खेल जगत जहानां, चुरासी पड़दा आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा

धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तेरा शब्द हुक्म इक फ़रमाना, फरमांबरदार हो के सीस निवाईआ।

✪ ८ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ दलीप सिंघ दे गृह पिण्ड मानांवाला ज़िला अमृतसर ✪

कलयुग कहे प्रभ मैं तेरा फ़र्ज़ंद बड़ा जबर, जाबर जगत जहान अख्वाईआ। तेरा हुक्म शेर बब्बर, शहिनशाह मन्न के खुशी बणाईआ। पैग़म्बर सुआए विच कबर, गोरां विच कुरलाईआ। सदी चौधवीं उम्मती वेखणा टब्बर, घराने शरअ वाले फोल फुलाईआ। आपणी पूरी करनी सध्धर, सदमा होणा जगत लोकाईआ। चारों कुण्ट पाउणा गदर, गदागर करां लोकाईआ। जेहड़े परवरदिगार तेरा नहीं करदे कदर, कत्लगाह देवां वखाईआ। अन्त करां आपणा अदल, कूड़ क्रिया नाल रलाईआ। सूफ़ीआं भुलाया तेरा वतन, बेवतन देण दुहाईआ। साचा नज़र ना आवे पत्तन, कन्ढ्ढा घाट पार ना कोए कराईआ। दूर दुराडे सारे तैनूं तक्कण, निज नेत्र दरस कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं तेरा दुलारा दूल्हा, लोकमात सोभा पाईआ। तेरा हुक्म हुक्म नहीं भूला, अभुल तेरी शरनाईआ। तेरी मस्तक ला के धूला, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त सति रहिण नहीं दिता मूला, अमल अमल विच्चों चुकाईआ। नाता तोड़या कन्त कन्तूहला, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। सदी चौधवीं मैं खुशीआं विच ना समावां फूला, फुल्ल फुलवाड़ी मेरी सर्ब महकाईआ। मैं सब नूं वेखदा तेरा नाम गाउंदे नाल बुल्लां, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। भाग लग्गया नहीं काया कुल्ला, काअबा हक ना कोए जणाईआ। तेरा मानव मेरे राज विच शाह सुल्ताना बण के रुला, रहमत हक ना कोए कमाईआ। सति दर मिले कोए ना तुल्ला, तूल अर्ज़ पन्ध ना कोए चुकाईआ। मेरे मालक ख़ालक प्रितपालक मेरे जुग विच वेख लै चार कुण्ट अंधेरा झुल्ला, तेरा नूर नज़र कोए ना आईआ। अमृत जाम सब दे अन्दर डुल्ल्हा, जो गोबिन्द जाम गया प्याईआ। मानव मानस जीवण फल सब दा हुल्ला, पत्त टहिणी सर्ब रही कुरलाईआ। उठ वेख प्रभू तेरी चरण प्रीती कोए ना घोल घुला, आपा वार ना कोए वखाईआ। मेरा मोह विकार हँकार विभचार दर दवारा खुल्ला, जूठ झूठ भण्डारा दिता वरताईआ। भावें अवतार पैग़म्बर गुरु साहिब तूं भेजे सुल्हकुला, सुल्ला सक्या ना कोए कराईआ। सब दे अन्दर त्रैगुण अग्नी तपाया चुल्ल्हा, अमृत मेघ सके ना कोए बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तेरी सरनाईआ। कलयुग कहे मेरे परवरदिगार मैं

तेरा सुत दलेर, सूरबीर अख्वाईआ। मैं सब तों वड्डा केहर, चारों कुण्ट भय जणाईआ। तेरी दीन दुनिया कीती ज़बर ज़ेर, ज़ेर ज़बर रूप दरसाईआ। तेरे नाम वाली रहिण नहीं दिती मेहर, मेहरवान वेख वखाईआ। मन कल्पणा काया अन्दर छेड़ दिती छेड़, दीन मज़्हब मज़्हब नाल टकराईआ। हउमे हंगता पा के झेड़, चक्र ज़ात पात समझाईआ। आत्म परमात्म आउण नहीं दिता नेड़, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। सति धर्म दी जड़ दिती उखेड़, गुरदर मन्दिर मस्जिद देण गवाहीआ। मैनूं याद आउंदा कलयुग कहे जो अन्त संदेशा दिता विच नदेड़, शब्दी शब्द शब्द शनवाईआ। मेरा पुरख अकाला दीन दिअला कलयुग अन्तिम झगड़ा दए नबेड़, दूसर चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच वर, मेरे साहिब बेपरवाहीआ। कलयुग कहे मेरे प्रभू मैं तेरा सूरबीर बहादर, जंगजू अख्वाईआ। मेरे करते करीम कादर, तेरी कुदरत वेख वखाईआ। तेरा रहिण नहीं दिता आदल, इन्साफ़ हक ना कोए कमाईआ। पिता पुत्त दा बणया कातिल, मक्तूल कीती लोकाईआ। सूफ़ीआं पड़दा चुक्के कोए ना बातन, ज़ाहर ज़हूर तेरा नूर ना कोए रुशनाईआ। जिधर तके अंधेरी रातन, चौदस चन्द ना कोए रुशनाईआ। एस वेले नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चौदां तबक चौदां लोक सारे आखण, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल कूक कूक सुणाईआ। कलयुग कलि कल्की आवे पुरख समराथन, समरथ दाता वड वड्याईआ। जो झगड़ा मेटे ज़ात पातन, दीन मज़्हबां डेरा ढाहीआ। आत्म परमात्म देवे साथन, सगला संग बणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्से गाथन, धुर दा नाम इक समझाईआ। रूह बुत करे पाकन, दीन मज़्हबां डेरा ढाहीआ। आत्म परमात्म देवे साथन, दुरमति मैल करे सफ़ाईआ। सब नूं कर के दासी दासन, गृह मन्दिर इक वखाईआ। जिथ्थे सांझा होवे जापन, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड ना कोए वंडाईआ। लख चुरासी दा बण के माई बापन, पिता पुरख अकाल गोद उठाईआ। कलयुग कहे मैं वेखां खेल तमाशन, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। मेरे साहिब सुल्तान जेहड़े तेरा नाम ना वाचण, अन्तर निरन्तर प्रेम ना कोए रखाईआ। मन मनुआ अन्दर नाचण, दहि दिशा उठ उठ धाईआ। उन्हां दा अन्तिम करां घातन, घाउ तेरा नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, साहिब सुल्तान पुरख समराथण, समरथ तेरे हथ्थ वड्याईआ।

८ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ चरण सिंघ दे गृह पिण्ड मानांवाला ज़िला अमृतसर

कलयुग कहे प्रभ तेरा नाम वजावां डंका, डौरु कूड़ हथ्थ उठाईआ। साबत रहिण देवां ना कोए दवार बंका, बंक

दवारी तेरी आस रखाईआ। झगड़ा पावां राउ रंका, राज राजानां शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। सदी चौधवीं जगत बणावां बणता, घड़न भन्न्णहार तेरी ओट रखाईआ। वेस वटावां अनेक अनका, अकल कलधारी होणा आप सहाईआ। फिरी दरोही चार कुण्ट विच जनता, मानव मानस मानुख नेत्र नीर वहाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर गढ़ बणावां हउमे हंगता, हँ ब्रह्म ना कोए समझाईआ। राज राजाना होवे मंगता, घर घर अलख जगाईआ। मेरा वेला अन्तिम जांदा लँघदा, समां समें विच्चों बदलाईआ। नगारा वज्जणा भुक्ख नंग दा, सांतक सति ना कोए कराईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप झगड़ा पैणा मज़्बी जंग दा, जगत जहान दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं तेरी ओट रखां, दूसर सीस ना कोए निवाईआ। मैं शाह सुल्तानां करां लखों कक्खां, साबत नज़र कोए ना आईआ। नव सत्त दहि दिशा दिवस रैण नट्ठां, भज्जां वाहो दाहीआ। धर्म दी धार डोर कटां, कटाक्ष तेरा नाम लगाईआ। झगड़ा पावां पथ्थर इट्टां, पाहन रो रो मारन धाईआ। साधां सन्तां साबत रहिण ना देवां लिटां, जटा जूट सर्ब कुरलाईआ। मन कल्पणा विच जगत जिज्ञासू सिट्टां, बाहर सके ना कोए कढ्ढाईआ। तेरा सति संदेश अगम्मा लिखां, बण कातब धुरदरगाहीआ। जो सिख्या गोबिन्द दे के गया सिक्खां, सिदकी सिख नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। कलयुग कहे पुरख अकाल मेरी झोली भर, भारत खण्ड दे वड्याईआ। तूं मालक नरायण नर, नर हरि तेरी बेपरवाहीआ। मैं भिखारी बणया दर, दर दरवेश अलख जगाईआ। निरगुण धार फड़या लड़, पल्लू आपणे नाल लैणा बंधाईआ। निरभउ कर दे निडर, भय सिर ना कोए रखाईआ। मैं लहिंदी दिशा मक्के मदीने जावां वड़, काअब्यां पड़दा दयां उठाईआ। दीन दुनी वेखां तेरा गृह घर, मन्दिर मस्जिद फोल फुलाईआ। जिथ्थे शरीअत वाली होवे शर, शरअ शरअ नाल टकराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, परवरदिगार तेरी बेपरवाहीआ। कलयुग कहे मेरे परवरदिगार महिबूब, मेहरवान तेरी सरनाईआ। तेरी मंज़ल तक अर्श अरूज, आलीशान सीस निवाईआ। तेरी मंज़ल हक मकसूद, दर इक्को इक वड्याईआ। सदी चौधवीं मेरे अन्दर दे दे इक सूझ, समझ आपणे नाल मिलाईआ। मैं ख़ाक उडावां काया पंज भूत, तत्व तत तत जलाईआ। तेरा फेर अख्वावां सच सपूत, सूरबीर अख्वाईआ। कूड़ी सृष्टी करावां कूच, कूचा गली करां सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दी वस्त इक वरताईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरी धुरदरगाही कर मदद, मुद्दा तेरे हथ्थ वखाईआ। मैं चारों कुण्ट करां तशदद्, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ।

सृष्टी हिंदस्यां विच वखावां गिणती वाले अद्दद, शुमार नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे धुर दा वर, दर मांगत सीस निवाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं अन्तिम सोया उठणा, आपणी लवां अंगड़ाईआ। तेरा भाणा कदे ना रुकणा, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। इक्को सीस जगदीश झुकणा, दूसर अवर ना कोए सरनाईआ। सदी चौधवीं मूल ना लुकणा, लुकमा करां सर्ब लोकाईआ। शंकर नाल रलावां जो चार जुग दा भुक्खणा, लख चुरासी खा के शुकर मनाईआ। तेरी किरपा नाल विष्नूं दा भण्डारा लुट्टणा, कुमेर रोवे मारे धाईआ। ब्रह्मे ब्रह्म धार किसे ना पुछणा, पुश्त पनाह हथ्थ ना कोए रखाईआ। किसे दवारे रहे कोए ना सुचना, सच धर्म ना कोए चतुराईआ। चार जुग दा धर्म दा बेड़ा पुट्टणा, अन्तिम जड़ देणी पुटाईआ। फेर शाह सुल्तानां लुट्टणा, ख़ाकी ख़ाक मिलाईआ। कोटां विच्चों किसे विरले भगत तेरे नाम दा गाना बन्न्हां गुट्टना, जो तेरा तेरे विच समाईआ। बाकी सब दा नाता तुटणा, अवतार पैग़म्बर गुर होए ना कोए सहाईआ। फेर मैनूं कहीं शाबाश कलयुग मेरे पुत्तना, सपूत तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण धार जोत निरँकार साहिब स्वामी परवरदिगार तुट्ठणा, यामबीन तेरी सरनाईआ।

८ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ धन्नतो दे गृह मानावाला ज़िला अमृतसर

कलयुग कहे प्रभू मेरे बाले नौ सौ चौरानवे, सेवादार संग रखाईआ। जिन्हां चारों कुण्ट खेल खिलावणे, खिलाउणे कूड़ वाले वरताईआ। लेखे तकणे बवन्जा अक्खर बावने, बलि बावन गया जणाईआ। रूप वटाउणे आहमणो साहमणे सन्मुख हो के नज़री आईआ। जो भविक्ख्त सीता दस्सया राम ने, सति विच समझाईआ। कृष्न अर्जन दस्से गावणे, गा के गया सुणाईआ। कलयुग जीवां तीर्थ बड़े नहावणे, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले भज्जण थांउँ थाँईंआ। पुरख अकाल दे दरस किसे ना पावणे, नूर नज़र किसे ना आईआ। ज़ोर पाउणा लोभ मोह हँकार काम ने, कामनी होए जगत लोकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर पकड़े कोए ना दामने, दामनगीर ना कोए अख्वाईआ। सहायता करनी नहीं सिफ्ती नाम ने, रसना जेहवा ना कोए वड्याईआ। उस वेले प्रगट होणा श्री भगवानने, भगवन आपणी दया कमाईआ। झगड़े मुकाउणे चम्म दृष्टी चाम ने, चमक आपणा नूर कर रुशनाईआ। लेखे मुकणे क्षत्री ब्राह्मणे, शूद्र वैश ब्रह्म आपणा पड़दा लाहीआ। कलयुग कहे मैं उस वेले सर्ब हुक्म मानणे, मन्न के दयां वखाईआ। अग्नी लावां घर घर खेड़ा ग्रामने, साढे तिन्न हथ्थ तत जलाईआ। साबत

रहे ना कोए इंतज़ामने, बन्दीख़ाने विच दुहाईआ। कोटां विच्चों अबिनाशी करते भगत पहचानने, पहचान आपणी आप दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच संदेशे दए पैग़ामने, पैग़म्बर नार धार समझाईआ।

✪ ८ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ गुरदित सिँघ दे गृह
पिण्ड मानावाला ज़िला अमृतसर ✪

कलयुग कहे प्रभू मेरा रूप ख़ालस, ख़ालस दयां सुणाईआ। साहिब सतिगुर बणीं सालस, विचोला इक अख्वाईआ। मैं सब नूं दीनां मज़्बां दा देणा लालच, लोभ नाम कलमे वाला जणाईआ। जो कहि के गया तेरा गोबिन्द बालक, सो पूरा देणा कराईआ। ख़ाली करनी तेरी ख़लक ख़ालक, मख़लूक वेख वखाईआ। मेरे हुक्म दी वेख जहालत, घर घर बैठी डेरा लाईआ। एस वेले सारी दुनिया दा जगत कुकर्म बणया मालक, मालक धुर दे तेरा ध्यान ना कोए रखाईआ। सति दी करे ना कोए अदालत, इन्साफ़ हथ्थ ना कोए वखाईआ। बेशक तूं सब दा प्रितपालक, मेहरवान बेपरवाहीआ। पर मेरी कूड़ क्रिया दी वडी नालश, जो सब नूं दए भुलाईआ। तैथों विछड़यां मस्तक लावां कालख, टिक्के लोकमात वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच वर, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं किडा चंगा, चंगी तरह जणाईआ। उलटे वहिण वहाई गंगा, गोदावरी जमना सुरस्ती नाल मिलाईआ। रस रहिण नहीं दिता धार खण्डा, खड़ग खड़ग ना कोए खड़काईआ। जगत जहान कीता नन्गा, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। विद्वान रिहा ना कोए पंडा, मुल्ला शेख़ मसला हक ना कोए सुणाईआ। चारों कुण्ट कूड़ विकार दा दंगा, झगड़ा पाया थाउँ थाँईंआ। अग्गे वास्ते इक्को मंग मंगां, दर तेरे सीस निवाईआ। जे तूं साहिब सूरा सरबंगा, सदा सद सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मैं झगड़ा मुकाउणा बोदी धोती जञ्ञू तहिमत तम्बा, इक्को वेस देणा वखाईआ। बेशक मेरा पैंडा शास्त्र ग्रन्थ दरसदे लम्बा, आयू हिन्दस्सयां विच गिणाईआ। पर तेरी किरपा नाल मेरा पिछला वक्त लँघ, अग्गे लेखा छेती देणा मुकाईआ। कुछ याद कर लै जिस वक्त लुबाणे जहाज़ लगाया कन्ढा, बहादर चादर तेरा रूप दरसाईआ। अन्त मेरा सीना करीं ठंडा, दर तेरे अलख जगाईआ। मैं शुकराना शुकर शरीणीआं वंडां, मेहरवान तेरी ओट तकाईआ। मैं बन्दगी वाला रहिण देणा नहीं कोई बन्दा, बन्दी छोड़ दर तेरे आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक

नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरी निमस्कार डण्डावत बन्दना सजदा उस अगम्मी पलँघा, जिस दा पावा चूल लुहार तरखाण ना कोए घड़ाईआ।

✪ ८ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ हज़ारा सिँघ दे गृह पिण्ड छीना ज़िला अमृतसर ✪

कलयुग कहे प्रभ मेरा सफ़र ना करीं लम्बा, अग्गे अवर ना कोए वधाईआ। मैं सुत दुलारा तेरे गृह जम्मा, जम्मण वाली अवर कोए ना माईआ। तेरे हुक्म अन्दर कलयुग जीवां कीता निकम्मा, धर्म दी धार ना कोए रखाईआ। उठ वेख जगत जिज्ञासू रोंदे छम्म छम्मां, धीरज धीर ना कोए धराईआ। सदी चौधवीं मेरा आया समां, पैग़म्बरां दयां हिलाईआ। उम्मत उम्मती वसाया नहीं कोई दमा, मुहम्मद दामनगीर लओ अंगड़ाईआ। झगड़ा मेटणा काया चम्मा, चम्म दृष्टी देणी बदलाईआ। कूड़ संदेशा सब नूं देणा बिना कन्नां, अन्दरे अन्दर आप जणाईआ। पुरख अकाल तैनूं मन्नण तों सारे करने मन्ना, नास्तिक रूप देणे दरसाईआ। प्रकाश होण देणा नहीं किसे तनां, निरगुण जोत ना कोए रुशनाईआ। इक वार मैनूं वी कहि दे गोबिन्द वांग आ मेरया चन्ना, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मैं फेर लख चुरासी दीआं तैनूं दस्सां गल्लां, भेव अभेद दयां खुल्हाईआ। तेरे अवतार पैग़म्बर गुरु लोकमात इक्ठे कलयुग कहे मैं इक इकल्ला, फिर वी कलधारी आपणी कल दरसाईआ। फेरां दरोही जलां थलां, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती अठ्ठ सठ्ठ नीर सीर रहिण कोए ना पाईआ। गृह गृह अन्दर घर घर काया मन्दिर करां हल्ला, हालत सब दी दयां बिगड़ाईआ। जिस कारन मुहम्मद तेरा नाम सिफ्त सालाहया अल्ला, अलाह तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे ओट तकाईआ। कलयुग कहे मेरे पुरख अकाल मैं तेरा सुत हीरा, चौथा जुग सोभा पाईआ। मैं किसे दे अन्दर रहिण नहीं देणी धीरज धीरा, धर्म दी धार ना कोए रखाईआ। सब नूं पा के शरअ ज़ंजीरा, शरीअत विच देणा बंधाईआ। सच दा मार्ग कर के भीड़ा, कूड़ दे रस्ते देणा लगाईआ। सीस रहिण देणा नहीं किसे लीड़ा, ओढण उपर ना कोए टिकाईआ। मैं मोह हँकार विकार दा चुक्कया बीड़ा, साहिब सुल्तान आपणे कंध उठाईआ। मैं झगड़ा पाउणा हस्त कीड़ा, कीट हस्त देणे लड़ाईआ। मैं खेल वेखणा ऊचा नीचा, वरन बरन फोल फुलाईआ। मैं साढे तिन्न हथ्थ काया नापणी कर्म कांड दा लै के फीता, फ़तवा सब दे उत्ते देणा लगाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार सब दा बणाउणा मीता, यारी कूड़ नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी तेरे अग्गे सीस निवाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं तेरा पूत अच्छा, अच्छी तरह सुणाईआ।

tूं मेरी करनी रच्छा, रच्छक हो के दया कमाईआ। मैं रहिण नहीं देणा कोई सच्चा, कूड़ दा डंका देणा वजाईआ। दरोही फराउणी मदीना मक्का, काअबा नेत्र नैणां नीर वहाईआ। झगड़ा पाउणा बूरा कक्का, कामल मुर्शद तेरी ओट तकाईआ। भाई भैण कोई रहिण नहीं देणा सका, पिता पूत नाल टकराईआ। कूड़ कुड़यारयां मार्ग दस्सां, चारों कुण्ट अक्ख खुल्हाईआ। कोटां विच्चों कोए विरला तेरा भगत बणे बच्चा, जो बचपन तेरी झोली पाईआ। जिन्हां ने अजपा जाप तेरा जपा, तिन्हां नूं निउँ निउँ सीस निवाईआ। बाकी सब दा इक्को वार मार के फक्का, शंकर नाल देणा रलाईआ। तेरी पूजा दा किसे नूं लैण देणा नहीं कोई टका, टकयां वाली कीमत देणी गंवाईआ। मैं सूरबीर बहादर तेरा योधा हट्टा कट्टा, गुरु गोबिन्द गया समझाईआ। जिस वेले सदी चौधवीं अन्तिम पूरा होया पटा, पटने वाला निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। जिस दे नाम दा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप इक्को लग्गणा ठप्पा, मोहर इक्को इक वखाईआ। जिस दा चार कुण्ट दहि दिशा संसार बुद्धी अन्दर लग्गे किसे ना पता, पतिपरमेश्वर समझ कोए ना पाईआ। उस ने इक्को शब्द गुरु नाल पकाउणा मता, मति मतांतर दा डेरा ढाहीआ। सति दी धार विच्चों सब दा बदल के सफा, सफा मलेछ देणी उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे दवारयों तेरे नाम दा खट्टां नफ़ा, नुकसान नज़र कोए ना आईआ। मैं धर्म दी रहिण दिती नहीं कोई सेज, सुहागण रूप ना कोए वटाईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरा वेख तप तेज, चारों कुण्ट नज़री आईआ। जिस कारन मैनूं दिता भेज, मैं भजन बन्दगी देणी गंवाईआ। कूड़ी क्रिया चाढ़ के नौ नौ नेज़, नव दवार देणे भराईआ। जेहड़ी किसे नूं नहीं कोए उमेद, ओह करनी कर के देणी वखाईआ। साधां मंज़ल रहिण नहीं देणी सेध, नूर जोत ना कोए चमकाईआ। माण रहिण देणा नहीं चार वेद, विद्याहीण ख़लक खुदाईआ। जेहड़े रसना पढ़न कतेब, अक्खरां विच सालाहीआ। ओह तेरा नाम जगत दवारे रहे वेच, कीमत टकयां वाली पाईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरा खेल विशेष, विषयां विच सारे दिते भरमाईआ। मैं तेरे दवारे होया पेश, निउँ निउँ सीस निवाईआ। अग्गे नूं पूजा रहे ना कोए गणपति गणेश, पाहन सीस ना कोए निवाईआ। जो हुक्म संदेशा दे के गया दस दशमेश, गोबिन्द गोबिन्द धार जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणी रेख, रक्षक हो के वेख वखाईआ। इक दरसाउणा सचखण्ड साचा देस, दरगाह साची दे समझाईआ। तूं मालक ख़ालक बणना नर नरेश, नर हरि तेरी सरनाईआ। सतिजुग अन्दर सब दे होवण मुच्छ दाढ़ी केस, केसगढ़ दी शहादत इक भुगताईआ। लेखा रहे ना मुल्लां शेख़, शरीअत आपणी देणी समझाईआ। चार जुग दा पूरा करना भविक्ख्तां वाला लेख, लेखक हो के आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा

६६६
२२

वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा लहिणा देणा आदि जुगादि जुग चौकड़ी हमेश, हम साजण तेरी सेव कमाईआ।

६७० ६७०

२२ २२

✪ ६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ सुरिन्दर सिँघ दे गृह पिण्ड भुल्लर ज़िला अमृतसर ✪

कलयुग कहे प्रभ बख्श दे आपणा ज़ोर, जोरू ज़र दीन दुनी दयां रुलाईआ। सदी चौधवीं करां अंधेरा घोर, तेरा नूर चन्द ना कोए चमकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी पावां शोर, शौहर बांके तेरी ओट तकाईआ। मुरीद मुर्शद उठावां विच्चों गोर, मकबरे देण दुहाईआ। झगड़ा मुकावां जिन्नां खाधे पशू ते ढोर, तत्तां खल्ल लुहाईआ। जेहड़ी सृष्टी तेरे दर तों हो गई चोर, ठग्गां वाला रूप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी सरनाईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरी आसा होर वड्डी, हरि वड्डे दयां जणाईआ। मेरा कूड़ निशाना जगत जहान गड्डीं, गाईड गॉड खुद बणाईआ। ममता मोह विकार विच दीन दुनी दब्बी, सिर सके ना कोए उठाईआ। तेरा नूर नज़र ना आवे रब्बी, यामबीन तेरी बेपरवाहीआ। क्यों मैं अन्त अख़ीर करना मुहम्मद दी चौधवीं सदी, सदमा घर घर पहुंचाईआ। चार जुग दी पिछली रहिण नहीं देणी गद्दी, गदागर करां लोकाईआ। पुरख अकाले तेरे अग्गे झोली अड्डी, दोवें ख़ाली हथ्थ दुहाईआ। मेहरवान महिबूब मेरी आशा मन्नीं, मनसा रिहा जणाईआ। जो माया ममता विच बण गए धनी, तिन्नां करनी अन्त सफ़ाईआ। जो चुग़ली निंदिआ सुणदे कन्नीं, खुदी विच हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा हुक्म सुणाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैनूं करदे इक इशारा, ऐशो इशर्त वेखां थांउँ थाँईंआ। साचा रहिण ना देवां कोए दवारा, धर्म दी धार ना कोए वड्याईआ। हर हिरदे अन्दर भरां कूड़ विकारा, काम क्रोध लोभ मोह हल्काईआ। तन वेसवा रूप दसां श्रृंगारा, कलयुग जीवां मन मति बुध बदलाईआ। भय रहिण ना देवां गुरु अवतारा, पैग़म्बरां सीस ना कोए निवाईआ। तेरे चरण कँवल करे ना कोए निमस्कारा, सजदा सीस ना कोए झुकाईआ। चार कुण्ट वखावां धूंआँधारा, नूर ज़हूर ना कोए प्रगटाईआ। झगड़ा पा के मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ गुरदवारा, मज़्हब मज़्हब नाल टकराईआ। मन वासना खेल वेखां विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी सिर सके ना कोए उठाईआ। फेर निरगुण निरवैर रूप धार आवें तूं दुबारा, आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान तेरी वड्याईआ। कलयुग कहे प्रभ मेरे अन्दर मार दे रमज़, रहमान तेरी सरनाईआ। मैं कायनात

दी बदल देणी समझ, बुध बिबेक रहिण ना पाईआ। तेरा भाणा वरतणा ग़ज़ब, गहर गम्भीर समझ किसे ना आईआ। सदी चौधवीं सारे होणा तअज्जुब, हैरानी घर घर देवां वखाईआ। मेरे राज विच तेज विच प्रताप विच अवतार पैग़म्बर कर सके कोए ना मदद, नाम कलमा ना कोए वखाईआ। मैं तन सरीर दे अन्दर करनी तशदद्, शरअ शरअ नाल टकराईआ। मेरा लेखा लहिणा देणा होवे नकद, उधार अग्गे ना कोए वखाईआ। मैं टकरा देणा दीन मज़्हब, ज़ात ज़ाती नाल लड़ाईआ। इक्को हुक्म मन्नणा तेरा सतिगुर शब्द, जो शब्दी शब्द शनवाईआ। इक्को झुकणा तेरे कदम, दूसर सीस ना कदे निवाईआ। सहारा तकणा नहीं किसे बदन, माटी खल्ल ना कोए चतुराईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी कलयुग कहे मेरा कर दे अदल, इन्साफ़ मेरे हथ्थ फड़ाईआ। कोटां विच वेख लै आपणे भगत सुहेले रत्न, अमोलक हीरे लए प्रगटाईआ। बाकी सब दा मानस जन्म दा निसफल जाए यतन, यथार्थ तैनूं मिलण कोए ना पाईआ। मेरा अन्तिम समां मैं कन्ढी खलोता पत्तन, बेड़ा शौह दरया अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दरगाह साची मंग मंगाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं आपणा अन्त वखावां रंगा, रंगत कूड़ दयां चढ़ाईआ। गुर चेले दा रहिण नाँ देवां संगा, मुरीद मुर्शद मिलण कोए ना पाईआ। साधां सन्तां सीस करां नन्गां, ओढण नाम ना कोए टिकाईआ। घर घर अंदर भरमां वाली बणा के कंधा, ओहला तेरे नालों कराईआ। तेरा नज़र ना आवे नूरी चन्दा, जोती जोत ना कोए रुशनाईआ। भावें किन्ना कोई गावे बत्ती दन्दा, रसना जेहवा सिफ्त सालाहीआ। पर आत्मा दा मैं आउण नहीं देणा अनन्दा, परमात्म तेरे विच ना कोए समाईआ। भावे कोई किन्ना नहावे तीर्थ गंगा, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। मेरे राज विच प्रताप विच तेरे नाल कोई ना सके गंढा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी वेखां थांउँ थाँईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी दर तेरे रिहा मंगा, मांगत हो के झोली डाहीआ। मैं चाहुंदा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मेरे कूड़ दा वज्जे मृदंगा, सति सच रहिण कोए ना पाईआ। नौ दवारे तों पार तेरी मंज़ल सके कोए ना लँघा, सच दवारे दरस कोए ना पाईआ। मेरा जोबन कदे ना जावे हंढा, सूरबीर तेरी सरनाईआ। मैनूं फेर पवे ठंडा, जे सारी सृष्टी भुल्ले तेरा नाम कोए ना गाईआ। मेरा खुशी होवे बन्द बन्दा, बन्दगी करके तैनूं सीस निवाईआ। फेर तकां की कहि के गया गोबिन्द पुरी अनन्दा, अनन्दपुर वासी शब्द शब्द शनवाईआ। जिन्हां सरसे धार कीता जंगा, खण्डा खड़ग खड़ग खड़काईआ। जिन्हे अस्व नीले कस्सया तंगा, दस्त कटार इक चमकाईआ। लेखा वेख गढ़ चमकौर कच्ची कंधा, दो जहानां फोल फुलाईआ। फेर तकां जो माछूवाड़े गाया छन्दा, सूलां सथ्थर सेज हंढाईआ। की संदेशा दे के गया गुजरी दुलारा चन्दा, चन्द सितार मुहम्मद

नाल मिलाईआ। तेरा हुक्म सूरे सरबंगा, अन्तिम तेरा राह तकाईआ। सेज सुहञ्जणी रहिण देणी नहीं कोए पलँघा, सुखआसण डेरा कोए ना लाईआ। सब दी नन्गी करनी कण्डा, कन्ढी वाले तेरी ओट तकाईआ। तूं दीन दयाल साहिब बख़्शंदा, बख़्शिश मेरी झोली देणी पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे निउँ निउँ लागां पाईआ। कलयुग कहे प्रभ मैं तेरे दर झुकदा, निव निव करां निमस्कार। मेरा पैंडा जाए मुकदा, मैनूं गोबिन्द दिती हार। वेला रिहा ना लुकदा, प्रगट होवां विच संसार। प्यार रहिण नहीं देणा पिता पुत्त दा, चारों कुण्ट हाहाकार। गुरु चेल्यां तांईं लुटदा, चेले गुरुआं कर ख्वार। झगड़ा पैणा पंज तत बुत दा, बुतख़ाने होणी धूंआँधार। तेरा खेल वखावां उच्च दा, मेरे पीर पीरन सरदार। वखावां नज़ारा उलटे रुख़ दा, जो जन्मे मरे विच संसार। मेरा इहो विचार दुःख दा, तेरे अग्गे देवां उच्चार। अजे समां आउणा होर भुक्ख दा, नाम दा देवे ना कोए उधार। फेर खेल होणा तेरे गोबिन्द दुलारे सुत दा, जोती जाते तेरी जोत करे उज्यार। जिस झगड़ा मुकाउणा द्वैती फुट्ट दा, मेल मिलाए सिरजणहार। पर इक वेरां मेरा वक्त सुहाउणा रुत दा, कलयुग कूड़ी रुतड़ी खिड़े गुलज़ार। मैं अन्त अख़ीर तेरे दर दवारे ठांडे पुछदा, मेरे साहिब परवरदिगार। मुहम्मद किस बिध तेरे दवारे झुकदा, की कलमा रिहा उच्चार। किस बिध चार यारी नालों टुट्टदा, उम्मत उम्मती दए विसार। किस बिध गाना बन्न्हे गुट्ट दा, मैहन्दी लाल रंग अपार। किस बिध लेखा पूरा होणा मनुक्ख दा, मानव मानस लेखा रहे ना विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरे साहिब सच्ची सरकार, सरोकार आपणा वेख वखाईआ।

✪ ६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ भाग सिँघ दे गृह पिण्ड माहल ज़िला अमृतसर ✪

कलयुग कहे प्रभ मेरे अन्तरजामी, अन्तष्करन वेख जगत लोकाईआ। मैं चौथा जुग तेरा सुत अनामी, मांगत हो के झोली डाईआ। मैं साबत रहिण नहीं दिता किसे दा ईमानी, धर्म दी धार ना कोए समझाईआ। सारी सृष्टी कीती क्रोधी कामी, हँकार विकार विच तड़फाईआ। किसे दे अन्दर अवतार पैग़म्बर गुरुआं दी वसण नहीं दिती बाणी, कूड़ दा अणयाला तीर चलाईआ। चारों कुण्ट तक लै प्रभू दिसे अंधेरी शामी, शमां नूर ना कोए चमकाईआ। मन मति दी दुनी होई ग़ुलामी, गहर गम्भीर ज़ंजीर सके ना कोए तुड़ाईआ। झगड़ा वेख उम्मत इस्लामी, इस्म आज़म नजर किसे ना आईआ। सीता राम दी भुल्ली कहाणी, राधे शाम रूप ना कोए दरसाईआ। वाहवा गुरु सतिगुरु तेरी खेल किसे ना जाणी, जानणहार तेरी बेपरवाहीआ।

तेरी किरपा नाल मैं घर घर अन्दर कीती बेईमानी, बेवा रूप कीती ख़लक ख़ुदाईआ। सति सच दे नालों करके ना फ़रमानी, जूठ झूठ दिता अपनाईआ। सब दी काया बस्ती कर बेगानी, सुरत शब्द गाना धागा दिता तुड़ाईआ। मैं चार कुण्ट दहि दिशा फिरां नाल शानी, शहिनशाह तेरा हुक्म मन्नां चाँईं चाँईंआ। अठसठ तीर्थ पवित्र रहिण नहीं दिता पाणी, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नेत्र रोवे मारे धाईंआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ सति दी नज़र ना आए निशानी, निशाना कूड़ दिता चलाईआ। झगड़ा पावां अञ्जील कुरानी, वेद पुराणी संग ना कोए रखाईआ। किसे मंज़ल चढ़न ना देवां रुहानी, रूह बुत पतित पुनीत ना कोए कराईआ। तूं साहिब सुल्तान मर्द मर्दान मेरे उत्ते करीं मेहरवानी, मेहरवान महिबूब तेरी आस रखाईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरी कला दी इक शैतानी, शरअ नाल शरअ देणी टकराईआ। तेरी कायनात करनी दीवानी, बुध बिबेक ना कोए वखाईआ। जिस सृष्टी नूं सब ने दस्सया फ़ानी, फ़नाह करके देणा वखाईआ। सदी चौधवीं सब नूं देणी पैणी कुरबानी, मुहम्मद बैठा आस रखाईआ। झगड़ा पाउणा विच अवामी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तूं आदि अन्त सब दा जाण जाणी, जानणहार इक अख्वाईआ।

६७३

२२

✪ ६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ हजारा सिँघ दे गृह पिण्ड घनूकपुर ज़िला अमृतसर ✪

कलयुग कहे प्रभ मैं खेल खिलाउणी बजर कपाटी सिल दी, सिलसिला अन्दर देणा बदलाईआ। मैं कल्पणा वधाउणी मन नाल दिल दी, दलील दलील विच्चों समझाईआ। कोई आत्मा मेरे अन्त तैनूं ना होवे मिलदी, ब्रह्म पारब्रह्म ना कोए समझाईआ। मैं खेल मिटाउणी इल्ललाह दी, रसूल रसूलां करां सफ़ाईआ। मेरे हुक्म नाल मेरे साहिब धरती होवे हिलदी, पापां भार नाल कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी वड्याईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं तेरे हुक्म दा फड़ना खंजर, खंजीर सृष्टी देणी बणाईआ। कूड़ नगारा वजाउणा सब दे अन्दर, सति सच नज़र कोए ना आईआ। प्रकाश होण देणा नहीं काया मन्दिर, काअबा हक ना कोए वखाईआ। अंधेरा होणा सदी चौधवीं दी कन्दर, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। कलयुग जीव नचाउणे वांग बन्दर, माया डोरी गल लटकाईआ। झगड़ा मुकाउणा सूर्या चन्द्र, चन्द सितार निशान गवाहीआ। तेरे दर ते आया मंगण, भिखारी हो के झोली डाहीआ। मेरे प्यार नाम दा छब्बी पोह बख़्श दे कंगण, कंघा इक्कीआं दन्दां वाला नाल रखाईआ। मैं होका देवां विच वरभण्डण, कूक कूक सुणाईआ।

ख़बर करां जेरज अंडन, उत्भुज सेत्ज आप उठाईआ। इक सौ इक गुरमुखां मस्तक लग्गा होवे चन्दन, चन्दन नाल निम वास महकाईआ। हुक्म देणा सूरे सरबंगण, साहिब सुल्तान तेरी ओट रखाईआ। मेरा तिन्न रंग दा काला होवे बदन, लाल सूहा पीला रंग रंगाईआ। खड़ग नन्गी होवे कंधन, कटार धार चमकाईआ। पुट्ठा डट्ठा होवे पलँघन, सोहणी सेज बणाईआ। नौ अवधूत करदे होण बन्दन, आपणा सीस झुकाईआ। मैं अगला होर भण्डारा आवां मंगण, आपणी आसा नाल प्रगटाईआ। रूप धरया होवे गुरमुख दुष्ट दमन, दामनगीर तेरी सरनाईआ। नौ रंग दा गुंचा बणया होवे चमन, बाग़वान वेख वखाईआ। पंजां लिखारीआं दे मस्तक लिख्या होवे अमन, अक्खर इक्को रंग वखाईआ। चौदां गुरमुख लहिंदी दिशा कम्बण, दन्द दन्दां नाल टकराईआ। चौदां चार कुण्ट लभ्भण, भज्जण वाहो दाहीआ। चौदां पुट्ठी करन बन्दन, सोहणा सीस झुकाईआ। चौदां डंगोरीआं फड़ के खंघण, उभे साह साह दबाईआ। चौदां इक दूजे तों लँघण, पिठ धरत उत्ते छुहाईआ। चौदां प्रभ दी धारों जम्मण, जन्म जन्म विच्चों बदलाईआ। चौदां दे हत्थ विच फड़े होण संमण, पंजाबी हिन्दी विच वखाईआ। पंजां दे मस्तक लग्गे होण खम्बण, गरड़ गरड़ नाल वड्याईआ। चौदां मस्तक ला के रंगण, नीली धार धार दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच मेला आप मिलाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं कंगण करना गोबिन्द भेंटा, आपणी खुशी बणाईआ। जिस नीहां हेठ दबा के बेटा, मेरी जड़ दिती हिलाईआ। मैनूं अजे ना भुल्लया चेता, जिस वेले तेग़ बहादर सीस कटाईआ। मैनूं अज्जे वी आउंदा सेका, जिस वेले अर्जन तत्ती लोह आसण लाईआ। मैं अजे वी देखदा तेरया देसा, जित्थे दस दशमेश सोभा पाईआ। मेरा पूरा करना लेखा, लिख्त भविक्ख्त ना कोए दृढ़ाईआ। इक्को वार चुरासी दा लैणा तैथों ठेका, ठेकेदारी अवर ना कोए कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा गृह बणाउणा भगत दवारे कोल गेटा, मेहर मेहर नज़र उठाईआ। कलयुग कहे मेरे लई होवे काली कम्मली, कफ़न काला नाल रखाईआ। नाल गुरमुख चौदां होवण अमली, नाम खुमारी अमल चढ़ाईआ। इक दी आशा होवे यमली, मूर्ख मुग्ध रूप दरसाईआ। चौदां तेरी सिख्या होवे मन्न लई, मन मनसा विच छुपाईआ। चौदां आवण जगत दे धन लई, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। चौदां आवण चुग़ली दे कन्न लई, निंदिआ विच सुणाईआ। चौदां आवण पवित्र तन लई, दुरमति मैल दूर कराईआ। चौदां आवण दर्शन श्री भगवन लई, नैण लाल रंग रंगाईआ। चौदां आवण जन्म कर्म दे डंन लई, कूड़ कुड़यारा नाल रखाईआ। चौदां आवण शब्द धार दे दम लई, दामनगीर सीस निवाईआ। चौदां आवण तृष्ना तम लई, हउमे रोग वखाईआ। चौदां गुरसिख आवण कलयुग अन्तिम ग़म लई, काली कफ़नी गल विच पाईआ। चौदां आवण नूरी चन्न

लई, चन्द हथ्थ विच उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी आस वखाईआ। कलयुग कहे चौदां आवण गुरमुख पक्के, छब्बी पोह वज्जे वधाईआ। चौदां भगत सुहेले होण सके, रिश्ता रिश्ते विच्चों प्रगटाईआ। चौदां ल्यावण चौदां चौदां टके, टके हथ्थां विच उठाईआ। चौदां नाम दी धार विच होवण रते, रत्न अमोलक रूप दरसाईआ। चौदां जैकारा बोलण फ़तिह, वाहिगुरु तेरी बेपरवाहीआ। चौदां वास्ता आवण घत्ते, दोए जोड़ सीस निवाईआ। चौदां बाज़ू कीते होण इक्ठे, गंढ इक्को इक पवाईआ। चौदां छाती बन्नॄ के आवण पटे, पटने वाला अक्खर वखाईआ। चौदां आपणे कर्म दे लै के आवण खते, खाता आपणे हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी वड्याईआ। कलयुग कहे प्रभू चौदां गाउंदे आउंण तराने, तर्ज़ तरह तरां सुणाईआ। चौदां खांदे आवण खाणे, मन भाउंदी ख़ुशी बणाईआ। चौदां चुक्की आवण अंञाणे, वडे छोटे ना कोए वड्याईआ। चौदां चब्बदे आवण दाणे, दाढ़ां दन्दां हेठ दबाईआ। चौदां अक्खों होवण काणे, इक इक अक्ख ना कोए खुल्ॄाईआ। चौदां बणे होण राणे, शाही लबास नाल सजाईआ। चौदां बुढ्ढे होण पुराणे, बिरध अवस्था वेख वखाईआ। चौदां चलण नाल शाने, मुक्खों कहिण शहिनशाह तेरी बेपरवाहीआ। चौदां बैठे होण घोड़यां उत्ते अलाणे, पाखर ज़ीन ना कोए वखाईआ। चौदां खड़ॄे होण सरहाणे, छब्बी पोह रैण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। कलयुग कहे प्रभू चौदां तबक दर तेरे आवण नट्ठे, भज्जण वाहो दाहीआ। चौदां अग्गों इक्की साल दे गुरमुख मिलण इक्ठे, जोबनवन्ते सोभा पाईआ। चौदां हथ्थ विच भवाउण लट्ठे, साढे तिन्न हथ्थ लम्बाईआ। चौदां हथ्थ विच फड़े होण कट्टे, नन्हे बच्चे संग रखाईआ। चौदां छुरी हथ्थ कसाई उठावण इक दूजे दे बण के सके, साजण मीत मीत अख्वाईआ। चौदां भार होवण चक्के, सवा पंज सेर समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग कहे मेरी अन्तिम पति रखे, रखणहार धुरदरगाहीआ।

✪ २० भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ जुगिन्दर सिँघ दे गृह इटारसी ✪

कलयुग कहे नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप पाउणा ग़दूर, चारो कुण्ट दहि दिशा देणा हिलाईआ। दीन दीन कोलों कराउंणा मक्तूल, कत्ल तकणी ख़लक खुदाईआ। सति धर्म दा रहिण नहीं देणा असूल, असल वसल यार ना कोए वखाईआ। नाउँ

निरँकारा सृष्टी दृष्टी अन्दर जाए भूल, सुरती सिफ्त ना कोए सालाहीआ। आत्म नारी तैनूं कोई वरे ना कन्त कन्तूहल, सुहञ्जणी सेज ना कोए वड्याईआ। सच पंघूड़ा ल्ए कोए ना झूल, कूड़ी क्रिया विच हल्काईआ। तेरे नाम दा बरखे कोए ना फूल, सुगंधी सति ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि साहिब तेरी सरनाईआ। कलयुग कहे प्रभ मेरी पूरी कर दईं मंग, दर मांगत सीस झुकाईआ। किसे दे अन्दर रहिण नहीं देणा अनन्द, सांतक सति ना कोए वखाईआ। मैं झगड़ा वेखणा तारा चन्द, सदी चौधवीं मुहम्मद नाल मिलाईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर अन्तर पए किसे ना ठंड, अग्नी तत जलाईआ। तेरे हुक्म दी चले चण्ड प्रचण्ड, खण्डा खड़ग कूड़ खड़काईआ। सदी चौधवीं तेरे हुक्म दी रही लँघ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे अलख जगाईआ। कलयुग कहे प्रभ मेरी आसा होर वड्डी, वड दाते दयां जणाईआ। मैं चार जुग दी पुश्त रहिण नहीं देणी यद्दी, यथार्थ साहिब दयां दृढ़ाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं दी अन्त रहे ना गद्दी, गदागर करां लोकाईआ। अन्त वेख लै आपणे हुक्म वाली सदी, सदमा गृह गृह समझाईआ। तेरी नूर जोत दीपक अगम्म हो के जगी, बिन तेल बाती रुशनाईआ। मेरे साहिब सूरे सुल्तान अलखणा अलखी, तेरा नूर लख्या कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहरवान महिबूब मुहब्बत विच मंग मंगाईआ। कलयुग कहे मेरा पूरा हो लैण दे चा, चाओ घनेरा इक दरसाईआ। वक्त सुहञ्जणा सुहावा रिहा आ, आमद विच रही वड्याईआ। मैं शाह सुल्तानां देणी पत्त गवा, पतिपरमेश्वर तेरी ओट तकाईआ। अन्त कन्त भगवन्त मेरा शब्द गुरु गवाह, शहादत इक भुगताईआ। मैं सब दे मस्तक लाउणी सुआह, शहिनशाह तेरा नूर नज़र किसे ना आईआ। हँस बुद्धी करनी काँ, सृष्टी काग वांग कुरलाईआ। झगड़ा पा के सूर गां, धर्म दी धर्म धार ठुकराईआ। फिर तूं मैनूं कहीं वाह वा, चौथे जुग सुत दुलारे तेरी वड वड्याईआ। मैनूं मन्नण तों सारे कर गए नांह, नाम निधान कोए ना गाईआ। ना कोए पिता रहे ना माँ, पूत कपूत सपूत नज़र कोए ना आईआ। भाई भैण ना पकड़े बांह, सज्जण मीत ना संग रखाईआ। दीन मज़्ब देवे कोए ना थाँ, रहिबर नूर ना कोए चमकाईआ। तूं मालक ख़ालक वाहिद इक खुदा, खुद मालक तेरी ओट तकाईआ। मैं चाहुंदा तेरी लख चुरासी करां जिबाह, छुरी तेरे नाम कलमे वाली चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निउँ निउँ लागां पाईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरे अन्तर उठी अगम्मी आवाज़, बिन रसना जेहवा सुणाईआ। मैं तेरा चार जुग दा वेखां साज़, असमान तकां पंज तत ख़लक खुदाईआ। दीन दुनी दा बदल देवां समाज, समग्री तेरी कूड़ वरताईआ। काया मन्दिर अन्दर

६७७
२२

बहि के करां राज, हुक्म मनुआ मन सुणाईआ। सुरती किसे ना जाए जाग, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक लावां दाग़, दुरमति मैल सके ना कोए धुआईआ। तेरे नाम बिना ख़ाली करां लंगड़े लूल्हे अपाहज, साबत रहिण कोए ना पाईआ। धर्म दी धार दिसे कोए ना साध, सांतक सति ना कोए समाईआ। जो तेरे अवतार पैग़म्बर गुरुआं दीनां मज़्हबां दा लाहया पाप, सब दा लेखा दयां मुकाईआ। तेरी जोत दा जगे ना कोए चराग़, चरागाहां करे ना कोए रुशनाईआ। सच दर ते ना कोए सवाल ना कोए जवाब, जवाब तल्बी ना कोए वखाईआ। मेरे पुरख अकाले साहिब महाराज, दीन दयाल सीस झुकाईआ। मैं दिवस रैण तैनूं रिहा अराध, सिमर सिमर सिमर तेरा ध्यान लगाईआ। तूं मेरी झोली पा दे वाद विवाद, विख आपणी आप टिकाईआ। मैं नाम विहूणी सृष्ट करां बर्बाद, जनणी जन भगत जन्मे कोए ना माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दवारे आस रखाईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरी आशा लम्मी, अन्त तेरे विच रखाईआ। मैं झगड़ा पावां काया माटी चम्मी, चम्म दृष्टी सब दी दयां बदलाईआ। मैं तेरा नाम जपण ना देवां दमी, स्वास स्वास कोए ना गाईआ। गगन पातालां रहिण ना देवां थंमी, थरथराहट करे लोकाईआ। सन्त फ़कीर बणावां डंभी, निरगुण नूर ना कोए चतुराईआ। घर घर अन्दर वखावां ग़मी, ग़मखार तेरी सरनाईआ। तूं मालक ख़ालक हो के मेरा बेड़ा बन्न्हीं, मेहरवान सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। तूं दाता आदि जुगादि धन धनी, धनाढ इक अख्वाईआ। कूड़ कुकर्म नाल मेरी ख़ाली होण देवीं ना कन्नी, पल्लू गंढ देणी पवाईआ। मैं तेरे हुक्म दी धार संदेशा रही मन्नी, मन मनसा पूर कराईआ। अन्त कोए रहिण ना देवां छप्पर छन्नी, शहिनशाह तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तेरा लेखा लिख्या जाए ना उपर पंनीं, सफिआं विच ना कोए जणाईआ।

६७७
२२

✪ २१ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ भगत सिंघ दे गृह इटारसी ✪

कलयुग कहे प्रभू मेरा करना वक्त सुहाउणा, सुहञ्जणा आप बणाईआ। तेरी किरपा मैं आपणा बल प्रगटाउणा, प्रगट होणा थांउँ थाँईंआ। दो जहानां रौला पाउणा, शोरो गुल दुहाईआ। लख चुरासी जीव जंत रुवाउणा, साध सन्त कुरलाईआ। कूड़ कुड़यार दा डंक वजाउणा, कुण्ट कूट शनवाईआ। तेरा सुत दुलारा इक अख्वाउणा, आख़र लवां अंगड़ाईआ। जगत हँकारी बुरज ढाउणा, ढाह ढाह ख़ाक मिलाईआ। तेई अवतार पैग़म्बरां गुरुआं आप हिलाउणा, जड़ रहिण कोए ना पाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहरवान तेरी सरनाईआ। कलयुग कहे औह वेख प्रभू मुहम्मद मैनूं कढदा अक्खां, नैण नैण उठाईआ। मैं तेरे अग्गे जोड़दा हथ्थां, दोवें दस्त दस्त बंधाईआ। ईसा मूसा संग होवे इक्ट्ठा, जगत जोड़ बणाईआ। मैं चाहुंदा इन्हां विच पावां रट्टा, रुटीन विच आपणा खेल खिलाईआ। सब दी ख़ाक उडावां घट्टा, मिट्टी खेत रसाईआ। आपणे वायदे वाला याद कर लै इक टप्पा, जो आदि दिता सुणाईआ। इक नूर ज़हूर प्रकाश वेखां तेरे पप्पा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच वर, सच दे मालक दया कमाईआ। कलयुग कहे प्रभू ओह वेख हज़रत ईसा मारदा झाकी, पड़दा पड़दे विच्चों उठाईआ। वीहवीं सदी दा लेखा वेख के बाकी, हिसाब अंकड़यां विच लगाईआ। झगड़ा दिसदा तन वजूद ख़ाकी, बुतख़ाने रहे कुरलाईआ। मैं उस नूं फिर शब्द कहाणी आखी, कलमा हक दृढ़ाईआ। मेरा संदेशा नहीं गुस्ताख़ी, गिले विच ना कोए जणाईआ। तेरा लहिणा रिहा ना बाकी, वेला वक्त वक्त दृढ़ाईआ। जिस कारन तैनूं चढ़ाया फाँसी, सलीब गल लटकाईआ। ओह लेखा पूरा करे पुरख अबिनाशी, जल्वागर नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक वेख वखाईआ। कलयुग कहे प्रभू ओह वेख मूसा तकदा, तकदीर आपणी नाल मिलाईआ। जिस नज़ारा तक्कया यक दा, वाहिद तेरी ओट रखाईआ। बिन कदमां तेरी कदम बोसी नूं भज्जदा, कदीम दे मालक राह तकाईआ। मेहरवान महिबूब तेरा भाणा कोए ना डकदा, ना कोए रोके रोक रुकाईआ। उस दा लेखा वेख लै लिख्या हथ्थ दा, हथेली अक्खरां नाल भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच साजण वेख वखाईआ। कलयुग कहे प्रभू की मूसा करदा उजर, आरज़ू की जणाईआ। क्यों मेरा वक्त गया गुज़र, गुज़शता हाल दए गवाहीआ। मैं वेखां अगम्मा मुज़र, मुज़ाहरे विच शनवाईआ। मेरा अन्त अख़ीर रूप रिहा ना सुन्दर, कोहतूर ना कोए चतुराईआ। आपणयां नेत्रां उत्ते फेर उँगल, जो बेज़बान असमान वल्ल उठाईआ। फेर धरती दा तक लै उजर, अन्तर निरन्तर वेख वखाईआ। फेर ज़मीन दा वेख लै कुतर, निशाना कलयुग कवण जणाईआ। फेर तकदा मैं किस धार दा पुत्र, कवण मेरी जणेंदी माईआ। फेर करदा तेरा शुकर, शुकराने विच सीस निवाईआ। फेर सदी चौधवीं वेखदा पूरब उत्तर, पच्छम दक्खण अक्ख उठाईआ। ओह वेख मैनूं इशारा करदा कलयुग तूं ना जावीं मुकर, वाहिदा दाअवे नाल समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मस्तक वेख वखाईआ। कलयुग कहे प्रभू ईसा मूसा मुहम्मद तिन्ने वेखदे नाल गुस्से, मेरे वल्ल ध्यान लगाईआ। मैं हस्स के किहा पैग़म्बरो तुहाडे रहिण नहीं दिते जुस्से, जिस्म ज़मीर ख़ाक मिलाईआ।

अन्तिम तुहाडे पैंडे मुके, मुकम्मल दयां सुणाईआ। उम्मत वल्ल वेख के तुहाडे हिरदे दुखे, मुर्शद मुरीद होणी अन्त जुदाईआ। सब नूं खाणे पैणे टुकड़े रुक्खे, छुरी ज़िबह ना कोए कराईआ। मुहम्मदा उम्मत नूं गाना बन्न्ह दे गुट्टे, मौली तन्द हथ्थ उठाईआ। ईसा वेख लै लहिंदी गुट्ठे, मूसा उँगल इक हिलाईआ। तक लओ पुराणे आपणे जुत्ते, जो मकबरयां बाहर तकाईआ। मेरे परवरदिगार दे भेव रहिणे नहीं लुके, लुकमान रो के गया सुणाईआ। सुलेमान ने बुल्ल्ह कर के सुच्चे, नौ वार दिता दृढ़ाईआ। शाह अली ने नेत्र कर के पुट्ठे, पुश्त पुश्त वेख वखाईआ। जिस वेले अमाम अमामा शाह शहाना उठे, कलमा कलाम आप जणाईआ। उस वेले पिछली गंढी सब दी टुट्टे, टुटयां गंढ ना कोए पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दे लेखे वेखे पुट्ठे, काग़ज़ कलम शाही अक्खर ना कोए चतुराईआ।

६७६
२२

✪ २२ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ टोपन राम दे गृह इटारसी ✪

पुरख अबिनाशी सज्जण सुहेला, परवरदिगार वेस वटाईआ। दरोही फिरी जंगल जूह बेला, कायनात पई दुहाईआ। लेखा जाणे गुरु चेला, मुरीद मुर्शद फोल फुलाईआ। फेर वस के सब तों नवेला, निरगुण आपणा हुक्म सुणाईआ। साडा कलमा अन्तिम होया फेला, लुक रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर हुक्म इक प्रगटाईआ। कलयुग कहे मुहम्मद बस कर यार, मित्र की सुणाईआ। मैं वी होण लग्गा त्यार, त्रैगुण आपणे नाल मिलाईआ। सृष्टी दृष्टी करनी ख्वार, ख़ालस नज़र कोए ना आईआ। कोटां विच्चों साबत रहिण देणे दो चार, जो प्रभ दी ओट तकाईआ। मैं हुक्म मन्ना सच्ची सरकार, जो पातशाह शाह रिहा दृढ़ाईआ। मैं आपणी वेखणी खूब बहार, चारों कुण्ट रंग रंगाईआ। झगड़ा पा के मर्द नार, स्त्री पुरुष देणे लड़ाईआ। खेल करना उस दी धार, जो धरनी उत्ते आवे चाँईं चाँईंआ। तेरा लहिणा देणा लेखा लए विचार, पूरब पड़दा फोल फुलाईआ। उठ दोवें करीए उस नूं निमस्कार, नमो नमो सीस झुकाईआ। जिस दे कोल सर्ब अख्त्यार, मुख़तारनामे साडे आपणे हुक्म विच चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी इक अवतार, अवतर आपणी जोत करे रुशनाईआ।

✪ २३ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ हरदित सिँघ दे गृह इटारसी ✪

शंकर कहे नानक वेख लै आपणी काली भूरी, भरम रहे ना राईआ। मेरी होई अन्त मजबूरी, मजबूर हो के दयां सुणाईआ। सब दी तृष्ना करनी पूरी, तृखा कूड़ वेख वखाईआ। साचा चन्द दिसे ना नूरी, नुराना नूर ना कोए चमकाईआ। तेरी दिसे ना कोए हज़ूरी, ओह वेख हज़रत देण गवाहीआ। सब दी दृष्टी होई मूढ़ी, चतुर सुजान रूप ना कोए दरसाईआ। मलेछां दी सफा वेख लै कूड़ी, धरनी धरत धवल दुहाईआ। रंगण रही नाम ना गूढ़ी, कुसंभड़ा रंग गई बदलाईआ। सच्याई सच दी धार होई मफ़रूरी, बेले ममता विच आपणा आप छुपाईआ। चार कुण्ट गढ़ ग़रूरी, कलमा सके ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा इक सुणाईआ। कलयुग कहे नानक वेख लै आपणी खूंडी, खोजत खोजत ध्यान लगाईआ। साची सिख्या मिले ना ढूंडी, ढूंडत ढूंडत ख़लक खुदाईआ। सब दी आसा होई मूधी, कँवली कँवल ना कोए उलटाईआ। हुण खेल वेखणी नबी नूह दी, जो निउँ निउँ सीस झुकाईआ। वड्याई रही ना किसे गुरु दी, गुरदेव देण दुहाईआ। खेल तकणी परवरदिगार शुरू दी, जो शरअ दए बदलाईआ। जिस बिध दीन दुनिया रुढ़ूगी, वहिंदे वहिण वहाईआ। जगत धार कोए ना मुड़ूगी, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच पर्दा रिहा चुकाईआ। कलयुग कहे नानक मोढे चुक्क के वेख लै खेस, ख़ालस नज़र कोए ना आईआ। जो सुनेहड़ा दे के गया दस दशमेश, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द धुर दा माहीआ। मैं उस दा लेखा पूरा करना लेख, लेखणी पिछली वेख वखाईआ। जो मेरे कारन बच्चे कर के गया भेंट, बाले नीहां हेठ दबाईआ। आपणा ख़ाली करके पेट, पेटा ताणा वेखे ख़लक खुदाईआ। माछूवाड़े दी सेज उत्ते वेख, निगह निगह विच्चों बदलाईआ। पुरख अकाले दिता संदेश, सथ्थर यार इक सुहाईआ। मेरा खेल सदा हमेश, जुग चौकड़ी चलया आईआ। कलयुग अन्तिम करा वेस, मेला मेले सहिज सुभाईआ। अन्दर वड़ के खोल्हां भेत, ओहला दो जहान चुकाईआ। नज़री आवां नेतन नेत, निज नैण नैण रुशनाईआ। धर्म दी धार बण के खेवट खेट, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। लहिणा देणा पूरा करे पिता पूत बेट, लेखा पूरब झोली पाईआ। सच स्वामी हो के करां हेत, अन्तर अन्तर जोड़ जुड़ाईआ। जगत निराली वखावां खेड, जिस दी समझ कोए ना पाईआ। प्रगट हो के सम्बल देस, संभल आपणा कदम टिकाईआ। कलयुग कूड़ी बदल देवां रेख, रखया करां थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। कलयुग कहे नानक तक लै आपणी सेली टोपी, सज्जण सुहेला रिहा जणाईआ। प्रभू

६८०
२२

काहन दी साची रही कोए ना गोपी, गोपाल बण गऊआं ना कोए चराईआ। जिधर तकां ओधर हँकार विकार क्रोधी, हउमे हंगता रूप बदलाईआ। साची पढ़े कोए ना पोथी, पुस्तक बग़ल सर्ब चुकाईआ। दीन दुनी दी बुद्धी होई थोथी, मतहीण दिसे लोकाईआ। सच साहिब दी नज़र ना आवे जोती, जोती जाता वेस वटाईआ। जिस नूं लभ्भदे कोटन कोटी, असंख असंखां ध्यान लगाईआ। ओह आपणी खेल करे सृष्टी दृष्टी अन्दर सोती, सोई सुरत ना कोए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच वर, देवणहार इक अख्वाईआ। कलयुग कहे नानक उठ वेख आपणी रबाब, सति सति की सुणाईआ। की संदेसा देवे मित्र अहिबाब, अदाब नाल सीस झुकाईआ। जिस नूं मन्नया हक जनाब, पैग़म्बर धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। उहदा वेख बगीचा बाग, दीन दुनी कूड़ महकाईआ। जो अन्तिम सब दा बणाउण वाला कबाब, काअब्यां पए दुहाईआ। अमृत रस मिले किसे ना नाभ, आबेहयात ना कोए चूआईआ। जो संदेश दिता विच बग़दाद, बग़लगीर हो सुणाईआ। उस ने बदल देणा समाज, समां समें नाल टकराईआ। खेल करने आया इक इकल्ला वाहिद, आपणी कार कमाईआ। जिस ने मेरी खोल्ही जाग, आलस निंद्रा दिती मिटाईआ। मैं उठ उठ रिहा भाग, भज्जा वाहो दाहीआ। सदी चौधवीं जिस उम्मत बुझाउणा चराग़, दीवा गुल कराईआ। ओह बिन अक्खरां वाली वेखे किताब, कुतबख़ाने ना फोल फुलाईआ। उस दा खुशी विच नानक तक्कीए मजाज़, बिन नेत्र अक्ख उठाईआ। जिस ने खेल करना अवतार पैग़म्बर गुरुआं तों बाद, हुक्म हुक्म विच्चों बदलाईआ। मैनूं मेरी करनी दा जिस ने देणा इजाज़, इज़त नाल वड्याईआ। मैं आपणा मंगां खराज, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। खेल वेखीए उस जगत गुरु महाराज, जो शहिनशाह शाह पातशाह अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, साचा साजण रिहा साज, साजण हो के दया कमाईआ।

✪ २४ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ सुरिन्दर सिँघ दे गृह इटारसी ✪

कलयुग कहे जन भगतो वेख लओ आपणी भगती, भाग भेव फोल फुलाईआ। धर्म दी धार रही ना शक्ती, शख्सीअत नज़र कोए ना आईआ। निगाह मारो उपर धरती, धरनी धवल धौल वेख वखाईआ। वड्याई रही ना किसे घर दी, साढे तिन्न हथ्थ कूड़ दुहाईआ। मन कल्पना सब दी लड़दी, सांतक सति ना कोए वरताईआ। सुरती सुरत किसे ना चढ़दी, शब्दी शब्द ना कोए कमाईआ। तुसीं खेल वेखो मेरी कलयुग कल दी, कलकाती कीती लोकाईआ। जोरू ज़र धार कपट

छल दी, अछल छल आपणा रंग वखाईआ। किसे नूं ख़बर नहीं घड़ी पल दी, पलकां दे ओहले बहि के दिता भुलाईआ। वड्याई रहिण दिती नहीं तीर्थ अठ्ठ सठ्ठ जल दी, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रोवे मारे धाईआ। मेरी खेल तक्को काम क्रोध मोह हँकार विकार दल दी, दलिद्री सारे दिते बणाईआ। आवाज़ रही ना किसे मन्दिर टल्ल दी, अटल पदवी समझ किसे ना आईआ। जिधर तक्को कूड़ी क्रिया अग्नी बल दी, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। खेल तक्को जल थल दी, महीअल पड़दा लओ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग मेरा हुक्म वरताईआ। कलयुग कहे जन भगतो वेखो सब दी नीती, निरन्तर ध्यान लगाईआ। चढ़े रंग ना किसे मजीठी, कूड़ कल्पना नाल वड्याईआ। काया होवे ना ठांडी सीती, झिरना निझर ना कोए झिराईआ। धुर दी दिसे ना कोए बग़ीची, फुल्ल फुलवाड़ी ना कोए महकाईआ। पुरख अकाल मेरे साहिब मैनूं कीती बख़्शीशी, बख़्शिश कूड़ क्रिया झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच मेरा संग निभाईआ। कलयुग कहे जन भगतो अक्खां खोल्ह के तको, तक्को खेल अथाह। इक दूजे नूं दस्सो, बोलो सहिज सुभा। मेरी करनी वेख के हस्सो, दो हत्थां ताली वजा। फेर प्रभ दी चरणी ढठ्ठो, सीस जगदीश झुका। फेर वेखो खेल समरथो, की करे बेपरवाह। जिस नूं कहिंदे मालक यक्को, वाहिद वाहिद नूर खुदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि सच्चा पातशाह। कलयुग कहे जन भगतो वेखो मेरी अक्ख बदली, नैण नैण मटकाईआ। मैं मातलोक दा अदली, इन्साफ़ रिहा कमाईआ। मेला रहिण नहीं दिता पति पत्नी, परमेश्वर सब नूं देणा भुलाईआ। अन्तिम पत किसे नहीं रखणी, सिर हत्थ ना कोए टिकाईआ। मैं नव सत्त लाउणी अग्नी, गृह गृह आंच वखाईआ। मेरी जोत इक्को जगणी, कूड़ कुड़यारे नाल रलाईआ। नहावण देणा नहीं किसे नूं प्रभ चरण धूढ़ मजणी, सरोवर सच ना कोए सुहाईआ। झगड़ा पा के पंज तत काया बदनी, बदला लैणा थांउँ थाँईंआ। तुसीं सारे हो जाओ बेवतनी, वतन हक ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच मेरा रंग रंगाईआ। भगत कहिण कलयुग की कहिणा, की रिहा जणाईआ। कलयुग कहे उठ वेख लओ आपणे नैणां, बिन नैणां नैण उठाईआ। धुर दे हुक्म दा वहिण वहिणा, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। नेत्र रो के उठया कबीर जुलाहया नाई सैणां, नामा छींबा नाल मिलाईआ। रविदास किहा की कलेश कल पैणा, कलकाती दे दृढ़ाईआ। कलयुग ने हस्स के किहा मेरी करनी ने रूप धरना डैणां, अनोखा इक दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेरी आसा पूर कराईआ। भगत कहिण कलयुग ओह वेख नानक आउंदा

भज्जा, कदम कदम नाल बदलाईआ। कलयुग कढ के हथ्थ सज्जा, उँगलां पंजे रिहा वखाईआ। नानक उच्ची कूक सुणाया टप्पा, नाअरा अगम्म अथाहीआ। मैं सूरबीर बहादर जुग चौकड़ी टेकां मथ्था, जोबनवन्त अख्वाईआ। तूं अवतार पैग़म्बर गुरुआं भगतां करें इक्ट्ठा, मख़ौल विच दुहाईआ। किसे नूं गाँ खवाई किसे नूं सूर खवाया किसे नूं वच्छा कट्टा, पंखी पंछीआं तनां खल्ल लुहाईआ। ओए तैनूं पता नहीं तूं वस पैणा उस शब्द धार धुरदरगाही जट्टा, जिस नूं जटा जूट सारे सीस निवाईआ। जिस दे हुक्म अन्दर कमलया तेरी आयू हो जाणी बटा, सिफ़र सिफ़र ज़ीरो ज़ीरो विच समाईआ। उठ वेख साहिब सुल्तान समरथा, पारब्रह्म आपणा खेल खिलाईआ। कलयुग नेत्र खोल्ह अक्खां, आखर अक्खर दयां पढ़ाईआ। जिस ने तेरी मेटणी सफ़ा, मलेछां डेरा ढाहीआ। सारा चार जुग दा लहिणा करना रफ़ा, रफ़ाकत आपणी दे दृढ़ाईआ। उस दे कोलों बिना भगतां तों खट्टणा किसे नहीं नफा, नुकसान विच दो जहान नज़री आईआ। आह वेख ढहिंदा मदीना मक्का, काअबे रहे कुरलाईआ। ओह वेख मुकदा बूरा कक्का, मूसा ईसा नेत्र नैणां नीर वहाईआ। ओह वेख जिन्हां इक्को तेरा नाम जपा, जगजीवण दाता वेख के खुशी मनाईआ। ओह वेख सतिजुग चलदा रथा, रथवाही हो के आपणा हुक्म वरताईआ। ओह वेख तूं मेरा मैं तेरा हुन्दी कथा, कथा कहाणी पिछली दिती मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा हुक्म वरताईआ। नानक कहे कलयुग उठ वेख टप्पदा अख़ीरी, बिन अक्खरां रिहा सुणाईआ। जिस ने शरअ दी तोड़नी ज़ंजीरी, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। रहिण देणी नहीं मीरी पीरी, अपरम्पर स्वामी आपणा हुक्म सुणाईआ। कमलया मैं वी आ गया अज्ज तकदीरी, तदबीर तैनूं रिहा समझाईआ। ना कोई पातशाह ना कोई वज़ीरी, वज़ारत रहिण कोए ना पाईआ। ना कोई चार जुग दी पिछली चले पीढ़ी, रीत सब दी देणी बदलाईआ। लेखा मुका के शाह हकीरी, एका रंग देणा रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। नानक कहे कलयुग आपणा पा लै ज़ोर, जोरू ज़र वेख वखाईआ। जिस ने बदल देणी सब दी तोर, तुरीआ तों परे आपणा हुक्म शनवाईआ। ज़रा निगह मार लै नाल ग़ौर, गोरू हो के वेख वखाईआ। जेहड़े चार जुग विच खाधे पशू ढोर, मानव मानव मुख मुख नाल बदलाईआ। ओह सारे धर्म राए दे अग्गे देणे तोर, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। तूं उस दवारे दा चोर, जिथ्थे ठग्ग चोर बैठे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। कलयुग कहे नानक मैं अंञाणा नहीं बच्चा, सच दयां सुणाईआ। मैं हुक्मे अन्दर सच्चा, प्रभ साचे दी सेव कमाईआ। मेरा वायदा मेरा कौल इकरार मुहम्मद नाल ओह सदी चौधवीं तेरा ढाउणा मदीना मक्का,

काअब्यां विच तेरे नाम दी पए दुहाईआ। कोई रहिण नहीं देणा सका, सज्जण मीत ना कोए अख्वाईआ। उस वेले इक्को पप्पा ते इक्को कूड़ दा होणा टप्पा, दूजी करे ना कोए पढ़ाईआ। जिस ने तूं मेरा मैं तेरा जाप जपा, तिस नूं मिले मातलोक विच वड्याईआ। एह खेल करे पुरख समरथा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। कलयुग कहे नानक मैं उस साहिब दा चाकर, चाकरी सच कमाईआ। जिस नूं निरगुण धार सारे आखण, रूप रंग रेख ना कोए दरसाईआ। मैं कोई कीता नहीं पापण, हुक्म मन्न के झट लँघाईआ। मैं घर घर अन्दर कीता वासण, विषयां विच कीती लोकाईआ। जिधर तक्को ओधर अंधेरी रातन, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। ना कोई पूजा रही ना पाठण, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। सब नूं माया डस्से नागण, अग्नी अग्ग तपाईआ। उठ वेख बिना भगतां नार दिसे ना कोए सुहागण, आत्म परमात्म कन्त ना कोए हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा राह इक वखाईआ। नानक कहे कलयुग की आपणा आप रिहों चितार, चित्तर आपणयां वेख वखाईआ। की आपणे सिफ्त दी करें गुफ़तार, गुफ़त शनीद फोल फुलाईआ। की आपणे जुग दी तकें रफ़तार, रफ़ता रफ़ता खोज खुजाईआ। की हुक्म दस्सें आपणी सरकार, शहिनशाह की कार कमाईआ। ओह ज़रा उठ वेख औह गोबिन्द दे खण्डे दी धार, जिस नूं लुहार तरखाण ना कोए घड़ाईआ। ओह प्रगट होया विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी जिस दे अग्गे बैठे सीस निवाईआ। दो जहानां बण शाह अस्वार, पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमानां भज्जे वाहो दाहीआ। उठ हो त्यार, त्रैगुण अतीता तेरा लेखा वेख वखाईआ। आपणा लहिणा कीती करनी दा करतब सर्ब विचार, विचर के देणा सुणाईआ। बेख़बरा हो जा ख़बरदार, खुआब विच वेख मैं आपणा आप भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ। कलयुग कहे नारद मैं नहीं कोई भोला भाला, भरम ना कोए रखाईआ। मैनूं हुक्म दिता अल्ला तुआला, ताबया विच सेव कमाईआ। मैं सदी चौधवीं मारनीआं छालां, चौदां तबक भज्जां चाँईं चाँईंआ। मैं सब दे कोलों मंगणा हाला, वसूली करां थांउँ थाँईंआ। मेरी करनी वेखीं सब दा मूँह करना काला, कालख टिक्का ना कोए धुआईआ। मैं दीन मज़्बां दा कढणा दिवाला, दिवालीए हो के सारे देण वखाईआ। मैं सब नालों हुक्म मन्नणा बाहला, सतिजुग त्रेता द्वापर मेरे अग्गे कर सके ना कोए चतुराईआ। मैं फल रहिण नहीं देणा किसे डाला, सिंमल रुक्ख दीन दुनी देणी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरा सगला संग निभाईआ। नानक कहे कलयुग मैं वेखे जुग चौकड़ी बीतदे, पूरब ध्यान लगाईआ।

अन्तिम सारे गए चीकदे, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। ओ जिस वक्त नूं अवतार पैग़म्बर गुरु उडीकदे, बैठे अक्ख खुल्हाईआ। ओह आपणयां दीनां मज़्बां दी गंढ पीचदे, ज़ोर ज़ोर नाल खिचाईआ। धर्म निशाने गए उडीकदे, सिफ्तां विच कर कर सिफ्त सालाहीआ। हुण वेले वक्त आ गए प्रभू दी तस्दीक दे, शहादत शब्द गुरु भुगताईआ। तैथों लेखे मंगण तेरी कर्म कांड रसीद दे, हरफ़ हरूफ़ नाल मिलाईआ। ज़रा खेल वेख उस प्रीतम दी प्रीत दे, जो प्रेम विच लेखा सब दा दए चुकाईआ। जिस ने झगड़े मुकाउणे ऊच नीच दे, नीच ऊच एका रंग रंगाईआ। उस खेल कराउणे इकीस बीस दे, बीस बीसा आपणा हुक्म वरताईआ। झगड़े मुकाउणे राग छतीस दे, छत्ती जुग दा डेरा ढाहीआ। लेखे मुकणे कुरान हदीस दे, हज़रतां तों परे करे पढ़ाईआ। छेती कर तूं दोहां हथ्थां दीआं मुट्ठां मीच दे, खुल्ही नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। कलयुग कहे नानक मैं बड़ा चंगा सुचज्जा, दुलारा दूल्हा नज़री आईआ। मैं पवित्र रहिण नहीं दिती कोई जगह, हर हिरदा वेख वखाईआ। जीव जहान बणाया कग्गा, हँस रूप ना कोए समझाईआ। किसे दा वसण नहीं देणा अग्गा, लेखा अवर रहे ना राईआ। जिस गोबिन्द नूं सिफ्त वाला लाया गग्गा, गहर गम्भीर आपणे विच समाईआ। ज़रा सब दीआं वेख चढ़ के उपर शाह रगां, शहिनशाह नज़र कोए ना आईआ। धर्म दा रिहा कोए ना तगा, शब्दी गंढ ना कोए बन्हाईआ। कूड़ कुड़यार घर घर मेरा अड्डा, नव दर आपणा हुक्म सुणाईआ। मैं धुर दा सेवक आपणे आप दा प्यारा ते सच्चा, सच सच रिहा सुणाईआ। मैं वी चाहुंदा सब दा भाण्डा भन्नणा कच्चा, साढे तिन्न हथ्थ नज़रीं नज़र कोए ना आईआ। झगड़ा मुकाउणा अवतार पैग़म्बरां गुरुआं चच्चा, इक्को पिता पुरख अकाल लैणा मनाईआ। मैनूं शब्दी हुक्म विच सारा देवे पता, पतिपरमेश्वर आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा इक वरताईआ। नानक कहे कलयुग ना दे वडीआं दलीलां, जगत जुगत ना कोए चतुराईआ। धुर मालक ने हुण सुणनीआं नहीं अपीलां, अपरम्पर स्वामी इक्को आपणा हुक्म वरताईआ। लोड़ रहिणी नहीं किसे वकीलां, धारा दीन दुनी देणी बदलाईआ। झगड़ा पैणा उत्ते ज़मीना, असमानां उत्ते सर्ब कुरलाईआ। ओ मूर्खा तूं बणिउ रिहा कमीना, होछी मति वखाईआ। तेरे विच सच्चा साहिब किसे नहीं चीना, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। कलयुग हस्स के किहा नानका मैनूं सलाम कर ते कहि आमीना, सजदा सीस झुकाईआ। उठ वेख मेरे विच प्रभू दे भगत ओह नगीना, जिन्हां वल्ल निगाह कर ना कोए वखाईआ। जिन्हां दे वसया हरिमन्दिर हरि चीना, हरि आपणा डेरा लाईआ। ओन्हां दे हो के अधीना, हुक्म विच भज्जे चाँईं चाँईंआ। जिन्हां दा लेखा किसे तों नहीं जाणा छीना, अग्गे हो ना कोए

अटकाईआ। उन्हां दा मालक ओह प्रबीना, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, शब्दी धार शाह सवार अस्व पावे पाखर ज़ीना, ज़ीना ज़ीना वेखे ख़लक खुदाईआ।

✪ २५ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ पारू मल दे गृह इटारसी ✪

कलयुग कहे मैं भगतां सदा दास, निम्रता विच सीस निवाईआ। जिन्हां दे अन्तर निरन्तर इक निवास, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। मैं निव निव उन्हां दा मंगां साथ, सगला संग बणाईआ। बन्दना करां जोड़ के हाथ, डण्डावत विच राम दुहाईआ। जो तूं मेरा मैं तेरा सोहँ गाउंदे गाथ, रसना जेहवा सिफ्त सालाहीआ। उन्हां दा पूरब लहिणा मस्तक माथ, जन्म जन्म दा लेख समझाईआ। मैं उन्हां दा दास, सेवक चाकर इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि करता रूप दरसाईआ। कलयुग कहे मैं भगतां आदि जुगादी सेवादार, दर दर सेव कमाईआ। जिन्हां दे अन्दर प्रभू प्यार, प्रीतम मिल के वज्जी वधाईआ। मैं वेखां आपणी धार, जग नेत्र नैण ना कोए उठाईआ। वक्खरा हो के सर्ब संसार, सृष्टी दृष्टी तों बाहर आपणी कार कमाईआ। जिन्हां दा तकां इक्को हकीकी यार, हक नूर खुदाईआ। उन्हां दा बण के बरखुरदार, बदी दे विच कदे ना आईआ। लहिणा तक के तन मनार, साढे तिन्न हथ्थ वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव चुकाईआ। कलयुग कहे भगत आदि प्रभू दा मीत, अन्त उसे विच समाईआ। जो हिरदे रखदा चीत, चितवित ठगौरी नज़र कोए ना आईआ। पारब्रह्म प्रभ गाए अगम्मड़ा गीत, सुरत शब्द शब्द समाईआ। अन्दर पवित्र करके नीत, दुरमति पापां मैल धुआईआ। उन्हां वेखां काया ठंडी सीत, अग्नी तत ना लागे राईआ। झगड़ा छड मन्दिर मसीत, पतिपरमेश्वर इक्को रहे मनाईआ। लेखा रहे ऊच ना नीच, ज़ात पात ना कोए चतुराईआ। मेरी सदा सदा सद उन्हां असीस, जो सिर सर प्रभ दे अग्गे निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, सृष्ट दृष्ट अन्तर अन्तर जाए जीत, जगजीवण दाता आपणा हुक्म इक वरताईआ।

✪ २५ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ सदन मल कौड़ा मल दे गृह इटारसी ✪

जन भगत कहे मेरी आसा पुन्नी, पूरन ब्रह्म भेव खुलाईआ। शब्दी अगम्मी अवाज़ सुणी, सुरत समाधी दिती खुल्हाईआ। नाम निधान अगम्मी वज्जी धुनी, धुन आत्मक राग अल्हाईआ। मंज़ल मिल गई उपर ऋषी मुनी, मोन रहिण दी लोड़ रहे ना राईआ। झूठी दिसी दीन दुनी, मज़्हब ज़ात दा डेरा ढाहीआ। प्रकाश होया काया कुल्ली, काअब्यां परे रुशनाईआ। मालक मिल्या सुलह कुली, कुल मालक बेपरवाहीआ। जिस मुहब्बत दिती नाम अनमुल्ली, कीमत हट्ट ना कोए लगाईआ। मेरी आशा फली फुल्ली, पत्त टहिणी मात महकाईआ। मेरी सुरत रहे ना भुल्ली, अभुल्ल लई जगाईआ। अमृत पीणा प्या ना चुल्ली, निझर झिरना दिता झिराईआ। मेरी कल्पणा मातलोक मूल ना रुली, चुरासी विचों बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। जन भगत कहे मेरा पूरा होया भरवासा, भरम रिहा ना राईआ। घर मिल्या पुरख अबिनाशा, अबिनाशी करता दया कमाईआ। जिस मानस जन्म कीता रहिरासा, रहमत आपणा नाम कमाईआ। भाग लगा के काया कासा, किस्मत किस्मत विच्चों बदलाईआ। चरण कँवल कँवल चरण करके दासी दासा, सेवक सेवा सच समझाईआ। आत्म परमात्म जोड़ के नाता, जुग जन्म दे विछड़े आप मिलाईआ। हरिसंगत बणा के भैण भ्राता, प्रेम मुहब्बत इक सिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा इक वर, इक इक दरसाईआ। जन भगत कहे मेरा पूरा होया जोग, जुगती अवर रही ना राईआ। पुरख अबिनाशी कीता सच संजोग, विछोड़ा विछोड़े विच्चों कटाईआ। आत्म परमात्म करके भोग, भस्मड़ आपणा रंग रंगाईआ। लेखा मुका के लोक परलोक, सच दवार दिती सरनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स सलोक, जगत विद्या डेरा ढाहीआ। निर्मल नूर जगा के जोत, अंध अंधेरा दिता गंवाईआ। एकँकार इक्को दस्स के ओट, ओड़क आपणे नाल मिलाईआ। लेखा मुका के जन्म कोटी कोट, कंचन गढ़ इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धर्म दवार इक वखाईआ। जन भगत कहे मोहे चाओ घनेरा, घनईया मिल्या धुरदरगाहीआ। जिस ने भेव चुकाया सञ्झ सवेरा, दिवस रैण ना कोए वड्याईआ। माया मोह मिटाया अंधेरा, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। इक्को घर दरसाया गुरु गुर चेरा, चेला गुर इक घर बणाईआ। हउमे हंगता ढाह के डेरा, डण्डावत इक्को दिती समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत सुहेला भगतां बन्न्हे बेड़ा, बेड़ा शौह दरया ना कोए रुढ़ाईआ।

✪ २५ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ जसवंत सिँघ दे गृह इटारसी ✪

जन भगत कहिण प्रभ तेरा सच दरबारा, दरगाह साची सचखण्ड सोभा पाईआ। जिथ्थे अगम्म नूर उज्यारा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। बिन सीस जगदीश झुकदे गुर अवतारा, पैग़म्बर सजदयां विच सोभा पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादारा, निरगुण धार तेरी सेव कमाईआ। एका शब्द सतिगुरु तेरा जै जैकारा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जुग चौकड़ी अपरम्पर तेरा खेल अपारा, पारब्रह्म प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर बीत्या विच संसारा, दीन दयाले परवरदिगार आपणा पन्ध मुकाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त चार कुण्ट दहि दिशा वेख धूंआँधारा, धरनी धरत धवल धौल ध्यान लगाईआ। सच स्वामी साचा दिसे ना कोए दवारा, दर दर घर घर अंध अंधेरा छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे अलख जगाईआ। जन भगत कहिण प्रभू तेरा साचा खण्ड, सच सच सोभा पाईआ। निगाह मार आपणे विच ब्रह्मण्ड, ब्रह्माद खोज खुजाईआ। वेख खेल सूर्या चन्द, मण्डल मण्डप डेरा लाईआ। जो दीन दुनी दिती वंड, मानव मानव हिस्से मात रखाईआ। जगत दी धार बणा के कंध, द्वैत दूई वाली रखाईआ। मन मनुआ करे जंग, कूड़ी क्रिया शस्त्र हथ्थ उठाईआ। सदी चौधवीं तेरी सृष्टी दृष्टी तेरे प्यार नालों होई रंड, सुहागी कन्त ना कोए हंढाईआ। दर ठांडा तेरा रहे मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। तेरा नाम कलमा देवे केहड़ा अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाईआ। केहड़ा ढोला गीत गाईए छन्द, कवण अक्खर अक्खर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, भेव अभेदा अन्त खुल्हाईआ। जन भगत कहिण प्रभू तेरा दरबार सुहञ्जणा, सोभावन्त सुहाए। पुरख वेख आदि निरँजणा, निरगुण नूर कर रुशनाए। मातलोक रिहा ना कोए दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर पार ना कोए कराए। साचा नाम मिले ना अंजणा, अंध अंधेर ना कोए मिटाए। कूड़ी क्रिया विच कलयुग सदी चौधवीं वंञणा, वञ्झ मुहाणा दए समझाए। सति दवार तेरी मंज़ूर होए बन्दना, डण्डावत सजदा ना कोए वडयाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे सीस निवाए। जन भगत कहिण प्रभ तेरा दवारा सच, सच मिले वड्याईआ। उठ वेख काया माटी कच्च, पंज तत फोल फुलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी नौ दवारे रही नच्च, नव रस नाल दुहाईआ। तेरा रूप अनूप दिसे किसे ना सति, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी तेरा भेव ना कोए खुल्हाईआ। जिधर तक्कीए ओधर मन मति, गुरमति सारे गए भुलाईआ। नाड़ बहत्तर उबले रत्त, हाडी तिन्न सौ सट्ठ सट्ठ कुरलाईआ। तेरा नूर ज़हूर मिले ना किसे उपर शाह रग, शहिनशाह तेरा दरस कोए ना पाईआ। कूड़ कल्पना सारे रहे भज्ज, भजन बन्दगी विच ना कोए समाईआ।

तेरी आत्म परमात्म तेरे नालों होई अड्ड, गृह मन्दिर मिलण कोए ना पाईआ। तेरी मंज़ल सारे गए छड, नाता जुड़या कूड़ लोकाईआ। तेरा नाम खुमारी पीए कोए ना मध, मधुर धुन ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच मेला लए मिलाईआ। जन भगत कहिण तेरा दरबारा चंगा, साहिब तेरी सरनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया लहर वेख धार गंगा, गोदावरी जमना सुरस्ती बैठी नैण शरमाईआ। मानव मानस मानुख नेत्र नैण हीण होया अन्धा, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख ना कोए खुल्लाईआ। मन मनसा विच गंदा, बुध बिबेक ना कोए कराईआ। सदी चौधवीं लेखा तक तारा चन्दा, मुहम्मद चार यारी नाल दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। जन भगत कहिण तेरा दरबारा अगम्म अथाह, अथाह तेरी वड्याईआ। कलयुग अन्तिम दिसे ना कोए मलाह, बेड़ा कंध ना कोए उठाईआ। सारे तेरे नाम कलमे दी देंदे सदा, सिफ्तां वाले ढोले गाईआ। अग्गे हो के पकड़े कोए ना बांह, दो जहानां पन्ध ना कोए चुकाईआ। जिधर तक्कीए झगड़ा सूर गां, धर्म दी धार रूप ना कोए दरसाईआ। कलयुग जीवां बुद्धी होई काँ, काग वांग सर्ब कुरलाईआ। तेरे प्यार मुहब्बत विच मिले कोए ना थाँ, थान थनंतर देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर दर तेरे सीस निवाईआ। जन भगत कहिण तेरा दरबारा उच्च अगम्मा, हरि अगम्म तेरी वड्याईआ। उठ वेख खेल काया माटी चम्मा, चम्म दृष्टी इष्टी फोल फुलाईआ। तेरा प्यार रिहा ना पवण स्वासी दमा, दामनगीर ना कोए अख्वाईआ। सदी चौधवीं बदल दे समां, समाप्त कर कूड़ खलक खुदाईआ। अगला हुक्म दे नवां, नव जोबन तेरी बेपरवाहीआ। माया ममता मोह विकार हँकार रहे कोए ना तमां, तामसगीरी देणी गंवाईआ। झगड़ा मुका दे हउँ हमां, हँकार विकार देणा मिटाईआ। सतिजुग सद्द जगा दे शमां, नूर जोत कर रुशनाईआ। कल्पना रहे कूड़ ना मनां, बुद्धी बुद्धी कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे धुर दा वर, जन भगत सुहेले झोली डाहीआ। जन भगत सुहेले कहिण प्रभू तेरा दरबारा सचा, सच सच तेरी सरनाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर संदेशा दे के गए सच हका, हकीकत इक इक दृढ़ाईआ। अन्तिम सब दा पैंडा मुका, लेखा अवर रिहा ना राईआ। किरपा निधान साहिब स्वामी आदि अन्त बेअन्ता, बेअन्त तेरी बेपरवाहीआ। निरगुण धार मेल साचे कन्ता, कन्त कन्तूहल तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। जन भगत कहिण साडी अर्ज़ोई, अर्ज़ बेनन्ती इक सुणाईआ। कलयुग मिले किसे ना ढोई, धर्म दी धार ना कोए जणाईआ। सुरती किसे (उठे) मूल ना सोई, शब्दी चोट ना कोए लगाईआ।

जगत दुहागण बण के रोई, बिन नैणां नीर वहाईआ। पति सब दी गई खोही, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे सच वर, दर आपणा वेख वखाईआ। जन भगत कहिण साडी इक इक अरदास, बेनन्ती सच सुणाईआ। सतिगुर शब्द शब्द वसणा पास, पासा दीन दुनी उलटाईआ। लेखे लाउणा स्वास स्वास, साह साह आपणे रंग रंगाईआ। भेव खोलणा पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर डेरा ढाहीआ। निरगुण नूर कर प्रकाश, जोती जाते नज़री आईआ। कलयुग मेट अंधेरी रात, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ। चार वरन अठारां बरन बणा इक जमात, जुमला अक्खर इक पढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा होवे गाथ, ढोला दस्सणा सिफ्त सालाहीआ। झगड़ा मुका के लोकमात, मात्रा भूमी रंग रंगाईआ। तेरा दरस करीए इकांत, इक गृह इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। पुरख अकाल दया कमाउंदा ए। शब्द अगम्मी इक सुणाउंदा ए। भेव अभेदा आप खुलाउंदा ए। अछल अछेदा वेस वटाउंदा ए। चारे वेदां वेख वखाउंदा ए। पुराण अठारां खोज खुजाउंदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाउंदा ए। सच दा पड़दा आप चुकावांगा। निरगुण नूर जोत चमकावांगा। जोती जाता डगमगावांगा। निरगुण सरगुण खेल खिलावांगा। लख चुरासी खेल खिलावांगा। गुर अवतार पैग़म्बर कोल बहावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव नाल रलावांगा। कलयुग कूड़ा पकड़ उठावांगा। दो जहानां वेख वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा इक सुणावांगा। सच संदेशा इक सुणाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। जोती जाता डगमगाएगा। कलयुग कूड़ा वेख वखाएगा। प्रभू दी धार इक प्रगटाएगा। निरगुण नूर जोत रुशनाएगा। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी भेव खुलाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच करनी कार कमाएगा। सच करनी कार कमावांगा। बोध अगाधा भेव खुलावांगा। सदी चौधवीं वंड वंडावांगा। मुहम्मद लेखा झोली पावांगा। अगला हुक्म हुक्म प्रगटावांगा। दीन दुनी आप समझावांगा। रिषी मुनी मुनीशर आप उठावांगा। धुर संदेशा नर नरेशा हो के इक सुणावांगा। जो आदि जुगादी रहे हमेशा, सो पुरख अबिनाशी रूप धरावांगा। भगत उधारना जिस दा पेशा, पेशतर आपणा पड़दा लाहवांगा। सच स्वामी हो के देवां संदेशा, फ़रमाना इक्को इक सुणावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर ठांडा इक दरसावांगा। दर ठांडा इक प्रगटाएगा। निरगुण नूर जोत रुशनाएगा। पारब्रह्म प्रभ वेस वटाएगा। देस परदेस खोज खुजाएगा। नर नरायण नरेश इक अख्वाएगा। जन भगतां कर के हेत, हितकारी मेल मिलाएगा। दर्शन दे के नेतन नेत,

निज नेत्र अक्ख खुल्हाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच आपणा मार्ग लाएगा। सच मार्ग इक लगावांगा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप हुक्म मनावांगा। मानव ज़ाती आप उठावांगा। शब्द अनादी नाद सुणावांगा। निरगुण जोती जोत जगावांगा। सोई सुरती आप उठावांगा। गुर अवतार पैग़म्बरां लहिणा लेखा पूर करावांगा। आत्म परमात्म रच सुअम्बर, सोहणा जोड़ा जगत जुड़ावांगा। कलयुग कूड़ मेट अडम्बर, सतिजुग सति सति वरतावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर इक्को इक खुल्हावांगा। दर इक्को इक खुल्हाएगा। सो पुरख निरँजण दया कमाएगा। हरि पुरख निरँजण वेख वखाएगा। आदि निरँजण सोभा पाएगा। इक एकँकार रंग रंगाएगा। अबिनाशी करता पड़दा लाहेगा। श्री भगवान डंक वजाएगा। पारब्रह्म प्रभ वेस वटाएगा। ब्रह्म आपणा संग रखाएगा। विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाएगा। गुर अवतार पैग़म्बर निउँ निउँ सीस झुकाएगा। भगत भगवान मेल मिलाएगा। शब्द निशान इक झुलाएगा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप, धुर दा हुक्म इक वरताएगा। तूं मेरा मैं तेरा लेखा मुका के मन्दिर मसीत, काया काअबा इक वडयाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला आप मिलाएगा। सच मेला मेल मिलावांगा। बिन तेल बाती जोत रुशनावांगा। बिन वरन गोती गोत चलावांगा। सब दी चढ़ के चोटी, चोट शब्द नाम लगावांगा। जिस नूं लभ्भदे कोटन कोटी, ओह भगत सुहेले वेख वखावांगा। झगड़ा कर के गोष्ट गोष्टी, हउमे हंगता जड़ उखड़ावांगा। नाम सुणा के इक सलोकी, सोहला धुर दा इक सुणावांगा। एथे ओथे दो जहानां बख़्श के ओटी, ओड़क इक्को रंग रंगावांगा। रसना रहिण देवां ना किसे दी खोटी, खोटे खरे सर्ब बणावांगा। भगत सुहेले बणा के माणक मोती, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच आपणी कार कमावांगा। सच आपणी कार कमाएगा। सो पुरख निरँजण दया कमाएगा। गृह मन्दिर फोल फुलाएगा। तन मन्दिर पड़दा लाहेगा। ममता मोह विकार जन्दर आप तुड़ाएगा। भाग लगा के मेरी कन्दर, दीपक जोती जोत रुशनाएगा। भगत दूजे घर ना जाए मंगण, वस्त अगम्म नाल झोली भराएगा। दूई द्वैती ढाह के कंधन, दर साचा इक सुहाएगा। तूं मेरा ते मैं तेरा इहो नाम ते इहो बन्दन, सजदा सच सच समझाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा राह वखाएगा। जन भगत कहिण प्रभ हउँ दासी दास तेरे, त्रैगुण डेरा ढाहीआ। घर स्वामी वसणा नेड़े, दूर दुराडा पन्ध चुकाईआ। कूड़ कल्पना रहिण ना देवे झेड़े, झगड़ा देणा मुकाईआ। चुरासी कट कट के गेड़े, चारे खाणी डेरा ढाहीआ। जो सुत दुलारे बण गए तेरे, तेरे विच समाईआ। उन्हां लेखा मुका दे गुरु गुर चेरे, चेला गुर आप हो आईआ। इक्को वार निरँकार चाढ़ लै बेड़े,

दूजी नईया दी लोड़ रहे ना राईआ। सतिजुग सच वसा लै आपणे खेड़े, जिथ्थे खण्डा खड़ग ना कोए चमकाईआ। दीन मज़्हब दे दिसण कोए ना झेड़े, झगड़ा शरअ ना कोए लड़ाईआ। तेरे चरण कँवल कँवल होण प्रभ तेरे, गृह इक्को सोभा पाईआ। मुड़ के मातलोक मारने पैण ना फेरे, फिरत फिरत ना कोए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर सच मिले सरनाईआ। जन भगत कहिण प्रभ असीं तेरे बणे बालक, बाले नन्हे रूप धराईआ। तूं सृष्ट सबाई ख़ालक, तेरे हथ्थ वड्याईआ। एथे उथे दो जहानां मालक, मेहरवान तेरी ओट तकाईआ। बिन तेरे साडा अवर कोए ना सालस, सुल्हकुल तेरी इक सरनाईआ। साडी कूड़ कल्पना मेट दे आदत, अदल इन्साफ़ इक कमाईआ। तेरे नाम दी करीए इबादत, कलमा इक्को देणा पढ़ाईआ। आपणी बख्शिश कर सख़ावत, सुख़न पिछले पूर कराईआ। साडी आत्मा तेरी अमानत, अमानत आपणी झोली लै टिकाईआ। साचा नाम निधाना गुण निधाना (दे) न्यामत, रस इक्को इक वखाईआ। मन मनुआ करे ना कोए बग़ावत, झगड़ा अवर रहे कोए ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा इक सुणाईआ। पुरख अकाल कहे जन भगतो सुणो आप, हरि आपणा भेव खुल्हाईआ। इक्को धुर दा मन्नो बाप, पिता पुरख अकाल वड्याईआ। इक्को धुर दा करो जाप, तूं मेरा मैं तेरा सबक पढ़ाईआ। इक्को आत्म परमात्म बणो साक, दूजा संग ना कोए रखाईआ। इक्को वेखो धुर दा वाक, सो संदेशा हक सुणाईआ। इक्को नूर इक्को बणो ज़ात, अज़ाती डेरा देणा ढाहीआ। इक्को अन्तर रखो ख़ाहिश, प्रभ मेला सहिज सुभाईआ। इक्को गृह करो विश्वास, जो विषयां दा डेरा ढाहीआ। इक्को विको हाट, दूजे हट्ट ना कोए विकाईआ। इक्को वेखो पुरख अबिनाश, जो जन्म मरन विच ना आईआ। सो आपे मेटे अंधेरी रात, कलयुग कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। प्रगट हो के दर्शन देवे साख्यात, सच स्वामी सोभा पाईआ। जिस दा लेखा लिख सके ना कोए कलम दवात, काग़ज़ सिफ्त ना कोए सालाहीआ। सो वसे तुहाडे पास, सच दवारे नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। पुरख अकाल कहे जन भगतो रख लओ ओट, ओड़क इक सरनाईआ। जो काया अन्दरों कढे खोट, खोटे खरे दए बणाईआ। नाम शब्द दी ला के चोट, चोटी चढ़ के वेख वखाईआ। निरगुण नूर जगा के जोत, अंध अंधेरा दए मिटाईआ। जिथ्थे मन बुद्धी दी रही नहीं सोच, सो अनभव पड़दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे नाम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस विच सब दी होई लोच, लोचा अवर रहे ना राईआ।

✪ २७ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ हरबंस सिँघ दे गृह गुड़गाउं ✪

जन भगत कहिण प्रभ किरपा कर अगम्म, अगम्मड़े आपणी दया कमाईआ। भाग लगा दे काया माटी चम्म, पंज तत चम्म दृष्टी दे बदलाईआ। पवण स्वासी जपीए जाप दम, दामनगीर हो के दया कमाईआ। कलयुग हरख सोग मेट दे ग़म, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। कूड़ विकार रहे ना तम, तृष्ना मोह देणा मिटाईआ। दहि दिशा ना भटके मन, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। जोत प्रकाश दे चन्न, अंध अंधेर दे गंवाईआ। जगत जुगत दा बेड़ा दे बन्नृ, जगत धार ना कोए रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी आपणी दया कमाईआ। जन भगत कहिण किरपा कर धुर दे ठाकर, ठोकर आपणा नाम लगाईआ। निर्मल कर्म कर उजागर, दुरमति मैल मैल धुआईआ। पड़दा लाह दे काया गागर, गहर गम्भीर वेख वखाईआ। भँवरी रहे कोए ना सागर, जगत भँवर पार कराईआ। सच नाम बणा सौदागर, वणज इक्को इक वखाईआ। तूं करता करीम कादर, दर तेरे अलख जगाईआ। दर घर साचे दे आदर, चरण कँवल मिले सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा नाम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, योधा सूरबीर शब्द शब्द गुर बहादर, भय आपणा इक वखाईआ।

✪ २७ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ सेवा सिँघ दे गृह गुड़गाउं ✪

जन भगत कहिण प्रभ किरपा कर अपार, अपरम्पर आपणी दया कमाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया ना करे ख्वार, मोह विकार ना कोए हल्काईआ। साचा नाम धुंन दे धुन्कार, अनहद नादी नाद सुणाईआ। अमृत झिरना झिरा ठंडा ठार, बूँद स्वांती दे झिराईआ। निर्मल नूर जोत कर उज्यार, बिन तेल बाती होवे रुशनाईआ। साचे मन्दिर खोलृ दवार, घर घर पड़दा दे उठाईआ। आत्म परमात्म मेला घर मीत मुरार, हरि सज्जण सहिज सुभाईआ। सच दवार एकँकार तेरा दरस होवे दीदार, दूसर नज़र कोए ना आईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी किरपा धार, पारब्रह्म ब्रह्म मेहर नज़र उठाईआ। जन भगत कहिण साडी निव निव नमों नमों निमस्कार, सजदा सीस जगदीश झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। जन भगत कहिण प्रभ धुर दा दे दे नाम भण्डारा, जगत मंगण दी लोड़ रहे ना राईआ। शब्द सुणा दे अगम्म अपारा, जिस नूं चार जुग दे शास्त्र कहिण कोए ना पाईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी घर अन्दर वखा दरबारा, दरगाह साची सचखण्ड दवार इक जणाईआ। जिथ्थे आदि अन्त जुगा जुगन्त

तेरा नूर जोत उज्यारा, जोती जाता डगमगाईआ। सो पुरख निरँजण दर मंगीए एका वारा, बेनन्ती इक इक सुणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अंध्यारा, अंध आत्म मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस निवाईआ। जन भगत कहिण प्रभ साचे नाम दी भर दे झोली, झूला दो जहान झुलाईआ। आत्म परमात्म दस्स दे बोली, अनबोलत आपणा राग दृढ़ाईआ। तेरे प्रेम दी खेलीए होली, लाल गुलाला रंग चढ़ाईआ। उलटी कर दे नाभ दी कँवली, कँवल कँवला रूप दरसाईआ। सुरती रहे किसे ना बवली, बुध बिबेक देणी बणाईआ। साडी आशा कोझी कमली, कामल मुर्शद तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा नूर अलाही अवल्ली, अमलां तों रहित तेरी बेपरवाहीआ।

६६४
२२

✪ २८ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ रेशम सिँघ दे गृह मेरठ छाउणी ✪

जन भगत कहिण प्रभू कलयुग बड़ा ठग्ग, घर घर ठगौरी पाईआ। साढे तिन्न हथ्थ पंज तत ला के अग्ग, सरगुण तत रिहा जलाईआ। चढ़ना मिले ना किसे उपर शाह रग, जीव जंत साध सन्त रहे कुरलाईआ। निझर झिरना बूँद स्वांती अमृत मिले किसे ना रस, कँवली कँवल ना कोए उलटाईआ। धुन आत्मक शब्द सुणे कोए ना नद, अनहद नादी नाद ना कोए शनवाईआ। हँस रूप होए कग, तेरा नाम माणक मोती चोग ना कोए चुगाईआ। तिन्न सौ सठ्ठ ख़ाली दिसे हड्ड, नाड़ बहत्तर ना वज्जे वधाईआ। तेरी आत्मा तेरे नालों कीती अड्ड, गृह गृह मिलण कोए ना पाईआ। साहिब सुल्तान नौजवान सारे तैनूं रहे सद्द, सद्दा होका इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं तेरा सुत दुलारा, जोबनवन्ता सोभा पाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर पावां सारा, इष्ट सब दा रिहा बदलाईआ। घर घर अन्दर वधा के काम क्रोध लोभ मोह हँकारा, हउमे गढ़ दिता बणाईआ। सुरत शब्द करे ना कोए प्यारा, प्रीतम रंग ना कोए रंगाईआ। अंमृत रस मिले ना किसे ठंडा ठारा, बूँद स्वांत ना कोए टपकाईआ। साढे तिन्न हथ्थ कीआ अंध्यारा, तेरा नूर नज़र किसे ना आईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द पढ़ पढ़ थक्का सर्ब संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी देण गवाहीआ। तेरी मंज़ल मिले ना किसे नर निरँकारा, बन्द कवाड़ ना कोए खुल्हाईआ। तेरी मेहर नाल महिबूब मैं नौ खण्ड पृथ्मी पावां सारा, नौ दवार आपणा बल धराईआ। हरि हिरदे अन्दर कीआ धूंआँधारा, अंध अंधेर कीता लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी सेव कमाईआ। जन भगत

कहिण प्रभ कलयुग कीता अंध घोर, घोरी नज़र कोए ना आईआ। अन्दर वसा के आपणे चोर, चोरी चोरी तेरा नाम ल्या चुराईआ। मनुशां कोलों खुआए पशू ते ढोर, पंछीआं खल्ल लुहाईआ। सच धर्म दी कट के डोर, डोरी कूड़ नाल बंधाईआ। झगड़ा पा के मढ़ी गोर, अवतार पैग़म्बर गुरु दिते लड़ाईआ। अवतार पैग़म्बर बणदे बांका छोहर, दर दर आपणा रूप दरसाईआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी अन्तिम तेरी पई लोड़, लुड़ींदे साजण हो सहाईआ। तुध बिन आत्म परमात्म सके कोए ना जोड़, सुरत शब्द ना कोए समाईआ। जगत विद्या तेरा भेव खोल्ह ना सके होर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, श्री भगवान तेरी सरनाईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरी तेरे चरण कँवल निमस्कार, डण्डावत बन्दना सीस झुकाईआ। मैं चाहुंदा चारों कुण्ट होवे हाहाकार, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। सच मिले ना किसे दवार, पड़दा अन्दरों ना कोए उठाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द गावण गाए विच संसार, सहिंसा अन्दरों ना कोए मिटाईआ। मैं तेरे प्रेम प्यार दी वज्जण ना देवां सितार, सति सतिवादी तेरा भेव ना कोए खुल्हाईआ। मेहरवान महिबूब मुहब्बत विच दे इक इशार, धुर संदेशा इक दृढ़ाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्तर खेल करां अपार, अपरम्पर आपणी कार कमाईआ। जेहड़ी मेरी आयू लख चार बत्ती हज़ार, छिन भंगर तेरी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। जन भगत कहिण मेरे साहिब स्वामी, हरि वडे तेरी वड्याईआ। तूं आदि जुगादी निरगुण धार निहकामी, निरन्तर तेरी शरनाईआ। लख चुरासी अन्तरजामी, घट घट अन्तर फोल फुलाईआ। लेखा वेख लै आपणी चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। पड़दा लाह के आपणी बाणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी भेव रहे ना राईआ। तेरी मंज़ल मिले ना किसे रुहानी, रूह बुत देण दुहाईआ। झगड़ा मेट जिस्म जिस्मानी, ज़मीर अन्दरों आप बदलाईआ। जिस कलयुग विच गोबिन्द बच्चयां दी दे के गया कुरबानी, उसे दा लेखा करबला रिहा सुणाईआ। किरपा कर शहिनशाह सुल्तानी, सति पुरख तेरी वड्याईआ। जो भविक्खतां विच अवतार पैग़म्बर गुर दे के गए ब्यानी, सदी चौधवीं संग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, पारब्रह्म तेरी वड्याईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरा खेल वेख लै चंगा, चंगी तरह कराईआ। जूठ झूठ वहाई धार गंगा, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती माण रिहा ना राईआ। घर घर पवाया दंगा, स्त्री पुरुष दिते लड़ाईआ। सब दा सीस कर के नन्गा, ओढण पर्दा दिता चुकाईआ। बन्दगी विच साबत रहिण दिता नहीं कोई बन्दा, बन्दन सीस ना कोए निवाईआ। लेखा वेख के जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज आपणी कार कमाईआ। इक डर आउंदा जिस वेले तकां शब्द गोबिन्द दा खण्डा, खड़ग अगम्म अथाहीआ। फेर तकां सदी

चौधवीं दा नज़र आवे तम्बा, तोबा तोबा नाल दुहाईआ। फेर वेखां लेखा हज़रत ईसा संगा, सदी बीसवीं नाल रलाईआ। फेर तकां मूसा होया अन्त इक टंगा, दोहरी धार ना कोए जणाईआ। मैं चाहुंदा मेरा अन्तिम छेती आवे कन्ढा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। धर्म शास्त्र विच पूरा रहिण ना देवां कोए पंडा, पिण्डी दा भेव ना कोए खुल्हाईआ। आत्म तेरे नालों करन रंडा, कन्त सुहाग ना कोए हंढाईआ। मन मनुआ कर मुशटंडा, दीन दुनी दी आदत देणी बदलाईआ। मेरा समां रहे ना लम्बा, लम्मा पै के सीस निवाईआ। उठ वेख खेल मेरे संगा, जो कलयुग कहे लोकमात कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगत कहिण प्रभ कलयुग सब नूं लाई जांदा कालख, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। चार वरन रिहा कोए ना ख़ालस, अठारां बरन कूड़ दुहाईआ। धर्म दी धार बणे ना कोए सालस, सगला संग ना कोए जणाईआ। सारी सृष्टी एस नूं कहिंदी अजे बालक, जगत शास्त्र नाल गवाहीआ। की अंधेरा पाया ख़लक दे ख़ालक, मख़लूक चारों कुण्ट रुआईआ। जिधर तक्को उधर जहालत, अक्ल बुद्धी ना कोए चतुराईआ। सच दी रहे ना कोए अदालत, अदल इन्साफ़ ना कोए कमाईआ। दीन मज़्हब करे बगावत, बग़लगीर ना कोए अख्वाईआ। धुर दा नाम करे ना कोए सख़ावत, अक्खरां वाली सारे करन पढ़ाईआ। मन मनसा करे ना कोए ममानत, मन का मणका ना कोए भवाईआ। तेरी आत्मा तेरे हथ्थ फड़ाए ना कोए अमानत, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। दीन दुनी होई अणजाणत, अनभव तेरा पड़दा कोए ना लाहीआ। समझ आए किसे ना मानस, मानव मानुख चरण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, जन भगत सुहेले दर तेरे ओट रखाईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरी पिठ ते मार दे थापी, पुश्त पनाह हथ्थ रखाईआ। मैं रूह बुत रहिण देणा नहीं कोई पाकी, सदी चौधवीं फोल फुलाईआ। मन मनुआ सब दा कर के आकी, घर घर देणा लड़ाईआ। तेरे नाम दा रहिण देणा नहीं कोई साकी, आबे हयात ना कोए प्याईआ। पवित्र रहिण देणा नहीं बन्दा ख़ाकी, धूढ़ी ख़ाक ना कोए रमाईआ। लहिणा तकणा ज़ात पाती, ऊच नीचां नाल टकराईआ। प्रभू एह मेरी बख्श देणी गुस्ताख़ी, गुस्सा गिला ना कोए जणाईआ। मैं तेरी मन्नणी साची आखी, साबत नज़र कोए ना आईआ। मैनूं ओह वेला याद जिस वेले माछूवाड़े गोबिन्द नूं बिन अक्खरां शब्दी दिती पाती, बिन हरफ़ हरूफ़ दिती लिखाईआ। गोबिन्द तेरे ढईए तों पिच्छों दीन दुनी दी बदल जाणी हयाती, सति रहिण कोए ना पाईआ। सो पूरा करना भविक्ख्त वाकी, वाक्या वेखणा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कलयुग कहे मैं ढहि प्या सरनाईआ। जन भगत कहिण प्रभू ओह वेख कलयुग पाउंदा शोर, ज़ोर

ज़ोर सुणाईआ। कलयुग कहे मैं कोई ठग्ग नहीं चोर, सन्मुख हो के दयां दृढ़ाईआ। पुरख अकाल कहे तुहानूं सब नूं मेरी लोड़, ख़ाली कोई नज़र ना आईआ। जन भगत कहिण पुरख अकाल आपणे नाल जोड़, जोड़ी धुर दी लै बणाईआ। कलयुग कहे प्रभू सब दी प्रीती लग्गी तोड़, तेरी मंज़ल चढ़न कोए ना पाईआ। पुरख अकाल कहे मैं सब दा मालक ख़ालक सचखण्ड निवासी शौहर, खावंद इक्को नज़री आईआ। जन भगत कहिण सानूं आपणे संग तोर, तुरीआ तों परे कर रुशनाईआ। कलयुग कहे बेड़ा सब दा शौह दरयाए रोड़्, नईया नौका नाम चढ़न कोए ना पाईआ। पुरख अकाल कहे मेरा सांझा इक्को पौड़, पौड़ी डण्डा अवर ना कोए रखाईआ। जन भगत कहिण अन्तिम छेती कर ग़ौर, गहर गम्भीर वेख वखाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैनूं होर बख़्श दे ज़ोर, जोरू ज़र ख़ाक दयां रुलाईआ। पुरख अकाल कहे मैं आदि अन्त जुगा जुगन्त अवर का और, होर दा होर रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द करे प्रकाश काया मन्दिर अन्दर विच अंधघोर, निरगुण नूर जोत बिन वरन गोत कर रुशनाईआ।

६९७ ६९७
२२ २२

✪ २९ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ सरमैल सिँघ दे गृह मेरठ छाउणी ✪

जन भगतो इक्को इक रखो सहार, सहायक इक्को नज़री आईआ। कलयुग करे ना किसे ख्वार, कूड़ क्रिया ना कोए समझाईआ। सिर हथ्थ रखे निरँकार, निरवैर आपणी दया कमाईआ। कूड़ी क्रिया मेट विच संसार, सहिँसा अगला दए चुकाईआ। जन्म लैणा ना पए दुबार, चुरासी फाँसी आप कटाईआ। घर मन्दिर वखा दवार, दरगाह साची इक सरनाईआ। जिथ्थे निरगुण नूर जोत उज्यार, दीआ बाती ना कोए रुशनाईआ। सचखण्ड मेल मिलाए मेलणहार, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। तिस साहिब करो निमस्कार, नमो नमो बन्दना इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद आपणा रंग रंगाईआ। जन भगतो इक्को रखणी ओट, ओड़क इक्को नज़री आईआ। कलयुग मार ना सके चोट, चोटी चढ़ ना दए दुहाईआ। सतिगुर शब्द अन्दरों कढे खोट, खोटे खरे लए बणाईआ। आत्म परमात्म जणा के गोत, वरन बरन दा डेरा ढाहीआ। जन्म कर्म दी करनी पए ना सोच, समझ बुद्धी तों परे दए समझाईआ। सब दी आसा मनसा पूरी करे लोच, लोचन नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। नाम खुमारी करे मदहोश, मधुर धुन इक सुणाईआ। झगड़ा मिटा के काया पोश, आत्म ब्रह्म दए दृढ़ाईआ। पढ़ना पए ना विद्या वाला कोश, अक्खर वक्खर इक समझाईआ।

पन्ध मुका लोक परलोक, दो जहानां चरणां हेठ दबाईआ। जिस तूं मेरा मैं तेरा गाया इक सलोक, तिस कलयुग माया पोह सके मूल ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निर्मल नूर जगाए जोत, जोती जाता दया कमाईआ।

✪ २६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ मुलख राज दे गृह मेरठ छाउणी ✪

जन भगतो इक्को मन्नो पुरख अकाल, अकल कलधारी दया कमाईआ। कलयुग पोह ना सके काल, कलू कल ना कोए वड्याईआ। साहिब सतिगुर दे बणो लाल, लालन आपणी गोद टिकाईआ। जिस दी जुगां अवल्लड़ी चाल, जुग चौकड़ी समझ कोए ना पाईआ। सो वेखणहारा मुरीदां हाल, मुर्शद दाता बेपरवाहीआ। जन भगतां बेनन्ती मन्ने सवाल, सवाली वेखे थाउँ थाँईंआ। कलयुग अन्तिम हो दयाल, मेहर नज़र इक उठाईआ। जिधर तक्को उधर नाल, हाज़र हज़ूर सोभा पाईआ। चरण प्रीती नाम देवे सच्चा धन माल, ख़ज़ीना अतोट अतुट वरताईआ। लेखा जाणे सब दा माज़ी हाल, ओहला नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां सदा करे प्रितपाल, प्रितपालक हो के सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ।

६९८
२२

✪ २६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ हँस राज दे गृह मेरठ छाउणी ✪

जन भगतो अन्दर तक्को आपणा मीत, मित्र प्यारा नज़री आईआ। जिस ने कलयुग बदल दिती रीत, मन्दिर मसीत दा पन्ध मुकाईआ। तुहाडी काया करे ठांडी सीत, अग्नी तत बुझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के गीत, सोहँ ढोला दिता पढ़ाईआ। दीन दुनी चों बदल के नीत, नीतीवान होया सहाईआ। इक्को रंग रंगा के हस्त कीट, ऊचां नीचां मेल मिलाईआ। धुर संदेशा दे हदीस, हज़रतां तों परे करे पढ़ाईआ। आसा मनसा पूरी करे उम्मीद, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। सब दी लेखे लाए दीद, दो जहानां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन सदा वसे चीत, चितवित जगत ठगौरी रहिण कोए ना पाईआ।

✪ २६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ प्यारे लाल दे गृह मेरठ छाउणी ✪

जन भगतो पुरख अबिनाशी अन्दर वसे, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारया नस्से, दूर दुराडा भज्जे वाहो दाहीआ। तुहाडी मिटे रैण अंधेरी मस्से, जोती नूर करे रुशनाईआ। अमृत धार बख्शे रसे, निझर झिरना इक झिराईआ। साचा मार्ग सतिजुग दस्से, कलयुग क्रिया विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। चार वरनां रहिणा इक्खे, ज़ात पात ना कोए चतुराईआ। जो इक्को साहिब दी चरणी ढट्ठे, उन्हां दा इक्को पिता माईआ। मज़्हबां दे रहिण नहीं देणे रट्टे, झगड़ा तुसां देणा मिटाईआ। तुसीं मंज़ल ओह टप्पे, जिथ्थे टप्पयां वाले पुज्ज सकण ना राईआ। तुहाडे चीथड़ नहीं रहिणे फटे, ओढण इक्को इक पहनाईआ। नाम खुमारी विच रहिणा रते, रत्न अमोलक रूप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुहानूं भगती विच रहिण ना देवे कच्चे, भगवन हो के सच दी बख्शे माण वड्याईआ।

✪ २६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ हरभजन सिँघ दे गृह दिल्ली ✪

पुरख अकाल कहे जन भगतो अन्तर आत्म माणो मेरा रंग, रंगत इक्को अगम्म अथाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया टुट्टे संग, माया ममता मोह विकार हँकार रहिण कोए ना पाईआ। सेज सुहञ्जणी सुहाओ आत्म पलँघ, जिस दा पावा चूल नज़र कोए ना आईआ। घर शब्द नाद सुणो मृदंग, धुन आत्मक राग अथाहीआ। जोत प्रकाश तक्को बिन सूर्या चन्द, अंध अंधेर मिटाईआ। आत्म परमात्म माणो साचा अनन्द, रसना जेहवा रस ना कोए वखाईआ। हउमे हंगता माया ममता कूड़ी क्रिया ढाओ कंध, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी गाओ छन्द, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। जगत जहान मंज़ल धर्म धार दी जाओ लँघ, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। सच गृह सच दवारा वेखो सचखण्ड, दरगाह साची सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर इक्को इक वखाईआ। पुरख अकाल कहे जन भगतो मेरा अन्तर आत्म माणो रस, जगत दवारे तृखा बुझाईआ। कलयुग कूड़ कल्पणा जाए नस्स, तन वजूद माटी ख़ाक रहिण ना पाईआ। मन मनुआ होए वस्स, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। शब्द निराला तीर मारो कस, अणयाला अगम्म चलाईआ। बिन रसना जेहवा मेरा गावो जस, अजपा जाप विच वड्याईआ। शब्द रथवाही चढ़ो रथ, दो जहानां पार कराईआ। इक्को ओट रखो पुरख समरथ, दूजा इष्ट ना कोए समझाईआ। जो वसे घट घट, सो तुहाडा पिता माईआ।

झगड़ा मेटे तीर्थ अट्ठ सट्ठ, गृह मन्दिर काया सरोवर इक नुहाईआ। निरगुण जोत जगाए लट लट, अंध अंधेर दए मिटाईआ। इक जैकारा शब्दी सुणो अलख, अलख अगोचर आप सुणाईआ। शाह सुल्तान मेहरवान करो प्रतख, प्रतख आपणा दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा नाम सुणाईआ। पुरख अकाल कहे जन भगतो मेरा अन्तर करो ध्यान, धरनी धरत धवल धौल दयां वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मिटे निशान, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म मेल मिलावां आण, मेहरवान हो के आपणी दया कमाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द गाणा पए कोए ना गाण, अनहद नादी धुन दयां सुणाईआ। पर्दा लाह के जोती धार देवां पहचान, बेपहचान आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। जन भगत कहिण प्रभ तेरा जपीए नाम, नर निरँकार तेरी सरनाईआ। कलयुग कीती अंध अंधेरी शाम, शमा नूर ना कोए चमकाईआ। मन मनसा कर गुलाम, गुरबत अन्दर देणी भराईआ। नज़र आए ना धुर दा राम, रमईआ रमज़ ना कोए वखाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले निरगुण धार हो मेहरवान, महिबूब आपणा पड़दा लाहीआ। तुध बिन दूजा दिसे ना कोए विच जहान, इष्ट देव आत्मा ना कोए मिलाईआ। सदी चौधवीं चार कुण्ट दहि दिशा होई हैरान, हैरानी घट घट अन्तर छाईआ। शरअ छुरी बणी शैतान, दीन मज़्ह्ब करे लड़ाईआ। सच मार्ग दिसे ना कोए निशान, निशाना दीन दुनी गए भुलाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु दे के गए नाम कलमे दा गाए गाण, दर दीदा दानिस्ता नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, शहिनशाह सुल्तान सूरे सरबग सीस जगदीश तेरे चरण कँवल सरनाईआ।

✪ २६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ गुरबलविन्दर सिँघ दे घर दिल्ली ✪

कलयुग कहे मैं योधा सूरबीर बहादर गभरू, गहर गम्भीर दिती वड्याईआ। मैं घर घर कूड़ कुड़यार वजाउणा डमरू, अडम्बर दीन दुनी देणा वखाईआ। मेरा संदेशा सतिगुर रामदास नूं दे के गया निथावां अमरू, अमरदास अरदास सुणाईआ। गोबिन्द दी अन्तिम धार कोए ना संभलू, सम्बल आपणी खेल खिलाईआ। जो कलयुग विच सतिजुग आ के बदलू, बदला लवे थाँईं थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जिस नूं कोई माई ना जम्म लू, गर्भ वास ना डेरा लाईआ। कलयुग कहे मैं जोबनवन्ता, प्रभ दिती माण वड्याईआ। चारों कुण्ट बणा के गढ़ हंगता,

हउमे हँकार देणा भराईआ। माण रहिण नहीं देणा किसे सन्ता, साधू सज्जण ना कोए अख्वाईआ। कूड़ी क्रिया वधा के ममता, मोह दे विच देणा फसाईआ। झगड़ा पा के क्रिया मन दा, मन का मणका देणा भवाईआ। झगड़ा वेखणा साढे तिन्न हथ्थ तन दा, पंज तत खोज खुजाईआ। प्रकाश रहिण नहीं देणा निरगुण जोत चन्न का, अंध अंधेर होए लोकाईआ। जगत वणजारा बणाउणा चुगली कन्न का, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाल रखाईआ। खेल खेलणा सृष्टी दृष्टी अन्दर धन का, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि साहिब दया कमाईआ। कलयुग कहे मैं मन्नणा हुक्म हज़ूरी, जो हज़रतां दा हज़रत रिहा सुणाईआ। दरगाह सच तों मिली मंज़ूरी, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। मैं दीनां मज़्बां धार करनी कूड़ी, कूड़ी क्रिया गंढ पवाईआ। पुरख अकाल दी चरण लै सके कोए ना धूढ़ी, टिक्का धर्म ना कोए लगाईआ। सब दी सुरती करनी मूढ़ी, मूर्ख मुग्ध देणे बणाईआ। मंज़ल रहिण नहीं देणी कोई नूरी, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। सब दे अन्तर भर ग़रूरी, गुरबत नाता देणा जुड़ाईआ। आपणे नाम दी कर मशहूरी, मशवरा सब नूं देणा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद मेरा संग निभाईआ। कलयुग कहे मैं हर घट अन्दर वड़ना, रहिबर हो के खोज खुजाईआ। कूड़ी क्रिया ढोला सब ने पढ़ना, नाम गुरदेव देणा भुलाईआ। झगड़ा पाउणा वरनां बरनां, वारस इक्को इक समझाईआ। भवजल विच्चों किसे ना तरना, भव सागर विच देणा रुढ़ाईआ। जीवत होए किसे ना मरना, मर जीवत ना कोए दरसाईआ। नौ दवारे अग्गे खड़ना, दस्म दुआरी चढ़न कोए ना पाईआ। पिता पूत हो के लड़ना, ढईआ ढईआ खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरे स्वामी (आस पुजाईआ)। कलयुग कहे मैं करनी खेल निराली, निरालम हो के दयां जणाईआ। बड़ी जुग चौकड़ी घालणा घाली, धायल हो के दयां वखाईआ। जेहड़ा खेल राम दस्सया संदेशा दिता बाली, सुगरीव समझ किछ ना पाईआ। उस वेले दी वस्त संभाली, सम्बल दूरों सीस निवाईआ। मेरा प्रभू खेल तक लै हाली, हालत वेखणी ख़लक खुदाईआ। फल रहिण नहीं देणा किसे डाली, ख़िज़ां रुत दयां जणाईआ। सृष्टी पा के त्रैगुण जंजाली, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, तेरे हुक्म अन्दर लोकमात सुरत संभाली, साहिब तेरी इक्को ओट तकाईआ।

✪ २६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ चन्दा सिँघ दे गृह दिल्ली ✪

कलयुग कहे प्रभ मेरे अन्तर दे दे बल, बलधारी दया कमाईआ। पवित्र रहिण ना देवां अठसठ जल, अमृत रस ना कोए वखाईआ। चार कुण्ट जगत विकार चढ़ावां दल, सति धर्म सिर सके ना कोए उठाईआ। भाग लग्गे ना किसे काया डूँग्घी डल, अंध अंधेर तन ना कोए चुकाईआ। दूई द्वैती सब नूं लावां सल्ल, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। पिता पूत नाल करे छल, एह मेरी बेपरवाहीआ। भाणा वरता आपणा कलयुग कल, कलकाती करां लोकाईआ। तेरा मन्दिर दिसे ना किसे अटल, अटल पदवी कोए ना पाईआ। जूठ झूठ दा लावां फल, पत्त शगूफा ना कोए मुसकाईआ। फिरी दरोही विच थल, अस्गाहां देण दुहाईआ। जगत दवारे मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ लवां मल्ल, गुरदवारे आपणा डेरा लाईआ। तेरा नाम कोई लै सके ना पल, पलकां दे पिच्छे तेरा नूर नज़र किसे ना आईआ। कायनात दुनिया सृष्टी सति सच तों सारी जावे हल, हलूणा इक्को देणा लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरे अन्दर दे दे ताकत, सदी चौधवीं दया कमाईआ। मैं किसे दी रहिण नहीं देणी शराफ़त, हक हक ना कोए कमाईआ। बुद्धी विच दस्से ना कोए ल्याकत, मूर्ख मुग्ध दयां बणाईआ। तेरी करे ना कोए इबादत, कलमा सुणन कोए ना पाईआ। माया ममता मोह विकार दी करां ज्यारत, आलस निंद्रा दयां खुल्हाईआ। मेरा खेल तक लै विच भारत, भावना गुर अवतार पैग़म्बरां नाल मिलाईआ। तेरी भविक्खतां वाली पूरी करां अबारत, जो अक्खरां विच लिख लिख दिती गवाहीआ। मैं नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप बणा के वज़ारत, माया ममता नाल ठुकराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीन दुनी दी बदल देवां आदत, अदली हो के तेरे हुक्म दा अदल कमाईआ।

✪ २६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ६ कैपटन महिन्दर सिँघ दे गृह दिल्ली ✪

कलयुग कहे प्रभ हुक्म दे दे हका, परवरदिगार वाहिद जणाईआ। मैं मुहम्मद दा लेखा वेखां सच्चा, सति सतिवादी फोल फुलाईआ। सदी चौधवीं दा पूरा दे दे पता, पतिपरमेश्वर पड़दा लाहीआ। खेल वखावां मदीना मक्का, काअब्यां विच दुहाईआ। पकड़ उठावां बूरा कक्का, ईसा मूसा नाल मिलाईआ। तेरे हुक्म दा कलमे दा सब नूं लावां धक्का, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा फिरां नट्ठा, साहिब सुल्तान भज्जां वाहो दाहीआ। मैं दीन मज़्हब दा वेखदा

पट्टा, पट्टेदारी खोज खुजाईआ। जिस ने तेरे नाम दा पाया रट्टा, अक्खर नाल अक्खर दिते लड़ाईआ। आत्म परमात्म समझया किसे ना टप्पा, सिफ्ती ढोले सारे गाईआ। हुक्म संदेशा दे दे शब्दी धार गोबिन्द बच्चा, बचपन आपणा पूर कराईआ। मेरा कौल इकरार रहे ना कच्चा, कायनात होए सहाईआ। अग्गे फ़र्क रहे ना फका, फ़तवा सब ते देणा लगाईआ। मेरा तेरे नाल अख़ीरी मता, मति बुद्धी तों बाहर देणा समझाईआ। मैं चार कुण्ट दहि दिशा वेखां बिना अक्खां, निज नेत्र तेरा ध्यान लगाईआ। साची मंजल चढ़े ना कोई विच्चों लखां, कोटन कोटी मिलण कोए ना पाईआ। मैं खिड़ खिड़ा के हस्सा, हस्स हस्स खुशी बणाईआ। तेरा मिले नाम किसे ना रसा, रस्ता दुनी गई भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरा पक्का वेख इरादा, अदली इक जणाईआ। मैं लेखा पूरा करना धर्म दवारा, लेखा रहिण नहीं देणा किसे साधा, सन्त सच ना कोए कमाईआ। तेरा भेव खोल्हे ना कोए बोध अगाधा, शब्दी शब्द ना कोए शनवाईआ। तेरा हुक्म जुग चौकड़ी आदि जुगादा, सतिजुग त्रेता द्वापर खेल खिलाईआ। अन्तिम निरगुण धार मारे वाजां, शब्द तेरा नाम सुणाईआ। मेरा लेखा पूरा कर दे जो कहि के गया वाला बाजां, बाज़ीगर आपणा स्वांग बदलाईआ। तूं शाहो भूप वड राजन राजा, शहिनशाह एकँकार इक अख्वाईआ। मैं तेरी सरन लागा, गुर अवतार पैग़म्बरां नाता ल्या तुड़ाईआ। तूं कन्त कन्तूहल सुहागा, परवरदिगार नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी सरनाईआ। कलयुग कहे प्रभ मेरा वक्त कर सुहञ्जणा, सोभावन्त साहिब सुल्तान। तूं दाता दानी दर्द दुःख भय भञ्जणा, योद्धा सूरबीर नौजवान। मैं तेरे चरण धूढ़ी करां मजना, सच दी धार इक अशनान। तेरा दरस कर कर रज्जणा, नेत्र नैण खुशी मनाण। तूं मैनूं लाउणा अंगणा, बेनन्ती कर परवान। मैं घर घर अन्दर लख चुरासी जीव जंत लँघणा, कूड़ी क्रिया सब नूं देणा दान। तेरा दरस होण नहीं देणा गोपाल मदना, शब्द सुणे ना कोए धुन्कान। तेरी किरपा नाल मेरा छन्द डौरु वज्जणा, नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप करां हैरान। मैं दीनां मज़्हबां ज़ातां पातां लाउणी अग्गना, त्रैगुण माया अग्नी बाल। मैं दिशा कूट विच वंञणा, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण खेल महान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देदे साचा वर, मेरे साहिब साहिब सुल्तान। कलयुग कहे प्रभू ओह वेख मैनूं मुहम्मद वटदा घूरी, चौदां तबक ध्यान लगाईआ। मूसा तेरा नूर दस्स के नूरी, नूर नुराने रिहा जणाईआ। ईसा जणा के इक हज़ूरी, हाज़र हज़ूर तेरी वड्याईआ। मेरी आसा तुध बिन कवण करे पूरी, तृष्ना जगत पूर कराईआ। मैं चाहुंदा सारी सृष्टी करां कूड़ी, कूड़ कुटम्ब बणाईआ। तेरे चरणां दी ला सके ना कोए धूढ़ी, मस्तक टिक्का ख़ाक ना

कोए रमाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा मोह विकार हँकार दी करां मशहूरी, माया ममता विच सृष्ट हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे धुर दा वर, वर दाते दया कमाईआ। कलयुग कहे प्रभ वेख किथे मुहम्मद धार नूह नदी, सागर वहिण ना कोए वहाईआ। बीतदी जांदी चौधवीं सदी, सदमा दिसे ना कोए लोकाईआ। मैं चाहुंदा किसे दी रहे मूल ना गद्दी, गदागर देणा बणाईआ। मेरी प्रीत तेरे नाल लग्गी, लग मात्रा दा झगड़ा देणा गंवाईआ। कलयुग जीव हँस करां कग्गी, मुख जूठ झूठ भराईआ। तेरी धार नज़र ना आवे किसे बग्गी, शाह रग तों उपर तेरा दरस कोए ना पाईआ। झगड़ा मुकावां सुदी वदी, किशना शुक्ला पक्ख पक्ख ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे धुर दा वर, मेरी आसा पूर कराईआ। कलयुग कहे प्रभू ओह वेख आपणा ईसा, ईसउलसलाम की चतुराईआ। ओह राह तके बीस बीसा, बीसवीं सदी दए गवाहीआ। जिस विच बदली हदीसा, हज़रतां तों परे तेरी पढ़ाईआ। झगड़ा मुकाउणा ऊचां नीचां, ज़ात पात रहिण कोए ना पाईआ। आत्म ब्रह्म मानव वेखणा हक बग़ीचा, कलमा शरअ ना कोए वड्याईआ। इक्को सिफ्त इक्को सलाह इक्को तमहीदा, इक्को विद्या विद्त देणी जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देदे धुर दा वर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। कलयुग कहे मेरा आया वक्त सुहाणा, परवरदिगार तेरी सरनाईआ। मैं कूड़ी क्रिया खेल खिलाणा, ख़ालक तेरी ख़लक देणी भुलाईआ। चारों कुण्ट करां वैराना, वैरी घर घर आप बणाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद ज़रूर लड़ांना, सच तेरी ओट तकाईआ। अन्तिम सब दा लेखा पूरा कराना, बाकी रहिण कोए ना पाईआ। मैं चाहुंदा छेती बदल देवां ज़माना, ज़िमी ज़मां तेरा ध्यान कराईआ। खेल तकां उपर ज़िमीं असमानां, इस्म आज़म तेरा वेख वखाईआ। झगड़ा मेट अंज़ील कुराना, कुरह इक दयां दरसाईआ। जिथ्थे जल्वागर नूर नुराना, जोती जोत जोत रुशनाईआ। ना कोई शब्द नाद ना कोई कल्मयां वाला गाणा, ना कोई अक्खरां वाली पढ़ाईआ। जिस धार विच अवतार पैग़म्बर गुरु समाणा, मज़्हबां वाली वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को तेरा पद होवे निरबाना, निरवैर तेरा राह जणाईआ। झगड़ा मुकावां सूर गाँ खाणा, पशूआं उत्ते धर्म ना कोए टिकाईआ। तूं मेरी बेनन्ती कर परवाना, परम पुरख दया कमाईआ। मैं वी आपणी आयू गोबिन्द धार भेंट चढ़ाना, लख लखीसा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मस्तक लेख बणाईआ। कलयुग कहे प्रभ दे दे सच पैग़ाम, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे दे जणाईआ। मैं तेरे बिना किसे दा नहीं ग़ुलाम, गुर अवतार पैग़म्बरां सीस ना कदे झुकाईआ। मैं मज़्हब दा मज़्हब उत्ते लाउणा इल्ज़ाम, झगड़ा कल्मयां वाला पाईआ। शरअ नाल शरअ करनी बदनाम,

बदी दा पर्दा देणा उठाईआ। मैं चाहुंदा इष्ट रहे कोए ना राम, कृष्ना काहन ना कोए मनाईआ। सारे जीव बणन शैतान, मन कल्पणा विच हल्काईआ। मेरा चार लख दा समां छेती मुके विच जहान, बत्ती हज़ार ना वंड वंडाईआ। जिस कारन गोबिन्द बच्चे कीते कुरबान, बाले नीहां हेठ दबाईआ। सो सूरबीर योधा आवे इक विच मैदान, दो जहानां खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी हो मेहरवान, मेहरवान महिबूब मुहब्बत विच तेरे कदम कदीम दे मालक सीस झुकाईआ।

✪ पहली अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल दरबार विच ✪

पहली अस्सू कहे छे सम्मत मेरी आस पुराणी, पूरन सतिगुर दिती सुणाईआ। मैं तकी इक्को जोत नुरानी, नूर नूरी नज़री आईआ। जो आदि जुगादि दा बानी, बाण अणयाला तीर चलाईआ। जिस दा सचखण्ड मकानी, मुकामे हक रुशनाईआ। जिस दी सध्धरां भरी जवानी, इक्को रंग रखाईआ। जिस दी धार आदि शक्ति भवानी, अग्गे पिच्छे भज्जे वाहो दाहीआ। जिस दी तेई अवतार निशानी, निशाना धुर गए समझाईआ। जिस दी पैग़म्बर पढ़न कलामी, कलमा हक सुणाईआ। जिस दी गुरुआं गाई बाणी, ब्रह्म खेल खिलाईआ। जिस दा विष्नूं रूप महानी, विश्व नाल प्रनाईआ। जिस दी ब्रह्म जोत महानी, ब्रह्म ब्रह्म वड्याईआ। जिस दा शंकर रंग निधानी, वेखण कोए ना पाईआ। जिस दी शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान बाणी निकली ज़बानी, जगत मनसा ज़िबह कराईआ। ओह शहिनशाह सुल्तानी, सूरबीर वड वड्याईआ। ओह दाता धुर दा दानी, दयावान अख्वाईआ। जिस दी लख चुरासी राणी, आत्म आप प्रनाईआ। जिस दा खेल जीव प्राणी, पूरब आप समझाईआ। जो वसे ज़िमीं असमानी, इस्म इक दरसाईआ। जो हर घट जाण जाणी, जानणहार अख्वाईआ। जो जुग चौकड़ी करे फ़ानी, फ़नाह रूप दरसाईआ। जिस दा खेल सदा गुमनामी, खोज्जयां हथ्थ किसे ना आईआ। ओह खेल करे सचखण्ड मैदानी, सच सच समझाईआ। सारे वेखो जीव इन्सानी, पर्दा अक्ख खुल्लाईआ। तक्को अमृत पाणी, तट किनार खोज खुजाईआ। मंज़ल तक्को रुहानी, रूह बुत दरसाईआ। क्यों जगत आई तुफ़ानी, कूड़ लहर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं आ गया, आया तेरे दरबार। मैं सोया सोया जागया, जागरत हो उज्यार। सरन सरनाई लागया, धूढ़ी लावां चरण छार। मैं सतिजुग त्रेता

द्वापर मारी आवाज़िआ, वेखो खेल अपार। गुर अवतार पैग़म्बर कीतिआ हास्या, तेरी हस्ती कर निमस्कार। फिर अक्खां पुट पुट झाक्या, झाकी मारी सर्ब संसार। फिर कुण्डा खोल्ह्या ताक्या, पर्दा अगम्म उतार। फेर वेख्या तेरा भविक्ख्त वाक्या जो जणाया पैग़म्बर गुर अवतार। फेर मैं सृष्टी अन्दर नास्या, कीती अगम्म विचार। जिद्धर तकां ओधर मदिरा मास्या, मानव होए खूंखार। अजब तेरा तमाश्या, तमां दी मारी मार। फिर नानक वल्ल खोल्ह्या नेत्र नैणां ताक्या, पलक पलक उठाल। दिसे कोए ना साचा हाटया, मैं हस्स के किहा नानक तक कमाल। फेर गोबिन्द वेख्या बाटया, अमृत सक्या ना कोए संभाल। कलयुग कहे फिर मैं खुशीआं दे विच नाचिआ, सोहणा बणाया ताल। फिर ताली मार के किहा अवतार पैग़म्बर गुरु जगत दे चाचिआ, उठो वेखो सुरत संभाल। तुहाडा लेखा साहिब ने वाचिआ, वाचक बणया आप अकाल। फिर नानक उठ के किहा दासी दास्या, तेरा खेल बेमिसाल। फेर गोबिन्द वेखी आपणी पातीआ, जो शब्दी धार रखी संभाल। फिर तक्कया पाणी आटया, जो लंगर चलाया विच जहान। फेर संदेशा सुणया पुरख समराथिआ, सच सुणाया दीन दयाल। आपणा लेखा तक्को मस्तक माथिआ, अगम्म अगम्मड़ा खेल कमाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि साहिब सच्ची सरकार। अस्सू कहे मेरी आसा पिछली रखी, रक्षक दिती वड्याईआ। मैं खेल वेखणा अक्खीं, अक्खरां विच देणा समझाईआ। भेव खोल्हणा अलख अलखी, अलख अगोचर दया कमाईआ। तेरी गोबिन्द नाल पक्की, पक्की गंढ ना कोए खुल्हाईआ। सदी चौधवीं जांदी टप्पी, टप्पा आपणा दे दृढ़ाईआ। तैनूं मन्नया कमलापती, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस तकाईआ। अस्सू कहे गुर अवतार पैग़म्बरो निगह मार लओ ख़ास, बिन नैण नैण उठाईआ। तक्को पुरख अबिनाश, जो मालक धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस तकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो जिस ने तुहानूं दिता लबास, तत्तां वाला तन सुहाईआ। जोत दे प्रकाश, नूर दिता चमकाईआ। शब्द दे आवाज़, धुन दिती प्रगटाईआ। ओह लेखा मंगे हिसाब, लहिणा दयो दृढ़ाईआ। अमृत दस्सो दस्सो हयाते आब, किथे रखया टिकाईआ। जां वेखण लग्गे सब दे मूधे होए ग्लास, भरया नज़र कोए ना आईआ। मुक्खों कहिण वाह रे साडे बाप, की तेरी बेपरवाहीआ। प्रभू कहे जपो आपणा आपणा जाप, मैनूं दयो सुणाईआ। इक दूजे नाल करो टाक, टंग जेहवा नाल सुणाईआ। इक दूजे नाल करो वाक, वाकिफ़कार बण के दयो समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण वेखीए केहड़ा बाटा, धरनी ध्यान लगाईआ। क्यों सब नूं

७०६
२२

आया घाटा, घाटी मंज़ल रही ना राईआ। किसे ना मन्नया आखा, बैठा मुख भवाईआ। कवण छड्डुया साका, आत्म परमात्म गंढ तुड़ाईआ। कवण सौं गया खाटा, लेफ तलाई अंग लगाईआ। कवण वड़ गया ज़ाता पाता, दीनां मज़्बां संग निभाईआ। सारे कढीए आपणा आपणा खाता, लेखा पूरब हथ्थ उठाईआ। क्यों सब दे हुन्दयां होई अंधेरी राता, सच चन्द ना कोए रुशनाईआ। क्यों पुरख अकाल ने सब दे उत्ते मारया छापा, छप्पा आपणा ल्या पाईआ। क्यों सृष्टी कटदी फ़ाका, भुक्खी मरे लोकाईआ। क्यों कूड़ी क्रिया लग्गी माथा, मस्तक दए दुहाईआ। क्यों नहीं किसे दा पूरा होया जापा, जपत जपत सहिज सुखदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, धुर आपणी खेल खिलाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण अमृत रिहा कोए ना भरया, भरम विच दुहाईआ। साचा रिहा कोए ना सरया, सरोवर देण गवाहीआ। तीर्थ तट कोए ना तरया, गंगा गोदावरी रोवे मारे धाईआ। मंज़ल सच कोए ना चढ़या, पड़दा दर ना कोए खुल्हाईआ। जीवण जी कोई ना मरया, मर जीवत रूप जणाईआ। की खेल करे हरि हरया, हरि वड्डा वड वड्याईआ। की लेखा नरायण नरया, नर हरि की समझाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण की खेल कीता प्रभ छड़या, इकल्ले आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पुरख अकाल कहे क्यों मैनूं कहिंदे छड़ा, सहिज दयो जणाईआ। मैथों केहड़ा कन्त बड़ा, जो सब नूं लए प्रनाईआ। वेखो साहमणे तुहाडे खड़्हा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। सारे कहिण हुण केहड़ी मारीए तड़ा, आकड़ नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल कहे मैं तुहाडा चार जुग दा लेखा पढ़ा, सब किछ वेख वखाईआ। केहड़ीआं दीनां मज़्बां वालीआं लाईआं जड़ां, उन्हां सहिजे दयां उखड़ाईआ। जेहड़ा दीन दुनी दा खोदिआ गढ़्हा, ओह तुहाथों दयां भराईआ। तुसां सारयां फड़या इक दा लड़ा, नारी रूप नूर दरसाईआ। बच्चू हुण चला के दस्सओ ज़रा शरअ, आपणा हुक्म वरताईआ। तुहाडा हुक्म रहिणा नहीं ज़रा, ज़र्रे ज़र्रे विच्चों इक्को नज़री आईआ। मेरा हुक्म शब्द हक खरा, खोटा रंग ना कोए रंगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो हुण रहिण नहीं देणा किसे दा धड़ा, वक्खरी वंड ना कोए कराईआ। इक्को प्रगट होया नरायण नरा, नर नरायण इक अख्वाईआ। नाम कलमा कोए जपे ना तरह तरह, इक्को हुक्म देणा सुणाईआ। भज्जणा पए ना दर दरा, घर इक्को देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच पड़दा आप चुकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू अन्त इक अरदास, सीस जगदीश झुकाईआ। सारे बण गए तेरे दास, दासी रूप अनूप वटाईआ। इक्को तेरा रूप नूर प्रकाश, जोती जाते तेरी रुशनाईआ। असीं तेरी निक्की निक्की साख, लोकमात महक महकाईआ। असीं सब

नूं आए आख, अन्तिम आए धुर दा माहीआ। जो दो जहानां पावे रास, गोपी काहन रूप जणाईआ। साडी तेरे नाल सुहञ्जणी होवे रात, रुतड़ी तेरे नाल महकाईआ। अठारां हाढ़ दे पिच्छों साडे नाल तूं करी नहीं कोई बात, उडीकां विच तेरा राह तकाईआ। सानूं ताअने देवे तेरी सचखण्ड दी खाट, खटीआ रही सुणाईआ। वे गुर अवतार पैग़म्बरो किथे तुहाडा कमलापात, पतिपरमेश्वर अंग ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, इक तेरी ओट तकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण असीं तेरे तेरी नारी, साहिब तेरी सरनाईआ। जे तूं छड्डा ते जोत तेरी कुँवारी, दोहां दा खेल बेपरवाहीआ। की अगली करे त्यारी, त्रैगुण अतीते दे सुणाईआ। सानूं सच दस्स दे यार चंगा कि यारी, यराना कवण निभाईआ। पुरख अकाल कहे पहलों पूजा करो हमारी, इक्को नाम ध्याईआ। इक्को चरण करो प्यारी, इक्को सीस झुकाईआ। इक्को मस्ती लओ खुमारी, इक्को रंग रंगाईआ। इक्को करो हार शृंगारी, इक्को भूसण वस्त्र सोभा पाईआ। इक्को तक्को नैण दातारी, दाता इक दरसाईआ। फेर वेखो खेल लोकमात न्यारी, निरँकार दए दृढ़ाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिछो हुण जिस दी आई वारी, वारता अगली दए जणाईआ। इक नाम नाम जैकारी, शब्द शब्द इक पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेहर नज़र नाल तराईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण असीं तेरा नूर महानी, तेरे विच समाईआ। साडे उत्ते कर मेहरवानी, महिबूब रहे जणाईआ। की कलयुग विच तेरा खेल महानी, सतिजुग धार दृढ़ाईआ। पुरख अकाल किहा सारे वेखो निगाह नाल नुरानी, जगत नेत्र ना कोए रखाईआ। मैं बण के धुर दा दानी, गोबिन्द दा लेखा अगला पूर कराईआ। पंजां प्यारयां दे कोलों पुठे ग्लास उत्ते रखाया पाणी, पुट्ठी रीती दिती चलाईआ। सवा रती केसर थोड़ा थोड़ा मिलाणा इक्को करनी जानी, रंग रंग बदलाईआ। इक इक पतासा विच पाउणा नाल असानी, जो गुरदास गया लिखाईआ। दर्शन सिँघ लै के आया खुशी बहुती माणी, माण नाल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक दरसाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर वेखे अजब नज़ारा, नज़र तों बाहर दरसाईआ। प्रभू दा भगत गोबिन्द दा प्यारा, गुरमुख दोवें रूप बणाईआ। आत्म परमात्म दा ला जैकारा, जागरत जोत दिती जगाईआ। एह पिछला पूरब दा इशारा, कलम शाही तों बाहर लिखाईआ। पिछला सब दा होया किनारा, अन्त आपणे विच टिकाईआ। पंजां प्यारयां होणा ख़बरदारा, संदेशा इक दृढ़ाईआ। एह तिलक गुरमुखां नूं लाउणा सारा, वड्डा छोटा वंड ना कोए ना वंडाईआ। वेख्यो तुहाडा साहिब हुन्दा हुण ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। जिस गोबिन्द ल्यांदा दुबारा, दोहरी धार दए वखाईआ। तुहाडे नाल मिल के दो जहानां लाउणा अखाड़ा, सूरबीर आपणा बल प्रगटाईआ। जेहड़ा

सब दा सतारां हाढ़ नूं बण गया लाड़ा, नारी रूप सर्ब जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहारा तेरी चतुराईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण पुट्ठा ग्लास मारे आवाज़ां, ज़ोर ज़ोर नाल सुणाईआ। ख़बरदार हुण पढ़नीआं पैण ना किसे नमाज़ां, रोज़यां वक्त चुकाईआ। हथ्थ लाउणे पैण ना साजां, सितार ना कोए हिलाईआ। बन्धन रहिण ना कोए समाजां, झगड़े देणे चुकाईआ। शहिनशाह करे कोए ना राजा, रईयत देणी बदलाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा इक्को फिरना वाला बाज़ां, बाज़ी सब दी दए उलटाईआ। ओह प्रगट हो गया देस माझा, माझे वाल्यो भुल्ल रहे ना राईआ। किसे दे सीस ते रहिण नहीं देणा ताजा, तख्त ताज देणे उलटाईआ। फेर सब नूं कहिण ओ मानव इक दी सरनी आ जा, अजामल वांग सब पार कराईआ। फिर नौ खण्ड दे फिरना विच बाग़ा, सत्त दीपां फेरा पाईआ। फिर हँस बणाउणा कागा, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। फेर शब्द दा मारना दाबा, सुत्ते सारे लैणे जगाईआ। फिर पुट्ठे चरण करने विच काअबा, मक्के हाल दुहाईआ। फिर बण के बुड्ढा बाबा, देस परदेसां फिरना रूप वटाईआ। फेर गुरमुखां दी बहि के उत्ते ढाबा, अमृत रस देणा भराईआ। फिर तख्त निवासी हो के धर्म दा कंडा फड़ के तोलणा छाबा, चुरासी आपणे तोल तुलाईआ। फेर लहिणा देणा वेखणा सब दा पीता खाधा, खादम खोजे थांउँ थाँईंआ। फिर सब ने कहिणा एह किथ्थों आ गया निरगुण रूप डाहढा, आपणा हुक्म वरताईआ। फेर सब ने कहिणा बच्चयां वांग लडावे लाडा, आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण, उए सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नाल लओ मिलाईआ। सारे खेल वेखो आपणे नैण, अक्ख अक्ख लओ उठाईआ। जिस ने तारे सदना सैण, कबीर जुलाहे दिती वड्याईआ। जिस ने बटवारे कोलों लिखाई रमाइण, रामा रूप रूप समझाईआ। जिस ने भेव जणाया ऐन ते ग़ैन, नुक्ता नून नाल मिलाईआ। जिस ने तत्तां दिता चैन, गुरु गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण असीं हुण वेखीए केहड़ी कलास, ए टू ज़ैड ध्यान लगाईआ। हज़रत मूसा कहे मेरे ते करो विश्वास, मैं आपणा भेव दयां खुल्हाईआ। ईसा कहे मेरा वेखो धरवास, धरनी उत्ते दयां दृढ़ाईआ। मुहम्मद कहे मैनूं दयो शाबाश, ताड़ी दो हथ्थां वाली लगाईआ। कलयुग आख्या ओ मैनूं सारे कहो बदमाश, बदी दा मालक इक अख्वाईआ। मैं चार जुग दे सारे बणा दिते पत्ते ताश, इक दा रूप नहिले दी धार विच नौ दवारयां विच वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणी कार कमाईआ। कलयुग कहे गुर अवतार पैग़म्बरो वेखो पंज दरबारी,

सज्जा हथ्थ उपर रहे उठाईआ। जिन्हां दी प्रभू दे नाल यारी, यराना इक्को नाल जणाईआ। अज्ज ओह करके आए त्यारी, त्रैगुण तों बाहर डेरा लाईआ। तुसीं उन्हां दी वेखणी हुश्यारी, हुश्यारी नाल ताश खेडण चाँईं चाँईंआ। उन्हां नूं एह खेड बड़ी प्यारी, क्यों कलयुग दी रीती सोहणी सुचज्जी सोभा पाईआ। कलयुग कहे ओ बस गुर अवतार पैग़म्बरो मैनूं पहलां थल्ले फेर लैण दयो बहारी, जिथ्थे पत्ते थल्ले सुट्टणे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। कलयुग कहे दरबारीओ सुट्टो पहलों इक इक यक्का, इक दूजे दे उत्ते दयो टिकाईआ। पंज प्यारयो आपणी उँगली नाल पुट्ठे ग्लास तों पाणी दा इक इक दयो छिट्टा, दूर दूर सुटाईआ। ओए लिखारीउ इस दे उत्ते सुट्टो टुकड़ा चाक दा निक्का जेहा चिट्टा, सुट्ट के दयो वखाईआ। पई गुर अवतार पैग़म्बरो हुण इंनां तिन्नां दा कढो सिट्टा, की प्रभ ने खेल रचाईआ। तेई अवतार कहिण ताश दा पत्ता इयों जापदा, ज्यों पिछला चिट्टा, इक नूं इक रिहा दरसाईआ। पैग़म्बर कहिण इयों जापदा अमृत दा छिट्टा, ज्यों आबेहयात मिट्ठा खुद खुदा ने दिता चुआईआ। गुरु कहिण लिखारीआं दे हथ्थ दा चाक चिट्टा, चिट्टी धार दा रूप सतिगुर सोहणा रिहा समझाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण, वाहवा किड्डा सोहणा कढ्ढया सिट्टा, लेखा सहिजे दिता समझाईआ। दुक्की कहे मैनूं पंजे ज़ोर नाल सिट्टण ते वेखण जिवें सरगुण रूप प्रभ दा टिका, इक तों दो सोभा पाईआ। पंज प्यारे कहिण उन्हां दोहां दा इक्को ही पती ते इक्को पिता, दूजा नज़र कोए ना आईआ। पंज लिखारी कहिण जुग जुग उसे दा लेख लिखा, जो मालक इक गुसाँईंआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण कलयुग वाह ओए वाह आपणी करनी दिआ सिखा, तेरी बेपरवाहीआ। पंजां दरबारीआं कढ ल्या तिका, पुट्ठा देण रखाईआ। पंज प्यारे कहिण त्रैगुण तों बाहर गुरमुख सतिगुर दे घर विका, त्रैभवण धनी विच समाईआ। पंज लिखारी कहिण इहो सब दी करदा रिच्छा, रच्छक हो के होए सहाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण ओ चार जुग पिच्छों साडा कीता पिछा, अचनचेत सानूं ल्या उठाईआ। कलयुग कहे एथे सब दा इक्को जेहा हिस्सा, वक्खरी वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, त्रैगुण दा लेखा दए मुकाईआ। पंज दरबारी कहिण असीं सुट्ट दिता चौका, चौथा सज्जे खब्बे सोभा पाईआ। पंज प्यारे कहिण जे सतिगुर मिल जाए ते पढ़ना पए ना पोथा, अक्खरां दी लोड़ रहे ना राईआ। लिखारी कहिण प्रभू दा प्यार बड़ा सौखा, बिना कीमत तों बिना टक्या तों लोकमात दए वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण हुण दीनां मज़्बां दा लेखा बण गया औखा, वेला वक्त दए गवाहीआ। कलयुग कहे मेहरवानो अग्गे सुख माण ल्या चोखा, चार जुग गए विहाईआ। ओए बौहड़ी ओए बौहड़ी ओए मेरा अन्दर हो गया खोखा, सच रहिण कोए ना पाईआ।

वेखो ओए रब्ब दयो बंदयो किसे ने पगड़ी हैट पहन लई किसे ने पहन ल्या टोपा, ओह टोपीआं वाल्यो टाप दा मालक नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। ताश कहे ओह मैनूं कहिंदे क्यों ताश, अज्ज तक सक्या ना कोए समझाईआ। ओह याद करो जिस वेले शंकर नूं सिख्या दिती सी उपर कैलाश, कला आपणी इक समझाईआ। इक तों नौ तक जगत तमाश, एह मेरी बेपरवाहीआ। पंजां तत्तां दा मेरा खेल तमाश, तत तत नाल जुड़ाईआ। पंज दरबारीओ सुट्ट दयो उत्ते पंजे नूं वाच, आपणा हथ्थ उठाईआ। पंज प्यारे खुशीआं नाल पए नाच, पंचम पंचम पंचम दिती वड्याईआ। पंज लिखारी कहिण धुर दा लेख साच, सच सच रिहा दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण पंजां तों बाहर केहड़ा समाज, लेखा अवर रिहा ना राईआ। कलयुग कहे मेरे वी वड्डे भाग, भाग प्रभ ने दिता लगाईआ। अग्गे तुसीं सवाल समझदे रहे ते हुण सब नूं देणा प्या जवाब, नतीजा अगले साल वखाईआ। छे कहिण साडा सब तों वक्खरा हिसाब, छिक्की छिक्की उत्ते टिकाईआ। पंज प्यारे कहिण ओ गुरमुखो कोए ना रिहो काग, बुद्धी हँस रूप बणाईआ। लिखारी कहिण प्रभू दे प्यार बिना कोई बण नहीं सकदा साध, साधना विच कोए ना आईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण अग्गे सानूं कोई ना ल्यो अराध, इक्को अराधना धुरदरगाहीआ। कलयुग कहे मैनूं खुशी होई आज, निउँ के सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। ताश कहे जिस वेले शंकर नूं दस्सया साता, सति दिता समझाईआ। उस वेले थल्ले प्या इक दाता, ते सति सरूप उपर दिता दरसाईआ। दस्सया इक्को पिता ते इक्को माता, इक्को जम्मण वाली माईआ। इस तों अग्गे मेरी धार दीआं शाखां, शनाख़त आपणे विच रखाईआ। पंज दरबारी इक दूजे नाल सलाह कर के साते नूं रख के उपर मारो हाथा, हथेली नाल दबाईआ। पंज प्यारे कहिण ओ गुरमुखो इक्को मीत ते इक्को साका, दूजा सज्जण ना कोए अख्वाईआ। पंज लिखारी कहिण असां लेख लिख दिता अग्गे रहे कोए ना चाचा, पिता पुरख अकाल सर्ब मनाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडा खुस गया हाटा, वणज ना कोए वखाईआ। कलयुग खुशीआं दे विच नाठा, भज्जया चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव चुकाईआ। शंकर कहे मैनूं समझ आई की खेल तत अठ, हरि सहिज दिता समझाईआ। मैं आपणे अन्दर बन्न्ह लई गट्ठ, जुग चौकड़ी ना कदे खुल्हाईआ। धुर दे हुक्म नाल रखी ठप्प, मोहर नाम वाली छुहाईआ। हुण हुक्म मिल गया झट, संदेशा अगम्म अथाहीआ। शंकरा लोकमात नूं नठ, भज्जणा वाहो दाहीआ। भगतां दा तकणा इक्ट्ठ, सोहणे सोभा पाईआ। पंज दरबारी तकणे प्रभ दे झीवर छींबे नाईं जट्ट, सोहणा रूप दरसाईआ। ओह अट्ठां तत्तां

७११
२२

उत्ते मारन लग्गे सट्ट, अठा खब्बे हथ्थ नाल सुटाईआ। पंज प्यारे कहिण अट्ठां तत्तां दी रहिण नहीं देणी वट्ट, झगड़ा दूई देणा मुकाईआ। पंज लिखारी कहिण असां लेख लिखणा सच, जो पुरख अकाला रिहा लिखाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण इक दूजे नूं दईए दस्स, सहिज नाल सुणाईआ। साडा रिहा कोए ना वस, वास्ता इक्को नाल जुड़ाईआ। कलयुग कहे तुहाडा पूरा होण लग्गा हक, प्रभ पूरब लेखा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा पड़दा लाहीआ। नहिला कहे मैं आ गया सूरबीर बहादर, नौ दर दा मालक इक अख्वाईआ। मैनूं माण बख्श गया नौवीं पातशाही तेग़ बहादर, खुशी नाल हथ्थ छुहाईआ। ओ धर्म दिआ नहिलया तूं होणा मात उजागर, चार कुण्ट कुण्ट रुशनाईआ। नहिले रो के किहा मेरा बणे ना कोए सौदागर, मेरी कीमत कोए ना पाईआ। मेरा ना कोए पिसर पिदर ना कोए मादर, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। सतिगुर किहा ओ वेख करीम कादर, मेरा साहिब धुरदरगाहीआ। जिस कलयुग अन्त खेल करना वाजब, वजूहात आपणे विच छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर मेला सहिज सुभाईआ। नहिला कहे मेरा नाम बड़ा खोटा, नौ दवार पई दुहाईआ। मैनूं कहिंदे सारे चोटा, शरारती नाउँ धराईआ। मैनूं गिणदे उत्ते पोटा, जेहवा नाल हिलाईआ। मैनूं इहो प्रभू ते रोसा, सहिज नाल सुणाईआ। मैं तकदा
७१२ ओधरों तेग़ बहादर ने हथ्थ विच फड़या लोटा, ओधरों दयाले दा पाणी हुन्दा सी कोसा, गुरमुख खुशीआं विच समाईआ। ७१२
२२ फेर मैनूं आया जोशा, मैं कीती हाल दुहाईआ। मेरे पुरख अकाला की तेरा खेल काया पोशा, तत्तां नाल वड्याईआ। पहनें २२
हड्ड मास नाड़ी दा चोगा, बूँद रक्त नाल सुहाईआ। शब्द आवाज़ आई जिस तरह तेग़ बहादर मेरीआं माणदा मौज़ां, ध्यान मेरे विच लगाईआ। फेर मेरे दुलारे दीआं गुरमुख होणीआं फ़ौजां, हथ्थ मेरे वल्ल रखाईआ। फेर कलयुग अन्त मैं उन्हां दे कोल पहुंचां, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। नहिला कहे मैनूं अट्ठे उत्ते मारो, आपणा बल रखाईआ। पंज दरबारी प्रभू नूं रिदे चितारो, तुहाडे नौ दरां करां सफ़ाईआ। पंज प्यारे अमृती बूँद इक इक डारो, प्रेम नाल सुटाईआ। पंज लिखारी चाकू नाल मेरे दुआले इक इक लकीर मारो, ज़िमीं नाल ना कोए छुहाईआ। नहिला कहे फिर सारे बोलो पंज जैकारो, प्रभ तेरी ओट तकाईआ। इक्को वार पुरख अकाल नूं करो निमस्कारो, दोए जोड़ के सीस निवाईआ। फेर खुशीआं नाल ताली वजा के कहो असीं आउणा तेरे दरबारो, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। विछड़ जाईए ना तेरी कतारो, इक्को डोरी तन्द बंधाईआ। तूं धुर दा सच्चा प्रीतम यारो, मुहब्बत तेरे नाल बणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर बण गए तेरी नारो, नर नरायण तेरी सेव कमाईआ।

तेरे जोगे हो गए सतारां हाढ़ो, लेखा अवर रिहा ना राईआ। तूं इक ख़सम हैं इक हैं लाड़ो, नारी सर्ब प्रनाईआ। सानूं दीन मज़्ब दी बाहर कढ दे धाड़ो, कंडा खार लग्गण ना पाईआ। तैनूं लभ्भणा पए ना जंगल पहाड़ो, हर घट अन्दर नज़री आईआ। ओ कोझयां कमल्यां नूं आ के तारो, तारनहार तेरी सरनाईआ। सतिजुग वेखीए सच बहारो, तेरा रूप फुल्ल महकाईआ। आपणा नाम वजा के नगारो, डंका इक शनवाईआ। नौ खण्ड पृथमी बणा के अखाड़ो, खण्डा खड़ग दे खड़काईआ। सब नूं कढ लै फड़ के झाड़ों, लुक्या रहिण कोए ना पाईआ। आपणे चरणां दी धूढ़ दे दे छारो, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। सारे कहि दयो यारां नूं यार मिल गया यारो, यारी इक रखाईआ। गुरमुखो हुण अग्गे वास्ते कुछ विचारो, पिछला वेला हथ्थ ना आईआ। ओह जिस नूं कहिंदे मालक धुरदरबारो, तुहाडे साहमणे सोभा पाईआ। भावें इस नूं चीरो भावे इस नूं फाड़ो, फिर वी तुहाडा तुहाडे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे विच आपणा रंग जणाईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरीआं अक्खां विच आ गए अथ्थरू अथरा हो के दयां जणाईआ। ओह केहड़ा गोबिन्द ते केहड़ा यार ते किस दा हंढाया सथ्थरू, सथ्थरां वाले देण समझाईआ। केहड़ीआं इट्टां केहड़े पूजे पथ्थरू, पाहन की वड्याईआ। पुरख अकाल किहा कलयुग, मेरा आदि दा जुगादि दा जुग जुग वेखो गोबिन्द गभ्भरू, बिरध बाल बुढापा
७१३
२२
रूप ना कोए वखाईआ। जद तक्को मेरे नाम दा अदलू, इन्साफ़ इक समझाईआ। जिस वेले चाहे ओह गुरमुख सन्त भगत आपणे विच्चों कढ लऊ, फिर आपणे विच समाईआ। जिस वेले चाहे सचखण्ड दवारे सद्द लऊ, दरगाह साची दए टिकाईआ। जिस वेले चाहे आपणी धार नाल आपे बज्झ लऊ, जुग जुग नाल बदलाईआ। जिस वेले चाहे पापीआं अपराधीआं दे पड़दे कज्ज लऊ, जो चरण आया सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैनूं हुलारा दिता पवण उणंजा, चौथे जुग दा नांयां नाल रलाईआ। नाले किहा वे कलयुगा पिच्छे ते सब दा लेखा अवतार पैग़म्बर गुरु भगत शब्द धार बवन्जा, बवन्जा माया विच समाईआ। प्रभ दा किहो जेहा शकंजा, जेहड़ा फस्या उहनूं बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं इक वेरां जोत विच तेई साल दी उमर विच हुक्म दिता सी तेजा सिंघ गंजा, हथ्थ मुख उत्ते लगाईआ। फिर कढ के रुमाल नीला रंगा, हवा विच उडा के फेर खलो के केसां नूं वाहया कंघा, वट पुट्ठे हथ्थ चढ़ाईआ। फेर खुशी विच किहा प्रभू आपे जोत ते आपे बन्दा, बन्दे दी समझ कोए ना आईआ। फेर हस्स के किहा जिस वेले मैं गुरमुखां दी धार आपणे शब्द सिंघासण उत्ते कर दिती बवन्जा तों सवा बवन्जा, बावन दा बावन खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। कलयुग

कहे सवा बवन्जा केहड़ा तेरा खेल, मैनूं दे समझाईआ। पुरख अकाल किहा शब्द गुरु मेरा मेला लए मेल, एह मेरे हथ्थ वड्याईआ। क्यों इक्को रूप गुरु गुर चेल, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस वेले मैं कलयुग विच अन्त दीन दुनी दा करना खेल, ख़ालक हो के ख़लक वेख वखाईआ। जोबनवन्ता हो के अलबेल, मस्ती विच आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा संग वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे कलयुग उठ वेख प्रभू दी खेल निराली, शब्दी धार पहली अस्सू भुगताईआ। जसवन्त सिँघ नूं शब्द दिता रुपईए ल्याउणे चाली, सिंघासण उत्ते टिकाईआ। गुरदर्शन नूं हुक्म दिता सुखाली, सत्त भेंटा देणे कराईआ। हरिजिन्दर सिँघ काका दुआबिउ ल्या उठाली, सवा पंज नाल मिलाईआ। एह कोई माया नहीं बाहली, चवंनी नाल जवानी सब दी दिती बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच आपणी कार कमाईआ। अस्सू कहे प्रभू चंगी तरह तकीं किते हो ना जावीं अन्ना, नैण मूंद अख्वाईआ। दीन मज़्हब दा छड ना जावीं बन्ना, हद्द हदूद वेख वखाईआ। किते कच्चा ना हो जावीं कन्नां, चुग़ली निन्दयां सुण के झट लँघाईआ। पुरख अकाल किहा मेरा सूरबीर गोबिन्द चन्ना, चन्द वांग रुशनाईआ। जिस दे वसां विच तनां, पंज तत डेरा लाईआ। आपणा हुक्म दे के नवां, नवजुग खेल खिलाईआ। दीन मज़्हब दी रखे कोए ना तमां, लालच विच कदे ना आईआ। इक्को मेरा दीपक होवे शमां, इक्को नूर होवे रुशनाईआ। मेरी धारो होवे जम्मा, जनणी कुख्ख ना कोए उठाईआ। जेहड़ा गोबिन्द ने लाया कन्ना, उस दे पिच्छे दीन दुनी उलटाईआ। जेहड़ा अगम्मी हुक्म दिता साहिब दम दमा, दमदमा साहिब दुहाईआ। उस ने बदल देणा बदीआं वाला समां, समाप्त करे खलक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। पुरख अकाल किहा कलयुग मैं अन्नां ना होवां निधान, अक्ख ना कोए बदलाईआ। औह वेख मेरा खेल महान, तैनूं दयां वखाईआ। दलीप सिँघ जेहड़ा सुरमा ल्यांदा बणा के नौजवान, अग्गे हो के हथ्थ लै उठाईआ। इक इक सलाई दा करना निशान, सहिज सहिज नाल छुहाईआ। जन भगतो तुहाडे सुरमे नाल तुहाडे अंजण नाल तुहाडी भगती दा होवे ज्ञान, अन्जाणत रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। ओए कलयुग वेख लै पैंदी सलाई, गुरमुख नैणां रंग रंगाईआ। जेहड़ी सताई साल अक्ख रही शरमाई, ओह साहमणे देणी खुल्हाईआ। मेरी खेल बेपरवाही, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। हुण फिरना एसे तरह थांउँ थाँईं, जेहड़ा मर्ज़ी रूप बदलाईआ। हुण बहिणा नहीं पीढ़ा डाही, घूँगट मुख टिकाईआ। खेल करना चाँईं चाँईं, चाओ घनेरा इक दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे घर वसाईआ।

भगतो सुरमा पाया अक्ख, अक्ख नाल अक्ख लओ मिलाईआ। जद मिलो ते मिलो प्रतख, बाहवां दोवें अग्गे उठाईआ। तुहाडा नाता होया सच, सच मिली वड्याईआ। हुण तुसीं भाण्डा रहे नहीं कच्च, कंचन गढ़ दिता जणाईआ। सारे खुशीआं विच इक्को वार पओ नच्च, प्रभू तेरी बेपरवाहीआ। तूं साडी रखणी पत, पतिपरमेश्वर दया कमाईआ। साडा दे दे हक, शर्म हया रहे ना राईआ। जेहड़ा नलेर रखया ढक, उहदी गंढ दे खुल्हाईआ। इस नूं साडे विच दे छड, भज्जे वाहो दाहीआ। कुछ लाची दाणा चब्ब, दन्दां हेठ दबाईआ। असीं दोगले ना रहीए ते साडे विच ना रहे डब्ब, इक्को रूप लैणा बणाईआ। असीं तेरे तेरे हो गए सभ, जो तेरा नाम ध्याईआ। ओ किरपा कर के सानूं आपणे प्यार दी प्या दे मदि, खुमारी इक्को इक चढ़ाईआ। ओ सानूं चंगा नहीं लगदा तूं मस्ती विच इकल्ला फिरें जग, आकड़ विच आपणा आप बणाईआ। असीं चाहुंदे असीं भगत तेरे नालों होईए वद्ध, साडे विच आपणा आप दे प्रगटाईआ। इक दूजे नूं कदी ना जाईए छड, रंडेपा जगत ना कोए हंढाईआ। भगत भगवान हो के कदी ना होईए अड्ड, वक्खरा घर ना कोए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल वखाईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरीआं सारीआं पूरीआं कर दे मंगां, मांगत हो के मंग मंगाईआ। मैनूं वखा दे ओह कंघा, जेहड़ा दुआब्बों ल्या मंगाईआ। मेरे मगर ला दे सत्तरंग डण्डा, गुरमुख हो के सीस ना कोए मुंडाईआ। मैं बन्दयां नूं बणा देवां बन्दा, बन्दगी इक जणाईआ। तेरे हुन्दयां तेरा रहे कोए ना गंदा, गंदगी विच आपणा आप डुबाईआ। सारे तूं मेरा मैं तेरा गावण छन्दा, सोहणा राग सुणाईआ। असीं नहीं चाहुंदे तेरा अग्गे पैंडा हो जाए लम्बा, सिसक सिसक के सारे आपणा आप तरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा मेल मिलाईआ अस्सू कहे पंज प्यारयो करयो मेहरवानी, आपणा बल धराईआ। सारयां दे मस्तक मेरे प्यार दी लायो निशानी, मेरे साहिब नूं देणी वखाईआ। पंज दरबारीओ ताश दे पत्ते लड़न वाले कट्ठे हो के इक तों नौ तक सारे बण गए इक दूजे दे जानी, प्यार प्यार नाल रलाईआ। पंज लिखारीओ लिखण विच कोई अक्खर रह ना जाए ख़ाली, ख़ाली नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, ताश वाल्यो ताश दी अगली खेल होणी चाली, किस तरह दहिले तों पातशाह किंग तांई आपणी कार कमाईआ।

✪ सत्तां लांगरीआं दे नवित ✪

सम्मत छे कहे सुण अस्सू मीत, मित्रा दयां जणाईआ। सृष्टी भुल्ली गोबिन्द दी रीत, ज़ात पात डेरा कोए ना ढाहीआ। माण मिले ना किसे ग़रीब, ऊचां नीचां रंग ना कोए रंगाईआ। मैं खेल तक्कया अजीब, अजब निराला वेख वखाईआ। साची रही ना कोए तरतीब, सिलसिला हक ना कोए जणाईआ। झगड़ा प्या मुर्शद मुरीद, गुर सतिगुर सिख लड़ाईआ। सृष्टी सुत्ती गूढ़ी नींद, सोई सुरत ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा धुर दा वर, साचा लेखा देणा बणाईआ। अस्सू कहे मैं वेखां सूर्या चन्द्र, चन्न चन्द ध्यान लगाईआ। वेखां मस्जिद मन्दिर, गुरदवारे फोल फुलाईआ। तकां ढोर डंगर, पशू ख़लक खुदाईआ। प्रभू दे नाम ते मंगण, घर घर फेरा पाईआ। धर्म दा चले कोए ना लंगर, सांझा घर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच आसा पूर कराईआ। अस्सू कहे जो लंगर चलाया जग, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। विच्चों कूड़ दी मेटणी अग्ग, हंगता देणी गंवाईआ। सब नूं लैणा सद्द, शब्द कर शनवाईआ। दो जहानां लैणा लभ्भ, खोजणा थांउँ थाँईंआ। आपणा बणा के आप सबब, साहिब सुल्तान लैणा मिलाईआ। तेरे बन्दे दिसण सभ, दूजा नज़र कोए ना आईआ। तेरयां भगतां रहे कोए ना लब, लालच विच ना कोए कुरलाईआ। भण्डारे विच्चों लए कोए ना कढ, चोरी ठग्गी ना कोए कमाईआ। कदे रिज्झे सूर गाँ ना हड्ड, पंखी पंछी ना वेख वखाईआ। धर्म निशाना देणा गड्ड, धर्म दी धार नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। अस्सू कहे प्रभू किरपा करनी जे, जोबनवन्त तेरी सरनाईआ। मेरी बेनन्ती इह, अहिमक मूर्ख लैणे तराईआ। जिन्हां दा तेरे नाल लग्गा नेह, निहकलंक तोड़ निभाईआ। अमृत बरसणा मेंह, मेघला इक बरसाईआ। पवित्र करनी देह, पंज तत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। अस्सू कहे प्रभू सत्त लांगरी कर त्यार, मैं आपणी मंग मंगाईआ। गिरधारा सिंघ होवे सरदार, बख्शीश सिंघ नाल मिलाईआ। पाल सिंघ लैणा वंगार, मस्सा सिंघ जोड़ जुड़ाईआ। काशी राम देणा प्यार, प्रीती प्रीतम नाल बंधाईआ। चरणी सुरत लैणी संभाल, सम्बल मेलणा सहिज सुभाईआ। वरयाम कौर रहे नाल, जोड़ जोड़ना सहिज सुभाईआ। सत्तां दा इक्को मालक इक्को करे प्रितपाल, प्रितपालक इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दवार इक रखाईआ। कलयुग कहे इन्हां दा हकीकी होवे लबास, तेरे शब्द नाल जणाईआ। गुरमुखां दे सिर ते पगड़ी काली होया करे ख़ास, बीबीआं काले लीड़े रंग रंगाईआ। जिस वेले तेरा हुक्म होवे

ख़ास, उस वेले लैण बदलाईआ। एह मेरी आसा मेरे निकले विच्चों स्वास, साह साह सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ।

३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ गुरमुख दवारे नींह रखण समें भलाई पुर डोगरां

अस्सू तिन्न कहे सुण चन्द सितारया, सम्मत शहिनशाही छे ध्यान लगाईआ। तक मुहम्मद वाला नज़ारया, नज़र आपणी इक उठाईआ। जिस ने चौदां तबक वंगारया, वंगार के दिता सुणाईआ। एह हुक्म परवरदिगारया, शाह सुल्तानां रिहा दृढ़ाईआ। चौदां सद मेरा बलकारया, बल इक्को इक वखाईआ। फिर हथ्थ मस्तक उत्ते मारया, उँगलां पंज तिन्न छुहाईआ। फिर उपर नेत्र लैण उग्घाड़या, नेत्र नैण अक्ख लई उठाईआ। जिस वेले मातलोक आवे धुर दा लाड़या, लाड़ी सब नूं लए बणाईआ। लेखा पूरा कर सतारां हाढ़या, हाढ़ा सब दा लेखे लाईआ। नाउँ धरा नर अवतारया, नर नरायण फेरा पाईआ। जगत जहान होवे ज़ाहरया, ज़ाहर जहूर करे रुशनाईआ। खेल करे अगम्म अपारया, नर नरायण आपणी दया कमाईआ। आपणयां मुरीदां भगतां करे उज्यारया, सिक्खां संग निभाईआ। सतिजुग साचा कर वरतारया, सच सच दए प्रगटाईआ। प्रसिद्ध कर गुरमुख दवारया, गुरसिख आपणे रंग रंगाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा फिर आवे हारया, संभल सके कोए ना राईआ। फेर मुहम्मद ने आपणा काला चोला पाड़या, टुकड़े सत्त दिते कराईआ। फेर मस्तक रंग लावे गाड़्या, लाल दिता जणाईआ। फेर मैहन्दी ला के दाढ़या, हथ्थां नाल छुहाईआ। फेर आपणा अल्फ़ी कफ़न साड़या, आंच अग्ग जलाईआ। फेर उपर कीता इशारया, उँगलां कन्नां विच पाईआ। फेर रो के ज़ारो ज़ारया, कीती हाल दुहाईआ। फेर तक्कया समुंद सागर पाणी खारया, मिट्ठा रस ना कोए चखाईआ। फेर आपणा आप उभारया, बल ल्या प्रगटाईआ। फेर इक अक्ख मीट के किहा मेरे आसमां असमानी तारया, तार सितार वेख वखाईआ। फेर किहा चन्न चन्न मेरे प्यारया, चन्न तेरी वड्याईआ। दोहां ताली वजा के किहा मुहम्मदा जिस वेले तुहाडा मालक आया विच अखाड़या, अकल कल धारी आपणा फेरा पाईआ। लेखा जाणे नाड़ी नाड़या, तन वजूद खोज खुजाईआ। मैनूं इयों दिसदा उहने तेरा चौदां तबक खुशी विच उजाड़या, मालक नज़र कोए ना आईआ। जन भगतां हिरदा करे ठंडा ठारया, अग्नी तत बुझाईआ। तेरा कीता की होवे खसारया, घाटा की रखाईआ। मुहम्मद कीता हाल पाहरया, दरोही दरोही हाल जणाईआ। किस बिध मेरी उम्मत लग्गे चंगयाड़या, शोले उडण थांउँ थाँईंआ। जगत जुग दीआं उजाड़न वाड़ीआं वाड़ा रहिण कोए ना पाईआ। धूंआँधार होणा उच्च पहाड़ीआं, टिल्ले अस्गाह रोवण मारन

धाईंआ। रूप रहिणा नहीं किसे धी भैण कुँवारीआं, धर्म दी धार कलमा हक ना कोए जणाईआ। सुहाग दीआं सिर ते चुकणीआं नहीं किसे ने खारीआं, ख़ालस रंग ना कोए समझाईआ। जिस वेले जन भगतां गुरमुख दवारे वास्ते चुकणीआं सिरां ते तगारीआं, तेग़ां वाले उठण थांउँ थाँईंआ। कलमां प्रसिद्ध होणीआं पंजां लिखारीआं, पंजां दरबारीआं संग मिलाईआ। पंजां प्यारयां खुशीआं मनाउणीआं सारीआं, ग़मी रहिण कोए ना पाईआ। हरिसंगत दे गुरमुखां ने मुच्छां होण चाढ़ीआं, सूरबीर आपणा बल प्रगटाईआ। पुरख अकाल खेल करना आपणी वारीआं, वाहिद आपणा हुक्म जणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां उतों उड जाणीआं एतबारीआं, बेएतबारी होए लोकाईआ। जिस कारन दो दरवाज़े ते छे लग्गीआं बारीआं, छे घर दा लेखा दिता मुकाईआ। मुहम्मद जिस प्रभू ने मेहर नाल आपणीआं संगतां तारीआं, तारनहार दया कमाईआ। उस दे पिच्छे गुर अवतार पैग़म्बर फिरने वांग वंगारीआं, दो जहानां थांउँ थाँईंआ। गुरमुखां खुशीआं विच मारनीआं कुदाड़ीआं, भज्जण वाहो दाहीआ। हँकारीआं दीआं भन्न देणीआं चबाड़ीआं, डण्डा शब्द वाला उठाईआ। मुहम्मद तक्कया की हाल होणा ख़ावंद ते लाड़ीआं, ज़नो मर्द सर्ब कुरलाईआ। किसे ने खाणीआं नहीं मुख पान सुपारीआं, खूंखार होए लोकाईआ। क्यों पुरख अकाल ने चार जुग दीआं पेशीनगोईआं उच्चारीआं, अक्खर अक्खर फोल फुलाईआ। ग्रन्थ रखे नहीं रहिणे विच अलमारीआं, प्रगट आपणा नाउँ कराईआ। जन भगतां बख़्श के नाम खुमारीआं, ख़िमा विच आपणा रंग रंगाईआ। दीन दुनी रोवे बेशुमारीआं, शमां नूर ना कोए रुशनाईआ। हुण गुरमुख दा जन्म नहीं घर चम्यारीआं, गुरसिख दा बेटा गुरमुख नज़री आईआ। जिन्ह आपणीआं आसां शब्द गोबिन्द उतों वारीआं, जगत तृष्ना ना कोए रखाईआ। मुहम्मदा तेरीआं धारां अन्तिम हारीआं, जित्त नज़र कोए ना आईआ। मुहम्मद कहे मेरी तोबा मैं सुट्ट दितीआं हथ्थों छुरी कटारीआं, ज़िबह कर ना कोए वखाईआ। अन्दर रहिणीआं नहीं ग़द्दारीआं, गदागर होए जगत लोकाईआ। माण रहिणा नहीं किसे अटारीआं, महल्ल अटल ना कोए जणाईआ। क्यों गुरमुख दवारे नौआं मिस्तरीआं ने करनीआं उसारीआं, नौ दर दा लेखा रहे ना राईआ। नौवें मिस्तरी इक इक वार हथ्थ लाउ इट्ट रखो लहिंदी दिशा सारी संगत मुक्खों बोलो सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान पंज पंज जैकारीआं, जै जैकार करे सर्ब लोकाईआ। गुरमुख दवारे सेवा करनगीआं संगतां सारीआं, इकल्ला हक ना कोए रखाईआ। अग्गे माण रहिणा नहीं किसे पुजारीआं, पूजा धान कोए ना खाईआ। एथे आउणा नहीं किसे जगत जुआरीआं, ठग्ग रहिण कोए ना पाईआ। इस दे पिच्छों फेर समाधां दीआं लग्गणीआं उसारीआं, हुक्म धुर दा इक जणाईआ। विआधां दीआं मिटण बीमारीआं, कूड़ी क्रिया रोग गुआईआ। जिस दी सेवा करन पुरख नारीआं, नर नरायण रंग रंगाईआ। सारी हरिसंगत इक इक उँगली

इट्ट उत्ते रखण वारो वारीआ, उँगली खुशीआं नाल छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

✪ ३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ गुरमुख सिँघ दे घर पिण्ड भलाई पुर डोगरां ✪

तिन्न अस्सू कहे मुहम्मद सजदा कीता लहिंदिउँ चढ़दा, चढ़दी दिशा ध्यान लगाईआ। नज़ारा तक्कया गुरमुख घर दा, गृह मन्दिर वेख वखाईआ। जिथ्थे खेल अगम्मी हरि दा, परवरदिगार रिहा कराईआ। भगत सुहेला रूप अगम्मा धरदा, धरनी धरत धवल होए रुशनाईआ। सब दी आसा मनसा पूरी करदा, पूरब लेखा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला आप मिलाईआ। मुहम्मद कहे मेरी सच सच तकबीर, तकवा इक रखाईआ। परवरदिगार की करे तदबीर, शाह पातशाह आपणा हुक्म वरताईआ। बौहड़ी मेरी शरअ दे तोड़न लग्गा ज़ंजीर, चौदां तबक खोज खुजाईआ। मेरी मंज़ल होई अख़ीर, आख़र रो के दयां सुणाईआ। शरअ दा रिहा ना कोई फ़कीर, फ़िकरा हक ना कोए सुणाईआ। दुहाई तोबा गुरमुख दवारा होया तामीर, तामील सब तों लई कराईआ। मेरे नेत्र वगे नीर, नैण छहिबर रहे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। मुहम्मद कहे मेरी अन्त अख़ीर सलाम, अलैकम इक जणाईआ। मेरा कलमा धुर कलाम, कायनात दी करे बेवफ़ाईआ। नाता तुटण लग्गा नालों अवाम, आम दा लेखा रहे ना राईआ। मेरा रहे ना कोए गुलाम, बन्धन बंध ना कोए खुल्हाईआ। किरपा करे श्री भगवान, परवरदिगार नूर इलाहीआ। मेरा विगड़न लग्गा निज़ाम, इंतज़ाम ना कोए रखाईआ। चारों कुण्ट होई अंधेरी शाम, तारा चन्द दए गवाहीआ। मेरा सदमे विच अन्तर होया हैरान, हैरानी मेरे उत्ते आईआ। अगला खेल श्री भगवान, भगवन आपणे विच छुपाईआ। मुहम्मद कहे गुरमुख दवारे वल्ल मेरा संदेशा इक पैग़ाम, पीर पीरां देणा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, करे खेल वड अमाम, अमाम अमामा नौजवाना, मर्द मर्दाना शाह सुल्ताना, आपणा हुक्म हिकमत नाल वरताईआ।

✪ ५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ दरबार विच जसबीर सिँघ जलालबाद दे नवित जेठूवाल ✪

नौं महीने अठारां दिन गए बीत, जसबीर जन्म ल्या शब्दी धार जग। पुरख अबिनाशी अवल्लड़ी रीत, किरपा करी

सूरे सरबग। दासी दी सच वेख प्रीत, धार होण नहीं दिती अलग्ग। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा जाणे जन्म जन्म दे कग्ग। कग्ग कहे मैं कीती कुरबानी, आपणा आप तजाईआ। मेरे साहिब दी होई मेहरवानी, मेहर नज़र उठाईआ। मैं दासी दा भ्रा मेरा नाँ जानी, देव कहि के सारे बुलाईआ। मेरा खेल खेल महानी, भेव अभेदा दयां दृढ़ाईआ। मैं वी हस्स के किहा प्रभू मेरी भैण दी रहे निशानी, आपणे जीवन दी लोड़ ना कोए रखाईआ। पर सच दस्सां अन्त अख़ीर मेरे अन्तर आई बेईमानी, बेवा आपणा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। दासी दा भराता कहे मैं दस्सां कहाणी सची, सच दयां जणाईआ। मेरा खेल जाणे पुरख समर्थी, जो दाता बेपरवाहीआ। मैं मन्दिर जादां सां वार अठी, अट्ठ अठ नाल दरसाईआ। इक दिन प्रशाद चढ़ा के भोग लगा के खा ल्या आपणी हथ्थीं, चोरी चोरी मुख लगाईआ। फेर रगड़ के मथ्थी, भुल्ल लई बख्शाईआ। झट हुक्म आया ओ वेख तेरे कर्मां दी धार आउंदी नट्ठी, भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। भराते किहा मैं रसना लाया प्रभू दा भोग, आपणे मुख छुहाईआ। मेरे अन्दरों उठया रोग, हउमें लई अंगड़ाईआ। हरख़ रिहा ना सोग, चिन्ता ना कोए जणाईआ। फेर मैं सुणया इक सलोक, संदेशा अगम्म अथाहीआ। तेरी अन्त नहीं होणी मोख़, चुरासी विच भवाईआ। तेरा लहिणा देणा मातलोक, चौथे जुग नाल समझाईआ। जन्म लैणा पए कोटन कोट, त्रेता द्वापर रूप बदलाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर तेरी करे ना कोए छोट, चुरासी विच्चों बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। जिस वेले प्रगट होवे पुरख अकाल निर्मल जोत, जोती जाता फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। भराता कहे मेरे मुक्खों निकल्यां ना नाँ, प्रभू ध्यान ना कोए रखाईआ। मैनूं याद आई की लेखा भैण भ्रा, भेव कवण खुल्हाईआ। जे दासी सुत मरा, रोवे मारे धाईंआ। मैं डिग्ग के विच दरा, ठाकर अग्गे सीस निवाईआ। डण्डावत विच पड़ा, नैण मूंद वेख वखाईआ। मैनूं दुःख बड़ा, सहि सकां ना राईआ। जां तक्कया निरगुण धार नूर खड़ा, जोती जाता सोभा पाईआ। उस हुक्म कीता उठ वेख नरायण नरा, नर हरि आपणा कर्म समझाईआ। जिस वेले सतिजुग त्रेता द्वापर पार परा, परा पसन्ती मद्धम बेखरी तों परे मेरी पढ़ाईआ। जेहड़ा दासी सुत तूं कदे नहीं मरा, मर जीवत रूप वटाईआ। उठ निगाह मार ज़रा, पड़दा दयां चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर हुक्म इक जणाईआ। शब्दी धार किहा जेहड़ा रसना लाया प्रशाद, चोरी चोरी खाईआ। इस दा लैणा प्या स्वाद, आपणा मन परचाईआ। एसे कुकर्म पिच्छे

तैनूं जन्म लैणा पैणा काग, काग रूप समझाईआ। उस रो के मारी अवाज़, कूक कूक सुणाईआ। किरपा कर आज, मेहर नज़र उठाईआ। शब्दी धार किहा जुग चौकड़ी वेख तमाश, त्रेता द्वापर पार कराईआ। जिस वेले निरगुण नूर होया प्रकाश, जोती जाता डगमगाईआ। तेरी भैण दा तेरे भणेवे नाल फेर बणावां साक, मात पित पुत्त मिलाईआ। दूजी दासी दा लेखा होवे साथ, सगला संग बणाईआ। जन्म विच्चों जन्म बख्श के पूरी करां आस, तृष्ना दूर कराईआ। उस वेले दासी ने बदल लैणा लबास, कपड़े ओढण संग वखाईआ। अग्गे लेखे लग्गे स्वास, साह साह आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक सुणाईआ। भ्राते किहा कलयुग अन्तिम जे मेरा रूप होवे काग, मानस समझ कोए ना पाईआ। शब्दी धार किहा मेरा खेल आदि जुगादि, जुग चौकड़ी चलया आईआ। वेखां दीन दुनी समाज, दो जहानां खोज खुजाईआ। जिस वेले पुरख अकाल दा होया राज, पंछी पंखी संग रलाईआ। जन्म कर्म दा धो के दाग़, पतित पुनीत दए कराईआ। बेशक तूं उस वेले होणा काग, काग रूप दरसाईआ। तेरे जीवण दा बुझाउणा चराग़, नूर नज़र कोए ना आईआ। तेरी भैण दा फेर वेखणा बग़ीचा बाग़, पत्त टहिणी फूल वेख वखाईआ। सच नाम वजाउणा नाद, धुंन इक शनवाईआ। अग्गे बख्श के दाद, सुत दुलारा झोली पाईआ। जिस दा प्रशाद कराउणा पए पहली माघ, गुरसिख पंज नाल रलाईआ। फेर अगला खेड़ा होणा आबाद, तत्ती वा ना लागे राईआ। नौ गन्ने ल्याउणे नाल कमाद, साढे तिन्न हथ्थ लम्बाईआ। ऊधम सिँघ बण के आउणा रूप साध, केस खुल्ल्हे पिछांह सुटाईआ। फेर अगली कुल नूं लग्गे भाग, भगवन आपणी दया कमाईआ। हुक्म संदेशा शब्दी धार दिता आप, आप आपणा पड़दा लाहीआ। दोवें कठ्ठे आउण जसबीर सिँघ ते उसदा बाप, थित वार वार समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, बल दवार दा पूरा करे वाक, दासी दास दासन दासा वेख वखाईआ।

★ ११ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ सुखदेव सिँघ दे घर पिण्ड कल्ला ★

दस्म दुआर कहे मेरी अरदास, अर्ज़ बेनन्ती इक सुणाईआ। मेरे साहिब पुरख अबिनाश, हरि करते तेरी बेपरवाहीआ। खेल खिला के हड्ड नाड़ी मास, पंज तत बणत बणाईआ। त्रैगुण माया पा के रास, प्रकृती रंग रंगाईआ। नौ दवारे दे के साथ, जगत संग जणाईआ। ईड़ा पिंगल सुखमन बणा के घाट, मंज़ल मंज़ल विच अटकाईआ। कँवली बख्श के बूंद

सवांद, नाभी नाभ टपकाईआ। शब्द अगम्मी जणा के नाद, धुन धुन शनवाईआ। सुरती सुरत अराध, रसना रस चखाईआ। आपणा भेव रख के बोध अगाध, अगाध बोध बोध बेपरवाहीआ। कँवल कँवला बुझा के आग, तृष्ना तृखा गंवाईआ। मन मनूए दे वैराग, वैरी अन्तर निरन्तर मिटाईआ। मेरे घर विच निक्का जेहा आपणा जगा के चराग़, सूर्या चन्न तों परे कीती रुशनाईआ। जगत साधूआं वास्ते खुशीआं वाला बाग, बगीचा दिता प्रगटाईआ। इस विच वड़ के कहिण एथे करीए राज, अग्गे कदम ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सच तेरी सरनाईआ। दस्म दुआर कहे मेरा निक्का जेहा घराना, घर घर विच टिकाईआ। जिस नूं माण जगत जहाना, जीव ईश समझाईआ। जिथ्थे पंचम पंच सुण धुन्काना, शब्द शब्द वड्याईआ। जिथ्थे मस्ती मस्त दीवाना, खुमारी ख़िमां विच रखाईआ। धर्म धर्म दा ईमाना, अमलां तों बाहर दृढ़ाईआ। तेरी मंज़ल दा पहला निशाना, निशानेबाज़ तेरी सरनाईआ। एथे दरस हुन्दा तेरा नूरी नूर दा कान्हा, राम तेरी वड्याईआ। तेरी मंज़ल मंज़ल दा मिले बहाना, रहिबर तेरा राह दरसाईआ। कलमा कलमे विच दस्से कलामा, संदेशा अगम्म अथाहीआ। साचा नूर नूर नुराना, रवि ससि सीस निवाईआ। दूसर दिसे ना कोए बेगाना, वैरी मीत ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच आपणा रंग रंगाईआ। दस्म दुआर कहे मैनूं अक्खरां विच पढ़दे, सिफ्तां विच वड्याईआ। अभ्भासां विच लड़दे, नैण मूंद ध्यान लगाईआ। पाणी विच ठरदे, जल धारा सीस कराईआ। अग्नी विच सड़दे, हवन हवन समझाईआ। इष्ट जगत वाला देव मूर्ती धरदे, धर्म धार दरसाईआ। ढोले गाउण नरायण नर दे, बिन रसना रसन हिलाईआ। सुरती शब्द नाल जड़दे, शब्द सुरत वल्ल रखाईआ। बौहड़ी मेरे घर मूल ना वड़दे, राह विच बैठण पत गंवाईआ। दस्म दुआर कहे मैं कोटन कोटि वेखे लोभ मोह हँकार विच लड़दे, दिवस रैण करन लड़ाईआ। कोई मुख करदे चढ़दे, कोई लहिंदे सीस निवाईआ। कोई दक्खण पहाड़ नट्ठदे, भज्जण वाहो दाहीआ। कोई राह तकण निज नेत्र अक्ख दे, जगत नैण नैण शरमाईआ। कोई बूंद स्वांत अमृत रस चक्खदे, कँवली कँवल कँवल उलटाईआ। दस्म दुआर कहे प्रभू मेरे दवारे बिना तेरे भगतां तों मूल कोए ना वसदे, विद्या जगत ना कोए वड्याईआ। कर किरपा जिस नूं आपणी मति दे, मति मतांतर डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। दस्म दुआरी कहे मेरा घर छोटे तों छोटा, साहिब तेरी वड वड्याईआ। मैनूं लभ्भदे कोटी कोटा, कोटन कोटि भज्जण वाहो दाहीआ। मैं उच्ची कूक सुणावां लोका, धुर दा नाम इक जणाईआ। बिना सतिगुर किरपा मेरे घर दा किसे नूं नहीं मिलदा मौका, दर चढ़न कोए

ना आईआ। गोबर नाल मेरा कदे किसे साफ़ कीता नहीं चौंका, जगत पोच ना कोए लगाईआ। वस्त्र तन किसे नहीं धोता, अन्तर करे ना कोए सफ़ाईआ। छत्तां वाला नहीं कोई कोठा, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। मेरे विच मेरे प्रभू ने रखी निक्की जेही आपणी जोता, जोती जोत नाल जगाईआ। मेरा कोई माण नहीं वड्डा बहुता, घर विच घर दिता बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच भेव आप खुलाईआ। दस्म दुआर कहे मेरा दरवाज़ा किसे ना लभ्भा, हाए उफ़ मेरी दुहाईआ। मेरे अन्दर सति सरूप इक्को बग्गा, जोती धार सोभा पाईआ। जिथ्थे हँस बण गए कग्गा, काग हँस रूप वखाईआ। त्रैगुण लग्गे कोए ना अग्गा, तत्व तत ना कोए जलाईआ। मेरा कोई सकेअर नहीं विच गज़ां, फ़ुट्टां विच ना कोए लम्बाईआ। मेरे घर दी किसे अग्गे ब्यान नहीं कीती पूरी वज़ह, चार जुग दे शास्त्र इशारे दे के गए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सच लेखा आप दृढ़ाईआ। दस्म दुआर कहे मेरा मुहीत मजले मुज़लू मीज़ान मज़्ज़ब ना कोए लगाईआ। जिथ्थे आफ्ताब ना होवे कोए तलूह ग़रूब गिरहा ना कोए समझाईआ। सैलाने सलल रूहाने रूह, रहमत यकसू अख्वाईआ। जिथ्थे बिना रूप रंग रेख तों शब्द गुरु, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा भेव खुलाईआ। दस्म दुआर कहे मेरा कर्ज़ा बू इरद गिरद, कबीर नानक मुहम्मद ज़हूरे ज़ाहर जीव समझाईआ। कोई जाण ना सके बाल बिरध, जोबनवन्त ना कोए चतुराईआ। भेव पा ना सके सुरत निरत, नैण अक्ख ना कोए दरसाईआ। जिथ्थे मनुआ करे कोए ना किरत, कृतघन ना कोए वड्याईआ। मिरतू विच होवे कदे ना मिरत, मिरतक रूप ना कोए दरसाईआ। वेखणा पए ना दीप घृत, जोती जगत ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा दर, दर दरबारा इक दरसाईआ। दस्म दुआर कहे मेरा गृह निक्के तों निक्का, नक्का सूई ना कोए चतुराईआ। जिस दा मालक इक्को इका, एकँकार इक रखाईआ। जो मेरे अन्तर मन्त्र निरन्तर हो के टिका, घर घर दिती वड्याईआ। मैं कदे हथ्थ नहीं आया विच्चों पथ्थर इट्टां, पाहन पूजस मिलण कोए ना पाईआ। मेरा आदि तों लै के अन्त तक इक्को गृह ते इक्को मन्दिर इक्को जुग चौकड़ी सिट्टा, दूजा रूप ना कोए दरसाईआ। सच दवार एकँकार किरपा धार अपर अपार मेरा दवार जद वखाया वखाया भगतां सिक्खां, सहिज नाल समझाईआ। जिथ्थे इक्को धुर धार दी मिलदी भिच्छा, दूजी वस्त ना कोए वरताईआ। तृष्ना तृखा रहे ना इच्छा, निरइच्छत रंग रंगाईआ। मेरा कोई लम्मा चौड़ा हरफ़ां हरूफ़ां वाला नहीं किस्सा, सतरां वाली ना कोए लिखाईआ। मेरा गृह मन्दिर टकयां विच कदे ना विका, कीमत हट्ट ना कोए पवाईआ। मेरा

इक्को मालक इक्को पिता, इक्को देवणहार वड्याईआ। पुत कहे प्यो नूं की तैनूं पहले वी कदे दिसा, जे अग्गे वेखणा ई बेनन्ती विच मंग मंगाईआ। जिथ्थे साहिब दा दर्शन होए निता, जागत सोवत नूर दए चमकाईआ। कोई चुक्कणी पए ना चिका, कुण्डी हथ्थ ना कोए खुलाईआ। प्रभ दी किरपा नाल भगतां दा पहला इहो हिस्सा, दस्म दुआरी विच पहलां दरस दिखाईआ। फेर दस्म दुआरी नूं दे के पिछा, अग्गे लए कढ्ढाईआ। इस तों अग्गे मंज़लां चार होर जिथ्थे साहिब सतिगुर बैठा अनडिठ्ठा, अगम्म अथाह बेपरवाहीआ। ओथे दस्म दुआरी तके बिट बिटा, दूर दुराडी ध्यान लगाईआ। जन भगतां कहे मेरी अर्ज़ोई हिका, इक दयां सुणाईआ। जिथ्थे तुहाडा साहिब स्वामी वसे पिता, ओथे मेरी मंज़ल मूल रहे ना राईआ। मैं तां साढे तिन्न हथ्थ विच हां टिका, नौ दवारयां उपर आपणा घर रिहा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित सब दी पूरी करे इच्छा, निरासा रहिण कोए ना पाईआ।

✪ १२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ दर्शन सिंघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

७२४
२२

फ़क्कर कहे शाह तक्की, तकीआ मेरा दए दुहाईआ। दो सौ सठ्ठ साल दी मेरी आसा पक्की, माज़ी लेखा दयां जणाईआ। मैं राह तकदा सां मालक हकी, जो हकीकत दए जणाईआ। बावन साल मेरी आसा रही शकी, पर्दा भेव ना कोए खुलाईआ। मेरी अन्तर अज़ां बांग ख़ाहिशां विच नठ्ठी, भज्जी वाहो दाहीआ। हुण सदी जांदी टप्पी, चौधवीं पन्ध मुकाईआ। मेरी बुझण लग्गी बत्ती, जगत नूर रहे ना राईआ। मैं इक सौ अठारां साल रिहा एथे दिन अस्सी, आसा विच ध्यान लगाईआ। ढाई वार मेरी जगह एह वसी, जगत रूप बणाईआ। मैं सब कुझ वेखदा रिहा अक्खी, नेत्र नैण खुलाईआ। अर्ज़ोई करदा रिहा अग्गे साहिब अलखी, लखमी नरायण तेरी सरनाईआ। मेरी धार तेरी मुहब्बत विच फसी, फैसला तेरे हथ्थ रखाईआ। हुण रमज़ रही ना छपी, छप्पा अवर दिता चुकाईआ। मेरी पिछला कलमा कलाम जपी, जगजीवण दाते तेरी झोली पाईआ। पूरब लेखा करदे नफ़ी, वाधा आपणे नाल बणाईआ। मेरा साथी इक होर मुहम्मद शफी, जो शाह सुल्तान दा नूर रूप दरसाईआ। जिस दे हथ्थ प्याला कफ़ी, कफ़न ओढण नाल मिलाईआ। मेहरवान महिबूब कथा कहाणी साची दस्सी, परवरदिगार दिती सुणाईआ। साडा लेखा मुका दे लख चार अस्सी, चुरासी रहिण कोए ना पाईआ। जन भगतां आपणे रंग विच रती, साडा झगड़ा देणा मुकाईआ। ओनां वा ना लग्गे तत्ती, जेहड़े तेरा नाम ध्याईआ। तूं साहिब पुरख समर्थी, हरि वड्डा वड वड्याईआ।

साडी आसा पूरी करदे इक्वी, इक्को वार दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंँघ विष्नूं भगवान, वसणहारा घट घटी, घट अन्तर गुरमुखां करे सफ़ाईआ।

✪ १२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे एथे अंगद लकीर खिच्ची सी नाल चीची, चीचक दा रोग गया गंवाईआ। फेर निगह कीती नीची, धरनी धरत धवल ध्यान लगाईआ। फेर आपणे पल्लू गंढ पीची, घुट्ट के दिती बंधाईआ। फेर पिछली वेखी बीती, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। त्रेते बाल्मीक एथे दब्ब के गया सी गीटी, उँगलां पंज पंज छुहाईआ। उत्ते लेख लिख्या कलयुग अन्त चले भगत भगवान दी रीती, अंगद वेख के खुशी बणाईआ। फेर निगाह मारी की अग्गे हुक्म हदीसी, हरि सतिगुर आप जणाईआ। जां खेल तक्कया बीस बीसी, चौदस चौदां अंक बणाईआ। इक्को छत्र दिसे सीसी, जगदीश सोभा पाईआ। अंगद सृष्टी वेखी नीती, निगाह नैण उठाईआ। चार कुण्ट तक्कया बिना भगतां तों रहे ना कोए प्रीती, भगवन मिलण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अंगद ला के गया अंगूठा, खब्बा हथ्थ हथ्थ उठाईआ। जिस वेले जगत भण्डार दा मूधा होया ठूठा, नाम वस्त ना कोए टिकाईआ। सतो गुण दा रिहा कोए ना बूटा, सिंमल होए जगत लोकाईआ। सतिगुर प्रेम मिले ना हूटा, दो जहानां पार ना कोए कराईआ। फिरे दरोही चारे कूटा, कुटीआ शांत ना कोए रखाईआ। अवतार पैग़म्बर होवे रूठा, रुठयां सके ना कोए मनाईआ। माण रहे ना किसे अवधूता, साध सन्त ना कोए चतुराईआ। ओस वेले पुरख अकाल किरपा करनी आपणे भगत सपूता, सुत दुलारे गोद टिकाईआ। चौदा तबक पैणीआं कूकां, कुरह कायनात सुटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत विकार दीआं कल रहिण ना माशूकां, आशक दा इश्क इश्क दा आशक इक्को एक एक दरसाईआ।

✪ १२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ जगीर कौर दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे गुर अंगद आख्या, शब्दी हुक्म सुणाईआ। मेरे अन्तर अगम्मी भाख्या, भजन बन्दगी तों बाहर दरसाईआ। किरपा करे अलखणा अलाख्या, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस ने कलयुग अन्तिम वेखणा वाक्या, वाक्या आपणा रूप प्रगटाईआ।

चार जुग दा लहिणा जानणा साक्या, साक सज्जण मीत हो के वेख वखाईआ। नाम अस्व चढ़ना राक्या, रकबा वेखे ख़लक खुदाईआ। जन भगतां खोल्णा ताक्या, पर्दा पर्दे विच्चों लाहीआ। कलयुग मेटे अंध अंधेरी रातया, रुत आपणे नाल महकाईआ। सचखण्ड निवासी सच दवारे करे वास्या, दर इक्को इक रखाईआ। जिथ्थे निरगुण नूर जोत होवे प्रकास्या, प्रकाशत रूप सहिज सुखदाईआ। मेरी पूरी करे आस्या, तृष्ना आपणे विच मिलाईआ। जिस दी जोत धार होणी दस शाख्या, गोबिन्द गोबिन्द कार भुगताईआ। सो वेला वक्त सुहाए देस माज्झया, मजलस धर्म गया समझाईआ। धरनी कहे सो स्वामी आ गया, आगमन विच ख़ुशी बणाईआ। मेरे गृह जगे चरागया, चरागाहां होए रुशनाईआ। मेरा अज्ञान अंधेरा भागया, भज्जया वाहो दाहीआ। सोहणा वक्त सुहञ्जणा आप सुहागया, कन्त सुहागी दया कमाईआ। धन्न वड्याई जो जन साहिब सरनाई लागया, लगमात्रा रहे ना राईआ। जगत विकार हँकार त्यागया, त्रैगुण दा डेरा ढाहीआ। सच दवारा एका पा गया, पवण पाणी तों बाहर समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तर देवे नाम वैराग्या, वैरी अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ।

✪ १२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ गुरबख्श सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

गुर अंगद कहे एथे बाल्मीक ने उँगल सी गड्डी, पोटे ढाई ज़िमीं विच दबाईआ। थोड़ी आपणी नन्नी कर के हड्डी, खल्ल दिती लुहाईआ। फेर माचस लै के डब्बी, अग्नी दिती जलाईआ। फेर टाकी कढ के बग्गी, चिन्दी उत्ते छुहाईआ। फेर निगह मारी उपर शाह रगी, शहिनशाह तक्कया बेपरवाहीआ। फेर कलयुग तक्कया अग्न लग्गी, चारों कुण्ट रही जलाईआ। फेर वेख्या भगत भगवान प्रीती लग्गी, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। फेर जल्वा तक्कया रब्बी, नूर नुराना नूर इलाहीआ। फेर वेखी चौधवीं सदी, सदमे विच दुहाईआ। फेर चार जुग धर्म दी वेखी गद्दी, तख्तनशीन ना कोए चतुराईआ। फेर दीन मज़्ब दी तकी हद्दी, वंडण वेखी थांओं थाँईआ। फेर आपणे अन्दरों आवाज़ कढी, उच्ची कूक के दिता जणाईआ। जे तूं मेरा साहिब समर्थी, राम राम तेरी दुहाईआ। तूं कलयुग अन्तिम आप पति रखीं, पतिपरमेश्वर दया कमाईआ। मैनूं खेल वखाउणा अक्खीं, आख़र चरणां सीस निवाईआ। फेर लकीर कढी नक्की, नक्क रगढ़ के दिती दुहाईआ। वास्ता पा के किहा हकी, हकीकत दे मालक होणा सहाईआ। आपणयां भगतां दी पति रखीं, जिस वेले पतिपरमेश्वर नज़र किसे ना आईआ। कोझयां कमल्यां पावीं घुट्ट के जफ्फी, ज़फ़ाकश आपणा रंग रंगाईआ। उन्हां दा जन्म कर्म सारा कर देवीं नफ़ी,

वाधा आपणे नाल बणाईआ। तेरी लिख्त लेख सिफ्तां विच लिख्या ना जावे सफ़ी, वरक्यां विच ना कोए वड्याईआ। तूं जुग चौकड़ी सब नूं करदा रफ़ी, रफ़ता रफ़ता आपणा हुक्म वरताईआ। मैं वास्ता पावां जोड़ के दो हथ्थीं, हथेली हथेली नाल मिलाईआ। बाल्मीक किहा पुरख समर्थी, तेरी बेपरवाहीआ। अंगद किहा एह खेल पुराणी पुरातन दस्सी, दस्स के दिता समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दो जहानां फिरदा टप्पी, टापूआं तों परे आपणी कार कमाईआ।

✪ १२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ प्यारो दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे एथे नौ घंटे बैठा रिहा बाल्मीक, आसण घुटने भार लगाईआ। आपणयां पैरां दे पिच्छे मारी लीक, आर पार दिती खिचाईआ। फेर प्रभू दी कीती उडीक, तृष्ना लई वधाईआ। मेहरवान कर बख्शीश, वस्त अगम्म दे वरताईआ। पुरख अकाल वस के चीत, चेतन सुरती दिती वखाईआ। उठ वेख कलयुग अन्तिम रीत, रीतीवान दिती समझाईआ। भगत भगवान इक्को मीत, दूजा संग ना कोए रखाईआ। लेखा छुटणा मन्दिर मसीत, मड्डां वंड ना कोए वंडाईआ। बाल्मीक किहा मैं बटवारा नीच, नीचो नीच अख्वाईआ। आपणे गलों लाह कमीज़, प्रभ दे चरणां अग्गे टिकाईआ। नाले हस्स के किहा नाले रो के किहा प्रभु सदा बख्शीं आपणी तामीज़, तमां विच ना कदे कुरलाईआ। मैनूं तेरे मिलण दी सदा रहे रीझ, विछोड़े विच विछड़ कदे ना जाईआ। पुरख अकाल किहा ओ कलयुग वेख नाल नीझ, ध्यान ध्यान विच्चों बणाईआ। जिस वेले भगतां दी लँघां दहिलीज़, दर दरां देवां वड्याईआ। उस वेले तेरी आसा मनसा पूरी करां उम्मीद, तृष्ना तृखा तृप्त कराईआ। धरनी कहे सो वेला वक्त पिछला गया बीत, जगत सुहञ्जणी दए वड्याईआ। मेरी काया होई ठंडी सीत, पुरख अबिनाशी चरण टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी सरनाईआ।

✪ १२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ कर्म सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

गुर अंगद कहे मैं एथे धरनी दब्बी सी नाल अड्डी, ज़ोर तिन्न वेरां लगाईआ। मेरे अन्दर आवाज़ आई रब्बी, धुर शब्द शब्द शनवाईआ। खेल वेखणा चौधवीं सदी, सदमे विच सर्ब कुरलाईआ। उस वेले भगत भगवान दी प्रीती होणी लग्गी,

दूसर इष्ट ना कोए रखाईआ। एह समां जुग चौकड़ी पिच्छों आउँदा कदी, कदीम दा मालक होए सहाईआ। जिस ने सब दी करनी करनी रद्दी, हुक्म आपणा इक वरताईआ। मातलोक विच्चों कढणी बदी, बुतखान्यां करे सफ़ाईआ । गुरमुखां देवे उच्च पदवी पदी, पद दा मालक इक अख्वाईआ। सृष्टी अग्नी होवे लग्गी, जगत सके ना कोए बुझाईआ। झगड़ा पए सूर गाँ ढग्गी, ढोरां उतों होए लड़ाईआ। आपणी मंज़ल सब ने जाणी छड्डी, जगत साध सन्त फ़कीर चढ़न कोए ना पाईआ। जगत हाकमां खाणी वढ्ढी, हराम खोर रूप दरसाईआ। फेर तिन्नां उँगलां नाल लकीर कढी, लहिंदे चढ़दे दिती वहाईआ। शब्दी बचन किहा जो खावे मच्छी डड्डी, डण्डावत प्रभ ने सब दी देणी बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा मालक बण के तबी, तबीअत वेखे थांओं बाईंआ।

७२८
२२

७२८
२२

✪ १२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ सरदारा सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे मेरा भाग वड्डा, हरि वड्डे दिती वड्याईआ। बाल्मीक दे के गया सद्दा, संदेशा प्रभ दी याद सुणाईआ। जिस वेले पिता पुत्त नाल करे दग़ा, सज्जण मीत ना कोए सखाईआ। माया रूपी लग्गणी अग्गा, तत्व तत ना कोए बुझाईआ। आत्म रस दा किसे लैणा नहीं मज़ा, विषयां विच सृष्ट हल्काईआ। सदी चौधवीं आउणी कज़ा, क्यामत आपणा रूप बदलाईआ। जिस दी समझणी नहीं किसे ने वजह, वजूहात ना कोए दृढ़ाईआ। बिना भगतां तों प्रभ दी चले ना कोए विच रज़ा, रज़ामंद ना कोए अख्वाईआ। उस वेले पुरख अकाल ने सब नूं देणी सज़ा, लेखा मंगे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति धर्म दी सति लगावे सभा, सभी आपणे रंग रंगाईआ।

✪ १२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ सरमुख सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

अंगद कहे एथे झंगी हुन्दी सी नौ दरख्त, किक्कर बेरी सोभा पाईआ। मैं ध्यान धरया दिन दे बारां वक्त, अन्तर अन्तर मेल मिलाईआ। मेरी दृष्टी विच आया सारा जगत, दीन दुनी खोज खुजाईआ। झट शब्द अगम्मी सुणया फ़कत, फ़िकरा अगम्म अथाहीआ। जिस विच जणाया नानक धार वारने जिगरे लखत, गोबिन्द गोबिन्द खेल खिलाईआ। लेखे लग्गणी

बूँद रक्त, रक्त बूँद सोभा पाईआ। उस दे पिच्छों प्रभू ने प्रगट करने भगत, भगवन आपणा मेल मिलाईआ। जिन्हां आत्मा परमात्मा दी लाउणी शर्त, शरअ दा झगड़ा देणा मुकाईआ। माण देणा वड्याई देणी उपर धरत, मेहर नज़र इक उठाईआ। अन्त वासा कर के उपर अर्श, अर्शी प्रीतम आपणे विच समाईआ। गुर अंगद किहा एह साहिब सतिगुर करना तरस, मेहरवान मेहरवान आपणा रंग रंगाईआ। मेरी इक्को बेनन्ती इक्को अर्ज़, इक्को इक दयां सुणाईआ। उस समें पुरख अकाल दीन दयाल नूं गुरमुखां नाल होवे ग़रज़, लोड़वंद आपणा पड़दा लाहीआ। एह खेल होणा असचरज, अचरज लीला आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ग़रीब निमाणयां वंडे दरद, दर्दीआं दु:ख आपणी झोली पाईआ।

७२६
२२

✪ १२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ हरनाम सिँघ दे गृह पिण्ड कल्लां ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे मेरा इशारा कीता सी अब्बूबकर, दूर दुराडा ध्यान लगाईआ। जिस वेले मेरे मालक ने वंड वंडी गुड़ शकर, शिकवा सब दा दए चुकाईआ। दीन दुनी दी लवाउणी टक्कर, मज़्हब मज़्हब नाल टकराईआ। ज़ात ज़ाती करने कट्टड़, निम्रता रहिण कोए ना पाईआ। धर्म धर्म नूं करे फट्टड़, फट्टयां उत्ते दए लटकाईआ। शरअ दा शरअ नूं वज्जे लफ्फड़, तमाचा धुरदरगाहीआ। चारों कुण्ट पैणा रफ्फड़, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। साचा दिसणा नहीं कोई फ़क्कर, फ़िकरे हक ना कोए सुणाईआ। जिस वेले सम्मत छे दा महीना चढ़या कत्तक, कत्तक आपणा रंग बदलाईआ। पंजां दरबारीआं सुहाउणा वक्त, आपणा बल धराईआ। पंजां प्यारयां मस्तक तिलक लाउणा सारे भगत, उँगली सज्जा हथ्थ उठाईआ। पंजां लिखारीआं मस्तक लाउणी आपणी रक्त, ख़ून आपणा आपणा चमकाईआ। फेर दिशा लहिंदी चढ़े कटक, अटक तों पार वेख वखाईआ। कल्ले वाल्यां लिआउणी इक बत्तख़, छब्बी पोह रिहा सुणाईआ। उस दा लाल पासा कीता होवे इक तरफ़, दूजा रूप ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे फ़र्श अर्श, अर्श फ़र्श आपणा हुक्म वरताईआ।

७२६
२२

✪ १२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ प्रीतम सिँघ दे घर पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे मैं की दस्सां, दस्स के दयां जणाईआ। नाले रोवां नाले हस्सां, हस्ती वेखां बेपरवाहीआ। गुर अंगद एथे जलाया सी नौ कक्खां, अग्नी आपणे हथ्थ लगाईआ। फेर नज़ारा तक्कया अगम्मी अक्खां, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्ह्लाईआ। ध्यान धरया किशना शुक्ला पक्खा, वदी सुदी वंड वंडाईआ। फेर ज़िमीं दे उत्ते सथ्थर लथ्था, डण्डावत रूप ल्या बदलाईआ। फेर मिट्टी नाल छुहाया मस्तक मथ्था, धूढ़ी उँगलां नाल छुहाईआ। फेर छेती तक्कया पुरख समरथा, साहिब स्वामी मेल मिलाईआ। झट मंगी अगली वथा, वास्तक झोली दिती डाहीआ। प्रभ सच सुणा दे कथा, अनुरागी राग सुणाईआ। भेव जणा के यथार्थ यथा, यदी आपणा पड़दा लाहीआ। धुर संदेशा आया जिस वेले कलयुग आयू बीती लखां, हुक्मे अन्दर आपणा हुक्म बदलाईआ। फेर पड़दा लाहवां भेद अगम्मा दस्सां, दहि दिशा करां रुशनाईआ। लेखा चुकावां चार चरस्सां, चशम दीद दयां दरसाईआ। जो लहिणा मुहम्मद मसीह यसू यसा, यथार्थ दयां दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्ह्लाईआ। धरनी कहे मैं की दस्सां आपणा भेव, पर्दा की चुकाईआ। एथे किरपा कीती सतिगुर सतिगुर गुरदेव, गुरुदेव भेव चुकाईआ। जिस नूं कहिंदे निहचल निहकेव, निहकर्मी धुरदरगाहीआ। सो कलयुग अन्तिम जन भगतां लेखे लाए सेव, सेवक सेवा आपणी झोली पाईआ। जिस नूं कहिणा वड देवी देव, देवत सुर आपणे रंग रंगाईआ। जिस दी सिफ्त कर ना सके रसना जिह्व, शास्त्र सिमरत कहिण किछ ना पाईआ। सो पड़दा खोल्ह्ले अलख अभेव, अपरम्पर आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे सर्ब देवी देव, देव आत्मा परमात्मा आपणे रंग रंगाईआ।

✪ १२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ सवरन सिँघ हरभजन सिँघ दे घर पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

बाल्मीक कहे मैं एथे कलम नूं शाही विच दिता डोबा, तिन्न तिन्न तिन्न वार लगाईआ। मुक्खों किहा प्रभू मैं तेरे जोगा, जोग जुगत ना कोए रखाईआ। आपणे नाम रस दा दे चोगा, चुग़ली निंदिआ तों लैणा बचाईआ। झट शब्द आवाज़ आई जिस वेले पैग़म्बरां कही तोबा, तोबा तोबा कर सुणाईआ। फेर भगतां दयां सोभा, सुबह शाम आपणा रंग रंगाईआ। सूरबीर बण के योधा, लोकमात लवां अंगड़ाईआ। गुरमुखां हिरदे आप सोधां, सुदी वदी दा पन्ध मुकाईआ। नाम निधाना दे के

अगाध बोधा, बुद्धी तों अग्गे करां पढ़ाईआ। खेल करां लोक चौदां, चौदस चन्न वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां बाल्मीक बख्शे ओह मौजां, मजलस सदा आपणे संग रखाईआ।

✪ १२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ साधू सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

गुर अंगद कहे मेरा लेख पंज अक्खर, अक्खरी बावन नाल वड्याईआ। मैं निशाना ला के गया उत्ते इट्ट पथ्थर, पाहन पाहन हेठ दबाईआ। निक्की जेही नाल रखाई पाती पत्र, पत्रका सहिज सुखदाईआ। जिस वेले गोबिन्द यारड़ा हंढाया सथ्थर, सूलां सेज सुहाईआ। नेत्र वरोले नीर ना अथ्थर, खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। फेर खेल करना प्रभ उत्तर पूरब पच्छम दक्खण, दहि दिशा पड़दा लाहीआ। जन भगतां आवे पैज रखण, थांउँ थाँईं होए सहाईआ। जो इक्को दा नाम जपण, बिन रसना रस चखाईआ। इक्को दवारे वसण, गृह मन्दिर इक वखाईआ। इक्को पीवण रसण, अमृत रस दए समझाईआ। खुशीआं दे विच सारे हस्सण, ग़मीं ग़मखार दए चुकाईआ। इक दूजे नूं दस्सण, साहिब मिल्या धुरदरगाहीआ। जिस चुरासी विच्चों भगत वरोले मक्खण, छाछ दीन दुनी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को बेड़ा इक्को चलाए नाम पत्तन, घाट इक्को इक दरसाईआ।

✪ १२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ लाल सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे सुलखणी घड़ी, घड़ी पल प्रभ आपणे लेखे पाईआ। किरपा कीती साहिब सतिगुर बड़ी, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। आत्म परमात्म जोड़ी जुड़ी, नाता बिधाता आप बंधाईआ। धुर प्रेम दी ला के झड़ी, अमृत मेघ दिता बरसाईआ। महिबूब हो के किरपा करी, किरपन आपणा रंग चढ़ाईआ। झगड़ा रहिण ना देवे कोई शरई, शरअ दा लेखा रिहा मुकाईआ। जो आत्मा सरन सरनाई परी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी दा लेखा दिता मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत परो के आपणी लड़ी, लड़ आपणे नाल बंधाईआ।

✪ १२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे मैं फिरां भार पब्बा, चारों कुण्ट चाँईं चाँईंआ। मैनूं साहिब सतिगुर लभ्भा, पुरख अकाल धुरदरगाहीआ। जिस ने मेरा धोणा धब्बा, दुरमति मैल मेटणी शाहीआ। झगड़ा चुकाउणा सबा, दीन मज़्ह़ब वंड ना कोए वंडाईआ। ज़ात पात मिटा के हद्दा, रंग इक्को देणा रंगाईआ। सति धर्म दी फड़ा के गदा, चक्र सुदर्शन देणा चलाईआ। कूड़ी क्रिया मेट के अग्गा, अग्नी तत दए बुझाईआ। पवित्र करे जन भगतां दवार जगह, जगह जगह आपणा चरण टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे नाम दा ला के डग्गा, दो जहानां दए जगाईआ।

✪ १२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ कुंदन सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ✪

धरनी कहे मैं जुग चौकड़ी घुंमां, घुंमण घेर विच्चों बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। मैं उस दे चरण चुम्मां, जो हुक्म रिहा वरताईआ। मैनूं संदेशा दिता हज़रत मुहम्मद दिन जुमां, शुक्रवार जगत कहे लोकाईआ। जिस कारन जिबह कीता दुम्बा, छुरी करद हथ्थ उठाईआ। जिस वेले सृष्टी दृष्टी रिहा कोए ना गुणा, गुणवन्त ना कोए चतुराईआ। वासना होणी वांग तुंमा, अमृत रस ना कोए भराईआ। खेल करना मालक कुल कुंना, कुल आलम वेख वखाईआ। कोटां विच्चों जन भगत सुहेला लए चुणा, चुण आपणे रंग रंगाईआ। साचे नाम दी बख्शे धुना, धुन आत्मक राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा संदेशा हक सुणा, सुण के आपणे विच टिकाईआ।

✪ १२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ गुरदयाल सिँघ दे घर पिण्ड कल्ला ✪

धरनी कहे मेरा भाग होया सुलखणा, गृह वज्जी वधाईआ। निरगुण धार तक्कया अक्खणा, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। जिस दा भगत रहिणा नहीं सक्खणा, ख़ाली झोली नाम भराईआ। लोकमात विच माण दे के रखणा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। किनारे ला के आपणे पत्तनां, दर साचा देणा जणाईआ। जिस खुशीआं दे विच नच्चणा, भज्जणा वाहो दाहीआ। दीन दयाल वेख के हस्सणा, हस्ती मस्ती विच समाईआ। दरगाह साची विच वसणा, सचखण्ड दवार वज्जे वधाईआ। मेरे

उत्ते उन्हां प्रेमीआं नच्चणा, जिन्हां मिल्या धुरदरगाहीआ। जिन्हां इक्को नाम जपणा, इक्को इष्ट देव रखाईआ। धरनी कहे प्रभ ने कौल इकरार पूरा करना जो गोबिन्द नूं तिन्न साल दी उमर विच दस्सया विच पटणा, पौंटे फेर दिता दरसाईआ। कलयुग अन्तिम होणी दुर्घटना, जिस नूं सके ना कोए अटकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां दा वेला टप्पणा, टप्पयां वाली ना रहे पढ़ाईआ। कलयुग दा फल कूड़ी क्रिया पक्कणा, पक्की तरह दिता जणाईआ। फेर पुरख अकाल दीन दयाल जगत जहान तकणा, चुरासी वेखे चाँईं चाँईंआ। जन भगतां बख्श के साची मतना, मति मतांतर डेरा ढाहीआ। चार वरनां इक्को नाम जपणा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश करे पढ़ाईआ। हर हिरदे अन्दर वसणा, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। धरनी कहे मैं उस साहिब दे चरणी ढहुणा, ढहि ढहि धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जिस ने आत्म धार लगा के वटणा, गुर अवतार पैग़म्बर लए प्रनाईआ। मैं खुशीआं दे विच हस्सणा, गुरमुखां देणा समझाईआ। जन भगतो इक्को जपो आपणी रसना, जेहवा इक्को इक इष्ट मनाईआ। अन्त इक्को कन्त दे घर वसणा, दूजा खौंत ना कोए हंढाईआ। सब दा तन माटी ख़ाक होणा भसना, भस्म उडे थांउँ थाँईंआ। जो हज़रत ईसा मुरीदां दे के गया बपुतिसमा, हयाते आब आप प्रगटाईआ। सो मालक मेहरवान महिबूब तुहाडे अन्दर रखणा, सहिज सहिज नाल टिकाईआ। जन भगतो तुसां बिना पीत्यों रस चखणा, रसना जेहवा ना कोए हिलाईआ। मुड़ जाणा आपणे वतनां, जिस वतनों होई जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल खेले अलख अलखणा, अलख अगोचर आपणी कार कमाईआ।

✪ १२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ हरदीप सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे मेरीआं निकलीआं चीकां, पापां भार दिता दबाईआ। मैं रो के किहा प्रभू आपणे भविक्खत दीआं वेख तरीकां, जो अवतार पैग़म्बर गुरु गए जणाईआ। तेरे विच हक तौफ़ीकां, साहिब सुल्तान तेरी सरनाईआ। सब दीआं आसा मनसा पूरीआं कर उम्मीदां, तृष्ना विच ना कोए बिल्लाईआ। सृष्टी अन्तर निरन्तर बदलीआं नीतां, नीतीवान नज़र कोए ना आईआ। आत्म परमात्म टुट्टीआं प्रीतां, प्रीतम प्रेम ना कोए वधाईआ। काया होए ना ठांडी सीता, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। कलमा रिहा ना जगत हदीसा, हज़रतां भय ना कोए दरसाईआ। अवतार गुरु करन तस्दीका, शहादत रहे भुगताईआ। छत्र झुल्ले किसे ना सीसा, जगदीश तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सद

तेरी आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा अन्तष्करन करे पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। मैं चारों कुण्ट गई हार, दहि दिशा ना कोए चतुराईआ। तेरी सृष्टी हो गई ठग्ग चोर यार, धर्मी धर्म ना कोए कमाईआ। गुर चेले रिहा ना कोए प्यार, मुरीद मुर्शद ना संग रखाईआ। पिता पूत करे ख्वार, स्त्री मर्द पई लड़ाईआ। तेरी मंज़ल चढ़े ना कोए दुष्वार, दुश्मण अन्दरों पंज ना कोए कढ्ढाईआ। मैं रो रो करां गिरयाज़ार, गृह गृह आपणा ध्यान रखाईआ। किरपा कर सच्ची सरकार, शाह पातशाह धुर दे शहिनशाहीआ। कलयुग वेला अन्त संभाल, सम्बल बहि के हुक्म वरताईआ। झगड़ा मेट के शाह कंगाल, दूई द्वैत दा डेरा ढाहीआ। तेरा हुक्म बेमिसाल, जिस दी मिसल ना कोए दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर दे के गए अहिवाल, भविक्खतां विच तेरी लिख्त लिखाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले सच आपणा दस्स अहिवाल, अहिल आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धरनी धरत धवल उपर वेख आपणे लाल, भगत सुहेले गुरु गुर चेले आपणे रंग रंगाईआ।

✪ १२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ मस्सा सिँघ दे गृह पिण्ड नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ✪

७३४ २२

कलयुग कहे अवतारो मेरी नमस्ते, नमों नमों नाल वड्याईआ। क्यों तुहाडे नाम होए ससते, काग़ज़ हट्टां विच विकाईआ। मार्ग प्रेम क्यों नहीं दस्सदे, दहि दिशा कर शनवाईआ। भेव खुल्ह्ण ना निज नेत्र अक्ख दे, प्रतख मिले ना किसे गुसाँईआ। क्यों तुहाडे मन मनूए अन्दर नच्चदे, नटुआ रूप वखाईआ। आपणे भाण्डे वेखो काया माटी कच्च दे, साढे तिन्न हथ्थ फोल फुलाईआ। जो विवहार चलाए मन्दिर मट्ठ दे, शिवदवाल्यां नाल कुड़माईआ। उथे राम नाम कोई ना रटदे, रट्टा वेखो थांउँ थाँईआ। तुसीं क्यों नहीं उठ उठ नच्चदे, भज्जो वाहो दाहीआ। मेरी कूड़ी क्रिया क्यों नहीं कटदे, कटाक्ष आपणा नाम लगाईआ। किथे धर्म दी धार रखदे, रक्षक हो के दयो समझाईआ। बिना निगह तों क्यों नहीं तक दे, जोती नूर नूर चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग कहे पैग़म्बरो आपणी मंज़ल तक्को रुहानी, रूह बुत वेख वखाईआ। क्यों सदी चौधवीं आई हानी, हान लाभ दयो दृढ़ाईआ। क्यों उम्मत उम्मती होई फ़ानी, आबे हयात ना कोए प्याईआ। केहड़ी तुहाडी आलमे ज़ावदानी, ज़रा पर्दा दयो उठाईआ। क्यों शरअ दी आई तुग्यानी, जगत जहान रही रुढ़ाईआ। किधर गई तुहाडी मेहरवानी, महिबूब नाल मेल ना कोए मिलाईआ। भेव दस्सो मणक्यां वाली गानी, इक ज़ीरो इक की चतुराईआ। चौदां तबक होई अंधेरी शामी, शमां नूर ना कोए रुशनाईआ।

सच संदेशा दस्सो पैग़ामी, पैग़म्बरो करो की पढ़ाईआ। क्यों उम्मत होई हरामी, हुरमां विच कुरलाईआ। किधर कलमा गया कलामी, कुल्ली ख़ाक ना कोए वड्याईआ। केहड़ा डंक वजाउणा दमामी, दामनगीर दयो दरसाईआ। क्यों तमां होई तमामी, तृष्ना संग रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। कलयुग कहे दस गुरु गुरु सतिगुरु धार, दर ठांडे सीस निवाईआ। सारे वेखो निगह मार, तक्को थांउँ थाँईंआ। धर्म दा रिहा ना कोए दवार, धुर दा डंक ना कोए वजाईआ। अन्तर करे ना कोए प्यार, प्रीतम प्रीत ना कोए निभाईआ। झगड़ा मुक्कया नहीं वरन चार, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक्को रंग ना कोए समाईआ। क्यों अठारां बरन करन हाहाकार, हउमे अग्नी तत जलाईआ। अमृत मिले ना ठंडा ठार, सांतक सति ना कोए कराईआ। उठो वेखो दीन दुनी संसार, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। सतिनाम दा मन्त्र कवण रिहा उच्चार, उच्चर के सति विच समाईआ। कवण वाहिगुरु फ़तिह बोले जैकार, ख़ालसा गोबिन्द रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा मालक सच्ची सरकार। कलयुग कहे मेरी डण्डावत, गुर अवतार पैग़म्बरो सीस निवाईआ। मेरी कूड़ दी वेखो बग़ावत, घर घर अन्दर दिती टिकाईआ। शरअ दी शरअ नाल अदावत, मज़्हब दीन नाल लड़ाईआ। करके रैण अंधेरी शामत, शमा सब दी गुल कराईआ। किसे कोल नाम कलमा रहिण नहीं दिती न्यामत, अमृत रस ना कोए चखाईआ। धर्म दी धार दिसे ना कोए दिआनत, अमानत हक ना कोए समझाईआ। मेरी क्रिया दा वेखो खेल कूड़ बणी बनावट, सोहणी बणत जणाईआ। क्यों तुहानूं आई थकावट, सवाधान हो के वेखो आपणी ख़लक ख़ुदाईआ। ज़रा मुच्छ दाढ़ी केस तक्को बोदी जञ्जू तक्को मूंड मुंडाए तक्को हजामत, हुजरा हक ना कोए वखाईआ। वेख्यो तुहाडे हुंदिआ सब ते आई क्यामत, कामल मुर्शद खेल खिलाईआ। सदी चौधवीं आपणयां सिक्खां मुरीदां दी दयो ज़मानत, ज़ामन हो के लैणा बचाईआ। प्रभ दा खेल ना कोए अनजानत, भरम विच ना कोए छुपाईआ। भेव खोल्ह मानुख मानव मानस, मनसा सब दी नाल रलाईआ। जगत दी तृष्ना तक लओ तामस, तमां कूड़ लोकाईआ। क्यों तुहाडे हुन्दयां सब दे अन्दर आया आलस, निंद्रा गूढ़ी नींद सवाईआ। कलयुग कहे मेरे अन्त सारे बण जाओ सालस, समां समें नाल टकराईआ। मैं वी उस साहिब दा बालक, जिस तुहानूं दिती माण वड्याईआ। मेरा उहो इक प्रितपालक, पारब्रह्म नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। कलयुग कहे अवतार पैग़म्बर गुरु मेरी आदि अन्त दी बन्दना, सीस बिन सीस झुकाईआ। वेखो मेरी जगत दी रंगणा, रंगण कूड़ दिती रंगाईआ। मेरे हुक्म नाल तुहाडा दर किसे ना लँघणा, अग्गे

कदम ना कोए टिकाईआ। मैं सब दा जन्म कर्म कीता भंगणा, धर्म दी धार ना कोए समझाईआ। बिना प्रभू दी किरपा तों कलयुग कहे मेरे विच भगत कोए ना जम्मणा, जम्मण वाली कोए ना माईआ। क्यों संदेशा दे के गया दुष्ट दमना, जल धारा विच आपणा ध्यान लगाईआ। जिस दा रूप सति सरूप गोबिन्द धार अनना, अनक कलधारी आपणी कार दरसाईआ। उस दा भाणा सब ने मन्नणा, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। इक्को प्रकाश होणा चन्नणा, चन्द नूर जोत रुशनाईआ। जिस दे कोलों दो जहानां कम्बणा, विष्न ब्रह्मा शिव सिर सके ना कोए उठाईआ। अन्तिम सब दा बेड़ा बन्नृणा, बन्नृणहार हो आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर हुक्म इक वरताईआ। कलयुग कहे गुर अवतार पैग़म्बरो मेरी इक सलाम, अलैकम विच सरनाईआ। आपणा तक्को नाम कलमा कलाम, सृष्टी दृष्टी दुनिया कायनात खोज खुजाईआ। वेखो की खेल करे अमाम, अमलां तों बाहर कार भुगताईआ। जिस झगड़ा मेटणा तमाम, शरअ ज़ंजीर शाह हकीर कटाईआ। मज़्हब दा रहिण देणा नहीं कोई ग़ुलाम, बन्धन हद्द ना कोए रखाईआ। नाम दे नाल लग्गण देणा नहीं बनाम, इक्को मार्ग पन्थ देणा दरसाईआ। खेल वेखणा जगत जहान, कुंठ बेकुंठ फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर धर्म धार समझाईआ। कलयुग कहे मेरी नमो नमो चरण कँवल, कमलापति सरनाईआ। लेखा वेखो उपर धवल, धरनी ध्यान लगाईआ। जिस नूं किहा इलाही अवल्ल, आलमीन समाईआ। जिस दी धार दिती पाहुल, अमृत रस वड्याईआ। जिस दा रूप समझया साँवल सवल, मुक्ट बैण नैण अख्वाईआ। जो हर घट रिहा मवल, मौला रूप नूर इलाहीआ। ओह सब कुछ मेरे अन्तिम देवे बदल, बदला दए चुकाईआ। सच स्वामी हो के करे अदल, इन्साफ़ इक दृढ़ाईआ। शरअ नाल शरअ नूं करके कत्ल, मक्तूल दा लेखा दए मुकाईआ। इक्को धार उपजा के मुक्दस, बैतुल धाम जणाईआ। जिथ्थे चार कुण्ट दहि दिशा चल के आवे पैदल, आपणा पन्ध मुकाईआ। कूड़ी क्रिया रहिण ना देवे बेअक्ल, बुद्धी बुद्ध नाल बदलाईआ। झगड़ा मुकाउणा तन वजूद शकल, रंगत रंग ना कोए लड़ाईआ। कलमा दस्स हकीकी हकल, नाम निधान देणा उपजाईआ। किसे दा चलणा नहीं कोई यतन, यथार्थ पुरख अकाल आपणा हुक्म वरताईआ। अवतार पैग़म्बर गुर मातलोक वेखो आपणा वतन, बेवतन ध्यान लगाईआ। जिथ्थे सब दा सांझा होणा पत्तन, दीन मज़्हब वंड ना कोए वंडाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार सांझा यार सब दी आए पति रखण, रखया करे थांउँ थाँईंआ। तुहाडा भविक्ख्तां दा पूरा करे कौल इकरार बचन, वायदा सब दा वेख वखाईआ। अग्गे सतिजुग बणाए साची रचन, रचना आप जणाईआ। भाग लगा के पंज तत कंचन, कंचन गढ़ दए वड्याईआ। जिस विच भगत

सुहेले नच्चण, टप्पण कुद्दण चाँईं चाँईंआ। सच दवारे साचे वसण, जिथ्थे मालक इक इलाहीआ। मनुआ मन रहे ना मतन, मन का मणका दए भवाईआ। हरिजन लाल अनमुलड़े बणा के रत्न, गुरमुख आपणी गोद उठाईआ। कलयुग कहे मेरा मूल रहे ना हठण, हठ दए मिटाईआ। मैनूं याद आउंदा जो संदेशा दिता पुरख अकाल गोबिन्द विच पट्टण, पटने वासी दया कमाईआ। ओह शब्दी धार मारे अगम्मी सट्टण, सुत्तयां लए जगाईआ। मेरी डोरी नूं आवे कटण, कटाक्ष इक्को नाम लगाईआ। कलयुग कहे मैं अन्त उस नूं टेकणा मथ्थण, निउँ निउँ लागां पाईआ। जिस दा ढोला नाम गीत एथे उथे दो जहानां जपण, गुर अवतार पैग़म्बर विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर गण गंधर्ब किन्नर यशप राग अलाईआ। मेरा खुशीआं विच निकले हस्सण, हस्ती तकां बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी जुग चौकड़ी जिस दे सब किछ हथ्थण, समरथ अकथ आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ १३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ मक्खण सिँघ दे गृह पिण्ड नौरंगाबाद ✪

७३७
२२

कलयुग कहे प्रभ मैनूं कहि दे लाडले चन्ना, चन्न मेरे तेरी वड्याईआ। मैं तेरा हुक्म फ़रमाना मन्ना, मन्न के तैनूं सीस झुकाईआ। मैं कोई लूला लंगड़ा नहीं लंङा, अंगहीण अख्वाईआ। मेरे विच लिख्या गया दसवां अक्खर "ङ", जिस दा बहु गिणती विच लेख ना कोए लिखाईआ। मेरे विच सिफ्त सालाही चौदां सौ तीह बणया पन्ना, सफ़ा सफ़े नाल वड्याईआ। मेरे विच गोबिन्द ने लाया तेरे प्यार दा कन्ना, कन्नी तेरे नाल रखाईआ। मेरे विच दीन मज़्ह्ब दा बणया बन्ना, हद हदूद दिती रखाईआ। मेरे विच तेरा कलमा उम्मत उम्मती चल्ला, कायनात सुहाईआ। मेरे विच तेरा नूर प्रगटाया अल्ला, आलमीन अख्वाईआ। मेरे विच शब्द गुरु फड़ाया पल्ला, पल्लू लोकमात फिराईआ। मेरे विच जगत हँकार दा चढ़या दला, आपणा बल प्रगटाईआ। मेरे विच कपट विकार वध्या छला, अछल छल धारी हो सहाईआ। मेरे विच माण रिहा ना जला थला, तीर्थ तट रहे कुरलाईआ। मेरे विच प्रभू तेरी प्रगटी कला, कलधारी खुशी देणी बणाईआ। मेरे विच तेरा गोबिन्द सूरबीर पला, जो पलक ना झले जुदाईआ। मेरे विच काम क्रोध लोभ मोह हँकार फला, फलीभूत नज़री आईआ। मेरे विच दूई द्वैती लग्गा सल्ला, सिल पाहन ना कोए चतुराईआ। मेरे विच ढोरां लथ्थदी खल्ला, गऊ ग़रीब ना कोए सहाईआ। मेरे विच नज़र ना आए कोई टला, अटल पदवी कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल

धुर दा हरि, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। कलयुग कहे प्रभू बुद्धी बख्श दे अक्ल, मति दे दृढ़ाईआ। सब तों वक्खरी दे दे शकल, हुसीन देणा बणाईआ। मैनूं बणा दे पीर मवक्कल, मेहर निगह उठाईआ। मैं सब नूं आवां तकण, वेखां थांउँ थाँईंआ। पड़दा लाहवां मदीना मक्कन, काअब्यां खोज खुजाईआ। मेरा बिरथा ना जाए यतन, यथार्थ होणा सहाईआ। मैं घर सुहावां पत्तन, कन्ढी रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं आवां कटण, कटाक्ष तेरा नाम लगाईआ। उम्मती जड़ आवां पट्टण, पटने वाला नाल मिलाईआ। सब दे हिरदे आवां फट्टण, फट्टड़ करां जगत लोकाईआ। सब दा रस आवां चट्टण, कूड़ क्रिया नाल लगाईआ। स्वांगी बणां नट्टण, घर घर वेस वटाईआ। मैं लेखा जाणा बाले शिकम विच बतन, अनभव आपणी खेल खिलाईआ। चारों कुण्ट मेरे अंग्यारे तपण, बिन तेरी किरपा सके ना कोए बुझाईआ। जगत सन्त फ़कीर मैथों छपण, सिर सके ना कोए उठाईआ। जम के दूत चारों कुण्ट टप्पण, कुद्दण वाहो दाहीआ। मेरा लहिणा दे दे हकण, हकीकत विच सुणाईआ। मैं खेल वेख्या पूरब उत्तर दक्खण पच्छम, दहि दिशा खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो तेरा नाम जपण, तिन्हां जम नेड़ कोए ना आईआ।

✪ १३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ करनैल सिँघ दे घर पिण्ड नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ✪

कलयुग कहे प्रभू मैं तेरा सुत दुलारा चंगा, चंगी बख्श माण वड्याईआ। तेरा नाम जपां इक टंगा, इक टंग कीती लोकाईआ। उलटा वहिण वहाया गंगा, कूड़ विकार लहर नाल मिलाईआ। जीव जंत साध सन्त कीता भुक्खा नन्गा, धीरज धरवास ना कोए बणाईआ। पिता पूत कराया दंगा, एह मेरी बेपरवाहीआ। तैनूं कोई आ ना लावे अंगा, नाता आत्म परमात्म दिता तुड़ाईआ। तैनूं दुनिया कहिंदी मंदा, भागहीण जणाईआ। मैं कोई पंज तत नहीं बन्दा, तन वजूद ना जगत रखाईआ। मेरा संग तेरे संदा, जोती धार तेरी वड्याईआ। इक्को वस्त अगम्मी मंगां, मांगत हो के झोली डाहीआ। घर घर कूड़ विकार दा देवां अनन्दा, अनन्द ममता विच समाईआ। मेरे विच तेरे नाम दा दीन मज़्हब उगराउंदे चन्दा, शास्त्र चुंगीख़ाना लए बणाईआ। मन वासना उडे पंतगा, डोरी शब्द ना कोए रखाईआ। कीता प्रधान लुच्चा लंडा, धर्म दी धार ना कोए रखाईआ। हउमें हंगता फड़ा के खण्डा, जगत खड़ग दिती खड़काईआ। हाए मेरा अन्तिम कन्ढा, कन्ढी बैठे वेख वखाईआ। की खेल होणा अचंभा, आपणा दे समझाईआ। औह वेख मुहम्मद पहन के हरा तम्बा, कदम चौदां रिहा उठाईआ। मेरा

लूं लूं वेख के कम्बा, कम्बणी गई आईआ। की हुण उम्मत दा हाल होणा मंदा, मंदभाग दिसे लोकाईआ। फिर नज़र आ गया सुल्तानपुर नानक फेरया रम्बा, धरनी धरती उत्ते चलाईआ। फेर दिसया जो तेग़ बहादर डाहया कंधा, लुबाणा पार कराईआ। फेर तक्कया जो गोबिन्द वन्डया मंडा, गुरमुखां जंगलां विच खवाईआ। फेर वेख्या खेल तेरा विच वरभण्डा, ब्रह्मण्ड अक्ख खुल्हाईआ। नज़री आया बिना भगतां तों जगत जहान रंडा, सुहागी कन्त ना कोए हंढाईआ। मैं चाहुंदा मेरा सफ़र करीं ना लम्बा, पन्ध छेती देणा मुकाईआ। अग्गे पावे कोए ना फंदा, फांदगी तैनूं रिहा सुणाईआ। वेख तेरा जग नेत्रहीण अन्धा, तेरा दरस करन कोए ना आईआ। मैं चाहुंदा अन्तिम लेखा मुकावां जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज डेरा ढाहीआ। मैनूं फेर पवे ठंडा, जिस वेले पूरी सृष्टी तेरी झोली दयां सुटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, मैनूं जगत कहे मुशटंडा, मैं मछन्दा तेरा नज़री आईआ।

७३६ २२ ★ १३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ दारा सिँघ दे घर पिण्ड नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ★ ७३६ २२

कलयुग कहे प्रभ मेरे कोल तेरे हुक्म दा पटा, जिस दा लेख ना कोए मिटाईआ। जिस विच सारी सृष्टी करनी बटा, धुर हुक्म कार कमाईआ। ज़िंदगी जीवण विच सब नूं लाउणा ठप्पा, कूड़ कुकर्म मोहर लगाईआ। माया डसणी घर घर डस्से सप्पा, सप्त सुरिख देण दुहाईआ। जो नानक कहि के गया तपा, तपदे हिरदे शांत ना कोए कराईआ। मैं तेरे उस बचन ते पक्का, सारी दुनिया दिती हिलाईआ। बण के नेक सपूत बच्चा, साहिब स्वामी तैनूं दिता वखाईआ। मेरा खेल नहीं कोई कच्चा, डोरी तन्द ना कोए तुड़ाईआ। मैं मानसा सूर गाँ खवाया कट्टा, पंखेरूआं खल्ल लुहाईआ। ममता मदि प्याई गट गटा, अमृत रस हथ्थ किसे ना आईआ। मैं काम क्रोध दा ला के झट्टा, ख़ाली घराने दिते भराईआ। जगत सन्यास सिर विच पा के घट्टा, बेआस दिते रुलाईआ। दिवस रैण फिरां नट्ठा, भज्जा वाहो दाहीआ। मैनूं सारे करदे ठट्ठा, मख़ौल रहे उडाईआ। मैं तेरे हुक्म विच रत्ता, रत्न अमोलक रूप बणाईआ। मैनूं अगला दस्स दे पता, पतिपरमेश्वर हुक्म सुणाईआ। केहड़ी धरनी उत्ते होवे सुत्ता, सुत्तयां कवण उठाईआ। भेव खुल्हा दे यथार्थ यथा, यदप यदी दे जणाईआ। मैं सुणना नहीं चाहुंदा पिछली जगत दी कथा, बीती कहाणी कम्म किसे ना आईआ। खेल वेखणा नहीं चाहुंदा खण्डा तीर कमान भथ्था, खड़ग खड़ग खड़काईआ। मैनूं इक्को दस्स दे तेरा शब्द खिलाड़ी केहड़ा पट्ठा, जो दो जहानां कार कमाईआ।

सूरबीर योधा हट्टा कट्टा, बलधारी नज़री आईआ। जिस दा नाम होवे इक्को टप्पा, दूजी करे ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। कलयुग कहे मैं तेरा बच्चा होणहार, होणी आपणे संग रखाईआ। मैं बण के खूंखार, सृष्टी सृष्ट जावां चबाईआ। मैं वेखां चार यार, यारी मुहम्मद नालों तुड़ाईआ। मैं फड़ के कंडा खार, गृह गृह दयां चुभाईआ। मैनूं बख्श दे नाम कटार, धारां दोवें दे दरसाईआ। मेरी चरण कँवल निमस्कार, सीस जगदीश झुकाईआ। मेरी आई अन्तिम वार, सदी चौधवीं संग रखाईआ। तूं इकल्ला मेरा यार, दूजा याराना ना कोए बणाईआ। ज्यों भावे मैनूं लैणा तार, तेरे हथ्थ मेरी वड्याईआ। किरपा कर सच्ची सरकार, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। मेरा बिरथा जाए ना वार, ख़ाली हथ्थ मेरी दुहाईआ। दीन दुनी नूं मारां मार, शरअ शरअ नाल टकराईआ। तेरे तेरे नालों करां ग़द्दार, गदा कूड़ हथ्थ फड़ाईआ। किरपा कर आप निरँकार, मेहर नज़र उठाईआ। मैं हो गया हुश्यार, आलस निंद्रा दिती तजाईआ। मैं वेखां सर्ब संसार, अन्तर निरन्तर फोल फुलाईआ। मंग मंगां तेरे दरबार, दर ठांडे सीस झुकाईआ। मेरी नमों नमों निमस्कार, डण्डावत विच कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा लहिणा देणा लेखा अगम्म अपार, अगम्मड़े आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ १३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ सोहण सिँघ दे गृह तरनतारन ✪

कलयुग कहे मेरे वड अमाम, परवरदिगार तेरी सरनाईआ। मैनूं ख़ुशी विच दे इनाम, ख़ालक ख़लक दया कमाईआ। मैं भुलाई पैग़म्बरां दी कलाम, तेरा नूर ना कोए रुशनाईआ। तेरा झगड़ा वेखणा विच इस्लाम, इस्म आज़म ना कोए जणाईआ। सदी चौधवीं मैं लेखा मुकाउणा तमाम, तमन्ना मुहम्मद नाल मिलाईआ। शरअ दा रहे ना कोए गुलाम, कूड़ ज़ंजीर देणी तुड़ाईआ। खेल करना विच अवाम, आम आपणी कार भुगताईआ। नौ खण्ड पृथ्मी ख़ाक देणी छाण, सत्तां दीपां धूढ़ उडाईआ। हुण आउणा विच मैदान, बलधारी रूप प्रगटाईआ। दीन मज़्हब कराउणा घमसान, ज़ात ज़ात नाल टकराईआ। धर्म दा रहिण नहीं देणा निशान, कलमा हक ना कोए सुणाईआ। सांझा रहे ना पीण खाण, पिता पूत देणे टकराईआ। मैं करनां खेल तमाम, मेहरवान तेरी ओट रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि साहिब तेरी वड्याईआ। कलयुग कहे मैं तेरा नाम ध्याउँदा, हरि हिरदे विच टिकाईआ। मैं सदा तेरी ओट रखाउँदा,

दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। तेरे अग्गे वास्ता पाउँदा, रो रो नैणां नीर वहाईआ। ख़ाली झोली अग्गे डाहुंदा, मेहरवान देणी भराईआ। मैं तेरा इक्को हुक्म चाहुंदा, जगत जहान दयां लड़ाईआ। शाह सुल्तानां खाक मिलाउँदा, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। मायाधारी दल फिराउँदा, गृह गृह अलख जगाईआ। चम्म दृष्टी पन्ध मुकाउँदा, ऊच नीच ना कोए चतुराईआ। धुर संदेशा इक सुणाउँदा, सुणावां इक बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी ओट रखाईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरी वेख नीत, नीतीवान दया कमाईआ। मेरी काया कर ठांडी सीत, अग्नी तत कूड़ बुझाईआ। झगड़ा मेट मन्दिर मसीत, काअबे पए ना कोए दुहाईआ। सतिजुग साची दस्स रीत, मानव ज़ाती दे समझाईआ। इक्को तेरे चरण होवे प्रीत, अवतार पैग़म्बर गुरु पन्ध मुकाईआ। लेखा रहे ना ऊच नीच, ज़ात पात ना कोए वंडाईआ। इक्को कलमा सच दस्स हदीस, हज़रतां तों परे कर पढ़ाईआ। तूं हर घट वसया बीच, अन्तर पड़दा दे उठाईआ। जिस दी चार जुग शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान करन तस्दीक, शहादत अक्खरां वाली भुगताईआ। सो स्वामी हक कर तबलीक, यक मुर्शद वाहिद खेल खिलाईआ। मेरी आसा मनसा इक उम्मीद, मेहरवान वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी दया कमाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं तेरा फ़रमांबरदार, फ़रमान मन्नया चाँईं चाँईंआ। सारी सृष्टी कीती ख्वार, ख़ालस रूप ना कोए वखाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई रोंदे ज़ारो ज़ार, पतिपरमेश्वर पारब्रह्म मिलण कोए ना पाईआ। सतिगुर इष्ट गए विसार, विषयां कूड़ भरी लोकाईआ। सब दे अन्दर धुआँधार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। सुरती शब्द ना करे प्यार, सुरत शब्द ना कोए मिलाईआ। अमृत मिले ना ठंडा ठार, झिरना निझर ना कोए झिराईआ। निज नेत्र सके ना कोए उग्घाड़, लोचन नैण ना कोए खुल्हाईआ। शब्द नाद सुणे ना कोए धुन्कार, अनहद नादी नाद ना कोए शनवाईआ। निरगुण जोत ना होए उज्यार, दीआ बाती घर ना कोए डगमगाईआ। मेरा प्रभू खेल अपर अपार, लख चुरासी विच गया समाईआ। जिधर तकां धुंआंधार, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। मैं चाहुंदा लेखा मुका दे संग मुहम्मद चार यार, सदी चौधवीं वेख वखाईआ। तेरे अन्तर निरन्तर मेरी गुफ़तार, गुफ़त शनीद भेव खुल्हाईआ। तूं पतिपरमेश्वर परवरदिगार, सांझा यार नूर इलाहीआ। तेरी महिमा कागत कलम ना लिखणहार, शाही शहादत ना कोए भुगताईआ। तेरी ओट रखदे गए अवतार पैग़म्बर गुरु विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी बैठे ध्यान लगाईआ। कलि कल्की तेरा खेल होवे अपार, अपरम्पर स्वामी आपणा भेव खुल्हाईआ। मेरी नमस्ते डण्डावत बन्दना सजदे विच मस्तक लावां छार, धूढ़ी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। कलयुग कहे प्रभू कर किरपा एकँकार,

अकल कलधारी आपणी कल प्रगटाईआ। सब दा लहिणा देणा पूरब लै विचार, विचर के सके ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि सच्ची सरकार, जुग चौकड़ी धुर दा हुक्म नाम वरताईआ।

✪ १६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ लाल सिँघ दे गृह पिण्ड डल्लेवाल ज़िला जलन्धर ✪

कलयुग कहे प्रभू अस्सू आ गया सोलह, सोलह कल रहे ना कोए चतुराईआ। मैनूं तक लै आपणे कोला, कुल मालक दया कमाईआ। मैं तेरे हुक्मे अन्दर बोला, अनबोलत राग सुणाईआ। चार कुण्ट तक लै साचा रिहा कोए ना ढोला, ढोल मेरे धुर दे माहीआ। नौ खण्ड पृथमी पावे रौला, सत्त दीप रहे कुरलाईआ। धरनी धरत धवल धौल लभ्भे किसे ना मौला, मौला विच ना कोए समाईआ। आपणा कौल इकरार तक लै रहे ना पड़दा ओहला, भेव देणा खुल्हाईआ। सच दी धार रहे कोए ना तोला, तक्कड़ नाम ना कोए उठाईआ। साचे घर दा बणे कोए ना गोला, गोलक माया रहे भराईआ। तेरे मिलण दा दिसे ना कोए विचोला, विचला भेव ना कोए खुल्हाईआ। सब दी शक्ती अन्तर खोह ला, भगती रहिण कोए ना पाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त टोह ला, साढे तिन्न हथ्थ फोल फुलाईआ। धुर दे प्यार विच फ़र्के किसे ना डौला, योधा सूरबीर ना कोए अख्वाईआ। तेरे नाम विच खेले कोए ना होला, लाल गुलाला रंग ना कोए रंगाईआ। मेहरवान महिबूब निरगुण आपणा वेख मातलोक विच चोला, चौबीसवें अवतार दया कमाईआ। तेरा मानस मानव मानुख इन्सान होया बोला, धुर संदेशा सुणन कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर निउँ निउँ लागा पाईंआ। कलयुग कहे प्रभ मैं नट्ठा भज्जा थक्का, नैण लै उठाईआ। मैं बचन करां हका, हकीकत विच सुणाईआ। तेरी सृष्टी लँघाई विच्चों ज्यों सूई नक्का, निक्का वडा बचया रहिण कोए ना पाईआ। साधां सन्तां कीमत पा के टका, टक्कयां विच दिते रुलाईआ। ओह वेख मुहम्मद दा सदी चौधवीं दा पटा, पटने वाला लै जगाईआ। सूरबीर योधा बणा हट्टा, हठ इक्को इक प्रगटाईआ। पिछला नाम सब दा जाए कटा, कटाक्ष अगला दे लगाईआ। दीन मज़्ब दा रहे कोए ना रट्टा, झगड़ा ज़ात कोए ना पाईआ। कलयुग चीथड़ पुराणा फटा, सतिजुग वस्त्र सति दे पहनाईआ। लख चुरासी आपणे नाम तों करके बटा, ज़ीरो सिफ़र दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि साहिब तेरी सरनाईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरे मालक धुर दे अब्बा, या मुबीन तेरी सरनाईआ। मेरा

वेखीं कोए ना धब्बा, सच दी धार इक सरनाईआ। मेरा कदम वेख लै सज्जा, सहिज सहिज उठाईआ। जिथ्थे मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ गुरदवार दी होवे जगह, ओथे ओथे दयां टिकाईआ। कलयुग जीव हँस बणा के कग्गा, माया ममता विच रुलाईआ। साधां सन्तां दे अन्दर ला के अग्गा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार विच तपाईआ। मेहरवान महिबूब अन्तिम सब नूं दे दे सज़ा, सज्जण हो के हो सहाईआ। मैं चलदा विच तेरी रज़ा, राज़क रिज़क रहीम ओट तकाईआ। सदी चौधवीं सब दे सिर ते वखा दे कज़ा, कातिल मक्तूल दिसे लोकाईआ। कोई दरस तेरा करे ना उपर शाह रगा, नौ दवार सृष्ट दृष्ट होए हल्काईआ। चौथा मिले ना किसे पदा, पतिपरमेश्वर मेरी आसा पूर कराईआ। धुन आत्मक सुणे कोए ना नद्दा, अनादी नाद ना कोए शनवाईआ। मेरा कूड़ निशाना चार कुण्ट होवे गड्डा, गॉड गुड मेरा रीमाकर्स देणा बणाईआ। तीर्थ तट्टां लावां अड्डा, तट किनारे वेख वखाईआ। सदी बीसवीं डूंग्घा कर दे आपणा होर खड्डा, हज़रत ईसा नैण उठाईआ। मुहब्बत विच लडावे कोए ना लड्डा, गोदी गोद ना कोए टिकाईआ। पुरख अकाल मैं तेरे हुक्मे अन्दर बध्धा, बदी दा मालक आपणा रूप बणाईआ। साची कारे जगत लग्गा, करनी करते तेरी सेव कमाईआ। मैनूं जगत विकार विच कर दे मगा, मग्न आपणा आप कराईआ। विषे विकार दा सब नूं चखावां मज़ा, जो मज़ाक तैनूं करे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस टिकाईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरी वेख लै करनी, करतब दयां जणाईआ। तेरी हकीकी मंज़ल किसे नहीं चढ़नी, चढ़दा लहिंदा वेख वखाईआ। आत्म परमात्म तुक किसे ना पढ़नी, सति विच ना कोए समाईआ। सृष्टी दीनां मज़्हबां विच लड़नी, एह मेरी वड चतुराईआ। मैं धान वांग सृष्टी छड़नी, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। मेरे अग्गे बुद्धी ना किसे दी अड़नी, मूर्ख मुग्ध देणे बणाईआ। सब दी अक्ल कूड़ विच हरनी, सच नाल ना कोए मिलाईआ। बिना भगतां तों तेरे आए कोए ना चरणी, चरणोदक मुख ना कोए चुआईआ। कलयुग कहे मैं ऐसी घाड़त घड़नी, घड़न भन्न्णहार देणी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच मेला लै मिलाईआ। कलयुग कहे प्रभू तेरा दर सच्चा दुआबा, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। गुर अर्जन इशारा कीता बुढ्ढे बाबा, शब्द शब्द विच्चों शनवाईआ। जिस वेले पुरख अकाल आया गुरमुखां दा धुर दा दादा, पिता गोबिन्द शब्द नाल मिलाईआ। दो जहानां बणे राजन राजा, शाहो भूप आप अख्वाईआ। सब दा लहिणा देणा पूरा करे देस माझा, मालवा संग बणाईआ। गुरमुख हँस बणावे कागा, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। जो आशा रखी कृष्न कोल राधा, रिदे विच ध्यान लगाईआ। जिस कारन राम नूं सीता मारीआं आवाज़ां, सुती उठ के दिती दुहाईआ। की मनुषां पढ़नीआं नमाज़ां,

राम कृष्न दा इष्ट भुलाईआ। राम हस्स के किहा सब दे पिच्छे वेखीं गोबिन्द वाला बाज़ां, गोबिन्द शब्द रूप दरसाईआ। जिस ने जगत जहान रचणा काजा, करनी धुर दी नाल रखाईआ। माण रहिणा नहीं सन्त साधा, साधना सच ना कोए कमाईआ। कोटां विच्चों भगतां दा होणा नहीं वाधा, वायदे सब दे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल आदि जुगादा, जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण सद आपणी खेल खिलाईआ।

✪ १६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ केहर सिँघ रुढ़का दे नवित
पिण्ड डल्लेवाल ज़िला जलन्धर ✪

कलयुग कहे मैं संदेशा देवां ज़रा, ज़ाहर ज़हूर रिहा जणाईआ। भगत सुहेला वेखणा खरा, ख़ालस धुर दा रंग रंगाईआ। तन मन्दिर वेखणा घरा, गृह अन्तर फोल फुलाईआ। धर्म दी धार तकणी शरअ, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। प्रेम वेखणा नरायण नरा, की नर हरि रंग रंगाईआ। धर्म दी धार तकणा धड़ा, सच सच नाल टकराईआ। दुआबे वाल्यो लेखा बड़ा, कलयुग कूक कूक सुणाईआ। जेहड़ा मैं गोबिन्द दी भेंटा करना कड़ा, ओह तुहाडे हिस्से आईआ। मैं भगत दवारे अग्गे होणा खड़ा, पलँघ दो रंग विछाईआ। फेर मेरी वेख्यो तर्ज़ ते तरह, की अगला हुक्म दृढ़ाईआ। लहिंदी दिशा लिख के लग्गी होवे मुहम्मद दी शरअ, काने कलम नाल वड्याईआ। चढ़दे ढाई फ़ुट दा बणया होवे थड़ा, तपा नानक मंग मंगाईआ। दक्खण नौ इंच दा होवे गढ़ा, धूढ़ी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। पहाड़ भरम लिख के लाया होवे मरा, मुरीद मुर्शद नाल रलाईआ। नौ फ़ुट अग्गे होवे दरा, पुट्ठा रूप देणा दरसाईआ। जिथ्थे धार चलणी नहीं मद्धम बैखरी पसन्ती परा, पारब्रह्म प्रभ आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एकँकार इक हरा, हरी हरि आपणी कार कमाईआ।

✪ १७ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ कर्म दे घर पिण्ड गुड़ा ज़िला लुध्याणा ✪

कलयुग कहे प्रभू मैं चार कुण्ट भज्जा दौड़ा, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण वाहो दाहीआ। जगत जहान जीव जंत साध सन्त मार्ग तक्कया सौड़ा, अग्गे कदम ना कोए टिकाईआ। नाम निधान नौजवान मर्द मर्दान तेरे प्यार दा दिसे कोए ना

पौड़ा, पौड़ी डण्डा चढ़न कोए ना पाईआ। आत्म परमात्म मिल्या रहिण नहीं देणा जोड़ा, जोड़ी तेरे नाल ना कोए बणाईआ। साहिब खेल वेख लै मोरा, मेहरवान आपणी अक्ख उठाईआ। जगत जीव कर के अन्तर कौड़ा, मिट्ठा रस दिता गंवाईआ। मैनूं दूर दुराडा नज़र आउंदा गोबिन्द वाला घोड़ा, नीला नीली धारों सोभा पाईआ। जिस दा दो जहान सुणदे शोरा, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल ध्यान लगाईआ। तेरा सूरबीर बहादर दिसदा बांका छोहरा, नौजवान नूर इलाहीआ। जिस ने खेल करना झगड़ा मेटणा पंज चोरा, तत्व तत तत बदलाईआ। तेरे नाम दा इक्को गाउणा दोहरा, दोहरी चोट लगाईआ। मेहरवान मेरे ते किरपा करदे भोरा, वस्त अगम्म देणी वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर घर साचे मंग मंगाईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरा खेल तक इत्फिाकी, इख़्तलाफ़ कीता जगत लोकाईआ। आबेहयात दा रिहा कोए ना साकी, साख्यात तेरा दरस कोए ना पाईआ। मंज़ल मिले ना किसे तन ख़ाकी, हकीकत हक ना कोए जणाईआ। सब दा मनुआ कीता आकी, अक्ल बुद्धी दा डेरा ढाहीआ। बजर कपाटी कोई खोल्ह सके ना ताकी, नाभी कँवल ना कोए उलटाईआ। धुन शब्द सुणे कोए ना गाथी, नादी नाद ना कोए वजाईआ। निर्मल जोत ना किसे प्रकाशी, अंध अंधेर ना कोए मिटाईआ। मेरे साहिब पुरख समराथी, तेरी सेवा सच कमाईआ। सदी चौधवीं मन्नणी आखी, उम्मत नबी रसूलां लवां उठाईआ। उम्मत उम्मती खेल करावां जगत तमाशी, तमां तमां नाल टकराईआ। तूं किरपा करनी पुरख अबिनाशी, सो पुरख निरँजण तेरी सरनाईआ। हरि पुरख निरँजण करीं मेरी राखी, एकँकार तेरी वड्याईआ। आदि निरँजण मेरी पूरी करीं घाटी, श्री भगवान वेख वखाईआ। अबिनाशी करते वेखीं मेरी वाटी, पारब्रह्म होणा आप सहाईआ। मैं अन्त अख़ीर बेनज़ीर कथा कहाणी आखी, कहि के दिता सुणाईआ। मेरी मुआफ़ करनी गुस्ताख़ी, गुस्सा गिला ना कोए जणाईआ। मेरा खेल वरतणा धर्म धार दी गोबिन्द वाली विसाखी, वसाह के सब नूं देणा हिलाईआ। शब्द अगम्मा तकणा पाती, पतिपरमेश्वर वेख वखाईआ। तेरी किरपा नाल चार कुण्ट कीती अंधेरी राती, रुतड़ी सच ना कोए महकाईआ। खेल वेख्या तत आठी, अप तेज वाए पृथमी आकाश मन मति बुध नाल मिलाईआ। नव दवार जगत वासना राखी, कूड़ कुटम्ब बणाईआ। हउँ सेवक नाथ अनाथी, दीनन तेरे अग्गे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं तेरे दर दा मंगता, मांगत इक अख्वाईआ। मैनूं बख्श दे हउमे हंगता, कूड़ी क्रिया गढ़ जणाईआ। मैं जगत जहान करना भुक्खा नन्गता, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। झगड़ा पाउणा काया मन का, ममता कूड़ नाल रलाईआ। हुण निशान रहिण देणा नहीं तारा चन्द दा, मुहम्मद चार यारी नाल कुरलाईआ। तेरा

खेल श्री भगवन दा, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। कलयुग कहे मैं तेरे दर ते जम्मदा, जम्मण वाली अवर कोए ना माईआ। तूं जुग जुग सब दा बेड़ा बन्न्हदा, मेरा होणा अन्त सहाईआ। मैं शुकराना करां तेरा धन्न धन्न दा, सिफ्तां विच सिफ्त सालाहीआ। इशारा दे दे आपणी गल्ल दा, संदेशा इक अगम्म अथाहीआ। फेर खेल तकणा कलयुग कल दा, कल काती लै उठाईआ। झगड़ा पावां पंच विकारे दल दा, तत तन वजूद लड़ाईआ। माण रहिण देणा नहीं अठसठ तीर्थ जल दा, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रोवे मारे धाईआ। लेखा याद कर लै राजे बल दा, जो बावन रूप गया समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे धुर दा वर, हरि साहिब तेरी सरनाईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरे अन्तर दे दे ताकत, ताकतवर तेरी वड्याईआ। मैं साबत रहिण देणी नहीं किसे ल्याकत, अक्ल बुद्धी ना कोए चतुराईआ। मुहब्बत विच करे ना कोए रफ़ाकत, निफ़ाक विच ख़लक खुदाईआ। माया ममता लाउणी अलामत, आलमां इलम देणा भुलाईआ। सृष्टी दृष्टी कर अणजाणत, नाता तेरे नालों तुड़ाईआ। सच दी रहे ना कोए अमानत, धर्म दी धार ना कोए वखाईआ। घर घर विच पा के बग़ावत, झगड़ा वेखां ख़लक खुदाईआ। तेरे नाम कलमे दी रहिण ना देवां ल्याकत, हउमे हंगता नाल भराईआ। फेर वेखीं मेरी रैण अंधेरी शामत, शम्हा जोत नूर ना कोए रुशनाईआ। मैं तेरा सुत दुलारा सही सलामत, तेरे चरण कँवल सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरी तेरे अग्गे अरदास, बेनन्ती इक जणाईआ। मैनूं देणी इक शाबाश, शहिनशाह पुश्त पनाह हथ्थ इक रखाईआ। मैं तेरा सुत दुलारा ख़ास, ख़ाहिश मेरी वेख वखाईआ। सति धर्म दा कीता नास, कूड़ कुड़यार दिता चलाईआ। झगड़ा पा के ज़ात पात, दीन मज़्हब दिता टकराईआ। अग्गे वेखीं मेरा होर हालात, हालत बदले सर्ब लोकाईआ। कूड़ कुड़यार कुकर्म पाउणी वफ़ात, मकबरा कायनात रूप दरसाईआ। सच दी रहिण देणी नहीं कोई जमात, जुमला अक्खर ना कोए शनवाईआ। तेरी किरपा नाल नव सत्त होणी अंधेरी रात, नौ दवारे पन्ध ना कोए मुकाईआ। तैनूं करे ना कोए तलाश, सारे बैठण मुख भवाईआ। उठ वेखे शंकर उपर कैलाश, की कला कल वरताईआ। ब्रह्मा अन्तर होवे हरास, हैरानी विच दुहाईआ। विष्नूं तके ख़ास, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। की खेल प्रभू तमाश, कलयुग आपणी कार कमाईआ। मैं जोड़ने दोवें हाथ, दर ठांडे सीस निवाईआ। सब दा पूरा कर दे वाक, जो भविक्ख्तां विच सुणाईआ। होणा पए ना किसे निरास, आसा सब दी पूर कराईआ। कलयुग कहे मेहरवान मेहरवान मेहरवान मैनूं बख़्श दे मेरी दात, दाते दानी झोली देणी भराईआ। अन्त कन्त भगवन्त दई शाबाश, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा

साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग कहे सतिजुग दा चिट्टा होवे लबास, चिट्टी धार धार विच्चों प्रगटाईआ।

✪ १८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ मेहर सिँघ दे घर जगराउं शहर ✪

कलयुग कहे प्रभ ध्यान दे यदी, शाह पातशाह दया कमाईआ। मुहम्मद तकदा आपणी सदी, चौधवीं चौदस अक्ख खुल्हाईआ। धार वहा दे नूह नदी, नर नरायण बेपरवाहीआ। सृष्टी तेरे हुक्म अन्दर बद्धी, बदी दा झगड़ा खोज खुाईआ। तेरी जोत निरालम जगी, जगत दे मालक हो सहाईआ। दीन दुनिया वेख लग्गी अग्गी, अग्न रही जलाईआ। जगत विकारी होई मधी, मदि मास अहार बणाईआ। मंज़ल मिले ना किसे पदी, पतिपरमेश्वर पड़दा दे उठाईआ। तूं नूर इलाही रब्बी, रहमत सच कमाईआ। झगड़ा मेट दे सुदी वदी, इक्को पक्ख देणा दृढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया चुका दे तन मास हड्डी, कल्पणा काया रहे ना राईआ। जीव जहान मेट दे गद्दी, गदागार कर लोकाईआ। निरगुण धार दस्सदे बग्गी, बग बपड़यां डेरा ढाहीआ। मैं मंग अगम्मी मंगी, मांगत हो के झोली डाहीआ। देवणहार मूल ना संगीं, सगले साथी तेरा दरस कोए ना पाईआ। चढ़या चन्द ना दिसे नवचन्दी, नव सत्त रही कुरलाईआ। दीन मज़्हब तोड़ पाबन्दी, पाबन्द आपणे लै कराईआ। वासना रहे किसे ना गंदी, अन्तर दुरमति मैल धुआईआ। एह खेल तेरे संदी, सनद पिछली दए गवाहीआ। मेरी मंज़ल किसे तों मूल जाए ना लँघी, कोटन साध सन्त बैठे धूंणीआँ ताईआ। सब दी आत्मा होई रंडी, परमात्म कन्त ना कोए हंढाईआ। तेरी जगत जहान दी घड़ी लँघी, वेला वक्त रिहा सुणाईआ। किरपा कर सूरे सरबंगी, शहिनशाह तेरी वड्याईआ। प्रगट हो विच वरभण्डी, ब्रह्मण्ड दे समझाईआ। जन भगतां पवण दे ठंडी, तत्ती वा ना लागे राईआ। जुग जन्म दे पिछले लईं गंढी, गंढणहार दया कमाईआ। तेरी धार चण्ड प्रचण्डी, प्रचण्ड रूप नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत जहान मेट दे तंगी, तंगदस्त नज़र कोए ना आईआ।

✪ १८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ महिंदर सिँघ दे घर पिण्ड दाखां ज़िला लुध्याणा ✪

कलयुग कहे प्रभू मैं तेरा धर्म धार दा जोगी, जुगीशर चौथा जुग अख्वाईआ। निरगुण धार निरगुण बण संजोगी, सच

स्वामी आपणा मेल मिलाईआ। विछोड़ा होए ना कोए विजोगी, नाता तुट सके ना राईआ। मेरे ठाकरा मैनूं बणा दे मौजी, मजलस जगत नाल वखाईआ। मैं सारी सृष्टी दृष्टी कीती रोगी, हउमे हंगता नाल मिलाईआ। जगत वासना बण के भोगी, सृष्टी तृष्ना तृखा वधाईआ। किसे दी कीमत रहिण नहीं दिती कौडी, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। मेरी आयू बीते ना बहुती, तेरे अग्गे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, हरि साहिब तेरी सरनाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं मंगां इक्को इक, सच सच दयां जणाईआ। मेरा लेखा देवीं लिख, लोकमात मिले वड्याईआ। तेरी किरपा नाल मैं धर्म दा रहिण दिता नहीं कोई सिख, सच विच ना कोए समाईआ। मैं सब दी बुद्धी लई जित्त, मन कल्पणा जगत कुरलाईआ। तेरा करे कोए ना हित्त, माया ममता विच हल्काईआ। प्रभू वसया किसे ना चित, कूड़ कल्पना वज्जे वधाईआ। तूं प्रगट होया मेरे नवित, मेहरवान दया कमाईआ। सच स्वामी बण के पित, पतिपरमेश्वर दया कमाईआ। सब दे अन्दरों सति धर्म दी धार लैणी खिच्च, चार कुण्ट कूड़ दिसे हल्काईआ। शब्द शक्त रहे किसे ना विच, साध सन्त ख़ाली रोवण मारन धाईआ। वड्याई रहे ना किसे मुन रिख, ऋषी ऋषीशर डेरा देणा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सो पुरख निरँजण तेरी आस रखाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं मंगां अन्तिम की, करनी करते दया कमाईआ। सब दा लेखा पूरा कर दे साढे तिन्न हथ्थ सीअ, रविदास चमारा दए गवाहीआ। सति धर्म दी मात रखदे नींह, नर निरँकार हो सहाईआ। कूड़ी क्रिया ख़त्म करदे बी, बीस बीसे बेपरवाहीआ। तेरा नाम निधान दीन दुनी ल्ए पी, अमृत रस देणा चखाईआ। निर्मल कर सब दा जी, जीव ईश दे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लख चुरासी जीव जंत चारे खाणी तेरा पुत्र धी, आत्म परमात्म दूजा नज़र कोए ना आईआ।

७४८
२२

✪ १८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ पाखर सिँघ दे गृह पिण्ड मोही ज़िला लुध्याणा ✪

कलयुग कहे मेरे साहिब परवरदिगारा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी इक सरनाईआ। गहर गम्भीर बेनज़ीर निरगुण धार हो ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर हरि हज़ूर तेरी ओट तकाईआ। निरगुण धार मैनूं मुहम्मद दए इशारा, सदी चौधवीं अक्ख खुलाईआ। उम्मत उम्मती दिसदा अन्त किनारा, अन्तष्करन बदलया ख़लक खुदाईआ। हक हकीकत दा लाए कोए ना नाअरा, कलमा कायनात ना कोए वड्याईआ। दीन मज़्ब दा मेट दे दाइरा, हद हदूद रहे ना राईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप चौदां

लोक चोदां तबक तेरा होए जैकारा, जै जैकार करे लोकाईआ। शब्द गोबिन्द खेल खेले दुबारा, दोहरी आपणी करनी कार कमाईआ। तूं निरवैर पुरख निराकारा, आदि निरँजण नूर अलाहीआ। सतिजुग साचा कर उज्यारा, सति धर्म सति प्रगटाईआ। कूड़ी क्रिया कर ख्वारा, जगत तृष्ना वासना दे बुझाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच आत्म परमात्म कर प्यारा, शब्द नाद धुन शनवाईआ। कलि कल्की तेरा खेल होवे अपारा, अपरम्पर तेरे हथ्थ सर्ब वड्याईआ। तूं करता करीम करनेहारा, कुदरत दा मालक नूर अलाहीआ। तेरी जागरत जोत जगे विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी बैठण सीस निवाईआ। तैनूं डण्डावत करन तेई अवतारा, रामा कृष्ना धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद तेरा नूर उज्यारा, जल्वागर तेरी रुशनाईआ। नानक धार गोबिन्द तेरा सुत दुलारा, दो जहानां मर्द मर्दाना सोभा पाईआ। तेरा शब्दी शब्द वड बलकारा, बलधारी इक अख्वाईआ। जिस ने सतिजुग त्रेता द्वापर कीता पार किनारा, मेरा अन्तिम लेखा दे मुकाईआ। कलयुग कहे मेरी नमो नमो निमस्कारा, डण्डावत बन्दना सजदा जगत सीस निवाईआ। तूं करनेहार करता पुरख करतारा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी धर्म दी धार दस्स दवारा, जिथ्थे द्वारकावासी सीस निवाईआ। जिथ्थे दीन मज़्ह़ब ज़ात पात ऊच नीच दा नहीं कोई अखाड़ा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को शब्द नाद होवे धुन्कारा, इक्को जोत नूर रुशनाईआ। किरपा कर परम पुरख मैं ढहि प्या तेरे दवारा, निम्रता विच सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी ओट तकाईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरा अन्त अख़ीर पकड़ लै दामन, दामनगीर तेरी सरनाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर रिहा कोए ना जामन, नाता बिधाता अन्त ना कोए जुड़ाईआ। चारों कुण्ट वेख अंधेरी शामन, शमा नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। कलयुग कहे मेरा कूड़ बणया रावण, बलधारी बल प्रगटाईआ। साचा दिसे कोए ना कानून, बंसरी धुंन ना कोए सुणाईआ। पैग़म्बर नूर ना कोए चमकावण, जल्वा सके ना कोए दरसाईआ। पड़दा खोल्ह ना ज़िमी असमानन, चौदां तबक रहे कुरलाईआ। जिधर तक्कीए कामनी कामन, कमसिन दिसे लोकाईआ। आत्म ब्रह्म दा रिहा कोए ना ब्राह्मण, पारब्रह्म तेरा भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्दी धार शाह सुल्तानन, शहिनशाह शाह पातशाह दर तेरे मंग मंगाईआ।

✪ १८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ गुरनाम सिँघ दे घर पिण्ड बुढेल ज़िला लुध्याणा ✪

कलयुग कोलों सो गुरमुख जाए बच, जो बचपन सतिगुर झोली पाईआ। सतिगुर लूं लूं अन्दर जाए रच, साढे तिन्न करोड़ रोम विच समाईआ। मनुआ दहि दिशा ना पवे नच्च, कल्पणा विच भज्जे ना वाहो दाहीआ। भाग लग्गे काया माटी कच्च, कंचन गढ़ सुहाईआ। रसना जेहवा बोलणा सच, कूड़ी क्रिया पन्ध मुकाईआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत, तत्व तत ना कोए तपाईआ। चरण प्रीती जोड़े नत, हरि चरण कँवल सरनाईआ। धीरज सन्तोख रखे जत, काम क्रोध ना रंग रंगाईआ। हिरदे धारे सतिगुर मति, मनमति दूर कराईआ। दीन दयाला अन्दर जाए वस, हरि गोपाला पड़दा दए उठाईआ। त्रैगुण अग्न विच ना जाए मच्च, सतिगुर अमृत मेघ बरसाईआ। सति धर्म दा साचा इक्को तप, सद चलणा हुक्म रज़ाईआ। गुरु शब्द गाउणा हस्स हस्स, गुर सतिगुर मेल मिलाईआ। निज नेत्र खुल्ल्हे अक्ख, अज्ञान अंधेर दए मिटाईआ। निझर अमृत लए चक्ख, बूँद स्वांती इक टपकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच मेला लए मिलाईआ। कलयुग आ ना सके नेड़े, गुरमुख संग ना कोए जणाईआ। जेहड़े सतिगुर चढ़ गए बेड़े, नईया नौका नाम टिकाईआ। कूड़ कल्पना मिट गए झेड़े, झगड़ा रहे ना राईआ। चुरासी विच पैण ना गेड़े, खाणी विच ना कोए भवाईआ। दूर दुराडे पहुंचण नेड़े, जो हिरदे नाम ध्याईआ। पुरख अकाला करे मेहरे, मेहर नज़र इक टिकाईआ। इक्को रंग गुरु गुर चेरे, गुर गोबिन्द गोद उठाईआ। भरम रहे ना सञ्झ सवेरे, एका नूर जोत रुशनाईआ। जो लेखा हक नबेड़े, मालक धुरदरगाहीआ। कलयुग दे कटे झेड़े, झगड़ा ममता दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। जिस कलयुग कोलों आपणा आप बचाउणा, नेत्र नज़र कोए ना आईआ। उस ने इक्को इष्ट मनाउणा, इष्ट गुरदेव स्वामी मिल के वज्जे वधाईआ। आत्म परमात्म ढोला गाउणा, गीत नादी नाद शनवाईआ। महिबूब मुहब्बत विच इक्को पाउणा, पवण पाणी ना कोए चतुराईआ। साची सेजा सेज सुहाउणा, पर्दा आत्म दर खुल्ल्हाईआ। नादी नाद शब्द वजाउणा, धुन आत्मक राग अल्लाईआ। घर दीपक जोत जगाउणा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। सच स्वामी दर्शन पाउणा, जिस नूं मिल के वज्जे वधाईआ। जिस ने कलयुग कोलों छुडाउणा, छुटकारा चुरासी कोलों कराईआ। उस सतिगुर दे चरणी सीस निवाउणा, जो आदि अन्त दा पिता माईआ। जिस ने दरगाह साची सचखण्ड वसाउणा, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां चरणां हेठ दबाईआ। अन्त जोती मेल कराउणा, जोती जोत समाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला एकँकारा इक ध्याउणा, धर्म दी धार धार वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा

हरि, सच दा खेल आप कराईआ। कलयुग कहे जन भगतो मैं जणावांगा। भेव अभेदा खोल्ह वखावांगा। पड़दा ओहला सर्ब उठावांगा। धुर दा ढोला इक्को गावांगा। जिस दा शब्द गुरु विचोला, तिस दे नेड़ कदे ना आवांगा। जो नानक घर दा गोला, तिस निउँ निउँ सीस झुकावांगा। जिस दा आत्म परमात्म बोला, उथे धूढ़ी ख़ाक ख़ाक रमावांगा। गुरमुख दवारे कदे ना पावां रौला, दूर दुराडा पन्ध मुकावांगा। जिस ने मेरे साहिब दा गाया सोहला, सुण के उस नूं सीस झुकावागा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक वडयावांगा। कलयुग कहे गुरमुखो मैं सच सुनेहड़ा दस्सां, सच दयां जणाईआ। मैं गुरमुखां कोलों कोटन योजन नस्सां, नेड़ रहिण कदे ना पाईआ। मैं उथे जावां जिथ्थे रैण अंधेरी मस्सा, सतिगुर रिदे ना कोए वसाईआ। मैं खुशीआं विच मारां कच्छां, जिथ्थे प्रभ नूं गए भुलाईआ। मैं लेखा पूर कराउणा जिन्हां खाधा गाँ वच्छा, वलछल आपणी खेल कराईआ। जन भगतो जिन्हां दी मेरा साहिब प्रभ करे रच्छा, उन्हां दर कदे ना आईआ। मेरा इक्को कौल इकरार पक्का, ना कोए तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। जिथ्थे पुरख अकाल दे नाम तों लैंदे पैसा टका, धुर दा नाम हट्टां विच विकाईआ। ओथे मैं आपणे समें दा लाग खट्टां, सब दी सुरती दयां बदलाईआ। कूड़ कुकर्म वाड़ां काया मट्टा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार करां हल्काईआ। नाले हस्स के करां ठट्ठा, मख़ौल विच जणाईआ। दुष्टो प्रभ दे नाम तों धन जो करो इक्ट्ठा, इहो तुहाडी करे सफ़ाईआ। कलयुग कहे मेरे कोल गोबिन्द दा लिख्या पटा, पटने वाला गया समझाईआ। जे मेरे गुरसिक्खां वल्ल तकां, तेरे नैण दोवें बाहर कढ्ढाईआ। कलयुग कहे जो गोबिन्द दा सिख मैं उस दे चरणां उत्ते आपणा सीस सुट्टां, निउँ निउँ लागां पाईआ। जेहड़ा साहिब सतिगुर नूं भुल्लया उस दीआं जड़ां पुट्टां, एह मेरे हथ्थ वड्याईआ। शाह सुल्तानां दी डोरी अन्तिम कटां, कटाक्ष आपणा इक लगाईआ। गुरसिखो जिस दे साहिब सतिगुर दी पूरी सत्ता, सति विच मिल के सति विच समाईआ। उस दे दवारे मैं आ ना सकां रता, सो रत्न अमोलक गुरमुख हीरा रूप गए बणाईआ। मैनूं डर आ जांदा जिस वेले मैं पूरे गुरसिख दे मुक्खों सुणदा जैकारा फ़तह, फ़तिह दा मालक गोबिन्द ने पुरख अकाल दिता बणाईआ। कलयुग कहे इहो मेरी निशानी ते इहो मेरा पता, पतिपरमेश्वर नूं भुल्लण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब दी जाणे मित गता, गति मित जानणहार इक अख्वाईआ।

✪ १८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ पलटू राम दे गृह पिण्ड सुधार ज़िला लुध्याणा ✪

कलयुग कहे प्रभू मैं तेरा शेर बब्बर, बाबर धार देणी मिटाईआ। नबी रसूल पैग़म्बर विच वेखणे कबर, मकबरयां खोज खुजाईआ। उम्मत उम्मती मुहम्मद दा वेखणा टब्बर, रसूलां नाल मिलाईआ। सदी चौधवीं पाउणा अन्तिम ग़दर, गदागर करां लोकाईआ। आपणी पूरी करां सधर, सदमा घर घर विच पहुंचाईआ। जेहड़े तेरी नहीं करदे कदर, कुदरत दे मालक कायनात दयां उलटाईआ। जगत दी धार देणी बदल, जूठ झूठ नाल वड्याईआ। इन्साफ़ करे कोए ना अदल, शाह सुल्तान मुख भवाईआ। शरअ ने शरअ नूं करना कत्ल, मज़्हब मज़्हब नाल टकराईआ। धाम दिसे ना कोए मुक्दस बैतुल, चारों कुण्ट कूड़ हल्काईआ। पिछली कीती सब दी करनी मुअत्तल, अग्गे तेरा राह तकाईआ। धर्म दा रहिण देणा नहीं पत्तन, नौका नाम ना कोए चढ़ाईआ। भगती दा चलण देणा नहीं यतन, यथार्थ तेरी सेव कमाईआ। दीन दुनी कीती बेवतन, तेरे दर मिलण कोए ना आईआ। मन वासना लग्गी नच्चण, चारों कुण्ट उठ उठ धाईआ। गढ़ रिहा ना किसे सोना कंचन, पंज तत ख़ाकी ख़ाक उडाईआ। कोटां विच्चों तेरा भगत सुहेला दिसे अमोलक रत्न, जिस दी कीमत जगत ना कोए चुकाईआ। जिस झगड़ा मेटया मन मति बुध बदन, इक्को तेरी ओट तकाईआ। निज दरस पाए अक्खण, लोचण नैण खुलाईआ। चरण कँवल सरनाई साची वसण, दर ठांडे सीस झुकाईआ। मैं पूरा करां कौल इकरार बचन, भविक्ख्त लिख्त वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे अलख जगाईआ। कलयुग कहे प्रभ तेरा हुक्म संदेशा यक, यदी दयां दृढ़ाईआ। मैं प्रगट होवां जग, चारों कुण्ट अंधेरा छाईआ। तेरा दरस कोए पा सके ना उपर शाह रग, नौ दवारे डेरा ढाहीआ। माया ममता घर घर लावां अग्ग, तत तत नाल टकराईआ। नाड़ बहत्तर उबाल के रत, सांतक सति ना कोए कराईआ। मेरे मालक मेरी रखणी पत, पतिपरमेश्वर तेरे अग्गे दुहाईआ। सदी चौधवीं मेरा पूरा करना हक, हकीकत नाल मंग मंगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां दे दीन मज़्बां दे पटे करने फक, फैसला आपणा हुक्म सुणाईआ। अग्गे रहे कोए ना शक, शिकवा सब दा देणा चुकाईआ। आदि अन्त जुगा जुगन्त तेरे हथ्थ, नित नवित आपणा हुक्म सुणाईआ। किरपा कर महिबूब समरथ, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। कलयुग कहे मैं चरणी तेरे रिहा ढट्ठ, माण हँकार ना कोए रखाईआ। तेरी किरपा नाल दीन दुनी दे अन्दर लावां सट्ट, सोए जगत लवां उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तूं वसणहारा घट घट, घाट अन्तर निरन्तर वेखणहारा थांउँ थाँईंआ।

✪ १८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ सरवण सिँघ दे घर पिण्ड पक्खोवाल ज़िला लुध्याणा ✪

कलयुग कहे मैनूं हुक्म दिता सूरे सरबगे, शाह पातशाह आपणी दया कमाईआ। किसे नूं चढ़न देणा नहीं उपर शाह रगे, रघुपति रघुबंस हुक्म सुणाईआ। तन वजूद लगाउणी अग्गे, सांतक सति ना कोए कराईआ। जीव जहान बणाउणे कग्गे, हँस रूप ना कोए दरसाईआ। दीपक नूर कोए ना जगे, अंध अंधेर देणा प्रगटाईआ। मेरी मंज़ल वल्ल कोए ना वधे, सच कदम ना कोए उठाईआ। सब दे ख़ाली करने हड्डे, नाड़ बहत्तर नाल मिलाईआ। कूड़ रसना दे देणे मज़े, अमृत रस ना कोए चखाईआ। नौ खण्ड पृथमी करने गजे, सत्त दीप तकणा चाँईं चाँईंआ। जिस दी समझ सके कोए ना वज्जे, तिस दा हुक्म देणा सुणाईआ। डंक लगाउणा आपणा कूड़ धार दी डग्गे, हाहाकार सृष्ट दृष्ट दरसाईआ। इक दूजे नालों करने अड्डे, पिता पूत नाल लड़ाईआ। धर्म निशाना कोए ना गड्डे, सत्त रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा इक जणाईआ। कलयुग कहे प्रभू जे तेरी होवे किरपा, कृपानिधान दया कमाईआ। मैं सारी सृष्टी विच पावां बिपता, विपरीत दयां दृढ़ाईआ। तेरा लेखा बिन तेरी किरपा कोए ना होवे लिखदा, अक्खर अक्खर ना कोए जोड़ जुड़ाईआ। सरूप रहिण ना देवां साचे सिख दा, सिख्या कूड़ कूड़ समझाईआ। मैं दीन दुनी होवां जित्तदा, हार विच सर्ब कुरलाईआ। इष्ट भुल्ल जाए तेरे पित दा, पतिपरमेश्वर तैनूं सीस ना कोए निवाईआ। झगड़ा वखावां पथ्थर इट्ट दा, सिल पाहन नाल टकराईआ। मन किसे ना होवे टिकदा, सुरती शब्द ना कोए समाईआ। तेरा खेल दस्सां नित दा, नवित तेरी कार कमाईआ। झगड़ा वेखां चेतन चित दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कहे प्रभू मैनूं बख्श अगम्म अनन्दा, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। मैं वेखां निशान तारा चन्दा, चन्न सितार नाल मिलाईआ। दीन दुनी विच तकां बन्दगी वाला बन्दा, बन्दन वेखां थांउँ थाँईंआ। कवण जगत धार विच गंदा, गंदगी विच आपणा आप फसाईआ। कवण तेरी मंज़ल लँघ, दर तेरे अलख जगाईआ। केहड़ा मानव होया चंगा, मानुख आपणा रूप बदलाईआ। मैं सब दा तकां धोती तहिमत तम्बा, जगत लबास फोल फुलाईआ। कवण बिन ओढण सीस फिरदा नन्गा, चारों कुण्ट हाल दुहाईआ। मैं खोजां जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। इहो वस्त अगम्मी मंगां, चरण कँवल ढहि ढहि सरनाईआ। मेरा कौल इकरार तेरे संदा, संनद पिछली वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वर दाते

दया कमाईआ। कलयुग कहे सदी चौधवीं अन्तिम वेला होया रवां, रवानगी सब नूं देणी कराईआ। जो आसा रखी आदम हव्वा, मुहम्मद सहिज नाल समझाईआ। चारों कुण्ट पैणी वबा, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। हाए उफ़ तोबा सब ने करना रब्बा, यामबीन तेरी बेपरवाहीआ। किसे हथ्थ ना आउणा धुर दा मालक अब्बा, अम्मी गोद ना कोए टिकाईआ। तेरा सूरबीर दुलारा कलयुग कहे मैं उठणा हो के शेर बग्गा, बगलगीर इक अख्वाईआ। सब दी बुद्धी करनी वांग कग्गा, सृष्ट काग वांग कुरलाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नव सत्त आपे लँघ, मंज़ल मंज़ल नाल बणाईआ। जगत सिंघासण वेख पलँघा, चरण टिकावां थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। पुरख अकाल किहा कलयुग अग्गे आजा मेरे कोल, कुल मालक दया कमाईआ। आपणा अन्तिम कर लै तोल, वजन तेरा तेरे हथ्थ फड़ाईआ। कूड़ कुड़यार वजा लै ढोल, डौरु डंक सुणाईआ। आपणा दस्स लै बोल, अनबोलत रिहा जणाईआ। लख चुरासी नाल कर लै चोहल, मुहब्बत प्यार विच बदलाईआ। आपणा भण्डारा लै खोल्ह, चारों कुण्ट देणा वरताईआ। अन्तिम तेरा लहिणा देणा विस्तर होणा गोल, गोलक कूड़ रहे ना राईआ। पुरख अकाल सब घट अन्तर जावे मौल, मौला आपणी खेल खिलाईआ। जिस विच फ़र्क रहे ना रती चौल, मासा तोला ना कोए जणाईआ। भेव पाए ना कोए पंडत पांधे रौल, अक्ल बुद्धी ना कोए समझाईआ। अन्त अख़ीरी आपणी प्रीती चरण घोल, घोली वारी आपणा आप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। कलयुग प्रभ लेखा वेख वखाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। विष्न ब्रह्मा शिव उठाएगा। करोड़ तेतीसा सुरप्त इन्द नाल मिलाएगा। तेई अवतार पड़दा लाहेगा। ईसा मूसा मुहम्मद जोड़ जुड़ाएगा। नानक गोबिन्द डंक वजाएगा। चार जुग दे शास्त्र, अक्खर अक्खरी फोल फुलाएगा। तेरा वेख के काला वस्त्र, बसन बनवारी हुक्म चलाएगा। जगत शरअ दा तक के शस्त्र, शरीअत कूड़ दा पन्ध मुकाएगा। नाम अगम्मी चढ़ के अस्त्र, दो जहानां आप दुड़ाएगा। जो कहि के गया ईसा मुहम्मद हज़रत, हज़ूर हरि जू पड़दा लाहेगा। जिस दे हुक्म अन्दर जुग चौकड़ी कीती बसरत, सो बिसरत विछड़ कदे ना जाएगा। अन्तिम सब दी पूरी करे हसरत, खाहिश खाहिश विच्चों मिलाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर हुक्म इक सुणाएगा। धुर हुक्म इक सुणावांगा। नाम निधान इक प्रगटावांगा। नौजवान शब्द उठावांगा। श्री भगवान डंक वजावांगा। राउ रंक इक करावांगा। दवार बंक इक सुहावांगा। चार वरन अठारां बरन डेरा ढाहवांगा। आत्म ब्रह्म ब्रह्म दृढ़ावांगा। साची करनी कार कमावांगा। शाहो भूप इक अख्वावांगा। दो जहानां पन्ध मुकावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव हुक्म मनावांगा। अन्तर भगतां ला के लिव, लहिणा

सब दा झोली पावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी देवी देव, देव आत्मा परमात्मा इक्को रंग रंगावांगा।

✪ १६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ साधू सिँघ दे गृह पिण्ड पक्खोवाल ज़िला लुध्याणा ✪

कलयुग कहे मैं मोटा ताज़ा काला, तख्त निवासी इक अख्वाईआ। मैं जगत जहान दा भूपन राजा, पातशाह बेपरवाहीआ। मेरे कोलों पुछण आया पीर ख्वाजा, खिज़र आपणा पन्ध मुकाईआ। सच दस्स की कहि के गया वाला बाज़ां, बाज़ी तेरे नाल लगाईआ। मैं झट उच्ची कूक के मारीआं वाज़ा, बौहड़ी बौहड़ी कर सुणाईआ। मेरे कोल अग्गे आ जा, तैनूं सहिज दयां सुणाईआ। जिस नूं कहिंदे ग़रीब निवाजा, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। उस ने आपणा साजण साजा, सज्जण हो के धुरदरगाहीआ। भेव खुल्ह्रावे बोध अगाधा, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। झगड़ा मेट के सन्तन साधा, सिद्ध मार्ग इक प्रगटाईआ। जिस दा हुक्म आदि जुगादा, जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। ओह शाहो भूप बण नवाबा, नौबत आपणा नाम सुणाईआ। उस दा गोबिन्द ल्या खवाबा, भविक्ख्तां विच गया जणाईआ। जिस दा खेल दिसदा माझा, मजलस भगतां नाल बणाईआ। चरण छुहा विच दुआबा, मालवा आपणी गंढ खुल्ह्राईआ। हुण फेरा पाउणा विच काअबा, शहिनशाह नूर इलाहीआ। जिस वेखणा पैग़म्बर पुन्न सुआबा, पड़दा लाहवे थांउँ थाँईंआ। कौल इकरार पूरा करना विच बग़दादा, जो नानक आस रखाईआ। फेर हुक्म देणा डाहढा, डण्डावत सब दी दए बदलाईआ। फेर तकणा मसीह जिस ने मन्नया गॉडा, गाईड हो के वेख वखाईआ। फेर तकणा राम सीता कृष्न राधा, रहिबर हो के पड़दा लाहीआ। फेर तकणा लख चुरासी बाग़ा, नव सत्त क्यारी फोल फुलाईआ। कलयुग कहे सतिजुग आउणा मेरे तों बादा, आपणा बल प्रगटाईआ। जिस ने इक वजाउणी रबाबा, रब्बी नूर नाल मिलाईआ। सब दी सुणनी फ़रयादा, दुखीआ रहिण कोए ना पाईआ। देणा हयाते आबा, अमृत रस प्याईआ। नाम वजाउणा वाजा, धुन नाद शनवाईआ। इहो खेल करना पुरख अकाल दीन दयाल सृष्टन सृष्ट लँघाउणी ज्यों सूई नक्के विच दी धागा, तन्द आपणे हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका हुक्म वरताए साचा, सच सच नाल प्रगटाईआ।

७५५
२२

✪ १६ अस्सू शहिनसाही सम्मत ६ सरदारा सिँघ दे गृह पिण्ड पखोवाल ज़िला लुध्याणा ✪

कलयुग कहे सुण पीर ख़वाजे खिज़रा, ख़ैरखाही नाल जणाईआ। मुहम्मद लेखा वेख सदी हिजरी हिजरा, चौदस चौदस ध्यान लगाईआ। परवरदिगार ने फोलया सब दा शजरा, शहिनशाह पड़दा आप चुकाईआ। जिस गोबिद ने वारया लख़ते जिगरा, नन्हे नीहां हेठ दबाईआ। ओह लेखा जाणे आदि दा सुरप्त इन्द्रा, इन्द्रासण खोज खुजाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव लाहवे निंद्रा, आलस रहिण कोए ना पाईआ। सवाधान करे जिस रास रचाँई बन बिन्दरा, गोकल रंग रंगाईआ। लेखा जाणे जिस राम फिराया सीता नाल जंगला, जूहां देण दुहाईआ। सो मूसा ईसा वायदा पूरा करे जो कीता उत्ते उँगलां, पोरव्याँ नाल गिणाईआ। आपणे विच कोटन कोटि रख के गुंझलां, पर्दा पर्दे विच छुपाईआ। उस ने लेखा करना सतिजुग मुढला, सति धर्म दा राह प्रगटाईआ। जिस दा शब्द शब्द शब्द गुरु उठणा, इके वार लए अंगड़ाईआ। दीन दयाले धुर दे तुठणा, मेहरवान नज़र उठाईआ। चार वरन करना इक मुठ्ठणा, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई डेरा ढाहीआ। बौहड़ी दरोही मेरा पैंडा मुकणा, मुकम्मल दयां जणाईआ। मेरे साहिब दा भाणा कदे ना रुकणा, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। इक्को सीस जगदीश झुकणा, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। जन भगतां उज्जल होणा मुखणा, दुरमति मैल धुआईआ। किसे दी रहे ना पूजा सुक्खणा, न्याज़ां विच ना कोए चतुराईआ। अन्तिम तैनूं पैणा लुकणा, ख्वाजे ख़बर दयां दृढ़ाईआ। मेरे मालक ख़ालक तांईं पुछणा, ख़लक वेख वखाईआ। जिस दा निशाना कदे ना उकणा, दो जहानां करे सफ़ाईआ। इक गोबिन्द कहि के गया पुतना, प्रीतम आपणी गोद टिकाईआ। कलयुग कहे इक शब्द अनमोल साहिब स्वामी कोलों पुछणा, चरण कँवल सीस निवाईआ। की अन्तिम उम्मत उम्मती होणा दुक्खणा, कवण दर्द विच कुरलाईआ। किस बिध बूटा जगत जहान पुट्टणा, पारब्रह्म देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धरनी दी सुफ़ल कराए कुक्खणा, कुक्खीं भाग जगत लगाईआ।

✪ १६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ कर्म सिँघ दे गृह पिण्ड पखोवाल ज़िला लुध्याणा ✪

कलयुग कहे सुण ख्वाजे पीरा, पीरन पीर रिहा जणाईआ। जिस तेरा वेखणा समुंद सागर नीरा, जल धार फोल फुलाईआ। ओह लेखा जाणे शाह हकीरा, कोझयां कमल्यां पड़दा लाहीआ। जिस ने बदलणीआं सब दीआं तकदीरां, तकदीरी आपणा हुक्म वरताईआ। उस दे अग्गे चलणीआं नहीं तदबीरां, तरीका सके ना कोए अपनाईआ। अन्त कटणीआं शरअ दीआं

ज़ंजीरां, बन्दना कलमा ना कोए वड्याईआ। माण चुकाउणा बवन्जा बीरां, बैताले देण दुहाईआ। खण्डे नाल खड़काउणीआं शमशीरां, जगत शमां गुल कराईआ। वेखणीआं सब तकसीरां, तरह तरह भेव खुल्हाईआ। सब तों कढाउणीआं नक्क नाल लकीरां, हंगता रहिण कोए ना पाईआ। जो संदेशा दे के गया कबीरा, गंगा धार विच दृढ़ाईआ। जिस कारन रविदास नूं मिल्या कसीरा, कौडी कीमत दिती बणाईआ। उस दा खेल होणा बेनज़ीरा, नज़र विच ना कोए टिकाईआ। सब दे उत्ते आउणीआं भीड़ां, भीड़ी गली पार ना कोए लँघाईआ। कलयुग कहे सब दे हड्ड मास नाड़ी होणीआं पीड़ां, दु:ख दर्द ना कोए मिटाईआ। बंधीआं रहिण मूल ना बीड़ां, बेड़ा रोड़्हे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीन दुनी कर्म कांड विच देवे तल, तल्ब सारे लए कराईआ।

७५७
२२

★ १६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ भाग सिँघ दे गृह पिण्ड पक्खोवाल ज़िला लुध्याणा ★

कलयुग कहे ख्वाजे वेख लै आपणा जल, जल्दी जल्दी ध्यान लगाईआ। जिस मालक ने करना थल, अस्गाहां रंग रंगाईआ। उहदा लेखा घड़ी पल, पलक विच आपणा हुक्म वरताईआ। देणा पूरा करे बल, बावन नाल सलाहीआ। मेरा मैनूं मिलणा फल, फलीभूत देणा बणाईआ। परवरदिगार ने वरतणी आपणी कल, कलधारी खेल खिलाईआ। सारी सृष्टी नाल कर के छल, छलीए आपणा हुक्म देणा वरताईआ। चौदां तबक जाणे हल, चौधवीं सदी संग मिलाईआ। उम्मती लेखा होणा डूँघी डल, बाहर सके ना कोए कढ्ढाईआ। दरोही खुदा दी चढ़ना दल, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। मैं वी उस दे नाल जाणा रल, रल मिल आपणा रंग वखाईआ। जिन्हां ढोरां लाही खल्ल, तिन्हां करनी अन्त सफ़ाईआ। परवरदिगार वेखणा खेल बैठ निहचल धाम अटल, दरगाह साची आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे हथ्थ रखे अगम्म दीआं तदबीरां, दूसर समझ ना कोए समझाईआ।

★ १६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ बाऊ भगवान सिँघ दे गृह पिण्ड पक्खोवाल ज़िला लुध्याणा ★

कलयुग कहे ख्वाजे उस नूं कर अरदास, अदब नाल सीस झुकाईआ। जिस ने पैग़म्बरां वखाई हक महिराब, महिबूब

नूर इलाहीआ। उस दी सिफ्तां नाल अक्खरां भरी किताब, कलमे नग़मयां विच सुणाईआ। जिस दा प्यार हकीकी नाल मज़ाज, मेहरवान आपणी धार प्रगटाईआ। उस दे सीस ते सोहणा ताज, तख्त निवासी सोभा पाईआ। मेरा कूड़ दा बदलणा राज, रईयत विकार देणी गंवाईआ। सतिजुग नूं बख्श के सच ख़ताब, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अमृत दे के हयाते आब, आबरू सब दी लैणी बणाईआ। निरगुण नूर जोत बख्श महताब, निराकार करे रुशनाईआ। दीनां मज़्बां विच्चों सब नूं कर आज़ाद, मानव इक्को घर वसाईआ। हउमे हंगता कर बर्बाद, जड़ डूँघी दए उखड़ाईआ। जो झगड़ा काग़ज़ात, अक्खर अक्खरां नाल लड़ाईआ। सब दा लहिणा करे साफ़, पूरब नज़र कोए ना आईआ। मेरी करनी करे मुआफ़, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। किसे नूं रहिण ना देवे गुस्ताख़, गिले सब दे मेट मिटाईआ। जिस दी अवतार पैग़म्बर गुरु सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बणे शाख़, शनाख़त सब दी आपणे हथ्थ रखाईआ। जन भगतां दे धर्म धरवास, धुर दी धार इक दृढ़ाईआ। इक्को मन्नणा पुरख अबिनाश, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक उठाईआ। ख्वाजा कहे वाह मेरे साहिब शाबाश, धुर दे मालक तेरी बेपरवाहीआ। मैं चाहुंदा मालवा संगत मेरे लई ल्यावे सोहणा इक ग्लास, ख्वाजा खिज़र वास्ता पा के मंग मंगाईआ। नाल पंजां दरबारीआं कोल दहिले तों लै के किंग तक पत्ते होण ताश, सज्जे हथ्थ उठाईआ। फेर दस्सां मेरी किस बिध बुझे प्यास, तृष्ना जगत रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। ख्वाजा कहे कल आउणी अंधेर आंधी, अंधला रूप दरसाईआ। सृष्टी होणी थक्की मांदी, बलहीण लोकाईआ। सब दी पति होणी जांदी, बिना साहिब ना कोए सहाईआ। कलयुग अक्ख होवे शरमांदी, नेत्र नैण ना कोए वड्याईआ। मेरा ग्लास बणया होवे चांदी, पित्तल रूप ना कोए बदलाईआ। मैनूं मुहम्मद आशा आंहदी, कहि के रही सुणाईआ। सदी चौधवीं गांदी, सोहणा राग दृढ़ाईआ। काला लबास होवे जेहड़ी सदी चौधवीं दी बांदी, जोगिन्दर जोग रूप दृढ़ाईआ। नौ रंग दी होवे परांदी, धार वक्ख वक्ख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, हुक्म संदेशा देवे मालवे वाल्यां इक मूर्त ल्याउणी ढांडी, जिस दी खल्ल ना कोए लुहाईआ।

✪ १६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ बीबी भगवान कौर दे घर पिण्ड पक्खोवाल ज़िला लुध्याणा ✪

कलयुग कहे ख्वाजे मेरी धार विच मार चुभी, गोता इक लगाईआ। जां तक्कया उम्मत सारी विच खुभी, बाहर सके

ना कोए कढ्ढाईआ। ख्वाजा रोया भुब्बीं भुब्बीं, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। बौहड़ी मुहम्मद शरअ जांदी डुब्बी, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। कलयुग कहे मैं खुशी विच पाई लुड्डी, नच्च टप्प के दिता वखाईआ। ओह वेख मेरी असमानां चढ़ी गुड्डी, डोरी सके ना कोए तुड़ाईआ। मैं सब दी भृष्ट कीती बुद्धी, दानशमंद ना कोए अख्वाईआ। शरअ दी वसण नहीं देणी झुग्गी, झुग्गे देणे ढाहीआ। मेरे मालक दी धार होई उग्घी, उगण आथण वज्जे वधाईआ। रस रहिण नहीं देणा दुद्धी, सीर शीर देणा बदलाईआ। मेरी आशा पुराणी बुढ्ढी, जोबन रंग ना कोए हंढाईआ। अग्गे धार रहिणी नहीं दूजी, इक्को रूप दए दरसाईआ। प्रभ दी धार खेल रहिणी नहीं गुज्झी, पड़दा ओहला दए उठाईआ। मैं कूक पुकारां उच्ची, ज़ोर ज़ोर सुणाईआ। आपणी कल्पना सारे कर लओ सुच्ची, संजम धुर दा नाल मिलाईआ। मेरी अन्तिम पूरी होणी बुती, बुतख़ाने देण दुहाईआ। कलयुग कहे सब दी जड़ जाणी पुट्टी, जगत वहिण विच रुढ़ाईआ। ख्वाजे तेरी तृष्ना जाणी लुट्टी, लुटेरा बणना धुर दा माहीआ। अन्त प्रीती ओह वेख टुट्टी, टुटयां गंढ ना कोए पवाईआ। कलयुग कहे मेरी आसा जो मालवे वाले सत्त रंग दा गाना बन्नू के आवण गुट्टी, सज्जे हथ्थ नाल छुहाईआ। चौदां गुरमुखां इक रूप दी पहनी होवे जुत्ती, इक्को रंग रंगाईआ। चौदां बीबीआं लाल रंग चाढ़्या होवे बुट्टीं, चौदां तबक हाल दुहाईआ। इक गुरमुख कूक पुकारे बौहड़ी सृष्टी गई लुट्टी, लुटेरा नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग कहे मेरी पूर करावे खुशी, खुशहाली विच आपणी दया कमाईआ।

✪ १६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ मंगल सिँघ दे घर पिण्ड पक्खोवाल ज़िला लुध्याणा ✪

ख्वाजा कहे गोबिन्द संदेशा दिता अब्बल, अव्वल इक जणाईआ। पुरख अकाल ने कलयुग देणा बदल, बदी दा डेरा ढाहीआ। धुर इन्साफ़ करे अदल, अदालत इक लगाईआ। शरअ मक्तूल रहे ना कत्ल, कत्लगाह ना दिसे लोकाईआ। निरगुण धार प्रगट होवे विच सम्बल, संभल आपणा खेल खिलाईआ। उस वेले अम्बाले वाल्यां ल्याउणा इक कम्बल, दो दो धार दा रंग रंगाईआ। नाल हिस्सा पावण जेहड़े गुरमुख रहिंदे विच चम्बल, चार जुग दा लेख दृढ़ाईआ। ख्वाजा कहे मैं भय विच लग्गा कम्बण, थरथराहट विच दुहाईआ। बौहड़ी जेहड़े चौदां गुरमुखां ल्याउणा संमण, वरंट चौदां लोक कढ्ढाईआ। जेहड़ा रूप बणाउणा दुष्ट दमन, दामनगीर पड़दा आप उठाईआ। मुहम्मद दा गुलशन बगीचा उजड़ना चमन, उम्मत महक ना कोए महकाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप ब्रह्मण्ड खण्ड धुर दा हुक्म मन्नण, सिर सके ना कोए उठाईआ। ख्वाजा

कहे मैं संदेशा सुणया कन्नन, जो गोबिन्द गोबिन्द गया जणाईआ। बिना पुरख अकाल तों अन्त होणा नहीं अमन, सांतक सति ना कोए वरताईआ। शंकर जो घड़या आवे भन्नण, भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग कूड़ी तृष्ना मेटे तमन, तामस विच तृखा ना कोए वधाईआ।

✪ १६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ नाज़र सिँघ दे घर पिण्ड पखोवाल ज़िला लुध्याणा ✪

७६० कलयुग कहे ख्वाजे मैं धुर दा ग़ुलाम, ग़ुलामी विच सेव कमाईआ। उठ सुण पैग़म्बरां वाली कलाम, जो कलमा कायनात गए दृढ़ाईआ। जो हज़रत ईसा मूसा दिता पैग़ाम, संदेशा धुर अलाहीआ। सदी चौधवीं प्रगट होवे इक अमाम, मैहन्दी महिबूब धुरदरगाहीआ। जिस ने शरअ दा झगड़ा मेटणा तमाम, तमां दा रोग गंवाईआ। मार्ग दस्सणा जगत अवाम, आम पड़दा देणा उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी जपाउणा एको नाम, सिख्या इक समझाईआ। सारी दीन दुनी होणी हैरान, हैरत विच जगत लोकाईआ। मेरा कूड़ दा मेटणा निशान, निशाना धर्म वाला झुलाईआ। कलि कल्की प्रगट हो बलवान, बल आपणा आप समझाईआ। मेरा जगण नहीं देणा कूड़ वाला शमांदान, दीवा गुल्ल दए कराईआ। मेरा अन्तर होया परेशान, परेशानी विच कुरलाईआ। की खेल करे श्री भगवान, भगवन आपणा हुक्म वरताईआ। जो मेरी करनी होई बदनाम, किस बिध बदी दा डेरा ढाहीआ। झगड़ा मुकावे काया माटी चाम, चम्म दृष्टी दए बदलाईआ। सब दा इक्को कर के धर्म धार मुकाम, मुकामे हक दए समझाईआ। अंध अंधेरी मेट के शाम, सतिजुग सच करे रुशनाईआ। जिस सम्बल वसाउणा इक ग्राम, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे वधाईआ। जोती धार शब्द सुणाउणा अगम्मा गाण, धुर दी आवाज़ जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक वरताईआ। कलयुग कहे ख्वाजे खेल होणा अगम्मी नूर, अवतार पैग़म्बर गुरु गए जणाईआ। जिस दा जल्वा तकणा ज़ाहर ज़हूर, ज़ाहरा आपणा आप प्रगटाईआ। जिस नूं मूसा तक्कया उपर कोहतूर, ओह तुरीआ तों बाहर दए समझाईआ। कलयुग प्रगट होए ज़रूर, ज़रूरत सब दी पूर कराईआ। ओह मालक सर्ब कला भरपूर, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। जिस ने कूड़ी क्रिया तोड़ना गढ़ ग़रूर, हँकार रहिण कोए ना पाईआ। मनुआ मन ना करे फ़तूर, फ़तवा लावे ख़लक खुदाईआ। सब दा बण के हाज़र हज़ूर, हज़रतां दा लहिणा दए चुकाईआ। जिस नूं कहिंदे वसया दूर, घर घर अन्दर पड़दा दए उठाईआ। लेखा वेखे चतुर स्याणे मूर्ख मूढ़, अन्तरजामी

खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग कहे मेरा नाता तोड़े कूड़ो कूड़, सतिजुग सति सच सच वरताईआ।

✪ १६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ अमरीक सिँघ दे घर पिण्ड भैणी ज़िला लुध्याणा ✪

कलयुग कहे ख्वाजे तक लै अगला ख्वाब, सुफ़न विच दरसाईआ। मुहम्मद बैठा होया बेताब, ताबयादारी विच ना कोए लोकाईआ। ख़ाली काअबा दिसे महिराब, महिबूब नूर ना कोए चमकाईआ। नज़र आए ना कोए अहिबाब, चार यारी ना संग रखाईआ। तीस बतीसा फड़ किताब, हदीसा रिहा दुहराईआ। की खेल करे मेरा शहिनशाह नवाब, नौबत की वजाईआ। किस बिध लेखा पूरा होवे जो नानक दस्स के आया बगदाद, बगलीआं गल विच लटकाईआ। किस बिध उम्मत उम्मती बदल देवे समाज, समग्री इक वरताईआ। सीस ते रहिणा नहीं कोई ताज, तख्त निवासी आपणा हुक्म वरताईआ। की खेल होणा सदी चौधवीं बाद, बदला किवें चुकाईआ। किसे नूं लभ्भणा नहीं आब, चारों कुण्ट कुण्ट हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता धुरदरगाहीआ। कलयुग कहे ख्वाजे तक लै इक मुबीन, अल्ला अलाह नूर इलाहीआ। जिस नूं कहिंदे सारे आमीन, अमलां तों बाहर नूर खुदाईआ। जिस ने अलिफ़ ये दिती तालीम, नग़मयां विच कीती शनवाईआ। ओह मालक इक कदीम, कुदरत दा मालक धुरदरगाहीआ। जिस ने दीन मज़्हब कीती तक्सीम, मानव इन्सान वंड वंडाईआ। ओह सब नूं करे यतीम, यदी आपणा हुक्म सुणाईआ। कर किरपा करे जगत तरमीम, तरकीब आपणी इक दृढ़ाईआ। जिस दा लेखा समझे ना कोए तबीब, तबीअत दीन दुनी बदलाईआ। एह हुक्म वरतणा अजीब, अजब निराला आप वरताईआ। लेखा रहिणा नहीं ईद बकरीद, बईद सईद सजदा सीस ना कोए झुकाईआ। पैग़म्बरां बध्धे नहीं रहिणे तावीज़, मणके गल ना कोए लटकाईआ। हज़रतां रहे ना कोए तौफ़ीक, तोबा तोबा करे लोकाईआ। मेरी आसा मनसा सदी चौधवीं पूरी होवे उम्मीद, खाहिश आपणी इक जणाईआ। इक्को नूर इक्को प्रकाश ते इक्को होवे ईद, इबादत इक्को इक जणाईआ। जो अक्खरां वाली सथ्थरां वाली पथ्थरां वाली चार जुग दी वसीहत, सो वेखणहारा वेखे चाँईं चाँईंआ। सब दी जानणहारा असलीअत, असल असल विच्चों प्रगटाईआ। जिस ने दीन दुनी नूं देणी इक नसीहत, हुक्म हुक्म अगम्म जणाईआ। आत्म परमात्म सांझी कर वलदीअत, वलद वालदा रूप प्रगटाईआ। कूड़ी रहिण ना देवे नीअत, नेस्तोनाबूद करके जड़ दए उखड़ाईआ। साचे नाम दी पावे कीमत, कुदरत दा मालक आपणी दया कमाईआ।

ख्वाजे वक्त समझणा ग़नीमत, ग़मखार की आपणी कार कमाईआ। जिस दी पैग़म्बर रूप त्रीया तरीमत, त्रैगुण तत ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। कलयुग कहे ख्वाजे वेख लै अक्खर अलिफ़, निरगुण सरगुण रूप दरसाईआ। जिस दा मुहम्मद चुक्कया हल्फ़, सजदा सजदे विच्चों जणाईआ। ओह सब नूं करन लग्गा बरतरफ़, यक तरफ़ हुक्म समझाईआ। सदी चौधवीं होणी कलमे वाली परख, पारखू बणया धुरदरगाहीआ। ना कोए सोग ना कोए हरख, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। आपणी शरअ दी पूरी करनी शर्त, शरीअत दा लेखा दए मुकाईआ। परवरदिगार दा हुक्म हुन्दा नहीं ग़लत, ग़लती विच कूड़ लोकाईआ। जो खेले खेल लेखा जाणे हलत पलत, निरगुण सरगुण बेपरवाहीआ। ओह वेस वटाए जोत प्रगटाए नूर रुशनाए घड़ी पलक, पलकां दा मालक अगम्म अथाहीआ। जिस ने खेल खेलणा धरनी धरत धवल धौल असमानां उपर फ़लक, ज़िमीं ज़मां ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवार इक समझाईआ। कलयुग कहे ख्वाजे ओह वेख नूर नुराना, अगम्म अगम्मड़ा बेपरवाहीआ। जिस दा इक्को इक निशाना, निशाने सारे दए बदलाईआ। जिस दी पैग़म्बर पढ़न कलामा, कायनात शनवाईआ। ओह योधा सूरबीर अमामा, अमलां तों रहित नूर अलाहीआ। जिस दा गोबिन्द शब्द इक दमामा, दो जहानां करे रुशनाईआ। जिस नूं झुकदे कृष्ना कान्हा, बंसरीआं धुंन शनवाईआ। जिस दा खेल नौजवाना, मर्द मर्दाना आपणा वेस वटाईआ। जिस ने सदी चौधवीं वरतणा आपणा भाणा, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। तख्तों लाह के राजा राणा, ग़रीब निमाणयां आपणा रंग चढ़ाईआ। एह खेल श्री भगवाना, हरि भगवन आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस दा सम्बल इक टिकाणा, संभल आपणा कदम टिकाईआ। जिस नूं ब्राह्मण गौड़ कहे जहाना, शास्त्रां नाल सालाहीआ। ओह मर्द मर्दाना नौजवाना, नूर नुराना सोभा पाईआ। जिस दा मन्दिर हक हकीकत सचखण्ड टिकाणा, दरगाह साची सोभा पाईआ। कलयुग कहे मैं उस दे दर निमाणा, निम्रता विच निउँ निउँ सीस निवाईआ। जिस ने सतिजुग सच मात प्रगटाणा, प्रगट हो के आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल महाना, महिमा अकथ कथ आपणी आप समझाईआ।

✪ १६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ धन्ना सिँघ दे घर पिण्ड ढहि पई ज़िला लुध्याणा ✪

कलयुग कहे मैं अज्ज खण्ड ब्रह्मण्ड तों बाहर नट्ठा, पुरी लोआं पन्ध मुकाईआ। हरि साहिब सरनाई ढट्ठा, सतिगुर शब्द सीस झुकाईआ। आपणा भाव दस्सया कट्ठा, भेव दिता जणाईआ। मेरे परवरदिगार मैं दुनिया अन्दर पाउणा रट्टा, जिस नूं सके ना कोए मिटाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं दा दीन मज़्हब दा वेख लै पट्टा, पाटल आपणा पड़दा लाहीआ। किसे दी कीमत रहे ना टका, कौडी जगत हट विकाईआ। धर्म दी धार रहे ना सता, सति विच ना कोए समाईआ। मैं सब दी बदलणी मता, मन मति नाल रलाईआ। तेरे अग्गे वास्ता घत्तां, निउँ निउँ लागां पाईंआ। मेरी चारों कुण्ट होवे फ़त्ता, डंक तेरा नाम शनवाईआ। शास्त्रां सुणन ना देवां किसे नूं कथा, कथनी चले ना कोए चतुराईआ। तेरा हुक्म यथार्थ यदा, यदी सब नूं दयां सुणाईआ। सदी चौधवीं गेड़नी उलटी लट्ठा, गेड़ा ज़िमीं असमान बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच पर्दा आप चुकाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं अन्तिम खेल खिलाउणी, ख़ालक ख़लक दयां जणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां नाल आसा मिलाउणी, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सुरती नाल उठाउणी, सोया रहिण कोए ना पाईआ। ख़ालक ख़लक मख़लूक तेरी कायनात हिलाउणी, हलूणा इक जणाईआ। आलस निंद्रा सब दी लौहणी, सोया रहिण कोए ना पाईआ। उम्मत नबी रसूल दी मैं पहल कराउणी, बौहड़ी तेरा नाम दुहाईआ। चारे खाणी मेरी हाढ़ी सौणी, साहिब सतिगुर दयां सुणाईआ। मेरी मनसा अन्तिम पूर कराउणी, परम पुरख तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। कलयुग कहे मैं दीन दुनी देणा झटका, हलूणा इक लगाईआ। खेल वेखणा लहू मिझ रत्त का, रती रत सर्ब सुकाईआ। लेखा पूरा करना हकीकत वाले हक दा, मेरे हाकम धुर दे माहीआ। ओह वेख चौदां तबकां अन्दर मुहम्मद बिन नैणां तकदा, लोचन अक्ख उठाईआ। बिना मणक्यां तेरा नाम रटदा, कलमा वेखे बिना कलम शाहीआ। मेरा कौल इकरार पूरा करना पक दा, पतिपरमेश्वर तेरे अग्गे अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कहे मैं खेल करना जगत जहान, जहालत दीन दुनी वखाईआ। धर्म दा रहिण नहीं देणा निशान, निशाने सर्ब देणे बदलाईआ। लोचा रहे किसे ना राम, सीता सुरत ना कोए दरसाईआ। छत्र झुल्ले ना किसे काहन, राधा संग ना कोए वखाईआ। मन्त्र फुरे ना कोए सतिनाम, वाहिगुरु जाप ना कोए जपाईआ। किरपा करनी मेरे भगवान, दर तेरे मंग मंगाईआ। तूं दाता सूरा नौजवान, मर्द मर्दान इक अख्वाईआ। मैं नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप देणा पैग़ाम, पैग़म्बरां

तों बाहर करां पढ़ाईआ। सब दा मालक ख़ालक प्रितपालक आउणा इक अमाम, अमलां तों बाहर ख़लक खुदाईआ। जिस ने शरअ दा झगड़ा मेटणा तमाम, तमां दी तृखा खोज खुजाईआ। ओह खेल करे महान, मेहरवान आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग कहे मैं तेरे चरण करां प्रणाम, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। मेरी बेनन्ती करीं परवान, परम पुरख तेरी वड्याईआ। वेला वक्त पहुँचया आण, समां समें नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा दवारा एकँकार गुण निधान, दूजा नज़र कोए ना आईआ।

७६४ ७६४

२२ २२

★ २० अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ निरँजण सिँघ दे घर नेड़े ऐगरीकलचर विद्याला लुध्याणा शहर ★

कलयुग कहे ख्वाजे आह वेख तेरे वास्ते आ गई पगड़ी, शब्दी सतिगुर लई मंगंवाईआ। जिस दी धार चिट्टी बगढ़ी, बपड़यां दए समझाईआ। जिस दी धार नानक तोली तकड़ी, तराज़ू हथ्थ उठाईआ। ओह लेखा जाणे शूद्र वैश ब्राह्मण क्षत्री, छत्रधारी बेपरवाहीआ। जिस दी ब्रह्मे फोली पत्री, चारे वेद सिफ्त सालाहीआ। जिस नूं याद कीता भारद्वाज नाल सप्त ऋषी नाल अत्री, नेत्र नैण उठाईआ। ओह गुर अवतार पैग़म्बरां दे सिर ते वेखणहारा दीन मज़्ह़ब दी गठड़ी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग फोल फुलाईआ। कलयुग कहे मेरी उमर होण लग्गी सत्तरी बहत्तरी, जवानी विच्चों बुढापा आईआ। मैं होण लग्गा बेवतनी, वतन अन्त रहे ना राईआ। खवाज्या जिस ने साडी जड़ पुटणी, ओह पटने वाला नाल रखाईआ। ओह वेख चौदां तबकां लग्गी अग्नी, शोहले रही दरसाईआ। जिस दे हुक्म अन्दर दीन दुनी छडनी, नाता तुटणा कूड़ लोकाईआ। उस दा खेल होणा विच अदनी, अदल दा मालक दया कमाईआ। जिस झगड़ा मेटणा बदनी, बदला चुकावे थांउँ थाँईंआ। जिस ने जोती नार बणाई पत्नी, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस ने कान्हा खवाई मखणी, गोपीआं रास रचाईआ। उस दी धार इक्को प्रगटणी, परगणे वेखे चाँईं चाँईंआ। उस दी खेल अन्तर तकणी, बिन नेत्र नैण उठाईआ। बौहड़ी दरोही नौ खण्ड पृथ्मी फेर वसणी, वसल यार इक जणाईआ। तेरी मेरी रहिणी नहीं हड्डी पसली, मुहम्मद दा मकबरा दए दुहाईआ। साडी लाश किसे नहीं दफ़णी, ख़ाकी ख़ाक ना कोए टिकाईआ। बौहड़ी सानूं मिलणी काली कफ़नी, साढे तिन्न हथ्थ लम्बाईआ। साडी पति किसे ना रखणी, अन्तिम होए ना कोए सहाईआ। असां फिरना उत्तर पूरब पच्छम दक्खणी, भज्जणा वाहो दाहीआ। सब दी धार होणी सक्खणी, ख़ाली हथ्थ कुरलाईआ। दरोही दरोही चौदां लोक मचणी, उम्मत नबी रसूल कुरलाईआ। चोली चीथड़ वाली पुराणी फटणी, ओढण रंग ना कोए रंगाईआ। साडी डोर असमानों कटणी, कटाक्ष आपणा नाम रखाईआ। साडा

मुल्ल रहिणा नहीं हीरे रत्नी, माणक रूप ना कोए दरसाईआ। अन्त वार इक्को भट्ठी तपणी, प्रभू भठियाले अग्नी देणी लगाईआ। किसे नूं कलमे दी अलिफ़ ये धार पए ना जपणी, सिफ्ती सिफ्त ना कोए सालाहीआ। ओह वेख दुनिया चार कुण्ट नठणी, बिना भजन तों भज्जे वाहो दाहीआ। झगड़ा वेखणा तत अठणी, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध दए दुहाईआ। माण रहिणा नहीं तीर्थ अठ्ठ सठ्ठणी, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नेत्र नैणां नीर वहाईआ। शाह रहिणा नहीं कोए लखणी, पातशाह ख़ाक मिलाईआ। रसना जेहवा बैखरी किसे नहीं बकणी, कूक ना कोए सुणाईआ। जबान जेहवा अक्खरां वाली लाए कोए ना रट्टणी, रट्टा सब दा दए मुकाईआ। कलयुग कहे ख्वाजे लूणी सिल सब नूं पैणी चटणी, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। ख्वाजा कहे कलयुग आह तेरे वास्ते आ गई दूजी पग्ग, यार नाल यार दिता मिलाईआ। कूड़ यराना तूं वी देणा छड, नाता लोकमात तुड़ाईआ। नहीं ते कमलया आपणी मंज़ल पूरी कर लै हद्द, वेला वक्त दए गवाहीआ। तेरे हुन्दयां कोए चढ़ सके ना उपर शाह रग, नौ दवार ना पन्ध मुकाईआ। सदी चौधवीं घर घर ला दे अग्ग, चार कुण्ट दे तपाईआ। काअबे रहे कोए ना हज्ज, हकीकत दा पड़दा ना कोए खुल्हाईआ। कलयुग जीव बणा दे कग्ग, हँसमुख सिफ्त ना कोए सालाहीआ। साढे तिन्न हथ्थ अन्दर वड़ के नच्च, घुंमर आपणी इक जणाईआ। किसे दे कोल रहे ना सच, झूठ विच कर लोकाईआ। वेख काया माटी भाण्डा कच्च, कंचन गढ़ देणा तुड़ाईआ। कूड़ी क्रिया पा दे मन मति, गुरमति सब दी दे भुलाईआ। पूरा होवे ना किसे तप, तपीशर रोवण मारन धाईआ। साधां डस्सण माया सप्प, डसणी आपणा डंग चलाईआ। धुर दा नाम सके कोए ना जप, अजपा जाप ना कोए रखाईआ। सब दे भाण्डे कर दे ख़ाली सख, अन्दर वस्त रहे ना राईआ। शाह सुल्तानां कर दे कक्ख, राज राजानां ख़ाक मिलाईआ। मेरा तेरा वायदा अन्त अख़ीर पक्क, पक्की गंढ पवाईआ। वेखीं किते ना जावीं थक्क, भज्जणा वाहो दाहीआ। साडा दोहां दा बणया रथ, मिल के लैणा चलाईआ। उठ मिला लै हथ्थ, दस्त दस्त नाल छुहाईआ। उत्तर पूरब तूं कछ, दक्खण पहाड़ मैं जावां चाँईं चाँईंआ। जिथ्थे प्रभ दा होवे जस, उथे आपणा खेल देणा वरताईआ। जिथ्थे मदिरा मास लैण छक, उन्हां दी पुश्त ते थापी देणी लगाईआ। फेर छेती आउणा नट्ठ, मिलणा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पगड़ीआं कहिण सुणो कलयुग वीर बहादर, सूरबीर सुणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप दा लँघणा बाडर, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। धर्म दी धार दिसे कोए ना चादर, ओढण रहिण कोए ना पाईआ। हुक्म मन्नणा करीम कादर, कुदरत

दा मालक आप सुणाईआ। किसे दवारे किसे दा रहिण देणा नहीं आदर, आदर्श विच ना कोए चतुराईआ। आपणी करनी करनी उजागर, चारों कुण्ट कूड़ डंक वजाईआ। प्रभ दे नाम दा रहे ना कोए सौदागर, वणजारा वणज ना कोए वखाईआ। चारों कुण्ट करना अंधेरा बादल, जोती नूर ना कोए चमकाईआ। तुहाडे हथ्थ चौधवीं सदी दा आदल, इन्साफ़ नाल रलाईआ। खुशी नाल बणना कातिल, मक्तूल करनी ख़लक खुदाईआ। सृष्टी दी दृष्टी करनी पागल, पगड़ी आपणे सीस टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। कलयुग कहे मित्र सुहेले सज्जण, सज्जणां दयां जणाईआ। हुण कूड़ नगारे वज्जण, धर्म दी धार ना कोए प्रगटाईआ। नाम कलमा वसे किसे ना बदन, बदनीत देणी कराईआ। नव सत्त ला के अग्गण, दीन दुनी देणी तपाईआ। एसे कम्म विच होणा मग्न, दिवस रैण सेव कमाईआ। ज़रूर झगड़ा पाउणा एसे साल दे महीने फग्गण, थित पहली नाल मिलाईआ। डौरु डंक चारों कुण्ट वज्जण, वजह सके ना कोए समझाईआ। जो घड़े भाण्डे भज्जण, भन्नृणहार बेपरवाहीआ। इक दूजे नूं कोए ना आवे सद्दण, हुक्म इक्को वार शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, शाह सुल्तान सूरा सरबगण, सूरबीर बेनज़ीर लाशरीक इक अख्वाईआ।

✪ २१ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ हरचरण सिंघ दे गृह चन्दा सिंघ कलोनी लुध्याणा शहर ✪

ख्वाजा कहे जिस वेले किरपा कीती दीन दयाल, परवरदिगार मेहर नज़र उठाईआ। मैं निरगुण आपणी सुरत लवां संभाल, सम्बल तकां नूर अलाहीआ। बेनन्ती विच करां सवाल, दोए जोड़ सीस निवाईआ। साहिब सतिगुर कृपाल, कृपानिध तेरी सरनाईआ। उठ वेख मुरीदां हाल, मुर्शद धुरदरगाहीआ। नाल तकां काल महाकाल, नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। जे हुक्म होया नीर दा देवां इक उछाल, सागर सत्त सति हिलाईआ। मेरी लेखे पवे सेवा घाल, हउँ घोली घोल घुमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग कहे मैं रखी अन्त उडीका, तकां कोहनूर खुदाईआ। भविक्ख्त दीआं वेख तरीकां, तवारीखां खोज खुजाईआ। कवण वेला हुक्म देवे लाशरीका, शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। जिस विच हक तौफ़ीका, जल्वागर नूर अलाहीआ। मुहम्मद दीआं पूरीआं करे उम्मीदां, सदी चौधवीं खोज खुजाईआ। चौदां तबकां लेखा चुक्के ईदां, ईदलफ़ितर ना कोए वड्याईआ। धुर दे हुक्म दीआं वेखे रसीदां, रहिबर हो के वेख वखाईआ। फेर मैनूं करे ताकीदा, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। दीन दुनी दा खेल होवे पेचीदा, पोशीदा

आप सुणाईआ। किसे नज़र ना आए लाईआं नीझा, नेत्र नैण ना कोए दरसाईआ। मैं सेवा करां बण अज़ीज़ा, निम्रता विच दुहाईआ। किसे विच रहिण ना देवां तमीज़ा, अक्ल बुद्धी दा डेरा ढाहीआ। सब दा बदल देवां दीदा, दीदा दानिस्ता खेल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक वरताईआ। ख्वाजा कहे मैं तकां रहिबर राह, रहमत विच ध्यान लगाईआ। की हुक्म देवे खुदा, मेहरवान मिहबान बीदो नूर अलाहीआ। जिस दे उतों होवां फ़िदा, आपणा आप घोल घुमाईआ। मार्ग दस्सणा जिस ने सिध्धा, रस्ता इक दृढ़ाईआ। मैं खुशीआं विच ताली वजा के पावां गिधा, गहर गम्भीर दया कमाईआ। जिस ने सब दा बणना पिता, पतिपरमेश्वर हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग कहे मैं तकां धुर फ़रमाना, कवण वेला वक्त सुणाईआ। किस वेले वरते भाणा, भावी आपणा रंग रंगाईआ। प्रगट होवे धुर दा राणा, रहमत विच गुसाँईंआ। जिस दा हुक्म दो जहानां, तबकां सबक आप पढ़ाईआ। सो परवरदिगार नौजवाना, पारब्रह्म हरि अगम्म अथाहीआ। जिस ने आपणा खेल कराणा, करनी दा करता इक हो आईआ। सच दा बख्श के तराना, तुरीआ तों परे दए समझाईआ। जिथ्थे इक्को शब्द निधाना, धुन अनादी नाद शनवाईआ। इक्को जोत नूर जहाना, इक्को दीपक डगमगाईआ।
इक्को घर सुहञ्जणा सुहाना, सच दवारा इक अख्वाईआ। जिथ्थे वसे श्री भगवाना, दूजा नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कहे मैं उस दा राह तकाना, जो तक्ब्बर हँकार दीन दुनी मिटाईआ। जिस ने नूर जोत पहनया जामा, शब्दी डंक डंक शनवाईआ। सो सूरबीर सुल्ताना, साहिब नूर चमकाईआ। कल कलेश जिस मिटाणा, ओह कलमा कलमे विच्चों बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक वरताईआ। ख्वाजा कहे मैं हुक्म चाहुंदा अगम्मा, अगम्म दए जणाईआ। मैं बैठा ना रहां निकम्मा, प्रभ सेवा दए लगाईआ। मेरे अन्दरों दीन मज़्हब दी कढ देवे तमां, लालच विच ना कोए रखाईआ। फेर झगड़ा मेटे चम्मा, चम्म दृष्टी दए बदलाईआ। हरख़ सोग रहे ना गमां, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। मैं वी चाहुंदा प्रभ दा जुग होवे नवां, नौ सत्त वज्जे वधाईआ। कलयुग पैंडा मूल रहे ना लम्मा, सदी चौधवीं अन्त कराईआ। कूड़ी क्रिया बुझावे शमा, सति नूर करे रुशनाईआ। पवण स्वासी वेखे दमां, दामनगीर कलयुग हो जाईआ। नाम कलमे दा मेट के बन्ना, बन्धन शरअ दे दए तुड़ाईआ। झगड़ा रहे ना धोती तम्बा, इक्को रंग रंग वखाईआ। सति धर्म दा सति सतिवादी होवे समां, साहिब सतिगुर दया कमाईआ। ख्वाजा कहे कलयुग मैं हिरदिउँ तैनूं कहां, कहि के रिहा सुणाईआ। दोहां दा लहिणा देणा लेखा इक्को वार होवे रवां, रवानगी प्रभ दे हथ्थ फड़ाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा सब दा जाणे दामनगीर हो के दमां, सास स्वास खोज खुजाईआ।

✪ २२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ लाल सिँघ दे घर लुध्याणा शहर ✪

वक्त सुहञ्जणा होया बाई अस्सू, आस पैग़म्बरां वेख वखाईआ। खुशी नाल कहे मसीह यसू, जस प्रभ दा इक जणाईआ। जो मार्ग सब नूं एका दस्सू, दहि दिशा आप समझाईआ। जिस दा नगर खेड़ा इक्को वसू, मन्दिर खेड़ा इक समझाईआ। जिस दे कोलों जगत विकारा नस्सू, कूड़ ना कोए हल्काईआ। अवतार गुरुआं पैग़म्बरां बणा के बच्चू, बचपन आपणे लेखे लाईआ। उस दा शब्द गुरु गुरदेव दो जहानां नच्चू, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी रास रचाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण वेखे पुरातन ख़तू, खतूत वेख वखाईआ। जो भगत सुहेला भगती विच रचू, हरिजन आपणे रंग रंगाईआ। दीन मज़्ब रहिण ना देवे बहु मतू, मति मतांतर डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक वरताईआ। धुर फ़रमाना कहे धर्म धार मसीह, मसला इक जणाईआ। मेरे साहिब दा दाइरा होणा वसीह, वसीअत सब दी वेख वखाईआ। जगत जहान देवे तरजीह, तरतीब आपणे हथ्थ रखाईआ। लेखा पूरा कर नबी, लहिणा रसूलां दए चुकाईआ। जगत जहान दा बण तबी, तबीअत सब दी वेख वखाईआ। प्रगट हो नूर रब्बी, रहमत आपणी आप कमाईआ। वीहवीं सदी मेट के बदी, बदला सब दा दए चुकाईआ। अगला हुक्म दस्स के यदी, यदप आपणी कार कमाईआ। वेखणहारा वहिण नूह नदी, नव नौ फोल फुलाईआ। दीन मज़्ब दी रहिण ना देवे गद्दी, गहर गम्भीर आपणा हुक्म वरताईआ। सब दी करनी करके रद्दी, अग्गे आपणा हुक्म प्रगटाईआ। धुर दे नाम दी लए कोए ना वढ्ढी, रिशवत खोरी दए मिटाईआ। झगड़ा मुका के काया माटी हड्डी, तन वजूद एका रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे आदि अन्त मधी, मध आपणी कार कमाईआ।

✪ २२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ सुरजन सिँघ दे घर लुध्याणा शहर ✪

मसीह कहे मैनूं मिल्या अगम्म कलाम, कल्मयां तों बाहर दिता जणाईआ। उठ वेख खेल तमाम, मूसा मुहम्मद नाल उठाईआ। चारों कुण्ट अंधेरा शाम, बीसवीं सदी रही कुरलाईआ। माया ममता झुल्ले निशान, धर्म दी धार ना कोए प्रगटाईआ।

सजदा होए ना साहिब सुल्तान, मकबरयां सीस सर्ब निवाईआ। सदी चौधवीं होणा सवाधान, आलस निंद्रा रहे ना राईआ। हुक्म देवे धुर अमाम, अमाम अमामा बेपरवाहीआ। जिस नूं सब ने मन्नया काहन, काहन कान्हा वड वड्याईआ। जो आदि जुगादी राम, रमया हर घट नज़री आईआ। जिस दा मन्त्र सतिनाम, सति सति विच्चों प्रगटाईआ। जिस दा डंका फ़तिह महान, वाहवा गुरु गुरु शनवाईआ। ओह खेल करे श्री भगवान, हरि करता धुरदरगाहीआ। पारब्रह्म ब्रह्म पड़दा चुकाए आण, ओहला रहिण कोए ना पाईआ। अबिनाशी करता नौजवान, जोबनवन्ता आपणा हुक्म वरताईआ। आदि निरँजण शमा दीप जगाए जहान, नूर ज़हूर इक वखाईआ। एकँकारा खेले खेल ख़लक महान, ख़ालक आपणा रंग रंगाईआ। हरि पुरख निरँजण नौजवान, सति सरूपा वेस वटाईआ। सो पुरख निरँजण निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण बण के हुक्मरान, हुक्म हाकम इक उपजाईआ। जिस नूं विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाण, देवत सुर झुक झुक लागण पाईंआ। अवतार पैग़म्बर गुरु मंगण दान, ख़ाली झोलीआं अग्गे डाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग धूढ़ी ख़ाक रमाण, मस्तक इक वड्याईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी गीता ज्ञान सिफ्ती ढोले गाण, गा गा शुकर मनाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी निरगुण दाता होए प्रधान, प्रधानगी आपणी इक वखाईआ। सब दा लहिणा देणा अन्तर आत्म परमात्म मंगे आण, पारब्रह्म ब्रह्म वेखे चाँईं चाँईंआ। पैग़म्बरो होणा सवाधान, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे आपणी खेल खिलाईआ। जिस मंज़ल ते चढ़े ना कोए नौजवान, कोटन कोटि साधू सन्त फ़कीर सूफ़ी बैठे धूंणीआँ ताईआ। पुरख अकाला दीन दयाला लेखा जाणे कुल मालक हो के कुल जहान, कलि कल्की आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा पड़दा आप उठाईआ। मसीह कहे मैनूं आया धुर फ़रमाना, परवरदिगार दिता जणाईआ। कलयुग वरते मेरा भाणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। पीर पैग़म्बरां कदमबोसी लै के सीस झुकाणा, कदीम दा मालक संदेशा इक सुणाईआ। अन्त कन्त भगवन्त सब दा वक्त चुकाणा, चारों कुण्ट दए समझाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया खेल मिटाणा, मिट्टी ख़ाक विच रुलाईआ। दीनां मज़्बां डेरा ढाउणा, उम्मत उम्मती करे सफ़ाईआ। चार वरनां अठारां बरनां एका नाम जपाउणा, गीत संगीत इक सुणाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मट्ठ इक्को रंग वखाणा, गुरदवार इक सुहाईआ। अन्तर आत्म निरन्तर तीर्थ इक नहाउणा, अट्ठ सठ खहिड़ा दए छुडाईआ। तूं मेरा मैं तेरा लख चुरासी आत्म परमात्म दस्से गाणा, पारब्रह्म आपणा भेव खुलाईआ। तख्त निवासी शाहो भूप दो जहानां बण के राणा, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर प्रभ वेख वखाईआ। मसीह कहे मैं वेख के होया हैराना, हज़रत ईसा दए दुहाईआ।

जिस ने साडा अन्त कराणा, जड़ लोकमात उखड़ाईआ। सो पहर के आपणा बाणा, जोती जाता डगमगाईआ। शब्द सतिगुर नौजवाना, निरगुण धार रिहा प्रगटाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा वेखे जगत जहाना, ज़िमीं असमानां फोल फुलाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी मेहरवान मेहरवान मेहरवान होए मेहरवाना, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी नौजवाना, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ २२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ मदन लाल दे घर लुध्याणा शहर ✪

हज़रत ईसा कहे मैनूं सदी बीसवीं कहिंदी, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। सृष्टी इक दूजे नाल खहिंदी, उम्मत उम्मत नाल टकराईआ। निगह मार दिशा लहिंदी, चढ़दा दक्खण पहाड़ ना कोए वड्याईआ। सब दी कला होई ढहिंदी, वेला वक्त दए गवाहीआ। लाड़ी मौत हथ्थां लावे मैहन्दी, सोहणा सगण मनाईआ। दीन मज़्ह्ब दी धार दिसे खहिंदी, इक दूजे नाल टकराईआ। बिना परवरदिगार तों पति किसे ना रैहंदी, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक वरताईआ। ईसा कहे संदेशा आए अख़ीरी, बिन अक्खरां रिहा जणाईआ। धुर दा हुक्म वरतणा तकदीरी, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। किसे दी रहिणी नहीं मीरी पीरी, फ़कीरी हक ना कोए जणाईआ। शरअ दी कट देणी ज़ंजीरी, शरीअत रूप देणा बदलाईआ। झगड़ा मिटाउणा शाह हकीरी, दोहां इक्को रंग रंगाईआ। लेखा रहे ना जगत अमीरी, ग़रीब ग़रीबां होए सहाईआ। खेल वरतणा बेनज़ीरी, जग नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। नाम खण्डा खड़कणा शमशीरी, तिक्खी धार धार दुहाईआ। मंज़ल हद्द मुकणी लकीरी, जो सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अवतार पैग़म्बर गुरु गए बणाईआ। झगड़ा रहे ना शाह वज़ीरी, अहुदयां लेखा दए मुकाईआ। धुर दा मालक ख़ालक प्रितपालक आपणे नाम दी बख़्शे इक तासीरी, तासीर पिछली दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। ईसा कहे मैनूं सदी चौधवीं आया संदेसा, बीसवीं नाल मिलाईआ। मुहम्मद दा तेरे नाल लेखा, लहिणा चुकणा थांउँ थाँईंआ। खेल वेखणा देस परदेसा, पेशीनगोईआं फोल फुलाईआ। जिस नूं याद कीता हमेशा, निरगुण नूर जोत इलाहीआ। ओह करके आपणा वेसा, अमाम अमामा रूप बदलाईआ। दरगाह साची बण नरेशा, सचखण्ड वासी होए सहाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप जिस दी चढ़ना भेंटा, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ।

कोटां विच्चों भगत सुहेला एका बेटा, पिता पूत गोद उठाईआ। पुरख अकाला होवे खेवट खेटा, लख चुरासी नईया नौका आपणे हथ्थ रखाईआ। भविक्खत लिख्त अनदृष्ट करो चेता, बीसवीं सदी दए गवाहीआ। राखा दीन मज़्ब दे रहे कोए ना खेता, अवतार पैग़म्बर गुर पल्लू जाण छुडाईआ। इक्को पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार सांझा यार दो जहानां होणा नेता, नर निरँकार इक्को हुक्म मनाईआ। तिस साहिब को सदा सदा आदेसा, निउँ निउँ लागां पाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित भुल्ले कदे ना चेता, अभुल्ल आपणा हुक्म वरताईआ।

७७१
२२

⭘ २२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ मग्घर सिँघ दे घर लुध्याणा शहर ⭘

ईसा कहे साथों होणी अन्त वसूली, लेखा मंगे बेपरवाहीआ। उम्मत तके बेअसूली, असल विच्चों खोज खुजाईआ। मेहर नज़र होई मामूली, निगह साडी विच ना कोई चतुराईआ। साडा वक्त चुकाउणा हरि कानूनी, कायदा आपणा इक दृढ़ाईआ। जल्वा रहे ना कोए जनूंनी, चार कुण्ट कुण्ट वेख वखाईआ। झगड़ा मेटे तन बैरूनी, वजूदों वजूहात इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। ईसा कहे करनेहार करे की, की दयां समझाईआ। जिस ने साडी रखी नींह, अन्तिम जड़ दए उखड़ाईआ। जिस दी अर्ज़ां दिती अर्ज़ी, अर्श फ़र्श ध्यान लगाईआ। ओह निगह करे नर्ज़ी, नज़र आपणी बदलाईआ। झगड़ा मुकावे जगत सींअ, धरनी धरत धवल दुहाईआ। अग्गे सच दा बीज के बी, फल फुल्ल इक वखाईआ। साडी उम्मत फ़सल होई रबी, रबीउल सानी विच दुहाईआ। सदी बीसवीं बणा के मुद्दई, मुद्दा अलैह आपणा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट होवे कदी, कदीम दा मालक कुदरत आपणा रंग रंगाईआ।

⭘ २२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ गुरदेव सिँघ दे घर लुध्याणा ⭘

ईसा कहे हुक्म देवे मेरा बाप, खुद खुदा नूर अलाहीआ। चारों कुण्ट वेख पाप, पतित होई लोकाईआ। वजूद रिहा किसे ना पाक, बुत करे ना कोई सफ़ाईआ। रस मिले ना आबेहयात, ज़िंदगी ज़िंदगी ना कोए बदलाईआ। मैं वेखी आपणी

बिना हरफ़ हरूफ़ किताब, बिन सत्तरां लाईनां नज़री आईआ। जिस विच अन्त देणा प्या हिसाब, लेखा अवर रिहा ना राईआ। पहला दूजा नहीं कोई बाब, हिस्सयां वंड ना कोए वंडाईआ। जिधर तकां इक्को नूर नज़र आवे मेरे मालक दा आपा आप, दूजा रंग ना कोए वटाईआ। मेरा अन्तर गया कांप, भय विच दुहाईआ। साबत रिहा किसे ना जाप, जगत मसला ना कोए चतुराईआ। जिधर तकां अंधेरी रात, नूरी चन्द ना कोए रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया उडे ख़ाक, ख़ालस रंग ना कोए रंगाईआ। मज़बां विच दिसे ना कोए इत्फ़िाक, निफ़ाक विच दुहाईआ। शरअ दा करन फ़साद, झगड़े विच हाल दुहाईआ। किसे दी रही ना अन्त इमदाद, साथी संग ना कोए निभाईआ। मेरी साहिब अग्गे फ़रयाद, सीस जगदीश झुकाईआ। तेरी सृष्टी तेरी दुनिया तेरी कायनात तेरा समाज, दीन मज़्हब तेरी वंड वंडाईआ। तूं मालक आदि जुगादि, जुग चौकड़ी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग चौकड़ी आपणी साजण आपे साज, साजणहारे तेरे हथ्थ वड्याईआ।

✪ २२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ निरवैर सिँघ दे घर लोको शैड लुध्याणा ✪

मूसा कहे मैं लेख वेख्या तहरीरी, तारीख कहिण किछ ना पाईआ। जिस विच दीन दुनी दी नवीं तामीरी, नव सत्त रंग वखाईआ। शरअ दी कटी होई ज़ंजीरी, साफ़ सोहणी नज़री आईआ। लेख दस्सया खेल होणा तकदीरी, वेला वक्त ना कोए जणाईआ। सब नूं गली दिसणी भीड़ी, मार्ग पन्ध ना कोए मुकाईआ। किसे दे मुख रहिणी नहीं सिगरट बीड़ी, तमाकू तमां ना कोए जणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं दी बदल जाणी पीढ़ी, यद इक्को नज़री आईआ। किसे दी रहिणी नहीं मीरी पीरी, पीआ प्रीतम इक्को हुक्म वरताईआ। सब दे अन्दर आए दिलगीरी, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। माण होवे हस्त कीड़ी, कीट कीटां खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच वखाई दरगाह साची दी इक्को सीढ़ी, पौड़ी डण्डा अवर ना कोए लगाईआ।

✪ २२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ हरनेक सिँघ दे घर लुध्याणा शहर ✪

मूसा कहे प्रभ लेखा करन लग्गा मुसावी, मुसलसल आपणा रंग रंगाईआ। हुक्मे अन्दर सब दे उत्ते वरतावे भावी, भाणा आपणा इक समझाईआ। जो आसा रख के गया अर्जन गुर उत्ते रावी, रविदास पाहणे गंढ ध्यान लगाईआ। जो अन्तिम याद कीता पातशाही नांवी, तेग़ बहादर ध्यान रखाईआ। जो बल समझाया गोबिन्द गोबिन्द बाहवीं, भेव अभेदा इक खुल्हाईआ। तिस दा लहिणा देणा पूरा करना चावीं, चाओ घनेरा इक समझाईआ। दीन मज़्हब दी अलामत रहिण देणी नहीं कोई लावीं, मानव ज़ाती इक्को रंग देणी रंगाईआ। झगड़ा मेटणा साढे तिन्न हथ्थ गरावीं, तन वजूद माटी ख़ाक ना कोए लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे दो जहान थांओं थाँईं, थनंतर अन्तर सब दा भेव खुल्हाईआ।

✪ २२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ समित्री देवी दे घर लुध्याणा शहर ✪

७७३ मूसा कहे खेल तक्कया हरि महिबूबा, महिबूब ध्यान लगाईआ। दीन दुनी नज़ारा तक्कया अजूबा, अजब निराला वेख वखाईआ। बहुमत होई बेहूदा, बेमत होई सर्ब लोकाईआ। मंज़ल चढ़या ना कोए मकसूदा, दरगाह सच ना कोए समाईआ। ७७३

२२ सब दा काया कासा होया मूधा, कँवली कँवल ना कोए उलटाईआ। अमृत रस मिले ना दूधा, विख रूप कूड़ सोभा पाईआ। २२

हरि का भेव किसे ना बूझा, पर्दा सक्या ना कोए चुकाईआ। झगड़ा होया एका दूजा, दुतीआ रंग ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रेम प्यार मुहब्बत विच अलूदा, अलल आपणे संग समाईआ।

✪ २२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ सुखवंत कौर दे गृह लुध्याणा शहर ✪

नानक कहे मैं सुणया शब्द अपारा, अपरम्पर स्वामी दिता जणाईआ। उठ मातलोक वेख धुआँधारा, नौ खण्ड सत्त दीप ना कोए रुशनाईआ। मन कल्पना सृष्टी दृष्टी पाई हाहाकारा, कूड़ी क्रिया पन्ध ना कोए मुकाईआ। सति दा रिहा ना कोए जैकारा, सति स्वामी दरस कोए ना पाईआ। पढ़ पढ़ थक्के रसना जेहवा जीव गंवारा, बुध बिबेक ना कोए दरसाईआ। धुन आत्मक सुणे ना कोए धुन्कारा, नादी नाद ना कोए शनवाईआ। अमृत आत्म रस मिले ना ठंडा ठारा, त्रैगुण अग्नी

अग्ग ना कोए बुझाईआ। निरगुण जोत ना कोए उज्यारा, आत्म परमात्म रंग ना कोए रंगाईआ। चार वरन अठारां बरन निरन्तर होया धुआँधारा, बसन्तर अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। सदी चौधवीं लहिणा देणा मुहम्मद पूरा होणा इकरारा, कौल पिछला रिहा दृढ़ाईआ। ईसा जिस दा करके गया इशारा, बीस बीसा अक्ख उठाईआ। मूसा तक्कया जिस दीदारा, नूर ज़हूर सोभा पाईआ। सो खेल कराए करनेहारा, हरि करता वड वड्याईआ। जिस नूं कहिंदे गए कलि कल्की अवतारा, निहकलंका नूर इलाहीआ। सो जोती जाता पुरख बिधाता हो उज्यारा, दो जहाना नौजवाना मर्द मर्दाना वेख वखाईआ। भेव खुल्हाए दया कमाए मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ गुरदवारा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी पड़दा आप उठाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझा यार हुक्म वरते आपणी धारा, धुर संदेशा इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच पड़दा आप चुकाईआ। नानक कहे पुरख अकाल कीता इशारा, शहिनशाह सैनत इक लगाईआ। कलयुग वेख अन्त किनारा, नईया नौका डोले थांओं थाँईंआ। साजण रिहा ना कोए मित्र प्यारा, दोस्त दस्त ना कोए मिलाईआ। पिता पूत ना कोए अधारा, सगला संग ना कोए बणाईआ। अठसठ तीर्थ रोवण ज़ारो ज़ारा, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रोवण मारन धाईआ। शास्त्र सिमरत करन गिरयाज़ारा, नेत्र नैण हन्झूआं हार बणाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक साढे तिन्न हथ्थ दिसे ना कोए मुनारा, ब्रह्म जोत बिन वरन गोत नज़र कोए ना आईआ। लेख भविक्ख्त पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सब दा विचारा, विचरण दी लोड़ रही ना राईआ। नौ सत्त करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर आपणी कार कमाईआ। जिस दा भेव पा सके ना तेई अवतारा, पैग़म्बर बैठे सीस निवाईआ। दस गुर तकदे गए सहारा, ओड़क ओट इक अकाल रखाईआ। कागत कलम ना लिखणहारा, शाही चले ना कोए चतुराईआ। सो लेखा जाणे विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नानक कहे तक लै आपणी दीन दुनी दी हालत, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। सतिनाम दी रही ना कोए इबादत, अव्वल अल्ला नूर ना कोए चमकाईआ। चार कुण्ट दीन दुनी करे ना कोए बग़ावत, शरअ शरअ नाल टकराईआ। सच कलमे दी करे ना कोए सख़ावत, सुख़न पूर ना कोए निभाईआ। हर हिरदे अन्दर वड़ी अदावत, अदल इन्साफ़ ना कोए कमाईआ। सच दस्स तूं किस दी देणी ज़मानत, किस दा होएं सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी एकँकार इक सलामत, दूसर दूजा नज़र कोए ना आईआ।

✪ २२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ हरबंस कौर दे घर आरीआ महल्ला लुध्याणा ✪

पुरख अकाल किहा सुण नानक धार महिंडी, अनडिठड़ो हुक्म दरसाईआ। पर्दा खुल्ल्या किसे ना इंडी, इन्द्रीआं वस ना कोए कराईआ। भाग लग्गा किसे ना पिण्डी, पर्दा सक्या ना कोए चुकाईआ। लेखे लग्गी ना कोए रक्त बिन्दी, तन वजूद ना कोए सफ़ाईआ। मिल्या मेल ना गुणी गहिन्दी, गहर गम्भीर ना कोए अपनाईआ। सृष्टी इक दूजे नूं जांदी निन्दी, निंदिआ विच लड़ाईआ। मनों मेटे कोए ना चिन्दी, संसा रोग ना कोए गंवाईआ। मस्तक नाम लग्गी किसे ना बिन्दी, लाल गुलाला रंग ना कोए चढ़ाईआ। कलयुग पै गए डण्डी विंगी, सिध्धा राह ना कोए अपनाईआ। रस माणया जगत जहान लिंगी, अमृत रस ना कोए चखाईआ। धुर नाम सुणया ना सिंगी, सतिनाम सतिवाद ना कोए जणाईआ। मैं दीन दुनी लख चुरासी सारी मिणी, पैमाना आप हथ्थ उठाईआ। लेखा वेख्या लोक तिन्नी, त्रैलोक फोल फुलाईआ। भरम मेटया किसे ना चिन्नी, तारा चन्द दए गवाहीआ। रोशनी मेरी रही ना निम्मी, धुआँधार होई लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे छिन्न छिन्नी, छिन्न मात्रा पड़दा आप उठाईआ।

✪ २२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ ज्ञान चन्द दे घर लुध्याणा शहर ✪

सृष्टी दृष्टी होई निधानी, गुण निधान दरस कोए ना पाईआ। आत्म ब्रह्म ना जाणी बाणी, निरअक्खर धार ना कोए समाईआ। सति धर्म तकी ना कोए निशानी, निशाने जगत कूड़ झुलाईआ। भेव पाया ना जावे चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज पड़दा ना कोए उठाईआ। शब्दी शब्द बणया ना कोए ज्ञानी, वाचक रूप सर्ब लोकाईआ। नानक अन्तर आई हैरानी, घर घर अन्दर वेख वखाईआ। जगत जहान भरया नाल बेईमानी, बेवा रूप ख़लक खुदाईआ। मंज़ल चढ़े ना कोए रुहानी, रूह बुत करे ना कोए सफ़ाईआ। काया काअबे दिसे ना जोत नुरानी, चार कुण्ट अंधेरा छाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म लेखा मुके ना जगत जहानी, दो जहानां पन्ध ना कोए मुकाईआ। पारब्रह्म पिष्तिपरमेश्वर नाम देवे ना बण के दानी, दातार दया ना कोए कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज सेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे नव नौ सत्त सर्ब घट जाण जाणी, अन्तरजामी अन्तर आत्म खोज खुजाईआ।

✪ २२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ महिन्दर सिँघ दे गृह योधा बस्ती लुध्याणा ✪

नानक निरगुण धार तक्कया अक्खे, बिन अक्खीआं अक्ख उठाईआ। तेरा खेल पुरख समरथे, प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। कलयुग जीव कूड़ कुड़यार सथ्थर लथ्थे, सेज सुहञ्जणी ना कोए वखाईआ। माया ममता सब नूं मथे, बचया रहिण कोए ना पाईआ। मोह विकार विच सारे ढड्ठे, सिर सके ना कोए उठाईआ। हिरदे हरि कोए ना रटे, रसना जेहवा ढोले सारे गाईआ। भाग लग्गे ना काया मट्टे, साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर ना कोए रुशनाईआ। तेरा निझर रस कोए ना चट्टे, अट्ठ सट्ठ भज्जण वाहो दाहीआ। नाम मुहब्बत विच आपणा आप कोए ना रते, रत्न अमोलक नज़र कोए ना आईआ। सति धर्म दी रहे कोए ना सते, लोभ विकार बैठा डेरा लाईआ। झगड़ा प्या मनमति, गुरमति सारे गए भुलाईआ। जैकारा सुणे कोए ना फ़तिह, हार विच सर्ब कुरलाईआ। जो लेखा लिख्या त्रै दत्ते, दत्ता त्रै गया दृढ़ाईआ। कलयुग अन्त पंच विकारा घर घर नच्चे, भज्जे वाहो दाहीआ। सृष्टी दी दृष्टी अन्दर त्रैगुण अग्नी मच्चे, गुर अवतार पैग़म्बर सके ना कोए बुझाईआ। रसन बचन कढे कोए ना सच्चे, सति सच ना कोए समाईआ। कौल इकरार शाह सुल्तानां होण कच्चे, सुख़न तोड़ ना कोए निभाईआ। माँ पुत्र प्यार रहे किसे ना बच्चे, पिता पूत ना गोद उठाईआ। सदी चौधवीं सारे रहिण हके, हकीकत हक ना कोए समझाईआ। उस वेले बिना पतिपरमेश्वर पति कोए ना रखे, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मानव ज़ाती इक्को मार्ग दस्से, दहि दिशा आप समझाईआ।

✪ २२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ भजन सिँघ दे गृह योधा बस्ती लुध्याणा शहर ✪

नानक तकी अगम्मी सदी, सदमे विच लोकाईआ। माया ममता नाल बद्धी, बदीआं विच कुरलाईआ। झगड़ा पा के माण वड्याई गद्दी, गदागर हो के भज्जे वाहो दाहीआ। कूड़ विकार दी वगे नदी, लहर लहर नाल टकराईआ। साची जोत किते ना जगी, निरगुण नूर ना कोए रुशनाईआ। अमृत धार मिले ना किसे बग्गी, बग बपड़े बैठे रंग बदलाईआ। लेखा मुक्कया रसूल नबी, पैग़म्बर रहे कुरलाईआ। कलयुग वाअ तत्ती वगी, तन वजूद शरीर रही जलाईआ। मंज़ल मिले ना किसे उपर शाह रगी, शहिनशाह दरस कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धर्म निशाना दो जहानां एका रिहा गड्डी, गाईड हो के सब नूं दए वखाईआ।

✪ २२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ रवेल सिँघ दे घर लुध्याणा शहर ✪

नानक कहे मैं तक्कया जगत जहान दा मन्त्र, मंतव हल ना कोए कराईआ। अन्दरों बुझे ना किसे बसन्तर अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। पड़दा खोल्हे ना कोए निरन्तर, निज नैण ना होए रुशनाईआ। समझ आए ना गगन गगनंतर, मण्डल रास ना कोए रचाईआ। जो लेखा लिख के गया धनवन्तर, औशध दारू नाम ना कोए प्याईआ। मन कल्पना सृष्टी भौंदी बन्दर, दहि दिशा उठ उठ धाईआ। बजर कपाटी खोल्ह के जन्दर, जगजीवण दाता मिलण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड दाता गुणी गहिन्दन, गहर गम्भीर इक अख्वाईआ।

✪ २२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ नछत्तर सिँघ दे घर दुराहा शहर ज़िला लुध्याणा ✪

पुरख अकाल कहे क्यों नानक होया चुप, सतिगुर शब्द दे जणाईआ। नानक कहे मैं चारों कुण्ट वेखा अंधेरा घुप, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। तेरे प्यार दी मौले कोए ना रुत, रुतड़ी नाम ना कोए महकाईआ। जगत अपराधी होए सुत , दुलारा नज़र कोए ना आईआ। उज्जल दिसे किसे ना मुख, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। मेरे साहिब इहो इक्को दु:ख, दुखड़ा रिहा सताईआ। भाग लग्गे किसे ना कुख्ख, भगत जन्मे कोए ना माईआ। धर्म दा गाना बन्न्हे कोए ना गुट्ट, बाहू बल ना कोए प्रगटाईआ। आत्म लिव सब दी गई छुट, परमात्म संग ना कोए निभाईआ। धुर दी प्रीती रही टुट, टुटयां जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। तेरा खेल अबिनाशी अचुत, बेपरवाह तेरी बेपरवाहीआ। देख गुरु अवतार पैग़म्बरां पैंडा रिहा मुक, लोकमात वज्जे ना कोए वधाईआ। तेरे नाम दी गाए कोए ना तुक, तुख्म तासीर ना कोए बदलाईआ। सृष्टी दृष्टी निशान्यों गई उक, मंज़ल हक ना कोए चढ़ाईआ। मेहरवान महिबूब आपे उठ, निरगुण निरवैर लै अंगड़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेख चारे गुट्ठ, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण फोल फुलाईआ। कलयुग जीवां भार सके कोई ना चुक्क, गठड़ी सीस ना कोए टिकाईआ। दीन दुनी पेट भरे मूल ना टुक, विष्नूं धार बैठी मुख छुपाईआ। ब्रह्मा ब्रह्म सरूप सके ना पुज, पूजस पाहन ना कोए वड्याईआ। शंकर अन्तिम जाए मूल ना तुठ, चुरासी गंढ ना कोए तुड़ाईआ। जिधर तकां कलयुग पाई लुट्ट, लुटेरा बणया थांउँ थाँईंआ। दीनां मज़्हबां पा के फुट्ट, फुटकल कीती लोकाईआ। तैनूं सारे गाउंदे बुल्ल्हां नाल बुट, हिरदे सक्या ना कोए वसाईआ। मात गर्भ दे सारे उलटे दिसदे रुक्ख, कुभ्भी वास बाहर ना कोए कराईआ। धर्म

धार दी गोदी सके कोए ना चुक्क, मेहर नज़र नज़र टिकाईआ। तेरी दुनिया तेरी सृष्टी तेरे मार्गां गई घुथ्थ, रहिबर रस्ता नज़र कोए ना आईआ। मेहरवान महिबूब की मैथों रिहा पुछ, अन्तरजामी तेरी खेल अगम्म अथाहीआ। किसे दे कोल रिहा ना कुछ, हथ्थ किछ ना आईआ। तेरा खेल अन्तिम होणा तुछ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नानक कहे प्रभू मैं वेख्या जगत जग, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। रूप बणया बपड़ा बग, अन्तर करे ना कोए सफ़ाईआ। जगत तृष्ना विच रहे दग, सांतक सति ना कोए कराईआ। बिन हरि नामे ख़ाली होए हड्ड, तत्व तत रंग ना कोए रंगाईआ। तेरी आत्मा तेरे नालों होई अड्ड, परमात्म मिलण कोए ना पाईआ। सदी चौधवीं सारे रहे छड, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। मेरे मेहरवान महिबूब किरपा कर सूरे सरबग, दयावान दया कमाईआ। आपणे नाम दा शब्दी धार बन्नृ दे तग, तन्दव इक्को इक रखाईआ। कूड़ी क्रिया मेट दे हद्द, हदूद आपणी इक समझाईआ। सच दवार एकँकार ल्ए सद्द, सद्दा दे अगम्म अथाहीआ। मेरी अरदास दोवें जोड़ के हथ्थ, समरथ तेरी सरनाईआ। ज्यों भावे त्यों लैणा रख, निरगुण निरवैर होणा सहाईआ। निज नेत्र लोचन खोलृ दे अन्तर अक्ख, निरन्तर पड़दा आप चुकाईआ। जोत सरूप हो प्रतख, शब्द नाद दे सुणाईआ। खेल कर अलखणा अलख, अगोचर तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी सिफ्त सालाह बेपरवाह आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित अकथ, कथनी कथ सके ना राईआ।

७७८
२२

✪ २३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ गज्जण सिँघ दे घर दुराहा ज़िला लुध्याणा ✪

पुरख अकाल कहे नानक मेला रिहा ना चार वरन, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश रंग ना कोए रंगाईआ। झगड़ा दिसे अठारां बरन, मन मति करे लड़ाईआ। साचा मन्त्र नाम मूल ना पढ़न, जगत विद्या विच हल्काईआ। हकीकी मंज़ल नर नरायण मूल ना चढ़न, घर सच ना कोए सुहाईआ। सच सरनाई मिले किसे ना सरन, सरनगति ना कोए रखाईआ। नेत्र खोलृे ना कोए हरन फरन, निज नैण दरस कोए ना पाईआ। झगड़ा चुक्के ना मरन डरन, चुरासी गेड़ ना कोए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द संदेशा इक सुणाईआ। नानक कहे मेरे साहिब सुल्तान, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। मैं तकां जगत जहान, लख चुरासी ध्यान लगाईआ। साचा मन्त्र तेरा नाम रिदे ना मूल वसाण, रसना जेहवा सर्ब हल्काईआ। भाग लग्गे ना किसे काया मकान, साढे तिन्न हथ्थ ना कोए वड्याईआ। अनहद शब्द सुणे

ना कोए धुन्कान, तेरा अगम्मी राग अगम्म अथाहीआ। दीपक जोत ना जगे महान, अंध अंधेर ना कोए मिटाईआ। कूड़ी क्रिया जगत होई प्रधान, सृष्टी दृष्टी विच दुहाईआ। तेरे चरणां करे ना कोए प्रणाम, सीस जगदीश ना कोए झुकाईआ। मन्त्र फुरे ना किसे सति नाम, सतिरंग ना कोए रंगाईआ। चारों कुण्ट वध्या लोभ मोह हँकार काम, तृष्ना तृखा रही जलाईआ। जिधर तकां अंधेरी शाम, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। मेरे मेहरवान महिबूब सजदा हक रिहा ना कोए सलाम, पैग़म्बर वेखण ध्यान लगाईआ। सारी दुनी होई बदनाम, बदी दा पन्ध ना कोए मुकाईआ। मेरी तेरे चरण कँवल प्रणाम, निउँ निउँ लागां पाईंआ। कलि कल्की हो प्रधान, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। खेले खेल वड अमाम, नूर नुराने नूर अलाहीआ। सदी चौधवीं कर ध्यान, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। आत्म ब्रह्म रिहा ना किसे ज्ञान, शब्दी शब्द ना कोए समाईआ। मन कल्पणा शरअ होई शैतान, चारों कुण्ट कूड़ दुहाईआ। किरपा कर मेरे भगवान, मेहरवान आपणा पड़दा दे उठाईआ। कलयुग कूड़ मेट निशान, सतिजुग सच सच प्रगटाईआ। तेरे धर्म दा इक्को होए विधान, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी मंज़ल कर आसान, असल विच्चों आपणा असल दे समझाईआ।

✪ २३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ जसवंत कौर दे गृह दुराहा ज़िला लुध्याणा ✪

कलयुग कहे नानक एह किरपा मेरे हरि दी, हरी हरि आप कमाईआ। जिस दुनिया चलाई आपणी नाल मर्ज़ी, मरीज़ शाह सुल्तान दिते बणाईआ। मैं किसे ख़बर नहीं आउण दिती धुर दे घर दी, घर मिले ना किसे वड्याईआ। सार पाउण नहीं दिती नरायण नर दी, नर हरि नज़र किसे ना आईआ। मैं खेल वखाई आपणे वल छल दी, अछल छल हो के वेख वखाईआ। वड्याई रहिण नहीं दिती अट्ठ सट्ठ जल दी, अमृत रस ना कोए भराईआ। ख़बर नहीं घड़ी पल दी, की करता हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। कलयुग कहे मेरे साहिब मन्नी अरदास, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मेरी पुनी आस, निरासा रूप ना कोए वखाईआ। मैं नाम चीनण नहीं दिता स्वास स्वास, साह साह ना कोए ध्याईआ। सुरत शब्द पैण नहीं दिती रास, आत्म परमात्म गोपी काहन मेल ना कोए कराईआ। मन ममता कर के हास बिलास, विषयां विच कीती लोकाईआ। आप बण के प्रभू दा दास, साची सेवा रिहा कमाईआ। किसे अन्दर रहिण नहीं दिता प्रकाश, अंध अंधेर दिता कराईआ। सब दी बुद्धी कर के फ़ाश फ़ाश, टुकड़े

टुकड़े दिते जलाईआ। झगड़ा पवा के नाड़ी हड्ड मास, तत तत नाल लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मैनूं देवणहार शाबाश, शाह पातशाह शहिनशाह मेरी करनी आपणे लेखे लाईआ।

✪ २३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ गुरनाम कौर दे गृह दुराहा ज़िला लुध्याणा ✪

कलयुग कहे मेरा वक्त होया सुहावा, सुहञ्जणी रुत सुहाईआ। मेरा धर्म दे नाल दाअवा, सच देणा मिटाईआ। कलयुग जीव हँस बणावां कावां, काग हँस ना कोए वखाईआ। झगड़ा पावां साढे तिन्न हथ्थ ग्रावां, गृह गृह खोज खुजाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी भज्जां नाल चावां, प्रभ साचे दी साची सेव कमाईआ। चौथे घर दी चौथी लैण देवां किसे ना लावां, दुहागण करां जगत लोकाईआ। गुरमुख गोद टिकावण जम्म के मूल ना मावां, एह मेरी बेपरवाहीआ। साध सन्त फ़क्कर करां निथावां, दर दर अलख जगाईआ। दीन मज़ब रुवावां विच हावां, हाए उफ़ कर दुहाईआ। सच दवारे लग्गे ना किसे नावां, प्रभ अबिनाशी मिलण कोए ना पाईआ। मानव ज़ाती धर्म राए हथ्थ फड़ावां, सोहणा आपणा बल प्रगटाईआ।

चुरासी विच फिरावां, फिरत फिरत गेड़ ना कोए कटाईआ। अट्ठे पहर दर ठांडे मैं कुरलावां, प्रभ अग्गे मंग मंगाईआ। नौ खण्ड सत्त दीप तेरी मिले किसे ना छावां, सिर हथ्थ ना कोए रखाईआ। मैं खुशी दे ढोले गीत गावां, गा गा शुकर मनाईआ। प्यार मुहब्बत रहिण दिती नहीं विच भरावां, पिता पूत नाल लड़ाईआ। जूठ झूठ दोए गलवकड़ी पावां, खुशी खुशी विच्चों बणाईआ। उलटे वहिण वहाए विच दरयावां, तट किनारे दयां वखाईआ। इक्को पुरख अकाल बुलावां, गुर अवतार पैग़म्बरां नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दे कोलों आपणी ख़ाली झोली भरावां, करनी दी ऊणता रहिण कोए ना पाईआ।

✪ २३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ जगदीश सिँघ दे घर पिण्ड अजनोध ज़िला लुध्याणा ✪

नानक कहे प्रभ तेरी सृष्टी गई भुल्ल, अभुल तेरा भेव कोए ना पाईआ। माया ममता विच गई रुल्ल, सिमरन जोग अभ्आस ना कोए कमाईआ। भाग लग्गे ना किसे कुल, कुलहीण होई लोकाईआ। तैनूं गाउंदे रसना नाल बुल्ल्ह, हिरदे सके ना कोए वसाईआ। अग्गनी लग्गी काया माटी चुल्ल्ह, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। फल फुलवाड़ी महके कोए ना

फुल्ल, दुर्गन्धी घर घर नज़री आईआ। तेरे नाम कंडे जाए कोए ना तुल, सति विच ना कोए समाईआ। चरण प्रीती प्रीतम रिहा कोए ना घुल, घोली घोल ना कोए कमाईआ। सब दा अन्तर आत्म गया डुल, निज रस ना कोए चखाईआ। मानव बूटा गया हुल्ल, सिंमल वांग जगत लहराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब तेरी सरनाईआ। नानक कहे प्रभू दीन दुनी भुल्ली राह, रस्ता नज़र किसे ना आईआ। धुर दा बणे ना कोए मलाह, बेड़ा कंध ना कोए टिकाईआ। फिरी दरोही थल अस्गाह, जल थल महीअल सार कोए ना पाईआ। झगड़ा प्या सूर गां, धर्म दी धार ना कोए वखाईआ। कलयुग जीव बुद्धी होई काँ, दिवस रैण काग वांग कुरलाईआ। प्यार रिहा ना पुत्र माँ, पिता पूत होई जुदाईआ। तेरा निरन्तर जपे कोए ना नाँ, मन्त्र सच ना कोए सुणाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले पकड़े कोए ना बांह, सज्जण मीत नज़र कोए ना आईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात झगड़ा प्या थाँ थाँ, चारों कुण्ट कुण्ट हल्काईआ। किरपा कर मेरे मेहरवां, मेहरवान तेरी ओट रखाईआ। सदी चौधवीं कर न्याँ, अदल इन्साफ़ आप कमाईआ। लहिणा चुका दे साढे तिन्न हथ्थ ग्रां, गहर गम्भीर आपणा रंग रंगाईआ। शब्दी धार धार दृढ़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एथे ओथे दो जहानां निरगुण सरगुण तेरे हथ्थ न्याँ, न्याँकारी आपणा हुक्म देणा वरताईआ।

७८१
२२

✪ २३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ श्री राम दे गृह पिण्ड मकसूदड़ा ज़िला लुध्याणा ✪

कलयुग कहे मेरे साहिब सतिगुर नानक, ओह वेख निरँकार रिहा जणाईआ। मेरा खेल करना अचानक, अचनचेत आपणी कार भुगताईआ। नौ सत्त रूप धरना भयानक, भय विच सर्ब कुरलाईआ। धर्म दी रहे ना कोए अमानत, कूड़ क्रिया कूड़ वरताईआ। सच दी करे ना कोए सख़ावत, बख्शिश नाम ना कोए जणाईआ। चार कुण्ट पाउणी बग़ावत, दीन दुनी देणी टकराईआ। हउमे रोग लग्गा अलामत, आलमां इलम देणा भुलाईआ। कोई रहे ना सही सलामत, सुल्हकुल रिहा जणाईआ। चौधवीं सदी ना रहिणा अणजाणत, पड़दा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। कलयुग कहे मैनूं आउंदा धुर दा सद्दा, ख़बर अगम्म जणाईआ। चार वरन अठारां बरन रहिण नहीं देणीआं हद्दां, हदूद नज़र कोए ना आईआ। इक्को हुक्म अन्दर जगत जहान होवे बध्धा, बन्दगी इक्को इक दरसाईआ। झगड़ा मेटणा काया माटी हड्डा, तन वजूद ना कोए लड़ाईआ। धर्म निशाना इक्को गड्डा, दो जहान

आप झुलाईआ। दर्शन दे उपर शाह रगा, भगत सुहेले लवां मिलाईआ। अमृत रस दा निझर दे के मज़ा, चिन्ता चिखा मिटाईआ। हरिजन चला विच रज़ा, राज़क रिज़क रहीम हो के दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा इक उपजाईआ। कलयुग कहे मेरी गुफ़त शनीद गुफ़तार, गहर गम्भीर जणाईआ। उठ वेख कर विचार, नेत्र लोचन नैण अक्ख खल्हाईआ। सृष्टी दृष्टी पा सार, इष्टी आपणा पड़दा लाहीआ। चारों कुण्ट करदे धूंआँधार, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। माया ममता कर गिरफ्तार, बन्धन मोह हँकार रखाईआ। मित्र दिसे कोए ना यार, यराने देणे सर्ब तुड़ाईआ। मंज़ल सब दी कर दुष्वार, दरगाह मिलण कोए ना आईआ। नौ सत्त ना करे विचार, बुध बिबेक ना कोए रखाईआ। मेरे सुत दुलारे होणा ख़बरदार, बेख़बर ख़बर सुणाईआ। जल्वागर दा करे ना कोए दीदार, दीद ईद ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा इक सुणाईआ। कलयुग कहे हुक्म आउंदा नाल शताबी, शरअ शरअ नाल टकराईआ। मंज़ल वेख जगत महिराबी, महिबूब रिहा सुणाईआ। नूर रहे ना आफ्ताबी, अंध अंधेर देणा कराईआ। झगड़ा मुकावे हकीकी मजाज़ी, पर्दा ओहला इक उठाईआ। मेरा खेल तक लै आदी, अन्त दयां दृढ़ाईआ। साध सन्त रहे ना कोए विच समाधी, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। जीवां जंतां नाद सुणन नहीं देणा अनादी, धुन आत्मक राग ना कोए शनवाईआ। सब दा मनुआ कर दे बाग़ी, हउमे हंगता गढ़ बणाईआ। चार यारी संग मुहम्मद रहे ना कोए अबादी, उम्मत उम्मती डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग तेरा अन्त अहिलादी, आमद विच तेरे उत्ते दया कमाईआ।

✪ २३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ हरी सिँघ दे घर पिण्ड महिमा सिँघ वाला ज़िला लुध्याणा ✪

नानक कहे प्रभू मैं तक्कया आपणे नैणां, सृष्ट दृष्ट ध्यान लगाईआ। धर्म धार दा मन्ने कोए ना कहिणा, सुरत शब्द ना कोए मिलाईआ। आत्म मंज़ल दिसे किसे ना बहिणा, नौ दवार कूड़ हल्काईआ। सच नाम दा वस्त्र पाए कोए ना गहिणा, कूड़ श्रृंगार वड्याईआ। तेरी चरण सरन किसे ना ढहिणा, पाहन पाथर बैठे सीस झुकाईआ। नुक्ता ऐन मेटे कोए ना ग़ैना, ग़मखार तैनूं मिलण कोए ना आईआ। नाता तुटा भाई भैणा, साक सज्जण ना कोए अख्वाईआ। चार कुण्ट माया ममता डैणा, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण भज्जे वाहो दाहीआ। तेरे दर तों तेरा प्यार किसे ना लैणा, लहिणेदार नज़र कोए ना

आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वहिण वहिणा, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जीव जहान बणे तरफ़ैणा, तामस तृष्ना ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहरवां मेहर नज़र उठाईआ। नानक कहे प्रभू मैं सृष्ट सबाई तकी, अन्तर निरन्तर ध्यान लगाईआ। हकीकत विच कोए ना हकी, सति सच ना कोए समाईआ। तेरे प्रेम गंढ होई ना पक्की, परम पुरख रंग ना कोए रंगाईआ। मैं सब कुछ वेख्या अक्खीं, जगत जहान ध्यान लगाईआ। धुर दे काहन तेरी मिली कोए ना सखी, जो सुख़न तेरा पूर कराईआ। चारों कुण्ट जगत वासना हट्टी, मन मनुआ रिहा चलाईआ। तेरी बावन धार पढ़ी किसे ना पट्टी, अकशर अक्खरां विच्चों बदलाईआ। मन ममता दहि दिशा भज्जी, भज्जे वाहो दाहीआ। उठ लेखा तक लै लख चार अस्सी, चुरासी आपणा ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। पुरख अकाल कहे मैं निरगुण धार आवांगा। सो पुरख निरँजण खेल खिलावांगा। हरि पुरख निरँजण रूप बदलावांगा। एकँकार रंग रंगावांगा। आदि निरँजण डगमगावांगा। अबिनाशी करता हो के सोभा पावांगा। श्री भगवान डंक खड़कावांगा। पारब्रह्म ब्रह्म उठावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलावांगा। करोड़ तेतीसा सुरप्त इन्द, नेत्र अक्ख खुल्हावांगा। आपणा हुक्म वहिण वहा के सागर सिन्ध, दो जहानां धार चलावांगा। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट के बिन्द, बन्धन सब दे आप तुड़ावांगा। पूजा रहे किसे ना लिंग, इक्को नूर जोत रुशनावांगा। खेल खिला के सूरबीर सिंघ, खण्डा खड़ग इक उठावांगा। मृदंगा वजा के अगम्मी किंग, किंगरे किंगरे आप सुणावांगा। जो प्रभ दी करदे निन्द, तिन्हां चोली फाह लटकावांगा। नानक करनी मूल ना चिन्द, चिन्ता चिखा सर्ब गवावांगा। प्रगट हो के विच हिन्द, सम्बल आपणा घर बणावांगा। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद वहाए हिंझ, सदी चौधवीं नेत्र सब दे साफ़ करावांगा। जो कौल इकरार कीता नाल गोबिन्द, गोबिन्द सतिगुर आप प्रगटावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर हुक्म इक सुणावांगा। धुर दा हुक्म इक सुणाएगा। पुरख अबिनाशी दया कमाएगा। घट निवासी वेख वखाएगा। कूड़ी क्रिया सर्ब मिटाएगा। सतिजुग सच सच वरताएगा। काया माटी कच्च, कंचन गढ़ आप बणाएगा। लूं लूं अन्दर रच, रचना आपणी इक वखाएगा। सब दी बदल के बुध मति, मन मनूआं आप समझाएगा। दहि दिशा ना उठ उठ जाए नस्स, नाम डोरी आप बन्ह्णाएगा। निज धार दे के रस, रसना रस पन्ध मुकाएगा। निज नेत्र खोल्ह के अक्ख, जगत लोचन डेरा ढाहेगा। सर्ब कला हो समरथ, हर घट आपणी कल वरताएगा। सब दा लहिणा देणा करके आपणे हथ्थ, हुक्म धुर दा इक दृढ़ाएगा। झगड़ा मुका के मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ, गुरदवार इक प्रगटाएगा।

इक्को नाम कलमा आत्म परमात्म दीन दुनी लए रट, रट्टा अवर ना कोए कराएगा। सदी चौधवीं जाण दे टप्प, टप्पा आपणा इक समझाएगा। सब दा पूरा करके भविक्ख्त वाक, वाक्या आपणा इक वखाएगा। साहिब स्वामी मार्ग दस्स के सच, सुच्च संजम विच मिलाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण भेव खुल्हाए आप अकथ, कथनी कथ ना कोए दृढ़ाएगा।

✪ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ बलवंत सिंघ दे घर पिण्ड गुजरवाल ज़िला लुध्याणा ✪

कलयुग कहे प्रभू मेरी इक अर्ज़, आरज़ू परवरदिगार सांझे यार दयां सुणाईआ। मेरी आसा मनसा पूरी होण दे ग़रज़, गरज के तेरी सेव कमाईआ। खेल खेल लैण दे ज़नो मर्द, तन वजूद फोल फुलाईआ। शरअ छुरी तिक्खी कर लैण दे करद, कत्लगाह तकां लोकाईआ। बौहड़ी अन्तिम मेरा वंडी दर्द, दीन दयाल दया कमाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक वाली अर्श, प्रीतम नूर अलाहीआ। किरपा निधान तूं आउणा उत्ते फ़र्श, फ़ैसला हक सुणाईआ। मैं तेरा करना दरस, छब्बी पोह रुत वड्याईआ। ना कोई सोग रहे ना हरख़, चिन्ता ग़म चुकाईआ। मेरे मालक मेरी कर लईं परख, पारखू हो के ध्यान लगाईआ। मैं चौथे जुग सब दी पुट्टी कीती नरद, सिध्धी सके ना कोए कराईआ। सब दा पूरा लहिणा देणा करना कर्ज़, मकरूज लेखा अन्त देणा जणाईआ। मैं दरोही फेरनी मन्दिर मसीत चर्च, चरागाहां कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरे वल्ल तकीं, निगह हकीकत वाली उठाईआ। अन्तिम मेरी पति रखीं, हरि साहिब तेरी सरनाईआ। सदी चौधवीं मेरा खेल वेखीं अक्खीं, आख़र ध्यान लगाईआ। मैं तेरी रहिण देणी नहीं कोई सख़ी, सति सरूप ना कोए समाईआ। साध सन्त धीरज सन्तोख विच रहे कोए ना जती, यथार्थ तेरी सेव ना कोए कमाईआ। तैनूं मिले ना कोए कमलापती, पतिपरमेश्वर तेरा दरस कोए ना पाईआ। जे तूं मेरा बूटा लाया हथ्थीं, अन्त पालणा चाँईं चाँईंआ। तूं साहिब मेरा समर्थी, वड दाता नूर अलाहीआ। वसीं घट घटी, हर घट रिहा समाईआ। मैं वी तेरे नाम दी पढ़ी पट्टी, पटनेवाला नाल मिलाईआ। मैं चाहुंदा मेरे अन्त विच किसे घर रहे ना दीवा बत्ती, बातन पड़दा ना कोए खुल्हाईआ। मेरी ख़ाहिश विच फ़र्क रहे ना रत्ती, रहमत आपणी देणी कमाईआ। मेरी बेनन्ती सच्ची, साहिब दिती दृढ़ाईआ। वेखीं गंढ रखीं ना कच्ची, तन्दन तन्द तुड़ाईआ। मेरी वासना घर घर होवे नच्ची, मन मनूआं स्वांग रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, दर तेरे मंग मंगाईआ।

कलयुग कहे प्रभू मेरी मनसा करनी पूर, परम पुरख तेरी सरनाईआ। मेरी बेनन्ती तेरे हज़ूर, हज़रतां दे हज़रत दयां सुणाईआ। मैं चाहुंदा सब नूं करां मूर्ख मूढ़, मुग्ध दयां बणाईआ। तेरे लाए कोए ना मस्तक चरण धूढ़, टिक्के ख़ाक ना कोए रमाईआ। जल्वा दिसे ना कोए नूर, जोती जोत ना डगमगाईआ। मेरी मन मनसा कर भरपूर, बेपरवाह आपणी दया कमाईआ। मैं चौथा जुग तेरा मज़दूर, नव सत्त सेव कमाईआ। घर घर अन्दर वड़या कूड़, काम क्रोध लोभ मोह हँकार दिता हल्काईआ। मेरी अरदास सुण ज़रूर, ज़रूरत तेरे अग्गे टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। कलयुग कहे मैनूं होण ना देवीं निरासा, निरवैर बेपरवाहीआ। मैनूं तेरे उत्ते भरवासा, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। मैं कोई वक्ख वक्ख नाम कलमे दा फड़या नहीं कासा, कसम खा के दयां जणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु तेरीआं शाख़ां, शनाख़त तन वजूद रखाईआ। अन्तिम तेरे दर ते आखां, निउँ निउँ लागां पाईआ। साहिब सुल्तान महिबूब मेरा बणना राखा, रक्षक हो के वेख वखाईआ। दीन दुनी दा बदल देवां पासा, पेशीनगोईआं पूर कराईआ। तूं मेरा वेखीं जगत तमाशा, आप आपणा पड़दा लाहीआ। गोपी काहन दीआं पैण ना देवां रासा, सीता सुरत राम ना कोए समाईआ। झगड़ा पा के ज़ातां पातां, दीन दुनी दयां लड़ाईआ। तूं अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक मैनूं देणी शाबाशा, परवरदिगार हथ्थ पुश्त पनाह टिकाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा तेरी किरपा मैनूं आवे कोई ना घाटा, चढ़दी कला देणी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरी पूरी करनी आसा, आसा तेरे अग्गे रखाईआ।

✪ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ ठाणेदार हरचरण सिँघ दे गृह पिण्ड जटवां ज़िला लुध्याणा ✪

कलयुग कहे मेरे शहिनशाह नवाब, मेहरवान महिबूब तेरी सरनाईआ। तेरे कदमां कदमबोसी वाला अदाब, निव निव लागां पाईंआ। परवरदिगार सांझे यार दे ख़ताब, मुख़ातब हो के दया कमाईआ। तेरे हुक्म दी कूड़ वजाई रबाब, नौबत जगत जग सुणाईआ। मित्र प्यारा रहिण दिता नहीं कोई अहिबाब, सज्जण संग ना कोए रखाईआ। गऊआं भुंन ख्वाया कबाब, काहन चली ना कोए चतुराईआ। प्रकाश रिहा ना किसे महिराब, काअबा हक ना कोए वड्याईआ। प्यार रिहा ना हकीकी मजाज़, सब दा मज़ाक दिता उडाईआ। मैं सदी चौधवीं होया बेताब, आपणी लै अंगड़ाईआ। लेखा मुकाउणा हयाते आब, आबरू सब दी देणी गंवाईआ। अक्खरां वाली रहे ना कोए किताब, सिफ्तां वाली सिफ्त ना कोए सालाहीआ। जगत

खेड़ा वसे ना कोए अबाद, महिफ़ल हक ना कोए वखाईआ। गुलशन महके ना कोए गुलाब, कंडा खार करां लोकाईआ। तूं साहिब सुल्तान नौजवान मेरा उस्ताद, पैग़म्बर अगम्म अथाहीआ। इक्को हुक्म दे दे वाहिद, वाहवा तेरी ओट तकाईआ। मैं आपणा हुक्म करां राइज़, रईयत दीन दुनी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दरगाह साची मंग मंगाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैनूं दे दे इक सहारा, सति तेरी सरनाईआ। मैं जीव जंत करां गंवारा, मूर्ख मूढ़ संग बणाईआ। मैं निशान मेटां चन्द सितारा, सदी चौधवीं संग मुहम्मद तेरी झोली पाईआ। लेखा रहे ना चार यारा, अलिफ़ ये ना कोए वड्याईआ। मेरा तेरे हुक्म नाल होणा अन्त कनारा, मेहरवान महिबूब नेत्र नैण लैणा उठाईआ। औह तक मैनूं गोबिन्द दिन्दा इशारा, कल्गी तोड़ा सीस टिकाईआ। कलयुग तूं आपणी कल नूं कर लै ज़ाहरा, बलि बलि विच्चों वखाईआ। औह वेख निरगुण निरवैर लए अवतारा, कलि कल्की वेस वटाईआ। जिस नूं झुकदे पैग़म्बर गुर अवतारा, विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर सीस निवाईआ। ओह शब्दी शब्द दए इशारा, नाम संदेसा अगम्म अथाहीआ। जिस ने मेरा खेल करना दुबारा, बिन तत्तां तत प्रगटाईआ। जोती जाता हो उज्यारा, पुरख बिधाता वेस वटाईआ। जिस दी महिमा कागत कलम ना लिखणहारा, शाही चले ना कोए चतुराईआ। सो कलयुग तैनूं दए उधारा, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। तूं नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप भज्जणा वारो वारा, आपणा पैंडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक नूर अलाहीआ। कलयुग कहे प्रभू मैनूं इक्को ओट तेरी, ओड़क दयां जणाईआ। तूं लाज रखणी मेरी, मेहरवान तेरी सरनाईआ। मैं चार कुण्ट चलाउणी अंधेरी, अंध कूप लोकाईआ। शौह दरयाए ठेहलणी बेड़ी, नईया नौका इक वखाईआ। चुरासी कटे कोए ना गेड़ी, शरअ ज़ंजीर ना कोए तुड़ाईआ। सारी सृष्टी ख़ाक करनी ढेरी, पंज तत तत जलाईआ। मैं आसा रखदा तेरी इक बथेरी, बहु गुणवन्ते ध्यान लगाईआ। मैं खेल रहिण नहीं देणी गुरु गुर चेरी, चेला गुर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि साहिब तेरी सरनाईआ। पुरख अकाल कहे कलयुग मैं वेखां तेरी मंग, जो मांगत हो के झोली डाहीआ। वस्त दे के भुक्ख नंग, तेरा भण्डारा दयां भराईआ। तूं नव सत्त जाईं लँघ, पुरी लोअ ना कोए अटकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां लावीं संग, सगला संग रखाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर जा के देवीं वंड, कायनात बचया रहिण कोए ना पाईआ। मोह विकार चाढ़ना रंग, क्रोध काम नाल हल्काईआ। दुखी करना बन्द बन्द, बन्दना धुर दी देणी बतलाईआ। भेव खुल्ह्ले किसे ना हं, पारब्रह्म मिलण कोए ना पाईआ। आत्म रहे ना कोए अनन्द, निजानंद रस ना कोए चखाईआ। नौ दवारे सब दी वासना देणी टंग,

७८६
२२

अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जिन्ना चिर एह करनी ना करें ओनां चिर एह निशान मिटणा नहीं तारा चन्द, सदी चौधवीं अन्त ना कोए कराईआ। ओह वेख मुहम्मद नेत्र रो रो मंगे मंग, सजदा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि करता दया कमाईआ। पुरख अकाल कहे मेरे अज़ीज़, नन्हे बच्चे दयां वड्याईआ। तेरा मेरे कदम झुकया सीस, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। मैं मालक इक जगदीश, जगदीश्र धुरदरगाहीआ। जुग चौकड़ी बदलां रीत, रीतीवान इक हो जाईआ। तूं सब दी बदल दे नीत, निज अन्दर डेरा लाईआ। मन कल्पणा कर पुनीत, पतित रूप सारे देण दुहाईआ। सदी चौधवीं रही बीत, वेला अन्त अन्त कुरलाईआ। काया रहिण नहीं देणी ठंडी सीत, अग्नी तत देणी जलाईआ। झगड़ा मिटाउणा मन्दिर मसीत, मट्ठ शिवाले वंड ना कोए वंडाईआ। लेखा मुकाउणा ऊच नीच, ज़ात पाती पन्ध मुकाईआ। तैनूं बख़्शां इक तमीज़, तमा दी झोली दयां भराईआ। मातलोक आपणी पूरी कर लै रीझ, मनसा अवर रहे ना राईआ। तूं मेरा गाउणा गीत, ढोला अगम्म अथाहीआ। सृष्टी दृष्टी लैणी जीत, जीवत जी मिले वड्याईआ। हक दी रहिण नहीं देणी प्रीत, प्रीतम मिलण कोए ना पाईआ। ओह तक मूसा तकदा बीस बीस, बीस बीसा नैण उठाईआ। ईसा खेल तके इकीस, एकँकार की करनी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची देवे इक हदीस, हज़रतां तों परे हरि हज़ूर आप समझाईआ।

✪ २५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ हरबंस सिँघ दे गृह संगरूर शहर ✪

मन मति बुद्धी दा जो ब्याना, रसना नाल गाईआ। इस तों परे खेल श्री भगवाना, बिन अनभव दृष्टी समझ किसे ना आईआ। जो लेखा जाणे दो जहाना, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिस दा रूप रंग रेख सके ना कोए पहचाना, नादां विच ना कोए शनवाईआ। ओह मालक ख़ालक प्रितपालक धुर दा कान्हा, नर नरायण नूर अलाहीआ। जिस नूं चार जुग दे शास्त्र गाणा, अवतार पैग़म्बर गए कर के सिफ्त सालाहीआ। पुरख अकाला दीन दयाला नौजवाना मर्द मर्दाना निहकलंक बली बलवाना, रूप अनूप शाहो भूप आपणे विच छुपाईआ। जिस ने सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बदलणा हुक्म दे नाल ज़माना, ज़िमीं ज़मां धुर दा खेल वेख वखाईआ। ओह व्यक्ति रूप हो के कदी ना बणे प्रधाना, आपणी सिफ्त विच ना कोए सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता अगम्म अथाहीआ। निहकलंक हरि

निरँकारा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जो जोती जोत उज्यारा, रूप रंग रेख कहिण कोए ना पाईआ। जो वसे सचखण्ड सच्चे दवारा, दर साचे डेरा लाईआ। जिस नूं कहिंदे सो हरि पुरख निरँजण मीत मुरारा, आदि निरँजण अगम्म अथाहीआ। अबिनाशी करता श्री भगवान पारब्रह्म पतिपरमेश्वर करे कराए करनेहारा, करता पुरख वड वड्याईआ। उस दा बुद्धी विच करे क्या कोई विसथारा, विचर के सके ना कोए सुणाईआ। ओह मंज़ल चढ़ के निरअक्खर पढ़ के पाओ ओस प्रभ दी सारा, जो परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों बाहर आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। जोत निरँकार आदि जुगादी निहकलंक, नर नरायण वडी वड्याईआ। जिस दा शब्द अगम्मी वज्जे डंक, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां रिहा सुणाईआ। जिस दा लख चुरासी जीव जंत, साध सन्त विच समाईआ। जो आत्म परमात्म धुर दा कन्त, कन्तूहल इक अख्वाईआ। उस दी पंज तत बणाए कोए ना बणत, रजो तमों सतो ना कोए चतुराईआ। उस दा गढ़ नहीं कोई हउमे हंगत, माया ममता ना कोए अख्वाईआ। ओह जगत वासना मनशा दी बणाउंदा नहीं कदे संगत, जगत चतुराईआं ना कोए रखाईआ। ओह लेखा जाणे आदि अन्त, जुगा जुगन्त आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा नाम अगम्मा बिन अक्खरां वाला मंत, शब्द शब्द शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। निहकलंक हरि एक है, एका एकँकार। ना कोई दूसर टेक है, ना कोई मीत मुरार। ना कोई जगत नेत्र सके वेख है, ना कोए पावे सार। उस दा जोत सरूपी भेख है, जोती जामा अगम्म अपार। जो वसे सचखण्ड देस है, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां होवे उज्यार। ओह सम्बल बहि के दए संदेश है, शब्द शब्द दी धार। जिस दा हुक्म हुक्म दा लेख है, गुर अवतार कातब बणे लिखार। उस दा कोए ना जाणे भेत है, बेअन्त सच्ची सरकार। ओह सब नूं वेखे नेतन नेत है, नव सत्त पाए सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वसणहार सचखण्ड सच्चे दवार। निहकलंक हरि आप है, दूसर अवर ना कोए। जिस दा ना कोए माई बाप है, मन्दिर मकान ना किसे सोहे। ना कोए अक्खरां वाला पढ़े जाप है, ना कोए सिफ्ती सिफ्त सालाहे। ना कदे पवित ना पाक है, दुरमति रूप ना कोए वटोए। ना कोए सज्जण साक है, मीत मुरार ना कोए अख्वाए। ना कोए खोल्हे ताक है, ना करता पाए सोए। जिस दा अवतार पैग़म्बर गुरुआं गाया भविक्ख्त वाक् है, सो इक्को पुरख अकाला आदि अन्त होए। जिस दा अक्खरां वाला दए कोए ना सात है, पढ़न वाला ना उस नूं टोहे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी एका एक जोत बलोए। निहकलंक हरि निरँकारा, निरगुण

७८८
२२

रूप समाईआ। रूप रंग रेख तों बाहरा, जोती जाता डगमगाईआ। शब्दी शब्द शब्द नगारा, दो जहान करे शनवाईआ। चौदां तबकां वसे बाहरा, चौदां लोक सार ना आईआ। जिस नूं झुकदे चन्द सूर्या ज़िमीं असमान सितारा, दर दर बैठे सीस निवाईआ। इस दा सम्बल धाम न्यारा, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे वधाईआ। जिस विच बहि के वेखे विगसे पावे सारा, वेखणहार आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। उहनूं तन वजूद दा लालच नहीं कोए विच संसारा, पंजां तत्तां ना कोए चतुराईआ। उस दा आदि अन्त दा सिफ्ती इक भण्डारा, जिस नूं कोटन कोटि गा गा आपणा शुकर मनाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी परवरदिगारा सांझा यारा, नूरो नूर अलाहीआ। ज़रा गुरमुखो इस तों उत्ते करो विचारा, विचरण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि दाता बेपरवाहीआ। जगत वेखणा ना कोई वक्त, तन वजूद ना कोए वड्याईआ। जिथ्थे निरगुण धार वसे प्रभू दी शक्त, शहिनशाह आपणा रंग रंगाईआ। जिस दा हुक्म संदेशा धार अगम्मी वस्त, अमोलक आप टिकाईआ। ओस दे नाल काहदी हसद, वैर भाव विच हथ्थ किछ ना आईआ। जिस दे विच जोत निरँकारा निरगुण हो जाए मस्त, मेहरवान आपणी खुशी मनाईआ। ओह खेल वखाए उत्ते अर्श फ़र्श, फ़र्श दे उपर आपणी धार प्रगटाईआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब दे उत्ते तरस, रहमत सच कमाईआ। ज़रा उस नूं तक्को आपणी नज़र परत, दीन दुनी तों बाहर कढ्ढाईआ। जिस गृह विच घर विच मुकाम विच पुरख अकाल ने अवतार पैग़म्बरां गुरुआं ख़ाली आपणी लाई शर्त, शरअ शरअ विच समझाईआ। उस दा खेल सदा असचरज, विद्या विच समझ किसे ना पाईआ। ओह धुर दा मर्द मर्दाना मर्द, योधा इक अख्वाईआ। जिस नूं पोह सके ना जगत शरअ वाली करद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक दया कमाईआ। व्यक्ति नूं लोड़ नहीं मेरी होवे वड्याई, वड्डा तन ना कोए अख्वाईआ। जिस पुरख अकाल ने आपणी बणत बणाई, सो रचना वेखे चाँईं चाँईंआ। सो सम्बल बैठा नूर कर रुशनाई, नूर नुराना डगमगाईआ। जिस दा शब्द शब्द गुरदेव देवे दुहाई, दो जहानां करे शनवाईआ। उस साहिब दे नाल काहदी लड़ाई, जो सब दा मालक इक अख्वाईआ। ओह अन्त श्री भगवन्त निरगुण धार जोत निरँकार जोती जाता पुरख बिधाता बणके अगम्मा राही, रहिबर हो के वेख वखाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी निहकलंक अवतार जिस दी महिमा जगत ज़बान लिखी ना जाई, कातब चले ना कोए चतुराईआ। सो मालक ख़ालक प्रितपालक नूर नुराना परवरदिगार धुरदरगाही, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक इक अख्वाईआ।

कलयुग कहे प्रभू मैं तेरे दर भिखारी, भिख्या दे वरताईआ। मेहरवान महिबूब मेरी तोड़ निभावीं यारी, यराना तेरे नाल रखाईआ। मैं सदी चौधवीं वेखणा उम्मत नबी रसूलां सारी, पैग़म्बरां ध्यान लगाईआ। कल्मयां नालों सब दी कराउणी ग़द्दारी, गदागर देणे बणाईआ। चौदां तबक कराउणी हाहाकारी, हाए उफ़ विच दुहाईआ। इक तेरी मन्नां ताबयादारी, दर कदमां सीस निवाईआ। बाकी सब दी करां ख्वारी, ख़ालस रहिण कोए ना पाईआ। ओह वेख मैनूं गोबिन्द दी दिसे कटारी, खण्डा खड़ग उठाईआ। जो नीहां हेठ बच्चे आया लिताड़ी, ओह मेरी जड़ रिहा उखड़ाईआ। मैं निउँ निउँ करां निमस्कारी, दर ठांडे लागां पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। पुरख अकाल कहे कलयुग मैं तेरी सुहावां रुत, रुतड़ी नाल महकाईआ। मेरा गोबिन्द दुलारा सुत, पूत सपूता इक अख्वाईआ। जिस दा लहिणा देणा नाल अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर संग निभाईआ। ओह तेरी तृष्ना पूरी करे भुक्ख, मनसा मनसा विच छुपाईआ। याद कर लै ओह मेरयां भगतां दा आपणयां सिक्खां दा ज़रूर वंडे दुःख, जो उसदी याद विच बैठे ध्यान लगाईआ। मेरा शब्द गोबिन्द आपणी गोदी लए चुक्क, फड़ बाहों गले लगाईआ। उसे वेले कलयुग सीस गया झुक, निउँ निउँ लागे पाईंआ। प्रभू जिथ्थे तेरे नाम दी इक्को पढ़ीदी होवे तुक, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। उथे तेरी मंज़ल जावे मुक, अग्गे कदम ना कोए रखाईआ। तेरयां भगतां दा उज्जल करां मुख, दुरमति मैल रहे ना राईआ। मैं वास्ता पाउणा गोबिन्द मैनूं अमृत दे दे घुट, अगम्मी जाम पिलाईआ। जिस वेले पी लवां उस वेले सारी दुनिया विच पा देवां फुट्ट, लुटेरा हो के आपणी सेव लगाईआ। मेरा भाग ना जाए निखुट, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मैं सुफ़ल रहिण ना देवां कोए कुख्ख, सदी चौधवीं रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं वेखां तेरा गोबिन्द सुत दुलारा, दूल्हा इक्को नज़री आईआ। जिस दा सम्बल होए धाम न्यारा, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे वधाईआ। तेरा नूर होए उज्यारा, जोती जाते तेरी रुशनाईआ। तेरा हुक्म होए इक जैकारा, दो जहान इक शनवाईआ। जिस दा डंक वज्जे नगारा, नौबत अगम्म अथाहीआ। मैं उस दे चरण करां निमस्कारा, धूढ़ी मस्तक ख़ाक रमाईआ। नाले हस्स के कहां गोबिन्द मेरा अन्त करदे कनारा, नईया तेरे हथ्थ फड़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मैनूं ला लैण दे इक अखाड़ा, चार कुण्ट दहि दिशा नाल मिलाईआ। एह खेल प्रभू जद वरते ते वरते सतारां हाढ़ा, एह मेरी आस रखाईआ। अग्नी लग्गे बहत्तर नाड़ा, साध सन्त कोए बचया रहिण ना पाईआ। फिरे दरोही जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, जिस कारन गोबिन्द तेरा सथ्थर आया हंढाईआ। तूं साहिब स्वामी अन्तरजामी निरगुण

धार होणा ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर तेरी आस रखाईआ। मैं उच्ची कूक पुकारां हाल पाहरा, दरोही तेरा नाम दुहाईआ। मुहम्मद रोवे नाल संग यारा, यारी अन्त ना कोए रखाईआ। ईसा नेत्र नीर वहावे वहिंदीआं धारा, बीसवीं सदी ध्यान लगाईआ। मूसा कहे वाहिद मेरे परवरदिगारा, तेरा खेल अगम्म अथाहीआ। तेई अवतार कहिण साडीआं चुक्कीआं बहारा, बसन्त रुत ना कोए महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी वड्याईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं तेरे कदमां झुकां, निव निव सीस झुकाईआ। इक भेव अगम्मा पुछां, पेशतर दयां सुणाईआ। तेरयां प्रेमीआं अन्दर क्यों आउंदा गुस्सा, तन सरीर जलाईआ। जे तूं वसें उन्हां दे विच जुस्सा, सांतक सति दे वरताईआ। मैनूं इयों जापदा उन्हां दा तेरी मंज़ल वाला अजे पैंडा नहीं मुका, पढ़ पढ़ आपणा झट लँघाईआ। तेरे सिफ्त दी गा गा के तुका, ताअने देण विच लोकाईआ। उन्हां गृह मिल्या ना उका, घर मिलण कोए ना आईआ। इहो इक दुखा, जो गुरमुख नानक सिख्या गए भुलाईआ। एसे कारन मैं नव सत्त जड़ पुट्टां, बचया नज़र कोए ना आईआ। तूं बल पावीं मेरयां हथ्थां गुट्टां, पुश्त पनाह देणी वड्याईआ। मैं घर घर अन्दर पा के फुट्टा, मानव मानव देणे टकराईआ। ढाईआं सालां दे अन्दर अन्दर मैं जगत विच ज़ोर नाल उड्डां, रोकण वाला रहिण ना पाईआ। जेहड़ा तेरा नाम गाउंदे बुल्ल्हां नाल बुट्टां, हिरदे सकण ना मूल वसाईआ। उन्हां नूं धर्म राए दी जेले सुट्टां, गेड़ा चुरासी वाला समझाईआ। फिर तूं मैनूं कहीं शाबाश मेरे कलयुग छोटया पुत्ता, एह तेरी बेपरवाहीआ। तेरे हुक्म नाल आपणे निशान्यों कदे ना उकां, उगण आथण वेख वखाईआ। मैं किसे दी झुग्गी विच रहिण नहीं देणा हुक्का, गोबिन्द दा लेखा पूर देणा कराईआ। सो वक्त सुहञ्जणा ढुका, जिस नूं दीन दुनी समझे ज़रा ना राईआ। तेरी नाम महिमा दीआं पढ़ के दो चार तुकां, तेरे खोजण दी सार किसे ना आईआ। हुण मैं उत्तर पूरब पच्छम दक्खण किसे पासे ना छुपां, प्रगट हो के देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि साहिब तेरे दर मंग मंगाईआ। कलयुग कहे मैनूं बख्श दे अगम्म प्रीत, प्रीतम दया कमाईआ। मैनूं करदे ठांडा सीत, अग्नी तत बुझाईआ। मैनूं जणा दे गोबिन्द वाली रीत, मैं रीती लवां अपणाईआ। मैनूं दस्सदे अगम्मा गीत, गुण गावां चाँईं चाँईंआ। झगड़ा मिटा देणा मन्दिर मसीत, मठ शिवदुआले रहिण कोए ना पाईआ। फेर कलयुग ने कूक के उच्ची मारी चीक, चीक चिहाढ़ा दिता पाईआ। मैं गुर अवतार पैग़म्बरां तों कराउणी तस्दीक, शहादत इक्को वार भुगताईआ। जिन्हां पेशीनगोईआं लिखीआं ठीक, भविक्खतां विच गए समझाईआ। ओह ठाकर आवे त्रैगुण अतीत, त्रैभवन धनी धुरदरगाहीआ। जो सब दा सांझा बणे मीत, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। जीवां जंतां बदले नीत, कूड़ी क्रिया बाहर

कढ्ढाईआ। इक्को कलमा दस्से हदीस, हज़रतां तों बाहर दए समझाईआ। झगड़ा मुका के ऊच नीच, ज़ातां पातां डेरा ढाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स के गीत, पारब्रह्म ब्रह्म मेला लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित तेरे उत्ते सब नूं उम्मीद, आसा विच सारे बैठे ध्यान लगाईआ।

✪ २६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ तरलोक सिंघ दे घर सनाम शहर ✪

कलयुग कहे तकी गोबिन्द वाली पाती, जो बिन अक्खरां पत्रका माछूवाड़े पुरख अकाल जणाईआ। जिस विच लेख लिख्या साख्याती, भेव अभेद दिता खुल्हाईआ। गोबिन्द जगत जहान जीवण जुगत बदलणी हयाती, तन वजूद सर्ब कुरलाईआ। चार कुण्ट होए अंधेरी राती, दीआ दीपक निरगुण जोत ना कोए रुशनाईआ। कथा कहाणी रहे कोए ना साची, क्रिया कूड़ जगत लोकाईआ। नाम भण्डारा बख्शे कोए ना दाती, ख़ाली झोली ना कोए भराईआ। झगड़ा पैणा ज़ात पाती, दीन मज़्हब करे लड़ाईआ। सति सच दा दिसे कोए ना साथी, सगला संग ना कोए निभाईआ। आत्म परमात्म बणे कोए ना पाठी, धुर दा शब्द ना कोए शनवाईआ। धुर दी मंजल चढ़े कोए ना घाटी, अधवाटे दिसे लोकाईआ। धर्म दी चोली होणी पाटी, चीथड़ सच ना कोए रंगाईआ। हक दी रहे कोए ना हाटी, हकीकत वस्त ना कोए वरताईआ। सुख मिले ना किसे साची खाटी, खटके अन्दर सर्ब दुहाईआ। चुरासी मेटे कोए ना वाटी, आवण जावण ना कोए कटाईआ। उस वेले खेल करना पुरख अबिनाशी, निरगुण निरवैर आपणी कल प्रगटाईआ। सम्बल देस करके वासी, साढे तिन्न हथ्थ करे रुशनाईआ। तूं शब्द गुरु गुरदेव मन्नणी आखी, बिन अक्खरां दयां समझाईआ। दो जहानां करनी राखी, रक्षक हो के वेख वखाईआ। धरनी उत्ते मन दी रहिण नहीं देणी गुस्ताख़ी, कूड़ी क्रिया देणी गंवाईआ। सब दी इक्को करके भाशी, भाषन नाम दा देणा सुणाईआ। मानव अन्दर दे के आपणा विश्वाशी, विषयां तों बाहर देणा कढ्ढाईआ। तीर अणयाला मार अगम्मी काती, कर्म कांड दा लेखा देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म आप वरताईआ। कलयुग कहे मैं गोबिन्द दा पढ़या लेख, प्रभ चरण ध्यान लगाईआ। मेरे योधे सूरबीर दस दशमेश, दहि दिशा तेरी रुशनाईआ। तूं मेरे नाल रहिणा हमेश, जन्म मरन दा पन्ध मुकाईआ। तेरा रूप रखावां बिन रंग रेख, चक्र चिहन् आपणे नाल बणाईआ। अन्तिम दोहां ने कलयुग करना खेत, कूड़ कुटम्ब देणा मिटाईआ। तूं मेरा खोल्हणा भेत, भेव अभेदा

७६२
२२

इक जणाईआ। जोत शब्द दोहां दा होवे वेस, सम्बल रुत सुहाईआ। दीन दुनी दी बदल देणी रेख, रक्षक हो के वेख वखाईआ। जिस कारन अर्जन सीस पवाई तत्ती रेत, कलयुग दी जड़ उखड़ाईआ। जिस वास्ते बच्चे करके आयों भेंट, बाले नीहां हेठ दबाईआ। तेरा सुहाउणा सुहञ्जणा इक्को देस, घर साचे वज्जे वधाईआ। अन्त झगड़ा मुकाउणा पीर पैग़म्बर मुल्ला शेख़, मुसायक रहिण कोए ना पाईआ। दो जहानां बख़्शणी इक्को टेक, नव सत्त हुक्म वरताईआ। सब दी बुद्धी कर बिबेक, दुरमति मैल देणी धुआईआ। कूड़ा रहे कोए ना रेठ, मन कल्पणा देणी बाहर कढ्ढाईआ। झगड़ा मिटाउणा ग़रीब सेठ, इक्को रंग देणा रंगाईआ। लेखा वेखणा विष्न ब्रह्मा शिव गणपति गणेश, करोड़ तेतीसा इन्द इन्द्रासण फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी आपणा भेव खुल्हाईआ। कलयुग कहे मैं गोबिन्द दा पढ़या हुक्मनामा, जो पुरख अकाल दिता जणाईआ। जिस विच लहिणा दस्सया कृष्ना रामा, धुर दा राम राम समझाईआ। पैग़म्बरां वाला सुणाया पैग़ामा, संदेशा धुर इलाहीआ। कलयुग अन्तिम निरगुण नूर पहनणा जामा, शब्दी शब्दी शब्द गुर अख्वाईआ। कलयुग रैण अंधेरी मेटणी शामा, शमा घर घर देणी जगाईआ। दीन मज़्हब दा रहिण देणा नहीं कोए ग़ुलामा, शरअ ज़ंजीर अन्त कटाईआ। इक्को नाम दा वज्जणा दमामा, दो जहानां आप सुणाईआ। गढ़ हँकार तोड़ अभिमाना, हउमे रोग देणा गंवाईआ। इक्को दस्से अगम्मी कलामा, कायनात देणा समझाईआ। पुरख अकाल बण के अन्तरयामा, अन्तर निरन्तर पड़दा दए उठाईआ। आपणे हुक्मे अन्दर वरतणा भाणा, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। तख़्तों लाह के राजा राणा, रईयत इक्को रंग वखाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म सब नूं दस्सणा गाणा, तूं मेरा मैं तेरा राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। कलयुग कहे मैं पढ़ के पत्रका पाती, गोबिन्द सीस झुकाईआ। वेखां तेरा मेरा खेल बणना साथी, सगला संग बणाईआ। पर मैं चाहुंदा अस्व उत्ते पावीं ज़ीन ना काठी, शाह सवार आपणा रूप लईं बदलाईआ। पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां मेटणी जगत जहान वाटी, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। खण्डा खड़ग घड़या होवे लोहार तरखाणे किसे जगत ना सी, अबिनाशी कोलों लैणी इक्को मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। कलयुग कहे मैं तक्कया लेख अनोखा, वक्खरी धार जणाईआ। जिस नूं चार जुग दा समझे कोए ना पोथा, अक्खर सिफ्त ना कोए सालाहीआ। नज़र आवे किसे ना कोठा, मन्दिर जगत ना कोए टिकाईआ। लिख्या जाए ना कलम शाही नाल पोटा, काग़ज़ ना कोए रंग रंगाईआ। जिस दा रूप होवे ना खोटा, कूड़ क्रिया ना कोए समझाईआ। उथे प्रकाश मिले

७६३
२२

इक्को निर्मल जोता, जोती जाता करे रुशनाईआ। जगत पाणी सरोवर नाल जावे ना धोता, निरअक्खर सके ना कोए मिटाईआ। उहदा इक्को हुक्म बहुता, अवर लोड़ रहे ना राईआ। जिस दी कर सके कोए ना सोचा, बुद्धी विच ना कोए दृढ़ाईआ। मन विच समझे कोए ना लोचा, जगत लोचन ना कोए पढ़ाईआ। उहदा मज़मून बिना गोबिन्द तों पढ़ना औखा, दूसर सके ना कोए समझाईआ। ओह कोई वेखण चुक्कण वाला नहीं पोथा, अक्खरां रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेद आप दरसाईआ। कलयुग कहे मैं लेखा पढ़या बेनज़ीर, चरण कँवल ध्यान लगाईआ। जिस विच धुर दी तकी दीन दुनी तकदीर, सदी चौधवीं अंक बणाईआ। योधे सूरबीर तकी तस्वीर, जिस नूं मुसव्वर तसव्वर सके ना कोए कराईआ। जिस विच धुर दी तकी तदबीर, तरीका अगम्म अथाहीआ। जिस विच वेख्या शरअ दी मिटणी लकीर, लैन ऐन देणी इक्को बणाईआ। फेर कूकदा वेख्या कबीर, कबरां तों बाहर रिहा जणाईआ। ओह कलयुग तेरे अन्त पुरख अकाल पातशाह ते शब्द गुरु होणा उस दा वज़ीर, इक्को हुक्म लैणा चलाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर दी रहिण नहीं देणी जगीर, जागरत जोत कर रुशनाईआ। सदी चौधवीं सब ते पैणी भीड़, उम्मत नबी रसूल नाल कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा हरि, सच संदेशा नर नरेशा नर नरायण इक सुणाईआ। कलयुग कहे फिर मैं बिन कदमां कदीम दे मालक झुकया, निउँ निउँ लागां पाईंआ। हस्स के ताली मार के किहा सब दा पैंडा मुक्कया, मेरी खुशी विच दुहाईआ। फेर मैं चार कुण्ट अंगड़ाई लै के उठया, आपणा बल धराईआ। फिर पुरख अकाले कोलों पुछिआ, प्रभ आपणा हुक्म दे समझाईआ। मेरा दीन दयाला तुठिआ, मेहर नज़र उठाईआ। सुण मेरे लाडले सुतया, पूत सपूते दयां समझाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा तेरा निशाना कदे ना होवे उक्या, धायल करनी सर्ब लोकाईआ। मैथों सारा जहान होवे रुस्या, अन्तर मिलण कोए ना पाईआ। ओह वेख गोबिन्द दा वेला ढुक्या, ढईआ पिछला दए दुहाईआ। कूड़ी क्रिया दा बूटा जाणा पुट्टया, जगत जड़ दए उखड़ाईआ। शौह दरयाए दए सुट्टया, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। एह खेल करना अबिनाशी अचुतया, चेतन सब नूं रिहा कराईआ। राहों रहे ना कोए घुथ्या, अन्तर वड़ आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग तेरे अन्त सुहावे रुत्तया, रुतड़ी आपणे हुक्म नाल महकाईआ।

✪ २७ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ बीबी दलीपी दे गृह सनाम शहर ✪

जन भगतां देवे प्रभ माण, देवणहार इक अख्वाईआ। जुग जुग वेखे मार ध्यान, लख चुरासी विच्चों खोज खुजाईआ। धर्म दा देवे सच निशान, निशाना कूड़ बाहर कढ्ढाईआ। अमृत रस बख्शे पीण खाण, जगत वासना तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। चरण प्रीती बख्शे दान, वस्त अमोलक इक वरताईआ। हउमे हंगता गढ़ तोड़ अभिमान, निम्रता इक्को दए समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्से के गाण, पारब्रह्म ब्रह्म मेला लए मिलाईआ। शब्द अनादी दे धुन्कान, अनहद नादी नाद वजाईआ। जोती नूर कर प्रधान, अंध अंधकार दए मिटाईआ। घर स्वामी दर्शन देवे आण, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। साख्यात नज़री आवे धुर दा काहन, जोती जाता पुरख बिधाता बेपरवाहीआ। सच दवार एकँकार कर परवान, जन भगत सुहेले आपणी गोद टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। जन भगतां प्रभ सदा दयाल, दीनन आपणी दया कमाईआ। एथे ओथे दो जहानां करे प्रितपाल, प्रितपालक हो के वेख वखाईआ। प्रेम प्रीती विच्चों लभ्भ के आपणे लाल, लालन आपणे रंग रंगाईआ। भाग लगा के काया माटी साची धर्मसाल, धर्म दवारा इक दरसाईआ। जुग जन्म दा कर हल्ल सवाल, आवण जावण गेड़ा दए कटाईआ। आप अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर वसे नाल, विछोड़े विच विछड़ कदे ना जाईआ। जन्म जन्म दी कर्म कम दी लेखे ला के घाल, मेहरवान महिबूब सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता आपे पुछणहारा मुरीदां हाल, मुर्शद हो के वेखे चाँईं चाँईंआ। एथे उथे दो जहानां करे सदा संभाल, सम्बल दा मालक आपणा रंग रंगाईआ। नेड़े आ ना सके काल महाकाल, राय धर्म ना दए सज़ाईआ। चित्रगुप्त लेखा ना सके वखाल, जम का भउ ना कोए दृढ़ाईआ। किरपा करे आप श्री भगवान, हरि भगवन दया कमाईआ। भगत सुहेले मेले आण, आनन फ़ानन आपणा भेव चुकाईआ। दरगाह साची सच दवारे देवे माण, सचखण्ड साचा इक सुहाईआ। दर ठांडे कर परवान, परम पुरख परमात्म आत्म मेला करे सहिज सुभाईआ। बुद्धी तों परे दे ज्ञान, मनमति दा डेरा ढाहीआ। सच्ची बख्श शब्द धुन्कान, धुर संदेशा इक समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दोहां दा सांझा इक विधान, जगत शरीअत कम्म किसे ना आईआ। तन वजूद माटी ख़ाक जावे कबर मढ़ी शमशान, आत्म शमा गुल ना कोए कराईआ। भगत सुहेला इक अकेला सचखण्ड दवारे कर परवान, परम पुरख प्रभ आपणे घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित सब दा जाणी जाण, जानणहार साहिब सुल्तान इक अख्वाईआ।

जो जन मंगे दरस दी मंग, आत्म अन्तर ध्यान लगाईआ। किरपा करे सूरा सरबंग, हरि करता धुरदरगाहीआ। जो कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आवे लँघ, मण्डल मण्डप चरणां हेठ दबाईआ। सो अन्तर निरन्तर देवे साचा अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। खुशी कराए बन्द बन्द, बन्दगी आपणी इक वरताईआ। दीन दयाल बण बख्शंद, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। राती सुत्तयां दिने जागदयां नौ दवारयां तों उपर जाए लँघ, पैंडा अन्तर निरन्तर आप मुकाईआ। सेज सुहञ्जणी सुहा के आप पलँघ, दरसी आपणा दरस देवे कराईआ। देवे प्रकाश बिन सूर्या चन्द, जोती जोत कर रुशनाईआ। एथे ओथे दो जहानां लावे अंग, अंगीकार इक हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। जो जन दरस दा होवे मंगत, अन्तष्करन वेख वखाईआ। गढ़ हउमे तोड़ के हंगत, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला बोध अगाधा धुर दा पंडत, जगत विद्या तों बाहर दए समझाईआ। जो लेखा जाणे आदि अन्त, जुग चौकड़ी लख चुरासी वेख वखाईआ। सो नाम निधाना नौजवाना मर्द मर्दाना देवे मणीआ मंत, मन कल्पणा दूर कराईआ। हरिजन गुरमुख बणा के साचे सन्त, सति सतिवादी आपणा घर वखाईआ। जिस घर चार दीवारी दी नहीं कोई बणत, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। इक्को साहिब स्वामी मिले कन्त, कन्तूहल नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। सतिगुर शब्द कदे नहीं दूर, मंज़ल नज़र कोए ना आईआ। जो सर्ब कला भरपूर, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। जिस वेले याद करो ओह सदा हाज़र हज़ूर, जो हज़रतां देवे माण वड्याईआ। कर किरपा कोट जन्म दे बख्श दए कसूर, मेहर नज़र नाल तराईआ। चुरासी विच्चों होण ना देवे मजबूर, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी दा लेखा दए मुकाईआ। इक्को बख्श के जोती नूर, अंध अंधेरा दए मिटाईआ। नाता रहिण ना देवे कूड़, कुकर्म विच्चों बाहर रखाईआ। चतुर सुघड़ बणा के मूर्ख मूढ़, दरगाह देवे माण वड्याईआ। जिन्हां बख्शे चरण धूढ़, धूढ़ी टिक्के ख़ाक रमाईआ। सो गुरमुख बणा के बीरसूर, बीर रस बीरता आपणा दिता भराईआ। जद वेखो ओह नेरन नेरा जोत सरूपी जो मूसे तक्कया उपर कोहतूर, तुरीआ तों बाहर आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति दा पड़दा आप चुकाईआ। दूर दुराडा सतिगुर शब्द कदे ना वसे, ब्रह्मण्ड खण्ड पन्ध ना कोए मुकाईआ। जो अन्दर वड़ के मन्दिर चढ़ के सच दवारे बहि बहि हस्से, घर घर विच सोभा पाईआ। जो प्रकाश देवे कोटन कोटि रवि शशे, सूर्या चन्द बैठण सीस निवाईआ। सो

मेटे रैण अंधेरी मस्से, अंध अंधेरा दए चुकाईआ। लेखा चुकाए लहिणा देणा हके, हकीकत आपणा रंग रंगाईआ। जिस पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नूं लभ्भदे फिरदे नट्ठे, सो काया मन्दिर अन्दर आपणा नूर जोत दए चमकाईआ। हरि सन्त सुहेले भगत बणाए सच्चे, सच मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। भाग लग्गे काया माटी तन कच्चे, कंचन गढ़ दए वड्याईआ। गुरमुख प्रभ प्रेम नाल जाण रत्ते, रत्न अमोलक हीरे आप प्रगटाईआ। एथे ओथे दो जहानां निरगुण सरगुण आपे पति रखे, पतिपरमेश्वर होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भाग लगाए तत अठे, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध आपणे रंग रंगाईआ।

७६७
२२

✪ २७ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ कपूर सिँघ बराड़ दे गृह मोगा शहर ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बर आओ अग्गे, धार विच्चों धार प्रगटाईआ। उठो बण के सूरबीर बहादर सरबगे, सरबग रिहा जणाईआ। ब्यान करो आपणी आपणी वज़्हे, वजूहात दयो समझाईआ। क्यों कलयुग चारों कुण्ट लग्गी अग्गे, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। जीव जहान होए कग्गे, हँस रूप ना कोए वटाईआ। मानव हो के खाधे ढोर पशू वच्छे ढग्गे, सूरां खल्ल लुहाईआ। रसना वासना चक्खे मज़े, आत्म रस ना कोए जणाईआ। क्यों कूड़ क्रिया विच बध्धे, बन्दन सके ना कोए तुड़ाईआ। जगत वासना पार ना होवे हद्दे, हदूद मेरी समझ कोए ना आईआ। चुरासी विच्चों कोए ना कढे, आवण जावण पन्ध ना कोए मुकाईआ। क्यों शरअ शरअ नाल करे दगे, कलमा कलमे नाल टकराईआ। किथ्थे तुहाडे धर्म निशाने गड्डे, हर हिरदे दयो वखाईआ। क्यों जगत खुमारी होई मद्धे, नाम रस ना कोए चखाईआ। जेहड़ी करनी कलयुग जीव लग्गे, लेखा लिख के दयो दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर संदेश इक सुणाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बर आओ नेड़े, जोत जोत विच्चों प्रगटाईआ। दस्सो कवण चढ़या तुहाडे बेड़े, बेड़ी नईया नौका नाम वखाईआ। किस किस दे तुसां कटे चुरासी गेड़े, चारे खाणी पन्ध मुकाईआ। भेव मेटया सञ्झ सवेरे, इक्को नूर दिता चमकाईआ। की रंग रंगया गुरु गुर चेरे, मुरीद मुर्शद की संग निभाईआ। कवण वाड़या मेरे सचखण्ड दे वेहड़े, लेखा लिख के दयो फड़ाईआ। क्यों झगड़े हुन्दे तुहाडे धर्म अस्थानां विच डेरे, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ गुरदवार रहे कुरलाईआ। आपणे आपणे भरे वखाओ बेड़े, भरपूर अन्तिम मंग मंगाईआ। जिस कारन तुसां लोकमात चार जुग मारे फेरे, पंज तत वजूद हंढाईआ। उस दे होणे अन्त नबेड़े, पुरख अकाला रिहा जणाईआ। तुसां

इष्ट आपणे बणा लए बथेरे, बहुरंगत रंग रंगाईआ। हुण वक्त सुहञ्जणे आउणे मेरे, मेहरवान इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, नाम निधान इक जणाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बर आवो कोल, पिछला पन्ध रहे ना राईआ। जो मेरे नाम कलमे दा वजाया ढोल, ढोलक साढे तिन्न हथ्थ सरीर खड़काईआ। उस विच कवण गया मौल, मौला हो के पुछे बेपरवाहीआ। कवण तराजू कंडे उत्ते तुसां तोलया तोल, पड़दा दयो उठाईआ। कवण सच प्रीती आपणा आप गया घोल, घोली घोल घोल घुमाईआ। किस बिध तुसां आपणा पूरा कीता रोल, रूल दस्सया जगत लोकाईआ। क्यों सृष्टी होई दृष्टी विच्चों अनभोल, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। बिना रसन ज़बान तों दस्से बोल, अनबोलत राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा मालक दया कमाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बरो आओ मेरे पास, पासा दीन दुनी वखाईआ। पहलों तक्को पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर अक्ख उठाईआ। फेर वेखो इक दे तुसीं दासी दास, सेवक सेवा सच कमाईआ। राम कृष्न तक्को किस बिध तुहाडी पैंदी रास, सुरती शब्दी सीता काहन रूप दरसाईआ। आत्म परमात्म की हुन्दा खेल तमाश, राधा कृष्ना रंग रंगाईआ। पैग़म्बर वेखो मार झात, झाती दीन दुनी टिकाईआ। क्यों उम्मत उम्मती मिटया विश्वाश, विषयां विच सर्ब हल्काईआ। सच दा रिहा ना कोए इख़लाक, इख्तिलाफ़ विच सर्ब कुरलाईआ। तुहाडे मुरीद मुर्शद तुहाडे होए बरख़िलाफ, धुर दा संग ना कोए निभाईआ। नूरी चमके ना कोए आफ्ताब, ज़हूर विच ना कोए समाईआ। हथ्थ आवे ना किसे हयाते आब, ज़िदगी विच्चों ज़िंदगी ना कोए बदलाईआ। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद आपणा कढ के दयो हिसाब, अंकड़े दस्सो थांउँ थाँईंआ। की खेल होणा तुहाडे पिच्छों बाद, की करता कल वरताईआ। जिस तुहानूं लोकमात कीता आबाद, सो तुहाडा लेखा पूर कराईआ। धुर कलमे दी सुणो आवाज़, राज़ अन्दरों दए जणाईआ। अग्गे हुक्म चलणा इक वाहिद, अमाम अमामा आपणी धार प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सब दा लेखा पूर कराईआ। पुरख अकाल कहे अवतार पैग़म्बरो हो जाओ अग्गे पिच्छे, सज्जे खब्बे ध्यान लगाईआ। आपणे दीन मज़्हब दे वेखो हिस्से, जो मानव मनुष वंड वंडाईआ। कवण हारे कवण जित्ते, कवण संग निभाईआ। कवण सच दवारे विके, कीमत इक्को वार पवाईआ। क्यों तुहाडे हुन्दयां मेरे नाम कलमे हो गए फिक्के, रसना रस ना कोए चखाईआ। मस्तक लग्गण किसे ना टिक्के, धूढ़ी ख़ाक ना कोए रमाईआ। उठ दस्स दे गोबिन्द सब तों अख़ीरी दुलारे धुर दे निक्के, निरगुण आख सुणाईआ। गोबिन्द किहा प्रभू तेरे बिना कलयुग अन्तिम निकले कोए ना सिट्टे, सिट्टेबाज़ी जगत लोकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर आपणी धार

वेख लोकमात पिट्टे, पटने वाला दए जणाईआ। हुण झगड़ा मेट दे पथ्थर इट्टे, पाहन पूज ना कोए चतुराईआ। इक्को तेरा नूर नुराना नूर अगम्मी दिसे, दहि दिशा कर रुशनाईआ। आत्म परमात्म भोग भोग लै धर्म धार दे विषे, विशा आपणा नाम जणाईआ। वेखीं सदी चौधवीं लँघ ना जाए किते, कुल मालक तेरी आस रखाईआ। तेरा खेल नित नविते, जुग चौकड़ी रीती चली आईआ। तूं पुरख अकाला धुर दा पिते, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण तुध बिन अवर ना कोए नजिट्ठे, सहायक नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण सब दी पूरी कर इच्छे, निरइच्छत आपणी दया कमाईआ।

७८६ ७८६

२२ २२

✪ २८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ गुरबचन सिँघ दे गृह पिण्ड सदा सिँघ वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

अवतार पैग़म्बर गुर तक्को आपणी करनी, हरि करता पुरख आप दृढ़ाईआ। निरअक्खर धार वेखो जो पढ़नी, शब्दी शब्द अगम्म अथाहीआ। जिस बिध झगड़ा मिटणा वरनी बरनी, ज़ात अज़ाती पन्ध मुकाईआ। इक अकाल दी सब ने आउणा सरनी, सरनगति इक हो जाईआ। नव सत्त ने ढहिणा चरणी, चरणोदक अमृत जाम मुख लगाईआ। धर्म दी मंज़ल साची चढ़नी, जगत वंड ना कोए वंडाईआ। कूड़ क्रिया अग्गे ना अड़नी, मुश्किल अवर रहे ना राईआ। फिरना पए ना दर बदरनी, चार कुण्ट ना कोए हल्काईआ। दूजी घाड़त पए ना घड़नी, मन मनसा ना कोए वधाईआ। जगत नईया पए ना तरनी, तारनहार वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर वेखो आपणी घाल घाली, जुग बीते ध्यान लगाईआ। जो सिख्या जीव इन्सान पंज तत सखाली, तन वजूद बुद्धी नाल कीती पढ़ाईआ। जिस बिध नाम कलमे नाल चाढ़ी लाली, रंग गुलाला इक बणाईआ। ओह मार्ग तक्को हाली, माज़ी पड़दा दयो उठाईआ। किस कारन कलयुग कीती काहली, दूर दुराडा आपणा पन्ध मुकाईआ। आपणा आपणा लहिणा देणा दयो वखाली, बिन पुस्तक पुस्तक हथ्थ उठाईआ। जिस बिध तुहाडी सब दी होणी चाली, जगत रहिण कोए ना पाईआ। सो लेखा दस्सो शाली, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। क्यों नाम भण्डारा धन रिहा साचा ना माली, कीमत अन्त रही ना राईआ। किधर गई अक्खरां वाली दलाली, विचोला विचला भेव ना कोए खुलाईआ। तुहाडुयां

सिक्खां मुरीदां कोलों तुहाडी वस्त नहीं गई संभाली, संभल संभल के पुरख अकाल रिहा सुणाईआ। फल दिसे किसे ना डाली, सिंमल रुक्ख सर्ब लहराईआ। झगड़ा वेखो जगत जंजाली, जीवण जुगत ना कोए चतुराईआ। क्यों घर घर अन्दर कलयुग मारे ताली, दिवस रैण शोर मचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच पड़दा आप चुकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर लेखा वेखो चोटी जड़ दा, चेतन हो के फोल फुलाईआ। क्यों जगत जहान चार कुण्टों सड़दा, दहि दिशा रिहा कुरलाईआ। क्यों माया ममता होया बरदा, चाकर हो के सेव कमाईआ। क्यों भेव पाए ना आपणे घर दा, आत्म परमात्म मेल ना कोए कराईआ। की लेखा होया अठ्ठ सठ्ठ जल दा, जल थल महीअल भेव दयो खुल्हाईआ। क्यों प्रताप वध्या कलयुग कल दा, कलकाती नाल रलाईआ। क्यों झगड़ा होया सूर गाँ खल्ल दा, ख़ालक ख़लक पुछ पुछाईआ। क्यों ज़ोर वध्या पंच विकारे दल दा, पंच शब्द ना कोए शनवाईआ। क्यों हँकार फिरे हर अन्तर अन्तर सलदा, सलल रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, भेव अभेद इक समझाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर वेखो जगत जहानां, अन्तर लै अंगड़ाईआ। क्यों झगड़ा प्या अञ्जील कुराना, गीता ज्ञान दए दुहाईआ। क्यों कलमा नाम होया बेगाना, सच घर ना कोए मिलाईआ। क्यों कलयुग जीव होया दीवाना, नाम खुमारी मस्त ना कोए कराईआ। क्यों मेरा हुक्म होया अफ़साना, पढ़ के मसख़रा रूप बणी लोकाईआ। क्यों तुहाडा प्रेम होया बेगाना, प्रीती सच ना कोए कमाईआ। क्यों सच दी धार ना दिसे तराना, तुरीआ तों बाहर ना कोए सुणाईआ। क्यों सदी चौधवीं बदलदा जाए ज़माना, ज़िमी ज़मां वेख वखाईआ। उत्तर देदे दसरथ बेटे रामा, धुर दा राम मंग मंगाईआ। भेत खोल्ह दे गोपीआं वाले कान्हा, धुर दा काहन रिहा जणाईआ। पैग़म्बरो क्यों इस्म विगड़या विच इस्लामा, आज़म धुर दा पुछ पुछाईआ। किधर संदेशा गया पैग़ामा, जो कल्मयां विच कीता शनवाईआ। दस गुरु आपणा दयो ब्याना, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। क्यों ना रिहा धर्म निशाना, सच दी धार ना कोए वड्याईआ। क्यों ना रच्छया करे खण्डा खड़ग किरपाना, साढे तिन्न हथ्थ ना कोए सफ़ाईआ। क्यों मदिरा मास प्या पीणा खाणा, गोबिन्द तेरा अमृत हथ्थ किसे ना आईआ। सारे नेत्र रोए कहिण तेरा खेल श्री भगवाना, हरि करते तेरी बेपरवाहीआ। तूं योद्धा सूरबीर मर्द मर्दाना, बलधारी इक अख्वाईआ। साडी तेरे चरण कँवल प्रणामा, सजदा सीस जगदीश झुकाईआ। तूं मेहरवान महिबूब शहिनशाह सुल्ताना, पातशाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। हउँ सेवक तेरे चार जुग दे गुलामा, जुग जुग सेव कमाईआ। अन्तिम साडा लेखा मुका दे तमामा, दीन मज़्हब दी तमां रहे ना राईआ। तेरे शब्द दा वज्जे दामामा, दो जहानां दे सुणाईआ। अन्तिम तेरे विच अवतार पैग़म्बर गुर सर्ब

समाणा, बाहर नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेहरवान महिबूब एका देणा दाना, जीआ दान सब दी झोली पाईआ।

✪ २८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ गुरदयाल सिँघ दे गृह पिण्ड सदा सिँघ वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

अवतार पैग़म्बर गुर वेखो आपणी सिख्या, अक्खर अक्खर फोल फुलाईआ। जो सरगुण लेख लिख्या नाता तत नाल बंधाईआ। जिस नूं कहि के आए मिथ्या, अन्त रहिण कोए ना पाईआ। की उस दा कढो सिट्टया, मैनूं दयो समझाईआ। क्यों नहीं आपणे दीन मज़्ब दा कम्म नजिठिआ, भरमे भुल्ली लोकाईआ। क्यों पूजा कराई पथ्थर इट्टया, मेरा इष्ट ना कोए शनवाईआ। क्यों नहीं माण रखाया धुर दी चिट्ठीआ, जोती जोत ना कोए मिलाईआ। क्यों नहीं मनुआ मन टिक्या, जगत वासना कूड़ मिटाईआ। क्यों ना मेल मिले धुर दे पितया, पतिपरमेश्वर गोद सुहाईआ। क्यों तुहाडा सिख मुरीद कलयुग दवारे विक्या, धर्म दी कीमत ना कोए रखाईआ। क्यों निज अमृत रस होया फिक्या, आबेहयात मुख ना कोए लगाईआ। क्यों सन्त भगत गुरमुख गुरसिख सूफ़ी फ़कीर नहीं दिसया, सदी चौधवीं रही कुरलाईआ। क्यों नहीं तुहाडी पूरी होई इच्छया, निरइच्छत धुर दी मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेखणहारा दीन मज़्ब दे खितया, हिस्से सब दे वेख वखाईआ।

✪ २८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ सीतल सिँघ दे घर पिण्ड डगरू ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

अवतार पैग़म्बर गुर तक्को चार जुग दे ग्रन्थ, अक्खर हरफ़ फोल फुलाईआ। दीन मज़्ब आपणा तक्को पन्थ, मानव ध्यान रखाईआ। नाद बांग अज़ान तक्को संख, जो जगत आए सुणाईआ। की करनी कीती कलयुग अन्त, अन्त दिता दृढ़ाईआ। की कलमा कहे तुहाडा नाम मंत, मन्त्र की समझाईआ। कवण मंज़ल चढ़े अगम्मी सन्त, सच देणा सुणाईआ। बोध अगाधा केहड़ा बणया पंडत, बुद्धी तों परे पड़दा आप उठाईआ। क्यों गढ़ बणया हउमे हंगत, हँ ब्रह्म सार किसे ना आईआ। क्यों आत्म परमात्म नाता तुटा नार कन्त, पुरख अकाल संग ना कोए रखाईआ। क्यों ढोला गीत शब्द बदलया छंत, सिफ्तां विच सालाहीआ। क्यों हउमे हंगता कीता शंक, सहिंसे विच सर्ब कुरलाईआ। क्यों झगड़ा होवे राउ रंक, ज़ात पात कुरलाईआ। क्यों ना सोहे दवारा बंक, साढे तिन्न हथ्थ चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर तक लओ आपणी पूजा, मनुशां अन्दर ध्यान लगाईआ। क्यों भाओ होया दूजा, दुतीआ भेव ना कोए खुल्हाईआ। अन्तर राह मिले ना गूझा, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। क्यों नहीं नाभी कँवल होया मूधा, झिरना अगम्म झिराईआ। क्यों नहीं मेरा सच दवारा सूझा, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। क्यों नहीं घर विच घर जगत जिज्ञासूआं ढूंडा, नौ दवारे पन्ध मुकाईआ। क्यों नहीं अमृत रस दा बणया कोए चूंघा, कूड़ी क्रिया परे तजाईआ। क्यों नहीं खेल तक्कया काया बुत परे रूह दा, बुतख़ाना सोभा पाईआ। क्यों नहीं आत्म लेखा मेरा नूर हूबहू दा, दूजा रंग ना कोए वखाईआ। क्यों नहीं अंधेरा मिटया लूं लूं दा, साढे तिन्न हथ्थ शनवाईआ। क्यों नहीं भेव खोल्हया शब्द सतिगुरु दा, गुरदेव स्वामी इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, लेखा मंगे कलयुग अन्त की लहिणा होणा सतिजुग शुरू दा, शरअ तों बाहर की खेल कराईआ।

८०२
२२

✪ २८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ चन्द सिंघ दे गृह पिण्ड डगरू ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

अवतार पैग़म्बर गुर तक्को दवारे नौ, नव नौ ध्यान लगाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी आउणा भौं, चारे कुण्ट पन्ध मुकाईआ। जगत तकणा क्यों बुद्धी होई काउं, मन काग वांग कुरलाईआ। खेड़ा दिसे ना कोए गाउँ, गहर गम्भीर नज़र किसे ना आईआ। साची मिले ना ठंडी छाउँ, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। चुरासी विच्चों बाहर कढे फड़ कोए ना बाहों, आवण जावण ना गेड़ कटाईआ। क्यों तुहाडे हुन्दयां भुल्लया तुहाडा नाउँ, जो चार जुग आए समझाईआ। क्यों नहीं हुन्दी वाहो वाहो, वाह वाह सतिगुर तेरी बेपरवाहीआ। क्यों नहीं दिसदा सच न्याउँ, अदल इन्साफ़ ना कोए कमाईआ। झगड़ा प्या थाँईं थाओं, थान थनंतर रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सब दा वेखे चार जुग दा लग्गे दाओ, दाइरा दीन दुनी खोज खुजाईआ।

✪ २८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ धन्ना सिंघ दे गृह पिण्ड डगरू ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

अवतार पैग़म्बर वेखो आपणे जानशीन, जो शास्त्र ग्रन्थ आए बणाईआ। जिस विच नाम कलमे दी सिफ्त कीती तरमीम, तरह तरां समझाईआ। हुक्म संदेशा दिता अज़ीम, जो आलीज़ाह दिता दृढ़ाईआ। रीती चलाई आदि कदीम, जुग जुग सेव

कमाईआ। भेव खुलाया नर मदीन, मुद्दा इक्को इक वखाईआ। मालक दस्स करीम, नर नरायण इक दरसाईआ। उस उत्ते क्यों नहीं रिहा यकीन, इक्ट्ठे बहि झगड़े सारे दयो सुणाईआ। किधर गई तालीम, सिख्या अगम्म अथाहीआ। जिस कारन कीती तक्सीम, मज़्ब हिस्से वंड वंडाईआ। ओह मालक लेखा मंगे अमीन, अन्त आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दा लेखा वेख वखाईआ।

✪ २८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ मेला सिँघ दे गृह पिण्ड डगरू ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

अवतार पैग़म्बर गुर दीन मज़्ब तक्को धार जिस्मानी, जिस्म ज़मीर सब दा वेख वखाईआ। अन्दर मन्दिर मंज़ल तक्को रुहानी, रूह बुत खोज खुजाईआ। सिख्या वेखो गीता ज्ञान अञ्जील कुरानी, बाईबल की रही दृढ़ाईआ। नाम भण्डारा वेखो बाणी, की अणयाला तीर चलाईआ। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ तक्को पाणी, की अमृत रस चुआईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ गुरदवार तक्को निशानी, की निशाना रहे वखाईआ। आपणे तन वजूद दी तक्को कुरबानी, जो लोकमात आए कराईआ।
८०३
२२
अन्तिम वेखो खेल शाह सुल्तानी, की शहिनशाह रिहा दृढ़ाईआ। क्यों तुहाडे हुन्दयां होए बेईमानी, मन कल्पणा ज़िबाह ना कोए कराईआ। क्यों झगड़ा प्या वेद पुराणी, पुराण अधारी रिहा सुणाईआ। ना लेखा मुक्कया चारे खाणी, चौथे जुग पई दुहाईआ। किधर गई तुहाडी मुहब्बत वाली मेहरवानी, मेहर नज़र ना कोए उठाईआ। प्रकाश होवे ना किसे पेशानी, मस्तक नूर ना कोए चमकाईआ। सब दी जूह होई बेगानी, घर साचे मिलण कोए ना आईआ। क्यों कूड़ क्रिया चढ़ी तुग्यानी, दीन दुनी रही रुढ़ाईआ। आपणा आपणा हल्फ़ीआ दयो ब्यानी, बिन रसना जेहवा शब्द शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी वेखणहारा जगत प्रधानी, प्रधानगी कवण हक वखाईआ।

✪ २८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ मल सिँघ दे घर पिण्ड रजीआणा ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

इक्ठ्ठे हो के कहिण अवतार तेई, त्रैगुण तों बाहर जणाईआ। साडी रही कोए ना देही, तन वजूद ना कोए वखाईआ। की संदेशा देवे हरि सनेही, सज्जण बेपरवाहीआ। आपणा आपणा लेखा कढो उत्ते वही, खाता खोल्हो चाँई चाँईआ। आपणे

प्रेम दी पावो सही, सही सलामत रिहा दृढ़ाईआ। क्यों दीन दुनिया पति गई, पतिपरमेश्वर मिलण कोए ना पाईआ। कवण समझे अगम्मी धार नई, नर निरँकारा की दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक सुणाईआ। पैग़म्बर कहिण वेखीए खाता, ख़ातर इक ध्यान लगाईआ। आपणी उम्मत तक्कीए हाता, कुण्ट कुण्ट वेख वखाईआ। सच रही कोए ना गाथा, कलमा हक ना कोए दृढ़ाईआ। क्यों अंधेरा मारे चारे कुण्ट ठाठा, नूर ज़हूर ना कोए रुशनाईआ। क्यों मंज़ल मुकी वाटा, सच पन्ध ना कोए रखाईआ। किस कारन प्या घाटा, सदी चौधवीं भेव चुकाईआ। की लहिणा देणा परवरदिगार पुरख समराथा, जल्वागर हुक्म की जणाईआ। क्यों मेटण लग्गा साडीआं शाख़ां, शनाख़त आपणी इक समझाईआ। झट वेख के कहिण पेशीनगोईआं पूरे करे भविक्ख्त वाका, वाकिफ़कार इक अख्वाईआ। आपणे दर दा खोल्ह के ताका, पर्दा अन्दरों रिहा चुकाईआ। असीं की तकणा खेल तमाशा, दीन दुनी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गुर दस कहिण की दस्सीए कथा कहाणी, कहिण किछ ना पाईआ। क्यों अमृत रस रिहा ना ठंडा पाणी, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रोवे मारे धाईआ। क्यों सुरत शब्द मिल्या मेल ना साचे हाणी, गृह मन्दिर ना वज्जी वधाईआ। क्यों प्रभ नूं भुल्ले जीव प्राणी, आत्म परमात्म संग ना कोए रखाईआ। क्यों सुरती होई दीवानी, मस्त अलमस्त रूप ना कोए बणाईआ। क्यों लेखा चुक्कया खण्डा खड़ग शक्त भवानी, आपणा बल ना कोए धराईआ। क्यों ना शरअ ज़ंजीर मुकी गुलामी, बन्धन बंध ना कोए तुड़ाईआ। क्यों नहीं मंज़ल चढ़े जगत रुहानी, रूह बुत ना कोए सफ़ाईआ। किस कारन हर हिरदे आई ख़ामी, पूरन पूर ना कोए जणाईआ। बौहड़ी क्यों लेखा मंगण लग्गा अन्तरजामी, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस मेटणी अंधेरी शामी, शमा नूर कर रुशनाईआ। किस बिध करे साहिब सच मेहरवानी, मेहरवान महिबूब आपणा रंग रंगाईआ। की लेखा लिखीए कलम शाही नाल कानी, कायनात की वड्याईआ। साडा लहिणा देणा बण गया चार जुग दा झगड़ा दीवानी, दिवाला सब दा वेख वखाईआ। अग्गे मन्नणा पैणा इक्को अगम्म अगम्मड़ा बानी, जो बाण अणयाला तीर चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी लख चुरासी निरगुण सरगुण जाण जाणी, जानणहार आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ २६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ केहर सिँघ दे गृह पिण्ड रजीआणा ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण असीं रैण सबाई रहे फिरदे, नौ सत्त भज्जे वाहो दाहीआ। जीवां जंतां साधां सन्तां वेखदे रहे हिरदे, अन्तष्करन ध्यान लगाईआ। ख्याल करदे रहे पिछले चिर दे, चिरी विछुन्ने वेख वखाईआ। सानूं प्यारे लभ्भे ना आपणे प्रीतम पिर दे, प्रेम विच ना कोए समाईआ। फिर साडे हन्झू रहे किरदे, आंसू दिते टपकाईआ। क्यों एह उलटे गेड़े गिड़दे, कवण लड्ड भवाईआ। किते नज़र ना आए साडे भण्डारे मेहर दे, मेहरवान कला की वरताईआ। नाते रहे ना गुरु गुर चेर दे, चेले गुर मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण असीं रैण सबाई नट्ठे, निरगुण निरगुण वाहो दाहीआ। देखे खेल मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठे, गुरदवार ध्यान लगाईआ। पन्ध मारया उपर अट्ठ सट्ठे, काअब्यां तक्कया चाँई चाँईआ। मानव वेखे नौ खण्ड पृथमी दीप सत्ते, सति सतिवादी तेरी दया आपणा पन्ध मुकाईआ। तेरे नाम प्यार विच दिसण मूल ना रत्ते, रत्न अमोलक नज़र कोए ना आईआ। सच प्रीती प्रेम वाली कोए ना दस्से, दहि दिशा होई हल्काईआ। असीं तेरे गोशे बहि के हस्से, हस्स के ताली दिती लगाईआ। इक दूजे नूं किहा ओह वेखो साडे हुन्दयां होई अंधेरी मस्से, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। फेर झट असां दीन मज़्ब दे कढे पटे, जो हुक्मनामे दिते हथ्थ फड़ाईआ। फिर बिन अक्खरां तों निरअक्खर धार विच रट्टे, शब्दी शब्द करी शनवाईआ। जिस दे अन्त अख़ीर तूं आपणे संदेशे दस्से, हुक्मी हुक्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण असीं पढ़या तेरा हुक्मनामा, नर नरायण तेरी सरनाईआ। जिस दा लेख अगम्मी कलामा, कलमा कायनात ना कोए समझाईआ। जिस दा संदेश धुर पैग़ामा, पैग़म्बरां तों बाहर तेरी पढ़ाईआ। फेर असां झुक झुक कीता सलामा, निउँ निउँ सीस निवाईआ। चरण कँवल कर प्रणामा, मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। फेर बेनन्ती कीती श्री भगवाना, भगवन आपणी दया कमाईआ। तेरा शब्द संदेशा सुणया उठे हो के नौजवाना, नव जोबन आप बणाईआ। जिस विच किहा आह वेखो कलयुग रैण अंधेरी शामा, शमां नूर ना कोए चमकाईआ। फड़ हलूणया राम ने रामा, कृष्न कृष्न नाल रलाईआ। पैग़म्बरां फड़ के दामन दामा, चारों कुण्ट दिता भवाईआ। गुरुआं दस्स के खेल तमामा, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। सब ने तक्कया प्रभ दा लेख कलयुग अन्तिम जोती धार पहनणा जामा, अन्तरजामी वेस वटाईआ। किसे दा रहिण देणा नहीं माणा, अभिमान नज़र कोए ना आईआ। सब ने इक्को गाणा गाणा, इक्को नाम ध्याईआ। इक्को इष्ट मनाणा, दूजा नज़र ना कोए टिकाईआ। अवतार पैग़म्बर

गुर कहिण असीं हो गए हैराना, हैरानी साडे अन्दर आईआ। क्यों फिरदे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ बीआबाना, समुंद सागर टिल्ले पर्बत भज्जीए वाहो दाहीआ। जिस ने खेल करना सो ख़ालक ख़लक वाली दो जहानां, निरगुण निरवैर निरँकार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दी धार इक जणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण असीं फिरया चार चुफेरा, चौगिर्द ध्यान लगाईआ। झगड़ा चुक्कया ना मेरा तेरा, तेरा मेरा समझ ना कोए समझाईआ। साडे नाम कलमे दा प्या झेड़ा, झगड़ा मज़्हब वाला दरसाईआ। काया वसया ना किसे खेड़ा, कलयुग सन्त फ़कीर रहे कुरलाईआ। भरया पूर ना कोई बेड़ा, नईया नौका नाम ना कोए वड्याईआ। जिधर तक्कया उलटा गेड़ा, प्रभ उलटी लट्ठ सर्ब भवाईआ। बिना अक्खां तों होया अंधेरा, नेत्र लोचन नैण ना कोए खुल्हाईआ। असीं ढहि के होए ढेरा, माण रिहा ना कोए चतुराईआ। सब बेनन्ती करदे किरपा कर दे इक वेरा, वैरी मीत वेख वखाईआ। तूं शब्द स्वामी शब्द गुरदेव प्रगट हो के सिँघ शेरा, शहिनशाह आपणी कार भुगताईआ। सदी चौधवीं लाईं मूल ना देरा, दूर दुराडे आपणा पन्ध मुकाईआ। तुध बिन लेख मुकाए केहड़ा, सगला संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेहरवान महिबूब मुहब्बत विच आपणीआं कर मेहरां, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक उठाईआ।

✪ २६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ इन्द्र सिँघ दे गृह पिण्ड कादर वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण हुक्म मन्नया प्रीतम चोजी, सचखण्ड दवारे दरगाह साची आपणा सीस जगदीश झुकाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल तके दो जहान रोगी, अन्तर अन्तरीव ध्यान लगाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात वरन बरन वेखे जञ्ञू बोदी, मस्तक तिलक ललाटी फोल फुलाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई तके वेदी सोढी, घट घट अन्तर आपणा ध्यान लगाईआ। रिषी मुनी जुगीशर तपीशर तके वासना वाले जोगी, जुगती जगत खोजी थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति सच तेरी सरनाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण वेखी दीन दुनी दी धार, धरनी धरत धवल धौल ध्यान लगाईआ। इक्ट्ठे होवो तेई अवतार, हज़रत मूसा ईसा मुहम्मद संग बणाईआ। दस गुर जोत कर आकार, निराकार रंग रंगाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी तक्कया आर पार, समुंद सागर फोल फुलाईआ। मानव मानस मनुख तके काया मन्दिर मुनार, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। चारों कुण्ट दिसया धूंआँधार, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ।

कूड़ कुड़यारा करे ख्वार, सति सच ना कोए समाईआ। झगड़ा दिसे जगत संसार, दीन दुनी रोवे मारे धाईंआ। साचा मन्त्र सके ना कोए उच्चार, रसना जेहवा बत्ती दन्द हल्काईआ। ख़ादम बणे ना कोए ख़िदमतगार, खुदी तक्बर ना कोए मिटाईआ। जिधर तक्कीए आई हार, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। दीन मज़्हब करे तकरार, झगड़ा ज़ात पात समझाईआ। साचा वसे ना कोए घर बाहर, साढे तिन्न हथ्थ रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सुल्तान मर्द मर्दान तेरी ओट तकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण वेखे आपणे सिख मुरीद, मुर्शद हो के ध्यान लगाईआ। आलस निंद्रा खुल्ही किसे ना नींद, जोती जोत ना कोए रुशनाईआ। हकीकी पढ़े कोए ना ईद, सजदा सीस ना कोए झुकाईआ। जो नाम कलमा कर के आए ताकीद, तसबीआं वाले गए भुलाईआ। सपारा हक ना कुरान मजीद, शरअ शरअ नाल टकराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण दीन दुनी दे अन्दर मारी झाकी, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। अंधेरा तक्कया बन्दा ख़ाकी, ख़ालक रंग ना कोए रंगाईआ। मनुआ सब दा होया आकी, नाम भय ना कोए जणाईआ। दवार मिले ना कोए साची हाटी, वस्त अगम्म ना कोए वरताईआ। उठ वेख पुरख समराथी, शहिनशाह दर तेरे सीस निवाईआ। धूंआँधार तक अंधेरी राती, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। साडा झगड़ा प्या दीन मज़्हब ज़ाती, कलमा नाम नाल लड़ाईआ। लेखा मुका दे काग़ज़ाती, कदीम दे मालक हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण दीन दुनी तकी तक्कया जगत जहान, जहालत भरी लोकाईआ। धर्म दा रिहा ना कोए निशान, निशाना कूड़ गया बदलाईआ। माण रिहा किसे ना राम, काहन बंसरी ना कोए सुणाईआ। पैग़म्बर दिसे ना कोए अमाम, रसूल रंग ना कोए रंगाईआ। दस गुरु करे ना कोए पहचान, बेपहचान होई लोकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण रसना जेहवा गाण, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। असीं वेख होए हैरान, हैरत विच साडी दुहाईआ। किरपा कर श्री भगवान, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी ओट तकाईआ। लहिणा देणा पूरा कर करनी दे करते विच जहान, जो भविक्ख्तां विच तेरे अग्गे मंग मंगाईआ। सब दी पेशीनगोई कर परवान, परवाने तेरे अग्गे टिकाईआ। साडी नमस्ते डण्डावत बन्दना सजदे विच सलाम, सीस जगदीश जगत दे मालक इक झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि निरगुण सरगुण तुध बिन दूजा अवर ना कोए मेहरवान, मेहरवान महिबूब मुहब्बत विच आपणी दया कमाईआ।

✪ २६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ सोहण सिँघ दे घर पिण्ड मुंडी जुमाल ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ दईए की हिसाब, लेखा अंकड़े गणित ना कोए गणाईआ। साडा तेरे चरणां इक अदाब, सचखण्ड निवासी निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाला महाराज, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। एथे ओथे दो जहानां तेरा राज, सचखण्ड निवासी तेरे हथ्थ वड्याईआ। तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी रचणहारा काज, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणी कल वरताईआ। कलयुग अन्तिम वेख आपणा समाज, दीन दुनी फोल फुलाईआ। लख चुरासी अन्तर निरन्तर सुण आवाज़, सरोते हो के धुरदरगाहीआ। धरनी धरत धवल धौल कवण तेरा मुहताज, मुहब्बत विच ध्यान लगाईआ। कवण सोया कवण गया जाग, आलस निंद्रा कवण रखाईआ। कवण दवारे लग्गा भाग, कवण मन्दिर सोभा पाईआ। तेरा खेल प्रभू जुगादि आदि, जुग जुग खेल खिलाईआ। सदी चौधवीं धर्म दा रिहा कोए ना साध, साधना सच ना कोए कमाईआ। भेव अभेदे अछल अछेदे आपणा दस्स बोध अगाध, बुद्धी तों परे तेरी पढ़ाईआ। जिस नाल तृष्ना बुझे आग, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। हर हिरदे उपजे तेरा वैराग, वैरी काम क्रोध लोभ मोह हँकार बाहर कढ्ढाईआ। माया ममता कूड़ी तृष्ना होवे त्याग, त्रैगुण अतीते पड़दा देणा चुकाईआ। सोई सुरती अकाल मूर्त सब दी जाए जाग, जोती जाते कर रुशनाईआ। दुरमति मैल रहे ना दाग़, पतित पुनीत देणे कराईआ। झगड़ा मुका के डण्डावत बन्दना रोज़ा नमाज़, शरअ शरअ विच्चों बदलाईआ। सच स्वामी आपणा आपे कर लै काज, करनी दे करते कुदरत दे मालक आपणी दया कमाईआ। साहिब सुल्ताने नौजवाने जोती धार बण अहिबाब, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। हर हिरदे वजा आप रबाब, सतार सता वाली समझाईआ। कलयुग जीव हँस बणा काग, कागों हँस उडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण किरपा करदे हरि हरि निरँकार, हरी हरि तेरी सरनाईआ। भरमे भुल्ला रहे ना कोए संसार, संसा हउमे रोग दे चुकाईआ। निज नेत्र लोचन बख्श दीदार, दीद ईद कर रुशनाईआ। तेरा खेल अपर अपार, अपरम्पर स्वामी समझ किसे ना आईआ। सदी चौधवीं सारे गए हार, बाहू बल ना कोए वखाईआ। कलि कल्की तेरा होवे इक अवतार, निहकलंक डंक शब्द देणा वजाईआ। धुर दे अमाम पाउणी सार, नबी रसूल रहे कुरलाईआ। लहिणा देणा पूरा करना इकरार, पेशीनगोई वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण निरवैर निराकार निरँकार, करनी करते करनेहार इक अख्वाईआ।

✪ ३० अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ बगीचा सिँघ दे गृह पिण्ड मुंडी जुमाल ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

अवतार पैग़म्बर कहिण साडा पैंडा मुका, मुकम्मल हुक्म बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं सब नूं लग्गा दुखा, दर्द दर्द नाल कुरलाईआ। पवित्र होया किसे ना मुखा, उज्जल रूप ना कोए दरसाईआ। जगत जहान हो गया भुक्खा, तृष्ना तृप्त ना कोए कराईआ। उलटा मात गर्भ दा रुक्खा, चुरासी फंद ना कोए कटाईआ। सब दा भाग दिसे निखुट्टा, वस्त धुर ना कोए वरताईआ। आत्म परमात्म नाता सब दा तुटा, रूह बुत रंग ना कोए रंगाईआ। प्रेम हकीकी वाला छुट्टा, हकीकत नज़र कोए ना आईआ। फिरी दरोही चारे गुट्ठा, दहि दिशा जगत हल्काईआ। मानव मानस मानुख फिरे रुट्ठा, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए कराईआ। अमृत जाम पीए कोए ना घुटा, रस निझर ना कोए झिराईआ। पुरख अकाला दीन दयाला अन्तिम तुट्ठा, मेहर नज़र इक उठाईआ। अन्त अख़ीर लहिणा देणा छुट्टा नाड़ी हुक्का, हुक्म धुर दा इक सुणाईआ। नेचे विच रहे ना तुक्का, तुख्म तासीर देणी बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अवतार पैग़म्बर कहिण साडा वक्त रहे ना मूल, सति सच दृढ़ाईआ। खेल खेले हरि कन्त कन्तूहल, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस दा हुक्म सारे गए भूल, भुल्ल विच लोकाईआ। साडा कायम ना रिहा असूल, असल वसल ना कोए कराईआ। कूड़ी क्रिया दुनी होई मशग़ूल, मशवरा माया ममता मोह रखाईआ। प्रभ चरण लाए कोए ना धूल, टिक्के ख़ाक ना कोए रमाईआ। कलमा सुणे ना कोए माकूल, भेव अभेदा ना कोए खुल्हाईआ। साचा नाम होए ना किसे वसूल, वस्त हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच हुक्म इक वरताईआ। अवतार पैग़म्बर कहिण साडा रहे ना अग्गा पिछा, प्रभ जोती जोत समाईआ। अन्तिम पूरी होई इच्छा, निरइच्छत दए वड्याईआ। जो भविक्ख्तां लेख लिखा, सो पूर रहे कराईआ। खेल खिला के दहि दिशा, नव दर दा डेरा ढाहीआ। साडा दीन मज़्ब दा रहे कोए ना हिस्सा, अग्गे वंड ना कोए वंडाईआ। दीन दुनी दा नाता दिसदा मिथा, मथण करे धुरदरगाहीआ। चार जुग दा लेख तक्कया चिट्ठा, सिफ्तां वाला सिफ्त सालाहीआ। अन्तिम प्रभ दा भाणा मन्नणा पैणा कर के मिट्ठा, सिर सके ना कोए उठाईआ। जिस दा खेल होणा अनडिट्ठा, पर्दा अन्दरों ना कोए चुकाईआ। सो स्वामी बण के सब दा पिता, मित्र प्यारा वेख वखाईआ। जन भगतां कर के हिता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीन दुनी दा इक्को नाम दस्स के विशा, विश्व दा मालक दया कमाईआ।

८०६
२२

✪ ३० अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ बीबी छिन्दो दे गृह पिण्ड मुंडी जुमाल ज़िला फिरोज़ पुर ✪

भगत सुहाउंदे सच दर, मिले माण वड्याईआ। मैल गवंदे सच सर, दुरमति रहे ना राईआ। दरस पवंदे सच घर, नेत्र नैण नैण बिगसाईआ। चरण ढहंदे लड़ फड़, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवार इक वखाईआ। जन भगतां दर सुहञ्जणा, सोभावन्त वसनीक। किरपा करे दर्द दुःख भय भञ्जणा, हरि करता लाशरीक। नाम निधान पावे अंजणा, बख्शणहारा धुर तौफ़ीक। चरण धूढ़ कराए मजणा, बख्शे सच प्रीत। हरिजन दरस कर कर रज्जणा, काया होए ठांडी सीत। गृह शब्द दमामा वज्जणा, कूड़ क्रिया रहे ना चीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सोहँ दस्से गीत।

✪ ३० अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ थानेदार सरूप सिँघ दे गृह पिण्ड ढुड्डी ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

पुरख अकाल कहे अवतार पैग़म्बर गुर वेखो कुण्ट चारा, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण ध्यान लगाईआ। नूर नुराना दीआ बाती होए ना कोए उज्यारा, अंध अज्ञान ना कोए मिटाईआ। शब्द अनाद सुणे ना कोए धुन्कारा, अनहद नादी नद ना कोए शनवाईआ। अमृत रस मिले ना ठंडा ठारा, बूँद स्वांती निझर झिरना ना कोए झिराईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप धूंआँधारा, धर्म दी धार ना कोए वखाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर निरगुण हो के पावां सारा, सरगुण भेव अभेद खुल्हाईआ। माण रिहा ना वेद चारा, शास्त्र सिमरत कुरान देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक समझाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर वेखो चार चुफेरा, निरगुण सरगुण ध्यान लगाईआ। तत वजूद मेटे ना कोए अंधेरा, आत्म पड़दा ना कोए खुल्हाईआ। जीव जंत साध सन्त बन्न्हे ना कोए बेड़ा, नईया नौका पार ना कोए लँघाईआ। चुरासी फाँसी चुक्के कोए ना झेड़ा, गर्भ जून ना कोए कटाईआ। लेखा मुके ना मेरा तेरा, हउमे रोग ना कोए मुकाईआ। साची मंज़ल लाए कोई ना डेरा, दरगाह साची सचखण्ड मिलण कोए ना पाईआ। आपणा आपणा सिख मुरीद दस्सो केहड़ा, शब्द इशारे नाल समझाईआ। जिस दा तन मन वासना चुक्या होवे झेड़ा, झगड़ा कूड़ ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर संदेश इक सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर तक्को दो जहां, निरवैर हो के वेख वखाईआ। सति धर्म दा वेखो निशां, निशाना धुर दा इक प्रगटाईआ। क्यों कलयुग

जीव हँस होए काँ, बुद्धी काग वांग कुरलाईआ। धर्म दा करे ना कोए न्याँ, अदल इन्साफ़ ना कोए वखाईआ। अन्दर वड़ के वेखो साढे तिन्न हथ्थ ग्राँ, मन्दिर वज्जे ना कोए वधाईआ। सदी चौधवीं पकड़े कोए ना बांह, पुश्त पनाह हथ्थ ना कोए टिकाईआ। क्यों तुहाडे हुन्दयां झगड़ा प्या सूर गां, जगत ढोरां खल्ल लुहाईआ। साचा मिले किते ना थाँ, थनंतर समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर नेत्र खोल्ह लओ जग, जगजीवण दाता आप दृढ़ाईआ। दीन दुनी वेखो उपर शाह रग, शहिनशाह मिलण कोए ना पाईआ। क्यों त्रैगुण माया लग्गी अग्ग, तुहाडा नाम कलमा सके ना कोए बचाईआ। नौ दवारे मुके किसे ना हद्द, दस्म दवारी पड़दा ना कोए उठाईआ। नाम खुमारी पीए कोए ना मदि, मधुर धुन ना कोए सुणाईआ। क्यों आत्म परमात्म होई अलग्ग, पारब्रह्म ब्रह्म जोड़ ना कोए जड़ाईआ। क्यों ख़ाली होए सब दे हड्ड, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। क्यों सृष्टी दृष्टी अन्दर इष्ट गई छड, ईश जीव रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर वेखो आपणा आपणा जगत लाल, हरि लालन आप जणाईआ। क्यों ना पूरी होई किसे दी घाल, घोली घोल ना कोए घुमाईआ। तुसीं किस दे बणे दलाल, विचोला कवण अख्वाईआ। सदी चौधवीं आपणयां आपणयां मुरीदां सिक्खां दी दयो मसाल, मिसल मेरे अग्गे टिकाईआ। मैं वेखणहारा मुरीदां हाल, मुर्शद दाता बेपरवाहीआ। दीन दुनी दा तकणहार जंजाल, जागरत जोत कर रुशनाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ वेखो धर्मसाल, गुरदवारे फोल फुलाईआ। क्यों झगड़ा प्या दीन दुनी तुसीं सके ना मूल संभाल, सम्बल लेखा दयो जणाईआ। खेल करे प्रभ अन्तिम दीन दयाल, दया निध आपणी कार कमाईआ। जिस नूं कहि के आए पुरख अकाल, सो अकल कलधारी आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण सब दा वेखणहारा हाल, अहिवाल पिछले नाल मिलाईआ।

३० अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ पिण्ड मंड ज़िला फ़िरोज़पुर

रावण आसा सवा लख नाती, रक्त बूँद वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दा लेखा लिख सके ना कलम दवाती, चार वेद छे शास्त्र समझ कोए ना पाईआ। जिस दे कोलों खेल कराया कमलापाती, पतिपरमेश्वर आपणा हुक्म सुणाईआ। ओह रावण जगत विद्या समराथी, गुणवान अख्वाईआ। जिस दा लेखा बणया नाल राम रघुनाथी, रघुपति खेल खिलाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। सवा लख नाती रावण तृष्ना, तमा तन रखाईआ। जिस दी शहादत देवे शिव ब्रह्मा विष्ना, त्रैगुण अतीते आप दृढ़ाईआ। उस दा भेव जाणे कवणा, बुद्धी विच ना कोए चतुराईआ। जिस कारन दसरथ बेटा जंगलां विच भवणा, दहि दिशा भज्जया वाहो दाहीआ। ओह खेल अगम्मा बिन रावण राम किसे ना मन्नणा, दूसर समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। सवा लख नाती रावण आसा, साह साह विच समाईआ। जिस नाल तके पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतर भेव खुल्ाईआ। मन मन्दिर अन्दर पावे रासा, सुरती खेल खिलाईआ। जपे स्वास स्वासा, बिन रसना जेहवा हिलाईआ। धुर दा मन्ने आखा, की राम दा राम समझाईआ। जिस दी पुत्र धीआं वाली गिणती नहीं कोए शाख़ा, शनाख़त सके ना कोए कराईआ। ओह निरगुण निरवैर निरँकार दा साका, बिना राम दे पढ़न कोए ना पाईआ। त्रेता द्वापर जिस दीआं करदे आउंदे बातां, सिफ्तां विच सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी आपणी खेल वरताईआ। सवा लख नाती रावण तमन्ना, तामस तमन्ना नाल मिलाईआ। जिस दा भेव ना जाणे गंगा गोदावरी सुरस्ती जमना, अट्ठ सट्ठ समझ किसे ना आईआ। जिस विच लहिणा देणा वरनां बरनां, चुरासी तांघ रखाईआ। हिसाब किताब जम्मणा मरना, काल पावे नाल बंधाईआ। निर्भय हो नहीं डरना, आपणा बल वखाईआ। सीता सवाणी जंगल हरना, आपणा रूप बदलाईआ। चार जुग तों वक्खरा वेद पढ़ना, एह तृष्ना रावण अग्गे प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सवा लख नाती रावण अन्तर अन्तश ख़ाहिश, ख़ालस समझ किसे ना आईआ। बिना राम दे राम तों करी ना किसे तलाश, खोजत खोजत खोज ना कोए समझाईआ। जिस सुहावणा बनवास, राम जंगलां विच भवाईआ। ओह लेखा जाणे साहिब गुणतास, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस मन का गढ़ सुहाया आप, दहि दिशा रंग रंगाईआ। अन्दर वधा के रोग संताप, सहिंस्सयां विच समाईआ। शास्त्र दे के जाप, दिती माण वड्याईआ। उस विषे नूं समझ सक्या ना कोए साख्यात, जिस कारन राम रावण दोवें लोकमात प्रगटाईआ। जगत कहाणी जो विद्या विच कोई गया आख, विद्वानां सिफ्त सालाहीआ। बाकी सारे करदे पश्चाताप, संसा मन ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सवा लख नाती रावण दे अन्दर दी झाकी, जिस दा लेखा जाणे कुछ विशिष्ट जिस निरन्तर खुल्ी ताकी, संदेशा पाती पत्रका राम राम राम समझाईआ।

✪ ३० अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ सरदारा सिँघ दे गृह पिण्ड मनावा ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ तेरा रूप ख़ालस, जोत शब्द दी धार तेरे विच समाईआ। दीन दयाले हरि गोपाले बण सालस, साहिब सुल्तान नौजवान आपणी दया कमाईआ। असीं चार जुग दे तेरे नन्हे बालक, बचपन तेरे हथ्थ फड़ाईआ। तूं अन्तर निरन्तर सब दा पालक, पालणहार तेरी सरनाईआ। मेहरवान ख़लक दे ख़ालक, कलि तेरी ओट तकाईआ। दीन दुनी दे अन्दरों कढ जहालत, कूड़ी क्रिया दे मिटाईआ। सच दवार कर अदालत, अदल इन्साफ़ इक कमाईआ। आत्म परमात्म बख्श इक अबादत, नाम इक जणाईआ। तेरा धुर दा कलमा होवे सख़ावत, बख्शिश रहमत आप कमाईआ। दीन मज़्ब दी रहे ना कोए अलामत, अवतार पैग़म्बर गुर सारे रहे सुणाईआ। मनुआ मन करे ना कोए बग़ावत, झगड़ा दूई ना कोए वखाईआ। मोह हँकार मेट अलामत, आलीजाह तेरी सरनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया सब नूं लाई कालख, जगत जिज्ञासूआं टिक्के मस्तक विच शाहीआ। मेहरवान महिबूब काया मन्दिर अन्दर बदल दे हालात, तेरे अग्गे अर्ज सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ बख्श दे नाम अगम्मा एक, एकँकार तेरी सरनाईआ। आदि जुगादी सब नूं बख्श दे धुर दी टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई कर बुध बिबेक, दुरमति मैल रहे ना राईआ। सुरती शब्द तैनूं लैण चेत, चेतन तैनूं आप समझाईआ। दरस दखा दे नेतन नेत, निज नैण कर रुशनाईआ। आत्म परमात्म बख्श दे हेत, हितकारी हो के वेख वखाईआ। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अग्न तत ना कोए जलाईआ। धर्म दी धार समझा दे आपणा देस, सचखण्ड निवासी पड़दा दे उठाईआ। तेरी महिमा सदा हमेश, हमसाजण तेरी सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लहिणा देणा कौल इकरार पूर करना कीता नाल दशमेश, दहि दिशा तों बाहर ध्यान लगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण मेरे दीन दयाले ठाकर, गहर गम्भीर तेरी सरनाईआ। दीन दुनी दे डूँघे सागर, बेअन्त बेअन्त बेअन्त तेरी सरनाईआ। भाग लगा के काया माटी गागर, साढे तिन्न हथ्थ पड़दा दे चुकाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर बणे तेरी सौदागर, नाम कलमा एकँकार इक देणा वरताईआ। धुर स्वामी योद्धा सूरबीर निरगुण धार इक बहादर, बलधारी तेरे हथ्थ वड्याईआ। तैनूं किहा करीम कादर, कुदरत दे मालक हो सहाईआ। हउँ तेरे सारे आजिज़, निरमाणता विच सीस झुकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट दे साज़श, शरअ दा झगड़ा रहे ना राईआ। मन कल्पणा रहे ना आतिश, अमृत मेघ देणा बरसाईआ। तेरा खेल तकणा इक्को एक वास्तक, वास्ता तेरे अग्गे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी पारब्रह्म दर ठांडे आस रखाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण मेरे साहिब साहिब सुल्ताना, हरि वडे तेरी वड्याईआ। ओह तक आपणा जहाना, जिस्मानां खोज खुजाईआ। सदी चौधवीं सब दा इक्को इक ब्याना, मिल के सारे रहे दृढ़ाईआ। प्रगट हो श्री भगवाना, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। तेरा सम्बल वसे सोहणा मकाना, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे वधाईआ। लख चुरासी आत्म परमात्म गोपी बण कान्हा, काहन घनईया तेरे दर ठांडे सीस निवाईआ। सच बेनन्ती सच स्वामी कर परवाना, सच सच सीस जगदीश झुकाईआ। एसे खुशी नाल कहीए तूं मालक इक अमामा, अमलां तों रहित नजरी आईआ। तेरा शब्द वज्जे दमामा, दो जहान होवे शनवाईआ। कलि कल्की पहर के आपणा जामा, जानणहार आपणा वेस वटाईआ। निहकलंक बली बलवाना, बलधारी पढ़दा देणा उठाईआ। तेरा हुक्म मन्नण सारे करन परवाना, मन्नण चाँईं चाँईंआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण किरपा कर श्री भगवाना, भगवन दर तेरे मंग मंगाईआ। तूं सचखण्ड निवासी मर्द मर्दाना, सूरबीर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ऐका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, शाह पातशाह सच्चे सुल्ताना, साहिब स्वामी अन्तरजामी अन्तर तेरी आस रखाईआ।

✪ ३१ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ बलवन्त सिंघ दे गृह पिण्ड तलवंडी जलेख़ां ज़िला फ़िरोज़ पुर ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण हरि अन्दर चुक्क के वेख्या पर्दा, पर्दानशीं तेरा नूर नज़र ना आईआ। सच प्यार दा बणया कोए ना बरदा, बदी विच सर्ब कुरलाईआ। दीनां अनाथां वंडे कोए ना दर्दा, दुःख भञ्जण भय ना कोए रखाईआ। चार कुण्ट शरअ दीआं तकीआं करदां, छुरीआं मानस हथ्थ उठाईआ। दरोही तेरे अग्गे साडीआं अर्ज़ां, आरज़ू विच दुहाईआ। कूड़ क्रिया मेट के मरजां, मुरीद वेख ख़लक खुदाईआ। दीन मज़्ब दीआं मेट के दरजां, हद्द हदूद दा डेरा ढाहीआ। पुट्ठीआं सिध्धीआं कर दे नरदां, नर नरायण तेरी सरनाईआ। भेव खुल्ह दे आपणे घर दा, गहर गम्भीर पड़दा आप उठाईआ। तूं योद्धा सूरबीर मर्दाना मर्दा, मदद देणी चाँईं चाँईंआ। तेरा खेल नरायण नर दा, नर हरि तेरी ओट तकाईआ। तूं आपे भन्ने आपे घड़दा, घड़नहार तेरी बेपरवाहीआ। तूं चार कुण्ट वेख लहिंदा चढ़दा, दक्खण पहाड़ अक्ख खुल्हाईआ। कवण तेरा नाम कलमा पढ़दा, कवण बैठा मात भुलाईआ। साडा तेरे चरण कँवलां उत्ते सजदा, सीस जगदीश निवाईआ। तेरे कोल सब दीआं फ़रदां, पर्दा ओहला दे चुकाईआ। कूड़ी क्रिया मेट अंधेर गर्दा, सच चन्द कर रुशनाईआ। क्यों मानस

मानस नाल लड़दा, सांतक सति दे कराईआ। भाण्डा भन्न दे हउमे गढ़ दा, हँकार विकार दे गंवाईआ। त्रैगुण विच होवे कोए ना सड़दा, अग्नी तत देणा बुझाईआ। अमृत दे दे आपणे सरोवर सर दा, मेघ अगम्म बरसाईआ। बिन तेरी किरपा दो जहान मरदा, मुर्दा मुरीद विच ना कोए समाईआ। लेखा मुका दे कलयुग कल दा, कलि कल्की तेरे अग्गे दुहाईआ। लहिणा पूरा कर दे अठसठ जल दा, तीर्थ तट किनारे नाल मिलाईआ। झगड़ा मुका दे अंधेरी डूँग्घी डल दा, अडोल अडुल आपणा हुक्म वरताईआ। लेखा पूरा कर दे राजे बल दा, जो बावन अग्गे गया वास्ता पाईआ। सानूं पता नहीं घड़ी पल दा, पारब्रह्म की तेरी बेपरवाहीआ। लेखा मुका दे दूई द्वैती सल्ल दा, सच आपणा घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण तेरा हुक्म संदेशा अगम्मी, अगम्म तेरी वड्याईआ। साडी अर्ज़ बेनन्ती इक मन्नी, मनशा तेरे विच समाईआ। सब दी आपणे नाल बन्नी कन्नी, कन्ना गोबिन्द वाला लेखे लैणा पाईआ। दीन मज़्ब दी रहिण ना देवीं कंधी, हद्द हदूद देणी चुकाईआ। सब दा वास कराउणा छप्पर छन्नी, शहिनशाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। तूं मालक धुर दा धनी, धनाढ इक अख्वाईआ। मित्र प्यारा भगतां बणना तनी, तन वजूद मिलणा चाँईं चाँईंआ। सृष्टी रहिण ना देवीं अन्नी, नेत्र नैण देणा खुलाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण तेरा नाम संदेशा सुणना कन्नी, धुर फ़रमान देणा समझाईआ। आपणे नाम दी वस्त देवीं नूर इलाही चन्नी, चन्न चन्द विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति सच तेरी सरनाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण आह वेख लै तेरे ख़ादम, ख़िदमत विच सीस निवाईआ। लेखा जाण माई हव्वा ते आदम, निरगुण नूर बेपरवाहीआ। जो संदेशा दे के गया कान्हा कृष्ना यादव, यदी सब दा ध्यान रखाईआ। तूं आदि जुगादी मोहण माधव, पारब्रह्म तेरी वड्याईआ। तूं शहिनशाह पातशाह आलीजाह आज़म, अज़ीम इक अख्वाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया रहिण ना देवीं नाज़म, नाम आपणा इक सुणाईआ। झगड़ा मेट दे दीन दुनी जग माया ममता ज़ालम, ज़ुल्म दा डेरा ढाहीआ। प्रभू असीं चार जुग दे तेरे मुलाज़म, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा बण ज़ामन, ज़ामनी आपणी विच रखाईआ।

३१ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ करतार सिँघ दे गृह पिण्ड शाह वाला

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण सब दा होणा अन्त किनारा, सद रहिण कोए ना पाईआ। कट्ठे रहिणा सचखण्ड सच दवारा, दूजा घर ना कोए बणाईआ। इक्को मन्नणा हरि निरँकारा, नर नरायण सच्चा शहिनशाहीआ। जो सांझा होवे परवरदिगारा, जल्वागर नूर इलाहीआ। ओस दे दर होणी निमस्कारा, सजदा सीस इक झुकाईआ। जिस दा शब्द हुक्म इशारा, पैग़म्बरां रिहा जणाईआ। ओस दा संदेशा इक्को नाअरा, जैकारा अगम्म अथाहीआ। जिस दा खेल होणा दुबारा, गोबिन्द धार धार प्रगटाईआ। नव सत्त पावे सारा, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। हुक्मी हुक्म देवे अपारा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। कलयुग रहिण ना देवे धूंआँधारा, अंध अज्ञान दए गंवाईआ। लख चुरासी पावे सारा, महासाथीं नूर इलाहीआ। दर ओस दे बणना सर्ब भिखारा, दरवेश हो के अलख जगाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले साडा सब दा बणा दे इक्को भाईचारा, दीन मज़्हब दा झगड़ा रहे ना राईआ। दो जहानां तेरा होवे सहारा, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। झगड़ा रहे ना मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मठ गुरदवारा, घर इक्को लैणा प्रगटाईआ। तेरी चरण धूढ़ लावे मस्तक सर्ब संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी सीस निवाईआ। तेरा राह सारे तकदे चव्वीआं अवतारा, अवतर आपणा हुक्म वरताईआ। कलि कल्की सूरबीर बलकारा, बलधारी इक अख्वाईआ। अमाम अमामा बण सिक्दारा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तेरा खेल सदा जुग चारा, जुग चौकड़ी हुक्म वरताईआ। कलयुग अन्तिम दर भिखारी पैग़म्बर गुर अवतारा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा इक रखाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण किसे रहिणा नहीं अन्त, अन्त सर्ब दुहाईआ। इक्को मालक श्री भगवन्त, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस दे लख चुरासी जीव जंत, साध सन्त दए वड्याईआ। जिस दा नाम कलमा मंत, अक्खरां विच सिफ्त सालाहीआ। जिस नूं धुर दा मन्नया कन्त, कन्तूहल इक अख्वाईआ। दर ओस दे करीए मिन्नत, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। साडी रही कोई ना हिम्मत, कलयुग कूड़ ना कोए मिटाईआ। मन मनुआ करे इल्लत, इलम आलमा रिहा भुलाईआ। सब दी ख्वारी होई ज़िल्लत, आबरू सके ना कोए बचाईआ। प्रभू असीं तेरा खाधा नाम दा निमक, निमक हलाल दे बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच आसा इक रखाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण असीं बणीए निमक हलाल, हरि तेरी इक सरनाईआ। दीनां बंधप दीन दयाल, दयानिध दया कमाईआ। जीव जंत तेरे लाल, मानव आपणी गोद टिकाईआ। सब दी सांझी कर दे धर्मसाल, भगत दवारा इक प्रगटाईआ। जिथ्थे त्रैगुण मूल रहे ना जाल, जगत जंजाल देणा तुड़ाईआ। साडी एहो बेनन्ती

एहो सवाल, सवाली हो के रहे सुणाईआ। सदी चौधवीं आपणा जगत जहान संभाल, सम्बल बहि के आपणा हुक्म वरताईआ। साडी लेखे ला ला घाल, पिछली कीती झोली पाईआ। चार जुग दे तेरे नन्हे बाल, छोटे छोटे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडी होणी अन्त ख़लासी, बन्धन नज़र कोए ना आईआ। हुक्म चलणा पुरख अबिनाशी, ना कोई मेटे मेटे मिटाईआ। दो जहान बणना दासी, सेवक हो के सेव कमाईआ। साडी भविक्ख्तां वाली पूरी करनी आसी, आहिस्ता आहिस्ता झोली दए भराईआ। पर्दा लाहे सचखण्ड निवासी, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। धरनी धरत धवल धौल पा के रासी, रसम आपणी दए समझाईआ। दीन मज़्ब दी रहिण ना देवे शाख़ी, शनाख्त आपणी इक दृढ़ाईआ। मंज़ल अगम्मी चढ़ा के घाटी, घाटा सब दा पूर कराईआ। साडी अन्तिम मेट के वाटी, लहिणा सब दी झोली टिकाईआ। दीन मज़्ब कोए रहे ना ज़ात पाती, झगड़ा मानव ना कोए जणाईआ। इक्को धार प्रगटा के साची, सच दा संजम इक समझाईआ। जिस दी कथा कहाणी किसे कोलों जाए ना वाची, वाचक बणे ना कोए विच लोकाईआ। सो खेल करे प्रभ अस्सू दा अन्त अन्त दी राती, रुतड़ी आपणे हुक्म विच महकाईआ।

✪ ३१ अस्सू शहिनशाही सम्मत ६ जरनैल सिँघ दे गृह पिण्ड शाहवाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण महीना अस्सू लँघया, आपणा पन्ध मुकाईआ। जिस विच हुक्म संदेशा देंदा रिहा सूरा सरबंगया, हरि करता धुरदरगाहीआ। चार कुण्ट दहि दिशा दीन मज़्ब वखाउंदा रिहा दंगया, झगड़े विच लोकाईआ। जीवां जंतां सीस वखाया नन्गया, ओढण उपर ना कोए टिकाईआ। मन विकार जणाया गंदिआ, बुध बिबेक ना कोए रखाईआ। आत्म मिले ना किसे अनंदिआ, अनन्द अनन्द विच्चों जणाईआ। भार चुक्के कोई ना कंध्या, ख़ाली हत्थ सर्ब दुहाईआ। नेत्र रोवे जमना सुरस्ती गोदावरी गंगया, गंगोतरी नीर वहाईआ। बौहड़ी तेरे कोलों किसे कुछ ना मंग्गया, भिक्खक हो के झोली डाहीआ। जगत समाज वेख धोती तहिमत तंबिआं, नेत्र नैण उठाईआ। उफ़ कलयुग आया अन्तिम कंढया, कन्ढी बैठे पार ना कोए लँघाईआ। भेव तेरा आया ना तेरे बंदिआ, बन्दगी विच ना कोए समाईआ। साचा सुणे कोई ना छंदिआ, हउमे रोग ना कोए मिटाईआ। झगड़ा मिटे ना जेरज अंडया, उत्भुज सेत्ज लेखा पूर ना कोए कराईआ। सानूं याद आई असां पूरब लहिणा तेरे सचखण्ड दवारे टंगया, डोरी प्रेम नाल लटकाईआ। जिस विच लेखा सब ने अन्तिम जाणा डन्नया, बचया रहिण कोए

ना पाईआ। गोबिन्द ने छाती नाल ला के रखया जो इक्को लाया कन्या, कन्ना आपणे लड़ बंधाईआ। जिस वेले पुरख अकाल दीन मज़्ब दा मेटया बन्नया, हद्द हदूद रहे ना राईआ। सब ने इक परमेश्वर मन्नया, दूसर सीस ना कोए झुकाईआ। जन भगतां आपणी शब्दी धारों जणया, पुरख अकाला जम्मण वाली बणे पिता माईआ। ना हरख़ सोग रहे ग़मया, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। लेखे ला के पवण स्वास दमया, दामनगीर आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण अस्सू गया लँघ, आपणा पन्ध मुकाईआ। असीं सुत्ते रहे सचखण्ड, सेज पलँघ आसण इक वखाईआ। गृह बैठे रहे जिस दा छप्पर छन्न कोए ना कंध, हद्द हदूद ना कोए जणाईआ। जुग चौकड़ी दा तकदे रहे पन्ध, जो मातलोक फेरा आए पाईआ। दीन मज़्ब दी खोजदे रहे हद्द, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। नाम कलमा सुणदे रहे नद, राग अनरागी ध्यान लगाईआ। अन्त साहिब सुल्तान सब नूं ल्या सद्द, सद्दा हुक्म वाला जणाईआ। हुक्मे अन्दर गए बज्झ, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। हो सके ना कोए अलग्ग, वक्खरा राह ना कोए दरसाईआ। सच सरनाई सारे रहे ढट्ठ, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। दीन दयाले सब नूं बख़्श इक इक्ट्ठ, अवतार पैग़म्बर गुर वक्खरा रहिण कोए ना पाईआ। तेरा नाम कलमा लईए रट, रट्टा मुके जगत लोकाईआ। इक्को तीर्थ सोहे तट, किनारा इक्को देणा वखाईआ। इक्को दवारा वसणा हट्ट, वस्त इक अगम्म वरताईआ। तूं सर्ब कला समरथ, गहर गम्भीर इक अख्वाईआ। सिर सब दे रख हथ्थ, मेहर नज़र टिकाईआ। तेरे नाम दा गाईए जस, सिफ्तां विच सालाहीआ। साडी पूरी करनी अस, तृष्ना रहे ना राईआ। तेरे होईए वस, वास्ता तेरे नाल जुड़ाईआ। तूं इक्को करना पक्ख, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। जिधर वेखीए नज़री आए प्रतख, जोती जाते दया कमाईआ। सब दी सांझी करदे अक्ख, नेत्र द्वैत रहिण ना पाईआ। कौल इकरार कर लै पक्क, अग्गे सके ना कोए तुड़ाईआ। पुरख अकाल प्या हस्स, हस्ती आपणी इक समझाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु लओ तक, तकवा इक्को उत्ते रखाईआ। मेरा संदेशा होवे यक, वाहिद करे पढ़ाईआ। पिछला दीन मज़्ब दा लेखा होया फक, मालक रहिण कोए ना पाईआ। उठो छेती करो कट्ठ, आपणी लओ अंगड़ाईआ। आपणे पल्लू कंधे लओ सट्ट, गठड़ी हथ्थ ना कोए उठाईआ। हुक्म देवे साहिब समरथ, हरि करता बेपरवाहीआ। इक्को वार पैणा इक्ट्ठ, भज्जणा वाहो दाहीआ। अज्ज दी रैण विष्न ब्रह्मा शिव कोल लैणी कट, सोहणी खुशी बणाईआ। पहली कत्तक लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जाणा टप, असमानां बाहर बाहर कदम टिकाईआ। साढे नौ रात नूं भगत दवार करना इक्ट्ठ, खुशीआं नाल आपणा संग बणाईआ। पंजां प्यारयां पाणी ग्लास भरना झट, वेला भुल्ल

कोए ना जाईआ। पंजां दरबारीआं संगत दे चारों कुण्ट पैणा नट्ठ, नौ नौ चक्र लैणे लगाईआ। पंज लिखारी रजिसटर रख के सज्जे पट्ट, लिखण चाँईं चाँईंआ। नौ गुरमुख बण के भोले जट्ट, डागां सोटे हथ्थां विच उठाईआ। हथ्थ विच बोतलां फड़ के पींदे होण गट गट, गुर अवतार पैग़म्बरां नूं देण वखाईआ। अगला लेखा फेर देणा दस्स, पहली कत्तक राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे हकीकत हक, हक दा मालक इक अख्वाईआ।

✪ पहली कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ गुरदास सिँघ दे घर पिण्ड शाहवाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

कत्तक कहे मैं सोया जाग्या, यारां मास ना अक्ख खुल्हाईआ। मेरे साहिब मैनूं दिती आज्ञा, हुक्म अगम्म दृढ़ाईआ। शब्दी मारी आवाज्या, आवाज़ इक सुणाईआ। मैं तक के राजन राज्या, शाहो भूप सीस निवाईआ। हस्स के किहा किरपा कीती ग़रीब निवाज्या, मेहर नज़र उठाईआ। जिस आदि तों मेरा साजण साज्या, जुग जुग दिती माण वड्याईआ। मैं खुशीआं विच उठ उठ भाग्या, भज्जया वाहो दाहीआ। मैं पुज्जया हरि भगत दवार दरवाज्या, आपणी खुशी बणाईआ। फिर आपणा आप साध्या, सवाधान हो लई अंगड़ाईआ। फिर इक्को पुरख अकाल अराध्या, दूसर नाम ना कोए ध्याईआ। फेर सुणया धुर दा नादया, वज्जी हक वधाईआ। फिर ढहि के सरन सरनाई लागया, निव निव सीस झुकाईआ। फिर जां तक्कया खुशी दिहाढ़ा आज्या, थित वार सोहणी रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दी करनी कार कमाईआ। कत्तक कहे साल पिच्छों होया आउणा, आ के खुशी मनाईआ। मैं धुर दा गाया गाउणा, सोहँ अगम्म अथाहीआ। फेर खुशी आई अज्ज अवतार पैग़म्बर गुरुआं दर्शन पाउणा, रैण भिन्नड़ी सोभा पाईआ। मैं वी बण के जाणा भगत दवार पराहुणा, खुशी खुशी आपणा पन्ध मुकाईआ। उस दे कदमां सीस झुकाउणा, जो मालक धुरदरगाहीआ। धूढ़ी ख़ाक रमाउणा, टिक्का इक वखाईआ। घर स्वामी साचा पाउणा, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक सुणाईआ। कत्तक कहे मैं आया मार के पन्ध, बणया पाँधी राहीआ। मैं गाया धुर दा छन्द, आत्म परमात्म राग अलाईआ। मैं तक के तारा चन्द, सूर्या अक्ख नाल मटकाईआ। फेर सच दवारा लँघ, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। फेर बैठ हेठ पलँघ, आपणा डेरा ल्या जमाईआ। मैं मंगी अगम्मी मंग, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। जिस बिध छब्बी पोह नूं होणा संग, सगला संग बंधाईआ। चौदां गुरमुखां उडाउणे पतंग, डोरी लाल रंग बन्नृ वखाईआ।

चौदां टप्पणा इक टंग, सोहणा आपणा ताल सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे सूरा सरबंग, हरि सूरबीर वडी वड्याईआ।

✪ पहली कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ करनैल सिँघ दे गृह पिण्ड शाहवाला ज़िला फिरोज़ पुर ✪

कत्तक कहे मैं सच दवारे गया पुज्ज, पूजन पूज्या बेपरवाहीआ। मेरी तृष्ना गई बुझ, तृखा रही ना राईआ। मैं तक्कया चौथा जुग, अन्तिम आपणा ध्यान लगाईआ। मैनूं रही कोई ना सुध, बेसुध हो के कीती हाल दुहाईआ। कूक किहा उठो वेखो जिस राम कृष्न कोलों कराया युद्ध, त्रेता द्वापर खेल खिलाईआ। ओह सब दी बदलण लग्गा बुध, बुध बिबेक ना कोए रखाईआ। शाह सवारा रिहा कुद्द, शाह सुल्ताना बल प्रगटाईआ। जिस ने दीन मज़्हब दे बन्न्हे मुढ, अन्तिम ओहो जड़ उखड़ाईआ। मैं सब नूं हलूण के मारी हुज्ज, सहिज नाल उठाईआ। वेखो किसे दा वसया नहीं रहिणा झुग, झुग्गे फोले थांउं थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। कत्तक कहे मैं ओस दवारे पहुंचा, आपणा पन्ध मुकाईआ। जिथ्थे जाए कोए ना औंता, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। फेर वेख्या गोबिन्द वाला ढौंका, ढईआ बैठा मुख भवाईआ। फेर वेख्या ब्रह्मे वाला चौंका, साफ़ सुथरा पोच पुचाईआ। फेर वेख्या धर्म दी धार वाला औंटा, जो ओड़क सब दा दए कराईआ। लेख पढ़या जो गोबिन्द पुरख अकाल दस्सया पौंटा, पटने वाला भेव रिहा ना राईआ। फेर वेख्या नाल शौंका, ज़िमीं असमानां अक्ख खुल्हाईआ। फेर वेख्या झाक्या तबकां तौंका, चौदस चौदां वेख वखाईआ। फेर वेख्या की हुण प्रभ ने आपणे हथ्थ रखया मौका, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। की खेल होणा हरि शाहो का, हरि शहिनशाह आपणी कल धराईआ। की लहिणा बेपरवाहो का, जो बेपरवाही विच समाईआ। फेर जैकारा सुणया वाहो वाहो का, अवतार पैग़म्बर गुर रहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे आपणे दाओ का, दाअवेदार रहिण कोए ना पाईआ।

✪ पहली कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

अवतार पैग़म्बर गुर हाज़र गए हो, होका हक सुणाईआ। प्रभू तुध बिन लेखा जाणे ना को, चार जुग समझ किसे ना आईआ। जो दीन मज़्ब दा बीज आए बो, धरनी वेख चाँईं चाँईआ। नौ खण्ड पृथ्मी रही कोई ना लो, नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। भेव जाणे ना कोई सो, हँ पड़दा ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार भुगताईआ। नानक कहे मेरे साहिब अहिबाबी, मित्रा दयां जणाईआ। गोबिन्द दे सिख बण गए शराबी, बोतलां हथ्थां विच उठाईआ। सतिनाम जपण वाले बण गए कबाबी, मास रसना मुख लगाईआ। प्रभू आपणा खेल तक लै आदी, आदि दे मालक दयां दृढ़ाईआ। आत्मा गई किसे ना साधी, साधना विच ना कोए वड्याईआ। धर्म दा दिसे कोई ना गाडी, रहिबर रूप ना कोए जणाईआ। बौहड़ी साडे हुन्दयां मन दी कूड़ी पै गई वादी, वायदा कौल पूर ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी सरनाईआ। नानक कहे गोबिन्द उठ मार ला झाकी, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। चारों कुण्ट दिसे कोई ना साथी, सगला संग ना कोए निभाईआ। नानक कहे मेरी बाणी दा रिहा कोई ना पाठी, रसना गुण ना कोए चतुराईआ। मंज़ल चढ़े कोई ना घाटी, पंज दरबारी देण गवाहीआ। जिन्नां नौ खण्ड पृथ्मी प्रभ दे हुक्म नाल नापी, नौ नौं चक्र आए लगाईआ। जिधर वेख्या उधर दिसदे पापी, पतित पुनीत ना कोए जणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो कढ लओ कापी, कापी दी नकल मैनूं दयो वखाईआ। क्यों नहीं तुहाडे तुहाडी मन्नदे आखी, की अक्खरां दी करन पढ़ाईआ। क्यों ना मेट सके गुस्ताख़ी, गुस्सा गिला जगत तजाईआ। क्यों कूड़ दी वध गई हाटी, हटवाणिओ तुहाडा नाम ना कोए विकाईआ। समें नाल पहली कत्तक दी तुहानूं मिल गई राती, कारतक आपणा भेव दयो खुल्हाईआ। ओह जिस नूं दस्स आए एह काया वंग काची, क्यों नहीं कच्ची भन्न वखाईआ। जेहड़ी तुहाडे हुन्दयां कल्पणा विच नाची, माया ममता नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। पैग़म्बर कहिण साडे अमाम, सजदा सीस झुकाईआ। असीं तकी शरअ तमाम, तमा विच लोकाईआ। साडा कायम ना रिहा निज़ाम, नौबत हक ना कोए वजाईआ। साडे कलमे होए बदनाम, बदी दा डेरा कोए ना ढाहीआ। जिधर तकी अंधेरी शाम, चौदस चन्द ना कोए चमकाईआ। काअब्यों होए हराम, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। किरपा कर मेरे मेहरवान, महिबूब तेरी सरनाईआ। भुन्न कबाब सारे खाण, गऊआं खल्ल लुहाईआ। ओह वेख दूरों तके काहन, बंसरी बुल्लां नाल छुहाईआ। भज्जा फिरदा राम, बनां विच कुरलाईआ। की खेल

तेरा भगवान, सब दा लेखा रिहा मुकाईआ। सीता सुरती होई ना कोए परवान, राधा रंग ना कोए रंगाईआ। कलमा करे ना कोए कल्याण, कायनात रही कुरलाईआ। गुरु गुरदेव मन्त्र फुरे ना कोए तेरा सतिनाम, सति सति विच ना कोए समाईआ। गोबिन्द दा अमृत रस पीए कोए ना जाम, मदि प्याले बोतलां वाले सारे हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण साडी पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। अज्ज आए तेरे दरबार, पंज दरबारी देण गवाहीआ। पंज लिखारी लेखा लिखण अपार, अपरम्पर तेरी बेपरवाहीआ। पंज प्यारे अमृत वखावण धार, जल ग्लासां विच टिकाईआ। बौहड़ी असीं फिर के आए कुण्ट चार, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। साडा दिसया कोए ना यार, यराना हक ना कोए जणाईआ। चारों कुण्ट धूंआँधार, निरगुण नूर ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण जगत तेरा पीवे मदि, मधुर धुन सुणन कोए ना पाईआ। असीं वेखीं जगत जग दी हद्द, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। हँस बुद्धी होई कग्ग, काग हँस ना रूप वटाईआ। सति धर्म नूं सारे गए छड, सच विच ना कोए समाईआ। प्रभू साडे साडे नालों हो गए अड्ड, नाता तोड़ ना कोए निभाईआ। असीं तेरे दवारे आए भज्ज, भज्जे चाँईं चाईआ। हुण रहिणा नहीं मातलोक दे जग, जगजीवण दाते तेरे अग्गे वास्ता पाईआ। क्यों तेरे हुक्म दी नव सत्त लग्गणी अग्ग, जिस नूं सके ना कोए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण तेरे आ गए कोल सिंघासण, सिँघ तेरी सरनाईआ। तूं साहिब इक अबिनाशण, वड दाता बेपरवाहीआ। इक्को बचन आए आखण, कहि के दईए सुणाईआ। साडा लेखा मुका दे अज्ज दी रातन, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। पड़दा ओहला रहे ना बातन, भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। सानूं तेरा मज़मून फेर पए ना वाचण, पढ़न दी लोड़ रहे ना राईआ। तूं आदि जगादी धुर दा बापण, पिता पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। सब दा पूरा करके भविक्ख्त वाकण, पेशीनगोईआं तेरी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बर आए धरनी धरत, धवल वज्जे वधाईआ। आपणा घर वेखो परत, पतिपरमेश्वर रिहा जणाईआ। कौल इकरार तक्को शर्त, जो शरअ रूप वटाईआ। निगह मारो उपर अर्श, अर्शी प्रीतम की समझाईआ। सारे इक दा करो दरस, दरस दीद वड्याईआ। मज़्हब दी रखो कोए ना हरस, हवस देणी गंवाईआ। मेहरवान प्रभ करे तरस, रहमत सच कमाईआ। सम्मत छे शहिनशाही बरस, पहली कत्तक थित वार वड्याईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण साडा रिहा कोए ना चारा, चौथे जुग जुग दुहाईआ। चारों कुण्ट धुआँधारा, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। प्रेम रिहा ना विच संसारा, मुहब्बत विच ना कोए समाईआ। सृष्टी दृष्टी रोवे ज़ारो ज़ारा, बिन नेत्र नैणा नीर वहाईआ। धर्म दा रिहा ना कोए दवारा, द्वारका वासी रिहा समझाईआ। किरपा कर आप निरँकारा, निरवैर तेरी वड्याईआ। असीं कहिंदे आए कलयुग अन्तिम कलि कल्की होए अवतारा, निहकलंक बेपरवाहीआ। अमाम अमामा वड सिक्दारा, शाहो भूप नूर अलाहीआ। जिस दा जगत जहान तों वक्खरा होए दरबारा, दर दवार सोभा पाईआ। सो लहिणा देणा पूरा करे कौल इकरारा, वायदा पिछला नाल मिलाईआ। तेरे दर आ के दरवेश हो के करीए निमस्कारा, निउं निउं सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक वरताईआ। कत्तक कहे मेरा आ गया वक्त, वास्तक दयां जणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु तुहाडा सारा जगत, दीन दुनी वेखो चाँईं चाँईंआ। बौहड़ी कोटां विचों प्रभ दे आह थोड़े जिहे भगत, जिन्हां नूं मिल के मैनूं वज्जे वधाईआ। जिस दवारे तुसीं सारे आए उपर धरत, धरनी धरत धवल धौल आपणा डेरा लाईआ। आपणा लहिणा पूरा करो कर्ज, मकरूज दए चुकाईआ। वेखो खेल साहिब असचरज, जो अचरज लीला रिहा वरताईआ। ग़रीब निमाणयां वंडे दर्द, दुखियां होए सहाईआ। तुहाडे कोलों खोह के शरअ वाली करद, कातिल मक्तूल दा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। कत्तक कहे अवतार पैग़म्बर गुरु जो सच दवारे रहै, इक्को घर डेरा लाईआ। अज्ज भगत दवार तक्को जिथ्थे पंजां लिखारीआं मस्तक उत्ते लिख्या सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै, तुहानूं सब नूं रहे वखाईआ। जिन्हां दी कलम ने कलयुग अन्तिम करना लै, लोकमात रहिण ना पाईआ। पंजां दरबारीआं दा सब नूं होणा भय, जो चारों कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। पंजां प्यारयां अमृत धार वहाउणी नै, जल धारा नाल रलाईआ। जिस नूं उडीकदयां जुग चौकड़ी लँघ गए कै, गिणती गणित ना कोए गणाईआ। जो आदि जुगादी इक्को है, हरि करता नूर अलाहीआ। ओह झगड़ा मेटे हउमे हंगता मैं, हँ ब्रह्म इक समझाईआ। भाग लगा के धर्म दवार गृह, मन्दिर इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच हुक्म इक वरताईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण असीं वेखे डांगां सोटे, गुरमुख हथ्थ उठाईआ। सारयां किहा गोबिन्दा जिन्हां पिच्छे वार के आयों जिगर दे टोटे, ओह तेरा प्रेम गए भुलाईआ। औह वेख बोतलां लै के खलोते, मध गट गट लँघाईआ। जिस तरह पिच्छे गुजरी ने वारे पोते, आपणा आप मिटाईआ। ओह कलयुग लहिर विच

मारदे ग़ोते, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। पैग़म्बर कहिण बौहड़ी साडे नाल वी हो गए धोखे, उम्मत संग ना कोए जणाईआ। अवतार कहिण मंज़ल चढ़े ना कोए अगम्मे कोठे, पाँधी पन्ध ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा हुक्म वरताईआ। पुरख अकाल कहे अवतार पैग़म्बर गुर तक लओ आपणे प्यारे, प्रेमी मैनूं दयो वखाईआ। ओनूं वल्ल करो इशारे, जो तुहाडे विच समाईआ। जेहड़े मेरे पुज्जे किनारे, मैनूं दयो दृढ़ाईआ। जे तुहाडे हुन्दयां सारे हारे, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। फेर तुहाडे काहदे दुलारे, पिता पूत की चतुराईआ। जिनूं पिच्छे आपणे वसदे घर उजाड़े, खेड़ा नज़र ना कोए आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभू लोकमात सब दे हथ्थ मध प्याला, जगत पी पी खुशी बणाईआ। सब नूं भुल्ल गया दीन दयाला, दयानिध तेरी सार किसे ना आईआ। चार कुण्ट होया बेहाला, हालत विगड़ी जगत लोकाईआ। धर्म रिहा ना किसे मन्दिर मस्जिद शिवदुआला, मठ सारे रहे कुरलाईआ। कलयुग अन्तिम वक्त ना किसे संभाला, सम्बल बैठा नज़र किसे ना आईआ। सदी चौधवीं बणे ना कोए दलाला, दिलबर यार ना कोए मिलाईआ। रसना खाए ना कोए हक हलाला, बदी विच भज्जण वाहो दाहीआ। वास्ता पावे तेरा गोबिन्द इक लाला, लालन तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग अन्तिम सब कुछ कीता तेरे हवाला, आपणे ख़ाली हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच हुक्म इक वरताईआ। कत्तक कहे अवतार पैग़म्बर गुरु आए, आए भगत दवार। साचा लेखा दयो लिखाए, लिखण गुरमुख पंज लिखार। प्रभू दीन मज़ूब तों पल्लू छुडाए, नाता रिहा ना विच संसार। सब तेरी झोली पाए, वायदा करीए कौल इकरार। दर ठांडे सीस निवाए, निव निव कर निमस्कार। साडा झगड़ा रिहा ना राए, हउमे विच्चों मार। तेरा इक्को कलमा रहे गाए, दूजा अक्खर ना पावे सार। कलयुग कूड़ी क्रिया दे मिटाए, मेटणहार एकँकार। सतिजुग साचा दे चलाए, चार कुण्ट होए जै जैकार। गुर अवतार पैग़म्बरां घाल पा थांए, पूरब लहिणा लेख विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर हुक्म इक सुणाए, अन्तिम सब नूं आई हार। अवतार पैग़म्बर गुरु कहिण साडा कौल इकरारी, वायदा सच कराईआ। उच्ची बांह कढ के लिखो पंज लिखारी, दो जहान दयो जणाईआ। पिछली रही ना किसे सिक्दारी, रईयत हक ना कोए बणाईआ। अग्गे हुक्म वरतणा इक निरँकारी, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। शरअ दी चले ना कोए कटारी, कटाक्ष कूड़ ना कोए लगाईआ। उठ के वेखो पंजे दरबारी, नेत्र चार कुण्ट फिराईआ। पंज प्यारे अमृत इक इक बूँद छिड़को धारी, धरनी उत्ते सुटाईआ।

कागद कलम शाही लिखे आपणी वारी, वारता दए बणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर इक नाम दे होए वपारी, वणज इक्को घर वखाईआ। इक दर दवार लग्गी यारी, याराना इक निभाईआ। इक्को नाम होए जैकारी, जै जैकार सर्ब सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच हुक्म इक सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण साडे हल्फ़ीआ हक ब्यान, बिन रसना जेहवा लिखाईआ। छड्डुया जगत जहान, नाता मातलोक तुड़ाईआ। हुक्म मन्नया श्री भगवान, जो सिर सिर रिज़क सबाईआ। इक्को वार चरण कँवल कर प्रणाम, सजदा सीस जगदीश झुकाईआ। तूं धुर दा अगम्म अमाम, दाता वड वड्याईआ। कल्की नौजवान, नूर नुराना नूर अलाहीआ। निहकलंक बली बलवान, बलधारी इक हो आईआ। सम्बल वसे धाम, निहचल डेरा लाईआ। झगड़ा मुकाउणा काया माटी चाम, चम्म दृष्टी जगत बदलाईआ। सब दा सांझा बणना राम, काहन इक्को नज़री आईआ। नूर नुराना हो अमाम, अवाम दा पड़दा देणा चुकाईआ। तेरा खेल दो जहान, तक्कीए चाँईं चाँईंआ। पहली कत्तक सब नूं करना परवान, परम पुरख आपणी दया कमाईआ। तूं आदि जुगादी मेहरवान, मेहरवान तेरी सरनाईआ। सांझा बणा दे इक विधान, जिस दी तरमीम जगत ना कोए कराईआ। पड़दा लाह दे लामुकाम, मुकामे हक नूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू सब दा सांझा कर यकीन, यकसां दे वखाईआ। धुर दी धार दे तालीम, तुलबे सारे आप पढ़ाईआ। भेव खोलू आदि कदीम, कुदरत दे मालक धुरदरगाहीआ। झेड़ा रहे ना नर मदीन, मुद्दा आत्म दे समझाईआ। मज़्ब रहे ना कोए प्राचीन, पुरातन लेखा देणा मुकाईआ। सतिजुग मार्ग लग्गे तेरा नवीन, नव सत्त वेख वखाईआ। शरअ विच रहे ना कोए ग़मगीन, ग़मख़ार देणी वड्याईआ। असीं सारे चाहुंदे कर दे तरमीम, आपणा हुक्म वरताईआ। लेखा मुका दे सब दा उत्ते ज़मीन, माटी ख़ाक रही कुरलाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर तैनूं लए चीन, दूसर राग ना कोए अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। पुरख अकाल कहे मेरे चार जुग दे दूले जगत दुलारे, अवतार पैग़म्बर गुर दयां दृढ़ाईआ। आपणी करनी करतब वेखो सारे, सारी सृष्टी खोज खुजाईआ। क्यों तुसां वक्खरे वक्खरे बणाए भाई चारे, तत्तां वंड वंडाईआ। जिस ने अग्नी लाई बहत्तर नाड़े, सांतक सति ना कोए कराईआ। दीन मज़्ब बणा अखाड़े, मानव मानव दिते टकराईआ। कोटन वसदे घर उजाड़े, तुहाडी शरअ दी पई दुहाईआ। हुण सारे पहुंचे अन्त किनारे, मंजल पन्ध मुकाईआ। पिछले लहिणे लेखे छडो सारे, पूरब याद ना कोए कराईआ। मिल के बोलो इक नाम जैकारे, जै जैकार सुणाईआ। सब दे बोल लिखे जाण अपर

अपारे, अपरम्पर स्वामी रिहा सुणाईआ। तुसीं जुग चौकड़ी दे मेरे दुलारे, दूले धुर दे सोभा पाईआ। एसे कारन लोकमात सद्दे दरबारे, दर दरबारी ल्या मंगाईआ। वाहिदे करो अगम्म इकरारे, कौल सके ना कोए तुड़ाईआ। सारे कहो धुर दे मालक पुरख अकाल हो ज़ाहरे, ज़ाहर ज़हूर कर रुशनाईआ। जेहड़े साडे भविक्ख्तां दे इशारे, सो पूरे दे वखाईआ। असीं दीन मज़्हब प्रभ तेरी झोली डारे, तेरे कदमां विच सुटाईआ। अन्तिम सब दे इक्को हाढ़े, हौका लै के दईए जणाईआ। कलयुग अन्तिम जड़ दे उखाड़े, रहिण कोए ना पाईआ। सतिजुग साचा कर मात उज्यारे, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। तेरे चरण कँवलां पहली कत्तक करीए निमस्कारे, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जन भगतां चाढ़ नाम दी इक खुमारे, मदि प्याले हथ्थों देण सुटाईआ। काया चोली रंग चाढ़ दे गाढ़े, उतर कदे ना जाईआ। किरपा कर आप निरँकारे, निरवैर तेरी सरनाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु आदि जुगादि तेरे सहारे, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे आदि अन्त जुग चारे, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग कलि कल्की आपणा हुक्म वरताईआ।

८२६
२२

✪ २ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ गुरदयाल सिँघ दे घर पिण्ड मूधल ज़िला अमृतसर ✪

माया ममता पैसा लोड़े सर्ब जग, मन ममता चार कुण्ट दहि दिशा हल्काईआ। तृखा तृष्ना घर घर लग्गी अग्ग, साढे तिन्न हथ्थ अन्दर ना कोए बुझाईआ। दिवस रैण दीन दुनी रही भज्ज, भजन बन्दगी गई तजाईआ। ठग्ग चोर रूप बण के रहे लभ्भ, नकब घरां विच लगाईआ। उच्ची कूक रहे सद्द, लच्छमी मिले चाँईं चाँईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां दी सिख्या कीती रद्द, हुक्म सच ना कोए मनाईआ। लोभ विकारा गया वध, रसना जेहवा नाल मिलाईआ। कलयुग आपणा कूड़ निशाना बैठा गड्ड, गाईड हो के सब नूं रिहा भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। कलयुग माया होई प्रधान, नव सत्त खुशी बणाईआ। जिस नूं लभ्भदे सर्ब इन्सान, भज्जण वाहो दाहीआ। अन्तर अन्तर सारे गाण, प्रेम प्रीती विच जणाईआ। जे किरपा करे श्री भगवान, खाली भाण्डे दए भराईआ। असीं बण जाईए राजे शाह सुल्तान, हुक्म मातलोक वखाईआ। असीं बणीए शाह धनाढ विच जहान, हउमे नाल रलाईआ। आत्म अन्तर तृष्ना तृखा सर्ब वधाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मार्ग इक लगाईआ। रुपया पैसा कहे एह कलयुग चाढ़्या रंग, रंगत अगम्म रंगाईआ। अन्दरों सारे कीते नंग, शाह कंगाल

रहे कुरलाईआ। जिस माया पिच्छे करदे जंग, पिता पूत सीस कटाईआ। जिस कारन कूड़ी क्रिया खांदे गंद, ममता मोह विच फसाईआ। जे एह माया प्यारी हुन्दी गोबिन्द क्यों छडदा पुरी अनन्द, सरसे विच डुबाईआ। एह मनमुखां पले बन्न्हणी गंढ, गुरमुख माया लोभ ना कोए हल्काईआ। जिस माया कारन शाह सुल्तान चमकाउंदे चण्ड प्रचण्ड, अग्नी तत जलाईआ। एह माया सब नूं करे खण्ड खण्ड, जिस लालच विच भज्जी फिरे लोकाईआ। जिस माया नाल स्वाद पूरा कर सकी ना रसना बत्ती दन्द, जेहवा गुण ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। माया कारन सृष्टी भज्जी दौड़ी, दिवस रैण वाहो दाहीआ। एहदी मंज़ल अन्त मिली किसे ना पौड़ी, कारू रो के दए दुहाईआ। एहदा विस्थार ना कोए दस्से किन्नी लम्मी चौड़ी, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। जिस माया कीता प्यार ओह अन्त कर के गया बौहड़ी बौहड़ी, हाए उफ़ कर कुरलाईआ। माया कारन कौरवां पांडवां कटी गई डोरी, दुर्योधन संग ना कोए रखाईआ। माया कारन सीता रावण कीती चोरी, ठग्गी जगत विच कमाईआ। माया कारन गंगू ने विछोड़ दिती जोड़ी, नन्हे नीहां हेठ दबाईआ। माया कारन औरंगज़ेब ने गोबिन्द नाल रखी खोरी, खार विच कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक जणाईआ। माया ममता वध्या लालच, तृष्ना जगत हल्काईआ। गुरमुख मिले कोए ना ख़ालस, जो ख़ालस ख़ालसा गोबिन्द गया समझाईआ। सब दे अन्दर कूड़ क्रिया दी लानत, तृष्ना पूर ना कोए कराईआ। पैस्सयां वाले दी दए ना कोए ज़मानत, नानक लालो दे घर भोग लगा के गया समझाईआ। माया धारीआं कोल कृष्न गया ना शामत, बिदर अलूणे साग रंग ना कोए रंगाईआ। माया कारन कूड़ क्रिया सदा अलामत, लोभ लोभ नाल टकराईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत कदे ना होण अणजाणत, कबीर जुलाहा दए गवाहीआ। सदना सैण रविदास कहे जिस रहिणा सही सलामत, ओह माया जगत दए तजाईआ। बेशक संसारी दुनिया वास्ते माया बड़ी न्यामत, बिना माया तों जगत दा काज ना कोए रचाईआ। साची माया प्रभ दी इक इबादत, जो अदम तशदद् डेरा ढाहीआ। जिस माया दी बणा सके ना कोए बनावट, अक्खरां हरफ़ां हरूफ़ां ना कोए छपवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता अगम्म अथाहीआ। माया विच सृष्ट सबाई मरदी, मर मर दए दुहाईआ। एह खेल कलू कल कल दी, कल काती कार कमाईआ। माया साथण पंज विकारे दल दी, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाल रखाईआ। उहदी वासना घड़ी पल दी, स्थिर रहिण कदे ना पाईआ। एह माया दी धार परछावें वांगू ढलदी, साया सदा ना कोए रखाईआ। जिन्हां दे अन्दर माया कूड़ी अग्नी बलदी, अन्त उन्हां नूं दए जलाईआ। एह

सब नूं आई छलदी, जुग जुग वेस वटाईआ। किसे नूं ख़बर नहीं घड़ी पल दी, जो माया पिच्छे प्रभ नूं जाण भुलाईआ। एह कूड़ कुड़यार सूमां दा दर मलदी, आपणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित खेल कराए सदा अछल अछल दी, वल छल धारी माया ममता मन वासना नाल मिलाईआ।

✪ २ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ वचित्र सिँघ दे घर मूधल ज़िला अमृतसर ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण पुरख अकाल अकाल मूर्ती, अकल कल धारी तेरे हथ्थ वड्याईआ। निरगुण सरगुण कलयुग जीवां बदल दे सुरती, सुरत शब्द आपणा रंग रंगाईआ। नाद आवाज़ सुणा अगम्मी धुर दी, धुन आत्मक राग दृढ़ाईआ। किरपा कर दे पूरे पूरे सतिगुर दी, साहिब सुल्तान तेरी सरनाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दरों जांदी रुढ़दी, सदी चौधवीं सके ना कोए बचाईआ। तेरे नाल प्रीती दिसे ना किसे जुड़दी, आत्म परमात्म संग ना कोए निभाईआ। गोबिन्द दी आसा पूरी कर दे अनन्द पुर दी, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। खेल दस्सदे आपणी अनमुल्ल दी, कीमत करते ना कोए लगाईआ। की होया जे माया अन्दर दीन दुनी जाए भुल्लदी, अभुल्ल मार्ग इक्को देणा वखाईआ। एह खेल तेरी आपणी कुल दी, कुल मालक होणा सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण दीन दुनी होई मुरदी, मुर्दा मुरीद ना कोए समाईआ। मुर्शद खेल दस्स दे अगम्मी धुर दी, पारब्रह्म प्रभ पर्दा आपणा आप उठाईआ। किरन बख्श दे आपणे नूर दी, नूर नुराना कर रुशनाईआ। खेल तक्कीए साख्यात हाज़र हज़ूर दी, हज़रत निउँ निउँ लागण पाईआ। लेखे ला के आसा मनसूर दी, मंज़ल अहिनलहक जणाईआ। की होया जे दुनिया कल्पणा हो गई कूड़ दी, माया ममता विच हल्काईआ। पुरख अकाले दीन दयाले बख्शिश कर दे आपणी चरण धूढ़ दी, मस्तक टिक्के ख़ाक रमाईआ। तेरी खेल तक्कीए सर्ब कला भरपूर दी, पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। कलयुग मज़दूरी करदे जगत मज़दूर दी, वस्त अगम्म झोली दे टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ झुकीए तेरे कदमां, कदीम दे मालक सीस निवाईआ। कूड़ी क्रिया मेट दे सदमा, हउमे रोग रहे ना राईआ। संख्या वेख लै संखां पदमां, कोटन कोटि मानस सोभा पाईआ। बौहड़ी तेरा भगत कोए ना जन्मा, जम्मण वाली दिसे कोए ना माईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मिटा दे कर्मा, निहकलंक आपणा रंग

रंगाईआ। सब दे अन्दरों भाण्डा भरम भन्ना दे भरमा, भरम विच आपणी बूझ बुझाईआ। इक्को सीस झुका पुरख अकाले तेरे कदमां, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। झगड़ा मिटा दे पंज तत बदना, काया माटी करे ना कोए लड़ाईआ। तूं आदि जुगादी लख चुरासी जीव जंत साध सन्त सच सज्जणा, सगला संग आप निभाईआ। बेशक जो घड़या सो भज्जणा, घणन भन्नणहार आप अख्वाईआ। पुरख अकाले आपणा करा दे मजणा, जगत सरोवर अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती लोड़ रहे ना राईआ। सच सरनाई तेरे ढठ्ठणा, ढहि ढहि सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब नूं इक दवारे सद्दणा, दूजा गृह नज़र कोए ना आईआ।

✪ २ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ पिशौरा सिँघ दे घर पिण्ड वेरका ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर शब्द कहे मैं बणया धुर दा शाह, शहिनशाह दिती वड्याईआ। दो जहानां एका हुक्म देणा सुणा, अनसुणत रहिण कोए ना पाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु बणाउणे गवाह, शहादत कलमे नाम वाली भुगताईआ। सब दा पैंडा देणा मुका, मुकम्मल आपणी कार भुगताईआ। सब दी कबूल करनी दुआ, जो सजदयां विच सीस निवाईआ। मैनूं सब ने कहिणा वाह वाह, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। कलयुग कूड़ा झगड़ा देणा गुआ, लोकमात रहे ना राईआ। सतिजुग सच चलाउणा राह, रहिबर हो के देणा वखाईआ। जिस दा इक्को कायदा कानून होणा लाअ, दूसर शरअ ना कोए बणाईआ। दीन मज़्हब दी रहे ना कोए वबा, कूड़ी क्रिया देणी गंवाईआ। सति धर्म दी पैदा कर फ़िज़ा, फ़ैसला इक्को देणा जणाईआ। छुट्टी देणी गुर अवतार पैग़म्बरां अज़ीज़ा, इज़ाज़ आपणे लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। शब्द गुरु कहे मेरा होणा इक हकाम, हुक्म इक जणाईआ। मन्नणा सर्ब तमाम, सिर सके ना कोए उठाईआ। पैग़म्बर गुर अवतार शरअ दे जो गुलाम, ज़ंजीर सब दे दिते कटाईआ। एका दस्स के धुर दा नाम, कलमा हक देणा पढ़ाईआ। भेव खुल्हा के अगम्म अमाम, अमन दा डंका देणा वजाईआ। हजामत वाला रहे ना हजाम, सीस जगत ना कोए मुनाईआ। गोपीआं वाला दिसे कोए ना काहन, काहन कान्हा इक्को बेपरवाहीआ। बनबासी दिसे ना कोए राम, धुर दा राम इक्को हुक्म वरताईआ। जो देवणहारा सतिनाम, सो सति सति आपणा आप समझाईआ। जिस नूं सारे करदे प्रणाम, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सो खेल खेले विच जहान, जोती जाता डगमगाईआ। कलयुग

कूड़ी क्रिया मेट निशान, सतिजुग साचा राह प्रगटाईआ। प्रगट हो के विच मैदान, योधा सूरबीर अख्वाईआ। जिस नूं झुक झुक सारे करन सलाम, सजदयां विच सजदा इक बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा मार्ग दस्से इक अवाम, आम दा लेखा दए चुकाईआ।

२ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ हरनाम कौर दे घर पिण्ड वेरका ज़िला अमृतसर

सतिगुर शब्द कहे मेरा हुक्म होणा अनादी, नाद धुर दा दयां सुणाईआ। संदेशा देवां ब्रह्म ब्रह्मादी, ब्रह्मांड आप जणाईआ। जो लोआं पुरीआं जाए साधी, खण्डां ध्यान लगाईआ। दीन दुनी दी तके आबादी, चुरासी पड़दा आप चुकाईआ। जिस दी धार होवे जागी, आलस निंद्रा ना कोए रखाईआ। घर घर दा बण के रागी, राग अगम्मा दए दृढ़ाईआ। जगत दा बण के ढाडी, ढंडोरा देवे थांउँ थाँईंआ। उठो वेखो खेल पुरख आदी, आदि पुरख की खेल खिलाईआ। हुण जगत दलील काहदी, काग़ज़ कलम चले ना कोए चतुराईआ। निरगुण धार आया रबाबी, सितार तन दए वजाईआ। आपणी नीती रीती दस्स के सादी, साधना सब नूं दए समझाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया सारे छड दयो वादी, वायदा प्रभ दे नाल कराईआ। पिछला राह रहिणा नहीं गाडी, मार्ग अग्गे इक रखाईआ। दीन मज़्हब दी उबले कोए ना हाण्डी, अग्नी अग्ग ना कोए जलाईआ। झगड़ा मेटे कर्म कांडी, कांड आपणा इक समझाईआ। चार वरन अठारां बरन बणा के गवांढी, नाता नाते नाल रखाईआ। सूर गाँ मानस ज़ाती कोए ना होवे खांदी, ख़ालस आपणा रंग चढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला आत्म होवे गांदी, परमात्म राह तकाईआ। मनसा रहे ना थक्की मांदी, हौसला हिम्मत ना कोए ढाहीआ। सब नूं कहिणा पए पुरख अकाल तों बिना पति जांदी, पतिपरमेश्वर सब दा पिता माईआ। जिस दी दुनिया होणी बांदी, बन्धन शरअ दए तुड़ाईआ। चरण धूढ़ सृष्टी दृष्टी होणी नहांदी, सरोवर इक्को इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण सरगुण बण के पाँधी, पन्ध सब दा पूर कराईआ।

✪ २ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ सुरजीत सिँघ दे घर पिण्ड वेरका ज़िला अमृतसर ✪

सच होवे पैग़ाम, धुर शब्द शब्द जणाईआ। अगम्म होवे कलाम, कलमा कायनात समझाईआ। बेअन्त होवे नाम, निधाना इक प्रगटाईआ। चुरासी पीवे जाम, अमृत इक चखाईआ। जिस नाल झगड़ा मिटे तमाम, शरअ रहे ना राईआ। मार्ग मिले आसान, असल दए समझाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक रूप समान, जोती जोत जोत रुशनाईआ। आदि जुगादी खेल महान, जुग चौकड़ी रंग रंगाईआ। भेव अभेदा खोल्हे आप भगवान, आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। शब्द कहे शब्द होणा गुरदेवा, देव आत्मा दए पढ़ाईआ। सोहँ होणा मेवा, अगम्म रस चखाईआ। मस्तक लग्गणा थेवा, चरण धूढ़ वड्याईआ। सब दी रसना जपणा जेहवा, तूं मेरा मैं तेरा राग अल्हाईआ। किरपा करे अलख अभेवा, अगोचर दया कमाईआ। धाम वक्खरा इक निहकेवा, निहचल दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा पड़दा लाहीआ। सतिगुर शब्द कहे दस्सणा धुर धाम, धर्म दवार जणाईआ। जिथ्थे वसे मेहरवान, महिबूब नूर अलाहीआ। जिथ्थे विष्न ब्रह्मा मिलदा दान, झोलीआं ख़ाली सर्ब भराईआ। जिथ्थों उपज्या दसरथ बेटा राम, राम रामा वेस वटाईआ। जिस ने खेल खिलाया काहन, बंसरीआं धुन सुणाईआ। जिस मूसा कीता प्रधान, कोहतूर नूर रुशनाईआ। जिस ने ईसा बणाया बलवान, डंका इक्को हथ्थ फड़ाईआ। जिस ने मुहम्मद दस्सया विधान, चार यारी संग जणाईआ। जिस ने नानक जणाया सतिनाम, सति सति समझाईआ। जिस ने फ़तिह डंका वजाया आण, गोबिन्द रंग रंगाईआ। सो सतिगुर शब्द कहे शब्द गुरु इक प्रधान, दूजा नज़र कोए ना आईआ। दो जहानां झुलाए निशान, धर्म दवार इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे जीव जहान, जीव जंत जंत जीव आपणे हुक्म विच चलाईआ।

✪ २ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ गुरनाम सिँघ दे गृह पिण्ड वेरका ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर शब्द कहे एह खेल अलख अभेवा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आप जणाईआ। जो आदि जुगादी जुग चौकड़ी वड देवी देवा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। सचखण्ड वसे सच धाम निहकेवा, निहचल आपणा घर जणाईआ। जिस दी अवतार पैग़म्बर गुर करदे आए सेवा, जुग जुग आपणी कार कमाईआ। जो नाम निधाना कौस्तक मनीआं मस्तक लावे थेवा, तिलक

ललाटी इक जणाईआ। जिस नूं गाउंदे आए सिफ्तां विच नाल रसना जेहवा, ज़बां अज़ान विच दृढ़ाईआ। सो नाम निधाना अमृत रस देवे मेवा, अंमिउँ रस आप चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, निरगुण निरवैर बेपरवाहीआ। सतिगुर शब्द कहे हरि हुक्म हुक्म सुल्तानां, शाहो भूप आप जणाईआ। योद्धा सूरबीर मर्द मर्दाना, निरवैर पुरख अगम्म अथाहीआ। जो सचखण्ड वसे सच मकाना, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। जोत नूर नूर महाना, बिन दीआ तेल बाती रुशनाईआ। सूर्या चन्द दिसे ना कोए भाना, मण्डल मण्डप ना कोए वखाईआ। सो पुरख निरँजण हो के मेहरवाना, मेहर नज़र इक उठाईआ। हरि पुरख निरँजण देवणहारा दाना, वस्त अमोलक अगम्म वरताईआ। एकँकारा सब दा जाणी जाणा, जानणहार इक हो जाईआ। आदि निरँजण जल्वागर नुराना, नूर नूर नूर रुशनाईआ। अबिनाशी करता मर्द मर्दाना, मेहरवान बेपरवाहीआ। श्री भगवान सूरबीर वड बलवाना, योधा दो जहान इक्को नज़री आईआ। पारब्रह्म प्रभ खेल महाना, महिमा कथ ना कोए सुणाईआ। सो खेले खेल दो जहानां, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा हुक्म वरताईआ। जिस ने कलयुग मातलोक कीता प्रधाना, हथ्थ पुश्त पनाह टिकाईआ। सो अन्तिम लेखा जाणे जोती जाता नौजवाना, बिरध बाल रूप ना कोए दरसाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदल देवे ज़माना, ज़िमीं असमानां फोल फुलाईआ। माया ममता मोह विकार रहिण ना देवे टिकाणा, हर हिरदिउँ जड़ दए उखड़ाईआ। शरअ दा झगड़ा मेटे बेगाना, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। जो अवतार पैग़म्बर गुरु दे के गया ब्याना, आसा सब दी पूर वखाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता परवरदिगार सांझा यार पहर के बाणा, बाण अणयाला तीर नाम चलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप तख्तों लाह के राजा राणा, शख्सीअत सब दी दए गंवाईआ। इक्को हुक्म संदेशा सब नूं करना पए परवाना, परवानगी आपणे हथ्थ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी आपणा हुक्म वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं दस्सां हुक्म निरँकारी, जो निरवैर रिहा दृढ़ाईआ। कलयुग धार मेटणी कूड़ कुड़यारी, कुटम्ब रहिण कोए ना पाईआ। लहिणा चुकाणा संग मुहम्मद चार यारी, याराना अन्तिम वेख वखाईआ। नव सत्त पाउणी सारी, महासारबी हो के आपणा शब्दी रथ चलाईआ। हर हिरदे अन्दर तकणी ग़द्दारी, गृह मन्दिर फोल फुलाईआ। पर्दा लौहणा बहत्तर नाड़ी, हाडी हाडी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे हुक्म देवे धुर फ़रमाना, फरमांबरदारी रिहा जणाईआ। उठो वेखो नौजवाना, हरि करता की खेल खिलाईआ। पैग़म्बर होवो सवाधाना, आलस निंद्रा देणी मिटाईआ। सदी चौधवीं वरते की भाणा, भावी सब दे सिर ते छाईआ। चौदां तबक करो ध्याना, बिन

८३२
२२

अक्खां अक्ख उठाईआ। नैण वेखो ज़िमी असमाना, ज़ामन नज़र कोए ना आईआ। क्यों जगत होया बेगाना, बेवा रूप ख़लक खुदाईआ। की नानक दस्सके आया जदों बगदाद रबाब वजाए मर्दाना, मुद्दा अगला आपणा समझाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझे यार पहनणा बाणा, जोती जाता पुरख बिधाता आपणा वेस वटाईआ। जिस नूं सब ने सजदयां विच करनीआं सलामां, बिन कदमां सीस झुकाईआ। उस प्रभू ने बदल देणा ज़माना, ज़िमीं ज़मां खोज खुजाईआ। धुरदरगाही बण के कान्हा, लख चुरासी आत्म लैणी प्रनाईआ। निरगुण धार हो के रामा, सुरती संग करे कुड़माईआ। पैग़म्बरो बिन अक्खां करो ध्याना, बिन नैणां नैण उठाईआ। उम्मत उम्मती दिसे ना कोए निशाना, निशाने सारे गए बदलाईआ। खेल करे श्री भगवाना, भगवन आपणी कार कमाईआ। जिस दा इक्को होणा विधाना, तरमीम अग्गे ना कोए कराईआ। शाहो भूप बण राजाना, हुक्म संदेसा दए सुणाईआ। सो वक्त सुहञ्जणा होए सुहाउणा, सोहणी रुतड़ी नाल महकाईआ। सतिगुर शब्द कहे सब नूं मन्नणा पैणा भाणा, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि पुरख अपरम्पर स्वामी योधा सूरबीर बलवाना, बलधारी जोत निरँकारी इक अख्वाईआ।

✪ ६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ दविन्दर कौर दे नवित हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

कत्तक कहे मेरा कर्म होया चंगा, चंगी मिली वड्याईआ। मैं फिरया जमना सुरस्ती गोदावरी गंगा, तीर्थ तट्टां पन्ध मुकाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मड्ड तक्कया दंगा, गुरदवार जगत लड़ाईआ। जगत सन्यासी वैरागी त्यागी वेख्या नन्गा, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। दीन दुनी दा हाल तक्कया मंदा, मंदभाग दिसे लोकाईआ। फेर वेख्या साहिब सतिगुर दा संगा, जो गुरमुख आपणे रंग रंगाईआ। प्यार दी ढोलक ते नाम वज्जे मृदंगा, शब्द राग सुणाईआ। मैं वी झट दर दरवाज़े लँघा, आपणा सीस झुकाईआ। जां तक्कया मेरा स्वामी नज़र आया उत्ते मंजा, जो मँझधार दा लेखा रिहा मुकाईआ। फेर अवतार गुर भगत धार तके अकवंजा, बवन्जा शब्द डंक शनवाईआ। मेरे नेत्र वग गई अंझा, नीर नैणां दिता वहाईआ। मैं ज़ोर ज़ोर दी कम्बा, कम्बणी विच कुरलाईआ। फेर तक्कया कलयुग दा पैंडा रिहा ना लम्बा, पन्ध रिहा मुकाईआ। फेर वेख्या हरि भगत नहीं किसे दा मुछन्दा, मुछन्दगी सब दी दिती मिटाईआ। एह खेल प्रभू दा अचंभा, अचरज लीला रिहा कराईआ। वड्डयां छोटयां इक्को रंग रंगा, रंगत नाम वाली चढ़ाईआ। मैं वी वस्त इक्को मंगां, ख़ाली झोली अग्गे ढाहीआ।

प्रभू चुरासी विच्चों जे माणस जन्म दे के बणाएं बन्दा, बन्दगी आपणी विच लगाईआ। जेहड़ा तैनूं भुल्लया ओह कर्म कांड दा गंदा, गंदगी विच आपणा रूप बदलाईआ। तेरी चरण प्रीती सब तों उत्तम धन्दा, धर्म दी धार इक दरसाईआ। तूं साहिब सूरा सरबंगा, मेहरवान तेरे हथ्थ वड्याईआ। जिस कारन दविन्दर ने विंगीआं टेडीआं कीतीआं जंघा, एह लेखा इस दी माता दा बल वेले दा दिता मुकाईआ। जेहड़ा भैण भ्रावां बख्श्या सी अनन्दा, उस दा फल लेखे विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेहर नज़र इक उठाईआ।

८ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ उत्तम सिँघ दे घर पिण्ड वैरोवाल ज़िला अमृतसर

कत्तक कहे मैं सृष्ट सबाई तक्कया जग, नव सत्त अन्तर निरन्तर ध्यान लगाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्तर लग्गी अग्ग, दीन दुनी अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। शब्द अनादी सुणे कोए ना सद, अनहद नादी नद ना कोए वजाईआ। प्रभ दा दरस करे ना उपर शाह रग, शहिनशाह मिलण कोए ना पाईआ। जिधर तकां कूड़ी क्रिया जगत खुमारी मदि, मधुर रस ना कोए प्याईआ। आत्म परमात्म होई अलग्ग, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। मैं ब्रह्मण्डां खण्डां बाहर गया भज्ज, भजन बन्दगी तों परे ध्यान लगाईआ। धुर दे काअबे करे कोए ना हज्ज, मन्दिर गृह ना कोए सुहाईआ। जगत जिज्ञासू मार्ग गए छड्ड, मंज़ल चढ़न कोए ना पाईआ। मैं सचखण्ड दवारे कूक पुकारया गज्ज, होका हक सुणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल साहिब समरथ, की तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। कलयुग कहे मैं दीन दुनी नूं तक्कया, निरगुण सरगुण वेखी धार। फिरया मदीना मक्कया, उम्मत उम्मती पाई सार। शरअ विच दिसे कोए ना रत्तया, नाता तुटा संग मुहम्मद चार यार। पंज विकार सब दे अन्दर तपया, आबे हयात बख्शे कोए ना ठंडा ठार। मैं हो के हक्कया बक्कया, नेत्र रोया ज़ारो ज़ार। कलमे रही कोए ना सत्तया, सति सतिवाद आई हार। फिर चौदां तबक नस्सया, आपणा पन्ध विचार। जिधर जावां कलयुग खिड़ खिड़ कर के हस्सया, ताली दो हथ्थां दी मार। औह वेख मेरी रैण अंधेरी मस्सया, प्रकाश दिसे ना कोए पैग़म्बर गुर अवतार। जिस कारन गोबिन्द सथ्थर लथ्थया, माछूवाड़ा सेज संभाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, शाह पातशाह सच्ची सरकार। कत्तक कहे मैं फिरया चार चुफेर, चौगिर्द ध्यान लगाईआ। नव नौ चार होया अंधेर, नूर चन्द

ना कोए चमकाईआ। चुरासी मिटे ना किसे गेड़, अवण गवण ना कोए कटाईआ। पुरख अकाल करे ना कोए मेहर, मेहर नज़र ना कोए उठाईआ। सतिगुर शब्द मिले कोए ना शेर, भबक नाम ना कोए सुणाईआ। मैं ढहि के होया ढेर, आपणा बल गंवाईआ। झगड़ा मुके ना अण्डज जेर, उत्भुज सेत्ज लेखा पूर ना कोए कराईआ। साबत रिहा ना गुरु गुर चेल, चेला गुर ना कोए चतुराईआ। जो अन्त संदेशा दे के गया शब्दी धार गोबिन्द धार नंदेड़, तन तत कर जुदाईआ। सदी चौधवीं बेनज़ीर लाशरीक धुर दे छेड़ देणी छेड़, छेकड़ आपणी कार भुगताईआ। पैग़म्बरां लहिणा देणा दए नबेड़, रसूलां लेखा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहरवान मेहर नज़र इक उठाईआ। कत्तक कहे मैं वेख्या दीन मज़्ब दा रंग, ज़ात पाती खोज खुजाईआ। मानव ज़ाती होई नंग, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। धर्म दी मंज़ल सके कोए ना लँघ, कूड़ी क्रिया पन्ध ना कोए चुकाईआ। निज नेत्र मिले किसे ना अनन्द, निज आत्म रस ना कोए चखाईआ। आत्म सेज सोए ना कोए पलँघ, परमात्म संग ना कोए रखाईआ। सब दा मानस जन्म दिसे भंग, लेखा लेखे विच्चों ना कोए प्रगटाईआ। माया डस्सणी मारे डंग, चार कुण्ट रही तड़फाईआ। लेखा कोए ना जाणे जो कहि के गया गुजरी चन्द, चन्द दुलारा की जणाईआ। सदी चौधवीं कलयुग अन्त ना जाए लँघ, पार किनार समझ किसे ना आईआ। प्रगट होवे सूरा सरबंग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। लहिणा देणा पूरा करे सत्त दीप नौ खण्ड, खण्डा खड़ग नाम चमकाईआ। जिस दी जोत धार तेज प्रचण्ड, चण्डका रूप दए समझाईआ। जिस ने इक्को आत्म परमात्म दस्सणा छन्द, तूं मेरा मैं तेरा राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर हुक्म इक प्रगटाईआ। कत्तक कहे मैं आसा रखी, आशा दयां जणाईआ। सतिजुग कथा कहाणी दस्सां सच्ची, सति सतिवादी नाल मिलाईआ। जिस विच फ़र्क ना होवे रत्ती, रुत कूड़ी किवें बदलाईआ। धर्म दी धार रही कोए ना सती, सति सच ना कोए समाईआ। चारों कुण्ट वाअ तत्ती, अग्नी कलयुग रही जलाईआ। की करे खेल पुरख समर्थी, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस ने कूड़ कुटम्ब मुकाउणा हथ्थी, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, धुर भेव आप खुल्हाईआ। पुरख अकाल कहे धुर भेव आप खुल्हावांगा। सो पुरख निरँजण नूर चमकावांगा। हरि पुरख निरँजण खेल खिलावांगा। एकँकार कल प्रगटावांगा। आदि निरँजण डगमगावांगा। अबिनाशी करता हुक्म वरतावांगा। श्री भगवान खेल खिलावांगा। पारब्रह्म कार कमावांगा। शब्द सतिगुरु इक अख्वावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलावांगा। ब्रह्मण्डां खण्डां धार हिलावांगा। जेरज अंडां पर्दा आप चुकावांगा। दीन दयाल बण बख्शंदा,

बख्शिश रहमत सच कमावांगा। दाता हो के गुणी गहिन्दा, गहर गम्भीर रूप दरसावांगा। परवरदिगार नूर रुशनंदा, ज़हूर इक्को इक दिखावांगा। जन भगतां मेट के चिन्दा, चिन्ता चिखा विच्चों कढावांगा। अमृत धार बख्श के सिन्धा, अग्नी तत तत बुझावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर हुक्म इक वरतावांगा। धुर हुक्म इक वरताएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। तेई अवतारां संग रखाएगा। पैग़म्बरां पड़दा आप चुकाएगा। गुर सतिगुर अंग लगाएगा। सूरा सरबंगा वेस वटाएगा। नाम मृदंग इक खड़ाएगा। पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां लँघ, धरनी धरत वडयाएगा। लहिणा वेख के सूर्या चन्द, मण्डल मण्डप आप रुशनाएगा। कलयुग कूड़ी क्रिया ढाह के कंध, भाण्डा भरम भउ भनाएगा। आत्म परमात्म बख्श के अनन्द, सतिजुग सच सच प्रगटाएगा। तूं मेरा मैं तेरा गाउणा छन्द, निरगुण निरगुण जोड़ जुड़ाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेव अभेदा आप खुल्हाएगा। भेव अभेदा आप खोल्हेगा। जोती धार शब्द शब्द गुर बोलेगा। लख चुरासी मथ मक्खण वरोलेगा। नाम तराज़ू कंडा सृष्टी दृष्टी आपे तोलेगा। योधा सूरबीर बलकार, जगत जहान आपे टोलेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा इक्को खोल्हेगा। कत्तक कहे मैं की दस्सां हाल, कहिण किछ ना पाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु जिस दे बाल। सो साहिब सुल्तान धुरदरगाहीआ। जिस दे वस काल महाकाल, राय धर्म चित्रगुप्त सीस निवाईआ। ओह जुग जुग खेले खेल कमाल, धुर दा हुक्म आप वरताईआ। जिस सतिजुग त्रेता द्वापर मेटया विच जहान, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। जिस अवतार पैग़म्बर गुरुआं दिता दान, वस्त नाम इक वरताईआ। ओह अन्तिम सब दा लेखा कर परवान, परम पुरख आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं मेट निशान, निशाना धर्म दए झुलाईआ। जिस नूं झुकण राज राजान, निउँ निउँ लागण पाईंआ। खेले खेल विच जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी कार भुगताईआ। कत्तक कहे मैं निउँ निउँ चरण करां ध्यान, बिन नैणां नैण उठाईआ। सच प्रीती बख्श के माण, प्रीतम आपणा रंग चढ़ाईआ। तूं दाता दानी गुण निधान, गहर गम्भीर अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। कत्तक कहे मेरी मंग इक, भिक्खक हो के झोली डाहीआ। जिस नूं तेरे मिलण दी सिक, सो साहिब लैणा मिलाईआ। अन्तर रहे कोए ना विख, दुरमति मैल धुआईआ। चार वरन बणाउणा सिख, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। तेरे प्यार विच जाए कोए ना भिट्ट, तन वजूद करनी सफ़ाईआ। खहिड़ा छुड़ा देणा पथ्थर इट्ट, पाहन सीस ना कोए निवाईआ। तेरी धार उत्ते आत्म परमात्म जाए टिक, नेत्र नैण देणा खुल्हाईआ। अमृत बूँद बख्शीं छिट्ट, नाभी

कँवल विच्चों चुआईआ। सब दा लेखा देणा नजिट्ठ, लहिणा देणा आपणे हथ्थ रखाईआ। जन भगतां देवीं कदे ना पिट्ठ, पुश्त पनाह हथ्थ टिकाईआ। मंज़ल मेट देणी सवा गिट्ठ, मार्ग मारू डण्ड दा पन्ध रहे ना राईआ। जिस कोल तेरे प्यार दी होवे चिट्ट, नाम दा ढोला दए सुणाईआ। ओह मानस जन्म जाए जित्त, लख चुरासी डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कत्तक कहे मेरी इहो इच्छ, निरइच्छत मेरी इच्छया पूर देणी कराईआ।

✪ ६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ उत्तम सिँघ दे घर पिण्ड वैरोवाल ज़िला अमृतसर ✪

८३७
२२

कलयुग कहे मैनूं मिल्या माण अगम्मा, अगम्म अगम्मड़े दिती वड्याईआ। मैं खेल खिलाउणा काया माटी चम्मा, चम्म दृष्टी देणी बणाईआ। घर घर वाड़ के हरख सोग ग़मा, चिन्ता चिखा देणी अपणाईआ। माया ममता मोह दा पा के तमां, तामस तृष्ना करनी हल्काईआ। हरि का नाम जपण देणा नहीं किसे दमा, स्वास स्वास ना कोए रखाईआ। मानस मानव मानुख कर निकम्मा, कूड़ क्रिया करनी हल्काईआ। मेरा खेल होणा रवां, चारों कुण्ट भज्जां चाँईं चाँईंआ। दीन मज़्हब दा रुख़ बदलणा नवां, नौ खण्ड पृथ्मी दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग कहे मैनूं मिल्या धुर फ़रमाना, पुरख अकाल दिता दृढ़ाईआ। उठ मेरया नौजवाना, मर्द मर्दाना रूप धराईआ। सृष्टी दृष्टी वेख ज़माना, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। इष्ट रिहा किसे ना रामा, राम रूप ना कोए समाईआ। माण दिसे ना कोए कान्हा, बंसरी हक ना कोए सुणाईआ। पैग़म्बरां भुल्लया धुर कलामा, कलमा कायनात ना कोए दृढ़ाईआ। मन्त्र रिहा ना कोए सतिनामा, सति सति ना कोए शनवाईआ। फ़तिह डंका वज्जे ना कोए दमामा, दामनगीर ना कोए अख्वाईआ। चारों कुण्ट अंधेरी शामा, शमां नूर ना कोए रुशनाईआ। माया ममता कूड़ हरामा, घर घर आपणा डेरा लाईआ। कलयुग सूरे सदी चौधवीं आजा विच मैदाना, बल आपणा आप प्रगटाईआ। तख़्तों लाह के राजा राणा, रईयत आपणा हुक्म समझाईआ। हर हिरदे भर अभिमाना, कूड़ी क्रिया नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच संदेसा रिहा जणाईआ। कलयुग कहे मैनूं मिल्या फ़रमाना एक, हरि करते दिता सुणाईआ। बुद्धी रहिण देणी नहीं कोई बिबेक, पवित्र धार ना कोए रखाईआ। सब दे अन्तर अग्नी लाउणा सेक, ममता मोह नाल जलाईआ। आत्म परमात्म रखे कोए ना टेक, टिक्का धूढ़ी ख़ाक ना कोए रमाईआ। मैं फिरना देस परदेस, नौ खण्ड

सत्त दीप आपणा फेरा पाईआ। मैं लहिणा देणा पूरा करना गोबिन्द दस दशमेश, जो दर दरबारे आख सुणाईआ। मैं लेखा तकणा विष्नूं बाशक शेष, सहँसर मुखां ध्यान लगाईआ। मैं अन्त तकणा शंकर गणेश, गणपति अक्ख खुल्हाईआ। मैं जानणा की खेल प्रभू हमेश, नित नवित हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर हुक्म इक उपजाईआ। कलयुग कहे मैं फिरना लख चुरासी अन्दर, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। भाउणा जगत दवारे मन्दिर, काअब्यां फोल फुलाईआ। मनुआ मन बणाउणा बन्दर, दहि दिशा हल्काईआ। अंधेरा करना अंधेरी कन्दर, नूरी जोत ना कोए रुशनाईआ। बजर खोल्हे कोए ना जन्दर, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। दीन दुनी करने भागां मंदन, मंद भागा होए लोकाईआ। लहिणा देणा तकणा त्रैलोकी नंदन, राम रामा खोज खुजाईआ। पीर पैग़म्बर करना बख़्शंदन, रहमत सब दी फोल फुलाईआ। धूढ़ी मस्तक तकणे चन्दन, ललाटी भेव चुकाईआ। जीव जंत आपणे चुक्क के अंगण, फ़रमाना इक्को देणा सुणाईआ। किसे वारसी रहिण नहीं देणा नंदण, परमानंद ना कोए समाईआ। कूड़ कुकर्म दे पाउणे बन्धन, बन्दी छोड़ ना कोए अख्वाईआ। किरपा करे मेरा सूरा सरबंगण, पुरख अकाला हुक्म वरताईआ। मैं ज़ोर रखाउणा नाल पंचण, पंचम पंचम नाल टकराईआ। मेरा मेहरवान होणा दर्द दुःख भय भञ्जण, मेहर नज़र उठाईआ। काम क्रोध दा सब नूं पाउणा अंजण, नेत्र अक्ख ना कोए शरमाईआ। सति धर्म दा रहिण नहीं देणा सगण, सगला संग ना कोए रखाईआ। सदी चौधवीं लाउणी अग्न, अग्गे हो ना कोए बुझाईआ। आप बैठणा हो के मग्न, समाधी प्रभ दे विच टिकाईआ। खेल खिलाउणा काया माटी बदन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। कलयुग कहे मैनूं हुक्म दिता सच्ची सरकार, शहिनशाह जणाईआ। दीन दुनी कर दे धुआँधार, नेत्रहीण होए लोकाईआ। सच दा रहे ना कोए प्यार, मुहब्बत कूड़ नाल हल्काईआ। चारों कुण्ट फिरना वारो वार, भज्जणा वाहो दाहीआ। मेरे मिलण दी मंज़ल कर दुष्वार, दूई दुशमण अन्दरों दे उठाईआ। बल बख्श काम क्रोध लोभ मोह हँकार, रहमत तेरी झोली पाईआ। माया ममता ला अखाड़, हउमे हंगता नाल नचाईआ। उठ वेख जंगल जूह पहाड़ उजाड़, समुंद सागर फोल फुलाईआ। तेरी अन्त अख़ीरी वार, सदी चौधवीं दए समझाईआ। कलि कल्की लए अवतार, तेरा पूरा लहिणा तेरी झोली दए टिकाईआ। कलयुग कहे मैं करां निमस्कार, निउँ निउँ सीस निवाईआ। सेवा करां मैं बण के बरखुरदार, अज़ीज़ अज़ीज़ां रूप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे अगम्म अपार, अलख अगोचर अगम्म अथाह, बेपरवाह आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ ६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ मास्टर सोहण सिँघ दे घर पिण्ड रामपुर ज़िला अमृतसर ✪

कलयुग कहे प्रभू मैं दूर दुराडा दौड़ा, पाँधी हो के आपणा पन्ध मुकाईआ। तेरा खेल कोए ना जाणे लम्मा चौड़ा, अन्तष्करन विच अन्त कहिण कोए ना पाईआ। चौदां तबकां वेखां ला के पौड़ा, अमाम अमामा तेरा ध्यान लगाईआ। निगह मारी वेख ब्राह्मण गौड़ा, गोबिन्द शब्द धार शनवाईआ। फेर वेख्या सस्से उपर होड़ा, हाहा टिप्पी संग रखाईआ। तेरी किरपा नाल दर दवार तेरे बौहड़ा, घर ठांडे सीस निवाईआ। उठ वेख तेरा जगत जहान कीता कौड़ा, मिट्ठा रस ना कोए भराईआ। मैं नौजवान तेरा बांका छोहरा, शहिनशाह तेरी ओट तकाईआ। सब दा जन्म कर्म दा लेखा कर के कोरा, मेहरवान दयां दिखाईआ। तेरे प्यार दा पढ़े कोए ना दोहरा, दोहरी आपणी कल वरताईआ। अवष्तार पैग़म्बर गुर चले कोए ना ज़ोरा, जोरू ज़र नाल टकराईआ। जिधर तके अंधेर घोरा, तेरा नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। सदी चौधवीं अन्त कन्त भगवन्त परवरदिगार तेरी लोड़ा, लोड़ींदे साजण वेख वखाईआ। आत्म परमात्म रहे कोए ना जोड़ा, पारब्रह्म ब्रह्म संग ना कोए रखाईआ। झगड़ा प्या तोरा मोरा, हउमे हंगता गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। कलयुग कहे मैनूं बख्श दे मेरे साहिब सुल्ताना, परम पुरख तेरी सरनाईआ। दीन दयाल आपणा दे दे दाना, झोली रहमत नाल भराईआ। सदी चौधवीं सब नूं बन्नू देवां कूड़ दा गाना, तन वजूद सगन मनाईआ। तेरा प्यार रहे ना विच जहाना, जहालत आपणी दयां वखाईआ। हिरदे अन्दर भर अभिमाना, माण गृह गृह दयां प्रगटाईआ। धर्म दी धार रहे ना कोए निशाना, चारों कुण्ट कूड़ हल्काईआ। चौवीवें अवतार फेर पहनणा जामा, ज़ामन होणा थांउँ थाँईंआ। तेरी आशा रखे राम दा रामा, कान्हा बैठा ध्यान लगाईआ। पैग़म्बर तक्कण राह धुर अमामा, महिबूब तेरा नूर नूर रुशनाईआ। नानक गोबिन्द दस्सया इक निशाना, निरवैर गए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। कलयुग कहे मेरे मालक दीनां बंधप, मेहरवान सरनाईआ। मेरे तिलक ललाटी ला दे चन्दन, सूर्या चन्द वेखण चाँईं चाँईंआ। तूं आदि जुगादी अलख निरँजण, नर नरायण बेपरवाहीआ। दाता दानी दर्द दुःख भय भञ्जण, पारब्रह्म बेअन्त बेअन्त अख्वाईआ। सदी चौधवीं कल धार ना देवीं लँघण, मनसा मनसा विच्चों बदलाईआ। पिछली कीती करनी खण्डन, खण्डा खड़ग नाम चमकाईआ। अगला हुक्म वरताउणा विच वरभण्डण, ब्रह्मण्ड देणा समझाईआ। तेरा दर ठांडा सारे मंगण, मांगत हो के अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सच तेरी वड्याईआ। पुरख अकाल कहे सुण कलयुग काती, कल्मयां तों बाहर

दयां दृढ़ाईआ। चारों कुण्ट करना अंधेरा राती, धर्म दा चन्द ना कोए चमकाईआ। तेरी ख़ाहिशां वाली होवे प्रभाती, वेला वक्त नाल वखाईआ। साची मंज़ल चढ़े कोए ना घाटी, पड़दा सके ना कोए उठाईआ। भाग लग्गे ना काया माटी, पंज तत ना कोए रुशनाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां पूरी करनी आसी, ख़ाहिश तमन्ना वासना नाल समाईआ। फेर मेरा खेल तकणा पृथ्मी आकाशी, गगन गगनंतर दयां जणाईआ। प्रगट कर जोत प्रकाशी, निरवैर हो के खेल खिलाईआ। कूड़ी क्रिया मेट के सतिजुग सति धर्म बणावे उत्तम ज़ाती, ज़ात अज़ाती डेरा ढाहीआ। तूं हुक्म मन्नणा आखी, आख़र दयां समझाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सब दा लहिणा देणा मेटे बाकी, हिसाब अन्त नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेख जाणे जुग चौकड़ी जुगादी, जुग जुग जग करता आपणा हुक्म इक वरताईआ।

✪ १३ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल दीवाली वाले दिन ✪

दीवाली कहे मेरा सच प्रकाश, प्रभ जोत नाल वड्याईआ। जुग जुग भगतां अन्दर मेरा खेल तमाश, नित नवित साची सेव कमाईआ। हुक्म मन्न साहिब गुणतास, सच स्वामी सीस निवाईआ। जिन्हां दे अन्दरों अंध अंधेर जाए विनाश, अबिनाशी करता करे रुशनाईआ। तिस मण्डल होवे मेरी रहिरास, सच समग्री इक प्रगटाईआ। सच दवारे कर के वास, आपणा नूर दयां चमकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु जिस दे दास, तिस दा रूप अनूप प्रगटाईआ। खेल तक पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर पन्ध मुकाईआ। लख चुरासी अन्दर कर के वास, सृष्टी दृष्टी अन्दर फोल फुलाईआ। कवण वसया प्रभ दे पास, भगत सुहेला कवण अख्वाईआ। जिस दा साहिब उत्ते विश्वास, विषयां तों बाहर राह तकाईआ। उस दी पूरी होवे आस, सिध्धा रस्ता देवे धुरदरगाहीआ। दीवाली कहे मैं भगतां देवां शाबाश, गुरमुखां नाल वड्याईआ। जिन्हां दा लेखा होवे ख़लास, चुरासी विच ना कोए भवाईआ। तन वजूद पहिनणा पए ना कोए लबास, ओढण तन ना कोए हंढाईआ। पवण स्वासी रहे ना कोए स्वास, रजो तमो सतो ना कोए रंग रंगाईआ। शंकर तकणा पए ना उत्ते कैलाश, ब्रह्मा ब्रह्म ना ध्यान लगाईआ। जिन्हां निरन्तर प्रभ मेरा कीता प्रकाश, दीपक दीआ आत्म परमात्म दिता जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। दीवाली कहे मैं कोई धार नहीं अग्ग दी, दीवा बत्ती ना कोए वड्याईआ। मैं धार सूरे सरबग दी, जुग चौकड़ी वेस वटाईआ। प्रकाश विच्चों प्रकाश हो के जगदी, जागरत

जोत कर रुशनाईआ। मेरी खेल उपर शाह रग दी, नौ दवारे डेरा ढाहीआ। मैं साथण नहीं जीव अल्पग दी, कूड़ क्रिया ना कोए वड्याईआ। मेरी आशा भगतां प्रेम विच सद्द दी, सद्दा देवे थांउँ थाँईंआ। ओनां घड़ी सुलखणी होवे अज्ज दी, जिनां मिल्या धुरदरगाहीआ। जो सृष्टी जगत माया प्यार विच बलदी, ममता मोह विच हल्काईआ। साहिब सतिगुर दा साथ छडदी, नाता कूड़ नाल बंधाईआ। कूड़ी आसा होवे कग्ग दी, तृष्ना तृप्त ना कोए रखाईआ। दीवाली कहे मैं प्रकाश हो के प्रकाश धुर दा लभ्भदी, भगत सुहेले वेख वखाईआ। मेरी आसा नहीं कोई मदि दी, तृष्ना तृखा ना कोए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। दीवाली कहे मैनूं ब्रह्मा कीता प्यार, दीपक दीआ अगम्म जलाईआ। विष्नूं मेरी बद्धी धार, जोती जोत नाल रुशनाईआ। शंकर मेरी कीती विचार, कैलाश उपर कर रुशनाईआ। इन्द्र मेरा कीता दीदार, जोत वेख अगम्म अथाहीआ। पड़दा चुकदे रहे पैग़म्बर गुर अवतार, अंध अंधेरा दूर कराईआ। मेरी जग मग जोत अपार, अपरम्पर स्वामी दिती प्रगटाईआ। अष्टभुज मैनूं ल्यांदा विच संसार, दीपक नौ नौं जगाईआ। फेर जगी बल दवार, बावन रंग वेख्या चाँईं चाँईंआ। राम दिता आधार, मिली माण वड्याईआ। कृष्न ने अर्जन दिता वखाल, प्रभ जोती जोत रुशनाईआ। मैं जुग जुग चलदी रही साल बसाल, सम्मत सम्मती पन्ध मुकाईआ। दीन दुनी दा वेखदी रही हाल, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। बिना भगतां घर दीपक सक्या कोए ना बाल, अंध अंधेर ना कोए मिटाईआ। जगत दीवाली सब नूं कीता कंगाल, जगत वासना विच सृष्ट हल्काईआ। मैं सदा जगदी रही सच सच्ची धर्मसाल, काया मन्दिर अन्दर आपणी आप कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जिस अन्दर आपणा दीपक देवे बाल, दीवाली कहे मैं सदा उस दे नाल जगत रंग दा पन्ध मुकाईआ।

✪ १५ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

पन्द्रां कत्तक कहे मेरी नक्क नाल लकीरा, लाईन ऐन दिती बणाईआ। मैनूं याद आ गया रविदास दा कसीरा, जो कौडी ब्राह्मण हथ्थ फड़ाईआ। गंगा धार तकी नीरा, जो वहिंदे वहिण भज्जे वाहो दाहीआ। खेल जाणया बेनज़ीरा, नज़र तों परे की करे नूर अलाहीआ। जिस विच्चों नज़र आई तेरी धार शमशीरा, शम्मस तबरेज़ दए दुहाईआ। फेर वेख्या लेखा शाह हकीरा, शहिनशाह दिता दृढ़ाईआ। फेर चोटी तकी अख़ीरा, जिथ्थे मंज़ल बेपरवाहीआ। इक्को रूप नज़र आया पीरन

पीरा, पारब्रह्म धुरदरगाहीआ। चरणी ढट्ठा दिसे कबीरा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। प्रभू कदों तोड़ें शरअ दीआं ज़ंजीरां, ज़रा ज़रा दे समझाईआ। की तेरीआं वड तदबीरां, पड़दा ओहला दे उठाईआ। कलयुग कूड़ीआं दिसण ज़मीरां, शरअ शरअ नाल टकराईआ। सच दा रिहा ना कोए वतीरा, वितकरे विच जगत लोकाईआ। सुहागण हथ्थी बन्ने ना कोए कलीरा, कौडी कसीरे मिले ना कोए वड्याईआ। मेरा अन्तर होया दिलगीरा, दिलदार दयां जणाईआ। पुरख अकाल किहा लै अमृत रस सीरा, तेरे मुख पवाईआ। औह तक कलयुग दा अन्त अख़ीरा, तैनूं दयां वखाईआ। जिस विच अवतार पैग़म्बर गुरुआं घत्तणीआं वहीरां, मातलोक थिर रहिण कोए ना पाईआ। दीन दुनी दी बदल जाणी तकदीरा, तरीका ढंग दयां समझाईआ। उस वेले रविदास होणा मेरा हीरा, हरि जू आपणे रंग रंगाईआ। जिस दे सीस ते नीले रंग दा होवे चीरा, नीली धार दए गवाहीआ। उत्ते बद्धी होवे शरअ दी ज़ंजीरा, शरीअत लिख के अलिफ़ ये नाल समझाईआ। जो संदेशा दे के गई मुहम्मद नूं हमशीरा, सुल्हकुल वल्ल ध्यान लगाईआ। जिस वास्ते जोती धार दा सतरंग दा आउणा लीड़ा, ओह ओढण गुरमुख सीस टिकाईआ। पंजां लिखारीआं सांझा फड़या होवे लक्कों बध्धा कीड़ा, डोरी साढे तिन्न हथ्थ वड्याईआ। पन्द्रां कत्तक कहे मैं निमस्कार कीती बिना नक्क तों कढीआं लकीरा, जगत लाईन नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां कटणहारा भीड़ा, भीड़ी गली औखी घाटी मंज़ल पिछली पार कराईआ।

८४२
२२

✪ १६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ साधू सिँघ दे घर पिण्ड बस्ती तेग़ा सिँघ वाली ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

कत्तक कहे मैं दूर दुराडा तक्कया, बिन अक्खां अक्ख उठा। की खेल पुरख समरथया, की हुक्म रिहा वरता। नौ खण्ड पृथ्मी नट्ठया, सत्त दीप भज्जया वाहो दाह। जगत जीव जहान मच्चया, कलयुग अग्नी अग्ग रही तपा। फिरी दरोही मदीना मक्कया, काअबे नज़र ना आए खुदा। झगड़ा प्या भाई भैण सक्या, पिता पूत सके ना कोए गोद उठा। मोह हँकारे संसार मत्तया, गुरमति सारे गए भुला। मैं लख चुरासी तकी डाली पत्तया, चारे खाणी पड़दा लाह। प्रभ दे नाम विच कोए ना रत्तया, हउमे खुदी सके ना कोए गवा। खेल तक के अलख अलखया, नेत्र नैणां नीर दिता वहा। कत्तक कहे मैं प्रभ सरनाई ढट्ठया, गल पल्लू वास्ता पा। क्यों कूड़ कुड़यारा हर हिरदे अन्दर नच्चया, पर्दा अन्तर निरन्तर दिता उठा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, पुरख अकाले बेपरवाह। कत्तक कहे मैं दूर दुराडा

खोज्या, खोजत खोजत ध्यान लगाईआ। चारों कुण्ट हउमे रोगया, माया ममता सृष्ट हल्काईआ। साढे तिन्न हथ्थ चिन्ता सोगया, हउमे रोग ना कोए मिटाईआ। जगत वासना दीन दुनी ने भोग भोगया, भस्मड़ रूप ना कोए बणाईआ । साढे तिन्न हथ्थ सब दा तक्कया चोगया, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। चौदां तबक फिरया चौदां लोक्या, चौदस विद्या रंग ना कोए रंगाईआ। सदी चौधवीं अन्तिम संभले कोए ना मौक्या, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक वरताईआ। कत्तक कहे मैं तक के होया हैरान, हैरत विच दुहाईआ। की खेल जगत जहान, की करता कार कमाईआ। चारों कुण्ट शरअ शैतान, शरीअत करे लड़ाईआ। साचा दिसे ना धर्म निशान, धुर दी धार ना कोए प्रगटाईआ। सच सुणे ना कोए धुन्कान, शब्द नाद ना कोए शनवाईआ। मानव मानव झगड़ा विच जहान, जहालत दूर ना कोए कराईआ। इक प्रभू नूं सारे गाण, अक्खरां वाली सिफ्त सालाहीआ। दीनां मज़्बां वंड वंडाण, नाम कलमे नाल टकराईआ। मन मनसा कर अभिमान, हउमे गढ़ प्रगटाईआ। साहिब स्वामी मिले कोए ना आण, निज नेत्र प्रभ दरस कोए ना पाईआ। मैं चार कुण्ट तक के किहा श्री भगवान, पारब्रह्म प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। कत्तक कहे मैं दूर दुराडे जन भगत सुहेले तके थोड़े, बहु गिणत ना कोए वड्याईआ। जिन्नां दे अन्तर प्रेम दी लोड़े, लोड़ींदा सज्जण वेख खुशी मनाईआ। आत्म परमात्म बणा के जोड़े, सुरती शब्द विच समाईआ। दीन दुनी दे रस समझ के कौड़े, कूड़ी क्रिया गए तजाईआ। इक्को तक के सस्से उपर होड़े, हँ टिप्पी नाल चतुराईआ। तूं मेरा मैं तेरा गा के दोहरे, नाता दोहरा ल्या जुड़ाईआ। जन्म कर्म दे लेखे कर के कोरे, कूड़ कुकर्म दा पैंडा दिता मुकाईआ। नौजवान बांके बण के छोहरे, गुरमुख साचे रंग रंगाईआ। जिस दा लहिणा देणा लेखा नाल अजीत जुझार सिँघ फ़तिह नाल जोरे, चौथे जुग गंढ गंढाईआ। सो साहिब सतिगुर शब्द अगम्मे चढ़ के घोड़े, वागां आपणे हथ्थ रखाईआ। मालक ख़ालक हो के बौहड़े, पोह छब्बी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। कत्तक कहे छब्बी पोह सुहाउणा, सोहणी रुत रमणीक। जोती शब्दी खेल खिलाउणा, पुरख अबिनाशी बख्श हक तौफ़ीक। कल्गी ताज जोड़ जुड़ाउणा, तोड़ा जोड़ जगत जगदीश। साढे तिन्न इंच दा चक्र बणाउणा, जिस विच हिन्दसा होवे बीस। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, पिछली पिच्छे दी मेटे लीक।

८४३
२२

✪ २१ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ करनैल सिँघ राजोके वाले दे नवित हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

सतिगुर साहिब सदा अतुल, जगत तराज़ू तोल ना कोए तुलाईआ। जन भगतां देवे नाम अनमुल्ल, कीमत करता ना कोए रखाईआ। आदि जुगादी बण के सुल्हकुल, कुल मालक होए सहाईआ। पिछली कीती बख्श के भुल्ल, मार्ग आपणे आप रखाईआ। मानस जन्म ना जाए रुल, मेहरवान होए सहाईआ। बचन कीता जिस नाल ज़बान बुल्ल्ह, बत्ती दन्द नाल शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। किरपा कर उपर सिँघ करनैल, पूरब लेखा दिता चुकाईआ। जन्म कर्म दी धो के मैल, पतित पुनीत आप बणाईआ। जीवण दा मार्ग कर सहिल, रस्ता इक्को इक वखाईआ। सदा रच्छया हुन्दी रहे उपर गाँ मज्झ बैल, बच्चयां देवे माण वड्याईआ। घर विच होवे चहिल पहल, दुक्खां दरदां डेरा ढाहीआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर करे सिँघ सूरबीर छैल, जोबनवन्ता धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणे रंग रंगाईआ। किरपा करे दीन दयाला दीन, दयानिध दया कमाईआ। तड़फण देवे ना मच्छी मीन, अमृत बूँद स्वांती जाम प्याईआ। नाता तोड़ के त्रैगुण तीन, त्रैभवण धनी होए सहाईआ। आपणा मार्ग दस्स महीन, राह इक्को दिता वखाईआ। सतिगुर हुक्म ते सदा करो यकीन, भुल्ल विच भुल्ल कदे ना जाईआ। इस तों वड्डी नहीं कोई होर तालीम, जगत सिख्या कम्म किसे ना आईआ। हिरदे रखो ज़हिन ज़हीन, ज़ाहर ज़हूर दए समझाईआ। फेर कदे ना होवो ग़मगीन, चिन्ता चिखा ना कोए तपाईआ। प्यार मुहब्बत विच रहिणा लीन, लिव अन्तर अन्तर लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा पूरा करे सब नर मदीन, मुद्दा आपणे हथ्थ रखाईआ।

✪ २२ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ अजीत सिँघ बटाले वाले दे नवित हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

अजीत सिँघ पिता पूत दा नाता, नाता धुर दा आप रखाईआ। पूरब जन्म दी मेट के वाटा, अगला जन्म जन्म बदलाईआ। भगती भाव दा पूरा करके घाटा, तोल कंडे नाम तराज़ू आप तुलाईआ। तेरी विस्तरे मरग दी खाटा, सतिगुर आपणे संग हंढाईआ। जो आदि अन्त दा दाता, दयावान इक अख्वाईआ। एथे ओथे होवे राखा, दो जहानां संग मिलाईआ। पूरा करे भविक्ख्त वाका, मुहम्मद शहादत दए भुगताईआ। तन जले ना अग्नी आंचा, अमृत मेघ मेघ बरसाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। गुरमुख जगत मरे कदे ना मरनी, मर जीवत रूप वटाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बख्शे आपणी सरनी, सरनगति इक वखाईआ। मंज़ल धुर दी इक चढ़नी, अगम्म अथाह आप चढ़ाईआ। नाता रहे ना भय डरनी, राय धर्म ना दए सज़ाईआ। जिस ने नवीं घाड़त घड़नी, घड़न भन्नणहार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। अजीत सिंघ मुहम्मद यार करे इशारा, सैनत नाल रिहा समझाईआ। मेरे बेऐब परवरदिगारा, तेरी बेपरवाहीआ। तेरा नूर नूर उज्यारा, जोत जोत रुशनाईआ। आपणे नाल मेल दुबारा, दोहरी मेरी बणत बणाईआ। मैं दस्त बदस्त करां निमस्कारा, सजदे विच सीस झुकाईआ। तूं अहिबाब मेरा मित्र प्यारा, महिबूब नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। हरिजन हरि साहिब सदा सहायक, आदि जुगादि दया कमाईआ। एथे उथे दो जहानां नायक, निरगुण निरवैर बेपरवाहीआ। तेरी लेखे लावे अलिफ़ ये वाली पढ़ी आयत, हज़रत संग निभाईआ। अग्गे विछोड़ा ना होवे शायद, विछड़ कदे ना जाईआ। जन्म कर्म दा कीता अहिद, वायदा आपणा वेख वखाईआ। मेहरवान होए सहाई सहिज सहिज, सहिज आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच आपणा रंग रंगाईआ। अजीत सिंघ वेख खेल पिसर पिदर, बरादर रिहा मिलाईआ। विश्वामित्र तेरा मित्र, नूर अलाही दए गवाहीआ। जिस दे हिरदे अन्दर इक दा ज़िकर, ज़करीए तों परे ध्यान लगाईआ। अन्त रखया महिबूब दा फ़िकर, फ़िकरा इक सुणाईआ। मेरा मीत जाए ना विछड़, विछोड़ा नज़र ना कोए वखाईआ। लहिणा देणा परवरदिगार तेरे दरबार जाए निबड़, बाकी अवर रहे ना राईआ। फिराक होवे हज़रते हिज़र, हज़ूर तेरी ओट तकाईआ। जिस दा लेखा मुकणा सी तेई कत्तक वेले फ़ज़र, फ़ज़ल आपणा आप कमाईआ। नेड़ ना आवे लाड़ी मौत कज़ल, अज़ल तों लए बचाईआ। प्रेमी नाल प्रेमी मेल नाल सज्जण, पिछला लेखा पूर कराईआ। करे खेल मूर्त गोपाल मदन, काहन कान्हा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। अजीत सिंघ एह तेरा पिछला चचा ज़ात भाई, सदी चौधवीं दए गवाहीआ। विछोड़ा सहि ना सके जुदाई, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। भज्जा आया चाँईं चाँईं, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। विस्तर सेज लिआया उठाई, तेरा कफ्फ़न दिता बदलाईआ। सच प्रीती दर साचे सच कमाई, सच मिली वड्याईआ। तेरे जन्म दी जन्म विच्चों जन्म लैण दी चुक्क के लिआया मिठ्ठाई, प्रभ अग्गे भेंट कराईआ। हरिजन हरिसंगत गुरमुख गुरसिख खाण चाँईं चाँईं, चाउ घनेरा इक दरसाईआ। तेरीआं भुजां

बाहवां वेखे थांउँ थाँईं, थान थनंतर फोल फुलाईआ। मेहरवान महिबूब किरपा करे धुर दा मालक सब थाँईं, मेहरवान मेहरवान मेहरवान आपणा रंग रंगाईआ। धर्म राए दी मंज़ल दा गुरमुख बणे कदे ना राही, चित्रगुप्त लेख ना कोए जणाईआ। सतिगुर शब्द शब्द सतिगुर निरगुण निरगुण होए सहाई, आत्म परमात्म परमात्म आत्म आपणा जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित नूर नुराना मर्द मर्दाना शाहो भूप धुर दा राम इक गुसाँईं, काहन कान्हा लख चुरासी नज़री आईआ।

२३ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ मिल्खा सिँघ दी देह छुट्टण दे नवित छत्ती बी बी गंगा नगर

मिल्खा सिँघ लोकमात पूरे होए स्वास, साह साह प्रभ दा नाम ध्याईआ। चुरासी विच्चों मानस जन्म दी पूरी होई आस, तृष्ना जगत रही ना राईआ। मात पित भाई भैण साक सज्जण सारे धरो धरवास, धीरज धीर सति सन्तोख रखाईआ। एह खेल पुरख अबिनाश, हरि करता आप कराईआ। राय धर्म दए ना फ़ास, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। जम का डण्ड करे ना नास, भय भउ ना कोए डराईआ। जन्म जन्म चों होए बन्द खुलास, बन्धन बंध दिता तुड़ाईआ। जिस दी वस्त उसे दे पास, आत्म परमात्म विच समाईआ। जोती जोत होया प्रकाश, अंध अंधेरा दिता गंवाईआ। गुरमुख सचखण्ड दवारे सच निवास, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिस दे विष्न ब्रह्मा शिव दासी दास, करोड़ तेतीसा सीस निवाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु जोत दी धार वेखण खेल तमाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। गुरसिख लोकमात कदे ना मरया, शब्द गोबिन्द गुरु गुरदेव दए वड्याईआ। जो पुरख अकाल दी सरनी परया, पारब्रह्म पतिपरमशेवर आपणे विच समाईआ। मिल्खा सिँघ मंज़ल अगम्मी चढ़या, जगत जहान पन्ध मुकाईआ। सच दवारे जा के खड़या, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। जन भगतां विच जा के रलया, कबीर रविदास खुशी मनाईआ। लख चुरासी विच्चों होया बरया, जन्म मरन दा पन्ध मुकाईआ। किरपा कीती नरायण नरया, नर हरि आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दर साचे सोभा पाईआ। मिलखा सिँघ छडी जगत जगीर, नाता दीन दुनी तुड़ाईआ। वर पा के गहर गम्भीर, दर साचा इक सुहाईआ। जिथ्थे लेखा नहीं कोई तकदीर, तदबीर जगत ना कोए जणाईआ। झगड़ा मुक जाए शाह फ़कीर, हकीर हकीरां डेरा ढाहीआ। मिल के शाह पातशाह शहिनशाह

मालक धुर दे पीर, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों उपर डेरा लाईआ। जगत जहान दी कूड़ी क्रिया मेट लकीर, लैन ऐन विच समाईआ। लेखा चुक्कया भूषन तन वस्त्र सरीर, आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को रूप दरसाईआ। पारब्रह्म प्रभ मेला कीता अख़ीर, ईश जीव आपणा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। मिल्खा सिँघ मिल्या परम पुरख प्रभ ठाकर, हरि करता रंग रंगाईआ। छड के दीन दुनी दा सागर, गहर गम्भीर विच समाईआ। जिस दवारे भगतां मिलदा आदर, नामा जै दयो सोभा पाईआ। सुदामा सदना कहे आया सूरबीर बहादर, योधा इक अख्वाईआ। झगड़ा मुक्कया मक्तूल कातिल, शरअ ज़ंजीर ज़ंजीर तुड़ाईआ। जिसदा भेव खुल्ल्या बातन, बेपरवाह वेख वखाईआ। सचखण्ड दवार मल्ल के वतन, बेवतन आपणे घर सोभा पाईआ। जगत प्यार मुहब्बत मोह मन कल्पना यतन, यथार्थ प्रभ दी धार प्रभ दे विच समाईआ। जिस दा सचखण्ड दवार इक्को पत्तन, दरगाह साची सोभा पाईआ। गुरसिख सतिगुर दा पूरा रत्न, अमोलक अमुल्ल नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणे घर वसाईआ। मिल्खा सिँघ कहे मैथों छुट्टया साक सज्जण, नाता कूड़ रिहा ना राईआ। जो घड़या सो अन्त भाण्डे भज्जण, थिर रहिण कोए ना पाईआ। मैं वसया ओस प्रभू दे वतन, जिथ्थे भगत सुहेले सूफ़ी फ़कीर अवतार पैग़म्बर गुर जोती जोत विच समाईआ। मेरे दीन दयाले पुरख अकाले मैनूं आपणे लाया अंगण, अंगीकार आप कराईआ। गोबिन्द दी धार शब्द कंगण, तन वजूद दिता पहनाईआ। मेरा भाग ना होया मंदन, जगत विच्चों चलया चाँईं चाँईंआ। मेरी अन्त अख़ीर साहिब सुल्तान अग्गे इक्को बन्दन, डण्डावत कर के सीस झुकाईआ। चार जुग तेरे नाम दी सिफ्ती चढ़ी रहे रंगण, कुसंभड़ा रंग ना कोए वखाईआ। गोबिन्द दी मरियादा करे ना कोए भंगण, भाणे विच सारे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा मालक इक अख्वाईआ। मिलखा सिँघ आत्म कहे मैं सच दवार सुत्ती, सचखण्ड विच मिली माण वड्याईआ। जिथ्थे इक्को जेही रुती, रुतड़ी सच दिती महकाईआ। नाता छुट्टया काया बुती, बुतख़ान्यां डेरा ढाहीआ। मिल्या पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अचुती, चेतन आपणे विच्चों आप कराईआ। मेरी आवण जावण गंढ टुट्टी, अग्गे पन्ध रिहा ना राईआ। मेरे साहिब सतिगुर दीन दयाल मंज़ल दिती उच्ची, उच्च अगम्म अथाह दर ठांडे इक टिकाईआ। मन कल्पणा तों बाहर मेरी आत्मा परमात्मा दी लग्गी रहे रुची, अवर वासना ना कोए रखाईआ। मेरा उज्जल होया मुखी, दुरमति मैल रहे ना राईआ। मेरी माता दी सुफ़ल होवे कुख्खी, जिस भगत जन्म के प्रभ दी झोली दिता पाईआ। मेरे पिच्छों मेरा परवार होए कोए ना दुखी, भैण भाई कीरना

वैण कोए ना पाईआ। मेरी जगत नालों टुट्टी, कूड़ संसार नालों होई छुट्टी, पुरख अकाल मेरे गाना बध्धा गुट्टी, आदि निरँजण आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल इक वखाईआ। मिलखा सिँघ दा तन वजूद कहे सरीर, सति सति सुणाईआ। सुणो मेरे साक सज्जण सैण सांझे वीर, सभनां दयां सुणाईआ। मेरे उत्ते ढाई गज़ दा लाल कपड़ा देणा चीर, गोबिन्द दी निशानी जुझार वाली सोभा पाईआ। कोए ना होयो दिलगीर, नेत्र नैणां नीर ना कोए वहाईआ। मैं पी के अमृत रस सीर, सिर धड़ दा लेखा दिता मुकाईआ। मैनूं सचखण्ड दी सच दवार दी सच धर्म दी मिली ओह जागीर, जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी इक्को रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म कर्म कम जन्म पूरब लेखे लहिणे ते मार लकीर, अगली अकसीर, अक्ल बुद्धी तों बाहर आपणे हथ्थ रखाईआ।

✪ २३ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ मिल्खा सिँघ दे अर्थी चुक्कण समें छत्ती बी बी गंगा नगर ✪

मिल्खा सिँघ पुरख अकाल दे सुत दुलारे, दूले धुर दे तेरी वड्याईआ। तूं मंज़ल चढ़ना ओस चुबारे, जिथ्थे गोबिन्द बैठा तेरा माहीआ। तैनूं उडीकदे सिँघ अजीत जुझारे, बाले नीहां वाले राह तकाईआ। खुशी विच हस्सण कहिण असीं वी रहे कुँवारे, कुँवारा गुरमुख साडे विच मिले चाँईं चाँईंआ। फिर जन्म लैणा ना पए दुबारे, मात गर्भ ना अग्न तपाईआ। सुहाणा भगतां दे दवारे, भगतां मिल के वज्जे वधाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर प्रेम दे देण हुलारे, हुलारा धुर दा नाम जणाईआ। अख़ीरी सिख्या दे मात पित भाई भैण साक सज्जण सारे भाईचारे, वड्डयां छोटयां दे समझाईआ। मेरी करे ना कोए गिरयाज़ारे, नेत्र नैणां ना नीर वहाईआ। कोई ना कहे वसदा घर गया उजाड़े, उजड़या खेड़ा जुग चौकड़ी वसे चाँईं चाँईंआ। जिस गोबिन्द ने गुरमुख गुरसिख प्रेम प्रीती प्यार विच तारे, तारनहार दया कमाईआ। गढ़ी चमकौर दे तेरे पूरे करे लारे, पूरब लेखा झोली पाईआ। तैनूं निमस्कार करन चन्द सितारे, सूर्या निउँ निउँ लागे पाईआ। करोड़ तेतीसा सुरप्त इन्द बरखा करे नाल इशारे, विष्न ब्रह्मा शिव तेरा जस गाईआ। तूं पुरख अकाल दीन दयाल साहिब स्वामी अन्तरजामी, घट निवासी दे वसणा ओस महल चुबारे, जिस नूं सचखण्ड कहि के सारे रहे गाईआ। आपणी अन्त दी सब नूं करदे निमस्कारे, अग्गे सीस जगदीश देणा झुकाईआ। जो तेरा एथे उथे बणे सहारे, दो जहानां आपणा रंग रंगाईआ। भैणां तकण साडा वीर चढ़या खारे, लाड़ी मौत वाली प्रनाईआ। फेर उस नूं चरणां विच लताड़े, पल्लू छुडा के भज्जया वाहो दाहीआ। मेरा साहिब सतिगुर

इक्को मित्र यारे, जो यारड़ा सथ्थर गया हंढाईआ। मैं उस दे गृह वसणा ते रहिणा सदा नाले, विछोड़ा अग्गे नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण जन भगतां शब्द सतिगुर हो के आप संभाले, सम्बल दा मालक कलयुग अन्तिम दया कमाईआ।

✪ २३ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ रत्न सिँघ दे गृह पच्ची बी० बी० गंगा नगर ✪

कलयुग कहे सदी चौधवीं लग्गी हस्सण, हस्स हस्स रही जणाईआ। आपणा भेव लग्गी दस्सण, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। दीन दुनी होई दिसे बेवतन, गृह मन्दिर चले ना कोए चतुराईआ। मेरा अन्त किनारा पत्तन, पाती गोबिन्द दए गवाहीआ। करना खेल अलखणा अलखण, अलख अगोचर आपणा हुक्म वरताईआ। जिस मेरी गोदी करनी सक्खण, उम्मत नबीआं पन्ध मुकाईआ। जिस दा पर्दा पुरख अकाल आवे ढकण, परवरदिगार नूर अलाहीआ। सांझी पति आवे रखण, रक्षक हो के होए सहाईआ। मैं सब कुझ तकां अक्खण, बिन नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। कोटां विच्चों मैनूं थोड़े दिसदे रत्न, गुरमुख सन्त सुहेले सोभा पाईआ। कलयुग जीवां चले कोए ना यतन, यथार्थ पड़दा ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता वड वड्याईआ। कलयुग कहे सदी चौधवीं दस्से नाल इशारे, सैनत अगम्म रही लगाईआ। मेरे वेख अन्त किनारे, नईया नौका डोले थांउँ थाँईआ। मुहम्मद तके नाल संग चार यारे, यराना पूरब फोल फुलाईआ। गोबिन्द वेखे पंज प्यारे, पंचम धार धार शनवाईआ। मेरा लहिणा देणा लेखा मुकणा विच संसारे, संसारी भण्डारी सँघारी रहे जणाईआ। मेरा लहिणा देणा पूरा करे कलि कल्की अवतारे, अमाम अमामा शहिनशाहीआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप साढे तिन्न हथ्थ वसदे घर उजाड़े, रुतड़ी रुत ना कोए महकाईआ। दीन मज़्हब दे ला अखाड़े, कलमा कलमे नाल टकराईआ। सृष्ट दृष्ट चबा आपणी दाढ़े, लख चुरासी लहिणा दए मुकाईआ। मेरी उस प्रभू निमस्कारे, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जिस दी चार जुग सिफ्तां विच लिखदे गए वारे, वारता अक्खरां नाल समझाईआ। सिफ्तां करन शास्त्र सिमरत वेद पुराण सारे, अञ्जील कुरान ढोले राग अल्हाईआ। सो धरनी धरत धवल धौल हो उज्यारे, लोकमात आपणा हुक्म वरताईआ। मैं तकदी कलि कल्की अवतारे, निहकलंक अगम्म अथाहीआ। जिस दा खेल बुद्धी तों बाहरे, अक्ल विद्या चले ना कोए चतुराईआ। जो जन भगतां बख्शे नाम अधारे, उदर विच होए सहाईआ। सो मेरा लेखा लहिणा देणा

सदी चौधवीं अन्त विचारे, बचया रहिण कोए ना पाईआ। मेरा साहिब सुल्तान परवरदिगारे, महिबूब जल्वागर इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान निरगुण धार नर अवतारे, अवतरी आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ २६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ६ अमीर चन्द गुलाटी दे नवित हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

सतिगुर शब्द कहे मेरी जुग जुग नवीं तासीर, चौकड़ी समझ किसे ना आईआ। मैं नित नवित करां तामीर, रूप अनूप आपणा इक प्रगटाईआ। ओट लै के गहर गम्भीर, बेनज़ीर आस रखाईआ। लख चुरासी बणा आपणी जागीर, मालक हो के खेल खिलाईआ। जिस धार विच याद कीता कबीर, हिरदे अन्तर ध्यान रखाईआ। खण्डा धार समझ शमशीर, प्यार धुर दा गया निभाईआ। एसे कारन पोह ना सक्या नीर, गंगा लहर ना कोए डुबाईआ। साची सिख्या सिख लै चन्द अमीर, बिना प्रभ तों दूजा नज़र कोए ना आईआ। जो आए सो घत्त के जाए वहीर, पाँधी बणके आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे जो आ गया प्रभ दी सरन, सरन इक तकाईआ। मिल गया नाल धरनी धरन, समरथ संग निभाईआ। उस दे लेखे लग्गे जीवण मरन, आपणी रखे ना कोए वड्याईआ। साहिब सतिगुर सद आए भगतां पल्लू फड़न, नेरन नेरा हो के दया कमाईआ। अग्नी तत ना देवे सड़न, अमृत मेघ नाम बरसाईआ। तूं मेरा मैं तेरा जो धुर दा ढोला पढ़न, तिन्नां लेखा आपणे विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे आदि जुगादी सतिगुर दीन दयाला, दया धार दया कमाईआ। जन भगत बणा के आपणा बाला, बचपन आपणे नाल रखाईआ। लहिणा देवे जन्म जन्म दी घाला, कर्म कम दा पन्ध मुकाईआ। जीवण ज़िंदगी मार्ग दे सुखाला, दु:ख दलिद्दर डेरा ढाहीआ। किसे दा देणा पए ना हाला, जगत जहान ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि सच आपणा रंग रंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे अमीर चन्द दे थाँ हो गया सिँघ अमीर, अमीर सिँघ नाम बदलाईआ। सतिगुर किरपा करके आपणे सीस दा बख्श के वस्त्र चीर, जगदीश आपणे रंग रंगाईआ। जन्म जन्म दी कट के पीड़, पीढ़ी अगली दए बदलाईआ। राय धर्म दवारे ना होवे भीड़, चित्रगुप्त लेखा मंग सके ना राईआ। मंज़ल अन्तिम चढ़े अखीर, जिथ्थे मिले बेपरवाहीआ। पिछली बदल दिती तकदीर, तकसीर आपणे नाल रलाईआ।

साढे तिन्न हथ्थ दी बख्श जागीर, वस्त अनमुल्ली झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होण ना देवे किसे दिलगीर, जगत दलिद्दर दूर कराईआ।

✪ पहली मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ रात नूं हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

कत्तक कहे भगतो मेरी अन्त नमस्ते, नमों नमों नमों सीस झुकाईआ। तुहाडे खेड़े रहिण वसदे, गृह गृह वज्जे वधाईआ। भण्डारे भरे रहिण अमृत रस दे, जगत तृष्ना रहे ना राईआ। मेल हुन्दे रहिण निज नेत्र नैण अक्ख दे, लोचन नाल मिलाईआ। हुक्म सुणदे रहिणा सच दे, सच नाल वड्याईआ। नाते छडणे कूड़ी मति दे, गुरमति लैणी अपनाईआ। प्यार मुहब्बत विच फिरना नस्सदे, भज्जणा वाहो दाहीआ। लेख मुकाउणे कल्पणा अग्ग दे, अमृत मेघ बरसाईआ। भगत दवारे सोहणे बैठे सजदे, दर साचे सोभा पाईआ। अग्गे खेल तक्को अज्ज दे, कत्तक कहे मेरी जगह मग्घर गया आईआ। मग्घर कहे तुसीं बच्चे प्रभू दी रत दे, रत्न अमोलक हीरे नाम समझाईआ। तुहाडे हिरदे रहिणे नहीं तपदे, अग्नी कूड़ देणी गंवाईआ। लेखे पूरे करके पिछले पप दे, पतित पुनीत देवे कराईआ। खेल वखा के इक अलख दे, अलख अगोचर देणा मिलाईआ। घराने रहिण नहीं देणे वक्ख दे, दवार बंक इक सुहाईआ। मेल मिलाउणे पुरख समरथ दे, जो राम रामा धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। मग्घर कहे मैं लोकमात विच चढ़या, प्रभ साहिब दिती वड्याईआ। मैं अक्खर अगम्मी पढ़या, जिस नूं जगत विद्या ना कोए समझाईआ। सच दवारे वड़या, मन्दिर इक्को इक वड्याईआ। प्रभ अबिनाशी तकी अनन्त कलया, कलि कल्की की कार कमाईआ। जिथ्थे जोत दा दीपक बलया, अवर ना कोए रुशनाईआ। जिस जुग चौकड़ी सब नूं छलया, सचखण्ड तक्कया धुर दा माहीआ। जिस दा विछोड़ा होए घड़ी ना पलया, पलक दे पिच्छे सोभा पाईआ। सो आत्म परमात्म धार हो के रलया, निरगुण निरगुण विच समाईआ। जिस दा निहचल धाम अटलया, दर ठांडा इक वखाईआ। उस शब्द संदेशा घल्लया, धुर फ़रमाना बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच हुक्म इक सुणाईआ। मग्घर कहे मैं वेखी दो जहानां पैंदी रास, बिन गोपी काहन वड वड्याईआ। मैं तक्कया पुरख अबिनाश, निरगुण दाता नूर अलाहीआ। मैं वेख्या पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर फोल फुलाईआ। मैं चार जुग दी तकी आस, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग ध्यान लगाईआ।

झट पुरख अकाल ने दिता आख, हुक्म अगम्मा इक दृढ़ाईआ। दीन दुनी दा वेख वाक्यात, वाक्या पड़दा इक चुकाईआ। की खेल कायनात, हरि करता रिहा जणाईआ। नूर नुराना तक साख्यात, जल्वागर अगम्म अथाहीआ। जिस दे कोल सब दा भविक्ख्त वाक, वाकिफ़कार आदि जुगादि अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। मग्घर कहे मैनूं आई अगम्मी ख़बर, बेख़बर दिती सुणाईआ। चार कुण्ट रिहा कोए ना सबर, बेसबर होई लोकाईआ। ओह तक की पुकारे पैग़म्बरां कबर, मकबरे देण दुहाईआ। जिस दा उम्मत बणाया टब्बर, वसीला जगत नाम समझाईआ। ओह पाउण लग्गा ग़दर, गदागर करे लोकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां उस दा मंज़ूर कीता अदल, इन्साफ़ इक समझाईआ। दीन दुनी दी धार देवे बदल, बदला चुक्के थांउँ थाँईंआ। सब दे सिर ते कूके अज़ल, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। सदी चौधवीं सब दी पूरी होई मज़ल, मंज़ल अग्गे रही ना राईआ। दीन दयाला करे वज़न, तराज़ू कंडा नाम उठाईआ। जिस झगड़ा मेटणा काया माटी बदन, बदी दा लेखा दए मुकाईआ। छेती हलूणा दए विच अदन, आहला अदना आप उठाईआ। खेल करे सूरा सरबंगण, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। सृष्टी दी दृष्टी तके भजन, बन्दगी फोले थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। मग्घर कहे मैं नेत्र खोल्या सज्जा, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। झट कलयुग आ गया भज्जा, पैंडा पन्ध मुकाईआ। मैनूं कहे मैं दीन दुनी दी करके आया गजा, घर घर अलख जगाईआ। मैनूं प्रभू दी किरपा बिना भगत कोए ना लभ्भा, सृष्टी वेखी थांउँ थाँईंआ। जेहड़ा गुर अवतार पैग़म्बरां पाया दब्बा, दबदबे सारे दिते हटाईआ। सारी दुनिया उफ़ हाए कहे रब्बा, रब्बी नूर ना कोए चमकाईआ। तन बणा के बगला बपड़ा बग्गा, हँकार विकार नाल मिलाईआ। कबुध रूप बणा के कग्गा, मुख कूड़ नाल भराईआ। सच सरनाई कोए ना लग्गा, लग मात्रा दा डेरा ढाहीआ। कलयुग कहे मैं पवित्र रहिण नहीं दिती कोई जगह, धर्म दी धार ना कोए वखाईआ। जिस कारन गोबिन्द दा मेटया अग्गा, बच्चयां जड़ ना कोए लगाईआ। गुरमुख बणा के हीरे नगा, कीमत सृष्ट विच समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। कलयुग कहे मग्घर मेरे मीत, मित्रा दयां जणाईआ। तूं वी रखणा चीत, दाता धुरदरगाहीआ। जिस झगड़ा मेटणा मन्दिर मसीत, काअब्यां परे करे पढ़ाईआ। त्रैगुण हो अतीत, त्रैभवण धनी पर्दा दए उठाईआ। दीन दुनी दी बदल देवे नीत, नीतीवान होए सहाईआ। झट कलयुग रो के मारी चीक, कूक कूक सुणाईआ। दरोही मेरी मिटणी लीक, पैग़म्बरां सके ना कोए बचाईआ। बिना शब्द गुरु तों करे ना कोए तस्दीक,

शहादत अवर ना कोए रखाईआ। मेरा अन्तर होया भय भीत, सिर अग्गे ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक वरताईआ। कलयुग कहे सुण सच्चे मग्घर महीना, महिव दयां जणाईआ। बिना प्रभू तों मुश्किल होणा सब नूं जीणा, जीवण हथ्थ किसे ना आईआ। झगड़ा पैणा लोक तीना, त्रैगुण आपणा रंग बदलाईआ। प्यार रहिणा नहीं रूसा चीना, चिन्ता ग़म नाल सताईआ। खेल वेखणा नर मदीना, की नर नरैण हुक्म वरताईआ। सब दा हक हकूक जाणा छीना, हकूमत अग्गे ना कोए चलाईआ। पुरख अकाल बण के दाना बीना, गहर गम्भीर आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक समझाईआ। कलयुग कहे मैनूं शब्द ने मारी चपेड़, आलस रिहा गंवाईआ। कन्नों फड़ के दिता गेड़, चारों कुण्ट भवाईआ। हुक्म नाल छेड़ के छेड़, हलूणा दिता वखाईआ। किस बिध दीन दुनी दा करना भेड़, आपणी बिधी दे सुणाईआ। उलटा करना गेड़, गेड़े विच दुहाईआ। कलयुग कहे प्रभू तेरा शब्द गुरु होणा दलेर, सूरबीर इक अख्वाईआ। मेटे मात अंधेर, नूर करे रुशनाईआ। बब्बर बण के केहर, धुर दी भबक सुणाईआ। मेहरवान करके मेहर, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक जणाईआ। कलयुग कहे मेरी अरदास, बेनन्ती दयां जणाईआ।
८५३
२२
जो हुक्म पुरख अबिनाश, सो सहिजे दयां सुणाईआ। किस बिध मेरी पूरी होवे आस, सदी चौधवीं नाल मिलाईआ। हुक्म मन्नणा पुरख अबिनाश, सिर सके ना कोए उठाईआ। मैं दस्सां दोवें जोड़ के हाथ, हथेली हथेली नाल मिलाईआ। मेरा साहिब इक रघुनाथ, रघुपति वड वड्याईआ। जिस दी चार जुग दे शास्त्र गाउंदे गाथ, अक्खरां विच सिफ्त सालाहीआ। उस लहिणा देणा मेरा पूरा करना हिसाब, लेखा अवर रहे ना राईआ। किरपा करे आप महाराज, महिबूब धुरदरगाहीआ। मैं कदमां करां आदाब, निउँ निउँ लागां पाईंआ। हुक्म सुणां अगम्म जनाब, जो अगम्मढ़ी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच हुक्म इक वरताईआ। कलयुग कहे अवतार पैग़म्बर मैनूं रहे बोल, धुर शब्दी शब्द जणाईआ। दीन मज़्हब दा रहे कोए ना रोल, रौला दीन दुनी मुकाईआ। पुरख अकाल नाम कंडे धर्म तराज़ू देणा तोल, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। कलयुग कहे सब तों वक्खरा मेरे प्रभ दे नाल गोबिन्द दा इक कौल, जिस दा पड़दा ना कोए उठाईआ। जिस वेले खण्डे दी धार देण लग्गा सी पाहुल, अमृत रस चखाईआ। इक सौ इक पैसा रखया सी उपर धरनी धौल, फेर चरणां हेठ दबाईआ। प्रभू दे नाल कीता कौल, इकरार इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच भेव आप खुल्हाईआ। कलयुग कहे गोबिन्द ने इक सौ इक

पैसा चरण हेठ रखया, सज्जा चरण दिता टिकाईआ। फिर ज़िमीं असमानां वल्ल तक्कया, अक्ख अक्ख विच्चों उठाईआ। फिर जैकारा बोल फतिहआ, पुरख अकाल सीस निवाईआ। फिर मस्ती विच आपणा आप रत्तया, रंग अगम्म चढ़ाईआ। फिर खुशीआं दे विच हस्सया, प्रेम दी ताली दिती वजाईआ। फिर गुरमुखां अन्दर वसया, प्रेम प्रीती गंढ पवाईआ। फिर बचन कीता सच्चया, सच दिता दृढ़ाईआ। फिर भविक्खत वल्ल तक्कया, बिन नैणां नैण उठाईआ। की खेल करे पुरख समरथया, हरि करता धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं पिता पुत दी करे हत्या, पूत पिता बणे कसाईआ। घर घर दिसे रट्टया, रट्टा सके ना कोए गंवाईआ। गोबिन्द ने आपणा खण्डा चक्कया, हथ्थ नाल भवाईआ। झट पुरख अकाल आया नस्सया, जोती नूर दिता चमकाईआ। दुलारे औह वेख अंधेरी मस्सया, तेरे ढईए पिच्छों आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। पुरख अकाल किहा औह वेख लै जोत शब्द धार दा ढईआ, ढौंका इक्को दे समझाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया होवे नईया, नौका नाम नज़र कोए ना आईआ। विभचार होणा भैणा भईआ, मात पुत अक्ख बदलाईआ। साक सज्जण नहीं रहिणा सईआ, मीत मित्र मुख बदलाईआ। साचे नाम दा दिसे ना कोए गवईआ, आत्म राग ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक सुणाईआ। कलयुग कहे इक सौ इक पैसे ते गोबिन्द पाया भार, खुशी नाल दबाईआ। हेठों धरती कीती पुकार, कूक कूक सुणाईआ। मैनूं माया नाल ना मार, ममता नाल रलाईआ। मेरी तेरे चरण निमस्कार, निउँ निउँ लागां पाईआ। तूं प्रभ दा सुत दुलार, गोबिन्द सच्चा माहीआ। जाह कलयुग दा बण यार, यराना वेख वखाईआ। झट कलयुग ताड़ी दिती मार, नच्चया टप्पया कुद्दया चाँईं चाँईंआ। औह वेख सदी चौधवीं दा अखाड़, धरनी उत्ते सोभा पाईआ। अग्ग लग्गणी बहत्तर नाड़, तत्व तत ना कोए बुझाईआ। माण रहिणा नहीं पैग़म्बर गुर अवतार, अवतरी आपणी खेल खिलाईआ। गोबिन्द नेत्र ल्या उठाल, निगह निगह विच्चों बदलाईआ। फिर हस्स के किहा कलयुग औह तक लै मेहरवान, जो मेहर नज़र उठाईआ। योधा सूरबीर बलवान, दो जहानां नज़री आईआ। उस प्रगट होणा विच जहान, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। कलयुग किहा मैनूं उस दा माण, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। धरनी किहा गोबिन्द जो मेरी झोली बख्श्या दान, मैं तेरे दर सुटाईआ। तूं साहिब कर परवान, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। गोबिन्द किहा कलयुग इक सौ इक लै चुक्क, आपणी झोली लै भराईआ। कलयुग विंगा कर के मुख, हस्स के दिता दृढ़ाईआ। गोबिन्द मैनूं नहीं भुक्ख, मैं भुक्खी करनी जगत लोकाईआ। अन्त

मेरी सुफल करनी कुख्ख, धरनी वाली कुख्ख दर तेरे वास्ता पाईआ। जिस वेले मेरी औध गई पुज्ज, पूजन जग दा सर्ब मिटाईआ। धुर दी खेल सके कोए ना बुज्झ, अनभव पर्दा ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा रंग रंगाईआ। कलयुग कहे गोबिन्द मैं धुर दा हुक्म सुणाउंदा हां। दर ठांडे सीस निवाउंदा हां। आपणी कीती करनी प्रभ दे अग्गे टिकाउंदा हां। सदी चौधवीं अन्त वेख वखाउंदा हां। की प्रभू बणाए बणत, उस प्रभू नूं सीस निवाउंदा हां। जिस वेले धर्म दा रहिणा नहीं कोई सन्त, उस वेले दा राह तकाउंदा हां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारे मंग मंगाउंदा हां। कलयुग कहे मेरी अरदास, बेनन्ती इक जणाईआ। मेरा देणा साथ, गोबिन्द संग निभाईआ। गोबिन्द किहा शाबाश, तेरे हथ्थ वड्याईआ। उठ ओह तक लै सम्मत शहिनशाही छे छब्बी पोह दी होणी रात, भिन्नड़ी नाल मिलाईआ। भगतां होणी जमात, प्रभ जोत जोत रुशनाईआ। सच संदेशा देवां आख, बिना अक्खरां आप दृढ़ाईआ। जिस वेले सब दा पूरा कीता भविक्ख्त वाक, पेशीनगोईआं वेख वखाईआ। वक्त सुहञ्जणा करे लोकमात, धरनी धरत धवल रंग रंगाईआ। उस वेले कलयुग तेरा होणा खेल तमाश, हरि करता आप कराईआ। तिन्न रंग दा त्रैगुण माया दा तेरा होणा लबास, धुर दे हुक्म नाल रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक हो आईआ। कलयुग कहे गोबिन्द खेल होवे कैसा, किस बिध वेख वखाईआ। मेरा कर्म होवे ना वांग वैशया, हुक्म धुर दा मन्नां चाँईं चाँईंआ। जेहड़ा तेरे चरणां हेठ दब्बया इक सौ इक पैसा, धरनी धरत उत्ते सुहाईआ। इस दा लहिणा की लेखा, मैनूं दे दृढ़ाईआ। गोबिन्द ने किहा कलयुग जिस वेले मेरे सिख बेअदबी करनगे केसा, साह साह ना कोए ध्याईआ। कूड़ी क्रिया आपणा समझणगे पेशा, माया ममता विच हल्काईआ। उस वेले मैं ते मेरा मालक प्रगट होवे सम्बल देसा, देश आपणा इक वसाईआ। दो जहानां बणे नेता, हुक्म देवे थांउँ थाँईंआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं चार जुग दा पूरा करे ठेका, ठेकेदारी सब दी दए मुकाईआ। निरगुण नूर प्रकाश करे उच्चेचा, उच्च अगम्म आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच पड़दा आप उठाईआ। गोबिन्द किहा कलयुग तेरा अन्त खेल खिलावांगा। सन्त सुहेले प्रगट कर के भगत, भगवन्त आपणा मेल मिलावांगा। नवीं धार दस्स के जगत, जुगती धुर दी इक प्रगटावांगा। सब दी पूरी कर के शर्त, शरअ दा लेखा आप चुकावांगा। निरगुण निरवैर हो के आवां परत, पतिपरमेश्वर संग रलावांगा। तेरा लेखा पूरा करां उपर धरत, धरनी धवल नाल उठावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा दर खुल्ावांगा। गोबिन्द किहा जो

इक सौ इक पैसा चरण हेठ ल्या दब्ब, एह कलयुग तेरा अन्त कराईआ। तेरा समां लम्मां नहीं रहिणा वद्ध, शब्दी हुक्म नाल कटाईआ। जिस वेले निरगुण परत के आवां जग, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। निरगुण धार बण सरबग, सूरबीर अख्वाईआ। सब दी पिछली मेट के हद्द, अगला मार्ग इक जणाईआ। भगत भगवान दा मार्ग दस्स, खेल करां चाँईं चाँईंआ। प्रेम प्रीती अन्तर वस, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। लेखा पूरा करां हक, हकीकत आपणी इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। कलयुग कहे एह खेल अगम्म अजीब, निराला दिता जणाईआ। गोबिन्द किहा मेरी हुक्म वाली ताकीद, तैनूं दयां दृढ़ाईआ। शब्द दी लै रसीद, बिन हथ्थां हथ्थ फड़ाईआ। सम्मत शहिनशाही छे रखीं उडीक, अन्तर अन्तर ध्यान रखाईआ। प्रगट होवे लाशरीक, परवरदिगार धुरदरगाहीआ। जिस दे विच हक तौफ़ीक, ताकतवर नूर इलाहीआ। आसा मनसा पूरी करे उम्मीद, तृष्ना दए गंवाईआ। फेर गोबिन्द ने मारी लीक, लाईन दिती लगाईआ। कलयुग ने मारी चीक, चीक चिहाढ़ा दिता पाईआ। की एह खेल होणा ठीक, ठाकर आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा भेव इक चुकाईआ। गोबिन्द किहा कलयुग जिस वेले सम्मत शहिनशाही छे, छब्बी पोह आवेगा। धर्म धार दा पूरा होवे नेंह, निहकलंक कल प्रगटावेगा। अमृत धार बख्श के मेंह, गुरमुखां हिरदे साफ़ करावेगा। भाग लगा के काया माटी साढे तिन्न हथ्थ देह, देहुरा मन्दिर मसीत गुरदवार इक जणावेगा। जिथ्थे सतिगुर शब्द हो के बहि, सिंघासण आसण इक वडयावेगा। जो गुर गोबिन्द दिता कहि, सो पूरा अन्त करावेगा। ओह वेख जन भगतां दा भगत दवारा होणा इक गृह, धाम सुहञ्जणा इक वडयावेगा। कलयुग तेरा पुट्ठा पलँघ जाणा डहि, पुट्ठी कल आप वरतावेगा। कोटां विच्चों कोई गुरमुख विरला भाणा सहे, सृष्ट सबाई आप भुलावेगा। जन भगतां अन्दरों मार के ममता मैं, हउमे गढ़ तुड़ावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता अगम्म अथाहीआ। गोबिन्द कहे कलयुग छब्बी पोह दी होणी रात, रुतड़ी सच महकाईआ। लेखा लिख्या जाणा कलम दवात, अक्खर अक्खरां जोड़ जुड़ाईआ। लहिणा देणा होणा बेबाक, लेखा अवर रहे ना राईआ। जो दाइरे दा बणया होणा ताक, सच सिंघासण साहमणे सोभा पाईआ। उस दे विच्चों जन भगतां लघाउँणा आपणा आप, दूजा मदद ना कोए कराईआ। सोहँ सो दा जपणा जाप, हिरदे हिरदे विच समाईआ। आपणा आप कर के पाक, चरण दवारे आउणा चाँईं चाँईंआ। कलयुग इक सौ इक पैसा गोबिन्द दे चरणां देणा राख, बचया रहिण ख़ाली कोए ना पाईआ। उस वेले पंजां लिखारीआं हरि शब्द दा करना जाप, जो हाढ़ सतारां दिता लिखाईआ। बाकी

सब ने रहिणा चुप्प चाप, निमस्कार कर के बैठण थांउँ थाँईंआ। फिर अगला लेखा दस्सणा साख्यात, की करता कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। मग्घर कहे मैं सुणया धुर फ़रमाना, सतिगुर शब्द दिता दृढ़ाईआ। जो चौदां गुरमुखां रूप धरया होणा राणा, कल्गी सीस उत्ते टिकाईआ। उन्हां दा इक्को जेहा होवे बाणा, बाण तीर तरकश कंध्याँ उत्ते टिकाईआ। बलधारी बण जवाना, चल्लण चाँईं चाँईंआ। चौदां तबकां नूं इक्को रंग रंगाउणा, अन्दर आशा इक वधाईआ। चौदां लोक हुक्म होवे सुल्ताना, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। मग्घर कहे मेरी अन्त अख़ीरी आस, आशा दयां जणाईआ। छब्बी पोह नूं पंज कुँवार कन्या पाया होवे काला लबास, मेंढी सीस ना कोए गुंदाईआ। मस्तक विच लिख्या होवे आकाश, अलिफ़ ये नाल वड्याईआ। जेब विच पाया होवे इक इक काट, जिस नूं कार्ड कहे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे धुर दा बाप, पिता पुरख अकाल दीन दयाल आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित आपणा हुक्म वरताईआ।

सतिगुर शब्द कहे शब्दी आ गया शब्दी शब्द फ़रिश्ता, भज्जया वाहो दाहीआ। निक्का जेहा बचन सुणाया आहिस्ता आहिस्ता आहिस्ता, हौली हौली रिहा जणाईआ। प्रभू जिन्हां दा तेरे उत्ते निश्चा, इष्ट स्वामी इक्को रहे मनाईआ। पिछला भैण भैणां दा रिश्ता, सुदामे दे गवांढी सोभा पाईआ। अग्गे पूरा कर दे निसचा, भरोसा आपणा नाम वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। द्वापर जुग दा नाता इक, एकँकार दया कमाईआ। स्त्री मर्द सारे सतिगुरु दे सिख, जन्म विच फ़र्क रहे ना राईआ। महिन्दरो नूं जो पिछला लेखा गया दिस, उस दा लहिणा दए समझाईआ। चिट्टे वस्त्र आपणीआं भैणां दा ल्यावे हिस, हिस्सा शब्दी सतिगुर पूर कराईआ। लहिणा मिलणा प्रकाश कौर चरणी नूं बिध किस, तरीका आपणा आपणे हथ्थ रखाईआ। जो आदि जुगादी दा मालक सब दे वड़या विच, पूरब पड़दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एकँकार एका इक, इक इकल्ला आपणी कल वरताईआ।

निरगुण सरगुण दे बटूए दो, वड्डा छोटा रूप बणाईआ। सरगुण नूं वड्डा बख्श्या ते रखया माया दा मोह, एसे कर के अवतार पैग़म्बर गुरु तत्तां वाले इस नूं लै के आपणा वक्त गए लँघाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला आपणयां भगतां नूं कर के निरमोह, माया हथ्थो हथ्थ चलाईआ। प्रीतम सिँघ पाल सिँघ ने लई छोह, फेर गुरमुख रविदास चमारे हथ्थ फड़ाईआ। ओन्हे गौह नाल लई टोह, अन्दर वड़ के ध्यान लगाईआ। फेर हस्स के किहा प्रभ दे दर ते रख दईए बण के गरोह, लालच रहिण कोए ना पाईआ। जिन्हां दे अन्तर बख्शी लो, लोयण आपणा दिता खुल्हाईआ। ओह उसे दे गए हो, ओसे दी माया उसे दी साया उसे दी काया ते उसे दी भेंटे दिती चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। शेर सिँघ दा झुम्बल बाटा, झुग्गी जगत वाली बणाईआ। पूरन सिँघ पूरन जोत प्रकाशा, जोत जोत इलाहीआ। जिस दा खेल अजब तमाशा, हरि करता आप समझाईआ। सच दवारे पा के सच आपणी रासा, खुशी खुशी विच्चों वखाईआ। चरण जोड़ा जेहड़ा प्रीती विच देवे साथा, प्रीतम आपणा संग बणाईआ। उहदे विच ओह तेल दा निशान जेहड़ा रविदास अठीं दिनी पाउंदा सी विच चराग़ा, ग़रीबी विच आपणा झट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सोहणा जोड़ा दिसया छोटा, मेच ना कोए समझाईआ। क्यों प्रभू दा पैर ना लम्मा ना चौड़ा ना मोटा, लम्बाई चौड़ाई नज़र किसे ना आईआ। ना ओह कोई कढ्ढुया होवे तिलेधारी नाल गोटा, जगत डोर बंध ना कोए बंधाईआ। जिस वेले प्रकाश होवे उपर जोता, जोत दी चमक विच चमक चमक रुशनाईआ। ओथे किसे दी पुज ना सके सोचा, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। ओह चरण जोड़ा भय देवे चौदां लोका, चौदां तबक दए हिलाईआ। सरगुण माया ने सब नूं करना थोथा, बटूआ वडा दए गवाहीआ। तेल दे दाग़ ने किसे दे घर रहिण नहीं देणा दीवा जगदा वांग जोता, चार कुण्ट अंधेरा दए कराईआ। भगतां दे वास्ते इक निक्का जेहा खेल जगत वास्ते बहुता, बहु आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द संदेशा संदेशा इक जणाईआ।

✪ २ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ काका गुरदेव सिँघ जेठूवाल दे सगण नवित सवेरे हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभू साडी निमस्कार, दरगाह साची सचखण्ड दवारे सीस निवाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित तेरा खेल अपार, सो पुरख निरँजण तेरी बेपरवाहीआ। हरि पुरख निरँजण शाह पातशाह सच्ची सरकार, शहिनशाह

तेरे हथ्थ वड्याईआ। एकँकार बण सहार, इक इकल्ले दया कमाईआ। आदि निरँजण नूर जोत कर आकार, निराकार डगमगाईआ। अबिनाशी करते दे आधार, मेहरवान महिबूब आपणा रंग रंगाईआ। श्री भगवान पा सार, महासार्थी आपणी कल प्रगटाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर लहिणा देणा सर्ब विचार, विचर के दईए जणाईआ। ब्रह्म लेखा वेखणा विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। तूं आदि जुगादी शब्द गुरु गुर अवतार, पैग़म्बर अगम्म अथाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा खेल वेख्या निरगुण सरगुण धार, पंज तत तत वड्याईआ। निरअक्खर संदेशा देंदा रिहों अक्षर जगत उच्चार, सिफ्त सिफ्ती सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड साचे मंग मंगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण तेरा चार जुग दा तक्कया समाज, चार वरन देणा गंवाईआ। तेरे नाम कलमे दी सुणी आवाज़, हुक्म अगम्म अथाहीआ। दृष्टी अन्दर गए जाग, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। खेल दस्स के आए दीन मज़्हब दी याद, मानव मानुख मनुष वंड वंडाईआ। धरनी धरत धवल धौल खेड़ा करके आए आबाद, बेपरवाह दर तेरे सीस झुकाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई पारसी बोधी जैनी अनिन तेरे नाम दा दस्सया रिवाज़, रहिबर राह समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभू तेरी दस्सी धर्म धार दी रीती, जुग जुग राह चलाईआ। खेल खिला के मन्दिर मसीती, शिवदुआले मट्ठां रंग रंगाईआ। आत्म धार दस्स प्रीती, परमात्म आए सुणाईआ। सति सच जणा के नीती, निरगुण निरवैर दिता दृढ़ाईआ। साढे तिन्न हथ्थ काया चाढ़ रंग मजीठी, दुरमति मैल धुआईआ। विच शरअ दी रख के लीकी, रस्ता वक्ख वक्ख बदलाईआ। कलमा नाम दस्स हदीसी, हज़रत हज़ूर करी पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे साचा वर, मेहरवान तेरे हथ्थ वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडे सीस प्रभू प्रभ झुकदे, कदीम दे मालक कदम ध्यान लगाईआ। साडे अन्तिम पैंडे मुकदे, कलयुग सदी चौधवीं दए गवाहीआ। असीं सारे वणजारे बणीए तेरी नाम तुक दे, इक्को शब्द होए शनवाईआ। ज़ात पात दीन मज़्हब भेद भाउ मिटा दे मनुख दे, मानव आपणे रंग रंगाईआ। झगड़े रहिण ना शरअ वाली दु:ख दे, छुरी हथ्थ ना कोए उठाईआ। आत्म परमात्म सब नूं साचा सुख दे, गृह मन्दिर कर रुशनाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर दर ठांडे तेरे पुछदे, गल पल्लू वास्ता पाईआ। जे तूं गोबिन्द नाल नाते जोड़े पिता पुत दे, पूत सपूते गुरमुख गोद उठाईआ। कलयुग वाली अन्तिम जड़ पुट्ट दे, लोकमात रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचा धरनी धरत धवल दी गोदी सुट्ट दे, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। पड़दे ओहले रहिण ना लुक दे, अनभव लेखा देणा जणाईआ। लहिणे

८५६ २२

मुक जाण मात गर्भ उलटे रुक्ख दे, दस दस मास ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझे यार दर तेरे सजदा सीस झुकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण कलयुग मेट दे कूड़ पसारा, क्रिया रहिण कोए ना पाईआ। सतिजुग तेरा सति होवे वरतारा, सति पुरख निरँजण होणा सहाईआ। चार वरन अठारां बरन बख्श इक दवारा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। नौ खण्ड पृथमी तेरी शरअ तों होए कोए ना बाहरा, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई इक्को रंग रंगाईआ। तूं पारब्रह्म पतिपरमेश्वर एकँकारा इक इकल्ला नूर अलाहीआ। सति धर्म दी साची बन्ह् दे धारा, सतिजुग सच दे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक वेख वखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू मानव ज़ाती बख्श आपणी लग्न, अन्तर आत्म प्रेम बणाईआ। शब्दी धार कर मग्न, सोई सुरती आप उठाईआ। त्रैगुण माया विच मूल ना दग्ण, अग्नी तत देणा बुझाईआ। सच प्रेम दी चाढ़ के रंगण, दुरमति मैल देणी धुआईआ। इक्को तेरे दर ते होवे बन्दन, दूसर सीस ना कोए झुकाईआ। लोकमात तन वजूद जगत विवहारी जो होवे सग्ण, सगले स्वामी तेरे चरण चरण सरनाईआ। नाता होवे माटी बदन, वजूद महिबूब देणा समझाईआ। तूं मालक ख़ालक करना अदल, इन्साफ़ इक दृढ़ाईआ। पिछली चार जुग दी मर्यादा दे बदल, तबदीली शब्द गुरु समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभू जिन्हां भगतां तेरे उपर होवे निसचा, निहचल धाम देणी वड्याईआ। रूप बणाउणा धर्म दे सिख दा, सिख्या शब्द नाम दृढ़ाईआ। इष्ट दृढ़ाउणा पुरख अकाल इक दा, एकँकार पड़दा आप चुकाईआ। माण बख्शणा मात पित दा, पिता पूत गोद उठाईआ। जो तेरे दवारे होवे विकदा, कीमत करते लैणी पाईआ। उन्हां दा मेल होवे नित दा, आत्म परमात्म मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। अन्तर विकार रहे ना विख दा, कूड़ कुड़यार देणा कढ्ढाईआ। जीवण समझाउणा आपणे भविख दा, पड़दा भविश विच्चों उठाईआ। तुध बिन दूजा दीन दुनी ना कोए नजिठ्ठदा, मार्ग इक ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि साहिब तेरी सरनाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभू साडी अरदास, बेनन्ती इक दृढ़ाईआ। तेरी सिख्या तेरे पास, जुग जुग भगतां आप वरताईआ। कलयुग अन्तिम निरगुण जोत कर प्रकाश, शब्द दमामा डंक वजाईआ। सृष्टी दृष्टी दीन दुनी कर खुलास, बन्धन शरअ वाले तुड़ाईआ। सच प्रीती दस्सदे आप, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। बन्द किवाड़ी खोल्ह ताक, निज नेत्र नैण कर रुशनाईआ। जिन्हां गुरमुखां नाल बाहरों तन नाल तन दा बणावें साक, अन्दरों आत्म परमात्म आपणे नाल लैणी जुड़ाईआ। अवतार पैग़म्बर

८६०
२२

गुर कहिण प्रभू सानूं तेरे उत्ते विश्वाश, विश्व दा लेखा तेरे हथ्थ नज़री आईआ। तेरी मर्यादा चार जुग दे शास्त्र समझ सके ना कोए किताब, अक्खर अक्खरां विच्चों भेव ना कोए खुल्हाईआ। तूं आदि अन्त दा जुगा जुगन्त दा मालक इक महाराज, मेहरवान धुरदरगाहीआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक साचा इक आदाब, अदब नाल सजदा सीस झुकाईआ। सति धर्म सतिजुग साचे तेरा इक्को हुक्म होवे वाहिद, वाहिद तेरे हथ्थ वड्याईआ। दीन दुनी दा आत्म परमात्म बणना गाईड, गॉड गुड दर तेरे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो सरन सरनाई पुरख अकाल तेरी जाए लाग, दीन दयाल लग मात्रा दा डेरा देणा ढाहीआ।

८६१ २२ ✪ २ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ नम्बरदार प्रीतम सिँघ दे घर पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪ ८६१ २२

जन भगत कहिण असीं जुग जुग दे पाँधी, मुसाफ़र दीन दुनी जगत लोकाईआ। धरनी धरत धवल धौल जगत विकार तकदे रहे आंधी, माया ममता मोह विकार हँकार ध्यान लगाईआ। साढे तिन्न हथ्थ तपदी तकदे रहे हाण्डी, कल्पणा विच मात कुरलाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर खेल वेखदे रहे स्वांगी, अकल कलधारी की आपणी कल वरताईआ। जीवां जंतां अन्तर धार तकदे रहे की की गुण गांदी, सिफ्ती सिफ्तां विच सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा रंग रंगाईआ। जन भगत कहिण तकदे रहे जगत जहाना, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेस वटाईआ। साहिब सतिगुर दा गाउंदे रहे तराना, तुरीआ तों बाहर सिफ्त सालाहीआ। नाद वजाउंदे रहे अगम्मी धुन्काना, अनरागी रूप प्रगटाईआ। इष्ट मन्नदे रहे श्री भगवाना, दूसर सीस ना कोए निवाईआ। नाम प्रेम दा तकदे रहे पैमाना, नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। गढ़ हँकार तोड़दे रहे अभिमाना, मन मति दा डेरा ढाहीआ। साहिब स्वामी दा तकदे रहे निशाना, निशावर आपणा आप कराईआ। प्रभ किरपा नाल समझया ना कोए बेगाना, बेग़म हो के इक्को ध्यान लगाईआ। बिना शमां तों भगती दा बण परवाना, आपा भगवन उतों वार वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि सज्जण मीत इक अख्वाईआ। जन भगत कहिण जुग जुग तक्कया खेल तख्त निवासी श्री भगवाना, निवास अस्थान भोग लगाईआ। नूर ज़हूर तक शाह सुल्ताना, हुक्म संदेशा मन्नया चाँईं चाँईंआ। निउँ निउँ करदे रहे प्रणामा, परम पुरख धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। झट पासा परत के कहे नामा, नामदेव दृढ़ाईआ। प्रभू मेरे घर दा बणया रिहा कामा,

धन्ना ताली रिहा वजाईआ। मैं वी फड़ खवाया खाणा, उलटी धार बणाईआ। कबीर कहे मैं करा दिता इश्नाना, गंगा नीर दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगत कहिण असीं दस्सीए जन भगतां, कलयुग अन्त अन्त सुणाईआ। सब दीआं पूरीआं हुन्दीआं वेखो शर्ता, शरअ ज़ंजीर रहे ना राईआ। निगह मार लओ जगत चुतरफ़ा, हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। रहिण देणा नहीं कोई तफरका, फिरकाप्रस्ती देणी गंवाईआ। हुक्म वरतणा नरायण नर दा, हरि करता आप सुणाईआ। जो मालक घर घर दा, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। गुरमुख सन्त सुहेले फड़दा, मातलोक सुत्तयां लए उठाईआ। सच प्रीती आपे करदा, प्रीतम हो के प्रीतम सिँघ नाल मिलाईआ। तन्दल सुदामे वाले चब्बदा, भगवन आपणी खुशी बणाईआ। पिछला समां गया लँघदा, आपणा पन्ध चुकाईआ। अग्गे खेल वेखो अनन्द दा, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जिस दा खेल अगम्मी नूरी चन्द दा, नूर जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्यार बख्शे आपणे नाम अगम्मी छन्द दा, छन्द आपणा आप दृढ़ाईआ।

८६२
२२

५ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ अजीत दे घर बटाला शहर

कलयुग कहे मैं तक्कया शाह सुल्ताना, हरि करता धुरदरगाहीआ। जो आदि जुगादी राम रामा, निरगुण निरवैर निराकार अगम्म अथाहीआ। खेल जाणया अगम्मड़े कान्हा, जो नित नवित लख चुरासी आत्म परमात्म गोपी आप प्रनाईआ। नूर नुराना नौजवाना तक्कया वड अमामा, जो अमलां तों रहित सोभा पाईआ। शब्द अगम्मी नाद सुणया धुर कलामा, कल्मयों बाहर पढ़ाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर खेल करे दो जहानां, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी वरते आपणा भाणा, ना कोई मेटे मेटे मिटाईआ। तख्त निवासी पुरख अबिनाशी सति सतिवादी बण के राणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक वरताईआ। कलयुग कहे मैं तक्कया साहिब श्री भगवन्त, हरि भगवन धुरदरगाहीआ। सति सतिवादी सुणया मंत, मन्त्र अगम्म अथाहीआ। जो दो जहानां बणया कन्त, कन्तूहल इक अख्वाईआ। जिस नूं लभ्भदे आदि जुगादी जुग चौकड़ी सन्त, सूफ़ी सफ़िआं विच्चों फोल फुलाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला बणाए आपणी बणत, घड़न भन्नणहार आपणी बणत बणाईआ। लख चुरासी वेखे जीव जंत, साध सन्त बचया रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल

धुर दा हरि, हरि करता सहिज सुखदाईआ। कलयुग कहे मैं तक्कया पुरख अकाले कोल बिन अक्खरां अगम्मी फ़रद, बिन सतरां सोभा पाईआ। जिस दा लेखा जाणे कोई ना छुरी करद, खड़ग धार ना कोए जणाईआ। ग़रीब निमाणयां वंडे कोए ना दर्द, दुखियां दुःख ना कोए गंवाईआ। आत्म परमात्म मिलण दी समझे कोए ना ग़रज़, ममता कूड़ भरी लोकाईआ। संदेशा नाम देवे कोए ना गरज, जैकारा अलख ना कोए सुणाईआ। सदी चौधवीं मेटे कोए ना अंधेरा गर्द, धूंआँधार होई लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, गृह सच तेरी वड्याईआ। कलयुग कहे मैं तक्कया भगत भगवान दा रिश्ता, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जिथ्थे पक्का होया निसचा, निहचल धाम ध्यान लगाईआ। उथे सीस झुकावे ज़बराईल फ़रिश्ता, निउँ निउँ लागे पाईंआ। झगड़ा रहे ना नरक स्वर्ग बहिशता, दरगाह सच सच समाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला जन भगतां लेख आपे लिखदा, कातब हो के कलम चलाईआ। पूरब लहिणा जाणे किस किस दा, नव सत्त पूरा दए कराईआ। नाता समझा के सतिगुर सिख दा, सिख सतिगुर विच समाईआ। इष्ट दृढ़ा के एकँकार इक दा, इक इक विच मिलाईआ। झगड़ा रहिण ना देवे मन ठगौरी चित दा, चितवन दी लोड़ रहे ना राईआ। भेव खुल्ह़ा के अबिनाशी अचुत दा, चेतन सुरती दए कराईआ। झगड़ा मुका के काया माटी बुत दा, बुतख़ान्यां करे सफ़ाईआ। जन भगतां वक्त सुहञ्जणा करे आपणी रुत दा, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। प्यार बन्ह़ के पिता पुत दा, पतिपरमेश्वर होए सहाईआ। झगड़ा मेट दूई द्वैत दुःख दा, दलिद्दर हउमे रोग दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, देवणहार इक हो आईआ। कलयुग कहे मैं वेख्या दीन दुनी दा सागर, गहर गम्भीर दया कमाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जन भगतां जन्म कर्म करे उजागर, दुरमति मैल दर लुहाईआ। कोझयां कमल्यां दर आया सर्ब नूं देवे आदर, अदल इन्साफ़ आपणा इक समझाईआ। झगड़ा रहिण ना देवे मक्तूल कातिल, कत्लगाह दा लेखा दए मुकाईआ। सच दवारे आपणा आदल, इन्साफ़ इक्को इक वखाईआ। कोटां विच्चों जन भगत आपणा आप साधण, सदके वारी घोली घोल घुमाईआ। जेहड़े इक्को प्रभू नूं अराधण, राधा कृष्न दए सफ़ाईआ। मेल मिले मोहण माधव, मधुर धुन शनवाईआ। कलयुग कहे मैनूं याद आ गया की संदेशा दिता कृष्न काहन त्रैलोकी नाथ यादव, यद बंस समझाईआ। कलयुग अन्तिम झगड़ा पैणा मनुश आदमी आदम, आदम हव्वा ना कोए सहाईआ। कोटां विच्चों विरला रहे ख़ादम, ख़िदमतगार हो के सेव कमाईआ। गुरमुखां वडे होणे भागण, भाग हिस्सा आपणी झोली पाईआ। नाम दी धार जला चराग़ण, चरगाहां करे रुशनाईआ। भगतां प्रेम प्रीती अन्दर आवे साधण, सिध्ध मार्ग इक जणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म राग अराधण,

८६३
२२

अवर दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां शब्द सरूपी मारे अवाज़ण, आवाज़ राज़ वाली आप दृढ़ाईआ।

६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ सुरजीत सिँघ दे घर बटाला शहर

सतिगुर शब्द कहे मैं निरगुण धार उठा, जग नेत्र जगत जहान नज़र ना आईआ। सृष्ट सबाई नौ खण्ड पृथ्मी तुट्टा, जन भगत सुहेले लवां जगाईआ। सत्तां दीपां कोने कनारे वेखां गुट्टां, सति सतिवादी हो के ध्यान लगाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन पकड़ उठावे फड़ गुट्टां, हरि गोबिन्द गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। धुर दी करनी वास्ते जुटां, जोड़ी जोत शब्द बणाईआ। कूड़ विकार जगत जहान लुट्टां, लुटेरा बणां थांउँ थाँईंआ। हउमें हंगता जड़ पुट्टां, प्यार मुहब्बत इक दरसाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां पुरीआं लोआं पुज्जां, पूजस धाम वेखां चाँईं चाँईंआ। पुरख अकाल दा भेव खुल्हा के गुज्झा, अन्दरों पड़दा दयां चुकाईआ। धर्म निशान्यों मूल ना उकां, तीरअंदाज़ इक अख्वाईआ। निरइच्छत सब नूं वखावां रुक्का, जो बिन अक्खरां अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दिता दृढ़ाईआ। जीव जंत साध सन्त उठावां सुत्ता, सोया रहिण कोए ना पाईआ। प्रगट हो अबिनाशी अचुता, चेतन सब नूं दयां कराईआ। सतिजुग साची मौले रुता, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। भाग लगा के काया बुता, बुतख़ान्यां करां सफ़ाईआ। जगत विकार करके पुट्ठा, उलटा गेड़ देवां भवाईआ। हरिजन मूल रहे ना खोटा, खोटिउँ खरे दयां बणाईआ। जिस कारन गोबिन्द वारे लखते जिगर टोटा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक वरताईआ। कलयुग कहे मैनूं प्रभ ने दिती थपकी, प्रेम नाल वड्याईआ। ताकत वखा आपणे तप की, तपस्या आपणी देणी प्रगटाईआ। वड्याई रहे ना किसे जप की, रसना जेहवा होए हल्काईआ। धार मिले ना किसे कँवल नभ दी, अमृत रस ना कोए चुआईआ। बुद्धी विषेश रहे ना सब दी, कूड़ क्रिया विच कुरलाईआ। आत्म परमात्म फिरे लभ्भदी, नेत्र लोचन नैण दरस कोए ना पाईआ। सब नूं खेल दस्सदे अज्ज दी, आजज़ हो के सेव कमाईआ। जेहड़ी धार अवतार पैग़म्बरां गुरुआं सब नूं रही सद्दी, सद्दे सब दे पूर कराईआ। ओह खेल वेखण सूरे सरबग दी, शाह पातशाह शहिनशाह आप वखाईआ। कलयुग सब दी बुद्धी होवे कग्ग दी, बिन हरि किरपा हँस बणन कोए ना पाईआ। तेरी प्रेम चंग्यारी होवे अग्ग दी, अग्नी तत देणी तपाईआ। कल्पणा वेखणी सारे जग दी सांतक सति ना कोए वखाईआ। आपणा निशाना इक्को वार गड्ड लईं, चार कुण्ट देणा झुलाईआ। पर याद रखीं प्रभू भगत सुहेले छड लईं, दूरों निउँ निउँ सीस

निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर ठांडे हथ्थ बन्नृ लईं, बन्दनां विच बन्धन बन्दगी बन्दयां रहे ना राईआ।

✪ ६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ बंता सिँघ दे गृह पिण्ड पंज गराईआं ✪

सतिगुर शब्द कहे खेल दस्सां आदि निरँजण, की निरवैर खेल खिलाईआ। दाता बणे दर्द दु:ख भय भञ्जण, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। जोती दीपक भगत सुहेले जिस दे जगण, लोकमात होए रुशनाईआ। उन्नृां नेत्र पावां नाम दा अंजन, अंध अज्ञान कूड़ गुआईआ। सच स्वामी मेला सज्जण, पुरख अकाला धुरदरगाहीआ। जो अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर चाढ़े रंगण, दुरमति मैल दए धुआईआ। सब दी सांझी करे बन्दन, डण्डावत सजदा सीस जगदीश इक सर्ब निवाईआ। आत्म परमात्म रखे अंगण, पारब्रह्म ब्रह्म गोदी आप टिकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा निरगुण धार सारे मन्नण, सरगुण सहिज करां पढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया कर के दमन, सति सच फड़ाईआ। नव सत्त करा के अमन, मन मनसा मेट मिटाईआ। जन भगत सुहेले बणा के साचा चमन, पत्त टहिणी फुल्ल महकाईआ। अमृत मेघ बरसा के सवण, नाभी कँवल कँवल टपकाईआ। नाम अहूती पवा के विच हवन, अग्नी जोत जोत रुशनाईआ। लेखा पूरा कर के बावन बवन, बलधारी हो के दया कमाईआ। प्रभ दा भेव पाए कवण, गुण कोए कहि सके ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दर इक खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं वेखां खेल अपारा, अपरम्पर स्वामी नाल मिलाईआ। जोती नूर कर उज्यारा, अंध अंध्यारा दूर कराईआ। शब्दी शब्द नाम जैकारा, लोआं पुरीआं बाहर सुणाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां दे अधारा, सांतक सति सति वरताईआ। खेल खिला के विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। सम्बल दस्स के धाम न्यारा, निराकार दयां मिलाईआ। जिस दा शब्द रूप गोबिन्द गोबिन्द दोबारा, हरि गोबिन्द इक अख्वाईआ। सो खेल खेले कलि कल्की नर नरायण सच्ची सरकारा, शाह पातशाह अगम्म अथाहीआ। जो चार वरन अठारां बरन मानव मानुख मानस दए सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। इक्को दस्स नाम जैकारा, जुग जुग दे झगड़े दए गंवाईआ। नूर अलाही अलाह कर चमत्कारा, पर्दा पर्दानशीं दए चुकाईआ। सच स्वामी हो के ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। जिस दा हुक्म वरतण वाला विच काहरा, कहर झल्ले जगत लोकाईआ। नौ सौ नड़िंनवे मील दा होए दाइरा, महीत विच ईद बणाईआ। जोती

८६५
२२

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल खिलाए आपणा गहरा, गहर गम्भीर बेनज़ीर जग नेत्र नज़र कोए ना पाईआ।

✪ ६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ दर्शन सिँघ दे घर पिण्ड नया शाला ज़िला गुरदास पुर ✪

सतिगुर शब्द कहे तेई अवतार सुणो आवाज़े, बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द शनवाईआ। पैग़म्बरो सुणो हुक्म धुर महिराबे, महिबूब मालक ख़ालक रिहा दृढ़ाईआ। गुरु धार समझ लओ राजे, राज़क रिज़क रहीम रिहा जणाईआ। निगाह मार लओ आपणे आपणे काअबे, बुतख़ाने वेख वखाईआ। की खेल होया दीन दुनी समाजे, समझ बुद्धी तों परे देणा दृढ़ाईआ। की हुक्म वरतणा आगे, भेव अभेदा दयो समझाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप किस बिध नूरी जोत जगे चराग़े, चरागाहां थल अस्गाह होवे रुशनाईआ। किस बिध गुरमुख हँस बणने कागे, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। किस बिध तन्द सितार वज्जे रबाबे, मन मणका दए भवाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सब दी आपणे हथ्थ पकड़े वागे, दीन दुनी इक्को डोरी तन्द लए बंधाईआ। की खेल कराए इश्क हकीकी ते मिजाज़े, मज़ा कवण रस चखाईआ। किस बिध सजदा सलाम होवे आदाबे, नमो नमस्ते की वखाईआ। किस बिध अन्त अख़ीर कलयुग निकले जनाज़े, अर्थी जगत वाली दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा इक उपजाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर चुको आपणा पड़दा, नकाब रहे ना राईआ। पैग़म्बर भेव दस्सो आपणे घर दा, ओहला अन्तर रहे ना राईआ। कवण कलमा हकीकी पढ़दा, मंज़ल चढ़े नूर अलाहीआ। मुकामे हक अगम्मे वड़दा, तन वजूद दा डेरा ढाहीआ। सच संदेशा नर नरेशा अगम्मी घल्लदा, सुणावे थाँईं थाँईंआ। भेव खोल्हो जल थल दा, महीअल रंग कवण रंगाईआ। किस बिध लहिणा मुके घड़ी पल दा, कलयुग अन्तिम डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। पुरख अकाल कहे गुरु गुर धार, सतिगुरु दयो जणाईआ। की खेल करे कल्की अवतार, अकल कलधारी आपणी कल प्रगटाईआ। लहिणा देणा सब दा लओ विचार, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। किस गृह मेरी शब्द नाम धुन होवे धुन्कार, अनहद नादी नाम शब्द कवण शनवाईआ। किस महल्ल अटल चमके नूर जोत उज्यार, अंध अंधेर रहे ना राईआ। किस घर अन्दर रस मिले ठंडा ठार, बूँद स्वांती कँवल नाभ चुआईआ। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर सारे पावो सार, महासार्थी आप जणाईआ। किस बिध सतिगुर शब्द होवे ज़ाहर, ज़ाहर ज़हूर आपणा हुक्म वरताईआ। ज़ात पात

दीन मज़्ब दी मेटे खार, कंडा ख़लक ना कोए चुभाईआ। माया ममता नाता कूड़ तोड़े विभचार, दुराचार दा पन्ध मुकाईआ। साचा मार्ग दस्से सच्ची सरकार, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। इक्को रंग रंगा के पुरख नार, नर नरायण होए सहाईआ। सतिजुग साचा सति सति वरतावे कार, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आपणी कार भुगताईआ। किस बिध सब दी सांझी होवे निमस्कार, नमो नमो सीस झुकाईआ। किस बिध आत्म परमात्म होवे जैकार, जै जैकार करे ख़लक खुदाईआ। खुद मालक ख़ालक प्रगट होवे आप निरँकार, निरवैर आपणी कल धराईआ। गुरमुख जन भगत सुहेले चुरासी विच्चों लए उठाल, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सुत दुलारे बणा आपणे लाल, लालन आपणी गोद टिकाईआ। साचा मार्ग दए सिखाल, सुखमन टेडी बंक ईड़ा पिंगल पार कराईआ। अमृत रस अगम्म प्याल, जगत तृष्ना भुक्ख दए मिटाईआ। अनहद नादी वजा के ताल, सोई सुरत लए उठाईआ। काया मन्दिर अन्दर दीपक दीआ जोती देवे बाल, बाल अंञाणयां करे रुशनाईआ। सम्बल बहि के करे संभाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। झगड़ा मुकावे शाह कंगाल, भगत सुहेले इक्को दर दए वड्याईआ। चुरासी फाँसी विच्चों कर बहाल, दर आपणे लए टिकाईआ। मुर्शद हो के पुछे मुरीदां हाल, गुर चेला आपणा रंग रंगाईआ। झगड़ा मेटे काल महाकाल, कलि कल्की कालख टिक्के दए धुआईआ। साढे तिन्न हथ्थ सुहा के सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक प्रगटाईआ। नाम भण्डारा दे सच्चा धन माल, कोझे कमले दए तराईआ। जीवण ज़िंदगी दा हल्ल करे सवाल, सवाली ख़ाली रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तोड़नहारा जीवण जगत जुगत जंजाल, निरगुण हो के आपणी दया कमाईआ।

साहिब सतिगुर दया कमाई, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। आसा मनसा पूरी करे बिरध माई, जो बेनन्ती रही सुणाईआ। दात पुत्र दी झोली पाई, वस्त अगम्म इक वरताईआ। साढे छत्ती साल खुशीआं नाल लए लँघाई, लाड़ी मौत नेड़ कोए ना आईआ। अग्गे साहिब दे हथ्थ वड्याई, जितनी चाहे होर दए भुगताईआ। राय धर्म ना दए सज़ाई, चित्रगुप्त ना लेख लिखाईआ। जिस दा मालक होवे बेपरवाही, बेपरवाह आपे रंग रंगाईआ। भैणां दी झोली पा के भाई, भाई भाईआं नाल मिलाईआ। एस जन्म दी पिता नूं होवे वधाई, वाधा कुल दे विच कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक धुरदरगाहीआ।

✪ ७ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ दर्शन सिँघ दे गृह पिण्ड नया शाला ज़िला गुरदास पुर ✪

हुक्म हज़रते हज़ूरी यक शंभा, शबे रोज़ जणाईआ। मुसाफ़रे सफ़र होए ना लम्बा, ज़िमीं असमान ध्यान लगाईआ। उम्मती धार वेखणा तम्बा, कायनात दे मालक ध्यान लगाईआ। दरे दरबार मुहम्मद कम्बा, थरथराहट विच सुणाईआ। तेरा खेल दिसे अचंभा, अचनचेत की देणा वरताईआ। सब दा हाल होणा मंदा, मंदभाग दिसे लोकाईआ। दरोही फिरनी जेरज अंडा, अण्डज जेरज रहे कुरलाईआ। मेरे कौल इकरार दी खोलृ दे गंढा, बन्धन रहिण कोए ना पाईआ। तेरा दवारा मंज़ल महिबूब ठंडा, अग्नी तत ना लागे राईआ। मेरा निशान बणा दे गुरमुख दवारे तारा चन्दा, चौदस चन्द शुरू कराईआ। जगत जहान नेत्र दिसे अन्धा, ज्ञान अक्ख ना कोए खुलृाईआ। तेरी धार विच रहे कोए ना गंदा, पतित पुनीत देणा बणाईआ। पिछला जुग पिच्छे लँघ, अग्गे मार्ग इक वखाईआ। धुर कलमा चाढ़ दे रंगा, रंगत इक्को इक प्रगटाईआ। तेरी कदमबोसी करे प्रेम धार दी गंगा, मुहब्बत वहिण वाले वहाईआ। सच सति दा दे दे अनन्दा, अनन्द आपणा आप जणाईआ। इक्की दन्दां वाला कंघा, कलयुग दा माझे वाले लैण घड़ाईआ। जिस नाल जगत विचार होणा रंडा, दलील बैठे मुख छुपाईआ। तूं साहिब सतिगुर बख्शंदा, बख्शणहार तेरे हथ्थ वड्याईआ। सच सिंघासण ते दिसे इक पलँघा, धार खण्डे वाली चमकाईआ। साहिब सतिगुर मेरे सूरे सरबंगा, सच सुल्तान तेरी सरनाईआ। धरनी धरत धवल दी मंग ल्याउणी प्यार दी वंगा, मासा डेढ दो वड्याईआ। एह हुक्म माझे संदा, गोबिन्द दा लेखा इक सौ इक पैसा दए गवाहीआ। दो जहान जगत निशान दिसे करंगा, हड्ड नाड़ी मास रो रो मारे धाईआ। जिनृां गुरमुखां उडाउणे पतंगा, ओह उच्ची कूक के कहिण वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। चौदां गुरमुख डांगा सोटे नाल करदे आवण दंगा, शोर ज़ोर ज़ोर दा पाईआ। इक गुरमुख बणया होवे पंडा, मस्तक तिलक किताब बग़ल विच रखाईआ। इक बणया होवे भंडा, भंडी पावे थांउँ थाँईंआ। इक रोंदा आवे रंडा, बौहड़ी बौहड़ी मेरा नाता दयो जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, तेरे नाम दा नौबत धार वज्जदा रहे मृदंगा, मर्द मर्दान इक तेरी होवे शनवाईआ।

✪ ७ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ महिन्दर सिँघ दे घर पिण्ड मांगा सराए ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर शब्द कहे प्रभ आदि जुगादी वेख फ़रद, जुग जुग पड़दा आप चुकाईआ। दीन दयाले हरि गोपाले दीन दुनी नाल वंड दर्द, मेहरवान महिबूब हो सहाईआ। योधे सूरबीर मर्दाने मर्द, मदद तेरे कोलों मंग मंगाईआ। कलयुग अन्तिम

पुत्ती सिध्धी कर दे नरद, नर नरायण तेरी सरनाईआ। शरअ दी छुरी रहिण देवीं ना कोई करद, दीन मज़्हब कातिल रूप ना कोए वखाईआ। दर ठांडे इक्को अर्ज़, आरज़ू तेरे अग्गे रखाईआ। पतिपरमेश्वर पूरा करना आपणा फ़र्ज़, फ़ैसला हक हक सुणाईआ। इक्को तेरा नाम तराना होवे तर्ज़, तराज़ू कंडा इक्को हथ्थ उठाईआ। नव सत्त मेट अंधेरा गर्द, गर्द गुबार ना रहे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर सच आस रखाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ आसा कर दे पूरी, पूरन ब्रह्म दृढ़ाईआ। सच प्रकाश बख्श दे नूरी, नूर नुराने नूर इलाहीआ। मंज़ल मुका दे नेड़ दूरी, दूर दुराडा पन्ध चुकाईआ। कल्पणा मेट दे कलयुग कूड़ी, क्रिया कुकर्म देणी गंवाईआ। सति सच बख्श चरण धूढ़ी, धर्म दे टिक्के ख़ाक रमाईआ। मुहब्बत रंगण चाढ़ दे गूढ़ी, दो जहानां उतर ना जाईआ। हउमे गढ़ तोड़ ग़रूरी, निवण सु अक्खर इक समझाईआ। धुर दे हुक्म दे ज़रूरी, ज़रूरत मेरी नाल मिलाईआ। आत्म परमात्म धार कर मशहूरी, मशवरा शब्द जोत पकाईआ। दर दरवेश मंगां मंग हज़ूरी, हज़रतां दे हज़रत अमामा दे अमाम नूर अलाहीआ। सच नाम दी दे मखमूरी, खुमार इक्को इक दृढ़ाईआ। मैनूं सच बख्श मज़दूरी, हुक्म शब्द नाम दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच वर, दर साचे आस रखाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभू कलयुग अन्तिम कर मेहरवानी, नज़रे कर्म मेहर उठाईआ। तूं आदि जुगादी धुर दा दानी, दयावान तेरी सरनाईआ। झगड़ा मेट दे चारे खाणी, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ भेव चुका दे परा पसन्ती मद्धम बैखरी बाणी, बाण अणयाला तीर चलाईआ। तूं आदि जुगादि जाण जाणी, जानणहार तेरी वड्याईआ। आत्म ब्रह्म आप पहचानी, पारब्रह्म होणा आप सहाईआ। अमृत रस बख्श दे सब नूं ठंडा पाणी, अग्नी तत दे बुझाईआ। मंज़ल धुर दी दस्स आसानी, असल विच वसल यार समझाईआ। तेरी धार पिच्छे गोबिन्द दे के गया कुरबानी, बच्चे धरनी गोद सवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे अलख जगाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभू तूं आदि जुगादी नेता, नर हरि नरायण अख्वाईआ। मैं आदि अन्त दा तेरा बेटा, दूसर जम्मण वाली कोए ना माईआ। चार जुग दे शास्त्र कराया हेता, ग्रन्थां सिफ्त सालाहीआ। प्यार रख के तेरे देसा, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। नाता जोड़ के आदि अन्त हमेशा, हमसाजण ल्या बणाईआ। धरनी धरत धवल धौल खेल तक उपर परदेसा, परदेसी हो के अक्ख खुल्हाईआ। किस बिध झगड़ा मेटणा पंडत पांधे मुलां शेख़ा, शरीअत वंड ना कोए वंडाईआ। सब दा सांझा करना लेखा, लिख्त भविक्ख्त नाल मिलाईआ। दीन दुनी दी बदलणी रेखा, रिषीआं मुनीआं दा पैंडा पन्ध मुकाईआ। निरगुण धार धारके वेसा, विश्व दा झगड़ा देणा मुकाईआ। धर्म दवार दा खोल्ह

के भेता, अनभव पड़दा इक चुकाईआ। पूरब लहिणे दा कर लै चेता, चेतन हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरे हथ्थ वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ दुनी धार बदल दे जगत, जगजीवण दाते दया कमाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं आसा मनसा पूरी करदे शर्त, क्षत्रीया आपणा हुक्म वरताईआ। जिस कारन निरगुण धार आयों परत, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। मेरी मंज़ूर कर बेनन्ती अर्ज़, दर ठांडे सीस झुकाईआ। मकरूज़ हो के लाह दे कर्ज़, लेखा अवर रहे ना राईआ। तेरा कुझ ना होवे हर्ज, हर्जाने सब दे पूर कराईआ। आह भरनी पए किसे ना सरद, दुक्खां विच ना कोए दुहाईआ। मेरी आसा मनसा अगम्मी ग़रज़, आसा तेरे अग्गे टिकाईआ। जन भगत सुहेले बणा जो तेरी गावण इक्को तर्ज़, नाम निधाना राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेनन्ती आसा तमन्ना ख़ाहिश पूरी कर सब दी ग़रज, ग़रज़ आपणी नाल मिलाईआ।

८७० २२

✪ ८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ सुरजन सिँघ दे घर पिण्ड मांगा सराए ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर शब्द कहे प्रभ सति दी पूरी करदे मनसा, ममता मोह दे गंवाईआ। हरिजन हरिभगत गुरमुख बणा हँसा, माणक मोती नाम चोग चुगाईआ। चार वरन सुहा इक बंसा, मानव वंड ना कोए वंडाईआ। हउमें गढ़ तोड़ दे हंगता, हँ ब्रह्म इक समझाईआ। बोध अगाधा बण धुर दा पंडता, विद्या अगम्म दे समझाईआ। इक्को इष्ट तेरे दी होवे मन्नता, दूसर सीस ना कोए निवाईआ। गुरसिख साचे बणा धर्म दे सन्ता, सच सज्जण मीत मेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे सति दी पूरी करदे ख़ाहिश, तृष्ना कूड़ रहे ना राईआ। धर्म दी धार करनी ना पए तलाश, खोजण बन कोए ना जाईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, अंध अंधेरा दे मिटाईआ। लेखे ला काया माटी आपणी लाश, लासानी आसानी आपणा रंग रंगाईआ। विष्नूं धार शंकर प्यार तके उपर कैलाश, बिन नैणां अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक पड़दा लाहीआ। सतिगुर शब्द कहे सति दी आसा तेरे वस, वास्ता तेरे नाल रखाईआ। सच मुहब्बत दे रस, अमृत अंमिउँ आप बरसाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा रहे नस्स, भज्जे वाहो दाहीआ। तेरा सिफ्ती ढोला गावे जस, वेद पुराणां बाहर पढ़ाईआ। कलयुग मिटे रैण अंधेरी मस्स, नूरी चन्द चन्द चमकाईआ। कूड़ी क्रिया विच

रहे ना कस, धुर दा रंग देणा चमकाईआ। आदि अन्त जुगा जुगन्त पुरख अकाले तेरे वस, वास्ता तेरे अग्गे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साहिब सुल्तान तूं सर्ब कला समरथ, कलधारी इक अख्वाईआ।

✪ ८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ दर्शन सिँघ दे घर पिण्ड मागा सराए ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर शब्द कहे प्रभू पूरी कर दे तांघ, दर ठांडे मंग मंगाईआ। झगड़ा मेट दे रोज़ा नमाज़ बांग, अज़ां आपणा नाम सुणाईआ। धुर प्रेम दी चाढ़ कांग, कलयुग कूड़ी क्रिया दे रुढ़ाईआ। स्वांगी आपणा बदल के स्वांग, सगले साथी होणा सहाईआ। तुध बिन रहे कोई ना बांझ, मेल मेलणा सहिज सुभाईआ। जेहड़ी मुहम्मद अन्तिम मारी चांग, कूक चौदां तबक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झगड़ा मेट दे कर्म कांड, करनी दे करते आपणी दया कमाईआ।

✪ ८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ बचन सिँघ दे घर पिण्ड मांगा सराए ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर शब्द कहे पूरी करदे तमन्ना, तामस कूड़ रहे ना राईआ। प्रकाश होवे तेरा इक्को चन्ना, चन्द सितार सीस झुकाईआ। दीन मज़्हब मेट दे बन्ना, हद हदूद दे गंवाईआ। गोबिन्द दा लेखे ला लै कन्ना, पारब्रह्म प्रभ आपणा रंग वखाईआ। सतिजुग तेरा बच्चा नन्हा, नर नरायण लैणा उठाईआ। भाग लगाउणा काया माटी साढे तिन्न हथ्थ तंना, शरीर बेनज़ीर आपणा पर्दा आप चुकाईआ। नेत्रहीण रहे कोए ना अन्ना, लोचन नैण देणा खुल्हाईआ। इक्को तेरा हुक्म दर दरबार तेरे मन्ना, दूसर भय ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अगला समां होए ना लम्मा, लमह लमह तेरा ध्यान गाईआ।

✪ ८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ प्रीतम सिँघ दे घर पिण्ड मांगा सराए ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर शब्द कहे प्रभ सति सच दी बदल दे रुची, प्रेम प्रीती इक बणाईआ। आत्म धार दस्स दे सुच्ची, संजम नाम वाला दृढ़ाईआ। झगड़ा रहे ना कोए बुती, तन वजूद कर सफ़ाईआ। आपणी मंज़ल दस्स दे उच्ची, उच्च अगम्म पड़दा

उठाईआ। जन भगत सुहेला रहे कोए ना दुखी, दर्दी हो के दर्दीआं दर्द वंडाईआ। उज्जल कर दे मात मुखी, दुरमति मैल आप धुआईआ। भाग लगा दे माता कुख्खी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कूड़ कल्पणा जड़ जाए पुट्टी, निगह निगह विच्चों बदलाईआ। तेरी शब्दी धार जिस वेले जुग चौकड़ी उठी, जगत जहानां करे सफ़ाईआ। कलयुग अन्त अन्तष्करन वेख सृष्टी तुट्टी, अतोट अतुट आपणा भण्डारा हथ्थ उठाईआ। तेरी वस्त जाए ना लुट्टी, लुटेरा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झगड़ा मुका दे नाम जपणा बुल्ल्हां बुट्टीं, हिरदे अन्दर आपणा आप दे समाईआ।

✪ ८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ अजीत सिँघ दे गृह पिण्ड मांगा सराए ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर शब्द कहे मेरे साहिब कमलापाती, पतिपरमेश्वर बेपरवाह धुरदरगाहीआ। कलयुग अन्तिम मेट अंधेरी राती, सतिजुग साचा चन्द कर रुशनाईआ। इक्को तेरे प्रेम प्यार दी होए प्रभाती, सँध्या आपणा नाम देणा समझाईआ। पिछले चार जुग दी लेखे ला लै गाथी, जो अवतार पैग़म्बर गुर गए दृढ़ाईआ। अक्खरां वाली तेरी सिफ्त सालाही पाती, पत्रका मातलोक वड्याईआ। बिरहों तीर अणयाला नाम मार दे काती, शब्दी शब्द कर शनवाईआ। झगड़ा रहे ना मूल ज़ात पाती, दीन मज़्हब दा पन्ध मुकाईआ। अमृत बख्श के बूँद स्वांती, निझर झिरना कँवल नाभ झिराईआ। धुर शब्द सुणा दे अनहद नादी, अनहद आपणा नाद वजाईआ। अगला भेव खोल्ह दे बोध अगाधी, बुद्धी तों परे कर पढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम साबत रही ना किसे समाधी, साधना विच साध सति विच ना कोए समाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द तैनूं रहे अराधी, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। मेल मिले ना सुरत शब्द कृष्ना राधी, सीता सुरती धुर राम ना कोए प्रनाईआ। मनुआ मन सब दा होया बाग़ी, भय भउ ना कोए रखाईआ। तूं मालक ख़ालक आदि जुगादी गाडी, रहिबर इक्को धुरदरगाहीआ। तेरा शब्द गुरु गुरदेव स्वामी अगम्म अगम्मड़ा ढाडी, ढड्ड अवतार पैग़म्बर गुरुआं तन वजूद जगत खड़काईआ। सुर ताल बणाउंदा रिहा तन वजूद हाडी, नाड़ी नाड़ी तार बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर तेरे मंग मंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ किरपा कर गुण निधान, गुणवन्त तेरी वड्याईआ। चार जुग दा पिछला बदल विधान, हुक्म हुक्म विच्चों सुणाईआ। तेरे दर ते झुकदे कोटन कोटि राम, काहन बैठे सीस निवाईआ। पैग़म्बर ख़ाली झोली मंगण दान, गुरु गुर बैठण दर ठांडे सीस निवाईआ। साध सन्त सूफ़ी फ़कीर दर दरवेश हमेश कदमीं डिग्गण आण,

कदीम दे मालक तेरी ओट तकाईआ। सदी चौधवीं अन्त कन्त भगवन्त सति धर्म दा मिटया निशान, निशाना कायम ना कोए कराईआ। तुध बिन जगत गुरु सतिगुर होए ना कोए प्रधान, जगत जिज्ञासू सन्त साध अक्खरां वाली करन पढ़ाईआ। तेरी महिमा पढ़ पढ़ झट लँघण, ग्रन्थां उत्ते ओट तकाईआ। अक्खीं मीट धरन ध्यान, इश्नान क्रिया कर्म कांड बणाईआ। सन्मुख दरस मूल ना पाण, पाहन पूजण थांउँ थाँईंआ। तेरा खेल समझे ना कोए श्री भगवान, शास्त्र शास्त्रां नाल करन लड़ाईआ। तूं सब तों वक्खरा वसे लामुकाम, मुकामे हक तेरी रुशनाईआ। अलिफ़ ये विच तेरी समझ ना आई किसे कलाम, कलमा सिफ्तां वाला गाईआ। तुध बिन तेरी सृष्टी होई निधान, निज नेत्र लोचण नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। किरपा कर नौजवान, मर्द मर्दाने आपणा बल प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तूं आदि जुगादी जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण सर्ब घटां घट जाणी जाण, जानणहार तेरे हथ्थ सर्ब वड्याईआ।

८७३ ✪ ८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ जागीर सिँघ दे घर पिण्ड मैणीआं ज़िला अमृतसर ✪ ८७३

२२ सतिगुर शब्द कहे प्रभ जन भगतां पैज संवार, जुग जुग तेरी ओट तकाईआ। जन्म कर्म विच्चों कढ बाहर, चुरासी गेड़ रहे ना राईआ। सचखण्ड बख्श सच्चा दवार, दरगाह साची इक वखाईआ। जिथ्थे तेरी जोत जगे निरँकार, निरवैर सोभा पाईआ। आत्म परमात्म होए प्यार, दूसर मंग ना कोए मंगाईआ। कुदरत कादर तेरे अख्त्यार, ख़ालक ख़लक मख़लूक तेरी सरनाईआ। कलयुग अन्तिम वेख विचार, सदी चौधवीं ध्यान लगाईआ। भरमे भुल्ला सर्ब संसार, नर नरायण तेरा दरस कोए ना पाईआ। चार कुण्ट कूड़ विकार हँकार, विभचार रहे लड़ाईआ। तेरा नाम मन्त्र सके ना कोए विचार, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। किरपा कर सच्ची सरकार, शाह पातशाह शहिनशाह दर तेरे मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहिणा देणा पूरा कर चौकड़ी जुग चार, चार कुण्ट दा लेखा दे मुकाईआ। २२

✪ ८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ प्रीतम सिँघ दे घर पिण्ड निज़ामपुर ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर शब्द कहे प्रभ आसा इक अगम्मी, हरि अगम्मड़े दयां दिड़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया झगड़ा मेट दे चम्मी,

चम्म दृष्टी दे बदलाईआ। आपणी खेल दस्सदे नवीं, नव नौ चार दा पन्ध मुकाईआ। जो आसा रख के गया रविदास चमारा रवी, अन्तर अन्तर राह तकाईआ। प्रगट हो के अवतार चव्ही, चार जुग दा लेखा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ मेरी आदि आदि दी आसा, आशा नर हरि दयां दृढ़ाईआ। निरगुण निरवैर निरँकार तेरा भरवासा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार तेरी सरनाईआ। दो जहानां नौजवाना मर्द मर्दाना पा रासा, गोपी काहन आपणा खेल खिलाईआ। दर ठांडे तेरे बण के दासी दासा, सेवक सेवा रूप जणाईआ। झगड़ा मेट दे पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतर डेरा ढाहीआ। सदी चौधवीं रहे ना अंधेरी राता, निरगुण नूर चन्द कर रुशनाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं पूरा कर भविक्ख्त वाका, वाकिफ़कार इक्को नज़री आईआ। आत्म परमात्म दीन दुनी दा बदल दे साका, साख्यात आपणी कल प्रगटाईआ। झगड़ा रहे ना ज़ाता पाता, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म देणा जणाईआ। मनुआ मन ना रहे गुस्ताख़ा, बुध बिबेक देणी समझाईआ। नव सत्त तेरा इक्को खेल तमाशा, ख़ालक ख़लक तेरी बेपरवाहीआ। मेहरवान महिबूब सति धर्म दा मार्ग ला दे साचा, सतिजुग सच सच प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरे महिबूब, मेहरवान तेरी सरनाईआ। तूं मालक दो जहानां अर्श अरूज, आलीशान हक तेरी शहिनशाहीआ। तेरी मंज़ल हक मकसूद, पिछला पन्ध मुकाईआ। जिस दे पिच्छे अजीत जुझार गए झूझ, आप आपा भेंट कराईआ। उस कारन दीन दुनी दी कढदे दूज, दुतीआ भाओ ना कोए रखाईआ। निर्मल होवे सब दी बुध, दुरमति मैल कर सफ़ाईआ। कलयुग विच बदलदे सतिजुग, सति सतिवादी आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे किरपा कर गुण निधान, दीन दयाल तेरी सरनाईआ। सति धर्म झुला निशान, निशाने कूड़ दे मिटाईआ। आत्म परमात्म बख्श इक ज्ञान, अज्ञान अंधेरा रहे ना राईआ। धुर संदेशा बख्श पैग़ाम, पैग़म्बरां तों परे कर पढ़ाईआ। तेरा मन्त्र इक्को होवे सति सतिनाम, नाउँ निरँकार आप दृढ़ाईआ। तूं आदि जुगादी सब दा काहन, राम रामा सोभा पाईआ। खेल वेख सृष्ट दृष्ट इष्ट दीन दुनी अवाम, नव सत्त ध्यान रखाईआ। कलयुग मेट अंधेरा शाम, शमां नूर जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी दर तेरे मंग मंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभू जगत जहान तेरा मंगता, मांगत हो के झोली डाहीआ। हउमे गढ़ तोड़ दे हंगता, हर हिरदे कर सफ़ाईआ। सतिजुग प्रकाश कर आपणे चन्न दा, नूर जोत जोत कर रुशनाईआ। भण्डारा बख्श दे नाम धन दा, अतोट

अतुट आप वरताईआ। रूप बणा दे गुरमुख जन दा, जन्म जणेंदी बण माईआ। झगड़ा मुका दे सरोते कन्न दा, अनहद नादी कर शनवाईआ। लेखा रहे ना छप्पर छन्न दा, चरण कँवल बख्शणी इक सरनाईआ। झगड़ा मेट दे कल्पणा मन दा, ममता मोह हँकार विकार गंवाईआ। तेरा रूप नज़र आए सूरे सरबंग दा, सति सरूप सोभा पाईआ। लेखा पूरा करदे गोबिन्द पुरी अनन्द दा, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी दर तेरे अलख जगाईआ। सतिगुर शब्द कहे तूं मालक ख़ालक आदि, अन्त तेरी सरनाईआ। तेरा खेल ब्रह्म ब्रह्मद, ब्रह्मंड तेरी चतुराईआ। शब्द अगम्म सुणा अनाद, निंद्रा दे मिटाईआ। (शब्दी) शब्द सुणा अवाज़, गीत संगीत इक समझाईआ। भेव अभेदा खोल्ह दे राज़, बजर कपाटी कुण्डा दे लाहीआ। निज नेत्र लोचण नैण खोल्ह दे आंख, आख़र आपणा मेल मिलाईआ। तेरा नूर जोत होवे प्रकाश, ज़हूर इक्को इक वखाईआ। मन मनुआ ना फिरे आज़ाद, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। रसना कूड़ मेट दे स्वाद, निज अमृत रस चखाईआ। बुद्धी जगत रहे ना काग, हँस गुरमुख लै प्रनाईआ। तेरे हथ्थ सब दी वाग, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। प्रेम प्रीती मुहब्बत विच कर विस्माद, बिस्मिल सब दा रूप दरसाईआ। तेरी सरन सरनाई सृष्टी दृष्टी अन्दरों जाए लाग, लग मात्रा दा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरुगण सरगुण निरगुण तेरा शब्दी शब्द समाज, दूसर वंड ना कोए वखाईआ।

✪ ८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ गुग सिँघ दे घर पिण्ड निज़ाम पुर ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर शब्द कहे प्रभ तेरे भगत दुलारे, दूल्हे धर्म धार अख्वाईआ। जो करदे चरण निमस्कारे, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। आत्म परमात्म बणन मीत मुरारे, मित्र धुर दे सद अख्वाईआ। नेत्र लोचण नैण करन दरस दीदारे, नैण नैणां नाल मिलाईआ। मूर्ख मुग्ध दुष्ट दुराचारे मन अन्दर रखण हँकारे, हउमे रोग वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे जो भगत सुहेला साहिब सतिगुर नहीं झुकदा, कूड़ हरस जगत वखाईआ। उस दा पैंडा सतिगुर दे दर तों चुकदा, घर ठांडे रहिण ना पाईआ। नाता रहे ना प्यो पुत्त दा, गोदी गोद ना कोए सुहाईआ। जगत जीवण होए दुःख दा, दर्दी दर्द ना कोए वंडाईआ। खेल रहे ना आत्म सुच दा, हँकार विकार नाल भराईआ। झगड़ा मुके काया बुत दा, मेहरवान महिबूब सिर हथ्थ ना कोए रखाईआ। जगत नाता नहीं

कोई चोटी गुत्त दा, निरगुण जोत जोती गंढ पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभू तेरा भगत मेरा मीत, सज्जण सोहणा सोभा पाईआ। जिन्ना दे अन्दर तेरा गीत, गा गा शुकर मनाईआ। काया होए ठांडी सीत, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। झगड़ा मेट के ऊच नीच, नीच नीचा रूप दरसाईआ। सति धर्म दी मन्ने रीत, कूड़ी क्रिया जगत मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरिजन साचे लैणे तराईआ। सतिगुर शब्द कहे तेरयां भगतां तकां राह, दिवस रैण ध्यान लगाईआ। जो तैनूं रहे गा, गा गा शुकर मनाईआ। सीस रहे झुका, निउँ निउँ लागण पाईआ। जो मुख गए भवा, पतित रूप अख्वाईआ। मनमुख जगत रहे अख्वा, पुरख अकाले दीन दयाले दर तेरे मिले ना कोए सरनाईआ। अन्दर आसा होई वांग कॉँ, विष्टा जगत वाला फुलाईआ। जिन्नां दे अन्दर वसया तेरा नाँ, सो गुरमुख साचे सोभा पाईआ। उन्नां बणना पिता माँ, पूत सपूते अंग लगाईआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान सद देवीं ठंडी छाँ, शहिनशाह सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सद तेरे हथ्थ न्याँ, न्याँकार दर तेरे मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरण सरन सरन चरण तेरी बलि बलि जां, बलधारी तेरी ओट तकाईआ।

८७६
२२

✪ १३ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ गुरचरण सिंघ, सवरन सिँघ दे घर पिण्ड ज़हूरा ज़िला हुश्यारपुर ✪

हिन्दू मुस्लिम सिख जगत धार दा वट्टा, वटांदरा प्रभ ने दिता कराईआ। शब्दी धार जो लिख्या पट्टा, पटनेवाला हुक्म समझाईआ। करे खेल पुरख समरथा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। ओधरों मुहम्मद फिरे नट्ठा, चौदां तबक भज्जे वाहो दाहीआ। परवरदिगार खेल वखाया अक्खां, लोचन नैण खुल्हाईआ। सदी चौधवीं वज्जीआं सट्टां, दो धार कीती लोकाईआ। दीन मज़्हब दी पा के वट्टा, कूड़ नगारा डंक वजाईआ। किसे ने सूर खाधा किसे ने खाधा वच्छा कट्टा, दोहां पई दुहाईआ। अक्ल बुद्धी समझे कोए ना पता, की पतिपरमेश्वर आपणा हुक्म वरताईआ। ज्ञान ध्यान सार आई ना रत्ता, बुद्धी अक्ल ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक वरताईआ। मानव ज़ाती जगत वटांदरा होया तन सरीर झगड़ा प्या मन कल्पणा वांग बन्दर, बन्दगी सारे गए भुलाईआ। ढाहे गुरदवारे मसीत मन्दिर, मट्ठां अग्ग लगाईआ। लुट्टे सन्त साधन, फ़कीर रहे कुरलाईआ। जगत अंधेरा होया आंधन, दो तरफ़ पई दुहाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक वरताईआ। क्यों हिन्दू मुस्लिम इक दूजे नाल वटया, जगत समझ किसे ना आईआ। जेहड़ा लेखा गोबिन्द सरसे दे विच घत्तया, उस विच पूरा भेत गया लिखाईआ। जिस दी सार पाए कोए ना रतया, पर्दानशीं पर्दा ना कोए उठाईआ। खेल होवे पुरख समरथया, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जिस वेले गोबिन्द सथ्थर आसण घत्तया, लेटया चाँईं चाँईंआ। शब्द निशाना तीर कस्सया, दो जहानां पार कराईआ। निगह मारी मदीना मक्कया, काअब्यां खोज खुजाईआ। फेर वेख्या बूरयां कक्कयां, की अन्त कार भुगताईआ। जिन्ह़ां झगड़ाया लड़ाया भरावां सक्या, हद्द हद्द नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता अगम्म अथाँईंआ। गोबिन्द प्रभ नाल कीता बचन बिलास, ताली हथ्थां वाली वजाईआ। मेरे साहिब पुरख अबिनाश, पारब्रह्म प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। वेख खेल तमाश, कलि कल्की रूप दरसाईआ। शंकर सवाधान कर उपर कैलाश, ब्रह्मे ब्रह्म नेत्र खुल्ह़ाईआ। विष्नूं वेख मण्डल रास, बिन गोपी काहन समझाईआ। गोबिन्द खुशी विच ल्या लम्बा सास, साह साह विच समाईआ। फेर तकी अंधेरी रात, नैण नैण विच्चों प्रगटाईआ। फेर मारी झात, आपणा बल वखाईआ। उठ के वेख्या जिस कारन पार नहीं कीता ब्यास, आपणा चरण छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। गोबिन्द किहा मैं पार ब्यास ना कीता, पुरख अकाल दिती वड्याईआ। जिस कारन कृष्न अठारां ध्याए लिखी गीता, अर्जन अर्ज़ पूर कराईआ। मुहम्मद मेहर बणाई मसीता, मुसल्ला हक जणाईआ। सब दी तक के नीता, नीतीवान खोज खुजाईआ। जिस वेले कलयुग कल बीता, आपणा पन्ध मुकाईआ। मार्ग दिसे ना कोए ठांडा सीता, अग्नी तत तत जलाईआ। दीन दुनी दी बदले रीता, मन मनसा विच हल्काईआ। बख्शिश करे ना कोए बख्शीशा, नाम निधान ना कोए वरताईआ। जिथ्थे बलि ने मारी लीका, निशान गया लगाईआ। सप्तस ऋषीआं रखी उडीका, नक्क ज़िमीं उत्ते घसाईआ। जिथ्थे चरण छुहाया राम वाली सीता, बनबासी डेरा लाईआ। पंजां पांडों तपाया अंगीठा, अग्नी हवन प्रगटाईआ। मुहम्मद कलमे धार दस्सी हदीसा, हज़रत हक पढ़ाईआ। मूसा वेख के मारी चीका, दरोही तेरा नाम खुदाईआ। नेत्र रो के किहा हज़रत ईसा, असल दे मालक धुरदरगाहीआ। साडी सब दी इक वसीअता, बिन अक्खरां लेख बणाईआ। सतिगुर नानक शब्दी शब्द दा कीता टीका, निरगुण निरगुण कर पढ़ाईआ। पंचम सतिगुर अर्जन धुर नेत्र नाल दीखा, निज लोयण इक खुल्ह़ाईआ। तेग़ बहादर शब्दी धार नाप के फ़ीता, फ़तवा धुर दा गया लगाईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम गया बीता, समां समें विच्चों गया बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे

खेल धुर दा हरि, हरि दाता अगम्म अथाहीआ। गुर गोबिन्द शब्द गाया अनरागा, अगम्मी राग अलाईआ। ना सोया ना जागा, सोवत जागत इक्को रूप दरसाईआ। नाम निधान आवाज़ सुणाई अनादा, अनहद आप प्रगटाईआ। सब दा लेखा पूरा करना पुरख अकाल दीन दयाल हद्द बणाई वाघा, वटांदरा धुर दा हुक्म दृढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया चाढ़ के कांगा, भरम दा वहिण दिता वहाईआ। एह सब तों उत्तम श्रेष्ट कलयुग दी उत्तम यादा, सतिजुग विच करे अगंवाईआ। एहदा हरख़ सोग काहदा, जो हुक्मे अन्दर प्रभ आपणा हुक्म भुगताईआ। एसे कारन जन भगतां होणा वाधा, गुरमुखां मिले वड्याईआ। गुरसिक्खां होवण वड वड भागा, जिन्हां मिले बेपरवाहीआ। जिस ने आपणा साजण साजा, सगल सृष्टी वेख वखाईआ। ओह पुरख अकाला दीन दयाला भाग लगाए विच देस माझा, कलि आपणी कल समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। वाघा कहे मेरा वटांदरा होया जग, शहादत शब्द गोबिन्द भुगताईआ। फेर लग्गणी नौ खण्ड पृथमी अग्ग, नव सत्त ना कोए बुझाईआ। झगड़ा पैणा दीन मज़्हब दी हद्द, हदूद ना कोए समझाईआ। दीन दुनी सृष्टी दृष्टी अन्दर होणी कग्ग, हँस रूप नज़र कोए ना आईआ। घर बाहर गृह मन्दिर सब ने जाणा छड, सदी चौधवीं रही कुरलाईआ। नार कन्त होणा अड्ड, भैण भ्रावां होए जुदाईआ। तत्ती वाअ जाणी वग, सांतक सति ना कोए कराईआ। की होया जो वटांदरे विच आपणा हिस्सा आए छड, हिस्सा दूजा ल्या दबाईआ। अग्गे वेखणा खेल सूरे सरबग, जो हरि करता मात कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी साहिब धुरदरगाहीआ। वटांदरे विच काहदा दु:ख, प्रभ भाणा सीस उठाईआ। चुरासी लख जूनी वटांदरे विच बदलदा रहे मनुक्ख, जन्म मरन मरन जन्म आपणा खेल वखाईआ। सच वटांदरा जे इक वार हो जावे सतिगुर शब्द दे बण जाउ सुत , गोबिन्द गोबिन्द विच समाईआ। फेर एसे धरती उत्ते तुहाडी मौले रुत, रुतड़ी प्रभ दे नाल महकाईआ। भाग लग्गे काया माटी बुत, तन वजूद होए रुशनाईआ। पर्दा ओहला रहे ना लुक, अंध अंधेर दए मिटाईआ। वटांदरे विच जे पिच्छों नहीं ल्यांदा कुछ, फेर सब कुझ एथे ल्या बणाईआ। जे प्रभू दे प्यार दी इक्को याद रखो तुक, नाम नामा रसना गाईआ। फेर वटांदरे दा पैंडा जाए मुक, चुरासी गेड़ रहे ना राईआ। जन्म कर्म दा रहे कोए ना दु:ख, हिन्द पाक ना कोए वखाईआ। सचखण्ड दवारे साचे बहो ढुक, जिथ्थे मिले माण वड्याईआ। उस प्रभू दे दुलारे बण जाउ सुत , जो अपराधीआं ल्ए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ। मानस जन्म वटांदरा जे होवे इक वार, वारता पिछली दए बदलाईआ। हुक्म मन्नो अगम्मे यार, जो यारड़ा

८७८
२२

धुरदरगाहीआ। वटांदरे विच बदल के लै जाए विच्चों संसार, संसारी भण्डारी सँघारी सके ना कोए अटकाईआ। मिरतू लोक विच्चों पहुंचाए हरि के दवार, दरगाह साची सच सुहाईआ। अमृत बख्श के ठंडा ठार, अग्नी तत दए गंवाईआ। नाम सुणा के नादी धुन्कार, अनहद नादी नाद वजाईआ। दीपक दीआ जोत कर उज्यार, अंध अंधेरा दए मिटाईआ। सचखण्ड दवारे लै के जाए आप निरँकार, निराकार दया कमाईआ। सच वटांदरे विच मातलोक दा छड जाओ घर बार, वस्तू संग ना कोए उठाईआ। वेखो आपणा गृह जिथ्थे वसे आप करतार, करनी दा करता सोभा पाईआ। जिस तरह जगत हद्द नूं कीता पार, पिच्छों चल के एथे गए आईआ। एथों उठ के जाओ उस सच्चे घर बार, जिथ्थों बदली फेर सके ना कोए कराईआ। वटांदरे विच्चों गुरमुखो वटांदरे दी करो विचार, प्रभ मेला होवे सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण खेल करे अगम्म अपार, अलख अगोचर धुर हुक्म आप वरताईआ।

✪ १४ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ माधा सिँघ दे घर पिण्ड रामूवाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

८७६
२२

गोबिन्द शब्द कहे मैं धुर दा सईआ, साहिब सतिगुर इक अख्वाईआ। जुग चौकड़ी सच नाम दी नईया, अवतार पैग़म्बर गुरु गए चलाईआ। जिस कारन बुल्ले गाया थईआ थईआ, ताल आत्म परमात्म बणाईआ। गोबिन्द शब्द संदेशा अगम्म कहीआ, कहि के गया सुणाईआ। जिस वेले पुरख अकाल खेल करे धुर दा पिता मईआ, पारब्रह्म प्रभ आपणा रंग रंगाईआ। जन भगतां धर्म राए लेखा मंगे ना उत्ते वहीआ, हिस्सा चित्रगुप्त ना कोए जणाईआ। सो लहिणा पूरा करन आया पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मालवे विच मलवईआ, हरिजन आपणे गोद टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। गोबिन्द शब्द कहे मेरा शब्दी देश पुराणा, जल थल देण गवाहीआ। मेरा निरगुण धार बाणा, सरगुण संग निभाईआ। मेरा शाह पातशाह सच्चा सुल्ताना, शहिनशाह धुरदरगाहीआ। निरवैर हो के मेहरवाना, मेहर नज़र इक उठाईआ। लेखा वेख दो जहानां, ब्रह्मण्ड खण्ड फोल फुलाईआ। कोटां विच्चों जन भगतां कर परवाना, परम पुरख आपणा भेव चुकाईआ। सुरत शब्द दा दे तराना, तुरीआ तों परे कर पढ़ाईआ। हउमे रोग मेटां बेगाना, मेल मिलावां सहिज सुभाईआ। रहिण देवे ना कोए निथावां, सचखण्ड साचे दए वड्याईआ। जिस वेले गोबिन्द डल्ले दे गल विच पाईंआ बाहवां, दोवें हथ्थ पिट्ठ उत्ते टिकाईआ। हस्स के किहा सतिगुर शब्द हो के हरिजन आपणे आप रावां, सेज सुहञ्जणी डेरा

लाईआ। आत्म परमात्म दीआं पूरीआं करां लावां, चौथे जुग धुर दा संग बणाईआ। चरण छुहा के गराँ ग्रावां, गहर गम्भीर हो के ओहला दयां चुकाईआ। सन्त सुहेला वेखां नाल चावां, चाउ घनेरा इक प्रगटाईआ। सब दा लेखा कर के सावां, सति सति विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्दी गोबिन्द सतिगुर देवणहारा ठंडीआं छावां, अग्नी तत ना कोए तपाईआ।

✪ १४ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ गुरदयाल सिँघ दे घर पिण्ड रामू वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

गोबिन्द शब्द कहे मैं वेखां गोबिन्द भविख, सिँघ सिंघ ध्यान लगाईआ। जो धुरदरगाही लेखा गया लिख, चार जुग दे शास्त्र समझ कोए ना पाईआ। सच वस्त दी दे के भिख, भिच्छया नाम गया वरताईआ। सदी चौधवीं सति सरूप रिहा कोए ना दिस, दहि दिशा अक्ख उठाईआ। आत्म परमात्म बणे कोए ना मित, मित्र प्यारा यार संग ना कोए रखाईआ। पुरख अकाल सच प्रीत करे कोए ना हित, पारब्रह्म ब्रह्म रंग ना कोए वखाईआ। धर्म दी धार सच दवार रिहा कोए ना सिख, सिख्या गोबिन्द अन्दर ना किसे टिकाईआ। कूड़ कल्पना जगत वासना गए विक, कीमत टकयां वाली पाईआ। सो पुरख स्वामी अन्तरजामी पुरख अकाल दीन दयाल सदी चौधवीं वेख के आपणी थित, पैग़म्बरां रिहा हिलाईआ। दीन मज़्हब दा दर दरवाज़ा खोल्ह के वेखो भित्त, पर्दा ओहला मात उठाईआ। तुसीं बोध अगाधा नाम निधाना बख्श्या किस किस, कलमा कायनात दयो जणाईआ। कवण मन मनसा रिहा जित्त, हर हिरदे विच वसाईआ। किस अन्तर लग्गी सिक्क, सिखर चोटी चढ़ के प्रभ दा दर्शन पाईआ। मुहब्बत प्यार महिबूब दी रखे तृख, तृष्ना जगत कूड़ गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सतिगुर शब्द शब्द सतिगुर दर ठांडे मंग मंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं गोबिन्द धार तकी, बिन नैणां नैण उठाईआ। हकीकत वेखी हकी, हकूक हक दा पड़दा लाहीआ। महिबूब तक्कया कमलापाती, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी समर्थी, शाह पातशाह शहिनशाह इक अख्वाईआ। सब दी जानणहारा मित गती, लख चुरासी फोल फुलाईआ। वेखणहारा मन मती, नौ खण्ड प्रिथवी खोज खुजाईआ। जिस दा खेल वेखणा अक्खीं, नेत्र लोचन नैण अक्ख उठाईआ। ओह कथा कहाणी करे सच्ची, सच सच नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहर नज़र इक उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं गोबिन्द धार तक्कया दाअवा, हुक्म संदेशा धुरदरगाहीआ। सूरबीर बहादर योधा तक्कया बल बाहवां, तरकश तीर कमान खेल खिलाईआ।

पूत सपूता दुलारा तक्कया पुरख अकाल नाल सावां, इक्को गृह वज्जे वधाईआ। जिस दा खेल दो जहान नाल होया चावां, चाओ घनेरा इक प्रगटाईआ। पुरख अकाल किहा वाहवा, तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग अन्तिम तेरे नाल आवां, निरगुण हो के निरगुण खेल खिलाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्तर निरन्तर बुद्धी वेखां कूड़ क्रिया वाली कावां, गुरमुख हँस सच सरबंस विच्चों फोल फुलाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात ऊच नीच लेखा जाणा थाव थावां, नव सत्त आपणा पन्ध मुकाईआ। धुर संदेशा नाम अगम्मी एकँकार इक्को गावां, वाहिद कलमा धुरदरगाहीआ। खेल करां जन भगत सुहेले जिस वसण थाँ गरावां, नगर खेड़ा फेरा पाईआ। नाम प्याला अमृत रस बूँद स्वांती निझर झिरने आप प्यावां, बाहर मंगण दी लोड़ रहे ना राईआ। चरण धूढ़ सच सरोवर सच दर आप नुहावां, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती अठ्ठ सठ तीर्थ पैंडा पन्ध मुकाईआ। चार वरन अठारां बरन मेहरवान महिबूब हो के सिर देवां ठंडीआं छावां, कलयुग कूड़ी क्रिया अग्नी तत ना कोए तपाईआ। चुरासी विच्चों जम की फाँसी विच्चों फड़ बाहों पार लँघवां, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। सतिगुर शब्द किहा हरिजन हरिभगत गुरमुख गुरसिख सूफ़ी सन्त फ़कीर कोई रहिण ना देवां निथावां, जो पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझे यार चरण कँवल कँवल चरण ध्यान ध्यान विच्चों लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दवार सब नूं करके सावां, सम्बल दा मालक हो के लेखा सब दा पूर कराईआ।

८८१
२२

✪ १४ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ करतार सिँघ दे घर पिण्ड चड़िक तहिसील मोगा ✪

गोबिन्द शब्द कहे मेरा सतिगुर रूप महाना, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। मैं वसां सचखण्ड सच्चे मकाना, बिन छप्पर छन्न डेरा लाईआ। मेरा मालक शाहो भूप सुल्ताना, नर निरँकार अगम्म अथाहीआ। जिस दा आदि अन्त पैग़ामा, पैग़म्बरां तों बाहर करे पढ़ाईआ। जिस दे दर इक्को सजदा इक सलामा, डण्डावत बन्दना इक रखाईआ। इक्को कलमा नाम कलामा, इक्को इक करे शनवाईआ। जिस दा खेल दो जहानां, निरगुण सरगुण हुक्म वरताईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला पहर के बाणा, जोती जाता पुरख बिधाता वेस वटाईआ। नाम निधान मारे तीर अणयाला, अनडिठड़ी आपणी कार कमाईआ। भगत वछल बण दीन दयाला, अनाथां होए सहाईआ। सदी चौधवीं करे खेल कमाला, कामल मुर्शद आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर

शब्द कहे प्रभ मालक आदि अन्त, अन्तष्करन वेखे जगत लोकाईआ। राज़क रिज़क रहीम जुगा जुगन्त, जुग जुग आपणी खेल खिलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग देवणहारा मणीआ मंत, मन्त्र धुर इक समझाईआ। मेल मिलावा होए अगम्मे कन्त, कन्तूहल मिले बेपरवाहीआ। दया कमाए गुरमुख विरले सन्त, भगत भगवान पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच संदेशा इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ दी धार धार अगम्मी, अगम्मढ़ी कार कमाईआ। जनणी कुख्ख कदे ना जम्मी, ज़िमीं असमान ना चरण टिकाईआ। पवण स्वास ना कोए दमी, साह साह ना कोए समाईआ। सूर्या चन्द नूर ना चन्नी, हिस्सा वंड ना कोए वखाईआ। हद्द हदूद कोए ना बन्नी, खेल खेले बेपरवाहीआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सद नवीं, नव जोबन रूप सद इक दरसाईआ। जिस दा वसेरा नहीं छप्पर छन्नी, हर घट आपणा खेल वखाईआ। सिफ्त जणाए चौदां सौ तीह अंक पंनीं, अकशर अक्खरां गंढ पवाईआ। लोभ लालच ना कोए तमी, तृष्ना तृखा ना कोए वखाईआ। घड़या जाए ना किते भन्नी, ठठिआर हथ्थ ना कोए छुहाईआ। नेत्र नैण होवे ना अन्नी, लोचन बन्द ना कोए कराईआ। सरोत सुणे कोए ना कन्नीं, सरवण कन्न ना कोए बणाईआ। धुर दी धार धर्म दवार दी धनी, धनाढ रूप इक अख्वाईआ। जिस दी आयू आदि जुगादि जुग चौकड़ी लम्मी, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे दाते पुरख बिधाते दीन दयाल दया कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ शब्दी खेल अपारी, अपरम्पर आप कराईआ। लेखा पूरा कर तेई अवतारी, अवतर आपणा हुक्म चलाईआ। पैग़म्बरां लेखे लाए सिक्दारी, सिलसले वार खोज खुजाईआ। गुरु गुरदेव पावे सारी, साहिब सुल्ताना धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं आई अन्तिम वारी, वारस हो के खोज खुजाईआ। शब्द संदेशा देवे एकँकारी, इक इकल्ला वाहिद नूर अलाहीआ। मुहम्मद हमद विच होणा ख़बरदारी, बेख़बर ख़बर सुणाईआ। झगड़ा मुकणा चार यारी, अलिफ़ ये दए गवाहीआ। कातिल मक्तूल शरअ दी करन ख्वारी, शरीअत असलीअत रूप बदलाईआ। अन्तिम इक दी झलणी पैणी ताबयादारी, सिर सके ना कोए उठाईआ। हज़रत ईसा तक लै वीहवीं सदी नेत्र रोवे ज़ारो ज़ारी, बिन नैणां नीर वहाईआ। फिरे दरोही जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, टिल्ले पर्बत रहे कुरलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप कलयुग कला रही साड़ी, कल्पणा अग्नी अग्ग जलाईआ। मानव तड़फे बहत्तर नाड़ी, अमृत मेघ सके ना कोए बरसाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ दा भाणा जद वरते वरते सतारां हाढ़ी, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप भुल्ल रहे ना राईआ। छब्बी पोह दर ठांडे मंग मंगणी मौत लाड़ी, राय धर्म चित्रगुप्त संग मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर,

सचखण्ड निवासी दया कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे गोबिन्द धार धार दा खण्डा, खड़ग जगत लोकाईआ। खेल होणा विच ब्रह्मण्डां, ब्रह्मांड दए दुहाईआ। झगड़ा वेखणा जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज अन्तर निरन्तर दए दुहाईआ। सदी चौधवीं अन्त अखीरी कन्ढा, कन्ढा पार ना कोए कराईआ। माण रहिणा नहीं सुरस्ती गोदावरी जमना गंगा, रविदास चमारा रिहा दृढ़ाईआ। धर्म दी धार दिसे ना कोए पंडा, आत्म बोध करे ना कोए पढ़ाईआ। जीव जगत जहान सिर ओढण होया नन्गा, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। कलयुग घर घर कराउणा दंगा, दुतीआ भाउ बणाईआ। प्रगट होणा सूरा सरबंगा, हरि करता शहिनशाहीआ। शब्दी गोबिन्द होणा संगा, सगला संग रखाईआ। आत्म सेज बैठ पलँघा, साढे तिन्न हथ्थ सम्बल दए वड्याईआ। अग्गे वक्त ना रहिण देवे लम्बा, जुगां दा मालक आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतां दीन दयाल बण बख्शंदा, बख्शिश रहमत आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग जीव कूड़ कुड़यार मन कल्पणा कोई रहिण नहीं देणा गंदा, कूड़ क्रिया काया माटी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ।

८८३
२२

✪ १५ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ महिन्दर कौर दे घर पिण्ड चड़िक तहिसील मोगा ✪

सुण अज़ी खां कुरेशी, अर्श कुर्श दा मालक रिहा जणाईआ। हक दवार तेरी पेशी, पेशवा दा लेखा दे मुकाईआ। तिन्न सौ तरेठ साल धार तेरी देखी, ख़बीस आपणा रंग वखाईआ। अन्त रहे ना कोए शेख़ी, शनाख़त विच दए समझाईआ। इस गृह चों हो जा परदेसी, दर दवारा आपणा राह तकाईआ। जन भगतां नाल सदा करनी नेकी, बदी वाला डेरा ढाहीआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान बख्शिश करे धर्म धार दी बेटी, पिता पूत गोद उठाईआ। ममता मोह दा रहिणा नहीं सेठी, जगत जुग ना कोए चतुराईआ। अन्तिम वार प्रभ कदम लेटी, सजदा सजदा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा हुक्म वरताईआ। कुरेशी कहे मेरी कसम, खुद खुदा सीस निवाईआ। मेरा रहे ना माटी जिस्म, ज़िमीं असमान मेरी दुहाईआ। तेरी चरण धूढ़ मेरी ख़ाक भस्म, ख़ाक ख़ाक विच्चों रमाईआ। इक्को मन्न के तेरा इस्म, आज़म तेरे कदमां सजदा करके खुशी मनाईआ। मैनूं दूर दुराडे तेरे प्रेमी दिसण, बिना अक्खां अक्ख उठाईआ। मेरे साहिब स्वामी पितन, पतिपरमेश्वर तेरी ओट तकाईआ। जिन्नां चिर तेरे शब्दी हुक्म दी धार लिखारी ना लिखण, ओनां चिर मेरी जूनी जून ना कोए कटाईआ। मेरे मालक ख़ालक प्रितपालक मेरा कदीम दे दे हिस्सण, कदम

कदम कदमबोशी करके नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी आसा मनसा पूरी करे इच्छन, निरइच्छत निरवैर निराकार हो के जन्म मरन मरन जन्म दा लेखा दए मुकाईआ।

✪ १५ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ कपूर सिँघ बराड़ दे घर मोगा शहर ✪

सतिगुर शब्द कहे गोबिन्द धार तक्कया प्रभ पूरन, पूरन रूप समाईआ। जिस दा खेल दो जहान नेड़ दूरन, ब्रह्मण्ड खण्ड हुक्म वरताईआ। हुक्म मन्नणा पैणा सब नूं मजबूरन, सिर सके ना कोए उठाईआ। मस्तक ख़ाक रमाउणी पए धूढ़न, टिक्के ख़ाक वाले रमाईआ। चतुर सुघड़ होणे मूर्ख मूढ़न, दुरमति मैल मैल धुआईआ। जन भगतां दिसणा हाज़र हज़ूरन, हर हिरदे अन्दर बैठा सोभा पाईआ। नाता तोड़ के कूड़ कूड़न, कूड़ कुटम्ब दा डेरा ढाहीआ। जगत जहान कर मशहूरन, हरिजन साचे आप उठाईआ। जोती जल्वा दे के नूरन, नूर नुराना चन्द चमकाईआ। सर्ब कला बण भरपूरन, भरपूर होवे सर्ब थाँईंआ। सतिगुर शब्द कहे जल्वा तकां नूर नुराना नूरन, निराकार निरँकार रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत वछल सब दी आसा मनसा पूरन, पारब्रह्म प्रभ आपणा खेल खिलाईआ।

८८४ २२

✪ १५ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ रछपाल कौर दे नवित पिण्ड नाथेवाल ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सतिगुर शब्द कहे प्रभ आदि जुगादी मालक, हरि करता पुरख पुरख धुरदरगाहीआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण होवे सालस, दो जहानां नौजवाना मर्द मर्दाना वेख वखाईआ। सन्त सुहेला गुरमुख सज्जण सन्त वेखे बालक, गुरमुख गुर गुर आपणी गोद टिकाईआ। जन्म जन्म दी कर्म कम दी मेट के कालख, नूर नुराना नूर चन्द दए चमकाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी आत्म परमात्म समझ आपणी अमानत, दरगाह साची सचखण्ड दवार टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे रूह बुत प्रभ दी धार, धरनी धरत धवल वड्याईआ। शब्दी शब्द गुरु सिक्दार, आदि जुगादि हुक्म वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादार, संसारी भण्डारी

सँघारी आपणी कार कमाईआ। धुर दा लेखा जाणे सच्ची सरकार, शाह पातशाह शहिनशाह पारब्रह्म अगम्म अथाहीआ। जन भगत सुहेला भगतां पावे सार, महासार्थी आपणी कार कमाईआ। सचखण्ड दवारा खोल्ह कवाड़, सचखण्ड निवासी आपणा पड़दा लाहीआ। आत्म पारमातम कर प्यार, प्रीतम प्रेम प्रीती इक बणाईआ। कलयुग वेखे विगसे पावे सार, वेखणहार दया कमाईआ। गुरमुखां लहिणा देणा पूरा करे आप करतार, करता करीम धुरदरगाहीआ। वक्त सुहञ्जणा पावे सार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पन्द्रां मग्घर करे निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। प्रभ चरण कँवल बलिहार, बलि बलि बलिहारी दर तेरे अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सतिगुर शब्द कहे जन भगत प्रभू दे बाल, लाल दुलारे आप बणाईआ। लहिणा देणा लेखा पूरा करे कौर रछपाल, रच्छक हो के वेख वखाईआ। जन्म जन्म दी कर्म कम दी सेवा लेखे लाए घाल, घालणा अवर रहे ना राईआ। चुरासी विच्चों कर बहाल, जम की फाँसी दिती तुड़ाईआ। सचखण्ड दवार बिठा सच्ची धर्मसाल, बंक इक्को इक वखाईआ। जिथ्थे पोह ना सके काल, महाकाल ना कोए चुतराईआ। जोती जोत दीपक बाल, जोती जोत विच समाईआ। किरपा कीती पुरख अकाल, अकल कलधारी आपणी कल प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। रछपाल कौर कहे सुण गुरसिख सिँघ बूड़, बुढेपा जगत रिहा ना राईआ। सतिगुर चरण मिली धूढ़, धूढ़ी टिक्का ख़ाक रमाईआ। मेरा अन्तर रिहा ना मूढ़, सुरत शब्द विच समाईआ। आवण जावण कटया गया जूड़, चुरासी बन्धन कोए ना पाईआ। सुणी आवाज़ अगम्मी तूर, तुरीआ तों परे कीती शनवाईआ। अन्त मिल्या अगम्मी नूर, जिस नूर विच नूर गया समाईआ। जन्म दा रिहा ना कोए कसूर, पतित पुनीत रूप बणाईआ। मेरे विछोड़े विच ना होणा मजबूर, मजबूरी प्रभ दे अग्गे चले कोए ना राईआ। दीन दुनी दा नाता वेख्या कूड़, सगला संग ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच आपणा रंग रंगाईआ। रछपाल कौर कहे तेरी मेरी तत्तां वाली जोड़ी, नाता जगत वखाईआ। मैं अरदास करां विश्वाश करां प्रभ छेती आपणे गुरसिख नूं चाढ़ दे घोड़ी, वाग आपणे हथ्थ उठाईआ। अग्गे आयू रह जाए थोड़ी, बहुती लोड़ रहे ना राईआ। धुर दा हुक्म हुक्म कदे ना मोड़ीं, मन्नणा चाँईं चाँईंआ। दरगाह साची सचखण्ड दवार पुरख अकाला दीन दयाला बच्चयां वांग देवे लोरी, दुःख दर्द ना लागे राईआ। आसा मनसा मूल रहे ना होरी, तृष्ना तृखा ना कोए सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे आप तराईआ। सतिगुर शब्द कहे जो गुरमुख छडे सरीर, तन माटी ख़ाक तजाईआ।

तिस अन्दर रहे ना पीड़, पीर पीरां होए सहाईआ। मंज़ल ओह मिले जिथ्थे बैठा जुलाहा कबीर, कबरां तों बाहर सोभा पाईआ। दर दवारा अन्त अख़ीर, आख़र सतिगुर दए वखाईआ। जिथ्थे वहाउणा पए ना नीर, हन्झूआं हार ना कोए बणाईआ। वस्त्र पहनणा पए ना चीर, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। वास्ता पा के कढणी पए ना लकीर, गल पल्लू ना कोए वखाईआ। झगड़ा रहे ना ग़रीब अमीर, अमरापद इक्को दए जणाईआ। सतिगुर शब्द कहे सतिगुर बदल देवे तकदीर, तदबीर आपणा नाम समझाईआ। प्रभू दर इक्को रूप सारे पातशाह वज़ीर, स्त्री पुरुष वंड ना कोए वंडाईआ। जगत मुहब्बत दी रहे ना कोए ज़ंजीर, कड़ी कड़ी नालों तुड़ाईआ। भगत सुहेला गुरमुख हरिजन कदे ना होवे दिलगीर, चिन्ता ग़म ना कोए सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां आवण जावण जन्म मरन दी कट पीड़, भीड़ी गली तों बाहर ज़ाहर आपणे घर वसाईआ।

८८६
२२

✪ १६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ सौदागर सिँघ दे घर पिण्ड नाथेवाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सतिगुर शब्द कहे ब्रह्मण्ड खण्ड रहे घुम्मदे, पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर चक्रवर्ती चक्र लगाईआ। निरगुण धार जोती नूर चरण रहे चुम्मदे, नव नौ चार आपणा पन्ध मुकाईआ। नाद सुणदे रहे अगम्मी धुंन दे, जो आवाज़ राज़ पड़दा अगम्म उठाईआ। भेव चुकाउँदे रहे सुन सुन दे, सुन्न समाधी परे अक्ख खुल्ह्लाईआ। खेल वेखदे रहे अबिनाशी गुण दे, गुणवन्ता की आपणा हुक्म वरताईआ। की लेख लिखे अवतार पैग़म्बरां सदी चौधवीं हुण दे, भविक्ख्त इष्ट विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि आपणा हुक्म वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे दो जहान लाउँदे वेखे चक्र, चाकर हो के भज्जण वाहो दाहीआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप धर्म दी धार दिसे कोए ना फ़क्कर, फ़िकरा हक ना कोए सुणाईआ। अक्खरी नाम दी लग्गी वेखी टक्कर, झगड़ा दीन दुनी जणाईआ। मन कल्पणा हँकारी वेखी मकर, सहिसे रोग नाल कुरलाईआ। निरगुण धार दी निरअक्खर धार वाली समझ आई किसे ना सतर, सत्ह समुंद बुलंद ना कोए दृढ़ाईआ। चार जुग दे शास्त्र गृहण कर सके ना इक पत्र, पत्रका लिख लिख मातलोक गए दृढ़ाईआ। किसे सार ना पाई की खेल होणा भगत बहत्तर, नाड़ बहत्तर नाद शनवाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर मानव ज़ाती कर ना सके इकत्तर, एका एके नाल जुड़ाईआ। पुरख अकाल दा समझया ना किसे गृह नछत्र, ब्रह्मवेता ब्रह्मा समझ कोए ना पाईआ। मनू जणा सक्या कोए ना अक्खर, अक्खरी पड़दा कोए ना लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता अगम्म अथाहीआ। सतिगुर शब्द कहे ब्रह्मण्ड खण्ड फिरे नट्ठे, भज्जे वाहो दाहीआ। धर्म दवार होणे इक्ट्ठे, छब्बी पोह रुत सुहाईआ। नाल अवतार पैग़म्बरां गुरुआं चार जुग दे ल्याउणे पटे, पटने वाला नाल मिलाईआ। सब दे लेखे होणे बटे, ज़ीरो ज़ीरो नाल बदलाईआ। नौ गुरमुखां प्रभ दे उतों नौ नौं वार के सुट्टणे टके, साढे नौ दा वक्त जणाईआ। उन्हां गुट्टीं रुमाल होणे खट्टे, सवा गिट्ठ लम्बाई चुड़ाईआ। पिछांह नूं सुट्टे होण पटे, कान्हा कृष्ना पूरी आस जणाईआ। मस्तक पाए होण वट्टे, तिऊड़ी ज़ोर नाल वखाईआ। ओह होवण ज़ात दे जट्ट जट्टे, दूसर संग ना कोए बणाईआ। फेर जैकारा बोलण फ़तिह, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल पुरख समरथे, समरथ तेरी बेपरवाहीआ।

८८७
२२

✪ १६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ नछत्तर सिँघ दे घर पिण्ड नाथे वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सतिगुर शब्द कहे ब्रह्मण्ड खण्ड रहे नस्स, दिवस रैण भज्जण चाँईं चाँईंआ। पुरख अकाल दा गाउँदे जस, तूं मेरा मैं तेरा सिफ्त सालाहीआ। इशारे करदे फिरन रवि शशि, मण्डल मण्डप रहे दृढ़ाईआ। उठो वेखो खेल पुरख समरथ, की करता करनी कार कमाईआ। आदि जुगादि जिस दे वस, जुग चौकड़ी हुक्म वरताईआ। लख चुरासी दीन दुनी इक्को वार विछावण वाला सथ, सथ्थर गोबिन्द दए गवाहीआ। कायनात सृष्टी रिहा मथ, मथणहारा बेपरवाहीआ। लेखा चुकावण लग्गा तत अठ, नौ दर तेरा पन्ध मुकाईआ। लख चुरासी लेखे लावे रत, रती रत खोज खुजाईआ। जेहड़ा साहिब स्वामी पुरख अकाला दीन दयाला आया वत, वतन बेवतन आपणा हुक्म वरताईआ। मानव मानस मानुख बदल देवे मति, मति मतांतर डेरा ढाहीआ। धीरज सन्तोख देवे जत, यथार्थ आपणा हुक्म वरताईआ। दीन मज़्हब दा मेट के फट्ट, पट्टी नाम दए बंधाईआ। जन भगतां सति धर्म दा खोल्ह के हट्ट, भगत दवारा इक वखाईआ। जिथ्थे मिले अंमिउँ रस, अमृत रस आप चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वसणहारा घट घट, घट निवासी मेहरवान मेहर नज़र इक उठाईआ।

✪ १६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ प्रीतम सिँघ दे घर पिण्ड नाथेवाल ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सतिगुर शब्द कहे ब्रह्मण्ड खण्ड बणे रहे पाँधी, जुग चौकड़ी मंज़ल मंज़ल पन्ध मुकाईआ। चार जुग जलधार मन कल्पणा वेखदे रहे आंधी, अन्दर बाहर ध्यान लगाईआ। सुरती तकदे रहे जो शब्द शब्द गुर गांदी, गहर गम्भीर सिफ्त सालाहीआ। माटी ख़ाक वेखदे रहे जो सच सरोवर नहांदी, तीर्थ तट्टां बाहर अक्ख खुल्हाईआ। मनसा जाणदे रहे जो थक्की मांदी, बलहीण जगत अख्वाईआ। बुद्धी तकदे रहे जो हँस होई कागी, काग वांग कुरलाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु वेखदे रहे जो धरदे रहे स्वांग स्वांगी, निरगुण सरगुण आपणा रूप बदलाईआ। जगत कल्पणा वेख्या रुपा चांदी, चंचल मन नाल चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक वरताईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड कहिण असीं जुग चौकड़ी भज्जे दौड़े, घड़ी पल टिकण कोए ना पाईआ। जीव जगत जहान वेखे मिट्ठे कौड़े, अन्तर निरन्तर फोल फुलाईआ। सदी चौधवीं साची मंज़ल चढ़े कोए ना पौड़े, पौड़ी डण्डा हथ्थ किसे ना आईआ। सब दी आशा लेखा पूरा करे ब्राह्मण गौड़े, गुर अवतार पैग़म्बर ध्यान लगाईआ। जिस दे मार्ग कोटन कोटि जुग चौकड़ी लम्मे चौड़े, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी सस्से उपर ला के होड़े, सो पुरख निरजंण आपणा हुक्म वरताईआ। हँ ब्रह्म आत्म धार आपे बौहड़े, बौहड़ी बौहड़ी करदी वेखे ख़लक खुदाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त अन्तर करे ग़ौरे, गहर गम्भीर हो के वेख वखाईआ। इक नाम निधाना श्री भगवाना मन्त्र फोरे, फ़ुरने सब दे बन्द कराईआ। सतिजुग साचा मार्ग कलयुग दी धार विच्चों तोरे, तुरीआ तों परे तुरत आपणा पड़दा लाहीआ। दीन मज़्हब ज़ात पात सब दी टुट्टी आपणे नाल जोड़े, जोड़ी आत्म परमात्म सच बणाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड कहिण कलयुग अन्तिम इक प्रभू दी लोड़े, जो लोड़ींदा सज्जण सब दी आसा मनसा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति दी धार तूं मेरा मैं तेरा दस्से दोहरे, दोहां दो राहां विच्चों पार कराईआ।

✪ १६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड नाथे वाल ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

ब्रह्मण्ड खण्ड कहिण असीं जुग चौकड़ी दीन दुनी तकी, जगत तकीआं उत्ते ध्यान लगाईआ। राम दी सीता कृष्न दी वेखी सख़ी, सुख़न सब दे नाल कीते चाँईं चाँईंआ। मूसा ईसा मुहम्मद दी धार वेखी अक्खी, पैग़म्बरां खोज खुजाईआ। नानक गोबिन्द जो वेखी सची, सच सच नाल वड्याईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान वेखी रची, ग्रन्थ सिफ्तां

विच सालाहीआ। दीन मज़्हब दी अग्ग वेखी मच्ची, चार कुण्ट जगत जलाईआ। मनुश देही देही धार वेखी कच्ची, अन्त रहिण कोए ना पाईआ। नाम कल्मयां दी संसारी वेखी हट्टी, जो हुक्म धुर दा रही सुणाईआ। अक्खरां वाली लिखी होई वेखी पट्टी, सिफ्तां वाली सिफ्त सालाहीआ। दरोही कलयुग अन्तिम मन वासना धार वेखी टप्पी, हद हदूद पिछली गई भुलाईआ। जिस नाल पूरब दी मोहर गई ठप्पी, ठप्पा नाम ना कोए लगाईआ। धर्म दा रिहा कोए ना तपी, तपीशर बैठे मुख भवाईआ। सति दा रिहा कोए ना पती, पति पत्नी विभचार विच कुरलाईआ। नाम दी दिसे कोए ना रती, रत्न अमोलक हीरा नज़र कोए ना आईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर रही पिट्टी, नेत्र रोवे थांउँ थाँईंआ। बौहड़ी बिना पुरख अकाल तों किसे समझ ना आई क्यों हाहे उत्ते लाई टिप्पी, हँ आपणी कार कमाईआ। चार जुग तों वखरी खेल कर अनडिट्ठी, अनडिठड़ा आपणा हुक्म समझाईआ। जन भगतां हथ्थ रखे पुश्त पनाह पिट्ठी, सीस जगदीश आप टिकाईआ। चुरासी विच्चों सन्त सुहेले बणा के सिक्खी, सिख्या धुर दी दिती दृढ़ाईआ। पूरी करे थित वार रुत सुहञ्जणी मिती मिथी, जो गुर अवतार पैग़म्बर गुरु मिथ के भविक्ख्तां विच गए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झगड़ा मुकावे पथ्थर इट्टी, इट्ट पथ्थर पथ्थर इट्ट नाल टकराईआ।

✪ १६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ महिन्दर सिँघ दे घर पिण्ड नाथेवाल ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

धरनी कहे मेरी मनसा पूरी होई उडीक, साल बसाला वक्त लँघाईआ। सच प्रविटे दी पुज्जी तरीक, तवारीख शब्द दए गवाहीआ। समां साहिब दा आया नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। मैनूं हुक्म दी कीती सी तबलीक, शरअ तों बाहर समझाईआ। परवरदिगार आवे लाशरीक, मुर्शद धुरदरगाहीआ। बिना अक्खरां तों दे रसीद, धर्म दी धार दिती जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला ल्या मिलाईआ। धरनी कहे एथे आया सी फ़रीद, फ़ायदा मैनूं गया पहुंचाईआ। सच प्रेम दी मना ईद, इबादत विच ध्यान लगाईआ। ढाई घंटे कीती नींद, सुत्ता चाँईं चाँईंआ। जिस विच प्रभ दी वेखी उम्मीद, आंमद विच वड्याईआ। खुशी नाल कीती ताकीद, मैनूं गया सुणाईआ। जिस वेले पैग़म्बर गुरु हो गए शहीद, शहादत वाला रहिण कोए ना पाईआ। तैनूं करे कोए ना ठांडी सीत, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। झगड़ा पैणा मन्दिर मसीत, काअबे रोवण मारन धाईआ। सच दी रहे ना कोए प्रीत, प्रीतम मिलण कोए ना पाईआ। उस वेले सदी चौधवीं जाणी बीत, कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। पुरख अकाला आवे त्रैगुण अतीत, त्रैभवन धनी आपणा खेल

खिलाईआ। मेरे प्यार दी करे तस्दीक, शहादत शब्द गुरु भुगताईआ। नाल खिच्च के मारी लीक, लाईन ऐन दिती वखाईआ। उस दा ढोला होणा तूं मेरा मैं तेरा गीत, गहर गम्भीर अगम्म पढ़ाईआ। झगड़ा मेटणा हस्त कीट, ऊचां नीचां रंग रंगाईआ। फेर ज़ोर दी मारी चीक, फ़रीद आह भर के दिती सुणाईआ। उस नूं कहिणा कलि कल्की अवतार चौबीस, चौथे जुग दा सच्चा माहीआ। झगड़ा मेटणा कूड़ क्रिया अबलीस, लाअनत रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरब आसा मनसा पूरी कीती उम्मीद, तृष्ना तृखा धरनी धरत धवल धौल दए मिटाईआ।

✪ १६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ जसवन्त सिँघ दे घर पिण्ड राजेआणा तहिसील मोगा ✪

सतिगुर शब्द कहे अवतार पैग़म्बर गुरु रहे फिरदे, जुग चौकड़ी भज्जे वाहो दाहीआ। सेवक सेवादार बणे रहे चिर दे, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सेव कमाईआ। भेव दस्सदे रहे अगम्मी पिर दे, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी जगत लिखाईआ। पड़दे खोल्हदे रहे घर थिर दे, नाम निधाना कर शनवाईआ। दीनां मज़्बां दे गेड़ रहे गिड़दे, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड वंडाईआ। बौहड़ी दरोही दीन दुनी साफ़ कर ना सके हिरदे, हरिजू हर हिरदे अन्दर सके ना कोए वसाईआ। नेत्र नैण हन्झू सब दे रहे किरदे, शांतक सति ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे अवतार पैग़म्बर गुरु आउंदे रहे जग, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। प्रभ दा भेव खोल्हदे रहे उपर शाह रग, जगत दुनी दा पन्ध मुकाईआ। नाम निधान सुणाउंदे रहे छन्द, अनहद नादी नाद नाद वजाईआ। हँस बणाउंदे रहे मूर्ख मुग्ध कग्ग, नाम माणक मोती चोग चुगाईआ। दीन मज़्ब दी वंडाउंदे रहे हद्द, शरअ विच शरअ दिती बदलाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल दी बणा सक्या कोए ना इक यद्द, यके बाद दीगरे गए सारे फेरीआं पाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक दी वंड कीती अलग्ग, हिस्से तत्तां वाले कराईआ। सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी मेल मिलाया ना किसे सरबग्ग, साहिब सुल्तान रंग ना कोए रंगाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश चार वरन अठारां बरन मेट सक्या कोए ना अग्ग, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। अमृत नाम प्याला नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप प्याई किसे ना मध, अनरस रस ना कोए चखाईआ। झगड़ा पा के मास नाड़ी हड्ड, दूई द्वैत विच दीन दुनी गए फसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच दवारे दर तेरे आस

रखाईआ। सतिगुर शब्द कहे अवतार पैग़म्बर गुरु पा पा गए फेरी, निरगुण सरगुण रूप धराईआ। खेल खिला के गए गुरु गुर चेरी, मुरीद मुर्शद रंग रंगाईआ। झगड़ा मेट सक्या कोए ना मेरी तेरी, हउमे गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। चार कुण्ट रैण कूड़ ना गई अंधेरी, नूरी चन्द सति ना कोए चमकाईआ। शरअ दी कट सक्या कोए ना बेड़ी, ज़ंजीर शाह हकीर ना कोए तुड़ाईआ। नाम निधान दी सृष्ट सुबाई चाढ़ सक्या कोए ना बेड़ी, वञ्झ मुहाणा इक ना कोए रखाईआ। दूर दुराडी मंज़ल दस्सी किसे ना नेड़ी, नेरन नेरा नर नरायण नज़र किसे ना आईआ। चुरसी फाँसी वाली कटी किसे ना जेड़ी, मानस जन्म मानुख सुफल ना कोए कराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पिच्छे औध बीत गई बथेरी, अग्गा समझ किसे ना आईआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान हो के नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप करे कोए ना मेहरी, दीनां मज़्बां ज़ातां पातां बाहर आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार कलयुग अन्त श्री भगवन्त सति धर्म दी सति सच दी धार बन्नू के कलयुग अन्तिम वेरी, वैर वैरीआं विच्चों बाहर कढुाईआ।

✪ १६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ कुलवंत सिँघ दे घर पिण्ड माढ़ी ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सतिगुर शब्द कहे मैं सदी चौधवीं तकी, चौदां तबक वेखे ध्यान लगाईआ। पैग़म्बरां धार वेखी हकी, हकीकत पड़दा आप उठाईआ। अन्तर सृष्टी वेखी मती, मन मनसा खोज खुजाईआ। हवस जहान तकी तत्ती, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। नाम निधान रिहा ना रत्ती, कलमा कायनात ना कोए जणाईआ। हउमे हंगता फिरे नस्सी, नव नौ चार भज्जे वाहो दाहीआ। कथा कहाणी दस्से कोए ना सची, पर्दा सच ना कोए उठाईआ। जगत तृष्ना माया बण के नच्ची, घर घर घूँगट दिता उठाईआ। किसे साहिब ना मिल्या कमलापती, पतिपरमेश्वर दरस कोए ना पाईआ। आत्म जोत प्रकाश होई ना बत्ती, बातन पड़दा ना कोए खुल्हाईआ। अनहद शब्द वज्जी ना सट्टी, सोई सुरती ना कोए उठाईआ। अमृत रस रिहा कोए ना चट्टी, अंमिउँ रस ना कोए चुआईआ। प्रभ मिल्या ना अलखणा अलखी, अलख अगोचर संग ना कोए रखाईआ। निज नेत्र दरस पाए कोए ना अक्खी, नैण नैण ना कोए मिलाईआ। काहन दी दिसे कोए ना सखी, बंसरी सच ना कोए जणाईआ। सीता फिरे कोए ना नट्ठी, बनां विच ना कोए दुहाईआ। आत्म परमात्म पढ़े कोए ना पट्टी, पटने वाला दए गवाहीआ। शरअ ज़ंजीर कटाए कोए ना रस्सी, रस्ता मिले ना रहिबर माहीआ। सतिगुर शब्द कहे सच खट्टी किसे ना खट्टी, खटके विच

कूड़ लोकाईआ। भाग लग्गा ना काया मट्टी, साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर ना कोए सुहाईआ। बौहड़ी सदी चौधवीं जांदी टप्पी, पिछला पैंडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं वेख्या चौदां तबक, तबा तबीअत खोज खुजाईआ। साचा मिले किसे ना सबक, सिख्या हक ना कोए दृढ़ाईआ। जिधर वेखां कूड़ी क्रिया कटक, हउमे गढ़ रुढ़ाईआ। मन कल्पणा सारे रहे भटक, तृष्ना तृखा ना कोए बुझाईआ। छुरी शरअ रही झटक, ज़िबह होए ख़लक खुदाईआ। जो आसा रख के गया दसवां अवतार मत्तस, मछली रूप बणाईआ। सच रही कोई ना वस्त, सति धर्म ना कोए जणाईआ। दीनां मज़्बां लग्गी हसद, अग्नी अग्ग रही तपाईआ। दरोही कायनात दिसे ना वालिद, परवरदिगार वाहिद नज़र आए ना पिता माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक हो सहाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं तकी दीन दुनी ज़मीर, निरन्तर वेख्या चाँईं चाँईंआ। अमृत रस मिले किसे ना सीर, तृष्ना तृखा ना कोए गंवाईआ। उच्ची कूक कहे कबीर, होका हक हक जणाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले तुध बिन बदल सके ना कोए तकदीर, तदबीर कम्म किसे ना आईआ। तूं साहिब सुल्ताना बेनज़ीर, नज़रीआ सब दा दे बदलाईआ। तेरे कोल नाम खण्डा हक शमसीर, शरअ दा डेरा देणा ढाहीआ। सतिजुग साचा चौदां तबकां तों बाहर कर तामीर, तामील पैग़म्बर आपणी आप देण कराईआ। अन्त कन्त भगवन्त सब दा लेखा कर अख़ीर, आख़र दे मालक आपणा हुक्म वरताईआ। इक्को रंग रंगा दे शाह हकीर, ऊच नीच दा झगड़ा देणा मुकाईआ। तूं शाह पातशाह पीरन पीर, रसूल रसूलां नज़री आईआ। तेरे दर ठांडे इक्को मंगदे वादअशीर, अर्शीवाद देणी बेपरवाहीआ। पिछली रहे ना किसे उम्मत जागीर, जागरत जोत कर रुशनाईआ। मानव माणस मानुख हद्द मेट लकीर, लाईन ऐन इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धर्म दी धार निरगुण निरगुण बदल देणे चीर, सति धर्म दा भूषन इक्को इक देणा पहनाईआ।

८६२ २२

✪ १७ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ नाज़र सिंघ, जागीर सिँघ दे गृह माढ़ी मुस्तफ़ा ✪

सतिगुर शब्द सानूं वज्जे ताअना, अवतार पैग़म्बर गुर रहे सुणाईआ। क्यों वक्खरा वक्खरा जणाया नामा, कलमा कायनात वंड वंडाईआ। क्यों सिफ्ती गाया धुर दा गाणा, गा गा खुशी बणाईआ। क्यों तन वजूद बदलया बाणा, तन शरीर वंड

वंडाईआ। क्यों कंध उठाई तीर कमाना, खण्डा खड़ग खड़काईआ। क्यों दीन मज़्ब खेलया खेल जहाना, जगत जुगत बदलाईआ। क्यों मानव वक्ख वक्ख कीता पीणा खाणा, आहार पवित्र ना कोए रखाईआ। क्यों मज़्ब मुत्तअसब तणया ताणा, शरअ वाला तन्द बणाईआ। क्यों जैकार सुणाया रामा कान्हा, सिफ्तां विच सालाहीआ। क्यों अल्ला अलाह कीआ मस्ताना, ज़बां रंग रंगाईआ। क्यों नाम सति गा तराना, तर्ज दीन दुनी बदलाईआ। क्यों वाहिगुरु दस्स निशाना, आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग अन्तिम सारे मारो ध्याना, अवतार पैग़म्बर इक दूजे नूं रहे सुणाईआ। पूरा होया ना किसे निशाना, निशाने सारे गए चुकाईआ। सिख मुरीदां होए ना कोए कल्याणा, कलमा नाम दए दुहाईआ। अल्ला वाहिगुरु राम कृष्न सति जो ल्या ब्याना, सौदेबाज़ी मात कराईआ। मलकीअत वाला दस्सो केहड़ा ख़ाना, हकीकत हक विच्चों जणाईआ। क्यों शरअ दा भरया तल्बाना, टकयां वंड वंडाईआ। सदी चौधवीं केहड़ा करो बहाना, पल्लू लओ छुडाईआ। अन्तिम दीन मज़्ब दा सब नूं देणा पए आब्याना, बचया रहिण कोए ना पाईआ। चार जुग दे शास्त्र बणे अफ़साना, ढोले गावण थाउँ थाँईंआ। किसे भेव खोल्या ना अन्त मेहरवाना, मेहर नज़र ना कोए उठाईआ। योद्धा सूरबीर बणे कौण जवाना, जो एका डंक दए वजाईआ। उठो वेखो पुरख अकाला दीन दयाला सब तों भरन वाला जुरमाना, जराइम जुरम सब दा वेख वखाईआ। नव सत्त जगत होया शैताना, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश बचया रहिण कोए ना पाईआ। अगम्मी सुणे ना कोए पैग़ामा, पैग़म्बर पड़दे लओ उठाईआ। नाम दा जाणे ना कोए दमामा, दमां वाल्यो लओ अंगड़ाईआ। क्यों झगड़ा पाया माटी चामा, चम्म दृष्टी सक्या ना कोए बदलाईआ। क्यों आत्म स्वर्ण होई तामा, जगत तमां विच ललचाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण सच घर दा रिहा कोई ना कामा, फ़रमांबरदारी विच सेव ना कोए कमाईआ। सारे शरअ दे होए गुलामा, सिर सके ना कोए उठाईआ। कलयुग मेटे ना कोए अंधेरी शामा, शमां सूर्या चन्द ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर शब्द तेरा खेल जाणे दो जहानां, अवतार पैग़म्बर गुर गुरु गुर तेरे हुक्म विच भवाईआ।

✪ सारी संगत नवित ✪

पुरख अकाल किरपा करे अपार, जन भगतां दए वड्याईआ। सम्मत शहिनशाही सत्त पावे सार, सति सरूप होए सहाईआ। चार जुग दा पिछला कर्जा उतार, अग्गे झोली दए भराईआ। चार कुण्ट दहि दिशा वेख विचार, गृह गृह खोज खुजाईआ।

गुरमुखां सीस बंधे आप दस्तार, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र टिकाईआ। कुनबे विच्चों माण बख्श इक सच्ची सरकार, सच दा मार्ग दए वखाईआ। घर घर विच ज़रूर करे एह विहार, आवे जावे चाँईं चाँईंआ। हुक्म संदेशा दे सच्ची सरकार, सतिजुग मर्यादा दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, दर आपणा इक खुल्हाईआ। पुरख अकाल सति धर्म चलाउणी नईया, बेड़ा जगत वखाईआ। जन भगतां घर जा जा दस्तार नाल देवे इक इक रुपईआ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अग्गे धर्म राए कढे कदे ना वहीआ, लेखा मंगे कोए ना राईआ। साहिब सतिगुर बण के सईआ, सज्जण हो के वेख वखाईआ। नौ गुरसिख सदा संग रखईआ, सम्मत सत्त चलणा चाँईं चाँईंआ। नाले लेखा दस्सणा गोबिन्द दा केहड़ा ढईआ, किस बिध लेखा पूर कराईआ। नाल फोटो रखणी अष्टभुज दुर्गा मईआ, सदा प्रभ सिंघासण हेठ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां घर भट्ट बण के बणे गवईआ, सिफ्त गुरमुखां वाली जणाईआ।

✪ १७ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ बसन्त कौर दे गृह पिण्ड समालसर ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सतिगुर शब्द तेरा गाउंदे रहे गीत, अवतार पैग़म्बर गुर कहिण तेरी सिफ्त सालाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चलाउंदे रहे रीत, नाम निधान श्री भगवान मात प्रगटाईआ। जगत जिज्ञासूआं काया करदे रहे ठंडी सीत, कूड़ क्रिया अग्न बुझाईआ। सच नाम वसाउंदे रहे चीत, चितवित ठगौरी अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। मेल कराउंदे रहे हस्त कीट, ऊचां नीचां जोड़ जुड़ाईआ। भेव दस्सदे रहे अनडीठ, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी अक्खर अक्खरां नाल जुड़ाईआ। मिट्ठे करदे रहे रीठ, पंज तत काया अमृत रस चुआईआ। दीन मज़्हब दी मारदे रहे लीक, हद्द शरअ वाली बणाईआ। निरगुण जोत करदे रहे तस्दीक, शहादत तत्तां वाली भुगताईआ। भविक्खतां विच रख के गए उम्मीद, कलयुग अन्तिम आवे धुर दा माहीआ। जो लख चुरासी परखे नीत, सृष्टी दृष्टी खोज खुजाईआ। त्रैगुण तों हो अतीत, त्रैभवण धनी आपणा हुक्म वरताईआ। साचा कलमा दस्स हदीस, सब तों परे करे पढ़ाईआ। एका छत्र झुला सीस, दो जहानां हुक्म मनाईआ। मालक ख़ालक बण जगदीश, जगदीशर आपणा पड़दा आप उठाईआ। लहिणा देणा रहे ना बीस, बीस इक इकीस आपणी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सच हुक्म आप सुणाईआ। सतिगुर

शब्द असीं शब्द रहे जणाउंदे, अवतार पैग़म्बर गुरु सेव कमाईआ। वक्खरे वक्खरे ढोले रहे गाउंदे, ओम राम कृष्न अल्ला वाहिगुरु नाम सति सति जणाईआ। अक्खरां वाला लेख रहे लिखाउंदे, जुग जुग धुर दी बणत बणाईआ। प्रभ मिलण दे मार्ग रहे दसाउंदे, रहिबर हो के राह वखाईआ। सच दवार रहे वसाउंदे, दरगाह साची इक सुहाईआ। जगत रीती रहे चलाउंदे, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ गुरदवार वखाईआ। उच्ची कूक कूक कलमा नाम रहे दृढ़ाउंदे, मुरीद सिख संग बणाईआ। वाअज़ घर रहे अलाउंदे, अल्ला तेरी बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं सारे ध्यान लगाउंदे, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। बौहड़ी कलयुग जीव तेरे नाम ना रिदे वसाउंदे, वसल यार ना कोए कराईआ। मन कल्पणा विच चार कुण्ट दहि दिशा भौदे, मन का मणका ना कोए भवाईआ। अन्दर डर रहे ना भय भाउ दे, भाण्डा भरम ना कोए तुड़ाईआ। वणजारे रहे ना नौका नाउँ दे, नईया नाम ना कोए रखाईआ। हँस बुद्धी रूप बणे काउं दे, काग वांग सर्ब कुरलाईआ। नाअरे भुल्ले वाहो वाहो दे, वाहवा तेरा दरस कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सुल्तान श्री भगवान दर तेरे मंग मंगाईआ। सतिगुर शब्द तेरा देंदे रहे संदेशा, अवतार पैग़म्बर गुरु सेव कमाईआ। लोकमात आउंदे रहे हमेशा, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। जगत जहान लिखदे रहे लेखा, बण कातब कलम चलाईआ। प्रभू मिलण दा दस्सदे रहे पेशा, पेशवा हो के पड़दा लाहीआ। सचखण्ड समझाउंदे रहे देसा, दरगाह सच सच वड्याईआ। भेव खुलाउंदे रहे नर नरेशा, नर नरायण इक अख्वाईआ। वंड वंडाउंदे रहे मुच्छ दाढ़ी केसा, मूंड मुंडाए खेल खिलाईआ। आत्म परमात्म कराउंदे रहे हेता, पारब्रह्म प्रभ पड़दा आप उठाईआ। दो जहानां तैनूं दस्सदे रहे नेता, नर निरँकार इक अख्वाईआ। तेरे कोलों दीनां मज़्बां दा लैंदे रहे ठेका, बोली तेरे नाम वाली चढ़ाईआ। बणदे रहे पूत सपूता बेटा, पिता पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। सब दा अन्तिम कर लै चेता, चेतन हो के दईए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग कूड़ी क्रिया मेट कलेशा, कलकाती लोकमात रहिण ना पाईआ।

✪ १७ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ सुहावा सिँघ दे गृह पिण्ड पंज गराईंआं ✪

सतिगुर शब्द असीं तन पहनया ख़ाकी, अवतार पैग़म्बर गुरु रहे जणाईआ। शब्द घोड़े चढ़े राकी, रकबा दो जहान नापया थांउँ थाँईंआ। पाखर ज़ीन पाई ना काठी, शाह सवारा रूप बदलाईआ। तन संभालया तत आठी, अप तेज वाए

पृथ्मी आकाश मन मति बुध संग रलाईआ। तेरी सिफ्त दे बण के पाठी, महिमा जुग चार चार गाईआ। कलमा कायनात खोल्ह के हाटी, अक्खर वस्त आए वरताईआ। मंजल धुर दी दस्स के घाटी, पड़दा शब्दी शब्द उठाईआ। जोत दस्स के नूर ललाटी, भेव अभेदा आए समझाईआ। अनहद शब्द जणा के नादी, नाद धुन धुन प्रगटाईआ। आत्म जोत दस्स प्रकाशी, सच गृह कीती रुशनाईआ। सीस निवा के पुरख अबिनाशी, इष्ट इक्को इक मनाईआ। निरगुण निरगुण पा के रासी, मण्डल मण्डप खेल खिलाईआ। तेरे नाम दी वंड के दाती, जगत जिज्ञासूआं झोली पाईआ। सिमरन करके सँध्या प्रभाती, भरम दा पड़दा आए चुकाईआ। लिव अन्तर ला इकांती, इक इक दा राह वखाईआ। अमृत रस दी दस्स के साती, सति सति समझाईआ। खेल कीता लोकमाती, मता तेरे नाल पकाईआ। चार जुग दे शास्त्र तेरी हुक्म वाली पाती, पत्रका दे के आए थांउँ थाँईंआ। तेरा खेल दस्सया पृथ्मी आकाशी, आकाश आकाशां सोभा पाईआ। तूं सचखण्ड निवासी, दरगाह साची डेरा लाईआ। साडी सब दी पूरी करदे आसी, अवतार पैग़म्बर गुरु सीस निवाईआ। झगड़ा मेट के वरन बरन ज़ात पाती, पंडत काशी कस रहिण कोए ना पाईआ। मुल्ला शेख़ मुसायक बणा इक जमाती, जुमला अक्खर इक बणाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन बणा हमाइती, हमसाजण दया कमाईआ। मेहर नज़र नाल बख्शिश कर अनाइती, मेहर निगह इक उठाईआ। तेरा खेल नूर नूराने वाहिदी, वाहिद आपणी कल प्रगटाईआ। साडा पूरा होया अहिदी, अहिदनामे दईए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सद दर तेरे सीस निवाईआ। सतिगुर शब्द असीं तेरी पढ़ी अगम्मी पट्टी, बिन हरफ़ हरूफ़ जणाईआ। जिस दी धार जगत संसार अन्तिम टप्पी, कलि कलूआ दए दुहाईआ। बौहड़ी साडी आसा क्यों पैंदी जांदी नट्टी, नटूए आपणा भेव दे खुल्हाईआ। दीन मज़्हबां दी सानूं भरनी पैणी चट्टी, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। साडी डोर लोकमात जाणी कटी, कटाक्ष हरिजू रिहा लगाईआ। तेरे प्यार विच केहड़ी खट्टी खट्टी, बेखटक दे समझाईआ। क्यों सृष्टी बिरहों विछोड़े विच गई फट्टी, फाटक प्या जगत लोकाईआ। भाग लग्गे ना किसे काया मट्टी, साढे तिन्न हथ्थ ना कोए रुशनाईआ। सदी चौधवीं सानूं सारे जांदे छडी, सगला संग ना कोए निभाईआ। रसना जेहवा सिख मुरीद खा के मास हड्डी, चम्म दृष्टी रूप बदलाईआ। पुरख अकाल दी दिसे कोए ना गद्दी, गदागर हो के दईए दुहाईआ। साडी करनी हुन्दी जांदी रद्दी, सही सच ना कोए पवाईआ। सतिगुर शब्द दीन मज़्हब साडी विरासत नहीं होई यद्दी, यदप तेरे अग्गे सीस झुकाईआ। साडा लहिणा देणा पूरा कर दे परम पुरख दी साची सदी, सदमा जगत रहे ना राईआ। साडी प्रीत अन्त इक नाल लग्गी, लग्गी प्रीत ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग अन्तिम झगड़ा मेट दे कूड़ कुड़यार बदी, बदला देणा थांउँ थाँईंआ।

✪ १७ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ खेम सिँघ दे घर कोटकपूरा शहर ज़िला बठिंडा ✪

सतिगुर शब्द असीं तैनूं रहे झुकदे, अवतार पैग़म्बर गुरु जुग जुग तैनूं सीस निवाईआ। पर्दे ओहले रहे लुकदे, जग नेत्र नजर कोए ना पाईआ। नाम निधान रहे पुछदे, ख़ाली झोलीआं रहे डाहीआ। समें सुहाउंदे रहे तेरी रुत दे, रुतड़ी तेरे नाल महकाईआ। जीवां जंतां लेखा मुकाउंदे रहे जनणी कुख्ख दे, कलयुग नाम नाम समझाईआ। दीन मज़्बां दा भार रहे चुक्कदे, चार जुग आपणे कंधे डाहीआ। रूप धरदे रहे अबिनाशी सुत दे, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। अन्तिम खेल देखीए कलयुग दु:ख दे, सदी चौधवीं दए गवाहीआ। रूप दिसे ना कोए सच्चे गुरसिख गुरमुख दे, मुरीद मुर्शद विच ना कोए समाईआ। पंच विकारे घर घर कुट्ट दे, गृह गृह आपणा डेरा लाईआ। असीं जाप तकदे बुल्लां बुट्ट दे, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। बौहड़ी भेव खुल्ले ना तेरी इक तुक दे, चार जुग दे शास्त्र देण गवाहीआ। पर्दे ओहले मिटे ना शाह पातशाह शहिनशाह उच्च दे, अगम्म अथाह संग ना कोए निभाईआ। उठ वेख निशाने चार कुण्ट दे, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, हरि साहिब सतिगुर शब्दी शब्द गुरदेव तेरी सरनाईआ। सतिगुर शब्द तेरा वक्त दस्सदे रहे सुहञ्जणा, अवतार पैग़म्बर गुरु रहे दृढ़ाईआ। पुरख अकाल जणाया दर्द दु:ख भय भञ्जणा, पारब्रह्म पतिपरमेशवर नूर अलाहीआ। सो पुरख निरँजण दस्सया धुर दा सज्जणा, हरि पुरख निरँजण मेला अगम्म अथाहीआ। जगत नेत्र वेख्या खेल अलखणा, लोचन नैण नैण बदलाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल तेरी करदे रहे प्रदक्खणा, चार कुण्ट भज्जदे रहे वाहो दाहीआ। तेरा हुक्म संदेशा सुणाउंदे रहे बचना, कलमा कायनात दृढ़ाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण तेरी वेखदे रहे रचना, लख चुरासी खोज खुजाईआ। एथे उथे दो जहानां तेरा तक्कया पत्तना, पाँधी बणके जुग जुग पन्ध मुकाईआ। बौहड़ी कलयुग अन्तिम की लोकमात होणी घटना, घट निवासी पुरख अबिनाशी भेव अभेदा दे खुल्लाईआ। कोटां विच्चों केहड़ा प्रभ दा भगत अमोलक हीरा होणा रत्ना, गुरमुख गुर गुर संग निभाईआ। दरोही क्यों जगत जहान होया सक्खणा, वस्त अगम्म ना कोए वरताईआ। सतिगुर शब्द धुर संदेशा इक्को दस्सणा, की कलि कल्की कार कमाईआ। किस बिध दीन मज़्ब दी मेटे वट्टणा, धर्म दी धार इक प्रगटाईआ। साचे नाम दा खोल्ह के हट्टणा, इक्को

वस्त दए वरताईआ। की बाल अवस्था गोबिन्द संदेशा दे के गया पटणा, की पौंटे धरनी धरत धवल उत्ते गया लिखाईआ। की तीर अणयाला कसणा, बेपरवाह आपणे हथ्थ उठाईआ। किस बिध अवतार पैग़म्बर गुरु निरगुण धार निरगुण नट्ठणा, सच दवारे वाहो दाहीआ। की लहिणा देणा होणा उत्तर पूरब पच्छम दक्खणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक पर्दा आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द की होणा खेल अनोखा, अवतार पैग़म्बर गुरु पुछण चाँईं चाँईंआ। की खेल होणा कलयुग अन्तिम मौका, मुकम्मल दे दृढ़ाईआ। किस बिध सब दे नाल होणा धोखा, गहिर गम्भीर बेनज़ीर आपणी कार भुगताईआ। की झगड़ा होणा चौदां लोका, चौदां तबक रोवण मारन धाईआ। किस बिध लख चुरासी जीव परखणा खरा खोटा, चारे खाणी ध्यान लगाईआ। कवण दवारे प्रकाश होवे जोता, नूर नुराना डगमगाईआ। सम्बल सच दवारे किस बिध ब्रह्मण गौड़ा होवे सोता, सच सिंघासण पुरख अबिनाशण डेरा लाईआ। किस बिध दो जहानां नौजवाना मर्द मर्दाना श्री भगवाना इक्को नाम देवे होका, हुक्म हक हक सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण सतिगुर शब्द सब दीआं दूर कर दे सोचां, चार जुग दी सोच रहे ना राईआ। अन्तिम अन्तर सब दी इक्को लोचा, आशा सर्ब इक वखाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला कलयुग अन्तिम इक्को बहुता, दूसर लोड़ रहे ना राईआ। सतिजुग लावे नाल शौका, कलयुग कूड़ी क्रिया पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल करे नाल शौका, शाह पातशाह शहिनशाह साहिब सतिगुर आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ १८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ भाई बुघर सिँघ दे घर पिण्ड बरगाड़ी ज़िला बठिंडा ✪

सतिगुर शब्द जुग चौकड़ी कीती तेरी सेवा, अवतार पैग़म्बर गुरु रहे जणाईआ। तूं आदि जुगादि सच स्वामी देवी देवा, देव आत्मा तेरा रंग रंगाईआ। तेरा खेल सदा सचखण्ड निहचल धाम निहकेवा, अटल तेरी बेपरवाहीआ। तेरा नाम निधाना सृष्टी दृष्टी अन्दर जपाया नाल रसना जेहवा, बत्ती दन्द सिफ्त सालाहीआ। तेरा खेल अलख अभेवा, अगोचर कहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर दर दरवेश सीस निवाईआ। सतिगुर शब्द जुग चौकड़ी तेरे बणे रहे ख़ादम, अवतार पैग़म्बर गुरु ख़िदमतगार हो के सेव कमाईआ। बोध अगाधा दस्सदे

रहे आत्म, परमात्म ब्रह्म नूर अलाहीआ। आदम, जोती जाता भेव चुकाईआ। शब्दी धार भेव खोल्हया बातन, कलमा काया विच प्रगटाईआ। गीत गाया साहिब पुरख अबिनाशण, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरानां राह तकाईआ। बेअन्त बेपरवाह तैनूं सारे आखण, शाह पातशाह शहिनशाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। जो मार्ग दस्स के आए लोक मातण, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई दीन मज़्हब वंड वंडाईआ। दरोही कलयुग होई अन्त अंधेरी रातण, तेरा नाम साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। धुन आत्मक सुणे कोए ना रागण, रसना सृष्ट होई हल्काईआ। तेरा नाम शब्द ना वाचण, पर्दा सके ना कोए चुकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरे बणे रहे दासी दासण, हुक्मे विच भज्जे वाहो दाहीआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाला साहिब अबिनाशण, परवरदिगार सांझा यार इक अख्वाईआ। साडी मनसा पूरी होई ना घाटण, पैंडा पन्ध ना कोए चुकाईआ। साडे सिख मुरीद सानूं करन ना यादन, याद तेरी गए भुलाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक आदि आदन, अन्त कन्त भगवन्त इक अख्वाईआ। किरपा कर मोहन माधव माधन, मेहर नज़र इक उठाईआ। सदी चौधवीं कलयुग जीव आपणा आप मूल ना साधण, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। अक्खरां वाले नाम सारे अराधन, उच्ची कूक कूक जणाईआ।

८६६ सुरती विच्चों ना अन्दरों जागण, शब्दी मेल ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका ८६६

२२ देणा धुर दा वर, तेरे हथ्थ हथ्थ वड्याईआ। सतिगुर शब्द तेरा मन्नदे रहे कहिणा, अवतार पैग़म्बर गुर बोलण थांउँ थाँईंआ। २२

जोती धार दरस करदे रहे नैणां, निज नेत्र लोचन नैण नैण खुल्हाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक पंज तत पाया गहिणा, वस्त्र भूषन इक्को रंग रंगाईआ। तेरी सच सरनाई सिख्या ढहिणा, दूसर अवर ना कोए सीस निवाईआ। सचखण्ड सच दवारे बहिणा, दरगाह साची सोभा पाईआ। नाता छड के मात पित भाई भैणां, तेरा प्यार ल्या प्रनाईआ। सब ने मन्नया तेरा भाणा सहिणा, सिर सके ना कोए उठाईआ। बौहड़ी कलयुग वेख सृष्ट सबाई कूड़ वहिण वहिणा, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। माया ममता लाड़ी मौत खाए डैणा, साह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे सीस निवाईआ। सतिगुर शब्द तेरे नाम दा चलाया जहाज़, नईया नौका ना कोए वड्याईआ। तेरी सिफ्त दा करके आए आग़ाज़, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। तेरे मिलण दा खोल्ह के आए राज़, पर्दानशीं पर्दा जगत चुकाईआ। तेरे नाम कलमे दी दस्स आवाज़, गीत ढोले सिफ्तां वाले गाईआ। सुरती शब्द खोल्ह के आए जाग, आलस निंद्रा कूड़ मिटाईआ। त्रैगुण बुझा के आए आग, अमृत मेघ इक बरसाईआ। हँस बुद्धी बणा के आए काग, काग हँस उडाईआ। साढे तिन्न हथ्थ घर घर अन्दर तेरा दीपक जोत जगा के आए चराग़, अंध अज्ञान दा डेरा ढाहीआ। आत्म

ब्रह्म सुणा के आए राग, अनरागी आप दृढ़ाईआ। दीन मज़्ह़ब दा ला के आए बाग़, बागबां हो के सेव कमाईआ। बौहड़ी सदी चौधवीं कलयुग अन्तिम सब नूं लग्गा दाग़, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। उत्तम श्रेष्ट होवे किसे ना भाग, भागहीण होए जगत लोकाईआ। झगड़ा प्या तत्तां वाले समाज, समर्गी सति ना कोए वरताईआ। सच प्रेम विच होए ना कोए विस्माद, बिस्मिल रूप ना कोए दरसाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझे यार तेरे अग्गे इक फ़रयाद, अवतार पैग़म्बर गुरु निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सानूं दीनां मज़्ह़बां विच्चों कर आज़ाद, ज़ात पात दा लेखा दे मुकाईआ। साडी बेनन्ती तेरे अग्गे नाल अर्शाद, अर्श फ़र्श दे मालक कूक सुणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मानव ज़ाती इक्को दस्स आवाज़, तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म परमात्म आत्म धुर दी इक पढ़ाईआ। सति धर्म दी सतिजुग सच हथ्थ फड़ आपणे वाग, डोरी अवर ना किसे फड़ाईआ। स्वामी अन्तरजामी तूं रचना रची आदि, अन्त लेखा सब दा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, नेहकंलक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग अन्त श्री भगवन्त धुर नाम दा सुणा इक नाद, अनाद अनादी धुन आप उपजाईआ।

✪ १८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ हरिचन्द सिँघ दे गृह हरिराए पुर ✪

सति प्रीती सतिगुर चरणा, गुरसिख गुरु गुरदेव जणाईआ। कूड़ी क्रिया काम क्रोध लोभ मोह हँकार हरना, आसा तृष्ना संग ना कोए रखाईआ। दिवस रैण तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म शब्द पढ़ना, धुर दा ढोला सहिज सुभाईआ। सच दवार एकँकार मल्लणा दरना, दर दरवेश हो के अलख जगाईआ। मन ममता विच्चों मन मनसा वस करना, कल्पणा मात रहे ना राईआ। सतिगुर प्यार विच धर्म दी धार होवे मरना, मर जीवत रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। जगत वासना मरना जीव जग, धुर दी धार दृढ़ाईआ। त्रैगुण माया पोह ना सके अग्ग, अग्नी अग्ग ना कोए जलाईआ। निज नेत्र दरस करना सूरे सरबग, सच स्वामी वेख वखाईआ। खेल खेलणा उपर शाह रग, नौ दवारे पन्ध मुकाईआ। जगत वासना रहे ना कग्ग, हँस गुरमुख रूप बणाईआ। घर घर विच्चों लैणा लभ्भ, बाहर खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। सिर सतिगुर कदमां उत्ते देणा रख, आपणी कीमत ना कोए जणाईआ। जीवत जी दीन दुनी नालों होणा वक्ख, ममता मोह विकार गंवाईआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। बंस सरबंस सारा देणा छड, हड्ड मास नाड़ी वज्जे वधाईआ। तिस दा सफल होवे मरना जग, जो जगजीवण दाते विच

समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मर जीवत रूप जणाईआ। जग मरना सतिगुर सरनाई, सच मिले वड्याईआ। राय धर्म ना दए सज़ाई, चित्तरगुप्त ना लेख वखाईआ। किरपा करे सहिज सुखदाई, हरि करता धुरदरगाहीआ। जो आदि अन्त दा माही, जुग जुग भगतां होए सहाईआ। कूड़ क्रिया दए तजाई, मान अभिमान रहे ना राईआ। इक्को ओट लए तकाई, प्रभ मिलणा चाँईं चाँईंआ। आत्म दर सच गृह मन्दिर निज वज्जे वधाई, खुशीआं राग जणाईआ। सो गुरमुख बौहड़ मरे ना मिल्या हरि गोसाँईं, मरजीवत रूप दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। जीवत जीवत जगत संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी देण गवाहीआ। आवे जावे मरे वारो वारा, चुरासी गेड़ ना कोए मुकाईआ। कबीर जुलाहा करे पुकारा, सचखण्ड गढ़ उपर चढ़ के दए दुहाईआ। जन भगतो वेखो विगसो पावो सारा, निज नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। जद मरो मरो हरि के दवारा, सतिगुर चरण सरन सरनाईआ। फिर मरना होए ना दूजी वारा, जन्म जन्म ना कोए भवाईआ। मर जीवत जीवत मर वेखो खेल धुर दरबारा, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म दवार दए वड्याईआ। गुरमुख सज्जण सन्त सुहेला कदे ना मरदा, मरजीवत रूप वटाईआ। जगत जहान चों तरदा, दुतर दा लहिणा दए गंवाईआ। गृह वेखे इक्को हरि दा, हरि मन्दिर बहि के खुशी मनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा इक्को राग पढ़दा, निरअक्खर अक्खर धार विच्चों समझाईआ। खेल वेख के आपणे घर दा, घर जावे चाँईं चाँईंआ। झगड़ा मुक जाए चेतन जड़ दा, मेला मिले सहिज सुभाईआ। सतिगुर किरपा नाल गुरमुख सच दी मरनी मरदा, जो बौहड़ जन्म ना पाईआ। कबीर कूक कूक पुकार करदा, जुलाहा दए दुहाईआ। जिस दर्शन कीता नरायण नर दा, तिस नर हरि आपणे विच छुपाईआ। सो सन्त सुहेला भवजल पार करदा, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। पैंडा मुके डूंघी डल्ल दा, अंध अंधेर रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच मरनी आप जणाईआ। साची मरनी सतिगुर हथ्थ, गुरमुखां दए दृढ़ाईआ। जिस दी महिमा सदा अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। जिस देवे नाम निधान दी वथ, वस्त अमोलक झोली पाईआ। सो सच सरनाई जाए ढठ्ठ, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। कूड़ कुड़यारा नाता जावे छड, प्रभ मेला मेले सहिज सुभाईआ। ओस दा जन्म ना होवे वत, बेवतन वतन आपणे विच जावे चाँईं चाँईंआ। बिना सतिगुर शब्द तों रखे कोई ना पत, पतिपरमेश्वर संग ना कोए बठाईआ। कबीर जुलाहे किहा सच, संदेसा जगत विच सुणाईआ। एह खेल अक्ल बुद्धी दे नहीं वस, मनसा मन ना कोए वड्याईआ। जिस हिरदे हरिजू जाए

९०१
२२

वस, मेहर नज़र उठाईआ। ओह मर जीवत जगत बणाए जस, सिफ्तां विच सालाहीआ। जिन्हां उपर किरपा करे पुरख समरथ, सो बौहड़ जन्म ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवणहारा धुर दा वर, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझा यार घट निवासी पुरख अबिनाशी जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ।

✪ १६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ मित सिँघ दे गृह बहिमण दीवाना ✪

सतिगुर शब्द धुर नाम वजाया डंका, अवतार पैग़म्बर गुरु रहे जणाईआ। सच दवार सुहाया बंका, बंक दवारी हो के खुशी मनाईआ। भेव खुल्हाया पंज तत सरीर तन का, तन मन्दिर पड़दा लाहीआ। माण गंवाया हउमे मन का, मणका मन दा मन भवाईआ। मानस जीवां रूप समझाया साचे जन का, धर्म दी धार इक दृढ़ाईआ। भेव खुल्हाया हँ दा, हँ ब्रह्म इक वखाईआ। बौहड़ी क्यों झगड़ा प्या माटी चम्म दा, चम्म दृष्टी जगत विच हल्काईआ। सदी चौधवीं समां आया ग़म दा, ग़मी ग़मखार यार ना कोए मिटाईआ। जगत वणजारा होया आसा तृष्ना तम दा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। माण रिहा ना पवण स्वामी दम दा, स्वास स्वास कोए ना गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर घर तेरे मंग मंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे अवतार पैग़म्बर गुरु सुणो अगम्मी बात, बातन पड़दा दयां उठाईआ। निरगुण धार वेखो मार झात, झाकी लोकमात कराईआ। कूड़ी क्रिया तक्को साख्यात, सन्मुख सब दे सोभा पाईआ। गुरमुख रिहा ना कोए पारजात, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। चारों कुण्ट अंधेरी रात, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराणां सारे पढ़दे गाथ, अञ्जील कुरानां कल्मयां विच सुणाईआ। खेल वेखो पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर फोल फुलाईआ। सति जोत दा रिहा ना कोए प्रकाश, धुआँधार होई लोकाईआ। मन कल्पणा करे ना कोए घात, हउमे रोग ना कोए मिटाईआ। आत्म परमात्म जोड़े कोए ना नात, सुरत शब्द ना कोए समाईआ। क्यों झगड़ा प्या ज़ात पात, दीन मज़्हब रहे कुरलाईआ। उठो वेखो खेल तमाश, ख़लक ख़ालक मख़लूक की आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर संदेशा इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे अवतार पैग़म्बर गुरु वेखो मार ध्यान, निगह निगह विच्चों बदलाईआ। की लेखा विच जहान, नव सत्त फोल फुलाईआ। दृष्टी रिहा ना ब्रह्म ज्ञान, गृह मन्दिर ना कोए रुशनाईआ। सच झुले ना कोए निशान, नौबत हक ना कोए वजाईआ। हिरदे रमया ना किसे राम, राम रामा दे समझाईआ। रूप नज़र ना आए काहन, बंसरी धुन ना कोए शनवाईआ। पैग़म्बरो भुल्ली तुहाडी कलाम,

कलमा कायनात ना कोए दृढ़ाईआ। अमृत रस पीए ना कोए सतिनाम, सति विच ना कोए समाईआ। फ़तिह जैकारा बोले ना कोए जहान, जहालत भरी कूड़ लोकाईआ। योधे सूरबीर उठो नौजवान, सतिगुर शब्द रिहा सुणाईआ। खेल वेखो श्री भगवान, की करता कार कमाईआ। संदेसा सुणो बिना कान, शब्दी शब्द शब्द शनवाईआ। सदी चौधवीं वकष्त पहुंचिआ आण, मुहम्मद चार यारी दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा मालक हुक्म सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे अवतार पैग़म्बर गुरु वेखो धरनी धरत धवल, धौल ध्यान लगाईआ। जिस नूं कहि के आए नूर इलाही अवल्ल, आलमीन बेपरवाहीआ। जिस दी सिफ्त सुणाई साँवल सवल, मुकन्द मनोहर इक रघुराईआ। जिस दा अमृत रस भरया नाभी कँवल, घट घट मेघ बरसाईआ। जिस दा स्वास पवणी पवण, दम दमां नाल चतुराईआ। उस दा भेव तुहाडे विच्चों जाणे कवण, जगत दे काहन दयो सुणाईआ। जो लेखा जाणे लख चुरासी अवण गवण, दो जहानां नौजवाना मर्द मर्दाना आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु कहिण एह खेल अगम्मी हरि दा, सतिगुर शब्द तेरे हथ्थ वड्याईआ। जेहड़ा ना जम्मे ना मरदा, मरजीवत रूप ना कोए बदलाईआ। जो चाहे सो जुग चौकड़ी करदा, करनी दा करता इक अख्वाईआ। सरगुण धार सब तों डरदा, भय विच बैठा सीस निवाईआ। निरगुण निरगुण अक्खर ओसे दा पढ़दा, नाम कलमा सिफ्त सालाहीआ। अवतार पैग़म्बर गुरु ओसे दी धार ओसे दा बरदा, दर दरवेश दर साचे अलख जगाईआ। कलयुग खेल अन्तिम उसे दी कल दा, कलि कल्की बेपरवाहीआ। जो सचखण्ड सच सिंघासण मल्लदा, अटल महल्ल डेरा लाईआ। जिस दा दीपक जोत अगम्मी बलदा, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी अवतार पैग़म्बर गुरु रिहा घलदा, नाम निधाना श्री भगवाना झोली लोकमात भराईआ। लख चुरासी रिहा छलदा, अछल छलधारी आपणी कार कमाईआ। दरोही उस दा भाणा कदे ना टल्दा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। ओह मालक दो जहान जल थल दा, महीअल आपणी कार भुगताईआ। कलयुग अन्तिम जो शब्द धार रलदा, रूप रंग रेख समझ कोए ना पाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सांझा यार परवरदिगार खेल करे जन भगतां वल्ल दा, वलवले सब दे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित मालक खालक प्रितपालक सचखण्ड दवारे निहचल धाम अटल दा, अटल पदवी पदां तों बाहर आपणी इक रखाईआ।

✪ १६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ बीबी हरिजिन्दर कौर दे गृह पिण्ड शेख ज़िला बठिंडा ✪

अवतार पैग़म्बर गुरु निगाह मारो काया अन्दर, शब्द गुरु गुरदेव रिहा जणाईआ। क्यों मन मनुआ भज्जे बन्दर, दहि दिशा उठ उठ धाईआ। क्यों नहीं बजर कपाटी खुल्हिआ जन्दर, पर्दा पर्दे विच्चों चुकाईआ। सति सच चढ़ी क्यों नहीं रंगण, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। शब्द अनादी धुन देवे किसे ना अनन्दन, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। तिलक ललाटी मस्तक टिक्का सति लग्गे कोए ना चन्दन, प्रेम प्यार ना कोए रखाईआ। ईड़ा पिंगल सुखमन टेडी बंक मूल ना लँघण, पाँधी आपणा पन्ध मुकाईआ। कोई खेल वेख सके ना ब्रह्म ब्रह्मण्डण, ब्रह्मांड पर्दा ना कोए वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सुणे कोए ना छन्दन, सहिंसा रोग ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण असां मार्ग दस्सया सच्चा, सच सच दृढ़ाईआ। शब्दी भेव रखया ना रता, रत्न अमोलक गुरमुख हीरे आए बणाईआ। पंच विकार कूड़ कुड़यार दस्स के तत तत्तां, तत्व तत तत समझाईआ। मन कल्पणा दस्स के आए पता, शब्दी खण्डा खड़ग नाम चमकाईआ। चेतन कर के आए सुरत धार दी चेतन सता, सति सति विच्चों उपजाईआ। मस्तक जोत ललाट जगा के आए खेल दरसाया पुरख समरथा, महिमा अकथ कथ दृढ़ाईआ। अगम्मी दे के आए अमोलक वथा, निरगुण निरगुण विच टिकाईआ। तेरा गृह वखाया यथार्थ यथा, घर घर विच पर्दा दिता उठाईआ। जिस नूं टेकणा पए किसे ना मथ्था, तन वजूद ना कोए रखाईआ। जैकारा बोलाणा पए ना कोए रसना जेहवा बत्ती दन्दा, ढोला गीत ना कोए सुणाईआ। दरस करना पए ना जगत अक्खां, लोचन कम्म कोए ना आईआ। रसना जेहवा नौ दवारे रस रसना कोए ना चखा, अनरस तेरा खेल वखाईआ। अगम्मी अगम्म सुणा कथा, बिना कथनी तों कथा दिती पढ़ाईआ। तेरा गृह पुरख समरथा, घर सुहञ्जणा आए जणाईआ। जिथ्थे आत्म धार रूप परमात्मा तेरा वसा, सूर्या चन्द ना कोए रुशनाईआ। जिस नूं जगत पैमान्यां विच किसे ना कछा, सवा गिठ्ठ दी धार सारे गए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, प्रभ तेरे हथ्थ वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू तेरा दस्स के आए घराना, गहर गम्भीर बेनज़ीर पड़दा तन वजूद चुकाईआ। सुणा के आए नाम निधाना, मेहरवान सिफ्त सालाहीआ। जणा के आए धुन आत्मक राग अगम्मी गाणा, अनाद अनादी बेपरवाहीआ। प्या के आए अमृत रस जाम महाना, नव रस दा डेरा ढाहीआ। निरगुण नूर जोत प्रकाश दस्सया खेल श्री भगवाना, भगवन तेरी कल धराईआ। आत्म धार दस्सया सति सरूप बलवाना, बलधारी वड वड्याईआ। जिस दा निरगुण विच ना बणया घराना, गृह गृह विच वड्याईआ। जिस नूं नापे शब्द शब्द पैमाना,

जगत नाप ना कोए चतुराईआ। नीकन नीका तेरा नूर नुराना, किरन किरन दी धार किरपा तेरी विच्चों नज़री आईआ। जिस दा सारे दे के गए ब्याना, सिफ्तां वाले ढोले गीत दृढ़ाईआ। ओह तेरा खेल काया माटी चामा, साढे तिन्न हथ्थ वंड वंडाईआ। जिथ्थे वज्जे अगम्मी दमामा, उँगलां ढाई ढाई दरसाईआ। सहिस दल कँवल दा नहीं निशाना, दस्म दुआरी मूँह दे भार सुटाईआ। इस तों अगला खेल महाना, तुरीआ सार कोए ना पाईआ। जिथ्थे शब्द नहीं कोई गाणा, रागी राग ना कोए शनवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव ना कोए निशाना, रूप अनूप ना कोए दृढ़ाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझे यार तेरे नूर दा सच टिकाणा, आत्म गृह गृह गृह विच वखाईआ। जिस दा लेखा शास्त्र सिमरत वेद पुराण कहि सके ना कोए ज़बाना, सिफ्तां विच ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण मेरे साहिब स्वामी परवरदिगार यार तूं, तेरी बेपरवाहीआ। तेरा खेल अल्ला हू, हक हक दृढ़ाईआ। भेव खुल्हा दे अन्ना हू, मेहर नज़र इक उठाईआ। लेखा चुका दे आपणी रूह, रूहे रवां तेरी सरनाईआ। तूं मालक सचखण्ड निवासी साढे हथ्थ जूह, जंगल पहाड़ टिल्ले पर्बत समुंद सागर ब्रह्मण्ड खण्ड वेख चाँईं चाँईंआ। आदि जुगादी निरगुण धार शब्द गुरु, पड़दा गुर दे चुकाईआ। जिथ्थे तेरा गृह तेरे दर दा मार्ग हुन्दा शुरू, उथे आत्म आपणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर पर्दा आप चुकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु कहिण असीं दस्सया खेल जगत, जगजीवण दाते सिफ्त सालाहीआ। तेरी आत्म धार दस्सी शक्त, शख्सीअत तेरे नाल वड्याईआ। निरगुण धार निरगुण नाल कर के अर्थ, अर्श फ़र्श दा नाता ल्या जुड़ाईआ। गृह मन्दिर कर के सरच, खोज खोजां चाँईं चाँईंआ। यसू कहे मेरे करास दा जो निशाना उत्ते चर्च, एह निशाना तेरा नूर इलाहीआ। मेरी दर ठांडे खुदा खुद अर्ज़, नूर नुराने दयां सुणाईआ। तेरी रूह तेरी धार तेरी तर्ज़, यकतरफ़ वेख वखाईआ। जिस दी सिफ्त कर ना सके हरफ़, हरूफ़ां विच ना कोए वड्याईआ। मेरा माण ताण तेरे उत्ते मुशरफ़, मुक्षत्री सब तों दयां कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर दरवेश बैठे आस रखाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण पुरख अकाले दीन दयाले तेरा दस्सया रस्ता, रहिबर हो के आए जणाईआ। नाम कलमा वेख्या ससता, कीमत मात ना कोए रखाईआ। चार जुग दे शास्त्र बन्न्हाया बस्ता, जगत डोरी गंढ पवाईआ। तैनूं मालक दस्स अर्शा, अर्शी प्रीतम तेरी सिफ्त सालाहीआ। तेरा भेव खुल्हा के उत्ते फ़र्शा, ज़िमीं ज़मां आए दृढ़ाईआ। दीन दुनी तों मार्ग लाया मसीतां चर्चा, शिवदुआले मट्ठां विच भवाईआ। खेल दस्स के नरायण नर

६०५
२२

दा, नर हरि आए समझाईआ। बिना भगतां तों तेरा भेव पाया ना किसे आत्म घर दा, गृह मन्दिर ना खोज खुजाईआ। जिस गृह जोती धार हो के वड़दा, निरगुण आपणा डेरा लाईआ। ना जीवत ना मरदा, सति सरूप विच समाईआ। जिथ्थे द्वैत दा मिटे पड़दा, उथे मिले बेपरवाहीआ। दीपक इक्को नूरी जगदा, जागरत जोत होए रुशनाईआ। जिथ्थे सूर्या चन्द कोए ना चढ़दा, मण्डल मण्डप ना कोए वड्याईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु शास्त्र वेद पुराण कोए ना पढ़दा, विद्या चले ना कोए चतुराईआ। सो खेल तेरा अगम्मे घर दा, ढाई दी ढाई वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दवार एकँकार परवरदिगार सांझे यार भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू तेरा चार जुग दस्सदे आए गीत, गोबिन्द तेरा नाम दृढ़ाईआ। तैनूं दस्सया त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी तेरी बेपरवाहीआ। जीवां जंतां करदे आए काया ठंडी सीत, कूड़ी क्रिया अग्नी तत बुझाईआ। आत्म परमात्म दस्सदे आए प्रीत, प्रीतम तेरे नाल मिलाईआ। सतिगुर शब्द विचोला बणया बीच, दूजा संग ना कोए रखाईआ। जिथ्थे झगड़ा मुके ऊच नीच, ज़ात पात रहे ना राईआ। लेखा रहे ना मन्दिर मसीत, काअब्यां राह ना कोए तकाईआ। सो गृह तेरा अनडीठ, बिन निज नेत्र बिन ज्ञान अक्ख ना कोए वखाईआ। जिस मम्बर चढ़ के कबीर जुलाहे मारी चीक, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। ओथे शब्द गुरु करे तस्दीक, शहादत आपणी आप भुगताईआ। उस गृह विच तेरे प्रेम प्यार दी लीक, लाईन ऐन इक्को नज़री आईआ। जिथ्थे ठाकर वसे ठाकर हो के ठीक, हरि ठाकर नूर अलाहीआ। सदा बैठा रहे अतीत, त्रैभवण धनी तेरा राह तकाईआ। सो पुरख स्वामी अन्तरजामी हरि पुरख निरँजण ठांडे मीत, मित्र प्यारे वेखणा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच गृह निज मन्दिर निज आत्म परमात्म आपणा पड़दा लाहीआ। अवतार पैग़म्बर गुरु कहिण सो पुरख निरँजण तेरी धार, धरनी धरत धवल धौल आए दृढ़ाईआ। हरि पुरख निरँजण तेरा खेल अपार, अपरम्पर स्वामी आए समझाईआ। एकँकार दस्स के मीत मुरार, मित्र प्यारा इक जणाईआ। आदि निरँजण तेरा नूर नूर उज्यार, जोती जाते तेरे हथ्थ वड्याईआ। अबिनाशी करते पाउणी सार, महासार्थी आपणा बल प्रगटाईआ। श्री भगवान हो के ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर देणी जणाईआ। पारब्रह्म तेरा खेल अपर अपार, अपरम्पर स्वामी पड़दा देणा उठाईआ। काया मन्दिर खोल्ह किवाड़, घर इक्को देणा बणाईआ। जिथ्थे जगे जोत अपार, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। अतीत बैठा त्रैभवण धनी शाह पातशाह सच्ची सरकार, शहिनशाह आपणा खेल खिलाईआ। तिस चरण कँवल आत्म आपणी धार करे निमस्कार, निउँ निउँ लागे पाईआ। सच मन्दिर सच दवार, सच सच विच प्रगटाईआ। सच घाड़त घड़े आप

ठठिआर, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल करे आप करतार, कुदरत दा करता करनी दा मालक ख़लक दा ख़ालक शब्दी हुक्मी हुक्म आप वरताईआ।

✪ २० मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ धर्मजीत कौर दे गृह
पिण्ड शेख़ ज़िला बठिंडा ✪

सतिगुर शब्द कहे मैं मालक आदि घर थिरना, अवतार पैग़म्बर गुरु गुरु समझाईआ। मेरा खेल जुग चौकड़ी पूरब चिरणा, चिरी विछुन्नी वेख वखाईआ। मैं ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल कोटन कोटि गगन गगनंतर फिरना, ज़िमीं असमानां धरनी धरत धवल धौल आपणी खेल खिलाईआ। सब दी जोती धार वेखां आपणी किरना, किरन किरन खोज खुजाईआ। सदी चौधवीं कलयुग अन्तिम आत्म परमात्म करना निरना, निरवैर हो के इक समझाईआ। तत्तां वाला झगड़ा छिड़ना, अग्गे हो ना कोए मिटाईआ। दीनां मज़्बां धुर दे हुक्म नाल घिरना, नाम डोरी तन्द बंधाईआ। अमृत मिले किसे ना झिरना, आबेहयात ना खेल वखाईआ। उलटा गेड़ अगम्मी गिड़ना, धुर हुक्म नाल गिढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं खेल दस्सणा निरवैर, अवतार पैग़म्बर गुरु ध्यान लगाईआ। मानव कोई रहिण देणा नहीं ग़ैर, आत्म परमात्म रंग रंगाईआ। शरअ दी धार मेटणी ज़हिर, ज़ाहर ज़हूर कर रुशनाईआ। लेखा दस्सणा गम्भीर गहर, गवर पड़दा इक चुकाईआ। सति धर्म चलाउणी लहर, माया ममता मोह रुढ़ाईआ। धर्म दा इक्को वसणा शहर, कसबिआं वाला पन्ध मुकाईआ। सदी चौधवीं मेट के कहर, कला प्रभ दी देणी वरताईआ। जिस विच अग्गे लग्गे ना देर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। सतिगुर शब्द अगम्मी शेर, भबक इक्को नाम लगाईआ। सब दा लेखा लहिणा देणा दए नबेड़, पूरब भविक्ख्त पूर कराईआ। हिस्सा रहे ना ज़बर ज़ेर, शाह पातशाह शहिनशाह आपणी कार कमाईआ। आशा पूरी करे जो गोबिन्द रख के गया नदेड़, अन्त अन्त ध्यान लगाईआ। पुरख अकाल दो जहानां कंध चुक्के बेड़, नईया नौका आपणा नाम वखाईआ। सब दी कल्पणा दए नखेड़, पिछली आस रहे ना राईआ। अग्गे कर के खुल्ह़ा वेहड़, धरनी धरत सुहाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं अगम्मी केहर, प्रभ हुक्म हुक्म वरताईआ। कलयुग मेटां अन्तिम फेर, फिरत फिरत वेखां ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा

९०७
२२

हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी हुक्मे अन्दर करे ना देर, दूर दुराडा नेरन नेरा हो के खेल खिलाईआ।

✪ २० मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ परसिंन कौर दे गृह पिण्ड शेख ज़िला बठिंडा ✪

सतिगुर शब्द कहे हुक्म संदेशा देवां सति, गुर अवतार पैग़म्बर सति सति दृढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदलणा तत, तमां लोभ हँकार विकार देणा गंवाईआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत, रत्न अमोलक हीरे गुरमुख लैणे जणाईआ। आत्म परमात्म मेल मिलाउणा साचा नत्त, रिश्ता इक्को इक वखाईआ। स्वामी मेलणा कमलापति, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जेहड़ा सर्ब कला समरथ, साहिब सुल्तान इक अख्वाईआ। जन भगतां देवे अगम्मी वथ, वस्त अमोलक नाम वरताईआ। लहिणा देणा चुकावे हथ्थो हथ्थ, मेला मेले सहिज सुभाईआ। झगड़ा मेटे तत अठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध दा पन्ध मुकाईआ। निझर झिरना अमृत बख्शे रस, बूँद स्वांती आप टपकाईआ। नाम निधान सुणाए नद, अनहद नादी नाद जणाईआ। दीन मज़्ब दी जिथ्थे टुट्टे हद्द, सो गृह मन्दिर सब नूं दए वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सुणा के छन्द, संसा अन्दरों दए चुकाईआ। धर्म नगारा जाए वज्ज, जगत जहान करे शनवाईआ। लेखा मुकाए काअब्यां वाले हज्ज, हुजरा हक हक सुहाईआ। सच दवार वखाए मन्दिर मट्ठ, शिवदुआला इक्को इक प्रगटाईआ। जिथ्थे जोत जगे लट लट, अंध अंधेर रहे ना राईआ। कलमे दा वक्खरा नहीं कोई फट्ट, शरअ ज़ंजीर ना कोए बंधाईआ। इक्को रूप नज़र आवे सच, सच सच विच्चों समझाईआ। भाग लगा के काया माटी कच्च, कंचन गढ़ दए वखाईआ। नज़र आवे जो लूं लूं गया रच, साढे तिन्न करोड़ खुशी मनाईआ। अग्नी तत ना जाए मच्च, हउमे रोग ना कोए सताईआ। लेखा दस्स अकथना अकथ, अनभव दृष्टी दए समझाईआ। जिथ्थे आत्म परमात्म दोवें रहे वस, लामुकाम मेहरवान महिबूब इक दरसाईआ। एह खेल यथार्थ यथ, यदी आपणा देणा वरताईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया लथ्थे सथ्थर सथ, गोबिन्द यारड़ा सथ्थर दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वसणहारा घट घट, घट निवासी पुरख अबिनाशी दीन दयाल दयानिध ठाकर स्वामी अन्तरजामी आपणा पड़दा लाहीआ।

✪ २० मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ माया देवी दे गृह पिण्ड शेख़ ज़िला बठिंडा ✪

सतिगुर शब्द कहे धुर हुक्म दा देणा ज़ोर, अवतार पैग़म्बर गुर वेखणा ध्यान लगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणा अंधेरा घोर, अंध अज्ञान देणा गंवाईआ। झगड़ा मेटणा पंज चोर, पंच शब्द नाद धुन कर शनवाईआ। आत्म धार पकड़नी डोर, परमात्म आपणी गंढ पवाईआ। सुरत शब्द वसेरा करना कोल, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। नाम दा डंक वजा के ढोल, कलमा इक्को कायनात देणा सुणाईआ। हर हिरदे अन्दर मौल, मौला मेलणा सहिज सुभाईआ। लख चुरासी नाम कंडे तराज़ू तोल, वज़न करना थांउँ थाँईंआ। सदी चौधवीं रहे ना कोए अनभोल, बेख़बरां ख़बर देणी सुणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सब दे नाल अन्त मारना रोल, अगम्म अगम्मड़ा आपणा हुक्म वरताईआ। दीन दुनी दा शब्दी धार सांझा करना बोल, अनबोलत आपणा राग सुणाईआ। कलमा नग़मा नाम गीत सुहावां होवे सोहल, सोहला इक्को इक समझाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण मिल के करे चोहल, मुहब्बत प्यार नाता इक बंधाईआ। लेखा वेखे धरनी धरत धवल धौल, धर्म दी धार पड़दा लाहीआ। चार वरनां अठारां बरनां निज आत्म रस दी देवे आपणी पाहुल, बूँद स्वांती सति सच टपकाईआ। सच प्रेम धुर दा रंग लाल गुलाला खेले होल, हौली हौली आपणा संग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अवतार पैग़म्बर गुरु शब्दी धार सतिगुर शब्द रहिण ना देवे अनभोल, अनभुल आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ २० मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ महिन्दर कौर दे गृह पिण्ड शेख़ रखाला ज़िला बठिंडा ✪

सतिगुर शब्द कहे धुर दा हुक्म मिलणा छेती, अवतार पैग़म्बर गुरु छत्रधारी रिहा जणाईआ। जिस ने सब दे अन्दर दा बणना भेती, भेव अभेदा अछल अछेदा पड़दा दए उठाईआ। चार जुग दी करनी वेखे लेखी, लिख्त भविक्ख्त नाल मिलाईआ। धुर हुक्म जाणे संदेशी, फ़रमाना अगम्म अथाहीआ। की आसा रख के गया गुर दस दशमेशी, दहि दिशा अक्ख उठाईआ। जिस वेले आवे नर नरेशी, हरि करता धुरदरगाहीआ। सन्त सुहेले भगत जन वेखे लोकमात परदेसी, जन्म दे विछड़यां खोज खुजाईआ। लहिणा देणा पूरा करे मुल्ला शेख़ी, मुसायकां लेखा दए चुकाईआ। आपणी धार दस्स के नेत नेती, नेती नेती आपणा खेल दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग चौकड़ी अन्त कन्त करे हमेशी, हमसाजण ग़रीब निवाजण आपणी दया कमाईआ।

✪ २० मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ आत्मा सिँघ दे गृह पिण्ड गदा डोब ज़िला बठिंडा ✪

सतिगुर शब्द कहे की खेल होणा अन्त कलयुग, अवतार पैग़म्बर गुर निज नेत्र लओ उठाईआ। जगत वासना सब दी औध रही पुग, अग्गे पैंडा पन्ध देणा मुकाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला भेव खुल्हाए गुज्झ, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। सदी चौधवीं अन्त मानव ज़ाती जाणा सुझ, भुल्लया रहिण कोए ना पाईआ। जगत मलेछ होणी बुध, मन कल्पणा कूड़ हल्काईआ। हिरदा रिहा किसे ना सुध, सुदी वदी दए गवाहीआ। हउमे हंगता पैणा कुद्द, भज्जे चाँईं चाँईंआ। नव खण्ड पृथ्मी होणा युद्ध, जो लेखा युधिष्टर कृष्न गया दृढ़ाईआ। पर्दा ओहला रहे ना लुक, चौदां लोक चौदां तबक देण दुहाईआ। दीन दुनी दा बदल जाणा रुख़, दरोही फिरे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता धुरदरगाहीआ। सतिगुर शब्द कहे कलयुग औध गई बीत, अवतार पैग़म्बर गुर वेखो बातन ध्यान लगाईआ। काया होए ना किसे ठांडी सीत, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। त्रैगुण होए ना कोए अतीत, त्रैवण धनी ना कोए मिलाईआ। साचा कलमा सुणे ना कोए हदीस, हज़रत रोवण मारन धाईआ। आत्म रही ना कोए प्रीत, पारब्रह्म गए भुलाईआ। झगड़ा प्या हस्त कीट, ऊच नीच करे लड़ाईआ। मन कल्पणा सके कोए ना जीत, शास्त्र सिमरत वेद पुराण रहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, सचखण्ड निवासी आपणा हुक्म वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे कलयुग खेल अन्तिम होणा, अवतार पैग़म्बर गुर पड़दा लओ उठाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर रोणा, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। झगड़ा पैणा कोना कोना, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण वेख वखाईआ। विस्तर सेज सिंघासण मिले किसे ना सौणा, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ भज्जण वाहो दाहीआ। नाम गीत मिले किसे ना गाउणा, गहर गम्भीर संग ना कोए रखाईआ। ठंडी मिले कोए ना पौणा, अग्नी अग्ग अग्ग तपाईआ। मेघ बरसे कोए ना सावणा, सांतक सति ना कोए जणाईआ। कलयुग कूड़ होणा हँकारी रावणा, राम राम आख सुणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल लेखा पूरा करना बलि बावना, जो बावन अनभव दृष्टी विच गया सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे कलयुग मिटणा अंधेर अंध, अंध अज्ञान रहिण ना पाईआ। सब दा पिछला मुके पन्ध, पाँधी नज़र कोए ना आईआ। सतिगुर शब्द खण्डा फड़ तीर कमंद, दो जहानां दए चलाईआ। दूई द्वैती ढाह के कंध, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के छन्द, आत्म परमात्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। अन्त अख़ीर सदी चौधवीं होए जंग, रूसा चीना वंड वंडाईआ। योरप पाए कोए ना ठंड, दरोही फिरे थांउँ थाँईंआ। ईसा मूसा मुहम्मद

तिन्ने वंडां रहे वंड, दरगाह सच ध्यान लगाईआ। बौहड़ी साडा समां रिहा लँघ, वक्त बेवक्त ना कोए कराईआ। उम्मत होणी नंग, नबी रसूल मारन धाईआ। सदी चौधवीं चौदस रहे मूल ना चन्द, अंध अंधेरा जाणा छाईआ। जगत सुहागी होणा रंड, बेवफ़ा दिसे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादी सूरा सरबंग, साहिब सतिगुर आपणा हुक्म सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे कलयुग अन्तिम वेखणी हालत, जगत जहान खोज खुजाईआ। पुरख अकाला करे अदालत, सच इन्साफ़ इक कमाईआ। बदी कूड़ दा लेखा वेखे जहालत, पड़दा लाहे थांउँ थाँईंआ। सति सच दी वेखे अमानत, हर हिरदा फोल फुलाईआ। कलयुग दी तृष्ना मेटे तामस, अग्नी तत गंवाईआ। जो संदेशा दे के गया तबरेज़ शमस, शमां नूर ना कोए रुशनाईआ। सदी चौधवीं अन्तिम होणा गज़ब, गहिर गम्भीर बेनज़ीर आपणा हुक्म वरताईआ। पैग़म्बर होणे तुअज्जब, हैरानी विच दुहाईआ। लेखा मुकणा ज़ात मज़्हब, मानव मानव नाल टकराईआ। परवरदिगार सांझे यार पुरख अकाल दीन दयाल शब्दी शब्द धार शब्द सतिगुर चुकणा आपणा कदम, कदीम दे मालक कुदरत दे कादर करनी दे करते कलयुग दी कल कलि कल्की हो के पूर कराईआ।

✪ २० मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ तेजा सिँघ दे घर पिण्ड सादक ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सतिगुर शब्द कहे खेल करना सूरे सरबग, अवतार पैग़म्बर गुर वेखणा अक्ख उठाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणी जग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। त्रैगुण माया बुझाउणी अग्ग, तत्व तत अमृत मेघ बरसाईआ। दीन मज़्हब मेटणी हद्द, ज़ात पाती पन्ध मुकाईआ। धुर दा नाम सुणाउणा छन्द, कलमा अगम्म अथाहीआ। निज आत्म परमात्म बख़्शणा अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जोत प्रकाश कर अगम्मी चन्द, दो जहान करे रुशनाईआ। आत्म परमात्म बणा के संग, सगला संगी होए सहाईआ। सेज सुहाए आत्म पलँघ, सुखआसण डेरा लाईआ। नाम निधान वजाए मृदंग, धुन आत्मक राग सुणाईआ। सदी चौधवीं रही लँघ, मुहम्मद वेखे नैण उठाईआ। उम्मत उम्मती होणी नंग, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। ईसा अन्दर आवे रंज, बीसवीं सदी अक्ख खुल्ल्हाईआ। परवरदिगार सांझे यार सब दा लेखा करना भंग, दुतीआ भाउ दए मिटाईआ। सतिजुग साचे हो आप बख़्शंद, बख़्शिश रहमत आप देणी कमाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया माया ममता मेट के गंद, पतित पुनीत देणे कराईआ। सब दी आसा मनसा गुर अवतार पैग़म्बरां पूरी करनी मंग, जो भविक्ख्तां विच लिख्तां विच इष्टां विच गए दृढ़ाईआ। अमृत धार वहाउणी गंग, सर सरोवर इक प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ मार्ग लाउणा सति, अवतार पैग़म्बर गुर वेखो चाँईं चाँईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर देणी ब्रह्म मति, पारब्रह्म प्रभ पड़दा आप उठाईआ। निरगुण निरगुण जोड़ना नत, सरगुण साचा संग वखाईआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत्त, अग्नी तत देणा गंवाईआ। सतिगुर साचा मार्ग दस्स, रस्ता रहिबर देणा समझाईआ। दीन दुनी नूं करके वस, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। हर हिरदे अन्दर वस, पर्दा निरन्तर देणा चुकाईआ। शब्द अगम्मी मारनी सट्ट, मन का मणका देणा भवाईआ। धर्म दवार दा खोल्ह के हट्ट, वस्त नाम इक वरताईआ। झगड़ा मेट के तीर्थ अठसठ, आत्म सरोवर दए नुहाईआ। हउमे हंगता मेट के फट्ट, पट्टी इक्को नाम बंधाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सब ने गाउणा जस, सिफ्त सालाह करे पढ़ाईआ। मानव मानुख माणस रहिण देवे कोई ना वक्ख, मानव आपणे रंग रंगाईआ। लहिणा देणा मेट चुरासी लख, हरिजन साचे गोद टिकाईआ। दुरमति मैल विकारा कट, अन्तर निरन्तर करे सफ़ाईआ। सतिजुग सति सतिवादी धरनी धरत धवल उपर रख, देवे जगत माण वड्याईआ। गुरमुखां खोल्ह के नेत्र लोचण नैण अक्ख, निज घर करे रुशनाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला बण के कमलापति, पतिपरमेश्वर आपणा पड़दा दए चुकाईआ। जिस पुरख अकाल दीन दयाल नूं गुर अवतार पैग़म्बर गए सद्द, पेशीनगोईआं विच दे दुहाईआ। ओह अन्त कन्त भगवन्त हो प्रगट, पारब्रह्म प्रभ आपणी कल वरताईआ। शब्द गुरु गुरदेव स्वामी आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब दी रखणहारा पत, मेहरवान महिबूब हो के सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, शाह पातशाह शहिनशाह अलखणा अलख, अगम्म अगोचर गहर गम्भीर बेनज़ीर लाशरीक आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ २० मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ सुलखण सिंघ दे गृह मूंगला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सतिगुर शब्द कहे वेखणी खेल हरि दी, अवतार पैग़म्बर गुर अक्ख खुल्हाईआ। जिस दी कला होणी चढ़दी, चारों कुण्ट डंक वजाईआ। शब्दी धार शब्द होणी पढ़दी, आत्म परमात्म राग अल्हाईआ। खेल करनी नरायण नर दी, नर हरि आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा लेखा आप कराईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ ने खेल करना अपार, अवतार पैग़म्बर वेख वखाईआ। कलि कल्की हो उज्यार, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। शब्दी शब्द हो त्यार, त्रैभवन फोल फुलाईआ। लख चुरासी पावे सार, महासार्थी वड वड्याईआ। कलयुग

कूड़ी क्रिया करे ख्वार, माया ममता मोह मिटाईआ। जन भगतां पैज दए स्वार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लेखा पूरा कर पैग़म्बर गुर अवतार, अवतरी आपणा रंग रंगाईआ। संदेशा दे सच्ची सरकार, सति सच सच दृढ़ाईआ। सब ने रहिणा अवतार पैग़म्बर गुर हुश्यार, होश मदहोश इक रंग बणाईआ। जगत तृष्ना पावे सार, आसा मनसा नाल रखाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सब दा लहिणा देणा दए निवार, पूरब पूरब झोली पाईआ। अग्गे हुक्म सच्ची सरकार, सतिजुग साचे आप जणाईआ। सति सति दा बोल जैकार, नाअरा इक्को इक प्रगटाईआ। जिस दा लेखा अपर अपार, अपरम्पर स्वामी आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग इक रंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ खेल आया करन, अवतार पैग़म्बर गुर वेख वखाईआ। जिस दी दो जहान लग्गण सरन, सरनगति इक दृढ़ाईआ। सारे ढोला इक्को पढ़न, सोहँ शब्द बेपरवाहीआ। मंज़ल अगम्मी एकँकार चढ़न, पदवी पद इक समझाईआ। शरअ विच मूल ना लड़न, छुरी करद दए सुटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अवतार पैग़म्बर गुरु चार जुग दा वायदा कौल इकरार पूरा करे प्रन, परमात्म हो के परम पुरख प्रभ आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ २१ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ राम सिँघ दे गृह फ़िरोज़पुर ✪

सतिगुर शब्द कहे वेखो प्रभ दी करनी, अवतार पैग़म्बर गुर ध्यान लगाईआ। जिस ने सन्त सुहेले लगाए सरनी, भगवन आपणा रंग रंगाईआ। भगती धार तुक पढ़नी, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। मंज़ल प्रभू साहिब दी चढ़नी, कदम कदम नाल बदलाईआ। दर्शन करना नेत्र हरनी फरनी, लोचन अक्ख उठाईआ। जगत मौत पए ना मरनी, मर जीवत रूप बदलाईआ। फुल्ल फुलवाड़ी साची फलणी, फलीभूत दए कराईआ। वेखो लख चुरासी अग्नी बलणी, तत्व तत तत तपाईआ। सृष्टी कलयुग अन्तिम दलणी, दलिद्दरी रोवण मारन धाईंआ। जन भगतां दरगाह साची मल्लणी, मलकुल मौत नेड़ ना आईआ। प्रेम प्रीती सतिगुर धार होवे सल्लनी, आर पार वेख वखाईआ। दीन दुनी होवे चलनी, थिर रूप ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे वेखो प्रभ दा खेल असचरज, अवतार पैग़म्बर गुर ध्यान लगाईआ। जिस ने छुरी शरअ खोहणी तुहाथों करद, कत्लगाह दा डेरा ढाहीआ। मानव ज़ाती वंडणा दर्द, मानुख इक्को रंग रंगाईआ। चार जुग दी वेख के फ़रद, फ़ैसला हक दए सुणाईआ।

उठो सारे करो अर्ज़, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जिस तुहाडी पूरी करनी ग़रज़, वाक् भविक्ख्त देण गवाहीआ। हउमे रहिण ना देवे मरज़, मरीज़ वेखे थांउँ थाँईंआ। पुट्ठी सिध्धी करके नरद, कलयुग विच सतिजुग दए बदलाईआ। शब्दी धार लेखे लावे करनी वाली शर्त, शरीअत लहिणा वेख वखाईआ। जो निरगुण धार आया परत, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। लेखा जाणे फ़र्श अर्श, अर्शी प्रीतम आपणा हुक्म वरताईआ। सब दी तमन्ना वासना ख़ाहिश पूरी करे हरस, हवस वेखे थांउँ थाँईंआ। जन भगत सुहेले जोधे सूरबीर बणा मर्द, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्दी खण्डा वखाए खड़ग, ब्रह्मण्डां आप जणाईआ।

६१४
२२

✪ २१ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ कुलवन्त कौर महिन्दर सिँघ दे गृह ख़लील बस्ती ✪

सतिगुर शब्द कहे वेखो खेल प्रभू ख़समाना, अवतार पैग़म्बर गुर नैण उठाईआ। जिस ने जगत जहान नापया नाम शब्द पैमाना, पैमाइश कीती थांउँ थाँईंआ। सो स्वामी बण के अन्तरयामा, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। सारे वेखो आपणा अहिदनामा, वेला वक्त थित वार नाल मिलाईआ। जगत जहान सच नाम दा तक्को मैख़ाना, जाम प्याला दयो वखाईआ। धुर संदेशा तक्को पैग़ामा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी बाहर जणाईआ। क्यों कलयुग होई अंधेरी शामा, शमादान नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। सारे निउँ निउँ करन सलामा, दर ठांडे सीस झुकाईआ। प्रभू असीं ब्यान दयांगे उत्ते जगत सवा रुपईए वाले अशटामा, चौथा जुग ध्यान रखाईआ। नाल शरअ रखांगे कलामा, कलमा तेरा नाल रलाईआ। पंजां लिखारीआं हक फक्क दा लिखणा लेख तमामा, तमा दा लालच रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे दो जहानां, दोए दोए धार धरनी धरत धवल धर्म आपणा आप समझाईआ।

✪ २१ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ गुरदीप सिँघ दे गृह पिण्ड तूत ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सतिगुर शब्द कहे पुरख अकाल दीन दयाल साहिब बख़्शंद, अवतार पैग़म्बर गुर तक्को खेल बेपरवाहीआ। जिस कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणा अंधेर अंध, नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप ध्यान लगाईआ। सतिजुग साचा सच चढ़ाउणा चन्द, धर्म दी ज़ात

६१४
२२

६१५ २२

मानव ज़ाती इक समझाईआ। मोह विकार हँकार विभचार मेटणा गंद, रसना जेहवा कूड़ ना कोए हल्काईआ। दीन मज़्ब ज़ात पात दी ढाउणी कंध, दूई द्वैत दा झगड़ा देणा चुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्सणा छन्द, सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ। नाम जपाउणा बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द, अजपा जाप इक प्रगटाईआ। निज आत्म बख़्शणा सच अनन्द, परमानंद रस चखाईआ। काया बंक दवार आपणे लँघ, सतिगुर शब्द करे शनवाईआ। अनहद नादी नाद वजा मृदंग, सोई सुरती आप उठाईआ। मन कल्पणा पंच विकार मेट के जंग, शरअ शरीअत लेखा दे मुकाईआ। पर्दा लाह के ब्रह्म हं, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। अमृत रस निझर धार वहाए गंग, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती लेखा दए मुकाईआ। सन्त सुहेले भगत जन लगाए अंग, गुरमुख गुरसिख गुर गुर गोद टिकाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक सब नूं देवे कंड, परवरदिगार पर्दा सके ना कोए चुकाईआ। करे खेल सूरा सरबंग, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस दवारे अवतार पैग़म्बर गुरु रहे मंग, निउँ निउँ लागण पाईंआ। सो खेल करे विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, सति सति सति प्रगटाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ मार्ग लाउणा इक, अवतार पैग़म्बर गुर वेखो चाँईं चाँईंआ। सृष्ट सबाई बख़्शणी टेक, इक्को इष्ट देणा वखाईआ। मन कल्पणा बुद्धी करनी बिबेक, हँकार विकार विभचार रहिण ना पाईआ। त्रैगुण माया मेटणा सेक, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। कलयुग अन्त बदलणी रेख, ऋषी मुनी सके ना कोए समझाईआ। सतिजुग वसाउणा साचे देस, धरनी धरत सोभा पाईआ। लेखा मुकणा गणपति गणेश, विष्न ब्रह्मा शिव नेत्र नैणां नीर वहाईआ। पैग़म्बर झुक झुक करन आदेस, सजदा धुरदरगाहीआ। अवतार तकण आपणा लेख, भविक्ख्तां खोज खुजाईआ। प्रभ पूरा करना लहिणा देणा गोबिन्द दस दशमेश, दहि दिशा तों बाहर आपणा हुक्म वरताईआ। दो जहानां आपणी पावे सार नर नरेश, नर हरि वड्डा वड वड्याईआ। सदी चौधवीं उम्मत नबी रसूल मेटणा कलेश, कलकाती दए मिटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्सणा सच संदेश, पैग़म्बर नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा हुक्म आप वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ किरपा करनी कलयुग अन्त, अवतार पैग़म्बर गुर वेखणा चाँईं चाँईंआ। प्रगट हो श्री भगवन्त, भगवन आपणा नूर जोत करे रुशनाईआ। हरिजन वेखे गुरमुख साचे सन्त, भगत सुहेले जोड़ जुड़ाईआ। गढ़ तोड़े कूड़ी क्रिया हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक समझाईआ। चार वरन अठारां बरन बणाए धर्म दी संगत, दीन मज़्ब ज़ात पात वंड ना कोए वंडाईआ। नाउँ निरँकारा चाढ़े रंगत, दुरमति मैल दए धुआईआ। दूसर दर होए कोए ना मंगत, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आपणी

भिच्छया आप वरताईआ। आत्म परमात्म दा बण के कन्त, कन्तूहल हो के साची सेज सुहाईआ। हरख़ सोग मेट के चिन्त, चिन्ता चिखा दए गंवाईआ। लोकमात रहिण दए कोए ना निन्दक, गुरमुख हँस काग लए बणाईआ। मन कल्पणा रहे कोए ना इल्लत, इलम आलमां दए मिटाईआ। कूड़ ख्वारी मेटे ज़िल्लत, शरअ शरअ विच्चों बदलाईआ। लेखा जाण उत्तर पूरब पच्छम दक्खण चारे सिम्मत, सति फ़रमाना इक समझाईआ। सदी चौधवीं अवतार पैग़म्बर गुरु सारे करो हिम्मत, हौसला मातलोक प्रगटाईआ। आत्म धार परमात्म होवे मिलत, नूर नुराना नूर इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी पूरी करे भविक्ख्त लिख्त, लेखा लेख अगला आप दृढ़ाईआ।

६१६
२२

✪ २१ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ करनैल सिंघ, अजैब सिँघ दे घर फ़रीदकोट शहर ✪

सतिगुर शब्द कहे सुणो नाम कलमा हदीसा, अवतार पैग़म्बर गुरु ध्यान लगाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला करे खेल हरि जगदीशा, जगदीश्र आपणा हुक्म वरताईआ। एका छत्र झुलाए धुर दे सीसा, छत्रधारी रहिण कोए ना पाईआ। लहिणा देणा पूरा करे बीस बीसा, सरगुण ज़ीरो रूप दरसाईआ। प्रगट हो के एकँकार इकीसा, दूआ एका खेल खिलाईआ। कलयुग कूड़ी बदल देवे रीता, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। सतिजुग मार्ग लावे ठांडा सीता, अग्नी अग्ग बुझाईआ। हर हिरदे वसे चीता, चितवित ठगौरी रहे ना राईआ। आत्म परमात्म दस्से धुर दा मीता, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। लहिणा देणा चुकाए जिस बिध गोबिन्द नहीं फोलाया अंगीठा, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। परम पुरख दा खेल सदा अनडीठा, अनडिठड़ी कार कमाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया भन्ने रीठा, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। लहिणा देणा वेखे विष्न ब्रह्मा शिव त्रैगुण अतीता, त्रैभवण धनी ध्यान लगाईआ। मनसा पूरी करे राम सीता, सुरत शब्द नाल मिलाईआ। लेखा जाणे राधा कृष्न जो बीता, बीती कहाणी आप प्रगटाईआ। संदेशा दे के गया हज़रत मूसा ईसा, कलमा कायनात सुणाईआ। मुहम्मद हमद विच लाशरीक दी दस्सी हदीसा, हज़रत हक सुणाईआ। नानक खेल जणाया त्रैगुण अतीता, भेव अभेदा इक वखाईआ। गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द धार खेल नीकन नीका, निरगुण निरवैर निराकार आप कराईआ। जिस लहिणा देणा लेखा पूरा करना लख चुरासी ईश जीव जी का, जगदीश्र आपणा हुक्म वरताईआ। झगड़ा मेटणा साढे तिन्न हथ्थ सीं का, रविदास चमारा दए गवाहीआ। मार्ग लाउणा सतिजुग नींह दा, बुन्याद आपणा नाम रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि सतिगुर इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ खेल खिलाउणी अनोखी, अवतार पैग़म्बर गुर अनभव दृष्टी ध्यान लगाईआ। अक्खरां वाली वाचणी सब दी पोथी, पुस्तक वेखे चाँईं चाँईंआ। धार प्रगटाउणी निर्मल जोती, जोती जाता करे रुशनाईआ। जन भगत सुहेले बणा के गोती, गौतम दा लहिणा पूर कराईआ। झगड़ा मेटणा जञ्ञू बोदी टोपी, सेलीआं गल ना कोए लटकाईआ। आत्म परमात्म बणाउणी सर्ब गोपी, काहन धुर दा दया कमाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट क्रोधी, काम क्रोध लोभ मोह हँकार दए मिटाईआ। शब्द डण्डा धुरदरगाही फड़ के सोटी, सति सतिवादी दए जणाईआ। जीव जंत साध सन्त सब दी साबत वेखे लंगोटी, अन्तर निरन्तर खोज खुजाईआ। जिस पुरख अकाल दीन दयाल नूं लभ्भदे कोटन कोटी, जुग चौकड़ी भज्जण वाहो दाहीआ। सो भगत सुहेला इक अकेला जन भगतां अन्दर चढ़ के चोटी, चोट नाम शब्द तन नगारे रिहा लगाईआ। सुरती रहिण ना देवे सोती, आलस निंद्रा विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। बुद्धी रहिण ना देवे कमली कोझी, बिबेकी आपणा रंग चढ़ाईआ। सतिजुग साचे साचे सन्तां देवे सोझी, गुरमुख मेला मेले सहिज सुभाईआ। नाम निधान सुणा के इक सलोकी, सोहला इक्को इक समझाईआ। झगड़ा मेट के चौदां लोकी, चौदां तबक करे रुशनाईआ। लेखे लावे अवतार पैग़म्बर गुरुआं सोची, सोच सोच विच समाईआ। आसा मनसा पूरी करे लोची, लोचन नेत्र नैणां नाल दिखाईआ। कर्म कांड दा रहिण देवे कोए ना जोगी, जुगीशरां वेख वखाईआ। मन वासना दिसे कोए ना भोगी, कल्पणा कूड़ ना कोए हल्काईआ। सतिजुग साचा सच धर्म दा होए संजोगी, गुर सतिगुर मेला सहिज सुभाईआ। आत्म परमात्म होवे मौजी, मौजी ठाकर इक अख्वाईआ। धरनी धरत धवल धौल दी पवित्र होवे गोदी, जो गोदावरी कन्ढे बहि के गोबिन्द गया समझाईआ। सदी चौधवीं अन्तिम खेल करे प्रीतम चोजी, चोला लोकमात बदलाईआ। जन भगतां मेट के हरख़ सोगी, चिन्ता चिखा दूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी दृष्टी होवे सोधी, सृष्ट इष्ट इक जणाईआ।

✪ २२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ गुरदेव सिँघ दे गृह फ़रीदकोट शहर ✪

सतिगुर शब्द कहे प्रभ खेल करना उत्ते बसुधा, अवतार पैग़म्बर गुर आपणी धार प्रगटाईआ। झूठ कराउणा युद्धा, युधिष्टर आसा पूर कराईआ। जो मनसा रख के गया बुद्धा, तिस दा लहिणा झोली पाईआ। मार्ग दरसाउणा सतिजुगा, सति सति दा संग बणाईआ। आत्म ब्रह्म भेव खोलुणा गुज्झा, बजर कपाटी पड़दा तुड़ाईआ। इक्को नाम कलमा करना उग्घा, उगण

आथण वज्जे वधाईआ। जो संदेशा दे के गया गुर अर्जन बाबा बुड्ढा, सो लहिणा लहिणेदार झोली पाईआ। जो गोबिन्द धार शब्दी मिल्या रुक्का, पुरख अकाल अकाल दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ खेल करनी उपर धरत, अवतार पैग़म्बर गुरु वेखणा चाँईं चाँईंआ। निरगुण धार आवे परत, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। भेव खुल्हाए अगम्मी अर्श, ओहला अन्तर रहे ना राईआ। सब दी पूरी करे शर्त, शरअ दा लेखा दए मुकाईआ। जो संदेशा दे के गया त्रेता राम भरत, सीता सति नाल मिलाईआ। सो पूरा करे मकरूज हो के कर्ज़, देवणहार धुरदरगाहीआ। लेखे लाए अर्जन वाली अर्ज़, जो घनईए अग्गे सुणाईआ। ईसा पूरी होवे ग़रज़, तृष्ना जगत मेट मिटाईआ। मुहम्मद दा लेखा वेखे उत्ते फ़रद, चौदां तबकां बाहर खोज खुजाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे अंधेर गर्द, गदागर करे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ खेल करना जल थल, अवतार पैग़म्बर गुर महीअल वेखण ध्यान लगाईआ। दीन दुनी जाए हल्ल, जगत जहान जाए कुरलाईआ। जिन्हां ढोरां लाही खल्ल, तिन्हां देवे अन्त सज़ाईआ। जिन्हां कीता कपट छल, तिन्हां राय धर्म हथ्थ फड़ाईआ। जेहड़े कल काती बणे कल, कलमा गए भुलाईआ। दूई द्वैती लग्गा सल, हउमे रोग लगाईआ। तिन्हां चैन मिले ना पल, पलक दे पिच्छे मिले मेल ना माहीआ। ओह कलयुग कूड़ी क्रिया विच फसे दलदल, दल दलिद्रां बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला निरगुण धार अन्तिम आवे चल, जोती जाता आपणा वेस वटाईआ। जेहड़ी धार वखाई बलि, बलहीण करे लोकाईआ। करनी दा सब नूं देवे फल, चुरासी अन्तर खोज खुजाईआ। जो आत्म परमात्म धार गए रल, तिन्हां मेला मेले सहिज सुभाईआ। बाहर कढे काया अंधेरी डल्ल, डूँग्घी भँवरी ना कोए भवाईआ। सतिगुर शब्द कहे अवतार पैग़म्बर गुर देवत शब्द दी धार इक रूप सारे जाण रल, वक्खरा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, वसणहारा धाम अटल, निहचल आपणा घर सुहाईआ।

६१८ २२

✪ २२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ नछत्तर सिँघ दे गृह फ़रीदकोट शहर ✪

सतिगुर शब्द कहे खेल करे सूरा सरबंगा, अवतार पैग़म्बर गुर लैणी अंगड़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे दंगा, दीन मज़्हब दा झगड़ा दए मुकाईआ। आत्म परमात्म बख्शे सच अनन्दा, पारब्रह्म ब्रह्म पड़दा आप उठाईआ। धुन शब्द नाद सुणाए

सच मृदंगा, अनहद नादी आप वजाईआ। अमृत रस धार निझर देवे लेखा रहे ना जलधार गंगा, गोदावरी जमना सुरस्ती पैंडा दए मुकाईआ। जगत जहान जीव मन विकार रहे ना मंदा, दुरमति मैल अन्तर निरन्तर करे सफ़ाईआ। सदी चौधवीं अन्तिम वेखे कन्ढा, मुहम्मद आसा नाल मिलाईआ। भेव खुल्हाए ब्रह्मण्डां खण्डां, पुरीआं लोआं पड़दा लाहीआ। हथ्थ फड़ सति सतिवादी सत्त रंग दा डण्डा, डण्डावत बन्दना सब दी दए बदलाईआ। मानव रहिण देवे कोए ना गंदा, बन्दगी इक्को इक दए जणाईआ। निशान मेट के तारा चन्दा, सूर्या सति प्रकाश दए वखाईआ। भुल्लया रहे कोए ना बन्दा, बन्धन शरअ दए तुड़ाईआ। सुरत शब्द करके संगा, सगला साथी होए सहाईआ। भगत सुहेले लाए अंगा, अंगीकार इक हो जाईआ। गुरमुखां सीस रहे ना नन्गा, ओढण आपणा नाम टिकाईआ। दीन दयाल बण बख़्शंदा, पतित पापी ल्ए तराईआ। कलयुग पन्ध रहिण ना देवे लम्बा, शब्द गुरु गुरदेव स्वामी शहादत इक भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता अगम्म अथाहीआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभू नाम कलमा एका दस्सणा कायनात, अवतार पैग़म्बर गुरु वेखणा ध्यान लगाईआ। झगड़ा मेटणा ज़ात पात, दीन मज़्हब ना कोए वड्याईआ। मार्ग इक्को दस्सणा परम पुरख अबिनाश, परवरदिगार सांझा यार दया कमाईआ। छुरी शरअ करे किसे ना घात, कातिल मक्तूल दा झगड़ा दए चुकाईआ। सदी चौधवीं मेट अंधेरी रात, कलयुग कूड़ी क्रिया दए गंवाईआ। सतिजुग सच बख़्श के दात, वस्त अमोलक झोली पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के गाथ, परमात्म आत्म करे पढ़ाईआ। चार जुग दा पूरा करे भविक्खत वाक, जो अवतार पैग़म्बर गुर संदेशयां विच गए जणाईआ। सब दा बन्द किवाड़ी खोल्ह के ताक, पर्दा अन्दरों दए चुकाईआ। मानव मानव मानस सब दा कर इत्फ़िाक, निफ़ाक दा देवे डेरा ढाहीआ। ईसा कहे मेरी दरोही मेरा उम्मत नाल होवे तलाक, मुहम्मद वास्ता रिहा पाईआ। मेरा कूक पुकारे कलाक, टक टक आवाज़ सुणाईआ। चार जुग दी शरअ रहिणी नहीं विच किताब, कुतबख़ाने रोवण मारन धाईआ। परवरदिगार सांझे यार महिबूब तेरे अग्गे इक अदाब, कदमां विच सीस झुकाईआ। जगत हुजरा रहे ना कोए महिराब, काअब्यां पए दुहाईआ। झगड़ा छिड़ना विच बग़दाद, बग़लगीर सज्जण संग रखाईआ। धुर कलमे दी सुणे ना कोए आवाज़, पैग़ाम जाणे ना कोए हक इलाहीआ। सदी चौधवीं चौदां तबकां खोल्हणा राज़, राज़क रहीम बेपरवाहीआ। अवतार पैग़म्बर गुरु जाणा जाग, सचखण्ड जोत जोत विच्चों प्रगटाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप हुक्मे अन्दर लग्गणी आग, प्रभ का भाणा मेट सके कोए ना राईआ। दीन दुनी दा बुझणा चराग़, दीवा गुल होए लोकाईआ। पेशीनगोईआं दा पूरा करे ख्वाब, ख्वाजा खिजर वेखे नैण उठाईआ। नेत्र खोल्हे आफ्ताब, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

६१६ २२

कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ करना खेल अगम्म, अवतार पैग़म्बर अगम्मढ़ी कार कमाईआ। हरख सोग रहे ना ग़म, चिन्ता जगत ना कोए जणाईआ। झगड़ा मेटणा काया माटी चम्म, चम्म दृष्टी देणी बदलाईआ। पवण स्वामी तकणा दम, कवण साह साह ध्याईआ। वैरागी हो के कवण रोवे छम्म छम्म, नीर सीर वहाईआ। कवण बेड़ा रिहा बन्नृ, इष्ट देव इक मनाईआ। कवण कहे धन्न धन्न, धन्न तेरी बेपरवाहीआ। कवण लेखा जाणे धुर दा कन्न, सरवण संग रलाईआ। कवण भटके विच मन, दहि दिशा उठ उठ धाईआ। कवण तड़फे आसा तृष्ना तम, हउमे हंगता नाल हल्काईआ। लेखा मंगे श्री भगवन, चुरासी फोले चाँईं चाँईंआ। अवतार पैग़म्बर गुरु अगली समझो गल्ल, भेव अभेदा दए खुल्लाईआ। जिस सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तुहाडे नाल कीता छल, वल छलधारी हो के आपणा हुक्म मनाईआ। की संदेशा दे के गया बावन बलि, कलयुग अन्तिम पड़दा लाहीआ। प्रगट होवे शाह सुल्तान (बख्शिंद), शाह पातशाह शहिनशाह नूर अलाहीआ। जिस ने सतिजुग सच चढ़ाउणा चन्द, नूर नूर करे रुशनाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला करे खेल विच (ब्रह्मण्ड, जगत जहान) जहालत वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगवत भगौती भगत भाग आपणा इक समझाईआ।

 ६२०

 २२

✪ २२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ रणजीत सिँघ दे घर फ़रीदकोट शहर ✪

सतिगुर शब्द कहे प्रभ उठाया नाम खण्डा, गुर अवतार पैग़म्बर तीर तरकश कंध ना कोए उठाईआ। पावे सार विच ब्रह्मण्डा, लोक परलोक वेखे थांउँ थाँईंआ। लहिणा देणा पूरा करे जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज लेखा दए मुकाईआ। सतिजुग साचा सति धर्म दए अनन्दा, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। कलयुग कूड़ कुकर्म रहिण ना देवे गंदा, तृष्ना मोह विकार हँकार लेखा दए चुकाईआ। अमृत रस निझर धार प्याए अगम्मी गंगा, गहर गम्भीर इक जाम प्याईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के छन्दा, आत्म परमात्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। पिछला लेखा पिच्छे सब दा लँघ, अवतार पैग़म्बर गुर अग्गे प्रभ आपणा हुक्म वरताईआ। दीन मज़्ब दा झगड़ा करे कोए ना बन्दा, ज़ात पात ना दए दुहाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सब दे होवे संगा, सगला संग बणाईआ। पर्दा लाह के ब्रह्म हंगा, गृह मन्दिर इक सुहाईआ। प्रकाश देवे बिना सूर्या चन्दा, जोत नूर डगमगाईआ। सच दवार दस्स के ठंडा, अग्नी तत दए बुझाईआ। जिस दा भेव पाए कोए ना पंडा, शास्त्र सिफ्त ना कोए सालाहीआ। ओह खेल करे सूरा सरबंगा, शाह पातशाह शहिनशाह आपणी दया कमाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को नाम जगत जहान वजाए मृदंगा, नव सत्त हर घट करे नाद शनवाईआ।

✪ २२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ कृपाल सिँघ दे घर पिण्ड गोलेवाल ज़िला बठिंडा ✪

सतिगुर शब्द कहे धुर खेल इललिल्ला बिसमिल्ला, बिस्मिल रूप सुणाईआ। नसीर फ़कीर रहिंदा सी नेत्र बिल्ला, अक्खीआं अक्खीआं नाल वटाईआ। चालीसा कढदा सी सदा चिल्ला, शिला जगत वाला वखाईआ। नौ हथ्थ उच्चा हुन्दा सी टिल्ला, बालू रेत नाल तपाईआ। थल्लयों आसण रखदा सी सिल्ला, जल इक्की सेर सुटाईआ। साढे तिन्न हथ्थ दी उठाई फिरदा सी सिला, विस्तर विस्तर नाल वड्याईआ। जिस वेले गोबिन्द आया शब्दी धार उस नूं मिला, निउँ निउँ सीस निवाईआ। हथ्थ ला के गोबिन्द चिल्ला, निगह असमान वल्ल उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता धुरदरगाहीआ। सतिगुर शब्द कहे खेल अगम्म न्यारा, फ़क्कर हक आवाज़ उठाईआ। गोबिन्द ज़िमीं वल्ल कीता इशारा, तीर मुखी नाल दबाईआ। फेर नेत्र नैण उग्घाड़ा, अर्शां तक्कया चाँईं चाँईंआ। फेर कूक के मारया नाअरा, तूं ही तूं ही राग अल्लाईआ। तेरा खेल सच्ची सरकारा, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। फ़कीर निउँ के करी निमस्कारा, चरण ढहि के आपणा आप मिटाईआ। दुहथ्थड़ मार के पिट्टया बौहड़ी तेरा हाढ़ा, हौके विच सुणाईआ। गोबिन्द रूप दरसाया ओह वेख अगम्मी लाड़ा, जिस दा नूर नज़र किसे ना आईआ। जिस दा हुक्म जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, टिल्ले पर्बत फिरे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। फ़कीर किहा मेरा सजदा, सद सद निमस्कारया। मैं परवरदिगार दा बरदा, बन्दा बाहरों नजरी आईआ। तूं खेल वखाया गोबिन्द मेरे घर दा, टिल्ले पर्बत उपर सोभा पाईआ। गोबिन्द झट कन्नों उस नूं फड़दा, चारों कुण्ट दिता भवाईआ। उठ वेख लहिंदा चढ़दा, काअबे परे अक्ख खुल्लाईआ। पर्दा लाहया परवरदिगार दा, सांझा यार दिता जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। गोबिन्द किहा वेख फ़क्कर, फ़ाक्यां तों बिना दयां जणाईआ। चौदां तबक तों परे मेरा चक्र, मुहम्मद बैठा ध्यान लगाईआ। जिस दी धार होणी टक्कर, झगड़ा ख़लक खुदाईआ। फ़कीर ने किहा गोबिन्द मैनूं खवा दे गुड़ शकर, सगन मुख लगाईआ। गोबिन्द ने उत्ते प्रेम दा छिड़क्या अतर, महक दिती महकाईआ। उहदी चोली दी कट के कतर, खण्डे नाल आपणे चरणां हेठ दबाईआ। फेर

लिख के दिता पत्र, फ़रमाना धुरदरगाहीआ। ओह लहिणा ढाई सतर, वद्ध घट ना कोए जणाईआ। फेर विंगी टेडी फड़ के लक्कड़, ज़िमीं विच दिती दबाईआ। जिथ्थे हुन्दे सी काने रक्कड़, फलीभूत दिता वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। गोबिन्द किहा ओ वेख फ़कीर अल्ला, आलमीन जणाईआ। गोबिन्द फड़ के पल्ला, पल्लू गल विच ल्या पाईआ। गोबिन्द ने सज्जे चरण दा वखाया तला, चरण चरण ल्या उठाईआ। जिथ्थे परवरदिगार वेख्या इकल्ला, चारों कुण्ट नजरी आईआ। फेर कूड़ी क्रिया वेख्या हल्ला, रौला दिसया ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। फ़कीर कहे मेरे हक नबी, गोबिन्द तेरी सरनाईआ। तूं आत्म धार तबी, तबीअत मेरी दे बदलाईआ। तेरे हथ्थ वस सभी, ख़ालक मख़लूक तेरी चतुराईआ। एह वेला मिलदा कदी, जुग चौकड़ी हथ्थ किसे ना आईआ। मैं झोली तेरे अग्गे अड्डी, ख़ाली रिहा डाहीआ। मेरा निशाना जावीं गड्डी, मेहर नज़र उठाईआ। खलोता हथ्थ बद्धी, सजदा सीस झुकाईआ। गोबिन्द हस्स के किहा ओह तक चौधवीं सदी, तेरा सदमा रिहा ना राईआ। परवरदिगार आवे नूर रब्बी, नूर नुराना वेस वटाईआ। जिस वेले दीन दुनी अग्ग होवे लग्गी, आबेहयात ना कोए प्याईआ। जगत धार वधी होवे बदी, धर्म दी धार ना कोए वखाईआ। नबीआं तों बाहर जिस वेले चढ़नी नूह नदी, लहर लहर नाल टकराईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं रहिणी नहीं गद्दी, गदागर होवे लोकाईआ। उस वेले आवे साहिब सूरा सरबगी, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। फ़क्कर कोल चढ़दयों आ गया बैरागी, आपणा रूप वटाईआ। गोबिन्द वेख के सोई सुरती जागी, नैण अक्ख खुल्हाईआ। मन रिहा मूल ना ग़ाज़ी, हउमा दिती मिटाईआ। अन्तर अन्तर रिहा अराधी, हिरदे विच वसाईआ। साहिब गोबिन्द मारी आवाज़ी, प्यार नाल कोल बहाईआ। किधर चलया पाँधी, भज्जया वाहो दाहीआ। ओधरों चढ़ के लहिंदिउँ आ गई आंधी, अंधेरा दिता बणाईआ। फ़क्कर ने तुक गाई वाह वाह दी, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। खेल खेली सच मलाह दी, बेड़ी बेड़े नाल मिलाईआ। उथे लोड़ रही ना किसे गवाह दी, शहादत इक दूजे दी आप भुगताईआ। ओधरों बछड़ी आ गई गाँ दी, ढाई साल दी उमर जणाईआ। ओधरों डार आ गई काँ दी, नौ उड के चाँईं चाँईंआ। ओधरों आवाज़ आ गई दुखी माँ दी, हावे पुत विच कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक प्रगटाईआ। गोबिन्द किहा सुण बैरागी, वैराग दे समझाईआ। उस ने किहा मैं बन्दा दाग़ी, अन्दर होई ना कोए सफ़ाईआ। वासना भटके वांग कागी, तृष्णा तृखा

ना कोए बुझाईआ। नाद सुणया ना कोए अनादी, आत्मक राग ना कोए जणाईआ। मनुआ होया बाग़ी, भज्जे वाहो दाहीआ। तृष्ना गई ना साधी, आसा पूर ना कोए वखाईआ। तेरे अग्गे वड्याई काहदी, निउँ निउँ सीस निवाईआ। फ़क्कर ने किहा एहदे कोल दौलत शहिनशाह दी, शाह हो के आप वरताईआ। एहदी धार अगम्मे मलाह दी, खेवट धुर दा सोभा पाईआ। साडी घड़ी दोहां दे दाअ दी, मिल के लईए लगाईआ। दोहां दी आवाज़ सांझी होई हां हां दी, हां हां विच मिलाईआ। घड़ी सुहञ्जणी होई चाअ दी, गोबिन्द मिल के ख़ुशी बणाईआ। जिस कारन वड्याई इस थाँ दी, पर्दा दईए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। गोबिन्द किहा वैरागी तेरा मरना होणा जग, तन रहिण ना पाईआ। फेर लवां सद्द, जन्म जन्म विच्चों वटाईआ। मेलां मेल नाल समरथ, लहिणा झोली पाईआ। फ़क्कर एथे रहिणा वस, जगह सके ना कोए बदलाईआ। जिस वेले आए साहिब अकथ, हरि करता धुरदरगाहीआ। दोहां दा सांझा बणे सथ्थ, सथ्थर इक वखाईआ। जे मंज़ूर उठा लओ हथ्थ, दोहां लए उठाईआ। चरणी डिग्गे ढह्ठ, गोबिन्द सीस निवाईआ। साहिब किहा हस्स, ख़ुशी नाल समझाईआ। बैरागीआ तूं फेर एथे जाणा वस, जिथ्थे आवे धुरदरगाहीआ। मेरे तीर दी मुखी तेरा धर्म निशाना जावे गड्ड, जिस दी जड़ ना कोए उखड़ाईआ। भाग लग्गे काया माटी हड्ड, नाड़ी नाड़ी डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर दवार इक वसाईआ। गोबिन्द किहा पुरख अकाल दया कमावेगा। दोहां बेघरयां दा घर वसावेगा। वैरागी जन्म जन्म दवावेगा। किरपा कर कृपाल प्रगटावेगा। सिर आपणा हथ्थ रखावेगा। समें अनुसार पिछला लहिणा झोली पावेगा। जगत धार तों बाहर वंड वंडावेगा। प्रगट हो सूरा सरबंग, गंढ जगत विच रखावेगा। तुं मेरा मैं तेरा दस्स के छन्द, आत्म परमात्म राग दृढ़ावेगा। तूं मेरे दवार सेवा करनी निशंग, सच सोहणी बणत बणावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म वरतावेगा। सतिगुर शब्द कहे एह किल्ला गोबिन्द दी निशानी, जो शब्द धार जणाईआ। जिथ्थे फ़क्कर मसल्ला रखदा सी मुसलमानी, सजदे विच सीस झुकाईआ। जिथ्थे बैरागी गोबिन्द करया सी ध्यानी, चरण कँवल सरनाईआ। ओह टिल्ले वाली खेल महानी, जगत सोभा पाईआ। जिस नूं जाणे जाण जाणी, जानणहार धुरदरगाहीआ। बख्शे माण माण प्रानी, पारब्रह्म प्रभ हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। किल्ला कहे मैनूं एथे देणा गड्ड, निशानी लओ लगाईआ। गोबिन्द वसे सदा संग, सतिगुर बेपरवाहीआ। अग्गे चाढ़े साचा रंग, रंगत दए वखाईआ। माणस जन्म ना होवे भंग, तन वजूद मिले वड्याईआ। मनसा पूरी कर के मंग, तृष्ना दए

बुझाईआ। चाढ़ के नूरी चन्द, नूर करे रुशनाईआ। फ़क्कर कहे मैं बण जाणा हुण मलंग, भूमिका देणी तजाईआ। मैं एथों भज्जणा गुरमुख दवारे जाणा जिथ्थे चौदस नूं बणना नूरी चन्द, सितार नाल मिलाईआ। फिर मैनूं पवे ठंड, गोबिन्द दरस करां चाँईं चाँईंआ। उस तों बाद दीन दुनी दा वेखां जंग, चढ़दा लहिंदा आपणा पन्ध मुकाईआ। मेरा शुकराना गोबिन्द दा वेख्या चिल्ला तीर कमंद, कमान ध्यान लगाईआ। एह पुराणी वंड, पिछली चली आईआ। अग्गे सोहणा बणया संग, सगला संग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कुलवन्त कौर कोलों पिछली पवाई गंढ, जो किल्ला लै के आई किल्ले तों किल्ा गुरमुख दए बणाईआ।

✪ २२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ भान सिँघ दे घर पिण्ड गोलेवाल ज़िला बठिंडा ✪

६२४
२२

सतिगुर शब्द कहे प्रभ मेटणा कूड़ कुकर्म, कलकाती कल रहिण ना पाईआ। झगड़ा रहिण नहीं देणा वरन बरन, इक्को रंग देणा रंगाईआ। एकँकार बख्शणी इक्को सरन, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। तुक अगम्मी सारे पढ़न, आत्म परमात्म राग अल्ाईआ। मंज़ल हक दी भगत सुहेले चढ़न, पाँधी आपणा पन्ध रखाईआ। कूड़ कुकर्म सारे डरन, सिर सके ना कोए उठाईआ। पुरख अकाला खोल्े हरन फरन, हरिजन निज नेत्र अक्ख खुल्ाईआ। मार्ग देवे तरनी तरन, तारनहार दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, करनहार प्रभ रघुराईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ आपणी प्रगटाउणी कला, अकल कलधारी खेल खिलाईआ। दूई द्वैत मेटणा सल्ला, नाता मुहब्बत विच जुड़ाईआ। धाम दस्सणा निहचल अटला, इक्को इष्ट देणा वखाईआ। भाग लगा के काया माटी खल्ला, ख़ालक ख़लक देणा उठाईआ। अंधेरा रहिण नहीं देणा डूंघी डल्ला, निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ वरतणा आपणा भाणा, अवतार पैग़म्बर गुर संग वखाईआ। तख्तों लाह के राजा राणा, तख्त निवासी वेख वखाईआ। किरपा करे माण निमाणा, निमाणयां होए सहाईआ। हर घट बण के जाणी जाणा, पर्दा ओहला दए उठाईआ। सोहँ सो दा दस्स के गाणा, गहर गम्भीर मेला मेले सहिज सुभाईआ। सुरत शब्द मिला के हाणी हाणा, सेज सुहञ्जणी इक सुहाईआ। जोती जोत पहन के बाणा, पारब्रह्म प्रभ आपणा हुक्म वरताईआ। भगत सुहेले जन वेखे विच जहाना, जहालत विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। अमृत रस निझर देवे पीणा खाणा, तृष्ना तृखा कूड़

६२४
२२

बुझाईआ। सदी चौधवीं रहिण देवे ना अंधेरी शामा, शमां नूर जोत करे रुशनाईआ। निहकलंक बण महिदी अमामा, कल आपणी कल वखाईआ। मज़्ह़ब दा रहे ना कोए गुलामा, शरअ ज़ंजीर दए तुड़ाईआ। हक हक वजा दमामा, दामनगीर होए सहाईआ। अल्ला हू अन्ना हू आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म धार दस्स के गाणा, कलाम कलमा इक्को इक प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगवन हो के भाग हिस्सा सब दा वेख वखाईआ।

✪ २२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ हज़ूरा सिँघ दे घर पिण्ड गोलेवाल ज़िला बठिंडा ✪

सतिगुर शब्द कहे प्रभ मालक इक स्वामी, सति सतिवादी सोभा पाईआ। आदि जुगादि दा बानी, जुग जुग हुक्म वरताईआ। पातशाह लासानी, बेअन्त इक अख्वाईआ। कलमा दए पैग़ामी, संदेसा धुरदरगाहीआ। मिटे अंधेर शामी, शमां नूर कर रुशनाईआ। विरोले अठ्ठ सठ्ठ पाणी, तीर्थ ध्यान लगाईआ। झगड़ा मिटे खाणी, चारे रंग रंगाईआ। मंज़ल दए रुहानी, रूह बुत करे सफ़ाईआ। बख्शे पद निरबाणी, निरवैर हरि रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार भुगताईआ। सतिगुर शब्द कहे गम्भीर गहरा, गवर इक अख्वाईआ। जगत जहान वेखे बहिरा, सोया सर्ब उठाईआ। प्रेम दी बख्शे लहरा, धार इक वखाईआ। कलयुग मेटे कहरा, सच सुच प्रगटाईआ। नगर वसाए शहिरा, जगत दवार वज्जे वधाईआ। माया ममता गंवाए ज़हिरा, अमृत रस इक चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभू डूंघा सागर, सिन्ध धार वहाईआ। खेल वेखे काया गागर, पर्दा ओहला आप उठाईआ। चुरासी बणे सौदागर, वणज करे थांओं थाँईंआ। प्रेमीआं देवे आदर, अदरश इक प्रगटाईआ। कर्म करे उजागर, दुरमति मैल धुआईआ। दीन दुनी दी बदले आदत, ममता मोह चुकाईआ। दस्से नाम इबादत, कलमा इक पढ़ाईआ। सच देवे ल्याकत, मन का मणका आप भवाईआ। मेट अंधेरी शामत, चन्द नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दी सच देवे न्यामत, निम्म विख रहिण कोए ना पाईआ।

✪ २२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ निहाल कौर दे गृह पिण्ड गोलेवाल ज़िला बठिंडा ✪

जन भगतां हरि आप माई बाप, आप आपणी दया कमांयदा। अन्तर मेट अंधेरी रात, साचा नूरी चन्द चमकांयदा। भेव खुल्हा के आपणा आप, पड़दा ओहला आप उठांयदा। मेट मिटा के तीनो ताप, त्रैगुण आपणा रंग रंगांयदा। आत्म परमात्म बण के सज्जण साक, सगला संग रखांयदा। बजर कपाटी खोल्ह के ताक, अंध अंधेरा दूर करांयदा। जुग जन्म दा पूरा कर भविक्ख्त वाक, लख चुरासी विच्चों आप उठांयदा। पुरख अकाला बण के साथ, संगी हो के आपणा संग बणांयदा। जो लहिणा देणा दस्स के गया त्रैलोकी नाथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति दा पर्दा आप उठांयदा। जन भगतां प्रभ साचा संगी, सगला संग निभाईआ। आत्म धार देवे रंगी, रंगत इक्को इक चढ़ाईआ। लेखा रहिण ना देवे मंदी, वडभागी भाग बणाईआ। नेत्र अक्ख खोल्ह के अंधी, लोचन इक करे रुशनाईआ। जोत नूर चाढ़ के चन्द नौचन्दी, सति सरूप दए वखाईआ। कर्म कांड दी तोड़ पाबन्दी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपणा घर दरसाईआ। जुग जुग दी आयू कर के लम्बी, जन भगतां देवे माण वड्याईआ। आत्म सेज सुहा पलँघी, सिंघासण आसण इक रखाईआ। धार रहिण ना देवे दोरंगी, दुतीआ भाउ मिटाईआ। पड़दा लाह के विच वरभण्डी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा इक वड्याईआ। जन भगतां प्रभ बख्शे जोत, बख्शणहारा वड्डी वड्याईआ। मन बुद्धी दी मेटे सोच, समझ समझ विच्चों बदलाईआ। पूरी करे मनसा लोच, तृष्ना दए गंवाईआ। लेखा जाण दीप पुष्कर करौच, जम्बु आपणा रंग रंगाईआ। जिथ्थे सुरती सुरत सके ना पहुंच, शब्दी शब्द नाल कुड़माईआ। भाग लगा के काया कोट, कूड़ कुटम्ब दा डेरा ढाहीआ। सति दी सच लगाए चोट, चोटी चढ़ के वेख वखाईआ। जन भगतां करनी पए ना खोज, खोजत खोजत आपणा मेल मिलाईआ। सति सच दा दे के बोध, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। जन भगतां प्रभ पूरी करे मनसा, मनसा मन ही मांहि समाईआ। दे वड्याई काग हँसा, हँस काग ल्ए बणाईआ। सतिजुग बणा के साचा बंसा, बंसाँवली आपणी दए वखाईआ। मन हँकारी मार के कंसा, हउमे गढ़ तुड़ाईआ। झगड़ा मुका के जीव जंता, जागरत जोत करे रुशनाईआ। बोध अगाधा बण के पंडता, सिख्या देवे थांउँ थाँईंआ। लेखा रहिण ना देवे मन का, मन का मणका दए भवाईआ। प्रकाश दे के जोती चन्न दा, जोती जोत डगमगाईआ। झगड़ा रहे ना आत्म परमात्म संन्ह दा, विचला पैंडा पन्ध मुकाईआ। सहारा रहे ना सरवण कन्न दा, सरोत तों परे करे शनवाईआ। मेल मिला अगम्मे राम दा, सीता सति नाल प्रनाईआ। दरस करा के

साचे काहन दा, राधा रंग दए वखाईआ। भण्डारा बख्श सतिगुर चरण ध्यान दा, चरणोदक इक्को जाम प्याईआ। निशाना मार अणयाले बाण दा, आर पार खेल खिलाईआ। खेल कर गुण निधान दा, गुणवन्ता होए सहाईआ। लख चुरासी विच्चों मात पहचानदा, बेपहचान पर्दा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवार देवे माण वड्याईआ। जन भगतां बख्शिश करे आप, हरि आपणी दया कमाईआ। कोट जन्म दे मेट के पाप, दुरमति मैल धुआईआ। सज्जण बण के साथ, सगला साथ बणाईआ। लहिणा देणा देवे हाथ, हथ्थो हथ्थ मुकाईआ। पन्ध मुका पृथ्मी आकाश, पातालां डेरा ढाहीआ। मेट अंधेरी रात, सच चन्द चमकाईआ। पुछणहारा बातन बात, बिन रसना जेहवा बोल बुलाईआ। सच दवार कर प्रभात, सँध्या लेखा रहे ना राईआ। चरण प्रीती दे विश्वास, विषयां तों बाहर कढ्ढाईआ। एथे उथे दो जहानां रखे पास, पुश्त पनाह हथ्थ रखाईआ। कलयुग अन्तिम गुरमुखां दे शाबाश, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां बण के पित मात, पिता पूत एका धागा एका सूत, एका ओढण जगदीश आपणा आप जणाईआ।

६२७ २२ निहाल कौर लालो दी भैण सी वलों फुफ्फी, नानक धार मिली वड्याईआ। जिस रोटी पकाई सी सुक्की, खुशीआं विच खुशी बणाईआ। आटा गुन्निआ सी नाल मुकी, दो हथ्थां नाल दबाईआ। प्रेम विच अन्दरे अन्दर इक गल्ल पुछी, सुरत विच्चों सुरत प्रगटाईआ। नानक कदी साडी वात पुच्छी, मेहर नज़र नाल तराईआ। फेर रो पई उच्ची भुब्बीं भुब्बीं, हाए उफ़ कर दुहाईआ। बिरध अवस्था लक्कों सी कुब्बी, हथ्थ पिट्ठ उत्ते टिकाईआ। प्यार विच किहा सतिगुर तेरा दरस हुन्दा जुग जुगीं, माणस जन्म मिले वड्याईआ। झट नानक दी शब्द धार ओथे पुज्जी, संदेशा दिता सुणाईआ। औह वेख खेल नहीं लुकी, हरि करता आप कराईआ। जिस वेले कलयुग औध पुज्जी, पूजा मुके जगत लोकाईआ। सृष्टी दी भृष्ट होवे बुद्धी, अक्ल चले ना कोए चतुराईआ। माण रहे ना वदी सुदी, अमावस पुन्यां दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नानक धार किहा अक्खां छेती मीट, उतों मुट्ठीआं नाल दबाईआ। ज़ोर दी मार चीक, रो के दे वखाईआ। फेर प्रभू दी रख उडीक, जो दाता धुरदरगाहीआ। जिस दे विच हक तौफ़ीक, परवरदिगार नूर अलाहीआ। तेरी आशा मनसा पूरी करे उम्मीद, तृष्ना वेख वखाईआ। नाल खुशी नाल मारी लीक, लाईन पिछली दिती बदलाईआ। प्रगट हो के लाशरीक, शरक्त वेखे थांउँ थाँईंआ। हक सति दी जाणे तबलीक,

संदेशा देवे अगम्म अथाहीआ। तेरे प्यार दी बन्ने प्रीत, प्रीतम इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा पूर कराईआ। चुल्हे हेठ अग्ग सी बलदी, ज़िमीं असमान करे रुशनाईआ। सरगुण नानक आ गया जल्दी, आपणा पन्ध मुकाईआ। ख़बर नहीं किसे घड़ी पल दी, पलकां दे पिच्छे रिहा समझाईआ। ख़बर सुणाई जीवण हल्ल दी, मसला दिता दृढ़ाईआ। जेहड़ी कल्ल ख़बर संदेशा मैनूं घल्लदी, पैग़ाम रही सुणाईआ। उस दी खेल कलयुग कल दी, कलि कल्की वेस वटाईआ। ओने चिर नूं लालो दी भैण फुलका थल्लदी, पक्का कच्चे नाल वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। लालो दी हस्स के किहा हमशीरा, निउँ के सीस निवाईआ। सतिगुर नानक घर नहीं कोई हलवा सीरा, सुक्की रोटी दिती वखाईआ। तूं साहिब पीरन पीरा, मालक धुरदरगाहीआ। वसणहारा हस्त कीड़ा, कीटां विच समाईआ। सिर तों लाह के आपणा लीड़ा, चरणां विच दिता सुटाईआ। गोबिन्द शब्द शब्द गोबिन्द प्रीती तकी अख़ीरा, आख़र वेख वखाईआ। नानक कहे मैं बदल देवां तकदीरा, तदबीर आपणी इक जणाईआ। फेर वखाई जो धार तस्वीरा, तसव्वर दिता कराईआ। जिस वेले मातलोक प्रगट होवे तेरा लालो वीरा, जन्म तेरे नाल जन्म विच्चों मिलाईआ। कर्म कर्म दी कट के भीड़ा, दु:ख दर्द दा डेरा ढाहीआ। सतिगुर हो के शब्द दी धार तेरे कोल डाहवेगा पीढ़ा, सन्मुख हो के सोभा पाईआ। प्रेम दी धार दस्स वतीरा, पिछला लहिणा दए चुकाईआ। उस दे नैणां वग गया नीरा, हन्झूआं हार बणाईआ। झट प्रगट हो के किहा कबीरा, कबरां तों बाहर सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक दया कमाईआ। कबीर किहा नानक हो कृपाल, आपणी दया कमाईआ। एह बुढ्ढे नढ्ढे सारे तेरे बाल, बच्चे लोकमात अख्वाईआ। लहिणा वेख शहिनशाह कंगाल, ग़रीब निमाणयां गले लगाईआ। चुरासी विच्चों सुरत संभाल, दीनां अनाथां दया कमाईआ। नानक हस्स के किहा तेरा पूरा होए सवाल, लेखा अवर रहे ना राईआ। जिस वेले कलयुग प्रगट होए पुरख अकाल, मेरा मालक धुर दा माहीआ। एस दी सुरत लए संभाल, सम्बल बहि के आपणा हुक्म दए वरताईआ। एसे फुलके नूं परोस के खाए विच थाल, हथ्थां तेरयां नाल पकवाईआ। जगत जुग तों वक्खरी करके चाल, भेव अभेदा आपणे अन्दर छुपाईआ। मेहरवान हो के दीन दयाल, दयानिध आपणी दया कमाईआ। सो वेला वक्त निहाल कौर ल्या संभाल, सोहणा आपणा वक्त जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण करनहारा संभाल, साहिब सतिगुर आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ २७ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ गुरमीत सिँघ दे गृह पिण्ड फराला ज़िला जलन्धर ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण होई परेशानी, परेशानी विच जणाईआ। चार जुग दी कूक पुकारे कानी, कायनात विच दृढ़ाईआ। अक्खर तकण नाल ध्यानी, निगह नैण उठाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले कर मेहरवानी, मेहरवान महिबूब तेरी सरनाईआ। तूं आदि जुगादि जाण जाणी, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। बिना शब्द गुरु तों रिहा कोए ना बानी, बाण अणयाला तीर ना कोए लगाईआ। नव नौ चार आई हानी, हालत विगड़ी जगत लोकाईआ। दीन दुनी अन्तर निरन्तर होई बेईमानी, बेवा रूप सर्ब दरसाईआ। मस्तक नूर रिहा ना किसे पेशानी, पेशतर तेरा पड़दा ना कोए उठाईआ। दरोही दरोही सारे मन दी करन ग़ुलामी, शरअ ज़ंजीर ना कोए तुड़ाईआ। सदी चौधवीं सब दी होई बदनामी, बदी दा लेखा दे मुकाईआ। धुर संदेशा दे पैग़ामी, पैग़म्बरां तों परे कर पढ़ाईआ। तेरा इक्को कलमा होए कलामी, इक्को शब्द नाम शनवाईआ। कूड़ कुकर्म दी मेट निशानी, निशाना आपणा इक दरसाईआ। साडी अर्ज़ बेनन्ती मानीं, मानव मनुष मानुख दे समझाईआ। हुण पिछली कथा कहाणी काहदी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभ तक लै आपणा लेख, लेखक रहे दृढ़ाईआ। सन्मुख हो के कहे दस दशमेश, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। सवाधान कर के सेज सुहञ्जणी शेष, बाशक बल ना कोए वड्याईआ। साडी सब दी इक आदेस, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले सच धर्म दा दे संदेश, सँध्या सरघी वंड ना कोए वंडाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट कलेश, कर्म कांड दा पन्ध मुकाईआ। लेखा रहे ना मुसायक मुल्ला शेख़, पंडत पांधे ना कोए चतुराईआ। घट घट अन्दर नज़री आ नेत नेत, निज नेत्र कर रुशनाईआ। कूड़ कल्पना करदे खेत, खण्डा खड़ग नाम चमकाईआ। लहिणा देणा पूरा कर विष्न ब्रह्मा शिव महेष, गणपति अक्ख खुल्हाईआ। तूं आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी इक नरेश, नर नरैण तेरी सरनाईआ। जिस कारन गोबिन्द रखाए मुंड उत्ते केस, तन वजूद सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू वेख आ नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। सब दा लेखा कर तस्दीक, शहादत शब्द धार भुगताईआ। तेरी चार जुग रखी उडीक, बिन नेत्र नैण अक्ख उठाईआ। कलयुग अन्तिम सांझी कर प्रीत, प्रीतम आपणा रंग रंगाईआ। दीन मज़्हब दा रहे ना कोए शरीक, लाशरीक तेरी सरनाईआ। इक्को कलमा दस्स हदीस, इक्को नाम सच पढ़ाईआ। त्रैगुण तों कर अतीत, त्रैभवण धनी आपणा पड़दा आप चुकाईआ। झगड़ा रहे ना मन्दिर मसीत, गुरदवार इक वखाईआ। जिथ्थे वसे साहिब अतीत, गृह मन्दिर कर

रुशनाईआ। झगड़ा रहे ना ऊच नीच, ज़ात पात ना कोए लड़ाईआ। ठाकर स्वामी होणा मीत, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्सणा गीत, सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ। रंग रंगाउणा हस्त कीट, कीट कीटां दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार बेपरवाहीआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण पुरख अकाल वेख लै नेड़े, नेरन नेरा ध्यान लगाईआ। दीन मज़्ब मेट दे झेड़े, झगड़ा दे गंवाईआ। भाग लगा के काया खेड़े, खिड़की अन्दरों देणी खुल्हाईआ। मेल मिलाउणा गुरु गुर चेरे, सुरती शब्द संग मिलाईआ। भगतां अन्दर बख्शणे चाउ घनेरे, हउमे रोग देणे गंवाईआ। पर्दा लाह के तेरे मेरे, परमात्म आत्म आत्म परमात्म विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सदके वारी घोल घुमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण पुरख अकाले आ जा कोल, घर घर विच डेरा लाईआ। नाम शब्द सुणा ढोल, अनहद नाद मृदंग वजाईआ। अमृत रस चखा दे पाहुल, निझर झिरना इक झिराईआ। उलटा कर के नाभ कँवल, कँवला इक खुल्हाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सांझा दस्स के बोल, अनबोलत आपणा राग दृढ़ाईआ। जन भगतां अन्दर जाणा मौल, मौला हो के सोभा पाईआ। दे वड्याई उपर धौल, धरनी धरत धवल निउँ निउँ लागे पाईआ। लेखा पूरा करके इकरार कौल, वक्त सुहञ्जणा दे वड्याईआ। वेखीं सदी चौधवीं ना मारी सतिगुर रोल, अछल छलधारी आपणी कार भुगताईआ। सच दवारा एकँकारा इक्को देणा खोल्ह, ख़ालक ख़लक पड़दा देणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, साहिब स्वामी अन्तरजामी मेहर नज़र इक उठाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण जन भगतो प्रभ नूं देवो सद्दा, अन्तर आवाज़ लगाईआ। तुहाडे प्रेम अन्दर बध्धा, जुग जुग आवे चाँईं चाँईंआ। सम्बल सुहावे आपणी जगह, साढे तिन्न हथ्थ वड्याईआ। दर्शन देवे उपर शाह रगा, नौ दवारे डेरा ढाहीआ। त्रैगुण बुझाए अग्नी अग्गा, अमृत मेघ बरसाईआ। गुरमुख हँस बणाए कग्गा, कागों हँस आप उडाईआ। सच दवार जन भगतां आए भज्जा, पूरब पन्ध मुकाईआ। बिना भगतां तों होर किसे ना लभ्भा, खोज्जयां हथ्थ ना कोए लगाईआ। प्रेम प्रीती प्यार दा दस्सो मज़ा, मज़ाक छुट्टे ख़लक खुदाईआ। क्यों तुसीं चलदे विच उस दी रज़ा, जो राज़क रिज़क रहीम नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणी कार कमाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण भगत सुहेले करो जल्दी, अन्तर अन्तर अन्तष्करन ध्यान लगाईआ। चार कुण्ट अग्नी वेखो बलदी, बलि बावन धार दए गवाहीआ। हउमे हंगता सृष्टी दृष्टी जाए सल दी, तन वजूद पार कराईआ। किसे नूं समझ नहीं घड़ी पल दी, की करता हुक्म वरताईआ। जिस खेल खिलाउणी तीर्थ अठ्ठ सठ्ठ जल दी,

समुंद सागर दए उलटाईआ। उस दी खेल अछल अछल दी, वलछलधारी आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। जन भगत कहिण साडा साहिब साचा मीत, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। जिस ने कलयुग विच सतिजुग बदल दिती रीत, रीतीवान होया सहाईआ। जगत वासना विच्चों कर अतीत, त्रैगुण दा डेरा ढाहीआ। आत्म परमात्म ला प्रीत, घर घर बैठा सोभा पाईआ। शब्द शहादत कर तस्दीक, मोहर आपणा नाम वखाईआ। इक्को रंग रंगा के हस्त कीट, ऊचां नीचां पन्ध चुकाईआ। काया कर के ठांडी सीत, अग्नी तत गंवाईआ। मन कल्पणा कर के भय भीत, भाण्डा भरम दिता भनाईआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान सच प्यार दी बख्शिश कर बख्शीश, रहमत हक हक वरताईआ। धुर दा कलमा दरस हदीस, हाज़र हज़ूर करी पढ़ाईआ। साडा साहिब मालक जगदीश, जगदीशर घर घर साचे डेरा लाईआ। जिस दा लेख बीस इकीस, इकीस इकीसा इक अख्वाईआ। एका छत्र झुलाए सीस, छत्रधारी नूर अलाहीआ। दो जहानां लए जीत, हार विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। जन भगत कहिण प्रभ आया भगत दवार, गुरमुख गृह सोभा पाईआ। मेल मिलाया विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी सीस निवाईआ। तकण पैग़म्बर गुर अवतार, बिन नैणां नैण उठाईआ। भगतां मिल गया सांझा यार, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दे बणे रहे ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सीस निवाईआ। सो साहिब सुल्तान नौजवान मर्द मर्दान कलि कल्की लए अवतार, जोती जाता पुरख बिधाता आपणी कल प्रगटाईआ। सम्बल बैठा धाम न्यार, सचखण्ड बैठा निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। सो साहिब सुहेला इक अकेला पावे सार, महासार्थी आपणी कार कमाईआ। मित्र प्यारा बण के यार, यार याराना वेख वखाईआ। गुरमुख गुरसिख दे दीदार, गुरमीत गुरदेव दया कमाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु वेख लओ खुशीआं नाल झाती मार, झाकी इक्को वार जणाईआ। जिस नूं बेअन्त बेअन्त बेअन्त कहि के आए पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। सो कलि कल्की लए अवतार, अनक कलधारी आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शाह पातशाह शहिनशाह सच्ची सरकार, सच सच सच आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ २८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ चरण कौर दे गृह पिण्ड फराला ज़िला जलन्धर ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ अबिनाशी अचुते, अलख अगम्म अगोचर तेरी बेपरवाहीआ। सच दवार तेरा प्रकाश वेख्या असुते, आदि अन्त कहिण कोए ना पाईआ। नाड़ी तत काया दिसे ना बुते, ख़ाकी ख़ाक ना वंड वंडाईआ। दिवस रैण मास बदले कोए ना रुते, घड़ी पल वंड ना कोए वंडाईआ। जागरत रूप दिसे कोए ना सुत्ते, आलस निंद्रा ना कोए वड्याईआ। जनणी जणे कोए ना कुख्खे, जणेंदी बणे कोए ना माईआ। असीं सारे दुलारे तेरे सुते, पिता पूत तेरी वड्याईआ। कर बेनन्ती रहे पुछे, बिना सीस सीस जगदीश झुकाईआ। जुग चौकड़ी तेरे भेव रहे क्यों लुके, पर्दा सक्या ना कोए उठाईआ। दीन दुनी इक धार होई ना मुट्ठे, सगला संग ना कोए बणाईआ। क्यों लोकमात असीं जांदे रहे लुट्टे, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। क्यों दीन मज़्हब दे गाने बध्धे गुट्टे, जुग चौकड़ी साचा सगन मनाईआ। क्यों मनुसां अन्दर पाई फुट्टे, तेरा नाम कलमा करे जुदाईआ। क्यों ना निरगुण धार रूप जुटे, जोड़ी तेरे नाल वखाईआ। क्यों धरनी धरत धवल पाँधी हो के पन्ध ना मुके, मुकम्मल कार ना कोए कमाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी मेहरवान महिबूब क्यों ना तुट्ठे, मेहर नज़र इक उठाईआ। क्यों निरगुण सरगुण आपणा नाम जपाया बुल्ल्हां बुट्टे, रसना जेहवा नाल समझाईआ। क्यों भेव खुल्ल्हया ना तेरा कूटे, कुटीआ मन्दिर ना कोए रुशनाईआ। उठ वेख कलयुग अन्तिम मानव हुल्ले बूटे, पत्त टहिणी रहिण कोए ना पाईआ। सच प्रेम लए कोए ना झूटे, शब्द हुलारा ना कोए रखाईआ। सब दे काया मूधे होए ठूठे, अमृत रस ना कोए भराईआ। कल्पणा विच होए झूठे, हंगता नाल रखाईआ। रस पाए ना कोए अनूठे, विख अन्दरों ना बाहर कढ्ढाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण तेरे धर्म दवार लग्गे साडे अंगूठे, अंगुष्त रहे वखाईआ। झगड़ा मेट काया पंज भूते, अनभव आपणा पड़दा लाहीआ। लेखा रहे ना इश्क माशूके, आशिक इक्को रंग रंगाईआ। साडी अन्तर अन्तर कूके, दरोही दरोही तेरा नाम खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरे अग्गे मंग मंगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण तेरा वेख्या अजब टिकाणा, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। छप्पर छन्न ना कोए मकाना, दीआ बाती ना कोए रुशनाईआ। पवण पाणी ना कोए निशाना, अप तेज वाए वंड ना कोए वंडाईआ। ना कोई सूर्या चन्द दिसे निशाना, मण्डल मण्डप ना कोए रखाईआ। ना कोई सीआ ना कोई रामा, कान्हा बंसरी धुन ना कोए शनवाईआ। ना पैग़म्बर पढ़े कलामा, सजदा सीस ना कोए निवाईआ। ना कोए मन्त्र सतिनामा, सतिगुर शब्द ना कोए शनवाईआ। ना कोए फ़तिह डंक वज्जे महाना, जै जैकार ना कोए वखाईआ। ना कोए तन वजूद दिसे महिमाना, सरगुण मेल ना कोए

मिलाईआ। ना कोए राग नाद तराना, डौरु डंक ना कोए वजाईआ। ना कोई तीर्थ तट इश्नाना, जलधार ना कोए वहाईआ। ना कोई ज़िमीं ना कोए असमाना, तबक सबक ना कोए पढ़ाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले तेरा इक्को नूर जोत जोत प्रधाना, एकँकार इक्को सोभा पाईआ। मेहरवान महिबूब कलयुग अन्तिम वेख मार ध्याना, निगह निगह विच्चों बदलाईआ। सच प्यार दा रहे ना कोए पैमाना, पैमाइश कर ख़लक खुदाईआ। हाहाकार मन कल्पणा करे तमामा, तृष्ना तृखा ना कोए बुझाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी निरगुण धार पहनणा बाणा, बनवासी हो के आपणा हुक्म वरताईआ। तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण जाणी जाणा, जानणहार इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सरूप सचखण्ड निवासी साहिब सतिगुर सच्चे सुल्ताना, सुत दुलारे परवरदिगारे सांझे यारे दर इक्को मंग मंगाईआ।

✪ २८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ मुणशा सिँघ दे गृह पिण्ड फराला ज़िला जलन्धर ✪

६३३ ६३३

२२ २२

अवतार पैग़म्बर गुर वेखो आपणा अबिनाशी अचुता, सतिगुर शब्द रिहा सुणाईआ। जिस ने लोकमात तुहानूं बणाया लाडले पुत्ता, सुत दुलारे कहि के दिती वड्याईआ। आपणी सिफ्त दीआं दे के दो दो तुकां, नाम कल्मयां विच फसाईआ। चार जुग दे शास्त्रां दा दे के रुक्का, ग्रन्थां रूप वटाईआ। सिफ्त करवा के नाल मुखां, ढोले लए पढ़ाईआ। तुहानूं जन्म दवा के मात दी कुख्खा, तन वजूद नाल सुहाईआ। आप बण के सब तों उच्चा, उच्च अगम्म आपणा नाम समझाईआ। दीन दुनी दी फेर के गली कूचा, गृह गृह दिता भवाईआ। इशारा दे के चार कूट दी कूटा, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण वंड वंडाईआ। अन्तिम वेखो सारे सब दा पैंडा मुका, बाकी नज़र कोए ना आईआ। दीन दुनी दी धार तुहाडा संसार होया रुक्खा, प्रेम प्रीत ना कोए निभाईआ। सब दा वक्त अन्त दा पुज्जा, पूजणयोग ना कोए वखाईआ। अन्तिम मेटे कल कलेश कलयुगा, कलि कल्की खेल खिलाईआ। नाम कलमे दा अग्गे लैण ना देवे भुग्गा, भोग सब दा देवे पाईआ। इक्को सतिगुर शब्द कर के उग्घा, उगण आथण डंक वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहिणा देणा वेखे उपर बसुधा, धरनी धरत धवल ध्यान लगाईआ।

✪ २८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ चरणो दे गृह पिण्ड फराला ज़िला जलन्धर ✪

अवतार पैग़म्बर गुर वेखो आपणा पारब्रह्म, सतिगुर शब्द शब्द शनवाईआ। जिस ने जुग चौकड़ी तुहाडा वन्डया कर्म, करनी दीनां मज़्बां वाली जणाईआ। झगड़ा पा के माटी चर्म, चम्म दृष्टी विच हल्काईआ। शरअ दा पा के भरम, शरीअत विच भरमाईआ। मज़्ब दा दे के जरम, जन्म दिता बदलाईआ। हिस्सा वंडा के वरन, बरनां गंढ पवाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख विरले भगत सुहेले बख्श आपणे चरण, चरणोदक मुख चुआईआ। सच दवार बख्श के सरन, सरनगति इक वखाईआ। तुहानूं लोकमात सब नूं पाया पढ़न, मक्तब इक्को इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच हुक्म इक सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर वेखो पुरख अकाल आपणा बापू, सतिगुर शब्द डंक वजाईआ। जिस दे जुग चौकड़ी जपे जापू, सिफ्तां वाले ढोले गाईआ। ध्यान लगाया दिवस रातू, रैण सबाई खोज खुजाईआ। किसे नूं मदि प्याई किसे दे मुख लगाया तम्बाकू, तमां दी धार विच वखाईआ। किसे नूं छुरी फड़ाई किसे फड़ाया चाकू, चक्र विच सर्ब रखाईआ। किसे नूं सांत बख्श्या किसे नूं बणाया डाकू, धाड़े मज़्बां वाले लगाईआ। ओह वेख अन्तिम सब दी डोरी काटू, कटाक्ष आपणा नाम रखाईआ। ओस दे साहमणे सन्मुख हो के केहड़ा बोलू केहड़ा करू टाकू, टाक करन वाला नज़र कोए ना आईआ। जिस ने ज़िमीं असमान भवाए वांग लाटू, दिवस रैण नज़र कोए ना आईआ। उस दा जुग चार कोई समझ ना सक्या जादू, भेव सक्या ना कोए खुल्हाईआ। कोटन कोटि तड़फा के मारे साधू, सूफ़ीआं खल्ल लुहाईआ। फिर वी तुसीं उस नूं कहिंदे माधव माधू, मधुर धुन शनवाईआ। जिस ने तुहानूं बणा के आगू, पंजां तत्तां नाल दिता लड़ाईआ। हुण सारे दस्सो की आपणी काढ काढू, नवीं धार समझाईआ। किस बिध सतिगुर साजणा साजू, सहिज दयो प्रगटाईआ। जिस प्रभू दा हथ्थ पैर नक्क कन्न नहीं कोई बाज़ू, बाजां वाल्या की आपणा खेल खिलाईआ। गोबिन्द कहे मेरा पिता पुरख अकाल इक्को आपणा हुक्म करेगा लागू, दूजा शस्त्र ना कोए उठाईआ। हुक्मे अन्दर सृष्ट सबाई दागू, दग़ा फ़रेब दा डेरा ढाहीआ। भगत सुहेला भगवन हो के आ जाऊ आवण जावण आपणी कार कमाईआ। सदी चौधवीं अन्त कन्त भगवन्त सब नूं तोले नाम कन्ढे तराजू, तक्कड़ इक्को हथ्थ उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दर रिवाजू, राह इक्को इक वखाईआ। दीन मज़्ब दा बदल समाजू, सच दवार इक प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्णूं भगवान, एका नाम धार वजाए रबाबू, सितार असुते सब दी दए हिलाईआ।

✪ २८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ साधू सिँघ दे घर फगवाड़ा ज़िला कपूरथला ✪

अवतार पैग़म्बर गुर वेखो आपणा पुरख अकाल अलाही नूर, सतिगुर शब्द हुक्म शनवाईआ। जिस दे हुक्म अन्दर पंज तत पहनया ज़रूर, लोकमात वेस वटाईआ। शब्द नाद वजाई तूर, तुरीआ तों परे कीती पढ़ाईआ। सच स्वामी दस्सया हजूर, हज़रतां दा मालक धुरदरगाहीआ। कल्मयां विच कीता मशहूर, सिफ्तां विच नाम सालाहीआ। चार जुग बण के उहदे मज़दूर, चाकर रूप सेव कमाईआ। सब नूं दस्सया सर्ब कला भरपूर, बेअन्त इक अख्वाईआ। ओस तुहाडे कोलों दीनां मज़्बां दा पवाया फ़तूर, फ़तवा शरअ वाला रखाईआ। झगड़ा वेख्या ज़रूर, तन माटी ख़ाक लड़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रहिण नहीं दिता किसे दा ग़रूर, अवतार पैग़म्बर गुर वेखो अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर जिस नूं कहि के आए पारब्रह्म बेअन्त, बेपरवाह इक अख्वाईआ। जपदे आए मणीआं मंत, नाम सोहला जगत दृढ़ाईआ। आत्म धार मन्नया कन्त, परमात्म अगम्म अथाहीआ। मालक लख चुरासी जीव जंत, चारे खाणी रंग रंगाईआ। सो लेखा जाणे आदि अन्त, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताईआ। भेव ना जणाया बोध अगाध बुद्धी पंडत, अनभव अन्त कहिण कोए ना पाईआ। जो संदेशा दे के आए जंत, फ़रमाना इक अल्लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अवतार पैग़म्बर गुर जिस नूं कहिंदे आए अल्ला, आलमीन बेपरवाहीआ। वसणहारा सचखण्ड सच महल्ला, दरगाह साची सोभा पाईआ। निरगुण धार इक इकल्ला, एकँकार इक अख्वाईआ। जो वसे महीअल जल थला, ब्रह्मण्ड खण्ड समाईआ। जिस दा निहचल धाम अटला, अलख अगोचर वड वड्याईआ। जिस ने तुहाडे हुक्मे अन्दर लोकमात घल्ला, संदेशा दे के धुरदरगाहीआ। दीन मज़्ब दा लाहया सल्ला, ज़ात पात वंड वंडाईआ। तुसां मनुशां उत्ते मनुषां कोलों कराया हल्ला, वैरी शरअ रूप जणाईआ। पुरख अकाल तुहाडा अछल अछला, वल छलधारी आपणी कार कमाईआ। आपणे नाम दा तुहानूं फड़ा के पल्ला, निरगुण निरगुण गंढ वखाईआ। कलयुग अन्त सारे तक्को कवण सिंघासण हरि जू मल्ला, कवण गृह सोभा पाईआ। कवण करनी कर के मात फला, फलीभूत सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर जिस नूं कहि के आए महिबूब, मेहरवान नूर अलाहीआ। वसे अर्श उरूज, आलीशान सोभा पाईआ। जिस दी मंज़ल हक मक्सूद, दरगाह साची वड वड्याईआ। महल्ल अटल ऊचो ऊच, सच सिंघासण सोभा पाईआ। जिस दा खेल चारे कूट, दहि दिशा हुक्म वरताईआ। सो पुरख

अकाला दीन दयाला तुहाडे कोलों झगड़ा पवाया काया कलबूत, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड वंडाईआ। प्यार रहिण नहीं दिता पंज भूत, हउमें हंगता नाल टकराईआ। तुहाडे नाम कलमे जगत विच देण सबूत, जो अल्ला वाहिगुरु राम ओम हरी ओम तत सति कहि के आए सुणाईआ। निगह मारो सब दा इक्को जेहा वजूद, पुरख अकाला सब दा इक्को माहीआ। जिधर वेखो ओधर मौजूद, ख़ाली नज़र कोए ना आईआ। क्यों तुसां दीन दुनी दी पाई दूज, दुतीआ भाउ जगत बणाईआ। आपणी मंज़ल दस्सो हक मकसूद, जिथ्थे मिले नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पिछली चार जुग दी करनी करनी दा करता करे नेस्तोनाबूद, सतिगुर शब्द शब्द दी धार धार धार प्रगटाईआ।

✪ २८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ६ प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड फगवाड़ा ज़िला कपूरथला ✪

जन भगत कहिण वेखो पुरख अकाल तुट्टा, अवतार पैग़म्बर गुर अक्ख खुल्ह़ाईआ। जिस दे नाम दी चार जुग लुटाई लुट्टा, वणज जगत नाल कराईआ। ओह खेल करे अबिनाशी अचुता, चेतन सब नूं रिहा कराईआ। तुहाडा झगड़ा मेटे जो पाया काया बुता, बुतख़ान्यां करे सफ़ाईआ। सतिजुग सच सुहाए रुता, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। गुरमुख गुरसिख गोद उठाए पुत्ता, आपणे अंग लगाईआ। तुहाडा सब दा पैंडा अन्तिम मुका, मुकम्मल दयां दृढ़ाईआ। तन वजूद रहे कोए ना जुस्सा, जिस्म ज़मीर बदलाईआ। अन्तिम करयो कोए ना गुस्सा, दीन मज़्ह़ब वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दर साचा खेल आप वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे वेखो भगत दवार सुहञ्जणा, अवतार पैग़म्बर गुर अक्ख खुल्ह़ाईआ। जिथ्थे आए आदि निरँजणा, नर नरायण वडी वड्याईआ। दाता बण के दर्द दु:ख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराईआ। नेत्र नाम दा पा के अंजणा, कलयुग अंध अज्ञान गंवाईआ। सुरती शब्द दा बण के सज्जणा, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। सच सरोवर कराए मजणा, दुरमति मैल धुआईआ। झगड़ा मेटे काया माटी बदना, दीन मज़्ह़ब दा डेरा ढाहीआ। रंग रंगाए आहला अदना, ऊच नीच ना कोए वखाईआ। जिस ने भगतां पड़दा कज्जणा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ । जिस नूं तुसां किहा गोपाल मूर्त मधना, सूदन बेपरवाहीआ। सो इक्को जणाए पदना, दवार सच दृढ़ाईआ। जिस दा प्रकाश नूर अगम्मी दीपक जगणा, दो जहान करे रुशनाईआ। जिस दे हुक्म अन्दर जो घड़या सो भज्जणा, थिर रहिण कोए ना पाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर रहिण देवे ना कोए अलग्गणा, वक्खरी

वंड ना कोए वंडाईआ। सदी चौधवीं शब्द दमामा वज्जणा, नौबत हक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। सतिगुर शब्द कहे वेखो भगत दवार मंगला, अवतार पैग़म्बर गुरु वेख वखाईआ। शरअ दा दिसे कोए ना संगला, कड़ी कड़ी ना कोए बंधाईआ। इक्को प्रेम प्रीती रंगणा, दूजा रंग ना कोए चढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा इक्को दात मंगणा, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। किरपा कर सूरे सरबंगणा, शाह पातशाह तेरी सरनाईआ। हरिजन तेरे लख चुरासी पार लँघणा, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। कर्म कांड राय धर्म करे कोए ना वज़ना, लेखा चित्रगुप्त ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचदा मालक दया कमाईआ। जन भगत कहिण साडा साहिब सुहेला इक, एकँकार बेपरवाहीआ। जिस दी धार आत्म सिख, सृष्टी वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दा संदेशा सारे गए लिख, अक्खरां विच सारे कर शनवाईआ। सो भगत सुहेला भगतां करे हित, हितकारी हो के वेख वखाईआ। घर स्वामी बण के मित, मित्र प्यारा पड़दा लाहीआ। सदा साहिब वसे चित्त, मन चित ठगोरी रहे ना राईआ। जन भगतां पूरी करे इच्छ, इच्छया अन्तर भिच्छया झोली पाईआ। वसेरा करके काया विच, विचला पड़दा दए चुकाईआ। सब दा पूरा करे भविख, जो अवतार पैग़म्बर गुरु गए लिखाईआ। लहिणा देणा देवे जिस जिस, जिसत टांक वंड ना कोए वंडाईआ। सतिगुर शब्द कहे जन भगत सुहेले शब्दी धार लए खिच्च, मेहरवान मेहरवान मेहरवान आपणी गंढ पवाईआ। एथे ओथे दो जहानां बणके पित, पतिपरमेश्वर गोद टिकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर सदी चौधवीं सब दा लेखा करे चिक, ओहला नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी करवट बदल के शब्दी धार जन भगतां हथ्थ रखाए पिठ्ठ, पुश्त पनाह आपणी आप जणाईआ।

६३७
२२

✪ पहली पोह शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल दरबार विच ✪

नारद कहे भगतो वेखो मैं आ गया गाउंदा, धुर दा राग अल्लाईआ। मेरे अन्दर वड़ के पुरख अकाल अलाउंदा, नादी धुन उपजाईआ। खुशीआं नाल मेरी बोदी हिलाउंदा, दो जहान वखाईआ। सितार मेरे हथ्थ फड़ाउंदा, जो तूं ही तूं ही रही जणाईआ। मैं निउँ निउँ सीस झुकाउंदा, निव निव लागा पाईंआ। दर ठांडे वास्ता पाउंदा, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। चारों कुण्ट वेख वखाउंदा, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण अक्ख खुल्लाईआ। आपणे आप नूं नाले हस्सदा नाले रुवाउंदा, दोवें ताल

बणाईआ। फेर प्रभ दे वल्ल तकाउंदा, चोरी चोरी अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। नारद कहे भगतो वेखो मेरी सितार, सति सति जणाईआ। अगम्मी वाजां रही मार, सोयां रही उठाईआ। कूक करे पुकार, प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। लोआं पूरीआं पावे सार, ब्रह्मण्ड खण्ड ध्यान लगाईआ। करोड़ तेतीसा वेखी धार, विष्न ब्रह्मा शिव फोल फुलाईआ। फिर मैं निगह मारी सचखण्ड दरबार, नैण नैण विच्चों बदलाईआ। मेरी बोदी हिल्ली पंज वार, पंजा दिता लगाईआ। मैं झट कीती निमस्कार, निउँ निउँ सीस निवाईआ। फेर बिना हथ्थां तों मारी लकार, लाईन दिती बणाईआ। तूम्बी नूं मारी मार, किंग उलटी दिती कराईआ। नी कमलीए तक लै अमामा दा अमाम धुर दा परवरदिगार, सांझा यार नूर अलाहीआ। जिस दा खेल सदा जुग चार, जुग चौकड़ी वेस वटाईआ। किंग बोली नाल प्यार, प्रेम विच जणाईआ। नारद तक लै कलि कल्की अवतार, कल आपणी रिहा दरसाईआ। जिस ने लख चुरासी पाउणी सार, दो जहानां वेख वखाईआ। शब्द नाद सुणाए सच्ची धुन्कार, अनहद रागी राग अल्हाईआ। नारद कहे मैं तक्कया टेडी अक्ख नाल, वेख्या की खेल सच्ची सरकार, हरि करता की कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे मैं धर्म दवार दा बण गवईआ, छत्ती रागां तों बाहर दिता जणाईआ। संदेशा दिता गुर अवतार पैग़म्बर वेखो आपणा सईआ, जो साहिब सुल्तान धुरदरगाहीआ। नाले तक लओ आपणे नाम दी नईया, जो नौका आए चलाईआ। आपणा लेखा कढु लओ वहीआ, हिसाब मंगे धुरदरगाहीआ। गोबिन्द दा पूरा हो गया ढईआ, ढौंका ला के लए अंगड़ाईआ। जिस ने लेखा पूरा करना आदि शक्ति जगत भवानी मईआ, मेहरवान महिबूब आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग अन्दर सतिजुग बदल देणा रवईआ, रहिमत आपणा नाम कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। नारद कहे मैं गाउण लग्गा परम पुरख दी तुक, अन्तर अन्तर आवाज़ सुणाईआ। नाले पुट्ठी गर्दन कर के गया झुक, अबिनाशी करते सीस निवाईआ। फेर टेडा कर के मुख, अवतार पैग़म्बर गुरु तके चाँईं चाँईंआ। मैं ताड़ी मार के किहा ओ तुसीं जम्मे माता दी विच्चों कुख्ख, पंज तत्तां वाला रूप बणाईआ। शरीर उत्ते झलदे रहे दु:ख, कष्ट नाल मिलाईआ। आपणी सुहाउंदे रहे रुत, जगत नाल वड्याईआ। हुण तुहाडे कोल की कुछ, मैनूं दयो समझाईआ। किसे दाढ़ी मुना लई किसे कटा लई मुच्छ, की प्रभ ने तुहाडे उत्ते कला दिती वरताईआ। की कलमा नाम पढ़या जिस नाल आत्म मिल्या सुख, मानव ज़ाती रंग रंगाईआ। क्यों सारे हो गए चुप, संदेशा दयो सुणाईआ। नारद कहे मैं वेख्या तुहाडी सृष्टी अन्तर अंधेरा घुप, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ।

तुसीं जाणदे नहीं प्रभ ने जे तुहानूं कोटां विच्चों अणगिणतां विच्चों इक नूं बणा ल्या पुत्त, तुसीं क्यों अणगिणतां दी ज़िमेवारी आपणे उत्ते उठाईआ। सच दस्सो किस ने किस दा भार ल्या चुक्क, गोदी लै के प्रभ दे दर पहुंचाईआ। मैनूं वखावो फड़ लओ मेरा गुट्ट, मैं नाल जावां चाँईं चाँईंआ। जे सिख दी प्रीती सतिगुर नालों जावे टुट्ट, सिख गुरु दा नाता लोकमात रहे ना राईआ। सच दस्सो किस ने अमृत जाम पीता घुट, निझर रस चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा वेला आप जणाईआ। नारद कहे पैग़म्बरो मेरी सलाम, सजदा पुट्ठे हथ्थ कराईआ। केहड़ी तुहाडी कलाम, अलिफ़ ये दयो वखाईआ। की तुहाडा पैग़ाम, जो कायनात आए सुणाईआ। किस दे होए ग़ुलाम, चाकर रूप बदलाईआ। किस दा रखया ईमान, सीस कवण झुकाईआ। कवण मालक ख़ालक तुहाडा अमाम, अमलां तों रहित दयो वखाईआ। क्यों तुसां ख़ुद ख़ुदा दा नाम कीता बदनाम, बदीआं दा डेरा सके कोए ना ढाहीआ। ओह वेखो शब्द गुरु सब ते लाउण लग्गा इल्ज़ाम, बचया रहिण कोए ना पाईआ। सदी चौधवीं होणी अंधेरी शाम, शमा जोत नूर ना कोए रुशनाईआ। झगड़ा मेट ना सक्या कोए तमाम, तमां विच सारे रहे कुरलाईआ। आपणा आपणा सारे दयो ब्यान, मेरी

६३६ बोदी रही जणाईआ। मैं चार जुग प्रभ दा भगत निक्का जेहा अणजाण, फिर तुर के आपणा झट लँघाईआ। ना कोए नगर ६३६

२२ खेड़ा ना कोए मेरा ग्राम, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ गुरदवार वंड ना कोए वंडाईआ। याद रखिओ नहीं ते छब्बी पोह २२

नूं पंजां लिखारीआं ने ल्याउणा अशटांम, पुट्ठे पासे तुहाडे लिख के ब्यान, मोहर सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै देणी लगाईआ। एह फेर हुक्मनामा भेजणा सारे विच जहान, कोई दुनिया दा राष्ट्रपती बचया रहिण ना पाईआ। जिस प्रभू नूं सारयां कीता बदनाम, ओह बदी दा लेखा मंगे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आप खुल्ह्हाईआ। नारद कहे मेरे सतिगुरु गुरदेवा, देव देवा सरनाईआ। वेखो खेल प्रभू निहकेवा, निहचल धाम रिहा कराईआ। जिस दी सिफ्त कोई कर सके ना जेहवा, रसना ना कोए वड्याईआ। ओह साहिब अलख अभेवा, अगम्म अगोचर आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दी करदे रहे मातलोक विच सेवा, सिफ्ती सिफ्त नाम वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे मेरी बोदी वेखो हिलदी, हिल हिल रही वखाईआ। एह खेल अलाही इल्लल दी, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। एह कहिंदी जिथ्थे आत्मा परमात्मा मिलदी, उस दा भेव आया ना कोए खुल्ह्हाईआ। हुण खेल नहीं कोई ढिल दी, धुर दा हुक्म वरते थांओं थाँईंआ। मर्ज़ी चलणी नहीं किसे दे मन दी, दिल दी दलील ना कोए बणाईआ। खेल वरतणी श्री भगवन दी, ना कोए

मेटे मेट मिटाईआ। जोत प्रकाश होणी उस गोबिन्द चन्न दी, जिस नूं सूर्या चन्द सीस निवाईआ। आवाज़ चार कुण्ट आउणी धन्न धन्न दी, धन्न धन्न प्रभू तेरी वड्याईआ। जिस ने चुग़ली रहिण नहीं देणी कन्न दी, अन्तर निरन्तर करनी सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक प्रगटाईआ। नारद कहे जन भगतो मैं आया भज्जा, भजन बन्दगी प्रभ दे कोल रखाईआ। मैं अग्गे करां हत्थ सज्जा, सज्जणो दयां वखाईआ। सब दे सिर ते कूकदी कज़ा, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। सदी चौधवीं सब ने चक्खणा मज़ा, जो मज़ाक करे ख़लक खुदाईआ। तुसां रहिणा इक प्रभू दी विच रज़ा, राज़क रिज़क रहीम जो अख्वाईआ। जिस दे नाम दी वज्जणी गदा, गदागर करे लोकाईआ। कबीर कहे मैं ते देवण आया सद्दा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जेहड़ा भगत प्रभ दे प्यार विच बध्धा, उहदा लेखा बधक वांग दए मुकाईआ। नारद कहे बधक ने छब्बी पोह नूं सिर नन्गा कर के आउणा अद्धा, उपर पड़दा ना कोए रखाईआ। नारद कहे जम्मू वाल्यो मेरा उस दे हत्थ विच फड़ा देणा ख़ाली डब्बा, रात दा साढे नौ दा वक्त समझाईआ। गल पाटा होवे झग्गा, तन पोशाक ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे मैं देवण आया होका, हुक्म प्रभ दा इक सुणाईआ। जिस दा भाणा वरतणा चौदां लोका, चौदां तबक ना कोए टिकाईआ। पुरीआं लोआं सुणना उस दा नाम सलोका, विष्न ब्रह्मा शिव गाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं समझणा ग़नीमत मौका, वेला वक्त नाल समझाईआ। जन भगतो तुसां आउणा नाल शौंका, सोहणा रंग वखाईआ। जिस ने छड्डया पटना पौंटा, ओह तुहानूं मिले तुहाडा माहीआ। उस दा पूरा हो गया ढईए वाला ढौंका, आलस निंद्रा ना कोए रखाईआ। जन भगतों तुहाडा फड़ के सज्जे हत्थ नाल पौंचा, दस्त दस्त ल्ए उठाईआ। ज़िंदगी विच जीवण विच किसे नूं भरन ना देवे हौका, हउमे रोग गंवाईआ। वक्त सुहञ्जणा होणा छब्बी पोह दा, सम्मत छे नाल वड्याईआ। जन भगतो अग्गे प्रभ दा प्यार होणा दो दो दा, आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को रंग दए बणाईआ। प्रकाश करना जोती धार अगम्मी लो दा, लोयण दए खुल्हाईआ। नाता तोड़ना झूठे मोह दा, मुहब्बत आपणे नाल बणाईआ। तुसां खेल करना रात दे बारां वजे इक दूजे कोलों खोह खोह दा, रौला देणा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। नारद कहे मेरी किंग पावे रौला, कूक कूक सुणाईआ। पैग़म्बरो तक्को मौला, मेहरवान अलाहीआ। पड़दा रहे ना ओहला, भेव अभेद खुल्हाईआ। पूरा करो कौला, इकरार रिहा जणाईआ। अर्शां दा मालक आ गया फ़र्शां उत्ते धौला, धरनी बैठी सीस निवाईआ। सब नूं गाउणा पैणा इक्को ढोला, ढोल माही रिहा दृढ़ाईआ।

सांझा करना बोला, अनबोलत हुक्म वरताईआ। वेख्यो परवरदिगार सांझा यार दो जहाना बण के तोला, सच तराज़ू हथ्थ उठाईआ। नारद कहिंदा मैं हैरान हो गया बौहड़ी दरोही उस ने इक सतिगुर शब्द गुरु सब दा बणा देणा विचोला, विचला लेखा देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि दाता धुरदरगाहीआ। नारद कहे ओह दो जहानो मेरी अलख, अलख अगोचर दा नाअरा दयां लगाईआ। उठो वेखो सवाधान हो जाओ परम पुरख तक्को प्रतख, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जल्वागर नूर अलाहीआ। जो आदि अन्त दा सच, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताईआ। जिस ने सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सब दी रखणी पत, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। ओह सब दी जाणे मित गत, गहर गम्भीर आपणा हुक्म वरताईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप जिस दे हुक्म नाल उबलणी रत्त, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। ओह लेखा सब तों मंगे झट, शब्द संदेसा इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे प्रभू मैं आ गया मातलोक विच्चों, फिर के चाँईं चाँईंआ। वेख लै की हालत होणी अवतार पैग़म्बरां गुरुआं पिच्छों, दीन दुनी सति ना कोए समाईआ। किसे नूं लम्भया नहीं पथ्थरां ते विच्चों इट्टों, जल वरोल्यां हथ्थ किछ ना आईआ। पुरख अकाले दीन दयाले तूं केहड़ी दिशा टिकों, आपणा पड़दा दे चुकाईआ। तेरे उतों कुरबान होया कोए ना विटों, ख़ादम हो के सीस ना कोए निवाईआ। नारद कहे तेरा सुत दुलारा दिसया नहीं जेहड़ा उपज्या तेरे खिट्टों, मात गर्भ ना आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। नारद कहे प्रभू मैं दिवस रैण रिहा फिरदा, घर घर अलख जगाईआ। मैं आसा रखदा रिहा चिरदा, ख़ाहिश तेरे अग्गे टिकाईआ। बौहड़ी मैनूं साफ़ दिसया नहीं कोई हिरदा, जिस हिरदे विच तेरा नूर नज़री आईआ। कोई प्यारा नहीं वेख्या सच्चे पिर दा, जो प्रीतम आपणे रंग रंगाईआ। मैं किसे दे नेत्र विच्चों हन्झू नहीं वेख्या किरदा, जो बिरहों विच आपणा आप तेरी भेंट चढ़ाईआ। पिच्छे बथेरा जुगां दा गेड़ वेख्या गिढ़दा, सतिजुग त्रेता द्वापर गए फेरीआं पाईआ। मैं चाहुंदा लेखा वेखां किवें कलयुग हिसाब निबड़दा, सदी चौधवीं नाल मिलाईआ। किस तरह अवतार पैग़म्बर गुरु आपणयां दीनां मज़्बां तों विछड़दा, विछोड़े विच सारे देण दुहाईआ। फेर पता लगणा गोबिन्द प्यारे मित्र दा, जिस पिच्छे सथ्थर यार गया हंढाईआ। ओह यार याराने विच्चों नितर दा, लम्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। नारद कहे जन भगतो हुण खेल होणा चोटी सिखर दा, मंज़ल आख़र देणी वखाईआ। याद रखयो छब्बी पोह नूं त्यार रखणा उहो सोटा किक्कर दा, सत्त रंगे नाल कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म

इक सुणाईआ। नारद कहे प्रभू मैं तकी तेरी खेल अपारी, अपरम्पर दयां जणाईआ। सृष्टी वेखी सारी, तेरी सार किसे ना पाईआ। तके पैग़म्बर गुर अवतारी, निरँकार निराकार तेरा खेल अगम्म अथाहीआ। चार जुग दी तकी सिक्दारी, हुक्म तेरा धुरदरगाहीआ। कलयुग अन्तिम तेरी आई वारी सच दस्स की आपणी कार कमाईआ। की तूं वी किसे दीन मज़्ब नाल लाउणी यारी, हिस्सया वंड वंडाईआ। सच दस्स तूं तरकश तीर कमान फड़ना कि खण्डा खड़ग कटारी, मानव बण के मानवां नाल आपणी करें लड़ाईआ। जे तूं पुरख अकाला दीन दयाला सब दा सांझा परवरदिगार यारी, याराना इक्को इक बणाईआ। मेरी तेरे चरण कँवल कँवल चरण निमस्कारी, निउँ निउँ लागां पाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वाहवा तेरी वज्जदी रहे वधाईआ। नारद कहे प्रभू ना कोई मेरा पिता ते ना कोई मेरी अम्मी, अंमढ़ी नज़र कोए ना आईआ। ना कोई तूं मेरे वास्ते सृष्टी विच कन्या कोई जम्मी, जेहड़ी मैनूं लए प्रनाईआ। ना कोई मेरा सज्जण मीत बणाया तनी, जो सगला संग रखाईआ। ना किसे दी आवाज़ सुणी कन्नी, रसना जेहवा ना कोए चतुराईआ। चार जुग किसे दा कुझ वध्या किसे दा कुझ वध्या ते मेरी बोदी हो गई लम्मी, लम्मी पै के रही जणाईआ। प्रभू जे किरपा करें ते भगतां दा बेड़ा बन्न्हीं, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तूं शाह पातशाह शहिनशाह धुर दा धनी, धनाढ इक अख्वाईआ। वेखीं आपणयां नूं गुर अवतार पैग़म्बरां दे आखे वी कदे ना डंनी, मेहर निगह कर के सारे पार कराईआ। मैं कुझ नहीं मंगदा मैनूं जुग बीत गए मैं रोटी बन्न्ही कदे नहीं कन्ही, भुक्खा रह के झट लँघाईआ। मैं चाहुंदा जेहड़ी तूं धार चलाउणी नवीं, नौ खण्ड पृथ्मी देणी वरताईआ। जे तूं पुरख अकाल हैं दीन दयाल हैं परवरदिगार हैं सांझा यार हैं ते भगतां दे अन्दर सवीं, सुख आसण तेरे कम्म किसे ना आईआ। सदा इहनां दे विच रहिवीं, जो तेरे दर ते बैठे सीस निवाईआ। इहनां दे मन्दिर विच बहिवीं, साढे तिन्न हथ्थ डेरा लाईआ। जेहड़ी चार जुग तैनूं प्रीत नहीं लभ्भी इन्हां कोलों लवीं, जेहड़े मात पिता भैण भ्रा छड के तेरी ओट तकाईआ। फेर खुशीआं नाल इहनां नूं आपणा नाम भण्डारा देवीं, रातीं सुत्तयां दी झोली देणी भराईआ। नारद कहे प्रभू मैं किंग वजावां ते मेरे मालक तूं आपणयां भगतां दा ढोला गवीं, तूं मेरा मैं तेरा इहो राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे अग्गे वास्ता पाईआ। नारद कहे प्रभू मेरी बोदी बड़ी वडी, वड्डया तेरी की वड्याईआ। वेख मैं चार जुग ओ प्रभू तेरे पिच्छे सारी दुनिया छड्डी, नन्गीं पैरीं फिरां चाँईं चाँईंआ। कदे चढ़या नहीं किसे रेल गड्डी, पाँधी हो के भज्जां वाहो दाहीआ। मैं सारी सृष्टी वेखी तेरे नाल प्रीत नहीं किसे दी लग्गी, सारे अवतार पैग़म्बर गुरुआं नूं बैठे सीस निवाईआ। जां मैं भगत दवारे गया उथे वेख्या

६४३
२२

भगतां दी तेरे नाल लग्गी, लग मात्रा दा डेरा गए ढाहीआ। ओह हँस तेरे बण गए कग्गी, काग हँस रूप बदलाईआ। मैं खलोता दोवें हथ्थ बद्धी, तेरे अग्गे वास्ता पाईआ। ओ तूं नूर अलाही रब्बी, मेहरवान इक अख्वाईआ। ओ शाह पातशाह शहिनशाह तूं सारयां दा तबी, गुरमुखां दी तबीअत अन्दरों दे बदलाईआ। किसे दे अन्तर अग्ग रहे ना लग्गी, अमृत मेघ नाल बुझाईआ। जन भगतो वेख्यो कदे कोए खायो ना मच्छी डड्डी, अग्गे मिले सज़ाईआ। तुहाडे माँ प्यो ने किसे संभालणा नहीं पा के विच डब्बी, राय धर्म बैठा मुच्छां नूं वट्ट चढ़ाईआ। वेखो चित्रगुप्त बैठा लेखा कढ्ढी, काल उठ उठ वेखे थांउँ थाँईंआ। याद कर लओ किसे अवतार पैग़म्बर गुर दी कदे नहीं रही गद्दी, बिना पुरख अकाल तों दूजा रहिण कोए ना पाईआ। गुरसिखो जन भगतो इक दूजे नाल करयो कदे ना बदी, बदला लैण दी इच्छया देणी गंवाईआ। हुण अख़ीर आ गया चौधवीं सदी, सदमे विच सारे मारन धाईआ। पुरख अकाल दा मेला हुन्दा कदी कदी, कदीम दे विछड़यां नाता ल्या जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे नरायण, तेरी बेपरवाहीआ। मैं बेनन्ती आया कहिण, कहि के दयां सुणाईआ। मैं चार जुग तक्कया ना कोई भाई ना कोई भैण, धर्म सारे गए गंवाईआ। ना कोई साक ते ना कोई सज्जण सैण, सगला संग ना कोए बणाईआ। मेरे पुरख अकाल साधां सन्तां नूं खा गई माया डैण, बचया रहिण कोए ना पाईआ। सारे वहि गए कूड़ दे वहिण, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जिधर तक्कया स्त्री पुरुष दी निगह बदल गई नैण, शर्म हया दिती गंवाईआ। मज़्हब तक्कया छुरी बण गई कसैण, इन्सानां उत्ते आपणा वार चलाईआ। प्रभू फेर मैं तक्कया बटवारे ने जेहड़ी बाल्मीक वाली लिखी रमाइण, रामा रंग बदलाईआ। उहदे विच्चों ढाई सतरां छड गया जिस वेले दर्शन कीता साख्यात नैण, अक्ख गई शरमाईआ। कलम लिख ना सकी ते ज़बान सकी ना कुछ कहिण, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। नारद कहे मैं बाल्मीक दे हो गया ओहले, आपणा खेल खिलाईआ। पिच्छों हौली जेही बोल बोले, सहिज नाल सुणाईआ। रिषी जी राम दा राम की सुणावे ढोले, मैनूं दयो सुणाईआ। उस मारया हथ्थ उस दे सज्जे डौले, बाहों फड़ के दिता हिलाईआ। बाल्मीक किहा ओए नारदा, जिस वेले ओह आप आया उपर धौले, धर्म दी धार वेख वखाईआ। उस ने चार जुग दे सारे मेट देणे रौले, रौणक आत्मा परमात्मा दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे बालमीक हथ्थ धर ल्या उत्ते ठोडी, सोचां विच ध्यान लगाईआ। मैं हो गया भार गोडी, घुटने दिते टिकाईआ। फेर हथ्थ रख के उत्ते

मोढीं, रिषी दिता हिलाईआ। फेर बण के जोगी, नाअरा दिता लगाईआ। ओह मेरा मालक रसीआ भोगी, जो धुर दा पिता माईआ। बाल्मीक ने मेरे तों अग्गे कीती सोझी, दो हथ्थां ताड़ी दिती वजाईआ। नारदा ओह तक लै मेरा राम मौजी, जो मजलस भगतां नाल बणाईआ। जिस ने कलयुग अन्तिम सब दा बणना खोजी, जुग जन्म दे विछड़े लैणे मिलाईआ। नारद कहे मेरी होर वध गई बोदी, लम्मी हो के हिल्ली चाँई चाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे बाल्मीक जो छडीआं ढाई सतरां, अज्ज तक ना कोई समझाईआ। रमाइण दा सब ने फोलया पत्रा पत्रा, पत्रका प्रभ दी ना किसे प्रगटाईआ। क्यों उस दे विच्चों अवतार पैग़म्बर गुरुआं नूं ख़तरा, जिस ख़ातर सारे दिते छुडाईआ। उस दा लेखा लिखणा धार सत्तरां बहत्तरां, नाड़ी नाड़ी डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा हुक्म वरताईआ। नारद कहे जिस वेले ढाई सतरां गुरमुख लिखण, छब्बी पोह ख़ुशी मनाईआ। सतिजुग साची सिख्या आवे सिक्खण, आपणा पन्ध मुकाईआ। कलयुग कुकर्म आवे पिटण, रो रो मारे धाईआ। सतिगुर शब्द सब नूं आवे जित्तण, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जन भगत प्रभू दे प्यार विच आवण विकण, दूसर हट्ट ना कोए वखाईआ। सब दी पूरी होवे इच्छन, निरइच्छत होवे आप सहाईआ। जो गोबिन्द दा बणया सिक्खण, सो प्रभ दा भगत लोकमात अख्वाईआ। सतिगुर मेला नित नवितन, होवे ना कदे जुदाईआ। भगत भगवान दी आसा उत्ते टिकण, भरवासा आपणा देवे बंधाईआ। इस सृष्टी नूं समझण मिथण, कूड़ी दुनिया कम्म किसे ना आईआ। इक्को सिमरना प्रभू चितण, चित वित ठगौरी रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे जन भगतो मैं पुराणा बुड्ढा बाबा, चार जुग किसे दी बेबे हथ्थ कोए ना आईआ। मैं फिरया मक्का काअबा, हुजरयां खोज खुजाईआ। तक्कया पुन्न सवाबा, चारों कुण्ट अक्ख खुल्हाईआ। वड़ गया काया विच महिराबा, आपणा बल धराईआ। जिधर वेख्या त्रैगुण लग्गी आगा, सांतक सति ना कोए कराईआ। जीव होए कागा, काग वांग कुरलाईआ। मैं सुणया दीन दुनी दा रागा, माया ममता ढोले गाईआ। हुण मैं आ गया विच पंजाबा, पंजाबीओ तुहानूं दयां जणाईआ। जिस वेले गोबिन्द ने नौ वार उडाया सी बाज़ा, दसवीं वारी उडा के बाज़ां वाला आपणा नाम रखाईआ। फेर तक्कया सी वल्ल माझा, हथ्थ दोवें उपर उठाईआ। शब्द सुणया पुरख समराथा, बिन कन्नां आवाज़ अलाहीआ। तेरा मेरा होवे साथा, जोत शब्द रंग वखाईआ। सम्बल दोहां दा होणा वासा, वास्तक दिता दृढ़ाईआ। गोबिन्द किसे नूं हथ्थ नहीं आउणा पृथ्मी ते आकाशा, सारी सृष्टी भज्जे वाहो दाहीआ।

तेरीआं मेरे हथ्थ होणीआं रासां, तूं सारी सृष्टी मेरे हुक्म नाल लैणी भवाईआ। मैं तेरा शाहो शाबाशा, तूं शहिनशाह दो जहान अख्वाईआ। गोबिन्द खुशी विच कीता हासा, अक्ख माझे वल्ल उठाईआ। जां वेख्या चार कुण्ट इक जोत प्रकाशा, दो जहान करे रुशनाईआ। गोबिन्द किहा प्रभू मेरा मन्न लै इक आखा, बेनन्ती विच आपणा सीस झुकाईआ। जेहड़ी सिक्खी बणाई विच विसाखा, वसाह के तेरी झोली देणी पाईआ। फेर तूं बणना कमलापाता, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। मेरा इक्को तूं ही पिता ते तूं ही माता, दूजा नज़र कोए ना आईआ। इक्को तेरा अमृत बाटा, चार जुग निखुट कदे ना जाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त मेटणी वाटा, तूं मेरा संग निभाईआ। एह दोहां दीआं अन्दर अन्दर दीआं बातां, लिखण वाला लिखारी लिख कोई ना पाईआ। जन भगतो ओह दिवस इहो सी पहली पोह ते पहली राता, लिखारीउ लिखणा चाँईं चाँईंआ। प्रभू दे दर उत्ते ना कोई ज़ात ना कोई पाता, ऊच नीच ना कोए वखाईआ। जिथ्थे आत्मा परमात्मा दी होवे गाथा, उथे अवर ना कोए पढ़ाईआ। छब्बी पोह नूं पुरख अकाल ने सब दे मस्तक तिलक लगाउणा माथा, आपणी हथ्थीं सेव कमाईआ। इक सूरबीर वेखणा जेहड़ा योद्धा होवे राठा, आपणा आप सतिगुर भेंट कराईआ। अग्गे फेर चलाउणा साका, हुक्म वरते धुरदरगाहीआ। हुण गोबिन्द प्रभू दा ओह रिहा नहीं काका, बलधारी सतिगुर शब्द अख्वाईआ। जिस ने सदी चौधवीं दा सारा वेखणा वाका, वाक्फकार होणा ख़लक खुदाईआ। जन भगतो सहिज नाल तुहाडे अन्दरों खोलॄ के ताका, बजर कपाटी दा पड़दा देणा लाहीआ। जिथ्थे अमृत सरोवर मारे ठाठां, लहर लहर विच्चों देणी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। कलयुग कहिंदा प्रभू मेरा सज्जा हथ्थ बध्धा, खब्बा कन्न उत्ते रखाईआ। मैं चाहुंदा तेरयां भगतां दा कोई नाँ कदे सद्दे ना अधा, पूरा खुशीआं नाल गाईआ। धर्म दा निशाना हर हिरदे होवे गड्डा, गाईड गॉड इक तूं ही नज़री आईआ। बिना तेरी किरपा तों कोई समझ ना सके वज़ॄा, वजूहात आपणा देणा दृढ़ाईआ। दीन मज़ॄब दी जन भगत रखे कोए ना हद्दा, हदूद इक्को वेखणी जिथ्थे वसे बेपरवाहीआ। नारद कहे पंजां लिखारीआं छब्बी पोह नूं कोल रखणी गदा, सज्जे पट्ट नाल छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। नारद कहे प्रभू मेरा इक हाढ़ा, हाए हाए हाए कर सुणाईआ। मैं चाहुंदा जावां विच पहाड़ा, पहाड़ीआं विच रह के आपणा झट लँघाईआ। मैं चाहुंदा मैं दीन दुनी वेखां अखाड़ा, मज़ॄब मज़ॄब नाल टकराईआ। प्रभू मेरा जी करदा तूं घर घर अग्ग ला दे बहत्तर नाड़ा, सांतक सति ना कोए कराईआ। मेरे सहिब जे करें किरपा भगतां नूं रंग चाढ़ॄ दे गाढ़ा, रंगण इक रंगाईआ। मेरा मैनूं कहिंदा भगतां दे घर दा मंग वाड़ा, गृह गृह

आपणा फेरा पाईआ। नाले दस्सां नाले हस्सां पुरख अकाल इक्को अगम्मी लाड़ा, जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी लख चुरासी लए प्रनाईआ। मेरा जी करदा किते इक वार मैनूं चाढ़ दे खारा, मौली तन्द बंधाईआ। सूहे दुपट्टे नाल मेरा होवे विहारा, जोड़ी वेखां चाँईं चाँईंआ। पर मैनूं कुलखणी देईं ना कुपत्ती नारा, जेहड़ी दिवस रैण करे लड़ाईआ। पर उस वेले व्याह कराउणा जदों चौधवीं सदी दा होवे अन्त कनारा, मुहम्मद बैठे मुख छुपाईआ। ईसा देवे ना कोए इशारा, मूसा नैण ना कोए उठाईआ। फेर मैं बणां कन्त भतारा, सोहणा रूप वखाईआ। पुरख अकाल किहा नारदा एह केहड़ीआं विचारां, विचर के फेर दे सुणाईआ। नारद झट बदल गया कहिंदा नहीं प्रभू नार नालों तेरे नाल बहारां, सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। जे विछड़ें रोवां ज़ारो ज़ारा, विछोड़ा झल ना सकां राईआ। मैं कलयुग विच्चों हो के आया मैं धर्म राए दे दवारे वेखीआं ब्याहयां होयां दीआं कतारां, नर्कां वल्ल भज्जण चाँईं चाँईंआ। बड़ीआं बड़ीआं जोबनवन्तीआं वेखीआं मुटयारां, सूरबीर मुच्छां नूं जो वट चढ़ाईआ। हाए मेरे रब्बा खांदे वेखे मारां, जमदूत देण सज़ाईआ। चुरासी भोगदे वारो वारा, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी आपणा डेरा लाईआ। मेरे दीन दयाल जिन्हां दीआं अन्दरों तेरे नाल वज्ज गईआं सितारां, ओ सति दे मालक सति तेरे विच रखाईआ। तूं उन्हां दा इक्को साहिब ते इक्को सतिगुर इक्को पतिपरमेश्वर ते इक्को कन्त भतारा, साहिब स्वामी इक अख्वाईआ। नारद कहे प्रभू मैं मुड़ के बेनन्ती नहीं करदा दुबारा, चार जुग कदे आस ना कोए रखाईआ। क्यों हुण वी मैनूं थोड़ा जेहा इशारा दिता सी गंगा जमना सुरस्ती टेडी अक्ख नाल कर के इशारा, सैनत मातलोक वाली लगाईआ। फेर मैनूं रावी ने ज़ोर नाल किहा ओह नारदा, आह वेख ओह अर्जन जिस सतिगुर नूं तत्ती लोह दा सहारा, मेरे विच बैठा डेरा लाईआ। भज्जा जा उस प्रभू दे दवारा, जिथ्थे द्वारका वासी बैठे सीस झुकाईआ। ना सख़ीआँ रहीआं ना रिहा मंगलाचारा, गोपीआं रास ना कोए रचाईआ। जदों तक्को भगत भगवान दा वसदा रहे दवारा, आदि जुगादि जुग चौकड़ी प्रभ ने आपणी रीत चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। नारद कहे जन भगतो सारे वेखो आपणा आपणा जुस्सा, जिस्म ज़मीर ध्यान लगाईआ। सिख दा ते सतिगुरु दा काहदा ग़ुस्सा, जिस दे ग़ुस्से विच्चों प्रेम नज़री आईआ। जिस वेले इक वार कहि देवे आ मेरे लाडले पुत्ता, पिता हो के गोद टिकाईआ। ओ गुरसिखो समझ लओ मैं सचखण्ड दवार पुज्जा, जिथ्थे बैठा धुरदरगाहीआ। लिखारीओ लिख दयो गुरसिख मात गर्भ विच कदे ना होवे उलटा रुक्खा, नौ महीने अठारां दिन अग्नी ना कोए तपाईआ। याद करयो कदे कोए ना खायो कुट्टा, शब्द सतिगुर दी रीत चली आईआ। नारद कहे प्रेमीओ प्यारयो गुरसिखो वेखो मुफ्त दी हथ्थ

आई लुट्टा, लुटेरयो लुट्ट लओ चाँईं चाँईंआ। तुहानूं कोई लोड़ नहीं नाम जपण दी बुल्लां बुट्टां, तुहाडे अन्दर वड़ के तुहाडा मिले धुर दा माहीआ। आत्म परमात्म दा करे जुट्टा, जोड़ी आपणे नाल बणाईआ। लुक्या रहिण नहीं देणा किसे गुट्टा, राती सुत्तयां लैणा जगाईआ। सारयां नूं कर देणा इक मुट्ठा, ज़ात पात दा डेरा ढाहीआ। क्यों पुरख अकाला दीन दयाला मेहरवान हो के तुट्ठा, बख्शिश आपणा नाम वरताईआ। हुण रहिणा नहीं कोए लुका, ओहले सारे देणे चुकाईआ। नारद कहे मैं बड़ा खुश होया ते पढ़ ल्या करांगा दो तुका, ते बहि के आपणा झट लँघाईआ। ना धोणा पए मुखा, ना पाणीआं विच आपणा तन ठराईआ। प्रभू दा प्यार सदा सुक्का, सुख सागर रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला मेले सहिज सुभाईआ। नारद कहे मेरी बोदी मेरे नाल लड़दी, ताअने रही सुणाईआ। कहिंदी वे नारदा तूं कोई गल्ल दस्स चोटी जड़ दी, चेतन नाल मिलाईआ। जा मैं नहीं अक्खरां वाले अक्खर पढ़दी, जो अक्खर अक्खरां नाल मिलाईआ। मैं नहीं भिखारन बणना दर दर दी, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठां विच भज्जां चाँई चाँईंआ। मैं होवां वणजारन इक्को हरि दी, जो हर हिरदे रिहा समाईआ। मैं नहीं किसे कोलों डरदी, भय सीस ना कोए रखाईआ। मैं उस प्रभू दे चरणी पड़दी, जो पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जल्वागर नूर अलाहीआ। मैं खेल वेखणी भगतां दे घर घर दी, गृह गृह फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा प्रेम वखाईआ। पुरख अकाल कहे इधर आ ब्राह्मणा, की ब्रह्मा रिहा सुणाईआ। शंकर नूं हो साहमणा, अक्ख अक्ख नाल मिलाईआ। विष्नूं दी तक कामना, की आपणी रिहा प्रगटाईआ। नारद कहे प्रभू मैं ते इक्को शब्द गुरु नूं समझदा जामना, बाकी ओसे दे सेवादार चाकरी रहे कमाईआ। मैं ते इक्को तेरा दर पावणा, जिथ्थे पवण पाणी दी लोड़ रहे ना राईआ। मेरी मनसा इहो कामना, इच्छया तेरे विच टिकाईआ। मैं की दस्सां मेरे भगवानना, भगवन तेरा खेल बेपरवाहीआ। मैं चाहुंदा तूं मातलोक भगतां गृह वसा आपणे गामना, मन्दिर इक जणाईआ। झूठी किसे दी रहे ना तामना, तृखा देणी गंवाईआ। तेरी चरण धूढ़ सब नूं मिले नहावणा, अठसठ दा पन्ध मुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला मिले गावणा, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। मैं तेरे दर ते सीस निवावणा, निउँ निउँ लागां पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तेरा सहारा इक तकावणा, ओट अकाल इक रखाईआ।

✪ ४ पोह शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल रात नूं ✪

सतिगुर शब्द सदा मेहरवान, मेहरवान अखवांयदा। जन भगतां देवे दान, जुग जुग झोली मात भरांयदा। सदा सुहेला होए मेहरवान, मेहरवान आप मिलांयदा। जगत जहान वेखे मार ध्यान, गुप्त ज़ाहर फोल फुलांयदा। महिन्दर सिँघ दे सट्ट लग्गणी सी उत्ते कान, तेरां मील दा पथ्थर राह तकांयदा। होणा सी परेशान, परेशानी विच कुरलांयदा। बाल मरना सी इक अंजाण, उमर पंज साल सत्त महीने सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगांयदा। सतिगुर शब्द कीती मेहरवानी, मेहर नज़र उठाईआ। बण धुर दा बानी, मार्ग आपणा इक जणाईआ। हथ्थ रथ पेशानी, मस्तक रेख उलटाईआ। बख्श दिती जवानी, जोबन रंग चढ़ाईआ। बण के जाण जाणी, आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक हो आईआ। सतिगुर शब्द कहे बख्श्या सच सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। बख्श चरण प्यारा, प्रीती इक वड्याईआ। पिछले कर्म दा लेखा पाड़ा, झगड़ा रिहा ना राईआ। गुरसिक्खां नाल मिल के सफ़ल होया अज्ज दा दिहाढ़ा, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। प्रेम प्रीती चाढ़ के रंग गाढ़ा, हरिजन साचे लए मिलाईआ। जेहड़ा पुलस वाल्यां पुट्टणा सी अज्ज दाढ़ा, ओह चरणां उत्ते छुहाईआ। जन भगतो प्रभ दा हुक्म होवे सदा किसे दाइरा, बिना कार तों कम्म ना कोए कराईआ। तुहाडे जन्म दा कर्म दा जिस ने लेख विचारा, बण के दाता धुरदरगाहीआ। सारी संगत कर दयो इक्को वार निमस्कारा, सीस जगदीश झुकाईआ। महिन्दर सिँघ नूं कहो वाह ओए साडया यारा, यारी साडे नाल निभाईआ। अग्गे जीवण बणया रहे विच संसारा, सुख सागर विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा भगतां दा मित्र प्यारा, मीत मुरारा इक अख्वाईआ।

६४८

२२

✪ ५ पोह शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल सवेर वेले ✪

पंज पोह करे वीह सौ यारां बिक्रमी मेरा लेख बणया सी विच मसीते, मुहम्मद प्रभ दर अग्गे सीस निवाईआ। जिस नूं सोलह साल अज्ज बीते, सोलह कलधारी कृष्न सीस निवाईआ। हुक्म मन्नया सर्ब त्रैगुण अतीते, सिर सक्या ना कोए उठाईआ। जिस कारन जगदीश बहाया विच अंगीठे, ख़ाक नीहां हेठ दबाईआ। लेखे ला के सिँघ मनजीते, मनसा भगतां पूर कराईआ। इक्को रंग रंगा के हस्त कीटे, दुतीआ भउ दिता चुकाईआ। खेल कर ऊचो नीचे, नीच ऊच आप अख्वाईआ।

साचा नाम दस्स हदीसे, करी हक पढ़ाईआ। नींह रखी जिथ्थे भगतां दी फुल्ल फुलवाड़ी महकी बग़ीचे, गुलशन अगम्म अथाहीआ। इक सुणया गीते, ढोला अगम्म अथाहीआ। पंज पोह कहे अगले साल वारी आउणी सी सिँघ सुरजीते, भाईआ नाल मिलणा सी भाईआ। अज्ज इक वजे पाल सिँघ शेर सिँघ इक रूप बण के आए आकाशों नीचे, मता गोबिन्द धार शब्द सिँघ पूरन नाल बणाईआ। दस्स जे तेरे बच्चयां दे तपण अंगीठे, इक सानूं भेंट चढ़ाईआ। गोबिन्द धार हस्स के किहा फेर हथ्थ मारया विच खीसे, ख़ाली हथ्थ वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा खेल जगत जगदीशे, जुग जुग दी रीती चली आईआ। तेरे तेरे जोगे कीते, आपणे हथ्थ रखी ना कोए वड्याईआ। पुरख अकाल जोती नूर ख़ुशी विच किहा वाह मेरे परम प्यारे मीते, मित्रा तेरा सथ्थर यार हंढाईआ। फेर मारी धौल उत्ते इक लीके, साढे तिन्न हथ्थ लम्बाईआ। फेर लेखा वेख्या जो गोबिन्द मस्तक हिन्दसा लाउणा वीह के, सरगुण तों ज़ीरो रूप समझाईआ। जिस विच लहिणे होणे सारे जीव जीअ के, पड़दा ओहला रहे ना राईआ। दीन दयाल किहा पोह पंचम तूं किस नूं उडीके, सच दे सुणाईआ। पोह कहे मैं वेखां पिछले जुग बीते, अगला ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द तेरा लेखा पूरा, पूरन रूप दरसाईआ। मैं सदा हाज़र हज़ूरा, हज़रत बेपरवाहीआ। बख्शी चरण धूढ़ा, टिक्का धुर दा दिता लगाईआ। अग्गे रंग चाढ़ां गूढ़ां, उतर कदे ना जाईआ। जेहड़ा पंजां लिखारीआं दे सिर ते कराया जूड़ा, इस दा भेव ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पोह पंज कहे मेरे परम पुरख प्रभ मीत, मित्रा दयां जणाईआ। क्यों साढे तिन्न हथ्थ दी मारी लीक, पर्दा दे उठाईआ। पुरख अकाल किहा एह लेखा सच ठीक, ठाकर आप सुणाईआ। धर्म दी धार विच शब्द दे प्यार विच आयू बख्शी फेर सिँघ सुरजीत, जन्म जन्म विच्चों बदलाईआ। इस दा लेखा पूरा लिखणा चौदां पोह नूं ठीक, पंज लिखारी पगड़ीआं सीस उत्ते टिकाईआ। जम्मू वाले इक्की सिख करन तस्दीक, शहादत मुहब्बत वाली भुगताईआ। माझा मालवा दुआबा पंज पंज गुरसिख होवण विच शरीक, हुक्म प्रभ दा मन्नण चाँईं चाँईंआ। बधक नौ वार उच्ची रो के मारे चीक, चीक चिहाढ़ा देवे पाईआ। जिस दा सताई माघ नूं विछड़ना सी पुत रणजीत, दु:ख जगत वाला बणाईआ। जम्मू वाल्यां दा ख़ाली डब्बा इहो गाउंदा सी गीत, राम सिंहां तेरे सिर ते पग्ग रहिण ना पाईआ। ओए तेरा अद्धा सिर ते सतिगुर वाली झूठी प्रीत, बिना सतिगुर तों होए ना कोए सहाईआ। पंज पोह कहे मेरे साहिब सतिगुर तूं सदा करनी बख़्शीश, क्यों मैनूं भगत दवारे दी दिती माण वड्याईआ। जिस विच कलयुग साध सन्त राजयां राणयां दी

रहिण नहीं दिती कोई तौफ़ीक, तोहफ़ा भगतां झोली पाईआ। जिस कारन बधक दा पाटा रखया कमीज़, ओह चीथड़ बच्चे दी दात दे के नवां देणा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। छब्बी पोह कहे मेरी खुल्ह् गई अक्ख, पिछला ध्यान लगाईआ। मेरे साहमणे वेला आया प्रतख, गढ़ी चमकौर दए गवाहीआ। जिस वेले जुझार लग्गी सट्ट, धरनी धरत उत्ते लेटया चाँईं चाँईंआ। रणजीत सिँघ गोबिन्द दा सिख पुज्या झट, सीस गोडे उत्ते टिकाईआ। फेर लग्गा तीर दा फट्ट, धायल कर के विंन्ह् गया पवण स्वासी दिती उडाईआ। दोहां दा इक दूजे उत्ते हो गया इक्ठ, छाती छाती नाल टिकाईआ। गोबिन्द ने गढ़ी चमकौर विच्चों इक उत्ते इक थल्ले रख के हथ्थ, ज़ोर नाल दबाईआ। फेर प्या हस्स, खुशीआं विच वड्याईआ। फेर तक्कया नाल अक्ख, नैण ल्या उठाईआ। तुसीं चलो कोल पुरख समरथ, सचखण्ड साचे डेरा लाईआ। मैं फेर आवांगा वत, बेवतनां लवां तराईआ। तुसीं मेरे प्यार दी रत, रत्न अमोलक हीरे रूप दरसाईआ। मातलोक कर प्रगट, देवां माण वड्याईआ। तुसीं मेरे पिच्छे सथ्थर गए लथ्थ, ते मैं यारड़ा सथ्थर हंढाईआ। एस प्यार दी फेर ज़िंदगी विच्चों ज़िंदगी देवां वथ, वक्खरी कार कमाईआ। फेर मीट के सज्जी अक्ख, उँगल नाल दबाईआ। फेर ज़मीन तों फड़ के कक्ख, फूक मार के अग्ग दिती लगाईआ। जोड़ के प्रभू नूं हथ्थ, सीस दिता झुकाईआ। शब्द अगम्मी आवाज़ सुणी सच, सुनेहड़ा धुरदरगाहीआ। गोबिन्द तेरा लहिणा देणा लेखा पूरा करां हक, हक दा मालक इक हो आईआ। पोह कहे उस लेखे दी धार विच दोहां ने जाणा बच, अग्गे आयू बहुती दए भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। पंज पोह कहे नवां उतार होणा पहले ग्रन्थ, सतारां हाढ़ दी लिख्त दए गवाहीआ। जेहड़ा पुरख अकाल ने किहा अग्गे चलाउणा नवां पन्थ, सिख बणन दी रीती देणी दृढ़ाईआ। जिस नूं कोई बुद्धीवान समझ ना सके असंखा असंख, कोटन कोटि ध्यान लगाईआ। क्यों जिस वेले प्रभू दा इक दवार ते इक होया बंक, दूजा नज़र कोए ना आईआ। इक्को राउ होया ते इक्को रंक, ऊच नीच नज़र ना कोए वखाईआ। उस वेले भगतां दे दवार विच ज़रूर आवे राजा जनक, जिस सीता सपुत्री राम भेंट चढ़ाईआ। पुरख अकाल शब्द दी धार लावे तणक, खिच्चे वाहो दाहीआ। जिस नूं गाया कि वसे पुरी घनक, ओह सम्बल दा मालक बेपरवाहीआ। जिस पूरन दी पूरन बणा के बणत, पूरन पूरन विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। पंज पोह कहे जन भगतो मैनूं दयो कुछ दान, मैं तुहानूं तुहाडा प्रभ दिता मिलाईआ। जे मैनूं नहीं कुछ देणा ते प्रभू दे चरणां दा करो ध्यान, आपणीआं झोलीआं

लओ भराईआ। तुहानूं पता नहीं द्वापर विच की खेल कीता सी काहन, कृष्न कृष्न नाल वड्याईआ। राधा नूं चरण दासी दा दिता सी माण, इहो मेरी थित इहो मेरा वक्त सुहाईआ। नाले मुक्खों किहा सी प्यार नाल राधे शाम, शाम राधे इक्को रूप नज़री आईआ। राधा किहा मेरी चरण कँवल प्रणाम, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। साहिब त्रैलोकी नाथ भगवान, भगवन तेरी बेपरवाहीआ। जिस कोझी कमली कीती परवान, परवाना आपणा ल्या बणाईआ। प्रण कीता मैं कदी बचन बोलांगी नाल ना ज़बान, निंदिआ प्रभू ना कदे अल्लाईआ। कृष्न ने हस्स के वखाया इक निशान, इशारा दिता कराईआ। कमलीए ओह तक लै कलयुग विच जहान, चारों कुण्ट अंधेरा छाईआ। उस वेले मेरा साहिब आवे हो मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। पैग़म्बरां दा लेखा करे परवान, मुहम्मद संग निभाईआ। पोस महीना देवे दान, वस्त अगम्म वरताईआ। सम्मत शहिनशाही छे होवे महान, महिंमां अकथ कथी ना जाईआ। सदी चौधवीं दी गोली जिस दा समझे ना कोए ईमान, हिन्दू मुस्लिम वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। राधा किहा कौण सदी चौधवीं दी बांदी, मैनूं दे वखाईआ। काहन किहा जिस दा काला लबास होणा ते नौ रंग दी परांदी, नौ खण्ड दी खेल खिलाईआ। जेहड़ी मालवे वाल्यां मूर्ती ल्याउणी गाँ दी, ओह रात दे बारां वजे उस दे हथ्थ देणी फड़ाईआ। फेर कसम लैणी सुगंद लैणी तूं रहीं ना प्यो ना माँ दी, सतिगुर दी सेवा सच कमाईआ। सतिगुर शब्द खेल करनी धर्म दे थाँ दी, द्वारका वासी कहि के गया सुणाईआ। रविदास चमारे खेल करनी सत्त रंग लीड़े वाली छाँ दी, जो सति विच समाईआ। गुरमुख सिँघ आवाज़ लगाउणी कहिणा वड्याई पुरख अकाल तेरे नाँ दी, दूजा माण रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ। पंज पोह कहे जन भगतो मेरा सोलह साल लंघिआं, आयू गई बीत। मैं तुहाथों कुछ नहीं मंग्गया, सिर्फ़ करदा रिहा प्रीत। अज्ज सारी रात खलोता रिहा इक टंगया, गाउंदा रिहा प्रभू दे गीत। इक्की वार पैंद ते इक्की वार सरहाणे होया मंज्या, मैं दस्सां सच ठीक। बेनन्ती कीती जे प्रभू तूं मेरा भगतां नाल प्यार गंढया, लोकमात भगत दवार कीता वसनीक। फेर मेरी बेनन्ती सुण सब दा हिरदा रखीं ठंडया, अग्नी तत ना लावीं चीत। की होया जे कलयुग अन्तिम कंढया, तूं कर दे बख़्शीश। पंज पोह कहिंदा तेरा भगत होवे ना भाग मंदिआ, नीती विच ना होवे नीच। जिन्हां कारन तूं मारया पंध्या, ते पिछली बदल दिती लीक। सुणा के आपणा छंदिआ, झगड़ा मुकाया मन्दिर मसीत। तूं शहिनशाह सूरा सरबंगया, सदा त्रैगुण अतीत। प्रभू आपणयां भगतां दा भार चुक्क लै कंध्या, ऐवें जगत विच ना घसीट। इन्हां दा लेखा दस्सणा नहीं किसे पांधे पंडया, गृह नछत्र जाणे ना

कोए तरीक। पुरख अकाल कहे पंज पोह मैं एसे करके ते दर्द वन्डया, सतिगुर शब्द करे तस्दीक। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी साहिब अनडीठ। पोह कहे प्रभू मेरा सुफल होया जन्म, बख़्शी माण वड्याईआ। भगतां दे अन्दरों मेट दे भरम, भाण्डा भरम दे भनाईआ। आपणे प्यार दा बख़्श दे कर्म, करनी दे समझाईआ। जन भगत जदों परसे ते परसे तेरा चरण, दूसर सीस ना कोए निवाईआ। तेरा नाम सदा पढ़न, हिरदे विच हरि जू जाणा समाईआ। मैं प्यार विच आया लड़न, लड़ाका हो के दयां सुणाईआ। तेरे हो के क्यों ना तेरी मंज़ल चढ़न, दर पुज्जण चाँईं चाँईंआ। मेरा इक इक परण, प्रणाम कर के सीस निवाईआ। सब नूं सांझी बख़्श प्रीती चरण, प्रीतम आपणे घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा पल्लू फड़ाउणा लड़न, गंढ आपणे नाल पवाईआ।

पंज पोह तेरा प्रशाद, पंचम विच वड्याईआ। तूं बच्चू बड़ा चंगा जिन्ह सिँघ सुरजीत रणजीत नूं रखया याद, गढ़ी चमकौर दा वेला ना अजे भुलाईआ। तेरे पिच्छे उन्हां नूं ज़िंदगी दा देवां दाज, मेहर नज़र उठाईआ। नन्गे सिर ते बख़्श के ताज, जीवण जीवण दयां वखाईआ। क्यों मेरे शब्द गुरु दा ब्रह्मण्ड खण्ड विच राज, जो चाहां सो लवां भुगताईआ। पंज पोह खुशी विच कीता नाच, नच्चया चाँईं चाँईंआ। प्रभू इक बेनन्ती मन्न लै आज, सीस दयां झुकाईआ। प्यार विच गुरमुख सिँघ नूं इक सौ इक रुपया देवीं दात, आपणे कोलों झोली देवीं पाईआ। पंजां लिखारीआं नूं इक इक बख़्शीं कलम दवात, आपणी हथ्थीं देणी फड़ाईआ। एह लेखा नवें जुग दा नवां होउ रिवाज, रीती पिछली देणी बदलाईआ। इहो मेरी बेनन्ती ते इहो मेरी अरदास, प्रभू भगतां नूं अरदासे सोधण वाल्यां तों लैणा बचाईआ। जेहड़े तेरे हो गए ओह तेरे वसण पास, तेरे विच समाईआ। पंज पोह कहिंदा प्रभू कर लै याद बचन ख़ास, राम बन विच लेटया ते तूं आपणा हुक्म दिता दृढ़ाईआ। सीता ने इक वस्त्र सी तन लपेटया, ते नैण प्रभ दे वल्ल रखाईआ। तूं खुशीआं विच आण के वेख्या, फड़ के दिता उठाईआ। हुक्म दिता औह वेख पैग़म्बर मुल्ला शेख्या, कलयुग गुरुआं नाल वड्याईआ। ओए रामा ते राम फेर नहीं किसे नूं आउणा चेतया, चेतन सुरती ना कोए कराईआ। औह वेख वाड़ खांदी खेतया, गुर चेले लुट्टण थांउँ थाँईंआ। फेर मैं आवां ते मेरा गोबिन्द बेटया, मालक बण के धुरदरगाहीआ। पंज पोह कहे इहो दिन सी जिस वेले राम नूं राम ने मथ्था टेक्या, सीस दिता निवाईआ। सीता ने तक्कया नेत्र नेतया, नैण निज खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पंज पोह कहे जिस वेले मेरे विच भगतां दी रखी बुन्याद, भगत दवारा नींह धराईआ। मैं हस्सया कि मैं हुण होया आबाद, प्रभ ने दिती माण वड्याईआ। चार जुग दे विछड़यां नाल मेरा होया साथ, सगला संग बणाईआ। जिस वेले मैं सोहँ सुणी गाथ, मेरे अन्तर अन्तर अन्तर होई रुशनाईआ। फेर प्रभू नूं तक्कया साख्यात, सन्मुख बैठा सोभा पाईआ। फेर मैं वेख्या ओह लेखा लिखावे उत्ते काग़ज़ात, अक्खर अक्खरां नाल जुड़ाईआ। फेर मैं इधर उधर झाक्या मैनूं भगतां दी दिसी जमात, बहुत्यों थोड़े ते थोड़िऊँ बहुते नज़री आईआ। फेर मैं सोचिआ लालो दा मेरे पहले दिन दा हिसाब, जो हिस्सा दिता पाईआ। मैं एसे कर के तिन्न दिन बड़ा कीता याद, प्रभू अग्गे अन्दरे अन्दर वास्ता पाईआ। वेखीं किते किशन सिँघ पंज पोह तों पहलां ना जावे भाज, आपणा पल्लू छुडाईआ। सो मैनूं खुशी होई आज, पंज पोह कहे मेरी भगतां नाल वज्जी वधाईआ। हुण प्रभू मेरे पंचम दा पंच रूप वरता दे प्रशाद, गुरमुखां मुख लगाईआ। जिस नूं खा के जन भगतां दा ठीक हो जावे दिमाग, बदी अन्दर रहे ना राईआ। पंज पोह कहिंदा प्रभू मैं हैरान हां कि सतिगुर शब्द ते सतिगुर पूरन वरगा लभ्भणा नहीं कोई उस्ताद, जेहड़ा मार कुट्ट के झिड़क झम्ब के बिना भगती तों सिध्धे रस्ते लाईआ। जिस दे अग्गे अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दा नहीं कोई जुआब, सारे बैठे सीस निवाईआ। बख्शिश
६५३ २२ नाल ते रहमत नाल दई जाए सब नूं खिताब, खाता पिछली माफ़ कराईआ। सब दा प्यार विच प्रेम विच मुहब्बत विच ६५३ २२
ठंडा ते तता वेखे मज़ाज, मज़ाक विच आपणा हुक्म वरताईआ। जिस नूं समझ सके ना कोए जगत सन्त साध, जिज्ञासू सार कोए ना पाईआ। जिस वेले नानक ने पहले दिन वजाई सी रबाब, उँगल सितार नाल छुहाईआ। अक्खां मीटदयां आ गया अगम्मी ख्वाब, शब्द शब्द नाल मिलाईआ। संदेशा सुणया उस महाराज, जो शाह पातशाह शहिनशाह धुरदरगाहीआ। ओ वेख नानक मेरा मेरे दे सिर ते होणा ताज, ताजां वाले जिस नूं सीस निवाईआ। जिस ने भगतां दा रचणा काज, जन्म मरन दोवें आपणे हथ्थ रखाईआ। धर्म दा लगाउणा बाग़, फुलवाड़ी इक महकाईआ। नौ रंग दा गुंचा ल्याउणा खुशी वाली विच मज़ाज, सिंघासण दे अग्गे देणा टिकाईआ। इहो धर्म दी धार तरिपत दा दाज, जिस नाल जगत दी हिरस दए चुकाईआ। पंज पोह कहे जन भगतो तुहानूं पढ़नी ना पए कोए निमाज, रोज्जयां तों दिता छुडाईआ। तुहाडे साहिब कोल तुहाडा लेखा सदा रिहा वाच, वाचक हो के ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंज पोह तेरा प्रेम विच देवे प्रशाद, मोह भगतां नाल रखाईआ।

✪ ६ पोह शहिनशाही सम्मत ६ गुरचरण सिँघ दे गृह जम्मू शहर ✪

पोह कहे प्रभ बख्श दे पद, पतिपरमेश्वर दया कमाईआ। दीन मज़्ब दी मेट दे हद्द, हदूद आपणी दे वखाईआ। भगत सुहेले बणाके आपणी यद, यदपि आपणा रंग रंगाईआ। झगड़ा मेट दे काया माटी हड्ड, तन वजूद ना कोए लड़ाईआ। जेहड़े आत्म धार तैनूं गए छड, सो पुरख निरँजण लैणे मिलाईआ। मेरी बेनन्ती चरण कँवल अज्ज, आजज़ हो के सीस झुकाईआ। सब दे पड़दे लैणे कज्ज, मेहर नजर आप उठाईआ। सच दवारे जाणा सज, साजण हो के होणा सहाईआ। अमृत जाम प्याउणा रज्ज, जगत तृष्ना तृखा मिटाईआ। घर स्वामी कराउणा हज्ज, काअबा इक्को इक वखाईआ। जिथ्थे धुर दा कलमा वज्जे नद, अनादी राग अल्लाईआ। त्रैगुण मूल रहे ना अग्ग, अग्नी तत गंवाईआ। भगतां दरस देणा उपर शाह रग, नौ दवारे डेरा ढाहीआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत, अमृत मेघ देणा बरसाईआ। सच स्वामी बख्श इक्को मति, तूं मेरा मैं तेरा ढोला देणा दृढ़ाईआ। मेरी बेनन्ती दोवें जोड़ के हथ्थ, नमस्ते डण्डावत सजदे विच सीस झुकाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, साहिब सतिगुर तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे अलख जगाईआ। पोह कहे प्रभ मेरी अन्त डण्डावत, सीस जगदीश निवाईआ। तूं मालक सही सलामत, सतिगुर दाता इक अख्वाईआ। सच प्रेम दी बख्श न्यामत, वस्त अमोलक इक वरताईआ। कलयुग मेट अंधेरी शामत, शमा नूर जोत कर रुशनाईआ। मन शब्द ना करे मज़ाहमत, दूई दा लेखा देणा मुकाईआ। हरिजन रहे ना कोए अणजाणत, मूर्ख मूढ़ ना कोए वखाईआ। अबलीस पाए कोए ना लाअनत, तमा दा लेखा देणा चुकाईआ। हउ सेवक इक अणजाणत, दर ठांडे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। नारद कहे पोह तूं केहड़ी करदा मिन्नत, प्रभ अग्गे सीस निवाईआ। कुछ धर्म दी सिख लै इज्ज़त, तैनूं दयां जणाईआ। कूड़ी क्रिया दा बण निन्दक, सति सच दी कर वड्याईआ। फिर वेख लै लेखा लहिंदी दिशा सिम्मत, सीमा मुहम्मद वाली हद्द वखाईआ। सब ने होणा हराम निमक, निमख निमख आपणा आप ना कोए कटाईआ। सदी चौधवीं होणी चिन्त, चिन्ता चिखा रूप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, हरि दाता वड वड्याईआ। नारद कहे पोह वेख लै आपणी वदी सुदी, सुदी वदी बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। पिछली चार जुग दी खेल धुर मालक करनी रद्दी, रहमत आपणी आप कमाईआ। साबत रहिण नहीं देणी कोई गद्दी, गदागर रोवण मारन धाईआ। जगत खुमारी मेटणी मधी, मधुर धुन राग सुणाईआ। जन भगतां होणा नहीं किसे अजी, भय विच ना कोए डराईआ।

६५४ २२

साहिब सुल्ताना रखे लज्जी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सदी चौधवीं जांदी लँघी, आपणा पन्ध मुकाईआ। कलयुग अन्तिम लेखा आया कन्ढी, किनारे रहे कुरलाईआ। प्रभ ने खेल करना विच वरभण्डी, ब्रह्मण्ड देण दुहाईआ। शब्द सतिगुरु गुरदेव उठाउणा जंगी, योद्धा बेपरवाहीआ। जिस भगतां कटणी तंगी, सेहन खुल्ला दए बणाईआ। आत्म धार बख्श अनन्दी, निजानंद करे रसाईआ। लेखा जाणे सूरा सरबंगी, शाह पातशाह शहिनशाह आपणी कार कमाईआ। जेहड़ी सृष्टी पिच्छे दीनां मज़्बां विच वंडी, इक्को रंग रंगाईआ। सब दी आत्मा कर के ठंडी, अग्नी तत दए बुझाईआ। मज़्ब दी रहिण देवे ना कोए पाबन्दी, शरअ दा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे जगत धार वरभण्डी, वरभण्ड आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ ७ पोह शहिनशाही सम्मत ६ जीत सिँघ दे गृह जम्मू शहर ✪

पोह कहे मेरी पवण स्वासी ठंडी, साहिब सतिगुर दिती वड्याईआ। मैं खा के इक सुगंदी, कहां कसम प्रभ दी इक जणाईआ। जन भगतो तूं मेरा मैं तेरा गाउणा छन्दी, शहिनशाह सतिगुर होए सहाईआ। आत्म परमात्म प्रीती जाए गंढी, अग्गे अवर ना कोए तुड़ाईआ। जो चार जुग दी पिछली कीती संधी, सनद गुर अवतार पैग़म्बरां हथ्थ फड़ाईआ। उस दी रहे ना कोए पाबन्दी, जगत शरअ दए तुड़ाईआ। सदी चौधवीं जांदी लँघी, आपणा पन्ध मुकाईआ। पुरख अकाल खेल करनी चंगी, चार कुण्ट वज्जी वधाईआ। सति सच दी देवे अनन्दी, अनन्द अनन्द विच्चों वखाईआ। जेहड़ी वस्त गोबिन्द गोबिन्द मंगी, गोबिन्द झोली दए भराईआ। आयू कल रहे ना लम्बी, अग्गे अवर ना कोए रखाईआ। थल्लयों धरनी रही कम्बी, रो रो रही जणाईआ। सतिगुर शब्द तेरे नाम दी चमके इक्को चण्डी, चण्डका रूप दखाईआ। गुरमुखां आत्म सेज सोहे पलँघी, सुहञ्जणी इक वखाईआ। दूई द्वैती मेटणी कंधी, हउमे रोग गंवाईआ। प्रेम सितार हिलाउणी तन्दी, धुर आपणा राग जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साहिब सुल्तान सूरा सरबंगी, शाह पातशाह शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ ७ पोह शहिनशाही सम्मत ६ राम कौर दे गृह जम्मू शहर ✪

पोह कहे हुक्म संदेशा देवे पौण उनन्जा, धुर दी धार इक समझाईआ। जिस कारन नानक लाया पंजा, संजे द्वापर

अक्ख उठाईआ। हरि गोबिन्द कली चोला पहनया बवन्जा, बावन धार इक अख्वाईआ। गोबिन्द खड़ग खड़काया खण्डा, शस्त्रधारी रूप बदलाईआ। निगह मारी विच वरभण्डा, वरभण्डी नैण उठाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल दा धर्म धार दा वेख्या डण्डा, जो डण्डावत सब दी रिहा बदलाईआ। सदी चौधवीं तक्कया कन्ढ़ा, अन्त अख़ीर मुहम्मद नीर वहाईआ। झगड़ा मुकदा वेख्या तहिमत तम्बा, टोपी सीस ना कोए सुहाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव वेख्या कम्बा, धीरज धीर ना कोए बंधाईआ। दिवस रैण वेख्या वेखी वंड शम्बा, एकँकार दिती वड्याईआ। मानव धार वेख्या संसार सीस नन्गा, ओढण नजर कोए ना आईआ। परवरदिगार सांझे यार दा मुक्कया ढंगा, तरीका तरीक विच्चों वखाईआ। उत्भुज सेत्ज खाणी तकी जेरज अंडा, चारे फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पोह कहे मैं वेखी पारब्रह्म दी शक्ती, आदि शक्ति दए गवाहीआ। झगड़ा तक्कया बूँद रक्ती, तत्व तत खोज खुजाईआ। जुग चौकड़ी तकी भगती, भगवन दिता दरसाईआ। कलयुग अन्तिम दिसे ना कोए व्यक्ति, जो आपणा पड़दा आप चुकाईआ। जिधर वेखां धार होई शक दी, संसा सके ना कोए मिटाईआ। लज्जया मिटे ना किसे नक्क दी, प्रभ मिलण दा मार्ग गए भुलाईआ। आवाज़ सुणी ना कोए हक दी, हकीकत पड़दा ना कोए उठाईआ। सदी चौधवीं वेखी नठदी, भज्जे वाहो दाहीआ। कलयुग खेल तकी भठियाले भट्ठ दी, कूड़ अग्नी रिहा डाहीआ। मन कल्पणा वेखी यक दी, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। माया नागणी तकी खेल सप्प दी, डस्से थांउँ थाँईं थाँईंआ। लड़ी वेखी विकार पप दी, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। वड्याई रही ना किसे जप दी, शास्त्र सारे देण गवाहीआ। चतुराई चले किसे ना मति दी, गुरमति सारे गए भुलाईआ। हुण खेल तकणी कलयुग क्रिया अत दी, अन्त अख़ीर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल करे आपणे आप प्रगट दी, प्रगट हो के आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ ७ पोह शहिनशाही सम्मत ६ सधरो देवी दे गृह पिण्ड दीवाना ज़िला जम्मू ✪

पोह कहे किरपा करे प्रभ सूरा सरबग, हरि करता धुरदरगाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बुझाए अग्ग, तृष्ना तामस दए मिटाईआ। जन भगत सुहेले लभ्भ, लख चुरासी विच्चों खोज खुजाईआ। देवे दरस उपर शाह रग, नौ दवारे डेरा ढाहीआ। मन कल्पणा मेट के हद्द, सुरत शब्द नाल मिलाईआ। आत्म परमात्म बणा के आपणी यद, एका नूर दए चमकाईआ।

भाग लगाए काया अंधेरी खड्ड, साढे तिन्न हथ्थ करे रुशनाईआ। मोह विकार हँकार विभचार देवे कढ, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। निरगुण जोत प्रकाश होवे लट लट, नूर नुराना चन्द चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा रंग आप रंगाईआ। पोह कहे जन भगतो गाओ प्रभ दे गीत, गहर गम्भीर वेख वखाईआ। काया काअबा तक्को हक मसीत, मुसल्ला हक नाम विछाईआ। देहुरा सुहावे साहिब अनडीठ, मन्दिर वज्जे राम वधाईआ। ठगौरी रहे ना मनुआ चीत, चेतन सुरती दए कराईआ। झगड़ा मुकाए ऊच नीच, ज़ात पात दा पन्ध मुकाईआ। साचा कलमा दस्स हदीस, हज़रतां तों परे करे पढ़ाईआ। जिस गृह वसे साहिब वसनीक, एकँकारा डेरा लाईआ। सो दवार होए तस्दीक, शहादत आपणी दए भुगताईआ। मानव मानव दिसे ना कोए शरीक, शरक्त कूड़ी दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ। पोह कहे जन भगतो गाओ गहर गम्भीर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। शांत होवे शरीर, अग्नी तत बुझाईआ। अमृत बख्शे सीर, निझर झिरना आप झिराईआ। बदल देवे तकदीर, तदबीर आपणी इक वखाईआ। लेखे लावे शाह हकीर, ग़रीब निमाणे गोद उठाईआ। शरअ दा तोड़ ज़ंजीर, साची मंजल दए पहुंचाईआ। जिस गृह वसे कबीर, कबरां तों बाहर डेरा लाईआ। सो मालक ख़ालक प्रितपालक झगड़ा मुकाए ग़रीब अमीर, अमरापद इक जणाईआ। सति दा सांझा बख्श के चीर, वस्त्र कूड़ कुड़यारा दए गंवाईआ। मन्दिर चोटी चढ़ अख़ीर, सचखण्ड दवारा इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जन भगतां सदा कटणहारा भीड़, चुरासी फाँसी जम की दए तुड़ाईआ।

७ पोह शहिनशाही सम्मत ६ गुरदित सिँघ दे गृह छम्ब ख़ास

पोह कहे मेरा प्रविष्टा सत्त, प्रभ सति दए वड्याईआ। तक प्रेमी तत, तत्व पड़दा आप उठाईआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत, अमृत मेघ देणा बरसाईआ। धीरज सन्तोख देणा जत, धर्म दी धार इक वखाईआ। मेहरवान महिबूब सिर रखणा हथ्थ, पुश्त पनाह आप टिकाईआ। नाम भण्डारा बख्शणी वथ, अमोलक इक वरताईआ। गाउणा सर्ब कला समरथ, हरि वडा वड वड्याईआ। तेरी महिमा जगत अकथ, जुग चौकड़ी कथ सके कोए ना राईआ। मेरे दोवें ख़ाली हथ्थ, दाता तेरे अग्गे वास्ता पाईआ। हर हिरदे जाणा वस, वास्तक आपणा रंग रंगाईआ। अमृत निझर देणा रस, बूँद स्वांती नाभी

कँवल टपकाईआ। निज नेत्र खोल्हणी अक्ख, मिलणा प्रतख गुसाँईआ। तेरे तेरे नालों होवण ना वक्ख, गृह इक्को देणा वसाईआ। मेरा नाम जैकारा होवे अलख, अगोचर तेरी बेपरवाहीआ। दर्शन देणा हो प्रगट, सन्मुख हो के सोभा पाईआ। जन्म कर्म दा लेखा देणा कट, कटाक्ष इक्को नाम लगाईआ। सति दवारा वखाउणा हट्ट, पड़दा अन्तर निरन्तर उठाईआ। तीर्थ सुहाउणा तट, मुनारा इक्को वेख वखाईआ। नाद सुणाउणा शब्द अनहद, नादी धुन वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। पोह कहे प्रभ मेरा दिवस होवे सुहञ्जणा, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जन भगतां बणना दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराईआ। नेत्र नाम निधान पाउणा अंजणा, दुरमति मैल देणी गंवाईआ। आत्म परमात्म बणना सज्जणा, साक सैण इक हो आईआ। नाम वखाउणा साचा वञ्झणा, मुहाणा धुरदरगाहीआ। प्रेम प्रीती चाढ़नी रंगणा, रंगत अगम्म अथाहीआ। जन भगतां दवारा पए कोए ना मंगणा, भिक्खक रूप ना कोए दरसाईआ। इक्को घर वसावे आहला अदना, ऊच नीच दा डेरा ढाहीआ। तूं गोपाल मूर्त मदना, स्वामी इक अख्वाईआ। जिस तारे छींबे नाई कबीर जुलाहे सदना, सैण वेख वखाईआ। अन्तिम सब दा पड़दा कज्जणा, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। पोह कहे मेरे साहिब सुल्ताना, सति सच देणी सरनाईआ। जोधे सूरबीर मर्द मर्दाना, कल तेरी ओट तकाईआ। हुक्म वरताउणा इक जहाना, निरगुण सरगुण आप समझाईआ। शब्दी राग बख्श तराना, तुरीआ तों परे कर पढ़ाईआ। तेरा आत्म नूर मिले महाना, परमात्म तेरे विच समाईआ। सच दवारा इक वखाणा, सचखण्ड साचा आप सुहाईआ। जोती नूर होवे नुराना, अंध अंधेर ना कोए प्रगटाईआ। मेहरवान महिबूब दर तेरे वास्ता पाणा, निउँ निउँ लागां पाईआ। सदी चौधवीं कर ध्याना, निज नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। उम्मत उम्मती बन्हू गाना, सगण मनाउणा चाँई चाँईआ। कलि कल्की पहरया जामा, जामन होणा बेपरवाहीआ। तेरा भगत सुहेला रहे ना कोए निथावां, निज घर आपणे लैणा टिकाईआ। प्यार मुहब्बत करीं ज्यों लाड लडावण मावां, गोदी गोद गोद वखाईआ। आपणा कंडा तोल तराज़ू निरगुण करीं सावां, वद्ध घट्ट ना कोए बणाईआ। मैं खेल वेखां नाल चावां, चाओ घनेरा इक प्रगटाईआ। पतिपरमेश्वर पारब्रह्म पुरख अकाले इक्को तेरा प्रेम हंढावां, दूजी सेज ना कोए सुहाईआ। गल पल्लू वास्ता पावां, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गृह मन्दिर वेखणा साढे तिन्न हथ्थ गरावां, घर घर अन्तर आपणा नूर नूर कर रुशनाईआ।

✪ ८ पोह शहिनशाही सम्मत ६ संसार सिँघ दे गृह छम्ब ख़ास ✪

नारद कहे मैनूं कलयुग दिता इशारा, बिन नैणां नैण उठाईआ। वेख मेरा किनारा, अन्त अन्तष्करन तक ख़लक खुदाईआ। धर्म दा वज्जे ना कोए नगारा, नौबत नाम ना कोए सुणाईआ। नव सत्त धूंआँधारा, प्रभ दा नूर ना कोए चमकाईआ। मोह विकार हँकार लग्गा अखाड़ा, विभचार करे जगत लोकाईआ। झगड़ा प्या पुरख नारा, पिता पूत रिहा लड़ाईआ। सच दा रिहा ना कोए दवारा, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले सारे रहे कुरलाईआ। अठसठ तीर्थ रोवे ज़ारो ज़ारा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। मेरा खेल अपर अपारा, अपरम्पर स्वामी दिता कराईआ। मैं योद्धा सूरबीर बण बलकारा, बल आपणा दिता वखाईआ। हुक्म चलण दिता नहीं पैग़म्बर गुर अवतारा, उम्मत लेखा ना कोए प्रगटाईआ। फिरी दरोही जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, टिल्ले पर्बत दिते हिलाईआ। प्रभ मिल्या ना किसे धुर दा लाड़ा, लाड़ी मौत सब नूं रही प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे मैं वेख्या जगत जग, सति सच दी अक्ख उठाईआ। चारों कुण्ट तत्ती वाअ रही वग, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। मक्के करे कोए ना हज्ज, हुजरा हक ना कोए सुहाईआ। नाम सुणे कोए ना सद, छन्दी राग ना कोए अलाईआ। झगड़ा वेख्या दीन मज़्हब दी हद्द, हदूद पार ना कोए कराईआ। प्रभ दी बणे कोई ना यद, बंस सरबंस ना कोए सुहाईआ। सति धर्म नूं सारे गए छड, कूड़ कल्पना विच कुरलाईआ। बिन हरिनामे ख़ाली दिसण हड्ड, रंगत रंग ना कोए रंगाईआ। जगत प्याले हउमे मदि, नाम खुमारी ना कोए रखाईआ। सच दवार किसे पए ना लभ्भ, दर ठांडे सीस ना कोए निवाईआ। अचरज खेल कीती आप प्रभ, कलयुग कलकाती रिहा जणाईआ। हँकार अग्नी रही वग, शोहले जगत विच वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता अगम्म अथाहीआ। नारद कहे मैनूं कलयुग रिहा अवाज़ी मार, कूक कूक सुणाईआ। आह वेख मुहम्मदी यार, सदी चौधवीं पन्ध मुकाईआ। लहिणा तक मुहम्मदी यार, निशान जगत विच वड्याईआ। ईसा सुण पुकार, मूसा मोह तुड़ाईआ। कलमा करे ना कोए प्यार, कायनात ना कोए चतुराईआ। चारों कुण्ट आई हार, जत सति ना कोए चतुराईआ। अन्तिम सब नूं पैणी मार, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। पैग़म्बर रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। की खेल करना परवरदिगार, सांझे यार आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल करे अगम्म अपार, जगत बुद्धी समझ कोए ना पाईआ।

✪ ८ पोह शहिनशाही सम्मत ६ ज्ञान चन्द दे गृह पिण्ड ख़ैरोआली ज़िला जम्मू ✪

पोह कहे मैं हुक्म संदेशा देवां श्री भगवान, हरि करता रिहा दृढ़ाईआ। की खेल होणा जगत जहान, जगजीवण दाता पर्दा रिहा चुकाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी मार ध्यान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां भेव रिहा चुकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु कर के सवाधान, आलस निंद्रा सब दी दूर कराईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक देवे फ़रमान, फरमांबरदारां आप सुणाईआ। कायनात कलमा तक्को हक इस्लाम, इस्म आज़म पड़दा दयो उठाईआ। क्यों शरअ शरीअत बणी हराम, सिदक सबूरी हक ना कोए कमाईआ। क्यों झगड़ा दिसे अवाम, आलमां इलम ना कोए चतुराईआ। भेद खुल्ह्या नहीं साढे तिन्न हथ्थ ग्राम, नगर खेड़ा ना कोए वसाईआ। ममता मिटी ना पंज शैतान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार होया हल्काईआ। सति धर्म दा रिहा ना कोए ईमान, इस्म आज़म ना कोए जणाईआ। मंज़ल चढ़े ना कोए इन्सान, दरगाह सच ना कोए सुहाईआ। की हुक्म संदेशा देवे देवणहार नौजवान, नर नरायण आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पोह कहे मेरा महीना आया मात, मात्रा भूमी दयां जणाईआ। वेखणा खेल पुरख अबिनाश, हरि करता आपणी कल वरताईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु तकणा साथ, सगला संग बणाईआ। चार जुग दी सिफ्ती तकणी गाथ, अक्खरां वाली मात पढ़ाईआ। किस बिध मेटणी अंधेरी रात, सतिजुग सति करे रुशनाईआ। झगड़ा रहे ना ज़ात पात, दीन दुनी दा पन्ध मुकाईआ। इक्को लेखा दिसे काग़ज़ात, काग़ज़ कलम शाही सिफ्त सालाहीआ। आत्म परमात्म कर आज़ाद, शरअ दा लेखा दए चुकाईआ। धुन सुणाए अगम्मी राग, तुरीआ तों बाहर करे पढ़ाईआ। मन कल्पणा मेट वाद विवाद, कूड़ कुकर्म दा लेखा दए मुकाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी भेव खुल्हाए ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड आपणा रंग रंगाईआ। झगड़ा रहे ना रोज़ा बांग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर हुक्म इक सुणाईआ। पोह कहे मैं सुणया हुक्म अपारा, अपरम्पर स्वामी रिहा जणाईआ। खेल होणा विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान लगाईआ। कलयुग कूक कूक पुकारा, नाअरा इक्को इक सुणाईआ। सदी चौधवीं आई तेरे दवारा, वारस सारे पल्लू रहे छुडाईआ। तेरा हुक्म वरते नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप ना कोए मेटणहारा, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। दर दरवेश नर नरेश ठांडे करां निमस्कारा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तेरा खेल कलि कल्की अवतारा, निहकलंक आपणा हुक्म वरताईआ। अमाम अमामे वड सिक्दारा, शाहो भूप तेरी रुशनाईआ। अलाही नूर तेरा उज्यारा, अलख अगोचर इक अख्वाईआ। अन्तिम सब दी पावां सारा, महासार्थी भज्जण वाहो दाहीआ।

निशान मेटणा चन्द सितारा, सतह बुलंदी डेरा ढाहीआ। जन भगतां बणना मीत मुरारा, सन्त सुहेले लैणे तराईआ। गुरमुख नूर नूर पावे सारा, दर ठांडा इक दरसाईआ। पोह कहे मेरी डण्डावत बन्दना अनक बारा, अनक कल धारी तेरी इक सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण तेरा खेल न्यारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग समझ किसे ना आईआ।

✪ ८ पोह शहिनशाही सम्मत ६ ज्ञान सिँघ दे गृह पिण्ड नवां चक्क ✪

पोह कहे हरि गोबिन्द अट्ठ वार भवाया रस्सा, अट्ठ पोह दए गवाहीआ। फेर ज़ोर नाल नस्सा, ढाई सौ कदम पन्ध मुकाईआ। फिर खिड़ खिड़ा के हस्सा, ताली दो हथ्थां दिती वजाईआ। फिर पुरख अकाल टेक्या मथ्था, सीस जगदीश निवाईआ। फिर हुक्म सुणया अलखणा अलखा, अलख अगोचर दिता जणाईआ। हरि गोबिन्द तूं बन्नॄणा कमरकसा, कमर धार इक जणाईआ। फेर आवे मेरा गोबिन्द बच्चा, सोहणा रूप बदलाईआ। जिस पहनाउणा जत सति दा कच्छा, पंच ककार नाल रलाईआ। माण वड्याई दे के कक्खां, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। ज़ात पात दा मेट के रट्टा, रटन इक्को देणी लगाईआ। सति सरूप दस्स के तथा, यथार्थ मेरा रंग रंगाईआ। फिर आत्म परमात्म होणी कथा, कथा कहाणी देणी सुणाईआ। शब्द सतिगुर देणी अगम्मी वथा, वस्त अमोलक इक वरताईआ। पारब्रह्म फिरे नट्ठा, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। सन्त भगत करे इक्ट्ठा, जुग जुग विछड़े जोड़ जुड़ाईआ। झगड़ा मुका के पथ्थर वट्टा, पाहन पूजण कोए ना पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्से टप्पा, आत्म परमात्म रंग रंगाईआ। कोई ना खाए वच्छा कट्टा, पंखेरू खल्ल ना कोए लुहाईआ। मदि पीए ना गट गटा, नाम रस आपणा चखाईआ। उस दा खेल होणा विच जट्टा, जटा जूट धारी दए मिटाईआ। सूरबीर बहादर बण के हट्टा कट्टा, हुक्म आपणा इक वरताईआ। भाग लगा के काया मट्टा, सम्बल साढे तिन्न हथ्थ सुहाईआ। धरनी धरत धवल सुफल कराए घट्टा, जिस उपर चरण छुहाईआ। कलयुग उलटी गेड़े लट्ठा, जगत जहान आप भवाईआ। झगड़ा मुका के अट्ठ सट्ठा, चरण सरोवर दए नुहाईआ। मानव मानस बदल के मता, गुरमति इक्को दए समझाईआ। सचखण्ड दवार दा दस्स के पता, पतिपरमेश्वर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड निवासी सचखण्ड दवार आप वसा, सच गृह आपणा आसण लाईआ।

✪ ८ पोह शहिनशाही सम्मत ६ भाग सिँघ दे गृह पिण्ड मलक कैंप ✪

अठ पोह कहे मैं प्रभू दे परसां पग, बिन सीस सीस जगदीश झुकाईआ। जो साहिब सुल्तान सूरा सरबग, शाह पातशाह शहिनशाह बेपरवाहीआ। जिस खेल खेलणा सृष्टी विच जग, जागरत जोत बिन वरन गोत कर रुशनाईआ। त्रैगुण कल्पणा वेखणी अग्ग, नौ खण्ड सत्त दीप फोल फुलाईआ। मक्के काअबिआ मुकणा हज्ज, हुजरयां पड़दा लाहीआ। मन्दिर मसीत शिवदुआले वेखणे मट्ठ, गुरदवार आपणा पन्ध मुकाईआ। लेखा जानणा तीर्थ अट्ठ सट्ठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती ओहला रहे ना राईआ। कर्म कांड दा लेखा तकणा घट घट, गृह गृह अन्दर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पोह कहे प्रभ दा खेल वेखणा महीन, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जिस दा चार जुग करे ना कोए यकीन, यके बाद दीगरे गुर अवतार पैग़म्बर गए समझाईआ। जो शाह पातशाह शहिनशाह अज़ीम, आलीजाह नूर अलाहीआ। जिस दा हुक्म शब्द नाम कलमा चले कदीम, कुदरत दा मालक धुरदरगाहीआ। जिस नूं कहिंदे ख़ालक ख़लक रहीम, रहमत इक कमाईआ। जिस ने दीन मज़्हब कीती तक्सीम, जुज़ां विच मनुशां वंड वंडाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला सांझी दे तालीम, धुर दी सिख्या इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता अगम्म अथाहीआ। पोह कहे मेरा मेहरवान दए संदेशा, अगम्मी राग जणाईआ। मालक इक नरेशा, नर नरायण बेपरवाहीआ। जिस दा सम्बल सुहञ्जणा देसा, सच गृह वज्जे वधाईआ। कलयुग अन्तिम वेखे लेखा, सदी चौधवीं खोज खुजाईआ। अवतार पैग़म्बर ना रहे कोए भुलेखा, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। झगड़ा मेटे मुल्ला शेख़ा, मुसायकां डेरा ढाहीआ। जिस कारन अर्जन सीस पवाई रेता, रावी भावी नाल रलाईआ। सो परमात्म जन भगतां करे हेता, आत्म मेले सहिज सुभाईआ। सचखण्ड निवासी बण के नेता, नौजवाना मर्द मर्दाना आपणा हुक्म वरताईआ। दीन मज़्हब दा ज़ात पात दा कूड़ कुकर्म दा पूरा कर के ठेका, ठाकर अग्गे आपणा हुक्म वरताईआ। सतिजुग साचा सति दा कर के एका, एकँकार आपणा रंग रंगाईआ। जन भगतां बुध कर के बिबेका, दुरमति मैल धुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पोह कहे मैनूं आया हुक्म फ़रमाना, हरि सच सच जणाईआ। खेल वेख दो जहानां, निरगुण सरगुण आप कराईआ। जिस दा हुक्म ना कोए मेटे राजा राणा, रईयत सीस ना कोए उठाईआ। उस कलयुग कूड़ी क्रिया अन्त मिटाणा, अंध अंधेरा दए गंवाईआ। सतिजुग साचा सच प्रगटाणा, सति धर्म करे रुशनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्सणा गाणा, धुर संदेशा इक सुणाईआ। इक्को बेड़ा

चलाउणा वञ्झ मुहाणा, दूसर नईया नौका ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण होवे जान जाणा, जाणी जाण इक अखवाईआ।

✪ ६ पोह शहिनशाही सम्मत ६ पूरन सिँघ दे गृह पिण्ड मलक कैंप ✪

पोह कहे मैं दस्सां नाल प्यार, भेव अगम्म खुलाईआ। नौ प्रविष्टे दिवस विचार, त्रेता जुग ध्यान रखाईआ। राजा जनक मिथलपुरी सिक्दार, धर्म दी धार वड्याईआ। पहाड़ लहिंदे दी दिशा गया नाल विचार, आपणा पन्ध मुकाईआ। तक्कया खेल सच्ची सरकार, हरि करता रंग वखाईआ। जोबनवन्ती दिसी इक नार, जो नर नरायण लिख के गल विच लटकाईआ। रसना तूं ही तूं ही रही उच्चार, हिरदे अन्दर हरि लिव लाईआ। कदे कदे नैण लए उग्घाड़, अक्खी फेर बन्द कराईआ। फिरे विच उजाड़, जंगल चाँईं चाँईंआ। रोवे ज़ारो ज़ार, नैणां नीर वहाईआ। मिले माही मेरा निरँकार, निरवैर अंग लगाईआ। जिस दी सिक विच बीते इक सौ वीह साल, जगत तृष्ना ना कोए रखाईआ। फिरदी वांग कंगाल, तन वस्त्र ना कोए सुहाईआ। खुले रखे वाल, वैरागण रूप वटाईआ। जनक दे कोल कीता आ सवाल, प्रेम नाल सुणाईआ। दस्स किथ्थे मेरा भगवान, मैनूं दे मिलाईआ। जनक अन्तर आया ज्ञान, दृष्टी दृष्टी विचों बदलाईआ। एह भगती विच महान, पूरब जन्म दी सोभा पाईआ। जेकर एहदे घर हो जावे सन्तान, उस लोकमात मिले वड्याईआ। मेरी इच्छया इच्छया बलवान, प्रभ दी आस रखाईआ। हर घट इशारा कीता नौजवान, उँगल असमान वल्ल उठाईआ। ओह तक मेरा मेहरवान, जो हर घट रिहा समाईआ। जिस दे कोलों तैनूं दे के चलया दान, वस्त अमोलक तेरी कुक्ख टिकाईआ। जो मेरे घर होवे परवान, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। उस दा झुल्ले फिर निशान, निशाना जगत जणाईआ। जिस नूं प्रगट हो के मिले राम, राम रामा रूप बदलाईआ। तेरा लेखा रखे विच जहान, जागरत जोत कर रुशनाईआ। फिर जनक ने हथ्थ लाया उत्ते धनुख बाण, चिल्ला तीर तरकश दिता हिलाईआ। फेर हुक्म दिता जाह आपणे मन्दिर मकान, सुख आसण सोभा पाईआ। जिस वेले समां बीत्या खेल होए महान, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। तेरे गृह जन्मे बाल अंञाण, बाली बुद्ध वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पोह कहे नौ पोह दिवस सी चंगा, सोहणी रुत सुहाईआ। प्रेम धार वहे गंगा, गंगोतरी रंग वखाईआ। सच दा आया अनन्दा, ठंडी पवण

सुहाईआ। जिस दा भेव जाणे ना कोए पंडा, शास्त्र कहिण कोए ना आईआ। एह खेल साहिब बख्शिंदा, हरि करता रिहा कराईआ। लेखा जगत जहान जीव संदा, सँध्या दा वक्त सुहाईआ। जिस तपसणी दे कोल नहीं कोई बन्दा, ओह किँवला बणी जणेंदी माईआ। मेहर करे गुणी गहिन्दा, हरि दाता वड वड्याईआ। कन्या रूप पंज तत सोहिंदा, सोहणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणा रंग चढ़ाईआ। नौ पोह कन्या ल्या जन्म, सीता सति सति वड्याईआ। मईआ रिहा भरम, भरम विच भवाईआ। इहो मेरा धर्म, जनक दी झोली दयां टिकाईआ। जिस दा ना कोए ज़ात ना कोई धर्म, ब्रह्म ब्रह्म विच समाईआ। शब्दी धार पूरा होया प्रन, परम पुरख दिती वड्याईआ। उधरों आ गया इक हरन, छलांगां मारे चाँईं चाँईंआ। किँवला दे आ के लग्गा चरण, नीवां मुख वखाईआ। तपसणी लग्गी फड़न, उस ने सीस दिता झुकाईआ। ओन झट सीता बन्नृ के लड़न, उहदे गल दिती लटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा लेखा आप प्रगटाईआ। हिरन गल बद्धी सीता, सति सति वड्याईआ। उधरों जनक दी वेखो रीता, इक सौ इक साथी नाल चलया चाँईं चाँईंआ। जिथ्थे कौल इकरार सी कीता, ओस धाम पुज्या आपणा पन्ध मुकाईआ। ओधरों मृग आया ठीका, आपणा बल धराईआ। कोलों रोया बाल नीका, कूक कूक सुणाईआ। जिस वेले माणस सुणीआं चीकां, हुक्म सुणया शहिनशाहीआ। जनक ने मारीआं तिन्न लीकां, लाईनां तिन्न बणाईआ। इस नूं फड़ो नाल तोफ़ीका, आपणा बल धराईआ। मृग आ गया नज़दीका, नेड़े आ के सीस झुकाईआ। आह लेखा लै लै जी जी का, जीवण तेरे हथ्थ फड़ाईआ। जनक ने ध्यान धरया उहनूं वक्त याद आया ठीका, जो रसना बचन दिता सुणाईआ। उस कर के सच प्रीता, आपणी गोदी लई टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, प्रेम प्यार दी धार दस्से रीता, त्रैगुण तों बाहर आपणा खेल खिलाईआ।

९६४
२२

✪ ६ पोह शहिनशाही सम्मत ६ रसाल सिँघ दे गृह पिण्ड मनावर ✪

जनक ने कन्या वल्ल कीती अक्ख, उँगल मस्तक उत्ते टिकाईआ। प्रभ दा नूर दिसया प्रतख, साख्यात सोभा पाईआ। फेर जैकारा सुणया अलख, अगम्म अगोचर दिता दृढ़ाईआ। तेरा जगत जहान वाला नत, रिश्ता तन वजूद वखाईआ। ओधरों हिरन नेड़े आ गया झट्ट, मुख उपर ल्या उठाईआ। धुर दा हुक्म सुणया सच, सुनेहड़ा बेपरवाहीआ। खुशीआं नाल प्या हस्स, करवट लई बदलाईआ। तेरा खेल प्रभू समरथ, आदि अन्त समझ किसे ना पाईआ। हुण इस कन्या होणा धर्म दवार

दे वस, जनक सपुत्री जगत वड्याईआ। चौदां साल धोणा नहीं मूँह हथ्थ, बाल अवस्था इस दी वड वड्याईआ। जोती जोत सर्पू हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। हिरन ने जनक कीती प्रणाम, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। फिर निगह मारी तमाम, नैण अक्ख उठाईआ। फेर तक्कया राम दा राम, पंज तत वजूद सुहाईआ। फेर वेख्या अंधेरा शाम, नूर ना कोए चमकाईआ। फेर जाणया खेल महान, जूहां जंगल खोज खुजाईआ। फेर बनबासी रूप तक्कया भगवान, भगवन आपणी कल वखाईआ। फिर रावण दा तक्कया निशान, लंकापती की राह तकाईआ। फिर हिरन ने वेख्या बीआबान, निज नेत्र नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। हिरन ने किहा जनक आह लै आपणी वस्त, तेरी झोली पाईआ। फेर खेल होणा उत्ते धरत, धरनी धवल वेख वखाईआ। मैं फिर आवां परत, पतिपरमेश्वर मैनूं रिहा जणाईआ। जिस राम पिच्छे राम दी धार आई उतों अर्श, अर्शी प्रीतम दिती वड्याईआ। पूरब दा लहिणा मुक्कया कर्ज़, लेखा रिहा ना राईआ। अग्गे खेल करना असचरज, अचरज लीला देणी वरताईआ। योधा सूरबीर मर्दाना बण के मर्द, आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। मृग ने किहा वेख मेरा नैण, नैण नैण नाल

मिलाईआ। मैं संदेशा आया कहिण, कहि के दयां सुणाईआ। जिस ने तेरी सिफ्तां भरी लिखी रमाइण, राम रामा वड वड्याईआ। उस दा अन्त रहिणा नहीं कोई सैण, सज्जण आपे अख्वाईआ। दिवस रैण मिले ना चैन, बन खोजे थाउँ थाईंआ। जिस वेले समां पहुँचया ऐन, वक्त वक्त नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। हिरन किहा जनक, जनक सपुत्री खेल खिलावांगा। धुर दा हुक्म वेख वखावांगा। लंकापती नाल मिलावांगा। रावण रूप अनूप दरसावांगा। बंक दवारे सोभा पावांगा। राम राम दी वंड वंडावांगा। ब्रह्मण्डां पड़दा लाहवांगा। चण्ड प्रचण्ड दा रूप धरावांगा। जगत धार धार लँघ, आपणी कल वरतावांगा। जिस दा राम नाल संग, सो संग विछोड़ा विच रखावांगा। एह खेल सूरा सरबंग, दूसर अवर ना कोए जणावागा। जिस ने त्रेता करना भंग, दुष्ट हँकारीआं गढ़ तुड़ावांगा। मैं तेरे दर तों इक्को वार मंगी मंग, मांगत हो के झोली डाहवांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त सब दा लहिणा देणा लेखा जाणे ब्रह्मण्ड खण्ड विच वरभण्ड, ब्रह्मादी अनादी आपणा पड़दा लाहीआ।

६६५
२२

✪ ६ पोह शहिनशाही सम्मत ६ साहिब सिँघ दे गृह पिण्ड मनावर ✪

मृग किहा तेरी धर्म धार दी अंस, पारब्रह्म ब्रह्म दिती वड्याईआ। तेरा सति सति दा बंस, सरबंस वज्जे वधाईआ। इस दा अनन्द कारज होणा नाल धनुष, जगत रीती ना कोए वड्याईआ। जगत मनसा रहे ना शंक, संसा देणा चुकाईआ। जिस खेल करना त्रेता अन्त, अन्त आपणा रूप धराईआ। सच विहार बणाए बणत, गुरदेव स्वामी संग रखाईआ। जिथ्थे लेखा नहीं किसे जन्नत, स्वर्ग ना रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। जनक ने वेख्या ध्यान कर अन्तर, अन्तष्करन तों बाहर खोज खुजाईआ। प्रभ दा खेल दिसया निरन्तर, निराकार रिहा वखाईआ। जिस दे ब्याह दा पढ़ना नहीं किसे वेद मन्त्र, वेदी विद्या नाल ना कोए वड्याईआ। खुशी होणी गगन गगनंतर, ज़िमीं असमानां वज्जे वधाईआ। जिस ब्रह्मे दे बीते अनेक मनवन्तर, बैठा ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। जनक ने निगह मारी वेख्या अगम्म विचार, परम पुरख दृढ़ाईआ। जिस विच झगड़ा नहीं कोई समाज, जगत रीती ना कोए वखाईआ। धर्म दे पती दा धर्म दा ताज, धर्म दी रखया करे चाँईं चाँईंआ। राम राम दा मुहताज, दूजी लोड़ ना कोए रखाईआ। सीता सति दा लै के दाज, धुर दरबार दी तृष्ना इक रखाईआ। कूड़ी क्रिया छड के राज, रईयत लेखा दए मुकाईआ। जिन्ह चौदां साल मुख धोता नहीं घर पित मात, चौदां साल बनबासी रूप प्रगटाईआ। रघुपति दा देणा साथ, पती पतिवन्त सेव कमाईआ। एह खेल शंकर वेखे उपर कैलाश, कलधारी आपणा पड़दा लाहीआ। जिस राम ने रावण दा करना नास, त्रेता त्रीया रूप बदलाईआ। सती दी सति दा होणा दास, सीता सति विच समाईआ। जिस नूं वेखण पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण जाणे खेल तमाश, जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ ६ पोह शहिनशाही सम्मत ६ तोती देवी दे गृह पिण्ड निगयाल ✪

जनक सपुत्री अवस्था बाल, बाली बुध ध्यान लगाईआ। प्रभ मिले दीन दयाल, दयानिध दया कमाईआ। मेरी सुरती सुरत लए संभाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। झगड़ा मेट के शाह कंगाल, इक्को रंग दए रंगाईआ। जिस त्रेते अवल्लड़ी

चलणी चाल, चाल निराली इक पगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि दाता बेपरवाहीआ। दुलारी आया धुर संदेशा, धुर दे राम दिता दृढ़ाईआ। तेरा राम दे राम नाल लेखा, लिख्त धुर दी दए गवाहीआ। छडणा पैणा बाबल देसा, मिथलपुरी पन्ध मुकाईआ। अयुध्या होणा वेसा, दसरथ सुत रुत सुहाईआ। फेर सौहरा रहिणा नहीं पेका, दोवें देणा तजाईआ। राम दे राम ने बदलणा भेखा, बनबासी रूप प्रगटाईआ। झट सीता ने आपणा मस्तक वेखा, नैण नैण वखाईआ। फेर प्रभ नूं मथ्था टेका, सीस दिता झुकाईआ। तेरा खेल वार अनेका, अकल कलधारी तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। जनक दुलारी तक्कया उपर असमां, असमानी धार पार कराईआ। ना कोई पिता दिसया ना कोई माँ, संगी संग ना कोए निभाईआ। ना कोई राग तराना शब्द दिसया नाँ, सिफ्ती वाली ना कोए पढ़ाईआ। ना कोई संगी साथी पकड़े बांह, सगला संग ना कोए निभाईआ। सतिजुग त्रेता लोकमात करे वाह वा, वाहवा तेरी वड वड्याईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जगत समाज दा चलया राह, दीन दुनी वंड वंडाईआ। फेर वेखे थल अस्गाह, जलां तों पार अक्ख उठाईआ। उफ़ हाए मेरे राम ने हो जाणा मैथों जुदा, की करता कल वरताईआ। बाली बुध कर सकी ना कोए न्याँ, प्रभ दे अग्गे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी लहिणा देणा जाणे थांउँ थाँ, थान थनंतर वेख वखाईआ।

✪ ६ पोह शहिनशाही सम्मत ६ शाहणी देवी दे गृह पिण्ड छम्ब ✪

जनक तकी आपणी करनी, प्रभ भगती वेख वखाईआ। जिस विच इक दी मिली सरनी, सरनगति इक अख्वाईआ। जिस दी इक्को तुक सब ने पढ़नी, आत्म परमात्म राग गाईआ। ओह लेखा जाणे चोटी जड़नी, जड़ चेतन फोल फुलाईआ। जिस दे हुक्म नाल सीता खारे चढ़नी, ख़ालस आपणी कार भुगताईआ। उस दा लेखा कोई ना जाणे हरनी फरनी, राम दा राम बेपरवाहीआ। जिस दी धार धार नाल लड़नी, सति असति नाल दए टकराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जनक वेखी धार अनोखी, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जिस नूं समझे कोए ना मातलोकी, लोक लोकांत पड़दा ना कोए उठाईआ। जिस दी भेंटा हो ना सकण माणक मोती, हीरे लाल जवाहर ना कोए चतुराईआ। जिस दी आदि तों जगदी जोती, अन्तिम जोत रुशनाईआ। जिस दी सिफ्तां वाली सारे पढ़न

पोथी, पुस्तक हथ्थां विच उठाईआ। मंज़ल मिले ना औखी, दर ठांडा ना कोए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। जनक दे अन्दर होया इक इशारा, सहिज सहिज दरसाईआ। औह वेख खेल अपारा, अपरम्पर रिहा दृढ़ाईआ। जिस सीता दा राम नाल प्यारा, प्यार मुहब्बत विच समाईआ। उस दा होणा अन्त किनारा, विछोड़े विच कुरलाईआ। जुग बीत्या सारा, महासार्थी आपणा रंग रंगाईआ। जिस लेखा लिख्या बण के बाल्मीक बटवारा, भेव अभेदा दए जणाईआ। फेर छडणा पए जगत संसारा, नाता मात तुड़ाईआ। उठ वेख कलयुग अंध अंध्यारा, चारों कुण्ट अंधेरा छाईआ। राम दा राम कलि कल्की लए अवतारा, कल आपणी कल प्रगटाईआ। जिस नूं झुकणे पैग़म्बर गुर अवतारा, बैठण सीस निवाईआ। उस दा खेल होणा धरनी धरत उत्ते अपर अपारा, अपरम्पर स्वामी आपणी कार कमाईआ। सीता दा सति दा बणना सहारा, सुरत शब्द नाल कुड़माईआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर करे आप निरँकारा, भगत भगती विच भगवन मिलण कोए ना पाईआ। फेर जोत दा दे चमत्कारा, नूर नुराना दए दरसाईआ। जनक झट कीती निमस्कारा, निउँ निउँ लागा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शाह पातशाह शहिनशाह तेरा आदि अन्त दा इक सहारा, दूजा नज़र कोए ना आईआ।

६६८
२२

✪ ६ पोह शहिनशाही सम्मत ६ फुमण सिँघ दे गृह पिण्ड छम्ब ✪

बाल्मीक ने मुख विच पा लई कानी, कलम कालम लिखण तों लई बचाईआ। अन्तर आई हैरानी, हैरत विच ध्यान लगाईआ। निगाह कर उपर असमानी, निज नैण करी रुशनाईआ। तकी परम पुरख जोत नुरानी, नूर नुराना सोभा पाईआ। जिस दा खेल अवतार जिस्म जिस्मानी, तत्तां रंग रंगाईआ। शब्द दे धुन्कानी, नादी नाद सुणाईआ। राम दा राम दिसे बानी, बनबासी वेखे चाँईं चाँईंआ। जिस दी खेल दो जहानी, जनक सपुत्री समझ कोए ना आईआ। फेर करया चरण ध्यानी, प्रभ चरण सीस झुकाईआ। मेरी विद्या दी नहीं कोई विद्वानी, विद्दत माण ना कोए रखाईआ। परम पुरख कर मेहरवानी, मेरा अन्तर मंग मंगाईआ। अबिनाशी करते संदेशा दिता बिना ज़बानी, फ़रमाना धुर दा इक दृढ़ाईआ। उठ वेख त्रेता ना रहे निशानी, राम रावण संग रलाईआ। द्वापर खेल होणा हैरानी, हैरत विच सर्ब कुरलाईआ। कलयुग अन्तिम शाह पातशाह शहिनशाह लेखा जाणे जाण जाणी, जानणहार आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जिस वेले दीन दुनी विच होई

बेईमानी, बेवा रूप होए लोकाईआ। प्रगट होवे योधा सूरबीर बलवानी, बलधारी इक अख्वाईआ। जिस दा लेखा जाणे ना कोए ज्ञानी, जगत विद्या सार कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा रिहा दृढ़ाईआ। बाल्मीक कलम फड़ के हथ्थ, हथ्थ पेशानी उत्ते टिकाईआ। बेनन्ती कर अग्गे पुरख समरथ, सीस जगदीश दिता झुकाईआ। तेरा लेखा अकथना अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। मैनूं अगला मार्ग दस्स, पड़दा दे चुकाईआ। अबिनाशी करता प्या हस्स, जोती धार शब्द शनवाईआ। उठ बटवारे खोल्ह अक्ख, धाड़वी तैनूं धाड़ा दयां वखाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार दा वेख हट्ट, सति धर्म ना कोए विकाईआ। झगड़ा पए तीर्थ तट, मानव मानव नाल टकराईआ। उस वेले होणा साहिब प्रगट, पारब्रह्म प्रभ धुरदरगाहीआ। जिस राम ने राम सीता जाणी छड, लोकमात नज़र कोए ना आईआ। उस दा खेल होणा विच जग, जगजीवण दाता आपणी कार भुगताईआ। भेव खुल्हाए उपर शाह रग, हरिजन साचे ल्ए मिलाईआ। सीता धार बन्न्हणा तग, नाम निधाना गंढ पवाईआ। खेल वेखणा सूरे सरबग, साहिब सतिगुर आपणा भेव चुकाईआ। जिस वेले सृष्टी दी दृष्टी विच जगत वासना कूड़ कामना लग्गणी अग्ग, तमां तृष्ना ना कोए मिटाईआ। प्रभू दा प्यार सारे जाण छड, संगी संग ना कोए वखाईआ। गुर चेले होवण अड्ड, मुरीद मुर्शद ना गंढ पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। बाल्मीक कलम नूं कीता पुट्ठी, नेत्र वेख वखाईआ। निगह मारी चारे गुट्ठीं, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण खोज खुजाईआ। सृष्टी सारी दिसदी रुस्सी, प्रभ दा प्यार ना कोए निभाईआ। दिस दे पंज तत जुस्सी, ज़मीर सके ना कोए बदलाईआ। मन कल्पणा सब नूं रही कुस्सी, जगत लालच ना कोए चुकाईआ। मुहब्बत हक रही ना उकी, निशाना उक्या थांउँ थाँईंआ। प्रभ नूं गाउणा मुश्किल हो जाए दो तुकी, आत्म परमात्म राग ना कोए अल्हाईआ। सृष्टी जगत प्यार दी होवे भुक्खी, प्रभू प्रेम ना कोए वखाईआ। आसा रखे जन्म मरन दी कुख्खी, चुरासी पन्ध ना कोए मुकाईआ। एह खेल रहे ना लुकी, पुरख अकाला दए वड्याईआ। जिस वेले सदी चौधवीं अन्तिम ढुकी, आपणा पन्ध मुकाईआ। सीता राम राम सीता इक दूजे दी करन बुत्ती, बुतख़ान्यां विच ध्यान लगाईआ। अबिनाशी करता आपणी मेहर नाल बेशक भगतां नूं आपणी गोद ल्ए चुक्की, भगती वांग भगत भगवन मिलण कोए ना पाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर होई दुखी, दुखियां दर्द ना कोए गंवाईआ। उस वेले बाल्मीक ने इक कूक मारी उच्ची, कूक के दिता सुणाईआ। निरमाणता विच इक गल्ल पुछी, निउँ के सीस झुकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल मेरे साहिब तुठीं, मेहर नज़र उठाईआ। जिस वेले सच दी धार जाए लुट्टी, कलयुग लुटेरा आपणा बल वखाईआ। उस

वेले जन भगतां उज्जल करीं मुखी, दुरमति मैल आप धुआईआ। लोकमात मार झात आप पुच्छी, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। सति धर्म दी साची देवीं बुद्धी, सोझी आपणी इक वखाईआ। तेरी रमज़ रहे ना गुज्झी, पड़दा अन्दरों देणा उठाईआ। प्रेम दी धार रहे ना दूजी, एका रंग देणा रंगाईआ। पतित पुनीत करनी बुद्धी, कूड़ कुड़यार दा डेरा ढाहीआ। लेखा मुकाउणा वदी सुदी, मस्सया अमावस वंड ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस वेले कलयुग दी औध पुग्गी, औध दे मालक अन्त होणा आप सहाईआ।

६ पोह शहिनशाही सम्मत ६ प्रताप सिँघ दे घर पिण्ड दड़ ज़िला जम्मू

बण विच सीता राम दा चरण झस्सया, सहिज सहिज नाल दबाईआ। राम करवट विच बदल के अक्खया, अक्ख लई उठाईआ। फेर खुशीआं दे विच हस्सया, हस्स के दिता सुणाईआ। कमलीए औह तक कलयुग अंधेरी मस्सया, सतिजुग साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। हिरदे हरि किसे नहीं होणा वसया, सगला संग ना कोए बणाईआ। जगत दवारा होणा ढट्ठया, गढ़ बंक ना कोए सुहाईआ। अग्ग लग्गे तत अट्ठया, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध कुरलाईआ। पिता पुत दी करे हत्या, नार कन्त विछोड़ा दिसे थाँईं थाँईंआ। धर्म चलावे कोई ना हट्टया वणजारा वणज ना कोए बणाईआ। भाग लग्गे ना किसे काया मट्टया, त्रैगुण अग्नी सर्ब जलाईआ। फिर हथ्थ मार उपर पट्टया, पटने वाला वेख वखाईआ। जिस दा लेखा होणा नाल पुरख समरथया, पारब्रह्म ब्रह्म मिल के वज्जे वधाईआ। फेर राम ने आपणा पासा वट्टया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक वखाईआ। राम किहा सीता आपणा नेत्र खोल्ह, सुरती राम विच समाईआ। प्रेम कंडे तराज़ू तोल, जगत लेखा सहिज सुभाईआ। उठ वेख कलयुग वज्जदा ढोल, डौरु डंका रिहा सुणाईआ। सच वस्त रहे किसे ना कोल, ख़ाली बंक दवारे दिसण थाँईं थाँईंआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म करे कोए ना चोहल, सीता सुरत धुर दे राम ना कोए मिलाईआ। अनबोलत सुणे कोए ना बोल, अनरागी राग ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सीता कहे मेरे धुर दे राम, राम राम दे जणाईआ। की एह खेल होणा तमाम, तमां विच होवे जगत लोकाईआ। राम ने किहा एह खेल श्री भगवान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। कूड़ कल्पना विच जहान, जहालत भरी होवे

लोकाईआ। ओस वेले पैग़म्बरां दा होणा इस्लाम, समां समें विच्चों बदलाईआ। शरअ दी चले कलाम, राम नाम ना कोए वड्याईआ। मन्त्र होर होणा सतिनाम, फ़तिह डंका इक शनवाईआ। सृष्टी दृष्टी होणी हैरान, हैरत विच सर्ब कुरलाईआ। मज़्बां दा बणना सर्ब ग़ुलाम, शरअ ज़ंजीर ना कोए तुड़ाईआ। पतिपरमेश्वर होणा बदनाम, बदी दा पन्ध ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। सीता हथ्थ रखया उपर ठोडी, उँगली नाल दबाईआ। राम दे चरण छोहे मस्तक लाया नाल गोडी, नेत्र नीर वहाईआ। मैनूं नज़र आउंदा कलयुग अन्त खेल होणा वेदी सोढी, सोढ बंस मिले वड्याईआ। झगड़ा मेटणा जञ्झू बोदी, रूप अनूप लए बदलाईआ। जिस ने सृष्टी दृष्टी देणी सोधी, शुध आपणा आप वखाईआ। ओह परम पुरख दा होणा जोगी, जुगीशर धुरदरगाहीआ। जिस हउमे मेटणा रोगी, ममता मोह दए मुकाईआ। उहदा इक्को शब्द होणा सलोकी, तूं मेरा मैं तेरा राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मार्ग आप बदलाईआ। सीता कहे मेरा अन्दरों खुल्ह्या पड़दा, राम राम दयां जणाईआ। खेल वेख्या लहिंदा चढ़दा, पहाड़ दक्खण फोल फुलाईआ। मैं इक्को नूर तक्कया नरायण नर दा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जो मालक निहचल धाम अटल दा, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जिस दा दीपक जोती बलदा, दो जहानां करे रुशनाईआ। उस झगड़ा मुकाउणा कलयुग कल दा, कलि कल्की वेस वटाईआ। ओह मालक जल थल दा, महीअल रिहा समाईआ। जो लेखा जाणे घड़ी पल दा, जुग चौकड़ी आपणे विच टिकाईआ। आत्म परमात्म धार हो के रलदा, नूर नुराना डगमगाईआ। उस दा वेस अवल्लड़ा दिसे अछल अछल दा, वलछल धारी आपणा हुक्म समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। सीता कहे मैनूं हुन्दा जाए इशारा, राम राम मेरी दुहाईआ। कलयुग अन्तिम दिसे किनारा, सतिजुग सच चन्द रुशनाईआ। इक्को नूर नूर उज्यारा, जोती जाता डगमगाईआ। सम्बल बैठा धाम न्यारा, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे वधाईआ। जिस दा शब्द शब्द दुलारा, सूरबीर इक अख्वाईआ। ओह मेटे धूंआँधारा, नूरी चन्द इक चमकाईआ। जिस दा लेखा कागत कलम ना लिखणहारा, शास्त्र देवे ना कोए गवाहीआ। ओह सब दा सांझा मीत मुरारा, परवरदिगार नूर ख़ुदाईआ। जिस ने लेखा चुकाउणा काया साढे तिन्न हथ्थ मुनारा, गृह मन्दिर आप सुहाईआ। दीन मज़्ब दा झगड़ा मेटणा विच संसारा, सिर सके ना कोए उठाईआ। मेरी चरण कँवल निमस्कारा, राम रामा सीस झुकाईआ। चरण धूढ़ लावां छारा, टिक्का ख़ाक रमाईआ। जिस दा आत्म परमात्म परमात्म आत्म धर्म दी धार होणा नाअरा, नर नरायण आपणा डंक वजाईआ। सो पारब्रह्म पतिपरमेश्वर

वेखे विगसे वेखणहारा, हरि करता अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण नित नवित लए अवतारा, अवतरी आपणा हुक्म हुक्म विच वरताईआ।

✪ १० पोह शहिनशाही सम्मत ६ ईश्र सिँघ दे घर पिण्ड दड़ ज़िला जम्मू ✪

राम किहा सीता आह तक लै कलयुग कल, कलकाती नज़री आईआ। चार कुण्ट दहि दिशा मन कल्पणा वधणा छल, अछल छलधारी आपणा हुक्म वरताईआ। पवित्र रहे ना तीर्थ अठसठ जल, अमृत सरोवर रस ना कोए वखाईआ। फिरे दुहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ महीअल थल, अस्गाह देण दुहाईआ। दूई द्वैती शरअ शरीअत सब नूं लग्गणा सल्ल, हउमे रोग ना कोए मिटाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म निरगुण निरगुण सके कोई ना रल, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। सति धर्म दा रहे कोई ना बल, बलहीण होई लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता अगम्म अथाहीआ। राम किहा उठ वेख मार ध्यान, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। वेख खेल श्री भगवान, नर हरि नरायण आप जणाईआ। जिस दा योद्धा सूरबीर सुत दुलारा नौजवान, गोबिन्द सूरा सोभा पाईआ। जिस ने क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश देणा इक ज्ञान, ज़ात पात दीन मज़्ह़ब दा डेरा ढाहीआ। अमृत रस दस्सणा पीण खाण, दुरमति मैल करे सफ़ाईआ। तरकश तीर खड़ग खण्डा किरपान, शस्त्रधारी नज़री आईआ। जिस दा लेखा लहिणा विच जहान, जहालत कूड़ी दए मिटाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी मारे ध्यान, सत्तां दीपां अक्ख खुल्ह़ाईआ। कलयुग मेटे कूड़ निशान, धरनी धरत धवल धौल सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सीता किहा राम कवण होवे गोबिन्द सूरा, सूरबीर दे दृढ़ाईआ। राम किहा पुरख अकाल दा जोती नूरा, नूर नुराना डगमगाईआ। सति धर्म विच होवे पूरा, पूरन ब्रह्म दए समझाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया हूंझे कूड़ा, सति सच दा मार्ग इक प्रगटाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ा, अमृत जाम प्याला हथ्थ उठाईआ। कोझयां कमल्यां रंग चाढ़े गूढ़ा, दो जहानां नज़र कदे ना आईआ। चरण कँवल बख़्शे धूढ़ा, मस्तक टिक्के ख़ाक रमाईआ। पन्ध मुका के नेड़ दूरा, घर इक्को इक सुहाईआ। शब्द अनादी दे के तूरा, तुरीआ तों परे पर्दा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी खेल खिलाईआ। सीता किहा राम गोबिन्द होवे

६७२
२२

कौण, प्रभू भेव दे जणाईआ। राम किहा जिस दी सेवा करे पाणी पौण, धरनी धरत सीस निवाईआ। जिस ने कलयुग हँकारी मारना रौण, राह धुर दा इक वखाईआ। माया धारीआं भन्ने धौण, कूड़ी मेटे शहिनशाहीआ। गुरमुखां अमृत बरसे मेघ साउण, अग्नी अन्दरों तत गंवाईआ। चार वरन एका घर आए वसाउण, अठारां बरन दा डेरा ढाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म ढोला दस्से गाउण, वाहवा सतिगुर तेरी बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं अन्त आए मुकाउण, मुकम्मल आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर संदेशा इक सुणाईआ। सीता अन्तर आई हैरानी, नैण मीट ध्यान लगाईआ। हथ्थ रखया उत्ते पेशानी, मस्तक ल्या दबाईआ। राम किहा औह वेख खेल महानी, हरि करता आप कराईआ। गोबिन्द सूरा मर्द मर्दानी, योद्धा इक अख्वाईआ। जिस दी सध्धरां भरी जवानी, बुढेपा रंग ना कोए रंगाईआ। जिस दा शब्द तीर कानी, कल्मयां दा लहिणा दए मुकाईआ। कूड़ क्रिया मेटे बेईमानी, माया ममता मोह दए गंवाईआ। प्रभ मिलण दी मंज़ल दस्से आसानी, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। सति सरूप रखाए जगत जिस्मानी, रोम रोम ना कोए कटाईआ। रहिबर हो के मंज़ल दस्से इक रुहानी, रूह बुत करे सफ़ाईआ। इक्को कलमा नाम कलामी, कायनात करे पढ़ाईआ। मेल मिलाए पुरख अनामी, मेला होवे सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक नूर अलाहीआ। सीता नेत्र नैण खोल्हया, ज़िमीं असमान ध्यान लगाईआ। राम खुशीआं दे विच बोलया, सहिज नाल दृढ़ाईआ। ओह वेख गोबिन्द दो जहान विचोलया, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर पड़दा रिहा उठाईआ। जिस ने पुरख अकाल दा कंडा तोलया, तराज़ू धर्म दा हथ्थ उठाईआ। उहदा फ़र्के खब्बा सज्जा डौलया, बाहू बल इक जणाईआ। जिस ने कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणा रौलया, हउमे हंगता दए मिटाईआ। सच दवार एकँकार साचा देणा खोल्हया, ख़ालक ख़लक दए समझाईआ। उस ने लहिणा देणा पूरा करना कान्हा कृष्न कला सोलया, अनक कलधारी प्रभ आपणे नाल मिलाईआ। जिस दा वस्त्र सोहवे चोलया, चोली तन मिले वड्याईआ। उस ने अमृत उठ तक लै सीता जन गुरमुखां अन्दर डोल्हिआ, निझर झिरना दिता झिराईआ। सद वसे अन्तर आत्म कोलया, हरि मन्दिर साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित लख चुरासी घट घट अन्तर निरन्तर हो के मौलया, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा रंग रंगाईआ।

✪ १० पोह शहिनशाही सम्मत ६ प्रकाश सिँघ दे गृह पिण्ड दड़ ज़िला जम्मू ✪

राम किहा सीता औह वेख मैनूं शब्द गोबिन्द रिहा दिख, दीख्या विच जणाईआ। जो सब दा लेखा रिहा लिख, चार जुग दा पन्ध मुकाईआ। चार वरन जिस दा होणा सिख, सिक्खी सिख्या इक समझाईआ। सब दा पूरा करे भविख, भविक्ख्त आपणे नाल मिलाईआ। उस ने इष्ट बणाउणा इक, एकँकार देणा दृढ़ाईआ। जन भगतां अन्दर जाणा टिक, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। गुरमुखां रहिणा विच, विचला भेव खुल्हाईआ। जिधर वेखण उधर पए दिस, चारों कुण्ट नज़री आईआ। मन कल्पणा मेटणी विस, विषे विकारां पन्ध चुकाईआ। सतिजुग दा साचा झोली पाउणा हिस, हिस्सा आपणा नाम समझाईआ। मैं हैरान होया पता नहीं लहिणा किस किस, अवतार पैग़म्बर गुर सारे याचक नज़री आईआ। उस झगड़ा मिटाउणा पथ्थर इट्ट, पाहन सीस ना कोए निवाईआ। अमृत बूँद बख्शणी निझर धारा छिट्ट, स्वांती आपणा नाम टपकाईआ। विख रहिण ना देवे विच, खिट पतित पुनीत दए बणाईआ। जिस नूं लभ्भदे कोटन कोटी केते कित, भज्जण वाहो दाहीआ। ओह जन भगतां दर्शन देवे नित, निज नेत्र आपणा पड़दा लाहीआ। अबिनाशी हो के वसे चित, ठगौरी चित रहे ना राईआ। आत्म परमात्म बणे मित, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। अगला हुक्म खेल उहदा अनडिठ, अन्त समझ कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। सीता किहा राम ओह समां किस बिध वेखां, बिधी दे दृढ़ाईआ। जगत ना रहे भुलेखा, भाण्डा भरम भनाईआ। राम ने हथ्थ रखया आपणे उपर केसा, केस खोल्ह के दिते वखाईआ। पहलों रूप धरना दस दशमेशा, फेर शब्दी डंक वजाईआ। जो आदि जुगादि रहे हमेशा, सो गोबिन्द आपणी कार भुगताईआ। सरगुण धार बच्चे करने भेंटा, निरगुण आपणा रंग रंगाईआ। दीन मज़्हब दा अन्त पूरा करना ठेका, सदी चौधवीं दए गवाहीआ। तूं याद रखीं कर लै चेता, चेतन हो के रिहा सुणाईआ। पुरख अकाल होणा इक्को नेता, निज नेत्र भगतां दए खुल्हाईआ। झगड़ा मुकाए मुल्ला शेखां, शरअ शरीअत अन्त कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तेरा लहिणा दए दृढ़ाईआ। राम किहा सीता सवाधान कर लै सुरती, धुर दा शब्द दयां जणाईआ। तूं वी होणा उस वेले फिरदी तुरदी, तत्तां वाला सरीर हंढाईआ। तेरी सार पावे जो धार वासी अनन्द पुर दी, पुरीआं लोआं तों बाहर आपणा खेल खिलाईआ। तेरी आसा पूरन होवे सतिगुर दी, सतिगुर आपणे रंग रंगाईआ। जगत कल्पणा विच ना होवें मुड़दी, जगत तृष्ना ना कोए वधाईआ। झट सीता दोवें हथ्थ जोड़दी, नमस्ते कहि के सीस झुकाईआ। हाए राम राम हो के ना कदे छोड़ दईं, विछोड़े विच दुहाईआ। मेरा जगत जहान ना

बेड़ा रोड़ दईं, रुढ़दयां दईं तराईआ। राम किहा तूं आपणा आप आपे उस प्रभू दे चरणां तों घोल दईं, घोली घोल घुमाईआ। निज अन्तर निरन्तर अडोल रहीं, अडुल होए सहाईआ। आत्म परमात्म हो के कोल रहीं, तन वजूद दा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी आत्म परमात्म सच्चा बोल कहीं, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ।

१० पोह शहिनशाही सम्मत ६ सेवा राम दे गृह पिण्ड जिउड़ीआं ज़िला जम्मू

सीता कहे मेरे राम ने खोली दृष्ट, दृष अगम्म दिता वखाईआ। मेरा इक्को होवे इष्ट, इष्ट देव स्वामी बेपरवाहीआ। जन्म जन्म दी मेटे हिरस, हरस दए गंवाईआ। मेहरवान हो के करे तरस, तृखा दए बुझाईआ। जोती जाता हो के आवे परत, पतिपरमेश्वर वेस वटाईआ। भाग लगावे उपर धरनी धरत, धवल रंग रंगाईआ। चार जुग दी पूरी करे शर्त, शरीअत वेखे चाँईं चाँईंआ। मालक बण के फ़र्श अर्श, दो जहानां खोज खुजाईआ। सब दा लहिणा देणा पूरा करे कर्ज़, गुर अवतार पैग़म्बर लेखे लेखे विच्चों चुकाईआ। उस साहिब दा खेल होवे असचरज, अचरज लीला दए वरताईआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना बणे मर्द, बेअन्त आपणा हुक्म वरताईआ। ग़रीब निमाणयां वंडे दर्द, कोझयां कमल्यां गले लगाईआ। मेरी आशा दी पूरी करे ग़रज़, निरासा रूप ना कोए दरसाईआ। मेरी मनसा होवे तृप्त, तृप्त दी धार नूर जोत रुशनाईआ। संकट रहे कोई विक्त, कल कलेश दए गंवाईआ। सति धर्म कराए लिख्त, सतिजुग सच्चा राह प्रगटाईआ। प्रेम प्रीती आत्म परमात्म दस्स के इश्क, आशिक माशूक दा झगड़ा दए गंवाईआ। लहिणा देणा पूरा करे कलयुग अन्त सुहेले दिवस, पोह दो छे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक वखाईआ। सीता कहे मैनूं दिसया दूर दुराडा, मेरा माही राम रहीमा। जिस दा हुक्म फ़रमाना डाहढा, खेल करे आदि जुगादि जुग चौकड़ी कदीमा। जिस दा भाणा वरतणा शब्दी धार सादा, दो जहान नौजवान देवे अगम्म फ़रमाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाद अनादी धार जुगादी शब्द ब्रह्मादी जोत विस्मादी निरगुण निरगुण निरगुण रूप महाना।

✪ १० पोह शहिनशाही सम्मत ६ झण्डू राम सिँघ दे गृह जिउड़ीआं ज़िला जम्मू ✪

राम ने बिन अक्खरां लिखी पाती, पत्रका लई बणाईआ। सीता दी रखी उत्ते छाती, सहिज नाल टिकाईआ। ओह वेख आपणा कमलापाती, राम दा राम बेपरवाहीआ। जेहड़ा जुग चौकड़ी देवे दाती, नित नवित आप वरताईआ। जिस वेले कलयुग होवे अंधेरी राती, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। आत्म परमात्म दा बणे साथी, सगला संग वखाईआ। तूं तकणा खेल पुरख अबिनाशी, नैण नैण नैण उठाईआ। मंज़ल चढ़नी घाटी, जगत पन्ध रहे ना राईआ। आत्म सुहाउणी खाटी, सुहञ्जणी धुर दे रंग रंगाईआ। धुर दा बन्नृणा साचा नाती, जो नातवां आदि जुगादि दा नूर नूर अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद सदा सद सब दा लहिणा देणा लेखा रिहा वाची, वाचक हो के आपणे विच छुपाईआ।

✪ १० पोह शहिनशाही सम्मत ६ सरदारा सिँघ दे गृह पिण्ड सीड़ ज़िला जम्मू ✪

सीता कहे मैं खेल वेखी अदुती, जी राम राम ने दिती वखाईआ। मैं मन्दिरां विच रही ना सुत्ती, सोवत जागत रूप बदलाईआ। नज़र आई कलयुग अन्त सुहञ्जणी रुती, रुतड़ी हरिजू इक महकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं दी औध वेखी मुकी, अग्गे होर ना कोए वधाईआ। मैं शब्द आवाज़ सुणी दो तुकी, सोहँ ढोला धुरदरगाहीआ। जिस नाल भगतां नूं मंज़ल मिलणी उच्ची, उच्च अगम्म अथाह आपणे घर वसाईआ। आत्मा होणी सुच्ची, सुच्च संजम इक दृढ़ाईआ। जिस ने झगड़ा मुका देणा दस्म दुआर त्रैकुटी, मंज़ल आपणी इक वखाईआ। जिथ्थे होवे कोए ना दुखी, सति सति विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। झट राम बदलया आपणा पासा, हथ्थ मस्तक उत्ते टिकाईआ। नैण मीट के कीता हासा, बुल्ल्ह बुल्ल्हां नाल टकराईआ। ओह वेख मेरे राम दा तमाशा, तमाशबीन बणया नूर अलाहीआ। जिस दा चार जुग दस्सणा सब ने खुलासा, भेव अभेद जगत समझाईआ। अन्तिम उस दा नूर होणा प्रकाशा, नूर नुराना डगमगाईआ। जिस नूं कहिंदे पुरख अबिनाशा, अबिनाशी करता आपणा पड़दा आप चुकाईआ। सम्बल करे वासा, सति सतिवादी आसण सिंघासण इक सुहाईआ। जिस नूं झुकण पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतर निउँ निउँ लागण पाईंआ। अवतार पैग़म्बर गुरु होणे दासी दासा, सेवक सेवा सच कमाईआ। जिस दा हर घट निरगुण धार होणा वासा, वस्त अमोलक इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा पड़दा आप उठाईआ।

सीता कहे मेरी निगाह बदली, बदल के रही जणाईआ। धुर राम होणा अदली, इन्साफ़ इक कमाईआ। मक्तूल रहिणा नहीं कोई कत्ली, कातिल दा डेरा ढाहीआ। जन भगतां मंज़ल बख़्शी अन्दरली, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा वक्त आप सुहाईआ। राम ने किहा सीता औह तक, बिना अक्खां अक्ख उठाईआ। जिस दा लेखा हकीकत हक, हाकम धुरदरगाहीआ। ओस आउणा वत, वतन मातलोक वेखे चाँईं चाँईंआ। जिस वेले सृष्टी दी दृष्टी अन्दर उबले रत्त, अग्नी सके ना कोए बुझाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं उस नूं लैणा सद्द, सद्दा देवण थांउँ थाँईंआ। दीन मज़्ह़ब दी मेट हद्द, हदूद आपणी दए वखाईआ। किरपा करे पुरख अकाल यद, यदी आपणा वेस वटाईआ। शब्द सुणा के अगम्मी नद, धुंन अनादी इक सुणाईआ। भगत सुहेले लख चुरासी विच्चों लभ्भ, निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाईआ। आपणी खेल आपे कर सबब, साहिब सुल्तान निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। चार जुग दा लहिणा देणा मेटे हब्ब, लेखा अवर रहे ना राईआ। जिस दी सरन सरनाई सारे जाणे ढट्ठ, विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाईआ। जिस झगड़ा मुकाउणा अट्ठ सट्ठ, गंगा गोदावरी वेखे चाँईं चाँईंआ। नाता रहिण नहीं देणा मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ, काअब्यां परे करे पढ़ाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण धार होवे प्रगट, परवरदिगार सांझा यार निरगुण धार नूर अलाहीआ। जिस ने सतिजुग सति धर्म दा खोल्हणा हट्ट, वस्त अमोलक इक वरताईआ। सीता खिड़ खिड़ा के पई हस्स, वाह राम तेरे राम राम दुहाईआ। की ओह वसे घट घट, गृह गृह आपणा डेरा लाईआ। राम झट उठ के प्या नस्स, नौ नौ कदम उत्तर पूरब वल्ल वधाईआ। फेर बैठ गया झट, हथ्थ छाती उत्ते टिकाईआ। फेर फड़ के सज्जा पट्ट, ज़ोर नाल दबाईआ। सीता ओह वेख मेरा राम समरथ, जो सब दा पिता माईआ। जिस कलयुग अन्तिम आपणे प्यार भगती दी देणी भगतां नूं वथ, बिना भगती तों भगत दए बणाईआ। मेहरवान हो के अन्दर जावे वस, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। तीर अणयाला निरन्तर मारे कस, दुतीआ भउ दए गंवाईआ। सीता किहा की राम एह सच, राम किहा हां, सच सच राम गुसाँईंआ। आदि अन्त जुगा जुगन्त सब कुछ उस दे हथ्थ, देवणहार इक अख्वाईआ। जिस दी महिमा सदा अकथ कथनी कथ ना सके राईआ। जिस ने उलटी गेड़नी लट्ठ, सृष्टी दृष्टी दए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी लेखा जाणे जगत जीव जहान तत्व तत, तत आपणा ना कोए जणाईआ।

✪ ११ पोह शहिनशाही सम्मत ६ गुरनाम सिँघ दे गृह पिण्ड सीड़ ज़िला जम्मू ✪

सीता कहे राम मैं निगह मारी वल्ल लहिंदे, कलयुग अन्त अक्ख खुलाईआ। तेरां सौ सतासी रिषी शब्दी धार कुछ कहिंदे, बावन दा लेखा रहे सुणाईआ। इक्ठे हो के धरनी उत्ते बहिंदे, बहि बहि बल प्रगटाईआ। सदी चौधवीं महल्ल मुनारे ढहिंदे, पथ्थर इट्ट रहे कुरलाईआ। भगत भगवान दा भाणा सहिंदे, सिर सके ना कोए उठाईआ। जीव कल वेखे वहिण वहिंदे, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। खेल तक्कया सरहाणा पैंदे, दोवें धारां खोज खुजाईआ। गंगा गुदावरी जमना सुरस्ती दे तके लहिंगे, अंगी अक्खां नाल वेख वखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां सिर लेखे वेखे पैंदे, हिसाब मंगे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। धर्म दी धार वेखी जगत सिसक, सिसकीआं विच दुहाईआ। अमृत रस झिरना ना रिहा रिसक, बूँद स्वांत ना कोए टपकाईआ। मनमति दा होणा इश्क, आत्म परमात्म प्यार ना कोए बणाईआ। झगड़ा पैणा टांक जिसत, निरगुण सरगुण दए दुहाईआ। धर्म दी धार तों सारे जाणे ख़िसक, सच कदम ना कोए टिकाईआ। जगत नेत्रां दा होणा गृहस्त, वडा छोटा बचया रहिण कोए ना पाईआ। सच राम दा मन्ने कोए ना इष्ट, इट्टां पथ्थरां सीस सर्ब निवाईआ। ओह आशा देंदी संदेशा वशिष्ट, विशेष रही समझाईआ। पीरां दा लेखा मुकणा बहिशत, अवतार स्वर्गां दा पन्ध चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि दाता बेपरवाहीआ। सीता कहे ऋषी करन इशारे, सतिजुग ध्यान लगाईआ। प्रभू प्रभ निमस्कारे, परम पुरख सरनाईआ। जिस वेले कलि आए किनारे, कलयुग पन्ध मुकाईआ। लेखा मुके पैग़म्बर गुर अवतारे, अवतरी आपणा वेस वटाईआ। निरगुण नूर करे ज़ाहरे, ज़ाहर जहूर डगमगाईआ। अमल कराए चौथे जुग पाए सारे, महासाथीं आपणा रूप बदलाईआ। लेखे लाए जो कौल कीते बलि दवारे, बावन शहादत इक भुगताईआ। भगत सुहेला बण आप निरँकारे, निरवैर आपणा रंग रंगाईआ। जिस नूं सर्ब करन निमस्कारे, नमों नमों सीस झुकाईआ। सो साहिब सुल्ताना मेहरवाना आपणी किरपा धारे, धरनी धरत धवल उत्ते वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आए भगतां दे विच अखाड़े, आपणा बल प्रगटाईआ।

✪ ११ पोह शहिनशाही सम्मत ६ लछमी देवी दे गृह पिण्ड सीड़ ज़िला जम्मू ✪

रिषी कहिण साडी निगह तमज़िम, तनज़ीम जगत ना कोए समझाईआ। प्रभ खेल कहि ज़ीनीअन, कोहज़े कुंन ना

कोए चतुराईआ। संदेशा देहीज़े तन तन, खबज़ू खिज़ा ना कोए जणाईआ। जल्वा गुफ़ारे जनगा बन्न, बोसीदा बरिज़ ज़बे ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तासीदा दाओ किलज़ा मिस्त मुअज़्ज़जे मेहरवां, मेहरवान मेहरवान मेहरवान महिबूब नूर अलाहीआ।

✪ ११ पोह शहिनशाही सम्मत ६ प्रकाश चन्द दे गृह पिण्ड मघोवाली ज़िला जम्मू ✪

राम ने राम दा तीर चुक्कया, राम राम राम समाईआ। ओह वेख मेरा लहिणा देणा ढुक्या, खाता अगम्म अथाहीआ। जिस दा लेखा नहीं उत्ते वरके पत्तया, कलम शाही ना रंग रंगाईआ। जिस दी बदले कदे ना सत्तया, सति सरूप समाईआ। जुग चौकड़ी होए ना हत्या, सिर सके ना कोए उठाईआ। उठ वेख द्वापर फिरे नट्ठया, भज्जे वाहो दाहीआ। फिर उलटी गिढ़े लद्दया, कलयुग लए अंगड़ाईआ। निगह मार मदीना मक्कया, काअब्यां राह तकाईआ। लहिणा देवे बूरे कक्कयां, पुरख अकाला रिहा सुणाईआ। सच रंग विच रहे कोई ना रत्तया, राम राम ना कोए समाईआ। फेर वेख लै डंका वज्जणा फ़तहया, फ़तिह नगारा हथ्थ ना कोए उठाईआ। फेर तक लै गोबिन्द सथ्थर लथ्थया, आसण सेज सुहाईआ। फेर तक लै कलयुग दा मेटणा घट्टया, कटाक्ष धुर दा इक लगाईआ। जिस साहिब ने सब दा मेटणा रट्टया, झगड़ा वेखे थाउँ थाँईंआ। ओह निरगुण धार होवे प्रगटया, जोती जाता नूर अलाहीआ। उस दा दो जहान होवे इक्को हट्टया, वस्त नाम नाम विकाईआ। अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं दे मनसूख़ करे पट्टया, हुक्म आपणा इक वरताईआ। जिस वेले कलयुग अन्त टप्पया, सदी चौधवीं संग रखाईआ। ऐ राम उस वेले बिना भगतां तों लाहा किसे ना खट्टया, सृष्टी दृष्टी रोवे मारे धाईआ। राम ने आपणा पासा वट्टया, पिट्ठ ज़िमीं उत्ते टिकाईआ। फिर आपणा सज्जा अंगूठा चट्टया, मुख विच टिकाईआ। फेर वेख्या अक्खर सस्सया, निरगुण सरगुण होड़ा सोभा पाईआ। फिर हाहे वल्ल तक्कया, टिप्पी टापूआं तों बाहर नज़री आईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक दूजे दे हिस्से होया वटया, बटा ज़ीरो कीती लोकाईआ। एह खेल तक पुरख समरथया, राम राम नूं सीस झुकाईआ। तेरा खेल यथार्थ यथ्थया, यदी समझ किसे ना आईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप अंगीठा वेख्या तपया, अग्नी माया मोह वखाईआ। मन मनूआं होया पपया, पतित पुनीत ना कोए जणाईआ। सति दिसे कोए ना जतया, स्त्री पुरुष देण दुहाईआ। एह खेल वेख्या बिना अक्खीआं, लोयण धुर दा इक उठाईआ। ना काहन रिहा ना रहीआं सखीआँ, द्वापर मुख भवाईआ।

कलयुग प्रभ दीआं खेलां वेखीआं रचीआं, रचना अगम्म दिती जणाईआ। राम बिना भगतां तों सब दीआं प्रीतां होणीआं कच्चीआं, पक्की गंढ ना कोए बंधाईआ। जगत वासना विच संसारी रूहां होवण नच्चीआं, बिन सतिगुर शब्द शांत ना कोए कराईआ। गुरुआं अवतारां पैग़म्बरां दीआं दीनां मज़्बां वालीआं होणीआं हिस्से पत्तीआं, पतिपरमेश्वर सांझा यार संग ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहिणा देणा लेखा जाणे जो जगत जहान लिखीआं जाणीआं पट्टीआं, अक्खरां तों बाहर निरअक्खर धार इक दरसाईआ।

✪ ११ पोह शहिनशाही सम्मत ६ देवी सिँघ दे गृह पिण्ड मग्घोवाली ज़िला जम्मू ✪

धरनी कहे एथे राम दे अस्व ने मारया सी पौड़, भुक्खे हिणक के दिता वखाईआ। चक्रवर्ती हो के जो करदा सी दौड़, भज्जया वाहो दाहीआ। कूक पुकार के किहा जिस वेले आया ब्रह्मण गौड़, गुर अवतार पैग़म्बरां तों बाहर खेल खिलाईआ। दो जहानां उस दे हथ्थ विच होणी डोर, डोरी शब्द नाम बंधाईआ। उस वेले कलयुग होणा अंधेरा घोर, चांदनी चन्द ना कोए चमकाईआ। साध सन्त बणने ठग्ग चोर, यारी जगत वाली कमाईआ। पंछी पंखी रोणे मोर, पपीहे देण दुहाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तेरी सब नूं लोड़, दरिंदे परिंदे अक्ख उठाईआ। कलयुग जीवां अन्तर रस मिट्ठे होणे कौड़, अमृत रस ना कोए चखाईआ। अठसठ तीर्थ तालाब बणने जौहड़, अमृत रूप ना कोए बदलाईआ। काया भाण्डे ख़ाली होणे तोड़, कुम्भ रूप ना कोए दरसाईआ। मन वासना लग्गणी दौड़, भटकणा भज्जणी वाहो दाहीआ। धुर दा लेखा सके कोए ना होड़, होड़ा सस्से वाला दए गवाहीआ। किसे दी प्रीती आत्म परमात्म निभे ना तोड़, टुट्टी गंढ ना कोए पवाईआ। बिना प्रभू दी किरपा तों भगत भगवान होणा नहीं जोड़, अजोड़ होए कूड़ लोकाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा सति सच दी रहिणी थोड़, थुड़े थिड़क्यां वस्त नाम ना कोए वरताईआ। दरोही फिरनी मढ़ी गोर, मकबरे रोवण मारन धाईआ। नाम कलमे दा होणा खोर, शरअ शरअ नाल टकराईआ। किसे दा रहिणा नहीं कोई ज़ोर, ज़ोरू ज़र रोवे मारे धाईआ। उस वेले कलयुग कल्पणा होणा शोर, शोरश सके ना कोए मिटाईआ। सदी चौधवीं वखाउणा जौहर, जल्वागर हुक्म सुणाईआ। दीन दुनी दा बदल जाणा तौर, तबीअत तबीब ठीक ना कोए जणाईआ। कूड़ मदि दा चलणा दौर, चारों कुण्ट कुण्ट हल्काईआ। सच प्यार दी लग्गणी औड़, लम्भया हथ्थ किछ ना आईआ। गुरु चेले इक दूजे नूं जावण छोड़, मुर्शद मुरीद अंग ना कोए लगाईआ। सति सच वसे किसे ना कोल, गृह मन्दिर ना कोए सुहाईआ। उस वेले परम पुरख ने तोलणा तोल, तराज़ू

धुर दा हथ्थ उठाईआ। सतिगुर शब्द बण अडोल, अडुल हो के वेखे चाँईं चाँईंआ। नाम मृदंगा वजाए ढोल, ढोलकी छैणा ना कोए खड़काईआ। जो चरण प्रीती आपा आप गए घोल, घोल घुमाई वेखे चाँईं चाँईंआ। उस वेले चतुराई चलणी नहीं कला चौदां सोल, सोलह कला ना कोए वड्याईआ। जिस दा अन्त अन्तष्करन तों बाहर दा होणा बोल, अनबोलत आपणा राग दए सुणाईआ। जन भगतां भगत सुहेला बणे विचोल, विचला पड़दा आप खुल्हाईआ। सृष्टी नाल मार के रोल, रूल आपणा दए बदलाईआ। निरगुण धार आउणा उपर धौल, धरनी दा धर्म दए समझाईआ। सच दवारा देवे खोल्ह, सतिजुग सच्चा राह प्रगटाईआ। ओह शाह अस्वारा जोत निरँकारा हर घट जाए मौल, मौला हो के खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, परदयां विच्चों चुकाए पर्दा ओहल, ओहले विच्चों अनमोला आपणा रूप दरसाईआ।

✪ १२ पोह शहिनशाही सम्मत ६ माया देवी दे गृह पिण्ड मग्घोवाली ज़िला जम्मू ✪

सचखण्ड कहे मेरे प्रभ सचे, साहिब सच तेरी वड्याईआ। मेरे दोवें हथ्थ बध्धे, बन्दना करके सीस निवाईआ। तेरा लोकमात खेल हुन्दा कदे कदे, जुग चौकड़ी रीती चली आईआ। बिना भगतां तों तैनूं मातलोक कोई ना सद्दे, धुर आवाज़ ना कोए अलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पैग़म्बरां दीन मज़्हब बणाए अड्डे, जगत हिस्सयां वंड वंडाईआ। वक्खरे वक्खरे जगत निशाने गड्डे, तेरा नाम सिफ्त सालाहीआ। शरअ शरअ नाल कीते दग़े, छुरी बणी जगत कसाईआ। तृष्ना मोह दी लाई अग्गे, लालच विच लड़ाईआ। तेरा खेल सूरे सरबगे, बेपरवाह समझ कोए ना पाईआ। सच दवार मेरे गृह कोए ना हद्दे, क्यों दीन दुनी दिती लड़ाईआ। मैं तेरे अग्गे झोली रिहा अड्डे, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। परम पुरख परमात्म सच दस्स तेरे खेल किस बिध वधे अग्गे, दो जहानां होए रुशनाईआ। पुरख अकाल किहा सचखण्ड ओह तक जन भगत सुहेले मेरे बच्चे, जुग चौकड़ी धुर दी पीढ़ी चली आईआ। जेहड़े नाम विच नहीं कच्चे, काया कंचन गढ़ रहे बणाईआ। मेरे प्यार विच रत्ते, रत्न अमोलक हीरे सोभा पाईआ। मैं सिर्फ़ उन्हां नूं दस्सदा आपणे पते, पतिपरमेश्वर हो के राह दरसाईआ। एथे उथे सांझे रखदा खत्ते, खित्ता आपणा इक दृढ़ाईआ। सचखण्ड किहा प्रभू तैथों विछड़ ना जाण किते, कदीम दे मालक दे जणाईआ। पुरख अकाल किहा मेरे आदि दे बच्चे निक्के, निरगुण निरगुण धार विच समाईआ। जिन्हां ज़हूर इक्को दिसे, दहि दिशा सोभा पाईआ। उन्हां बणां धुर दे पिते, पतिपरमेश्वर हो के गोद उठाईआ। सच संदेसे

नाम दे देवां चिट्ठे, धुर अगम्म करां पढ़ाईआ। अमृत रसना बोल दस्सां मिट्ठे, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। मेरे सच सिंघासण सरन सरनाई ढट्ठे, सुख आसण सोभा पाईआ। उन्हां झगड़े मुक गए पथ्थर इट्टे, इक्को इष्ट देव पुरख अकाला रहे मनाईआ। अन्त कलयुग वेखीं निकलदे सिट्टे, नतीजा धर्म दा दयां दृढ़ाईआ। जिन्हां दे कर्म कांड दे लेखे होणे चिट्टे, दुरमति मैल रहे ना राईआ। सचखण्ड ओह सच दवार आ के जाण टिके, दूसर धाम ना कोए वड्याईआ। जेहड़े साची सिख्या नाम दी सिखे, सो सिख सतिगुर विच समाईआ। उठ तक जिन्हां दे लेखे मैं शब्दी धार लिखे, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। जिस नूं समझे ना कोए मुन रिखे, जगत तपस्या ना कोए चतुराईआ। तूं आयो अन्त उन्हां दे हिस्से, सचखण्ड तेरा दर सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एकँकारा इक्को दिसे, इक इकल्ला नूर इलाहीआ।

✪ १२ पोह शहिनशाही सम्मत ६ दौलत राम दे गृह पिण्ड कोटली ज़िला जम्मू ✪

९८२
२२

सचखण्ड कहे जन भगतो मेरे गृह पैणा आउणा, अबिनाशी करते दिती वड्याईआ। एथे आलस निंद्रा नहीं कोई सौणा, सोवत जागत रूप ना कोए दरसाईआ। नाद शब्द राग नहीं कोई गाउणा, सिफ्ती सिफ्त ना कोए वड्याईआ। जल धार पाणी नहीं कोई नहाउणा, दुरमति मैल ना कोए वखाईआ। इक्को पतिपरमेश्वर पाउणा, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। जिस ने जोती जोत मिलाउणा, आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। फेर ठांडा दर सुहाउणा, सुहञ्जणी रुतड़ी इक महकाईआ। निरगुण निरगुण रंग इक रंगाउणा, सरगुण दा लेखा देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग इक बणाईआ। सचखण्ड कहे जन भगतो तुहाडा सच धर्म अस्थान, गृह मेरा सोभा पाईआ। जिथ्थे सति सरूप वसे भगवान, सति सतिवादी डेरा लाईआ। दीपक जोत जगे महान, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। लख चुरासी धुर दा काहन, राम रामा रूप प्रगटाईआ। जिथ्थे पढ़नी ना पए कोए कलाम, सिफ्तां वाली ना कोए चतुराईआ। मिले शहिनशाह अवाम, पातशाह अगम्म अथाहीआ। जिस दे जुग चौकड़ी ग़ुलाम, अवतार पैग़म्बर गुर सेव कमाईआ। जिस दा शास्त्र गाउँदे नाम, अक्खर अक्खरां नाल मिलाईआ। सो मेरा गृह वसाँईं ग्राम, नगर इक्को इक वड्याईआ। जिथ्थे कदे ना होवे शाम, अंध अंधेर ना कोए रखाईआ। प्यार मुहब्बत दा प्रेम विच्चों मिले पैग़ाम, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। सजदा करना ना पए सलाम, डण्डावत बन्दना ना कोए रखाईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार इक्को होवे मेहरवान,

९८२
२२

महिबूब आपणे विच समाईआ। सति सच दा दए जाम, हकीकी हक हक प्याईआ। लेखे मुका देवे एथे उथे सर्ब तमाम, तमा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला आप मिलाईआ। सचखण्ड कहे जन भगतो तुहाडी भूमिका मेरा गृह, लोकमात ना कोए चतुराईआ। जिथ्थे पुरख अकाला पारब्रह्म इक्को रहे, दीन दयाला दयानिध प्रभ आपणा आसण लाईआ। इक्को सति दी धार वहे, दूजा वहिण ना कोए वहाईआ। जिथ्थे ना कोई नछत्र ना कोई गृह, सूर्या चन्द ना कोए वड्याईआ। ना कोई निरगुण सरगुण धार दिसे शै, विष्न ब्रह्मा शिव बैठे दूर दुराडे सीस निवाईआ। जेहड़ा गृह कदे नहीं होया लै, उतपत वाली वंड ना कोए वंडाईआ। तुहानूं रहे ना किसे दा भय, निर्भय आपणे विच समाईआ। उथे आदि तों अन्त अन्त तों आदि इक्को इक तुक दी जै, दूजा नाअरा ना कोए सुणाईआ। सो साहिब सुल्तान सच प्रीती तुहानूं दए, दयावान दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी खेल अनक वारी कै, कहि के सके ना कोए समझाईआ।

६८३
२२

✪ १२ पोह शहिनशाही सम्मत ६ शिव सिँघ दे गृह पिण्ड सई खुरद ज़िला जम्मू ✪

सचखण्ड कहे प्रभ मेरी अगम्मी मंग, दर मांगत झोली डाहीआ। मैनूं अनडिठड़ी जगह तूं दिता टंग, जिथ्थे वेखण कोए ना पाईआ। चार जुग मेरी सिफ्त दे गंवाए छन्द, अक्खरां नाल चतुराईआ। ना कोए छप्पर दिसे चार दवारी कंध, छन्न नज़र कोए ना आईआ। ना कोई सूर्या ना कोई चन्द, मण्डल मण्डप ना कोए डगमगाईआ। मैनूं आपणे हुक्म अन्दर कीता बन्द, शब्द दा ताला दिता लगाईआ। मैनूं याद आ गया जिस वेले तूं बिना पावे चूल तों डाहया सी पलँघ, आसण इक सुहाईआ। निरगुण धार निरगुण माण अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों वखाईआ। मैं हो गया सां दंग, हैरानी विच सीस निवाईआ। तेरा केहड़ा अनोखा ढंग, की करनी कर जणाईआ। मेहरवान महिबूब कुछ वस्त मैनूं वंड, निउँ के सीस निवाईआ। तूं इशारे नाल मैनूं पाई ठंड, सहिज नाल सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। सचखण्ड कहे मेरा ना कोई रूप, अनूप सति ना कोए वखाईआ। मैं एसे कर के चंगा तूं वसें सति सरूप, सच स्वामी डेरा लाईआ। मेरी ना कोई दिशा ना कोई कूट, हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। ना कोई बूझ सके बूझ, समझ विच समझाईआ। कोटन कोटि अवतार पैग़म्बर गुरु तेरी धार विच्चों कर के गए कूच, कूचा गली

मात फिर के फिर धार तेरी विच समाईआ। मैनूं वड्याई तेरे प्यार दी जिस बणाया ऊचो ऊच, अगम्म अथाह आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सचखण्ड कहे प्रभू मैं ना मरां ना जम्मां, जीवण की दरसाईआ। ना आसा ना तमा, लालच संग ना कोए बणाईआ। ना नाड़ी ना चम्मा, दृष्टी वंड ना कोए वंडाईआ। ना सोग ना ग़मा, चिन्ता विच ना कोए रखाईआ। मैं नित नवित तेरा वेखदा समां, सच स्वामी ध्यान लगाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी बिना तेरयां भगतां तों रहां निकम्मा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेहरवान हो सहाईआ। पुरख अकाल कहे सचखण्ड ना कर गिरयाज़ारी, ज़ाहर जहूर हो के दयां जणाईआ। मेरी खेल अपारी, अपरम्पर हो के दयां दृढ़ाईआ। हुण आई लोकमात मेरी वारी, वारस हो के वेख वखाईआ। तेरी नाल रखां सिक्दारी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिथ्थे भगत भगवान दी होवे यारी, याराना धुरदरगाहीआ। ओहो तेरा महल्ल ओहो तेरी अटारी, ओह गृह तेरा सोभा पाईआ। तेरा रूप ना पुरख ना नारी, नर नरायण होए सहाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच पड़दा आप खुल्हाईआ। पुरख अकाल कहे सचखण्ड तैनूं भगतां वेखणा दवार, दर दवार इक दृढ़ाईआ। चौदां पोह दिवस विचार, नेत्र नैण खुल्हाईआ। खेल धुर दा धुर दरबार, गोबिन्द धार धार दरसाईआ। तूं निउँ के करीं निमस्कार, माण ताण गंवाईआ। जिथ्थे मेरा लग्गा होवे दरबार, तूं सिंघासण हेठां वड़ के वेखणा चाँईं चाँईंआ। की खेल कलि कल्की अवतार, निहकलंक कल वरताईआ। जिथ्थे झुकणे पैग़म्बर गुर अवतार, बैठण सीस निवाईआ। ओथे नौ गुरमुख होणे पहरेदार, कमरकसे कमर नाल बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। सतिजुग सचखण्ड तेरी धार वेखे इक्के, एकँकार दए जणाईआ। इक्की गुरमुखां वस्त्र पाउणे चिट्टे, तन तन नाल सुहाईआ। मस्तक संधूरी लाउणे टिक्के, टिक्का इक्को रंग रंगाईआ। मौली तन्द बद्धे होण सज्जे गिट्टे, रंग रंग नाल बदलाईआ। खड़े होण इक दूजे दे पिच्छे, सूरबीर रूप धराईआ। सब दी प्रभ मिलण दी होवे इच्छे, दूसर ओट ना कोए जणाईआ। दो बाल विच होण निक्के, आयू यारां साल समझाईआ। साहिब सतिगुर वसया होवे चिते, चेतन सुरती नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। इक्की गुरमुख इक्को नाम दी करन इबादत, ढोला इक्को गाईआ। इक्को वार देण शहादत, गवाह गोबिन्द लैण भुगताईआ। सब दी प्रेम दी होवे सदाकत, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। नख़रे वाली होवे नज़ाकत, नेत्र कज्जल आप पवाईआ। पंजां दी विच्चों कीती होवे हजामत,

सोहणा रूप दरसाईआ। सोलह होण सही सलामत, सोलह कल कृष्न ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी कदे ना बणे अणजाणत, जानणहार जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ १२ पोह शहिनशाही सम्मत ६ तेज भान दे गृह पिण्ड सई खुर्द ज़िला जम्मू ✪

जन भगतो सारे फड़ लओ कन्न, दोवें हथ्थ हथ्थ लगाईआ। प्रभ दा हुक्म लैणा मन्न, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सतिगुरु दी भेंटा करना तन, आपणा वजूद ना कोए रखाईआ। धर्म दी वस्त लैणी धन, आपणी झोली लैणी भराईआ। जगत विच बेड़ा लैणा बन्न्, मलाह सतिगुर इक अख्वाईआ। गोबिन्द दे नूरी बणना चन्न, चन्न जोत नूर रुशनाईआ। वेख्यो अग्गे तों नेत्र रिहों ना अन्न्, निज नैण लैणा खुल्लाईआ। गढ़ हँकारी देणा भन्न, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। ना कोई खुशी ना कोई ग़म, सतिगुर नूं मिल के सतिगुर विच समाईआ। जिस दे हथ्थ तुहाडा पवण स्वासी दम, सो दामनगीर तुहाडा होए सहाईआ। जगत वैराग विच कदे ना नीर वहायो छम छम, जे सतिगुर विछड़े दिवस रैण चैन ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। जन भगतो कन्न दयो छड, दोए हथ्थ जोड़ के सीस निवाईआ। पुरख अकाल नालों कदे नहीं होणा अड्ड, वक्खरा घर ना कोए वखाईआ। तुसीं ओस प्रभू दी यद, जो यके बाद दीगरे अवतार पैग़म्बर गुरुआं सेव लगाईआ। ओह तुहाडी एथे ओथे रखे लज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सतिजुग दे रिषीओ किथे जाओगे भज्ज, भज्जयां पन्ध ना कोए मुकाईआ। जिस ने तुहानूं माता पिता तों बाहर ल्या लभ्भ, लभ्भण वाला हो के मिल्या चाँईं चाँईंआ। प्रण कर लओ अज्ज, वायदा सतिगुर नाल बणाईआ। भावें सृष्टी छुट जाए ते छुटे सारा जग, भगत भगवान विछड़ कदे ना जाईआ। एह खेल सूरा सरबग, शाह पातशाह शहिनशाह आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगतो वेखो हार पवाया उत्ते चरणां, चरण प्रीती दए बणाईआ। अग्गे तों तुहाडा सतिगुर दे घर मरना, जीवण सतिगुर झोली पाईआ। तुसां बिना पौड़ी डण्डे तों ओस मंजल चढ़ना, जिथ्थे मिले बेपरवाहीआ। ओस सचखण्ड दवारे विच वड़ना, जिथ्थे इक्को जोत नूर रुशनाईआ। किसे दा लेखा पए ना भरना, राय धर्म ना अक्ख उठाईआ। सच दवार एकँकार देवे सरना, साहिब स्वामी होए सहाईआ। परमात्मा आत्मा तुहाडी वरना, वर इक्को सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग दए रंगाईआ। हार कहे मैं चरणी गया छूह, सच सेव कमाईआ। जन भगतो तुहाडी पवित्र होणी रूह, रूह बुत वज्जे वधाईआ। तुसीं परमात्मा दा सरूप हूबहू, दूजा रंग ना कोए रंगाईआ। तुहाडे अन्दरों आवाज़ निकले तूंही तूं, दूजा राग ना कोए अलाईआ। तुसां जगत जहान दी छडणी जूह, जंगलां विच ना कोए भवाईआ। तुहाडा अज्ज तों लै के इक्को शब्द सतिगुरु, सतिगुर शब्द इक अख्वाईआ। जदों चाहोगे तुहाडे अन्दर बाहर तुरू, सन्मुख हो के नज़री आईआ। हुण तुहाडे साहिब दा समां होणा शुरू, जिस शरअ दा लेखा देणा मुकाईआ। आपणी करनी तों कदे ना मुड़ू, दो जहानां डंक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। हार कहे मैं सतिगुर चरणी लग्गा, जन भगत दयां वड्याईआ। जन भगतो हुण तुहाडा वधणा अग्गा, पिछला लेखा रहे ना राईआ। वेख्यो कोई रूप ना बणिओ कग्गा, हँस सोहणे सोभा पाईआ। सतिगुरु कदे ना करे दग़ा, फ़रेबां तों बाहर जन भगतां लए मिलाईआ। तुहानूं ओह पतिपरमेश्वर लभ्भा, जिस दी चार जुग सिफ्त रहे सुणाईआ। तुहाडे नाल रहे सदा, विछोड़े विच कदे ना आईआ। तुहाडे प्रेम विच रहे बद्धा, रातीं सुत्तयां अन्दर वड़ के लए जगाईआ। फेर तुहानूं दस्स जाए गुरमुखो केहड़ी मेरी जग्गा, किस थान विच आपणा नूर करां रुशनाईआ। तुसां घर बैठयां सतिगुर शब्द दा लैंदे रहिणा मज़ा, रस रस विच्चों प्रगटाईआ। तुहाडे नेड़ ना आवे कज़ा, काल दा झगड़ा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। हार कहे मेरी पुराणी हिरस, हवस दयां जणाईआ। बड़ा सोहणा सुहञ्जणा दिवस, रैण मिली वड्याईआ। मेरी जुग जुग दी किरस, प्रभ झोली दिती पाईआ। तुहाडी सदा खुल्ली रहे सुरत निरत, निरवैर मिले चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि दाता धुरदरगाहीआ। सतिगुर शब्द कहे सुण शब्दी मीत, गुरमुख शब्दी दयां जणाईआ। शब्द गुरसिख होवे चीत, सिख शब्द सतिगुर विच समाईआ। पुरख अकाल दोहां दे होवे बीच, विचोला बेपरवाहीआ। सतिजुग दी सच चलाउणी रीत, रीती इक समझाईआ। जिस दी करदे रहे उडीक, सो आया बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त दा दूर जन भगतां सदा नज़दीक, नेरन तों नेरा नज़री आईआ।

✪ १३ पोह शहिनशाही सम्मत ६ बेलू राम दे गृह पिण्ड सई खुर्द ज़िला जम्मू ✪

सचखण्ड कहे प्रभ मेरा इक्को बचन सच्चा, सति सच दयां सुणाईआ। मैनूं जम्मण वाली माता नहीं कोई जच्चा, याचक हो के सीस निवाईआ। मेरा तन वजूद माटी ख़ाक नहीं कोई कच्चा, घड़न भन्नृणहार रूप ना कोए बदलाईआ। मैं जगत जहान कदे नहीं वसा, ब्रह्मण्ड खण्ड नज़र कोए ना आईआ। मैं दो जहान कदे नहीं नस्सा, भज्जया वाहो दाहीआ। इक्को तेरी आस रखां, नित नवित राह तकाईआ। मैनूं समां मिल गया हुण मसां, जिस दी मिसाल पिच्छे ना कोए रखाईआ। मैं चाहुंदा तेरे नाल सदा वसां, चरण कँवल तेरी रहां सरनाईआ। कूड़ दीआं मेटां सफ़ां, मलेछां डेरा ढाहीआ। जिथ्थे तेरया भगतां नूं मिले तेरे नाम दा गफ्फा, ओथे आपणी खुशी बणाईआ। बिना तेरे तों होर होवे किते नहीं नफ़ा, नुकसान विच जुग चौकड़ी नज़री आईआ। मैनूं खुशी तूं कदी नहीं हुन्दा खफ़ा, गुस्सा गिला ना कोए रखाईआ। हुण पिछला लहिणा करना रफ़ा, अग्गे आपणा राह दृढ़ाईआ। मैं सदा तेरा दार वफ़ा, बेवफ़ाई ना कोए रखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आपणे प्यार दा बदल दे सफ़ा, जिस दी जुग चौकड़ी समझ किसे ना आईआ। जिस दे विच तेरे प्रेमीआं नूं सदा मिलदी शफा, चुरासी दा रोग रहे ना राईआ। तेरे प्यार दा होवे जसा, सिफ्तां विच सालाहीआ। जिथ्थे अवतार पैग़म्बर गुरु कहिंदे अच्छा, निरगुण धार भगवन सीस निवाईआ। उथे तत्तां वाला लबास नहीं कोई जञ्झू बोदी तहिमत कच्छा, सरीरक वंड ना कोए वंडाईआ। जिथ्थे निरगुण धार तूं सब दी करें रच्छा, रच्छक हो के वेख वखाईआ। कोटन कोटि फिरदे मछ कछा, भज्जण वाहो दाहीआ। मैं सच दस्सां आदि तों लै के अन्त (तक) शब्दी सतिगुर बचया बच्चा, दूजा बचया बच्चा रहिण कोए ना पाईआ। मैं दो जहानां निगाह मारी चप्पा चप्पा, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। तेरा सब दे उपर छप्पा, सिर सक्या ना कोए उठाईआ। मैं हैरान हो गया तूं किस बिध माण बख्श्या इक पप्पा, पूरन आपणा रंग रंगाईआ। ओह वेख दुहाई देंदा नानक तपा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जिस गोबिन्द ने गाया सोहँ टप्पा, अन्तिम आपणा रंग जणाईआ। उस दा तेरे नाल होया मता, मतांतर होर ना कोए वखाईआ। जिस नूं तूं आपणा सम्बल दस्सया पता, सच सिंघासण इक सुहाईआ। मेरे मेहरवान उस विच फ़र्क रिहा ना रता, किणका सक्या ना कोए बदलाईआ। मैं तेरा खेल वेखदा यथार्थ यथा, यदी आपणी कार कमाईआ। जिथ्थे तेरे चरण कँवल जन भगत छुहाउँदे मथ्था, मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। उथे इक्को निरगुण निरगुण धार कथा, सरगुण जगत ना कोए पढ़ाईआ। जेहड़ा तेरे सथ्थर लथ्था, उस दे अन्दर तेरा नूर वेख्या चाँईं चाँईंआ। सचखण्ड कहे प्रभू भावें मेरीआं नहीं अक्खां, बिन अक्खां तों अक्खां रिहा खुल्हाईआ। मैं निव निव तेरी सरनाई ढट्ठां, ढहि

ढहि सीस निवाईआ। मेरा भेद पाया नहीं मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठां, गुरदवार मेरी वंड ना कोई वंडाईआ। एह तेरीआं जुग जुग दीआं गेड़ीआं लट्ठां, चक्र विच चक्रवर्ती सारे दिते भवाईआ। खेलां खिला के विच तत अट्ठां, अट्ठ नौ दस दा भेव चुकाईआ। मेरे सचखण्ड दवार तूं दे के आपणीआं गट्ठां, गंढ पीच के दिती बंधाईआ। जेहड़ीआं खुल्हीआ नहीं बिना तेरे नाम दी सट्टां, कोटन कोटि साध सन्त जगत लुहार मन दे हथौड़े गए उठाईआ। मेरे अन्दर तेरीआं गुझीआं ओह ढक्का, जिस नूं जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। मेरे अन्दर तेरी बेपरवाही दीआं हट्टां, जिथ्थे वणजारे गुर अवतार पैग़म्बर बैठे झोलीआं डाहीआ। मेरे अन्दर तेरे धर्म धार दीआं मतां, सिख्या भण्डारे भरे चाँईं चाँईंआ। बौहड़ी इक्को दुःख, बिना तेरी किरपा तों मेरा किसे नूं नहीं पता, सारी सृष्टी बैठी मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मैं सदा सदा सद तेरे संग वसां, वसल यार इक्को इक देणा वखाईआ।

✪ १३ पोह शहिनशाही सम्मत ६ गुरा राम दे गृह पिण्ड सई ख़ुर्द ज़िला जम्मू ✪

सचखण्ड कहे प्रभू मेरी दस्सी नहीं किसे बुलंदी, सतह पड़दा ना कोए उठाईआ। मेरी नज़र आई नहीं किसे हद्दबन्दी, लम्बाई चुड़ाई ना कोए जणाईआ। मेरी किसे खाते विच नहीं जमांबन्दी, लेखा सके ना कोए बणाईआ। मैनूं इक तेरे हुक्म दी पाबन्दी, पाबन्द हो के तेरे चरणां सीस निवाईआ। तेरी बेअन्त जुग चौकड़ी लँघी, कोटन कोटि काल गए विहाईआ। किसे दे कोल आदि दी मैनूं लभ्भी नहीं संदी, संन्नद सक्या ना कोए वखाईआ। मातलोक तेरे ढोले सुणे छन्दी, रसना वाले राग अलाईआ। पर सच दस्स केहड़ी खेल तेरी चंगी, जेहड़ी तेरे विच समाईआ। मेरी अन्तरगत होई अचंभी, हैरानी विच सुणाईआ। पता नहीं तेरी कितनी आयू लम्बी, अग्गे अन्त कहिण कोए ना पाईआ। मेरी अरदास तूं सदा मेरे विच सवीं, सच सिंघासण आसण लाईआ। पर मैनूं ऐं दिसदा तूं खेल खिलाउणी नवीं, नवां जुग देणा लगाईआ। जिस विच तेरा नाउँ होणा अवतार चव्ही, चार जुग दा झगड़ा देणा मुकाईआ। मेरी बन्दना मैनूं वी माण उथे दवीं, देवणहार तेरी सरनाईआ। मेरा दिल करदा मैं वी वेखां कन्ढा तवी, तरह तरां पन्ध मुकाईआ। जिथ्थे तेरा शब्द गुरु तेरे शब्द दा होणा कवी, तेरे शब्द दी शब्द सालाहीआ। तूं भगतां दा ढोला गवीं, गा के देणा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा सद मेरे संग रव्हीं, रह के आपणी खुशी बणाईआ।

✪ १३ पोह शहिनशाही सम्मत ६ कृष्न लाल दे गृह पिण्ड सई खुर्द ज़िला जम्मू ✪

सचखण्ड कहे प्रभ ना कोई तेरा चक्र चिहन, रूप रंग रेख सक्या ना कोए समझाईआ। ना कोई मेरा घर गृह सिहन, महल्ल अटल ना कोए वड्याईआ। सारे मैनूं सिफ्तां विच कहिण, गुर अवतार पैग़म्बर राग सुणाईआ। मेरे दवारे विच आ के मिलदा चैन, सच सच विच समाईआ। मैनूं दस्स मैनूं किस ने वेख्या नाल नैण, अक्ख अक्ख विच्चों खुल्हाईआ। कवण बणया सच्चा सैण, मेरा संग बणाईआ। किस ने लेखा तक्कया लहण देण, हिसाब किताब दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। सचखण्ड कहे प्रभ मेरा ना कोई मुहीत दस्सया ना कुतर, दाइरा वंड ना कोए वंडाईआ। मेरी दिशा ना कोई पूरब दस्सी उत्तर, पहाड़ दक्खण ना कोए समझाईआ। मैनूं सच दस्स मैं किस दा आदि तों पुत्र, कवण मेरी जणेंदी माईआ। मैं सब तों पहलां किस दा कीता शुकर, शुकराने विच सीस निवाईआ। किस नूं लग्गा झुकण, निउँ निउँ लग्गया पाईआ। मैं कोटन जुगां पिच्छों तैनूं लग्गा पुछण, गल पल्लू वास्ता पाईआ। मैनूं किस ने लाड नाल किहा पुत्तन, फड़ बाहों गोद बहाईआ। मैं अज्ज तक नहीं सिख्या रुस्सण, रोसे वाली गल्ल ना कोए सुणाईआ। बचन करना दो तुकन, बहुता तकरार ना कोए वखाईआ। किस बिध मेरा उज्जल होया मुखन, मैनूं दिती वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक पड़दा देणा उठाईआ। सचखण्ड कहे प्रभू मेरा दस्स की इरादा, किस बिध ध्यान लगाईआ। मेरा केहड़ा पिता ते केहड़ा दादा, केहड़ी पीढ़ी विच्चों ल्या प्रगटाईआ। केहड़ा मज़्हब केहड़ा समाजा, केहड़ी ज़ात रखाईआ। केहड़ा नाद धुन वाजा, की कीती शनवाईआ। मैं कदों सोया ते कदों जागा, मेरा पड़दा लैणा उठाईआ। किस वेले तूं मेरे अन्दर आयों भागा, वड़या चाँईं चाँईंआ। तूं बण के कन्त सुहागा, सोहणी खुशी लई प्रगटाईआ। मेरी अन्त अख़ीर इक आवाज़ा, सच स्वामी दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, मेरा दस्स कवण रूप आदि आदा, अन्त कवण संग वखाईआ।

✪ १३ पोह शहिनशाही सम्मत ६ रवेला राम दे गृह पिण्ड सई खुर्द ज़िला जम्मू ✪

सचखण्ड कहे प्रभ मेरा अन्दर खिड़ खिड़ा के हस्से, हस्स हस्स रिहा जणाईआ। सच दस्सीं, तूं मेरे विच कि मैं तेरे विच दोहां विच्चों कौण वसे, घर कवण रूप दरसाईआ। कि दोवें इक दूजे दे प्यार विच्च फसे, हद्द नज़र कोए ना

आईआ। इक दूजे दे प्रेम दे लईए रसे, रस आपणा ना कोए वखाईआ। किस सहारे मैनूं बध्धा केहड़ी डोरी केहड़े रस्से, रस्ता कवण बणाईआ। किस बिध तेरे मेरे प्यार नाते इक दूजे नाल फसे, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। मैनूं ऐं जापदा मेरे नालों तेरे घर होर अच्छे, मेरे तों उपर होर सोभा पाईआ। जिन्हां दा राह गुर अवतार पैग़म्बर रहे तके, अक्खीं वेखण कोए ना पाईआ। मेरे विच आ के तेरे विच जाण छपे, आपणा रूप रंग रंग रूप देण बदलाईआ। अग्गे किसे दी खुल्ल्ह ना सके अक्खे, निगह नैण ना कोए टिकाईआ। तैनूं अगम्म अगोचर किहा अलखे, लख के गया ना कोए समझाईआ। जुग चौकड़ी तेरे कोलों सारे झके, पुछण दी हिम्मत ना किसे रखाईआ। जेहड़ी तूं वस्त दिती ओसे नाम दे मार के फक्के, आपणा झट गए लँघाईआ। सिफ्तां वाले वक्खरे वक्खरे दस्स के टप्पे, अक्खरां वाली करी पढ़ाईआ। तेरे भय विच डर विच रहे पक्के, सिर सक्या ना कोए उठाईआ। मैं वेख के हुन्दा रिहा हक्के बक्के, हैरानी मेरे अन्तर आईआ। खेल तकदा रिहा दीगरे बाद यके, यक तेरा ध्यान लगाईआ। किरपा कर मेहरवान कुछ मैनूं दे दस्से, आप आपणा पड़दा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे प्यार दे आदि अन्त बज्झे रस्से, तन्द सके ना कोए तुड़ाईआ।

✪ १३ पोह शहिनशाही सम्मत ६ नानक चन्द दे गृह पिण्ड सई खुर्द ज़िला जम्मू ✪

सचखण्ड कहे प्रभ कहिंदे सच्ची दरगाह, दरगाह पवण रूप समझाईआ। होर नहीं कोई मेरे वरगा, रूप रंग ना कोए समझाईआ। मैनूं सारे कहिंदे घर हरि दा, जिथ्थे वसे नूर इलाहीआ। मै तेरे कदमां सीस धरदा, निउँ निउँ लागां पाईंआ। मैनूं अज्जे पता नहीं लग्गा किस बिध मेरे अन्दर अवतार पैग़म्बर गुरु पढ़दा, सिख्या तेरी झोली पाईआ। मै मालक कदीम चिर दा, मेरी आयू ना कोए समझाईआ। इक होर दवार मेरे विच रखा घर थिर दा, जिस नूं थिर घर कहि के सारे रहे गाईआ। सारे कहिंदे ओथे प्रीतम मिलदा, प्रिया आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मेला लए मिलाईआ। सचखण्ड कहे प्रभू मैनूं क्यों किहा हक मुकाम, मुकम्मल मैनूं दे दृढ़ाईआ। मेरी सिफ्त करन तमाम, मेरी तामीर दा लेखा ना कोए जणाईआ। मेरे गृह ना कोए दिवस ना कोई शाम, पक्ख वंड ना कोए वंडाईआ। ना कोई कलमा ना कलाम, नग़मा नाम ना कोए दृढ़ाईआ। ना कोई संदेशा सद्दा पैग़ाम, ना कोई अक्खरां वाली शनवाईआ। मैनूं पता नहीं मेरा किस तरह होया इंतज़ाम, बन्दोबस्त कवण कराईआ। किस बिध रचया मेरा ग्राम,

खेड़ा दिता सुहाईआ। केहड़ी मेरे विच्च वसे अवाम, कवण बहि बहि झट लँघाईआ। मेरी सति दी सच दस्स पहिचाण, बेपहचान आपणा हुक्म वरताईआ। मै सिर्फ़ अक्खरां विच सिफ्तां विच काग़ज़ातां दे उत्ते सुणया ब्यान, मेरा नकशा कोई मुसव्वर तसव्वर कर के ना सक्या सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवन, आदि जुगादि जुगादि आदि तेरे संग मेरा खेल महान, नूरी नूर जोत जोत श्री भगवान, भाव भेव मेरा दे खुल्हाईआ।

✪ १३ पोह शहिनशाही सम्मत ६ नंदू दे गृह पिण्ड सई खुर्द ज़िला जम्मू ✪

सचखण्ड कहे प्रभू किस सहारे दिता टंगी, मेरीआं टंगां बाहवां नज़र कोए ना आईआ। मेरा केहड़ा मार्ग रखया ते केहड़ी रखी डण्डी, रस्ता केहड़ा दिता बणाईआ। मैनूं ऐं दिसदा तेरी सृष्टी हो गई अंधी, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। मेरी मंज़ल किसे ना लँघी, पैंडा पन्ध ना कोए मुकाईआ। मैं सीस पट्टीआं विच फिरदी वेखी कंघी, मेंढी सुहाग ना कोए गुंदाईआ। धर्म हथेली सच रंग किसे ना रंगी, रंग धुर ना कोए चढ़ाईआ। तैनूं केहड़ी खेल लग्गदी चंगी, परम पुरख देणी समझाईआ। सचखण्ड दवार कहे मैं आपणा आपणे विच्चों वेखां अनन्दी, अनन्द होर ना कोए बणाईआ। क्यों मेरे वास्ते सब दे उत्ते लाई पाबन्दी, दरगाह साची मिलण कोए ना पाईआ। इक्को तेरा शब्द सतिगुर योधा सूरबीर जंगी, जेहड़ा सब नूं रिहा डराईआ। जिस दी कटार आदि अन्त तों नन्गीं, म्यान विच ना कोए रखाईआ। साहिब सतिगुर दर इक्को मंग मंगी, मांगत हो के झोली डाहीआ। मैं लोकमात तकां तेरा खेल सूरे सरबंगी, साहिब सुल्तान संग रखाईआ। मेरी धार रखणी ठंडी, अग्नी तत ना कोए रखाईआ। मैं वी चाहुंदा धरती उत्ते तेरयां भगतां नाल पा के आवां गंढी, रिश्ता धर्म दा इक बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस प्रगटाईआ। सचखण्ड कहे प्रभू मैं भगतां नाल पा के आवां प्यार, प्रेम प्रीती तेरी नाल रखाईआ। जिस वेले आपणा छडो घर बाहर, मेरे घर आउणा चाँईं चाँईंआ। पर याद रखयो मेरा सब तों वक्खरा विहार, विवहारी हो के दयां जणाईआ। मातलोक विच तुहाडे साक सज्जण मात पित पुत्र धी होर बथेरे यार, याराने तन वाले रखाईआ। पर गुरमुखो मेरे कोल उस आउणा जिस दा लेखा कोल मेरी सच्ची सरकार, दूजा साथी संग ना कोए बणाईआ। तुसीं मेरे उत्ते मैं तुहाडे उत्ते सांझा करां एतबार, बेएतबारी दा झगड़ा देणा मुकाईआ। क्यों साडा दोहां दा इक्को पुरख अकाल यार, दूजी यारी ना कोए निभाईआ। समें नाल छड

जाण पैग़म्बर गुर अवतार, संग ना कोए रखाईआ। ओह काहदे मित्र मुरार, जिन्हां ओट ओड़क प्रभ दे उत्ते रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। सचखण्ड कहे प्रभू मैं भगतां नूं खवा के आवां सुगंद, सौंह धर्म वाली चुकाईआ। तुसां मेरा दवारा आउणा लँघ, पिछला पन्ध चुकाईआ। सतिगुर शब्द तुहाडे नाल होवे संग, विछोड़ा विच ना कोए रखाईआ। तुहाडा झगड़ा मुकणा जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज रहिण ना पाईआ। तुसां मेरे गृह चढ़ाउणा चन्द, जोत नूर कर रुशनाईआ। फेर मेरा खुशी होए बन्द बन्द, तुहाडी बन्दगी प्रभ दे लेखे पाईआ। जन भगतो तुसां खुशीआं नाल आउणा निशंग, राह विच ना कोए अटकाईआ। मैं वी पुरख अकाल कोलों मंगी मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि सूरा सरबंग, जुग जुग सदा सद सद मेरा घर वसाईआ।

✪ १३ पोह शहिनशाही सम्मत ६ गूहड़ा राम दे गृह पिण्ड सई खुर्द ज़िला जम्मू ✪

सचखण्ड कहे जन भगतो संदेशा देवां हका, हक हक जणाईआ। प्रभू प्रीती विच रहे कोई ना कच्चा, कच्ची गंढ ना कोए पवाईआ। मेरे नाल सांझा कर लओ सारे मता, मनमति दा डेरा ढाहीआ। आत्म आत्म नाता सका, दूजा संग ना कोए निभाईआ। किसे नूं पार करे ना कोए मदीना मक्का, काअबे रहे कुरलाईआ। प्रभ मिल्या नहीं मन्दिर मट्ठा, शिवदुआले देण दुहाईआ। हथ्थ आया नहीं पथ्थर इट्टां, पाहन रोवन मारन धाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि दाता इक अख्वाईआ। सचखण्ड कहे जन भगतो मेरे नाल करो सलाह, मशवरा लओ बणाईआ। सतिगुर शब्द बणाउणा मलाह, दूजा खेवट खेटा नज़र कोए ना आईआ। इक्को पुरख अकाल दा जपणा नाँ, नर निरँकारा आप सुणाईआ। फिर वेखणा सच दवारा मेरा थाँ, जिथ्थे निर्मल नूर जोत रुशनाईआ। मेरी दुहाई ओथे कोई ना पुज्जे जिन्हां सूर खाधी गां, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु सके ना कोए पुचा, जो प्रभ दा हुक्म गए भुलाईआ। ना कोई सहारा देवे पिता माँ, नार कन्त संग ना कोए वखाईआ। वेख्यो ऐवें करयो ना हां विच हां, अन्तर निरन्तर प्रभ आपणा लओ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि दाता धुरदरगाहीआ। सचखण्ड कहे जन भगतो मेरे नाल मिलाओ हथ्थ, दस्त दस्त नाल जुड़ाईआ। दोहां दा मालक होवे पुरख समरथ, दूजा नज़र कोए ना पाईआ। सांझा होवे जस, सिफ्तां सिफ्त सालाहीआ। जिस वेले मातलोक देवो छड, दर मेरे आउणा चाँईं चाँईंआ।

मैं धर्म निशाना सच दवारे देवां गड्ड, गॉड इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच पड़दा आप चुकाईआ। जन भगत कहिण सचखण्ड तूं आ लोकमात, सानूं मिल के दे वखाईआ। असीं तक्कीए तैनूं साख्यात, पर्दा ओहला रहे ना राईआ। अग्गे तेरा नाम पढ़या उत्ते काग़ज़ात, अक्खरां नाल चतुराईआ। तेरा लम्भया ना किते हिसाब, अंकड़े सक्या ना कोए गिणाईआ। फेर तक्कीए तेरा जनाब, हाज़र हज़ूर नूर इलाहीआ। ज़रा खोल्ह के दस्स आपणी महिराब, जिथ्थे महिबूब वसे नूर इलाहीआ। जिथ्थे नूर नहीं कोई आफ्ताब, शमा चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। जन भगत कहिण सचखण्ड तूं आ जा उपर धरत, धवल फेरा पाईआ। कुछ आपणी दस्स शर्त, शरअ तों बाहर समझाईआ। की खेल तेरा उपर अर्श, अर्शी प्रीतम की आपणा रंग रंगाईआ। की तेरी ख़ाहिश केहड़ी हरस, हवस देणी सुणाईआ। जे तेरे गृह आईए परत, किस बिध पतिपरमेश्वर मेलें चाँईं चाँईआ। किस धार होवे दरस, दीद कवण रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सचखण्ड कहे जन भगतो मैं साची मंग मंगावांगा। गुरमुख साचे सन्तो, सतिगुर शब्द इक मनावांगा। गुरमुखो जे ओह गया मन्न, उहदे नाल चल के आवांगा। जिस दा ना कोई सरीर वजूद तन, नूर नूर विच समावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि सूरा सरबंग, सूरबीर अग्गे आपणा वास्ता पावांगा।

✪ १३ पोह शहिनशाही सम्मत ६ सेवा सिँघ दे गृह कीर पिण्ड ज़िला जम्मू ✪

सचखण्ड कहे जन भगतो मैं आवांगा। चौदस पोह पन्ध मुकावांगा। निरगुण धार निरगुण हो, निरगुण संग रखावांगा। जिस दा रूप ना जाणे को, सो कलि कल्की मेल मिलावांगा। जिस दी एथे ओथे दो जहानां लोअ, लोआं पुरीआं तों बाहर सो साहिब संग रखावांगा। तुहाडा मेरा रिश्ता रहे ना दो, दो तों इक सरूप समावांगा। तुसां मेरा कीता मोह, मैं मुहब्बत तुहाडे विच रलावांगा। तुसीं मेरे साहिब नाल जाणा छोह, मैं तुहाडे नाल मिल के तुहाडे अन्दर डेरा लावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणी कार कमावांगा। सचखण्ड कहे मैं आवां ज़रूर जग, जागरत जोत नाल रुशनाईआ। सच दवारे बहिवां सज, जिथ्थे होवे मेरा शहिनशाहीआ। जन भगतो तुहाडे अन्दर

वसां ते वसां उपर शाह रग, नौ दवारे पन्ध मुकाईआ। मैनूं कोई जाण ना सके बुद्धी वाला कग, हँस गुरमुख वेखण चाँईं चाँईंआ। मैं इक प्रभू दा बंस ते इक वेखणी यद, यदी आपणी अक्ख खुल्हाईआ। तुसीं मैनूं ना लभ्भओ ते मैं आपे तुहानूं लवां लभ्भ, एह मेरी बेपरवाहीआ। मैं तुहाडे सुणने सद, तुसीं सोहँ ढोले गाउणे चाँईं चाँईंआ। मैं तुहाडा दर्शन करां रज्ज, बिन नेत्र नैण आपणा आप तृप्त लवां कराईआ। एह खेल कराउणा सूरे सरबग, जो शाह पातशाह शहिनशाह इक्को बेपरवाहीआ। सचखण्ड कहे ठीक वाक्या मैं सब तों दूर दुराडा वसया अलग्ग, मेरा गुआंढी नज़र कोए ना आईआ। जुगां पिच्छों जे प्रभू किरपा कर के इक अद्धा भगत ल्ए सद्द, ओह वी मेरे विच वड़ के प्रभ दी जोत विच समाईआ। मैं एसे कर के झोली रिहा अड्ड, सन्मुख दयां दुहाईआ। तुसीं मेरे गृह आओ जद, याददाशत ना देणी भुलाईआ। इक वेरां ज़रूर इक्ट्ठे बहांगे सज, सज्जण सज्जणां वल्ल तकाईआ। जित्थे शब्द दा नाअरा नहीं नग़ारा नहीं फेर वी प्रभू दे प्यार विच कहिणा तूं मेरा मैं तेरा दोहां दी मुक गई हद्द, हदूद दी वंड ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सचखण्ड कहे मैनूं लिख लिख अक्खरां ने कीता उग्घा, मेरा रूप ना कोए दरसाईआ। मेरी सिफ्त दा सारे लैंदे रहे भुग्गा, जुग जुग हिस्सयां विच वंड वंडाईआ। मेरी मंज़ल ते बिना प्रभू किरपा तों कोई ना पुज्जा, जो पुज्या प्रभ दे चरणां विच बहि के सीस निवाईआ। उस तों अग्गे उस दा भेव गुज्झा, जिस नूं चार युग दा शास्त्र सक्या ना कोए सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु जो आए उपर बसुधा, धरनी धरत धवल उपर आपणा डेरा लाईआ। उन्हां नूं पुरख अकाल दीन दयाल बणा के आपणे पुत्ता, नाम खिलाउणे विच दिता परचाईआ। उन्हां ने एसे कर के सिफ्तां उहदीआं विच गाया ओह साहिब सब तों उच्चा, ऊचो ऊच नूर इलाहीआ। बेअन्त बेअन्त बेअन्त कहि के आपणा खहिड़ा छुडाया पंज भूता, तन वजूद दा लेख मुकाईआ। सचखण्ड कहे कोई ग्रन्थ शास्त्र दस्स ना सके मेरी केहड़ी गली ते केहड़ा कूचा, किस गृह अवतार पैग़म्बर गुरु दिते टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि दा अन्त अन्त दा आदि आप आपणा दए सबूता, दूजा साबत करन वाला नज़र कोए ना आईआ।

✪ १३ पोह शहिनशाही सम्मत ६ चरण दास दे गृह पिण्ड सई खुर्द ज़िला जम्मू ✪

सचखण्ड कहे जन भगतो तुसीं मेरे आदी साक, जुग जुग दे नज़री आईआ। तुहाडे वास्ते सदा खुल्हा रखणा ताक,

शब्द गुरु दे अग्गे वास्ता पाईआ। तुसां पूरा करना ओस प्रभू दा वाक, जो भविक्ख्त वाक् सब दे पूर कराईआ। तुहाडा नाम अस्व इक्को होवे राक, रस्ता इक्को मेरा देणा वखाईआ। मेरे साहिब दे बणना चाकर चाक, फ़रमांबरदार रूप दरसाईआ। दीन दुनी तों देणा तलाक, जगत सांझ ना कोए रखाईआ। मेरा तुहाडे नाल बणया रहे अख़लाक, इख्तलाफ़ ना कोए वखाईआ। फेर वेख्यो तुहाडा किवें वधदा प्रताप, हरि प्रतापी देवे माण वड्याईआ। तुसीं सदा तों तूं मेरा मैं तेरा करना जाप, इक्को इक दा राग अलाईआ। तुहानूं मिले धुरदरगाही धुर दा बाप, पिता पुरख अकाल गोद उठाईआ। मैनूं आदि तों लै के अन्त तक ओसे दा विश्वास, जिस ने इक्को विशा दिता समझाईआ। जुग चौकड़ी सारे मेरी शाख़, हिस्से लोकमात वंड वंडाईआ। तुहाडी अन्त पूरी होवे आस, तृष्ना रहे ना राईआ। तुहाडा ओथे रखां वास, जिथ्थे निरगुण नूर जोत प्रकाश, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिथ्थे ना पुन्न ना कोई पाप, ना कोई कलमा ना कोई जाप, ना कोई सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवन, सचखण्ड मेरे गृह लेखा मुकाए दिवस रात, घड़ी पल नज़र कोए ना आईआ।

६६५ २२

✪ १३ पोह शहिनशाही सम्मत ६ ज्ञान चन्द दे गृह पिण्ड सई खुर्द ज़िला जम्मू ✪

सचखण्ड कहे जन भगतो मेरा रंग अपारा, आप आपणा दयां जणाईआ। प्रभ दी जोत मेरा सहारा, सहायक इक्को नज़री आईआ। प्रभ दी धार मेरा दवारा, दूजा घर ना कोए दरसाईआ। प्रभ दा चरण मेरा किनारा, अग्गे दर ना कोए रखाईआ। आदि अन्त जुगा जुगन्त जिस दा हुक्म सच्ची सरकारा, सो साहिब मेरा शहिनशाहीआ। मैं उस दा सेवादारा, नित नित सेव कमाईआ। सच सच करां प्यारा, मुहब्बत विच समाईआ। मेरा मालक परवरदिगारा, सांझा नूर खुदाईआ। मैं ओसे दी दरगाह ते ओसे दा दरबारा, जिथ्थे ज़हूर ल्ए प्रगटाईआ। मेरा लेखा कागत कलम ना लिखणहारा, सिफ्तां विच ना कोए जणाईआ। मैं हुक्म दा इक चुबारा, हुक्म हुक्म विच रखाईआ। हुक्म दा चार दवारा, हुक्म दा छप्पर छन्न वखाईआ। हुक्म होवे उज्यारा, हुक्मी हुक्म रुशनाईआ। हुक्म मेरा घर बाहरा, हुक्मी सोभा पाईआ। हुक्मे मेरा अखाड़ा, हुक्मे रंग रंगाईआ। हुक्मे करां प्यारा, हुक्मे मेल मिलाईआ। जन भगतो जिथ्थे नूर नूर निरँकारा, नूर नुराना नूर डगमगाईआ। ओह मेरा आर पार किनारा, मँझधार उस दे विच रखाईआ। जिस दा सब ने कीता इशारा, सैनतां नाल दृढ़ाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस गृह जोती जोत करे उज्यारा, सो मेरा ठांडा दरबारा दर इक्को सोभा पाईआ।

✪ १३ पोह शहिनशाही सम्मत ६ राम चन्द दे गृह पिण्ड निकोवाल ज़िला जम्मू ✪

सचखण्ड कहे मैं आदि तों इक कलापा, इकल्ला नज़री आईआ। ना कोई अम्मी ना कोई पापा, मात पित ना कोए रखाईआ। मेरा ना कोई सज्जण ना कोई साका, सगला संग ना कोए बणाईआ। ना कोई नकशा ना कोई ख़ाका, ना कोई मुसव्वर मेरा रूप दए प्रगटाईआ। ना कोई दर ना कोई ताका, कुण्डा वंड ना कोए वंडाईआ। ना कोई भविख ना कोई रागा, ना कोई आवाज़ सुणाईआ। ना कोई मज़्हब ना कोई जाता, ना कोई दीनन दीन बणाईआ। ना कोई तृष्ना ना कोई आशा, ना कोई तमा लोभ वखाईआ। ना कोई सिम्मत ना कोई पासा, हद्द हदूद ना कोए वखाईआ। ना कोई पृथ्मी ना कोई आकाशा, गगन गगनंतर ना कोए मण्डलाईआ। ना कोई दिवस ना कोई राता, सूर्या चन्द ना कोए रुशनाईआ। ना कोई सिंघासण ना कोई खाटा, तकीआ लेफ ना कोए वखाईआ। ना कोई रस ना कोई बाटा, ना कोई वंड वंडाईआ। ना कोई ताया ना कोई चाचा, नार कन्त ना रंग रंगाईआ। ना कोई संग ना कोई साथा, प्रभू सच दयां सुणाईआ। ना कोई मस्तक ना कोई माथा, ना कोई धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। मैनूं सच दस्स मेरा किथे रखया वासा, कवण धाम चतुराईआ। मैं आपणी महिमा सुणी विच अल्फ़ाज़ां, सिफ्तां वाले ढोले सारे गाईआ। मेरे पिच्छे जगत जहान पढ़े नमाज़ां, भुक्खे रह के झट लँघाईआ। जंगल जूहां मारन वाटां, टिल्ले पर्बत खोज खुजाईआ। फिरन तीर्थ ताटां, भज्जण वाहो दाहीआ। गल वस्त्र रखण पाटा, शृंगार सति ना कोए बणाईआ। मैं बिना हत्थां तों जोड़दा हाथा, सीस जगदीश निवाईआ। मैनूं मेरी सच दस्स दे गाथा, किस बिध मेरी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे सीस निवाईआ। सचखण्ड कहे प्रभू मैं आदि दा इक इकल्ला, अकल कलधारी तेरी बेपरवाहीआ। मेरा सच दस्स किन्ना लम्मां चौड़ा महल्ला, महल्ल अटल की वड्याईआ। किस बिध तेरा दीपक विच बला, निरगुण नूर कीता रुशनाईआ। क्यों मैनूं दस्सया निहचल अटला, नर नरायण सिफ्त सालाहीआ। अग्गे करीं ना वला छला, भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। किस कारन मैं फुलया फला, फलीभूत दिता कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। सचखण्ड कहे प्रभू क्यों मेरी धार न्यारी, निरँकार दिती जणाईआ। किस बिध

रची उच्च अटारी, अटल दे मालक देणा समझाईआ। तूं शहिनशाह शाह पातशाह सच्ची सरकारी, पुरख अकाला इक अख्वाईआ। मैं तेरा सेवादारी, आदि अन्त सेव कमाईआ। किस बिध मेरी कीती उसारी, नींह किस धार बंधाईआ। मेरा राह तकदे पैग़म्बर गुर अवतारी, बिन नैणां नैण उठाईआ। किस तरीके नाल मेरे अन्तर करें सिक्दारी, हुक्म आपणा इक चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहरवान दर तेरे सीस निवाईआ। सचखण्ड कहे प्रभू की मेरा दरबारा, दरबान कवण अख्वाईआ। की मेरा घर बाहरा, कवण रंग रंगाईआ। की मेरा किनारा, अन्त दे समझाईआ। की मेरा सहारा, जिस सहारे झट लँघाईआ। की मेरा वरतारा, की करनी हथ्थ फड़ाईआ। की मेरा अधारा, मेहरवान देणा सुणाईआ। क्यों सारे तकदे मेरा राह सच्ची सरकारा, सरगुण बैठे अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि साहिब तेरी सरनाईआ। सचखण्ड कहे की प्रभू मैं सच्चा, सच दे सुणाईआ। की मेरा रूप रंग कच्चा, कि कंचन गढ़ दएं वड्याईआ। की तूं मेरा पसारा आपे रचा, आपणी रचना नाल रचाईआ। मैनूं सारा दस्स दे पता, पतिपरमेश्वर भेव खुल्हाईआ। की मेरा वी जुग चौकड़ी वांग लिख्या पटा, लेखा अंकड़यां विच बणाईआ। की मेरा वी जगत दवारयां मुल्ल रखया कुझ टका, जिस दी कीमत ना कोए समझाईआ। की मेरी बदली वास्ते तूं वी कोई प्रगट कर देंणा टप्पा, आपणा शब्द शब्द जणाईआ। की मेरा वी बदलण वाला हट्टा, धुर दे हटवाणे देणा दृढ़ाईआ। सचखण्ड कहे प्रभ मैं केहड़ी खुशी विच हस्सां, हस्स के दयां वखाईआ। केहड़ी धार विच नस्सां, भज्जां वाहो दाहीआ। पुरख अकाल किहा ओह वेख लोकमात समां आया मसां, नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग गए राह तकाईआ। मैं जन भगतां देणा रसा, बिन रसना रस चखाईआ। सच सुनाउणा जसा, सिफ्तां विच वड्याईआ। मार्ग अगम्मी दस्सां, तेरा राह वखाईआ। जिन्हां दीआं अन्दरों खोलणीआं अक्खां, निज नेत्र नाल रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सचखण्ड सुण हुक्म अनोखा, अवल्लड़ा दयां जणाईआ। तेरा भेव पाए कोई ना पोथा, पुस्तक सके ना कोए दृढ़ाईआ। तेरा मेरे प्यार दा कोठा, महल्ल इक्को इक वड्याईआ। जो आदि तों लै के अन्त तक लम्मा चौड़ा बहुता, जगत नाप ना कोए रखाईआ। जिथ्थे जोत धार धार सोता, सोवत जागत रूप ना कोए बणाईआ। जिथ्थे पुज्जे कोई ना सोचा, समझ विच ना कोए समझाईआ। जिथ्थे धार नहीं कोई लोका, परलोक ना वंड वंडाईआ। जिथ्थे लेखा नहीं कोटन कोटा, असंख असंखां गणित गिणाईआ। जिथ्थे कोई साक सैण नहीं पुत पोता, सरगुण संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा

आप चुकाईआ। सचखण्ड तेरा प्रेम प्यार मेरा घराना, गृह इक्को इक वड्याईआ। जिथ्थे धुर दा नूर नुराना, तेरा नूर नूर रुशनाईआ। बिना मेरे प्यार तों तैनूं नापण वाला नहीं कोई पैमाना, पैमाइश विच कदे ना आईआ। तेरा विहार नहीं नाल जगत ज़माना, ज़िमीं असमानां तों बाहर तेरा गृह वसाईआ। जिथ्थे अवतार पैग़म्बर गुरु बाल निधाना, आपणा बल ना कोए धराईआ। जिथ्थे मेरा सच निशाना, आदि जुगादि जुग जुग झुल्ले वाहो दाहीआ। ओह तेरा महल्ल अटल महाना, सोहणा सोभा पाईआ। जिथ्थे निरवैर वसे श्री भगवाना, निरवैर अगम्म अथाहीआ। उठ वेख लोकमात होया मेहरवाना, मेहर नज़र इक टिकाईआ। जन भगतां देवे बिना भगती तों धुर दा दाना, नाम अगम्मा आप वरताईआ। खेले खेल मर्द मर्दाना, जोती जाता आपणी कार भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त सच दा मालक इक अख्वाना, एकँकार बेपरवाहीआ।

✪ १४ पोह शहिनशाही सम्मत ६ केसरी देवी दे गृह पिण्ड सई खुर्द ज़िला जम्मू ✪

६६८ २२

सचखण्ड भगतां देवां सच अनन्दा, सच स्वामी हो के दया कमाईआ। जुग जन्म दे विछड़े आपणे नाल गंढां, आत्म परमात्म मेल मेलां सहिज सुभाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक पावां ठंडा, अमृत नाम मेघ बरसाईआ। चरण प्रीती धुर दी नाल रंगां, रंग मजीठ अगम्म चढ़ाईआ। दीन दयाला हो के उन्हां अन्दर लँघ, नौ दवार ना कोए अटकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गावां छन्दा, आत्म परमात्म पड़दा दयां उठाईआ। मेरा खेल नहीं कोई पंज तत तत्तां वाला बन्दा, बन्दगी विच ना आपणा झट लँघाईआ। बण के साहिब सच्चा बख्शिंदा, बख्शिश रहमत इक कमाईआ। जन्म जन्म दा कर्म कट के गंदा, पतित पुनीत दयां कराईआ। सतिगुर हो के वसां संगा, सगला संग बणाईआ। निझर धार बख्शां गंगा, जमना सुरस्ती गोदावरी नाल मिलाईआ। आवण जावण मेटां पन्धा, चुरासी फाँसी जम कटाईआ। निरवैर हो के लावां अंगा, अंगीकार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक होए सहाईआ। सचखण्ड जन भगतां देवां रस, निझर झिरना आप झिराईआ। मन कल्पणा कर के वस, विख अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। कर प्रकाश कोट रवि शशि, अंध अंधेरा देणा मिटाईआ। निज नेत्र खोल्ह के अक्ख, लोयण आपणे नाल रलाईआ। अमृत आत्म निझर झट्ट, बूँद स्वांती इक टपकाईआ। धर्म दवार खोल्ह के हट्ट, वस्त नाम दयां वरताईआ। जगत किनारा पन्ध

मुका के तट, गृह इक्को इक वखाईआ। जिथ्थे नूर जोत लट लट, दिवस रैण डगमगाईआ। मेला कर पुरख समरथ, सगला संग आप हो जाईआ। महिमा दस्स शब्द अकथ, जगत विद्या डेरा ढाहीआ। तेरा दवारा देवां दस्स, दहि दिशा पन्ध मुकाईआ। तूं अग्गों मिलणा हस्स, हस्स हस्स आपणी खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दवार तेरा घर प्रगट, प्रगट आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ १४ पोह शहिनशाही सम्मत ६ अमरो देवी दे गृह पिण्ड सई खुर्द ज़िला जम्मू ✪

सचखण्ड आ वखावां तेरे साथी, परम पुरख चोहल जणाईआ। जिन्हां मन्नी मेरी आखी, आख़र बैठे सीस निवाईआ। धुर दी सुणी साखी, ढोला गीत अगम्म अथाहीआ। जिन्हां नूं संदेशा दिता कमलापाती, पतिपरमेश्वर हो के आप दृढ़ाईआ। उन्हां दी अन्तिम मुकणी वाटी, चुरासी गेड़ा रहे ना राईआ। खेले खेल अलखणा अलाखी, हरि करता धुरदरगाहीआ। तूं वी पूरी करनी आसी, आशा आपणी नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सचखण्ड आ वखावां तेरे सज्जण, मीत मुरारे नज़री आईआ। जिन्हां चरण धूढ़ कीता मजण, दुरमति मैल मात धुआईआ। नेत्र दर्शन कर कर रज्जण, तृष्ना तृखा रही ना राईआ। तूं मेरा मैं तेरा कर के भजन, बन्दगी इक्को झोली पाईआ। ओह लाल अनमुलड़े मेरे रत्न, हीरे दयां वखाईआ। जिन्हां नूं करना पैणा नहीं कोई यतन, यथार्थ तेरे नाल मिलाईआ। मुड़ के आवण आपणे वतन, बेवतन पन्ध मुकाईआ। जिन्हां दा इक्को घाट इक्को पत्तन, इक्को तेरे दर चढ़न चाँईं चाँईंआ। ओह तेरे दवार वसण, सच दवारे सोभा पाईआ। तैनूं मिल के हस्सण, खुशीआं रंग रंगाईआ। जोती धार हो के नच्चण, टप्पण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला आप मिलाईआ। सचखण्ड आह वेख मेरे मीत, मित्रा दयां दृढ़ाईआ। जिन्हां सतिजुग बदलणी रीत, रीती आपणी इक समझाईआ। जेहड़े गाउंदे धुर दा गीत, तूं मेरा मैं तेरा राग जणाईआ। नाता छड के मन्दिर मसीत, काअब्यां बाहर सोभा पाईआ। त्रैगुण तों हो अतीत, त्रैभवण धनी विच समाईआ। उन्हां दी करनहार शब्द गुरु तस्दीक, शहादत शब्द गुरु भुगताईआ। तेरे दवारे होण वसनीक, पल्लू तेरे नाल गंढाईआ। मैं दोहां नूं करां ताकीद, सहिज नाल दृढ़ाईआ। इक दूजे दी आसा मनसा पूरी करनी उम्मीद, हिरस हवस देणी मिटाईआ। सांझी रखणी प्रीत, प्रीतम मिल के वज्जे वधाईआ।

कलयुग कूड़ी क्रिया पार करनी लीक, लाईन ऐन तेरी दिती वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सुनेहड़ा इक सुणाईआ। सचखण्ड आ वेख लै मेरे प्यारे गुरमुख, शब्दी गुर गुर धार वड्याईआ। जिन्हां जन्म मरन दा मेटणा दुःख, आवण जावण रहे ना राईआ। उज्जल होणी जननी कुख्ख, मिले माण जणेंदी माईआ। आत्म मिलणा सुख, दुक्खां दा डेरा ढाहीआ। लोकमात विच्चों लैणे चुक्क, घर तेरे देणे पहुंचाईआ। जिथ्थे वसे अबिनाशी अचुत, चेतन बैठा सोभा पाईआ। तूं वेख के होणा खुश, खुशीआं ढोले गाईआ। सब नूं प्यार नाल लईं पुछ, निम्रता विच मेल मिलाईआ। वेखीं किते हो ना जावीं चुप्प, आप आपणा नैण शरमाईआ। जिन्हां नाता छडणा कलयुग अंधेरा घुप, कूड़ी क्रिया पन्ध मुकाईआ। ओह गाउंदे आवण तूं मेरा मैं तेरा साची तुक, दूजा राग ना कोए अलाईआ। तेरे दवार आ के मेरे चरण कँवल उन्हां दा पैंडा जाए मुक, अग्गे पन्ध ना कोए भवाईआ। ओह सन्त सुहेले जन भगत मेरे शब्द अनादी सुत्त, अपराधी रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, तेरी सुहाए सुहञ्जणी रुत, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ।

✪ १४ पोह शहिनशाही सम्मत ६ प्रेम चन्द दे गृह सई खुर्द ज़िला जम्मू ✪

सचखण्ड ओह तक लै मेरे लाल, सो पुरख निरँजण रिहा सुणाईआ। जिन्हां पोह ना सके काल, महाकाल ना कोए चतुराईआ। चित्रगुप्त लेख ना सके वखाल, राय धर्म ना दए सज़ाईआ। लाड़ी मौत ना चले नाल, आपणा संग बणाईआ। चुरासी करनी पए ना भाल, चारे खाणी अक्ख उठाईआ। मैं उन्हां दी करां प्रितपाल, प्रितपालक हो के वेख वखाईआ। दीनां बंधप हो के दीन दयाल, दया आपणी इक कमाईआ। सचखण्ड वखावां सच्ची धर्मसाल, धर्म दी धार इक दृढ़ाईआ। आपे वेखां मुरीदां हाल, मुर्शद हो के खोज खुजाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत करां रुशनाईआ। सब दी लेखे पावां घाल, जो जन आयण सरनाईआ। सतिगुर शब्द बणावां दलाल, विचोला अगम्म अथाहीआ। ज़िंदगी दा हल्ल करां सवाल, जीवण अवर रहे ना राईआ। तूं आउंदयां नूं लैणा संभाल, सम्बल दा मालक रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पड़दा आप उठाईआ। सचखण्ड ओह वेख गुरमुख मेरे रंग रत्ते, रत्न अमोलक नज़री आईआ। जिन्हां दे अन्तर इक्को सत्ते, सति स्वामी वेख वखाईआ। कूड़ी क्रिया छडी मते, सतिगुर मति लई अपणाईआ। जिन्हां दे साफ़ होए खते, लेखा अवर रिहा ना राईआ। अग्नी तत कोए ना तपे, सांतक

सति दिता कराईआ। जिन्हां तूं मेरा मैं तेरा ढोले जपे, सोहँ अगम्म अथाहीआ। ओह आदि अन्त दे मेरे बच्चे, बचपन आपणी झोली पाईआ। ओह छडण मकान काया कच्चे, तन वजूद डेरा ढाहीआ। तेरे दवारे आवण भज्जे, पिछला पन्ध मुकाईआ। सचखण्ड बैठण सजे, हरि करता आप टिकाईआ। प्रेम प्यार दे लैण मज़े, रस इक्को इक चखाईआ। जिथ्थे धुर दा दीपक जगे, जोती जोत विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सचखण्ड ओह तक लै गुरमुख मेरे सन्त, सति दयां जणाईआ। जिन्हां दा इक्को नाम मणीआ मंत, मन दी मनसा दए गंवाईआ। गढ़ तोड़ के हउमें हंगत, हँ ब्रह्म दे विच समाईआ। बण के साची संगत, ऊच नीच दा डेरा ढाहीआ। दर ठांडे करन मिन्नत, निउँ निउँ सीस निवाईआ। उन्हां ग़म रहे ना चिन्त, चिन्ता चिखा ना दए जलाईआ। पुरख अकाल बख़्शणी मिन्नत, दीन दयाल दया कमाईआ। उन्हां तेरी आउणा सिम्मत, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे दर दरबार पुज्जण देवे कोई ना निन्दक, हरिजन साचे आवण चाँईं चाँईंआ।

१००१ ✪ १४ पोह शहिनशाही सम्मत ६ चेला सिँघ दे गृह पिण्ड सई खुर्द ज़िला जम्मू ✪ १००१

२२ २२

सचखण्ड कहे प्रभ जुग जुग खेल वेखे तेरे हरि दे, धुर दा मालक ध्यान लगाईआ। भगत सुहेले तेरे दुःख रहे भरदे, जगत राज समाज दुहाईआ। दिवस रैण तेरा नाम रहे जपदे, अन्तर वड़ वड़ खोज खुजाईआ। जगत जहान रहे छडदे, तृष्ना तृखा मिटाईआ। वास्ते पा पा रहे लभ्भदे, खोजण थांउँ थाँईंआ। कदी मेले होण नाल सबब दे, सतिजुग त्रेता द्वापर दए दुहाईआ। इशारे मिलदे रहे अक्ख दे, अक्खरां वाली विद्या इक सुणाईआ। छिन मात्रा दर्शन हुन्दे रहे प्रतख दे, साख्यात सरगुण रूप धराईआ। सुनेहड़े सुणदे रहे कच दे, कंचन गढ़ ध्यान लगाईआ। तेरी सरनाई रहे ढठदे, दूर दुराडे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहरवान दया कमाईआ। सचखण्ड कहे प्रभ बिन भगती कोई ना तरया, जगत शास्त्र देण गवाहीआ। बिना नाम तों मंज़ल कोए ना चढ़या, गृह सच ना कोए वखाईआ। बिना प्यार तों मिले किसे ना दरया, दर दरवाज़ा ना कोए खुल्हाईआ। की खेल नरायण नरया, मेहरवान देणा दृढ़ाईआ। पुरख अकाल किहा सचखण्ड मेरा निरअक्खर किसे ना पढ़या, विद्या विच ना कोए चतुराईआ। जिस दा शब्दी धार मैं पल्लू फड़या, गंढ आत्म नाल पवाईआ। ओह निर्भय हो कदे ना डरया, भय जगत ना कोए रखाईआ। संसार

सागर विच्चों तरया, तारी इक्को नाम लगाईआ। दरगाह साची सचखण्ड दवारे वड़या, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सद आपणा घर वसाईआ। सचखण्ड जिस उपर मैं आपणी किरपा करदा, किरपन लेखे लवां लगाईआ। सो सन्त सुहेला ना जन्मे ना मरदा, मरजीवत रूप वटाईआ। ओह मालक होवे मेरे घर दा, गृह साचे डेरा लाईआ। जिथ्थे इक्को दीपक बलदा, दूजी अवर ना कोए रुशनाईआ। ओह खेल वेखे निहचल धाम अटल दा, सच सिंघासण ध्यान लगाईआ। झगड़ा मुक जाए महीअल जल थल दा, अस्गाहां दा लहिणा जाए मुकाईआ। जोत जोत विच रलदा, जोती जोत विच समाईआ। विछोड़ा होए घड़ी ना पल दा, पारब्रह्म आपणे रंग रंगाईआ। इहो लहिणा मेरी किरपा दे फल दा, फलीभूत दयां कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सचखण्ड कहे प्रभ मैं भगत वेखे तेरे लोकमात, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग ध्यान लगाईआ। किसे सुख मिल्या ना दिवस रात, भिन्नड़ी रैण रंग ना कोए रंगाईआ। सारे तेरा मार्ग रहे झाक, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। किसे दा छिन भंगर खोल्हया ताक, पर्दा परदयां विच्चों लाहीआ। शब्द दी दे के आवाज, सुन्न समाध दिता दृढ़ाईआ। निरगुण सरगुण रच के काज, करनी करते कार कमाईआ। सति प्रीती दे के दाद, दौलतमंद दिता बणाईआ। निंद्रा खोल्ह के जाग, जागरत जोत कीती रुशनाईआ। हरि प्रगट हो के कदे नाल रिहा नहीं साख्यात, सगला संग ना कदे रखाईआ। छिन भंगर दरस दिता महिमा लिखाई काग़ज़ात, अक्खर अक्खरां नाल जुड़ाईआ। मजमूआ बणा के अलिफ़ ये अलिफ़ाज़, नग़मा दिता जणाईआ। कलयुग अन्त तेरा मुक्कया अगम्मा राज, जिस दी रवाइत नज़र कोए ना आईआ। मेहरवान महिबूब किरपा करी आप महाराज, निरवैर हो के होया सहाईआ। सीस जगदीश रख के ताज, तख्त निवासी हुक्म सुणाईआ। सति सच दी साजण साज, सज्जण बण के भेव खुल्हाईआ। जन भगत सुहेले मार आवाज़, सोए मात लए उठाईआ। पूरब लहिणा सच दा वाच, वाचक हो के वेख वखाईआ। चरण प्रीती जोड़ के नात, नाता आत्म परमात्म ल्या बंधाईआ। सच नाम दी दे सौग़ात, वस्त अनमुली आप वरताईआ। सचखण्ड कहे मैं वेख के खेल तमाश, तमा पिछली दिती भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल शाहो शाबाश, शहिनशाह तेरी बेपरवाहीआ।

१००२
२२

✪ १४ पोह शहिनशाही सम्मत ६ सरदारा सिँघ दे गृह पिण्ड सई खुर्द, सरदारी कैंप ज़िला जम्मू ✪

सचखण्ड कहे मैं तकी जोत निरँकारी, निराकार सोभा पाईआ। जिस ने आवाज़ शब्द अगम्मी मारी, संदेशा दिता दृढ़ाईआ। उठ मातलोक दी कर त्यारी, त्रिलोकी पन्ध मुकाईआ। चलणा नाल हुश्यारी, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां पन्ध मुकाईआ। अग्गे तकणी परम पुरख दी यारी, जो याराने भगतां नाल रखाईआ। जिस दी नव नौ चार पिच्छों आई वारी, वारता पिछली दए गवाहीआ। ओस करनी खेल न्यारी, निरवैर आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता वड वड्याईआ। सचखण्ड कहे जिस वेले आवाज़ वज्जी, मैं सवाधान होया चाँईं चाँईंआ। मैं आपणी आसा तजी, तृष्ना ना कोए रखाईआ। झट जोत अगम्मी जगी, नूर दिता चमकाईआ। मैनूं इक्को दिसी डण्डी, रहिबर रस्ता इक वखाईआ। उठ चल विच वरभण्डी, ब्रह्मण्ड दा पन्ध मुकाईआ। तूं जन भगतां दवार लँघीं, पुजणा चाँईं चाँईंआ। चौदां पोह नूं आसण लाउणा हेठां मंजी, सिंघासण साचा सोभा पाईआ। एहो खेल प्रभू दी चंगी, जो करनी दा करता रिहा कराईआ। तूं आपणा प्रेम प्यार नाल रंगी, मुहब्बत विच वखाईआ। जिस ने दीनां मज़्बां तोड़नी पाबन्दी, शरअ दा डेरा ढाहीआ। ओह पुरख अकाला दीन दयाला सब दी वखाए संधी, सनद आपणे हथ्थ उठाईआ। फेर
१००३ वेखीं किस बिध सदी चौधवीं लँघी, दरगाह साची अक्ख खुल्हाईआ। फेर तकीं किस बिध दीन दुनी दी ढैंहदी कंधी, अग्गे १००३
२२ हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच फ़रमाना इक सुणाईआ। २२
सचखण्ड कहे प्रभ मेरे ठाकर स्वामी, मालक दयां जणाईआ। तूं आदि दा अन्तरयामी, जुग जुग वेख वखाईआ। तैनूं सब ने किहा वसया देस अनामी, मेरे तों परे तेरी बेपरवाहीआ। मैं तेरा नगर ग्रामी, खेड़ा इक अख्वाईआ। जिस नूं याद करन तमामी, तमां दा लालच दिता भराईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं गाईं बाणी, सिफ्तां विच सालाहीआ। तेरा साहिब खेल महानी, सतिगुर तेरी बेपरवाहीआ। किरपा कर शाह सुल्तानी, शहिनशाह तेरी इक शरनाईआ। मैं सुणना चाहुंदा तेरी ज़बानी, भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। किस बिध कलयुग अन्तिम जन भगतां उत्ते करें मेहरवानी, मेहर नज़र उठाईआ। किस बिध लेखे लावें गोबिन्द बच्चया वाली कुरबानी, कायनात दा पड़दा देणा चुकाईआ। कुछ अगली दस्स निशानी, निशाना दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे चरण कँवल सदा चरण ध्यानी, ध्यान तेरे विच रखाईआ।

✪ १४ पोह शहिनशाही सम्मत ६ सोभा दे गृह सई कलां ज़िला जम्मू ✪

सचखण्ड मेरे भगत सुहेले तक जग, पुरख अकाला दीन दयाला रिहा दृढ़ाईआ। जिन्हां दे उपर वसां शाह रग, जगत वासना पन्ध मुकाईआ। त्रैगुण माया बुझा के अग्ग, अमृत मेघ अगम्म बरसाईआ। शब्द अगम्मी वजा के नद, धुन आत्मक राग सुणाईआ। मूर्ख मुग्ध बणा के हँस कग, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। लख चुरासी विच्चों लभ्भ, हरिजन आपणा मेल मिलाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म खेल करां सूरा सरबग, अल्पग जीव तराईआ। कूड़ी क्रिया जगत वासना मेट के हद्द, हदूद आपणी इक वखाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी हो के लवां सद्द, सच संदेशा नाम सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर तेरा इक वखाईआ। सचखण्ड औह तक लै मेरे भगत सुहेले, हरि सज्जण इक अख्वाईआ। जिन्हां आदि जुगादि जुग जुग मेले, नित नवित होवां सहाईआ। ओन्हां लेखे पूरे हो गए गुरु गुर चेले, सुरत शब्द शब्द सुरत विच समाईआ। दीन दुनी नालों हो के वेहले, नाता मेरे नाल रहे जुड़ाईआ। ओन्हां लेखा रिहा ना धर्म राए दी जेले, लख चुरासी ना कोए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सचखण्ड कहे प्रभ तेरा भगत मात केहड़ा, हरि करते दे दृढ़ाईआ। पुरख अकाल कहे जिन पंचम चुकाया झेड़ा, झगड़ा अवर रिहा ना राईआ। अन्तर आत्म मेरा वेहड़ा, सिहन सोहणा सोभा पाईआ। सद वसां नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध रहे ना राईआ। ओस दा आवण जावण लख चुरासी चुक्कां गेड़ा, चारे खाणी पन्ध मुकाईआ। सतिगुर शब्द बन्न्हे बेड़ा, भार आपणे कंध उठाईआ। जेहड़े गाउंदे गीत तूं मेरा मैं तेरा, ढोला अगम्म अथाहीआ। ओन्हां सुहञ्जणा होवे वेला, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एकँकारा इक इकेला, अकल कलधारी आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ १४ पोह शहिनशाही सम्मत ६ अंग्रेज़ सिँघ दे गृह पिण्ड कलां सई ज़िला जम्मू ✪

हरि गोबिन्द दिती अगम्मी पाती, पत्रिका आपणे सीस टिकाईआ। आपणे अन्दर मारी झाती, चौदां पोह दिवस सुहाईआ। खेल करना कमलापाती, पतिपरमेश्वर आपणा हुक्म वरताईआ। बण के आवे भगतां साथी, सगला संग बणाईआ। जन्म कर्म दे विछड़े तारे पापी, पतित पार कराईआ। अग्गे कथा कहाणी दस्से साची, सच नाल वड्याईआ। जिस चरण छुहाउणा

उपर धरती ख़ाकी, ख़ाका खिच्च के गया वखाईआ। ढाई ढाई हथ्थ दी वाटी, चारों कुण्ट लम्बाई चौड़ाईआ। जिथ्थे सचखण्ड ने आ के कटणी राती, आपणा डेरा लाईआ। सिंघासण बहे पुरख अबिनाशी, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। देवे दात धुर दी दाती, दाता आप वरताईआ। सब दी पूरी करे आसी, तृष्ना दए चुकाईआ। जो सप्तस ऋषीआं आपणी दस्सी भविक्ख्त वाकी, पूरी दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, मेहर नज़र इक उठाईआ। धरनी कहे मेरा लेख बणाया भाग, हरि गोबिन्द दिती वड्याईआ। जिस कर के मेरे उत्ते जगया चराग़, दीपक नूर होया रुशनाईआ। मेरी जुग जुग दी बुझी आग, तृष्ना दिती गंवाईआ। सांझा कर समाज, भगत रिहा तराईआ। जिस दी सदा रहे जुग चौकड़ी याद, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। ओह भगतां खेड़ा करन आया आबाद, उजड़े दए वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां बख्श के सीस धर्म दा ताज, हुक्म धुर दा इक समझाईआ।

✪ १४ पोह शहिनशाही सम्मत ६ अंग्रेज सिँघ दे गृह पिण्ड सई कलां ज़िला जम्मू रात नूं ✪

इकी गुरमुख लाओ पंज जैकार, जम्मू वाले खुशी बणाईआ। पंज लिखारी करो निमस्कार, निव निव सीस झुकाईआ। पंज मालवे वाले लाओ धूढ़ी छार, सोहणा रंग रंगाईआ। पंज माझे वाले दोवे हथ्थं लओ उठाल, हथेली हथेली नाल मिलाईआ। पंज दुआबे वाले होणे ख़बरदार, अक्खीं मीट ध्यान लगाईआ। बधक उच्ची कूक पुकार, नाअरा सच सुणाईआ। सारे बैठो नाल प्यार, प्रभ चरण ध्यान लगाईआ। हुक्म सुणो सच्ची सरकार, हरि करता आप सुणाईआ। वेखो खेल अगम्म अपार, अपरम्पर स्वामी रिहा दृढ़ाईआ। हुक्म देवे अगम्मी धार, संदेशा नूर इलाहीआ। दरगाह साची करे ख़बरदार, मुकामे हक उठाईआ। सचखण्ड नैण उग्घाड़, नेत्र नाल मिलाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों आई तेरी वार, वारस हो के प्रभ रिहा सुणाईआ। लोकमात आउणा सच सच्चे दरबार, सच सिंघासण वेख वखाईआ। नाल ल्याउणे पैग़म्बर गुर अवतार, विष्न ब्रह्मा शिव संग बणाईआ। करोड़ तेतीसा भज्जे सुरप्त करे विचार, आपणा नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। सचखण्ड तूं मेट आपणा पन्ध, पाँधी हो के पन्ध मुकाईआ। संदेशा दे के आउणा सूर्या चन्द, मण्डप मण्डल देणा समझाईआ। सारे वेखो खेल सूरा सरबंग, हरि करता की कराईआ। जिस दा जुग चौकड़ी सिफ्तां वाला गाया छन्द, नाम कलमे ढोले राग अल्हाईआ। ओह खेल करे

विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड हुक्म वरताईआ। जिस ने झगड़ा मेटणा जेरज, अंड, उत्भुज सेत्ज खोज खुजाईआ। सो साहिब सुल्तान नौजवान मर्द मर्दान की लेखा जाणे अज्ज, रुत रुतड़ी विच्चों बदलाईआ। प्रगट हो के उत्ते जग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। खुशीआं विच सानूं ल्या सद्द, सद्दा शब्द नाम समझाईआ। असीं सारी छडणी हद्द, हदूद दा पैंडा लैणा मुकाईआ। लोकमात जाणा भज्ज, बिन कदमां पन्ध मुकाईआ। जन भगतां कोल बहिणा सज, सज्जण वेखणा नूर इलाहीआ। जिस दा डंक नगारा निरगुण धार जाणा वज्ज, सरगुण धार करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सचखण्ड कहे अवतार पैग़म्बर गुरु जोती धार चलो नाल, निरगुण जोत जोत समाईआ। मेरी वेखो सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक वखाईआ। जिस मेरे उत्ते किरपा करनी दीन दयाल, दयानिध आपणा रंग रंगाईआ। मेरा पूरब पूरा करे सवाल, आसा आपणे नाल रखाईआ। जिस ने जुग चौकड़ी बदली चाल, सतिजुग त्रेता द्वापर पन्ध मुकाईआ। कलयुग अन्त वेखे मुरीदां हाल, मुर्शद हो के बेपरवाहीआ। सारे खुशीआं विच मारन छाल, निरगुण धार लै अंगड़ाईआ। चलो तक्कीए जल्वा नूर जलाल, पैग़म्बर रहे सुणाईआ। जिस दा सिफ्तां विच अक्खरां विच दे के आए अहिवाल, संदेशे धुर सुणाईआ। जिस दे हुक्म अन्दर आदि जुगादि जुग चौकड़ी काल महाकाल, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सचखण्ड कहे असीं सारे भज्जे दौड़े, खुशीआं रंग रंगाईआ। उतरे धर्म धार दे पौड़े, डण्डा हथ्थ ना कोए रखाईआ। जिस दी करनी कोए ना मोड़े, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जिस दा लेखा जाणे ब्राह्मण गौड़े, जोती जाता नूर अलाहीआ। जिस दे पन्ध लम्मे चौड़े, गिणती गणित ना कोए दृढ़ाईआ। सच दवार धरनी उत्ते आ गए कोले, नेरन नेरे नज़री आईआ। सारे पुज गए उपर धौले, धर्म धार दरसाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाया सोहले, सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ। साडे किसे दे दिसदे नहीं काया वाले पंज तत चोले, चोली जगत ना कोए वखाईआ। सारे शब्दी धार रहे बोले, जन भगतो जगत सुणाईआ। कोटां विच्चों तुसीं थोड़े जेहे टोले, प्रभ किरपा नाल मिली वड्याईआ। बचन ज़रूर पूरे होण कौले, जो परम पुरख समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता अगम्म अथाहीआ। सचखण्ड कहे प्रभू असीं आ गए नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। मेरे मालक हक शरीक, लाशरीक तेरी सरनाईआ। तूं बख्शी सच तौफ़ीक, हिम्मत इक बणाईआ असीं पुज्जे ठीक चौदां पोह तारीख, वेला वक्त दए गवाहीआ। तेरे चरण कँवल साडी रहे प्रीत, प्रीतम मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे सीस झुकाईआ।

पुरख अकाल कहे सचखण्ड पूरब कर ध्यान, तैनूं दयां सुणाईआ। गोबिन्द वेख निशान, जो धर्म रिहा झुलाईआ तूं सब दे सुणे ब्यान, भुल्ल रहे ना राईआ। की वरत्या खेल जहान, गढ़ी चमकौर दए गवाहीआ। वेखीं होवीं ना मूल हैरान, हैरानी ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सचखण्ड कहे प्रभू मैनूं आ गया चेता, चेतन हो के दयां सुणाईआ। जिस वेले तेरा गोबिन्द बणया नेता, नर नरायण तेरा हुक्म मनाईआ। मैं उस दा खेल वेखा, बिना अक्खां अक्ख उठाईआ। तेरे हुक्म नाल बदल के आया सां भेसा, आपणा रूप बदलाईआ। क्यों गोबिन्द दिता संदेशा, सुनेहड़ा इक दृढ़ाईआ। मैं तेरा दस दशमेशा, सुत दुलारा तेरा सोभा पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल मेरयां गुरमुखां दा पूरा करदे लेखा, बाकी रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सचखण्ड कहे मैं गढ़ी चमकौर नूं तक्कया, तक्कया बेपरवाह। जिस दा लेखा लिख कोए ना सक्या, नाल काग़ज़ कलम शाही शाह। मैं खिड़ खिड़ा के हस्सया, ख़ुशी दा नाअरा ला। वाह वाह तेरा खेल पुरख समरथया, मेरे गहर गम्भीरे नूरी अलाह। गोबिन्द ख़ुशीआं दे विच रत्तया, मस्तक नूर रिहा चमका। मैं चारों कुण्ट नट्ठया, भज्जया वाहो दाह। फेर गोबिन्द तीर निशाना कस्या, मुखी असमान वल्ल उठा। मैं ज़िमी तों फोलया घट्टया, ख़ाक दिती उडा। मैं हथ्थ मारया उत्ते पट्टया, पटने वाल्या तेरा लेखा रहे ना राअ। फेर गुरमुखां वल्ल तक्कया, सोहणा नैण उठा। पंज माझे वाले पंज दुआबे वाले पंज मलवईए जुझार दे जेहड़े बणे नाल जथ्थया, सूरबीर नाम धरा। जिन्हां दा गोबिन्द दे वेंहदयां सथ्थर लथ्थया, सीस धड़ होया जुदा। फेर आपणा पासा परतया, नैण नैण विच्चों उलटा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म रिहा सुणा। सचखण्ड कहे मैं गढ़ी चमकौर तकी निक्की, पुरख अकाल दिती वखाईआ। गोबिन्द दी धार वेखी सिक्खी, सिख्या बेपरवाहीआ। जिस वेले जुझार झूज्या उस वेले गोबिन्द दे कोल एह जम्मू वाले बाकी रह गए सी इक्की, दूजा नज़र कोए ना आईआ। फेर गोबिन्द दी अन्दरों निगह टिकी, ध्यान ध्यान विच रखाईआ। फेर पुरख अकाल नूं अगम्मी चिट्ठी लिखी, शब्दी शब्द सुणाईआ। जे तूं प्रेम प्यार दी धार मैनूं दिती, देवणहार तेरी वड्याईआ। मैनूं तेरी खेल लग्गे मिट्ठी, मिट्ठा रस दिता चखाईआ। मेरा लहिणा देणा पुरख अकाल आप नजिट्ठीं, दूसर लोड़ रहे ना राईआ। झगड़ा रहे ना पथ्थर इट्टीं, पाहन रंग ना कोए रंगाईआ। मेरी सेजा उत्ते लिटीं, आसण आपणा इक बणाईआ। मेरी धार रखीं चिट्टी, निरवैर तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सचखण्ड कहे मैं गढ़ी चमकौर

वेख्या खेल तमाश, आपणा रूप बदलाईआ। जिस जुझार नूं दिता नहीं सी पाणी ग्लास, पुट्ठा दिता परताईआ। ओस अन्त डिगदे रखी आस, अक्ख गोबिन्द वल्ल टिकाईआ। जे तूं पुरख अकाल दा सुत मैं वी तेरा दास, सदा आपणा संग निभाईआ। जेहड़े मेरे नाल झूजे ख़ास, इन्हां आपणे घर वसाईआ। मेरा इक दा इक नाल होए नात, नाता देणा बंधाईआ। साहिब सतिगुर देवीं दात, बख़्शिश रहमत इक कमाईआ। जिस गुरमुख दा नाम सी सिँघ गुलाब, ओह जुझार दे कोल आया चाँईं चाँईंआ। पहलों प्रेम नाल कीता आदाब, सीस दिता झुकाईआ। फेर सिर चुक के पट्ट उत्ते रखया आप, आपणा प्रेम बणाईआ। अन्दर कीता तूं मेरा मैं तेरा जाप, वाह सतिगुर तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सचखण्ड कहे मैं वेख्या खेल अपारा, अपरम्पर दिता वखाईआ। जिस ने चुक्कया सिँघ जुझारा, आपणी सेव कमाईआ। उसनूं लग्गा तीर करारा, आर पार लेखा गया मुकाईआ। ओह डिग्गा मूँह दे भारा, छाती छाती नाल छुहाईआ। फेर गोबिन्द ने खुशीआं विच बोलया प्रभू दा इक जैकारा, वाह वाह तेरी बेपरवाहीआ। तेरे कोल आवे गुरमुखां नाल मिल के मेरा दुलारा, सोहणा रंग रंगाईआ। सचखण्ड कहे मैं उस वेले खुशीआं विच वाह वाह करके ऊची कूक पुकारा, कूक कूक सुणाईआ। पुरख अकाल तेरा खेल न्यारा, गोबिन्द तेरी वड वड्याईआ। ओन्हे चिर नूं इक्कीआं दी आ गई वारा, गोबिन्द संदेशा दिता सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। सचखण्ड कहे गोबिन्द खुशीआं दे विच हस्सया, ताली दिती वजाईआ। फेर गुरमुखां दा कराया कमर कस्सया, हुक्म दिता सुणाईआ। सिर्फ़ पंजां नूं कोल रखया, बाकी गढ़ीउँ बाहर कढ्ढाईआ। फेर जुझार दे वल्ल तक्कया, जिस दा मेल मिल्या गुरमुख प्यारे भाईआ। फेर अगली कीती इच्छया, पड़दा दिता खुल्हाईआ। तुसां मेरी मन्नणी सिख्या, सिख हो के सतिगुर विच समाईआ। फेर तीर दी मुखी नाल अगम्मी लेख लिख्या, कलम शाही ना हथ्थ उठाईआ। मेरे सूरबीर जवाने निक्कया, तैनूं देवां माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म सुणाईआ। सचखण्ड कहे गोबिन्द ने तीर नाल लिख्या लेख अपारा, धुर दा हुक्म हुक्म सुणाईआ। बच्चयो जिस वेले आवां दुबारा, शब्दी धार जोत समाईआ। मेला मेलां विच संसारा, शहादत धर्म वाली भुगताईआ। फेर धुर दा होया इशारा, पुरख अकाल दिता दृढ़ाईआ। बाल अवस्था फेर विछड़ जाणा तेरा दुलारा, आयू जगत ना कोए वखाईआ। गोबिन्द किहा एह तेरा खेल तेरा सदा सहारा, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। मैं सेवक सेवादार तुमारा, नित नवित सेव कमाईआ। तूं साहिब सुल्तान सिक्दारा, हुक्मी हुक्म चलाईआ। पुरख अकाल पुश्त पनाह दे के थापी मारया

ललकारा, ज़ोर नाल समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द तेरी धार अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। मैं तेरे नाल बदलणी रीत, रीतीवान हो के वेख वखाईआ। तेरे जुझार नूं बख्शां फेर बणा के सिँघ सुरजीत, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुलाब दा नाँ होवे सिँघ रणजीत, दोहां दा मेला सहिज सुभाईआ। अन्त समें मेहरवान हो के ज़िंदगी दी करां बख्शीश, रहमत सच कमाईआ। पर याद रखीं इन्हां गुरमुखां नूं इकठ्ठयां करना ठीक, सच दी धार विच्चों प्रगटाईआ। तेरी आसा मनसा पूरी होवे उम्मीद, तृष्ना तृप्त दए कराईआ। जेहड़ा शब्द शहादत विच होया शहीद, सतिगुर सीस झोली पाईआ। उहदी धुर दवारे सदा रसीद, सचखण्ड दवार दए गवाहीआ। गुरमुख तेरे करन तस्दीक, इक्की शहादत देण भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गोबिन्द किहा प्रभ तेरी आदि जुगादि मेहरवानी, मेहरवान तेरी वड्याईआ। मैं योधा सूरबीर मर्द मर्दानी, जगत हवस ना कोए रखाईआ। ना कोई लेखा लिखणा कलम कानी, शाही शहादत ना कोए भुगताईआ। तूं आदि जुगादि दा दानी, दाता बेपरवाहीआ। मेरी ते सदा सदा सद गुरमुख होणे निशानी, निशाना जगत विच झुलाईआ। जिन्हां दी मंजल होणी आसानी, भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। इक्की गुरमुख दयो गवाही, गढ़ी चमकौर नाल मिलाईआ। जे कहो ज़िंदगी दी दात झोली देवां पाई, मेहर निगह इक उठाईआ। बिना तुहाडे प्रेम तों एह बच सकदे नहीं जगत दे राही, लोकमात रहिण ना पाईआ। जे मंज़ूर उठा लओ बाहीं, इक्की दोवें हथ्थ उठाईआ। जे खुशी माझे मालवे दुआबे वाले रल जाउ नाल चाँईं, उठ के सीस झुकाईआ। फिर पुरख अकाला दीन दयाला होए सहाई, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगतो तुहाडी प्रीती नहीं कोई पराई, प्यार आपणा रूप दरसाईआ। गुरसिक्खां अग्गे गोबिन्द दी आदि आदि दुहाई, कूक कूक गया सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सचखण्ड कहे जन भगतो मैं दस्सां होर निशाना, आपणा ध्यान लगाईआ। गोबिन्द ने अन्त इक्कीआं दे गिट्टयां नूं बन्न्हया सी प्रेम दा गाना, मौली तन्द बंधाईआ। जिस वेले मेरे पुरख अकाल ने बदल देणा ज़माना, मुहम्मद दा लेखा तुहाडे हथ्थ फड़ाईआ। चरण धूढ़ जो टिक्का लगाया उस दा सच ब्याना, संधूर रो के दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति दा मेला लए मिलाईआ। सचखण्ड कहे इक्कीआं विच्चों चौदां झूजे, आपणी सेव कमाईआ। पंजां ने रूप बदलाए इक दूजे, गोबिन्द संग निभाईआ। दो गुरमुख बण के सूंघे, राह खोजण चाँईं चाँईंआ।

ओह वड़ गए वहिण प्रेम दे डूँग्घे, जिथ्थों बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। गोबिन्द गढ़ी विच्चों आउण लग्गयां नेत्र हन्झू ओन्हां दे पूंझे, प्यार विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। सचखण्ड कहे प्रभू तेरा खेल अपारा, वड तेरी बेपरवाहीआ। मेरे नाल पैग़म्बर गुर अवतारा, गढ़ी चमकौर वेखण आए चाँईं चाँईंआ। चौदां पोह नूं ओहो तेरा नज़ारा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण कार कमाईआ। मैं आया तेरे दवारा, दर ठांडे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। सचखण्ड कहे मैं तेरे सिंघासण हेठां रिहा वड़, नेत्र नजर किसे ना आईआ। मैं फेर वेख्या सब नूं खड़, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। प्रभू केहड़े तेरी मंज़ल गए चढ़, आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। सचखण्ड कहे जिस वेले मैं तेरे हुक्म नाल गढ़ी चमकौर पुज्जा, आपणा फेरा पाईआ। तूं मैनूं हुक्म दिता गुज्झा, सहिज नाल सुणाईआ। सचखण्ड गोबिन्द दे गुरसिख आपणे दवारे ल्याउणे आवे कोई ना दूजा, दर वड़न कोए ना पाईआ। जिन्हां दा प्रेम करना उग्घा, उगण आथण वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच साहिब तेरी सरनाईआ। सचखण्ड कहे मैं आया प्रभ तेरे दरबार, भगतां वेख वखाईआ। तूं बख्शिश कीती अपार, रहमत हक कमाईआ। शहिनशाह सच्ची सरकार, सच तेरी शहिनशाहीआ। तूं डुब्बदे देवें तार, पाहन पार कराईआ। गुरमुख ल्एं उभार, चुरासी विच्चों उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। प्रभू सच दस्स मैं आया तेरे दर, पिछला पन्ध मुकाईआ। पुरख अकाल किहा उठ वेख लै मेरा घर, घराना दयां दरसाईआ। जिन्हां दा घाड़न लवां घड़, आपणा रंग रंगाईआ। ओह भगत सुहेले मेरे सचखण्ड तेरे अन्दर जावण वड़, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। अज्ज सारयां दा अन्दरों फड़ लै लड़, जो प्रभ नूं बैठे सीस निवाईआ। एह जगत जहान विच ज़िंदगी विच जाण कदे ना मर, मर जीवत रूप वटाईआ। एह लख चुरासी मेरी किरपा नाल जाण तर, डूँग्घे वहिण ना कोए वहाईआ। तूं सारयां प्यारयां भगतां नूं इक्को वार निमस्कार कर, निउँ निउँ वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। सचखण्ड कहे मैनूं सद्दया लोकमात, आपणी दया कमाईआ। मेरयां भगतां दी कदे वेखीं ना ज़ात पात, दीन मज़्हब ना वंड वंडाईआ। इन्हां दा लेखा नहीं उत्ते किसे कागज़ात, अक्खरां वाली ना सिफ्त सालाहीआ। एह सब तों उत्तम श्रेष्ट मेरी जमात, जिन्हां नूं जुमला अक्खर इक्को दिता पढ़ाईआ। इन्हां दी पूरी करनी अन्त खाहिश, तमन्ना पूर देणी कराईआ। जगत

विषयां तों बाहर दिता विश्वाश, विश्व दा पड़दा दिता उठाईआ। इन्हां तेरे दर ते मेरी वेखणी रास, सोहणी खुशी बणाईआ। हुण इक्को वार सरयां वल्ल मार लै झात, जो निक्के वड्डे बैठे डेरा लाईआ। चौदां पोह दी याद रखी रात, रुतड़ी प्रभ ने दिती महकाईआ। अज्ज इक्को वार सब दा जन्म कर्म दा लेखा कीता पाक, पतित पुनीत दिते कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सचखण्ड कहे प्रभू मैं मारी अन्तर झाती, ध्यान ल्या लगाईआ। मेरा वाहिदा हो गया कौल इकरार हो गया तेरयां भगतां वास्ते सदा खुल्ल्ही रखां ताकी, खिड़की बन्द ना कोए कराईआ। मैं बणया रहां साथी, सगला संग बणाईआ। तेरे प्यार दी दस्सदा रहां गाथी, ढोला अगम्म अथाहीआ। पर तूं वी पूरा करीं मेरा वाकी, वाक्फकार इक हो आईआ। सदा प्रेम प्यार दी इन्हां नूं बख्शदा रव्हीं दाती, दाता हो के दया कमाईआ। अग्गे रहे किसे ना वाटी, पैंडा देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तूं साहिब पुरख समराथी, समरथ तेरे हथ्थ वड्याईआ। सचखण्ड कहे प्रभू तेरे नाल हो गई मेरी शर्त, शरअ अवर ना कोए रखाईआ। जिस कारन आया उपर धरत, धवल उत्ते पन्ध मुकाईआ। फिर जाणा उपर अर्श, गुर अवतार पैग़म्बर संग रखाईआ। तेरा खेल वखाया असचरज, अचरज लीला तेरी बेपरवाहीआ। जिथ्थे शरअ छुरी दिसे ना करद, कातिल मक्तूला रूप ना कोए वटाईआ। ग़रीब निमाणयां वंडीं दर्द, दुखियां आपणी गोद उठाईआ। इक बेनन्ती मन्नीं मेरी अर्ज़, आरज़ू दयां सुणाईआ। आपणयां भगतां दी किसे हथ्थ फड़ावीं ना फरद, ज़ुमेवार ना कोए बणाईआ। उन्हां दी लज्जया रखीं होण ना देवीं नपड़द, ओढण आपणा नाम पाईआ। मेरे दवारे दी सिध्धी करीं सड़क, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। घर आपणे आउण निधड़क, भज्जण चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सचखण्ड कहे प्रभू मैं जावां आपणे गृह, दर तेरे तेरा सोभा पाईआ। जिस दा लेखा कोई ना कहे, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। इक्को नूर नुराना तेरा रहे, दूजा नज़र कोए ना आईआ। मैनूं आदि तों अन्त तक किसे दा नहीं भय, निर्भय तेरी शरनाईआ। जुग चौकड़ी जिन्हां ने कीती तेरी जै, ओह घर मेरे आए चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सचखण्ड उठ जाह आपणे वतन, वतन तेरा बेपरवाहीआ। जिस दा आदि अन्त दा इक्को पत्तन, दूजा तट ना कोए बणाईआ। जिथ्थे भगत सुहेले वसण, निरगुण जोती जोत नूर रुशनाईआ। इक्को पुरख अकाला दीन दयाला तकण, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच

१०११
२२

दा हुक्म इक वरताईआ। सचखण्ड कहे मेरी नमो नमो निमस्कार, नमस्ते सीस झुकाईआ। प्रभू तेरयां भगतां दा वसदा रहे दरबार, द्वारकावासी जिथ्थे ध्यान लगाईआ। मेरे नाल चले तेई अवतार, पैग़म्बर संग बणाईआ। गुरु दस करन प्यार, प्रेम प्रीती तेरी बेपरवाहीआ। मैं जुग जुग ख़ादम रवां ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। मैं सदा सदा रहवां तेरे दर दवार, सच सच मिले सरनाईआ। तूं बख़्शिश कीती अपार, रहमत हक कमाईआ। सुरजीत सिँघ रणजीत सिँघ दी आयू बख्श के विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी हैरान दिते कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द दी सुणनी सुणाउणी, तेज भान दयां दृढ़ाईआ। छब्बी पोह नूं जेहड़ी पग्ग तेरी सपुत्री ने भेंट चढ़ाउणी, ओह राम सिँघ दे सिर देणी बन्ह़ाईआ। जिस दी लजपत सतिगुर मात रखाउणी, इक्कीआं दी शहादत नाल भुगताईआ। बच्चे दा दान झोली पाउण, बिना सतिगुर शब्द तों एह बख़्शिश किसे नहीं कराउणी, करन वाला नज़र कोए ना आईआ। गुरमुखो एह कोई गल्लां बातां वाली नहीं सुणाउणी, जो पिच्छे वरत्या अग्गे लेखा पूर कराईआ। गढ़ी चमकौर दी रौणक उहो अज्ज वखाउणी, जो गोबिन्द आपणे सिक्खां नाल ख़ुशी विच वेखी चाँईं चाँईंआ। एह गल्ल नहीं कदे भुलाउणी, भुल्ल विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक वखाईआ। गढ़ी चमकौर कहे मैनूं टेक लैण दे प्रभू मथ्था, निउँ निउँ सीस निवाईआ। मैनूं गोबिन्द दे प्यारयां दा ओहो दिसदा जथ्था, जो कमरकसे कस के बैठे चाँईं चाँईंआ। किड्डा सोहणा संग बणया इक्ठा, जुझार दे साथी रंग वखाईआ। एह खेल तेरा अनडिठा, जगत शास्त्र ना कोए दृढ़ाईआ। तेरा भाणा सदा सदा सद सब नूं लग्गे मिट्ठा, मेहरवान तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे जन भगतो तुसीं बड़े वड्डे भगत, प्रभ भगवन दिती माण वड्याईआ। जिन्ह़ां कोई नाम नहीं जपया विच जगत, जगजीवण दाता आपणा रंग रंगाईआ। तुहाडे अन्दर सच प्रेम दी इहो बख़्शी शक्त, तुहाडी शख़्सीअत गुरमुखां वाली दिती बणाईआ। तुसीं हुण मालक आपणे दा वेख्यो वक्त, वक्त नाल की आपणी कार कमाईआ। जदों चाहोगे सुत्तयां जागदयां चलदयां फिरदयां देवेगा दरस, दीदार आपणा आप कराईआ। सतिगुर शब्द प्यार नूं लैणा परख, पारखू हो के आपणा ध्यान लगाईआ। तुहाडे अन्तर निरन्तर अमृत मेघ देवे बरस, अग्नी तत तत गंवाईआ। तुहाडी लेखे लावे अज्ज दी रैण जो ठंडी सरद, सीतल तुहानूं दए कराईआ। याद रखयो कदी मिन्नत ना करयो हथ्थ जोड़ के अर्ज़ ना करयो प्रभू साडा वंड दर्द, जे सतिगुरु हैं ते तुहाडा दु:ख आपणी झोली पाईआ। इहो खेल करना असचरज, जिस

दी चार जुग समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे अंग्रेज़ सिँघ ज़रा अग्गे आ, तेरा लेखा दयां दृढ़ाईआ। जिस वेले जुझार शहीदी गया सी पा, धड़ ज़िमीं उत्ते टिकाईआ। तेरा नाँ सी आज़म खां, तूं रो के मारी सी धां, खुदा तेरी बेपरवाहीआ। किड्डा सोहणा सूरबीर मेरे भ्रा वरगा भ्रा, जिस दी होई जगत जुदाईआ। मेरा जी करदा इस नूं चुक्क के लै जावां कोल आपणी माँ, गोदी उस दी दयां टिकाईआ। फिर सिर तों कुल्ला दिता लाह, ज़िमीं उत्ते पटकाईआ। फेर दोवें हथ्थ जोड़ के मंगी दुआ, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मेरे मालक ख़ालक प्रितपालक जे तूं सच्चा ते मैनूं कबरां तों परां लईं मिला, मकबरयां विच आसण कदे ना लाईआ। गोबिन्द ने झट निगह लई उठा, सैनत हथ्थ नाल कराईआ। जिस वेले आया ते ज़रूर लवांगा मिला, मुहम्मद दी शरअ विच्चों बाहर आपणे नाल रखाईआ। तैनूं बच्चयां वांग गोदी लवांगा बहा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। ज़रूर इन्हां दी ज़िंदगी दा लेखा तेरी झोली देवांगा पा, तेरे गृह वज्जे वधाईआ। एसे कर के सब दा मेला ल्या मिला, सतिगुर शब्द अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। ओस वेले दी शहादत प्यार विच भुगतावे जरनैल सिँघ गवाह, जिस गोबिन्द नूं उच्च दा पीर बणा के आपणे कंध ल्या उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो चाहे सो करे विच जहां, करनहार आदि अन्त दा मालक इक अख्वाईआ।

✪ १५ पोह शहिनशाही सम्मत ६ देवा सिँघ दे गृह पिण्ड सई कलां ज़िला जम्मू ✪

सचखण्ड कहे मेरी सुहाउणी रुता, प्रभ देवे माण वड्याईआ। किरपा करे प्रभ अबिनाशी अचुता, निरगुण निरवैर निराकार अगम्म अथाहीआ। तेरा मार्ग दिसे उच्चा, ऊच अगम्म दया कमाईआ। जगत जीव जहान रहे कोए ना सुत्ता, सुरती शब्द नाल उठाईआ। आपणा भेव रखे ना लुका, ओहला निरन्तर दे चुकाईआ। हउमे रोग मेट दे दुखा, हंगता गढ़ तुड़ाईआ। आत्म प्रेम जोड़े टुट्टा, टुटयां गंढ पवाईआ। निज गृह देवे सच दा सुक्खा, प्रेम सागर विच समाईआ। सुफ़ल कराए जनणी कुख्खा, हरिजन साचे ल्ए तराईआ। उज्जल कराए मात मुखा, मुख दुरमति मैल रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा रंग रंगाईआ। सतिजुग कहे प्रभ मेरा वक्त सुहाउणा, सोहणी रुत सुहाईआ। धरनी धरत धवल धौल टिकाउणा, धर्म दी धार नाल रखाईआ। सच दा मन्त्र इक दृढ़ाउणा, आत्म परमात्म

राग अलाईआ। क्रिया कूड़ दा पन्ध चुकाउणा, माया ममता मोह चुकाईआ। सच दरबारा इक सुहाउणा, दर इक्को इक वखाईआ। जिथ्थे चार वरन अठारां बरन सीस निवाउणा, दीन मज़्हब वंड ना कोए वंडाईआ। पुरख अकाला इष्ट इक मनाउणा, देव आत्मा सच्ची कुड़माईआ। सो पुरख निरँजण आपणा खेल खिलाउणा, हरि पुरख निरँजण रंग रंगाईआ। एकँकार संग निभाउणा, आदि निरँजण करे रुशनाईआ। अबिनाशी करते मार्ग समझाउणा, श्री भगवान रहिबर इक अख्वाईआ। पारब्रह्म धुर दा हुक्म वरताउणा, ब्रह्म पर्दा दए उठाईआ। शब्दी शब्द नाद वजाउणा, सोई सुरत जगत उठाईआ। धर्म दी धार धर्म दृढ़ाउणा, मानव जाती इक्को घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा गृह इक वखाईआ। सतिजुग कहे मेरा समां होया सुहाउणा, सोहणी मिले वड्याईआ। दीन दयाला बणे राणा, रईयत दो जहान वेख वखाईआ। सब नूं दस्से इक्को गाणा, सतिगुर सेवा शब्द लगाईआ। अन्तर निरन्तर होवे जाणी जाणा, पर्दे परदयां विच्चों खुल्हाईआ। नव सत्त वेखे मार ध्याना, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जल्वागर बण नूर नुराना, निरवैर आपणा हुक्म वरताईआ। मैनूं लोकमात देवे माणा, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मैं खुशीआं दे विच जाणा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। धरनी धरत धवल धौल दी गोद टिकाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी इक भगवाना, श्री भगवान धुरदरगाहीआ।

✪ १५ पोह शहिशाही सम्मत ६ बीबी राजो दे घर पिण्ड सई कलां ज़िला जम्मू ✪

सतिजुग कहे प्रभ मेरी इक अरजोई, बेनन्ती दयां जणाईआ। आपणे दर ते देवीं ढोई, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। पहलों कलयुग दी कला खोहीं, लोकमात रहिण ना पाईआ। जगत विकारी रहे ना कोई, कूड़ा नाता देणा तुड़ाईआ। सति धर्म दा बीज सति सतिवादी हो के बोईं, हरि हिरदे रंग रंगाईआ। ग़फ्लत विच कदे ना सोईं, जागरत जोत कर रुशनाईआ। मेरी आशा रही रोई, बिन नैणां नीर वहाईआ। मेरी तमन्ना मोह ममता विच जाए ना मोही, मुहब्बत आपणे नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। सतिजुग कहे प्रभ मैनूं बणाईं आपणा सुत दुलारा, पूत सपूता गोद उठाईआ। देवीं नाम अधारा, वस्त अगम्म वरताईआ। सच दा सच इकं जैकारा, इक्को तेरा नाम ध्याईआ। जोती जाते होईं उज्यारा, मेरा सगला संग निभाईआ। दीन दुनी दी पावीं सारा, हर घट अन्तर वेख वखाईआ। कोई जीव मूर्ख मूढ़ ना रहे गंवारा, बुध बिबेक देणी कराईआ। इक्को दस्सीं धर्म दवारा, दूजा राह ना

कोए वखाईआ। मैं सब दा बणां मीत मुरारा, मित्र बण के झट लँघाईआ। धरनी उत्ते देंदा रहां इशारा, पुरख अकाले तेरा राह दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि साहिब तेरी सरनाईआ। सतिजुग कहे प्रभ मेरी पुश्त पनाह देवीं थापी, देवणहार तेरी वड्याईआ। मेरा लेखा रखीं लोकमाती, मात पित आप हो जाईआ। पहलों कलयुग दे मेटीं कूड़े पापी, पतित रहिण कोए ना पाईआ। भगत बणाईं साथी, संगी धुर दे नाल रलाईआ। आपणे नाम दी खोल्हीं हाटी, वणज इक्को इक दरसाईआ। झगड़ा मेटीं ज़ाती पाती, दीन मज़्हब ना कोए लड़ाईआ। चार वरन करीं इक जमाती, इक्को अक्खर देणा समझाईआ। नौ खण्ड रहे ना अंधेरी राती, साचा चन्द देणा चमकाईआ। तेरे प्रेम दी होवे प्रभाती, सँध्या तेरा रंग वखाईआ। तूं साहिब पुरख समराथी, धुर दे मालक तेरी वड वड्याईआ। मेरी मिन्नत मेरे साहिब मन्नीं आखी, अक्खरां विच दयां सुणाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा करीं राखी, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण तेरी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा जीवण ज़िंदगी बदल देवीं हयाती, हर हिरदे हरि जू आपणा डेरा लाईआ।

१०७५ २२

✪ १५ पोह शहिनशाही सम्मत ६ अजीत सिँघ दे गृह पिण्ड सई कलां ज़िला जम्मू ✪

सचखण्ड कहे प्रभ सब दा पूरा कर दे भविक्ख्त, पूरब लहिणा दे चुकाईआ। कलयुग बकाया रहे कोई ना किशत, हिसाब बेबाक देणा कराईआ। फेर सब दी खोल्हीं दृष्ट, पर्दा आप चुकाईआ। इक्को तेरा मन्नण इष्ट, दूसर सीस ना कोए निवाईआ। सच प्रीती होवे इश्क, मजाज़ी हकीकी इक्को रंग रंगाईआ। नीती अन्दर देणा सिदक, भरोसा देणा बंधाईआ। मेरी सदा ओन्हां नाल होवे मिल्लत, जो तेरा जस गाईआ। मनुआ करे कोई ना इल्लत, चार कुण्ट ना होए हल्काईआ। तेरा रहे कोए ना निन्दक, सिफ्ती ढोले सर्ब सुणाईआ। फेर मैनूं बख्शीं हिम्मत, हर हिरदे अन्दर सेव दयां कमाईआ। प्यार नाल जावां चिम्मट, सोहणा आपणा संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। सतिजुग कहे प्रभ कलयुग दी पहलों पूरी कर लै मनसा, मानसां लहिणा दे चुकाईआ। फेर मेरा सुहावीं बंसा, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। जन भगत होण तेरी अंसा, सुत धुर दे देणे प्रगटाईआ। जेहड़े तेरी करदे होण मन्नता, मन मनसा तेरे विच रखाईआ। तूं बोध अगाधी बण के पंडता, धुर दा लेखा देणा दृढ़ाईआ। झगड़ा मेटणा कल्पना मन दा, गुरमति धुर दी देणी समझाईआ। इक्को रूप करना साढे तिन्न हथ्थ तन दा, वक्खरी वंड ना कोए

वंडाईआ। झगड़ा मुकाउणा चुग़ली निंदिआ कन्न दा, सच दा सच देणा प्रगटाईआ। मोह लालच रहे किसे ना धन्न दा, धर्म दी धार सर्ब वखाईआ। संकट रहे कोई ना अन्न दा, भुक्खी मरे ना कोए लोकाईआ। मैं जिधर वेखां ओधरों नाअरा सुणां धन्न धन्न दा, धन्न प्रभू तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा आदि जुगादी खेल अगम्म दा, अगम्म अगम्मड़े तेरे हथ्थ वड्याईआ।

✪ १५ पोह शहिनशाही सम्मत ६ गुरमुख सिँघ दे गृह पिण्ड सई कलां ज़िला जम्मू ✪

सतिजुग कहे प्रभ पिछली रहे ना कोए मुछन्दगी, मुश्किल हल्ल देणी कराईआ। कलयुग दी आपणे लेखे ला लै बन्दगी, डण्डावत बन्दना आपणी झोली पाईआ। मैनूं बख़्शिश करीं आपणे अनन्द दी, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। मैं खेल तकां शब्दी तेरे चन्न दी, दुलारा इक्को सोभा पाईआ। खुशी वेखां बन्द बन्द दी, बन्धन शरअ ना कोए तुड़ाईआ। मेरी धार होवे भगतां संग दी, भगवन तेरा राह तकाईआ। मेरी आशा इहो मंगदी, इक्को तेरा नाम सिफ्त सालाहीआ। खेड रहे ना दीन मज़्ब जंग दी, शरअ कत्लगाह ना कोए प्रगटाईआ। हद्द रहे ना द्वैती कंध दी, दर इक्को होणां सहाईआ। वड्याई रखणी आपणे छन्द दी, ढोला दस्सणा अगम्म अथाहीआ। मंज़ल रहे ना कूड़े पन्ध दी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब तेरे हथ्थ वड्याईआ। सतिजुग कहे प्रभ तूं मेरा बणना अहिबाब, मित्र इक अख्वाईआ। कलयुग दा लेखा पूरा कर हिसाब, बाकी नज़र कोए ना आईआ। पिछली लेखे ला जगत किताब, कुतबख़ाने आपणे विच टिकाईआ। मानव ज़ाती कर आज़ाद, दीन दुनी दा बन्धन आप तुड़ाईआ। सच नाम सुणा आप आवाज़, संदेशा इक अल्लाईआ। झगड़ा रहे ना रोज़ा नमाज़, सजदा सीस ना कोए निवाईआ। पुरख अबिनाशी इक्को सीस सोहे तेरे ताज, दो जहानां हुक्म वरताईआ। फेर मेरा चले सच्चा राज, लोकमात वड वड्याईआ। सब दी आलस निंद्रा खुल्ले जाग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। मेरा वडा होवे भाग, भगवन तेरी ओट तकाईआ। तूं आदि अन्त दा महाराज, मेहरवान होवें सहाईआ। मेरा सति दा होवे समाज, समग्री इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा हुक्म चले वाहिद, वायदे पिछले सब दे पूर कराईआ।

✪ १५ पोह शहिनशाही सम्मत ६ पूरन सिँघ दे गृह पिण्ड सई ज़िला जम्मू ✪

सतिजुग कहे प्रभ मेरी निमस्कारी, नमो नमो सीस निवाईआ। हुक्म दे दे आपणे जो तेरे कर्मचारी, जुग जुग लोकमात सेव कमाईआ। ओनूं दस्सदे आई सतिजुग वारी, वारता पिछली देण भुलाईआ। बेख़बर रहे ना कोए पैग़म्बर गुर अवतारी, अवतरे पड़दा देणा चुकाईआ। मेरे विच तेरे नाम दी होवे इक जैकारी, जै जै कार करे लोकाईआ। इक्को तेरा नूर जोत होए उज्यारी, दूसर रूप ना कोए दरसाईआ। इक्को तेरा शब्द सतिगुरु होवे दर दरबारी, दर दरबान सोभा पाईआ। तूं सच दा बणीं भण्डारी, सति सच देणा वरताईआ। इक्को नाम दी बख्श खुमारी, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। किसे तन वजूद रहे ना कोए बीमारी, दुखी जीव ना कोए बिल्लाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा तेरी मुहब्बत दी होवे यारी, यराना अवर ना कोए वखाईआ। तूं शाह पातशाह शहिनशाह बणना सिक्दारी, सिर सिर आपणा हुक्म वरताईआ। मेरी पैज देवीं संवारी, अपहाज लूला लंगड़ा नज़र कोए ना आईआ। निव निव तेरा होए अधारी, उदर विच होणा आप सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा नूर जोत निरँकारी, निरवैर तेरे हथ्थ वड्याईआ।

१०१७ १०१७

२२ २२

✪ १५ पोह शहिनशाही सम्मत ६ इन्द्र राम दे गृह पिण्ड सई ज़िला जम्मू ✪

सतिजुग कहे प्रभ आपणी पवित्र कर बसुधा, बसन बनवारी दया कमाईआ। कूड़ी क्रिया रहे कोए ना युद्धा, झगड़ा लोभ ना कोए वखाईआ। फेर इक्को आपणा नाम कर उग्घा, उगण आथण वज्जे वधाईआ। दुतीआ भाउ रहे ना दूजा, द्वैत देणी बाहर कढ्ढाईआ। सच सुहञ्जणा वेला होए लुग्गा, सोहणा रंग रंगाईआ। तेरे नाम दा लए कोए ना भुग्गा, हिस्सया वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार बेपरवाहीआ। सतिजुग कहे प्रभ आपणी धौल कर लै साफ़, सुथरी मात बणाईआ। पिछला कर्म कर मुआफ़, मेहर नजर उठाईआ। जीव रहे ना कोए गुस्ताख, गिला अन्दरों देणा कढ्ढाईआ। एका नूर कर प्रकाश, जोती जोत डगमगाईआ। पर्दा लाह पुरख अबिनाश, अबिनाशी करते आपणा हुक्म वरताईआ। शंकर हलूणा दे उपर कैलाश, ब्रह्मा ब्रह्म धार उठाईआ। विष्न विश्व दा देवे साथ, सगला संग बणाईआ। आत्म परमात्म प्रसिद्ध कर गाथ, जीव जगत जहान दृढ़ाईआ। पिछली रहे कोई

ना वाट, मंज़ल सब दी पूर कराईआ। कलयुग मेट अंधेरी रात, सच सति चन्न कर रुशनाईआ। इहो मेरी बेनन्ती इहो मेरी आस, ख़ाहिश तेरे अग्गे टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेहरवान महिबूब किरपा कर आप, आप आपणी दया कमाईआ।

✪ १५ पोह शहिनशाही सम्मत ६ वकील सिँघ दे गृह पिण्ड सई ज़िला जम्मू ✪

सतिजुग कहे प्रभ मेरी इक अरदास, आरज़ू अर्ज़ विच जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया सारी कर नास, नास्तिक रहिण कोए ना पाईआ। हर हिरदे अन्दर दे आपणा विश्वास, विषयां विच्चों बाहर कढ लोकाईआ। चारों कुण्ट मेट अंधेरी रात, नूरी जोत चन्द कर रुशनाईआ। दीन मज़्हब कोई करे ना किसे दा घात, घाउ कलमा नाम ना कोए लगाईआ। सच धर्म दी बख़्श दात, दौलतमंद आप वरताईआ। भगत सुहेले बणा जमात, सारे इक्को घर समझाईआ। मनुआ रहे ना कोए गुस्ताख़, हउमे रोग देणा मिटाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं रहे कोई ना शाख़, शनाखत आपणी देणी कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। सतिजुग कहे प्रभ कलयुग कूड़ तोड़ दे नाता, नर नरायण दया कमाईआ। पिछला रहे कोई ना साका, अगली अगम्म कर पढ़ाईआ। धर्म दवार दा खोल्ह ताका, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। लहिणा रहे ना ज़ाता पाता, दीन दुनी इक्को रंग रंगाईआ। आप बण सब दा पिता माता, सो पुरख निरँजण बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। सतिजुग कहे प्रभ कलयुग कूड़ रहे ना काती, कलकाती दे मुकाईआ। सब दी ज़िंदगी बदल हयाती, हरि हरि जू वेख वखाईआ। तेरा इष्ट होवे ना बहुभांती, इक्को नाम देणा जपाईआ। आत्म ब्रह्म दा बणना साथी, धुर दा संग रखाईआ। मेरे साहिब सतिगुर फिर मैं तेरी मन्नां आखी, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण धार अलखणा अलाखी, अलख अगोचर बेपरवाह वड तेरी बेपरवाहीआ।

✪ १५ पोह शहिनशाही सम्मत ६ मंगल सिँघ दे गृह पिण्ड सई कलां ज़िला जम्मू ✪

सतिजुग कहे प्रभ कलयुग बंधा दे बस्ता, अलिफ़ ये रहे ना राईआ। धर्म दा साफ़ कर दे रस्ता, मार्ग इक समझाईआ। नास्तिक कोई ना होवे वसदा, मनमुखां डेरा ढाहीआ। तेरा गुरमुख होवे हस्सदा, तेरी हस्सती तके चाँईं चाँईंआ। उस दे अन्दर भण्डारा होवे जस दा, सिफ्तां सिफ्त सालाहीआ। उस दा मेला निज नेत्र होवे अक्ख दा, ज्ञान देणा दृढ़ाईआ। लहिणा देणा होवे पक्क दा, पक्की गंढ नाम पवाईआ। ओह सूर गाँ कोई ना होवे छकदा, पंछीआं खल्ल ना कोए लुहाईआ। प्याला पींदा होवे कोई ना मदि दा, रसना रस ना कोए हल्काईआ। हरिजन तैनूं होवे लभ्भदा, चार कुण्ट दहि दिशा अक्ख उठाईआ। फिर सतिगुर मेरा समां फबदा, वक्त सुहञ्जणा नज़री आईआ। मैं लेखा तकां तेरी भगतां वाली यद दा, यदी देणा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरा लेखा होवे लोकमाती फेर जगदा, जागरत जोत करनी आप रुशनाईआ।

✪ १५ पोह शहिनशाही सम्मत ६ प्रेमी देवी दे गृह पिण्ड सई कलां ज़िला जम्मू ✪

सतिजुग कहे प्रभ कलयुग मेट कल्पना कूड़, कुड़त्तन अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। मानस रहे ना कोई मूर्ख मूढ़, जो तैनूं रिहा भुलाईआ। जन भगतां बख्श आपणी धूढ़, टिक्के धर्म लगाईआ। योधे बणा बीर सूर, सूरबीर अख्वाईआ। नाम दी दे दे तूर, अगम्म नाद शनवाईआ। जोत दा बख्श नूर, अंध अंधेर गंवाईआ। प्रेम विच कर मखमूर, मग़रूर रहिण कोए ना पाईआ। सति सच बणा दस्तूर, हुक्म इक्को इक वरताईआ। सब दा मालक हो हज़ूर, हज़रत नज़र कोए ना आईआ। तेरा इक्को कलमा होए मशहूर, मशवरा तेरे नाल रखाईआ। तूं सर्ब कला भरपूर, प्रभ मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे शुक्रिए विच रहां मशकूर, मुश्किल नज़र कोए ना आईआ।

✪ १५ पोह शहिनशाही सम्मत ६ चूहड़ सिँघ दे गृह पिण्ड सई कलां ज़िला जम्मू ✪

सतिजुग कहे प्रभ मिटा कलयुग अंधेरा घोर, सति सच कर रुशनाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा रहे कोई ना चोर, ठग्गी मात दे मुकाईआ। मनुआ ममता विच पाए ना शोर, तृष्ना तृखा ना कोए तड़फाईआ। सति सच दा मार्ग आपणा तोर, तुरत

आपणा हुक्म वरताईआ। अवतार पैग़म्बर गुर दी रहे कोए ना लोड़, लोड़ींदे साजण होणा सहाईआ। भगत भगवान आपणे नाल जोड़, जोड़ी धर्म धार बणाईआ। नाम शब्द दी रहे कोई ना थोड़, घाटा नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे नाम दी ला दे अगम्मी मोहर, मोहरे सब दे दे बदलाईआ।

✪ १५ पोह शहिनशाही सम्मत ६ लक्ष्मण सिँघ दे गृह पिण्ड सई कलां ज़िला जम्मू ✪

सतिजुग कहे प्रभ मैं तेरी तकां हस्ती, हस्त चरण कँवल छुहाईआ। तेरयां भगतां दी तकां बस्ती, नगर खेड़ा सोभा पाईआ। नाम खुमारी तकां मस्ती, जो तेरे रंग विच समाईआ। खेल वेखां उपर धरती, धवल नाल चतुराईआ। तेरा लेखा अन्तिम पूरा होवे शर्ती, शरअ दी शरअ देणी बदलाईआ। की होया जे हुंडी तारी नरसी, नर नरायण दया कमाईआ। हुण ग़रीब बण के दर्दी, दीन दयाल गोद टिकाईआ। मेरी इक्को बेनन्ती इक्को अर्ज़ी, अरदास दयां सुणाईआ। सदा पैज संवारीं गुरमुखां दे घर दी, घर घर आपणे चरण टिकाईआ। तेरी मुहब्बत जाए बढ़दी, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। गुरमुखां दी कला होवे चढ़दी, चढ़दे लहिंदे वज्जे वधाईआ। मेरे विच सब दी आत्मा सोहँ ढोला होवे पढ़दी, शब्दी राग सुणाईआ। मैं खेल तकां नरायण नर दी, नर हरि आपणी अक्ख खुल्हाईआ। मेरी आशा भरी तेरे चरण कँवल दी, कँवल नैण ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी जोड़ी होवे ना घड़ी पल दी, जन भगत सद तेरे विच समाईआ।

सतिजुग कहे प्रभ आपणा खेल करदे अच्छा, अच्छी तरह ध्यान लगाईआ। मैं इक बचन करां सच्चा, सच सच सुणाईआ। पहलों मैनूं आपणा बणावीं बच्चा, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। फेर धर्म दी भरीं सत्ता, सतिवादी दया कमाईआ। फिर नाम भण्डारा रत्न अमोलक देवीं रता, निरवैर अक्ख खुल्हाईआ। फिर धीरज बख्शीं जता, सति सन्तोख वरताईआ। मेरी दरोही मेरे विच कोई खाए ना कटा वच्छा, पंखेरआं खल्ल ना कोए लुहाईआ। तूं हर घट लूं लूं अन्दर होवें रचा, रचना आपणी देणी बणाईआ। हर घड़ी मेरी होवे फ़तिह, डंका आपणा नाम देणा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। सतिजुग कहे प्रभ मेरा धर्म वधाईं अग्गा, तेरे आगमन विच सीस

निवाईआ। कूड़ क्रिया रहे मूल ना दग़ा, झूठ दा झगड़ा देणा चुकाईआ। हरिजन तेरी सरनाई होवे लग्गा, इष्ट अवर ना कोए मनाईआ। सच प्रीती विच होवे बज्झा, मुहब्बत सके ना कोए तुड़ाईआ। तेरी चलदा होवे विच रज़ा, भाणा मन्न के सीस निवाईआ। सच दवारे बैठा होवे सजा, दर साचा इक वखाईआ। तेरे नाम दा लवे मज़ा, रस आपणा देणा चखाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप सब दी सांझी भगत दवारे होवे जगह, इक्को गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। किसे अवतार पैग़म्बर गुर दा रहे कोए ना दब्बा, दबदबे सारे देणे चुकाईआ। सतिगुर शब्द दा सारे सुणन सद्दा, सुनेहड़ा घर घर देणा पहुंचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि वड्डे तेरी वड वड्याईआ। सतिजुग कहे प्रभ चाढ़ीं इक्को अगम्मा रंग, रंगत अवर ना कोए रखाईआ। धुर दा रखीं संग, सगला संग बणाईआ। मेरे विच रहे ना कोई भुक्ख नंग, दीन दुनी दा दर्द देणा मिटाईआ। धर्म प्रीती सब दे नाल जावे हंढ, लग्गी मुहब्बत ना कोए तुड़ाईआ। बिना तेरे तों होर गाए कोई ना छन्द, आत्म परमात्म राग देणा सुणाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश ऊच नीच दा करे कोई ना जंग, झगड़ा दिसे ना कूड़ लोकाईआ। तेरे नाम दा रस आवे अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। कोई पूजा रहे ना सूर्या चन्द, विष्न ब्रह्मा शिव सीस ना कोए निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि साहिब सच तेरी सरनाईआ। सतिजुग कहे प्रभू मेरा बणीं सगला साथी, सोहणा रंग बणाईआ। शब्द अस्व पावीं काठी, दो जहानां वेख वखाईआ। मेरा लेख रहे ना कोए दक्खण दिशा ऐराप्त हाथी, हरि जू दयां सुणाईआ। मैं तेरा खेल तकणा पुरख समराथी, धुर दे दाते दया देणी कमाईआ। पिछला लहिणा किसे दा रहे कोई ना बाकी, कलयुग कल ना कोए वरताईआ। जिद्धर तकां तेरयां भगतां दा खुल्ा दर ते खुल्ी होवे ताकी, कुण्डा बन्द ना कोए कराईआ। मैनूं रूह बुत दिसे पाक पाकी, मिट्टी ख़ाक वज्जे वधाईआ। नौ सत्त रहे ना अंधेरी राती, तेरा नूरी चन्द करे रुशनाईआ। मैं कथा कहाणी दस्सां शाह दी, वल छल ना कोए रखाईआ। मैनूं कोटां नालों थोड़ी चंगी आबादी, जो गुरुमख तेरे सोभा पाईआ। मैनूं काल कोलों मनुषां दी शरीरक कराउणी पए ना वाढी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवणहार तेरी सरनाईआ। सतिजुग कहे प्रभू मैं तैनूं की दस्सां, अन्तरजामी तेरी बेपरवाहीआ। इक्को तेरी सरन सरनाई ढट्ठां, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। मैं चाहुंदा सब दा पिछला मनसूख़ कर दे पटा, पटे दी वलदीअत तों बाहर पटने वाला आपणा संग रखाईआ। छब्बी पोह नूं गोबिन्द शब्द कोलों इक्की गुरसिक्खां दी झोली पवावीं इक इक टका, टकयां दी लोचा रहे ना राईआ। जिस नूं बिना अक्खां तों वाचे निरगुण नानक धार तपा, बिन अक्ख अक्ख उठाईआ। उन्ां इक्कीआं दी छाती

उत्ते लिख्या होवे इक्को अक्खर पप्पा, पप्पा पुड्डा लैण लटकाईआ। नाले चुक्कया होवे साढे तिन्न हथ्थ दा फट्टा, मढ़ी मसाणां विच्चों ल्याउण उठाईआ। मैं तेरा खेल तकणा मेरे साहिब पुरख समरथा, दर तेरे ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर दवार बचन करां सचा, सतिजुग सच सच विच सुणाईआ।

✪ १६ पोह शहिनशाही सम्मत ६ कुलवंत सिँघ दे गृह पिण्ड सई कलां ज़िला जम्मू ✪

सतिजुग कहे प्रभ साचे सरनी सीस निवाउणा, प्रभ निउँ निउँ लागां पाईआ। तेरी धूढ़ी मस्तक ख़ाक रमाउणा, टिक्का धुरदरगाहीआ। मेरे मालक जे मेरा मार्ग मात चलाउणा, नव सत्त हुक्म मनाईआ। फेर मेहरवान मेहर नैण इक उठाउणा, निगह मेहर नाल तराईआ। आपणा शब्द अनादी इक सुणाउणा, दूजा राग ना कोए सुणाईआ। इक्को नूर जोत प्रगटाउणा, दूसर इष्ट ना कोए मनाईआ। उनन्जा पवणां साफ़ कराउणा, सुगंधी आपणा नाम भराईआ। सब दा उत्तम करीं धोणा नहाउणा, अन्तर मैल देणी कटाईआ। साची सेजे दस्सीं सौणा, सच सिंघासण इक विछाईआ। आत्म परमात्म मेला दस्सीं मिलाउणा,
१०२२ दुतीआ पन्ध मुकाईआ। अनरागी राग दस्सीं गाउणा, बिन रसन जिह्व हिलाईआ। सच दवारे दस्सीं सीस निवाउणा, किस १०२२
२२ बिध पुरख अकाल मनाई दा। इक्को डंका डंक वजाउणा, डौरु अवर ना कोए सुणाई दा। राउ रंक इक रंगाउणा, हुक्म २२
दस्सणा गोबिन्द सच्चे माही दा। महल्ल अटल इक वसाउणा, जिथ्थे नूर अगम्मी होवे नूर इलाही दा। दर दरवाज़ा इक खुल्ह्‌हाउणा, जिथ्थे वरन चार बहाई दा। दीन मज़्ह्‌ब दा पन्ध मुकाउणा, मुकम्मल आत्म ब्रह्म दृढ़ाई दा। अमृत मेघ इक बरसाउणा, जगत तृष्ना तृप्त कराई दा। मन का मणका आप भुआउणा, दहि दिश ना उठ उठ धाईआ। सारंगधर भगवान बीठला आप अख्वाउणा, आख़र इक्को रंग दरसाई दा। मैं गल पल्लू वास्ता पाउणा, सतिजुग कहे मेरा वास्ता तेरे राही दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जे मेरी अर्ज़ बेनन्ती मन्ने फेर मैनूं मज़ा आवे सतिगुर तेरी शहिनशाही दा।

✪ १६ पोह शहिनशाही सम्मत ६ बचन सिँघ दे घर पिण्ड सई कलां ज़िला जम्मू ✪

सतिजुग कहे प्रभ जे मेरी लाउणी मात सेवा, सेवक सच बणाईआ। पूजा रहे ना किसे देवी देवा, देव आत्मा देणी

वड्याईआ। आप मालक बणना अलख अभेवा, अगम्म अगोचर हुक्म वरताईआ। याद करे तैनूं सब दी रसना जेहवा, सिफ्तां विच सालाहीआ। वेखीं आपणे हुंदयां मेरे विच आपणी आत्मा नूं अवतार पैग़म्बर गुरु करावीं ना कदे करेवा, दूसर हथ्थ ना कदे फड़ाईआ। मैं मंगदा तेरा इक्को धाम निहचल निहकेवा, अटल दवारा वेख वखाईआ। इक्को प्रेम दा मस्तक होवे थेवा, कौस्तक मणीआं कम्म किसे ना आईआ। नौ खण्ड पृथ्मीं सत्त दीप इक्को होवे पहरेवा, लिबास इक्को देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा नाम अगम्मा इक्को रस होवे मेवा, दूसर लोड़ रहे ना राईआ।

✪ १६ पोह शहिनशाही सम्मत ६ खेमो देवी दे गृह पिण्ड सई कलां ज़िला जम्मू ✪

सतिजुग कहे जे प्रभू मातलोक मेरा रखणा नाँ, सति नाम वड्याईआ। पहलों हँस बुद्धी जीव बणा काँ, गुरमुख रंग रंगाईआ। फेर आत्म ब्रह्म जणा, पर्दा दे उठाईआ। फेर शब्द नाद सुणा, अनरागी राग अलाईआ। फेर निरगुण जोत कर रुशना, अंध अंधेर दे मिटाईआ। फेर दीन मज़्ब मिटा, ज़ात पात रहिण ना पाईआ। पहलों चार वरन गंवा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना कोए अख्वाईआ। पहलों विष्न ब्रह्मा शिव उठा, संदेशा दे चाँईं चाँईंआ। फेर हुक्म फ़रमाना धुर दा अगम्म लिखा, जिस नूं अग्गे जाणे कोए ना राईआ। फेर सब दे अन्दर आपणा फेरा पा, घर घर वेख वखाईआ। फेर दृष्टी विच दस्स दे राह, रहिबर रस्ता इक प्रगटाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले पहलों आपणी कला इक वरता, कलधारी हो सहाईआ। निरवैर पुरख इक अख्वा, चारों कुण्ट डंक वजाईआ। जिस वेले सारे तैनूं कहिणगे बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। हर हिरदे अन्दरों निकले इहो साडा अल्ला इहो साडा वाहिगुरु इहो साडा खुदा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। फेर मैं तेरे चरणां विच सीस जगदीश लवां झुका, निउँ निउँ लागां पाईआ। जिस तरह कहेंगा ओसे तरह सेवा लवां कमा, सेवक हो के आप आपा तेरे अग्गे टिकाईआ। मेरे साहिब सतिगुर आदि अन्त दे मालक कदे करां ना नांह, हां विच हां कहि के तेरा रूप बणाईआ। तूं किरपा कर मातलोक धरनी उत्ते मैनूं सति धर्म दी दवाईं थाँ, पहलों कलयुग कूड़ी क्रिया लोकमात विच्चों बाहर दे कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे दरस दा मैनूं चाअ, चाउ विच घराउ विच बेपरवाहो विच बेपरवाह जिस तरह लक्ष्मण सिँघ नच्च नच्च के आपणी खुशी मनाईआ।

✪ १६ पोह शहिनशाही सम्मत ६ पुन्नू राम दे गृह पिण्ड सई कलां ज़िला जम्मू ✪

सतिजुग कहे प्रभ पहलों आसा पूरी करदे मुहम्मद यार उमर, खुद खुदा जो तेरे अग्गे गया टिकाईआ। जगत शरअ दी रहे कोए ना घुंमर, घेरा देणा मुकाईआ। सारे तेरा चरण चुम्मण, दूसर लब ना कोए वड्याईआ। लेखा मुका दे मुहम्मद सीस मुन्नण, सुन्नत शरअ दी शरअ गंवाईआ। तेरा नाम संदेशा सारे सुणन, अंदेसा नज़र कोए ना आईआ। आपणा जगत जहान बणा दे कुंदन, स्वर्ण रंग रंगाईआ। तेरे कलमे दी आवे इक्को धुंनण, धुंन अनादी इक शनवाईआ। कड़वा रहे कोए ना तुंमण, तासीर बेनज़ीर देणी बदलाईआ। तेरे धर्म निशाने चारों कुण्ट झुल्लण, हुलारा इक्को देणा दवाईआ। गुरमुख तेरे भगत सुहेले पहलवान सारे घुलण, दंगल धर्म दा इक बणाईआ। कलयुग माया विच ना रुलण, रौला पवे ना कोए लोकाईआ। तेरे शब्द भण्डारे खुल्हण, अगम्म देणे वरताईआ। जिन्हां दा लग्गे कोए ना मुल्लण, अनमुलड़े आप वरताईआ। तूं मेरा मैं तेरा जाप होवे मानव ज़ाती बुल्लण, हर हिरदे तैनूं लैण वसाईआ। पुरख अकाले तेरे तराज़ू सारे तुलण, तेरे नूर विच्चों नूर लैण रुशनाईआ। काया अग्नी तपे किसे ना चुल्लण, ईंधन जगत ना कोए वखाईआ। तेरा दीदा दानिस्ता दीदार कर के फुल्लण, गृह मन्दिर खुशी बणाईआ। भाग लगाउणा काया काअबे कुल्लण, कलमा कायनात इक सुणाईआ। तेरे मुरीद तेरे उतों घोली घोल घुलण, आपणा आप भेंट चढ़ाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक सदा सुल्हा कुलण, सुल्हकुल तेरी इक सरनाईआ। तूं लाल गुलाला रंग चढ़ा दे बुल्लण, भगवन आपणी दया कमाईआ। जद मैं तकां तेरे प्रेमी प्यारे बणे होण दुल्हन, दूल्हा इक्को नज़री आईआ। छब्बी पोह नूं तेरे चरण कँवलां उत्ते होवे बरखा फूलण, नौ सौ नड़िनवे फुल तेरी भेंट चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी कन्त कन्तूहलन, कन्त बेअन्त बसन्त तेरी रुत सुहाईआ।

✪ १६ पोह शहिनशाही सम्मत ६ फ़रंगी राम दे घर पिण्ड तरेवा कैंप ज़िला जम्मू ✪

सतिजुग कहे प्रभू तूं दाता गुणी गहिन्दा, सो पुरख निरँजण तेरी सरनाईआ। तूं आदि जुगादि साहिब बख्शिंदा, हरि पुरख निरँजण बेपरवाहीआ। नित नवित तेरे अन्दर कदी ना आए चिन्दा, एकँकार अगम्म अथाहीआ। लख चुरासी तेरी साहिब बिन्दा, आदि निरँजण तेरी रुशनाईआ। तूं मालक ख़ालक जीउ पिण्डा, अबिनाशी करते वड वड्याईआ। तूं देवणहारा अमृत धार सिन्धा, श्री भगवान सहिज सुखदाईआ। तेरा प्रेम सागर वहिण वहिन्दा, पारब्रह्म नूर इलाहीआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। सतिजुग कहे प्रभ मेरे साहिब सुल्ताना, हरि करते तेरी सरनाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर दे ब्रह्म ज्ञाना, अज्ञान अंधेर रहे ना राईआ। सति धर्म झुला इक निशाना, निशाना कूड़ दे चुकाईआ। प्रेम प्रीती शब्दी बन्नृ गाना, डोरी गंढ आपणे हथ्थ उठाईआ। लख चुरासी आत्म दा निरगुण धार बण कान्हा, गोपी आपणा खेल वखाईआ। मेहरवान हो धुर दे रामा, सीता सुरत लै प्रनाईआ। पीरन पीर पैग़म्बरां दे पैग़ामा, रसूलां नबीआं भेव खुलृाईआ। तेरा सब तों वक्खरां होए कलामा, कलमा कायनात दृढ़ाईआ। गुरु गुरदेव स्वामी बण अन्तरजामा, अन्तष्करन पड़दा देणा उठाईआ। पहलों कलयुग मेट अंधेरी शामा, शमां नूर जोत कर रुशनाईआ। फेर तेरा दो जहानां वज्जे इक दमामा, शब्द गोबिन्द धार जणाईआ। शरअ दा लेखा मेट तमामा, मज़्ब दी तमां रहे ना राईआ। मन दा रहे ना कोए गुलामा, गुरबत अन्दरों देणी कढ्ढाईआ। तेरे चरण कँवल कँवल चरण सीस निवावां, निउँ निउँ लागां पाईआ। जन भगतां पकड़ लै बाहवां, बाहू बल आप प्रगटाईआ। गुरमुख रहे ना कोए निथावां, सूफ़ीआं सगला संग बणाईआ। मन कल्पणा रहे ना वांग कावां, सृष्टी हँस देणी वखाईआ। फेर मैं तेरा हुक्म मन्नावां नाल चावां, चाओ घनेरा इक रखाईआ। दुःख विच मैनूं भरना पए कदे ना हावा, हाए उफ़ ना कोए सुणाईआ। मेरे नाल भार आपणा रखीं सावां,
१०२५ सतिगुर शब्द संग बणाईआ। तेरे नाम दी ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल होवे वाहवा, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। १०२५
२२ पुरख अकाले दीन दयाले पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझे यार इक्को तेरी सेज हंढावां, दूजा सथ्थर ना कोए २२
विछाईआ। तूं मेहरवान महिबूब मेरे उत्ते रखीं जगत विच ठंडी छांवां, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गल पल्लू वास्ता पावां, निउँ निउँ लागां पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी धूढ़ अगम्मी बिना धूढ़ तों बिना मस्तक तों मस्तक लावां, खुशी निरगुण निरगुण धार बणाईआ।

✪ १६ पोह शहिनशाही सम्मत ६ अनंत राम दे गृह पिण्ड तरेवा ज़िला जम्मू ✪

सतिजुग कहे प्रभ मेरे पुरख बिधाता, बिध इक्को मंग मंगाईआ। तूं सब दा नज़री आवें पिता माता, सच स्वामी धुरदरगाहीआ। इक्को देवणहार होवें दाता, इक्को वस्त देणी वरताईआ। इक्को तेरे नाम दी होवे गाथा, इक्को सिख्या सच पढ़ाईआ। इक्को चलाउणा धुर दा राथा, रथवाही इक अख्वाईआ। इक्को पूजा होवे पाठा, इक्को इष्ट देव समझाईआ। इक्को तीर्थ होवे

ताटा, सरोवर इक सुहाईआ। इक्को कथा कहाणी होवे साका, सगला संग इक बणाईआ। इक्को तेरी मुहब्बत दा होवे ख़ाका, नकशा इक्को इक वखाईआ। इक्को रहिबर बणना आका, इक्को अक्ल बुद्धी देणी वड्याईआ। इक्को गृह खोल्हणा ताका, इक्को घर घर देणा वसाईआ। इक्को सतिगुर होवे शब्द शब्द तेरा काका, दूजा जन्म ना कोए दुहराईआ। सतिजुग कहे प्रभू प्रभ मेरी इहो आसा, तृष्ना तेरे अग्गे टिकाईआ। चरण कँवल देणा भरवासा, भरमां विच ना कोए भुलाईआ। तेरा नूर नज़र आए प्रकाशा, प्रकाश करना थांउँ थाँईंआ। सब दा लेखे लग्गे स्वासा, जो साह साह ध्याईआ। तूं साहिब सरबगुण तासा, हरि वडा वड वड्याईआ। मैं तेरा मन्नणा आखा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। मैनूं आउण ना देवीं कोई घाटा, वाधा आपणे नाल बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तूं आदि जुगादि अलखणा अलाखा, अलख अगोचर दर तेरे मंग मंगाईआ।

✪ १६ पोह शहिनशाही सम्मत ६ कृपाल सिंघ दे गृह पिण्ड सई कलां ज़िला जम्मू ✪

सतिजुग कहे प्रभ जे मैनूं मातलोक रखणा, निरगुण धार दया कमाईआ। पहलों धरनी दा वेहड़ा कर दे सक्खणा, कूड़ कुड़यार चोर यार रहिण कोए ना पाईआ। पवित्र हो जाऊ तेरा लोकमात दा वतना, बेवतनां कर सफ़ाईआ। फेर पुरख अकाले मैनूं दस्सणा, शब्द सुनेहड़ा इक घलाईआ। मैं दूर दुराडा वेखां बिना अक्खना, निज नैण अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब तेरे हथ्थ वड्याईआ। सतिजुग कहे प्रभ जे मैनूं मातलोक देणा थाँ, धुर दा हुक्म जणाईआ। पहलों झगड़ा मेट दे सूर गां, धर्म दी धार इक प्रगटाईआ। हँस बुद्धी रहे कोई ना काँ, मानव काग वांग ना कोए कुरलाईआ। सारे जपण इक्को तेरा नाँ, दूजा नाउँ ना कोए ध्याईआ। तूं सब दा बणना पिता माँ, पुरख अकाल तेरी इक सरनाईआ। जन भगतां भगत सुहेला हो के पकड़ीं बांह, बाज़ू आपणा बल धराईआ। सदा सुहेला बण के रखीं ठंडी छाँ, अग्नी तत ना लागे राईआ। सच दवारे करीं सच न्याँ, अदल इन्साफ़ हक दृढ़ाईआ। सृष्टी दी सृष्टी बणाई वांग भैण भ्रा, बुरी अक्ख ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। सतिजुग कहे प्रभ जे मैनूं सेवादार बणाउणा, चाकर जगत जणाईआ। पहलों कलयुग कूड़ कुटम्ब मिटाउणा, माया बंस रहिण ना पाईआ। हउमे हंगता गढ़ तुड़ाउणा, विकार विभचार देणा मिटाईआ। धुर दा ढोला इक सुणाउणा, आत्म परमात्म पड़दा देणा खुल्हाईआ। अवतार पैग़म्बरां पन्ध मुकाउणा, अग्गे हक ना कोए

रखाईआ। सच दा हुक्म इक वरताउणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव आप समझाउणा, धुर फ़रमाना आप सुणाईआ। सति धर्म निशाना इक झुलाउणा, दूसर नज़र कोए ना आईआ। मर्द मर्दाना आप अख्वाउणा, सूरबीर बेपरवाहीआ। खण्डा खड़ग आप चमकाउणा, शस्त्र इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार दया कमाईआ। सतिजुग कहे प्रभू जे मेरा लोकमात होणा समां, समाप्त पिछला लेखा दे कराईआ। जे मार्ग चलाउणा नवां, कूड़ी क्रिया दे मुकाईआ। जे नाम जपाउणा दमां, साह साह आप टिकाईआ। जे नूर जगाउणा शमा, सच जोत करीं रुशनाईआ। जे मेटणा हरख़ सोग ग़मां, आत्म परमात्म देणा दृढ़ाईआ। जे ख़त्म करनी जगत तमां, सांतक सति देणा वरताईआ। लेखा रहे ना बाबा आदम हव्वा, पारब्रह्म तेरी ओट तकाईआ। फिर मैं तेरा इक्को ढोला इक्को गीत गवां, गा गा शुकर मनाईआ। फिरां नाल चवां, चारों कुण्ट भज्जां वाहो दाहीआ। सच संदेशा सब नूं कहवां, कहि कहि देवां सुणाईआ। उठो वेखो जन भगतो तुहाडा धर्म दा जुग होया रवां, कलयुग हथ्थ किछ ना आईआ। मैं भगत दवारे खुशीआं नाल भवां, सच सिंघासण इक प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि साहिब तेरी इक सरनाईआ। सतिजुग कहे जे मेरी लोकमात लाउणी नींह, धर्म दी धार दृढ़ाईआ। पहलों कलयुग कूड़ी क्रिया रहिण ना देवीं लीह, ममता मोह देणा चुकाईआ। सब दा लेखा पूरा करीं साढे तिन्न हथ्थ सींअ, जो रविदास चमारा गया लिखाईआ। फिर पैग़म्बरां लेखा पूरा करीं वीह, बीस बीसे अक्ख उठाईआ। पैग़म्बरां सदी चौधवीं वेखीं लीह, लैन ऐन अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सब नूं मेरे विच आयां नूं कहीं जी, जी आयां कहि के मेरी खुशी देणी बणाईआ।

१०२७ २२

✪ १७ पोह शहिनशाही सम्मत ६ वीरो देवी दे गृह पिण्ड सई कलां ज़िला जम्मू ✪

सतिजुग कहे तेरे प्यार दा चढ़े रंग, मुहब्बत नाम वाली वखाईआ। सति दा रहे संग, सगला संग वखाईआ। धर्म दा रहे अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। तेरे प्रकाश दा चढ़े चन्द, चन्द चन्द विच्चों रुशनाईआ। कलयुग मंज़ल जाए लँघ, पाँधी मात ना कदम टिकाईआ। घर घर तेरी आत्म सेजा होए पलँघ, सुख आसण वज्जे वधाईआ। मेरे साहिब सूरे सरबंग, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। आदि तों अन्त मेरी इहो मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। आत्म परमात्म सदा

सुणदा रहवां छन्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे हुक्म दे सारे होण पाबन्द, पाबन्दी अवर रहे ना राईआ।

✪ १७ पोह शहिनशाही सम्मत ६ देवा सिँघ दे गृह सई कलां ज़िला जम्मू ✪

सतिजुग कहे प्रभू मेरा सच्चा होए समाज, समग्री सच देणी वरताईआ। शहिनशाह इक्को दे सिर ते होवे ताज, तख्त निवासी इक्को सोभा पाईआ। इक्को सति दी होए आवाज़, तेरा नाम डंक शनवाईआ। इक्को प्यार दा होवे राग, राग रागणीआं जिस नूं सीस निवाईआ। सब दे अन्दर कूड़ दा होवे त्याग, ममता मोह मिटाईआ। तेरे विछोड़े दा होवे वैराग, बिरहों विच ध्यान लगाईआ। दीपक जोत जगे चराग़, चरागाहां होए रुशनाईआ। मेरा वड्डा होए सुभाग, भगवन तेरी आस रखाईआ। भगतां दा महिक्या होवे बाग़, गुलशन बग़ीचा इक्को नज़री आईआ। तैनूं लभ्भणा पए ना काशी अयुध्या प्राग, काअब्यां राह ना कोए तकाईआ। त्रैगुण लग्गे किते ना आग, सांतक सति वरताईआ। इक्को सीस झुके महाराज, राज राजान सीस झुकाईआ। दुरमति मैल रहे ना दाग़, पतित पुनीत सर्ब कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरा खुशीआं विच इरशाद, अर्श दे मालक दयां सुणाईआ।

✪ १७ पोह शहिनशाही सम्मत ६ भाईआ देवी दे गृह पिण्ड सई कलां ज़िला जम्मू ✪

सतिजुग कहे मेरे साहिब सच्ची सरकार, अदना हो के सीस झुकाईआ। दया सिँघ दी तक लै धार, जो आया बिशन सिँघ रूप बदलाईआ। गोबिन्द दा गोबिन्द धार यार, यराना तोड़ गया निभाईआ। तेरी खुशी विच छड संसार, संसारी भण्डारी सँघारी तों अग्गे कदम टिकाईआ। पुज्या सच सच्चे दरबार, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। रंग चढ़या अगम्म अपार, अलख अलखणे तेरी मिली सरनाईआ। जोत जोत दी बण के धार, जोत जोत विच रुशनाईआ। मेरी नमो नमो निमस्कार, झुक झुक सीस निवाईआ। तेरे कदमां सदा बलिहार, बलिहारी आपणा आप कराईआ। जिस भगत सुहेले दिते तार, जन्म जन्म दे लेखे पूर कराईआ। सच प्रेम दी बख्श के धार, धरनी उत्ते दिती वड्याईआ। इक बेनन्ती सुण मेरे दातार, दीन दयाल दया कमाईआ। ओह तेरे पंजां प्यारयां दी सी सिक्दार, पंचम दा पंचम रूप दरसाईआ। उसे दी बख्शिश सेवा सिँघ

नूं फेर बख्श दे दस्तार, पंजां प्यारयां विच रलाईआ। पिछला रहे ना कोए उधार, लेखा सब दा पूर कराईआ। उस दे मस्तक तिलक लगावेगा रविदास चमार, गुरमुख सिँघ गुरमुख संग रलाईआ। फेर फड़ावे हथ्थ नन्गी तलवार, सोहणा सगन मनाईआ। एह छब्बी पोह नूं विहार तों पहलों कर लैणा विहार, विवहारी संदेशा इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।

✪ १७ पोह शहिनशाही सम्मत ६ सेवा सिँघ दे गृह पिण्ड सई कलां ज़िला जम्मू ✪

सतिजुग कहे प्रभ किरपा करनी अपार, अपरम्पर दया कमाईआ। तेरा खेल सच्ची सरकार, शहिनशाह होवे बेपरवाहीआ। जम्मू वाल्यां ल्याउणे पंज हार, सेवा सिँघ दे गल देणे पहनाईआ। इक्कीआं टकयां दा वारना करना वारो वार, धर्म दी धार हथ्थ उठाईआ। अग्गे वास्ते सिख दा सिक्खां नाल बणया रहे प्यार, दूर नेड़ा पन्ध ना कोए जणाईआ। जिस दा लेखा सो साहिब करनेहार, करनी दा करता रंग रंगाईआ। पंजां प्यारयां पंज लाउणे फेर जैकार, खुशीआं नाल सुणाईआ। पंजां लिखारीआं शब्द लिखणा मूँह उग्घाड़, दन्दां नाल दन्द ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बिशन सिँघ दा लेखा लेखे लावे भगत दर जगत करे विहार, रिश्तेदार कोई गुरसिख सिर पग्ग ना कोए बंधाईआ।

✪ १७ पोह शहिनशाही सम्मत ६ बंती देवी दे गृह पिण्ड सई कलां ज़िला जम्मू ✪

सतिजुग कहे प्रभ मेरा बण जा धुर दा साकी, नाम प्याला जाम घर घर दे प्याईआ। अगम्मे शब्द घोड़े चढ़ राकी, राकब आपणा बल धराईआ। दो जहानां रहे कोई ना आकी, अक्ल बुद्धी सब दी देणी ठीक कराईआ। सति धर्म दा चन्द चढ़या रहे दिवस राती, अंध अंधेर नज़र ना आईआ। सृष्टी तेरे चरण कँवलां होवे नहाती, तीर्थ तट ना कोए वड्याईआ। साची मुहब्बत होवे विच लोकमाती, मति मतांतर डेरा ढाहीआ। आह तक मेरे कोल गोबिन्द दी पाती, जो सहिज नाल गया फड़ाईआ। जिस हथ्थ रखया उपर आपणी छाती, छत्रधारी दा दाअवा कर के गया सुणाईआ। किहा सतिजुग मैं आवां ते नाल होवे मेरा कमलापाती, पतिपरमेश्वर सगला संग बणाईआ। धर्म दवारा तेरा होवे हाटी, वस्त सच वाली वरताईआ। मुश्किल रहे कोई ना घाटी, घाटे विच ना कोए कुरलाईआ। कलयुग अन्तिम मेट के वाटी, वटना तैनूं दयां मलाईआ। मैं

बड़ी अच्छी तरह वाची, वाचक हो के दयां सुणाईआ। मेरी इच्छया आसा मनसा साची, सच सच नाल मिलाईआ। इक होर गल्ल आखी, आख के गया सुणाईआ। सतिजुग जिस वेले सम्मत शहिनशाही दे छेवें बरस विच छब्बी पोह दी होणी राती, रैण आपणा रंग वखाईआ। ओस वेले मालवे वाल्यां पंज दाणे ल्याउणे इलाची, जो सरसे दे कन्ढे गोबिन्द दन्दां हेठ चब्ब के फेर सरसे विच सुटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर साहिब पुरख समराथी, समरथया आपणी इक दरसाईआ।

✪ १७ पोह शहिनशाही सम्मत ६ बेला सिँघ दे गृह पिण्ड सई कलां ज़िला जम्मू ✪

सतिजुग कहे प्रभू मैं दर तेरे सवाली, सवाल धर्म दा इक जणाईआ। मैं गोबिन्द दे मस्तक दी तकां लाली, पिछला वेला वक्त दए गवाहीआ। जिस नूं मालवे वाल्यां सत्त रंग फुल्लां दी दिती सी डाली, प्रेम प्रीती विच भेंट कराईआ। ओह टिकाई सी विच चांदी दी थाली, थाली तेरां इंच कुतर वंड वंडाईआ। जेहड़ी हथेली उत्ते उठा लई, उठा के चारों कुण्ट चक्र दिता लगाईआ। फिर खब्बे हथ्थ दी सज्जे पट्ट ते मारी थापी, आवाज़ दिती सुणाईआ। हस्स के किहा जिस वेले आई परम पुरख दी जोत अकाली, अकल कलधारी वेस वटाईआ। ओस ने पीरां दे गृह करने ख़ाली, खवाज़ा खिज़र दए गवाहीआ। ओस वेले मालवे वाल्यो दसां फिर बण के माली, एह भेंटा प्रभ दी देणी कराईआ। वेख्यो ओस विच मुलम्मा रखयो कोए ना जाहली, खोट नाल ना कोए वड्याईआ। ज़रूर नाल नौ पत्ते रखयो टाहली, जिस नूं शीशम कहे लोकाईआ। गोबिन्द ने फेर निगह उठा लई, नेत्र लोचण अक्ख खुल्हाईआ। चारों कुण्ट अंधेर घटा दिसी काली, कालख टिक्का ना कोए धुआईआ। फिर हथ्थ फेरया उपर आपणी दाढ़ी, सूरबीर लई अंगड़ाईआ। हुण मैं फिरदा विच जंगलां उजाड़ी, बीआबानां वाहो दाहीआ। फिर शहिनशाह नाल होवे मेरी सिक्दारी, सच सिंघासण सोभा पाईआ। दो जहानां पावां सारी, महासाथी हो के भज्जां वाहो दाहीआ। मुहम्मद दी आशा तकां जिस वेले आए सदी चौधवीं दी वारी, वारस हो के खोज खुजाईआ। लहिणा देणा लेखा अपर अपारी, अपरम्पर आपणा हुक्म वरताईआ। ओस वेले रविदास दे कोल होणी इक शरअ वाली शारी, चौदां हिस्से वंड वंडाईआ। सदी चौधवीं दी गोली कोल होणी इक पटारी, जिस उत्ते लेखा लिख्या होवे पटने वाला धुर दा माहीआ। पंजां दरबारीआं खुल्ही छड्डी होवे दाढ़ी, सोहणा साफ़ सुथरा रूप दरसाईआ। एह खेल होणा रात दे बारां वज्जे ते खेल लग्गे सब नूं प्यारी, प्रीतम प्यारा आप कराईआ। मालवे वाल्यो तुहाडा पिछला लहिणा दए पिछला उधारी,

एसे करके लए मंगाईआ। पंजां दे नाँ लिख दयो वड्डे तों छोटे तक वारो वारी, केहर सिँघ नाज़र सिँघ जागीर सिँघ कपूर सिँघ चमकौर सिँघ लहिणा पिछला रिहा ना राईआ। सतिजुग कहे प्रभ मैं सदा तेरे चरण कँवल निमस्कारी, निव निव लागां पाईआ। तेरे भगतां तों जावां बलिहारी, जिन्नां तेरी प्रेम विच सेव कमाईआ। अज्ज खुशीआं दी दिहाढ़ी, सब नूं बख्श माण वड्याईआ। घरां नूं जाणा वारो वारी, प्रेम विच ढोले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, तेरा हुक्म सच्ची सिक्दारी, दूजा सिक्दार नज़र कोए ना आईआ।

✪ १७ पोह शहिनशाही सम्मत ६ वकील सिँघ दे गृह पिण्ड हँसा ज़िला जम्मू ✪

सतिजुग कहे प्रभ तेरा शब्द होवे धुर दा योधा, सूरबीर हुक्मरान इक अख्वाईआ। सब दा साबत रखे सीस बोदा, बहु बिध रूप ना कोए जणाईआ। जन भगतां इक्को जेहा बख्शे औहदा, वडा छोटा ना कोए अख्वाईआ। मुक्खों निकले किसे ना तोबा, तेरे नाम दी वड्याईआ। जगत जिज्ञासूआं इक्को दस्सणा जोगा, जुगीशर इक्को रंग रंगाईआ। आत्म रस बख्शणा भोगा, निझर धार प्रेम वहाईआ। धुर दा कलमा होए सलोका, नाम निधान वज्जे वधाईआ। भेव रहे ना चौदां लोका, चौदां विद्या इक्को गृह समझाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी तेरा होवे होका, सत्त दीप इक्को हुक्म वरताईआ। हरिजन नाल करे कोई ना धोखा, बेवा बेईमान ना कोए बणाईआ। धुर दे मालक मार्ग दस्सणा सौखा, मंज़ल घाटी इक जणाईआ। पंज तत दा पवित्र करीं कोठा, सति सरूप आपणी दया कमाईआ। तेरा नाम जपणा पए ना नाल बुल्लां होटां, निज आत्म वसणा चाँईं चाँईंआ। इक्को तेरे उत्ते होण सब दीआं ओटां, दूजा इष्ट ना कोए जणाईआ। शब्दी शब्द मारीं चोटां, सोई सुरत सुरत जगाईआ। गुरमुख रहे कोई ना खोटा, खोटे खरे लैणे बणाईआ। तेरे प्यार दा रहे किसे ना तोटा, अतुट भण्डार देणे भराईआ। हथ्थ फड़ना पए ना किसे लोटा, वुज़ूआं वंड ना कोए वंडाईआ। खल्ल लाहे कोई ना सूर गाँ झोटा, ढोरां मुख ना कोए लगाईआ। दीन मज़ब दी दिसे कोई ना फोटा, फुटकल रूप ना कोए बणाईआ। हरिजन दिसे कोई ना सोता, आलस निंद्रा देणा मुकाईआ। दु:ख विच होवे कोई ना रोता, हन्झूआं हार ना कोए बणाईआ। तेरा भाणा सारे मन्नण नाल शौका, शक शिकवा सारा देणा गंवाईआ। माणस जाए कोई ना औंता, ख़ाली कुख्ख ना कोए रखाईआ। सब दा मालक बणना खौंता, ख़ावंद इक्को इक अख्वाईआ। तेरी मंज़ल तेरा सन्त सुहेला होवे पहुंचा, अधविचकार ना कोए

अटकाईआ। गोबिन्द दा लेखे लावे पहला ढौंका, ढईआ अग्गे ना कोए वखाईआ। जिस दा लेखा पटना पौंटा, पारब्रह्म प्रभ पूरा देणा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे शब्द नाम दा वज्जे इक्को धौंसा, धरनी धरत धवल धौल देणा सुणाईआ।

✪ १७ पोह शहिनशाही सम्मत ६ रणीआ राम दे घर पिण्ड कलोए ज़िला जम्मू ✪

सतिजुग कहे प्रभ मेरा सुहाउणा होवे समां, समाप्त कूड़ी क्रिया देणी कराईआ। सच दी जगदी होवे शमा, अंध अंधेर देणा गंवाईआ। कूड़ी होवे किसे ना तमां, अन्तर लोभ देणा मिटाईआ। रोग रहे किसे ना दमां, साह साह तेरा नाम ध्याईआ। झगड़ा मेट के काया चम्मां, चम्म दृष्टी देणी बदलाईआ। मार्ग निरगुण निरगुण दस्स के नवां, नौ खण्ड पृथ्मी देणी समझाईआ। तेरा सहारा इक्को लवां, लम्मा पै के सीस निवाईआ। पिछला लेखा रहे ना, पिछल्यां चौहां जुगां दा पन्ध देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म देणा वरताईआ। सतिजुग कहे प्रभ मेरी अन्त खाहिश, ख़ालस दयां जणाईआ। पिछली रहे कोई ना शाख, शनाख्त आपणी देणी वखाईआ। इशारा रहे ना ईसा कोई कलाक, घड़ी घड़ी वंड वंडाईआ। चौदां तबकां दा बन्द करना ताक, मुहम्मद दए दुहाईआ। सरगुण धार कर इत्फिाक, निफ़ाक सब दा देणा कढ्ढाईआ। सृष्टी तेरी इक्को होवे ज़ात, आत्म ब्रह्म देणा समझाईआ। लेखा लिख के नाल कलम दवात, दोहां मेल मेलणा सहिज सुभाईआ। साचे भगतां देणी शाबाश, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। शहिनशाह इक अबिनाश, अबिनाशी करते सीस निवाईआ। ओन्हां एथे ओथे बख्शणी निजात, दरगाह साची होणा आप सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को तेरा नूर होवे प्रकाश, जोती जाते तेरा नूर सोभा पाईआ।

✪ १७ पोह शहिनशाही सम्मत ६ सेवा सिँघ दे गृह पिण्ड कलोए ज़िला जम्मू ✪

सतिजुग कहे प्रभ मैनूं बख्श प्यार अनोखा, वक्खरी धार समझाईआ। मेरे विच करे कोई ना धोखा, दग़ेदार नज़र कोए ना आईआ। कल्पना वाली रहे ना सोचा, समझ सच देणी समझाईआ। मेरा समां बड़ा लम्मा चोखा, बहुता सब तों नज़री आईआ। ओनां चिर पिता ना मरे जिनां चिर घर अग्गे ना होवे पोता, मेहरवान मेहर वस्त देणी वरताईआ। दु:ख

कलेश विच कोई ना होवे रोता, नेत्र नीर ना कोए वहाईआ। तैथों विछड़ के कोई ना होवे सोता, सुरती सब दी लैणी उठाईआ। बिना तेरे तों जगाउणी पए कोई ना जोता, जोती जाते इक्को तेरा नूर नज़री आईआ। वेखीं कदी आपणयां भगतां नाल करीं ना रोसा, रुस्सयां सदा लईं मनाईआ। नाम खुमारी दईं मदहोशा, मधुर धुन आप सुणाईआ। ओनां नूं पढ़ना पए कोए ना कोशा, अक्खर रंग ना कोए रंगाईआ। सदा तेरे मिलण दा उपज्या रिहा शौका, शौकीन धुर दे देणे प्रगटाईआ। चढ़े रहिण तेरे नाम दी नौका, बेड़ा बेड़ी अवर ना कोए टिकाईआ। भाग करना अन्दर चाओ का, चाओ घनेरा इक कराईआ। प्रेम दस्सणा वाहो वाहो का, वाहवा सतिगुर तेरी बेपरवाहीआ। नगर खेड़ा वसाउणा सच गराउं का, तन वजूद सोभा पाईआ। खेल वेखण तेरे पसाउ का, पसर पसारी ध्यान लगाईआ। उनां उत्ते हुक्म होवे ना किसे दबाउ का, दब्बा अवर ना कोए जणाईआ। तेरा दर्शन तकण शहिनशाहो का, पातशाह तेरी इक सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मैं नज़ारा तकां तेरा बेपरवाहो का, बेपरवाह तेरी बेपरवाही विच समाईआ।

★ १७ पोह शहिनशाही सम्मत ६ प्यारे लाल दे गृह पिण्ड कलोए ज़िला जम्मू ★

१०३३ २२

सतिजुग कहे प्रभ मैं तेरी मंगां रहमत, रहीम ध्यान लगाईआ। कायनात तेरे नाल होवे सहिमत, सहिम दीन मज़्ब दा देणा गंवाईआ। झगड़ा मुकाउणा धोती तहिमत, तमां दा लालच रहे ना राईआ। मूर्ख मुग्ध रहे कोई ना अहिमक, हरिजन आपणे लैणे बणाईआ। तेरे धुर कलमे दी वज्जे अगम्मी सैनत, इशारा इक्को इक कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। सतिजुग कहे प्रभ जे मेरी आसा पूरी करें माकूल, मुकम्मल दयां जणाईआ। तेरे हुक्म दा होवे असूल, असलीअत इक्को नज़री आईआ। मेरे विच भेजीं ना कोए रसूल, नन्हे दी लोड़ रहे ना राईआ। तेरा सच पंघूड़ा लवां झूल, हुलारा दो जहान वखाईआ। तूं मालक आदि दा कन्त कन्तूहल, हरि साहिब तेरी सरनाईआ। तेरे नाम दा लैंदा होए ना कोई मसूल, कीमत सके ना कोए पाईआ। प्रेम प्यार दे जगत विच बख़्शीं फूल, बरखा धुर दी इक रखाईआ। खेल करनी हसबे मामूल, ज़ाहर ज़हूर तेरी वड्याईआ। वेखीं मेरा कौल इकरार ना जावीं भूल, अभुल तेरे अग्गे सीस निवाईआ। किते लेखा ना करीं अर्ज़ तूल, हिस्सयां वाली वंड वंडाईआ। मैं तेरे प्यार विच सदा रहवां मशगूल, नज़र अवर ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मैनूं डर भय रहे ना शंकर वाली त्रिशूल, इक्को तेरा सहारा रख के सीस निवाईआ।

✪ १७ पोह शहिनशाही सम्मत ६ लीला वन्ती दे गृह करन नगर जम्मू शहर ✪

सतिजुग कहे प्रभ देणा सच नाम भण्डारा, पुरख अकाल दीन दयाल दया कमाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप निरगुण धार होवे वरतारा, सरगुण झोली लोकमात भराईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म पारब्रह्म ब्रह्म बणना सच सहारा, सहायक नायक नर नरायण इक्को सोभा पाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा तूं मेरा मैं तेरा होए जैकारा, अगम्म अगोचर अथाह तेरा नाम वड्याईआ। साहिब सुल्ताना नौजवाना मर्द मर्दाना तेरे चरण कँवल होवे निमस्कारा, डण्डावत बन्दना सीस जगदीश इक्को इक निवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर सति सरूपी होवण सेवादारा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार तेरा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप दरसाईआ। सतिजुग कहे प्रभ धुर दा देवीं नाम ख़ज़ाना, अतोट अतुट वरताईआ। मालक बण के देणा विच जहाना, ग़रीब निमाणयां होए सहाईआ। तेरे धर्म दा धर्म झुल्ले निशाना, निछावर दो जहान कराईआ। सत्त दीप करन परवाना, परम पुरख प्रभ तेरी ओट तकाईआ। चार जुग तों वक्खरा तेरा होए विधाना, जिस दी तरमीम ना कोए कराईआ। शाहो भूप नज़र आए इक सुल्ताना, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। सतिजुग कहे प्रभ देणा नाम अपारा, अपरम्पर स्वामी दया कमाईआ। सतिगुर शब्द होए वरतारा, गृह गृह देवे थांउँ थाँईंआ। तेरा हुक्म वरते सची सरकारा, भय विच होवे सर्ब लोकाईआ। कूड़ी क्रिया होए ना धुँदूकारा, जगत विकारा देणा मिटाईआ। सच धर्म दा होवे इक दवारा, इक्को वस्त नाम वरताईआ। जिस नूं दूर दुराडे निरगुण निरगुण वेखण पैग़म्बर गुर अवतारा, सचखण्ड ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सुल्तान तेरी वड्याईआ। सतिजुग कहे प्रभ तेरे हुक्म दा होवे भय, भय भञ्जण तेरी वड्याईआ। लख चुरासी तेरा भाणा सहि, सिर सके ना कोए उठाईआ। जो अवतार पैग़म्बर गुरु गए कहि, भविक्ख्तां विच शनवाईआ। उस सब दी कराउणी जै, विजै तेरे हथ्थ फड़ाईआ। कूड़ क्रिया करनी लै, सति धर्म देणा प्रगटाईआ। अमृत धार इक्को वहै, कूड़ क्रिया देणी रुढ़ाईआ। तेरी उडीक, विच जुग चौकड़ी बीते कै, गिणती गणित ना कोए गिणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

१०३४ २२

कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार दर तेरे मंग मंगाईआ। सतिजुग कहे प्रभ दे दे हुक्म अगम्मी, अगम्म अगम्मड़े आप जणाईआ। सृष्टी धार होवे नवीं, नव जुग मिले वड्याईआ। तैनूं सारे उडीकदे अवतार चौवीं, चौबीसवें आपणा रंग दे रंगाईआ। लहण देणा लेखा सब तों लवीं, बाकी रहिण कोए ना पाईआ। वस्त अमोलक सति धर्म दी धरनी धरत धवल धौल दवीं, देवणहार तेरी सरनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म राग गवीं, गहर गम्भीर बेनज़ीर ढोला देणा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, नाम निधाना इक वरताईआ। सतिजुग कहे प्रभ देणा नाम नाम भरपूर, समरथ दया कमाईआ। जोती जल्वा बख्शणा नूर, अंध अंधेर गंवाईआ। शब्द नाद प्रगटाउणी तूर, तुरीआ तों बाहर शनवाईआ। दर्शन देणा हाज़र हज़ूर, हज़रतां दा लेखा रहे ना राईआ। मैं तेरे ठांडे दर दा होवां मज़दूर, चाकर बण के सेव कमाईआ। तूं बख्शिश बख्शणी वाली धूढ़, रहमत रहम विच्चों कमाईआ। मेरे विच होवे कोई ना मूढ़, सुघड़ सुचज्जे गुरमुख भगत लैणे बणाईआ। मैं तेरा सहारा तकां ज़रूर, ज़रूरत तेरे हथ्थ फड़ाईआ। तेरा नाम करां मशहूर, मशवरे नाल रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणा कूड़, हउमे हंगता माया ममता मोह विकार धरनी धरत धवल धौल उतों पार कराईआ।

१०३५ २२

✪ २१ पोह शहिनशाही सम्मत ६ जसवंत सिँघ दे गृह करतार पुर शहर ✪

सतिजुग कहे प्रभ एका बख्श ओट, ओड़क तेरा ध्यान लगाईआ। सृष्टी दी दृष्टी अन्दरों कढ खोट, कूड़ कुकर्म दा डेरा ढाहीआ। आलूणिउं डिग्गे उठा बोट, लख चुरासी जीव जंत रहे कुरलाईआ। झगड़ा मेट दे वरन गोत, ज़ात पात ना कोए लड़ाईआ। सच प्रकाश बख्श दे जोत, जोती जाते दया कमाईआ। मन कल्पणा रहे ना सोच, धुर दी समझ देणी दृढ़ाईआ। निज नेत्र खोलूणा लोच, लोयण इक प्रगटाईआ। तेरे नाम दी नौ खण्ड पृथ्मी होवे सरोत, सरगुण निरगुण आपणा पड़दा देणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सच तेरी सरनाईआ। सतिजुग कहे प्रभ जे मैनूं मात करना प्रगट, प्रगट आपणा संग निभाईआ। तूं निरगुण धार वसणा हर घट, घट निवासी दया कमाईआ। लेखा पूरा करना तीर्थ तट, अट्ठ सट्ठ रोवे मारे धाहीआ। तेरे नाम दा इक्को होवे हट्ट, दूसर वस्त ना कोए वरताईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया लेखा मुका नटुआ नट, स्वांगी स्वांग ना कोए वरताईआ। तूं साहिब पुरख

समरथ, हरि दाता अगम्म अथाहीआ। जुग चोकड़ी तेरा चलदा रिहा रथ, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दए गवाहीआ। मैं वास्ता पावां दोवें जोड़ के हथ्थ, सीस जगदीश इक निवाईआ। मेरे विच तेरे नाम दा इक्को होवे जस, तूं मेरा मैं तेरा ढोला सिफ्त सालाहीआ। सब दी नेत्र खोल्ह अक्ख, निज नैण कर रुशनाईआ। तेरे तेरी धारों होण कदे ना वक्ख, वक्खरा घर ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझे यार तेरी आस रखाईआ। सतिजुग कहे प्रभ जे मैनूं धरनी धरत धवल मातलोक सुहाउणा, सुहञ्जणी रुत तेरे नाल महकाईआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाला बण के आउणा, जोती जाता आपणा वेस वटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला सब ने गाउणा, रीती कलयुग अन्तिम देणी चलाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म लेखा सर्ब मुकाउणा, मुकम्मल आपणी कार भुगताईआ। शाहो भूप बिन रंग रूप निरवैर पुरख आपणा खेल खिलाउणा, ख़ालक ख़लक मख़लूक तकणा चाँईं चाँईंआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी डंक वजाउणा, दो जहानां नौजवाना मर्द मर्दाना आप जणाईआ। हउँ सेवक बालक नन्हा दर तेरे सीस निवाउणा, सतिजुग निउँ निउँ लागे पाईआ। मेरे मालक ख़ालक प्रितपालक पारब्रह्म पतिपरमेश्वर ठांडा दर इक सुहाउणा, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। मेरे अन्दर चार वरन अठारां बरन इक्को रंग रंगाउणा, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई जगत शरअ वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति सच तेरी सरनाईआ। सतिजुग कहे प्रभू जे मैनूं घलणा उपर धरनी, धरत धवल धौल देणी वड्याईआ। सब नूं इक्को तुक पैणी पढ़नी, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। इक्को पुरख अकाल दी रहिणा सरनी, दूजा इष्ट ना कोए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण निरवैर निराकार निरँकार आपणी खेल करनी, ख़ालक ख़लक मख़लूक वेखणा चार कुण्ट दहि दिशा चाँईं चाँईंआ।

१०३६
२२

✪ २२ पोह शहिनशाही सम्मत ६ हरबंस सिँघ दे गृह करतार पुर शहर ✪

सतिजुग कहे प्रभ माण देणा साचे सुत दा, सुत दुलारा आपणा लैणा बणाईआ। वक्त सुहाउणा आपणी रुत दा, रुतड़ी लोकमात महकाईआ। कोई गुरमुख होए ना हिरदिउँ दु:ख दा, हउमे रोग देणा मिटाईआ। आत्म परमात्म मेला करना साचे सुख दा, दुतीआ भउ रहे ना राईआ। सतिगुर शब्द हो के सब नूं पुछदा, आपणा हुक्म लैणा वरताईआ। अमृत रस प्याला

दयां घुट दा, मदि रसना ना कोए लगाईआ। किसे दा भाग ना होवे निखुट दा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप पुरख अकाल तैनूं होवे झुकदा, दूसर सीस ना कोए निवाईआ। कलयुग पैंडा होवे मुकदा, अग्गे होर ना कोए वधाईआ। सब दा पाठ होवे इक्को तुक दा, तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला देणा गाईआ। ज़ात पात झगड़ा रहे ना मानस मनुक्ख दा, दीन मज़्हब ना वंड वंडाईआ। खेल करना अबिनाशी अचुत दा, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। मैनूं सहारा तेरी इक्को ओट दा, ओड़क दर तेरे सीस निवाईआ। नाम भण्डारा बख्शीं अतोट दा, अतुट निखुट्ट कदे ना जाईआ। इक्को प्रकाश होवे तेरी जोत दा, निरगुण नूर देणा चमकाईआ। प्रभू मैं खेल तकां तेरे चोज दा, चोजी प्रीतम आपणा पड़दा देणा उठाईआ। दु:ख रहे ना हउमे रोग दा, हँकार विकार देणा मिटाईआ। नाता जुड़ जाए धुर संजोग दा, पारब्रह्म प्रभ मिल के वज्जे वधाईआ। दीन दुनी खेल करना आपणी मौज दा, मजलस भगतां नाल रखाईआ। तेरा दवार कदे ना होवे औंत दा, दर दर घर घर वज्जदी रहे वधाईआ। मेरी इक बेनन्ती सतिजुग कहे वक्त होवे सुहञ्जणा शौक दा, शहिनशाह शाह पातशाह आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा लेखा आदि जुगादि जुग चौकड़ी लोक परलोक दा, दो जहान नौजवान दर तेरे सीस झुकाईआ।

✪ २२ पोह शहिनशाही सम्मत ६ बन्ना सिँघ दे घर करतारपुर शहर ✪

सतिजुग कहे प्रभ इक्को नाम दी देणी दात, दाते दानी दया कमाईआ। कलयुग मेट अंधेरी रात, धरनी धरत धवल धौल उत्ते रहिण ना पाईआ। झगड़ा रहे ना ज़ात पात, दीन मज़्हब करे ना कोए लड़ाईआ। पिछला लेखा सब दा कर बेबाक, अग्गे मंग ना कोए मंगाईआ। फेर आपणे धर्म दवार दा खोल्ह ताक, पड़दा लोकमात चुकाईआ। जन भगत सुहेले बणा मेरे सज्जण साक, नाता कूड़ क्रिया नालों तुड़ाईआ। मैं सच दवारे तेरे रिहा आख, बिन अक्खरां कहि सुणाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाश, अबिनाशी करते तेरे हथ्थ वड्याईआ। हर हिरदे अन्दर होवे तेरा वास, वासना माया ममता मोह हँकार देणी कढ्ढाईआ। तेरी जोत दा होवे प्रकाश, अंध अज्ञान रहे ना राईआ। रुत मौले मेरी पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर वज्जे वधाईआ। सृष्टी दी दृष्टी अन्दर तेरा होवे विश्वास, विषयां तों बाहर देणा कढ्ढाईआ। तूं साहिब सरबगुण तास, गुणवन्ता इक अख्वाईआ। झगड़ा मेट हड्ड नाड़ी मास, आत्म ब्रह्म सर्ब देणा दृढ़ाईआ। शंकर खेल तके उपर कैलाश, ब्रह्मा

ब्रह्म लोक ध्यान लगाईआ। विष्नूं वेखे खेल तमाश, विश्व तेरा रंग सोभा पाईआ। दीन दयाल पुरख अकाल सब दा अन्दर करना साफ़, दुरमति मैल देणी धुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा गुरमुख हरि भगत होवे ना कदे गुस्ताख़, गुस्सा अन्दर रहे ना राईआ।

✪ २४ पोह शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल दरबार दे निवासीआं नवित ✪

सतिगुर शब्द नाम दा देवे फक्का, फाका जन्म जन्म दा दए गंवाईआ। अन्तर आत्म कर दए पक्का, पक्का आपणा रंग रंगाईआ। चुरासी विच मिले ना धक्का, जन्म जन्म ना कोए भवाईआ। अग्नी तत ना होवे तता, तपश अन्दरों दए कढ्ढाईआ। कूड़ी क्रिया करे हत्ता, नाम कटार हथ्थ उठाईआ। सति सच दी बख्श के सत्ता, सति सतिवादी आपणा रंग रंगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के पता, पतिपरमेश्वर होए सहाईआ। लहिणा देणा देवे हथ्थो हथ्था, अग्गे वंड ना कोए वंडाईआ। मेहरवाना पुरख समरथा, सिर सब दे हथ्थ टिकाईआ। पैज संवार के यथार्थ यथा, यदी आपणे घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच प्रीती जन भगतां भिच्छया पावे धुर दा फक्का, फ़िकर अगला रहे ना राईआ।

✪ २५ पोह शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल रात नूं ✪

चौदां तबक सुणो हुक्म अलाही, अलाह आलमीन दृढ़ाईआ। धुर संदेशा देवे बेपरवाही, वाहिद खुदा नूर इलाहीआ। जिस दा खेल होणा अगम्म अथाही, जुग चौकड़ी हुक्म वरताईआ। जिस नूं मुहम्मद बैठा सीस झुकाई, हज़रत निउँ निउँ लागे पाईआ। कदम बोसी विच करे दुहाई तोबा तेरा नाम खुदाईआ। निगह ज़िमीं असमान उठाई, निज नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। फेर तक्कया हज़रत ईसा जगत राही, रहिबर इक अख्वाईआ। जिस दे अन्तर जल्वा नूर रुशनाई, ज़हूर इक प्रगटाईआ। मूसा वेखे अक्ख उठाई, पर्दा परदयां विचों चुकाईआ। दरोही घड़ी लोकमात विच आई, वेला वक्त दए गवाहीआ। सदी बीसवीं होए रुशनाई, निरगुण निरवैर निराकार आपणा रूप दए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। चौदां तबक लैण अंगड़ाई, आलस निंद्रा दूर कराईआ। छब्बी पोह नूं चलणा वाहो दाही, दूर दुराडे पन्ध मुकाईआ। मुहम्मद नाअरा सुणना हक जो लाशरीक जणाई, शरअ दी

शरअ विचों पढ़ाईआ। सदी चौधवीं लेखा मुकणा पुन्न सुआब गुनाही, बचया रहिण कोए ना पाईआ। नबी रसूलां होणी जुदाई, उम्मत उम्मती दए दुहाईआ। की संदेसा रिहा जणाई, बिन अक्खरां आप पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि दाता अगम्म अथाहीआ। चौदां तबक कहिण मानवल ज़लू ज़ेबे ज़न ज़ोती ज़वा, हज़रते नोश गोज़े कमिन हमदे खुदा तोज़े तज़िक यकीते आलमीनो खुज़ा ज़ाहरे ज़बू अलाह वज़ू ज़ोरे ज़गी चासे मज़ू मुहब्बते नूरा वाहिदे अमाम वज़के ज़लो कामिस्ता हबू ज़ख़ता वलू आलिसते वज़ा, ज़ाकोने अज़ा, बाहिशते वज़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा मालक इक अख्वाईआ। चौदां तबक इक दूजे नूं कहिंदे, रसना जेहवा ना कोए हिलाईआ। उठो तक्को वेखो चढ़दे लहिंदे, दक्खण पहाड़ अक्ख उठाईआ। किस बिध अवतार पैग़म्बर गुरु धुर दा भाणा सहिंदे, सिर सके ना कोए उठाईआ। बिन कलमे कलाम धुर अमाम दे कदमां ढहिंदे, बिन सीस सीस निवाईआ। निरअक्खर धार बिन अलिफ़ ये तों धुर दा हुक्म कहिंदे, कहि के रहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। चौदां तबक कहिण ऐ मालक धुर अमाम, कामल मुर्शद तेरी बेपरवाहीआ। असीं चल के आईए तमाम, शरअ दी तमां ना कोए रखाईआ। कलमे दा होए ना कोए गुलाम, बन्धन तन्द ना कोए बंधाईआ। तेरा संदेशा हक पैग़ाम, पैग़म्बरां तों परे पढ़ाईआ। तूं शहिनशाह पातशाह सुल्तान, नूर नुराना नूर इलाहीआ। तेरा सदा सदा अगम्म निज़ाम, जिस दी धारा सके ना कोए दृढ़ाईआ। जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग खेल होया महान, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। ओह वेख पैग़म्बर करन सलाम, हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद बैठे सीस झुकाईआ। सदी चौधवीं चारों कुण्ट होई अंधेरी शाम, शमा नूर ना कोए रुशनाईआ। तीस बतीस कामल रही ना कोए कलाम, कलमा कायनात ना कोए दुहाईआ। झगड़ा तक दीन मज़्हब अवाम, अमलां तों बाहर ख़लक खुदाईआ। हकीकी प्याए ना कोए जाम, आबेहयात मुख ना कोए चुआईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु सदी चौधवीं संभाल सके ना कोए इंतजाम, नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप मानव ज़ाती रही कुरलाईआ। दीन मज़्हब छुरी शरअ बण के करे कत्लेआम, कातिल मक्तूल दा रूप बणाईआ। योधा सूरबीर दिसे ना कोए नौजवान, नौबत हक ना कोए वजाईआ। निगह मार मेहरवान महिबूब तक ज़िमीं असमान, चौदां तबक सबक इक ना कोए पढ़ाईआ। सच दा रिहा ना कोए निशान, निशाने कूड़ रहे झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। चौदां तबक कहिण असीं आउणा लोकमात, जग नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। छब्बी पोह सुहञ्जणी होणी रात, सदी चौधवीं वज्जे वधाईआ।

असां लेखा तकणा काग़ज़ात, अलिफ़ ये जो वंड वंडाईआ। शरअ दी तकणी जमात, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। दीन दुनी दे तकणे हालात, मक्के काअब्यां खोज खुजाईआ। जो मुहम्मद हमद विच दे के गया हदाइत, कलमा हक हक सुणाईआ। की होई उस दे विच अशाइत, असल वसल यार कवण कराईआ। कवण देवणहारा अन्त नजात, मेहर निगाह इक उठाईआ। चौदां तबक कहिण दरोही कलमे बणाउण वाले पा गए वफ़ात, अन्त नज़र कोए ना आईआ। मन कल्पणा सब दी होई गुस्ताख़, नूरे चशम ना कोए रुशनाईआ। परवरदिगार सांझे यार आपणे हुक्म दा बख्श जज़बात, जज़बा हक दिता दृढ़ाईआ। चौदां तबक उठो वेखो मार झात, बिन नेत्र लोचन नैण अक्ख उठाईआ। जिस दी सिफ्त कीती वज़ाहत, संदेशयां विच सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। चौदां तबक कहिण असीं आउणा कलयुग कोल, कल काती वेख वखाईआ। उस वेले ढोली ने वजाउणा ढोल, डंका धर्म दवार लगाईआ। असां इक्को चौदां तबकां सांझा नाअरा अज़ाती बू अज़ाती बू अज़ाती बू देणा बोल, कूक कूक सुणाईआ। चौदां गुरमुख प्रेम नाल साडा तोलण तोल, आयू इक्की साल समझाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच सारे जाण मौल, मौला वेखे नूर अलाहीआ। जिस दा लेखा जाण सके ना कोए भूगोल, काग़ज़ कलम शाही ना कोए चतुराईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी

१०४० पुरख अबिनाशी आपणा करे रोल, रूल आपणा इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे १०४०

२२ खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। चौदां तबक कहिण साडा अन्त होणा ऐन्ड, इंनडैकस नज़र कोए ना आईआ। २२

हज़रत ईसा मुहम्मद नहीं रहिणे फ्रैन्ड, खेल वेखे बेपरवाहीआ। सच दी धार मिले ना हैंड, हैंडज़ अप दए कराईआ। धुर संदेशा नाम कलमा करे सेंड, फ़रमाना अगम्म अथाहीआ। लेखा जाणे योरोशलम लैंड, लैंड मारक इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वडा वड वड्याईआ। चौदां तबक कहिण असीं आउणा उपर धरनी धरत धौल जग, जगत आपणा पन्ध मुकाईआ। जन भगतां दिसणा उपर शाह रग, नव दवारे पन्ध मुकाईआ। फेर वेखणी कलयुग दे कोल धूणी अग्ग, जो अग्नी रही तपाईआ। एह खेल सूरा सरबग, हरि करता रिहा कराईआ। जिस दा नाम वज्जणा अगम्मा नद, दो जहानां आप जणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म होणा इक्को छन्द, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा भेव खुल्हाईआ। मानव मानस मानुख इक्को समझा के यद, यदी आपणा रंग रंगाईआ। दीन मज़्हब दी मेट के हद्द, तत्तां वाला झगड़ा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, पुरख अकाला दीन दयाला वाहिद, गॉड इक अख्वाईआ। चौदां तबक कहिण साडी अन्त होई सलाम, कदमबोसी

विच सीस निवाईआ। हुक्म मन्नणा इक अमाम, जिस दी आमद विच बैठे ध्यान लगाईआ। जिस ने शरअ झगड़े मेटणे तमाम, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई पारसी बोधी जैनी इक्को रंग रंगाईआ। काया खेड़ा सच वेखणा ग्राम, साढे तिन्न हथ्थ पर्दा आप उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म देणा हक पैग़ाम, हकीकत इक्को इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। छब्बी पोह कहे मेरा वक्त होणा सुहञ्जणा, धरनी धरत धवल धौल मिले वड्याईआ। प्रभ आउणा दीन दर्द दुःख भय भञ्जणा, जो भव सागर पार कराईआ। जो जन भगतां नेत्र पाए नाम अंजणा, दुरमति मैल धुआईआ। सच प्रेम दी चाढ़े रंगणा, कूड़ी क्रिया दए गंवाईआ। जिस ने तेई अवतार सद्दणा, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। हज़रत ईसा मूसा मुकाउणा पन्धना, पाँधी बण के भज्जण वाहो दाहीआ। दस गुरु गुरदेव साचे धाम सजणा, साजण हो के वेख वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रहे ना अलग्गणा, वक्खरी कार ना कोए कमाईआ। चौदां लोक उठ उठ भज्जणा, पूरब आपणा पन्ध मुकाईआ। सब दा इक्को इक जैकारा लग्गणा, ढोला गाउण चाँईं चाँईंआ। जिस पवरदिगार सांझे यार दा इक नगारा वज्जणा, नाम डंका हक शनवाईआ। उस दा खेल वेखो जो गोपाल मूर्त मदना, सति सरूप सोभा पाईआ। जिस दा करदे रहे हज्जणा, काअब्यां अक्ख उठाईआ। जिस नूं चर्चा विच्चों लभ्भणा, मसीह बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। छब्बी पोह कहे मेरे साहिब दा प्रकाश होणा नूर अगम्मा शमां, शाम कल रहिण ना पाईआ। जिस ने दीन मज़्हब दी मेटणी तमां, जगत तामस दए गंवाईआ। नाम कलमे शरअ दा मेटणा ग़मा, चिन्ता चिन्ता विच्चों चुकाईआ। सति धर्म दा जुग करना रवां, रौणक आत्म परमात्म दृढ़ाईआ। इक्को पुरख अकाल परवरदिगार सांझा यार जपणा दमा, गॉड गाईड इक बणाईआ। मन कल्पणा करनी मन्हां, मनसा विच ना कोए भटकाईआ। सदी चौधवीं दा लेखा होण नहीं देणा लम्मा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जिस कारन गुरु अर्जन चौदां सौ तीह अंक दा लिख्या पन्ना, तिस कारन पनिशमैंट दए सर्ब लोकाईआ। जिन्हां ने धुर नाम सुण के कन्नां, अन्दर ना ल्या वसाईआ। उन्हां धर्म राए पीड़ना ज्यों वेलणे विच गन्ना, नानक गोबिन्द दोवें देण गवाहीआ। मुहम्मद फिरना भन्ना, चौदां तबक बैठे अक्ख उठाईआ। हज़रत ईसा आपणा वेखे समां, सदी बीसवीं ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीन मज़्हब ज़ात पात नाम कलमे दा रहिण ना देवे बन्ना, आत्म परमात्म परमात्म आत्म पारब्रह्म ब्रह्म पड़दा दए चुकाईआ।

✪ २६ पोह शहिनशाही सम्मत ६ सेवा सिँघ नूं पंज प्यारयां विच शामल करन समें हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

बिशन सिँघ दा सुत दुलारा, दर दरबार मिली वड्याईआ। सेवा सिँघ सेवा विच लग्गा प्यारा, प्रेमी प्रीतम दया कमाईआ। चन्द नाल चमक गया सितारा, सत्ा ज़िमीं असमान वज्जी वधाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी करनेहारा, करता पुरख अगम्म अथाहीआ। जिस नूं झुकदे अवतार पैग़म्बर गुरु विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी सीस निवाईआ। देवत सुर करन निमस्कारा, जुग चौकड़ी धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगारा, सांझा यार होए सहाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरि भगत दे के नाम अधारा, उदर दा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद आपणा रंग रंगाईआ। बिशन सिँघ कहे मैं सचखण्ड दा वासी, प्रभ सच दिती वड्याईआ। मातलोक दी तकां रासी, मण्डल खोजां चाँईं चाँईंआ। जिस साहिब दी बणया दासी, सेवक हो के सेव कमाईआ। ओह किरपा करे पुरख अबिनाशी, अबिनाश आपणा रंग रंगाईआ। मेरी धर्म धार दी शाखी, शनाखत प्रभ आपणे घर रखाईआ। अर्ज़ बेनन्ती मन्न के आखी, आख़र आपणे घर टिकाईआ। मेरा लहिणा रिहा ना बाकी, पूरब लेखा दिता चुकाईआ। आत्म
१०४२ परमात्म बण के साथी, दरगाह साची सच टिकाईआ। जिथ्थे इक्को निरगुण नूर जोत प्रकाशी, दूजा नज़र कोए ना आईआ। १०४२
२२ मैं खुशी मनाउणी चौदां पोह दी राती, रुतड़ी प्रभ दी वेख वखाईआ। सेवा सिँघ मेरी याद रखणी बाती, बातन पड़दा दयां खुल्ाईआ। इक्को पुरख अकाल मन्नणा कमलापाती, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। तेरी लेखे लग्गे जीवण ज़िंदगी हयाती, आबे हयात अमृत रस इक चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। छब्बी पोह कहे जन भगतां भगत दा वेख्या सगण, सगला संग वखाईआ। जिन्ां दे अन्तर आत्म रंगण, रंग अनडीठ इक चढ़ाईआ। सच प्रीती विच मग्न, आलस निंद्रा ना कोए रखाईआ। ओह गुरमुख दीपक लोकमात जगण, जागरत जोत बिन वरन गोत रुशनाईआ। घर ठाकर पाए प्रभ सज्जण, दाता धुरदरगाहीआ। जो चरण धूढ़ कराए मजण, दुरमति मैल करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित लेखा जाणे सूरा सरबंगण, साहिब सुखदाई बेपरवाही आपणी दया कमाईआ। २२

✪ जलूस दे दरबार पुज्जण ते ✪

सचखण्ड कहे मैं आवांगा। बिन रूप रंग रेख खेल खिलावांगा। निरगुण धार सूरा सरबंग वेख वखावांगा। अवतार पैग़म्बर गुरु नाल मिलावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव साथ ल्यावांगा। करोड़ तेतीसा सच इशारे नाल उठावांगा। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान आप समझावांगा। धरनी धरत धवल धौल वेख गृह अन्तर, निरन्तर आपणा रंग रंगावांगा। चार जुग दा पिछला वाच के मन्त्र, गुर मन्त्र खोज खुजावांगा। लख चुरासी अन्दर तकां बसन्तर, हड्ड मास नाड़ी फोल फुलावांगा। नव सत्त खोज के थान थनंतर, पर्दा ओहला आप चुकावांगा। जिस ब्रह्मे दे कोटां बीते मनवन्तर, धुर संदेशा इक सुणावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगावांगा। सचखण्ड कहे मेरा खेल लोकमात, मता प्रभ दे नाल पकाईआ। शब्द गुरु गुरदेव सुणावे गाथ, बिन अक्खरां अक्खर दृढ़ाईआ। जिस दा जुग चौकड़ी खेल तमाश, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग कल वरताईआ। उस दा हुक्म सुनेहड़ा मिल्या ख़ास, शब्द अनादी नाद जणाईआ। जिस ने निरगुण निरगुण आत्म परमात्म पाउणी रास, बिन गोपीआं काहन नाच नचाईआ। जिस कलयुग अन्त मेटणी अंधेरी रात, सतिजुग सति चन्द चमकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु जो दस्स के गए भविक्ख्त वाक, वाक्या सब दा लए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सचखण्ड कहे मैं आवांगा उपर धरनी, धरत धवल धौल सुहाईआ। मैं इक्को तुक पढ़नी, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। इक्को पुरख अकाल दी ढहिणा सरनी, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। इक्को धर्म दी धार दस्सणी करनी, दीन मज़्हब ज़ात पात दा पन्ध मुकाईआ। इक्को मंज़ल दस्सणी चढ़नी, जिथ्थे विष्न ब्रह्मा शिव राह विच ना कोए अटकाईआ। इक्को तारी दस्सणी तरनी, दो जहानां पार लँघाईआ। इक्को गृह मन्दिर घर नेत्र खोल्हणा हरनी फरनी, बरनी वरनी ऊच नीच वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सचखण्ड कहे मैं आउणा सवा दस, पोह छब्बी रुत सुहाईआ। जन भगतां हिरदे अन्दर जाणा वस, वास्ता प्रभ दे नाल जुड़ाईआ। धुर दा अमृत देणा रस, बिन रसना जेहवा चखाईआ। उस वेले अवतार पैग़म्बर गुरु आपणे ख़ाली दस्सण हथ्थ, बिन हथ्थां हथ्थ उठाईआ। बिना सीस तों चरणी जावण ढह, पुरख अकाल तेरी वड वड्याईआ। साडा दीन मज़्हब दा चल सक्या मूल ना हट्ट, हटवाणे रोवण मारन धाईआ। कूड़ी क्रिया लग्गा फट्ट, ममता मोह रही कुरलाईआ। सिख मुरीद सानूं गए छड, बौहड़ी साडी तेरे अग्गे दुहाईआ। जिस तरह सचखण्ड

१०४३
२२

विच नहीं कोई अड्ड, अवतार पैग़म्बर गुरु वक्खरा नाम कलमा ना कोए ध्याईआ। मज़्ब दा निशाना सके कोई ना गड्ड, मनुक्ख वंड ना कोए वंडाईआ। असीं आदि तों तेरी जोत दी यद, अन्त तेरी जोत विच समाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले औह वेख साडी चौधवीं बीसवीं सदी दी आ गई हद्द, हदूद अग्गे रही ना राईआ। गोबिन्द होवे गद गद, मेरा ढईआ दए गवाहीआ। चार कुण्ट सृष्टी पीवे प्याले मदि, रसना रस ना कोए चखाईआ। कूड़ कल्पना लग्गी अग्ग, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। ओह वेख मुहम्मद रिहा भज्ज, चौदां तबक वाहो दाहीआ। ईसा नेत्र रिहा अड्ड, नूरे चशम ध्यान लगाईआ। मूसा ख़ाली वखावे हथ्थ, मस्तक हथ्थ हथ्थ नाल मिलाईआ। अवतार नेत्र बदल गए जग, रामा कृष्ना कृष्ना रामा सीता राधा संग ना कोए वखाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मानव होए बगले बप, अन्तर रंग ना कोए रंगाईआ। किसे दा रिहा ना सच्चा तप, तपीशर वेख लै थांउँ थाँईंआ। माया डस्सणी डस्स गई सप्प, साधां सन्तां डंग लगाईआ। हिरदा रिहा किसे ना पक्क, यक यार वाहिद ना कोए मनाईआ। तेरा खेल पुरख समरथ, तेरी बेपरवाहीआ। असीं सारे गए थक्क, दोए जोड़ सीस निवाईआ। असीं चाहुंदे तेरे सचखण्ड दवारे जाईए वस, वास्ता तेरे नाल रखाईआ। दीन मज़्ब साडा लेखा रहे ना वत, वतन बैठीए चाँईं चाँईंआ। तूं साहिब परमेश्वर पति, पारब्रह्म इक
१०४४ अख्वाईआ। मेरे सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझे यार अन्तर खुल्ल्हे १०४४
२२ किसे ना अक्ख, अक्खीआं सारे जगत रहे मिलाईआ। निरगुण धार सच्ची सरकार हो प्रतख, भेव अभेदा अछल अछेदा २२
चार वेदां तों बाहर दे समझाईआ। असीं सारे चाहुंदे तूं दो जहानां नौजवाना मर्द मर्दाना एकँकार सब दा होवें नेता, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सचखण्ड कहे मैं अज्ज रात नूं सब दा चार जुग दा पिछला दस्स देणा लेखा, बकाया रहिण कोए ना पाईआ। पुरख अकाल तेरा इक्को इक आदि जुगादि जुग चौकड़ी शब्द गुरु गुर बेटा, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार नर हरि नरायण सच, साची सच कार कमाईआ।

✪ रात नूं साढे नौ वजे ✪

सचखण्ड कहे सो पुरख निरँजण खेल महाना, हरि पुरख निरँजण आप कराईआ। एकँकार नूर नुराना, आदि निरँजण डगमगाईआ। अबिनाशी करता शाह सुल्ताना, श्री भगवान अगम्म अथाहीआ। पारब्रह्म वड बलवाना, परवरदिगार नूर इलाहीआ।

शब्दी शब्द खेल महाना, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। बिना छप्पर छन्न तों मेरा हक मकाना, चार दीवारी ना कोए वड्याईआ। सूर्या चन्द ना कोए निशाना, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु कोई ना नामा, सिफ्ती सिफ्त ना कोए सालाहीआ। सरगुण तत ना कोए पहचाना, माया वंड ना कोए वंडाईआ। ब्रह्म होए ना कोए प्रधाना, आत्म रंग ना कोए वखाईआ। रूप दिसे ना सीता रामा, राधा कृष्ना ना कोए वखाईआ। पैग़म्बर करे ना कोए सलामा, मन्त्र नाम सति ना कोए सुणाईआ। डंका फ़तिह वज्जे ना कोए दमामा, दामनगीर दामन फड़न कोए ना पाईआ। ना कोए नाम ना कोए कलामा, अक्खर वंड ना कोए वंडाईआ। ना कोई ज़िमीं ना कोए असमाना, मण्डल मण्डप ना कोए रुशनाईआ। ना कोई सुबह ना कोई शामा, घड़ी पल वक्त ना कोए जणाईआ। इक्को मेरा मेहरवान मेहरवान मेहरवाना, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सचखण्ड कहे मेरा दवार सुहञ्जणा, सोभावन्त रमणीक। जोत जगाए आदि निरँजणा, एका एकँकारा धुर रफ़ीक। जिस नूं कहिंदे गोपाल मूर्त मदना, सज्जणा आपणी हक रखे तौफ़ीक। ना घड़या ना भज्जणा, ना आसा मनसा कोए उम्मीद। जिस दा प्रकाश दीपक इक्को जगणा, जिस दी कर सके ना कोए तमहीद। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक, जिस दी आदि अन्त दी शनीद। सचखण्ड कहे मेरा जाणे कोए ना अन्त, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। मैनूं अक्खरां अक्खरां विच गा के गए अवतार पैग़म्बर सन्त, फ़कीर कल्मयां विच दृढ़ाईआ। मेरी महिमा करदे गए नाम वाले मंत, लेखा लिख के कलम शाहीआ। संदेशा मिलदा रिहा जीव जंत, धरनी धरत धवल वड्याईआ। किसे भेव ना पाया मेरा बोध अगाधा सतिगुर शब्द इक्को पंडत, दूजा नज़र कोए ना आईआ। मैं पुरख अकाल दीन दयाल अग्गे बिना बोल तों करां मिन्नत, बिना सीस सीस निवाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले सच दस्स मेरी केहड़ी सच्ची सिम्मत, कवण वंड वंडाईआ। किथ्थे मेरी लिमट, हद्द हदूद दे दृढ़ाईआ। किस तार नाल मैं रिहा चिमट, सहारा कवण दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सचखण्ड कहे मैं किहा पुरख अकाल, सहिज नाल दृढ़ाईआ। मेरे अन्दर आपणा दीपक बैठों बाल, आदि जुगादि तेरी रुशनाईआ। मेरे साहिब तेरी धर्मसाल, धर्म दवारा इक्को नजरी आईआ। जिथ्थे वज्जे कोए ना ताल, राग नाद ना कोए सुणाईआ। ना कोई पुछे मुरीदां हाल, मुर्शद रूप ना कोए वटाईआ। ना कोई सिख मुरीदां कदे पुछे केहड़ा तुहाडा सवाल, भेव अभेद ना कोए जणाईआ। ना कोई दिसे काल महाकाल, राय धर्म ना दए सज़ाईआ। चित्तर गुप्त लेखा ना सके वखाल, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ।

मैं वेखां खेल कमाल, करते तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। सचखण्ड कहे मेरी नमों नमों बन्दना, सजदा सीस झुकाईआ। मेरे साहिब सच बख्शंदना, रहमत मंगां चाँईं चाँईंआ। तेरा आदि अन्त अनन्दना, अनन्द अनन्द विच्चों दरसाईआ। मेरे वेंहदयां कोटन कोटि जुग बीते अवतार पैग़म्बर गुरु मंगदे गए मंगणा, तेरे अग्गे वास्ता पाईआ। पता नहीं तूं किस वेले किस नूं आपणे रंग विच रंगणा, की आपणी दया कमाईआ। मेहरवान महिबूब दस्सदे सतिजुग विच केहड़ा नाम वंडणा, पिछली वंड अग्गे रहे ना राईआ। केहड़ा मस्तक लाउणा चन्दना, दुरमति मैल धुआईआ। केहड़ा अवतार पैग़बर गुरु मातलोक घल्लणा, तन वजूद नाल सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। सचखण्ड कहे प्रभू मेरी अरदास, बेनन्ती दयां दृड़ाईआ। की करना खेल तमाश, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। किस बिध धरनी उत्ते पैणी रास, मण्डल मण्डप नाच नचाईआ। की लेखा जाणे सर्ब गुणतास, पड़दा ओहला दे उठाईआ। की अवतार पैग़म्बर गुरु आए आख, भविक्खतां विच तेरा राग सुणाईआ। किस बिध प्रगट होवें साख्यात, साहिब स्वामी आपणी दया कमाईआ। उठ आपणी सृष्टी दी दृष्टी विच मार झात, अन्तर निरन्तर वेख वखाईआ। सचखण्ड कहे प्रभू बौहड़ी किसे दा खुल्ह्या नहीं ताक, निज नेत्र अक्ख ना कोए रुशनाईआ। जेहड़े तेरे मानव प्यार मुहब्बत विच हँस बुद्धी होए काग, काग हँस ना कोए रूप बदलाईआ। दरोही तेरे नाम कलमे दा जगया ना कोए चराग़, चरागाहां करे ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। सचखण्ड कहे प्रभू औह वेख मेरा घराना, तैनूं दयां जणाईआ। जिथ्थे पवण पाणी नहीं कोई निशाना, अग्नी हवन ना कोए तपाईआ। तेरा जोती जोत नूर महाना, निरगुण निरवैर तेरी रुशनाईआ। एथे सब दा इक मकाना, पैग़म्बर गुर अवतार वंड ना कोए वंडाईआ। तूं सब दा मालक अन्तरजामा, अन्तरजामी बेपरवाहीआ। किरपा कर निरगुण निरवैर नर लोकमात प्रगट कर आपणा जामा, ज़िमीं असमान खोज खुजाईआ। कूड़ी क्रिया मेट दे शामा, शमा नूर जोत होए रुशनाईआ। हक दा हक दएं पैग़ामां पैग़म्बरां तों बाहर कर पढ़ाईआ। सूरबीर आया विच मैदाना, दो जहानां डंक वजाईआ। तेरा खेल आदि जुगादि विष्नूं भगवाना, भगवन तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। सचखण्ड औह तक नज़ारा, सो पुरख निरँजण रिहा दृढ़ाईआ। तेरा मुहब्बत वाला प्यारा, प्रेमी प्रीतम तोड़ निभाईआ। जिस दा सब ने कीता इज़हारा, सिफ्तां विच सालाहीआ। ओह साहिब तेरा निरँकारा, निरवैर इक अख्वाईआ। कागद कलम सिफ्त तों बाहरा, कल्मयां विच कदी

ना आईआ। जिस दा हुक्म वरते दो धारा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण कार कमाईआ। अलाही नूर परवरदिगारा, महिबूब इक अख्वाईआ। तेरे लेखे दी पावे सारा, लहिणा तेरे हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सचखण्ड कहे प्रभू मेरी इक नमस्ते, नमो नमो सीस झुकाईआ। मैनूं आपणा भेव दस्स दे, पड़दा ओहला रहे ना राईआ। जिस नाल सारे घराणे रहिण वसदे, वसल आपणा यार देणा कराईआ। औह वेख अवतार पैग़म्बर गुरु मेरे नाल नस्सदे, भज्जण चाँईं चाहींआ। जिन्हां ने झगड़े पाए तत अट्ठ दे, नव सत्त दर दर बणाईआ। वणजारे बण गए दीन मज़्हब दे हट्ट दे, कायनात खोज खुजाईआ। दूर दुराडे तैनूं रहे सद्द दे, होके नाम कलमे वाले लगाईआ। नेत्र उठा के रहे तकदे, दूर दुराडे खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच वर, दर तेरे सीस निवाईआ। सचखण्ड कहे प्रभू मैं तैनूं झुकां, झुक झुक सीस निवाईआ। इक अगम्मी ख़बर पुछां, सहिज नाल दृढ़ाईआ। तूं शब्द गुरु नूं क्यों किहा उठ मेरया पुत्ता, सुत दुलारे दयां वड्याईआ। क्यों अवतार पैग़म्बर गुरुआं दा वेला चुक्का, चेतन सब नूं दए कराईआ। मैनूं इक्को इक दुखा, बौहड़ी सदी चौधवीं मेरे दवारे वड़न कोए ना पाईआ। किसे ने मदि पीती किसे ने खाधा पान किसे ने मुख लगाया हुक्का, तेरा हुक्म मन्नण वाला नज़र कोए ना आईआ। किसे ने मूंड मुंडाया, किसे ने लब कटाया, किसे ने सीस वधाया, किसे ने वधा लईआं मुच्छां, मुश्किल हल्ल ना कोए कराईआ। मैं वेख्या जो झगड़ा सो झगड़ा काया बुता, बुतख़ान्यां करे ना कोए सफ़ाईआ। मैं होर तक्कया सृष्टी तेरा नाम जपदी नाल बुल्लां बुट्टां, हिरदे सक्या ना कोए वसाईआ। सचखण्ड कहे मेरा जीअ करदा हुण मैं आप उठां, जे कोई मेरे कोल उत्ते नहीं आउंदा ते मैं लोकमात जा के वेखां तेरी सृष्टी दी दृष्टी जेहड़ी तेरा नाम गई भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। सचखण्ड कहे अवतार पैग़म्बर गुर करो त्यारी, त्रैगुण अतीते लओ अंगड़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव नाल रलाओ इक्ठी हो जाए यारी, यराना इक बणाईआ। इक्ठे करो इक्को वारी, वारता पिछली देणी भुलाईआ। धरनी उत्ते धवल उत्ते धौल उत्ते बोलो इक जैकारी, नाअरा इक सुणाईआ। तूं मालक साडा बेऐब परवरदिगारी, जल्वागर तेरी रुशनाईआ। साडी दीन मज़्हब नालों टुट्ट गई यारी, यराना तेरे नाल लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा इक सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर करन सलाह, सचखण्ड विच आपणा मता बणाईआ। चलो इक मल्लीए राह, रहिबर तक्कीए बेपरवाहीआ। जिस नूं राम कृष्न कहि के आए खुदा, वाहिगुरु सतिनाम दृढ़ाईआ। होणा नहीं उस तों जुदा, वक्खरी वंड ना कोए वंडाईआ।

उहदे हथ्थ सब दी बांह, पुश्त पनाह सब दे हथ्थ टिकाईआ। जिस नूं सारे कहिंदे वाहवा, सो मालक अगम्म अथाहीआ। इक डर अग्गे दीन मज़्ब दा लग्गणा नहीं कोई दाअ, दाअवेदार ना कोए अख्वाईआ। साडा शब्दी गुरु गुर गवाह, शहादत अन्त दए भुगताईआ। जिस दा सारयां ने सिफ्तां विच गाया नाँ, असली नाम हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। जिस नूं कहिंदे आए पिता ते माँ, मालक नूर खुदाईआ। उन की कीता ओह गुर अवतार पैग़म्बरां तों झगड़ा पवा के सूर ते गां, मानव मानव नाल दिते लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सचखण्ड कहे मैं की कहिणा, प्रभ कहि के की सुणाईआ। मैनूं ऐं जापदा अग्गे वास्ते मेरे अन्दर किसे नहीं बहिणा, लोकमात विच्चों कोए ना आईआ। तेरा उसारया होया प्यार दा मन्दिर बिना ढाहे तों ढहिणा, रंग महल्ल ना कोए सुहाईआ। तेई अवतार पैग़म्बर गुर इन्हां इक्को दस्सया तेरा भाणा सहणा, दूसर सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सचखण्ड कहे औह तक मेरा नाम मुकामे हक, हक हक दा नाअरा दिता लगाईआ। दरगाह साची तेरा दवारा पक्क, पैग़म्बर आए सुणाईआ। क्यों होया सब नूं शक, शिकवे सके ना कोए मिटाईआ। प्रभ एह तेरा दवारा दीन मज़्ब दा बण गया हट्ट, वणजारे वक्खरा वक्खरा सौदा रहे टिकाईआ। ओह वेख हज़रत ईसा दा कलाक करे टक टक, आवाज़ आपणी रिहा जणाईआ। मुहम्मद रिहा नट्ठ, भज्जे वाहो दाहीआ। मूसा रिहा ढट्ठ, नैण मूंद अक्ख वखाईआ। तेरा खेल पुरख समरथ, वड तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर ठांडा इक जणाईआ। सचखण्ड कहे प्रभ तेरा खेल अपारा, अपरम्पर नज़री आईआ। दर खड़े गुरु अवतारा, पैग़म्बर सोभा पाईआ। दर दरवेश होण भिखारा, मंगण चाँईं चाँईंआ। इक्को वस्त दे थारा, थिर आपणी दया कमाईआ। की खेल तक्कीए संसारा, संसा रोग ना कोए मिटाईआ। चारों कुण्ट धूंआँधारा, अंध अंधेरा गया छाईआ। साडा चले कोए ना चारा, चारों कुण्ट दुहाईआ। राह तकदे तेरा कलि कल्की अवतारा, अमाम अमामा हो सहाईआ। तेरा सुणीए इक जैकारा, इक्को सिफ्त सालाहीआ। सब दा ख़ाली भरीं भण्डारा, भरपूर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक बेपरवाहीआ। सचखण्ड कहे प्रभू गुर अवतार पैग़म्बर आए नेड़े, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। वसे तेरे धर्म धार दे खेड़े, नगर नर नरायण मिले वड्याईआ। जिथ्थे एका दूआ नहीं झेड़े, दुतीआ भाउ ना कोए वखाईआ। खेल तकण तेरे मेरे, रूप अनूप इक्को सोभा पाईआ। झगड़े रहे ना गुरु गुर चेरे, मुर्शद मुरीद वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को धर्म धार दे बेड़े, नईया नौका

ना कोए रखाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आए दवारे तेरे, दर तेरा इक्को नज़री आईआ। साहिब सुल्तान कर दे मेहरे, मेहरवान होणा सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। पुरख अकाल कहे अवतार पैग़म्बर गुरु सारे इक्को वार मारो झाकी, निगह चारों कुण्ट उठाईआ। तुहाडे हुन्दयां क्यों होई अंधेरी राती, कलयुग आपणी कल वरताईआ। सूरमे हो के हथ्थ मारो उपर छाती, छत्रधारी रिहा दृढ़ाईआ। क्यों नहीं आत्मा दी घर घर जगी बाती, अंध अंधेर मिटाईआ। क्यों नहीं बजर कपाटी पाटी, पड़दा सक्या ना कोए खुलाईआ। क्यों ना अन्दर मुकी वाटी, नव दर दा डेरा ढाहीआ। क्यों ना अमृत मिल्या बूँद स्वांती, आबे हयात ना कोए पिलाईआ। क्यों ना सुरती होई इकांती, यकसूई रंग रंगाईआ। क्यों ना मंज़ल चढ़े घाटी, पिछला पन्ध मुकाईआ। केहड़ा कलमा केहड़ा नाम केहड़ी तुहाडी हाटी, हटवाणिउ दयो वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो वेखो नौजवानो, नौ खण्ड पृथ्मी ध्यान लगाईआ। दीनां मज़्हबां दे मेहरवानो, पड़दा लओ चुकाईआ। धर्म दे गड्डण वाले निशानो, निशाने तक्को थांउँ थाँईंआ। कथण वाले करन कलामो, कायनात खोजो चाँईं चाँईंआ। फेर तक्को मकबरयां ते मढ़ी मसाणो, कवण पल्लू दए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि करता आप जणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर फिरे चार चुफेरे, भज्जे वाहो दाहीआ। ओ तुहाडे हुन्दयां वेखो कलयुग ने ला लए डेरे, बैठा डेरा लाईआ। शरअ मुहम्मद दी करे ना कोए नबेड़े, राम रामा रूप ना कोए बणाईआ। नानक तपे दा रंग ना आवे नेड़े, दूर दुराडे भज्जे वाहो दाहीआ। काया अग्नी सब दी तपे विच खेड़े, साढे तिन्न हथ्थ रही जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैग़म्बर भज्जो नाल ज़ोर, छेती छेती पन्ध मुकाईआ। वेखो तुहाडे दीनां मज़्हबां दे घर विच लग्गे चोर, बैठे आसण लाईआ। प्रेम दी कट दिती डोर, गंढ सके ना कोए पवाईआ। मन सके कोए ना होड़, होड़ा नाम ना कोए लगाईआ। सुरती शब्द ना सके जोड़, मन का मणका ना कोए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण आओ नट्ठीए नाल बल, ब्रह्मण्ड खण्ड चक्र लगाईआ। कदमां नाल नहीं जाणा चल, तन वजूद ना कोए रखाईआ। जिधर तक्कया ओधर कपट छल, हँकार विकार विच सृष्टी दृष्टी दए दुहाईआ। नेत्र रोवे अठसठ जल, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रोवे मारे धाहीआ। फल दिसया ना किसे काया डल, पत्त टहिणी रही कुरलाईआ। आत्मा परमात्मा गई किसे ना रल, सच्चा घर

ना कोए वसाईआ। जिधर वेख्या ओधर लोभ मोह हँकार दा फिरे दल, भज्जे वाहो दाहीआ। दीन मज़्हब वेखी डूँग्घी डल, जिस विच्चों बाहर सके ना कोए कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस निवाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण सुण साचे साडे मालक, सच दईए दृढ़ाईआ। असीं सब ने किहा तूं साडा प्रितपालक, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। हुण क्यों करदा एं निंद्रा आलस, पड़दा ओहला दे उठाईआ। असीं चाहुंदे सारे मानव हो जाण रूप ख़ालस, ख़ालसा रूप तेरा तेरे विच समाईआ। सानूं मज़्हब दी अज्ज तों रही कोए ना लालस, झगड़ा पिछला दिता चुकाईआ। सच दी हक दी तेरे नाम दी नाम अदालत, अदल इन्साफ़ इक कराईआ। कूड़ी क्रिया सब दे अन्दरों कढ दे जहालत, जहां तहां हो सहाईआ। मेहर मुहब्बत दी बख़्श दे न्यामत, नर नरैण आपणा रंग दे रंगाईआ। पर साडा इक वास्ता जे किते सदी चौधवीं दी टाल देवें क्यामत, क्यामगाह तेरा दर इक्को नज़री आईआ। तूं आदि अन्त दा सही सलामत, शाह पातशाह शहिनशाह सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बरो वेखो खेल सूरा सरबंगा, हरि करता आप कराईआ। जेहड़ीआं तुसीं चार जुग मंगीआं मंगां, मांगत हो के झोली डाहीआ। जिस नूं समझे कोए ना पंडा, बन्दा बन्दगी विच ना कोए दृढ़ाईआ। जिस दा खेल पुरख अकाल संदा, दूजी सनद हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। जिस दे कोल लेखा चंगा मंदा, चुरासी वेखे थांउँ थाँईंआ। उस दे नाम दा इक्को सतरंग दा डण्डा, डण्डावत सब दी दए बदलाईआ। मनुश अन्दरों रहिण ना देवे कोए गंदा, अन्दरों अन्दर करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। पैग़म्बर कहिण आवाज़े अज़ू, आज़ीनो अज़म ज़ौके ज़निश चशमे नज़ू खुदाए ज़िगत आफ्ताबे नज़ूना गोशे शमी नूरे रहीं तीरे ज़मीं तोखे तबा ज़नीते रुबा मुहम्मदे ख़ुदा दस्ते दुआ ज़हीरे ज़वा गुज़शते कज़ी बहिशते मज़ी चाने सतू, ज़ाने महू रसूले ज़बू नबीए दहू कालिसता कनुंद शब्दे मृदंग नविस्ते नकी ज़हूरे मबू तबरेज़ नूह, सीने सरमद दस्ते ज़वद अववव वव तेरा मज़ू, मेरे ख़ुदा तेरा ज़हूर बेनज़ीर दरस कदों होणा शुरू, शरअ दे मालक शरअ शरअ विच्चों बदलाईआ। मेरे हक हक दे गॉड, गाईड तेरी इक दुहाईआ। तेरे हैंड विच हथ्थ विच इक्को राड, रैड रंग दे वखाईआ। तेरा हुक्म हक कि हारड, जिस नाल हैंडज़ अप सब दे दएं कराईआ। मुहम्मद कहे ओह मालक इक्को वाहिद, मालक धुरदरगाहीआ। जिस नूं लभ्भदे कोटन कोटि सन्त साध, बैठे धूंणीआँ ताईआ। सुरती विच सारे रहे जाग, जागरत वेखण थांउँ थाँईंआ। जिस दा ब्रह्मण्ड खण्ड दो जहान शब्दी शब्द नाल आबाद, आबादकारी आत्मा परमात्मा

लई बणाईआ। ओ जुग बदलणा उस दा रिवाज, आदि अन्त दी रीती चली आईआ। जिस ने सब नूं अन्त दे के जुआब, जुआब तल्बी मंगणी थांउँ थाँईंआ। किसे दी जुरत पैणी नहीं सीस ते रख सके कोए ताज, तख़्त निवासी सारे ख़ाक मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अवतार पैग़म्बर गुरु गुरदेवा, देव देवा रिहा सुणाईआ। तुसां सब ने बड़ी चंगी कीती सेवा, चार जुग मेरा सिफ्तां वाला ढोला गाईआ। नाम जपाया नाल रसना जेहवा, बुल्लां नाल बुल्ल दिते टकराईआ। किसे फड़ के बहाया नहीं सचखण्ड धाम निहचल निहकेवा, निज गृह डेरा कोए ना लाईआ। सच दस्सो तुहाडे मुरीदां सिक्खां नूं तुहाडे नाम दा केहड़ा केहड़ा मिल गया मेवा, जिस दा रस चख के शांती विच तुहाडे विच गए समाईआ। कोई कौस्तक मनीआं दा लाउणा नहीं थेवा, तिलक ललाटी जगत ना कोए वखाईआ। कोई लिबास नहीं पहरेवा, तन भूषण नाल बदलाईआ। प्यार ते मुहब्बत वाली दस्सो सेवा, सेवक सेवा विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा दए उठाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू तेरा हुक्म बड़ा जबरदस्त, जाबर इक्को नज़री आईआ। असीं तेरी महिमा लिखदे रहे ते साडे कम्बदे रहे हस्त, हस्त हस्त नाल बदलाईआ। तेरी मध ख़ुमारी विच रहे मस्त, मस्ती विच तेरा ढोला गाईआ। कदी दस्सया उत्ते अर्श कदी वेख्या उत्ते फ़र्श,
१०५१ अर्श फ़र्श तेरा रूप नज़री आईआ। बौहड़ी, दुहाई, ख़ुदा तूं साडे उत्ते कीता नहीं तरस, रहमत वाली निगह ना कोए १०५१
२२ उठाईआ। किसे नूं मन्दिर वाड़या किसे नूं मसीत वाड़या किसे नूं वाड़ दिता चर्च, चम्म दे चम्म दृष्टी वाले झगड़े दिते २२
पाईआ। आपणे नाम दे थोड़े थोड़े पल्ले दे के ख़र्च, ख़र्चखाह जगत वाले दिते वखाईआ। साडे सिरों अजे तक लथ्था नहीं कर्ज़, मकरूज़ हो के दईए दुहाईआ। असीं चाहुंदे तेरा इक्को नाम कलमा तेरे सिफ्त दी इक्को होवे तर्ज़, दूजा तराना ना कोए सुणाईआ। पुरख अकाल कहे अवतार पैग़म्बर गुरुओ दस्सो मेरे सचखण्ड विच केहड़े कराए दरज, दरजेवार दयो दृढ़ाईआ। तुसां किस दी बेनन्ती मंज़ूर कीती अर्ज़, आरज़ू आपणे विच टिकाईआ। किस दी जन्म मरन दी मिटाई मरज़, चुरासी दा पन्ध मुकाईआ। किस दी शरअ दी मिटी ग़रज़, गरजे कि मेरा इक्को नूर दिता चमकाईआ। वेखो आपणे लेखे दी पुट्ठी कि सिध्धी नरद, नर नरायण धुर दा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला मेले सहिज सुभाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू असीं आदि तों दस्सया औह वेख तेरी इक्को जगदी जोती, दीपक थालीआं वाले देण गवाहीआ। तेरा नाम अगम्मा माणक मोती, इस दी कीमत जगत ना कोए चुकाईआ। तेरा तन वजूद सोहणा सुहञ्जणा सति सरूप दी कोठी, काया गढ़ दिती सुहाईआ। पर तूं बड़ा चालाक आप चढ़ ग्यों उपर

चोटी, चोटया नज़र किसे ना आईआ। नाले नाम दिता पैग़ाम दिता कलमा दिता ईमान दिता नाले विच मन दी मनसा पा दिती खोटी, खरे खोटे इक्को रंग रंगाईआ। साडी दुहाई हुण कलयुग दी उमर लँघ गई चोखी, चार लख बत्ती हज़ार पूर ना कदे कराईआ। अजे ते थोड़ा समां बीत्या तेरी पढ़े कोए ना पोथी, पुस्तकां बग़लां विच टिकाईआ। जे कोई पढ़दा ते पढ़दा कारन रोज़ी, रोज़े रख के तेरा ध्यान ना कोए लगाईआ। जे कोई जगत जिज्ञासू बण गया जोगी, जोगीशर हो के भज्जे वाहो दाहीआ। पर तेरा खेल तूं ठाकर धुर दा मौजी, मजलस आपणी ना किसे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। सचखण्ड कहे मैं वेखां अगली पिछली कूच, कूचा गली वेख वखाईआ। किथ्थे मेरे मालक दा मिले सरूप, रूप अनूप सबर सबूरी नजरी आईआ। मैं वेखणे पंज तत कलबूत, काया काअबे खोज खुजाईआ। ... ...। मैं छेती कदम लवां पुट्ट, भज्जां वाहो दाहीआ। उत्तर पूरब पच्छम दक्खण वेखां गुट्ठ, चारे कुण्टां फोल फुलाईआ। जां वेखां प्रभू दे प्यारे दुलारे पंज तत दे पुतले इन्सान साचे बणे मूल ना सुत, सुत्तयां नींद ना कोए खुल्हाईआ। किसे दी चोटी किसे दी गुत्त, किसे ने बोदी दिती हिलाईआ। सचखण्ड कहे अवतारो पैग़म्बरो गुरु सहिबानो मैं किस नूं लवां पुछ, किस दे अग्गे वास्ता पाईआ। ओए क्यों तुहाडे सब दे हुन्दयां कलयुग कूड़े ने पाई लुट्ट, लुटेरा बण के सब नूं लुट्ट पुट्ट गया खाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण सोहणी सुहञ्जणी आई रात, रुतड़ी प्रभ दे नाल महकाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले मेहरवान महिबूब पंजां लिखारीआं बख्श दे इक इक कलम दवात, कलमा कायनात दे बदलाईआ। साडा पूरा होवे भविक्ख्त वाक, अग्गे चले ना कोए चतुराईआ। ना कोए सज्जण रहे ना साक, सगला साक ना कोए बणाईआ। नाता तुट जाए लोकमात, मात्रा भूमी दए गवाहीआ। तेरे अग्गे बेनन्ती पुरख अबिनाश, अबिनाशी करते दईए दृढ़ाईआ। लेखे ला दे पिछला खाधा पीता ते सब दा स्वास, अगला समां आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस निवाईआ। ओह मेरे परवरदिगार तेरे अग्गे मेरा सजदा, सलाम हक हक सुणाईआ। तूं मालक मेरे घर दा, गृह मन्दिर तेरा नज़री आईआ। बिना तेरी मंज़ूरी तों तेरी हज़ूरी तों तेरी ज़रूरी तों मेरे गृह कोए ना वड़दा, सचखण्ड पुज्जण कोए ना पाईआ। मैं वेख्या लहिंदा चढ़दा, दक्खण पहाड़ अक्ख उठाईआ। कोटन कोटि जगत जीव जहान मरदा, मर जम्मे जम्मे मर जूनीआं विच आपणा चक्र लगाईआ। बौहड़ी तेरे बिना नहीं कोई तरदा, तारनहार सिर हथ्थ ना कोए रखाईआ। तूं जो चाहें सो करदा, करता पुरख बेपरवाहीआ।

तेरा रूप नरायण नर दा, नर हरि तेरे हथ्थ वड्याईआ। तैथों अवतार पैग़म्बर गुरु सदा सदा डरदा, अग्गे सिर ना कोए उठाईआ। तेरे कलमे सारे पढ़दा, पढ़ पढ़ रहे सुणाईआ। वेखणा खेल अन्त कलयुग कल दा, कल काती दए खपाईआ। तेरा खेल तकणा निहचल धाम अटल दा, अटल पदवी तेरी बेपरवाहीआ। कुछ लेखा पूरा कर दे राजे बल दा, जो बावन गया समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सचखण्ड कहे मेरी दुआ, दस्त दस्त सरनाईआ। मेरे मालक दिलरुबा, रहमत हक कमाईआ। मुहब्बत दा दे दे मज़ा, मज़ाहमात अवर रहे ना राईआ। तेरे नूर दे विच नेड़ ना आवे कज़ा, काज़ी मुल्लां शेखां दा झगड़ा दे चुकाईआ। तेरे दवार उत्ते सब दी सांझी जगह, इक्को घर देणा बणाईआ। इक्को होवे सारयां दा अग्गा, आगमण विच सब नूं मिले वड्याईआ। तेरा रूप सूरा सरबगा, सति सरूप तेरा खेल इक्को सोभा पाईआ। तेरे हुक्म अन्दर विष्न ब्रह्मा शिव बध्धा, गुर अवतार पैग़म्बर बैठे सीस निवाईआ। असीं सुणना चाहुंदे तेरे नाम दी इक्को सदा, सदा सब नूं देणी सुणाईआ। तूं मालक इक्को वड्डा, वड्डी तेरी वड्याईआ। क्यों नारद ने ख़ाली वखा दिता डब्बा, जो बधक हथ्थ फड़ाईआ। जिस दे पिच्छे अक्खर लिख्या "बब्बा", बाबल नूं मिलण कोए ना पाईआ। ना मालक किसे नूं लभ्भा, जगत खोजे थांउँ थाँईंआ। सारे वेखदे किथे कलयुग किथ्थे उस दी हद्दा, किथे नानक तपा धूंणीआँ बैठा ताईआ। किथे अक्खर पप्पा, जिस ने सब नूं करना रफ़ा, दुनिया दा बदल देणा सफा, मलेछां सफ़ा देणी उठाईआ। इक्को नाम दा देणा नफ़ा, किसे ते होणा नहीं ख़फ़ा, मेहर नज़र इक उठाईआ। पुरख अकाल दी इक्को धारा ते इक्को लग्गणी दफ़ा, जिस दी तरमीम अग्गे ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडी हदीस, हज़रतां दे हज़रत सीस निवाईआ। असीं चाहुंदे वर्ल्ड विच हो जाए पीस, पीस पीस दुनिया रहिण ना पाईआ। नमो नमो जगत जगदीश, गॉड गुड गाईड इक्को नज़री आईआ। झगड़ा मुक जाए तीस बतीस, छतीस तेरा नाम सिफ्त सालाहीआ। तूं आदि दा बीस इकीस, दूए दा ज़ीरो ज़ीरो दा एका सोभा पाईआ। तेरी इक दी इक नाल हो जाए प्रीत, प्रीतम इक्को मिल के वज्जे वधाईआ। फेर कलयुग ने मार दिती चीक, चीक चिहाढ़ा दिता पाईआ। ओधरों गोबिन्द ने किहा मैनूं तेरी उडीक, तूं मालक धुरदरगाहीआ। राम ने किहा मैथों सीता ने पुछिआ ठीक, बण विच कीती हाल दुहाईआ। कृष्न ने राधा नूं किहा वेख लै ला के नीझ, कलयुग अन्तिम अक्ख खुल्हाईआ। हज़रत मूसा ने किहा उस दी हक तौफ़ीक, जो तोहफा घर घर दए पहुंचाईआ। ईसा ने जिस वेले गल विच पाई सलीब, हथ्थ दोवें दिते फैलाईआ। मुहम्मद ने नक्क

नाल कढी लीक, लाईन ऐन दिती लगाईआ। नानक ने सतिनाम दा गा के गीत, संदेशा दिता सुणाईआ। गोबिन्द ने फ़तिह डंका वजा के किहा ओह मालक ते तुसीं सारे उस दे घर दे वसनीक, दूजा नज़र कोए ना आईआ। असीं सारे मंगण वाले भीख, ख़ाली झोलीआं रहे वखाईआ। फेर पुछो कलयुग दे अन्त इक शब्द गुरु ने सब दी करनी तस्दीक, दूजी शहादत ना कोए भुगताईआ। जिस ने सारी दुनिया दा सांझा करना गीत, ढोला गोबिन्द वाला गाईआ। उहदा सदी चौधवीं दा वक्त ठीक, ठाकर हो के नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु कहिण कलयुग बड़ा चंगा, सूरबीर मात अख्वाईआ। जिस उलटा वहिण वहाया गंगा, गंगोतरी दए दुहाईआ। मिल्या रहिण नहीं दिता बन्दे नाल बन्दा, बन्दगी वाले बन्दगी वाल्यां नाल दिते लड़ाईआ। किसे हथ्थ डांग फड़ाई किसे दे हथ्थ फड़ाया टम्बा, दोवें रूप बदलाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार दा चला के मम्बा, मुहब्बत प्रभ दी दिती तुड़ाईआ। क्यों उस ने किहा मेरा पैंडा बड़ा लम्बा, चार लख बत्ती हज़ार मुकण कदे ना पाईआ। जे मेरा किक्कर दा डण्डा आ जाए चल के विच्चों छम्बा, ते जम्मू वाले मेरी शहादत देण भुगताईआ। क्यों बल ने संदेशा दिता सी तेरां सौ सतासी रिषीआं बावन ने हथ्थ मारया उत्ते कंधा, हलूणा दिता लगाईआ। ओ कलयुग अन्तिम किसे ने धोती पहनणी किसे ने तहिमत पहनणी किसे ने पहनणा तम्बा, ताबयादार नज़र कोए ना आईआ। उस वेले किसे ने किसे नूं लाउणा नहीं अंगा, अंगीकार ना कोए अख्वाईआ। सदी चौधवीं दा होणा कन्ढा, कन्ढी बैठे सारे रोवण मारन धाईआ। मन मन होणा दंगा, बुद्धी बुद्धी नाल टकराईआ। खण्डे नाल खड़कणा खण्डा, खड़ग खड़ग नाल छुहाईआ। झगड़ा पैणा जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज नेत्र नैणां नीर वहाईआ। कलयुग कहे मैं सब नूं करना रंडा, आत्मा परमात्मा मिलण वाला नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। सच कहे मैं वेख्या सच दा मुनारा सच, सच विच समाईआ। सच विच्चों सच प्रगटे संसार विच संसार दा सच, संसार नज़र किसे ना आईआ। फेर तक्कया काया माटी कच्च, जिस नूं कंचन गढ़ कहि के गए गाईआ। जां चंगी तरह वेख्या मन मनुआ रिहा नच्च, अट्ठे पहर भज्जे वाहो दाहीआ। जिस ने भुलाया परमेश्वर पति, आत्मा परमात्मा पति पत्नी मेल ना कोए कराईआ। जिस तरह स्वामी देव मूर्ती ने दस्सया इक्को उत्ते रखणा हथ्थ, दूजे उत्ते अक्ख ना कदे उठाईआ। ओ दुनिया वाल्यो वेखो पतिपरमेश्वर पुरख अकाल दीन दयाल धुर दा खुदा मन्नणा पक्क, दूज्जयां नूं सजदे कर कर के ऐंवे वक्त ना लैणा गंवाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिंदे चलीए भज्जीए ते ज़ोर नाल पईए नट्ठ, आपणा पन्ध मुकाईआ। वेखीए

कलयुग केहड़ा जिस ने साडयां मुरीदां सिक्खां नूं मारी सट्ट, आपणा बल धराईआ। टापूआं नूं जाईए टप्प, समुंद सागर ना कोए अटकाईआ। पहाड़ां नूं जाईए छड, चोटी अग्गे ना होर अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे हत्थ सब दी वड्याईआ। तूं साडयां सिक्खां मुरीदां नूं साडे नाम दा लालच पा दिता लै लओ पैस्सयां वाला भुग्गा, बिना पैस्सयां तों साडा नाम ना कोए ध्याईआ। तूं बड़ा शैतान तूं खेल कीता गुज्झा, आपणी रमज़ अन्दरे अन्दर लगाईआ। ओह साडा उजड़न लग्गा वसदा झुग्गा, साढे तिन्न हत्थ जगत काया डेरा लाईआ। तूं समझ ल्या पुरख अकाल दा अन्तिम इक्को मुद्दा, जो मुद्दतां तों आपणा भविक्खत रिहा सुणाईआ। मेरे अन्त अख़ीर बेनज़ीर इक्को शब्द सतिगुरु नूं कहिणा पुत्ता, दूसर गोद ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ। कलयुग कहे अवतार पैग़म्बर गुरु सहिबानों मैं सीस निवाउंदा, बल्ले बल्ले बल्ले तुहाडी वड्याईआ। इक वास्ता तुहाडे अग्गे पाउंदा, सतिजुग आया सुणाईआ। मेरा खेल मेरे प्रभू नूं भाउंदा, जिस मेरी सेवा दिती लगाईआ। मैं चाहुंदा तुहानूं सब नूं इक दूजे नाल लड़ाउंदा, पल्ला सके ना कोए छुडाईआ। ओ वेखो मैनूं धुरदरगाहों हुक्म आउंदा, हुक्मी हुक्म ल्या सुणाईआ। हज़रत मुहम्मद ईसा नाल अक्ख मिलाउंदा, सैनत नाल जणाईआ। मेरा सदी चौधवीं दा वक्त मुकाउंदा, कौण संदेशा दए अलाहीआ। दोहां दा इक्को रंग इक्को संग इक्को जेहा कदम उठाउंदा, अग्गा पिछा ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। ईसा कहे मुहम्मद वेख लै ख़ाकी बदन, तन वजूद ध्यान लगाईआ। मेरा जी करदा हुण झगड़ा छेड़ देवां विच अदन, अदल इन्साफ़ इक वखाईआ। ईसाई मुस्लिम इक दूजे नूं करन कत्ल, शरअ शरअ नाल दयां टकराईआ। जिथ्थे किसे दा चले कोए ना यतन, यथार्थ आपणा हुक्म वरताईआ। सब नूं कर देवां बेवतन, बेवतनां घर ना कोए रखाईआ। मुहम्मद किहा मसीह मुजीह तज़ीह रज़ीह अज़ीह कुज़ीह मेरा परवरदिगार आपे कातिल मक्तूल आपे करे कत्ल, कत्लगाह आपे दए बणाईआ। धाम रहे ना कोए मुक्दस बैतुल, मक्का काअबा रोवे मारे धाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। खुदा कहे मेरे नबी नज़ूले, कदल गमज़ा रसूलां सदाए चीनाज़गी, चशमे मज़ल, तख्ते खबहू, मुहम्मदे रज़ूह, चौदां तबक दहू, दरोही तेरा नाम नज़री आईआ। झट नानक आ गया कहे केहड़ा ते कौण कोई, कहि के रिहा सुणाईआ। जिस ने सृष्ट सगली मोही, मुहब्बत जगत विच रखाईआ। मुहम्मदा जिस दे नाम दी पवे दरोही, दोहरी आपणी कार वखाईआ। उस दे बिना मिलणी किसे नहीं ढोई, ढोआ देवण कोए ना आईआ। हुण वेला सारे अकट्ठे कर

लईए अर्ज़ोई, बेनन्ती इक सुणाईआ। साडी अन्तिम अन्त होई, होका दे के दईए जणाईआ। अमृत धार जाए ना चोई, रसना रस ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। मुहम्मद किहा मैं निगह मारां ज़िमीं असमानां, चौदां तबक बाहर ध्यान लगाईआ। मैं वेखां कृष्ना कान्हा, गोपाल गऊआं फेरे चाँईं चाँईंआ। मैं वेखां राम दा रामा, राम राम दा पड़दा लाहीआ। मैं फेर तक्कया सतिनामा, पड़दा पड़दयां विच्चों उठाईआ। फेर वेख्या आपणा अमामा, जो जल्वागर नूर इलाहीआ। मैं सजदे तों बिना सज्जण हो के कीती सलामा, सीस दिता झुकाईआ। इक बेनन्ती अरदास कीती तेरे अग्गे दा की अकदामा, मुकाम किथे लैणा लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। सचखण्ड कहे प्रभू मैं वेखी लोकमात दी टक्कर, सति असति नाल देणा टकराईआ। जिस ने सारे कीते फट्टड़, घाउ धायल दिता लगाईआ। जिज्ञासू जीव कीते कटड़, कट्टे वच्छे खा के आपणा झट रहे लँघाईआ। तेरे प्यार दा पढ़े कोई ना पत्र, पत्रे ग्रन्थां वाले फोल फुलाईआ। तेरी निरअक्खर धार वाली लभ्भी किसे ना सतर, सतरां उत्ते उँगलां रहे चलाईआ। ओह बुद्धीवान बण गए चतुर,
१०५६ चतुरथ तैनूं गए भुलाईआ। नाम बीज्या किसे ना वत्तर, रुतड़ी रुत ना कोए महकाईआ। तेरे चढ़े कोए ना तक्कड़, तराज़ू १०५६
२२ सच ना कोए वखाईआ। मैं वेख्या साचा दिसे कोए ना फ़क्कर, फ़िकरे जगत वाले रहे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, २२
आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सचखण्ड कहे प्रभू मैं वेखणी चाहुंदा तेरी सभा, सुबह शाम ध्यान लगाईआ। तूं किस दा पिता बणिउँ ते किस दा बणिउँ अब्बा, किस दी अम्मीजान बण के आपणी गोद टिकाईआ। किस नूं दिता रस अगम्मी मज़ा, रसना जेहवा स्वाद रहे ना राईआ। किस नूं चलाया आपणी विच रज़ा, राज़क रिज़क रहीम हो के दया कमाईआ। पर मैनूं इक दस्स दे कलयुग बदलणा किस वज़ा, वजूहात देणा दृढ़ाईआ। ओह वी चारों कुण्ट फिरदा भज्जा, काली कफ़नी गल विच पाईआ। सब दे उत्ते पा ल्या दब्बा, सिर सके ना कोए उठाईआ। रूप धारन कीता वांग ठग्गां, ठगौरी मन दे नाल रलाईआ। जे कलयुग ने गोबिन्द दे बच्चया दा वधण नहीं दिता अग्गा, बाले नीहां हेठ दिते दबाईआ। उस ने किसे दे सिर ते रहिण नहीं देणी पग्गा, ओढण नज़र कोए ना आईआ। मानव ज़ाती लगा दिती खाण वच्छा ढग्गा, पंछीआं खल्ल लुहाईआ। धर्म दवारे बणा के अड्डा, कूड़ विकार रंग दिता रंगाईआ। धर्म दा खाली करके डब्बा, जगत सारे दिता जणाईआ। नाले प्यार नाल किहा सारे पीओ रज्ज के मधा, मदि प्याले हथ्थ फड़ाईआ। फेर भवा के आपणी गदा, चारों कुण्ट दिता वखाईआ। बच्चू मैं अन्त सब नूं भुगताउणी सज़ा, राय धर्म दे हथ्थ फड़ाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सचखण्ड कहे मेरे साहिब मैं तेरी की करां तारीफ़, सिफ्तां विच सालाहीआ। तूं बड़ा शरीफ़, शराफ़त विच बैठा आसण लाईआ। उठ वेख सृष्टी दी नीत, नीतीवान वेख वखाईआ। ज़रा तक लै दीन मज़्ब रोवण मार के चीक, चीक चिहाढ़ा रहे पाईआ। तेरे ढोले गा के वक्खरे वक्खरे गीत, दीन दुनी रहे सुणाईआ। किसे नूं तूं मन्दिर वाड़ दिता किसे नूं वाड़या विच मसीत, मसला हल्ल ना कोए कराईआ। ज़रा सच दी दस्स दे अग्गे प्रीत, प्रीतम हो के पड़दा दे उठाईआ। तेरा ओहला रहे ना बीच, दो इक रंग ना कोए रंगाईआ। ना कोई शाह सुल्तान ना कोई ऊच नीच, झगड़ा सारा देणा मुकाईआ। तेरा खेल सदा अनडीठ, जग नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। रंग चाढ़ दे इक मजीठ, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। वेखीं किते प्रभू कलयुग विच आपणयां भगतां दे ना जावीं पीठ, पासा ना कदे बदलाईआ। मिट्ठे करने कौड़े रीठ, रस इक्को देणा चखाईआ। कदे नाम ना जपावीं नाल जीभ, प्रभू अजपे जाप विच आपणे भगत देणे समाईआ। झगड़ा मेटणा हस्त कीट, इक्को रंग देणा रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण चलो वेखीए कलयुग लुटेरा, जिस लुट्टया जगत जहान। जिस दा समां अग्गे बथेरा, ओह बणया नौजवान। प्यार रहिण नहीं दिता गुरु गुर चेरा, झूठा कीता जगत जहान। बड़ा होया दलेरा, उस नूं भुल्लया श्री भगवान। सब दा डोबण लग्गा बेड़ा, वेखे मार ध्यान। उजाड़न लग्गा खेड़ा, करन लग्गा वैरान। ढाह के कराए ढेरा, वखाए सुंञ मसाण। चारों कुण्ट कीता अंधेरा, साचा चन्द दिसे ना कोए भान। ओए कलयुगा ओए तेरा पिच्छे मालक केहड़ा, आपणा दे ब्यान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वड दाता गुणी निधान। कलयुग कहे मेरा मालक इक भगवन्त, सब नूं दयां सुणाईआ। जिस ने मैनूं दिता मंत, मन्त्र दिता समझाईआ। कोई साबत रहिण नहीं दिता साध सन्त, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। आत्म परमात्म मेला होवे नार ना कन्त, सेज सुहञ्जणी ना कोए सुहाईआ। घर घर बणाउणा गढ़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म नज़र किसे ना आईआ। कूड़ विकार दा बणना पंडत, माया ममता बुद्धी देणी फसाईआ। किसे नूं समझ आउण नहीं देणी किस तुहाडी बणाई बणत, ओह मालक धुरदरगाहीआ। फेर छेती तेरा होवे अन्त, अन्तष्करन बदल देणा सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। कलयुग कहे गुर अवतार पैग़म्बर तक लओ मेरा काला वेस, कफ़नी गल विच पाईआ। मैनूं कहि के गया गोबिन्द दस दशमेश, खण्डा शब्द वाला भवाईआ। मैं फेर आवांगा माझे देस, भुल्ल रहे ना राईआ। पुरख

अकाल दा इक्को होवेगा रूप रंग ते रेख, रेखा सब दी देणी बदलाईआ। किसे दी चले कोए ना पेश, पेशतर आपणा हुक्म दृढ़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव महेष, गणपति गणेश सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुरदरगाही इक अख्वाईआ। कलयुग कहे मैं गल पाया काला कपड़, काया रूप बदलाईआ। जीव करने बगले बप्पड़, हँस रहिण कोए ना पाईआ। मैं तीर्थ सारे करने छप्पड़, सरोवर रहिण कोए ना पाईआ। नाम दा तोले कोए ना तक्कड़, हटवाणे सारे देणे भुलाईआ। मैं कूड़ दा भरना मट्टड़, घर घर देणा वरताईआ। मैं सब दे उत्ते बणना धारी छत्र, छत्रधारी सारे देणे ख़ाक मिलाईआ। मैं बिना अक्खरां तों पुरख अकाल दा पढ़या इक्को पत्र, जिस पत्री विच्चों पत्रका गुर अवतारां पैग़म्बरां दे के चार जुग दे शास्त्र दिते बणाईआ। मेरी कदे कोई कर सक्या नहीं हत्तक, हत्यारा नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कहे कल्ले वाल्यो किथे तुहाडी ल्यांदी बत्तख़, ओह लाल रंग इक पासे वाली दयो वखाईआ। ओह खेल प्रभू दा फ़कत, किसे नूं समझ नहीं विच जगत, जिज्ञासू अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। सृष्टी फसी विच बूँद रक्त, तन माटी सोभा पाईआ। इक्को साहिब दी साची शक्त, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। कलयुग कहे वेखो बत्तख़ दा पासा लाल, लाल गुलाला रिहा वखाईआ। कलयुग जीवो तुहाडे सिर ते कूकदा काल, महाकाल हुक्म सुणाईआ। बिना शब्द गुरु तों तुहाडा रहिणा नईं जे कोई दलाल, विचोले पल्लू जाण छुडाईआ। प्रेम मिलणा नहीं हकीकत वाला हक हलाल, हलाल खाण वाला रहिण कोए ना पाईआ। मावां दी गोदी विच नहीं, दिसणे बाल, बाली बुध गुरु हरि कृष्न गया दृढ़ाईआ। संदेशा देवे गोबिन्द दी ढाल, खण्डा खड़ग रिहा जणाईआ। कोई ना पुछे मुरीदां हाल, मुर्शद नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कहे मेरी वेख्यो सदी चौधवीं दी चाल, चाल निराली इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग कहे वेखो बत्तख़ की कहिंदी, कहि कहि रही सुणाईआ। हुण छेड़ छिड़नी दिशा लहिंदी, लहिंदिउँ चढ़दे नूं आपणा पन्ध मुकाईआ। ओ दुनियादारो दुनिया वेख्यो गहिन्दी, तिनका तिनका दए तुड़ाईआ। अज्ज छब्बी पोह दी रात मुहम्मद ने सगणां वाली लाउणी मैहन्दी, चौदां तबकां दए वखाईआ। मेरी उम्मत दी कला होणी ढहिंदी, बाहों फड़ ना कोए उठाईआ। मेरी आसा धुर दा भाणा होवे सहिंदी, निउँ निउँ सजदयां विच सीस झुकाईआ। आफ्त धुर दी वेख्यो पैंदी, पैंडा सब दा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक नूर अलाहीआ। बत्तख़ कहे मेरीआं सुण लओ कूकां, कूक कूक सुणाईआ। ईसा मुहम्मद दीआं उम्मतां उठावण बन्दूकां, बदले

वास्ते लैण अंगड़ाईआ। सब दीआं चुकणीआं चूकां, चूक चूक जणाईआ। मेरी आह कहिंदी मैं सब नूं फूकां, फुंकारे अग्न वाले लगाईआ। झगड़ा मेटां पंज भूतां, तत तत्तां विच रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। बत्तख़ कहे मैं बड़ी बख़तावर, मैनूं सब ने दिती वड्याईआ। मैं नौ वार आई राम दे दर, सीस चरणां उत्ते टिकाईआ। यारां वार कृष्न दी सरनी गई पड़, प्रेम तक्कया शाम धुर दे माहीआ। मूसे दे मोढुयां उत्ते इक दिन गई चढ़, कंधे उत्ते बहि के खुशी बणाईआ। हज़रत ईसा दे छोही नाल धड़, सीना सीने नाल लगाईआ। मुहम्मद दे कोल डिगी दड़, बेहोश हो के आपणी सुरत भुलाईआ। नानक तों मंग्गया वर, चरण चुम्म के खुशी मनाईआ। गोबिन्द नूं उदों मिली जिस वेले चमकौर गढ़ी विच गया वड़, वड़दयां उस दा दर्शन पाईआ। फेर वेख्या किस तरह उहदे गुरमुख रहे लड़, सूरबीर सोभा पाईआ। घमसान वेख के गई डर, मैं पासा ल्या बदलाईआ। जिधर मुहम्मद दी शरअ, उस शरीअत नूं वेख्या नैण उठाईआ। फेर मैनूं इक्को दिसया दरा, जिथ्थों प्रभ दा नूर नज़री आईआ। मैं हिलाया आपणयां परां, फरफराहट विच दुहाईआ। फेर मैनूं गोबिन्द ने दर्शन दिता ज़रा, अन्तर नूर दिता चमकाईआ। मैनूं प्यार आया बड़ा, मैं बिना बोलिउँ मंग लई मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला मेले सहिज सुभाईआ। बत्तख़ कहे मैं वेख्या प्रीतम चोजी, चोज निराला रिहा कराईआ। ओह अकाल पुरख दा खोजी, दूसर राह कदे ना जाईआ। ओह सच प्रेम दा जोगी, जोगीशरां वाला वेस ना कोए वटाईआ। ओह भस्मड़ रूप दा भोगी, जगत तृष्ना ना कोए रखाईआ। बत्तख़ कहे मैं उस दे सीस निवाया गोडीं, निउँ के दिता वखाईआ। उस वेले गोबिन्द ने नौ सौ नड़िनवे नदी दी मेरे अन्दर प्यार दी बूँद सुट्टी मेरा रिहा कोए ना रोगी, रोग जन्म जन्म दा दिता गंवाईआ। मैं प्यार नाल किहा जे मैं इन्सान होवां जवान होवां ते मैं तेरयां चरणां उत्ते चढ़ावां फुल्ल गुलाब दा डोडी, वरखा फूलन वाली लगाईआ। फेर बत्तख़ कहे मैं रो पई हाए तूं कदे वेदी कदे सोढी, बंस बंस विच्चों बदलाईआ। कदी राम कृष्न ईसा मुहम्मद मूसा बण के मौजी, मौज आपणी दिती वखाईआ। मैनूं ऐं जापदा मेरया मालका तूं बड़ा आपणी सिफ्त दा लोभी, जुग जुग नाम कलमे दएं बदलाईआ। मैं चाहुंदी मेरा इक पासा लाल ते इक पासा चिट्टा ते जे तूं सच दा बण जाएं धोबी, इक्को रंग दएं रंगाईआ। पुरख अकाल किहा कमलीए मैं सदी चौधवीं फेर सब दा बणना मोढी, मुढला भेव दयां खुल्ह्लाईआ। पिछली शरअ नूं देवां डोबी, डुब्बदयां पार ना कोए कराईआ। दीन मज़्ह्ब दी रहिण नहीं देणी कोई बोगी, बोगस झगड़े देणे चुकाईआ। आपणे नाम दी टक्या वाली रहिण नहीं देणी परोहती, परमानंद इक्को देणा वखाईआ। मेरी

आदि अन्त दी इक्को सिख्या बहुती, जो आत्म परमात्म दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। बत्तख़ कहे जन भगतो गुरमुखो गुरसिखो सूफ़ीओ फ़कीरो मैं निमाणी, बद्धी देवां दुहाईआ। ओ तुसीं चलदे फिरदे आपणे विच्चों लभ्भ लओ आपणा हाणी, बाहर खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। ओह तुहाडा मालक जे तुसीं उस दी बण जाओ राणी, दोहां दी रईयत इक्को नज़री आईआ। ना कोई कथा रह जाए ते ना कोई कहाणी, ना कोई पढ़नी पए वेद पुराणी, ना कोई आसा रखे जीव अञ्जील कुरानी, काया दा कुरह इक्को वेखे बेपरवाहीआ। जिथ्थे चमके जोत नूर नुरानी, झगड़ा मुक जाए ज़िमीं असमानी, मिल जाए मुहब्बत विच रुहानी, रूह बुत विच महिबूब नज़री आईआ। बत्तख़ कहे कोई झगड़ा ना करयो जिस्मानी, एह दुनिया दिसे फ़ानी, झगड़यां वाली कलामी, साहिब दी बदनामी, जे मिल जाए पुरख अनामी, फेर अल्ला वाहिगुरु राम हरीओम तत सति दी लोड़ रहे ना राईआ। क्यों ओह सब दा अन्तरजामी, कदे करे ना बेईमानी, इक गल्ल ओह कदे कदे ज़रूर आपणे नाम दी करदा नीलामी, जगत दे ठेकेदार सारे लए बुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा दाता इक अख्वाईआ। कलयुग कहे ओह बत्तख़ दुरंगी, मेरी सदी चौधवीं ध्यान लगाईआ। याद कर लै मैं लड़ाउणे उम्मती ते फ़रंगी, फ़ारस विच झगड़ा देणा पाईआ। ओ कमलीए तूं जिस तरह दो टंगी, ओसे तरह दो धड़ सृष्टी देणी वखाईआ। किसे पासिउँ पौण आउण देणी नहीं ठंडी, समुन्दर सत्त देणे तपाईआ। आह वेख अवतार पैग़म्बर गुरु आउंणे पिछली धार लँघी, आपणा पन्ध मुकाईआ। किड्डी सोहणी गल्ल मुहम्मद दी ख़ाहिश अल्ला राणी वाहवे कंघी, सोहणा सीस गुंदाईआ। ओधरों धर्म दी धार हिन्दवाइण पावे गल अंगी, बटन पिच्छे रही वखाईआ। पुरख अकाल बड़ा ढंगी, आपणा भेव ना किसे समझाईआ। अज्ज रात नूं उस ने बिना अक्खरां तों शब्द संदेशा देणा ओह डाक घल्लणी बेरंगी, किसे डाकख़ाने विच्चों हथ्थ कदे ना आईआ। उहदे नाल लमकदी होणी शरअ दी चण्डी, प्रचण्ड रूप बणाईआ। मैनूं ऐं दिसदा उस ने लखण दीप विच पाउणी आपणी वंडी, करौच राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संदेशा सच विच जणाईआ। कलयुग कहे बत्तखे किते मेरा ना दस्सीं भेत, ओ कमलीए तैनूं दयां जणाईआ। ओह याद कर लै मैं गुर अर्जन दे सीस विच पवाई तत्ती रेत, लोहां उत्ते बहाईआ। तेग़ बहादर दा सिर धड़ कराया खेत, खेती जगत वाली लगाईआ। गोबिन्द दे बच्चे नीहां हेठ करके भेंट, भेंटा धरती दी पूर कराईआ। हुण मैं वेख सिंघासण डाह के गया लेट, कलयुग कहे मैं काला रंग बदलाईआ। ज़रा मैनूं तक लै नेतन नेत, नेती वाले नाल लैणे मिलाईआ। मेरा

१०६१ २२

अगला जल्वा लैणा वेख, चारों कुण्ट अक्ख खुलाईआ। मैं हुण बदलण वाला भेख, भेखाधारी हो के भज्जां वाहो दाहीआ। उठाउणे शरअ वाले मुल्लां शेख़, मुसायक देणे हिलाईआ। शरअ दे उत्ते देणे वेच, कीमत टकयां वाली रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि साहिब इक अख्वाईआ। बत्तख़ कहे कलयुग मैं मूल ना भुल्ली, ओए भुक्ल्यां दयां दृढ़ाईआ। मैनूं याद आउंदी रविदास वाली कुल्ली, कक्खां सोभा पाईआ। सुदामे दी दिसदी पाटी जुल्ली, बिदर दा अलूणा साग दए दुहाईआ। मैनूं ऐं जापदा जिंना चिर साहिब मिल्या ना सुल्हकुली, कुल मालक नूर इलाहीआ। ओनां चिर मैं किसे तोल नहीं तुली, जगत तराज़ू कम्म कोए ना आईआ। मेरी जन्म जन्म दी कोटन वार फुलवाड़ी हुल्ली, साची रुत ना कोए महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। बत्तख़ कहे मैनूं कलयुग दा कर लैण दे दीदार, दीदा दानिस्ता ध्यान लगाईआ। सारे हो जाउ ख़बरदार, सोया रहिण कोए ना पाईआ। एह वी मुहम्मद दा यार, चहुं यारां तों बाहर वंड वखाईआ। जिस नूं मदद देवे इसतग़फ़ार महिबूबे आलम इक अख्वाईआ। उस नूं करां जा के निमस्कार, सजदे विच सीस झुकाईआ। ओए कलयुगा वेखीं किते जानवरां दा फेर ना करीं शिकार, शिकारी बण के सब दे सीस कटाईआ। बण ना बुरयार, कूड़ी नीती लैणी बदलाईआ। औह वेख सच्ची सरकार, हरि करता धुरदरगाहीआ। पैग़म्बर गुरु अवतार, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण भज्जण वाहो दाहीआ। उन्हां फिरना विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। मेरी इक्को वार पुकार, कूक कूक दयां सुणाईआ। तुसीं पंछी पंखी जानवर उडणहार, उड उड आपणा झट लँघाईआ। वेखो कलयुग दी करनी ने मैनूं कीता गिरफ्तार, मैं चाहुंदी कलयुग विच गिफ़ट तैनूं भेंट देण चढ़ाईआ। तूं फेर मेरे साहिब नूं मेरे वल्लों करीं निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जे ओह मन्न जाए सच्ची सरकार, शाह पातशाह शहिनशाह धुरदरगाहीआ। फेर मैनूं जन्म लैणा पए ना दूजी वार, सचखण्ड उड के जावां चाँईं चाँईंआ। उथे मिलां उस अगम्मी यार, जो यराना धुर दा रिहा लगाईआ। हुण भगतो बारां वज्ज गए कर लओ आपणा विहार, विवहारी रिहा सुणाईआ। इक्को इक ते इक्को पुरख अकाल दी धार, इक्को शब्द गुरु जो आदि जुगादि दा अवतार, अवतरी आपणी खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। सदी चौधवीं दी गोली गाँ दी उठाए मूर्ती, मूर्त अकाल ध्यान लगाईआ। अग्गे आवे मंज़ल मुके दूर दी, नेरन नेरा पन्ध चुकाईआ। खेल वेखे हाज़र हज़ूर दी, जो हज़रतां तों बाहर समझाईआ। जिस ने सदी चौधवीं दी शरअ मेटणी गाँ सूर दी, सूर गाँ खाण वाला रहिण कोए ना पाईआ। आवाज़

सुणाउणी अगम्मी तूर दी, तुरीआ तों बाहर जणाईआ। झलक दृढ़ाउणी आपणे नूर दी, नूर नुराना दए वखाईआ। सब दी मंज़ल मुकाउणी कोहतूर दी, गृह इक्को इक जणाईआ। जिथ्थे शरअ नहीं कोए मज़बूर दी, मंज़ल पन्ध ना कोए वधाईआ। उथे आवाज़ नहीं किसे तम्बुर दी, रागणी राग कोए ना गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक दया कमाईआ। सदी चौधवीं दी गोली खा लै सोगंद, सुगंध अन्तर आत्म वेख वखाईआ। तूं अज्ज तों शरअ दी रही नहीं पाबन्द, मुहम्मद नूं संदेशा देणा चाँईं चाँईंआ। चौदां गुरमुख हथ्थां विच उठा लओ चौदां चन्द, चन्द सतारा लेखा देणा मुकाईआ। कलयुग कूड़ा रहे ना रंग, रंगत इक्को देणी चढ़ाईआ। मनुआ ममता विच नच्चे ना बण मलंग, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। चार यारी दा रहिणा नहीं संग, सगला संग ना कोए बणाईआ। जिस कारन गोबिन्द ने छड्डया पुरी अनन्द, अनन्द प्रभ दे विच समाईआ। ओह खेल करे सूरा सरबंग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। सदी चौधवीं दी गोली आसरा तकणा नहीं कदे मज़ूब, हुक्म धुरदरगाहीआ। सब नूं इक्को जेहा करना अदब, वड्डे छोटयां सीस निवाईआ।
१०६२ धरती उत्ते धरनी उत्ते धौल उत्ते धर्म दा चुक्कणा कदम, कदम कदम नाल बदलाईआ। कदे झगड़ा नहीं पाउणा बदन, माटी खाक खाक विच रुलाईआ। तेरे महिबूब दा नूरी खुदा दा खुद मालक दा इक्को अदल, इन्साफ़ रिहा कराईआ। सब दा सांझा प्यार वाला हुब्बे वतन, बेवतन नज़र कोए ना आईआ। जिस दे अग्गे किसे दा चलणा नहीं कोई यतन, यथार्थ आपणा हुक्म सुणाईआ। जिस ने चौदां लोक चौदा तबक लेखे लाउणे चौदां रत्न, चौदस चन्द नाल वड्याईआ। उस माही दा इक्को दवारा ते इक्को पत्तन, घाट इक्को दए वखाईआ। जिस नूं जुग चौकड़ी कोई लख ना सक्या बण के लखण, कोटन कोटि ध्यान लगाईआ। ओह सुभावक ही कलयुग दी क्रिया नूं आया मथण, नाम मधाणा हथ्थ उठाईआ। हुक्मे अन्दर उलटी गेड़े लट्ठण, चार कुण्ट भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सदी चौधवीं दी गोली खा लै कसम, कसम नाल सुणाईआ। झगड़ा रहिण नहीं देणा माटी भसम, जिस्म जिस्मानी झगड़ा देणा चुकाईआ। जो सब दी पति आए रखण, रक्षक हो के वेख वखाईआ। जा निगह मारयो दिशा दक्खण, की कल दए वरताईआ। क्यों जेहड़ा कलयुग दी जड़ आया पट्टण, पटने वाला नाल मिलाईआ। अग्गे वास्ते पुरख अकाल दीन दयाल सति धर्म दी चलाउणी रसम, रिवाज रसम इक्को देणा बदलाईआ। ओह इक्को नूर नूं सारे वेखण इक्को नूरे चशम, चशम दीद हो के सोभा पाईआ। उहदे कोल चुरासी लख दी ज़िंदगी दा बटन, जिस वेले चाहे दए दबाईआ। उस

दे हुक्मे अन्दर सारे जीव जगत जहान विच दिन कटण, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। जिस दा नाम कलमा करदे आए रट्टण, रट्टे जगत वाले रखाईआ। ओह सब दा लेखा हिसाब किताब आया ठप्पण, ठप्पा आपणा नाम मोहर दए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सदी चौधवीं दी गोली मार दे नाअरा, नाअरा हक इक जणाईआ। तेरा अमाम बणया सिक्दारा, जिन्ह सिक्कम तों अगले बन्ने छेड़ देणी छिड़ाईआ। जिस दा खण्डा होणा दो धारा, खड़ग खड़ग नाल टकराईआ। उस फिरना जंगल जूह उजाड़ टिल्ले पर्बत पहाड़ा, चरणां हेठ दबाईआ। उस खेल करना स्त्री पुरुष पुरुष विच नारी नारा, नर नरायण आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा साढे तिन्न हथ्थ दा अन्तिम दाइरा, दाहवेदार रहिण कोए ना पाईआ। याद रखयो अग्ग भड़कणी हुण विच काहरा, कायम मुकाम दा मालक दए सुणाईआ। कोई कन्नां तों ना रिहो बहिरा, बहरहाल दा भेव दए जणाईआ। अज्ज अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं दा इक्ठ्ठा होणा मुशाहरा, सारे आपणा आपणा लेखा देण सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सदी चौधवीं दी गोली कहे ऐ मालक, मैं चाहुंदी सब नूं दे दे वजीफा, दरगाह दी बख्श वड्याईआ। क्यों इन्हां तेरे नाम दा अल्ला हू अन्ना हू दा गाया लतीफा, लुतफ आपणा लै के जगत नूं गए लड़ाईआ। बणा के मुनारयां वालीआं मसीतां, मुसलसल तेरा झगड़ा रहे पाईआ। नाले तीस बतीस गाउंदे ते तेरे घर दीआं करदे तारीफां, तारीफ विच तारीक अंधेरा गया छाईआ। मैं चाहुंदी ना कोई कलमा रहे ना कोए रहे वसीअता, इक्को तेरा वसल वसले यार नज़री आईआ। तेरे नाल होवण हक दीआं प्रीतां, प्रीतम तैनूं मिल के वज्जे वधाईआ। मैं चाहुंदी पिछलीआं सारीआं बदल दे रीतां, रीता इक्को दे वखाईआ। जिथ्थे मिले वड्याई हस्त कीटा, ऊच नीच दा झगड़ा देणा चुकाईआ। क्यों तूं मालक लख चुरासी जीव जीअ का, जीवण तेरी झोली पाईआ। महिबूब तेरीआं हक तारीफां, तेरी ताबयादारी विच सीस निवाईआ। मेरीआं आसां पूरीआं कर दे उम्मीदां, तेरी आमद विच राह तकां नैण उठाईआ। तेरी सिफ्त करे कुरान मजीदा, मजमूआ अक्खरां वाला बणाईआ। अलिफ़ वाले चौदां हिस्से शरअ वाली छारी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सदी चौधवीं दी गोली कहे आ मेरे मुहम्मद पैग़म्बर, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों बाहर जणाईआ। उठ वेख पुराणीआं रीतीआं वाला अज्ज रचण लग्गा सुअम्बर, सुबह शाम दा वक्त चुकाईआ। जिस ने दीनां मज़्हबां दा बणाया अडम्बर, टुकड़े टुकड़े दिते कराईआ। ओह सब दा सांझा वखाउण लग्गा मन्दिर, काया काअबा दए समझाईआ। जिस दी इक्को कुंजी ते नाम ते इक्को वज्जा

जन्दर, वक्ख वक्ख ताले ना कोए बणाईआ। उस सत्त रंग डण्डे नाल मन रोकणा भवे ना दहि दिशा उठ के बन्दर, बन्दगी आपणी देणी समझाईआ। घर विच घर वखा देवे ते वखावे सूर्या चन्द्र, कोटन कोटि भान करे रुशनाईआ। जेहड़ा उस दे हुक्म दी करे उलँघण, उस नूं जम की फाँसी विच फसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। छब्बी पोह कहे वेखो खेल सूरा सरबंग, हरि साहिब आप कराईआ। क्यों कुलवन्त ने राम सिँघ नूं बख़्शी पग्ग, पिछला लेखा दए दृढ़ाईआ। प्रभ दी रीती जुग जुग चली आई जग, जगजीवण दाता आपणी बणत बणाईआ। खेल करदा रिहा मास नाड़ी हड्ड, तत्व तत तत नाल मिलाईआ। गुप्त ज़ाहर खेल खेले अड्ड, वक्खरा आपणा राह चलाईआ। पर किसे नूं आपणी दस्सी नहीं हद्द, हदूद समझ कोए ना पाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु बेअन्त बेअन्त बेअन्त कहि के टेकदे गए मथ, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। अख़ीर कहिंदे गए पुरख समरथ, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस दे सब कुछ हथ्थ, करे करावे करनेहार करता अगम्म अथाहीआ। उस ने जिस तरह सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चलाया रथ, एसे तरह जगत दी जुगत दए बदलाईआ। हुण कलयुग वेख्यो लथ्थणा सथ, गोबिन्द यारड़े दा सथ्थर दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र
१०६४ उठाईआ। औह वेखो हस्स प्या नौ रंग दा गुलदस्ता, उपर दयो उठाईआ। जिस ने सारी शरअ दा बन्न्हणा बस्ता, अक्खर १०६४
२२ बग़लां विच लटकाईआ। इक्को नूं अग्गे दस्सणा रस्ता, नौ दवारे दा डेरा ढाहीआ। नौ खण्ड पृथ्मी नाम मिलणा ससता, २२
करता कीमत ना कोए लिखाईआ। जिस प्रभू दा सदा सचखण्ड खेड़ा वसदा, ते गुर अवतार पैग़म्बर अजे तक आपणा घर सके ना कोए बणाईआ। जो आया सो फेर गया नस्सदा, जोत विच्चों निकल फेर जोती विच समाईआ। ते नाम उसे प्यो दा गया रटदा, जिस दे रट्टे घर घर गए वखाईआ। ओह खेल करे बाज़ीगर नट दा, स्वांगी आपणा स्वांग रचाईआ। कदे राम कदे रहीम कदे आलीशान अज़ीम, कदे मालक बण कदीम, कदे मज़्ह़बां दी कर तक्सीम, कदे हुक्म दे नज़ीम, कदी बदली करन आया तरमीम, रूप धार बैठा जट्ट दा, साफ़ सुथरा सोभा पाईआ। जिस झगड़ा रहिण नहीं देणा बन्ने बन्ने वट्ट दा, डांगां दो हथ्थां विच उठाईआ। इधरों डोरी शरअ दी इधरों डोरी मज़्ह़ब दी वेखो कटदा, कट्टे खाण वाला रहिण कोए ना पाईआ। सब दा प्याला सुटा देणा हथ्थों गट गट दा, मदि रस ना कोए चखाईआ। मानस भुक्खा ना रहे मानस दी रत्त दा, रत्न अमोलक हीरे देणे प्रगटाईआ। इन्सान पक्का करना जत दा, धीरज धीर देणा रखाईआ। माया रूप ना धरे डस्सणी सप्प दा, विख अन्दरों देणी कढ्ढाईआ। इक्को इष्ट होवे पुरख समरथ दा, इक्को उसे नूं सीस झुकाईआ।

इक्को कलमा होवे यक दा, वाहिद नूर रुशनाईआ। बाकी दा लेखा होणा फक दा, फिरके पिछले आपणे विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नौ रंग दा कहे गुंचा मेरा इक उस्ताद, उस्तत उस दी दयां सुणाईआ। जिस ने पहलों शब्द गुरु कीता आज़ाद, आपणे विच्चों प्रगटाईआ। उहदे विच्चों विष्न ब्रह्मा शिव कीते आबाद, सोहणा रंग रंगाईआ। फेर आपणे बदल के मज़ाज, आपणे नाम लए प्रगटाईआ। फिर आपणी सुणा के आवाज़, आपणी खुशी वखाईआ। फिर धुर दा साजण साज, देवे माण वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव नूं दे के दात, दौलतमंद दिते कराईआ। चुरासी दा चला के जहाज, बेड़े दिते भराईआ। वक्ख वक्ख बणा के समाज, समग्री दिती झोली पाईआ। रसना नाल लैण अराध, रस्ते दिते दृढ़ाईआ। शरअ दे बणा के काज, कज्जल अक्खां विच टिकाईआ। ममता दे नचा के नाच, नटूए दिते बणाईआ। सति वस्तू नूं आपणी वस्तू नूं रख के काया माटी विच काच, घड़न भन्नणहार आपणी खेल खिलाईआ। बड़ा दुःख अज्ज तक उस नूं सक्या कोए ना वाच, वाचक हो के सक्या ना कोए समझाईआ। जिंनी कु किसे मिल गई ओनी कु कहाणी गया आख, अग्गे सारे सीस निवाईआ। ओह प्रभू कदे निमाणा कदे गुस्ताख़, कदे मालक ते कदे शाख़, कदे अग्नी हवन ते कदे राख, कदे पवण पाणी कदे जलाद, जल्वागर आपणी खेल खिलाईआ। गुंचा कहे सच पुछो मैनूं उस दी सदा याद, बिन याददासत सब दे विच टिकाईआ। मैनूं याद आ गया जिस वेले नानक ने वजाई रबाब, रब्बी नूर नज़री आईआ। जिस वेले गया विच बग़दाद, बग़लीआं कंध्याँ उत्ते टिकाईआ। कन्नां विच उँगलां पा के दिती बांग, उच्ची उच्ची दिता सुणाईआ। यामबीन या रहीम या अमीन तेरा रूप सदा विस्माद, बिस्मिल आपणी कार कमाईआ। फेर किहा उस मालक ने सब नूं दीनां मज़्बां तों कर देणा आज़ाद, शरअ दी डोरी ना कोए बंधाईआ। पंजां लिखारीआं कोल साढे तिन्न हथ्थ दी डोरी नाल कीड़ा बध्धा लम्मीआं टंगां वाला एह मुहम्मद दी काढ, काढिआं विच्चों डाहढे नूं गया पाईआ। हिजर करदयां जिस वेले मारी सी चांग, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। ऐ मेरे महिबूब ऐ नूरे खुदा, खज़ला मज़लू शीने ज़बाह वस्ते ज़ही तलज़ू खुदा, असीते गज़ुद, ज़ुजे दजीह, मुसीहे मुसाह, शहिनशाहे आलम तेरा इलम समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणी कार कमाईआ। वेखो बई आ गया ख़वाज़ा खिजर, खिजर कहि के की सुणाईआ। ओ मेरया मालका, मेरा दुखी होया जिगर, जगह नज़र कोए ना आईआ। मैं फिरया उधर ते इधर, भज्जया थांओं थाँईंआ। फेर वेख्या जिस वेले कृष्न घर गया बिदर, आपणा पन्ध मुकाईआ। उहदी पूरी कीती सिधर, सधरां रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद

आपणा भेव खुल्हाईआ। पंजां प्यारयां लिखारीआं दा बध्धा होया बोले कीड़ा, आपणा ध्यान लगाईआ। जेहड़ा नछत्र सिँघ ने ल्यांदा पीढ़ा, सदी चौधवीं दी गोली हेठां देणा डाहीआ। चौदां राजे महाराजे आपणे उपर उठाओ कमान तीरा, तरकश दयो हिलाईआ। उठ के वखा दयो आपणा चीरा, ताज धर्म दा नज़री आईआ। पुरख अकाल तक्को वड पीरन पीरा, पारब्रह्म इक अख्वाईआ। जिस ने सारी सृष्टी दी बदल देणी तकदीरा, तदबीर आपणी आपणे विच छुपाईआ। झगड़ा मेटणा शाह हकीरा, हज़रत हज़रतां हुक्म सुणाईआ। मालवे वाल्यां सत्त रंग दा गाना बध्धा जिन्हां ने थाली ग्लास दा चुक्कया बीड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरी तोबा, तोबा तोब सुणाईआ। मैं आया सुण के तेरी सोभा, सोभावन्त तेरी सरनाईआ। मैनूं ना कोई लालच ते ना कोई लोभा, ममता मोह ना कोए रखाईआ। मैं इक वेरां वेखणा चाहुंदा जेहड़ा शब्द होया सी बीबी राज नूं विच मोगा, ओह उठ के तेरीआं धर्म दीआं जोतां देण वखाईआ। फेर मैं तेरे अग्गे लावां आपणा गोडा, नीवां हो के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मेला आप कराईआ। कलयुग कहे गोबिन्द मेरा आ गया कड़ा तेरी भेंटा, भेंटा अवर रहे ना राईआ। तूं इक्को साहिब पुरख अकाल दा बेटा, दूजी जन्म देण वाली कोए
१०६६ ना माईआ। तूं सब दा खेवट खेटा, खटका कूड़ देणा चुकाईआ। सोहणया सूरबीरा नौजवाना तूं माछूवाड़े दी सेजा लेटा, १०६६
२२ आपणा आसण लाईआ। तेरे कोल कोई इकल्ले पन्थ दा नहीं ठेका, सारी सृष्टी पुरख अकाल ने तेरी दिती बणाईआ। ज़रा २२
याद कर लै पिछला चेता, भुल्ल रहे ना राईआ। की होया जे तूं फिरदा विच खेतां, खेती बाड़ी लख चुरासी तेरी दयां वखाईआ। तूं फिरना हुण विच परदेसां, भज्जणा वाहो दाहीआ। तेरा सब दे नाल लेखा, इक्को वार देणा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। गुंचा कहे मैनूं बणा दिता तृप्त दा धर्म दा दाज, राम सिँघ ने झोली दिता पाईआ। मैं हुण सारयां दी खुल्हाउणी जाग, सोया रहिण कोए ना पाईआ। इक वार सारे पंजां जैकारयां दी उच्ची दयो आवाज़, सारे खुश कर लओ मिज़ाज, इश्क हकीकी ते मजाज़ी दोवें देणे तजाईआ। इस तों अग्गे तुहाडे प्रभू दी आवाज़, जिथ्थे बिना शब्द गुरु तों दूजा नज़र कोए ना आईआ। तुसीं उस दा बाग़ीचा ओसे दा बाग़, जेहड़ा गुलशन रिहा महकाईआ। तुहाडा सारयां दा इक्को समाज, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। ना कोई लंगड़ा लूल्हा अपाहज, आत्मा जम्मण मरन विच कदे ना आईआ। तुहाडा सब दा धर्म दा धर्म होवे राज, रईयत आपणा आप बणाईआ। एह अवतार पैग़म्बर गुरुआं दा ख्वाब, जेहड़े पेशीनगोईआं विच भविक्ख्तां विच लिख्तां विच इष्टां विच दृष्टां विच सृष्टी गए

समझाईआ। देखिओ कोए ना बणिओ काग, काग वांग ना कोए कुरलाईआ। तुहाडे अन्दर तुहाडे साहिब दी नाम दी सदा वज्जदी रहे रबाब, मुहम्मद रबीउल सानी विच गया जणाईआ। नानक ने भेव दस्सया उस दा आदि, जो अन्त दा मालक इक अख्वाईआ। बेशक ओह चुरासी लख कपड़ दा बज़ाज़, जन्म जन्म विच तन दे सूट दए बदलाईआ। जे उस दी धार विच प्यार विच गा लओ तूं मेरा मैं तेरा इक्को राग, दूजा रूप ना कोए दरसाईआ। फेर तुहानूं लोड़ नहीं रैहंदी विच जाण दी सुन्न समाध, ओह किरपा करके मेहर निगह नाल सचखण्ड दए पहुंचाईआ। सचखण्ड कहे प्रभू मैं वी आ गया मैनूं किसे ने नहीं करनी इमदाद, इमदादी नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कहे सचखण्डा ओए मैनूं अजे कर लैण दे इत्फिाक, सदी चौधवीं दे दस साल आपणा हुक्म वरताईआ। तैनूं पता नहीं नौ सौ नड़िनवे गुरमुखां ने मुख नूं लाया लुआब, ज़बान बुल्ल्हां उत्ते छुहाईआ। वक्त आउणा ते किसे नूं लभ्भणा नहीं आब, जल प्याले हथ्थ ना कोए उठाईआ। किसे ने भुन्न नहीं खाणा कबाब, छुरीआं वाले कसाई मुख लैण बदलाईआ। जिस दा इक्को मित्र प्यारा अहिबाब, जल्वागर इक अख्वाईआ। जे उस दा रस माणो इक्को लओ स्वाद, अनरस इक्को दए चखाईआ। फेर खुशीआं नाल कहो उहो साडा मेहरवान ते उहो साडा गॉड, उहो साडा धुर दा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। कलयुग कहे मुहम्मद मैं ईसा मूसा रहिण नहीं देणे फ्रैन्ड, फ़राड आपणा देणा वखाईआ। धुर दा हुक्म करना सेंड, सैंड सटारमां विच दी दूर दुराडे देणे पहुंचाईआ। वेखणी ओह लैंड, जिथ्थे नौ चक्र कट के हज़रत ईसा निशान गया लगाईआ। जिथ्थे दोहां दे उपर होणे हैंड, हैंडस अप करे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। कलयुग कहे मेरा हुन्दा जांदा वक्त, व्यक्तिआं दयां जणाईआ। जिज्ञासूउ जे बणना ते बणिउ भगत, बिना भगतां तों प्रभू नूं मिलण कोए ना पाईआ। एह मेरी पक्की शर्त, मैं शरअ वाल्यां नूं दयां ठुकराईआ। मेरा खेल उत्ते धरत मेरा मालक उत्ते अर्श, अर्शी प्रीतम इक अख्वाईआ। ओह उस दे प्यार विच मुहब्बत विच इंतज़ार विच सब कुझ कर दएगा तरक, दस्त बरदार हो जाऊ कुल लोकाईआ। जे ओह ना मिले तुहाडे घर ना आवे परत, फेर उस नूं पतिपरमेश्वर कहिण दी लोड़ रहे ना राईआ। क्यों ओह सदा सूफ़ीआं दी मेटदा हरस, हवस आपणी इक लगाईआ। ग़रीब निमाणयां उत्ते करे तरस, रहमत रहीम आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। मुहम्मद कहे मैनूं लग्गी प्यास, सदी चौधवीं राह तकाईआ। खवाज़ा खिज़र कहे मेरे मालक ने घल्लया तेरे लई ग्लास, गले विच आब लैणा टिकाईआ। सुखाला हो

१०६७ २२

जाए स्वास, सास सास नाल टकाईआ। झट शंकर बोलया उतों कैलाश, त्रशूल हथ्थ उठाईआ। हुक्म मेरे अबिनाश, अबिनाशी करते रिहा सुणाईआ। ज़रूर सदी चौधवीं नूं करना नास, नाशता बणा के लैणा खाईआ। क्यों मुहम्मद दा मेरे नाल वाक, पेशतर गया सुणाईआ। ऐ मेरे पीरां दे पीर अमामां दे अमाम तूं आउणा नाल इत्फिाक, इत्फिाकीआ आपणा फेरा पाईआ। उस वेले रूह बुत रहिणा नहीं कोई पाक, पाकीज़ा नज़र कोए ना आईआ। मेरा तेरे अग्गे नहीं कोई सवाल, ते नहीं कोई जुआब, जुआबतल्बी करके निउँ के सीस झुकाईआ। तूं मेरा नूरे नूर मैं तेरा छोटा जेहा आफ्ताब, लोकमात विच डगमगाईआ। तेरी सिफ्त दी लिख के निक्की जेही किताब, जगत दे हुजरे दिते सुहाईआ। तेरी वेख के महिराब, महिबूब कीती शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं लभ्भदे कोटन कोटी, कोटन ध्यान लगाईआ। चढ़ के पर्बतां उपर चोटी, नैण मूंद कराईआ। बन्नृ के तेड़ धोती, मस्तक तिलक छुहाईआ। तक्कण नूर अगम्मी जोती, जोत किस बिध करे रुशनाईआ। एह गल्ल कदी किसे नहीं सोची, समझ विच ना कोए तकाईआ। जिस ग़रीबी विच माण पाया रविदास चमारे मोची, ताणा तण के झट लँघाईआ। उस दा लहिणा दिता सहणा दिता गहिणा दिता इक सौ इक धार उस लई चोखी, इक विच्चों उपज्या ज़ीरो हो जाणा ते फेर इक विच समाईआ। धर्म दी धार निक्की जेही छोटी, छोटयां वड्डयां रही समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखां वक्त हाली, की हालत दिसे लोकाईआ। बणे ना कोए सच्चा दलाली, विचोले बैठे मुख भवाईआ। हरया दिसे ना कोए हरयाली, सिंमल रुक्ख रहे लहराईआ। जन भगतो सदी चौधवीं कहे मेरे अग्गे इक वेर मार दयो ख़ुशी दी ताली, ताला दो जहान बन्द कराईआ। सारी सृष्टी होणी ख़ाली, बेवा रूप नज़री आईआ। वेख्यो जिंना चिर बाग़ दा ना होवे माली, फुल्ल डाली ना कोए लहराईआ। तुसीं इक दे बणिउ सवाली, मंगते घर घर दे बण के आपणा जन्म ना लैणा गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं कहे ओए आ जाओ चौदां तबक, तबीअत दयो समझाईआ। हुण वेखो इक मिलण लग्गा सबक, सिख्या बेपरवाहीआ। कोई है ते मारो भबक, शेर अग्गे सिँघ शेर रूप बदलाईआ। सारे कहिण असीं ते बध्धे वांग बत्तख़, बल अग्गे ना कोए वखाईआ। क्यों पुरख अकाल दा शब्द डंडा जगत विकार नाल वरतण लग्गा हो के सख्त, चोट चोट उत्ते लगाईआ। जिस दे अग्गे कोई ना सके अटक, अटकों पार पए दुहाईआ। फेर उठणे फ़रीदी ते खटक, सोहणा खेल खिलाईआ। ज़रा हुण खेल वेख्यो सृष्टी उत्ते जगत, जगजीवण दाता

की आपणा हुक्म वरताईआ। जिंना चिर बणोगे ना भगत, भगवन मिलण किसे ना आईआ। इक्को नूर ते इक्को दा करो दरस, हरस अगली दए चुकाईआ। कदे असमान ते कदे फ़र्श, कदे ज़िमीं जमान सोभा पाईआ। जिस दे कोल ना कोए स्वर्ग ना कोए नरक, दोज़ख़ बहिशत वंड ना कोए वंडाईआ। जदों किरपा करे ते लै जाए आपणे घर विच परत, जिथ्थे पतिपरमेश्वर इक्को नूर जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक दया कमाईआ। सदी चौधवीं कहे प्रभू रंगण चाढ़ दे गूढ़ी, इक्को रंग रंगाईआ। धरनी तेरे चरण दी लावे धूढ़ी, टिक्के ख़ाक रमाईआ। उहदी आदि दी दे दे मज़दूरी, सेवा झोली पाईआ। मेरी बेनन्ती इक ज़रूरी, ज़ाहर ज़हूर दयां सुणाईआ। जिस ने मंग मंगी गोबिन्द कोलों किते सोहणया कंगण मेरे हथ्थ नूं पहना दे चूड़ी, सोहणा जोबन देणा बणाईआ। मेरी आसा रहे ना अधूरी, अध विचकाले ना देणा लटकाईआ। गोबिन्द किहा मेरी एस वेले मजबूरी, तैनूं सच दयां सुणाईआ। जिस वेले मेरा साहिब आया बण के जोत नूरी, नूर नुराना नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे ऐ मेरे खुदा क्यों तूं मेरी गोली नूं पा दिता काला लबास, ओह उठ के तैनूं दए वखाईआ। चौदां तबकां दा उड गया हिरास, हैरत विच देण दुहाईआ। कदी तकण

उपर कैलाश, कदी असमानां परे ध्यान लगाईआ। किसे दा रिहा नहीं कोई विश्वास, विशा तेरा समझ कोए ना पाईआ। मैं आउंदी आउंदी सब नूं आई आख, सहिज नाल सुणाईआ। बई, सारे उठ खलोवो चौदां तबको छब्बी पोह दी आ गई रात, भिन्नड़ी रैण जणाईआ। बौहड़ी दरोही दुहाई शरअ ने होणा वफ़ात, मकबरे बैठे राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। चौदां तबक कहिण असीं बण गए मरीज़, मुर्शद नज़र कोए ना आईआ। सानूं मिले ना कोए तबीब, तबा सके ना कोए बदलाईआ। असीं हो गए ग़रीब, धन माल ना कोए रखाईआ। झट आवाज़ आई इक दे बण जाउ अज़ीज़, मुहब्बत विच मुहब्बत लैणी प्रनाईआ। सच दी करो तमीज़, पहचान इक दृढ़ाईआ। शरअ दी मेटो लीक, लाईन इक्को नज़री आईआ। जिस दे विच आदि तों अन्त तक तौफ़ीक, तोहफ़े नाम कलमे वाले सब दी झोली पाईआ। उस दी हुण सारे करो उम्मीद, ओह अमामां दा अमाम आवे धुर दा माहीआ। जो मालक आदि दा कदीम, कुदरत दा कादर इक अख्वाईआ। जिस ने अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं तों कराई तक्सीम, बटवारे मज़्बां वाले जणाईआ। उस ने इक नवीं देणी तालीम, ऐजूकेशन ऐजूकेटां दे विच देणी बदलाईआ। फेर वेख्यो उसदा सीन, जो सुनेहा देवे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर

१०६८
२२

दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। चौदां तबक कहिण ना ज़ोखल, मुल्लां मुहम्मदे रसूल सलासलम दवाअ खुदा मस्तलू नूरे कबूल अज़ली वज़्जो चानी खुरी तसबी तलू, ना रोज़ा ना वुज़ू, वज़ली मफ़ललो मुसतबारा मज़लूके अज़ल, गले ख़ान गुलो गुल गुल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे कुँवारी कन्या पहने वस्त्र, पंज पंजां तत्तां देण जणाईआ। शब्द गुरु दा वेखो शब्द शस्त्र, जो शरअ दे टुकड़े टुकड़े दए कराईआ। उहदे कोल नाम दी नशतर, हउमे दे रोग दए मिटाईआ। सारयां दे भाण्डे साफ़ करके काया वाले बरतन, बरतांत अवर ना कोए जणाईआ। जिस दी अन्त अख़ीर पूरी होणी शर्तन, शरअ ज़ंजीर दए कटाईआ। इक्को गल्ल कृष्न ने दस्सीं सी अर्जन, अर्ज बेनन्ती दिती सुणाईआ। की होया जे मैं उँगली ते उठाया गवर्धन, जगत दिता जणाईआ। मेरे काहन दा खेल हुन्दा रहिंदा फ़रदन फ़रदन, मेहरवान आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। चौदां तबक कहिण असीं तकणा बेनज़ीर, नज़र नज़र विच्चों बदलाईआ। वेखणी ओह तस्वीर, जेहड़ी गऊ दी मालवे वाले ल्याए चाँईं चाँईंआ। फेर असां सब ने बदल लैणी ज़मीर, अन्तर अन्तर करनी सफ़ाईआ। इक्को मन्नणा धुर दा पीर, पैग़म्बरां दा झगड़ा देणा गंवाईआ। नाले सच दी खिच्चणी लकीर, लाईन इक्को इक बणाईआ। कोई वेरवा रहे ना विच खंजीर, खंजर शरअ ना कोए चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस कारन गुर अर्जन ने चौदां सौ तीह अंक दी बन्नी बीड़, सच दा हुक्म इक वरताईआ। शरअ कहे मैं सब तों वड्डी करां शरारत, मुख नकाब दयां उठाईआ। जिस महिबूब ने आपणी लिखाई इबारत, अलिफ़ ये नाल सिफ्त कराईआ। उस कोल चलणी नहीं कोई शफ़ारश, हुक्म वरते धुरदरगाहीआ। साढे तिन्न हथ्थ दी कूड़ी रहिण नहीं देणी इमारत, सब दा झगड़ा दए चुकाईआ। आपणे नाम कलमे दी किसे मुल्लां शेख़ पंडत पांधे ग्रन्थी नूं लैण नहीं देणी आढ़त, आड़्त वाला रहिण कोए ना पाईआ। याद रखयो एह जोत जगी कलयुग दे अन्त विच भारत, संदेशे घर घर दए पहुंचाईआ। क्यों सारयां दा जुम्मेवार पुरख अकाल इक्को वारस, जो आदि जुगादि बैठा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर हुक्म इक सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण छब्बी पोह दी बीतदी जांदी राती, घड़ी पल पन्ध मुकाईआ। असीं सारे इक्ठे हो के बणे इक जमाती, इक्को ढोला रहे गाईआ। साडी पिछली बदल गई हयाती, जीवण जगत ना कोए रखाईआ। असीं चाहुंदे साडे मालका ख़ालका ओए प्रितपालका साडा झगड़ा मेट दे काग़ज़ाती, जो अञ्जील कुरानां विच तेरा लेखा आए समझाईआ। कोई रहे ना तेरे नाम

दा फ़सादी, फैसला हक देणा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बरो सुणो अख़ीरी शब्द, शब्द शब्द सुणाईआ। सारे कहो ना कोई साडा दीन ते ना कोई साडा मज़्ब, मज़्बी वंड ना कोए वंडाईआ। सारे तेरे विच हो गए जज़ब, आपणा जज़बा ना कोए रखाईआ। इक्को नूं करीए अदब, डण्डावत बन्दना नमो नमो सजदे विच सीस झुकाईआ। तेरी सदा मंगीए मदद, बेपरवाह तेरी इक सरनाईआ। असीं चाहुंदे अग्गे वास्ते शरअ दा मेट दे तशदद्, तसबी माला मणके सारे रहे सुटाईआ। तेरे नाम दी तेरे कलमे दी तेरे कलाम दा इक्को होवे वजद, (वजद विच वाहिद) आपणा राज़ खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ।

पंज लिखारी कढ लओ अशटाम, उलटे लओ कराईआ। तेई अवतार लिखो बनाम, बेनन्ती रहे सुणाईआ। तूं इक्को सब दा राम, सीता सुरत लै प्रनाईआ। इक्को सब दा शाम, आत्म राधा आपणे रंग रंगाईआ। सब कुझ तेरे कोल सौंपया आपणा इंतजांम, बन्दोबस्त तेरे हथ्थ फड़ाईआ। तूं साहिब सुल्ताना आदि जुगादी मेहरवान, मेहरवान अख्वाईआ। अग्गे
१०७१ २२ वास्ते सांझा बणा दे विधान, इक्को आपणा हुक्म दरसाईआ। साडा लेखा मुका दे तमाम, तम्हां लालच सब तेरी झोली पाईआ। १०७१ २२
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। पैग़म्बर कहिण साडा अन्त अख़ीरी सजदा, कदमबोसी विच खुशी मनाईआ। मालक रिहा ना कोई दीन मज़्ब दे घर दा, घराने तेरी झोली पाईआ। असीं चाहुंदे इक्को नाम तेरा जीव जहान होवे पढ़दा, वखरी वंड ना कोए वंडाईआ। झगड़ा रहे ना माटी ख़ाकी धड़ दा, तन वजूद इक्को रंग रंगाईआ। बिन तेरी किरपा कोई ना तरदा, तारनहार तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार दया कमाईआ। गुर दस कहिण साडे साहिब पुरख अकाल, अकल कलधारी तेरी वड वड्याईआ। तूं धुर दा दीन दयाल, दयानिध इक अख्वाईआ। असीं चाहुंदे सब दी इक्को होवे धर्मसाल, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। जिथ्थे बैठण शाह कंगाल, इक्को तेरा नाम ध्याईआ। दीन मज़्ब दा करे ना कोए सवाल, शरअ रंग ना कोए रंगाईआ। तेरे हथ्थ काल महाकाल, दो जहान तेरी सरनाईआ। साडी बेनन्ती कलयुग अन्तिम सतिजुग कर बहाल, सति धर्म दा राह वखाईआ। सारे मानव तेरे बाल, आत्म तेरा नूर नज़री आईआ। सब नूं सांझे दे बहाल, वक्खरा रहिण कोए ना पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा जपे जीव जगत जहान, आत्म परमात्म राग जणाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, अवतार पैग़म्बर गुर इक्ठे मंगण तेरे दर, सृष्टी दृष्टी शब्द सतिगुर ला दे लड़, लड़ दीनां मज़्बां कोलों दे छुडाईआ।

पंज दरबारी कढो दहिला, पुट्ठा ज़िमीं उत्ते दयो टिकाईआ। प्रभ दा मार्ग होवे सहिला, सहिज नाल वड्याईआ। घर पुचावे आपणे महला, महिफ़ल आपणे नाल रखाईआ। दरस दिखावे छबील छैला, शाह सुल्ताना वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक हुक्म वरताईआ। दहिला कहे मैं हो गया पुट्ठा, प्रभ पुट्ठी रीत चलाईआ। पुरख अकाल हो के तुट्ठा, मेहर नज़र उठाईआ। आपणे नाम दीआं पा के लुट्टां, भगत भण्डारे रिहा भराईआ। कलयुग कल्पणा मेट के फुट्टां, फुटकल डेरा रहे ढाहीआ। धर्म दे गाने बन्न् के गुट्टा, गुरमुख साचे जोड़ जुड़ाईआ। करे लाड वाग पुत्ता, प्रीतम आपणी गोद टिकाईआ। अग्गे झगड़ा रहिण ना देवे बुतां, बुतपरसती दा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ।
१०७२ दहिला कहे मेरे उत्ते आउणा गोला, पासा लए बदलाईआ। उस ने मेरे माही दा गाउणा ढोला, तूं ही तूं ही राग सुणाईआ। १०७२
२२ नज़री आउणा मौला, मलकुलमौत तों लए बचाईआ। निमाणयां दा जिस ने बणना विचोला, भुक्ख्यां नंगिआं पार कराईआ। २२
धर्म दा दस्सणा सोहला, सोहणा राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग वेख वखाईआ। गोला कहे मैं नहीं रहिणा गुलाम, शरअ ना कोए रखाईआ। मैं तक्कया इक अमाम, अमाम अमामां नज़री आईआ। जिस मेटणा अंधेरा शाम, शमा नूर करे रुशनाईआ। दीन दुनी दी बदल कलाम, कलमा, कल्मयां विच्चों समझाईआ। मुहब्बत विच होवे मेहरवान, महिबूब आपणा रंग रंगाईआ। उहदा संदेशा सुणया फ़रमान, फरमांबरदारां रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गोला कहे मेरे पिच्छों आई बेग़म, बेगमपुरे दा हाल सुणाईआ। जेहड़ा उथे गया मुड़ के फेर पए ना जम्म, जम दंड ना कोए रखाईआ। दुक्खां विच भरना पए कोए ना दम, साह साह ना कोए कुरलाईआ। झगड़ा रहे ना माटी चम्म, चम्म दृष्टी दए बदलाईआ। इक्को भेव खुल्लाए आत्म ब्रह्म, ब्रह्मवेता इक्को नज़री आईआ। दूसर रहे ना कोए भरम, भाण्डा भरम दा दए भनाईआ। लेखा मुका के कांड कर्म, करनी आपणी विच समाईआ। जिस ने सारी मनुष ज़ाती दा इक्को रखणा धर्म, धर्म दवारा इक्को इक प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच

दा रंग इक रंगाईआ। बेग़म कहे मेरा आउणा पातशाह, जिस नूं बादशाह कहे लोकाईआ। धुर दा मालक शहिनशाह, शाही कूड़ी दए बदलाईआ। धुर दा इक्को दस्से राह, रहिबर बण के नूर खुदाईआ। पंज दरबारी इक दूजे दे उत्ते दयो टिका, किंग दा मुख उपर देणा समझाईआ। लिखारी लेखा दयो लिखा, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल ने सब दा वायदा पूर देणा करा, कौल इकरार संग रखाईआ। जिस विच भेव रहे ना ज़रा, ज़र्रे ज़र्रे विच्चों इक्को नूर दए चमकाईआ। पिछली रहे कोए ना शरअ, शरीअत दा डेरा ढाहीआ। जिस कारन लिख के लाया मरा, महिरम हो के वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। बादशाह कहे मैं नहीं पत्ता ताश, सब नूं दयां सुणाईआ। मैं तां शरअ दा बदमाश, जिस ने सारे दिते लड़ाईआ। मैनूं कलयुग दिती शाबाश, मेरा संग बणाईआ। मैं हो के दासी दास, साची सेव कमाईआ। अन्त प्रभ दे चरणां मिल्या निवास, मेरा लेखा रिहा ना राईआ। ना कलमा पढ़ा ना नमाज़, ढोला नाम कोए ना गाईआ। मेरा पूरा होया काज, हरि करते दिती वड्याईआ। मेरा छुट गया बन्धना वाला समाज, जगत समग्री ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दी सरन सरनाई गया लाग, लग मात्रा दा अग्गे लेखा ना रिहा राईआ।

१०७३ २२

१०७३ २२

✪ २७ पोह शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल सवेरे पंजाब मन्त्री सतिनाम सिँघ बाजवा दे आउण ते ✪

सतिगुर शब्द सूरा गोबिन्द, गोबिन्द गोबिन्द सिँघ रूप प्रगटाईआ। जो पुरख अकाल दी नादी बिन्द, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। उस दी अमृत धार सागर सिन्ध, काया मन्दिर अन्दर टपकाईआ। उहदा साथी पुरख अकाला गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर इक अख्वाईआ। जिस ने साजणा कीती जीउ पिण्ड, तन वजूद रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। गोबिन्द सूरा शब्द शब्द शब्द ललकारा, दो जहान सुणाईआ। जिस ने नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप रंग रंगणा अगम्म अपारा, अलख अगोचर नाल मिलाईआ। जिस दा खेल होणा पृथ्मी आकाश सर्ब संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी बैठण सीस निवाईआ। भविक्ख्त पूरा करना तेई अवतारा, रामा कृष्ना अक्ख खुल्हाईआ। जो पैग़म्बर दे के गए इशारा, ईसा मूसा मुहम्मद नैण उठाईआ। जो नानक निरगुण सरगुण धार किहा निहकलंक नर नरायण

होवे अवतारा, अवतर आपणा वेस वटाईआ। जिस नूं गुर गोबिन्द सिँघ किहा कलि कल्की मेरा साहिब स्वामी अन्तरजामी दो जहानां होवे उज्यारा, निरगुण निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। उस वरन बरन ज़ात पात दीन मज़्ब दा करना अन्त किनारा, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप इक्को धर्म दी धार होवे जैकारा, डंका फ़तिह दए वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच आपणा हुक्म वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं गोबिन्द रूप अपारा, अपरम्पर स्वामी दए वड्याईआ। मानव ज़ाती सच्चा सिख बणे ते मिले साहिब सच्ची सरकारा, जो जुग चौकड़ी आपणी कार कमाईआ। मुच्छ दाढ़ी केस एह परम पुरख दी धारा, गोबिन्द सब नूं गया जणाईआ। जिस वेले कलयुग विच्चों सतिजुग होया उज्यारा, उस वेले मूंड मुंडाया रहिण कोए ना पाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता कलि कल्की लए अवतारा, सम्बल आपणा देस सुहाईआ। नाम सति सति नाम एह आत्म परमात्म परमात्म आत्म दोहां दा इक दवारा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस कारन बाजवा साहिब चल के आया ओस दी बख्शिश विच मिले अमृत रस बूँद स्वांती ते निझर ठंडी ठारा, बाहर दी अग्नी तत ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जाता पुरख बिधाता, आदि अनादी शब्द ब्रह्मादी, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार परवरदिगार सांझा यार बेपरवाह अगम्म अथाह आपणी खेल आप खिलाईआ।

✪ २७ पोह शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल रात नूं ✪

लिखारीओ कलमां कर लओ पुट्ठीआं, लिखण दी लोड़ रहे ना राईआ। प्यार विच कहो प्रभू पहलों भगतां दीआं रूहां मना लै रुट्ठीआं, रोसा रहिण कोए ना पाईआ। जे सतिगुरु एं इन्हां दीआं कर बुत्तीआं, घर घर फेरा पाईआ। जे मेहरवान हैं ओ सुहा दे इन्हां दीआं रुतीआं, रुतड़ीआं आपणे नाल महकाईआ। तेरे पिच्छे पन्ध मारया तोड़ीआं जुत्तीआं, ओह चम्यारा गंढ दे गंढ के आपणे नाल जुड़ाईआ। जेहड़ीआं जुग चौकड़ी निशान्यों उकीआं, उन्हां दा उका पैंडा दे मुकाईआ। क्यों पिछल्यां दीआं मुन्यादां मुकीआं, ओह मुकम्मल तेरा वेला वक्त गया आईआ। तेरे हुन्दयां जे तेरयां भगतां दीआं आशा रहिण दुखियां, दुक्खां दा डेरा देणा ढाहीआ। इन्हां कोलों तेरे विछोड़े दीआं पंडां नहीं जाणीआं चुक्कीआं, भार सके ना कोए उठाईआ। तेरे कोल केहड़ीआं कथा कहाणीआं लिखीआं, लुक्या आपणा पर्दा दे चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, एका देणा साचा वर, सच आपणा हुक्म वरताईआ। लिखारीओ आपणीआं कलमां कर लओ सिध्धीआं, हथ्थ छाती उत्ते लगाईआ। नाले लिखो नाले अन्दर कहो प्रभू तेरे प्रेम विच गुरमुखां दीआं आशा जाण विंन्हीआं, विंन्ह के दे वखाईआ। जे तेरे हुन्दयां तेरयां भगतां नूं होर लभ्भणीआं पैण बिधीआं, ओ तैनूं बिधाता कौण कहे धुर दा माहीआ। वेख भगतां दीआं आशा किड्डीआं, किथ्थे बैठे ध्यान लगाईआ। ओ जिथ्थे तेरे अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं दीआं जोतां छिन्दीआं, उथे देणा बहाईआ। हुण तूं काहन नहीं भगवान हैं तूं केहड़ीआं लाउणीआं उँगलां नाल बिन्दीआं, केहड़े बिन्दराबन विच रास लैणी रचाईआ। केहड़ीआं पट्टीआं वाहुणीआं विंगीआं, टेडा चीर कढ्ढाईआ। केहड़ीआं लक्क नूं मारनीआं लुंगीआं, पेचां वल्ल रखाईआ। केहड़ीआं हलाउणीआं किंगीआं, सुर ताल बणाईआ। ओ इक्को वार, जे सतिगुरु एं तां सब दीआं मेट दे चिन्दीआं, चिन्ता अन्दर रहे ना राईआ। कोई डण्डीआं रहिण नहीं देणीआं विंगीआं, सिध्धा राह देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच आपणा हुक्म वरताईआ। ओह वेख कलमां कहिण फड़ लै आपणा नक्क, हलूणा दे लगाईआ। सब दी झोली पा दे हक, जो हक दे मालक बैठे डेरा लाईआ। साहिब हो के किसे दे अन्दर रहिण ना देवीं शक, सहिंसा सब दा देणा मिटाईआ। इन्हां दीदयां नाल ना लवीं तक, नूर नूर नाल वेखणा चाँईं चाँईंआ। पहलों इन्हां दी चुरासी कट,
१०७५ कलम हुक्म नाल चलाईआ। फेर किरपा कर झट, मेहर निगह नाल उठाईआ। सदा आपणयां चरणां दा खोल्ह के रखीं १०७५
२२ हट्ट, दवारा इक्को इक वखाईआ। जिथ्थे तेरे भगत होण इकल्ले तेरे साथ, लै के भज्जण वाहो दाहीआ। कोई ऐधर कोई २२
ओधर सारे जाण ढट्ठ, जे वेखें ते पुरख समरथ, सब दा पिता माईआ। की तूं पुराणा जुगां दा चलाउण वाला रथ, रथवाही इक अख्वाईआ। वक्ख वक्ख मार्ग दिते दस्स, पट्टी जगत वाली पढ़ाईआ। हुण ते सब दी हो गई बस, तेरे बच्चू बण के तेरे अग्गे वास्ता पाईआ। साडी करनी कर दे रफ़, लेखा दे मुकाईआ। किसे नूं गर्मी हो गई किसे नूं हो गई कफ़, तबीब नज़र कोए ना आईआ। सच्ची शफ़ा ना कोई होवे शफ़, शफ़कत नज़र कोए ना आईआ। ओ जगत नेत्रां वाल्या इन्हां अक्खां तों पिछली खोल्ह आपणी अक्ख, प्रतख आपणी दया कमाईआ। ओ तैनूं याद नहीं तूं कौल इकरार कीता मैं इक तों करना लख, लख पातालां आकाशां विच फिराईआ। की तूं कोई पंडत पांधा एं भगतां दे वेखेंगा हथ्थ, हथेलीआं आपणे अग्गे टिकाईआ। ओह वेख बिशन सिँघ कहिंदा मेरी पहली होई चट्ठ, प्रभ ने मार्ग दिता बणाईआ। मैं पुरीआं लोआं आया टप्प, भज्जया वाहो दाहीआ। मेरी निक्की जेही प्यार वाली गप्प, गपौड़ा धुर दा दयां सुणाईआ। जन भगतों उथे कोई अमृत नहीं मिलदा भर के लप्प, प्याला हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। ना कोई पूजा ते ना कोई जप, ना राग रिहा सुणाईआ।

मैं की वेख्या इक्को नूर ते इक्को सति, जो सति सति विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। कलमां कहिण तूं सानूं बख्शिश विच अग्गे कर दिता दान, पंज्जयां नाल दबाईआ। असीं हुण लेखा रहिण नहीं देणा ना किसे सीता ते ना किसे राम, ना किसे गोपी ते ना किसे काहन, ना किसे पैग़म्बर ते ना किसे अमाम, तेरा हुक्म संदेशा लिखणा तमाम, तमां दा झगड़ा रिहा ना राईआ। प्रभू तैनूं एह केहड़ी बीमारी तूं जुग चौकड़ी सारयां नूं आपणे नाम कलमे नाल खुरक खुरक के मज़्बां दे पा दिते निशान, निशाने जगत विच वखाईआ। शरअ दी दस्सी आपणी धर्म शैतानी वाली कलाम, अवामी खेल खिलाईआ। आप बण के भगवान वडा भलवान नौजवान किसे नूं इक ना मिले ते आप लख चुरासी गोपीआं दा काहन, फिर कहें मैं निराकार, मैं वसया सब तों बाहर, जां तक्कया सब दे अन्दर वड़ के यारां दा यार, यारी चोरी चोरी सब दे नाल कमाईआ। फेर उस वेले कहि देवें मैं सब दा मुख्त्यार, गुर अवतार पैग़म्बर मेरी नार, मैं शहिनशाह सिक्दार, हुक्म आपणा इक चलाईआ। पर याद कर लै हुण बदल गया संसार, विष्न ब्रह्मा शिव दी रहिणी नहीं धार, नाता तुटणा चार यार, इक हुक्म मिलणा जिस ने सब नूं करना ख़बरदार, ओ बेख़बरा ओ बेख़बरा ओ बेख़बरा ख़बर सब नूं देणी सुणाईआ। ओ तूं मुर्शद बणा के पैग़म्बर बणा के कबरां विच दिते सवाल, उथे करदे हाल हाल, साडी पूरी होई घाल, तेरा बैठे राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। कलमां कहिण ओ प्रभू तेरी बड़ी वड्डी समस्सया, समें दे मालक दईए जणाईआ। तूं घट घट दे विच वसया, वसणहार अख्वाईआ। किसे नूं आह ते किसे नूं औह राह दस्सया, रस्ते रसतिआं विच्चों कढ्ढाईआ। शरअ तों बाहर अवतार पैग़म्बर गुरु कोई ना छड्डया, सारयां नूं बन्धन दिते पाईआ। आपणे नाम दे बणा के अड्डया, टिकाणे दिते जणाईआ। सब नूं किहा मैं तुहानूं आपणी कुख्खों कढ्ढया, आपे जम्मण वाली माईआ। ते जे किसे नूं दुःख प्या ते मातलोक किसे ना लब्भया, खोज्जयां हथ्थ किसे ना आईआ। दीपक हो के जोती जगया, तन अन्दर कीती रुशनाईआ। शब्द नगारा हो के वज्जया, डौरु डंक दिता सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ। ओ कलमां कहिंदीआं, इक्ट्ठीआं बहिंदीआं, लम्मीआं पैंदीआं, चरणी ढहिंदीआं, ओह भाणा सहिंदीआं, इक दूजे दे नाल नोकां मिला दयो कहिंदीआं, अज्ज असीं हथ्थ नूं लाउणीआं मैहन्दीआं, अमाम मैहन्दी आपणा रंग रंगाईआ। हुण असीं जाणा दिशा लहिंदीआं, नच्चीए टप्पीए जाईए चाँईं चाँईंआ। फ़रिशतिओ हुक्म ल्याउण वाल्यो आपणे मोढ्ढयां उत्ते चुक लओ वैहन्गीआं, हथ्थ अग्गे पिच्छे रख के भज्जो वाहो दाहीआ। उच्ची कूक कूक

के कहिंदीआं, कहि कहि सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। कलमां कहिण जन भगतो लाह लओ सुस्ती, हथ्थ अक्खां उत्ते फिराईआ। जेहड़ा कोई सूरबीर आओ आपणे भगवान नाल करो कुशती, जिस ने कुशतिआं दे कुशते देणे लगाईआ। तरमीम करन लग्गा ते करन लग्गा दरुस्ती, दरुस्त आपणा हुक्म जणाईआ। मुल्लां शेख़ रहे कोए ना मुफ्ती, मुफ्त विच आए मुफ्त विच दए लुटाईआ। आह वेखो अल्ला राणी खुशी नाल पल्लू चुक्क के पुछदी, नैण टेडी अक्ख वाला बणाईआ। परवरदिगारा सांझा यारा मैनूं पता लग्गा तूं रुत सुहाउणी आपणे गोबिन्द प्यारे सुत दी, जो सुत्तयां जगत लए जगाईआ। तूं शरअ मिटाउणी काया बुत दी, बुतख़ान्यां करनी सफ़ाईआ। तूं खेल रचाउणी लुट दी, ओ लुटेरयो मेरी उम्मत लुटणी चाँईं चाँईंआ। देखीं मेरी लाज रखीं गुत्त दी, चूंडे वाल्यां कोलों ना देवीं पुटाईआ। मैं वी जन्मी तेरी कुख्ख दी, नूर जोत जोत विच्चों आईआ। मैं डर गई जदों सोहणया आवाज़ सुणी तेरी इक तुक दी, जिस ने तुख्म तासीर सारी देणी बदलाईआ। मैनूं ऐं जापणा मुहम्मद दी सदी चौधवीं जांदी मुकदी, जिस दी गोली विचोली बण के कलम रही चलाईआ। जन भगतो एह गल्ल बड़ी दुःख दी, मुहम्मद दी आसा दए दुहाईआ। जिस उम्मत ने छाँ माणी सी मुहम्मद वरगे रुक्ख दी, बैठी डेरा लाईआ। उस दी अज्ज टहिणी वेखो टुट्ट दी, पत्ता पत्ता दए दुहाईआ। जिस नूं नसीब नहीं होणी पाणी धार घुट्ट दी, तृष्ना जगत ना कोए बुझाईआ। मैं तुहानूं अज्ज पुछदी, प्रभ दे प्यारयो गोबिन्द दे दुलारयो मैनूं दयो सुणाईआ। ओ केहड़े तरीके नाल भुक्ख्यां दी भुक्ख मिटदी, दुःख रहे ना राईआ। घड़ी आए सुहञ्जणी सुख दी, सति रंग रंगाईआ। जन भगत कहिण ओ कमलीए, जेहड़ी माटी ख़ाक साडे साहिब दे अग्गे झुकदी, लम्मी पै के सीस निवाईआ। ओह तुहाडा प्यार उहदे प्रेम विच्चों लुट्टदी, आपणी झोली लए भराईआ। उहदी हयाती कदे नहीं निखुट दी, खोट्टयां खरे दए बणाईआ। उहदी खेल नहीं किसे मनुक्ख दी, पंजां तत्तां ना वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा फेरा आपे पाईआ। कलम कहे तूं बड़ा सूरबीर बहादर, आपणा आप बणाईआ। बण के करीम कादर, करता इक अख्वाईआ। संसार नूं दस्स के जगत सागर, वहिण कूड़ वाले वहाईआ। आप वड़ के काया वाले गागर, जुग जुग वेस वटाईआ। कल्मयां दा बणदा रिहों सौदागर, जगत वणज वखाईआ। खेल दस्स के पिदर मादर, आपणा पड़दा पड़दयां विच्चों चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। ओ प्रभू तूं फेर करन लग्गा चालाकी, आपणी कल वखाईआ। ओए बाहरों बन्दा ख़ाकी, तन दिसे पोशाकी, अन्दर वाड़ के घोड़ा राकी, ओ शाह सवारा शब्द ते मारें पलाकी, दो जहानां खोल्ह के

ताकी, फफ्फे कुटणीआं वांगू मात भुलेखे पा के लाउण आया टाकी, टकयां दे पिच्छे सारी दुनिया दिती रुलाईआ। मैं चार चुफेरे वेख्या केहड़ा सूरबीर राठी, केहड़ा मंज़ल बा मंज़ल चढ़े फिरे उच्ची नीवीं घाटी, लभ्भदा फिरे अंधेरयां विच राती, केहड़ा दुनिया विच प्रभू दा जमाती, जेहड़ा इक्को नाम पढ़ के दूजा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। कलमां कहिण खुदा तेरीआं खुद दीआं दस्सीआं होईआं कलामां, कायनात देण गवाहीआ। जिस विच पैग़म्बर बणाए गुलामा, बन्धन शरअ वाले रखाईआ। हक दा वजा के दमामा, दामनगीर हो के पल्लू दिते फड़ाईआ। आपणे थोड़े थोड़े वखाए गुदामा, जिथ्थों भण्डारे रिहा वरताईआ। मुहम्मद जदों रोंदा सी पहलों उच्चीआं करे बाहवां, फेर हथ्थ कन्नां उत्ते टिकाईआ। चौदां वार किहा आपणी ज़िंदगी विच ऐ मेरे महिबूब मैं कोई बच्चा तेरा नहीं लावां, मेरा वालद वालदा तेरे बिना नज़र कोए ना आईआ। खुदा ने किहा उठ तैनूं खेल वखावां, सहिज नाल जणाईआ। हज़रत हुण तूं मालक ते फेर तैनूं बणा देवां निथावां, लोकमात घराणा रहिण कोए ना पाईआ। जे बख्श्या ते इक सौ इक टावां टावां, जेहड़ा गोबिन्द इक सौ इक धरनी दी भेंट कराईआ। ओह वी मिल जाए नाल मेरयां

१०७८ भगतां ते नाता बणा ल्ए वांग भरावां, शरअ दा लेखा ना कोए रखाईआ। मुहम्मद किहा ओ मालक मैं तकां तेरीआं राहवां, १०७८

२२ महिबूब ध्यान लगाईआ। मैं रोवां ते कुरलावां, हन्झूआं हार बणाईआ। परवरदिगार किहा मैं तेरा दिल पर्चावां, प्राचीन दा २२

लेखा दे वखाईआ। कलि कल्की बण के आवां, जोती जामा रूप धराईआ। अमाम अमामा रूप दरसावां, नूर नुराना डगमगाईआ। तेरे गलों शरअ दा लाहवां गलावां, ज़ंजीरां चौदां दयां कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा हुक्म वरताईआ। ओ पंज लिखारीओ कलमां पा लओ विच मूँह, मूँह ज़ोर नाल खुल्हाईआ। नाले लिखो ते नाले अन्दरे अन्दर कहो वेला आ गया नदी नूह, नबी नूह दए दुहाईआ। जिस दी याद विच मुहम्मद ने कलमा कीता सी शुरू, शरअ दा राह तकाईआ। उस वेले फ़रमान होया पैग़ाम आया तेरी सदी चौधवीं तों बाद मेरा कलमा होणा गुरु, दूजा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर करनी कार कमाईआ। मुहम्मद खिड़ खिड़ा के हस्सया, आहा आहा आहा कर के दिता सुणाईआ। ओ प्रभू तेरी शहिनशाही सम्मत छे विच केहड़ी होणी समस्सया, केहड़ा राग सुणाईआ। खुदा ने किहा मेरे वाली खोल्ह लै अक्खीआ, अक्ख मेरे नाल मिलाईआ। ओ मुहम्मद मैं उस वेले पूरन विच होणा वसया, वसल यार वाला कराईआ। सच संदेशा इक्को दस्सया, प्रेम नाल सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणा रंग रंगाईआ। मुहम्मद खुशीआं दे विच

सोया, आसण इक लगाईआ। जां तक्कया पूरन जोत दा पूरन प्रकाश होया, दो जहानां वज्जी वधाईआ। फेर वेख्या मैथों सब कुछ जाणा खोहया, ख़ाली हथ्थ कुरलाईआ। उस ने भगतां नूं देणा ढोया, वस्त अमोलक झोली पाईआ। सच दा बीज देणा बोया, धर्म दी जड़ देणी लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। मुहम्मद आया इक अनन्दा, अनन्द विच समाईआ। साहिब मेरा बख्शंदा, मेहरवान नूर इलाहीआ। उस ने बाहरों वेस वखाउणा पंजां तत्तां वाला बन्दा, हथ्थां पैरां वाला नड्डे भज्जे वाहो दाहीआ। फेर उस दे कोल चौदां तबकां उत्ते मारन वाला होणा डण्डा, डण्डावत सब दी दए बदलाईआ। फेर आपे बण के कन्त सुहागी आपे हो जाणा रंडा, इक इकल्ला फिरे वाहो दाहीआ। पता नहीं उहनूं एह भाणा क्यों लगदा चंगा, जुग जुग आपणी कार कमाईआ। मैनूं समां नहीं बख्श्या लम्बा, चौदां सौ साल मेरी झोली पाईआ। नाले थरथराहट विच आ के कम्बा, गोडयां भार हो के दिता सीस झुकाईआ। ख़ुदा ने खेल वखाया अचंभा, हैरानी हैरानी विच्चों प्रगटाईआ। मुहम्मदा ओह वेख मेरा किक्कर वाला टम्बा, किड्डा मोटा सोटा सोहणा नज़री आईआ। जिस ने चहुं जुगां दीनां मज़्हबां दा कर देणा धन्दा, पंजाबी बोली विच प्रसिद्ध मेरा नाम दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।
१०७६ २२ कलमां कहिण सताई पोह दी समस्सया सोहणी ""पूरन जोत दा पूरन प्रकाश होया, अर्श फ़र्श ते कीती रुशनाई होईए।"" क्यों अवतारां पैग़म्बरां दा लेखा जाणा खोहया, ख़ाली हथ्थ देवे कराईआ। कोई भेत रहिण नहीं देणा चूंकि चुनांचे अगरचे मगरचे गोया, गोबिन्द ने आपणा खेल देणा वखाईआ। देवत सुर दूर दुराडा प्रभ दा दर्शन कर के जाणा मोहया, मुहब्बत प्यार वाली बणाईआ। सचखण्ड रहिणा नहीं कोई सोया, आलस निंद्रा सब दी दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। पंज लिखारी सम्बल देस दी मारो लीक, सिध्धी कलम नोक नाल खिचाईआ। संभल मारो लीक, लाईन सोहणी सोभा पाईआ। शब्द गोबिन्द करे तस्दीक, शहादत दए भुगताईआ। वेखो नूरी लाशरीक, शहिनशाह बेपरवाहीआ। जिस दे विच अगम्म तौफ़ीक, जिस नूं समझे कोए ना राईआ। जिस ने सानूं बणाया अज़ीज़, दिती माण वड्याईआ। ओह भगतां दी पूरी करन आया रीझ, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। सति धर्म दा बीजे बीज, किरसाणा अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। सम्बल कहे मेरे घर होया पूरन प्रकाश, जोत जोत नाल रुशनाईआ। अर्श फ़र्श ते पैंदी रास, सोहणी वज्जी वधाईआ। एस समस्सया दा गुण सी ख़ास, जो लिख के दिती दृढ़ाईआ। बिना इक तों किसे

ते नहीं रखणा विश्वास, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। जो वसे पृथ्मी आकाश, दो जहानां सोभा पाईआ। जन भगतो तुसीं उस दे गुण गाणे ते ओन तुहानूं देणी शाबाश, सिर तुहाडे हथ्थ टिकाईआ। अज्ज खुशी ओह तुहानूं वंडे ओह प्रेम वाले इनामात, जो अनामी देश विच जुग चौकड़ी आपणे घर रखे लुकाईआ। बाकी दुनिया सुणे सिफ्त काग़ज़ात, अक्खरां वाली पढ़ाईआ। तुहाडे साहमणे पूरन पूरन जोत प्रकाश, नूर नुराना नज़री आईआ। अर्श फ़र्श जिस दे दास, सेवक हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। अर्श फ़र्श होई रुशनाई, किरपा करी मेहरवान। जन भगतो तुसीं वेखो चाँईं चाँईं, तुहाडे घर आया भगवान। जोत नूर रिहा रुशनाई, जिस नूं कोटन झुकदे रवि ससि ते भान। जिस दे चरणां हेठां लुकदे, अणगिणत तत्तां वाले राम। जिस दे कोलों हुक्म संदेशे पुछदे, करोड़ी गोपीआं वाले काहन। पैग़म्बर वणजारे जिस दी तुक दे, पैग़ाम सुणन बिना कान। गुरुआं नाते बणाए प्यारे सुत दे, गोबिन्द सूरा दिसे बलवान। हुण वेले उस दे ढुकदे, जो लाड़ा बण के ढुक्कया विच जहान। जिन लेखे मुकाउणे लुट्ट दे, कूड़ी क्रिया मेटे निशान। नाते सांझे करने मानस मानुख दे, सच प्रीती दे के दान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि सतिगुर मेहरवान। मेहरवान महिबूब आया, अड़ीओ तक्को

१०८०

२२

नैण उठा। ओह जिस ने ढोला तुहाडा गाया, प्रेम प्रीती नाल चाअ। तुहाडे दर ते मंगण आया, ओ वड्डयो निक्कयो बण जाउ भैण भ्रा। जो तुहानूं आपणी नहीं ते सतिगुरु दी रखो लज्जया, ते आ जाउ शर्म वाले विच हया। क्यों एह मालक पीर पैग़म्बरां दा, ते हकी नूरी खुदा। हाए किस तों होए जुदा, जुज़ आपणा वंड वंडाईआ। ओ इस कारन गोबिन्द अमृत गया प्या, जाम धुर दा मात लिआईआ। क्यों उस नूं गए भुल्ला, माया ममता कर हल्काईआ। ओह आ गया ओह आ गया ओह आ गया तुहाडा बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। जिस ने तुहाडे नाल आपणा सांझा कर ल्या नाँ, तूं मेरा मैं तेरा ढोला दिता गाईआ। उस ने कबूल नहीं करना जिन्हां ने सूर खाधा जा गां, पैग़म्बरां गुरुआं नूं साहमणे दए वखाईआ। ओ उस नूं कोई मज़्हब दी नहीं तमा्हं, लालच विच कदे ना आईआ। शरअ दा नहीं ग़मां, ग़मखार धुरदरगाहीआ। हद्द नहीं कोई बन्ना, वंड ना कोए वंडाईआ। जन भगतो जिस दा गोबिन्द सोहणा चन्ना, सम्बल बैठा डेरा लाईआ। ओह तुहाडे साहमणे अक्खां तों हो के अन्न्हा, नूरी नूर करे रुशनाईआ। जिस कारन गोबिन्द ने लाया कन्ना, हद्द पिछली दिती मुकाईआ। अग्गे इक्को पुरख अकाल दा होणा समां, दूजा बल ना कोए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। कलमां कहिण ओ दुष्ट दमना अग्गे आ जा भज्ज, आपणा

पन्ध मुकाईआ। चरण बैठणा सज, दर ठांडे सीस निवाईआ। ओ तपसवीआ उठ वेख लै आपणा जग, चारों कुण्ट अग्नी रही तपाईआ। चल तैनूं आपणी समस्सया देवां दस्स, सहिज नाल सुणाईआ। पूरन जोत दा पूरन प्रकाश होया ते लुकदे रवि शशि, सिर सक्या ना कोए उठाईआ। भगत भगवान दोवें रहे हस्स, खुशीआं रंग रंगाईआ। पहले लंगोटी बद्धी ते फेर तेरे साथी ने बन्न्ह लई कच्छ, सोहणा रूप वटाईआ। हुण फेर तकें ते हो गया सरूप स्वच्छ, जगत कपड़ दा लेख दिता मुकाईआ। ओ बच्चयो तुहाडी ज़रूर खोल्हांगां अक्ख, वड्डुयां छोटयां आपणा रंग रंगाईआ। प्रेम दा देवांगा रस, रसना रस ना कोए वड्याईआ। तुसीं बैठे रिहो ते मैं तुहाडा गावांगा जस, सितार शब्द वाली उठाईआ। जेहड़े मेरे प्यार विच गए फस, उन्हां दा फैसला अन्त देणा मुकाईआ। अजे वी नहीं करनी बस्स, बस्ते पिछल्यां दे सारे देणे बंधाईआ। साहिब ने गंढां देणीआं कस कस, कसम सुगंदां खा के प्रभ तों पल्लू लैणा छुडाईआ। किसे ने अग्गे किसे ने पिच्छे सचखण्ड दरगाह साची नूं जाणा नट्ठ, भज्जण वाहो दाहीआ। फेर होणा इक धाम ते इक्ट्ठ, प्रभ दी समस्सया इहो रही सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। पंज दरबारी प्रभ दे पैर चुम्मो, चम्मदृष्टी दयो गंवाईआ। पंज प्यारे इधर ओधर घुंमो, खुशीआं विच पन्ध मुकाईआ। पंज लिखारी निमस्कार करो

१०८१ वार तिन्नों, त्रैगुण दा डेरा ढाहीआ। जन भगतो तुहाडा प्रकाश करना दिन दिनो, पूरन प्रकाश दी इहो वड्याईआ। क्यों १०८१

२२ तुसीं गोबिन्द दे दुलारे ते गोबिन्द दे चन्नो, अन्त गोबिन्द गोबिन्द हथ्थ वड्याईआ। हुण लम्मे नहीं सफ़र दिन पोटयां उत्ते २२

गिणों, गिणती दा लेखा दयां चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। ओ वेखो ईसा पुकारे बिना चर्च, चर्चा आपणी रिहा सुणाईआ। सदी बीसवीं दे भगतो भगत दवारे आउण वास्ते कदी महिसूस ना करयो खरच, पैसा धेला कम्म किसे ना आईआ। समझयो ना होया हर्ज, हर्जाने सब दे पूरे दए कराईआ। क्यों परवरदिगार नूं तुहाडे नाल ग़रज़, ग़रीबां दा ग़रीब हो के तुहाडी सेव कमाईआ। बड़ा पुराणा मुनीम बड़ा पुराणा करीम बड़ा पुराणा रहीम जिस ने तुहाडी सांभ के रखी फ़रद, प्यो दादे वल्लों तुहाडा रिकारड हथ्थ किसे ना आईआ। पूरब वाहिदा कौल इकरार वाला बण के मर्दाना मर्द, पाजीआं वाला रूप ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि साहिब बेपरवाहीआ। हज़रत ईसा कहे मैं दस्सां इक अवाज़, मुहब्बत विच जणाईआ। जिस दा खुल्ल्हे कदे ना राज़, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। मैनूं नौ वार वखाया पंज मुखी आपणे सीस दा ताज, पंचम धार प्रगटाईआ। दो जहानां सुणाया इक दा होणा राज, दूजी रईयत रहिण कोए ना पाईआ। मैनूं

फेर वखाया गोबिन्द दे हथ्थ ते उडदा बाज, बाजां वाला नाउँ धराईआ। फेर दरसाया मेरी जोत दा होणा प्रकाश, पूरन प्रकाश करे रुशनाईआ। हज़रत ईसा कहे मैनूं आ गया विश्वास, विश्व दे मालक नूं सीस दिता निवाईआ। ओस वेले मैं दहिले तों लै के किंग तक पत्ते सुट्टे सी ताश, हस्स के किहा ओह दस्म दुआरी चढ़न वाल्यो मेरे पातशाह ने रस्ते बन्द देणे कराईआ। फेर मेरा वक्त दा वखाया कलाक, जो टक टक अवाज़ सुणाईआ। जां मैं वीहवीं सदी तकी मैनूं दिसया सब नाल हो जाणे तलाक, नाता रहिण कोए ना पाईआ। जिस तरह मैं पाई वफ़ात, फेर हुक्म लिखणा नाल कलम दवात, सब दा लेखा मुकाउणा इक्को छब्बी पोह दी रात, संदेशा धुरदरगाह जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। ईसा कहे भगतो तुसीं बहुते ते नहीं थक्के, सच दयो सुणाईआ। वेखो मेरा ख़ुदा फिरदा मदीने मक्के, काअब्यां खोज खुजाईआ। जिन्हां खाधे खल्लां लाह के कट्टे, कटड़ आपणा हुक्म सुणाईआ। ओह धर्म दवारे तों अग्गे कोए ना टप्पे, चुरासी विच दए भवाईआ। क्यों पुरख अकाल दीन दयाल ने हुक्म नाल पुट्ठे करा दिते पप्पे, पूरन ब्रह्म ना कोए दृढ़ाईआ। जिंना चिर भगत बणन ना पक्के, ओनां चिर जगत विच सन्त साध सूफ़ी फ़कीर दरगाह दी मंज़ल चढ़न कोए ना पाईआ। हुण कोई सतिगुरु ओह नहीं जिहनूं ख़रीद लओगे नाल टके, माया वाला लालच जगत वखाईआ। हुण ग़रीबां दे दाइरे विच गया टप्पे, मायाधारी सके ना कोए बाहर कढ्ढाईआ। उन्हां दे अन्दर वसे, जिन्हां दा गोबिन्द इक्को माहीआ। ओह आपणे वेले वक्त नूं तके, कन्ढी बैठा धुरदरगाहीआ। जो शब्द संदेशा निरगुण धार दिता नानक तपे, सचखण्ड सच सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। ईसा कहे मैं तक्कया अगम्म नज़ारा, नज़रीआ ल्या बदलाईआ। जिस वेले मेरा होणा किनारा, अन्तिम दए गवाहीआ। उस वेले प्रगट होवे एकँकारा, परवरदिगारा नूर इलाहीआ। जिस दा हुक्म वरते विच संसारा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सब ने बन्दना डण्डावत करनी निमस्कारा, सजदयां विच सीस झुकाईआ। उस दा आत्मा परमात्मा दा होणा इक जैकारा, आपणा इकल्ला नाम ना किसे जपाईआ। मेरा निक्का जेहा इशारा, जो प्रभ ने सैनत दिती लगाईआ। जिस वेले गोबिन्द आया दुबारा, दुहरा खेल खिलाईआ। उहदा सम्बल होणा साढे तिन्न हथ्थ दा मुनारा, मुनी रिषी समझ कोए ना पाईआ। उहदा समस्सया वाला छब्बी पोह दा होणा दिहाढ़ा, त्यौहार जगत नाल रलाईआ। सताई पोह नूं आपणी खुशीआं वाली सुणनी वारा, भगतां सिफ्त विच सालाहीआ। पूरन जोत दा पूरन प्रकाश होया एह वी खेल अपारा, अपरम्पर रंग रंगाईआ। अर्श फ़र्श दए अधारा, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगतां बख्शे प्यारा, मुहब्बत आपणे नाल मिलाईआ।

सब दा लेखे लग्गा आया दिहाढ़ा, मज़दूरी मुहब्बत वाली सब दी झोली दए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच प्रेम दा बणया रहे वरतारा, देवणहार आपणी दया कमाईआ।

✪ २८ पोह शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल शादीआं समें ✪

सतिगुर शब्द बहुत गुणवन्ता, गहर गम्भीर अख्वाईआ। जिस बणाई सच दी बणता, मार्ग सच लगाईआ। धर्म दी धार उपजाई संगता, धुर दा संग रखाईआ। धुर नाम दा बणे पंडता, बुद्धी तों परे बोध दए कराईआ। सच प्रीती अन्दर रंगदा, रंगण अगम्म चढ़ाईआ। जिस निशान बणाया तारे चन्द दा, अन्त लेखा पूर कराईआ। जिस खेल खिलाया गोबिन्द पुर अनन्द दा, अनन्द अनन्द नाल जणाईआ। उस दे हुक्म नाल जुग चौकड़ी जांदा लँघदा, पाँधी बण के पन्ध मुकाईआ। अग्गे पुरख अकाल कोलों इक वस्त मंगदा, ख़ाली झोली रिहा वखाईआ। जन भगतां लेखा रहे ना मंद दा, दर ठांडे देणी माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।
१०८३
२२
सतिगुर शब्द आदि अन्त दलेर, दयावान अख्वाईआ। करदा आया मेहर, मुहब्बत विच वड्याईआ। बण के दो जहानां केहर, भबक सिँघ वाली लगाईआ। जिस ने झगड़ा मेटणा अण्डज जेर, जगत खाणी पन्ध मुकाईआ। अन्तर रहिण नहीं देणी तेर मेर, तेरा मेरा इक्को घर वसाईआ। कूड़ी क्रिया करनी ढेर, ख़ाकी ख़ाक विच मिलाईआ। कलयुग दा लेखा अन्त नबेड़, सतिजुग दा साचा राह चलाईआ। जन भगतां चाढ़ के आपणे बेड़, बेड़ी नईया नौका आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सतिगुर शब्द करदा अदली बदली, जुग जुग खेल खिलाईआ। सच दवार दा बण के अदली, इन्साफ़ आपणा दए प्रगटाईआ। गुरमुख बणा के हीरे रत्नी, अमोलक वंड वंडाईआ। पिछली पिच्छे मेट के मतनी, मति अगली दए समझाईआ। ओह भगत ओह गुरसिख जेहड़े प्रभू दे दवारे बणन पति ते पत्नी, दूजा प्रभ दा मीत ना कोए अख्वाईआ। जिस ने एथे उथे पति रखणी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आत्मा रहिण ना देवे सक्खणी, प्रेम प्रीती झोली पाईआ। जन भगतो एह चार जुग दी शरअ दी हद्द टप्पणी, इस तों वड्डी भगती होर नज़र कोए ना आईआ। इक्को आत्म परमात्म तुक रटणी, रट्टा समाजां दए मुकाईआ। जिस ने तुहाडी चुरासी कटणी, ओह करता होए सहाईआ। एह फेर रुत कदे नहीं लभ्भणी, खोज्जयां हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जिस ने सतिजुग दी साची रचना रचनी, रच रच के आपणी रचना आप प्रगटाईआ।

३० पोह शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल लोहड़ी समें

सतिगुर शब्द शब्द दी दे दलीला, जगत बुद्धी ना संग रखाईआ। सच दस्स क्यों गोबिन्द चढ़या अस्व नीला, नीली धार की चतुराईआ। क्यों वस्त्र पाया पीला, गुरसिख श्रृंगार सुहाईआ। क्यों घास दा तोड़या तीला, तिनका हथ्थ उठाईआ। क्यों आप तुड़ाया बाज़ कोलों चीलां, चरागाहां देण दुहाईआ। क्यों पुरख अकाल बणाया वसीला, वसल इक्को इक रखाईआ। क्यों बंस सरबंस वारयां कबीला, जगत निशान ना कोए वखाईआ। क्यों बण के छैल छबीला, आप आपणा गया समाईआ। क्यों आपणे आउण दी पा के गया ताहीला, तारीख तवारीख विच बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, साहिब तेरी शरनाईआ। सतिगुर शब्द किहा एह खेल आकाशां उत्ते, अर्श वज्जे वधाईआ। जिथ्थे पुरख अकाल सुहाए रुते, रुतड़ी आपणे नाल बणाईआ। उथे कोटन अवतार पैग़म्बर गुरु सुते, बिन आलस निंद्रा डेरा लाईआ। जिन्नां नूं सच दी धार गोदी चुक्के, चुक्क चुक्क आपणे रंग रंगाईआ। जिस वेले अवतारां पैग़म्बरां पैंडे मुके, अन्त अख़ीर नज़री आईआ। उस वेले भाग लगाया गोबिन्द दे जुस्से, जिस्म इस्म इक बणाईआ। जिस दे कोलों जगत शरीअत रुस्से, पासा मुख बदलाईआ। ओह सब दे लहिणे पुछे, पुछणहार इक हो आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द क्यों गोबिन्द गाया नहीं राग, शब्दी शब्द शब्द नाद सुणाईआ। क्यों हथ्थ उठाया बाज़, अगम्मी बणत बणाईआ। क्यों कल्गी सुहाई बिना ताज़, तख्त निवासी राह तकाईआ। क्यों चार वरन दा रचया काज, सिक्खी सिख्या विच वड्याईआ। क्यों धर्म चलाया जहाज़, चप्पू मलाह वाहिगुरु शब्द जणाईआ। क्यों सृष्टी दा सांझा कीता समाज, समग्री इक्को इक वरताईआ। क्यों पुरख अकाल दी सुणाई अवाज़, आपणा नाम ना कोए वड्याईआ। क्यों चारों कुण्ट रखी भाज, बिना सम्बल तों संभल के पैर ना किते टिकाईआ। क्यों संदेशा दिता खेल करां माझ, अन्त आपणी कल प्रगटाईआ। इस दा सति दे जवाब, सच नाल समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी किरपा आप कमाईआ। सतिगुर शब्द क्यों गोबिन्द कीता कमरकस्सा, बन्धन बंध बंधाईआ। क्यों तेड़ पवाया कच्छा, तन माटी जोड़ जुड़ाईआ। क्यों ग़रीबां कीती रच्छा, दुखियां दर्द वंडाईआ।

क्यों पुरी अनन्द छड के नस्सा, भज्जया वाहो दाहीआ। क्यों होड़ा लाया उपर सस्सा, हाहे टिप्पी तीर कमान जणाईआ। क्यों पूरनमाशी पाठ कीता दिन इक सौ अठा, चारे कुण्ट वंड वंडाईआ। क्यों चार वरन अठारां बरनां कीता इक्ट्ठा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश जोड़ जुड़ाईआ। क्यों अमृत जाम प्याया गट गटा, धुर दा रस चखाईआ। क्यों चीथड़ पुराणा वखाया फटा, माछूवाड़े डेरा लाईआ। क्यों खुल्ल्हीआं छड के लटां, पीर उच्च नाम दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। सतिगुर शब्द तूं आदि आदि दा दानी, दयावान अख्वाईआ। इक धर्म दी कर मेहरवानी, मेहर निगह उठाईआ। क्यों गोबिन्द दिती कुरबानी, खण्डे किरपानां नाल लड़ाईआ। क्यों मेट के आपणी निशानी, गुरमुखां रंग रंगाईआ। क्यों खेल खेलया चण्डी आदि शक्ति भवानी, चण्ड प्रचण्ड नाम वखाईआ। क्यों शरअ दी तोड़ गुलामी, शरीअत विच रखाईआ। क्यों बवन्जा कवी बणाए इनामी, बुद्धी बल वखाईआ। क्यों जीउँदा चढ़या काहनी, भार फट्टयां उत्ते टिकाईआ। क्यों हुक्म लेखा दस्सया शाह सुल्तानी, भेव अभेद खुल्ल्हाईआ। क्यों सम्मत शहिनशाही छे लेखा दस्सया रुहानी, रूह बुत तों पार कराईआ। क्यों हुक्म दिता जम्मू वाल्या फट्टा ल्याउणा मुरदयां वाला विच्चों मढ़ी मसाणी, छब्बी पोह रैण रुत्त सुहाईआ। क्यों खेल नूर नुरानी, जोती जाता आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द की खेल श्री भगवान, सच दे सुणाईआ। क्यों नहीं इक्की टके जम्मू वाल्यां नूं कीते दान, फट्टे वाला नज़र कोए ना आईआ। सतिगुर शब्द कहे एह हुक्म धुर फ़रमान, जिस नूं समझे कोए ना राईआ। सुण हुक्म ला के कान, संदेशा इक अलाहीआ। की होया जे भुल्ल गए गुरमुख रूप इन्सान, भुल्लयां हो सहाईआ। सब तेरे बच्चे अंञाण, बाली बुध ना कोए चतुराईआ। सतारां हाढ़ नूं एह ज़रूर भुगताउणा भुगतान, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। इक्की गुरसिख गोबिन्द नूं फट्टे उत्ते टिकाण, वारो वारी चुक्क के ल्यावण चाँईं चाँईंआ। सारी संगत खुशी करनी असीं जीउँदयां सतिगुर जीउँदे दी लाह लई मकाण, मरयां रोण कोए ना पाईआ। एह समां वेखे जगत जहान, सोहणा रूप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हो के हरि (मेहरवान), आपणा खेल खिलाईआ।

✪ १ माघ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

माघ कहे मैं खेल वेख्या सति सरूपया, सति सति वज्जी वधाईआ। निगह मारी चारे कूटया, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। दीन दुनी दी तकी पूज्या, समग्री हथ्थ उठाईआ। लेखा एका दूज्या, धुर रंग ना कोए वखाईआ। धुर हुक्म किसे ना बूझया, बुझी ना हवस हरस लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि साहिब सहिज सुखदाईआ। माघ कहे मैं खुशीआं जावां हस्स, हस्ती तक अगम्म अथाहीआ। जिस जगत तृष्ना कीती वस, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। सच प्रेम दा देवे रस, रस्ता आप खुल्हाईआ। धुर दा मार्ग दस्स, धर्म धार समझाईआ। मेटे रैण अंधेरी मस, नूर चन्द चमकाईआ। सिफ्त सालाही जस, धुर दे ढोले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। माघ कहे मैं तक्कया गहर गम्भीर, हरि गवर बेपरवाहीआ। जिस दा लेखा पातशाह फ़कीर, शहिनशाह हकीर रंग रंगाईआ। जुग चौकड़ी बदले तकदीर, तदबीर आपणे विच छुपाईआ। जिस दा होका दिता कबीर, गढ़ उत्ते चढ़ के दिती दुहाईआ। ओह कलयुग लेखा पूरा करे अख़ीर, भगतां होए सहाईआ। लेखे लावे जन्म कर्म सिँघ जसबीर, सुत ऊधम सिँघ वड्याईआ। जिस दी सिंघासण थल्ले सांभ के रखी तस्वीर, मेहर नज़र इक टिकाईआ। उस दा पिता बणा के फ़कीर, फ़िकरा शब्द सुणाईआ। गल वैरागीआं वाले चीर, खुल्हड़े केस केस समझाईआ। मेहरवान बख्श के धीर, धीरज आप धराईआ। तेरा बच्चा भैणां नालों विछड़न नहीं दिता वीर, ज़िंदगी ज़िंदगी विच्चों बदलाईआ। काया गढ़ शब्द दी धार कर तामीर, मन्दिर इक सुहाईआ। उहनूं मारे ना कोए शमशीर, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जदों चाहे बदल देवे तकदीर, तदबीर आपणे हथ्थ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। माघ कहे मैं तकां नाल अक्ख, बिन अक्खीआं अक्ख खुल्हाईआ। साहिब वेखां प्रतख, प्रभ दाता धुरदरगाहीआ। जिस ने किरपा करके ल्या रख, पंज गुरमुख देण गवाहीआ। नौ दवारयां दा जगत प्यार रस, रसां वाले नौ गन्ने कूक कूक सुणाईआ। बिना प्रभू दी किरपा तों सके कोए ना बच, बचपन झोली कोए ना पाईआ। इक्को हुक्म शब्द गुरु दा सच, सच सतिगुर शब्द अख्वाईआ। जो भाग लगावे काया कच्च, कंचन गढ़ सुहाईआ। लूं लूं अन्दर जावे रच, बेपरवाह आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। माघ कहे मैंनूं गन्ने करन इशारा, अन्तर निरन्तर ध्यान लगाईआ। साडा रस पीवे सर्ब संसारा, रसना रस विच समाईआ। साडा भोग जगत दवारा, जुगती जीवण नाल रलाईआ। पर जन भगतो

गन्ने कहिण असीं रो के मारीए ललकारा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। बिना पुरख अकाल तों मिट्ठा रस नहीं कोई संसारा, चारे खाणी कम्म किसे ना आईआ। जेहड़ा तुहाडी ख़ातर जोत सरूप हो के आया दुबारा, एसे करके दोबारे जीवण तुहाडी झोली पाईआ। जिस दा अवतार पैग़म्बर गुरुआं नाम विच कीता मज़ाहरा, सिफ्तां विच सालाहीआ। ओह सतिगुर शब्द बण के शाइरा, शरअ दे बन्धन रिहा कटाईआ। लेखा पूरा करे हो के ज़हूर ज़ाहरा, ज़ाहर आपणी कल धराईआ। इस दे बदले झगड़ा पैणा विच काहरा, कामल मुर्शद दए सुणाईआ। हरिजन रहे कोए ना बाहरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। माघ कहे जन भगतो आपणी जन्म दी कर लओ बदली, बदला राय धर्म दा दयो चुकाईआ। पुरख अकाला तुहाडा अदली, इन्साफ़ इक्को इक वखाईआ। जो आया भगतां दी यद लई, यदी आपणा हुक्म सुणाईआ। जिस ने तुहाडी आत्म धार सद्द लई, सद्दा शब्द वाला जणाईआ। चुरासी विच्चों कढ लई, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। माघ कहे पंजे गुरमुख नौआं गन्नयां दे करन टोटे, दो दो चार बणाईआ। जिस कारन खरे होणे खोटे,
१०८७ धुर दे रंग नाल रंगाईआ। बच्चे पार कराए छोटे, वड्डियां माण वड्याईआ। जिस रलणा सी प्रभू दी जोते, ओह जोती १०८७
२२ जोत करे रुशनाईआ। भवजल मारने पए ना गोते, डूंग्घा वहिण ना कोए वखाईआ। मात पित कोई कर सक्या ना सोचे, २२
सोच समझ तों बाहर आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर मस्तक लेख बणाईआ। माघ कहे जन भगतो सुणो मेरी धर्म दी कथा, कहि के दयां जणाईआ। पतिपरमेश्वर मन्नो यथार्थ यथा, यदी आपणा ध्यान लगाईआ। इक्को साहिब नूं टेको मथ्था, दूसर सीस ना कदे निवाईआ। जिस दा खेल मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठां, गुरदवारयां वंड वंडाईआ। धार बणा के अट्ठ सठा, जलधारा वहिण वहाईआ। चार जुग दे शास्त्र सुणा के टप्पा, सिफ्तां वाले ढोले राग जणाईआ। अन्तिम हो के आप प्रगटा, परगणा सम्बल इक सुहाईआ। निरगुण धार फिरे नट्ठा, भज्जे वाहो दाहीआ। वेस वटा पुरख समरथा, हरि करनी कार कमाईआ। गुरमुख सन्त जन भगत कर इक्ट्ठा, इक्को रंग रंगाईआ। योद्धा सूरबीर बहादर बण के हट्टा कटा, बलधारी आपणा बल प्रगटाईआ। जो दर आयां मेहरवान हो के ज़िंदगी दा देवे गफ्फा, बन्दगी धुर दी झोली पाईआ। चुरासी विच भवावण वास्ते कदे ना होवे ख़फ़ा, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सब दी ज़िंदगी विच्चों जीवण दा बदलया सफ़ा, वरका दिता उलटाईआ। धुर मुहब्बत दा मिले नफ़ा, नुकसान नज़र कोए ना आईआ। जो प्रभू दवारे आया ओह पुरख अकाल दा बच्चा, बचपन आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। माघ कहे मेरा इक्को इक संदेश, बिना सँध्या प्रभाती दयां जणाईआ। जन भगतो करना प्रभू दा हेत, हितकारी हो के खुशी बणाईआ। वेखणा नेत नेत, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्ाईआ। जिस माण बख्शणा सब नूं पहली चेत, दुलारे धर्म वाले प्रगटाईआ। नाम सदा रखे हमेश, ज़िंदगी ज़िंदगी नाल बणाईआ। सृष्टी दृष्टी जगत दिसे मलेछ, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। जन भगतां किरपा करदा आया सदा हमेश, हम साजण दया कमाईआ। जो मालक नर नरेश, नर हरि वड्डी वड्याईआ। सो वस के सम्बल देस, सभा भगतां नाल लगाईआ। शहिनशाह बण नरेश, नर नरायण हुक्म सुणाईआ। जो लहिणा देणा दस दशमेश, सो अन्तिम पूरा दए कराईआ। झगड़ा मुका के मुल्ला शेख़, शरअ दा डेरा ढाहीआ। जो मिट्ठा रस पिता पुत्त ने प्रभू दी कीता भेंट, गन्ना जगत नाम समझाईआ। तिस कारन हरि बख्शे सच्ची टेक, टिक्के मस्तक नाम लगाईआ। जन्म कर्म दी बदल दिती रेख, रेखा आपणे नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सहाई होवे सदा हमेश, हमसज्जण बण के दया कमाईआ।

३ माघ शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल

नाम सुरमे बख्शे सतिगुर सलाई, साहिब सुल्तान दया कमाईआ। किरपा करे आप रघुराई, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। निज नेत्र नैण होए रुशनाई, अंध अज्ञान रहे ना राईआ। अन्तर वज्जदी रहे वधाई, खुशीआं रंग रंगाईआ। मिले प्रेम माण वड्याई, ममता मोह ना कोए रखाईआ। बख्शिश विच रहमत करे आप गुसाँईं, गहर गम्भीर रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक दया कमाईआ। सलाई कहे मैं अक्खीआं वेख्या रंग, रंगत बेपरवाहीआ। धनंतर दे साथी दी एह मंग, सतिजुग दी कलयुग पूर कराईआ। त्रेता द्वापर गया लँघ, आपणा पन्ध मुकाईआ। एह सतिगुर शब्द मेलण दा ढंग, मेला मेलया सहिज सुभाईआ। दर्शन देवे काया मन्दिर अन्दर लँघ, जगत दवार दा डेरा ढाहीआ। द्वैती रहिण ना देवे कंध, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। आत्म सेज सुहाए पलँघ, सच सिंघासण डेरा लाईआ। करे प्रकाश बिना सूरीआं चन्द, नूरी जोत नूर रुशनाईआ। लेखे लाए हँ ब्रह्म, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। सच प्रीती धुर दा धर्म, धर्म दी धार आप बणाईआ। लेखे लग्गा मानस जन्म, कर्म कम दा डेरा ढाहीआ। एथे उथे दो जहानां परम पुरख दी मिले सरन, सहारा इक्को इक वखाईआ। झगड़ा रहे ना मरन डरन, चुरासी फाँसी दए

कटाईआ। हरिजन हरिभगत साचे पौड़े चढ़न, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। सतिगुर शब्द सदा तरनी तरन, तारनहार दया कमाईआ। जिस दा कौल इकरार पूरा होया प्रन, प्रानपति हो के होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दवार गृह इक वखाए घरन, जो घराना आदि अन्त जन भगतां नज़री आईआ।

✪ ४ माघ शहिनशाही सम्मत ६ ऊधम सिँघ दे गृह पिण्ड जलालाबाद ज़िला अमृतसर ✪

सम्मत शहिनशाही छे कहे मेरी रुत सुहंझणी चार माघ, मग्न प्रभ ने दिता कराईआ। जन भगत फुलवाड़ी वेखी बग़ीचा बाग़, बाग़बान धुर दे दिता महकाईआ। जिथ्थे हरिजन सुहेले रहे जाग, जागरत जोत बिन वरन गोत रुशनाईआ। हँस होए गुरमुख रहे ना काग, माणक मोती चोग चुगाईआ। दुरमति मैल धो के दाग़, पुनीत आपणे रंग रंगाईआ। आत्म परमात्म दस्स के राग, अनुरागी पड़दा दिता उठाईआ। शब्द अगम्मी मार के आवाज़, सोई सुरत अकाल मूर्त उठाईआ। अनभव दृष्टी खोल्ह के राज़, पर्दा ओहला दिता चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। चार माघ कहे मेरा दिवस सुहञ्जणा, प्रभ दिती माण वड्याईआ। मेरा मालक आदि निरँजणा, नर नरायण धुरदरगाहीआ। दाता दानी दर्द दुःख भय भञ्जणा, हरिजन भवसागर पार कराईआ। चरण धूढ़ करा के मजणा, दुरमति मैल दए धुआईआ। लेखे ला के आहला अदना, राउ रंकां एका रंग रंगाईआ। संदेशा दे के धुर दा बचना, शब्द अगम्मी करे पढ़ाईआ। कलयुग विच सतिजुग वखावे रचना, रचना आपणे नाल रचाईआ। मनुआ मन ना दहि दिशा नच्चणा, चार कुण्ट ना उठ उठ धाहीआ। मेहरवान महिबूब सिर आपणा हथ्थ रखणा, रक्षक हो के होए सहाईआ। जिस दा लेखा पिच्छे पौंटा पटना, पाटल मेला धुरदरगाहीआ। उस रूप अनूप अगम्मी धार वट्टणा, शब्दी शब्द खेल वखाईआ। खोज्जयां किसे आए हथ्थ ना, नेत्र अक्ख ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि करता अगम्म अथाहीआ। माघ कहे मेरी रुत सुहञ्जणी आई, आवत आवत ख़ुशी मनाईआ। प्रभ मिल्या बेपरवाही, पारब्रह्म प्रभ आपणा रंग रंगाईआ। जिस भेद खोल्ह्या मालक बण के धुरदरगाही, सचखण्ड निवासी पड़दा लाहीआ। ओह लेखे लावे जो गोबिन्द बूटा पुट्टया काही, जिस दा काग़ज़ कलम भेव कोए ना पाईआ। सतिगुर शब्द शब्दी धार बणया राही, रहिबर नूर नुराना नूर इलाहीआ। जिस ने कलयुग कूड़ी क्रिया बदल देणी शाही, शाहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ।

सच धर्म मार्ग दए वखाई, वाहवा आपणा रंग रंगाईआ। जिस निरगुण धार नानक नूं बणाया सुराही, सो सुराही नाम प्याला दए प्याईआ। जिस ने गोबिन्द बल बख्श्या बाही, बलधारी वड वड्याईआ। सो निरगुण नूर करे रुशनाई, जोती जाता डगमगाईआ। गुरमुख भगत सुहेले रिहा तराई, तारनहारा इक अख्वाईआ। तिस साहिब सतिगुर उतों बलि बलि जाई, बलिहारे बलिहार घोली घोल घुमाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला बण के धुर दा माही, मुहब्बत मेहरवान महिबूब इक जणाईआ। माघ कहे जिस मेरी रुत सुहाई, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। मैं प्रभ भगतां दयां वधाई, मुबारक विच अबारत कलमा नाम लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी भगत भगवान होवे ना कदे जुदाई, वक्खरा जुज़ ना कोए वखाईआ।

✪ ५ माघ शहिनशाही सम्मत ६ लक्ष्मण सिँघ दे गृह पिण्ड रुढ़का कलां ज़िला जलन्धर ✪

पंज माघ कहे शब्द दी धार साचा मजण, सतिगुर पुरख अकाल दया कमाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला मिले धुर दा सज्जण, हरि करता अगम्म अथाहीआ। मन विकारी कूड़ कुड़यारे भाण्डे भज्जण, ममता मोह विकार दए मिटाईआ। भाग लगाए काया माटी साढे तिन्न हथ्थ बदन, तन वजूद महिबूब करे रुशनाईआ। जिस नूं जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण धार सारे लभ्भण, दिवस रैण खोजण थांओं थाँईंआ। सो स्वामी अन्तरजामी निरगुण धार धार मग्न, रूप अनूप सोभा पाईआ। जिस दे लख चुरासी जीव जंत दीपक जोती जगण, नव सत्त सति रुशनाईआ। ओह साहिब सुल्तान सूरा सरबंगण, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दे नाम दमामे दो जहानां वज्जण, निरगुण सरगुण करे शनवाईआ। सो कलयुग अंतिम मेटे हद्दन, हद्द हदूद दए गंवाईआ। जिस दे हुक्म नाल जुग जुग दे मार्ग लग्गण, सो सतिजुग सच दए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता अगम्म अथाहीआ। माघ कहे हरि सतिगुर शब्द सच्चा इश्नान, इष्ट देव स्वामी इक दृढ़ाईआ। जो आदि अन्त दा रमईआ राम, हर घट सोभा पाईआ। जो लख चुरासी काहन, आत्म परमात्म गोपी सर्ब प्रनाईआ। जो नूर नुराना अलाही अमाम, अमलां तों रहित जल्वागर अख्वाईआ। जिस नूं नानक कीता प्रणाम, परम पुरख पुरख जणाईआ। जिस गोबिन्द फतिह डंक वजाया आण, आण इक सब नूं समझाईआ। सो मालक ख़ालक प्रितपालक दो जहान, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार अख्वाईआ। योद्धा सूरबीर बली बलवान, बल

१०६० २२

आपणा ल्ए प्रगटाईआ। कलयुग अन्त कूड़ी क्रिया मेटे मात निशान, सति धर्म इक वखाईआ। शरअ दा झगड़ा रहे ना विच अवाम, अमलां तों रहित दए समझाईआ। चारों कुण्ट मेट अंधेरी शाम, शमां नूर जोत करे रुशनाईआ। मज़्ह्ब दा दिसे ना कोए गुलाम, शरीअत ज़ंजीर दए कटाईआ। एको रंग रंगाए सर्ब इन्सान, तत्तां वंड ना कोए वंडाईआ। साचा मन्दिर दसाए मकाण, गृह इक्को इक दृढ़ाईआ। जिथ्थे वसे श्री भगवान, सचखण्ड साचा सोभा पाईआ। ना कोई हिन्दू मुस्लमान, ज़ाती बन्धन ना कोए पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर साचा इक वखाईआ। माघ कहे मेरी नमो नमो निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ । मेरे शहिनशाह सिक्दार, तेरी बेपरवाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर बीते विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी वेखण अक्ख उठाईआ। संदेशा देवण पैग़म्बर गुर अवतार, गुरु गुरदेव देव जणाईआ। चारों कुण्ट होया धूंआँधार, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। आत्म परमात्म करे ना कोए प्यार, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। जगत जहान ग़फ्लत विच सुत्ता पैर पसार, निज नेत्र लोचण नैण अक्ख ना कोए खुल्ाईआ। चारों कुण्ट निगह मार, नव सत्त आपणा पड़दा लाहीआ। मेरी बेनन्ती अरदास तेरे दवार, दर ठांडे मंग मंगाईआ। दुरमति मैल सब दी अन्दरों उतार, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण बचया रहिण कोए ना पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सब नूं दस्स जैकार, जै जै कार करे ख़लक खुदाईआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार, सांझा यार इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिघ विष्नूं भगवान, शाह पातशाह शहिनशाह सच्ची सरकार, साहिब सतिगुर दर तेरे सीस निवाईआ।

✪ ६ माघ शहिनशाही सम्मत ६ केहर सिँघ पिण्ड रुढ़का कलां ज़िला जंलधर ✪

किरपा करे श्री भगवाना, हरि करता दया कमाईआ। जुग चौकड़ी देवे अगम्मा दाना, निरगुण निरवैर अगम्म अथाहीआ। लख चुरासी वेख जीव जहाना, चारे खाणी फोल फुलाईआ। जन भगत सुहेले कर परवाना, परम पुरख प्रभ देवे माण वड्याईआ। चरण धूढ़ करा इश्नाना, मजन सच दए समझाईआ। अन्तर आत्म दे ज्ञाना, अंध अज्ञान दे गंवाईआ। घर स्वामी मिल के कान्हा, नाम धुन करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक होए सहाईआ। सतिगुर शब्द धार गुणवंता, गहर गम्भीर अख्वाईआ। मेल मिलावे आत्म परमात्म नारी कन्ता, कन्तूहल इक अख्वाईआ। धर्म दी धार रंग चढ़ावे बसन्ता, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगता, निवण

सु अक्खर इक जणाईआ। मणका फेर के मन का, मन दी ममता मोह दए चुकाईआ। कर प्रकाश जोती चन्न दा, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। भण्डारा दे के नाम धन दा, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे हरि साहिब स्वामी बख्शिंदा, बख्शणहार इक अख्वाईआ। वड दाता गुणी गहिन्दा, गहर गम्भीर वड वड्याईआ। धुर दी धार अमृत सिन्धा, सागर सच समाईआ। जुग जुग जन भगतां मेटे चिन्दा, जन्म जन्म दा रोग मिटाईआ। झगड़ा मुका के जिओ पिण्डा, ब्रह्मण्ड खण्ड दा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी हरिजन साचे आत्म धार बणाए आपणी बिन्दा, पारब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म आपणा रूप दरसाईआ।

✪ ६ माघ शहिनशाही सम्मत ६ गर्दावर सिँघ दे गृह पिण्ड रुढ़का कलां ज़िला जलन्धर ✪

१०६२ सच इश्नान सतिगुर चरण धूढ़ी, जिथ्थे पवण पाणी सीस निवाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ी, पतित पापीआं दुरमति मैल धुआईआ। सच धार दी रंगत चाढ़े गूढ़ी, जो एथे ओथे दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। मन कल्पणा ख़ाहिश रहे ना कूड़ी, सति सच सच विच मिलाईआ। शब्दी नाद वजा के तूरी, तुरीआ तों परे राग अलाईआ। निरगुण नूर बख्शे जोत नूरी, अंध अज्ञान दए गंवाईआ। जन भगतां आसा मनसा करे पूरी, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। दरस वखाए हाज़र हज़ूरी, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, भिक्खक मंग मंगाईआ। सच इश्नान सतिगुरु चरण, मिले माण वड्याईआ। भरम मिटे वरन बरन, ब्रह्मांड भेव खुलाईआ। निज नेत्र खोले हरन फरन, लोचण नैण अक्ख रुशनाईआ। साची मंज़ल बख्शे चढ़न, गृह पड़दा आप उठाईआ। जिथ्थे आत्म परमात्म दोवें इक्को ढोला पढ़न, तूं मेरा मैं तेरा राग सुणाईआ। झगड़ा रहे ना जन्म मरन, मरन जन्म दा लेखा दए चुकाईआ। किरपा करे पुरख अकाला तरनी तरन, तारनहार अगम्म अथाहीआ। जो आदि जुगादी हार भन्नण घड़न, समरथ पुरख शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, वर दाता दया कमाईआ। सच इश्नान प्रभू दी प्रीत, प्रीतम इक जणाईआ। काया होवे ठांडी सीत, अग्नी तत ना लागे राईआ। झगड़ा मिट जाए ऊच नीच, ज़ात पात दा पन्ध मुकाईआ। साचा सुणे नाम हदीस, हज़रतां तों बाहर पढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा साचा होवे

गीत, आत्म परमात्म सिफ्त सालाहीआ। लेखा रहे ना मन्दिर मसीत, काया काअबा इक रुशनाईआ। जिस दी सतिगुर शब्द शब्दी धार करे तस्दीक, शहिनशाह खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि सहिज सहिज सुखदाईआ। सच इश्नान गुरमुख गुर गुर देवे रंग, रंगत इक रंगाईआ। आत्म धार सुहाए सच पलँघ, सुख आसण सोभा पाईआ। नाम वजाए अगम्मा मृदंग, जगत साज ना कोए शनवाईआ। निरगुण निरगुण देवे अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। कर प्रकाश बिना सूर्या चन्द, जोती जोत डगमगाईआ। झगड़ा मेट ब्रह्मण्ड खण्ड, पुरी लोअ दा पन्ध ना कोए वखाईआ। किरपा करे सूरा सरबंग, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगतां बख्श के धुर दा संग, सगला संग आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित एका एक साहिब बख्शंद, बख्शणहार अगम्म अथाह इक अख्वाईआ।

✪ ७ माघ शहिनशाही सम्मत ६ डोगर सिँघ दे गृह पिण्ड सुन्नड़ कलां ज़िला जलन्धर ✪

१०६३ २२

माघ कहे दुनिया वेखी रोज़ नहाउँदी, तन माटी ख़ाक करे सफ़ाईआ। दुरमति मैल ना कोए धुआउंदी, अन्तर निरन्तर वज्जे ना सच वधाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द प्रभ दा नाम ध्याउँदी, हिरदे हर ना कोए वसाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान राग गाउँदी, पढ़ पुस्तक मन प्रचाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म मेल ना कोए मिलाउँदी, निरगुण नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। सचखण्ड दवार एकँकार तेरा दरस मूल ना पाउँदी, नव सत्त डेरा कोए ना ढाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया घर घर अग्नी लाउँदी, सांतक सति ना कोए वरताईआ। मानस जीवां बुद्धी होई काउँ दी, हँस रूप ना कोए बदलाईआ। वड्याई रही ना पिता माउँ दी, इष्ट गुरदेव सीस ना कोए झुकाईआ। खेल हो गई कूड़ पसाउ दी, चार कुण्ट दहि दिशा सति धर्म नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहरवान आपणी दया कमाईआ। माघ कहे प्रभ दुनिया वेखी नहाती धोती, धोती टिक्के मस्तक ख़ाक रमाईआ। ग़फ्लत विच्चों उठी ना सोती, निंद्रा जगत ना कोए खुल्हाईआ। माणक बणे कोए ना मोती, गुरमुख रूप ना कोए दरसाईआ। अन्तर वासना निकले ना खोटी, कूड़ी क्रिया बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। तेरे नाम शब्द दी लग्गे कोए ना चोटी, सोई सुरती ना कोए हिलाईआ। सच प्रकाश जगे ना जोती, अंध अंधेर ना कोए मिटाईआ। तेरा नाम जपदे पूजा करदे रोटी, निरगुण

निरवैर निराकार तेरा दरस कोए ना पाईआ। मैं तकां नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप की तेरी धार धार सलोकी, नाम अक्खर वक्खरे वक्खरे सिफ्तां वाले सारे गाईआ। बौहड़ी तेरी मंज़ल आत्मा कोई ना पहुंची, सचखण्ड दवारे बैठा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। माघ कहे प्रभ मैं दीन दुनी दा तक्कया इश्नान, अमृत वेले उठ उठ नहाईआ। तेरा दरस मिले ना किसे भगवान, अन्तर रंग ना कोए रंगाईआ। सुरती मिले ना धुर दे राम, सति विच ना कोए समाईआ। नज़र आए ना अगम्मी काहन, बंसरी नाम ना कोए सुणाईआ। नूरी चमके ना कोए भान, पैग़म्बर धुर मेल ना कोए मिलाईआ। रसना पढ़दे सतिनाम, सति सतिवादी तेरा दर ना कोए रुनशाईआ। फ़तिह डंका वज्जे ना कोए जहान, पंच विकार सृष्ट होई हल्काईआ। शास्त्र सिमरत पढ़दे वेद पुराण, अञ्जील कुरान अक्ख उठाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ मस्तक सर्ब रगढ़ाण, पाहन पूजस झट लँघाईआ। दरोही परवरदिगार पुरख अकाल तेरा दरस मूल ना पाउण, निज नेत्र लोयण नैण ना अक्ख खुल्हाईआ। माघ कहे मैं हो गया हैरान, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण चारों कुण्ट वेख वखाईआ। मुहब्बत रही ना विच इन्सान, इन्सानीअत सारे गए गंवाईआ। दीन मज़्हब दी शरअ होई शैतान, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई करन लड़ाईआ। तेरे नाम नूं करन बदनाम, कलमा कायनात कुरलाईआ। किरपा कर साहिब मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। अन्तर सब नूं दे ज्ञान, पर्दा ओहला दे चुकाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म दी दे पहचान, धुर दा नूर कर रुशनाईआ। चरण धूढ़ इक्को वार बख़्श दे सच प्रीती दा इश्नान, जिस विच जन्म कर्म दी दुरमति मैल रहे ना राईआ। तूं ठाकर स्वामी अन्तरजामी परम पुरख सुल्तान, पारब्रह्म बेअन्त बेपरवाह इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, जन भगतां बख़्श दे इक्को वार सति सच दा दान, दूसर दर दरवेश हो के मंगण कोए ना जाईआ।

१०६४
२२

७ माघ शहिनशाही सम्मत ६ प्रकाश कौर दे गृह पिण्ड सुन्नड़ कलां ज़िला जलन्धर

दीन दुनी नहाउँदी नाल पाणी, जल आब नाल वड्याईआ। रसना पढ़दी बाणी, ढोले सिफ्त सालाहीआ। अन्तर धरे ना कोए ध्यानी, निरन्तर पड़दा ना कोए उठाईआ। बुद्धी तों परे बणे ना कोए ज्ञानी, ब्रह्म भेव ना कोए खुल्हाईआ। लेखा चुक्के ना जिस्म जिस्मानी, ज़मीर सके ना कोए बदलाईआ। मंज़ल लभ्भे ना इक रुहानी, रूह बुत ना वज्जे वधाईआ। सीस

झुके ना शाह सुल्तानी, शहिनशाह नज़र किसे ना आईआ। लख चुरासी दी मुके ना कोए ग़ुलामी, जन्म कर्म दा ज़ंजीर ना कोए कटाईआ। ऐ पुरख अकाल दीन दयाल तुध बिन करे ना कोए मेहरवानी, मेहरवान सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जगत जहान अन्तष्करन होया नादानी, बुध बिबेक ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकंलक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरण धूढ़ धूढ़ चरण धुर तेरा होवे इक इश्नानी, आसा रोग रहे ना राईआ।

✪ ७ माघ शहिनशाही सम्मत ६ प्रीतम सिँघ दे घर पिण्ड जंडयाला ज़िला जलन्धर ✪

माघ कहे प्रभ सृष्टी नहा नहा थक्की, जुग चौकड़ी खेल खिलाईआ। बिन तेरी किरपा प्रीती होई किसे ना पक्की, सगला संग ना कोए निभाईआ। मैं चार कुण्ट दृष्टी सब दी तकी, बिना अक्खां अक्ख उठाईआ। सन्त सुहेला दिसे ना कोई हकी, हकीकत रंग ना कोए रंगाईआ। ज़िंदगी सब दी पै गई नट्टी, नटुआ कलयुग स्वांग वरताईआ। तेरे प्रेम दी पढ़े कोए ना पट्टी, पटने वाला रिहा सुणाईआ। मन कल्पणा चार कुण्ट फिरदी नट्ठी, दिवस रैण भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फिरी दुहाई तीर्थ अठसठी, गंगा गुदावरी जमना सुरस्ती नेत्र रो रो मारे धाहीआ।

✪ ७ माघ शहिनशाही सम्मत ६ पिन्दर सिँघ दे गृह पिण्ड जंडयाला ज़िला जलन्धर ✪

माघ कहे प्रभ जल पाणी खेल वेख्या नीर, नेरन नेर ध्यान लगाईआ। तेरा साथ तक्कया पीरन पीर, पीर पैग़म्बर धुरदरगाहीआ। शरअ दे कट सक्या ना कोए ज़ंजीर, फाँसी गलों ना कोए लुहाईआ। जगत नहावण विच बदली ना किसे तकदीर, तदबीर हथ्थ किसे ना आईआ। बिन तेरी किरपा पार उतर ना सक्या कबीर, कबरां तों बाहर रिहा जणाईआ। तूं मेहरवान महिबूब तेरा खेल अजीब, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। कलयुग अन्त सब दे पाटे चीथड़ होए लीर लीर, रंग मजीठ ना कोए रंगाईआ। मेरी आसा होई दिलगीर, निरासा विच दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी सति सतिवादी देणी धीर धराईआ। माघ कहे मैं प्रभू तक्कया जगत सरोवर, डूंघे सागर फोल फुलाईआ। तेरे प्यार दा मिले ना कोए ज़र ज़ोवर, ज़ेर ज़ज़ी ना कोए वखाईआ। सालेहिज़ शोज़ेनेवर, नैण

अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। माने ज़खतू तज़ूने कोवर, कायम मुकाम तेरा भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर तेरे आस रखाईआ।

✪ ७ माघ शहिनशाही सम्मत ६ उजागर सिँघ दे गृह पिण्ड सरींह ज़िला जलन्धर ✪

माघ कहे प्रभ जगत जहान वेख्या न्हाता धोता, सोहणा रूप बणाईआ। तेरे दर कोए ना पहुंचा, मंज़ल हक नज़र किसे ना आईआ। तेरा रूप किसे ना सोचा, सति सरूप ना कोए समाईआ। मनसा होए पूरी ना लोचा, लोयण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मारदे गोता, ममता वहिण विच डुबाईआ। भाग लग्गे ना काया कोठा, साढे तिन्न हथ्थ ना कोए वड्याईआ। मन वासना जीव जंत होया थोथा, बुध बिबेक ना कोए बणाईआ। मैं सुणया अगम्म सलोका, सोहला तेरा वड वड्याईआ। जिस ने ख़बरदार कीता संग मुहम्मद चौदां तबकां चौदां लोका, तबा सब दी दिती बदलाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा किसे संभलया नहीं तेरा मौका, मुकम्मल भेव कोए ना पाईआ। गोबिन्द दा पूरा हो गया ढईए वाला ढौंका, सदी चौधवीं संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी आसा मनसा तेरे अन्तर दूसर खेल नहीं किसे भाउ का, भय नज़र कोए ना आईआ।

१०६६
२२

✪ ७ माघ शहिनशाही सम्मत ६ उजागर सिँघ दे गृह पिण्ड सरींह ज़िला जलन्धर ✪

माघ कहे मैं दर दवारे झुका, गृह ठांडे सीस निवाईआ। शब्दी धार शब्द संदेसा पुछा, जगत विद्या ना कोए वड्याईआ। मैं खेल करना दीप कुशा, कछ मछ दे मालक देणा जणाईआ। की झगड़ा पाउणा तन माटी जुस्सा, जिस्म ज़मीर देणा बदलाईआ। किस बिध मुहम्मद लेखा मुका, मुकम्मल देणा दृढ़ाईआ। ईसा रहे ना रुठ्ठा, मूसा जोड़ जुड़ाईआ। पारब्रह्म तेरा लेखा दीन दुनी होणा पुठ्ठा, की पुठ्ठी कल वरताईआ। जाप रहिणा नहीं किसे दा बुल्हां बुट्टां, रसना जेहवा ना कोए चतुराईआ। कवण कूट कवण दिशा तेरे हुक्म दी पैणी लुट्टा, लुटेरा कूड़ कुकर्म नाल मिलाईआ। सीस तेरे कदमां सुट्टां, चरण कँवल निउँ निउँ लागां पाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पवित्र दिसे कोए ना काया बुता, बुतखाने नव सत्त देण दुहाईआ।

७ माघ शहिनशाही सम्मत ६ प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड खेड़ा ज़िला जलन्धर

माघ कहे प्रभ मैं वेखी सृष्टी थक्की मांदी, जन्म जन्म दा पन्ध ना कोए मुकाईआ। सच सरोवर मूल कोए ना नहांदी, अठसठ तीर्थ कम्म किसे ना आईआ। चार कुण्ट दहि दिशा दी बणी पाँधी, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। लालच पै गया रुपा चांदी, नाम अमोलक हीरा नाम तेरा हथ्थ किसे ना आईआ। दीन मज़्हब दोंह धिरां दी, ज़ात पाती खोज खुजाईआ। शरअ शरअ नाल टकरांदी, सांतक सति ना कोए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी सरनाईआ। दीन दुनी वेखी थक्की टुट्टी, आत्म परमात्म टुट्टी गंढ ना कोए पवाईआ। श्री भगवान तेरे नालों लिव सब दी छुट्टी, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। तैनूं गाउंदे रसना बुल्ल्हां बुट्टीं, हिरदे सक्या ना कोए वसाईआ। सति धर्म दा गाना रिहा किसे ना गुट्टीं, गोबिन्द खण्डा खड़ग ना कोए उठाईआ। दरोही सृष्टी दी अन्तर धार गई लुट्टी, कलयुग लुटेरा सब नूं गया खाईआ। मुहब्बत वाली जड़ गई पुट्टी, पिता पूत करे लड़ाईआ। सवाणी सुरत ना उठी सुत्ती, शब्दी कन्त ना अंग लगाईआ। साढे तिन्न हथ्थ सोहे ना रुती, रंग मजीठ ना कोए चढ़ाईआ। तेरी आत्म तेरे नालों लुकी, परमात्म तेरा नूर दरस कोए ना पाईआ। मेहरवान महिबूब मुहब्बत विच सदी चौधवीं अन्तिम पुच्छी, घर घर पर्दा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, हरि वडे तेरी वड्याईआ। दीन दुनी दा रिहा धर्म ना नाता, प्रभ वेखी ख़लक खुदाईआ। तेरा नूर नज़र ना आए धुर दा दाता, दातार तेरा पड़दा ना कोए उठाईआ। जिधर तकां अंधेरी राता, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान पढ़दे गाथा, अक्खरां वाली सिफ्त सालाहीआ। तेरी मंज़ल चढ़े ना कोए पुरख समराथा, दरगाह साची सचखण्ड दवारे मिलण कोए ना आईआ। दीन मज़्हब वरन बरन ज़ात पात खुल्ल्हया हाटा, तन वजूद माटी ख़ाक रहे विकाईआ। तेरा नाम कलमा दिसे कोए ना साचा, सच विच सच ना कोए समाईआ। झगड़ा तक्कया जीउ पिण्ड काचा, पंज तत सांतक सति ना कोए कराईआ। किरपा निधान स्वामी ठाकर कलयुग अन्त इक बेनन्ती इक्को मन्न आखा, आख़र निउँ निउँ सीस झुकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं पूरा करदे भविक्ख्त वाका, पेशीनगोईआं आपणे संग रखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप ब्रह्मण्ड खण्ड दा बदल दे खाका, पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगत सुहेले हरिजन खोल्हीं अन्दरों ताका, पर्दा निरन्तर रहिण ना पाईआ। तूं साहिब सतिगुर सदा सदा समराथा, समरथ तेरी इक सरनाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म तूं मेरा मैं तेरा मानव ज़ाती दस्स दे गाथा, गहर गम्भीर बेनज़ीर आपणा नाम समझाईआ। सच

धर्म दा सतिजुग धरनी धरत धवल धौल उत्ते धर्म दा बण आका, कलयुग कूड़ी क्रिया दे मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एथे ओथे दो जहानां निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण हरिजन साचे होणा राखा, रक्षक हो के सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ।

७ माघ शहिनशाही सम्मत ६ लाल सिँघ दे गृह पिण्ड हेरां ज़िला जलन्धर

धरनी कहे हाए उफ़ मेरया अब्बा, दरोही तेरा नाम खुदाईआ। नव सत्त तेरा नूरी नूर कोए ना लभ्भा, चन्द चांदना ना कोए रुशनाईआ। दीपक शमा्ं सति सरूप कोए ना जगा, अंध अंधेर ना कोए गंवाईआ। मंज़ल मिले ना किसे उपर शाह रगा, नौ दवारे पन्ध ना कोए मुकाईआ। शब्द अनादी नाद कोए ना वज्जा, अनुरागी राग ना कोए सुणाईआ। कूड़ क्रिया पार होए किसे ना हद्दा, सति सच ना कोए प्रगटाईआ। आत्म रस अमृत पीवे कोए ना मधा, मधुर धुन सुणन कोए ना पाईआ। सच दवार एकँकार तेरे मन्दिर कोए ना सजा, साजण संग ना कोए रखाईआ। मेरे उत्ते कर के वेख लै गजा, लख चुरासी फोल फुलाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म लए कोई ना मज़ा, तैनूं मज़ाक करे खलक खुदाईआ। बिन तेरी किरपा चले कोई ना विच रज़ा, राज़क रिज़क रहीम वेखणा ध्यान लगाईआ। मेरा अन्त अख़ीर बेनज़ीर निरमाणता विच सद्दा, होका हक दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। धरनी कहे मेरे प्रभ साहिब स्वामी मीत, हरि सज्जण दयां सुणाईआ। त्रैगुण दिसे ना कोए अतीत, त्रैभवण धनी तेरा दरस कोए ना पाईआ। सति सच दी रही कोई ना रीत, कूड़ क्रिया जगत वड्याईआ। सिर झुके ना कोए जगदीश, जगदीशर मिलण कोए ना पाईआ। सृष्टी दी दृष्टी विच रही ना कोए हदीस, हज़रत बैठे मुख भवाईआ। झगड़ा प्या ऊच नीच, ज़ात पात रही कुरलाईआ। सच नाम करे ना कोए बख्शीश, रहमत हक ना कोए कमाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार फिरे अबलीस, मन ममता नाल मिलाईआ। दरोही तेरे अग्गे मेरी इक्को चीक, चरण कँवल रो के दयां दुहाईआ। आपणा समां तक लै वेख लै तारीख, जो अवतार पैग़म्बर गुर भविक्ख्तां विच गए जणाईआ। मेहरवान महिबूब लाशरीक, परवरदिगार दया कमाईआ। तेरे विच हक तौफ़ीक, तारीफ़ तेरी विच सिफ्त सालाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट दे लीक, सति धर्म दा सच राह प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार दया कमाईआ। धरनी कहे प्रभू वेख लै आ के मेरी उपर छाती, सीना आपणा खोज खुजाईआ। मेला मिले ना किसे कमलापाती,

पतिपरमेश्वर तेरा दरस कोए ना पाईआ। नव सत्त अंधेरी राती, नूर नुराना चन्द ना कोए चमकाईआ। मंज़ल चढ़े कोए ना घाटी, अधवाटे बैठी तेरी ख़लक ख़ुदाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म मिले कोई ना साथी, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए कराईआ। जीवण ज़िंदगी बदले ना किसे हयाती, आबेहयात ना कोए प्याईआ। झगड़ा प्या काग़ज़ाती, दीन मज़्हब शरअ दी करे लड़ाईआ। नूर नज़र ना आए तेरा आफ़्ताबी महिराबी, मेहर मुहब्बत तेरी ना कोए दृढ़ाईआ। जो संदेशा दे के आया नानक निरगुण सरगुण बग़दादी, बग़लगीर हो के लेखा पिछला पूर कराईआ। मेरी आदि अन्त दी इक आवाज़ी, आरज़ू विच सीस निवाईआ। सदी चौधवीं बणना मेरा इमदादी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। शरअ दा रहे ना कोए काज़ी, कजीआ सब दा देणा चुकाईआ। उम्मत दी रहे ना कोए अराज़ी, हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। मेरा लेखा लहिणा देणा मानव ज़ाती करना मतवाज़ी, मेहरवान आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार मेरी आसा पूर कराईआ। धरनी कहे प्रभ वेख लै आपणा जगत, दीन दुनी खोज खुजाईआ। पिछले कौल इकरारां दी तक लै शर्त, पेशीनगोईआं वेख वखाईआ। तेरा समां आ गया वक्त, घड़ी पल दए गवाहीआ। आपणी किरपा नाल बणा लै गुरमुख सुहेले भगत, हरिजन आपणे रंग रंगाईआ। उन्हां लेखे ला लै बूँद रक्त, जेहड़े आत्म परमात्म
१०६६ तेरा राग अलाईआ। ओह लख चुरासी फेर आवण ना परत, पतिपरमेश्वर तेरे विच समाईआ। लेखा पूरा कर दे अर्श फ़र्श, १०६६
२२ दो जहानां डेरा ढाहीआ। मेरी बेनन्ती मंज़ूर कर दे अर्ज़, आरज़ू तेरे अग्गे रखाईआ। ग़रीब निमाणयां वंडीं दर्द, कोझे २२
कमल्यां गले लगाईआ। शरअ दी छुरी मेट दे करद, कातिल मक्तूल दा डेरा ढाहीआ। आपणी खेल दस्सीं असचरज, अचरज आपणा रंग देणा रंगाईआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना मर्द, शाह पातशाह इक अख्वाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणी अंधेर गर्द, धुंद विकार देणा गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार जोती शब्दी (धार) हो के आउणा परत, पतिपरमेश्वर उपर धरनी धरत धवल धौल आपणा रंग देणा रंगाईआ।

✪ ८ माघ शहिनशाही सम्मत ६ सरवण सिँघ दे गृह पिण्ड हेर ज़िला जलन्धर ✪

धरनी कहे प्रभ मेरा उत्तम करदे कर्म, श्रेष्ट आपणी दया कमाईआ। मेरे उत्ते सच दा होवे धर्म, अधर्मी नज़र कोए ना आईआ। झगड़ा मेट दे माटी चर्म, चम्म दृष्टी सब दी दे बदलाईआ। ज़ात पात दा रहे ना भरम, आत्म ब्रह्म दे समझाईआ।

नेत्र खोल्ह दे हरन फरन, हरिजन साचे लै उपजाईआ। आपणे लेखे ला लै सब दा जरम, जन्म आपणी झोली पाईआ। झगड़ा मेट दे वरन बरन, इक्को रंग देणा चढ़ाईआ। मैं निमाणी हो के डिग्गां तेरी सरन, चरण धूढ़ ख़ाक रमाईआ। तूं आदि जुगादि दा करता करनी करन, करता पुरख इक अख्वाईआ। मैं चाहुंदी दीन दुनी तेरा इक्को ढोला पढ़न, इक्को धुर दा नाम वड्याईआ। सचखण्ड निवासी तेरी मंज़ल चढ़न, जगत विकार अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। सचखण्ड दुआरे पुज्जण तेरे दरन, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा देणा खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सद तेरी इक सरनाईआ। धरनी कहे प्रभ मेरी नमों नमों निमस्कारा, डण्डावत सजदा सीस झुकाईआ। तूं आदि अन्त दा परवरदिगारा, पुरख अकाला बेपरवाहीआ। लख चुरासी मित्र प्यारा, चारे खाणी रंग रंगाईआ। शाहो भूप वड सिक्दारा, शहिनशाह इक अख्वाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरे सेवादारा, अवतार पैग़म्बर गुर तेरा नाम शब्द करन शनवाईआ। मेरे साहिब स्वामी तेरे कोल अगम्म भण्डारा, निरगुण सरगुण दएं वरताईआ। कलयुग मेट दे धूंआँधारा, सतिजुग सच चन्द कर रुशनाईआ। मानव ज़ाती बख़्श प्यारा, चार वरन अठारां बरन करे ना कोए लड़ाईआ। तेरा धर्म दा सांझा होवे इक दवारा, जिस भगत दवार हरिजन बैठण चाँईं चाँईंआ। इक्को नाम शब्द होवे जैकारा, कलमा इक्को सिफ्त सालाहीआ। तूं
११०० आत्म परमात्म परमात्म आत्म मीत मुरारा, पारब्रह्म ब्रह्म मेला लैणा मिलाईआ। अमृत रस बूँद बख़्श दे ठंडी ठारा, अग्नी ११००
२२ तत दे गंवाईआ। सति धर्म दा मेरे उत्ते सति पा दे वरतारा, सति सतिवादी पड़दा देणा उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त २२
दीप तेरा नूर होवे चमत्कारा, जोती जाते डगमगाईआ। अन्त कन्त भगवन्त धूढ़ी मस्तक लावां छारा, ख़ाक आपणा रंग रंगाईआ। दीन दुनी दा सांझा कर विवहारा, विवहारी आपणी खेल खिलाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन नित नवित बख़्श दीदारा, सन्मुख हो के नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण निराधार दो जहान सच्ची सरकारा, दर तेरे धुर दी आस रखाईआ।

८ माघ शहिनशाही सम्मत ६ मनजीत कौर दे गृह पिण्ड नूर पुर ज़िला जलन्धर

धरनी कहे प्रभ तेरी चरण धूढ़ी लावां ख़ाक, ख़ाकी ख़ाक मिले वड्याईआ। मेहरवान महिबूब दीन दुनी करदे पाक, पतित पुनीत दे कराईआ। कलयुग अन्तिम मेट अंधेरी रात, सति सतिवादी सति चन्द कर रुशनाईआ। मेरी बेनन्ती इक्को अरदास, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप धर्म दी होवे रास, रस्ता इक्को देणा प्रगटाईआ। अवतार

पैग़म्बरां गुरुआं पूरी करनी आस, जो भविक्ख्तां विच गए सुणाईआ। तेरा खेल तकां उपर आकाश, गगन गगनंतर वज्जे वधाईआ। किरपा कर लोकमात, मेहर नज़र नज़र उठाईआ। सृष्टी दी दृष्टी अन्दर मार झात, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। सति प्रेम दा जोड़ नात, रिश्ता मुहब्बत विच रखाईआ। चार जुग दा झगड़ा रहे ना काग़ज़ात, कलमा कलमे नाल ना कोए टकराईआ। सदी चौधवीं लेखे ला आपणी ख़िदमात, ख़ादम हो के सीस निवाईआ। धर्म दी धार मेरे उत्ते दिसे ना कोए जमात, सति सति विच ना कोए समाईआ। जो निरगुण सरगुण धार नानक गोबिन्द गया आख, बिन अक्खरां कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। धरनी कहे मेरे प्रभ साहिब स्वामी मीते, धुर सज्जण दयां दृढ़ाईआ। मेरे उत्ते आ निरगुण सरगुण धार नीचे, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। जुग चौकड़ी पिछले बीते, कलयुग वेखे नैण उठाईआ। झगड़ा प्या मन्दिर मसीते, काअबे रो रो देण दुहाईआ। मेहरवान मेहर कर त्रैगुण अतीते, त्रैभवन धनी तेरी सरनाईआ। लहिणा देणा वेख दस दशमेश गोबिन्द अंगीठे, संदेशा कवण धार जणाईआ। बौहड़ी क्यों मेरे उत्ते कलयुग जीव होए कौड़े रीठे, अमृत रस ना कोए भराईआ। तेरे उत्ते रही ना किसे प्रतीते, प्रीतम मिलण कोए ना पाईआ। सचखण्ड पुज्जे ना कोए नज़दीके, जन्म जन्म दा पन्ध मुकाईआ। झगड़ा प्या हस्त कीटे, ऊच
११०१ नीच करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। ११०१
२२ धरनी कहे मेरे सतिगुर पुरख एक, हरि साहिब तेरी सरनाईआ। साची रही कोए ना टेक, टिक्का नाम ना कोए लगाईआ। २२
चारों कुण्ट वध्या भेख, भेखाधारी होई लोकाईआ। निज नेत्र तैनूं सके कोए ना वेख, लोचण नैण अक्ख ना कोए उठाईआ। बौहड़ी कलयुग कूड़ी क्रिया बदल दे रेख, ऋषी मुनी सारे रहे कुरलाईआ। धुर दा नज़र आए किसे ना देस, परदेस बैठे राह तकाईआ। सदी चौधवीं चले किसे ना पेश, जो पेशतर पेशीनगोई मुहम्मद गया दृढ़ाईआ। याद कर लै गोबिन्द वाला संदेश, जो माछूवाड़े गया सुणाईआ। सो मालक हो के अन्तिम वेख, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। धरनी कहे मेरे ठाकर स्वामी अब्बा, दर तेरे झोली डाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट दे सभा, सफा मलेछ रहिण ना पाईआ। शब्दी सतिगुर पा दे दब्बा, सिर सके ना कोए उठाईआ। माया मोह दा रहे कोए ना लब्बा, कूड़ा लालच अन्दरों देणा कढ्ढाईआ। इक्को तेरे नाम दी होवे सदा, तूं ही तूं ही राग देणा दृढ़ाईआ। तुध बिन तेरी जाण सके कोए ना वज़ा, वजूहात समझ कोए ना आईआ। दीन दुनी दी मेरे उत्ते बदल दे तबा, तबीअत तबीब हो के देणी बदलाईआ। किरपा कर के जन भगतां

दर्शन दे उपर शाह रगा, शहिनशाह आपणा रंग रंगाईआ। त्रैगुण अग्नी ना साड़े अग्गा, तत्व तत ना कोए जलाईआ। मेरे उत्ते धर्म दवारा वसा, सचखण्ड वासी बणा जगह, घराना इक्को इक प्रगटाईआ। जिथ्थे तेरा नाम नगारा होवे वज्जा, अनादी नाद कर शनवाईआ। हँस बुद्धी होवे ना कग्गा, काग वांग ना कोए कुरलाईआ। अमृत रस बख्श दे मज़ा, मज़ाक कूड़ देणा चुकाईआ। मैं सदा चलां तेरी विच रज़ा, राज़क रिज़क रहीम तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग अन्त अख़ीर बेनज़ीर कूड़ी क्रिया मेट दे हद्दा, हदूद आपणी आप दे जणाईआ।

✪ ६ माघ शहिनशाही सम्मत ६ फ़कीर सिँघ दे गृह मजीद पुर ज़िला जलन्धर ✪

धरनी कहे पुरख अकाल मेरा सुण लै दु:ख, धरत धवल धौल हो के दयां सुणाईआ। मेरे अन्तर निरन्तर मिले कोई ना सुख, सांतक सति नज़र कोए ना आईआ। सच प्यार विच रिहा ना कोए मनुक्ख, मानस मानव तेरे रंग ना कोए समाईआ। भाग लग्गे ना किसे जनणी कुख्ख, भगत जन्मे कोए ना माईआ। आत्म परमात्म लिव सब दी गई छुट्ट, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। जीव जंत जगत जहान भाग गए निखुट, कर्म कांड दा डेरा कोए ना ढाहीआ। सन्त सुहेले मौले किसे ना रुत, रुतड़ी तेरा नाम ना कोए महकाईआ। मेरे मेहरवान अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी ओट तकाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले सदी चौधवीं अन्तिम उठ, परवरदिगार सांझे यार लै अंगड़ाईआ। तेरे कदमां उत्ते जावां झुक, निउँ निउँ सीस जगदीश मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। गेड़ा मिटे ना किसे मात गर्भ उलटा रुख, नौ अठारां डेरा कोए ना ढाहीआ। तेरी सृष्टी दृष्टी विच तेरा निशाना गई उक, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी दर तेरे मिलण कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। धरनी कहे मेरे साहिब पुरख समरथ, सति सच तेरी सरनाईआ। चरण कँवल जावां ढट्ठ, निउँ निउँ लागां पाईआ। सति धर्म दा खोल्ह दे हट्ट, कूड़ क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। हर हिरदे अन्दर वसा दे सच, नाम सति सति समझाईआ। भाग लगा दे काया माटी कच्च, साढे तिन्न हथ्थ कंचन गढ़ दे सुहाईआ। लूं लूं अन्दर जा रच, रचना आपणी दे वखाईआ। मनुआ मन ना सके नच्च, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत, रत्न अमोलक हीरे गुरमुख लै प्रगटाईआ। बीज बीज आपणे वत, धर्म दी धार मार्ग इक समझाईआ। सदी चौधवीं सब दी पति रख, रक्षक हो के दया कमाईआ। जन भगतां खोल्ह दे नेत्र

अक्ख, लोचन नैण कर रुशनाईआ। तेरे तैथों होण कदे ना वक्ख, वक्खरी वंड ना कोए वंडाईआ। मैं बिना हथ्थां तों जोड़दी हथ्थ, धूढ़ी मस्तक ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, हरि सच तेरी सरनाईआ। धरनी कहे किरपा कर मेरे मेहरवाना, मेहर नज़र उठाईआ। कलयुग विच सतिजुग बख़्श दे दाना, दाते आपणी दया कमाईआ। सति जोत प्रकाश कर भाना, कोटन कोटि रवि ससि जिस नूं सीस झुकाईआ। धर्म दी धार झुला निशाना, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप तेरा नूर नज़री आईआ। आत्म ब्रह्म दा बण कान्हा, सीता सुरत शब्द प्रनाईआ। धुर दा पैग़म्बर बण अमामा, नबी रसूलां पन्ध मुकाईआ। सतिगुर शब्द हो बलवाना, बलधारी आपणा बल प्रगटाईआ। तैनूं झुकदे होण दो जहानां, विष्न ब्रह्मा शिव बैठण सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। धरनी कहे मेरा सजदा इक सलाम, कदमबोसी विच सीस झुकाईआ। मेरे मालक अगम्म अमाम, परवरदिगार तेरी सरनाईआ। साचा कलमा दे कलाम, कायनात इक पढ़ाईआ। धर्म दी धार चुक्क इकदाम, कदीम दे मालक आपणा कदम लै बदलाईआ। शरअ दा झगड़ा मेट विच अवाम, अमलां तों रहित कर ख़लक खुदाईआ। वेखण तेरा नूर सारे जल्वागर तमाम, तमा मज़्ब रोब रहे ना राईआ। मानव ज़ाती उत्ते कर एहसान, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। इक्को रंग रंगा दे नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप इन्सान, हिंसा अहिंसा रहिण कोए ना पाईआ। तूं परम पुरख परमात्म आत्म तेरा नूर जहान, जोती जाते तेरी वड वड्याईआ। धरनी कहे मैं निमाणी कोझी कमली दर तेरे मंगां दान, भिखारी हो के झोली डाहीआ। पुरख अकाले दीन दयाले किरपन किरपा विच मेरी रख लै आण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त नित नवित निरगुण निरवैर निराकार निरँकार परवरदिगार सच्ची सरकार साहिब सुल्तान, महिबूब मेहरवान सच तेरी ओट तकाईआ।

✪ ६ माघ शहिनशाही सम्मत ६ महिन्दर सिंघ, मुखत्यार सिँघ पिण्ड हरनाम पुरा ज़िला जलन्धर ✪

धरनी कहे पुरख अकाल वड प्रबीना, परम पुरख तेरी सरनाईआ। मेरा ठांडा करदे सीना, अमृत मेघ इक बरसाईआ। झगड़ा मेट दे दीनां, मज़्बां इस्म इक्को इक जणाईआ। लेखा रहे ना माया तीना, त्रैभवण धनी आपणी दया कमाईआ।

मैं तड़फदी वांग मीना, सच सरोवर देणा नुहाईआ। मेरे उत्ते दरोही तेरा नाम किसे ना चीना, कलमे वाले कलमे गए भुलाईआ। सच दा रिहा कोई ना अधीना, कूड़ क्रिया चार कुण्ट डंक वजाईआ। तेरा प्रेमी प्यारा हीरा दिसे ना कोए नगीना, माणक मोती रूप ना कोए जणाईआ। मेरी नमों नमों निमस्कार मेरे मालक ख़ालक इक आमीना, अमल वेख ख़लक ख़ुदाईआ। अर्श दे मालक फ़र्श उत्ते आ ज़मीना, ज़मीर सब दी खोज खुजाईआ। रहमत कर मेरे रहीमा, रहमान तेरी वड्याईआ। कलयुग कूड़ा बाहर कढ दे कमीना, जो सब दी पति रिहा गंवाईआ। फिरे दरोही विच मक्का मदीना, पैग़म्बर मकबरयां विच रहे कुरलाईआ। मेरे उत्ते मानव दी रहे ना कोए तक्सीमा, तत्व तत वंड ना कोए वंडाईआ। सदी चौधवीं मेरा वक्त होए ग़नीमा, ग़मख़ार आउणा चाँईं चाँईंआ। सति सच दा सब नूं दस्स दे जीणा, ज़िंदगी ज़िंदगी विच्चों बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच आपणा नाम वरताईआ। धरनी कहे मेरे भगवन्त, पुरख अकाल तेरी वड्याईआ। इक्को दस्स दे अगम्मा मंत, मंतव सब दा हल्ल कराईआ। झगड़ा मेट दे जीव जंत, जागरत जोत कर रुशनाईआ। गढ़ तोड़ दे हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक समझाईआ। सो पुरख निरँजण शब्दी धार बण के पंडत, कलमा कायनात सुणाईआ। मेरी दर ठांडे इक्को मिन्नत, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। सदी चौधवीं मेरे विच रही कोए ना हिम्मत, धरनी कहे

११०४ मैं हौसला रही ढाहीआ। चारों कुण्ट कलयुग करे इल्लत, इलम आलमां रिहा भुलाईआ। धर्म दिसे किसे ना सिम्मत, उत्तर ११०४

२२ पूरब पच्छम दक्खण सारे वेखण नैण उठाईआ। तेरी सृष्टी तेरी होई निन्दक, कूड़ी क्रिया कर्म वड्याईआ। दिवस रैण मैनूं २२

इहो चिन्त, तेरे मानव तैनूं गए भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे तेरी पूरी आस कराईआ। धरनी कहे मेरा कदमां सीस रिहा झुक, सजदे विच जणाईआ। मेरा अन्तिम मेट दे दुःख, दुखड़ा कूड़ रहे ना राईआ। मेरी सुफल करा दे कुख्ख, जननी बणा दे जणेंदी माईआ। तैनूं भुल्लया रहे ना कोए मनुक्ख, हर हिरदे अन्दर आपणा नाम देणा जणाईआ। कलयुग अन्तिम वेला रिहा ढुक, भगत दवार दए गवाहीआ। मेरे साहिब स्वामी मालक ख़ालक उठ, शाह पातशाह शहिनशाह आपणा बल प्रगटाईआ। दीन दुनी दा बदल दे रुख़, मार्ग पन्थ इक्को इक वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सारे गावण तुक, तुख्म तासीर देणा बदलाईआ। मोह विकार हँकार मेरे अन्दरों कढ कुट्ट, शब्द खण्डा नाम हथ्थ उठाईआ। मेरे उत्ते तेरे भगतां दी मौले रुत, रुतड़ी तेरे नाल महकाईआ। किरपा कर अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां जगत जिज्ञासूआं आ के पुछ, पुश्त पनाह आपणा हथ्थ टिकाईआ। लहिणा देणा लेखा पूरा करदे शब्दी गोबिन्द दुलारे सुत , सुत्तयां लै जगाईआ। हरि सन्त सुहेले आपणी

गोदी चुक्क, दर ठांडे दे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरी आसा सचखण्ड सच दवारे जाए पुज, पूजनीक तेरे अग्गे वास्ता पाईआ।

✪ १० माघ शहिनशाही सम्मत ६ प्यारा सिँघ दे गृह पिण्ड बस्ती जांगला ✪

धरनी कहे पुरख अकाल सूरे सरबग, हरि करते दया कमाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा कूड़ दी लग्गी अग्ग, सति सच दी धार नज़र ना आईआ। कलयुग जीव हँस बुद्धी होई कग्ग, गुरमुख रंग ना कोए रंगाईआ। तेरा दरस करे ना कोए उपर शाह रग, नौ दवारे पन्ध ना कोए मुकाईआ। माया ममता विच सारे गए बज्झ, बन्धन सके ना कोए तुड़ाईआ। जिधर तकां दीन मज़्हब दी हद्द, ज़ात पात करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। धरती कहे प्रभू सदी चौधवीं वेख लै मेरी हालत, चार कुण्ट ध्यान लगाईआ। सृष्टी दृष्टी होई जहालत, सति सच ना कोए वखाईआ। धर्म दी दिसे ना कोए अदालत, इन्साफ़ हक ना कोए कमाईआ। मनुआ घर घर करे बग़ावत, बग़लगीर संग ना कोए निभाईआ। तेरे प्यार विच दीन दुनी होई अणजाणत, आत्म आत्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। मेहरवान महिबूब मुहब्बत विच सच प्यार दी बख़्श न्यामत, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार आपणी दया कमाईआ। कलयुग रैण अंधेरी मेट शामत, शमा नूरी चन्द कर रुशनाईआ। तूं आदि जुगादि सही सलामत, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्तिम तेरा ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तेरी वड्याईआ। धरनी कहे प्रभ मेरे उत्ते वेख अधर्म, चार कुण्ट अंधेरा छाईआ। मेरी रेखा बदल दे कर्म, जीवां जंतां कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। हउमे हंगता रहे कोए ना भरम, भाण्डा भरम देणा भनाईआ। झगड़ा मेट दे वरन बरन, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को तेरी ओट सब नूं होवे सरन, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला सारे पढ़न, आत्म परमात्म तेरा राग अगम्म अथाहीआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी तेरी मंज़ल सारे चढ़न, अधवाटे रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभ कलयुग कूड़ी क्रिया मेट दे धब्बा, दाग़ रहिण कोए ना पाईआ। सति धर्म दी साची लगा दे सभा, सुबह शाम तेरे नाम दी वज्जे वधाईआ। शरअ ज़ंजीर विच होवे कोए ना बध्धा, दीन मज़्हब दा लेखा देणा गंवाईआ। सज्जण मीत किसे नाल कोए करे ना दग़ा, पतित पुनीत कर लोकाईआ। जन्म कर्म दा सब दा लेखा करदे बग्गा, मेहरवान मेहरवान

मेहर नज़र उठाईआ। सतिजुग धार अमृत रस बूंद स्वांती दे दे मज़ा, रसना रस देणा चखाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा सारे चलण तेरी विच रज़ा, राज़क रिज़क रहीम तेरी ओट तकाईआ। माया ममता मोह विकार रहे ना लबा, लोभ कूड़ देणा गंवाईआ। सच धर्म दी सब दी सांझी इक्को होवे जगा, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ गुरदवार इक्को गृह वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे झोली डाहीआ। धरनी कहे पुरख अकाल गुर अवतार पैग़म्बर पा के गए वंडां, दरोही तेरा नाम दुहाईआ। मैं दरवेश हो के जगत भिखारन मंग मंगां, निम्रता विच सीस निवाईआ। इक्को रंग रंगा दे मानव ज़ाती मानस बन्दा, बन्दगी आपणी इक दृढ़ाईआ। भेव खुल्हा दे ब्रह्म हंगा, हँ ब्रह्म पड़दा आप उठाईआ। आत्म परमात्म बणा दे संगा, सगला संग रखाईआ। निझर झिरना झिरा दे धुर दी धार गंगा, अमृत रस अगम्म वखाईआ। बोध अगाधा बण जा पंडा, धुर दा नाम शब्द कर शनवाईआ। झगड़ा मेट दे जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज आपणा खेल खिलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप तेरे प्यार दा सब नूं आवे अनन्दा, अनन्द अनन्द विच्चों देणा प्रगटाईआ। मैं चाहुंदी सदी चौधवीं अन्तिम लेखा पूरा कर दे निशान तारा चन्दा, मुहम्मद लहिणा हमद विच आपणी झोली पाईआ। सति धर्म दी धार सृष्टी दृष्टी अन्दर तेरा गावे इक्को छन्दा, शहिनशाह इक्को तेरे नाम दी वज्जे वधाईआ। कलयुग अग्गे पन्ध रहे ना लम्बा, सतिजुग सच देणा प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित साहिब बख़्शिंदा, बख़्शणहार तेरे हथ्थ वड्याईआ।

✪ १० माघ शहिनशाही सम्मत ६ जागीर सिँघ दे गृह बस्ती शिकार पुर ज़िला जलन्धर ✪

धरनी कहे प्रभ मेरे उत्ते होवे धर्म दी बस्ती, सच दा खेड़ा सोभा पाईआ। सब दे अन्दर तेरे नाम दी होवे मस्ती, मस्त मस्ताने लैणे बणाईआ। इक्को तेरा नूर नज़र आए धुर दी हस्ती, हस्त कीटां वज्जे वधाईआ। अमृत धार वहे तेरे रस दी, रसना जेहवा ना कोए हल्काईआ। कथा कहाणी होवे तेरे जस दी, सिफ्त सालाही ढोले गाईआ। कलयुग रैण अंधेरी मेट मस दी, नूर चन्द कर रुशनाईआ। मैं रो रो तैनूं दस्सदी, गल पल्लू इक वखाईआ। चारों कुण्ट नस्सदी, भज्जां वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, पुरख अकाल तेरे हथ्थ वड्याईआ। धरनी कहे प्रभ मेरे उत्ते होवे तेरा धर्म दवारा, कूड़ा नगर नज़र कोए ना आईआ। तेरे नाम दा होवे जैकारा, इक्को नाद

११०६
२२

वज्जे वधाईआ। तेरे नूर दा होवे चमत्कारा, अंध अंधेरा देणा गंवाईआ। शाह पातशाह तूं होवें सिक्दारा, हुक्म इक्को वरते थांउँ थाँईंआ। सब दा तेरे चरण कँवल होवे निमस्कारा, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट दे गर्द गुबारा, अंध अज्ञान दे चुकाईआ। तूं शहिनशाह पातशाह साजण बण प्यारा, प्रीतम हो के दया कमाईआ। मेरी नमो नमो डण्डावत बन्दना निमस्कारा, दर तेरे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे मेरे उत्ते तेरा होवे धर्म दा राज, रईयत हरिजन लै बणाईआ। सति सच दा हेवे ताज, तख्त निवासी इक्को सोभा पाईआ। ग़रीब निमाणयां रखीं लाज, कोझयां कमल्यां गले लगाईआ। धुर दे नाम दा चलावीं जहाज, बेड़ा इक्को इक प्रगटाईआ। आत्म परमात्म दस्सीं आवाज़, राग इक्को इक सुणाईआ। भेव चुकाईं बोध अगाध, बुद्धी तों परे पढ़ाईआ। सब दे सिर ते देवीं साध, साधना इक्को इक वखाईआ। मानव मानस मानुक्ख तेरी सरन जाइण लाग, लग मात्रा दा डेरा ढाहीआ। जगत विकारा होवे त्याग, त्रैगुण अतीते होणा सहाईआ। चार वरन दा सांझा कर समाज, समग्री आपणा नाम वरताईआ। मेरे वडे होवण भाग, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। पुरख अकाल तेरी जोत दा जगे चिराग़, चार कुण्ट करे रुशनाईआ। तूं इक्को होवीं गुरु महाराज, मेहरवान बेपरवाहीआ। मैं तेरे दर दी होई मुहताज, भिखारन हो के मंग मंगाईआ। वेखीं दे ना देवीं जवाब, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को इक एकँकार रही अराध, दूसर नाम ना कोए ध्याईआ।

११०७
२२

✪ १० माघ शहिनशाही सम्मत ६ ज्ञान सिँघ दे गृह पिण्ड सुरख पुर ज़िला कपूरथला ✪

धरनी कहे प्रभ मैं तेरी धरनी धरत धवल धौल बसुधा, बेसुध हो के दयां सुणाईआ। कूड़ी क्रिया मेरे उत्ते करे युद्धा, जगत विकार हँकार विभचार नाल लड़ाईआ। मेहरवान महिबूब मेरा कर्म कर दे उग्घा, पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। हउमे रोग गवा दे कलयुगा, कलकाती रहिण कोए ना पाईआ। तेरे नाम दा ल्ए कोई ना भुग्गा, वढी खोरां सफा देणी उठाईआ। आपणे आत्म आपे दस्स दे आपणा मुद्दा, मुद्दत दे मालक दया कमाईआ। उठ वेख सदी चौधवीं वक्त पुग्गा, मुहम्मद भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, परवरदिगार तेरी सरनाईआ। धरनी धरत धवल धौल कहे मेरा साफ़ करदे अन्तर, अन्तष्करन वेख ख़लक ख़ुदाईआ। सति धर्म दी बणा बणतर, घड़न भन्नृणहार दया कमाईआ। त्रैगुण माया कूड़ मेट बसन्तर, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी

तेरा इक्को होवे मन्त्र, इक्को वज्जे नाम वधाईआ। कर प्रकाश गगन गगनंतर, गहर गम्भीर पर्दा दे उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर घर साचे मंग मंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा लहिणा देणा कर दे पूरा, लेखा अन्त रहे ना राईआ। तूं शहिनशाह पातशाह सूरा, सरबग तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया हूंझ दे कूड़ा, सति धर्म दा मार्ग इक प्रगटाईआ। मानस रहे कोई ना मूर्ख मूढ़ा, बुध बिबेक देणी कराईआ। चार वरन अठारां बरन तेरी मस्तक लावण चरण धूढ़ा, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। सब नूं चाढ़ दे इक्को रंग गूढ़ा, दीन मज़्ब दा लेखा रहे ना राईआ। जोती जाते पुरख बिधाते काया मन्दिर दिस हाज़र हज़ूरा, परमात्म आत्म आपणा खेल खिलाईआ। तेरा नज़री आए इक्को जोती नूरा, नूर नुराने पड़दा देणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दवारे मंग मंगाईआ। धरनी कहे प्रभ मेरे उत्ते कर किरपा, कृपाल हो के दया कमाईआ। मेरी दीन दी कट दे बिपता, दुखी हो के रही सुणाईआ। सारी सृष्टी दृष्टी अन्दर रूप बणा दे सिख दा, नाम सिख्या इक समझाईआ। जो शास्त्र सिमरत वेद पुराण तेरी महिमा रिहा लिखदा, तिस दा लहिणा आपणे लेखे लाईआ। मैं चाहुंदी मेरे उत्ते मार्ग होवे एकँकार इक दा, दूजा इष्ट नज़र कोए ना आईआ। सदी चौधवीं बौहड़ी मनुआ किसे ना टिकदा, साध सन्त सूफ़ी फ़कीर

११०८
२२

रोवण मारन धाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक वेख वखाईआ। धरनी कहे प्रभ मैनूं इक्को बख्श दे आपणी टेक, दूसर सीस ना कदे निवाईआ। कलयुग विच सतिजुग बदल दे रेख, ऋषीआं मुनीआं पैंडा दे मुकाईआ। काया मन्दिर अन्दर वड़ के खोल्ह भेत, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। हर घट नज़र आ नेतन नेत, निज लोचन नैण कर रुशनाईआ। घर स्वामी ठाकर मैनूं लए वेख, बाहर लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। मैं आपा करां तेरी चरण भेंट, हभ कुझ तेरी झोली पाईआ। तूं जुग चौकड़ी खेवट खेट, मालक बेपरवाह अख्वाहीआ। सच सुहञ्जणा करदे मेरा देस, सम्बल आपणा रंग रंगाईआ। तेरा जोत सरूपी नज़री आवे वेस, शब्दी डंक देणा वजाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर विष्न शिव ब्रह्मा देवत सुर तैनूं करन आदेस, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल तेरे निउँ निउँ लागण पाईआ। तूं सच स्वामी आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा रहवीं हमेश, हम साजण इक्को नज़री आईआ। धरनी कहे मेरे मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेरा साफ़ सुथरा करदे पेट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अनादी शब्द ब्रह्मादी निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका बख्शणा आपणा शब्दी हेत, शब्द सतिगुर शब्द गुरदेवा देव आत्मा आपणा रंग रंगाईआ।

✪ १० माघ शहिनशाही सम्मत ६ दौलत सिँघ दे गृह कपूरथला शहर ✪

धरनी कहे मेरे साहिब सूरे सरबंग, हरि करते तेरी सरनाईआ। सच प्रीती चाढ़ दे रंग, रंगत आपणा नाम रंगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करदे भंग, जगत विकार दे मिटाईआ। आपणा भेव खुल्हा दे सति सरूप ब्रह्म, पारब्रह्म आपणी दया कमाईआ। झगड़ा रहे ना काया माटी चर्म, चम्म दृष्टी सब दी दे बदलाईआ। लेखा मुका दे ज़ात पात वरन बरन, दीन मज़्हब दा डेरा ढाहीआ। मेरे साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी तेरी इक्को सरन, सरनगति अवर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मांगत हो के झोली डाहीआ। धरनी कहे प्रभ मेरी पवित्र करदे गोदी, दुरमति मैल रहिण ना पाईआ। सब दी आत्म दे सोधी, बुध बिबेक देणी कराईआ। सच नाम बणा जोगी, जुगीशर आपणा भेव खुल्हाईआ। हउमे दा रहे कोए ना रोगी, हंगता गढ़ देणा तुड़ाईआ। आत्म परमात्म मेला कर धुर संजोगी, जुग विछड़े जोड़ जुड़ाईआ। तूं साहिब स्वामी ठाकर मौजी, मजलस चार वरन वखाईआ। तेरा इक्को होवे नाम सलोकी, सोहला सच सच सुणाईआ। झगड़ा रहे ना चौदां तबक चौदां लोकी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार बेपरवाहीआ। धरनी कहे मेरा सुहा दे मन्दिर, इक्को नूर कर रुशनाईआ। जन भगतां तोड़ के बजर कपाटी जन्दर, ज़िंदगी ज़िंदगी विच्चों बदलाईआ। प्रकाश कर दे अंधेरी कन्दर, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। मनुआ दहि दिशा ना भवे बन्दर, सांतक सति देणा वरताईआ। लोड़ रहे ना प्रकाश सूर्या चन्द्र, तेरा नूर नुराना सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार आपणी दया कमाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं दर तेरे दी मंगती, मांगत हो के झोली डाहीआ। गढ़ तोड़ दे हउमे हंगती, हँ ब्रह्म दे समझाईआ। आपणे नाम दी दस्स दे पंगती, निरअक्खर धार दे समझाईआ। कल्पणा रहे ना मनूए मन दी, ममता मोह देणा चुकाईआ। लड़ाई रहे ना कूड़े तन दी, तत्व इक्को देणा समझाईआ। लो देणी अगम्मे चन्न दी, लोयण अन्दरों इक खुल्हाईआ। सफा मेटणी कूड़े ग़म दी, ग़मखार होणा सहाईआ। मुहब्बत बख्शणी आपणे ब्रह्म दी, पारब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। धरनी कहे तेरे नाम दी इक्को होवे पूजा, पूरन ब्रह्म सर्ब समझाईआ। मार्ग रहे कोई ना दूजा, दुतीआ भाउ देणा गंवाईआ। कोझयां कमल्यां कँवल कर मूधा, नाभी झिरना इक झिराईआ। तेरा दवारा सब नूं होवे सूझा, दर पड़दा देणा उठाईआ। भेव रहे कोई ना गूझा, घर घर विच वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वड दाते तेरी वड वड्याईआ।

धरनी कहे मेरे साहिब श्री भगवन्त, हरि भगवन दयां जणाईआ। तेरा इक्को होवे मंत, मन्त्र नाम कलमा बेपरवाहीआ। रसना जेहवा गाए जीव जंत, बत्ती दन्द दन्द मिलाईआ। सति धर्म दी सच बणा बणत, कलयुग कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। चार वरन धर्म दी धार तेरे होण सन्त, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए रखाईआ। तेरी महिमा आदि जुगादि सदा अनन्त, कथनी कथ सके ना राईआ। मेरी अन्दरों मेट दे चिन्त, खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। मेरे उत्ते मेरे साहिब तेरा रहे कोई ना निन्दक, निंदिआ चुग़ली देणी गंवाईआ। आपणे सतिगुर शब्द नूं बख्श हिम्मत, हौसला आपणा आप जणाईआ। ओह फिरे उत्तर पूरब पच्छम दक्खण चारों सिम्मत, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप आपणा पन्ध मुकाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म सच प्यार दी होवे मिल्लत, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित तेरी सच नाम दी खिल्लत, सतिजुग साचे देणा पहनाईआ।

✪ ११ माघ शहिनशाही सम्मत ६ गुरदयाल सिँघ दे गृह कपूरथला शहर ✪

धरनी कहे प्रभ कलयुग जीव होए नाशुकरे, शुकर गुज़ार ना कोए अख्वाईआ। जेहड़े आत्म रूप तेरी धारों उतरे, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण, बैठे डेरा लाईआ। तेरे कौल इकरार धुर दिउँ मुकरे, मन्नण वाला नज़र कोए ना आईआ। मेरे कीते टुकड़े टुकड़े, हिस्सया वंड वंडाईआ। बौहड़ी मेरे कोई सुणे ना दुखड़े, दर्दी हो ना दर्द वंडाईआ। दुरमति मैल धोए कोई ना मुखड़े, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। मेरी मौले सच ना रुतड़े, रुतड़ी रुत ना कोए महकाईआ। तेरे मार्गां सारे उखड़े, औझड़ भज्जण वाहो दाहीआ। किरपा कर स्वामी मुढले, हरि करते दया कमाईआ। मेरी अन्तर आशा बुज्झ लै, की अन्तष्करन करे दुहाईआ। मेरी कलयुग अन्तिम सुझ लै, समझ आपणे नाल मिलाईआ। तेरा किसे रिहा ना कुझ भय, भय सिर ना कोए रखाईआ। झगड़ा प्या काया माटी गृह गृह, तन मन्दिर ना कोए सफ़ाईआ। तूं आदि जुगादी जुग चौकड़ी सब नूं करदा लै, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रहिण कोए ना पाईआ। हुण किरपा करके मेरे उत्ते आपणे नाम दी करदे जै, जै जैकारा इक सुणाईआ। सच दवारे आ के बहि, बैकुण्ठ निवासी डेरा लाईआ। झगड़ा रहे तूं ना मैं, मैं ममता दे चुकाईआ। आदि अन्त इक्को तूं हैं, एकँकारा इक अख्वाईआ। सच वस्त भण्डारा दे दे नाम शै, शहिनशाह हो के आप

वरताईआ। बिन तेरी किरपा पवित्र ना होवे थैं, थान थनंतर सोभा कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। धरनी कहे मेरा गृह करदे उच्चा, दर दे वड्याईआ। तेरा नाम वरते सुच्चा, संजम इक्को देणा समझाईआ। मानव रहे कोए ना लुच्चा, कूड़ी क्रिया देणी गंवाईआ। ज्ञान दे दे पंज तत मनुक्खा, मानव पड़दा आपणा लाहीआ। शरअ दा रहे कोई ना दुखा, कूड़ दर्द देणा मिटाईआ। नाम भण्डारा दे दे करके उग्घा, उगण आथण वज्जे वधाईआ। तेरा राह तकदे अवतार पैग़म्बर गुरु आसा रख के गया बुद्धा, बुद्धी तों परे ध्यान लगाईआ। मैं चाहुंदी मेरे उत्ते इक वार कराईं युद्धा, फेर युद्ध दी लोड़ रहे ना राईआ। साफ़ करदे पाणी दुद्धा, हुक्म धुर दा इक वरताईआ। सच धर्म दा सब नूं समझा दे मुद्दा, मुद्दत दे मालक दया कमाईआ। लेखा मुका दे कलयुगा, सतिजुग कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मैनूं माण दे मैं तेरी चरण धूढ़ लैण वाली बसुधा, बेसुध हो के तेरे अग्गे वास्ता पाईआ।

१११९ ११११

२२ २२

✪ ११ माघ शहिनशाही सम्मत ६ करतार सिँघ दे घर कपूरथला शहर ✪

धरनी कहे किरपा कर प्रभू मेरी सच्ची सरकार, नेत्र रो रो दयां दुहाईआ। मैं जुग चौकड़ी अवतार पैग़म्बरां गुरुआं चुक्कया भार, दीन मज़्हब दा बोझ मेरे उत्ते गए टिकाईआ। खेल करदे गए खड़ग खण्डा तलवार, तरकश तीर कमान कंध्याँ उत्ते रखाईआ। मानव ज़ाती तन वजूद माटी धार वहाउंदे गए धार, खून मेरे उत्ते डुल्हाईआ। हिस्से वंडां वंड के मेरे टुकड़े करके गए विच संसार, हद्द नाम कलमे वाली बणाईआ। मेरी चार कुण्ट दहि दिशा बणया ना कोए मुख्त्यार, मुख्त्यारनामे तेरे नाम दे सर्ब वखाईआ। लिख के गए शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गुरु ग्रन्थ कर प्यार, त्रैगुण अतीते तेरी सिफ्त सालाहीआ। मंगां मंगदे गए कलयुग अन्तिम आवे कलि कल्की अवतार, निहकलंक आपणी कल प्रगटाईआ। सो कलयुग कूड़ी क्रिया तेरे उतों हौला करे भार, कूड़ कुकर्म दा बोझ रहे ना राईआ। मैं सदी चौधवीं चार कुण्ट फिरी वारो वार, दिवस रैण भज्जी वाहो दाहीआ। मुहब्बत विच मिल्या कोए ना यार, प्रेम प्रीती सच ना कोए कमाईआ। मैं रो के करां गिरयाज़ार, गिरया गिरया ध्यान लगाईआ। तुध बिन दिसे ना कोए सहार, सहारा नज़र कोए ना आईआ। धरनी कहे किरपा कर मेरे निरँकार, निरगुण निरवैर तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर

साचे सीस निवाईआ। धरनी कहे मैनूं करदे पतित पुनीत, पतित पावन दया कमाईआ। मेरा लेखा वेख लै मैं भार उठाया मन्दिर मसीत, शिवदुआले मट्ठ गुरदवारे सीने उत्ते रखाईआ। जुग जुग दी तेरी दस्सी रीत, जो सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अवतार पैग़म्बर गुरु गए समझाईआ। अन्त वेख झगड़ा प्या हस्त कीट, राउ रंक करे लड़ाईआ। तेरे प्यार दा गाए कोई ना गीत, गहर गम्भीर तेरी याद ना कोए रखाईआ। मैं रो के मारां चीक, कूक कूक सुणाईआ। कलयुग जीवां साफ़ होए किसे ना नीत, नीतीवान नज़र कोए ना आईआ। तेरे नाल हकीकी करे ना कोए प्रीत, प्रीतम तेरा प्यार ना कोए वखाईआ। मेरे साहिब सुल्ताना नौजवाना मेरी आसा मनसा पूरी कर उडीक, दर ठांडे सीस निवाईआ। कलयुग विच सतिजुग बदल दे तवारीख, तारीख पिछली नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल सदा अनडीठ, जग नेत्र जिज्ञासूआं नज़र कोए ना आईआ।

★ ११ माघ शहिनशाही सम्मत ६ अमर कौर दे गृह कपूरथला शहर ★

धरनी कहे प्रभ मेरी किड्डी वड्डी लम्मी सोहणी सेज, आदि दी आदि नज़री आईआ। मेरे उत्ते आपणा जोती जल्वा कर तेज, तेज़ धार आपणी इक प्रगटाईआ। वेखीं अवतार पैग़म्बर गुर हुण ना देवीं भेज, जो भजन बन्दगी करके आपणा झट लँघाईआ। तेरे नाम कलमे नूं दीनां मज़्हबां विच दए ना वेच, हिस्सा जगत विच रखाईआ। मेरे सुहावे सुहञ्जणे देस, साहिब आपणा रंग रंगाईआ। मैं चाहुंदी इक्को तेरा होवे अगम्मड़ा वेस, वेस आपणा लैणा बदलाईआ। नूर नुराने करना भेस, भेख कूड़ा देणा मुकाईआ। नौ सौ चौरानवे जुग चौकड़ी पिच्छों मेरी बदल दे रेख, जो रिखव देव ध्यान लगाईआ। ओह वेख वास्ता पाउंदे विष्न ब्रह्मा शिव महेष, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। दुहाई देवे सहँसर नामा शेष, नेत्र नीर वहाईआ। सृष्टी दा मालक अन्तिम बण इक्को एक, एकँकार दया कमाईआ। मेरे उत्ते सब नूं होवे तेरी चरण टेक, टिक्के धूढ़ी ख़ाक देणे लगाईआ। वक्खरा वक्खरा मानस ज़ाती रहे कोए ना पेट, आहार विवहार इक्को देणा बणाईआ। सब दा सांझा बणना खेवट खेट, खिटे विच्चों हउमे रोग गंवाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले इक वार मेरी सेज सुहञ्जणी उत्ते लेट, सीना शांत दे कराईआ। मैं अवतार पैग़म्बर गुरु सारे कर दिते तेरी भेंट, मढ़ीआं कबरां विच तन वजूद गए छुपाईआ। तूं मालक इक नर नरेश, नर नरायण तेरी सरनाईआ। मनसा पूरी करदे दस दशमेश, गोबिन्द दुलारा आपणे रंग रंगाईआ। दूसर

चले कोई ना पेश, पेशतर सारे गए सुणाईआ। झगड़ा मुका दे मुल्लां शेख, शख्सीअत आपणी इक दृढ़ाईआ। नज़री आ नेत्र नेत, निज नैण कर रुशनाईआ। भाग लगाउणा गुरमुख दवारे तीजी चेत, चेत्र आपणा रंग रंगाईआ। फिर कलयुग दा लेखा करना पछेत, अगेत आपणा हुक्म वरताईआ। खोल्ह के दस्सणा धुर दा भेत, पड़दा ओहला रहे ना राईआ। धरनी कहे जन भगतां नूं दस्सणा इक इक मुट्ठी सारे ल्यावण रेत, सज्जी कन्नी गंढ पवाईआ। धर्म दा विवहार होणा माझे देस, मजलस भगतां नाल रखाईआ। इक्को छत्र वेखां सीस नर नरेश, नर नरायण तेरी सरनाईआ। लिखारीआं खुल्ह्ड़े रखणे केस, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच आपणी खेल खिलाईआ। धरनी कहे मेरी किस्मत जागे सोती, मैं सुत्ती लवां अंगड़ाईआ। लिखारीआं तेड़ बन्न्हणी साड़ी नाल धोती, दुहरा आपणा खेल खिलाईआ। सत्त रंग दी शब्दी धार सतिगुर कोल होवे सोटी, सोहणा रंग रंगाईआ। पंज गुरमुखां तेड़ बन्न्ही होवे लंगोटी, लंगड़ा लूल्हा रूप बणाईआ। पंज गुरमुख लाल करन होठी, आपणा बल धराईआ। पंजां खुल्ही रखी होवे चोटी, पगड़ीउँ बाहर सोभा पाईआ। पंजां मन भरया होवे नाल करोपी, गुस्से विच देण दुहाईआ। पंज बणे होण लोभी, लालच विच मंगण चाँईं चाँईंआ। पंज बणे होण धोबी, वस्त्र कंध्याँ उत्ते उठाईआ। पंजां दे हत्थ विच होवे सोटी, साढे तिन्न हत्थ लम्बाईआ। एह खेल प्रभू प्रभ चोजी, हरि करते देणा कराईआ। मेरी आसा इहो चिरोकी, धरनी धरत धवल रही सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां अन्दर आपणी देणी सोझी, समझ रमज़ नाल खुल्हाईआ।

✪ ११ माघ शहिनशाही सम्मत ६ गुरबचन सिँघ दे गृह पिण्ड अहिमदपुर ज़िला कपूरथला ✪

धरनी कहे मेरे मालक प्रितपालक ख़ालक वाली अर्श, साहिब सुल्तान श्री भगवान सीस निवाईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार मन्न मेरी अर्ज़, आरज़ू पुरख अकाल दीन दयाल तेरे अग्गे रखाईआ। जोत सरूपी परवरदिगार आ परष्त, पष्तिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं पूरी करदे शर्त, शरअ दा लेखा आपणी झोली पाईआ। इक्को नाम निधान सुणा तर्ज़, तरह तरह दा लेखा दे मुकाईआ। तेरा शब्द अनादी मारे ग़र्ज, गूंज इक्को इक प्रगटाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया दे वरज, माया ममता मोह मिटाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां वंड दर्द, दीनां अनाथां हो सहाईआ। आपणा खेल दस्स असचरज, अचरज लीला दे वरताईआ। तूं आदि दा योधा सूरबीर मर्दाना मर्द, मदद तेरी मंग मंगाईआ। छुरी

शरअ कत्ल कोए करे ना करद, कातिल मक्तूल दा झगड़ा दे मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, पुरख अकाल दीन दयाल तेरी सरनाईआ। धरनी कहे प्रभ मैं रखी तेरी आस, तृष्ना तृप्त दे कराईआ। निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, प्रकाशवान होवे तेरी ख़लक ख़ुदाईआ। सति धर्म दी सत्त दीप पा रास, नौ खण्ड आपणा रंग रंगाईआ। किरपा कर सर्ब गुणतास, गहर गम्भीर होणा सहाईआ। झगड़ा मेट दे दीन मज़्हब ज़ात पात, ऊच नीच राउ रंक वंड ना कोए वंडाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म दे साथ, पारब्रह्म ब्रह्म सगला संग बणाईआ। तूं मेहरवान अनाथां नाथ, दीनन दया आप कमाईआ। तेरा खेल वेखे शंकर उत्ते कैलाश, ब्रह्मा ब्रह्म धार नैण उठाईआ। विष्नूं नूं विश्व दे विश्वाश, विशा आपणा दे दृढ़ाईआ। मैं दर भिखारन नूं बख्श अगम्मी दात, दाता हो के झोली दे भराईआ। मेरे उत्ते कलयुग कूड़ कुकर्म दी रहे ना अंधेरी रात, सतिजुग सति चन्द चमकाईआ। मानस ज़ाती दिसे भैण भ्रात, दुतीआ भाओ ना कोए रखाईआ। पूरब पूरा करदे भविक्ख्त वाक, वाक्या आपणा रंग रंगाईआ। सब दे अन्दरों खोल्ह दे ताक, बजर कपाटी पड़दा दे चुकाईआ। शब्द अनादी सुणा दे आवाज़, धुन आपणी इक जणाईआ। गृह गृह तेरी जोत होवे प्रकाश, घर घर विच कर रुशनाईआ। तूं साहिब सतिगुर परम पुरख महाराज, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। वेखीं मैनूं कोझी कमली नूं दे ना देवीं जवाब, दर तेरे चरण धूढ़ ख़ाक रमाईआ। मेरे परवरदिगार करीं इमदाद, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलयुग अन्तिम सब दी खोल्ह दे जाग, निज नेत्र लोचण नैण कर रुशनाईआ। हरिजन हँस बणा दे काग, काग वांग ना कोए कुरलाईआ। साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर जगा दे चराग़, निरगुण नूर नूर चमकाईआ। मेरे उत्ते सतिजुग खेड़ा कर आबाद, घराना इक वसाईआ। सारे तैनूं लैण अराध, हिरदे अन्दर हरि वसाईआ। तेरे नाम दा अनरस लैण स्वाद, जेहवा रस ना कोए वड्याईआ। तेरा धर्म दा होवे समाज, समग्री सति देणी वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तेरे हथ्थ वड्याईआ। धरनी कहे मैं कोझी कमली निमाणी, गुणवन्त तेरी सरनाईआ। मेरे उत्ते वसदी चारे खाणी, चुरासी तेरी सोभा पाईआ। मेरे उत्ते अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं गाई तेरी बाणी, ढोले सिफ्तां वाले सालाहीआ। मेरे उत्ते सर सरोवर तेरा पवित्र पाणी, जल थल महीअल सारे सोभा पाईआ। मेरी बेनन्ती मन्न मेरे साहिब सुल्तानी, शहिनशाह दयां दृढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट निशानी, निशाना सतिजुग धर्म इक झुलाईआ। झगड़ा मेट दे कूड़ अवामी, अमलां तों रहित कर ख़लक ख़ुदाईआ। धुर संदेशा नाम कलमा दे पैग़ामी, पैग़म्बरां तों परे कर पढ़ाईआ। तूं प्रगट हो वाहिद इक नूरानी, नूर नुराना नूर इलाहीआ। मेरे उत्ते रैण रहे ना अंधेरी शामी, शम्हां नूर जोत देणा चमकाईआ। ज़ंजीरां दी

कट गुलामी, गुरबत अन्दरों देणी कढ्ढाईआ। तूं मालक हक पैग़ामी, मेहरवान इक अख्वाईआ। धरनी कहे तूं घट घट दा जाण जाणी, अन्तरजामी तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा मेल करा दे बाहमी, तेरे विछोड़े विच विछड़ कोए ना जाईआ।

✪ १२ माघ शहिनशाही सम्मत ६ जुगिन्दर सिँघ दे गृह पिण्ड अहिमदपुर ज़िला कपूरथला ✪

धरनी कहे प्रभ तूं मेरा आदि आदि दा माली, मालक अन्त तक अख्वाईआ। मैं तेरी लख चुरासी सृष्टी संभाली, जुग चौकड़ी आपणे विच टिकाईआ। अग्गे कदी ना होई सवाली, झोली ख़ाली ना कोए वखाईआ। बौहड़ी हुण मेरी धर्म दी करे ना कोए दलाली, विचोला नज़र कोए ना आईआ। मानव सारे खांदे झटका ते हलाली, झट किस बिध लवां लँघाईआ। फल रिहा किसे ना डाली, ख़ाली टाहणे देण दुहाईआ। तेरा प्यार मुहब्बत होया जाहली, अन्तिम मेल ना कोए कराईआ। तूं किरपा कर दे शहिनशाह शाली, हरि सतिगुरु तेरी सरनाईआ। मैं कीती कोई नहीं काहली, जुग चौकड़ी बैठी रही ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेरा आपे बणे पाली, प्रितपालक हो के मेरी आसा पूर कराईआ।

११९५
२२

✪ १२ माघ शहिनशाही सम्मत ६ फुम्मण सिँघ दे गृह पिण्ड अहिमदपुर ज़िला कपूरथला ✪

धरनी कहे प्रभ मैं तेरी चारे खाणी चुक्की, जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर होई मूल ना दुखी, दुःख विच ना कदे कुरलाईआ। मेरी आशा मेरे अन्दर रही लुकी, बाहर सकी ना मूल कढ्ढाईआ। कलयुग अन्तिम तेरी सृष्टी तेरे निशान्यों उकी, तेरा मार्ग गई भुलाईआ। तेरी धार समझे ना कोए दो तुकी, आत्म परमात्म संग ना कोए बणाईआ। कूड़ विकारा रिहा मैनूं कुट्टी, माया ममता नाल मिलाईआ। तेरी धार तेरे नालों टुट्टी, टुटयां गंढ ना कोए पवाईआ। बौहड़ी कलयुग लुटेरा मैनूं जांदा लुट्टी, चार कुण्ट आपणा बल वखाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु लुक गए गुट्ठीं, प्रगट हो के बल ना कोए जणाईआ। मेरी पवित्र ख़ाक रही ना मुट्ठी, ज़र्रा ज़र्रा दए दुहाईआ। मेहरवान महिबूब हो के आप उठीं, निरगुण निरवैर लै अंगड़ाईआ। आपणे नाल सब दी करनी रुची, रचना आपणी दे वखाईआ। मेरी सफा करदे सुच्ची, संजम आपणा इक समझाईआ। मैं कूक पुकारां उच्ची, उच्च अगम्म दयां सुणाईआ। मैं नेत्र रो रो वैराग विच फुट्टी, नैणां नीर वहाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नहीं ते मैनूं दे दे खुशी, जगत जहान महापरलो आपणी धार बणाईआ।

✪ १२ माघ शहिनशाही सम्मत ६ जीत सिँघ दे गृह अहमदपुर ज़िला कपूरथला ✪

धरनी कहे प्रभ बख्श दे आपणा रंग, रंगीन रंगत दे चढ़ाईआ। सच नाम वजा मृदंग, नाद अगम्मी इक सुणाईआ। सेज सुहञ्जणी सुहा मेरा पलँघ, सुखआसण आपणा डेरा लाईआ। मेरी आदि आदि दी मंग, पारब्रह्म प्रभ पूरी दे कराईआ। सदी चौधवीं रही लँघ, सद्दा देवे थांउँ थाँईंआ। कूड़ी क्रिया कर दे भंग, ममता मोह रहिण ना पाईआ। झूठ पखण्ड रहे ना डम्ब, सति सच देणा वरताईआ। मैं पाप नाल रही कम्ब, थर थराहट विच कुरलाईआ। प्रभ किते माता कुक्खों पई ना जम्म, निरगुण नूर जोत जोत कर रुशनाईआ। झगड़ा मेट दे काया माटी चम्म, आत्म ब्रह्म दे समझाईआ। मैं नेत्र रोवां छम्म छम्म, हन्झूआं हार बणाईआ। मेरा मेट दे दुक्खां वाला ग़म, ग़मखार होणा सहाईआ। मैनूं तृष्ना रहे कोई ना तम, तमा तेरी झोली पाईआ। जिधर तकां नज़री आए तेरा ब्रह्म, परम पुरख तेरा नूर रुशनाईआ। मेरा सति दा सति करदे कर्म, कूड़ कर्म दा डेरा ढाहीआ। मैं चाहुंदी मेरे उत्ते सारे तेरा इक्को नाम पढ़न, सिख्या इक देणी सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सारे मंज़ल तेरी चढ़न, चढ़दी धार आप दरसाईआ।

✪ १२ माघ शहिनशाही सम्मत ६ कर्म सिँघ दे गृह पिण्ड अहमदपुर ज़िला कपूरथला ✪

धरनी कहे प्रभ क्यों मैनूं कहिंदे धरती माँ, मानव रसना नाल गाईआ। मेरे ख़सम दा केहड़ा नाँ, सच देणा समझाईआ। वसे केहड़े थाँ, थनंतर सोभा पाईआ। जिस दवारे मैं जां, जा के सीस निवाईआ। पकड़े मेरी बांह, फड़ बाहों लए उठाईआ। मैं निमाणी होई गां, पाली नज़र कोए ना आईआ। किस बिध आपणा झट लँघां, चारों कुण्ट तेरी दुहाईआ। सिर देवे कोई ना ठंडी छाँ, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। मेरा कवण करे न्याँ, इन्साफ़ अदल कवण कमाईआ। मैनूं मिले कोई ना थाँ, भज्जां वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म देणा सुणाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा केहड़ा ख़सम, ख़समाने दे जणाईआ। जो मेरे उत्ते आया मैं करके छड्डुया भस्म, अवतार

पैग़म्बर गुरु रहिण कोए ना पाईआ। मेरी नज़र ना आवे कोई चशम, दीद नाल दीद ना कोए मिलाईआ। किसे दा नज़र नहीं आउंदा माटी जिस्म, जिस्म ज़मीन बण के गई खाईआ। हाए मैं किस दी खावां कसम, किस नूं वड्डा कहि के सीस निवाईआ। मेरा केहड़ा होवे इस्म, आलीशान कवण शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी सरनाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा दस दे केहड़ा कन्त, कन्तूहल कवण अख्वाईआ। मैं जुग चौकड़ी सारे खा गई साध सन्त, भगत सूफ़ी बचया रहिण कोए ना पाईआ। मैं लख चुरासी हज़म कर गई जीव जंत, मेरा पेट ना कोए भराईआ। मैं कोटन कोटि बदला दिते तेरे नाम मंत, मन्त्र जीवण वाला रहिण कोए ना पाईआ। मैनूं विद्या देण वाला दिसे कोए ना पंडत, जो आया सो मैं खा के दिता मुकाईआ। मेरी तेरे अग्गे मिन्नत, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। मेरा मालक दस्स दिसे केहड़ी सिम्मत, मैं खोजां चाँईं चाँईंआ। मेरी सगली मिट जाए चिन्त, चिन्ता रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा केहड़ा हक महिबूब, जो मुहब्बत विच रखाईआ। हर दम रहे मेरे कोल मौजूद, सगला संग बणाईआ। जुग चौकड़ी मैनूं रखे महफ़ूज़, दूसर अक्ख ना कोए उठाईआ। मेरे विच्चों झगड़ा मेटे दूज, दुतीआ भाउ मुकाईआ। आपणा घराना दस्से गूझ, पड़दा देवे लाहीआ। मैनूं बख्शे सूझ, संजम इक समझाईआ। ओहदा इक्को हलकारा इक्को चाकर होवे दूत, इक्को हुक्म संदेशा दए दृढ़ाईआ। मैं नहीं चाहुंदी मेरा मालक होवे कोई काया वाला पंज भूत, जो जम्मे ते मर जाईआ। जिस दा आदि अन्त दा आवा जाए ऊत, अन्त निशान ना कोए रखाईआ। तेरे हुक्म अन्दर कर जाए कूच, मेरा कूचा गली दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरा गृह घराना दस्स जिथ्थे तेरी मंजले मकसूद, अग्गे मंजल रहे ना राईआ।

✪ १२ माघ शहिनशाही सम्मत ६ प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड कोटली इबराहीम खां ज़िला जलन्धर ✪

धरनी कहे मेरे साहिब श्री भगवाना, भगवन भगवन्त तेरी ओट तकाईआ। मेरे आदि अन्त दे रामा, मेहरवान महिबूब तेरी बेपरवाहीआ। मेरे सति सच दे कान्हा, काहन तेरे निउँ निउँ लागां पाईआ। मेरे पैग़म्बर धुर अमामा, तेरी धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। मेरे सतिगुर सति शब्द दमामा, डंका सुणां चाँईं चाँईंआ। उठ वेख कलयुग अंधेरी शामा, शम्मा नूर ना कोए रुशनाईआ। झगड़ा प्या जीव जहाना, जागरत जोत ना कोए डगमगाईआ। तन वजूद वेख्या तृष्ना तामा, अमृत मेघ ना

कोए बरसाईआ। माण रिहा ना कलमे कलामा, कायनात रोवे मारे धाईआ। तूं मेरा साहिब स्वामी अन्तरजामा, अन्तरजामी हो के खोज खुजाईआ। सब दा वेख पूरब लिख्या ब्याना, भविक्खतां खोज खुजाईआ। सति दा सच दा रिहा ना कोए टिकाणा, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ सारे देण दुहाईआ। तीर्थ तट ना कोए इश्नाना, गंगा गोदावारी जमना सुरस्ती अक्ख शरमाईआ। झगड़ा प्या अञ्जील कुराना, शास्त्र सिमरत करन लड़ाईआ। तेरे प्यार मुहब्बत दा मिले कोए ना जामा, हकीकी जाम ना कोए प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। धरनी कहे मेरे साहिब सुल्तानी, स्वामी हरि सज्जण तेरी वड्याईआ। उठ वेख लै आपणी चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज पड़दा लाहीआ। चार जुग दी पिछली तक लै बाणी, जो बाण अणयाला तीर चलाईआ। तीर्थ सरोवर तक लै पाणी, अट्ठ सट्ठ खोज खुजाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म मेले मेल कोए ना हाणी, पारब्रह्म ब्रह्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। चारों कुण्ट शरअ शैतानी, शरीअत रही कुरलाईआ। तेरी मंज़ल मिले ना किसे आसानी, मेहरवान महिबूब दर मिलण कोए ना आईआ। पंच विकार चढ़ी तुग्यानी, जीव जहाना रही रुढ़ाईआ। सच धर्म दी दिसे ना कोए निशानी, निशाने बैठे मुख भवाईआ। बिन तेरी किरपा होए ना किसे कल्याणी, कलमा संग ना कोए निभाईआ। शाह सुल्ताने आ

१११८ विच मैदानी, निरगुण धार लोकमात लै अंगड़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट कहाणी, कथा आपणी इक समझाईआ। सृष्टी १११८

२२ दृष्टी पुणी छाणी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। धरनी २२

कहे मेरे मालक गहर गम्भीरा, हरि गवर दयां दृढ़ाईआ। लेखा वेख पंज तत सरीरा, मानस मानव मानुख खोज खुजाईआ। सच दा रिहा कोए ना धीरा, धीरज धर्म ना कोए जणाईआ। हउमे सब नूं लग्गी पीड़ा, माया ममता रही सताईआ। तेरे प्यार दा चुक्के कोए ना बीड़ा, खण्डे खड़ग सर्ब रहे खड़काईआ। तेरे नाम दा मस्तक दिसे किसे ना चीरा, चिरी विछुन्ने तेरा मेल ना कोए मिलाईआ। तूं कृपाल हो के दीन दुनी दी अन्दरों बदल दे ज़मीरा, ज़ाहर ज़हूर आपणा नूर कर रुशनाईआ। तेरे हथ्थ सब दी तकदीरा, तदबीर आपणी दे समझाईआ। झगड़ा मेट दे हस्ट कीड़ा, ऊच नीच इक्को रंग रंगाईआ। लेखा रहे ना ग़रीब अमीरा, अमरापद दे मालक दर तेरे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरख अकाले दीन दयाले तूं आदि जुगादी परवरदिगार सांझा यार पीरन पीरा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों बाहर आपणी आसा तेरे अग्गे रही रखाईआ।

✪ १२ माघ शहिनशाही सम्मत ६ बलजीत सिँघ दे गृह पिण्ड जैतोवाली ज़िला जलन्धर ✪

धरनी कहे प्रभ किरपा कर, कृपाल दयाल दया कमाईआ। निरगुण निरवैर नर नरायण जोत धर, पुरख अकाले आपणा पड़दा दे उठाईआ। चरण सरोवर बणा अगम्मा सर, सरनगति इक्को दे वखाईआ। मानव ज़ाती धर्म दा इक्को खोल्ह दर, ग़रीब निमाणयां दर्द वंडाईआ। तेरा नाम निधाना सृष्टी दृष्टी अन्दर जाए पढ़, धुर दा राग नाद कर शनवाईआ। सच स्वामी सति सरूपी हो के खड़्ह, सन्मुख हो के नजरी आईआ। झगड़ा मेट दे काया माटी धड़, दीन मज़्हब ना करे लड़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया पुट्ट दे जड़, सति धर्म दा मार्ग इक वखाईआ। तेरा सांझा समझे दो जहानां घर, गृह मन्दिर इक सुहाईआ। मेरी ख़ाली झोली भर, भण्डारा धुर दा नाम वरताईआ। कूड़ा रहे ना जोबन ज़र, ज़र्रे ज़र्रे आपणा नूर दे चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, श्री भगवान तेरी वड वड्याईआ। धरनी कहे प्रभू किरपा कर दे धुर दे मित्र, हरि सति सच दृढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया चढ़ी सिख़र, चोटी सब दी बैठी डेरा लाईआ। माया ममता मोह विकार किसे अन्दरों सके ना निकल, हउमे गढ़्ह ना कोए तुड़ाईआ। पंच विकार मूल ना जित्तण, जीव जंत रहे कुरलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप कलयुग कर्म कर दे मिथण, मिथ्या दस्स सर्ब लोकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर तेरा शब्द संदेश लिखण, तूं मेरा मैं तेरा दिता जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर पल्लू वास्ता पाईआ। धरनी कहे प्रभ मेरा वेख लै मात घराना, नव सत्त ध्यान लगाईआ। तेरा मानुख होया बेगाना, सच प्रेम ना कोए बणाईआ। धर्म दा दिसे ना कोए यराना, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। निरगुण निरगुण गाए कोई ना गाणा, सरगुण वज्जदी वेख वधाईआ। चारों कुण्ट मान अभिमाना, हउमे गढ़्ह ना कोए तुड़ाईआ। शरअ खेल करे शैताना, शरीअत विच ना कोए वड्याईआ। भाग लग्गे ना किसे साढे तिन्न हथ्थ मकाना, पंज तत सोभा कोए ना पाईआ। तेरा नाम बणया अफ़साना, सृष्टी रसना नाल गाईआ। तूं मालक प्रगट हो इक्को धुर दा कान्हा,

तूं आदि जुगादी एकँकार रामा, रहम आपणा दे कमाईआ। जिस नूं झुकदे अवतार पैग़म्बर गुरु विच जहाना, निव निव लागण पाईआ। सजदयां विच करन सलामां, धूढ़ी मस्तक ख़ाक रमाईआ। भेत खोल्ह आपणा कलयुग अमामा, पड़दा ओहला रहे ना राईआ। कलि कल्की वड बलवाना, बलधारी भेव खुल्हाईआ। निहकलंक शाह सुल्ताना, तेरी सरन सच सरनाईआ। कलयुग अन्तिम मेट निशाना, कूड़ कुकर्म रहिण ना पाईआ। सतिजुग मेरे उत्ते कर प्रधाना, सति सच दा मार्ग दे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर,

निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा लेखा अगम्म अथाह कोई कर ना सके ब्याना, कथनी जगत ना कोए वड्याईआ।

✪ १२ माघ शहिनशाही सम्मत ६ हरभजन कौर दे गृह पिण्ड कोटली थान सिँघ ज़िला जलन्धर ✪

धरनी कहे प्रभ मेरी पूरी कर दे सध्धर, सदा सदा सद तेरा ध्यान लगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट दे ग़दर, गदा आपणी नाम इक उठाईआ। दीन मज़्ब दी धारा कर दे पद्धर, रोड़ा अग्गे ना कोए अटकाईआ। इक्को आपणे नाम दी धुन सुणा दे मधुर, सति सुरीली आप जणाईआ। सच प्यारयां भगतां दा कर कदर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तेरी मेहर दी निगाह होवे नदर, नज़रीआ सब दा दे बदलाईआ। शरअ छुरी करे किसे ना कत्ल, मक्तूल रूप ना कोए दरसाईआ। तेरा इक्को इन्साफ़ होवे अदल, अदालत इक्को नज़री आईआ। कलयुग विच सतिजुग जावे बदल, बदली शब्द नाम दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। धरनी कहे प्रभ मेहरवान कर दे मेहरवानी, मेरी आसा वेख वखाईआ। मेरी खुशीआं भरी जवानी, जोबन कलयुग रिहा गंवाईआ। चारों कुण्ट वेख बेईमानी, सति धर्म ना कोए रखाईआ। शरीअत शरअ होई शैतानी, धीरज धर्म ना कोए प्रगटाईआ। किरपा कर मेरे दाते धुर दे दानी, दयावान दया कमाईआ। इक्को रंग रंगा दे चारे खाणी, ख़ालस आपणा मेल मिलाईआ। तूं सर्ब घटा घट जाण जाणी, जानणहार वड वड्याईआ। अमृत रस बख्श दे पाणी, अंमिउँ रस आप चुआईआ। हुण रीती मेट दे पुराणी, निव निव दर तेरे सीस निवाईआ। सतिजुग दी सच चले कहाणी, कहावत गुर अवतार पैग़म्बरां पूर देणी कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति सच आप वरताईआ। धरनी कहे मेरी वेख पुराणी हरस, हउमे दयां जणाईआ। मेहरवान कर तरस, रहमत हक कमाईआ। अमृत मेघ अगम्मा बरस, कलयुग अग्नी दे बुझाईआ। झगड़ा मेट दे मन्दिर मसीत चर्च, चर्चा आपणी दे जणाईआ। जिस नाल सारे जीव जंत जाण परच, प्राचीन दा झगड़ा रहे ना राईआ। तूं मालक वाली अर्श, अर्शी प्रीतम इक अख्वाईआ। कर किरपा उत्ते धरत, धरनी रो रो मारे धाईआ। तेरा साख्यात होवे दरस, दीद ईद कर रुशनाईआ। बेनन्ती मंज़ूर होवे अर्ज़, आरज़ू तेरे अग्गे रखाईआ। तूं योद्धा सूरबीर मर्दाना मर्द, मुद्दत दे मालक मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ग़रीब निमाणयां वंड दर्द, दीना नाथ अनाथां हो सहाईआ।

✪ १३ माघ शहिनशाही सम्मत ६ गुरदयाल सिँघ दे गृह पिण्ड चीमां कलां ज़िला जलन्धर ✪

धरनी कहे प्रभ किस नूं मेरी लज्जया दी होवे अणख, अणखीला ल्ए अंगड़ाईआ। धर्म दे बल दा उठाए धनुख, धनुष कंध लटकाईआ। मेरी पूरी करे आसा मनस, मनुशां भेव खुल्हाईआ। द्वापर इक हँकारी कंस, कलयुग अनगिणत नज़री आईआ। सच दी दिसे कोई ना जिनस, जन्म सारे गए बदलाईआ। हउमे रोग दिसे हिँस, आहिँसा विच दुहाईआ। किस बिध कूड़ी क्रिया जाए बिनस, बिस्मिल सब नूं दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। धरनी कहे प्रभ कौण फड़े खड़ग तीर कमान, खण्डा कवण खड़काईआ। किस नूं होवे मेरी आण, आनन फ़ानन तेरा रूप दए दरसाईआ। योद्धा सूरबीर बणे बलवान, बलधारी ल्ए अंगड़ाईआ। झगड़ा मेटे कूड़ निशान, निशाना धर्म दए झुलाईआ। सति सच दा करे ऐलान, संदेशा देवे धुरदरगाहीआ। हुक्म सुणावे अगम्म फ़रमान, फ़ुरन्यां बाहर दृढ़ाईआ। इक्को पूजा दस्से तेरी श्री भगवान, दूसर सीस ना कोए निवाईआ। इक्को सांझा करे विधान, पिछला लेखा दए मुकाईआ। आत्म दा आत्म होए ज्ञान, ब्रह्म दा ब्रह्म जोड़ जुड़ाईआ। शरअ दी शरअ मेटे निशान, शरअ दी शरअ इक समझाईआ। साचा मन्दिर दस्से मकान, दवार इक्को इक सुहाईआ। जिथ्थे तेरा नूर जोत महान, प्रकाश बेपरवाहीआ। मेरी भूमिका पवित्र होवे अस्थान, अस्थिल तेरा गृह नज़री आईआ। मेरे साहिब स्वामी मेरी बेनन्ती कर परवान, परम पुरख तेरे हथ्थ वड्याईआ। मैं बाली बुध अंञाण, मात चले ना कोए चतुराईआ। तूं मालक मेरा सवाधान, स्वच्छ हो के देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, तुध बिन मेरी करे ना कोए पहचान, बेपहचान तेरी आस रखाईआ।

✪ १३ माघ शहिनशाही सम्मत ६ गुरदेव सिँघ दे गृह पिण्ड दुसांझ खुरद ज़िला जलन्धर ✪

धरनी कहे पुरख अकाल धुर दे बली, बलधारी सीस निवाईआ। वेखीं मैनूं अन्त ना छलीं, अछल छलधारी आपणी खेल खिलाईआ। मैं आपणा सीस रखया तेरी तली, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। मैं फिरां तेरे दवारे तेरी गली, दरोही दरोही आवाज़ सुणाईआ। मेरी आसा मनसा इक इकल्ली, अकल कलधारी तेरा राह तकाईआ। दर ठांडे दवार तेरे खड़ी, गल पल्लू वास्ता पाईआ। लेखा पूरा कर दे जो आसा रखी हज़रत अली, मुहम्मद पैग़म्बर नाल सालाहीआ। सदी चौधवीं वेख फली, पति टहिणी ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार

११२२
२२

तेरी वड्याईआ। धरनी कहे मैं आपणा आप वारां, वारता पिछली दयां दुहराईआ। मैं खेल तक्कया तेई अवतारां, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। पैग़म्बरां वेख्या कनारा, लोकमात ध्यान लगाईआ। गुरुआं वेख्या दवारा, दोहरा पड़दा आप चुकाईआ। हुण चार कुण्ट होया अंध्यारा, अंध अज्ञान दे गंवाईआ। सच दा दिसे ना कोए दरबारा, अदल इन्साफ़ ना कोए रखाईआ। सृष्टी दृष्टी रोवे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तेरा रूप दिसे ना ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर ना कोए रुशनाईआ। मैनूं ऐं दिसदा मेरा झगड़ा मेरे उत्ते होणा पहलों काहरा, कायनात रंग रंगाईआ। जिस दा छिआनवे योजन होणा दाइरा, दाइम मुकाम हुक्म सुणाईआ। सदी चौधवीं दा खेल अन्तिम शाइरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि साहिब बेपरवाहीआ। धरनी कहे मेरा इक्को इक नाअरा, नर नरायण दयां सुणाईआ। मुहम्मद लेखा टुट्टणा चार यारा, याराना तोड़ ना कोए निभाईआ। नौ सत्त दिसे ना कोए सहारा, सहायक नज़र कोए ना आईआ। चारों कुण्ट अंध अंध्यारा, नूर चन्द ना कोए रुशनाईआ। मेरा तेरे अग्गे हाढ़ा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। होणा सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, टिल्ले पर्बत ध्यान लगाईआ। मेरे उत्ते कलयुग कलकाती लाउणा अखाड़ा, खण्डा खड़ग नाल खड़काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, नर नरायण सहिज सुखदाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा वेख लै अन्तष्करन, हरि करते दयां दृढ़ाईआ। इक्को तेरी रखां सरन, सरन इक सरनाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद लग्गे लड़न, आपणी लैण अंगड़ाईआ। कलयुग वहिण लग्गे हढ़न, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। कलयुग जीव तेरी मंज़ल मूल ना चढ़न, पाँधी पन्ध ना कोए मुकाईआ। मेरे उत्ते लेखा होणा सीस धड़न, धड़ सीस देण दुहाईआ। तूं दीनां मज़्ह़बां उखेड़नी जड़न, चोटी चढ़ के आपणा हुक्म वरताईआ। लेखा रहे ना वरन बरन, ज़ात पात दा पन्ध मुकाईआ। पुरख अकाला करनी करन, हरि करता धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी तरनी तरन, तारनहार तेरी ओट तकाईआ।

✪ १४ माघ शहिनशाही सम्मत ६ दर्शन सिँघ दे गृह पिण्ड दुसांझ ज़िला जलन्धर ✪

धरनी कहे प्रभ मेरे सीने लग्गी आतश, अग्नी अग्ग रही जलाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा कूड़ी क्रिया दिसे साज़िश, सज्जण तेरा प्रेम ना कोए वखाईआ। माया मोह वेखी नालिश, नर नरायण तेरा रंग ना कोए रंगाईआ। चार वरन बणया

रूप ना ख़ालस, ख़ालस ख़ालसा दिस कोए ना आईआ। मेरे साहिब क्यों कीती आलस, सवाधान हो के लै अंगड़ाईआ। कूड़ी क्रिया मेट जहालत, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। मेरे उत्ते सच दर सच दी कर अदालत, इन्साफ़ आपणा इक समझाईआ। शरअ दी रहे ना कोए बग़ावत, बग़लगीर कर लोकाईआ। धर्म दी बख़्श इक न्यामत, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेरे उत्ते तेरे कहर दी आवे ना कोए क्यामत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा लेखा वेख वखाईआ। धरनी कहे मैं की दस्सां, साहिब साहिब सुणाईआ। मेरीआं रोंदीआं बिना अक्खां तों अक्खां, अक्खरां वाली दिसे ना कोए पढ़ाईआ। वास्ता तेरे अग्गे घत्तां, दरोही तेरा नाम दुहाईआ। उफ़ हाए सृष्टी दीआं मारीआं गईआं मतां, मनमति नाल रलाईआ। लग्गी अग्ग पंजां तत्तां, सांतक सति ना कोए कराईआ। मानस भुक्खे हो गए मानस रत्तां, रत्न अमोलक तेरा नाम हथ्थ किसे ना आईआ। भेखाधारी सीस वधावण जटां, जटा जूट कूड़ कुकर्म विच लिव लाईआ। दीन मज़ब दीआं ख़ाली वेख हट्टां, नाम भण्डारा वस्त ना कोए टिकाईआ। जिधर वेखां काम क्रोध दीआं पैंदीआं सट्टां, सिर सके ना कोए उठाईआ। मैं खुल्ह्ड़े केस आपणे पिटां, पटने वाले दयां जणाईआ। सूरबीर जे तूं रूप धरया सति सतिवादी

११२३ जट्टां, जागरत जोत तेरी रुशनाईआ। होर किस दवारे नट्टां, भज्जां वाहो दाहीआ। मेरे उतों झगड़ा मेट दे मन्दिर मसीत ११२३

२२ शिवदुआले मट्टां, गुरदवार झगड़ा रहे ना राईआ। लहिणा पूरा कर दे अट्ठ सट्ठां, तीर्थ तट देण दुहाईआ। राग सुणना २२

पए ना कोई कोलों भट्टां, ताल तलवाड़े ना कोए शनवाईआ। इक्को तेरा नाम साहिब सुल्तान रट्टां, रट्टे पिछले देणे चुकाईआ। धुर दा लाहा तेरे चरण कँवल खट्टां, खटका अगला देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि साहिब तेरी सरनाईआ। धरनी कहे मेरे उत्ते रिहा कोई ना धर्म, धुर धाम दे मालक दयां जणाईआ। मेरा दुखी होया चर्म, बिन नैणां नीर वहाईआ। मेरे विच सतिजुग दा बदल दे जरम, जन्म आपणे विच्चों दवाईआ। पिछला रहे कोए ना भरम, भाण्डा भरम देणा भनाईआ। इक्को तेरी सब नूं होवे सरन, दूजा इष्ट नज़र कोए ना आईआ। भगतां खुल्ह्ा होवे हरन फरन, निज नेत्र लोचन नैण तेरा दर्शन पाईआ। लेखा रहे ना वरन बरन, ज़ात पात ना वंड वंडाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा तूं मेरा मैं तेरा सारे ढोला पढ़न, आत्म परमात्म तेरा नाम ध्याईआ। तेरी मंज़ल सचखण्ड निवासी चढ़न, अधविचकार ना कोए अटकाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक तरनी तरन, तारनहार इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, कलयुग अन्त सब दा पूरा कर दे प्रन, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपणे विच समाईआ।

✪ १४ माघ शहिनशाही सम्मत ६ संतोख सिँघ दे गृह पिण्ड सोढ्ढीआं ज़िला जलन्धर ✪

धरनी कहे दोवें जोड़ के हथ्थ, हरि करते सीस निवाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, बेपरवाह तेरी वड्याईआ। मैं चरण कँवल रही ढह्, सरनगति इक टिकाईआ। धर्म दा रिहा कोए ना हट्ट, कूड़ क्रिया होए हल्काईआ। धीरज दिसे कोए ना सति, सति सतिवाद ना कोए दरसाईआ। कलयुग जीवां उलटी हो गई मति, गुरमति गए भुलाईआ। नाड़ बहत्तर उबले रत्त, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। मनुआ रिहा किसे ना वस, दहि दिशा उठ उठ धाईआ। बूँद स्वांती मिले किसे ना रस, झिरना निझर ना कोए झिराईआ। अणयाला तीर मारे कोई ना कस, बजर कपाट ना कोए तुड़ाईआ। शब्द अनाद सुणे ना नद, अनहद नादी नाद ना कोए सुणाईआ। जोत जगे ना लट लट, अंध अज्ञान ना कोए मिटाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारे मारया फट्ट, घाउ डूँघा दिता लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक दया कमाईआ। धरनी कहे मेरा नेत्र वहाए नीर, बिन नैणां छहिबर लाईआ। मेरे शहिनशाह पीरां दे पीर, हज़रत धुरदरगाहीआ। मेरे चीथड़ पाटे वेख लीर, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। मेरी आसा होई दिलगीर, धीरज धीर ना कोए धराईआ। झगड़ा प्या शाह हकीर, शाह सुल्तान रहे कुरलाईआ। किसे दी पवित्र ना होए ज़मीर, सच
११२४ विच ना कोए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक मेहर ११२४
२२ नज़र उठाईआ। धरनी कहे मैं रो रो दस्सां हाल, प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। चारों कुण्ट मेरा ज़वाल, आबरू रहिण कोए ना पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वज्जे ताल, तलवाड़ा ममता मोह नाल मिलाईआ। धर्म दा रिहा ना कोए दलाल, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। सच दी दिसे ना कोए धर्मसाल, साढे तिन्न हथ्थ ना होए रुशनाईआ। जोती जल्वागर ना होए जलाल, नूरे चशम ना कोए रुशनाईआ। मेरी बेनन्ती इक सवाल, दर ठांडे सीस झुकाईआ। आ के वेख मुरीदां हाल, हरि मुर्शद बेपरवाहीआ। तेरी चार कुण्ट करदी भाल, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण भज्जां वाहो दाहीआ। तुध बिन करे ना कोए प्रितपाल, प्रितपालक आपणा फेरा लैणा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। धरनी कहे मैं रो रो मारां नाअरा, होका हक सुणाईआ। तूं मेरा परवरदिगारा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जल्वागर नूर इलाहीआ। पल्लू छुडा गए पैग़म्बर गुर अवतारा, सगला संग ना कोए निभाईआ। सदी चौधवीं दा तक किनारा, चौदां तबक नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मुहम्मद कूक करे पुकारा, तोबा तेरा नाम दुहाईआ। लेखा तकणा चार यारा, सगला संग ना कोए रखाईआ। धरनी कहे मेरे उत्ते लग्गणा इक अखाड़ा, खड़ग खड़ग नाल खड़काईआ।

नव सत्त होणा धुंदूकारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मांगत हो के मंग मंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे वेख खुल्हड़े केस, मेंढी सीस ना कोए गुंदाईआ। तूं मालक आदि जुगादि हमेश, हम साजण नज़री आईआ। जिस जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कीता भेस, भेखा धारी रूप बदलाईआ। हुण लहिणा देणा लेखा पूरा करदे गोबिन्द दस दशमेश, दहि दिशा अक्ख उठाईआ। हलूणा दे दे विष्नूं सुत्ता रहे ना बाशक सेज, सहँसर मुख सिफ्त ना कोए वड्याईआ। ब्रह्मा तेरा झल ना सके तेज, जोती जाते पुरख बिधाते कर रुशनाईआ। शंकर छड कैलाश नूं लए वेख, बिन नैणा नैण उठाईआ। मैं मंगती दर तेरे दर दरवेश, भिखारी हो के सीस निवाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया नाल मेरा भरया पेट, लेखा अवर ना कोए जणाईआ। मैं सब कुछ करदी तेरे भेंट, दर तेरे दयां टिकाईआ। तूं आदि जुगादी खेवट खेट, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर धुर दा मालक दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार तेरे चरण कँवल आदेस, देस देसांतरां दे मालक मेहरवान मेहरवान मेहरवान होणा आप सहाईआ।

✪ १५ माघ शहिनशाही सम्मत ६ लक्ष्मण सिँघ दे गृह पिण्ड धनौरी ज़िला रोपड़ ✪

धरनी कहे प्रभ मेरा सुहञ्जणा होवे मौका, मुकम्मल दयां दृढ़ाईआ। तेरे नाम दा इक्को होवे होका, हुक्म साहिब सुल्तान सच देणा सुणाईआ। सिफ्त सलाही इक्को होवे सलोका, इक्को कलमा नाम पढ़ाईआ। इक्को अक्खरां वाला होवे पोथा, इक्को शब्द करे अगंवाईआ। इक्को प्रकाश होवे निर्मल जोता, इक्को नूर देणा चमकाईआ। मानव रहे कोए ना सोता, सोयां सुरत देणी खुल्हाईआ। कूड़ी क्रिया विच मारे कोई ना गोता, फड़ बाहों लैणा तराईआ। दुरमति पाप कलेवर सब दा जाए धोता, पतित पुनीत देणे कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी सरनाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं नेत्र रोवां छम्म छम्म, छहिबर तेरा प्रेम लगाईआ। मेरा सुखाला कर दे दम, दामनगीर आप हो जाईआ। झगड़ा मेट दे जगत दृष्टी चम्म, चम्म दृष्टी दे बदलाईआ। हरख़ सोग रहे ना ग़म, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। मेरा बेड़ा देणा बन्न्हु, बन्न्हुणहार तेरी वड्याईआ। मेहरवान मेरी बेनन्ती लैणी मन्न, मनसा मन दी पूर कराईआ। सति सच दी वस्तू देणी धन, नाम भण्डारा इक वरताईआ। जीव बणाउणे आपणे जन, बणना जणेंदी आप माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे झोली डाहीआ। धरनी कहे प्रभू मेरा

पूरा करना काम, काम क्रोध लोभ मोह हँकार देणा गंवाईआ। इक्को तेरा उपजे नाम, नाउँ निरँकारा देणा दृढ़ाईआ। अमृत रस दा देणा जाम, हकीकी इक प्याईआ। शरअ दा रहे ना कोए ग़ुलाम, ज़ंजीर बेनज़ीर देणे तुड़ाईआ। तूं मालक इक अवाम, मेहरवान इक अख्वाईआ। मेरी बेनन्ती करीं परवान, परम पुरख तेरी सरनाईआ। मेरे उतों झगड़ा मेटणा तमाम, दीन मज़्ह़ब ना कोए लड़ाईआ। कूड़ी क्रिया मेटणी शाम, शमा नूर देणा चमकाईआ। मैं सुणना चाहुंदी तेरा इक पैग़ाम, पैग़म्बरां तों बाहर देणा सुणाईआ। मेरा सजदयां तों बाहर सलाम, निउँ निउँ लागां पाईआ। मेरे उत्ते तेरे शब्द गुरु दा होवे इक्को इंतज़ाम, बन्दोबस्त इक्को हथ्थ फड़ाईआ। चार कुण्ट करे ना कोए हराम, धर्म दी धार देणी प्रगटाईआ। मेरा नगर खेड़ा वसाउणा ग्राम, गृह इक्को वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा अन्तर प्यार दा होवे रंग, रंग अगम्म देणा चढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया करे ना जंग, जंग जू आपणा भय देणा रखाईआ। मेरी आसा मनसा इहो मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। तेरे नाम दा दो जहानां वज्जे मृदंग, नाद अनादी देणा सुणाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल आवीं लँघ, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। मेरे उत्ते आपणी सेज सुहाउणी पलँघ, सम्बल बहि के खुशी मनाईआ। दूई द्वैत दीन दुनी दी ढाउणी कंध, दुतीआ भाउ देणा मुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सब दा होवे छन्द, दूसर ओट ना कदे तकाईआ। मेरे सीने तेरे प्यार दी होवे ठंड, अग्नी तत देणा बुझाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी मेरा भाग होण ना देवीं मंद, मंदभागण होणा आप सहाईआ। तेरा इक दुलारा एकँकारा नूर नुराना श्री भगवाना शब्दी तकां चन्द, चन्द चादना इक रुशनाईआ। मेरा खुशी कर दे बन्द बन्द, बन्दगी विच दर तेरे सीस निवाईआ। सति धर्म विच्चों सच देणा अनन्द, अनन्द आपणा इक प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्णूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी निरगुण निरवैर मैनूं लगा लै आपणे अंग, अंगीकार आप हो जाईआ।

११२६
२२

✪ १६ माघ शहिनशाही सम्मत ६ जगीर सिंघ दे गृह पिण्ड रंगीलपुर ज़िला रोपड़ ✪

धरनी कहे प्रभ लख चुरासी सुत्ती मेरे उत्ते छाती, छत्रधारी बैठे आसण लाईआ। सच वस्त नाम भण्डारा दिसे कोल किसे ना दाती, दाते दानी दया देणी कमाईआ। सदी चौधवीं मेट अंधेरी राती, रुतड़ी आपणे नाल लैणी महकाईआ। इक्को अमृत बूँद बख्श स्वांती, अग्नी तत देणा बुझाईआ। सब दी सांझी इक्को करदे ज़ाती, दीन मज़्ह़ब दा झगड़ा रहे ना राईआ।

इक्को नाम कलमा इक्को पट्टी पढ़ा जमाती, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। आत्म परमात्म बण अगम्मा साथी, सगला संग निभाईआ। मेरी निमस्कार दोवें जोड़ के हाथी, ख़ादम हो के सीस निवाईआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाला सर्ब कला समराथी, भरपूर इक अख्वाईआ। कलयुग अन्तिम मेरी मन्न आखी, आख़र दयां सुणाईआ। गुस्सा गिला रहे ना कोए गुस्ताख़ी, ग़मी दा डेरा देणा ढाहीआ। तेरे नाम दी होवे सच प्रभाती, प्रभू जिस विच सारे तेरा नाम ध्याईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं लेखा रहे ना बाकी, बाकायदा सब दा देणा मुकाईआ। मनुआ रहे कोए ना आकी, हउमे गढ़ देणा तुड़ाईआ। नाम प्याला देणा बण के साकी, जाम धुर दा हथ्थ उठाईआ। आपणे मिलण दी खोल्हीं ताकी, पड़दा अन्दरों देणा चुकाईआ। कूड़ी क्रिया करे ना कोए चलाकी, सति सच सब नूं देणा समझाईआ। लेखा मुका दे बन्दा ख़ाकी, ख़ालस आपणा जोड़ जुड़ाईआ। मेरी बेनन्ती धर्म धार दी साची, साचे सज्जण दयां सुणाईआ। लूं लूं अन्दर राचीं, रचना आपणी देणी प्रगटाईआ। मेरे तन लग्गे मूल ना आंची, अग्नी तत ना मूल जलाईआ। मेरी (नौ सौ चौरानवे) चौकड़ी जुग दी पूरी करनी आसी, आहिस्ता आहिस्ता मंग मंगाईआ। तूं करता पुरख अबिनाशी, पारब्रह्म तेरी बेपरवाहीआ। मेरे उत्ते सति दी पा रासी, निरगुण निरगुण गोपी काहन काहन गोपी आप नचाईआ। तेरे हुक्म दा हुक्म होवे इनकलाबी, बदली करदे ख़लक खुदाईआ। महिबूब नज़र आवे महिराबी, दर इक्को इक सुहाईआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान कर शताबी, शरअ दा लेखा देणा मुकाईआ। मैं जिधर तकां मेरे उत्ते सब मानव नूं होवे आज़ादी, बन्धन मज़्हब ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरे उतों कूड़ क्रिया दी कर बर्बादी, नेस्तोनाबूद करके जड़ देणी उखड़ाईआ।

✪ १६ माघ शहिनशाही सम्मत ६ प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड राजो माजरा ज़िला रोपड़ ✪

धरनी कहे प्रभ तेरी चरण मस्तक लावां धूढ़ा, धर्म दा टिक्का ख़ाक रमाईआ। मेरे उतों कलयुग कूड़ी क्रिया हूंझ दे कूड़ा, कुकर्म दा लेखा रहे ना राईआ। चतुर सुघड़ बणा दे मूर्ख मूढ़ा, नाम निधाना इक समझाईआ। मानव ज़ाती रंग चाढ़ दे गूढ़ा, निरगुण निरवैर तेरा रंग उतर कदे ना जाईआ। तूं दाता योधा बहादर सूरा, साहिब सुल्तान अख्वाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं भविक्खत करदे पूरा, पूरन ब्रह्म दे समझाईआ। इक्को तेरी जोत दा नज़र आए नूरा, अंध अंधेरा देणा मिटाईआ। जन भगतां नज़र आउणा हाज़र हज़ूरा, सच स्वामी हो के सोभा पाईआ। तोड़ना गढ़ हउमें हंगता ग़रूरा,

निवण सु अक्खर इक जणाईआ। मैं जुग चौकड़ी तेरे दर दी रही मज़दूरा, सेवक हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। धरनी कहे प्रभ मैं तेरी मस्तक लावां ख़ाक, धूढ़ चरण रमाईआ। सृष्टी दृष्टी करदे पाक, पतित पुनीत दे बणाईआ। सब दे अन्दरों खोल्ह दे ताक, पड़दा बजर कपाट तुड़ाईआ। शब्द अगम्मी सुणा दे नाद, अनादी धुन कर शनवाईआ। भेव खुल्हा दे ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड रंग रंगाईआ। तूं मालक ख़ालक आदि जुगादि, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर बर्बाद, मेरे उत्ते रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचा होवे आदि, धर्म दी जड़ देणी लगाईआ। तेरे शब्द गुरु दा होवे राज, रईयत आत्मा लए बणाईआ। नवीं मेरे उत्ते साजणा साज, पिछला लेखा दे मुकाईआ। नाम दस्स दे बोध अगाध, बुद्धी तों परे तेरी पढ़ाईआ। सब दा सांझा कर समाज, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। लेखे विच लेखा ला दे पूरा कर हिसाब, निस्बत आपणे नाल मिलाईआ। तूं दो जहानां श्री भगवाना शहिनशाह महाराज, तख्त निवासी इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि साहिब दर तेरे मंग मंगाईआ। धरनी कहे प्रभ मेरे उत्ते करनी मेहर, निगह मेहर उठाईआ। इक्को रंग रंगाउणे गुरु गुर चेर, चेला गुर भेव रहे ना राईआ। कूड़ी क्रिया करनी ख़ाक
११२८ ढेर, सति सच देणा प्रगटाईआ। झगड़ा मुकाउणा अण्डज जेर, उत्भुज सेत्ज आपणे रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं मुहम्मद ११२८
२२ लेखा देणा नबेड़, बाकी अवर ना कोए रखाईआ। हुक्मे अन्दर गेड़ना गेड़, लख चुरासी देणी भवाईआ। मेरा धर्म दा दवारा २२
दिसे खेड़, नगर नौ खण्ड देणा सुहाईआ। मेहरवान करीं ना डेर, महिबूब तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तेरा सतिगुर शब्द शब्द गुर सति आदि जुगादी एकँकारा शेर, भबक विच सबक आपणा देणा जणाईआ।

१६ माघ शहिनशाही सम्मत ६ हज़ूरा सिंघ दे गृह पिण्ड गुराया ज़िला जलन्धर

धरनी के प्रभ मेरे सीस रही ना चुन्नी, ओढण नज़र कोए ना आईआ। सच दा रिहा कोए ना ऋषी मुनी, मोन धारी बैठे मुख भवाईआ। आत्मा परमात्मा दा दिसे कोए ना गुणी, गुणवन्त ना कोए अख्वाईआ। तेरे नाम शब्द दी सुणे कोए ना धुनी, धुन आत्मक राग ना कोए शनवाईआ। मेरी पुकार दातार कलयुग अन्तिम सुणीं, अणसुणत ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेहरवान तेरी वड्याईआ। धरनी कहे प्रभ मेरे उत्ते रिहा

कोए ना पड़दा, पर्दानशी तेरी दुहाईआ। मालक दिसे कोए ना घर दा, बेघर होई लोकाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं कोलों कोई ना डरदा, भय सृष्टी दृष्टी विच्चों गई चुकाईआ। दीन मज़्ब बौहड़ी मेरे उत्ते लड़दा, तेरे नाम कलमे धरया रूप कसाईआ। किसे भेत ना आया चोटी जड़ दा, चेतन सुरत ना कोए वखाईआ। भय रिहा ना नरायण नर दा, नर हरि तेरी ओट ना कोए तकाईआ। उठ वेख खेल कलयुग कल दा, की कलकाती कार कमाईआ। जिस साथ बणाया पंज विकारे दल दा, आसा तृष्ना नाल मिलाईआ। गृह भुलाया तेरा निहचल धाम अटल दा, सचखण्ड साचा नज़र किसे ना आईआ। नज़ारा तक लै कपट छल द, अछल छलधारी आपणा फेरा पाईआ। ज़ोर रिहा नहीं किसे सूरबीर दे बल दा, बलधारी बैठे सीस निवाईआ। तेरा हुक्म संदेशा निहचल धाम कोए ना घलदा, नग़मा नाम ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। धरनी कहे प्रभ मेरे सीस तों लथ्था चीर, चिरी विछुन्ने दया देणी कमाईआ। मेरा नेत्र नैण वहावे नीर, अक्खां छहिबर लाईआ। मेरी बदल दे तकदीर, तदबीर आपणी नाल मिलाईआ। मेरे उतों शरअ दे कट ज़ंजीर, शरीअत दा लेखा देणा मुकाईआ। इक्को रंग रंगाउणा शाह हकीर, शहिनशाह मेहर नजर उठाईआ। तैनूं झुकदे पैग़म्बर पीर, अवतार गुर सीस निवाईआ। सदी चौधवीं मेरा बणना

११२६
२२

दस्तगीर, दस्त दस्त नाल मिलाईआ। मैं चाहुंदी सब दी बदल दे ज़मीर, ज़ाहर ज़हूर आपणा नूर कर रुशनाईआ। तूं मालक ख़ालक बेनज़ीर, जग नेत्र नज़र कोए ना आईआ। मेरी आसा अन्त होए दिलगीर, धीरज धीर ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते रिहा कोए ना ओढण, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। कलयुग जीव वेखे कोटी कोटन, अणगिणत ध्यान लगाईआ। साची मंज़ल चढ़े कोए ना चोटन, चोटी चढ़ तेरा दरस कोए ना पाईआ। दरोही एह आलृणिउं डिग्गे बोटन, सदी चौधवीं फेर ना कोए उठाईआ। उठ वेख फिरी दुहाई चौदां लोकन, चौदां तबक रहे कुरलाईआ। तेरा नाम गाए ना कोए सलोकन, सोहला हक ना कोए जणाईआ। सारी सृष्टी दृष्टी विच्चों हो गई मेरी दोख़न, दुखियां दुःख ना कोए मिटाईआ। धर्म दा रिहा कोए ना जोबन, बलहीण दयां सुणाईआ। तुध बिन मेरा कारज कोई ना आवे सोधण, जो सुदी वदी तों बाहर आपणा खेल खिलाईआ। मेरा मार्ग पन्ध लम्बा नहीं कोई जगत वाला योजन, जुगती आपणी देणी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, हउमे हंगता कूड़ी क्रिया कढ दे रोगण, चिन्ता सब दे अन्दरों दे मिटाईआ। धरनी कहे प्रभ मेरे उपर ना किसे सहारा, पुरख अकाले दीन दयाले धुर दे साहिब दयां जणाईआ। मैं दुहाई

कीती अग्गे पैग़म्बर गुर अवतारा, कूक कूक सुणाईआ। संदेशा दिता कलयुग वेखो अन्त कनारा, नईया डोले थांउँ थाँईंआ। लहिणा देदा मुकणा मुहम्मद चार यारा, सदी चौधवीं संग मिलाईआ। चारों कुण्ट वेख अंध अंध्यारा, धुर दा चन्द ना कोए चमकाईआ। मेरी इक्को कूक पुकार दो जहानां सुणना नाअरा, नर नरायण दयां जणाईआ। तुध बिन दूसर अवर ना कोए कलि कल्की अवतारा, अवतरी आपणा हुक्म देणा सुणाईआ। मैं निउँ निउँ सजदयां विच करां निमस्कारा, डण्डावत बन्दना करके धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शाह पातशाह शहिनशाह सच्ची सरकारा, धुर दे मालक तेरी इक्को ओट तकाईआ।

१११३० २२

✪ १७ माघ शहिनशाही सम्मत ६ गुरदेव सिँघ दे गृह नवां पिण्ड ज़िला जलन्धर ✪

धरनी कहे प्रभ किरपा कर मेरे कमलापती, पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझे यार दया कमाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा वाअ वगे तत्ती, पुरख अकाले दीन दयाले अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। नाम निधाना तेरी धार दिसे ना रती, रत्न अमोलक काया गोलक विच टिकाईआ। सच धर्म मुहब्बत विच आत्मा होवे कोई ना सती, सति सरूप शाहो भूप बिन रंग रूप तेरे विच ना कोए समाईआ। जिधर तकां कूड़ कुकर्म दी दिसे हट्टी, कलयुग वणजारा सोभा पाईआ। मैं चारों कुण्ट भज्जी नट्ठी, दिवस रैण वाहो दाहीआ। सन्त महात्मा दिसया मूल ना भट्टी, सूफ़ी फ़कीर फ़िकरा हक ना कोए सुणाईआ। सब दी डोर प्रेम वाली तेरे नालों कटी, कटाक्ष हक ना कोए लगाईआ। धर्म दा रिहा कोए ना जती, यथार्थ तेरा प्यार ना कोए वखाईआ। अमृत रस रिहा कोए ना छकी, विख कूड़ भरी लोकाईआ। बौहड़ी मैं सब कुछ वेखां अक्खीं, नौ खण्ड पृथमी बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे प्रभ वेख लै आपणी धरत धवल धौल, धर्म दवारा नज़र कोए ना आईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर गई डोल, सति सन्तोख ना कोए जणाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म जाए कोई ना मौल, जोती जाते पुरख बिधाते तेरा नूर नज़र किसे ना आईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक मुहम्मद दा पूरा कर दे कौल, वाहिदा पिछला तोड़ निभाईआ। गोबिन्द दा लेखा तक लै जो चार वरनां दिती पाहुल, अमृत बिन रसना रस जणाईआ। राम दा लहिणा वेख लै जो दस्सया ब्राह्मण रौल, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। सदी बीसवीं तोलणा पूरा तोल, हज़रत ईसा बैठा नैण उठाईआ। आदि अन्त जुगा जुगन्त जुग चौकड़ी दा लेखा तेरे कोल, कुल मालक तेरे अग्गे वास्ता पाईआ। मैं आपणा आप देवां घोल, घोली घोल घोल घुमाईआ।

तेरा नाम शब्द इक्को होवे बोल, अनबोलत आपणा राग देणा दृढ़ाईआ। सतिजुग सच दवारा एकँकारा इक इकल्ला मेरे उत्ते खोल्ह, ख़ालक खलक मखलूक देणा समझाईआ। मैं निमाणी मिट्टी ख़ाक जिस नूं सारे कहिंदे धौल, धर्म दया दा पूत मेरी गोदी देणा टिकाईआ। तेरा इक्को होवे असूल, असल दे मालक वसल आपणा देणा जणाईआ। तेरा हुक्म सुणना धुर दा अगम्म माकूल, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। दीन मज़्हब दा झगड़ा रहे ना कातिल मक्तूल, कत्लगाह दा डेरा देणा ढाहीआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर तेरा नाम प्यार पंघूड़ा लईए झूल, हुलारा दो जहान श्री भगवान नौजवान देणा लगाईआ। औह वेख मेरे उत्ते शंकर सुट्टी बैठा त्रशूल, विष्नूं नेत्र अक्ख ना कोए उठाईआ। ब्रह्मा तेरे चरण दी लावे धूल, बिन मस्तक ख़ाक ख़ाक रमाईआ। तूं मालक इक कन्त कन्तूहल, करतार तेरी वड्याईआ। जो तेरे हो के तैनूं गए भूल, भुल्लयां मार्ग दे समझाईआ। सच मुहब्बत विच कर मशगूल, मुश्किल जन्म कर्म दी दे गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, दीन दुनी दा लेखा रहे ना अर्ज़ तूल, चार कुण्ट दहि दिशा इक्को रूप देणा दरसाईआ।

✪ १७ माघ शहिनशाही सम्मत ६ प्यारा सिँघ दे गृह माडल टाऊन जलन्धर ✪

धरनी कहे प्रभ कलयुग जीवां खोल्ह दे जाग, जागरत जोत बिन वरन गोत कर रुशनाईआ। हँस बुद्धी बणा दे काग, कागों हँस रूप दे वखाईआ। हर हिरदे अन्तर निरन्तर उपजे तेरा वेराग, वैरी अन्दरों बाहर देणे कढ्ढाईआ। मन कल्पणा सृष्टी दृष्टी अन्दर दे त्याग, त्रैगुण अतीते आपणी दया कमाईआ । निझर झिरना अमृत रस दे स्वाद, बूँद स्वांती अगम्म टपकाईआ। धुन आत्मक सुणा अगम्मी नाद, बिन रसना जेहवा ढोला गाईआ। निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, गृह मन्दिर होवे रुशनाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म निरगुण निरगुण बण साथ, सरगुण मेला मेल सहिज सुभाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक पुरख समराथ, अलख अगोचर अगम्म अथाह तेरी वड वड्याईआ। मैं निमाणी जोड़ां दोवें हाथ, मुहब्बत मुहब्बत नाल मिलाईआ। कलयुग विच सतिजुग सच धर्म चला दे राथ, रथवाही आपणा हुक्म वरताईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं पूरा कर दे भविक्ख्त वाक, वाकिफ़कार होणा खलक खुदाईआ। चार वरन अठारां बरन धर्म दी धार कर इत्फ़िाक, दीन मज़्हब आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी दर तेरे झोली डाहीआ। धरनी कहे प्रभ मेरी झोली देणी भर, नाम भण्डारा अतुट वरताईआ। दर्शन करां

नरायण नर, नर हरि इक्को नज़री आईआ। मेरा खोल्णा बन्द कवाड़ी दर, बजर कपाटी पड़दा देणा उठाईआ। नहाउणा अगम्मे सर, सर सरोवर इक्को देणा जणाईआ। जिस विच्चों लख चुरासी जावां तर, आवण जावण गेड़ा रहे ना राईआ। तेरी धार जावां रल, जोती जोत जोत समाईआ। सचखण्ड वसां महल्ल अटल, दरगाह साची सोभा पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट दे कल, कल काती रहिण कोए ना पाईआ। पंज विकारा देणा दल, शब्दी धार इक प्रगटाईआ। सृष्टी दृष्टी विच्चों कढ दे कपट छल, हँकार विकार लेखा देणा मुकाईआ। मैं तेरे चरण सरन जावां बलि बलि, बलकारी आपणा आप तेरी भेंट चढ़ाईआ। तूं मालक जल थल, महीअल तेरा रूप नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सज्जण सहिज सुखदाईआ। धरनी कहे प्रभ दे दे सच भण्डारा, सति सतिवादी दया कमाईआ। तेरी वस्त मिले सति थारा, थिर घर वासी इक्को तेरा रूप नज़री आईआ। भगत सुहेला बण मीत मुरारा, भगवन आपणा रंग रंगाईआ। भाग लगा दे काया माटी साढे तिन्न हथ्थ मुनारा, घर विच घर मेला मेल सहिज सुभाईआ। तेरा जोती जोत होवे चमत्कारा, नूर नुराना नज़री आईआ। जिथ्थे नजर ना आए सूर्या चन्द सितारा, मण्डल मण्डप ना डेरा लाईआ।
११३२ मेरी अर्ज़ बेनन्ती एका एक एकँकारा, अकल कलधारी दयां जणाईआ। सदी चौधवीं चार कुण्ट वेख अंध अंध्यारा, चौदां ११३२
तबक रहे कुरलाईआ। मुहम्मद अन्त अख़ीर मारे आपणा नाअरा, हकीकत हक रिहा सुणाईआ। मूसा रोवे ज़ारो ज़ारा, ईसा
२२ नेत्र नैणां नीर वहाईआ। दस गुर करे पुकारा, जोती शब्द धार दुहाईआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी निराकार निरँकार २२
हो ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर आपणा वेस वटाईआ। कूड़ी क्रिया चारों कुण्ट कर पार किनारा, दीन दुनी विच रहिण कोए ना पाईआ। तेरा राह तकदे सारे कलि कल्की अवतारा, निहकलंक तेरी ओट तकाईआ। धरनी कहे मैं तेरी चरण धूढ़ मस्तक लावां छारा, मिट्टी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। तूं अमाम अमामा मेहरवान बण सिक्दारा, महिबूब तेरा राह तकाईआ। मेरी नमो नमो डण्डावत बन्दना निमस्कारा, सजदयां विच कदमबोसी कर के आपणी खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। धरनी कहे प्रभ ओह वेख तेरे आउंदे भगत, भगवन तैनूं दयां दृढ़ाईआ। तूं बैठा उत्ते अर्श, अर्शी प्रीतम बेपरवाहीआ। निगह मार उत्ते फ़र्श, ज़िमीं ज़मां खोज खुजाईआ। ग़रीब निमाणयां उत्ते कर तरस, रहमत आपणी हक कमाईआ। अमृत मेघ अगम्मा बरस, बूँद स्वांती मुख चुआईआ। निज नेत्र ज्ञान नेत्र दिव्य नेत्र दे दरस, दोए लोचन लोड़ रहे ना राईआ। तूं योद्धा सूरबीर मर्दाना मर्द, बेपरवाह तेरी वड्याईआ। मेरी मंज़ूर कर अर्ज़, बेनन्ती तेरे अग्गे रखाईआ। शरअ छुरी मेट दे करद, कत्लगाह दा लेखा दे मुकाईआ। प्रेमी प्यारयां

सूफ़ीआं सन्तां वंड दर्द, दर्दी हो के दया कमाईआ। तेरा खेल तकां असचरज, अचरज लीला देणी जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा आप सहाईआ। धरनी कहे मेरे उत्ते रोवण तेरे सन्त, सज्जण तेरा ध्यान लगाईआ। राह तक्कण धुर दे मंत, मन्त्र तेरी ओट रखाईआ। गढ़ तोड़ के हउमें हंगत, हँ ब्रह्म दे समझाईआ। तूं बोध अगाधा पंडत, चार जुग दे शास्त्र तेरी सिफ्त सालाहीआ। तूं कल धारी अनन्त, अनन्त कलधारी तेरी समझ किसे ना आईआ। ओह वेख कलयुग आपणा जीव जंत, चार कुण्ट सर्ब कुरलाईआ। आत्म परमात्म बणे किसे ना बणत, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक होणा आप सहाईआ। धरनी कहे प्रभ तेरा राह तकदे गुरमुख, मुक्खों तेरा नाम ध्याईआ। आपणे विछोड़े दा मेट दे दुःख, सन्मुख हो के नज़री आईआ। लेखा मुका दे जनणी कुख्ख, फेर जन्म दी लोड़ रहे ना राईआ। कूड़ी क्रिया अन्दरों जड़ दे पुट्ट, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहिण ना पाईआ। तेरा प्यार अन्तिम ना जाए टुट्ट, टुटयां लैणा जुड़ाईआ। जेहड़ी लिव गई छुट्ट, सो सुरत शब्द मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। किरपा करनी अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म तेरी ओट तकाईआ। उन्हां उज्जल करना मुख, जेहड़े तेरा बैठे राह तकाईआ। भेव रहे ना ओहला लुक, अन्तर निरन्तर मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। तूं आत्म परमात्म परमात्म आत्म दस्सणी तुक, शब्द अनाद अनादी धुन कर शनवाईआ। लेखे ला दे मानस देही मनुक्ख, मानव आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। धरनी कहे मेरे निरँकार, निरवैर दयां सुणाईआ। आत्म ब्रह्म बख्श प्यार, प्रीतम हो के वेख वखाईआ। तूं शाह पातशाह शहिनशाह सच्ची सरकार, अवतार पैग़म्बर गुर विष्न ब्रह्मा देवत सुर सब तैनूं सीस निवाईआ। सजदे करदे वारो वार, खादम हो के धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। ख़ाली झोलीआं रहे वखाल, मांगत हो के मंगण थाउँ थाँईंआ। तूं साहिब सुल्ताना पुरख अकाल, परम पुरख बेपरवाहीआ। सब दे उत्ते हो दयाल, दीन दयाल आपणी दया कमाईआ। लेखे ला लै शाह कंगाल, ग़रीब निमाणयां पड़दा देणा चुकाईआ। जेहड़े गुरमुख तेरे प्यार विच होए बेहाल, बिहबल हो के रोवण मारन धाईआ। उन्हां दे अन्तर निरन्तर चलणा नाल नाल, काया मन्दिर अन्दर मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। तूं पुरख बिधाता साढे तिन्न हथ्थ तेरी धर्मसाल, दवारा इक्को देणा सुहाईआ। धरनी कहे मैं मंगां मंग विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी संग ना कोए रखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया प्रभू दे निवार, निरवैर हो के आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित शाह पातशाह शहिनशाह सच्ची सरकार, साहिब सुल्तान नौजवान मर्द मर्दान श्री भगवान तेरी आस रखाईआ।

✪ १७ माघ शहिनशाही सम्मत ६ नगीना सिँघ दे गृह माडल हाउस जलन्धर ✪

धरनी कहे प्रभ मैनूं बख्श दे दात, दाते दानी दया कमाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अंधेरी रात, निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। आत्म परमात्म अगम्मी दस्स दे गाथ, गहर गम्भीर बेनज़ीर पड़दा देणा उठाईआ। मेरी बेनन्ती दोए जोड़ के हाथ, हस्त दस्त नाल मिलाईआ। तूं सर्ब कला समराथ, समरथ इक अख्वाईआ। तेरी सिफ्त सालाह अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। निरगुण धार खेल कर प्रगट, परगणे दीन मज़्ब वेख चाँईं चाँईंआ। नौ खण्ड पृथमी उबले रत्त, सत्त दीप रहे कुरलाईआ। कलयुग झगड़ा पाया मन मति, गुरमति सारे गए भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी सरनाईआ। धरनी कहे प्रभ मेरी सुहञ्जणी कर दे रुत, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। तूं अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म नूर अलाहीआ। कलयुग जीव बणा लै आपणे सुत, दुलारे रंग रंगाईआ। भाग लगा दे काया बुत, बुतख़ान्यां कर रुशनाईआ। पंज विकारा कढ कुट्ट, हउमे रोग दे गंवाईआ। जेहड़ी लिव तेरे नालों गई छुट, छुट्टी लिव तेरे नाल जुड़ाईआ। दे नाम भण्डारा अतुट, अतोट दे वरताईआ। मेरा साहिब सतिगुर मेट दे दु:ख, दुखी हो के दयां सुणाईआ। सुफल कर दे कुख्ख, दर तेरे निउँ निउँ लागां पाईआ। मेरा उज्जल होवे मुख, दुरमति मैल रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे हथ्थ सब कुछ, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ।

✪ १७ माघ शहिनशाही सम्मत ६ गुरदयाल सिँघ दे गृह जलन्धर शहर ✪

धरनी कहे प्रभ मेरा घर बणा दे सुहञ्जणा, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। तूं दाता दानी दर्द दु:ख भय भञ्जणा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नूर अलाहीआ। सच प्रीती धूढ़ी इश्नान करा दे मजना, दुरमति मैल देणी धुआईआ। आदि जुगादी बणना साचा सज्जणा, साजण मीत तेरी ओट रखाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा मेरे उतों कढणा, शब्दी हुक्म कर शनवाईआ। सतिजुग साचा चाहीए लग्गणा, लग मात्रा दा लेखा देणा मुकाईआ। तेरा नाम दमामा इक्को इक वज्जणा, दो जहानां डंक

सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा लेख देणा बणाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा गृह बणा दे चंगा, चरण कँवल तेरी सरनाईआ। तेरे शब्द दा वज्जे अगम्म मृदंगा, जगत ताल तलवाड़ा नज़र कोए ना आईआ। आत्म ब्रह्म बख्श सब नूं अनन्दा, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। सदी चौधवीं निशान मेट दे तारा चन्दा, चन्द नूर तेरा डगमगाईआ। बन्दगी तों ख़ाली रहे कोए ना बन्दा, बन्दना आपणी देणी समझाईआ। नेत्रहीण रहे कोए ना अन्धा, लोचन इक्को इक खुल्हाईआ। अमृत धार वहा दे गंगा, सिन्ध सागर रूप दरसाईआ। दर तेरे सवालण हो के मंगां, भिखारन हो के झोली डाहीआ। तूं साहिब सूरा सरबंगा, शहिनशाह इक अख्वाईआ। कलयुग वेख लै अन्तिम कन्ढा, कन्ढी बैठी रोवां मारां धाईआ। अगला सफ़र करीं ना लम्बा, तेरे हथ्थ वड्याईआ। लेखा वेख गोबिन्द संधा, जो माछूवाड़े दिता दृढ़ाईआ। शब्द दी शब्द धार होणी पाबन्दा, पाबन्दी दीन मज़्ब वाली चुकाईआ। मैं तेरा खेल तकणा चाहुंदी अचंभा, अजब निराले देणा वखाईआ। तेरी धार मेरे उत्ते खड़के खड़ग नाल ना खण्डा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे लेख बणा दे आपे, आपणी दया कमाईआ। तुध बिन दूजा कोई ना जापे, नेत्र नैण ना कोए रुशनाईआ। तेरे हुक्म संदेशे साचे, अवतार पैग़म्बर गुरु गए दृढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट दे पापे, पतित पुनीत सारे दे वखाईआ। चिन्ता रोग रहे ना संतापे, ममता मोह देणा मिटाईआ। मेरा हिरदा थर थर कांपे, बौहड़ी तेरा नाम दुहाईआ। सब नूं भुल्लया तेरा जापे, जग जीवण दाते तैनूं हिरदे सके ना कोए वसाईआ। मैं सब दे तके पूजा पाठे, सिमरन जोग अभ्भासां विच ध्यान रखाईआ। रूह बुत होया किसे ना पाके, सति सरूप ना कोए समाईआ। सदी चौधवीं सब नूं आए घाटे, घाटा पूर ना कोए कराईआ। आत्म परमात्म तुटे नाते, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। तेरे उतों उडया सब विश्वाशे, विषयां भरी कूड़ लोकाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाशे, मेहरवान दर तेरे अलख जगाईआ। इक्को तेरा नूर होवे प्रकाशे, नौ खण्ड अंध अंधेरा देणा गंवाईआ। तेरा खेल होवे हकीकी हक महिराबे, महिबूब तेरी वज्जे वधाईआ। लहिणा देणा लेखा पूरा कर दे जो नानक दस्स के आया विच बग़दादे, बग़लगीर आपणा खेल देणा खिल्हाईआ। जो आवाज़ दिती सति दी धार सितार रबाबे, रबीउल सानी विच दृढ़ाईआ। जिथ्थे इश्क रहे ना हकीकी मजाज़े, दोहां दी मंज़ल देणी चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी तेरे अग्गे मंग मंगाईआ। धरनी कहे प्रभ मेरे अन्तर पा दे ठंड, अग्नी तत रहे ना राईआ। सब दी सुरती शब्दी शब्द नाल गंढ, सोया रहिण कोए ना पाईआ। अन्तर आत्म दे अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ।

गुरमुख सन्त सुहेले वेख आपणे चन्द, भगत भगवन्त जोड़ जुड़ाईआ। सब दा ख़ुशी कर दे बन्द बन्द, बन्दना आपणी इक समझाईआ। तूं दीन दयाल साहिब बख़्शंद, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नाम निधान श्री भगवान हर हिरदे अन्दर देणा वंड, बाहर मंगण दी लोड़ रहे ना राईआ। कूड़ी क्रिया कर दे खण्ड खण्ड, खण्डा खड़ग नाम खड़काईआ। मेरी आसा मनसा पूरी कर दे मंग, मांगत हो के सीस निवाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी तेरे सच दा वज्जे मृदंग, मर्द मर्दाने श्री भगवाने करनी इक शनवाईआ। जुग चौकड़ी नौ सौ चौरानवे पिच्छे गए लँघ, जुग जुग आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल तकां ब्रह्मण्ड खण्ड विच वरभण्ड, आपणी दया देणी कमाईआ।

✪ १८ माघ शहिनशाही सम्मत ६ प्यारा सिँघ दे गृह जलन्धर ✪

धरनी कहे प्रभ साचा रिहा कोई ना हाटा, वस्त तेरा नाम ना कोए वरताईआ। अमृत रिहा किसे ना बाटा, ख़ाली बरतण देण दुहाईआ। उठ वेख चारों कुण्ट अंधेरी राता, सच रिहा किसे ना थाँईंआ। मेरा कोझी कमली दा खुल्ला झाटा, मेंढी सीस ना कोए गुंदाईआ। मेरा चीथड़ पुराणा पाटा, ओढण नज़र कोए ना आईआ। तेरयां दीनां मज़्बां पाया मैनूं घाटा, घाटे विच मेरी दुहाईआ। मैं दुखी हो गई विच ज़ाता पाता, हिस्सयां वाली वंड वेख वखाईआ। मैं बचन दस्सां इक्को साचा, सच दयां सुणाईआ। तेरा जीउ पिण्ड पंज तत काया काचा, कंचन गढ़ दे वड्याईआ। आत्म परमात्म आपणा दस्स नाता, नातवां पूरब लेखा वेख वखाईआ। मेरे उत्ते बख़्श प्रेम दीआं सच सौगातां, वस्त अगम्मढ़ी आप वरताईआ। मैं थक्क गई सुण सुण के तेरीआं सिफ्तां वालीआं गाथां, जुग चौकड़ी अवतार पैग़म्बर गुरुआं दिती दुहाईआ। सहायक बणया ना कोए नाथ अनाथां, दीनां गले ना कोए लगाईआ। दीन दुनी दा मालक बणया ना कोए सूरबीर बांका, बलधारी नज़र कोए ना आईआ। तन वजूद दा सारे बदलदे रहे ख़ाका, जो मिटी ख़ाक विच समाईआ। तेरा जल्वा नूर नूर ना कदे प्रकाशा, दो जहान ना कोए रुशनाईआ। की होया जे गोपी काहनां पवाईआं रासां, राम सीता बनां विच भवाईआ। की होया जे पैग़म्बरां कलामां विच तैनूं जाता, सिफ्त संदेशा ढोला गाईआ। की होया जे गुरुआं मन्नया तेरा आखा, भाणे विच बहि के सीस निवाईआ। मैं चाहुंदी तूं प्रगट हो साख़िआता, स्वच्छ सरूप इक्को नज़री आईआ। मेरा अन्तर कर दे पवित्र पाका, पतित पुनीत दे बणाईआ। तूं सब दा जोती जाता, पतिपरमेश्वर तेरी वड्याईआ। स्वच्छ सुहञ्जणी सेज बणा दे खाटा,

खटीआ आपणा आप तेरे अग्गे टिकाईआ। बौहड़ी अग्गे होण ना लम्मीआं वाटां, लेखा तेरे हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। धरनी कहे प्रभ मेरा अन्तर होवे इक, एकँकार देणा कराईआ। मेरा लेखा देणा लिख, लेख लेख विच्चों बदलाईआ। मैं भिखारन मंगां भिक्ख, ख़ाली झोली देणी भराईआ। मैं चाहुंदी मेरे उत्ते सारी मानव ज़ाती तेरा रूप होवे सिख, सिख्या साहिब सुल्तान देणी दृढ़ाईआ। सृष्टी सारे जानण मिथ, मिथ्या दिसे सर्ब लोकाईआ। इक्को वार आपणी सुहञ्जणी कर दे थित, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। परमात्म हो के वस चित, मन चित ठगोरी रहे ना राईआ। कूड़ी क्रिया लवां जित्त, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मैं तेरा दर्शन चाहुंदी नित, नवित आपणा रंग रंगाईआ। वेखीं कदे बन्द ना करीं भित, भीतर दा पड़दा देणा चुकाईआ। चारों कुण्ट आवीं दिस, दहि दिशा तेरी रुशनाईआ। मेरी पूरी करनी इच्छ, मनसा तेरे विच छुपाईआ। मैं होर ना मंगां किछ, निउँ निउँ लागां पाईआ। तूं सब दा प्रीतम प्यारा एक एकँकारा होवें इक, इक इकल्ले तेरी वज्जे वधाईआ। कलयुग अन्तिम सब दा लहिणा देणा लै नजिठ, लेखा अवर रहे ना राईआ। वेखीं मैनूं देवीं ना पिठ्ठ, करवट आपणी ना मूल बदलाईआ। बौहड़ी मेरे उतों पूजा हटा दईं पथ्थर इट्ट, पाहन सीस ना कोए निवाईआ। सब दी सुरती तेरे उत्ते जाए टिक, टिक्का इक्को मस्तक नाम देणा लगाईआ। तूं सब दे वसीं विच, विचला भेव देणा खुल्ह़ाईआ। मैं चाहुंदी तेरा दर्शन होवे नित, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरे उत्ते दीन मज़्ह़ब दा होवे कोई ना हिस्स, हिस्सेदारी पिछली देणी चुकाईआ।

✪ १८ माघ शहिनशाही सम्मत ६ गुरनाम सिँघ दे गृह पिण्ड सूरा नस्सी ज़िला जलन्धर ✪

धरनी कहे प्रभ सब दा वायदा पूरा करीं कौल इकरार पक्का, मेहरवान दया कमाईआ। फिरे दरोही विच मदीना मक्का, काअब्यां पए दुहाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी देणा अन्तिम धक्का, धुर दा हुक्म नाल मिलाईआ। झगड़ा छिड़ना विच बूरा कक्का, मसीह बैठा वसीह ध्यान लगाईआ। जिस कारन गोबिन्द सथ्थर लथ्था, मेरे उत्ते सेज गया हंढाईआ। मैं उस दा लहिणा देणा लेखा वेखां नाल अक्खां, लोचन धर्म देणा खुल्ह़ाईआ। चारों कुण्ट उठ उठ नस्सां, भज्जां वाहो दाहीआ। सदी चौधवीं मूल ना थक्कां, थकावट विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी सरनाईआ। धरनी कहे मेरे साहिब स्वामी यक्क, वाहिद सीस निवाईआ। मेरा मैनूं दे दे हक, हकीकत दे मालक

दया कमाईआ। पिछला लेखा सब करदे फ़क, फ़िकरा अग्गे आपणा दे दृढ़ाईआ। तूं सर्ब कला समरथ, सो पुरख निरँजण तेरी वड वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण तेरे अग्गे जोड़ां हथ्थ, एकँकारा निउँ निउँ लागां पाईआ। आदि निरँजण तेरा नूर नुराना तकां सच, अबिनाशी करते देणी माण वड्याईआ। श्री भगवान तेरी सरन सरनाई रही ढह्व, पारब्रह्म तेरे निउँ निउँ लागां पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेरे विच्चों देणी कढ, काम क्रोध लोभ मोह हँकार तन वजूद रहिण ना पाईआ। इक्को तेरा नाम निधाना श्री भगवाना गावां सद, छन्द धुर दा दयां जणाईआ। दीन मज़्ब दी मेटणी हद्द, हदूद आपणी देणी वखाईआ। जिथ्थे दीपक जोत रिहा जग, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। मिले मेल सूरे सरबग, जो शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेहरवान मेहरवान मेहरवान आपणी किरपा कर दे झट, दूर दुराडा पन्ध रहिण ना पाईआ।

★ १८ माघ शहिनशाही सम्मत ६ जरनैल सिँघ दे गृह पिण्ड सगवाल ज़िला जलन्धर ★

धरनी कहे प्रभू तूं मेरा पित मात, पुरख अकाल दीन दयाल तेरी सरनाईआ। मेहरवान महिबूब मेट दे अंधेरी रात, निरगुण निरवैर नूरी चन्द कर रुशनाईआ। झगड़ा रहे ना ज़ात पात, दीन दुनी इक्को रंग देणा रंगाईआ। तूं साहिब सुल्ताना श्री भगवाना पुरख समराथ, बेअन्त बेपरवाह अख्वाईआ। मिन्नतां करां दोए जोड़ के हाथ, झुक झुक लागां पाईआ। मेरी आसा मनसा पूरी कर दे ख़ाहिश, ख़ालस आपणा भेव खुल्हाईआ। निरगुण निरवैर मैं तेरी दासी दास, सेवक हो के सेव कमाईआ। निगह मार उतों आकाश, प्रिथवी रो रो दए दुहाईआ। मेरे स्वामी आ जा मेरे पास, कलयुग आपणी करवट लै बदलाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु जो शब्द संदेशे विच गए आख, कौल सब दा पूर कराईआ। तुध बिन करे ना कोए इमदाद, मालक नज़र कोए ना आईआ। मैं चाहुंदी सब दी अन्दरों खुल्ल्हे जाग, सोया रहिण कोए ना पाईआ। त्रैगुण अग्न बुझा दे आग, अमृत मेघ इक बरसाईआ। आपणा मजन करा दे धर्म धार दे माघ, अंमिउँ रस इक चुआईआ। हर हिरदे अन्दरों मेट दे कूड़ा दाग़, दुरमति मैल दे धुआईआ। मेरे करदे वड वड भाग, भागहीण ना रहे लोकाईआ। काया मन्दिर अन्दर तेरा नूरी जगे चिराग़, जल्वागर तेरी होवे रुशनाईआ। तूं मालक ख़ालक आदि अन्त दा कन्त सुहाग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। धरनी कहे प्रभू मैनूं इक्को तेरी ओट, ओड़क दयां जणाईआ। प्रकाश करदे आपणी जोत, जोती जाते होणा आप सहाईआ। किसे दी चले कोए ना सोच,

११३८
२२

समझ विच ना कोए चतुराईआ। आपणी नाम खुमारी नाल कर मदहोश, मधुर धुन राग सुणाईआ। मन कल्पणा तेरे प्यार विच हो जाए ख़ामोश, उच्ची कूक ना कोए जणाईआ। भाग लगा दे काया माटी पोश, पंज तत तन दे वड्याईआ। मानव ज़ाती काया मन्दिर अन्दर तैनूं सारे लैण खोज, बाहर खोजण दा झगड़ा दे मुकाईआ। बुद्धी तों परे आपणे शब्द दा दे बोध, नाम निधाना श्री भगवाना इक दृढ़ाईआ। तेरी चरण प्रीती होवे सब दा जोग, तन भूषन इक्को नाम देणे रंगाईआ। धरनी कहे मेरे उत्ते कूड़ कुड़यारां दा रहे कोए ना बोझ, पतित पुनीत सारे देणे बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी आसा मनसा आपे बुज्झ, अन्तरजामी दया कमाईआ। सारी सृष्टी दी दृष्टी कर दे सुद्ध, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। पंच विकार करे ना युद्ध, धर्म दा खण्डा दे चमकाईआ। मेरे विच्चों बाहर कढ दे कलयुग, सतिजुग सच दे प्रगटाईआ। सब नूं तेरे नाम दी आवे सुध, समझ समझ विच्चों देणी बदलाईआ। माया ममता दी औध जाए पुग, हँकार विकार ना कोए हल्काईआ। तेरा भाणा कदे ना जावे रुक, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। मेरे साहिब सुल्तान तेरे कदमां जावां झुक, डण्डावत बन्दना सजदे विच सीस झुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सारे तेरी गावण इक्को तुक, तुख्म तासीर दीन दुनी देणा बदलाईआ। तेरे कोल सब कुछ, बेपरवाह सच भण्डारा देणा वरताईआ। पड़दा ओहला रहे ना लुक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार दया कमाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं तेरे चरण ढट्ठी, ढहि ढहि सीस निवाईआ। सारी सृष्टी आपणे नाम नाल कर लै इक्ठी, विछड़या रहिण कोए ना पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर दे मट्ठी, अमृत मेघ नाम बरसाईआ। सच नाम दी सच पढ़ा दे पट्टी, पटने वाला नाल मिलाईआ। जिस ने तेरे पिच्छे माछूवाड़े दी सेज कटी, सूलां सथ्थर गया हंढाईआ। उस दी धार प्रगटा दे नाम बख्श दे गुरमुखां अन्दर रती, रत्न अमोलक हीरे देणे बणाईआ। तूं सब दा मालक परम पुरख कमलापती, पतिपरमेश्वर होणा आप सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी अन्तिम लज्जया रखीं, रखणहार तेरी सरनाईआ। मैं तेरा निरगुण खेल वेखां अक्खीं, आख़र आपणा पड़दा देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण तेरी शब्द कहाणी सच्ची, सतिगुर शब्द शब्द सतिगुर गुरु गुरदेव वड वड्याईआ।

११३८
२२

✪ २१ माघ शहिनशाही सम्मत ६ बीबी जुगिन्दर कौर दे नवित हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

धरनी कहे प्रभ मैनूं विष्न ब्रह्मा शिव करन इशारे, इशारा धुर दा इक लगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर रहे ललकारे, ज़ोर ज़ोर सुणाईआ। उठ वेख कलि कल्की अवतारे, निहकलंक बेपरवाहीआ। जिस नूं झुकदे ज़िमीं असमान चन्द सितारे, सतह बुलंदी उपर ध्यान लगाईआ। कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड धूढ़ी लावण छारे, मस्तक टिक्के धुर रंगाईआ। जिस नूं कागद कलम शाही लिख लिख हारे, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। ओह खेल करे नर निरँकारे, नरायण अगम्म अथाहीआ। जिस दे भविक्खत सब ने उच्चारे, सिफ्तां वाले ढोले गाईआ। ओह निरगुण नूर करे उज्यारे, जोती जाता डगमगाईआ। शब्द संदेशा देवे आपणी धारे, धरनी कहे मेरे उत्ते सुणाईआ। लेख लिखाए अगम्म अपारे, अलख अगोचर आपणी कार भुगताईआ। जिस दा हुक्म सच्ची सरकारे, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। मैं निउँ निउँ करां निमस्कारे, ढहि ढहि लागां पाईआ। जिस ने आपणी लिख्त लिखाउणी शुरू कीती दुबारे, दोहरी जगत धार बदलाईआ। सृष्टी दृष्टी आप उग्घाड़े, नोक कलम नाल हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे जिस दी लिख्त शुरू होई दुबारा, धुर दी धार वड्याईआ। बाल अवस्था बाल कन्या नानक दे के गया इशारा, संदेशा अगम्म जणाईआ। तेरा लहिणा देणा नाल कलि कल्की अवतारा, अवतरी आपणा हुक्म वरताईआ। शब्दी धार दा दए इशारा, शब्द शब्द नाल शनवाईआ। सेवा विच सेवा देवे बल अपारा, अपरम्पर बेपरवाहीआ। जिस दा लेख सदा रहे जुग चारा, चौकड़ी आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे अन्तर आ गई हैरानी, मैं की दयां सुणाईआ। तेरा भगत बड़ा बलवानी सूरबीर ध्यान लगाईआ। गुरदयाल सिँघ कहे मेरी बणाउणी धर्म निशानी, निशाना जगत विच प्रगटाईआ। मेरे दवार दा बणना बानी, बाण अणयाला तीर चलाईआ। तूं दाता धुर दा दानी, दयावान अख्वाईआ। मेरे गृह करीं मेहरवानी, मेहर नज़र उठाईआ। सम्मत शहिनशाही नौ विच मेरी आशा होण ना देवीं पुराणी, पुनह पुनह सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, पन्द्रां अठारां दी मेरी मंग सहिज नाल दयां सुणाईआ। गुरदयाल सिँघ कहे मैं तेरा बल देवणहारा बलीदान, बावन ध्यान लगाईआ। मेरी बेनन्ती श्री भगवान, दर ठांडे दयां जणाईआ । मेरे प्यार दा हुंदा सी इक दरबान, जो मनज़ूना नाम बणाईआ। रोज़ मैनूं कराउंदा हुंदा सी इश्नान, नड़िंनवे साल सेव कमाईआ। जिस वेले बावन आया मंगण दान, आपणा रूप बदलाईआ। मेरे नाल उस ने कीती प्रणाम, सीस दिता झुकाईआ। बावन ने थापी दिती आण, हथ्थ पुश्त पनाह टिकाईआ।

११४० २२

रो के किहा मैनूं मिला दे मेरा भगवान, तेरे हथ्थ वड्याईआ। बल कहे मैं आख्या तूं मेहरवान, मेहर नाल तराईआ। बावन किहा औह कलयुग तक मार ध्यान, नेत्र नैण उठाईआ। एस दा जन्म फेर होवे विच जहान, तेरे गृह गृह मिले वड्याईआ। तेरे सुत दा सुत होवे निधान, सति सतिवादी रूप समझाईआ। दरगाह सच होवे परवान, परम पुरख देवे वड्याईआ। दोहां ने सीस झुकाया खुशी विच गाया गाण, तेरी बेपरवाहीआ। बावन दा लेखा होया परवान, परम पुरख दिती वड्याईआ। जिस दरबान दा रूप जगजीत सिँघ जन्मया विच जहान, गृह गृह विच्चों मिली वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक मनाईआ। गुरदयाल सिँघ कहे मेरा गृह होवे अठारां पन्दरा, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। चार दर होए धर्म दे मन्दिरा, दर दवार सोहणा नज़री आईआ। मेरी प्यार दी होए बन्द बन्दना, डण्डावत इक समझाईआ। जिथ्थे तेरी धूढ़ दा मिले चन्दना, धुर दा तिलक रखाईआ। इस तों परे होर कुछ नहीं मंगणा, मंगण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल सूरे सरबंगणा, सति सच तेरी सरनाईआ।

११४१ ११४१

२२ २२

✪ २७ माघ शहिनशाही सम्मत ६ रणजीत सिँघ दे गृह ग्वाल टोली ज़िला फ़िरोंज़पुर छाउणी ✪

शंकर कहे प्रभू मेरी आदि अन्त दी तेरी शर्ती, शरअ सके ना कोए बदलाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रीतम अर्शी, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। मेरी तेरे अग्गे बेनन्ती अर्ज़ी, आरज़ू दयां सुणाईआ। तूं क्यों कीती आपणी मर्ज़ी, मेहरवान देणा समझाईआ। मेरी खेल चोटी जड़ दी, अस्थूल वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। शंकर कहे प्रभू मैं तेरी शक्ती, शख़श नज़र कोए ना आईआ। तेरा प्यार मेरी भगती, भगवन अवर ना कोए वड्याईआ। तेरी खेल नरायण नर दी, नर हरि तेरी सरनाईआ। की धार तकी मैं कलयुग कल दी, कलि कल्की दयां सुणाईआ। तूं खेल खिलाई अछल अछल दी, वलछल धारी आपणा हुक्म वरताईआ। तेरी कीती आदि अन्त कदे ना टल्दी, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। धार रही ना जल थल दी, महीअल सारे रहे कुरलाईआ। तेरी कीती करनी कदे ना टल्दी, ना कोई मेटे मेटे मिटाईआ। कथा कहाणी रही कोए ना मेरे हल्ल दी, साहिब तूं हालत दिती बदलाईआ। तेरी खेल तकां निहचल धाम अटल दी, सचखण्ड निवासी तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार दया कमाईआ। शंकर कहे मेरे सूरे सरबंग, साहिब तेरी सरनाईआ।

मैनूं तेरा इक्को रंग, रंगत अगम्म अथाहीआ। मैं मांगत हो के मंगां मंग, दर ठांडे सीस निवाईआ। क्यों आपणी मर्यादा कीती भंग, असूल असल विचों बदलाईआ। मेरे तन ओढण कोई ना दिसे वेखां वजूद नंग, तशका गल सुहाईआ। मैं वेख के होया दंग, हैरानी विच कुरलाईआ। की खेल कीता विच वरभण्ड, मेरे मालक धुरदरगाहीआ। मैं भोला नाथ हो के पावां डण्ड, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। मेरी नन्गी हो गई कंड, पुश्त पनाह हथ्थ ना कोए रखाईआ। कोटन कोटि तेरे जुग चौकड़ी गए लँघ, लोकमात अवतार पैग़म्बर गुरु सेव कमाईआ। जन्म विचों जन्म दी किसे ना दिती दात वंड, वंडणहारा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेरे साहिब तेरी सरनाईआ। शंकर कहे प्रभू मैं पाउण लग्गा शोर, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। क्यों तूं वरत्या आपणा ज़ोर, बल दिता प्रगटाईआ। ओह वेख अंधेरा घोर, चारों कुण्ट नज़री आईआ। तेरे साध सन्त बणे ठग्ग चोर, शरअ कूड़ विच लड़ाईआ। सुरती शब्द सके कोए ना जोड़, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। मन वासना सारे रहे दौड़, काम कामनी नाल हल्काईआ। तेरी मंज़ल चढ़े कोए ना पौड़, सचखण्ड निवासी नज़र कोए ना आईआ। बौहड़ी साडी रही कोए ना लोड़, लोड़ींदे सज्जण तेरे अग्गे दुहाईआ। तैनूं अवतार पैग़म्बर गुरुआं किहा बन्दी छोड़, बन्धन सब दे दे कटाईआ। बौहड़ी तेरा हुक्म मैं मूल ना सकां मोड़, अग्गे हो ना कदे अटकाईआ। जो उपज्या अवतार पैग़म्बर गुरु मैं सारे छडे तोर, बच्चया रहिण कोए ना पाईआ। किस बिध तूं भगतां भाग कीते मथोर, मेहरवान देणा सुणाईआ। की मैं तेरा हो गया कमज़ोर, बलहीण नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक मंग मंगाईआ। शंकर कहे प्रभू मैं वेखां केहड़ी तेरी हद्द, हदूद नज़र कोए ना आईआ। क्यों मेरी करनी कीती रद्द, आपणा हुक्म हुक्म वरताईआ। क्यों ना मैनूं दस्सया सद्द, संदेशा आप सुणाईआ। एह भगत मेरी यद, बंस इक्को इक वड्याईआ। बिना मेरे हुक्म तों सरीर कोए ना सके छड, नाता तन ना कोए तुड़ाईआ। मैं छेती आउंदा भज्ज, दर तेरे सीस निवाईआ। तूं साहिब पुरख समरथ, वड दाता बेपरवाहीआ। मेरी दुहाई मैं चाहुंदा घर घर जगावां अलख, अगम्म अगम्मड़े दयां सुणाईआ। मैं अवतार पैग़म्बरां गुरुआं विष्न शिव ने करना इक्ठ, ब्रह्मा लैणा नाल मिलाईआ। ओह वेखो खेल झट, झटका हुक्म दा देणा जणाईआ। वेखो रूप पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जो साख्यात नज़री आवे जट्ट, ज़ाहर ज़हूर आपणी कल वरताईआ। जिस नूं चाहे मेरे तों बिना लए रख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन्म विच्चों जन्म दे के धुर दी अगम्मी वथ, वस्त अमोलक आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। शंकर कहे मैं अवाज़

मारां आपणे सज्जणां, ज़ोर नाल सुणाईआ। विष्न ब्रह्मे उठ के भज्जणा, आउणा चाँईं चाँईंआ। तेई अवतारां अस्थान तज्जणा, बिना कदम कदम लैणा उठाईआ। पैग़म्बरां आपणी मंज़ल लँघणा, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। गुरुआं खेल तकणा सूरे सरबंगणा, सति सच सति समझाईआ। आओ जिस नूं सारे करदे रहे बन्दना, सजदयां विच सीस झुकाईआ। ओह आपणी करनी दी करे आप उलँघणा, आपणा हुक्म रिहा बदलाईआ। जिस ने साडा भाण्डा अन्तिम भन्नणा, थिर रहिण कोए ना पाईआ। जिस दा इक्को शब्दी धार गोबिन्द चन्दना, दो जहान करे रुशनाईआ। उस खेल कीता विच वरभण्डणा, ब्रह्मण्ड दए वखाईआ। शंकर कहे जन भगतां दा बण के सज्जणा, गुरमुख लए तराईआ। जिस नूं मढ़ी गोर सी दब्बणा, मिट्टी अग्नी ख़ाक रलाईआ। उन्हां नूं नाम दा दे के सगणा, सोहणा रंग चढ़ाईआ। प्रकाश हो के दीपक जगणा, अंध अंधेर मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि सच साहिब सुखदाईआ। शंकर कहे ब्रह्मे हाए मेरी बौहड़ी, दरोही विच दुहाईआ। विष्नूं उठ के वेखीं दौड़ीं, पिछला पन्ध मुकाईआ। अवतार दो जहानां लाओ पौड़ी, डण्डा इक्को इक जणाईआ। पैग़म्बरां मंज़ल ना रखणी सौड़ी, दूर दुराडा डेरा ढाहीआ। गुरुआं तकणा धुर दा जौहरी, हरि करता बेपरवाहीआ। जिस कीती खेल अवर की औरी, भेव कोए ना पाईआ। धार बदल दे एका दूआ दोहरी, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। भगतां आपणे नाल बणा के जोड़ी, जोड़ा धुर दा दए समझाईआ। सारे तक्को जिन्हां दी आयू रह गई सी थोड़ी, दिवस लोकमात समझाईआ। उन्हां नूं बख्श दिता शंकर कहे साडे सारयां कोलों चोरी, बौहड़ी सानूं समझ कोए ना आईआ। साडे शास्त्र सिमरत वेद पुराण बण सके कोए ना घोरी, पड़दा अगम्म ना कोए खुल्हाईआ। सारे उठो हथ्थ बिना हथ्थां तों लओ जोड़ी, नमो नमस्ते विच सीस झुकाईआ। वेखीं प्रभू अग्गे वास्ते एह रस्ता ना देवीं तोरी, तुरत आपणा हुक्म मनाईआ। बेशक तेरी आत्मा बज्झी नाल प्रेम दी डोरी, दूसर नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। ब्रह्मा कहे प्रभू मेरा ब्रह्म वेख सति, सति सतिवादी दयां जणाईआ। विष्नूं कहे तेरी मित गति, प्रभ तेरे विच नज़री आईआ। तेई अवतार मारन हथ्थां उत्ते हथ्थ, हथेली हथेली नाल टकराईआ। पैग़म्बर चौदां तबक रहे नट्ठ, भज्जण वाहो दाहीआ। नानक गोबिन्द शब्दी धार रहे दस्स, संदेशा धुरदरगाहीआ। ओ शंकर एहदे कोल नहीं किसे दा वस, वास्ते पा के पुरख अकाल इक्को सीस दयो झुकाईआ। असीं चार जुग दे गावण वाले जस, सिफ्तां विच सालाहीआ। जिथ्थे जिथ्थे सानूं दिता रख, उथे उथे बहि के आपणा झट लईए लँघाईआ। एहदी मर्ज़ी जे भावे ते भगतां नूं कदे होण ना देवे अड्ड, वक्खरी वंड ना कइ

वंडाईआ। जिस वेले चाहे उसे वेले लए रख, रखणहार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। शंकर कहे ओह वेखो चित्रगुप्त टेकदा मथ्था, बिन ख़ाक ख़ाक रमाईआ। नाले करदा आवे कथा, संदेशा धुरदरगाहीआ। मैं ख़बर देवां यथार्थ यथा, यदी दयां दृढ़ाईआ। दूर दुराडा आया नस्सा, भज्जया वाहो दाहीआ। तेरे दवारे पुज्या मसां, आपणा पन्ध मुकाईआ। नेत्र नीर वहाया अक्खां, रो के दिता वखाईआ। शंकर मैं की दस्सां, तेरा नाम दुहाईआ। फेर दोहथ्थड़ मारी उत्ते पट्टां, पटने वाला नजरी आईआ। इशारा कर के किहा रूप धारया वांग जट्टां, जग नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। जिस दे नाल पुरख समरथा, समरथ बेपरवाहीआ। मैं सुनेहड़ा दस्सां सच्चा, सच सच नाल जणाईआ। मेरे लेखे विच चित्रगुप्त कहे रणजीत सिंघ दा मकान रहिणा नहीं सी साढे तिन्न हथ्थ दा कच्चा, पंज तत ना कोए चतुराईआ। बौहड़ी धुर दे मालक ने उस नूं बणा के आपणा बच्चा, बचपन विच्चों बचपन दिता बदलाईआ। सारयां नूं छड के गोबिन्द दा बण गया सका, पिछला लेखा लेखे विच रखाईआ। फेर कढ ल्या ओह धुर दा हुक्म वेख जिस दे उत्ते पटने वाले दा पट्टा, बिना पट्टी तों दिता लिखाईआ। झट राय धर्म आ गया नट्ठा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। शंकर आपणीआं वेख लम्मीआं लटां, की बाशक गल लटकाईआ। मैं सारा लेखा तेरे अग्गे सट्टां, आपणे ख़ाली हथ्थ वखाईआ। मैं वेखे सारे तेरे मट्ठा, शिवदुआले खोज खुजाईआ। दुहाई दरोही ओ पुरख अकाल ने उलटी गेड़ दिती लट्ठा, मैनूं समझ कोए ना आईआ। जेहड़ा साढे तिन्न हथ्थ शरीर अज्ज चुक्या होणा सी उत्ते फट्टा, ख़ाकी ख़ाक विच मिलाईआ। उस नूं आत्मा परमात्मा परमात्मा आत्मा दा दस्स के इक्को टप्पा, चुरासी दे टापूआं विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। अग्गे आपणे नाम दा ला के ठप्पा, मोहर सच दी दिती वखाईआ। नवें जुग दा ते नवें प्यार दा बख्श के गफ्फा, ज़िंदगी ज़िंदगी विच्चों बदलाईआ। राय धर्म कहे मेरा अक्खरां वाला रह नहीं गया कोई सफ़ा, लिखण वाली ना कोए कलम शाहीआ। मेरा हुक्म हो गया रफा, ओह वेख दूत सारे रोवण मारन धाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। राय धर्म कहे शंकर मेरे अन्दर आ गया शंका, सहिज नाल जणाईआ। चुरासी विच्चों मेरा कोई सहि ना सके तनका, भज्जा आवे वाहो दाहीआ। मैं ज़ुंमेवार देवणहार डंन का, लख चुरासी खेल खिलाईआ। पता नहीं क्यों प्रभू नूं प्यार आ गया उस गोबिन्द चन्न का, जो चन्द चांदना जोत नूर रुशनाईआ। मालक बण गया साचे संग का, सगला संग वखाईआ। लहिणा देणा पूरा कर दे चमकौर जंग दा, जंगजू आपणा लेखा दे मुकाईआ। जिस रस माणया सी नीले वाले तंग दा, तंगदस्ती विच्चों आपे बाहर कढ्ढाईआ। साथी बण के पुरख अकाल सूरे सरबंग

११४४
२२

दा, साहिब आपणी कल वरताईआ। जेहड़ा किसे दवारे नहीं कदी मंगदा, मांगत हो के झोली कदे ना डाहीआ। ओह खेल करे सूरे सरबंग दा, सूरबीर वड वड्याईआ। मैनूं एं दिसदा राय धर्म कहे जिवें रणजीत सिँघ फिर राम सिँघ दे घर जम्मदा, जन्म जन्म विच्चों बदलाईआ। जिस कृपाल हो के दयाल हो के नाता तुटण नहीं दिता काया माटी चम्म दा, चम्म दा दम आपणे रंग रंगाईआ। जेहड़ा नेत्र नीर वगणा सी छम्म छम्म दा, ओह शमा दा दीपक गुरमुख दिता जगाईआ। जेहड़ा गृह बणना सी दुखड़ा ग़म दा, ग़मखार हो के दिलदार हो के धुर दा यार हो के निराकार हो के निरँकार हो के सच्ची सरकार हो के सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। चित्रगुप्त कहे राय धर्म आह वेख लै मेरी पुस्तक, जो लेखे सब दे रही लिखाईआ। जां तक्कया कुकर्म दे थाँ ते भगत दी उस्तत, केहड़े वेले लिख के मेरा लेखा गया बदलाईआ। ओ वेख जिस नूं पैग़म्बर कहिंदे मुरशद, ओह मुर्शद बेपरवाहीआ। पता नहीं उस नूं सचखण्ड विच्चों केहड़े वेले मिल गई फ़ुरसत, वेहला हो के गुरमुखां जन्म गया बदलाईआ। उस दी महिमा की ते वड्याई की उल्फ़त, सिफ्तां विच की सालाहीआ। जिस दा आदि दा धर्म बगीचा ते भगत गुलशन, गुल प्रेम वाले महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला दए मिलाईआ। चित्रगुप्त कहे अवतार पैग़म्बर गुरु सहिबानो, ब्रह्मा विष्न जी शंकर दयां सुणाईआ। मेरे लेखे विच्चों कोई आपणे सिख मुरीद पहचानो, जिस नूं फड़ के बाहर लओ कढ्ढाईआ। खण्डे खड़ग खिच्चण वाले किरपानो, तीर तरकश कंध्याँ उत्ते उठाईआ। तत्तां वाल्यो जवानो, आपणी लओ अंगड़ाईआ। ओ धरती दे महिमानो, चार दिन कट के फिर भज्जे वाहो दाहीआ। वेखो खेल श्री भगवानो, की करता कल वरताईआ। सारे इक दा करो ध्यानो, बिन नैण नैण उठाईआ। मशहूरी विच दयो ब्यानो, इक्को इक वार दृढ़ाईआ। आपणा आपणा नाम दस्सो पैग़ामो, सिफ्तां विच सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण करीए की ध्यान, चित्रगुप्त वेख की वखाईआ। असीं ते बरदे श्री भगवान, जुग जुग सेव कमाईआ। असीं आप वेख के होए हैरान, हैरानी विच दईए जणाईआ। जिस ने नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दी पिछली आपणी कीती बदली आप आण, आपणी दया कमाईआ। जन भगतां ज़िंदगी विच्चों ज़िंदगी दा बख्श दान, दाता दानी होया आप सहाईआ। काहन कहे मैं अर्जन कोल कीता सी इक ब्यान, बिना लिखण तों दिता सुणाईआ। जिस वेले मेरा मालक आया श्री भगवान बेपहचान नूर इलाहीआ। ओह जिस वेले चाहे आपणयां भगतां नूं देवे माण, वड्याई आपणे हथ्थ वखाईआ। जींवदयां दी जींवदयां

कर देवे कल्याण, जीवण विच मरन दी लोड़ रहे ना राईआ। जिस दा चाहे उस दा खड़ा कर देवे निशान, निशाने पिछले दए मुकाईआ। आदि दा आदि अन्त दा अन्त सतिगुर शब्द शब्द सतिगुर सदा मेहरवान, मेहरवान दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा लेख आप बदलाईआ। सारे कहिण शंकर अन्त वेख लै खेल मुकी, मुकम्मल सारे दईए दृढ़ाईआ। ओह जिस दी शब्द धार दो तुकी, दो जहान बेड़ा पार कराईआ। सारे मंज़ूर कर लईए जिस दे भगत सचखण्ड विच वसदे सुखी, मातलोक उन्हां दा होए सहाईआ। जन्म दे के बिना मात दी कुख्खी, जन्म जन्म विच्चों बदलाईआ। लटकण नहीं दिता दस मास उलटा रुक्खी, मात गर्भ अग्नी तत ना कोए तपाईआ। भाग लगाया पिता पुत्तीं, पिता पूत आपणा रंग रंगाईआ। जिस दी मिट्टी ख़ाक इस गृह विच्चों अज्ज जाणी सी चुक्की, चार काहनी कंध्याँ उत्ते उठाईआ। उस परिवार नूं बेपरवाह करके सुखी, सुख सतिगुर शब्द विच रखाईआ। सृष्टी जगत विहार दी भुक्खी, अगला संग ना कोए बणाईआ। जिस माता दी अज्ज कुख्ख जाणी सी लुट्टी, लुटेरा राय धर्म नज़र किसे ना आईआ। उस दा मालक उस दा उज्जल करे मुखी, मुख मुखड़े नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता आपणी करनी कार कमाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण सारे कहि दईए
१२४६ वाह वा, सतिगुरु तेरी बेपरवाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण सीस दईए निवा, निव निव सीस झुकाईआ। चित्रगुप्त कहे १२४६
२२ राय धर्म एह दाता बेपरवाह, बेपरवाह अग्गे चले ना कोए चतुराईआ। सारे रल के सताई माघ नूं बण जाईए गवाह, शहादत २२
सतिगुर शब्द वाली भुगताईआ। राम सिँघ ते राम होया सहा, सहायक इक्को नज़री आईआ। तेरा बच्चा बचा के तेरी झोली दिता पा, आपणे ख़ाली हथ्थ रखाईआ। तेरे परिवार तों तेरा लेखा दिता लिखा, दूजा लिखारी ना कोए वखाईआ। इन्हां दी कलम दे लेख ने तेरा घर दिता वसा, जे एह लिखण वाले ना हुन्दे तेरा हुन्दा ना कोए सहाईआ। एह चार जुग दे बच्चे प्रभू दे भगत बल दा लेखा ते बावन बणया गवाह, जिस नूं चार जुग दे शास्त्र सकण ना मूल समझाईआ। जन भगतां दा भगतां वाला राह, मार्ग पन्थ पन्थ मार्ग सतिगुर नज़री आईआ। जेहड़ी सिख्या गोबिन्द गया समझा, सो गोबिन्द पूर दए कराईआ। जिस नूं मुहम्मद किहा ख़ुदा, ईसा मूसा जिस नूं सीस झुकाईआ। जिस नूं राधा कृष्न ल्या अपणा, आप अपणा मूल चुकाईआ। ओह दाता आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगतां लहिणा देणा देवे थांउँ थाँ, थान थनंतर खोज खुजाईआ। जिस ने बख़्शिश कीती रणजीत सिँघ दे उत्ते पिता ते माँ, मात पिता दा पिता रूप आप बदलाईआ। सदा सदा सद होवे सहा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक

नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बधक दी फड़ के बांह, राम सिँघ दा लेखे ला के नाँ, नाउ निरँकार आपणा इक दरसाईआ।

✪ २८ माघ शहिनशाही सम्मत ६ राम सिँघ दे गृह फ़िरोज़पुर छाउणी ✪

जो गुरमुख सतिगुरु दवार खलोते, तट किनारा इक ध्यान लगाईआ। ओह जगत जहान शौह दरया खावण ना गोते, कूड़ी क्रिया डूँग्घे वहिण ना कोए वहाईआ। सुरती अन्दर रहिण मूल ना सोते, आलस निंद्रा ग़फ्लत ना कोए वखाईआ। सतिगुर पूरा उठावे नाल शब्द सोटे, भय भउ इक जणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्से सच सलोके, सोहला एकँकार अगम्म अथाहीआ। माया ममता कूड़ी क्रिया कढे विच्चों धोखे, हउमे रोग दए मिटाईआ। भाग लगावे काया माटी कोठे, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे वधाईआ। प्रकाश बख्श के निर्मल जोते, अंध अंधेर दए गंवाईआ। अनादी धुन लगा के चोटे, चोटी चढ़ के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जो गुरमुख आए सतिगुरु दवार, सति सच सरनाईआ। सतिगुर बख्शे नाम अधार, उदर दा लेखा दए मुकाईआ। किरपा करे आप निरँकार,
११४७ निरवैर दया कमाईआ। कलयुग अन्दर पावे सार, महासार्थी हो के वेख वखाईआ। कूड कल्पणा मेटे अंध अंध्यार, हउमे ११४७
२२ हंगता गढ़ तुड़ाईआ। अमृत बख्श के ठंडा ठार, अग्नी तत दए बुझाईआ। शब्द अनादी दए धुन्कार, धुन आत्मक राग २२
सुणाईआ। निर्मल दीपक जोती दीआ दए बाल, अगम्म अथाह बेपरवाह करे रुशनाईआ। साढे तिन्न हथ्थ बणा के सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक प्रगटाईआ। दर्शन देवे दीन दयाल, दयानिध ठाकर आपणा पड़दा दए उठाईआ। सुरती शब्द मुरीद मुर्शद हो के पुछे मुरीदां हाल, गृह मन्दिर वेख वखाईआ। झगड़ा मुका के काल महाकाल, मेहरवान होए सहाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत बिन वरन गोत करे रुशनाईआ। सतिगुर शब्द हो के करे आप संभाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। जो गुरमुख सतिगुर दवार पुज्जा, पूरब पिछला पन्ध मुकाईआ। सतिगुर किरपा करे उपर बसुधा, धरनी धरत धवल धौल वेख वखाईआ। अन्तर निरन्तर भेव खुल्ावे गुज्झा, पर्दा बजर कपाट तुड़ाईआ। घर प्रकाश करे उदा, जिस नूं सूर्या चन्द सीस निवाईआ। परमात्म आत्म धार दस्स के मुद्दा, मुद्दत दे विछड़े ल्ए मिलाईआ। भाग लगा के काया साढे तिन्न हथ्थ दा झुग्गा, झुग्गी वेखे चाँईं चाँईंआ। जिस दा वेला अन्त कर्म कांड दा होवे पुज्जा, पूजा आपणी दए दृढ़ाईआ। निर्मल करा के बुद्धा, बुद्धी बिबेक दए बणाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। जो गुरमुख सतिगुरु दवारे जाए आ, दर ठांडे सीस निवाईआ। सतिगुर शब्द शब्दी पकड़े बांह, बाज़ू आपणे नाल बंधाईआ। परमात्म आत्म बणे मलाह, खेवट खेट अगम्म अथाहीआ। सच सरोवर ल्ए नुहा, दुरमति मैल आप धुआईआ। हँस बुद्धी बणाए फड़ के काँ, कागों हँस उडाईआ। इक दृढ़ा के आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा दए समझाईआ। जिथ्थे शरअ नहीं सूर ते गां, दीन मज़्हब वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को सति सतिवादी अगम्मा थाँ, थान थनंतर सोभा पाईआ। सो भगतां जणाए आपणा ग्रां, गृह मन्दिर इक वड्याईआ। जिथ्थे निर्मल नूर जोत होए रुशना, अंध अंधेर नज़र ना आईआ। सारे करन वाह वाह, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। अवतार पैग़म्बर गुरु नूर विच नूर रहे समा, वक्खरी वंड ना कोए वंडाईआ। सो पुरख अकाल दीन दयाल समरथ सतिगुर जन भगतां बण के पिता माँ, गुरमुख आपणी गोद उठाईआ। दरगाह साची सचखण्ड दवार निथाव्याँ देवे थाँ, धर्म दवार इक वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक नूर इलाहीआ। सतिगुरु दवारे जो जन आया, हउमे हंगता रोग गंवाईआ। त्रैगुण कूड़ी मेटे माया, ममता मोह दए चुकाईआ। निरगुण सरगुण सिर रखे आपणा साया, अग्नी तत ना लागे राईआ। सतिगुर शब्द शब्द सतिगुर कन्ढे बैठे सारे पार लँघाया, फड़ बाहों आप तराईआ। गोबिन्द दा बेड़ा गोबिन्द कंध टिकाया, गोबिन्द गोबिन्द होया सहाईआ। सतिगुर शब्द शब्द शब्द दा जहाज़ चलाया, नाम शब्द इक वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन उपर आपणी दया आप कमाया, सो गुरमुख गुरसिख हरिजन हरि भगत हरि सतिगुर विच समाईआ।

✪ पहली फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ हरि भगत दवार जेठूवाल रात नूं ✪

चार जुग दे भगत सूफ़ी सन्त फ़कीर, मशवरा दरगाह साची सचखण्ड रहे बणाईआ। बेनन्ती करीए अग्गे बेनज़ीर, जो नज़रीआ सब दा दए बदलाईआ। सारे कहिण उठ शरोमणी भगत कबीर, बेपरवाह लै अंगड़ाईआ। परवरदिगार नूं कहो शरअ दी बदल देवे लकीर, लाईन ऐन आपणी दए समझाईआ। झगड़ा मेट दे शाह हकीर, राउ रंक इक्को रंग रंगाईआ। आपणी नवीं दस्स तदबीर, तरीका इक दृढ़ाईआ। दीन मज़्हब शरअ दा तुट्टे ज़ंजीर, ज़र्रे ज़र्रे तेरा नूर नज़री आईआ। दीन दुनी दी बदल देणी ज़मीर, ज़ाहर ज़हूर आपणा पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका

देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। भगत सूफ़ी सन्त कहिण फ़कीर साडी इक बेनन्ती, आरज़ू अर्ज़ विच जणाईआ। तूं बोध अगाधा शब्द अनादा पंडती, परवरदिगार नूर इलाहीआ। तूं कूड़ी खेल मिटा दे पंज तत तन दी, गृह इक्को कर रुशनाईआ। कल्पणा मेट दे मनूए मन दी, ममता मोह दे चुकाईआ। आसा पूरी कर दे गोबिन्द चन्न दी, जिस नूं सूर्या चन्द सीस निवाईआ। अवाज़ पवित्र कर दे जगत वाले कन्न दी, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। सोझी दे दे आपणे ब्रह्म दी, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। शरअ जणा दे इक्को धर्म दी, धर्म दी धार इक प्रगटाईआ। लड़ाई रहे ना ज़ात पात वरन दी, बरन दा लेखा देणा चुकाईआ। ओट दस्स दे इक्को आपणे चरण दी, चरण चरणोदक देणा प्याईआ। अक्ख खोल्ह दे हरन फरन दी, निज नेत्र कर रुशनाईआ। दुरमति मैल धो दे जन्म जन्म दी, हरिजन आपणे घर वसाईआ। चिन्ता मेट दे कल्पणा भरम दी, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। सिख्या दे दे इक्को नाम आपणा पढ़न दी, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। मंज़ल दस्स दे आपणे चढ़न दी, चौथे पद तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। भगत फ़कीर सूफ़ी कहिण सन्त, साहिब तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर दे अन्त, अन्तष्करन सब दा दे बदलाईआ। तेरे नाम दा इक्को होवे मंत, मन्त्र इक्को देणा समझाईआ। आत्म परमात्म नज़री आवे कन्त, कन्त कन्तूहल तेरी सरनाईआ। हउमे गढ़ तोड़ दे हंगत, हँ ब्रह्म इक दृढ़ाईआ। झगड़ा रहे ना जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज पड़दा देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, हरि वड्डे तेरी वड वड्याईआ। सन्त भगत सूफ़ी कहिण साडी अर्ज़ोई, तमन्ना तेरे अग्गे रखाईआ। तेरे नाम दी इक दरोही, दरोही तेरा नाम दुहाईआ। तेरी किरपा बिना तैनूं मिल ना सके कोई, कोटन कोटि बैठे ध्यान लगाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी सदी चौधवीं मिले कोई ना ढोई, दूर दुराडे सारे रोवण मारन धाईआ। तूं पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कलयुग अन्तिम आत्म सब दी मोही, मोह मुहब्बत आपणे नाल रखाईआ। जीवां जंतां सुरती उठा सोई, सोई सुरत शब्द हलूणे नाल जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। भगत सन्त सूफ़ी कहिण तेरी चरण धूढ़ी लाईए ख़ाक, मस्तक इक रमाईआ। कलयुग मेट अंधेरी रात, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं पूरा कर भविक्ख्त वाक, पेशीनगोईआं तेरी झोली पाईआ। निरगुण नूर जोत तेरा होवे प्रकाश, कलि कल्की तेरी बेपरवाहीआ। निहकलंक तेरा होवे इक विश्वाश, विषयां तों बाहर आपणा हुक्म वरताईआ। धुर दे अमाम देणा साथ, सगला संग बणाईआ। चार जुग तों वक्खरी दस्सणी गाथ, गहर गम्भीर करनी अगम्म पढ़ाईआ। सति धर्म चलाउणा राथ,

रथ रथवाही आपणी दया कमाईआ। सति धर्म दा मार्ग लाउणा साच, सच दी करनी कार कमाईआ। भेव खुल्हाउणा काया माटी काच, कंचन गढ़ वज्जे वधाईआ। लूं लूं अन्दर जाणा राच, साढे तिन्न करोड़ तेरी रुशनाईआ। तूं पूरन पूरन करनी आस, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। हउ बालक तेरे दास, सेवक सेवा विच समाईआ। खेल वखा दे पृथमी आकाश, गगन गगनंतर आपणा नूर कर रुशनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दोवें जोड़ के हाथ, बिन हत्थां हत्थ उठाईआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाला सर्ब कला समराथ, शाह पातशाह शहिनशाह तेरे हत्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। भगत सन्त सूफ़ी फ़कीर तकण तेरी अगम्मी अक्ख, आख़र आपणी दया कमाईआ। निरगुण नूर जोत नज़र आ प्रतख, पारब्रह्म प्रभ आपणा पड़दा लाहीआ। तेरा सुणीए जैकारा नाम अलख, अलख अगोचर देणा दृढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट दे तत, तत्व आत्म ब्रह्म देणा समझाईआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत्त, रत्ती रत आपणे रंग रंगाईआ। पतिपरमेश्वर हो के रखणी त्त, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। साडे सब दे ख़ाली हत्थ, वस्तू हत्थ ना कोए उठाईआ। तेरे चरण कँवल रहे ढट्ठ, डण्डावत बन्दना नमस्ते सजदयां विच सीस झुकाईआ।

११५० सचखण्ड दवारे तेरी धार विच्चों धर्म दी धार कीता इक्ट्ठ, तन वजूद ना कोए जणाईआ। तेरा जल्वा तक्कीए नूर नुराने ११५०

२२ लट लट, चार कुण्ट अंधेरा नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाले दीन दयाले सच धर्म दा खोल्ह दे हट्ट, वस्त इक्को २२

नाम देणी वरताईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात दूई द्वैत दा मेट दे फट्ट, पट्टी नाम वाली बंधाईआ। इक्को नाम कलमा सारे लैण रट, रट्टा जगत ना कोए वखाईआ। जन भगतां दरस देणा जोत सरूपी नट्ठ नट्ठ, जोती धार भज्जणा वाहो दाहीआ। जिधर तक्कीए उधर तेरा रूप होवे प्रतख, पारब्रह्म अगम्म अथाहीआ। बीज बीज दे आपणे वत, तन वजूद आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार दया कमाईआ। कबीर कहे सुणो मेरी सलाह, सर्ब सहिज नाल सुणाईआ। सारे मन्नो इक मलाह, बेड़ा इक्को हत्थ फड़ाईआ। दीन मज़्हब दा लओ कोई ना नाँ, नाउँ निरँकारा इक जणाईआ। पहलों सारे झगड़ा मेटो सूर गां, ढोरां पशूआं खल्ल ना कोए लुहाईआ। वेखो फेर धरती धरनी धवल धौल जगत दी माँ, जम्मण वाली जगत दी माईआ। फेर आपणे आपणे छडो ग्रां, गहर गम्भीर ध्यान रखाईआ। फेर सारे कहो प्रभू वाह वाह, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक वाहिद इक खुदा, गॉड अलाह तेरी बेपरवाहीआ। राम कृष्न तेरा नूर अला, सतिनाम सति सति विच समाईआ। फेर सारे खड़्ही कर दयो बांह, भगत सन्त फ़कीर बचया रहिण कोए ना पाईआ। उच्ची कूक के कहो प्रभू तेरा इक्को जपांगे नाँ, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ।

इक्को तेरा पवित्र होवे थाँ, थनंतर इक्को सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, जुग जुग आपणा रंग रंगाईआ। कबीर कहे सुणो भगत सूफ़ी सन्त, सति सति दयां जणाईआ। इक्को सब दा होवे भगवन्त, भगवन इक्को नज़री आईआ। मुल्लां शेख़ बणिओ कोए ना पंडत, वक्खरी वंड ना कोए वंडाईआ। सारे परवरदिगार सांझे यार पुरख अकाल अग्गे करो मिन्नत, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। प्रभू शरअ दा झगड़ा मेट दे उत्तर पूरब पच्छम दक्खण जगत वाली सिम्मत, शरअ दी रहे कोए ना लड़ाईआ। जन भगतां बख्श आपणी हिम्मत, हौसले नाम वाले वधाईआ। हउमे कढ दे विच्चों चिन्त, रोग सोग देणा गंवाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म साची दस्स मिल्लत, पारब्रह्म प्रभ मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। चार कुण्ट दिसे कोए ना निन्दक, पुरख अबिनाशी ढोले सारे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहारा तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। कबीर कहे सारे वेखो कलयुग घोर, घोरी हो के ध्यान लगाईआ। सब दे अन्दर वड़या कलयुग चोर, लुटेरा, बणया थांउँ थाँईंआ। जिस ने सति धर्म दी कटी डोर, अन्तर निरन्तर गंढ ना कोए पवाईआ। कूड़ कुड़यारा हो के पाया शोर, शौहर दा मेल ना कोए
११५१ मिलाईआ। बुद्धी कीती अवर की और, औरत मर्द दिते लड़ाईआ। आप फिरदा चढ़ के घोड़, चारों कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। ११५१
अग्गे हो के कोई ना सके मोड़, सारे बैठे मुख छुपाईआ। ऐस वेले प्रभू दी सब नूं लोड़, लोड़ींदा साजण होए सहाईआ।
२२ सारे बिना हथ्थां तों हथ्थ लओ जोड़, कबीर कबरां तों बाहर रिहा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा २२
कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। कबीर कहे वेखो इक्को नूर नुराना, नर नरायण ध्यान लगाईआ। जिस दा शब्द धुर फ़रमाना, पैग़ाम कलमा अगम्म अथाहीआ। जिस दा सारे हुक्म करन परवाना, अवतार पैग़म्बर गुर सिर सके ना कोए उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सिर झुकाउणा, निउँ निउँ लागण पाईंआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला खेल करे महाना, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। जिस ने दीन दुनी दा बदल देणा ज़माना, ज़िमीं असमानां खोज खुजाईआ। लेखा पूरा करे सीता रामा, राधा कृष्ना आपणे विच समाईआ। पैग़म्बरां लेखा मुकाए विच जहाना, पैग़ाम आपणा इक दृढ़ाईआ। गुरुआं दे के शब्द गुण निधाना, गुणवन्ता आपणी कार कमाईआ। जोती धार पहर के जामा, शब्द शब्दी डंक वजाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा हो प्रधाना, पारब्रह्म प्रभ आपणा हुक्म वरताईआ। जिस ने सम्बल इक सुहाना, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे वधाईआ। धर्म दी धार आए विच मैदाना, मदद संग ना कोए वखाईआ। लख चुरासी बण के अन्तरजामा, चारे खाणी खोजे थांउँ थाँईंआ। कलयुग कूड़ी कल्पणा शरअ तोड़े गुलामा, गुरबत अन्दरों देवे कढ्ढाईआ। एका धर्म वजा दमामा, दामनगीर

होए सहाईआ। भेव खुल्हाए आप अमामा, आप आपणा पड़दा लाहीआ। कलयुग कूड़ी रैण मेट के शामा, शमा नूर जोत करे रुशनाईआ। अन्तर आत्म बख्श ज्ञाना, अज्ञान अंधेर दए मिटाईआ। जिस दा दो जहान झुलणा निशाना, एथे ओथे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, देवणहार इक अख्वाईआ। भगत सन्त सूफ़ी फ़कीर कहिण कबीरा साडी अन्त इक्को ख़ाहिश, ख़ालस दईए दृढ़ाईआ। साडा इक दे उत्ते विश्वाश, विषयां वाला गुरु मन्नण कोए ना पाईआ। जिस सतिगुर शब्द दी ब्रह्मण्ड खण्ड अगम्मी रास, बिन गोपी काहन आपणा नाच नचाईआ। जिस दी चार जुग कोई वरनण ना कर सक्या ज़ात पात, मज़्हब सक्या ना कोए समझाईआ। जिस दी सिफ्तां वाली हथ्थ आई ना कोए लुग़ात, अक्खरां विच ना कोए वड्याईआ। भेव पा ना सके चार जुग दे शास्त्र अते किताब, कलम शाही ना कोए चतुराईआ। उस दी आदि तों अन्त तक इक्को इक शब्द अगम्मी बात, जो बातन पड़दे सब दे दए खुल्हाईआ। सारे भगत इक्ठे हो के दईए इक आवाज़, होका हक सुणाईआ। तेरा नाम कलमा तेरी जगत नमाज़, रोज़ा तेरी रज़ा विच वड्याईआ। तूं मेहरवान महिबूब अन्तर खोल्ह दे आपणा राज़, पड़दा रहे ना राईआ। सब दा सांझा कर समाज, समग्री नाम वाली वरताईआ। तेरे नाम दे सारे होण मुहताज, लोड़वंद कर लोकाईआ। तेरे शब्द दी धार सुरती जावे जाग, सोया रहिण कोए ना पाईआ। सारे कहिंदे गए अवतार पैग़म्बर गुरुआं पिच्छों तूं आउणा बाद, वाहिद आपणा रूप दरसाईआ। असीं चाहुंदे इक्को तेरे हुक्म नाल दो जहान हो जाए इनकलाब, लेखा लिखण दी लोड़ रहे ना राईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझा यार, ओह लेखा पूरा कर दे जो निरगुण सरगुण दे के आया विच बगदाद, बगलीआं कंधे उत्ते लटकाईआ। जिस दा किसे कोल नहीं जवाब, सवाल करन वाला सवाली नज़र कोए ना आईआ। भगत सन्त सूफ़ी फ़कीर संग कबीर दरगाह साची सचखण्ड मुकामे हक हक दे मालक तैनूं सारे करन अदाब, अदब नाल बिना सीस तों झुक झुक सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्णूं भगवान, आदि अन्त दे मालक इक्को सीस जगदीश होवे ताज, तख्त निवासी पुरख अबिनाशी तेरा हुक्म वरताईआ।

✪ १४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ बसन्त कौर दे सरीर छडण ते पिण्ड मलूवाल ज़िला अमृतसर ✪

बसन्त कौर तेरी मौली रुत परिवार बंस, लोकमात महक महक महकाईआ। प्रभ दी धार विच तेरा अन्त, अन्तष्करन सतिगुर विच समाईआ। नाता तुटा जीव जंत, जगत लेखा पूर कराईआ। गृह स्वामी पाया धुर दा कन्त, पतिपरमेश्वर

नूर इलाहीआ। जिथ्थे चार जुग दे बैठे भगत सन्त, सचखण्ड साचे आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद आपणा रंग रंगाईआ। बसन्त कौर तेरी मौली रुत, रुतड़ी सच सच महकाईआ। प्यार मिल्या धीआं पुत्त, दोहत पोत सोभा पाईआ। अन्तिम लेखा नाल अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म प्रभ आपणे घर वसाईआ। भगत भगवान दोवें इके दवार बहिण उठ, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। आत्मा जगत जहान विच्चों गई छुट, परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। दीन दयाल आपणी गोदी चुक्क, सचखण्ड दवारे दए टिकाईआ। जिथ्थे उज्जल होवे मुख, दुरमति मैल रहे ना राईआ। एथे ओथे सच्चा सुख, सुखआसण इक सुहाईआ। मात गर्भ फेर उलटा होणा पए ना रुक्ख, चुरासी फाँसी दए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणे घर वसाईआ। बसन्त कौर तेरा पिछला लहिणा संग, सगला संग वखाईआ। जगत जहान मंज़ल गई लँघ, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। शब्द सिंघासण तेरा पलँघ, महाराज शेर सिँघ आप विछाईआ। जिस दा अन्तिम वेला तूं वेख्या सी नाल अनन्द, पुरी घनक सोभा पाईआ। ओह तेरे अन्त विच अन्त दा आप मुका पन्ध, मुसाफ़र सफ़र ना कोए कराईआ। जम की फाँसी कट के
११५३ बन्द, बन्दगी आपणे लेखे लाईआ। सदा ला के रखे अंग, अंगीकार इक हो जाईआ। जिथ्थे धर्म धार दा चन्द, गुरमुख ११५३
२२ सिँघ पाल बैठा सोभा पाईआ। जिस नूं झुकदे खण्ड ब्रह्मण्ड, पुरी लोअ ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप २२
आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा गृह इक वसाईआ। बसन्त कौर नाड़ बहत्तर ना उबले रत्त, रती रत्त आप महकाईआ। लेखा पूरा होया पत्नी पत, पतिपरमेश्वर वेख वखाईआ। संसार धीरज रिहा जत, सन्तोख विच वड वड्याईआ। अन्त वेख ख़ाली हथ्थ, जगत साक सज्जण संग ना कोए निभाईआ। बंस सरबंस सारे जाण छड, पल्लू गंढ ना कोए बंधाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोई ना रखे पत, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। तेरा लेखे लाया तूं मेरा मैं तेरा गाया जस, सिफ्तां वाली सिफ्त तेरे नाल रखाईआ। तेरी सेवा सदा अणथक्क, दिवस रैण रंग रंगाईआ। तेरा नाता जुड़ गया पक्क, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। हुण सचखण्ड साचे जाणा वस, जिथ्थे मिले मेल इक्को बेपरवाहीआ। शब्द दी धार मिले रस, अमृत अंमिउँ रस चखाईआ। बंस परिवार नूं सच संदेशे विच दस्स, कहि के दे दृढ़ाईआ। सतिगुर दे अग्गे नहीं कोई किसे दा वस, हुक्मे अन्दर झल्लणा चाँई चाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद आपणे गृह टिकाईआ। बसन्त कौर कहे सुणो मेरे परिवार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों बाहर दयां दृढ़ाईआ। मेरा शाह पातशाह शहिनशाह सच्ची सरकार, परम पुरख पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस किरपा

कीती विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव दा लेख मुकाईआ। धुर दी दात दिती दातार, दयावान दया कमाईआ। आत्मा सिँघ दा छड घर बाहर, सचखण्ड बैठी सोभा पाईआ। जिथ्थे गुरदयाल सिँघ रिहा ललकार, सवरन भज्जे चाँईं चाँईंआ। बुध सिँघ प्रेम वहावे धार, बिन नैणां नीर वहाईआ। मैं खेल तक्कया अपर अपार, अपरम्पर स्वामी दिता दृढ़ाईआ। मैं सुणावां उच्ची कूक पुकार, कूक कूक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवार दए वड्याईआ। बसन्त कौर कहे मेरा घर बार सुहञ्जणा, सोहणा नज़री आईआ। जिथ्थे वसे आदि निरँजणा, पुरख अकाल शहिनशाहीआ। दाता दानी दर्द दुःख भय भञ्जणा, भवसागर पार कराईआ। मूर्त गोपाल मदना, मधु सूदन नूर इलाहीआ। जिस गृह विच मेरा आत्म दीवा जगणा, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। ओह दवारा जन भगतो किसे विरले गुरमुख लँघणा, बिना पुरख अकाल दे पार ना कोए कराईआ। मेरे पिच्छों कोई नेत्र नीर वहाए ना अंझणा, आंसूआं हार ना कोए बणाईआ। मैनूं सच दी चढ़ गई रंगणा, सच सच विच समाईआ। मेरी अन्त अख़ीर दी इक्को वार कीती बन्दना, जिस विच बन्दीख़ाना गई तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दर देवे वड्याईआ। बसन्त कौर कहे मेरा नहीं कोई पवण स्वास, साह साह ना कोए वड्याईआ। मैं वेखी उस प्रभू दी रास, जो बिन गोपी काहन खेल खिलाईआ। मेरी अन्तिम पूरी होई आस, भगत दवारे जा के दर्शन पाईआ। मेरा शुरू दा विश्वास, वासना सतिगुर चरण रखाईआ। सो लै के गया उपर आकाश, पातालां विच ना कोए भवाईआ। जिथ्थे इक्को निर्मल नूर जोत प्रकाश, प्रकाश अगम्म अथाहीआ। मेरा सच घर सच गृह सच मन्दिर सच दवार सच बंक होया वास, वास्ता इक्को नाल रखाईआ। बंस परिवार नूं शब्दी धार देवां आख, आख़र दयां दृढ़ाईआ। वेख्यो कोई प्यार ना करयो मेरी लाश, काया पंज तत माटी ख़ाक कम्म किसे ना आईआ। मेरे सतिगुर दे दरबार पहली चेत नूं इक मेरे प्यार दा चढ़ाउणा ग्लास, जिस उत्ते मेरा नाम लिख के देणा लगाईआ। फेर दस्सां जो सम्मत सत्त घर घर दा चलणा रिवाज, पगड़ी गुरमुखां सीस टिकाईआ। जिस कारन पुरख अकाल दीन दयाल मैनूं सचखण्ड मारी आवाज़, दर घर साचे ल्या बुलाईआ। मेरा लहिणा देणा दीन दुनी बाहर जगत समाज, नीती इक्को बेपरवाहीआ। जगत जहान दे दुःख सुख दे चलदे रहिंदे काज, विवहारी विवहार विच आपणा हुक्म वरताईआ। मेरा शरीर सब नूं दे गया जुआब, नाते कूड़े गया तुड़ाईआ। मेरी अरदास बेनन्ती मंज़ूर होई घर उस सतिगुरु महाराज, जो महाबली इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। बसन्त कौर कहे जिस वेले होवे मेरा

संस्कार, सिसकी भरन कोए ना पाईआ। आत्मा सिँघ फ़ौजा सिँघ प्यारा सिँघ दरबारा सिँघ लम्बू लावण कुण्ट चार, चारों कुण्ट आंच लगाईआ। प्रीतम सिँघ बोले इक्की जैकार, हथ्थ छाती उत्ते टिकाईआ। जिस छाती उत्ते खांदा रिहा सी मार, छब्बी साल देण गवाहीआ। मेरे अन्दर इक वेरां आई सी विचार, पातशाह दया दए कमाईआ। प्रीतम सिँघ दा दु:ख मैं अन्दर ना सकी सहार, अन्दरे अन्दर दिती दुहाईआ। फेर सतिगुर किहा एह मार तेरे अन्त दा बणे प्यार, प्रीती तेरे नाल निभाईआ। क्यों तूं छोटे हुन्दे नूं दिता पाल, पालणा कीती चाँईं चाँईंआ। उस वेले दी सतिगुर सतिगुर करे संभाल, सम्बल बैठा दया कमाईआ। तेरे नेड़े ना आए काल महाकाल, राय धर्म चित्रगुप्त लेख ना कोए वखाईआ। सचखण्ड दवार एकँकार बिठा दिती सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक्को नज़री आईआ। चुरासी विच्चों जम की फाँसी विच्चों जगत दी उदासी विच्चों कर के बहाल, सांतक सति सति विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फल लगाया तेरे काया जगत वाले डाल, बंस सरबंस मातलोक सोभा पाईआ।

११५५
२२

✪ १५ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ बख्शीश सिँघ दे गृह पिण्ड कादराबाद ज़िला अमृतसर ✪

पुरख अकाल कहे सन्त भगत सूफ़ी फ़कीर लिखो आपणे रुक्के, बिना अक्खरां निरअक्खर धार जणाईआ। कौल इकरार वायदा करो साडे पिछले पैंडे मुके, पूरब नज़र कोए ना आईआ। दीन मज़्हब दा भार कोए ना चुक्के, ज़ात पात संग ना कोए रखाईआ। नाम कलमे वंड विच कोए ना दुखे, हउमे रोग ना कोए सताईआ। मंजल विच बणे कोई ना उच्चे, वड्डा वड ना कोए वड्याईआ। शरअ दे रिहो मूल ना भुक्खे, तृष्ना जगत वाली गंवाईआ। धर्म निशान्यों कोए ना उके, उगण आथण ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर भगत लिख के दयो आपणी पाती, पत्रका होवे अगम्म अथाहीआ। सति धर्म दे सारे बणो साथी, सगला संग बणाईआ। इक्को नाम दे बणना पाठी, पूजा मज़्हब देणी तजाईआ। इक्को नूर दी बणना ज़ाती, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। झगड़ा छडणा कागज़ाती, हउमे हंगता देणी मिटाईआ। सब ने आपणे आप दी करनी आज़ादी, बन्धन शरअ ना कोए रखाईआ। इक्को सतिगुर शब्द मन्नणा अनादी, नाम धुन इक शनवाईआ। संदेशा सुणना बोध अगाधी, बुद्धी तों परे नाम पढ़ाईआ। सचखण्ड दवारे सब ने होणा राज़ी, राज़क रिज़क रहीम दया कमाईआ। अग्गे वास्ते लेखा रख्यो पंडत

मुल्लां शेख़ कोए ना काज़ी, अक्खरां वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को इक सुणना संदेशा अगम्म आवाज़ी, तुरीआ तों परे तुरत आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर बिना कलम शाही तों लिखो चिट्ठी, हरफ़ हरूफ़ ना कोए लिखाईआ। झगड़ा छडणा पथ्थर इट्टी, पाहन रंग ना कोए रंगाईआ। वड्याई दिसे ना पंज तत ख़ाक मिट्टी, काया बुत ना कोए चतुराईआ। सारे मिल के सरगुण निरगुण दूआ एका बणाओ इक्की, अन्तिम एकँकार विच समाईआ। मानव ज़ाती होए धर्म दी सिक्खी, सिख सति रूप दरसाईआ। सुरती सब दी होवे टिकी, इष्ट पुरख अकाल जणाईआ। सारे लिखो मंज़ूर हाहे उत्ते टिप्पी, हँ ब्रह्म चतुराईआ। सो धार लिखो अनडिठी, जिस दी समझ कोए ना पाईआ। पन्द्रां फग्गण याद रखणी मिती, मित्र प्यारा रिहा दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि वडा वड वड्याईआ। पुरख अकाल कहे सन्त सूफ़ी फ़कीर लिखो आपणी आशा, आशा आपणे नाल मिलाईआ। ज़िमी असमान तक्को पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतरां खोज खुजाईआ। फेर करो इक भरवासा, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। दीनां मज़्बां वाले सारा छडो इलाका, ज़ातां पातां संग ना कोए वखाईआ। प्यार मुहब्बत विच करो इत्फ़ाका, मेल मेलणा सहिज सुभाईआ। लिखो सब दा इक्को पुरख अकाल पिता माता, दूजी जम्मण वाली कोए ना माईआ। जो एथे ओथे दो जहानां राखा, रखया करे थांउँ थाँईंआ। ओह प्रगट होवे पुरख समराथा, समरथ बेपरवाहीआ। जिस दा सिफ्तां विच अवतार पैग़म्बर गुरुआं गाया भविक्ख्त वाका, वाक्या वेखे चाँईं चाँईंआ। माण रहिण देवे ना किसे अवतार पैग़म्बर गुर जगत दे चाचा, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। जन भगतां बणके दासी दासा, सेवक सेवा सच आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा लेखे लावे सूफ़ी सन्त फ़कीर भगत अरदासा, बेनन्ती बेअन्त आपणे विच समाईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ सवरन सिँघ दे गृह पिण्ड कादराबाद ज़िला अमृतसर ✪

भगत सन्त सूफ़ी फ़कीर दयो ब्याना, बिन अक्खरां लेख लिखणा धुरदरगाहीआ। सब दा इष्ट होवे इक विष्नूं भगवाना, दूआ दूजा दूसर नज़र कोए ना आईआ। आदि पुरख अपरम्पर स्वामी होवे इक्को कान्हा, काहन कृष्न इक्को अगम्म अथाहीआ। धुर दा राम राम होवे महाना, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। जिस दा रूप अनूप होए बेपहचाना, जग नेत्र नज़र किसे

ना आईआ। उसदा इक्को सोहला गाणा, जो गहर गम्भीर बेनज़ीर शब्द शनवाईआ। खेल करे एथे ओथे दो जहानां, वाली दो जहान वड वड्याईआ। सति सतिवादी जिस दा होवे तराना, नाम कलमे सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा इक सुणाईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर भगत लेखा लिखो धर्म इबारत, लहिणा बिन कलम शाहीआ। मज़्हब दी रहे ना कोए शरारत, शरअ दा झगड़ा देणा चुकाईआ। नूर नुराना शाह सुल्ताना अगम्मी चन्द वेखणा विच भारत, सप्तस रिख भारद्वाज दए गवाहीआ। ब्रह्मण्डां खण्डां दरोही फेरे उठ उठ नारद, निरगुण धार ल्ए अंगड़ाईआ। सब दा मालक होवे इक्को वारस, वसल इक्को दए वखाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं रहे ना कोए सफ़ारिश, सफा सब दी दए चुकाईआ। सच नाम दी ल्ए कोए ना आढ़त, जगत धड़त ना कोए धड़वाईआ। इक्को हुक्म संदेशा श्री भगवान होवे मारफ़त, महिबूब इक्को रंग रंगाईआ। अक्खरां वाला रहे कोए ना आरफ़, उल्फ़त जगत ना कोए वड्याईआ। संदेशयां वाला लिखणा पए कोए ना कार्ड, हरफ़ हरूफ़ ना सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर शब्द शब्द सतिगुर दो जहानां बणे लारड, ला इक्को इक रखाईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ संपूरन कौर दे गृह पिण्ड कादराबाद ज़िला अमृतसर ✪

सन्त भगत सूफ़ी फ़कीर दयो आपणा इकबाल, किबले अर्ज़ हुक्म बेपरवाहीआ। पुरख अकाल सब दी सांझी कर धर्मसाल, दवारा इक्को इक वड्याईआ। जिथ्थे वस्त मिले नाम तेरा धन माल, ख़ज़ाना अगम्म अथाह वरताईआ। दीन मज़्हब दा रहे ना कोए सवाल, जवाबी मंग ना कोए मंगाईआ। ज़माना बदल दे हाल, हालत वेख जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सन्त भगत सूफ़ी लिखो आपणी अगम्म तमन्ना, आशा दयो दृढ़ाईआ। सारे कहो प्रभू पूरा कर दे गोबिन्द वाला कन्ना, जिस नूं कायनात समझ सक्या कोए ना राईआ। दीन मज़्हब दा मेट दे बन्ना, बनावट कूड़ ना कोए रखाईआ। इक्को रंग रंगा दे काया माटी तना, तन वजूद वज्जे वधाईआ। तेरा तेरे हथ्थ समां, सच स्वामी तेरी ओट तकाईआ। अग्गे वक्त रहे ना लम्मा, डण्डावत विच बैठ सीस निवाईआ। झगड़ा पैणा काया माटी चम्मा, चम्म दृष्टी देणी बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ज़ात पात दी सब दे अन्दरों कढ दे तम्ा, लालच जगत जहान रहे ना राईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ करनैल सिँघ दे गृह पिण्ड कादराबाद ज़िला अमृतसर ✪

सूफ़ी सन्त फ़कीर भगत आपणी आख़िर दयो सलाह, मशवरा मुशतरका इक बणाईआ। जिस दा इक्को मेरा शब्द गुरु होवे गवाह, दूजी शहादत ना कोए भुगताईआ। इक्को मन्नणा सब ने धर्म मलाह, बेड़ा इक्को हथ्थ फड़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा कहि के करना वाह वाह, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। राम कृष्न ओम अल्ला वाहिगुरु गॉड इक्को समझणा खुदा, खुदी खुदग़रज़ ना कोए रखाईआ। अग्गे वास्ते बणो ना कदे कोए जुज़ा, हिस्सा जुज़ वंड ना कोए वंडाईआ। इक महिबूब मन्नणा दिलरुबा, मुहब्बत मेहर नाल मिलाईआ। दीन मज़्ब दी किसे विच रहे ना कोए अदा, अदालती हुक्म सुणना चाँईं चाँईंआ। पिछली नूं पिच्छे कहि दयो अलविदा, अन्त आपणी अक्ख उठाईआ। अगला मार्ग सब दा होवे सिध्धा, सुध आपणी इक जणाईआ। धुर नाम कलमे विच अन्तर जाए विधा, विद्या इक्को दए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर भगत लिखो इक्को अगम्मा भाग, भगवन दए जणाईआ। इक्को नूरी जोत तक्को चराग़, जो चरागाहां करे रुशनाईआ। जिस कलयुग कूड़ी क्रिया धोणा दाग़, दुरमति मैल करे सफ़ाईआ। सब दा सांझा करना समाज, समग्री आपणा नाम वरताईआ। काया गृह मन्दिर घर सब नूं कर के आबाद, इबादत इक्को दए दृढ़ाईआ। हाज़र हज़ूर हज़रत बण ज़नाब, जनाबेआली आलीशान आपणा गृह वखाईआ। जिथ्थे पढ़नी ना पए कोए किताब, कुतबख़ाना नज़र कोए ना आईआ। इक्को सजदा दस्से आदाब, डण्डावत बन्दना इक दृढ़ाईआ। इक्को महिबूब मिले अहिबाब, मुहब्बत पै दर पै जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मार्ग रस्ता दस्से इक्को वाहिद, वाहिदे सब दे पूर कराईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ बूड़ सिँघ दे गृह पिण्ड कादराबाद अमृतसर ✪

सन्त भगत फ़कीर सूफ़ी सुणो अगम्म कलाम, फ़रमाना धुरदरगाहीआ। सब ने मन्नणा इक अमाम, निरगुण निरवैर

नूर इलाहीआ। शरअ दा रहे ना कोए ग़ुलाम, बन्धन जगत देणे तुड़ाईआ। प्यार मुहब्बत दा नाता रखणा नाल अवाम, अमल दस्सणा सहिज सुखदाईआ। मज़्हब दा करे ना कोए जराइम, मुजरम रूप ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर भगत इक्को करनी बन्दना, बन्दगी इक जणाईआ। बिना पुरख अकाल तों दर कोई नहीं मंगणा, भिखारी रूप ना कोए वखाईआ। सच हुक्म दी करे ना कोए उलँघणा, भय भउ नाल दृढ़ाईआ। पिछला लेखा सब नूं पैणा छडणा, कलयुग अन्तिम पन्ध मुकाईआ। धर्म निशाना धर्म दवारे इक्को गड्डणा, सच धर्म दी धार इक झुलाईआ। सतिजुग साचा सति सतिवादी हो के लग्गणा, लागत कीमत ना कोए रखाईआ। जिन्हां भगतां भगवान दा परिवार हो के वधणा, वाधा आपणे हथ्थ रखाईआ। पूरब लेखा जगत जिज्ञासूआं मूल ना लभ्भणा, खोज्जयां हथ्थ कुछ ना आईआ। इक्को नाम दमामा वज्जणा, डंका धुरदरगाहीआ। इक्को दीपक जोत जगणा, दो जहानां करे रुशनाईआ। इक्को तख्त निवासी सजणा, सचखण्ड दवारे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सूरा सरबंगणा, योधा युद्ध तों बाहर इक्को नज़री आईआ।

११५८ २२

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ अमराउ सिँघ दे गृह पिण्ड बल ज़िला गुरदास पुर ✪

सन्त भगत सूफ़ी फ़कीर, फ़िकरा नाम कलमा इक्को लैणा गाईआ। शरअ शरीअत तोड़ ज़ंजीर, ज़ाहर ज़हूर मन्नणा बेपरवाहीआ। जिस विच बदल जाए सर्ब तकदीर, तदबीर इक्को लैणी अपणाईआ। उठ के होका दे कबीर, काअब्यां तों बाहर दे जणाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार सांझा यार अगम्मी पीर, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों बाहर हुक्म सुणाईआ। जिथ्थे मेला होवे शाह हकीर, राउ रंक मिले वड्याईआ। अमृत बख्शे ठंडा सीर, नीर नर नरायण निझर धार चुआईआ। दीन दुनी दी बदल जाए ज़मीर, ज़र्रा ज़र्रा करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी सच संदेशा इक सुणाईआ। सन्त भगत फ़कीर सूफ़ी करो इक इरादा, विश्वाश विश्व दा इक जणाईआ। शब्द नाम धुन सुणो अनादा, अनुरागी आप जणाईआ। भेव अभेदा खोल्हे बोध अगाधा, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। सति धर्म विच कोए ना होवे अलाहिदा, दीन मज़्हब ज़ात पात वंड ना कोए वंडाईआ। शाहो भूप पुरख अकाला इक्को मन्नणा राजन राजा, जो लख चुरासी जीव जंत साध सन्त सूफ़ी फ़कीर रईयत रिहा बणाईआ।

उस दा खेल तकणा निरगुण सरगुण देस माझा, मजलस भगतां नाल लगाईआ। जिस दा हुजरा हक महिबूब वाला मुहब्बत मिले काया काअबा, बाहर खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। एका निरगुण नूर जोत करे प्रकाशा, अंधेर अंध अज्ञान दए मिटाईआ। इक्को नाम जणाए स्वास स्वासा, चार वरन अठारां बरन इक्को रंग रंगाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी सब दा इक्को पिता इक्को माता, दूसर जननी नज़र कोए ना आईआ। जिस दी चार जुग दे शास्त्र गाउंदे गाथा, अवतार पैग़म्बर गुरु सिफ्तां विच गए सालाहीआ। सो परवरदिगारा हरि निरँकारा सर्ब कला समराथा, ख़ालक ख़लक आपणी खेल कराईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर भगत जन इक्को चरण कँवल इष्ट देव पुरख अकाल टेकिओ माथा, मस्तक अवर ना किसे झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण लख चुरासी आत्म परमात्म परम पुरख हो के राजा, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा वेस वटाईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ मस्सा सिँघ दे गृह पिण्ड बल ज़िला गुरदास पुर ✪

सूफ़ी सन्त फ़कीर भगत पिछली तक्को आपणी करनी, हरि करता आप दृढ़ाईआ। कलम शाही लेख लेखणी तक्को पढ़नी, की सिफ्तां विच कीती सालाहीआ। की वंड वंडाई वरनी बरनी, ज़ातां पातां सोभा पाईआ। अन्त इक दे लग्गे चरणी, चरणोदक पी के ख़ुशी बणाईआ। सब दी इक्को अक्ख नेत्र हरनी फरनी, अन्दर वंड ना कोए वंडाईआ। धार जानणी चोटी जड़नी, पड़दा ओहला आप रखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल अग्गे आपणी करनी करनी, हरि करता सर्ब दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा इक सुणाईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर भगत वेखो आपणी भगत पुराणी, वेद पुराण देण गवाहीआ। आपणी रसना जेहवा वाली तक्को बाणी, जो रागां नादां विच कीती शनवाईआ। आपणे जन्म जन्म दी वेखो खाणी, गृह गृह पर्दा फोल फुलाईआ। आपणे मज़्ब दी दस्सो निशानी, निशाना दयो प्रगटाईआ। आपणे जीवण दी दस्सो कहाणी, किस बिध आपणा झट लँघाईआ। मेहरवान महिबूब अग्गे तक्कयो बणया अगम्मा दानी, वस्त अमोलक आप वरताईआ। झगड़ा मेट ज़िमीं असमानी, दो जहानां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। सन्त भगत सूफ़ी जन भगत वेखो खेल हरि अगम्मा, जिस दी आगमन विच बैठे ध्यान लगाईआ। जगत दी धार बदल दए समां, समाप्त करे

कूड़ लोकाईआ। झगड़ा मेटे काया चम्मा, चम्म दृष्टी दए बदलाईआ। मज़्ब दी रहिण देवे कोई ना तमां, तामस तृखा दए गंवाईआ। साचा मार्ग ला दे नवां, नव नौ चार दा रूप बदलाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नव सत्त रहिण देवे कोई ना बन्ना, बाण अणयाला तीर चलाईआ। लेखा वेखे चौदां सौ तीस अंक दा पन्ना, जिस दी पनिशमेंट विच दिसे सर्ब लोकाईआ। गोबिन्द दी शब्द गुरु दी धार कन्ना, कायनात दा पर्दा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा अगम्म भण्डार सच वस्त नाम धना, धनाढ आपणी दया कमाईआ।

१९६१
२२

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ मोहण सिँघ दे गृह पिण्ड तारा चक्क ज़िला गुरदास पुर ✪

भगत सन्त सूफ़ी फ़कीर लिखो इकरारनामा, जगत हरफ़ ना कोए लिखाईआ। सब ने इक्को इष्ट मन्नणा श्री भगवाना, आदि अन्त दा मालक जो धुरदरगाहीआ। इक्को नाम कलमा पढ़ना कलामा, इक्को शब्दी शब्दी ढोला गाईआ। इक्को घर गृह करना बिसरामा, वक्खरी वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को मन्नणा अन्तरजामा, निरगुण निराकार निरँकार ध्यान लगाईआ। शरअ दा रहे ना कोए गुलामा, मज़्ब दा बन्धन ना कोए बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सूफ़ी फ़कीर सन्त भगत सारे खोल्हो अक्ख, बिन अक्खां वेख वखाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर निरगुण नूर तक्को प्रतख, पारब्रह्म प्रभ नज़री आईआ। क्यों दीनां मज़्बां कीता वक्ख, कलमे नाम वंड वंडाईआ। मेरा आदि दा इक्को जस, अन्त दी सिफ्त इक समझाईआ। सारे माणो इक रस, रस्ता इक्को बेपरवाहीआ। पिछली करनी दी होवे बस, बस्ता सब दा दए बंधाईआ। अग्गे खेल पुरख समरथ, हरि करता आप दृढ़ाईआ। नाम निधान नौजवान निरगुण धार डोरी पावे नथ्थ, सति सरूपी धुर दी गंढ पवाईआ। शब्दी शब्द जणाए महिमा अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। कलयुग विच सतिजुग चलाउणा रथ, रथ रथवाही हो के वेखे चाँई चाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत सन्त सूफ़ी फ़कीर दीन मज़्ब विच रहिण ना देवे वक्ख, सृष्टी दृष्टी अन्दर धुर दा मेल मिलाए सहिज सुभाईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ महिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड धीरा दईआ ज़िला गुरदास पुर ✪

सन्त भगत सूफ़ी फ़कीर वेखो आपणी पिछली करनी, करनी दा करता आप जणाईआ। किस बिध लोकमात तरे साची तरनी, जगत जिज्ञासूआं विच्चों आपणा पल्लू छुडाईआ। किस गृह प्रभ सरनाई मिली सरनी, सहारा इक्को नज़री आईआ। किस बिध मंज़ल मिली चढ़नी, पाँधी बण के बैठे पन्ध मुकाईआ। केहड़ी नाम तुक मिली पढ़नी, कलमा नाम शब्द कवण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर वेखो भगत, पूरब ध्यान लगाईआ। की करनी कीती विच जगत, जगत जहान दयो दृढ़ाईआ। किस बिध तुहाडे उत्ते होया तरस, रहमत सच कमाईआ। अमृत मेघ दिता बरस, अंमिउँ रस अगम्म चुआईआ। तुहाडी पूरी कीती शर्त, शरअ ज़ंजीर कटाईआ। आशा जगत रही ना ग़रज़, ग़रीब निमाणे गोद टिकाईआ। अगला खेल वेखणा असचरज, अचरज लीला आप वखाईआ। योद्धा सूरबीर बण के मर्दाना मर्द, हुक्म देवे थांउँ थाँईंआ। ग़रीब निमाणयां वंडे दर्द, हरिजन साचे गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे हुक्म सुणाईआ। सन्त भगत सूफ़ी सुणो फ़कीर फ़िकरा, फ़िकर रहे ना राईआ। चार जुग दा बिन हरफ़ां वाला वेखो शिजरा, जिस दी हदूद ना कोए बणाईआ। जो संदेशा दिता काहन कृष्ना बिन्दरा, बिधी नाल जणाईआ। मेरी रास नहीं रहिणी बन बिन्दरा, गोपी काहन ना कोए वड्याईआ। कलयुग जगत जहान पंज तत ख़ाली होणा पिंजरा, नाम वस्त ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि , आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। सूफ़ी फ़कीर भगत वेखो सन्त, सति ध्यान लगाईआ। कल काती होवे अन्त, अन्तष्करन दए बदलाईआ। सतिजुग दा साचा प्रगटे मंत, मंतव सब दे हल कराईआ। जन भगतां मौले रुत बसन्त, फुलवाड़ी आप महकाईआ। हउमें गढ़ तोड़ के हंगत, हँ ब्रह्म वेख वखाईआ। परमात्म आत्म बण के कन्त, कन्त कन्तूहल होए सहाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्से छंत, नाम ढोला धुरदरगाहीआ। लेखा जाण जीव जंत, चुरासी वेखे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति धर्म दी सच बणाए बणत, सति सतिवादी सति सच दा मार्ग इक दरसाईआ।

१७ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ अवतार सिँघ दे गृह पिण्ड माढ़ी पनूआं ज़िला गुरदास पुर

सन्त भगत सूफ़ी फ़कीर करन निमस्कार, डण्डावत बन्दना सजदा सीस झुकाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी किरपा कर अपर अपार, पतिपरमेश्वर निरगुण निरवैर दया कमाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल पा सार, ज़िमीं असमान दो जहान खोज खुजाईआ। तेरा राह तकदे पैग़बंर गुर अवतार, बेअन्त पड़दा देणा उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चार कुण्ट दहि दिशा होया धूंआँधार, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी तेरा नूर ना कोए रुशनाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म मिले किसे ना प्रीतम यार, परवरदिगार सांझे यार कलमा हक ना कोए दृढ़ाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक होए हाहाकार, पंज तत ब्रह्म मति सति शब्द ना कोए शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर घर ठांडे मंग मंगाईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर जन भगत दर तेरे करन अर्ज़ोई, आजिज़ हो के सीस निवाईआ। जगत जहान श्री भगवान मिले किसे ना ढोई, दर घर साचे मिलण कोए ना आईआ। अन्तर निरन्तर निरगुण धार आत्म तेरी रोई, सांतक सति सतिवादी धीर ना कोए रखाईआ। अमृत रस निझर झिरना रिहा कोए ना चोई, बूँद स्वांत मेहरवान महिबूब ना कोए टपकाईआ। जगत सुहेला भगत भगवान नज़र ना आए कोई, कोटन कोटि बैठे अक्ख खुल्ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर भगत बिन हथ्थां जोड़न हथ्थ, दर ठांडे सीस निवाईआ। पुरख अकाल साहिब समरथ, पारब्रह्म तेरी वड वड्याईआ। झगड़ा मेट के काया तत अठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध आपणे रंग रंगाईआ। दुरमति मैल हर हिरदिउँ अन्दरों कट, कटाक्ष आपणा नाम लगाईआ। सच दवार खोल्ह दे हट्ट, वस्त इक्को इक वरताईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सारे नाम लैण रट, रट्टा कूड़ी क्रिया देणा चुकाईआ। अमृत अम्मीउँ देणा रस, रसना रस ना कोए वड्याईआ। निज नेत्र लोचण नैण खोल्ह दे अक्ख, बिन अक्खरां दरस आपणी पढ़ाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते निरगुण नूर कर प्रकाश, अंध अज्ञान रहिण ना पाईआ। साचे मण्डल बिन गोपी काहन पा रास, निरगुण निरगुण आपणी कल वरताईआ। हउँ सेवक तेरे दासी दास, दर ठांडे मंग मंगाईआ। सृष्टी दी दृष्टी अन्दर कर वास, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। तूं साहिब सर्ब गुणतास, गुणवन्ता इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन दूजा देवे कोए ना साथ, सगला संगी नज़र कोए ना आईआ।

११६३
२२

✪ १७ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ रणधीर सिँघ दे गृह पिण्ड माढ़ी पनूआं ज़िला गुरदास पुर ✪

भगत सन्त सूफ़ी फ़कीर कहिण प्रभू साडा सजदा, डण्डावत बन्दना विच सीस झुकाईआ। सदी चौधवीं वेख खेल घर घर दा, काया गृह गृह ध्यान लगाईआ। तेरा मानव बणया कोए ना तेरा बरदा, बन्दीख़ाना सके ना कोए तुड़ाईआ। भय विच भाउ कोए ना करदा, निम्रता विच सीस ना कोए झुकाईआ। वरन वरन नाल लड़दा, मज़्हब मज़्हब नाल टकराईआ। बौहड़ी दरोही तेरी मंजल कोए ना चढ़दा, सचखण्ड दवारे मिलण कोए ना जाईआ। तेरा दरस पावे कोए ना नरायण नर दा, नर हरि तेरा रंग ना कोए रंगाईआ। ज़ोर वध गया कलयुग कल दा, कलकाती आपणी कल रहे वरताईआ। खेल हो गया कपट छल दा, अछल छलधारी तेरी सार किसे ना आईआ। तूं मालक ख़ालक जल थल दा, महीअल तेरी वड वड्याईआ। आपणा भेव दस्स निहचल धाम अटल दा, अटल पदवी इक दृढ़ाईआ। बिन तेरी किरपा आत्म परमात्म जोत कोए ना रलदा, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। मेहरवान महिबूब झगड़ा मेट दे पंच विकारे दल दा, कूड़ कुड़यार दलिद्दर अन्दरों दे कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि साहिब तेरी सरनाईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर भगत कहिण साडी नमो नमो निमस्कार, दर ठांडे ख़ाक धूढ़ रमाईआ। प्रभू उठ वेख आपणा संसार, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलाईआ। नाल रला तेई अवतार, हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद अक्ख खुल्ह्राईआ। सतिगुर दस लै उठाल, नानक गोबिन्द भेव चुकाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप दीन दुनी दी वेख चाल, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। बिन हरिनामे सारे होए कंगाल, नाम धन दौलत नज़र कोए ना आईआ। मुरीदां मुर्शद पुछे कोए ना हाल, हालत बिगड़ी जगत लोकाईआ। सति धर्म दा वज्जे कोए ना ताल, तलवाड़ा रंग ना कोए रंगाईआ। सचखण्ड निवासी तेरी नज़र ना आए किसे धर्मसाल, दरगाह साची सोभा कोए ना पाईआ। सदी चौधवीं साडी अन्त कन्त भगवन्त इक बेनन्ती इक सवाल, सवाली हो के मंग मंगाईआ। श्री भगवान नौजवान मर्द मर्दान आपणी सृष्टी दृष्टी अन्दर संभाल, सम्बल बहि के आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन आदि जुगादि जुग चौकड़ी करे ना कोए प्रितपाल, प्रितपालक ख़ालक नज़र कोए ना आईआ।

✪ १७ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ बीबी सुरिन्दर कौर दे गृह पिण्ड माढ़ी पनूआं ज़िला गुरदास पुर ✪

सन्त भगत सूफ़ी कहिण प्रभ साडा तेरे अग्गे होका, तेरे हुक्म नाल जणाईआ। सति रिहा ना किसे लोका, चौदां लोक देण गवाहीआ। माण रिहा ना किसे सलोका, सोहले रोवण मारन धाईआ। वेख आपणा जुग चौथा, की कलयुग कल वरताईआ। धर्म दी धार समझे कोए ना पोथा, पुस्तक सारे फोल फुलाईआ। मेहरवान महिबूब सदी चौधवीं तक मौका, मुकम्मल आपणी दया कमाईआ। तेरा नाम जपदे सारे बुल्ल्हां होठां, हिरदे सक्या ना कोए वसाईआ। दीन मज़्ह्ब दीआं चार कुण्ट चोटां, चोटी चढ़ के तेरा दरस कोए ना पाईआ। मनूआं मन होया खोटा, दिवस रैण माया ममता विच ललचाईआ। आसा मनसा पूरी करदे साडी लोचा, दर तेरे आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां अन्तर निरन्तर अवर रहिण नहीं देणी सोचा, सोच समझ शब्द रमज़ नाल आपणे नाल रखाईआ।

१९६५ ✪ १७ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ विरसा सिँघ दे गृह श्री हरि गोबिन्द पुरा शहर ज़िला गुरदास पुर ✪ १९६५

२२ सन्त भगत सूफ़ी कहिण प्रभ मेट दे क्रिया कुकर्म हूंझ दे कूड़ा, कायनात काया मन्दिर अन्दर कर सफ़ाईआ। पारब्रह्म २२

पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझे यार चतुर सुघड़ बणा मूर्ख मूढ़ा, अंध अज्ञान विच जहान लोकमात रहिण ना पाईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार सच ध्यान बख्श दे चरण धूढ़ा, श्री भगवान नौजवान मर्द मर्दान टिक्के ख़ाक नाम रमाईआ। चार वरन अठारां बरन सच प्रीती रंग चाढ़ दे गूढ़ा, एथे ओथे दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। हउमे हंगता गढ़ तोड़ ग़रूरा, पुरख अबिनाशी घट निवासी आपणी दया कमाईआ। सति सरूप शाहो भूप निरगुण जोत बख्श दे नूरा, अनहद नादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द धुन कर शनवाईआ। सति सरूप दरस दिखा हाज़र हज़ूरा, हज़रतां दे हज़रत आपणा पर्दा देणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। सूफ़ी फ़कीर जन भगत करन अरदास, सचखण्ड दवारे दरगाह साची मुकामे हक हक सीस निवाईआ। परवरदिगार सांझे यार परम पुरख आत्म परमात्म पा रास, निरवैर निराकार निरँकार बिन गोपी काहन आपणी खेल खिलाईआ। दीन दयाल दयानिध ठाकर सब दी पूरी कर आस, निरासा नज़र कोए ना आईआ। कूड़ क्रिया कर्म कांड झगड़ा मेट ज़ात पात, दीन मज़्ह्ब आत्म ब्रह्म दे समझाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा कलयुग रहे ना अंधेरी रात, सतिजुग साचा चन्द नूर जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दरगाह साची सचखण्ड दवार इक्को आस रखाईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर भगत नेत्र नैण वहावण नीर, दरोही तेरा नाम खुदाईआ। शाह पातशाह शहिनशाह गुणी गहीर, गहर गवर तेरी सरनाईआ। आपणा खेल दस्स बेनज़ीर, नज़रीआ सब दा दे बदलाईआ। शरअ तोड़ ज़ंजीर, शरीअत अगम्मी इक जणाईआ। चार जुग दी पिछली मेट लकीर, लाईन ऐन आपणी दे समझाईआ। जिस नूं कट सके ना कोए शमशीर, शस्त्र वंड ना कोए वंडाईआ। सृष्टी दृष्टी रहे ना मात दिलगीर, दिलबर हो के होणा सहाईआ। हउमे हंगता कढ दे पीड़, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों अग्गे कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर जन भगत रहे झुक, निउँ निउँ सीस निवाईआ। पुरख अकाल कलयुग कूड़ी क्रिया पैंडा जाए मुक, मुकम्मल आपणा हुक्म दे वरताईआ। तेरे नाम दा गीत सुहागी इक्को होवे तुक, तुख्म तासीर इक्को दो जहान दे बदलाईआ। हर हिरदे अन्दर कर सुच्च, संजम आप इक दृढ़ाईआ। पवित्र कर दे मात गर्भ दे उलटे रुक्ख, नव अठारां पन्ध मुकाईआ। धुर दा मालक हो के तुठ, दयावान दया कमाईआ। कूड़ क्रिया दी रहे कोए ना लुट्ट, लुटेरा कलयुग मातलोक विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। सतिगुर सच दुलारा तेरा जाए उठ, सति सतिवादी हो के लए अंगड़ाईआ। अमृत जाम प्याए हर हिरदे अन्दर घुट्ट, नाम प्याला हथ्थ उठाईआ। निरन्तर लिव किसे ना जाए छुट, अन्तर आपणा मेल कराईआ। तूं पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अबिनाशी अचुत, चेतन सुरती सब दी दे कराईआ। माया ममता झगड़ा मेट तृष्ना भुक्ख, सांतक सति आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। साधू सन्त फ़कीर भगत नेत्र खोलॣण अक्ख, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, हरि सतिगुर तेरी वड वड्याईआ। सृष्टी होई तेरी तेरे नालों वक्ख, गृह मन्दिर मिल के वज्जे ना कोए वधाईआ। मन कल्पणा सारे रहे नट्ठ, दिवस रैण भज्जण वाहो दाहीआ। तेरा अक्खरां वाला नाम रहे रट, सिफ्तां वाली जगत वड्याईआ। जगत दवार दी मंज़ल सके कोए ना टप्प, ब्रह्मण्ड खण्ड टापूआं पन्ध मुकाईआ। सच दवार दा इक्को खोलॣ दे हट्ट, नाम निधान श्री भगवान आप वरताईआ। मानव ज़ाती लाहा लए खट्ट, खटका अवर रहे ना राईआ। शब्द अगम्मी हरि अगम्मड़े मार सट्ट, सोई सुरत अकाल मूर्त लै जगाईआ। शब्द धुन सुणा अनहद, नादी नाद आप जणाईआ। निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, अंध अज्ञान देणा मिटाईआ। काया मन्दिर अन्दर सच दवार पा आपणी रास, सुरती शब्द मिल के वज्जे वधाईआ। पन्ध मुका पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर लेखा दे चुकाईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी पतिपरमेश्वर तेरे अग्गे इक अरदास,

बेनन्ती बिनै दिती दृढ़ाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं पूरा कर भविक्ख्त वाक, वाक्या वेख जगत लोकाईआ। बिन तेरी किरपा खुल्ल्हे किसे ना ताक, पर्दा अन्दरों ना कोए उठाईआ। दीन दुनी कर थक्की पूजा पाठ, ढोले सिफ्तां वाले गाईआ। भाग लग्गा किसे ना काया माट, गृह मन्दिर ना कोए रुशनाईआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान सन्त भगत सूफ़ी फ़कीर कहिण कलयुग कलि कल्की मेट अंधेरी रात, नव सत्त ब्रह्म मति श्री भगवन्त भगवन आपणी दया देणी कमाईआ।

✪ १७ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ करतार सिँघ दे गृह पिण्ड भूम्बली ज़िला गुरदास पुर ✪

सन्त भगत सूफ़ी कहिण पुरख अकाल सच्चे सुल्तानी, शाह पातशाह शहिनशाह दर तेरे मंग मंगाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार धुर दे यार आदि अन्त दे दानी, दयावान दीन दयाल मेहर नज़र इक उठाईआ। सत्त दीप नौ खण्ड चार कुण्ट दहि दिशा कूड़ी क्रिया मेट बेईमानी, माया ममता मोह हंगता गढ़ तुड़ाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी तेरी होवे इक निशानी, अलख अगोचर अगम्म अथाह पड़दा देणा चुकाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्तर निरन्तर जल्वा बख्श जोत नुरानी, अंध अज्ञान श्री भगवान नौजवान मर्द मर्दान देणा गंवाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परम पुरख हर हिरदे बणना जाण जाणी, जानणहार तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरी महिमा सिफ्त सालाह बेपरवाह लिखी जाए नाल कलम ना कानी, स्याही चले ना कोए चतुराईआ। भेव अभेव खोल्ह दे मंज़ल महिबूब दस्स रुहानी, रूह बुत अबिनाशी अचुत आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक लेखा जाण जगत अवामी, कामल मुर्शद तेरे अग्गे वास्ता पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड दवार एकँकार तेरे अग्गे झोली डाहीआ। जन भगत सन्त सूफ़ी फ़कीर आखण नाल ज़ोर, बौहड़ी दरोही तेरा नाम खुदाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा हर घट अन्दर वड़या चोर, सति वस्त अमोलक लुट्टे थांउँ थाँईंआ। बिना तेरी दीप जोत होया अंधेरा घोर, सूर्या चन्न कम्म किसे ना आईआ। अबिनाशी करते घट निवासी तेरी सब नूं लोड़, लोड़ींदे साजण आपणा पड़दा देणा चुकाईआ। पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड ज़िमीं असमान शब्दी सतिगुर उठ उठ दौड़, दो जहानां आपणा पन्ध मुकाईआ। हउमे हंगता माया ममता कूड़ी क्रिया भन्न दे रीठा कौड़, अमृत अंमिउँ रस बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द देणा चुआईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म विछड़ी सब दी जोड़, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। मानस जन्म जगत जहान जावे सौर, सूरबीर सुल्तान सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगत सन्त कहिण प्रभू पुरख अकाल दीन दयाल अन्तष्करन विच तेरी साची लोड़, निरन्तर मेल मेलणा सहिज सुभाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि नित नवित जुग चौकड़ी तेरा खेल अगम्म लेखा मुका दे तोर मोर, आत्म परमात्म परमात्म आत्म पर्दा रहे ना राईआ।

✪ १७ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ जुगिन्दर सिँघ दे गृह पिण्ड डडवां ज़िला गुरदास पुर ✪

सन्त भगत सूफ़ी फ़कीर कहिण प्रभ मेट कलयुग अंधेरी राती, नव नौ चार कूड़ी क्रिया दे मुकाईआ। अमृत रस निझर झिरना बख्श बूंद स्वांती, अगम्म अथाह अंमिउँ रस आप चुआईआ। नाम निधान श्री भगवान एका बख्श अगम्मी दाती, दयानिध ठाकर स्वामी आपणी दया कमाईआ। काईआ मन्दिर अन्दर बोध अगाधे मार झाती, पर्दा परदयां विचें आप उठाईआ। तेरे नाम रस दा दिसे कोए ना साकी, सच प्याला दीन दयाला हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। गृह मन्दिर अन्दर मंज़ल चड़े कोए ना घाटी, सचखण्ड दवार एकँकार मिलण कोए ना आईआ। आवण जावण लख चुरासी मुके किसे ना वाटी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरा दरस कोए ना पाईआ। दीन दुनी दा झगड़ा तक काग़ज़ाती, तेरा नाम कलमा करे लड़ाईआ। सच दा सच बणे ना कोए इमदादी, सगला संग ना कोए निभाईआ। सदी चौधवीं सृष्टी दृष्टी अन्दर होई बाग़ी, मन हँकार विकार ना कोए मिटाईआ। धुन आत्मक शब्द राग दा दिसे कोए ना रागी, अनहद नादी नाद ना कोए शनवाईआ। बौहड़ी कलयुग जीवां सोई सुरत मूल ना जागी, अकाल मूर्त तेरे विच ना कोए समाईआ। दरगाह सच घर दा दिसे कोए ना हाजी, हुजरा हक तेरा नज़र कोए ना आईआ। किरपा कर मेहरवान महिबूब अगम्मे वाहिदी, वाहवा तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड दवार एकँकार दर ठांडे मंग मंगाईआ। भगत सन्त फ़कीर सूफ़ी कहिण प्रभ आपणी दीन दुनी वेख, बिन नेत्र नैण अक्ख उठाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा वध्या भेख, सति सच नज़र कोए ना आईआ। तेरा नूर नुराना नूर सके कोए ना वेख, जोती जाते पुरख बिधाते तेरा दरस कोए ना पाईआ। झगड़ा प्या ज़ात पात मुल्ला शेख, मुसायक पंडत काज़ी रहे कुरलाईआ। धर्म धार दी रुत्त बसन्त मौले कोए ना चेत, चेतन सुरत ना कोए कराईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म करे कोए ना हेत, निरगुण निरगुण मेला मेल ना कोए मिलाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर वेख आपणी खेड, अवतार पैग़म्बर गुर बैठ ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दरगाह साची सच दवार दर तेरे मंग मंगाईआ। जन भगत कहिण प्रभ अवतार पैग़म्बर गुरु

तक, निरगुण धार ध्यान लगाईआ। तूं सर्ब कला समरथ, समरथ बेपरवाहीआ। सब दे ख़ाली होए हथ्थ, चारो कुण्ट रहे वखाईआ। निरगुण सरगुण धार रहे नस्स, दो जहान भज्जण वाहो दाहीआ। जिधर तकण चार कुण्ट दहि दिशा कलयुग अंधेरी रैण मस्स, मस्त खुमारी नाम ना कोए रखाईआ। जो नाम कलमा जगत जिज्ञासू आए दस्स, अक्खरां विच सिफ्ती ढोले गाईआ। उन्हां माणे कोए ना रस, रस्ता काया मन्दिर अन्दर नज़र किसे ना आईआ। बिन हरिनामे ख़ाली होए हट्ट, वस्त अमोलक काया गोलक ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक ख़ालक प्रितपालक पतिपरमेश्वर तेरी ओट तकाईआ। जन भगत सन्त कहिण प्रभ वेख लै आपणी सृष्टी, श्रेष्ट आपणा ध्यान लगाईआ। अन्तर खुल्ही किसे ना दृष्टी, देव आत्मा वज्जे ना कोए वधाईआ। तेरे नाम निधान बेड़े चढ़े कोए ना किशती, दरगाह साची मिलण कोए ना जाईआ। सिदक भरोसा रिहा ना किसे गृहस्ती, सांतक सति ना कोए जणाईआ। लेखा मुका दे टांक जिसती, एका दूआ भरम ना कोए मिटाईआ। साडी बेनंती असीं पूजा चाहुंदे एकँकार इक दी, इक इकल्ले तेरी सच सरनाईआ। खेल ख़त्म करदे पथ्थर इट्ट दी, पाहन पूजण कोए ना जाईआ। दुहाई शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान पढ़दयां सुरत किसे ना टिकदी, मन मनसा तेरे विच ना कोए समाईआ। वड्याई रही ना मुन रिख दी, ऋषीशर मुनीशर बैठे मुख भवाईआ। साची धार समझा दे परम पुरख परमात्म आत्म गोबिन्द धार धुर दे सिख दी, सिख्या सति सच जणाईआ। आसा मनसा प्यार मुहब्बत दस्स दे आपणे हित दी, हितकारी हो के मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी नूर नुरानी शाह सुल्तानी जोत अगम्मी धार किसे ना दिसदी, जग नेत्र जिज्ञासू पेखण कोए ना पाईआ।

११६८
२२

✪ १७ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ जागीर सिँघ दे गृह पिण्ड सोहल ज़िला गुरदास पुर ✪

भगत सन्त सूफ़ी फ़कीर करो ना सोग, चिन्ता ग़म ना कोए रखाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला कलयुग मेटे हउमे रोग, हंगता गढ़ दए तुड़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्से साचा जोग, जुगती काया मन्दिर अन्दर इक समझाईआ। अमृत रस निझर बख़्शे चोग, बूंद स्वांती इक अकांती आप टपकाईआ। शब्द अनादी अनहद सुणाए सलोक, सोहला अगम्म अथाह दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक जणाईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर ना करो कोई विचार, विचरण दी लोड़ रहे ना राईआ। सो पुरख निरँजण किरपा करे विच संसार, हरि

पुरख निरँजण आपणी दया कमाईआ। एकँकारा खेले खेल सच्ची सरकार, आदि निरँजण जोती जाता डगमगाईआ। अबिनाशी करता पावे सार, श्री भगवान वेखे थांउँ थाँईंआ। पारब्रह्म प्रभ पड़दा दए उतार, ब्रह्म मेला होए सहिज सुभाईआ। शब्द अनादी नाद जणाए धुन्कार, अनरागी आपणा राग दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक होए सहाईआ। सन्त भगत सूफ़ी ना अन्दर करो ग़म, चिन्ता नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाला झगड़ा मेटे काया माटी चम्म, चम्म दृष्टी सृष्टी अन्तर निरन्तर दए बदलाईआ। पवण स्वासी लेखा जाणे दम, दामनगीर आपणी करनी खेल खिलाईआ। पड़दा लाहे आत्म ब्रह्म, पारब्रह्म जल्वागर एका नूर करे रुशनाईआ। सतिजुग साचा सच चलाए धर्म, धरनी धरत धवल धौल वज्जे वधाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे कुकर्म, कर्म कांड दा लेखा दए चुकाईआ। जन भगतां नेत्र खोल्ह हरन फरन, निज लोचण नैण करे रुशनाईआ। सच प्रीती बख़्श आपणे चरण, चरणोदक अमृत जाम प्याईआ। आत्म परमात्म ढोला दस्से पढ़न, सिख्या साख्यात इक समझाईआ। गृह मन्दिर अन्दर मंज़ल दस्से चढ़न, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर अन्तर अन्तर वेखो मार के झाती, पर्दा पर्दानशीं आप उठाईआ। सब दा लेखा लहिणा देणा पूरा कर

११७० २२ बाकी, बाकायदा आपणा हुक्म वरताईआ। सतिजुग कथा कहाणी दस्सां साची, सति सतिवादी आपणा हुक्म वरताईआ। बोध ११७० २२

अगाधा शब्द जणावां अनादी, अनहद नाद आत्म धुन आप उपजाईआ। शरअ रहिण ना देवां मुल्लां काज़ी, सदी चौधवीं मुहम्मद लेखा पूर कराईआ। हज़रत ईसा रहे ना कोए इमदादी, मूसा मुसलसल आपणा हुक्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा धर्म इक प्रगटाईआ। सन्त भगत सूफ़ी सुणो अगम्म फ़रमाना, हरि करता आप दृढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम वरते प्रभ दा भाणा, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। तख़्त निवासी रहे कोए ना राजा राणा, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा होए हैराना, हैरानी अन्दर सर्ब कुरलाईआ। नव सत्त रहे कोए ना माणा, माण ताण ना कोए जणाईआ। इक्को हुक्म वरते श्री भगवाना, भगवन आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, भगवन आपणी करनी हरि करता आपणे हुक्म नाल वरताईआ।

✪ १८ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ गुरचरण सिँघ दे गृह पिण्ड पंडोरी ज़िला कपूरथला ✪

सूफ़ी सन्त फ़कीर भगत कहिण प्रभ तकी तेरी चार जुग दी आरजा, आजज़ हो के बैठे ध्यान लगाईआ। भेव आया ना किसे अगम्मी शब्द सार दा, सार शब्द सार किसे ना पाईआ। कन्ढ़ा तक्कया नहीं आर पार दा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी अन्त कहिण कोए ना पाईआ। लेखा जाणया नहीं अगम्मी यार दा, अगम्म अगम्मड़े तेरी वड वड्याईआ। खेल तक्कया जीव जगत जहान संसार दा, संसारी भण्डारी सँघारी जो बैठे खेल बणाईआ। तेरा रूप अनूप वेख्या परवरदिगार दा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक ध्यान लगाईआ। दर तेरे बिन तेरी किरपा ना कोए पुकारदा, पुनह पुनह सीस ना कोए निवाईआ। कलयुग अन्तिम वेख तेरा दीन मज़्ब बणया गढ़ हँकार दा, हउमे हंगता ना कोए गंवाईआ। सति सरूप किसे नज़र ना आए तेरा सति करतार दा, करते पुरख तेरा दरस कोए ना पाईआ। जगत मलेछां रूप धरया ग़द्दार दा, बेमुख होई कूड़ लोकाईआ। बेख़बर संदेशा दे दे नाम ख़बरदार दा, आलस निंद्रा ग़फ़लत सब दी दे मिटाईआ। वक्त सुहञ्जणा कर आपणी सतिगुर शब्द बहार दा, रुतड़ी इक्को इक महकाईआ। गुलशन महका दे हरिजन रूप बणा गुलज़ार दा, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। वक्त सुहञ्जणा होए तेरे दरस दीदार दा, निज नेत्र लोचन नैण कर रुशनाईआ। झगड़ा मुका दे अवतार पैग़म्बर गुरु मुख़्त्यार दा, मुख़्त्यारनामा रहिण कोए ना पाईआ। जीव जगत जहान इक्को तेरा नाम होवे उच्चारदा, इक्को ढोला सोहला सिफ्त सालाहीआ। इक्को लेखा होवे कातब तेरे लिखार दा, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को लहिणा देणा होवे मानस ज़ाती भगत दवार दा, भगवन आपणा संग रखाईआ। कलयुग कूड़ा किसे ना होवे वंगारदा, कूड़ कुड़यार देणा मिटाईआ। मेल मिलावे आत्म परमात्म पुरख नार दा, नर नरायण इक्को गृह सुहाईआ। जिथ्थे तेरा शब्द अगम्मी राग सुणावे तेरी धुन्कार दा, अनरागी अगम्म दृढ़ाईआ। प्रकाश होवे तेरे ज़हूर ज़ाहर दा, निरगुण निरवैर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगत सुहेले कोई ना तारदा, सूफ़ी सन्त फ़कीरां दरगाह साची सचखण्ड ना कोए बहाईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ जुगिन्दर सिँघ दे गृह पिण्ड फतिह गढ़ ज़िला कपूरथला ✪

सन्त भगत सूफ़ी कहिण प्रभ कलयुग मेट अंधेरी रैण, अंध अज्ञान दे चुकाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर खोल्ह निज नैण, लोचन नैण अक्ख प्रतख इक गुसाँईआ। चार वरन अठारां बरन नाता जोड़ भाई भैण, दीन मज़्ब शरअ करे ना कोए लड़ाईआ।

कूड़ी क्रिया विच कलयुग जीव मूल ना वहिण, नाम धार एकँकार इक दरसाईआ। सदी चौधवीं मुहम्मद पूरा कर दे लैण देण, बीस बीसे हज़रत ईसा नाल मिलाईआ। लेखा बाकी रहे ना कोए बाल्मीक रमाइण, राम रामा श्री भगवाना आपणा पड़दा देणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे ओट तकाईआ। जन भगत सन्त सूफ़ी कहिण प्रभ बख्श अगम्मी वथ, प्रेम प्रीती इक वरताईआ। सतिजुग सच चला रथ, रथ रथवाही हो सहाईआ। तूं सर्ब कला समरथ, करता पुरख इक अख्वाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर दे भट्ठ, भाण्डा भरम भाओ भनाईआ। प्रकाश कर दे तत अठ, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। हर घट अन्दर धीरज दे सति, सति सन्तोख आपणा नाम दृढ़ाईआ। जगत जीवां पवित्र कर के मति, मन मति दा डेरा ढाहीआ। सचखण्ड निवासी इक्को मार्ग दे दस्स, दहि दिशा तेरी होवे सच पढ़ाईआ। हर हिरदे जाणा वस, घट घट आपणा आसण लाईआ। तेरी सरन सरनाई जगत जिज्ञासू जाण ढह्व, डण्डावत बन्दना सजदा सीस इक जगदीश निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धरनी धरत धवल धौल उत्ते धर्म दी धार चला दे सच, सच दे मालक आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ मुणशी राम दे गृह पिण्ड बेगोवाल ज़िला हुश्यारपुर ✪

सूफ़ी सन्त भगत रहे आख, बिन अक्खरां रहे दृढ़ाईआ। धुर दे मालक साहिब अबिनाश, अबिनाशी करते ध्यान लगाईआ। तेरी सृष्टी होई गुस्ताख़, मन मनसा विच हल्काईआ। आत्म परमात्म नाता तुटा साक, सज्जण सतिगुर मेल ना कोए मिलाईआ। रूह बुत दिसे कोए ना पाक, पतित पुनीत ना कोए बणाईआ। जो अवतार पैग़म्बर गुर गए आख, संदेशा धुर दा इक दृढ़ाईआ। सो सब दा लेखा वेख मार झात, पर्दा ओहला मात उठाईआ। सति सच दा रिहा कोए ना साथ, धर्म दवार ना कोए चतुराईआ। रसना जेहवा सारी सृष्टी करदी पाठ, अन्तर लिव ना कोए लगाईआ। साची मंज़ल चढ़े कोए ना घाट, सचखण्ड दवारे तेरा दरस कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण निरवैर इक्को तेरे उत्ते विश्वास, विश्व दे मालक मेहर नज़र लैणी उठाईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ अर्जन सिंघ दे गृह पिण्ड सलीम पुर ज़िला हश्यारपुर ✪

सन्त भगत सूफ़ी कहिण प्रभू तेरीआं अन्त उडीकां, बिन नैणां सर्ब ध्यान लगाईआ। चार जुग दे शास्त्र सिमरत वेद पुराण करन तस्दीकां, शहादत अवतार पैग़म्बर गुरु रहे भुगताईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया उत्ते अन्तिम मार आण के लीकां, लाईन ऐन आपणी दे लगाईआ। लेखा वेख लख चुरासी जीव जीअ का, जागरत जोत बिन वरन गोत आप प्रगटाईआ। तूं साहिब स्वामी वड राजन राज , नर नरायण अगम्म अथाहीआ। तुध बिन सदी चौधवीं दिसे कोए ना मीता, मित्र प्यारा नज़र कोए ना आईआ। बौहड़ी कलयुग अन्दर सतिजुग बदल दे रीता, रीतीवान तेरी वड्याईआ। कूड़ी क्रिया रस मेट दे फीका, अमृत अंमिउँ रस आप चुआईआ। तूं मेरा मैं तेरा सब नूं दस्स दे गीता, गहर गम्भीर बेनज़ीर आपणा हुक्म सुणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप झगड़ा मेट दे मन्दिर मसीता, काअब्यां करे ना कोए लड़ाईआ। तेरा नाम निधाना नौजवाना सब नूं लग्गे मीठा, अनरस आपणा दे चखाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक पंज तत कौड़ा रहे मूल ना रीठा, विख रूप नज़र ना आईआ। सांतक सति करा दे साढे तिन्न हथ्थ अंगीठा, त्रैगुण माया अग्न ना कोए जलाईआ। जन भगत कहिण प्रभ रंग चाढ़ अगम्म मजीठा, सन्त साजण बैठे ध्यान लगाईआ। आत्म ब्रह्म दस्स आपणी प्रीता, प्रीतम आपणा मेल मिलाईआ। झगड़ा रहे ना ऊचां नीचां, ज़ात पात वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को नाम कलमा तेरी होवे हदीसा, हज़रतां तों बाहर कर पढ़ाईआ। सच दवार एकँकार दस्स आप जगदीशा, जगदीश्र आपणी दया कमाईआ। सदी चौधवीं लेखा पूरा कर दे बीस बीसा, बीस इकीसे आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, दो जहान तेरा अगम्म बागीचा, बाग़बान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक उठाईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ भगवान सिंघ दे गृह पिण्ड ओड़ मुड़ टांडा ज़िला हुश्यार पुर ✪

सन्त भगत सूफ़ी कहिण प्रभ भगती दा रिहा कोए ना मुल्ल, अमुल्ल तेरी सार किसे ना पाईआ। अन्तर आत्म दीपक सब दा होया गुल्ल, निरगुण नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। नाभी खिड़या किसे ना फुल्ल, कँवल रंग ना कोए रंगाईआ। अमृत सब दा गया डुल्ल्, बूँद स्वांती रस ना कोए चखाईआ। रसना गाउंदे नाल बुल्ल्, हिरदे सक्या ना कोए वसाईआ। त्रैगुण अग्नी बले काया चुल्ल्, सांतक सति ना कोए वरताईआ। माया ममता विच गए रुल, फड़ बाहों बाहर ना कोए कढ्ढाईआ।

साचे तोल मूल ना गए तुल, कीमत सच ना कोए चुकाईआ। भाग लग्गा ना किसे कुल, कुल मालक तेरी बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं मानव बूटा रिहा हुल, पत्त टहिणी फल फुल्ल नज़र कोए ना आईआ। तूं मालक किरपा करदे सुल्हकुल, सृष्ट सबाई दया कमाईआ। चरण चरणोदक दे दे धूल, धूल टिक्के ख़ाक रमाईआ। आत्म परमात्म दस्स असूल, असल आपणा पड़दा लाहीआ। मेल मिला कन्त कन्तूहल, हरि करते धुरदरगाहीआ। तैनूं सजदा करदे पैग़म्बर रसूल, अवतार गुरु सीस झुकाईआ। सच बेनन्ती कर कबूल, किबलेअज तेरी वड्याईआ। तेरा शब्द हुक्म सदा माकूल, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। तेरे नाम दा सच पंघूँणा लैण झूल, जीव जहान हो सहाईआ। किसे कम्म ना आवे शंकर वाली त्रिशूल, नाम कलमे रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तेरी सरनाईआ। जन भगत सन्त सूफ़ी दर तेरे अगम्मी ढट्ठे, ढहि ढहि सीस निवाईआ। झगड़ा मेट दे मन्दिर मट्ठे, मसीतां मसला हल्ल कराईआ। वरन बरन कर इक्ट्ठे, ज़ात पात भरम ना कोए भुलाईआ। भाग लगा काया मट्टे, साढे तिन्न हथ्थ कर रुशनाईआ। नज़र आ तत अठे, पर्दा ओहला दे चुकाईआ। कलयुग जीव तेरे नाम जाण रत्ते, रत्न अमोलक लै बणाईआ। कूड़ विकार उत्ते विजै पा फ़तै, डंका इक्को नाम सुणाईआ। तन वजूद कोई ना तपे, तृष्ना अग्न देणी बुझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सृष्ट सबाई इक्को नाम जपे, सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश बणा सज्जण सके, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई इक्को गंढ पवाईआ। बिना तेरे दरस दूसर इष्ट कोई ना तके, इक्को जल्वा नूर कर रुशनाईआ। मेहरवान पुरख समरथे, तेरे हथ्थ वड्याईआ। सब दे परवान कर टेके मथ्थे, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत जीव जहान निरगुण धार सरगुण तेरे बच्चे, बचपन सब दा आपणे लेखे लाईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ अमरीक सिँघ दे गृह पिण्ड सराई ज़िला हुश्यार पुर ✪

सूफ़ी सन्त भगत जन कहिण श्री भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। सो पुरख निरँजण होणा मेहरवान, हरि पुरख निरँजण पर्दा अगम्म उठाईआ। आदि निरँजण दीपक जोत जगाउणा महान, अबिनाशी करते अंध अंधेरा देणा मिटाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर हो सवाधान, सति सतिवादी आपणी लै अंगड़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मार ध्यान, दो जहानां पर्दा दे चुकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु लेखा वेख ज़िमी असमान, ज़ाहर ज़हूर आपणी कल प्रगटाईआ। सच धर्म दा रिहा

ना कोए निशान, कूड़ निशाने जगत झुलाईआ। अमृत रस मिले ना पीण खाण, रसन विकार कूड़ हल्काईआ। अनादी धुन सुणे ना कोए सच धुन्कान, शब्द अनुरागी राग ना कोए जणाईआ। काया मन्दिर अन्दर होया सुंञ मसाण, सच समग्री हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। जन भगत सन्त सूफ़ी कहिण किरपा कर सतिगुरु मीत, मित्र प्यारे तेरी सरनाईआ। आत्म ब्रह्म पारब्रह्म दस्स दे रीत, रीतीवान अन्तर निरन्तर पड़दा देणा उठाईआ। शब्द अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी सुणा गीत, अगम्म अगम्मड़े आपणा राग अलाहीआ। निरगुण निरवैर निरँकार वस चीत, चेतन सुरती दे वखाईआ। मालक ख़ालक प्रितपालक बण जगदीश, जगदीश्र आपणा संग निभाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट विपरीत, प्रीतम प्रीत आपणी दे चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरे हथ्थ वड्याईआ। सन्त भगत सूफ़ी कहिण वेख कलयुग अन्त अंधेरा, अंध अज्ञान दे मिटाईआ। कूड़ क्रिया चुका दे डेरा, सति सच शब्द कर शनवाईआ। भेव खुल्ह्हा दे तेरा मेरा, आत्म परमात्म नूर इक चमकाईआ। मन कल्पणा रहे कोए ना झेड़ा, झगड़ा कूड़ ना कोए लड़ाईआ। साढे तिन्न हथ्थ वसा दे खेड़ा, खिड़की बन्द किवाड़ी दे खुल्ह्हाईआ। शौह दरया ना रुढ़े बेड़ा, नईया नौका आपणे नाम चढ़ाईआ। आवण जावण रहे ना अण्डज जेरा, उत्भुज सेत्ज पन्ध देणा मुकाईआ। मेहरवान मेहरवान महिबूब करदे मेहरा, मेहर नज़र इक उठाईआ। साबत रिहा कोए ना चेरा, चेला गुर संग ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी दया कमाईआ। सन्त भगत सूफ़ी कहिण किरपा कर प्रभू गुणवन्ते, गहर गम्भीर तेरी सरनाईआ। गढ़ तोड़ दे हउमे हंगते, हँ ब्रह्म इक जणाईआ। जीव जहान तेरे मंगते, ख़ाली झोली दे भराईआ। नाम अगम्मे रंग दे, मजीठी इक्को इक वखाईआ। झगड़े मुका दे भुक्ख नंग दे, भण्डारा अतुट इक वरताईआ। जुग चौकड़ी गए लँघदे, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। बचन पूरे करदे गोबिन्द चन्न दे, माछूवाड़ा दए गवाहीआ। तेरे जैकारे होवण धन्न धन्न दे, धन्न तेरी सरनाईआ। लेखे मुका दे सरवन कन्न दे, धुन आत्मक राग दृढ़ाईआ। मोह मुका दे ममता मन दे, मनसा सब दी पूर कराईआ। दुखड़े मेट दे अन्दरों ग़म दे, ग़मखार हो सहाईआ। झगड़े चुका दे काया माटी चम्म दे, चम्म दृष्टी दे बदलाईआ। हुक्म संदेशे दे इक ब्रह्म दे, पारब्रह्म आपणा मेल मिलाईआ। चार वरन मीत बणा दे साचे धर्म दे, धर्म दी धार इक रखाईआ। लेखे रहिण ना कूड़े कर्म दे, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त निरगुण धार तेरे विच्चों जन्म दे, दूसर जम्मण वाली कोए ना माईआ। अन्तिम पड़दे लाह दे भरम दे, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। इशारे दे दे नेत्र हरन

फरन दे, निज नैण कर रुशनाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले परवरदिगार सांझे यार असीं वणजारे तेरे चरण दे, चरणोदक धुर दा जाम देणा प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी किरपा नाल गुरमुख तेरी मंज़ल चढ़दे, चढ़दे लहिंदे दक्खण पहाड़ अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर ज़ाहर ज़हूर निरगुण निरवैर तेरा दर्शन पाईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ मेला सिँघ दे गृह पिण्ड सराई ज़िला हुश्यार पुर ✪

सन्त भगत सूफ़ी कहिण प्रभ किरपा कर अदुती, दुतीआ भाउ दे मिटाईआ। प्रेम प्यार बख्श पंज भूती, पंचम आपणा रंग रंगाईआ। सुरती रहे किसे ना सुत्ती, शब्द इशारे नाल उठाईआ। आत्म परमात्म ला दे रुची, रचना आपणी दे वखाईआ। काया करनी कर सुच्ची, संजम धुर दा दे समझाईआ। मंज़ल महिबूब मिले तेरी उच्ची, उच्च अगम्म अथाह पड़दा देणा उठाईआ। जन्नत ज़िंदगी जावे किसे ना लुट्टी, कलयुग लुटेरा नेड़ किसे ना आईआ। होणा सहाई चारे कूटी, दहि दिशा ध्यान रखाईआ। अमृत रस देणा घुट्टी, निझर झिरना आप झिराईआ। तेरी प्रीत जावे ना टुट्टी, टुटयां लैणा गंढाईआ।
११७६ आपणी धार दस्स दो तुकी, तूं मेरा मैं तेरा पड़दा लाहीआ। मन मनसा रहे ना भुक्खी, तृप्त देणी कराईआ। भाग लगाउणा ११७६
२२ साची कुख्खी, जन्म जन्म विच्चों बदलाईआ। तेरा मानव तेरे दवार होवे सुखी, सुख सागर विच समाईआ। कलयुग अन्त २२
श्री भगवन्त धरनी धरत धवल धौल उत्ते आ के पुच्छी, पुश्त पनाह आपणा हथ्थ टिकाईआ। तेरी मंज़ल रहे ना लुकी, निरन्तर पड़दा देणा खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेहरवान मेहरवान मेहरवान हो के तुट्ठीं, बख्शिश रहमत आपणी सच कमाईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ हरभजन सिँघ दे गृह पिण्ड बैहरम पुर ज़िला हुश्यार पुर ✪

सन्त भगत सूफ़ी फ़कीर कहिण प्रभ किरपा करदे कलयुग जीवां काया मन्दिर, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे वधाईआ। भाग लगा दे डूँघी कन्दर, गृह आपणा रंग रंगाईआ। तेरा प्रकाश होवे अंधेरी कन्दर, जोती जाते डगमगाईआ। बजर कपाटी तोड़ दे जन्दर, अनभव पड़दा आप खुल्हाईआ। मनुआ दहि दिशा ना भवे बन्दर, डोरी शब्द तन्द रखाईआ। तेरे दर सवाली हो के आए मंगण, मांगत हो के झोली डाहीआ। कलयुग जीवां अंग लगा आपणे अंगण, अंगीकार इक अख्वाईआ। शब्द

नाद वजा मृदंगण, अनहद नादी धुन प्रगटाईआ। तेरा प्यार मुहब्बत वाला होवे भजन, बन्दगी बन्दना सच दे समझाईआ। दीपक जोती घर घर जगण, शमा नूर कर रुशनाईआ। आत्म परमात्म रहे मूल ना अग्न, नाता बिधाता लैणा जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी दर तेरे आस रखाईआ। भगत सन्त सूफ़ी कहिण प्रभू किरपा कर अगम्म, अगम्मढ़ी कार कमाईआ। भाग लगा दे काया माटी चम्म, चम्म दृष्टी सृष्टी दे बदलाईआ। हरख़ सोग मेट दे चिन्ता ग़म, ग़मखार आपणा रंग रंगाईआ। ममता मोह रहे ना तृष्ना तम, सांतक सति आप कराईआ। हउमे हंगता भाण्डा भरम भन्न, भय भउ इक जणाईआ। तेरे घर सब दा होवे जरम, जन्म आपणे लेखे लाईआ। झगड़ा मेट दे वरन बरन, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा हुक्म वरताईआ। पुरख अकाले दीन दयाले तेरी इक्को होवे सरन, सरनगति इक समझाईआ। सारी सृष्टी पूजे तेरे कँवल चरण, दूसर इष्ट ना कोए मनाईआ। नेत्र खोल्ह दे हरन फरन, निज नेत्र लोचन नैण कर रुशनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म ढोले सारे पढ़न, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। सचखण्ड दवार एकँकार सन्त भगत सुहेले तेरे चढ़न, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जोती धार जोत विच रलण, नूर नूर विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार दीन दयाल तेरी इक सरनाईआ। सन्त भगत सूफ़ी कहिण प्रभ दे दे नाम अनडिठ, अनडिठड़ी दया कमाईआ। ग़रीब निमाणयां बणना मित, मित्र प्यारा रूप बदलाईआ। आत्म परमात्म करना हित, हितकारी हो के वेख वखाईआ। हर घट अन्दर आउणा दिस, दहि दिशा कर रुशनाईआ। तूं आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी पित, पतिपरमेश्वर तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी अन्तरजामी अन्तर निरन्तर मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। सन्त भगत सूफ़ी कहिण दे दे नाम भारी वस्त, अमोलक इक वरताईआ। झगड़ा मेट दे कीट हस्त, कीट कीटां कर रुशनाईआ। नाम खुमारी दे मस्त, मस्त दीवाने दे बणाईआ। निरगुण नूर दे दरस, आदर्श आपणा इक दृढ़ाईआ। अमृत मेघ अगम्मा बरस, बूँद स्वांती आप टपकाईआ। जन्म कर्म दी मेट हरस, हवस चुरासी दे गंवाईआ। तेरे बिरहो विछोड़े विच रहे तड़प, रहमत हक देणी कमाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले निगह कर उपर धरत, धवल धौल नैणां नीर रही वहाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं पूरी करदे शर्त, शरअ दा लेखा दे चुकाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक वाली अर्श, अर्शी प्रीतम तेरे हथ्थ वड्याईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर परवरदिगार सांझे यार तेरी ग़रज़, ग़रीब निमाणयां हो सहाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी घट निवासी सब दी मंज़ूर कर अर्ज़, आरज़ू तेरे अग्गे टिकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अंधेरा

गर्द, सतिजुग साचा चन्द कर रुशनाईआ। तूं योधा सूरबीर मर्दाना मर्द, समरथ पुरख इक अख्वाईआ। ग़रीब निमाणयां वंड दर्द, दुखियां दुःख दे गंवाईआ। तेरा खेल तक्कीए असचरज, अचरज लीला देणी जणाईआ। लहिणा पूरा कर दे मसीह लेखा रहे ना चर्च, चरागाहां कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग कूड़ी क्रिया छुरी शरअ मेट दे करद, कातिल मक्तूल मक्तूल कातिल कत्लगाह बेपरवाह लेखा दे मुकाईआ।

२० फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ तरसेम सिँघ दे गृह पिण्ड खुरदन ज़िला हुश्यार पुर

जन भगतो कलयुग अन्तर सतिजुग ज़रूर लग्गे, कूड़ क्रिया लोभ मोह हँकार रहिण ना पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल दा दीपक जोत इक्को जगे, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर करे रुशनाईआ। शब्द अगम्मी नाद दो जहानां वज्जे, लोकमात करे शनवाईआ। जन भगत सुहेले लख चुरासी विच्चों लभ्भे, सन्त साजण सूफ़ी आपणे रंग रंगाईआ। कूड़ी क्रिया पार कराए नौ दवार हद्दे, मन कल्पणा दए गंवाईआ। निझर धार अमृत रस चुआए मधे, तृष्ना भुक्ख कूड़ दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच दा सच इक समझाईआ। जन भगतो सतिजुग साचा मातलोक जावे आ, आपणा पन्ध मुकाईआ। किरपा करे बेपरवाह, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। अंध अंधेरा दए मिटा, सतिजुग साचा चन्द रुशनाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु बणाए गवाह, शहादत शब्द नाम भुगताईआ। सदी चौधवीं लेखा दए मुका, मुहम्मद लहिणा पूर कराईआ। ईसा लेखा दए चुका, बीस बीसा होए सहाईआ। गोबिन्द मनसा वेख वखा, कलि कल्की आपणी कल वरताईआ। ज़िमी असमानां दए हिला, धरनी धरत धवल खोज खुजाईआ। कलयुग माया ममता मेटे वबा, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। सति धर्म दा मार्ग ला, लाअ नवां नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। कलयुग अन्दर सतिजुग होवे प्रधान, परम पुरख दए वड्याईआ। सृष्टी दृष्टी बख्शे इक ज्ञान, अज्ञान अंधेरा दए चुकाईआ। सब दा इष्ट होवे श्री भगवान, सिल पाहन पूजण कोए ना जाईआ। आत्म दीप जोत जगाए महान, महिमा आपणी अकथ दृढ़ाईआ। सति धर्म दा सच होए विधान, हुक्म सच सच वरताईआ। जिस नूं अवतार पैग़म्बर गुरु करन परवान, भगत सन्त सूफ़ी सारे सीस निवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सुणन ला के कान, नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ।

धर्म दा धर्म झुलाए निशान, निशाना दो जहान वखाईआ। नज़री आए धुर दा राम, रमईआ आपणा रूप बदलाईआ। सोभा पाए घनईया शाम, काहन कान्हा वड वड्याईआ। प्रगट होवे पैग़म्बरां दा अमाम, अमलां तों रहित नूर इलाहीआ। योद्धा सूर बली बलवान, कलि कल्की इक अख्वाईआ। जिस नूं झुके ज़िमीं असमान, दो जहान निव निव लागण पाईंआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला सति स्वामी होवे मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगत सुहेले करे परवान, परम पुरख प्रभ आपणा रंग रंगाईआ। जन भगतो सतिजुग साचा होवे प्रसिद्ध, परम पुरख दए वड्याईआ। धर्म दी धार जणाए बिध, आत्म परमात्म रंग रंगाईआ। लेखा पूरा कर नव निध, अठारां सिद्ध पड़दा लाहीआ। जन भगतां गुरमुखां अन्तर निरन्तर जाए विध, तीर अणयाला नाम चलाईआ। भाग लगा के जीउ पिण्ड, साढे तिन्न हथ्थ करे रुशनाईआ। अमृत वहाए सागर सिन्ध, गहर गम्भीर आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा बखशिंद, बख्शिश रहमत आपणी आप कमाईआ।

११७८ ११७८

२२ २२

✪ २० फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ सविन्दर सिँघ दे गृह पिण्ड रूपोवाल ज़िला हुश्यार पुर ✪

सति धर्म जन भगतां देवे संग, अन्तर आत्म संग निभाईआ। सच प्रीती चाढ़े रंग, जगत जहान उतर कदे ना जाईआ। शब्द नाम वज्जे मृदंग, धुन अगम्मी राग सुणाईआ। निज गृह मिले अनन्द, सुख सागर विच समाईआ। प्रकाश होवे बिन सूर्या चन्द, जोती जोत डगमगाईआ। दीन दयाल बणे बख्शंद, श्री भगवान होए सहाईआ। जगत विकार देवे दंड, डण्डावत बन्दना आपणी इक समझाईआ। हउमे कर के खण्ड खण्ड, हंगता गढ़ दए तुड़ाईआ। देवे वड्याई विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड वज्जे वधाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्सणा छन्द, साची सिख्या इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मेला लए मिलाईआ। जन भगतां देवे वस्त नाम अनमुल्ली, करता कीमत ना कोए रखाईआ। भाग लगा के काया कुल्ली, कुल्ल मालक होए सहाईआ। लेखा चुकावे रसना बुल्लीं, हिरदे अन्दर आपणा डेरा लाईआ। चरण कँवल देवे धूली, धूढ़ी मस्तक ख़ाक रमाईआ। साची सिख्या दए असूली, असल आपणा इक समझाईआ। संदेशा नाम होवे माकूली, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दवारा इक सुहाईआ। जन भगतां बख्शे सच प्रीत, प्रीतम आपणी दया कमाईआ। साचा कलमा दे हदीस, निर अक्खर

करे पढ़ाईआ। छत्र झुला अगम्मे सीस, जगदीश होए सहाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे रीत, रीतीवान आपणा पड़दा लाहीआ। एका रंग रंगाए हस्त कीट, ऊच नीच दा डेरा ढाहीआ। काया चोली चाढ़े रंग मजीठ, बसन बनवारी आप रंगाईआ। जन भगतां कदे ना देवे पीठ, सन्मुख हो के सोभा पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे लीक, मार्ग सतिजुग इक प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पतित पापीआं करे पुनीत, पतित पावन आपणी दया कमाईआ।

११८० ११८०

२२ २२

✪ २० फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ धन्ना सिँघ दे गृह पिण्ड कुल्लीआं ज़िला हुश्यारपुर ✪

जन भगत कहिण प्रभ तेरी धार जाणे ना कोए सोहँ सो, परमात्म आत्म आत्म परमात्म तेरा मेल ना कोए मिलाईआ। निज नेत्र अन्तर निरन्तर होवे किसे ना लो, लोचण लोयण दीप अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया चार कुण्ट वध्या मोह, माया ममता विच सृष्टी दृष्टी होई हल्काईआ। पंच विकार हँकार बणया गरोह, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी तेरी सार किसे ना आईआ। अमृत रस निझर झिरना सके कोए ना चो, बूंद स्वांती इक अकांती नाभी कँवल ना कोए टपकाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात इक दूजे नाल करे धरोह, सदी चौधवीं पिता पूत बणया रूप कसाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म सके कोए ना छोह, सुरत शब्द जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। पड़दा लाह सके ना कोई एका दो, दूआ एका रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी आपणी दया कमाईआ। जन भगत कहिण प्रभ काया रिहा किसे ना सति, सति विच ना कोए समाईआ। आत्म ब्रह्म जाणे ना कोए तत, तत्व तेरा भेव ना कोए खुल्हाईआ। नौ खण्ड पृथमी बहत्तर नाड़ी उबले रत, सांतक सति ना कोए कराईआ। धर्म दी धार रिहा ना जत, सन्तोख विच ना कोए समाईआ। निज नेत्र खुल्ल्हे किसे ना अक्ख, प्रतख तेरा दरस कोए ना पाईआ। तूं वसणहारा घट घट, हर घट मालक होणा सहाईआ। निरगुण नूर जोत कर प्रगट, परगणे दीन मज़्हब वेख थाउँ थाँईंआ। चार वरन अठारां बरन सांझा खोल्ह हट्ट, ज़ात पात दा झगड़ा दे चुकाईआ। वस्त अगम्मी नाम दे वथ, अमोलक आप वरताईआ। तूं साहिब सर्ब कला समरथ, स्वामी नूर इलाहीआ। अवतार पैग़म्बर गुरु तेरा गा के गए जस, सिफ्तां विच ढोले सोहले राग नाद शनवाईआ। अन्तिम तेरा राह सारे रहे तक, बेनज़ीर बिन नैणां अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दवारे आस रखाईआ। जन भगत कहिण सदी चौधवीं तेरी अन्तिम आसा, मुहम्मद महिबूब

तेरा ध्यान लगाईआ। हज़रत ईसा होण ना देईं निरासा, ... आपणा पड़दा लाहीआ। गोबिन्द पूरा कर भरवासा, भाण्डा भरम जगत भनाईआ। निरगुण नूर जोत कर प्रकाशा, दो जहानां नज़री आईआ। तूं मालक इक अबिनाशा, करता धुरदरगाहीआ। कलयुग अन्तिम वेख आपणी रासा, बिन गोपी काहन खेल खिलाईआ। तेरा आत्म रिहा ना किसे स्वासा, हिरदे सके ना कोए वसाईआ। झगड़ा प्या मन्दिर मस्जिद माठा, शिवदुआले रहे कुरलाईआ। नेत्र रोवे तीर्थ ताटा, गंगा गुदावरी जमना सुरस्ती मारे धाईंआ। अमृत रस रिहा ना गोबिन्द बाटा, बूंद स्वांती ना कोए चुआईआ। चार वरन अठारां बरन प्या घाटा, दीन मज़्ब देण दुहाईआ। परम पुरख परमात्म तेरी आत्म मारे अवाज़ा, शब्दी शब्द धार शनवाईआ। तूं शाहो भूप वड राजा, रईयत दो जहान वेख वखाईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार कलधारी मातलोक वेख जगत समाजा, समग्री सब दी फोल फुलाईआ। मानव ज़ाती अन्तर सब नूं लग्गा दागा, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। हँस बुद्धी होई कागा, दिवस रैण कुरलाईआ। बिन तेरी किरपा सोया जीव कोए ना जागा, सुरत शब्द ना कोए मिलाईआ। मेहरवान महिबूब कलयुग अन्तिम बदल दे रिवाजा, सतिजुग सच सच प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दा शब्द दे अनुरागा, अनहद नादी आपणी धुन उपजाईआ।

✪ २० फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ ख़िआल सिँघ दे गृह पिण्ड दसूआ ज़िला हुश्यारपुर ✪

जन भगतो तुहाडा जन्म सतिगुर लाए मुजरे, राय धर्म दा मुज़रम रहिण कोए ना पाईआ। तुहाडी सिफ्त सालाह वड्याई आप उच्चरे, जगत उच्चारन दी लोड़ रहे ना राईआ। रातीं सुत्तयां दरस वखाए काया हुजरे, गृह मन्दिर वेख वखाईआ। तुहाडे मानस जन्म सुधरे, वदी सुदी दा लेखा दिता मुकाईआ। तुहाडी खातर निरगुण धार हो के उतरे, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण वेख वखाईआ। पूत सपूत बणाए सपुत्रे, सो पुरख निरँजण आपणी गोद टिकाईआ। लेखा रहे ना कोए मातलोक दी नुकरे, फड़ बाहों बाहर कढ्ढाईआ। तुहाडा जीवन महल्ल सचखण्ड दवारे उसरे, दरगाह साची सोभा पाईआ। किसे समझ ना देवे दूसरे, दो जहानां वेखण कोए ना पाईआ। तुहाडे जन्म कर्म होए सुरखरे, लेखा अवर रिहा ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगतो तुहाडा जन्म सतिगुर भेंटा, बन्दगी अवर रही ना राईआ। शब्दी धार बणाए बेटा, पिता पूत गोद सुहाईआ। धुरदरगाही बण के खेवट

खेटा, नईया नौका नाम चढ़ाईआ। आत्म परमात्म करे हेता, हितकारी हो के वेख वखाईआ। चार जुग ना भुल्लया चेता, चेतन सब नूं लए कराईआ। पुरख अकाला बण के नेता, निज नैण दरस वखाईआ। जन्म कर्म दा पूरा कर के लेखा, अगला लहिणा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दवार वखाए इक्को सचखण्ड देसा, दिशा अवर नज़र कोए ना आईआ।

११८२
२२

✪ २० फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ वतन सिँघ दे गृह पिण्ड शरीह पुर ज़िला हुश्यारपुर ✪

जन भगतो तुहाडा गृह सुहाउणा, सुहञ्जणा इक्को नज़री आईआ। जिथ्थे वसे श्री भगवाना, भगवन मीता धुरदरगाहीआ। दीपक जोत जगे महाना, नूर नुराना सोभा पाईआ। छप्पर छन्न ना कोए छुहाना, चार दीवार ना वंड वंडाईआ। सूर्या चन्द कोए ना भाना, मण्डल मण्डप ना कोए वखाईआ। ना कोई ज़िमीं ना कोए असमाना, धरनी धवल ना कोए वखाईआ। ना कोई सीता ना कोई रामा, इष्ट देव ना कोए मनाईआ। ना कोई गोपी ना कोई कान्हा, बंसरी धुंन ना कोए शनवाईआ। ना कोई पैग़म्बर पढ़े कलामा, सिफ्ती सिफ्त ना कोए वड्याईआ। ना कोई मन्त्र सतिनामा, ना कोई फ़तिह डंक वजाईआ। ना कोई तीर्थ तट इश्नाना, जल धार ना कोए वखाईआ। ना कोए मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मट्ठ निशाना, गुरदवार ना वंड वंडाईआ। ना कोई रसना जेहवा बत्ती दन्द गाणा, अक्खरां वाली करे ना कोए पढ़ाईआ। ना कोई ब्रह्म पारब्रह्म वेखो मार ध्याना, लोचण नैण नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। ना कोए नाद धुन धुन्काना, धुनी नाद ना कोए सुणाईआ। ना कोई अमृत रस पीणा खाणा, रसना जेहवा ना कोए हल्काईआ। ना कोए वस्त्र सेज जगत सिंघासण दिसे सराणा, तकीआ नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को देवे चरण प्रीती साचा दाना, दाता दानी दयावान दीन दयाल आप वरताईआ।

✪ २० फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ दयाल सिँघ दे गृह पिण्ड डड्डां ज़िला हुश्यारपुर ✪

जन भगत कहिण प्रभ तेरी एका ओट, कलयुग अन्त श्री भगवान बैठे ध्यान लगाईआ। शब्द अगम्मी निरगुण सरगुण ला दे चोट, सोई सुरत अकाल मूर्त दे जगाईआ। कूड़ी क्रिया हउमे हंगता अन्दरों कढ दे खोट, माया ममता मोह विकार

रहिण ना पाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म वेख आपणा गोत, दूई द्वैत पर्दा दे चुकाईआ। इक्को बख्श निर्मल धार आपणी जोत, नूर नुराने नूर दे चमकाईआ। अमृत रस नाम खुमारी कर मदहोश, मधुर धुन धुर दे काहन इक सुणाईआ। आसा मनसा पूरी करदे लोच, निज नेत्र अन्तर दे खुल्हाईआ। मन कल्पणा रहे कोई ना सोच, बुद्धी तों परे कर पढ़ाईआ। इक्को सुणीएं तेरा नाम सलोक, सोहला ढोला देणा दृढ़ाईआ। झगड़ा रहे ना चौदां लोक, चौदां तबक पन्ध मुकाईआ। हउमे रहे किसे ना रोग, निवण सु अक्खर देणा जणाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी सच दवारे कर आपणा संजोग, संजोगी हो के मेल मिलाईआ। जन भगत तेरा सहि ना सकण विजोग, विछोड़े विच देण दुहाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म दस्स आपणी मौज, मजलस आपणे नाल रखाईआ। दुरमति मैल अन्दरों धोत, पतित पुनीत दे कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण सरगुण वखा आपणे चोज, चोजी हो के काया चोले आपणी दया कमाईआ।

✪ २० फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ करतार सिँघ दे गृह पिण्ड पंज ढेरा ज़िला हुश्यारपुर ✪

११८३
२२

जन भगत कहिण प्रभ मेट अंधेरा अंध, अंध अज्ञान दे गंवाईआ। कर प्रकाश अगम्मी चन्द, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। हउमे हंगता ढाह दे कंध, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। अन्तर आत्म दे अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों वखाईआ। सति सरूप पा ठंड, अग्नी अग्ग दे बुझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाईए छन्द, संसा रोग रहे ना राईआ। जन्म जन्म दा मेटणा पन्ध, पाँधी सफर ना कोए भवाईआ। जुग जन्म दी टुट्टी लैणी गंढ, गंढणहार गोपाल स्वामी आपणा जोड़ जुड़ाईआ। तेरी धार होवे ना रंड, सुहागण कन्त कन्तूहल लैणी अपणाईआ। अमृत धार नीर वहाउणा गंग, सीर सागर इक प्रगटाईआ। जगत जहान जाईए लँघ, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। आत्म सेज सुहाउणी पलँघ, सच सिंघासण डेरा लाईआ। नाम शब्द वजाउणा मृदंग, नाद अनादी आप प्रगटाईआ। दर ठांडे मंगी मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। कलयुग अन्तिम सारे आसावंद, ख़ाहिश तमन्ना तेरे अग्गे रखाईआ। तेरे हुक्म दे हुक्म पाबन्द, बन्दना विच सीस निवाईआ। मानस जन्म ना होवे भंग, राय धर्म ना दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। जन भगत कहिण प्रभ किरपा कर आपणी आप, आपणी दया कमाईआ। तूं त्रैगुण माया तोड़ दे ताप, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। हउमे रोग ना रहे संताप, माया ममता मोह चुकाईआ। पतित पुनीत कर पाक, पतित पावन तेरे

हथ्थ वड्याईआ। नाम अगम्मी चढ़ा राथ, रथ रथवाही हो सहाईआ। आत्म ब्रह्म दस गाथ, परमात्म मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। साडे ख़ाली वेख हाथ, वस्त संग ना कोए रखाईआ। तेरे चरण छूहीए मस्तक माथ, टिक्का ख़ाक ख़ाक रमाईआ। सब दी दुरमति मैल काट, कटाक्ष आपणा नाम लगाईआ। कलयुग अन्तिम मुके वाट, अगला पन्ध रहे ना राईआ। तेरी जोत विच होवे निवास, अस्थान भूमिका इक्को सोभा पाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाश, मेहरवान होणा सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सब दी पूरी करनी आस, निरासा रहिण कोए ना पाईआ।

११८४ २२

✪ २१ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ लाल सिंघ दे गृह पिण्ड पंज ढेरा ज़िला हुश्यार पुर ✪

सूफ़ी सन्त भगत सारे इक्ठे हो के कहिण, दरगाह साची सचखण्ड प्रभ चरण ध्यान लगाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले दीन दुनी वेख आपणे अगम्मे नैण, जोती जाते पुरख बिधाते अगम्मी अक्ख खुल्हाईआ। साचा मित्र प्यारा दिसे कोए ना सैण, सज्जण संग ना कोए निभाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता नाल रमाइण, राम कृष्न इष्ट ना कोए वड्याईआ। साचे कलमे करे कोए ना गायण, पैग़म्बरां संग ना कोए निभाईआ। नाम सति लए कोए ना लहण, ख़ाली हथ्थ सर्ब वखाईआ। डंका वज्जे फ़तिह ना ऐन, गृह मन्दिर ना कोए शनवाईआ। सृष्टी दृष्टी आवे किसे ना चैन, चार कुण्ट कूड़ हल्काईआ। जगत जिज्ञासू पावण वैण, लख चुरासी रोवे मारे धाईआ। गुरु चेले होए तरफ़ैण, मुरीद मुर्शद संग ना कोए बणाईआ। कलयुग माया ममता वहिन्दा वहिण, पार किनारा नज़र किसे ना आईआ। नाता तुट्टा भाई भैण, पिता पूत ना गोद उठाईआ। झगड़ा प्या हिन्दू मुस्लिम इसाई सिख पारसी बोधी जैन, विपरीत होई लोकाईआ। उठ वेख खेल विच हिन्दवाइण, दो जहानां मालक दया कमाईआ। सब दा लेखा पूरा कर नर नरायण, नर हरि आपणा पर्दा दे उठाईआ। कूड़ कल्पना मेट जगत गलैण, गिला रहिण कोए ना पाईआ। नेत्र रोंदे वेख हसन हुसैन, करबला रोवे मारे धाईआ। लाड़ी मौत चार कुण्ट उठ उठ वेखे डैण, काल नग़ारा डंक रिहा वजाईआ। झगड़ा तक शरअ शरायण, शरीअत आपणा रूप बदलाईआ। तेरे तेरे नालों होए परायण, परा पसन्ती मद्धम बैखरी सार किसे ना आईआ। जगत मनसा बणी कसायण, छुरी कूड़ हथ्थ उठाईआ। अमीर ग़रीब इक दूजे नाल खहिण, राउ रंक करे लड़ाईआ। साचा नाम वस्त्र मिले किसे ना गहिण, तन शृंगार ना कोए कराईआ। रैला पाया पंच पंचाँइण, पंचम रंग ना कोए रंगाईआ। सति धर्म दी दिसे किसे ना लाईन, मार्ग तेरा गए भुलाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदी चौधवीं चार कुण्ट दहि दिशा नेत्र नैण सर्ब शरमाइण, सन्मुख हो के तेरा दरस कोए ना पाईआ।

✪ २१ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ हज़ारा सिँघ दे गृह पिण्ड पंज ढेरा ज़िला हुश्यार पुर ✪

जन भगत सूफ़ी सन्त कहिण प्रभ तेरा नाता गया टुट्ट, टुटयां गंढ ना कोए पवाईआ। अन्तर लिव सब दी गई छुट, छुटकी लिव ना कोए जुड़ाईआ। अमृत जाम मिले कोए ना घुट, अंमिउँ रस ना कोए चखाईआ। किरपा कर अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म प्रभ आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदल दे रुत, सतिजुग साची रुत दे महकाईआ। उज्जल कर जीवां मुख, दुरमति मैल धुआईआ। आपणे नाम दा बख़्शीं सुख, चरण प्रीती इक सरनाईआ। उलटा रहे गर्भ ना रुक्ख, नव अठारां दा गेड़ा चुकाईआ। तेरा मानव बूटा रिहा सुक्क, हरया सिंच ना कोए कराईआ। निरगुण धार आ के पुछ, निरवैर हो के वेख वखाईआ। ग़रीब निमाणयां गोदी चुक्क, कोझयां कमल्यां गले लगाईआ। अपराधी रहे कोए ना सुत , सुत दुलारे लै अपनाईआ। भाग लगा दे काया बुत, पंज तत वज्जे वधाईआ। मेहरवान मेहरवान हो के उठ, मेहर नज़र टिकाईआ।
११८५ ११८५
२२ २२
भगतां सन्तां उत्ते तुठ, गुरमुख आपणे घर वसाईआ। अन्तिम तेरी सब नूं ओट, ओड़क तेरी आस रखाईआ। सुरत शब्द लगा दे चोट, चोटी चढ़ के लै जगाईआ। हउमें अन्दरों कढ दे खोट, खोटे खरे आप बणाईआ। तैनूं लभ्भदे कोटी कोट, खोज्जयां हथ्थ किसे ना आईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती जाते पर्दा देणा उठाईआ। झगड़ा रहे ना वरन गोत, दीन मज़्हब ना कोए लड़ाईआ। कूड़ी क्रिया कढ दे सोच, समझ आपणे नाल रखाईआ। सच प्रीती बख्श दे जोग, जोगीशर होणा सहाईआ। हउमे हंगता कट दे रोग, सुख सागर विच समाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दे दे चोग, चुग़ली निंदिआ तों बाहर रखाईआ। आत्म रस बख्श भोग, भस्मड़ आपणा मेल मिलाईआ। कलयुग अन्तिम कर संजोग, विजोग दा लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भाग लगा के काया बंक कोट, दर दवारा एकँकारा इक्को इक सुहाईआ।

✪ २१ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ राम सिंघ, दरबारा सिंघ, मंगा सिँघ दे गृह पिण्ड गालड़ीआं ज़िला हुश्यारपुर ✪

जन भगत कहिण प्रभ कलयुग कर वक्त सुहञ्जणा, अन्तष्करन बदल ख़लक खुदाईआ। मेहर कर मेहरवाना दर्द दुःख

भय भञ्जणा, जगत सागर पार देणा कराईआ। निज नेत्र ज्ञान दे आपणा अंजणा, नैण अगम्म कर रुशनाईआ। सच दवार करा धूढ़ी मजणा, दुरमति मैल दे धुआईआ। पवित्र होवे माटी ख़ाक बदना, बदी दा लेखा रहे ना राईआ। इक्को रंग रंगा दे आहला अदना, ज़ात पात दे गंवाईआ। धुरदरगाही बण सज्जणा, सैण इक अख्वाईआ। तुध बिन कलयुग कूड़ा भाण्डा मूल ना भज्जणा, भजन बन्दगी वाले सारे देण दुहाईआ। सति धर्म दा मार्ग मूल ना लग्गणा, लग मात्रा दा डेरा कोए ना ढाहीआ। दर तेरे ठांडे इक्को बन्दना, बन्दगी सजदयां विच सीस झुकाईआ। किरपा कर गोपाल मूर्त मदना, मद सूदन तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। जन भगत कहिण प्रभ कर अगम्मी मेहरवानी, महिव महिबूब आपणी दया कमाईआ। प्रकाश कर जोत नूर नुरानी, निरगुण निरवैर निराकार नज़री आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट तुग्यानी, हउमे हंगता दे चुकाईआ। लख चुरासी बण जाण जाणी, जानणहार तेरी सरनाईआ। तेरी महिमा लिखी ना जाए कलम कानी, कायनात ना कोए चतुराईआ। चार जुग दा झगड़ा मेट दीवानी, शास्त्र सिमरत रहे कुरलाईआ। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ रोवे पाणी, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नीर वहाईआ। तेरी समझ सके कोए ना बाणी, बाण अणयाला तीर ना कोए लगाईआ। सदी चौधवीं मंज़ल चढ़े ना कोए रूहानी, रूह बुत ना वज्जे वधाईआ। चार वरन अठारां बरन होई बेईमानी, दीन मज़ब ज़ात पात सति विच ना कोए समाईआ। कल्पणा करे ना कोए कुरबानी, काया काअबे तेरा दरस कोए ना पाईआ। चारों कुण्ट कूड़ निशानी, दहि दिशा डंक वजाईआ। जल्वा रिहा ना किसे पेशानी, नूर ज़हूर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड दवार एकँकार इक इकल्ले तेरी आस रखाईआ। जन भगत कहिण प्रभ दे दे अगम्मी धूल, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। सति सच तेरा असूल, असलीअत आपणी दे समझाईआ। कलयुग अन्त मुका दे मूल, अनमुल्ल तेरे हथ्थ वड्याईआ। जे तेरी सृष्टी गई भूल, भुल्लयां गले लगाईआ। तूं मालक कन्त कन्तूहल, हरि करता इक अख्वाईआ। दुहाई देंदे तेरे पैग़म्बर रसूल, वेखण थांउँ थाँईंआ। सब दी बेनन्ती कर कबूल, अर्ज़ आरज़ू तेरे अग्गे टिकाईआ। जन भगत सुहेले तेरा शब्द पंघूड़ा लैण झूल, हुलारा दो जहान झुलाईआ। शब्दी हुक्म दे माकूल, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरे अग्गे झोली डाहीआ। जन भगत कहिण प्रभ ख़ाली भर दे झोली, वस्त अगम्म वरताईआ। सृष्टी दी दृष्टी अन्दर बोल दे बोली, अनबोलत आपणा रंग रंगाईआ। भाग लगा दे काया चोली, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे वधाईआ। बजर कपाटी पड़दा खोल्हीं, निज नैण कर रुशनाईआ। मनूआं मन ना

पावे रौली, पंच विकार दा डेरा ढाहीआ। मिले वड्याई उपर धौली, धरनी धरत धवल सोभा पाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं पूरा कर कौली, कौल इकरार खोज खुजाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप हर हिरदे अन्दर कलयुग पाउंदा रौली, अट्ठे पहर शोर मचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी दया कमाईआ। जन भगत कहिण किरपा करदे सिन्ध सागर, गहर गम्भीर तेरी सरनाईआ। भाग लगा दे काया गागर, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे वधाईआ। निर्मल कर्म कर उजागर, दुरमति मैल रहे ना राईआ। धर्म वणजारा बण सौदागर, सौदा इक्को इक वखाईआ। नाम रत्न दे रत्नागर, रत्ती रत्त रंग रंगाईआ। तुध बिन करे कोए ना आदल, इन्साफ़ नज़र कोए ना आईआ। दुनिया दा झगड़ा मेट मक्तूल कातिल, कत्लगाह दा लेखा रहे ना राईआ। आपणा दर्शन दे बातन, ज़ाहर ज़हूर कर रुशनाईआ। सन्त सूफ़ी सारे तैनूं आखण, भगत बैठे ध्यान लगाईआ। अन्तर निरन्तर तेरा नाम वाचण, रसना जेहवा बुल्ल्ह ना कोए हिलाईआ। तूं साहिब पुरख अबिनाशण, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। सच स्वामी पा रासन, सुरती शब्द गोपी काहन नाच नचाईआ। लेखे विच पूरी कर आसन, निरासा नज़र कोए ना आईआ। तेरा हर घट अन्दर वासन, वसया हर घट थाँईंआ। आदि अन्त ना होए विनासन, जन्म मरन ना कोए रखाईआ। उच्च अगम्म पाक पाकन, पलीत तेरी बेपरवाहीआ। साची मंज़ल चढ़ा घाटण, अध विचकार ना कोए अटकाईआ। जन्म जन्म दी मुके वाटण, चुरासी गेड़ ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल पृथ्मी आकाशण, गगन गगनंतर निरन्तर अन्तर पर्दा ओहला बण शब्द विचोला देणा चुकाईआ।

११८७
२२

११८७
२२

✪ २१ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ जीआ लाल दे गृह तलवाड़ा शहर ✪

जन भगत सन्त सूफ़ी कहिण शहिनशाह बेनज़ीर, नज़रीआ सब दा दे बदलाईआ। अमृत आत्म बख्श अगम्मा सीर, धुर दी धार जाम प्याईआ। सति सन्तोख बख्श दे धीर, धर्म धार दृढ़ाईआ। झगड़ा मुका दे शाह हकीर, ऊच नीच दा डेरा ढाहीआ। सति सच दी दस्स तदबीर, तरीका धुर दा इक समझाईआ। दीन मज़्हब दी मेट लकीर, लाईन ऐन इक वखाईआ। शरअ छुरी ना रहे शमशीर, कत्लगाह ना दिसे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। जन भगत सन्त सूफ़ी कहिण पुरख अकाल

कर सख़ावत, सुख़न सब दा पूर कराईआ। धुर दा नाम दे न्यामत, नर नरायण दया कमाईआ। मन मनुआ मेट बग़ावत, बगलगीर कर लोकाईआ। झगड़ा रहे ना कोए अदावत, अदल इन्साफ़ इक समझाईआ। कूड़ी क्रिया मेट बनावट, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दरगाह साची तेरी ओट तकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु रहे उडीक, जन भगत सुहेले ध्यान लगाईआ। आपणी आदि अन्त दी वेख तारीख, तवारीख धुर दी फोल फुलाईआ। जिस दी धार सदा बारीक, जग नेत्र नज़र कोए ना आईआ। जिस नूं तन वजूद करे ना कोए तस्दीक, शहादत मात ना कोए भुगताईआ। सो सब दी आसा पूरी करनी उम्मीद, आमद विच बैठे अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार दीन दयाल दया कमाईआ। जन भगत सूफ़ी कहिण तेरे अग्गे इक्को सजदा, सीस जगदीश झुकाईआ। वेख खेल आपणे घर दा, लोकमात नैण उठाईआ। साचा बणे कोए ना बरदा, बन्दीख़ाना ना कोए तुड़ाईआ। तेरा नाम कलमा रसना जेहवा जीव जंत पढ़दा, साध सन्त सिफ्तां वाले ढोले गाईआ। बौहड़ी तेरा मन्त्र कोए ना पढ़दा, दरगाह साची मिलण कोए ना आईआ। इश्नान करे ना कोए साचे सर दा, अट्ठ सट्ठ भज्जण वाहो दाहीआ। प्यार मिले ना नरायण नर दा, निज नैण लोचन नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। माण
११८८ मिटे ना हँकारी गढ़ दा, विकार हँकार ना कोए तजाईआ। पंच विकारा घर घर लड़दा, दिवस रैण करे लड़ाईआ। जोती ११८८
२२ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वस्त अमोलक अगम्म वरताईआ। सन्त भगत सूफ़ी २२
कहिण मेहरवान परवरदिगार लाशरीक, शरअ शरक्त दे गंवाईआ। तेरे विच हक तौफ़ीक, तोबा तेरा नाम दुहाईआ। सारे तेरी करन उडीक, जुग चौकड़ी बैठे अक्ख उठाईआ। सदी चौधवीं रही बीत, मुहम्मद वेखे चाँई चाँईआ। ईसा तके बीस बीस, बीस बीसे हरि जगदीशे तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार अतोट अतुट वरताईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर कहिण साडी चरण कँवल निमस्कार, नमो नमो नमो सीस झुकाईआ। वेख विगस कर विचार, विचरण दी लोड़ रहे ना राईआ। चारों कुण्ट धूंआँधार, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। कूड़ कुकर्म वध्या विभचार, माया ममता मोह हल्काईआ। सज्जण दिसे ना कोए मीत मुरार, सच प्रीती संग ना कोए रखाईआ। झगड़ा प्या पुरख नार, नर नरायण होणा सहाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु दिसे ना कोए मुखत्यार, चार कुण्ट दहि दिशा सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। वरन बरन ज़ात पात दीन मज़्हब शरअ दी मारे ललकार, शरीअत विच कुरलाईआ। शाह पातशाह शहिनशाह उठ वेख सच्ची सरकार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझे यार आपणा ध्यान लगाईआ। नव नौ

चार दिसे हार, नव सत्त दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर दवार एकँकार ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। भगत कहिण आदि अन्त दे मालक, मेहरवान तेरी सरनाईआ। किरपा कर खलक दे ख़ालक, मख़लूक रही कुरलाईआ। तुध बिन दिसे ना कोए सालस, सति सुख़न ना कोए दृढ़ाईआ। बिन तेरे हक दिसे ना कोए अदालत, इन्साफ़ सच ना कोए कमाईआ। कलयुग जीवां शब्द धार इक्को दे ज़मानत, ज़ामन आपणा आप बणाईआ। आत्म वेख आपणी अमानत, साढे तिन्न हथ्थ अन्दर फोल फुलाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले तेरा आउणा होवे अचानक, अचनचेत आपणी कल वरताईआ। कलयुग समां तक भयानक, भय भाओ आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी दीन दयाल आपणा रंग रंगाईआ। सूफ़ी सन्त कहिण तेरा नाम दुहाई, दरोही दरोही हाल सुणाईआ। किरपा कर जगत गुसाँईं, गहर गम्भीर बेनज़ीर पड़दा आप उठाईआ। तुध बिन पकड़े ना कोए बाहीं, बलहीण होई लोकाईआ। परमात्म आत्म होई जुदाई, विछड़यां मेल ना कोए मिलाईआ। अमृत जाम दे प्याई, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। शब्द नाद सुणाई, अनहद नादी नाद वजाईआ। निरगुण जोत कर रुशनाई, अंध अंधेर रहे ना राईआ। आत्म ब्रह्म दे समझाई, पर्दा ओहला आप उठाईआ। सच दवारा दे दरसाई, दरस दीद इक कराईआ। सचखण्ड खण्ड दवार बहाईं, सुख आसण इक टिकाईआ। जिथ्थे जन्मे फेर कोए ना माई, जन्म मरन रहे ना राईआ। लख चुरासी कटणी फाही, फाँसी जम ना कोए लटकाईआ। राय धर्म ना दए सज़ाई, चित्रगुप्त ना वेख वखाईआ। किरपा करनी बेपरवाही, बेअन्त तेरी ओट तकाईआ। तूं आदि अन्त दा साचा माही, मेहरवान नूर इलाहीआ। जिस कारन गोबिन्द बूटा पुट्टया काही, कायनात वेखणा थांउँ थाँईंआ। रहिबर बणना दो जहान राही, रस्ता इक्को देणा दृढ़ाईआ। दीन मज़्हब दा झगड़ा देणा मुकाई, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। धुर दा ढोला सच संदेशा नाम सुणाई, कलमा इक्को गाईआ। वाहिद आपणी रमज़ लगाई, वाहवा आपणा पड़दा लाहीआ। तेरा मेला होवे चाँईं चाँईं, चाओ घनेरा इक प्रगटाईआ। तूं जल्वागर नूर अलाही, आलमीन इक अख्वाईआ। शाह पातशाह तेरी सच्ची शहिनशाही, सचखण्ड दवार नज़री आईआ। झगड़ा मुकाउणा थल अस्गाही, गहर गम्भीर इक्को गृह देणा दरसाईआ। तेरे चरण कँवल कँवल चरण होवे सरनाई, सरनगति इक अख्वाईआ। सन्त भगत सूफ़ी कहिण तेरा नाम दुहाई, दूजा राग ना कोए सुणाईआ। कलयुग जीवां कूड़ी मेटणी शाही, दुरमति मैल देणी धुआईआ। सदी चौधवीं अन्त बचाँईं, बचपन आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी तेरा ढोला गीत नाउँ निरँकार सुणीए थांउँ थाँईं, थान थनंतर गगन गगनंतर हर घट जीव तेरी धर्म धार दी वज्जे वधाईआ।

✪ २२ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ हरिसंगत दे नवित तलवाड़ा शहर ✪

पुरख अबिनाशी किरपा धार, धरनी धरत धवल धौल दया कमाईआ। निरगुण सरगुण वेख आपणा संसार, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। लहिणा तक तेई अवतार, त्रैगुण अतीते आपणा पड़दा लाहीआ। पैग़म्बरां पा सार, महासार्थी आपणा बल प्रगटाईआ। गुरुआं कर विचार, विचर के सब नूं दे दृढ़ाईआ। चारों कुण्ट धूंआँधार, नूर चन्द ना कोए रुशनाईआ। शास्त्र सिमरत पढ़ पढ़ थक्का संसार, वेद पुराण अञ्जील कुरान फोल फुलाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ तक गुरदवार, नौ खण्ड सत्त दीप आपणा पड़दा लाहीआ। चार जुग दे सिफ्तां वाले नाम वेख निरँकार, नर नरायण ध्यान लगाईआ। बौहड़ी चारों कुण्ट आई हार, दरोही तेरा दर ना कोए खुलाईआ। सदी चौधवीं अन्तिम सारे गए हार, बली बल ना कोए वखाईआ।

११६० डण्डावत बन्दना विच साडी निमस्कार, सज्जदयां विच सीस झुकाईआ। जोती जाते हो ज़ाहर, पुरख बिधाते आपणा ज़हूर ११६०

२२ दे प्रगटाईआ। कलकाती कर ख्वार, कूड़ विकारा दे मिटाईआ। शब्द खण्डा खिच्च कटार, कटाक्ष नाम वाला लगाईआ। २२

दो जहानां हो उज्यार, उज्जल आपणा आप कराईआ। दीन दुनी वेख दुख्यार, दुखियां दर्द मिटाईआ। तूं मालक सांझा यार, परवरदिगार अगम्म अथाहीआ। दर ठांडे इक पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। झगड़ा मेट दे नौ दवार, जगत वासना रहे ना राईआ। शाह रग दे उपर चढ़ शाह सवार, आपणा पन्ध मुकाईआ। त्रैकुटी दा लेखा दे निवार, सुरत तुरत भेव चुकाईआ। शब्द अनादी दे धुन्कार, अगम्मी धुन सुणाईआ। अमृत बख्श ठंडा ठार, ठाकर हो के दे वरताईआ। मंज़ल रहे ना कोए दुष्वार, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। घर विच घर दिसे ज़ाहर, निरगुण तेरा नूर रुशनाईआ। फड़ बांहों जाणा तार, त्रैगुण अतीते आपणी दया कमाईआ। सच दवार खोल्हणा कवाड़, बन्दीख़ाना मेरा देणा तुड़ाईआ। साची मंज़ल देणा चाढ़, मज़ल पिछली पन्ध मुकाईआ। तेरा धर्म दा दिसे अखाड़, बिन गोपी काहन नाच नचाईआ। मालक बणना इक्को लाड़, लाड़ा शहिनशाहीआ। तेरी धार शब्द सार विच सार मिले निरँकार, निराकार तेरे गृह वज्जे वधाईआ। सच सिंघासण करना प्यार, प्रीतम आपणा प्रेम वखाईआ। आत्मा परमात्मा मेल मिलाउणा कन्त सुहागी नार, संजोग लैणा बणाईआ। बिन हथ्थां तों करां निमस्कार, घर ठांडे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा

वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त कन्त भगवन्त मेहर करनी अपर अपार, अपरम्पर स्वामी अन्तरजामी पड़दा देणा उठाईआ।

✪ २२ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ जागीर सिँघ दे गृह तलवाड़ा शहर ✪

जन भगत कहिण प्रभ इक्को आसा, आसा तेरे नाल रलाईआ। चरण प्रीती दे भरवासा, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। नाम बख्श स्वास स्वासा, साह साह तेरा नाम ध्याईआ। काया मण्डल पा रासा, सुरत शब्द गोपी काहन नाच नचाईआ। निज गृह तेरा दिसे वासा, वास्ता आपणा पड़दा देणा उठाईआ। तेरा रूप नज़री आवे पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतर वज्जे वधाईआ। चुरासी विच्चों होवे बन्द खुलासा, बन्दी छोड़ दया देणी कमाईआ। तेरे दर तों जाए ना कोए निरासा, निरासता रहिण कोए ना पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदल दे पासा, करवट आपणी लै बदलाईआ। तूं आदि जुगादि साहिब पुरख अबिनाशा, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। शंकर वेखे उपर कैलाशा, ब्रह्मा ब्रह्म ध्यान लगाईआ। विष्नूं तेरे नाम दी बोले भाषा, पेशीनगोई रिहा दृढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम खेल करे शाहो भूप शाबाशा, शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया तोड़े नाता, सतिजुग सच सच प्रगटाईआ। चार जुग दा पिछला कढे खाता, फ़रदां फोले थांउँ थाँईंआ। सो पुरख अकाले दीन दयाले तूं सर्ब कला समराथा, साहिब तेरे हथ्थ वड्याईआ। ग़रीब निमाणयां मन्न आखा, कोझयां कमल्यां गले लगाईआ। तूं धुरदरगाही देवणहारा दाता, वस्त अगम्म दे वरताईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म तूं मेरा मैं तेरा सृष्ट सबाई होवे जापा, जगजीवण दाते इक्को नाम देणा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा हुक्म वरते पृथ्मी आकाशा, गगन मण्डल ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल मन्नण चाँईं चाँईंआ।

✪ २२ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ जुगिन्दर सिँघ दे गृह तलवाड़ा शहर ✪

जन भगतो मैं सब दा जाण जाणी, जानणहार इक अख्वाईआ। सो पुरख निरँजण शाह सुल्तानी, हरि पुरख निरँजण बेपरवाहीआ। एकँकारा मर्द मर्दानी, आदि निरँजण नूर इलाहीआ। अबिनाशी करता हुक्मरानी, श्री भगवान वड वड्याईआ। पारब्रह्म खेल महानी, पतिपरमेश्वर हो के आप कराईआ। शब्दी धार सुत बलवानी, योधा सूर इक प्रगटाईआ। विष्न ब्रह्मा

शिव जिस दी निशानी, निशाना निरगुण धार इक प्रगटाईआ। लख चुरासी जिस दी बणी खाणी, चारे खाणी वंड वंडाईआ। त्रैगुण माया खेल नादानी, निरवैर आपणा हुक्म वरताईआ। जुग चौकड़ी खेल खेलां विच दो जहानी, निरगुण सरगुण आपणा वेस वटाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं कर धुर फ़रमानी, नाम निधाना इक दृढ़ाईआ। लेखा लेख मस्तक पेशानी, आपणा भेव खुल्हाईआ। कलयुग अन्तिम वेखां मार ध्यानी, नौ खण्ड सत्त दीप ध्यान लगाईआ। चारों कुण्ट वधी बेईमानी, बेवा रूप होई लोकाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार चढ़ी तुग्यानी, चार वरन अठारां बरन रही रुढ़ाईआ। सति धर्म रिहा ना जिस्म जिस्मानी, ज़मीर बदली कूड़ लोकाईआ। मंज़ल चढ़े ना कोए रुहानी, रूह बुत ना वज्जे वधाईआ। मन मनुआ होया अभिमानी, मन का मणका ना कोए भवाईआ। अमृत रस मिले किसे ना ठंडा पाणी, अड्ड सड्ड रोवण मारन धाईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद मड्ड दिसे कूड़ निशानी, नाम निशाना ना कोए झुलाईआ। हर हिरदे अन्दर माया ममता कीती वैरानी, वैरी मीत समझ कोए ना पाईआ। किसे दी लेखे लग्गे ना तरल जवानी, जोबन सच ना कोए हंढाईआ। सुरत शब्द सुणे ना कोए धुन्कानी, धुन नाद ना कोए शनवाईआ। जोत जगे ना दीपक निरगुण नूर नुरानी, अंध अज्ञान ना कोए मिटाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द सिफ्त सालाही मेरी पढ़दे जगत अक्खरां नाल बाणी, सोहले ढोले गाईआ। मेहरवान मुहब्बत कर के मंगण ना सच्चा दानी, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। बिना गोबिन्द दी धार सच करे ना कोए कुरबानी, करबले वाले रोवण मारन धाईंआ। सदी चौधवीं चौदां तबक होई हैरानी, हैरत विच सारे नैण उठाईआ। शरअ दी कोई कट ना सके गुलामी, गुरबत अन्दरों ना कोए कढ्ढाईआ। परवरदिगार सांझा यार ना मिले अमामी, अमलां तों रहित ना कोए कराईआ। जन भगतो जिधर तकां मेरे नाम दी होवे बदनामी, बदी दा डेरा कोए ना ढाहीआ। सच सुणे ना कोए पैग़ामी, पैग़म्बर बैठे सीस झुकाईआ। अन्त लेखा मुकणा वेखो इस्लामी, इस्म आपणा इक दृढ़ाईआ। पुरख अकाल कहे मैं मालक ख़ालक प्रितपालक वाली दो जहानी, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड दवारा एकँकारा जन भगतां इक्को मंज़ल दस्से आसानी, प्रेम भगती विच एहसान ना कोए जणाईआ।

✪ २२ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ रेशम सिँघ दे गृह पिण्ड मकेरीआं ज़िला हुश्यार पुर ✪

जन भगतो मैं हर घट अन्दर वेखां, लख चुरासी अन्दर ध्यान लगाईआ। कर्म कांड रहिण ना देवां भुलेखा, भरम

विच ना कोए भरमाईआ। मेरा आदि अन्त अनडिठड़ा देसा, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बदलां वेसा, वेस अनेका रूप बदलाईआ। दो जहानां बणां नेता, शाह पातशाह आप अख्वाईआ। सब दा पड़दा जाणा भेता, भेव आपणे हथ्थ रखाईआ। कलयुग अन्तिम सब दा पूरा करां ठेका, ठाकर हो के हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी दया कमाईआ। जन भगतो मेरा लेखा आदि अन्त, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। वेखां साध सन्त, सूफ़ीआं खोज खुजाईआ। तकां जेहवा मंत, रसना गुण वड्याईआ। जाणां हउमे हंगत, गढ़ां फोल फुलाईआ। वेखां धुर दी संगत, संगी साथी मेल मिलाईआ। सति दी सच बणावां बणत, धुरदरगाही घाड़त आप घड़ाईआ। कलयुग करावां अन्त, अन्तष्करन वेख ख़लक खुदाईआ। सतिजुग बणावां बणत, धुर दा हुक्म वरताईआ। लख चुरासी बण के कन्त, आत्म सेजा इक हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्दी धार पंडत, बोध अगाधा अगाध इक अख्वाईआ।

✪ २२ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ बलवन्त सिँघ दे गृह मुकेरीआं ज़िला हुश्यार पुर ✪

जगत धार दी लग्गी गर्मी, गर्मा गर्म रही कराईआ। गर्मी विच्चों प्यार दी निकली नरमी, निरमाणता आपणा रूप बदलाईआ। सतिगुर नाम दी बूटी ब्रह्मी, ब्रह्म लेखा दए चुकाईआ। साहिब दी चरणी लग्ग के फिर कदे ना जरमी, चुरासी विच कदे ना आईआ। अकाल पुरख दी इक्को सरनी, दूजी सरन ना कोए वड्याईआ। इक्को वार लेखा मुक जाए उपर धरनी, धरनी तों परे आकाशां तों परे सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। इक्को प्रेम प्यार दी होवे मरनी, मर जीवत रूप वटाईआ। किरपा करे आप निहकर्मी, कर्म कांड दा लेखा दए मुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा इक्को आत्म परमात्म तुक पढ़नी, जगत विद्या तों बाहर दए समझाईआ। फिर साहिब सुल्तान सतिगुर किरपा आप करनी, करता पुरख होए आप सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तन वजूद अन्दर वेखे बदल के प्रेम प्यार धार दी गर्मी, जो रोम रोम रोम गर्म दए कराईआ।

✪ २२ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ लाल चन्द दे गृह पिण्ड भीम पुर ज़िला गुरदास पुर ✪

जन भगत कहिण प्रभ सब दा इक्को लेखा, निरँकार अगम्म अथाहीआ। लख चुरासी आत्म परमात्म कर साचा हेता, हितकारी हो के आपणी दया कमाईआ। सदी चौधवीं कलयुग अन्तिम सब दा पूरा कर लेखा, अवतार पैग़म्बर गुर बाकी रहिण कोए ना पाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी धर्म दी धार खोल्ह भेता, भेव अभेद आपणा दे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वड दाते तेरी इक सरनाईआ। जन भगत कहिण प्रभ धुर दे ठाकर, स्वामी सच तेरी सरनाईआ। भाग लगा दे डूँघी गागर, गहर गम्भीर हो सहाईआ। सति सच कर आदल, धर्म इन्साफ़ इक बणाईआ। शरअ दा रहे कोए ना कातिल, मज़्हब दी करे ना कोए लड़ाईआ। भेव अभेदा खोल्ह दे बातन, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। तूं पुरख अकाल अकाल अबिनाशण, हरि करता नूर इलाहीआ। धरनी धरत धवल धौल उत्ते पा रासन, सुरती शब्दी गोपी काहन नचाईआ। सति धर्म दा जोड़ नातन, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। निज गृह कर आपणा वासण, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। निरगुण नूर कर प्रकाशन, अंध अंधेर रहे ना राईआ। मंज़ल आपणी चढ़ा घाटण, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। लख चुरासी मिटे वाटण, पाँधी पन्ध देणा मुकाईआ। तूं साहिब पुरख अबिनाशण, हरि करता अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी सर्ब कला समराथण, समरथ स्वामी अन्तरजामी अन्तष्करन वेख दीन दुनी जगत लोकाईआ।

✪ २३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ कुशल्लया देवी दे गृह पिण्ड भीम पुर ज़िला गुरदास पुर ✪

जन भगतो प्रभ किरपा करे आप, आप आपणी दया कमाईआ। जन्म जन्म दे मेटे पाप, पतित पुनीत आप बणाईआ। हउमे रोग मेटे संताप, सहिंसा अन्दरों दए कढ्ढाईआ। आत्म परमात्म दस्से जाप, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। झगड़ा मेटे ज़ात पात, दीन मज़्हब दा डेरा ढाहीआ। अन्तर रहे ना अंधेरी रात, निरगुण नूर चन्द करे रुशनाईआ। सतिगुर हो के देवे साथ, सगला संग बणाईआ। मंज़ल पौड़ी चढ़ाए घाट, अगला पिछला पन्ध मुकाईआ। जन्म जन्म दी मेटे वाट, चुरासी देवे फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दवार इक सुहाईआ। जन भगतो किरपा करे दीन दयाला, दयानिध दया कमाईआ। काया मन्दिर वखाए सच्ची धर्मसाला, काअबा इक्को इक

सुहाईआ। जिथ्थे निरगुण दीपक करे उजाला, जोती जोत डगमगाईआ। दुरमति मैल दाग़ रहे ना काला, कूड़ी क्रिया दए चुकाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाला, जागरत जोत करे रुशनाईआ। साचा मार्ग दस्स सुखाला, ईड़ा पिंगल सुखमन तों बाहर आपणा पड़दा लाहीआ। नाम दे सच्चा धन्न माला, भण्डारा अतोट अतुट वरताईआ। जीवन जुगती बदल देवे चाला, चाल आपणे नाल रखाईआ। जन्म कर्म दा हल्ल करे सवाला, अग्गे लेखा रहे ना राईआ। शब्द अनाद वजा के ताला, धुन अगम्मी आवाज़ सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे भूत भविक्खत हाला, हालत तके जगत लोकाईआ।

११६५

२२

✪ २३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ देव राज दे गृह पिण्ड भीम पुर ज़िला गुरदास पुर ✪

जन भगतो इक्को जपणा सोहँ मंत, मंतव मानस जन्म हल्ल कराईआ। धर्म दी धार बणना सन्त, सतिगुर शब्द विच समाईआ। गढ़ तोड़ना हउमे हंगत, हँ ब्रह्म रूप प्रगटाईआ। सच दी धार बणना पंडत, बुद्धी तों परे बोध कराईआ। पुरख अबिनाशी पाउणा कन्त, हरि करता अगम्म अथाहीआ। मानस जन्म बणाउणी बणत, सच सच रंग रंगाईआ। पन्ध मुकाउणा स्वर्ग बहिशत जन्नत, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जिथ्थे मिले साहिब भगवन्त, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जोती जोत समाउणा अन्त, अन्तष्करन दा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। जन भगतो प्रभ दा जपणा नाम अगम्मा, अलख अगोचर अगम्म अथाह दए जणाईआ। भाग लगाउणा काया माटी चम्मा, चम्म दृष्टी लैणी बदलाईआ। पवण स्वास जपाउणा दमा, साह साह विच्चों प्रगटाईआ। हरख सोग मेटणा ग़मा, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। वैरागी हो के नीर वहाउणा छम छमा, त्याग कूड़ क्रिया जणाईआ। दीन मज़्ह़ब दा मेटणा बन्ना, बन्दगी करनी ख़लक खुदाईआ। सतिजुग सच तकणा समां, समाप्त होवे कूड़ लोकाईआ। सतिजुग साचा करना रवां, मार्ग लोकमात लगाईआ। निरगुण धार सरगुण अन्दर चमकणा हो के नूरी चन्ना, सूर्या चन्द तों करनी बाहर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा नाम निधाना अगम्मी धना, धन दौलत दर इक्को इक वरताईआ।

✪ २३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ अजीत सिँघ दे गृह पिण्ड कत्तोवाली ज़िला गुरदास पुर ✪

श्री भगवान सदा करदा चोरी, चोरी चोरी लख चुरासी विच्चों आपणे भगत लए उठाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म बणावे जोड़ी, निरगुण निरगुण नाता जोड़े सहिज सुभाईआ। जुग जुग यारी दस्से थोड़ी थोड़ी, ज्यों भावे तिवें आपणे रंग रंगाईआ। दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड फिरे चढ़ के शब्द अगम्मे घोड़ी, जग नेत्र जग जीवां नज़र किसे ना आईआ। कूड़ी क्रिया जन भगतां अन्दरों देवे होड़ी, होड़ा सस्से उत्ते लगाईआ। हाहे टिप्पी भाग कर मथोरी, मिथ्या दस्से सर्ब लोकाईआ। मनुआ मन पा ना सके शोरी, शौहर हो के वेखे चाँईं चाँईंआ। सरगुण दी धार खेल खेले दोहरी, दूआ एका आपणा रूप प्रगटाईआ। धरनी धरत धवल धौल उत्ते अवतार पैग़म्बर रूप धर के बणे मोहरी, मोहर आपणा नाम लगाईआ। मानव मानस मानुख सब दा बण के जौहरी, हरिजन परखे चाँईं चाँईंआ। विख रहिण ना देवे अन्दर कौड़ी, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। सति धर्म दी ला के पौड़ी, पौड़े डण्डे दए चढ़ाईआ। सुरती शब्द पिच्छे फिरे दौड़ी, सुरत शब्द पन्ध मुकाईआ। आप बणया रहे घोरी, घोर अंधेरे विच वड़ के आपणी जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जन भगतां वेख वखाईआ। श्री भगवन्त चोरी करे जगत जग, जुग जुग आपणी खेल खिलाईआ।

११६६ ११६६

२२ २२

लुक के बहि जावे उपर शाह रग, लम्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। शब्द अनादी अन्दर वजाए नद, धुन अनादी नाद कर शनवाईआ। अमृत अगम्मा देवे रस, कटोरा सके ना कोए समझाईआ। घर दा मालक घर विच जावे वस, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। पन्ध मुका के पृथ्मी आकाश, आकाशां तों बाहर आपणा खेल खिलाईआ। निरगुण निरगुण पा के रास, बिन गोपी काहन आपणा मेल मिलाईआ। नाम जपा के बिना स्वास, बिना रसना तों रस दए चखाईआ। भाग लगा के साढे तिन्न हथ्थ काया प्रभास, चोरी चोरी नाम अणयाला तीर दए चलाईआ। प्रगट होए पुरख अबिनाश, घट निवासी आपणा दरस वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति दी चोरी आपणे हथ्थ रखाईआ। श्री भगवन्त चोर आदि अन्ता, जुग जुग वेस वटाईआ। मेल मेले साचे सन्ता, सति दवारा इक खुल्हाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख विरले दा बण के कन्ता, कन्त सुहागी आपणा जोड़ जुड़ाईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगता, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। बुद्धी तों परे बण के पंडता, नाम धुन करे शनवाईआ। लेखा मुका के स्वर्ग बहिशत जन्नता, सचखण्ड दवारा इक्को दए दरसाईआ। जिथ्थे अवतार पैग़म्बर गुर झुकदे अनका, अनक कलधारी इक्को सोभा पाईआ। जन भगतां चोरी चोरी सचखण्ड दवार वखाए बंका, जग नेत्र नैणां नज़र किसे ना आईआ। जिथ्थे आवण जावण लख चुरासी जन्म मरन दा नहीं कोई शंका,

संसा रोग ना कोए वखाईआ। ना कोई मन्त्र ना मंता, सिफ्तां वाली ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी चोरी जुग जुग आप कमाईआ। श्री भगवन्त जुग जुग लावे यारी, यराना समझ किसे ना आईआ। जदों प्रनावे भगतां दी आत्मा कुँवारी, जिस कुँवार कन्या नूं अक्ख नाल वेखण कोए ना पाईआ। सतिनाम दी सति करे श्रृंगारी, वस्त्र भूषन प्रेम वाले समझाईआ। कज्जल पावे अगम्मा धारी, नैण नैण विच्चों बदलाईआ। सोहणा देवे रूप अपारी, कंचन गढ़ अन्दर कंचन आपणा रूप दरसाईआ। जिस नूं समझ सके ना कोए संसारी, संसारी विद्या विच हथ्थ किसे ना आईआ। इहो खेल प्रभू दी न्यारी, निरगुण निरवैर आपणे हथ्थ रखाईआ। प्यार मुहब्बत मोह दी महिबूब लावे यारी, यराना तोड़े जगत लोकाईआ। धुर दी यारी विच करे ना कदे ग़द्दारी, धोखा धार ना कदे वखाईआ। सच विच सच दा बणे वपारी, वणज इक्को इक दरसाईआ। बहत्तर बहत्तर खेल कर बहत्तर नाड़ी, तिन्न सौ सठ्ठ हाडी साढे तिन्न करोड़ लूं लूं विच आपणा यराना दए वसाईआ। एथे ओथे दो जहान निरगुण हो के फिरे पिच्छे अगाड़ी, अग्गा पिच्छा आपणे हुक्म विच चलाईआ। सतिगुर दी यारी नाल फेर किसे नूं व्याह ना सके मौत लाड़ी, राय धर्म चित्रगुप्त लेखा ना सके कोए वखाईआ। फिरे ना चुरासी वाले जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, चारे खाणी टिल्ले पर्बत चोटी थल अस्गाहां विच्चों पार कराईआ। मढ़ी गोर साड़ फूक दब्ब सके कोए ना साड़ी, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। जोती जोत मिले मेला होए पुरख नारी, नर नरायण आपणे घर वसाईआ। बिना सतिगुर तों सदा सब दी कच्ची यारी, पक्की गंढ ना कोए पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। पुरख अकाल दी यारी गोबिन्द हंढाया सथ्थर, यराना इक्को नाल वखाईआ। मात पित पूत भेंट चढ़ा के फिर वी ना वहाया अथ्थर, नैणां नीर ना कोए टपकाईआ। विछोड़े विच याद नहीं कीता इक अक्खर, बंस दी आस ना कोए रखाईआ। बच्चयां दी सिफ्त विच लिखी नहीं इक सतर, अक्खरां नाल अक्खर ना कोए जणाईआ। मेरा होवे यराने विच चार वरनां दा कर इकत्तर, गुरमुख गया बणाईआ। गुरसिख सतिगुर शब्द दे कनारे खड़े कीते पत्तन, मलाह बणया गोबिन्द सच्चा माहीआ। ग़रीब निमाणे बणा के हीरे रत्न, अमोलक आपणा रंग चढ़ाईआ। बिना प्रभू दी यारी तों सचखण्ड दवारे टोल कोई ना सकण, दरगाह साची सच दवार डेरा कोए ना लाईआ। कोटन कोटि मन वासना दिवस रैण नस्सण, भज्जण वाहो दाहीआ। सच दी प्रीत सच दी रीत सच दा सच यतन, यथार्थ यथा इक्को गृह प्रगटाईआ। बिना सतिगुर शब्द तों यारी लग्गे किसे ना हट्टण, संगी संग ना कोए बणाईआ। सच्ची साहिब सतिगुर दी यारी जो चुरासी दा लेखा आवे कटण, कटाक्ष आपणा नाम लगाईआ।

११६७
२२

प्रभू दे यार सन्त भगत सूफ़ी फ़कीर अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं दे यार सिख मुरीद हरिजन इक्ट्ठे इक्को घर वसण, यराने वाला दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को अगम्म अगम्मड़ा देवे रसन, रस आपणा आप चुआईआ।

✪ २३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ गुरचरण सिँघ दे गृह पिण्ड कत्तोवाल ज़िला गुरदास पुर ✪

जन भगतो वेखो जगत जहान, जग नेत्र अक्ख उठाईआ। मन कल्पणा होई शैतान, घर घर अन्दर डेरा लाईआ। भुलाया श्री भगवान, भरम विच भुलाईआ। मिले मेल ना धुर दे काहन, राम राम ना कोए समाईआ। कलमा गाए ना कोए कलाम, पैग़म्बर पड़दा ना कोए उठाईआ। पुरख अकाला खेल करे महान, हुक्म धुर दा इक सुणाईआ। लेखा जाण दो जहान, दूई द्वैती दए मिटाईआ। एकँकारा इक दा देवे ज्ञान, एका शब्द नाम शनवाईआ। एका दर होवे परवान, दूसर सीस ना कोए झुकाईआ। एका दीन मज़्हब होवे सलाम, इस्म आज़म इक जणाईआ। इक्को मन्दिर होए मकान, तीर्थ तट इक्को इक दरसाईआ। एका शब्द धुन होवे गान, राग अनादी इक जणाईआ। इक्को साहिब होवे मेहरवान, बख्शिश रहमत सच कमाईआ। इक्को देवण वाला होवे दान, दाता दानी धुरदगाहीआ। इक्को सांझा होवे पीण खाण, जगत वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मार्ग इक लगाईआ। जन भगतो इक्को होवे शब्द संदेश, सरघी सँध्या इक दृढ़ाईआ। इक्को मालक होवे नरेश, नर नरायण धुरदरगाहीआ। इक्को सब दा होवे वेस, तन वस्त्र सोभा पाईआ। इक्को मुहब्बत दा होवे देस, दूई द्वैत रहे ना राईआ। इक्को रंग रंगे पंडत मुल्लां शेख़, मुसायकां दया कमाईआ। इक्को पूजा होवे जिस दी शहादत दे के गया दस दशमेश, गोबिन्द सूरा धुरदरगाहीआ। इक्को साहिब स्वामी रहे हमेश, हम साजण इक अख्वाईआ। लेखा जाणे सब दा लेख, अन्तरजामी आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। इक्को मेटे भरम भुलेख, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। इक्को बणे खेवट खेट, जगत जहान बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। इक्को मात पित लेखा जाणे बेटी बेट, लख चुरासी खोज खुजाईआ। इक्को नज़री आवे नेतन नेत, निज नैण लोचण नेत्र करे रुशनाईआ। इक्को कलयुग कूड़ी क्रिया करे खेत, खण्डा खड़ग नाम खड़काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को देवणहारा निरगुण धारा सरगुण संदेश, धुर फ़रमाना धुर दा राणा बेपरवाहीआ।

✪ २३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ सरूप सिँघ दे गृह गुरदास पुर शहर ✪

जन भगतो धरनी सुफल करावां कुख्ख, धरनी धवल धौल वज्जे वधाईआ। आत्म परमात्म भेव खुल्हावां मानस मानुख, मानव आपणा पड़दा लाहीआ। हउमे रोग दा रहिण ना देवां दु:ख, हंगता गढ़ देणा तुड़ाईआ। चरण प्रीती बख्शां सुख, सुख सागर विच समाईआ। सति धर्म दी इक्को मौले रुत, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। खेल करां हो के अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म ब्रह्म पड़दा आप उठाईआ। सच निशान्यों कदे ना जावां उक, तीर अणयाला नाम चलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दो जहानां गाउणी तुक, तुख्म तासीर दयां बदलाईआ। निरगुण धार हो के पवां उठ, सरगुण मेला मेलां सहिज सुभाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप जोती जाता हो के जावां तुठ, मेहर नज़र इक उठाईआ। अमृत रस निजर झिरना नाम प्यावां घुट, जन्म जन्म दी तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। पंच विकार रहे कोए ना लुट्ट, लुटेरा कलयुग बाहर कढ्ढाईआ। हरिजन आपणे बणा के सुत , दुलारे अगम्मी गोद टिकाईआ। लोकमात विच्चों चुक्क, दरगाह साची सच टिकाईआ। जिथ्थे इक्को निर्मल जोत, दूजा नज़र कोए ना पाईआ। झगड़ा रहे ना वरन गोत, ज़ात अज़ाती ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक होए सहाईआ। जन भगतो कलयुग मेटां अंधेरा अंध, सतिजुग सति सच रुशनाईआ। निरगुण धार चमके चन्द, चन्द सितार सीस निवाईआ। आत्म परमात्म नाता लवां गंढ, गंढणहार गोपाल स्वामी इक अख्वाईआ। हर हिरदे अन्दर पावां ठंड, त्रैगुण अग्नी तत बुझाईआ। गुरमुख रहिण देवां ना कोए भागमंद, सुरती शब्द नाल जगाईआ। सति सच दा दे अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। आत्म परमात्म ढोला गाउणा सब ने छन्द, धुर दा सोहला इक दृढ़ाईआ। मालक हो के सूरा सरबंग, दो जहान वेखां चाँईं चाँईंआ। झगड़ा रहिण ना देवां तत पंज, पंच विकारां दयां गंवाईआ। ग़मी रहे ना चिन्ता रंज, रंजश कूड़ी बाहर कढ्ढाईआ। नेत्र वहाए कोए ना अंझ, नैणां छहिबर ना कोए वखाईआ। भाग रहे किसे ना मंद, मंदभाग मिले वड्याईआ। खुशी करा के बन्द बन्द, बन्दगी इक्को दयां जणाईआ। जगत दवार किरपा नाल जाण लँघ, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। लोड़ रहे ना प्रकाश सूर्या चन्द, जोती जोत जोत रुशनाईआ। झगड़ा मुके खण्ड ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड दा डेरा ढाहीआ। दरगाह साची सच घर वेखां सचखण्ड, मन्दिर इक्को इक उपजाईआ। जिथ्थे वसे दीन दयाल बख्शंद, हरि करता अगम्म अथाहीआ। सच सुहञ्जणी सेज होवे पलँघ, पावा चूल ना कोए दरसाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर चरण निवासी जिथ्थे रहे लँघ, आशा आशा विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। जन भगतो किरपा करे

आप महिबूब, मेहरवान दया कमाईआ। मंज़ल देवे हक मकसूद, दरगाह साची सोभा पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करे नेस्तोनाबूद, सदी चौधवीं वेख वखाईआ। झगड़ा मुकाए एक दूज, दुतीआ भाओ दए मिटाईआ। सब दा अन्तर अन्तष्करन लए बूझ, घट निवासी हो के वेख वखाईआ। अन्त विरोले लख चुरासी पाउणी गूझ, बचया रहिण कोए ना पाईआ। जन भगतां साची देवे सूझ, सुदी वदी दा डेरा ढाहीआ। निर्मल कर के अन्तर बुध, निरन्तर पर्दा दए चुकाईआ। कलयुग अन्दर ज़रूर लग्गे धर्म दा जुग, जुग चौकड़ी आपणे अन्दर रखाईआ। कर्म कांड दी औध जाए पुग्ग, समां समें विच्चों समाप्त दए कराईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु आपणा वक्त तक्कण समां रिहा पुज्ज, पूजा वेखे थांउँ थाँईंआ। जिस भेव खोल्हणा गुझ, दो जहानां पर्दा आप चुकाईआ। सो पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण निरवैर निराकार निरँकार परवरदिगार सांझा यार नूर इलाही जोती धार आपे उठ, दो जहानां नौजवाना मर्द मर्दाना श्री भगवाना कलयुग अन्त श्री भगवन्त नव सत्त चार कुण्ट दहि दिशा वेखणहारा थांउँ थाँईंआ।

✪ २३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ बीबी बावी दे गृह पिण्ड मर्हाज ज़िला गुरदास पुर ✪

पुरख अकाल सच दवारा रिहा खोल्ही, ख़ालक ख़लक मख़लूक दया कमाईआ। शब्द अगम्म बण के ढोली, दो जहानां मर्द मर्दाना नौजवाना आपणा हुक्म सुणाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान बदले बोली, अनबोलत आपणा हुक्म वरताईआ। लख चुरासी जीव जंत आत्म परमात्म बणाए आपणी गोली, शाह पातशाह शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। एकँकार हरि निरँकार नाम कंडे रिहा तोली, तोलणहारा हरि करतारा इक्को बेपरवाहीआ। मेहरवान महिबूब किरपा करे उपर धरनी धरत धवल धौली, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप सति सतिवादी कार कमाईआ। सतिजुग सच सुहञ्जणी रुत जावे मौली, मौला हो के आपणा खेल वखाईआ। मन कल्पणा कूड़ क्रिया ना पावे रौली, सांतक सति सति कराईआ। वेखणा खेल अगम्मा हौली हौली, हालत बदले जगत लोकाईआ। जो अवतार पैग़म्बर गुरुआं कीता इकरार कौली, वायदा पूरा दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मार्ग इक लगाईआ। सच मार्ग जाए लग्ग, लग मात्रा डेरा ढाहीआ। जोत अगम्मी दीपक जाए जग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। कलयुग जीव बणाए कग्ग, कागों हँस आप उडाईआ। दरस देवे उपर शाह रग, शहिनशाह आपणा पड़दा लाहीआ। काया काअबे कराए हज्ज, हुजरा इक्को इक सुहाईआ। जिथ्थे नाद अगम्मी जाए वज्ज, अनहद नाद करे शनवाईआ। सेज सुहञ्जणी

१२०१
२२

चढ़े भज्ज, सिंघासण आसण इक वखाईआ। जिथ्थे दीप निराला रिहा जग, जोती जाता डगमगाईआ। शाह पातशाह शहिनशाह सूरा सरबग, सच स्वामी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर ठांडा इक वखाईआ। जन भगतो प्रभ दो जहान वरतावे ठंड, अमृत मेघ नाम बरसाईआ। जगत विछोड़ा मेटे रंड, आत्म परमात्म कन्त सुहागी लए प्रनाईआ। जुग जन्म दी टुट्टी देवे गंढ, गंढणहार गोपाल स्वामी इक अख्वाईआ। निज गृह निज आत्म देवे अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। निरगुण नूर जोत चाढ़ के चन्द, अंध अंधेरा दए मिटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के छन्द, शब्दी शब्द शब्द वड्याईआ। आत्म सेज सुहाए पलँघ, सुख आसण डेरा लाईआ। धर्म दी धुन वजाए मृदंग, डंका अगम्म अथाहीआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड खण्ड वेखे लँघ, पाँधी पन्ध ना कोए जणाईआ। जिस दे अवतार पैग़म्बर गुरु आशावंद, आशा विच बैठे राह तकाईआ। सो खेल करे सूरा सरबंग, साहिब सुल्तान हुक्म वरताईआ। सब दा खुशी करे बन्द बन्द, बन्दगी इक्को इक जणाईआ। सदी चौधवीं अन्त निशान मेटे तारा चन्द, मुहम्मद लहिणा रहे ना राईआ। बीस बीसे पूरी होवे मंग, हज़रत ईसा बैठे सीस निवाईआ। गोबिन्द तृष्ना रहे ना जंग, खण्डा खड़ग ना कोए चमकाईआ। सृष्टी दृष्टी तोड़े घमंड, हउमे हंगता दए मिटाईआ। सच नाम दे सारे कर पाबन्द, पाबन्दी शब्द वाली वखाईआ। धुर दा हुक्म सके कोए ना लँघ, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, लेखा जाणे सर्ब वरभण्ड, ब्रह्मण्ड खण्ड निरगुण सरगुण आपणा हुक्म वरताईआ।

१२०१
२२

✪ २४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ राज सिँघ दे गृह पिण्ड मराज पुर ज़िला गुरदास पुर ✪

जन भगतो तुसीं की रोज़ मंगदे मंगां, नक्क मरोड़ के नारद रिहा सुणाईआ। मैं वी आ गया चल के उतों गंगा, गंगोतरी लत्तां नाल बंधाईआ। वेखो तुसीं ते हथ्थ जोड़दे मेरीआं असमान वल्ल टंगां, कूक कूक दयां दुहाईआ। प्रभू तेरा दवारा किवें लँघ, राह देणा जणाईआ। मैं भगतो तुहाडा हलूणा कंधा, हिला के दयां समझाईआ। नाले धुर दे प्यो नूं समझो परमात्मा ते नाले समझो बन्दा, एह की तुहाडी चतुराईआ। जिस दे कोल सत्त रंग दा टम्बा, टोया टोभयां करे सफ़ाईआ। जिस ने घर घर दा खाणा मंडा, मुंडीआं सब दीआं वेखे थांउँ थाँईंआ। जिस दा चरण होणा नन्गा, जोड़ा चरण ना कोए छुहाईआ। नाल मैं होणा रंडा, छेकड़ छेड़ देणी छिड़ाईआ। घर घर विच्चों जा के इक इक खाणा गंढा, गंढ धुर दी

आप बंधाईआ। नाल रखणा अगम्मी धार खण्डा, खण्डा खड़ग नाल टकराईआ। जिस घर जावे ओह पुट्ठा ढाहवे मंजा, सिध्धे पलँघ उत्ते ना कोए बहाईआ। एह कोई सफ़र पैंडा नहीं लम्बा, लम्मा पै के दयां सुणाईआ। नाले हस्सां नाले कम्बां, नाले भज्जां चाँईं चाँईंआ। जन भगतां हाल होण देणा नहीं मंदा, मंदभागी नज़र कोए ना आईआ। नारद कहे सब ने उडणा बिना खम्बां, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों उडारी परे लगाईआ। खुशी विच कदे ना आवे गमां, ग़मी वाल्यां दयां जणाईआ। भगतो प्रभू दा साल चढ़ना नवां, नवीं धार धार विच्चों प्रगटाईआ। मैं सदा संग अग्गे पिच्छे हो के बहवां, सच दी सेवा सेव कमाईआ। दवार निरँकार अग्गे रहवां, रह के आपणा झट लँघाईआ। फिरां नाल चवां, चाओ घनेरा इक वखाईआ। इक्कीआं घरां तों बाद रोटी ज़रूर खावां जवां, जवां दा प्रशादा अग्गे देणा टिकाईआ। सब दी सरनाई सरन विच ढह्वां, ढहि के देवां दृढ़ाईआ। इस खेल नूं समझणा नहीं तमां हमां, हमसाजण हो के मिले चाँईं चाँईंआ। एह धार पुराणी जिस वेले सीता राम दे गल विच पाईआं बाहवां, बहीआं गल विच लटकाईआ। राधा याद कीता नाल दमां, कृष्न साह साह समाईआ। मूसा रो के छम छमां, कोहतूर नीर वहाईआ। हज़रत ईसा आशां नूं कर के मन्नां, मनसा इक विच समाईआ। मुहम्मद ने महिबूब जाणया धुर दा धना, दर इक्को मंग मंगाईआ। नानक ने तन सरीर आत्मा पुरख अकाल दी बणाई

१२०२ नाल जनां, जन आपणा आप समझाईआ। अर्जन लिखण लग्गयां चौदां सौ तीह अंक पन्ना, आसा अन्दरे अन्दर प्रगटाईआ। १२०२

२२ गोबिन्द ने जिस वेले लाया कन्ना, कायनात खेल खिलाईआ। नाले हस्स के किहा जिस वेले सृष्ट सबाई दा जगत नेत्र होया अन्ना, निरगुण नूर नज़र किसे ना आईआ। उस वेले पुरख अकाल आवे भन्ना, भज्जे वाहो दाहीआ। लेखा पूरा करे जट्ट धन्ना, जटा जूट ना कोए वड्याईआ। नारद कहे मैं सब कुछ चार जुग सुणदा रिहा कन्ना, इन्सान हो के शैतान हो के भगत भगवान हो के आपणा ध्यान लगाईआ। जन भगतो प्रभू दी धार जगत नहीं तम्हा, लालच लोभ ना कोए हल्काईआ। विहार दे समें सिंघासण कोल ज़रूर पंज पंज जगदे होण दान शमां, दिवस रैण वंड ना कोए वंडाईआ। गुरमुख मन्नण वाले घर विच प्रभ दे कोल सारे होण जम्हां, इधर उधर फिरन वाला नज़र कोए ना आईआ। अन्तर अन्तर गाउण बिना रसना दमां, साह साह विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे हथ्थ रखाए आदि अन्त दा समां, जुग चौकड़ी आपणी खेल खिलाईआ। २२

✪ २४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ महिंगा सिँघ दे गृह पिण्ड सदा ज़िला गुरदास पुर ✪

नारद कहे मैनूं आ गई निच्छा, आंछी आंछी आंछी कर के रिहा वखाईआ। जन भगतो इस गंगी नूं कहि दयो मेरा छड देवे पिछा, विंगी टेडी मेरे पिच्छे भज्जे वाहो दाहीआ। पहाड़ां दे विच्चों जम्मण वाली दी मैनूं नहीं कोई इच्छा, जगत पहाड़न मेरे कम्म किसे ना आईआ। मैं चाहुंदा अज्ज कल्ल दे समें मुताबिक ओह होवे जिन लई होवे धुर दी सिख्या, सचखण्ड दे विद्याले विच्चों पढ़ के आपणा बल धराईआ। जगत जहान नाल होवे ना किते हिस्सा, हिस्सयां वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को मेरे प्यार दा पढ़दी होवे किस्सा, किस्मत मेरे नाल जुड़ाईआ। तकदी होवे बिना अक्खां तों दहि दिशा, दो जहानां वेख वखाईआ। सारी सृष्टी नूं जाणदी होवे मिथा, मिथ्या वेखे कूड़ लोकाईआ। फेर मैं हथ्थ रखां ओस दी पिट्ठा, पुश्त पनाह दयां टिकाईआ। उहदा रूप होवे अगम्मा चिट्टा, वस्त्र तन ना कोए छुहाईआ। उहदा ध्यान मेरे भगवान वल्ल होवे टिका, टिकटिकी इक्को इक वखाईआ। मेरे चार जुग दी जिंदगी दा कढे सिट्टा, सिट्टेबाजी अवर ना कोए रखाईआ। फिर अगम्मे नाम दी मैनूं वखा लए चिटा, जेहड़ी धुरदरगाहो मिली होवे चाँईं चाँईंआ। उस दीआं कुण्डलां वालीआं होण लिटां, दुर्गा तों परे आपणा रूप बदलाईआ। वसदी होवे ना पथ्थर इट्टां, जगत मन्दिरां ना डेरा लाईआ। इधरों मैं वी सूरबीर होवां

१२०३ फिट्टा, योद्धा रूप बणाईआ। सुख आसण उत्ते होवां लिटा, सेज सुहञ्जणी इक सुहाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड बैठा होवां जित्ता, १२०३

२२ हार नज़र कोए ना आईआ। इक्को आशा होवे करन दी हिता, हित आपणा दयां समझाईआ। इक्को बचन कहां कमलीए २२

आ दोवें बणा लईए इक्को पिता, जिहनूं पतिपरमेश्वर पूरन कहि के सारे गाईआ। फिर धाम होवे अनडिट्ठा, जिथ्थे बहि के झट लँघाईआ। प्रेम होवे मिट्ठा, रस अन्दरे अन्दर चखाईआ। आपणा खेल होवे नजिट्ठा, दूसर दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेरी आसा वेख वखाईआ। नारद कहे मैनूं नहीं लोड़, लोड़वंद आपणी लोड़ ना कोए बणाईआ। मैं बेनन्ती करां हथ्थ जोड़, जोड़ी हथ्थां वाली वखाईआ। मैं प्रीती लाई जिस नाल निभे तोड़, अधविचकार ना कोए तुड़ाईआ। गंगीए जा मेरा पिछा छोड़, भज्ज वाहो दाहीआ। ओह वेख कलयुग अंध घोर, भज्जा फिरे वाहो दाहीआ। मैनूं जगत ना बणा चोर, चोरी ठग्गी ना कदे कमाईआ। मेरा आदि जुगादि जुग वक्खरा वक्खरा तौर, तरह तरह तबीअत लवां बदलाईआ। मेरे प्रेम दा दौर, दो जहानां चले वाहो दाहीआ। मैं पुरख अकाल दा कौर, कौरव पांडव दिते ठुकराईआ। ज़रा तक लै नाल गौर, अवतार पैग़म्बर गुरु मढ़ीआं गोरां विच वखाईआ। अग्गे ना पावीं शोर, रौला जगत ना कोए रखाईआ। जे मेरे बिना तेरा कारज जावे सौर, सौहरीए पिच्छे मुड़ जा चाँईं

चाँईंआ। तैनूं पता नहीं मेरा किड्डा होणा जौहर, बलधारी इक अख्वाईआ। मैं रहिण नहीं देणा कोई काअब्यां विच मजौर, मजलस सब दी देणी बदलाईआ। मेरा कोई गल्लां वाला नहीं फौहड़, हुक्म धुर दा दयां सुणाईआ। अठसठ तीर्थ वखाउणे कर के तलाब जौहड़, अमृत रस ना कोए रखाईआ। तेरे कंढिआं उत्ते जेहड़े लग्गे पौड़ीआं पौड़, पौड़ी डण्डे सब दे देणे खिचाईआ। अग्गे हो के कोई ना सके होड़, होड़ा सस्से वाला दए गवाहीआ। औह वेख रोंदे कोटन कोटी लख करोड़, हाहा टिप्पी समझ किसे ना आईआ। मैनूं अक्खीं दिसदा मेरे साहिब ने सब नूं देणा मरोड़, मरोड़ा नाम वाला चढ़ाईआ। सिर्फ़ भगतां होणां बन्दी छोड़, बन्धन सारे दए कटाईआ। अन्त उसे दी पैणी लोड़, जो लोड़ींदा सज्जण इक अख्वाईआ। जिस ने सति धर्म दी तोरनी तोर, तुरीआं तों परे दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां भाग करे मथोर, मिथ्या वेखे कूड़ लोकाईआ।

१२०४ ✪ २४ फग्गण शहिनशाही समत ६ जरनैल सिँघ दे गृह पिण्ड सदा ज़िला गुरदास पुर ✪ १२०४

२२ नारद कहे मैं आया इक कलापा, इकल्ला भज्जया वाहो दाहीआ। मेरा चार जुग दा पुराणा चीथड़ पाटा, वस्त्र तन ना कोए वड्याईआ। मैनूं दस्सो साचा हाटा, मैं जावां चाँईं चाँईंआ। पिछली मंज़ल मुके वाटा, अगला पन्ध रहे ना राईआ। २२ पूरा होवे घाटा, घाटे विच फेर कदे ना आईआ। हुक्म संदेशा मिल्या ओह तक खेल तमाशा, बिना कदम तों कदम उठाईआ। जां तक्कया अग्गे गंगा दा खुल्ल्हा झाटा, बौरीआं रही वखाईआ। झट जमना सुरस्ती गोदावरी रोंदीआं करदीआं आउण सिआपा, हाहाकार विच कुरलाईआ। बौहड़ी कलयुग चार कुण्ट वध्या पापा, पतित पुनीत ना कोए वखाईआ। किसे नूं समझ ना आए आपणी आपा, आपणा पड़दा ना कोए उठाईआ। जिधर तक्कीए चढ़या त्रैगुण तापा, । झट नारद दा निकल गया हासा, हस्स के दिता वखाईआ। मैनूं पहलों आपणे जीवण दा दस्सो खुलासा, खुल्ह्ही गुत्त ना मोहे भाईआ। तुहानूं किस दे उत्ते विश्वासा, किस अग्गे सीस झुकाईआ। तुहाडा केहड़ा मालक गुणतासा, गुणवन्त कवण अख्वाईआ। की तुहाडे कोल किसे दे है कोई काका, बाल गोदी गोद उठाईआ। मैनूं पिछल्यां जुगां दा दस्सो साका, अवतार पैग़म्बर गुरुआं दा भेव दयो खुल्ह्हाईआ। झट गोदावरी रगड़या नाका, नक्क रगढ़ के दिती दुहाईआ। मेरे कन्ढे आया गोबिन्द सूरा जिस दस्सी अगम्मी बाता, बातन पड़दा गया उठाईआ। जिस वेले कलयुग होवे अंधेरी राता, चारों कुण्ट अंधेरा छाईआ।

उस वेले पुरख अकाल आवे शाहो भूप शाबाशा, शहिनशाह धुरदरगाहीआ। आत्म परमात्म जोड़े नाता, मेला मेले सहिज सुभाईआ। धुर दी दस्से गाथा, अगम्म दी करे पढ़ाईआ। गोदावरी कहे मैं गोबिन्द नूं टेक्या माथा, मस्तक चरणां उत्ते छुहाईआ। उस ने फेर दस्सया भविक्ख्त वाका, हुक्म संदेशा इक सुणाईआ। ओह तक जोती दा जाता, जागरत जोत करे रुशनाईआ। झट जमना जोड़ के दोवें हाथा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। सुरस्ती आपणा आप कर के पाका, पुनीत हो के रही सुणाईआ। असीं वेखीआं गोपी काहन दीआं रासां, मण्डल मण्डपां बाहर हुक्म सुणाईआ। खेल तक्कया जिस दा हर घट वासा, वास्तक आपणा रंग रंगाईआ। उस दे हुक्म दा मन्नया आखा, शब्द दी शब्द धार सीस निवाईआ। झट नारद ने बदलया पासा, करवट आपणी लई बदलाईआ। तुसीं मेरी समझ लओ भाषा, भविक्ख्त भूत दयां दृढ़ाईआ। ओह वेखो शंकर रोवे उत्ते कैलाशा, त्रिशूल हथ्थ विच्चों सुटाईआ। ब्रह्मा ब्रह्म रिहा वाचा, वाचक हो के ध्यान लगाईआ। विष्नूं फिरे नासा, भज्जे वाहो दाहीआ। अजब दी धार अगम्म तमाशा, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। गंगा किहा नारद इक वार मार झाका, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल खोल्या ताका, दर दरवाज़ा इक सुहाईआ। जिथ्थे सतिगुर शब्द शब्द गुर राखा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। शहिनशाह शाह पातशाह पुरख अकाल महाराजा, राजन राज सोभा पाईआ। जिस सीस जगदीश अगम्मा ताजा, तख्त निवासी इक अख्वाईआ। उस दा लेखा किसे ना जाता, कातब सक्या ना कोए लिखाईआ। ओह कलयुग अन्तिम खेल करे हो बेपहिचाता, पेशीनगोई सब दी वेख वखाईआ। नारद कहे मैनूं खिच लैण दयो ख़ाका, बिना नकश तों नकशा दयां बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण धार सर्ब कला समराथा, समरथ पुरख एकँकार इक इकल्ला बेपरवाहीआ।

✪ २५ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ चतुर सिँघ दे गृह पिण्ड ओगरा ज़िला गुरदास पुर ✪

जन भगतो मेरा सुणो दुखड़ा, नारद रो के रिहा जणाईआ। मैं चार जुग दा भुक्खड़ा, भुक्खे दी भुक्ख ना कोए मिटाईआ। प्रभ चरण धूढ़ नाल मेरा अजे ना रंगया मुखड़ा, मुखारबिन्द दे विच्चों कहि के दयां सुणाईआ। सच सुहावी होवे ना रुतड़ा, रुती रुत ना कोए वड्याईआ। सच पुछो मैं प्रभू दी धारों उतरा, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण फिर के आया चाँईं चाँईंआ। मेरे साहिब ने हुण मैनूं किहा आ मेरे पुत्रा, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। वेखीं मेरे भगत रहिण देवीं ना किसे

नुक्करा, कोने कोने विच्चों लैणे जगाईआ। मैं रूप धारना वांग सुथरा, डण्डे हथ्थां विच खड़काईआ। गृह गृह लगाउणा मुजरा, ताज धुर दा इक वखाईआ। मेरे प्रभू दा तक्को हुजरा, बिन हाजीआं हज्ज कराईआ। जिस दे लेखे विच भगतां दा जन्म सुधरा, सुध अगली पिछली दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे मैं बिना जणेंदी तों प्या जम्म, आपणा रूप बदलाईआ। नाता रखया नहीं माटी चम्म, चम्म दृष्टी दिती बदलाईआ। जन भगतो तुहानूं काहदा ग़म, चिन्ता नज़र कोए ना आईआ। तुहानूं मिल्या साजण हम, हमसाजण मिल के वज्जे वधाईआ। जिस दा अगम्मा इक नाम, नर निरँकारा इक दृढ़ाईआ। तृष्ना मेटे तम, मोह दए चुकाईआ। इक्ट्ठे हो के करीए कम्म, काज तुहानूं दयां दृढ़ाईआ। बिना प्रभू दी याद तों ख़ाली रहे कोए ना दम, साह साह विच रखाईआ। मनसा भेंट कर दईए मन, ममता मोह चुकाईआ। प्रेम प्रीत दा बख़्शे धन, दौलत नाम वाली आपणी झोली पाईआ। सरोते रहीए मूल ना कन्न, हर हिरदे लईए वसाईआ। फिर तुहानूं दस्सांगा, केहड़ा साहिब सतिगुर दा चन्न, कवण चन्द नूर चमकाईआ। सज्जणो सब ने छड जाणा तन, तत रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे जन भगतो प्रभ दा दर्शन पा के मैनूं आया डकार, मैं रज्ज के दिता वखाईआ। जां अक्ख खोल्ही जोती नार दिसी मुटयार, जोबनवन्ती सोभा पाईआ। उहदा रूप अनूप शृंगार, जगत सुन्यार ना कोए घड़ाईआ। वस्त्र अगम्म अपार, ताणा पेटा ना कोए रखाईआ। चलदी फिरदी दी आवे छणकार, कदम कदम नाल बदलाईआ। जिस वेले मैनूं इशारा देवे नाल प्यार, मेरा अन्दर दए हिलाईआ। जिस वेले मैं अक्खां वेख्या उग्घाड़, अग्गों नज़र किछ ना आईआ। मेरा गुस्सा आवे नाड़ नाड़, अग्नी तत तत जलाईआ। मेरा दिल करदा जे मैं इस दा बण जावां लाड़, लाड़ी बणा के लवां प्रनाईआ। फेर एहनूं रावी दे कंडे तत्ती रेत उत्ते फेरां विच महीने हाढ़, पैरीं जोड़ा ना कोए रखाईआ। वसण नूं घर देवां झाड़, झाड़ीआं विच टिकाईआ। सैर करन नूं बेल्यां विच फेरां उजाड़, काने काहीआं विच भवाईआ। फेर खेल वखावां अपार, पड़दा इक उठाईआ। हस्स के कहवां मेरे वरगा पती तैनूं लभ्भणा नहीं विच संसार, पत्नीए बेवतनीए अगम्मी रत्नीए बिना रत्त तों जिस तैनूं ल्या प्रनाईआ। तूं दस्स पिच्छे किथ्थे वसनीए, कवण दवार डेरा लाईआ। किस दे चरण कँवल झस्सनीए, आपणी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे मैनूं गुस्से विच कहिंदी गंजा, मेरी बोदी दी सार कोए ना पाईआ। नक्क चढ़ा के कहे तेरे घर नहीं मंजा, विस्तर नज़र कोए ना आईआ। मैं कन्नी फड़

के फेर आपणा वखाया पंजा, पंजे उँगलां उपर उठाईआ। याद कर लै जे आईउँ मेरे इस विच शकंजा, तेरे छक्के देवां छुडाईआ। वेख मेरी बोदी दे अन्दर पवण उनन्जा, बन्ह के दिती टिकाईआ। मेरी सिफ्त कर ना सके अक्खर बवन्जा, बावन धार ना कोए समझाईआ। मैनूं इहो इक रंज़ा, गुस्सा ग़म रिहा सताईआ। मातलोक विच जो आया सो मंगदा गया मंगां, मांगत हो के झोली डाहीआ। कमलीए हुण मैं साहिब तक्कया सूरा सरबंगा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस ने जगत जहान कीता अन्धा, अक्खां वाल्यां नज़र किसे ना आईआ। मैं बड़ा बेपरवाह ओ वेख मेरे पिच्छे भज्जी फिरे गंगा, नन्गीं पैरीं वाहो दाहीआ। मैं उहदे नाल करन वाला दंगा, फ़साद फ़ैसले वाला वखाईआ। हुक्म देवां पहलों पाणी ल्या आपणा ठंडा, मेरे चरणां उत्ते टिकाईआ। फेर मैनूं कहि नारदा तैनूं रहिण नहीं देणा रंडा, तेरा रंडेपा देणा कटाईआ। फेर आपणा साफ़ कर कन्ढा, तीर्थ तट्टां पन्ध मुकाईआ। जां निगह बदली दुर्गा खिच्ची फिरे खण्डा, गोबिन्द खण्डा नाल खड़काईआ। फेर वेख्या लालो दा नज़र आया मंडा, जो नानक हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे जीव जहान जगत धन्दा, धुंदूकार मेटे थांउँ थाँईंआ।

१२०७ १२०७

२२ २२

✪ २५ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ ओगरा संगत नवित पिण्ड ओगरा ज़िला गुरदास पुर ✪

नारद कहे जन भगतो मेरी तक्को अगम्मी चिप्पी, जो चुप चाप बैठी ध्यान लगाईआ। जिस ने जगत जहान दी विद्या वाली बदल देणी लिपी, धुर दा नाम शब्द कर शनवाईआ। जिस भेद खोलूणा हाहे उत्ते टिप्पी, हँ ब्रह्म दए दृढ़ाईआ। जिस खहिड़ा छुडाउणा पथ्थर इट्टी, एका एकँकार मिलाईआ। धुर दी धार दस्सणी मिट्ठी, रस अगम्मा इक चखाईआ। कूड़ी क्रिया मार मारनी पिट्ठी, आपणा बल प्रगटाईआ। धुर दे नाम दी दस्सणी चिट्ठी, संदेशा इक सुणाईआ। प्रभू दा लेखा नहीं सवा गिट्ठी, मेरूडण्ड ना कोए चतुराईआ। ईड़ा पिंगल सुखमन धार नहीं कोई निक्की, नीकन नीक दए जणाईआ। सरगुण धार वखाए निरगुण इक्की, पर्दा लोकमात चुकाईआ। शब्दी धार गोबिन्द दी सिक्खी, सिख सतिगुर विच समाईआ। जिस दी महिमा आदि अन्त ना जाए लिखी, उस दा भेव दए समझाईआ। सृष्टी दस्से अन्तिम मिथी, मथन करे लोकाईआ। धर्म दी धार जणाए मित्ती, मित्र प्यारा इक मिलाईआ। अबिनाशी करता दसाए हिती, हितकारी जोड़ जुड़ाईआ। जिस दा खेल नित नविती, नर नरायण बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर

दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे मेरी चिप्पी दा तक्को मूँह, मुख उज्जल रही कराईआ। जिस हुक्म दस्सणा शब्द गुरु, गुरदेव स्वामी की दृढ़ाईआ। जिस नाल पवित्र होणे बुत रूह, रूह बुत करे सफ़ाईआ। खुशी जणाए लूं लूं, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे वधाईआ। भगत भगवान मेल मिलाए हूबहू, सन्मुख दोवें सोभा पाईआ। झगड़ा मुकाए नमाज़ वुज़ू, वज़ाहत नाल समझाईआ। सब दी इक कराए रजूह, रज़ा इक विच चलाईआ। कूड़ी क्रिया करे ममनू, अग्गे कदम ना कोए टिकाईआ। दीन मज़्ब दी रहिण ना देवे जूह, जंगल पहाड़ां वेख वखाईआ। ज़ात पात दी छत्त रहिण ना देवे छूह, इक्को नाम रंग रंगाईआ। सचखण्ड दवार दी देवे सूह, सोई सुरत आप उठाईआ। भेव खुल्हाए धर्म धार दी धू, धरोह किसे नाल ना कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे मेरी चिप्पी उत्ते लग्गा चप्पा, चारे जुग देण गवाहीआ। जो संदेशा दे के गया नानक तपा, तपीशरां तों बाहर समझाईआ। माण मिले इक्को पप्पा, पारब्रह्म प्रभ भेद खुल्हाईआ। आत्म परमात्म धार सब दा होवे टप्पा, नाउँ निरँकारा इक दृढ़ाईआ। प्यार मुहब्बत दी होवे सफ़ा, सफ़ा कूड़ी दए गंवाईआ। सतिगुर प्यार दा मिले नफ़ा, वणज इक्को इक कराईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे दफ़ा, सतिजुग सति सच प्रगटाईआ। इक्को सतिगुर शब्द किसे रहिण ना देवे बेवफ़ा, वफ़ादारी दए दृढ़ाईआ। धर्म दी धार होवे ना ख़फ़ा, गुस्सा गिला ना कोए प्रगटाईआ। पिछली करनी करे रफ़ा, रफ़ाकात आपणे नाल बणाईआ। धुर दे नाम दा बख्श के नफ़ा, भण्डारा अगम्म दए भराईआ। सिफ्त वड्याई कर के जसा, महिमा अकथ कथ सुणाईआ। कलयुग मेटे रैण अंधेरी मस्सा, नूरी चन्द चन्द चमकाईआ। होड़ा सुहावे उपर सस्सा, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। भगतां लूं लूं होवे रचा, रचना आपणी दए जणाईआ। गुरमुख बणा के धर्म दा बच्चा, बचपन आपणे विच टिकाईआ। शब्द संदेशा दे के सच्चा, सच समग्री इक वरताईआ। कंचन गढ़ बणाए पंज तत तन कच्चा, आपणी दया कमाईआ। लेखा पूरा करे मदीना मक्का, काअबा आपणी झोली पाईआ। जन भगतां कौल इकरार करे पक्का, वायदा आपणे नाल रखाईआ। सदी चौधवीं अन्त लेखा रहे ना चूंकि चुनांचे अलबत्ता, अलिफ़ ये दा लेखा वेखे चाँईं चाँईंआ। दो जहान इक्को डंका वज्जे फ़तिह, फ़ातिहा सब दा दए पढ़ाईआ। भगत भगवान दा इक्को आत्म परमात्म होवे मता, मति मतांतर रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति धर्म दी सच जणाए सत्ता, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आपणा खेल वखाईआ।

✪ २६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ गुरबख्श सिँघ दे गृह पिण्ड नौशहरा ज़िला हुश्यार पुर ✪

नारद कहे मैनूं आ गई याद पुराणी, पुनह पुनह सीस निवाईआ। जिस वेले प्रभ ने समुंद सागर रिड़क्या पाणी, रत्न चौदां बाहर कढुाईआ। तक्की धर्म दी धार सवाणी, सोहणा रूप दरसाईआ। उस समें ऐराप्त हाथी ने बोली इक बाणी, अगम्मी दिती सुणाईआ। कलयुग अन्तिम झगड़ा पैणा चारे खाणी, ख़ालस रूप ना कोए वखाईआ। आत्म परमात्म मेल मिलणा नहीं हाणी हाणी, ब्रह्म पारब्रह्म ना कोए मिलाईआ। किसे कम्म नहीं आउणी विद्या वाली विद्वानी, विद्वत रूप ना कोए दरसाईआ। मैं हैरान हो गया सुण के बोलया नेत्र चुक्क के वेख्या एह की खेल अगम्म महानी, हुक्म की सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। ऐराप्त हाथी फेर मारी चीक, दक्खण दिशा ध्यान लगाईआ। कलयुग वेला वक्त फेर आवे ठीक, ठाकर आपणा हुक्म सुणाईआ। मेरा शब्द करे तस्दीक, शहादत इक भुगताईआ। ओह सम्बल दा होवे वसनीक, दर दवारा इक सुहाईआ। उस दी धार होवे बारीक, जगत नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। ओह भगतां नाल करे प्रीत, प्रीतम हो के मेल मिलाईआ। चार जुग दी पिछली मेटे लीक, लाईन अगली दए समझाईआ। सृष्टी दृष्टी लए जीत, जागरत जोत करे रुशनाईआ। बैठा रहे आप अतीत, त्रैगुण दा मालक बेपरवाहीआ। सोहँ ढोला दस्से गीत, आत्म परमात्म राग जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा करनी कार कमाईआ। नारद कहे मैं हस्स के किहा ओए बिना माँ तों जम्मण वाले हाथी, मैनूं दे समझाईआ। एह तैनूं ख़बर संदेशे वाली किस दस्सी पाती, बिन अक्खरां दिती पढ़ाईआ। सति सच जणा साखी, सुख़न इक्को इक दृढ़ाईआ। उस वेले केहड़ा नछत्र केहड़ा गृह केहड़ी होवे रासी, केहड़ी दिशा वंड वंडाईआ। उस हस्स के किहा ओ ब्राह्मणा ओह आप पुरख अबिनाशी, नाशवान ना रूप धराईआ। कलयुग अन्त सदी चौधवीं इक आसी, आसा सब दी वेख वखाईआ। शंकर बैठा ना रहे उत्ते कैलाशी, ब्रह्मा भज्जे वाहो दाहीआ। विष्नूं बणे दास दासी, सेवक हो के सेव कमाईआ। उस वेले सृष्टी दी दृष्टी अन्दर होए उदासी, सांतक सति ना कोए कराईआ। इक पुकार करनी हज़रत ईसा जिस चढ़ना फाँसी, मसीह मसला इक वखाईआ। बीस बीसे कलयुग मेटणी अंधेरी राती, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। एह मेरी ख़बर धुर दी पाती, बिना अक्खरां तों पत्रिका दिती जणाईआ। नारद किहा एह केहड़ी लम्मी वाटी, इक दो तिन्न चार चौथा जुग आउंदयां देर लग्गे ना राईआ। नाले ताली मारी अक्खां मीटीआं नारद कहे मैनूं ऐं दिसदा जिवें साहिब दे थल्ले उस वेले उलटी होणी खाटी, उलटी मति दीन दुनी कराईआ। मैं वी ज़रूर पुज्जां पन्ध मुका के वाटी, वटणा मल के जावां चाँई

चाँईंआ। नन्गी रखां छाती, छाती ठोक के कहां छत्रधारी देणे रुलाईआ। एह मेरी खुशी दी कहाणी कोई कीती नहीं गुस्ताख़ी, सच दी सच दिती सुणाईआ। पर याद रखीं सम्मत शहिनशाही सत्त दी सधरां भरी आउणी विसाखी, चौदां चौदस चौदां वंड वंडाईआ। पंजां प्यारयां इश्नान करना साढे दस वज्जे रातीं, उँगलां दस दस सिर उत्ते टिकाईआ। पंजां लिखारीआं लेख लिखणा बहि के उत्ते खाटी, हरि भगत दवार सोभा पाईआ। पंजां दरबारीआं सीस उत्ते पंज पंज सेर दी सिर ते चुक्की होवे जल वाली चाटी, भाण्डा कच्चा मिट्टी सोभा पाईआ। ओह अमृत जल पुरख अकाल दीन दयाल सब नूं बख्शणा नाल प्रेम वाली ग्लासी, रस जाम रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल करे अनपछाती, बेपहचान आपणा हुक्म वरताईआ।

२६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ बूड़ सिँघ दे गृह पिण्ड वजीर पुर ज़िला गुरदास पुर

नारद कहे प्रभू मैनूं पैग़म्बर मारदे दाबे, मुकामे हक हक अख्वाईआ। कुछ लेखा दस्स दे जो बग़दाद जणाया नानक बाबे, बाबल तेरा भेव रहे दृढ़ाईआ। वाहिद खुदा खुद झगड़ा पाउणा काअबे, महिराबां रोवण मारन धाईआ। उम्मत उम्मती आउणा अज़ाबे, रसूल नबी वेख वखाईआ। जो लेखा लिख्या हज़रत मुहम्मद दी किताबे, कुतबख़ान्यां तों बाहर रिहा समझाईआ। सदी चौधवीं अन्त सब ने होणा लाजुआबे, लाशरीक लेखा मंगे थांउँ थाँईंआ। दरोही परवरदिगार ने बदल लए इरादे, दलील दलील विच्चों बदलाईआ। लहिणा वेखे पुन्न सवाबे, हज़रतां दा हज़रत बेपरवाहीआ। चार कुण्ट दहि दिशा शोरो गुल दा डंका वाजे, वज़ाहत नाल सके ना कोए समझाईआ। लेखा वेखणा जेहड़े पशू ढोर खांदे, पंछीआं खल्ल लुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे पैग़म्बर वेखण अगम्मा हरफ़, जिस नूं अलिफ़ ये ना सके समझाईआ। जिस नाल सब नूं देंदा रिहा शरफ़, मुशरफ़ नाल वड्याईआ। उस नाल करन लग्गा बेतरफ़, तरफ़दारी ना कोए जणाईआ। झगड़ा पाए गरबन शरक, क्षत्रीया आपणा हुक्म वरताईआ। आपणा हुक्म ना करे तरक, तुरकी वाले तुरत लए उठाईआ। सदी चौधवीं अन्त पैण ना देवे फ़र्क, फ़िरकेदार करे ख़लक खुदाईआ। मुहम्मद दा वायदा पूरा करे शर्त, शरअ दी शरीअत दे बदलाईआ। लेखा तके उपर अर्श, अर्शां दा मालक नूर इलाहीआ। निगह मार उपर फ़र्श, ज़िमीं ज़मां खोज खुजाईआ। सूफ़ीआं उत्ते मुहब्बत दा करे तरस, रहमत हकीकत हक रखाईआ। नूर अलाही जोती धार नर नरायण हो के देवे दरस, पर्दा पर्दानशीं आप उठाईआ। मुहम्मद दी महिबूब मुहब्बत विच मेटे

हरस, हवस अगली दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दा हुक्म हाकम हो के लए वरत, वर्तमान आपणी खेल खिलाईआ।

✪ २६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ दलीप सिँघ दे गृह पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदास पुर ✪

नारद कहे मैं निरगुण धार नद्दा, दिवस दिहाढ़े भज्जा वाहो दाहीआ। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद वेख्या इक्ठा, बहि के मता पकाईआ। इशारा करन लहिंदी दिशा उडदा घट्टा, ख़ाकी ख़ाक दुहाईआ। नाले कढ के सदी चौधवीं वीहवीं दा वेखण पटा, जो धुरदरगाही दिता फड़ाईआ। फेर उम्मत दा चीथड़ वेखण फटा, अगम्म लोयण अक्ख खुल्हाईआ। फेर तक्कण मानव मानव दिसदा रट्टा, अल्ला राम नाल दुहाईआ। निगह मारी धुर दे नाम दा लग्गा ठप्पा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। चौदां लोक रहिणा नहीं हट्टा, चौदां तबक तबक दुहाईआ। हिस्सा रहे कोए ना खत्ता, सांझी गंढ ना कोए रखाईआ। जुस्सा जिस्म ज़मीर सब दा होणा तत्ता, तत्व तत ना कोए बुझाईआ। धुर दे हुक्म विच फ़र्क पैणा नहीं रता, खालक मालक रिहा जणाईआ। लेखा जाणे यथार्थ यथा, यदी आपणा हुक्म वरताईआ। झगड़ा वेखण काया मट्टा, साढे
१२११ तिन्न हथ्थ कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। १२११
२२ नारद कहे मैं वेख्या पिछा परत, प्रभ प्रीतम वल्ल ध्यान लगाईआ। निगह मारी फेर उपर धरत, धवल धौल वेख वखाईआ। २२
हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद आपणी शरअ दी वेखण शर्त, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। साडी मंज़ूर होई अर्ज़, आरज़ू अवर रही ना राईआ। परवरदिगार सांझा यार खेल करे असचरज, अचरज लीला आप बणाईआ। जिस दे कोल चार जुग दी पिछली फ़रद, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लुक्या रहिण कोए ना पाईआ। सो खेल करे योधा सूरबीर मर्दाना मर्द, मदद मंग ना कोए मंगाईआ। उम्मत उलटी करे नरद, पुट्ठी सिध्धी सके ना कोए बणाईआ। शरअ छुरी मज़्हब दी मेटे करद, कातिल मक्तूल कत्लगाह दा लेख मुकाईआ। ग़रीब निमाणयां वंडे दर्द, दुखियां दीन दयाल होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। नारद कहे मैं वी कोल जा के गया झुक, सजदा सीस झुकाईआ। सुभावक ल्या पुछ, पैग़म्बरो मैनूं दयो दृढ़ाईआ। तुहाडी उम्मत दे कोल की कुछ, की कलमा आए वरताईआ। हज़रत मुहम्मद क्यों कटाई मुच्छ, लबां देण दुहाईआ। सदी चौधवीं क्यों नहीं हुन्दे खुश, खुशहाली विच वज्जे वधाईआ। तुसीं क्यों डरदे पुरख अकाल दा इक्को शब्दी उठया सुत, सुत दुलारा लए अंगड़ाईआ। जिस ने

दीन दुनी ज़ात पात मज़्ब शरअ दी बदलणी रुत, रुतड़ी प्रभ दे नाल महकाईआ। जिस ने तुहाडे ख़ाली कीते काया वाले बुत, बुतख़ाने रोवण मारन धाईआ। उस ने सब दी बदल देणी रुत, रुतड़ी इक्को इक महकाईआ। मूसे किहा नारद औह वेख पई लुट्ट, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। हज़रत ईसा कहे साथों सब कुछ जाणा छुट्ट, नाता सके ना कोए जुड़ाईआ। नारद फड़ के आपणा आपे गुट्ट, हलूणा दिता लगाईआ। बौहड़ी तुहाडे कोलों सब कुछ जाणा खुस, वस्त उम्मत उम्मती रहिण कोए ना पाईआ। मैनूं ऐं जापदा सब ने इक्को अगम्मी गाउणी तुक, तूं मेरा मैं तेरा ढोला धुरदरगाहीआ। जिस दा प्रकाश होणा अगम्मी जोत, जोती जाता पुरख बिधाता डगमगाईआ। नारद कहे पैग़म्बरो रसूलो नबीउ अज्ज दी इहो तकरीर बहुत, जो तहरीर रूप बदलाईआ। सुबह फेर मिलांगा नाल शौंक, शक रहिण कोए ना पाईआ। हुण मैनूं प्रभ दे चरणां विच जाण दयो पहुंच, पंजे दोहां हथ्थां रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सति धर्म दी सच चलाए रौंस, रसम विच इस्म सब दा दए बदलाईआ।

✪ २७ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ प्यारा सिँघ दे गृह पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदास पुर ✪

नारद कहे पैग़म्बरां मैनूं वट्टी घूरी, तिऊड़ी मथ्थे उत्ते पाईआ। पंडता गल्ल सुण ज़रूरी, ब्राह्मणा तैनूं दईए जणाईआ। साडे कलमे दी कर मशहूरी, मशवरा तेरे नाल पकाईआ। साडी रहि विच हज़ूरी, हाजर हो के सीस निवाईआ। नारद कहे मैं पुट्ठे हथ्थ जोड़ के किहा कलयुग दे जंमिउँ मैथों हुन्दी नहीं । मैनूं ऐं दिसदा तुहाडी उम्मत कूड़ी, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। तुहाडे कोल पुराणी सफ़ा रहिणी ते फूहड़ी, दूजी वस्त नज़र कोए ना आईआ। मुहम्मद ने बोदी फड़ के किहा तेरी पुट्ट देवां जूड़ी, फड़ के दिता हिलाईआ। नारद कहे मैं पा देणी भसूड़ी, प्रभ नूं कहि के कला उलटी देणी भवाईआ। अन्त रहिण नहीं देणी किसे दी ग़रूरी, ग़ुरबत सब दी बाहर कढ्ढाईआ। मेरा मालक तुहाडा खुदा सदा दा दस्तूरी, दस्तूर आपणा ना कदे बदलाईआ। किसे दी वज्जण नहीं देणी अग्गे तम्बुरी, तार सितार सब दी देणी हिलाईआ। जम्बु देश खेल वेखो जमहूरी, ज़ाहर ज़हूर रिहा जणाईआ। मूसा हस्स प्या नारदा तक प्रकाश कोहतूरी, तुरीआ तों बाहर दरसाईआ। हज़रत ईसा कहे वाट नहीं दूरी, दूर दुराडा पन्ध ना कोए रखाईआ। नारद किहा तुसीं चूरमा खाणा कि चूरी, मैनूं दिउ सुणाईआ। गाँ खाणी कि सूरी, सूरमिओ छाती ते हथ्थ मार के दयो दृढ़ाईआ। मुहम्मद हस्स के किहा

ब्राह्मणा तेरी कढ दईए कड़ाह पूड़ी, दबदबे नाल जणाईआ। नारद किहा मेरा मथ्था तक्को पेशानी तक्को जिथ्थे प्रभ दे चरणां दी लग्गी धूढ़ी, धूढ़ां तुहाडीआं दयां उडाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सब नूं इक्ठे कर के रिहा नूड़ी, नरड़ के बन्धन देवे पाईआ। शरअ दी ज़ंजीर हथ्थों चूड़ी, बन्धन बंध ना कोए बंधाईआ। जिस ने दीन दुनी कीती मूढ़ी, मूर्ख मूर्खां नाल टकराईआ। ओह तक्को जेहड़ी नानक खेल कीती सी खडूरी, खुद आपणा आप पड़दा लाहीआ। आपणी काया वेखो काअबे वाली ख़ाली दिसे चटूरी, वस्त विच ना कोए वखाईआ। रबाब सितार तक्को तम्बुरी, नाड़ी नाड़ी खोज खुजाईआ। तुहाडी उम्मत तुहाडे अमाम अग्गे भरे ना कोए हज़ूरी, हाज़र हज़ूर नज़र कोए ना आईआ। तुसीं सारे पैग़म्बर मेरे होवो मशकूरी, मुश्किल तुहाडी दयां जणाईआ। किसे दी रहिणी नहीं सबर सबूरी, साबत नज़र कोए ना आईआ। सारयां दी मंज़ल कर देणी , इज्ज़त आबरू लेखा दए मुकाईआ। शाह पातशाह शहिनशाह शाह सुल्ताना अलाही रूप नूरी, नूर नुराना खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे हुक्म दी आपणे हुक्म विच्चों दए मंज़ूरी, मोहर धुर दे नाम वाली लगाईआ।

✪ २७ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ रवेल कौर दे गृह पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदास पुर ✪

नारद कहे पैग़म्बरो मैं तक्कया तुहाडा खुदा, खुदी तुहाडे नाल रखाईआ। जेहड़ा तुहाडी उम्मत करन लग्गा जुदा, नाता रिहा तुड़ाईआ। तुसीं क्यों कहिंदे उस नूं खुदा, इहो जेहे अलाह दा नाम । तुसीं सारे कहि दयो अलविदा, आपणा चेहरा लओ बदलाईआ। तुहाडे उत्ते की उहदा दबदबा, मैनूं दयो सुणाईआ। उस दे नालों मैं चंगा रब्ब रब्बा, रब्बी नूर मेरा वेखो चाँईं चाँईंआ। मेरे कोल प्यार मुहब्बत लब लबा, लबरेज़ पैमाना दयां वखाईआ। सन्मुख वेखो आपणा अब्बा, आबेहयात दयां प्याईआ। मेरी बोदी नूं सलाम करो तुहानूं आवे बड़ा मज़ा, रस अनोखा दयां वखाईआ। फेर तुहाडे उतों टल जाए सदी चौधवीं दी क़ज़ा, काज़ीआं मुल्लां दयो समझाईआ। चलणा मेरी इक विच रज़ा, राज़क रिज़क रहीम दयां वखाईआ। नहीं ते तक लओ सब नूं मिलणी ज़रूर सज़ा, सज़ा याफ़त होए जगत लोकाईआ। मैं फिर के आया सब दे अन्दर कीती गजा, बुतख़ाने खोज खुजाईआ। पर याद करो इधर वेखो मख़ौल ना मन्नयों सम्बल विच तुहाडे संभालण वाले दी जग्ा, जो जगदीश मेरा धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस शरअ धार मेटणी हद्दा, हदूद हज़रतां पार कराईआ।

✪ २७ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ दीदार सिंघ गृह पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर ✪

नारद कहे माझे वाल्यो मैं तुहानूं कहां भाऊ, भाअ मेरे नाल लैणा कराईआ। मेरे नाल सौदा करो अगाऊ, धुर दे हुक्म नाल जणाईआ। मैं तुहाडे कोल वेचणे केतू ते राहू, ब्राह्मण हो के नछत्र तुहाडे हथ्थ फड़ाईआ। मैनूं शाहूकार दस्सयो कोई साऊ, जेहड़ा ठग्गी ना कदे कमाईआ। नाल मैं वी आवां जेहड़ा चार जुग प्रभ दा पुत कमाऊ, दिवस रैण भज्जां वाहो दाहीआ। मैं किसे दा कुछ ना खाऊं, सारयां दा खाधा पीता कढ के आपणा झट लँघाईआ। मैं धर्म दा पहरेदार कलयुग अन्त सुत्तयां नूं जगाऊं, हलूणा देवां थांउँ थाँईंआ। जेहड़े ना उठण उन्हां नूं फड़ूं बांहू, बाहां नूं फड़ के दयां उठाईआ। मैनूं खेल वेखण दा बड़ा चाऊ, चुकन्ना हो के भज्जां वाहो दाहीआ। पुरख अकाल सब दा दस्सां मलाहू, खेवट खेटा इक वखाईआ। जो कलयुग अन्त बणे बेपरवाहू, बेपरवाही विच समाईआ। पैग़म्बरां तों लेखा मंगे बण के धुर दरगाहू, सच दा मालक इक अख्वाईआ। पिछली चार जुग दी कीती ढाहू, ढाह के ख़ाक दए मिलाईआ। फिर मैं बणत बणाऊं, घड़न भन्नणहार दया कमाईआ। नारद कहे ओस वेले मेरी सेवा ज़रूर लगाऊ, लग्न इक्को इक बणाईआ। धर्म दी कीती फेर दोहराऊं, दोहरा आपणा खेल खिलाईआ। मैनूं ऐं जापदा नाम भण्डारा इक वरताऊ, वारस हो के आप वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया अन्त मुकाऊ, मुकम्मल आपणा हुक्म समझाईआ। अवतारां पैग़म्बरां ज़रूर दबाऊ, सिर सके ना कोए उठाईआ। त्रैगुण अग्नी अग्ग लगाऊ, दो जहान सके ना कोए बुझाईआ। भगत भगवान दा सिक्का ज़रूर चलाऊ, सोहँ मोहर इक लगाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ दो जहान आप निवाऊ, सिर सके ना कोए उठाईआ। हरिजन कोझे कमले ज़रूर तराऊ, भगत सुहेले पार लँघाईआ। सतिजुग साचा धरनी धरत धवल धौल उत्ते ज़रूर वखाऊ, घराना इक्को इक वखाईआ। दीन दुनी कूड़ कुड़यार ज़रूर रवाऊ, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। सच दवारा सति पुरख आप प्रगटाऊ, परगणा इक्को इक वखाईआ। सति धर्म सच निशान ज़रूर झुलाऊ, जगत जहान नज़री आईआ। नारद कहे जन भगतां मनसा ज़रूर पूर कराऊ, करवट बदले धुरदरगाहीआ। शाह पातशाह शहिनशाह इक अख्वाऊ, आख़र आपणा हुक्म वरताईआ। आत्म दरसी दरस दरसाऊ, दहि दिशा नज़री आईआ। कलयुग अन्तिम चिखा बुझाऊ अग्नी तत ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, नारद कहे गृह नछत्र हुक्मे अन्दर हुक्म विच बदलाऊ, बदली ब्रह्मा विष्न शिव आप कराईआ।

✪ २७ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ हज़ारा सिँघ दे गृह पिण्ड बाबुपुर ज़िला गुरदासपुर ✪

नारद कहे मैं पैग़म्बरां किहा तुहाडा पैंडा मुका, सदी चौधवीं मुकम्मल रिहा दृढ़ाईआ। हज़रत मुहम्मद आह लै अगम्मी रुक्का, जो बिना हरफ़ हरूफ़ लिखाईआ। अग्गे कलमा होणा शब्द दो तक्का, तुखम तासीर सब दी दए बदलाईआ। पाणी रहिणा नहीं किसे हुक्का, चिलम सब दी दए बुझाईआ। अगला भेव रहे ना छुपा, पर्दा दयां उठाईआ। पुरख अकाल इक्को शब्द उठाउणा दुलारा सुता, पूत सपूत आप प्रगटाईआ। जिस लहिणा तकणा पंज तत काया बुता, बुतख़ान्यां वेख वखाईआ। झगड़ा पाउणा दीप कुशा, करौच पुष्कर नाल रलाईआ। वेखो अगम्मी धार हो के उठा, निरगुण निरवैर लए अंगड़ाईआ। मेरे ग़रीब उत्ते तुट्ठा, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। शब्दी धार फड़ के गुट्टा, हलूणा दिता लगाईआ। औह तक मुहम्मद दा तारा निशान जांदा टुट्टा, चन्द संग ना कोए वखाईआ। ईसा मूसा पाउणी फुट्टा, फुटकल करे लोकाईआ। कूड़ कुड़यार पाउणी लुट्टा, लुटेरा कलयुग नाल मिलाईआ। सब दा भाग दिसे निखुटा, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। माण रहिणा नहीं लबां मुच्छां, मुश्किल हल्ल करे लोकाईआ। मुहम्मद मेरी गल्ल दा करीं ना गुस्सा, गिला ना कोए रखाईआ। मकबरे विच तेरा कुरलावे जुस्सा, तन वजूद दए दुहाईआ। दरोही खुदा महिबूब तेरा वेला पुज्जा, पूजा अवर रहे ना राहीआ। लेखा पूरा होणा कलयुगा, कलकाती दए खपाईआ। इक्को नूर इलाही होणा उग्घा, उगण आथण करे रुशनाईआ। शब्दी धार खेल वरते उत्ते बसुधा, लेखा पूरा करे जो अर्जन गुर संदेसा दिता बाबा बुड्ढा, शब्दी शब्द सुरत नाल जणाईआ। जो आसा पूरी रखी महात्मा बुद्धा, बुद्धी तों परे अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे मैं मुहम्मद किहा तक नूर असमानी, इस्म आजम इक जणाईआ। जिस दा जल्वा बाहर जिस्म जिस्मानी, जल्वागर अगम्म अथाहीआ। जिस दी मंज़ल रूहे रवां रुहानी, रज़ी अज़ी नज़ी आज़म इक अख्वाईआ। ओह वेखे तेरी तकबीर वाली तहरीर वाली तकरीर वाली कलामी, कलमा कल्मया विच्चों खोज खुजाईआ। जो महिव मालक मेहरवान महिबूब दो जहानी, सांझा यार दो जहान अख्वाईआ। अमाम अमामा शहिनशाह सुल्तानी, नूर ज़हूर इक वखाईआ। तुहाडी शरअ दी कटे ग़ुलामी, शाह हकीर वेखे थाउँ थाँईंआ। धुर दे हुक्म दा हुक्म होवे इकदामी, कामल मुर्शद दए दृढ़ाईआ। सब दा नाता जोड़ना बाहमी, मज़्ह़बी वंड ना कोए वंडाईआ। सब दा लहिणा तके पेशानी, धुर मस्तक खोज खुजाईआ। झगड़ा मेटे अञ्जील कुरानी, काया कुरह वेख वखाईआ। दीन दुनी तके जगत बेईमान, बेपरवाह आपणा पड़दा आप उठाईआ। तेरी अन्त अख़ीर बेनज़ीर मंज़ूर करे सलामी, सलामालैकम अलैकम सलाम सुल्हकुल आपणे

विच छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण एथे ओथे दो जहानी, दो जहान श्री भगवान भगवन आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ २८ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ आसा सिँघ बलाका सिँघ दे घर पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर ✪

नारद कहे मुहम्मद ने खोल्या अगम्मी बस्ता, बिना शरअ तों शरीअत तों बाहर कढ्ढाईआ। तक्कया उस दा लेख अन्तिम सब दा इक्को होणा रस्ता, रहिबर इक हो आईआ। परवरदिगार साचा मार्ग होवे दस्सदा, हकीकत दा पड़दा आप उठाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां चौदां तबकां तों बाहर होवे नस्सदा, दहि दिशा भज्जे वाहो दाहीआ। मार्ग लाउंदा जाए सच दा, सच करनी कार कमाईआ। भेव खोल्दा जाए काया माटी कच्च दा, कंचन गढ़ आप सुहाईआ। लेखा रहिण ना देवे मनमति दा, गुरमति इक दृढ़ाईआ। अन्तिम इक्को प्यार पाउणा पंज तत दा, तत्व तत आपणे रंग रंगाईआ। होर लेखा
१२१६ लेख होणा ब्रह्म मति दा, मति मतांतर डेरा ढाहीआ। जेहड़ा पुरख अकाल हर हिरदे विच वसदा, लख चुरासी रिहा समाईआ। १२१६
२२ उस संदेसा देणा आपणे जस दा, सिफ्तां वाली सिफ्त पढ़ाईआ। उस वेले मुहम्मद असमानां वल्ल तकदा, ताकत बिन नैणां २२
नैण उठाईआ। चारा रहिणा नहीं किसे दे वस दा, ताकत सके ना कोए अज़माईआ। फेर हुक्म सुणया अगम्मी अलख दा, अलख अगोचर रिहा दृढ़ाईआ। धुर अमाम खेल करना प्रतख दा, अमलां तों रहित दिसे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद करे मुहम्मद तकी गौर नाल किताब, बिना कुतबखानिउँ हथ्थ उठाईआ। जिस विच मज़मून खुद खुदा होवे धुर दा अहिबाब, मित्र प्यारा धुरदरगाहीआ। कलमा कलमे दी मारे आवाज़, सोई कायनात आप उठाईआ। मुहब्बत मेहर दी वजाए रबाब, रब्बी नूर आपणी दया कमाईआ। अन्तर निरन्तर खोल्हे राज़, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। शरअ छुरी विच्चों सब नूं करे आज़ाद, कातिल मक्तूल दा लेखा दए मुकाईआ। इक्को नाद सुणाए अनादी नाद, अनुरागी आपणा आप दृढ़ाईआ। जिथ्थे पैग़म्बरां दा ख़त्म हो जाए जुआब, सवाल दी जुरत ना कोए रखाईआ। बिना सीस तों होए आदाब, सजदयां विच निउँ निउँ लागण पाईआ। जेहड़े चौदां मसले ज़मीन उत्ते नानक लिखे बग़दाद, बग़ली कंध्याँ उत्ते टिकाईआ। ओह नूरे चशम चशमे शबाब, ज़वे ज़ही सोभा पाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा इक दृढ़ाईआ। नारद कहे मुहम्मद ने बदलया इक वरका, वाक्या तक्कया बेपरवाहीआ। जिस विच लेखा परवरदिगार घर का, गृह इक्को नज़री आईआ। उथे झगड़ा नहीं दरवेश दर का, दर भिखारी वंड ना कोए वडाईआ। मेहरवान महिबूब मेहर आपे करदा, करदार दूजा नज़र कोए ना आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेस आपे धरदा, निरगुण सरगुण रूप बदलाईआ। कलमा कायनात नबी रसूल हो के आपे पढ़दा, सजदयां विच निउँ निउँ सीस झुकाईआ। मढ़ी मसाणी आपे रिहा सड़दा, गोर विच आपणा डेरा लाईआ। ओह लेखा जाणे चोटी जड़ दा, दो जहानां खोज खुजाईआ। इशारा करदा मुहम्मदा जो जम्मदा सो अन्त ज़रूर मरदा, एसे तरह दीन मज़ब अन्त रहिण ना पाईआ। एह खेल होणा नरायण नर दा, नर हरि आपणी कार भुगताईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित जो चाहे सो करदा, करनी दा करता दाता धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची मंज़ल अगम्मी आपे चढ़दा, दरगाह साची मुकामे हक हक विच दरसाईआ।

✪ २८ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ भाग सिँघ दे गृह पिण्ड बाबू पुर ज़िला गुरदास पुर ✪

नारद कहे मैं नाअरा लाया हक मेरे मौला, तेरी बेपरवाहीआ। ओस संदेशा दिता जा चौदां तबकां पा रौला, होका दे धुरदरगाहीआ। ख़बरदार हो जाओ मुहम्मद दा पूरा होण लग्गा कौला, इकरारनामा दए दृढ़ाईआ। नाले निगह मारी उपर धौला, धरती वेख वखाईआ। फेर आपणा सज्जा खब्बा फ़र्का के डौला, बिन बाहवां लई अंगड़ाईआ। परवरदिगार सब दा भार करना हौला, बोझल नज़र कोए ना आईआ। ओह खेल करे जल्दी जल्दी तौला, तालब तल्ब सब दी वेख वखाईआ। नाल हस्स के करी मखौला, दोवें हथ्थ कन्ना उत्ते लगाईआ। खुदा बख्शण वाला तुहानूं न्याज़ां वालीआं चौलां, चाअ इक्को वार कराईआ। तुहाडा लेखे लग्गणा पेका सौहरा, दो जहान देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा दोहरी हो के वेखे दोहरा, ज़ाहर ज़हूर आपणी करनी आप कराईआ।

✪ २८ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ मेला सिँघ दे गृह पिण्ड बाबू पुर ज़िला गुरदासपुर ✪

नारद कहे मुहम्मदा मैनूं निरगुण धार दी पई लिशक, चमक चमक विच्चों नज़री आईआ। ओस नूं तक के मेरा अन्दर रिहा सिसक, हौक्यां विच रिहा जणाईआ। पैग़म्बरा जे आपणी अल्ला राणी नाल मेरा लगा दएं इश्क, प्रेम प्रेम विच बंधाईआ। मैं फेर लत्तां मारूं स्वर्ग बहिशत, जन्नत दी लोड़ रहे ना राईआ। मैं केहड़ा भोगी गृहस्त, जगत वासना ना कोए रखाईआ। इहो आशा मैं कीती राम दे गुरु कोल वशिष्ट, विषयां तों बाहर दिता दृढ़ाईआ। ओह वी गया सी कोलों खिसक, पल्लू गया छुडाईआ। मेरे हथ्थ ना टांक रही ना जिसत, निरगुण सरगुण दोवें कम्म किसे ना आईआ। मेरी बड़ी पुराणी हिरस, हवस दयां दृढ़ाईआ। मेरे अन्तर प्रेम दी धार रही रिसक, बूंदा बांदी मेघ बरसाईआ। मैं तकणा चाहुंदा आपणी विच दृष्ट, दृष्टीकोण नज़र कोए ना आईआ। ओह तक लै मेरे महिबूब वाली लिख्त, जो लेखा धुर दा रही जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे मुहम्मद सुण लै मैथों अगम्मी बाणी, धुर कलमे नाल जणाईआ। तेरी अल्ला राणी दा मैं हाणी, जोड़ सोहणा सोभा पाईआ। साडे प्रेम प्यार मुहब्बत दा बणे आबेहयात पाणी, जगत आब दी लोड़ रहे ना राईआ। जगत नमाज़ां तों परे दी सुण कहाणी, कथा अकथ दयां जणाईआ। जे मैनूं इहो जेही मिल जाए सवाणी, सोहणा घर दयां सुहाईआ। चौदां तबकां विच खेल करां महानी, ख़ालक ख़लक रूप बदलाईआ। तैनूं फिर खुशी नाल देवां पैग़ामी, संदेशा धुरदरगाहीआ। मैं सब दा अन्तरजामी, अन्तरयामता दयां दृढ़ाईआ। नाले कहां मैं ते मेरी राणी दे हुक्म नाल गलों लाह दे गुलामी, शरअ ज़ंजीर दे तुड़ाईआ। ओह तक्क जल्वा अवामी, अवाम विच मेरा नूर इलाहीआ। हुण मैथों झल्ली नहीं जांदी बदनामी, बदी दा लेखा देणा मुकाईआ। क्यों मैं शहिनशाह सुल्तानी, पातशाह इक अख्वाईआ। जिस ने कलमे अन्दर भेजे कृष्णा रामी, राधे सीता मेरे ढोले गाईआ। मैं बड़ा गुण निधानी, गहर गम्भीर अख्वाईआ। मैं सब दी मेटणी बेईमानी, अन्तर अन्तर वेखां चाँई चाँईआ। तूं मेरा हुक्म मानी, मेरे तों दूर होर खुदा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मालक धुर दा अनामी, इनाम विच पैग़ाम अगला दयां सुणाईआ।

✪ २८ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ संता सिँघ दे गृह पिण्ड बाबू पुर ज़िला गुरदास पुर ✪

नारद कहे अन्त होणा पए ख़ानाबदोश, घराना नज़र कोए ना आईआ। माण रहे ना काया माटी पोश, पुश्त पनाह

हथ्थ ना कोए रखाईआ। सब ने हो जाणा ख़ामोश, ख़ाहमखाह आपणा हुक्म ना कोए वरताईआ। किसे दा अन्दर कवत्त रहिणा नहीं जोश, जवां मर्द ना कोए अख्वाईआ। सब दी टिकाणे लाउणी होश, हुश्यारीआं नाल प्रभ आपणा हुक्म वरताईआ। अन्दर पैग़म्बरो होणा पए कलमा फ़रोश, फ़रोख्त करो थांउँ थाँईंआ। नज़री आए रू पोश, गलाफ़ इन्साफ़ विच दए दुहाईआ। पिछली रहे कोई ना सोच, समझ अग्गे दए जणाईआ। मेरी आशा कहिंदी लोच, तृष्ना दए दुहाईआ। खेल वरते धुर दा खौंत, खसम नूर इलाहीआ। जिथ्थे किसे दी नहीं कोई पहुंच, आपणा बल ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत दी धार मेटे अदौत, अदालत अदल विच रहिण मूल ना पाईआ।

✪ २८ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ करतार कौर दे गृह पिण्ड बाबू पुर ज़िला गुरदास पुर ✪

नारद कहे मैं चौदां तबक वेखी अगम्मी पौण, पौण पाणी तों बाहर नज़री आईआ। मैं ख़ुशी नाल लग्गा सौण, आसण
१२१६ सिंघासण इक विछाईआ। मैनूं झट मुहम्मद लग्गा हिलाउण, हलूणा इक लगाईआ। तूं आया एथे कौण, काफ़र डेरा लाईआ। १२१६
उच्ची उच्ची लग्गा सुनाउण, ज़ोर ज़ोर नाल सुणाईआ। मैं नीवीं कर लई धौण, उच्ची अक्ख ना मूल उठाईआ। हथ्थ
२२ मरोड़ के लग्गा पछताउण, पश्चाताप विच सुणाईआ। फिर सहिज नाल किहा मुहम्मदा जेहड़ा दीन दुनी लग्गा बदलाउण, २२
दो जहान वेख वखाईआ। मैं ओस दा गाउण वाला गाउण, ढोले सिफ्तां वाले सुणाईआ। जिस ने राम रूप हो के मारया रौण, रावण दहिसर दिता ढाहीआ। कंस सिंघासण दिता ना सौण, काहन हो के लेखा दिता मुकाईआ। ओह मेरा मालक कलयुग विच सतिजुग आया लगाउण, धर्म दा राह इक चलाईआ। कूड़ी क्रिया आया हटाउण, माया ममता मोह गंवाईआ। चार वरन अठारां बरन हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई इक्वे आया कराउण, वडे छोटे अमीर ग़रीब आहला अदना इक्को घर बहाईआ। सच प्यार दी भगती आया समझाउण, भगवन आपणी दया कमाईआ। जुग जन्म दे विछड़यां आया मिलाउण, मेला हरि जगदीश कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग जन्म दे उजड़यां सचखण्ड दवार आया वसाउण, दरगाह साची सच घर बहाईआ।

१२२०
२२

✪ २८ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ हज़ारा सिँघ दलीप सिँघ दे गृह पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदास पुर ✪

नारद कहे मुहम्मद हुक्म सुण अगम्म रहीमा, रहमान रिहा दृढ़ाईआ। संदेशा देवे ओह खुदावंद करीमा, पैग़ाम नूर अलाहीआ। सब दा हक हकूक जाणा छीना, शहिनशाह नज़र कोए ना आईआ। जिस खेल करना उत्ते ज़मीना, ज़ामनी सब दी दए मुकाईआ। उम्मत उम्मती होणी ग़मगीना, ग़मखार ग़मी ना कोए गंवाईआ। दुलदुलां उत्ते रहे कोए ना ज़ीना, ज़ेबोज़ीनत नज़र कोए ना आईआ। अन्त सब नूं कहिणा पए अमीना, बिन सजदयां तों सीस झुकाईआ। जिस ने तुहाडी बदल देणी तालीमा, ताबयादारी विच नज़र कोए ना आईआ। ओह मालक आलीशान अज़ीमा, आलीजाह बेपरवाहीआ। ओह जिस ने लेखा मुकाउणा मक्का मदीना, काअब्यां तों बाहर आपणा हुक्म वरताईआ। धरती दा साफ़ करना सीना, सीना बसीना आपणा हुक्म चलाईआ। चौदां तबक होणे अधीना, सिर सके ना कोए उठाईआ। ओह तक सदी चौधवीं दा अन्त समां होए ग़नीमा, ग़नीमत विच आपणा खेल खिलाईआ। जो मालक आदि दा आदि कदीमा, कुदरत दा कादर नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, दरगाह साची दरमजोशे मुज़ीअज़ अज़ आपणा हुक्म वरताईआ। नारद कहे मैं सुणया पैग़ाम पेचीदा, बेज़बां दिता दृढ़ाईआ। राज़ वेख्या पोशीदा, बातन पड़दा दिता खुल्हाईआ। इशारा कीता आह वेख मुहम्मद दीआं उम्मीदां, आमद विच बैठा राह तकाईआ। राह तके नाल अगम्मी दीदा, दीदा दानिस्ता ध्यान लगाईआ। जिस हुक्म दे नाल कलमा जणाया मजलस हरफ़ हरूफ़ वाली बणाईआ। शरअ दी कीती तमहीदा, बेख़बरां ख़बर दृढ़ाईआ। प्यार बख्श्या अज़ीज़ा, रहमत विच समाईआ। हक दी दे तमीज़ा, तमा दिती मिटाईआ। ज़रा उस नूं तक ला के नीझा, मुहम्मद बिन अक्खां तों अक्ख उठाईआ। किसे दे कोल दरगाह वाला नहीं वीज़ा, वुज़ू कीते कम्म किसे ना आईआ। हकीकत दी जाणे कोए ना ईदा, ईदुलफ़ितर दए गवाहीआ। सब नूं ग़फ़लत विच आई नींदा, बेदारी विच लए ना कोए अंगड़ाईआ। ओह वेख शहादत देंदे हसन हुसैन जो होए शहीदा, करबले वाले रोवण मारन धाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। नारद कहे मैनूं आउंदी धुर दी हदाइत, हदूदां तों बाहर जणाईआ। हज़रत वेख शरअ वाली शरायत, शरीअत की समझाईआ। ओह तक जो कलमा होया अनाइत, बख्शिश रहमत तेरी झोली पाईआ। उस ने किस दी कीती समाइत, समें नाल दे दृढ़ाईआ। किस दे विच इशाइत, इशारा कर धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं किस बिध होए रयाइत, रहमत तेरे उत्ते कमाईआ। मुहम्मद किहा एह हुक्म इक्को वाहिद, ख़ालक ख़लक रिहा दृढ़ाईआ। जिस दा फ़रमाना मेरे उत्ते होया आइद, आदि दा मालक इक अख्वाईआ।

ओह बख्शिश करे शायद, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सति दी धार खेल मुशाहिद, मशवरा मुशहिरयां विच कदे ना लिआईआ।

✪ २६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ किशन सिंघ दे गृह पिण्ड अल्लड़पिण्डी ज़िला गुरदास पुर ✪

नारद कहे भगतो वेखो मेरा गुण, गुणी निधान बण के गया आईआ। मेरा शब्द लओ सुण, अणसुणत दयां जणाईआ। सुणो अनादी धुन, अनरागी राग उपजाईआ। कुछ मैनूं दान करो पुन्न, पूरन ब्रह्म दयां समझाईआ। मैनूं इयों जापदा तुहानूं प्रभ ने ल्या चुण, चोणवें गुरमुख डेरा लाईआ। मैं वी बड़ा पुराणा मुन, मुनीश्र बेपरवाहीआ। तुसीं सारे दस्सो रब्ब नेड़े कि घसुंन, वेरवा सब ने देणा सुणाईआ। ओ तुसीं उस परमात्मा नूं मन्नदे जेहड़ा भवावे विच लख चुरासी जून, चारे खाणींआ विच भवाईआ। मेरे कोल प्रेम प्यार दी पौण, हुलारा सब नूं दयां वखाईआ। मैं प्यार विच सब नूं देणा सौण, सुख आसण उत्ते टिकाईआ। तुसीं मेरे साथी बणे मैं तुहानूं आया जगाउण, हमसाजण आपणे नाल रलाईआ। दस्सो तुहाडे विच्चों प्रभू
१२२१ नूं छडेगा कौण, जिस छड देणा ओह बाहवां दयो उठाईआ। फेर आकड़ नाल फिरो उच्ची करके धौण, तुहानूं विकार विच्चों १२२१
२२ रोकण वाला नज़र कोए ना आईआ। गाँ सूर नूं प्रेम नाल छको ते त्यार होवो वास्ते छकाउण, शकवा अन्दर रहे ना राईआ। २२
तुहानूं की लोड़ पई ए उस प्रभू दे गाउ गाउण, जेहड़ा जग नेत्रां नाल वेखण कोए ना पाईआ। मेरे वल्ल तक्को मैं तुहानूं आपणे कोलों सब कुछ आया दवाउण, देवणहारा बण के चाँईं चाँईंआ। जगत भय विच्चों आया कढाउण, अवतार पैग़म्बर गुरु दा डर रहे ना राईआ। मैं इक्को सिख्या आया पढ़ाउण, पुस्तक हथ्थ ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे ओह तक्को जुलाहा आवे नस्सया, कबीर वाहो दाहीआ। मैं उहनूं वेख के खिड़ खिड़ा के हस्सया, ताली हथ्थां वाली वजाईआ। इशारा कीता जा वेख आपणी अंधेरी मस्सया, तेरे राम दा चन्न नज़र कोए ना आईआ। अक्खरां वाले वेख जस्या, सिफ्तां वाली सिफ्त वड्याईआ। तेरा प्रभू किसे दे नहीं अन्दर वसया, जिस दे अग्गे वास्ते पा पा के आपणा जन्म गया गंवाईआ। ओह तक इक होर खेल होड़ा उपर सस्सया, समझ तों परे समझ जणाईआ। हाहे दी टिप्पी दा लेख किसे ना लिख्या, लेखक कातब चले ना कोए चतुराईआ। कलयुग चार कुण्ट फिरे नठ्ठया, भज्जे वाहो दाहीआ। झट बोदी ते हथ्थ मार कहे आह वेख कलयुग अन्त

सब दा अन्त अख़ीरी पटया, जो पटने वाला आपणे हथ्थ रखाईआ। जिन्हां दीन दुनी नूं ज़ीरो करना ज़ीरो नाल बटया, ज़ीरो दा ज़ीरो रूप समाईआ। ओह वेख मातलोक विच्चों सब दा नाम कटया, अग्गे दाख़ला हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। जेहड़ा खाधा सूर गाँ ते वच्छा कट्टया, कट कट के सब दे हिस्से धर्म राए हथ्थ फड़ाईआ। किसे दी कीमत नहीं पैणी पैसा धेला टक्या, अमुल्ल मुल्ल ना कोए रखाईआ। कबीरा ओह तक लै सब दा चीथड़ पुराणा फटया, फट्टयां उत्ते लेटी दिसे लोकाईआ। मैं जगत जहान दी हद्द टप्पया, टापूआं तों बाहर डेरा लाईआ। मैं इधर तक्कया उधर तक्कया जगत जहान विच्चों भगतां ने खहिड़ा छड दिता पथ्थर वट्टया, जेहड़े पिछले भगत आसा रख के गए ओह आसा दिती बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे जन भगतो मेरा नाम जपो साह साह, साहिब मैं इक्को नज़री आईआ। जे चाहोगे गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नाल दयां प्रना, जो प्रणाम करके मैनूं झट लँघाईआ। मैं समरथ पिछले बख़्श दयांगा गुनाह, गुनाहगार ना कोए अख्वाईआ। मैं सृष्टी कर दयां फ़नाह, फ़नाह फ़िल्ला होए लोकाईआ। चुरासी लख करां सुआह, धूढ़ी सब दी दयां उडाईआ। मेरा इक्को इक गवाह, जो शहादत दए भुगताईआ। खेल करे थांउँ थाँ, थान थनंतर आपणा हुक्म वरताईआ। मेरी कराए वाह वाह, वाहवा होवे वड वड्याईआ।

१२२२ २२ मैं फिरां जल अस्गाह, थलां विच डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, १२२२ २२

सच दा पड़दा आप चुकाईआ। कबीर कहे सुण मुनी नारदा, नरद पुत्ती सिध्धी वेख वखाईआ। औह तक खेल शब्द सार दा, जिस दी सार किसे ना आईआ। जो मालक आर पार दा, पारब्रह्म नूर अलाहीआ। जन भगतां फिरे तारदा, तारनहार आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जिस भय चुकाया पैग़म्बर गुर अवतार दा, भउ रहिण कोए ना पाईआ। ओह भगत जन तैनूं कलयुग अन्त कदे नहीं निमस्कार दा, भावें कितनी दे माण वड्याईआ। उन्हां सथ्थर हंढाया इक्को अगम्मी यार दा, यराना यराने नाल रखाईआ। एह खेल अगम्म अथाह उस सच्ची सरकार दा, जो शाह पातशाह शहिनशाह इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। नारद कहे जन भगतो तुसीं क्यों नहीं कीती हां, मेरी हां विच हां मिलाईआ। क्यों नहीं उठाई बांह, नाता प्रभ दे नालों तुड़ाईआ। मैं तुहाडे गुण गां, तुसीं क्यों नहीं गा के आपणी ख़ुशी बणाईआ। मेरा जी करदा मैं प्रभ नालों सब नूं दयां भुला, मिल्या नज़र कोए ना आईआ। जे तुसीं मैनूं हस्स के इक वार लओ बुला, बुल्हे तों परे की मंज़ल दयां समझाईआ। वेख्यो आपणा जन्म ऐवें ना ल्ओ रुला, खाणा पीणा छड के पुरख अकाल विच समाईआ। तुसीं मेरे नाल कर लओ सुल्हा, सुल्हकुल मैं इक्को नूर इलाहीआ।

तुसीं याद रखो मैं फ़तूर पा देणा विच काज़ी मुल्लां, मुलाणे देणे रुलाईआ। मैं भँवर नहीं रहिण देणे उत्ते फुल्लां, सुगंधी नज़र कोए ना आईआ। मैं किसे घर अग्ग नहीं बलण देणी चुल्ह्रा, चारों कुण्ट अग्नी देणी लगाईआ। नाम दा किसे कोल रहिण नहीं देणा तुला, वञ्झ मुहाणा साथ ना कोए वखाईआ। इक्को दवार वखाउणा खुल्ह्रा, जिथ्थे ख़लक बैठी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी बेपरवाहीआ। कबीर कहे नारदा ना दे झांसे, आपणा आप बदलाईआ। एह उस प्रभ दे प्यार विच फांसे, जेहड़ा जम की फाँसी दए कटाईआ। इहनां दे अन्दर निरगुण धार रखे वासे, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। तूं नहीं जाणदा इन्ह्रां दे जीवण दे खुलासे, कथनी तों बाहर इन्ह्रां दी सिफ्त सालाहीआ। एह बिना पुरख अकाल तों तेरे वरगे पंडतां नूं कदे नहीं टेकदे माथे, सीस ना कदे निवाईआ। विकदे नहीं लालच लोभ वाले हाटे, गंगा गुदावरी जमना सुरस्ती दी लोड़ ना कोए रखाईआ। इन्ह्रां बणाया नाल प्रभू दे साथे, जो हर हिरदे विच समाईआ। तेरे मक्कार विच कोए ना फांसे, बन्धन तेरा कम्म किसे ना आईआ। नारद बिना ताली तों कीते हासे, हस्स के दिता जणाईआ। मैं वी देवां इहनां नूं शाबाशे, जेहड़े इक्को ओट रख के प्रभ साचे नूं सीस निवाईआ। कबीर ने मस्तक रखया आपणे हाथे, उँगलां तिन्न नाल छुहाईआ। निमस्कार कीती पुरख अबिनाशे, सीस जगदीश दिता निवाईआ। फेर खेल दस्सया आकाशे, की करता कार कमाईआ। नारदा जिन्ह्रां दे अन्दर अन्तर दिता विश्वाशे, विश्व दा मेला मेलया सहिज सुभाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला निरगुण धार जोती जाता हो प्रकाशे, प्रकाशवान इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा खेल तमाशे, तमाशबीन बेपरवाहीआ।

✪ २६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ बीबी ध्यानो दे गृह पिण्ड अल्लड़ पिण्डी ज़िला गुरदास पुर ✪

नारद कहे मैनूं पैग़म्बरां किहा खोदा, खुद मुख दाढ़ी ना कोए रखाईआ। मैं हिला के आपणा बोदा, हवा सब नूं दिती लगाईआ। नाले कहे वेखो मैं किड्डा योधा, चार जुग दा नज़री आईआ। जिस ने आपणा आप सोधा, सोध साध के प्रभ दे नाल रखाईआ। मेरे कोल इक अगम्मी बोझा, जिस नूं जेब कहे लोकाईआ। पैग़म्बरो मैं तुहाडा बन्द कीता उहदे विच रोज़ा, नमाज़ बग़ल विच टिकाईआ। मेरा वेख्यो होर अगम्मी मोजज़ा, मुअज़ज़ हो के दयां वखाईआ। कलयुग अन्त पुरख अकाल इक्को भगतां नूं देणी सोभा, सुहबत आपणे नाल रखाईआ। बाकी सब नूं दीन मज़्ह्रब दा दे के लोभा, लालच

विच देणा फसाईआ। इक्को वार चौदस चन्द दा चौधवीं सदी लाउणा गोडा, घुटणे सब दे दए निवाईआ। मेरा मुख ना जाणिओ रोडा, मज़्हबां दी रोड ते चलण वाल्यो तुहानूं दयां जणाईआ। शरअ दी मोरी तक्को खोडा, खुद आपणा ध्यान उठाईआ। जिस खेल खिलाया वेदी सोढा, सोढ बंस रंग रंगाईआ। उस अगम्मी आपणा ओढण ओढा, जिस दी समझ कोए ना पाईआ। उस ने सब दा बदल देणा मोढा, मज़्हबां भार ना कोए उठाईआ। इक्को होणा भगतां जोगा, जुगीशरां पन्ध मुकाईआ। साढे तिन्न हथ्थ दा पहन के चोगा, सम्बल आपणा देस वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे रोगा, रोगीआं रोग गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, हरिजन पार कराए कमला कोझा, मेहर नजर इक उठाईआ।

✪ २६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ बीबी चरणो दे गृह पिण्ड अल्लड़ पिण्डी ज़िला गुरदास पुर ✪

१२२४ नारद कहे मैनूं पैग़म्बरां मारीआं हाकां, ज़ोर ज़ोर नाल सुणाईआ। मैं हस्स के किहा की कहिंदे हो काका, काकिओ १२२४

दयो सुणाईआ। मैनूं सच दस्सो क्यों तुहाडी उम्मत मुन्नाया झाटा, सीस पति गंवाईआ। क्यों मिट्टी दी कनाली विच गुन्नया आटा, पड़दा दयो उठाईआ। क्यों कलमा गाया नाल सफ़ाता, सिफ्तां विच वड्याईआ। क्यों अलिफ़ ये बणाया खुलासा, खुद दयो सुणाईआ। क्यों ना चंगीआं लग्गीआं पैंदीआं रासां, गोपी काहन वेख वखाईआ। तुहाडीआं केहड़ीआं लम्मीआं आसां, मैनूं दयो समझाईआ। ओह वेखो तुहाडीआं पूरीआं हो गईआं ख़ाहिशां, तमन्ना रही ना राईआ। दीनां मज़्हबां दीआं कटीआं जाणीआं शाख़ां, शनाख़त करे धुरदरगाहीआ। मैं इक्को बचन संदेशा आखां, आख के दयां दृढ़ाईआ। सारे खोल्ह के वेखो ताका, पड़दा ओहला रहे ना राईआ। अन्तिम खेल करे पुरख अबिनाशा, अबिनाशी आपणी कार कमाईआ। सदी चौधवीं सब दा होवे बन्द खुलासा, बन्दीख़ाने दए तुड़ाईआ। मैनूं मेरे साहिब उत्ते भरवासा, भरम भेव ना कोए रखाईआ। जिस दा बणया दासी दासा, सेवक हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, दीन दुनी दा बदल देवे पाशा, पेशीनगोई चिह मेगोई सब दी वेख वखाईआ।

✪ २६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ बीबी जीतो गृह पिण्ड अल्लड़ पिण्डी ज़िला गुरदास पुर ✪

नारद कहे चौदां तबकां तों बाहर मैनूं मिल गई अलिफ़ ये, दोवें भज्जण वाहो दाहीआ। इक दो सिम्मतां तकीआं फेर कहिण से, तीजी अक्ख खुल्हाईआ। चौथा पद कहिण केहड़ा विच देह, तन वजूद सोभा पाईआ। किस पैग़म्बर नाल नेंह, मुहब्बत कवण रखाईआ। नारद कहे मैं उन्हां नूं हस्स के किहा कमलया एह खेल सारी होण वाली खेह, ख़ाक पंज तत नज़र कोए ना आईआ। ओह वेखो अग्गे बे, बेबे तुहाडी धुर दी माईआ। ओह तक्को अग्गे खेल पे, पिता पुरख अकाल धुर दा माहीआ। ओह जाणो अग्गे ते, तख्ता ज़िमी असमान उलटाईआ। ओह समझो अग्गे टे, टाल मटोल करन वाला अग्गे रहिण कोए ना पाईआ। ओह वेखो खे दी से, साबत सबर सबूरी वाला दिस कोए ना आईआ। नारद कहे मैनूं दोहां किहा ब्राह्मणा वे, एह की रिहा सुणाईआ। ओह तक लै साडी जे, जगत बन्धना विच बंधाईआ। जीम दे नाल तक लै चे, चारों कुण्ट पए दुहाईआ। ओह वेख अगम्मी खे, ख़ालक ख़लक रिहा दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। नारद कहे मैं किहा नी तक लओ आपणा दाल, दलिद्दर वेखो जगत लोकाईआ। वेखो आपणा डाल, पत्त टहिणी सोभा कोए ना पाईआ। वेखो आपणा ज़ाल, ज़र्रा ज़र्रा रिहा कुरलाईआ।
१२२५ २२ रे तक्को की कहि रही कमाल, कूक कूक सुणाईआ। ड़े कहे ड़ाड़ मिटे ना जगत जहान, दीन दुनी रोवे मारे धाईआ। १२२५ २२
ज़े कहे सब दा आउणा ज़वाल, ज़ाहर ज़हूर हुक्म वरताईआ। जे कहे जोर जुलम दे ज़ीज इज़ते चौदां तबकां तों बाहर, सबक इलम आलम ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता अगम्म अथाहीआ। नारद कहे मैं तक्कया रूप सीन, त्रै त्रैलोकी मुख उठाईआ। खेल वेख्या शीन, शमा नूर चशम रुशनाईआ। निगह मारी तक्कया स्वाद, सबर रूप ना कोए दरसाईआ। पड़दा लाहया ज़वाद, ज़ाबते विच ना कोए लोकाईआ। तोए यकतरफ होया निकाब, पर्दा दिता उठाईआ। ज़ोए ज़ालम कूड़ तों दिता ज़ुआल, आज़म आलीशान दिता दृढ़ाईआ। ऐन अक्ख खुल्ही पढ़ी अगम्मी किताब, जिस दा हरफ़ हरूफ़ नज़र कोए ना आईआ। ग़ैन ग़ज़ब दा वेख्या महिराब, जित्थे खेल बेपरवाहीआ। फे दा फ़िकर होया अन्त सब नूं मिलणा अज़ाब, बचया रहिण कोए ना पाईआ। कआफ़ कातिल मक्तूल दा पूरा होणा हिसाब, दो जहान लेखा चुक्के थांउँ थाँईंआ। कीफ कर्म दा वेखणा भाग, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। गाफ़ गदागर होणे सर्ब जो शहिनशाह आलीजाह जनाब, आबरू माण जगत गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे मैं अग्गे होया मैनूं मिल गई लाम, लम्मा

चौड़ा रूप बणाईआ। मैं हस्स के किहा मीम दा मज़मून नहीं रहिणा कलाम, कायनात ना कोए चतुराईआ। नून दा नुक्ता नहीं रहिणा निशान, निशाने सब दे दए बदलाईआ। वा वास्ते पावे पीर पैग़म्बर दरगाह साची बण ग़ुलाम, सजदयां विच सीस झुकाईआ। हे हथ्थ जोड़ करन प्रणाम, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। हमज़े दा किसे उत्ते होणा नहीं एहसान, आशा सब दी वेख वखाईआ। ये याद कर लै यक दा हुक्म होणा वाहिद दा कलमा होणा सुणना अवाम, आम दा झगड़ा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मार्ग इक समझाईआ। नारद कहे चौदां तबकां तों बाहर विद्या पढ़ी अनोखी, अलिफ़ ये ना कोए समझाईआ। जिस दा लेख लिख्या नहीं विच किसे पोथी, पुस्तक ग्रन्थ ना कोए दृढ़ाईआ। जिस दी मंज़ल जाणे कोए ना चोटी, जड़ वेखण कोए ना पाईआ। उस मेरी आसा उठाई सोती, हलूणा दिता लगाईआ। चपेड़ मार के किहा नारदा जा वेख अगम्मी जोती, जोती जाता धुरदरगाहीआ। सम्बल बैठा आपणी कोठी, सच दवारे नज़री आईआ। नारद कहे मैं उँगल रख लई आपणी उपर ठोडी, सोचां विच आपणा आप डुबाईआ। फेर हो गया भार गोडीं, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। फेर मैं कुल तकां वेदी ते सोढी, जिथ्थे नानक गोबिन्द रूप षिगआ बदलाईआ। झट धुर दे शब्द ने मैनूं दिती सोझी, समझ दिती दिड़ाईआ। ब्राह्मणा पहलों हथ्थ फेर आपणी बोदी,
१२२६ उँगलां अक्खां नाल छुहाईआ। निगह मार तक लै ठाकर मौजी, जो मजलस भगतां नाल रखाईआ। ओह आदि अन्त दा १२२६
२२ बोधी, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। ओह आत्म ब्रह्म दा धोबी, दुरमति मैल दए धुआईआ। हउमे कटे रोगी, ममता मोह २२
चुकाईआ। आत्मा परमात्मा दा बणे संजोगी, सच दा मेला लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी सृष्टी दृष्टी विच्चों आपे जाए सोधी, सुध शुध शुधी विच आप कराईआ।

✪ ३० फग्गुण शहिनशाही सम्मत ६ बीबी दीपो दे गृह पिण्ड दोस्तपुर ज़िला गुरदासपुर ✪

नारद कहे पैग़म्बर वेखो खुदा बड़ा कानूनी, कायदा बकायदा आपणा हुक्म वरताईआ। तुहानूं दस्स के हरफ़ां वाली मज़मूनी, मजमूआ आपणा दिता जणाईआ। खेल खिला के इक तों दूणी, एका दूआ वंड वंडाईआ। रसना ज़बान दी बदल के कूणी, हद्द हदूद दिती वंडाईआ। संसार लालच बख्श्या बेरूनी, ब्रह्म दा पड़दा रखया छुपाईआ। भेव दस्से ना किसे अंदरूनी, अन्तष्करन ना कोए चतुराईआ। ओह तक्को जिस कौरो पांडो अठारां भराए अकशूणी, इक कशूणी अठाई लख

जणाईआ। उस दी खेल अगम्मी होणी, होणी आपणे हुक्म अन्दर भवाईआ। सुख दी नींद किसे ना सौणी, सुख आसण जगत देवे तजाईआ। शांत आवे ना किसे पौणी, पवण पाणी अग्ग ना कोए बुझाईआ। जिस ने सब दी पति गवाउणी, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जन भगतां सोई सुरत जगाउणी, सुत्तयां ल्ए उठाईआ। दीन दुनी कूड़ कल्पणा विच रुवाउणी, रूह बुत करे ना कोए सफ़ाईआ। सदी चौधवीं खेल वरताउणी, चारों कुण्ट पए दुहाईआ। अगम्मी खेल आप खिलाउणी, ख़ालक ख़लक दया कमाईआ। सच दस्सां जोती धार इक प्रगटाउणी, प्रगट होवे धुर दा माहीआ। पिछली कीती सारी ढाउणी, अग्गे आपणा हुक्म वरताईआ। माया ममता विच सृष्टी सर्ब तरसाउणी, धीरज धीर ना कोए धराईआ। शब्द हलूणे नाल कायनात कल्मयां वाली आप उठाउणी, काअब्यां दए हिलाईआ। शरअ दी शरअ नाल पाए अड़ौणी, अग्गे करे ना कोए सफ़ाईआ। अल्ला राम राम अल्ला नाल लड़ाउणी, लड़ सके ना कोए बंधाईआ। खुदा गॉड वंड वंडाउणी, गाईड नज़र कोए ना आईआ। शब्द राड इक उठाउणी, चारों कुण्ट दए वखाईआ। तुहाडी कीती पैग़म्बरो आपणे लेखे पाउणी, परवरदिगार आपणे विच समाईआ। सतिजुग दी धार सच चलाउणी, चाल निराली इक जणाईआ। आत्म परमात्म धार दरसाउणी, दरस दीद दए कराईआ। सच नूर जोत चमकाउणी, चमक अहिमकां विच चमकाईआ। हुक्म दी हुक्म नाल बदली कराउणी, बदला चुक्के थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची सिख्या इक समझाउणी, साख्यात हो के करे अगम्म पढ़ाईआ।

१२२७ २२

✪ ३० फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ गुरमुख सिँघ दे गृह पिण्ड सोहण ज़िला गुरदास पुर ✪

नारद कहे अवतार पैग़म्बर गुरु तक्को अगम्मी तालीम, तुलबे हो के बिन अक्खरां ध्यान लगाईआ। विद्याला मकतब तक्को आलीशान अज़ीम, जिथ्थे आहला अदना नज़र कोए ना आईआ। सिख्या देवे कुदरत दा करीम, बेऐब परवरदिगार नूर इलाहीआ। जेहड़ा दीन दुनी दी मेट देवे तक्सीम, फ़िरकेदारी दा फ़र्क दए गंवाईआ। साची धार दस्से महीन, निज नेत्र नैण अक्ख खुल्ह़ाईआ। आत्म परमात्म भरोसा दए यकीन, वाहिद पड़दा आपणा आप दए उठाईआ। मन कल्पणा जिस दे होए अधीन, त्रैगुण अग्नी तत ना कोए तपाईआ। सिख्या देवे नवीं नवीन, नव दवारयां बाहर करे पढ़ाईआ। जिथ्थे मनसा होए ना कदे ग़मगीन, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। जिस दी कोई कर ना सके तरमीम, अदल विच बदली ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्ह़ाईआ।

नारद कहे पैग़म्बरो पढ़ो अगम्मी सिख्या, अल्फ़ ये तों बाहर पढ़ाईआ। जिस दा अक्खर लेख विच नहीं कोई लिख्या, काग़ज़ कलम शाही ना कोए समझाईआ। ओह संदेशा देवे धुर दा पित्तया, पिता पुरख अकाल नूर इलाहीआ। जिस दा मज़मून जगत विच ना कदे विकया, हट्टां विच ना कोए टिकाईआ। ओह खेल करे अनडिठया, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर सदी चौधवीं दा कढे सिट्टया, लाशरीक आपणा हुक्म वरताईआ। औह वेखो तुहाडा कलमा दोहथ्थड़ मार के पिट्टया, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। रोज़े नमाज़ां विच मन किसे ना टिकया, आबेहयात मुख ना कोए चुआईआ। बुत बुतख़ान्यां विच्चों किसे ना जित्तया, रूह रवां ना कोए कराईआ। आपणे मज़्बां दा वेखो हिस्सया, जो वंडां आए वंडाईआ। साचा रिहा कोए ना मित्तया, दोस्त संग ना कोए बणाईआ। आत्म परमात्म करे कोए ना हितया, हितकारी संग ना कोए वखाईआ। अन्त जगत जहान दिसे मिथ्या, मिथी दिसे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे सो पुरख निरँजण सुणो संदेश, सँध्या सरघी तों बाहर दृढ़ाईआ। हरि पुरख निरँजण दा सुणो उपदेश, चार जुग दी विद्या तों बाहर करे पढ़ाईआ। एकँकार दा तक्को लेख, जिस नूं कातब लिख ना कोए समझाईआ। आदि निरँजण दा खेल वेखो विशेष, जो विश्व दा मालक इक प्रगटाईआ। अबिनाशी करते दा तक्को देस, जो देस देसातरां तों बाहर नज़री आईआ। श्री भगवान दा खेल तक्को जो रहे हमेश, जुग चौकड़ी आपणी खेल खिलाईआ। पारब्रह्म दा वेखो भेत, अनभव दृष्टी अक्ख खुल्हाईआ। जो सब दे वसे नेतन नेत, निज घर बैठा डेरा लाईआ। उस सब सृष्टी दी दृष्टी अन्दर आत्म परमात्म दरसणा हेत, हितकारी हो के दया कमाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करनी खेत, खण्डा खड़ग नाम चमकाईआ। रुत बसन्त मानव ज़ाती मौले चेत, चेतन सुरती सब दी दए कराईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे कलेश, कलकाती रहिण कोए ना पाईआ। जो अन्तिम आशा रख के गया दस दशमेश, दहि दिशा तों बाहर ध्यान लगाईआ। सो लेखा पूरा करे नर नरेश, सचखण्ड वासी आपणा हुक्म वरताईआ। अन्त झगड़ा मुकाए मुल्लां शेख़, मुसायकां मसला हल्ल कराईआ। दीन दुनी दी बदल देवे रेख, जिस दी ऋषी मुनी खेल समझ सकण ना राईआ। ओह भाग लगावे सम्बल देस, सुहञ्जणा इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्टी दी दृष्टी अन्तर निरन्तर बुद्धी करे विशेष, विश्व दा मालक खलक दा ख़ालक मखलूक दा मालक, तल्ब सब दी पूर कराईआ।

✪ ३० फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ गुरदेव सिँघ दे गृह पिण्ड शोहण ज़िला गुरदास पुर ✪

नारद कहे वेखो बदल रही रुत, रुतड़ी आपणा आप बदलाईआ। प्रभ दा नाम होणा दो तुक, दोहरा रंग रंगाईआ। भाग लग्गणा काया बुत, बुतख़ाने वज्जे वधाईआ। प्रभ दे दुलारे होणे सुत , जन भगत नज़री आईआ। जिन्हां गोदी लए चुक्क, चुकन्ना हो के वेखे थाउँ थाँईंआं। आत्म ब्रह्म दा देवे सुक्ख, दुःख दर्द दा डेरा ढाहीआ। जामा लेखे लाए मनुक्ख, मानस आपणे लेखे लाईआ। उलटा होण ना देवे रुक्ख, गर्भ वास ना अग्न तपाईआ। जे कोई मैनूं लवे पुछ, मैं सब नूं देणा सुणाईआ। चुरासी विच्चों निकलणा कम्म तुछ, जे तुछ बुद्धी वाले प्रभ दे लागण पाईंआ। जो एथे उथे रखे ख़ुश, ख़ुशीआं विच वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बख्शणहारा सच सुच, सति आपणा आप दरसाईआ।

✪ ३० फग्गुण शहिनशाही सम्मत ६ हरिभजन सिँघ दे गृह पिण्ड जीऊ जुलाई ज़िला गुरदास पुर ✪

सतिगुर पूरा नदरी नदर निहाल, मेहर नदर नाल तराईआ। त्रैगुण माया तोड़ जगत जंजाल, रजो तमो सतो दा डेरा ढाहीआ। सोई सुरत लए उठाल, शब्द अनादी नाद करे शनवाईआ। आपे पुछे मुरीदां हाल, मुर्शद बण के धुरदरगाहीआ। नाता तोड़े काल महाकाल, चुरासी फाँसी दए कटाईआ। सच दवार बठाए सच्ची धर्मसाल, सचखण्ड साचा इक सुहाईआ। जिथ्थे झगड़ा नहीं शाह कंगाल, ऊच नीच ना कोए अख्वाईआ। सतिगुर शब्द बण दलाल, जगत जहान पन्ध मुकाईआ। गुरमुख वेखे आपणे लाल, लालन आपणा रंग रंगाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सतिगुर पूरा नदर निहाल, नज़र नज़र विच्चों बदलाईआ। सतिगुर पूरा करे मेहर नदर, नज़रीआ अन्दरों दए बदलाईआ। आसा मनसा पूरी करे सध्धर, सदमा कूड़ रहे ना राईआ। मनुआ मन ना पाए ग़दर, पंज विकार ना कोए लड़ाईआ। सुरती शब्द नाल देवे बदल, बदली प्रेम विच रखाईआ। काया मन्दिर अन्दर बहि के करे अदल, इन्साफ़ आपणे हथ्थ रखाईआ। कूड़ी क्रिया नाम खण्डे नाल करे कत्ल, मक्तूल दा लेखा दए चुकाईआ। गुरसिक्खां करना पए कोए ना यतन, यथार्थ जिन्हां ते आपणी दया कमाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आपणा वखाए अगम्मा वतन, जिथ्थों बेवतन होई लोकाईआ। जो साहिब सतिगुर दे घाट आ गया पत्तन, सो नाम बेड़े लए चढ़ाईआ। एथे ओथे मालक होवे लाजा रखण, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नाम अमोलक दे के धुर दा रत्न, कीमत आपणे, विच छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा

वर, सचखण्ड निवासी मेहर नज़र उठाईआ। भेव खोल्हे सतिगुर पूरा जिस उपर नदर करदा, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। भेव खुल्हावे आपणे घर दा, घर घर विच पड़दा दए चुकाईआ। जिथ्थे अमृत बूंद स्वांत निजर झिरना झिरदा, नाभी कँवल कँवल खुल्हाईआ। मनुआ दहि दिशा ना उठ उठ फिरदा, सतिगुर शब्द डोरी नाल बंधाईआ। आत्मा मेले जुग जन्म विछड़या चिर दा, चिरी विछुन्ने आपणे नाल मिलाईआ। राग सुणावे आपणी धुन दा, अनहद नादी नाद वजाईआ। भेव रहे ना अगम्मी सुन्न दा, सुन्न समाधी तों बाहर कढ्ढाईआ। जिथ्थे जाम रहे ना बुल्ल्ह दा, रसना वाली ना कोए पढ़ाईआ। उथे खेल होवे इक्को गहर गम्भीर बेनज़ीर सुल्हकुल दा, कुल मालक नज़री आईआ। गुरमुखां बूटा कदे ना हुलदा, जिन्हां नूं सतिगुर अमृत नाम फल लगाईआ। ओह मातलोक कदे ना भुल्ल दा, जिस ते मेहर नदर नज़रवान आप टिकाईआ। चुरासी विच कदे ना रुलदा, राय धर्म ना दए सज़ाईआ। सच तराज़ू कंडे तुलदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा मालक बेपरवाहीआ। सतिगुर नदर देवे तार, तारनहार दया कमाईआ। किरपा करे विच संसार संसा रोग दए मिटाईआ। अन्दरों कढ कूड़ विकार, हँकार दए चुकाईआ। सच प्रेम दी वजा सितार, सोई सुरत दए उठाईआ। लेखा मुका के नौ दवार, ईड़ा पिंगल सुखमन पन्ध मुकाईआ। अमृत बख्श के ठंडा ठार, झिरना निजर आप झिराईआ। शब्द सुणा अनादी धुन्कार, अगम्मी राग अलाईआ। दीआ बाती घर कमलापाती दीआ जोती देवे बाल, सूर्या चन्न दी लोड़ रहे ना राईआ। काया मन्दिर अन्दर वखाए सच्ची धर्मसाल, घर घर विच पड़दा लाहीआ। जेहड़े गुरमुख सतिगुर दे बण जाण लाल, लाल गुलाल रंग दए चढ़ाईआ। उन्हां नूं दिने जागदयां राती सुत्तयां दर्शन दे के नदरी नदर करे निहाल, नज़र निज नेत्र नज़र नाल मिलाईआ। फिर ना जुआब रह जाए ना सवाल, सवाल जुआब विच जुआब सवाल मिल के दोवें आपणा आप जाण मिटाईआ। फेर जिधर तके उधर वेखे परम पुरख मेहरवान, मेहरवान मेहरवान जो मेहर नज़र उठाईआ। जो आदि अन्त जुगा जुगन्त आत्म परमात्म परमात्म आत्म सति सरूप शाहो भूप शहिनशाह श्री भगवान , सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा सद मेहर दा जन भगतां देंदा रहे दान, दाता दानी हो के आपणी वस्त नाम वरताईआ।

✪ ३० फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ धिरता सिँघ दे गृह पिण्ड कलानौर ज़िला गुरदास पुर ✪

नारद कहे मैं चार कुण्ट दौड़या, दहि दिशा पन्ध मुकाईआ। जगत जहान रीठा होया कौड़या, अमृत रस ना कोए भराईआ। धर्म दे चढ़े कोए ना पौड़या, मंज़ल हक ना कोए मुकाईआ। मनुआ सके कोए ना होड़या, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। सुरत शब्द मेल किसे ना जोड़या, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। सतिगुर शब्द चढ़े कोए ना घोड़या, करनी पन्ध ना कोए मुकाईआ। सब ने आपणा आपणा बेड़ा रोढ़या, नईया नौका नाम हथ्थ किसे ना आईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तेरा पन्ध मुके ना सौड़या, भीड़ी गली पार ना कोए कराईआ। कलयुग साधां सन्तां दे सीस ते झुलदे चौरया, धर्म दा छत्र ना कोए झुलाईआ। मानस जन्म किसे ना सौरया, सौहरे पईए मिले ना कोए वड्याईआ। प्रभू मैं तक्कया नाल ग़ौरया, गहर गवर ध्यान लगाईआ। पंज विकार दा चले दौरया, दर दर पई दुहाईआ। तेरी दीन दुनी दा बदलया तौरया, तार सितार ना कोए हिलाईआ। खावंद मिले किसे ना शौहरया, कन्त भगवन्त तेरी सेज ना कोए हंढाईआ। नौ खण्ड पृथमी सृष्टी दृष्टी अन्दर शोरया, धीरज धीर ना कोए धराईआ। वर पावे कोए ना लोड़या, दुहागण रूप दिसे लोकाईआ। बौहड़ी तेरे नालों सब दा होया विछोड़या, विछड़यां मेल ना कोए मिलाईआ। किसे दा भाग ना दिसे मथोरया, मथन कूड़ कर्म ना कोए कराईआ। घर घर अन्दर कूड़ क्रोध हँकार करे खोरया, शरअ नाल शरअ टकराईआ। एस वेले पुरख अकाले दीन दयाले तेरी लोड़या, परवरदिगार सांझे यार तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा दिसे कोए ना होरया। नारद कहे मैं सब दा तक्कया अन्तरशकरन, हरि करते दयां दृढ़ाईआ। प्रीती लग्गी किसे ना तेरे चरण, चरण धूढ़ी ख़ाक ना कोए रमाईआ। झगड़ा किसे ना मिटे मरन, मर जीवत रूप ना कोए रखाईआ। बेशक सारे तेरे ढोले पढ़न, ढोल माही तेरा दरस कोए ना पाईआ। जगत वासना विच सारे अड़न, कल्पणा करे ना कोए सफ़ाईआ। भय विच मूल ना डरन, निर्भय होई लोकाईआ। माण टुट्टे ना हँकारी गढ़न, सति सरूप ना कोए समाईआ। दरोही तेरी मंज़ल मूल ना चढ़न, चढ़दा लहिंदा वेख ध्यान लगाईआ। सदी चौधवीं मानस जन्म सर्ब हरन, हरन फरन निज नेत्र ना कोए खुलाईआ। झगड़ा मिटे ना वरन बरन, ज़ात अज़ाती पन्ध ना कोए मुकाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले बिन तेरी किरपा कलयुग जीव मूल ना तरन, भवजल पार ना कोए कराईआ। सतिगुर शब्द फड़ा लड़न, पल्लू नाम गंढ पवाईआ। तूं मालक भन्नृण घड़न, समरथ इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। नारद कहे मैं फिरया जहान जगत, हुक्मे हुक्म सेव कमाईआ। साचा

दिसे कोए ना भगत, भगवान रंग ना कोए रंगाईआ। सतिगुर दी लभ्भे कोए ना शक्त, शक्ती नूर नुरानी नूर ना कोए चमकाईआ। मैं निगह मारी उत्ते फ़र्श, धरनी धरत धवल धौल वेख वखाईआ। किसे दी मिटी नहीं अन्दरों हरस, हवस विच सर्ब लोकाईआ। अमृत मेघ देवे कोए ना बरस, बूंद स्वांती जाम ना कोए प्याईआ। प्रभ दर्शन नूं सारे रहे तरस, तृष्ना तृखा ना कोए चुकाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कलयुग अन्तिम आप परत, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। सब दी आसा मनसा पूरी कर दे शर्त, शरअ दा लेखा रहे ना राईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां उत्ते कर तरस, रहीम हो के रहम आप कमाईआ। दुखियां दुःख वंड दर्द, दर्दीआं दर्द आप मिटाईआ। तेरा खेल सदा असचरज, अचरज लीला दे जणाईआ। तूं योधा सूरबीर मर्दाना मर्द, मेहरवान मेहरवान मेहरवान इक अख्वाईआ। शरअ छुरी मेट दे करद, कातिल मक्तूल दा लेखा रहे ना राईआ। मेरी बेनन्ती मंज़ूर करनी अर्ज़, आरज़ू तेरे अग्गे रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अंधेरा गर्द, गर्दिश मोह विकार हँकार दे मुकाईआ।

✪ ३० फग्गण शहिनशाही सम्मत ६ बीबी सुखराज दे गृह पिण्ड कलानौर ज़िला गुरदास पुर ✪

नारद कहे सुण फग्गणा, फल्गुण आपणा ध्यान लगाईआ। सच दस्स अगला साल किहो जेहा लग्गणा, पहली चेत की चतुराईआ। की शब्द दमामा वज्जणा, जगत जहानां करे शनवाईआ। की हुक्म होणा सूरा सरबंगणा, शाह पातशाह शहिनशाह की आपणा हुक्म वरताईआ। की खेल करना गोपाल मूर्त मदना, मधसूदन आपणी कार कमाईआ। की लेखा होणा आहला अदना, पर्दा परदयां विच्चों देणा चुकाईआ। किस गृह दवार धर्म दी धार दीपक जगणा, अंध अंधेर रहे ना राईआ। किस दा मेल होणा नाल स्वामी सज्जणा, सतिगुर शब्द जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। फग्गण कहे सुण हुक्म सूरे सरबंग, धुर दा दयां जणाईआ। जो संदेसा दे के गया गोबिन्द पुरी अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जिस दा लेखा नहीं नाल जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज बन्धन ना कोए पवाईआ। याद रखणा पहली चेत जगत सिंघासण शब्द दी धार उलटा करना पलँघ, धर्म दी रीती दयां दृढ़ाईआ। सृष्टी दी दृष्टी होणी अंध, सच चन्द ना कोए चमकाईआ। झगड़ा वेखणा नव खण्ड, नव दर दर हल्काईआ। पुरख अकाला दीन दयाला खेल करे सूरा सरबंग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि,

सच दा भेव आप खुल्हाईआ। फल्गुण कहे पुट्ठा सिंघासण देणा डाह, पहली चेत चेतन दए कराईआ। फेर सब ने कहिणा वाह वाह, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। एह खेल कराउणा ख़ुद ख़ुदा, ख़ुदी तकबरी वेखे थांउँ थाँईंआ। रूह बुत तकणे जुदा, जुज़ वेखे थांउँ थाँईंआ। जिस नूं कहिंदे वाहिद अल्ला, आलमीन आपणा पड़दा दए उठाईआ। साचा हुक्म करे रवां, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। दीन दुनी दा बदलणा समां, समझ समझ विच्चों बदलाईआ। वास्ता पाउणा संग मुहम्मद यार चव्हां, चार यारी साथ बणाईआ। सदी चौधवीं लेखा तकणा तामस तम्हां, तमन्ना वेखणी थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरख सोग़ जणाए कोए ना ग़मां, ग़मखार हो के ग़मी सब दी दए चुकाईआ।

✪ पहली चेत शहिनशाही सम्मत ७ मंगल सिँघ दे गृह पिण्ड फतूपुर ज़िला गुरदास पुर ✪

सम्मत छे कहे मेरी अन्त अख़ीरी रात गई बीत, फल्गुण आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं प्रभ दी तकी अगम्मी रीत, सचखण्ड साचे ध्यान लगाईआ। जिथ्थे बैठा इक अतीत, त्रैगुण नज़र कोए ना आईआ। रूप दिसया ना कोए मन्दिर मसीत, शिवदुआला मट्ठ गुरदवार ना कोए वखाईआ। इयों जापदा उस ने दीन दुनी दी बदल देणी रीत, रीतीवान धुरदरगाहीआ। जो हर घट वसया चीत, मन चित ठगौरी दए गंवाईआ। आत्म परमात्म दी दस्से प्रीत, प्रीतम हो के पड़दा दए उठाईआ। झगड़ा मेटे हस्त कीट, ऊच नीच इक्को रंग रंगाईआ। धुर दे नाम दी दए हदीस, हज़रतां तों अग्गे करे पढ़ाईआ। भगतां आसा मनसा पूरी करे उम्मीद, तृष्ना तृखा जगत वाली बुझाईआ। काया माटी करके ठांडी सीत, अग्नी तत दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सम्मत छे कहे मेरा समां गया लँघ, लोकमात आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं शब्द दा सुणया अगम्मी छन्द, संदेशा धुरदरगाहीआ। निरगुण जोती धार दा तक्कया चन्द, नूर नुराना डगमगाईआ। शब्दी धार वेख्या पलँघ, पावा चूल नज़र कोए ना आईआ। जोती जाता तक्कया सूरा सरबंग, शाह पातशाह शहिनशाह जो इक्को नाम वजाए मृदंग, दूसर तार सितार ना कोए हिलाईआ। जिस दा आदि अन्त दा इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जिस दे दवारे उत्ते सम्मत शहिनशाह छे मंगे मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। प्रभू मेरा साथ बणा दे जिस छड्डया पुरी अनन्द, सरगुण दा निरगुण रूप बदलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट दे पन्ध, पाँधी सफ़र विच ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा

वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी धार दा धर्म विच होवे रंग, दूसर रंगत नज़र कोए ना आईआ।

✪ पहली चेत शहिनशाही सम्मत ७ गुलज़ार सिँघ दे गृह पिण्ड फतू पुर ज़िला गुरदास पुर ✪

सम्मत छे कहे मैं वेखी अगम्मी पाती, पत्रिका धुरदरगाहीआ। जिस विच कथा कहाणी साची आखी, शास्त्रां तों बाहर दिती दृढ़ाईआ। भगवान भगतां करे राखी, रक्षक हो के रिहा जणाईआ। फेर लेख तक्कया पिछली पिच्छे बख्श दिती गुस्ताख़ी, अग्गे बख्शिश ना कोए कराईआ। सच दी सच करे इन्साफ़ी, इन्साफ़ अदल आपणे हथ्थ रखाईआ। जेहड़ा मन्न के भुल्ल जावे अग्गे मिले मूल ना मुआफ़ी, दोबारा हरिसंगत विच कदे ना आईआ। मेरा लहिणा देणा सम्मत छे कहे इहो अख़ीर बाकी, जो बाकायदा दिता दृढ़ाईआ। अग्गे धर्म दी चलणी हाटी, सच दा सच वणज वखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल खेल करे बहु भांती, भेव अभेद आपणे विच छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी पूरी करे आसी, आसा आसा विच मिलाईआ।

✪ पहली चेत शहिनशाही सम्मत ७ जुगिन्दर सिँघ दे गृह पिण्ड फ़तूपुर ज़िला गुरदास पुर ✪ ✪

सम्मत छे कहे मेरी निमस्कार, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। सत्त दा सति होवे विचार, सति सति विच रखाईआ। जो आशा रखी पैग़म्बर गुर अवतार, जुगा जुगन्तर ध्यान लगाईआ। मंगदे रहे तेरे कोलों दाता दातार, ख़ाली झोलीआं अग्गे डाहीआ। तेरी सच दी करनी धर्म दी होवे कार, करते पुरख तेरी बेपरवाहीआ। जेहड़ी खेल असीं कर नहीं सके विच संसार, आपणा बल ना कोए वखाईआ। सो किरपा करीं आप निरँकार, निरवैर तेरी ओट तकाईआ। वेला वक्त लैणा विचार, विचरण दी लोड़ रहे ना राईआ। सो वक्त सुहञ्जणा होया अपर अपार, अपरम्पर स्वामी देणी माण वड्याईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु कहिण भगतो उठो आपणी धार, सारे लओ अंगड़ाईआ। निगह मारो धरनी धरत धवल धौल उपर एका वार, एका नैण उठाईआ। सारे रल के कहीए पतिपरमेश्वर धुर दे स्वामी अकल कलधारी आपणयां भगतां दे सिर ते बन्नृ दे दस्तार, जिस दस्तार दी आस सारे बैठे रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सम्मत छे कहे मेरी नमो नमो बन्दना, निमस्कार सरनाईआ। सम्मत सत्त शहिनशाही लग्गणा,

पहली चेत रुत सुहाईआ। भगत दवार हरि भगतां दा दीपक जगणा, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। करे खेल पुरख समरथणा, हरि वड्डा वड वड्याईआ। पंजां प्यारयां सीस बन्ने पग्गना, पगड़ी आपणा हथ्थ छुहाईआ। लिखारीआं नाल सद्दणा, सीस दस्तार दए टिकाईआ। जिन्नां इक्को रूप वेखणा आहला अदना, वड्डा छोटा ना कोए समझाईआ। पंजां दरबारीआं करनी बन्दना, निउँ निउँ सीस निवाईआ। शब्द विहार दा सतिगुर धार दा संगत प्यार दा सब तों पूरा करना सगणा, सगली आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दा मालक बणे सज्जणा, सज्जण हो के पंजां प्यारयां पंजां लिखारीआं पंजां दरबारीआं नाल सज्जे नाल खब्बा खब्बे नाल सज्जा आपणा हथ्थ लए मिलाईआ।

पहली चेत शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल रात नूं

पुरख अकाल कहे सम्मत शहिनशाही सत्त अगम्मी चेता, चेतन तैनूं दयां कराईआ। गोबिन्द शब्द धार संग बणावां तेरा नेता, निरगुण निरवैर निरँकार आपणा हुक्म सुणाईआ। दो जहानां खोल्ह्लां भेता, पर्दा ओहला रहे ना राईआ। जन भगतां करना हेता, हितकारी हो के वेख वखाईआ। तक लै सदी चौधवीं मुहम्मद पूरा होणा ठेका, ठाकर लेखा वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। चेत कहे मेरे भगवन्त, हरि भगवन दयां दृढ़ाईआ। सतिगुर शब्द अगम्मा बख्श कन्त, कन्तूहल बेपरवाहीआ। जिस दा इक्को होवे मंत, मंतव हल्ल करे लोकाईआ। बुद्धी तों परे होवे पंडत, शास्त्रां तों बाहर करे पढ़ाईआ। सब दा गढ़ तोड़े हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करे अन्त, अन्तष्करन वेखे ख़लक ख़ुदाईआ। मेरी मौली धर्म धार दी रुत बसन्त, रुतड़ी तेरे नाल महकाईआ। संदेशा देवे जीव जंत, चुरासी लख आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। पुरख अकाल कहे चेत मेरा शब्द गुरु अगम्मा, जन्म मरन विच कदे ना आईआ। जिस नूं ना कोए लालच ना कोए तमा, तामस तृष्ना ना कोए रखाईआ। हरख सोग़ कोए ना ग़मा, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। सिफ्त गाए ना कदे दम दमा, साह साह ना कोए चतुराईआ। उस दे कोलों जुग लवावां नवां, नौ सौ चौरानवे चौकड़ी दा पन्ध मुकाईआ। धुर संदेशा इक्को दवां, दो जहानां आप जणाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड फिरना नाल चवां, पुरी लोअ भज्जणा वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच

दा हुक्म इक सुणाईआ। चेत कहे प्रभ मेरी इक्को इक मनसा, दर ठांडे दयां दृढ़ाईआ। जन भगत रूप बणा दे हँसा, काग रूप ना कोए दरसाईआ। तेरा सति दा होवे बंसा, परिवार इक्को इक वखाईआ। आत्म परमात्म मेल मिला नार कन्ता, सुहागी आपणा पड़दा उठाईआ। नव सत्त सब तैनूं होवे मन्नदा, मन दी कल्पणा दे गंवाईआ। झगड़ा मुका दे तेरा नाम सुणना सरवण कन्न दा, अन्तर आत्म धुन अनादी कर शनवाईआ। चेत कहे मैं साथ मंगां ते इक्को तेरे चन्न दा, दूसर लोड़ ना कोए रखाईआ। जिस नूं प्यार ना होवे तन दा, जगत लोभ लालच ना कोए हल्काईआ। कूड़ विकार नूं होवे डंनदा, तेरा नाम खण्डा चमकाईआ। हरिजन रूप बणा दे जन दा, आप बण जणेंदी माईआ। चार वरन अठारां बरन बेड़ा होवे बन्नृदा, शब्दी सतिगुर आपणे कंध उठाईआ। लख चुरासी कूड़ी क्रिया होवे डंनदा, अदल इन्साफ़ इक कमाईआ। उहदा नाता इक्को प्यार होवे ब्रह्म दा, पारब्रह्म तेरे विच समाईआ। चेत कहे वेखीं किते मैनूं साथ ना देवीं सतिगुर चम्म दा, चम्म दृष्टी दी लोड़ ना कोए रखाईआ। मैं ओह सतिगुरु कदे नहीं मन्नदा, जेहड़ा माता दी कुखों जम्मदा, दस दस मास अग्न विच रखाईआ। मेरा साथी ओह होवे जेहड़ा लेखा जाणे इक गल्ल दा, जेहड़ी गल्ल नानक आपणे विच गया छुपाईआ। लख चुरासी दा भार होवे झलदा, दीनां मज़्बां वंड ना कोए वंडाईआ। ओह मालक होवे अस्गाह जल

१२३६ थल दा, टिल्ले पर्बत खोज खुजाईआ। मैं जदों तकां ओह आत्म परमात्म विच होवे रलदा, तन वजूद दा खहिड़ा दए १२३६

२२ चुकाईआ। उह वसनीक होवे निहचल धाम अटल दा, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ गुरदवारयां विच आपणा आप ना बन्द २२

कराईआ। ओहदा मसला होवे कलयुग मसला हल्ल दा, हालत सब दी दए बदलाईआ। ओह समरथ होवे अकथ होवे जन भगतां दे अन्दर शब्द संदेशा होवे घल्लदा, अक्खरां तों बाहर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। पुरख अकाल कहे चेता मेरा शब्द गुरु गुरु गोबिन्द, गोबिन्द गोबिन्द धार समाईआ। जो आदि तों अन्त तक अनादी बिन्द, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। जिस दा मालक गहर गम्भीर गुणी गहिन्द, गवर इक अख्वाईआ। ओह लेखा जाणे लख चुरासी जीउ पिण्ड, इंड ब्रह्मण्ड खोज खुजाईआ। ओह बख्शणहारा होवे अमृत धारा सिन्ध, बूँद स्वांती इक टपकाईआ। जिस दी आदि जुगादि कोई कर ना सके निन्द, निंदिआ विच कदे ना आईआ। जिस ने रस माणया नहीं कदे लिंग, जगत सेज ना कोए वड्याईआ। जिस ने जगत सितार वजाई कदे नहीं किंग, हद्दां विच ना वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। चेत कहे प्रभू इक्को मंग, मांगत हो के दयां जणाईआ। सतिगुर शब्द दा होवे संग, सगला संग वखाईआ।

मैं इक्को चाहुंदा जेहड़ा पुरी अनन्द नूं गया छड अनंद, अनन्द अनन्द तेरे विच समाईआ। हुण उहनूं मज़्बां विच कदे ना करीं बन्द, बन्दीख़ाने विच्चों बाहर कढाईआ। ओह लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां दो जहानां धारा आवे लँघ, पन्ध मुकाए चाँईं चाँईंआ। सम्बल बहि वजाए मृदंग, नाम निधाना अगम्म अथाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा सब नूं दस्से छन्द, सहिंसा अवर रहे ना राईआ। बन्दी तोड़ होवे बख़्शंद, रहमत हक कमाईआ। जिस नूं शस्त्रां नाल करना पए ना जंग, भथ्था तीर कमान ना कंध उठाईआ। छिन्न विच दो जहान आर पार जाए लँघ, आउंदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। जन भगतां तेरा प्यार जाए वंड, काया मन्दिर अन्दर आप टिकाईआ। पंच विकारे देवे दंड, डण्डावत इक्को दए समझाईआ। धुन अनादी सुणाए नाद अनहद, अगम्म करे शनवाईआ। कलयुग अन्त मेट अंधेरी रातन, रुतड़ी धर्म धार महकाईआ। तेरा भेव खुल्हाए बातन, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। जिस नूं अवतार पैग़म्बर गुरु सारे वाहवा आखण, वाहिगुरु तेरी वड वड्याईआ। उस दा इक्को तट किनारा होवे पातन, दूजा घाट ना कोए जणाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाईआं देवे साथन, सगला संगी इक हो आईआ। ग़रीब निमाणे वेखे अनाथण, कोझे कमले गले लगाईआ। आत्म परमात्म दस्से जापण, नाम निधाना इक दृढ़ाईआ। जिस उत्ते किरपा करे कोट जन्म दे मेट देवे पापन, पतित पुनीत दए कराईआ। हर घट रखे आपणा वासण, लख चुरासी विच समाईआ। झगड़ा मेटे ज़ात पातन, दीन मज़्ब आपणे विच छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस निवाईआ। पुरख अकाल कहे सुण सम्मत सत्त दुलारे, दूल्हिआ दयां जणाईआ। वेख खेल अगम्म अपारे, अलख अगोचर रिहा कराईआ। जिस ने भेजे पैग़म्बर गुर अवतारे, तन वजूद नाल वड्याईआ। धुर दे शब्द दे दिते नज़ारे, नूर नज़र आप जणाईआ। सो खेल करे करतारे, कुदरत दा मालक धुरदरगाहीआ। कलयुग लेखा वेखे अन्त किनारे, दो जहानां खोज खुजाईआ। सतिगुर शब्द भेजे योधा सूरबीर बलकारे, बलधारी इक अख्वाईआ। जो कलयुग कूड़ी क्रिया कढे बाहरे, धरनी धरत धवल धौल रहिण ना पाईआ। इक्को डंका फ़तिह करे जैकारे, जै जै कार ख़लक खुदाईआ। सृष्टी दृष्टी बणाए शब्द अधारे, मन मनसा कूड़ गंवाईआ। लेखा मुकाए नौ दवारे, नव नौ चार दा डेरा ढाहीआ। जिस दे मुहम्मद दे के गया इशारे, मूसा ईसा बैठे ध्यान लगाईआ। वेद व्यासा बण लिखारे, कातब हो के कलम चलाईआ। जिस दे राम कृष्न बणन पनिहारे, सेवक हो के सेव कमाईआ। ओह खेल करे विच संसारे, संसारी भण्डारी सँघारी जिस नूं सीस निवाईआ। उस दा शब्द गुरु गुरदेव आदि जुगादी सब दी पावे सारे, महासार्थी हो के वेखे थाउँ थाँईंआ। जिस नूं कोई मारे ना खण्डा खड़ग तलवारे, तीर तरकश ना कोए चतुराईआ। कदे डुब्बे ना जल धारे,

अग्नी अग्ग ना कोए जलाईआ। मढ़ीआं विच कोए ना साड़े, मकबरयां विच ना कोए दबाईआ। मज़्बां वाले ना पाए पुआड़े, पुस्तक पढ़ ना झट लँघाईआ। जिस ने सतिजुग त्रेता द्वापर दो धड़ कराए अखाड़े, मानव मानव नाल टकराईआ। ओह लेखा जाणे जीव जहान सारे, चारे कुण्ट खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। चेत कहे प्रभ शब्द सतिगुर करा दे मिलाप, मिलणी हर जगदीश कराईआ। आत्म परमात्म सब नूं जपा दे जाप, जगजीवण दाते दे वड्याईआ। सतिगुर मेटे तीनों ताप, त्रैगुण अग्न ना लागे राईआ। अन्तर निरन्तर होवे साफ़, पतित पुनीत दए बणाईआ। जन्म कर्म दा लेखा करे मुआफ़, पूरब लहिणा रहे ना राईआ। पन्ध मुकाए गर्भ मात, जूनी विच ना कोए भवाईआ। मन कल्पणा करे घात, घाउ आपणा नाम लगाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे अंधेरी रात, कलयुग कल्पणा दए मुकाईआ। सहिंसा रोग ना रहे संताप, हउमे गढ़ तुड़ाईआ। जे सतिगुर दे हुन्दयां गुरसिख करन पूजा पाठ, फिर सतिगुर दी लोड़ ना कोए रखाईआ। सतिगुर सो जेहड़ा निगह नाल कोट जन्म दे पापी कर दए पाक, दुरमति मैल दए धुआईआ। रातीं सुत्तयां दिने जागदयां प्रेम विच अन्दरों खोल्ह दए ताक, पर्दा परदयां विच्चों दए चुकाईआ। प्रगट हो के दर्शन दए साख्यात, सन्मुख हो के नज़री आईआ। आपणी मंज़ल पौड़ी चढ़ाए आपणे घाट, अग्गे हो ना कोए
१२३८ २२ अटकाईआ। राय धर्म चित्रगुप्त कोए अक्ख ना सके झाक, विष्न ब्रह्मा शिव दूरों दूरों सीस निवाईआ। सारे शब्दी धार १२३८ २२
देण आख, वाहवा गोबिन्द शब्द तेरी वड्याईआ। तूं गुरमुखां भगतां सन्तां बणाई आपणी जमात, जुमला अक्खर ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तेरी वड्याईआ। पुरख अकाल कहे चेत मेरा सतिगुर शब्द सूरा, सूरबीर अख्वाईआ। जद तके हाज़र हज़ूरा, हज़रतां दा हज़रत धुरदरगाहीआ। जद वेखे जोत अगम्मी नूरा, नूर नुराना डगमगाईआ। आदि अन्त बचन दा पूरा, पूरन ब्रह्म दए समझाईआ। मेहर करके चतुर बणा के मूर्ख मूढ़ा, कोझयां कमल्यां दए वड्याईआ। जन भगतां बख्श के अगम्मी धूढ़ा, टिक्के मस्तक ख़ाक रमाईआ। रंग चाढ़ दए गूढ़ा, दो जहान उतर कदे ना जाईआ। दुखड़ा रहे ना कोए वसूरा, विसरयां आपणा मेल मिलाईआ। पन्ध मुकाए नेड़ दूरा, काया घर विच घर दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी वस्त इक वरताईआ। चेत कहे प्रभू मेरी इक्को आसा, आशा दयां जणाईआ। चरण कँवल दे भरवासा, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। तूं साहिब साहिब अबिनाशा, करता अगम्म अथाहीआ। सब दा पूरा कर दे वाका, वाकिफ़कार हो सहाईआ। तूं इक्को धुर दा आका, अक्ल बुद्धी तों बाहर तेरी पढ़ाईआ। तेरा सतिगुर शब्द दो जहानां होवे राखा, दूजा रहिण कोए

ना पाईआ। चार जुग अवतार पैग़म्बर गुरु तेरे बालक जगत पित जग काका, नंन्हिआं लोकमात खेल खिलाईआ। तेरा सतिगुर शब्द उहनां दे तन चुक्की फिरदा रिहा आपणे ढाका, लोरीआं नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवणहार दर तेरे अलख जगाईआ। पुरख अकाल कहे सतिगुर शब्द तेरा होवे मीत, चेत दयां जणाईआ। जिस दीन दुनी दी बदलणी रीत, रीतीवान इक हो जाईआ। सब दा सांझा करना गीत, गीत गोबिन्द इक दृढ़ाईआ। पन्ध मुकाउणा हस्त कीट, हस्त कीट दए वड्याईआ। मार्ग दस्स इक अनडीठ, अगम्मढ़ी कार कमाईआ। सब दे वसे चीत, चित वित ठगौरी रहे ना राईआ। मन कल्पणा लए जीत, हार रहिण कोए ना पाईआ। ओह सचखण्ड दा होवे वसनीक, थिर घर भगतां मेला मेले सहिज सुभाईआ। ज़रूर तेरे नाल मिल के करदा जाए बख़्शीश, रहमत रहीम वाली वरताईआ। उस सतिगुर शब्द ने जन भगतां दस्तार बन्नणी सीस, सीस सतिगुर आपणे लेखे लाईआ। खुशीआं नाल जिन्हां दा जीवण जाए बीत, बीत्या जीवण आपणे लेखे पाईआ। सतिगुर हो के कदे ना देवे पीठ, करवट ना कदे बदलाईआ। मिट्ठे कौड़े करे रीठ, कौड़े मिट्ठे आप बणाईआ। काया चोली चाढ़े रंग मजीठ, मेहरवान रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच द मेला दए मिलाईआ। पुरख अकाल कहे चेत सतिगुर शब्द नूं कर निमस्कार, डण्डावत बन्दना सजदा सीस झुकाईआ। फिर जोत तक पैग़म्बर गुर अवतार, जो मेरे विच समाईआ। फेर ब्रह्मा शिव विष्न दी वेख धार, जो संसारी भण्डारी सँघारी सोभा पाईआ। फेर चार जुग दी तक गुफ़तार, जो गुफ़त शनीद करी पढ़ाईआ। फेर खेल तक सच्ची सरकार, जो हरि करता रिहा कराईआ। जिस भगतां पैज देणी संवार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सतिजुग दा सच करे विहार, विवहारी आपणी करनी कार कमाईआ। अग्गे रहिण देवे ना कोए उधार, पिछला लेखा झोली पाईआ। आत्म परमात्म बण के यार, यारड़ा सथ्थर लए हंढाईआ। सतिगुर शब्द हो के ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। आलस निंद्रा विच्चों कढे बाहर, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। मंज़ल रहिण ना देवे दुष्वार, दुश्मण अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। अमृत रस बख्शे ठंडा ठार, बूँद स्वांती नाभी कँवल निजर झिरना आप झिराईआ। आत्म दीपक देवे बाल, नूर नुराना डगमगाईआ। सचखण्ड वखाए सच्ची धर्मसाल, जिथ्थे वसे गोबिन्द धुर दा माहीआ। पोह सके ना काल महाकाल, सारे बैठण सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। चेत कहे प्रभू सतिगुर शब्द नूं मेरी नमस्ते, नमों नमों नमों सीस निवाईआ। सतिगुर शब्द मैनूं इक्को बचन दस्स दे, दहि दिशा तों बाहर जणाईआ। किस बिध तूं भेव खोल्हणे ज्ञान नेत्र अक्ख दे, प्रतख

१२३६ २२

रूप प्रगटाईआ। भगतां दे खेड़े रहिण वसदे, जगत जहान उजड़ कदे ना जाईआ। पुरख अकाल दा नाम रहिण जपदे, तूं मेरा मैं तेरा राग अल्ाईआ। पैंडे पार कर जाण चुरासी वाली हद्द दे, खाणीआं विच ना कोए भवाईआ। दर्शन करन पुरख समरथ दे, जोती जोत विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मार्ग इक वखाईआ। चेत कहे मैं मातलोक विच चढ़या, चढ़दा लहिंदा दक्खण पहाड़ वेख वखाईआ। मैं सतिगुर शब्द दा शब्द पढ़या, जिस दी अक्खरां वाली नहीं लिखाईआ। मैं भय विच भउ विच डरया, निउँ के सीस निवाईआ। फेर हस्स के किहा ओ मेरे मित्र अड़या, मैनूं दे समझाईआ। किस बिध तेरा घाड़न घड़या, प्रभ ने तेरी बणत बणाईआ। जे तूं अग्नी अग्ग कदे नहीं सड़या, जलधारा ना कोए डुबाईआ। सच दस्स तूं किस दवारे खड़्या, किस गृह मन्दिर आपणी सोभा पाईआ। सतिगुर शब्द कहे चेत आह तक ज़रया, ज़र्रा ज़र्रा ज़र्रा तैनूं दयां समझाईआ। मेरा खेल उस प्रभू ने करया, जो करनहार करता धुरदरगाहीआ। मैं ओसे गृह मन्दिर दवार विच पलया, जिथ्थे पालण वाली दिसे कोए ना माईआ। हुण वेखीं मेरा बलया, बलधारी सारे देणे खपाईआ। क्यों ओ मेरे साहिब दा हुक्म कदे ना टलया, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सतिगुर शब्द किसे कोलों ना जावे छलया, वल छल विच सारी सृष्टी दए भुलाईआ। हुण मैं मातलोक दा डेरा मल्लया, गृह गृह आपणा हुक्म वरताईआ। सच पुछें सतिगुर शब्द हो के जन भगतां दे काया मन्दिर अन्दर अज्ज दी रात तों जाणा चलया, सत्त रंग दा आपणा रूप देणा दरसाईआ। नंन्हिआ बच्चयां नूं कहिणा आओ मेरे बल्लया, बच्चे धुर दे गोद टिकाईआ। जिथ्थे पुरख अकाल दा दीपक जोत बलया, दूजी अवर ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहर नज़र इक उठाईआ। सतिगुर शब्द धार गया आ, दो जहान नज़र किसे ना आईआ। गोबिन्द ने गोबिन्द बणाया गवाह, बेड़ा धर्म दा कंध उठाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु सारे शहादत दयो भुगता, भगवन आपणा हुक्म सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव वेखो थांउँ थाँ, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। तुहाडे सब दे हुन्दयां क्यों कलयुग जीवां दी बुद्धी हो गई वांग काँ, चारों कुण्ट काग वांग कुरलाईआ। किसे ने सूर खाधा किसे ने खाधी गां, नाम कलमे वाला नज़र कोए ना आईआ। तुसीं दस्सो किस दे सिर उत्ते दिती ठंडी छाँ, कलयुग अग्नी तों ल्या बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं सब दा वेखणा मूला, अन्तर अन्तर खोज खुजाईआ। मैं कोई लंगड़ा नहीं लूल्ा, दो जहान फिरन दी हिम्मत ना कोए रखाईआ। मैं किसे नूं नहीं भूला, लख चुरासी वेखां चाँईं चाँईंआ। याद कर लओ जदों बदलया सतिगुर शब्द ने बदलया असूला, असल विच्चों

असल प्रगटाईआ। जिस दा फ़रमान हुक्म सदा माकूला, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जिसनूं झुकदे सजदे करदे पैग़म्बर नबी रसूला, रसम विच कसम खा के आपणा इष्ट लँघाईआ। सतिगुर शब्द आदि तों अन्त तक सब दा दूल्हा, दुल्हन लख चुरासी ल्ए प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा राह इक जणाईआ। चेत कहे सतिगुर शब्द तैथों बलिहारी, बलि बलि आपणा आप कराईआ। मेरे नाल मेरा प्रीतम हो के लावीं यारी, यराना कूड़ ना कोए रखाईआ। याद कर लै गोबिन्द हो के माछूवाड़े दी सेज माणी सी सथ्थर सूलां कीती प्यारी, मुहब्बत इक नाल जणाईआ। जो सतिगुर शब्द तेरे हुन्दयां भगतां दी आत्मा रह जाऐ कँवारी, फेर सके ना कोए प्रनाईआ। धन्न भाग तेरी लोकमात आई वारी, वारता पिछली दे बदलाईआ। तेरा जस होवे आत्मा रस होवे मन वस होवे ब्रह्म ते पारब्रह्म रूप बण जाए नर ते नारी, नर नरायण इक्को सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक अगम्म अथाहीआ। सतिगुर शब्द कहे चेत तेरा करां वक्त सुहञ्जणा, लोकमात वड्याईआ। जन भगतां मेला मिलावां नाल दर्द दुःख भय भञ्जणा, भवसागर पार कराईआ। नेत्र पा के अगम्मी अंजणा, निज नैण दयां खुल्हाईआ।

१२४१ २२ साचे नाम दा हथ्थ पहना के कंगणा, बन्धन इक्को दयां दरसाईआ। जन भगतो बिना पुरख अकाल तों दूजा घर कदे नहीं मंगणा, झोली किसे अग्गे ना डाहीआ। जदों करो ते करो श्री भगवान नूं बन्दना, पंजां तत्तां वाले नूं सीस ना कदे झुकाईआ। सतिगुर ओह जो शब्द दी धार तुहाडी आत्मा नाल हंढणा, सरीर छडण तों बाद तुहाडा मालक बण के सचखण्ड लै जाए चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। चेत कहे सतिगुर शब्द मेरी अरदास, बेनन्ती इक सुणाईआ। मैनूं याद आ गया जे बसन्त कौर दा ल्यांदा होवे ग्लास, ते घर वाले हाज़र देण कराईआ। फेर जे दुआबिउँ आई होवे खाट, ते हीआं सेरू पावे उपर देण उठाईआ। जे तिन्न रंग दी चादर दा नाल होवे लबास, खोल्ह के गुरमुखां देण वखाईआ। जेहड़ीआं छोटीआ मोटीआं वस्तूआं रखीआं विच परात, टकयां वाली दयो हिलाईआ। जन भगतो अज्ज तों समझ लैणी इक्को बात, अग्गे भुल्ल रहे ना राईआ। किसे भगत दे सरीर छडण तों पिछो किसे नूं कोई किसे बख्शणी नहीं दात, मंजा पीढ़ा लीड़ा भाण्डा वस्त्र ग्लास भेंटा कदे ना किसे नूं कराईआ। अज्ज तों तुहाडा धर्म दा बदल गया राज, कलयुग दी कूड़ी क्रिया देणी गंवाईआ। हुण तुहाडे सतिगुर शब्द ने नवां साजणा साज, साजण इक्को इक अख्वाईआ। जन भगतो आपणे सीस तों लाह के ताज, दस्तारां पंजां प्यारयां सिर टिकाईआ। जे पिच्छे सुत्ते रहे ते हुण जाणा जाग, अग्गे सौण दा लेखा देणा मुकाईआ। हुण भगत ते भगवान दा बणना समाज, जगत

१२४१ २२

वंड ना कोए वखाईआ। अज्ज तों समझ लैणा तुहाडे तों वड्डा ना कोए सन्त ते ना कोए साध, सो सन्त जो आपणे प्रभ नूं मिल के आपणा रंग लए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहर नज़र इक उठाईआ। चेत कहे सतिगुर शब्द मैं आपा तैथों वारया, घोली घोल घुमाईआ। कदी तूं गोबिद पुरख अकाल दा सुत दुलारया, लोकमात आपणी खेल खिलाईआ। फेर छड के पंज तत आकारया, जोती जोत विच समाईआ। हुण पुरख अकाल ने तेरा खेल विचारया, आपणी दया कमाईआ। तूं आयों बण के दूल्हा निरगुण निरवैर निराकारया, निरँकार हो के आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मार्ग इक वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे चेत सम्मत सत्त दी सति वाली त्यारी, त्रैगुण अतीता हो के दयां दृढ़ाईआ। मेरी धार दी धार पंच दे पंच लिखारी, पंचम दा लेखा पूर कराईआ। जिन्हां दी परम पुरख ने पैज संवारी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। उन्हां दे सीस ते रखणी आप दस्तारी, मेहरवान हो मेहर नज़र उठाईआ। सतिगुर शब्द दे घर ना कोए पुरख ते ना कोए नारी, आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि,
१२४२ सच दा संदेशा इक्को इक जणाईआ। सतिगुर शब्द कहे चेत तैनूं होए चाओ घनेरा, अन्तर वज्जे वधाईआ। भगत भगवान दा बणया बेड़ा, मलाह दूजा नज़र कोए ना आईआ। इक्को घर दोहां दा डेरा, वक्खरा मन्दिर ना कोए जणाईआ। इक्को गृह सुहञ्जणा वेहड़ा, इक्को बंक दवारा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा सुख़न इक अल्हाईआ। पंज प्यारे हथ्थ नाल मिलाउणा हथ्थ, हथ्थ छुट कदे ना जाईआ। इथे ओथे कदे नहीं होणा वक्ख, वक्खरा घर ना कोए वखाईआ। जन भगतो लोक लज्जया विच कदी शर्म नहीं करनी अक्ख, सन्मुख हो के बैठणा चाँईं चाँईंआ। विछोड़े विच इक दूजे तों कदे नहीं जाणा नस्स, पल्लू जगत वाला छुडाईआ। याद कर लओ तुसीं सतिगुर शब्द दे जाल विच गए फस, तुहाडा सज्जण मित्र बाहर सके ना कोए कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। पंज दरबारी हथ्थ नाल हथ्थ घुट्टो, घुट्ट के दयो वखाईआ। कूड़ी क्रिया दी जड़ पुट्टो, पटणे वाला आपणे हिरदे विच रखाईआ। शौह दरया विच सुट्टो, जिथ्थों फेर बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। सतिगुर दे प्यार दा लाहा लुट्टो, हिरदे हिरदे विच्चों प्रगटाईआ। हथ्थ मिलाउण नाल चुरासी विच्चों छुट्टो, राय धर्म देवे ना किसे सज़ाईआ। सतिगुर शब्द तुहानूं फड़ के लै जाए धर्म धार दे गुट्टों, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला आप मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे

२२

पंच लिखारी लिख दयो धुर दा लेख, हथ्थ हथ्थ नाल मिलाईआ। साडा सतिगुर शब्द ते शब्द सतिगुर दशमेश, बिना शब्द तों सतिगुर नज़र कोए ना आईआ। असीं वसणा उस दे देस, जिस दा देस सचखण्ड साचा सोभा पाईआ। असीं बदल देणी अज्ज तों आपणे जन्म कर्म दी रेख, ऋषीआं मुनीआं दी लोड़ रहे ना राईआ। जिस ने लेखा मुका देणा पैग़बर पीर औलीए शेख़, मुसायकां डेरा ढाहीआ। उस सतिगुर शब्द दे नाल मिल गए जिस विच मिल के रहिणा हमेश, विछोड़ा नज़र कोए ना आईआ। पहली चेत कहे जन भगतो मेरा इक संदेश, सहिज नाल सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे कलेश, कलकाती रहिण कोए ना पाईआ।

✪ ३ चेत शहिनशाही सम्मत ७ गुरमुख सिँघ दे गृह पिण्ड भलाईपुर ज़िला अमृतसर ✪

तिन्न चेत कहे सोहया दवारा गुरमुख, सतिगुर शब्द शब्द सुहाईआ। अवतार पैग़म्बर तक्को सन्मुख, विष्न ब्रह्मा शिव अक्ख खुल्हाईआ। जन भगतो तुहाडा जन्म कर्म रहे कोए ना दुक्ख, दुखड़ा दूर कराईआ। तुसीं सतिगुर दी जन्मे विच्चों कुक्ख, नाता तुट्टया जम्मण वाली माईआ। आत्म परमात्म मानणा सच दवारे सुख, सूखम आपणा रंग रंगाईआ। धुर दे बच्चयो धर्म दी धार जाणा उठ, सोया रहिण कोए ना पाईआ। किरपा करे अबिनाशी अचुत, चेतन सब नूं रिहा कराईआ। गुरमुखो गुरमुख दवारे तुहाडी मौले रुत्त, रुतड़ी तुहाडी आप महकाईआ। तुसीं सारे उस प्रभू दे सुत , जो आदि जुगादी पिता माईआ। तुहाडा भाग ना जाए निखुट्ट, जन्म कर्म दा डेरा ढाहीआ। आत्म धार ना जावे टुट्ट, टुटयां लए जुड़ाईआ। चुरासी गेड़ा जाए छुट, अग्गे देवे ना कोए सज़ाईआ। वेखो रविदास हुन्दा खुश, खुशीआं हाल सुणाईआ। पुरख अकाल नूं रिहा पुछ, सहिज सहिज मंग मंगाईआ। प्रभू वेख कलयुग मचाँई लुट्ट, लुटेरा बणया थांउँ थाँईंआ। अमृत मिले किसे ना घुट्ट, अठ्ठ सठ तीर्थ गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रोवे मारे धाईआ। मेरे दीन दयाल मैं जेहड़े तेरी याद विच पुराणे टुट्टे गंढे जुत्त, पुराणा जूता दए गवाहीआ। चम्यार दी आर रही ना छुप, सब नूं नज़री आईआ। इहनां विच्चों बहुते जेहड़े गंगा जांदे मेरे कोल गए रुक, गंढ पुआ के बणे पाँधी राहीआ। मैं संदेशा देंदा रिहा ओ गुरमुखो गाउणी इक्को तुक, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। फेर तुहाडा पैंडा जाए मुक, अग्गे पन्ध ना कोए वखाईआ। तुसां तट किनारे जा के पाउणी नहीं लुट्ट, लुटेरा रूप ना कोए वखाईआ। नाले हस्स के कहि देंदा ओह वेखो भगवान मेरा खुश, मेरी रम्बी नाल तुहाडी

टुटयां दी गंढ पवाईआ। आर कदे ना जावे रुक, आर पार विंन्ह के तुहानूं प्रभ दा चिन्न्ह वखाईआ। एह टुट्टा जूता कहे मैं चमार दे साथी सारे ल्यांदे खिच्च, गुरमुख दे दवारे दिते बहाईआ। जिहो जेहा चम्यार ग़रीब उस ने पुट्ठी मंजी उत्ते भगवान बहा ल्या आप हो गया चुप्प, मुक्खों बचन ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। जुत्ती कहे भगतो मैं चलदी चलदी गई घस, पुराणी हो के आपणा आप तुड़ाईआ। तीर्थ तट्टां फिरी पैंडा मुकाया नस्स नस्स, भज्जी वाहो दाहीआ। जंगलां जूहा आसण बैठी घत्त, टिल्लयां डेरे लाईआ। अग्नी नाल सुकाई रत्त, जलधारा नाल ठराईआ। धीरज रखया जत, सन्तोख विच समाईआ। होका दिता जगत जिज्ञासूओ कोई मिला दिउ मेरा परमेश्वर पति, जो विछड़ी आपणे नाल जुड़ाईआ। मेरा पूरा कर दे हक, हकीकत रहे ना राईआ। टुट्टी जुत्ती कहे रविदास खुशी नाल कहिंदा मैनूं आपणी वेखो अन्दर अक्ख, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। नाले ज़ोर नाल आर देंदा धक्क, तली नाल दबाईआ। फेर खुशी नाल पवे हस्स, आओ जुत्ते गंढाउण वाल्यो तुहानूं दस्सां सच, सच नाल समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। टुट्टी जुत्ती कहे इक दिन रविदास ने आर दब्बी, दब्ब के दिती हिलाईआ। उस नूं नूर नज़र आया रब्बी, अलाही बेपरवाहीआ। ओस आपणी
१२४४ २२ आसा सद्दी, सद्द के दिता सुणाईआ। नाले वेख्या प्रभू दा खेल अवतार पैग़म्बर गुरुआं दी चलाउंदा गद्दी, शहिनशाह हो १२४४ २२
के आपणा आप छुपाईआ। भगतां दा वेला आउंदा कदी, आपणयां कदमां उत्ते झुक के ताली दिती वजाईआ। जां तक्कया ते वेखी चौधवीं सदी, सदमे भरी लोकाईआ। फेर तक्कया अज्ञान दी अंधेरी वगी, सति धर्म गई उडाईआ। पंच शब्द दी धुंन किसे अन्दर ना दिसे वज्जी, अनादी नाद ना कोए सुणाईआ। फेर ध्यान मारया प्रभ दी किरपा नाल जन भगतां दी जोत होणी जगी, पंजां तत्तां दा मालक पंज दान शमां करे रुशनाईआ। उस वेले इक सभा लग्गणी वड्डी, हरि वड्डा दए वड्याईआ। रविदास ने किहा भगतां दी मैल पंजां धोबीआं गठड़ी होणी बद्धी, भार मोढुयां उत्ते टिकाईआ। जगत दी धार होणी बदी, पंज पंजां तत्तां विच समाईआ। पंजां बोदी खुल्ही होणी छड्डी, आपणा वेस वटाईआ। पंज बुल्ल्ह बैठे होण रंगी, आपणा रंग चढ़ाईआ। पंज विंगिआं टेडयां डंडयां वाले सब नूं देण दंडी, कलयुग दा डिंगा टेडा रस्ता रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। आर कहे ओ मैनूं सारे कहिंदे आर, जुग जुग सिफ्त सालाहीआ। पर गुरमुखो याद रखिउ मैं जदों होवां ते होवां आर पार, ते नवें पुराणे विंन्ह के दयां वखाईआ। मैं टुट्टे गंढां ते विगढ़े दयां संवार, आपणा स्वार्थ ना कोए रखाईआ। मैनूं इक दिन

हस्स के किहा रविदास चमार, मुह्न वल्लों चुंम के ख़ुशी नाल हसाईआ। नाले चपेड़ मारी नाले किहा कमलीए कदे बण ना जावीं ग़द्दार, आपणी मनसा ना लईं बदलाईआ। क्यों कलयुग दा समां आउणा चारों कुण्ट होणा अंध्यार, सच दा चन्द ना कोए चमकाईआ। गुरु चेला नहीं रहिणे यार, मुरीद मुर्शद ना संग निभाईआ। सच दी सच नहीं रहिणी गुफ़तार, सति नाल सति ना कोए रखाईआ। झगड़ा पै जाणा पुरख ते नार, घर घर होवे लड़ाईआ। धर्म रहिणा नहीं किसे मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मह्न गुरदवार, अह्न सह्न अमृत रस ना कोए भराईआ। जगत जहान करे विभचार, भैण भाईआ अक्ख बदलाईआ। उस वेले फेर खेल होणा अपर अपार, अपरम्पर स्वामी आपणा हुक्म वरताईआ। इक सतिगुर शब्द शब्द होणा सिक्दार, सिर सिर आपणा हुक्म मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल वखाईआ। रविदास किहा मोहे बचन ना भूला, अभूलो दयां दृढ़ाईआ। तीना ज़मो ज़ख़ते ज़बीं काज़ीना कमालो कासे नाज़ाईआ। आरे उस वेले बदलणा सब असूलो, असल असल विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। रविदास किहा आरे रहीं ना सोती, सुत्तयां देणा जगाईआ। जगत जहान होणा लंगड़ा लूल्हा कूड़ दी बन्न्हणी तेड़ लंगोटी, लंगोटयां वाले देण गवाहीआ। उस वेले आवे रविदास चम्यार दे गृह दवारे, गुरमुख रूप होए संसारे,

प्रभू दे भगत इक्ठे होण दुलारे, जिन्हा दा दूल्हा इक्को नज़री आईआ। पुराणे जुतिआं वांग पुराणे जन्म कर्म सारयां दी पावे सारे, महासार्थी आप दया कमाईआ। निरगुण जोत निरवैर कर आकारे, निराकार कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। आर कहे रविदासा मैनूं फेर ल्यावीं ना उत्ते गंगा, गंगा दी लोड़ रहे ना राईआ। मैं इक्को वस्त प्रेम दी मंगां, मांगत हो के झोली डाहीआ। प्रभू तों वर मंग लै अग्गे वास्ते तेरयां भगतां दा पैर होवे कदे ना नन्गा, प्रभू तूं भगवान हो के मेहरवान हो के जन भगत दवारे नन्गीं पैरीं भज्जीं चाँईं चाँईंआ। उस वेले तेरी निशानी साहिब सुल्तानी धर्म दी धार कहे रविदास दी आर होवे हथ्थ सतरंगा, रंगत सब दी देणी बदलाईआ। प्रेमी प्रीतम हो के पुरख अकाल देणा संगा, सगला संग रखाईआ। खा के भगतां दे घर घर दा सुक्का मंडा, रविदास दा पिछला लेखा पूरा देणा कराईआ। याद कर लै जिस तरह भगतां नूं खवांदा रिहों कच्चा गंढा, उस तरह तैनूं वी खाणा पए थांउँ थाँईंआ। जवां दी रोटी नाल देवे कोई ना पाणी ठंडा, कोसा करके अग्गे देणा टिकाईआ। जन भगतो एह कोई खेल नहीं अचंभा, हैरानी विच हैरानी ना कोए प्रगटाईआ। जे प्रभू नाल ऐं ना करोगे फेर एस कलयुग दा पैंडा नहीं मेटणा लम्बा, छेती छेती आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल

साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। रविदास कहे इक दिन अन्तर अन्तर आई विचारी, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। मैं प्रेम विच पुछिआ प्रभू तूं पुरख कि नारी, जेहड़ा तेरा सोहणा रूप उहो मैनूं दे वखाईआ। तूं शब्द सतिगुर कि शब्द दा लिखारी, पड़दा देणा उठाईआ। पुरख अकाल हस्स के किहा रविदास वेख नैण उग्घाड़ी, इशारे नाल समझाईआ। मेरा सति सरूप आपे पुरख आपे नारी, आपे सतिगुर शब्द आपे लिखारी, पंजे लिखारी उठ के दयो वखाईआ। आपे मुच्छ आपे दाढ़ी, आपे नर नरायण विष्नूं धारी, मुच्छ दाढ़ी ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। रविदास कहे मैं फेर हस्स के किहा प्रभू तूं लाड़ा कि लाड़ी, मैनूं दे समझाईआ। धोती बन्नें कि साड़ी, पड़दा देणा उठाईआ। मूंड मुंडाएं कि रखें दाढ़ी, कवण रंग रंगाईआ। पुरख अकाल किहा रविदासा मैं आदि तों परदेसण प्रेमीआं दी प्यारी, खुल्हड़े केस खेल न्यारी, निराकार निरँकार आपणा रूप तेरे दर ते दए दरसाईआ। रविदासा ओह वेख शब्द सतिगुर ते सतिगुर शब्द लिखारी, दोवें सोभा पाईआ। जिन्हां दा इक्को मन्दिर इक्को गृह इक्को घर इक्को अटारी, अटल पदवी सब नूं रहे वखाईआ। लिखारीओ लिख दयो जन भगतो तुहाडा सति दा रूप निरँकारी, ब्रह्म ब्रह्म तत दा रूप जोत उज्यारी, तुहाडी आत्मा तुहाडी आशा सतिगुर दे घर ना रही कुँवारी, सुहागण
१२४६ अन्त तक बणाईआ। जन्म दी कर्म दी भरम दी शर्म दी पैज संवारी, शरअ दा लेखा दिता मुकाईआ। सतिगुर दे शरन १२४६
२२ लग्ग के ना रहे गुनांहगारी, पतत्तां पुनीत दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा २२
हरि, मेहर नज़र इक उठाईआ। सिंघासण कहे प्रभू क्यों मेरे नाल रुट्ठा, साहिब दे सुणाईआ। क्यों मैनूं कीता पुट्ठा, चारे पावे रोवण मारन धाईंआ। वेख लहिंदी वाली गुट्ठा, जिथ्थे तारा चन्न रहे आपणा आसण लाईआ। ओह कूक पुकारन भगतो साडा शरअ दा नाता तुट्टा, सदी चौधवीं मुहम्मद अन्त लेखा रहे ना राईआ। क्यों प्रभू ने वड़ना भगतां दे विच जुस्सा, जिस्म ज़मीर देणी बदलाईआ। कूड़ क्रिया दी रहिण नहीं देणी लुट्टा, धर्म दी धार देणी प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप खुल्हाईआ। चन्द कहे सुण मीत सतारा, सतह बुलंदी ध्यान लगाईआ। ओह वेख खेल परवरदिगारा, जल्वा रिहा वखाईआ। लेखा मुकणा संग मुहम्मद चार यारा, चारे पावे देण गवाहीआ। सत्त रंग दा डण्डा करे इशारा, जिस ने डण्डावत सब दी देणी बदलाईआ। घर घर भगतां दीपक होणा उज्यारा, पंचम तत होए रुशनाईआ। जिन्हां दा फेर जन्म नहीं होणा दुबारा, चुरासी विच ना कोए भवाईआ। सीस ते बन्न्हणी पुरख अकाल ने इक इक दस्तारा, इक रुपईआ धर्म दा रूप सीस टिकाईआ। गुरमुख तेरा गुरमुख रूप निरँकारा, दूजा नज़र कोए ना

आईआ। जन भगतो तक लओ एह सेवा दा फल मिलदा सारा, जो माता पिता साक सज्जण भैण भाई कोई दे ना सके राईआ। अज तों सब दा जन्म होया दुबारा, ओह तुहाडे गुरमुख दवारे सारे देणे वसाईआ। तुहाडा ओस प्रभू नाल प्यारा, जो प्रीतम धुरदरगाहीआ। वेखो हुण ओह हो गया तुहाडे सहारा, सहारा तुहाडा आपणे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। रविदास कहे ओह मखीआ मेरी खेल पुराणी, पूखा ना नज़री आईआ। जुत्तीआ गांढों ना पीउँ ना खाणी, खनसो तेरी दुहाईआ। मन वसे ना बेईमानी, ओ सूमे क्यों बैठा गंढ घुटाईआ। टुटीआ खाटी जलो ना माटी ईंगण पाटी, टासो ना को साईआ। हीनो ज़ाती तख़ने ब्रह्म पहिचाती, अरे भूका मरूं सुकीआ चपाती चप्पे चप्पे विच तेरा नूर नज़री आईआ। इहो तीना चेता दी राती, रविदास आपणे कन्न खिच्च के एधर एधर लफ्फड़ मारे ओह तूं मेरा साहिब कमला पाती, पतिपरमेश्वर तेरी बेपरवाहीआ। पर मैं दरस मंगदा तरस मंगदा ओ तेरा सति सरूपी दरस मंगदा उपर फ़र्श ख़ाकी, ओह ख़ाक विच मिलाउण वाल्या ख़ाक विच्चों पाक दे बणाईआ। तेरा जीवण तेरी हयाती, ओह तेरी नार तूंही कमलापाती, ना हंडीओ ना नमको ना बोसाती, अबूसले बसन बनवारी तेरी खेल मोहे चंगी भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ।
रविदास तिन्न चेत दी तकी राती, अक्खां मीट ध्यान लगाईआ। सहिज नाल उठ के कंध नाल ला लई आपणी छाती, शहिनशाह विच समाईआ। बिन बोलण तों बिना ज़बान तों आपणी गल्ल आखी, आख के दिता दृढ़ाईआ। भुक्खे ग़रीब नूं बख़्श दे दाती, शहिनशाह तेरे अग्गे झोली डाहीआ। मेरी इक बेनन्ती प्रभू मन्नणी आखी, निमाणा हो के सीस झुकाईआ। मेहर करीं कलयुग अन्तिम आपणयां भगतां दी आप करीं राखी, जिंना चिर तूं किरपा ना करी भगत बणन वाला नज़र कोए ना आईआ। ओ परवरदिगार उनां दे कर्म कुकर्म वल्ल मूल ना झाकीं, जे झाकी मारें कोट जन्म दे पाप देणे मुकाईआ। पर याद रख लै उन्हां दी ज़रूर खोल्हीं ताकी, ओह सुत्ते होण तूं घर घर जा के दरस देणा दिखाईआ। इक होर बचन तूं उन्हां दा करीं पाठी, पाठशाला उहनां दा काया मन्दिर देणा वसाईआ। होर बेनन्ती उहनां दी बदल देवीं हयाती, हया कूड़ क्रिया रहिण कोए ना पाईआ। प्रभू इक होर आशा कलयुग अन्तिम आपणयां भगतां नूं चढ़न ना देवीं फाँसी, फ़ैसला इक्को वार देणा सुणाईआ। तैनूं किसे नूं लभ्भण जाणा पए ना तीर्थ तट्टां उत्ते काशी, प्राग अयुध्या बिन्दराबन फेरा कोए ना पाईआ। पर मेहर करीं जिथ्थे भगत होण उथे आप जावीं लम्मी चौड़ी ना रखीं वाटी, पैंडा सहिज सहिज मुकाईआ। जे प्यार करें ते ला लईं नाल सीने छाती, शहिनशाह आपणे रंग रंगाईआ। बेशक तेरे वास्ते पुट्ठी होवे खाटी, तूं पुट्ठे लट्टकण वाल्यां

नूं सिध्धे सचखण्ड देणा पहुंचाईआ। जिथ्थे पुरख अकाल दी हाटी, दूजा दर ना कोए खुल्ल्हाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु मुकामे हक हक दे सारे बणा दईं इहनां दे साथी, जो तेरे चरणां सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। रविदास कहे मैं ग़रीब निमाणा मंगता, माण ताण ना कोए रखाईआ। भावें मेरे घर आटा नहीं इक डंग दा, ढोरां दी खल्ल लाह के आपणा झट लँघाईआ। मैं टुट्टे जुत्ते गंढदा, गंढ तेरे नाल रखाईआ। पर इक बेनन्ती प्रभू जेहड़ा तेरा भगत होवे उहनूं धर्म राए ना होवे डण्डदा, सगों डण्डावत कर के भगतां नूं सीस निवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव खुशीआं विच्चों खुशी होवे वंडदा, खुशी खुशी नाल वरताईआ। पैग़म्बर कहिण ओह वेखे नूर नुराने पुरख अकाल दे शब्द सतिगुर शब्द सतिगुर दे फरज़ंद दा, फ़र्ज़ आपणा पूर कराईआ। उस वेले समां तेरी याद विच तेरयां भगतां होवे लँघदा, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। विछोड़ा रहे ना नार दुहागण रंड दा, रंडेपा देणा कटाईआ। झगड़ा मुकाउणा वरभण्ड दा, ब्रह्मण्ड पार खेल खिलाईआ। जिथ्थे प्रकाश तेरा इलाही चन्द दा, नूर नुराना नज़री आईआ। तेरा रूप होवे साहिब बख्शंद दा, बख्शिश रहमत सब दी झोली पाईआ। तैनूं कोई चाअ ना होवे आपणे आसण पलँघ दा, भगतां दी खुशी वेख के आपणी खुशी लैणी बणाईआ। प्रभू तूं वेरवा नहीं रखणा काया माटी चम्म दा, चम्म दृष्टी देणी बदलाईआ। जेहड़ा भगत भगवान तेरी धारों जम्मदा, ओह अन्त तेरे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लै मिलाईआ। सत्तरंगा कहे सुण रविदासा, ओ मैं वी दास हो के दयां जणाईआ। हुण दीन दुनी दा बदलणा पासा, पाशा सब दा देणा उलटाईआ। वेखी खेल तमाशा, तमाशबीन करां लोकाईआ। हौली हौली ज़रूर खोल्ही जावां खुलासा, खुफ़ीआ पर्दा दयां उठाईआ। भगतां दयां विश्वाशा, विश्व दा राह दृढ़ाईआ। शंकर जरूर पहुंचावां उपर कैलाशा, कलस हथ्थ विच फड़ के भज्जे वाहो दाहीआ। बाशक सहँसर मुख गाए स्वासा, दो सहँसर जेहवा नाल हिलाईआ। ब्रह्मा नूर नूर दा तके प्रकाशा, प्रकाश प्रकाश विच्चों प्रगटाईआ। विष्नूं विश्व दी वेखे रासा, रास मण्डल गोपी काहन आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा हुक्म वरताईआ। आर कहे मैं दस्सां बिना दन्दीं, दन्दां वाल्यो दयां जणाईआ। प्रभ दा प्यार नहीं पाबन्दी, शब्द शब्द नाल समझाईआ। सदी चौधवीं जांदी लँघी, पैंडा आपणा पन्ध चुकाईआ। किसे नूं किसे ने लाउणा नहीं अंगी, अंगीकार ना कोए अख्वाईआ। प्रभू प्यार विच अन्दरों वासना कढीं गंदी, कूड़ी क्रिया देणी तजाईआ। आत्मा परमात्मा बणाउणा संगी, सगला संग बणाईआ। पंज दीपक शमादान घृत दी देणा सुगंधी, अग्नी नाल वड्याईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत भगतां दे बणाए सनबंधी, नाता धर्म दा धर्म नाल जुड़ाईआ।

✪ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ७ पाल सिंघ, फौजा सिंघ, श्रृंगारा सिंघ, सुच्चा सिँघ महिंदर सिंघ, तरसेम सिंघ, हरभजन सिंघ, महिंदर सिंघ, गुरचरण सिँघ गगढ़ेवाल, पिण्ड भलाईपुर डोगरां ज़िला अमृतसर ✪

चेत कहे प्रभू मैं बलिहार, बलिहारी आपणा आप कराईआ। सति दी सच चली चाल, धरती धरत धवल खुशी मनाईआ। मेरी नमो नमो निमस्कार, नमस्ते कहि के सीस झुकाईआ। दस गुरमुखां पहला मेरा कीता विहार, दस दशमेश दी आसा पूर कराईआ। दस्म दुआर बणे तेरा घर बार, गृह गुरमुखां डेरा लाईआ। सोहणा सुहञ्जणा दिसे परिवार, बंस इक्को नज़री आईआ। सुत दुलारे बणा के बन्नी सिर दस्तार, सीस आपणा हथ्थ रखाईआ। इक इक रुपईआ इहनां दे सिर तों देवे वार, वारस हो के आपणा मेल मिलाईआ। कूड़ माया दा रहे ना किसे प्यार, सतिगुर प्रेम विच समाईआ। धर्म दा गंढा असीं खुशी विच तेरा कराउणा आहार, भोग लाउणा चाँईं चाँईंआ। तेरी मेहर दा सदका एह लेखा रहे सदा जुग चार, चौकड़ी तेरे नाम दी वज्जे वधाईआ। तेरा दर ठांडा दरबार, दर दवार सोभा पाईआ। मैं सदा सदा सेवादार, सच साची सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मेला लैणा मिलाईआ। पगड़ी कहे सुणो गुरमुख मीत, मित्रों दयां जणाईआ। सतिगुर रखणा चीत, हिरदे विच वसाईआ। आत्म परमात्म गाउणा गीत, ढोला अगम्म अथाहीआ। कलयुग विच सतिजुग बदलणी रीत, रीती धुर दी इक अपणाईआ। इक नूं झुके सीस, पगड़ी कहे एह सीस फिर झुकण किसे ना पाईआ। जीवण नालों मरना चंगा जेहड़ा मुख मोड़े जगदीश, जगदीश्र प्रेम तुड़ाईआ। इहो हुक्म इहो प्यार इहो कलमा इहो हदीस, जेहड़ी हज़रतां तों परे दिती समझाईआ। तुसीं इक दे इक नाल करनी प्रीत, जो प्रीतम ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी दया आप कमाईआ। सीस कहे ओह पगड़ीए आ जा मेरे उत्ते, लज्जया रखणी चाँईं चाँईंआ। मेरे भाग जाग पए सुत्ते, सुत्तयां ल्या उठाईआ। खुशी होई विच जुस्से, ज़मीर वज्जी वधाईआ। सीस कहे मैं सुगंद खावां दूसर अग्गे कदे ना झुक्के, जे लथ्थ जावे सी ना कदे सुणाईआ। अज्ज तों पिछले सब दे पैंडे मुके, अवतार पैग़म्बर गुरु दा नाता दिता तुड़ाईआ। भगत भगवान हो के उठे, लोकमात लई अंगड़ाईआ। सतिगुर शब्द हो के तुठे, मेहर नज़र उठाईआ। सुहञ्जणी होई रुते, प्रभ बख्शी

माण वड्याईआ। जन्म कर्म दे मनाए रुस्से, आपणा जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां सार पुछे, दूसर हथ्थ ना कुछ फड़ाईआ।

४ चेत शहिनशाही सम्मत ७ ऊधम सिंघ, गुलज़ार सिंघ, बलवन्त सिंघ, मुखत्यार सिंघ, धर्मबीर, पिण्ड जलालाबाद ज़िला अमृतसर

सतिगुर शब्द कहे वेखो पुड़ा डड़ा मंजा, अवतार पैग़म्बर गुर ध्यान लगाईआ। पुरख अकाला तारनहारा पंजां, तत्तां दए माण वड्याईआ। इक्को रूप बख्श्या केसा धारी गंजा, मूंड मुंडाया वंड ना कोए वंडाईआ। हरख़ सोग मिटा के रंजा, चिन्ता पिछली रिहा गंवाईआ। जेहड़ा खेल दस्सया द्वापर विच संजा, अनभव दृष्टी विच रखाईआ। ओह लेखा पूरा करे सूरा सरबंगा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। गुरमुख हरिजन भगत सुहेले देवे संगा, सगला संग निभाईआ। जिन्हां दे चरण चुम्मे गंगा, गंगोतरी सीस निवाईआ। जिन्हां दी आस रख के गया वाली वासी पुरी अनन्दा, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जिस वर दिता सी माधो बैरागी बन्दा, बन्दगी आपणी इक जणाईआ। जिस वेले कलयुग जीव जहान होया अन्धा, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। मेरा सिख मेरे ना लागे अंगा, अंगीकार ना कोए अख्वाईआ। सिँघ सिंघ नाल करे दंगा, गुरमुख रूप ना कोए वखाईआ। सब दा सीस होणा नन्गा, ओढण उपर ना कोए टिकाईआ। परख रहिणी नहीं माढ़ा चंगा, जगत बुद्धी दए गंवाईआ। उस वेले किरपा करे सूरा सरबंगा, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस ने भगतां दा खा के मंडा मंडा, मण्डलां तों बाहर देणा वसाईआ। मेट के भेख पखण्डा, मार्ग इक्को देणा दरसाईआ। जिथ्थे आत्म परमात्म होवे छन्दा, दूजा राग ना कोए दृढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया मेटणी फड़ सच सच दा खण्डा, खड़ग प्रेम वाली खड़काईआ। आदि जुगादी ग़रीबां दी मिस्सी रोटी ते नाल हुन्दा गंढा, जुग चौकड़ी चली आईआ। जिस दे हुक्म विच पिछला जुग चौकड़ी लँघ, ओह अग्गे अगला अग्गा दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे ओह वेखो जग, जगजीवण दाता दए वखाईआ। जिन्हां दीन मज़्हब कीते अलग्ग, वक्खरी वक्खरी रीती अपनाईआ। सतिजुग दी धार विच सब दे सीस ते रखे पग्ग, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड ना कोए वंडाईआ। ग़रीब निमाणयां बुझावे अन्दरों अग्ग, तृष्ना तृखा गंवाईआ। बग़ला बपड़ा रहे कोए ना बग, हँस

आपणे ल्ए प्रगटाईआ। सच दवारे साचे सद्द, सदा इक दृढ़ाईआ। जन भगतो जगत दी लँघणी हद्द, हद्द आपणी दए वखाईआ। भगत भगवान दी बणायो यद, यदी आपणा आप सतिगुर भेंट कराईआ। हुण अग्गे जाणा वध, पिछला पन्ध मुकाईआ। पिछली करनी होवे रद्द, अग्गे हुक्म चले धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अवतार पैग़म्बर गुर वेखो रीत पुराणी पुराणी चिर, पिछली पिच्छे ध्यान लगाईआ। जेहड़ी खेल कीती नरायण निर, निरवैर हुक्म वरताईआ। चार जुग विच लोकमात विच गई फिर, रूप वक्ख वक्ख बदलाईआ। हुण फिर वेखो सतिगुर प्यार धार दी पगड़ी सब दे आउणी सिर, जिस दी आसा श्री राम गया रखाईआ। जिस दा बनबास जांदयां इक हन्झू गया सी किर, किरन किरन विच्चों बदलाईआ। ओह धरती उत्ते गया गिर, मिट्टी घट्टे सोभा पाईआ। फिर राम हस्सया खिड़, खुशी लई प्रगटाईआ। नाले इशारा कीता जिस वेले धर्म दा रहिणा नहीं कोई पिड़, पीढ़ी धर्म ना कोए चलाईआ। उलटा गेड़ा जावे गिढ़, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। उस वेले किरपा करे राम ना लावे दिर, राम रामा दया कमाईआ। गुरमुखां दी बन्न्हे धिर, धरनी धरत धौल होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा लेखा जाणे सिर, सिर दा मालक सति पुरख पुरख अकाला इक अख्वाईआ।

✪ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ७ सोहण सिँघ दे गृह पिण्ड रामपुर ज़िला अमृतसर ✪

पगड़ी कहे मैनूं कहिंदे टरबन, अक्खरां वाली सिफ्त वड्याईआ। मैं वक्त सुहाउणा शरकन गरबन, शमाल जनूब आपणी गंढ पवाईआ। लेख वखाउणा अरबानीआं अरबन, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। भगतां करना मर्दन, चौथे जुग जुग उठाईआ। शरअ छुरी मेटणी करदन, कत्लगाह दा डेरा ढाहीआ। सब दी पूरी करनी अर्जन, आशा आसा नाल मिलाईआ। जगत जहान दी पुट्ठी होवे नरदन, जन भगत मिले वड्याईआ। प्रभ दा खेल दस्सणा असचरजन, अचरज लीला देणी समझाईआ। जो आसा रखी पंचम गुर अर्जन, ध्यान नानक जोत लगाईआ। उस दा लहिणा पूरा होणा जो तेग़ बहादर कटी गर्दन, गर्दिश विच पए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां सीस ओढण देवे परदन, दो जहानां होए आप सहाईआ।

✪ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ७ उत्तम सिंघ, चन्नण सिँघ दे गृह पिण्ड वैरोवाल ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर शब्द कहे जुग चौकड़ी बदलदा आया समां, पुरख अकाला दीन दयाला आप बदलाईआ। जुगां विच्चों जुग हुन्दा रिहा नवां, नव नौ चार आपणा हुक्म वरताईआ। रसना जेहवा जाप बदलदा रिहा दमां, अक्खर अक्खरां नाल टकराईआ। धर्म दी धार धर्म दा मार्ग हुन्दा रिहा रवां, रवानगी पिछले हथ्थ फड़ाईआ। कलयुग अन्त अवतार पैग़म्बर गुरुआं दीन मज़्ब दी मेटणी तमां, लालच हरस हवस रहिण ना पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चार वरन अठारां बरन करने जमां, आत्म परमात्म नाता देणा बंधाईआ। कूड़ क्रिया कर्म कांड अन्तर करना मन्ना, मनसा मन दी दए बदलाईआ। सच दवार एकँकार अगम्म जगाउणी शमां, अंध अंधेरा दए मिटाईआ। लेखे लाउणा गोबिन्द दी आसा गोबिन्द दा कन्ना, कायनात दुतीआ भाउ गंवाईआ। झगड़ा मेटणा काया माटी चम्मा, चम्म दृष्टी दीन दुनी देणी बदलाईआ। हरि भगत भगवन्त विछोड़ा रहे ना लम्मा, नेरन नेरा हो के नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई भगत जनां, जन आपणे रंग रंगाईआ।

१२५२ २२

✪ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ७ सुरैण सिंघ, दलीप सिंघ, सवरन सिंघ, तेजा सिंघ, गुलज़ार सिंघ, सन्तोख सिंघ, सुरैण सिंघ, तरलोक सिंघ, गगढ़ेआल श्रृंगारा सिंघ, पक्खो के अेकल गड्डा, बूटा सिंघ, जरनैल सिँघ सरली खुर्द, सन्तो बंडाला जिंदो बंडाला, सवरनी बंडाला, अमर कौर बंडाला, धन्नतो बंडाला, बंसो ठट्ठीआं कशमीरो तख्तू चक्क पिण्ड जंडयाला गुरु ज़िला अमृतसर ✪

अवतार पैग़म्बर गुर तक्कण उपर धरती, सचखण्ड दवार बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। निरगुण धार तक्को प्रभ बणया भगतां दा निधपरती, प्रीतम हो के दया कमाईआ। सब दा लहिणा देणा पूरा करे शर्ती, शरअ दा मालक धुरदरगाहीआ। लेखा जाणे शाहो भूप अगम्मा अर्शी, आलीशान नूर इलाहीआ। खेल वखावे आपणे घर दी, गृह मन्दिर पड़दा आप चुकाईआ। ग़रीब निमाणयां बणे दर्दी, दर्दीआं दु:ख मिटाईआ। धार दस्से नरायण नर दी, नर हरि आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेखे अग्नी बलदी, बावन धार नाल मिलाईआ। फिरी दरोही जल थल दी, महीअल नैणां नीर वहाईआ। पदवी रही ना किसे अटल दी, निहचल धाम ना कोए सुहाईआ। चारों कुण्ट वरती कला कलयुग कलि दी, कलकाती होई लोकाईआ।

आत्म परमात्म धार मूल ना रलदी, सगला संग ना कोए वखाईआ। किसे नूं ख़बर नहीं घड़ी पल दी, अनभव दृष्टी भेव ना कोए चुकाईआ। सार समझी ना किसे गोबिन्द चन्द दी, जिस नूं सूर्या चन्द सीस निवाईआ। पवित्र धार रही ना किसे तन दी, तत्व तत रिहा कुरलाईआ। मनसा मेटे ना कोए मन दी, ममता मोह ना कोए चुकाईआ। सृष्टी वणजारी हो गई चुग़ली कन्न दी, रसना सति ना कोए सुणाईआ। साधां सन्तां आसा हो गई माया धन दी, लोभ लालच विच हल्काईआ। बौहड़ी जनणी भगत कोए ना जणदी, सुफली कुल ना कोए कराईआ। चारों कुण्ट घड़ी हो गई ग़म दी, ग़मी ग़मखार ना कोए गंवाईआ। सृष्टी दृष्टी होई चम्म दी, अनदृष्ट प्रभ दा दरस कोए ना पाईआ। तृष्ना कूड़ी होई तम दी, सांतक सति ना कोए कराईआ। आशा किसे रही ना प्यासी प्रभू दे नाम दी, साह साह ना कोए समाईआ। रसना हलकाई हो गई मदि दे जाम दी, जमां तों सके ना कोए बचाईआ। थित दिसदी कलयुग शाम दी, शमा करे ना कोए रुशनाईआ। ख़बर आ गई पैग़म्बरां वाले पैग़ाम दी, हज़रत ईसा मूसा रहे दृढ़ाईआ। खेल होणी अगम्मी इक अमाम दी, जो अमलां तों रहित बेपरवाहीआ। निशानी होणी धर्म निशान दी, निशाने कूड़ दए गंवाईआ। वड्याई रहिणी नहीं किसे ग़ुलाम दी, ग़ुलामी शरअ दी सब दी देणी कटाईआ। वड्याई रहिणी नहीं रसना वाले कलाम दी, अक्खरां नाल ना कोए चतुराईआ। खेल तकणी अगम्मे सुल्तान दी, जो शाह पातशाह शहिनशाह इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला आप मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे होया वक्त सुहञ्जणा, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। किरपा करे दर्द दुःख भय भञ्जणा, हरि पुरख निरँजण अगम्म अथाहीआ। जो आदि जुगादी सज्जणा, एकँकारा नूर इलाहीआ। जिस दा इक्को दीपक जगणा, आदि निरँजण डगमगाईआ। जिस दा मार्ग सति दा लग्गणा, श्री भगवान वड वड्याईआ। जिस दा इक्को होणा हज्जणा, अबिनाशी करता नूर इलाहीआ। जिस दी सारी दिसे रचना, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अगम्म अथाहीआ। उस ने सब दा पूरा करना बचना, जो अवतार पैग़म्बर गुर भविक्ख्त गए दृढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम कूड़ी क्रिया लग्गी अग्गणा, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। बिन भगतां सति दीपक किसे ना जगणा, आत्म जोत ना कोए रुशनाईआ। अनादी शब्द नाद कोए ना वज्जणा, अनहद राग ना कोए सुणाईआ। साचे चढ़े कोए ना गगना, गगन गगनंतर पन्ध मुकाईआ। किरपा करे पुरख समरथणा, समरथ पुरख अगम्म अथाहीआ। जिस ने सब दी बदलणी बन्दना, डण्डावत सजदा इक दृढ़ाईआ। डंक दमामा जिस दा वज्जणा, वजह सके ना कोए समझाईआ। जन भगतां हाल होण देवे ना मंदना, मंदभागी लए तराईआ। सच दवार दी चाढ़े रंगणा, रंगत नाम वाली रंगाईआ। कूड़ी क्रिया लँघाए हद्दना, अध विचकार

ना कोए अटकाईआ। किरपा करे सूरा सरबंगणा, शाह पातशाह दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर वेखो नाल ख्याल, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जन भगत तक्को प्रभू दे लाल, जो लालन आपणे रंग रंगाईआ। जिन्हां दा सतिगुर शब्द बणया दलाल, विचोला इक्को इक अख्वाईआ। नाता तोड़े काल महाकाल, राय धर्म ना दए सज़ाईआ। एथे ओथे करे प्रितपाल, प्रितपालक हो के सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सचखण्ड दवार बहाए सची धर्मसाल, जिथ्थे दीन मज़्हब ज़ात पात वंड ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे वेखो विष्न ब्रह्मा शिव जन भगत बन्न्ही जाण पग्गां, सीस दस्तार सुहाईआ। दर्शन पाउंदे जाण उपर शाह रगा, नौ दवार दा डेरा ढाहीआ। सति धर्म दी साची मिले जग्गा, गृह मन्दिर इक्को इक सुहाईआ। जिथ्थे बुद्धी विचार ना होवे कग्गा, हँस गुरमुख सोभा पाईआ। त्रैगुण लग्गे मूल ना अग्गा, हउमे अग्नी ना कोए जलाईआ। राय धर्म ना देवे सज़ा, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। आत्म रस दा लैण मज़ा, परमात्म विच मिलाईआ। सदा रहिण इक दी विच रज़ा, जो राज़क रिज़क रहीम नूर अलाहीआ। झगड़ा मेटे जगत जहान कज़ा, काज़ी मुल्ला तों खहिड़ा दए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर वेखण नाल प्यार, प्रेम नज़र उठाईआ। तेरा खेल सच्ची सरकार, शाह पातशाह तेरी बेपरवाहीआ। निरगुण निरवैर तेरा रूप अनूप निरँकार, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। शब्द अगम्मी तेरी धार, दो जहानां वज्जे वधाईआ। जुग जुग लए अवतार, निरगुण सरगुण रूप प्रगटाईआ। कलयुग अन्तिम खेल अपार, अपरम्पर स्वामी तेरी बेपरवाहीआ। अमाम अमामा बण सिक्दार, हुक्म हाकम इक दृढ़ाईआ। कलि कल्की हो उज्यार, उजाला भगतां दे कराईआ। निहकलंक तेरा अन्त ना पारावार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरे हथ्थ वड्याईआ। सदी चौधवीं जन भगतां पैज संवार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान निगह मेहर दी मार, मरजीवत आपणा पड़दा दे चुकाईआ। तेरे दर खड़े भिखार, भिक्खक झोली देणी भराईआ। तेरा हुक्म शब्द सजा दवार, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। सम्मत शहिनशाही सत्त सति दी कार, करनी करते कार कमाईआ। चौथे जुग दी पाउणी सार, चार चेत आसा रिहा रखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणा धुआँधार, अंध अज्ञान रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शाह पातशाह शहिनशाह सच्ची सरकार, सरोकार आपणा हुक्म देणा वरताईआ।

७ चेत शहिनशाही सम्मत ७ सुखदेव राज, प्रीतम सिंघ, जागीर कौर, कर्म सिंघ, बीबी प्यारो, गुरबख्श सिंघ, सरदारा सिंघ, सरमुख सिंघ, पूरन सिंघ, नाज़र सिंघ, तारा सिंघ, सवरन सिंघ, प्रीतम सिंघ, दर्शन सिंघ, साधू सिंघ, गेजा सिंघ, मंगल सिंघ, जिन्दर सिंघ, प्रीतम सिंघ, हरी सिंघ, हरदीप सिंघ, दयाल सिंघ, कुंदन सिंघ, हरनाम सिंघ, दरबारा सिँघ वरया, बीबी बीरो कैरो, पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर

सतिगुर शब्द कहे जग आया वक्त सुहञ्जणा, हरि सोभावन्तष सुहाईआ। प्रभ दाता दीन दर्द दुःख भय भञ्जणा, मेहर नज़र नज़र उठाईआ। भगत सुहेला बण के सज्जणा, साजण हो के वेख वखाईआ। नाम निधान वजा मृदंगणा, सोई सुरती आप उठाईआ। गुरमुख लगा के अंगणा, अंगीकार आप हो जाईआ। जन भगतो दूजा घर कदे ना मंगणा, भिखारी हो ना झोली डाहीआ। आत्म परमात्म दए अनन्दना, अनन्द अनन्द विच समाईआ। शब्दी तिलक लगाए चन्दना, सूर्या चन्द दा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे सप्तस ऋषी वेखण जग, बैठे अक्ख खुल्हाईआ। निरगुण धार रहे भज्ज, भज्जण वाहो दाहीआ। जैकारा अलख बोलण गज्ज, गज दा लेखा वेख वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया तक्कण हद्द, हदूद फोल फुलाईआ। कवण प्रभ दी बणया यद, यदी धुर दा रंग रंगाईआ। कवण अन्तर दृष्टी नालों होया अलग्ग, दृष्टी प्रभ दे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सप्तस रिख कहिण सानूं वक्त याद आया दुहेला, पूरब दईए जणाईआ। जिस वेले मिल्या प्रभू सुहेला, कर्म दिता बदलाईआ। रूप दरसाया चेला, गुरु गुर नाम वड्याईआ। धाम दस्स नवेला, पर्दा दिता उठाईआ। अचरज खेल खेला, अगम्म अथाह बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सप्तस रिख कहिण शब्दी धार कीता प्यार, अपरम्पर दया कमाईआ। शब्द संदेशा दिता अगम्म अपार, अलख अगोचर दिता दृढ़ाईआ। वेखो खेल सच्ची सरकार, हरि करता रिहा जणाईआ। सारे आपणी पैज लओ संवार, आप आपणी बणत बणाईआ। इक दूजे दा रहे ना कोए सहार, ओट ओट ना कोए तकाईआ। धर्म दी धार बन्न्हो दस्तार, सीस सीस सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। सप्तस रिख बन्न्हो दस्तारा, दहि दिशा अक्ख उठाईआ। रिषीओ रूप दस्सो न्यारा, निरगुण निरवैर रिहा जणाईआ। आत्म परमात्म बोलो जैकारा, धुर दा राग अल्हाईआ। जगत जगदीश करो निमस्कारा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। धूढ़ी लावो छारा, मस्तक ख़ाक रमाईआ। अन्तर करो प्यारा,

प्रीतम इक मनाईआ। वेखो खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर रिहा दृढ़ाईआ। दूर दुराडा तक्को कलयुग खेल न्यारा, कलि कल्की की दृढ़ाईआ। बिना नेत्र पाई सारा, बिन लोचण वेख वखाईआ। चारों कुण्ट धुआँधारा, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। सत्ते रोवण ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल चार कुण्ट हाहाकारा, सांतक सति ना कोए वरताईआ। मुरीद मुर्शद ना कोए सहारा, गुर चेला मुख भवाईआ। भगत भगवान ना कोए दवारा, दर दर रोवण मारन धाईआ। किरपा कर आप निरँकारा, निरवैर तेरी सरनाईआ। सति धर्म दी साडे सीस बन्नृ दस्तारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। विच्चों अन्तरी उठ के मारया ललकारा, भारद्वाज दिता सुणाईआ। पुरख अकाल तूं सब दा मीत मुरारा, मेहरवान अख्वाईआ। किरपा कर वड संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी तेरी ओट तकाईआ। असीं चाहुंदे तूं कलयुग अन्तिम होवीं ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर रूप धराईआ। तेरा अन्त ना होवे पारावारा, बेअन्त कार कमाईआ। जोती जाते पावीं सारा, आत्म परमात्म खोज खुजाईआ। जन भगतां बख्शीं इक्को दरस दवारा, दूजे दर कोए ना जाईआ। किरपा निधान उहनां देईं अधारा, उदर दा लेखा दईं मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। सप्तस रिख कहिण प्रभ सानूं किरपा कर दे उपर शाह रग, शहिनशाह दया कमाईआ। दीपक जोती
१२५६ जाए जग, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। तेरा दर्शन कीता रज्ज, निउँ निउँ सीस निवाईआ। साडे पड़दे कज्ज, ओढण १२५६
२२ इक सुहाईआ। असीं सारे बोलीए गज्ज, कूक कूक सुणाईआ। तूं सर्ब कला समरथ, अकथ बेपरवाहीआ। जिस वेले कलयुग २२
होवे कूड़ कुड़यार दा रथ, धर्म दा रथ ना कोए चलाईआ। सृष्ट सबाई ममता लथ्थे सथ, सथ्थर यार ना कोए हंढाईआ। नेत्र खुल्ल्हे किसे ना अक्ख, निज दरस कोए ना पाईआ। निरगुण धार होणा प्रतख, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। उस वेले आपणे भगत चुरासी विच्चों करने वक्ख, वास्ता तेरे अग्गे पाईआ। इहनां त्रैगुण माया ना साड़े अग्ग, अग्नी तत देणी बुझाईआ। सप्तस रिख कहिण उस वेले आपणयां भगतां सीस बन्नृाईं पग्ग, जो चरण परस तेरे आपणा झट लँघाईआ। जिस नाल अन्दर विकार देवीं दब्ब, कूड़ विकार देणा गंवाईआ। पिछला लेखा पूरा करना हभ्भ, हमसाजण हो के मेल मिलाईआ। हिस्सेदार बणाउणे नाल अध, अधवाटे रहिण कोए ना पाईआ। जगत जहान दी पार कराउणी हद्द, हदूद आपणी देणी वखाईआ। जिस गृह जोत सरूपी बहीए सज, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। पगड़ी कहे मैं भगतां सिर चढ़ी, चढ़दा लहिंदा ध्यान लगाईआ। भगतो सच पुच्छो एह माण बख्श्या सी मैनूं गोबिन्द विच गढ़ी, चमकौर दी चमक दए गवाहीआ। जिस वेले कोई सिख गोबिन्द

साड़ सक्या नहीं सी विच मढ़ी, तन वजूद अग्ग ना कोए जलाईआ। उस वेले मेहर दी निगह प्यार दी किरपा करी, नैण नैण विच्चों उठाईआ। फिर हस्स के किहा दुलारया जिस वेले जोत सरूप मेरा आवे हरी, हर हिरदे वेख वखाईआ। शब्द दी धार नाल तुहानूं सब नूं करे बरी, लेखा दो जहान रहे ना राईआ। तुसीं मेरा इक ढईआ वेख लओ ज़री, ज़ाहर ज़हूर हो के लेखा दए चुकाईआ। जिस दा लहिणा नहीं कोई शरीअ, शरअ तों बाहर आपणा हुक्म वरताईआ। तुसीं जिथ्थे होए ओथे ल्एगा फड़ी, सुरत शब्द नाल मिलाईआ। विहार करेगा भगतो तुहाडी भगतां दी बणा के गढ़ी, गढ़ भगतां वाला बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। पगड़ी कहे गोबिन्द ने तक्कया विच मैदान, हथ्थ मस्तक उत्ते टिकाईआ। गढ़ी तों बाहर कीता ध्यान, ध्यान गुरमुखां विच रखाईआ। फेर सीस ते हथ्थ रख के किहा तुसीं मेरे निशान, निशाने धर्म दे नज़री आईआ। जिस वेले मैं आवां ते नाल आवे भगवान, भाग तुहाडे दयां बदलाईआ। मैं तुहाडा सतिगुरु नौजवान, जन्म मरन विच कदे ना आईआ। मेरा शब्द चिल्ला ते तीर कमान, भथ्था प्रेम वाला बंधाईआ। जगत जहान बख्श के माण, अभिमानीआं लेखा दयां चुकाईआ। किरपा होवे विच जहान, कृपाल हो के दया कमाईआ। अग्गे पगड़ी ने कीता ब्यान, दोए जोड़ के सीस निवाईआ। ऐ मेरे सतिगुर गोबिन्द सिंघ गोबिन्द जे कोई तेरा सिख, तेरे बिना सीस ना किसे झुकाउण, बिना पुरख अकाल तों आपणा आप भेंट ना किसे कराईआ। जिन्हां पिच्छे तूं आपणे दुलारे कीते कुरबान, प्यारे गुरमुख ल्ए बणाईआ। तेरे कल्गी तोड़े दा निशान, तख्त निवासी तेरा नूर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। पगड़ी गुरमुख दी मैदान विच्चों गई झुक, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द सीस झुकाईआ। नाले हस्स के किहा तेरा प्यार कदे ना जावे मुक, मुकम्मल प्रेम लैणा बणाईआ। जिस तरह तूं पुरख अकाल दा पुत्त, उस तरह गुरमुख सपूत लैणे बणाईआ। आपणी गोदी लैणे चुक्क, फड़ बाहों गले लगाईआ। जिस तरह तूं अन्तर अन्तर तूं मेरा मैं तेरा गाउंदा तुक, एह तुक दो तुकी गुरमुखां दे अन्दर देणी टिकाईआ। तेरे चरण कँवल विच धर्म धार दा सुक्ख, जगत सुखआसण कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जन भगतो तुहाडी सच सुहञ्जणी बणाए रुत, रुतड़ी प्रभ दे नाल महकाईआ।

✪ ८ चेत शहिनशाही सम्मत ७ निरँजण दई दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

किरपा करे सो पुरख निरँजण, निरँजण दई दया कमाईआ। सतिगुर शब्द सदा दर्द दु:ख भय भञ्जण, भव सागर पार कराईआ। नाम निधान पा के नेत्र अंजण, अंध अज्ञान कूड़ मिटाईआ। आत्म परमात्म बणाए साचा सज्जण, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। सचखण्ड निवासी लाए आपणे अंगण, अंगीकार इक अख्वाईआ। मानस जन्म दी चाढ़ी रंगण, रंगत इक्को इक वखाईआ। मेला मिल्या नाल गोपाल मूर्त मदन, सच स्वामी अगम्म अथाहीआ। धर्म दवार पुज्जी आपणे वतन, मातलोक वतन तजाईआ। खुशी नाल कहे धन्न भाग मैं बच्चा जन्मया आपणे शिकम वतन, सुखदेव राज ध्यान लगाईआ। जेहड़ा मेरा मातलोक दा बणया किनारा पत्तन, तट धुर दा दिता वखाईआ। जिस दा प्रीतम सतिगुर शब्द आया रखण, सुहेला इक अख्वाईआ। मेरी धार बणा के अमोलक रत्न, कूड़ी क्रिया विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। चुरासी दी फाँसी टुट्टी बिना यतन, यथार्थ हरिसंगत सेव कमाईआ। सचखण्ड दवार मिलणा वसण, चारे खाणी डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर शब्द धार हो के आवण जावण लख चुरासी जन भगतां गेड़ा आया कटण, धर्म राए दी फाँसी गल ना कोए लटकाईआ।

१२५८ १२५८

२२ २२

✪ ८ चेत शहिनशाही सम्मत ७ मस्सा सिंघ, मक्खण सिंघ, दारा सिंघ, करनैल सिंघ, बीबी अजैब कौर बाठ, नरायण सिँघ कंग, गुरनाम सिँघ कंग, कुंदन सिँघ माल चक, सोहण सिँघ माल चक, हरनाम सिँघ पंडोरी, उजागर सिँघ खडूर साहिब, सवरन सिँघ फतिआ बाद पिण्ड नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ✪

नारद कहे मैं तक्कया अक्खर धार बवन्जा, बावन बावन बावन ध्यान लगाईआ। नानक निरगुण सरगुण धार दा तक्कया पंजा, पंज पंज पंज खोज खुजाईआ। फेर लेखा तक्कया द्वापर संजा, की भविख गया सुणाईआ। फिर रावण तक्कया रंजा, रंज़स विच दिती दुहाईआ। फेर गोबिन्द दा तक्कया कंघा, इक्कीआं दन्दयां वाला दए गवाहीआ। फेर कलयुग समां वेख्या लँघ, सदी चौधवीं अक्ख खुलाईआ। कूड़ी क्रिया दा जाणया कन्ढा, तट फोले थांउँ थाँईंआ। धर्म दी धार वेख्या खण्डा, ब्रह्मण्ड खण्ड फोल फुलाईआ। जां निगह मारी सतिगुर शब्द तक्कया सब दा पंडा, विद्या अगम्म रिहा पढ़ाईआ। जिस ने हुक्मी हुक्म दा कराउणा जंगा, नव सत्त सत्त नव नाल टकराईआ। उलटा वहिण वहाउणा गंगा, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रोवे मारे धाहीआ। उम्मत दा पाटा चीथड़ दिसे तम्बा, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। बौहड़ी मेरा अन्तर

अन्तर कम्बा, भय विच दिती दुहाईआ। प्रभू किते कलयुग दा पैंडा करीं ना लम्बा, अग्गे आयू ना कोए वधाईआ। मैं तकणा चाहुंदा तेरा खेल अचंभा, अचरज लीला देणी वखाईआ। मानव रहे कोए ना गंदा, दुरमति मैल देणी धुआईआ। आत्म परमात्म पाईं गंढा, जन भगतां मेल मिलाईआ। गुरमुखां सीना रखणा ठंडा, अग्नी तत बुझाईआ। सन्त सुहेला कोई ना होवे रंडा, कन्त सुहागी इक्को नज़री आईआ। खहिड़ा छुडाउणा सब दा करीर जंडा, पाहन पूजन ना कोए वड्याईआ। इक्को तेरे नाम दा सब नूं होवे अनन्दा, अनन्द पुर वाला देणा नाल मिलाईआ। तेरे नाम दा लए कोए ना चन्दा, चन्द सितार दा लेखा देणा चुकाईआ। पिछला जुग वेख लँघ, पन्ध मुक्कया थाउँ थाँईंआ। मैनूं सच दस्स क्यों डाहया उलटा मंजा, मँझधार विच लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। नारद कहे मैं वेखे दीपक जलदे, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। सोहणे बैठे लग्गदे, पंचम पंचम मिल के वज्जी वधाईआ। वणजारे बण गए अग्ग दे, घृत नाल सुहाईआ। शब्दी सतिगुर सारे सद्द दे, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। बौहड़ी असीं वणजारे नहीं रहिणा काअब्यां वाले हज्ज दे, हुजरा हक दे वखाईआ। सब दे लेखे पूरे कर दे सीस धड़ वाले पग्ग दे, पगड़ी सीस जगदीश जगत बंधाईआ। तेरे भगत सुहेले तैनूं मूल रहिण ना लभ्भदे, घर घर मिलणा जा के चाँईं चाँईंआ। झगड़े मिटाउणे काया मास नाड़ी हड्ड दे, ख़ाकी ख़ाक ना वेख वखाईआ। अग्गे घराणे रहिण ना अलग्ग दे, आत्म परमात्म संग निभाउणा थाउँ थाँईंआ। सारे तैनूं होवण मन्नदे, सीस जगदीश इक झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर , एका देणा साचा वर, मेहरवान मेहर निगह उठाईआ। नारद कहे जन भगतो वेखो दीपक प्रकाश, प्रकाश नूर इलाहीआ। वेखो आपणी रास, तन मण्डल खोज खुजाईआ। खोल्हो आपणी आंख, निज नेत्र पड़दा रहे ना राईआ। पंजां तत्तां विच मारो झाक, झाकी अवर ना कोए जणाईआ। खोल्हो आपणा ताक, पड़दा दयो उठाईआ। मेटो अंधेरी रात, नूरी चन्द चन्द रुशनाईआ। पुतले ना बणे रिहो मिट्टी ख़ाक, ख़ालस आपणा आप लैणा प्रगटाईआ। दुनिया अन्दर कलयुग अंधेरी रात, जन भगतां गृह सतिगुर शब्द करे रुशनाईआ। नाम शब्द दर ठांडे लओ दात, दाता दानी आप वरताईआ। झगड़ा मेट दयो काग़ज़ात, कलमा कायनात सुणाईआ। हुजरा हक तक्को महिराब, महिबूब नूर इलाहीआ। जिस दा अमृत हयाते आब, जीवण ज़िंदगी दए बदलाईआ। ओह सब नूं देवे ख़िताब, ख़ता सब दी माफ़ कराईआ। जन भगतो तुहानूं पढ़ाए अगम्मी किताब, जेहड़ी कुतबख़ान्यां विच्चों हथ्थ किसे ना आईआ। ना कोई समझ सके अल्फ़ाज़, लफ़ज़ां वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी दया कमाईआ।

नारद कहे प्रभू तेरा खेल अनोखा, हरि करते दयां दृढ़ाईआ। सृष्टी नाल करीं ना धोखा, वल छल आपणी कार कमाईआ। नाले आह विच भरया हौका, हाए उफ़ कीती दुहाईआ। किसे अन्दर प्यार रिहा ना तेरे चाउ का, दीन दयाल तैनूं मिलण कोए ना पाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारे वार चलाया तेरे घाउ का, हउमे डूंघा रोग दिता लगाईआ। प्यार भुल्लया बेपरवाहो का, बेपरवाह तेरे विच ना कोए समाईआ। हुण लेखा मुका दे दीन मज़्हब अवतार पैग़म्बर गुर दाउ का, दाइरा इक्को दे वखाईआ। आत्म परमात्म संदेशा दे सुझाउ का, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। मानस रूप रहे कोए ना काउं का, गुरमुख हँस लै प्रगटाईआ। तेरा संदेशा होवे वाहो वाहो का, वाहवा सतिगुर तेरी बेपरवाहीआ। रूप धर अगम्म मलाहो का, लख चुरासी बेड़ा कंध उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर लेखा पूर कराईआ। नारद कहे प्रभ मैं खा के कहां कसम, कसम नाल जणाईआ। सब दा झगड़ा मेट दे जिस्म, जिस्म ज़मीर दे बदलाईआ। भगतां भगती दी इक्को दस्स रसम, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सब दी लेखे लाउणी भस्म, भस्मड़ आपणा रंग बदलाईआ। हरिजन तेरे दवारे वसण, दूजा दर ना कोए वड्याईआ। खुशीआं विच सारे हस्सण, हस्ती तकण नूर इलाहीआ। तेरा दर्शन पावण निज अक्खण, लोचण नैण देणा खुल्हाईआ। अमोलक हीरे बणा लै रत्न, अमोलक आप प्रगटाईआ। अमोलक घाट बहा दे पत्तन, धुर दे तट आप बहाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म तेरा नाम सारे रटण, दिवस रैण ध्यान लगाईआ। निज नेत्र खोल्हदे अक्खण, लोचण नूर नूर रखाईआ। गुरमुख हरिजन हरिभगत तेरे प्यार मुहब्बत दी दस्तार सीस ते रखण, सिर सिर आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सतिगुर धार शब्द सज्जण, साजण मीत त्रैगुण अतीत त्रैभवण धनी इक्को इक अख्वाईआ।

९ चेत शहिनशाही सम्मत ७ सोहण सिंघ, सन्ता सिंघ, सवरन सिंघ, करतार कौर, दलीप सिंघ, बसन्त कौर,
बली सिँघ कैरों, मखण सिँघ जौड़ा केसो राम जंडो की सरहाली, प्रीतम कौर साहब पुरा,
महिन्दर सिँघ बग्गे, सन्ता सिँघ बुगे, जगीर सिँघ मुग़ल चक्क, करनैल कौर शफ़ीपुर,
प्रताप सिँघ सुगा, प्रताप कौर भोजीआं, तरनतारन शहर ज़िला अमृतसर

नौ चेत कहे मेरा सच प्रविष्टा, सम्मत शहिनशाही सत्त नाल वड्याईआ। श्री भगवान सब दा होवे इष्टा, इष्ट देव

स्वामी इक अख्वाईआ। आत्म धारी होवे सृष्टा, सृष्टी दृष्टी दए बदलाईआ। जन भगतां पूरन करे निसचा, निहचल दए वड्याईआ। गृह वखाए एकँकार इक दा, अकल कलधारी आपणी कार कमाईआ। झगड़ा मेटे जगत हित दा, हितकारी इक अख्वाईआ। मेल मिलावा होवे साचे पित दा, पतिपरमेश्वर आपणे रंग रंगाईआ। पर्दा लाहवे काया मन्दिर विच दा, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। निज नेत्र नूर नुराना होवे दिसदा, लोचण अक्ख अक्ख रुशनाईआ। मनुआ शब्द धार होवे टिकदा, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। चार वरन प्रभ रूप बणाए सिख दा, साची सिख्या इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। करनी कहे हरि आदि अन्त दा करता, गहर गम्भीर अख्वाईआ। भेव खुल्हाए आपणे घर दा, गृह मदर आप जणाईआ। जिथ्थे मेला नरायण नर दा, दूजा संग ना कोए निभाईआ। इक्को दीप अगम्मी जलदा, जोती जोत डगमगाईआ। झगड़ा रिहा ना जल थल दा, महीअल रूप ना कोए दरसाईआ। भगत विछोड़ा होए कोए ना पल दा, पलक दी वंड ना कोए वंडाईआ। जो अवतार पैग़म्बर गुरु रिहा घल्लदा, शब्दी शब्द शब्द शनवाईआ। ओह मालक निहचल धाम अटल दा, अटल पदवी इक दरसाईआ। सो आत्म परमात्म हो के रलदा, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। जुग चौकड़ी सृष्टी सरगुण हो के आया छल दा, अछल छलधारी आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे अवतार पैग़म्बर गुरु मारो झाकी, सचखण्ड दवार पड़दा आप उठाईआ। मातलोक दी निरगुण धार दी खोल्हो ताकी, सरगुण रूप ना कोए प्रगटाईआ। क्यों नहीं तत्तां दी करदे राखी, दिवस रैण भज्जो वाहो दाहीआ। तुहाडे हुंदयां मनुआ होया आकी, अक्ल बुद्धी दी रही ना कोए चतुराईआ। क्यों नहीं जाम प्याउंदे बण के साकी, नाम प्याला हथ्थ उठाईआ। चारों कुण्ट अंधेरी राती, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। आबेहयात बदले ना कोए हयाती, अमृत अमृत रस ना कोए चखाईआ। वेखो झगड़ा प्या तन ख़ाकी, ख़ाकी ख़ाक रही उडाईआ। सति धर्म दी रही ना कोए इन्साफ़ी, आदल अदल ना कोए कमाईआ। आपणा तक्को भविक्ख्त वाकी, जो पेशीनगोईआं विच आए सुणाईआ। अवतारो साचे मण्डल पए कोए ना रासी, रस्ता भुल्ली दीन दुनी लोकाईआ। वेखो शंकर रोवे उत्ते कैलाशी, कलाधारी की आपणी कल वरताईआ। ब्रह्मे ब्रह्म धार धर्म धार ना पछाती, बेपहचान समझ किसे ना आईआ। विष्नूं विश्व दी करे कोए ना राखी, रक्षक रूप ना कोए दरसाईआ। क्यों कलयुग कलुआ होया कलकाती, कलमा सारे गए भुलाईआ। वेखो झगड़ा प्या कागज़ाती, अक्खरां वाली दीन दुनी लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव

आप खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द कहे अवतार पैग़म्बर गुरु वेखो चुक्के लोकमात दा पड़दा, पड़दानशीं रिहा दृढ़ाईआ। तुहाडा दीन मज़्हब दूई दूवैत विच सड़दा, शरअ दी अग्ग ना कोए बुझाईआ। शरीअत विच जाए हड़्दा, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। साची मंज़ल महिबूब वाली कोए ना चढ़दा, सचखण्ड दवारे प्रभ दा दरस कोए ना पाईआ। माण रिहा ना तीर्थ अट्ठ सट्ठ जल दा, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रोवे मारे धाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ दीपक जोत कोई ना बलदा, गुरदवार गुरदेव स्वामी नज़र किसे ना आईआ। पंच विकारा कूड़ कुड़यारा चारों कुण्ट हड़्दा वगदा, वहिण वहिण विच्चों वहाईआ। साचे तट किनारे जगत जिज्ञासू कोए ना लग्गदा, पत्तन हथ्थ किसे ना आईआ। घर स्वामी ठाकर परवरदिगार सांझा यार कोई ना सद्दा, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द सिफ्तां नाल जीव जहान पढ़ पढ़ थक्कदा, थकावट विच सर्ब लोकाईआ। वेखो झगड़ा मन मति दा, मन कल्पणा आपणा रंग रंगाईआ। बिना भगतां तों आत्म दीप कोए ना जगदा, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। झगड़ा मुक्कया नहीं किसे शाहरग दा, नौ दवार डेरा कोए ना ढाहीआ। राग सुणे ना कोए अनहद दा, नादी धुन ना कोए शनवाईआ। सच दवार बहि कोए ना सजदा, साजण मीत नज़र किसे ना आईआ। मालक बणे ना कोए चौथे पद दा, मंज़ल हक ना कोए रखाईआ। जगत खेल तक्को पंज तत दा, मन मति बुद्ध नाल मिलाईआ। साची मंज़ल कोए ना टप्पदा, बन्धन बंध ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे वेखो दीन दुनी दी धार, धर्म समझ किसे ना आईआ। चारों कुण्ट धुआँधार, अंध अंधेर ना कोए मिटाईआ। नेत्र खोल्हो तेई अवतार, त्रैगुण अतीते ध्यान लगाईआ। पैग़म्बर आपणी करो विचार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों बाहर वेख वखाईआ। गुरु दस तक्को नज़ार, नज़रीआ नाम वाला बदलाईआ। सदी चौधवीं सब नूं आई हार, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। मंज़ल सब दी होई दुश्वार, दुश्मण अन्दरों बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। सतिगुर शब्द होवे ना पहरेदार, दिवस रैण आपणी सेव कमाईआ। मन कल्पणा सृष्टी दृष्टी करे विभचार, कुकर्म कूड़ नाल मिलाईआ। सारे वेखो बिन नैणां नैण उग्घाड़, बिन लोचन अक्ख खुल्हाईआ। अग्ग लग्गी बहत्तर नाड़, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण सतिगुर शब्द शब्द बलकारी, बलधारी दईए दृढ़ाईआ। की करन विष्न ब्रह्मा शिव संसारी सँघारी भण्डारी, अग्गे चले ना कोए चतुराईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर प्रभ दी आई वारी, वारस हो के वेखे चाँईं चाँईंआ। असीं दर दरवेश सजदे करीए निमस्कारी, डण्डावत सजदे विच झुक झुक सीस निवाईआ।

तूं मेहरवान महिबूब शहिनशाह सिक्दारी, शाह पातशाह तेरी इक सरनाईआ। अमाम अमामा जोती जोत जोत निरँकारी, निरगुण निरवैर तेरी वड वड्याईआ। कलि कल्की तेरा रूप अपर अपारी, अपरम्पर समझ कोए ना आईआ। निहकलंक निरगुण जोत जोत उज्यारी, उजाला दो जहान दे कराईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट रैण अंध अंध्यारी, आत्म अंधेरा दे चुकाईआ। एका शब्द तेरा नाम होवे जैकारी, जै जैकार करे ख़लक खुदाईआ। सृष्टी दृष्टी अनदृष्ट हो के पावे सारी, महासार्थी आपणी कल धराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर बीते आपणी वारी, कलयुग वेला अन्तिम आपणे लेखे लाईआ। तेरी सिफ्त सालाह बेपरवाह कागत कलम ना लिखणहारी, चार जुग दे अक्खर तेरी समझ किसे ना आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान बाईबल तुरैत गुरु ग्रन्थ साहिब तेरी सिफ्तां दी भण्डारी, भण्डारा इक्को एक एकँकार तेरा नाम वड वड्याईआ। जिस दा रूप रंग रेख सरगुण धार कोई तके ना विच संसारी, संसारी भण्डारी सँघारी जिस नूं बैठे सीस निवाईआ। ओह सचखण्ड तों सच स्वामी वसे बाहरी, जिस दा रूप रंग रेख आदि जुगादि जुग चौकड़ी समझ किसे ना आईआ। तेरा आदि दा अन्त दा कन्त दा भगवन्त दा इक्को शब्द बोध लिखारी, लेख कातब करनी करते इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे ओह वेखो नारद आउंदा नट्ठा,
१२६३ भज्जे वाहो दाहीआ। पैरां वल्ल उडावे घट्टा, बिन पैरां पैर हिलाईआ। हथ्थ मारदा आवे उत्ते पट्टां, पटने वाले वल्ल अक्ख १२६३
२२ उठाईआ। क्यों नहीं मेटदा दीन मज़्हब दा रट्टा, झगड़ा कूड़ मिटे लोकाईआ। तेरे नाम नूं करदे ठट्ठा, सति विच ना कोए २२
समाईआ। सतिगुर शब्द तेरे हुन्दयां दीन दुनी खाए वच्छा कट्टा, ढोरां खल्ल लुहाईआ। नारद कहे जे मैं सतिगुर होवां सारी सृष्टी नूं कर देवां बटा, ज़ीरो दा ज़ीरो रूप वखाईआ। ओह वेख मुहम्मद दा पूरा होण वाला सदी चौधवीं दा पटा, पाटल आपणी लै अंगड़ाईआ। प्रभ दा नाम हट्टां विच विकदा नाल टका, टक्कयां वाली कीमत गए पाईआ। कलयुग खेल कीता बाज़ीगर वांग नटा, नटुआ आपणा स्वांग वरताईआ। सति रहिणा नहीं तीर्थ तटा, अमृत रस ना कोए चखाईआ। फिरी दरोही मन्दिर मट्ठा, शिवदुआले देण दुहाईआ। चर्चां मसीतां रोंदीआं इट्टां, पथ्थर नैणां नीर वहाईआ। ओह वेख कूड़ी क्रिया दीआं खुल्लीआं लिटां, मेंढी सीस ना कोए गुंदाईआ। किसे नूं नज़र ना आवे पुरख अकाल पिता, जो गोबिन्द तेरा बणया पिता माईआ। आपणीआं वेख लै वार थितां, घड़ी पल गृह नछत्र वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे नारद आवे रोंदा हस्सदा, हस्स हस्स रिहा वखाईआ। दूरों कहे मैं जाणया अवतार पैग़म्बर गुरु भुक्खा नाम दे जस दा, जस सब दा दयां सुणाईआ।

प्यार मंगदा रिहा अक्ख दा, अक्ख अक्ख नाल मिलाईआ। आपणयां आपणयां दीनां मज़्बां दी पैज रिहा रखदा, दूसरयां नाल करी लड़ाईआ। मनुषां वांगू मनुषां दे सीस रिहा कटदा, धड़ वक्खो वक्ख दिसाईआ। झगड़ा पाउंदा रिहा काया मट्ट दा, तन वजूद वंड वंडाईआ। इक रूप दरसाया ना किसे पुरख समरथ दा, समरथ विच ना कोए टिकाईआ। झगड़ा पाया तत अट्ठ दा, अप तेज वाए पृथमी आकाश मन मति बुध आपणा हुक्म वरताईआ। प्यासा बणया रिहा खून ते रत्त दा, रत्न अमोलक रूप ना कोए दृढ़ाईआ। राह चलाउंदा रिहा वक्ख वक्ख दा, वखरी जगत ना कार कमाईआ। नाम कलमा रूप धरदा रिहा सच दा, सच सच नाल ठुकराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। नारद कहे सतिगुर शब्द मैं पुज्जा, पूजा करके सीस निवाईआ। मैनूं भेव दस्सदे गुज्झा, पर्दा दे उठाईआ। क्यों नाम बदलया एका दूजा, दुतीआ आपणा रूप दरसाईआ। सच दस्स चहुं जुगां विच केहड़ा तेरा नाम उग्घा, जो उगण आथण तांईं जपाईआ। मैनूं ऐं जापदा जेहड़ा तूं नाम चलाया उसे दा लैंदे रहे भुग्गा, हिस्से वंड जगत वाली पाईआ। जे तूं आदि अन्त दा इक ते इक्को तेरा मुद्दा, क्यों मुद्दतां विच आपणे कलमे लए बदलाईआ। जदों तूं ग्यों उपर बसुधा, पंज तत तत रूप वखाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु बण के क्यों कराउंदा रिहों युद्धा, खण्डे खंडयां नाल टकराईआ। तूं आदि तों अन्त तक कदे ना होइयों बुड्ढा, ओए जगत दे भेखी भेख धार के आपणी खेल रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे सतिगुर शब्द खोल्ह दे आपणा भेत, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। मैं इक गल्ल पुछदा क्यों अर्जन दे सिर विच पाई रेत, तत्ती लोह उत्ते बहाईआ। क्यों तेग़ बहादर दा सीस कीता खेत, की ख़तरा दिसे लोकाईआ। क्यों गोबिद ने बच्चे कीते भेंट, नीहां हेठ दबाईआ। ओए क्यों तेरे नाम कलमे नूं जगत जिज्ञासू रहे वेच, टकयां वाली कीमत पाईआ। की तूं आदि अन्त दा मालक नहीं हमेश, जुग जुग दा शहिनशाह अख्वाईआ। क्यों झगड़ा प्या लोकमात दे देस, दीन मज़्हब करन लड़ाईआ। जे तेरा सचखण्ड दवारा इक, अवतार पैग़म्बर गुरु सारे तेरे विच, क्यों धरती उत्ते इन्सानां विच पाई खिच्च, शरअ शरअ नाल दिती टकराईआ। क्यों वख वख कलमे दिते लिख, क्यों अणगिणत सिफ्तां वाले नाम चलाईआ। जे तूं सब दा सांझा इक्को पित, पतिपरमेश्वर रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच विच्चों प्रगटाईआ । नारद कहे सतिगुर शब्द ओ मैं तकां इक्को जोती, जोती जाता सोभा पाईआ। क्यों नहीं सृष्टी बणी इक्को गोती, गौतम दी आसा दए दुहाईआ। क्यों नहीं सुरती उठी सोती, सुरत शब्द शब्द सुरत विच समाईआ। क्यों

१२६४
२२

१२६५ २२

सृष्टी दृष्टी रही रोती, धीरज धीर ना कोए वखाईआ। क्यों माण दिता रविदास चमारे मोची, रम्बी आर नाल सोभा पाईआ। की तेरी खेल प्रीतम चोजी, चोजी आपणा पड़दा देणा उठाईआ। उठ वेख सारी दुनिया होई रोगी, हउमे हंगता घर घर नज़री आईआ। सदी चौधवीं ऐस वेले कोई ना दिसे जोगी, जुगीशरां सार कोए ना पाईआ। सन्त महात्मा साधू फ़कीर जिज्ञासूआं वरगे बण गए भोगी, संजोगी नज़र कोए ना आईआ। जे तूं माण दिता वेदी सोढी, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। नारद कहे मैं तैनूं हथ्थ लगावां बिना गोडयां तों गोडीं, गुड गॉड कहि के दयां सुणाईआ। उठ सवाधान हो मेहरवान हो भगत भगवान हो जगत जहान सब नूं दे सोझी, सुत्तयां लै जगाईआ। नाम दी तेरे पैग़ाम दी सब नूं मिले रोज़ी, राज़क रिज़क रहीम आपणी रहमत दे वरताईआ। तेरे प्यार मुहब्बत दा सोहला होवे दो जहान सलोकी, चौदां लोक तेरा जस गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग साची कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे नारदा उठ तक, आपणी बोदी लै हिलाईआ। पहलों लकीर कढ नाल नक्क, लाईन सिध्धी दे लगाईआ। फेर जैकारा बोल हक, हकीकत विच समाईआ। फेर कन्नां ला हथ्थ दोवें लै उठाईआ। फेर चरणी जा ढहु, डण्डावत बन्दना सजदा करके सीस झुकाईआ। फेर अंगड़ाई लै झट, आपणा आप उठाईआ। फेर करवट लै वट्ट, पासा लै बदलाईआ। फेर वेख खेल पुरख समरथ, श्री भगवान रिहा दरसाईआ। कलयुग वेख अंधेरी रात, चारों कुण्ट सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे नारदा ओए ओह तक लै जगत, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। ओह वेख प्रभूव्दे भगत, भगवन जिन्हां देवे माण वड्याईआ। जिस नूं कहिंदे वाली अर्श, ओह फ़र्श उत्ते उहनां दे अन्दर डेरा लाईआ। सदी चौधवीं करके तरस, रहमत आपणी आप कमाईआ। अमृत मेघ अगम्मा बरस, अग्नी तत रिहा बुझाईआ। सम्मत शहिनशाही लेखे लावे सत्तवां बरस, बरसी सब दी रिहा मनाईआ। पूरब लहिणा देवे कर्ज़, मकरूज लेखा रिहा चुकाईआ। कर खेल आप असचरज, अचरज रिहा बणाईआ। इक्ट्ठे करके नार मर्द, इक्को देवे माण वड्याईआ। शाह हकीरां वंड के दर्द, दुखियां होए सहाईआ। आपणा पूरा करे फ़र्ज़, फ़ैसला हक हक सुणाईआ। योधा सूरबीर मर्दाना बण के मर्द, मुद्दत दे विछड़यां रिहा मिलाईआ। जिस दे कोल नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दी पिछली फ़रद, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बैठे सीस निवाईआ। जिस ने शरअ दी छुरी सब दी खोह लैणी करद, कातिल मक्तूल दा लेखा देणा गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला रिहा मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे नारदा तक लै सतिगुर शब्द दी धार, धरनी धरत धवल धौल दयां वखाईआ।

जिहनूं वेखण पैग़म्बर गुर अवतार, बिन नैणां नैण उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव पावण सार, संसारी भण्डारी सँघारी आपणी करनी कार कमाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला की खेल करे विच संसार, वड संसारी दया कमाईआ। भगत वछल बण गिरधार, गिरवर आपणा पड़दा दए उठाईआ। भगत भगवन्त पाए सार, महासार्थी हो के आपणा रथ चलाईआ। मेहरवान महिबूब हो के सब नूं बख्शे सीस दस्तार, सीस जगदीश आपणे लेखे लाईआ। जिन्हां नूं काल महाकाल ना सके मार, राय धर्म चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। मानस जन्म पैज देवे संवार, जन्म जन्म दा गेड़ कटाईआ। चुरासी विच्चों कढे बाहर, जम की फाँसी ना कोए लटकाईआ। सतिगुर शब्द शब्द सतिगुर तों हो के पहरेदार, भगतां होए सहाईआ। आत्मा दी धार नाल प्यार लै के जाए सच सचे दरबार, जिथ्थे बैठा धुरदरगाहीआ। आवण जावण लेखा रहे ना कोए वारो वार, जोत जोत विच समाईआ। सो दीन दयाला हरि कृपाला शब्द रखवाला परम पुरख परमात्म आत्म पावे सार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नारदा साचिआं भगतां कर निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जेहड़े एस कलयुग विच इक्को प्रभू नूं रहे चितार, दूसरी चित वित ठगौरी ना कोए रखाईआ। उन्हां दी मंजल रही ना कोए दुष्वार, दुश्मण नज़र कोए ना आईआ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी एकँकार इक इकल्ला जन भगतां वसाए वखाए इक महल्ला, जिथ्थे इक्को महिफ़ल भगत भगवान नज़री आईआ।

✪ १० चेत शहिनशाही सम्मत ७ गुरबचन सिंघ, अर्जन सिंघ, पूरन सिंघ, दीदार सिँघ जट्टा, भगवन्त सिँघ जट्टा, जुगिन्दर सिँघ जट्टा, तेजा सिँघ चम्बल, पूरन सिँघ चम्बल, चन्नण सिँघ चम्बल, निरँजण सिँघ चम्बल, अनोख सिँघ चम्बल, मोहण सिँघ चम्बल, हीरा नंद चम्बल, दलीध सिँघ चम्बल, सज्जण सिँघ चम्बल, रतन सिँघ चम्बल, गुपाल सिँघ मुंडा पिण्ड, अजीत सिँघ चोला साहिब फौजा सिँघ सरहाली, दर्शन सिँघ दुर्गापुर, पिण्ड ऊसमा ज़िला अमृतसर ✪

नारद कहे मैं जगदे वेखे दीवे, दीपक दीए ध्यान लगाईआ। जन भगत सुहेले वेखे खीवे, खिमां ग़रीबी निम्रता विच वड्याईआ। प्रभू प्यार मुहब्बत विच जीवे, ज़िंदगी ज़िंदगानी प्रभ दी झोली पाईआ। सच दवार हो के नीवें, निव निव लागण पाईआ। झगड़ा मुकाउणा साढे तिन्न हथ्थ सीवें, मढ़ी गोर दा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि दाता धुरदरगाहीआ। दीवा कहे नारदा मैनूं कहिंदे दान शमां, शमां नूर जोत रुशनाईआ। मेरा खेल वक्खरा जुग चवृां, चौथे जुग दयां सुणाईआ। दो जहानां कूक के कहवां, अनबोलत आपणी अगम्म आवाज़ उठाईआ। दरोही खुदा ने जुग बदलणा नवां, नव नौ चार दा पन्ध मुकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर तक्को आपणा समां, समाप्त वेखो जगत लोकाईआ। हरि का नाउँ रिहा किसे ना दमां, स्वास स्वास ना कोए समाईआ। झगड़ा प्या काया माटी चम्मा, चम्म दृष्टी सके ना कोए बदलाईआ। कल्पणा कूड़ होई मना, मनसा मोह ना कोए चुकाईआ। अग्नी लग्गी पंज तत तना, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। दीन मज़्हब दा तोड़े कोए ना बन्ना, हद्द हदूद ना कोए मिटाईआ। जोती नूर नज़र आए ना चन्ना, सूर्या चन्द बैठे सीस झुकाईआ। वेखो धरनी धरत धवल धौल रोंदी छम छमां, छहिबर इक वखाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले कलयुग अन्तिम वक्त करीं ना लम्मां, लमह लमह तेरा ध्यान रखाईआ। सब दी चिन्ता मेट दे ग़मा, ग़मगीन नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। नारद कहे मैं की सुणया हुक्म संदेशा, बिना सँध्या दिता सुणाईआ। सवाधान होए विष्न ब्रह्मा शिव गणपति गणेशा, सुरप्त इन्द इन्द नाल मिलाईआ। तेई अवतार देण संदेशा, हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद कूकण चाँईं चाँईंआ। नानक धार बोले दस दशमेशा, दहि दिशा इक शनवाईआ। कलयुग अन्तिम जिस ने पूरा करना लेखा, ओह लिखण इक विच कदे ना आईआ। भगत उधारना उसदा आदि अन्त दा पेशा, पेशीनगोईआं सब दीआं वेख वखाईआ। एथे उथे दो जहानां रहे हमेशा, हमसाजण नूर इलाहीआ। जिस ने सदी चौधवीं बदल देणी रेखा, रखीशर मुनीशर तपीशर समझ किसे ना आईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दा पूरा करे लेखा, नव नौ चार दा पैंडा दए चुकाईआ। दीन मज़्हब दा रहिण ना देवे ठेका, ठाकर हो के आपणा हुक्म वरताईआ। इक्को प्रगट करे सतिगुरु शब्द शब्द सतिगुरु बेटा, जिस नूं जम्मण वाली कोए ना माईआ। दो जहानां मर्द मर्दाना होवे खेवट खेटा, नईया नौका नर निरँकार एकँकार एको एक दए जणाईआ। जिस दा जोती धार होवे वेसा, भेस आपणा लए बदलाईआ। मुच्छ दाढ़ी ना कोए केसा, मूंड मुंडाया नज़र कोए ना आईआ। लख चुरासी होवे नेता, निज नेत्र वेखे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वडा वड वड्याईआ। दीपक कहिण साडी वेख जगदी जोती, नारद अक्ख उठाईआ। सृष्टी रहिण नहीं देणी सोती, सुत्तया देणा जगाईआ। जन भगत बणाउणे प्रभ दे गोती, वरन बरन ना कोए चतुराईआ। कोटां विच्चों होणे माणक मोती, कीमत सके ना कोए गिणाईआ। जिन्हां दी मति होणी नहीं होछी, दुरमति मैल देणी धुआईआ। उन्हां पढ़नी पए ना पुस्तक पोथी, निरअक्खर

धार विच समाईआ। सच दवार दी बख्शे सोझी, समझ जगत वाली बदलाईआ। मेला मेले बण के ठाकर मौजी, मजलस आपणे नाल रखाईआ। जगत प्यार चों करे वियोगी, विछोड़ा कूड़ क्रिया रखाईआ। आत्म परमात्म मेला मेल के धुर संजोगी, जन्म जन्म दा लेखा दए चुकाईआ। जिस धार नूं दस्सया जोती शब्द वेदी सोढी, सो पुरख निरँजण आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि करता अगम्म अथाहीआ। दीपक कहिण जन भगतो रहिणा जागदे, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। प्यारे रहिणा शब्द वैराग दे, बिरहों रोग इक समझाईआ। कूड़ी क्रिया रहिणा त्यागदे, त्रैगुण अतीता मिलणा धुर दा माहीआ। नाद सुणदे रहिणा अगम्मी अवाज़ दे, धुन आत्मक राग जणाईआ। रूप बणना नहीं काग दे, हँस गुरमुख सोभा पाईआ। इक्को परम पुरख रहिणा अराधदे, जिस विच सीता राम राधा कृष्न गए समाईआ। झगड़े पाउणे नहीं अल्फ़ाज़ दे, अक्खरां वाली ना कोए लड़ाईआ। तुसां दर्शन करने इक्को वाहिद दे, जिस नूं वाहवा कर के सारे गए गाईआ। मेल मिलणे हक जनाब दे, शाह पातशाह शहिनशाह जो अख्वाईआ। तुहाडे झगड़े मुक गए डण्डावत बन्दना सजदयां वाले अदाब दे, अदल इक्को दिता दृढ़ाईआ। तुसां इष्ट मन्नणा दास होणा पुरख अकाल महाराज दे, जो राजन राज वड वड्याईआ। छत्र झुलदे वेखणे अगम्मी ताज दे, तख्त निवासी इक्को सोभा पाईआ। इशारे सुणने अगम्मी रबाब दे, जिस दी तार सितार नज़र किसे ना आईआ। नाम सुणने उस किताब दे, जेहड़ी कुतबख़ाने विच ना कोए छपवाईआ। झगड़े मुकणे इश्क हकीकी मजाज़ दे, मेला मिलणा धुर दे माहीआ। तुसां आसरे नहीं तकणे किसे इमदाद दे, सहारा अवर ना कोए रखाईआ। तुसां मालक बणना सचखण्ड दवारे साचे राज दे, अधविचकार सके ना कोए अटकाईआ। तुसां नूर चमकणा अगम्मी प्रकाश दे, प्रकाश प्रकाश विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला लए मिलाईआ। दीपक कहिण जन भगतो आदि अन्त दा इक प्यारा, परम पुरख इक अख्वाईआ। जिस ने भेजे पैग़म्बर गुर अवतारा, अवतरी आपणी कार कमाईआ। निरगुण जोत जोत कर चमत्कारा, नूर नूर कीता रुशनाईआ। शब्द नाद नाद धुन्कारा, अगम्मी नाद दिता दृढ़ाईआ। जन भगतां बणदा रिहा सिक्दारा, सिर सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कीता पार किनारा, कलयुग अन्तिम वेखे चाँईं चाँईंआ। चुरासी विच्चों जन भगतां आप उभारा, फड़ बाहों पार कराईआ। दीपक कहिण गुरमुखो सतिगुर दी शब्द वाली दात सीस उत्ते रखो दस्तारा, दस्त दस्त नाल मिलाईआ। याद रखणा किसे दा जन्म नहीं होणा फेर दुबारा, चुरासी विच ना कोए भवाईआ। राय धर्म चित्रगुप्त तुहानूं सब नूं निउँ निउँ करे निमस्कारा, दूर दुराडा सीस झुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव संसारी भण्डारी सँघारी तकण वारो वारा, बिन नेत्र नैण

१२६८
२२

अक्ख खुल्हाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु तुहाडा करन सतिकारा, सति सति कहि के ताली देण वजाईआ। धन्न भाग जो मातलोक विच आए सचखण्ड सच्चे दरबारा, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिन्हां दा मलाह बेपरवाह सतिगुर शब्द शब्द सतिगुर सहारा, सहायक हो के नायक हो के घर आपणे दए टिकाईआ। शमादान कहिण नारदा उठ वेख भगत भगवान दा विवहारा, विवहारी हो के निरँकारी हो के जोत उज्यारी हो के उज्जल मुख भगतां रिहा कराईआ। अग्गे मंज़ल ना रहे दुष्वारा, दूती दुश्मणां डेरा ढाहीआ। मेहरवान हो के जन भगतां जन्म मरन संवारा, स्वार्थ प्रेम प्रीती वाला नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी इक सिक्दारा, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ ११ चेत शहिनशाही सम्मत ७ महिंदर कौर, कश्मीर सिंघ, दर्शन सिँघ लाखना, काबल सिंघ, बासरके, लक्ष्मण सिंघ, गोपाल कौर भूरे, बीबी वीरो माढ़ी कम्बको की, जीतो बासर के, पिण्ड राजोके ज़िला अमृतसर ✪

१२६८ सतिगुर शब्द कहे होवे वक्त सुहञ्जणा, हरि सोभनीक सुहाईआ। जन भगतां नेत्र नाम पावे अंजणा, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। आत्म परमात्म रहिण ना देवे अलग्गणा, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। धुरदरगाही ठाकर बण के सज्जणा, सच दा मालक दया कमाईआ। मेहर करे गोपाल मूर्त मदना, मधुसूदन आपणी खेल खिलाईआ। बिन मक्के काअब्यों कराए आपणा हज्जना, हज़रत मालक ख़ालक धुरदरगाहीआ। जिस दा डंका डौरु नाम दमामा वज्जणा, दो जहाना करे शनवाईआ। ओह दीपक जोती जगणा, जागरत जोत डगमगाईआ। सदी चौधवीं पूरी करे हद्दना, हदूद शरअ रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे उठो वेखो नबी रसूल, पैग़म्बरां दयां दृढ़ाईआ। हक हकीकत करो कबूल, कलमा कायनात धुरदरगाहीआ। सब दा बदल जाणा असूल, असूली आपणा हुक्म वरताईआ। पैग़ाम देवे हक माकूल, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। खेल वेखो हरि भगवन्त कन्तूल, हरि करता की कराईआ। जिस दी जुग चौकड़ी मंगदे रहे धूल, धूढ़ी चरणां ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। पैग़म्बर वेखो रसूल नबी, बिन नैणां नैण उठाईआ। बिन अक्खरां तक्को मुहम्मद दी चौधवीं सदी, सदमा घर घर नज़री आईआ। पट्टेदारी दी रहिणी नहीं कोई गद्दी, गदागर होए लोकाईआ। इक्को जोत अगम्मी जगी, जागरत जोत बिन वरन गोत करे रुशनाईआ।

जिस लेखा पूरा करना हद्दी, किशना शुक्ला पक्ख खोज खुजाईआ। प्रकाश होवे नूर रब्बी, रबीउलसानी आपणा पड़दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। नबी रसूल तक्कण तमाम, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। साडे मालक ख़ालक इक अमाम, आलमीन तेरी सरनाईआ। तेरा तक्कया कलमा कलाम, कायनात खोज खुजाईआ। साडा रिहा ना इंतजाम, दरोही तेरा नाम दुहाईआ। चार कुण्ट अंधेरी शाम, शमा दीप तेरा नूर ना कोए रुशनाईआ। मज़्ह़ब दा रिहा ना कोए ग़ुलाम, ग़ुरबत कूड़ भरी लोकाईआ। जीव जगत होए नादान, निज नैण ना कोए खुल्हाईआ। तूं साहिब स्वामी मेहरवान, महिबूब अगम्म अथाहीआ। तेरा संदेशा वाहिद दा फ़रमान, फ़रमांबरदार हो के सीस निवाईआ। साडी बोलण वाली नहीं ज़बान, ज़िमीं ज़मां ना ध्यान लगाईआ। अलिफ़ ये दा रिहा ना कोए मुकाम, मुकामे हक तेरा नूर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। पैग़म्बर नबी रसूल रहे झुक, बिन कदमां कदम सीस निवाईआ। परवरदिगार सांझे यार साडा पैंडा रिहा मुक, अग्गे कदम ना कोए उठाईआ। वेला वक्त अख़ीरी रिहा ढुक, समां समें विच्चों बदलाईआ। तेरा निशाना कदे ना जावे उक, अणयाला तीर बेपरवाहीआ। असीं तकदे तेरा शब्द दुलारा इक्को गोबिन्द सुत , सूरबीर वड वड्याईआ। जो तेरी धारों पैणा उठ, जम्मण वाली दिसे ना कोए माईआ। उस दो जहानां नौजवाना मर्द मर्दाना हो के लैणा पुछ, लख चुरासी खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। पैग़म्बर नबी रसूल इक्को वार करन सजदा, सीस सीस झुकाईआ। हउँ बालक तेरे बरदा, बन्दगी विच तेरी धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। तेरा नूर अगम्मी हरि दा, हर हिरदे रिहा समाईआ। सदी चौधवीं तेरे कोलों सब डरदा, सिर सके ना कोए उठाईआ। तूं निरगुण धार हो के लड़दा, सतिगुर शब्द शब्द प्रगटाईआ। जेहड़ा ना जन्मे ना मरदा, मर जीवत रूप दरसाईआ। उस ने लेखा पूरा करना कलयुग कल दा, कलकाती दए खपाईआ। भेव पाउणा जल थल दा, महीअल वेखे चाँईं चाँईंआ। जो आत्म परमात्म हो के भगतां अन्दर रलदा, गुरमुखां विच समाईआ। अछल छल हो के छलदा, वल छलधारी आपणी कार कमाईआ। ओह लेखा जाणे काया माटी डूँग्घी डल दा, तन सरीर बेनज़ीर आपणा पड़दा आप चुकाईआ। भेव आउंदा नहीं तेरे सूरबीर अगम्मे बल दा, बलि बावन दए गवाहीआ। पुरख अकाले दीन दयाले परवरदिगार सांझे यार तेरा भाणा कदे ना टल्दा, अटल तेरा हुक्म मेट सके कोए ना राईआ। तेरा मसला महिबूब इक्को होवे हल दा, हालत बदले जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक

नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा लेखा निहचल धाम अटल दा, जिथ्थे इक्को दीपक जोत बलदा, दूसर नज़र कोए ना आईआ।

✪ १२ चेत शहिनशाही सम्मत ७ बाबा मोता सिंघ, दलीप सिंघ, फुम्मण सिंघ, प्रताप सिंघ, सुरजीत कौर, सेवा सिंघ,
बीबी बीरो, बेबे भजनो, सज्जण सिंघ, गुलाब कौर डल, दयाल सिँघ डल, गंडा सिँघ दुराजके,
कमी बरनाला, सुरजन सिँघ नूरपुर, मनी राम सिद्धम, मिलखा सिँघ माढ़ी मेघा,
समुंद सिँघ माढ़ी मेघा, हरबंस कौर नारला, साधू सिँघ झामके,
दलीप सिँघ नूरपुर, अमरीक कौर डलीरी,
पिण्ड कल्सीआं ज़िला अमृतसर ✪

शमादान कहिण पंजे, पंचम पंचम पंचम ध्यान लगाईआ। जन भगतो तुसीं मंजल प्रभ दी लँघे, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल लाया अंगे, अंगीकार इक हो आईआ। जो भगत दवार फिरे पैर नन्गे, खुशीआं विच चले चाँईं चाँईंआ। बैठ गृह सिंघासन उलटे मंज, उलटी सृष्टी दृष्टी दए कराईआ। विछोड़े दे समें रहिण ना देवे लम्मे, अगला पन्ध मुकाईआ। जन भगतो सम्मत शहिनशाही सत्त विच तुसीं सारे प्रभ दे घर जम्मे, जम्मण वाली अवर कोए ना माईआ। तुहाडा लेखे लग्गे पवण स्वास दमें, दामनगीर इक अख्वाईआ। तुसीं मार्ग समझाउणे नवें, नव नौ चार दा पन्ध मुकाईआ। तुहाडी आसा तूं मैं तेरा गावे, आत्म परमात्म राग अलाईआ। सच स्वामी तुहाडे मन्दिर अन्दर रहिवे, साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुलाईआ। दीपक कहिण असीं सेवादार, दर ठांडे सेव कमाईआ। असीं छड के मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ गुरदवार, तट्टां किनारयां पन्ध मुकाईआ। हुक्म संदेशा ना सुणया धुर दरबार, हरि करते दिता दृढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम पुरख अकाले आपणी वार, वारता पिछली दए दृढ़ाईआ। वेखो खेल विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी ध्यान लगाईआ। सवाधान होए तेई अवतार, हज़रत ईसा मूसा नैण अक्ख खुलाईआ। नानक गोबिन्द पावे सार, पर्दा ओहला रहे ना राईआ। जगत जिज्ञासू हो हुश्यार, आलस निंद्रा कूड़ गंवाईआ। चारों कुण्ट धुआँधार, दहि दिशा अंधेरा छाईआ। सति सच दा रिहा ना कोए प्यार, प्रेमी प्रीतम मेल ना कोए मिलाईआ। दीपक कहिण असीं रोईए ज़ारो ज़ार, बिन नैणां नीर वहाईआ। बौहड़ी दरोही आत्म परमात्म किसे

मिल्या ना सांझा यार, घर स्वामी अन्तरजामी नज़र किसे ना आईआ। जोती दीपक देवे कोई ना बाल, अंध अज्ञान ना कोए चुकाईआ। भाग लग्गे ना किसे साढे तिन्न हथ्थ धर्मसाल, साचे मन्दिर निर्मल जोत ना कोए डगमगाईआ। ना कोई पुछे मुरीदां हाल, मुर्शद मेल ना कोए मिलाईआ। त्रैगुण माया पाया जंजाल, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। सब दे सिर ते कूके काल, महाकाल भय रिहा वखाईआ। चित्रगुप्त लेखा रिहा संभाल, राय धर्म नैण उठाईआ। शंकर चलण वाला आपणी चाल, सँघारी आपणा हुक्म वरताईआ। की खेल करना दीन दयाल, दीन दुनी तों बाहर रिहा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा इक सुणाईआ। दीपक कहिण साडा रूप अग्ग बलदी, जगत जगत रुशनाईआ। जन भगतो वेखो खेल निहचल धाम अटल दी, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आपणी खेल खिलाईआ। जिस सार पाउणी जल थल दी, महीअल पड़दा दए उठाईआ। जड़ उखेड़नी कलयुग कल दी, कल काती दए मिटाईआ। धार मेटणी विकारे दल दी, दीन दुनी दा डेरा ढाहीआ। द्वैत रहिण नहीं देणी मज़बी सल्ल दी, सलल आपणा रंग रंगाईआ। माया किसे ना फिरे छलदी, अछल छल आपणा हुक्म देणा वरताईआ। आशा मनशा पूरी करनी बल दी, जो बावन अग्गे वास्ता पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। दीपक कहिण जन भगतो साडी बेनन्ती मन्नो, अरदास इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द दे बणो चन्नो, चन्द नूर डगमगाईआ। कूड़ कुड़यार कढो तनो, जूठ झूठ ना कोए वड्याईआ। मानस जन्म आपणा बेड़ा बन्नो, प्रभ सरन लाग सरनाईआ। सुणो संदेशा अगम्मी कन्नो, जोती जाता रिहा दृढ़ाईआ। गढ़ हँकारी हउमे भन्नो, हंगता कूड़ रहे ना राईआ। पुरख अकाल दे घर जम्मो, भगत हो के आपणा संग रखाईआ। हँकार विकार जगत डंनो, हुक्म मन्नणा चाँई चाँईआ। धर्म दी धार सच दस्तार सीस बन्नो, सिर सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। बाहर निकलो विच्चों खुशी ग़मों, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। दस्तार कहे प्रभू मैं तेरी निमाणी, दस्तार सीस झुकाईआ। तेरी शब्द अगम्मी बाणी, बोध अगाध पढ़ाईआ। तेरा खेल चारे खाणी, चारे जुग देण गवाहीआ। तेरा रूप अगम्म महानी, अलख अगोचर तेरी बेपरवाहीआ। तेरा लेखा ज़िमीं असमानी, दो जहानां सोभा पाईआ। तूं आत्म ब्रह्म ज्ञानी, पारब्रह्म तेरी बेपरवाहीआ। तूं भगतां करे मेहरवानी, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। तूं सतिगुर शब्द दानी, दाता इक अख्वाईआ। तेरी महिमा लिखे कलम कानी, अक्खरां विच सिफ्त सालाहीआ। तूं सब दा जान जानी, जानणहार तेरी वड्याईआ। मेरी बेनन्ती कलयुग अन्तिम मानी, मनसा पूर दिती कराईआ।

जन भगत सुहेले मेल मेरे धुर दे हाणी, धर्म दवार दा नाता दिता जुड़ाईआ। अग्गे लेखा मुका दे कलयुग अंधेरी शामी, शमा दीप तेरे अग्गे वास्ता पाईआ। भगतां नाल भगत करे ना कोए बेईमानी, गुरमुख गुरसिख ठग्गी चोरी ना कोए कमाईआ। सब दे गलों लाह दे शरअ दी गुलामी, ज़ंजीर कूड़ देणे तुड़ाईआ। मंज़ल दस्स इक इन्सानी, आत्म परमात्म गंढ पवाईआ। झगड़ा रहे ना कोए जिस्मानी, जिस्म ज़मीर देणे बदलाईआ। तूं शहिनशाह शाह अमामी, पैग़म्बर बैठे सीस निवाईआ। धुर संदेशा दे पैग़ामी, पैगम्बरां तों परे करे पढ़ाईआ। तेरा लेखा जगत अवामी, अलाही ज़ाहर तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। पगड़ी कहे मैं भगतां सिर बज्झदी, बाज़ां वाले दिती माण वड्याईआ। मेरी आशा सफ़ल होवे अज्ज दी, घड़ी सुलखणी नाल मिलाईआ। मैं जगत जहान होर किसे ना लभ्भदी, खोज्जयां हथ्थ किसे ना आईआ। मैं सदा गुरमुखां सिर फबदी, जेहड़ा एह फ़ैसले नाल प्रभ तैनूं सीस निवाईआ। मेरी मंज़ल उपर शाह रग दी, नौ दवारयां तों उपर आपणा डेरा लाईआ। मेरे अन्दर तेरी धार मक्के काअब्यां वाले हज्ज दी, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मढ्ढ गुरदवार वेख वखाईआ। तेरी जोत मेरे थल्ले जगदी, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। तेरी शब्द अनादी धुन अगम्मी वज्जदी, आत्म आपणा राग सुणाईआ। अग्गे गुरमुखां बुद्धी रहे ना कग्ग दी, हँस देणे बणाईआ। मैं चाहवान चार वरनां दी यद दी, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सब नूं रहवां सद्ददी, सद्दा देवां चाँईं चाँईंआ। सब ने ओट रखणी इक सूरे सरबग दी, जो मालक ख़लक खुदाईआ। तेरी धार रहे ना अड्ड दी, वक्खरी कार ना कोए कमाईआ। जन भगतो जुग जुग प्रभ दी खेल हुन्दी सबब दी, बिना समें तों समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मंज़ल देवे इक्को हकीकी आपणे पद दी, जिस गृह बैठा निरगुण धार सोभा पाईआ।

१३ चेत शहिनशाही सम्मत ७ मुखत्यार सिंघ, गुरबख्श सिंघ, कर्म सिंघ, जागीर सिंघ, चन्नण सिंघ, भजन कौर, करतार सिँघ भोजीआं, बीबी सेवी ठठ्ठा, वीरो अगयाड़ी, पूरन सिँघ सोहल, हीरा सिँघ सोहल, महिंदर सिँघ सोहल, बचन सिँघ सोहल, गुरदीप कौर सोहल, सुरजन सिँघ भुक्चर, गुरबचन कौर बगयाड़ी पिण्ड गगो बूहा ज़िला अमृतसर

शमादान कहिण जन भगतो तक्को धुर दा शाम, जिस दा राधे शाम ध्यान लगाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता तक्को

१२७३
२२

अगम्मा राम, जिस दे सीता राम निउँ निउँ लागण पाईआ। नूर नुराना नौजवाना मर्द मर्दाना तक्को अमाम, जिस नूं पैग़म्बर सजदयां विच सीस झुकाईआ। घट निवासी पुरख अबिनाशी वेखो शाह सुल्तान, निरगुण सरगुण गुर गुर जिस दा मन्त्र सतिनाम दृढ़ाईआ। जिस नूं झुकदे ज़िमीं असमान, ब्रह्मण्ड खंड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर सिर सके ना कोए उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सुणन फ़रमान, देवत सुर मुन जन बैठे ध्यान लगाईआ। जुग चौकड़ी जिस दा खेल महान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रूप बदलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जिस दे गीत सारे गाण, शास्त्र सिमरत वेद पुराण, अञ्जील कुरान खाणी बाणी राग अनुरागी राग अलाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला योधा सूरबीर मर्द मर्दान, शाह पातशाह आपणा खेल खिलाईआ। सदी चौधवीं चौदां लोक चौदां तबक वेखे मार ध्यान, बिन नैणां नैण उठाईआ। धुर फ़रमाना श्री भगवान देवे आप महान, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। दीपक कहिण वेखो खेल पुरख अबिनाश्या, कल आपणी खेल खिलाईआ। जन भगतां बण के दासी दास्या, निरगुण सरगुण होए सहाईआ। खेल वखा पृथ्मी अकास्या, गगन गगनंतर पर्दा लाहीआ। अवतार पैग़म्बर गुरु देवे बाक्या, लहिणा अवर रहे ना राईआ। दो जहान खोल्हे ताक्या, पर्दा ओहला आप उठाईआ। चार जुग दा पूरा करे भविक्ख्त वाक्या, वाकिफ़कार नूर इलाहीआ। लख चुरासी जिस ने सब दा लहिणा वाचिआ, वाचक हो के वेखे थांउँ थाँईंआ। सो साहिब सुल्ताना नौजवाना मर्द मर्दाना कलयुग मेटे अंधेरी रातया, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। आत्म परमात्म हो के जोती जातया, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जन भगतां देवे धर्म दा साथिआ, सगला संग आप बणाईआ। धर्म दवार खोल्ह के हाटया, वणज इक्को नाम वखाईआ। मानस जन्म ना आवे घाटया, पूरब लहिणा झोली पाईआ। लख चुरासी मेटे वाटया, जोती जाता आपणे रंग रंगाईआ। गृह मन्दिर वखाए साचिआ, सचखण्ड दवारा इक सुहाईआ। जिथ्थे दीपक इक परगास्या, नूर नुराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता अगम्म अथाहीआ। दीपक कहिण साडे अन्तर तेल बाती, प्रभ बातन पड़दा दे उठाईआ। कलयुग मेट अंधेरी राती, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। हरिजन दर्शन देवे साख्याती, साहिब सुल्ताना दया कमाईआ। जीवण विच्चों बदले हयाती, ज़िंदगी ज़िंदगी विच्चों वखाईआ। नाद शब्द सुणाए अनादी, अनहद आप जणाईआ। अमृत देवे बूंद स्वांती, निजर झिरना सच झिराईआ। जोत जगा कमलापाती, पतिपरमेश्वर अंध अंधेरा दए मिटाईआ। आत्म परमात्म दा बणे अगम्मा साथी, अलख अगोचर आपणी दया कमाईआ। दरगाह साची सच मुकाम चढ़ाए घाटी, सचखण्ड दवार दए वड्याईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी होए सहाईआ। दीपक कहिण साडी नमो नमो निमस्कारा, डण्डावत बन्दना सीस झुकाईआ। जन भगतो भगवान बणया मीत तुमारा, साजण इक अख्वाईआ। जिस दा जोत नूर उज्यारा, अंध अंधेरा दए मिटाईआ। राती सुत्तयां दिने जागदयां पावे सारा, आलस निंद्रा विच कदे ना आईआ। देवे दरस गुप्त ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। जिस दा धर्म दा ताज सीस दस्तारा, सिर सिर आपे दए टिकाईआ। हुक्म संदेशा देवे चार जुग तों बाहरा, अवतार पैग़म्बर गुर वेखण ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। दीपक कहिण साडी वेखो बिन नैणां लो, लोआं पुरीआं बाहर ध्यान लगाईआ। साडा मालक पुरख अगम्मा सो, सो पुरख निरँजण बेपरवाहीआ। जिस दी धार हँ रूप आत्म गई हो, होका देवे थांउँ थाँईंआ। भगत भगवान मिल के कदे ना रहिंदे दो, दूआ एके विच समाईआ। कूड़ क्रिया नाता तुटे मोह, मुहब्बत लग्गे नाल बेपरवाहीआ। जो पारब्रह्म ब्रह्म नाल जाए छोह, जोती जाता हो के आपणा रंग रंगाईआ। दीपक कहिण जन भगतो कलयुग अन्त पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार सांझा यार तुहाडे नाल कदे ना करे धरोह, धर्म दी धार एकँकार हरि निरँकार निरवैर आपणे विच मिलाईआ। दीपक कहिण साडी इक अर्ज़ोई, बेनन्ती सच दृढ़ाईआ। जन भगतां सुरती रहे कोए ना सोई, सोवत जागत इक रूप प्रगटाईआ। वेखो सदी चौधवीं पैग़म्बर पाउंदे दरोही, दरोहि तेरा नाम दुहाईआ। साडे कलमे दा मीत रिहा ना कोई, कायनात रोवे मारे धाहीआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर मिले किसे ना ढोई, सच दवार परवरदिगार नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, तुध बिन एथे ओथे दो जहान दूजा अवर ना कोई, निरगुण निरवैर नज़रीआ नज़र कोए ना आईआ।

✪ १४ चेत शहिनशाही सम्मत ७ बीबी सुरजीत कौर, गुरदीप सिंघ, बलबीर कौर चेतन पुरा, अवतार सिँघ काउंके, समां सिँघ मोदे, पिण्ड भरोभाल अमृतसर ✪

शमादान कहिण जन भगत सुहेले धुर दे चन्द, निरगुण सरगुण धार करन रुशनाईआ। निज आत्म परमात्म माणण सच अनन्द, अनन्द अनन्दपुरी वाले नाल बणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाउंदे छन्द, आत्म परमात्म सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ। जगत विकार कूड़ कुड़यार मंज़ल गए लँघ, कूड़ क्रिया अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। हउमे हंगता कर के खण्ड खण्ड,

तृष्ना मोह जगत चुकाईआ। पन्ध मुकाउणा जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज लेखा रहे ना राईआ। पुरख अकाला दीन दयाला लावे अंग, अंगीकार इक अख्वाईआ। काया चोली चाढ़ अगम्मी रंग, दुरमति मैल दए धुआईआ। भेव खुल्ला के हँ ब्रह्म, सो पुरख निरँजण मेला मेले सहिज सुभाईआ। दूई द्वैत ढाह के कंध, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। दीपक कहिण जन भगतां वेख्या सोहणा अन्दर, साढे तिन्न हथ्थ ध्यान लगाईआ। भाग लग्गा अगम्मी मन्दिर, घर विच घर होई रुशनाईआ। बजर कपाटी तुट्टया जन्दर, त्रैगुण लेखा रिहा ना राईआ। मनुआ दहि दिशा ना धावे बन्दर, मनसा मन ना कोए हल्काईआ। लोड़ रही ना प्रकाश सूर्या चन्द्र, जोती जाते डगमगाईआ। भाग लग्गा डूंग्घी कन्दर, अंध अज्ञान दिता मिटाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म होया छन्दन, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। बिना रंग तों चाढ़े रंगण, अनडिठड़ी आप चढ़ाईआ। मिले मेल सूरे सरबंगण, हरि करता होए सहाईआ। शरअ दूई दा तोड़या बन्धन, बन्दगी इक्को दिती जणाईआ। धूढ़ी ख़ाक टिक्का रमाया चन्दन, निम्म वास रही ना राईआ। ज्ञान नेत्र बख्श्या अंजन, लोइन दिता खुल्लाईआ। पुरख अकाल बण के दर्द दु:ख भय भञ्जण, भव सागर पार कराईआ। थिर घर देवे आपणा अनन्दन, अनन्द विच्चों जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। दीपक कहिण खेल तक्कया जोती जाता, जागरत जोत करे रुशनाईआ। कलयुग मेटे अंधेरी राता, रैण भिन्नड़ी आपणे रंग रंगाईआ। खेल खेले पुरख बिधाता, बिध सके ना कोए समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्से गाथा, गहर गम्भीर करे पढ़ाईआ। होए सहाई नाथ अनाथा, ग़रीब निमाणयां गोद उठाईआ। सति धर्म दा खोल्ले हाटा, सतिजुग सच सच प्रगटाईआ। झगड़ा मुकाए तीर्थ ताटा, तट किनारा इक्को दए सुहाईआ। अमृत रस जणाए काया बाटा, निजर झिरना कँवल नाभी आप झिराईआ। आत्म सेज सुहञ्जणी करे खाटा, खटीआ इक्को सोभा पाईआ। जिथ्थे आवण जावण दी मुके वाटा, चुरासी गेड़ रहे ना राईआ। सो पुरख निरँजण जोड़े आपणा नाता, हरि पुरख निरँजण मेला सहिज सुभाईआ। एकँकार बणे पिता माता, आदि निरँजण देवे माण वड्याईआ। अबिनाशी करता बख्शे धुर दीआं दाता, श्री भगवान झोली दए भराईआ। पारब्रह्म प्रभ बणे सच दा साथा, सगला संग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। शमादान कहिण जन भगतो सीस रखो दस्तार दुपट्टे, दो पट्ट वेखो जगत लोकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया विकणा नहीं काल दे हट्टे, कीमत जगत ना कोए रखाईआ। तुसीं धर्म राए दी मंज़ल टप्पे, चित्रगुप्त अक्ख ना सके उठाईआ। सचखण्ड दवारे जाणा नट्ठे, शब्दी धार भज्जणा वाहो दाहीआ।

कूड़ा नाता तत अठे, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध कम्म किसे ना आईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द प्यार विच रत्ते, रत्न अमोलक हीरे सोभा पाईआ। एथे ओथे दो जहान सतिगुर शब्द तुहाडी पति रखे, पतिपरमेश्वर होवे आप सहाईआ। तुसीं अज्ज तों उस प्रभू दे बच्चे, जो बचपन सब दा आपणी झोली पाईआ। भगत धार विच रहिणा मूल ना कच्चे, काया काची कंचन गढ़ लैणा बणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तुहाडे लूं लूं अन्दर रचे, साढे तिन्न करोड़ विच रचना आपणी दए वखाईआ। सतिजुग साचे धर्म दी धार चढ़ाए रथे, रथ रथवाही आपणा हुक्म वरताईआ। धुर मस्तक लेखा लिखे मथ्थे, पेशानी पेशतर आपणी दया कमाईआ। जो साहिब सरनाई ढट्ठे, तिन्हां देवे माण वड्याईआ। जो वसे घट घटे, हर घट रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी निरगुण सरगुण पुरख समरथे, समरथ स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी दया कमाईआ।

१२७७

२२

✪ १५ चेत शहिनशाही सम्मत ७ बीबी छिन्दो, बीबी गुरबचन कौर दे गृह पिण्ड मौदे धनौए ज़िला अमृतसर ✪

दीपक कहिण हरिजन बणा प्रभू प्रभ हँसा, गुरमुख गुर गुर गोद टिकाईआ। भगत भगवान सुहा साचा अंसा, चार वरन सरबंस वड्याईआ। मन हँकारी मार दे कंसा, तीर निशाना नाम चलाईआ। दे माण वड्याई उपर सहँसा, सहँसर मुख शेष रिहा सुणाईआ। मानस जन्म बणा साची बणता, बसन बनवारी तेरे हथ्थ वड्याईआ। आत्म परमात्म नाम जपा दे मंता, पारब्रह्म ब्रह्म मेला दे मिलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट दे अन्ता, अन्तष्करन दे बदलाईआ। सन्त सुहेला दर तेरे मंगता, ख़ाली झोली देणी भराईआ। गढ़ तोड़ दे हउमे हंगता, हँ ब्रह्म इक दरसाईआ। प्रकाश दे दे आपणे नूरी चन्द दा, निज नेत्र लोचण नैण कर रुशनाईआ। लेखा ला लै पवण स्वामी दम दा, दामनगीर आप हो जाईआ। झगड़ा मेट दे काया माटी चम्म दा, चम्म दृष्टी डेरा ढाहीआ। जो जन तेरी धारों जम्मदा, पुरख अकाले दीन दयाले बणना पिता माईआ। लेखा रहे ना हरख सोग ग़म दा, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। वणजारा रहे ना सरवण कन्न दा, धुन आत्मक राग अन्तर निरन्तर देणा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। दीपक कहिण प्रभ भगतां दे नाम अनमुल्ल, कीमत करता ना कोए लगाईआ। भाग लगा दे साची कुल, कुल

मालक हो सहाईआ। तेरे प्यार विच कोई ना जावे भुल्ल, अभुल्ल देणी माण वड्याईआ। कलयुग माया विच जाइण ना रुल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लख चुरासी विच्चों हरिजन तेरे उत्तम श्रेष्ट फुल्ल, नाम महक नाल महकाईआ। धर्म दे कंडे जाण तुल, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक सुल्हकुल, साहिब सति सच तेरी सरनाईआ। चरण प्रीती साची धूढ़ी दे दे धूल, मस्तक ख़ाकी ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तेरी सरनाईआ। दीपक कहिण प्रभ कलयुग वेख अन्त अंध अंधेरा, चार कुण्ट दहि दिशा नज़री आईआ। नाता तुट्टया तेरा मेरा, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। चुरासी मुके किसे ना गेड़ा, चारे खाणी रही कुरलाईआ। मनुआ मन करे झेड़ा, मति मतांतर डेरा कोए ना ढाहीआ। साढे तिन्न हथ्थ वसे किसे ना खेड़ा, काया गागर निर्मल जोत ना किसे रुशनाईआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान करदे नज़र मेहरा, महिबूब तेरे हथ्थ वड्याईआ। इक्को रंग वखा दे सञ्झ सवेरा, अंध अंधेर रहे ना राईआ। सतिगुर शब्द सच स्वामी बणा लै आपणा चेरा, चेला गुर इक्को रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। दीपक कहिण सुण साहिब, प्रभ स्वामी समां वेख जगत लोकाईआ। लख चुरासी अन्तरजामी, घट भीतर खोज खुजाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी बेईमानी, सत्त दीप दीप ना कोए वड्याईआ। नेत्र रोवे अट्ठ सट्ठ तीर्थ पाणी, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रही कुरलाईआ। बौहड़ी करे चार जुग दी बाणी, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान सार किसे ना आईआ। मंज़ल चढ़े ना कोए रुहानी, रूह बुत करे ना कोए सफ़ाईआ। सच धर्म दी रही ना कोए निशानी, तेरा निशाना भुल्लया कूड़ लोकाईआ। मनुआ मन होया अभिमानी, मन का मणका ना कोए भवाईआ। पढ़ पढ़ थक्के जगत कलामी, कायनात कम्म किसे ना आईआ। कूड़ क्रिया दी कटे ना कोए गुलामी, शरअ ज़ंजीर ना कोए कटाईआ। तेरे नाम कलमे दी हट्टां विच होए नीलामी, कीमत टकयां वाली पाईआ। किरपा करे शहिनशाह सुल्तानी, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। जन भगत सुहेले अन्तर निरन्तर सुरती शब्द कर सवाधानी, आलस निंद्रा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त तेरा लेखा दो जहानी, जगत जहान नौजवान मर्द मर्दान श्री भगवान जन भगतां होणा आप सहाईआ।

✪ १५ चेत शहिनशाही सम्मत ७ सुरिन्दर सिंघ, हज़ारा सिँघ छीने, गुरदित सिँघ मानावाला, चरण सिँघ मानावाला,
दलीप सिँघ मानावाला, तारा सिँघ मानावाला, मंगल सिँघ सारंगढ़ा, कारज सिँघ सारंगढ़ा,
सन्ता सिँघ लेलीआं, लच्छमी लेलीआ, जागीर कौर लेलीआं, दर्शन कौर लेलीआं,
कुलवन्त कौर डेरी वाला, हरदेव कौर कलेर, बाहल सिँघ भंगम,
जुगिन्दर कौर लोपो के पिण्ड भुल्लर ज़िला अमृतसर ✪

दीपक कहिण सुहञ्जणी होई राती, जन भगतो रुतड़ी प्रभ दे नाल महकाईआ। मिल्या मेल हरि कमलापाती, जो पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। आत्म दीआ जोत जगाए बाती, बातन पड़दा दए खुल्हाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेले नाती, सज्जण सैण इक अख्वाईआ। शब्द अनाद सुणाए धुन अनादी, अनहद आपणा राग दृढ़ाईआ। अमृत बख्शे बूँद स्वांती, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। देवे दरस बहु बिध भांती, भावना सब दी खोज खुजाईआ। एथे उथे बणे धर्म दा साथी, सगला संगी नूर इलाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्से गाथी, गहर गम्भीर बेनज़ीर करे पढ़ाईआ। भाग लगाए साढे तिन्न हथ्थ काया माटी, साचे मन्दिर वज्जे नाम वधाईआ। मंज़ल पौड़ी चढ़ाए घाटी, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जन्म जन्म दी पूरी करे वाटी, चुरासी जम की फाँसी दए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी होए सहाईआ। दीपक कहिण जन भगतो तक्को पुरख अकाला, अकल कलधारी इक अख्वाईआ। जो वसे सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, धर्म दवारा इक्को इक वड्याईआ। सो निरगुण निरवैर खेल करे निराला, निरगुण आपणी कल प्रगटाईआ। जन भगतां मार्ग दस्से सुखाला, सुखमन ईड़ा पिंगल अधविचकार ना कोए अटकाईआ। त्रैगुण माया तोड़े जंजाला, जागरत जोत बिन वरन गोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म दवारा इक वड्याईआ। दीपक कहिण जन भगतो तक्को पुरख अगम्मा, अगम्मड़ी कार कमाईआ। जेहड़ा जनणी कुख्ख कदे नहीं जम्मा, जन्म मरन विच कदे ना आईआ। सो स्वामी अन्तरजामी बदलण वाला समां, समाप्त करे कूड़ लोकाईआ। झगड़ा मेटे कूड़ी काया चम्मा, चम्म दृष्टी इष्टी दए बदलाईआ। इक्को नाम जपाए दामनगीर हो के दमां, स्वास स्वास साह आपणा आप उपजाईआ। सतिजुग साचा करे रवां, रवानगी कलयुग हथ्थ फड़ाईआ। मन का मणका फेरे मना, मनसा कूड़ कुड़यारी दए गंवाईआ। सच भण्डारा दे के नाम धन्ना, धनाढ धुर दे दए वखाईआ। जिस ने लेखा पूरा करना जो गोबिन्द लाया कन्ना, कायनात दा लेखा दए चुकाईआ। निशाना बदल देणा तारा चन्ना, चन्न सितार दोवें रोवण मारन धाईआ। ओह

वेखो हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद फिरे भन्ना, भज्जे वाहो दाहीआ। सदी चौधवीं वक्त नहीं रहिणा लम्मा, लमह लमह लेखा रिहा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। दीपक कहिण वेखो जगत दा दीपक होणा गुल, गुलशन नज़र कोए ना आईआ। जेहड़ी सृष्टी गई प्रभ नूं भुल्ल, अभुल्ल वेखे थांउँ थाँईंआ। जिस नाम कंडे तराज़ू तोलणा तोल, तोलणहार बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं किसे नाल ना मारे रोल, लहिणा देणा देवे चाँईं चाँईंआ। अवतार पैग़म्बरां पूरा करे कौल, इकरार वेखे थांउँ थाँईंआ। सब दा लहिणा देणा लेखा पूरा करना उपर धौल, धरनी धरत धवल बैठी आस रखाईआ। जन भगतां अन्तर आत्म सच नाम दी देवे पाहुल, अमृत आबेहयात जाम प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। शमादान कहिण वेखे खेल सच्ची सरकार, सरोकार आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा राह तकदे पैग़ब्बर गुर अवतार, अवतरी आपणा हुक्म ल्ए वरताईआ। चुरासी पावे सार, चारे खाणी खोज खुजाईआ। जन भगत सुहेले ल्ए उबार, पर्दा ओहला अन्तर निरन्तर दए उठाईआ। सतिगुर शब्द हो के करे प्यार, प्रेमी प्रीतम प्रीआ आपणा रंग रंगाईआ। मानस जन्म पैज देवे संवार, स्वार्थ सब दा आपणी झोली पाईआ। प्यार मुहब्बत विच धर्म दी धार बख़्शे दस्तार, दस्त दस्त नाल मिलाईआ। जन भगत चुरासी विच्चों कढे बाहर, जन्म मरन दा लेखा रहे ना राईआ। सचखण्ड दवार एकँकार अकल कलधारी लै के जाए आपणी वार, वारस हो के होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे आप करतार, कुदरत दा कादर करनी दा करता लेखा जाणे थांउँ थाँईंआ।

✪ १६ चेत शहिनशाही सम्मत ७ नरायण सिंघ, अजीत सिंघ, सवरन सिंघ, हरनाम सिंघ, भाग सिँघ माहल,
बेला सिँघ माहल, हरबंस सिँघ ऐस डी ओ अमृतसर, हज़ारा सिँघ काउंके, महिन्दर सिँघ काउंके,
कर्म सिँघ मीआंपुर, बलवन्त कौर धारड़, गुरमेज़ कौर मीआंपुर, सवरन कौर भुसे,
आस कौर बोपाराए, जगमोहण सिँघ बोपाराए, पिण्ड गुमानपुर ज़िला अमृतसर ✪

दीपक कहिण वेखो भाग लग्गा घर सिँघ नरायण, नर नरायण दए वड्याईआ। निरगुण धार तक्को दीन दयाला नैण, नैण लोचण अक्ख खुल्ाईआ। जो आदि जुगादी साक सज्जण सैण, सचखण्ड निवासी सद आपणा संग निभाईआ। जो

जन्म कर्म दा लेखा पूरा करे लैण देण, झोली ख़ाली दए भराईआ। भगत भगवान मेल मिलाए ऐन, जिस दा ऐनुलहक हक ढोला गाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी हरिजन बणाए साक सैण, सज्जण आपणा रंग चढ़ाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात विच रहे ना कोए तरफ़ैण, आत्म परमात्म नाता लए जुड़ाईआ। जन भगत सुहेले प्रभ दा भाणा सहण, सच दवार सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक इक अख्वाईआ। दीपक कहिण गृह गृह होया प्रकाश, जोती नूर नूर रुशनाईआ। किरपा करे पुरख अबिनाश, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस दा जुग चौकड़ी खेल तमाश, सतिजुग त्रेता द्वापर वंड वंडाईआ। कलयुग अन्तिम लेखा जाणे आप, आप आपणा पड़दा लाहीआ। सदी चौधवीं मेटे रोग संताप, सहिंसा कूड़ रहे ना राईआ। रूह बुत बुतख़ाने करे पाक, पतित पुनीत दए बणाईआ। अन्तर आत्म खोल्हे ताक, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। शब्द अगम्मी सुणाए नाद, धुन आत्मक राग दृढ़ाईआ। सच स्वामी हो के मारे आवाज़, सोई सुरत लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक वेख वखाईआ। दीपक कहिण वेखो गृह भगत दवारा, हरि भगवान दया कमाईआ। निरगुण नूर नूर हो उज्यारा, जोती जाता डगमगाईआ। शब्दी शब्द शब्द धुन्कारा, अनहद नादी नाद सुणाईआ। अमृत रस बख्शे ठंडा ठारा, ठाकर हो के बूंद स्वांती आप टपकाईआ। काया मन्दिर अन्दर देवे नाम सच हुलारा, पवण उनन्जा बैठे सीस झुकाईआ। लहिणा देणा पूरा करे लेखा रहे ना नौ दवारा, दर घर साचा इक्को इक जणाईआ। जिथ्थे दीआ बाती कमलापाती करे उज्यारा, नूर ज़हूर इक वखाईआ। सो भगत सुहेला इक इकल्ला एकँकारा, अकल कलधारी आपणी कल वरताईआ। जन भगत धरनी धरत धवल धौल पावे सारा, सन्त सुहेले गुर चेले लए मिलाईआ। आत्म ब्रह्म पारब्रह्म करे प्यारा, प्रीतम हो के आपणी गोद टिकाईआ। सच संदेशा नर नरेशा देवे एको वारा, इक इकल्ला आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद होणा अन्त किनारा, बीसवीं लेखा नाल मिलाईआ। चौदां तबक रोवण ज़ारो ज़ारा, बिन नैणां नीर वहाईआ। धुर दा अमाम होणा ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। जो झगड़ा पाउणा विच काहरा, कायनात दए हिलाईआ। जिस दा नव नौ चार दा दाइरा, हद्द हदूद इक्को दए दरसाईआ। नूर नुराना अलाही होवे ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। नाम कलमे दा होए मुशाइरा, मुश्किल समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। शमादान कहिण जन भगत दवार सुहञ्जणा, सोभावन्त सुहाए। मेल करे सो पुरख निरँजणा, हरि पुरख निरँजण वेख वखाए। एकँकार दर्द दुःख भय भंजना, आदि निरँजण डगमगाए। अबिनाशी करता

बणे धुर दा सजणा, श्री भगवन इक होए सहाए। पारब्रह्म ब्रह्म चढ़ा इक्को रंगणा, आत्म परमात्म उतर कदे ना जाए। लेखे लाए कलयुग अन्तिम आहला अदना, शाह हकीरां खोज खुजाए। नाम दमामा इक्को वज्जणा, दो जहानां डंक शनवाए। अवतार पैग़म्बरां दो जहानां उठ उठ भज्जणा, गुरु गुरदेव फिरन वाहो दाहे। एह खेल सूरे सरबंगणा, ना कोई मेटे मेट मिटाए। धुर दे हुक्म दी करे ना कोए उलँघणा, ज़ोर ज़बर ना कोए रखाए। सब दा अन्तिम हाल होणा मंदना, मंदभागी दिसे लोकाए। पुरख अकाला दीन दयाला जन भगतां कबूल करे बन्दना, बन्धन दीन दुनी तुड़ाए। लेखा जाणे विच वरभण्डणा, वरभण्डी पड़दा लाहे। हरिजन गुरमुख हरि भगत देवे इक अनन्दना, अनन्द अनन्द विच रखाए। सतिजुग सति धर्म चाढ़े चन्दना, चन्द सितार दा निशाना रहिण ना पाए। जन भगतां सच दवारा लँघणा, अग्गे हो ना कोए अटकाए। जिन्हां सीस दस्तारा बन्नृणा, बन्दीख़ाने विच्चों बाहर कढाए। अन्त अन्तष्करन लाए आपणे अंगणा, अंगीकार आप हो जाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे उत्भुज सेत्ज जेरज अंडना, चारे खाणी चारे कुण्ट फोल फुलाए।

१२८२ ... १२८२

२२ ... २२

✪ १७ चेत शहिनशाही सम्मत ७ गुरनाम सिंघ, अजमेर सिंघ, पिशौरा सिंघ, हर्जीत सिंघ, हरनाम कौर, जुगिन्दर कौर, रत्न कौर मूधल, गुरदयाल सिँघ मूधल, हरबंस कौर मूधल, कुंदन सिँघ पंडोरी, हज़ारा सिँघ चेतन पुरा, गुरमुख सिँघ चेतन पुरा हीरा सिँघ चेतन पुरा, हज़ारा सिँघ जेठूनन्गल पिण्ड वेरका ज़िला अमृतसर ✪

किरपा करे हरि राज राजन, शाह पातशाह शहिनशाह धुरदरगाहीआ। शब्द अगम्मी मारे आवाज़न, सोई सुरत अकाल मूर्त आप जगाईआ। अनुभव दृष्टी खोल्हे राज़न, राज़क रिज़क रहीम पड़दा आप उठाईआ। जन्म जन्म दा संवारे काजन, जन्म जन्म विच्चों बदलाईआ। लेखा मुकाए जगत समाजन, दीन मज़्हब दी वंड ना कोए वंडाईआ। भेव खुल्हाए आदि आदिन, परमात्म बेपरवाहीआ। धुन उपजाए अगम्मी नादन, अनहद नादी नाद करे शनवाईआ। निरगुण सरगुण बणे साजण, सगला संगी आप अख्वाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख विरले जागण, जिस मेहर मेहर नज़र नाल तराईआ। अन्तर निरन्तर देवे वैरागण, वैरी अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। गुरमुख हँस बणावे कागण, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। ममता मोह मेटे दाग़ण, दुरमति मैल करे सफ़ाईआ। अबिनाशी करता सारे अराधण, साह साह इक्को नाम ध्याईआ। मेल मिलाए मोहण माधव माधन, मधुसूदन होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। दीपक

कहिण जन भगतां अन्तर दीपक दीआ, जोती जाता डगमगाईआ। लहिणा देणा चुकाए साढे तिन्न हथ्थ सीआ, पंज तत ब्रह्म मति आप समझाईआ। आत्म नाम निधाना बीज बीआ, पत्त टहिणी फुल्ल आप महकाईआ। ठाकर बण के धुर दा प्रीआ, प्रीतम आपणे रंग रंगाईआ। राय धर्म ना कढे वहीआ, लेखा लेख ना कोए जणाईआ। सतिगुर शब्द बण के सईआ, साजण मेले चाँईं चाँईंआ। धुर दे नाम चढ़ाए नईया, नौका इक्को इक वखाईआ। लेखा मुकाए भैणां भईआ, साक सज्जण सैण ना कोए वड्याईआ। जन भगतां लेखे लाए गोबिन्द दा अन्त अन्त दा ढईआ, सदी चौधवीं संग मिलाईआ। बीस बीसे बदल देवे रव्वईआ, ईसा नैणां अक्ख उठाईआ। लेखा पूरा करे बुल्हे गाया थईआ थईआ, अन्तर आत्म अवाज़ सुणाईआ। जो आशा रख के गया काहन घनईया, कृष्ना द्वापर ध्यान लगाईआ। जो संदेशा दिता सीता राम रमईआ, बिन अक्खरां कीती पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। सत्त रंग कहे मैं फिरां विच ब्रह्मण्डां, ब्रह्मांड ध्यान लगाईआ। कलयुग अन्तिम वेखां कन्ढा, कन्ढी बैठे अवतार पैग़म्बर गुरु अक्ख खुल्हाईआ। फिरी दरोही विच वरभण्डा, भंडी होवे थांउँ थाँईंआ। सति दा आए ना किसे अनन्दा, अनन्द अनन्द विच्चों ना कोए प्रगटाईआ। निशान मेटणा तारा चन्दा, चौदां तबक पर्दा आप उठाईआ। उम्मत रहे ना कोए बख्शंदा, मुहम्मद
१२८३ रोवे मारे धाईआ। खुदाई धार जाणे कोए ना बन्दा, बन्दीख़ाना सके ना कोए तुड़ाईआ। जगत जहान वेखणा अन्धा, अंध १२८३
२२ आत्मक होए लोकाईआ। किसे समझ नहीं आउणा शब्दी धार गोबिन्द खण्डा, खड़ग अष्टभुज ना कोए खड़काईआ। लेखा २२
रहे ना चण्ड प्रचण्डा, चण्डाल दिसे कूड़ लोकाईआ। मन विकारी होवे गंदा, सति सरूप ना कोए समाईआ। कलयुग अन्तिम पैंडा रहिण नहीं देणा लम्बा, सदी चौधवीं लेखा दए चुकाईआ। जन भगत सुहेले रखे संगा, सगला संग आप हो जाईआ। भेव खुल्हाए हँ ब्रह्मा, पारब्रह्म प्रभ पड़दा दए चुकाईआ। झगड़ा मेटे काया माटी चम्मा, चम्म दृष्टी दए बदलाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर कलधारी आपणा करे कम्मा, कामल मुर्शद धुरदरगाहीआ। कूड़ी क्रिया मोह लालच मेटे तमा, तामस तृष्ना दए गंवाईआ। जन भगतां नाम जपाए दम दमां, दामनगीर आप हो आईआ। कलयुग विच सतिजुग बदल देवे समां, सच स्वामी अन्तरजामी मेहर नज़र इक उठाईआ। लेखा जाणे चौदां सौ तीह अंक अंक दा पन्ना, पारब्रह्म प्रभ आपणा हुक्म वरताईआ। दीन मज़्हब दा रहिण ना देवे बन्ना, शरअ छुरी जगत बणे ना कोए कसाईआ। इक्को नाम सुणाए बिन कन्ना, काया मन्दिर अन्दर करे शनवाईआ। भाग लगाए साढे तिन्न हथ्थ तना, तामस तृष्ना दए मिटाईआ। सच मार्ग चार वरन अठारां बरन दस्से नवां, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई इक्को रंग दए रंगाईआ। जन भगतां नाम निधाना देवे धुर दा धना, अतोट अतुट

आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सीस दस्तार बंधा बणाए आपणे चन्ना, चन्द चांदना जगत जहान करे रुशनाईआ।

अजीत सिँघ दे बेनन्ती करन ते

तबीअत दा मिल गया तबीब, तबा अन्दरों दए बदलाईआ। मेहर करे अन्दर हो के करीब, कुरह काया वेख वखाईआ। जगत जन्म विच्चों बदल जाए नसीब, निस्बत आपणे हथ्थ रखाईआ। सति दी सति दे तरतीब, तरीका आपणा लए अपणाईआ। दर्शन देंदा रहे अजीब, पर्दा ओहला आप उठाईआ। प्यार रखे सतिगुर शब्द तेरी सुरत सुरत मुरीद, मुरीद मुर्शद दोहां मिल के वज्जे वधाईआ। जीवण दी आसा जीवण दी मनसा जीवण दी ख़ाहिश पूरी करे उम्मीद, आमद विच आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख बणा के आपणा अज़ीज़, आजज़ देवे माण वड्याईआ।

१८ चेत शहिनशाही सम्मत ७ सुरजन सिंघ, महिंदर सिंघ, प्रीतम सिंघ, अजीत सिंघ, बचन सिंघ, जसवन्त कौर, चरण सिंघ, जगीर सिँघ मैणीआं, गिरधारा सिँघ बलोआली, केसर सिँघ मैसम पूरा, चरण सिँघ मांगा सराए, पिण्ड मांगा सराए ज़िला अमृतसर

कलयुग कहे प्रभू मैं चारों कुण्ट नड्डा, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण वाहो दाहीआ। अन्दर वड़या मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मड्डा, गुरदवार चर्च ध्यान लगाईआ। खेल तक्कया तीर्थ अड्ड सड्डा, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती फोल फुलाईआ। दीनां मज़्बां ज़ातां पातां प्या रट्टा, झगड़ा सके ना कोए मुकाईआ। अन्त अख़ीर सब दा पूरा होवण वाला पटा, पटने वाला वेख वखाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म भुल्लया सब नूं टप्पा, तूं मेरा मैं तेरा राग ना कोए अल़ाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी तेरा नाम किसे ना जपा, जगजीवण दाते तेरे विच ना कोए समाईआ। औह वेख बिन अक्खां वेखे नानक तपा, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाईआ। सति सच दी रही कोई ना सत्ता, सति धर्म नज़र कोए ना आईआ। फिरी दरोही मदीना मक्का, काअबे रहे कुरलाईआ। नेत्र रोवे बूरा कक्का, सदी बीसवीं अक्ख खुल्ह़ाईआ। अन्त अख़ीर सब नूं लग्गणा धक्का, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। फिरी दरोही मनमता, गुरमति नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, धर्म दवारे मंग मंगाईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरी धर्म धार जवानी, जोबनवन्ता इक अख्वाईआ। मेरे उत्ते कर मेहरवानी, मेहरवान तेरी सरनाईआ। मैं झगड़ा पाउणा चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज सारे दयां हिलाईआ। लेखा मुकाउणा अट्ठ सट्ठ पाणी, तीर्थ तट ना कोए चतुराईआ। तेरा नाम कलमा पढ़े कोए ना बाणी, अणयाला तीर ना कोए चलाईआ। आत्म परमात्म मेल मिलण नहीं देणा हाणी, पारब्रह्म ब्रह्म संग ना कोए रखाईआ। तेरा नूर ज़हूर होणा बेपहिचाणी, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। सृष्टी दृष्टी होणी वैरानी, वैरी घर घर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। कलयुग कहे प्रभ तेरा दिसे कोए ना नूरा, ज़हूर नज़र कोए ना आईआ। हरिजन रहे कोए ना सूरा, सूर्या चन्द नेत्र रोवण मारन धाईआ। चार कुण्ट विषा होवे कूड़ा, सति धर्म ना कोए समझाईआ। चतुर सुघड़ होवे मूर्ख मूढ़ा, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। मस्तक लाए कोए ना तेरी चरण धूढ़ा, टिक्का ख़ाक ना कोए रमाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले रंग चढ़े किसे ना गूढ़ा, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। तेरा नूर दिसे ना हाज़र हज़ूरा, हज़रतां दे हज़रत साचा मेल ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी सरनाईआ। पुरख अकाल कहे कलयुग मेरे बच्चे, उठ वेख ध्यान लगाईआ। भगत सुहेले धुर दे सच्चे, सच साजण दयां दृढ़ाईआ। जिन्हां भाग लग्गा काया माटी तन कच्चे, कंचन गढ़ रहे सहाईआ। मेरे प्रेम प्यार विच रत्ते, नाता आत्म परमात्म रहे जुड़ाईआ। निरगुण धार तक्कण निज नेत्र लोचण नैण अक्खे, अक्खरां तों बाहर करन पढ़ाईआ। उन्हां दे वसया घट घटे, निज घर बैठा डेरा लाईआ। ओह जगत जहान दी मंज़ल टप्पे, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। कलयुग औह तक धर्म निशान, जन भगत भगत दृढ़ाईआ। जिन्हां देवे आप माण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। उन्हां नाता तुटे जगत जहान, जागरत जोत करे रुशनाईआ। आत्म ब्रह्म दा दे के दान, काया झोली आप भराईआ। सच सुणा अगम्मी धुंनकान, अनुरागी राग आप दृढ़ाईआ। अमृत बख्शे पीण खाण, निजर झिरना आप झिराईआ। दीपक जोत जगा महान, अंध अंधेरा दए मिटाईआ। सचखण्ड सच दवार पुचाए मकान, जिथ्थे मक्का काअबा नजर कोए ना आईआ। ना कोई ज़िमीं दिसे असमान, सूर्या चन्द ना कोए रुशनाईआ। निरगुण निरगुण विच समाण, रूप रंग रेख दा लेखा रहे ना राईआ। पुरख अकाला दीन दयाला किरपा करे आप मेहरवान, मेहर नज़र नज़र उठाईआ। हरिजन जनभगत सुहेले करे नौजवान, जोबनवन्त आपणे रंग रंगाईआ। धर्म धार दी दस्तार कर

दान, दाता सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा लेखा करे परवान, परम पुरख परमात्म आत्म आपणे अंग लगाईआ।

✪ २० चेत शहिनशाही सम्मत ७ तारा सिँघ निरँजण सिँघ दे गृह जमना नगर ज़िला अम्बाला ✪

दीपक कहिण पंज तत मेरा प्रकाश, आत्म परमात्म दिती वड्याईआ। मेरा मालक इक अबिनाश, अबिनाशी करता धुरदरगाहीआ। जो निरगुण निरगुण हो के पावे रास, गोपी काहन रूप नूर इलाहीआ। सति सरूपी साख्यात, स्वच्छ आपणी कल वरताईआ। कलयुग अन्त मेटे अंधेरी रात, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ। कूड़ क्रिया करे घात, खण्डा खड़ग नाम उठाईआ। सदी चौधवीं मेटे वाट, चौदां तबक नैण उठाईआ। जन भगत सुहेले चढ़ाए अगम्मे घाट, मंज़ल आपणी आप जणाईआ। दीनां अनाथां पुछे वात, वातावरन वेखे ख़लक ख़ुदाईआ। चार वरन बणा इक जमात, आत्म परमात्म रंग रंगाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी सब दी पूरी करे आस, भविक्ख्त लेखा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। सच कहे मेरा ठाकर स्वामी, हरि करता धुरदरगाहीआ। लख चुरासी अन्तरजामी, घट घट रिहा समाईआ। शब्द अगम्मी सुणाए बाणी, अणयाला तीर चलाईआ। आत्म परमात्म बणाए धुर दा हाणी, धुर संजोगी जोड़ जुड़ाईआ। अमृत रस निजर झिरना बूंद स्वांती देवे ठंडा पाणी, अंमिउँ रस आप चुआईआ। आत्मक धुन सुणाए सच्ची धुन्कानी, अनहद नादी नाद वजाईआ। जोती जोत खेले खेल महानी, मेहरवान महिबूब पर्दा आप उठाईआ। कलयुग रीती नीती वेखे शाह सुल्तानी, शहिनशाह आपणा भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। हुक्म कहे सुणो संदेसा परवरदिगारा, धुर पैग़ाम इक जणाईआ। खेले खेल हरि करतारा, करनी दा करता नूर इलाहीआ। लेखा वेखे सृष्टी दृष्टी सर्ब संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। सवाधान कराए तेई अवतारा, त्रैगुण अतीता आपणी दया कमाईआ। बेख़बरां करे ख़बरदारा, पैग़म्बर ईसा मूसा मुहम्मद लए अंगड़ाईआ। नानक गोबिन्द पावे सारा, महासार्थी इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं चारों कुण्ट जणाए धुआँधारा, धर्म दी धार ना कोए वड्याईआ। हर घट अन्तर दिसे काम क्रोध लोभ मोह हँकारा, माया ममता नाल कुड़माईआ। सच दा रहे ना कोए प्यारा, प्रीतम मिलण कोए ना पाईआ। नाता तुटणा मुहम्मद चार यारा, यारी हक ना कोए कमाईआ। ख़ादम रहिणा नहीं कोए ख़िदमतगारा, खुद खुदा आपणा हुक्म सुणाईआ। दीन मज़्ब दा होए ना कोए ताबयादारा, तबीअत सब

दी दए बदलाईआ। उच्ची रोवण पैग़म्बरां वाले मज़ारा, मकबरे रहे कुरलाईआ। यामबीन दरोही सब नूं आई हारा, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा होए दुख्यारा, दुखयां दुःख ना कोए गंवाईआ। तेरी कायनात गफ्लत विच सुत्ती पैर पसारा, आलस निंद्रा सके ना कोए मिटाईआ। कलमा करे ना कोए बेदारा, नेत्र लोचन नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। उठ वेख खेल सच्ची सरकारा, साहिब सुल्तान आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी दर तेरे मंग मंगाईआ। दर तेरा सच सुहञ्जणा, हरि साहिब सतिगुर मीत। किरपा कर आदि निरँजणा, लेखा वेख हस्त कीट। तूं दाता दानी दर्द दुःख भय भञ्जणा, पर्दा खोल्ह प्रभू अनडीठ। सच प्रीती धूढ़ी बख्श मजना, कलयुग जीव मिट्ठे कर कौड़े रीठ। नाम निधान चाढ़ रंगणा, त्रैगुण विच्चों कर अतीत। तूं आत्म परमात्म साचा सज्जणा, पारब्रह्म ब्रह्म उत्ते कर बख्शीश। नेत्र नाम पा अंजणा, रहम मुहब्बत कर बख्शीश। सदी चौधवीं अन्तिम सब ने वंञणा, कल्मयां वाली रहे ना कोए हदीस। सब ने इक्को तेरी करनी बन्दना, तूं मालक जगत जगदीश। जो घड़या सो भज्जणा, तेरा लेखा बीस इकीस। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, त्रैगुण स्वामी शब्द अतीत। त्रैगुण अतीते ठांडे सीते, सतिगुर तेरी इक सरनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पिच्छे बीते, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। खेल तके रामा सीते, राधा कृष्ना खोज खुजाईआ। सदी चौधवीं वेख हुक्म हक हदीसे, हज़रतां तों बाहर खोज खुजाईआ। तेरा नूर अलाही बीस बीसे, बीसवीं सदी दए गवाहीआ। सदमयां विच सारे रहे चीके, उच्ची कूकण मारन धाईआ। औह वेख झगड़ा पैणा हस्त कीटे, हस्त कीट आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक तेरी इक सरनाईआ। सच कहे मैं सब दा प्यारा, सच सच नाल मिलाईआ। सच दा सच होवे दवारा, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। सच दा मेला एकँकारा, अकल कलधारी नूर इलाहीआ। सच दा सच दर दरबारा, जिथ्थे वंड ना कोए वंडाईआ। सच दे प्रेमी भगत जन विच संसारा, भगवन देवे माण वड्याईआ। जुग जुग निरगुण सरगुण पावे सारा, सरगुण निरगुण आपणी खेल खिलाईआ। कलयुग अन्त भगवन्त हो उज्यारा, जोती जाता डगमगाईआ। शब्द शब्द शब्द धुन्कारा, धुन अनादी नाद शनवाईआ। लख चुरासी विच्चों गुरमुख मेले आपणी धारा, भगत भगवान लए उठाईआ। मेहर निगह नाल चुरासी विच्चों कढे बाहरा, जम की फाँसी दए तुड़ाईआ। सीस बख्श जगदीश इक दस्तारा, सिर सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जन भगतां जन्म ना होए दुबारा, चारे खाणी अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक

नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म परमात्म परमात्म आत्म देवे अधारा, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेले सहिज सुभाईआ।

✪ २१ चेत शहिनशाही सम्मत लक्ष्मण सिँघ ते हरबंस सिँघ दे नवित सहारन पुर शहर ✪

दीपक कहिण भगतां अन्दर जगा दे जोती, परम पुरख परमात्म आत्म कर रुशनाईआ। सुरती रहे ना किसे सोती, जागरत जोत बिन वरन गोत डगमगाईआ। चुरासी विच्चों हरिजन बणा माणक मोती, अनमुलड़े लाल मात प्रगटाईआ। मंज़ल अगम्मी चढ़ा चोटी, चोट शब्द नाम लगाईआ। वासना अन्दर रहे ना खोटी, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म बणा आपणा गोती, सगला संगी संग निभाईआ। मनसा मति रहे ना होछी, हवस कूड़ देणी चुकाईआ। नेत्र खोल्ह अक्ख लोची, नैण निज कर रुशनाईआ। ग़रीब निमाणयां मंज़ल दे जेहड़ी दिती रविदास चमारे मोची, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगतां पढ़नी पए कोए ना पोथी, पुस्तक बग़ल ना कोए टिकाईआ। नाम जपणा पए ना बुल्ल्हां होंटीं, अजपा जाप विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। जन

१२८८
२२

भगतां अन्तर दीपक जोत जाए जग, नूर ज़हूर कर रुशनाईआ। पर्दा लाह उपर शाहरग, शहिनशाह आपणा रंग रंगाईआ। त्रैगुण माया ना साड़े अग्ग, तत्व तत ना कोए तपाईआ। हँस बणा मूर्ख मूढ़ कग्ग, माणक मोती नाम चोग चुगाईआ। जगत दवार मेट के हद्द, नव नव दा लेखा दे मुकाईआ। शब्द अगम्मी सुणा नद, अनहद नाद वजाईआ। आत्म परमात्म समझा आपणी यद, यदी आपणा मेल मिलाईआ। कूड़ी क्रिया जाण छड, जगत जहान ना कोए चतुराईआ। माया ममता विच्चों होवण अड्ड, लोभ मोह हँकार बन्धन ना कोए रखाईआ। सच सरनाई तेरी जाण लग्ग, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। नाम निधान प्या मदि, अमृत रस निजर धार चुआईआ। लहिणा देणा पूरा कर सभ, सबब्ब नाल आपणा पड़दा देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। दीपक कहिण प्रभू भगतां अन्दर कर प्रकाश, प्रकाशवान तेरी सरनाईआ। तूं साहिब पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता धुरदरगाहीआ। अवतार पैग़म्बर गुरु तेरे दास, विष्न ब्रह्मा शिव सीस निवाईआ। निरगुण सरगुण तेरी जोती शब्दी रास, मण्डल मण्डप वज्जे वधाईआ। तेरा रूप तकण साख्यात, सति सरूपी नज़री आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कोलों दे नजात, माया ममता मोह मिटाईआ। झगड़ा रहे ना शरअ काग़ज़ात, दीन मज़्ह्ब ना कोए लड़ाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म दे साथ, सगला संग बणाईआ।

१२८८
२२

तूं मेरा मैं तेरा गावण गाथ, ढोला सोहला धुरदरगाहीआ। शरअ शरीअत विच्चों कर आज़ाद, ज़ात पात नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तेरी सरनाईआ। भगतां अन्दर बख्श दे नूर, नूर नुराने दया कमाईआ। तेरा जल्वा तकण ज़हूर, ज़ाहर कर रुशनाईआ। पन्ध मुका नेड़ा दूर, काया मन्दिर काअबा इक सुहाईआ। जिथ्थे तेरे नाम दी उपजे तूर, तुरीआ तों परे दी कर पढ़ाईआ। चतुर सुघड़ बणा दे मूढ़, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सच प्रीत बख्श दे धूढ़, चरणोधक टिक्के ख़ाक रमाईआ। साडी बेनन्ती कर मंजूर, मनसा तेरे अग्गे रखाईआ। जन भगतां जन्म कर्म दा मुआफ़ कर कसूर, लेखा अवर रहे ना राईआ। नज़र आ हाज़र हज़ूर, हज़रतां दे हज़रत धुरदरगाहीआ। तेरे सारे होण मशकूर, शुक्रिया विच सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी जन भगतां आसा मनसा कर पूर, तम्मा तमन्ना वाली रहिण कोए ना पाईआ।

१२८६ ✪ २१ चेत शहिनशाही सम्मत ७ विश्वा मित्र मेरठ, हँस राज मेरठ, जुगिन्दर सिँघ फतिह गढ़, १२८६

२२ निरँजण सिँघ अजितवाल, प्यारे लाल कलोए, सेवा राम कलोए, रेशम सिँघ खहिरा मज्जा, २२

जगजीत सिँघ सलीमपुर, गुरदीप सिँघ दबुरजी, महिंदर सिँघ बस्ती गुजरां, सन्त सिँघ घगराली,

मुलख राज मेरठ, प्रेमी देवी झण्डे, पूरन सिँघ मुंडयाणी, सरमेल सिँघ दाऊदपूर,

ज्ञान चन्द मिरज़ापुर, मेरठ शहर ✪

दीपक कहिण प्रभ वेख अंधेरा घुप, निरगुण सरगुण अन्दर ध्यान लगाईआ। सुरती शब्दी तेरी मौले कोए ना रुत, रुतड़ी हक ना कोए महकाईआ। धर्म दी धार रिहा कोए ना सुत , अपराधी कूड़ लोकाईआ। सृष्टी भार सके ना कोए चुक्क, चार कुण्ट रही कुरलाईआ। तेरी सृष्टी दृष्टी तेरे निशान्यों गई उक, अणयाला तीर ना कोए चलाईआ। जन भगतां उज्जल कर मुख, दुरमति मैल धुआईआ। आत्म परमात्म बख्श दे सुक्ख, सुख सागर विच समाईआ। निरगुण निरवैर निराकार हो के उठ, निरँकार लै अंगड़ाईआ। सदी चौधवीं चौदां तबक आपे तुठ, चौदां लोक ध्यान लगाईआ। अमृत रस आबेहयात दे अगम्मा घुट, बिन रसना रस चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सच तेरी सरनाईआ। दीपक कहिण प्रभ सति धर्म दा दीपक बुझा, दीआ बाती कमलापाती ना कोए रुशनाईआ। तेरा भेव

खोल्हे कोए ना गुज्झा, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। फिरी दरोही उत्ते बसुधा, धरनी धरत धवल रही कुरलाईआ। सतिगुर शब्दी कर दे उग्घा, उगण आथण तेरे नाम दी वज्जे वधाईआ। कूड़ कल्पणा मेट कबुद्धा, मनमति दे बदलाईआ। सच सति करा युद्धा, कूड़ क्रिया कर सफ़ाईआ। मानव मानस मनुक्ख मनुष जन्म दा दस्स दे मुद्दा, मुद्दत दे विछड़े लै मिलाईआ। सदी चौधवीं वेख खेल करतब कलयुगा, कल काती आपणा रूप गया बदलाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक पैग़म्बरां पैंडा मुका, मुकम्मल लहिणा दे चुकाईआ। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद झुका, सजदा सजदयां विच्चों कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सतिगुर तेरे हथ्थ वड्याईआ। दीपक कहिण प्रभ वेख अंधेरा अंध, नूर नुराना नज़र कोए ना आईआ। तेरा साचा चमके नूर कोई ना चन्द, चन्द सितारा दए गवाहीआ। सदी चौधवीं पैंडा मुकणा पन्ध, पाँधी पैग़म्बर रहे सुणाईआ। बीसवीं सदी रही लँघ, बीस बीसा ध्यान लगाईआ। उम्मत लाए कोए ना अंग, अंगीकार ना कोए अख्वाईआ। संग चार यार मुहम्मद सब ने बदलणी कंड, करवट सके ना कोए बदलाईआ। तेरा खेल सूरे सरबंग, समझ सके कोए ना राईआ। दीन दयाल हो बख़्शंद, बख़्शिश रहमत आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। दीपक कहिण प्रभ पैग़म्बर वेखण तेरी अगम्मी किताब, हरफ़ हरूफ़ नज़र कोए ना आईआ। जेहड़ी रखी नहीं विच किसे महिराब, महिबूब तेरे विच छुपाईआ। जिस दे विच इक्को इक दा इक अदाब, दूसर सीस ना कोए झुकाईआ। ना कोई सवाल ना कोई जवाब, जुमला अक्खर ना कोए पढ़ाईआ। सदी चौधवीं बिन हिन्दसिउँ लेखा दिसे हिसाब, अंकड़ा रंग ना कोए रंगाईआ। जो इशारा कीता निरगुण सरगुण सति सरूप विच बग़दाद, नानक नानक नानक त्रैगुण बाहर आया समझाईआ। सो लेखा पूरा करदे साहिब सतिगुरु धुर दे महाराज, महिबूब तेरे उत्ते ओट तकाईआ। औह तक मैनूं तेरे अगम्मी कलमे दी आवे आवाज़, राज़ अन्दरों देणा खुल्हाईआ। जिस विच रोज़ा रहे ना कोए नमाज़, वुज़ू दा झगड़ा देणा चुकाईआ। शरअ दा रहे ना कोए नाज़, निजात सब दी दे बदलाईआ। लेखा मुका दे ज़ात काग, काग़ज़ात दी करे ना कोए लड़ाईआ। तेरी सिफ्त सालाह अक्खरां भरी अल्फ़ाज़, जुग चौकड़ी ढोले सिफ्तां वाले गाईआ। तूं मालक इक्को वाहिद, वाहिदा सब दा पूर कराईआ। मुहम्मद दा पूरा होए अहिद, अहिदनामा दे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तेरी वड्याईआ। दीपक कहिण प्रभ शरअ दा दीपक कर दे गुल्ल, गुलशन नज़र कोए ना आईआ। तूं आदि जुगादि सदा अभुल्ल, भुल्ली भटकी वेख ख़लक खुदाईआ। सति धर्म दा लेखा अगम्मी कंडे तोल, तराजू इक्को नाम जणाईआ। सच

वस्त रही किसे ना कोल, कुल मालक ख़ाली काअबे रहे कुरलाईआ। झगड़ा मुका दे उपर धौल, धरनी धरत धवल नेत्र नैणां नीर वहाईआ। हर घट अन्तर निरन्तर हो के मौल, मौला आपणा पड़दा दे चुकाईआ। सदी चौधवीं सब दा पूरा कर दे कौल, इकरारनामे सानूं दे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड दवार एकँकार दर तेरी ओट तकाईआ। दीपक कहे प्रभ अन्तर वेख अंधेरा, अंध आत्म ध्यान लगाईआ। किसे समझ ना आवे सञ्झ सवेरा, दिवस रैण वंड ना कोए वंडाईआ। भेव लभ्भे ना गुरु गुर चेरा, चेला गुर समझ किसे ना आईआ। तेरा नूर दिसे ना नेरन नेरा, निज नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। बिन तेरी किरपा जन भगत बणे केहड़ा, भगवन तेरा दरस कोए ना पाईआ। साहिब सुल्तान नौजवान मर्द मर्दान सब दी शरअ दा कट दे झेड़ा, बन्धन मज़्ह्ब रहे ना राईआ। आत्म परमात्म दा बन्न्ह दे बेड़ा, बेड़ी नईया नौका आपणा नाम चलाईआ। जन भगतां लेखा चुका दे चुरासी गेड़ा, गेड़ा गेड़े विच्चों बदलाईआ। तेरा रूप अनूप सति सरूप एकँकार इक्को इक बथेरा, जोती जाते पुरख बिधाते निरगुण नूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जीव जहान जगत जुगती नाल मुका दे झेड़ा, झगड़ा रहिण कोए ना पाईआ।

१२६१ १२६१

२२ २२

✪ २२ चेत शहिनशाही सम्मत ७ गुरबलविन्दर सिँघ चन्द पुराणा, गुरचरण सिँघ जटवां, बूआ सिँघ बलपुरीआ, माया दिल्ली, हरभजन सिँघ फेरूमान, अवतार सिँघ चबेवाल, तरलोक सिँघ सनाम, सुरिन्दर कौर दिली हरि भगत दवार, दर्शन सिंघ हरि भगत दवार, पी पी सिँघ किशन पुर, हरभजन सिँघ दिल्ली, चन्दा सिँघ नन्गल राए, रत्न सिँघ दिल्ली, महिन्दर सिँघ नयाशाला, पूरन सिँघ दिल्ली, सरूप सिँघ ढुडीके, दर्शन सिँघ बागे, इन्द्र सिँघ सोनीपत, सतपाल हांडा फ़रीदाबाद, राजा राम दिल्ली, जगत सिँघ चमनाओ, दिल्ली हरि भगत दवार विच ✪

शमादान कहिण साडी दलील दिली, दिलबर दिलदार रिहा दृढ़ाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल अक्ख बदलणी बिल्ली, हुक्म देवे बेपरवाहीआ। नेत्र रोवे मुहम्मद मकबरे वाली सिल्ली, सिलसला बदले थांउँ थाँईंआ। जेहड़ी निशानी सज्जे होंट उत्ते तिली, चार यारी देवे गवाहीआ। उस दी ख़बर पैग़म्बरां तों परे मिली, जिस नूं समझ विच ना कोए समझाईआ। चौदां तबक मारन खिल्ली, हासी करन चाँईं चाँईंआ। खेल तकणी उपर धार नीली, धरनी धरत धवल धौल दा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। शमादान कहिण

दिल्ली बरज़िली ज़कना तू नूर इलाहीआ। चाने मज़दू तख़ने कवा गोशे ज़ाहू, असमाने इज़ी मोनीज़ो, हक जलाखिता कलल कमदे मुहम्मद मादी ज़ाअ बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। चराग़ कहिण वेखे चशमे चराग़, चराग़ाहां ध्यान लगाईआ। नबी नबीआं देण त्याग, रसूल रसूलां संग ना कोए बणाईआ। शरअ विच शरअ दा रहे कोए वैराग, शरीअत शरीअत नाल बदलाईआ। इन्सान हैवान होवण काग, मुख कूड़ नाल भराईआ। जेहड़ी उम्मत मुहम्मद कीती आबाद, शहिज़ाद विच कर शनवाईआ। चौदस चौदां तक्कया राज, राजस तामस सांतक संग मिलाईआ। उस दा लेखा पूरा होणा जगत समाज, समग्री समझ कोए ना पाईआ। हुक्म संदेशा देवे आप महाराज, शहिनशाह शाह पातशाह नूर इलाहीआ। सिर सर सरो रहिणा नहीं कोई ताज, तख्त निवासी रूप ना कोए दरसाईआ। धुर कलमा कलाम तों बाहर जाए जाग, कायनात समझ कोए ना आईआ। जिस दी करे ना कोए इमदाद, मददगार ना कोए अख्वाईआ। सो सब नूं करे आज़ाद, बन्धन शरअ वाले तुड़ाईआ। नेत्र रोवे पंज वक्त दी नमाज़, राज आपणा रही सुणाईआ। परवरदिगार सांझा यार बदल रिहा रिवाज, रवादार रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। शमादान कहिण असीं मिल के पाईए शोर, शोरोगुल नाल दुहाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं रिहा कोए ना ज़ोर, जोरू ज़र होए ना कोए सहाईआ। नाम कलमे लुट्ट के लै गया कलयुग चोर, चोरी यारी आपणा संग बणाईआ। चारों कुण्ट होया अंधेरा घोर, अंध अज्ञान सके ना कोए गंवाईआ। भरम मिटे ना मोर तोर, तुरीआ तों परे करे ना कोए पढ़ाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु सुत्ते विच मढ़ीआं गोर, गहर गम्भीर नज़र किसे ना आईआ। सति धर्म दी कटी डोर, टुट्टी गंढ ना कोए पवाईआ। तीर्थ अट्ठ सट्ठ तलाब बणे जौहड़, सरोवर सर ना कोए वड्याईआ। आत्म परमात्म प्रीती निभे किसे ना तोड़, अधवाटे बैठी ख़लक खुदाईआ। जुग जन्म दे विछड़यां सके कोए ना जोड़, धुर दा संग ना कोए रखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल निरगुण धार तेरी लोड़, लोड़ींदे सज्जण होणा सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी बेपरवाहीआ। दीपक कहिण प्रभ तेरा नाम दुहाई, दरोही दरोही रहे सुणाईआ। नूर नज़र ना आए तेरा अलाही, अल्ला अलाह तेरा दरस कोए ना पाईआ। चार कुण्ट रही कुरलाई, दहि दिशा काया कुरह समझ ना कोए जणाईआ। तुध बिन मेहरवान कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे कोए ना शाही, हकूमत हक ना कोए समझाईआ। धुर मंज़ल दा बणे कोए ना राही, रहिबर मेल ना कोए कराईआ। खुदा खुद वेख आपणी खुदाई, ख़ालक ख़लक मख़लूक अक्ख उठाईआ। सति धर्म दा लेखा रिहा ना राई, रहमत हक

१२६२
२२

ना कोए कमाईआ। दीन दुनी धर्म गंवाया खा के सूर गाई, जन्म विच्चों जन्म ना कोए बदलाईआ। बौहड़ी तेरे हुक्म नाल जगत जहान होई तबाही, तबक सबक सके ना कोए जणाईआ। मेहरवान महिबूब जन भगतां होई सहाई, सहायक हो के नायक हो के सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तेरा जल्वा नूर अलाही, आलमीन तेरी वड्याईआ। तूं बख्शीं पापी पतित गुनाही, गहर गम्भीर होणा सहाईआ। सच दी निर्मल जोत जगाईं, जोती जाता हो के नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, मालक ख़ालक इक अख्वाईं, अक्खरां तों बाहर आपणी दस्सणी सिफ्त सालाहीआ।

✪ २३ चेत शहिनशाही सम्मत ७ सेवा सिंघ दे नवित गुड़ागाउं शहर ✪

१२६३ दीपक कहिण प्रभ जोती दीपक जगया दीआ, आत्म ब्रह्म नूर इलाहीआ। भाग लग्गा साढे तिन्न हथ्थ काया सीआ, सीआ पति राम वेख वखाईआ। धर्म धार दी साची तकी नीआ, नींह लोकमात वखाईआ। पूरब जन्म बीज जो बीआ, कर्म कम नाल समझाईआ। सतिगुर साचा सच दा करे आप हीआ, हरि आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा आप दृढ़ाईआ। दीपक कहिण साडे अन्तर होया प्रकाश, बिन सञ्झ सवेर जणाईआ। किरपा करे पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता धुरदरगाहीआ। पर्दा लाहवे साख्यात, ओहला रहिण कोए ना पाईआ। गोबिन्द सूरा खोल्हे ताक, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। पूरब जन्म दा वेखे साक, सगला संगी संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा आपणे नाल रखाईआ। दीपक कहिण साडे अन्तर होया ज्ञान, अज्ञान रिहा ना राईआ। किरपा कीती श्री भगवान, भगवन दया कमाईआ। दया सिंघ दा ब्यान, गुरमुख गुरमुख नाल वड्याईआ। जिस ठठिआर तों लई सी किरपान, किरपा गोबिन्द नाल फड़ाईआ। उस दा बच्चा इक अंजाण, चौदां मास सोभा पाईआ। उस बचन कीता महान, सहिज नाल सुणाईआ। मैनूं मेल मेरा भगवान, जिस जन्म दिता घर पिता माईआ। दया सिंघ हस्स के किहा आह वेख नौजवान, गोबिन्द सूरा सच्चा माहीआ। उस किहा इस दा मालक कौण जहान, मैनूं दे दृढ़ाईआ। गोबिन्द तक्कया नाल ध्यान, नैण नैण विच्चों बदलाईआ। शब्दी हस्स के कीता फ़रमान, संदेशा इक फ़रमाईआ। हुण युद्ध होणा घमसान, घुंमण घेरी विच लोकाईआ। जिस वेले निरगुण रूप धरे विच जहान, सरगुण मेला मेलां सहिज सुभाईआ। पुरख अकाल तेरी करे पहचान, बेपहचान ध्यान लगाईआ। दया सिंघ हस्स के किहा उस १२६३

वेले मैं किथ्थे वेखां आण, भेव देणा दृढ़ाईआ। मेरा जिस्म नहीं रहिणा इन्सान, तत्तां वाली ना वंड वंडाईआ। गोबिन्द किहा तेरा गृह होवे परवान, परवाना धर्म धार हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी कार कमाईआ। गोबिन्द किहा होवे वक्त सुहावा, सोहणी रुत वड्याईआ। शब्दी सतिगुर बन्ने दाअवा, दाअवे नाल देवे मिलाईआ। जिस वेले प्रभ सिंघासण दा उलटा होया पावा, सिध्धा पुट्ठा कर वखाईआ। अमीर ग़रीबां करे सावां, वंड इक्को रंग रंगाईआ। गुरमुखां आपणे घर लावे नांवां, नाउँ निरँकारा आप हो आईआ। बच्चे दा लेखा पूरा करे नाल चावां, चाउ घनेरा इक दरसाईआ। मैं शब्दी धार नाल जावां, जोती आपणा मेल मिलाईआ। सम्बल सुहा के सच ग्रावां, दर ठांडा इक रखाईआ। लहिणा देणा पूरा करावां, दया सिँघ गृह दयां वड्याईआ। बाल अवस्था लेखे पावां, बाली बुध नाल रलाईआ। जन्म कर्म दा रहे कोए ना हावा, हउमे रोग दयां मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गोबिन्द बचन सुण के बाली बाला मन्नया, अन्तर अन्तर कर ध्यान। गोबिन्द हस्स के किहा तेरा जन्म होणा फेर कन्या, किरपा करे श्री भगवान। फेर तेरे मात पिता दा बेड़ा जाणा बन्नया, अग्गे मिले अगम्मा दान। नूर प्रकाश चढ़े चन्नया, जोती चमके साचा भान। जिस कारन साहिब स्वामी आवे भन्नया, लेखा पिछला लए पहचान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिगुर साचा हो मेहरवान। धर्म धार दी कन्या दविन्दर नाम नामा, गोबिन्द वड वड्याईआ। शब्दी शब्द पैग़ामा, संदेशा अगम्म अथाहीआ। कपूर सिँघ पूरा होवे कामा, अग्गे मिले वड्याईआ। सेवा सिँघ मिल्या माणा, माण माण विच्चों वड्याईआ। बिशन सिँघ दा रिहा ना तत निशाना, दया सिँघ दा लेखा पूर कराईआ। पुट्ठा सिंघासण डाह श्री भगवाना, पूरब लहिणा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि दा अन्तरजामा, अन्तष्करन सब दा लेखे पाईआ।

✪ २३ चेत शहिनशाही सम्मत ७ हरबंस सिँघ दे गृह गुड़गाउं शहर ✪

दीपक कहिण प्रभ मेट अंधेरा अंध, जन भगतां अन्तर कर रुशनाईआ। जोती नूर चमका चन्द, बिन सूर्या चन्द कर रुशनाईआ। आत्म परमात्म दे अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। भेव खुल्ला दे ब्रह्म हं, पर्दा ओहला रहे ना राईआ। हरख़ सोग मिटा दे ग़म, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। भाग लगा दे काया माटी चम्म, चम्म दृष्टी दे बदलाईआ।

ममता मोह कूड़ मिटा तम, तृष्ना तृखा देणी गंवाईआ। नाम निधान सुणाउणा बिन कन्न, शब्द अनादी नाद प्रगटाईआ। मानस जन्म बेड़ा देणा बन्न्, बन्न्णहार दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, गृह तेरे सीस निवाईआ। दीपक कहिण प्रभ मेट अंधेरी रैण, अनदिन आपणी दया कमाईआ। जन भगतां बख्श आपणा निज नैण, दिव्य नेत्र कर रुशनाईआ। निरगुण बण साक सैण, सरगुण सज्जण इक अख्वाईआ। सन्त सुहेला रहे ना कोए तरफ़ैन, त्रैगुण माया डेरा ढाहीआ। सारे तेरा नाम निधाना लैण, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। सिफ्त वड्याई तेरी कहिण, साह साह तेरे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा, वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। दीपक कहिण प्रभ अन्तर करदे आपणी किरपा, कृपाल दयाल दया कमाईआ। जन भगतां कलयुग पोह ना सके बिपता, विपरीत दा लेखा देणा मुकाईआ। सब नूं इष्ट जणा दे इक दा, एकँकार हो सहाईआ। चार वरन रूप बणा सिख दा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। सतिगुर शब्द शब्दी धार तेरी महिमा होवे लिखदा, लेख कातब तेरे हथ्थ वड्याईआ। लहिणा देणा पूरा करदे अवतार पैग़म्बर गुरु भविख दा, पोशीनगोईआं जो पेशतर तेरीआं गए सुणाईआ। तेरा खेल आदि जुगादि नित दा, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। अन्त लेखा वेख मित्त दा, मित्र प्यारे आपणी

१२६५ ... १२६५

२२ ... २२

दया कमाईआ। तेरा रूप अनूप धुरदरगाही पित दा, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। दो जहान नौजवान निरगुण धार सरगुण तेरा रूप दिसदा, दूसर नज़र कोए ना आईआ। मन विकार पवित्र कर दे भरया विस दा, अमृत रस बिन रसना दे चखाईआ। इक्को जैकारा होवे नौ खण्ड तेरे जस दा, सिफ्तां विच गाए ख़लक खुदाईआ। तेरा मेल होवे अगम्मी अक्ख दा, लोचन इक्को इक वड्याईआ। दर्शन देणा रूप धार सतिगुर प्रत्तख दा, साख्यात हो के नज़री आईआ। जन भगतां विछोड़ा रहिण नहीं देणा वक्ख दा, आत्म परमात्म परमात्म आत्म मेलणा सहिज सुभाईआ। तेरी सरन सरनाई जगत जहान होवे ढहुदा, टिक्का धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। तूं मालक घट घट दा, लख चुरासी रिहा समाईआ। इक्को खेल खिला दे ब्रह्म मति दा, मन मति दूर कराईआ। दीन मज़्हब प्यासा रहे ना मानस रत्त दा, शरअ दी छुरी कातिल मक्तूल दा रूप ना कोए जणाईआ। तेरा नाम दो जहान आत्म परमात्म होवे रटदा, रट्टा अवर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा जोती नूर प्रकाश होवे लट लट दा, जगत जहान अंध अंधेर देणा मिटाईआ।

✪ २५ चेत शहिनशाही सम्मत ७ अवतार सिंघ, गुरदित सिंघ, किरपा सिंघ, महल सिंघ, गुरबचन सिंघ, सतवन्त कौर, बसन्त कौर सुखदेव सिंघ, मोहण सिँघ कादीआं, अमृत कौर लखनऊ, जुगिन्दर कौर लखनऊ, कानपुर शहर ✪

दीपक कहिण प्रभ जन भगतां बुद्धी कर बिबेक, दुरमति मैल अन्तर निरन्तर रहिण कोए ना पाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले बख्श आपणी टेक, परवरदिगार सांझे यार तेरी इक सरनाईआ। त्रैगुण माया पंज तत लग्गे ना सेक, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। जन्म कर्म दी निहकर्मी बदल दे रेख, ऋषीकेश गवर्धन धार तेरा रंग रंगाईआ। किरपा निधान नौजवान शब्द अगम्मी दे संदेश, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आपणा नाम दृढ़ाईआ। नूर नुराने शाह सुल्ताने निरगुण दस्स आपणा भेख, मर्द मर्दाने पड़दा दे चुकाईआ। तूं आदि अन्त दा मालक एक, एकँकार तेरे हथ्थ वड्याईआ। शाहो भूप शहिनशाह नर नरेश, नर नरायण तेरी ओट तकाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक कर हेत, हितकारी हो के आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी पर्दा पर्दे विच्चों चुकाईआ। दीपक कहिण प्रभ जन भगतां खोल्ह अगम्मी अक्ख, बिन अक्खरां कर पढ़ाईआ। तेरा सति सरूप तकण प्रतख, पारब्रह्म ब्रह्म मेला लैणा मिलाईआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत्त, रत्ती रत्त आपणे लेखे लाईआ। तूं सर्ब कला समरथ, समरथ तेरे हथ्थ वड्याईआ। जो सरन सरनाई तेरी जाए ढट्ठ, धूढ़ी मस्तक ख़ाक रमाईआ। उस दे भाग लगाउणा तत अठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध आपणे रंग रंगाईआ। घर मन्दिर लेखा वखाउणा तीर्थ अठसठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती सच सरोवर देणा नुहाईआ। हक हकीकी काअबा महिबूब मुहब्बत वाला तेरा होवे मट्ठ, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सच दवारा एकँकारा अगम्मा इक्को वखाउणा हट्ट, जिथ्थे बिना भगतां वणजारा नज़र कोए ना आईआ। शब्द अगम्मी सुरत सवाणी मार सट्ट, सोई आत्म परमात्म आपणे नाल मिलाईआ। कूड़ कुकर्म दा लेखा देणा कट, कटाक्ष विच इक्को तीर अणयाला देणा चलाईआ। औह वेख कलयुग नव नौ चार रिहा नट्ठ, दिवस रैण भज्जे वाहो दाहीआ। बिन हथ्थां तेरे अग्गे जोड़े हथ्थ, निउँ निउँ लागे पाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दवार एकँकार दर तेरे मंग मंगाईआ। दीपक कहिण प्रभू तेरा कलयुग सूरबीर सुल्ताना, ... बेपरवाहीआ। जिस ने बदल दिता जमाना, ज़िमीं ज़मां रहे कुरलाईआ। फिरी दरोही उत्ते असमानां, पैग़म्बर वेखण नैण उठाईआ। जहालत होई विच जहाना, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ।

शब्द सुणे ना कोए तराना, तुरीआ पद ना कोए समाईआ। मन मनुआ होया शैताना, शरअ शरअ नाल टकराईआ। सन्त सुहेला सूरबीर रिहा ना कोए विच जहाना, भगत भगवान मिलण कोए ना पाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा होई हैराना, हैरत विच सारे देण दुहाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले तेरा नज़र ना आए सति धर्म दा निशाना, कूड़ डंक राउ रंक सब दे उत्ते रिहा वजाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म भुल्लया सब नूं गाणा, गावत गा गा शुकर ना कोए मनाईआ। दीपक कहिण असीं वेख होए परेशाना, पश्चाताप विच दईए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। पुरख अकाल कहे वेखो खेल दीपक जोती जाते, हरि करता आप कराईआ। जिस ने कलयुग वेखणे खेल तमाशे, निरगुण सरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। मण्डल मण्डप तकणी रासे, गोपी काहन पड़दा आप उठाईआ। कलयुग वेखे अंधेरी राते, सदी चौधवीं ध्यान रखाईआ। जो कुझ वरतणा विच लोकमाते, मात्रा भूमी सब दी दए गवाहीआ। अन्तिम चीथड़ सब दे होणे पाटे, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। कर्म धर्म दे सब नूं आउणे घाटे, जन्म विच्चों जन्म ना कोए बदलाईआ। सब दी मुकणी अन्तिम वाटे, पाँधीआं पन्ध विच भवाईआ। विस्तर सुख सेज मिले किसे ना खाटे, खटीआ संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। दीपक कहिण प्रभू तेरा खेल होणा अनडिठ, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। तूं मालक साहिब सब दा पित, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। किरपा कर एकँकार इक, इक इकल्ले वाहिद नूर इलाहीआ। जन भगत सुहेले सच दवार बणा आपणे सिख, सिख्या सच नाम दृढ़ाईआ। सब दा बदल दे भविख, भविश आपणे नाल मिलाईआ। आत्म परमात्म कर हित, हितकारी हो के खोज खुजाईआ। तेरा खेल नित नवित, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। कलयुग अन्त लहिणा देणा आप नजिट्ठ, दूसर हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। झगड़ा मुका दे पथ्थर इट्ट, एका इष्ट दे समझाईआ। मंज़ल रहे ना सवा गिठ, मेरूडण्ड दा डेरा ढाहीआ। फिरना पए ना त्रैकुटी विच, ईड़ा पिंगल सुखमन पन्ध ना कोए जणाईआ। मन कल्पणा दे जित्त, शब्दी शब्द शब्द कर शनवाईआ। तेरयां भगतां तेरा दर्शन होवे नित, निज लोचन नैण कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तेरे हथ्थ वड्याईआ। पुरख अकाल कहे मैं दया कमावांगा। निरगुण नूर जोत रुशनावांगा। शब्दी शब्द डंक वजावांगा। पुरीआं लोआं खोज खुजावांगा। ब्रह्मण्डां खण्डां पड़दा लाहवांगा। जेरज अंडां वेख वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला मेल मिलावांगा। सच मेल मिलावांगा। दीन दयाल हो के दया कमावांगा। लख चुरासी खोज खुजावांगा।

भगत सुहेले आप उठावांगा। गुर चेले जोड़ जुड़ावांगा। मुरीद मुर्शद अंग लगावांगा। नाम मृदंग शब्द सुणावांगा। ब्रह्मण्ड खण्ड दा डेरा ढाहवांगा। जेरज अंड दा पन्ध मुकावांगा। सुरत शब्द विच समावांगा। निजानंद नंद दिसावांगा। जोती नूर चन्द चमकावांगा। काया मन्दिर अन्दर लँघ, सति सरूपी दरस दिखावांगा। सब दी आसा मनसा पूरी करके मंग, जगत तृष्ना भुक्ख मिटावांगा। आत्म होण ना देवां रंड, प्रभ कन्त सुहागी हो के आप प्रनावांगा। तूं मेरा मैं तेरा निरगुण निरगुण दस्स के छन्द, परमानंद विच टिकावांगा। जन्म जन्म दी कर्म कर्म दी टुट्टी गंढ, गंढणहार गोपाल स्वामी इक अख्वावांगा। बिन सूर्या चन्द चाढ़ के चन्द, गृह मन्दिर इक रुशनावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवार इक सुहावांगा। सच दवार इक सुहाएगा। सचखण्ड पड़दा आप उठाएगा। निरगुण दीआ जोती जाता आप जगाएगा। जन भगतां आपणे मिलण दा दस्स के हीआ, मंज़ल पैंडा पन्ध मुकाएगा। लेखे ला के साढे तिन्न हथ्थ सींआ, सम्बल आपणा घर दृढ़ाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित आपे जाणे आपणा कीआ, करनहार समरथ अकथ कथनी विच कदे ना आएगा।

१२६८ १२६८

२२ २२

✪ २७ चेत शहिनशाही सम्मत ७ देवदत दे नवित पटने शहर ✪

दीपक कहिण प्रभ साडी नमो नमो निमस्कार, डण्डावत बन्दना विच सीस निवाईआ। असीं जगदे रहे सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सेव कमाईआ। साडा खेल तकदे रहे तेई अवतार, पैग़म्बर गुरु ध्यान लगाईआ। असीं जगदे रहे मन्दिर शिवदुआले मट्ठ गुरदवार, तीर्थ तट्टां सोभा पाईआ। घर घर करदे रहे उज्यार, सरगुण सरगुण नाल संग निभाईआ। आसा रखदे रहे विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव अग्गे ध्यान रखाईआ। कवण वेला पुरख अबिनाशी साडी पावे सार, महासार्थी आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच साहिब तेरी वड्याईआ। दीपक कहिण तेरा दीपक नूर उज्यारा, आदि जुगादि रुशनाईआ। जगदा रहे निरगुण धारा, सरगुण विच समाईआ। प्रकाश हुन्दा रिहा पैग़म्बर गुर अवतारा, भगत सन्त नाल रुशनाईआ। खेल तकदे रहे अगम्म अपारा, अलख अगोचर तेरी वड वड्याईआ। कलयुग अन्तिम दर तेरे निमस्कारा, नमो नमो सरनाईआ। भेव खोल्ह पर्दा रहे ना तेरे दवारा, द्वारकावासी बैठा ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच

सच तेरी सरनाईआ। दीपक कहिण काया अन्तर तेरी निरगुण जोती, आत्म धारा तेरी वड्याईआ। तेरा खेल सदा लोक परलोकी, दो जहान तेरी बेपरवाहीआ। तेरा रूप अनूप नाथ त्रैलोकी, त्रैगुण अतीते तेरे हथ्थ वड्याईआ। जन भगत सुहेले रखण इक्को ओटी, ओड़क तेरा ध्यान लगाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी जन भगत सुहेले चाढ़ आपणी चोटी, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। तूं पारब्रह्म पतिपरमेश्वर ब्रह्म धार तेरा गोती, परमात्म आत्म इक्को रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। दीपक कहिण तेरा भगत सुहेला मीत, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। जुग चौकड़ी तेरी रीत, जन भगतां देवें माण वड्याईआ। तूं ठाकर त्रैगुण अतीत, त्रैभवन धनी तेरी सरनाईआ। तूं हर घट वसें चीत, गृह मन्दिर काया डेरा लाईआ। सच प्रेम दी कर बख्शीश, रहमत आपणा नाम वरताईआ। कलयुग विच सतिजुग बदल दे रीत, रीतीवान आपणा पड़दा दे उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स दे गीत, चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक्को करन पढ़ाईआ। दीन मज़्ब ज़ात पात अन्त मार दे लीक, लाईन इक्को दे वखाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु करन तस्दीक, शहादत शब्द गुरु भुगताईआ। निरगुण तेरी सारे करन

१२६६ उडीक, सरगुण मेला लैणा मिलाईआ। सदी चौधवीं रही बीत, बीस बीसे अक्ख खुल्हाईआ। झगड़ा मेट दे मन्दिर मसीत, १२६६

२२ काअब्यां इक्को रंग रंगाईआ। सति धर्म दी साची दस्स रीत, रीतीवान तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी २२

किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी दर तेरे आस रखाईआ। दीपक कहिण प्रभ जन भगतां चाढ़ दे रंग, रंगत इक्को नाम रंगाईआ। आत्म परमात्म बख्श दे संग, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। निज गृह निज आत्म दे अनन्द, परमानंद विच समाईआ। कूड़ी क्रिया कर दे खण्ड, खण्डा खड़ग नाम चमकाईआ। झगड़ा मेट दे जेरज अंड, उत्भुज सेतज पन्ध रहे ना राईआ। खुशी करा दे बन्द बन्द, बन्दना इक्को इक दरसाईआ। जगत जहान दी मंज़ल जाण लँघ, राज समाज ना कोए अटकाईआ। तेरा सच सिंघासण वेखण सचखण्ड, जिथ्थे इक्को नूर जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार दातार तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। दीपक कहिण जन भगतां दे इक दवारा, काहन कान्हा तेरी सरनाईआ। तूं राम राम धुर दा राम प्यारा, सीता सुरत लै प्रनाईआ। जगत विछोड़ा मेट विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। भगत सुहेला इक इकेला वेखे तेरा सच्चा घर बाहरा, गृह मन्दिर इक्को डेरा लाईआ। जिथ्थे दीपक जोत जगे न्यारा, तेल बाती संग ना कोए वखाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी कदे ना होए धुंदूकारा, अंध अंधेर ना कोए रखाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी सच बख्शे आपणा

प्यारा, प्रीतम हो के जोड़ जुड़ाईआ। कलयुग अन्तिम श्री भगवान आपणा बण जीअ अधारा, जीव ईश आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। दीपक कहिण प्रभ तेरा भगत सुहेला इक, एकँकार इक विच समाईआ। उस दा लेखा शब्दी धार देणा लिख, जिस नूं चार जुग सके ना कोए मिटाईआ। तूं आदि अन्त दा पित, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। परमात्म धार कर हित, आत्म आपणे घर वसाईआ। जिथ्थे ठगौरी रहे कोए ना चित, मन मनसा ना कोए हल्काईआ। इक्को तेरा नूर नुराना पए दिस, जोती जाते डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी सच दवार तेरे हथ्थ वड्याईआ। दीपक कहिण वेख भगत भगवान सच दवार, सचखण्ड निवासी ध्यान लगाईआ। किरपा कर अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़े तेरे हथ्थ वड्याईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म पा सार, महासार्थी आपणा संग रखाईआ। सच दवार खोल्ह किवाड़, बन्द ताकी रहिण ना पाईआ। सन्त सुहेला घर अगम्मड़े वाड़, जिथ्थे मंज़ल तेरी बेपरवाहीआ। अग्नी पोह ना सके तत्ती हाढ़, राजस तामस छोह सके ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक ख़लक दे ख़ालक सद आपणा रंग वखाईआ। दीपक कहिण वेखीए तेरी जोत अकाली, अकल कलधारी तेरी बेपरवाहीआ।
१३०० सचखण्ड दवार तेरी धर्मसाली, दवारा धुर दा नज़री आईआ। जिथ्थे पोह ना सके त्रैगुण माया जगत जंजाली, जागरत १३००
२२ जोत डगमगाईआ। उथे तेरे भगत तेरे दर ते होण सवाली, दूजा नज़र कोए ना आईआ। तूं निरगुण दाता सदा करें रखवाली, २२
रक्षक हो के वेख वखाईआ। औह तक तेरे भगत सुहेले तेरे सचखण्ड दवार बिन हथ्थां मारदे ताली, तलवाड़ा तेरे प्रेम वाला बणाईआ। जेहड़े मातलोक विच्चों कर गए चाली, नाता तन सरीर गए तुड़ाईआ। उहनां मंज़ल मिली सुख़ाली, सुख आसण तेरे बहि के खुशी बणाईआ। राज नरायण वेख्या समां हाली, हालांकि जगत आस ना कोए तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरे हथ्थ वड्याईआ। दीपक कहिण दर तेरे अरदास, बेनन्ती इक सुणाईआ। तेरा भगत पुज्या तेरे पास, पासा दीन दुनी बदलाईआ। मंज़ल चढ़ गया उपर आकाश, आकाशां तों परे तेरी जोत विच समाईआ। जिथ्थे निरगुण निरगुण पैंदी रास, भगत भगवान गोपी काहन रूप वटाईआ। सदा सच दा रहे साथ, सगला संग निभाईआ। राज नरायण सब नूं रिहा आख, संदेशा देवे चाँईं चाँईआ। मेरी आत्म पुन्नी आस, परमात्म मिल्या बेपरवाहीआ। जिस दे उत्ते मेरा विश्वाश, विषयां तों बाहर लेखा दिता चुकाईआ। अग्गे करनी ना पई तलाश, खोजण दी लोड़ रही ना राईआ। मैनूं शंकर मिल्या उत्ते कैलाश, त्रिशूल हथ्थ विच उठाईआ। ब्रह्मे किहा शाबाश, खुशीआं नाल

सुणाईआ। विष्नूं दिता आख, तेरा विश्व रूप रूप बेपरवाहीआ। पुरख अकाल मिल गया धुर दा बाप, मालक नूर इलाहीआ। जिस ने सचखण्ड दा खोल्ह्या ताक, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। जन भगतां दी मिल गया विच जमात, जिथ्थे सन्त सहेले बैठे डेरा लाईआ। इक्को सब दा सांझा वाक, अवतार पैग़म्बर गुर सिफ्त सालाहीआ। सचखण्ड सच गृह दा सच मिल गया राज, नाता कूड़ कूड़ तुड़ाईआ। मैं सदा लई सच विच गया जाग, आलस निंद्रा दिती मुकाईआ। जिथ्थे भगतां दा खेड़ा आबाद, दरगाह साची सोभा पाईआ। उथे वज्जे ना कोए रबाब, तार सितार ना कोए हिलाईआ। नाम शब्द दी नहीं आवाज़, धुनां विच ना कोए शनवाईआ। दीन मज़्ब नहीं कोई समाज, हद्दां वंड ना कोए वखाईआ। इक्को मेला होया हरि प्रभ कन्त सुहाग, जो सुहागी सद आपणे अंग लगाईआ। जिस दी किरपा नाल मेरे गृह विच जगदा चराग़, चराग़ाहां करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद सद आपणी दया कमाईआ। राज नरायण कहे मैनूं संदेशा देवे उनन्जा पौण, पौण पाणी सिफ्त सालाहीआ। जिस खेल खिलाया राम रौण, राम रामा धुरदरगाहीआ। जो काहन बण के आया कंस मुकाउण, कौरव पांडव पन्ध मुकाईआ। सो किरपा करे साहिब सुल्तान जिस सुख आसण दिता सौण, दु:ख दर्द दा डेरा ढाहीआ। मेरी अर्ज़ बेनन्ती छोटे पप्पू दा नाम रख देवे जगमोहण, मोहणी मोहण रूप बदलाईआ। जिस दा लेखा जाणे कौण, कवण गति कहिण कोए ना पाईआ। बाल अंञाणयां शब्दी धार आए समझाउण, समझ समझ नाल बदलाईआ। जगत रोग आए गंवाउण, दुखियां दु:ख दर्द मिटाईआ। उजड़या घर आए वसाउण, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। देवदत्त सिर सीस धर दस्तार आए बंन्हाउण, बन्धन आपणा नाम पाईआ। सुरस्ती सुरत शब्द आए जुड़ाउण, सुरत शब्द विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वक्त सुहञ्जणा आए सुहाउण, सुहञ्जणी रुतड़ी प्रभ दे नाल महकाईआ।

✪ ३० चेत शहिनशाही सम्मत ७ गुरमेज सिंघ, सूरत सिंघ, करतार दे गृह शकूर बस्ती दिल्ली ✪

चेत कहे जन भगतां सोहे रुत बसन्त, ख़िज़ां नज़र कोए ना आईआ। परम पुरख परमात्म आत्म मिले कन्त, हरि करता धुरदरगाहीआ। देवे वड्याई विच्चों जीव जंत, जागरत जोत कर रुशनाईआ। धर्म दी धार बणाए गुरमुख सन्त, भगवन आपणे रंग रंगाईआ। धुर दा नाम दे के मंत, तूं मेरा मैं तेरा करे पढ़ाईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक समझाईआ। जन्म कर्म दी रहिण ना देवे चिन्त, सुख सागर विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे

खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। चेत कहे मेरी रुतड़ी मौले फल फुल, पत्त टहिणी नाल वड्याईआ। प्रभ भाग लगाए भगतां कुल, कुल मालक होए सहाईआ। कलयुग विच ना जावण रुल, कूड़ क्रिया विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। कंडे नाम दे तोले तुल, अतोल आपणे रंग रंगाईआ। माणस देही पाए मुल्ल, कीमत करता आप चुकाईआ। मेल मिलाए सुल्हकुल, कुल मालक ख़लक ख़ुदाईआ। चरण प्रीती बख्श के धुल, धूल मस्तक ख़ाक रमाईआ। मानस जन्म ना जाए हुल्ल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। चेत कहे मेरे अन्तर भगतां सोहे रुत, प्रभ देवे माण वड्याईआ। किरपा करे अबिनाशी अचुत, चेतन सुरती दए कराईआ। शब्दी धार बणा के सुत , अपराधी आपणे अंग लगाईआ। भाग लगा के काया बुत, बुतख़ान्यां करे सफ़ाईआ। अमृत नाम दे के घुट, जाम अगम्मी दए प्याईआ। कूड़ी वासना जाए छुट, छुट्टी लिव आप लगाईआ। कूड़ विकारा कढे कुट्ट, ममता मोह ना कोए हल्काईआ। जन्म कर्म दा मेटे दु:ख, दुखियां दर्द गंवाईआ। आत्म ब्रह्म दा देवे सुख, सुख सागर विच समाईआ। मात गर्भ फेर उलटा होण ना देवे रुक्ख, चुरासी फाँसी दए कटाईआ। उज्जल करके मात मुख, जुग चौकड़ी सिफ्त सालाहीआ। लेखे ला के जनणी कुख्ख, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवार इक सुहाईआ। चेत कहे जन भगतां होए वक्त सुहञ्जणा, प्रभ साची बणत बणाईआ। किरपा करे आदि निरँजणा, अबिनाशी करता धुरदरगाहीआ। मेहरवान दर्द दु:ख भय भञ्जणा, कलयुग कूड़ा सागर पार कराईआ। गुण निधान पा के नेत्र अंजणा, अंध अंधेरा दए मिटाईआ। आत्म परमात्म बणा के सज्जणा, घर घर विच जोड़ जुड़ाईआ। अमृत आत्म सरोवर नुहा के मजना, दुरमति मैल दए धुआईआ। सच प्रेम दी चाढ़े रंगणा, रंगत इक्को इक वखाईआ। दूजा दर पए ना मंगणा, दर दर अलख ना कोए सुणाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला इक्को दस्से साची बन्दना, बन्दा बन्दगी विच समझाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म दा लैणा अनन्दना, आत्म परमात्म विच टिकाईआ। सतिगुर शब्द बणे बख्शंदना, बख्शिश रहमत आप कमाईआ। देवे वड्याई सूरा सरबंगणा, जन भगतां सीस दस्तार आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी जन भगत लगाए आपणे अंगणा, अंगीकार एकँकार अकल कलधारी आप अख्वाईआ।

✪ ३० चेत शहिनशाही सम्मत ७ भान सिंघ, सोहण सिंघ जगतार सिँघ बीड़ अमीन निरँजण सिँघ फारम गुरुकुल थानेसर, गुरमेज सिँघ थानेसर, बचन सिँघ चिबा, मान सिँघ बोढी, सन्ता सिँघ शरीफ़गढ़, बंता सिँघ मुग़ल माजरा काला सिँघ किरसाणा, सरैण सिँघ किरसाणी, आसा सिँघ किरसाणी, इन्द्र पाल सिँघ बबैन वरयाम सिँघ ठीकरी छन्नां हज़ारा सिँघ रोहतक, पिण्ड नानकपुरा ज़िला करनाल ✪

चेत कहे मेरा समां रिहा बीत, दिवस रैण भज्जया वाहो दाहीआ। मैं भगतां संग कीती प्रीत, प्रभू प्रीतम दिती माण वड्याईआ। सच जणाई जगत रीत, रीतीवान दिता दरसाईआ। आत्म परमात्म गाया गीत, तूं मेरा मैं तेरा मिल के वज्जी वधाईआ। काया काअबा दस्स के हक मसीत, गृह मन्दिर अन्दर इक वखाईआ। रंग रंगा के हस्त कीट, ऊचां नीचां जोड़ जुड़ाईआ। धुर दा कलमा दे हदीस, हज़रतां बाहर करी पढ़ाईआ। किरपा करी जगत जगदीश, जगदीशर मेहर नज़र उठाईआ। गुरमुखां दस्तार बंधा के सीस, सीस सतिगुर लेखे पाईआ। लहिणा देणा पूरा कर बीस, इकीसे गुरदास मनसा विच समाईआ। झगड़ा रिहा ना ऊच नीच, ज़ात पात दा पन्ध मुकाईआ। दीन मज़्हब दी टप्प के लीक, लाईन इक्को दिती वखाईआ। अमृत रस दे के मीठ, नाम निधाना इक समझाईआ। कौड़ा रहे कोए ना रीठ, विख अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ।
१३०३ २२ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। चेत कहे मेरा समां रिहा लँघ, दिवस रैण भज्जया वाहो दाहीआ। मेरी आसा मनसा पूरी कीती मंग, भिक्खक भिक्खया झोली पाईआ। सतिगुर शब्द ने दिता अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जन भगत सुहेले बणा के आपणे चन्द, चन्द नूर रुशनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स दे छन्द, संसा अन्दरों दिता कढ्ढाईआ। अमृत धार वहा के गंग, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती लेखा दिता मुकाईआ। गृह मन्दिर अन्दर निरगुण रूप हो के लँघ, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। आत्म सेज सुहा पलँघ, सच सिंघासण सोभा पाईआ। धुर दी वस्त अगम्मी वंड, अलख अगोचर झोली दिती भराईआ। त्रैगुण अग्नी मेट के पाई ठंड, तत्व तत दिता बदलाईआ। आवण जावण रिहा ना पन्ध, चुरासी फाँसी दिती कटाईआ। भेव खुल्हा के ब्रह्म हं, हँ ब्रह्म आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे के साचा वर, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। चेत कहे मेरा समां बणया मेरा संगी, सगला संग बणाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला मेहर करे सूरा सरबंगी, शाह पातशाह शहिनशाह बेपरवाहीआ। सृष्टी दृष्टी वेखे नव सत्त अंधी, अन्तर निरन्तर खोज खुजाईआ। दीन मज़्हब दी तके पाबन्दी, अवतार पैग़म्बर गुरु लए उठाईआ। शरअ शरीअत दी वेखे डण्डी, डण्डावत बन्दना सजदा तके थांउँ थाँईंआ। कलमे नाम दा रूप वेखे जंगी, जंगजू

बहादर पड़दा आप चुकाईआ। फिरनी दरोही विच वरभण्डी, ब्रह्मण्ड देण गवाहीआ। चेत कहे प्रभ शब्द कटार करनी नन्ग़ी, जगत जहान दए चमकाईआ। कलयुग दी आयू रहिण ना देवे लम्बी, समां समें विच्चों बदलाईआ। धरनी धरत धवल धौल सदी चौधवीं अन्तर कम्बी, मुहम्मद लेखा नाल बणाईआ। जगत जहान लेखा रहिण नहीं देणा डम्बी, सति सति देणा प्रगटाईआ। जेहड़ा धर्म उडया ला के खम्बी, सति नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मालक होए सहाईआ। चेत कहे मेरा वक्त बीत्या मात, मात्रा भूमी दए गवाहीआ। मेरी अन्त सुहञ्जणी रात, सति विच समाईआ। भगतां तकां जमात, गुरमुख गुर गुर सोभा पाईआ। जिन्हां दे अन्तर इक्को गाथ, तूं मेरा मैं तेरा ढोला रहे गाईआ। मिली वस्त सुग़ात, धुर दी धार प्रभू वरताईआ। झगड़ा चुक्कया कूड़ समाज, राजशाही ना कोए डराईआ। सति सच दी सुणी आवाज़, राज़ अन्दरों दिता खुल्हाईआ। सोई सुरती गई जाग, आलस निंद्रा दिती मिटाईआ। हरिजन हँस बणा के काग, कागों हँस उडाईआ। गृह अन्दर निरगुण जोत जगा चराग़, अंध अंधेरा दिता मिटाईआ। कूड़ धर्म दा मेट के दाग़, दुरमति मैल कीती सफ़ाईआ। चेत कहे भगतां वड वडभाग, भाग सतिगुर शब्द सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आत्म परमात्म पकड़ी वाग, डोरी शब्दी तन्द जुड़ाईआ। जिथ्थे रिहा ना कोए सवाल जवाब, जुआब तल्बी विच मंग ना कोए मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सच स्वामी अन्तरजामी अन्तर आत्म वेख वखाईआ। चेत कहे मेरा इक्को इक सजदा, दर साचे सीस निवाईआ। भगत भगवान तेरा होवे बरदा, बन्दना इक्को देणी दृढ़ाईआ। भेव खुल्हाउणा आपणे घर दा, गृह पड़दा देणा चुकाईआ। इश्नान कराउणा साचे सर दा, सरोवर इक्को इक नुहाईआ। जिथ्थे ना जन्मे ना कोए मरदा, चुरासी विच ना कोए भवाईआ। तेरी मंज़ल तेरा सन्त सुहेला होवे चढ़दा अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। तेरा ब्रह्म तेरा आत्म तेरा ढोला होवे पढ़दा, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। तूं मालक ख़ालक चोटी जड़ दा, चेतन सब नूं देणा कराईआ। झगड़ा मेटणा कपट छल दा, अछल छलधारी आपणी दया कमाईआ। माण बख़्शणा जन भगतां निहचल धाम अटल दा, सचखण्ड दवार एकँकार परवरदिगार सांझे यार देणा टिकाईआ। चेत कहे सब दा लेखा पूरा करना कलयुग कल दा, कलि कल्की तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, माण बख़्शणा निहचल धाम अटल दा, दरगाह साची सचखण्ड दवार सति सच आपणा मेल मिलाईआ।

१३०४ २२

★ ३१ चेत शहिनशाही सम्मत ७ हरबंस सिंघ, संपूरन सिंघ, सौदागर सिँघ भठ माजरा, रणधीर सिँघ हरनाया, अर्जन सिँघ बलोचपुर, जरनैल सिँघ सतौड़ा, अजैब सिँघ भेवा, जुगिन्दर कौर भेवा, मोहण सिँघ गढ़ी लांगरी, महिन्दर सिँघ गढ़ी लांगरी, करतार सिँघ कौमी फारम, चानण सिँघ हरनौला रण सिँघ जीत नगर, सुरजीत कौर जीत नगर, लखबीर सिँघ जीत नगर, राज कौर खारे, पिण्ड ठीकरी छन्ना ज़िला करनाल ★

चेत कहे मेरा प्रविष्टा अख़ीरी इक्ती, अकल कलधारी ध्यान लगाईआ। प्रभू भगतां तेरयां वाअ लग्गे ना तत्ती, तत्व तत ना कोए जलाईआ। आत्म परमात्म धार फ़र्क पवे ना रती, रत्न अमोलक हीरे लैणे प्रगटाईआ। सब दा लेखे लाउणा नाम जपया दन्द बत्ती, बत्ती धार मात वाली बख़्शाईआ। शब्दी धार लेखा पूरा करना राग छत्ती, छतीसा वंड ना कोए वंडाईआ। निरगुण नूर जोत प्रकाश करना अगम्मी बत्ती, बातन पड़दा देणा खुल्हाईआ। अबिनाशी करते बणना कमलापती, पतिपरमेश्वर हो के वेख वखाईआ। सति सन्तोख धीरज बख़्शणा जती, यथार्थ आपणा रंग रंगाईआ। लेखा मुकाउणा लख चार अस्सी, आस सब दी पूर कराईआ। तेरी मुहब्बत हर हिरदे अन्तर होवे वसी, वास्ता तेरे नाल जुड़ाईआ। करना प्रकाश बिन रवि शशी, सूर्या चन्द दी लोड़ रहे ना राईआ। मेहरवान महिबूब हो के जन भगतां अन्दर वसीं, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। एथे ओथे दो जहानां पत्त रखीं, रक्षक हो के वेख वखाईआ। सति सरूप सच दवार बणाउणी सख़ी, सख़ावत आपणा नाम झोली पाईआ। तेरा दर्शन करन निज नेत्र अक्खी, आख़र पड़दा ओहला देणा उठाईआ। मालक ख़ालक बणना हकी, हकीकत लेखा देणा मुकाईआ। सदी चौधवीं रहे कोई ना शकी, शिकवा सब दा देणा मिटाईआ। परवरदिगार नूर इलाही बणना यकी, वाहिद आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। चेत कहे मेरा दिवस इक तीसा, चार जुग समझ किसे ना आईआ। धुर दा हुक्म जगत जगदीशा, देवणहार बेपरवाहीआ। जो लहिणा देणा वेखे बीस बीसा, बीस इकीसा वंड वंडाईआ। जिस दा शब्दी धार सोहे छत्र सीसा, सीस जगदीश सोभा पाईआ। सो धुर संदेशा देवे हदीसा, हज़रतां तों बाहर करे पढ़ाईआ। जिस ने लख चुरासी अन्तर आत्म सब दा जीता, हार विच कदे ना आईआ। सो पुरख अकाल दीन दयाल भगतां बण के मीता, मित्र प्यारा हो के वेख वखाईआ। जिस ने लेख लिखाया भेव खुल्हाया अठारां ध्याए गीता, काहन कान्हा नाम वड्याईआ। जो वेस वटाए राम सीता, बनवासी हो के बन खण्ड आपणा डेरा लाईआ। निरगुण धार रहे अतीता, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। सो कलयुग अन्तिम लख

चुरासी परखे नीता, चारे खाणी खोज खुजाईआ। दीन मज़ब दी पूरब मेटे लीका, हुक्म हाकम इक दृढ़ाईआ। जिस दे विच हक तौफ़ीका, मेहरवान महिबूब नूर इलाहीआ। सब दीआं आसा मनसा पूरीआं करे उम्मीदां, तृष्ना तृखा दए गंवाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जिस दीआं करदे उडीकां, बिन नैणा नैण उठाईआ। ओह गुर अवतार पग़म्बरां लेखे लाए वसीहता, लहिणा वेखे थांउँ थाँईंआ। सदी चौधवीं दीन दुनी बदल दए तबीअता, तबीब बणे धुर दा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। चेत कहे मेरा अन्त अख़ीरी आया वक्त, वक्त नाल जणाईआ। प्रभ दा खेल होणा विच जगत, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सन्त सुहेले उठाए भगत, भगवन आपणा मेल मिलाईआ। जो जोती जाता हो के आया परत, पतिपरमेश्वर फेरा पाईआ। नूर उजाला करे उपर धरत, धरनी धवल खोज खुजाईआ। आसा मनसा पूरी करे शर्त, शरअ दा लेखा दए दृढ़ाईआ। वाली बण के मालक अर्श, अर्शी प्रीतम वेख वखाईआ। जन भगतां उत्ते करे तरस, रहमत आपणी आप कमाईआ। अमृत मेघ देवे बरस, बूंद स्वांती इक टपकाईआ। आपणा खेल दिखाए असचरज, अचरज लीला आप जणाईआ। ग़रीब निमाणयां वंडे दर्द, दुखियां होए सहाईआ। सूफ़ीआं सन्तां मंज़ूर करे अर्ज़, आरज़ू आपणे विच टिकाईआ। जन्म जन्म दा लहिणा देवे कर्ज, मकरूज़ लेखा दए मुकाईआ।
१३०६ आपणी आशा आपे जाणे ग़रज़, ग़रज़ भगतां नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल १३०६
२२ साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। चेत कहे मैं दिवस रैण भज्जा नट्ठा, खुशीआं पन्ध मुकाईआ। सेवा कीती यथार्थ २२
यथा, यदी प्रभ नूं सीस झुकाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले इक्को तेरी आत्म परमात्म होवे कथा, दूसर कथनी कथे कोए ना राईआ। इक्को दवार सब दा मंज़ूर होवे मथ्था, मस्तक टिक्के धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जिस दी याद विच गोबिन्द सथ्थर लथ्था, यारड़ा सेज गया हंढाईआ। उस दा दर्शन होवे जोती धार अक्खां, नेत्र लोचण नैणां नज़री आईआ। सति सरूप होवे सच्चा, शाहो भूप नूर इलाहीआ। जन भगतां भाग लगाए काया माटी गढ़ु कच्चा, कंचन रूप दए बदलाईआ। गुरमुख गुरसिख बणाए धुर दा बच्चा, बचपन आपणी झोली पाईआ। लूं लूं अन्दर होवे रचा, रचना आपणी दए वखाईआ। सति धर्म दी बख्शे सता, सति सतिवादी दया कमाईआ। सचखण्ड दवार दा दस्से पता, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच देवे माण वड्याईआ। चेत कहे जन भगतो मेरी अन्त प्रणाम, परम पुरख सीस निवाईआ। तुहाडा पूरा होवे काम, जन्म जन्म दी हवस मिटाईआ। तुहाडा वसे नगर खेड़ा ग्राम, साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाईआ। घर ठाकर मिले राम, काहन कान्हा नूर इलाहीआ। जिस रैण मेटणी अंधेरी शाम, शमां

नूर जोत करे रुशनाईआ। आत्म परमात्म दस्स कलाम, कलमा कायनात देणा बदलाईआ। संदेशा देणा विच अवाम, आम आपणा हुक्म वरताईआ। दीन मज़्ब दा रहे ना कोए ग़ुलाम, शरअ ज़ंजीर देणी कटाईआ। मज़्ब दा मज़्ब करे ना कोए कत्लेआम, कातिल मक्तूल दा लहिणा देणा मुकाईआ। कलयुग मेटे अंधेरी शाम, अंध अंधेरा दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सच प्यार दा हकीकी देवे जाम, जमां दा लेखा दए मुकाईआ।

✪ पहली विसाख शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल विच रात नूं ✪

चौदां लोक कहिण बदल गई विसाखी, जगत बुद्धी समझ किसे ना आईआ। तेई अवतारो हुण मन्नणी पैणी आखी, समां पिछला रहे ना राईआ। तुहाथों हो ना सकी राखी, रक्षक हो ना सेव कमाईआ। आह वेखो प्रभू दी पाती, पत्रिका रिहा जणाईआ। जिस दी खेल ना किसे पछाती, पहचान सके ना कोए कराईआ। लेखा लिख्या नहीं नाल कलम दवाती, काग़ज़ वंड ना कोए वंडाईआ। इक ख़बर अगम्मी आखी, राम कृष्न नूं दिती सुणाईआ। जिस वेले भगत रहिणा नहीं जिस दी नज़र आवे विच्चों छाती, छत्रधारी सच ना कोए कमाईआ। चारों कुण्ट कूड़ दी होणी हाटी, हरि का नाम ना कोए विकाईआ। तुहाडे सिंघासण नहीं रहिणे जगत वाली खाटी, मूर्तीआं पथ्थर देण गवाहीआ। तुहाडे अग्गे भोग लगा के पांधे खा जाण चपाती, तुहाडा भय ना कोए रखाईआ। तुहानूं मन्दिरां विच्चों चुक्क के लै जाण रातीं, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। मंज़ल चढ़े कोए ना घाटी, घाटा वेखण थांउँ थाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। चौदां तबक कहिण पैग़म्बरो तक्को हदीसा, हुक्म की इलाहीआ। निगह मार ईसा, सदी बीसवीं नैण उठाईआ। मुहम्मदी सदी चौधवीं तक शीशा, शहिनशाह नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। वेला याद करना बीता, पिछला रिहा समझाईआ। जेहड़ा कौल इकरार कीता, बिना कैदयां कीती पढ़ाईआ। जिस वेले समां अन्त दा बीता, समाज दी पए दुहाईआ। झगड़ा पैणा चर्च मसीता, मसला हल्ल ना कोए कराईआ। उस वेले बदलणी सब दी रीता, चौदां तबकां वाल्यो चौदां अप्रैल दी विसाखी दए गवाहीआ। रस रहिणा नहीं कोई मीठा, फल फुल्ल ना कोए महकाईआ। चौदां तबक तपणा अंगीठा, सदी चौधवीं नाल मिलाईआ। जिस प्रभू दे कलमे दा कर सक्या ना कोए टीका, भेव सक्या ना कोए खुल्हाईआ। ओह लेखा जाणे जीव जीअ का, भेव अभेदा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे

खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। चौदां वेखो सतिगुर राए, बिन नैणां नैण उठाईआ। क्यों विसाख आपणा दिवस बदलाए, बदला समझ कोए ना पाईआ। जेहड़े गोबिन्द ने पुत्ते अक्खर लिखाए, तोड़े कल्गी उत्ते छुहाईआ। कन्नां विच उँगलां पाए, आपणी कार कमाईआ। खेल तक्कया इक हरिराए, हरि करता करनी की कमाईआ। जो सति दी धार समाए, सति सति विच समाईआ। सम्मत सत्त शहिनशाह प्रगटाए, प्रगट आपणी कल वखाईआ। पिछले कीते चार जुग बीते लहिणे दए मुकाए, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। जगत मुनारे देवे ढाहे, ढईआ गोबिन्द दए गवाहीआ। चारों कुण्ट होए हाए हाए, हौका भरे लोकाईआ। नेत्र रोए बिन अक्खां तों धरनी माए, धवल दए दुहाईआ। आकाश आकाशों नीर वहाए, बिन नैणां छहिबर लाईआ। पवण पाणी भज्जे वाहो दाहे, आपणा बल प्रगटाईआ। अग्नी आपणा खेल खिलाए, तत्व तत जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणा हुक्म वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैग़म्बरो मेरा तक लओ नुक्कता, जिस उत्ते नुक्कता चीनी करे कोई ना राए। आह तक्को हुण सब दा पैंडा मुकदा, मुकम्मल खेल खिलाए। प्रभ दा भाणा कदे ना रुकदा, ना कोई मेटे मेट मिटाए। जाप होणा भगत भगवान दी

१३०८ तुक दा, आत्म परमात्म ढोला सहिज सुभाए। संसार वास्ते जगत रैण विसाखी दिहाड़ा दुःख दा, दुक्खां भरी दिसे लोकाए। १३०८

२२ जन भगतां वेला आउणा सुख दा, सुख सागर विच समाए। खेल वेखणा शहिनशाह दुलारे गोबिन्द सुत दा, जिस पंज प्यारे लए नुहाए। २२

भेव अनोखा आपणा कीता अगम्मी मनुक्ख दा, मानस विच्चों नज़र फेर ना आए। झगड़ा मेट के जनणी कुख्ख दा, जोती जोत करे रुशनाए। अवतार पैग़म्बरो एह उहो वेला ढुक्कदा, जो समां सब दा दए बदलाए। हुण वेला रहिणा नहीं पुछ दा, इनकुआइरी विच कोए ना आए आपणा समां वेखो अंधेरे घुप्प दा, सच चन्द ना कोए चमकाए। इक्को सतिगुर शब्द सूर बहादर उठदा, जो विसाखी वसाह के दए बदलाए। पड़दा रहे ना ओहला लुक दा, निरगुण नूर करे रुशनाए। धुर दा चानण कदे ना छुपदा, पड़दा सके कोए ना पाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताए। अवतार पैग़म्बर गुर वेखण नैण उठाई, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। हिन्दसा तक्कण इक इकाई, दहाई संग ना कोए बणाईआ। जां पाती वेखी फ़र्क रिहा ना राई, कमलापाती खेल खिलाईआ। जिस नूं भविक्ख्तां विच आए गाई, पेशीनगोई विच सुणाईआ। बौहड़ी ओह खेल करे बण के धुर दा माही, महिबूब नूर इलाहीआ। कलयुग कूड़ी मेटे शाही, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। चार कुण्ट पए दुहाई, तोबा तोबा करे खुदाईआ। जिस ने अगम्मी कार कमाई, कलमा कायनात बदलाईआ। पंज लिखारीआं दए वड्याई, सच सिंघासण उत्ते टिकाईआ।

गुर अवतार पैग़म्बर कहिण पिच्छे किसे एह कार नहीं कमाई, करनी कर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। विसाखी कहे प्रभू कर लैण दे निमस्कार, पहलों तैनूं सीस निवाईआ। मैं छड दिते पिछले यार, याराने लए तुड़ाईआ। मैं बण गई सेवादार, सेवा तेरी सच कमाईआ। मैं ओह ख़ादम छडे जेहड़े तेरे ख़िदमतगार, जुग जुग तैनूं सीस निवाईआ। मैं हुण आ गई उस प्रभू दे दवार, जिस दी मंज़ल बेपरवाहीआ। मैं चाहुंदी इक्को रूप कर दे संसार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस दी गोबिन्द नींह गया उसार, उस दा अन्त दे वखाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक्को जेहा बख़्श प्यार, ज़ात पात दा डेरा ढाहीआ। किरपा कर के नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप पंजां तत्तां अन्दर आपणा अमृत दे प्याल, जो पंज दरबारी सिर ते आए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस निवाईआ। विसाखी कहे मैं सुत्ती सुत्ती उठी, प्रभू तेरे नाल लई अंगड़ाईआ। हुण मेरे उत्ते तुट्ठीं, बौहड़ी वास्ता पाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर वड़ के पुच्छी, घर घर अन्दर खोज खुजाईआ। जिस दी तेरे नाल लग्गी होवे रुची, उस दा मेला लैणा मिलाईआ। भेव रखणा नहीं पंज तत बुतीं, चम्म दृष्टी देणी बदलाईआ।
१३०६ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। विसाखी कहे लिखारी १३०६
लिखण वाले चंगे, सतिगुर शब्द शब्द वड्याईआ। पंज दरबारी सूरे सरबंगे, सूर बीर सोभा पाईआ। जिन्हां कोल अमृत धार अगम्मी गंगे, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती जिस दा राह तकाईआ। पंज प्यारे गुरमुख ठंडे, सांतक सति सरूप समाईआ। विसाखी कहे जन भगतो तुहाडे नाते गए गंढे, गंढा खवाण वाल्यो गंढ तुहाडे नाल पवाईआ। तुहाडे सुक्के खा के मंडे, मण्डलां तों परे देणा वसाईआ। तुहाडा प्रीतम तुहाडे नाल हंढे, जन्म मरन विच कदे ना आईआ। तुहानूं पार लँघावे आपणे कन्ढे, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। तुसीं ओह मंज़ल लँघे, जिथ्थे मिले धुर दा माहीआ। पंजां लिखारीआं बहाया उत्ते मंजे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। विसाखी कहे जिस वेले गोबिन्द ने प्यार कीता कवी नाल बवन्जा, बावन अक्खर धार दृढ़ाईआ। फेर सज्जे हथ्थ दा वखाया पंजा, पंज पंज वार उठाईआ। फेर संदेशा दिता कोल पुरी अनन्दा, अनन्द अनन्द विच्चों समझाईआ। जिस वेले मेरे प्रभू ने निशान मेटणा तारा चन्दा, चन्द सितार दा लेख मुकाईआ। मुहम्मद लहिणा पूरा करना मज़्हब दा लए कोए ना चन्दा, शरअ शरीअत देणी बदलाईआ। उस वेले पंजां लिखारीआं बहाउणा उपर मंजा, मंझ दा विचला झगड़ा देणा मुकाईआ। कोल सत्त रंग दा होणा टम्बा, टापूआं दा डेरा देणा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा

हुक्म इक वरताईआ। विसाखी कहे मेरा साहिब इक अनामी, इनाम भगतां दए वरताईआ। मेरा मालक इक पैग़ामी, पैग़ाम दए सुणाईआ। मेरा साहिब इक सुल्तानी, शहिनशाह शाह दात वरताईआ। मेरा अहिबाब इक कलामी, कलमा आपणा दए दृढ़ाईआ। मेरा शहिनशाह सब तों अन्तिम ल्ए सलामी, अवतार पैग़म्बर गुरु सीस दयो झुकाईआ। पिछला लेखा मुके तमामी, अग्गे तमां ना कोए प्रगटाईआ। हुण रहिणी नहीं अंधेरी शामी, शमां नूर करे रुशनाईआ। पुरख अकाल दी इक्को होवे बाणी, बाण अणयाला तीर चलाईआ। जन भगतां अन्तर आत्म बख़्शे अगम्मा पाणी, पाणी दे मटके देण गवाहीआ। जो आदि अन्त दा जाण जाणी, जानणहार इक अख्वाईआ। सो रीती मेटे परा पुराणी, परम पुरख बेपरवाहीआ। सतिजुग मार्ग दए आसानी, असल असल विच्चों सुणाईआ। विसाखी कहे प्रभू तेरयां भगतां देणी ना पए कोए कुरबानी, तत्तां वाली ना कोए लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। विसाखी कहे जन भगतो मैं कीती जग बदली, बदल के बदला दयां चुकाईआ। पुरख अकाल बणा के अदली, अदल इन्साफ़ दयां जणाईआ। मेरा समां पहुँचया मज़लो मज़ली, मंज़ल पिछला पन्ध मुकाईआ। मैं इक्को नाम संदेशा देणा गज़ली, नग़मा हक दृढ़ाईआ। मैनूं सारयां कहिणा कोझी कमली, मूर्ख मुग्धां नाल मिलाईआ। मति दी होछी कहिणा यमली, मूर्खां नाल समझाईआ। पर याद रखो मैं समें नाल आपणा आप संभली, सम्बल दा मालक वेख्या चाँईं चाँईंआ। मैं तक्कया नूर अलाही अवल्ली, जो आलमीन इक अख्वाईआ। जिस दे प्यार विच हो गई बवली, बुध मति ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। विसाखी कहे मेरा लेखा पुराणा दिसे तमाम, तमां ना कोए रखाईआ। जिस वेले राम जैकारा लाया सी सीता राम, राम राम राम ध्याईआ। जिस वेले राधा कृष्न कीता ब्यान, कृष्न राधा रंग रंगाईआ। जिस वेले हज़रत ईसा मूसा पढ़ी कलाम, सुणया फ़रमान धुरदरगाहीआ। जिस वेले मुहम्मद होया अलहाम, इलम तों बाहर कीती शनवाईआ। जिस वेले नानक बख़्श्या सतिनाम, सति सति दी धार समझाईआ। जिस वेले (गोबिन्द) वाहिगुरु फ़तिह दा गाया गाण, ढोला ढोल्यां नाल जणाईआ। उस वेले पुरख अकाल ने सब दा कराया ध्यान, शब्द इशारे नाल दृढ़ाईआ। ओह तक्को वेखो मेरा कलयुग अन्तिम खेल महान, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जिस वेले मैं तुहाडा सब दा बदलणा विधान, हुक्म हुक्म विच्चों जणाईआ। चौदां लोक चौदां तबक चौदां विद्या सारे करन ब्यान, बिन सिफ्तां सिफ्त सालाहीआ। उस वेले जगत रीती दा दिवस होणा महान, विसाखी विसाख वाली वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। विसाखी कहे पंज प्यारे

नहाते साढे दस, दस दस वक्त सुहाईआ। मैं खुशीआं विच पई हस्स, हस्स के खुशी बणाईआ। पुरख अकाल वल्ल ल्या तक, तक्कया चाँईं चाँईंआ। सब दा पूरा करीं हक, हकीकत वेखीं थांउँ थाँईंआ। मेरी लेखे लाउणी रत्त, रत्ती रत्त तेरी झोली पाईआ। मेरा पूरा करीं तप, तपीशर हो के सीस निवाईआ। मेरा वेख लहिणा जप, जगजीवण दाते ध्यान लगाईआ। जिस वेले इक प्रविष्टा गया टप्प, टापूआं दा झगड़ा देणा मुकाईआ। पिछला लेखा करीं ठप्प, आपणा नाम मोहर लगाईआ। भगत भगवान दा नाता जोड़ना पक्क, आत्म परमात्म मेल मिलाउणा सहिज सुभाईआ। धुर दा प्रीतम बणना सच, सच स्वामी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। विसाखी कहे मेरी धार करीं न्यारी, निरवैर तेरी सरनाईआ। लेखा लिखण पंज लिखारी, पलँघीं बैठे सोभा पाईआ। जलधार वखावण पंज दरबारी, दर दरबारे सोभा पाईआ। इस आब दी आह हसन हुसैन सी मारी, रो के दिता सुणाईआ। जिस वेले प्यास बुझा ना सकी मुहम्मद दी चार यारी, याराना तोड़ ना कोए निभाईआ। उस वेले फ़रमान दिता खुद शहिनशाह सरकारी, पैग़ाम इक सुणाईआ। जिस वेले पैग़म्बरां तों बाद उन्हां दे अमाम दी आई वारी, वारस हो के फेरा पाईआ। फेर

१३११ तुहाडी प्यास बुझावां सारी, मेहर नज़र उठाईआ। रूह बुत दी करां दारी, दर्दी हो के दर्द वंडाईआ। युद्धां विच होण ना देवां ख्वारी, करबला रूप ना कोए बणाईआ। सिर्फ़ आत्मा परमात्मा बणा के पुजारी, पूजा इक्को इक समझाईआ। अमृत बख़्शां ठंडा ठारी, दीन मज़्हब दी वंड ना कोए वंडाईआ। किसे नाल ना करां ग़द्दारी, सांझा पीर इक्को नज़री आईआ। मज़्हब धार ना रखां दो धारी, इस्म आज़म इक समझाईआ। सति सच दी करां उसारी, नींह नाम वाली रखाईआ। धर्म दी धार फड़ तगारी, जगत दा चिक्कड़ लवां उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। विसाखी कहे मेरा पुराणा रिश्ता, रिश्ते दारां दयां जणाईआ। औह वेखो पैग़ाम दिन्दा जबराईल फ़रिश्ता, फ़र्श ज़िमीं उत्ते समझाईआ। संदेसा सुणो आहिस्ता आहिस्ता, बिन कन्नां रिहा जणाईआ। जिस ने सब नूं देणी शकिस्ता, शख़्सां दी शख़्सीअत देणी बदलाईआ। भगतां दा कामल करे निसचा, मुर्शद बेपरवाहीआ। इक्को नाम आपणा दस्से विरसा, जो जुग चौकड़ी जगत विच वरताईआ। जिस दी सदी चौधवीं बदल देणा फ़िरका, फ़िरका प्रस्ती दए मिटाईआ। ओह मालक आदी चिर का, चिरी विछुंने लए जुड़ाईआ। जिस दा रूप निराला निर दा, निरवैर इक अख्वाईआ। भगतां माण देवे घर थिर दा, थिर घर साचे आप टिकाईआ। नाता रखे पीआ पिर दा, प्रीतम अगम्म अथाहीआ। सृष्टी दृष्टी बदल देवे हिरदा, हरि हिरदा फोल फुलाईआ। जिस दा गेड़ा हुक्मे अन्दर गिड़दा, ना कोई रोके रोक रुकाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। विसाखी कहे ओह वेखो जल दे मटके, मटक नाल बैठे डेरा लाईआ। जेहड़े गोबिन्द पटने विच सी पटके, पाटल हो के खेल खिलाईआ। ओह मुहब्बत विच पिच्छे ना अटके, आपणी आसा रहे जणाईआ। साडा वायदा जिस वेले गोबिन्द दीन मज़्हब वैरी होए रत्त दे, रत्त रत्त नाल रंगाईआ। माण रहिणे नहीं पंज तत दे, तत्व तत सर्ब कुरलाईआ। लंगोट रहिणे नहीं धीरज यति दे, काम क्रोध लोभ मोह हल्काईआ। विचार रहिणे नहीं गुरमति दे, मनमति होए हल्काईआ। सहारे रहिणे नहीं परमेश्वर पति दे, पतीर्वत ना कोए अख्वाईआ। सब दे अन्दर होणे तपदे, सांतक सति ना कोए कराईआ। रसना जेहवा सारे होणे नाम जपदे, हिरदे सके ना कोए वसाईआ। दीन दुनिया भोग करने नेत्र अक्ख दे, नैण जगत ना कोए शरमाईआ। किसे नूं दर्शन नहीं होणे प्रतख दे, साख्यात वेखण कोए ना पाईआ। इष्ट बणने पथ्थर इट्ट दे, पुजारन होवे कूड़ लोकाईआ। मुल्ला शेख़ मुसायक होणे पिटदे, ग्रन्थी रोवण मारन धाईआ। बौहड़ी उस वेले मनूए होणे नहीं किसे दे टिकदे, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। फेर लहिणे देणे देणे पैणे इक्को पुरख अकाल दी चिट दे, जो चेते सब नूं दए कराईआ। ऐं जापदा सब दे हुक्म होणे मिट दे, अग्गे हो ना कोए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा
१३१२ हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। मटके कहिण साडे अन्तर पाणी जल, सति सच सुणाईआ। सानूं याद आउंदा करबले १३१२
२२ वाला थल, बौहड़ी दरोही तेरा नाम खुदाईआ। तेरे नूर ख़ाक विच गए रल, बिन आब हयाती सके ना कोए बचाईआ। २२
विछोड़ा सहि ना सके पल, पलक विच आपणा आप मिटाईआ। ओह इक्को कहि के गए गल्ल, संदेशा दिता नूर इलाहीआ। साडी दरोही साडी तोबा परवरदिगार सांझे यार वेखीं आपणयां भगतां सूफ़ीआं नाल करीं ना छल, कपटी रूप ना कोए बणाईआ। जिस वेले लोकमात धरनी धवल धौल उत्ते आवें चल, निहचल आपणा धाम सुहाईआ। किते निगाह ना बदलीं प्यारा ना बणीं माटी खल्ल, मज़्हबां विच ना वंड वंडाईआ। साडा सब दा मसला करना हल्ल, मसाइल तेरे हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। पाणी कहे मेरा मालक इक अबिनाशा, हरि करता वड वड्याईआ। मैं जिस दा दासी दासा, जुग जुग सेव कमाईआ। मैं चार जुग दा जाणां खुलासा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख वखाईआ। मैनूं अवतार पैग़म्बर गुरुआं वेख के आउंदा हासा, ताली दयां वजाईआ। की खेल प्रभू तमाशा, जुग जुग आपणा दिता वखाईआ। कोई मैदाने जंग विच आपणयां मुरीदां सिक्खां नूं मैनूं भर के दे ना सक्या विच ग्लासा, प्यास प्यास्सयां ना सक्या बुझाईआ। सारे देंदे गए दिलासा, सबर सबर दृढ़ाईआ। मैनूं इक गल्ल याद जिस

वेले गोबिन्द ने जुझार नूं किहा औह तक पुरख अकाल तेरा राखा, तेग़ बहादर दादा ध्यान लगाईआ। मैं वी उस प्रभू दा काका, नन्हे काके तैनूं उस प्रभू दी गोद टिकाईआ। फेर प्रेम दी रखीं आसा, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द ध्यान लगाईआ। मेरे साहिब साहिब अबिनाशा, वड तेरी बेपरवाहीआ। मैं इक्को बचन अगम्मा आखां, आख के दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच तेरी सरनाईआ। गोबिन्द किहा मेरी बन्दना इक अरदास, बेनन्ती सच सुणाईआ। आदि जुगादि तेरा खेल तमाश, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। की होया जे राम भेज्या विच बनवास, रावण राम खेल खिलाईआ। की होया जे गोपीआं पवाई रास, काहन घनईया कृष्न वड वड्याईआ। की होया जे पैग़म्बरां नूर कीता प्रकाश, अल्ला अलाही नूर प्रगटाईआ। की होया जे गुरुआं बख्शी दात, आपणे नाम दी साथों सिफ्त लई कराईआ। की होया जे दीनां मज़्बां वंड कराई जमात, शरअ शरअ विच्चों बदलाईआ। की होया जे तूं सब दा माई बाप, पिता पुरख अकाल नूर इलाहीआ। पर मेरी इक बेनन्ती मेरे साहिब तूं अजे इक नहीं कराया आपणा जाप, जगजीवण दाते तैनूं दिती वड्याईआ। मैं तैनूं सच दयां आख, साफ़ साफ़ दयां सुणाईआ। किसे नूं दिता मग्घ हयाते आब, किसे नूं अमृत चुलीआं नाल प्याईआ। मेरे मालक मेरी बेनन्ती तेरे चरणां पास, कँवल कँवल सरनाईआ। गोबिन्द किहा ओह तक अंधेरी रात, कलयुग रही डराईआ। झगड़ा वेख लै आपणयां ग्रन्थां काग़ज़ात, चार जुग दे शास्त्र करन लड़ाईआ। कोई भगत दिसे ना पारजात, पारब्रह्म तेरे विच ना कोए समाईआ। किसे दा रहिणा नहीं इत्फिाक, मुहब्बत विच ना कोए समाईआ। तेरे दर दा दिसे कोए ना चाक, चाकरी हक ना कोए कमाईआ। प्रभू ओह वेख की कहे मूसे दा कलाक, टक टक रिहा सुणाईआ। सदी बीसवीं दए ना कोए निज़ात, मेहर नज़र ना कोए तकाईआ। सदी चौधवीं मुहम्मद फोले खात, खाता आपणा रिहा दृढ़ाईआ। प्रभू तेरे नाम बिना तेरे प्यार बिना सारी दुनिया होणी वफ़ात, कायनात साचा काअबा नज़र किसे ना आईआ। उस वेले किरपा करीं आप, आप आपणा संग निभाईआ। जन भगतां अन्दर खोल्ह के आपणा ताक, पड़दा देणा उठाईआ। सच सति दा लै के ग्लास, अमृत जाम देणा प्याईआ। अन्त तक उन्हां नूं फेर ना लग्गे प्यास, तृष्ना तृखा तृप्त देणी कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। विसाखी कहे पंजे मंजे रहे आख, कूक कूक सुणाईआ। वेख्या दीन दुनी इख़लाक, सृष्टी दृष्टी फोल फुलाईआ। रिहा कोए ना पाक, पवित्र रूप ना कोई दरसाईआ। पूरा होया भविक्खत वाक, वाक्या वक्त नाल दए गवाहीआ। तकी अंधेरी रात, सति सच चन्द ना कोए चमकाईआ। बख्शे कोए ना नाम दात, ख़ाली झोली ना कोए भराईआ। पुरख अकाले हुक्म दिता आप, शब्दी

शब्द शब्द शनवाईआ। पंज लिखारी फड़ो कलम दवात, काग़ज़ शाही नाल मिलाईआ। हुक्म लिखो साफ़ साफ़, संदेसा धुरदरगाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करनी नास, सतिजुग सच सच प्रगटाईआ। पिछली पिच्छे रह गई वाट, अग्गे आपणा पन्ध समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा इक सुणाईआ। विसाखी कहे मेरा इक विश्वास, विश्व दे मालक ध्यान लगाईआ। सब दी पूरी करीं आस, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। लेखे लाउणा भगतां स्वास स्वास, साह साह आपणे विच मिलाईआ। साचे मण्डल वखाउणी रास, सुरती शब्द गोपी काहन बणाईआ। जो अवतार पैग़म्बर गुर गए आख, आख़र पूरा देणा कराईआ। खुशीआं वाला होए विसाख, वसल मेले नूर इलाहीआ। साचे भगतां देणी शाबास, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। झगड़ा मेटणा ज़ात पात, दीन मज़्हब ना वंड वंडाईआ। इक्को माण बख़्शणा मात, इक्को गृह देणा वखाईआ। धुर दा सज्जण बण के देणा साथ, सगला संग निभाईआ। जन्म जन्म दी मेटणी वाट, कर्म कर्म दा पन्ध चुकाईआ। पिछला पूरा करना घाट, घाटा अवर रहे ना रहे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तेरी वड्याईआ। विसाख कहे मेरा प्रविष्टा सुध, जन भगतां प्रकृती दए बदलाईआ। श्रेष्ट करे बुध, मति मतांतर डेरा ढाहीआ। अमृत रस देवे दुद्ध, सति सतिवादी दया कमाईआ।
१३१४ कलयुग अन्तिम लेखा रिहा पुज्ज, पूजा अवर रहे ना राईआ। पुरख अकाल भेव खोल्हे गुज्झ, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। १३१४
२२ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी सार पावे सुध, सार शब्द आपणा हुक्म वरताईआ। २२

✪ २ विसाख शहिनशाही सम्मत ७ रूड़ सिँघ धुंन ढाया अवल्ला, जगत सिँघ घणी एकी बांगर, सरदूल सिंघ, बालचिन्द्र, हरभजन कौर भगवान पुरा, हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

सतिगुर शब्द धार जग मीता, मित्र प्यारा अगम्म अथाहीआ। जिस कलयुग विच सतिजुग बदली रीता, सति धर्म दी कार कमाईआ। मेल मिलाए नाल त्रैगुण अतीता, त्रैभवन धनी नाल जुड़ाईआ। तन करे ठांडा सीता, मन मनसा पूर वखाईआ। सतिगुर हो के वसे चीता, गृह मन्दिर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सतिगुर शब्द गहर गम्भीर, बेपरवाह वड वड्याईआ। जन भगतां लेखे लाए तन सरीरा, मन मनसा आपणे नाल मिलाईआ। सीस बंधाए धर्म धार दा चीरा, चेरा गुरमुख वेख वखाईआ। सचखण्ड दवार

जणाए डेरा, थिर घर आपणा रंग रंगाईआ। नाम जपा के तेरा मेरा, आत्म ब्रह्म इक दरसाईआ। इक्को रंग रंगा के सञ्झ सवेरा, घड़ी पल वंड ना कोए वंडाईआ। कलयुग अन्तिम बन्ह के बेड़ा, नईया नौका पार लँघाईआ। भाग लगा के काया खेड़ा, घर मन्दिर दए वड्याईआ। आवण जावण चुकाए गेड़ा, चुरासी विच ना कोए भवाईआ। जन भगतां उत्ते करे मेहरा, मेहरवान होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त कन्त भगवन्त करे हक नबेड़ा, लेखा जन्म कर्म रहिण कोए ना पाईआ।

✪ २० विसाख शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल
माझा गुरदासपुर संगत दे वाढी कर के जाण समें ✪

गढ़ी चमकौर दए ब्याना, बेनन्ती रही जणाईआ। शब्द संदेशा दिता श्री भगवाना, हरि करते बेपरवाहीआ। गोबिन्द तेरा वेख्या खण्डा खड़ग किरपाना, तीर तरकश नाल वड्याईआ। औह वेख कलयुग बदलदा ज़माना, ज़िमीं असमानां नैण उठाईआ। पुरख अकाला होणा प्रधाना, शब्द प्रधानगी तेरा रूप दरसाईआ। जोती जोत पहरना जामा, नूर नूर विच्चों प्रगटाईआ।
१३१५ खेल खिलाउणा दो जहानां, ज़िमीं असमानां पड़दा लाहीआ। देवे हुक्म अगम्मी फ़रमाना, फ़ुरना फ़ुरन्यां विच्चों बदलाईआ। १३१५
२२ लख चुरासी मज़्बी धार वेखे इन्साना, नव सत्त खोज खुजाईआ। खेले खेल मर्द मर्दाना, परवरदिगार नूर इलाहीआ। सदी २२
चौधवीं मुहम्मद तके निशाना, ईसा आपणी अक्ख उठाईआ। झगड़ा पैणा अञ्जील कुराना, कुरह कायनात दए दुहाईआ। फिरे दरोही वेद पुराणा, पुरीआं लोआं समझ कोए ना आईआ। तेरा लेखा वेखण सूरबीर बलवाना, लख चुरासी ध्यान लगाईआ। तेरा प्यार शस्त्र मेरा नाम खण्डा धर्म दी धार रूप धरे किरसाना, किरसी गुरमुख नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गढ़ी चमकौर कहे गोबिन्द दिता उत्तर, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण ध्यान लगाईआ। पुरख अकाले मैं शब्दी धार तेरा पुत्र, पूत सपूते गुरमुख आपणे लवां प्रगटाईआ। भेव चुकावां दूआ दुतर, दुतीआ भाउ रहिण कोए ना पाईआ। कौल इकरार कीता कदे ना जावां मुकर, मुकर्र तेरा हुक्म वेख वखाईआ। लेखे लावां रविदास वाले टुक्कर, टुकड़े भगतां लेखे पाईआ। लालो दा लहिणा चुकावां नानक वाला कुक्कड़, जो कूक कूक सुणाईआ। ईसा मूसा नेड़े हो के मैनूं पुछण, मुहम्मद नैण अक्ख उठाईआ। सदी चौधवीं जिस वेले वेला आया ढुकण, बीस बीसा नाल मिलाईआ। सब दी औध अन्तिम होवे पुज्जण, पूजा नज़र कोए ना आईआ। कलयुग दा

दीपक आवे बुझण, नौ खण्ड पृथ्मी अंधेरा छाईआ। उस वेले ब्यासों पार माझे वाले करन युद्धण, अमृतसर गुरदास पुर नाल मिलाईआ। फेर चारों कुण्ट पंखेरू उडण, पंछी पंखी देण दुहाईआ। पुरख अकाल बदली करन वाला आए जुगण, जुग दा मालक वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गोबिन्द किहा जिस वेले समां गया पुज, सतिगुर शब्दी खेल खिलाईआ। अमृतसर गुरदास पुर करे प्रेम प्यार दा युद्ध, दाती किरसाणा वाली हथ्थ उठाईआ। धरनी धरत धवल उत्ते जिस वेले खुशीआं विच भरे रुग्ग, मुट्ठी मुट्ठी नाल मिलाईआ। मुहम्मद किहा मैनूं एह रिहा सुज्झ, सहिज नाल सुणाईआ। मेरा उम्मती फिट जाणा दुद्ध, आबेहयात मुख ना कोए चुआईआ। ईसा किहा हज़रतां दे हज़रत सब दी उलटी होवे बुध, बिबेक नज़र कोए ना आईआ। मूसा किहा मैं की दस्सां कुछ, कहिण दी लोड़ रहे ना राईआ। इयों जापदा जिवें सब दा बेड़ा जाणा डुब्ब, डुब्बयां पार ना कोए लगाईआ। क्यों जन भगतां वाढी करदयां बक्करे बुलाउणे नाले मारनी गुभ्भ, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। अमृतसर गुरदास पुर जगत लड़ाई दा बन्नू देण मुढ, जड़ जगत वाली हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। गोबिन्द शब्द कहे मैं वेख्या बिन नैणां अगम्मा सीन, दिवस रैण ध्यान लगाईआ। भगतां मन्नी भगवन दी ईन, सिर सक्या ना कोए उठाईआ। त्रैलोकी दा झगड़ा खेल कीता दिन तीन, त्रैगुण दी खेल दिती खिलाईआ। कुछ लेखा जन भगतो तुहाडे नाल चीन, चिन्ता सब नूं दए जणाईआ। तुहाडा लेखे लग्गा रुक्खा सुक्खा खाण पीण, प्यार मुहब्बत तुहाडी दरगाह सच टिकाईआ। तुहाडा वासा उस थाँ जिथ्थे धरनी ना ज़मीन, इक्को वाहिद अलाह यामबीन, मुफ़लिस नज़र कोए ना आईआ। गढ़ी चमकौर नूं पूरा दवाउणा सी यकीन, भरोसा दिता बणाईआ। गोबिन्द दी शब्द वाली तरमीम, तख्ता ज़िमीं असमान उलटाईआ। वेख्यो कोई अन्दरों ना रिहो ग़मगीन, चिन्ता कम्म किसे ना आईआ। तुहाडा प्रभू दे नाल प्रभू दा दीन, मज़्बां वंड ना कोए वखाईआ। एह लेखा गोबिन्द दा प्राचीन, परम पुरख सहिजे पूर कराईआ। खुशीआं नाल सब ने जाणा बण के नवें नवीन, जन्म जन्म विच्चों बदलाईआ। तुहानूं गढ़ी चमकौर कहे आफ़रीन, गोबिन्द पुश्त पनाह हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त जन भगतां मुहब्बत विच सदा अधीन, आहला अदना अदना आहला आपणा रूप बणाईआ।

✪ ३० विसाख शहिनशाही सम्मत ७ गुरबख्श सिँघ दे अन्तिम समें पगड़ी दा विहार हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

तीह विसाख कहे गोबिन्द लेख अगम्मी लिखा, शब्दी धार धार विच्चों प्रगटाईआ। खुशी विच किहा वाह धुर दे सिखा, गुरमुख तेरी वड वड्याईआ। जिस दा काला लेख होवे चिट्टा, दुरमति मैल रहे ना राईआ। राह तके सिँघ पाल पाल पिता, सचखण्ड सच ध्यान लगाईआ। धर्म दी धार मेरा दुलारा आवे निक्का, निक्यों वड्डी मिले वड्याईआ। जगत जिज्ञासूआं छडे हित्ता, ममता मोह ना कोए रखाईआ। दरगाह साची पाए हिस्सा, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। जगत जहान समझणा मिथा, मिथ्या दिसे कूड़ लोकाईआ। हरिजन अन्तर आत्म पूरी होवे इच्छा, परमात्म मेल सहिज सुभाईआ। सच दी सति पई भिच्छा, वस्त अमोलक इक वरताईआ। पूरब लहिणे दा लेखा दित्ता, राम रामा दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे वेखो खेल पुरख अबिनाशी, हरि करता आप कराईआ। जो आदि जुगादि वेखे खेल तमाशी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा वेस वटाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां करे बन्द खुलासी, खुलासा धर्म धार समझाईआ। पूरब जन्म दी पूरी करे आसी, आशा मन विच्चों बदलाईआ। जिस दी शहादत देवे गोबिन्द दी बदली होई विसाखी, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। जन भगतां मिले अगम्मी दाती, दाता दानी आप वरताईआ। जगत तृष्ना पंज तत तुटे नाती, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश संग ना कोए वखाईआ। आत्मा परमात्मा परमात्मा आत्मा बणे साथी, शब्द मिलावा सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेल लए मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुरबख्श सिँघ गुर शब्द धार दा फाह, फाँसी जगत ना कोए लटकाईआ। सति धर्म दा साचा राह, सति स्वामी अन्तरजामी दिता दृढ़ाईआ। जिस आत्मा नूं डोबे ना कोए जल थल अस्गाह, समुंद सागर ना वहिण वहाईआ। चुरासी विच सके ना कोए भवा, राय धर्म ना दए सज़ाईआ। चित्रगुप्त लेखा ना सके वखा, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला दया रिहा कमा, मेहरवान महिबूब मेहर नज़र उठाईआ। जिस विसाखी बदल के मार्ग दिता ला, विसाख दा अन्त अन्त विसाख विच समाईआ। गुरमुख साचा सेवा ला, सेवक सेवा आपणे विच टिकाईआ। हरि भगत दवारे दए टिका, टिक्का मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। तेई अवतार बणे गवाह, शहादत शब्द शब्द भुगताईआ। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद करो दुआ, बिन कलमा कलमा गाईआ। नानक गोबिन्द जोती धार करो वाह वाह, वाहवा वाहिद तेरी बेपरवाहीआ। जिस मार्ग भगत भगवान दिता ला, दीन दुनी दी रीती दिती बदलाईआ।

जन भगतां लख चुरासी विच्चों उठा, निरन्तर अन्तर आपणा मेल मिलाईआ। सच दी रीती इक चला, चार वरन अठारां बरन दिती वड्याईआ। दीन मज़्हब दा झगड़ा दिता मुका, ज़ात पात रहे ना राईआ। सप्तस ऋषीआं लेखा पूरा दए करा, जो आपणा पूरब आए तकाईआ। रविदास चमारे लहिणा देणा झोली पा, चोली तन दए बदलाईआ। हरिजन हरिभगत गुरमुख गुरसिख सीस दस्तार दए बंधा, बन्धन आवण जाण कटाईआ। गुरबख्श सिँघ दे सिर ते दयो टिका, लेखा अग्गे रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैग़म्बर निरगुण धार मारो झाती, बिन नैणां नैण उठाईआ। सचखण्ड दवारे दरगाह साची खोल्ह लओ ताकी, पर्दा पर्दा रहे ना राईआ। धर्म दी धार खेल तक्को जो करे पुरख अबिनाशी, अबिनाशी करता बेपरवाहीआ। जिस दी मण्डल ब्रह्मण्ड खण्ड पाउंदे रासी, पुरी लोअ गोपी काहन नाच नचाईआ। ओह सब दी पूरी करे आसी, आशा तृष्ना रहे ना राईआ। जन भगतां करे बन्द खलासी, बन्धन तोड़े धुरदरगाहीआ। मंज़ल चाढ़ आपणी घाटी, दर दवारा इक सुहाईआ। भगतां नाल भगत मिलावे सचखण्ड दवार साचे साथी, जिथ्थे जम्मण वाली कोए ना माईआ। जिथ्थे इक्को नूर जोत प्रकाशी, नूर नुराना डगमगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु तीह विसाख ख़ुशीआं विच सारे करन हासी, ताली बिन हथ्थां रहे वजाईआ। तेरी जोत प्रभू तूंहे जाती, जागरत जोत तूंहे नज़री आईआ। जिस आवण जावण पन्ध मुकाया रही कोए ना वाटी, वटना मलया चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। आत्मा कहे मैं गुरबख्श सिँघ दा छड्डुया सरीर, तन माटी आई तजाईआ। मैनूं पहलों मिल्या कबीर, जो कबरां तों बाहर बैठा सोभा पाईआ। फेर मिल्या शहिनशाह पीरां दा पीर, पातशाह नूर इलाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव जिस दी तस्वीर, जिस नूं तसव्वर कर सके ना कोए विच लोकाईआ। आप बैठा गहर गम्भीर, गवर आपणा आसण लाईआ। जोती प्रकाश बेनज़ीर, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। मेरी धार ना होई दिलगीर, अन्तर अन्तर वज्जी वधाईआ। मैनूं इयों जापया ज्यों मैं प्रभ दा बच्चा ख़ारशीर, नन्हा नूर नूर इलाहीआ। मैनूं कोई ना कहे माढ़ी एहदी तकदीर, मानस जन्म गया गंवाईआ। मेरी जगत जहान विच्चों बदल गई ज़मीर, ज़िमीं ज़मां असमान दए गवाहीआ। मैं मालक ख़ालक प्रितपालक तक्कया जिस दा लेखा शाह हकीर, शहिनशाह इक्को अगम्म अथाहीआ। जिस दे दर उत्ते द्वैती वाली नहीं लकीर, वंडन वंड ना कोए वंडाईआ। उथे ख़ुशी विच सूफ़ी सन्त फ़कीरां निरधार बणी रहे भीड़, जोती जोत जोत विच समाईआ। घराना अच्छा मेहरवाना अच्छा श्री भगवाना अच्छा जिथ्थे ना कोई शाह ना कोई अमीर, ग़रीब नज़र कोए ना आईआ। मैं गोबिन्द दी रीती जगत वाली

पीले वस्त्र पहने चीर, रूप शहीदां वाला बणाईआ। लाल रंग दा वस्त्र मेरे उत्ते पाया अख़ीर, जो चमकौर गढ़ी विच गोबिन्द वर दिता चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे गोबिन्द दी धार लाल रंग दा पड़दा, पंज तत लए लुकाईआ। जन भगतां आत्मा मेला परमात्म घर दा, दूजे घर ना कोए चतुराईआ। सतिगुरु किरपा नाल जाए चढ़दा, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा निरगुण निरगुण ढोला पढ़दा, अक्खरां वाली ना कोए पढ़ाईआ। पिछला लेखा जगत जहान छडदा, नाता कूड़ रहे ना राईआ। जन भगत जननी दी कुख्ख जन्मया कदे ना मरदा, मरन विच कदे ना आईआ। ओह मालक उस दर दा, जिथ्थे दर दरबारी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा; आप खुल्हाईआ। गुरबख्श सिँघ कहे मेरा तन सरीर झूठा, सच प्यार ना कोए कमाईआ। काया माटी ठूठा, हड्ड मास नाड़ी नाल सुहाईआ। जेहड़ा मात गर्भ लटक्या पुट्ठा, दस दस मास तपाईआ। मैनूं खुशी मेरा पुरख अकाल दीन दयाल मेरे उत्ते तुट्ठा, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। मेरे बन्न्ह के रुमाल नाल गुट्टा, तिन्न गंढां दितीआं पवाईआ। मैं दरगाह साची सच दवारे जा के सुत्ता, सुख आसण सोभा पाईआ। जिथ्थे इक्को परम पुरख दी रुता, दूजी रुत नज़र कोए ना आईआ। मेरी प्यार दी नमस्ते कदे ना मेरीए माता रोईं कहि के हाए मेरया पुत्ता, दु:ख विच हौका ना कदे भराईआ। मेरा जगत जहान लेखा चुक्का, छडी कूड़ लोकाईआ। मैनूं शब्दी हुक्म होया तूं नौं वार पढ़ दो तुका, तूं मेरा मैं तेरा इक्को नाम वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला दए मिलाईआ। गुरबख्श सिँघ दी आत्मा कहे मेरी वेखो खुशहाली, खुशीआं विच जणाईआ। मेरी सतिगुर शब्द भरी दलाली, विचोला बणया गोबिन्द माहीआ। नाता जुड़या नाल जोत अकाली, जो अकल कलधारी इक अख्वाईआ। जिस दे दर ते अवतार पैग़म्बर गुर सवाली, विष्न ब्रह्मा शिव बैठे झोलीआं डाहीआ। जन भगत सुहेले धर्म दी धार वजावण ताली, बिन हथ्थां ताल बणाईआ। धन्नभाग जे फल लग्ग गया पाल सिँघ दी डाली, माता बिशन कौर वड्याईआ। जिस दे मस्तक चढ़ जाए लाली, नूरी चन्द चमकाईआ। हरिसंगत नूं मार्ग दस्से सुखाली, सहिजे दए बतलाईआ। संसार दा नाता झूठा जंजाली, मुहब्बत मोह कम्म किसे ना आईआ। जिस दी आत्मा उस संभाली, जो सम्बल बैठा डेरा लाईआ। जिस दा दवारा बिना भगतां कदे ना होवे ख़ाली, जन भगत बैठे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच सच विच समाईआ। सरीर कहे मेरा पंज तत दा नाता, नाता जगत वाला जणाईआ। मेरी आत्मा दा मालक पुरख बिधाता, जिस नूं पुरख अकाल

कहि के सारे गए गाईआ। जो जुग जुग भगतां पुछे वाता, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। एथे उथे बण के पिता माता, पतिपरमेश्वर गोद उठाईआ। जगत नाता तोड़या भैण भ्राता, भगत सुहेले लए मिलाईआ। जिथ्थे इक्को जोत ते इक्को जाता, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को सेज इक्को खाटा, इक्को आसण सोभा पाईआ। इक्को मंज़ल इक्को वाटा, इक्को पन्ध रिहा जणाईआ। इक्को नूर प्रकाश अगम्मी लाटा, ज़हूर ज़हूर विच समाईआ। बण के साहिब अलखणा अलाखा, अलख अगोचर रिहा दृढ़ाईआ। जन भगतो भगतां दी रीती बदल के आया विसाखा, विश्व दा लेखा दए समझाईआ। सब ने मन्नणा इक प्रभू दा आखा, जो मालक धुरदरगाहीआ। जिस नूं झुकदे त्रैलोकी नाथा, राम रामा सीस झुकाईआ। पैग़म्बर गुर गाउंदे गाथा, सिफ्ती सिफ्त सालाहीआ। सो साहिब पुरख समराथा, हरि करता वड वड्याईआ। जो भगतां होवे राखा, रक्षक हो के वेख वखाईआ। खुशी नाल खुशी विच मिलाया पाल सिँघ दा पालया होया निक्का जेहा काका, निक्का निक्कयां विच्चों उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, देवणहार बेपरवाहीआ। गुरबख्श सिँघ आत्मा कहे मेरी सब नूं नमस्ते, नमो नमो सीस निवाईआ। जन भगतां खेड़े रहिणे वसदे, लोकमात उजड़ कदे ना जाईआ। सब ने दिन लँघाउणे खुशी विच हस्सदे, ग़मीं अन्दर ना कोए टिकाईआ। उस प्रभू दे दर्शन करने जिस दे मेले निज नेत्र अक्ख दे, लोयण अन्तर दए खुल्हाईआ। विछोड़े रहे ना वक्खरे वक्ख दे, मेला मिल्या सहिज सुभाईआ। जिस दी महिमा अवतार पैग़म्बर गुरु रहे दस्सदे, अक्खर अक्खरां नाल जुड़ाईआ। नाम कलमे रहे रटदे, ढोले गीत गोबिन्द दे गाईआ। ओह खेल परमेश्वर पति दे, पारब्रह्म प्रभ आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतो प्यारे बणिओ ना कदे रत्त दे, रक्त बूँद दा सरीर कम्म किसे ना आईआ। वणजारे बणिउ ब्रह्म मति दे, ब्रह्म विद्या लैणी अपणाईआ। जो आया सो गया नस्स के, लोकमात रहिण कोए ना पाईआ। जगत रैण वसेरा कट के, भज्जया वाहो दाहीआ। जुग जुग कोटां विच्चों जन भगत सुहेला ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश टप्प के, गगन गगनंतर पन्ध मुकाईआ। मिले जोत प्रकाश विच लट लट दे, जो पुट्ठे लटकणो लए बचाईआ। नाते रहिण ना काया मट्ट दे, गगरीआ काची कम्म किसे ना आईआ। लहिणे मुक गए अन बट दे, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। लेखे पूरे हो गए हकीकत हक दे, लाशरीक दया कमाईआ। सदी चौधवीं पैग़म्बर सारे हस्सदे, हस्स के रहे सुणाईआ। बिन निशान्यों तीर निशाने तकदे, तदबीर तकदीर नाल टकराईआ। उहनां हुक्म मन्नणे यक दे, जो वाहिद नूर इलाहीआ। जन भगतां लेखे मुकणे जन्म कर्म लहिणे पूरे होणे फक्क दे, फ़ैसला इक्को हक सुणाईआ। जेहड़े तन मिट्टी ख़ाक विच दब्ब दे, अग्नी नाल जलाईआ। वणजारे बण गए अल्ला रब्ब दे, वाहिगुरु नाल राम ओट रखाईआ।

अग्गे लेखे होणे सबब दे, सब दा भेव जाणे बेपरवाहीआ। जन भगतो शब्द अक्खर याद रखणे अज्ज दे, विसाख तीह दए गवाहीआ। भाग उच्चे होण उस यद्द दे, जिस यद विच मिले माण वड्याईआ। भगत भगतां नूं सदा रहिंदे सद्द दे, सचखण्ड बैठे राह तकाईआ। तुहाडे नालों विछोड़े होए अलग दे, तन वजूद संग ना कोए निभाईआ। झगड़े मुक गए शाह रग दे, शाहरग दे उत्ते मिल्या शहिनशाह बेपरवाहीआ। जिस नूं कोटन कोटि कोटी रहे लभ्भदे, खोज्जयां हथ्थ किसे ना आईआ। ओह भण्डारे देवे खुशी वाली गद गद दे, गदागर तों जिस ने घर वाले दिते बणाईआ। कदे बणे ना रिहो प्यारे मास नाड़ी हड्ड दे, पिंजर कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा मालक इक इलाहीआ। सतिगुर शब्द कहे शब्द शब्द प्यारा, प्रेमी प्रीतम हो के दयां जणाईआ। गुरबख्श सिँघ दी माता खुशीआं नाल गल विच पा दे हारा, बिशन कौर विष्न ब्रह्मा शिव वेखण ध्यान लगाईआ। बिना अक्खां तों तकण तेई अवतारा, की अवतर आपणी कार कमाईआ। पैग़म्बर सजदयां विच सारे कहिण वाहवा परवरदिगारा, बेपरवाह तेरी बेपरवाहीआ। गुर दस कहिण की गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द कमाए कारा, करनी करता आपणा हुक्म वरताईआ। भगत दवार विच भगतां दी सदा रहे जैकारा, जै जै कार ख़लक खुदाईआ। गुरबख्श सिँघ दा खुशीआं विच करयो संस्कारा, सिसकी विच हौका लैण कोए ना पाईआ। जिस दा लेखा सदा रहे जुग चारा, जुग चौकड़ी राह तके चाँईं चाँईंआ। पंज गुरमुख उठ के पंज लगा दयो जैकारा, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुगा जुगन्त नित नवित जन भगतां करे निरगुण निरगुण हित, सरगुण सरीर बेनज़ीर नज़र तों ओहले सब दे दए कराईआ।

✪ पहली जेठ शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल रात नूं ✪

सतिगुर शब्द कहे विसाख लँघया, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जिस जन भगतां चोला रंगया, रंगत चाढ़ी अगम्म अथाहीआ। सच सिंघासण निमस्कार कर पलँघया, बिन पावा चूल सीस निवाईआ। तेरा खेल सूरे सरबंगया, हरि करते वेख वखाईआ। जो गोबिन्द दान मंग्गया, दाता हो के दिता वरताईआ। अग्गे लेखा पूरा करना भुक्खा नन्गया, ग़रीब ग़रीबां होणा सहाईआ। सति सरूपी अस्व तंग लैणा कस्या, कासद देणा नाम दृढ़ाईआ। कलयुग कूड़ कुकर्म वेखणा धंदिआ, धरनी धरत धवल धौल खोज खुजाईआ। गुरमुख रहे ना कोए नेत्र अंध्या, अंध अज्ञान देणा मिटाईआ। लख चुरासी वेखणा

मानस मानुख मानव बंदिआ, बन्दगी बन्दना खोज खुजाईआ। तेरा खेल प्रभू अचंभिआ, अचरज लीला देणी वरताईआ। पैग़म्बर चुक्की फिरन तंबिआ, तोबा तेरा नाम ख़लक खुदाईआ। अवतार वेखण खेल वरभंडया, वरभण्डी ध्यान लगाईआ। सतिगुर चढ़ के पौड़ी डंडया, डण्डावत तकण थांउँ थाँईंआ। जगत जहान होया रंडया, आत्म परमात्म कन्त सुहाग ना कोए हंढाईआ। रस रिहा ना अमृत वेले सँध्या, सिन्ध सागर रूप ना कोए जणाईआ। सब दा लेखा होया मंदिआ, मंदभाग दिसे लोकाईआ। ओह कलयुग तक कंढया, कन्ढी बैठा ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस निवाईआ। विसाख कहे मेरा वक्त गया बीत, बेपरवाह दिती वड्याईआ। मैं तक्कया त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी धुरदरगाहीआ। जो आदि जुगादी बदले रीत, बदलणहार इक अख्वाईआ। जिस झगड़ा मिटाउणा मन्दिर मसीत, काअब्यों परे करे पढ़ाईआ। लख चुरासी बदल देणी नीत, नीतीवान इक हो आईआ। साचे नाम दी दस्से हदीस, हरि करता नूर इलाहीआ। मालक बण के धुर जगदीश, जगदीश्‍र हुक्म वरताईआ। इक्को छत्र झुल्ले प्रभ दे सीस, दूजा नज़र कोए ना आईआ , आत्म परमात्म ढोला गाउंणा सब ने गीत, गहर गम्भीर करे पढ़ाईआ। झगड़ा मिटा के हस्त कीट, ऊचां नीचां रंग रंगाईआ। शब्द विचोला बण के बीच, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं आसा मनसा पूरी कर उम्मीद,

लेखा सब दा झेली पाईआ। अग्गे इक्को नाम कलमे दी कर तमहीद, सिफ्त सिफ्तां विच्चों सालाहीआ। शब्दी हुक्म दी कर ताकीद, तबीअत सब दी दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दरगाह साची हुक्म वरताईआ। विसाख कहे मेरा अन्त अख़ीर, आख़र दयां दृढ़ाईआ। मेरा मालक इक दस्तगीर, जो दस्त भगतां नाल मिलाईआ। जिस दी मंज़ल बेनज़ीर, नज़रीआ सब दा दए बदलाईआ। जुग चौकड़ी बदल देवे तकदीर, तदबीर आपणी इक समझाईआ। जो होका दे के गया कबीर, काअब्यों परे सुणाईआ। सो खेल करे गुणी गहीर, गहर गवर हरि रघुराईआ। जिस दी नज़र ना आए कोए तस्वीर, मुसव्वर तसव्वर ना कोए कराईआ। ओह बदलण लग्गा सब दी ज़मीर, ज़र्रा ज़र्रा खोज खुजाईआ। जिस दा नाम खण्डा शमशीर, शरअ दा झगड़ा दए गंवाईआ। इक्को रंग रंगाए शाह हकीर, हकीकत आपणी इक समझाईआ। लेखा रहे ना ग़रीब अमीर, अमरापद इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। विसाख कहे ओह तक्को जेठ अगम्मा चढ़दा, आपणी लए अंगड़ाईआ। जो तूं ही तूं ही ढोला पढ़दा, आत्म परमात्म राग अलाईआ। भेव खुलाए अगम्मी घर दा, गृह पड़दा आप चुकाईआ। जिथ्थे खेल इक्को अगम्मी हरि दा, नर नरायण नूर इलाहीआ। ना जन्मे ना मरदा, मर जीवत ना रूप

बदलाईआ। दीपक प्रकाश हो के बलदा, बलधारी इक अख्वाईआ। जो मालक जल थल दा, महीअल आपणा हुक्म वरताईआ। उस दा हुक्म कदे ना टल्दा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी लख चुरासी छलदा, अछल छलधारी आपणा भेस वटाईआ। जिस लहिणा देणा पूरा करना बलि दवारे बावन बलि दा, बलधारी बेपरवाहीआ। ओह खाता वेखे कलयुग कल दा, कलि कल्की वेस वटाईआ। जो सच सिंघासण आसण इक्को मल्लदा, सम्बल बैठा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। जेठ कहे मैं खुशीआं दे विच आया, आगमन विच भगतां खुशी बणाईआ। लेखा तोड़ना त्रैगुण माया, त्रैगुण अतीते नाल जणाईआ। भेव खुल्हाउणा जो सब दा दाई दाया, दीन दुनी दा मालक नूर इलाहीआ। जिस दा भेव किसे ना पाया, बेअन्त कहि के गए गाईआ। सो निरगुण नूर जोत करे रुशनाया, शब्द शब्दी डंक वजाईआ। जिस नूं सिफ्तां विच चार जुग दे शास्त्रां गाया, अक्खरां नाल कीती वड्याईआ। ओह मालक ख़ालक प्रितपालक नूरी नूर नूर कर रुशनाया, जोती जोत डगमगाईआ। ओह लेखा जाणे सृष्ट सबाया, सृष्टी दृष्टी फोल फुलाईआ। झगड़ा मेटे पंज तत काया, चम्म दृष्टी दए बदलाईआ। जिस दा ढोला सोहला गीत निरगुण सरगुण सब ने गाया, सो पुरख परमात्म निरगुण आत्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप

१३२३
२२

हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे चढ़या महीना जेठ, जेठा वड वड्याा। जिस लेखा वेखणा जगत जिज्ञासू सेठ, चारों कुण्ट खोज खुजाया। भन्न वखाउणे कूड़े रेठ, कूड़ी क्रिया मेट मिटाया। हरिजन जन भगतां करना हेत, हितकारी रूप दरसाईआ। प्रभ दर्शन कराए नेतन नेत, निज नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाया। जो आसा रख के गया दस दशमेश, दहि दिशा पर्दा दए चुकाया। निगह मारन ब्रह्मा विष्न महेष, गणपति गणेश ध्यान लगाया। जिस ने कलयुग विच सतिजुग बदल देणी रेख, ऋषी मुनी समझ कोए ना राया। भाग लगा के सम्बल देस, देस देशांतरां खोज खुजाया। जो मालक आदि अन्त हमेश, हरि सतिगुर वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप चढ़ाया। जेठ कहे मेरा रंग मजीठा, प्रभ देवे माण वड्याईआ। जन भगतो मालक मिले इक अनडीठा, अनडिठड़ी कार कमाईआ। साढे तिन्न हथ्थ तपण ना देवे अंगीठा, अमृत मेघ इक बरसाईआ। तन वजूद करे ठांडा सीता, अग्नी तत दए गंवाईआ। अन्तर निरन्तर बदल के नीता, नीतीवान दए समझाईआ। परम पुरख सब ने रखणा चीता, चित विच ठगौरी रहे ना राईआ। आत्म परमात्म बख्शे प्रीता, प्रीतम हो के मेल मिलाईआ। झगड़ा मेट के मन्दिर मसीता, मन्दिर धुर दा दए वखाईआ। जिथ्थे मिले वड्याई ऊच नीचा, ज़ात पात ना कोए वंड वंडाईआ।

मज़्बां वालीआं ना कोए हदीसा, हज़रतां वाली ना कोए पढ़ाईआ। इक्को मेल जगत जगदीशा, जो जगदीश्र धुरदरगाहीआ। जिस नूं झुकदे पैग़म्बर मूसा ईसा, मुहम्मद सजदयां विच सीस निवाईआ। ओह सब दीआं बदल देवे नीता, नीतीवान दया कमाईआ। लेखा पूरा करे अठारां ध्याए गीता, गीत गोबिन्द इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता बेपरवाहीआ। जेठ कहे मेरी डण्डावत अगम्मी बन्दना, बिन बन्दगी सीस निवाईआ। प्रभ मालक इक बख़्शंदना, रहमत सच कमाईआ। जन भगतां देवे अनन्दना, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जिन सतिजुग तूं मेरा मैं तेरा दिता छन्दना, आत्म परमात्म राग दिता समझाईआ। दूसर दर कदे ना मंगणा, भिखारी हो ना झोली डाहीआ। जन भगतो प्रभू चाढ़े सदा सच दी रंगणा, रंगत इक्को नाम रंगाईआ। तन वजूद कदे ना होवे भंगणा, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। हरिजन बणा के धुर दे चन्दणा, चन्द नूर जोत करे रुशनाईआ। जिथ्थे धर्म राए कदे ना दंडणा, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। जूनीआं विच किसे ना वंडणा, चुरासी विच ना कोए भवाईआ। इक दवारे वंञणा, भज्जणा चाँईं चाँईंआ। माता कुख्ख फेर कदे ना जम्मणा, जोती जोत विच मिलाईआ। लेखे लावे पवण स्वामी दमणा, दामनगीर आप हो जाईआ।
१३२४ आपे बण के राम रमईआ रवणा, राम राम रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल १३२४
२२ साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। जेठ कहे प्रभ हुक्म सुणाया अगम्मी, अगम्म दयां दृढ़ाईआ। सतिजुग धार चलाउणी २२
नवीं, नव सत्त सति वड्याईआ। सब दा जाप बदलणा दमीं, स्वास स्वास विच्चों प्रगटाईआ। जगत दी हद्द तोड़नी बन्नी, हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। लेख धार पूरी करनी कन्नी, कन्ना गोबिन्द वाला दए गवाहीआ। जिस दी धार किसे ना जणी, जणेंदी बणे कोए ना माईआ। ओह सृष्टी दृष्टी वेखे अन्नी, अंध आत्म खोज खुजाईआ। सब दी कर्म कांड दी फोले कन्नी, कायनात दा पड़दा दए उठाईआ। गुरमुख आत्म वेखे नूर इलाही चन्नी, जिस नूं चन्द्रमा सीस निवाईआ। आत्म परमात्म नाता वेखे तनी, तामस तृष्ना दूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। जेठ कहे मैं आया नट्ठा भज्जा, भजन बन्दगी वेख वखाईआ। मैं वेख्या खब्बा सज्जा, सज्जण नज़र कोए ना आईआ। जगत जहान हद्दां दे विच बध्धा, बन्धन सके ना कोए तुड़ाईआ। शब्दी धार पड़दा किसे ना कज्जा, कज्जल नैण रहे कुरलाईआ। मैं घर घर अन्दर कीती गजा, दर दर वेख्या थांउँ थाँईंआ। बौहड़ी प्रभ दी चले कोए ना विच रज़ा, राज़क रिज़क रहीम नज़र किसे ना आईआ। दरोही सब दे सिर ते कूकदी कज़ा, लाड़ी मौत लए अंगड़ाईआ। मैनूं इयों जापदा चढ़दे लहिंदे सब ने चक्खणा मज़ा, जो मज़ाक करे ख़लक खुदाईआ। जिस दी समझ

१३२५
२२

सके कोए ना वजह, वजूहात ना कोए दृढ़ाईआ। प्रभ ने सब दी बदल देणी तबा, तबीअत दा तबीब नज़र कोए ना आईआ। उम्मत नबी रसूल कहिंदे हाए उफ रब्बा, रब्बी नूर नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। जेठ कहे मेरा धर्म दा बदल के आ गया चक्र, चक्रवरती देणे हिलाईआ। धर्म दी धार विच रहिण देवां कोए ना फक्कर, फ़िकरा हक ना कोए सुणाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद मुहम्मदीआं नाल लगाउणी टक्कर, टाकरा वेखणा चाँईं चाँईआ। चार यारी शरीणी वंडे गुड़ शकर, शुक्रिया करे बेपवाहीआ। जिस ने सदी चौधवीं दा वरका पलटणा पत्र, पत्रिका दए वखाईआ। जिस ने हिलाउणे पठाण लख सत्तर, बहत्तर नाल वड्याईआ। किसे दा चलणा नहीं कोई यतन, यथार्थ आपणी कार कमाईआ। सारे बैठे कन्ढी उत्ते पत्तन, वञ्झ मुहाणा दिस कोए ना पाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सदी चौधवीं सब नूं आवे मथण, नाम मधाणा कंध उठाईआ। कलयुग दी अन्तिम कहाणी कथा आपे आवे कथण, सतिगुर शब्द शब्द करे शनवाईआ। लेखा जाणे गोबिन्द धार पटने वाला पाटन, पतिपरमेश्वर नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जेठ कहे अवतार पैग़म्बर गुरु करो छेती, छत्रधारी नाल मिलाईआ। ओह वेखो पुरख अकाला सब दा बणया इक्को भेती, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। जिस ने मज़्हबां वाली दात तुहाडे जरीए मात वेची, बोली पंज तत कराईआ। उस ने अन्तिम जोत प्रगटाई उच्चेची, उच्च अगम्म अथाह आपणा हुक्म वरताईआ। सब नूं पावण वाला पेची, पेचीदा आपणी कार कमाईआ। ओह वेखो जोत निराली नूर नुरानी भेखी, भेखधारी बणया धुर दा माहीआ। जिस दा अवल्लड़ा इक्को वेसी, वेस अवल्लड़ा रिहा दृढ़ाईआ। जिस नूं कहिंदे जगत जगत परदेसी, जुग चौकड़ी खेल खिलाईआ। उस ने सब दी मेटणी शेख़ी, मुल्लां शेख मुसायक रहिण कोए ना पाईआ। जिस दी ख़ातर गोबिन्द दुलारे कीते भेंटी, भेंटा गया चढ़ाईआ। माछूवाड़े दी सेज गया लेटी, सथ्थर यारड़ा गया हंढाईआ। ओह खेल करे एकँकार एकी, इक इकल्ला कार कमाईआ। जन भगतां बख्श के धुर दी टेकी, टिक्के मस्तक नाम रमाईआ। दीन मज़्हब सब दी पूरी करे ठेकी, ठेका पिछला दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। जेठ कहे मेरा साहिब रंग रंगीला, रंग रतड़ा बेपरवाहीआ। जो भगतां बणे वसीला, वसल देवे नूर इलाहीआ। सति सच बणा कबीला, किबले अज़ खोज खुजाईआ। जिस ने बदल देणी तालीमा, गुर अवतार पैग़म्बर तुलबे देणे पढ़ाईआ। हुक्म दस्स के इक अज़ीमा, आलीज़ाह करे शनवाईआ। रीती रहिण नहीं देणी कोई कदीमा, कदीम दा मालक इक्को हुक्म वरताईआ। जन भगत कोई फिरन नहीं देणा वांग यतीमां, सिर आपणा

हथ्थ टिकाईआ। सदी चौधवीं अन्त अन्त कर देणी तरमीमा, हुक्म हुक्म विच्चों सुणाईआ। हरिजन रहे ना कोए ग़मगीना, ग़मखार हो के वेख वखाईआ। गुरमुख रहे ना कोए कमीना, कोझे कमले गले लगाईआ। इक्को माण देवे श्री भगवान नर मदीना, स्त्री पुरुष वंड ना कोए वंडाईआ। ज़रा खेल तक्कयो उत्ते ज़मीना, शरअ शरअ नाल टकराईआ। सब दा हक हकूक जाणा छीना, मालक नज़र कोए ना आईआ। कोटां विच्चों हरिजन होए विरला नग़ीना, जो नागरिक दिसे धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। जेठ कहे मेरी दूर दूर डण्डावत, बन्दन बन्दना सीस निवाईआ। मेरा साहिब सही सलामत, साहिब इक अख्वाईआ। जिस दा कलमा नाम न्यामत, देवे माण वड्याईआ। रूह बुत जिस दी अमानत, अमलां तों रहित दए कराईआ। शब्दी धार दे ज़मानत, जगत जहान होए सहाईआ। मुहम्मद कूक पुकारे बौहड़ी सदी चौधवीं अन्त अन्त आउणी क्यामत, क्यामगाह नज़र कोए ना आईआ। नबी नबीआं नाल करनी बग़ावत, रसूल रसूलां नाल टकराईआ। रहमत दी करे ना कोए सख़ावत, वस्त सति ना कोए वरताईआ। मैनूं इयों दिसदा मेरे परवरदिगार सांझे यार अन्त मेरी उहनूं इक्को वार देणी दावत, दाअवेदार रहिण कोए ना पाईआ। मेरा कलमा दे ना सके ज़मानत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। जेठ कहे उठ सत्त रंगे मार लै झाकी, सोहणयां लै अंगड़ाईआ। चौदां तबकां भन्न दे ताकी, ताकतवर नज़र कोए ना आईआ। जगत वेख लै बन्दे ख़ाकी, ख़ालस रूप ना कोए दरसाईआ। सब दा मनुआ होया आकी, अक्ल बुद्धी ना कोए चतुराईआ। प्रभ दी मंज़ल चढ़े कोए ना घाटी, घाटा दिसे थाउँ थाँईंआ। नीर वेख लै तीर्थ अट्ठ साठी, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रोवे मारे धाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले तक लै माठी, गुरु दवारे अक्ख खुल्हाईआ। साफ़ दिसे ना काया पंज तत पवित्र माटी, कूड़ी क्रिया ना कोए गंवाईआ। नौ खण्ड धर्म दी रही कोई ना हाटी, हटवाणा हट्ट ना कोए चलाईआ। झगड़ा पै गया ज़ात पाती, आत्म ब्रह्म ना कोए समझाईआ। सब नूं भुल्लया कमलापाती, ग्रन्थां उत्ते बैठे इष्ट बणाईआ। सतिगुर शब्द बणावे कोए ना साकी, जाम प्याला धुर मुख ना कोए चुआईआ। आत्म परमात्म जुड़या किसे ना नाती, नातवां होई लोकाईआ। प्रभ दा खेल तकणा इत्फिाकी, इत्फिाकीआ आपणा हुक्म वरताईआ। शब्द खण्डा ब्रह्मण्डां इक्को वखावे लाठी, भय भउ विच दृढ़ाईआ। शाह पातशाह शहिनशाह धुर दे अस्व मारे पलाकी, सोलह कलीआं आसण इक सुहाईआ। जिस दी कृष्न लिख के गया पाती, पत्रका इक दृढ़ाईआ। सो खेल करे पुरख अबिनाशी, हरि करता अगम्म अथाहीआ। चारों कुण्ट होणी अंधेरी राती, रुतड़ी जगत ना कोए महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

१३२६
२२

१३२७
२२

आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। डण्डा कहे मैं सो पुरख निरँजण बणाया मीता, मित्र बेपरवाहीआ। हरि पुरख निरँजण जाया इक अतीता, त्रैगुण तों बाहर सोभा पाईआ। एकँकार तक्कया अनडीठा, अनडिठड़ी कार कमाईआ। आदि निरँजण वेख्या ठांडा सीता, सांतक सति रिहा वरताईआ। अबिनाशी करता तक्कया जिस दी वक्खरी रीता, रीतीवान इक हो आईआ। श्री भगवान तक्कया जो आदि जुगादी मीता, मित्र प्यारा धुरदरगाहीआ। पारब्रह्म तक्कया जो सच दवार वसनीका, दरगाह साची सोभा पाईआ। सतिगुर शब्द तक्कया जिस ने जुग जुग बदलाई रीता, सतिजुग त्रेता द्वापर पिछला पन्ध मुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तक्कया जो गाउण प्रभू दे गीता, संसारी भण्डारी सँघारी आपणी सेव कमाईआ। जां कलयुग धार दी आसा तकी लख चुरासी अन्दरों मारे चीकां, सांतक सति नज़र कोए ना आईआ। भेव जाणे कोए ना जीव जी का, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। जिस पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझे यार दीआं करदे गए उडीका, अवतार पैग़म्बर गुरु भविक्ख्तां विच आए रखाईआ। सो सब दीआं पेशीनगोईआं दीआं करे तस्दीकां, शहादत शब्द गुरु भुगताईआ। पिछलीआं कीतीआं उत्ते मार के लीकां, लाईन अगली दए वखाईआ। नेरन नेरा आप दिसे नज़दीका, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जिस नूं किहा लाशरीका, शरक्त सब दी दए गंवाईआ। उस दे विच हक दी इक तौफ़ीका, तोहफ़ा नाम वाला दए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा मालक अगम्म अथाहीआ। जेठ कहे मैं फिरना चढ़दा लहिंदा, भज्जणा चाँईं चाँईंआ। ईसा मुहम्मद वेखणा खहिंदा, मूसा रंग रंगाईआ। जगत जहान मन्दिर वेखणा ढहिंदा, कूड़ा गढ़ रहिण ना पाईआ। अवतार गुर भाणा वेखणा सहिंदा, सिर सके ना कोए उठाईआ। लख चुरासी इक्को गाह वेखणा गहिन्दा, कूड़ क्रिया पीस पिसाईआ। मुहम्मद उभे साह वेख्या लैंदा, हाए उफ़ मेरी दुहाईआ। सदी चौधवीं कलमा कलमे नाल खहिंदा, नबी रसूल वेखण थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा मालक इक अख्वाईआ। धुर मालक इक अख्वाउंदा ए। नूर इलाही नूर चमकाउंदा ए। अल्ला अलाह रूप दरसाउंदा ए। अमाम अमामा वेस वटाउंदा ए। निरगुण नूर जोत रुशनाउँदा ए। सो पुरख निरँजण खेल खिलाउंदा ए। पारब्रह्म ब्रह्म समझाउंदा ए। तारा चन्द नीर वहाउंदा ए। सदी चौधवीं पन्ध कौण मुकाउंदा ए। सतिजुग सच राह तकाउंदा ए। कलयुग आपणी कल वरताउंदा ए। दोहां खेल कवण कराउंदा ए। जगत जहान वेख वखाउंदा ए। बेपहचान वंड वंडाउंदा ए। नौजवान हुक्म सुणाउंदा ए। शरअ शैतान मेट मिटाउंदा ए। दीन मज़्ब खण्ड खण्ड कराउंदा ए। आत्म ब्रह्म इक समझाउंदा ए। चम्म दृष्टी इष्टी दूर कराउंदा ए। सम भावना इक प्रगटाउंदा

ए। खुशी ग़मी दूर कराउंदा ए। निरगुण रुची निरगुण नाल जुड़ाउंदा ए। जन भगतां आत्मा कर के सुच्ची, सुच संजम इक समझाउंदा ए। भाग लगा के काया बुती, बुतखाने आप वडयाउंदा ए। हरिजन आत्मा रहे ना सुत्ती, सोई सुरती शब्द जगाउंदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाउंदा ए। सच दा हुक्म इक सुणाउंदा ए। दीन दयाल दया कमाउंदा ए। भेव अगम्मड़ा आप खल्हाउंदा ए। कलयुग कूड़ी क्रिया वेख वखाउंदा ए। सतिजुग साचा आप जगाउंदा ए। धरनी धरत धवल धौल सुहाउंदा ए। अर्श फ़र्श वेख वखाउंदा ए। ब्रह्मण्ड खण्ड पड़दा लाहुंदा ए। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आपणी कार कमाउंदा। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के छन्द, सोहँ सति सरूप समाउंदा ए। आत्म परमात्म बख्श के अनन्द, अनन्द अनन्द इक प्रगटाउंदा ए। अमृत धार वहा के गंग, सर सरोवर इक नुहाउंदा ए। जन भगतां जगत दवारे नौ लँघ, दस्म दुआरी सोभा पाउंदा ए। जिथ्थे ना कोई सूर्या ना कोई चन्द, मण्डल नूर आप रुशनाउँदा ए। आत्म सेज सुहा पलँघ, बिन पावा चूल वडयाउंदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाउंदा ए। सच करनी कार कमाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। जन भगत हो रखवाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाएगा। जिन्हां पोह ना सके काल, महाकाल सीस निवाएगा। राय धर्म पुछ

१३२८ ना सके सवाल, चित्रगुप्त अक्ख ना कोए उठाएगा। विष्न ब्रह्मा शिव खुशीआं विच वजाए ताल, तलवाड़ा इक्को नाम दरसाएगा। १३२८

२२ जन भगतां फल लगा के आत्म डाल, फुलवाड़ी धुर दा नाम महकाएगा। बूटा ला के मातलोक विच सिँघ पाल, पालणा कर के आप वखाएगा। जिस दा खेल होणा ब्रह्मण्डां खण्डां तों बाहर विशाल, विषयां वाली हद्द गंवाएगा। कलयुग विच सतिजुग बदल देणी चाल, चारों कुण्ट हुक्म सुणाएगा। गुरमुखां तोड़ के त्रैगुण जंजाल, जागरत जोत डगमगाएगा। राती सुत्तयां दिने जागदयां सदा करे संभाल, सम्बल बैठा वेख वखाएगा। आपे पुछे मुरीदां हाल, मुर्शद हो के आपणी कार कमाएगा। लेखा मुका के शाह कंगाल, आहला अदना इक्को रंग रंगाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाएगा। विसाख कहे मैं उस प्रभू नूं झुकां, जिस नूं झुक झुक सारे सीस निवाईआ। मेरा सम्मत शहिनशाही सत्त दा पैंडा मुका, मुकम्मल दयां दृढ़ाईआ। अग्गे प्रभ दा जेठ दुलारा उठा, उठ के लई अंगड़ाईआ। आपणीआं दोवें खोल्ह के मुट्ठां, पंजे ल्ए फैलाईआ। जे पुरख अकाले तुट्ठा, मेहरवान मेहर नज़र टिकाईआ। आपणा भगत लुक्या रहिण ना देवीं किसे गुट्ठा, नौ खण्ड पृथ्मी विच्चों लैणा जगाईआ। तेरी धारों रहे ना टुट्टा, टुटयां लैणा जुड़ाईआ। नाता प्यार रहे ना छुटा, छुटकी लिव लैणी लगाईआ। किते भगतां नूं फेरीं ना विच त्रैकुटी वाली गुट्ठा, ईड़ा पिंगल सुखमन

विच भवाईआ। सहिंसर दल कँवल लाईं कदे ना रुचा, रचना आपणी देणी वखाईआ। जिस दा दवारा सब तों उच्चा, दस्म दुआरी पहला कदम टिकाईआ। फेर उज्जल कर के मुखा, मेहरवान होणा सहाईआ। थिर घर तेरी पढ़े प्रेम दी तुका, आत्म परमात्म राग अलाईआ। फेर सचखण्ड दवारे आपणी गोदी लैणा चुक्का, बिना गोद तों गोद सुहाईआ। सदा सदा सद तेरी धार विच रहे सुत्ता, सोया भगत ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सच तेरी सरनाईआ। जेठ मैं साची दया कमावांगा। जन भगतां खेल खिलावांगा। काया काची वेख वखावांगा। अंध अंधेरी रात मिटावांगा। सञ्झ सवेर इक वखावांगा। मेहरवान हो के आपणी मेहर कमावांगा। कलयुग कूड़ क्रिया कर के (ढेर), भाण्डा भरम भउ भन्नावांगा। नाता तोड़ के अण्डज जेर, उत्भुज सेत्ज विच्चों बाहर कढावांगा। लेखा रहे लख चुरासी ना गेड़, गेड़ा गेड़े विच्चों बदलावांगा। इक्को वार सब दा लेखा दए निबेड़, दूजी वंड ना कोए वंडावांगा। नाम दे चाढ़ के आपणे बेड़, बेड़ा आपणे कंध टिकावांगा। आप हो सतिगुर शब्द दलेर, दो जहानां पन्ध मुकावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी नज़र इक उठावांगा। जेठ, भगत सुहेले देवां तार, तारनहार इक अख्वाईआ। आत्म परमात्म बण के यार, याराना धुर दा दयां निभाईआ। तत्तां अन्दर दे अधार, बिन तत्तां होवां सहाईआ। ख़ादम हो के ख़िदमतगार, जन भगतां सेव कमाईआ। आत्म ब्रह्म कर प्यार, ईश जीव रंग रंगाईआ। सतिगुर शब्द शब्द सतिगुर हो के पावां सार, महासार्थी हो के खेल खिलाईआ। रथवाही बण के अगम्म अपार, अलख अगोचर आपणी कार कमाईआ। चुरासी विच्चों कढ के बाहर, गुप्त ज़ाहर आपणा रंग रंगाईआ। इक्को घर वखावां सच्चा दरबार, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिथ्थे झुकदे पैग़म्बर गुर अवतार, विष्न ब्रह्मा शिव सीस निवाईआ। करोड़ तेतीसा सुरप्त इन्द दूरों दूरों करन निमस्कार, दूर दुराडे तकण चाँईं चाँईआ। जन भगत सुहेले उस मंज़ल पुचावां जिथ्थे निरगुण नूर जोत उज्यार, जोती जोत विच मिलाईआ। उथे नाद शब्द धुन सारे हो जाण भस्मार, सुणन सुणाउण वाला रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दवारा इक सुहाईआ। जेठ ओह वेख प्रभ दे सुत दुलारे, गुरमुख सोहणे नज़री आईआ। जेहड़े रहिणे नहीं मात कुँवारे, आत्म परमात्म लैणी प्रनाईआ। जिन्हां नूं वसाउणा सचखण्ड दे सच महल मुनारे, जिथ्थे इक्को नूर जोत रुशनाईआ। सूर्या चन्द ना कोए उज्यारे, मण्डल मण्डप ना डगमगाईआ। इक्को खेल सच्ची सरकारे, शहिनशाह इक्को सोभा पाईआ। जिथ्थे पढ़ने पैण ना वेद चारे, शास्त्र सिमरत अक्खरां वाली ना कोए वड्याईआ। सोभावन्त सोभा पाए एकँकारे, अकल कलधारी नज़री आईआ। जिस दा निरगुण जोत

नूर निहकलंक अवतारे, कलि कल्की बेपरवाहीआ। ओह वेखे विगसे पावे सारे, महासार्थी आप हो आईआ। ओह तक्के दिवस आउंदा सतारां हाढ़े, दो जहान हाढ़े कढण थांउँ थाँईआ। जिस ने अवतार पैग़म्बर गुर बणाए जगत दे लाड़े, लाड़ी धर्म धार प्रनाईआ। उस ने चार कुण्ट वेखणे अखाड़े, खण्डा खड़ग खड़ग खड़काईआ। खेल होणा अपर अपारे, अपरम्पर स्वामी दए समझाईआ। मुहम्मद मशवरा करना नाल चार यारे, चार यारी मता पकाईआ। फेर वेखणे गोबिन्द दे पंज प्यारे, पंचम पंचम खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। जेठ ओह वेख हाढ़ महीना कर कर आउंदा फुरती, फुरतीला रूप वटाईआ। सतारां हाढ़ नूं जन भगतो इक्को करनी सुरती, सुरत प्रभ दे चरणां विच टिकाईआ। माझे वाल्यो तुहाडे हथ्थ विच फड़या होवे लेख लिख के तुरकी, तुरत आपणी कार कमाईआ। दुआबे वाल्यो आशा लिखणी तिन्नां गत्तयां उत्ते मुहम्मदी, साढे तिन्न हथ्थ लम्बाईआ। मालवे वाल्यो लेख लिखणा सृष्टी जांदी रुढ़दी, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जम्मू वाल्यो तुसां लेख लिखणा वेखो खेल प्रभू चोर दी, जो चोरी लख चुरासी नालों रिहा कमाईआ। नाल इक सौ इक हथ्थ लम्बाई रखणी सूत्र दे डोर दी, इक ज़ीरो इक नाल वड्याईआ। माझे वाल्यो तुसां छत्री बणाउणी खम्ब मोर दी, मोहरे प्रभ दा नाम लिखाईआ। दुआबे वाल्यो तुहाडे विच्चों इक्की गुरमुखां दी धार होणी
१३३० दौड़ दी, भज्जो वाहो दाहीआ। मालवे वाल्यो तुसां शकल बणाउणी ब्राह्मण गौड़ दी, मल सिंघ दा रूप लैणा बदलाईआ। १३३०
जम्मू वाल्यो तुसां लेख लिखणा इक्की गुरमुखां सानूं प्यास प्रभू मिलण औड़ दी, ओड़क ध्यान लगाईआ। माझे वाल्यो खेल करनी इक्की गुरसिक्खां घोड़ दौड़ दी, अस्व तंगां नाल कसाईआ। दुआबे वाल्यो इक शकल बणाउणी जौहड़ दी, जल परात विच टिकाईआ। मालवे वाल्यां वस्त वखाउणी तौड़ दी, कालीआं तौड़ीआं इक्कीआं बीबीआं सिर टिकाईआ। जम्मू वाल्यो तुसां गप्प लिखणी फौहड़ दी, ज़ोर दी कहिंदे आउणा वेखो खेल धुर दे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सतारां हाढ़ कहे प्रभू मेरा लेखा करना वड्डा, वड्डे देणी वड्याईआ। सब दे मस्तक तेरा तीर निशाना होवे गड्डा, गॉड लिखणा चाँईं चाँईंआ। जम्मू वाल्यो पिछला भुल्ल नहीं जाणा ख़ाली डब्बा, लै के आउणा लाल रंग रंगाईआ। माझे दुआबे मालवे इक इक ने पल्लू होवे बध्धा, तिन्न गुरमुख लैणे जगाईआ। उहनां दे हथ्थ विच फड़या होवे गधा, गदागरां दा रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तेरी भगवन वाली लग्गी होवे सभा, भगवन हो के भाग सब दे देणे जगाईआ।

✪ १७ जेठ शहिनशाही सम्मत ७ अजीत सिँघ दे पुत्र नवित हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

जेठ कहे मेरा जगत महीना, मास धुर दा सोभा पाईआ। मेरा खेल तकदे विष्न ब्रह्मा शिव तीना, त्रैलोकी धार ध्यान लगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण आमीना, प्रेम विच आपणा राग सुणाईआ। जन भगतां अन्तर ठांडा होवे सीना, सीतल अमृत धार वहाईआ। सतिगुर शब्द खेल अगम्मा कीना, करनी करते कार कमाईआ। किरपा कीती उत्ते गुरमुख सिँघ जीणा, जो जीवण सिँघ तेग़ बहादर सीस ल्या उठाईआ। खेल वेखे दाना बीना, दाता दानी धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। जेठ कहे मेरा लहिणा देणा बाकी, हरि करता आप चुकाईआ। गुरसिख तन तों तन मिल गया ख़ाकी, मानव मानुख मनुष रंग रंगाईआ। सतिगुर शब्द बण गया साथी, सगला संग संग निभाईआ। पुरख अकाल किरपा करे कमलापाती, पतिपरमेश्वर दया कमाईआ। धर्म दी धार बख़्शे हयाती, जीवण जगत जुगत चतुराईआ। मेहरवान मेहर करे आप अबिनाशी, अबिनाशी आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। जेठ कहे मेरा लहिणा देणा कोटन विच सहँस, गिणती गणित ना कोए गिणाईआ। मेरा लेखा नाल भगत भगवन्त, साचा संग बणाईआ। हरिजन तकां रूप हँस, गुरमुख नज़री आईआ। जीवण दा नाँ होवे हरबंस, हरबंस सिँघ सिंघ सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत सुहाए आपणा बंस, सरबंस आपणा रंग रंगाईआ।

✪ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ७ कपूर सिँघ दे नवित हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

जेठ कहे नारदा तूं क्यों फिरें लुका, लुकमा वेख जगत लोकाईआ। नारद झट जेब चों कढ के रुक्का, रुकावट बिना दिता वखाईआ। मैं चार जुग कदे नहीं सुत्ता, आलस निंद्रा विच कदे ना आईआ। मैं तकण गया चार यारी दा गुस्सा, यरान्यां विच ध्यान लगाईआ। पैग़म्बरां वेख्या जुस्सा, जो जिस्म जगत अख्वाईआ। मुहम्मद दी लबां वेखीआं मुच्छां, जो दुनी दीन कटाईआ। हकीकत दी धार वेख्या हुक्का, हुक्म बेपरवाहीआ। चारों कुण्ट उम्मती पैंडा मुका, मुकम्मल दयां सुणाईआ। जिस कारन कपूर दा बाज़ू टुट्टा, टुटयां वेख वखाईआ। धुर दा तीर अणयाला छुट्टा, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। प्रभ

दा खेल वेखणा पुड्ठा, पुट्ठी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। जेठ कहे नारद तूं किथ्थे रिहों फिरदा, फिरत फिरत पन्ध मुकाईआ। नारद कहे मैं राह तकदा चिर दा, पूरब ध्यान लगाईआ। किस बिध खेल होवे मेरे पिर दा, पीआ प्रीतम खेल खिलाईआ। हुक्म संदेशा देवे घर थिर दा, थिर घर वासी सोभा पाईआ। मेरा हन्झू रिहा किरदा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जगत गेड़ा रिहा गिड़दा, गेड़े विच लोकाईआ। हुण खेल वेखणा मुहम्मद मूसा किस तरह भिड़दा, टक्कर उम्मत नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे जेठ तूं क्यों रिहा तपदा, तपश रही जलाईआ। क्यों नहीं इक इक दा नाम जपदा, जप के दे सुणाईआ। क्यों संसार विख रूप होया सप्प दा, माया डस्सणी डस्से थांउँ थाँईंआ। क्यों बेड़ा भरया पप दा, पतित पुनीत ना कोए बणाईआ। क्यों माण गया सति दा, जति सति ना कोए रखाईआ। क्यों सन्तोख गया धीरज जत दा, जटा जूट रहे कुरलाईआ। क्यों संसार वणजारा होया कूड़ हट्ट दा, कूड़ी क्रिया वणज वखाईआ। तैनूं पता नहीं तेरे विच रूप धरया प्रभ जट्ट दा, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। जो पिछले लेखे कटदा, कटाक्ष अगला नाम रखाईआ। झगड़ा मिटे द्वैती फट्ट दा, फट्टयां उत्ते सर्ब लिटाईआ। प्रकाश करे लट लट दा, नूर नुराना नूर इलाहीआ। मालक हो के घट घट दा, वेख वखाणे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। जेठ कहे नारद मैं सच दस्सां आज, सहिज नाल सुणाईआ। भगत भगवान दा धर्म चले समाज, भगत भगत नाल मिल के वज्जे वधाईआ। स्त्री पुरुष दा जो साजण दिता साज, जोड़ी जगत जहान जणाईआ। जिस कारन कपूर ने मार मारी राज, राज राजान वेख वखाईआ। एह लहिणा देणा गोबिन्द बाज़, बाज़ां वाला होए सहाईआ। प्रेम दी प्रेम विच मारी आवाज़, आह आह विच्चों प्रगटाईआ। सच स्वामी दिती दाद, दयावान वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। जेठ कहे मैं दस्सां सच्ची बात, सहिज नाल सुणाईआ। भगत भगत दा जुड़े नात, नार कन्त सोभा पाईआ। इक दूजे दा देण सच्चा साथ, सगला संग रखाईआ। सति धर्म दी सतिजुग चले गाथ, गहर गम्भीर आप प्रगटाईआ। धर्म दी धार इक दूजे नाल देण आख, गुस्सा गिला ना कोए रखाईआ। गुरमुख गुरसिख कदे ना होए कोए गुस्ताख़, गिला जाणे ना कोए रखाईआ। एह राम सीता दा वाक, जो बन विच गए सुणाईआ। एह कृष्न दी सुहञ्जणी रात, जो राधा दिता जणाईआ। हुक्म संदेशा दे के साख्यात, सति सति प्रगटाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त आवे पुरख अबिनाश, हरि

करता धुरदरगाहीआ। जन भगतां मण्डल पावे रास, गोपी काहन काहन समझाईआ। हाज़र हो के आप, आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। नारद कहे मैं अख़ीरी दस्सण आया बण के दासी, दास्तान सतिजुग दयां जणाईआ। मैनूं हुक्म दिता पुरख अबिनाशी, अबनाशी करता रिहा सुणाईआ। धर्म दी धार मुहब्बत दा खेल तमाशी, तमूां जगत कूड़ लोकाईआ। जो हरिजन हिरदिउँ प्रभ दा होए स्वासी, साह साह रसना गाईआ। उस दा इक्को सदा साथी, जो सगला संग निभाईआ। जिस कारन राम सिँघ नूं चढ़ाया उपर ऐराप्त हाथी, शब्द संदेशे विच जणाईआ। खाणा पीणा जगत मिली ना दाती, घर बाहर नज़र किछ ना आईआ। इक्को मंज़ल दस्स के वाटी, पन्ध रहे ना राईआ। जन भगतो भगवान दी धुर दी वाटी, पैंडा दिता समझाईआ। स्त्री मर्द प्रभ दे भगत सब ने मन्नणी आखी, बिन अक्खरां आख जणाईआ। पिछली पिच्छे दी बख्श गुस्ताख़ी, गुस्से गिले दिते गंवाईआ। नारद कहे मेरा खेल सति सच दी राती, रुतड़ी नाल महकाईआ। मैं वेखे तन वजूद ख़ाकी, तत्तां खोज खुजाईआ। छेआं घरां दे छे गुरसिख बण के इक जमाती, भज्जे वाहो दाहीआ। मैं घुमाउंदा रिहा लाठी, चारों तरफ़ भवाईआ। चढ़दा रिहा घाटी, मंज़ल मंज़ल कदम उठाईआ। इक्को नूर दिसया इक्को जोत जोत दा जाती, जोती जाता इक अख्वाईआ। इक्को कँवल नैण इक्को कमलापाती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस दी सुगंद राज ने खाधी, कसम कसम नाल सुणाईआ। उस दी भय विच डर विच छिन्न अन्तर अन्दर लग्गी समाधी, समां समझ किसे ना आईआ। मेरी द्रोपत वांग रख लाजी, लाज तेरे हथ्थ वखाईआ। मेरा नाता कपूर नाल जगत समाजी, आत्मा तेरा नूर सोभा पाईआ। पुरख अकाल दे के दाती, दयावान होया सहाईआ। अग्गे वास्ते हरिसंगत सदा रहे जागी, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। क्रोध लग्गे किसे ना आगी, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। गुरमुख गुरसिख धन्न धन्न धन्न वड्डे वड भागी, जिनूां दे भाग प्रभ ने दिते बणाईआ। अन्तर नाम दे होए रागी, परमात्म आत्म ढोला गाईआ। जिथ्थे कोई नहीं सवाल जवाबी, झगड़ा दिसे ना कूड़ लोकाईआ। मुहब्बत नहीं इश्क हकीकी ते मजाज़ी, मज़ा सब तों बाहर चखाईआ। उथे शिरक्त शरीक्त शरअ जगत दी काहदी, कादर कुदरत इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, जन भगतां हिरदे रिहा साधी, साधना सच दी सति जणाईआ।

१३३३
२२

✪ २३ जेठ शहिनशाही सम्मत ७ चेला सिंघ, गुरचरण सिंघ, अजीत सिंघ, प्रकाशो देवी जम्मू, अमरो देवी, सवरनो देवी, लील्ला वन्ती, बंती, वन्ती, राज सिँघ हमराज पुर, राम कौर छम्ब, सदरो देवी दीवाना, जीवण सिँघ अम्बा राए, कर्मी देवी घगरेल, बाज़ सिँघ मड्डूआ जम्मू शहर ✪

सदी चौधवीं कहे मेरी आशा करे वाह वाह, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। बेपरवाही नूर अलाह, आलमीन तेरी सरनाईआ। नूर नुराने हक खुदा, ख़ालक ख़लक वड वड्याईआ। पैग़म्बरां लहिणा पूर रिहा करा, हज़रत हाज़र हो के वेख वखाईआ। सब दी कबूल करी दुआ, दो जहान तेरी सरनाईआ। जन भगतां बख्श के सरोपा, पगड़ी सीस टिकाईआ। निरगुण धार हो सहा, सहायता करे थांउँ थाँईंआ। उठ के तके आदम बावा नाल हव्वा, अम्मां अंमढ़ी रूप वटाईआ। काअबे अक्ख रहे उठा, नेत्र नैण नैण बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं आई हासी, हस्स के हस्तां कीटां दयां सुणाईआ। मैं वेखी तेरी खेल अबिनाशी, अबिनाशी करते बेपरवाहीआ। संदेशा देवे ईसा जो चढ़या फाँसी, फ़ैसला हक हक सुणाईआ। मुहम्मद दी पुकार करे ख़ाहिशी, ख़ालस हुक्म रही सुणाईआ। कलमा कलमा वेखे अनादी, नाद अनादी रिहा दृढ़ाईआ। बौहड़ी बिना भगतां तों जगत जहान होए बर्बादी, बदी दा लेखा सके ना कोए मिटाईआ। पैग़म्बरां दी अंकड़यां वाली पूरी होए आबादी, लेखा शरअ ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मैं मुहम्मद दा तक्कया इशारा, बिन नैणां नैण उठाईआ। जो हुक्म संदेशा देवे ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर हुक्म दृढ़ाईआ। नी कमलीए उठ वेख की झगड़ा पैणा विच काहरा, कायनात राह तकाईआ। जिस दा नौ सौ चौरानवे मील दा होणा दाइरा, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद दे सके कोई ना पहरा, सिर सके ना कोए उठाईआ। शरअ शरअ नाल करे मुशाहरा, मशवरा कलमे वाला समझाईआ। जगत जहान सुणे कोए ना बहिरा, नादी धुंन ना कोए शनवाईआ। हुक्म देवे गम्भीर गहरा, गहर आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखी खोल्ल के ताकी, पर्दा पर्दे विच्चों चुकाईआ। धुर दा यार चढ़या उत्ते राकी, राकब होया बेपरवाहीआ। जिस दा खेल वरते इत्फिाकी, इत्फिाकीआ आपणी कार कमाईआ। जीव जहान ख़लक वेखे इख़लाकी, मख़लूक फोले थांउँ थाँईंआ। चार यार तके बेइत्फिाकी, निफ़ाक वेखे ख़लक खुदाईआ। पर्दा लाहवे हक महिराबी, महिबूब अगम्म अथाहीआ। लेखा जाणे पुन्न सवाबी, सभा तके नूर इलाहीआ। जीव जहान वेखे शरअ कबाबी,

काअब्यां अन्दर फोल फुलाईआ। आत्म धार तके रबाबी, रहमत आपणी सच कमाईआ। सज्जण मीत वेखे अहिबाबी, मित्र प्यारे खोज खुजाईआ। इश्क हकीकी वेखे मजाज़ी, भेव अभेदा रहे ना राईआ। शरअ दा शरअ नाल प्यार ना होवे इमदादी, अमलां तों बाहर दीन दुनी रोवे मारे धाईआ। कुछ लेखा काहरा नाल बग़दादी, बग़लगीर पल्लू जाण छुडाईआ। मूसा खेल करे जवाबी, ईसा विचोला हो के वेखे चाँईं चाँईंआ। एह लैणा देणा नहीं कोई किताबी, कुतबख़ान्यां विच्चों हथ्थ कुछ ना आईआ। बुद्धी अक्ल ना कोए उस्तादी, आलम इलम ना कोए चतुराईआ। ढोला गीत कोई नहीं रागी, सिफ्ती सिफ्त ना कोए सालाहीआ। धुर दा हुक्म हुक्म अलाही अहिलादी, आलमीन आप दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखे पगड़ीआं नाल दुपट्टे, प्रभ दोहरी खेल खिलाईआ। दरोही खुदाए मनसूख़ कर देणे पट्टे, पटने वाला लेखा दए चुकाईआ। सब दी आबरू मिलणी विच ख़ाक माटी वाले घट्टे, घाटा पूर ना कोए कराईआ। खुशीआं दिन कोई ना टप्पे, टापूआं वाले रोवण मारन धाईआ। सब दे चीथड़ होणे फटे, तन शृंगार ना कोए वखाईआ। शाह सुल्तानां हिरदे होणे तपे, तपीशर तृप्त ना कोए कराईआ। इक्को खेल करना अक्खरां विच्चों पप्पे, पारब्रह्म प्रभ आपणी कार भुगताईआ। लैणा देणा तकणा जगत जहान मदीने मक्के, मकबरयां विच्चों पैग़म्बरां आसा रही सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक नूर इलाहीआ। सदी चौधवीं कहे मेरे अन्दर आया हुलारा, अन्तष्करन लई अंगड़ाईआ। मैं तक्कया प्रभ दा सुत दुलारा, सतिगुर शब्द बेपरवाहीआ। जेहड़ा आदि अन्त कुँवारा, चार जुग लाड़ी ना कोए प्रनाईआ। लख चुरासी बणे सहारा, सहायक इक्को सोभा पाईआ। हुक्मी हुक्म करे वरतारा, ना कोई मेटे मेटे मिटाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं दए अधारा, उदर अन्दर होए सहाईआ। नाम कलमा दए प्यारा, शब्द शब्दी नाद सुणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान बणे लिखारा, अक्खर अक्खरां मेल मिलाईआ। निरगुण सरगुण हो के खेल करे संसारा, तत तत्तां नाल टकराईआ। सो हुक्म संदेसा देवे आपणी धारा, धरनी धरत धवल धौल रिहा दृढ़ाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद वेखो अन्त कनारा, चारों कुण्ट अक्ख खुल्हाईआ। उम्मत नईया दिसे ना कोए सहारा, कलमा चप्पू वञ्झ ना कोए उठाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला लेखा जाणे परवरदिगारा, सांझा यार वेस वटाईआ। जिस नूं सजदयां विच सब ने कीती निमस्कारा, डण्डावत विच आपणा आप मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं नेत्र नैण अक्ख लई उग्घाड़, खुशीआं वेख वखाईआ। पुरख अकाला तक्कया धुर दा लाड़, नौजवाना मर्द

१३३५
२२

मर्दाना नूर इलाहीआ। जिस दा नूर उत्तर पूरब पच्छम दक्खण पहाड़, दिशा आपणा रंग रंगाईआ। जो जुग चौकड़ी देवे उजाड़, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणी खेल खिलाईआ। मेरा लेखा जिस ने लिखाउणा सतारां हाढ़, हाढ़ा मेरी इक दुहाईआ। समें दा मालक समां रिहा ताड़, ताड़ी जगत वाली खुलाईआ। कूड़ क्रिया दए पछाड़, पच्छम वाले लए उठाईआ। ममता चबाए आपणी दाढ़, मोह विकार दए मिटाईआ। जन भगतां पाए सार, महासारबी हो के वेख वखाईआ। निरगुण नूर दए दीदार, जोती जाता नजरी आईआ। लहिणा देणा पूरा करे लेखा संग मुहम्मद चार यार, यार याराना वेख वखाईआ। राह तके कुतब सितार, सतर, सतह बुलंदी अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी एका एक एकँकार, अकल कलधारी आपणा हुक्म वरताईआ।

१३३६
२२

२४ जेठ शहिनशाही सम्मत ७ गुरदित सिंघ, संसार सिंघ, फुम्मण सिंघ, भाग कौर, शाहणी देवी, बीबी जीतो, बंती देवी, ज्ञान चन्द खैरोवाल,खोजू राम, रोहलू राम, ज्ञान सिँघ नवां चक्क, भाग सिँघ मलक कैंप, पूरन चन्द, भाग सिंघ, रसाल सिँघ मनावर, इन्द्रों नगयाल, प्रकाशो देवी, तोती देवी, प्रताप सिंघ, ईश्रर सिंघ, प्रकाश सिँघ दड़, झण्डू राम जिउड़ीआ, छम्ब ज़िला जम्मू

पगड़ी कहे मैं भगतां सीस बणी पग्ग, पग प्रभ दे सीस निवाईआ। किरपा करे सूरा सरबग, सूरबीर नूर इलाहीआ। कूड़ क्रिया जिस बुझाउणी अग्ग, त्रैगुण अतीता आपणी दया कमाईआ। हरिजन हँस बणाउणे कग्ग, काग हँस रूप वखाईआ। दर्शन देणा उपर शाह रग, रघुपति आपणा पड़दा लाहीआ। सच दवार कराउणा हज्ज, हाजत अवर रहे ना राईआ। जगत जहान रखणी पति लज, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। माण वड्याई बख्श के जग, जागरत जोत जोत दरसाईआ। नाम निधान प्या के मध, मधुर धुन इक सुणाईआ। वरन बरन दी मेट के हद्द, हदूद आत्म ब्रह्म जणाईआ। पिछली करनी कर्म कांड दी कर के रद्द, कुकर्म दा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। पगड़ी कहे मेरा खेल विच संसार, हरि संसारी आप कराईआ। खुशीआं विच तकण तेई अवतार, राधा कृष्न वज्जे वधाईआ। मूसा ईसा मुहम्मद खुशी विच करन दीदार, बिन नेत्र लोचण नैण अक्ख

खुल्हाईआ। गुर दस हो हुश्यार, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। जिस नूं झुकके करदे रहे निमस्कार, डण्डावत बन्दना सजदे सीस निवाईआ। सो मालक ख़ालक परवरदिगार, सांझा यार अगम्म अथाहीआ। सब दे लहिणे देणे रिहा विचार, जुग चौकड़ी लेखा जाणे चाँईं चाँईंआ। सतिजुग त्रेता द्वापर विछड़यां दए अधार, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पगड़ी कहे मैं भगतां सीस सुहंदड़ी, किरपा करी श्री भगवान। लेखे ला के काया माटी विच्चों जिंदड़ी, ज़िंदगी ज़िंदगी विच्चों होई परवान। धुर दी धार बण बख़्शंदड़ी, बख़्शिश कीती नौजवान। अग्गे हालत होवे किसे ना मंदड़ी, चुरासी विच ना कोए बेहाल। नेत्र अक्ख रहे ना अंधड़ी, लोचण नूर बेमिसाल। अन्तर वासना रहे ना गंदड़ी, सुरती शब्द लए संभाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक मालक इक मेहरवान। पगड़ी कहे मैं वेखां चारों कुण्ट, निरगुण सरगुण ध्यान लगाईआ। निगह मारी विच बैकुण्ठ, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। फेर वेख्या काग भसुंड, जो ध्यान ध्यान विच्चों जणाईआ। जिस दे कोल नहीं कोई जिज्ञासूआं दा झुंड, सरगुण रूप ना कोए दरसाईआ। जिस ने इशारा कीता सतिगुर चरण सरोवर कुण्ड, गहर गम्भीर जणाईआ। जिस दा ध्यान धरया कृष्ना कान्हा नैण मूंद, मुकन्द मनोहर लखमी
१३३७ नरायण नर हरि इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला १३३७
२२ रिहा मिलाईआ। पगड़ी कहे मैं भगतां अन्दर तक्कां मस्ती, बिन नैणां नैण उठाईआ। जिन्हां दे गृह प्रभू दी हस्ती, हस्त २२
कीट रूप दरसाईआ। निज नेत्र होया दरसी, दरस दीदार बेपरवाहीआ। मालक बण के अर्शी, अर्शी प्रीतम वेस वटाईआ। प्रगट हो के उपर धरती, धरनी धरत लेखे रिहा लगाईआ। दो जहानां बण के निधपरती, पतिपरमेश्वर आपणी कार कमाईआ। चार जुग दे गुर अवतार पैग़म्बरां भविक्ख़्तां वाली वेखे पर्ची, प्राचीन दा लेखा दए चुकाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ खोजे चरागाहां चर्ची, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा भेव चुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दी जाणे अर्ज़ी, जो आरज़ू आदि अन्त दिती दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं अन्तिम पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार आपणी करे मर्ज़ी, दूसर संग ना कोए रखाईआ। जन भगतां मेहरवान हो के बणे ग़रज़ी, ग़रज़ इक्को इक दृढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम मेटे अंधेर गर्दी, धर्म दी धार इक उपजाईआ। जगत शरअ रहिण ना देवे फ़र्ज़ी, फ़ाज़ल आपणा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। पगड़ी कहे मैं प्रभू दे पग चुम्मां, बिन रसना रस चखाईआ। सृष्टी दी दृष्टी अन्दर घुंमां, घुंमण घेरे वेखां कूड़ लोकाईआ। मन कल्पणा कूड़ी वेखां तुंमा, जो

तबा ज़मीर गई बदलाईआ। सदी चौधवीं सम्मत शहिनशाही सत्त प्रभ दा हुक्म वरतणा दिन ज़ुंमा, जमीअत जमात समझ कोए ना पाईआ। बकरीद वाला रोवे बली होया दुम्बा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। किसे समझ नहीं आई अल्फ़ ये दे विच क्यों हरफ़ लिखाया नून गुंनां, वा हे दए दुहाईआ। कुल दा मालक हो के कुंना, ख़ालक मख़लूक पर्दा लाहे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत सूफ़ी सन्त फ़कीर बेनज़ीर कलयुग अन्त सदी चौधवीं सति दा दए नमूना, जगत नुमाइश विच नमूंदार आप कराईआ।

✪ २५ जेठ शहिनशाही सम्मत ७ गुरनाम सिंघ, सरदार सिंघ, जुगिन्दर सिंघ, लच्छमी देवी, हरबंस कौर सीड़, लच्छमी देवी मूसा चक्क, देवी सिंघ, हरी सिंघ, प्रकाश चन्द, ठाकर दास, जीतो देवी, प्रीतो देवी मेलू जिंदड़, दौलत राम कोटली, रणीआं राम कलोए, ख़ज़ान सिँघ रणबीर सिँघ पुरा, सेवा सिँघ मग्घोवाली, जागीर सिंघ, भगत सिँघ कीर पिण्ड कृष्ना देवी बिरला, शाहणी देवी माजरा, सन्त सिँघ दीवान गढ़, पिण्ड सीड़ ज़िला जम्मू ✪

पगड़ी कहे मैनूं विष्नूं रिहा आख, विश्व विशेष ध्यान लगाईआ। औह तक पुरख साख्यात, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस ने भगत बणाउणे पारजात, पारब्रह्म प्रभ आपणा रंग रंगाईआ। आत्म परमात्म जोड़े नात, नाता बिधाता आपणे नाल रखाईआ। अन्तर निरन्तर मेटे अंधेरी रात, निज नेत्र लोचन नैण करे रुशनाईआ। शब्द अगम्मी सुणाए बात, बातन पड़दा आप चुकाईआ। चार वरन बणा के इक जमात, जुमला अक्खर इक समझाईआ। धर्म दी धार बख़्श इत्फिाक, इत्फिाकीआं आपणा रंग रंगाईआ। झगड़ा मेट के ज़ात पात, दीन मज़्हब वंड ना कोए वंडाईआ। जगत जहान विच्चों दे नजात, निज आपणा घर दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। पगड़ी कहे मैनूं ब्रह्मा करे इशारा, ब्रह्म तों परे ध्यान लगाईआ। औह वेख कलि कल्की अवतारा, अवतरी आपणा वेस वटाईआ। जिस नूं झुकदे पैग़म्बर गुर अवतारा, निरगुण सरगुण सारे सीस निवाईआ। ओह लेखा जाणे सर्ब संसारा, संसारी निउँ निउँ लागे पाईंआ। जिस दा निरगुण नूर जोत उज्यारा, जोती जाता डगमगाईआ। प्रगट हो दूजी वारा, दो जहानां वेस वटाईआ।

मालक ख़ालक बण परवरदिगारा, सांझा आपणा हुक्म सुणाईआ। जिस दी याद विच बीते जुग चारा, चारे बाणी चारे खाणी खेल खिलाईआ। सो वेखे विगसे पावे सारा, वेखणहारा नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि दाता अगम्म अथाहीआ। पगड़ी कहे मैनूं शंकर रिहा दस्स, दास्तान पिछली रिहा जणाईआ। उठ वेख आपणी अक्ख, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। निरगुण धार सति सच, सच सति विच समाईआ। जिस भाग लगाया काया माटी कच्च, कंचन गढ़ दए वड्याईआ। लूं लूं अन्दर रिहा रच, साढे तिन्न करोड़ सोभा पाईआ। रूप बणा के परमेश्वर पति, परमात्म आत्म आपणी खेल वखाईआ। जो सब दी जाणे मित गत, जानणहार इक हो आईआ। जन भगतां लेखे लावे रत्त, रत्ती रत्त आपणे विच समाईआ। शब्द अगम्मी मार के सट्ट, सोई सुरत लए उठाईआ। दो जहानां आया टप्प, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। वसणहारा घट घट, घट दा मालक बेपरवाहीआ। जिस भगत दवारा बणा के आपणा मट्ठ, मुनारे धर्म धार सुहाईआ। जोती जोत जगा के लट लट, नूर नुराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक दया कमाईआ। पगड़ी कहे विष्न ब्रह्मा शिव दिसण इक्ठे, तिन्ने बैठे ध्यान लगाईआ। चार जुग दे लिखे मिटण पटे, पटने वाला नाल मिलाईआ। सब दे कर्म कांड होणे बटयां विच बटे, ज़ीरो सिफ़र ना कोए चतुराईआ। जेहड़े कलमे नाम रटे, रट्टा जगत विच कराईआ। जिन्हां दे कैदयां कानूनां विच खाधे कट्टे वच्छे, पंछीआं खल्ल लुहाईआ। वासना विच फिरे नट्ठे, दीनां मज़्हबां वंड वंडाईआ। अन्तिम पैंडे सब दे टप्पे, वेल वक्त दए गवाहीआ। जो सिफ्तां विच अक्खरां विच सतरां विच कोटन कोटि प्रभ दे नाम छपे, काग़ज़ां उत्ते रंग रंगाईआ। ओह सदी चौधवीं अंग्यार वांग तपे, दीन दुनी रहे जलाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला वेखणहारा सब दे खते, खाता फोले थांउँ थाँईंआ। जिस कारन गोबिन्द जैकार बुलाया फ़तिह, फ़तिह वाहिगुरु इक दृढ़ाईआ। उस दे अग्गे मशवरे रहिणे नहीं मते, मति मतांतर दा डेरा देवे ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। पगड़ी कहे विष्न ब्रह्मा शिव मेरे वल्ल रहे तक, नेत्र नैण नैण उठाईआ। उठ वेख प्रभू जन भगतां देवे हक, हकीकत पिछली फोल फुलाईआ। वाहिद मालक हो के यक्क, यकतरफ़ा आपणी कार कमाईआ। धीरज सन्तोख बख्शे सति, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आपणा ब्रह्म समझाईआ। तत्तां विच्चों पछाण के तत, तत्व तत दए वड्याईआ। जन भगतां लेखे ला के रत्त, रत्न अमोलक हीरे लए प्रगटाईआ। कलयुग अन्तिम रखे पति, पतिपरमेश्वर होए सहाईआ। सब दी सांझी करके मति, मित्र प्यारा दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा

हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण पगड़ी जन भगतां तक भाग, भागां भरी अक्ख उठाईआ। जिन्हां दे गृह धर्म चराग़, जोती नूर नूर रुशनाईआ। जिस्म इस्म रहे ना आग, अग्नी तत गंवाईआ। अन्त बख्शे इक वैराग, वैरी अन्दरों बाहर कढाईआ। धर्म दी धार दे त्याग, त्रैगुण अतीता होए सहाईआ। गुरमुख हँस बणाए काग, काग हँस रूप प्रगटाईआ। किरपा करे मालक वाहिद, वाहवा आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप निभाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण पगड़ी ओह तक्क आपणे नाल दुप्पटे लीड़े, दर सच मिले वड्याईआ। इक्को माण हस्त कीड़े, कीट कीटां होए सहाईआ। धर्म दी धार सब दे बन्हे बीड़े, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। सोहणे सीस सुहा के चीरे, चिरी विछुंने लए मिलाईआ। जन भगतां बदल आप तकदीरे, तदबीर आपणी इक दरसाईआ। लख चुरासी विच्चों कढ के हीरे, अमोलक रत्न लए उपजाईआ। अमृत धार बख्श के नीरे, निरवैर होए सहाईआ। हरिजन हरि भगत गुरमुख गुरसिख होए ना कोए दिलगीरे, चिन्ता ग़मी ना कोए रखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आत्म परमात्म नाता जोड़या पातशाह वज़ीरे, दर साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी खेल खिलाए धीरे धीरे, धीरज धरवास पुरख अबिनाश, जन भगतां आप जगाईआ।

१३४० २२

✪ २६ जेठ शहिनशाही सम्मत ७ तेजभान, शिव सिंघ, गूढ़ा राम, राम चन्द, अमरो देवी, चरण दास, सोभा सिंघ, केसरी देवी, प्रेम चन्द, सरदार चन्द, गुरा राम, कृष्न लाल, रवेला राम, बेलू राम, नानक चन्द, नंदू राम, फ़कीर सिंघ, पीरा राम, ज्ञान चन्द, ईश्र दास, पिण्ड सई खुर्द ज़िला जम्मू ✪

सदी चौधवीं कहे मेरा वक्त लँघ, लँघदी लँघदी दयां जणाईआ। मेरी फिरदी फिरदी दीआं थक्क गईआं जंघां, बलहीण दयां सुणाईआ। मेरी निगह पई उत्ते गंगा, गंगोतरी ध्यान रखाईआ। झट नारद बोलया कमलीए मेरा वेख लै पिण्डा नन्गा, नन्गी तक जगत लोकाईआ। ईमान मिले किसे ना मंगा, दस्त वस्त ना कोए कराईआ। मुल्लां शेख़ मुसायक रिहा कोए ना चंगा, चन्द सितार दए गवाहीआ। ओह वेख शब्दी धार दा सत्तरंगा, रंगत सब दी रिहा बदलाईआ। जिस दा मालक सूरा सरबंगा, शहिनशाह नूर इलाहीआ। जिस झगड़ा वेखणा जगत जहान फ़रंगा, फ़ारस तों परे ध्यान लगाईआ। चार

यारी नचाउणी वांग मलंगा, मतिहरा हुक्म हथ्थ उठाईआ। मेरा बचन ना तैनूं लग्गे कुड़ंघा, प्रेम नाल रिहा समझाईआ। मेरा खेल वेख इक टंगा, इक धार हो दृढ़ाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आपणा उलटा कराया पलँघा, पावा चूल रोवण मारन धाईआ। अग्गे पैंडा करीं प्रभू ना लम्बा, हुक्म हुक्म विच्चों बदलाईआ। कमलीए ओह तक मुहम्मद वाला तम्बा, तम्बुर धुर दा रिहा वजाईआ। अलाही नूर दा वेख मम्बा, फ़रमाना अगम्म रिहा सुणाईआ। उफ़ हाए एह खेल होणा अचंभा, अचरज आपणी कल वरताईआ। जो वसे सतह उत्ते बुलंदा, बलंदी समझ किसे ना आईआ। लेखा जाणे चुरासी ब्रह्म हंगा, हँ ब्रह्म बेपरवाहीआ। जिस ने शरअ दा भार लौहणा सब दे उतों कंधा, कन्ढी बैठा वेख वखाईआ। मानव रहिण देणा कोई नहीं गंदा, गोदावरी जमना सुरस्ती बैठी अक्ख उठाईआ। उस दा अमृत रस वेख ठंडा, मेघ अगम्मा रिहा बरसाईआ। नी मैं आदि दा लम्मी बोदी वाला पंडा, धोती धर्म दी तन सुहाईआ। जुग जुग मेरा खेल होवे ब्रह्मण्डा, वरभण्डां वंड वंडाईआ। मैं भगत सन्त जगत जहान कराया पखण्डा, भेखाधारी रूप बणाईआ। कमलीए ओह तक्क तेरा छुपदा जांदा तारा चन्दा, चांदनी चन्द ना कोए चमकाईआ। सदी चौधवीं कहे की कोए संदेसा दिन्दा बन्दा, बन्दगी वाला सोभा पाईआ। नारद ज़ोर

१३४१ ज़ोर दी कम्बा, बिना तन तन वजूद रिहा हलाईआ। नी मेरा मालक इक्को लखमी नरायण मनोहर मुकन्दा, मुकम्मल ध्यान १३४१

२२ दृढ़ाईआ। जिस दे कोल धुर कलमे दा इक्को फंदा, फांदी सब नूं रिहा फसाईआ। उहदीआं त्रैगुण तों बाहर गंढा, जगत २२

जहान ना कोए खुलाईआ। मैं ओसे दा हुक्म संदेसा वंडां, सब नूं रिहा दृढ़ाईआ। जिस ने वेस बदल के भेख धार के जवां दा खाधा मंडा, मण्डली दो जहान वेख वखाईआ। भोग लगा के भगत दवार दे गंढा, गंढ अगली रिहा पवाईआ। उस दा निरवैर रूप दा तन्दा, तन्द सितार रिहा हिलाईआ। जिस ने जगत जहान कीता अन्धा, नेत्रहीण होणी लोकाईआ। निगह मार लै वेख गोबिन्द वाला कंघा, इक्की दन्दयां वंड वंडाईआ। ओह याद कर लै दुर्गा वाला खण्डा, अष्टभुज सिँघ अस्वार रही जणाईआ। जिस ने जगत जहान करना रंडा, कन्त सुहाग ना कोए हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। नारद कहे सदी चौधवीं सुण साहिब दी दासी, दास्तान दयां दृढ़ाईआ। क्यों ईसा चढ़या फाँसी, फ़ैसला प्रभ दे हथ्थ फड़ाईआ। क्यों मुहम्मद रखी आसी, चौदां सद ध्यान लगाईआ। क्यों बरतन तजाए पित्तल कांसी, हाण्डी कुंनी माटी वाली सुहाईआ। क्यों नाता तोड़या फुफ्फी मासी, चाची ताई नाल वड्याईआ। क्यों अमृत ल्या आबेहयाती, बिना चुलीआं मुख पुआईआ। क्यों शरअ बणी जमाती, चार यारी संग रखाईआ। क्यों हुक्म सुणाया कायनाती, कलमा रसूल नाल वड्याईआ। क्यों राह तक्कया सदी चौधवीं अंधेरी राती, नूरी

चन्द ना कोए चमकाईआ। नारद कहे आह वेख मेहरवान दी इक पाती, पत्रा दयां वखाईआ। जिस दा लेखा नहीं काग़ज़ाती, कलम शाही ना जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे सदी चौधवीं मैं पंडत बड़ा पुराणा, पुनह पुनह तैनूं सीस निवाईआ। मेरा आदि तों इक्को गाणा, गा गा झट लँघाईआ। मैं वेख्या जगत जहाना, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग खेल खिलाईआ। सब ने अक्खरां वाला दिता ब्याना, गुर अवतार पैग़म्बर सिफ्तां वाली सिफ्त सालाहीआ। शरअ दा गड्ड निशाना, निशाने निशाने विच्चों बदलाईआ। सदा रिहा नहीं इक्को जेहा ज़माना, ज़िमीं ज़मां दए गवाहीआ। आपणी धोती विच्चों कढ के वखावां तैनूं ओह परवाना, जेहड़ा परम पुरख मेरे हथ्थ दिता फड़ाईआ। जिस विच आत्म ब्रह्म नज़र आए ना कोए बेगाना, खुदा दीए बेगमे बे ग़म हो जा तैनूं दयां सुणाईआ। प्रभ दा खेल वेख शाहाना, शहिनशाह की आपणा हुक्म वरताईआ। भुल्ल जा पिछलीआं कलामां, कलमा सुण नूर इलाहीआ। जिस ने किहा मेरा आउणा अमामा, अमलां तों बाहर नूर इलाहीआ। उस दा वज्जे इक दमामा, दो जहानां करे शनवाईआ। जिस नूं याद करदे गए कृष्ना कान्हा, गोपीआं वाली रास रचाईआ। जिस दी आस रखी सीता रामा, बनबासां विच सोभा पाईआ। सप्त ऋषी करन ध्याना, बिना नैणां नैण उठाईआ। नानक गोबिन्द गाया गाणा, गा गा शुकर मनाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला पहिर के आपण बाणा, बाण अणयाला तीर रिहा चलाईआ। सब दा बण के जाणी जाणा, जानणहार इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे नीं ओह तक मालक कदीम कलमा, कादर कुदरत धुरदरगाहीआ। जिस ने तेरे अन्त मुहम्मद दी उम्मत देणा सदमा, सदके वारी घोली घोल घुमाईआ। क्यों प्रभ दा इकरार वायदा नाल दुर्गा अष्टभुज जिस ने सुंभ निसुंभ सैना खपाई अठासी लख पदमा, पद आपणा इक जणाईआ। जिस दा लेख लिखाया काहन कृष्ना बांसी वंशी विच यादवां, यादव भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। नारद कहे शक्ती धार वेख भुज अठ, अट्ठ अठ तत चतुराईआ। नौ खण्ड पृथ्मी उठ के नट्ठ, भज्जणा वाहो दाहीआ। उम्मत दी आशा दा करना इक्ठ, सतारां हाढ़ थित जणाईआ। नाल मौली दा ल्याउणा गट्ट, हथ्थीं फड़ना चाँईं चाँईंआ। दो धार नाल देणा कट, खण्डा खड़ग नाल छुहाईआ। जोत जगे लट लट, पंज दीपक होण सुहाईआ। विच होण पंज पिपल दे पत्त, पतिपरमेश्वर उपर नाम लिखाईआ। जम्मू वाले ल्याउण सच, सच सच नाल कुड़माईआ। सदी चौधवीं पई हस्स, हस्स हस्स के रही सुणाईआ। अग्गे होर कुछ दस्स, नारद पड़दा दे उठाईआ। नारद

१३४२
२२

आपणा मूँह वट्ट, पासा ल्या बदलाईआ। पहलों मेरे चरणां उत्ते ढट्ठ, फेर अग्गे दयां सुणाईआ। सदी चौधवीं किहा वे नारदा मेरा पिछला नाता जुड़ गया नाल जट्ट, मैं पंडत पांधे दिते तजाईआ। नारद नेत्र खोल्या फट, अक्ख लई उठाईआ। उहनूं नज़र आया सूरबीर समरथ, दाता धुरदरगाहीआ। फेर नीवीं करके अक्ख, इशारा दिता लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे नारदा इक मन्न लै बात, बातन दयां जणाईआ। जिस वेले आवे सतारां हाढ़ दी रात, रुतड़ी प्रभ दे नाल महकाईआ। मांझे वाल्यां अट्ठां दी बणाई होवे जमात, सीस जामन रंग रंगाईआ। दुआबे वाल्यां अट्ठां कोल होवे खात, खाता भरे धुरदरगाहीआ। मालवे वाले बैठे होण इकांत, अट्ठां तत्तां अन्दर ध्यान लगाईआ। जम्मू वाले अट्ठ गुरमुख उस दिन वंडणगे प्रशाद, सेवा सच धार कमाईआ। तेज भान रखणा याद, यादाशत तेरे नाल रखाईआ। सदी चौधवीं दी गोली बदल लए लबास, वस्त्र पीले रंग रंगाईआ। मस्तक टिक्का जिहदे पंज होण बलाक, सवा इंच लम्बाई चौड़ाईआ। मस्तक नौ लड़ीआं होवण मोतीआं साथ, नव रंग नज़री आईआ। ढाई चीर विच पावण रास, लड़ी लड़ी नाल बंधाईआ। पंज पाणी दे भरे होण ग्लास, हथेली सज्जी उत्ते

१३४३ सुहाईआ। एह खेल प्रभू अबिनाश, हरि करता आप कराईआ। नारद कहे सदी चौधवीं शाबाश, शाबा शाबा कहि के रिहा १३४३

२२ सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा वास्ता तेरे अग्गे बाप, जो पिता पुरख अकाल अख्वाईआ। उस वेले नारदा तूं मेरे नाल २२

मिल के सोहँ सोहँ जपणा जाप, नारद दा रूप गुरनाम सिंघ लए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अष्टभुज कहे मेरी आसा नाल अष्टवकर, राम रामा ध्यान लगाईआ। माझे वाल्यां अट्ठां दे सिर ते होवे छत्र, छत्रधारी वेख वखाईआ। दुआबे वाल्यां लाल रंग दा सीस ते रखणा पत्र, पत्र कागज़ रंग रंगाईआ। मालवे वाल्यां कज्जल पाउणा अट्ठां अक्खण, सज्जी अक्ख विच टिकाईआ। जम्मू वाल्यां अट्ठां रूप धरना वांग नट्टण, स्वांगी हो के स्वांग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी गोली दे मुख विच्च होवे फुल्ल गुलाब, मिन्ट ढाई ढाई टिकाईआ। खब्बे हथ्थ फड़ी होवे रबाब, सितार सति नाल मिलाईआ। इक्की वार प्रभू नूं करे आदाब, निव निव सीस झुकाईआ। नारद उच्ची कूक सुणाए आवाज़, प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। गुरमुख सिंघ ने कहिणा जन भगतो बदल गया समाज, समग्री पिछली रही ना राईआ। हरिसंगत शोर मचाउणा दीन दुनी जाउ जाग, नेत्र अक्ख अक्ख खुल्हाईआ। सारयां इक्को वार मारनी चांग, ज़ोर बल नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग

आप बणाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं प्रभ दा सुणना संगीत, संगला दीप विच ध्यान लगाईआ। जन भगतां वेखणी इक प्रीत, जो प्रीतम विच समाईआ। झट नारद किहा कुछ तूं वी याद कर लै गीत, जेहड़ा गढ़ी चमकौर गाया गोबिन्द माहीआ। सदी चौधवीं कहे रात दे बारां वजे पगड़ी बदलण अंग्रेज़ सिँघ रणजीत सिँघ ते सिँघ सुरजीत, सुरती सतिगुर विच मिलाईआ। हरिसंगत करे तस्दीक, शहादत इक्को वार भुगताईआ। जन भगतो भगतां दा नाता ठीक, आदि जुगादि ना कोए तुड़ाईआ। ना कोई हस्त ना कोई कीट, राज राजान इक्को गढ़ वसाईआ। इका चाढ़े रंग मजीठ, पंज प्यारे पीले वस्त्रां नाल सुहाईआ। पंज दरबारी मथ्थे उत्ते मारन चिट्टी काली लीक, लाईन साढे तिन्न इंच लम्बाईआ। लिखारी पंज पंज हार गल विच पावण ठीक, ठाकर आपणा इक मनाईआ। हरिसंगत सोहँ निशान लगाउणा उपर पीठ, पुश्त पनाह दा मालक होवे बेपरवाहीआ। सोहँ मोहर लगाउणी उपर जीभ, जेहवा रसना गुण बणाईआ। माझा मालवा दुआबा जम्मू धर्म दी धार होवे तरतीब, तरीका इक्को समझाईआ। सब ने आसा रखणी हरि का नाम लैणा ख़रीद, वपारी बण के आउणा चाँईं चाँईंआ। सदी चौधवीं कहे नारदा मैं ऐतकीं हुक्म सुणना चाहुंदी अजीब, जेहड़ा अजे तक गुर अवतार पैग़म्बर प्रभ कोलों सुणन कोए ना पाईआ। जिस दी आसा रखी अन्त समें फ़रीद, ध्यान ध्यान विच लगाईआ। ओह लेखा पुछणा जेहड़ा अक्खर लिख्या नहीं विच कुरान मजीद, मुहम्मद नूं हुक्म नाल दिता हटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे खेल तक इक एकँकारी, अकल कलधारी रिहा जणाईआ। नेत्र तक शब्द लिखारी, पंज पंज पंज नाल वड्याईआ। ग्रन्थ तक जिहनूं झुकणी सृष्टी सारी, सार शब्द नाल चतुराईआ। ओह हाज़र होणे भगत दवार वड दरबारी, दर दरबारे सोभा पाईआ। फेर खेल वरते अपर अपारी, अपरम्पर स्वामी आप जणाईआ। सदी चौधवीं अग्गे कला वरतणी ज़ाहरी, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला कोई रूप नहीं मर्द नारी, स्त्री पुरुष ना वंड वंडाईआ। आदि जुगादि जुगादि आदि दा इक निराकारी, निरवैर नूर इलाहीआ। जिस ने सतिजुग दी सति करनी उसारी, नींह सच वाली रखाईआ। जन भगतां दी लेखे लाए सेवा भारी, भारद्वाज ऋषी दा लेखा दए चुकाईआ। जिस नूं सब ने करनी निमस्कारी, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। नारद कहे मेरा रूप होवे सवा हथ्थ लम्मी बोदी होवे सुट्टी होवे पिछाड़ी, त्रिशूल त्रै धार मथ्थे उत्ते बणाईआ। सदी चौधवीं दी गोली बुल्ल्हां उत्ते लाली लाई होवे गाढ़ी, गढ़ गढ़ी चमकौर दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति दी धार करे प्यारी, प्यार मुहब्बत सच रूप दरसाईआ।

१३४४
२२

✪ २७ जेठ शहिनशाही सम्मत ७ लक्ष्मण सिंघ, कुलवन्त सिंघ, बचन सिंघ, भजन सिंघ, सरैण सिंघ, अंग्रेज़ सिंघ,
वकील सिंघ, बंसो देवी, इन्द्र राम, देवा सिंघ, धर्म कौर, बिशन कौर, चूहड़ सिंघ, बचन सिंघ,
धर्मी देवी, पुंनूं राम, रोशन लाल, गुरदेई, कृपाल सिंघ, सन्तो देवी, कर्म सिंघ,
गुरमुख सिंघ, अजीत सिंघ, कर्मी देवी, पूरन सिंघ, खेमो देवी, वीरो देवी,
बेला सिंघ, सेवा सिंघ, भाईआं देवी, बंती देवी, मंगल सिंघ, चन्नो देवी,
राजा सिंघ, बाबू राम, बचनो देवी, प्यारी देवी, फ़रंगी राम, साँईं राम,
अनन्त राम, वकील सिंघ, तोती देवी, प्रेमी देवी
पिण्ड सई कलां ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे मैनूं मिल्या नबी नूह, नूह नौहां उत्ते ध्यान लगाईआ। मेरा चौदां वार तक्कया उस ने मूँह, मुख वेख नैण उठाईआ। फेर गुस्से विच पुछदा तेरा केहड़ा गुरु, मुर्शद कवण मनाईआ। मैं नक्क मरोड़ के किहा जिस दा हुक्म होणा शुरू, शरअ दा लेखा दए चुकाईआ। जिस दे हुक्म अन्दर पैग़म्बर औलीआ सब तुरू, तुरत आपणी कार कमाईआ। अगला हुक्म कदे ना मुड़ू, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जिस दे प्यार विच लख चुरासी आत्म जुड़ू, जोड़ी परमात्म आप रखाईआ। जिस दा मन्त्र नाम कलमा इक्को फुरू, फ़ुरने पिछले बन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल इक वरताईआ। नारद कहे मैनूं नदी नूह वखाई नईया, नौका बेपरवाहीआ। जिस दे चारों कुण्ट लिख्या इक्को सईआ, साजण बेपरवाहीआ। चार जुग दा लेखा तक्कया वहीआ, खाता विधाता फोल फुलाईआ। जां उपर निगह मारी मैनूं नज़र आ गया गोबिन्द वाला ढईआ, जो ढौंका ला के लए अंगड़ाईआ। बुल्ह दी याद आ गई जो कहिंदी थईआ थईआ, थरथराहट विच दुहाईआ। झट रूप प्रगटया अष्टभुज मईआ, अनूप दिता दरसाईआ। फेर काहन आ गया गवईआ, बंसरी नाद धुन शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे मिल गया मेलीआं विच्चों नूह, नौबत हक हक सुणाईआ। आह तक बुत रूह, बुतख़ान्यां बाहर रिहा समझाईआ। मैं वेख्या नूर अलाही हूबहू, होका हक हक सुणाईआ। मेरा खुशी होया लूं लूं, साढे तिन्न करोड़ वज्जी वधाईआ। अन्तर आवाज़ आई तूं ही तूं, तूं तूं दा ढोला गाईआ। अग्गों इशारा मिल्या हूं हूं, हां विच जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ।

नारद कहे मैनूं हस्स के किहा नूह नबी, नबीउल इन्सान ध्यान लगाईआ। इन्हां दा दिसे कोए ना तबी, तबीअत बदली ना कोए लोकाईआ। मेरी नौका चढ़ने सभी, सफ़ा सब दी देणी उलटाईआ। खुदा दा हुक्म मिलणा अभी, अज सर नाउ रिहा जणाईआ। मैं सेवा करनी ज़बी, जबराईल दए गवाहीआ। औह तक लै मुकदी जांदी चौधवीं सदी, सिदक रहिण कोए ना पाईआ। मेरे खुदा ने पिछली कीती करनी रद्दी, रद्दे अमल विच आपणा खेल खिलाईआ। प्रगट होवे ज़ाहर ज़बी, ज़दीद दा पर्दा आप उठाईआ। जिस दी धार किसे ना लभ्भी, ओह लबां दे अन्दर आपणा हुक्म दए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप समझाईआ। नारद कहे नबी औह वेख मैनूं पैंदीआं हाकां, धुर दा हाकम रिहा सुणाईआ। निगह मार लै मेरे काका, बच्चू बच्चयां वांग दृढ़ाईआ। नौ खण्ड पृथमी मेरा तक इलाका, चारों कुण्ट खेल खिलाईआ। संदेशा सुण लै बिना पत्रका पाता, पत्तन ते बैठयां दयां जणाईआ। मेरा रूप आदि जुगादि ना किसे पछाता, पच्छम विच पैणी दुहाईआ। नाता जुड़या नहीं रहिणा भ्राता, भईआ भईआ नाल टकराईआ। पिछलीआं याद कर लै बातां, जो मुहम्मद ईसा दितीआं सुणाईआ। मेरीआं कोई झूठीआं नहीं टाकां, धुर दा हुक्म अगम्म अथाहीआ।
१३४६ ओह वेख कलमे दे पिच्छे सब दीआं मुक गईआं वाटां, अगला पन्ध रिहा ना राईआ। सदी चौधवीं खुल्ह्ा करके झाटा, मेंढी १३४६
२२ सीस उतों खुल्ह्ाईआ। मैनूं दिसदी आ जोत अगम्मी लाटा, नूर नूर विच्चों रुशनाईआ। जिस ने उलटीआं कीतीआं खाटां, २२
खटका दो जहान वखाईआ। सब नूं भुल्ल जाणा पिछला पूजा पाठा, पाठक रहिण कोए ना पाईआ। बौहड़ी नज़र ना आए गोबिन्द वाला बाटा, अमृत रस ना कोए भराईआ। बिरहों रोग विच मेरे अन्तर पैंदीआं तराटां, बौहड़ी उफ़ कर सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नूह कहे नारदा मेरा वेख लै वञ्झ मुहाणा, मुहब्बत विच जणाईआ। नारद किहा सज्जणा एह कदीम दा पुराणा, इस दी चले ना कोए चतुराईआ। उठ वेख खेल श्री भगवाना, की करता कार कमाईआ। जोती धार पहर के जामा, वेस अवल्लड़ा आया वटाईआ। जिस लेखा पूरा करना कृष्ना रामा, पैग़म्बरां उत्ते रहमत सच कमाईआ। उहदा रूप अनूप शाहाना, शहिनशाह इक अख्वाईआ। मैं सुणया उस दा गाणा, जो गहर गम्भीर रिहा दृढ़ाईआ। जिस आत्म ब्रह्म ब्रह्म आपणा रूप प्रगटाउणा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस दा इक्को चिल्ला तीर कमान इक्को होए निशाना, खण्डा खड़ग इक चमकाईआ। जिस ने रूप अनूप दरसाउणा ज़िमी असमाना, दो जहानां आपणी कल वरताईआ। तेरे मेरे वेंहदयां बदल जाणा ज़माना, तेरी नईया नौका कम्म किसे ना आईआ। उस ने किसे नूं लाउण नहीं देणा बहाना, फड़ बाहों सारे लैणे उठाईआ। नबीओ तुहानूं गाउणा पैणा

उस दा तराना, जो तुरीआ तों बाहर रिहा दृढ़ाईआ। ओह सूरबीर मर्द मर्दाना, मददगार संग ना कोए रखाईआ। आह वेख मेरे कोल लेख जो लिख के गया दस दशमेश उस दा रूप होणा श्री भगवाना, विष्न विश्व धार विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। नारद कहे नबी जी की दस्सां, दास्तान की दृढ़ाईआ। मैं खेल वेख के हस्सां, हस्ती तकां बेपरवाहीआ। जिस दा वक्त आया मसां, जिस मसल देणी सर्ब लोकाईआ। जिस दा रूप नहीं कोई बाहवां लत्तां, सिर धड़ ना कोए जणाईआ। उस ने सब दीआं रखणीआं पत्तां, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। हुक्म विच फ़र्क ना रखे रता, रती रती भेव ना कोए जणाईआ। जिस दा इशारा दे के गया नानक तपा, तपदयां हिरदयां विच सुणाईआ। उस ने कूड़ दी मेट देणी सफ़ा, मलेछां डेरा देवे ढाहीआ। उहदे कोलों जे खट्टया जांदा ई ज़रूर खट्ट लईं कोई नफा, नुकसान अग्गे होए ना राईआ। उहदे हुक्म नूं समझीं कदे ना होवे ख़फ़ा, गुस्से विच कदे ना आईआ। बिना अक्खरां तों धुर दा बदल के वेख लै सफ़ा, जित्थे अलिफ़ ये ना कोए चतुराईआ। जिसने पिछली कीती सारी करनी रफ़ा, रफ़ता रफ़ता लेखा सब दा दए चुकाईआ। उस दा इक्को हुक्म इक्को लग्गणी दफा, जिस विच तरमीम ना कोए कराईआ। मैं तैनूं पहलों दस्स दिता पता, पतिपरमेश्वर हुक्म सुणाईआ। जिस दा लेखा चूंकि चुनांचि
१३४७ नहीं कि अलबत्ता, इलम आलमां वाली ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल १३४७
२२ साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। नबी कहे नारदा मेरी तक लै किशती, जो किशत किशतवार जणाईआ। मेरा २२
महिबूब तक लै बहिश्ती, जिस दी बहिस विच ख़लक खुदाईआ। नारद किहा ज़रा आपणी खोल्ह लै दृष्टी, दृष्टी विच्चों दृष्टी पड़दा लाहीआ। तेरी निक्की जेही नईया विच कदे चढ़ सके ना सारी सृष्टी, श्रेष्ट कम्म ना कोए कराईआ। मुहम्मद मूसा ईसा दे लेख वेख लिख्ती, जो लिख के धुरदरगाही दिता फड़ाईआ। तुहानूं वड्याई दिती सिर्फ़ इक इक दी, तिन्न तिन्नां तों बाहर सके ना कोए बचाईआ। मैनूं वखा निशानी तेरे कोल किस किस दी, किस दी किस्मत दए बदलाईआ। जे तेरी धार पथ्थर इट्ट दी, मस्जिदां विच मसले हल्ल कराईआ। ओह वेख मुहम्मद दी आसा पिटदी, बिन नैणां नीर वहाईआ। कलमे वाल्यां सुरत किसे ना टिकदी, टिकटिकी विच नज़र किछ ना आईआ। मुहब्बत रहिणी नहीं चार यारी मित दी, मित्रा तैनूं दयां दृढ़ाईआ। हुण खेल वरतणी इक्को परमेश्वर पित दी, जो प्रितपालक होवे ख़लक खुदाईआ। उहने कलेश मेटणी नित दी, निरगुण हो के आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक दया कमाईआ। नारद कहे नबी जी मैनूं हुक्म आया शताबी, शरअ तों बाहर सुणाईआ। सजदा कर अदाबी,

रोहब नाल सीस झुकाईआ। तुहाडा लेख अरबी उर्दू दा बदल जाणा विच पंजाबी, पंजा नानक वाला दए गवाहीआ। शरअ रहिण नहीं देणी किताबी, कुतबख़ान्यां दा डेरा ढाहीआ। मलकीअत रहिणी नहीं कोई अराज़ी, मनसूख़ होणी ख़लक खुदाईआ। कुछ याद लेखा रखणा खेल माज़ी, हकीकत हाल वाली दृढ़ाईआ। कलमे दा रहिणा कोई नहीं काज़ी, कज़ा सब दे उत्ते छाईआ। इक खुदा नूं कर लउ राज़ी, रज़ा विच चलणा चाँईं चाँईंआ। किते बणे ना रिहो पिछले नमाज़ी, रोज़यां विच झट लँघाईआ। हुण सब दी उलटण वाली बाज़ी, बाज़ां वाला दए दुहाईआ। किसे नूं ख़त ख़तूत घल्लणा नहीं जवाबी, जवाब तल्बी ल्ए कराईआ। दोवें छड दयो इश्क हकीकी ते मजाज़ी, मज़ा चक्खो बेपरवाहीआ। जिथ्थे नूर नहीं आफ्ताबी, चन्द चन्द ना कोए रुशनाईआ। इक्को प्रेम मुहब्बत दी तकणी आज़ादी, शरअ ज़ंजीर ना कोए बंधाईआ। झगड़ा रहिणा नहीं कोई समाजी, समां सब दा दए गवाहीआ। जेहड़ा मालक आदि अन्त दा आदी, अन्त इक इक अख्वाईआ। उस ने वेखणे जगत जहान अपराधी, दूती दुष्ट फोल फुलाईआ। ओस दा हुक्म नाम खण्डा फौलादी, फ़िलासफ़र समझ कोए ना आईआ। जिस दे कोल ब्रह्मण्डां खण्डां दी अबादी, चौदां तबक ध्यान रखाईआ। ओह शहिनशाह शाह पातशाह हिसाबी, इस्म दा मालक इक अख्वाईआ। जिस नूं हज़रतां किहा हज़ूरे जनाबी, जनाबे आहला इक अख्वाईआ। जिसदा नूरे चशम हो के जगे जगत महताबी, महिराब तन वजूद वाली बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। नूह किहा मैं वी सुणया हुक्म बाकायदा, बाकायदगी विच जणाईआ। सब दा पूरा होया मुआहिदा, मुबारक विच सीस निवाईआ। अग्गे होणा नहीं किसे अलहिदा, वक्खरी कार ना कोए कमाईआ। मेरा मालक ल्ए जाइज़ा, लेखा वेखे थांउँ थाँईंआ। मेरा वहिण जेहड़ा नै दा, नौ नौ नौ नाल वड्याईआ। नारद किहा एह निक्का जेहा खेल हां हूं हैं दा, हरि का भेव कोए ना पाईआ। अन्दरों झगड़ा मुका दे मैं दा, मैं मनसा रहे ना राईआ। एह जगत जहान खेल लय दा, सदा नजर कोए ना आईआ। दीन मज़्हब विरसा बणया नहीं किसे बै दा, सदा मालक नज़र कोए ना आईआ। हुण इक्को जैकारा होणा आत्मा परमात्मा दी जै दा, जै जैकार करे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे मैनूं पिच्छों वज्जदा धक्का, ज़ोर नाल सुणाईआ। चेता भुल्ल जाणा मक्का, मदीने काअब्यां अक्ख ना कोए उठाईआ। अज्ज वायदा कर लै पक्का, रसूल रसूलां नाल हथ्थ मिलाईआ। जिस बेड़े ते शरअ दा लग्गदा टका, उस उत्ते चढ़न कोए ना पाईआ। जिन्हां ने खाधा वच्छा कट्टा, कटाक्ष लग्गे थांउँ थाँईंआ। आह वेख लै सदी चौधवीं दा अख़ीरी पट्टा, लेख लिख्या बेपरवाहीआ। सब दा चीथड़ होणा फटा,

१३४८
२२

तन पोशाक ना कोए सुहाईआ। कलमे दा कलमे नाल पैणा रट्टा, रुटीन नाल आपणा कम्म कराईआ। शरअ विच शरअ होणी बटा, ज़ीरो सिफ़र नाल टकराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा इक सुणाईआ। सच संदेशा सुण लै अगम्मी बात, पर्दे विच सुणाईआ। जिस वेले सतारां हाढ़ दी आवे रात, रुतड़ी रुत नाल महकाईआ। नबी नूह तूं आपणी हाज़र करनी ज़ात, ज़ात ज़ात विच रखाईआ। नाले ब्यान करीं किस बिध सृष्टी होणी वफ़ात, वफ़ादार कवण अखवाईआ। नाल लै के आउणी कलमां वाली दवात, लेखा सब दा दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक सति सच दी कार कमाईआ। नूह कहे मेरी किथ्थे होवे बेड़ी, बेड़ा कवण पार कराईआ। नारद किहा भगत दवारे आवीं रेढ़ी, धक्का लावां चाँईं चाँईंआ। फेर आसा दस्सीं जेहड़ी, ज़ेर ज़बर फ़र्क रहे ना राईआ। पर याद कर लै सब दी जड़ जाणी उखेड़ी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सब दा लेखा पूर कराईआ। नबी किहा मैं लै के आवां आपणी धार, धार धार नाल रलाईआ। जगत आसा करके पार, पार किनारा वेख वखाईआ। जिथ्थे इक्को परवरदिगार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। उस दवारे बणां ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। हुक्मी हुक्म दा बण के ताबयादार, ताबयादारी विच सीस निवाईआ। आपणी नईया करके ज़ाहर, ज़ाहर ज़हूर अग्गे टिकाईआ। की हुक्म सच्ची सरकार, अग्गे अगली मंग मंगाईआ। एह खेल वरतणी जगत थित सतारां हाढ़, शहिनशाही सम्मत सम्मत सत्त नाल वड्याईआ। उस वेले रात दे साढे बारां चौदां गुरमुखां चौदां रौंद चलाउणे काड़ काड़, निगह ज़मीन असमान उपर उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा लहिणा देणा कर्ज़ा मकरूज हो के दए उतार, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ।

२८ जेठ शहिनशाही सम्मत ७ सन्त राम, प्रीतम सिँघ जाड़, प्यारी देवी बदीपुर पिण्ड गोकले चक्क ज़िला जम्मू

सदी चौधवीं कहे मैं भज्जी दौड़ी, निरगुण धार वाहो दाहीआ। चौदां तबकां ला के वेखी पौड़ी, डण्डे डण्डे पन्ध मुकाईआ। दरोही मुहम्मद वेख्या करदा बौहड़ी बौहड़ी, कूक कूक सुणाईआ। मेरी उम्मत वेल हो गई कौड़ी, आबेहयात रस ना कोए भराईआ। वुज़ू करदे विच्चों जौहड़ीं, जलधार ना कोए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

१३४६
२२

कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख्या चढ़ के धुर दे डण्डे, डौरू डंक डंक वजाईआ। चार यारी वेखी अन्तिम कन्ढे, कन्ढी बैठे अक्ख खुल्हाईआ। मुहम्मद तक्कया वेखे ख़ाकी बन्दे, बन्दगी वाले फोल फुलाईआ। मेरे चौदां सौ साल एवें लँघे, लँघदयां देर लग्गी ना राईआ। मुल्लां शेख़ मुसायक हो गए गंदे, नूरे चशम नूर ना कोए रुशनाईआ। सब दे पाटे होए तम्बे, पर्दा पुश्त पनाह ना कोए वखाईआ। तन वजूद दिसण ना रंगे, दाढ़ी रतड़ी दए गवाहीआ। बौहड़ी टुट्टी मूल ना गंढे, गंढणहार ना कोए अख्वाईआ। जिस दी धार हसन हुसैन शहादत दे गए बिना पाणी ठंडे, सांतक सति ना कोए कराईआ। ओह मुसाफ़र बण गए लम्बे, कदीम दा आपणा आसण लाईआ। दरोही खुदा दी यामबीन आलमीन मक्का मदीना कम्बे, काअबे रहे कुरलाईआ। सब दे लेख धुरदरगाही सचखण्ड दवारे टंगे, बिन अक्खरां दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मैं चढ़ के उपर चोटी, चोटी हो के ध्यान लगाईआ। मैं सब दी आसा तकी खोटी, खोटे खरे रूप ना कोए बदलाईआ। खुदा दा नाम वेचदे कारन रोटी, मज़्बां विच पई दुहाईआ। अक्खरां वाली पोथी हो गई थोथी, कलमा हक ना कोए दृढ़ाईआ। रौला प्या चौदां तबक चौदां लोकी, परलोक वेखण थांउँ थाँईंआ। मैनूं याद आ गया की संदेशा
१३५० दे के गया रविदास चमारा मोची, सहिज नाल दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं तेरे अन्त किसे नहीं समझणी प्रभ दी अगम्मी सोच १३५०
२२ सोची, समझ समझ ना कोए जणाईआ। उम्मत दी मुहम्मद दे हथ्थों खुसणी रोज़ी, राज़क रिज़क रहीम आपणा हुक्म वरताईआ। २२
तेरी आशा होणी कोझी, कमलीए तैनूं दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मैं उत्ते चढ़ के तक्कया नाल ग़ौर, गहर गम्भीर वेख वखाईआ। जेहड़ा आदि अन्त सब दा शौहर, छोहर बांका नूर इलाहीआ। जिस ने आपणा वखाउणा ज़ौहर, जाबर जबर आपणी खेल खिलाईआ। दीन दुनी दे बदल देणे तौर, तबकां सबकां पर्दा दए उठाईआ। जिस दे हथ्थ विच सब दी डोर, डौरू डंका इक करे शनवाईआ। उसे नूं सब ने किहा ब्राह्मण गौड़, वेद व्यासा दए गवाहीआ। जिहदा आदि अन्त सति सरूप नवां नकोर, निक्का वडा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता नूर इलाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं तक्कया नूर अलाह परवरदिगार, इलाही नूर नज़री आईआ। उस हुक्म संदेशा दिता अगम्म अपार, संदेशा इक सुणाईआ। ओह तक मुहम्मदी यार, यराने सारे रहे तुड़ाईआ। किसे दा किसे उत्ते रिहा नहीं कोई एतबार, बेएतबारी होई ख़लक खुदाईआ। मूसा ईसा नैण रहे उग्घाड़, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। कवण सृष्ट सबाई चबाए आपणी दाढ़,

दाढ़ां हेठ दबाईआ। मूसा किहा ईसा जिस ने तैनूं फाँसी दिता चाढ़, सलीब गल विच लटकाईआ। ओह खेल करे सच्ची सरकार, अमाम अमामा नूर इलाहीआ। जिस नूं सजदे कर कर झुकदे रहे विच संसार, हदीसां विच सिफ्ती राग अल्हाईआ। ओह मालक ख़ालक होया ज़ाहर, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। जिस नूं कहिंदे आए इस्तगुफ़ार, ग़फ़्लत सब दी दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं निउँ के कीता सजदा, बिन सीस सीस झुकाईआ। प्रभू मुहम्मद तेरा बरदा, बांदी हो के दयां जणाईआ। ओह वेख कलमा पढ़दा, तूं ही तूं ही राग अल्हाईआ। तेरी मंज़ल चढ़दा, चौदां तबक भज्जे वाहो दाहीआ। निगह ज़मीन असमान करदा, करदार हो के वेख वखाईआ। की खेल होणा मेरे घर दा, गृह पड़दा रिहा चुकाईआ। जो लेखा परवरदिगार सांझे यार दा, सो यराना तोड़ दए निभाईआ। मेरा मकरूज दा कर्ज़ा सदी चौधवीं आप उतार दा, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण ध्यान लगाईआ। जन भगतां सूफ़ीआं सन्तां निरगुण धार काज संवारदा, स्वार्थ आपणा ना कोए रखाईआ। जिस दा खेल आदि जुगादि जुग चौकड़ी आर पार दा, दो जहानां मर्द मर्दाना वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जाता पुरख बिधाता रूप अनूप सच्ची सरकार दा, दूसर नज़र कोए ना आईआ।

१३५१ २२

✪ २६ जेठ शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर शब्द कहे गुरमुख साचे धुर दे फुल्ल, फुलवाड़ी प्रभ लोकमात महकाईआ। जन भगत रूप बणा के आपणी कुल, कुल मालक होए सहाईआ। जन्म जन्म दी कर्म कम दी बख्शे भुल्ल, अभुल्ल देवे माण वड्याईआ। जिन्हां दे बराबर नहीं कोई तुल, सम रूप ना कोए दरसाईआ। ओह भगत दवार दे गुलशन दा गुल, महक प्रेम वाली महकाईआ। कलयुग माया विच जाण ना रुल, मोह ममता आए तजाईआ। नाता जोड़ के नाल सुल्हकुल सच दी साची कार कमाईआ। लंगर खा के इक्को चुल्ह, प्रेम प्रीती विच झट लँघाईआ। सच दा बूटा कदे जावे ना हुल्ल, पति टहिणी फुल्ल फल आप लगाईआ। जन भगतां दीपक होवे कदे ना गुल्ल, नूर जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे जन भगत सुहञ्जणे फूल, हरि करता आप महकाईआ। जिन्हां दा मालक इक कन्तूहल, सचखण्ड निवासी नज़री आईआ। जो धर्म दी धार दस्से असूल, असलीअत आपणी इक

दृढ़ाईआ। प्रेम प्रीती बख़्श माकूल, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। चरण चरणोदक दे के धूल, धूढ़ी टिक्के ख़ाक रमाईआ। जिन्हां दा लेखा करे ना कोए वसूल, राय धर्म ना अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे फुल्लां वांग जाओ महक, खुशबू प्रेम वाली प्रगटाईआ। धर्म दवारे बणो लायक, हरिजन आपणा रूप बदलाईआ। धुर दा मालक तक्को नायक, नर नरायण नूर इलाहीआ। जिस दी अवतारां पैग़म्बरां मन्नी हदाइत, गुरु गुरदेव सीस निवाईआ। कलमे दी मंज़ूर कीती शरायत, शरअ विच सीस झुकाईआ। सो सच वस्त भगतां करे इनायत, भगवन आपणी दया कमाईआ। जन्म कर्म लेखे लाए नाल रयाइत, रवैत आपणी आप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे धुर दे फुल्ल बण जाओ चंगे, कूड़ी क्रिया देणी कढ्ढाईआ। भगत भगतां नाल करन ना दंगे, गुस्सा गिला ना कोए जणाईआ। पिछले वेले सब दे लँघे, अग्गे आपणा हुक्म सुणाईआ। तुसीं बन्दयां वरगे नहीं बन्दे, बिना बन्दगी तों बन्दगी वाले दिते प्रगटाईआ। तुहाडा खेल वेख के राय धर्म चित्रगुप्त कम्बे, लाड़ी मौत अक्ख दबाईआ। जिन्हां दे पैंडे अग्गे रहे नहीं लम्बे, पाँधी पन्ध ना कोए भवाईआ। खेल तकणे प्रभू संदे, जो सँध्या सरघी आपणा रंग वखाईआ। जो
१३५२ सतिगुरु दवार करनी किरत दे करदे धन्दे, दिवस रैण कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, १३५२
२२ करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे हरिजन साचा धर्म दा हीरा, धर्म धार विच समाईआ। २२
जिन्हां दे सिर ते प्रभ ने बन्हणा चीरा, चिरी विछुन्ने लए मिलाईआ। ओह इक दूजे नूं सदा समझण भैण भाई वीरा, प्रेम मुहब्बत विच बुलाईआ। गुरमुख कलयुग विष्टा वाला बणे कोए ना कीड़ा, हँस रूप लैणा बदलाईआ। सति सच दा मार्ग नहीं कोई भीड़ा, भीड़ी गली ना कोए वखाईआ। जन भगतो अज्ज तों सारे बन्ह लओ बीड़ा, आपणा भार आपे लओ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। फुल्ल कहिण असीं भगतां उत्ते लाउणी बरखा, प्रभ दिती माण वड्याईआ। गुरसिखो याद कर लओ सिख नूं सिख तरसदा मर गया विच सरसा, सिख नाल सिख सक्या ना कोए मिलाईआ। उस नूं कोई बहुता नहीं बीत्या अरसा, थोड़ा समां रिहा जणाईआ। हुण वी तुहाडे उत्ते पैण वाला पर्चा, प्राचीन दा लेखा वेख वखाईआ। जन भगतो तुहाडे विच निंदिआ वाली होवे कदे ना चर्चा, जो निन्दक होवे उस नूं बाहर कढ के दयो वखाईआ। क्यों तुहाडा मालक वाली अर्शा, अर्शी प्रीतम नूर इलाहीआ। जिस दा सम्मत शहिनशाही सत्त दा बरसा, जन भगतो घर घर गुरमुखां बरसी रिहा मनाईआ। भगत दवारा धाम अगम्मा उपर धरता,

धरनी धरत धवल वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। फुल्ल कहिण साडी वेखो बहार, खुशीआं विच जणाईआ। जन भगतो भगतां नाल करना प्यार, मुहब्बत मुहब्बत विच्चों प्रगटाईआ। इक्को घर इक्को तुहाडा घर बार, इक्को गृह नज़री आईआ। इक्को मालक इक्को अगम्म एकँकार, इक इकल्ला अगम्म अथाहीआ। इक्को दे तुसीं सुत दुलार, पिता पुरख अकाल इक अख्वाईआ। अग्गे नूं झगड़े छड्ड दयो संसार, झगड़यां विच हथ्थ किछ ना आईआ। अन्दरों होवे ना कोए दुख्यार, खुशीआं विच आपणा झट लँघाईआ। क्यों तुसीं वसदे उस प्रभू दे दरबार, जिथ्थे पंज दरबारी देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। फुल्ल कहिण साडी पुनह पुनह निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। प्रभ ने खेल करना अपर अपार, अपरम्पर स्वामी आपणा हुक्म वरताईआ। पहली हाढ़ नूं हरिसंगत नूं करे निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। शब्द देवे जे तुसीं नहीं छड सकदे हँकार, मैं निमाणा हो के सेव कमाईआ। फेर तुसीं प्रभू दे बणिउँ सिक्दार, सिर हउमे वाला ताज टिकाईआ। सतिगुर चाकर बणे होवे ख़िदमतगार, सेवक सेवा सच कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। फुल्ल कहिण सतिगुर शब्द कीता खेल अपार, अपरम्पर दे दृढ़ाईआ। तेरे दर क्यों फिरे कूड़ हँकार, भज्जे वाहो दाहीआ। क्यों होया धुआँधार, सति जोत ना कोए रुशनाईआ। क्यों मनुआ होया अवार, बन्धन बंध ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी होणा सहाईआ। सतिगुर शब्द कहे सब ने इक्को लड़ फड़ना, इक्को राह तकाईआ। इक्को मंज़ल चढ़ना, इक्को घर वज्जे वधाईआ। पंजां दरबारीआं विच्चों गुरदर्शन ने सतारां दिन सवा घंटा भगत दवार विच धुर दा हुक्म पढ़ना, वक्त चार पंज सुहाईआ। हरिजन प्रेम विच इक दूजे नूं वरना, नाता मुहब्बत वाला रखाईआ। इक्को साहिब दी पड़ना सरना, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे जो हरि भगत दवार सेव कमाउंदे सिख, सिख्या धुर दी लैण अपनाईआ। उहनां सतिगुर धार मस्तक लैणी लिख, हाढ़ सतारां वंड वंडाईआ। पंजां लिखारीआं बहिणा उत्ते इक इक इट्ट, इट्ट रविदास चमारे वाली राह तकाईआ। फेर डोरी इक्को उत्ते देणी सिट्ट, जो करता धुरदरगाहीआ। इक इक आपणी जेब विच लिख के पाउणी चिट, चेतन चेतन चेतन रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे सतारां हाढ़ खेल तक्कण गण गधंरव, सुरप्त राजा इन्द्र किन्नर यशप ध्यान लगाईआ।

सदी चौधवीं दी गोली नाल मिल के गीत गाउणा दविन्दर, तूंबी तन्द सितार हिलाईआ। गुरदर्शन दा रूप बणया होवे ज्यों शहिज़ादी सिन्धण, लबास सिन्धीआं वाला वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। सतारां हाढ़ कहे पंजां लिखारीआं दे मस्तक विच होण पंज पंज निशान, पंजे धुर दे रंग रंगाईआ। पंजां दरबारीआं चिट्टे चादरे उत्ते लैणे ताण, ताणा पेटा वंड ना कोए वंडाईआ। पंजां प्यारयां मिल के गाउणा गाण, शब्द धुर दा इक सुणाईआ। सारी संगत ने करना परवान, परवाने बण के सीस निवाईआ। इक गुरमुख माझे दा बणया होवे बेज़बान, मुक्खों बोल ना सके राईआ। मालवे वाल्यां दा बणया होवे इक ख़ान, मुगलां वाला रूप वटाईआ। दुआबे वाल्यां दा इक बणया होवे अंञाण, बाली बुध समझाईआ। जम्मू वाल्यां दा इक नज़र आवे पहलवान, लंगोटे दोहां मोढया उत्ते टिकाईआ। दिल्ली विच्चों बणयां होवे इक सैनतान, तान सैन आपणा रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। फुल्ल कहिण जन भगतो फुल्लणी बनराए, बनखण्ड खुशी मनाईआ। इक्की गुरमुख माझे वाले इक प्रभू दे होण जाए, आपणा मात पित भुलाईआ। इक्की गुरमुख दुआबे वाले करन हाए हाए, हाए तेरा नाम दुहाईआ। इक्की गुरमुख मालवे वाले मठिआई खुशीआं नाल लैण खाए, खा खा मस्ती देण बणाईआ। इक गुरमुख जम्मू वाला सब दे अग्गे जगत रुकावटां डाहे, हरिसंगत रोके थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा करे बेपरवाहे, बेपरवाह आपणी कार कमाईआ।

✪ ३१ जेठ शहिनशाही सम्मत ७ कपूर सिँघ ते रणजीत सिँघ दे नवित मोगा शहर ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सतिगुर शब्द कहे विष्नूं दस्स आपणा विषा, विशेष आपणी धार प्रगटाईआ। ब्रह्मे ब्रह्म ब्रह्माद दी दस्स दे इच्छा, निरइच्छत हो के ध्यान लगाईआ। शंकर चारों कुण्ट दा भेव खोलृ दे धर्म दी दिशा, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण ध्यान लगाईआ। अवतार दस्सो आपणा हिस्सा, हिस्सेदारी की जणाईआ। पैग़म्बर ब्यान करो आपणा किस्सा, की किस्मत दीन दुनी बदलाईआ। गुरु गुरदेव वेखो पिछा, पिछला लेखा फोल फुलाईआ। धरनी धरत धवल पृथ्मी आकाश तक्को अगम्मी पिता, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। सारे दस्सो किस दे नाल करे सच दा हिता, हितकारी रूप दरसाईआ। किस नूं आपणा रूप दस्से वड्डा निक्का, निक्का

१३५५
२२

वड्डा भेव चुकाईआ। की खेल करे अबिनाशी इका, एकँकार अगम्म अथाहीआ। सारे कहिण दीन दयाले कढणा आपणा सिट्टा, जुग चौकड़ी लेखा दए मुकाईआ। लहिणा देणा पूरा करे पथ्थर इट्टां, दृष्ट इष्ट आपणा इक समझाईआ। जन भगतां लावे मस्तक टिक्का, धूढ़ी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। सति धर्म चलाए अगम्मी सिक्का, मोहर आपणा नाम जणाईआ। लेखा जाणे जो कलम शाही नाल नहीं लिखा, कातब लेख ना कोए दृढ़ाईआ। फेर निगाह मारे वेखे शब्दी धार सिखा, गुरमुख गुर गुर खोज खुजाईआ। जगत जहान होवे जित्ता, जागरत जोत करे रुशनाईआ। वेखे विगसे नित नविता, निरगुण सरगुण कार कमाईआ। अन्त भगतां सचखण्ड निवासी बण के इक्को पिता, पतिपरमेश्वर दया कमाईआ। लेखे ला के रक्त बूंद हड्ड मास नाड़ी रत्ता, रत्न अमोलक लए बणाईआ। प्यार मुहब्बत विच होण देवे ना कदे दो चिता, ठगौरी मन रहे ना राईआ। शब्दी शब्द चला के सिक्का, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। सतिगुर शब्द कहे विष्न ब्रह्मा शिव तक्को जगत जहाना, बिन नैणा नैण उठाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु तक्को आपणा ब्याना, जो भविक्खतां विच जणाईआ। सृष्टी इष्टी मारो दृष्टी विच ध्याना, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। खेल वेखो आपणा सीता रामा, कृष्ना कान्हा अक्ख खुलाईआ। पैग़म्बर तक्को हक पैग़ामा, संदेशा नूर इलाहीआ। गुरु गुरदेव सुणो दमामा, डंका इक्को नाम शनवाईआ। कलयुग रैण अंधेरी तक्को शामा, शमां दीप ना कोए रुशनाईआ। पंज तत तक्को तको सिख मुरीद इन्साना, मुर्शद हो के खोज खुजाईआ। खेल तक्को महिबूब रूप रहमाना, नूर नूर चमकाईआ। जिस नूं झुक झुक करो सलामा, निव निव लागो पाईंआ। सो मेहरवान मेहर करे नौजवाना, नौबत आपणा नाम हक वजाईआ। झगड़ा मेटे लख चुरासी कूड़ आश्याना, गृह इक्को दए वखाईआ। जन भगत सुहेले कर परवाना, परम पुरख देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी साची कार कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण साडी इक अरदास, बेनन्ती दईए जणाईआ। अवतार कहिण वेख साडी ख़ाहिश, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। पैग़म्बर कहिण तेरी करीए तलाश, ज़िमीं असमानां खोज खुजाईआ। गुरु गुरदेव कहिण वेखीए अगम्मढ़ी रास, सोहणा रंग रंगाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाश, तेरे हथ्थ वड्याईआ। निगह मार पृथ्मी (आकाश), गगन गगनंतर खोज खुजाईआ। सच मुहब्बत रही किसे ना पास, पिता पूत संग ना कोए निभाईआ। चारों कुण्ट अंधेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। एस वेले किरपा कर आप, आप आपणा मेल मिलाईआ। आत्म परमात्म बख्श के जाप, जगजीवण दाते हो सहाईआ। जन भगतां बणा सज्जण साक, मीत मित्रा इक दरसाईआ। निरगुण सरगुण धार बख्श इत्फिाक,

मेल मिलावा होवे चाँईं चाँईंआ। मनूए दा रहे ना अन्दर निफ़ाक, अमृत मेघ इक बरसाईआ। सब तों उत्तम श्रेष्ट भगतां दस्स समाज, समग्री आपणा नाम वरताईआ। सांझा कर काज, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। धर्म दा बख्श राज, मेहर नज़र उठाईआ। झगड़ा मेट समाज, द्वैती पन्ध मुकाईआ। गुरमुखां उपर किरपा करीं आज, जो आजिज़ हो के सीस निवाईआ। मेहर करनी उपर कपूर सिँघ ते राज, रणजीत रंग विच रंगाईआ। अन्दरों सब दी खोलणी जाग, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। घर घर प्रेम दा जगे चराग़, साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर वज्जे वधाईआ। दुरमति मैल रहे ना दाग़, पापां कर सफ़ाईआ। तेरा बाग़ बगीचा आपे हरया कर बाग़, फुल्ल फुलवाड़ी आप महकाईआ। तेरे चरणां इक आदाब, सजदा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मेला लैणा मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे सच प्यार दी दे दे ताकत, मुहब्बत आपणे नाल रखाईआ। चरण कँवल बख्श ल्याकत, नूर इक्को इक चमकाईआ। गुरमुख गुरमुख दी करे शनाखत, हरिजन हरिजन वेख वखाईआ। जगत विद्या रहे ना कोए अणजाणत, बुध बिबेक देणी कराईआ। धुर दा नाम बख्श न्यामत, नर नरायण तेरी सरनाईआ। आपणयां भगतां रख सही सलामत, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। शरअ दी रहे ना कोए अलामत, कूड़ क्रिया डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। सतिगुर शब्द कहे जन भगतां बणया रहे मिलाप, जोड़ जोड़ना चाँईं चाँईंआ। इक दूजे नूं वेख के सोहँ अन्दरों निकले जाप, मस्तक खुशीआं विच खिलाईआ। सारे मन्नण तैनूं अगम्मा बाप, पिता पुरख अकाल सीस निवाईआ। रूह बुत दोवें करने साफ़, पतित पुनीत रहिण कोए ना पाईआ। जन्म कर्म दा लेखा बदल देणा पूरब वाली किताब, कुतबख़ान्यां डेरा ढाहीआ। सदा सहायता करीं आप, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। धर्म दी धार बख्शणा इत्फिाक, इत्फिाक आपणे नाल बणाईआ। कूड़ दा लेखा करना बेबाक, हउमे रोग रहे ना राईआ। हर हिरदे अन्दर बख्शणी शांत, सांतक सति सति वरताईआ। अन्दर रहे ना कोए भरांत, भरम भुलेखा देणा कढ्ढाईआ। चरण प्रीती जोड़ के नात, साचा मेला लैणा मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे किरपा करनी जगत दी धार, जगजीवण दाते तेरी सरनाईआ। दीन दुनी दा दुनी विच चलाउणा विवहार, विवहारी हो के खेल खिलाईआ। भगतां भगतां नाल ना रहे उधार, लेखा जन्म कर्म चुकाईआ। आत्म ब्रह्म दा बख्शणा प्यार, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। तेरा हुक्म सच्ची सरकार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। इक्ती जेठ दा दिवस विचार, दिवस आपणी दए गवाहीआ। जिस कारन तेरे प्यार दा कीता विहार, मुहब्बत विच ध्यान लगाईआ। सो

सच दवारे करीं स्वीकार, सच दे मालक होणा सहाईआ। सति दा सति सच दा सच जगत दा जग जुगत नाल चलाउणा विहार, जुगती बिध आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा सद जन भगतां पाउंदे रहिणा सार, सार शब्द सार सर दी कार कमाईआ।

✪ पहली हाढ़ शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल रात नूं ज़िला अमृतसर ✪

जेठ कहे मैं प्रभू नूं कीती अन्त डण्डावत, बन्दना विच सीस निवाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले मैं दीन दुनी तकणा चाहुंदा बग़ावत, बग़लगीर रहिण कोए ना पाईआ। ईमान धर्म विच रहे ना कोई सलामत, सबूरी सबर ना कोए रखाईआ। सच वस्त तेरा नाम मिले ना किसे न्यामत, अनरस ना कोए जणाईआ। किरपा निधान वखाउणी सदी चौधवीं क्यामत, कायम
१३५७ मुकाम तेरी ओट तकाईआ। सतिजुग साचे रहे ना कोए अणजाणत, पर्दा परदयां विच्चों देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप १३५७
२२ हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दर हुक्म इक सुणाईआ। जेठ कहे मैं झुकया धुर मालक कीता २२
सलाम, सजदा सीस निवाईआ। मेरे मेहरवां अमाम, ईमान तेरी झोली पाईआ। तेरे कलमे नाल कलम दा होया कलाम, कायनात वेख वखाईआ। शरअ शरअ नूं कीता कत्लेआम, कातिल मक्तूल दीन मज़्हब रूप जणाईआ। सदी चौधवीं सब दा विगड़या इंतज़ाम, हकूमत हक ना कोए कमाईआ। सच दा सच होया ग़ुलाम, ग़ुरबत ग़ुरबत नाल ठुकराईआ। मैं तेरा खेल वेखणा चाहुंदा विच अवाम, बिन नैणां नैण उठाईआ। शरअ दा लेखा मुकाईं तमाम, तमां कूड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पुरख अकाल किहा जेठ ओह वेख मेरा हाढ़ महीना चढ़दा, चढ़दा लहिंदा ध्यान लगाईआ। लेखा जाणे हँकार गढ़ दा, गढ़ी चमकौर दए गवाहीआ। जिस लहिणा मुकाउणा चोटी जड़ दा, जड़ चेतन खोज खुजाईआ। ओह खेल जाणे लख चुरासी घर दा, गृह गृह फोल फुलाईआ। रूप धर नरायण नर दा, नर हरि आपणा वेस वटाईआ। लेखा जाणे कलयुग कल दा, कल काती खोज खुजाईआ। लख चुरासी फिरे छल दा, अछल छलधारी आपणा हुक्म वरताईआ। जिस लहिणा देणा पूरा करना बलि दा, बावन आपणा रंग रंगाईआ। झगड़ा मुकाउणा कूड़ कुड़यारे कलयुग दल दा, विकार हँकार डेरा ढाहीआ। मालक बणे जल थल दा, महीअल

पर्दा आप चुकाईआ। झगड़ा मेटे द्वैती सल्ल दा, दीन मज़्हब ज़ात पात रहिण ना पाईआ। जन भगतां विछोड़ा मेटे घड़ी पल दा, पलक दे पिच्छे नूर नुराना नज़री आईआ। जो आत्म परमात्म हो के रलदा, जोती जोत जोत समाईआ। उस दा भाणा कदे दा टल्दा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। ओह लेखा जाणे आपणे हल दा, हालत तके दीन दुनी नूर इलाहीआ। मालक बण के निहचल धाम अटल दा, सचखण्ड निवासी आपणी कार कमाईआ। जोत प्रकाश हो के निरगुण धार हो के बलदा, जोती जाता डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पुरख अकाल कहे जेठ ओह वेख हाढ़ महीना आया, आपणी लए अंगड़ाईआ। जिस दा होणा तेज सवाया, सवा सवा दी धार प्रगटाईआ। कलयुग कूड़ी वेखे माया, माया ममता फोल फुलाईआ। जिस दा वक्त सुहञ्जणा आया, चारों कुण्ट खुशी बणाईआ। जिस ने पहली हाढ़ आपणा ढोला सोहँ गाया, गा गा खुशी बणाईआ। ओह दो जहानां नौजवाना मर्द मर्दाना बण के दाई दाया, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण वेख वखाईआ। जिसनूं जननी कुक्ख किसे ना जाया, जन्म मरन विच ना आईआ। ओह निरगुण धार हो के बेपरवाहया, बेपरवाही विच समाईआ। सो हुक्म संदेसा देवे सहिज सुभाया, सुभावक आपणी कार कमाईआ। जिसने गोबिन्द दा ढईआ पूर कराया, घड़ी पल वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि,
१३५८ आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। हाढ़ कहे जन भगतो मैं दूर दुराडा आया १३५८
२२ नट्ठा, निरगुण धार भज्जया वाहो दाहीआ। नारद ने मैनूं हाल दस्सया अट्ठां सट्ठां, बिन तत्तां खोज खुजाईआ। मैं वेखीआं २२
जगत धार दीआं जटां, जटा जूट वेख वखाईआ। दीन मज़्हब दीआं तकदा आया वट्टां, हद हदूद फोल फुलाईआ। खेल वेखदा आया मन्दिर मट्ठां, काअब्यां अक्ख उठाईआ। मैनूं चार कुण्ट दहि दिशा जगत दी आसा करदी ठट्ठा, तृष्ना रही दुरकाईआ। मेरा मुल्ल ना प्या टका, कीमत कीमत ना कोए रखाईआ। मैं जिधर वेख्या ख़ाली दिसदे पंज तत काया मट्टा, धुर दा रस ना कोए भराईआ। मैं अंकड़यां विच हिसाब लगाया सृष्टी हो गई बटा, ज़ीरो ज़ीरो नाल मिलाईआ। फेर मैं वेख्या पथ्थर इट्टां, जगत शिवाल्यां ध्यान लगाईआ। बौहड़ी मैं दुहथ्थड़ मार दे पिट्टा, पटने वाले दयां जणाईआ। तेरे बिना सदी चौधवीं मूल ना जित्तां, जित्त हार ना कोए रखाईआ। मैं चाहुंदा भगत दवार दा वेखां किता, जिथ्थे केते चन्द सूरज ध्यान लगाईआ। मालक तकां धुर दा पिता, पतिपरमेश्वर नूर इलाहीआ। जिस दा सब ने कीता हिता, हितकारी अवतार पैग़म्बर गुरु अख्वाईआ। ओह वेस वटावे नित नविता, जुग जुग आपणी कार कमाईआ। जिस ने कलयुग अन्तिम कढणा सिट्टा, सिट्टेबाज़ी वेखे ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच

दी साची करनी कार कमाईआ। हाढ़ कहे जन भगतो करयो ना कोए तकरार, झगड़ा जगत ना कोए रखाईआ। मेरा गोबिन्द नाल इकरार, वायदे नाल सुणाईआ। जिस वेले सरसे गुरमुख दिते सी ठार, जल धार विच समाईआ। उस वेले सत्तरां कीती पुकार, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। गोबिन्द गोबिन्द जे अनन्द पुर छडणा सी छडदों विच महीना हाढ़, तन दुःख ना लागे राईआ। उहनां विच सी कपूर सिँघ इक बराड़, जिन गल पल्लू पा के चरण ध्यान लगाईआ। इष्ट जाण के चरण छुहाया दाढ़, बिना चरण तों सीस निवाईआ। सरसा कर ना सक्या पार, नौ कदम पिच्छे आपणा आप तजाईआ। अन्त बोल के फ़तिह जैकार, वाहिगुरु तेरी बेपरवाहीआ। मैं जाणा तेरे उस सच्चे दरबार, जिथ्थे दरबारी नज़र कोए ना आईआ। करना तेरा दीदार, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। मेरी अन्त दी अन्त इक्को वार निमस्कार, गोबिन्द सच्चे माहीआ। झट गोबिन्द खिच्च के तलवार, अग्गे हो के दिता सुणाईआ। मेरा सिख रुढ़े ना कदे विच मँझधार, दो जहानां पार कराईआ। मस्तक उँगल लाई नाल प्यार, लेख लेख बदलाईआ। दर्शन कर सच्ची सरकार, जो शहिनशाह नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। कपूर सिँघ दा पिछला नाँ जिस नूं कहिंदे सी सिँघ जीता, जीत सिँघ अख्वाईआ। अन्तर आत्म दा अतीता, त्रैगुण तों बाहर वेख वखाईआ। रोज़ नौ सलोक पढ़दा हुन्दा सी गीता, इष्ट काहन नाल बणाईआ। कृष्न लिख के रखया हुन्दा सी विच ख़ीसा, पाकट विच टिकाईआ। गोबिन्द दा दर्शन बिना अक्खां मंगदा सी शीशा, साख्यात सोभा पाईआ। अन्दरों साफ़ रखदा सी नीता, नीतीवान नाल अक्ख जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। गोबिन्द दा अन्त कीता दीदार, सरसे विच ध्यान लगाईआ। गोबिन्द ने फेर कीता इशार, बिन इशारे दिता समझाईआ। मैं फेर आउणा ते नाल आउणा मेरा नर निरँकार, निरगुण रूप वटाईआ। मैं सतिगुर शब्द होणा दो जहानां सिक्दार, ब्रह्मण्ड खण्ड हुक्म सुणाईआ। सम्बल वसणा वसणा धाम न्यार, साढे तिन्न हथ्थ डेरा लाईआ। तेरा जन्म फेर देवां दुबार, जन्म जन्म विच्चों बदलाईआ। मैं मेलां आपणी धार, सुरत शब्द नाल रखाईआ। फेर खेल होणा जिस वेले सम्मत शहिनशाही आउणा जिस दा रूप होणा अपार, अपरम्पर स्वामी नाल मिलाईआ। दीन दुनी नूं मारनी मार, खण्डा खड़ग नाम चमकाईआ। अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं दा कर्ज़ा देणा उतार, पिछला लेखा रहे ना राईआ। भविक्खतां दी पाउणी सार, पेशीनगोईआं दए चुकाईआ। बिना सिक्खां तों मेरी समझणी नहीं किसे गुफ़तार, गुफ़त शनीद आपणा खेल खिलाईआ। मेरे पैंडे दी जाण सके ना कोए रफ़तार, रफ़ता रफ़ता आपणी कार कमाईआ। याद रख जिथ्थे मेरा सिख होया उथों कर लैणा गिरफ्तार,

१३५६
२२

शब्द डोरी नाल बंधाईआ। फेर करना अगम्मी विहार, भगत सुहेले धुर दे संग रखाईआ। कलि कल्की लए अवतार, कल कलेश देणा मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गोबिन्द किहा इक होर लै जा संदेशा, छेती नाल जणाईआ। नाल हथ्थ मारया उत्ते केसा, केसगढ़ दा लहिणा दिता मुकाईआ। ओह वेख नर नरेशा, हरि करता धुरदरगाहीआ। भगतां नूं तारना जिस दा पेशा, पेशीनगोईआं आपणी झोली पाईआ। जो आदि जुगादि रहे हमेशा, हम साजण नज़री आईआ। जिस मिटाउणा मुल्लां शेखां, शेख़ी सब दी दए गंवाईआ। लहिणा रहे ना किसे लेखा, लेखे सब दे दए चुकाईआ। जन भगतां अन्दरों कढ के भरम भुलेखा, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गोबिन्द किहा इक होर सुण लै बात, जल्दी जल्दी दयां दृढ़ाईआ। फेर सरसे दी अन्ह़ेरी रात, पवण ठंड नाल खेल खिलाईआ। सब दा विछड़या साथ नालों साथ, साथी संग ना कोए निभाईआ। इक दूजे नूं रहे आख, अन्दरे अन्दर ध्यान लगाईआ। धन्न ओह वेला आवे जद गोबिन्द दा पूरा होवे भविक्ख्त वाक, वाक्या वेखे जगत लोकाईआ। गोबिन्द हस्स के किहा फेर खोल्ह़ांगा ताक, पर्दा धर्म वाला रखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर सारयां दी होवेगी इक जमात, दीन मज़्ह़ब दा झगड़ा ना कोए रखाईआ।
१३६० लेखा पूरा करना त्रैलोकी नाथ, जो कान्हा कृष्ना अर्जन गया समझाईआ। जिस राम ने राम दा रखया विश्वास, ओह विश्व १३६०
२२ दा मेला लए मिलाईआ। पैग़म्बरां दा पैग़म्बर प्रगट होवे साख्यात, शनाख़त आपणे हथ्थ रखाईआ। दीन मज़्ह़ब दा झगड़ा २२
मेटे काग़ज़ात, कायदा इक्को इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सरसा कहे मैं सुणया ला के कन्न, वहिंदी धार दयां जणाईआ। साख्यात रूप तक्कया गुजरी चन्न, जिस नूं चन्द सूर्या सीस निवाईआ। जिस ने मेरे विच रुढ़दे जांदे तारे चन्न, बणे जणेंदी माईआ। उहनां दे लेखे ला के तन, तरह तरां होया सहाईआ। नाम निधान दा दे के धन, अतोट अतुट दिता कराईआ। जगत वासना विच्चों बन्ह़ के मन, मनसा प्रभ दे नाल मिलाईआ। करा के वसेरा बिना छप्परी छन्न, सचखण्ड दवारे दिता टिकाईआ। जिथ्थे शब्द दी धार कहे धन्न धन्न धन्न, रसना जेहवा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सरसा कहे गोबिन्द ने मेरे पाणी उत्ते खण्डे दी धार मारी लीक, फेर हथ्थ छाती उत्ते टिकाईआ। शहिनशाही सम्मत सत्त दी जिस वेले आई सतारां हाढ़ दी तरीक, तवारीख पिछली दयां बणाईआ। अवतारो पैग़म्बरो सब ने करनी उडीक, हुक्म हक हक सुणाईआ। मेरा मालक पुरख अकाला जिस दे विच सच तौफ़ीक,

फ़रीक रफ़ीक लेखा इक्को दए जणाईआ। जिस ने झगड़ा मेटणा मन्दिर मसीत, काअब्यों परे करे रुशनाईआ। उस दा गाउणा सब ने गीत, ढोला दस्से धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सरसा कहे गुरमुख जांदे सिँघ जीत जोड़े हथ्थ, हथ्थ हथ्थ नाल मिलाईआ। मेरे सतिगुर समरथ, तेरी बेपरवाहीआ। तूं जदों आवें मैं चढ़ां तेरे रथ, रथ रथवाही इक्को सोभा पाईआ। तेरी सिफ्त होवे अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। इक बचन दस्स, सहिज नाल सीस निवाईआ। किस बिध आपणा देवें रस, बिन रसना रस चखाईआ। गोबिन्द प्या हस्स, हस्स के दिता दृढ़ाईआ। मेरे कोल गुरमुखो तुहाडे अन्दर दी इक अक्ख, बिन अक्खीआं तों अक्ख लवां मिलाईआ। सारी सृष्टी तों कर के वख, वक्खरा आपणा राह समझाईआ। मेरा रूप वाहिद यक, नूर जोत जोत रुशनाईआ। जन भगतां मेल मेल मिलावां बिना हथ्थां हथ्थ, हथेली आपणे विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सम्मत सत्त शहिनशाही कहे मैनूं आउंदा जांदा पसीना, हड्ड पसली देण गवाहीआ। चढ़ गया हाढ़ महीना, महीना आपणी रुत बदलाईआ। जिस खेल वेखणा प्रभ दा त्रैगुण तों बाहर तीना, त्रैलोकी तों परे ध्यान लगाईआ। जिस जन भगतां ठांडा करना सीना, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। हरिजन बणाउणा शब्द धार नगीना, कीमत आपणे हथ्थ रखाईआ। किसे दे होण नहीं देणा अधीना, दूसर देवे ना कोए सजाईआ। जिस ने आपणा आप खेल कीना, करनी करता कार कमाईआ। ओह मालक वड प्रबीना, परम पुरख नूर इलाहीआ। जिस दा खेल होणा असमान ज़मीना, दो जहान राह तकाईआ। लेखा चुकाउणा सब दा कदीमा, कुदरत दा कादर वेख वखाईआ। फेर बण के शहिनशाह अज़ीमा, आहला अदना इक रंग वखाईआ। कलयुग विच सतिजुग कर देवे तरमीमा, हुक्म हुक्म नाल समझाईआ। जेहड़ा खेल वेख्या सी बहत्तर वार नामा छींबा, सो बहत्तरां दी सिफ्त भगत दवार सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। हाढ़ कहे प्रभू मैं वेख्या खेल न्यारा, निरगुण धार खोज खुजाईआ। तूं माझा जम्मू फिरयों सारा, भगत सुहेले अंग लगाईआ। हुण दुआबा मालवा रहिणा त्यारा, त्रैगुण अतीता रिहा दृढ़ाईआ। गोबिन्द दी धार कपूर सिँघ ने डराईवर बणना कारा, कार आपणी हथ्थीं भवाईआ। सिर ते पीला होवे दस्तारा, गल चोला लाल वखाईआ। तेड़ तहिमत होवे काला, मौली तन्द गुट्ट नाल रखाईआ। दो साथी होण नाल लिखारा, लिखारी लेख विच वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। हाढ़ कहे मेरी होर इक मंग, मंगता हो के दयां जणाईआ। मालवे वाले तिन्न

१३६१
२२

गुरमुख मालवे विच रहिण नाल संग, सगला संग बणाईआ। केहर सिँघ नाज़र सिँघ माढ़ी वाला रूप बणाउणा ज्यों करन जाणा जंग, कृपाल सिँघ हथ्थ हथ्थ नाल मिलाईआ। जिस वेले पुट्ठा डट्ठा होवेगा पलँघ, नौ नौ वार सीस झुकाईआ। इस दा खेल अग्गे दस्से सूरा सरबंग, हरि करता धुरदरगाहीआ। की वायदा कीता जिस वेले गोबिन्द ने छड्डया पुरी अनन्द, अनन्द जगत वाला तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी कार कमाईआ। हाढ़ कहे जन भगतो भुल्लणा नहीं विच मात, मता तुहाडे नाल पकाईआ। हुक्म सुण लओ मेरी पहली रात, रुतड़ी आपणा रंग वखाईआ। यारां दिन तुहानूं बख्शणी दात, शब्द अगम्मा अगम्म वरताईआ। सब दी आत्म परमात्म बणाउणी ज़ात, अजाती भेव रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। हाढ़ कहे दुआबे वाल्यो कस लओ कमरकसा, कसम नाल तुहानूं दयां जणाईआ। नौ दिन तुहानूं मिलणा रसा, रस्ते सब दे लैणे बदलाईआ। लाल सिँघ जसवन्त सिँघ प्रीतम सिँघ नाल रहिणा लक्क नूं बन्नृ के रस्सा, साढे तिन्न हथ्थ लम्बाईआ। छाती उत्ते पप्पा ते मथ्थे उत्ते लिख्या होवे सस्सा, सोहणा रंग रंगाईआ। अग्गे खेल वखाउणा नाल अक्खां, अक्खां अक्खां विच्चों खुल्हाईआ। जन भगतो तुहानूं रुलण नहीं देणा विच कक्खां, कलयुग दे कूड़े विच्चों बाहर लैणा कढ्ढाईआ। ओ तुहानूं उस प्रभू दीआं रखां, जिस नूं गुर अवतार पैग़म्बर सीस निवाईआ। तुहाडा जन्म कर्म दा लेखा बिना कलम शाही तों कर देणा रफ़ा, निशाना कूड़ देणा मिटाईआ। जिधर जाणा प्यार दा देंदे जाणा गफ्फा, ग़फ्लत अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। एस विहार विच किसे नहीं होणा ख़फ़ा, गुस्सा गिला ना कोए रखाईआ। क्यों जन भगतो तुहाडे पिच्छे सारी सृष्टी उत्ते लग्गणी दफ़ा, जिस दी दफ़ा ना किसे समझाईआ। एह ओह मज़मून जिस दा बदलया नहीं किसे ने सफ़ा, सफ़ा सब दी दए उलटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। जेठ कहे कपूर सिँघ मस्तक चढ़ी रहे लाली, लाल गोबिन्द लए बणाईआ। वेखणा खेल अग्गे हाली, माज़ी दा चेता देणा भुलाईआ। जन भगतो प्रभू दे नाम दी करे ना कोए दलाली, दलालां दा लेखा देणा चुकाईआ। इक्को जोत ते जोत अकाली, अकल कलधारी बेपरवाहीआ। हुण फल लगाउणा तुहाडे पंज तत दी डाली, टहिणी टहिणी देणी महकाईआ। तुसीं किसे दे कदे ना बणिउ सवाली, आसा सब दी पूर वखाईआ। तुहाडी आत्मा अंजाणी बाली, पर प्रभ दी आदि तों चली आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे हाढ़ृ क्यों मारदा कड़ाके, ऐंवे रिहा डराईआ। हाढ़ कहे ओए नारदा ओह वेख उम्मत नबी ते मूसा दी धार पैंदे पटाके, पटने वाला वेख वखाईआ।

१३६२
२२

ओ कमलया तैनूं पता नहीं की खेल हुन्दा ढाके, ढाकां ते चुक्कण वाला रहिण कोए ना पाईआ। क्यों परवरदिगार ने सब दे खिच्च दिते ख़ाके, ख़ाकी ख़ाक विच देणा मिलाईआ। सदी चौधवीं आपणा राह ताके, नैण नैण नैण रही उठाईआ। क्यों मेरी बदलदी जांदी प्रभाते, सँध्या आपणा रूप जणाईआ। चार यारी तक्कीए खाते, क्यों ख़तरा अग्गे नज़री आईआ। जां वेख्या असीं बन्द चौदां तबक दे अहाते, गढ़ निक्का जेहा वखाईआ। चौदां तबक प्रभ दा निक्का जेहा बलाके, जिस विच बलाक कर के लाक उम्मत दा देणा लगाईआ। मुहम्मद बौहड़ी बौहड़ी आखे, आखर रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। हाढ़ कहे नारद जी आह वेख मेरी लंगोटी, बिन कपड़ दयां वखाईआ। ओह वेख गाँ सूर दी बोटी, जो रो रो रही कुरलाईआ। ओह तक लै ओह मालक ख़ालक जो सब दी चढ़या चोटी, चोटा हो के आपणा हुक्म वरताईआ। उस दे हथ्थ सत्त रंग दी सोटी, सुत्तयां ल्ए उठाईआ। ज़रूर फ़रंगी दी उडा देणी टोपी, जो तेग़ बहादर गया लिखाईआ। जिस दे खेल नूं जाण ना सकण कोटन कोटी, कोटन कोटि राह रहे तकाईआ। उस दी सब तों वक्खरी सोची, जिस दी सोच समझ विच ना कोए समझाईआ। जे कुछ भेत दिता ते दिता रविदास चमारे मोची, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। रविदासा जिस वेले मेरे नाम दी रही कोई ना रोज़ी, रोज़े बांग वाला रहिण कोए ना पाईआ। उस वेले माण रहिणा नहीं किसे बोधी, बोदी जञ्नू दए दुहाईआ। आपणी धार किसे तों जाणी नहीं सोधी, बुध बिबेक ना कोए कराईआ। धर्म दा रहिणा नहीं कोई जोगी, जुगीशर रोवण मारन धाईंआ। सारी सृष्टी नेत्रां दी होणी भोगी, भैण भाई आपणी अक्ख बदलाईआ। बिना प्रभू दी किरपा तों रविदासा पुरख अकाल दा बणे ना कोए संजोगी, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। वासना रहिणी नहीं तन वजूद वाली डोडी, खुशी महक ना कोए महकाईआ। मेरा अन्त लेखा मुकाउणा जिस ने अन्त रूप धराउणा सोढी, सोढी बंस नाल चतुराईआ। फेर उस दी धार मेरे नाल जाणी सोधी, जिस नूं सुदी वदी जाण सके ना राईआ। उस वेले साधां सन्तां दी धार होणी लोभी, माया ममता विच हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे हाढ़ जी जजमान जी दस्सो की कीता जे जमा, खाता दयो वखाईआ। केहड़ी पै गए विच तमां, तामस विच हल्काईआ। क्यों बुझ गई शमां, नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। हाढ़ कहे नारदा ओ मैनूं पंडता इक्को ग़मा, ग़मगीन हो के दयां जणाईआ। बौहड़ी दरोही दुहाई दुनी झगड़दी माटी चम्मा, चम्म दृष्टी अन्दर ब्रह्म नज़र किसे ना आईआ। मैं रोवां ऐ मालक एह बदल दे समां, समाप्त कूड़ी क्रिया कर लोकाईआ। मैनूं चाओ घनेरा होवे जे तेरा सतिजुग होवे रवां, रवानगी

कलयुग हथ्थ फड़ाईआ। मैं तेरयां भगतां विच मिल के बहवां, भगवन तेरा रूप वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। हाढ़ कहे पंडता औह तक लै कमलापाती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस दा आदि तों अन्त तक बणया ना कोए जमाती, विद्या संग ना कोए रखाईआ। जिस ने कीती ते कीती उस दे नाम दी कापी, जो संदेशा अन्दरे अन्दर दृढ़ाईआ। ओसे दा गवईआ ते ओसे दा बण गया पाठी, उसे दे राग अलाईआ। ओसे दी चढ़ के घाटी, अन्त ओसे विच समाईआ। पर इक गल्ल याद रख गोबिन्द ने गुरमुखां नूं अमृत छका के आपणी हथ्थीं मांजी सी बाटी, जिस दा लेखा सक्या ना कोए समझाईआ। जे बाटा ना मांजदा ते गुरमुख गुरसिख सिँघ अन्दरों बण जांदे पाकी, पवित्र रूप नजरी आईआ। पर गोबिन्द ने अन्दरों किसे नूं दिती नहीं मुआफ़ी, आपणे हथ्थीं ना कीती सफ़ाईआ। उतों दे के पिठ ते थापी, जगत जहान विच लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप वखाईआ। हाढ़ कहे नारदा मैं इक मारां हड़प्पा, दोवें पैर उठाईआ। इक सुणावां टप्पा, टापूआं तों बाहर जणाईआ। ऐतकीं प्रभू ने भेद खोलणा प्रभ ने क्यों अक्खर बणाया पप्पा, जिस दे नाल पारब्रह्म पूरन विच समाईआ। एह लेखा इकवंजा वार लिख्या नानक तपा, उँगलां ज़मीन उत्ते घसाईआ। गुर अर्जन ने नौ दिन पहलों गुरु ग्रन्थ दे लिखण तों सफ़ा, लिख के फेर रावी विच वहाईआ। गोबिन्द ने सरसे नूं दिता नफ़ा, जिस विच नुकसान गुरसिक्खां दा आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे हाढ़ जी मैं अज्ज फिरया बहुत दूर, दूर दुराडा दयां जणाईआ। मैं वेख्या कोहतूर, मूसे अक्ख मिलाईआ। मैं तक्कया ईसा नूर, नूर नूर इलाहीआ। मैं तकीआं केहड़ीआं मुहम्मद बख्शीआं हूर, हूर हूर रूप समाईआ। जिस ने सब नूं कर दिता मजबूर, मजबूरी विच सारे देण दुहाईआ। जिन्हां दे घर घर विच पैणा तूर, फ़तवा कलमे वाला लगाईआ। क्यों एह खेल करे जो सर्ब कला भरपूर, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। जन भगतो तुहानूं कर देवे मशहूर, मशरक तों मग़रब नाल मिलाईआ। क्यों दीन दुनी तपणी वांग, तन्दूर, भठियाला कलयुग अग्नी डाहीआ। किसे ने समझणा नहीं मेरा की कसूर, कसर इशारीए नाल सब नूं दए उडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। हाढ़ कहे भगतो आओ करीए सलाह, सोहणा संग बणाईआ। मन्नीए इक मलाह, जो खेवट खेटा धुरदरगाहीआ। जिस दा आदि अन्त दा राह, रहिबर नूर इलाहीआ। जिस नूं पैग़म्बरां किहा खुदा, खुद मालक अगम्म अथाहीआ। करदे रहे दुआ, बिन नैणां नैण उठाईआ। तेरी चलीए सदा रज़ा, राज़क

१३६४
२२

रिज़क रहीम तेरी सरनाईआ। सानूं इक्को दस्स दे साडे अन्त होण दी इक्को वजह, वजूहात दे समझाईआ। परवरदिगार किहा मैं यार सांझा नूर अलाही मेरी सम्बल होणी जग्गा, धरती ख़ाक ना डेरा लाईआ। मेरे नाल सूफ़ी सन्तां भगतां दा वधणा अग्गा, अग्गे आपणा हुक्म चलाईआ। याद कर लओ दीन मज़्ह़ब दा रहे ना कोए बध्धा, बन्धन सब दे देणे तुड़ाईआ। जिस वेले सम्मत शहिनशाही सत्त धर्म दे भगता दी बणी होवे सभा, सभा दे विच दए जणाईआ। भेव खोल्लांगा कलमा अगम्मी बोलांगा मुहम्मदा क्यों कटाईआ लबां, लबरेज़ तेरा पैमाना दयां कराईआ। याद कर लै मैं पैग़म्बरां दा पैग़म्बर हुक्म विच असूल विच बड़ा कब्बा, काअब्यां तों परे डेरा लाईआ। एसे कर के बच्चू मैनूं सारे कहिंदे अब्बा, अम्मीजान रूप ना कोए बणाईआ। बावा आदम ते माई हवा दा पा के सब ते दब्बा, दबाओ आपणा दिता जणाईआ। याद करो तुहानूं रख के दरगाह साची विच डब्बा, डब आपणी विच बन्द कराईआ। फेर खेल वेख्यो सज्जा खब्बा, खब्बा सज्जे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक आपणी कार कमाईआ। हाढ़ कहे भगतो ग्रन्थ कहिंदे सन्तां हथ्थ नाम दी कुंजी, जेहड़े कूंज वांग कुरलाईआ। जेहड़े नाम दी आप भरदे होण चुंगी, मसूल तों बरी ना कोए कराईआ। किसे ने धोती पहनी किसे ने पहन लई तम्बी, कोई हैट पैंट नाल चतुराईआ। प्रभू दी खेल बड़ी लम्बी, गुर अवतार पैग़म्बर सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग विच आउण वाले समझ सकण ना राईआ। जिन्नां ने नाम जपया स्वास ते दमी, माला मणक्यां वाली भवाईआ। रूप धार काया माटी चम्मी, पंज तत्तां संग रखाईआ। जेहड़ी धार माता दी कुक्खों होवे जम्मी, अन्त फेर मर जाईआ। उस दी गल्ल की सुणनी कन्नी, जो कन्नां तों बिना ना सके सुणाईआ। उस सतिगुर दी काहदी लोड़ जिहदी अक्ख हो गई अन्नी, डंगोरी फड़ के जगत विच कदम हौली हौली टिकाईआ। सतिगुर शब्द ओह जिस दी जवानी नवीं, नवां नकोर नज़री आईआ। ओह धुर दी धार दा कवी, शब्द शब्द विच्चों प्रगटाईआ। पर ओह बड़ा बेपरवाह जिस नूं सारयां किहा आउणा अवतार चव्वी, चौबीसा आपणा रूप बदलाईआ। उहदी धारा निक्की जेही सोहल ते लवी, लैरी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक हुक्म सुणाईआ। हुक्म कहे जन भगतो मैं बड़ा सख्ता, मैनूं प्रभ ने दिता बणाईआ। मैं बड़ा बकता, दो जहानां करां शनवाईआ। मैं कदे ना अक्कदा, जुग जुग वेस वटाईआ। मैं कदे ना थक्कदा, भज्जां वाहो दाहीआ। पुरीआं लोआं टप्पदा, गगन गगनंतरां चरणां हेठ दबाईआ। इक संदेशा सुणो गप्प दा, गप्पां मारन वाल्यो तुहानूं दयां बुझाईआ। हुण बेड़ा डुब्बणा सब दा पप दा, पापीआं होए ना कोई सहाईआ। सदी चौधवीं अन्त अंग्यारा तपदा, तपीशर शांत ना कोए

कराईआ। क्यों माया ने रूप धर ल्या सप्प दा, प्यो पुत्त नूं डस्स के करे सफ़ाईआ। हिरदिउँ प्रभ दा नाम कोई नहीं जपदा, रसना बुल्ल् सारे रहे हिलाईआ। अन्दरों मेल नहीं किसे अक्ख दा, निज नेत्र लोचण नैण ना कोए रुशनाईआ। बिना प्रभू दी किरपा तों किसे दा मुल्ल नहीं पैणा कक्ख दा, राय धर्म हट्ट विकाईआ। समां आपणे आप जांदा टपदा, भज्जे वाहो दाहीआ। अग्गे झगड़ा मिटणा दीन मज़्हब दी खप्प दा, खप्पर लै के चार जुग दी कलजोगण बैठी राह तकाईआ। क्यों भ्रा प्यासा हो गया भ्रा दी रत दा, प्यो पुत बणया रूप कसाईआ। पुरख नारी इक दूजे वल्ल तकदा, सति धर्म विच ना कोए समाईआ। जेहड़ा सतिगुर दी शरन ढह्वदा, उहनूं ताने दए लोकाईआ। जेहड़ा पुरख अकाल दी धार अग्गे आपणा आप घत्तदा, नाता छडे मात पित भैण भाईआ। ओस नूं कलयुग जीव वेख वेख तपदा, तन अग्न रिहा लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पहली हाढ़ कहे सुणो बचन इक होर, होर दयां जणाईआ। पीले वस्त्र पहने बिशन कौर, जेहड़ी गुरबख़्श सिँघ दी माईआ। जिस नूं किरपा कर के उस दे पिच्छे देणा तोर, दर साचे देणी वड्याईआ। जन भगतो प्रभू नूं सदा भगतां दी लोड़, जगत धार विच आपणा आप ना कदे बदलाईआ। जो सदा सदा सद बन्दी छोड़, छुटकी लिव लए लगाईआ। पंजां प्यारयां बिशन कौर
१३६६ दे हथ्थ नूं बन्न्णी डोर, सज्जे गुट्ट नाल रखाईआ। सतिगुर आपणे हथ्थीं करेगा चौर, चुरासी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। अग्गे १३६६
२२ सारयां भगतां नूं सरीर छड्डण तों पहलां तक्कया करेगा नाल गौर, घर घर जा के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, २२
आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। पहली हाढ़ कहे जन भगतो सारे मुच्छीं दयो ताअ, ताकतवर अख्वाईआ। सतारां हाढ़ नूं आउणा नाल चाअ, हर हिरदे वज्जे वधाईआ। अग्गों मिले बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। दोहां ने भगत भगवान दा नाँ सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दा ढोला लैणा गा, सांझी होए पढ़ाईआ। हाढ़ कहे मैं फेर सब नूं सीस दयां निवा, निव निव धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। बिना रसना तों करना वाह वाह, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी नौजवान, बिरध बाल रूप ना कोए वटाईआ।

२ हाड़ शहिनशाही सम्मत ७ माता बिशन कौर, रणजीत कौर, अमरजीत सिंघ, सुरजीत सिंघ, प्रीतम सिंघ, जगजीत सिंघ, गुरमीत सिँघ गुरचरण सिंघ, हरभजन सिंघ, वरयाम सिंघ, पाल सिंघ, अमर सिंघ, जगमेल सिंघ, मिल्खा सिंघ, बचन सिंघ, दलीप सिंघ, सन्तोख सिंघ, साधू सिंघ, ठाकर सिंघ, करतार कौर, नंती, गुपाल कौर, सुभाग वन्ती, चन्नण कौर, प्रीतम कौर, प्यारा सिंघ, रूप सिंघ, कुंनण सिंघ, भगत सिँघ पिण्ड कीर जम्मू, सवरन सिँघ पिण्ड बाठ हरि भगत दवार जेठूवाल ज़िला अमृतसर

दीपक कहिण साडा चमक्या नूर, नूर नुराने दिता चमकाईआ। असीं संदेशा देणा ज़रूर, ज़रूरी सब नूं मात जणाईआ। जन भगतो अन्तर करयो ना कोए ग़रूर, हँकार विकार ना कोए वड्याईआ। पुरख अकाल सदा तक्को हज़ूर, जो हज़रत अगम्म अथाहीआ। सच स्वामी दा तक्को दस्तूर, जो दस्त दस्त नाल मिलाईआ। आपणे अन्तर तक्को अगम्मा नूर, कोहतूर तों परे रुशनाईआ। सच नाम दा लैणा सरूर, रस इक्को इक वखाईआ। सदी चौधवीं रहिणा नहीं किसे मूढ़, मुग्धां लए उठाईआ। सब दी आसा मनसा करे पूर, पूरन ब्रह्म इक समझाईआ। सगले संगी साथी इक्को रंग रंगाए ना नेड़ा ना दूर, दूर दुराडा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। हुक्म कहे मैं प्रभ दा हुक्मी बन्दा, बन्दन विच सीस निवाईआ। भेव खोल्हां प्रभू संदा, जो संदेशा देवे आपणी दया कमाईआ। जिस दे विच सच अनन्दा, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। ओह सार पावे जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज खोज खुजाईआ। लेखा जाणे गोबिन्द वाला खण्डा, खण्डा खड़ग नाल टकराईआ। फेर पौड़ी मंज़ल तके डण्डा, डण्डावत वेखे चाँईं चाँईंआ। फेर संदेशा दिता वेखो कलयुग अन्तिम कन्ढा, कन्ढी बैठा ध्यान लगाईआ। गुरमुखां कोलों खावे इक इक गंढा, रस रस विच जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी सरनाईआ। दीपक कहिण जन भगतो वेखो साडी लोअ, लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। घृत बाती इक्को हो, इक्को धार विच समाईआ। झगड़ा मेट के दूआ दो, दो जहानां खहिड़ा दयां छुडाईआ। मालक तक्कया अगम्म अथाह उह, ओड़क जिस नूं सीस निवाईआ। अन्तर दृष्टी तके मोह, मुहब्बत खोज खुजाईआ। प्रभू प्रकाश जिस नाल जावे छोह, छोहरा बांका लए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा नाम इक प्रगटाईआ। दीपक कहिण साडा हुन्दा रहे प्रकाश, प्रकाशवान दया कमाईआ। मेला मिलदा रहे नाल अबिनाश, अबिनाशी

करता खेल खिलाईआ। निगह मारनी धरती उपर आकाश, आकाश आकाशां वेख वखाईआ। फेर संदेशा देणा साख्यात, सन्मुख हो के आप जणाईआ। पुरख अकाला तक्को इक्को बाप, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस ने आत्म परमात्म सब नूं सांझा बख़्श्या जाप, मज़्ह्ब वंड ना कोए वंडाईआ। ओह खेल करे साख्यात, साखी पिछली खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी सरनाईआ। दीपक कहिण जन भगतो धर्म दी धार करना कौल, इकरार संग निभाईआ। वेखणा खेल उपर धौल, धरनी धरत धवल देवे दृढ़ाईआ। जो स्वामी हर घट रिहा मौल, मौला इक्को नज़री आईआ। जिस दा लेखा लेखणी उपर धौल, धरनी धरत ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। दीपक कहिण साडा वेखो रूप अपारा, हरि अपरम्पर दिती वड्याईआ। मैं होवां शुकर गुज़ारा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सांझा करां प्यारा, मुहब्बत मुहब्बत नाल जुड़ाईआ। तुसीं खेल तक्को ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर आप समझाईआ। उम्मत रोंदी दिसे विच काहरा, कहर वरते ख़लक ख़ुदाईआ। बणया रहे कोए ना बहिरा, पर्दा सब ने लैणा खुलाईआ। सति शब्द समझणा ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर नूर इलाहीआ। जन भगतो परम पुरख दा सब तों वड्डा दाइरा, जिस दी हद्द ना कोए दृढ़ाईआ। गुरमुख गुरमुख किसे नूं समझे कोए ना भैड़ा, बुरी अक्ख ना कदे उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। दीपक कहिण वेखो भगत दवार सुहावा, सोहणी वज्जी वधाईआ। भगतां इक्को दवार लग्गणा नावां, नर निरँकारा मेल मिलाईआ। सब ने सांझीआं करनीआं बाहवां, बाज़ू बल वड्याईआ। बेशक तुहाडे सरीर नूं वक्ख वक्ख जम्मण वालीआं मावां, आत्म परमात्म प्रभ दा रूप दरसाईआ। जन भगतो सब ने आपणा वज़न करना सावां, साँवल सुन्दर रूप दए समझाईआ। भाग लग्गणा तुहाडे काया गृह ग्रावां, मन्दिर अन्दर खुशी बणाईआ। सब ने शब्दी धार कहिणा वाहवा, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। दीपक कहिण जन भगतां पगड़ी हस्सी, हस्स के रही जणाईआ। इशारयां नाल रही दस्सी, दहि दिशा अक्ख उठाईआ। जगत रैण अंधेरी मस्सी, मूसा ईसा मुहम्मद ना कोए रुशनाईआ। सिफ्तां वाली सिफ्त करदे जसी, वेद पुराणां कंध उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा दर इक वखाईआ। दर कहे जन भगतो वेखो दर्द दुःख भय भञ्जण, जो भव सागर पार कराईआ। जिस दा नाम निधाना नूरी अंजण, दुरमति मैल दए धुआईआ। सब दा सांझा बण के सज्जण, साजण हो के वेख वखाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार जीव जहान तपण,

अग्नी अग्ग नाल वड्याईआ। हरिजन गुरमुख धुर दे हीरे रत्न, अमोलक आपणा रंग चढ़ाईआ। जन भगतो तुहाडा सफ़ल होया यतन, यथार्थ प्रभ ने दिती वड्याईआ। सारे बहि गए उस प्रभू दे घाट पत्तन, जिथ्थे पात्र नज़र कोए ना आईआ। तूं मेरा मैं तेरा नाम जपण, सोहँ ढोला चाँईं चाँईंआ। जिस दा प्रेम अगम्मा चक्खण, बिन रसना रस वखाईआ। सो साहिब स्वामी संदेशा देवे हकण, हकीकत इक दृढ़ाईआ। जिस नूं अवतार पैग़म्बर गुरु तक्कण, बिन लोचन नैण नैण उठाईआ। सो भगत सुहेले भगत दवार पहुंच गए आपणे वतन, बेवतना नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन बणाए हीरे अमोलक रत्न, रत्न अमोलक आपणी धार समझाईआ।

६ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल दुपहर वेले ज़िला अमृतसर

हाढ़ कहे मेरा धर्म धार प्रविष्टा, छे घर छे गुर अवदेश जणाईआ। चौदां लोक चौदां तबक इक प्रभू दा इष्टा, इष्ट देव इक दृढ़ाईआ। नव सत्त खेल रचाए सृष्टा, सृष्टी सृष्ट आप समझाईआ। जन भगतां पूरन करे निसचा, निहचल आपणा धाम सुहाईआ। लहिणा देणा देवे जिस जिस दा, लेखा लेखे विच्चों वेख वखाईआ। मेल मिलणा धुर दे पित दा, पतिपरमेश्वर होए सहाईआ। नाता जोड़े आत्म हित दा, हितकारी आपणा रंग रंगाईआ। झगड़ा मेटे चुरासी नित दा, आवण जावण रहे ना राईआ। कूड़ कल्पना फिरे जित्त दा, हार संग ना कोए वखाईआ। सोहणा दिहाढ़ा छे हाढ़ थित दा, सम्मत सत्त सत्त सुहाईआ। जन भगतो तुहाडा लेखा मुके विच दा, विचला भेव चुकाईआ। तुहाडा प्यार बणया रहे इक दा, एकँकार आपणा रंग रंगाईआ। तुसां रूप बणना साचे सिख दा, जो सिख गोबिन्द गढ़ी चमकौर गया बणाईआ। तुहाडी लेखे लग्गे सेवा कीती इक इक इट्ट दा, मिट्टी गारा नाल रलाईआ। तुहाडा कर्म जन्म विच लेखा लिखदा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। छे हाढ़ कहे मैनूं नज़र आवे बावन, बलि दवारा सोभा पाईआ। जिस रिषीआं फड़ाया आपणा दामन, सतिजुग कलयुग संग रखाईआ। सो सेव आए कमावन, दर दवारे चाँईं चाँईंआ। पिछला लहिणा आए चुकावण, बुड्ढे बाले प्रेम रखाईआ। सच सरोवर आए नहावण, दुरमति मैल धुआईआ। जिस दा पुरख अकाला बणया ज़ामन, ज़ामनी आपणी पूर कराईआ। बाकी लेखा दस्सणा अज्ज दी शामन, अवतार पैग़म्बर संग रखाईआ। की खेल करे पतित पावन, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जोती जोत

१३६८
२२

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि इक्को कानून, काहन धुर दा आप अख्वाईआ।

✪ ६ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल रात नूं ज़िला अमृतसर ✪

हाढ़ कहे मैं वेखणा खेल अमामा, धुर अमाम रिहा दृढ़ाईआ। उम्मत नबी रसूल तकणा हंगामा, हाकम धुर दा हुक्म वरताईआ। कलमा कायनात तकणा कलामा, दीन दुनी खोज खुजाईआ। शरअ मज़्हब तकणा इस्लामा, इस्म वेख थांउँ थाँईंआ। सूफ़ीआं निरधार तकणा इलहामा, आहला इलम तों बाहर पढ़ाईआ। धुर संदेश तकणा गुमनामा, जिस दी गुफ़त शुनीद समझ किसे ना आईआ। कलयुग कूड़ क्रिया तकणा अंधेरा शामा, शमा नूर ना कोए रुशनाईआ। काया माटी तन वजूद तकणा चामा, चम्म दृष्टी दे बदलाईआ। सदी चौधवीं खेल तकणा अवामा, आलमगीर हो के ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। हाढ़ कहे मेरा धर्म धार प्रविष्टा, पुरख अकाल दिती वड्याईआ। लेखा राम नाल वशिष्टा, विशा धुर दा गया समझाईआ। कलयुग अन्त सति
१३७० सच ना होवे दिसदा, चारों कुण्ट अंधेरा छाईआ। किसे प्यार रहे ना इक दा, चार कुण्ट जगत हल्काईआ। बिना प्रभ १३७०
२२ दी किरपा रूप बणे ना कोए सिख दा, सिख सतिगुर विच ना कोए समाईआ। जगत वणजारा बण जाए माया हित दा, २२
दर दर मंगे वाहो दाहीआ। मानस रूप बणे रिच्छ दा, रच्छक नज़र कोए ना आईआ। प्यारा दिसे ना कोए धर्म दी इच्छ दा, निरइच्छत आस ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। हाढ़ कहे मेरी अज्ज दी रात भिन्नी, भिन्नड़ी खुशी मनाईआ। मैं खेल वेखणी किन्नी, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। मैं धार तकणी तिन्नी, त्रैगुण पड़दा आप उठाईआ। खेल वेखणी दिनी, दिवस रैण राह तकाईआ। प्रभ दी प्रेम धार तकणी निम्मी, निम्मी निम्मी आप जणाईआ। जिस दी महिमा जाए ना गिनी, अलख अगोचर वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। हाढ़ कहे मेरा दिवस चढ़ना सत्त, सति सति नाल वड्याईआ। मैं दस्सां धुर दी मति, मता प्रभ दे नाल पकाईआ। धर्म दी धार विच जम्मू वाल्यां पंजां सिक्खां पंज तुबके देणे रत्त, जो नींह विच जाण दबाईआ। लक्ष्मण सिँघ कढावे विच्चों सज्जे हथ्थ, सरदारा सिँघ खब्बा हथ्थ नाल मिलाईआ। भाग सिँघ सीस झुकाए झट, गर्दन आपणी भेंट चढ़ाईआ। हरबंस चरणी जाए ढट्ठ, पैर

उँगल नाल रलाईआ। बलबीर अग्गे करे मथ्थ, मस्तक रंग रंगाईआ। सारी संगत जोड़े होण हथ्थ, खुशीआं विच (सीस झुकाईआ)। एह वक्त होवे सवा पंज, वद्ध घट्ट ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा लहिणा देणा पूरा करे हस्स हस्स, हस्त आपणे नाल इट्ट दए टिकाईआ।

८ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल रात नूं ज़िला अमृतसर

अठ तत कहिण साडी दरोही, दो राही तेरा ध्यान लगाईआ। तेरे सार शब्द दी ख़बर देवे ना कोई, सुरती सुरत ना जगत मिलाईआ। साडी आसा तेरे दर ते रोई, बिन नैणां नीर वहाईआ। सच प्यार विच जाए कोई ना मोही, मुहब्बत आपणा रंग रंगाईआ। जो आसा रखी कबीर लोई, लोइनां पिच्छे ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अट्ठ तत कहिण कबीर रखया इक भरवासा, लोई लोयणां तों परे जणाईआ। औह तक्क कलयुग खेल तमाशा, तमाशबीन दिसे लोकाईआ। प्रभू उत्ते रहे किसे ना भरवासा, भगवन
१३७१ रूप ना कोए दिसाईआ। फिरे दरोही पृथ्मी आकाशा, गगन मण्डल रोवण मारन धाईआ। फेर प्रगट होए पुरख अबिनाशा, १३७१
२२ हरि करता धुरदरगाहीआ। किरपा करे शाहो शाबाशा, शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। साचे गुरमखां लेखे लाए पवन स्वासा, २२
स्वास साह आपणे नाल मिलाईआ। मानस जन्म करके रासा, रोग सोग दा डेरा ढाहीआ। अमृत बख्श के काया कासा, निजर धार दए चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अट्ठ तत कहिण साडे अन्तर इक ख़ाहिश, सदा सद जणाईआ। इक इक दी करीए तलाश, इक इक दा राह तकाईआ। जिस इक विच्चों सृष्ट होई प्रकाश, प्रकाश्त बेपरवाहीआ। अन्त जाए विनाश, विष्नूं ब्रह्मा शिव रहिण कोए ना पाईआ। एह खेल प्रभू साख्यात, जुग चौकड़ी आप कराईआ। मेहरवान हो के जन भगतां देवे दात, नाम निधाना झोली पाईआ। दरस दिखाए इक इकांत, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। वेले अन्त पुछे वात, अन्तष्करन वेखे चाँईं चाँईंआ। जिन्नां तूं मेरा मैं तेरा जपया स्वास स्वास, सोहँ ढोला सहिज सुभाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सचखण्ड लै जाए आपणे पास, जोती जोत विच मिलाईआ। झगड़ा मुका के मण्डल रास, ब्रह्मण्ड खण्ड ना कोए भवाईआ। सच दवार बख्शे जित्थे वसे आप, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। मानस जन्म रोग कट संताप, अट्ठां तत्तां डेरा ढाहीआ। आत्म धार करके पाक, पतित

पुनीत आपणे नाल मिलाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म बणा के साक, सज्जण वेखे चाँईं चाँईंआ। जन भगतां जन्म जन्म कर्म कम दा लेखा करे बेबाक, जो जन हरि सतिगुर सीस निवाईआ। पिछली कीती पिच्छे कीती मुआफ़, अग्गे आपणे घर टिकाईआ। जिथ्थे कदे ना होवे नास, तत्व तत ना कोए जलाईआ। हरिजन सचखण्ड दवार बहाए साख्यात, साखी शब्द नाम जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म जन्म दे लेखे पूरे करे करनी करता हो के आप, आप आपणी दया कमाईआ।

✪ १७ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल रात नूं ✪

अष्टभुज कहे प्रभ निमस्कार मेरी, हाढ़ सतारां सीस निवाईआ। मैं उम्मत दी आसा ल्यांदी घेरी, चौदां तबक ध्यान लगाईआ। चार यारी झुलाई झक्खड़ हनेरी, मुहम्मद आपणी धार बरसाईआ। कूकां मारदे तूं आ गई केहड़ी, कवण वेस वटाईआ। सब दी जड़ रही उखेड़ी, पौदा रहिण कोए ना पाईआ। मैं हस्स के किहा हुण करो कुछ दलेरी, आपणा बल धराईआ। मैं आ गई बण के इक इक दी चेरी, दूजा इष्ट ना कोए रखाईआ। जिस नूं कहिंदे शाह शेरी, शहिनशाह बेपरवाहीआ। जिस सेवा लाई मेरी, मेहरवान दया कमाईआ। नव नौ चार पिच्छों पाई फेरी, फिरत फिरत आपणा खेल खिलाईआ। ओह तक्को सब नूं नाम दी पावण वाला बेड़ी, बीड़ा आपणा आप उठाईआ। उलटी आवण वाली गेड़ी, गेड़े विच भवाईआ। शरअ दी होणी ढेरी, ढईआ गोबिन्द दए गवाहीआ। जेहड़ी दुनिया दीनां मज़्बां विच बखेरी, वक्ख वक्ख कराईआ। उस ने आरजू भोग लई बथेरी, पिछला पन्ध मुकाईआ। हुण सब दी जड़ रिहा उखेड़ी, अग्गे सके ना कोए लगाईआ। जिस ने धार चलाई तेरी मेरी, आत्म परमात्म कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अष्टभुज कहे मैं होई सिँघ अस्वार, सिँघ नज़र किसे ना आईआ। हुक्म दिता सच्ची सरकार, शाह पातशाह धुरदरगाहीआ। नाल रलाया शब्द सार, महासार्थी रूप बदलाईआ। मैं दो जहानां करके पार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे वेख्या ध्यान लगाईआ। मैं तके जुग चौकड़ी चार, चौथा वेख वखाईआ। चारों कुण्ट धूंआँधार, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। मैनूं रोंदा दिसया सितार, सतह बुलंदी मारे धाईआ। असीं जिस दे बणे ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। ओह मुहम्मद दा कर्ज़ा रिहा उतार, लहिणा रिहा चुकाईआ। सदी चौधवीं आई हार, हार विच कुरलाईआ। किसे दा रहिणा नहीं कोई अख्त्यार, मालक रूप ना कोए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। अष्टभुज कहे मैं सेवा कीती भारी, सच सच सुणाईआ। उम्मत दी आसा लै के पहुंची हरि भगत दवारी, द्वारका वासी वेखण नैण उठाईआ। राम रामा करे त्यारी, त्रैगुण अतीता खेल वखाईआ। पैग़म्बर नैण रहे उग्घाड़ी, बिन लोचन नैण नैण वड्याईआ। गुर दस मारदे ताड़ी, ताल आपणा रहे बणाईआ। सारे इक्ट्ठे हो जाउ छेती नाल सम्मत शहिनशाही सत्त दी आ गई हाढ़ी, हाढ़ सतारां नाल वड्याईआ। वेखो खेल जंगल जूह पहाड़ी, उच्चे टिल्ले फोल फुलाईआ। धार तक्को पुरख नारी, नर नरायण रिहा जणाईआ। किसे दी पावे कोए ना सारी, महासार्थी नज़र कोए ना आईआ। सृष्टी दृष्टी होई भिखारी, भिखारन रूप बणाईआ। अष्टभुज कहे मैं दस्सां नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मैनूं सति विच दिसी ना कोए कुँवारी, मैं कुँवारी हो के दयां सुणाईआ। सारे वेखो अवतार पैग़म्बर गुरु आपणी धारी, धरनी धरत धवल ध्यान लगाईआ। मूंड मुंडाए तक्को तको मुच्छ केस दाढ़ी, लबां कटीआं ध्यान लगाईआ। बिना प्रभू तों सब दी उजड़ गई वाड़ी, राखा नज़र कोए ना आईआ। मैं सोहणी सुणक्खी बण के नारी, भज्जी वाहो दाहीआ। मेरी मुहब्बत लग्गी ना किसे प्यारी, प्रेमी प्रेम ना कोए कमाईआ। दीन दुनी होई विभचारी, कुकर्म विच कुरलाईआ। मैं कीती इक हुश्यारी, आपणा भेव ना किसे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। अष्टभुज कहे मैं प्रभ नूं दस्सां आपणी बीती, पिछला हाल सुणाईआ। तेरी किहो जेही रीती, की तेरी बेपरवाहीआ। तेरी सृष्टी पवित्र कर ना सके नीती, नीतीवान ना कोए अख्वाईआ। झगड़ा प्या हस्त कीटी, तेरे विच ना कोए समाईआ। तेरी बाणी लग्गी किसे ना मीठी, मिट्ठा रस ना कोए चखाईआ। सब दी आशा हो गई कौड़ी रीठी, मुहम्मद दी तमन्ना दए गवाहीआ। मैनूं गुस्से विच चढ़े कचीची, गिला आपणा रही सुणाईआ। प्रभू किसे ने भंग किसे ने मदि पीती, तेरी खुमारी नज़र कोए ना आईआ। याद कर लै जेहड़ी आपणी धार दी मारी लीकी, लाईन ऐन इक बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सच तेरी सरनाईआ। अष्टभुज कहे मेरा शहिनशाह शाहाना, पातशाह बेपरवाहीआ। जुग जुग बदल दए ज़माना, ज़िमी असमान खेल खिलाईआ। रावण दा राम खेल महाना, तीर तरकश संग निभाईआ। बंसरी सुणा के धुर दा कान्हा, धुन नाद इक जणाईआ। पैग़म्बरां दे अगम्मी पैग़ामा, संदेशा इक सुणाईआ। गुरुआं दे सतिनामा, सति सति विच्चों समझाईआ। अन्त पहर के आपणा बाणा, कलि कल्की वेस वटाईआ। अष्टभुज कहे मैनूं सिंघासन दे थल्ले रख के बख्श्या दाना, सच प्रीती इक दृढ़ाईआ। उठ फिर दो जहानां, नव जोबन रूप वटाईआ। चौदां तबकां मार ध्याना, गहर गम्भीर आप सुणाईआ। आशा उम्मत दी बन्नृ के ल्याउणी

तमामा, तमूां अवर ना कोए रखाईआ। हाज़र करनी जिथ्थे बैठा होवे अमामां दा अमामा, अमलां तों रहित नूर इलाहीआ। सतारां हाढ़ दी होवे शामा, शमादान देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। अष्टभुज कहे मेरे शहिनशाह निवाज़ू, नीज़ू निज़ा ध्यान लगाईआ। मेरे अशट कष्ट दे बाज़ू, बिन तन वजूद सुहाईआ। तूं मालक धुर दा आगू, तेरे अग्गे सीस निवाईआ। मेरी निमस्कार बिन तेरी किरपा कोई ना जागू, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। आपणा इष्ट ना कोए त्यागू, सति मार्ग ना कोए अपनाईआ। तेरी सरनी कोई ना लागू, मैं वेखी ख़लक खुदाईआ। तैनूं कोई नहीं कहिंदा बापू, अवतार पैग़म्बर गुरु चाचे जगत जहान रिहा मनाईआ। सृष्टी खा के पान तमाकू, तोहमत तैनूं रहे लगाईआ। साध सन्त बण के डाकू, तेरे नाम नूं लुट्टण थांउँ थाँईंआ। सृष्टी घुंमदी वांग लाटू, लुटेरा वेख जगत लोकाईआ। तक सतारां हाढ़ दी रातू, रुतड़ी आपणी फोल फुलाईआ। मैं इक्को गल्ल आखूं, आख के दयां सुणाईआ। सब दा पूरा कर भविक्ख्त वाकू, वाक्या आपणा दे समझाईआ। तेरे अग्गे कोई ना रहे आकू, अक्ल बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। तूं दाता बण अगम्मा दातू, दयावान इक अख्वाईआ। धर्म दी धार बदल पोशाकू, पेशतर आपणा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि साहिब तेरी

१३७४ सरनाईआ। अष्टभुज कहे मेरी डण्डावत मेरे बाबा, बिन सीस सीस निवाईआ। मैं उम्मत अन्तर वेख्या तक के आई काअबा, १३७४

२२ केवल तेरा ध्यान लगाईआ। चारों कुण्ट कूड़ दा वाधा, वाधल होई लोकाईआ। तेरा सहे कोई ना दाबा, दबदबा नज़र २२

कोए ना आईआ। मैं वेखे तीर्थ तट बण गए ढाबा, अमृत रस ना कोए भराईआ। बाबे आदम दा डोलया छाबा, तराज़ू हक ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सच तेरी वड्याईआ। अष्टभुज कहे उम्मत दी आशा आई भगत दवार, दर दवारे बाहर सीस निवाईआ। किरपा कर आप निरँकार, हुक्म दे चाँईं चाँईंआ। ओह हालत दस्से सर्ब संसार, की करनी कार कमाईआ। की कल्मयां विच्चों मिले प्यार, की काअब्यां होए रुशनाईआ। आपणा भेव दस्स मेरे मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। मैं हस्स के कहां आओ विच मैदान, अगला पन्ध मुकाईआ। पुरख अकाल किहा अष्टभुज सुण हुक्म हुक्मरान, हुक्मी हुक्म सुणाईआ। माझे वाल्यां दा छत्र वेख लै नाल ध्यान, नैण अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। अष्टभुज कहे मैं वेख्या छत्र मोर पंख, आपणा ध्यान लगाईआ। मेरा कूक प्या संख, असंख असंखां रिहा जणाईआ। उहदी आवाज़ अगम्मी जेहड़ी बोली अवतार हँस, आपणा राग अल्हाईआ। मैं तान सुणया सहँस, सहँसर मुख ना कोए चतुराईआ। मैं

तक्कया अगम्मा बंस, जिस दी बंसरी वाला दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी आस तकाईआ। अष्टभुज कहे तूं साहिब छत्रधारी, सुल्तान इक अख्वाईआ। मैं तेरा रूप जोत धार कुँवारी, चन्द तक जगत विच सुहाईआ। मैं सिँघ शेर अस्वारी, तूं सिँघ शेर बेपवराहीआ। मैं सुंभ निसुंभ मार मारी, आपणा बल प्रगटाईआ। तूं जुग चौकड़ी करे पार किनारी, वड दाता बेपरवाहीआ। तेरे अग्गे की उम्मत दी आसा विचारी, ग़रीब निमाणी नज़री आईआ। तेरा इक चाहुंदी इशारी, इशारा देवां थांउँ थाँईंआ। मैं बथेरे वेखे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, टिल्लयां खोज खुजाईआ। जिधर तक्कया ओधर सब दी आशा होई ग़द्दारी, सच रूप ना कोए जणाईआ। हउमे हंगता दी लग्गी बीमारी, तबीब सके ना कोए बचाईआ। जूए सब ने बाज़ी हारी, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। मैं चौदां तबकां वड़ के दो हथ्थां मारां ताड़ी, ताड़ के दिता सुणाईआ। मुहम्मदा जिस ने तेरी लब कटाई दाढ़ी, दाढ़ां हेठ सर्ब चबाईआ। उस दी वेख बहारी, की साहिब रिहा वखाईआ। जिस दा हुक्म चलणा काबल कंधारी, कंधां तों परे दए शनवाईआ। किसे नूं होण ना देवे फ़रारी, दूर दुराडे फड़ लिआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा
१३७५ हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। अष्टभुज कहे प्रभू उम्मत दी आशा दूरों मारदी झाती, निउँ निउँ वेख वखाईआ। असीं १३७५
२२ पैग़म्बर मन्ने जेहड़े तत्तां वाले बन्दे ख़ाकी, अन्त ख़ाक विच समाईआ। चढ़दे दुलदुलां उत्ते राकी, रकाबां विच पैर टिकाईआ। २२
विकदे रहे शरअ दी हाटी, जगत वणजारे वणज कराईआ। चढ़दे रहे निक्की निक्की घाटी, मज़्ज़बां दी चोटी कदम टिकाईआ। सौंदे रहे उत्ते खाटी, आसण तन वजूद लगाईआ। कल्मयां वाली गाउंदे रहे गाथी, वाहिद लाशरीक इक मनाईआ। खुदा नूं बणाउंदे रहे साथी, आप संगी ना कोए अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी बेपरवाहीआ। अष्टभुज कहे ओह वेख चौदां तबक दी आशा, उदे अस्त ध्यान लगाईआ। जिस दा खोल्या ना किसे खुलासा, पर्दा सक्या ना कोए जणाईआ। ओह वेखण आई तेरा तमाशा, धुर दे मालक बेपरवाहीआ। जिस दा पवण नहीं स्वासा, साह साह ना कोए वड्याईआ। उस दे हथ्थ ना कोई खप्पर ना कोई कासा, कसम खा के रही जणाईआ। मैं सच दस्सां अष्टभुज देवी वाली लाटा, दर तेरे सीस निवाईआ। उस दा वस्त्र वेख पाटा, सीस ओढण ना कोए जणाईआ। तक के आई दूर दुराडीआं वाटां, आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। अष्टभुज कहे उम्मत दी आशा रही झुक, झुक झुक सीस निवाईआ। भगतां रहे ना लुक, ओहला दए मिटाईआ। हुण छेती गाईए तुक, इक्को नाम ध्याईआ। सदी चौधवीं पैंडा जाए मुक, अग्गे

रहे ना राईआ। हुण सानूं करीं खुश, खुद खुदा तेरी सरनाईआ। तैनूं लईए पुछ, पुश्त पनाह हथ्थ टिकाईआ। पहलों वेखीए तेरे भगत दुलारे सुत, जो भगत दवारे डेरे लाईआ। जिहनां दे अन्दरों बाहरों तेरा इक्को बुत, बुतख़ान्यां वज्जे वधाईआ। सब दा सांझा हो गया रुख़, मार्ग इक्को नज़री आईआ। ओह जम्म पए प्रभू विच्चों तेरी कुख्ख, तूं बणें जणेंदी माईआ। सानूं वी गले लाईं घुट्ट, आपणे अंग सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। मुहम्मद दी आशा कहे प्रभू तेरा सोहणा सच्चा दरबार, खुद खुदा तेरी सरनाईआ। तूं वाहिद परवरदिगार, बेअन्त नूर इलाहीआ। खेल कीता अगम्म अपार, सम्बल आपणां डेरा लाईआ। माझे वाल्यां पूरा कर इकरार, कौल गोबिन्द दिता निभाईआ। जिन्हां दे हथ्थ विच तेरी धार, धरनी धरत धवल धौल वज्जे वधाईआ। उन्हांः दे छत्र छाया हेठ तेरी चरणी झुकीए सच्ची सरकार, बिना सलाम तों आपणा समां समां बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। मुहम्मद दी आशा कहे पाया नूर अलाह, आलमीन सरनाईआ। दाता बेपरवाह, बेऐब धुरदरगाहीआ। खुशी विच ढोले लईए गा, गा गा शुकर मनाईआ। कबूल करीं दुआ, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। साडे विच्चों कढ वबा, द्वैत रोग रहे ना राईआ। तूं धुर दा इक्को अब्बा, आबरू साडी लै बचाईआ। बदल दे आपणी तबा, तबीअत साडी वेख वखाईआ। मलेछां रहे कूड़ ना सभा, सति सच लैणा प्रगटाईआ। साडा लेख बणा दे कगा, काग हँस उडाईआ। हुण तेरा इक्को वधणा अग्गा, आगमन विच खुशी मनाईआ। तेरा रूप शब्द धार बग्गा, बगल्यां बपड़यां करीं सफ़ाईआ। पवित्र कर दे काया हड्डा, चम्म नाड़ी मिले वड्याईआ। जेहड़ा धर्म निशाना गड्डा, दो जहानां करे सफ़ाईआ। शरअ दा रहे कोए ना अड्डा, अड्डी चोटी तक करीं सफ़ाईआ। मज़्हब मज़्हब नाल करे कोए ना दग़ा, फरेबी फरेबी ना करे लड़ाईआ। शरअ दा शरअ नाल होवे ना लबा, लुआब कूड़ देणा मुकाईआ। आपणे खेल दी दस्सदे वज़ा, वजूहात दे समझाईआ। तेरी अष्टभुज धार क्यों उस विच कर के आई गजा, घर घर अन्दर आपणा फेरा पाईआ। असीं ते चलणा तेरी विच रज़ा, राज़क रिज़क रहीम तेरी सरनाईआ। वेखीं आपणे दर आयां नूं देवीं कदे ना सज़ा, सज़ा विच ना कोए सुकाईआ। बिना प्रभू भगत दवार तों पवित्र रही कोई ना जग्गा, जागरत रूप ना कोए दरसाईआ। असीं चार कुण्ट वजा के आए डग्गा, डौरु तेरा नाम सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। उम्मत आशा कहे ओह मैं आ गई भज्जी नट्ठी, नट्ठ नट्ठ के पन्ध मुकाईआ। मैं चौदां सदीआं दी बद्धी गट्ठी, गठड़ी आपणे नाल रखाईआ। जिस वेले भगतां दी हद्द टप्पी, पिछला पन्ध मुकाईआ। मैनूं मिल

प्या नारद पंडत गप्पी, गपौड़ा लिख के दिता वखाईआ। कमलीए हुण प्रभू दी धार रहिणी नहीं छप्पी, छुपदे पासे पए दुहाईआ। औह वेख मुहम्मद दी भट्ठी तपी, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। किसे दा रहिणा नहीं कोई हिस्सा पत्ती, जम्मू वाल्यां दे पंज पत्ते देण गवाहीआ। एह लेखा मुहम्मद ने लिख के ते फेर चौदां वेर वेख्या सी आपणी अक्खीं, अक्ख अक्ख विच्चों खुल्हाईआ। फेर मौली दी धार आपणे हथ्थ रखी, रख के दिती वखाईआ। फेर आशा मुहम्मद दी ओस अगम्मी नूर दे दर ते ढट्ठी, जिस दा नूर नूर विच्चों नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। मुहम्मद दी आशा कहे ओ ओह मेरी उम्मत दा सदका, सद सद सीस निवाईआ। मैं राह उडीकां कद का, कदीम दे मालक बेपरवाहीआ। धन्न भाग जे मालक बणें मेरी यद का, यादव बंसी गवाह बणाईआ। मैं पैंडा छड देणा चौदां तबकां दी हद्द का, हदूद तेरी विच समाईआ। जेहड़ा सदा आपणे विच्चों सब नूं कढदा, कढ के आपणे विच मिलाईआ। तेरा खेल वेख्या मास नाड़ी हड्ड दा, हड्डीआं विच्चों आपणा आप बदलाईआ। हुण वेस वटा ल्या सूरे सरबग दा, सूरबीर इक हो आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। उम्मत दी आशा कहे की खेल दस्सीए हाली, हालत बदली लोकाईआ। ओह वेखो नारद लाल रंग दा डब्बा लै के ख़ाली, ख़ाली घराणे रिहा वखाईआ। एह ख्याल मुहम्मद ने उदों कीता सी जिस वेले अली दे नाल मिलाया सी आली, आलीशान दा नूर वेख के आपणा सीस निवाईआ। मेरी सदी चौधवी विच जिस वेले होवे चाली, चारों कुण्ट अंधेरा छाईआ। उम्मत दी उम्मत भरे ना कोए दलाली, विचोला नज़र कोए ना आईआ। मेरे बाग दा रहिणा नहीं कोई माली, मालवे वाले देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप प्रगटाईआ। ख़ाली डब्बा कहे नीं उम्मत दीए आशे, इशारे नाल दृढ़ाईआ। नी कलयुग दीए शाख़े, तैनूं शख्सीअत इक दृढ़ाईआ। नी फड़न वालीए मिट्टी के कासे, कसमां खा के झट लँघाईआ। तूं हुण हो जा ओस पासे, जिथ्थे दूजा पासा नज़र कोए ना आईआ। उम्मत दी आशा कहे शाबाश शाबासे, सोहणी गल्ल सुणाईआ। असीं ओसे दे हुक्म वाचे, जो बिना पत्रका रिहा दृढ़ाईआ। सानूं पता लग्ग गया साडा नाता टुट्ट जाणा जो पैग़म्बर बणे साडे चाचे, इक्को अब्बा जान इक्को अम्मी होणी धुर दी माईआ। सहारे रहिणे नहीं काया माटी काचे, कंचन गढ़ ना कोए वड्याईआ। हुण चौदां तबकां विच मुहम्मद दी ख़ाहिश नाचे, नच्च नच्च आपणा हाल सुणाईआ। क्यों सब नूं वज्जण वाले तमाचे, तम्हा दे झगड़े देणे गंवाईआ। जिस कारन उम्मत ने कटे फ़ाक, रोज़े रख के झट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। दुर्गा कहे अष्टभुज कहे कहि के सुणाए उफ़ हाए, दुहाई तेरा नाम दुहाईआ। तेरा नूर अलाह बेपरवाहे दिस ना आए, दो जहान अक्ख उठाईआ। जो तेरी धार जाए, अन्त तेरे विच समाए, मुड़ के फेर कदे ना आए, कदीम दे मालक तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे नी मैं आ गया दौड़ा, आपणा पन्ध मुकाईआ। तैनूं नहीं पता प्रभ दा किड्डा लम्मा चौड़ा पौड़ा, पौड़ीआं चढ़न वाले गुर अवतार पैग़म्बर चौथे डण्डे तों उपर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जिन दस्सया कहि के गया बड़ा राह सौड़ा, भीड़ी गली विच कुरलाईआ। मन नूं बणा के भौरा, घुम्मर विच घुंमाईआ। पथ्थरां इट्टां अक्खरां काग़ज़ां उत्ते करा के चौरा, जगत विच दिती वड्याईआ। बिना प्रभू दी किरपा तों किसे दे सिर ते होया कदे नहीं छौरा, छोहर बांका नज़र कोए ना आईआ। नारद कहे नी उम्मत दी आशे ओह वेख जिस ने भगतां दे निशान लाया उपर मौरां, मोहर आपणी दिती लगाईआ। जिहनूं सारयां मन्नया जाणया कि उस ने वेस धरना आपणा ब्राह्मण गौड़ा, गउड़ी राग गाउण वाल्यां दए समझाईआ। मुहम्मद ने इक्की वार फ़ातमा दे सिर ते रखया सी काला तौड़ा, उन्नी उँगलां उत्ते भवाईआ। जिस वेले प्रभ दी जोत ते शब्द दोहां दा बण गया जोड़ा, जोड़ी वाला गुरु रहिण कोए ना पाईआ। सब दा हो जाणा विछोड़ा, विछड़यां मेल ना कोए वखाईआ। फेर चौदां तबकां विच पै जाणा लोहड़ा, हाए हाए कर सुणाईआ। इक्को सतिगुर शब्द ते शब्द दा फिरना घोड़ा, ते घोड़ सवारां दे लेखे दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे नी उम्मत दीए ख़ाहिशे, तैनूं ख़सूसीअत दयां जणाईआ। तूं बड़े खेल कीते फ़ाहिशे, आपणा आप बदलाईआ। जगत माणे रंग तमाशे, वासना विच हल्काईआ। आबेहयात मिल्या ना किसे कासे, कसम नाल सुणाईआ। उहनां वेख फल रिहा किसे ना शाखे, शनाख़त करन वाले बैठे मुख भवाईआ। सब दे चेहरे अन्त उदासे, खुशी खुशी ना कोए जणाईआ। जिस मुहम्मद दे बैठ रिहों भरवासे, ओह पल्लू रिहा छुडाईआ। नाम प्यार हकीकी रिहा ना मजाज़े, मजाज़ी नज़र कोए ना आईआ। सब दे वल्लों कोरा हो गया जवाबे, अग्गे आस ना कोए तकाईआ। हुण उस ख़ुदा दे मेटे खुआबे, जो ख़बर सुणे थांउँ थाँईंआ। जिस ने सब नूं आपणे करना ताबे, ताबयादारी विच रखाईआ। जो लेख लिख्या नानक नानक नानक दे बाबे, जिस बाबे नूं बाबल कहि के गया गाईआ। क्यों ओह आ गया विच देस माझे, मजलस भगतां नाल रखाईआ। ओह मस्तक धर्म निशाने गाडे, गॉड हो के मस्तक टिक्के दए लगाईआ। जिस ने पिछले सारे वणजारे छाडे, अगला वणज

इक कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे ब्राह्मण गौड़ दा वेख लओ रूप, रुपे सोने वाल्यो ध्यान लगाईआ। जिस नूं सारयां कहिणा भूप, शहिनशाह धुरदरगाहीआ। जिस दे गल कपड़ा नहीं कोई सूत, सूत्रधारी आपणी कल वरताईआ। कराए सब दे कूच, कूचे गली वेख वखाईआ। ब्राह्मण गौड़ नहीं ओह सतिगुर शब्द दा दूत, दुतीआ भाओ दए चुकाईआ। जिस ने कलयुग दा, आवा करना ऊत, उतले हेठां दए सुटाईआ। कूड़ कुकर्म दे बणा के कपूत, कर्म कांड दा लेखा दए भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संदेशा इक सुणाईआ। ब्राह्मण गौड़ किसे ना जाणया कवण धार, अक्खरां विच लिख लिख के सारे खुशी मनाईआ। जेहड़ा तत वजूद तों बाहर, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। वसे सचखण्ड दवार, सच साचे सोभा पाईआ। जेहड़ा तत्तां वाला तत भेजे अवतार, अवतर आपणी कार कमाईआ। ओह ब्राह्मण गौड़ जेहड़ा जन्मे मरे ना विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी जिस दी सेव कमाईआ। एह खेल उस दा अपार, अपरम्पर स्वामी रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। ब्राह्मण गौड़ कहे मैं आ गया धुर दा राही, राहीओ तुहानूं दयां जणाईआ। सारे बल वखाउ आपणी बाहीं, बाहू बल प्रगटाईआ। मेरा आउणा उस वेले जिस वेले प्यार रिहा नहीं भाई भाई, सज्जण मीत नज़र कोए ना आईआ। याद रखयो मैं हाज़र सां जिस वेले गोबिन्द ने बूटा पुट्टया काही, कायनात दी जड़ दिती हिलाईआ। ओस वेले मुहम्मद ने दिती सी दुहाई, आपणी उम्मत दी आसा विच टिकाईआ। ओह जिस वेले आया मेरा शहिनशाह सम्मत सत्त विच शहिनशाही, ते शाही सब दी दए बदलाईआ। उहदा वेस होणा खेल परदेस होणा नर नरेश होणा ते दुनिया विच कम्म करेगा वाही, वाहिदे आपणे पूर कराईआ। ब्राह्मण गौड़ बण के आपणी मोहर लगा के सब दी कर देवेगा तबाही, ताकतवर नज़र कोए ना आईआ। इक आशा आपणी जेहड़ी मुहम्मद दी धार विच्चों जाई, जिस नूं जम्मण वाली अवर कोए ना माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। मुहम्मद कहे मैं सुणया कलमा कलमा सच खुशखबरी, खुशीआं विच दृढ़ाईआ। जिस वेले माण रिहा ना मसीतां मन्दिरीं, मन्दिर वज्जे ना कोए वधाईआ। ओस वेले मेरे मालक ने भाग लगाउणा काया अन्दरीं, अन्दरे अन्दर खेल खिलाईआ। खोल्ह कपाटी जन्दरी, पड़दा देणा उठाईआ। दुनिया दी ख़ाहिश होणी चन्द्री, चन्द सितारा दए दुहाईआ। सब दी तृष्ना होणी अन्न दी, प्रभ दा ध्यान ना कोए रखाईआ। सब दी आशा वध जाणी मन दी, मनुआ मन ना कोए समझाईआ। तृष्ना मिटणी नहीं तम दी, तृखा दूर ना कोए कराईआ।

गुरुआं चेल्यां दी धार बण जाणी चुगली निंदिआ कन्न दी, कूक कूक सुणाईआ। सच आवाज़ रहिणी नहीं किसे टल्ल दी, टल्लीआं रोवण मारन धाईआ। फिर आशा पूरी करनी बलि दी, जो बावन हो के आया समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। हाढ़ सतारां कहे मैं बड़े सुणे कलमे, कलमां लिख लिख गईआं आपणा बल लगाईआ। मैं बड़े वेखे लमहे, जो लम्मे पै के सीस निवाईआ। मैं नाम दे मिलदे वेखे तग़मे, जो गुर अवतार पैग़म्बरां तन लटकाईआ। सुणे शब्द दे नग़मे, जो नाद धुन करे शनवाईआ। जगत दी धार वेखे चशमे, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ फेरीआं पाईआ। साधां सन्तां दे वेखे करिशमे, कृष्न दी रास आपणा रंग रंगाईआ। बिना प्रभू दी धार तों सचखण्ड मूल कोई ना वसणे, वसल मिले ना यार अलाहीआ। हुण दीनां मज़्हबां वाले सारे फसणे, फ़ैसला सके ना कोए कराईआ। अन्त सब दे सूर्या छुपणे, छप्पा मारे धुरदरगाहीआ। चारों कुण्ट अंग्यारे तपणे, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। सब ने आपणे घरे टप्पणे, धर्म विच नज़र कोए ना आईआ। याद कर लओ क्यों गोबिन्द ने जन्म ल्या सी विच पटने, पंजाब नूं छड के तेग़ बहादर आपणा पन्ध मुकाईआ। जिस वेले हुक्मनामे अक्खरां विच किसे नहीं रटणे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। ओ मेरया मालका, ख़लक दिआ ख़ालका, ओ

१३८० ख़ालसे दिआ ख़ालसा, ख़ालस दे दृढ़ाईआ। हुण करीं ना किसे नाल नालशा, जगत जहान वेख साज़शा, मन दीआं वेख १३८०

२२ वासना, घर घर अग्न लगाईआ। साध सन्त वेख रूप बणया राकशा, ठग्ग चोर डाकू करदे मालशा, धर्म दी धार विच २२

चलण वाले मुख दे उत्ते करदे पालिशा, कूड़ी क्रिया रंग चमकाईआ। सति धर्म दा दिसे कोई ना रास्ता, तेरे प्रेम दा लभ्भे कोए ना बरास्ता, जगत वासना विच पै गया सब दा वास्ता, वास्तक तेरा रूप नज़र किसे ना आईआ। हुण हाल वेख लै शंकर वाले कैलाश दा, खेल तक लै ब्रह्मे वाले प्रकाश दा, नूर वेख लै विष्नूं वाले अहिसास दा, असल आपणा पड़दा लाहीआ। हुण रूप तक लै सदी चौधवीं उम्मत दी आशा गोली दे मुख विच अगम्मा रूप गुलाब दा, गुल्ल खिल्या नज़र किते ना आईआ। हुण वेख्यो की खेल हुन्दा पंज आब दा, फेर झगड़ा वेख्यो बग़दाद दा, फेर हुक्म सुणिउ उस अहिबाब दा, जो मित्र प्यारा नूर इलाहीआ। की खेल होणा समाज दा, की संदेसा होणा अर्शी आवाज़ दा, जिस नूं फ़र्श उत्ते सुणन वाला नज़र कोए ना आईआ। झगड़ा मुकणा रोज़ा नमाज़ दा, इशारा होणा गोबिन्द वाले बाज़ दा, जो आदि जुगादि सब साजणा साजदा, साजणहारा हो के आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। उम्मत कहे प्रभ मैं तेरी धार निमाणी, निउँ निउँ सीस निवाईआ। मैं कोझी कमली

काणी, बुद्धहीण दर तेरे दुहाईआ। मैनूं चारों कुण्ट लभया किते ना पाणी, पारब्रह्म तेरी ओट तकाईआ। मैं फिरी मढ़ी मसाणी, मकबरयां विच ध्यान लगाईआ। मैनूं मुहम्मद दी नज़र ना आई जवानी, जो जोबन गया हंढाईआ। मैं ओह वेखी जिस दे नाल तेरी तकरीर तेरी तहरीर लिखी नाल कानी, कलमा रिहा समझाईआ। मैं चौदां तबकां तकी निशानी, ज़िमीं असमाना खोज खुजाईआ। मैं मंज़ल वेखी रुहानी, रूह बुत आपणी अक्ख उठाईआ। मैं चार कुण्ट भज्जी जिधर तक्कया उधर बेईमानी, बेवा रूप लोकाईआ। मैं डर गई सहिम गई हाए उफ़ तेरी आउण वाली तुग्यानी, माझे वाल्यो तुरकी दा लेखा दयो वखाईआ। हुण झगड़ा पैणा जिस्मानी, सारयां नूं पसीना आउणा पेशानी, मंज़ल रहिणी नहीं कोई रुहानी, शरअ दी शरअ ने करनी ग़ुलामी, बचया नज़र कोए ना आईआ। मुहम्मद ने इशारा कीता किनारा कीता मेरा मालक इक वाहिद सब दा बणे बानी, बाणप्रस्त वाल्यो बाण इक लगाईआ। ढाई मिन्ट दी फुल्ल गुलाब दी खेल इक महानी, ढाईआं मिन्टां विच गोबिन्द दा ढाई सौ साल दा लेखा पूर कराईआ। हुण कोई भगतां दी धार रहिणी नहीं बेगानी, जिस नूं बेगमपुरा कहिंदे उस बेगमपुरे दी बेगम हरिजन देणा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा

१३८१ हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। हाढ़ कहे मेरा वी इक समां, समझ नाल समझाईआ। जन भगतो तुसीं होए इक्ठे १३८१

२२ जम्हा, आपणा घर वसाईआ। छड के कूड़ी तमा, तामस आए गंवाईआ। अज्ज इक हुक्म सुण लओ नवां, नव जोबन २२

रिहा दृढ़ाईआ। अग्गे पैंडा नहीं रहिणा लम्मा, लम्मा पै के गोबिन्द दी धार इक्कीआं दा प्यार दए वखाईआ। जन भगतो गोबिन्द चुक्क लओ सीढ़ी, सिरड़ आपणा लैणा निभाईआ। तुहाडी मातलोक विच वध गई पीढ़ी, पीआ प्रीतम दए वड्याईआ। ओह विहार तक लओ जेहड़ा अन्त होणा अख़ीरी, तुहानूं अक्खां नाल वखाईआ। किसे ने होणा नहीं दिलगीरी, सतिगुर तुहाडा संग ना कदे तुड़ाईआ। मेरी शब्द धार ज़ंजीरी, गंढ धुर दी दए पवाईआ। तुहाडे प्यार दे विच ओह फ़कीरी, जेहड़ा फ़िकरा गाया गोबिन्द माहीआ। एह हुक्म वरतणा तकदीरी, तकदीर आपणे विच छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। जन भगतो वेखो गोबिन्द आया तुहाडे कंधे, कंधीं भाग लगाईआ। तुहानूं बणा के बन्दगी वाले बन्दे, बन्दना आपणी विच समाईआ। कूड़ क्रिया विच्चों कढ बणाए चंगे, चंगी तरह समझाईआ। बिशन कौर दी धार पंजां प्यारयां नाल गंढे, गंढ गुजरी पूर कराईआ। मौली दा तन्द तेजभान नाल कटे खण्डे, कटार तिक्खी नाल छुहाईआ। प्रभ दे चरणां पिप्पल पत्त रखो पंजे, पंज्जयां नाल छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। मुहम्मद कहे मेरी धार गई वढ्ढी, सच

दयां सुणाईआ। उम्मत आसा रही छडी, नाता तुट्टे जगत लोकाईआ। होणा पए अलग्गी, वखरी कार कमाईआ। सब दी वेखे बदी, जिस बधक ल्या तराईआ। उहदी जोत अगम्मी जगी, जागरत जोत करे रुशनाईआ। ओह बण के धुर दा तबी, तबीअत वेखे थांउँ थाँईंआ। मुहब्बत दा बण के लब्बी, हरिजन लए तराईआ। पंजां प्यारयां एका रंग रंगी, रंगत आपणी रिहा चढ़ाईआ। गुरमुखां आसा पूरी करे जो गोबिन्द कोलों मंग मंगी, मांगत हो के झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा पड़दा लाहीआ। सीढ़ी कहे मैं कोटन कोटां दिता साड़, अग्नी तत जलाईआ। जन भगतो अज्ज आ गई तुहाडे दवार, आपणी खुशी बणाईआ। औह वेखो सांझा यार, जो यारड़ा इक अख्वाईआ। जो मरे ना जम्मे विच संसार, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जिस दे कारन गोबिन्द कीता खेल अपार, जीवत जीअ उच्च पीर अख्वाईआ। अन्त समें विच नंदेड़ आपणे तत दी रख के धार, अग्नी अग्नी नाल मिलाईआ। ओस वेले वाहिदा कीता कौल इकरार, सच नाल समझाईआ। एह लेखा पूरा फेर करां जद सम्मत शहिनशाही आए सतारां हाढ़, आपणा वेस वटाईआ। सचखण्ड पहलों भेज के पाल सिँघ दा सुत दुलार, बख्शिश आपणी नाल तराईआ। फेर भगतो सब नूं दयांगा दीदार, घर घर दरस वखाईआ। खड़न तों पहलों होवांगा ज़ाहर, चिट्टे अस्व सोभा पाईआ। इक साल तों बाद पंज गुरमुख वखाया करांगा नाल, आपणी दया कमाईआ। जिथ्थे होवोगे उथे करांगा संभाल, सम्बल बैठा वेख वखाईआ। सब दी कर लवांगा भाल, भज्जां वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ। मुहम्मद कहे जिस वेले गोबिन्द बणया उच्च दा पीर, पीर पीरां खेल वखाईआ। मैं वेखी इक तस्वीर, तसबी माला हथ्थ ना कोए वड्याईआ। जिस दा रूप अनूपा पीले वेखे चीर, चीर सीस वड्याईआ। मैं नक्क नाल कढी लकीर, लाईन दिती वखाईआ। वाह मेरे कादर तेरी कुदरत तेरी तकदीर, तदबीर तेरी सोभा पाईआ। तूं लेखा जाणे शहिनशाह शाह हकीर, हज़रत वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा राह इक दृढ़ाईआ। मुहम्मद कहे मैं सुणी अगम्मी बोली, अनबोलत दिती दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं धार तकी अनमोली, नूर जोत रुशनाईआ। सगला संग तक्कया गोली, गहर गम्भीर दिती वखाईआ। जिस दी अल्लड़ जवानी मलूक सोहली, नव सत्त दा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्लाईआ। सतारां हाढ़ कहे ओह वेखो चौदां तबक करन सलाम, सजदे सीस निवाईआ। वाह धुर दे अमाम, तेरी आमद बेपरवाहीआ। तेरा सुणया अगम्म कलाम, कलमा नूर इलाहीआ। असीं रहे ना कोए गुलाम, ज़ंजीर दिता तुड़ाईआ। मिटी अंधेरी शाम,

१३८३
२२

शमां नूर रुशनाईआ। तेरी इक पहचान, बेपहचान वेख वखाईआ। सानूं ज़मीन उत्ते तेरा देणा पए ब्यान, हुक्म मन्नणा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा राह इक समझाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी इक तमन्ना, तामस ना कोए रखाईआ। मैं वेख्या गोबिन्द दा इक कन्ना, कन्नां वाल्यो दयां सुणाईआ। जिस दा हद्द कोए ना बन्ना, वंड ना कोए वंडाईआ। ओह दो जहानां तों लम्मा, लम्मा पै के सथ्थर यारड़े वाला दए वखाईआ। जिस नूं समझे कोई ना बन्दा माटी वाला चम्मा, जो रसना जेहवा गाईआ। हुण ओस दा आ गया समां, समाप्त करे ख़लक खुदाईआ। जगत जिज्ञासू रहे कोई ना पम्मा, नारद मुनी दए गवाहीआ। जगतहीण दिसे ना अन्न्हा, नेत्र जगत ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। उम्मत दी आशा कहे सीढ़ी रख दयो थल्ले, थलक थलक थलक धरनी आप कराईआ। किसे दे रिहा कुछ नहीं पल्ले, पलक विच कीती सफ़ाईआ। जेहड़े अन्न पाणी नाल पले, पलकां दे पिच्छे लभ्भण माहीआ। ओह रह गए इकल्ले दे इकल्ले, कलकाती संग ना कोए रखाईआ। जिन्ह्नां दे उत्ते किरपा कीती अन्तर आत्म दिते सल्ले, सलल आपणा तीर चलाईआ। ओह जगत दी धार बण गए झल्ले, आपणी सुध बदलाईआ। निरगुण जोत विच रले, नाता तत्तां वाला तुड़्हाईआ। प्रकाश हो के बले, नूर नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। उम्मत दी आशा कहे मेरीआं निकलदीआं चीकां, चीक चिहाढ़ा दयां पाईआ। जिस दीआं मुहम्मद नूं उडीकां, बैठा ध्यान लगाईआ। राह तके लाशरीका, जो शरक्त दए गंवाईआ। जिस दे विच हक तौफ़ीका, मालक धुरदरगाहीआ। बणे धुर दा मीता, मित्र इक हो आईआ। लेखा जाणे जीव जीअ का, लख चुरासी खोज खुजाईआ। सब नूं देवे आपणा कीता, बचया रहिण कोए ना पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी दो जहानां नापे नाम दे फ़ीता, लेखा अवर ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। सीढ़ी कहे मैं सुणया ला के कन्न, आपणा ध्यान रखाईआ। मैं वेख्या गोबिन्द गुजरी चन्न, जो चन्न रिहा बदलाईआ। वसया बिन छप्परी छन्न, शंकर सीस झुकाईआ। बेड़ा रिहा बन्न्ह, आपणे कंध उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। पंज कहिण पिप्पल दे पत्ते, पत्रिका धुर दी दईए दृढ़ाईआ। पतिपरमेश्वर हुक्म दस्से अकथे, कथनी कथ ना सके राईआ। जिहदा खेल यथार्थ यथे, यदी आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दे सथ्थर सारे लथ्थे, गोबिन्द यारड़ा सेज हंढाईआ। ओस ने खहिड़े छुडाउणे पथ्थर वट्टे, पाहन पूजण कोए ना पाईआ। चार जुग

दी मंज़ल टप्पे, टापूआं डेरा ढाहीआ। इक्को माण रखाया अक्खर पप्पे, पतिपरमेश्वर आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। पप्पा कहे मैं दस्सां पता, पत्ता पत्ता दए गवाहीआ। मेरा भेव रिहा ना रता, रत्ती रत्त ना कोए जणाईआ। मेरा लेखा ओस धार दा यथा, जो सति सच अख्वाईआ। जेहड़ा दिसे किसे ना अक्खां, अक्खरां तों बाहर डेरा लाईआ। जिस दे गुण गाउंदे गए कोटन कोटि ते लक्खां, अवतार पैग़म्बर गुरु सिफ्त सालाहीआ। जेहवा दा माणदे गए रसा, निजर रस रस चखाईआ। जिस दी धार इक्को सस्सा, सस्सा साहिब नाल वड्याईआ। ओह सब दा करन लग्गा अन्तिम पता, पतिपरमेश्वर हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पप्पा कहे मैं पारब्रह्म दी धार, पतिपरमेश्वर मेरा रूप समाईआ। मेरी याद करदे गए तेई अवतार, रामा कृष्ना इक दूजे नाल सिफ्त सालाहीआ। ईसा मूसा मुहम्मद बणदे रहे लिखार, लिख के लेखा आपणे विच छुपाईआ। नानक ने इकवंजा वार लिख्या तूं मेरा मैं तेरा तेरा रूप अपार, अपरम्पर तेरी बेपरवाहीआ। सच दस्स जिस वेले लए कलि कल्की अवतार, किस बिध आपणा खेल खिलाईआ। पुरख अकाल किहा नानक निरगुण पा सार, महासार्थी हो के दयां दृढ़ाईआ। मैं सतिगुर शब्द जोत दी धार, करनी करता इक हो आईआ। ना पुरख होवां ना नार, नर नरायण धुरदरगाहीआ। ना मन्दिर वसां ना घर बाहर, जगत दवारे ना डेरा लाईआ। ना पति रखां ना तन शृंगार, शस्त्र हथ्थ ना कोए उठाईआ। ना खाण पीण दा होवे अहार, जल धार ना कोए वहाईआ। ना बंस सरबंस होवे ना प्यार, मीत संगी ना कोए जणाईआ। ना ख़ादम होवां ना सिक्दार, जगत आस ना कोए रखाईआ। नानक वेख मेरा दरबार, दरगाह सच दयां दृढ़ाईआ। जिथ्थे जोत जगे अपार, नूर नुराना डगमगाईआ। ना कोई पैग़म्बर गुरु अवतार, ना कोई आपणा बल वखाईआ। जिधर वेख्या मेरा मेरा मेरा उज्यार, मेरा मेरे विच समाईआ। मेरे सब कुछ इख्त्यार, छोटे छोटे मुख्त्यारनामे तुहाडे हथ्थ फड़ाईआ। जिस वेले आवां ते आपणी कल धार, अकल कलधारी वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। पप्पा कहे मैनूं गुर अर्जन ने लिख्या नाल प्यार, पीआ प्रीतम ध्यान लगाईआ। बिना सतिगुर शब्द तों सतिगुरु होवे ना विच संसार, तत कम्म किसे ना आईआ। नाले लिखदा नाले सिखदा नाल करे निमस्कार, डण्डावत विच आपणा आप टिकाईआ। नाले बिना कन्नां तों सुणे गुफ़तार, की शब्द करे धुन्कार, धुन आत्मक राग सुणाईआ। ओह वेख अर्जन रावी तों पार, मेरा सम्बल देस अपार, अपरम्पर स्वामी आप सुणाईआ। फेर लेख लिखणा सतिनाम सतिनाम सत्त वार, सति सति विच प्रगटाईआ।

१३८४
२२

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला आप मिलाईआ। पिप्पल दे कहिण पत्ते साडी लिखी गई पाती, पत्तना ते बैठे दिती सुणाईआ। वेखो खेल कलयुग अंधेरी राती, अंध अंधेरा नज़री आईआ। सच धर्म दी रहे ना कोए जमाती, मार्ग हक ना कोए रखाईआ। जिस वेले कूड़ क्रिया दी होई अन्तिम वाटी, पिछला पन्ध मुकाईआ। मंज़ल चढ़े कोए ना घाटी, सचखण्ड रंग ना कोए रंगाईआ। झगड़ा पैणा तत आठी, अड्डां तत्तां नाल कुरलाईआ। पाखर ज़ीन पावे कोए ना काठी, अस्व तंग ना कोए कसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। सीढ़ी कहे पंज प्यारे जाओ टिक, आपणा आसण लाईआ। सारी संगत हथ्थ रखो आपणी हिक, छाती उत्ते टिकाईआ। प्रभू तेरा दर्शन करीए नित, निज नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। तूं वसणा साडे विच, विच्चों पड़दा देणा चुकाईआ। आत्म परमात्म बणना मित, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। सुहञ्जणी सुहाउणी सतारां हाढ़ दी थित, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। सदी चौधवीं दी गोली ढाई मिन्ट रखे मुख दे विच्च, गुल फुल्ल नाल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक वखाईआ। अष्टभुज कहे मेरा वेख शस्त्र खड़ग खण्डा, खण्ड ब्रह्मण्ड ध्यान लगाईआ। निगह मार विच चर्च जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ।

१३८५ २२

१३८५ २२

साचा दिसे ना कोए अनन्दा, अनन्द पुर वाला दए गवाहीआ। हुण सदी चौधवीं दा वेला लँघ, अन्त आपणा पन्ध मुकाईआ। मुहम्मद दी पूर कर दे मंगा, ख़ाहिश ख़ाहिश नाल रलाईआ। इस तों केहड़ा होर वक्त चंगा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। पुरख अकाल कहे मैं अकल कला कुलवन्ता, हरि हरि इक अख्वाईआ। मेरी सुहञ्जणी होवे रुत बसन्ता, महक महक महक नाल महकाईआ। धर्म दी धार बणाए बणता, घड़न भन्नणहार धुरदरगाहीआ। जो वेस करे वार अनन्ता, जुग जुग आपणा रूप बदलाईआ। कलयुग मेटे हउमे हंगता, हँ ब्रह्म समझाईआ। बोध अगाधा बणे पंडता, ब्रह्म करे पढ़ाईआ। जन भगतां वेखे मनसा, मन माहे खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। उम्मत आशा कहे मेरे पैग़म्बर हज़रते हज़रत, मुहम्मद महिव दयां दृढ़ाईआ। आपणा खेल वेख अहिमद, अहिम भेव चुकाईआ। सच नाल रिहा कोए ना सहिमत, सगला संग ना कोए जणाईआ। लेखे लग्गे किसे ना मेहनत, रोज़ा बांग रहे कुरलाईआ। धुर दा इशारा करे कोई ना सैनत, पर्दा विच्चों ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। मुहम्मद किहा एह खेल न्यारा, निराकार तेरी वड्याईआ। मैं सोहां तेरे दवारा,

दर तेरे सीस झुकाईआ। मेरे मालक ख़ालक इसतग़ुफ़ारा, गुफ़त शनीद तेरी शनवाईआ। तूं सांझा इक्को यारा, लाशरीक वड वड्याईआ। अमाम अमामा आयों दुबारा, दोहरी धार प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। मुहम्मद कहे सदी चौधवीं मैनूं मारदी धक्के, खुशीआं नाल जणाईआ। चल चलीए मदीने मक्के, मकबरयां तों बाहर लै अंगड़ाईआ। साडे अन्तिम फल पक्के, भोएं गिर ना आपणा आप गंवाईआ। मुहम्मद चारों कुण्ट तके, बिन नैणां नैण उठाईआ। की खेल हकीकत हके, करनी करता कार की कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे ओह वेख पूरी हुन्दी आस, आसा वाल्यां दयां जणाईआ। मेरी गोली ने बदल ल्या लबास, काली कफ़नी दिती तजाईआ। सच दे मण्डल पा के रास, आपणा रंग रंगाईआ। जेहड़ी उच्च दे पीर ने रखी सी आस, अन्तर इक ध्यान लगाईआ। जिस वेले प्रगट होया मेरा पुरख अकाला मेरे साथ, सगला संगी संग बणाईआ। हो के सर्ब कला समराथ, भरपूर बेपरवाहीआ। लेखा जाण अनाथां नाथ, ग़रीब निमाणा खोज खुजाईआ। जोती जोत कर प्रकाश, अंध अंधेरा दिता मिटाईआ। लहिणा पूरा कर चम्यार रविदास, रवी आपणा हुक्म समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी गोली ने छड दिता मेरा वस्त्र, बस्ती छडी संग ना कोए बणाईआ। मेरे सीने लग्गी नश्तर, खून बिना ज़िबह तों दिता वहाईआ। मैं भज्जी उठ के पच्छम, आपणा पन्ध मुकाईआ। काअब्यां आई दस्सण, मदीने मक्के हाल दुहाईआ। उठो वेखो खेल हकीकत हकण, की करता कार कमाईआ। मैं अन्त हो गई शक्कण, शक विच दयां दुहाईआ। मेरी जड़ आ गया पट्टण, पटने वाला धुर दा माहीआ। जिस दा ढोला सारे रट्टण, तूं मेरा मैं तेरा नाम ध्याईआ। ओस भगत सुहेले बणाए रत्न, अमोलक आप प्रगटाईआ। मुहम्मदा तेरा मेरा चलणा कोई नहीं यतन, यथार्थ दयां सुणाईआ। हुण चलीए आपणे वतन, चौदां तबकां पन्ध मुकाईआ। मेरे ख़ाली हो गए हथ्थण, रो के दयां सुणाईआ। तेरी आसा लग्गी नट्ठण, भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मैं की दस्सां, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। मैं सब कुझ वेखां अक्खां, अक्खां वाल्यां दयां सुणाईआ। मैं जुग वेखे चौकड़ी लखां, कोटन कोटि ध्यान लगाईआ। सारे सड़ गए वांग कक्खां, बिना प्रभू तों नज़र कोए ना आईआ। मैं की तकदी वे नारद ब्राह्मण ने सवा हथ्थ वधा लईआं लिटां, बोदी आपणी पिच्छे लई लमकाईआ। हुण माण रहिणा नहीं पथ्थर इट्टां, पाहन सीस ना कोए निवाईआ। चार जुग दे शास्त्र प्रभू

दीआं चिट्टां, नाम संदेशे रहे सुणाईआ। मैं इक्को आस उस ते सिट्टां, जो सिट्टेबाज़ी वेखे जगत लोकाईआ। उसे दे उत्ते टिकां, जिन्ह मेरे मथ्थे तों टिक्का लाह के मेरी गोली दे मथ्थे दिता पहनाईआ। हुण ज़रूर धर्म दा बदल जाणा सिक्का, साखी सच दी दयां सुणाईआ। जिस मेहरवान महिबूब दा इक्को कलमा ते इक्को विशा, विश्व दा लेखा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आपणे हथ्थ रखाईआ। मुहम्मद कहे सदी चौधवीं हुण ना हिम्मत हारीं, हार के दयां जणाईआ। जिस प्रभू दी सब दे नाल यारी, यराने जुग जुग तोड़ निभाईआ। की हो गया जे मेरी पहलों आ गई वारी, वारता पिछली नाल रलाईआ। फेर खेल तकणी सृष्टी सारी, सार शब्द हुक्म मनाईआ। चार कुण्ट तपणी अंग्यारी, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। मति वेखणी मन हैंस्यारी, हस्त कीट खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वडा वड वड्याईआ। मुहम्मद कहे असीं अवतार पैग़म्बर गुरु इक्को घर गए जुट, जुट्ट लए बणाईआ। साडे नाम कलमे वाले नहीं बुट्ट, रसना ना कोए वखाईआ। तत्तां वाली धारों गए छुट्ट, तन वजूद ना कोए हंढाईआ। पुरख अकाल दे बण के पुत्त, दर दवारे सोभा पाईआ। हाढ़ सतारां सुहञ्जणी रुत, रुतड़ी इक महकाईआ। किरपा करे अबिनाशी अचुत, चेतन सब नूं दए समझाईआ। सारे इक्को वार लओ पुछ, पिच्छे नज़र कोए ना आईआ। हुण कलयुग अंधेरा मेटणा घुप्प, निरगुण नूर होए रुशनाईआ। सब दी मंज़ल गई पुज्ज, पाँधी पन्ध ना कोए भवाईआ। जगत दा दीपक जाणा बुझ, बिन भगतां ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। मुहम्मद कहे गोबिन्द मिला लै हथ्थ, हथ्थ हथ्थ नाल मिलाईआ। सदी चौधवीं पई हस्स, मुख पिच्छे रही भवाईआ। गोली नूं मारी अक्ख, इशारे नाल दृढ़ाईआ। नी ओह तक गोबिन्द सूरबीर सच, बांका सोहणा नजरी आईआ। नी मेरे वेंहदयां मेरे विच गया रच, मेरा लूं लूं दए गवाहीआ। नाल जुड़ गया नत्त, नाता ल्या बंधाईआ। मेरा इक्को हो गया तत, तत्व दिता गंवाईआ। पिछली रही ना मति, मतांतर डेरा ढाहीआ। मैं विच्चों तक्कया इक्को कमलापति, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, करनहार इक अख्वाईआ। मुहम्मद किहा सदी चौधवीं तूं की दिता आख, आखर दे दृढ़ाईआ। क्यों बण गईउँ गुस्ताख़, गुस्से विच डराईआ। मैं नहीं तैनूं करना मुआफ़, मुफ्ती सके ना कोए बचाईआ। कोई ना सके राख, होए ना कोए सहाईआ। मैनूं तक साख्यात, पीर अगम्म अथाहीआ। मेरा उस दे नाल भविक्ख्त वाक, जो वाक्या वेखे चाँईं चाँईंआ। तूं किस बिध मेरे नालों तोड़ें नात, नातवां मैनूं रही बणाईआ। मेरा

अन्तर वेख पाक, पतित पुनीत इक्को रूप दरसाईआ। मेरी ओस ख़ुदा दी ज़ात, जो अज़ाती वंड ना कोए वंडाईआ। ज़रा मेरे वल्ल झाक, मैं जोबनवन्ता धुर दा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद जी मैं तुहानूं करदयां वेख्या मुज़ाहरा, कल्मयां विच दुहाईआ। मैं हुण जाणा विच काहरा, गुस्से नाल सुणाईआ। वंडणा इक दाइरा, हद्द हदूद तेरी विच रखाईआ। लाउणा इक्को नाअरा, हक हक सुणाईआ। तेरा कायम नहीं रहिणा पहरा, चारों कुण्ट होए हल्काईआ। फेर मूसा नाल वेखणा मुशाइरा, मुश्किल हल्ल ना कोए कराईआ। जिन्हां खाधा गाँ वच्छा ते वहिड़ा, रसना रस चखाईआ। उन्हां दा हुण कुछ हाल होणा भैड़ा, भैड़ी सतारां हाढ़ी दए गवाहीआ। मैनूं जापदा मैनूं छडणा पैणा सब दा खहिड़ा, ख़ाक मिलण वाले सारे देणे तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। मुहम्मद कहे मैं शरअ दा पक्का, सूरबीर अख्वाईआ। मैं बणा के मदीना मक्का, मकबरे दिते वसाईआ। मैं मार के काफ़र लखां, ख़ाक विच रुलाईआ। मेरीआं चौदां तबकां तकण वालीआं अक्खां, चौधवीं सदी दयां समझाईआ। मेरे नाल मिल के तैनूं मिलदा नफ़ा, नुकसान विच कोए ना आईआ। सदी चौधवीं कहिंदी मुहम्मद जी क्यों ऐवें हुन्दे ख़फ़ा, गुस्से विच सुणाईआ। ज़रा ध्यान कर लै तेरा लेखा पिछला पंज लिखारी करदे जांदे रफ़ा, रफ़ता रफ़ता आपणी कलम चलाईआ। ओह वेख उलटा दिता सफ़ा, सफा मलेछां रिहा उलटाईआ। हुण ऐउँ जापदा जे किसे नूं मिलणा ते इक्को परवरदिगार कोलों गफ्फ़ा, बाकी गुफां विच सारे बन्द देणे कराईआ। तुसीं ते परमात्मा कोलों ख़ुदा कोलों लाशरीक कोलों झोलीआं अड्ड के कलमे दा मंगण वाले फक्का, छोटी छोटी पूंजी आपणी झोली पवाईआ। धरनी उत्ते वंड वंडाई चप्पा चप्पा, चिप्पी विच पाणी पीण वाल्यो अन्त रहिण कोए ना पाईआ। हुण चारों कुण्ट इक्को एक चलणा पप्पा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा हुक्म सुणाईआ। इस विच फ़र्क रहे ना रता, रत्न अमोलक हीरे गुरमुख लैणे प्रगटाईआ। जिन्हां ने लेख लिखे उपर गत्ता, गतमित सब दी वेखे थांउँ थाँईंआ। जिन्हां दी ज़बान विच लग्गा ठप्पा, मोहर इक्को इक रखाईआ। इक्को अमृत विच प्रेम प्यार दा प्याला पी के अन्दर लँघाई गट गटा, गटा गटा आपणा आप कराईआ। जन्म मरन दा मेट लैणा रट्टा, अग्गे लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद जी आह वेखो किताब, कुतबखान्यां बाहर जणाईआ। जिस दे विच एह हिसाब, जिस दा लेखा अंकड़यां विच कदे ना आईआ। उस दा पहला वेखो बाब, की हुक्म रिहा सुणाईआ। अग्गे तक्को जनाब, नूर नुराना नूर इलाहीआ। सुणो ओह आवाज़, जिस

नूं सरवन सुणन कोए ना पाईआ। करो उस नूं आदाब, जिसने अदब दिता सिखाईआ। हुण वेला आ गया सारे जाओ जाग, नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। गोबिन्द दा शब्दी उडण वाला बाज़, बाज़ां वाला आपणा हुक्म वरताईआ। दीन मज़्हब सब ने जाणा त्याग, त्यागी हो के प्रभ दे अग्गे सीस झुकाईआ। एह गुलशन खिड़या नहीं रहिणा बाग़, उम्मत दा गुंचा कम्म किसे ना आईआ। आत्मा दी इक ने पकड़ी वाग, डोरी आपणा तन्द खिचाईआ। क्यों सदी चौधवीं दी गोली ने मुख विच फड़या फुल गुलाब, जो गुल गुलशन दए खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। मुहम्मद कहे गोबिन्द आ दोवें करीए अरदास, परवरदिगार पुरख अकाल अग्गे सीस निवाईआ। साची केहड़ी रासी ते केहड़ी रास, पर्दा परदयां विच्चों दे खुल्हाईआ। गोबिन्द हस्स के किहा मुहम्मदा शाबाश, वाहवा तेरी वड वड्याईआ। ओह तक मेरा नूर नुराना साख्यात, जोती जाता धुरदरगाहीआ। जिस ने साथों लेख लिखाया उत्ते काग़जात, कलम शाही वंड वंडाईआ। हुण उस विच्चों सब नूं करन लग्गा आज़ाद, आज़ादी आत्मा परमात्मा दए बणाईआ। उस ने सानूं सरीर दे बणन नहीं देणा बजाज, तन कपड़ा वखो वक्खरा मज़्बां दे हट्ट विकाईआ। साडा रहिणा नहीं कोई राज, रईयत रंग ना कोए रंगाईआ। जो पिच्छे नहीं ते हुण मिल जाणा जुआब, हुक्म देवे धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गोबिन्द कहे आजा होईए अग्गे, अग्गे हो के सीस निवाईआ। तेरा मेल हुन्दा कदे कदे, कदीम दे मालक बेपरवाहीआ। असीं सारे तेरे हुक्म विच बध्धे, बन्दना विच सीस झुकाईआ। तैनूं कदे नहीं पुच्छया क्यों दीन मज़्ब चलाउंदे ते की वजहे, वज़ूहात ना कोए समझाईआ। तेरी सरनी सारे लग्गे, ढहि ढहि आपणा आप बणाईआ। तूं सानूं राह वखाए अड्डो अड्डे, वक्खरी वक्खरी कार कमाईआ। नाल कलमे निशाने गड्डे, गॉड हो के राड हुक्म वाली वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा इक दृढ़ाईआ। पुरख अकाल किहा मुहम्मद गोबिन्द दोवें होवे पेश, पेशतर दयां सुणाईआ। केहड़ा रव्हे हमेश, मैनूं दयो सुणाईआ। केहड़ा करे वेस, अवल्लड़ा रूप दरसाईआ। केहड़ा वसे साचे देस, देसांतर डेरा ढाहीआ। मुहम्मद ने झट चौदां तबक लए वेख, ज़िमीं असमानां ध्यान लगाईआ। फेर वेखी आपणी रेख, बिना पेशानी खोज खुजाईआ। गोबिन्द ने निगह मारी दिसया एकँकारा एक, अकल कलधारी अगम्म अथाहीआ। जिस ने मैनूं दस दशमेश बणा के दिता भेज, बिना भजन बन्दगी तों आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत दा दे के तेज, तेज आपणे नाल रखाईआ। जिस दे पिता तेग़ बहादर ने टोपी वाले सद्द लए अंग्रेज़, ओसे दे गोबिन्द शब्द धार ने हुण उहनां दी सफ़ा देणी उलटाईआ। जिन्हां

ने धर्म खाधा वेच, कीमत उहनां दी लए पाईआ। हुण आपणा लाउण वाला पेच, पेचीदा समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक नूर इलाहीआ। हाढ़ सतारां कहे वेखी खेल अनमुल्ली, अनमुलड़ा दयां दृढ़ाईआ। मैं फिरया लख चुरासी काया कुल्ली, कुल मालक ध्यान रखाईआ। मैनूं अमृत रस मिल्या ना चुली, अठसठ भज्जया वाहो दाहीआ। सृष्टी नाम जपदी बुल्लीं, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। मैनूं नारद मिल गया जे आह हालत रही तेरे भगवान दे नाम नूं लग्ग जाणी उली, सफ़ा साफ़ ना कोए कराईआ। क्यों कि उस ने कलयुग नूं छुट्टी दे दिती खुल्ली, चारों कुण्ट हुक्म सुणाईआ। मेरे चरणां दी किसे नूं लैण ना देवी धूली, धूढ़ मस्तक ना कोए छुहाईआ। सारी सृष्टी करी बेअसूली, असल विच नजर कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला आप मिलाईआ। मुहम्मद कहे गोबिन्द मेरी सदी चौधवीं मैनूं देंदी जाए विछोड़ा, पल्लू रही छुडाईआ। सदी चौधवीं कहे हज़रत जी तैनूं हुण उस दी लोड़ा, जो लोहड़े पैणा सब दी करे सफ़ाईआ। उस दा जोत शब्द दा जोड़ा, जोड़ी आपणे नाल रखाईआ। ओह आया मार के मोड़ा, मुड़दी पैरीं सचखण्ड विच्चों सम्बल विच डेरा लाईआ। सेवादार बण के बांका छोहरा, उम्मत दा लेखा दिता गंवाईआ। जदो तक्को ते तक्को नवां नकोरा, सतिगुर शब्द विच इहो वड्डी वड्याईआ। उसदे बिना कम्म किसे दा ना कदे सौरा, सौहरे पईए दोवें रहे कुरलाईआ। उहदी किसे दे नाल नहीं खोरा, निरवैर इक अख्वाईआ। उहदा आपणा जलाल ते आपणा जौहरा, जाबर जबर इक हो आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद जी ओह वेखो उस दा खुल्ला रूप अनोखा, सतारां हाढ़ ल्या बदलाईआ। जिस ने सब नूं दे जाणा धोखा, धोखे विच दुहाईआ। पर इक गल्ल भगतां नूं भेव दस्सणा सौखा, ते थोड़ी थोड़ी करे पढ़ाईआ। जन भगतो प्रभ दे नाम तों वड्डा नहीं कोए पोथा, पुस्तक पढ़यां पार ना कोए कराईआ। एह काया दा काअबा ते काया दा कोठा, काया दा मन्दिर इक सुहाईआ। जिथ्थे जगदी उस प्रभू दी जोता, जो जोती जाता नूर इलाहीआ। आदि अन्त कदे ना सोता, सुत्तयां लए जगाईआ। साडे विछोड़े दा समां रिहा नहीं बहुता, बुहत्यों थोड़ा दए कराईआ। हुण साडे अन्दर मारना गोता, आपणा आप लैणा छुपाईआ। तुहाडा मन पढ़ा के तोता, तुरत आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे गोबिन्द एह की कारन, करनी दे करते ल्या कराईआ। की मैं मुहम्मद दी वगारन, वगार करके झट लँघाईआ। की मैनूं अन्त मारे मारन, भय विच डराईआ। मेरे अन्तष्करन विच आउंदा ओह

विचारन, जिस नूं विचर के दस्सां ना मूल सुणाईआ। मैं तेरे कोल लग्गी उच्चारन, हौली हौली दयां सुणाईआ। दुःख विच लग्गी पुकारन, निउँ के सीस झुकाईआ। तेरे प्यार दे बथेरे मिले उदाहरन, सिख्या जगत वाली दृढ़ाईआ। मैनूं समझ नहीं आउंदी मैनूं केहड़ा आया उजाड़न, वसदी नूं घरों बाहर कढ्ढाईआ। मुहम्मद दी उम्मत नूं आया साड़न, साड़ फूक के लेखा दए चुकाईआ। मैं काहनूं आ गई विच एस महीने हाढ़न, भगत दवार वेख के आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं किते बण ना जावां दुहागण नारन, नर नरायण नाता लए तुड़ाईआ। मैनूं दुनिया ना कहे विभचारन, हाहाकार ना करे लोकाईआ। मैं किस तरह आपणा आप लवां संभालण, सहिज नाल सुणाईआ। गोबिन्द ने किहा कमलीए इक्को जोत ते जोत अकालण, दूजा नज़र कोए ना आईआ। असीं सारे उस दे दर दे सवालण, सवाली हो के सीस झुकाईआ। उस नूं ओसे दी किरपा नाल अवतार पैग़म्बर गुरु जानण, जिस जणाए ओह उसदे ढोले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा सच इक हो आईआ। गोबिन्द किहा नीं सदी चौधवीं जगत मुटयारे, सुण हुक्म अगम्म अथाहीआ। जिस ने तेरे बदल दिते लबास काले, कालख टिक्का दिता लाहीआ। ओह वेख भगत दवारे, भगत भगवान आपणा रंग रंगाईआ। तेरी गोली नूं पीले वस्त्र पवाए ते खेल कीते न्यारे, निराकार निरँकार आपणी कार कमाईआ। हुण अगले इक होर दे होर इशारे, इशारा इशारे विच्चों समझाईआ। तेरा पैंडा मुक गया जल सुक्क गया तूं आ गई ओस किनारे, जिस किनारे ते जगत वणजारे बैठे डेरा लाईआ। चौदां तबक नहीं रहिणे चोबारे, चोबदार मुहम्मद पहरेदार ना कोए अख्वाईआ। पुरख अकाल दे परवरदिगार दे जुग लाए सब दे नाल लारे, लारयां विच आपणा झट लँघाईआ। पिछले लेखे हिसाब सारे पाड़े, अग्गे आपणा हुक्म वरताईआ। हुण चल वेखीए अग्गे पिच्छे दे अखाड़े, खड़ग खण्डे नाल की आपणी कार भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला आप मिलाईआ। सदी चौधवीं कहिंदी नी बेशक छडने मज़्हब, मज़्हब संग ना कोए रखाईआ। इक नूं करना अदब, आदाब विच सीस झुकाईआ। मैं पंजां प्यारयां तों इक सुणना चाहुंदी शब्द, शब्दी धार दृढ़ाईआ। फेर मैं दस्सणा जन भगतो की होण वाला ग़ज़ब, बौहड़ी की करता कार कमाईआ। जिस ने सारी सृष्टी दी दृष्टी दी आपणे हथ्थ विच फड़ लई नब्ज़, मरीज़ वेखे कूड़ लोकाईआ। बिना भगतां तों जिस ने आपणी किसे नूं दस्सणी नहीं रमज़, रमज़ान दे महीने रोज़ा रखण वाले सारे रोवण मारन धाईआ। जिस दे कारन खल्ल लुहाई शमस, तबरेज़ तबकां नूं रिहा हिलाईआ। उस दी दुहाई ते ओसे दी कसम, कसम खा के दयां सुणाईआ। सदी चौधवीं जिस ने कर देणी भस्म, ख़ाक ख़ाक नाल उडाईआ। भगतो अज्ज ओसे दा विहार ते ओसे दी

रसम, तुहाडे नाल पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। नारदा सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै दा कर लै जाप, जपत जपत सुख पाईआ। सदी चौधवीं आपणा आप कर लै पाक, पतित पुनीत सुणाईआ। मुहम्मदा आपणा पूरा कर लै वाक, वाकिफ़कार ख़लक खुदाईआ। निरासी रहे किसे ना आस, आसा सब दी पूर कराईआ। तेरी काली कमली दा बदल गया लबास, कफ़नी दिती तजाईआ। सदी चौधवीं दी गोली पाणी दे लै के पंज ग्लास, हाज़र होवे चाँईं चाँईंआ। थित सुहञ्जणी होए सतारां हाढ़ दी रात, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। ग्लास कहे मैं पाणी भरया, भरम दयां चुकाईआ। जुग चौकड़ी जिस ने छलया, वल छलधारी बणया धुरदरगाहीआ। जिस दा इक्को दीपक बलया, नूर नूर रुशनाईआ। ओह मेटे कलयुग कलया, कल कालख़ टिक्का लाहीआ। भगतां अन्दर रलया, जोती जोत जोत समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। सदी चौधवीं कहे एह पंज ग्लास आबेहयात, सब दा दिता (माण) गंवाईआ। पंजां तत्तां वाले हो गए बेताब, बेताबी विच दुहाईआ। किसे झिरना झिरदा नहीं विच्चों कँवल नाभ, नाभी रस ना कोए चखाईआ। सारे मुल्लां शेख़ पढ़न वाले किताब, अक्खरां पढ़
१३६२ के झट लँघाईआ। महिबूब दी किसे ना मिली महिराब, मंज़ल हक ना कोए पहुंचाईआ। शरअ दा करे ना कोए अदाब, १३६२
२२ बन्धन सके ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म २२
इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे नी मेरी पुराणी गोली, इक तैनूं दयां सुणाईआ। एह पंज ग्लास ओसे दे सिर ते डोल्हीं, जेहड़ा सब दे सिर दा माहीआ। जिस ने सब दी रंगणी चोली, चोला आपणा रंग रंगाईआ। जन भगतां पड़दे देवीं खोल्ही, अन्दरे अन्दर अक्ख खुल्हाईआ। जिस दी धार सब दे नाल मौली, मौला बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे पाणी किडा ठंडा, ठंड रिहा वरताईआ। ओ जन भगतो जिस ने खाधा तुहाडा गंढा, गंढ तुहाडे नाल रखाईआ। हथ्थ विच फड़ के सत्त रंग दा डण्डा, चौदां तबकां रिहा हिलाईआ। दुर्गा दा वेख के चण्ड प्रचण्डा, प्रचण्ड रूप बदलाईआ। जिस ने गोबिन्द दा खड़काया खण्डा, नौ खण्डां पावे दुहाईआ। धर्म दा शरअ दा किसे नूं लैण नहीं देणा चन्दा, चन्द सितारे दा निशाना दए गवाहीआ। पिछला पिच्छे वक्त लँघ, अग्गे आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा दाता इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद आ गया इक मेरे गोशे, आपणा ध्यान लगाईआ। फेर वेखे आपणे

कोशे, कोशां तों बाहर की जणाईआ। मैं ते रिहा इक दे भरोसे, जो वाहिद नूर इलाहीआ। जिस दी सोच कोई ना सोचे, समझ विच ना कोए समझाईआ। ओह शायद आपणा भाणा आपे रोके, रोकणहार इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा दाता इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे नी गोली उठ के आजा छेती, छत्तर माझे वाल्यां दा दए गवाहीआ। नी तूं गोबिन्द दे घर दी भेती, पड़दा उस दा देणा खुल्हाईआ। जिस ने सब दे नाल कीती नेकी, निक्कयां तों वडे दिते बणाईआ। उस दी आशा पुरख अकाल दी बेटी, नूर नूर जोत इलाहीआ। जो धर्म दी सेज ते लेटी, सिंघासण इक्को सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे नी तेरा विगड़ गया मज़ाज, काले तों पीले वस्त्र लए बणाईआ। की हो गया जे मुहम्मद दा रहिणा नहीं राज, रईयत रोवे मारे धाईंआ। मैं वी जाणदी इक्को दे सिर ते होणा ताज, जो ताजां दा मालक इक अख्वाईआ। जिस ने सब दे पूरे करने काज, लेखा चुकावे थांउँ थाँईंआ। उस नवीं साजणा देणी साज, सज्जण मित्र सारे लैणे मिलाईआ। जिस ने गोबिन्द दा गोबिन्द बणाया बाज, बाजां वाला आपणी कार कमाईआ। चार वरन अठारां बरन इक्को रूप दा इक चलाए समाज, आत्म ब्रह्म ब्रह्म दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा आपणा हुक्म वरताईआ। नी तूं क्यों बदले आपणे कपड़े, आपणा रंग बदलाईआ। हाए सदी चौधवीं कहे मैं इधर वेख्या मैं उधर वेख्या किसे ने गाँ खाधी किसे ने सूर खाधा किसे ने खाधे बक्करे, बचया नज़र कोए ना आईआ। जेहड़े अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ फिरे ओह वी ना प्रभू अपड़े, सचखण्ड मिलण कोए ना जाईआ। सब दे ख़ाली हो गए तक्कड़े, वस्त विच ना कोए टिकाईआ। सदी चौधवीं कहे गोलीए मेरे मस्तक तों लाह टिक्के तूं आपणे बणा लए नख़रे, नख़रे वालीए पंज बलाक पंजां प्यारयां नूं आपणा रंग रंगाईआ। जिस दा खेल बहत्तर ते सत्तरे, ओह गोबिन्द अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा मालक आपणी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे गोलीए क्यों मेरे नालों ल्या तलाक, नाता ल्या तुड़ाईआ। नी तूं बड़ी हो गई गुस्ताख़, गुस्से विच आपणा आप ल्या बदलाईआ। मैनूं चौदां तबक रहे आख, मुहम्मद दी आशा इकल्ली रोवे मारे धाईंआ। मैं वेख्या उत्ते आकाश, आकाशां तों परे ध्यान लगाईआ। फेर धरती उत्ते रखी आस, आस आसा विच्चों प्रगटाईआ। जां मैं अगांह वेख्या सम्बल विच बैठा पुरख अबिनाश, दाता नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे गोलीए तेरे विच बड़ीआं अड़ीआं, तैनूं दयां सुणाईआ। ओह

तूं मेरयां सत्तां तबकां नूं छड के मथ्थे ते लमका लईआं नौ लड़ीआं, नौवां दवारयां दा झगड़ा दिता मुकाईआ। एह बिधना दा लेख ढाई सतरां तेरे मस्तक ते बड़ीआं, अग्गे दा लेखा रहे ना राईआ। मैं उम्मत दे प्यार विच हावे दे विच सड़ी आं, सड़ के दयां सुणाईआ। उस परवरदिगार सांझे यार दे दरबार विच खड़ी आं, जेहड़ा खण्डे खड़गां रिहा खड़काईआ। मैनूं ऐं जापदा कि हुण अग्गे वास्ते हुक्के दीआं मूँह विच आउण नहीं देणीआं नड़ीआं, नाड़ीआं सब दीआं दए बदलाईआ। जिहनूं प्रेम खुमारीआं चढ़ीआं, चढ़दयों लहिंदे ते लहिंदयो चढ़दे सारयां नूं लए मिलाईआ। उहने झगड़ा मुकाउणा शरअ ते शरीआ, शरारत वाला रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गोली कहे सदी चौधवीं मैनूं ना कर मज़ाक, मज़ाक विच सुणाईआ। याद कर लै मुहम्मद ने ईसा नूं इशारा कीता जिस वेले शहिनशाही सम्मत सत्त ते सतारां हाढ़ दी होई अध्धी रात, ओ बारां वजाए तेरा कलाक, कला जगत दी दए बदलाईआ। एह खेल करना पुरख समराथ, जो सर्ब कला भरपूर धुरदरगाहीआ। होए सहाई अनाथां नाथ, दीनां आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी आपणी धार बदलाईआ। सदी चौधवीं दी गोली कहे नी सुण मेरीए राणी, राणीए दयां जणाईआ। मैं चौदां सद तेरा भरदी रही पाणी, खुशीआं सेव कमाईआ। मैं हुण पैग़म्बर दी कलाम तों बाहर परवरदिगार दी सुण लई बाणी, बाण निराला तीर चलाईआ। जिस दा सतिगुर शब्द शब्द सतिगुर आत्मा दा हाणी, हाण इक्को रिहा वखाईआ। मेरा झगड़ा मुक गया चारे खाणी, खाण पीण वाल्यां दा लेखा दिता मुकाईआ। मेरी मंज़ल बण गई रुहानी, रूह बुत मिल के खुशी मनाईआ। क्यों मेरी प्रभ दे नाल मिल के जगत विच रह जाणी निशानी, जगत निशाने नज़र कोए ना आईआ। ओए नारदा उठ आपणी खोलू अक्लदानी, अक्ल आपणी दे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा आपणा हुक्म वरताईआ। लिखारीओ तुहाडे थल्ले इट्ट रविदास दी, इट्ट इट्ट नाल खड़काईआ। एह खेल (पुरख) अबिनाश दी, हरि करता आप समझाईआ। एह धार जोत प्रकाश दी, प्रकाशवान नूर इलाहीआ। एह रमज़ धरवास दी, धरती ते फिरन वाल्यो दयां समझाईआ। ज़रा चतुराई वेखणी इस लिबास दी, जेहड़ा काले तों पीला ल्या बदलाईआ। दरबारीओ की रमज़ समझी इक अवाज़ दी, जो तुहाडे विच टिकाईआ। तुहाडी सुरती रहे जागदी, सुत्तयां लए उठाईआ। घड़ी सुहञ्जणी होई काज दी, करनी करता कार कमाईआ। तुहाडे विच हिम्मत ना रहे अगों जवाब दी, खुशीआं विच सारे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे गुरदर्शन ने

१३६५
२२

लिबास बणाया सिन्धी, उठ के दए वखाईआ। नाले चाल चल्ले विंगी, टेडीआं लत्तां पुट्ठीआं सिध्धीआं भवाईआ। पिच्छों खोल्ह लवे मेंढी, मोढ्ढुयां उत्ते सुटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी खेल इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे हाए पंज दरबारीओ क्यों झगड़ा पाउणा पार सिन्ध, जो सिन्धू संधू सिद्धू सारे वेख वखाईआ। मैनूं इयों दिस प्या तुसीं सारे बण गए उस प्रभू दी बिन्द, जिस बिन्दराबन विच काहन वरगे नाचां विच रासां विच भवाईआ। हुण कुछ खेल होणा मशरक ते मगरब ते फेर विचाले हिन्द, हिन्द दी हिन्द विच खेल खिलाईआ। उम्मत कहे आशा कहे मेरी सुंगड़दी जाए जिंद, ज़िंदगी ज़िंदगी हाए ज़िंदगी विच दुहाईआ। मेरे मुहम्मद दी उम्मत जाणी खिण्ड, खिण्डी नूं इक्ट्ठा ना कोए कराईआ। मेरा जीउ पिण्ड वे जीउ पिण्ड, इस दी करे ना कोए सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पढ़दा आप चुकाईआ। सिन्धी कहे मैं कोई कपड़ा नहीं चिट्टा, चिट्टी धार ना कोए रखाईआ। मैं ते इक कढण वाला सिट्टा, सिट्टेबाज़ी दा लेखा दिआ मुकाईआ। जम्मू दयां पहलवानां दोहां लंगोटयां वाल्यां ज़रा साहमणे आ तेरा खिच्चां गिट्टा, ते गिटिउँ फड़ के दयां भवाईआ। फेर वेखां सारयां दा सिट्टा, जो बैठे आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। चल ओए पहलवाना, क्यों आपणा रूप बदलाईआ। ओए सूरबीर जवाना, आपणा बल धराईआ। तेरा खेल विच मैदाना, प्रभ वेखे चाँईं चाँईंआ। तूं मस्त हो मस्ताना, आपणा बल वखाईआ। तूं वेख मेरा निशाना, जो निशाने सब दे दए बदलाईआ। जाह भज्ज जाह नट्ठ जाह हो जा रवाना, कश्मीर तों परे पैणी दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारदा ओ गोली नाल करना सच विहार, सीस इक्की वार झुकाईआ। अदब अदब विच अदाब, अदाब अदाब विच वड्याईआ। जेहड़े मज़्हब दे बरखुरदार, ओह मुजाहदीन बणके भज्जण वाहो दाहीआ। जेहड़े उहनां दे ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। ओह हो जाओ हुश्यार, हुश्यारी नाल दृढ़ाईआ। हुण रहिणा नहीं विच संसार, शरअ दा लेखा देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। शरअ कहे मैं बड़ी पुराणी, पुराण वेद देण गवाहीआ। मेरी पैग़म्बरां गाई कहाणी, जगत दीन दुनी सुणाईआ। मैं बणके मात विच राणी, आपणा हुक्म वरताईआ। सुघड़ सुचज्जी हो के सवाणी, सोहणा ढंग दरसाईआ। अक्खों करके दुनिया काणी, कायनात दिती लड़ाईआ। मैं फेर तक्कया किते आबेहयात किते अमृत ते फेर पाणी दा पाणी, पाणी विच्चों हाणी नजर किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मार्ग इक्को इक दरसाईआ। वेखो नीं मैं की कहिवां, कहि की सुणाईआ। मैं मुहम्मद दी धार नाल रहिवां, सदी चौधवीं वड वड्याईआ। मैं किस तरह एह सहिवां, काले तों पीले वस्त्र पा के गोबिन्द रंग रंगाईआ। मैं कचीचीआं खवां कुद्द कुद्द पवां, गुस्से नाल डराईआ। ओह खलोती नाल चवां, आकड़ के वेखे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक आपणी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे नी गोलीए मुहम्मद दी रुढ़ चली कुल, कलमालक आपणा हुक्म वरताईआ। नी तूं लाल करके बुल्ल्, हस्स के रही वखाईआ। मूँह विच फड़ के गुलाब दे फुल्ल, ढईआ गोबिन्द वंड वंडाईआ। उम्मत दी तप रही चुल्ल्, कलयुग अग्नी रिहा डाहीआ। हाए बूटा जाणा हुल, फल फुल रहिण कोए ना पाईआ। कोई नहीं पैणा मुल्ल, करता कीमत ना कोए जणाईआ। जगत अंधेर जाणा झुल, सांतक सति ना कोए कराईआ। अनमुलड़े हीरे जाणे रुल, रुल्लयां हथ्थ ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। मुहम्मद कहे नी सदी चौधवीं ना कर झगड़ा झेड़ा, कमलीए बहि के मता पकाईआ। चल के वेखीए उस प्रभू दा खेड़ा, जिथ्थे खिड़की नज़र कोए ना आईआ। मज़्बां दा नहीं कोई डेरा, हिस्सया वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को सतिगुर शब्द ते इक्को शब्द दी धार चेरा, दूजा खेल ना कोए खिलाईआ। जिस जुग जुग कीता हक नबेड़ा, कलयुग आपणा वेस वटाईआ। नी साडे बदले नी मेरी आसा बदले सदी चौधवींए मारया फेरा, आपणा नूर ज़हूर कर रुशनाईआ। असां सुख माण ल्या बथेरा, गोबिन्द दे बच्चे नीहां हेठ दिते दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे नी गोली नेड़े आ के झुक, अन्त अन्त सलाम सलाम सलाम सलामालैकम कहि के खुशी बणाईआ। मैनूं पता लग्ग गया कलमे छड के तूं गा लई इक्को तुक, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। जिस विच आदि अन्त दे सारे सुख, सुख सागर विच समाईआ। उस प्रभू दी जन्मीउँ कुख्ख, जो सब दा पिता माईआ। अग्गे वास्ते जिस भगतां नूं लटकण देणा नहीं पुट्ठा विच कुख्ख, रुख सब दा देणा बदलाईआ। हुण सब नूं रिहा पुछ, पुश्त पनाह हथ्थ रखाईआ। सोहँ दा लेखा दिता लिख, आपणा नाम दृढ़ाईआ। अग्गे लेखा रहे ना कुछ, कुछ मुख दा झगड़ा दिता मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। सोहँ कहे प्रभू मैं कोई तेरा अक्खरां वाला नहीं सस्सा, सस्से हाहे नाल वड्याईआ। मैं आदि तों तेरा रूप तकां, ब्रह्म धार पारब्रह्म समाईआ। मेरा कोई लेखा नहीं कच्चा, कंचनगढ़ सुहाईआ। मैं कोई माया कारन नहीं नच्चा, जगत तृष्ना ना कोए तरसाईआ।

मैं कोई ममता विच नहीं हस्सा, इक्को हस्ती तेरी वेखी बेपरवाहीआ। मेरा इक्को नाम तेरा सखा, सखे सुहेले सज्जण तेरे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतारां हाढ़ कहे मैं सारे तके हाजी, संग हज़रतां ध्यान लगाईआ। मुल्लां शेख़ मुसायक तके काज़ी, कलमा नाम खुदाईआ। दीन दुनी दी तकी बाज़ी, बाज़ीगर स्वांग वरताईआ। प्रभ दी किरपा तों बिना तक्कया कोए ना राज़ी, सच विच ना कोए समाईआ। सोई सुरत किसे ना जागी, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। झगड़ा तक्कया दीन दुनी समाजी, शरअ शरअ नाल टकराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। हाढ़ कहे मैं वेख्या करीम कादर, करता धुरदरगाहीआ। जिस पंजां दरबारीआं उत्ते पवाई चादर, धुर दा आपणा रंग रंगाईआ। एह आसा रखी सी सतिगुर तेग़ बहादर, बहादरी नाल अक्ख खुलाईआ। जिस वेले धर्म दा रहिणा नहीं कोई हाजण, हाजी हुजरा हक ना कोए सुहाईआ। नमाज़ पढ़े ना कोए नमाज़ण, नमो नमो ना सीस झुकाईआ। उस वेले खेल करे प्रभ सर्ब कला समराथण, हरि करता वड वड्याईआ। जिस नूं खुदावंद करीम आखण, कर्म सब दे वेखे थांउँ थाँईंआ। प्रगट हो के अलखणा अलाखण, अलख अगोचर आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। चिट्टी चादर कहे मैं बण गई रूप बुरका बुरयां भल्यां वेख वखाईआ। मैं हुण जा वड़ना विच तुरकां, तुरकी वाले देणे हिलाईआ। सब दीआं बन्नणीआ मुशकां, मशकां विच पाणी पीण वाले लैणे उठाईआ। ओ खेल कराउणा मालक उस दा, जिस दी उस्तत करे लोकाईआ। जेहड़ा जुग चौकड़ी शरअ नाल रुसदा, रुस्सयां ना कोए मनाईआ। भगतां सूफ़ीआं सन्तां पुछदा, पुसत पनाह हथ्थ टिकाईआ। उस ने दस्सया सब दा पैंडा मुकदा, मुकम्मल आपणी कार भुगताईआ। धुर हुक्म कदे ना रुकदा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। अग्गे जाप होणा इक्को तुक दा, सोहँ ढोला राग अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। चादर कहे जन भगतो मैं आई नहीं पंजां दरबारीआं उत्ते, उत्तर पूरब दा लेखा दयां सुणाईआ। वेख्यो ग़फ़लत विच रिहो ना सुत्ते, सुत्तयां दयां उठाईआ। प्रभ दी मौलणी अगम्मी रुते, रुतड़ी आपणा रंग बदलाईआ। शरअ दी धार विच रोणे कुत्ते, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। किसे नूं अंगण कोई ना चुक्के, गलवकड़ी कोए ना पाईआ। पाणी रहिणा नहीं किसे दे हुक्के, नेजे विच ना कोए वड्याईआ। उम्मत उम्मती हिरदा दुखे, दुखियां दर्द ना कोए वंडाईआ। सब दी औध अन्तिम पुजे, पूजा सब दी आपणा रंग रंगाईआ। प्रभ ने खेल करने गुज्झे, आप आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

१३६७
२२

कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म दा राह चलाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण सारे कर लओ इक समझौता, मता इक बणाईआ। प्रभ नूं कहि दयो इक्को सतिगुरु बहुता, बहुते गुरु कम्म किसे ना आईआ। सतिगुर शब्द जेहड़ा कदे ना जाए औंता, जगत निशाना ना कोए मिटाईआ। ओह सृष्टी विच फिरे नाल शौका, शौकीन हो के भज्जे वाहो दाहीआ। फिरे तबकां तौकां, लोक परलोकां खोज खुजाईआ। सुणाए अगम्म सलोका, ढोला तेरा बेपरवाहीआ। उस नूं हुण दे दे कलयुग अन्तिम मौका, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वर दाते बेपरवाहीआ। अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभ साडा इक्को इक बुलारा, बुल्लां तों परे सुणाईआ। सतिगुर शब्द बणा वणजारा, वणज दो जहान वखाईआ। सानूं वसा दे उस महल्ल मुनारा, जिथ्थे निरगुण नूर इलाहीआ। दीन मज़्हब दा झगड़ा रहे ना विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी देण गवाहीआ। तेरयां भगतां दा तेरे नाल मिल के होए जै जैकारा, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। तेरा सोहे सच दा दवारा, सति सच तेरी रुशनाईआ। असीं ढहि ढहि चरण कँवल करीए निमस्कारा, नमो नमो सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति सच तेरी वड्याईआ।
१३६८ गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू साडी इक बेनन्ती, दर तेरे इक सुणाईआ। गढ़ तोड़ दे हउमे हंगती, हँ ब्रह्म इक जणाईआ। १३६८
२२ बोध अगाधा बण के पंडती, ब्रह्म विद्या दे पढ़ाईआ। चार वरन बणा के इक संगती, सगला संग इक रखाईआ। तेरी २२
आत्मा तेरे तों बिना होए ना किसे दी मंगती, दूजे दर मंगण कदे ना जाईआ। खेल करदे आपणे गोबिन्द चन्न दी, चन्द चांदनी कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, धुर दा मालक दया कमाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण तूं सतिगुर शब्द शब्द बहादरा, सूरबीर अख्वाईआ। सब दा करीम कादरा, करता नूर इलाहीआ। दर आयां देवें आदरा, अदर्श आपणा इक जणाईआ। जगत जहान बेड़ा पार कर दे समुंद सागरा, भवजल ना कोए भवाईआ। मनुआ मन रहे ना बांदरा, पंछी वांग उठ ना दहि दिश धाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ रंग दे रंग रंगीला, रंगत इक चढ़ाईआ। हरि भगत बणा आपणा कबीला, कामल मुर्शद दया कमाईआ। सतिगुर शब्द होवे वसीला, वसल देवे अगम्म अथाहीआ। तेरे मिलण दा तेरा प्यार कराए हीला, हिम्मत नाम वाली जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मस्तक लेख बणाईआ। मस्तक कहे प्रभ लिख दे लेख अपार, भगतां दे वड्याईआ। तूं शहिनशाह सच्ची सरकार, पातशाह इक हो आईआ। वसें धाम न्यार, सम्बल सोभा पाईआ। गढ़ी चमकौर दा दे उधार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अगंरेज़

सिँघ रणजीत सिँघ सुरजीत सिँघ बदल लैण दस्तार, दस्तूर आपणा दे दृढ़ाईआ। जन भगतो शहादत देणी इक्को वार, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। हरिसंगत इक दूजे नाल सदा करे प्यार, मुहब्बत विच समाईआ। चुग़ली निंदिआ विच्चों हो जाउ बाहर, कूड़ी क्रिया कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वर दाता इक हो आईआ। हाढ़ सतारां कहे जन भगतो सुणो हुक्म अपारा, अपरम्पर स्वामी रिहा दृढ़ाईआ। तुहाडा मालक एका एकँकारा, अकल कलधारी इक अख्वाईआ। जिस नूं कहिंदे कलि कल्की अवतारा, अमाम अमामा सोभा पाईआ। सो बख़्शे सच सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुरसिख गुरसिख नूं कोई ना कहे माड़ा, प्रेम प्यार विच इक दूजे नूं लओ समझाईआ। तुहाडा सब दा इक्को लाड़ा, पुरख अकाल अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। हाढ़ कहे मेरा इक्को इक संदेशा, सब नूं दयां सुणाईआ। पुरख अकाल मन्नो हमेशा, दूसर इष्ट ना कोए बणाईआ। सब ने लाज रखणी गोबिन्द वाले केसां, केसगढ़ दा मूल चुकाईआ। शब्द सतिगुरु चलया जाणा विच परदेसां, प्रादेशक आपणा हुक्म सुणाईआ। सब दा पूरा करना लेखा, जो बैठे ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जन भगतो आया हाढ़ महीना, मास रिहा जणाईआ। झगड़ा छिड़ना रूसा चीना, चैन विच रहिण कोए ना पाईआ। की हालत होणी धरनी उत्ते ज़मीना, असमान रहे कुरलाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद कहे आमीना, यामबीन तेरी वड्याईआ। चारों कुण्ट आए पसीना, पेशानी उत्ते सोभा पाईआ। नाता तुटणा नर मदीना, मदीने वाले रोवण मारन धाईआ। आब मिले किसे ना पीणा, जगत तृखा ना कोए बुझाईआ। बिना भगतां तों ठंडा रहे किसे ना सीना, सीन शीन दोवें देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा मालक वड वड्याईआ। उम्मत आसा कहे मैं थक्की टुट्टी, प्रभ नालों टुटयां दयां सुणाईआ। सदी चौधवीं गई लुट्टी, लुटेरा बणया धुर दा माहीआ। जिन मौली तन्द दे गाने बंधाए गुट्टी, आपणा हुक्म वरताईआ। भाग लगाया गुरसिख दुलारे सुत्तीं, मेहर नज़र नाल तराईआ। शब्दी धार रिहा चुक्की, चुकन्ना हो के फिरे वाहो दाहीआ। आपणे निशान्यों रिहा ना उकी, उका आपणा हुक्म वरताईआ। संदेशा दे के दो तुकी, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी गोली नूं पीले वस्त्र पहना के रुखी, रुखी रुखसत मेरे नालों कराईआ। माण वड्याई दे के पंज प्यारे मुखी, पंजां दरबारीआं पड़दा रिहा पाईआ। पंज लिखारी इट्टां रखे चुक्की, आपणे हेठ छुहाईआ। हरिसंगत उत्तम श्रेष्ट करके सुच्ची, संजम इक दृढ़ाईआ। आत्म परमात्म लाउणी रुची, ब्रह्म पारब्रह्म समाईआ। लख चुरासी होए

कोई ना दुखी, चारे खाणी ना कोए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां दे के मंज़ल उच्ची, उच्च अगम्म अथाह बेपरवाह आपणे नाल मिलाईआ।

✪ १८ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल सवेरे शादीआं समें ✪

फुल्ल गुलाब कहे मैनूं दन्दां विच घुटयां, गोली जोगिन्दर कौर ज़ोर नाल दबाईआ। बौहड़ी उम्मत दा रस गया लुट्टया, लुटेरा बणया धुर दरगाहीआ। मुहम्मद निशाना गया पुटया, पटने वाला जड़ उखड़ाईआ। जिस दा नाम कलमा दो तुक्या, दो जहानां खोज खुजाईआ। जन भगतो तुसां मैनूं मूल ना पच्छया, मैं देवां हाल दुहाईआ। जिस कारन टाहणी नालों टुटयां, टुटयां जोड़ जुड़ाईआ। दाणा पाणी जगत जहान नखुटया, निखुट खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी आस रखाईआ। फुल्ल कहे मैनूं दन्दां हेठ दब्बया, ढाई मिन्ट मेरी दुहाईआ।
१४०० २२ हौका निकलया उफ़ हाए रब्बया, रहीम तेरी बेपरवाहीआ। किस कारन मैनूं सद्दया, हुक्म संदेशा इक दृढ़ाईआ। धुर फ़रमाना १४०० २२
होया ओ वेख अगम्मे बच्चया, भेव अभेद खुल्ह्हाईआ। जिस खेल जगत जहान रचया, सदी चौधवीं संग बणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी अंग्यारा तपया, तपीश्र सके ना कोए बुझाईआ। खेल करे पुरख समरथया, हरि करता अगम्म अथाहीआ। तूं जिस कारन आया नट्ठया, भज्जया वाहो दाहीआ। भगतां तक इक्कठिआ, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश एका रंग समाईआ। जिन्ह्हां दे कोल नाम दा पटया, पाटल आपणा भेव खुल्ह्हाईआ। चीथड़ रहे किसे ना फटया, ओढण इक्को इक टिकाईआ। जिन्ह्हां ने खेल कीता स्वांगी नटया, अट्ठां तत्तां गंढ पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। धुर शब्द कहे सुण धुर दे फुल्ल गुलाबे, गुल आब दयां जणाईआ। तूं विचोला बणिउँ बाबा आदम ते माई हव्वा काअबे, जेहड़ा काअबा नज़र किसे ना आईआ। तैनूं बावन ने बल दवार मारी आवाज़े, हुक्म संदेशा इक सुणाईआ। तेरी आशा रखी खिजर ख्वाजे, बिन नैणां नैण उठाईआ। तैनूं नौ वार गोबिन्द ने कल्गी नाल सुहाया ताजे, नव नव रंग रंगाईआ। फेर इशारा कीता देस माझे, सैनत नाल समझाईआ। फेर हुक्म दिता ओह तक लै पार वाघे, पड़दा पड़दयां विच्चों उठाईआ। फेर संदेशा दिता की मुहम्मद सुणाया लेख लिखाया आपणी बिना किताबे, अलिफ़

ये ना वंड वंडाईआ। फेर जणाया सदी चौधवीं वेख साजण साजे, साजणहार नूर इलाहीआ। भेव खुल्हाया सजदा कर अदाबे, अदब नाल सीस झुकाईआ। होर तक आगे, अग्गा दयां वखाईआ। जिस वेले सोया मात कोए ना जागे, आलस निंद्रा ना कोए मिटाईआ। उस वेले खेल करे हरि करता आपणा आपे, आपणी दया कमाईआ। तूं मेरा मैं तेरा होणा जापे, सच सच नाल कुड़माईआ। मेरयां भगतां भुल्ल जाणे आपणे मापे, मात पित प्यार ना कोए वधाईआ। तेरे सोहणयां सोहणे बणाउणे साके, साख्यात रंग वखाईआ। तूं ओस वेले दी रखणी ताके, ताकत आपणी इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। फुल्ल कहे प्रभू मेरा पूरा हो गया अरसा, विरसा पिछला रिहा ना राईआ। शहिनशाही सम्मत सत्त दा साचा बरसा, हाढ़ सतारां दए गवाहीआ। मैं चाहुंदा मेरी सारयां भगतां उत्ते कर दे बरखा, पत्ती पत्ती नाल महकाईआ। मैनूं सोग रहे ना हरखा, दर तेरे आपणा आप भेंट कराईआ। मेरी ज़िंदगी दा मेरे जीवण दा सदी चौधवीं दी गोली नाल पर्चा, प्राचीन दा लेखा दे मुकाईआ। मैं चाहुंदा तेरी हर थाँ होवे चर्चा, चर्चा वाले तेरा ध्यान लगाईआ। तेरी इक्को पूजा होवे अरचा, आचरण इक्को देणा समझाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर पूरा कर दे खर्चा, बाकी नज़र कोए ना आईआ। तेरा नूर ज़हूर दा होवे दरसा, नेत्र नैण अक्ख रुशनाईआ। मालक ख़ालक धुर दरगाही करता, करता पुरख इक हो आईआ। तूं लख चुरासी भरता, पारब्रह्म बेअन्त तेरी वड्याईआ। तेरे नाल मेरी हो जाए लिख्त पढ़ता, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। मेरा जीअ करदा मैं खेल वेखां लहिंदा चढ़दा, भज्जां वाहो दाहीआ। मुहम्मद दा आवा वेखां तप्पदा, चौदां तबक खोज खुजाईआ। उन्हां विच्चों वी तेरे सूफ़ी फ़कीर रिहा लभ्भदा, आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं ढाईआं मिन्टां विच ढाई करोड़ वार तेरा नाम जपदा, मेरी रफ़तार गुफ़तार सच्ची सरकार तेरे बिना समझ किसे ना आईआ। मैं मन्दिर शिवदवाल्यां विच टप्पदा, गुरदवारयां आपणा रंग रंगाईआ। मैं चार जुग तैनूं रिहा लभ्भदा, भज्जया थाउँ थाँईंआ। मिन्नतां विच रिहा सद्दा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। धन्नभाग दिहाढ़ा होवे अज्ज दा, मालक मिल्यों धुर दरगाहीआ। जेहड़ा भगतां दे विच सजदा, सज्जण बणिउँ नूर इलाहीआ। किसे दा रूप रहिण नहीं देणा कग्ग दा, कागों हँस बणाईआ। हुण समाज बदल दे जग दा, जगजीवण दाते तेरे हथ्थ वड्याईआ। झगड़ा मेट दे ज़ात पात दी हद्द दा, घर इक्को इक सुहाईआ। नशा दे दे नाम प्याले मध दा, मधुर धुन सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा खेल इक खिलाईआ। फुल्ल कहे प्रभू मेरी कहिंदी पत्ती पत्ती, पतिपरमेश्वर रही जणाईआ। तेरयां भगतां वा लग्गे ना तत्ती, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। जिस नाम दी खोज करदे रहे रत्ती रत्ती, सो रत्न अमोलक हीरे गुरमुख

लए बणाईआ। नानक ने तेरा भेव खोल्या जुग छत्ती, छत्रधारी तेरा अन्त कहिण कोए ना पाईआ। तूं साहिब साहिब समर्थी, हरि करता वड वड्याईआ। तेरा खेल वेख्या अक्खी, आख़र तेरी इक सरनाईआ। फुल्ल कहे मैं चाहुंदा जन भगतां दे अन्दर मेरी वासना रखीं, महक महक नाल महकाईआ। रुल ना जावां विच कक्खीं, कक्खों लख देणा बणाईआ। मैं धार तेरी धर्म धार दी सखी, सख़ावत करनी अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सद तेरा हुक्म मन्ना चाँईं चाँईंआ। फुल्ल गुलाब कहे जन भगतो वेखो मेरा हाल, सति सच सुणाईआ। मैं टुट्ट के आपणे नालों डाल, झूठा तन दिता तजाईआ। आया सच सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारे सोभा पाईआ। मैनूं आउंदयां नूं ल्या संभाल, सम्बल बहि के आपणी दया कमाईआ। नाले पुछिआ मुरीदां हाल, मुर्शद होया सहाईआ। मैं कीता इक सवाल, बेनन्ती दिती दृढ़ाईआ। मेरे मालक पुरख अकाल, अकल कलधारी देणा जणाईआ। किस बिध सदी चौधवीं होए ज़वाल, ज़ेर ज़बर दा डेरा ढाहीआ। तेरा भाणा वरते बेमिसाल, मिसल सके ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा पड़दा देणा उठाईआ। पुरख अकाल किहा सुण गुलाबी फुल्ला, फुल्ल फुलवाड़ी दयां वखाईआ। ओह वेख जन भगतां सिर ते रखया कुल्ला, कुल मालक हुक्म वरताईआ। किसे दा वञ्झ मुहाणा रहिणा नहीं तुल्हा, बेड़ी बेड़ा ना कोए उठाईआ। झगड़ा पाउणा शेख़ां मुल्ला, मुसायक पन्ध चुकाईआ। सब दा दीपक होणा गुला, नूर चन्द ना कोए चमकाईआ। किसे हथ्थ ना आउणा कपड़ा जुल्ला, जुलाहा कबीर रिहा सुणाईआ। जेहड़ा जगत जहान भुल्ला, प्रभ नूं गया भुलाईआ। जाप करदे नाल बुल्ल्हां, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। भाग लग्गे किसे ना कुला, कुलहीण होए लोकाईआ। जन भगत दवारा खुल्हा, ख़ालक ख़लक आप खुल्हाईआ। तेरा रस गोली दे मुख विच डुल्हा, धरनी धवल हथ्थ किछ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। फुल्ल कहे मेरी धार तेरी ख़ुशबू, ख़ुशख़बरी आपणी दयां सुणाईआ। मेरा बुत तेरा रूह, रूह बुत मिल के वज्जे वधाईआ। तेरी हां ते मेरी हूं, दोवें इक्को रंग समाईआ। तेरी आवाज़ ते मेरा मूँह, शब्द नाद धुन शनवाईआ। तेरा प्रकाश मेरा लूं, लोचण अक्ख खुल्हाईआ। मैं चेला ते तूं गुरु, सतिगुर तेरे हथ्थ वड्याईआ। हुण नवीं चाल तुरू, तुरत आपणा हुक्म सुणाईआ। चौथे जुग मोड़ा मुड़ू, कलयुग रोवे मारे धाईआ। चारों कुण्ट होणी दुड़ू दुड़ू, सांतक सति ना कोए कराईआ। उम्मत नबी रसूलां बेड़ा तेरे शौह दरयाए रुढ़ू, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, भेद अभेदा आप खुल्हाईआ। फुल्ल कहे ढाई मिन्ट दी दस्सां बात, बातन भेव खुल्हाईआ। जिस वेले मनू

बणाई ज़ात पात, हिस्सयां वंड वंडाईआ। ओह वेला सी सतारां हाढ़ दी रात, रुतड़ी आपणा रंग वखाईआ। शंकर संदेशा देवे उपर कैलाश, ब्रह्मा ब्रह्म अवाज सुणाईआ। विष्नूं दिता आख, विश्व हिस्से देणे पाईआ। पुरख अकाल ने दस्सी जाच, याचक आपणा ल्या बणाईआ। धुर दे नाम दा लाया घात, घाउ इक वखाईआ। ब्रह्म दा ब्रह्म रहे ना साथ, सगला संग ना कोए बणाईआ। वक्खरी वक्खरी होवे पूजा पाठ, वक्खरा वक्खरा राह चलाईआ। ढाईआं मिन्टां विच्चों ढाई मिन्ट बख्शे आप, आप आपणी दया कमाईआ। सृष्टी दी दृष्टी दा बदल जाए जाप, जगजीवण दाता आप जपाईआ। नव सत्त वधे पाप, रसना नाम ना कोए ध्याईआ। उस वेले प्रगट होवे साख्यात, हरि करता धुर दरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा मालक दया कमाईआ। फुल्ल कहे मैं दस्सां नाल ज़ोरी, ज़ोर नाल जणाईआ। जन भगतो प्रभ तों करयो कोए ना चोरी, चोरी करन वाल्यो तुहाडे मुख विच मोहर दिती लगाईआ। तुहाडी रसना दी आवाज़ थोड़ी, सुणन वाला वड्डा बेपरवाहीआ। ऐवें ज़बान ना करयो कौड़ी, कूड़ क्रिया रंग चढ़ाईआ। मन मनुआ लैणा होड़ी, होड़े सस्से वाला संग रखाईआ। तुसीं सच धर्म दी चढ़ गए घोड़ी, वाग आपणे हथ्थ उठाईआ। जगत धार पति पत्नी दी बण जाए जोड़ी, जोड़ जोड़े थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। फुल्ल कहे मेरी नमो नमो निमस्कार, नमस्ते सीस झुकाईआ। जो जन आए हरि भगत दवार, हरि भगवन विच समाईआ। उहनां दा लहिणा देणा पिछला दिता उधार, अग्गे आपणा राह वखाईआ। संदेशा देवे सिमरत शास्त्र बाहर, ग्रन्था संग ना कोए रखाईआ। आत्म ब्रह्म दा दए हुलार, सति सच नाल उडाईआ। वक्त सुहञ्जणा होए सतारां हाढ़, हाढ़ अठारां नाल मिलाईआ। जन भगतो खुशीआं नाल बोलो जैकार, धुर दे शब्द धार शनवाईआ। जन भगतां भगत होए प्यार, मुहब्बत मुहब्बत नाल रलाईआ। सदा सदा सद इक्को रंग रवे निरँकार, निरगुण नूर इलाहीआ। जन भगतां भरया रहे भगत दवार, हरि भगवन होए सहाईआ। खेल तक्कण पैग़म्बर गुर अवतार, जोती जाता ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत धार चौवीआं अवतार, अवतारां अवतर आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ १८ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल रात नूं विहार समें ✪

अष्टभुज कहे मैं वजा के आपणा संख, संख्या दो जहान दिता दृढ़ाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड हिलाए असंख, असंख असंखा ध्यान लगाईआ। दो जहान संदेशा दिता नेत्र अक्ख खोल्हो वेखो भगत भगवान दे ग्रन्थ, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जिस ने आत्म परमात्म बणाया पन्थ, मार्ग इक्को इक जणाईआ। सन्त सुहेले बणाए आपणी अंस, आपणी दया कमाईआ। चार कुण्ट सुहाए बंस, बंसाँवली इक उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि सच सच उपजाईआ। अष्टभुज कहे सुणना इक उपदेश, सिख्या अगम्म अथाहीआ। तकणा इक नरेश, नर नरायण वड वड्याईआ। जिस दा ना मुच्छ दाढ़ी केस, मूंड मुंडाया रूप ना कोए जणाईआ। सदा रहे हमेश, जम्मण मरन विच कदे ना आईआ। जिस लेखा पूरा करना गोबिन्द दस दशमेश, दहि दिशा अक्ख उठाईआ। ओह कर अगम्मड़ा वेस, अकल कलधारी आपणी खेल खिलाईआ। जिस सब नूं कीता पेश, पेशीनगोईआं संग रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। अष्टभुज कहे मेरी धार आदि आदि पुराणी, पुनह पुनह सीस निवाईआ। मैं कीता चरण ध्यानी, प्रभू प्रभ ओट तकाईआ। मंगी इक निशानी, निशाना अगम्म अथाहीआ। तेरी जोबन वाली मेरी बणी रहे जवानी, बिरध बाल रूप ना कोए वटाईआ। तेरा मेल रहे दो जहानी, दोहरी तेरी कार कमाईआ। तेरा खेल तकां ज़िमीं असमानी, इस्म आज़म इक वड्याईआ। मैं तेरी महिमा सुणनी चाहुंदी जो बाहर वेद पुराणी, गुर अवतार पैग़म्बर सिफ्तां तों बाहर तेरी होवे शनवाईआ। तूं आत्म ब्रह्म दा जाण जाणी, जानणहार इक अख्वाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरे वेखां नाम कलमे कलामी, जो कलम शाही नाल वड्याईआ। मैं ओह वेला तकणा, जिस वेले सब दी होए नीलामी, ख़रीददार नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। अष्टभुज कहे मैं तकणा तेरा हुक्म अगम्मा, अगम्म देणा द्रढ़ाईआ। जिस विच दीन दुनी मज़्हब दा होए कोई ना बन्ना, हदूद हद्द ना कोए रखाईआ। निशान दिसे ना तारा चन्ना, मज़्बी वंड ना कोए प्रगटाईआ। मैं ओह तकणा जिस विच गोबिन्द धार रूप बणे कन्ना, कन्या धार दए गवाहीआ। जिस दा वसेरा बिना छप्पर छन्ना, महल्ल अटल सोभा पाईआ। उस दा ग्रन्थ शास्त्र इक्को पूरन होवे ते होवे पप्पा (पंन्ना), दूजा वरका ना कोए उलटाईआ। जो सारी हद्द तोड़े तोड़े जगत दा बन्ना, हदूद रहिण कोए ना पाईआ। शब्दी धार सतिगुरु तेरा रूप होवे नन्हा, नर नरायण नज़री आईआ। देवे वड्याई साचे जनां, बणे जण जणेंदी माईआ। नाता तोड़ के माटी चम्मा, चम्म दृष्टी दए बदलाईआ। मेट के हरख

सोग ग़मा, ग़मखार दए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। दुर्गा कहे मेरा नाम दुर्गा, दुरगी तेरी नज़री आईआ। तूं मैनूं आपणा नाम ग्रन्थ वखा दे धुर दा, धुर मालक पड़दा आप चुकाईआ। ओह घर दस्स दे जिथ्थे सतिगुरु शब्द तुरदा, मटक नाल आपणी चाल बणाईआ। ओह गृह दस्स दे जिथ्थे सतिगुरु रूप बणदा, बनखण्ड नज़र कोए ना आईआ। ओह भेव दस्स दे जिथ्थे अवतार पैग़म्बर गुरु जणदा, देवणहार माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी वड्याईआ। अष्टभुज कहे तेरे ग्रन्थ तके भगत दवारे, भगवन रूप नज़री आईआ। जेहड़े सब नूं देण इशारे, ऐशो इशर्त तजणा कूड़ लोकाईआ। सब दी नईया आई अन्त किनारे, नौका तक्को थांउँ थाँईंआ। अवतार पैग़म्बर गुरु लेखा दयो सारे, सार शब्द हुक्म जणाईआ। आपणे नेत्र नैण लओ उग्घाड़े, अक्ख प्रतख रूप दरसाईआ। धर्म दी धार आउणी विच अखाड़े, सच दवारे सोभा पाईआ। दिवस तक्को सतारां हाढ़े, हाढ़ा कढ के इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मस्तक लेख बणाईआ। ग्रन्थ कहिण असीं आ गए विच मैदान, मदन मोहण मानव दिती माण वड्याईआ। चार जुग दा झगड़ा मेटणा जो शरअ कीता विच दरम्यान, दर दर आपणा हुक्म वरताईआ। साडी समझ कर सके ना कोए इन्सान, बुद्धी विच ना कोए चतुराईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु दिता ना किसे ज्ञान, मेहरवान हो के आपणी दया कमाईआ। सारे सिफ्तां वाले गा के गाण, ढोले रागां नादां विच कर शनवाईआ। हुण खेल श्री भगवान, हरि करता आप कराईआ। तीर अणयाला वज्जे बाण, बाण अणयाला आप चलाईआ। हुक्म कीता सूरबीर बलवान, बलधारी आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। ग्रन्थ कहिण असीं जुड़ गए अक्खर अक्खर, अक्खरां नाल मिल के वज्जी वधाईआ। जन भगतो पूजा करनी नहीं किसे इट्ट पथ्थर, पाहन सीस ना किसे निवाईआ। एह ओह लेखा जेहड़ा गोबिन्द लिखाया सी आपणे प्रेम पत्र, पत्रका समझ किसे ना आईआ। नौ वार रोज़ छिड़कदा सी अतर, अतर धुर दा नाम चढ़ाईआ। आपणे चोले दी कट के कतर, कतरा कतरा उत्ते रखाईआ। जन भगत हीरे बणा के रत्न, देंदा रिहा माण वड्याईआ। पर जिस वेले सरसे दे पहुँचया पत्तन, घाट कन्ढी डेरा लाईआ। आपणा लेखा दस दशमेश जलधारा विच लग्गा रखण, रखणा खण्डे नाल बणाईआ। नाले इशारा कीता कान्हा आजा जो खांदा रिहा मक्खण, बंसरीआं धुन सुणाईआ। आह वेख मैं जाणा एका वार ओस प्रभू दे वतन, जो बेवतनां लए मिलाईआ। फेर तक जन भगतां आवां रखण, रक्षक हो के खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे

खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। ग्रन्थ कहिण गोबिन्द ने डोबे सी गिणती दे बाई, दूआ दूए नाल मिलाईआ। फेर दोवें उठा के बाहीं, बाबल अग्गे सीस निवाईआ। मैं ओह काहन नहीं बणना जेहड़ा चरवाहा बणे गाईं, गऊआं पिच्छे भज्जे वाहो दाहीआ। मैं ओह राम नहीं बणना जेहड़ा जंगल बेले भज्जे वाहो दाही, रसतिआं विच आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं ओह पैग़म्बर नहीं मन्नणा, जेहड़ा शरअ दी करे तबाही, तबा कूड़ वाली बणाईआ। ओह गुरु नहीं मन्नणा जिस नूं जनणी कुख्ख दए जाई, माता आपणी कुख्ख उठाईआ। मैं ओह पुरख अकाल नहीं मन्नणा, जेहड़ा सदा ना बणे गुसाँईं, सदा ना संग निभाईआ। मैं ओह नाम नहीं मन्नणा, जेहड़ा गुरमुखां दी कटे ना फाही, फाँसी गलों ना दए कटाईआ। मैं ओह दाम नहीं मन्नणा, जेहड़ा दमां दी दए ना गवाही, दामनगीर ना संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा आपणा हुक्म वरताईआ। जिस वेले गोबिन्द ने ग्रन्थ सरसे विच डोबे, नक्क फड़ के डुबकी आपणी लई लगाईआ। फेर मूधे मार के गोडे, हथ्थ छाती थत्ते डाहीआ। एह हो गए तेरे जोगे, तेरी झोली पाईआ। हथ्थ लै आपणे बोझे, बोझल भार ना कोए बणाईआ। नाले किहा नाल रोहबे, गुस्से विच सुणाईआ। मेरे प्रभू मैं कोई फिरना नहीं विच टोइआं टोबे, डुबकीआं लै ना झट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सरसा कहे जिस वेले बाई ग्रन्थ मेरे पुज गए विच तहि, तहिख़ाना नानक दिता बणाईआ। गोबिन्द दोवें हथ्थ सिर ते रख के गया बहि, आसण टेडी धार लगाईआ। नाले हस्स के किहा आदि अन्त तूं ही हैं, दूजा नज़र कोए ना आईआ। तेरी शक्ती शक्त शवै, नूर जोत रुशनाईआ। मेरे ग्रन्थ ओ पुरख अकाले तैनूं कीते बैअ, दूजा हक ना कोए रखाईआ। जिस विच तूं सब कुछ करना लय, लाईन इक्को देणी बणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु सारे तेरी चरणी जाणे ढह, ढईआ मेरा दए गवाहीआ। मैं ख़ाली हथ्थीं जाणा मेरे हथ्थ विच होणी कोई नहीं शय, माछूवाड़ा मेरा धाम सुहाईआ। मैं इक्को सरसे दी जगह तेरे प्रेम दी वगदी वेखणी नय, नईया दूसर नज़र कोए ना आईआ। मैं नहीं जाणना तूं मालक त्रैलोकी कि त्रैअ, तिन्नां गुणां तों बाहर समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणी कार कमाईआ। सरसा कहे गोबिन्द ने खण्डे नाल नौ मारीआं चारों कुण्ट लकीरां, आपणी खुशी नाल लगाईआ। फेर आपणे चोले दीआं कर के लीरां लीरां, लीरां दितीआं कराईआ। फेर आपणे सीस तों लाह के चीरा, पुट्ठा दिता लटकाईआ। फेर उँगली तों चट्ट के हीरा, हीरे गुरमुख दिते वखाईआ। फेर आख्या भज्ज के आ कबीरा, कबरां तों बाहर दयां जणाईआ। आह वेख लै मैं उच्च दा पीरा, पीर पैग़म्बर सारे सीस निवाईआ।

१४०६
२२

ओह वेख मेरी उँगली नाल रविदास दा कसीरा, जो कस के ल्या बंधाईआ। ओह वेख मेरा कमान ते तीरा, तुरीआ तों परे दृढ़ाईआ। मैं कोई गोबिन्द डाह के बहिण वाला नहीं पीढ़ा, मुख घुंगट ना कोए रखाईआ। जद आवांगा दो जहानां चुकांगा बीड़ा, आपणा बल प्रगटाईआ। गुरमुखां दा राह रहिण देणा नहीं भीड़ा, भीड़ी गली विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। मैं इक्ट्ठे कीते जट्ट नाई छींबे झीरा, झीवर हो के गुरमुखां अमृत प्यावां चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सरसा कहे गोबिन्द ने कन्न फड़ के मेरे अन्दर मारी झाकी, निगह निगह विच्चों बदलाईआ। इक ख़बर अगम्मी आखी, बिन अक्खरां दिती सुणाईआ। हाज़र हो जा मेरे कमलापाती, पतिपरमेश्वर आपणा पन्ध मुकाईआ। आह तक लै पोह दी ठंडी राती, रुतड़ी तेरे नाल महकाईआ। जिथ्थे मेरे ग्रन्थ जिथ्थे मेरा पन्थ उथे ना कोई दीवा ना कोई बाती, बिना तेरी जोत तों नूर नज़र कोए ना आईआ। जिंना चिर मैं शब्द रूप हो के ना आवां तैनूं करनी पऊगी राखी, राख्या आखा मन्न के फिर मैनूं हुक्म लैणा मनाईआ। मैं तेरा लाडला सुत जे ख़ुशी विच कर लवां गुस्ताख़ी, फेर वी घुट्ट के गले लैणा लगाईआ। पर याद रखणा तेरे शब्द दी तेरे शब्द गोबिन्द बिना करे कोए ना कापी, नकल मारन वाला नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल हस्स के किहा नाले कन्नां ते मारी थापी, थपक के दिता सुणाईआ। गोबिन्द एह तेरे ग्रन्थ मेरे शब्द दा पन्थ जिस वेले प्रगट होया बिना भजन बन्दगी तों तार देवांगा पापी, पतित पुनीत बणाईआ। मंज़ल चाढ़ देवां घाटी, घाटा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा आपणा हुक्म इक मनाईआ। सरसा कहे गोबिन्द ने मेरे उत्ते ला दिता पंजां, पंजे उँगलां फेर आपणे मुख विच पाईआ। जेहड़ा हुक्म हुक्म लिख सके नहीं मेरे कवी धार बवन्जा, बावन रंग रंगाईआ। मेरे साहिब ने मेरे नाल मिल के करना चंगा, चंगी तरह दृढ़ाईआ। अज्ज ओए सरस्सयां मैं भज्जा जांदा छड के पुरी अनन्दा, अनन्द जगत वाला तजाईआ। एह ढहिणे कोठे कंधा, महल्ल नज़र कोए ना आईआ। मैं गोबिन्द बणया तेरा नज़री आवां पंजां तत्तां वाला बन्दा, बन्धन जगत वाले रखाईआ। अग्गे खेल करां अचम्भा, अचरज कार कमाईआ। आपणा रूप सरूप किसे ना दस्सां चौड़ा लम्बां, मिणती सके ना कोए कराईआ। ना धोती पहना ना तम्बा, कछिहरा कच्छ ना संग रखाईआ। ना वेस वटावां ना केस रखावां ना रंग रंगावां कंघा, कंगण तन ना कोए चतुराईआ। इक्को होवां तेरा रूप होवां सूरा सरबंगा, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। इक्को शब्द होवां इक्को होवां मृदंगा, इक्को करां शनवाईआ। इक्को सेज होए पलँघा, आसण इक सुहाईआ। इक्को नाम होवे इक्को होवे खण्डा, ब्रह्मण्डां हुक्म वरताईआ। इक्को मंज़ल होवे इक्को होवे कन्ढा,

कन्ढी बैठा ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सरसा कहे गोबिन्द ने मेरी निक्की जेही बणाई क्यारी, कदम ढाई पुट्ठे पैरीं चल के दिती जणाईआ। फेर दो हथ्थां दी बणा के खारी, सीस आपणे उत्ते टिकाईआ। फेर बण गया जगत दा जवारी, सच झूठ दीआं गोहटां हथ्थ टिकाईआ। फेर दोहां नूं मारे वारो वारी, इक दूजी उत्ते छुहाईआ। फेर तक्कया मेरा नूर जोत निरँकारी, निरवैर इक इलाहीआ। जिस ने मेरी सांभ के रखणी पटारी, पटने वाला रिहा दृढ़ाईआ। जेहड़ा आदि तों वड्डा भण्डारी, भण्डारे विष्नूं रिहा दृढ़ाईआ। मेरा खेल होणा अपारी, अपरम्पर रिहा दृढ़ाईआ। मेरे लेख नूं आपणे देस विच लै जाए इक वारी, वारस हो के आपणी दया कमाईआ। फेर बण शाह सिक्दारी, निरवैर हो के रूप बदलाईआ। नाद शब्द धुन कर धुन्कारी, संदेशा देवे थांउँ थाँईंआ। झट शब्द अगम्मी रमज इक मारी, मारू राग तों बिना दिती दृढ़ाईआ। ओ गोबिन्द तेरे ग्रन्थ पन्थ दा इक्को पाहरू, पहरा दे के आपणा खेल खिलाईआ। याद कर लै जिस वेले आवे तेरयां गुरमखां भगतां पार उतारू, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच सच नाल मिलाईआ।

१४०८ ग्रन्थ कहिण जिस वेले गोबिन्द पाणी दे विच रखया, सहिज नाल टिकाईआ। असां प्यार विच टेक्या मथ्थया, मस्तक सीस १४०८

२२ झुकाईआ। गोबिन्द पिच्छे ताली मार के हस्सया, पिच्छे तों पिछा दिता जणाईआ। ओह तक्को आदि वसया, अन्त उहो २२

होए सहाईआ। कलयुग होवे अंधरी मस्सया, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। बिना कदमां तों आवे नस्सया, बण के धुर दा माहीआ। नाले खुशीआं दे विच नच्चया, कदम कदम नाल बदलाईआ। मेरा वाहिदा कौल पूरा होण लग्गया सच्चया, पुरी अनन्द दिता तजाईआ। नाले तूं मेरा मैं तेरा ढोला जपया, सोहँ राग सुणाईआ। नाले हस्स के किहा वाहिगुरु तेरी रक्ख्या, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। नाले घुट्ट के कमर कस्या, सूरबीर लई अंगड़ाईआ। सच पुछो गोबिन्द इक्को कदम नाल सरसे नूं टप्पया, दूजा कदम ना विच टिकाईआ। अग्गे प्रकाश तक्कया लट लटया, नूर जोत रुशनाईआ। गोबिन्द ने पुट्ठा सीस चरणां ते सूट्टया, सुट्ट के दिता वखाईआ। पुरख अकाल चुक्क के आपणे पट्टया, पटने वाला छाती ते ल्या टिकाईआ। वाह मेरे बच्चया, बचपन तेरा मोहे भाईआ। ओह वेख तेरा टुट्ट जाणां भाण्डा शरीर कच्चया, तन वजूद रहिण ना पाईआ। औह वेख तेरा नंदेड़ अंगीठा मच्चया, जिथ्थे नानक निशाना गया टिकाईआ। औह वेख तैनूं झुकदे कोटन रवि सस्सया, डण्डावत कर के खुशी बणाईआ। ओह वेख सचखण्ड दवारा तेरी करे कथया, कथनी राग अलाईआ। ओह खेड़ा तक बण गया रूप समरथया, दूजा नज़र कोए ना आईआ। फेर नीचे वेख कलयुग अंधेरी मस्सया, साचा चन्द ना

कोए चमकाईआ। ख्याल कर सस्से उत्ते होड़ा होड़े नाल मिल्या सस्सया, सो आपणा रूप वखाईआ। हँ ब्रह्म अंधेरे विच छपया, गोबिन्द चन्न चन्नां तेरे बिना करे ना कोए रुशनाईआ। गोबिन्द किहा प्रभू तेरा मेरा कौल इकरार पक्कया, पारब्रह्म गंढ पक्की लैणी बन्ाईआ। फेर जोत धार विच नस्सया, भज्जया वाहो दाहीआ। फिर खिड़ खिड़ा के हस्सया, बिना मुख दन्द तों आपणा राग अलाईआ। अबिनाशी करते इशारा कीता रतया, सैनत दिती लगाईआ। गोबिन्द आह वेख दोहां दा धाम न्यारा, जित्थे खेल होणा अपारा, पूरन ते पूरन दा सोहे पप्पया, पतिपरमेश्वर तेरा मेरा रूप इक्को नज़री आईआ। जेहड़ा तूं सरसे विच मेरे सहारे रखया, सो सांभ के रखां चाँईं चाँईंआ। पर इक गल्ल याद कर लै जिस वेले तेरा ढईआ टप्पया, इन्हां ग्रन्थां दे टप्पे मैं देणे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा वर हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गोबिन्द किहा मेरे पुरख अकाल स्वामी, साहिब तेरी सरनाईआ। आदि अन्त दे अन्तरजामी, आदि अन्त तेरे हथ्थ वड्याईआ। मैं तैनूं इक्को वार करां सलामी, सलामां लैण वाल्या तेरे अग्गे सीस झुकाईआ। पर मैथों होणी नहीं किसे दी ग़ुलामी, चाकर हो ना सेव कमाईआ। मैं शरअ छड देणी तमामी, पिछले ज़ंजीर गल ना कोए पवाईआ। जदो जावांगा तेरा नाता सब दा जोड़ांगा बाहमी, ब्रह्म नूर ब्रह्म दयां जणाईआ। जेहड़ा लेख लिख्या तमामी, तरह तरह दयां समझाईआ। इक खेल करां तेरयां भगतां नूं खड़ा करां तेरयां गुरमुखां दी निशानी, निशाना नाम तीर देणा चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द तेरे सिख बणा दयां भगत, एह मेरी बेपरवाहीआ। सिर्फ़ तेरे उत्ते किरपा करां फ़कत, फ़िकरा तेरा आपणे नाल बणाईआ। जिस वेले सदी चौधवीं दा आया वक्त, सम्मत शहिनशाही सत्त नाल वड्याईआ। प्रगट होवां विच जगत, जागरत जोत कर रुशनाईआ। गुरसिख बणा के जिगरे लख़त, लेखा सब दा दयां बणाईआ। पर इक गल्ल याद करलै अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं वास्ते मेरा हुक्म होवे सख़्त, सख़ीआँ वाला काहन बचया रहिण कोए ना पाईआ। मैं शरअ दी गुंजाइश रहिण नहीं देणी बचत, बच्चू बणा के सारे देणे समझाईआ। मेरे कोल चल के आवे कोए ना वफ़द, आपणा मता पकाईआ। याद कर लै गोबिन्द मेरा रूप इक्को सतिगुरु ते सतिगुरु मेरा शब्द, तत कम्म किसे ना आईआ। आत्म दी धार सदा मेरा मज़्हब, परमात्म इष्ट देणा रखाईआ। पर इक हैरान होण वाली गल्ल जिस नूं सारयां कहिणा ग़ज़ब, भेव आपणा ना किसे खुल्ाईआ। जेहड़ा इशारा दिता नानक नूं विच अरब, अरबां खरबां तों परे दिता समझाईआ। उस नूं नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग जिंने शास्त्रां दे अक्खर जे ओनी वार देंदे रहिण ज़रब, उहदा हासल समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द जिस वेले बीत गया अरसा, आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं पूरन दी धार बणा देवां तेरा सरसा, सरीर बेनज़ीर रूप प्रगटाईआ। मुहम्मद दा पूरा हो गया बरसा, बरसी सतिगुर शब्द लए मनाईआ। तेरे ग्रन्थां दी पूरन दी धार विच्चों करांगा चर्चा, चरागाहां खोजण कोए ना जाईआ। हुक्म देवागा उतों अर्शा, वसावांगा उत्ते फ़र्शा, फ़र्शी हो के आपणी खेल खिलाईआ। जिस दीआं वक्खरीआं होणगीआं तर्ज़ां, मेरीआं होणगीआं ग़रज़ां, ग़रज़े कि दूजा राह ना कोए तकाईआ। नाले अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं दीआं पूरीआं करांगा अर्ज़ां, अर्ज़ीआं फोलो चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी आपणी करनी कार कमाईआ। गोबिन्द दे वेंहदयां वेंहदयां सरसे विच आ गई लहर, लहर लहर नाल टकराईआ। उस ने प्रेम विच तूं मेरा मैं तेरा गाया नाल बहिर, बहिरयां दिता सुणाईआ। नाले हस्स के किहा गोबिन्द गुणी गहिन्दा मेटणी चिन्दा जदों वसणा सोहणयां वसणा तेरा सम्बल शहर, शहिनशाह तेरा डेरा लए लगाईआ। उस वेले ज़रूर दीन दुनी उत्ते वरतेगा कहर, सरसा काहरे वल्ल ध्यान लगाईआ। इक होर ख़बर सुण प्रभू दी सार पा सके कोई ना ग़ैर, गहर गम्भीर नज़र किसे ना आईआ। उस वेले तूं गुरमुखां दे अन्दर दी करीं सैर, सैरगाह इक्को इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

१४१० कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। उस वेले ग्रन्थां ने गाउणा इक गाणा, बिना ज़बान हिलाईआ। १४१०

२२ सरस्या तूं बण गया साडा कुतबख़ाना, कुतबिआं दा झगड़ा देणा मुकाईआ। तेरे विच वेखणा खेल श्री भगवाना, जो भगवन २२

धुरदरगाहीआ। जिस दा इक्को इक तराना, इक्को करे पढ़ाईआ। इक्को नूर नुराना, इक्को जोत रुशनाईआ। इक्को घर घराना, इक्को गृह वसाईआ। इक्को होवे मेहरवाना, मेहर नज़र उठाईआ। असीं चाहुंदे उस दा करीए ब्याना, जो बेज़बान अख्वाईआ। जिस नूं झुकण ज़िमी असमानां, इस्म आज़म इक वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा आपणा भेव खुल्हाईआ। गोबिन्द किहा एह खेल निरँकारी, अकल कलधारी आप कराईआ। जिस वेले आवे उस दी वारी, वारता मेरी दए प्रगटाईआ। उस दी कला होवेगी ज़ाहरी, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। ख़बर होवे सब तों बाहरी, बहिरहाल दृढ़ाईआ। उस दे पंजां तत्तां दे पंज होणे लिखारी, पंजा गोबिन्द दा दए गवाहीआ। मेरी आशा पूरी करे सारी, सरसा दी भेंटा वाले फेर दए दुहराईआ। जिन्हां विच लग मात्रा घट ना करे कन्नां ते बिहारी, औंकड़ दुलैंकड़ लांव दुलांव बची रहिण कोए ना पाईआ। सो वक्त सुहञ्जणा आ गया, पुरख अकाला आ गया, खेल खिला गया, गोबिन्द सूरा नाल रला गया, सम्बल आपणा धाम सुहा गया, शब्द शब्दी डंक वजा गया,

भेव अभेदा भेद छुपा गया, बिना छप्पर छन्न तों वसण वाला पूरन दी छप्परी विच आपणा डेरा ला गया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दी सब ने चलणा विच आज्ञा, अग्गे हो के आपणा बल ना कोए वखाईआ।

✪ १६ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल रात नूं ✪

उम्मत आशा कहे मैं चौदां सद दी नंन्ही मुन्नी, बाली बुध बुध दुहाईआ। मेरा ओढण सीस निक्की जेही चुन्नी, चन्न सूरज सितार ध्यान लगाईआ। मेरी निक्की जेही हाण्डी ते छोटी जेही कुंनी, कुल मालक दयां सुणाईआ। तूं गहर गम्भीर गुणी, गुणवन्त इक अख्वाईआ। मेरी सच पुकार सुणीं, अणसुणत दयां दृढ़ाईआ। मैं तेरे कलमे दी सुण के धुनी, भज्जी वाहो दाहीआ। मैनूं मिल्या पंडत नारद मुनी, मुख दिता वखाईआ। मैं हिसाब लाया इक इक दे नाल नौ बण गए उन्नी, ऊणता नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक दया कमाईआ। उम्मत ख़ाहिश कहे मेरी उमर छोटी, उम्मत दे मालका दयां जणाईआ। मैं चढ़ गई सिख़र चोटी, मंज़ल मंज़ल पन्ध मुकाईआ। गाँ खवा के गोशत बोटी, गोशे कोने दिते हिलाईआ। कलमा जपा के कोटन कोटी, काया कुटीआ खेल खिलाईआ। सति धर्म दी लाह लंगोटी, तहिमत जगत दिती बंधाईआ। मुख खून लगा के होंटीं, खूंखार दिते बणाईआ। अन्तिम रख के तेरी ओटी, ओड़क बैठी अक्ख उठाईआ। जिस वेले मेरा अमाम आवे निरगुण धार धार दी जोती, जोती जाता अगम्म अथाहीआ। हज़रत उम्मत उठाए सोती, सुत्ता रहिण कोए ना पाईआ। लेखा चुकाए काहन ते गोपी, सीआ राम सति जणाईआ। हुक्म देवे लोक परलोकी, दो जहानां करे शनवाईआ। आत्म धार दस्से सलोकी, सोहँ ढोला इक दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं घड़ी दिसे औखी, मुश्किल आपणे हथ्थ रखाईआ। शरअ शरअ नूं करे दोषी, निर्दोष नज़र कोए ना आईआ। झगड़ा पवे चन्न ते पोशी, पेशीनगोई दए गवाहीआ। लेखा जाणे नाल रविदास मोची, गुरमुख आपणी गंढ पवाईआ। धुर दी धार फड़ के सोटी, खण्डा नाम वाला खड़काईआ। लेखा जाणे जिज्ञासू जोगी, जुगीशरां वेख वखाईआ। लहिणा तके चुरासी भोगी, भस्मड़ आपणी खेल खिलाईआ। शरअ तके शरीअत रोगी, तबीब पड़दा दए चुकाईआ। भेव खुल्हाए धुर दा बोधी, गोबिन्द बण के धुर दा माहीआ। लहिणा जाण नमाज़ रोज़ी, राज़क रिज़क रहीम कार कमाईआ। धर्म दा ठाकर बण के मौजी, मजलस भगतां नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल

साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। उम्मत दी आशा कहे मुहम्मद दे अन्दर अगम्मी तांघ, चार यारी संग वखाईआ। जिस वेले मम्बरां ते दिती आवाज़, नाअरा धुर दा हक सुणाईआ। कलमा कलाम बोल के बांग, अज़ान आपणी इक जणाईआ। अन्तर निरन्तर रखी तांघ, बिन नेत्र नैण नैण उठाईआ। जिस वेले मेरा नूर नुराना अमाम अमामा बदले स्वांग, वेस अवेसा आप कराईआ। उहदी ब्रह्मण्ड खण्ड दी इक्को होवे पलांघ, कदम कदम ना वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति दा हुक्म इक वरताईआ। उम्मत आशा कहे प्रभ आशा तक मोरी, मोहरे हो के वेख वखाईआ। मेरा रूप ना काला ना गोरी, (गौरव) आपणा हाल सुणाईआ। तेरे कोलों प्रभ काहदी करां चोरी, पर्दा पर्दा ना कोए रखाईआ। तूं आदि जुगादि दा जौहरी, जौहर तेरा सोभा पाईआ। तेरी खेल सदा नवीं नकोरी, बिरध बाल ना रूप वखाईआ। मैं नंन्ही निक्की बांकी छोहरी, शहिनशाह तेरे दर सुहाईआ। सदी चौधवीं पै गई तेरी लोड़ी, लोड़ींदे साजण ध्यान लगाईआ। सदी चौधवीं दी गोली बणावां जोड़ी, सगला आपणा संग निभाईआ। मेरी आशा रह गई थोड़ी, थोड़ा समां ध्यान लगाईआ। अग्गे रैण दिसदी अंधेर घोरी, घराना नज़र कोए ना आईआ। किरपा करके ज़ीरो दे मालक आपणी बन्न्ह लई इक सौ इक हथ्थ नाल डोरी, डोरी आपणे नाल बंधाईआ। तेरा एका एकँकार मोहरी, सृष्टी ज़ीरो रूप दरसाईआ। ज़ीरो ते एका तेरा नूर जौहरी, आदि अन्त ना कोए मिटाईआ। तेरा खेल ब्राह्मण गौड़ी, गॉड तकां चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच सच तेरी सरनाईआ। डोरी कहे मैं इक सौ इक हथ्थ लम्मी, लम्मी पै के दयां जणाईआ। मैं मुहम्मद दी उम्मत दी आशा तकां जम्मी, दूजा जन्म नज़र कोए ना आईआ। सदी चौधवीं दी प्रेमण बणी तनी, सगला संग रखाईआ। गोली नूं संदेशा दिता कन्नी, फ़रमाना नूर इलाहीआ। जिस वेले सृष्टी अन्दरों होई अन्न्ही, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। उस वेले इक प्रभ नूं मन्नीं, परवरदिगार इक्को नज़री आईआ। जिस दा वसेरा कदे ना छप्पर छन्नी, सचखण्ड दवारे सोभा पाईआ। ओह मित्र प्यारा रिषीआं दा बणे तनी, बलि बावन संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। डोरी कहे जिस वेले मुहम्मद मदीनिउँ होया रवाना, मध आपणा ध्यान लगाईआ। सुण चौदां तबक दिआ अमामा, धुर अमाम रिहा सुणाईआ। आह लै मेरा निक्का जेहा कलामा, कायनात दी कलाम सिफ्त रसना नाल गाईआ। मेरा खेल दो जहानां, वेखणहारा थांउँ थाँईंआ। कलयुग अन्तिम मार ध्याना, सदी चौधवीं अक्ख उठाईआ। तेरा बदल जाणा ज़माना, ज़िमीं ज़मा दए गवाहीआ। तेरी उम्मत होणी बेईमाना, ख़ाहिश ममता वाली प्रगटाईआ। उस वेले पहरना बाणा, जोती जाता रूप धराईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। डोरी कहे मैं सुणया हुक्म प्रभू समरथ, हरि करते दिता दृढ़ाईआ। जिस वेले मुहम्मद दा चलया रथ, वहीर जगत वाली बणाईआ। उस वेले मुहम्मद लाशरीक दा कलमा पढ़ के पुट्ठीं पैरी चलया सी इक सौ इक हथ्थ, हथ्थ पेशानी उत्ते टिकाईआ। नाले खुशीआं विच रिहा हस्स, हुक्म सुण धुर इलाहीआ। सिफ्ती गावे जस, ढोला सहिज सुभाईआ। फेर बदल आपणी अक्ख, करवट लई बदलाईआ। इक सौ इक वार नाअरा बोलया हक, हक हक सुणाईआ। इक सौ इक हथ्थ प्या नट्ठ, भज्जया वाहो दाहीआ। फेर सदी चौधवीं नूर नुराने कर प्रगट, आपणा भेव दृढ़ाईआ। फेर पुश्त ते मार के हथ्थ, हलूणा दिता लगाईआ। खोल् आपणी अक्ख, पर्दा परदयां विच्चों दिता चुकाईआ। सदी चौधवीं दे नाल धुर दी धार खेल होणा सच, गोली आत्म धार लैणी प्रगटाईआ। बलि दा बेटा नानक दी साथण जोगिन्दर नाम लैणा रख, तन तत वड्याईआ। मुहम्मद बिन सजदे चरणी गया ढट्ठ, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। इक सौ इक वार फेर कलमा ल्या रट, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। फेर मस्तक धूढ़ लाई झट, लम्मा पै के आपणा झट लँघाईआ। फेर इक सौ इक वार प्या टप्प, उच्ची उच्ची कुदया चाँईं चाँईंआ।
१४१३ फेर कीता झट, आपणी करवट लई बदलाईआ। ठोडी उत्ते हथ्थ रख, उँगली नाल दबाईआ। परवरदिगार सांझे यार कुझ आपणा भेव दस्स, ओहला ओहला रहे ना राईआ। परवरदिगार फेर इक सौ इक हथ्थ आपणी धार नाल दिता धक्क, धक्के इक सौ इक वार लगाईआ। जिस वेले इक दा लेखा सृष्टी ज़ीरो रूप हो गई अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं दा लेखा होणा फक्क, परवरदिगार तेरा सांझा यार इक्को आपणा हुक्म वरताईआ। फेर मुहम्मद दा फड़ के नक्क, इक सौ इक वार अग्गे दिता खिचाईआ। फेर हस्स के क्या मुहम्मद अहिमद बण के मेरा आबेहयात चक्ख, रस निजर दयां झिराईआ। मुहम्मद आपणे मुख विच लै के कक्ख, निमाणा हो के सीस झुकाईआ। मेरे परवरदिगार सांझे यार ज्यों भावे तिउ रख, रखणहार तेरी सरनाईआ। साहिब सुल्तान नौजवान मर्द मर्दान मुहम्मद दे दोवें खड़े कर दिते हथ्थ, भुजां सीस उपर उठाईआ। ओह फड़ ओह फड़ ओह फड़ जिस ने सब दीआं डोरीआं देणीआं कट, नाते पिछले दिते तुड़ाईआ। अगला मार्ग पन्थ लगा के सति, सति सति सति लए प्रगटाईआ। गोबिन्द दी धार बच्चयां दी लेखे ला के रत्त, गुरमुख रत्न अमोलक लए बणाईआ। सदी चौधवीं एह खेल होणा सच, मुहम्मद रसूल दयां दृढ़ाईआ। तेरी आशा तेरी तेरी उम्मत उम्मत दी खाहिश मेरे हुक्म विच जाए फस, बाहर रहिण कोए ना पाईआ। मुहम्मद आपणी लब दा वाल इक कट, साहिब दे अग्गे भेंट कराईआ। मेरे महिबूब तेरे हुक्म दा समां ऐवें ना जाए टप, पूरा आपे लैणा कराईआ। मैं ओट तेरे उत्ते रिहा रख, रक्षक हो के वेखणा

चाँई चाँईआ। सदी चौधवीं किसे दा करीं मूल ना पक्ख, दीनां मज़्हबां संग ना कोए रखाईआ। तेरी कीमत होवे शाह कंगाल करोड़ी लख, इक्को रंग देणा रंगाईआ। तेरा फ़रमान तेरा संदेशा हकूमत दे मालक इक्को हक, हक हक तेरी वड्याईआ। मेरी मंज़ल महल्ल तेरे इक्को हथ्थ, दूसर दस्त ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तूं सर्ब कला समरथ, समरथ अकथ इक अख्वाईआ।

✪ २० हाढ़ शहिनशाही सम्मत ७ बख्शीश सिंघ, करनैल, सवरन सिंघ, बूड़ सिंघ, कर्म सिंघ, संपूरन कौर मस्सा सिंघ बलपुरीआ अमराउ सिंघ, बलपुरीआ रछपाल सिंघ, सठिआला, तेजा सिंघ सठिआला, प्रकाश कौर दिल्ली पिण्ड कादराबाद ज़िला अमृतसर ✪

१४१४ २२ सरसा कहे जिस वेले गोबिन्द मैनूं टप्पा, टापूआं दा डेरा दिता ढाहीआ। अग्गे रूप तक्कया नानक तपा, जो बिन पंजां तत्तां सोभा पाईआ। उस ने संदेशा हुक्म दिता पता, पतिपरमेश्वर भेव खुल्हाईआ। नाल इक्की वार अक्खर लिख के पप्पा, धरनी धरत धवल धौल उत्ते दिता दृढ़ाईआ। गोबिन्द ध्यान मार लै रता, रत्न अमोलक रूप ध्यान रखाईआ। नज़री आए इक्को प्रभू दी सत्ता, सति सतिवादी सोभा पाईआ। जिस ने तेरी अन्त कराउणी फतह, फ़तिह फ़ातिहा सब दा दए पढ़ाईआ। सृष्टी दृष्टी कूड़ी क्रिया करे बटा, ज़ीरो अंक वेख वखाईआ। किसे दी कीमत रहे ना टका, आबरू ख़ाक विच मिलाईआ। पटने वाला आपणे लक्क दा वेख पटा, कमरकस्सा कस के लै अंगड़ाईआ। तेरा रूप प्रसिद्ध होणा कलयुग अन्तिम धार जटा, जटा जूट रहिण कोए ना पाईआ। लेखा मुकाउणा जिन्हां खाधा कट्टा वच्छा, कटाक्ष आपणा नाम लगाईआ। कूड़ क्रिया ख़ाक उडाउणी मिट्टी घट्टा, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। सदी चौधवीं गेड़नी उलटी लट्ठा, चक्कवरती चक्र देणा लगाईआ। लहिणा पूरा करना तीर्थ अठसठा, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती वेखणी चाँई चाँईआ। भेव खुल्हाउणा मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठा, गुरु गुरदवार पर्दा रहे ना राईआ। सृष्ट दृष्टी खेल वेखणा बाज़ीगर नटा, नटूए आपणा हुक्म वरताईआ। सच दस्सां तूं जीवदयां चढ़ना शमशान भूमी वाले फट्टा, मरयां फेर ना कोए उठाईआ। जगत समाज दा रहे कोए ना रट्टा, झगड़ा करे ना कोए लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि साहिब सच वड्याईआ। सरसा पार किनारा कहे जिस वेले गोबिन्द ने रखया कदम, कदीम दे मालक दया कमाईआ। मैनूं लेख याद १४१४ २२

आया अदम, आलीजाह दिता दृढ़ाईआ। मैं खुशी नाल चुम्मया कँवल चरण दा पदम, पद इक्को वेख वखाईआ। जो इशारा कीता सी कृष्न काहन यदव, यदी आपणी अक्ख खुल्हाईआ। मैनूं याद आया नूर इलाही अदम, राम रहीम बेपरवाहीआ। मैं खुशी विच लग्गा भज्जण, भजन बन्दगी पिछली दिती तजाईआ। नाले कूक के किहा मैनूं दुखियां दा मिल्या सज्जण, जो ग़रीबां होए सहाईआ। मेरे अन्दर ताल लग्गा वज्जण, शब्द अनादी नाद धुंन वजाईआ। मेरे घाट ते जोती दीपक लग्गा जगण, अंध अंधेरा रिहा ना राईआ। मैं खुशी विच होया मग्न, मस्ती विच लई अंगड़ाईआ। गौर नाल तक्कया सूरबीर दा बदन, निगह निगह विच्चों उठाईआ। उस वेले गोबिन्द ने इशारा कीता सरसे अन्तिम दा लेखा वेख विच अदन, आहला अदना करे लड़ाईआ। शरअ शरअ नूं लग्गे वढ्ढण, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। कलमा कलमे नूं लग्गे छडण, संगी संग ना कोए वखाईआ। एह खेल करे सूरा सरबंगण, शाह पातशाह नूर इलाहीआ। सरसे किहा गोबिन्द उस वेले साचे गुरमुखां निरगुण धार कराईं मजण, सरगुण आपणा रंग रंगाईआ। तेरा सिख तैनूं मूल ना जाए लभ्भण, घर बैठयां लैणा उठाईआ। धुर दा शब्द सुणा के नदन, सोई सुरत लैणी जगाईआ। मालक ख़ालक बण के आवीं पड़दे कज्जण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तेरे प्रकाश दे दीपक जगण, पंज दीपक देण गवाहीआ। उस वेले गोबिन्द ने संदेशा दिता हकण, हक हक जणाईआ। सरसे जिस वेले पूरे होए अरसे, पुरख अकाल करे तरसे, हुक्मी मेहर अगम्मी बरसे, मैं जन भगतां दर ते गंढे आवां छकण, गंढ पिछली याद रखाईआ। भरां भण्डारे ख़ाली सक्खण, सख़ावत आपणा नाम कराईआ। निज नेत्र खोल्ह के अक्खण, दर्शन देवां थांउँ थाँईंआ। चुरासी विच्चों वरोले मक्खण, गुरमुख आपणे घर वसाईआ। इक्को घाट दस्स के पतण, इक्को नईया नाम चढ़ाईआ। तूं मेरा तेरा सारे नाम जपण, सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ। जन्म कर्म दे दूर करावां पप्पन, पतित पुनीत बणाईआ। फेर वसा के साचा वतन, बेवतनां होवां सहाईआ। हुण जन्म ल्या विच पटन, फिर सम्बल सोभा पाईआ। जगत वसेरा रैण आवां कटण, नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। पिछली सब दी डोरी आवां कटण, कटाक्ष धुर दा नाम लगाईआ। अग्गे इक्को नाम कलमे दी दस्स के रट्टण, रट्टा शरअ दा दयां चुकाईआ। किसे दा कोए चलण देवां ना यतन, यथार्थ प्रभ दा हुक्म वरताईआ। मेल मिलावां नाल पुरख समरथण, विछोड़ा अग्गे रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सरसा कहे मेरी नमो नमो बन्दना, बन्दगी विच सीस निवाईआ। पुरख अकाल दे साचे चन्दना, चन्द तेरी रुशनाईआ। तूं छड्डुया पुरी अनन्दना, अनन्द प्रभ दे विच टिकाईआ। तेरा फेर जोती दीपक जगणा, नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। पर याद रखीं मेरे विच भेंटा

होण वाल्यां सारयां सद्दणा, आपणे नाल मिलाईआ। मुहब्बत विच बज्झणा, नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। नाम अगम्मे रंगणा, रंगत इक वखाईआ। उहनां दवारा पए कोए ना मंगणा, भिखारी रूप ना कोए वटाईआ। जीवण जगत नाल हंढणा, सगला संग रखाईआ। अंगीकार लगाउणा अंगणा, बणना जणेंदी माईआ। हथ्थ पुश्त पनाह रखणा कंधणा, दो जहान होणा सहाईआ। सीस दस्तार उन्हां दे बन्नृणा, सिर सर आपणे कदमां विच रखाईआ। तेरे हुक्म दी करे ना कोए उलँघणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। तेरा खेल वेखां माही गोबिन्द धुर दे चन्दणा, प्रभ दे चन्न तेरी वड्याईआ। मेरे उत्ते कौल होया इकरार होया तूं माता दी कुख्खों फेर नहीं जम्मणा, जणेंदी बणे कोए ना माईआ। सम्बल तेरा आसण लग्गणा, संभल आपणा नाम टिकाईआ। मेरी अन्त अख़ीर बेनज़ीर साहिब सतिगुर बन्दना, निव निव लागां पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को रंग रंगाउणा आहला अदना, ऊच नीच राउ रंक वड्डा छोटा अमीर ग़रीब नज़र कोए ना आईआ।

✪ २६ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ७ कपूर सिँघ रणजीत सिँघ मोगा शहर ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

पंज फुल्ल कहिण गुरमुख आत्मा फूला राणी, फली भूत सोभा पाईआ। जिस दा परम पुरख परमात्म साचा हाणी, जगत तत ना कोए वड्याईआ। शब्द अगम्मी सुणा बाणी, नाम निधाना इक समझाईआ। अमृत अंमिउँ बरस के पाणी, अग्नी तत तत गंवाईआ। झगड़ा मुका के चारे खाणी, चारों कुण्ट होए सहाईआ। दाता हो के देवे दानी, सच वस्त सति वरताईआ। दीन दुनी विच बणे बानी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जगत जहान आउण ना देवे हानी, सदा सुहेले आपणा रंग रंगाईआ। कूड़ क्रिया चुकाए काणी, काम क्रोध लोभ मोह हँकार तजाईआ। आपणे गृह सुघड़ सुचज्जी बणा के सवाणी, साची सिख्या इक सुणाईआ। जगत प्यार विच शरअ कूड़ ना रहे शैतानी, सति सति नाल मिलाईआ। गढ़ तोड़ तोड़ अभिमानी, मन मनसा वेख वखाईआ। इक सिख्या सदा सतिगुर चरण होणा कुरबानी, विटों आपणा आप कराईआ। फेर प्रभू दर मिले महिमानी, भण्डारा अतोट अतुट वरताईआ। जगत झगड़ा रहे ना कोए दीवानी, दाअवे पिछले दए मिटाईआ। अग्गे मंज़ल दस्स आसानी, असल आपणा रंग रंगाईआ। प्यार प्यार दी बख्श जवानी, जोबन जोबन नाल सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। पंज फुल्ल कहिण गुरमुख आत्मा फूला राणी सुहञ्जणी, सोभावन्त नज़री आईआ। जिस दा मालक इक आदि निरँजणी, नर हरि आदि बेपरवाहीआ। जो दाता

सदा दर्द दुःख भय भञ्जणी, भव सागर पार कराईआ। ओह लेखा जाणे आत्मा दे संग पंज तत बदनी, बदन आपणा खेल खिलाईआ। अमोलक हीरा बणा के रत्नी, अनमुलड़े लाल आप वखाईआ। जिस सतिगुरु दी गुरसिख बण गया पत्नी, ओह पतिपरमेश्वर हो के होए सहाईआ। हर थाँ उस दी पति रखणी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कक्खों बणाए लखणी, लख करोड़ी धुरदरगाहीआ। गुरमुख दी आत्मा कदे रहिण ना देवीं सक्खणी, सुखन कीते तोड़ निभाईआ। जगत दुकान नहीं हट्टणी, जगत हटवाणा इक प्रगटाईआ। सब दा लेखा वेखे अक्खणी, बिना अक्खां ध्यान लगाईआ। गुरमुख धार आत्म कदे ना होए बेवतनी, एथे उथे वतन दा मालक मिले बेपरवाहीआ। सुबह शाम पंज वार सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै दी तुक जपणी, जगत विहार भुल्ल कदे ना जाईआ। प्रभ दी कला कदे नहीं छपणी, छप्पर छन्नां करे रुशनाईआ। मेहरवान महिबूब भण्डारा देंदा नहीं कदे लप्प लप्पणी, अतोट अतुट दए भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द धार शब्दी शब्द जणाए रसनी, रस रसना नाल मिलाईआ।

१४१७ ✪ पहली सावण शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल रात नूं ज़िला अमृतसर ✪ १४१७

२२ उम्मत दी आशा कहे मैं कीता अदाब, अदब नाल सीस झुकाईआ। मुहम्मदा वेख आपणी किताब, कुतबख़ान्यां बाहर हथ्थ उठाईआ। झट सदी चौधवीं मारी आवाज़, नाअरा हक हक सुणाईआ। सुणो हुक्म धुर जनाब, जनाबे आली की दृढ़ाईआ। संदेशा देवे तक्को आपणे मित्र अहिबाब, सज्जण मीत ध्यान लगाईआ। शरअ शरीअत दी वज्जदी वेखो रबाब, रबीउलसानी संग रखाईआ। चार यारी दा गुल तक्को गुलाब, गुलशन कवण महकाईआ। शरअ दा वेखो ख़ताब, ख़ता सब दी फोल फुलाईआ। शहिनशाह भूप तक्को नवाब, जो नौबत हक वजाईआ। इशारा वेखो जेहड़ा नानक मिल्या बग़दाद, बग़लगीर संग रंखाईआ। नेत्र नैण खोल्हो शताब, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। झट सुणया अनोखा राग, नाद कीती शनवाईआ। सदी चौधवीं निगह मारी ख्वाजा खिज़र आ गया आप, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। बिना अक्खरां तों करे जाप, सिफ्तां वाली सिफ्त सालाहीआ। मैं अल्ला अलाह दा वेख्या प्रताप, जो प्रतीनिध धुरदरगाहीआ। जो रसूल रसूलां करे पाक, पैग़म्बरां रंग रंगाईआ। उहदा समां आ गया (नाल) इत्फिाक, इत्फिाकीआ खेल खिलाईआ। सब नूं देण वाला नजात, लेखा पिछला रहे ना राईआ। ख्वाजा कहे नीर दा पीर मेरे कोल रिहा ना हयातेआब, आबरू नज़र कोए ना आईआ। सदी चौधवीं रो

के किहा वे बुढ्ढया खवाज्या तूं किस नूं मन्न ल्या बाप, दर किस दे आसण लाईआ। वे बुढ्ढया उठ वेख सदी चौधवीं कहे मेरी गोली दा बदल गया मिजाज, मज़ाजण हो के आपणा रूप बदलाईआ। पीले वस्त्र पहन के उहने टिक्के नूं लाए पंज बलाक, पंचम रंग रंगाईआ। ओह वेख ईसा दा की कहिंदा कलाक, टक्क टक्क आवाज़ सुणाईआ। शरअ दा शरअ नाल होणा नहीं इलहाक, ऐनलहक रिहा दृढ़ाईआ। उम्मत उम्मत दा होवे निफ़ाक, नफ़रत तक ख़लक ख़ुदाईआ। रूह बुत होए बेताब, बेसबरी विच दुहाईआ। मुहम्मद दा छुपण वाला आफ्ताब, चन्द सितार देण गवाहीआ। साचा रिहा ना कोए इन्साफ़, अदल हक ना कोए कमाईआ। ख़ता नूं करे ना कोए मुआफ़, ख़तरा वेख थांउँ थाँईंआ। मुल्लां काज़ी शेख़ मुसायक होए गुस्ताख़, रहीम रहमत ना कोए कमाईआ। परवरदिगार सांझा यार अमाम अमामा आपणी जोती धार बदल पुशाक, पोशीदा आपणा खेल खिलाईआ। हुण किसे नूं लभ्भणा नहीं मक्का मदीने वाली विच्चों महिराब, महिबूब हथ्थ किसे ना आईआ। रस रहिणा नहीं किसे लुआब, सति सच ना कोए जणाईआ। वे खवाज्या कुझ झगड़ा पैण लग्गा उत्ते चनाब, नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। सब नूं आउणा इक वैराग, वैरी घर घर लए प्रगटाईआ। सब दी खुल्हण लग्गी जाग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। मैं होर सुणया एह खेल करे शहिनशाह पातशाह महाराज, परवरदिगार सांझा यार नूर इलाहीआ। जिस ने लहिणा देणा दीन मज़्हब लूल्हे लंगड़े अपहाज, जवां मर्द मर्दान खोज खुजाईआ। ओह खेल करे इक इकल्ला एकँकारा वाहिद, वाहवा आपणा हुक्म वरताईआ। पता नहीं किधरों आ गया शायद, शाह पातशाह आपणा फेरा पाईआ। मुहम्मद किताब कढ्ढी निगह मारी नूर अलाही रब्बी पूरा वाहिदा होया लेखा लिख्या साख्यात, सख़ी सरवर आपणा हुक्म वरताईआ। जिस ने किसे दी मंगणी नहीं हमाइत, हमसाजण बेपरवाहीआ। किसे नाल करनी नहीं रयाइत, रईयत दो जहान वेखे चाँईं चाँईंआ। शरअ दी रहिण ना देवे कफाइत, कैफ़ीअत आपणी इक समझाईआ। निरवैर हो के करे इनाइत, मेहरवान महिबूब रहमत सच कमाईआ। साचे कलमे दी करे अशाइत, इशारा देवे धुरदरगाहीआ। ख्वाजा गावे इक आयत, इनाइत खुज़ले ज़मा नूरे निशा ज़लिखे ज़वा नाज़नो मर्द मज़दीअल बेमिसाल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। ख्वाजा कहे सुण चौधवीं सदी, सदके वारी घोली घोल घुमाईआ। तूं परवरदिगार अग्गे दोवें हथ्थ लैणे बद्धी, बन्दना कर के सीस निवाईआ। मेरी करनी मालक करीं ना रद्दी, तेरे हथ्थ हथ्थ वड्याईआ। साचा हुक्म दे दे यदी, यदपि आपणा हुक्म दृढ़ाईआ। शरअ निशाना देणा गड्डी, गॉड तेरा राह तकाईआ। आपणे लेखे विच ला लै आपणी नूह नदी, नदीआं तों पार तेरी दुहाईआ। जगत मुसाफ़िर भार जांदे लद्दी, भज्जण वाहो

१४१८
२२

दाहीआ। तेरे प्रेम प्यार दी सिक इक्को लग्गी, सिकम दे परे झगड़ा देणा वखाईआ। चार यारी मोढे चुक्कण लग्गी डग्गी, डोरू डंका वज्जे धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं कहे मेरे अन्दर अग्ग लग्गी, बौहड़ी बौहड़ी दयां दुहाईआ। क्यों मेरी गोली पीले वस्त्र पा के मेरे कोलों भज्जी, पल्लू गई छुडाईआ। खवाज्या समुन्दरां सागरां विच्चों जल धारा दी धार विच्चों उहनूं लभ्भीं, खोजीं चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। ख्वाजा कहे मैं उस खुदा दा गदागर, जो गर्दिश विच भवाईआ। वेखो दरो दर, दर दुआर खोज खोजाईआ। जावां घरो घर, गृह गृह फेरा पाईआ। वेखे सरोवर सर, तीर्थ तट पन्ध मुकाईआ। मसीतां मन्दिरां हुजरयां अन्दर जावां वड़, ओहला रहे ना राईआ। शिवदुआले मन्दिर मट्ठ वेखां खड़, चारों कुण्ट अक्ख उठाईआ। सदी चौधवीं तेरी गोली जिथ्थे होवे उथों ल्यावां फड़, फड़ बाहों नाल उठाईआ। चोटीआं टिल्लयां जावां चड़, पर्बत खोज खुजाईआ। जंगलां अन्दर जावां वड़, जूहां पड़दा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। ख्वाजा कहे सदी चौधवीं अज्ज सावण दा पहला प्रविष्टा, परम पुरख वेख वखाईआ। जिस नूं खुदा किहा अल्ला किहा अमाम किहा राम किहा रहीम किहा अज़ीम किहा ओह बण गया सब दा इष्टा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। मैनूं वी ओसे उत्ते निश्चा, भरोसे विच समझाईआ। पता नहीं ओह मालक किस किस दा, जिस नूं कोटन कोटि सीस निवाईआ। जे मैं निशाना वेखां श्री भगवाना वेखां नौजवाना वेखां मर्द मर्दाना वेखां शाह सुल्ताना वेखां ओह रूप आदि तों अन्त इक दा, इक दा इक नज़री आईआ। जो जुग चौकड़ी आया जितदा, जेतू बण के आपणी खेल खिलाईआ। रूप धर लए अगम्मे पिता दा, पिता पूत गुर अवतार पैग़बर आपणी गोद उठाईआ। मैनूं वी पता नहीं लग्गा उहदी थित दा, थित वार सक्या ना कोए समझाईआ। जेहड़ा सारयां दे लेखे लिखदा, लिखण तों बाहर आपणा आप रखाईआ। ओ मैं वी वणजारा बण गया उहदी हिक्क दा, छाती नाल लग्ग के आपणा झट लँघाईआ। मैं चौदां तबकां विच भज्जा फिरां पर उहदे बिना मेरा निशाना नहीं टिकदा, टिक्का मस्तक ना कोए लगाईआ। जेहड़ा वणजारा नहीं पथ्थर इट्ट दा, बेपरवाह बेपरवाह गुसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे ख्वाजा जी मेरी वी इहो ख़ाहिस, ख़ालस दयां जणाईआ। मैं वी एसे अमाम दी करदी तलाश, जेहड़ा तलाशीआं विच्चों हथ्थ किसे नाँ आईआ। जिस ने शंकर बहाया उपर कैलाश, ब्रह्मा ब्रह्म धार दृढ़ाईआ। विष्नूं विश्व बणा के शाख़, शनाख़त आपणी विच छुपाईआ। उसे दी सिफ्त उसे दी महिमा मुहम्मद गया आख, हमद विच हरूफ़ नाल मिलाईआ।

मैं इधर उधर सारे ल्या झाक, निगह निगह विच्चों उठाईआ। मैनूं सहिज नाल धुर कलमे दी आई आवाज़, जिस राज़ अन्दरों दिता खुल्हाईआ। जिस दा कलमा पढ़ें सजदा करें विच नमाज़, रोज़े रख के झट लँघाईआ। उस दा तक्को इक महिराब, जिथ्थे मुहब्बत वाला महिबूब बैठा बेनज़ीर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। ख्वाजा कहे सदी चौधवीं, असीं पहुंच गए अन्त कन्ढे, कन्ढी बैठे ध्यान लगाईआ। साडा दर्द कोए ना वंडे, संगी साथी बैठे मुख भवाईआ। पता नहीं केहड़े चंगे केहड़े मंदे, भेव सक्या ना कोए खुल्हाईआ। मैं हैरान हो गया, बेपहचान हो गया नादान हो गया, किस बिध चौदां सौ साल लँघे, लँघदयां समझ कोए ना आईआ। मैनूं इक गल याद आई जिस वेले मैनूं गोबिन्द ने आपणे कंघे दे इक्की वखाए सी दन्दे, दो इक दी धार दृढ़ाईआ। खवाज्या ओह सरसे वाले पैंडे रहिणे नहीं लम्बे, अगला पन्ध रहे ना राईआ। झगड़े रहिणे नहीं माटी चम्मे, चम्म दृष्टी देणी बदलाईआ। मुहब्बत दे जगदे (रहिणे) नहीं दान शमे, शमा गुल्ल सब दी देणी कराईआ। धुर दे मालक दे हुक्म होणे नवें, नव जोबन आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं विच सदी चौधवीं दे बदल जाणे समें, समाप्त सब ने होणा थांउँ थाँईंआ। गोली ने छड के शरअ वाले बन्ने, हद्दां तों पार डेरा देणा लाईआ। ओह लेखा पूरा होणा गोबिन्द वाले कन्ने,
१४२० काहन दा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप १४२०
२२ चुकाईआ। सदी चौधवीं कहे ख्वाजा ओह वेख मेरी गोली दा काला लिबास, काले कपड़े वाली नज़री आईआ। तक लै २२
इस नूं ख़ास, बिना अक्खां अक्ख उठाईआ। इस ने भर के पाणी दे पंज ग्लास, आबेहयात दिता मुकाईआ। मस्तक टिक्का पा के बणी चलाक, चलाकी आपणी दिती दृढ़ाईआ। नाले हस्स के किहा पैग़म्बरो पीरो मैनूं मिल गया इक खुदा खुदा दा नूर पाक, नूर नूर इलाहीआ। ख़बरदार जे कोई मेरे वल्ल सक्या झाक, चौदां तबकां विच तुहाडा लेखा दए मुकाईआ। मुहम्मदा तेरी ते तेरी मुहम्मदी उम्मत दी उडणी ख़ाक, ख़ाक ख़ाक नाल रलाईआ। गोबिन्द ने गोबिन्द दा खोल्हणा ताक, पड़दा पड़दयां विच्चों चुकाईआ। मैं नाता तोड़ ल्या तेरी उम्मत होई बदमाश, बोदी दा झगड़ा ल्या मुकाईआ। मेरी सतिजुग दी बलि दवारे दी पूरी होई ख़्वाहिश, ख़्वाहिश पिछली लेखे लाईआ। नानक ने मन्न लई आस, बाली बुध मिली वड्याईआ। हुण उस दा मिल गया साथ, जो साथी धुरदरगाहीआ। याद कर लै मैं चौदां साल होर सब दी लिख देणी गाथ, ओह सारयां दीआं पिछलीआं गठड़ीआं बन्ह के मोढ्यां उत्ते देणीआं टिकाईआ। ख्वाजा कहे सदी चौधवीं अज्ज सारा दिन मैं वी रिहा उदास, उदासी विच आपणा वक्त लँघाईआ। खुदा अग्गे करदा रिहा अरदास, बेनंत बेनन्ती इक सुणाईआ। ऐ मालक

ऐ ख़ालक ऐ प्रितपालक नूरी अलाह, सच दी गोली कि पंज तत दी लाश, की जगत खेल खिलाईआ। झट हुक्म होया मेरा खेल ज्यों पत्ता ताश, ताशकंद दा लेखा हिन्दू मुस्लिम दोहां नूं देवे लड़ाईआ। फेर साहिब दा होवे प्रकाश, प्रकाश सृष्टी दृष्टी अन्दर तके चाँईं चाँईंआ। सब दी पूरी करनी ख़ाहिश, निरासा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। उम्मत आशा कहे मेरा अन्तर धड़के, धीरज धीर ना कोए धराईआ। मैं लेखे सारे आई पढ़ के, अक्खर अक्खर फोल फुलाईआ। सब नूं महिबूब मिलदा मर के, मरयां हथ्थ ना किछ रखाईआ। मैं डिग्गी धरनी उत्ते दड़ के, आपणा आप सुटाईआ। क्यों मैं अज्ज सवा पहर हुक्म सुणदी रही तड़के, जो मातलोक विच्चों शब्दी धार दए धुरदरगाहीआ। मैनूं हूंगरां विच वजदे रहे कड़के, मेरी हौक्यां विच दुहाईआ। मैं मर गई बिरहों विच सड़ के, दरोही तेरा नाम खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। ख्वाजा कहे कमलीए मेरा पूरा होवे खुआब, सदी चौधवीं तैनूं दयां सुणाईआ। मैं झुक झुक करां आदाब, सजदा सीस सीस निवाईआ। जे लेखा पूरा होवे हिसाब, लहिणा अवर रहे ना राईआ। की होया जे तेरी गोली दा बदल गया मिज़ाज, आपणा आप गई बदलाईआ। उस ने गाणा गाया नाल रबाब, तूम्बी तन्द सितार हिलाईआ। लहिणा पूरा हो गया जो लेखा लिख्या बिना किताब, अलिफ़ ये जिस नूं सके ना कोए समझाईआ। हुण इक्को मन्नणा पैणा नवाब, नूर नुराना नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सावण कहे मैं चढ़ गया लोकमाती, मातृ भूमि वाल्यो दयां जणाईआ। सारे अन्दर वेखो मार के झाती, बिन नैणां नैण उठाईआ। अन्दरों पड़दा खोल्हो बजर कपाटी, नव दर दा डेरा ढाहीआ। अमृत रस लओ बूँद स्वांती, निजर झिरना इक टपकाईआ। अंधेरे गृह जलाउ बाती, निज घर होवे रुशनाईआ। आत्मा धार तक्को इकांती, निरवैर रंग वखाईआ। दरस करो कमलापाती, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। बाहर रखो कोई ना आसी, खोज्जयां हथ्थ किछ ना आईआ। इक्को मेरा होवे परम पुरख पुरख अबिनाशी, जो अबिनाशी करता धुरदरगाहीआ। जिस दी ब्रह्मण्ड खण्ड पैंदी रासी, मण्डल आपणा खेल खिलाईआ। सो रूप अनूप धरे कलयुग घनकपुर वासी, अकल कलधारी आपणी कल धराईआ। हरिजन हरिभगत गुरमुख गुरसिख सूफ़ी सन्त फ़कीर आपणी लेखे लावो राती, रुतड़ी प्रभ दे नाल महकाईआ। तुहाडा मालक तुहानूं लगावे आपणी नाल छाती, छत्रधारी हो के वेख वखाईआ। सारे आत्म धार दे बणिओ जमाती, ब्रह्म विद्या लैणी अपणाईआ। सदी चौधवीं चारों कुण्ट दीन दुनी होणी फ़सादी, झगड़ा सके ना कोए मुकाईआ। शरअ दी शरअ करे ना कोए इमदादी,

संगी संग ना कोए रखाईआ। हुण ओहला लुक काहदी, वेला वक्त दए गवाहीआ। नौ खण्ड पृथ्मी ग़मी दी घर घर होणी शादी, शादिआने लाड़ी मौत वजाईआ। सतिगुर शब्द धार दी होवे बाज़ी, बाज़ां वाला आपणा हुक्म वरताईआ। सम्बल विच बहि गया आ के पुरख अनाद आदी, आदि पुरख आपणा डेरा लाईआ। जिस ने दीन दुनी वेखणी बाग़ी, बगीचा तके ख़लक खुदाईआ। जन भगतां अन्तर निरन्तर मन कल्पणा देवे साधी, सतिगुर हो के होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दा हुक्म नाम कलमा इक करे अहिलादी, अल्ला वाहिगुरु इक्को धार जणाईआ।

✪ ३ सावण शहिनशाही सम्मत ७ सुभागवन्ती दे गृह पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

ख्वाजा कहे मैं दिवस रैण घुंमदा, घुंमण घेरी वेखां जगत लोकाईआ। आब जल मेरे चरण चुम्मणा, लहर लहर नाल सीस निवाईआ। मैं खेल तकदा एकँकार ओम दा, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। ध्यान धरां सरगुण धार दोइम दा, जो दुतीआ भाउ दए चुकाईआ। खेल तकणा त्रैलोकी नाथ तों परे सोइम दा, सो आपणी कार कमाईआ। संदेशा सुणया मदन मोहन दा, मोहे आपणा हुक्म सुणाईआ। बौहड़ी हुण वेला वक्त आ गया सदी चौधवीं रोइण दा, उम्मत नबी ध्यान लगाईआ। रस देवे कोए ना मिठ्ठा आबेहयात चोइण दा, चोल्यां रंग ना कोए रंगाईआ। प्रकाश रिहा ना किसे लोयण दा, लोचण नैण रहे कुरलाईआ। वेला आया कलयुग ग़फ्लत गूढ़ी नींद सोइण दा, सावण माह दए गवाहीआ। मुहब्बत मुक गया ठंडी पौण दा, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। मैनूं साका याद आ गया रावण राउण दा, की रामा कार कमाईआ। निशाना दिस प्या कौरव पांडव मुकाउण दा, यादव यदी की कार कमाईआ। कलयुग वेला अन्त दिसया दीन दुनी हिलाउण दा, हुलारा इक वखाईआ। समां आ गया पिछली कीती ढाउण दा, अग्गे आपणी कार कमाईआ। जन भगत सुहेले उजड़े वसाउण दा, गृह मन्दिर आप टिकाईआ। कलयुग कूड़ क्रिया खपाउण दा, खप्पर काली हथ्थ फड़ाईआ। वक्त सुहेला होया गुरमुख तराउण दा, तारनहार दया कमाईआ। समां आ गया सन्त बचाउण दा, सच सुहेले गोद टिकाईआ। लेखा पूरा होया धरनी धरत धवल हिसाब चुकाउण दा, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। वक्त आ गया कलयुग अंधेर मिटाउण दा, मिट्टी ख़ाक नाल मिलाईआ। ख्वाजा कहे समां आ गया सोहँ ढोला गाउण दा, तूं मेरा मैं तेरा नाम ध्याईआ। इक्को ख़ालक ख़लक इष्ट देव मनाउण दा, दृष्ट इक्को इक जणाईआ। वेला हो गया जोती शमां जगाउण दा, शबे रोज़ करे रुशनाईआ। वक्त

सुहञ्जणा नूरी चन्द चमकाउण दा, चन्द सितार सीस झुकाईआ। वक्त सुहेला बेड़ा पार कराउण दा, नबी नूह अक्ख खुल्हाईआ। कदीम दा कदम अग्गे टिकाउण दा, कादर कुदरत पड़दा लाहीआ। सब दा दवारा इक्को होणा सीस झुकाउण दा, वक्खरी धार ना कोए बणाईआ। लेखा इक्को होणा सरोवर नहाउण दा, अठसठ दा पन्ध मुकाईआ। परवरदिगार नूर अलाही मेल होणा इक्को दर्शन पाउण दा, पवण पाणी संग बणाईआ। मुहम्मद लेखा पूरा होणा मकबरयां विच्चों रूहां जुआउण दा, बुतख़ाने वेख वखाईआ। उम्मत आशा आया पछताउण दा, पश्चाताप विच कुरलाईआ। वक्त सुहावा कलयुग सतिजुग बदलाउण दा, बदली करे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, खेल करे इक्को विश्व रंग रंगाउण दा, रंगत रंगली आप चढ़ाईआ।

✪ ५ सावण शहिनशाही सम्मत ७ जुगिन्दर कौर तरिपत दे नवित हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

सतिगुर शब्द सावण कहे मेरे उत्ते सतिगुर शब्द ने लाया पंजा, पंज पंज नाल वड्याईआ। जेहड़ा खेल बाकी द्वापर वाला संजा, सो साहिब वेख वखाईआ। कोई समझे ना माढ़ा चंगा, भेव भेद ना कोए दृढ़ाईआ। जिस दा अरसा बड़ा सी लम्बां, गया पन्ध मुकाईआ। सो स्वामी बणे संगा, सगला खेल खिलाईआ। आया कलूकाल दा कन्ढा, अन्तिम वेस वटाईआ। नाले सतिगुर शब्द नाले फिरे उत्ते दो टंगा, दोहरी आपणी कार कमाईआ। नाले सति सरूप नाले लुच्चा लंडा, जगत वासना संग रखाईआ। नाले प्रेम प्यार बख्शंदा नाले कूड़ी क्रिया कराउंदा (दंगा), निरगुण सरगुण आपणा रंग रंगाईआ। नाले स्वामी बणे नाले बणे मंदा, मंद भागहीण अख्वाईआ। नाले अमृत रस देवे अनन्दा, नाले हउमे गढ़ जणाईआ। नाले सति सरूप बणे पंडा, नाले जगत जिज्ञासू वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पंचम सावण कहे इहो जिहे सतिगुर दा भन्न दयो नंक, जो नक्क दी लाज ना सके बचाईआ। इहो जेहा अन्दर रहे ना शक, जेहड़ा शिकवे ना सके मिटाईआ। इस वल्ल कदे ना लओ तक, जेहड़ा अन्दरों ना करे सफ़ाईआ। मूर्ख कहि दयो झट, मन दे नाल गवाहीआ। जे सतिगुर रूप सति फेर सति कहि के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। पंज सावण कहे जेहड़ा सतिगुर दा होवे सरीर, पुरज़े पुरज़े दयो कटाईआ। क्यों जिस दे शब्द दी झूठी होवे तकरीर, तहरीर दी लोड़ ना कोए वखाईआ। नौ वार कबीर नूं दिता सी शब्द आरे चीर, तन मन वक्ख वक्ख कराईआ। फेर ना होया

दिलगीर, निउँ के सीस झुकाईआ। कढ के नक्क नाल लकीर, नैणां नीर वहाईआ। बख्श मेरी तकसीर, तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। पंज सावण कहे मेरा दिन बड़ा चंगा कमाल, चण्डका रूप बणाईआ। एसे दिन गोबिन्द ने पुरख अकाल नूं भेंटा कीते सी लाल, लाल आपणा आप कराईआ। सारा दिन रिहा सी बेहाल, ओट इक अकाल तकाईआ। बिन तेरी किरपा दूजा दिसे कोए ना नाल, संगी संग ना कोए वखाईआ। जो उपज्या सो बिनसै खा जाए जम काल, निशाना रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पंज सावण कहे मेरे दिन गोबिन्द आसा रखी सी प्रगट करना पन्थ, मार्ग बेपरवाहीआ। मेरे दिन अष्टभुज ने वजाया सी संख, असंखा संख सुणाईआ। मेरे दिन सन्त कुमार नूं ज्ञान दिता सी हँस, हँसा रूप वटाईआ। मेरे दिन जगत त्यागण दी आसा रखी सी राम रघुबंस, रघुपति आपणी कार कमाईआ। मेरे दिन काहन ने विचार कीता सी दुष्ट मारना कंस, हँकारी देणा मिटाईआ। मेरे दिन मूसा नूर देख्या नूरी बार अनक, अनक बार रुशनाईआ। मेरे दिन ईसा योहना दा मिटाया शंक, मिल के वज्जी वधाईआ। मेरे दिन मुहम्मद ने रस वेख्या कामनी कनक, दोवें रंग रंगाईआ। पंज सावण कहे मेरे दिन नानक सचखण्ड दा दवारा तक्कया बंक, दवारा इक्को सोभा पाईआ। गोबिन्द ने कमान नूं लाई तनक, चिल्ल्हा हथ्थ उठाईआ। मेरे दिन जोती जामा बदलणा शेर सिँघ ने आशा रखी सी पुरी घनक, घनक घनक खेल खिलाईआ। मेरे दिन लेखा हुन्दा विच जन्नत, बहिशतां गणत गिणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। पंज सावण कहे गोबिन्द ने मेरे दिन शुरू कीते सी बाई ग्रन्थ, भविक्ख्त विच वड्याईआ। शब्दी धार बणाई बणत, धुर दा जोड़ जुड़ाईआ। लेखा रख्या सरसा अन्त, सहिज नाल समझाईआ। जिस वेले मेरे नाल आया मेरा भगवन्त, भगवन फेरा पाईआ। इक्को नाम प्रगट करांगा मणीआ मंत, मंतव सब दा हल कराईआ। बहुत कर के जीव जंत, लख चुरासी करां पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पंज सावण कहे गोबिन्द ने कीती इक अरदास, बेनन्ती सच सुणाईआ। पुरख अकाल किहा शाबाश, तेरे हथ्थ वड्याईआ। जिस वेले मेरा नूर होया प्रकाश जोती जोत डगमगाईआ। तेरी पूरी होवे आस, तृष्ना रहे ना राईआ। ज़रूर सम्मत शहिनशाही सत्त पंचम सावण साचे ग्रन्थां दा होएगा प्रकाश, प्रकाश जगत विच बणाईआ। पढ़े जाणगे दिवस रात, इकाहठ इकाहठ मिन्ट वंड वंडाईआ। पंज प्यारे लैणगे वाच, पंज दरबारी पढ़न चाँईं चाँईंआ। पंजां लिखारीआं दा सदा होवे साथ, सगला संग बणाईआ। गोबिन्द

१४२४
२२

हस्स के किहा पुरख अकाल उस वेले की होवणगे हालात, हालत दे दृढ़ाईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द ना मज़्ब रहे ना ज़ात, दीन रंग ना कोए रंगाईआ। शंकर भज्जा फिरे उत्ते कैलाश ब्रह्मा वेखे अक्ख उठाईआ। विष्नूं तके खेल तमाश, अवतार पैग़म्बर गुरु संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। गोबिन्द कहे पंज सावण दा एह दिहाढ़ा, सोहणा रूप बदलाईआ। भगत भगवान लग्गे अखाड़ां, वज्जे हक वधाईआ। सीस तों नन्गा होवे धुर दा लाड़ा, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। आपणा लै के आपणे हथ्थ दस्तारा, दस्त दस्त नाल बंधाईआ। इहनूं दोहरा करे इक्को वारा, वारता आपणी इक दरसाईआ। जिस दा भेव जाणे ना कोए संसार, संसारी भण्डारी सँघारी बैठण ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे ओह केहड़ा वक्त सुहञ्जणा, हरि सच सच दे दृढ़ाईआ। पुरख अकाल किहा पहलों कर अगम्मी बन्दना, बिना बन्दना सीस झुकाईआ । जिस वेले कलयुग वेला वंञणा, जगत दे नाम वञ्झ मुहाणे कम्म किसे ना आईआ। ना कोई डण्डावत रहे ना कोई रहे बन्दना, बन्दगी विच सारे देण दुहाईआ। उस वेले सतिगुर शब्द सार शब्द दी धारों जम्मणा, जम्मणवाली कोए ना माईआ। सब दे वरंट लै के आवे संमणा, समें नाल आपणा फेरा पाईआ।

जगत जहान अनोखा करे कम्मना, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पंज सावण कहे धर्म धार दे ग्रन्थां दा होणा प्रकाश, प्रकाश प्रभ जोत रुशनाईआ। अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं बख़्शणा विश्वास, विशा धर्म दा इक दृढ़ाईआ। दीन मज़्ब दी रहिणी नहीं कोई शाख़, हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। धर्म दे मण्डल इक्को पैणी रास, गोपी काहन इक्को खेल खिलाईआ। भगत दवारे भगवन खेल करना आप, आपणी दया कमाईआ। सब दा लेखे लुाउणा जाप, जगजीवण दाता होए सहाईआ। जन भगतां रखे सिर दे कर हाथ, पुश्त पनाह आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे इक सत्त मिन्ट रोज़ होएगा पाठ, सुबह शाम खुशी बणाईआ। प्रेम सागर मारेगा ठाठ, उछाला देवे धुरदरगाहीआ। धर्म धार दा खुल्ल्हेगा हाट, हट्ट हटवाणा इक जणाईआ। नाम कंजूसी दी खुल्ल्हेगी गाठ, गड्डड़ी धुर दी फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पंज सावण कहे प्रभ तूं मेरी पुकार सुणी, मेहरवान दया कमाईआ। तूं दाता वड गहर गम्भीर गुणी, गुणवन्त अख्वाईआ। तेरे शब्द दी दो जहान सुणदी धुनी, धुन आत्मक राग अलाहीआ। लख चुरासी तेरे दर ते निक्की जेही मुन्नी, आत्मा परमात्मा

नज़री आईआ। मेहरवान महिबूब प्रेम लिखारीआं तृप्त जिन्दर इक इक बख्श दे चुन्नी, पगड़ी सीस वाली सुहाईआ। सतिगुर शब्द बणाए मुनी, मुनीश्र आपणा रंग रंगाईआ। जेहड़ा लेख लिख्या सम्मत विच उन्नी, सो पूरा देणा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पंज सावण कहे बारां वज्जण तों पहलां पहले ग्रन्थ दा प्रभ चरणां विच ज़रूर होवे प्रकाश, प्रकाशवान दया देणी कमाईआ। नाल जल दा भर गिलास, चरणामत लैणा बणाईआ। इक्की वार सब ने सोहँ कहिणा स्वास स्वास, अन्दरे अन्दर गाईआ। पतिपरमेश्वर आपणा कारज आपे करे रास, रस्ता जगत वाला वखाईआ। सावण पंज तेरा प्रभ तेरे विच होवे वास, वास्ता विश्व नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ग्रन्थ पन्थ आपे पुछे वात, वास्तक आपणा खेल खिलाईआ।

पंज सावण कहे पगड़ी दे टुक्कड़े होए दो, दो जहान वेख वखाईआ। पर्दा लाहया परम पुरख सो, सो पुरख निजंण आपणी दया कमाईआ। निरगुण सरगुण धारा आपे हो, होका दिता धुरदरगाहीआ। जगत जहान साचे नेत्र तक्को लो, लोयण भगतां अक्ख खुल्हाईआ। जगत माया विच्चों कर निरमोह, मुहब्बत आपणे नाल रखाईआ। कूड़ क्रिया वासना खोह, नाम भण्डारा वस्त वरताईआ। पंच विकार मेटे गरोह, गुरु गुरदेव स्वामी हो सहाईआ। जिस दा भेव ना जाणे को, करता आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पगड़ी कहे मेरे दो बण गए लीड़े, अध विच्चों वंड वंडाईआ। जिस धार गोबिन्द ने खण्डे चुक्के सी बीड़े, बीड़ा आपणे दस्त उठाईआ। उस वेले शब्दी धार पहन कलीरे, कल्गी वाला आपणी कल वरताईआ। योधा बण के सूरबीरे, बीर रस आपणा आप प्रगटाईआ। फेर मुखी फड़ के तीरे, ज़िमीं असमान वल्ल खिचाईआ। फेर कढ के नोक नाल लकीरे, लाईन इक्को इक जणाईआ। फेर वेख दीन दुनी तकदीरे, तदबीर आपणे हथ्थ वखाईआ। रविदास दा वेख कसीरे, कंगण हथ्थ वाला छणकाईआ। जिस वेले सति धर्म दे सीस रहिणे नहीं चीरे, जगत दस्तार ना कोए वड्याईआ। माण रहिणा नहीं पैग़म्बर पीरे, परा पसन्ती मद्धम बैखरी रोवे मारे धाईआ। नेत्र रोवण अट्ठ सट्ठ नीरे, नर नरायण ना कोए सहाईआ। झगड़ा पवे धरनी मिलख जगीरे, दीन दुनी सर्ब कुरलाईआ। उस वेले प्रभ ने प्रगट करने गुरमुख हीरे, रत्न अमोलक आप प्रगटाईआ। रस बख्शणा शब्द खण्डा धार शमशीरे, शमा नूर जोत कर रुशनाईआ। सब दी बदल देणी ज़मीरे, ज़िमीं असमान होए सहाईआ। खेल करे

धीरे धीरे, धर्म दी धार इक वखाईआ। जिस वेले भैणां तों विछड़ने वीरे, वीर भैणां संग मिलाईआ। हरदेव सिँघ दे नौ अस्सू नूं दिन अख़ीर सी भीड़े, भीड़ी गली विच्चों बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। किरपा करे शाह पातशाह शहिनशान गुणी गहीरे, गहर गवर आपणी कार कमाईआ। जेहड़े जगत धार विच भैण भ्रा प्यार विच नेत्र वगणे सी नीरे, साह साह विच दुहाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी कृपानिधान लेखा जाण अन्त अख़ीरे, आख़र आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। दुपट्टे कहिण असीं होए दोपट, सतिगुर पूरे पटने धार दिती वड्याईआ। जिस दा रहमतां दा खुल्ह्आ रहिणा हट्ट, पंज सावण दए गवाहीआ। मेहरवान हो के किरपा करे झट, झटका आपणा नाम लगाईआ। नौ साल नौ महीने हरदेव ने अन्तर नौ वार नाम दी लाई सी रट, प्रेम प्यार विच लगाईआ। उसे दे लेखे कारन अन्त जम की फाँसी दिती कट, कटाक्ष इक्को नाम रखाईआ। मेहरवान सिर आपणा रख हथ्थ, समरथ होए आप सहाईआ। भैण भ्रावां रखे पत, पतिपरमेश्वर आपणा रंग रंगाईआ। जुगिन्दर कौर तृप्त चिट्टे वस्त्र पहनणे दिन सत्त, जगत विहार विच भुल्ल ना जाईआ। एसे धार विच प्यार विच संसार विच जीव आत्मा रहे बच, बचपन प्रभ आपणे रंग रंगाईआ। भज्जण ना देवे काया माटी कच्च, भैणां पिच्छे भईआ लए तराईआ। पंज सावण कहे मैं
१४२७ संदेशा पहलों दिता सी दस्स, बेख़बरां ख़बर जणाईआ। कवण जाणे खेल पुरख समरथ, की करता कार कमाईआ। पगड़ी १४२७
२२ कहे मैं सिर ते चढ़ गई झट, झपट आपणी इक लगाईआ। जिन्ह्नां दी साहिब स्वामी अन्तरजामी रखणी पत, पतिपरमेश्वर २२
होए सहाईआ। लेखे ला के रतड़ी रत्त, रुत आपणे नाल महकाईआ। हरिसंगत हरि जू नाता जुड़या रहे ब्रह्म धार तत्व तत, पारब्रह्म आपणा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, ज्यों भावे त्यों लए रख, रखणहार आपणी दया कमाईआ।

पंज सावण कहे मैं दस्सां ठीक, सति सच सच सति समझाईआ। इक्की सावण नूं नाज़र सिँघ प्रशाद कराउणा सिँघ जगजीत, जिस दा जन्म अगला दए बणाईआ। पिच्छे दा लेखा पिच्छे गया बीत, अग्गे सतिगुर सतिगुरु सति आपणे घर दए वड्याईआ। चरण बख़्श के चरण प्रीत, प्रीतम आपणा संग वखाईआ। अग्गे दा लेखा अग्गे दी रीत, रीतीवान दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ।

✪ १० सावण शहिनशाही सम्मत ७ अजीत सिंघ बटाला दी बेनन्ती करन ते हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

पुरख अकाल कहे उठ विष्नूं जगत भण्डारी, पारब्रह्म प्रभ दया कमाईआ। क्यों सृष्टी दृष्टी अन्दर होई दुख्यारी, दुनी रोवे मारे धाईआ। जगत भुक्ख ने करी ख्वारी, सांतक सति ना कोए वरताईआ। धर्म दी मिले ना कोए सिक्दारी, सच रंग ना कोए रंगाईआ। चारों कुण्ट धूंआँधारी, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। सच नाम दा बणे ना कोए पुजारी, पूजा पाहन करे लोकाईआ। निगह मार वड संसारी, ब्रह्मे आपणी अक्ख खुल्हाईआ। निर्मल जोत ना कोए उज्यारी, आत्म ब्रह्म ना वज्जे वधाईआ। शंकर नेत्र नैण वेख उग्घाड़ी, भोलेनाथ लै अंगड़ाईआ। चारों कुण्ट रैण अंधेरी काली, कलयुग आपणी कल वरताईआ। दीपक सोहे ना किसे गगन मण्डल थाली, रवि ससि ना कोए नूर रुशनाईआ। सच प्यार दी करे ना कोए दलाली, विचोला नज़र कोए ना आईआ। शरअ रही ना हक हलाली, हकीकत पर्दा ना कोए उठाईआ। कलयुग अन्त मेरे दर ते होए सवाली, जन भगत आपणी आस रखाईआ। सानूं वस्त चाहीदी नहीं बाहली, बहुती कम्म किसे ना आईआ। इतनी बख्श जिस नाल साडी ज़िंदगी रहे सुखाली, सुख विच तेरा ध्यान लगाईआ। मस्तक सतिगुर शब्द तेरी चढ़ी रहे लाली, लाल अनमुलड़े आपणे लै प्रगटाईआ। तेरा नूर जोत तक्कीए अकाली, अकल कलधारी तेरा दर्शन पाईआ। गुरमुखां भण्डारा रहे ना ख़ाली, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। कूड़ी क्रिया लहिणा देणा मुकाउणा जाहली, जंजाल त्रैगुण माया तोड़ तुड़ाईआ। सच दवारयों जाए कोए ना ख़ाली, भिक्खया अगम्म देणी वरताईआ। ख़ुशीआं विच जन भगत सुहेले घर घर वजावण ताली, ताल आपणा आप बणाईआ। पिछली कर्मां दी कीती कमाई खा लई, अग्गे मेहर नज़र नाल दया देणी कमाईआ। फल लगाउणा काया डाली, पत्त टहिणी आप महकाईआ। जिन्हां तेरी तुक प्रभू तूं मेरा मैं तेरा गा लई, गा गा आपणी ख़ुशी बणाईआ। उन्हां पिच्छे रुक्खी सुक्खी बथेरी खा लई, ख़ालक ख़लक वेखणा थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। विष्नूं कहे प्रभू मेरी इक डण्डावत, बन्दना विच सीस निवाईआ। तेरयां भगतां सच भण्डार दी बख़्शां न्यामत, वस्त धुर दी इक वरताईआ। जिस दे नाल ख़ुशी रहिण सही सलामत, दु:ख भुक्ख ना लागे राईआ। कूड़ क्रिया करां ममानत, मनसा मन दी दयां बदलाईआ। सच सरूप दृढ़ावां सही सलामत, साहिब सुल्तान तेरी सरनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मिटावां क्यामत, कलमा नाम इक सुणाईआ। सति सच दी बख्श दिआनत, धर्म दी धार इक वखाईआ। जेहड़ा तेरे भगतां दा भण्डारा मेरे कोल चार जुग दी अमानत, सो अग्गे भगतां

दयां वरताईआ। तृष्ना भुक्ख दी रहिण ना देवां अलामत, इलम आलमां बाहर करां पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। पुरख अकाल कहे विष्नूं वेख आपणी विश्व धार, विषयां तों बाहर जणाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों मैं भगत सुहेले कीते त्यार, त्रैगुण अतीते हो के दया कमाईआ। आत्म परमात्म दे अधार, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेलया सहिज सुभाईआ। जगत तृष्ना भुक्ख निवार, कूड़ कल्पना दिती मिटाईआ। एह मंज़ल चढ़ गए पीर पैग़म्बर गुर अवतार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे मेरा ध्यान लगाईआ। इहनां बख़्शणा सति भण्डार, सति सच देणा वरताईआ। जगत भुक्ख विच रहे ना कोए दुख्यार, दुखियां दुःख देणा गंवाईआ। वस्तू वस्त दे लग्गे रहिण अम्बार, ज़िमीं असमान वज्जे वधाईआ। फेर मेरा तकणा नूरी जोत दीदार, दरस परस के हरस मिटाईआ। मेरा खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर रिहा जणाईआ। मैं भगतां दा सदा सेवादार, सेवक हो के सेव कमाईआ। दर वेरवा नहीं पुरख नार, नारी पुरख इक्को रंग रंगाईआ। जो सन्त सुहेले मस्तक धूढ़ी लाउंदे रहे छार, शहिनशाह हो के होवां सहाईआ। जगत जहान जीवण जुगती मंज़ल करां पार, पारब्रह्म हो के ब्रह्म आपणा मेल मिलाईआ। सचखण्ड लै जावां शब्दी शब्द बख्श के धार, जोती जोत विच मिलाईआ। कलि कल्की निरगुण धार लै अवतार, जोती जाता वेस वटाईआ। साचे भगत मंगण जायण ना किसे दवार, दर दरवेशा रूप वखाईआ। उन्हां सदा सदा भण्डारा भरया रहे घरबार, अतोट अतुट वरताईआ। ग़रीब निमाणयां देणी पैज संवार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लोकमात धरनी धरत धवल धौल उत्ते पाउणी सार, महासार्थी हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहार सच्ची सरकार, शाह पातशाह शहिनशाह एकँकार इक अख्वाईआ।

१४२६
२२

✪ १३ सावण शहिनशाही सम्मत ७ आत्मा सिंघ, फौजा सिंघ, प्यारा सिंघ, दरबारा सिंघ, जीवण सिंघ, दर्शन सिंघ, किशन सिंघ, प्रीतम कौर मैणीआं गुरदयाल सिंघ, जगीर कौर, हरभजन सिंघ, गुरमेज कौर मक्खण विंडी तारा सिँघ अमृतसर शहर, पिण्ड मलूवाल ज़िला अमृतसर ✪

पगड़ी कहे मैं जुग जुग वेखे नार मर्द, स्त्री पुरुष ध्यान लगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वन्डया किसे नहीं दर्द, दुखियां दुःख ना कोए गंवाईआ। चार वरन अठारां बरन दीन मज़्हब दी छुरी वेख करद, कज़ा कसाई रूप दरसाईआ।

आत्म परमात्म सुणी किसे नहीं अर्ज़, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। निरगुण सरगुण मैं वेखदी रही फ़रद, लख चुरासी ध्यान लगाईआ। निगह पाउंदी रही उपर धरत, धरनी धवल धौल अक्ख उठाईआ। सदा सदा सद लाउंदी रही शर्त, शरअ शरअ नाल बदलाईआ। राह तकदी रही जिस वेले आवे वाली अर्श, अर्श दा मालक नूर इलाहीआ। मेहरवान महिबूब किरपा करे उत्ते फ़र्श, फ़ैसला आपणा हक सुणाईआ। जन भगतां उत्ते करे तरस, रहमत रहीम आपणी आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पगड़ी कहे मैं तकदी निरगुण सरगुण दो जहानां, ब्रह्मण्ड खण्ड ध्यान लगाईआ। की खेल करे श्री भगवाना, पारब्रह्म प्रभ आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर जन भगतां किस बिध देवे माणा, अभिमान अन्दरों दूर कराईआ। सतिजुग दा सच प्रगटा निशाना, प्रगट आपणी कल वरताईआ। बख्शिश दे के नाम गुणनिधाना, गहर गम्भीर होए सहाईआ। ग़रीब निमाणयां आपणे दर कर परवाना, परम पुरख आपणे रंग रंगाईआ। योधा सूरबीर बण मर्द मर्दाना, शाह पातशाह शहिनशाह आपणा खेल खिलाईआ। लेखा जाणे बिरध बाल नौजवाना, जोबनवन्त धुर दा माहीआ। जो कलयुग अन्तिम जोती जोत पहर के जामा, वेस अवल्लड़ा इक वटाईआ। जिस नूं झुकदे सीता राम राधा कृष्न कान्हा निउँ निउँ लागण पाईंआ। पैग़म्बर सजदयां विच करन सलामा, सुल्हकुल नूर इलाहीआ। गुर गुरदेव मन्त्र गावण सतिनामा, नाम निधाना शब्द शब्द शनवाईआ। सो खेल करे वड अमामा, अमन दा मालक इक अख्वाईआ। शरअ ज़ंजीर तोड़ के आज़ाद करे ग़ुलामा, ग़ुरबत दा लेखा दए मुकाईआ। संदेशा दे के सति पैग़ामा, पारब्रह्म प्रभ आपणा हुक्म वरताईआ। निज आत्म हो के अन्तरजामा, अन्तर निरन्तर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पगड़ी कहे मैं जुग जुग सीस रही बज्झदी, लोकमात वड्याईआ। मैं ख़बर दस्सां अज्ज दी, संदेशा देवां धुरदरगाहीआ। हुण हद्द मुकणी काअब्यां वाले हज्ज दी, महिराबां विच ना कोए वड्याईआ। सदी चौधवीं वेखो नन्गी पैरीं भज्जदी, मंज़ल पैंडा पन्ध मुकाईआ। जिस दी आयू जांदी लँघदी, समां समें नाल बदलाईआ। मैं कथा कहाणी दस्सां पुरी अनन्द दी, जो गोबिन्द गोबिन्द गया दृढ़ाईआ। जिस वेले धार दिसणी नहीं किसे सचखण्ड दी, खण्डा खड़ग ना कोए वड्याईआ। सहायता करे ना कोए जेरज अंड दी, उत्भुज सेत्ज मेल ना कोए मिलाईआ। बन्दगी रहिणी नहीं बन्द बन्द दी, बन्दना विच सीस ना कोए निवाईआ। मुहब्बत रहिणी नहीं गुजरी चन्द दी, चन्द चांदना दए गवाहीआ। मेरी मनसा पूरी उमंग दी, सच सच समझाईआ। शरअ मेटणी दूई द्वैती कंध दी, भाण्डा भरम देणा भनाईआ। मनसा रहे ना कूड़ी गंद दी, तृष्ना मोह देणा मिटाईआ। इक्को ओट होवे

पुरख अकाल तेरे छन्द दी, तूं मेरा मैं तेरा ढोला लैणा गाईआ। जन भगतां आत्म रंगी होवे तेरे रंग दी, रंग चलूल इक चढ़ाईआ। बाकी सृष्टी राह तकदी होवे जंग दी, जगह जगह पए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। पगड़ी कहे मैं तके गोशे कोने, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। जटा जूट धार मौले, तत्व तत फोल फुलाईआ। ज़ेवर ज़र वेखे चांदी सोने, कंचन तके थांउँ थाँईआ। मैं वेखे अक्ख नेत्र लोचन लोइने, पर्दे परदयां विच्चों उठाईआ। जगत रूप अनूप तके सोहणे, तन माटी ख़ाक नाल सुहाईआ। रसना जेहवा राग तके गाउणे, सिफ्तां विच सालाहीआ। कूड़ क्रिया दी धार तके अणहोणे, कलयुग अनडिठड़ी कार कमाईआ। प्रभू बिन तेरी किरपा तेरे शब्द सिंघासण मूल ना सौणे, दरगाह सच ना कोए सुहाईआ। जिधर तकां घर घर पए रोणे, नेत्र नीर कूड़ जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। पगड़ी कहे मैं दीन दुनी दी धार वेखी टुट्टी, टुटयां गंढ ना कोए पवाईआ। सच दी सच वस्त गई लुट्टी, कूड़ क्रिया जगत हथ्थ वड्याईआ। मैं अंगड़ाई लै के उठी चारों कुण्ट ध्यान रखाईआ। बिना भगतां तों दिसे कोई ना सुखी, सुख सागर विच ना कोए समाईआ। जेहड़े तेरा भाणा मन्नदे खा के रुक्खी सुक्खी, उहनां नाल तेरी गंढ धुर दी नज़री आईआ। पोशीदा गल्ल रही ना लुकी, ओहला विच ना कोए वखाईआ। जिन्हां तेरा नाम जपया दो तुकी, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। उन्हां उज्जल करना मुखी, दुरमति मैल देणी धुआईआ। आत्म धार करके सुच्ची, सति पुरख आपणे नाल लैणी मिलाईआ। सचखण्ड दी मंज़ल दे के उच्ची, उच्च अगम्म अथाह आपणे गृह लैणा टिकाईआ। पगड़ी कहे मैं बेनन्ती करदी रुक्खी रुक्खी, जन भगतां सीस देणी सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मस्तक लेख बणाईआ। पगड़ी कहे मैं वेखीआं चारे गुट्ठां, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण ध्यान लगाईआ। चारों कुण्ट कूड़ दीआं लुट्टां, लुटेरा कलयुग बणया वाहो दाहीआ। जगत जहान दोहागणां मेंढीआं खुल्ह गईआं गुत्तां, सीस जगदीश ना कोए गुंदाईआ। धर्म धार रही ना रुता, रुतड़ी तेरा नाम ना कोए महकाईआ। मानव मानस मानुख सुरती धार ना उठे सुत्ता, शब्द हलूणा ना कोए लगाईआ। सब दा हिरदा अन्तर दुखा, दुखियां दर्द ना कोए वंडाईआ। सुफल होए किसे ना कुख्खा, भगत जन्मे कोए ना माईआ। बिन तेरी किरपा जन भगतां कहे कोए ना पुत्ता, सुत दुलार गोद ना कोए टिकाईआ। जगत जहान निशान्यों घुथ्था, मंज़ल हथ्थ किसे ना आईआ। तेरा प्यार तेरे नालों रुठ्ठा, तेरी मुहब्बत तेरे नाल ना कोए प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि साहिब तेरी सरनाईआ। पगड़ी कहे मैनूं इशारे देंदी

देवी वाली लाटा, अष्टभुज अक्ख उठाईआ। मेरी मंज़ल पूरी होई वाटा, वटणा मल के रही वखाईआ। फेर खुल्ला कर के झाटा, झट आपणी लई अंगड़ाईआ। फिर वेख के पुत्री खाटा, नेत्र रोवे मारे धाहीआ। फेर तक के गोबिन्द वाला बाटा, पासा गई बदलाईआ। फेर तक्कया जोती जाता, पुरख अकाला धुरदरगाहीआ। जो सब दा आदि अन्त दा राखा, रक्षक हो के वेख वखाईआ। झट आवाज़ आई बचन सुण साचा, सच दयां समझाईआ। जेहड़ा तत सरीर पूरन सिँघ दा आत्मा सिँघ चाचा, चन्द नूर जोत रुशनाईआ। उस दा वक्त प्रभू ने पछाता, समां नेरन नेर वखाईआ। बसन्त कौर खुशीआं विच करे हासा, सचखण्ड प्रभ अग्गे सीस निवाईआ। मेरे हिस्से दा लंगर विच तृप्त कौर ढाई मुट्ठीआं पा दे आटा, मेरा लंगर जन भगतां नाल देणा रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। बसन्त कौर कहे मैं सेवा कीती अपार, हरि लंगर सेव कमाईआ। बूड़ सिँघ होणा ख़बरदार, जिस कारन तैनूं ल्या बुलाईआ। लाल पीढ़ा कर के ल्याउणा त्यार, उपर कपड़ सोहणा रंग रंगाईआ। छब्बी पोह नूं जिस ते होणा विहार, ब्याह रचणा चाँईं चाँईंआ। एह खेल सच्ची सरकार, हरि करता आप कराईआ। पगड़ी कहे मैं भगतां दे सीस दी बणां दस्तार, दस्त प्रभ दे नाल मिलाईआ। सब दे अन्दर धुर दे नाम दी होवे गुफ़तार, गुफ़त शुनीद राग अलाईआ
१४३२ जन भगतो आपणे अन्तर सारे करो इकरार, वाहिदा सतिगुर नाल पकाईआ। सतिगुर दा खेल जिस नूं समझ सके ना कोए १४३२
२२ विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव बैठे सीस निवाईआ। अवतार पैग़म्बर पा ना सके सार, बेअन्त बेअन्त २२
बेअन्त कहि के आपणा झट लँघाईआ। सब दा लेखा इक्को जेहा पुरख नार, वडा छोटा ना कोए जणाईआ। दर आया सब दा करे उधार, उदर दा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्ची सरकार, सरकारेआला आहला अदना इक्को रंग रंगाईआ।

✪ १४ सावण शहिनशाही सम्मत ७ कपूर सिँघ दे गृह मोगा शहर ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

नारद कहे खवाज्या मैं तके तेरे आब, आबेहयात नज़र कोए ना आईआ। शरअ दे हिस्से तके बाब, वरका वरका फोल फुलाईआ। उम्मती मित्र प्यारे तके अहिबाब, कायनात खोज खुजाईआ। नाम कलमे तके रबाब, सितार सच ना कोए वजाईआ। सजदे सीस तके आदाब, बन्दगी विच ना कोए समाईआ। काअबे तके महिराब, महिबूब मिलण कोए ना

पाईआ। हरफ़ हरूफ़ तके किताब, कुतबख़ान्यां पड़दा आप चुकाईआ। रसना रस तके लुआब, जेहवा जगत जहान वेख वखाईआ। सति दा सच नाल वज्जे किते ना नाद, धुर अवाज़ ना कोए सुणाईआ। शरअ विच्चों दिसे ना कोए आज़ाद, बन्धन बन्द ना कोए कटाईआ। धुर कलमे दी सुणे ना कोए आवाज़, अन्दरों राज़ ना कोए खुल्हाईआ। उठ तक लेखे लग्गी ना किसे नमाज़, रोज़ा नमाज़ वुज़ू कम्म किसे ना आईआ। परवरदिगार नवां साजण रिहा साज, सज्जण मीत धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं बेड़ा पूर भरया डोबे तेरे विच आब, जलधारा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। ख्वाजा कहे नारद मैं पै गया विच सोचीं, समझ समझ नाल मिलाईआ। सब कुछ तकां नैणां लोची, लोयण अक्ख खुल्हाईआ। जो इशारा दे के गया रविदास चमारा मोची, कपालमोचव भेव खुल्हाईआ। ओह गल्ल पिच्छे किसे ना सोची, समझ विच ना कोए टिकाईआ। बौहड़ी पैग़म्बरां दी खुस्सण लग्गी रोज़ी, राज़क रिज़क रहीम आपणा हुक्म वरताईआ। एकँकार इक्को देण लग्गा सोझी, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। बण के ठाकर धुर दा मौजी, मजलस भगतां नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। नारद कहे ख्वाजे निगह मार विच काअबे, कबरां तों परे ध्यान लगाईआ। किसे दा पुन्न रिहा ना सवाबे, साबत रूप ना कोए दरसाईआ। हिरदे गए किसे ना साधे, साधना विच ना कोए समाईआ। अन्तर आत्म प्रभ नूं ना कोई आराधे, राधे शाम ढोले गा के आपणा झट लँघाईआ। सदी चौधवीं मूल कोई ना जागे, पैग़म्बरां कलमा सके ना किसे उठाईआ। ओह तक कुछ लेखा कोल वाघे, वगदी पौण रही समझाईआ। एह खेल उस दे (डाहढे), जो डौरु डंक शरअ रिहा खड़काईआ। हुण भेव रहिणे नहीं विच साडे, नारद हस्स के रिहा सुणाईआ। उम्मत लडाउणे नहीं किसे ने लाडे, गोदी गोद ना कोए सुहाईआ। हुक्म सुण की फ़रमान मिले आजे, अज़ल उठ के लै अंगड़ाईआ। प्रभ नवीं साजणा साजे, सच सुहेला इक अख्वाईआ। प्रगट हो के देस माझे, मझेरां लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप वखाईआ। ख्वाजा कहे नारद मैं वी सुखणा सुखदा नाल खुशी, खुशीआं विच जणाईआ। याद करां मालक उसी, जिस दी उस्तत करे लोकाईआ। जिस दी आत्म धार सृष्टी अन्दर रुस्सी, रुस्सयां सके ना कोए मनाईआ। दीनां मज़्हबां दे मार्ग विच घुसी, मंज़ल हक ना कोए चढ़ाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर रिहा कोए ना पुछी, पुश्त पनाह हथ्थ ना कोए टिकाईआ। सदी चौधवीं रोवे साह उच्चे भुक्खी, हौक्यां विच कुरलाईआ। बौहड़ी परवरदिगार ने धार रहिण नहीं देणी दूजी, द्वैत दा झगड़ा दए चुकाईआ। जिस ने नाम रमज़ धुर कलमे दी मारनी

गुझी, गुफ़त शनीद पड़दा दए उठाईआ। रस रहिण नहीं देणा धार दुद्धी, अमृत जाम ना कोए प्याईआ। उत्तम श्रेष्ट रहिणी किसे नहीं बुद्धी, बुद्धी दा मालक आपणा हुक्म वरताईआ। खेल वेखणा धर्म धार दी सुदी, वदी आपणा पक्ख समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, (आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि,) निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी खेल वरताए गुझी, गोझ समझे कोए ना राईआ।

✪ १५ सावण शहिनशाही सम्मत ७ हरजीत सिँघ दे नवित हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

नारद कहे सुण पीर ख्वाजा, खैरखाही नाल दृढ़ाईआ। नीर दा होवे कवण राजा, पातशाह अख्वाईआ। जिस तेरा साजण साजा, दिती माण वड्याईआ। सुण उस दा हुक्म बोध अगाधा, अकल कलधारी रिहा दृढ़ाईआ। जिस ने जगत जहान निवाजा, मेहर नज़र इक उठाईआ। उस दा खेल तक विच माझा, देस परदेस अक्ख खुल्हाईआ। जिस लहिणा पूरा करना वाले बाजां, बाज़ी सब दी दए उलटाईआ। जन भगतां रखे लाजा, निरगुण हो के होए सहाईआ। सदी चौधवीं बदल दए समाजा, समग्री आपणा नाम वरताईआ। अवतारां पैग़म्बरां पूरा करे वाहिदा, गुरु गुरदेव कौल निभाईआ। एका

१४३४ शब्द वजाए नादा, धुन अनादी आप दृढ़ाईआ। निरवैर हो के अन्तिम जागा, कलयुग लई अंगड़ाईआ। करे खेल पुरख १४३४

२२ समराथा, हरि करता वड वड्याईआ। याद कर जिस वेले खेल कीता विच दोआबा, दो जहान खोज खुजाईआ। तूं हाज़र होणा कोल बेआब वाले आबा, कन्ढी घाट डेरा लाईआ। नाल हुक्म दी ल्याउणी किताबा, बिन अक्खरां बग़ल टिकाईआ। सजदयां विच करीं आदाबा, अदब नाल सीस झुकाईआ। मुख रखीं वल्ल काअबा, दिशा मग़रब वंड वंडाईआ। लेखा पूरा तकीं हिसाबा, हासल ज़रब नज़र कोए ना आईआ। चारों कुण्ट तकीं जहादा, जहाद विच दुहाईआ। तेरा लिबास होवे सादा, कुल्ला सीस ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे सुण ख्वाजे खिज़र पीर, पीर पीरां रिहा दृढ़ाईआ। जिस दी दो जहान मिलख जागीर, जागरत जोत करे रुशनाईआ। उस दा हुक्म सुण अखीर, आखर रिहा सुणाईआ। जो गंगा धार वायदा कीता कबीर, कबरां तों बाहर ध्यान लगाईआ। सो खेल करे गुणी गहीर, गहर गवर आपणी कार कमाईआ। तूं होणा नहीं दिलगीर, धीरज धीर नाल प्रगटाईआ। ब्यास पार किनारे खड़ा होणा शरअ दी तोड़ जंजीर शरीअत संग ना कोए रखाईआ। सतिगुर शब्द सतिगुर दा वस्त्र पीला होवे चीर, तन तन नाल सुहाईआ। तूं चौदां वार मारनी चौदस धार लकीर, लाईन ऐन देणी वखाईआ।

१४३५
२२

फेर हुक्म संदेशा देवे बेनज़ीर, नज़रीआ सब दा दए बदलाईआ। नारद कहे ख्वाजा तूं बच्चा खारशीर, बाल बाला नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेख इक बणाईआ। ब्यास कहे जिस वेले दिवस आया चौदां अस्सू, आस मेरी पूर कराईआ। मैं खिड़ खिड़ा के हस्सूं, हस्ती तकां बेपरवाहीआ। इधर उधर खुशीआं नाल नस्सूं, आर पार इक्को रंग रंगाईआ। मेरे कन्ढे नौ सेर गुड़ लै के खड़ा होवे सिँघ मस्सू, मस्सा सिँघ पिछली सेव कमाईआ। जिस दा लहिणा पुरख अकाला दीन दयाला दस्सू, दहि दिशा अक्ख खुल्हाईआ। मौली दा तन्द सवा गज़ लै के खलोता होवे सिँघ जस्सू, जसबीर आपणा रंग रंगाईआ। ख्वाजा खिजर आपणी वहीर घत्तू, भज्जे वाहो दाहीआ। लाल पगड़ी लै के आवे सिँघ रत्तू, रत्न सिँघ रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि दाता धुरदरगाहीआ। ब्यास कहे मैं निव निव करनी बन्दना, डण्डावत सीस निवाईआ। जिस वेले मेरा पार किनारा लँघणा, लहिंगा चुक्के गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती जगत जहान वाली माईआ। मैनूं आउणा इक अनन्दना, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। मैं तकणा नूरी चन्दना, चन्द नूर जोत रुशनाईआ। जिस गोबिन्द शब्द लाया अंगणा, अंगीकार इक वखाईआ। उस नवीं चाढ़नी रंगणा, तबदीली करे जगत लोकाईआ। ख्वाजे तेरा मंझ मुहाणा लँघणा, वञ्झी हाथ किछ ना आईआ। लेखा मुकाउणा सभना, सभा मलेछ कूड़ देणी उठाईआ। खेल वेखणा उपर गगना, गगनंतरां परे दरसाईआ। चार कुण्ट कूड़ कुड़यारी लग्गे अग्गणा, आंच सके ना कोए बुझाईआ। इक्को डौरु डंका वज्जणा, वाहिद हुक्म सुणाईआ। ब्यास कहे मैं नौ वार चरण सरोवर करना मजना, आप आपणी मैल धुआईआ। एह खेल प्रभू निरँजणा, नर नरायण रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे आहला अदना, इन्साफ़ आपणे हथ्थ रखाईआ।

✪ १७ सावण शहिनशाही सम्मत ७ गुरदयाल सिँघ दे गृह पिण्ड मूधल ज़िला अमृतसर ✪

सदी चौधवीं कहे मुहम्मद सुण अगम्मी नग़मा, अलिफ़ ये तों बाहर ध्यान, लगाईआ। दरोही लाशरीक मैनूं देण वाला सदमा, सदा होके दयां जणाईआ। अन्त अख़ीर झुक जा इक नूर दे कदमा, कदीम दे मालक ध्यान लगाईआ। जिस झगड़ा मेटणा माटी ख़ाक बदना, बदी दा डेरा देणा ढाहीआ। कुछ झगड़ा पैण वाला विच अदना, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जो बेनज़ीर करन वाला इन्साफ़ अदला, अदल आपणा इक कमाईआ। दीन दीन दा लाहवे बदला, मज़्ह़ब मज़्ह़ब नाल ठुकराईआ।

मैं नेत्र धार पाउणी कजला, चारों कुण्ट अक्ख उठाईआ। उम्मती उम्मत दा रहिणा नहीं कोई सज्जणा, साजण मीत ना संग निभाईआ। सब ने चारों कुण्ट वंञणा, वञ्झ मुहाणे देण गवाहीआ। ओह तक ख्वाजा नीर दा पीर करे बन्दना, बन्दगी विच सीस झुकाईआ। नबी रसूल कोई ना लावे अंगणा, चार यारी रही कुरलाईआ। दुहाई दर्द किसे ना वंडणा, दुखियां दु:ख ना कोए मिटाईआ। परवरदिगार सांझे यार नूर इलाही सब नूं डण्डणा, डण्डावत सब दी दए बदलाईआ। शरअ शरीअत दी ढाहवे कंधना, मार्ग इक्को इक प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक बेपरवाहीआ। मुहम्मद कहे सदी चौधवीं अन्त अख़ीर मार झाकी, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। मेरा मालक ख़ालक प्रितपालक वेखणहारा बन्दा ख़ाकी, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। मैं शरअ दा रिहा मूल ना साकी, साख्यात दयां दृढ़ाईआ। सच दी बन्द होई ताकी, तकवा हक ना कोए जणाईआ। शरअ दी आसा होई आकी, मनसा मन ना कोए मिटाईआ। हक रिहा ना कोए इख़लाकी, इख़तलाफ़ विच दुहाईआ। खेल होणा इत्फिाकी, इत्फिाकीआं आपणा हुक्म वरताईआ। दीन दुनी दी तके निफ़ाकी, गृह मन्दिर तन तत ध्यान लगाईआ। जिस ने किसे दी रहिण नहीं देणी गुस्ताख़ी, गहर गम्भीर आपणा हुक्म वरताईआ। मेरी अन्तिम पूरी करे आसी, आहिस्ता आहिस्ता आपणा खेल वखाईआ। जिन्हां ईसा नूं चाढ़्या

१४३६

२२

फाँसी, सदी बीसवीं आपणी लए अंगड़ाईआ। सो लेखा मंगे पुरख अबिनाशी, हरि करता धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक अगम्म अथाहीआ। सदी चौधवीं कहे हज़रत उठ छेती नाल तक, मशरक मग़रब ध्यान लगाईआ। ईसा दा कलाक करे टक टक, बीस बीसा नाल मिलाईआ। उम्मत उम्मती रहे ना शक, शिकवा सारा देणा गंवाईआ। चारों कुण्ट नूर दी थाँ दिसे रत्त, तत तत नाल लड़ाईआ। शरअ शरअ होई वख, शरीअत संग ना कोए निभाईआ। ओ सुण जैकारा अलख, अलख अगोचर रिहा दृढ़ाईआ। तेरे रहिणा नहीं कुछ हथ्थ, हथेली ख़ाली हथेली नाल मिलाईआ। सब ने सथ्थर जाणा लथ्थ, सथ्थर गोबिन्द यारड़ा दए गवाहीआ। चौदां तबकां खेड़ा होणा भट्ठ, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। कलमा कायनात किसे ना लैणा रट्ट, रट्टा होवे कूड़ लोकाईआ। आपणा सर सिर परवरदिगार दे कदमां उत्ते सट, बिना सीस तों सीस निवाईआ। सजदे विच कहो मैनूं नौ साल होर लैण दे कट, अग्गे आस ना कोए तकाईआ। जिस वेले चौदां सौ साल गए टप्प, टप्पा कलमे वाला देणा बदलाईआ। तेरे नाम दी मोहर लग्गे झट, ठप्पा इक्को इक वखाईआ। नव सत्त नव दर नव वासना तों बाहर तेरा आवे रस, रस्ता इक्को देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं

भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण तेरी खेल सदा अकथ, मेहरवान महिबूब कथनी कथ ना सके राईआ।

✪ २१ सावण शहिनशाही सम्मत ७ जगजीत सिँघ दे नवित हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

बावन कहे मेरा बिरध रूप इतना, ब्राह्मण ब्रह्म समझ किसे ना आईआ। मैं लेखा लिख्या वेखां मानव धार बिधना, बिध आपणी ना किसे जणाईआ। पता नहीं किस बिध समां लँघया इतना, सतिजुग तों कलयुग रूप बदलाईआ। जिस दा खेल जगत किसे ना दिसना, दहि दिशा वेखण कोए ना पाईआ। उस भगतां वंडाउणा हिस्सना, हिस्सेदार इक हो आईआ। जिस दा लेख किसे ना लिखणा, कातब कलम ना कोए वड्याईआ। ओह वेस वटाए नित नवितना, जुग जुग आपणी कार कमाईआ। सच सुहेला बणे मितना, मित्र प्यारा धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। बावन कहे जेहड़ा बल दा बल वाला दरबान, दर साचे सोभा पाईआ। उस कीता चरण ध्यान, ध्यान ध्यान विच्चों बदलाईआ। जे कर मेरे गृह आवे भगवान, हरि भगवन बेपरवाहीआ। दर्शन करां महान, नेत्र नैण अक्ख उठाईआ। झट बावन कीती पहचान, अन्दरे अन्दर वेख वखाईआ। बेनन्ती अरदास कर परवान, शब्दी हुक्म नाल जुड़ाईआ। निगह मार के जगत जहान, कलयुग अन्तिम राह तकाईआ। जिस वेले आप होवां मेहरवान, मेहर नज़र नज़र उठाईआ। तेरी आशा करां परवान, परम पुरख हो के आपणा रंग रंगाईआ। साथ बख्शां राज राजान, बलि बलधारी जोड़ जुड़ाईआ। सच धर्म दा धर्म बणावां निशान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। बावन अन्तर अन्तर दिता इशारा, शब्दी शब्दी शब्द धार जणाईआ। ओह वेख कलयुग अन्त किनारा, नईया नौका पार ना कोए कराईआ। चार वरन होण आवारा, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। मेरा सरूप सरगुण निरगुण होए दोबारा, दोहरी धार जणाईआ। खेल खेलां विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी संग रखाईआ। लेखे लावां बलि दवारा, दर आपणा हुक्म वरताईआ। तेरा जन्म कर्म नाल रखां सतिगुर धारा, सतिगुर सति सति सति सरनाईआ। सम्मत शहिनशाही सत्त इक्की सावण होए दिहाड़ा, वक्त वक्त नाल वड्याईआ। जगजीत जीत नाम तुम्हारा, तुरत आपणा जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। बावन जगत जहान शब्दी धार घुंमा, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। कलयुग अन्त सृष्टी होणी कौड़ी वांग तुंमा,

तुख्म तासीर सारे जाण बदलाईआ। किसे दी खुल्ल्हे मूल ना सुन्ना, सुन्न समाध ना कोए खुल्हाईआ। किसे मालक नज़र नहीं आउणा कुन कुना, कायनात रोवे मारे धाईआ। किसे गाँ सूर खाणा किसे छत्रा बक्करा दुम्बा, बचया रहिण कोए ना पाईआ। चोबदार तूं होणा इक नंन्हां जेहा मुन्ना, बालक बालक रूप सखाईआ। तेरे अन्दर बख्शणा इक गुना, गुणवन्त दए वड्याईआ। एसे करके जगजीत सिँघ ने यारां सौ सतासी वार सतिगुर दा चरण चुम्मा, अज्ज तक गिणती सारी लई गिणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। बावन किहा प्रभ दा खेल होणा अपारा, अपरम्पर दयां जणाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त बलि दे गृह बणया गुरमुख दवारा, गुर
१४३८ गुर धार जणाईआ। उस वेले तेरा लेखा दस्सां सारा, सहिज नाल सुणाईआ। दो इक इक्की करनी निमस्कारा, सम्मत शहिनशाही नौ दए वड्याईआ। फेर इक सौ इक गुरसिख मालवे विच्चों करना त्यारा, त्रैगुण अतीता आपणा रंग रंगाईआ। इक्की इक्की सब दे गल पाए होवण हारा, रुपा आपणा रंग वखाईआ। एह खेल सच्ची सरकारा, पन्द्रां पन्द्रां आपणी गंढ रखाईआ। अस्सू तिन्न होवे दिहाढ़ा, अग्गे थित ना कोए वधाईआ। खेल करे धुर दा लाड़ा, वस्त्र केसरी सोभा पाईआ। सब ने मंगण आउणा वाड़ा, गुरमुख आपणी आस रखाईआ। कुछ लहिणा पूरा करना जो बलि दा पिछला उधारा, दर आपणे घर सुहाईआ। उस दा नीले वस्त्रां नाल होणा शृंगारा, चन्न सितार निशान मथ्थे विच रखाईआ। पहली कड़ाही चुक्के गारा, नीहां हेठ दबाईआ। फेर बलि दी गोली ल्याए पंज छुहारा, लम्मा छोटा ना कोए वड्याईआ। गुरमुख सिँघ लम्मा पै के बणे लिखारा, नैण असमान वल्ल टिकाईआ। इक सौ इक गुरमुख बोलण जैकारा, ज़ोर ज़ोर नाल जणाईआ। सुरजीत सिँघ खुल्हा छड्डुया होवे दाहड़ा, वाल पिच्छे नूं लटकाईआ। अमरजीत पगड़ी नूं रंग लावे लाल गाड़्हा, डब्ब रहिण कोए ना पाईआ। गुरदर्शन कौर रज़ाई दा खड़ना इक उछाड़ा, पीले रंग रंगाईआ। चेला सिँघ कोल तेलीआं वाला होवे ताड़ा, खब्बे हथ्थ विच लटकाईआ। सरूप सिँघ वजाए सितारा, उँगली उँगली नाल हिलाईआ। पंज प्यारे शब्द गावण इक्को वारा, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। पंज दरबारी सज्जे गुट्ट ते लावण इक इक बिन्दी गारा, गहर गम्भीर जणाईआ। रणजीत कौर नाल सहेलीआं लै के अठारां, पुज्जणा चाँईं चाँईंआ। एह खेल करे हरि करतारा, करनी दा करता कार कमाईआ। बधक ने मोढे उत्ते चुक्कया होवे झाड़ा, कंडयां वाला सोभा पाईआ। मलवईए लावण सच अखाड़ा, गीत खुशीआं वाले गाईआ। अजीत सिँघ मोढे चुक्कया होवे कुहाढ़ा, बटाले विच्चों लै के आईआ। किशन सिँघ वजाउंदा आवे दोतारा, राग नानक धार गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। बावन १४३८

कहे एह खेल करनी प्रभ ने नन्गी, ओहला नज़र कोए ना आईआ। सदी चौधवीं दी गोली बणया होवे रूप चंगी, चन्द सितार नाल वड्याईआ। दविन्दर साथ होवे संगी, नैण कज्जल धार सुहाईआ। सत्त सहेलीआं दी डार होवे लम्बी, वस्त्र इक्को रूप बणाईआ। कपूर सिँघ ने बाणा पहनणा जंगी, किहर सिँघ जोड़ जुड़ाईआ। नाज़र सिँघ ने अलाणी डाहुणी मंजी, सभा विच टिकाईआ। सौदागर सिँघ बैठा होवे उत्ते कंधी, आप आपणा आप टिकाईआ। माझे मालवे दुआबे जम्मू इक इक कन्नी होवे गंढी, गंढु सांझी दए वखाईआ। जन भगतां दी धार गुरमुखां दा राह दस्से डण्डी, डण्डावत इक्को इक जणाईआ। सतिगुर शब्द शब्द सतिगुरु आदि जुगादि पखण्डी, जिस दा भेव कोए ना पाईआ। जिस दी आयू जुगा जुगन्त कदे ना लँघी, अन्त कहिण कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। बावन कहे चोबदार तेरी आसा पूरी, पूरन पुरख दए कराईआ। हाज़र हो के विच हज़ूरी, हज़रतां तों परे दए दृढ़ाईआ। जल्वागर जल्वा बख़्श के नूरी, नूर नुराना चन्द चमकाईआ। सुरजीत कौर बणा के पंज पूड़ी, पंजां गुरमुखां दए खवाईआ। फेर चरण लावे धूढ़ी, धूढ़ी मस्तक नाल छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं सब किछ जाणदा, जानणहार अख्वाईआ।
१४३८
२२
मैं भगत दवारे विच्चों नौ गुरमुख पछाणदा, जो खुशीआं नाल जावण चाँईं चाँईंआ। खेल तक्कण श्री भगवान दा, की भगवन आपणा रंग रंगाईआ। जन भगतां लेखा दए आपणे दान दा, दानी दाता आप अख्वाईआ। तेजभान रूप बणया होवे काहन दा, मोर मुक्ट सीस टिकाईआ। लाल सिँघ खेल करदा आवे धर्म निशान दा, निशाना मोढुयां उत्ते रखाईआ। ऊधम सिँघ जाप करदा आवे श्री भगवान दा, जो शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। जिस वक्त नूं जगत जहान नहीं कोई जाणदा, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी आपणी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं आदि जुगादी संगी, सच्चा संग निभाईआ। जेहड़ी गुरदयाल सिँघ दी नारी दिसे रंडी, रंडेपा जगत वाला हंढाईआ। उस दी सेवा लाउणी लंगर विच इक कन्न दी डण्डी, डण्डावत अगली दए बदलाईआ। फेर लेखा मुक जाए विच्चों वरभण्डी, ब्रह्मण्ड खण्ड तों पार वज्जे वधाईआ। अगली खेल होर बड़ी चंगी, सतिगुर चंगी तरह जणाईआ। जन भगतां अन्दर वासना रहे ना गंदी, दुतीआ भाउ दए मिटाईआ। सब दे अन्दरों सतिगुर प्यार विच पवण आवे ठंडी, अग्नी तत ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि सूरा सरबंगी, बीर सूर इक अख्वाईआ।

हरिजन प्यार विच झोना धान लाउंदे मुंजी, सेवा सति सच कमाईआ। जिन्हां दी आत्मा अन्तर रहे ना सुंञी, सुंञ मसाण दा डेरा ढाहीआ। साचे नाम दी ला के कुंजी, कंचन गढ़ दए वड्याईआ। नाभी कँवल कर के ऊंधी अमृत रस दए भराईआ। जेहड़ी ख़ाहिश रसना नाल कूंदी, स्वास स्वास वज्जे वधाईआ। मुहब्बत बख्शे लूं लूं दी, साढे तिन्न करोड़ आपणा रंग वखाईआ। इक्को वड्याई शब्द सतिगुरु दी, गुरु गुरदेव होए सहाईआ। जिस दी रीती आदि आदि शुरू दी, शरअ दा मालक इक अख्वाईआ। अग्गे तोर अगम्मी तुरूगी, तुरत आपणी वंड वंडाईआ। शब्द दी सुरत शब्द निरत जुड़ूगी, जोड़ी सतिगुर आप बणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया रुढ़ूगी, शौह दरया आप डुबाईआ। इक्को धर्म दी आशा फुरूगी, फ़ुरने ममता दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे भगतो मैं वी बड़ा कामा, जुग जुग प्रभ दी सेव कमाईआ। मैनूं गाउंदे रहे कृष्ना रामा, सीता राधा आपणी धार दरसाईआ। मैनूं पैग़म्बरां कीतीआं सलामा, सजदयां विच सीस निवाईआ। मैनूं नानक किहा सतिनामा, सति सति वज्जी वधाईआ। मेरा वाहिगुरु फ़तिह डंक दमामा, दो जहानां करे शनवाईआ। ब्रह्मण्ड संदेश महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवाना, भगवन आपणी कार कमाईआ। हरिजन बणा के सच दवार दे सच निशाना, निशाना आपणा इक प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरी आदि अन्त दी यारी, याराना प्रभ दे नाल रखाईआ। मेरी जुग जुग दी वफ़ादारी, बेवफ़ा ना रूप दरसाईआ। मेरी प्यार मुहब्बत दी सिक्दारी, सिर सिर हुक्म सुणाईआ। मेरे काग़ज़ कलम लिखारी, गुण गावण चाँईं चाँईआ। मेरा जगत जहान पुजारी, पूजा विच ध्यान रखाईआ। मेरी सिफ्त सब तों बाहरी, जिस नूं समझे कोए ना राईआ। मेरा मालक इक निरँकारी, निरवैर अगम्म अथाहीआ। तुसीं उसे दे दर दे दर्द भरे पुजारी, दर दरवेश हो के आपणी सेव कमाईआ। मुहब्बत विच करे ना कोए ग़द्दारी, गदागर ना कोए अख्वाईआ। इक्को माण नर नारी, नर नरायण आपणा रंग रंगाईआ। तुहाडा लेखा लग्गे ओस सच सच्चे दरबारी, जित्थे इक्को नूर जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं जुग जुग सेवा करदा, धुर दी करनी कार कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर बणया रिहा बरदा, कलयुग निउँ निउँ लागां पाईआ। अट्ठे पहर रिहा डरदा, नेत्र नैण ना अक्ख उठाईआ। सरन सरनाई इक्को पर्दा, ढहि ढहि सीस निवाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रभू साचे घर दा, गृह तेरे वज्जे वधाईआ। तेरा रूप अगम्मा नर दा, नर

नरायण तेरी सरनाईआ। तूं लेखा जाणे चोटी जड़ दा, चेतन तेरा राह तकाईआ। जन भगतो पुरख अबिनाशी जन भगत सुहेले सदा वरदा, वर घर आपणा इक दरसाईआ। पल्लू गंढे आपणे लड़ दा, लाड़ी मौत तों पल्ला दए छुडाईआ। जो हरिजन हरि दर साची सेवा करदा, सच सति विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मालक दिसे सांझे घर दा, सचखण्ड निवासी सच दवार इक्को इक सुहाईआ।

✪ ३० सावण शहिनशाही सम्मत ७ कपूर सिँघ दे गृह
मोगा शहर ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

नारद कहे ख्वाजा तूं बड़ा तपी, जलधारा विच आपणा आसण लाईआ। मैं तेरा लेखा वेख्या सदी चौधवीं नाल हिस्सा पत्ती, पतिपरमेश्वर दिता दृढ़ाईआ। जिस विच फ़र्क रहे ना रती, रत्न अमोलक हीरे तेरी वड वड्याईआ। ख्वाजा कहे नारदा तूं बड़ा गप्पी, ब्राह्मणा ऐवें रिहा जणाईआ। पुराणी रीती तेरी नहीं कोई छपी, छुपी नज़र कोए ना आईआ। तूं
१४४१ पाणी देंदा रिहों मेरी धार विच्चों लप्पी, सूर्या भेंट चढ़ाईआ। एह गल्ल याद कर लै जेहड़ी गोबिन्द नाल तेरी पक्की, पक्की १४४१
२२ दयां सुणाईआ। जिस वेले सरसा धार सी टप्पी, वहिणां विच्चों वहि के आपणी खेल खिलाईआ। की कौल इकरार होया २२
खुशीआं नाल दस्सीं, दहिसर दा लेखा लेख समझाईआ। की आशा रखी काहन कृष्न हठी, जमना तट तट वड्याईआ। किस कारन राधा फिरी नट्ठी, ओढण सीस ना कोए रखाईआ। की निरअक्खर धार पढ़ी पट्टी, ज़ोर ज़ोर नाल सुणाईआ। कृष्न निगह मारी राधा हस्सी, खुशी खुशी विच्चों बदलाईआ। जिस वेले नानक दी धार लेखा दस्से जुग छत्ती, छत्ती रागां विच वड्याईआ। फेर गोबिन्द सुत दुलारे भेंट चाढ़े हथ्थीं, हथ्थ ख़ाली जगत वखाईआ। पुरख अकाल आवे बेपरवाह फेर समर्थी, कुल मालक नूर इलाहीआ। तेरा मेरा खेल वेखो अक्खीं, अक्खरां तों बाहर आपणी सिफ्त सालाहीआ। भाग लगावे कुल्ली कक्खीं, कक्खो लख लख बणाईआ। जिस दी धर्म दी धार भगत आत्मा होणी सखी, सुख़न सब दे पूर कराईआ। सब दी पैज जावे रखी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सदी चौधवीं वेले अन्तिम फिरे नस्सी, भज्जे वाहो दाहीआ। शरअ दी तोड़े आण के रस्सी, रस्ता इक्को दए वखाईआ। दो जहानां नगर खेड़ा इक्को करे बसी, बस्ती इक्को इक प्रगटाईआ। दो जहान चरणां हेठां देवे झस्सी, झलक बख्शे धुरदरगाहीआ। सिफ्त सालाह सतिगुर शब्द करे जस्सी, जस वेद पुराण

कहिण कोए ना पाईआ। ख्वाजा कहे पंडता उस वेले पंडत पांधे मुल्ला शेख़ मुसायक सारे होवण शक्की, शिकवा सके ना कोए मिटाईआ। इक्को मालक ख़ालक प्रितपालक वाहिद हकी, हकीकत दा दाता धुरदरगाहीआ। शब्द सुनेहड़ा कलमा कायनात सुणाए ख़बर अच्छी, बेख़बरां ख़बर जणाईआ। लेखा पूरा करे मत्तस जो रूप धारया मच्छी, दस्म अवतर अवतरा आपणा लेखा पूर कराईआ। निगह मारे लहिणा देणा पूरा करे विष्नूं धार लच्छमी लच्छी, लच्छण सब दे खोज खुजाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर सारे जाणे कच्छी, कच्छ दा लेखा रहे ना राईआ। बौहड़ी उस वेले शरअ नूं पैणी ग़शी, गशत करन वाला अवतार पैग़म्बर गुरु नजर कोए ना आईआ। तूं नीवां हो के निरमाणता विच बचीं, बच्चा बण के आपणा झट लँघाईआ। नारद कहे ख्वाजे एह कोई कथा कहाणी नहीं कच्ची, कच्ची गंढ ना कोए पवाईआ। जिस ने सृष्टी जगत जहान रची, रचना आपणी वेख वखाईआ। तूं आपणा वञ्झ मुहाणा चक्कीं, बिन कंध्याँ कंध उठाईआ। फेर मैं वेखां तूं किस दवार दा तपी, तपस्सया कवण कमाईआ। हथ्थ नाल मैं मिलावां हथ्थी, हथेली तेरे नाल जुड़ाईआ। जेहड़ी कथा कहाणी अकथी, कथ के दयां सुणाईआ। सब दी धार होणी बेवसी, बन्धन विच ना कोए बंधाईआ। प्रभ दा प्रभू दा दर्शन होणा मसीं, मसीह कूक के गया जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी हुक्मे अन्दर सब नूं करे वसी, वास्ता वाबस्ता हो के आपणे नाल जुड़ाईआ।

✪ पहली भाद्रों शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल रात नूं ✪

भाद्रों कहे मैनूं आउंदा जांदा मुड़्का, सम्मत शहिनशाही सत्त सति सति ना कोए वरताईआ। मित्र प्यारा साथी मिले कोई ना धुर का, दरगाह साची संग ना कोए वखाईआ। मंज़ल चोटी चढ़े कोई ना सिख गोबिन्द गुर का, पारब्रह्म ब्रह्म विच मिलाईआ। मैं निगह मारी कुछ लेखा अन्तिम नाल तुरकां, तुरत दयां दृढ़ाईआ। जगत जहान होया मुर्दा, मुरीद मुर्शद मिलण कोए ना पाईआ। राग सुणे कोई ना शब्द सुरत धुन का, अनहद नादी नाद ना कोए वजाईआ। सच सरूप रिहा ना किसे रिख मुन का, तपी तपीशर तप विच ना कोए समाईआ। समाज दिसे ना कोई गुण का, दीन मज़्ब रहे कुरलाईआ। लेखा मुक्कया पाप पुन्न का, पतिपरमेश्वर तेरा दरस कोए ना पाईआ। तूं मालक ख़ालक एकँकार कुन का, कुल मालक

इक अख्वाईआ। लहिणा देणा लेखा पूरा करदे उन का, जो अवतार पैग़म्बर गुर तेरी ओट तकाईआ। भेव खोल्ह दे आपणी अगम्मी सुन्न दा, सति सरूप शाहो भूप आपणा इक दरसाईआ। तुध बिन भगत सुहेले कोई ना चुणदा, चुरासी विच्चों खोज खुजाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया गुलशन वेख गुल का, नव सत्त ध्यान लगाईआ। आपणा नाम कलमा तक रसना जेहवा बुल्ल्ह दा, हिरदे सके ना कोए वसाईआ। तेरे नाम तराज़ू धर्म दे कंडे कोई ना तुलदा, सच तराज़ू नज़र कोए ना आईआ। त्रैगुण अंग्यारा वेख काया माटी चुल्ल्ह दा, साढे तिन्न हथ्थ पड़दा आप उठाईआ। तेरा ब्रह्म माया ममता विच रुलदा, मनसा मन होई हल्काईआ। लेखा कोई ना जाणे सुल्हकुल दा, सही सलामत तेरा दरस कोए ना पाईआ। बिन तेरी किरपा सच दवार कदे ना खुल्हदा, साचा वणज ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। भाद्रों कहे मैनूं आउंदा जांदा पसीना, पश्चाताप विच दुहाईआ। मेरा तक आप महीना,
१४४३ माह महिबूब वेख वखाईआ। तेरा जगत (जहान) होया नाबीना, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। ओह वेला तक लै जेहड़ा हुक्म दिता विच मदीना, मुहम्मद मेहर नाल दृढ़ाईआ। आपणी जोती धार दस्स हसीना, हस्स हस्स के दिता वखाईआ। आपणा दे के कलमा हक नग़ीना, नौबत नूर नूर वजाईआ। भेव खोल्ह के नर मदीना, मुद्दा इक्को १४४३
२२ दिता समझाईआ। सदी चौधवीं तेरा ठांडा करे सीना, सद तेरा संग रखाईआ। मुहम्मद झुक के किहा आलमीना, सजदे विच सीस निवाईआ। नाले मंगी हक तालीमा, अलिफ़ ये तों बाहर दिती समझाईआ। तेरा हक हकूक अन्तिम जाणा छीना, लोकमात रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। २२
भाद्रों कहे प्रभ मैनूं याद आ गया की मुहम्मद संदेशा दिता अबू बक्कर, अब्बा जान तेरे वल्ल ध्यान लगाईआ। शरीणी वंड के प्रेम शकर, शहिनशाह तेरे कदमां विच सुटाईआ। धुर कलमा लिख्या अगम्मी पत्र, कलम शाही कागद जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। जिस दी वेख सके कोए ना सतर, लाईन लीक ना कोए लगाईआ। फेर इशारा दिता, सदी चौधवीं किनारा दिता, इलाही नूर जोत नज़ारा दिता, बेपरवाह बेपरवाही विच तेरी उम्मत दी तेरे नाल लावे टक्कर, टाकरा आपणा हुक्म रखाईआ। कलमा कलमे नूं करे फट्टड़, फातिआ पढ़े जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी बेपरवाहीआ। भाद्रों कहे प्रभू मैनूं याद तेरी संधी, जो सनद बिन अक्खरां दिती लिखाईआ। जिस विच दीनां मज़्ह्बां उत्ते लाई पाबन्दी, चार जुग दा लेखा दिता चुकाईआ। नाले मुहम्मद दी पिठ्ठ कर के नन्गी, हकी जोत धार प्रगटाईआ। फेर शब्द धार चमका के चण्डी, गोबिन्द अक्ख दिती वखाईआ। फेर उम्मत दी धार दस्स के डण्डी,

डण्डावत सजदयां विच बदलाईआ। फेर सदी चौधवीं दस्स अन्तिम कन्ढी, कंधा फड़ के हलूणा दिता चाँईं चाँईंआ। हुण अन्तिम औध जांदी लँघी, आपणा पन्ध मुकाईआ। तेरा खेल सूरे सरबंगी, निरगुण धार समझ कोए ना पाईआ। अग्गे आयू करीं ना लम्बी, वाहिदा आपणा तोड़ निभाईआ। तेरा कलमा सद कल्मयां करे पखण्डी, कलमा कल्मयां नाल बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी सरनाईआ। भाद्रों कहे मैं आया भज्जा, परवरदिगार तेरी सरनाईआ। मैनूं दस्स आपणी जगह, धरनी धरत धवल उपर निशान लगाईआ। जिथ्थे मुहम्मद दी उम्मत दा मेटणा अग्गा, अग्गा रहिण कोए ना पाईआ। तेरा सतिगुर शब्द प्रगट होवे शेर बग्गा, जिस नूं जग नेत्र वेखण कोए ना राईआ। जो सब दे नाल कर के दग़ा, फ़रेब फ़रेबीआं दए मिटाईआ। कूड़ विकार दा वेखे नफ़ा, माया ममता मोह खोज खुजाईआ। अन्तिम सब नूं कुकर्म दा लावे धब्बा, धो सके कोए ना राईआ। भेव दस्स दे अगम्मी अब्बा, आदम हव्वा तेरी ओट तकाईआ। मैं कर के वेख्या चार कुण्ट गजा, चुरासी अन्दर ध्यान लगाईआ। तेरे नाम शब्द दा मिले किसे ना सद्दा, धुन आत्मक राग ना कोए जणाईआ। सृष्टी दृष्टी रस माणे मधा, मधुर धुन सुणन कोए ना पाईआ। तेरी सरन सरनाई कोई ना लग्गा, लग मात्रा दा डेरा गए ढाहीआ। ओह तक नारद खड़काउंदा आउंदा ख़ाली डब्बा, डौरु रिहा

१४४४ वजाईआ। दुनिया दयो लोको धुर दा पिता मन्नयो कोई ना रब्बा, रब्ब नज़र कोए ना आईआ। कोई लभ्भयो ना उपर १४४४

२२ शाह रगा, जगत दवारे डेरा ढाहीआ। वेखो कलयुग ने कूड़ निशाना गड्डा, गॉड इहो लओ मनाईआ। नाले मंज़ल नाले २२

हज्जा, हुजरा जगत वाला सुहाईआ। मन दी चलो सारे रज़ा, राज़क रिज़क रहीम इहो नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक दया कमाईआ। भाद्रों कहे मैं बेनन्ती करां ख़ुद, ख़ुदी तक्ब्बर ना कोए रखाईआ। तेरी सृष्टी दी बदली बुध, बुद्धीवान नज़र कोए ना आईआ। सति धर्म गया उड, सच विच ना कोए समाईआ। दरोही हुण बदल दे कूड़ा कलयुग, जुग चौकड़ी तेरे हथ्थ नज़री आईआ। धर्म दा दीपक गया बुझ, सच करे ना कोए रुशनाईआ। मैनूं इयों दिसदा तेरा होणा शब्दी धार युद्ध, युधिष्टर बैठा सीस निवाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद पैणा कुद्द, आपणा आपणा बल वधाईआ। अर्जन दी तत्ती लोह ते बध्धा मुढु, नींह जगत विच रखाईआ। जो गोबिन्द दे बच्चे गए झुज, धरनी धरत सोभा पाईआ। इहो सब नूं लग्गी उज, बचया रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। भाद्रों कहे मुहम्मद उठ तक, तकवा इक रखाईआ। आपणा पूरा कर लै हक, हकीकत आपणी झोली पाईआ। अग्गे रहे कोई ना शक, शिकवा देणा मिटाईआ।

ओह वेख नूर इलाही लेख लिख्या बिन कलम शाही खुशख़त, जिस नूं जगत ख़तूत सके ना कोए समझाईआ। तेरी उम्मत दी आशा उबली वांग रत, आबेहयात ना कोए चुआईआ। परवरदिगार सांझे यार अन्तिम उलटी करनी मति, मति मतांतर डेरा ढाहीआ। कवण जाणे उहदी मित गत, गहर गम्भीर बेनज़ीर आपणा खेल खिलाईआ। सदी चौधवीं पैंडा मुकाया नट्ठ, भज्जी वाहो दाहीआ। चौदां तबक खेड़ा रिहा ढट्ठ, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। तेरी आशा उलटी गिड़नी लट्ठ, चारों कुण्ट दरोही इक्को नाम दुहाईआ। चार यारी रहे कोई ना हठ, सिदक सबूरी सारे रहे गंवाईआ। उठ कलमा पढ़ लै झट, पंज नमाज़ रही कुरलाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला निरगुण धार होया प्रगट, पारब्रह्म प्रभ आपणा रूप बदलाईआ। जिस ने दीन मज़्हब रहिण नहीं देणी कोई वट्ट, चार जुग दा झगड़ा देणा गंवाईआ। साचा लाहा नबी रसूल हो के खट्ट, पैग़म्बर हो के सीस निवाईआ। आपणे कदम नाल आपणी हद्द जा टप्प, कदीम दे मालक अग्गे कदमबोसी विच सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। मुहम्मद हथ्थ मारया उत्ते पेशानी, पेशवा हो के ध्यान लगाईआ। की महिमूद करें मेहरवानी, महिज़ देणा जणाईआ। मेरी वेख कुरबानी, तेरी धार करबला दए गवाहीआ। मेरा जिस्म ना रिहा जिस्मानी, ज़मीर रंग ना कोए रंगाईआ। मैं तेरा नूर नुरानी, तूं जल्वागर

१४४५
२२

बेपरवाहीआ। तूं आदि अन्त दा बानी, जुग जुग आपणा हुक्म सुणाईआ। मैं तेरा पढ़या कलमा कलामी, कायनात सुणाईआ। तूं शहिनशाह अमामी, अमलां तों रहित नज़री आईआ। तेरा हुक्म आलमे जाविदानी, दो जहानां सदा शनवाईआ। मैनूं अन्त आपणे प्यार दी दे महिमानी, मुहब्बत विच मेहर रस देणा चखाईआ। मेरी ओह तक लै ओह तक लै एथे उथे दो जहानां वाली निशानी, जिस दी तारा चन्द दए गवाहीआ। मेरी अन्तिम होणी जूह बेगानी, लोकमात चौदां तबक संग ना कोए रखाईआ। सदी चौधवीं चौदस दिसे परेशानी, (परेशान) हो के रिहा सुणाईआ। मंज़ल हक ना रही रुहानी, रूह बुत पाक ना कोए कराईआ। मुल्ला शेख़ मुसायक करन बेईमानी, बेवा होई लोकाईआ। मैनूं सच दिसदा हक दिसदा अनुलहक दी याद आई कुरबानी, जगत शमस तबरेज़ खल्लां खल्ल लुहाईआ। ज़रूर तेरे हुक्म दी चार कुण्ट आए तुग्यानी, मूसा कोहतूर ते वेखे अक्ख उठाईआ। ईसा अन्दर आवे हैरानी, सदी बीसवीं अक्ख खुल्हाईआ। तेरे गोबिन्द दी ढईए तों बाद शब्दी धार जवानी, जोबनवन्ता इक्को सोभा पाईआ। जिस ने करनी खेल महानी, महाबली तेरा रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। भाद्रों कहे मुहम्मदा औह तक लै गोबिन्द सूरा, हरि सतिगुर शब्द रूप बदलाईआ। जिस दा मेल जोती धार अगम्मी नूरा, नूर नुराना डगमगाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी

१४४५
२२

सर्ब कला भरपूरा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार इक अख्वाईआ। एथे ओथे दो जहानां नव सत्त ज़ाहर ज़हूरा, ज़र्रा ज़र्रा आपणा रंग रंगाईआ। सो कलयुग अन्त कूड़ी क्रिया हुंझे कूड़ा, कूड़ कुटम्ब दए मिटाईआ। जिस कारन मुहम्मदा तेरी कफ्फणी शब्दी धार काला मंग्गया भूरा, मेला सिँघ लै के आया चाँईं चाँईंआ। धुर दा बचन जाए ना कदे हदूरा, हद्द सब दी दए गंवाईआ। जिस दे प्रेम विच सब ने होणा मशकूरा, शुक्रिया कहि के सीस झुकाईआ। उस दा बदले ना कोए दस्तूरा, दस्त नाल दस्त सर्ब मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। भाद्रों कहे मुहम्मद वेख गोबिन्द धार अवल्ली, अवल्ल अल्ला इक जणाईआ। योद्धा सूरबीर महाबली, बलि बावन दए गवाहीआ। ओह जिस नूं सजदा करदा तेरा शाह अली, आलमीन तक नूर इलाहीआ। जिस दी हुक्म वाली घड़ी कदे ना टली, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। ओह सदी चौधवीं सब नूं जांदा छली, वल छल आपणा हुक्म वरताईआ। शब्दी धार जोत जोत विच रली, जोत जोत विच समाईआ। जो दो जहानां फिरदा गलीउ गली, लख चुरासी काया मन्दिर अन्दर आपणा हुक्म सुणाईआ। जिस ने भगतां दा सीस रखया आपणी तली, ताल तलवाड़ा आपणा नाम वजाईआ। ओह खेल करे थली जली, महीअल आपणा रंग रंगाईआ। सच सिंघासण रिहा मल्ली, मालक हो के धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। भाद्रों कहे मुहम्मद औह तक अवतार तेई, सारे तेरा राह तकाईआ। ओह वेख नानक खलोता कन्ढे उत्ते बेई, चुभ्भी दो जहान लगाईआ। ओह वेख की संदेशा दिता राम मात केकई, मतरेई जगत सुणाईआ। कमलीए जिस वेले अवतार पैग़म्बर गुरुआं दी रहिणी नहीं कोई देही, पंज तत नज़र कोए ना आईआ। फेर ओह राम आउणा जेहड़ा सब दा राम सनेही, सगला संग रखाईआ। जिस नूं खोजण कोटन कोटि कई, केते ध्यान लगाईआ। उहदी सूरत उहदी मूर्त इक्को आपणे जेही, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। भाद्रों कहे प्रभू मेरा पिछला तक दिहाढ़ा, देहुरी ध्यान लगाईआ। जिस वेले सतिगुर शब्द बणाया लाड़ा, लाड़ी लख चुरासी प्रनाईआ। शब्द अगम्मी नाद वजाया तलवाड़ा, धुन आपणे विच्चों प्रगटाईआ। नूरी जोत लगाया अखाड़ा, पंज तत ना कोए चतुराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पैग़म्बरां दिता इशारा, सैनत नाल समझाईआ। ओए दुलारिउ दुल्यो बच्चयो तुहाडा वक्त चुक्कया संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव बैठे सीस निवाईआ। झट कलि कल्की प्रगट होए चव्हीआं अवतारा, जिस नूं जन्मे कोई ना माईआ। जिस दा गोबिन्द होए सुत दुलारा, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। तिक्खीआं रखे दोवें धारा,

निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रूप समझाईआ। सृष्टी दी दृष्टी अन्दर इक्को आपणा करे वारा, वारता पिछली दए बदलाईआ। सब दे अन्तर निरन्तर तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म उपजे जैकारा, शब्दी धुन धुन शनवाईआ। जिस दी महिमा कागद कलम ना लिखणहारा, चार जुग दे शास्त्र अन्त कहिण कोए ना पाईआ। सो साहिब सुल्तान अन्तरजामी भाद्रों कहे मेरा बण जाए मीत मुरारा, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। मैं बिना सीस तों उस जगदीश नूं करां निमस्कारा, जो जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। मुहम्मद कहे मैनूं देख लैण दे तारा कुतब, कुतबिआं दयां जणाईआ। क्यों खुदा खेल करन लग्गा मुफ्त, मुफ्तीआं पड़दा दयां उठाईआ। क्यों परवरदिगार होया चुस्त, जगत चलाकां दयां जणाईआ। क्यों हुक्म देण लग्गा दरुस्त, दोहरी आपणी कार कमाईआ। बौहड़ी नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों किथों एस नूं मिल गई फ़ुरसत, वेहला हो के आपणी कार कमाईआ। पहलों सानूं बणा के मुरशद, मुरीदां कलमे दिते जणाईआ। आपणी आप कराके उल्फ़त, आलमां इलम दिते समझाईआ। हुण सब नूं देण लग्गा रुख़सत, छुट्टी होवे विच्चों मात लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ। मुहम्मद कहे मेरा इक्को इक सजदा, सजदा दयां जणाईआ। मैं इक्को इक दा बरदा, बरदयां दयां जणाईआ। वेखो खेल आपणे घर दा, जो घर घर रिहा वखाईआ। मैं जिस दा पल्लू फड़दा, तुहानूं आया फड़ाईआ। ओह वेख अगम्मी पर्दा, जोती नूर नूर इलाहीआ। मैं उस दे कदमां आपणा हाढ़ा कढदा, हाए उफ़ दुहाईआ। दरोही सदी चौधवीं अन्त मूल ना छडदा, वाइदे कौल आपणे पूर कराईआ। उम्मते हुण वेला इक्को अख़ीरी हज्ज दा, हुजरयां तों बाहर देणा सुणाईआ। जेहड़ा खुदा मसीतां मकबरयां विच्चों नहीं लभ्भदा, मम्बरां उत्ते करे ना कोए शनवाईआ। उहदा नूर अलाही नुराना हो के जगदा, जागरत जोत डगमगाईआ। वेस कर सूरे सरबग दा, हुक्म संदेशा रिहा सुणाईआ। कुझ लेखा याद आ गया मुहम्मद नूं अज्ज दा, इज़राईल ज़बराईल इसराफील मीकाईल चारे लए बुलाईआ। आपणा हिसाब वेखो झब्ब दा, पल्लू लउ उठाईआ। सारे कहिण दरोही दो जहानां मालक किते ना लभ्भदा, चार कुण्ट नज़र कोए ना आईआ। ओह वणजारा नहीं रिहा मास नाड़ी हड्ड दा, तत्तां तों परे नूर इलाहीआ। जिथ्थे इक्को दीपक नूर नुराना जगदा, दूजा नजर कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। मुहम्मद कहे तुसीं चारे चार फ़रिश्ते, फ़रिश्तयो वेखो थांउँ थाँईंआ। तुहाडे कोलों कोई ना खिसके, भज्ज सके ना राईआ। मैनूं ऐथों सारे दिसदे, नूरी जलवे नाल तकाईआ। तुसां मैनूं लेखे देणे इक इक दे, पहली

अस्सू हिस्सा आपणे हथ्थ उठाईआ। क्यों नहीं कल्मयां विच मन उन्हां दे टिकदे, सांतक सति ना कोए वरताईआ। क्यों प्यारे ना होए अगम्मी पित दे, पलकां दे पिच्छे दिसे ना नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा इक सुणाईआ। ज़बराईल कहे मैं वेखणा अगम्मी जबर, की जाबर रिहा जणाईआ। मुहम्मदा पहलों तकां तेरी कबर, मकबरे फोल फुलाईआ। फेर तकां तेरी उम्मत दा सबर, की सबूरी जाम आया प्याईआ। फेर तेरे मुल्ला शेख़ मुसायकां दा वेखां टब्बर, जिन्हां नूं तीस बतीस सपारे आया दृढ़ाईआ। फेर कलमे दा तकां धुन मधुर, कायनात खोज खुजाईआ। फेर सदी चौधवीं दी वेखां सधर, की आसा रही तकाईआ। फेर वेखां क्यों परवरदिगार सब नूं रिहा बदल, बदली होवे थांउँ थाँईंआ। की पैग़म्बरो तुहाथों हो ना सक्या अदल, इन्साफ़ सच ना कोए कमाईआ। क्यों तुहाडी शरअ ने इन्सानां नूं कीता कत्ल, कत्लगाह बणी लोकाईआ। क्यों नहीं सारयां दा सांझा वखाया ओह वतन, जिस दा मालक इक्को नूर इलाहीआ। जिस दी तुसीं कुखों सारे जम्मे विच्चों बतन, शिकम विच्चों आपणा आप प्रगटाईआ। क्यों वक्ख वक्ख हुक्म सुणाया कलमे लग्गे रटण, रट्टा दीन दुनी पवाईआ। हुण तुहाडी सब दी ओह जड़ लग्गा पट्टण, पटने वाला शब्द गुरु आपणे नाल रखाईआ। भाद्रों कहे मैं सब नूं आया दस्सण, संदेशा देणा चाँईं चाँईंआ। करे खेल अलखणा अलखण, अलख अगोचर आपणा खेल खिलाईआ। सब दे पूरे करने भविक्ख्त बचन, पेशीनगोईआं पेशतर सब दे नाल मिलाईआ। जेहड़े अल्ला वाहिगुरु राम कृष्न नाम सति जपण, जपदे जपदे सारे देणे टकराईआ। मज़्ब मज़्बां नूं कटण, कटाक्ष लग्गे नाम इलाहीआ। एह हुक्म उस दा जिस नूं कहिंदे पाटल प्रगटया विच्चों पटण, नदेड़ आपणा खेल खिलाईआ। ओह खेल करे नाल समरथण, परम पुरख नाल चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। भाद्रों कहे मैं वेखणा गोबिन्द ओह भुजंगी, जिस दीआं भुजां नज़र कोए ना आईआ। सूरबीर बहादर योधा होवे जंगी, जंग दो जहान कराईआ। सब दी पुश्त करके नन्गी, ओढण उत्ते ना कोए टिकाईआ। कलयुग अन्तिम रहिण देवे ना कोए पखण्डी, जूठ झूठ दा पन्ध मुकाईआ। सतिजुग सच धर्म दी ला के डण्डी, डण्डावत इक्को दए दरसाईआ। जन भगतां सन्तां सूफ़ी फ़कीरां लगाए अंगी, अंगीकार इक अख्वाईआ। शरअ शरीअत तोड़ पाबन्दी, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। पिछली आयू सब दी लँघी, अग्गे वक्त सुहञ्जणा दए दृढ़ाईआ। क्यों धरनी धरत धवल पापां नाल कम्बी, नेत्र रो रो मारे धाईआ। मेरे उत्ते सदी चौधवीं सन्त फ़कीर हो गए डम्बी, कूड़ क्रिया विच हल्काईआ। दीन दुनी हो गई अंधी, पारब्रह्म तेरा दरस कोए ना पाईआ। ग़रीबी भुल्ल गई रविदास चमारे वाली आर रम्बी, सुक्के टुकड़े

१४४८ २२

खा के झट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरा वेस अवल्लड़ा सूरे सरबंगी, जगत बुद्धी समझ कोए ना पाईआ।

✪ २ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ७ टहिल सिंघ, गुलज़ार सिंघ, वरयाम सिँघ राम दवाली पिण्ड रूपोवाली ज़िला अमृतसर ✪

जन भगतो आपणा हिस्सा लैणा भाग, जन्म जन्म दा पूरब लहण चुकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया विच्चों जाणा जाग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। त्रैगुण तत बुझाउणी आग, अग्नी तत ना लागे राईआ। माया डस्सणी डस्से ना नाग, तृष्ना तृखा ना कोए हल्काईआ। गुरमुख हँस बणे काग, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। घर दीपक गृह जोत तक्को चराग़, चराग़ाहां दा डेरा ढाहीआ। मन मनसा छड्डो समाज, बुध बिबेक बणाईआ। पुरख अकाल सरनाई जाणा लाग, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। अन्तर निरन्तर रहे ना वाद विवाद, विख अमृत रूप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच वस्त नाम वरताईआ। जन भगतो आपणा पूरा करो लेखा, जुग जुग दा लहिणा झोली पाईआ। तन मन्दिर रहे ना भरम भुलेखा, भाण्डा भरम देणा भनाईआ। सतिगुर शब्द शब्द सतिगुर सुणो संदेशा, जो सँध्या सरघी इक्को रंग रंगाईआ। इक्को माण वड्याई देवे इक्को मूंड मुंडाए धारी केसा, केसगढ़ दा मालक होए सहाईआ। जो एथे उथे दो जहानां मालक नर नरेशा, नर नरायण अगम्म अथाहीआ। जिस दा सुत दुलारा गोबिन्द दस दशमेशा, दहि दिशा भेव चुकाईआ। उस दा रूप अगम्मा वेसा, जिस नूं समझ विच ना कोए समझाईआ। साचे सन्तां करे हेता, हितकारी इक हो आईआ। आत्म ब्रह्म दा बण के नेता, निरगुण निरवैर दया कमाईआ। सुणो नाम सच सच सच संदेशा, अणसुणत दए सुणाईआ। जिस दी अवतार पैग़म्बर गुरुआं रखी टेका, टिक्के मस्तक धूढ़ी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि करता अगम्म अथाहीआ। जन भगतो आपणी पूरी करो मनसा, मन मति देणी गंवाईआ। गुरमुख रूप बणो हँसा, हिँसा अन्दर रहे ना राईआ। मन हँकारी मारो कंसा, काहन इक्को इक मनाईआ। जो लहिणा देणा देवे कोट सहँसा, सहिज पद आपणा इक दरसाईआ। तुसीं आत्म धार उस दी अंसा, अन्तष्करन तजणा कूड़ लोकाईआ। सच दा सच बणाउणा बंसा, दूसर रंग ना कोए रंगाईआ। जो धर्म दी धार बणाए बणता, घड़न

भन्नणहार इक अख्वाईआ। देवे वड्याई साचे सन्ता, सन्त साजण आपणे रंग रंगाईआ। गुरमुखां तोड़े गढ़ हउमे हंगता, हँ ब्रह्म आप प्रगटाईआ। बोध अगाधा बणे पंडता, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। जेहड़ा ना जम्मदा ना मरदा, जम्मण मरन विच कदे ना आईआ। ओह प्यारा बणया कदे ना माटी चम्म दा, चम्म दृष्टी सारे दयो तजाईआ। उहदा खेल वेखो अगम्म दा, अलख अगोचर आपणी कार कमाईआ। रूप अनूप दस्से श्री भगवन दा, भगवन आपणा पड़दा आप चुकाईआ। फेर नूर तक्को ओस नुराने चन्न दा, जिस नूं सूर्या चन्द कोटन कोटि सीस झुकाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण सब दे बेड़े बन्नदा, बन्नणहार इक अख्वाईआ। ओह मालक ख़ालक वजूद पंज तत (तन) दा, गृह गृह आपणा भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा मालक दया कमाईआ। जन भगतो आपणी पूरी करो वंड, वंडणहार दया कमाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया छडो पखण्ड, ममता मोह ना कोए हल्काईआ। आत्म परमात्म माणो अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गावो छन्द, सोहँ ढोला धुरदरगाहीआ। पारब्रह्म ब्रह्म लावो आपणे अंग, अंगीकार इक अख्वाईआ। नाम शब्द सुणो मृदंग, मर्द मर्दाना आप दृढ़ाईआ। आत्म सेज सुहञ्जणी करो पलँघ, गृह मन्दिर होवे रुशनाईआ। झगड़ा मुकाओ जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज लेखा रहे ना राईआ। जगत जहान
१४५० जाओ लँघ, मंज़ल साची कदम टिकाईआ। झगड़ा रहे ना कोए ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड पड़दा लैणा उठाईआ। मिले मेल सूरे सरबंग, १४५०
२२ मेलणहार दया कमाईआ। जिस दी सिफ्त कर ना सके बत्ती दन्द, रसना जेहवा ना कोए चतुराईआ। ओह लेखा जाणे २२
हँ ब्रह्म, पारब्रह्म अगम्म अथाहीआ। गुरमुख बणा के धुर दे चन्न, दरगाह साची होए सहाईआ। हरख़ सोग मेट के ग़म, चिन्ता चिखा विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। लेखे लावे पवण स्वासी दम, दामनगीर आप हो जाईआ। लहिणा देणा लेखा पूरा करे ब्रह्म, ब्रह्म पारब्रह्म समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा मालक दया कमाईआ। जन भगतो सतिगुर शब्द दा लओ प्यार, प्रेम प्रीती इक जणाईआ। हिरदे हरि रखो करतार, कादर कुदरत दया कमाईआ। एका रूप तक्को पुरख नार, नर नरायण सोभा पाईआ। जिथ्थों इक्को नूर जोत उज्यार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। ना कोई पैग़म्बर गुर अवतार, तत्व तत ना कोए रखाईआ। ना कोई शब्द नाद धुन्कार, उच्ची कूक ना कोए दृढ़ाईआ। वेखो खेल सच्ची सरकार, शाह पातशाह शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगत सुहेले होवो ख़बरदार, सोई सुरती मात उठाईआ। सतिगुर शब्द शब्द दातार, दयावान दया कमाईआ। जुग चौकड़ी लहिणा देणा देवे कर्ज़ उतार, मकरूज सब दा लेखा पूर कराईआ। साची बख़्श के धूढ़ छार, टिक्के मस्तक ख़ाक रमाईआ। किरपा करे अगम्म अपार,

अलख अगोचर होए सहाईआ। साची बख्श सीस दस्तार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मानस जन्म देवे संवार, अग्गे लेखा रहे ना राईआ। चित्रगुप्त राय धर्म नेत्र अक्ख ना सके उठाल, दूर दुराडा सीस झुकाईआ। नाता तोड़ के काल महाकाल, दीन दयाल होए सहाईआ। एथे उथे दो जहानां श्री भगवाना करे प्रितपाल, प्रितपालक हो के वेख वखाईआ। सचखण्ड दवारा बख्श सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक जणाईआ। जिथ्थे दीपक जोती जगे बेमिसाल, जिस दी मिसल ना कोए बणाईआ। जिस दा चार जुग दे शास्त्र देण अहिवाल, सिफ्तां वाले ढोले गाईआ। सो भगतां हल्ल करे सवाल, सवाली ख़ाली रहिण कोए ना पाईआ। लख चुरासी विच्चों भाल, हरि जू आपणे रंग रंगाईआ। सतिगुर शब्द बणा दलाल, विचोला विचला भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित जन भगतां करे हित, मित मित्र मीत एकँकार इक अख्वाईआ।

✪ २० भाद्रों शहिनशाही सम्मत ७ कपूर सिँघ दे गृह मोगा शहर ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

१४५१ नारद कहे गुर अवतार पैग़म्बर उठो, निरगुण धार बल प्रगटाईआ। आपणयां सिक्खां मुरीदां उत्ते मुर्शद हो के तुट्ठो, १४५१
२२ मेहरवान रूप वखाईआ। लुके रहो मूल ना गुट्ठो, सचखण्ड साचे लओ अंगड़ाईआ। कलयुग कूड़े पाई लुट्टो, लुटेरा बणया २२
थांउँ थाँईं थाँईंआ। किसे दी सुहञ्जणी होए मूल ना रुतो, रुतड़ी हरि नाम का कोए महकाईआ। पुरख अकाल कोलों सारे पुछो, जो पेशतर पेशीनगोईआं आए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे प्रभू मैं तेरी सृष्टी दृष्टी तकी, इष्ट अवतार पैग़म्बर गुर ध्यान लगाईआ। मानव माणस मानुक्ख मंज़ल चढ़े कोए (ना हकी,) हकीकत दे मालक तेरा हक समझ कोए ना पाईआ। सब दा अन्तर होया शकी, मन वासना कूड़ हल्काईआ। किसे दे अन्दर नाम रिहा ना रत्ती, रत्न अमोलक हीरा रूप ना कोए वखाईआ। तैनूं गाउंदे रसना जेहवा दन्द बत्ती, हिरदे अन्दर सके ना कोए वसाईआ। दरोही तेरी समझ आई ना राग छत्ती, छत्रधारी कोटन बैठे सीस झुकाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारी होई मती, गुरमति दीन दुनी गए भुलाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तेरा दरस पाए कोए ना कमलापती, पतिपरमेश्वर तैनूं मिलण कोए ना आईआ। मैं जिधर तकां नौ खण्ड सत्त दीप जगत शास्त्रां लग्गी हट्टी, सौदा अक्खर तेरा नाम विकाईआ। साची खट्टी किसे ना खट्टी, खटका मिटे ना कूड़ लोकाईआ। मेहरवान महिबूब तेरे नाम कलमे दी पढ़े कोए ना पट्टी, निरअक्खर समझ ना कोए समझाईआ। गृह मन्दिर काया जोत जगे ना लट लटी,

नाद धुन शब्द ना कोए शनवाईआ। मैं वास्ता पावां जोड़ के हथ्थीं, हथेली हथेली नाल मिलाईआ। कलयुग अन्तिम दीन दुनी दी वासना वेख इक्वी, हर घट अन्तर ध्यान लगाईआ। भाग लग्गा ना दिसे किसे काया मट्टी, घर विच घर होए ना कोए ना रुशनाईआ। सुरत शब्द डोर सब दी गई कटी, मिले मेल ना धुर दे माहीआ। तूं साहिब पुरख समर्थी, हरि करता इक अख्वाईआ। नारद कहे कूड़ी सृष्टी दे मथ्थी, मथन कर जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। नारद कहे अवतार पैग़म्बर गुर वेखो खेल अक्खां, बिन नेत्र लोचण नैण अक्ख उठाईआ। तुहाडा सिख मुरीद रिहा कोए ना सख़ा, सगला संग ना कोए निभाईआ। अमृत मिले ना किसे रसा, निजर झिरना ना कोए झिराईआ। मनुआ मन ना होए वसा, ममता कूड़ ना कोए मिटाईआ। साचा मार्ग किसे ना दिसा, दीन मज़ब तों बाहर करे ना कोए पढ़ाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म सिफ्त सालाह करे कोए ना जसा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी सारे गाईआ। सदी चौधवीं वेख मैं खिड़ खिड़ा के हस्सा, हस्ती तक तेरी बेपरवाहीआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चार कुण्ट दहि दिशा नस्सा, ज़िमीं असमान दो जहान फोल फुलाईआ। जिधर तकां कलयुग रैण अंधेरी दिसे मस्सा, जोती नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। तन वेस वेख्या धोती तहिमत कच्छा, सति
१४५२ सच रंग ना कोए रंगाईआ। चुरासी विच्चों बिन तेरी किरपा भगत बणे कोए ना बच्चा, भगवन तेरे विच समाईआ। सब १४५२
२२ दा काया माटी भाण्डा कच्चा, नव सत्त खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल २२
साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे पुरख अकाल मैं वेखे अवतार पैग़म्बर गुरु फिरदे, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। तेरा राह तकदे निरगुण धार विछुन्ने चिर दे, जुग जुग आपणी आस वधाईआ। असीं खेल वेखणे उस अगम्मी पिर दे, जो पतिपरमेश्वर शहिनशाहीआ। जिस भगतां साफ़ करने हिरदे, कलयुग कूड़ी क्रिया दुरमति मैल धुआईआ। शब्द भण्डारे बख़्शणे मेहर दे, मेहरवान महिबूब आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। पुरख अकाल कहे सुण नारद मुनी, मुनीश्र दयां जणाईआ। कलयुग अन्तिम रिहा कोए ना गुणी, अवगुण कूड़ भरी लोकाईआ। सब दी पुकार रिहा सुणी, अणसुणत करता धुरदरगाहीआ। कोटां विच्चों सन्त सुहेले रिहा चुणी, अणगिणतां विच्चों आपणी गणित गिणाईआ। जिन्नां अन्दर देवे नाम दी धुनी, धुन आत्मक राग सुणाईआ। भाग लगा के काया कुल्ली, कुल मालक होए सहाईआ। जेहड़ी आत्मा नाम शब्द तराज़ू उत्ते तुली, तुलहा बेड़ा अवर ना कोए रखाईआ। ओह लोकमात रहे ना भुल्ली, अभुल आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक दया कमाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण नारद तेरा सुणया संदेश, दो जहानां वेख वखाईआ। अन्तिम लेखा वेख दस दशमेश, जो दहि दिशा गया जणाईआ। जिस दा समझे कोए ना लेख, बुद्धी पर्दा ना कोए उठाईआ। ओह सब दी बदलण वाला रेख, ऋषीआं मुनीआं करे सफ़ाईआ। वस के सम्बल देस, साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाईआ। झगड़ा मेटे औलीए मुल्लां शेख़, मुसायकां लेखा दए मुकाईआ। खेल करे नेतन नेत, नित नवित आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतां अन्तर आत्म खोल्ह भेत, अनुभव दृष्टी विच जणाईआ। जो वसे सचखण्ड साचे देस, दरगाह साची सोभा पाईआ। ओह लेखा जाणे आदि जुगादि जुग चौकड़ी हमेश, हमसाजण नूर इलाहीआ। जिस नूं सूफ़ीआं किहा दरवेश, संदेशा कल्मयां विच दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। नारद कहे अवतार पैग़म्बर गुरु वेखो आपणी कार, की करनी कार कमाईआ। की संदेशा दे के आए विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी शब्द जणाईआ। की भविक्ख्तां विच आए उच्चार, पेशीनगोईआं पेशतर जगत जणाईआ। निरगुण धार सारे करो विचार, बिना रसना तों विचर के दयो सुणाईआ। की खेल करे करतार, हरि करता धुरदरगाहीआ। तेई अवतार होवो हुश्यार, आपणी आप लओ अंगड़ाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद होणा ख़बरदार,
१४५३ बेख़बरां ख़बर दयो जणाईआ। दस गुरु पाओ सार, की महासार्थी आपणी खेल खिलाईआ। सारे इक्ट्ठे हो के बोलो इक १४५३
२२ जैकार, तूं ही तूं ही राग अल्हाईआ। की संदेशा देवे एकँकार, इक इकल्ला वाहिद नूर इलाहीआ। जिस दे सतिजुग त्रेता २२
द्वापर कलयुग बणे तुसीं बरख़ुरदार, बरख़ुरदारी विच आपणी सेव कमाईआ। नाम शब्द कलमे आए उच्चार, अक्खर काग़ज़ कलम शाही जोड़ जुड़ाईआ। तिस दा भेव दस्सो नाल प्यार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों बाहर देणा जणाईआ। क्यों सृष्टी कायनात आई हार, चार वरन अठारां बरन रहे कुरलाईआ। क्यों दीनां मज़्बां उडदी छार, सति धर्म विच ना कोए समाईआ। क्यों चेले गुर होए ग़द्दार, मुरीद मुर्शद बैठे मुख भवाईआ। बिन अक्खरां तों आपणी सच दस्सो गुफ़तार, गुफ़त शुनीद पड़दा इक खुल्हाईआ। क्यों दीन दुनी बदली रफ़तार, रफ़ता रफ़ता आपणा भेव चुकाईआ। सारे इक्को वार कहिण ललकार, उच्ची कूक कूक जणाईआ। कलयुग आई अन्तिम वार, अन्तष्करन बदलया कूड़ लोकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर करन निमस्कार, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस झुकाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त कलि कल्की लए अवतार, निहकलंक अमाम अमामा वेस वटाईआ। जिस दा लेख कोए कातब लिख सक्या ना बण लिखार, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी नारद कहे सब दी पावे सार, महासरथी इक अख्वाईआ। जगत सुहेले साचे सन्तां लए उबार,

सूफ़ीआं आपणा रंग रंगाईआ। कारज सिद्ध करे जगत विच विवहार, विवहारी आपणी दया कमाईआ। मेहरवान महिबूब आप निरँकार, निराकार इक अख्वाईआ। साचे भगतां सदा पैज जाए संवार, स्वार्थ आपणा ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिर हथ्थ धरे कपूर सिँघ बराड़, इकरार पूरब तोड़ निभाईआ।

✪ २३ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ७ इटारसी शहर मध्ध प्रदेश, भगत सिंघ, हरदित सिंघ, जसवन्त सिंघ, सुरिन्दर सिंघ, जोगिन्दर सिंघ, चमन लाल, पटोला बाई, टोपन राम, गुरमुख सिँघ पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर, महा सिँघ जबलपुर, शिंगरा सिँघ बड़ोदा, मंगल सिंघ, जोगिन्दर सिंघ, सरूप सिँघ भूपाल, सन्त सिँघ उजैन ✪

सो पुरख निरँजण कहे मेरा खेल अपारा, अगम्म अगाध भेव कोए ना पांयदा। हरि पुरख निरँजण कहे मेरा हुक्म अपारा, आदि जुगादि जुग चौकड़ी आपणे विच्चों प्रगटांयदा । एकँकार कहे मैं करनी करता करनेहारा, अकल कलधारी आपणी कल वरतांयदा। आदि निरँजण कहे मैं शाह पातशाह शहिनशाह सच्ची सरकारा, सच स्वामी अन्तरजामी इक अख्वांयदा। अबिनाशी करता कहे मेरा लहिणा देणा लेखा धुर दरबारा, दरगाह साची इक्को रंग वखांयदा। श्री भगवान कहे मैं रूप रंग तों वसां बाहरा, नूर नुराना डगमगांयदा पारब्रह्म कहे मैं आपणा आप करां उज्यारा, निरगुण आपणी कल धरांयदा। शब्दी शब्द धार कर पसारा, आपणा पड़दा आप उठांयदा। विष्न ब्रह्मा शिव दे सहारा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमांयदा। सो पुरख निरँजण कहे उत्पत कीता निरगुण धार सुत दूल्हा, शब्द शब्दी धार प्रगटाईआ। हुक्म हुक्म दा दस्स असूला, असल असल विच्चों समझाईआ। बिना धूढ़ तों ला के मस्तक धूला, बिना चरण तों चरण दिता छुहाईआ। मालक दस्स कन्त कन्तूहला, भगवन दिती माण वड्याईआ। बिन पवण तों दे के झूला, सच दवार दिता झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। हरि पुरख निरँजण कहे शब्दी शब्द सुत दुलारा, बिन जननी ल्या प्रगटाईआ। गृह दस्स अगम्म अपारा, अलख अगोचर दिती वड्याईआ। सति सच दे सहारा, दर इक्को इक दरसाईआ। जोती नूर नूर चमत्कारा, सच सरूप पिता माईआ। आदि अन्त करे प्यारा, मेहरवान महिबूब इक हो आईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। इक एकँकार कहे सुत दुलारा कीता प्रगट, परगणा आपणा ल्या जणाईआ। जो इक्को इक रिहा रट, इक इक्को विच समाईआ। इक्को गृह वणज करा के हट्ट, इक्को वस्त वस्त वखाईआ। इक्को मेल पुरख समरथ, स्वामी आपणा जोड़ जुड़ाईआ। आपणी दात दी अगम्मी वथ, वस्त इक्को इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। आदि निरँजण कहे सतिगुर शब्द कीता उतपत, उत्तम आपणी दया कमाईआ। हड्ड मास नाड़ी ना कोई रत, बूँद रक्त ना रंग रंगाईआ। इक्को रूप प्रगटा के सति, सति सति विच समाईआ। सति सरूप दे के ब्रह्म मति विद्या अगम्म दिती जणाईआ। सचखण्ड दवारे जाणा वस, दूजा गृह ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। अबिनाशी करता कहे सतिगुर शब्द दुलारा उठया, निरगुण धार लए अंगड़ाईआ। पुरख अकाला एका तुठ्ठया, दीन दयाला होया सहाईआ। सच चरणोदक प्याया घुटया, आदि अन्त दी तृष्ना दिती मिटाईआ। सचखण्ड दवार सुहाई रुत्तया, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। प्यार नाल किहा मेरे दुलारे पुत्तया, पिता पूत खुशी बणाईआ। तेरा लेखा नाल अबिनाशी अचुतया, चेतन इक्को घर जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर देवणहारा

१४५५ धुर दा वर, सचखण्ड निवासी आपणा हुक्म सुणाईआ। श्री भगवान कहे सुत दुलारा शब्दी नन्हा बच्चा, बचपन समझ किसे १४५५

२२ ना आईआ। जिस दा रूप आदि जुगादी सच्चा, सति सच विच समाईआ। जिस दा नूर नूर विच रचा, रचना अवर ना २२

कोए दरसाईआ। लेखा दिसे ना भाण्डा कच्चा, घड़न भन्नणहार वंड ना कोए वंडाईआ। एका धार बणा के तता, तत्व तत दा डेरा ढाहीआ। आपणा प्यार बख्श के साची सत्ता, सति सति विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक बेपरवाहीआ। पारब्रह्म कहे सुत दुलारा शब्द बणाया आप, आपणी दया कमाईआ। आप आपणा दस्स के जाप, आपणे रंग रंगाईआ। आपणा आप वखा प्रताप, वड वड्डा दए दृढ़ाईआ। मेहरवान हो के सिर रखे हाथ, बिन हथ्थां हथ्थ टिकाईआ। निरगुण निरगुण दस्सी गाथ, अगम्म कीती पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। सतिगुर शब्द शब्दी धार गया झुक, सति दवारे सीस निवाईआ। पुरख अकाल किहा सुत दुलारे सुत, सच तेरी वड्याईआ। तूं इक्को पढ़नी तुक, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। दूसर धार ना बदले रुख़, जगत धार ना कोए जणाईआ। तूं जणिउं जोती धार दी कुक्ख, तत्तां वाली कोए ना माईआ। गर्भ होणा नहीं उलटा रुक्ख, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। तेरा खेल करना पंज तत काया विच

मनुक्ख, पारब्रह्म प्रभ आपणा हुक्म वरताईआ। तन वजूद माटी ख़ाक खेल करना अदभुत, अनभव आपणा हुक्म चलाईआ। निरगुण धार रहिणा लुक, सरगुण आपणा खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। पुरख अकाल किहा सुत दुलारे रहिणा ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर जणाईआ। सति सच दी तैनूं बख़्शां इक दस्तार, दस्त नाल सीस ना कोए बंधाईआ। इस नाल सदा रहे मेरा प्यार, प्यार मुहब्बत रूप बदलाईआ। मेरे नाम शब्द दी धुन रहे गुफ़तार, गुफ़त शुनीद हुक्म सुणाईआ। बणया रहिणा सेवादार, जुग जुग आपणी सेव कमाईआ। मैं पाउंदा रहिवां सार, महासार्थी हो के वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द किहा (तेरे) चरण कँवल निमस्कार, निउँ निउँ लागा पाईआ। मैं केहड़े वसां घर बाहर, लोकमात देणा समझाईआ। कवण मित्र बणावां यार, सज्जण कवण संग रखाईआ। किस दा दरस करां दीदार, सन्मुख हो के खोज खुजाईआ। अबिनाशी करते संदेशा दिता आपणी धार, बिन रसना जेहवा आप दृढ़ाईआ। जिस वेले लख चुरासी दिता पसर पसार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज तेरी झोली पाईआ। माणस मानव मानुख लएं उभार, लोकमात देवां माण वड्याईआ। निरगुण नूर जोत कर उज्यार, आत्म ब्रह्म सर्ब दरसाईआ। शब्दी नाद तेरी धुन्कार, आपणा नाम दयां प्रगटाईआ। रूप दस्स जगत संसार, खेल करावां चाँई चाँईंआ। लेखा बणा पैग़म्बर गुर अवतार,
१४५६ अवतर आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी १४५६
२२ पुरख अबिनाशी भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। पुरख अकाल किहा सतिगुर शब्द मेरी धार वेख लै जगत, जगजीवण दाता २२
हो के दयां दृढ़ाईआ। तेरे मीत बणावां आपणे भगत, भगवन हो के होवां सहाईआ। उन्हां लेखे लावां बूँद रक्त, तन वजूद आपणी झोली पाईआ। तेरे प्यार दी बख़्श के शक्त, शख़्सीअत दयां वखाईआ। तूं लेखा लाउणा वेखणा फ़कत, फ़िकरे इके विच दृढ़ाईआ। ओह सुहावण उपर धरत, धरनी धौल धवल वज्जे वधाईआ। मैं वेखां उन्हां परत, पतिपरमेश्वर हो के खोज खुजाईआ। सतिगुर शब्द किहा की लेखा जाणें उपर अर्श, अर्शी प्रीतम दे दृढ़ाईआ। की पर्दा (खोल्हें) उपर फ़र्श, ज़िमीं ज़मां लेख चुकाईआ। पुरख अकाल किहा जोती धार देवां दरस, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। जन्म जन्म दी मेटां हरस, हवस अगली दयां गंवाईआ। मेहरवान हो के करां तरस, सिर सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। पर याद कर लै सतिगुर शब्द, जिस वेले अन्तिम कलयुग सम्मत शहिनशाही दा होणा सत्तवां बरस, बरसी धर्म धार मनाईआ। ग़रीब निमाणयां वंडां दर्द, दर्दीआं आपणे लेखे पाईआ। जगत शरअ छुरी जिन्हां पोह ना सके करद, कातिल मक्तूल दा डेरा ढाहीआ। तेरी मंज़ूर करां अर्ज़, आरज़ू लेखे विच रखाईआ। आपणा पूरा करां फ़र्ज़, निरगुण धार होवां सहाईआ। जगत तृष्ना होवे कोई

ना ग़रज़, गरज के सब दा लहिणा दयां चुकाईआ। नव नौ चार दा पिछला मूल चुकावां कर्ज़, मकरूज़ हो के वेख वखाईआ। योधा सूरबीर बण मर्दाना मर्द, मदद करां थांउँ थाँईंआ। जगत वेख अंधेरा गर्द, अंध अज्ञान दयां मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा पूर कराईआ। सतिगुर शब्द किहा मेरे निरँकार, निरवैर तेरी सरनाईआ। मैं बिन हथ्थां करां निमस्कार, निव निव लागां पाईंआ। तेरा खेल होवे विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी सेव कमाईआ। जुग चौकड़ी बीतण आपो आपणी वार, वारता अवतार पैग़म्बर गुरु गुरदेव गाईआ। तेरी सिफ्त दा होवे इज़हार, महिमा अगम्म अथाहीआ। तेरा भगतां होवे प्यार, प्रेमी प्रीतम इक अख्वाईआ। मैं तेरी चरण धूढ़ी लावां छार, मस्तक टिक्का ख़ाक रमाईआ। सचखण्ड निवासी बेनन्ती देवां गुज़ार, गुज़ारिश विच हाल सुणाईआ। जिस वेले जुग चौकड़ी बीते नव नौ चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। चारों कुण्ट होणा धूंआँधार, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। सहायता करे ना कोए पैग़म्बर गुर अवतार, चार जुग दे शास्त्र बैठण मुख छुपाईआ। सीस दस्तार ना दिसे किसे सिक्दार, शाह पातशाह रोवण मारन धाईआ। नाम सति होवे हाहाकार, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। उस वेले किरपा
१४५७ करीं आप करतार, कुदरत दे मालक दया कमाईआ। लख चुरासी विच्चों जन भगतां करीं संभाल, सम्बल बहि के आपणा १४५७
खेल खिलाईआ। कोझयां कमल्यां पावीं सार, महासार्थी भज्जणा वाहो दाहीआ। सब दी पैज देवीं संवार, जो जन बैठण
२२ तेरी ओट तकाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले परवरदिगार बणना सांझा यार, यथार्थ आपणी दया कमाईआ। सतिगुर शब्द २२
कहे उन्हां दे सिर बन्न्हीं दस्तार, जिन्हां दा सीस जगदीश आपणे लेखे लाईआ। फेर जन्म लैणा पए ना दूजी वार, चुरासी फाँसी देणी कटाईआ। वसाउणा सचखण्ड सचे दरबार, दरगाह साची आपणे विच मिलाईआ। मेरी आदि अन्त अन्त आदि सतिगुर शब्द कहे सदा सद निमस्कार, डण्डावत बन्दना विच सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण निरवैर तेरा अन्त ना पारवार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परम पुरख परमात्म तेरी बेपरवाहीआ।

✪ पहली अस्सू शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल रात नूं ज़िला अमृतसर ✪

अज़राईल जबराईल मेकाईल इसराफील रहे झुक, बिन सिर सर सजदा सीस झुकाईआ। परवरदिगार सांझे यार तेरे दर ते आ के गए रुक, रुक्का वेख चाँई चाँईंआ। नूर इलाही जल्वागर तेरे कलमे दी इक्को तुक, जो तुख्म तासीर दए

बदलाईआ। असीं फिर के नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चार कुण्ट, गली कूचा ध्यान लगाईआ। धरनी धरत धवल उत्ते पई लुट्ट, कलयुग लुटेरा बणया थांउँ थाँईंआ। दीनां मज़्बां तकी फुट्ट, कलमा कायनात कम्म किसे ना आईआ। रूह बुत नाता रिहा टुट्ट, अल्ला हू अन्ना हू जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। महिबूब तेरी (मुहब्बत) महिज़ गई छुट, साचा संग ना कोए बणाईआ। तेरी धार तैथों गई रुट्ठ, रुस्सयां ना कोए मनाईआ। बिन तन वजूद नूर इलाही हो के उठ, आलमीन आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि साहिब तेरी सरनाईआ। चारे कहिण निरगुण धार तेरे फरिस्ते बिन अक्खरां हथ्थ उठाईआ। नबी रसूल सानूं सारे दिसदे, पैग़म्बर वेख वखाईआ। मालक ख़ालक की लेखे दईए इक इक दे, इक इकल्ले वाहिद तेरी बेपरवाहीआ। मुहम्मद दे कलमे विच मन किसे ना टिकदे, इस्म आज़म ना कोए जणाईआ। शरअ दे झगड़े वेखे नित दे, शरीअत घर घर करे लड़ाईआ। कायनात तेरे सिफ्तां वाले अक्खर विकदे, अलिफ़ ये हट्टां विच भवाईआ। दरोही असीं सारे तेरे कोल पिटदे, उच्ची कूक सुणाईआ। झगड़े वेखे पथ्थर इट्ट दे, मन्दिर मसीत रहे कुरलाईआ। पैंडे मंज़ल मुके ना किसे सवा गिठ दे, कुण्डी खिड़की बजर कपाट ना कोए खुल्हाईआ। मानस जन्म मूल ना जितदे, पंज विकार होए हल्काईआ। मुल्ला शेख़ मुसायक सति सरूप मूल ना दिसदे, ऐनुलहक नाअरा कोए

१४५८ ना लाईआ। की खेल तेरे नूर इलाही पित दे, पतिपरमेश्वर दे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा १४५८

२२ कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। चारे कहिण असीं होए हाज़र, हज़रतां दे हज़रत सीस निवाईआ। २२

तेरा तक्कया कलमे दा मुहम्मद ताजर, तजरबिआं विच वेख वखाईआ। बौहड़ी सानूं नज़र आया सीस तेग़ बहादर, विच रिहा जणाईआ। जिस दा नूर होया उजागर, गोबिन्द सूरा बेपरवाहीआ। जिस नूं कहिंदे वाला बाज़न, बाज़ी सब दी दए उलटाईआ। मेल मिला के शाहो भूप राजन, शहिनशाह आपणा रंग रंगाईआ। वेस वटा के देस माझन, मजलस भगतां संग रखाईआ। शब्दी शब्द मार आवाज़न, चौदां तबक रिहा हिलाईआ। धुन शब्द देवे नादन, नाद अनादी आप जणाईआ। झगड़ा मिटे मुल्ला शेख़ काज़न, शरअ शरअ नाल टकराईआ। सब दा लेखा आया वाचन, बिन अक्खरां हरफ़ हरूफ़ फोल फुलाईआ। जिस नूं तकण पृथ्मी आकाशण, गगन गगनंतर ध्यान लगाईआ। सो लेखा जाणे हर घट रखे वासन, वास्ता आपणे नाल प्रगटाईआ। उस ने भेव खोल्हणा बातन, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। परवरदिगार असीं हाज़र होए पहली अस्सू रातन, रुतड़ी तेरे नाल महकाईआ। जगत शरअ तोड़या नातन, नातवां नाते दिते गंवाईआ। तेरा जल्वा तक प्रकाशन, परम पुरख तेरी सरनाईआ। तेरा हुजरा सच महिबूब अगम्म महिराबन, मीनार अगम्म अथाहीआ। जिथ्थे झगड़ा नहीं दो

दोआबन, आबेहयात मिले चाँईं चाँईंआ। लेखा रहे ना मक्का काअबन, काअब्यां परे दृढ़ाईआ। निरगुण धार निरगुण निरगुण रूप अराधन, रसना जेहवा ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। जबराईल कहे अज़राईल उठ मेरे उस्ताद, उस्तत साची दे जणाईआ। असराफ़ील तेरे आवे बाद, बाग़बां अज़ां नाल जणाईआ। मेकाईल वजाए नाद धुन अगम्म शनवाईआ। चौदां तबकां दस्से फ़रयाद, संदेशा देवे चाँईं चाँईंआ। नूरी अल्ला औह तक मुहम्मद नाल ईसा कहे गॉड, गाईड नज़र कोए ना आईआ। तेरे शब्द दी अगम्मी इक्को राड, निरगुण नूर दो जहान रही डराईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक नूर इलाही वाहिद, वाहिदे सब दे पूर कराईआ। सदी चौधवीं सुणनी इक फ़रयाद, दर ठांडे सीस निवाईआ। तेरे कलमे दा करे कोए ना वाअज़, आवाज़ हक ना कोए सुणाईआ। मुल्लां शेख़ खुल्ले किसे ना राज़, राज़क रिज़क रहीम तेरा नूर नज़र किसे ना आईआ। उठ के तक कम्म ना आई पंज वक्त नमाज़, पंचां करे ना कोए सफ़ाईआ। तेरे नूर दा किसे ना कोए आग़ाज़, अकल कलधारी की तेरी बेपरवाहीआ। सोई सुरत सके मूल ना जाग, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। पैग़म्बर दे सके ना कोए जुआब, जुआबतल्बी विच सारे सीस निवाईआ। सजदयां विच कर कर थक्के आदाब, निव निव लागण पाईआ। परवरदिगार सानूं दस्स ओह अगम्मी किताब,
१४५६ जेहड़ी कुतबखान्यां विच्चों हथ्थ किसे ना आईआ। जिस विच्चों इक्को तेरे नाम दा होवे लाभ, लबेलुआब अवर ना कोए १४५६
२२ जणाईआ। वायदा पूरा कर दे जो नानक नाल वायदा कीता विच बग़दाद, बग़लगीर बेनज़ीर आपणा आप बणाईआ। जोती २२
जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक वेख वखाईआ। चारे फ़रिश्ते कहिण असीं लेखा दस्सीए की, कहिण किछ ना पाईआ। जगत नाता तुटा पुत्र धी, पिता पुत्र ना संग निभाईआ। गुरु चेला झगड़ा प्या साढे तिन्न हथ्थ सीअ, मन का मणका ना कोए भवाईआ। अमृत जाम सके ना पी, पीआ प्रीतम तेरा दरस कोए ना पाईआ। लेखा वेख बीस इकीसा वीह, वीहवीं सदी अक्ख खुल्हाईआ। की ईसा कहि के गया जी, जींवदयां दिती दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दरगाह साची पर्दा आप उठाईआ। चार फ़रिश्ते कहिण साडी हक सलाम, सीस जगदीश झुकाईआ। इक इक दा लेखा दईए तमाम, तमां कूड़ ना कोए रखाईआ। परवरदिगार मुल्ला शेख़ मुसायक सईयद करन हराम, बचया नज़र कोए ना आईआ। माया ममता सब नूं कीता गुलाम, ग़ुरबत अन्दरो बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। साचा दिसे ना काया काअबा हक मकान, निरगुण नूर ना कोए रुशनाईआ। की अंकड़यां विच लाईए मीज़ान, हिन्दसे हिन्दस्सयां नाल मिलाईआ। उम्मत नबी रसूल होई बेईमान, बेवा रूप होई लोकाईआ। मन

शरअ होई शैतान, शरीअत नाल लड़ाईआ। तोबा तोबा हथ्थ लाईए कान, कायनात दे मालक सीस झुकाईआ। असीं बालक तेरे नादान, तूं वड्डा वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। परवरदिगार कहे वखाओ लेखा धुर, धुर दयां दृढ़ाईआ। केहड़ा नाद केहड़ी सुर, कवण ताल आए वजाईआ। केहड़ा चेला केहड़ा गुर, गुरदेव कवण अख्वाईआ। किस गृह जाणा मुड़, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। किस शौह दरयाए जाणा रुढ़, वहिण जगत वाला वहाईआ। केहड़ी कुण्टों आए मुड़, आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। जबराईल कहे मैं दस्सां हक निशानी, हज़रतां दे हज़रत दयां जणाईआ। मैं तके शरअ वाले ईरानी, इबरत विच मेरी दुहाईआ। मैं तके तेरे कलमे वाले बानी, मुहम्मद अहिमद खोज खुजाईआ। मैं सुणया कलमा कलामी, अक्खरां वाली वड वड्याईआ। शरअ दा बणया जाण जाणी, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। सदी चौधवीं अन्तिम सब दी दिसी जूह बेगानी, मालक नज़र कोए ना आईआ। मैं सुण के तेरा अगम्म पैग़ामी, पैग़म्बरां दिता दृढ़ाईआ। उठो वेखो खेल शहिनशाह सुल्तानी, की आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर दी तक्को निशानी, नूर नुराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा लेखा आप दृढ़ाईआ। चारे फ़रिश्ते कहिण साडे कोल लेखा तेरा इक महिबूब, मुहब्बत विच जणाईआ। जिधर वेख्या तकी द्वैती दूज, दुतीआ भाओ ना कोए चुकाईआ। साची मंज़ल चढ़े ना कोए हक मकसूद, तेरा दरस कोए ना पाईआ। नज़र ना आए अर्श अरूज, आलीशान तेरी करे ना कोए शनवाईआ। सारे बज्झे मज़्हबां दी हदूद, हद्द पार ना कोए वखाईआ। मैं सच दस्सां मैं जिधर तकां तूं नूर इलाही मौजूद, मौजूदा हो के आपणा पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक होणा आप सहाईआ। परवरदिगार कहे मेरा हुक्म यक्क यकीनी, यकीनन दयां दृढ़ाईआ। मेरा सजदा इक अमीनी, आलमीन सीस निवाईआ। मैं खेल वेखां अर्श फ़र्श ज़मीनी, ज़िमीं जमां खोज खुजाईआ। सदी चौधवीं सब दी बदल देणी तनज़ीमी, तहज़ीब धुर दी इक दृढ़ाईआ। मेरा लेखा आदि जुगादि जुग चौकड़ी कदीमी, कुदरत दा मालक आपणा हुक्म वरताईआ। लेखा रहिण ना देणा नर मदीनी, मुद्दा आत्म ब्रह्म सब नूं दयां जणाईआ। मैं पर्दा लाहवां भेव खुल्हावां आलमीनी, इलम आलम उलमां करां पढ़ाईआ। जगत शरअ रहिण ना देवां तक्सीमी, वंडन वंड ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। फ़रिश्ते कहिण खुद खुदा मुहम्मद तों लै पुछ, आपणा हुक्म सुणाईआ। उम्मत कोल

की कुछ, की वस्त रही वखाईआ। जिस कारन लब कटाई मुच्छ, मुश्किल हल्ल ना कोए कराईआ। सदी चौधवीं क्यों बैठा हो के चुप, चुप चपीता डेरा लाईआ। ओह तक ओह तक एथे ओथे अंधेरा घुप्प, तेरा नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। सच पुच्छें ओह वेख तेरा गोबिन्द दुलारा दूल्हा सुत , निरगुण नूर जोत जोत रुशनाईआ। जो सब कुछ सब दा रिहा लुट्ट, दो जहानां भज्जे वाहो दाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जड़ रिहा पुट, पटने वाला आपणा वेस वटाईआ। जिस दे कोल लख चुरासी विच्चों भगत सुहेले इक मुट्ठ, मुट्ठी आपणी विच टिकाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती जाता डगमगाईआ। झगड़ा मेटे वरन गोत, नीचां ऊचां इक्को रंग रंगाईआ। लेखा रहिण ना देवे दीन मज़्हब वरन गोत, गौतम दा लेखा झोली पाईआ। गुरमुख अन्दरों खोल्ह के अन्तर निरन्तर सोत, सोई सुरती लए उठाईआ। शब्द शब्द लगाए चोट, चोटी चढ़ के वेख वखाईआ। जिस दा लेखा जाण ना सकण कोटन कोटी कोट, कोट कोटां भेव कोए ना पाईआ। ओह वेस वटाए एक इक्को बहुत, बहुता भेव आपणा आप जणाईआ। जिहने झगड़ा मेटणा चौदां लोक, चौदां तबक करे सफ़ाईआ। दो जहान मर्द मर्दान, नाम निधाना इक सुणाए सलोक, तूं मेरा मैं तेरा राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर बैठे सीस निवाईआ। चारे कहिण उठ मुहम्मद करीए सलाह, सफ़ा वेख जगत लोकाईआ। बेड़ा दा गेड़ा बणे मलाह, कवण कंध टिकाईआ। चारे यार वेख गवाह, शहादत की भुगताईआ। सदी चौधवीं अन्तिम गया आ, आह भर के दईए सुणाईआ। धरनी धरत धवल धौल उत्ते वेख थाँ, मक्का काअबा मदीना मुद्दा फोल फुलाईआ। किसे गृह ना होवे वाहवा, हाहाकार करे लोकाईआ। झगड़ा प्या थल अस्गाह, जंगल जूह उजाड़ रोवण मारन धाईआ। प्यार रिहा ना पुत्र माँ, पिता पूत ना संग रखाईआ। कलयुग जीव हँस बणे काँ, बुद्धी काग वांग कुरलाईआ। जे सच पुछें किसे ने सूर खाधा किसे ने खाधी गां, धर्म दा पूत नज़र कोए ना आईआ। पीर पैग़म्बर गुर अवतार किसे ना पकड़े बांह, अग्गे हो ना कोए छुडाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सच संदेशा एकँकारा रिहा सुणा, इक इकला धुर दा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, भेव अभेदा अछल अछेदा आप खुल्हाईआ। चारे कहिण साडी तोबा, तोबा तोबा विच दुहाईआ। सदी चौधवीं रस सब ने भोगा, भोगी भस्मड़ रूप ना कोए बणाईआ। दीन दुनी दा वेख्या अभ्यास जोगा, जुगती जगत ना कोए दृढ़ाईआ। हउमें वध्या घर घर रोगा, हंगता गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। ना कोई मेटे हरख़ सोगा, चिन्ता चिखा रही जलाईआ। फिरी दुहाई लोक चौदां, चौदां तबक रोवन मारन धाईआ। बौहड़ी किसे पैग़म्बर दा रहिणा नहीं कोई अहुदा, वाहिदे सब दे पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। चारे कहिण कुछ लेख दस्से प्रभ अस्सू, असल आपणा ध्यान लगाईआ। की ओट रखाई मसीह यसूह, यदपि आपणा राह तकाईआ। मूसा केहड़ी धार नस्सू, जिस दी नसल नजर किसे ना आईआ। गोबिन्द केहड़ा तीर निशाना कसू, कसम खा के पए दुहाईआ। कृष्न केहड़ी धार जड़ पट्टू, राम आपणा तीर निशान लगाईआ। वेद व्यासा जो लेखा लिख्या बण के लक्खू, इक लख अठारां हज़ार सलोक पुराण अठारां लिखाईआ। बावन केहड़ी धार आपणी कार टप्पू, वाहिदा बल दा पूर कराईआ। सप्तस रिख केहड़ी खेल रचू, रचना प्रभ दए जणाईआ। शंकर चारे कुण्ट वेख हस्सू, जटा जूट अक्ख खुल्हाईआ। ब्रह्मा खुशीआं दे विच टप्पू, ब्रह्म लेखा पूरा करे गुसाईआ। विष्न भण्डारा किस दी झोली घत्तू, वस्त इक वरताईआ। पुरख अकाला दीन दयाला एकँकार परवरदिगार सांझा यार केहड़ा हुक्म संदेशा दस्सू, दहि दिशा आप जणाईआ। अमृत झिरना केहड़ी धारों रिसू, रस्ता दे अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अस्सू कहे सुणो पीर पैग़म्बर संग फ़रिश्ते चार, यार यराना धुर दा दयां दृढ़ाईआ। जो निरगुण निरवैर रूप निरँकार, हरि करता धुरदरगाहीआ। जो नित नवित खेल करे विच संसार, निराकार साकार आपणा रूप बदलाईआ। जिस दा नाम कलमा सारे गए उच्चार, रसना जेहवा सिफ्त सालाहीआ। चरण धूढ़ी मंगदे गए छार, मस्तक टिक्के ख़ाक रमाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला कलयुग अन्तिम सब दी पावे सार, महासार्थी आपणा वेस वटाईआ। जो मंज़ल बमंज़ल लेखा जाणे आपणी धार, धरनी धरत धवल खेले खेल अगम्म अथाहीआ। सो स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी जोती जोत कर उज्यार, दो जहानां नौजवाना मर्द मर्दाना करे रुशनाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सब दी पावे सार, भेव अभेदा अछल अछेदा आपणा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। अस्सू पस्सू कहे मैं दस्सां प्रभू दी उस्तत, जो निदयां विच कदे ना आईआ। जिस नूं गाउंदे चार जुग दे पुस्तक, अक्खरां नाल अक्खर वड्याईआ। ओह इक्को साहिब सुल्ताना दो जहानां बणे मुरशद, मुरीद लख चुरासी लए बणाईआ। सदी चौधवीं सब दे नालों लै के फुरसत, वेहला हो के आपणा हुक्म वरताईआ। उहदे इक्को नाम कलमे दी होवे उल्फ़त, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। दीन दुनी अन्दर रहिण ना देवे गफ्लत, गुफ़त शुनीद आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा मालक पर्दा आप चुकाईआ। अस्सू कहे फ़रिश्ते चार मुरीदो, मुद्दत दे विछड़िओ वेखो नैण उठाईआ। निरगुण नूर करो दीदो, दीदा दानिस्ता नज़री आईआ। जिस नूं कहिंदे मेहरवान महिबान बीदो, बी खैरीया अलाह अलाह

नूर इलाहीआ। ओह ग़फ्लत सब दी खोल्हे नींदो, आलस रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा मालक दया कमाईआ। चार फ़रिश्ते कहिण मुजज़िज़ला जल अज़ली आहला नज़ू मुहज़े ज़का नूरी अलाह अलाह बेपरवाहीआ। कोने कज़िद, अर्शां ज़हिद, ज़मीने जगिद बहिशते अविद, दोज़खे ज़निद, ज़ाहर ज़हूर नूर नुराना नज़री आईआ। कुतबे कली, रहमते ज़लीह, शाइरे अज़ीं, दाइरे वसीह, मुहम्मदे रवीह, अहिमदे तबीह, तबीब तबी तबीयत दा इक्को इक अख्वाईआ। जिस दा वाहिदा वज़ीह, कफ़ने नफ़ी, दफ़ने रवीह, आदि अन्त श्री भगवन्त आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच विच्चों प्रगटाईआ। अस्सू कहे फ़रिश्तो किस दी करो तसरीह, तशबीह नाल जणाईआ। की सिफ्त करे ज़बीह, ज़बान नाल वड्याईआ। सच दस्सो केहड़ी धार वहिणी नबी नूह, हूबहू भेव दयो खुल्हाईआ। तुहाडी केहड़ी होणी जूह, कवण दवारे सोभा पाईआ। सच दस्सो उम्मत नबीआं दी किस दा पाक होया रूह, पतित पुनीत कवण अख्वाईआ। किस बिध सदी चौधवीं अन्तिम होणा शुरू, शरअ दा झगड़ा रहे ना राईआ। किस बिध वञ्झ मुहाणा बेड़ा रुढ़ू, नईया नौका पार ना कोए
१४६३ लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा नर नरेशा नर हरि इक १४६३
जणाईआ। अस्सू कहे मैं आया लोकमाती, मात्रा भूमी दयां दृढ़ाईआ। मेरी सुहञ्जणी होवे राती, रुतड़ी प्रभ दे नाल महकाईआ। जिस ने झगड़ा मेटणा काग़ज़ाती, काग़ज़ कलम शाही दए गवाहीआ। उहदा खेल होणा इत्फिाकी, इत्फिाकीआ आपणा हुक्म वरताईआ। शब्द घोड़े अस्व चढ़े राकी, दो जहानां भज्जे वाहो दाहीआ। लख चुरासी जाम प्याए बण के साकी, सच सुराही नाम हथ्थ उठाईआ। जन भगतां अन्दर खोल्ह के ताकी, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। निरगुण धार मार के झाकी, जोती जोत करे रुशनाईआ। धुन सुणा के शब्द अनादी, अनहद आपणा राग समझाईआ। भेव खुल्हा के महिबूब महिराबी, मंज़ल आपणी हक वखाईआ। जिथ्थे जोत जगे अहिबाबी, मित्र प्यारा इक्को नज़री आईआ। नानक दा लेखा पूरा करे बग़दादी, मेला मेले सहिज सुभाईआ। जिथ्थे सवाल ना कोए जवाबी, जवाब तल्बी विच सारे बैठण सीस निवाईआ। प्यार मुहब्बत इश्क रहे ना हकीकी ना मजाज़ी, दोहां दी मंज़ल पन्ध मुकाईआ। इबादत वाली दिसे ना कोए आबादी, कलमा कलाम ना कोए सुणाईआ। ना कोए जेहवा ना कोए रागी, रसना राग ना कोए अलाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला जिथ्थे इक्को नूर जोत स्वांगी, सति सरूप इक्को नज़री आईआ। उथे ना कोई रोज़ा ना कोई बांगी, कलमा नाम ना कोए पढ़ाईआ। सब दी इक्को जोत इक्को धार इक्को मंज़ल सांझी, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड ना कोए वंडाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर

सारे ओसे मंज़ल दे पाँधी, जिस दी परा पसन्ती मद्धम बैखरी चारे खाणी दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा मालक वेख वखाईआ। अस्सू कहे मैं सब दा खेल वेखणा इक्व्हा, इक्को रंग समाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला दीन दुनी दी उलटी गेड़नी लद्दा, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। बिना सतिगुर शब्द तों दुलारा बणे कोए ना पद्दा, सिर सके ना कोए उठाईआ। निरगुण धार खेल होणा यथार्थ यथा, यदी आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दे हुक्म अन्दर ब्रह्मण्ड खण्ड बध्धा, पुरी लोअ बैठे सीस निवाईआ। जेहड़ा नाम चक्र धर्म धार दी गदा, सुदर्शन इक्को इक भवाईआ। उस ने सदी चौधवीं सब नूं देणी सज़ा, सज़ायाफ़ता होए लोकाईआ। कूड़ क्रिया दा चखाउणा सब नूं मज़ा, जो मज़ाक प्रभ दा रहे उडाईआ। घर घर सिर ते कूकदी कज़ा, कलयुग कज्जाक बणया थांउँ थाँईंआ। जो पंडत पांधे मुल्लां शेख़ मुसायक ग्रन्थी पन्थी गुर अवतार पैग़म्बरां नाल करदे दग़ा, जूठ झूठ नाल वड्याईआ। उहनां नूं धर्म राए दे दवारे मिलणी जग़्हा, चित्रगुप्त लेखा दए वखाईआ। जो मानस रूप बण गए कग्गा, कूड़ी क्रिया मुख लगाईआ। उहनां चुरासी भोगणी सदा, फाँसी जम ना कोए कटाईआ। जिन्हां सतिगुर नाम तों बिना जगत विकार वाली पीती मधा, मधुर धुन सुणन कोए ना पाईआ। सदी चौधवीं अन्त नबी रसूल नाल सब नूं मिलणा सद्दा, सदके वारी सब तों घोल घुमाईआ।

१४६४ २२ उफ़ तोबा हाए करनी सब ने रब्बा, रब्बी हुक्म ना कोए उलटाईआ। सतिगुर शब्द शब्द सतिगुरु ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर फिरे भज्जा, भजन बन्दगी फोले थांउँ थाँईंआ। ओ सूफ़ी सन्त फ़कीरो प्रभ दी मिल के सारे लगाउ सभा, सभापती इक्को पुरख अकाल नज़री आईआ। जिस दा खेल उपर शाह रगा, नौ दवारे डेरा ढाहीआ। आत्म परमात्म दा देवे मज़ा, मिलणी हरि जगदीश आपणे नाल वखाईआ। इक्को मंज़ल इक्को पौड़ी इक्को देवे पदा, गृह इक्को घर टिकाईआ। सन्त सुहेले गुरु चेले आदि जुगादि जुगा जुगन्त आपणी बणाए यदा, यद आपणी आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साच वर, सच स्वामी अन्तरजामी, अन्तर आत्म वेख वखाईआ। अस्सू कहे मैं आसावंद, आपणी आस दयां दृढ़ाईआ। पुरख अकाले मेरे ख़ावंद, ख़सम ख़समाने सीस निवाईआ। मैं चाहुंदा हुण निशान मेट तारा चन्द, वाहिदा पिछला पूर कराईआ। पैग़म्बरां खुशी कर दे बन्द बन्द बन्द, बन्दगी सब दे बदलाईआ। जो लेखा लिख्या गोबिन्द बहि के पुरी अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों दे समझाईआ। जो कृष्न ने गाए छन्द, अर्जन अर्ज़ विच समझाईआ। जो राम ने सीता नाल मुकाया पन्ध, पाँधी हो के पर्दा दयां उठाईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम होया अंधेरा अंध, निरगुण नूर ना कोए चमकाईआ। शरअ शरअ दा करना जंग, मज़्हब मज़्हब नाल टकराईआ। सब दी सति

धर्म दी खुल्ह जाणी गंढ, पल्लू सच ना कोए बंधाईआ। झगड़ा पैणा जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज रोवे मारे धाईआ। उस वेले सदी चौधवीं पैंडा जाणा लँघ, पाँधी बण के आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच नाल दृढ़ाईआ। अस्सू कहे मुहम्मद ने बिना काअबे तों कीती तकरीर, तहरीर विच ना कोए जणाईआ। सदी चौधवीं मेरा अन्त एथे होणा अख़ीर, आख़र दयां सुणाईआ। मालक दिसे ना कोए शहिनशाह वज़ीर, पातशाह सिर ताज ना कोए रखाईआ। सब दी अन्दरों बदल जाणी ज़मीर, तबा सच ना कोए रखाईआ। सच झूठ दा रल जाणा ख़मीर, ख़ालस ख़ालस रूप ना कोए दरसाईआ। उस वेले परवरदिगार सांझे यार करनी आपणी इक तदबीर, तरीका इक अपणाईआ। साचा कलमा पकड़ अगम्मी शमशीर, खण्डा खड़ग खड़ग उठाईआ। जो सब नूं कर देवे दिलगीर, सांतक सति ना कोए वरताईआ। मालक रहे ना कोए जागीर, जागरत जोत डगमगाईआ। शरअ दा तोड़े अन्त ज़ंजीर, कुंडी कड़ी ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। अस्सू कहे मुहम्मद ने लाया इक्को नाअरा, उँगलां कन्नां विच पाईआ। मेरा महिबूब होवे ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं करे मुज़ाहरा, मुश्किल सब नूं इक दृढ़ाईआ। आपणे आपणे दीन मज़्हब दा तक्को दाइरा, हद्द हदूद दए वखाईआ। फेर चुरासी विच्चों मानव ज़ाती वेखो केहड़ा दिसे ग़ैरा, जिस विच मेरा नूर नज़र कोए ना आईआ। केहड़ा मज़्हब चंगा केहड़ा भैड़ा, सारे दयो समझाईआ। जे सारे चंगे इक्को रंग रंगे, फेर दीन मज़्हब दा गुर अवतार पैग़म्बरो सारे छड दयो खहिड़ा, माणस मानव मनुष वंड ना कोए वंडाईआ। सारे आ जाओ पुरख अकाल दे हुक्मी अन्दर दाइरा, दामनगीर इक अख्वाईआ। साचे नाम दी लओ लहरा, कलमा इक्को इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। अस्सू कहे ओ तक्को आपणा आफ्ताब, बिन नैणां नैण उठाईआ। ओ वेखो हकीकी इक महिराब, महिबूब नूर इलाहीआ। ओ तक्को की तुहाथों मंगे जवाब, जवाब तल्बी की रखाईआ। आपणी तबीअत बदलो मिज़ाज तबा पिछली रहे ना राईआ। बिना अक्खरां तों पढ़ो किताब, जिस विच अलिफ़ ये वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को वेला सारे जाओ जाग, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। पिछला लेखा दयो त्याग, त्यागपत्र प्रभ दे हथ्थ फड़ाईआ। हर हिरदे अन्दर पुरख अकाल दा दयो वैराग, वैरी दीन मज़्हब रहिण कोए ना पाईआ। पर सारे कहिण प्रभू साडे भविक्ख्त कहिण सदी चौधवीं सब दा गुल्ल होणा चराग़, गुलशन कायनात महक ना कोए महकाईआ। एसे कारन सारे होणे लाजवाब, दर तेरे सीस निवाईआ। सब दा पूरा कर दे भविक्ख्तां वाला खुआब, ख़ालस आपणा हुक्म समझाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। अस्सू कहे मैं मुहम्मद नूं आपणी हमद वेख्या पढ़दा, पढ़ पढ़ आपणे विच रखाईआ। फेर लेखा वेख्या चढ़दा, चढ़दी दिशा अक्ख उठाईआ। कलमा कलमे नाल लड़दा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। पैग़म्बर पैर कोए ना धरदा, धरनी धरत रही कुरलाईआ। जीव जहान वेख्या सड़दा, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। की हाल होणा अग्गे मक्के मदीने घर दा, मूसा हुक्म रिहा समझाईआ। आपणा लेखा आपे अग्गे धरदा, वींहवी सदी फोल फुलाईआ। की गोबिन्द खेल करदा, करनी दा करता कार भुगताईआ। ईसा कहे चारों कुण्ट झगड़ा जाणा वधदा, वाहिदा पूरा करे ख़लक खुदाईआ। सब नूं लेखा देणा पैणा गऊ बध्ध दा, बदी दा झगड़ा वेख वखाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी कदे असूल नहीं बदलया नूरी रब्ब दा, रब्बे आलमीन आलमां रिहा जणाईआ। जिस दा दीपक इक्को जगदा, जागरत जोत करे रुशनाईआ। ओह लेखा जाणे कलयुग कल दा, कलकाती फोल फुलाईआ। जो प्यासा बणया लहू मिझ रत दा, माणस मानव रिहा खाईआ। घर घर झगड़ा पा के मनमति दा, गुरमति दिती भुलाईआ। नाता तोड़ परमेश्वर पति दा, कूड़े पते उत्ते सारे दिते बिठाईआ। मेल रहिण नहीं दिता किसे दा निज नेत्र लोचण नैण अक्ख दा, सारे अक्खरां वाली करन पढ़ाईआ। दर्शन करे कोए ना पुरख समरथ दा, सन्मुख सतिगुर नज़र किसे ना आईआ।
१४६६ साँईं बणे कोए ना किसे पति दा, पतिपरमेश्वर मिलण कोए ना पाईआ। साध सन्त लेखा रिहा ना धीरज जत दा, काम १४६६
२२ क्रोध लोभ मोह हँकार विच सर्ब हल्काईआ। पिता पुत प्यासा बण गया इक दूजे दी रत दा, कलयुग आपणी खेल खिलाईआ। २२
प्रभू दा भेव कोई ना जाणे मित गत दा, परदयां विच्चों पर्दा ना कोए उठाईआ। वेखो कलयुग कूड़ कुड़यारा रथ भज्जदा, भज्जे वाहो दाहीआ। जिस लेखा पूरा करना दीन दुनी जग दा, जगजीवण दाता आपणी कार कमाईआ। उस ने झगड़ा मेटणा गौतम दी धार अहल्लया वाली भग दा, भगवन आपणी कार भुगताईआ। किसे दा लेखा रहिणा नहीं अड्ड अड्ड दा, वक्खरी कार ना कोए कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला आप कराईआ। अस्सू कहे सच दा मेला हरि मिलाप, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। जिस दा आदि अन्त दा इक्को जाप, जगजीवण दाता भगतां करे आप पढ़ाईआ। मेट के तीनो ताप, त्रैगुण अतीता होए सहाईआ। अन्तर निरन्तर करे पाक, पतित पुनीत आप बणाईआ। आत्म परमात्म बणा के साक, सज्जण साजण इक अख्वाईआ। काया मन्दिर खोल्ह के ताक, पर्दानशीं पर्दा आप उठाईआ। शब्द सुणा के अगम्मी नाद, नादी धुन दए दृढ़ाईआ। सोई सुरती जाए जाग, आलस निंद्रा रहे ना राईआ। जोती नूर कर प्रकाश, अंध अंधेरा दए मिटाईआ। जन भगतां पूरन कर के आस, जन्म जन्म दा लेखा

झोली पाईआ। लहिणा पूरा करे स्वास स्वास, साह साह आपणे विच समाईआ। झगड़ा मुका दे पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर पन्ध चुकाईआ। सचखण्ड दवार कराए निवास, दरगाह इक्को इक सुहाईआ। जिथ्थे वसे पुरख अबिनाश, श्री भगवान सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग रंगाईआ। अस्सू कहे मैं मात विच आया, आया कलयुग धार। पुरख अकाल दया कमाया, किरपा कीती अपर अपार। भेव अभेदा इक खुल्हाया, पड़दा लाहया सच्ची सरकार। सच दवारा इक सुहाया, जोत जगे अगम्म अपार। नूर नुराना डगमगाया, जोती जाता एकँकार। सच सिंघासण इक सुहाया, सोभावन्त कन्त भतार। गुरमुख मेला मेल मिलाया, विछोड़ा कटे जगत संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताया। अस्सू कहे चार फ़रिश्ते हो जाओ पुट्ठे, पुठी कला वरताईआ। परवरदिगार तुहाडा तुट्ठे, दीन दयाल होए सहाईआ। तुसां मज़े बथेरे लुट्टे, चार कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। हुण वेख्यो मुहम्मद दा कलमा कलमे नाल जुटे, अग्गे हो ना कोए छुडाईआ। चन्द सितारा असमानी निशान तुटे, टुट्टी गंढ ना कोए पवाईआ। शब्दी सतिगुर सब नूं लुट्टे, लुटेरा बणे थांउँ थाँईंआ। कलयुग कूड़ी जड़ पुट्टे, पटने
१४६७ वाला नाल मिलाईआ। सतिजुग साची पोह फुटे, चार कुण्ट होए रुशनाईआ। भाग लग्गे काया बुते, बुतख़ान्यां करे सफ़ाईआ। १४६७
२२ सच सुहंजदी होवे रुते, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुते, चेतन सब नूं दए कराईआ। कूड़ २२
कुड़यारे पैंडे जाण मुके, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। पाणी रहिणा नहीं किसे दे हुक्के, हुक्म हाकम इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखे लाउणे रविदास दे खाधे टुकड़े रुक्खे, रम्बी आर दए गवाहीआ। अस्सू कहे मेरी धार कम्बी, सच दयां जणाईआ। मैनूं दिसदी चम्यार दी आर रम्बी, तिक्खी धार रही बदलाईआ। हुण सब दी औध लँघी, वेला वक्त दए गवाहीआ। इक्को शब्द सतिगुर गोबिन्द धार उठे भुजंगी, बिना भुजां तों सब दा बल दए गंवाईआ। तुरकां नाल लड़ाउण फ़रंगी, फ़ैसला हको हक सुणाईआ। रूसा चीना पिट्ठ होए नन्गी, गोबिन्द लेखा पहलां गया लिखाईआ । नानक ने बग़दाद विच मंग इकल्ली मंगी, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। पुरख अकाले दीन दयाले तेरी आत्म होवे ना कदे दोरंगी, बिन तेरे दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। तेरी जोत अकाली दीन दयालण सब तों चंगी, नूर नुरानी सोभा पाईआ। एसे दी धार एसे नाल कर लै अंगी, अंगीकार इक अख्वाईआ। पुरख अकाल किहा नानक जिस वेले सदी चौधवीं अन्तिम लँघी, मुहम्मद दा लेखा झोली पाईआ। इक वेरां सब नूं ज़रूर आउणी तंगी, तंगदस्त होवे लोकाईआ। शाह सुल्तानां सौणा मिले ना उत्ते मंजी, सिंघासण आसण ना कोए वड्याईआ। ओह लेखा पूरा करना जेहड़ा गोबिन्द कीता

सरसे कन्ढ्ढी, कंडयां दी सेज माछूवाड़े सुहाईआ। चार वरन अठारां बरन दी इक्को करनी डण्डी, डण्डावत इक दरसाईआ। कूड़ कुड़यार दी क्रिया दा रहिण देणा नहीं कोए पाखण्डी, झूठा वणज ना कोए वखाईआ। साधां सन्तां दी मन वासना दी लग्गे कोए ना मंडी, मण्डलां मण्डपां विच इक्को सतिगुर शब्दी शब्द नज़री आईआ। जन भगतां सन्तां गुरसिक्खां सूफ़ीआं आत्मा होए मूल ना रंडी, कन्त कन्तूहल हरि ख़ावंद आप प्रनाईआ। कलयुग दी आयू होण नहीं देणी लम्बी, गोबिन्द नीहां हेठ बच्चे दबा के जड़ गया उखड़ाईआ। तेग़ बहादर नूं धार तलवार लग्गी चंगी, चारे कुण्ट उम्मत दी जड़ गया उखड़ाईआ। अर्जन ने तत्ती रेत उत्ते खुशी माणी कर के ठंडी, ठंड गुरमुखां अन्दर पाईआ। उँगल नाल इशारा कीता मुहम्मदा तेरी अन्त निशानी लंडी, लम्मी चौड़ी ना कोए वखाईआ। सीस वाहवे कोए ना कंघी, सवाणी सुरत ना कोए जणाईआ। सब ने भज्जणा पैरीं नन्गी, कपड़ा तन ना कोए वखाईआ। जिन्हां दे अन्दरों वासना निकलणी गंदी, कूड़ी क्रिया नाल हल्काईआ। उन्हां दे पिच्छे शब्दी धार फिरनी अगम्मी चण्डी, चण्डका आपणा रूप बदलाईआ। रहिण देवे ना कोए घुमंडी, गढ़ तोड़े हँकार थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच आप समझाईआ। अस्सू कहे मैं हुक्म दस्सां धुर दा, धुर मस्तक वेख वखाईआ। जन भगतो सतिगुर कदे ना हुन्दा मुर्दा, मुरीदो मुर्शद मरन विच
१४६८ कदे ना आईआ। ओह शौह दरयाए कदे ना रुढ़दा, जुग जुग रुढ़दयां लए तराईआ। जगत वासना विच कदे ना जुड़दा, १४६८
२२ सुरती शब्द नाल मिलाईआ। ओह भेव खुल्हाए मालक धुर दा, दरगाह साची सच जणाईआ। गृह वखाए होर होर दा, अवर २२
अवरा आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक अगम्म अथाहीआ। अस्सू कहे मैं रखी आस अवल्ली, अव्वल दयां जणाईआ। मैं वेखां जोत अकाली, अकल कलधारी वेख वखाईआ। जिस दी सारे दिन्दे आए बली, बलधारी सीस निवाईआ। मुहम्मदा याद कर लै की वाहिदा कीता नाल अली, आलीजाह की दिता दृढ़ाईआ। तुहाडी उम्मत अन्तिम जाणी छली, छलीआ बणे बेपरवाहीआ। सब दी धार जाणी हली, सिदक सबूरी हथ्थ किसे ना आईआ। जाओ चौदां तबकां होका देणा गलीओ गली, पल्लू गल विच पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। अस्सू कहे मैं मात आया भज्जा, पिछला पन्ध मुकाईआ। मैं चार कुण्ट वेखां जग्गा, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ गुरदवारे फोल फुलाईआ। जिधर तक्कया माया ममता लभा, सच विच ना कोए समाईआ। धर्म दी धार पींदे मधा, मधुर धुन सुणन कोए ना पाईआ। मैं सब नूं देण आया सद्दा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। नारद वजाउंदा फिरे डग्गा, डौरु डंक रिहा खड़काईआ। जिन्हां ने खाधा कट्टा वच्छा ढग्गा, सब

नूं होणी अन्त जुदाईआ। जिन्हां ने माया ममता दा कीता लबा, मोह हँकार विच हल्काईआ। उहनां दी सफ़ा मेटणी सभा, मलेछ रहिण कोए ना पाईआ। हुक्म देवे शब्दी धार सूरा सरबगा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। बिना भगतां तों जुग जुग लोकमात वधे किसे ना अग्गा, जगत जुगत ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। अस्सू कहे मैनूं हुक्म आया फेर, शब्दी शब्द दिता जणाईआ। उठ वेख धुर दा बब्बर केहर, गहर गम्भीर नूर इलाहीआ। जिस दे हुक्म विच होवे कोए ना देर, दूर दुराडा इक्को हुक्म जणाईआ। जिस ने कूड़ी क्रिया करनी ढेर, ढहि ढहि ख़ाक मिलाईआ। धरनी धरत खुल्ला करना वेहड़, चारों कुण्ट होए सहाईआ। उम्मत उम्मत देणी भेड़, झगड़ा करे नूर इलाहीआ। फेर काहरा तों परे छेड़नी छेड़, लेखा मूसा वाला पूर कराईआ। भरम भुलेखा रहे ना ज़बर ज़ेर, जाबर आपणी कार भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा नर नरेशा नर हरि इक्को इक दृढ़ाईआ। अस्सू कहे मेरा होर भगतो इक वाहिदा, वाहवा दयां जणाईआ। भगत भगवान दा वेस सदा अलाहिदा, अलाह नूर नूर रुशनाईआ। जो जुग जुग साचे सन्तां लए जाइज़ा, जाइज़ आपणी कार भुगताईआ। अन्तर निरन्तर नाम दा दे के लहिजा, लहर आपणी इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी सच करनी कार कमाईआ। अस्सू कहे मैनूं तिन्न अस्सू रिहा उडीक, आपणी अक्ख उठाईआ। सम्मत वीह सौ चौदां दी वेख तारीख, निज आपणी अक्ख खुल्लाईआ। जिस विच लेखा लिख्या सम्मत शहिनशाह सत्त बाबूपुर पहुंचणा ठीक, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। जित्थे ग़रीब निमाणयां बख़्शणी प्रीत, प्रीतम आपणा रंग चढ़ाईआ। सब दे अन्दर वड़ना चीत, चित ठगौरी देणी कढ्ढाईआ। नाता तोड़ के मन्दिर मसीत, काया काअबा देणा वखाईआ। इक सुणा अगम्मी गीत, नाद धुन देणा जणाईआ। जन्म मरन दी पिछली मेट के लीक, लाईन अगली देणी चढ़ाईआ। जित्थे सतिगुर शब्द करे तस्दीक, शहादत प्रेम वाली भुगताईआ। साजण बणे धुर दा मीत, मित्र प्यारा इक हो जाईआ। ममता वाली रहिण ना देवे नीत, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। दर्शन दे के करे ठांडे सीत, अग्नी तत बुझाईआ। संदशा देवे जन भगतो जीउंदयां सतिगुर चरण विच मानस जन्म जाओ जीत, मरन दे पिच्छों लोड़ रहे ना राईआ। जिस दी पैग़म्बर कर के गए तबलीग, सिफ्त सलाही ढोले गाईआ। ओह तुहाडी आसा मनसा पूरी करे उम्मीद, मुहब्बत मोह आपणे विच रखाईआ। तुहानूं उथे खेल वखावां इक अजीब, अजब रंग रंगाईआ। इक्की गुरसिक्खां देणी तरतीब, तरह तरां दृढ़ाईआ। रातीं सुत्तयां वखावांगा वेखो समां करीब, करबले वाले साहमणे देण दुहाईआ। जिस तों चाहवांगा पढ़ा देवांगा

कुरान मजीद, मसले मुश्किलां वाले हल्ल कराईआ। मेला सिँघ ने गल नहीं पाउणी कमीज़, सिर ते पग्ग ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी वेख वखाईआ। बाबूपुर कहे मैं निक्का जेहा पिण्ड, पिण्डी समझ किसे ना आईआ। मेरी निमाणी जिंद, ज़िंदगी भेंट ना किसे कराईआ। मैनूं याद कीता नौ वार सुरप्त राजे इन्द, सिँघ सिंघासण बैठा ध्यान लगाईआ। मैनूं शंकर प्यार विच सुणाई किंग, किंगरे किंगरे मृदंग वजाईआ। ब्रह्मे ने बिना अक्खां तों वहा के हिंझ, हन्झूआं हार बणाईआ। मैनूं विष्नूं ने किहा कमलया प्रभ नूं मिलीदा इंज, दोए जोड़ सीस निवाईआ। तूं आदि अन्त उसे दी बिन्द, तैनूं जन्मे कोए ना माईआ। तेरा बेड़ा रुढ़ना नहीं विच सागर सिन्ध, संधू बैठा अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। बाबूपुर कहे मेरी छोटी जेही हट्टी, हटवाणिउं दयां जणाईआ। मेरे विच ओह अगम्मी खट्टी, जिस विच खटका रहे ना राईआ। मेरे विच गुरसिक्खां पढ़ी सोहँ दी पट्टी, पटने वाला गया समझाईआ। एथे राम ने इक रात सी रातीं जागदयां कटी, कटाक्ष धुर गया लगाईआ। फेर याद कीता सी विच पंचवटी, पंचम पंचम मेला होवे सहिज सुभाईआ। कृष्न ने इशारा कीता सी जिस वेले अर्जन दा चलाया रथी, रथवाही हो के दिता सुणाईआ। अर्जना ओह वेख तेरे काहन दा काहन खेल करे अक्खी,
१४७० अक्खां वाल्यां नज़र कोए ना आईआ। हुण आत्मा दी धार बणाउणी आपणी सखी, सुखन मेरा पूर कराईआ। एह गल्ल १४७०
२२ बावन ने बलि राजे नूं सी दस्सी, जिस वेले रावी दा कन्ढा टप्पया चाँईं चाँईंआ। जिस वेले सतिगुर अर्जन बैठा सी उत्ते २२
लोह तत्ती, तत्ती तवी आसण लाईआ। उस इशारा कीता मेरा नूर नुराना शाह पातशाह कमलापती, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जिस ने द्रोपत लाज रखी, भगतां होए सहाईआ। भीलणी दे बेर गया चक्खी, बिदर आपणा रस वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा मेला लए मिलाईआ। बाबूपुर कहे मेरे कोल अल्लड़पिण्डी, अल्लड़ जवाना दयां जणाईआ। जिस दा इक्को राह ते इक्को डण्डी, डण्डावत इक्को नज़री आईआ। इक्को जोत नाल सब दी आत्मा गई गंढी, गंढणवाला इक्को मिल्या धुर दा माहीआ। किसे नहीं पूजणा करीर जंडी, जगत तृष्ना ना कोए वखाईआ। ओह वेखो पिछली औध सब दी लँघी, बाकी नज़र कोए ना आईआ। किशन सिंघा तिन्नां डंडयां वाली डाहुणी मंजी, चौथी चूल ना कोए रखाईआ। इक गुडीआ रखणी सिर तों नन्गी, आसा मुहम्मद नाल मिलाईआ। जेहड़ी अन्तिम मंग मदीने विच हिजर करदयां मंगी, मांगत हो के झोली डाहीआ। उस दी धार विच गुरमुख सिँघ कड्ढे होण सिँघ पंझी, पंजे सब दे लाल रंग रंगाईआ। कोल किरपान होवे जंगी, जंगजू बणे बेपरवाहीआ। दलीप सिँघ ने पाटी पहनणी तम्बी,

लीरो लीर वेख वखाईआ। ओदण ज़रूर पवण वगेगी ठंडी, गुरमुखां अन्दर अग्नी तत बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेश आपणा इक सुणाईआ। अस्सू कहे मेरा वेख्या तीजा प्रविष्टा, जो परीक्षत ध्यान लगाईआ। जन्मेजा दूर दुराडा दिसदा, बैठा अक्ख उठाईआ। फ़रिश्ते वेखे सब दा लेख लिखदा, बिन लेखां लेख बणाईआ। जन भगतो साचा माण जुग जुग साचे सिख दा, बिन सिख्या तों सतिगुर मिलण कोए ना पाईआ। जिन्हां दा भेव खुल्ल्हया अन्दरों विच दा, विच्चों हउमे रोग गंवाईआ। उहदा नाता जुड़या पुरख अकाल पिता दा, पतिपरमेश्वर मेला मेले सहिज सुभाईआ। ओह गुरमुख दूल्हा आपणा मानस जन्म जित दा, हार विच कदे ना आईआ। जिस दा इष्ट सदा इक दा, ओह एकँकार विच समाईआ। फेर झगड़ा मुक जाए आवण जावण नित दा, लख चुरासी ना कोए भवाईआ। लेखा रहे ना वार थित दा, थिती वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सुहेला सदा साहिब सुखदाईआ। पहली अस्सू कहे जन भगतो मैं मंगदा छुट्टी, खुशी नाल सीस झुकाईआ। मैं सब दी साफ़ करां जुत्ती, जोड़यां सेव कमाईआ। जिन्हां दी प्रभ दे नाल लग्गी रुची, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। उहनां दी आत्मा सदा सुची, संजम इक्को इक रखाईआ। मन कल्पणा विच होण कदे ना दुखी, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। सुफल होवे मात कुखी, मिले वड्याई धन्न जणेंदी माईआ। उलटा गर्भ फेर होवे ना रुक्खी, नौ महीने अठारां दिन अग्नी तत ना कोए तपाईआ। जेहड़ी आत्मा परमात्मा दर पुज्जी, पूजण योग सदा अख्वाईआ। उहनां सिफ्त होवे जुग जुगी, कबीर जुलाहा रविदास चमारा दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अस्सू तेरी आसा सच दवारे उगी, निरासा रूप शाहो भूप रहिण देवे ना राईआ।

✪ ३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ७ मेला सिँघ दे गृह पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर ✪

अस्सू तिन्न कहे मैं फिरया तीन लोक, परलोकां विच प्रभ चरण सीस निवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर गाउंदे इक सलोक, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर डण्डावत विच कहिण प्रभ तेरा भाणा सके कोए ना रोक, दो जहानां मेट ना कोए मिटाईआ। सूर्या चन्द झुकदे वेखे कोटी कोट, मण्डल मण्डप सीस निवाईआ। जिधर तक्कया इक्को प्रकाश निर्मल जोत, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिथ्थे ना कोई हरख ना कोई सोग, चिन्ता ग़म ना कोए दृढ़ाईआ।

कूड़ी क्रिया दिसे कोई ना रोग, हउमे हंगता ना कोए वखाईआ। जगत जिज्ञासू कोई ना जोग, जुगीशर नज़र कोए ना आईआ। सारे तक के बैठे इक्को ओट, ओड़क इक ध्यान रखाईआ। जिस दी एथे ओथे आदि जुगादि शब्द अगम्मी लग्गे चोट, चोटी चढ़ के बैठा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सच सरनाईआ। अस्सू कहे मेरा तीजा सच दिहाढ़ा, दिउहाढ़ी ध्यान लगाईआ। मैं फिरया जंगल जूह विच उजाड़ा, पहाड़ टिल्ले ध्यान रखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप माया ममता तक्कया अखाड़ा, कूड़ी क्रिया कल्पना नच्चे वाहो दाहीआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आत्म सखी मिले किसे ना लाड़ा, लाड़ी मौत सब नूं लए प्रनाईआ। कलयुग चारों कुण्ट मारे धाड़ा, धाड़वी बणया थांउँ थाँईंआ। लग्गी अग्ग सृष्टी बहत्तर नाड़ा, तत्व तत ना कोए बुझाईआ। फिरी दरोही मुहम्मद संग चार यारा, यराना हक ना कोए निभाईआ। बेपरवाह भुल्लया परवरदिगारा, महिबूब मुहब्बत विच ना कोए समाईआ। अनलहक दा हक लाए कोई ना नाअरा, नरायण नज़र किसे ना आईआ। जूठा झूठा वज्जे ताल तलवाड़ा, आवाज़ आपणी रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। अस्सू तिन्न कहे मैं फिरया जल थल अस्गाह, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। सच दा दिसे ना कोए मलाह, खेवट खेटा बेड़ा कंध ना कोए उठाईआ।

१४७२
२२

धुर दी मंज़ल दिसे कोई ना राह, रहिबर हो के पड़दा ना कोए चुकाईआ। आत्मा परमात्मा नालों होई जुदा, ब्रह्म पारब्रह्म विच ना कोए समाईआ। चारों कुण्ट दरोही दरोही दरोही तेरी खुदा, खुदी तक्बर डेरा कोए ना ढाहीआ। अदब विच मज़्ब सीस सके ना कोए झुका, निव निव लागे कोए ना पाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार सब दी बदल दिती अदा, आदत इबादत विच ना कोए रखाईआ। मैं फिर के वेख्या मैनूं नज़री आया नूरी अलाह, आलमीन खेल खिलाईआ। जिस ने भेव दरसाया बाबा आदम ते माई हव्वा, रूप रंग रेख रंगत आपणे विच समाईआ। संदेशा दिता फ़रमान अगम्म नवां, नव नौ चार दा डेरा ढाहीआ। तिन्न अस्सू आस रख तेरे विच्चों दीन दुनी दा बदल देवां समां, सन्मुख हो के दिता दृढ़ाईआ। सृष्टी होवे दृष्टी अन्दर ग़मा, चिन्ता सोग ना कोए गंवाईआ। मुहम्मद दी आसा सदी चौधवीं दी तमा, तामस तृष्ना वेख वखाईआ। धुर दा हुक्म करां रवां, रवानगी देवां चाँईं चाँईंआ। सब दा लेखा अवतार पैग़म्बर गुरुआं कोलों लवां, बचया रहिण कोए ना पाईआ। झगड़ा मेटणा सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चवां, चारे खाणी चारे बाणी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। अस्सू तिन्न कहे मैं वेखे नौ खण्ड दीप सत्त, सति सति ध्यान लगाईआ। उत्तर पूरब पच्छम दक्खण मन मति, गुरमति नज़र कोए ना आईआ। मानव मानुख

माणस उबले रत, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। जगत जिज्ञासू रिहा ना धीरज जत, सति विच ना कोए समाईआ। मन कल्पणा सारे रहे नट्ठ, दिवस रैण भज्जण वाहो दाहीआ। मैं फिर के आया तीर्थ अट्ठ सट्ठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती फेरा पाईआ। मैं तके मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ, गुरदवारे अक्ख उठाईआ। चारों कुण्ट नज़र आए कोए ना सच, सच विच ना कोए समाईआ। भाग लग्गा ना किसे काया माटी कच्च, कंचन गढ़ ना कोए सुहाईआ। मेरा पुरख अकाल दीन दयाल लूं लूं अन्दर गया किसे ना रच, साढे तिन्न करोड़ रोम रोवे मारे धाईआ। बुल्लां नाल रसना नाल जेहवा नाल सारे करदे जप, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। तपीशरां पूरा दिसे ना तप, जुगीशरां जोग ना कोए वखाईआ। साधां सन्तां जोत जगे ना लट लट, काया मन्दिर ना कोए रुशनाईआ। अनहद शब्द ना वज्जे सट्ट, नादी धुन ना कोए शनवाईआ। सब दा खेड़ा दिसे भट्ठ, कलयुग अग्नी रिहा जलाईआ। धर्म मुनारा रिहा ढट्ठ, सच महल्ल ना कोए सुहाईआ। अस्सू कहे मैं फिर के वेख्या नट्ठ, नट्ठया भज्जया वाहो दाहीआ। झगड़ा तक्कया दीन मज़्हब दी वट्ट, हदूद पार ना कोए कराईआ। अक्खरां वाला कलमा सारे रहे रट, सिफ्तां वाले ढोले गाईआ। दीन दुनी खेल वेख्या बाजीगर नट, स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। अस्सू कहे मैं तिन्न दिन रिहा फिरदा, फिरत फिरत आपणा पन्ध मुकाईआ। बिना प्रभ दी किरपा तों किसे दा साफ़ दिसे ना हिरदा, हारदिक देवां ना कोए वधाईआ। जेहड़ा सन्त सुहेला विछड़या चिर दा, चिरी विछुन्ने प्रभ आप मिलाईआ। एह खेल प्रभू निरवैर निर दा, जो निज घर बैठा आसण लाईआ। जिस दा जुग चौकड़ी गेड़ा गिड़दा, अवतार पैग़म्बर गुरु गुर रूप वटाईआ। ओह मालक ख़ालक दो जहानां पिड़ दा, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा हुक्म वरताईआ। ओह लेखा जाणे लख चुरासी धड़ सिर दा, श्री सर आपणी कार कमाईआ। जिस दा रूप ना बाल ना बिरधा, जोबनवन्ता इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। तिन्न अस्सू कहे मैं गया ब्रह्मण्ड खण्ड विच पुरी लोअ, आकाश आकाशां ध्यान लगाईआ। मैं आवाज़ सुणी इक्को सो, सो पुरख निरँजण रिहा दृढ़ाईआ। हरि पुरख निरँजण बख्श्या मोह, मुहब्बत इक्को इक जणाईआ। एकँकार किहा अवर ना कोअ, दूजा नज़र कोए ना आईआ। आदि निरँजण आपे गया आपे हो, जोती जाते रूप दिता दरसाईआ। अबिनाशी करता सब नालों हो निरमोह, नूर नुराना डगमगाईआ। श्री भगवान जोती धार रिहा छोह, छोहरा बांका सोभा पाईआ। पारब्रह्म आपणी धार आप परो, परम पुरख आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ।

अस्सू तिन्न कहे मैं दिवस रैण फिरया भज्जा, भजन बन्दगी वाले वेख वखाईआ। दीनां मज़्बां अन्दर कीती गजा, गज दा लेखा पूर कराईआ। धुर दा भाणा मन्नया चलया विच रज़ा, राज़क रिज़क रहीम सेव कमाईआ। बिना भगतां तों अन्दर प्रभ दा मिले किसे ना मज़ा, मज़ाक करे जगत लोकाईआ। मैं चढ़दा लहिंदा तक्कया सब दे सिर ते कूकदी कज़ा, काज़ी मुल्लां शेख़ रोवन मारन धाईआ। बौहड़ी पवित्र रही कोए ना जग्गा, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। अग्गे वधणा नहीं किसे दा अग्गा, अगला भेव कोए ना पाईआ। दीन दुनी बुद्धी होई वांग कग्गा, काग वांग कुरलाईआ। मन सतिगुरु डोरी शब्द किसे ना बध्धा, बन्दगी विच ना कोए समाईआ। कूड़ क्रिया दा लग्गा धब्बा, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। परवरदिगार नज़र ना आए अब्बा, अमीजान गोद ना कोए सुहाईआ। अस्सू तिन्न कहे मेरा प्रविष्टा मेरा दिवस जिस वेले हरि गोबिन्द वर दिता सी सुलखणी विच चब्बा, चाबक आपणे हथ्थ बदलाईआ। गोबिन्द ने अक्खर बदलया बब्बा, बाबल तेरी बेपरवाहीआ। नारद जुग जुग मेरे दिवस ख़ाली वजाउंदा रिहा पहलों डब्बा, डौरु जगत वाला खड़काईआ। कबीर ने ताणा उणन वास्ते मेरे दिवस पहली वार गड्डया सी अड्डा, अड्डी चोटी इक ध्यान लगाईआ। रविदास ने जगत प्यार एसे दिन सी छड्डा, छड्डी लिव जगत लोकाईआ। बधक नूं कृष्न दे तीर ने प्यार विच एसे दिन सी बिध्धा, निशाना प्रभास विच लगाईआ। हरि कृष्न
१४७४ ने छोटी अवस्था मेरे दिवस मस्तक नाल बध्धा छब्बा, तीजे साल विच वड्याईआ। तिन्न अस्सू कहे दुर्गा अष्टभुज अस्वार १४७४
होई सी उत्ते शेर बग्गा, शस्त्र अट्ठां भुजां विच सुहाईआ। उँगल फेरी सी उत्ते आपणयां लबां लबरेज कीती दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। अस्सू तिन्न कहे मैं आया मात जग, प्रभ दिती माण वड्याईआ। ईसा नूं मेरे दिवस दिन पहली वार होया सी हज्ज, हुजरा हक हक वड्याईआ। मूसा गृह छोड़ के गया सी भज्ज, दिवस उहो सोभा पाईआ। कोहतूर उत्ते हज़ूर ल्या सद्द, सदा शब्दी नाम जणाईआ। एह खेल सूरा सरबग, हरि करता आप कराईआ। जो संदेशा देवे अज्ज, अजमतों कसमतो अजिबवा अतिल हो धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच दा खेल खिलाईआ। अस्सू तिन्न कहे मैं दस्सां नाल प्यार, प्रीतम भेवी भेव खुल्हाईआ। गोबिन्द दस्सी साची धार, दो इक दा जोड़ जुड़ाईआ। जिस नूं इक्की कहे संसार, दूआ एका मेल मिलाईआ। एह खेल निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण अगम्मी कार, हरि करता आप कराईआ। जिन्हां मेला मिल जाए हरि कन्त भतार, प्रभ मिल के वज्जे वधाईआ। सो मंज़ल चढ़न दुष्वार, दूती दुश्मण अन्दर अटका सके कोए ना राईआ। मिलण उस सच्ची सरकार, जो शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। साची इक्की बणाए

आप एकँकार, दूआ एका रंग रंगाईआ। भगत भगवान खेल अपार, अपरम्पर स्वामी दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मस्तक लेख बणाईआ। तिन्न अस्सू कहे मैं दस्सां हक हकीकी, हकीकत दयां दृढ़ाईआ। प्रभ मिल्या लाशरीकी, शरक्त सब दी दए गंवाईआ। जिस दे विच हक तौफ़ीकी, ताकतवर बेपरवाहीआ। जो दिसे हर घट नज़दीकी, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। विछोड़ा रहिण ना देवे फ़रीकी, फ़िरका अन्दरों दए गंवाईआ। मंज़ल बख्शे अगम्म हकीकी, हमाकत अन्दरों दए कढ्ढाईआ। जन भगतां अन्दर रहिण ना देवे तारीकी, अंध अज्ञान दए गंवाईआ। कूड़ क्रिया उत्ते मार के लीकी, लाईन ऐन दए वखाईआ। आशा वेखे जीव जीअ की, घर घर बैठा सोभा पाईआ। गुरमुखां लेखा पूरा करे पिछली बीती, अग्गे आपणे घर वसाईआ। जिथ्थे आत्मा रहे सदा अतीती, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। इक्को चाढ़ रंग मजीठी, दुरमति मैल दए धुआईआ। सदा सच दवारे रहे जीती, मरन विच कदे ना आईआ। अस्सू कहे जन भगतो तुहाडे अन्दर वड़ के आपणी आप दस्से प्रीती, प्रीतम हो के दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। अस्सू कहे तिन्न मैं फिरया तट किनारे गंगा, गोदावरी ध्यान लगाईआ। कलयुग तक्कया उत्ते फिरे इक टंगा, लंगड़ा लूला रूप बणाईआ। सब दे कोलों मंगदा फिरे मंगां, भिच्छया
१४७५ देवो चाँईं चाँईंआ। फेर वेख्या खेल सूरा सरबंगा, की करता कार कमाईआ। जिस दे कोल शब्द अगम्मी डण्डा, डण्डावत १४७५
२२ सब दी रिहा बदलाईआ। तक्कया पांधा पंडा, पंडतां खोज खुजाईआ। इक होर खेल वेख्या अचंभा, नारद बोदी रिहा २२
हिलाईआ। आपणा सरीर बणा के लम्बा, लम्मा पै के सब नूं रिहा डराईआ। अस्सू कहे मैं थर थरा के कम्बा, अन्दर हिम्मत रही ना राईआ। उस मैनूं झट वखाया रविदास वाला रम्बा, जिस नूं रम्बी कहे लोकाईआ। फेर जणाया ओह वेख टुट्टा होया पलँघा, जिस दी पावा चूल नज़र कोए ना आईआ। फेर दस्सया ओह तक पिच्छे हरनाक्ष वाला थंभा, प्रहलाद संग निभाईआ। फेर वखाया नाले डराया तक लै सतरंगा जो आया विच्चों छम्बा, झम्ब के सब नूं दए वखाईआ। जिस ने पंखीआं भन्नूणे खम्बा, आलूणे देण दुहाईआ। मानव जुड़या रहिण नहीं देणा कंधे नाल कंधा, कंधी हथ्थ किछ ना आईआ। उस ने दीन दुनी दा बदल देणा धन्दा, धर्म दी धार इक जणाईआ। जन भगत बणा के बन्दगी वाला बन्दा, बन्धन सच देणा बंधाईआ। गुरमुख नेत्रहीण रहे कोए ना अन्धा, अंधकार देणा गंवाईआ। आत्म ब्रह्म दे के अनन्दा, अनन्दपुर दा लेखा पूर कराईआ। निशान मेट के तारा चन्दा, सदी चौधवीं मुहम्मद दा लेखा झोली दए टिकाईआ। फेर दस्स के तूं मेरा मैं तेरा छन्दा, सोहँ करे हक पढ़ाईआ। हरिजन रहे मूल ना रंडा, रंडेपा पिछला देणा मुकाईआ। जिस ने घर घर विच्चों

खाधा गंढा, गंढ सब दी दए पवाईआ। हरि हिरदा कर के ठंडा, तत्व तत दए बुझाईआ। धर्म प्यार बख्श के चंगा, चंगी दए वड्याईआ। अस्सू कहे मैं फिर चलया बिना जंघा, भज्जया वाहो दाहीआ। बाबूपुर पहुँचया जिथ्थे मेला सिँघ दा पिण्डा नन्गा, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। मैं हस्स के किहा प्रभू जे किरपा करें ते गुरमुख अन्दरों रहिण देवीं कोए ना गंदा, कूड़ी क्रिया सब दी देणी कढ्ढाईआ। पिच्छे कलयुग तेरा लँघ, आपणा पन्ध मुकाईआ। फेर नज़र आ गया अस्सू कहे मैनूं गोबिन्द वाला खण्डा, जिस दी धार लुहार तरखाण ना कोए घड़ाईआ। जिस ने लहिणा देणा पूरा करना खण्ड ब्रह्मण्डा, वरभण्ड ध्यान लगाईआ। जिस नूं कहिंदे चण्ड प्रचण्डा, प्रचण्ड चण्ड रूप बणाईआ। ओह नव सत्त दा वेखो दंगा, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण अक्ख खुल्हाईआ। जिस कारन सतिगुर शब्द ने कस्या तंगा, दो जहानां फिरे चाँईं चाँईंआ। मर्द मर्दाना वजाए मृदंगा, डौरु धुर दा नाम समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। नन्गा पिण्डा कहे मेरा ओढण बख्श दे सीस, सच तेरी सरनाईआ। तूं भगवन हरि जगदीश, जगदीश्र नूर इलाहीआ। लेखा वेख बीस इकीस, ईसा मूसा मुहम्मद ध्यान लगाईआ। गोबिन्द रख के गया उडीक, नानक निरगुण अक्ख उठाईआ। तेरी शहादत देवे भविक्ख्तां वाली तारीख, पेशीनगोईआं संग रलाईआ। वेला वक्त तक करीब, कुदरत दे मालक खोज खुजाईआ। उठ वेख दुखी होए जीव ग़रीब, ग़रीबां गोद ना कोए उठाईआ। इक्की सिक्खां नूं दो इक दी धार दे तरतीब, सरगुण निरगुण विच समाईआ। जिस दा लेखा पूरा कर जो लिख्या विच कुरान मजीद, मजमूआ अक्खरां वाला बणाईआ। तेरे चन्न दी चन्न होवे ईद, ईदुलफ़ितर दा पन्ध मुकाईआ। सब नूं करदे ताकीद, संदेशा देणा थांउँ थाँईंआ। जेहड़े अवतार पैग़म्बर गुरु तेरे अज़ीज़, प्यारयां प्रेम नाल समझाईआ। सारे तक्को ला के दीन दुनी नीझ, बिन नैणां अक्ख उठाईआ। पंजां तत्तां उत्ते रही ना कोए धर्म दी कमीज़, जिस दी धर्म दवारे मेला सिँघ दए गवाहीआ। जो जगत विच धुर दे नाम दा बीज के आए बीज, फल फुल्ल फुल्ल फल वेखो चाँईं चाँईंआ। जेहड़े तुहाडा नाम कलमा जपदे नाल जीभ, सिफ्त अक्खरां विच गाईआ। क्यों नहीं ग़फ्लत विच्चों खुल्ही उन्हां दी नींद, निज नेत्र ना होए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म सच प्रगटाईआ। अस्सू तिन्न कहे मैं आया पुर बाबू, बाबल दिती वड्याईआ। जिस ने गुरमुख सन्त सुहेले कीते काबू, झगड़ा काबल विच देवे पाईआ। जिस दा शाह ईरान उत्ते चलणा जादू, जादू नाम वाला वरताईआ। मूसा नूं बणा के आगू, ईसा नाता देणा रखाईआ। मुहम्मद दी अग्ग लाउणी विच तम्हा वाले तमाकू, फुंकारा इक्को कलमा कलाम जणाईआ। सदी चौधवीं अन्दर परवरदिगार दीनां मज़्हबां

विच फिरे बण के डाकू, डाका मारे थांउँ थाँईंआ। सृष्टी घुंमणी वांग लाटू, लुटेरा नज़र किसे ना आईआ। जिस कारन खेल कराए भगतां दा तम्बा पाटू, पटने वाले हुक्म जणाईआ। झगड़ा पैणा इक्को वार इक सौ इक टापू, टप्पा टप्पा वंड ना कोए वंडाईआ। अस्सू तिन्न कहे जन भगतो मैं इक संदेशा आखूं, सुणावां चाँईं चाहीआ। बिना पुरख अकाल तों दीन दयाल तों किसे नूं मन्नयो मूल ना बापू, अवतार पैग़म्बर गुरु चाचिआं दी लोड़ रहे ना राईआ। जो एथे ओथे दो जहानां तुहानूं सांभू, सम्बल बहि के आपणी दया कमाईआ। इक गल्ल याद रखयो कल्ल नूं सवा सेर ज़रूर भुन्ना के ल्याउणे आबू, जो आबरू सब दी वेख वखाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन प्रभ आप बणाए धुर दे साधू, साधना सिदक वाली दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार दो जहानां एका जागू, जागरत जोत बिन वरन गोत निरगुण नूर डगमगाईआ।

✪ ४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ७ पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदास पुर दी संगत नवित ✪

चन्द कहे सुण मीत सतारे, सत्ता बुलंदी उत्ते दयां जणाईआ। मुहम्मद नईया दिसे अन्त किनारे, नौका तट्टां डेरा लाईआ। चार यारी दए इशारे, सैनत निरगुण धार लगाईआ। उम्मत उम्मती सारे हारे, योधा सूर ना कोए अख्वाईआ। खेल करे की परवरदिगारे, बेपरवाह आपणा हुक्म वरताईआ। जो निरगुण नूर जोत करे उज्यारे, जोती जाता डगमगाईआ। प्रकाश प्रकाश करे दोबारे, सरगुण निरगुण रूप वखाईआ। ओह लेखा मंगे संग मुहम्मद गुर अवतारे, पैग़म्बर बचया रहिण कोए ना पाईआ। उठ तक्कीए उस साहिब दे नज़ारे, जो नज़रां तों परे डेरा लाईआ। जिस दे पूरे होए कौल इकरारे, वाहिदे सब दे वेख वखाईआ। दीन दुनी नूं आपणे हुक्म दे दए नज़ारे, फ़रमाना इक्को इक दृढ़ाईआ। असीं फड़े रहे चौदां सद वगारे, जगत विच निशान बणाईआ। हुण आउणा विच मैदान अखाड़े, नव नव आपणा पन्ध मुकाईआ। जो वसदे घर उजाड़े, उजड़यां ल्ए वसाईआ। ओह मारन वाला धाड़े, धाड़वी बणया बेपरवाहीआ। उठ वेख अग्ग लग्गी बहत्तर नाड़े, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। फिरी दरोही उजाड़ पहाड़े, चार कुण्ट कुरलाईआ। धर्म दे रहे कोए ना वाड़े, मंगण सच कोए ना आईआ। तपदे हिरदे कोई ना ठारे, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। जगत वासना होई कुलखणी नारे, हरि कन्त ना कोए हंढाईआ। लेखा मंगे पुरख अकाल करतारे, कुदरत दा मालक बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सितार कहे सुण धुर दे नूरी चन्ना, चन्न दयां जणाईआ।

कमलया असां दोहां ने दीन मज़्हब दा मिल के पाया बन्ना, हद्द माणसां विच रखाईआ। झगड़ा पा के माटी तना, तन वजूद दिता लड़ाईआ। कलमा जणा के सुणा के नाल कन्ना, कायनात खेल खिलाईआ। भरांत कर के विच मनां, मनसा दिती बदलाईआ। मार्ग दस्स के नवां, नव खण्ड खेल खिलाईआ। संग मुहम्मद यार रला के चवां, चौथे जुग हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। चन्न कहे सुण सितारे निक्के, सति दयां दृढ़ाईआ। प्रभ दे नाम जुग जुग शरअ दे विच विके, कीमत जगत ना कोए रखाईआ। उम्मतीआं निगह साथों परे किसे ना टिके, अग्गे अक्ख ना कोए उठाईआ। मुहम्मद हथ्थ मारया सी उत्ते हिक्के, छाती लई ठुकराईआ। शरअ दे पा दे हिस्से, हस्ती दस्सी बेपरवाहीआ। धर्म निशान मेरा ईमान अवाम नूं दिसे, चन्द सितार नज़री आईआ। लेख लिखे सी उत्ते कागज़ चिट्टे, शाही वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। चन्द कहे ओह तक धुर दी धार मुढ्ढी, मुहम्मद धार जणाईआ। मुहम्मद दी आशा रूप बणनी नंन्ही गुड्डी, सीस ओढण ना कोए टिकाईआ। जिस ने बिना घूँगट पाउणी लुड्डी, लोहड़ा करे थांउँ थाँईंआ। चारे कुण्ट फिरना उडी, भज्जणा वाहो दाहीआ। सब दी बदल देणी बुद्धी, अक्ल रहिण कोए ना पाईआ। एह खेल परवरदिगार दी गुज्झी, गोझ आपणे विच रखाईआ। साडी अन्तिम औध पुगी, पूजा रहे ना जगत लोकाईआ। इक्को धार अग्गे होणी उग्घी, उगण आथण खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। तारा कहे चन्न ओह वेख गुड्डी की कहिंदी, कहि के रही सुणाईआ। पिट्ठ कर के दिशा लहिंदी, करवट लई बदलाईआ। हथ्थीं ला के मैहन्दी, मुहम्मद रही वखाईआ। मैं तेरा भाणा रही सहिंदी, सहि सहि झट लँघाईआ। परवरदिगार कदमां रही ढहिंदी, धूढ़ी खाक रमाईआ। जोबनवन्ती हो के रही बैहंदी, सच सिंघासण डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गुड्डी कहे मेरी सज्जी अक्ख दे लाउणा कसीरा, रविदास गुरमुख आपणी सेव कमाईआ। मेरा लहिणा देणा पंज पीरा, पंचम पंचम वंड वंडाईआ। मेरे मस्तक विच तिन्न लगाउणीआं लकीरां, तरिप्त काले रंग रंगाईआ। मेरे सीस ओढण नहीं कोई चीरा, चीरे वाल्यां दयां जणाईआ। जिन्हां दे कोल पंज्जी होण शमशीरां, शरअ शरअ नाल ठुकराईआ। मैनूं ज़रूर बहायो गुरमुखो उत्ते निक्के जिहे पीढ़ा, पीड़ सब दी दयां कढ्ढाईआ। मैं सदी चौधवीं दा अन्तिम चुकणा बीड़ा, बल आपणा आप प्रगटाईआ। दीन दुनी दा मार्ग होणा भीड़ा, अग्गे राह ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक

सुणाईआ। गुडीआ कहे मैं सदेशा देणा तारे चन्नू, चन्द सितार देणा समझाईआ। जेहड़ी वंडां पा के गया मन्नू, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश रूप वखाईआ। जो अवतार पैग़म्बर गुरुआं बणाए बन्नू, हद्द वेखे बेपरवाहीआ। जो नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप सब दीआं वट्टां भन्नू, भाणा आपणा लए मनाईआ। जुग चौकड़ी लेखे डंनू, डण्डा नाम हथ्थ उठाईआ। निरगुण धार बण के कलू, कला सब दी दए भवाईआ। सच सिंघासण इक्को मल्लू, मलेछां करे सफ़ाईआ। जिस दी छत्र छाया हेठ गुरमुख सन्त सुहेला पल्लू, पतिपरमेश्वर आपणी कार कमाईआ। परमात्म आत्म धार हो के रलू, जोती जोत विच मिलाईआ। लख चुरासी सारी छलू, छलल आपणी कार कमाईआ। दीन दुनी अग्नी तत जलू, जलदयां शांत ना कोए कराईआ। गुडीआं कहे मैं सच दस्सां तारे चन्ना प्रभ दा भाणा कदे ना टलू, टल्लीआं वाले झण्डे सब दे देणे मुकाईआ। खुदा नूं कहिण वाले अल्लू, आहला अदना वेख वखाईआ। सब दी पुट्टी लथ्थे खल्लू, ख़ालक ख़लक दए सज़ाईआ। धर्म राए दवारे तलू, जिन्हां खाधा सूर गांईआ। मैं इक संदेशा देणा इक्को वार मारे हल्लू, हलत पलत आपणा हुक्म वरताईआ। गुरमुख साचे सन्त जनां सतिगुर शब्द फड़ा के पल्लू, पारब्रह्म प्रभ आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच संदेशा एका घल्लू, घाल विच वेखे जगत लोकाईआ।

१४७६
२२

✪ ४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ७ किशन सिँघ दे गृह पिण्ड अल्लड़ पिण्डी ज़िला गुरदास पुर ✪

सदी चौधवीं कहे भगतां दा तम्बा पाटा, लीर लीर दए दुहाईआ। मैनूं आउंदा जाए चारे कुण्ट घाटा, ख़ाली झोली ना कोए भराईआ। मेरी मंज़ल मुकदी जाए वाटा, अग्गे अवर ना कोए वधाईआ। मैं भज्जी फिरां फड़ के ख़ाली बाटा, जगत जहान वाहो दाहीआ। जां तकदी मुहम्मद दी चूल टुट्टी खाटा, सिंघासण कायम ना कोए रखाईआ। मेरी बदलदी जाए आशा, निराशा हो के दयां दुहाईआ। की खेल तेरा अबिनाशा, की करते कार कमाईआ। उठ वेख मेरा नन्गा होया झाटा, ओढण सीस ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब तेरी सरनाईआ। सदी चौधवीं कहे परवरदिगार सीस तों नन्गी, बौहड़ी मेरी मेरी दुहाईआ। ओधर टुट्टी दिसे मंजी, पावा चूल रहे कुरलाईआ। मैं फिरदी अन्तिम कन्ढी, भज्जां वाहो दाहीआ। मैनूं टेडी दिसदी डण्डी, मार्ग हक ना कोए दरसाईआ। शरअ शरीअत होणी पाखण्डी, सति विच ना कोए समाईआ। पई दुहाई विच वरभण्डी, ब्रह्मण्ड देण दुहाईआ। मैं फिरां पैरी नन्गी, दिवस

रैण थांउँ थाँईंआ। चार यारां आई तंगी, तंगदस्ती ना कोए कटाईआ। मुहम्मद वेखे तारा चन्दी, चन्द सितार ध्यान लगाईआ। बौहड़ी सब दे उत्ते लग्गी पाबन्दी, सिर सके ना कोए उठाईआ। दरोही तेरयां भगतां ने हथ्थ विच फड़ लई चण्डी, चण्ड प्रचण्ड बैठे सीस निवाईआ। मेरी दुहाई उहनां दे वस होई जिन्नां प्रकृतीआं घेरीआं पंझी, पंझी बैठ बल धराईआ। चौदां तबक वञ्झ मुहाणा हाथ ना आवे वञ्झी, अथाह सार कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब तेरी सरनाईआ। सदी चौधवीं कहे क्यों भगतां फड़े खण्डे, खड़ग रहे खड़काईआ। क्यों लाल रंग रंगे, हथेली हथ्थ जणाईआ। क्यों अस्व कस्या तंगे, दुलदुल ऐली रोवे मारे धाईआ। बौहड़ी मेरे पिछले समें लँघे, अग्गे वक्त ना कोए वड्याईआ। दुहाई मक्के मदीने होणे जंगे, जंगजू रहे कुरलाईआ। मेरे लबास रह जाणे टंगे, तन कपड़ ना कोए वखाईआ। किसे नूं जल नहीं मिलणे ठंडे, आब हथ्थ किसे ना आईआ। झगड़ा होणा जेरज अंडे, उत्भुज सेत्ज नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, की सच सच वरताईआ। सदी चौधवीं कहे क्यों मेरे मस्तक लकीर लाई काली, त्रैगुण दाग़ लगाईआ। मेरा लेख वेख हाली, हालत तक ख़लक खुदाईआ। मेरा रूप नहीं कोई जाहली, जाहल दीन दुनी वेख थांउँ थाँईंआ। बौहड़ी फल रिहा नहीं उम्मत दी डाली, अमृत रस ना कोए चखाईआ। कलमा करे ना कोए दलाली, विचला भेव ना कोए खुल्हाईआ। हक दी रही ना कोए हलाली, हरामखोर दिसे जगत लोकाईआ। किरपा कर मेरे शहिनशाह शाली, साहिब स्वामी दया कमाईआ। मेरी आयू बीती नहीं कोई बाहली, बहुता समां ना कोए रखाईआ। ना कर एडी छेती काहली, कलयुग तेरा ध्यान लगाईआ। तूं लख चुरासी माली, अवतार पैग़म्बर गुरु तेरे बूटे धर्म दे नज़री आईआ। मैं वी अन्त होई सवाली, सवालण हो के हाल सुणाईआ। मेरी आशा मुरदी फेर ज्वाली, तृष्ना आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो मेरी भरो हामी, हमला कूड़ रहे ना राईआ। तुसीं चुरासी विच्चों अनामी, नाम वाले नज़री आईआ। जिन्नां दी जगत टुट्टी ग़ुलामी, ग़ुलामी मेरी दयो तुड़ाईआ। तुसां सुणया हक पैग़ामी, पैग़म्बरां तों परे जणाईआ। तुहाडा मालक अन्तरजामी, अन्तर निरन्तर वेख वखाईआ। की होया जे होई अंधेरी शामी, शम्हा नूर करे रुशनाईआ। मेरी पूरी हो जाए ख़ामी, ख़ाहमखाह मिले ना कोए सज़ाईआ। तुहाडा मालक इक निहकामी, निहकर्मी इक अख्वाईआ। बौहड़ी मेरी चारों कुण्ट होई बदनामी, बदी दा लेखा ना कोए मुकाईआ। मैं सब नूं करां सलामी, सही सलामत सीस झुकाईआ। तुहाडी मंज़ल इक रुहानी, रूह बुत वज्जे वधाईआ। तुसीं वेखो मालक असमानी, इस्म आज़म

नूर खुदाईआ। जिस भाग लगाया तत जिस्मानी, जिस्म ज़मीर दिती बदलाईआ। सूरबीरो इक वार खड़का दयो किरपान नाल किरपानी, किरपा प्रभ दी नाल जणाईआ। एह लिख्त भविक्ख्त दी रह जाणी निशानी, सदी चौधवीं निउँ के सीस झुकाईआ। गुरमुखो अल्लड़ो तुहाडी अलड़ जवानी, आदि अन्त वज्जे वधाईआ। बेशक मेरी जूह होणी पुराणी, पुरीआं लोआं तों बाहर दृढ़ाईआ। हुण वेख्यो झगड़ा पैणा विच दुरानी, दूर दुराडे लैण अंगड़ाईआ। शरअ शरअ दी चढ़े तुग्यानी, शौह दरया रूप बणाईआ। तुहाडे उत्ते मेरे साहिब दी मेहरवानी, मेहर नज़र नाल तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे क्यों लकीरां तिन्न मेरे उत्ते लाईआं तृप्त, बौहड़ी काली काली धार बणाईआ। दुहाई प्रभू दी पूरी होणी लिख्त, लिख्या लेख ना कोए बदलाईआ। एक दा इक्को रहिणा इष्ट, इष्ट देव आप हो जाईआ। जिस दी आशा रख के गया राम वशिष्ट, विषयां तों बाहर ध्यान लगाईआ। उस दा लेखा बाहर होणा टांक जिसत, इक दो ना वंड वंडाईआ। लेखा मुकाउणा जिस दोज़ख़ बहिशत, स्वर्गां वेख वखाईआ। मैं चौदां सद मुहब्बत कीती प्रेम वाला लाया इश्क, माशूक आपणा आप बणाईआ। अन्त ओह मुहम्मद रिहा ख़िसक, पल्लू रिहा छुडाईआ। पता नहीं मेरे मस्तक लग्गणा केहड़ा तिलक, त्रैगुण अतीता दए लगाईआ। मैं रो के मारां किलक, ऊची कूक कूक सुणाईआ। मेरी कीमत (पाए) कोए ना निरख, दाम सके ना कोए चुकाईआ। ना कोई जाणे मेरा सोग हिरख, हिरस हवस ना कोए गंवाईआ। मैं चौदां सौ साल दा बिरख, जड़ जगत विच रखाईआ। मेरा समां पुज्या फिरत, आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं वेख्या नाल सुरत निरत, बिन नैणां नैण उठाईआ। मेरी लेखे लग्गी अन्तिम किरत, कीती करनी झोली पाईआ। उम्मत आशा होणी मिरत, मित्रक रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे रविदासा क्यों कौडी बद्धी उत्ते मेरी अक्ख, आख़र दे जणाईआ। मैं वेख ना सकां अलखणा अलख, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। क्यों इक नालों मैनूं कीता वक्ख, वक्खरी धार बणाईआ। मैं रगढ़ां आपणा नक्क, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। मेरा पूरा कर दे शक, गिले रही सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति सच आप समझाईआ। सदी चौधवीं कहे क्यों मैनूं कीता काणी, इक अक्ख बणाईआ। मिल लैण दे आपणा हाणी, जोबनवन्त बेपवाहीआ। मैं मुहम्मद दी बणी ना मूल सवाणी, हुक्मे अन्दर आपणा झट लँघाईआ। बिना परवरदिगार तों दूजी सुणी कोए ना बाणी, कल्मयां विच मन ना कदे परचाईआ। मैं उस साहिब दी राणी, जो राज़क रिज़क रहीम अख्वाईआ। मैं ओसे दी कथा कहाणी, गा गा झट लँघाईआ। जो मालक जीव प्राणी, पुनह

पुनह सीस झुकाईआ। जिस ने खेल वेखणी विच लिबनानी, धुर दा पड़दा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे क्यों मेरी अक्ख ते बध्धा कसीरा, कसम खा के दयो जणाईआ। मैं नेत्र वहावां नीरा, रो रो दयां दुहाईआ। क्यों रविदास मैनूं ना आवे धीरा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। चारों कुण्ट पैणी वहीरा, वैरी घर घर नज़री आईआ। झगड़ा मुके पैग़म्बरां पीरा, पीर पीरा हुक्म सुणाईआ। किसे दी रहे ना मिल्ख जगीरा, जगत वंड ना कोए वंडाईआ। मेरा रहिणा नहीं रंगला पीढ़ा, सुहागण रूप ना कोए बणाईआ। मेरे हड्डीं लग्गीआं पीड़ां, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। मुश्किल हो गया जीउंणा, वेला अन्त दए गवाहीआ। अन्तिम पए निउंणा, निव निव लागां पाईआ। वे रविदासा ठीक सब दे हिस्से आउणी साढे तिन्न हथ्थ सीणा, सींव साढे तिन्न हथ्थ जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे मथ्थे लीकां मारन वालीए चलाके, तेरी चलाकी दयां जणाईआ। की होया जे प्रभ दे नाम दे लिखदी खाते, ख़ाक चरणां धूढ़ रमाईआ। कदी मैं वी चढ़ी सां उस दी ढाके, कुछड़ बहि के खुशी मनाईआ। जिस ने मुहम्मद वरगे खिडाए काके, बाले आपणे रंग रंगाईआ। मेरे बणाए राखे, सेवा हुक्म वाली सुणाईआ। एहदे वल्ल कोई ना झाके, नेत्र
१४८२ नैण ना अक्ख उठाईआ। दरोही अज्ज मैनूं आ गए घाटे, मेरा पन्ध रिहा ना राईआ। मेरे वस्त्र पुराणे चीथड़ फाटे, ओढण १४८२
२२ सच ना कोए वखाईआ। की खेल कीता मेरे अगम्मी दाते, दयावान कार भुगताईआ। मेरी पुछे मूल ना बाते, बलि दीए २२
गोलीए तैनूं दिती वड्याईआ। कदी मेरे वी सीस गुंदे सी जिहदे अज्ज खुल्ले झाटे, मेंढी नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो तुहाडीआं वेखां नन्गीआं तलवारां, तालब हो के ध्यान लगाईआ। केहड़ीआं तुहाडीआं मेरे नाल पिछलीआं खारां, मैनूं दयो जणाईआ। मेरा नाता नाल चार यारां, याराना मुहम्मद नाल वखाईआ। मैं करदी रही शरअ वालीआं कारां, कारी करनी कार कमाईआ। चौदां सद कटीआं वगारां, सेवा कीती थांउँ थाँईंआ। माणीआं खूब बहारां, ऐशां विच वड्याईआ। मैं तक्कीआं कोटन कोटि जेबनवन्तीआं नारां, मेरे वरगी नज़र कोए ना आईआ। मैं आपणा आप संवारां, साफ़ सुथरी हो के दयां वखाईआ। जन भगतो की तुसी मेरे उत्ते दयोगे पहरा, खुशी खुशी नाल मेरा संग रखाईआ। जन भगत कहिण कमलीए असीं कलयुग अन्तिम मारनीआं धाड़ां, धाड़वी पुरख अकाल आपणे नाल मिलाईआ। फिरना जंगल जूह उजाड़ां, पहाड़ां फेरा पाईआ। लभ्भणा इक्को लाड़ा, जेहड़ा कोटन कोटां लए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

करे खेल धुर दा हरि, धुर दा पर्दा आप चुकाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं निक्की जेही मेरा की लेखा लिखो लिखारीओ, कलम नाल चतुराईआ। की मेरी हालत वेखो नारीओ, रूपहीण दुहाईआ। चौदां सदीआं मैं लुट्टी खूब बहारीओ, आपणा रंग रंगाईआ। मुहम्मद तकणा जिस दा रूप रत्ती दाढ़ीओ, लाल हत्थ गुरमुखां देण गवाहीआ। समां बदल जाणा हुक्म नाल एसे हाढ़ीओ, हाढ़े नाल सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर हुक्म इक सुणाईआ। सदी चौधवीं सत्त रंग दे वणजारे, जगीर सिंघा जणाईआ। मेरे वेखो चार यारे, मुहम्मद नाल चतुराईआ। जेहड़े अन्तिम बाज़ी हारे, बाज़ां वाला खेल खिलाईआ। मेरी नईया अन्त किनारे, तट किनारे सोभा पाईआ। कसीरा करे हाहाकारे, भगतां रिहा जणाईआ। की लहिणा रविदास चमारे, गुरमुख सिँघ समझाईआ। क्यों तृप्त मारीआं तिन्न लकारे, पड़दा देणा उठाईआ। मैनूं इयों दिसदा जिवें मैं चढ़ना धुर दे खारे, सगनां वाला सगन मनाईआ। मैनूं प्रनाउणा उस अगम्मी लाड़े, जिस नूं लाड़ी मौत ना कदे प्रनाईआ। जो मेरा चीथड़ फाड़े, धुर दा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे कवण भेव दस्से गुज्झे, बिना साहिब ना कोए चतुराईआ। मेरे उजड़न लग्गे झुग्गे, झुगीआं नज़र कोए ना आईआ। मुहम्मदा तेरी उम्मत वांग दाणयां भुक्जे,
१४८३ २२ कच्चे भुन्ने दाणे देण गवाहीआ। प्रभ दे हुक्म होणे उग्घे, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सब दे भरे बेड़े डुब्बे, अग्गे पार १४८३ २२
ना कोए लँघाईआ। लुक्या रहे ना कोए किसे गुट्ठे, डूँघीआं डल्लां विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। इक्को सतिगुरु शब्द उडे, दो जहानां भज्जे वाहो दाहीआ। सब नूं दस्स के आपणे मुद्दे, मुद्दतां दे झगड़े दए मुकाईआ। वेला अन्तिम मेरा पुजे, पूजण योग दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। दाणे कहिण असीं दस्सीए आपणा हाल, सहिज नाल सुणाईआ। जिस वेले मुहम्मद मदीने विच्चों मारी छाल, आपणा कदम उठाईआ। उस वेले सानूं भुन्न के लिआया सी इक भठियाल, छेती छेती आपणी सेव कमाईआ। आह लै जा आपणे नाल, जिथ्थे भुक्ख लग्गे उथे खाणे चाँईं चाँईंआ। मुहम्मद दो हथ्थां वजाया ताल, आवाज़ आवाज़ प्रगटाईआ। फेर हुक्म सुणया अकाल, अकल कलधारी दिता सुणाईआ। मुहम्मद इहनां नूं रखणा संभाल, चौदां सदीआं मुख ना कोए लगाईआ। जिस वेले आवे आप दीन दयाल, परवरदिगार नूर इलाहीआ। उस वेले चारों कुण्ट सब दे सिर ते कूके काल, नगारा आपणा डंक वजाईआ। तुसीं उम्मत दी सुरत ना सकणी संभाल, सम्बल बहि के वेखे बेपरवाहीआ। उस वेले चुरासी विच्चों सन्त भगत लए भाल, अवतार पैग़म्बर गुरुआं तों बाहर कर पढ़ाईआ। एह सवा सेर उहनां नूं आप दए खवाल, दूसर रस ना

कोए चखाईआ। मुहम्मद हस्स के किहा तेरा खेल कमाल, बेपरवाह बेपरवाही विच समाईआ। परवरदिगार किहा ओह मेरे सोहणे लाल, लालो दा लेखा पूर कराईआ। जिस नूं नानक बख्श्या धन माल, कंगाल कहे लोकाईआ। उथे पुछां मुरीदां हाल, मुर्शद हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं काणी हो गई अक्खों, सच दयां सुणाईआ। पंझी गुरमुख ज़ोर नाल हस्सो, हस्स के दयो वखाईआ। प्रभू किसे दा करे कोई ना पक्खो, बणे सांझा पीर गुसाँईंआ। सब दा लेखा मंगे फड़ के नक्कों, बचया रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। सदी चौधवीं कहे गुरमुख सिँघ ज़ोर दी हस्स के दे वखाल, आपणी सुन्न दे खुल्ह़ाईआ। गल्लीं बातीं देवणहारा शाह कंगाल, भण्डारा गल्लीं बातीं भराईआ। गल्लीं बातीं आवे जगत ज़वाल, गल्लीं बातीं दीन दुनी करे तबाहीआ। गल्लीं बातीं भगतां करे संभाल, गल्लीं बातीं होए सहाईआ। गल्लीं बातीं मेला मिले भगत भगवान, बिना गल्लां बातां तों शब्द नाद ना कोए
१४८४ शनवाईआ। गल्लीं बातीं कूड़ी काया माटी दिसे खाल, गल्लीं बातीं वज्जदी रहे वधाईआ। बिना गल्लां बातां तों अज्ज तक खेल होया नहीं जहान, जुग चौकड़ी रीती चली आईआ। नाता तुट्टे जगत छुट्टे गल्ल फेर सुणे कोए ना कान, बिना गल्ल तों ग़ुलामी सके ना कोए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा सच हुक्म वरताईआ। गल्लां बातां शब्द धार दी खुशी, खुशहाली विच प्रगटाईआ। गल्लां बातां विच साहिब दी रुची, बिना गल्लां बातां तों रचना रच ना कोए जणाईआ। गल्लां बातां विच प्रभ दी मंज़ल मिले उच्ची, बिना गल्लां बातां तों हथ्थ किछ ना आईआ। जो जगत विच जहान विच कटण आए बुती, बुतखाने बहि के आपणा झट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे जगत धार दुखी, दु:ख सुख आपणी खेल खिलाईआ।

✪ ६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ७ हरदेव सिँघ दे नवित हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

सतिगुर पूरा सदा निहकेव निहचल धाम वड वड्याईआ। आदि जुगादी अलख अभेव, अगोचर बेपरवाहीआ। जिस दी विष्न ब्रह्मा करदे सेव, शिव शंकर चरण धूढ़ रमाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर गाउंदे रसना जिह्व, सिफ्त सिफ्त नाल वड्याईआ। जिस दा नाम रस अगम्मी मेव, मुन्याद सब दी वेखे थांउँ थाँईंआ। सो सतिगुर साचा साहिब स्वामी जन्म विच्चों

जन्म दए हरदेव, हरि आपणी दया कमाईआ। बधक दी लेखे ला के सेव, बन्धन धर्म राए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक होए सहाईआ। नौ अस्सू कहे मेरी नमो नमो निमस्कार, डण्डावत विच सीस झुकाईआ। परम पुरख सच्ची सरकार, हरि करता बेपरवाहीआ। जो जुग जुग पैज दए संवार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। डुब्बदे बेड़े लाए पार, पाहिन पाथर आप तराईआ। गुरमुख मनमुख दोहां पाए सार, जोती जाता अगम्म अथाहीआ। पूरब लहिणा कर्म विचार, निहकर्मी होए सहाईआ। जेहड़ा जन्मेजे दा सी ख़िदमतगार, नथीआ नाउँ ब्राह्मणी कुख्ख वड्याईआ। तिस दा लेखा पूरा करे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी एका एका एकँकार।

✪ १४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ७ ब्यास दरया दे कन्ढे पंज वजे शाम ✪

ब्यास कहे मैं चार जुग दा प्यासा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मेरी तृखा ना किसे बुझाईआ। मेरा लेखा लिख के गया वेद व्यासा, इक लख सतारां हज़ार सलोक पुराण अठारां देण गवाहीआ। मैनूं अन्तिम गोबिन्द दिता दिलासा, कल्गीधर जगदीश दया कमाईआ। तेरा लहिणा देणा पूरा करे पुरख अबिनाशा, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। मुहम्मद दी नाल रलाए ख़ाहिशा, सदी चौधवीं जोड़ जुड़ाईआ। चौदां तबक करे तलाशा, चौदां लोक वेख वखाईआ। नव सत्त कर जोत प्रकाशा, नव नौ चार दा पन्ध मुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव वेखण आवण तमाशा, करोड़ तेतीसा अक्ख उठाईआ। अवतार तेई होवण दासी दासा, मूसा ईसा संग मिलाईआ। गुर दस नूर जोत होवे रहिरासा, मण्डल मण्डप वज्जे वधाईआ। लेखा जाणे जोती जाता, जागरत जोत कर रुशनाईआ। अकल कलधारी पुरख बिधाता, महिबान बीदो नूर इलाहीआ। जिस दी जुग चौकड़ी शास्त्र सिमरत वेद पुराण गाउंदे गाथा, खाणी बाणी सिफ्त सालाहीआ। दो जहानां पुरख समराथा, परम पुरख वड वड्याईआ। कलयुग अन्तिम वेखे अंधेरी राता, ज़िमीं असमानां खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। ब्यास कहे मैं तकां ख्वाजा खिज़र, नीर पीर भज्जे वाहो दाहीआ। जिस दा ज़करीए कीता ज़िकर, अलिफ़ ये नाल वड्याईआ। जिस दा मुहम्मद ने कीता फ़िकर, फ़िकरा कायनात सुणाईआ। ओह निरगुण धारों आवे निक्कल, नूर नुराना कर रुशनाईआ। जगत नेत्र किसे ना आवे दिसण, दहि दिशा वेखण कोए ना पाईआ। जो झगड़ा मेटे पथ्थर इट्टण, पाहन लेखा दए मुकाईआ। भेव खुल्हाए इतल वितल, सितल आपणी कार कमाईआ। सदी

चौधवीं आवे जितण, चारों कुण्ट अक्ख उठाईआ। पीर पीरां बणे मितण, मेहरवान महिबूब नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। ख्वाजा कहे मैं आया लहिंदी दिशा, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। मेरा परवरदिगार पाया हिस्सा, हस्ती दस्सी नूर इलाहीआ। मैं राह तक्कां निता, चौदां सद ध्यान लगाईआ। कवण वेला परवरदिगार मिले धुर दा पिता, अब्बा जान शहिनशाहीआ। जिस दा तन वजूद होवे ना जुस्सा, ज़मीर नज़र कोए ना आईआ। मुच्छ ना होवे दाढ़ी ना मनुशां वाला रुक्खा, माटी ख़ाक ना कोए सुहाईआ। भाग लगाए अगम्मी बुता, बुतख़ान्यां परे समझाईआ। खेल दस्से अबिनाशी अचुता, चेतन आपणी धार वखाईआ। सम्मत शहिनशाही सत्त सुहाए रुत्ता, अस्सू चौदां वंड वंडाईआ। जिस दे विच चार जुग दा पैंडा मुका, कलयुग निउँ निउँ लागे पाईंआ। बेपरवाह इक्को उठा, धुर दा मालक धुरदरगाहीआ। वेखे लहिंदी गुट्ठा, पच्छम आपणी अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। ख्वाजा कहे मैं आया दौड़ा, भज्जया वाहो दाहीआ। चौदां तबक छड्डया पिछला पौड़ा, पौड़ी डण्डा नज़र कोए ना आईआ। जगत जहान वेख्या कौड़ा, उम्मत उम्मती अक्ख बदलाईआ। बिना परवरदिगार कोई ना बौहड़ा, बौहड़ी करे लोकाईआ। दुहाई सदी चौधवीं वक्त रिहा थोड़ा,

१४८६ मुहम्मद नेत्र लोचण नैण रिहा तकाईआ। वेद व्यासे लेखा लिख्या कलयुग अन्तिम आए ब्राह्मण गौड़ा, कन्ढी मेरे चरण छुहाईआ। १४८६

२२ जिस दा नूर नुराना होवे जौहरा, जौहरी परखे कोए ना राईआ। उस दा सच दा होवे इक्को मोहरा, मेहरवान आपणा हुक्म २२

वरताईआ। जिस ने कलयुग अन्तिम करना बौरा, सुरती सुरत ना कोए वड्याईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्सणा दोहरा, निरगुण निरगुण मेला मेले सहिज सुभाईआ। जिस दे अग्गे चलणा नहीं कोई जोरा, अवतार पैग़म्बर गुर बैठण सीस निवाईआ। उस दे कोल साढे तिन्न हथ्थ बन्न्हण वाली इक्को डोरा, डोरी करनैल सिँघ दए फड़ाईआ। ख्वाजा कहे बौहड़ी हुण लहिंदी दिशा पै जाणा लोहड़ा, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। सतिगुर शब्द शब्द सतिगुर चढ़े अगम्मी घोड़ा, वाग जोती धार हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। ख्वाजा कहे परवरदिगार मेरे अहिबाब, महिबूब सीस निवाईआ। मैं लै के आया बिना अक्खरां तों किताब, कुतबख़ाने नज़र किते ना आईआ। मुहम्मद दा पूरा कर दे खवाब, खता अवर रहे ना राईआ। मेरा सजदे नाल आदाब, अदब नाल दृढ़ाईआ। मग़रब विच इक्को तेरे नूर दी होवे महिराब, दूजा नज़र कोए ना आईआ। शरअ शरीअत कोलों कर आज़ाद, नाम कलमा वंड ना कोए वंडाईआ। धुर दे हुक्म दा बख्श ख़िताब, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मेरा लेखा पूरा कर दे आज, दर तेरे मंग मंगाईआ। नौ

खण्ड पृथ्मी खोल्ह़ दे जाग, आलस निंद्रा रहे ना राईआ। मैनूं याद आ गया ख्वाजा कहे ब्यास तों पार गोबिन्द उडाया आपणा बाज़, बाज़ां वाला आपणा खेल खिलाईआ। मैनूं मार के किहा आवाज़, चौदां तबकां बाहर सुणाईआ। छेती आ जा भाज, भज्जणा वाहो दाहीआ। हुक्म दिता ग़रीब निवाज़, शब्द संदेशा इक सुणाईआ। सदी चौधवीं मुहम्मद दा रहिणा नहीं राज, उम्मत नबी रसूल नज़र कोए ना आईआ। इक्को परवरदिगार दा महकणा बाग, बूटा माणस दए लगाईआ। उस वेले सब ने होणा लाजवाब, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। ख्वाजा कहे मैं आया वांग हकीरा, निव निव लागां पाईंआ। मैं कढीआं तेरे चरण कँवलां चौदां लकीरा, चौदां तबकां लेखा रहे ना राईआ। मेरी दृष्टी होई वांग फ़कीरा, फ़िकरा इक्को देणा जणाईआ। अग्गे शरअ तोड़ ज़ंजीरा, शरीअत कम्म किसे ना आईआ। इक्को माण बख्श ग़रीब अमीरा, ज़ात पात नज़र कोए ना आईआ। अवतार पैग़म्बर गुर पूरीआं कर तहरीरा, जो भविक्ख्तां विच गए दृढ़ाईआ। जेहड़े मानव नाम कलमे कीते लीरा लीरा, इक्को गंढ देणी बंधाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप परवरदिगार पुरख अकाल धुर दे राम बदल दे ज़मीरा, ज़िमीं असमान ध्यान लगाईआ। ब्यासा कहे मेरे उत्ते संदेशा दे के गया भगत कबीरा, कबरां तों बाहर दृढ़ाईआ। जिस वेले सदी चौधवीं वेला अन्त होए अख़ीरा, अक्खरां चले ना कोए चतुराईआ। बिना पुरख अकाल तों दीन दुनी बदले ना कोए तकदीरा, तदबीर चले ना कोए चतुराईआ। झगड़ा मेटणा शाह हकीरा, इक्को रंग देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ। ख्वाजा कहे सुण ब्यास दे कन्ढे, तट्टा तैनूं दयां जणाईआ। उठ वेख नव खण्डे, ब्रह्मण्डां अक्ख उठाईआ। पुरख अकाल की वंडे, वंडणहार आपणी दया कमाईआ। की कहे गोबिन्द दी चण्ड प्रचण्डे, चण्डका आपणा रूप बणाईआ। की खेल करना सत्त रंग डण्डे, डण्डावत सब दी दए बदलाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख विरला ब्यास पार लँघे, आसावंद हरि सतिगुर आप बणाईआ। तट कहे गोबिन्द ने मेरे उत्ते बैठ के कंघे दे गिणे सी इक्की दन्दे, दो इक वेख वखाईआ। फेर इशारा कीता वल्ल तारे चन्दे, तारे चन्द दिता सुणाईआ। जिस वेले सदी चौधवीं अन्तिम लँघे, बीस बीसा नाल मिलाईआ। परम पुरख देवे सब नूं दंडे, हुक्म हुक्म विच्चों बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। ब्यास कहे गोबिन्द ने मेरे उत्ते मारे मूधे गोडे, गुट्टने ज़िमीं उत्ते टिकाईआ। फेर आपणे फड़ के दोवें मोढे हलूणे नाल हिलाईआ। फेर दो जहानां हथ्थां उत्ते चुक्क बोझे, जगत हलूणा दिता वखाईआ। कलयुग अन्तिम सदी चौधवीं मुहम्मद कटे जाणे बोदे, बदला चुक्के

थांउँ थाँईंआ। जो दीनां मज़्बां वाले टोए टोबे, वडा छोटा रहिण कोए ना पाईआ। इक्को डंका वज्जणा चौदां लोके, चौदां तबक करे शनवाईआ। इक्को नाम इक्को कलमा होवे सलोके, इक्को ढोला धुरदरगाहीआ। ख्वाजे तूं वेखणे ओस समें दे मौके, मुकम्मल दयां दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। ख्वाजा कहे मैं खुशीआं दे विच हस्सा, हस्स के गोबिन्द सीस निवाईआ। वेख के साढे तिन्न हथ्थ दा रस्सा, रस्ता पिछला देवां बदलाईआ। उस वेले गोबिन्द दे संग सी जिस दा नाम जस्सा, मस्त रह के आपणा झट लँघाईआ। उस रोड़ा पथ्थर कीता इक्ट्ठा, मखौल नाल गोबिन्द अग्गे हथ्थ टिकाईआ। नाले किहा बड़ा अच्छा, साहिब इस नूं दे वरताईआ। नाले हथ्थ नाल चुक्कया आपणा ढिला कच्छा, सहिज नाल उठाईआ। ख्वाजे खुशी विच आपणा कदम चुक्का, टप्प के दिता जणाईआ। गोबिन्द एह तेरा सिख सच्चा, जो सच रिहा सुणाईआ। गोबिन्द किहा एह धुर दा बच्चा, पुरख अकाल दिती वड्याईआ। जिस वेले कलयुग अन्त जोती नूर होया प्रगटा, प्रगट आपणी कार कमाईआ। इस दा लेखे लावे पथ्थर वट्टा, वट्ट दीन दुनी वाली कढ्ढाईआ। जिस दा रस होवे मिठ्ठा, विख रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा लेखा पूर कराईआ। पथ्थर किहा मैं होवां मिठ्ठा रस, गोबिन्द दिती वड्याईआ। ख्वाजा प्या हस्स, एह एहदी बेपरवाहीआ। ज्यों भावे त्यों लए रख, रखणहार वड वड्याईआ। मस्त ने ख़ाली झोली डाही झट, अग्गे दिती वखाईआ। गोबिन्द इस दे विच सब कुझ घत्त, मेहर नज़र उठाईआ। गोबिन्द किहा जिस वेले निरगुण धार आवे वत्त, बेवतन बेपरवाहीआ। तेरी रखे पति, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। झट वट्टे किहा मेरा भार नौ सेर तों नहीं घट्ट, नवां रसां दयां जणाईआ। जिस वेले मैं साहिब दे विक्या हट्ट, घाट सोहणा सोभा पाईआ। तेरी लज्जया लए रख, होवे आप सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। पथ्थर किहा जे गोबिन्द मेरा वंडे प्रशाद, प्रशादी हो के दया कमाईआ। मैं सदा रखां तेरी याद, जो यादव बंसी कृष्न गया दृढ़ाईआ। जिस दा राम ने राम नूं वखाया स्वाद, भोग भगवन संग बणाईआ। मुहम्मद नौ वार कर के आदाब, खुद खुदा सीस झुकाईआ। मूसा आ के विच वैराग, उच्ची कूक दिती दुहाईआ। ईसा लुक के विच कमाद, कामल मुर्शद अक्ख मिलाईआ। नानक ने मैनूं बख्शी दाद, दयावान होया सहाईआ। गोबिन्द अन्त तेरे आया हाथ, हथेली नाल छुहाईआ। तूं सर्ब कला समराथ, दानी बेपरवाहीआ। मेरे अन्दर दे दे रास, पथ्थर पाहन रूप बदलाईआ। गोबिन्द मेहर नाल उठा आंख, बिना अक्खरां लेख बदलाईआ। मैं शब्द सुणावां साच, सच दयां दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। गोबिन्द किहा हथ्थ पथ्थर नाल गया जुड़, तेरी हस्ती दयां बदलाईआ। शब्दी धार आवां मुड़, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। दो जहानां बणां सतिगुर, सति सतिवादी रूप समाईआ। मस्सा सिँघ नाल आवे तुर, तुरत लहिणा झोली पाईआ। तेरा रस बणा के गुड़, नव सेर दयां वंडाईआ। जन भगतां अन्दर मिट्ठे रस दी रहिण ना देवां थुड़, ख़ाली भण्डारे आप भराईआ। ओह वेख मैं छडी जांदा अनन्दपुर, पुरी अनन्द तजाईआ। रूप बणावां होर दा होर, माछूवाड़ा दए गवाहीआ। दक्खण चले किसे ना ज़ोर, नंदेड़ आपणा रंग रंगाईआ। फेर जावां उस साहिब दे कोल, जो कुल मालक अख्वाईआ। फेर वजावां अगम्मी ढोल, दो जहानां शब्द शनवाईआ। फेर आ के तोलां पूरा तोल, घाटा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। ख्वाजा कहे गोबिन्द दे नाल इक सिख सी नग़ीना, नन्हा बच्चा नज़री आईआ। ओह लेटया उत्ते ज़मीना, निगह असमान वल्ल उठाईआ। फेर तक्कया घोड़े दी ज़ीना, पाखर वेखे चाँईं चाँईंआ। फेर समझया मैं मरना कि जीणा, ज़िंदगी संग ना कोए निभाईआ। झट भय विच आया पसीना, आपणा पासा ल्या बदलाईआ। ख्वाजे किहा वाह मेरे रहीमा, रहमत तेरी बेपरवाहीआ। तूं कुदरत कादर करीमा, काल महाकाल तेरी सरनाईआ। तूं आलीशान अज़ीमा, आज़म नूर इलाहीआ। तेरी सब तों वक्खरी तालीमा, तुलबे अवतार पैग़म्बर गुर गए जणाईआ। तूं वसें बाहर असमान ज़मीना, दो जहानां परे तेरी रुशनाईआ। तैनूं सजदे विच कहां आमीना, आमीन कहि के सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। ख्वाजे वेख्या अस्व दा तंग, निगह नीले उत्ते टिकाईआ। उहदे कोल सी मौली दा तन्द, जिस दी सवा गज लम्बाईआ। फेर निशान तक्कया तारा चन्द, सदी चौधवीं अक्ख उठाईआ। मुहम्मद दा लेखा रिहा लँघ, पन्ध मुक्कया वाहो दाहीआ। चार यारी दा एना संग, उम्मती उम्मत ना कोए चतुराईआ। कलमा मिले ना किसे अनन्द, कायनात रही कुरलाईआ। मुल्लां शेख़ मुसायक लाए किसे ना अंग, औलीआ इलम ना कोए पढ़ाईआ। उस छोटे बच्चे किहा आ मेरे कोल वंञ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच सच विच्चों समझाईआ। ख्वाजे किहा आ बाले छोटे, सहिज नाल सुणाईआ। ब्यास विच मार गोते, डूँघी भँवर वेख वखाईआ। बच्चे हस्स के किहा मैं चौदां तबक वेखे रोते, खुशी खुशी ना कोए बणाईआ। मुरीद वेखे सोते, सुत्तयां अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। खुदा नूं भुल्ले बहुते, खुदी विच हल्काईआ। सदी चौधवीं जाणे औंते, अन्त रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला इक

मिलाईआ। मौली किहा मेरा तन्द सवा गज़ लम्बा, दोहां दयां जणाईआ। मैं वेखणा खेल अचंभा, भेव अभेदा दयां दृढ़ाईआ। जिस वेले नाता रिहा ना पिता माई अम्मा, अम्मी ना गोद सुहाईआ। झगड़ा पैणा काया माटी चम्मा, चम्म दृष्टी ना कोए बदलाईआ। सदी चौधवीं बीत जाणा समां, कलयुग अन्तिम अक्ख खुल्हाईआ। चारों कुण्ट जगे कोए ना शमां, अंध अंधेर ना कोए गंवाईआ। सब दे अन्दर होणा ग़मां, ग़मख़ार ना कोए सहाईआ। दीन मज़्हब दी होणी तम्हा, कलमा कलमे नाल टकराईआ। पवण स्वासी नाम रहे किसे ना दमा, दामनगीर ना कोए अख्वाईआ। उस वेले परवरदिगार मेरे अमाम खेल करना नवां, नव खण्ड खण्ड जणाईआ। भगत सुहेले कर के जम्हा, जामा दीन दुनी बदलाईआ। धुर दा हुक्म कर के रवां, रास्ता बरास्ता इक्को दए दृढ़ाईआ। ख्वाजे तैनूं करना मनाह, हुक्म हुक्म विच्चों बदलाईआ। तूं सुणना बिना कन्नां, कन्ना गोबिन्द वाला दए गवाहीआ। जिस नूं समझ ना सके कोई चौदां सौ तीह पढ़न वाला पन्ना, पनिशमैंट विच सारे लैण सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। मौली तन्द किहा मेरा किसे कोल नहीं ठेका, मुहम्मद नाल ना कोए वड्याईआ। ख्वाजे तूं वी रखणा चेता, चेतन हो के दयां दृढ़ाईआ। जिस वेले निरगुण धार बणे नेता, निरवैर बेपरवाहीआ। उस वेले मैनूं उस दी कर दयो भेंटा, निक्का बाला जसबीर सिँघ हथ्थ फड़ाईआ। मेरा पूरा होवे लेखा, मुहम्मद दी गंढ रहे ना राईआ। सब नूं भुल्ल जाए सौहरा पेका, एथे उथे दो जहानां मिले ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। मौली तन्द कहे मैं कोई कच्चा नहीं तन्दा, शब्दी हुक्म जणाईआ। मैं गोबिन्द दी धार गोबिन्द संगा, सगला संग बणाईआ। जिस वेले छड्डुया पुरी अनन्दा, सवा गज़ डोरी चरणां हेठ दबाईआ। फेर इशारा कीता तारा चन्दा, सदी चौधवीं तेरी होए सफ़ाईआ। उस वेले सहारा रहिणा नहीं कोई मुहाणा वञ्झा, वञ्झी हाथ कोए ना आईआ। एह कोई समां नहीं लम्बा, ढईआ मेरा दए गवाहीआ। उस वेले गुर गोबिन्द दे कोल इक सिख दूल्हा जेहड़ा भय विच कम्बा, आप आपणा ल्या हिलाईआ। की कलयुग हाल होवे मंदा, चारों कुण्ट दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गुरमुख किहा गोबिन्द मेरे पीरा, सतिगुर तेरी सरनाईआ। तूं दाता गुणी गहीरा, गहर अख्वाईआ। मैं तेरे चरण कँवल रखां आपणा चीरा, सीस तेरी भेंट कराईआ। की अग्गे होवे तेरा वतीरा, बेवतनां ल्एं मिलाईआ। क्यों फिरें वांग फ़कीरां, भज्जें वाहो दाहीआ। गोबिन्द किहा मैं कटां शरअ दीआं जंजीरां चार वरन अठारां बरन इक्को रंग रंगाईआ। सब दीआं बदल दयां तकदीरां, तदबीर आपणी इक समझाईआ।

उम्मत उम्मती पए वहीरा, वहिण वगण थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। गोबिन्द किहा गुरमुख मेरे रत्न, सिँघ रत्न वड्याईआ। जिस वेले पहुँचया घाट पत्तन, बेआस सोभा पाईआ। सब दी पैज आवां रखण, रक्षक हो के होवां सहाईआ। किसे दा चले ना कोई यतन, यथार्थ आपणा हुक्म वरताईआ। जेहड़ा पटने वाला पाटल पटन, पारब्रह्म रूप दरसाईआ। लेखा जाणे कलयुग नटुआ नट्टण, स्वांगी आपणा स्वांग बणाईआ। इक्को मार्ग आवे दस्सण, दो जहानां राह जणाईआ। हरिजन हिरदे आवे वसण, बेऐब नूर इलाहीआ। वाहिदा पूरा कौल करे बचन, अग्गे हो ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। ब्यास कहे गोबिन्द हत्थ मारया उत्ते भत्था तीरा, तरकश लई अंगड़ाईआ। गुरमुख मेरा सोहणा हीरा, कीमत सके ना कोए चुकाईआ। ख्वाजे अक्खों वहाया नीरा, जल धार जल विच मिलाईआ। गोबिन्द खिच इक शमशीरा, दो धार दिती चमकाईआ। सदी चौधवीं ज़रूर कटां शरअ दीआं ज़ंजीरा, ज़र्रा ज़र्रा वेख वखाईआ। प्रगट होवां पीरन पीरा, अमाम अमामा रूप दरसाईआ। उस वेले गुरमुख रत्न सिँघ बध्धा होवे लाल चीरा, चिरी विछुन्ने आप मिलाईआ। अमृत रस बख्श के सीरा, सिर धड़ लेखे पाईआ। जन भगत दुखी रहे कोए ना जीउड़ा, जीवण आपणे
१४६१ विच समाईआ। नव नौ चार चुक्कां बीड़ा, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। दीन मज़्ब दा मार्ग रहिण नहीं देणा भीड़ा, मानव १४६१
२२ मानुख माणस इक्को नाम शब्द कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन २२
भगतां सीस बंधाए चीरा, चेतन सब नूं आप कराईआ। ख्वाजा कहे मेरी आसा पुन्नी, परम पुरख दिती वड्याईआ। कोटन उधरे ऋषी मुनी, जो दूर दुराडे बैठे आसण लाईआ। मेरा लहिणा पूरा होया इक ते उन्नी, दो इक इकीसा बीसा आपणे रंग रंगाईआ। मैं इक्को हदाइत सुणी, जो हज़रतां परे दिती सुणाईआ। हुण झगड़ा वेखणा दीन दुनी, काअब्यां परे अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। ब्यासा कहे मैं पाणी धार वगदा, मैनूं जल नीर कहे लोकाईआ। मैं सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रिहा सद्दा, उच्ची कूक कूक दृढ़ाईआ। किस वेले प्रकाश होवे अगम्मी नूर अलाही रब्ब दा, रब्बे आलमीन वेख वखाईआ। जो झगड़ा मेटे दीन मज़्ब दी हद्द दा, लेखा सब दा पूर कराईआ। रस देवे नाम खुमारी मध दा, मधुर धुन करे शनवाईआ। मार्ग दस्से भगत भगवान यद दा, आत्म परमात्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। झगड़ा रहिण ना देवे वक्खरा अड्ड दा, चार वरन अठारां बरन इक्को घर वसाईआ। धर्म निशान होवे गड्डदा, दो जहानां इक झुलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया हर हिरदे अन्दरों होवे कढदा, सति

सच धर्म नाल वड्याईआ। विकार हँकार होवे वढ्ढदा, नाम खण्डा इक चमकाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख मेरे कन्ढे होवे सद्दा, सद्दा शब्द वाला सुणाईआ। धन्न भाग दिहाढ़ा होवे चौदां अस्सू अज्ज दा, अज़ल दी मज़ल दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच संदेशा इक सुणाईआ। ख्वाजा कहे मेरी किताब बिन अक्खरां रही दस्स, दस्तगीर रिहा दृढ़ाईआ। ब्यास लै लै आपणा रस, रस्ता छड कूड़ लोकाईआ। खुशीआं दे विच हस्स, वज्जे अन्दर वधाईआ। मैं वी आया नस्स, आपणा पन्ध मुकाईआ। निगह मारे शशि, रवि अक्ख उठाईआ। इन्द्र रिहा नच्च, टप्पे चाँईं चाँईंआ। खेल करे परमेश्वर पति, पारब्रह्म अगम्म अथाहीआ। जिस ने कलयुग चलाया रथ, अग्नी कूड़ नाल तपाईआ। ओह वेस करे समरथ, करता बेपरवाहीआ। सतिजुग मार्ग जाए रख, धरनी धरत वज्जे वधाईआ। मेरा लेखे लावे किनारा तट, मेहर नज़र उठाईआ। मेरा अन्तर चाहुंदा मैं चरण सरोवर लवां चट, नौ वार मुख छुहाईआ। अम्मीउँ पीवां गट गट, जुग चौकड़ी तृखा लवां बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक देवे माण वड्याईआ। ब्यास कहे मैं चरणोधक चरण सरोवर पीणा, परम पुरख देणा प्याईआ। मैं सदा सदा सद तेरे सहारे जीवां, जीवण मरन वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को रंग चाढ़ दे भीना, निरगुण सरगुण उतर कदे ना जाईआ। मैनूं याद आ गया गोबिन्द ने

मेरे कन्ढे उत्ते इशारा कीता सी वल्ल रूसा चीना, मुखी तीर वाली उठाईआ। फेर ठोक के आपणा सीना, धर्म लई अंगड़ाईआ। सब ने होणा शब्द गुरु अधीना, बल सके ना कोए वखाईआ। फेर किहा गुरमुख प्यार होवे जल मीना, जल मीना तों परे गुरसिख सतिगुर विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी वड्याईआ। ब्यास कहे भगतो मेरी पुराणी इच्छया, सब नूं दयां जणाईआ। धन्न भाग जे पई भिच्छया, भिच्छक हो के झोली डाहीआ। मेरी मेहरवान महिबूब कीती रच्छया, रच्छक हो के होया सहाईआ। मैं चार जुग ना किसे दवारे विक्या, ओड़क ध्यान लगाईआ। मेरा मनुआ रिहा टिक्या, पर्बत हड़ ना कोए डुलाईआ। मैं आपणा भरोसा ओसे ते सिटया, जो सिट्टा वेखे जगत लोकाईआ। मैं गोबिन्द अग्गे पिट्टया, दुहथ्थड़ मार दिती दुहाईआ। तूं मेरा साजण मितया, मित्र प्यारा अगम्म अथाहीआ। तेरा दर्शन करां नितया, नवित तेरी ओट तकाईआ। ख्वाजा कहे गोबिन्द ने बिना अक्खरां तों लेखा लिख्या, ना कोई जाणे कलम शाहीआ। तूं ब्यासे मेरी सुण लै सिख्या, साख्यात दयां दृढ़ाईआ। जिस वेले सतिगुरू दा नाम हट्टां दे विच विक्या, कीमत जगत रहे ना राईआ। फेर मेरा पुरख अकाल दीन दयाल चारों कुण्ट इक्को दिसया, दहि दिशा आपे लए संभाल, तेरा लहिणा देणा पूरा करे हिस्सया, करता पुरख पुरख अकाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल

साचा हरि, सच दा मालक दीन दयाल। ब्यास कहे जन भगतो वेखो अगम्मी साख, साख्यात दयां जणाईआ। सारे इक प्रभू नूं दयो आख, आख़र तेरी वड वड्याईआ। मैं बालक बाली बुध दास, दासी दास सेव कमाईआ। मेरा लेखे लग्गे बिना स्वास तों स्वास, साह साह आपणे रंग रंगाईआ। सब दी पूरी करे आस, ब्यासा कहे बेआसा रहिण कोए ना पाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सर्ब गुणतास, गुणवन्ता वड वड्याईआ। ओह वेखो शंकर भज्जा आउंदा उतों कैलाश, जटा जूट वाहो दाहीआ। ब्रह्मा चारे मुख गाउंदा आए स्वास स्वास, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाहीआ। विष्नूं विश्व दा लेखा रखे पास, दर खलोता सोभा पाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर सारे नूर जोत प्रकाश, नूर नूर नूर रुशनाईआ। खुशी विच सारे करन अरदास, दोए जोड़ बेनन्ती सीस निवाईआ। ब्यास कहे मेरी पूरी होवे आस, असल आपणा रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। ब्यास कहे जन भगतो मैं इक निमाणा, बलहीण अख्वाईआ। मेरा साहिब जाणी जाणा, जानणहार वड वड्याईआ। देवणहारा जुग जुग माणा, निमाणयां आपणे गले लगाईआ। जिस पहिणयां अगम्मी बाणा, बाण अणयाला शब्द तीर चलाईआ। जिस नूं झुकदे ज़िमीं असमाना, दो जहानां लागण पाईंआ। जिस ने आत्म परमात्म दस्सया गाणा, पारब्रह्म मेला मेलया सहिज सुभाईआ। उस नूं सब ने
१४६३ कहिणा मेरे विच चरण छुहा के जाणा, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। तूं शाह पातशाह शहिनशाह राणा, सचखण्ड १४६३
२२ निवासी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर लेखा पूर कराईआ। २२
ख्वाजा कहे मेरे साहिब सुल्तान, महिबूब तेरी सरनाईआ। मेरा पिछला दान पाहन, मिट्ठा रूप वखाईआ। आपणे दर कर परवान, परम पुरख तेरी सरनाईआ। मेरे मालक ख़ालक जाणी जाण, जानणहार तेरी वड्याईआ। झट ब्यास कहे ख्वाजे इधर कर ध्यान, निगह निगह विच्चों बदलाईआ। मैं चाहुंदा हरिजन हरि भगत गुरमुख गुरसिख मेरे तट किनार ते बहि के खाण, खा खा खुशी मनाईआ। फेर जन्म ना लैण विच जहान, चुरासी लेखा दए मुकाईआ। अन्त चढ़ाए शब्द विच बबाण, राय धर्म ना कोए अटकाईआ। दरगाह साची सचखण्ड करे परवान, जिथ्थे अवतार पैग़म्बर गुर बैठे सोभा पाईआ। जोती जोत मेल मिले श्री भगवान, जोती जाता आपणे विच मिलाईआ। ब्यास कहे ख्वाजे ओह तक आह तक साडी बेनन्ती होई परवान, परम पुरख परमात्म आत्म दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी नूर महान, नूर नुराना नौजवाना मर्द मर्दाना इक अख्वाईआ।

✪ १४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ७ पाल सिंघ, हज़ारा सिँघ फतू चक्क, गुरचरण सिँघ ज़हूरा, तख्त सिँघ ज़हूरा, गुरचरण सिँघ पंडोरी, चरण कौर ढिलवां, सुरजीत कौर ढिलवां, पिण्ड दाऊद पुर ज़िला कपूरथला ✪

ध्रू कहे उठ वेख प्रहलाद, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों बाहर ध्यान लगाईआ। की खेल करे परम पुरख वाहिद, निरगुण दाता धुरदरगाहीआ। सच्चा फ़रमान हुक्म करन लग्गा आइद, ऐहद सब दा वेख वखाईआ। हुक्म संदेशा देवे जाइज़, नाजाइज़ लेखा रिहा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। कबीर कहे उठ वेख नामे, शब्दी शब्द दयां जणाईआ। की खेल करे श्री भगवाने, हरि भगवन बेपरवाहीआ। जिस दे गा के आए सिफ्तां वाले गाणे, सृष्टी दृष्टी विच वड्याईआ। सो जोत सरूपी पहरे बाने, बाण अणयाला तीर चलाईआ। जिस नूं सदी चौधवीं कोई ना जाणे, अमाम अमामा अगम्म अथाहीआ। जिस नूं झुकदे दो जहान ज़िमीं असमाने, इस्म आज़म इक वड्याईआ। जिस दे उतों पीर पैग़म्बर गुरु होए कुरबाने, तन वजूद भेंट चढ़ाईआ। ओह वेखे कलयुग अन्त अंधेरी शामे, शमां नूर खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि सच्चा बेपरवाहीआ। भगत कहिण उठो तक्को सारे नाल नीत, निरगुण धार ध्यान लगाईआ। की खेल करे पतित पुनीत, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। कलयुग विच सतिजुग चलाए रीत, रीतीवान इक अख्वाईआ। झगड़ा मुका के मन्दिर मसीत, काया काअबे करे रुशनाईआ। त्रैगुण तों कर अतीत, त्रैभवन धनी आपणा रंग रंगाईआ। अमृत बख्श के ठांडा सीत, अग्नी तत गंवाईआ। आत्म परमात्म दे के प्रीत, प्रीतम मेल मिलाईआ। झगड़ा मेट के हस्त कीट, ऊचां नीचां इक्को घर वसाईआ। शब्दी खेल दस्स अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाईआ। जगत जहान दे के पीठ, करवट आपणी लए बदलाईआ। ओह तक भगतां चाढ़े रंग मजीठ, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। सदा सुहेला हथ्थ रखे उत्ते पीठ, सिर सिर आपे होए सहाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया भन्ने रीठ, विख रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। प्रहलाद कहे सुण ध्रू अगम्मी सज्जण, साजण दयां समझाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला जन भगतां आत्म परमात्म कराए मजन, अट्ठ सट्ठ तीर्थ लोड़ रहे ना राईआ। किरपा करे गोपाल मूर्त मदन, सूदन आपणी खेल खिलाईआ। हरिजन दीपक साचे जगण, लोकमात होए रुशनाईआ। त्रैगुण तृखा बुझाए अगण, सांतक सति सति वरताईआ। इक्को दस्स डण्डावत बन्दन, सजदा इक्को इक जणाईआ। आत्म परमात्म बख्श अनन्दन, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ।

तूं मेरा मैं तेरा गाउणा छन्दन, पारब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। किरपा कर आदि निरँजण, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। जिस दे नाम नगारे वज्जण, शब्दी शब्द सिफ्त वड्याईआ। ओह दीनां मज़्बां तोड़ के हद्दन, हदूद इक वखाईआ। जिथ्थे अवतार पैग़म्बर गुर इक्को नाम जपण, जगत कलमा वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को धुर दी धार रटण, रट्टा दीन मज़्ब ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। जन भगत कहिण तक्कीए लोकमाती, बिन नैणां नैण उठाईआ। कलयुग वेखीए अंधेरी राती, चारों कुण्ट अंधेरा छाईआ। की खेल करे कमलापाती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जन भगतां दे के नाम सौग़ाती, शुक्ला किशना पक्ख डेरा ढाहीआ। निरगुण जोत जगा के बाती, बातन पड़दा रिहा उठाईआ। इक्को वक्त दस्स प्रभाती, प्रभ आपणा मेल मिलाईआ। काया मन्दिर खोल्ह के ताकी, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। अमृत दे के बूँद स्वांती, निजर झिरना आप झिराईआ। शब्द सुणा के धुन अनादी, अनहद राग दृढ़ाईआ। निरगुण जोत कर प्रकाशी, अज्ञान अंध दए मिटाईआ। करे खेल शाहो शाबाशी, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जन भगतां पूरी करे आसी, जुग जन्म दे विछड़े मेल मिलाईआ। धर्म दी धार बख़्शे दाती, दाता दानी वस्त अगम्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। जन भगत कहिण लोकमात तक्कीए नज़ारा, बिन नेत्र लोचण नैण अक्ख उठाईआ। की खेल करे निरँकारा, निरगुण निरवैर नूर इलाहीआ। जिस नूं झुकदे पैग़म्बर गुर अवतारा, विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाईआ। सो रूप अनूप आपणा जाणे अगम्म अपारा, अपरम्पर आपणी खेल खिलाईआ। जन भगत सुहेला कढ्ढे विच्चों मँझधारा, फड़ बाहों पार कराईआ। लेखा जाणे सदी चौधवीं अन्त किनारा, कलयुग नईया डोले थांउँ थाँईंआ। परम पुरख परमात्म आत्म दए सहारा, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। करे कराए कुदरत कादर करनेहारा, रहीम करीम बेऐब नूर इलाहीआ। जो शाहो भूप सति सरूप सच्चा सिक्दारा, दो जहानां हुक्म मनाईआ। सो जन भगतां सीस बख़्शे दस्तारा, दस्त दस्त नाल मिलाईआ। लख चुरासी विच्चों करे बाहरा, जम की फाँसी आप तुड़ाईआ। जन्म लैणा ना पए दुबारा, मात गर्भ ना कोए तपाईआ। मिलाए जोत जोत निरँकारा, निरगुण निरवैर आपणे विच समाईआ। सच धाम सुहाए वसाए सचखण्ड दवारा, दरगाह साची इक जणाईआ। जिथ्थे आदि अन्त इक्को नूर जोत उज्यारा, दूजा दीआ बाती नजर कोए ना पाईआ। जन भगत कहिण उस प्रभू नूं करो निमस्कारा, जो निरगुण निरगुण सरगुण सरगुण सब दा पिता माईआ। जो लेखा जाणे जीव जंत सर्ब संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी हुक्म मनाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला चव्हीआं अवतारा, निरगुण नूर नूर जोत रुशनाईआ। सतिगुर शब्द

शब्द सतिगुर इक्को नाम जैकारा, जै जैकार दो जहान कराईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वहाए वहिंदी धारा, धरनी धरत धवल धौल करे सफ़ाईआ। सतिजुग साचा सच रखे आप निरँकारा, निरँकार होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत नूर नूर उज्यारा, निरगुण निराकार अगम्म अथाहीआ।

✪ १५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ७ अर्जन सिंघ, सोमराज सिँघ कालू वाला कोटला, मुनशी राम बेगोवाल, भगवान सिँघ उड़ मुड़ टांडा गुरमीत कौर कराला, तारू सिँघ जंडीरे, महिन्दर कौर सुसाणा, गुनाम कौर सुसाणा, राम सिंघ फतोवाल गुरदेव कौर घदाला शेख़ां अमरीक सिँघ सराईं, मेला सिँघ सराई, भजन सिँघ बैरम पुर तरसीम सिँघ खुर्दां, सुरिन्दर सिँघ रूपोवाल पिण्ड सलीम पुर ज़िला हुश्यारपुर ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण तक्कीए लोकमात, निरगुण नूर नूर ध्यान लगाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला की देवे अगम्मी दात, निराकार निरँकार आपणी दया कमाईआ। सच प्रीती आत्म परमात्म जोड़े नात, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। लेखा मुकाए कलयुग अंधेरी रात, सति सतिवादी सच्चा नूर चन्द कर रुशनाईआ। जन भगतां झगड़ा मेट के ज़ात पात, दीन दुनी बन्धन शरअ वाले कटाईआ। मेहरवान महिबूब खेल करे अगम्मड़ा आप, आप आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण लोकमात मारीए झाती, बिन नेत्र लोचण नैणां नैण उठाईआ। की खेल करे सर्ब घटवासी, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस दी ब्रह्मण्ड खण्ड मण्डल मण्डप रासी, रस्ता रहिबर की दृढ़ाईआ। जन भगतां अन्तर आत्म देवे नाम स्वास स्वासी, साह साह आपणा रंग रंगाईआ। किस बिध कटे गलों जम की फाँसी, सिर सिर पगड़ी सीस टिकाईआ। जन्म जन्म दी मेटे उदासी, कर्म कम दा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर संदेशा नर नरेशा इक सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण कलयुग अन्त तक्को राह, सदी चौधवीं ध्यान लगाईआ। अवतार तेई करो सलाह, मशवरा इक्को इक प्रगटाईआ। पैग़म्बर दयो जणा, भेव अभेदा रहे ना राईआ। गुरु गुरदेव दयो दृढ़ा, दृढ़ हुक्म इक सुणाईआ। की करे बेपरवाह, पारब्रह्म आपणी खेल खिलाईआ। जिस नूं किहा वाह वा, वाहिगुरु कहि के

आपणी खुशी बणाईआ। नूर अलाही हक खुदा, खुद मालक अगम्म अथाहीआ। की संदेशा देवे अज़ां सदा, आवाज़ की सुणाईआ। की नाद रिहा वजा, धुंन अगम्मी इक उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मालक इक दृढ़ाईआ। जन भगत कहिण वेखीए धरनी धवल धौल धरत, धर्मातम ध्यान लगाईआ। किस बिध सब दी पूरी होवे शर्त, शरअ दा लेखा वेख वखाईआ। की हुक्म संदेशा देवे उत्ते अर्श, अर्शी प्रीतम बेपरवाहीआ। किस बिध सब दा लहिणा देणा पूरा करे कर्ज़, मकरूज़ लेखा दए चुकाईआ। किस बिध सब दी आसा मनसा मंज़ूर करे अर्ज़, आरज़ू आपणे विच समाईआ। गुरमुखां गुरसिक्खां पूरी करे ग़रज़, ग़रज़ के आपणी दया कमाईआ। निरगुण धार वेस करे असचरज, अचरज आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण वेखो खेल अनोखा, अगम्म रिहा दृढ़ाईआ। जिस विच नहीं कोई धोखा, सति सच इक प्रगटाईआ। मंज़ल राह ना दिसे औखा, आत्म परमात्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। निरगुण धार शब्दी होका, हुक्म पुरख अकाल जणाईआ। लेखा मुकणा चौदां लोका, चौदां तबकां डेरा ढाहीआ। दो जहानां सुणना इक सलोका, पारब्रह्म ब्रह्म करे पढ़ाईआ। दीन दुनी मेटे हरख़ सोगा, चिन्ता ग़म चुकाईआ। बुद्धी तों परे हो के बोधा, भेव अभेदा दए खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। सतिगुर शब्द कहे खेल वेखो बेनज़ीर, नज़र तों परे ध्यान लगाईआ। जिस दी दिस ना आए कोए तस्वीर, मुसव्वर तसव्वर कर ना कोए समझाईआ। जिस दी मंज़ल चढ़ के बैठा कबीर, भगत भगवान रूप समझाईआ। ओह कहि के गया अख़ीर, आख़र कलमा इक दृढ़ाईआ। प्रगट होवे गुणी गहीर, गहर गवर अगम्म अथाहीआ। जो शरअ दे तोड़े ज़ंजीर, शरीअत लेखा दए मुकाईआ। सति धर्म दा सति करे तामीर, सति सच नाल अपणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया रहिण ना देवे ख़मीर, गुरमुख ख़ालस लए प्रगटाईआ। झगड़ा मेटे शाह हकीर, मानव माणस मानुख देवे आप वड्याईआ। कूड़ी क्रिया उत्ते मार लकीर, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। हउमे अन्दरों कढ्ढे पीड़, संसा रोग ना कोए सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सारे कहिण निरगुण धार लग्गा भाग, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जिस दा नूर दीपक चराग़, चराग़ाहां करे रुशनाईआ। जगत जहान बदले समाज, समग्री आपणा नाम वरताईआ। जन भगतां धर्म धार रखाए सीस ताज, पगड़ी नाम वाली बंधाईआ। माणस जन्म दा पूरा करे काज, राय धर्म ना दए सजाईआ। शब्द अगम्मी मारे आवाज़, धुन नाद कर शनवाईआ। हरिजन सुहेले सन्त बणाए साध, साधना धर्म धार समझाईआ। मेल

मिलाए मोहण माधव माध, बेपरवाह दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण की खेल करे सुल्ताना, हरि करता वड वड्याईआ। निरगुण नूर पहर के बाणा, बानी बणया बेपरवाहीआ। सति धर्म झुला निशाना, निशाना कलयुग रिहा मिटाईआ। रूप धार नौजवाना, मर्द मर्दाना खेल खिलाईआ। पैग़म्बरां तों परे देवे पैग़ामा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी निउँ निउँ सीस झुकाईआ। साचा धर्म दस्से इस्लामा, इस्म आज़म इक दृढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सब दा गाणा, गावत गावत गावत खुशी मनाईआ। हुक्म वरते ज़िमीं असमाना, दो जहानां होवे रुशनाईआ। किरपा करे प्रभू मेहरवाना, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जन भगतां लेखे लावे आवण जाणा, एथे ओथे होए सहाईआ। अन्तिम जोती मेल मिलाना, जोत जोत विच समाईआ। सचखण्ड साचा धाम सुहाना, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। जिथ्थे इक्को दीपक जोत नूर नुराना, दीपक पंज देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सच दा हुक्म कलयुग अन्तिम धार हरि करता आप दृढ़ाईआ। लेखा जाणे विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी बैठे सीस निवाईआ। करनी दा करता करे आपणी कार, करनेहार खेल खिलाईआ। जोती जाता हो उज्यार, पुरख बिधाता वेस वटाईआ। जिस नूं आदि
१४६८ जुगादि जुग चौकड़ी नमों नमों करन सर्ब निमस्कार, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस झुकाईआ। सो भगत सुहेला जन १४६८
२२ भगतां पावे सार, महासार्थी आपणी दया कमाईआ। लख चुरासी विच्चों लए उभार, मेला मेले सहिज सुभाईआ। वेखे विगसे पावे सार, इक अकेला धुरदरगाहीआ। कलयुग अन्तिम लहिणा देणा कूड़ी क्रिया दए निवार, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। सचखण्ड निवासी बख्शे सचखण्ड दवार, दर दवारा इक जणाईआ। जिथ्थे वसे जोती जाता हरि निरँकार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। भगत भगवन्त आदि अन्त जुगा जुगन्त इक्को धार, इक अकेला सज्जण सुहेला सति स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी परवरदिगार सांझा यार इक अख्वाईआ। जुग जुग जन भगत सुहेले देवे तार, संसार सागर विच्चों करे पार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, आदि जुगादि जुगादि आदि निरगुण धार सच्ची सरकार, शाह पातशाह शहिनशाह दो जहाना श्री भगवाना इक अख्वाईआ।

१६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ७ वतन सिंघ, ख्याल सिँघ दसूहा, हरभजन सिँघ साहिब दा पिण्ड, दयाल सिँघ डड्ड, लाल सिँघ पंज ढेरा, करतार सिंघ, हज़ारा सिंघ, रेशम सिंघ, दरबारा सिँघ गालड़ीआं, मंगल सिंघ, राम सिंघ, दलजीत सिँघ तलवाड़ा, नरायण सिंघ, जीआ लाल, आत्म चन्द, ज्ञान चन्द जगीर सिंघ, धन्ना सिँघ कुलीआ पिण्ड सरीह पुर ज़िला हुश्यार पुर

ब्यास कहे मेरे पार किनारे होई लो, लोयण प्रभ ने दिता खुल्हाईआ। गुरमुखां दे मस्तक अक्खर तक्कया सो, सो पुरख निरँजण दिती वड्याईआ। मैं जगत नाता तोड़ के होया निरमोह, मुहब्बत कूड़ वाली तजाईआ। जिस दे चरणां चरणामत ल्या धो, धर्म दी धार इक बंधाईआ। उस दे बाझ अवर ना को, कोटन अवतार पैग़म्बर गुर बैठे सीस निवाईआ। जो कूड़ी क्रिया कलयुग रिहा खोह, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। साचा नाम जन भगतां अन्दर रिहा बो, बीजण वाला बेपरवाहीआ। धुर दरगाहों लै के आया ढोआं ढो, वस्त अमोलक अगम्म अथाहीआ। मेहरवान हो के नाल जावे छोह, आत्म परमात्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। अमृत रस अगम्मा देवे चो, कूड़ी क्रिया अग्न बुझाईआ। जिस दा रूप नज़र ना आए दो, दूआ एका एका दूआ विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक होए सहाईआ। सो कहे मैं जन भगतां लग्गा मथ्था, मस्तक रंग रंगाईआ। भेव जणावां यथार्थ यथा, यदी दयां दृढ़ाईआ। वेद व्यास ने इक सौ अठारां दिन मेरी इक्को गाई गाथा, दूसरा अक्खर ना नाल मिलाईआ। फेर जोड़ के पुठ्ठयां हथ्थां, पिठ्ठ पिठ्ठ नाल टकराईआ। बिना चरणां तों टेक के मथ्था, मस्तक दिता निवाईआ। फेर वेख्या बिना अक्खां, नेत्र नैण जोत रुशनाईआ। फेर हुक्म सुणया सच्चा, सच मिली वड्याईआ। संदेशा सुण अगम्मी बच्चा, भेव अभेदा दयां खुल्हाईआ। ओह वेख जुग चौकड़ी जांदा नस्सा, भज्जया पन्ध मुकाईआ। वेख लै होड़ा उपर सस्सा, सो पुरख निरँजण आप लगाईआ। जिस वेले कलयुग रैण अंधेरी होणी मस्सा, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। धर्म दा रहिणा नहीं कोई कमरकसा, गोबिन्द धार दए गवाहीआ। नाम कलमा रहे ना रसा, रस्ता अन्दर ना कोए खुल्हाईआ। हरि जू किसे गृह ना होवे वसा, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। सच दा देवे कोए ना पता, पतिपरमेश्वर मिलण कोए ना पाईआ। प्यो पुत दी करे हत्ता, हितआरी होवे जगत लोकाईआ। जगत वासना होवे नता, कूड़ क्रिया गंढ वखाईआ। मन मनुआ करे मता, मति मतांतर डेरा ढाहीआ। डंका वज्जे किते ना फता, फतिह डंक ना कोए वजाईआ। उस वेले खेल करे पुरख समरथा, हरि करता धुरदरगाहीआ। कलयुग वेखे कूड़ दा रथा, रथ अग्नी जगत चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा

हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सो कहे जिस वेले मैं ब्यासा टप्पा, जन भगतां मस्तक ल्या लटकाईआ। मैं निगह मारी मैनूं नज़र आया अक्खर पप्पा, जो पूरन सतिगुर रूप जणाईआ। जिस ने नाता जोड़या पक्का, पक्की आपणी गंढ रखाईआ। जिस विच फ़र्क रहे ना रता, रत्न अमोलक हीरे गुरमुख लए बणाईआ। आप पी के पाणी तता, अमृत मेघ आप बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक जणाईआ। पप्पा कहे मैं चढ़ गया गुरमुखां दी उपर छाती, छत्रधारी नाल देणा मिलाईआ। पूरन सतिगुर दरसणा कमलापाती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जो सम्बल बैठा बण समराथी, सगला संग बणाईआ। धुर दी मन्न के आखी, अक्खरां तों परे रिहा दृढ़ाईआ। निरगुण सरगुण दी करे राखी, रक्षक बणे चाँईं चाँईंआ। जन भगतां बण के दास दासी, सेवक सेवा सच कमाईआ। नाल मिल के पुरख अबिनाशी, अबिनाशी आपणा रंग रंगाईआ। जिस दा निरगुण नूर जोत प्रकाशी, प्रकाशवान ख़लक खुदाईआ। ओह अन्दरों लाहे आप उदासी, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। गलों कट सिलक जम फाँसी, फ़ैसला हक हक सुणाईआ। पन्ध मुका के मण्डल रासी, मंजल आपणी लए चढ़ाईआ। जिथ्थे वसे शाहो शाबाशी, शहिनशाह इक्को सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार इक अख्वाईआ। सो कहे मैं आदि अन्त दा इक, एकँकार रूप समाईआ।
पप्पा कहे मैं लग्गा भगतां दी नाल हिक्क, हिकमत आपणी इक समझाईआ। जेहड़ा दोहां दे विच गया टिक, टिक टिकी इक्को नाल रखाईआ। निरगुण सरगुण बख्श के सिक, प्रीती प्रेम वाली बणाईआ। दोहां ने लेखा जाणा लिख, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। पूरन सतिगुर दा पूरन सिख, पप्पा पूरन रूप जणाईआ। सो पुरख निरँजण कहे मेरा लेखा नित नवित, जुग जुग आपणी कार कमाईआ। मैं झगड़ा मिटाउणा पथ्थर इट्ट, पाहन पूजण कोए ना जाईआ। इक्को नाम दी दे के चिट्ट, सच संदेशा देणा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। ब्यास कहे मैं दोवें वेखे भगतां संग, सस्सा पप्पा नज़री आईआ। मेरा खुशी होया अंग अंग, बिना तन वज्जी वधाईआ। की खेल सूरा सरबंग, हरि करता आप कराईआ। ब्यास कहे जिस वेले गोबिन्द ने मेरे कन्ढे प्रेम दा डाहया पलँघ, सिंघासण धर्म धार विछाईआ। फेर निगह मारी वल्ल पुरी अनन्द, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। फेर तक्कया तारा चन्द, मुहम्मद नाल कीती सलाहीआ। ओह वेख तेरा मुकदा पन्ध, सदी चौधवीं दए गवाहीआ। बिना सो तों पाए कोई ना ठंड, कलमा कायनात कम्म किसे ना आईआ। बिना पप्पे तों पूरन सतिगुर ना कोए बख्शंद, बख्शिश नज़र कोए ना आईआ। चारों कुण्ट अंधेरा अंध, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। सो पूरन नाल होणा पाबन्द, पप्पा पूरन सो विच समाईआ। जिन्हां दा इक्को

होणा छन्द, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। जगत द्वैत ढाहुउणी कंध, कंधा कंधे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा वक्त आप सुहाईआ। ब्यास कहे मैं सो तक्कया उपर पग्ग, पगड़ी गुरमुखां दए गवाहीआ। मैं वेख्या उपर शाह रग, जगत दवारे डेरा ढाहीआ। फेर वेख्या भज्ज, भज्जया वाहो दाहीआ। जो सब दी रखे लज, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगतां पड़दे रिहा कज्ज, मेहरवान महिबूब धुरदरगाहीआ। ओह बैठा उथे अज्ज, दिवस दिहाढ़ा दए गवाहीआ। जिथ्थे युधिष्टर आसण लाउंदा सी डूँग्घा सवा गज़, साढे तिन्न हथ्थ लम्बाईआ। अवाज़ मार के रिहा सी सद्द, शब्दी काहन ध्यान लगाईआ। निगह नाल बणा के हद्द, इशारा अक्ख नाल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। ब्यास कहे युधिष्टर ने एथे आपणे मस्तक लिख के लाया सी सो, सिर मस्तक सीस निवाईआ। पप्पा हथ्थ विच फड़ के दो, फेर छाती उत्ते छुहाईआ। भगत भगवान इक ना रहे दो, दूआ एका इक्को नज़री आईआ। झट कृष्न (सन्मुख) गया हो, हो के दिता दृढ़ाईआ। धर्म सुत औह वेख अगम्मी लो, निज नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। खेल करे अबिनाशी उह, जिस दी उस्तत सारे रहे गाईआ। जिस वेले दीन दुनी होई निरमोह, अवतार पैग़म्बर गुर संग ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप

१५०१ हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। ब्यास कहे मैं वेख के खेल कम्बा, १५०१

२२ कम्बणी गई आईआ। मेरे पार लेख लम्बा, हद्द हदूद ना कोए जणाईआ। मैं हैरान होणा अचंभा, हैरत विच दुहाईआ। २२

की खेल भगतां संगा, हरि भगवान आप कराईआ। तिन्नां गुरमुखां सतारां अस्सू नूं होणा इक टंगा, जिन्हां दे मस्तक सो दिता लगाईआ। अठारां अस्सू नूं हथ्थ विच फड़ना डण्डा, साढे तिन्न हथ्थ लम्बाईआ। उन्नी अस्सू नूं गर्दन उत्ते रखणा खण्डा, पुठ्ठी धार बणाईआ। वीह अस्सू नूं इक दूजे नाल जोड़ना कंधा, कंधी बैठा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सो कहे मैं दस्सां सच प्यार, मुहब्बत बेपरवाहीआ। जो हरि करता करनेहार, जुग जुग आप कराईआ। जन भगतां दए अधार, सिर सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जिस सतिजुग त्रेता द्वापर लाया पार, कलयुग वेखे चाँईं चाँईंआ। जन भगत सुहेले देवे तार, तारनहार इक अख्वाईआ। जिन्हां दा लेखा रहे सदा जुग चार, चार वरन इक्को रंग रंगाईआ। सीस जगदीश बख्श दस्तार, देवे मात माण वड्याईआ। राय धर्म दा गेड़ निवार, चित्रगुप्त दा लेख चुकाईआ। शब्दी सतिगुर दए अधार, उदर तों बाहर कढ्ढाईआ। अन्तिम लहिणा रहे ना विच संसार, मात गर्भ ना अग्न तपाईआ। लै के जाए सचखण्ड सचे दरबार, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिथ्थे

इक्को नूर उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्ता एकँकार, अकल कलधारी आपणी कल वरताईआ।

✪ १७ अस्सू शहिनशाही सम्मत ७ जसवन्त सिंघ, बन्ना सिंघ, हरबंस सिंघ, गुरनाम सिँघ सूरानसी, प्रीतम सिँघ कोटली इबराहिम, जरनैल सिँघ सगवाल, दर्शन कौर पातड़ खुर्द, नगीना सिंघ, प्यारा सिँघ हरदयाल सिँघ जलन्धर, गुरबचन सिँघ आहम पुर, जुगिन्दर सिंघ, फुम्मण सिंघ, अजीत सिंघ, तरसेम सिंघ, हरभजन सिँघ आदमपुर, जुगिन्दर कौर बूल्हे, अजीत कौर जलपोत, करतार पुर शहर ज़िला जलन्धर ✪

पप्पा कहे मैं लग्गा भगतां गुरमुखां दे सीने, सतिगुर पूरन दिती वड्याईआ। मैं खेल तकणे लोक तीने, ब्रह्मण्ड खण्ड अक्ख खुल्हाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर तकणे परम पुरख अधीने, दरगाह साची खोज खुजाईआ। वेस वेखणे पुरख अबिनाशी दाने बीने, निरगुण सरगुण ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी दया कमाईआ। सो कहे मैं खेल दस्सां साहिब सुल्ताना, सतिगुर भेव खुल्हाईआ। पप्पा कहे मैं पूरन देणा ब्रह्म ज्ञाना, भेव अभेदा रहे ना राईआ। दोहां दा लेखा इक श्री भगवाना, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जो कलयुग वेखे मार ध्याना, धरनी धरत धवल धौल खोज खुजाईआ। चार जुग दा वेखे जगत निशाना, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। हुक्म संदेशा जाणे अगम्म फ़रमाना, फ़ुरन्यां तों बाहर समझाईआ। की कहि के गया रमईआ रामा, कान्हा कृष्ना राग जणाईआ। की मूसा ईसा सुणया पैग़ामा, मुहम्मद बिना अलिफ़ ये पढ़ाईआ। नानक गोबिन्द की तक्कया नूर नुराना, निरवैर निराकार निरँकार अगम्म अथाहीआ। की सतिगुर शब्द शब्द तराना, तुरीआ तों बाहर दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पप्पा कहे कलयुग अन्तिम रहिणे नहीं कोए पंडे, पांडव कृष्न गया दृढ़ाईआ। जिस वेले भगत सुहेले खलोणे इक टंगे, चारों कुण्ट अंधेरा छाईआ। राम राम कोलों अगम्मी मंग मंगे, जिस वेले बनवासी बणया पाँधी राहीआ। कलयुग वेला अन्तिम सब दे सीस होणे नन्गे, ओढण नज़र कोए ना आईआ। सीता सुरत धुर दे राम शब्द कोई ना गंढे, साचा संग ना कोए बणाईआ। धुर भण्डारा मात कोई ना वंडे, धरनी रोवे मारे धाहीआ। जगत जहान जीव होणे अंधे, निज नेत्र लोचण नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। दीनां मज़्हबां भाग होणे मंदे, अवतार

पैग़म्बर गुर पकड़े कोए ना बाहींआ। प्रभ दे नाम दे घर घर लैणे चन्दे, चन्द सितार रोवण मारन धाहीआ। भय रहिणा नहीं जगत धार खण्डे, खड़ग मिले ना कोए चतुराईआ। उस वेले पुरख अकाला दीन दयाला कूड़ी क्रिया दंडे, डण्डावत जगत वाली बदलाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी हो के ब्यासा पार किनारा लँघे, अग्गा समझ किसे ना आईआ। शब्दी धार बैठ पलँघे, सम्बल आपणा रंग रंगाईआ। कलयुग पैंडे मेटणे लम्बे, अग्गे पन्ध ना कोए रखाईआ। मनुआ मन कराए दंगे, बुध बिबेक ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप वखाईआ। पप्पा कहे मैं परम पुरख दी धार, प्रभ दिती माण वड्याईआ। मैं आया ब्यासों पार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी पिछला संग निभाईआ। अग्गे संदेशा देवां धुर दे यार, जो मालक धुरदरगाहीआ। कलयुग जीवो होवो ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। कलि कल्की इक अवतार, अवतर आपणा नूर जोत करे रुशनाईआ। जिस दी पावे कोई ना सार, आदि अन्त कहे कोए ना राईआ। जिस नूं झुकदे गुर अवतार, पैग़म्बर सीस निवाईआ। जिस ने भगत बणाए बरख़ुरदार, पिता पूत गोद सुहाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पाए सार, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। इक्को रंग रंगा के पुरख नार, स्त्री मर्द वंड ना कोए वंडाईआ। सच प्रीती दे अधार, उदर दा लेखा दए मुकाईआ। एथे उथे सिरजणहार, सिर सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। चुरासी विच्चों कढ के बाहर, राय धर्म दा फंद कटाईआ। चित्रगुप्त ना मारे मार, लेखा अवर रहे ना राईआ। देवे माण सच्ची सरकार, शाह पातशाह होए आप सहाईआ। सीस जगदीश बख़्श दस्तार, धर्म निशान दए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ। पप्पा कहे मैं करन आया परख, परम पुरख दिती वड्याईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। जिन्हां नूं मेरा साहिब देवे दरस, अन्तर दृष्टी दए खुल्हाईआ। जन्म कर्म दी मेटे हरस, हवस कूड़ी दए गंवाईआ। मेहरवान हो के करे तरस, रहमत रहीम सच कमाईआ। देवे वड्याई उपर फ़र्श, अर्शां आपणा रंग रंगाईआ। अमृत मेघ देवे बरस, बूँद स्वांती आप टपकाईआ। जुग जन्म दी बेनन्ती आशा पूरी करे अर्ज़, आरज़ू आपणे विच मिलाईआ। ग़रीब निमाणयां वंडे दर्द, दुखियां होए सहाईआ। शरअ छुरी ना कटे करद, कातिल मक्तूल दा डेरा ढाहीआ। योधा सूरबीर बण मर्द, मर्द मर्दाना वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम मेटे अंधेरा गर्द, सति जोत करे रुशनाईआ। इहो खेल प्रभू असचरज, जुग जुग भगतां दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। पप्पा कहे मैं बण आया परदेशी, परम पुरख दिती वड्याईआ। सृष्टी दृष्टी सारी वेखी, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। लेखा जाणया बदी

नेकी, अन्तर निरन्तर भेव रिहा ना राईआ। किसे ना होवे बुध बिबेकी, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। जिधर वेखां कूड़ कुड़यारा भेखी, कलयुग भज्जे वाहो दाहीआ। झगड़ा प्या मुल्लां शेख़ी, मुसायक रहे कुरलाईआ। लख चुरासी नज़र आए कोई ना भेती, अगला भेव ना कोए चुकाईआ। परम पुरख दा नाम कलयुग जीव जांदे वेची, कीमत हट्टां विच पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पप्पा कहे मैं परम पुरख दी धारा, धर्म दी धार इक दृढ़ाईआ। जिस दा नूर ज़हूर नव अवतारा, नर नरायण इक अख्वाईआ। जिस दा लेखा कागद कलम ना लिखणहारा, शाही चले ना कोए चतुराईआ। जिस नूं बीते कोटन कोटि जुग लख हज़ारा, हज़रत बैठे सीस निवाईआ। सजदे करदे वारो वारा, निव निव लागण पाईआ। दर दरवेश दिसे गुर अवतारा, विष्न ब्रह्मा शिव ख़ाली झोलीआं रहे डाहीआ। सो लेखा जाणे धुर दरबारा, सचखण्ड निवासी अगम्म अथाहीआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त धुर दा कन्त सब दी पावे सारा, महासार्थी आपणा हुक्म वरताईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेले खेल अगम्म अपारा, अपरम्पर स्वामी वड वड्याईआ। भगत सुहेले सूफ़ी सन्त लए उबारा, महिबान बीदो आपणा रंग रंगाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी किरपा करे परवरदिगारा, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा भेव खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप
१५०४ आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त १५०४
२२ निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण जोती जाता लए अवतारा, अवतर आपणा रूप अनूप दरसाईआ। २२

✪ १८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ७ भगत सिँघ दी माता दे नवित दयाल गढ़ ज़िला कपूरथला ✪

सति धर्म दा बख़्श्या हार, हरि सतिगुर आपणी दया कमाईआ। किरपा करे निरवैर निरँकार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। माणस जन्म दए संवार, पूरब लेखा वेख वखाईआ। जिस नानक दर्शन कीता नौ वार, तलवंडी रह के आपणा झट लँघाईआ। रामो नाम सी पिछला विच संसार, घर क्षत्री सोभा पाईआ। धूढ़ी ला के चरण छार, नानक अग्गे झोली डाहीआ। मेरा ख़ाली भर भण्डार, तृष्ना जगत पूर कराईआ। मैनूं भगती दा दे अधार, चरण कँवल सरनाईआ। सतिगुर (नानक) निगह लई मार, निगह निगह विच्चों बदलाईआ। की हुक्म सच्ची सरकार, सच सच दयां सुणाईआ। तैनूं जन्म लैणा पैणा दूजी वार, मिरतू लोक वज्जे वधाईआ। भगती नहीं भगत सिँघ तेरी झोली देवां डार, तेरे जन्म दी तेरे कर्म नाल वज्जदी रहे वधाईआ। जिस दा लहिणा देणा लेखा कोई मेट ना सके सरकार, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्म

शिव वेखण चाँईं चाँईंआ। तेरे जन्म दी पैज देवे संवार, हरि करता धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला आप मिलाईआ। हार कहे मैं गल नाल गया लटक, लटक आपणी दयां वखाईआ। मेरी तृष्ना मिट गई भटक, भटकणी जगत रही ना राईआ। अग्गे रहे कोई ना अटक, राय धर्म चित्रगुप्त ना लेख जणाईआ। सिध्धा मार्ग इक्को मिल्या जिथ्थे गया सिँघ भगत, भगती जन्म दी पूर कराईआ। वेला वेले नाल पहुँचया वक्त, समां समें नाल सुहाईआ। नानक निरगुण धार दी शर्त, निरगुण निरँकार पूर कराईआ। मिले वड्याई उत्ते फ़र्श, वज्जदी रहे वधाईआ। ज़िंदगी विच जीवण विच बिना प्रभू तों करे कोई ना तरस, रहमत हक ना कोए कमाईआ। सम्मत शहिनशाही सत्त दा खुशीआं वाला बरस, बरसी जन्म दी लेखे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। हार कहे मैं छोहया नाल कौर इन्द, इन्द इन्द्रासण उत्ते वेख वखाईआ। जिस दा सूरबीर दुलारा सुत धर्म दी बिन्द, जिस नूं बिन्दराबन दा काहन वेखे चाँईं चाँईंआ। जो वार के आपणा जीवण ज़िंदगी जिंद, जिबह जगत विच आपणा आप कराईआ। खून सिंच के विच हिन्द, भारत दा भरम दिता मिटाईआ। भगत दी माता हो के भगत सिँघ पिच्छे कदे ना वगाउणी हिंझ, अथ्थरू हार ना कदे बणाईआ। सदा रिहा ना किसे दा जीउ पिण्ड, पंज तत अवतार

१५०५ पैग़म्बर गुरु गए तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुगा जुगन्त जन भगतां सदा बख्शंद, बख्शिश रहमत रहीम रहमान आपणी आप कमाईआ। १५०५

२२ २२

१८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ७ दौलत सिंघ, गुरदयाल सिंघ, करतार सिंघ, अमर कौर, किशन सिँघ सुरखपुरा, प्यारा सिँघ जांगले, जगीर सिँघ शिकार पुर, सरूप सिँघ टिब्बा, मनजीत कौर नूर पुर, हरभजन कौर नूर पुर, करतार कौर मजीद पुर, बसन्त कौर कड़ाल कला, सुरजीत कौर गौसल, बनत कौर दरया, अवतार सिँघ अहिमद पुर, धन्न कौर ढिलवां, प्यार कौर ढुडीआं बाज़ी साधू सिँघ मताब गढ़, कपूरथला शहर विच

सदी चौधवीं कहे मुहम्मद संग चार यार मार झाती, हज़रतां दा हज़रत वेख वखाईआ। चौदां तबकां खोल्ह के तक ताकी, तारा चन्द नाल मिलाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा कोए ना मिले सच्चा साकी, आबेहयात जाम हक ना कोए प्याईआ। झगड़ा तक उम्मत पंज तत ख़ाकी, ख़ाक छार दिसे लोकाईआ। तेरे कलमे नालों मनुआ होया आकी, शरअ चले ना कोए

चतुराईआ। हकीकी मंज़ल चढ़े कोए ना घाटी, परवरदिगार सांझे यार मिलण कोए ना पाईआ। मेरे अन्तर निरन्तर आई उदासी, चिन्ता चिखा रही जलाईआ। की करना खेल पुरख अबिनाशी, अबिनाशी आपणा हुक्म वरताईआ। चारों कुण्ट अंधेरी राती, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। अमृत वेला दिसे ना कोए प्रभाती, सँध्या रोवे मारे धाईआ। आपणा लेखा लिख्या वेख जो लिख्या बिना कलम दवाती, कातब चले ना कोए चतुराईआ। सो परवरदिगार सांझा यार खेल करे इत्फिाकी, इत्फिाकीआ आपणा हुक्म वरताईआ। सब दा लहिणा देणा वेखे इख़लाकी, ख़ालक ख़लक खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद अहिमद मार निगह, बिन नैणां नैण उठाईआ। सानूं अगली दस्स बिधा, मार्ग अगम्म जणाईआ। तेरा लेखा मुकणा किदां, की करता हुक्म दृढ़ाईआ। की संदेशा देवे धुर दा पिता, पतिपरमेश्वर नूर इलाहीआ। जिस दे नाल कीता हिता, हितकारी हो के सेव कमाईआ। जिस दी महिमा दा सिफ्त सालाही लिख्या चिट्ठा, अलिफ़ ये नाल चतुराईआ। ओह तेरे अन्त मेरा कढे की सिट्टा, सति सतिवादी दयां समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि,
१५०६ धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद मैं दस्सां हुक्म सुल्ताना, सति सति दृढ़ाईआ। की खेल करे मेहरवाना, १५०६
२२ महिबूब नूर इलाहीआ। जिस ने झगड़ा मेटणा ज़िमी असमाना, दो जहानां खोज खुजाईआ। उम्मत उम्मती बदल जाणा २२
जमाना, ज़िमीं ज़मां दए गवाहीआ। मैं सुणया अगम्मी फ़रमाना, फ़ुरन्यां तों बाहर जणाईआ। कुझ झगड़ा वेखणा विच तहिराना, तीर निराला इक चलाईआ। लख सत्तर उठाए पठाना, पट्ठे आपणे लए बणाईआ। खेले खेल विच मैदाना, मदद आपणी नाल चलाईआ। झगड़ा पाए जंगल जूहां विच बीआबाना, समुंद सागर टिल्ले पर्बत सारे देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। मुहम्मद कहे सुण सदी चौधवीं अगम्मी ख़बर, अमाम अमामां रिहा दृढ़ाईआ। जो मालक ख़ालक धुरदरगाही जबर, ज़ाहर ज़हूर नूर इलाहीआ। जिस लेखा पूरा करना मेरी कबर, मकबरयां वेखे थांउँ थाँईंआ। दरोही उम्मत विच रिहा कोई ना सबर, सबूरी सच ना कोए जणाईआ। चार यारी विछड़ गया टब्बर, कुनबा हक ना कोए रखाईआ। मेहरवान महिबूब महिबान करे अगम्मा अदल, इन्साफ़ आपणा इक जणाईआ। शरअ शरअ कोलों कराए कत्ल, मक्तूल दीन मज़्हब रूप जणाईआ। किसे दा चलणा नहीं कोई यतन, अवतार पैग़म्बर गुर हुक्म मन्नण थांउँ थाँईंआ। सदी चौधवीं तेरा अन्त किनारा पत्तन, पाती गोबिन्द गया लिखाईआ। किसे दा चलणा नहीं कोई यतन, यथार्थ आपणा हुक्म वरताईआ। खेल करे पुरख समरथण, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। लेखा

जाणे अलखणा अलखण, अलख अगोचर अगम्म अथाहीआ। जिस ने साढे तिन्न हथ्थ इक्को वसाउणा वतन, दूजा गृह ना कोए जणाईआ। शब्दी धार जणाए बचन, संदेशा देवे चाँईं चाँईंआ। जन भगतां भाग लगाए काया माटी कंचन, गढ़ इक्को इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मदे इशारा, मुहम्मद हमद विच जणाईआ। मेरे अन्तष्करन दा अन्त किनारा, बेअन्त रिहा समझाईआ। चार कुण्ट दिसे ना कोए सहारा, सगला संग ना कोए बणाईआ। दीन मज़्ब रोवण ज़ारो ज़ारा, बिन नेत्र लोचण नैणां नीर वहाईआ। लेखा मुकाए ना कोए गुर अवतारा, कलि कल्की बेपरवाहीआ। जो निरगुण नूर करे उज्यारा, जोती जाता डगमगाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी जिस दी पाए कोई ना सारा, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला लेखा जाणे धुर दरबारा, सो पुरख निरँजण आपणी दया कमाईआ। हरि पुरख निरँजण करे खेल अपारा, एकँकारा आपणी कल धराईआ। आदि निरँजण जोती जाता पुरख बिधाता इक्को नूर करे उज्यारा, दो जहानां नौजवाना मर्द मर्दाना डगमगाईआ। अबिनाशी करता पावे सारा, महासाथीं आपणी कार भुगताईआ। अबिनाशी करता होवे ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर डगमगाईआ। पारब्रह्म लेखा जाणे धुर दरबारा, धरनी धरत धौल पर्दा दए चुकाईआ। कलयुग अन्त १५०७
श्री भगवन्त आपणा हुक्म वरते विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी बैठण सीस निवाईआ। मेहरवान महिबूब मुहब्बत विच महिज़ देवे इक इशारा, आलीशान आलीजाह आप दृढ़ाईआ। जन भगत सूफ़ी सन्त फ़कीरां लख चुरासी विच्चों कढे बाहरा, बातन ज़ाहर आपणा खेल खिलाईआ। सीस जगदीश सति सच बन्न्हे दस्तारा, सिर सिर आपणा रंग रंगाईआ। आवण जावण लख चुरासी गेड़ दए निवारा, जन्म जन्म ना कोए भवाईआ। दरगाह साची साचा धाम देवे थारा, थिर घर वासी सचखण्ड निवासी साची करनी कार कमाईआ। एथे ओथे दो जहानां निरगुण सरगुण पावे सारा, सतिगुर पूरा शब्दी धार दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा इक्को सजदा, सजदा सीस निवाईआ। जिस घर दा बणया रिहों बरदा, डण्डावत बन्दना विच सीस झुकाईआ। भेव दस्स ओस नरायण नर दा, जो नर हरि इक अख्वाईआ। किस बिध लेखा मुकावे कलयुग कल दा, कलकाती दए खपाईआ। लेखा जाणे जल थल दा, मईअल वेखे चाँईं चाँईंआ। की हुक्म संदेशा धुर फ़रमाना घल्लदा, बिन घड़ी पल दृढ़ाईआ। की खेल ओस निहचल धाम अटल दा, जिथ्थे वसे शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। मुहम्मद कहे मेरा मालक इक अज़ीम, निरगुण नूर नूर अलाहीआ। जिस

नूं किहा कादर करीम, करता धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं तेरे अन्त ओह देवे इक तालीम, तुलबिआं हक करे पढ़ाईआ। झगड़ा मेटे नर मदीन, मुद्दा इक्को इक समझाईआ। जिस ने दीनां मज़्बां दी रहिण नहीं देणी कोई तक्सीम, हुजरा इक्को दए सुहाईआ। जिस दा मार्ग होणा महीन, रहिबर रस्ता इक दरसाईआ। जिस भेव चुकाउणा आदि कदीम, कुदरत दा मालक दया कमाईआ। उस ने खेल खेलणा उत्ते ज़मीन, अमाम अमामा प्रगट दिसे नूर इलाहीआ। मेरी लेखे लाउणी गोई पेशीन, पेशीनगोई आपणे संग जणाईआ। अन्त सब ने होणा उस दे अधीन, आहला अदना सारे सीस निवाईआ। जिस झगड़ा रहिण नहीं देणा प्राचीन, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों बाहर करे पढ़ाईआ। सरगुण सारे होणे अधीन, निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। वेखीं तूं ना होवीं ग़मगीर, चिन्ता अन्तर ना कोए रखाईआ। तेरा झगड़ा मुकाउणा रूसा चीन, बेज़बीं आप दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि वडा वड वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मैं सब कुझ वेखां आपे नैणां, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। पैग़म्बरां आपणा लेखा देणा, मूसा ईसा संग निभाईआ। तेई अवतारां भाणा सहणा, कृष्न राम गया जणाईआ। सतिगुर शब्द धार अगम्मी वहिण वहिणा, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं अन्तिम वेहली हो के बहिणा, साक सज्जण सैण उम्मती सुंनती सारे देणे तजाईआ। मैं सब नालों बण जाणा तरफ़ैणां, तरफदारी ना कोए रखाईआ। मैं की दस्सां किहो जेहा अगला साल चढ़ना कुलहिणा, कल्गी वाला की आपणी कार कमाईआ। जो आसा रखी सी राम ने बाहर रमाइणा, बिन अक्खरां बाल्मीक दृढ़ाईआ। जो अर्जन कृष्न वखाया बिना नैणां, निज नेत्र नैण खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक अगम्म अथाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखां नाल चाअ, चाओ घनेरा इक बणाईआ। मुहम्मदे सलाह, मशवरा तेरे नाल बणाईआ। की तैनूं संदेशा दिता खुदा, खुद मालक आप जणाईआ। जिस कारन असां इक दूजे तों होणा जुदा, अगला संग ना कोए रखाईआ। इक दूजे ने बदल जाणी अदा, आदत इबादत वाली जणाईआ। मन्नणी पैणी इक रज़ा, सिर सके ना कोए उठाईआ। क्यों उस दे सिर ते कूकदी कज़ा, काज़ी मुल्लां शेख़ सके ना कोए समझाईआ। क्यों गोबिन्द ने अन्त किहा वाहवा, वाहिगुरू तेरी बेपरवाहीआ। मैनूं उस खुदा दा खुद मसला दे समझा, जिस दी मुसलसल सारे सेव कमाईआ। जिस ने नाम कलमा तीस बतीस दिता दृढ़ा, हरफ़ हरूफ़ दिती वड्याईआ। ओह खेल करे की बेपरवाह, बेपरवाही विच (समाईआ)। मुहम्मद सीस दिता झुका, बिन कदमां सीस निवाईआ। सदी चौधवीं आपणी निगह उठा, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण अक्ख खुल्हाईआ। ओह वेख जन भगतां उपर तुठा, सन्त सुहेले सूफ़ी गले लगाईआ। जिन्हां दी धार

इक्को मुट्ठा, मुट्ठी भर नज़री आईआ। बाकी चारों कुण्ट पैणी लुट्टा, लुटेरा कलयुग बणया थांउँ थाँईंआ। दीन मज़्हब वेखणी फुट्टा, साचा संग ना कोए निभाईआ। एह खेल करे अबिनाशी अचुता, पारब्रह्म प्रभ आपणी कार भुगताईआ। जेहड़ा नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों उठया सुत्ता, सुत दुलारे गुरमुख आपणी गोद टिकाईआ। आदि अन्त जुगा जुगन्त साचे मार्ग उतों कदे ना घुथ्था, जुग जुग घुथ्थयां मार्ग पाईआ। उस ने दीन दुनी नूं गेड़ा देणा पुट्ठा, पुट्ठी मति आप कराईआ। बिना गुरसिक्खां तों गोबिन्द ने किसे नूं कहिणा नहीं आ मेरया पुत्ता, बचपन लेखे कोए ना लाईआ। पुरख अकाल दा भाणा रहिणा नहीं कोए छुपा, चारों कुण्ट होए रुशनाईआ। उज्जल करे जन भगतां मुखां, दुरमति मैल दए धुआईआ। अमृत जाम प्याए घुटा, तृष्ना कूड़ मिटाईआ। चरण प्रीती बख्श के ओटा, ओड़क आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी ब्रह्माद सुहाए आपणी रुता, रुतड़ी धुर नाम नाल महकाईआ।

✪ १९ अस्सू शहिनशाही सम्मत ७ लाल सिंघ, सवरन सिंघ, करतार सिँघ गाधरां, बचन कौर बोपाराए,
मल सिँघ लल्लीआं कलां, प्रेम सिँघ जमशेर खेड़ा, महिन्दर कौर जमशेर खेड़ा,
प्रीतम सिँघ जंडयाला, राम सिँघ शरीह, गुरदयाल सिंघ चीमां कलां,
लक्ष्मण सिँघ धनौरी, जगीर कौर बाहमणीआं, पिण्ड हेर ज़िला जलन्धर ✪

१५०९
२२

ब्यास कहे गोबिन्द मेरे तट छुहाया खण्डा, खण्ड खण्ड दस्सी लोकाईआ। शब्दी धार वखाया सत्त रंग डण्डा, जो डण्डावत सब दी रिहा बदलाईआ। निशान समझाया तारा चन्दा, मुहम्मद सहिज नाल समझाईआ। फेर इशारा कीता मैं छडणा पुरी अनन्दा, अनन्द जगत वाला तजाईआ। मेल मेलणा नाल सूरे सरबंगा, शाह पातशाह विच आपणा आप मिलाईआ। अगला सफ़र कलयुग रहिण नहीं देणा लम्बा, आयू कूड़ देणी चुकाईआ। लहिणा देणा पूरा करना तत्तां पंजां, पंज प्यारे देण गवाहीआ। लेखा पूरा करना कवी धार बवन्जा, बावन आपणी कार भुगताईआ। हुक्म संदेशा देणा पवण उनन्जा, ब्रह्मण्ड खण्ड शनवाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेखणा धन्दा, धरनी धरत धवल धौल वेख वखाईआ। हज़रत दा लेखा पूरा करना यक सम्बा, वाहिद आपणी कार भुगताईआ। फेर खेल तकणा इक्की धार कंघा, कंगण लेखा पूर कराईआ। तेग़ बहादर भविक्खत वेखणा जो शब्दी धार जणाया औरंगा, जेबो ज़ीनत उम्मत रहे ना राईआ। फेर लहिणा वेखणा रविदास कसीरे वाला

गंगा, गंगोतरी पड़दा आप चुकाईआ। जन भगतां फेर तन सरीर करना ठंडा, अग्नी तत तत बुझाईआ। भेव खुल्हाए ब्रह्म हंगा, आत्म परमात्म मेल मेलणा सहिज सुभाईआ। धुर दा देणा अनन्द परमा, परमानंद विच समाईआ। एह खेल वखाउणा जोती धार ब्रह्मा, पारब्रह्म प्रभ आपणा हुक्म वरताईआ। शंकर लेखा जणाए निहकर्मा, निहकर्मी आपणा हुक्म वरताईआ। विष्नूं रहिण ना देवे भरमा, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। झगड़ा मेटे काया माटी चर्मा, चम्म दृष्टी दए बदलाईआ। दीन दुनी बख्शे इक्को सरना, सरनगति इक दृढ़ाईआ। लेखा मुकाए वरना बरना, ज़ात पात नज़र कोए ना आईआ। जन भगतां आत्म परमात्म अक्खर पढ़ना, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। बिन पौड़ी डण्डे मंज़ल चढ़ना, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। खेल तकणा आपणे घरना, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। ब्यास कहे भगवन देवे सच्चा दान, दाता दानी दया कमाईआ। पूरन ब्रह्म बख्श ज्ञान, अंध अंधेरा दए मिटाईआ। पुट्ठी तक गर्दन किरपान, कृपानिध कूड़ी क्रिया रिहा मिटाईआ। लिखारीआं करा इश्नान, इशारे नाल दिता समझाईआ। वेखो खेल श्री भगवान, की करता कार कमाईआ। झगड़ा पैणा अञ्जील कुरान, काअब्यां परे दुहाईआ। नाता तुटणा जगत इन्सान, इन्सानीअत नजर कोए ना आईआ। अक्ल बुद्धी वाले बणने हैवान, पशू प्रेत रूप दरसाईआ।
१५१० जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। ब्यास कहे मैं खण्डा १५१०
२२ तक्कया धार पुट्ठी, बिन नैणां नैण तकाईआ। सृष्टी दृष्टी जाणी लुट्टी, लुटेरा नज़र किसे ना आईआ। सब दी जाणी चोग २२
निखुट्टी, डण्डावत अतुट ना कोए वरताईआ। उम्मत उम्मती जड़ जाणी पुट्टी, पटने वाला रिहा दृढ़ाईआ। एह खेल रहिणी नहीं लुकी, लोक परलोक वेख वखाईआ। प्रभ दी धार होणी दो तुकी, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। जन भगत सुहेले वेखण इक्को मुट्ठी, नव नौ सत्त खोज खुजाईआ। दुहाई देवे रविदास, चमारे दी टुट्टी जुत्ती, बौहड़ी बौहड़ी कर सुणाईआ। सदी चौधवीं दी गोली उठी सुत्ती, आपणी लए अंगड़ाईआ। सत्तां रंगां दा वणजारा ता देवे मुच्छीं, प्रभ भगतां मुश्किल हल्ल कराईआ। गुरदास लेखा रिहा सदा सुखी, सुख सागर विच समाईआ। गुरमुखां मंज़ल बख्शे उच्ची, उच्च अगम्म दया कमाईआ। सदा सुहञ्जणी होवे रुती, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। जन भगतो जगत विहार नालों करनी छुट्टी, छुटकारा आपणा लैणा कराईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सब दी गंढे टुट्टी, टुटयां आपणी गंढ पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। खड़ग कहे मैं लग्गी भगतां गर्दन, गर्दो गुबार दिसे लोकाईआ। सब नूं सवाधान करां मर्दन, मर्द मर्दाना हुक्म सुणाईआ। कुझ खेल वेखणा विच यरदन, अराकान

अक्ख उठाईआ। मैं आपणा पासा लग्गी परतण, प्रतिनिध वेखां बेपरवाहीआ। जिस ने चुरासी तन भाण्डे वेखणे बरतन, माटी ख़ाकी फोल फुलाईआ। लेखा पूरा करना काहन कृष्न गवर्धन, पिछला मूल चुकाईआ। जो संदेशा दिता अगम्मी अर्जन, हुक्म हुक्म विच्चों दृढ़ाईआ। ओह तक जिस दा अन्त पा ना सके अरबन खरबन, संख असंखा ना ध्यान लगाईआ। सो खेल करे शरकन ग़रबन, शमाल जनूब आपणा हुक्म वरताईआ। शरअ छुरी वेखे करदन, चारों कुण्ट अक्ख उठाईआ। ग़रीब निमाणयां वंडे दरदन, दुखियां होए सहाईआ। अमृत मेघ आए बरसण, अग्नी तत गंवाईआ। जन भगतां मेटे हरस हवसन, आपणा दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। ब्यास कहे इश्नान कीता शब्द धार लिखारी, लिख्त लेख वड्याईआ। मैं दस्सां खेल अपारी, की अपरम्पर रिहा जणाईआ। जगत धार धार न्यारी, निरगुण सरगुण आप दृढ़ाईआ। गुरमुखां गुरसिक्खां एका बख्शे सच प्यारी, मुहब्बत चरण कँवल जणाईआ। धूढ़ मस्तक लाउणी छारी, छार काली ख़ाक अन्दरों देणी कढ्ढाईआ। मन मति अन्दर ना वड़े हत्यारी, हैंस्यारी नेड़ कदे ना आईआ। तुसां धार बणाउणी बरखुरदारी, सति सच विच समाईआ। हउमें हंगता मैल देणी उतारी, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण वेखो पैणी की दुहाईआ। हाहाकार तक्को चार यारी, संग मुहम्मद नाल दुहाईआ। सतिगुर शब्द दी शब्द धार करो ताबयादारी, तबीअत अन्दरों लैणी बदलाईआ। जगत खेल खेलो नाल हुश्यारी, हुश्यार हो के लओ अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। ब्यास कहे मैं सुणी अगम्म बोली, अनबोलत रिहा जणाईआ। जन भगतो तुहाडी साफ़ पवित्र होवे चोली, कूड़ी क्रिया रहे ना राईआ। आत्म परमात्म जाए मौली, मौला आपणा रंग रंगाईआ। मैं संदेशा देवां नाल हौली हौली, सहिज सहिज सुणाईआ। तिन्न वार तिन्न दिन विच नहाया करेगी सदी चौधवीं दी गोली, मस्तक तिन्न धार बणाईआ। रविदास तिन्न वार धुर शब्द रखेगा खोल्ही, नौ नौ सतरां बहि के आपे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। ब्यास कहे खण्डा, रिहा पुकार, ज़ोर नाल सुणाईआ। उठ वेख मेरे यार, यार यारा दयां समझाईआ। सदी चौधवीं तक बहार, चारों कुण्ट अक्ख खुल्हाईआ। जिधर वेखे धुआँधार, अंध अंधेरा छाईआ। साचा मिले ना कोए मीत मुरार, सज्जण संग ना कोए वखाईआ। सदी चौधवीं रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। परवरदिगार मारे मार, पुरख अकाला खण्डे भगतां हथ्थ फड़ाईआ। लाल सिँघ नन्गी खिच तलवार, धार धार विच्चों बदलाईआ। जसवन्त सिँघ वेखे नाल प्यार, परम पुरख दिती वड्याईआ। सिँघ प्रीतम सीस निवार, वारता पिछली दए दुहाईआ। इन्हां तिन्नां दा

युधिष्टर नाल सी प्यार, संगी साथी बराट सोभा पाईआ। पूरब सब दा कर्ज़ा रिहा उतार, कान्हा कृष्ना विचोला दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब दी पावे सार, महासार्थी आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ २० अस्सू शहिनशाही सम्मत ७ लक्ष्मण सिंघ, गुरमेज सिंघ, सुरजीत सिंघ, जगीर कौर, केहर सिंघ, जुगिन्दर सिंघ, भजन कौर, गर्दावर सिंघ, करतार सिंघ, ऊधम कौर, दर्शन सिंघ, आत्मा सिंघ, करनैल सिँघ बिलगा प्रकाश कौर सुन्नड़ां, समां कौर सुन्नड़ां, छिन्दे बिलगा, संपूरन कौर रुढ़का, राम कौर सुन्नड़ां, पिण्ड रुढ़का कलां ज़िला जलन्धर ✪

नारद कहे ब्यासा मेरी नमो, नमो दा नमूना तैनूं दयां जणाईआ। तूं कमलया मिलदा रिहों गुर अवतार माटी चम्मो, चम्म दृष्टी ध्यान लगाईआ। मैं कोई संदेशा नहीं देंदा मनों, मनू दा लेखा ना कोए जणाईआ। मेरा दिल करदा तैनूं फड़ लवां कन्नों, हलूण के दयां वखाईआ। की तक्कया सतार ते चन्नो, चन्न सितार की वड्याईआ। ओए कमल्यो क्यों नहीं गोबिन्द गया पार बन्नो, बन्धन जगत वाले तुड़ाईआ। ब्यास रोया छम छम्मों, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मैनूं वेख लैण दे चौदां सौ तीह अंक अंक पंनो, की लेख रहे जणाईआ। जां तक्कया शब्द शब्द दी धार करे धन्न धन्नो, धन्न तेरी वड्याईआ। संदेशा दिता पार ब्यासो गोबिन्द आवे ते आवे आप अगम्मो, जम्मणवाली होवे कोए ना माईआ। जो भगतां लेखा लाए दम दमो, दामनगीर नूर इलाहीआ। जगत तृष्ना मेटे तमो, तामस कूड़ दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। नारद कहे आह वेख मेरी गढ़वी डोरी, डूंघे वहिणां वाले आप दयां जणाईआ। मैं गंगा दी चुक्क के ल्यांदी चोरी, आपणा आप छुपाईआ। मैं वेखी तक्की बांकी छोहरी, रंग रूप आपणा रही दरसाईआ। मेरे अन्तर कीता बौहड़ी बौहड़ी, कूक कूक जणाईआ। मैं आसा रखी किते मेरी एहदे नाल बण जाए जोड़ी, जोड़ा इक्को सोभा पाईआ। फेर पुरख अकाल दी रहे ना लोड़ी, लोड़ींदा सज्जण घर मिले चाँईं चाँईंआ। मैं ब्राह्मण मेरे विच इक कमज़ोरी, सच दयां सुणाईआ। मैं किसे नूं वस कर सकदा नहीं ज़ोरीं, जोरू ज़र दोवें रहे डराईआ। मैं तैथों मदद मंगां थोड़ी, तूं करनी चाँईं चाँईंआ। मैनूं सच दस्स गोबिन्द चढ़या केहड़ी घोड़ी, वाग कवण हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे ब्यास

वेख मेरी बोदी वडी छोटी, लम्मी समझ किछ ना आईआ। मेरी चार युग दी पाटी होई लंगोटी, लीर लीर दए दुहाईआ। मैं फिरया जगत जहान दी चोटी, चोटा बण के भज्जया वाहो दाहीआ। मैनूं रविदास वरगी किसे घरों मिली नहीं रोटी सुक्के टुकड़े ना कोए खवाईआ। दीन दुनी रसना लाए गोशत बोटी, गोशा कोना वेख वखाईआ। आह तक मेरी पाटी होई धोती कन्नी कन्नी नाल गंढाईआ। जिधर वेखां धरनी दिसे रोती, बिन नैणां नीर वहाईआ। दीन दुनी उठे ना सोती, सुत्तयां ना कोए जगाईआ। किसे पुस्तक पढ़ी किसे पढ़ी पोथी, पूरन ब्रह्म नज़र किसे ना आईआ। ओए ब्यासा मैं तेरे कन्ढे अन्तिम जगदी वेखी जोती, जोती जाता नज़री आईआ। मैं फड़ के आ गया हथ्थ डंगोरी सोटी, डण्डावत विच सीस निवाईआ। मैनूं दस्स जिहनूं लभ्भदे कोटन कोटी, खोजण थांउँ थाँईंआ। जिस नूं झुकदे चौदां लोकी, परलोक सीस निवाईआ। मैं सुणना चाहुंदा उस दा इक सलोकी, सोहला इक धुरदरगाहीआ। अन्त रख के आया ओटी, ओड़क ध्यान लगाईआ। मैं समझया ओह जल वायू दा गोती, पवण पवणां विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। ब्यास कहे मैनूं भज्ज भज्ज आया मुड़्का, नारद रिहा जणाईआ। मैनूं भेव दस्स सच्चे सतिगुर दा, किथे मिले बेपरवाहीआ। तूं लेखा जाणे गोबिन्द वाले अनन्द पुर दा, अनन्द अनन्द विच्चों जणाईआ।
१५१३ पर्दा खोल्ह दे उस मालक धुर दा, जो धुर धाम डेरा लाईआ। जिस दा हुक्म कदे ना मुड़दा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। १५१३
२२ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे ब्यास मैनूं भर लैण दे पाणी, गढ़वी इक्को रिहा वखाईआ। ब्यास किहा पहलों पढ़ उस प्रभू दी बाणी, जो बाण अणयाला तीर चलाईआ। मेरे विच चरण छुहा के गया शाह सुल्तानी, शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। मैनूं कहि के गया अक्खरां वाली इक कलामी, कलमा कल्मयां विच्चों प्रगटाईआ। नाले संदेशा दिता ज़बानी, हुक्म अगम्म अथाहीआ। मैं भगतां उत्ते करन चलया मेहरवानी, मेहरवान हो के आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप जणाईआ। नारद कहे ब्यास मैनूं कर लैण दे इश्नान, इशारे नाल सुणाईआ। मैनूं जमना तों रोक्या नहीं सी काहन, गोपीआं विच रह के झट लँघाईआ। मैं उहदे तों मंग्गया सी इक तन दा दान, उहने हस्स के दिता वखाईआ। पर मैनूं बोदीयों फड़ के तिन्न वार कराया सी इश्नान, फेर खिच्च के बाहर कढ्ढाईआ। फेर कन्न खिच्च के किहा भगवान, नारदा अक्ख लै उठाईआ। ओह वेख तेरे काहन दा काहन, काहन बेपरवाहीआ। जिन कलयुग अन्तिम होणा प्रधान, दो जहानां हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं मेटे निशान, निशान आपणा इक वखाईआ। फेर खेल करे महान, महिमा अगम्म २२

अथाहीआ। जन भगत सुहेले कर परवान, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगतां करे कल्याण, कलमा आपणा नाम सुणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सारयां गाउणा गाण, गा गा झट लँघाईआ। उस वेले तेरी आशा करे परवान, परम पुरख आपणी दया कमाईआ। नारद निउँ के सीस लग्गा झुकाण, कृष्न उपर ल्या उठाईआ। ज़रा सुण ला कर कान, संदेशा देवां अगम्म अथाहीआ। जिथ्थे इश्नान पंज तत कराया विष्नूं भगवान, माघ पंज अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद उथे लै के जाईं आपणी रूह, बुत दी लोड़ रहे ना राईआ। जिथ्थे लक्ष्मण सिँघ दा होणा खूह, गुरमेज सिँघ जोड़ जुड़ाईआ। रुढ़का संगत एका रूप होवे हू बहू, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस दा लेखा शब्दी धार होणा शुरू, शहिनशाह आपणी कार भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद पुरख अकाल देणा वर, हरि वडा वड वड्याईआ। जिस दे इश्नान कराउण नाल सतिजुग बण जाए सर, सरसे दा लेखा पूर कराईआ। एसे कर के पंज गुरमुख एथे पहरेदार गए खड़, पंचम दा लहिणा देणा थाँईं थाँईंआ। गुरमुख सारे लए फड़, लै के भज्जया वाहो दाहीआ। साचे मार्ग गया चढ़, चढ़दा लहिंदा दोवें राह तजाईआ। फेर अग्गे गया खड़, धूढ़ी मस्तक ख़ाक रमाईआ।
१५१४ फेर बदल के आपणा घर, अग्गे भज्जया वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा १५१४
२२ हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे वाह तेरीआं मेहरां, मेहरवान तेरी वड्याईआ। सतिजुग दीन दुनी पुछे किथे २२
परम पुरख दा डेरा, कवण धाम सोभा पाईआ। सारे कहिण विष्नूं भगवान केहड़ा, सच दयो समझाईआ। सतिगुर शब्द कहे जिथ्थे मुके झेड़ा, झगड़ा रहे ना राईआ। ग़रीब निमाणयां बन्न्हे बेड़ा, बेड़ी आपणे कंध उठाईआ। वसे धर्म दा खेड़ा, छप्पर छन्न आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। ब्यास कहे नारद सुण लई धुर दी कथा, बिना कथनी दिती दृढ़ाईआ। एह खेल यथार्थ यथा, यदी आपणी कार भुगताईआ। जन भगतां दी धूढ़ी ला के मस्तक मथ्था, सब दी मस्तक रेख दिती बदलाईआ। गुरमुखां नूं सतिगुर आप वेखे आउंदयां अक्खां, अक्खां हरिसंगत विच टिकाईआ। आप निमाणा हो के वांग कक्खां, हरिसंगत सीस उत्ते टिकाईआ। पिच्छे चढ़दे सी उत्ते घोड़या रथां, अग्गे हरिजन शब्द बबाण ल्या चढ़ाईआ। देवे वड्याई विच्चों करोड़ां लखां, गणती गणित ना कोए गिणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा हुक्म आप वरताईआ। नारद कहे प्रभू दा खेल बड़ा अनहोणा, होंद विच कदे ना आईआ। इस दा अन्त किसे नहीं पाउणा, पौण पाणी सारे बैठे

सीस निवाईआ। आदि अन्त नाम गीत ढोला सब ने गाउणा गा गा शुकर मनाईआ। जिस ने जन्म जन्म दा फंद कटाउणा, कर्म कम दा रोग कटाईआ। प्यासा रह के झट लँघउणा, गुरमुखां अमृत जाम मुख चुआईआ। पिछला जन्म कर्म दा लेखा सर्ब मुकाउणा, अग्गे वज्जदी रहे इक्को इक वधाईआ। दुआबे वाल्यो दोहरा तुहाडा जोड़ जुड़ाउणा, विछोड़ा अग्गे रहे ना राईआ। जगत रोंदयां विच्चों तुहानूं हसाउणा, हस्ती आपणी इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। ब्यास कहे नारद कोई गल्ल दस्स चंगी, सच सच सुणाईआ। नारद कहे ब्यासा तूं की मंग मंगी, मंगत्या मैनूं दे जणाईआ। तूं नहीं तक्कया खण्डे धार नन्गी, गुरमुखां हथ्थ वखाईआ। बणा के सूरबीर जंगी, जगत जहान रिहा लड़ाईआ। आप बैठ के उलटी मंजी, जगत सिंघासण दए उलटाईआ। जन भगत कढ के घरां दे विच्चों ख़ाने जंगी, बन्धन जगत वाले तुड़ाईआ। फेर ला के आपणे अंगी, अंगीकार हो के भज्जया वाहो दाहीआ। जगत वस्त जन भगतो सतिगुर नालों नहीं चंगी, एसे कर के छिन विच तुहाडा नाता सब नालों दिता तुड़ाईआ। तुहाडे घर दे पहरेदार कर के गुरमुख पंज ते तुहानूं लै गया नाल पैरीं नन्गी, नंगिआं दे सिर ते पड़दा दए पाईआ। इक वेर तोड़ के दुआबे वाल्यो तुहाडी सारयां दी फेर गंढी, अग्गे गंढ ना कोए खुल्हाईआ। तुहाडे प्रेम वाली अन्दरों पवण आउंदी ठंडी, ठंडक सति रही वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सत्त रंगा कहे जन भगतो मैं चलया तुहाडे अग्गे, धरनी धरत धवल हिलाईआ। हुण वेख्यो इक्को प्रभू दा दीपक जगे, जगत जहान होए रुशनाईआ। तुसीं खुशीआं विच लैणे मज़े, लुट्टी जाए कूड़ लोकाईआ। क्यों पुरख अकाला दीन दयाला तुहाडे दर्शन कर के रज्जे, सन्मुख हो के अगों आउंदयां लए मिलाईआ। जे तुसीं याद नहीं कीता ओह तुहाडे साहमणे शेर वांग गज्जे, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै कहि के कायनात विच्चों आपणा जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। ब्यास कहे नारदा वेख खेल सतिगुर दा, गुरदेव की कार कमाईआ। गुरमुख जिस वेले होण लग्गे मुर्दा, सवाधान आपे लए कराईआ। फेर नाता जोड़े धुर दा, धुर दा धर्म आप कमाईआ। एह लेखा सी अनन्द पुर दा, पुरी अनन्द दा लेखा फेर बणाईआ। माझे वाल्यां नाल थोड़ा उस वेले दुआबे वाल्यां दा संग तुरदा, नौ कदम जा के फेर पिछा आए प्रताईआ। उस वेले गोबिन्द दा बाज़ नौ सौ गज़ सी उपर उडदा, खुशीआं दे विच भज्जे वाहो दाहीआ। गोबिन्द ने झट निगह मारी दुआबे दे विच वहिण वाला मेरा बेड़ा ते नहीं रुढ़दा, मैं रुढ़दयां लवां बचाईआ। क्यों पार ब्यासों जाण दा ना लेखा मेरा धुर दा, एसे करके माझे

वाले ना सके अटकाईआ। जिस वेले मेरा पुरख अकाल आवे ओह खेल जाणे आपणे घर दा, घराना माझा देस सुहाईआ। उस नूं सब ने वेखणा सम्बल दे विच वड़दा, सच दुआरे सोभा पाईआ। फेर लेखा पूरा करे ब्यास वाले जल दा, वहिंदे वहिण खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे ब्यासे एह चंगा भगवान, उठ वेख ध्यान लगाईआ। पंडतां नूं छड के ग़रीब निमाणयां नूं देवण आया दान, आपणी दया कमाईआ। जगत विद्या तोड़ अभिआन, इक्को अक्खर रिहा पढ़ाईआ। मैं सुणया नाल आपणे कान, बिना कन्नां वाल्यो तुहानूं दयां सुणाईआ। इक्को जैकारा दस्स सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार जुग दी भगती नालों मंज़ल परे दिती वखाईआ। मैनूं इयों दिसदा ओन दीन मज़्हब दी रहिण नहीं देणी कोई दुकान, ठेकेदारी सब दी पूर कराईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां सब नूं दर करे परवान, परवाने आपणे लए बणाईआ। जिन्हां दा पन्ध मुका के ज़िमीं असमान, दो जहानां पार कराईआ। नारद कहे रुढ़के वाल्यो तुसीं वी ज़रा हो जाओ सवाधान, सिध्धे साधिओ आपणा आप लओ परताईआ।
१५१६ जे तुसीं भुल्ले तुहाडा भुल्लया नहीं सुल्तान, सुत्तयां लए जगाईआ। अमृत वेले सारी संगत करयो इश्नान, इश्नान कर के खुशी मनाईआ। खुशी विच्चों सतिगुर दे अग्गे खुशी करयो पर्दान, खुशामंद अवर ना कोए रखाईआ। सदा नाता बणया रहे भगत भगवान, जन भगतो वज्जदी रहे वधाईआ। बुड्ढे बाले कर परवान, नौजवाना झोली पाईआ। तेरे दर ते सदा सदा तेरा दर्शन पाण, दूसर अवर ना सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। वीह अस्सू कहे साडी पूरी कर दे आसा, तृखा रहे ना राईआ। चरण कँवल दे भरवासा, भाण्डा भरम भनाईआ। तेरा नाम जपीए स्वास स्वासा, साह साह समाईआ। प्रभ भगतां बणया रहीं दासी दासा, सद सद आपणा रंग रंगाईआ। साडी लेखे ला लै अज्ज दी राता, रैण भिन्नड़ी नाल मिलाईआ। तूं ही पिता तूं ही माता, हउँ बालक गोद उठाईआ। सब दा पूरा कर भविक्ख्त वाका, युधिष्टर कूक के दए सुणाईआ। लाल सिँघ विराट दा सी छोटा चाचा, पूरब जन्म जन्म दृढ़ाईआ। जसवन्त सिँघ सदा मन्नदा सी आखा, सगला साथी रूप दृढ़ाईआ। प्रीतम सिँघ मसेर वाला सी नाता, विराट नगरी दए गवाहीआ। एह पूरब जन्म दा साका, दुआबे विच जोड़ जुड़ाईआ। हरिसंगत तेरी निक्का जेहा काका, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। नारद कहे ब्यासे की सुणी कहाणी, कहि के दे जणाईआ। ओए कमलया मैनूं घुट ना मिले पाणी, प्यासा भज्जां वाहो दाहीआ। ओ वेख जेहड़े उहनूं जाणदे नहीं उहनां दी लिखाई जांदा बाणी, बाण अणयाला तीर चलाईआ। मैं चार जुग दा पंडा लेखा जाणां चारे खाणी, ख़ालस

आपणा आप रखाईआ। मैं तत्तां वाला बणाया नहीं कोई हाणी, नार कन्त ना रूप दरसाईआ। मेरी सदा इक्को जेही जवानी, जड़ चेतन वंड ना कोए वंडाईआ। मेरी यारी यार नाल पुराणी, पुनह पुनह सीस निवाईआ। ब्यास किहा नारदा ओह सब दा जाण जाणी, जानणहार इक अख्वाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर जिस दी दे के गए ब्यानी, ब्याना नाम वाला रखाईआ। उहनां मेले फड़ फड़ उत्ते ज़िमीं असमानी, इस्म आज़म आपणा इक जणाईआ। कमलया तूं कोई कीती नहीं कुरबानी, जन भगत जुग जुग आपणा आप सतिगुर भेंट कराईआ। एसे करके इहनां उत्ते हुन्दी मेहरवानी, मेहरवान मेहरवान मेहरवान होया आप सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जन भगतां अन्दरों कढे परेशानी, पश्चाताप दा डेरा ढाहीआ।

१५१७ ✪ २१ अस्सू शहिनशाही सम्मत ७ प्रीतम सिंघ, साधू सिंघ, हज़ूरा सिँघ गुराया, नछत्तर कौर गुराया, बेअन्त कौर धनेता, लाल सिँघ डलेवाल, प्रेम सिंघ, केसर सिंघ, गुरदेव सिँघ नवां पिण्ड, साधू सिँघ सलार पुर, नसीब कौर डविढारिहाणा, अजीत सिँघ जसवन्त सिँघ भाम, गुरदेव सिँघ दुसांझ खुर्द, दर्शन सिँघ दुसांझ खुर्द फगवाड़ा शहर ✪ १५१७

२२ नारद कहे ब्यासा आया इक्की अस्सू, अस्व शब्द चढ़या धुरदरगाहीआ। ओह तक सजदे करदे आउंदे मूसा संग यसू, यथार्थ ध्यान लगाईआ। मुहम्मद चौदां तबकां बाहर नस्सू, निरगुण भज्जे वाहो दाहीआ। की करे खेल अलखणा अलखू, हरि करता धुरदरगाहीआ। पता नहीं केहड़ा संदेशा दस्सू, जिस नूं जुग चौकड़ी समझ कोए ना पाईआ। किस बिध दो जहानां नस्सू, निरगुण आपणा पन्ध मुकाईआ। जिस ने अवतार पैग़म्बर सब बणाए बच्चू, बचपन सब दा वेख वखाईआ। इक शब्द अगम्मा जोती धार रचू, रचना आपणी आप प्रगटाईआ। जिस विच सृष्टी दृष्टी नव सत्त नच्चू, नव नव आपणा रंग रंगाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा अंगीठा तपू, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। बिना भगतां तों पुरख अकाल दा नाम कोए ना जपू, सिफ्तां वाली जगत सिफ्त सालाहीआ। लख चुरासी धार कोए ना टप्पू, मंज़ल पन्ध ना कोए मुकाईआ। सब दी डोर सतिगुर शब्दी धार कटू, कटाक्ष इक्को इक लगाईआ। सदी चौधवीं चार यारी नाल कलमे होणी मनखट्टू, मुहम्मद वेखे नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, की धुर दा हुक्म वरताईआ। ब्यास कहे मैं तकां गोईपेशीन, पुश्त दर पुश्त ध्यान लगाईआ। की खेल करे हरि करता उत्ते ज़मीन, ज़ाहर ज़हूर नूर इलाहीआ। २२

१५१८
२२

जिस नूं सब ने किहा आमीन, अमलां तों रहित नूर इलाहीआ। सो बदल देवे तालीम, सिख्या साख्यात समझाईआ। जिसदा हुक्म संदेशा इक्को होवे अज़ीम, आलीशान आलीजाह दए दृढ़ाईआ। जिस झगड़ा मेटणा नर मदीन, मुद्दा इक्को इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। इक्की अस्सू कहे ब्यासा मेरी तक पेशानी, जो पेशवा गए दृढ़ाईआ। मंज़ल वेख रुहानी, रूह बुत परे ध्यान लगाईआ। की खेल करे वाली दो जहानी, निरगुण सरगुण आपणी कार भुगताईआ। जिस दा हुक्म संदेशा अगम्म कलामी, कायनात इक दृढ़ाईआ। ओह वेखे नव नौ सर्ब तमामी, तमा तामस खोज खुजाईआ। जिस नूं मुहम्मद किहा मेरा अमामी, अमलां तों रहित नूर इलाहीआ। ओह सब तों लवे अन्तिम इक सलामी, सलामत वड वड्याईआ। फेर नाता जोड़े सब दा बाहमी, विष्न ब्रह्मा शिव बैठण सीस निवाईआ। पैग़म्बरां शरअ कटे ग़ुलामी, ज़ंजीर कल्मयां वाला तोड़ तुड़ाईआ। मंज़ल आपणी दस्स रुहानी, रूह बुत रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। ब्यास कहे मैं दस्सां खेल अपारा, की अपरम्पर कार कमाईआ। जिस दा लेखा लिखे ना कातब कोए लिखारा, अवतार पैग़म्बर गुर अन्त कहिण कोए ना पाईआ। सो निरगुण निरवैर निराकार होए उज्यारा, जोती जाता डगमगाईआ। जिहनूं चार जुग दे शास्त्र कहिंदे प्रगट होवे चव्हीआं अवतारा, सदी चौधवीं लेखा दए मुकाईआ। कलयुग विच सतिजुग बन्न्हे साची धारा, धरनी धरत धौल देवे माण वड्याईआ। इक्को नाम कलमा दस्स जैकार, तूं ही तूं ही दए दृढ़ाईआ। आत्म ब्रह्म दा बण प्यारा, प्रीतम आपणा रंग रंगाईआ। जन भगतां सीस बन्न्हे दस्तारा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लै के जाए सचखण्ड सचे दवारा, दरगाह साची होए सहाईआ। जिस दा लेखा कागद कलम ना लिखणहारा, शाही चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। इक्की अस्सू कहे मेरी पुराणी आसा, नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग ध्यान लगाईआ। कवण वेला मेरा ख़ाली भरे कासा, वस्त अगम्म दए वरताईआ। अवतार पैग़म्बर गुर देंदे गए दिलासा, अन्त गोबिन्द शब्दी शब्द जणाईआ। तेरा लहिणा देणा पूरा करे पुरख अबिनाशा, हरि करता धुरदरगाहीआ। जो मण्डल मण्डप पावे रासा, दो जहानां वेखे चाँईं चाँईंआ। ओह खेल करे पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतर पड़दा उठाईआ। जन भगतां बण के राखा, लोकमात होए सहाईआ। मेल मिला के कमलापाता, पतिपरमेश्वर रंग रंगाईआ। भेव रहे ना जोती जाता, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सति धर्म दी दस्से गाथा, गहर गम्भीर दया कमाईआ। जिस नूं कोटन कोटि झुकण त्रैलोकी नाथा, राम रामा सीस निवाईआ। पैग़म्बर ख़ादम हो के कदम रहे चाटा, धूढ़ी मस्तक

ख़ाक रमाईआ। ओह आदि अन्त दा लेखा जाणे साका, साख्यात आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा आपणा पड़दा लाहीआ। अस्सू कहे औह नारद आया सिरों नन्गा, बोदी रिहा हिलाईआ। नारद कहे मैं नाल लै के आया गोदावरी सुरस्ती जमना गंगा, गंगोतरी आपणा पन्ध मुकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं पैंडा लँघ, मंज़ल मंज़ल दए गवाहीआ। कलयुग साचा दिसे ना कोए पांधा पंडा, पंडत नज़र कोए ना आईआ। जगत जहान होया अन्धा, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। मन वासना होया गंदा, बुध बिबेक ना कोए कराईआ। साची मंज़ल चढ़े कोए ना डण्डा, सचखण्ड साचे पन्ध ना कोए मुकाईआ। जिधर तकां भेख पखण्डा, कूड़ी क्रिया नाल हल्काईआ। जां निगह मारी शब्दी सतिगुरु इक वखाया खण्डा, खड़ग अगम्म चमकाईआ। जिस ने लख चुरासी देणा दंडा, डण्डावत सब दी दए बदलाईआ। कलयुग पैंडा रहिण नहीं देणा लम्बा, आयू अग्गे ना कोए रखाईआ। उम्मत दा पाटा दिसे तम्बा, ओढण सीस ना कोए रखाईआ। लहिणा मुकणा तारा चन्दा, चन्द सितार नीर वहाईआ। अन्तिम सब ने गाउणा इक्को छन्दा, तूं मेरा मैं तेरा ढोला बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे
१५१६ खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे उठ वेख जमना सुरस्ती, सुत्तयां रिहा जगाईआ। गंगा गोदावरी १५१६
२२ आई नस्सदी, भज्जी वाहो दाहीआ। की सिफ्त गाईए उस दे जस दी, अक्खरां नाल वड्याईआ। जिस नूं अवतार पैग़म्बर २२
गुरुआं आशा ना लखदी, लिख लिख लेख ना कोए मुकाईआ। उहदी खेल वेखणी वक्ख दी, वक्खरी कार कमाईआ। जेहड़ी सृष्टी प्यासी होई मिझ रत्त दी, दीन दुनी कातिल मक्तूल रूप वखाईआ। उस धार जणाउणी मनमति दी, गुरमति सारे गए गंवाईआ। खेल पूरी करनी गोबिन्द वाले ख़त दी, जो बिन अक्खरां गया लिखाईआ। जिस दे नाल सदी चौधवीं भट्ठी तपदी, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। माया रूप बण गई सप्प दी, डस्सणी डस्से थांउँ थाँईंआ। धीरज रही ना किसे जत दी, जगत वासना कूड़ हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला आप कराईआ। गंगा कहे वे नारदा, कुझ सानूं दे समझाईआ। क्यों नहीं गोबिन्द ने कन्ढा वेख्या ब्यासा पार दा, की पारब्रह्म हुक्म जणाईआ। क्यों दूर दुराडा रिहा ललकारदा, शब्दी शब्द शब्द शनवाईआ। क्यों खेल तकदा रिहा बाज़ उडारदा, बाज़ां वाला वेख वखाईआ। की हुक्म संदेश सच्ची सरकार दा, जिस नूं मेट सके ना राईआ। नारद किहा कमलीए ओह रूप आप करतार दा, कुदरत कादर इक अख्वाईआ। ओह निशाना दस्स के गया चवीए अवतार दा, नर नरायण जो अख्वाईआ। जो सम्बल बहि के सब दी पैज संवारदा, हरिजन साचे आप उठाईआ। फड़ फड़ डुब्बयां पार

उतारदा, सिर सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। लेखा वेखे ना गुनाहगार दा, कोट जन्म दे पापी पार लँघाईआ। जिस नूं आदि अन्त गोबिन्द निमस्कारदा, नमो नमो नमो सीस निवाईआ। ओह नूर इक पुरख अकाल दा, अकल कलधारी आप अख्वाईआ। जिस ने लहिणा देणा कलयुग अन्तिम पूरा करना सर्ब संसार दा, चुरासी विच्चों बचया रहिण कोए ना पाईआ। भेव खुल्हाउणा इक सच सचे दरबार दा, दरगाह साची आप वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। जमना कहे पंडता ओह रावी किहनूं उडीके, बिन नैणां नैण उठाईआ। जिस ने वाहिदे कौल इकरार कीते, जुग चौकड़ी हुक्म सुणाईआ। ओह वेखे सब दे लहिणे बीते, बातन आपणा पड़दा लाहीआ। कमलीए रावी कहे मैं कीती इक प्रीते प्रीतम मिल के वज्जे वधाईआ। मैनूं सतिगुर अर्जन दस्सया उठा के आपणी उँगली चीचे, निक्की निक्कयों वड्डे जणाईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम सदी चौधवीं बीते, मुहम्मद दा लेखा रहे ना राईआ। फेर प्रगट होवे पुरख अकाला त्रैगुण अतीते, त्रैभवण धनी नूर इलाहीआ। जिस ने सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सब दे नाल कौल इकरार कीते, अवतार पैग़म्बर गुरु सारे सन्मुख लए बुलाईआ। अगला हुक्म दस्से नाम हदीसे, हज़रतां तों परे करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा मालक इक अख्वाईआ। गोदावरी कहे नारदा वेख आपणी बोदी, पवण जगत रही हिलाईआ। जिस पुरख अकाल चुक्कया आपणी गोदी, गोद आपणे विच रखाईआ। कुछ उस दी दस्स दे सोझी, समझ तों बाहर देणा दृढ़ाईआ। मैं तेरे हथ्थ लगावां गोडीं, चार जुग दे पंडता तेरी सिफ्त सालाहीआ। तूं निरगुण सरगुण धार धुर दी खोजी, चारों कुण्ट भज्जें वाहो दाहीआ। मसखरयां विच बड़ा मौजी, मजलस भगतां संग रखाईआ। तैनूं माया ममता दा नहीं कोई लोभी, लालच नज़र कोए ना आईआ। तैथों वड्डा नहीं कोई जोगी, जुगीशर रहे सुणाईआ। तैनूं वेखण लोक परलोकी, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। तूं केहड़ी पंडतां वाली फोलणी पोथी, पुस्तक हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच आप जणाईआ। गोदावरी कहे मैं वेख्या गोबिन्द सूरा, सूरबीर सुणाईआ। जो बचनां दा होवे पूरा, कौल इकरार तोड़ निभाईआ। जिस दा हुक्म ना होवे अधूरा, हज़रतां तों बाहर दए समझाईआ। जिस ने लेखा पूरा करना मूसे वाला कोहतूरा, कोहतूर दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। इक्की अस्सू कहे मेरा दिवस सुहञ्जणा, जन भगत मिले वड्याईआ। हरि देवे पुरख निरँजणा, नर नरायण अगम्म अथाहीआ। चरण धूढ़ कराए मजना, दुरमति मैल धुआईआ। चार वरनां अठारां बरनां दस्स के इक्को बन्दना, बन्दगी धुर दी इक समझाईआ। जिस

नाल आत्म परमात्म चढ़े रंगणा, दूजा रंग ना कोए वखाईआ। लोक परलोक दो जहानां विच दूजा दर पए ना मंगणा, ख़ाली झोली अग्गे कोए ना डाहीआ। जिन्हां पुरख अकाला दीन दयाला मिल गया सूरा सरबंगणा, सूरबीर अगम्म अथाहीआ। उहनां चुरासी लख तुटा तन्दना, शरअ ज़ंजीर ना कोए बंधाईआ। इक्को नाम दा पा के अंजणा, अंध अंधेरा दिता गंवाईआ। जन भगतां भगवन हो के सदा संगणा, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे इक अनन्दना, अनन्द अनन्द विच्चों वखाईआ।

✪ २२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ७ गुरमीत सिंघ चरण कौर पिन्दर सिंघ मनसा सिंघ प्रीतम कौर माल गहिला चरण कौर सन्तोख सिंघ सोढ़ीआं गनेशा सिंघ कोट कलां हरभजन कौर कोटलीथान महिंगा सिंघ हरीपुर मिलखा सिंघ सैला खुर्द करतार कौर जमशेद खेड़ा, इकबाल सिंघ जगपाल पुर जुगिन्दर सिंघ दौलतपुर पिण्ड फराला ज़िला जंलधर ✪

नारद कहे ब्यासा तेरी पूरी होवे तमन्ना, तामस तृष्ना रहे ना राईआ। उठ वेख गोबिन्द वाला कन्ना, जो कायनात नज़र किसे ना आईआ। जिस ने जगत जहान कीता अन्ना, निज नेत्र लोचण नैण ना कोए खुल्हाईआ। नाम पदार्थ पाए कोए ना धना, धर्म दी धार ना कोए प्रगटाईआ। मनसा चुकाए कोए ना मना, ममता मोह ना कोए गंवाईआ। झगड़ा तक माटी चम्मा, चार कुण्ट कुण्ट कुरलाईआ। पुरख अकाल बदलण वाला आपणा समां, संमण सब दे रिहा कढ्ढाईआ। दीन मज़्ब दी वेखे तमा, लालच नाम कलमा खोज खुजाईआ। निशान तके तारा चन्ना, चन्द सितार अक्ख उठाईआ। जिस ने अन्तिम मेटणा सब दा बन्ना, बन्धन मात वाले तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। ब्यास कहे मेरा खुल्ल्हया अगम्मी नेत्र, नैण मिली वड्याईआ। जगत जहान तक्कया खेत्र, चारों कुण्ट फोल फुलाईआ। पड़दा उठया जड़ चेतन, भेव अभेदा रिहा ना राईआ। सदी चौधवीं बणया लेखण, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला धारे भेखण, भेखाधारी वड वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया भन्ने रेठण, नव खण्ड पृथ्मी फोल फुलाईआ। झगड़ा मेटे जिज्ञासू सेठण, सिर सिर आपणा हुक्म मनाईआ। प्रभ का नाम घर घर जाए कोए ना वेचण, कीमत टकयां वाली पाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला खेल करे नेत नेतन, नर

नरायण धुरदरगाहीआ। सब दा लेखा जाणे एकँकार एकन, इक इकल्ला वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ। ब्यास कहे मैं नौ दिन तक्कया नज़ारा, नज़रीआं नज़र विच्चों बदलाईआ। खेल वेख्या कलि कल्की अवतारा, अवतर आपणी कार कमाईआ। जो लेख मिटाए भगतां नौ दवारा, नव नौ चार दा पन्ध मुकाईआ। शब्दी शब्द नाद धुन दे धुन्कारा। अनहद नाद सुणाईआ। अमृत आत्म बख्श के ठंडा ठारा, झिरना निजर आप झिराईआ। दीआ बाती कमलापाती कर उज्यारा, नूर नुराना डगमगाईआ। जन भगतां लेखा पूरा कर विच संसारा, सगला संग आप हो जाईआ। जगत जहान करे पार किनारा, दरगाह साची सच वड्याईआ। जिथ्थे दीआ दीपक इक उज्यारा, नूर नूर करे रुशनाईआ। सचखण्ड सुहाए सच्चा दरबारा, दरगाह साची वज्जदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। ब्यास कहे मैं सुणया शब्द संदेशा, सँध्या सरघी नज़र कोए ना आईआ। तक्कया इक नरेशा, नर नरायण बेपरवाहीआ। जो आदि अन्त रहे हमेशा, हमसाजण नूर इलाहीआ। भगत उधारना जिस दा पेशा, पेशीनगोईआं वेखे थांउँ थाँईंआ। निरगुण निरवैर कर कर वेसा, वेस अवल्लड़ा आप समझाईआ। जिस झगड़ा मेटणा मुल्लां शेख़ा, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। कलयुग कूड़ी बदल देणी

१५२२

२२

रेखा, ऋषीआं मुनीआं पन्ध मुकाईआ। सतिजुग साचे सच बणाए बेटा, पिता पुरख अकाल दया कमाईआ। धर्म दी धार बणा के खेवट खेटा, नईया नौका नाम इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप प्रगटाईआ। नौ कहिण असीं नव नौ दी वंड, चारे खाणी ध्यान लगाईआ। तके कोटन कोटि ब्रह्मंड, पुरी लोअ अक्ख उठाईआ। सुण अगम्मी छन्द, ढोला धुरदरगाहीआ। जिस विच सारे होणे पाबन्द, सिर सके ना कोए उठाईआ। सदी चौधवीं रही लँघ, उम्मत उम्मती लए अंगड़ाईआ। मुहम्मद नन्गी होई कंड, चार यारी रही कुरलाईआ। झगड़ा वेखणा जेरज अंड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। अस्सू कहे मेरा दिवस आ गया बाई, सरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाईआ। निरगुण फ़र्क कहे ना राई, निरवैर दया कमाईआ। सब दा सांझा इक गुसाँईं, गहर गम्भीर इक अख्वाईआ। जिस ने कलयुग बदल देणी शाही, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। लेखा लाउणा जो गोबिन्द बूटा पुटया काही, कायनात जड़ उखड़ाईआ। चढ़दे लहिंदे पए दुहाई, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ। बाई अस्सू कहे मेरी इक अरदास, आख़र सीस निवाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाश, अबिनाशी करते हो सहाईआ। जन

भगतां पूरी कर ख़ाहिश, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। तैनूं करना ना पए तालाश, जंगल जूहां खोज खुजाईआ। गुरमुखां काया मन्दिर अन्दर दे प्रकाश, जोती नूर नूर रुशनाईआ। हर घट अन्दर कर वास, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। गुरमुखां लेखे ला स्वास, स्वास, जो साह साह रहे ध्याईआ। झगड़ा मिटा पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर पन्ध मुकाईआ। तेरी मण्डल तक्कण रास, सुरती शब्दी गोपी काहन नाच नचाईआ। सदा सद वसण तेरे पास, पासा जगत वाला बदलाईआ। सच दवार कराउणा निवास, सिंघासण आसण इक्को इक दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। पुरख अकाल कहे सुण बाई अस्सू प्रविष्टे, पेशतर दयां जणाईआ। दीन दुनी बुद्धी भृष्टे, अक्ल बुद्धी ना कोए चतुराईआ। साबत रहिणा नहीं कोई इष्टे, इष्ट देव ना कोए मनाईआ। कामल रहिणे नहीं निसचे, निसचित कर के दयां जणाईआ। प्यार रहिणे नहीं पीआ पित दे, प्रीतम मिलण कोए ना पाईआ। कलयुग जीव कूड़ क्रिया होणे विकदे, कीमत अग्गे ना कोए रखाईआ। कोटां विच्चों प्रभू प्यारे थोड़े दिसदे, जिन्हां मिले माण वड्याईआ। जो दुलारे बणने इक दे, एकँकार विच समाईआ। झगड़े मुकाउणे नित दे, अग्गे वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा इक सुणाईआ। ब्यास कहे जन भगतो मेरी अन्त डण्डावत,
१५२३ सब नूं सीस निवाईआ। प्रभ दा नाम इक न्यामत, झोली भरनी चाँईं चाँईंआ। जो करन आया सख़ावत, मेहरवान मेहर १५२३
२२ नज़र उठाईआ। तुसां करनी नहीं अदावत, निगह निगह विच्चों बदलाईआ। मनुआ करे ना किसे बग़ावत, झगड़ा कूड़ २२
रहे ना राईआ। मेरा प्यार सतिगुरु अमानत, ब्यासा कहे तुहाडी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। ब्यास कहे मैं करां निमस्कार, डण्डावत विच सीस निवाईआ। तुहाडे सीस सोहे दस्तार, सिर सिर वज्जे वधाईआ। मेला मिल्या रहे कन्त भतार, कन्त कन्तूहल इक्को नज़री आईआ। जिस नूं गाउंदे जुग चौकड़ी चार, अवतार पैग़म्बर गुर सिफ्त सालाहीआ। सो देवणहार दातार, दयावान दया कमाईआ। शब्दी शब्द कर प्यार, प्रेमी प्रीतम वेख वखाईआ। धुर दा हुक्म धुर दा विहार, विवहारी आप भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। ब्यास कहे मैं तक्कया खेल महाना, महिमा अकथ कथ जणाईआ। जन भगतो बाई अस्सू सब ने बन्नणा गाना, मौली तन्द बंधाईआ। केसर मस्तक तिलक लगाउणा, जन भगत मिले वड्याईआ। इक्की कंघे इक्की गुरसिक्खां मिले दाना, सतिगुर साचा होए सहाईआ। किरपा करे श्री भगवाना, भगवन आपणा रंग रंगाईआ। इक दस्तार गुरदयाल सिँघ सीस टिकाणा, जो महिन्दर कौर लै के आए

चाँईं चाँईंआ। इक दुपट्टा गुरमेज कौर सीस सुहाना, सीस सर धुर दे लेखे पाईआ। अस्सू बाई कहे मेरा एह विचार पुराणा, पूरन ब्रह्म दयां समझाईआ। जो साहिब सतिगुरु करे परवाना, परम पुरख दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुगादि आदि एका बख्शे नाम निधाना, नाउँ निरँकारा आप जणाईआ।

✪ ३० अस्सू शहिनशाही सम्मत ७ जोगिन्दर कौर दे नवित हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

ग्रन्थ कहिण असीं सरसा धार नहीं गृहस्ती, बन्धन जगत ना कोए रखाईआ। साडा लेखा नाल प्रभू दी हस्ती, जो हस्त कीटां रिहा समाईआ। जो मालक मेहरवान प्रीतम अर्शी, अर्शे आज़म नूर इलाहीआ। जिस दी समझे कोए ना मर्ज़ी, मरीज़ जगत जहान समझ कोए ना पाईआ। ओह मेरी परवान करे अर्ज़ी, आजज़ां दी इज्ज़त आपणे हथ्थ रखाईआ। जगत जहान वेख खुदग़रज़ी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। ग्रन्थ कहिण साडा भेव गहरा, गहर गम्भीर रिहा जणाईआ। उम्मत नबी रसूल होए मुशाहरा, मसला हल्ल ना कोए कराईआ।
१५२४ जगत जहान होया बहिरा, सरवण सुणन कोए ना पाईआ। चौदां लोक जिस दा पहरा, पाहरू लेखा रिहा मुकाईआ। जिस १५२४
२२ दा हुक्म संदेशा मिलणा विच काहरा, कहर वरते ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे २२
खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। मुहम्मद कहे की लेखा लिख्या मेरी कानी, कलम कायनात दृढ़ाईआ। की जज़बा होया कुरबानी, करबला दए गवाहीआ। की मंज़ल मिली रुहानी, रूह बुत वज्जी वधाईआ। की खेल जिस्म जिस्मानी, इस्म आज़म वड वड्याईआ। क्यों मेरी जूह होई बेगानी, बेवा रूप दिसे लोकाईआ। चारों कुण्ट चढ़े तुग्यानी, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। बिना परवरदिगार ना करे कोए मेहरवानी, मेहरवान सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। मेरी अन्त इक निशानी, निशाने सब नूं दयां वखाईआ। मैनूं खुदा ने खुद हुक्म दिता सी बिना ज़बानी, ज़ामन हो के आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। मुहम्मद कहे मैं वेखां धुर कलमा अगम्मी तीर, अणयाला हुक्म इक वरताईआ। जिस लेखा पूरा करना पीर फ़कीर, पारब्रह्म प्रभ आपणा रंग रंगाईआ। जिस सदी चौधवीं मेरा करना अख़ीर, आख़र हुक्म वरताईआ। अगला मार्ग कर तामीर, तमन्ना सब दी दए बदलाईआ। जिस पिछली उत्ते मारनी लकीर, लाईन अगली दए चमकाईआ। मालक बण दस्तगीर, दस्त दस्त नाल

मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। मुहम्मद कहे अन्तिम खेल खेलां अगम्मी होली, होलिका जिस नूं सीस निवाईआ। जेहड़ी प्रहलाद ने बोली सी बोली, अनबोलत राग सुणाईआ। उस दा वक्त पहुँचया हौली हौली, समां समें नाल पन्ध मुकाईआ। सो खेल वरते उपर धौली, धरनी धरत धवल वेख वखाईआ। दरोही सदी चौधवीं दा अन्तिम लेखा पूरा होणा लेख लिखणा पंज तत धार गोली, गुलाम रहिण कोए ना पाईआ। मेरा महिबूब ख़ाली भरे सब दी झोली, झलक आपणी इक जणाईआ। बिन कहारां सब दी चुक्के डोली, अनडोलत आपणी कार भुगताईआ। जिस लख चुरासी जोह लई, जौहरी बण के वेख वखाईआ। बौहड़ी मेरे कोल रुपईए विच्चों रह गई इक पौली, चौथे जुग चौथा हिस्सा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं भज्ज के आई नेड़े, आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं वेखे जगत झेड़े, झगड़े विच लोकाईआ। पुज्ज गई भगतां दे खेड़े, जिथ्थे भगवन धुरदरगाहीआ। सहिज नाल पुछिआ अग्गे हुक्म केहड़े, सच दे सुणाईआ। किस बिध बन्ने बेड़े, किस बिध दीन दुनी रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं याद पिछला भविख, भविश दयां जणाईआ। जो गोबिन्द संदेशा दिता इक, शब्द धार सतिगुर समझाईआ। जिस वेले पूरा रिहा कोई ना सिख, सिख्या सच ना कोए जणाईआ। बिना प्रभू तों भगतां नाल करे कोई ना हित, सच प्रेम ना कोए बणाईआ। मिले मेल ना अबिनाशी अचुत, चेतन रूप ना कोए दरसाईआ। उस वेले खेल होणा अनडिठ, अनडिठड़ी कार कमाईआ। परवरदिगार बदल के पिठु, आपणी करवट दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा परवरदिगार होणा ज़ाहरा, (ज़ाहर) ज़हूर इक जणाईआ। जिस दा समझे कोए ना दइरा, हद्द हदूद ना कोए वखाईआ। उस दा इक्को होणा नाअरा, तूं मेरा मैं तेरा राग सुणाईआ। जिस वेले उस ने शब्द दा लेख लिखणा दुबारा, सदी चौधवीं दी गोली सेव कमाईआ। जोगिन्दर दा जगत तत विहारा, ब्रह्मा मति नाल वड्याईआ। फेर लग्गे दीन दुनी दा अखाड़ा, खेल करे धुरदरगाहीआ। जिस दा खुशीआं वाला दिहाड़ा, दिउहाड़ी खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। मुहम्मद कहे मेरी इक्को आस, आहिस्ता दयां सुणाईआ। मेरा अमाम मेरा पहने लुबास, तन वजूद नाल छुहाईआ। मैं वेखां खेल तमाश, निउँ निउँ लागा पाईआ। मंगां मंग बण के दास, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। उस वेले पंजां प्यारयां जल दा देणा इक इक ग्लास, गल

आपणे उत्ते हथ्थ टिकाईआ। ठीक वक्त होवे साढे दस कलाक, कला सब दी आप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच वखाए इक प्रभात, प्रभाती आपणा नूर जणाईआ।

✪ १ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल रात नूं ✪

मुहम्मद कहे सुण प्यारे चन्ना, चन्न चन्द दयां दृढ़ाईआ। उठ तक गोबिन्द वाला कन्ना, कायनात अक्ख प्रतख खुल्हाईआ। जो दो जहानां करदा मन्नां, मन मनसा दूर कराईआ। भेव खुल्हाउंदा काया माटी पंज तत तना, तामस तृष्ना तृखा रिहा गवाहीआ। वस्त अमोलक देवे गुरमुखां नाम धना, वड धनाढ दया कमाईआ। खेल तक परवरदिगार बिन छप्परी छन्ना, शहिनशाह की हुक्म वरताईआ। अग्गे वक्त रिहा ना लम्मा, लमह लमह गिण के झट लँघाईआ। जिस झगड़ा मेटणा काया माटी चम्मा, चम्म दृष्टी रिहा बदलाईआ। दरोही दीन मज़्हब दी रहिण नहीं देणी तमां, तमन्ना सब दी दए बदलाईआ। मेरा तन वजूद बिना वजूद तों कम्बा, कामल मुर्शद की कार भुगताईआ। की खेल करे नवां, नव खण्ड हुक्म सुणाईआ। बौहड़ी साथ छुटणा यार चव्हां, चौथे जुग अन्त दुहाईआ। सब दी लेखे लाए सुगंधां सौहां, बचया रहिण कोए ना पाईआ। फेर वेखे आपणे हथ्थां वाले नौहां, नव दस्स अक्ख खुल्हाईआ। हुण केहड़ी कूटे बव्हां, हिस्सा वंड ना कोए रखाईआ। कवण सिंघासण सवां, मक्का काअबा रहे कुरलाईआ। दरोही जिस ने भोग लगाया जवां, जवानी सब दी रिहा मिटाईआ। मैं हक संदेशा कहवां, कहि के दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। मुहम्मद किहा सुण मेरे सतार, सतह बुलंदी दयां जणाईआ। उठ वेख परवरदिगार, नूर नुराना डगमगाईआ। जिस दा ख़ादम खिदमतगार, चाकर हो के सेव कमाईआ। जिस दी गुप्त शनीद ग़ुफतार, पैग़ाम देवे धुरदरगाहीआ। जिस ने झगड़ा मुकाउणा मेरे इस्लाम, सही सलामत आपणा हुक्म वरताईआ। शरअ दा रहिण देणा नहीं कोई ग़ुलाम, ज़ंजीर बेनज़ीर दए तुड़ाईआ। ओह मालक ख़ालक मेरा अमाम, अमलां तों रहित नूर इलाहीआ। जिस नूं सजदे करन तमाम चौदां तबक निव निव लागण पाईंआ। उस दा इक्को हक मुकाम, मुकामे हक नूर इलाहीआ। जिस ने लहिणा देणा लेखा चुकाउणा अवाम, आम हुक्म ना कोए सुणाईआ। बिना तारीख तवारीख तों कलमे धार करना कत्लेआम, कातिल मक्तूल खेल खिलाईआ। उस नूं सयदे विच करां सलाम, बरदा हो के सीस निवाईआ। जिस ने झगड़ा पाउणा विच असाम, सांघीआं आपणीआं लए

उठाईआ। लेखा वेखणा फेर तहिरान, तुरत आपणी तार हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। चन्द कहे सुण मुहम्मद मेरे नबी, नमो नमो सीस निवाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु तक सभी, सभा सब दी वेख वखाईआ। की परवरदिगार हुक्म देवे अभी, (इबनुल) वक्त आपणी कार भुगताईआ। जो लख चुरासी दीन दुनी दा तबी, तबीअत सब दी दए बदलाईआ। जिस नूं किहा नूर अलाही रब्बी, रब्बे आलमीन अख्वाईआ। उस दी धार तक नूह नदी, वहिणां तों बाहर अक्ख खुल्हाईआ। साडा तेरा कौल इकरार अन्त चौधवीं सदी, सदमे विच ना कोए दुहाईआ। सज्जणा एह मेल हुन्दा कदे कदी, कदीम दा मालक आप कराईआ। हुण उम्मत दी चुक्कणी पैणी डग्गी, डौरु डंक देणा वजाईआ। धरनी उत्ते ओह नहीं रहिणा जिन्हां खाधी वच्छी ढग्गी, पंछी पंखोरू खल्ल लुहाईआ। उम्मत दी जड़ रहिणी नहीं गड्डी, निशाना दीन ना कोए झुलाईआ। ओह तक पैग़म्बरां कायम नहीं रहिणी गद्दी, गदागर होए लोकाईआ। परवरदिगार बेपरवाह पिछली लेखे लाउणी सुदी वदी, वाहिदे सब दे पूर कराईआ। सतार कहे मेरी प्रीत नहीं सदा किसे नाल बद्धी, बन्धना विच सीस ना कदे निवाईआ। कोटन कोटि मुहम्मद गए जगत विच लद्दी, अन्त नज़र कोए ना आईआ। ओह वेख अग्ग चारों कुण्ट लग्गी, जगत जुगत ना कोए बुझाईआ। शरअ शरीअत होई लबी, लबां कटाउण वाल्यां ध्यान
१५२७ लगाईआ। मकबरयां विच पुकारे पसली हड्डी, नाड़ी नाड़ी दुहाईआ। बौहड़ी वेले अन्त जावीं ना छडी, सगला संग लैणा १५२७
२२ बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक इक अख्वाईआ। तारा २२
कहे मेरे मुहम्मद हज़रत रसूला, इललाह कहि के सीस निवाईआ। मैं सुणया तेरा हुक्म माकूला, जो मुकम्मल दिता दृढ़ाईआ। पर मेरे परवरदिगार दा बदले ना कदे असूला, असल असल विच्चों प्रगटाईआ। चौदां सदीआं झूलया तेरा झूला, जो झलक नाल झुलाईआ। धुर फ़रमान कीता कबूला, पैग़ाम सुणया नूर इलाहीआ। अग्गे संदेशा देवे इक्को दूहला, हरि करता धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं अन्तिम होण मूला, मलकुलमौत लए अंगड़ाईआ। उम्मत उम्मती तपणा चुल्हा, अग्नी शरअ वाली लगाईआ। किसे सहारा मिले ना तुल्हा, नईया नौका नज़र कोए ना आईआ। चार कुण्ट करे कोए ना सुल्हा, सुल्हकुल आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। चन्द सितार कहिण साडी इक सलाह, सहिज नाल सुणाईआ। असीं इक दूजे दे बणे गवाह, शहादत दईए भुगताईआ। सदी चौधवीं अन्तिम वेल गया आ, आलमीन वेखे नूर इलाहीआ। जिस नूं मन्नया हक खुदा, खुद मालक इक अख्वाईआ। मुहम्मदा सानूं होणा पैणा जुदा, जुज़ वंड सब दी रिहा कराईआ। जिस दी जुग जुग बदलण वाली अदा, अदल इन्साफ़ आपणे हथ्थ रखाईआ।

१५२८
२२

सब दा लहिणा देणा पूरा दए करा, पूरब लेखा खोज खुजाईआ। झगड़ा मेटे दीन मज़्हब शरअ, शरअ नज़र कोए ना आईआ। जेहड़ा मालक वसदा ज़र्रा ज़र्रा, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। ओह वेखणहारा घर घरा, गृह गृह पड़दा दए उठाईआ। जिस ने जगत मार्ग प्रगटाउणा खैबर वाला दर्रा, जगत दरवेश गए सुणाईआ। जगत जहान वंडणा धड़ा, धाड़वी आपणी कार भुगताईआ। हुण समां बीत्या बड़ा, चौदां सदीआं तेरा संग निभाईआ। ओह तक दीन दुनी दा लेखा गोर मढ़ा, मढ़ी गोर विच दफ़नाईआ। आदि दा आदि अन्त दा अन्त इक्को नूर अगम्मी चन्द चढ़ा, जिस दी मंज़ल अगम्म अथाह नूर रुशनाईआ। सितारा सतह बुलंदी उत्ते खड़ा, निव निव सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर करता अगम्म अथाहीआ। मुहम्मद कहे चन्द सितार ओह वेखो मेरा लिख्या होया पट्टा, पटने वाला दए गवाहीआ। जिस ने जगत जहान पाउणा रट्टा, झगड़ा दीन दुनी जणाईआ। किसे दी कीमत रहे ना टका, कायनात ना मिले वड्याईआ। सब दा ओढण दिसे फटा, सीस हथ्थ ना कोए रखाईआ। मेरा महिबूब आवे नट्ठा, अमाम धुरदरगाहीआ। गोबिन्द दी धार कर के बटा, सिट्टा आपणा लए कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। मुहम्मद कहे तारे चन्ने ओह तक्को पहली कत्तक दी रात, रुतड़ी खुद मालक नाल महकाईआ। जिस दा प्यार आबेहयात, अमृत रस रिहा वखाईआ। जिस ने झगड़ा मेटणा काग़ज़ात, अक्खरां वाली रहिण ना देवे लड़ाईआ। आपणी जोत दा कर प्रकाश, नूर नुराना डगमगाईआ। पंचम लै के पंज ग्लास, जल धारा धार नाल मिलाईआ। कूड़ कुड़यारा गल विच आवे फास, हथ्थ गुरमुख गल छुहाईआ। एह मसीह ने रखी सी अन्तिम आस, यसूह आख के गया सुणाईआ। भगतां जिज्ञासूआं शाहरग दे उत्ते हुन्दा करास, एसे कर के करास गल विच गया लटकाईआ। जिस दी रहे ना अग्गे शाख़, शनाख़त नज़र कोए ना आईआ। मुहम्मद दा महिबूब नाल मिलण दा होए इत्फिाक, इत्फिाकीआ आपणी कार भुगताईआ। अन्त इक दूजे नूं देणा पए तलाक, तुअलक तारा चन्न रहे ना राईआ। मेहरवान बड़ा चलाक, अछल अछल अख्वाईआ। बातन आपणी करे बात, हुक्म संदेशा देवे थांउँ थाँईंआ। मसीह दा वक्त साढे दस कलाक, दिवस तों रात आया बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। तारा चन्द कहे मैं पाणी पाणी तक्कया, तक्कया नैण उठा। नाता तुटा सज्जण सक्या, मीत संग सके ना कोए निभा। साडा कौल इकरार पूरा होया पक्कया, पाक हिन्द दोवें बणे गवाह। सब ने लेखा वेखणा अक्खीआं, की आख़र खेल करे खुदा। जो संदेशा दिता काहन सी सखीआँ, जमन किनारे तट सुणा। कलयुग अन्तिम कूड़ीआं होणीआं हट्टीआं, सच वस्त मिले

१५२६
२२

किसे ना थां। पंजाब दी धारा जाणीआं पट्टीआं, पटने वाला पार ब्यासों गया जणा। शरअ दीआं डोरीआं जाणीआं कटीआं, ना कोई गंढां सके बंधा। सब दीआं दन्दीआं होणीआं खट्टीआं, अमृत रस मुख देवे ना कोए चुआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणा। तारा चन्न कहे मुहम्मद की करीए हुण मता, मति रही ना राईआ। याद कर लै की संदेसा दे के गया नानक तपा, बग़दाद बग़लगीर अख्वाईआ। क्यों गोबिन्द ने आपणी हथ्थीं लिख्या लेख अक्खर पप्पा, पूरन परम पुरख वड्याईआ। की खुदा ने तैनूं सुणाया टप्पा, जिस वेले मदीनिउँ बाहर कदम टिकाईआ। तेरा आफ्ताब अन्तिम जांदा छप्पा, छप्परी छन्न ना कोए रुशनाईआ। तूं हस्स के किहा मेरा तेरा वाहिदा पक्का, पाक परवरदिगार तेरी सरनाईआ। औह वेख की हाल होणा मदीना मक्का, मकबरयां पैग़म्बर देण गवाहीआ। नाल रलणा बूरा कक्का, ईसा इशारे नाल जणाईआ। मूसा फिरे नस्सा, मुश्किल सब नूं दए जणाईआ। किसे दी करे कोई ना रच्छा, रच्छक नज़र कोए ना आईआ। गोबिन्द चुक्की फिरे भथ्था, भज्जे वाहो दाहीआ। पुरख अकाल दा खेल तकणा यथार्थ यथा, यदी आपणा हुक्म सुणाईआ। जिस दी गुर अवतार पैग़म्बरां सुणनी कथा, बिन अक्खरां निरअक्खर धार दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। तारा चन्द कहे मुहम्मद जिस ने भगतां जल पीता, पीआ पीतम्बर बेपरवाहीआ। जिस दी जुग जुग अवल्लड़ी रीता, चौकड़ी दए गवाहीआ। जिस दा इशारा कीता राम सीता, सीता सुरत शब्द नाल समझाईआ। जिस नूं काहन गाया अठारां ध्याए गीता, सिफ्ती सिफ्त सालाहीआ। राधा कृष्न बण के मीता, सगला संग निभाईआ। पैग़म्बरां वाड़ के विच मसीता, चर्चा दिता भुगताईआ। दस्स के हक हदीसा, हज़रतां कीती पढ़ाईआ। अन्तिम उहनां दा वेला बीता, पिछला समां रिहा ना राईआ। जिस दी दस गुरु करन तस्दीका, शहादत नाम वाली भुगताईआ। उस ने अन्त जड़ उखेड़नी अमरीका, पाताल पातालां विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। जिस कोल नापण वाला अगम्मी फ़ीता, रूसा चीना कदमां हेठ दबाईआ। लेखा जाणे मूसा ईसा, शीशा सब दे अग्गे दए टिकाईआ। अन्तिम वेखो उम्मत उम्मती सब दा ख़ाली खीसा, सच वस्त हथ्थ किसे ना आईआ। लहिणा पूरा करे अठारां ध्याए गीता, बंसरी काहन वाली लेखे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। मुहम्मद कहे चारे (जाणे) मेरे अहिबाब, बेऐब दयां वखाईआ। इक्ट्ठे करीए इक आदाब, अदब नाल सीस झुकाईआ। तारा चन्द कहे हज़रत तेरी उम्मत ने भुन्न खाधा कबाब, काअब्यां विच पए दुहाईआ। सब दा बदल जाणा मजाज, मज़ा जगत वाला चखाईआ। आ उठ वेखीए सदी चौधवीं दा काज, किस बिध निकाब नाल फ़ातिहा दए

पढ़ाईआ। ओह सुणे नानक दी रबाब, की सितार रही सुणाईआ। जिस दे अग्गे सारे होणे लाजवाब, ओह दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी कार कमाईआ। चन्द सितार कहे मुहम्मद मानज़लू, जाए नौ ज़ीआ। मुहम्मद कहे तारा चन्न परवरदिगार दा खेल होणा शुरू, अन्तिम शरअ दी उखेड़े नींह। सब दा मालक इक्को कलमा ते इक्को शब्द होणा गुरु, जिस नूं सजदा करे लख चुरासी जीअ। सदी चौधवीं अन्तिम मोड़ मुड़ू, उथे अवतार पैग़म्बर गुरु करन की। सतिजुग साचा मार्ग तुरू, परवरदिगार बरखे अगम्मा मींह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। मुहम्मद कहे मैनूं वेख लैण दयो आपणी अलिफ़, ये नज़र कोए ना पाईआ। जिस वेले मैं चौदां सदीआं दा चुक्यां हल्फ़, हल्फ़ीआं ब्यान दे के आपणा आप बंधाईआ। किस बिध अगला मिले शरफ, देवे बेपरवाहीआ। की हुक्म होवे यकतरफ़, तरफ़दारी ना कोए जणाईआ। जे मैं निगह मारदा मेरे रह गए नौ बरस, बरसी अन्त लवां मनाईआ। वाहिदा कौल इकरार पूरा होवे शर्त, क्षत्रीया दयां सुणाईआ। हुक्म करना मालक वाली अर्श, अर्शी प्रीतम खेल खिलाईआ। मेरी उम्मत दा लेखा मुकणा उत्ते फ़र्श, फ़रिश्ते चारे ज़बराईल मेकाईल असराईल असराफील देण गवाहीआ। मैं फेर नहीं आउणा परत, पतिपरमेश्वर रिहा जणाईआ। शरअ छुरी रहे ना करद,
१५३० कातिल मक्तूल दा डेरा ढाहीआ। ग़रीब निमाणयां वंडे दर्द, दुखियां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी १५३०
२२ किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। कत्तक कहे की होणा तुहाडा कर्मा, निहकर्मी की कार २२
कमाईआ। किस बिध लेखे लग्गे जरमा, जन्म जन्म विच्चों बदलाईआ। मेटे सब दा भरमा, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। लेखा रहे ना वरनां बरनां, ज़ात पात ना कोए जणाईआ। झगड़ा चुकाए माटी चर्मा, चम्मदृष्टी दए बदलाईआ। किस बिध इक्को करे धर्मा, धर्म दी धार इक समझाईआ। झट उठ के सीस निवाए ब्रह्मा ब्रह्म रूप समझाईआ। जिस दा रस सदा अनन्द परमा, परमानंद विच समाईआ। उहदा आदि अन्त इक्को इष्ट ते इक्को चरणां, दूजा गुरदेव ना कोए अख्वाईआ। इक्को नाम अगम्मा कलमा पढ़ना, पुस्तकां लोड़ रहे ना राईआ। जिस दी मंज़ल भगतां चढ़ना, चढ़दा लहिंदा वेख वखाईआ। तोड़े किला हँकारी गढ़ना, हउमे हंगता दूर कराईआ। सब नूं बख्शे इक्को सरना, सरनगति इक दरसाईआ। कोटां विच्चों सूफ़ी सन्त फ़कीर गुरमुख विरले तरना जिस सतिगुर साहिब आप तराईआ। सदी चौधवीं अन्त सब नूं पैणा मरना, मर जीवत रूप ना कोए वखाईआ। कलयुग वहिंदे वहिण सब ने हढ़ना, हाढ़ सतारां थित समझाईआ। सतिगुर सूर्या इक्को चढ़ना, दो जहान करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। कत्तक कहे

मैं तकां उत्ते कोहतूरा, बिन नैणां नैण उठाईआ। मूसा आपणा कौल कर लै पूरा, पूरब लेखा दयां समझाईआ। उठ वेख अगम्मी नूरा, नूर नुराना डगमगाईआ। जिस नूं किहा ज़ाहर ज़हूरा, ज़हूर निरगुण धार जोत रुशनाईआ। उस दे दर होणा मशकूरा, शुक्रिए विच सीस निवाईआ। जो सर्ब कला भरपूरा, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। जिस दा पन्ध रिहा ना दूरा, दूर दुराडा नेड़े आईआ। कूड़ी क्रिया हूंझे कूड़ा, सति धर्म इक प्रगटाईआ। जन भगतां बख्श के चरण धूढ़ा, टिक्के मस्तक ख़ाक रमाईआ। नाम चाढ़ के रंग गूढ़ा, गूढ़ी नींद दए सवाईआ। कलयुग कलन्दर जगत नचावे वांग जमूरा, डोरी कर्मां वाली हिलाईआ। हुक्म देवे हरि सूरा, सूरबीर हुक्म जणाईआ। सब दा वाहिदा करना पूरा, पूरन सतिगुर लेखे पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सच दा मालक इक अख्वाईआ। तारा चन्द कहे कत्तक की कहिंदा, हज़रत दे जणाईआ। कत्तक कहे मूसा ईसा इक्ट्ठा हो हो बहिंदा, मुहम्मद इशारे नाल जणाईआ। ओह तक लेखा चढ़दा लहिंदा, दिशा दिशा विच्चों बदलाईआ। उच्च मुनारा जांदा ढहिंदा, किले कोट ना कोए सहाईआ। उम्मत उम्मती नाल खहिंदा, ख़ालस रूप ना कोए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। मुहम्मद कहे मैं हुक्म दस्सां अख़ीरी, आख़र दयां जणाईआ। की लेखा मालक तहरीरी, तहरीर विच समझाईआ। शरअ दी तुटणी अन्त ज़ंजीरी, बन्धन बंध ना कोए बंधाईआ। किसे दी रहिणी नहीं कोई पीरी, पीर पीरां प्रगट होए गुसाँईंआ। लेखा मुके पातशाह वज़ीरी, वज़ारत नज़र कोए ना आईआ। एह हुक्म वरते तकदीरी, तकदीर सब दी दए पलटाईआ। अग्गे गली आ गई भीड़ी, औखी घाटी ना कोए चढ़ाईआ। किसे दे मुख लग्गी रहिणी नहीं बीड़ी, बीड़ा पान खाण वाला नज़र कोए ना आईआ। कलयुग तेरे विच सतिजुग दी बदल जाणी पीड़ी, पीढ़ा डाहुण वाली कूड़ी क्रिया देणी बाहर कढ्ढाईआ। जन भगतां मंज़ल ला के देणी इक्को सीढ़ी, डण्डे डण्डे कदम ना कोए टिकाईआ। गुरमुखो तुहाडी बजर कपाटी जाणी चीरी, चिरी विछुन्ने लैणे मनाईआ। तुहाडी तृष्ना रहिणी नहीं ख़मीरी, नवां रंग लैणा रंगाईआ। झगड़ा मेटणा शाह हकीरी, हिकमत आपणे हथ्थ रखाईआ। लेखे लाउणा रविदास दा इक कसीरी, गंगा नीवीं हो के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक आप अख्वाईआ। कत्तक कहे मैनूं कहिंदे कारतक, अक्खरां विच बदलाईआ। दीन दुनी हो जाणी सारी नास्तिक, इष्ट नज़र कोए ना आईआ। मैं संदेशा देवां इक्को वास्तक, वास्ता सब दे नाल पाईआ। बिना भगतां तों रहे कोए ना अस्तिक, प्रभ मिलण दी इच्छा ना कोए वखाईआ। नाम निकले ना किसे स्वास्तक, साह साह ना कोए समाईआ। जगत कल्पणा होई रूप राक्षश, मन मनुआ

नाल मिलाईआ। बिना भगतां तों प्रभ दा रिहा ना कोए उपाशक, उपाशना विच उपनिशदां कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा मालक इक्को ख़ालक, ख़लक रिहा सुणाईआ। मालक कहे पैग़म्बर मेरे ममनून, सजदा सीस झुकाईआ। मेरा बिन अक्खरां कानून, कायदा समझ कोए ना पाईआ। सारी सृष्टी अन्त होई महरूम, ख़ाली चारों कुण्ट नज़री आईआ। सदी चौधवीं ज़ुल्म दे नाल होणा मज़लूम, मज़्हब मज़्हब नाल टकराईआ। जिस ख़ुदा परमात्मा नूं कहिंदे बड़ा सूम, उस सूम ने मन मति दे जगत गफ्फे देणे वरताईआ। शरअ के कट्ठे कर हज़ूम, हुजरे धरत वाले वसाईआ। आप मस्ती विच झूम, दीन दुनी देणी लड़ाईआ। जन भगत बच्चे रहिण ना देणे मसूम, आपणी गोद उठाईआ। जिस दा हुक्म वरतणा नामालूम, मुलम्मे दे काचे भाण्डे सारे भन्न वखाईआ। जिस दी अन्त होणी इक रसूम, रसम विच इस्म सब दा दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर वड्डी वड वड्याईआ। कत्तक कहे प्रभ करे भगतां मेहरवानी, मेहरवान अख्वाईआ। जन भगत सूरबीर बणाए नौजवानी, जोबन आपणे नाल रंगाईआ। मालवे वाल्यो सुणना नाल ध्यानी, धर्म दी धार सुणाईआ। तिन्नां गुरमुखां जो पिच्छे दस्सी कहाणी, शब्दी धार सुणाईआ। जंगजू बहादर बण के नाल चढ़ना शानी, शहिनशाह संग रखाईआ। जिधर
१५३२ २२ फिरदा जाएगा उधर देणी ना पए कोए कुरबानी, सिर सब दे हथ्थ टिकाईआ। यारां दिन दी रसम महानी, रसम कर के दए वखाईआ। सृष्टी जदों होणी ते होणी यारां दिनां विच फ़ानी, एह गोबिन्द डल्ले गया सुणाईआ। कपूरे इहनूं कढ के दिती सी कोलों दवानी, दोहरी धार समझाईआ। जिस वेले गोबिन्द दी सिख्या होवे पुराणी, उस वेले गोबिन्द दा आवे धुर दा माहीआ। आपणा शब्द संदेशा देवे नाल ऐलानी, ऐलान शब्द वाला सुणाईआ। इक्को मालक हक अमामी, मुकामे हक सुहाईआ। कलयुग दी अन्त करन आया नीलामी, बोली इक्को वार जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आपणा आप सुणाईआ। मालवे वाल्यो तुहानूं पहलों दस्सया जंगी पाउणा लबास, भुल्ल रहे ना राईआ। एह वी हुक्म प्रभ दा ख़ास, जो ख़ालसे कोलों गोबिन्द गया छुपाईआ। महा सिँघ दी पूरी करनी आस, भागो दी आसा नाल रलाईआ। जिस कारन तुहाथों खेल खिलाया सी पत्ते ताश, भगत दरबारी वंड वंडाईआ। ओह सी सब तों वक्खरी दात, जेहड़ीआं इक दस तक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। कत्तक कहे मेरी नहीं काया, काया वाल्यो दयां जणाईआ। बिना भगतां तों प्रभू किसे ना पाया, पाहन पूजन वाले प्रभ मिलण कोए ना पाईआ। जगत झूठी कूड़ी माया, ममता मोह हल्काईआ। धन्नभाग

गुरमुखो तुहाडा वेला आया, वक्त वक्त नाल मिलाईआ। जिन्हां खुशीआं नाल पिछलीआं चौंह जुगां विच गाया, उहनां सहिजे ल्या मिलाईआ। कूड़ी क्रिया विच ना कोए रुलाया, रुलदयां गोद उठाईआ। इक्को वस्त्र तन पहनाया, सोहणा रंग रंगाईआ। ग़रीब निमाणयां बण के दाई दाया, दाइरे दीन दुनी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। साचे मार्ग साचे लाया, पन्थ मार्ग इक दरसाईआ। कत्तक कहे जन भगतो तुहाडा कर्मां दा गेड़ कटाया, जो सतिगुर सरनी सीस निवाईआ। राय धर्म ना दए सज़ाया, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। लाड़ी मौत ना ल्ए प्रनाया, सतिगुर शब्द नाल कुड़माईआ। तुहानूं उस धाम वसाया, जिथ्थे जन्मे कोए ना माईआ। इक्को नूर जोत रुशनाया, जोती जोत विच मिलाईआ। सतिगुर कदे ना होए पराया, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे आपणा घर जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। मुहम्मद कहे कत्तका मेरा लिबास सोहणा, लम्मी बांह कर के दयां जणाईआ। मेरा परवरदिगार नूर नुराना मोहणा, मोह मुहब्बत विच वड्याईआ। जिस ने कूड़ कुकर्म दा दाग़ धोणा, दुरमति मैल करे सफ़ाईआ। सति धर्म दा बीज बोणा, नाम फल इक लगाईआ। बौहड़ी जिस ने मैथों दिता सब कुछ खोहणा, सदी चौधवीं अन्त कराईआ। उम्मत उम्मती पए रोणा, रोंदयां सके ना कोए हसाईआ। मैं तकणा आपणे लोयणा, लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। विस्तर मिले ना किसे सौणा,
१५३३ सिंघासण सुख ना कोए रखाईआ। इयों जापदा कलयुग जीव धर्म राए दा प्राहुणा, मिल के इक्ट्ठे जावण चाँईं चाँईंआ। उथे १५३३
२२ कूड़ी तृष्ना विच कूक सुणाईआ। होका देवे जिस ने पंजां प्यारयां दा हथ्थ रखाया उत्ते धौणा, धौणों फड़ के सब दे सीस दए निवाईआ। राज गद्दी दा तख्त किसे ना डाहणा, सीस ताज ना कोए वखाईआ। शाह सुल्तानां फड़ हिलाउणा, प्रधानां इक्को धक्का लाईआ। धुर रुस्सया ना किसे मनाउणा, बाहों फड़ ना कोए उठाईआ। अग्गे हो ना किसे छुडाउणा, छुटकी लिव ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा लहिणा देणा पूर कराउणा, पूरब लेखा अवर रहे ना राईआ। २२

✪ २ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जठूवाल दीवाली दी रात नूं ✪

कलयुग कहे दीवाली मेरा लुट्टण आई सोना चांदी, चन्द सितार अक्ख खुल्हाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया भन्न्हण आई हाण्डी, उम्मत नबी रसूलां ध्यान लगाईआ। लेखा वेखण आई जन भगतां किस बिध चलदी कांडी, कांड दीन दुनी बदलाईआ। जिस झगड़ा मेटणा सूर गाँ ढांडी, ढंडोरा देवे अगम्म अथाहीआ। प्यार रहिणा नहीं आंढी गवांढी, संगी संग ना कोए बणाईआ। कलयुग अन्तिम सब दी पति जांदी, जांदी सके ना कोए अटकाईआ। गुर अवतारां पूरी करे तांघी, तृष्ना पैग़म्बरां लेखे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। कलयुग कहे दीवाली कढे मेरा दीवाला, दीवालीआ जगत जहान कराईआ। मैं अग्गे किस दा दयां अहिवाला, संदेशा संदेश विच्चों जणाईआ। की खेल करे पुरख अकाला, अकल कलधारी आपणा हुक्म वरताईआ। जिस ने लेखे लाया भगतां दा गुरमाला, गोबिन्द गढ़ी चमकौर गया जणाईआ। ओह लेखा वेखे अन्तिम हाला, हालत दीन दुनी खोज खुजाईआ। चारों कुण्ट होणा अंधेरा काला, कलि कल्की आपणा हुक्म वरताईआ। अग्गे समां रहे ना बाहला, जगत वंड ना कोए वंडाईआ। रातीं सुत्तयां दिने जागदयां बदल देवे चाला, चाल अवल्लड़ी इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। कलयुग कहे दीवाली करे केहड़ी कारी, की करनी कार कमाईआ। मुहम्मद लेखा रिहा विचारी, बिन नैणां नैण उठाईआ। नाता तुटदा जांदा चार यारी, याराना तोड़ ना कोए निभाईआ। चारों कुण्ट रैण अंध्यारी, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। मुहब्बत रहे ना किसे प्यारी, प्रेमी प्रीतम प्रेम ना कोए निभाईआ। चारों कुण्ट होणी ख्वारी, खार विच दिसे लोकाईआ। जिस ने भगतां दी लेखे लाउणी सीस चुक्की होई तग़ारी, तरह तरह आपणा हुक्म वरताईआ। सब दी अन्तिम करे बेएतबारी, एतबार सके ना कोए रखाईआ। उम्मत उम्मती करे ग़द्दारी साचा रंग ना कोए चढ़ाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आपणी कला वरताई ज़ाहरी, ज़ाहर ज़हूर खेल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप कराईआ। कलयुग कहे दीवाली लेखा वेखे सब दा उत्ते वही, खाते पूरब फोल फुलाईआ। जिस दी पैग़म्बरां पाई सही, सही सलामत नूर इलाहीआ। जिस ने भगतां लेखे लाउणी पहली कत्तक वाली कही, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। निरगुण धार बण मुदेई, मुद्दा वेखे थांउँ थाँईंआ। जगत चानणा चन्न कोए ना रही, रहमत रहीम ना कोए कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। दीवाली कहे मेरा किसे ना समझया, चानण, अक्खां वाल्यां नज़र कदे ना आईआ।

मैनूं कोटां विच्चों भगत सुहेले जानण, जिन्नां दी जननी मिले वड्याईआ। मेरा प्रकाश उत्ते असमानण, नूर नूर विच रुशनाईआ। मेरा सच घर दा कामन, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। मैनूं राम ने राम दा कीता ज़ामन, विचोला विचला इक बणाईआ। दीवाली कहे जिस वेले भगवन भगतां दे अन्दरों मेटे अंधेरी शामन, शमा नूर जोत करे रुशनाईआ। उस वेले प्रकाश होवे कोटन भानन, जगत दीपक दी लोड़ रहे ना राईआ। हरिजन तकण ज़िमी असमानण, ज़िमीं असमान तों बाहर इक्को नूर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। दीवाली कहे मैनूं सब ने किहा दौली, दौलतमंद अख्वाईआ। मेरा खेल उपर धौली, धरनी धरत धवल सुहाईआ। मैं सच दस्सां दीनां मज़्हबां दी कीमत नहीं रहिणी पौली, रुपईआ रोक ना कोए वखाईआ। सब दा लेखा मुकणा हौली हौली, हौले भार सर्ब दए वखाईआ। मैं जुग चौकड़ी होई नहीं तौली, आहिस्ता आहिस्ता आपणा पन्ध मुकाईआ। नव नौ चार पिच्छों जन भगतां फ़र्कन डौली, डांवाडोल होए लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा पूरा करे धरनी नाल धौली, धर्म दी धार नाल बंधाईआ।

✪ ३ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ करतार सिंघ, ठाकर सिंघ, गुरा सिंघ, इन्द्र कौर बोहड़ू, गुरबचन कौर मलकपुर, चरणजीत कौर गमटाला, सरमुख सिँघ माल मंडी तरनतारन, पिण्ड निज़ामपुर ज़िला अमृतसर ✪

कबीर कहे उठ वेख रविदासा, रवी बिन नैणां नैण उठाईआ। खेल करे की पुरख अबिनाशा, अबिनाशी करता धुरदरगाहीआ। जेहड़ा आदि अन्त ना कदे विनासा, जुग जुग भगतां होए सहाईआ। मण्डल मण्डप पावे रासा, निरगुण निरगुण गोपी काहन खेल खिलाईआ। कलयुग अन्तिम वेखे खेल तमाशा, ख़ालक ख़लक नूर इलाहीआ। जोती जोत जोत शाहो शाबाशा, शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। जो निरगुण धार निरवैर हो के हर घट अन्दर रखे वासा, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। जिस नूं झुकदे पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतर सीस झुकाईआ। ओह दिसे गुरमुखां दासा, दासी दास धुरदरगाहीआ। जिस नूं वेख के आउंदा हासा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। रविदास कहे सुण कबीरा, कबरां तों बाहर दयां जणाईआ। पुरख अकाला गहर गम्भीरा, गवर इक अख्वाईआ। जो माण बख्शे पंज तत सरीरा, तन माटी आपणे रंग रंगाईआ। जिस मैनूं बख्श्या इक कसीरा, गंगा गंगोतरी लई प्रगटाईआ। बख्श्या

अथाह हीरा, जगत कीमत ना कोए चुकाईआ। सो कलयुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां सीस बख्शे चीरा, चिरी विछुन्ने आप मिलाईआ। दीन मज़्ह़ब शरअ दीआं तोड़ ज़ंजीरा, आत्म परमात्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। पन्ध मुका के शाह अमीर हकीरा, चार वरन दए वड्याईआ। सच प्रीती बख्श हस्त कीड़ा, कीट कीटां होए सहाईआ। गुरमुखां प्रेम प्यार दा बख्श के लीड़ा, ओढण नाम वाला सीस टिकाईआ। अग्गे मार्ग रहिण ना दए भीड़ा, चुरासी फाँसी ना कोए लटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। कबीर कहे सुण रवी चमरेटे, चम्म दृष्टी तों बाहर जणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल ग़रीब निमाणे बणाए आपणे बेटे, पिता पूत आपणी गोद सुहाईआ। जिस ने चार जुग दे लहिणे कीते चेते, चेतन हो के सब नूं रिहा उठाईआ। निरगुण धार हो के आत्म परमात्म वेखे, पारब्रह्म ब्रह्म आपणे रंग रंगाईआ। मानस जन्म लाए लेखे, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। जन भगतां कढे भरम भुलेखे, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। नाम जणा धुर संदेशे, तूं मेरा मैं तेरा करी पढ़ाईआ। जन्म जन्म दी कर्म कम दी बदल के रेखे, बिधना दा लहिणा दिता चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। कबीर रविदास कहिण प्रभू प्रभू बेअन्त, बेअन्त तेरी वड्याईआ। तूं साजण मीत कन्त, कन्तूहल तेरी सरनाईआ। कोझयां कमल्यां बणाएं गुरमुख हरिजन साचे सन्त, भगवन आपणा रंग रंगाईआ। कलयुग विच सतिजुग दे मणीआ मंत, नाम निधाना इक दृढ़ाईआ। गुरमुखां लेखा मुका के जीव जंत, जागरत जोत करें रुशनाईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म रिहा समझाईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, आत्म परमात्म परमात्म आत्म पड़दा दएं उठाईआ। झगड़ा मेट के जेरज अण्डज, उत्भुज सेतज लेखा दएं गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। पुरख अकाल कहे सुणो भगत भगत जन मीता, आत्म ब्रह्म दृढ़ाईआ। मेरी आदि जुगादी रीता, नित नवित खेल खिलाईआ। अन्तिम सब दा वेला बीता, बातन पड़दा लओ उठाईआ। झगड़ा मेटणा मन्दिर मसीता, काया काअबा कर रुशनाईआ। जन भगत बणा त्रैगुण अतीता, त्रैभवण धनी होए सहाईआ। लहिणा रहे ना साढे तिन्न हथ्थ सींअ का, सच दुआर दए वड्याईआ। लेखा पूरा करे जीवण जी का, जागरत जोत डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सति इक समझाईआ। जन भगत कहिण प्रभ तेरा खेल अगम्मा, अलख अगोचर तेरी वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी तेरा वेखीए समां, समाप्त हुन्दी जाए लोकाईआ। भरोसा रिहा ना किसे दमां, दामनगीर ना कोए अख्वाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख तेरा चन्ना, चन्द तेरा करे रुशनाईआ। नव नौ

१५३६ २२

चार दिसे ग़मा, ग़मी ग़मखार ना कोए मिटाईआ। तेरा हुक्म संदेशा सब ने सुणना नवां, नव खण्ड सृष्टी दृष्टी अन्दर देणा जणाईआ। पिछली धार रहे ना बन्ना, ब्राह्मण क्षत्री शूद्र वैश एका रंग रंगाईआ। कल्पणा कूड़ रहे ना मना, मन मनसा देणी गंवाईआ। जन भगत सुहेले जगा के धुर दी शमा, अंध अज्ञान देणा मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक्को वर, देवणहार तेरी सरनाईआ। पुरख अकाल कहे जन भगतो दया कमावांगा। निरगुण नूर जोत रुशनावांगा। जोती जोत डगमगावांगा। शब्दी शब्द धार प्रगटावांगा। साचा डंका नाम सुणावांगा। दवार बंका इक वखावांगा। सम्बल नगर रंग रंगावांगा। अमाम अमामा वेस धरावांगा। कलि कल्की कल जणावांगा। निहकलंक नरायण नर अखवांगा। जन भगतां बण के साक सैण, सज्जण इक्को इक दरसावांगा। कलयुग क्रिया नाता तोड़ के भाई भैण, पिता पूत वंड वंडावांगा। सब दा पूरा करां लैण देण, वस्त अनमुलड़ी नाम वरतावांगा। गुरमुखां दरस दिखा के तीजे नैण, दोए लोचन रंग रंगावांगा। रूप दस्स के ऐन दा ऐन, निरगुण नूर डगमगावांगा। जिस नूं सके कोए ना कहिण, रसना जेहवा नाल सिफ्त सालाहांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग अन्त श्री भगवन्त हरिजन साचे (सति) सरूप, सति सतिवादी सति प्रगटावांगा।

✪ ६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ सन्ता सिँघ बाऊपुर दे नवित
हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

नारद कहे मैं पंडत बड़ा विशेष, विषयां विच कदे ना आईआ। मैं ध्रू नूं दिता उपदेश, भगवन दी भगती विच लगाईआ। बाल अवस्था लेखे ला नरेश, मतरेई दा डेरा दिता ढाहीआ। जिस दी याद सदा रही हमेश, जुग जुग मिली वड्याईआ। जिस दा वक्खरा अगम्मड़ा लेख, लेखा लिख ना कोए समझाईआ। मैं सब कुझ रिहा वेख, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। इक दस्सां सच संदेश, धुर फ़रमान अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे जिस वेले ध्रू घरों होया रवाना, जग ममता मोह तजाईआ। रखया एका इक ध्याना, अन्दरे अन्दर ध्यान लगाईआ। मिले मेल श्री भगवाना, भगवन मिल के वज्जे वधाईआ। आस रही ना राज राजाना, बाल अवस्था रईयत दिती तजाईआ। चलया विच बीआबाना, जंगलां रुत सुहाईआ। तक्कया इक निशाना, निशान एकँकार नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप कराईआ। नारद

कहे जिस वेले धूू निकलया बाहर शहर, नगरी दिती तजाईआ। देसू पंडत निकलया करन सी सैर, अमृत वेला खुशी मनाईआ। उस हस्स के किहा राजन बेटे क्यों करन लग्गा कहर, भगवन हथ्थ किते ना आईआ। असीं पंडत करदे मेहर, जजमानां वेख वखाईआ। क्यों कूड़ी खाण लग्गा ज़हिर, गृह मन्दिर आप तजाईआ। झट अग्गे डाहया पैर, ज़ोर नाल दबाईआ। मैं कोई पंडत नहीं कायर, सूरबीर नज़री आईआ। मेरा तेरे नाल नहीं कोई वैर, शत्तरू रूप ना कोए बणाईआ। वापस मुड़ जा नहीं ते मैथों नहीं कोई ख़ैर, ख़ैरखाही नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। नारद कहे ब्राह्मण ने ज़ोर नाल मारी अड्डी, लत्त अग्गे दिती अटकाईआ। आह वेख धरती उत्ते गड्डी, इस नूं सके ना कोए उखड़ाईआ। कमलया तूं क्यों राज गद्दी जांदा छड्डी, पंडतां तों बिना गुरु नज़र कोए ना आईआ। मैं तुहाडा ब्राह्मण पुश्त ते यद्दी, यदी राज तिलक दयां लगाईआ। तैनूं जाण नहीं देणा बदो बदी, अग्गे हो के ज़ोर वखाईआ। धूू हस्स के किहा मेरी आत्मा किसे नहीं बद्धी, बदला सके ना कोए चुकाईआ। मेरे अन्दर प्रभू दे मिलण दी जोत जगी, जगह जगह करे रुशनाईआ। मैनूं कोई वस्त अच्छी नहीं लग्गी, कूड़ कुड़यार दिसे लोकाईआ। तुसीं ब्राह्मण बड़े लबी, लोभ लालच विच हल्काईआ। मैं पाउणा अमरापदी, पतिपरमेश्वर मिल के वज्जे वधाईआ।
१५३८
२२ पंडता अग्गों जा हटी, हठ नाल बाले दिता सुणाईआ। नहीं ते तेरी अड्डी जावेगी कटी, कटाक्ष नाम वाला लगाईआ। जोती १५३८
२२
जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ। झट ब्राह्मण नूं आई सुरत, आपणा आप बदलाईआ। पैर पिच्छे कीता तुरत, नेत्र नैण शरमाईआ। साहिब अकाल मूर्त, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। जिस दी नाद अगम्मी तुरत, तूरत आपणा हुक्म सुणाईआ। धूू हस्स के किहा पंडत जी तुसां चंगी कीती महूरत, मोहर मैं उत्ते दयां लगाईआ। हुण मैनूं प्रभ दे मिलण दी ज़रूरत, ज़रूरी घर बाहर तजाईआ। करना दरस नूरी नूरत, नूर नुराना वेख वखाईआ। पर याद कर जिस वेले कलयुग अन्त सृष्ट सबाई होई कूड़त, कूड़ी क्रिया संग रखाईआ। चतुर सुघड़ बणन मूढ़त, अक्ल बुद्धी ना कोए वड्याईआ। उस वेले प्रभ नूं भगतां दी फेर पए ज़रूरत, हरिजन लभ्भे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। धुरू हस्स के किहा पंडत जी औह वेख मुकदी वाट, पन्ध रहे ना राईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा होवे हाट, सच धर्म ना कोए वखाईआ। उस वेले पुरख अकाल इक भगत दवार बणाए ताट, तीर्थ नज़र कोए ना आईआ। सब दी सांझी करे ज़ात, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। जेहड़ा मैनूं तूं अग्गे हो के रोक्या आप, आपणा बल प्रगटाईआ। इस दा लेखा ज़रूर देवेगा मेरा बाप,

पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। तूं हँकार विच कीता पाप, मेरा रस्ता बन्द कराईआ। जेहड़ी अड्डी पैर धरनी दिता थाप, ज़ोर नाल दबाईआ। एहदा लेखा ज़रूर मिले साख्यात, हरि सतिगुर आप दवाईआ। भगत दवारे तेरा पैर रोकण वाला जाए पाट, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। फेर तेरा लहिणा देणा देवे काट, जन्म मरन दा गेड़ चुकाईआ। एसे कारन पूरब लेखे दी सन्त सिँघ नूं लग्गी साट, पिछली कीती भुल्ल कदे ना जाईआ। अग्गे रखे सिर दे कर हाथ, समरथ होए सहाईआ। सत्त कत्तक नूं सारी बाबूपुर दी संगत ने सन्ता सिँघ पिच्छे कराउणा प्रशाद, भगत भगतां नाल मिलाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश दा वख रहे ना कोए समाज, समग्री इक्को इक दसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग जुग सब दा लहिणा देणा लेखा रखे याद अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ।

✪ ७ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ सन्ता सिँघ दे नवित पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर ✪

ध्रू कहे जिस वेले मैं आ गया आपणे पत्तन, पंडत सक्या ना कोए अटकाईआ। मेरा साथी मेरे वल्ल वेखे जिस दा नाम रत्न, रतू कहि के पुकारे जगत लोकाईआ। मैनूं दिती सच्ची मत्तन, सति सच नाल समझाईआ। ज़रूर प्रभू दा दर्शन करीए अक्खण, नेत्र नैण उठाईआ। जे तेरे पिच्छे ओह मित्रा मैनूं आवे फेर रखण, मेहरवान फेरा पाईआ। ध्रू हस्स के कीता बचन, सहिज नाल सुणाईआ। मैं ते चलया अजे लभ्भण, भज्जणा वाहो दाहीआ। जे मिल्या मेरा मैनूं सज्जण, मैं संदेशा देवां चाँईं चाँईंआ। झट नारद लग्गा गज्जण, कूक कूक दुहाईआ। सुणया अगम्मी नदन, शब्द नाम शनवाईआ। एह काया माटी भाण्डे सब दे भज्जण, अन्त रहिण कोए ना पाईआ। कोटन कोटि शाह सुल्तान एथों लद्दण, अन्त नज़र कोए ना आईआ। जुग चौकड़ी वहिण वगण, भज्जण वाहो दाहीआ। जिस वेले पंडे नूं चाढ़ी रंगण, रंगत रंग रंगाईआ। उस दी लेखे लाए अड्डी गड्डण, गॉड आपणा खेल खिलाईआ। उस वेले फेर जन्म लैणा तेरे रत्न, रतू प्रभ रंग रंगाईआ। जिस दा नाम होणा सिँघ वतन, बतन सिँघ एसे करके ल्या मिलाईआ। प्रभ दे हुक्म अग्गे किसे दा चले कोए ना यतन, यथार्थ आपणा हुक्म वरताईआ। जो प्रेम प्यार मुहब्बत विच फसण, जगत तृष्ना सके ना किसे छुडाईआ। एह दोवें इक्को घर वसण, मेल मिलावा होवे सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ। ध्रू कहे नारद मन्न उपदेशा, उपनिशदां दी लोड़ रही ना राईआ। मालक मेरा मिले हमेशा,

हमसाजण बेपरवाहीआ। जिस दा जुग जुग अवल्लड़ा वेसा, नित नवित आपणी कार कमाईआ। जन भगतां जाणे लेखा, लेख लिख्त नाल समझाईआ। जुग चौकड़ी खोल्हे भेता, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। कलयुग अन्तिम बण के आवे नेता, नर नरायण धुरदरगाहीआ। सब दा कौल इकरार पूरा करे ठेका, ठाकर आपणी कार भुगताईआ। अभुल्ल कदे ना भुल्ले चेता, चेतन सब नूं दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। धू कहे ओह वक्त होणा सुहाउणा, सोहणी रुत बणाईआ। पुरख अबिनाशी खेल खिलाउणा, ख़ालक ख़लक बेपरवाहीआ। मैं साचा बचन जणाउणा, जाणकारी दयां कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप वरताईआ। धू कहे अस्सू तिन्न दी वेखो गाथा, की गई दृढ़ाईआ। जिस दा लेख सी मस्तक माथा, भेख बेपरवाहीआ। सो साहिब सर्ब कला समराथा, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस ने सच दी सच नाल पाई रासा, रसम आपणी इक जणाईआ। हरिसंगत दे भरवासा, बाबूपुर गया समझाईआ। गुरसिख पिच्छे हरि भगवन आवे नासा, भज्जे वाहो दाहीआ। जगत जहान बणे राखा, एथे उथे होए सहाईआ। अन्दर बाहर सब दीआं सुणे बातां, अणसुणत आपणी दया कमाईआ। जीवण मरन दोवें जोड़े नाता, बिधाता आपणा खेल खिलाईआ। भगत दा बचन सतिगुर
१५४० दा आखा, कलयुग अन्तिम पूर कराईआ। सन्ता सिँघ दी अन्त मुकणी सी वाटा, वटा सत्त कत्तक ध्यान लगाईआ। जोती १५४०
२२ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक दया कमाईआ। सत्त कत्तक कहे लेखा २२
लिख्या बिन कलम दवात, राय धर्म चित्रगुप्त वेखे नैण उठाईआ। जिस सन्ता सिँघ दा लेखा मुकणा सी अज्ज दी रात, साढे दस दा वक्त सुहाईआ। तन वजूद दा छुट्टणा सी नात, माटी चम्म ना संग वखाईआ। तिस उत्ते किरपा कीती पुरख अबिनाश, अबिनाशी करते मेहर नज़र उठाईआ। स्वास विच्चों बख्श स्वास, पाताल आकाश दा पन्ध मुकाईआ। जन्म विच्चों जन्म दे के आज, पिछली अज़ल तों ल्या बचाईआ। जिथ्थे पुज्ज ना सके कोई योगराज, भगती भगत ना कोए चतुराईआ। जिस नूं समझे ना कोए समाज, समस्सया हल्ल ना कोए कराईआ। जिस दे प्यार विच हरिसंगत कराया प्रशाद, बाबूपुर संगत मिली वड्याईआ। एह लेखा इक दा इक वाहिद, वाहिदा पिछला पूर कराईआ। जेहड़ा पंडत तों नाई नाई तों जट्ट बण गया खेल होया लाजवाब, भेव अभेद ना कोए दृढ़ाईआ। जिस नूं समझ ना सके अक्खरां वाली कोई किताब, कुतबख़ाने रोवण मारन धाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। कत्तक कहे मेरी दुहाई, सति सति सीस निवाईआ। मैं वेखां बणके राही, भज्जां वाहो दाहीआ। जिस दा लहिणा देणा

दो दो बाई, बावन आपणी कार भुगताईआ। जिस दा हुक्म बदल सके कोए ना राई, रईयत दो जहान सीस निवाईआ। जिस दी शहादत हरिसंगत दए गवाही, गवाह अवर ना कोए रखाईआ। जिस नूं जन्म वेले लभ्भणी पई कोई नहीं दाई, दाई दाया आपे हो के जन्म दिता बदलाईआ। उस दी प्रीती उस दी खुशी सवाई, हरि सज्जण वड वड्याईआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी देवणहार वड्याई, वड वड्डा इक अख्वाईआ। परवार नालों होण नहीं दिती जुदाई, विछोड़े नालों जोड़ा दिता बणाईआ। बतन सिँघ बातन भेव खुलाई, गुज्झी रमज़ नाल जणाईआ। सतिगुर बचन कदे ना समझो अजाईं, जो भगत दवारे विच बहि के दए सुणाईआ। जो कुछ करे सो करे तुहाडे थाँईं, परथाए तुहाडी कार कमाईआ। जन भगतो तुसीं साहिब ते ओह तुहाडा साँईं, दोहां दा मेला नूर इलाहीआ। सत्त कत्तक सुहञ्जणा सब ने खुशी मनाउणी चाँईं चाँईं, चिन्ता ग़म ना कोए रखाईआ। सतिगुर हो के गुरसिक्खां पकड़े बांही, फड़ बांहो बाहर कढ्ढाईआ। राय धर्म ना दए सज़ाई, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। जिस नाम दी प्रीती आपणे नाल लगाई, अन्तिम देवे तोड़ निभाईआ। जन भगतो तुहाडे पिच्छे नहीं आपणे प्यार पिच्छे आया वाहो दाही, सेवा गुरसिख लेखे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द शब्द गुर पूरन, पूरब लेखा रिहा चुका। वड दाता
१५४१ योधा योध सूरन, बेपरवाह अगम्म अथाह। जोती जाता नूरी नूर नूरन, नूर नुराना नूर अलाह। गुरमुखां आसा मनसा करे १५४१
२२ पूरन, जगत तृष्ना तृखा दूर करा। सच प्रीती बख्श के जाए धूढ़न, टिक्के नाम प्रेम दे दए रमा। इक्को रंग चढ़ाए गूढ़न, २२
जगत जहान उतरे कदे ना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि सदा हाज़र हज़ूरन, विछोड़े विच विछड़े कदे ना।

✪ ७ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ सारी संगत दे प्रशाद कराउण ते पिण्ड अल्लड़पिण्डी ज़िला गुरदास पुर ✪

चन्द सितार बदल के मुख, सन्मुख हो के रहे जणाईआ। परवरदिगार दा तक्कीए रुख, रुख़सत सब नूं रिहा दवाईआ। खेल तक्कीए मानस मानुख, मानव मानव ध्यान लगाईआ। चारों कुण्ट तृष्ना भुक्ख, सांतक सति ना कोए वरताईआ। कूड़ कल्पणा लग्गा दुःख, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। धरनी पवित्र दिसे कोए ना कुख्ख, जनणी रोवे मारे धाईआ। अवतार पैग़म्बर बैठे चुप, धुर शब्द ना कोए शनवाईआ। सब दा सूर्या रिहा छुप, नूर नूर ना कोए कराईआ। धर्म दा दिसे कोए

ना सुत, अपराधी वेखे थांउँ थाँईंआ। चारों कुण्ट अंधेरा घुप्प, घुम्मण घेरी विच लोकाईआ। मुहम्मद तकदा जिस कटाई दाढ़ी मुच्छ, मुश्किल हल्ल ना कोए कराईआ। किसे दे कोल नहीं कुछ, खाली हथ्थ भज्जण वाहो दाहीआ। सदी चौधवीं परवरदिगार रिहा रुस्स, करवट आपणी रिहा बदलाईआ। बौहड़ी साडा माण ताण जाणा खुस, खुशीआं ढोले कोए ना गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। तारा चन्द कहे वेखीए आपणा अब्बा, अवल्ल अल्ला नूर इलाहीआ। जिस दा खेल आदि जुगादि सबा, सभा मलेछां दए मिटाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे हद्दा, हदूद जगत रहे ना राईआ। धुर संदेशा देवे सद्दा, हुक्मी हुक्म आप दृढ़ाईआ। सब दा वक्त जांदा लद्दा, लहिंदा चढ़दा ध्यान लगाईआ। हुक्मे अन्दर दो जहान बध्धा, बन्दगी विच सीस निवाईआ। कलयुग अन्तिम किसे दा रहिणा नहीं अग्गा, अग्गे पीहड़ी ना कोए वधाईआ। करे खेल सूरा सरबगा, हरि करता धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं सब नूं चखावे मज़ा, मज़ाक सब दा वेख वखाईआ। दुहाई सब दे सिर ते कूकदी कज़ा, काज़ी मुल्लां रोवण मारन धाईआ। कोई ना चले प्रभ दी विच रज़ा, राज़क रिज़क रहीम वेखे थांउँ थाँईंआ। सदी चौधवीं सब नूं मिलणी सज़ा, साहिब सतिगुर आपणा हुक्म सुणाईआ। जिस दी समझे कोए ना वजह, पड़दा सके ना कोए उठाईआ। सो स्वामी जन भगतां रखे लज्जा, परवरदिगार दया कमाईआ। तारा चन्द कहे जगत खोज्जयां किसे ना लभ्भा, वेखण विच नज़र कोए ना आईआ। जिस दा मेल हुन्दा नाल सबब्बा, सब दा मालक होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। तारा चन्द इक दूजे वल्ल रहे तक, तकवा बेपरवाहीआ। खेल वेखीए हक, हकीकत दए समझाईआ। रहे कोए ना शक, संसा नज़र कोए ना आईआ। की परवरदिगार हुक्म देवे यक्क, एकँकार आपणी कार भुगताईआ। उठ वेखीए बिना अक्ख, बिन अक्खरां करे पढ़ाईआ। जिस ने सब दे भाण्डे करने सक्ख, वस्त सच ना कोए टिकाईआ। प्रगट हो आप प्रतक्ख, गुरमुख पारस लए बणाईआ। सृष्टी नालों करके वख, वक्खरा आपणा हुक्म सुणाईआ। जैकारा दस्स अलख, अलख अगोचर करे पढ़ाईआ। अमृत आत्म दे के रस, हरिजन हिरदे आप चुआईआ। जन भगत सुहेले प्रकाश दे रवि शशि, आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन साचे करके वस, वसल यार बख्शे इक खुदाईआ।

✪ ८ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ हरिसंगत नवित
पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदास पुर ✪

रावी कहे मैं खिड़ खिड़ा के हस्सां, हस्स हस्स खुशी बणाईआ। चढ़दे लहिंदे नस्सां, भज्जा वाहो दाहीआ। धुर संदेशा दस्सां, जो गुर अर्जन गया समझाईआ। मेरीआं पुकारन उछल्लां ते लस्सां, धार धार रूप बदलाईआ। वक्त पहुँचया मसां, मस्ती विच दयां सुणाईआ। खुशी मनाउणी रवि शशा, सितार सति नाल वड्याईआ। चौदां कत्तक नूं लिखारीआं करया होवे कमरकसा, पगड़ी सीस उत्ते सुहाईआ। सिफ्ती सिफ्त गाउणा जसा, महिमा अगम्म अथाहीआ। यारां दिन शब्द गोबिन्द दी चले कथा, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। सतिगुर दे मैहन्दी लग्गी होवे हथ्थां, उँगलां दस रंग रंगाईआ। नाल रखणा इक भथ्था, पीले रंग विच बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक जणाईआ। रावी कहे रविदास दे सिर पग्ग होवे नीली, नीलकंठ रिहा जणाईआ। कोल माचस रखणी लाउण वाली तीली, डब्बी जेब विच टिकाईआ। साढे दस हथ्थ डोरी संग होवे पीली, पीले वस्त्र नाल वड्याईआ। धर्म दी धार होवे असीली, असल असल विच्चों प्रगटाईआ। सतिगुर खेल खेल नहीं दलीली, धुर दा हुक्म हुक्म जणाईआ। जिस दी करे ना कोए अपीली, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। रावी कहे मेरी आह मेरे अल्ला, अलहिदा हो के दयां जणाईआ। बेशक तेरा रूप सदा इकल्ला, अकल कलधारी आप अखवाईआ। जुग जुग बणके अछल अछला, वल छल आपणी धार समझाईआ। हुण लेखा पूरा करना जो गोबिन्द किहा डल्ला, भविख भविश नाल मिलाईआ। वेखणा ज़िमीं असमानां तला, ताकतवर आपणी दया कमाईआ। फेर खेल वेखणा जला थला, थल रहे कुरलाईआ। तेरा हुक्म होवे विच दोहां दला, संदेशा अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। रावी कहे मेरे महिबूबा, माशूक आशक दा रूप दे जणाईआ। जो अर्जन बणाया मेरे अन्दर वड़ मनसूबा, बिन सुबह शाम ध्यान लगाईआ। ओह खेल दस्स अजूबा, पड़दा देणा उठाईआ। जगत विचार होए बेहूदा, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। सब दी आशा करनी नेस्तोनाबूदा, जड़ रहिण कोए ना पाईआ। मैनूं इक्को बचन सच्चा सूझा, सच दयां सुणाईआ। जिस गृह विहार होवे ओह गुरमुख पेश करया करन इक इक कूज़ा, कुझ होर ना संग रलाईआ। विच्चों भाव निकले दूजा, दुतीआ रहे ना राईआ। इक कुम्भ माटी दा कोल रखया होवे मूधा, जल पाणी ना कोए भराईआ। सवा सेर आटा होवे गूंदा, तौण इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। रावी कहे मैनूं याद आ गया गुरसिख गुरसिक्खां उतों टप्पे, कन्ढे मेरे खुशी बणाईआ। आपणी छाती उत्ते मेरे लाउंदे गए ठप्पे, आपणी छाती मेरी छाती नाल छुहाईआ। मेरे ठंडे होए हिरदे तपे, गुर अर्जन दए गवाहीआ। मेरे हट्ट उत्ते पूरन परमेश्वर दे मिले पते, पतिपरमेश्वर दया कमाईआ। गुरसिख नाम खुमारी विच रत्ते, रत्न अमोलक वेख वखाईआ। जिन्हां दे सीस उत्ते सतिगुर रखया हथ्थे, जगत ओढण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। रावी कहे मेरी वेखो मस्ती, मस्त मस्तानिउँ दयां जणाईआ। इक्को तक्को हस्ती, जो हस्त कीटां दए वड्याईआ। सब दा लेखा पूरा करे दस्ती, दस्त दस्त नाल मिलाईआ। जन भगतो तुहाडी सदा वसदी रहे बस्ती, जगत खेड़यां डेरा ढाहीआ। तुहानूं प्रेम दी भगती मिली सस्ती, सतिगुर कीमत ना कोए लगाईआ। जेहड़ी आसा रखी सी अन्दरे अन्दर भगत नरसी, प्रहलाद नर सिँघ दिता जणाईआ। जेहड़ी धार गोबिन्द तकी सी सरसी, सरसा साह साह ध्याईआ। ओह लेखा करे प्रीतम अर्शी, मालक धुरदरगाहीआ। जन भगतो तुहाडी खुशीआं वाली बरसी, खुशहाली विच वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। रावी कहे मैं साहिब दे चरण चुम्मा, आपणी

१५४४ मैल धुआईआ। जिस दीआं दो जहान पैणीआं धुंमा, चार कुण्ट होवे रुशनाईआ। उस दा खुशीआं वाला होणा इक्को जुंमा, १५४४

२२ जिस नूं सारे लैण मनाईआ। कूड़ कुड़यारा रहिण नहीं देणा कौड़ा तुंमा, तुख्म तासीर देणी बदलाईआ। ओह अर्श फ़र्श २२

घुंमा, भज्जे वाहो दाहीआ। जिस दा अस्व मारे सुम्बा, दीन दुनी रिहा हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी साची खेल खिलाईआ। रावी कहे मेरा साहिब रंगला, रंगत बेपरवाहीआ। जिस दा इक्को इक बंगला, महल्ल अटल वज्जे वधाईआ। फिरे दरोही विच जंगला, जूहां नैण वहाईआ। जन भगतां होवे चार मंगला, खुशीआं रंग रंगाईआ। सतिगुरु दवारे ना कोई शाह ना कोई कंगला, इक्को देवे माण वड्याईआ। जिस नूं अन्त सब ने करनी बन्दना, बन्दगी विच सीस झुकाईआ। मानणा सुख अनन्दना, अनन्द सुख विच समाईआ। उस अर्शी प्रीतम दा शब्दी धार चढ़या चन्दना, चन्द सितार नैण शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची करनी कार कमाईआ।

✪ १४ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ सोहण सिँघ मुंडी जमाल, इन्द्र सिँघ कादर वाला, सरदारा सिंघा मनांवा,
हरनाम कौर तलवंडी नौ बहार, अनन्त सिँघ उमरीआणा, केहर सिँघ रजीवाल, मल सिँघ रजीवाल
गुरदेव सिँघ रजीवाल, बलवन्त सिँघ तलवंडी जले खां, चमकौर सिँघ मनावा,
जरनैल सिँघ शाहवाला, गुरदास सिंघ, करतार सिंघ,
निरँजण सिंघ, गुरबंस कौर चबा, करतार कौर रटौल,
माधा सिँघ रामूवाला, गुरबचन सिँघ सदा सिँघ वाला,
गुरदयाल सिँघ सदासिंघ वाला,
पिण्ड मनांवा ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

चौदां कत्तक कहे मेरी सुहञ्जणी राती, रुतड़ी पुरख अकाल दीन दयाल मात महकाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला देवे दाती, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। अवतार पैग़म्बर गुर मारन झाती, सचखण्ड दवार निरगुण धार ध्यान लगाईआ। किस बिध भगतां मिले बूँद स्वांती, हरि अमृत नाम प्याईआ। कलयुग वेले अन्तिम पुछे वाती, समरथ सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सब दा पूरा करे भविक्ख्त वाकी, खोजणहारा नूर इलाहीआ। शब्द घोड़े अस्व चढ़ के राकी, रहिबर हो के वेखे थांउँ थाँईंआ। की खेल तक्कीए पुरख अबिनाशी, अबिनाशी करता की कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण चौदां कत्तक करो ध्यान, अनदृष्ट वेख वखाईआ। गोबिन्द शब्द बोले सूरा नौजवान, मर्द मर्दाना इक सुणाईआ। वेखो खेल श्री भगवान, की करता कार कमाईआ। जिस नूं झुकण ज़िमीं असमान, दो जहान डण्डावत बन्दना विच निव निव लागण पाईआ। ओह ख़ालक ख़लक खेल करे महान, महिमा अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। चौदां कत्तक कहे मैं तकणा खेल सूरा सरबंगी, हरि करता ध्यान लगाईआ। जिस दा गोबिन्द सूरा इक्को बहादर जंगी, जंगजू अख्वाईआ। जिस दी त्रैलोकी धार तरंगी, दो जहानां वेख वखाईआ। जिस कारन सदी चौधवीं लँघी, आपणा पन्ध मुकाईआ। हुक्म संदेशा मिलण वाला फ़रंगी, फ़ारस विच पए दुहाईआ। उम्मत आयू रहे ना लम्बी, अग्गे अवर ना कोए वधाईआ। परवरदिगार सब ते लाए पाबन्दी, सिर सके ना कोए उठाईआ। जो संदेशा दे के गया गोबिन्द विच पुर अनन्दी, अनन्द पुर सुणाईआ। जगत सिंघासण उलटी होणी मंजी, मजलस कूड़ रहे ना राईआ।

जगत विकार रहे ना दंभी, भेख पखण्ड दए चुकाईआ। शब्द सतिगुर सतिगुर शब्द इक्को खण्डा ते इक्को चण्डी, चण्डालां करे अन्त सफ़ाईआ। पुरख अकाला इक्को मार्ग पन्थ दस्से डण्डी, डण्डावत सब दी दए बदलाईआ। लेखा जाणे जेरज अंडी, उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। इक खेल करे अचंभी, जगत बुद्धी तों बाहर प्रगटाईआ। सदी चौधवीं वेला आवे अन्तिम कन्ढी, कन्ढी बैठा ध्यान लगाईआ। जन भगतां चुरासी विच्चों देवे पवण ठंडी, साह साह आपणा आप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ। गोबिन्द कहे मैं सतिगुर शब्द शब्दी शब्द गुरदेवा, देव आत्म वेख वखाईआ। मेरा रूप अलख अभेवा, अगोचर कहिण कोए ना पाईआ। कथनी कथ सके कोई ना जेहवा, रसना विच ना कोए वड्याईआ। जन भगतां बख्शां नाम भण्डार मेवा, अनरस इक चखाईआ। कौस्तक मणीआ मस्तक लावां थेवा, थिर घर दा पड़दा दयां चुकाईआ। मेल मिलावां निहचल धाम निहकेवा, निरगुण इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। गोबिन्द शब्द कहे आदि अन्त इक स्वामी, निरगुण निरवैर वड वड्याईआ। लख चुरासी अन्तरजामी, अन्तष्करन वेखे ख़लक खुदाईआ।
१५४६ जो अवतार पैग़म्बरां गुरुआं बणया बानी, बाणी कलमा नाम दिता पढ़ाईआ। खेल कर ज़िमीं असमानी, दो जहानां आपणा १५४६
२२ पड़दा लाहीआ। शाह पातशाह शहिनशाह नूर नुरानी, नूर नुराना डगमगाईआ। जो लहिणा देणा लेखा जाणे तमामी, निरगुण २२
सरगुण सरगुण निरगुण पड़दा आप चुकाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त अंधेरा मेटे शामी, शमा नूर जोत करे रुशनाईआ। जगत ज़ंजीर कटे गुलामी, गुरबत अन्दरों दए कढुाईआ। जन भगतां उपर मेहरवान करे मेहरवानी, सीस दस्तार इक सुहाईआ। जिस नूं तकण अवतार पैग़म्बर गुर उपर असमानी, नूर नूर विच्चों आपणी अक्ख बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वडा वड वड्याईआ। गोबिन्द कहे मैं वेखां गुरमुख दुलारे, दूल्हे धुर दे ध्यान लगाईआ। जेहड़े शब्दी शब्द वणजारे, नाम वस्त खरीदण चाँईं चाँईंआ। तिन्नां गुणां तों बाहरे, रजो तमो सतो दा डेरा ढाहीआ। पहन के जंगी हथियारे, आपणा बाणा आए बदलाईआ। सृष्टी उत्ते होवे हाहाकारे, करनी करता कार कमाईआ। जिस गुरमुख दे सीस बंधाई नीली दस्तारे, नीले वाला धुर दा माहीआ। पीले वस्त्रां तन श्रृंगारे, शहीदी शहादत ना कोए रखाईआ। लिखारीआं बन्न्ह सीस दस्तारे, जगत विद्वानां डेरा ढाहीआ। लेखा पूरा करना रविदास चमारे, माचस अग्नी कूड़ वाली चारों कुण्ट लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर संदेशा इक सुणाईआ। गोबिन्द कहे की देस मालवे धार, गोबिन्द डल्ले गया जणाईआ। कपूरे अगला लेखा वेख विचार, धुर शब्दी

शब्द सुणाईआ। कलयुग वेख अंध अंध्यार, ढईआ मेरा दए गवाहीआ। चारों कुण्ट अंध अंध्यार, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। मिले मेल ना मीत मुरार, यारड़ा सथ्थर ना कोए हंढाईआ। चारों कुण्ट हाहाकार, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। ओह तक देश दी खुशीआं वाली बहार, फल फुल्ल रहे महकाईआ। खुशी दिसदे नर नार, नर नरायण देवे माण वड्याईआ। एह खेल सच्ची सरकार, सतिगुर गोबिन्द आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, पड़दा ओहला दए उठाईआ। गोबिन्द भेंटा कीता डल्ले इक कूज़ा, मिशरी मिशरां वांग भेंट चढ़ाईआ। नाले पुट्ट के कान्यां बूझा, हस्स के दिता सुणाईआ। ख़ाली भाण्डा मार के मूधा, ताली दिती वजाईआ। कणक दा आटा किसे घर ना दिसे गूधा, बाजरा मक्की खा के झट लँघाईआ। गोबिन्द ने तीर दी मुखी नाल विंन्ह दिती बसुधा, धरती उत्ते धर्म निशान लगाईआ। जिस वेले अन्तिम होया कलयुगा, सति धर्म रहे ना राईआ। उस वेले खेल करे पुरख अकाला दीन दयाला गुज्झा, मन बुद्धी समझ किसे ना आईआ। जन भगतां गुरमुखां धरनी उत्ते करे उग्घा, उगण आथण वेख वखाईआ। इक इशारा किसे ना बुज्झा, रमज़ रमज़ विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। चौदां कत्तक कहे मैं मातलोक विच चढ़या, सम्मत शहिनशाही सत्त सति वड्याईआ।

१५४७ मैं निरअक्खर अगम्मी पढ़या, जिस नूं लिखे कोए ना कलम शाहीआ। खेल वेख्या सिर धड़या, सिर धड़ खोज खुजाईआ। १५४७

२२ इक गोबिन्द पुरख अकाल दी सरनी पड़या, सरनगति इक रखाईआ। जिस ने दीन दुनी दी मेटणी शरया, शरीअत दा डेरा ढाहीआ। मुहम्मद दा लेखा पूरा करना विच नौ वरि्आ, नौ खण्ड पृथ्मी भुल्ल रहे ना राईआ। गुरमुखां भाग लगाउणा दर दरया, घर घर आपणा मेल मिलाईआ। निरगुण धार जोड़ के लड़या, सुरती शब्द नाल बंधाईआ। बाहर कढ्ढ चुरासी विच्चों गड़्या, गढ़ी चमकौर दा लेखा लेखे विच लगाईआ। जिन्नां दे उत्ते सीस दस्तारा धरया, धर्म दी धार रंग रंगाईआ। ओह गुरमुख गुरसिख सन्त सुहेला लोकमात कदे ना मरया, मरजीवत रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण जन भगत दवारे सदा खड़्या, हाज़र हज़ूर हरि करता आपणी दया कमाईआ। २२

१५४८ २२

✪ १५ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ कपूर सिंघ, कर्म सिंघ, सरवण सिंघ, हरदयाल कौर, गुरदीप सिंघ, गुरतेज सिंघ घलकलां अजैब सिँघ हरिराए पुर, सीतल सिँघ डगरू, मेला सिंघ, धन्ना सिंघ, चन्द सिँघ हरबंस सिँघ निधां वाला, गुरिन्दर कौर दुन्याणा, महिन्दर कौर चड़िक, नंद सिँघ थम्मण वाला, हरदेव कौर, दलीप सिँघ बदनी कलां, सुख राम चक्र, गुरदयाल सिँघ रामूवाला, करतार सिंघ, नरैण कौर दीदारे वाला, करतार सिँघ चड़िक, चन्नण सिंघ, शाम सिँघ बरनाला मोगा शहर ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

गोबिन्द शब्द कहे मालवे वाले सिँघ तिन्न जंगी, जगत जहान वेख वखाईआ। जिन्हां हलूणा देणा शाह फ़रंगी, ईसा नैण रिहा उठाईआ। मुहम्मद दी पिठ्ठ होवे नन्गी, पुश्त पनाह हथ्थ ना कोए रखाईआ। जिन्हां दी धार संसार विच्चों पार लँघी, दीन दुनी वेखण कोए ना पाईआ। जिन्हां मालक तक्कया सूरा सरबंगी, शाह पातशाह नूर इलाहीआ। जिस सृष्टी दृष्टी करनी अन्नी, नेत्रहीण दिसे लोकाईआ। सब दी करनी होणी मंदी, मंद वासना खोज खुजाईआ। फिरे दरोही विच वरभण्डी, ब्रह्मण्ड अक्ख खुल्हाईआ। जो संदेशा दे के गया गोबिन्द जगत धार कन्ढी, घाट इक्को इक जणाईआ। लेखा मुकणा भेख पखण्डी, दुतीआ रूप ना कोए दरसाईआ। कलयुग आयू रहे ना लम्बी, अग्गे पन्ध ना कोए वखाईआ। चार यारी दा लेखा मुकावे गोबिन्द धार उलटी मंजी, चार फ़रिश्ते सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। शब्द गोबिन्द कहे गुरमुख कोल साढे दस हथ्थ दा रस्सा, पीला रंग रंग रंगाईआ। जिस नाल गोबिन्द ने कस्या सी कमरकसा, जिस वेले मालवे चरण छुहाईआ। पुरख अकाल दा कीता जसा, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त वड्याईआ। फेर तक्कया चारों कुण्ट रैण अंधेरी मस्सा, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। दो जहान लगाईआं अक्खां, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। फेर हथ्थ मारया उपर आपणे भथ्था, बिन तीर तरकश वेख वखाईआ। की खेल करना यथार्थ यथा, यदी पड़दा आप उठाईआ। फेर बचन कीता सच्चा, गुरदेव स्वामी इक दृढ़ाईआ। जिस वेले सब दा कौल इकरार होया पक्का, वाहिदे पिछले वेख वखाईआ। कलयुग काया माटी भाण्डा दिसे कच्चा, कंचन गढ़ ना कोए बणाईआ। मन विकार घर घर होवे नच्चा, वेसवा रूप दिसे लोकाईआ। पतिपरमेश्वर दा देवे कोए ना पता, पति पत्नी सोभा कोए ना पाईआ। जैकारा बोले कोई ना अलख अलखा, अलख अगोचर संग ना कोए रखाईआ। फेर आवां नस्सां, जोती जाता पुरख बिधाता नाल मिलाईआ। होड़ा ला के उपर सस्सा, सो पुरख निरँजण वंड वंडाईआ। हाहे उत्ते

टिप्पी रखां, आत्म ब्रह्म भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। डोरी कहे मैं साढे दस हथ्थ दी धार, पीले रंग नाल वड्याईआ। भेंटा कर देवे गुरमुख रवीदास चमार, मेरा पूरब लेख बणाईआ। मैनूं गोबिन्द कीता प्यार, प्रेम नाल आपणे तन छुहाईआ। फेर हुक्म संदेशा दिता धुर दे यार, जो यारड़ा सथर हंढाईआ। कमलीए ओह तक कलयुग अंध अंध्यार, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। फेर खेल होणा अगम्म अपार, हरि करता आप कराईआ। निहकलंक कलि कल्की लए अवतार, अमाम अमामां वेस वटाईआ। जिस दा वेद व्यास बणया लिखार, नौ हज़ार सलोक गया जणाईआ। सो उत्तरे आपणी धार, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण वेख वखाईआ। जिस नूं समझे कोए ना विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी दूर दुराडे बैठण सीस निवाईआ। जिस दे सब कुछ होवे अख्त्यार, मुखत्यार पिछला रहिण कोए ना पाईआ। लहिणा देणा पूरा करे जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणी वंड वंडाईआ। जन भगतां कारज दए संवार, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। धर्म दी डोरी बन्न्हे नाल सीस दस्तार, दस्त दस्त नाल मिलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कपड़ देवे पाड़, ओढण संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ। डोरी कहे मैनूं आई याद पुराणी, पुनह पुनह सीस निवाईआ। मेरा मालक बणया धुर दा बानी, जो बावन भेख धराईआ। जिस दा गोबिन्द सुत निशानी, शब्द निशाना इक वड्याईआ। ओह मंज़ल दे के गया रुहानी, बिना रूह समझाईआ। ओह तक सदी चौधवीं चारों कुण्ट बेईमानी, बेवा रूप दिसे लोकाईआ। की खेल करे ईसा दा बाप असमानी, इस्म आज़म की जणाईआ। जिस दे उतों पैग़म्बरां कीती कुरबानी, मुहम्मद सजदयां विच सीस झुकाईआ। ओह सब दा लेखा दस्से फ़ानी, फ़नाह फिल्ला खलक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। डोरी कहे गोबिन्द दे सिख सिख बहादर, तिन्न मालवे विच वड्याईआ। जिन्हां नूं दिता शब्द शब्द गुर आदर, आदर्श आपणा इक दिखाईआ। इन्हां उत्ते किरपा कीती सी तेग़ बहादर, जो सीस दिल्ली गया कटाईआ। भाग लगाया काया गागर, साढे तिन्न हथ्थ अमृत रस भराईआ। किरपा करे करीम कादर, कुदरत दा मालक धुरदरगाहीआ। निर्मल कर्म करे उजागर, दुरमति मैल धुआईआ। धर्म दा साचा साजे साजण, सगला रंग रंगाईआ। मेहरवान ग़रीब निवाजण, निमाणयां गोद उठाईआ। सीस जगदीश रख के ताजण, राज तख्त दीन दुनी उलटाईआ। प्रगट हो के देस माझण, लेखा सब दा वेख वखाईआ। जिस दा शब्दी धार उडणा बाज़ण, बाजांवाला आपणा हुक्म वरताईआ। इन्हां दा लेखा फेर होया नाल माई भागण, भागो भगवन संग बणाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। रस्सी कहे मैं साढे दस हथ्थ, हथ्थो हथ्थी वंड वंडाईआ। मेरा लेखा नाल पुरख समरथ, पारब्रह्म दया कमाईआ। गुरमुखां गोबिन्द नालों होण ना देवां वख, एसे करके मालवे चली आई चाँईं चाँईंआ। सब नूं मेल मिलाउणा अन्दरली अक्ख, निज नेत्र लोचण नैण कर रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया गढ़ तोड़ना हँकारी हठ, हउमे हंगता देणी मिटाईआ। सच प्रेम मुहब्बत दी बन्नृणी गड्ड, एथे उथे सके ना कोए खुल्हाईआ। पिछला पन्ध मुकाया नट्ठ नट्ठ, भज्जी वाहो दाहीआ। जन भगतां मेल मिलाया झट, झटके खाण वाला संग ना कोए रखाईआ। ज़ात पात दी मेट के वट्ट, हद्द इक्को इक समझाईआ। जिथ्थे सतिगुर शब्द सुहाना रिहा वस, दूसर नज़र कोए ना आईआ। जगत मंज़ल होवे बस, पाँधी पन्ध ना कोए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। डोरी कहे मैं भगतां बन्नृां धुर दी डोर, डोर प्रभ दे नाल जुड़ाईआ। मैनूं छूह सके ना कोई होर, होका दे के दयां दुहाईआ। मैं नाता छड्डया ठग्ग चोर, कूड़यां संग ना कोए बणाईआ। कलयुग वेख अंधेर घनघोर, लोकमात लई अंगड़ाईआ। जन भगतां अन्दर हंगता पाए ना शोर, मनसा कूड़ ना कोए हल्काईआ। सब नूं इक्को मार्ग बन्नृ के देवां तोर, तुरत आपणी सेव कमाईआ। किसे दा चले ना कोई ज़ोर, जोरू ज़र ना कोए वड्याईआ। सब दा मन्त्र इक्को होवे फ़ुरना फोर, फ़ुरने जगत वासना बन्द कराईआ। गुरमुखां भाग होण मथ्थोर, मिथ्या दस्सां कूड़ लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सेवा इक समझाईआ। डोरी कहे मेरा रंग पीला, गोबिन्द गोबिन्द धार दरसाईआ। जन भगतां दस्सां सतिगुर शब्द धार वसीला, वसल यार अगम्म अथाहीआ। जिस नूं मिलण दा इक्को हीला, इक्को मार्ग दयां दृढ़ाईआ। उस दा सारे बणो इक कबीला, जो कबरां तों बाहर डेरा लाईआ। लेखा जाणे असमान ज़मीना, ज़िमीं ज़मां खोज खुजाईआ। जगत जहान वेखे सीमा, नौ खण्ड पृथमी ध्यान रखाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर सब दी कर देवे तरमीमा, धुर दा हुक्म फ़रमान इक दृढ़ाईआ। खेल करे आलीशान अज़ीमा, अज़मतो कसमतो अज़िबवाह अतिलहे आपणा हुक्म वरताईआ। जो आदि अन्त छैल छबीलो, शाह पातशाह शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। नीली धार कहे मैं वेख्या पीला रंग, रंगत अगम्म अथाहीआ। जिस नूं वेख के तेई अवतार होण दंग, पैग़म्बर परेशानी विच ध्यान लगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव इक्ट्ठा बण के संग, बिन नैणां नैण उठाईआ। केहड़ी धार वज्जे मृदंग, कवण कूट डंक शनवाईआ। सदी चौधवीं अन्त जाए ना लँघ, मंज़ल पन्ध पार

१५५० २२

ना कोए कराईआ। जिस ने उलटा कीता पलँघ, पावे चार रोवण मारन धाहीआ। दरोही खुदा खुदा दे नबी दी चार यार संग मुहम्मद होणा नंग, पर्दा सिर सर ना कोए टिकाईआ। जिस साहिब ने बिना शस्त्रां तों करना जंग, शस्त्र धारी गुरमुख दिते वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करनी भंग, सतिजुग सति सति उपजाईआ। निशान मेट के तारा चन्द, इक्को नूरी चन्द देणा चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। डोरी कहे मालवे विच गोबिन्द वड़दयां पुट्ठा कीता सी कुम्भ, घड़ा बिन पाणी धरत टिकाईआ। फेर लेखा लिख्या सुंभ निसुंभ, दुर्गा अष्टभुज शनवाईआ। फेर दो जहानां लई उँघ, सवाधान हो के वेख वखाईआ। अमृत रहिण देणा नहीं गरड़ चुंज, जाम आपणे हथ्थ धराईआ। जगत बदल देणा जुग बदल देणा प्रभ दी कार ज्यों सर्प उतारे कुंज, सति सरूप समझ किसे ना आईआ। दीन मज़्ह़ब दा माल ख़ज़ाना रहे कोई ना पुंज, पूंजी शरअ ना अन्त जणाईआ। मैं खेल करांगा उँज, जो पुरख अकाला दीन दयाला दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। घड़ा कहे जिस वेले गोबिन्द ने मैनूं कीता पुट्ठा, मूँह दे भार रखाईआ। फेर फड़ के आपणे सज्जे खब्बे गुट्ठा, दोहां ल्या दबाईआ। फेर सूरबीर हो के उठा, आपणी लई अंगड़ाईआ। चारों कुण्ट निगह मार के तुट्ठा, मेहरवान हो के अक्ख खुल्ह़ाईआ। किस बिध कलयुग कूड़ी क्रिया जड़ पुट्टां, पटने वाला रिहा सुणाईआ। फेर तीर फड़ के विच मुट्ठा, ज़ोर नाल दबाईआ। बिना शस्त्रां तों पावां लुट्टा, प्रभ नाल मिल के खेल खिलाईआ। जगत जहान रहिण देवां कोए ना सुत्ता, सोए अवतार पैग़म्बर गुर लवां जगाईआ। जिस पुरख अकाल ने मैनूं बणाया सुता, सुत दुलारा हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। घड़ा कहे मैं हो गया हैरान, हैरानी विच सीस निवाईआ। कुछ दस्स मेरे मेहरवान, सतिगुर अग्गे सीस झुकाईआ। गोबिन्द हस्स के किहा औह तक कलयुग निशान, निशाना दयां वखाईआ। कलयुग जीव माटी भाण्डे ख़ाली दिसण विच नज़र ना आए श्री भगवान, जोती नूर ना कोए रुशनाईआ। पंडत पांधे मुल्लां शेख़ मुसायक बणन बेईमान, सच विच ना कोए समाईआ। जेहड़े मटके भन्ने गोपीआं वाले काहन, कृष्न खेल खिलाईआ। पहलों पटने भुगता के आया आया मैं भुगतान, अन्तिम लेखा तेरा मालवे विच जणाईआ। हुण एथों हो जावां रवान, चलणा वाहो दाहीआ। तिन्न दिन करना नहीं इश्नान, तेरा जल ना तन छुहाईआ। कुम्भ रो के लग्गा कुरलाण, कूक कूक सुणाईआ। गोबिन्द तेरे विच हक तौफ़ीक, तूं ही खुद मालक नज़री आईआ। मेरी आसा मनसा पूरी कर उम्मीद, तृष्ना रहे ना राईआ। मैं निमाणा जगत नाचीज़, ठीकर माटी सोभा

पाईआ। मैनूं आपणा बणा मीत, मित्र प्यारे दया कमाईआ। मैं सदा तेरा गावां गीत, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द मेरा माहीआ। गोबिन्द हस्स के किहा मेरे साहिब दी अवल्लड़ी रीत, जुग चौकड़ी समझ किसे ना पाईआ। औह वेख कलयुग वेला अन्त नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जिस वेले धर्म दा धर्म बणया शरीक, लाशरीक वेस वटाईआ। दीन दुनी दी बदल देवे तवारीख, तारीख अगली दए दृढ़ाईआ। तूं रखणी उस दी उडीक, जो मालक अगम्म अथाहीआ। फेर खण्डे नाल धरती उत्ते खिच्ची लीक, लाईन ऐन दिती बणाईआ। जिस दी सिफ्त करे कुरान मजीद, सपारे ढोले रहे गाईआ। ओह तेरा लेखा पूरा करे गुफ़त शनीद, बातन आपणी कार भुगताईआ। बिना अक्खरां तों तैनूं देवां रसीद, लेखा लिखां बिन कलम शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर गोबिन्द हो मेहरवान, शब्दी धार नज़र उठाईआ। तेरा लेखा करे पूरा नौजवान, मर्द मर्दाना अगम्म अथाहीआ। जिस ने कलयुग कूड़ा मेटणा निशान, निशाना दो जहानां धर्म चलाईआ। जिस नूं झुकणे सीता राम, काहन कृष्न सीस निवाईआ। पैग़म्बर सजदयां विच करन सलाम, कदमबोसी विच खुशी बणाईआ। गुरु गुरदेव करन प्रणाम, परम पुरख वड वड्याईआ। सो प्रगट होवे वाली दो जहान, निरगुण सरगुण आपणी कार भुगताईआ। मालवा फेर करे परवान, मलेछां पड़दा दए चुकाईआ। गुरमुख सारे करके सवाधान, सोई सुरत लए उठाईआ। दर ठांडे कर परवान, परवाने धुर दे लए बणाईआ। गुरमुख सूरबीर जंगी बणा नौजवान, तिन्नां लोकां बाहर समझाईआ। तीजे दिन उन्हां तों फेर करे इश्नान, जल तेरे विच भराईआ। सोलह कत्तक दिवस होए महान, महिमा सिफ्त अगम्म अथाहीआ। हरिसंगत खुशी विच ढोले सारे गाण, गीत गोबिन्द अलाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच सारे उठ के जाण, खुशीआं रंग रंगाईआ। फेर गोबिन्द ने तीर दा कीता निशान, बिना कमान चिल्ला चढ़ाईआ। ओह तक जिस दा लहिणा देणा काहन कीता परवान, आपणा प्रेम बणाईआ। ओह बधक नौजवान, कन्ढी बैठा डेरा लाईआ। जिस दे कोल पुज्जणा नौ नौ शब्द सारे राह विच गाण, नव दवार दा डेरा ढाहीआ। तिन्ने जंगजू बहादर गुरसिख पहलों जाण, आपणा पन्ध मुकाईआ। नौ नौं दीपक थालां विच टिकाण, अग्गों मिलण चाँईं चाँईंआ। गुरमुख सिंघ माचस नाल सवाधान करे शमादान, अग्नी अग्ग छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। कुम्भ कहे मेरा खेल होणा सोलह कत्तक दी राती, जन भगतां रुतड़ी दयां जणाईआ। जेहड़ी मंग मंगी सी धरत माती, धरनी धवल आस रखाईआ। उस दी सारी दस्सांगा गाथी, जिस नूं ग्रन्थ शास्त्र कहिण कोए ना पाईआ। लिखारीआं दो दो कलमां रखणीआं नाल इक दवाती, सज्जे पट्ट नाल छुहाईआ। जितनी हरिसंगत होवे

सब ने तिन्न वार हथ्थ रखणा उपर छाती, साढे दस वक्त सुहाईआ। तृप्त दे हथ्थ विच फड़ी होवेगी लाठी, आपणा रूप सरूप बदलाईआ। केहर सिँघ इक फ़ाइर करेगा बण के साथी, सगला संग बणाईआ। कृपाल सिँघ जोड़ के हाथी, प्रभ अग्गे सीस निवाईआ। नाज़र सिँघ कूक पुकारे , दरोही तेरा नाम खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। डोरी कहे जन भगतो मेरा रंग अनोखा, सति सच दयां जणाईआ। पिच्छे वेला लँघ गया चोखा, चौथा जुग रिहा कुरलाईआ। परम पुरख नूं मिलणा नहीं सौखा, सिर धड़ कम्म किसे ना आईआ। दीन दयाल दा आदि अन्त नहीं किसे नाल रोसा, जुग विछड़े जुग जुग मेल मिलाईआ। जिस दा मार्ग दस्सणा सौखा, दे दर्शन पार लँघाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों निरगुण धार मिलण दा मिलदा मौका, जिस दी वंड ना कोए समझाईआ। हरिजन कोई ना जाए औंता, दर घर वज्जदी रहे वधाईआ। तुहाडा दिवस दिहाढ़ा दो जहानां विच सोहणा लग्गे नाल शौका, शहिनशाह आपणा रंग रंगाईआ। जिस ने लहिणा देणा पूरा करना चौदां तबकां तौका, चौदां लोक लेखा दए मुकाईआ। उस दा शब्द गुरु गुरदेव देवे होका, हुक्म धुर दा इक सुणाईआ। प्रभ दे प्यार वाली इक्को नईया इक्को नौका, बेड़ा इक्को इक बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पन्द्रां कत्तक जन भगतां दुरमति पाप कलेवर धोता, अन्तर अन्तष्करन करनी करता आपणे रंग रंगाईआ।

१५५३ २२

१५५३ २२

✪ १६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ राम सिँघ दे घर जाण वास्ते केहर सिँघ नाज़र सिँघ कृपाल सिँघ ने पातशाह जी नूं इश्नान करवाया मोगा शहर ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सोलह कत्तक कहे सोलह कल तों बाहर सच विहारा, तिवहार मेरे मिले वड्याईआ। हाज़र होए तेई अवतारा, अवतर आपणा रूप दरसाईआ। पैग़म्बर पुज्जे निरगुण धारा, अगम्मी वेस वटाईआ। गुरु दस जोत उज्यारा, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन निमस्कारा, निउँ निउँ लागण पाईआ। देवत सुर चरण धूढ़ी लावण छारा, शहिनशाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। जुग चौकड़ी कूकन करन पुकारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा हाल सुणाईआ। सदी चौधवीं रोवे ज़ारो ज़ारा, बिन नैणां नीर वहाईआ। नारद मुन बण भिखारा, भज्जा आया वाहो दाहीआ। सैनत मारे चार यारा, बोदी आपणी रिहा हिलाईआ। ओह वेखो परवरदिगारा, बेपरवाह नूर खुदाईआ। जिस लहिणा देणा पूरा करना विच संसारा,

सहिंसे सब दे दए मिटाईआ। ओह खेल करे हरिजन साचे सच दवारा, गुरमुखां देवे माण वड्याईआ। गोबिन्द दा पिछला लौहण आया उधारा, मालवे वाल्यां झोली आप भराईआ। डल्ले दा लेखा सुट्टया नहीं डल्ल डूँग्घी ग़ारा, आपणे सीने उत्ते छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। नारद कहे अवतार पैग़म्बर गुरु गुरदेवा मैं भगत सुहेला बोध, बुद्धी तों परे ध्यान रखाईआ। मेरे कोल जगत जहान वाला नहीं कोई जोग, जुगीशरां तों परे बैठा ध्यान लगाईआ। मेरे विच जगत कलेशां दा नहीं कोई रोग, हउमे गढ़ ना कोए वखाईआ। चिन्ता ग़म नहीं कोई सोग, हवस कूड़ ना कोए लगाईआ। मेरी जुग जुग सब दे नाल मजलस मौज, निरगुण धार सरगुण दए गवाहीआ। मैं वेखे चौदां लोक, चौदां तबक फेरीआं पाईआ। मैनूं कोई ना सकदा रोक, भज्जां वाहो दाहीआ। मैं सुणया हुण परम पुरख दा इक सलोक, जो ढोला गीत हरिजन रहे गाईआ। जिस दी तुसां सारयां रखी ओट, अवतार पैग़म्बर गुर बैठे आस तकाईआ। ओह तक्को निरगुण नूर प्रकाश जोत, जोती जाता डगमगाईआ। जिस नूं मैं निमस्कार करां बण के परोहत, निउँ निउँ लागा पाईआ। जिस ने खेल करना दीप विच करौच, खुरासान वंड वंडाईआ। तुसां तकणा
१५५४ नाल शौंक, शौकीन आपणा रूप बदलाईआ। की खेल करे पैग़म्बरो तुहाडा खौंत, ख़सम ख़ावंद अगम्म अथाहीआ। जोती १५५४
२२ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे मैं सब नूं २२
कहिंदा, पैग़म्बरां करां शनवाईआ। परवरदिगार दा नूर वेखो विच लहिंदा, चढ़दी दिशा रिहा बदलाईआ। बुरज मुनारा दिसे ढहिंदा, ढेरी ढाह ख़ाक बणाईआ। ईसा मूसा नाल खहिंदा, मुश्किल हल्ल ना कोए कराईआ। सीता राधा वेखे लहिंगा, अंगी अंग ध्यान लगाईआ। जेहड़ा राम राम सी रूप बहिंदा, बनखण्ड भज्जया वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे इन्द्रा आजा लै के कलस, कलास पिछली देणी तजाईआ। ख्वाजा आपणा लै अलस, जिस दी घाड़त जगत ना कोए घड़ाईआ। हुक्म सुण अगम्मी सलस, जो सालस हो के आप समझाईआ। मेहरवान हो के जन भगतां करे तरस, रहमत हक आप कमाईआ। धुर दा मेघ देवे बरस, अग्नी तत तत गंवाईआ। जो वाली मालक अर्शी अर्श, अर्शी प्रीतम नूर खुदाईआ। ओह खेल करे उत्ते फ़र्श, फ़रिश्ते भज्जण वाहो दाहीआ। जिस दा शहिनशाही शहाना सत्तवां बरस, सोलह कत्तक रंग रंगाईआ। सब दा लेखे लावे जन्म जन्म दा ख़र्च, कर्म कम दा रोग मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे क्यों साहिब सतिगुर नहाउंणा, जगत जुग जग खेल खिलाईआ। क्यों सेवा करे ठंडी

पौणा, पवण पवणां नाल मिलाईआ। क्यों भगतां गीत गाउणा, शब्दी ढोला धुरदरगाहीआ। क्यों खुशीआं पन्ध मुकाउणा, अगली वाट रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे एह राम राम दी आसा, बण विच ध्यान लगाईआ। कदे पृथ्मी तके कदे तके आकाशा, आकाशां तों परे अक्ख उठाईआ। फेर आपणा आप कर भरवासा, भरम भरम ना कोए रखाईआ। फेर धुर दे राम दा मन्न के आखा, बैठा डेरा लाईआ। फेर तक्कया विछड़या साथा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। फेर गाई अगम्मी गाथा, तूं मालक बेपरवाहीआ। फेर हुक्म सुणया साख्याता, हरि करते दिता दृढ़ाईआ। औह तक कलयुग अंधेरी राता, चारों कुण्ट अंधेरा छाईआ। किसे दिसे ना जोती जाता, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। उस वेले प्रगट होवे पुरख बिधाता, पुरख पुरखोतम आपणा वेस वटाईआ। भाग लगाए धरनी जिस नूं जगत कहे धरनी माता, मात पित लेखा सब दा पूर कराईआ। निरगुण धार निरगुण जोड़े नाता, सरगुण सरगुण मेला सहिज सुभाईआ। सब दा लेखा जाणे वेखे लेखां वाला खाता, ख़ातर भगतां भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे मैं गावां राग गउड़ी, गौड़ ब्राह्मण ध्यान लगाईआ। मेरी बोदी हिले लम्बी चौड़ी, जगत चुराहा वेख वखाईआ। मैनूं इयों दिसदा भगत भगवान दी इक्को जोड़ी, आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। अन्तर विख रहिण ना देवे कौड़ी, कूड़ी विख बाहर कढ्ढाईआ। आपणे प्रेम दी ला के पौड़ी, मंज़ल डण्डे सारे दए चढ़ाईआ। किसे नूं नहाउणा पए ना तालाब जौहड़ी, चरण सरोवर इक इश्नान कराईआ। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ करन बौहड़ी बौहड़ी, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रोवे मारे धाहीआ। की खेल हो गया सब तों चोरी, चोजी प्रीतम आपणी कार कमाईआ। असीं वेख ना सके विच कलयुग रैण अंधेर घोरी, घोर कलयुग अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। साडा रूप रंग कम्म ना आया बणे बांकी छोहरी, शहिनशाह छार धूढ़ मस्तक कोए ना लाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं चले कोए ना ज़ोरी, ज़ोरावर आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। नारद कहे इन्द्रा भर लै चरणोदक जल, जल वायू वेख वखाईआ। जेहड़ा जुग चौकड़ी करदा आया छल, अछल छल आपणा नाउँ धराईआ। जिस ने वाहिदा पूरा करना राजे बल, बावन आपणी कार भुगताईआ। हुण सतिजुग दी थाँ कलयुग कल, कलकाती रूप वटाईआ। बिना प्रभू दी किरपा तों भगती दा मिले किसे ना फल, फलीभूत ना कोए कराईआ। जेहड़ा निरगुण धार सरगुण विच रिहा रल, रल मिल आपणा खेल खिलाईआ। जेहड़ा गोबिन्द दी धार मालवे रिहा चल, कदम कदम नाल बदलाईआ। जिथ्थे हुन्दा सी मारूथल, उथे

वहिण प्रेम वाले वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे तूं क्यों रोनीं ए गंगा, कमलीए दे सुणाईआ। जमना सुरस्ती की तुहाडीआं मंगां, भेव दयो दृढ़ाईआ। गोदावरी तेरा सीस क्यों नन्गा, खुल्ल्हे केस रही कुरलाईआ। मैं पुछां चार जुग दा पंडा, पंडत हो के रिहा सुणाईआ। मैं जाणदा जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। जे तुहाडा जल धार ठंडा, क्यों अग्नी तत तपाईआ। क्यों ना आवे सुख अनन्दा, दुःख दर्द दा डेरा ढाहीआ। नी ओह तक्को ईसा मूसा मुहम्मद दा वेला लँघ, चार यारी रही कुरलाईआ। मेरे साहिब स्वामी अन्तरजामी उलटा डाहया मंजा, मति उलटी जगत कराईआ। जन भगतां गाया सोहँ छन्दा, तूं मेरा मैं तेरा नाअरा लाईआ। जिस दा साची धार होवे कारज अनन्दा, अनन्द कारज आपणा इक रखाईआ। जिस नूं समझे कोए ना बन्दा, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। तुहाडा सफ़र रिहा नहीं लम्बा, लम्मा पै के दयां सुणाईआ। ज़रा तक्कयो खेल अचंभा, रावी दा कन्ढा अक्ख खुल्हाईआ। जिस दीआं गुरु अर्जन पा के गया वंडा, हिस्सा आपणे नाल रखाईआ। दो धार खड़कदीआं चण्डा, चण्ड प्रचण्ड रूप बेपरवाहीआ। मैं हौली हौली खंघा, हंगूरे नाल सुणाईआ। जेहड़ा हुक्म सुणाया तेग़ बहादर नौरंगा, औरंगे दिता जणाईआ। मेरा सुत दुलारा खेले खेल धार जंगा, जंगजू इक्को नज़री आईआ। जिस ने शत्तरू भेड़ देणे नाल मिला के कंधा, कन्ढी बैठा आपणा खेल खिलाईआ। उम्मत सांभ होवे ना तम्बा, तम्बुरी आवाज़ ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती पाटे दिसण चीर, अंगी लहिंगा रूप ना कोए सुहाईआ। गोबिन्द दा शब्दी तिक्खा दिसे तीर, जो अणयाला रिहा चलाईआ। जिस नूं अन्तर अन्तर याद कीता कबीर, कबरां तों बाहर वेख वखाईआ। जिस दा तन वजूद नहीं शरीर, शरअ तों बाहर आपणा हुक्म वरताईआ। ओह मालक बेनज़ीर, नज़र विच ना कोए टिकाईआ। जिस दा खण्डा अगम्म शमशीर, शरअ दा पैंडा दए मुकाईआ। जिस दी सारे करदे गए तकरीर, नाम कलमे तहरीर विच लिआईआ। उस दी दो जहानां इक जागीर, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जिस वेले चाहे उस वेले बदल देवे तकदीर, तदबीर आपणी इक समझाईआ। आपे पातशाह बण वज़ीर, जगत वज़ारत दा लेखा दए मुकाईआ। जन भगतां मार्ग दस्स के इक लकीर, फ़कीर आपणे लए उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा माण आप दवाईआ। नारद कहे कान्हा वेख लै आपणीआं सखीआँ, सिखावत पिछली दे वखाईआ। राम वेख लै सीता आपणीआं अक्खीआं, सीता राम वाली जुदाईआ। मूसा ईसा तक लै आपणीआं पत्तीआं, हिस्से मुहम्मद रिहा वंडाईआ। नानक वेख लै राग छत्तीआं, गोबिन्द खण्डा रिहा खड़काईआ।

विष्न ब्रह्मा शिव आपणी धार दीआं तक्को बत्तीआं, निक्कीआं निक्कीआं निशाने रहीआं वखाईआ। अगला खेल कमलापतीआ, पतिपरमेश्वर आपणा हुक्म वरताईआ। जेहड़ीआं उस दे नाम विच रत्तीआं, रत्न अमोलक हीरे ल्ए प्रगटाईआ। ओह दो जहानां मंज़ल टप्पीआं, भज्जीआं वाहो दाहीआ। पढ़के इक्को नाम दीआं पट्टीआं, पटने वाले विच मिल के वज्जे वधाईआ। सति धार होईआं इक्ठीआं, गीत सुहागी रहीआं गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे मेरा इक्को अन्तिम हाढ़ा, हाढ़ा कढ के दयां सुणाईआ। मैं वेख्या जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, टिल्ले पर्बत फोल फुलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर तक्कया अखाड़ा, जो अवतारां खेल खिलाईआ। कलयुग अन्तिम इक्को लाड़ा, जिस नूं लाड़ी मौत ना कदे प्रनाईआ। ओह भगतां चाढ़े रंग गाढ़ा, रंगण इक्को इक वखाईआ। जिस नूं झुकदे पैग़म्बर गुर अवतारा, अवतर निउँ निउँ लागण पाईंआ। ओह खेले खेल भगत दवारा, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। जिस दी धार दा इक्को इक नाअरा, एकँकार इक्को इक सुणाईआ। जिस दी भेंटा साढे दस वज्जे रैण होवे इक छुहारा, जो सुक्का सड़या नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण
१५५७ नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त सब दी पावे सारा, जुगा जुगन्त जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। १५५७

२२ २२

✪ १६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ राम सिँघ ते घर तों बाहर नौ नौ दीव्याँ नाल तिन्ने जंगजू पातशाह जी नूं मिलण ते फ़िरोज़पुर छाउणी ✪

दीपक कहिण साडी जगी जोती, जोतां वाले ध्यान लगाईआ। जन भगतां आत्म रहे ना सोती, सोई सुरत शब्द उठाईआ। चार वरनां दिसे इक्को गोती, छत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। कोटां विच्चों भगत सुहेले धुर दे मोती, अनमुलड़े हीरे नज़री आईआ। असीं चढ़ना सब दी उपर चोटी, मंज़ल पिछला पन्ध मुकाईआ। कूड़ वासना कढणी खोटी, खोटे खरे दोवें मिटाईआ। इक्को संदेसा देणा धर्म सलोकी, सोहला साहिब सुल्तान सुणाईआ। संदेसा होवे परलोकी, लोक वेखण नैण उठाईआ। जिस दी धार जवां दी रोटी, रोज़े बांग दा झगड़ा दए मुकाईआ। जिस ने कलयुग आयू कीती छोटी, अग्गे अवर ना कोए वधाईआ। जिस नूं लभ्भदे कोटन कोटी, बणखण्ड भज्जण वाहो दाहीआ। उस दी खेल अजब अनोखी, अलख अगोचर आप कराईआ। हरिजन बणा के धर्म धार दे मोखी, मुफ्त आपणा रंग रंगाईआ। पढ़नी पए किसे ना पोथी, पुस्तकां लेखा रहे ना राईआ। मनमति मिटाए होछी, गुरमति आप समझाईआ। सतिगुर चरण सदा उधरदे दोषी,

निर्दोषां लए तराईआ। जेहड़ी माचस लगाई रविदास चमारे मोची, पूरख लेखा रहे सुणाईआ। जिस दे घर पक्कदी नहीं सी रोटी, भुक्खा रह के झट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुकम इक वरताईआ। माचस कहे मैं खुशीआं नाल लाई अग्ग, आगमन प्रभ दा दयां जणाईआ। जिस दा खेल होणा सृष्टी जग, जागरत जोत डगमगाईआ। शाह सुल्तानां आउणा भज्ज भज्ज, पन्ध वेखणा थाउँ थाँईंआ। जिस ने तज्जया पुरी अनन्द, अनन्द गुरमुखां विच टिकाईआ। भगत भगवान सुणा के छन्द, छन्दा बन्दी दा लेखा दिता मुकाईआ। अन्तर अन्तर हो के संग, सगला संग निभाईआ। जिस दी छोह नाल धार बणी जमना सुरस्ती गंग, चरण गोदावरी विच टिकाईआ। ओह खेल करे सूरा सरबंग, शाह पातशाह आपणा भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। दीपक कहिण असीं बनबासां विच कदे ना जगदे, राम राम सीता दुहाईआ। सानूं कोटन कोटि रिषी मुनी लभ्भदे, तपस्वी भज्जण वाहो दाहीआ। एह खेल पुरख समरथ दे, जो जुग जुग आप कराईआ। जन भगतां साची वथ दे, वस्त अमोलक इक वरताईआ। लेखे पूरे करके दसरथ वाले रथ, दे, कैकई दा डेरा ढाहीआ। अग्गे खेल करने वक्ख दे, वक्खरी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा
१५५८ हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। माचस कहे मैं आपणा लाया लम्बू, लम्मा पै के मुहम्मद रिहा जणाईआ। मेरे उत्ते मकबरयां १५५८
२२ लाया आपणा तम्बु, शरअ दा सोभा पाईआ। की खेल होणा देस जम्बु, जम्बु दीप नैण उठाईआ। निरगुण धारों सतिगुर २२
शब्द किस बिध जम्मू, जमना दा लेखा पूर कराईआ। लहिणा झोली पावे शिव शम्भू, शंकर आपणा हुक्म वरताईआ। सो लेखा पूरा करे जो माता गुजरी दस्सया सी गंगू, खेड़ी विच ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। दीपक कहिण साडी सच सच घर लो, लोआं पुरीआं वेख वखाईआ। प्रभ दा भेव जाणे को, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। जगत जहान धड़ा करके दो, दोहरा डंक देणा वजाईआ। सब नूं अन्दर वड़ के लैणा जोह, जौहर वेखणा थाउँ थाँईंआ। दीनां मज़्बां तोड़ के मोह, मुहब्बत लाड़ी मौत नाल वखाईआ। एका जाप जपा के सोहँ सो, सो पुरख निरँजण आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। माचस कहे मैं होर दस्सां आपणा गुज्झा भेव, भेव भेव विच्चों जणाईआ। सोलह कत्तक रात तृप्त ने सतिगुर लंगर दी करनी सेव, अग्नी आपणे हथ्थ तपाईआ। लाल रंग लाउणा उत्ते जिह्व, पंज निशान लैणे टिकाईआ। मस्तक होवे धर्म धार दा थेव, कौस्तक पड़दा लाहीआ। अगला हुक्म इक निहकेव, निहचल आप

जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। दीपक कहिण पकवान कोल जगदे होण नौ दीवे, अन्दर वड़ के लैणा बणाईआ। नौ वार अमृत घुट पीवे, नौ दर दा लेखा रहे ना राईआ। राम धार अमरापद जीवे, अमर अमर विच्चों रखाईआ। जन्म कर्म दा पाटा चीथड़ सीवे, ओढण दी लोड़ रहे ना राईआ। नेत्र नैण रखणे नीवे, अक्ख हाण्डी विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। दीपक कहिण जन भगत जंगजू साथी, सानूं हथ्थां उत्ते उठाईआ। एह कथा सानूं अष्टभुज सी आखी, रसना कूक कूक दृढ़ाईआ। जिस वेले चार जुग दी बदली साखी, साख्यात प्रगट होवे धुर दा माहीआ। उहदी सुहञ्जणी होवे राती, रुतड़ी भगतां नाल रंगाईआ। उहदी धार बिन किरपा ना जाए पछाती, पूरब पच्छम सारे वेखण नैण उठाईआ। जिस दा लेखा लिखणा लिखारीआं ने बदल के कलम दवाती, कलम कलम नाल बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान पूरब लेखा सब दा पूर कराईआ।

१६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ राम सिँघ गुरचरण कौर तारा सिँघ प्रीतम कौर मदरसा मुखत्यार सिँघ कामल वाला सुरजीत सिँघ जगत पुर जोगिन्दर सिँघ बस्ती खलील, अर्जन सिँघ हरी सिँघ महिन्दर सिँघ साधू सिँघ बस्ती तेग़ा सिंघ, तेज कौर वलूर संपूरन सिँघ ईश्र कौर फेरू शहर, गहिणा सिँघ कैलाश, गुरदीप सिँघ तूत निरवैर सिँघ लुध्याणा, ग्वाल टोली फ़िरोज़पुर छाउणी

मुहम्मद कहे ईसा करीए सजदा, सही सलामत सीस निवाईआ। जो सब दा उठावे पर्दा, पर्दानशीं नूर इलाहीआ। लहिणा पूरा करे साडे घर दा, गृह गृह खोज खुजाईआ। रूप धर नरायण नर दा, अमाम अमामा वेस वटाईआ। जिस दा खेल घड़ी पल दा, परम पुरख अगम्म अथाहीआ। जो मालक निहचल धाम अटल दा, दरगाह साची सोभा पाईआ। ओह लहिणा पूरा करे जल थल दा, महीअल खोज खुजाईआ। जिस दा जुग जुग हुक्म संदेसा चलदा, चार जुग आप सुणाईआ। जो सब नूं रिहा छलदा, अछल अछल नूर इलाहीआ। उस दा खेल घड़ी पल दा, घड़ी कलाक तेरा दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। ईसा कहे मुहम्मद बिन नैणां लैणा तक, तकवा इक रखाईआ। जो सब दा लेखा पूरा करे हक, हकीकत पड़दा दए उठाईआ। धुर फ़रमाना

१५६० २२

देवे यक्क, वाहिद आपणी कार भुगताईआ। सदी चौधवीं वहिम रहे ना शक, शिकवे सारे देणे गंवाईआ। जिस दे सब कुछ हथ्थ, समरथ इक अख्वाईआ। ओह लहिणा देणा पूरा करे झट, झटके हलाली वाले सारे खोज खुजाईआ। जगत जहान उम्मत उम्मती बुरज जाणा ढट्ठ, मुनारा नज़र कोए ना आईआ। दरगाह साची आपां मिल के करीए इक्ठ, फिर धरनी संदेसा दईए चाँईं चाँईंआ। जिस ने दीन मज़ूब दी मेटणी वट्ट, झगड़ा वेखे कूड़ लोकाईआ। ओह जोती जाता हो प्रगट, प्रकाश आपणा रिहा वखाईआ। जिस ने दीन मज़ूब दा लुट्टणा हट्ट, उम्मत वस्त रहे ना राईआ। साडा वेला वक्त रिहा टप्प, टप्पा टप्पा पढ़ के हरफ़ हरूफ़ दईए सुणाईआ। ओह वेख शरअ दा लग्गा फट्ट, बन्धन सके ना कोए बंधाईआ। ज़रा निगह मार मूसा रिहा नट्ठ, भज्जे वाहो दाहीआ। इक्को कलमा रिहा रट, तूं मेरा मैं तेरा राग सुणाईआ। संदेसा देवे झट, हुक्म इक इलाहीआ। आओ तक्कीए कमलापति, पष्तिपरशेरवर बेपरवाहीआ। जिस दा नाअरा जैकारा इक अलख, अलख अगोचर आपणा आप सुणाईआ। चार जुग दी रीती नीती करके वक्ख, वक्खरी आपणी कार कमाईआ। नूर नुराना शाह सुल्ताना नौजवाना मर्द मर्दाना हो प्रतक्ख, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा वेस वटाईआ। जिस ने सब दे काया भाण्डे ख़ाली करने सख, तन वजूद अमृत रस ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। मूसा कहे मैं तुहाडा मीत पुराणा, प्राणीउ दयो जणाईआ। जिस दा इक्को इक निशाना, निशाना कोहतूर रिहा वखाईआ। जिस अन्तिम वरतणा आपणा भाणा, हुक्मे अन्दर हुक्म भुगताईआ। जोती नूर वेस वटाउणा, जल्वागर नूर इलाहीआ। जिस दा तूं मेरा मैं तेरा गाणा, अल्ला हू अन्ना हू आपणा राग सुणाईआ। हज़रत उठ के कर ध्याना, मुहम्मद महिज़ दयां दृढ़ाईआ। जिस ने दीन दुनी बदल देणा ज़माना, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। ओह तक गोबिन्द वाला चिल्ला तीर कमाना, अणयाला की वखाईआ। जिस ने बदल देणा जिस्म ज़मीर जिस्माना, कलधारी आपणी कल वरताईआ। दरोही सब ने हो जाणा बेगाना, सगला संग ना कोए रखाईआ। आपणा आपणा लेखा तक्कीए आपणे विच्चों ख़ाना, दूसर वरका ना कोए उलटाईआ। जो सुणदे रहे पैग़ामा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों बाहर शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ। मुहम्मद कहे मैं तकां गोबिन्द वाला भथ्था, पुश्त पनाह वड्याईआ। जिस ने कलयुग कूड़ चलण नहीं देणा रथा, रथ रथवाही नज़र कोए ना आईआ। जिहदा हुक्म यथार्थ यथा, यदी आपणी कार भुगताईआ। बौहड़ी किस दे नाल लाईए मथ्था, मस्तक लेख ना कोए बणाईआ। जिस झगड़ा मेटणा तत्तां अट्ठा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध करे सफ़ाईआ। दीन दुनी रहिण

देवे ना रट्टा, झगड़ा कूड़ देवे चुकाईआ। सब दा खेड़ा दिसे भट्टा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। मुहम्मद कहे ईसा मूसा ओह मारीए झाकी, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। की खेल करे कमलापाती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस दे गुर अवतार पैग़म्बर सच विद्यार्थी इक जमाती, पट्टी इक्को इक पढ़ाईआ। चरण कँवल दी दस्स के घाटी, मंज़ल पैंडे पूर कराईआ। नाम कलमा दस्स के गाथी, निरअक्खर अक्खरां विच बदलाईआ। जोती धार बण के साथी, सगला संग बणाईआ। उस दी मन्नदे रहे आखी, आख़र सीस झुकाईआ। ओह वेखण आया कलयुग अंधेरी राती, जोती जाता वेस वटाईआ। किसे गृह ना दिसे दीवा बाती, दीन मज़्ब ना कोए रुशनाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर हथ्थ मार सके ना उपर छाती, सूरबीर सृष्ट सबाई एका रंग ना कोए रंगाईआ। आत्म ब्रह्म जोड़े कोए ना नाती, पारब्रह्म ब्रह्म ना कोए समाईआ। सब दी वक्खरी वक्खरी लेख लिखण वाली कलम दवाती, रागां नादां विच सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। मुहम्मद कहे खेल अगम्म अपारा, परवरदिगार आप खिलाईआ। मुरीदां मुर्शद पावे सारा, मेहरवान लेख लिखाईआ।
१५६१ धुर दा शब्द बण लिखारा, लेख लिख्त इक वड्याईआ। जिस ने लहिणा मुकाउणा चार यारा, नाता जगत वाला तुड़ाईआ। १५६१
२२ ओह लिखारीआं दीआं कलमां बदल देवे दुबारा, दोहरी धार बणाईआ। लेख लिखणा ज़रूर झगड़ा पैणा विच काहरा, कालम आलम सके ना कोए बदलाईआ। मूसा वाल्यां करना मुशाहरा, नच्चण टप्पण कुद्दण चाँईं चाँईंआ। ईसा कौम देवे ललकारा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। नौ सौ सट्ठ वरग मील दा बणना दाइरा, मुकाम इक्को इक समझाईआ। जिथ्थे शरअ दीआं उठणीआं लहरा, लहर लहर नाल टकराईआ। समुंद सागरां पाणी रहे ना गहरा, गहर गम्भीर आपणी कार भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। कलम कहे मैं हो गई बदली, बदल देवां लोकाईआ। मेरा मालक इक्को अदली, अदल इन्साफ़ रिहा जणाईआ। जिस दी मंज़ल पूरी होई मज़लो मंज़ली, अगला पन्ध रिहा ना राईआ। ओह दीन दुनी वेखे बेवतनी, वतन वाला नज़र कोए ना आईआ। गोबिन्द लेखा जाणे कन्ढ्ढा घाट पत्तनी, तट किनारे खोज खुजाईआ। अन्तिम लाज किसे ना रखणी, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। धरनी धरत धवल होणी सक्खणी, दूतां दुष्टां डेरा ढाहीआ। ईसा मूसा मुहम्मद भट्ठी तपणी, त्रैगुण अग्नी अग्ग लगाईआ। गोबिन्द ने आपणी खेल रचणी, रट्टा घर घर देवे पाईआ। धुर दी खेल अग्गे नहीं छपणी, परदयां विच ना कोए लोकाईआ। माया रूप धरना सप्पणी, जोरू ज़र दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ।

मुहम्मद कहे मूसा ईसा वेख आपणी तांघ, तंगदस्त दिसे लोकाईआ। परवरदिगार वरत्या स्वांग, अमाम अमामा वेस वटाईआ। चारों कुण्ट चढ़े अगम्मी कांग, जिस दी सार कोए ना पाईआ। ओह तक भगत लिखारी तृप्त ने हथ्थ विच पकड़ी डांग, गुस्से नाल आपणा आप बदलाईआ। सृष्टी रोणी वांग काग, काग वांग कुरलाईआ। कोटां विच्चों भगत सुहेले जाण जाग, जिन्हां जागरत जोत करे रुशनाईआ। लहिणा देणा मुकाउणा रोज़ा नमाज़ बांग, मुनारे मम्बर रहे कुरलाईआ। जिस दी चौदां तबकां तों परे इक पलांघ, कदम कदम नाल बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सोलह कत्तक कहे मेरे दिवस जगे नौ चराग़, तिन्नां लोकां खेल खिलाईआ। पहला हिस्सा पहला भाग, त्रैलोकी चरणां हेठ दबाईआ। दो जहानां पकड़ वाग, डोरी शब्द तन्द बंधाईआ। सब नूं करके लाजवाब, हुक्म संदेशा इक सुणाईआ। जिस दी रचना आदि तों आदि, कलयुग अन्तिम पूर कराईआ। लेखा जाणे ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाईआ। जो हर घट होवे विस्माद, बिस्मिल आपणा आप जणाईआ। जन भगत बदल के आप पोशाक, पोश तन माटी ख़ाक लेखे लाईआ। चढ़ के अस्व शब्द घोड़े राक, दो जहानां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। दीपक कहिण असीं दिन दिहाढ़ प्रकाशे, प्रभ दिती माण वड्याईआ। दुनिया लुट्टी जाणी विच हासे, हस्ती प्रभ दी समझ कोए ना पाईआ। तन वजूद मिट जाणे वांग पतासे, जल कुम्भ दए गवाहीआ। गुर अवतार पैग़म्बर कलयुग अन्तिम रहिणे नहीं राखे, रक्षक नज़र कोए ना आईआ। एह खेल होणा होवे पहली विसाखे, वसाह के आपणी कार भुगताईआ। जाणे लेखा बातन बाते, बातल आपणी कार कमाईआ। सतरंगा कहे मैं सति सति दी धार, सो पुरख निरँजण दिती वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण कर प्यार, एकँकार होया सहाईआ। आदि निरँजण हो उज्यार, अबिनाशी करता गंढ पवाईआ। श्री भगवान दे अधार, पारब्रह्म प्रभ आपणा पड़दा लाहीआ। सतिगुर शब्द करके ज़ाहर, ज़ाहर ज़हूर वज्जे वधाईआ। मेरा खेल विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी दयां जगाईआ। करोड़ तेतीसा मार इक ललकार, पुरीआं लोआं अक्ख खुल्हाईआ। लहिणा पूरा करना तेई अवतार, अवतर लेखा पूर कराईआ। पैग़म्बरां रहे ना कोए उधार, लहिणा सब दा झोली पाईआ। गोबिन्द कर्ज़ा दयां उतार, मकरूज आपणा आप बदलाईआ। सति सच दी दस्सां कार, की करनी कार कमाईआ। जन भगतां पहना के जंगी हथियार, दीन दुनी दिती उठाईआ। तृप्त आपणी डांग लैणी संभाल, अग्गे आउणा चाँईं चाँईंआ। गुस्से विच मुख करना लाल, लाल मुख वाले सारे लैण अंगड़ाईआ। मूसा वाले होण बेहाल, डांग डण्डे नाल खड़काईआ। सृष्टी दी दृष्टी होए बेहाल, उत्ते

ठोकर देणी खड़काईआ। सतिगुर शब्द दी झल्ले कोए ना झाल, गोबिन्द दा खण्डा बेपरवाहीआ। जिथ्थे ना कोई जवाब सवाल, बुद्धी समझ ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। सतरंगा कहे मैं सति पुरख दा मीता, दूजा नज़र कोए ना आईआ। मैं खेल खेलया राम सीता, सीता राम बनां विच दुहाईआ। मैं राधा कृष्न लेख लिखाया जीव जीअ का, बंसरी धुन कर शनवाईआ। पैग़म्बरां आपणी दस्स के रीता, कलमे दिते पढ़ाईआ। गुरुआं दस्स के नाम ठीका, ठाकर धुर दा भेव खुल्हाईआ। दीन मज़्हब चला के रीता, मन्दिर मसीतां जगत सुहाईआ। हद्दां वंड के मारीआं लीकां, लाईन आपणी दिती रखाईआ। आपणे हथ्थ विच रख के हक तौफ़ीका, तोहफे सब नूं थोड़्हे थोड़्हे दिते वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। मुहम्मद कहे मेरे पीर ने बिना पैग़म्बरां तों लाई मैहन्दी, अमाम आपणी कार कमाईआ। जिस दी खेल होणी दिशा लहिंदी, लहिंदा चढ़दा वेख वखाईआ। उम्मत इक्ट्ठी हो हो बैहंदी, मता चार यारी बाहर पकाईआ। सब दी खेल जाए ढहिंदी, महल्ल अटल ना कोए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। मुहम्मद कहे मेरा मैहन्दी वाला रत्ता, रंग रतड़ा धुर दा माहीआ। जिस दा कल्मयां विच दिता पता, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस दा गोबिन्द डंक वजाया फतह, फतिह डंका इक शनवाईआ। बौहड़ी ओह हुक्म विच मेरे हुक्म दी करे हत्ता, हत्या विच जगत लोकाईआ। जिस ने किसे दे सीस ते रहिण नहीं देणा बोदा छत्ता, छत्रे खाण वाल्यां करे सफ़ाईआ। जिस दा इक्को हुक्म चूंकि चुनांचे अलबत्ता, आलमां तों परे करे पढ़ाईआ। सो सब दे थल्लयों खिच्चण वाला आप फट्टा, कदम संभल ना कोए टिकाईआ। जिहदे हुक्म दा इक्को टप्पा, दीन मज़्हब दे टापूआं करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। मैहन्दी कहे मेरे उत्ते वज्जे प्रेम दी लाठी, ज़ोर जगत वाला जणाईआ। सूरबीर उठाउणे राठी, शाह सुल्तान देणे हिलाईआ। सोलह कत्तक गोबिन्द ने पहले दिन नीले उत्ते पाई सी काठी, ज़ीन ज़ीनत नाल वड्याईआ। फेर तकी मंज़ल घाटी, दो जहानां अक्ख खुल्हाईआ। फेर संदेशा लिख्या धुर दे कमलापाती, बिना अक्खर अक्खर बणाईआ। औह तक कलयुग अंधेरी राती, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। तूं मालक पुरख अबिनाशी, घट निवासी नज़री आईआ। तुध बिन दीन दुनी दी कौण करेगा राखी, राख्या क्यों बैठा पड़दा पाईआ। जेहड़ी चार जुग विच दीन मज़्हब विच वंडी ज़ाती पाती, मानव हिस्से दिते कराईआ। नाले दस्सदा रिहो तन वजूद मिट्टी ख़ाकी, ख़ालस आपणा हुक्म वरताईआ। मेरे मेहरवाना श्री भगवाना नौजवाना मर्द मर्दाना सदी चौधवीं सचखण्ड दी खोल्ह के वेख लै ताकी, पर्दा परदयां

विच्चों चुकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु तेरे अग्गे लेखा मंगदे बाकी, लहिणा सब दा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब तेरी सच सरनाईआ। मैहन्दी कहे मेरा रंग अपरम्पर, सच स्वामी दिती वड्याईआ। मेरा मालक इक भरतम्बर, भरपूर रिहा सर्ब ठाईआ। जिस ने सीता धार कलयुग रचणा इक सुअम्बर, सोहणी खेल खिलाईआ। कलयुग कूड़ मेटणा अडम्बर, जगत जहान करे सफ़ाईआ। लेखा रहे ना मस्जिद मन्दिर, शिवदुआले मट्ठ चर्चा वंड ना कोए वंडाईआ। भाग लगाए जन भगतां काया अन्तर, अन्तर निरन्तर खोज खुजाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्से मन्त्र, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। खेल कहे मैं लेखा दस्सां कुम्भ, भाण्डा माटी वेख वखाईआ। जिस वेले दुर्गा दैंत मारे सी सुंभ निसुंभ, शतरू नास कराईआ। जेहड़ी राकशां कोल सी अमृत बूँद, ओह सरगुण धार मटके विच भराईआ। जिस दी गरड़ पा सक्या ना आपणी चुंज, त्रैबरग ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। घड़ा कहे धरनी चार जुग दी रही प्यासी, तृष्ना तृखा विच हल्काईआ। एहदे अन्तर रही उदासी, सांतक सति ना कोए कराईआ। जिस वेले ईसा चढ़या फाँसी, कदम धरती वल्ल लटकाईआ। एस ने खुशीआं विच कीती हासी, हस्स के दिता दृढ़ाईआ। जेहड़ा दरगाह सच्ची दा वासी, सच दवारे सोभा पाईआ। उस दा नूर नूर प्रकाशी, प्रकाश अगम्म अथाहीआ। मैं तेरी मिट्टी ख़ाक तन वजूद ख़ाक दी दासी, सच वस्त मेरे विच ना किसे दबाईआ। अवतार पैग़म्बर कोटन कोटि सौं गए मेरी उत्ते छाती, मैं प्यार नाल दुद्ध सीर ना किसे चुंघाईआ। फेर खुशीआं दे विच टापी, उछली कुद्दी टप्पी वाहो दाहीआ। धरनी कहे जे दूजे हथ्थ ते वज्ज जाए लाठी, मेरा लेखा दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आपणे हथ्थ रखाईआ। कुम्भ कहे मैं ओह जल घड़ा, जिस नूं घड़याल ईसा रिहा सुणाईआ। जेहड़ा मैनूं रखदा हुन्दा सी उपर थड़्हा, साढे तिन्न हथ्थ उपर उठाईआ। मेरा रूप हुन्दा सी पड़ाह, उलटा कर ना कोए वखाईआ। जिस दिन हज़रत नूं अन्त अख़ीरी फड़ा, बन्धन हथ्थां वाले पाईआ। उस दिन सूर्या बड़ा तेज़ सी चढ़ा, चढ़दयों लहिंदे कीती रुशनाईआ। फेर इशारे नाल पुट्ट के गढ्ढा, मैनूं दिता दबाईआ। घड़या तेरा रूप तन माटी वाला मुहम्मद बणाउणी शरअ, शरअ दीन दुनी उपजाईआ। परवरदिगार ने खेल करना तरह तरा, तरीका आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस वेले पैग़म्बरां दा वक्त लँघ गया बड़ा, पिछला पन्ध मुकाईआ। चौदां सदीआं हुक्म मिलणा खरा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। फेर प्रगट होणा अवतार नर नरा, नरायण नूर इलाहीआ। तूं उस दे पुजणा दरा, दर

१५६५
२२

दरवेश हो के सीस निवाईआ। क्यों तैनूं मूधा करन लग्गयां गोबिन्द दा तेरे नाल छूहणा कड़ा, बन्धन आपणे लए बंधाईआ। बिना पुरख अकाल तों तेरा भण्डारा जावे ना भ्रा, धरनी धरत धवल धौल दा जल कम्म किसे ना आईआ। ओह वक्त सुहञ्जणा होणा सम्मत शहिनशाही ते सत्तवां वर्‌ा, लोकमात मात लए अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कृपानिध वेख वखाईआ। घड़ा कहे मेरे भाग वड वड्डे, हरि वड्डा दए वड्याईआ। सतारां कत्तक मेरे नाल लडाए लड्डे, मुहब्बत इक समझाईआ। चार निशाने चारों तरफ़ गड्डे, वेखणहारा वेखे चाँईं चाँईंआ। तिन्ने जंगजू बहादर लावण हथ्थे, हथ्थ हथ्थ नाल बदलाईआ। फेर अगली दस्सां कथे, की कहाणी जगत जणाईआ। प्रभ दे नाम कलमे आदि जुगादि सचे, सच सच विच्चों प्रगटाईआ। जगत जहान जीव भाण्डे कच्चे, थिर रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। कुम्भ कहे मेरी पुराणी तांघ, सच दयां सुणाईआ। मेरे चढ़दे पासे तृप्त गड्डे डांग, डौरु डंक दयां वजाईआ। तिन्ने गुरमुख इक इक कदम पुट्ट के पलांघ, तिन्ने कूट निशाने देण सुहाईआ। इक निशान बणा के तारा चांद, मेरे उत्ते देणा टिकाईआ। फेर दस्सांगा अगली सांझ, किस बिध हरि सज्जण मेल मिलाईआ। मैं आपणे विच बन्द करनी शरअ वाली बांग, अज़ां अवर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण धार बदल के स्वांग, स्वांगी आपणा खेल खिलाईआ।

छुहारा कहे मेरा जगत जहान दा सगण, जगत संगीआं दयां जणाईआ। दीन दुनी होवे नग्न, पर्दा सीस ना कोए रखाईआ। जन भगत करा के मग्न, मधुर धुन इक सुणाईआ। जगत तृष्ना मेट के अग्न, बूँद स्वांती मुख चुआईआ। जन भगतां लेखे ला के बदन, तन ज़मीर दयां वड्याईआ। मैं विचोला मुहम्मद दा ज़रूर झगड़ा पाउणा विच अदन, आहला अदना आप उठाईआ। मैं इक दा इक्को वार बणना सज्जण, दूजा संगी ना कोए वखाईआ। मैनूं जिज्ञासू दन्दां नाल चब्बण, खा खा खुशी मनाईआ। मैं पर कलयुग अन्त उम्मत आया दब्बण, दबदबा सब दा वेख वखाईआ। जिस खुदा नूं खुद मालक करके सारे लभ्भण, खोज्जयां हथ्थ किसे ना आईआ। जन भगतो मैं पाँधी बण के तुहानूं आया सद्दण, जुग विछड़यां मेल मिलाईआ। जिस बधक दे घर नौ दीपक जगण, ओह राम दा राम तुहाडा माहीआ। जन भगतो तुहाडा मेल उपर गगन, गगन गगनंतरां डेरा ढाहीआ। सच दमामे सच दवारे वज्जण, गोबिन्द धौंसा आपणा रिहा वजाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। छुहारा कहे मैनूं लाउंदे नाल लबां, होंटां विच दबाईआ। मैं संदेशा देवां सबां, सब नूं दयां जणाईआ। जन भगतो तुहाडा इक्को पिता ते इक्को अब्बा, दूजी जन्म देण वाली कोए ना माईआ। जगत मात पित लहू मिझ गारा बणाउंदे हड्डां, जो अन्त सड़ के ख़ाक ख़ाक विच मिल जाईआ। सतिगुर दा सरूप आत्म परमात्म परमात्म आत्म रहिंदा सदा, सदा दे मित्रो तुहाडा मेला दिता मिलाईआ। निगह मार लै बधक दा परिवार विच्चों निखेड़ के अध्धा, सेवा संगत विच लगाईआ। जिस दा हुक्म संदेशा दिता सी नानक यथार्थ यथा, सत्त साल दी कन्या दिता सुणाईआ। राजे बल ने आपणी दासी गोली ते सुत नूं दिता सी पता, पतिपरमेश्वर दा हुक्म इक सुणाईआ। ओह वेखो कलयुग बिना अक्खां, अक्खीआं वाल्यां नज़र कोए ना आईआ। ओह वेखो कृष्न दा चरण गोडे उत्ते रखा, बधक दा तीर निशाना रिहा घाईआ। ओह वेखो पुरख अकाल सब नूं देवे इक्ट्ठा सद्दा, जुग जुग दे विछड़े मेल मिलाईआ। जिन्हां दा लेखा प्रभ दे हुक्म दी लिखणी कथा, रविदास चमारा दए गवाहीआ। भावें अज्ज धुर दे हुक्म नाल हथ्थ फड़ाया नहीं गोबिन्द दा भथ्था, फिर वी भुल्ल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। छुहारा कहे जन भगतो मैनूं भगवान कोलों किसे ना खाधा, खा के नाता प्रभ दे नाल जुड़ाईआ। जगत जहान खेल करदा गया सब दा प्यो दादा, पीढ़ी पिछली चली आईआ। पर याद करो कृष्न ने आपणे मुख नहीं सी लगाया ते मुख लगाया सी राधा, ते राधा नूं आपणा रूप बणाईआ। राम ने होर कीता सी वाधा, भेव पड़दा दयां खुल्हाईआ। सीता दे मुख विच कट के पाया सी आधा, अद्धा आपणे सीस उत्ते टिकाईआ। नाले हस्स के किहा तेरा फेर चौथे जुग होए वाधा, वदी सुदी दा डेरा ढाहीआ। झगड़ा पैणा विच जगत वाले काअबा, काअब्यां परे पए दुहाईआ। उस वेले परम पुरख जन भगतां मारे आवाज़ा, सुत्तयां लए जगाईआ। जन भगतो इक छुहारे नाल तुहाडा सब दा कीता काजा, आत्म परमात्म नाता इक जुड़ाईआ। जिस वेले गोबिन्द ने पहले दिन उडाया सी बाज़ा, बाज़ां वाला आपणा खेल खिलाईआ। फेर आपणे आप नूं बणा के शहिनशाह राजा, शाह पातशाह रूप धराईआ। जिस दिन पहली वार नीले दीआं पकड़ीआं सी वागां, आप नहीं खाधा ते नीले दे मुख विच दिता टिकाईआ। ओ जन भगतो तुहाडे नाल होर वेखो वाधा, बिना खाध्याँ तों सब दे सगण पूरे दिते कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सोलह कत्तक कहे की संदेशा दिता छुहारे, छोहर बांकिओ की सुणाईआ। बधक दे दर खेल अपारे, अपरम्पर रंग रंगाईआ। जिस दे बच्चे जगत कुँवारे, धुर दे राम नाल प्रनाईआ। जिथ्थे अग्नी

तत ना साड़े, मढ़ी गोर ना कोए दबाईआ। जिथ्थे वेखण पैग़म्बर गुर अवतारे, बैठे बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। तुसीं सारे इक प्रभू दे दुलारे, दूजा नज़र कोए ना आईआ। मालवे वाल्यो तुसां वसणा सच सच्चे दरबारे, जिथ्थे तुहाडा बैठा गोबिन्द माहीआ। तुसीं पूरन ना समझयो पूरन जोत निरँकारे, निरगुण नूर डगमगाईआ। जेहड़ा भगवन सदा चलदा भगतां दे सहारे, बिना भगतां तों लोकमात रूप ना कदे बदलाईआ। आओ रल मिल के इक्को घर बहीए भगत भगवन दा खेल वक्खरा होवे विच संसारे, संसारी भण्डारी सँघारी सारे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतो इक छुहारे नाल तुहानूं सब नूं जगत खारे उतों उतारे, लाड़े बणा के घर आपणे लै के जाईआ।

✪ १७ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ सुलखण सिंघ, कृपाल सिंघ, ज्ञान कौर, हज़ूरा सिंघ, निहाल कौर गोलेवाल अजैब सिंघ, राज सिंघ, इकबाल सिंघ, जिंद कौर फरीदकोट, हरिजन्दर कौर, परसिंन कौर माया शेखां बेअन्त सिँघ लील, नछत्र सिँघ पंज गराईंआ, पिण्ड रुकना मूंगला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

१५६७ २२

घड़ा कहे पैग़म्बर कलमा पढ़दे, बिन रसना जेहवा गाईआ। सच दवारे सच खड़्हदे, घर इक्को सोभा पाईआ। ओह तक्कीए क्यों निशाना गड्डया गया चढ़दे, चढ़दी कूट वेख वखाईआ। मूसा कहे मुहम्मदा वेख उम्मत उम्मती मुरदे, मुरदयां मुर्शद ना कोए सहाईआ। अग्गे खेल होणे लहिंदी दिशा साडे घर दे, घर घर पए दुहाईआ। दक्खण पहाड़ मूल ना जरदे, सारे भज्जण वाहो दाहीआ। अन्तिम लेखे मुकणे कलयुग कल दे, कलि कल्की दए मुकाईआ। जिस दा वार मूल ना झलदे, झलक आपणी इक जणाईआ। खेल तक्कीए उस अगम्म दे, जो अगम्म अगोचर इक अख्वाईआ। जिस दी धारों सारे जम्मदे, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। हुण भेव खुल्ह्आउणे ब्रह्म दे, पड़दा आप उठाईआ। झगड़े मेटणे दीन मज़्ह्ब भरम दे, भाण्डा भरम भनाईआ। ओह वेख भगत सुहेले जंगजू बहादर मातलोक जम्मदे, जिन्ह्नां दा जामन इक अख्वाईआ। ओह साडीआं चारे कूटां बन्न्हदे, निशाने धरती विच टिकाईआ। पैंडे मुकणे तारा चन्न दे, चन्द सितार बण के दिता वखाईआ। कलमे कलपत रहिणे नहीं मनसा वाले मन दे, ममता कूड़ कराईआ। दरोही झगड़े मेटी जाए चम्म दे, चम्म दृष्टी आप बदलाईआ। हुण वेले आउणे सब दे ग़म दे, ग़मखार खेल खिलाईआ। फेर झण्डे झुल्लणे इक्को धर्म दे, धर्म निशाना इक उठाईआ। जेहड़े सानूं भुल्ल गए ओह मुहम्मदा सारे मरन दे, मारू डंक वजाईआ। सृष्टी उत्ते सारे रह जाण इक्को पुरख अकाल चरण

दे, दूजा इष्ट ना कोए वखाईआ। कलयुग बलहीण होणे करन दे, करनी कर ना कोए वखाईआ। धन्न भाग जे झगड़े मिटण वरन बरन दे, इक्को ब्रह्म दए समझाईआ। चारे कूटां चारे शत्तरू हो के लड़न दे, मित्रा मीत ना कोए अख्वाईआ। जन भगतां नूं सोहँ ढोला पढ़न दे, जो गुर अवतार पैग़म्बर पढ़ के आपणा झट लए लँघाईआ। उन्हां नूं उस प्रभू दी मंज़ल चढ़न दे, जो साडा मालक धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। निशाने कहिण असीं धरती दे विच ठुके, ठोक के दईए जणाईआ। पिछले सब दे पैंडे मुके, अग्गे कदम ना कोए टिकाईआ। पाणी रहिण नहीं देणा किसे दे हुक्के, हुक्म धुर दा इक सुणाईआ। लहिणा देणा सब दा चुक्के, चुकन्नी होवे लोकाईआ। खेल वेखणा काया बुते, बुतख़ाने रोवण मारन धाहीआ। साडे मुरीद आपणी मंज़ल राहों घुथ्थे, सच मार्ग ना कोए अपणाईआ। हुण सारे कर जाईए चुप्पे, कलमा कलाम ना कोए दृढ़ाईआ। दरोही साडे हुन्दयां सदी चौधवीं होया अंधेरा घुपे, चन्द सितार करे ना कोए रुशनाईआ। साडी जात नूं साडी ज़ात कोई ना पुछे, पर्दा पर्दा ना कोए चुकाईआ। असां की करने बिना कलमे नाम तों ख़ाली जुस्से, माटी ढेरी कम्म किसे ना आईआ। ओह वेख साडा मेहरवान महिबूब हुन्दा गुस्से, हुक्म नाल दबाईआ। सदी वीहवीं सब नूं फड़ फड़ कुस्से, कसम नाल सब दी किस्म दए बदलाईआ। आ चढ़ीए उस मंज़ल उत्ते, जिथ्थे उत्तर पूरब पच्छम दक्खण चारे कूटां वेखे चाँईं चाँईंआ। अन्त रहीए मूल ना सुत्ते, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी धार आप प्रगटाईआ। कुम्भ कहे मेरे चारों पहरेदार, चारों कुण्ट नज़री आईआ। एह खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर आप कराईआ। उठ वेख मुहम्मद यार, यारा दयां सुणाईआ। चारों कुण्ट हाहाकार, होका हक ना कोए सुणाईआ। आपणा वेला वक्त विचार, जो विचर के दिता जणाईआ। सदी चौधवीं वेख अन्त संसार, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। क्यों तेरी उम्मत होई ग़द्दार, गदागर नज़री आईआ। तेरा करे ना कोए दीदार, दीदा दानिस्ता दरस कोए ना पाईआ। चारों कुण्ट होए ख्वार, ख्वारी घर घर वेख वखाईआ। लेखा मुकदा चार यार, यराना तोड़ ना कोए निभाईआ। साडा रहिणा नहीं अख्त्यार, मुख़तार नज़र कोए ना आईआ। दुखतेर रज़ नशा सब दा दए उतार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी दा करता कार कमाईआ। घड़ा कहे मैं बैठा अधविचकार, कदम कदम वंड वंडाईआ। मेरा लेखा नाल चार यार, चहुंआं दयां दृढ़ाईआ। वेखो जिस दे ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। ओह हुक्म देवे सच्ची सरकार, सिर सिर आपणा हुक्म मनाईआ। तुहाडा पूरा होया इकरार, वायदा वेखो चाँईं चाँईंआ। अग्गे रहे ना कोए तकरार, झगड़ा ना कोए जणाईआ। एह खेल इसतिग़ुफ़ार,

बेनज़ीर आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक समझाईआ। कुम्भ कहे जिस वेले गोबिन्द पुट्ठा रखया, निशाने चार चार लगाईआ। इक्को हुक्म संदेशा दस्सया, बिन अक्खरां कर पढ़ाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त होए अंधेरी मस्सया, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। मेरा पुरख अकाला आवे नस्सया, मालक धुरदरगाहीआ। मैं सुणावां उस दी कथया, सतिगुर शब्द हो के चाँईं चाँईंआ। जिस दा लेख जाए ना लख्या, लिख्त विच कदे ना आईआ। मेरा निशाना उस वेले होवे मेरा पीले रंग दा भथ्थया, कंधे उत्ते टिकाईआ। इक बचन कीता सच्चया, सच दिता समझाईआ। पाणी मिलणा नहीं मदीना मक्कया, मकबरे रोवण मारन धाहीआ। ईसा मूसा होवे अंगीठा तपया, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। प्रभ दा खेल रहिणा नहीं छपया, उगण आथण वेख वखाईआ। वाहिदा कौल इकरार पक्कया, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। अन्तिम सब दा धरनी उत्ते पैणा रट्टया, झगड़े विच ख़लक ख़ुदाईआ। शाह सुल्तानां कीमत रहे ना टक्या, राज रजान ना कोए चतुराईआ। लेखा सब दा पूरा होणा इकट्ठया, हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। जगत मुनारा सब दा होणा ढट्ठया, महल्ल अटल ना कोए सुहाईआ। सृष्टी ज़ीरो होणी विच बटया, निरगुण सरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। निशान कहिण असीं धरनी दे विच खुभ्भे, खूब दईए जणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर साह लैंदे उभे, हौली हौली रहे सुणाईआ। प्रभू की खेल करे गुज्झे, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। जिस ने भेव भाव मेटणे दूजे, दुतीआ भाउ चुकाईआ। उस दा खेल वेखीए दरगाह साची मुनारे उच्चे, खिड़की ताकी इक खुल्हाईआ। घड़ा कहे किसे दे हिरदे रहिण नहीं देणे सुच्चे, सुच संजम जगत ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी धार इक वखाईआ। घड़ा कहे मेरे निशाने निशाने दस्सण भगत, जन भगत मिले वड्याईआ। जिन्हां दे पिच्छे परम पुरख आया परत, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। भेव खुल्हाया उपर धरत, धरनी धरत धौल धवल रंग रंगाईआ। वेस वटा के वाली अर्श, अर्शी प्रीतम फेरा पाईआ। हरिजन दे के साचा दरस, आदर्श आपणा इक समझाईआ। घड़ा कहे बिना मेरे पाणी तों अमृत मेघ बरस, सांतक सति सति कराईआ। ग़रीब निमाणयां कर तरस, रहमत आपणी सच रखाईआ। मैनूं याद आ गया जिस वेले मसीह ने निशाना दिता सी चर्च, चरागाहां ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। घड़ा कहे मेरी चर्चा विच कीती चर्चा, मसीह चार वार जणाईआ। फिर लिख के अगम्मी पर्चा, पोशीदा दिता दबाईआ। नाले हस्स के किहा तेरा मेरे सिर कर्ज़ा, मकरूज आप अख्वाईआ। तेरा फेर दस्सां दरजा, की

मात वड्याईआ। बीस सदी ना होवे हर्जा, हर्जाने अवर ना कोए रखाईआ। जिस वेले लेखा मुकणा चर्चा गिरजा, गहर गम्भीर खेल खिलाईआ। किसे दा साफ़ रहिणा नहीं हिरदा, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। मेरा मालक महिबूब आउणा फिरदा फिरदा, नूर नुराना पन्ध मुकाईआ। उस वेले उलटा गेड़ा होवे गिड़दा, चार कुण्ट गिढ़ाईआ। दीन मज़्ब दा जंग होवे छिड़दा, छेकड़ तैनूं दयां सुणाईआ। तूं वणजारा बणना भगतां वाले पिड़ दा, चार निशाने गड्ड के आपणा अखाड़ा दईं वखाईआ। फेर खेल वेखणा निरवैर निर दा, निरुगण की हुक्म वरताईआ। किते भुल्ल ना जाईं संदेसा चिर दा, चिरी विछुन्ने मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आपणे हथ्थ रखाईआ। कुम्भ कहे मैं झट ओसे वेले कंबिआ, आपणा आप हिलाईआ। मैं केहड़ी धारों जम्मया, कवण मेरी माईआ। ना माटी ना चम्मया, हड्डी नाड़ ना कोए सुहाईआ। ना ख़ुशी ना ग़मया, चिन्ता चिखा ना कोए वखाईआ। ना वजूद ना तन्या, मनसा मन ना कोए भवाईआ। ना नेत्र ना अन्नूयां, नैणहीण ना खेल खिलाईआ। ना सरवण ना कन्या, ना राग शब्द शनवाईआ। ना आशा तृष्ना तमया, ना तृखा जगत वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दिता साचा वर, मेरी बणत दिती बणाईआ। कुम्भ कहे मेरी ईसा रखी आसा, मसीह मसला गया जणाईआ। सदी वीहवीं रख भरवासा, धीरज धीर इक धराईआ। मेरा आवे शाहो शाबासा, शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। खेल खेले तमाशा, तेरा रंगण रंग रंगाईआ। शिंशटी हथ्थ फड़ाए कासा, जगत भिखारी दए बणाईआ। सच सच दी पावे रासा, आपणी खेल खिलाईआ। याद करीं तेरा भगतां विच होवे वासा, दूसर संग ना कोए बणाईआ। चारों कुण्ट बणया रहीं राखा, निशाने चार चार गडाईआ। कुम्भ कहे एह बचन मोहे भाखा, समझ विच समझाईआ। मैं ख़ुशीआं दे विच नाचा, टप्पया चाँईं चाँईंआ। वाहवा मेरा लेखा मुक्कया नाल जगत चाचा, पिता पुरख अकाल नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। घड़ा कहे जन भगतो मैं दस्सां इक अख़ीर, आख़र इक जणाईआ। तुहाडा पंजां तत्तां वाला शरीर, कुम्भ माटी नज़री आईआ। अमृत रस मिले ना नाभी नीर, पुट्ठा सिध्धा ना कोए बणाईआ। मेरे उत्ते हथ्थ रखया सी कबीर, ढोला ख़ुशीआं वाला गाईआ। नाले हस्स के किहा गंगा जल विच मैनूं वज्जे ज़ंजीर, शरअ शरअ नाल टकराईआ। मैं वेख्या खेल बेनज़ीर, बिन नैणा नैण तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला लए मिलाईआ। कुम्भ कहे जन भगतो तुहाडा सरीर मेरे वरगा कच्चा घड़ा, घड़ी घड़ी पल पल दयां जणाईआ। पिच्छे चुरासी दा समां वेख्या बड़ा, जून जूनी वेस वटाईआ। अणगिणत वार तन वजूद अग्नी

सड़ा, कबरां विच दफ़नाईआ। हुण साहिब स्वामी तुहाडे चारों तरफ़ खड़ा, मेरे चार निशाने देण गवाहीआ। जो जुग जुग इक्को साहिब सतिगुर बड़ा, वड वड्डा वड वड्याईआ। जन भगत सुहेले तारे तरह तरा, तरीका आपणा इक जणाईआ। तुहाडी दीन मज़्ब दी तुटी शरअ, शरअ ज़ंजीर दिता तुड़ाईआ। इक्को गृह ते इक्को घरा, मन्दिर इक वखाईआ। जिथ्थे हरिजन हरि भगत कदे ना मरा, सद मर जीवत रूप वटाईआ। तुसां नाम संदेसा सुणना परा, पसन्ती मद्धम बैखरी दी लोड़ रहे ना राईआ। तुहाडे मेरे विच फ़र्क नहीं है ज़रा, घड़ा कुम्भ रिहा जणाईआ। वेखो मैनूं मूधा तुहाडे विच धरा, धरनी उत्ते टिकाईआ। मेरे उत्ते चन्द सितारा पड़ा, बैठा आसण लाईआ। मैं फेर मूल नहीं डरा, भय ना कोए वखाईआ। मैं हस्स के किहा तारे चन्ना हुण रहिणा नहीं तुहाडा धड़ा, धाड़वी सब दे लेखे दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। तारा चन्द कहे असीं आ गए विच घेरे, रस्ता नज़र कोए ना आईआ। चढ़दे भगत डांग रिहा फेरे, आपणा बल प्रगटाईआ। तिन्ने कूटां जंगजू गुरमुखां ला लए डेरे, रस्ता नज़र कोए ना आईआ। किस बिध वड़ां मुहम्मद वाले वेहड़े, भज्जां वाहो दाहीआ। सब दा वक्त आ गया नेड़े, दूर दुहाडा पन्ध मुकाईआ। बौहड़ी इस्म
१५७१ जिस्म दे पैणे झेड़े, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। परवरदिगार सब दी जड़ उखेड़े, तना तन ना कोए वखाईआ। जन भगतां उत्ते करे मेहरे, मेहर नज़र तकाईआ। चाढ़ के आपणे बेड़े, मंज़ल हक दए पहुंचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, १५७१
२२ आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। कुम्भ कहे मैं तक्कया भगत प्यार, भगवन २२
दिती वड्याईआ। जिन्हां दे सीस धरी दस्तार, सिर आपणे लेखे पाईआ। फिर जन्म लैणा पए ना विच संसार, चुरासी वंड ना कोए वंडाईआ। इन्हां नाँ रहे जुग चार, धर्म ग्रन्थ देण गवाहीआ। जिस दा अग्गे होणा विस्थार, भेव अभेद दए खुल्हाईआ। घड़ा कहे मैं भगतां बहि के विचकार, घराना आपणा ल्या बणाईआ। नाता तोड़ कूड़ संसार, पिछला पैंडा पन्ध मुकाईआ। अग्गे बोल इक जैकार, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। चौथे जुग मेरा चौथे घर होया विहार, पुट्ठे तों सिध्धा देणा कराईआ। मैं संदेशा देणा चार यार, पैग़ाम इक दृढ़ाईआ। अमाम अमामा पावे सार, कलि कल्की नूर इलाहीआ। जोती जाता हो उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शाह पातशाह सच्ची सरकार, सच आपणा आप खेल खिलाईआ।

✪ १८ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ सुलखण सिँघ दे गृह पिण्ड रुकना मूंगला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

कुम्भ कहे मेरा त्रैलोकी नाथ ने वेख्या निशाना, चारे कूटां बन्द कराईआ। मैं मंग्गया पिछला दाना, दानशमंद हो के दयां सुणाईआ। आह वेख मेरे त्रैलोकी नाथ भगवाना, की तेरा भगवन खेल खिलाईआ। कौरव पांडव लड़ावण वाले जवाना, आपणी खेल खिलाईआ। अग्गे तक्क तेरे नालों खेल होर महाना, हरि करता आप कराईआ। मुहम्मद वल्ल कर ध्याना, की संदेसा रिहा सुणाईआ। मक्का मदीना नाप बिन पैमाना, पैमाइश प्रभ दे हथ्थ फड़ाईआ। चार यारी नैण शरमाणा, नेत्र अक्ख ना कोए उठाईआ। ईसा फिरे हो दीवाना, मूसा मसला रिहा जणाईआ। संदेसा सुणे धुर फ़रमाना, जो धुर मालक आप जणाईआ। हैरान हो के कहे की खेल होणां विच मैदाना, मेहरवान की कार भुगताईआ। झट गोबिन्द मारया ताअना, हुक्म इक सुणाईआ। पैग़म्बरो तुहाडा देश होणा बेगाना, बेगमां दा मालक नज़र कोए ना आईआ। अठारां कत्तक सब नूं शरअ दा भरना पए जुरमाना, हुक्म धुर दा लग्गे थांउँ थाँईंआ। गुरमुख जंग जू बहादर नाल तृप्त घड़ा कहे मेरे गल नूं बन्नृ देण सत्तां कौडीआं वाला गाना, मौली दे तन्द सत्त सत्त बंधाईआ। फेर जल दे नाल भराना, सवा सवा सेर टिकाईआ। मैं सब दा लेख चुकाउणा, चुकन्ने सब नूं दयां कराईआ। पैग़म्बरो सब ने तकणा प्रभू दे भगतां विच नहीं कोई बेगाना,
१५७२ २२ बेदर नज़र कोए ना आईआ। उन्नी कत्तक मेरे विच चवृां ने पंज पंज अनाज दा पाउणा दाणा, दाणे दाणे उत्ते मोहर लगाईआ। १५७२ २२
मेरे थल्ले टिकाणा इक सरहाणा, सोहणी विछाउणी लेफ तलाईआ। फेर चहुंआं ने करना जंगी बाणा, नन्गे खण्डे कंध्याँ उत्ते टिकाईआ। वीह कत्तक दा लेखा होण नहीं देणा पुराणा, परम पुरख रिहा दृढ़ाईआ। मेरे विच इक इक चहुंआं ने रखणा काना, काहनी मुहम्मद दे देणे समझाईआ। चिट्टी चादर दा कोल लाउणा शाम्याना, शमां दीपक थल्ले पंज देणे रखाईआ। सब दे कोल लिख्या होवे इक गोबिन्द दा परवाना, दूजा लेखा ना कोए बणाईआ। जिस ने बदल देणा विधाना, विधी आपणे विच्चों प्रगटाईआ। सुणना दो जहान फ़रमाना, गुर अवतार पैग़म्बर अक्ख खुलृाईआ। जिस कलि कल्की पहरना बाणा, अमाम अमामा खेल खिलाईआ। इक्की कत्तक चहुंआं दा रूप होवे नौजवाना, मुच्छ दाढ़ी नाल वड्याईआ। इक परात कोल रखणी तांबा, वड्डी छोटी ना कोए जणाईआ। इक लम्मां कोल रखणा झाड़ू मांजा, मंजी पुट्ठी नाल टिकाईआ। अक्खर लिख्या होवे चहुंआं दा सांझा, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। बाई कत्तक नूं सब ने मस्तक होवे बांधा, पट्टी सोहँ उत्ते लगाईआ। तृप्त दे सीस होवे लाल परांदा, सग्गी मालवे वाली पाईआ। जंगजूआं कोल होण लम्बीआं डांगा, लांगढ़ा कस के लैण अंगड़ाईआ। नौ रखे होण कोल मांज के भाण्डा, बरतन साफ़ टिकाईआ। इक विच सुक्का होवे मक्की दा

टांडा, जिस उत्ते गोबिन्द लिखणा चाँईं चाँईंआ। तेई कत्तक नूं चहुंआं दा हथ्थ इक दूजे नाल होवे बांधा, बन्दना बध्धे हथ्थ नाल कराईआ। चहुंआं दा मुख सतिगुर शब्द होवे गांदा, रसना जेहवा नाल वड्याईआ। सतिगुर उत्ते अमृत बरखे ठांडा, अग्नी तत बुझाईआ। चौवी कत्तक कहे मेरा दिवस आए सुखां सांदा, जो अवतार पैग़म्बर गुरु गए जणाईआ। गुरसिख उठ के पैर थल्ले सज्जा हथ्थ रख के होवे नहांदा, जल थोड़ा थोड़ा पाईआ। परम पुरख परमात्म अमृत वहिण होवे वहांदा, रस इक्को इक रखाईआ। घड़ा कहे जन भगतो मैं तुहाडा पिछला मित्र पुराणा यार अग्गे वास्ते पाउण आया सांझा, साथी हो के दयां वखाईआ। जगत अंधेर झुलणा झांजा, आब हथ्थ किसे ना आईआ। घड़ा कहे मैं गुरमुखां नूं घर घर जल होणा प्याउंदा, एह मेरी बेपरवाहीआ। हरिजन खुशीआं विच सब कुझ होवे खांदा, जगत तोट रहे ना राईआ। पर ओह नहीं छडणा जिस ने खाधा सूर गाँ ते ढांडा, ढांडीआं खाण वाले ढोर देणे बणाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सदा सतिगुर शब्द दा बांदा, बिना बन्दगी वाल्यां तों सतिगुरु बन्दा ना किसे बणाईआ। मालवे वाल्यो तुहाडे कर्मां दा आपणे उत्ते लद्दण आया इक्को वार लांगा, बोझ आपणे कंध उठाईआ। किसे दा रहिण नहीं देणा रोज़ा नमाज़ बांगा, अज़ां आपणे विच छुपाईआ। चारों कुण्ट वज्जणीआं चांघाँ, चार यारी दए दुहाईआ। त्रेते दीआं तृप्त दीआं पूरीआं करनीआं तांघा, विछोड़े वाले तिन्ने साथी नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उधरों आया इधर जावे वहिन्दा, वहिण ज़िमीं असमान वहाईआ।

✪ १८ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ हरचन्द सिंघ, प्रीतम कौर ख्याली वाला, बखतावर सिँघ ख्याली वाला,
रूप कौर ख्याली वाला ,धन्न कौर चक्क, फतिह सिंघ, भाग सिँघ दबड़ी खाना,
मल सिँघ अकालगढ़, साधू सिँघ गामी वाला, कुंढा सिँघ वड़े
इकबाल सिँघ बढलाडा, मित सिँघ बैहिमण दीवाना,
करनैल सिँघ मलूका, जगीर कौर खोखर, बुगर सिँघ बरगाड़ी,
सरदारा सिँघ छाजला कौड़ी रतीआं, किरपा सिँघ थेड़ी
पिण्ड हरिराए पुर ज़िला बठिंडा ✪

गोबिन्द शब्द कहे खेल तकणा उपर धरती, धरनी धवल धौल नैण उठाईआ। की हुक्म संदेशा देवे मालक अर्शी, प्रीतम

अगम्म अथाहीआ। जिस नूं सब ने मन्नया निधपरती, वड मालक आप अख्वाईआ। ओह शरअ दा लेखा पूरा करे शर्ती, शरीअत ध्यान लगाईआ। खेल जाणे दो जहान आपणे घर दी, गृह गृह फोल फुलाईआ। जिस दा कलमा दीन दुनी पढ़दी, ढोले नाम वाले गाईआ। उहदी धार प्रगटणी दिशा चढ़दी, चढ़दा लहिंदा वज्जे वधाईआ। दक्खण पहाड़ धार वेखणी नरायण नर दी, जो निराकार नूर इलाहीआ। जिन खेल जानणी चोटी जड़ दी, तत्व तत भरम गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गोबिन्द शब्द कहे वेखणा पुरख निरँजणा, सो पुरख आप समझाईआ। लेखा जाणे दीन दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव वेखे जगत लोकाईआ। जिस दो जहानां भज्जणा, पुरीआं लोआं वेखे थांउँ थाँईंआ। अवतार पैग़म्बर गुरु निरगुण धार सद्दणा, संदेशा नाम वाला सुणाईआ। उठो वेखो आपणे सज्जणा, मित्र मित्रो लओ उठाईआ। कलयुग काया पड़दा किसे ना कज्जणा, आपणा ओढण दयो वखाईआ। जेहड़ी दस्स के आए शरअ दी बन्दना, बन्दगी जगत समझाईआ। की उस विच्चों मिल्या अनन्दना, अनन्द अनन्द दयो दृढ़ाईआ। झट रो के बोलया तारा चन्दना, कूक कूक सुणाईआ। दरोही तेरी ख़ुदा तेरे नबीआं ने अन्त वंञणा, वञ्झ मुहाणा हथ्थ ना कोए उठाईआ। धूढ़ी मिले किसे ना मजना, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। तेरा नूर किसे ना लभ्भणा, ज़हूर विच ना कोए रुशनाईआ। जो घड़या सो भज्जणा, ठीकर माटी रहे कुरलाईआ। तेरे नाम दी दिसे कोए ना रंगणा, साचा रंग ना कोए रंगाईआ। अंगीकार करे कोए ना अंगणा, बग़लगीर ना कोए अख्वाईआ। झगड़ा पैणा आहला अदना, अमीर ग़रीब लैण अंगड़ाईआ। चारों कुण्ट नगारा वज्जणा, शब्द गोबिन्द रिहा खड़काईआ। गृह मन्दिर सब ने तजणा, दर घर ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। तारा चन्द कहे मुहम्मद आपणी तक निशानी, निशाना साडा रहे ना राईआ। तेरी उम्मत जूह होणी बेगानी, मालक घर ना कोए सुहाईआ। लेखा तक शाह ईरानी, इबरानी अक्ख खुल्हाईआ। दरोही मशरक मग़रब चढ़े तुग्यानी, वहिण कलमे वाला वहाईआ। तेरी हो गई याद पुराणी, सगला संग ना कोए वखाईआ। लेखा मुके अन्त कुरानी, कुरह कायनात वेख वखाईआ। झगड़ा तक जिस्म जिस्मानी, जमीर बदली ख़लक ख़ुदाईआ। मंज़ल रही ना कोए रुहानी, रूह बुत जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। मुहम्मद धर के हथ्थ उत्ते पेशानी, पेशवा हो के वेख वखाईआ। तारा चन्द मैनूं इयों दिसदा जिवें गोबिन्द कस्या तीर कमानी, चिल्ला इक्को रिहा खिचाईआ। खण्डा खड़ग खड़काणी, खण्ड ब्रह्मण्ड देण दुहाईआ। चण्ड प्रचण्ड प्रगट होवे रूप भवानी, भँवर विच दीन दुनी जणाईआ। इहो खेल ज़िमीं असमानी, ज़ाहर ज़हूर रिहा जणाईआ। मुहम्मद कहे ओह वेखो काया मटके

नूं सत्तां कौडीआं दा बध्धा गानी, गाना मेरा नज़री आईआ। विच रख के आबेहयात पानी, मेरा सरोवर दिता सुकाईआ।
अग्गे दिसदी नहीं कोई कहाणी, कहावत कहि के की दृढ़ाईआ। भगत सुहेले नौजवानी, जंगजू बहादर सोभा पाईआ। उफ़
मेरा लेखा होणा अन्तिम फ़ानी, फ़ैसला हक देवे सुणाईआ। शरअ दी कूड़ रहे ना कोए शैतानी, हुक्म वरते धुरदरगाहीआ।
सोया रहे ना कोए लिबरानी, लिबरेज़ करे लोकाईआ। उम्मत हक ना दिसे ईमानी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी
किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा खेल धार गोबिन्दा, गोबिन्द गोबिन्द
धार जणाईआ। हुक्म संदेशा देवे गुणी गहिन्दा, गहर गम्भीर अगम्म अथाहीआ। ग़फ़्लत विच्चों सब दी खोल्हणी नींदा, आलस
रहिण कोए ना पाईआ। कलयुग कूड़ कुकर्म दा तोड़ना जिंदा, ज़िंदगी सब दी वेखणी थांउँ थाँईंआ। लेखा वेखणा जेहड़े
प्रभू दी करदे निन्दा, निन्दकां वल्ल अक्ख उठाईआ। फेर मेरा भगत दुलारा वेखणा छिन्दा, जिस नूं धुर दी गोद सुहाईआ।
जो सुत अनादी बिन्दा, जन्म मरन विच कदे ना आईआ। तिन्हां अमृत देवां सागर सिन्धा, अंमिउँ रस आप चुआईआ। सन्त
सुहेले रखां ज़िंदा, ज़िंदगी आपणे विच छुपाईआ। जिस खेल नूं तकण एह होणा विच हिन्दा, भारत दी शरारत सब नूं
दए तपाईआ। झगड़ा पैणा जीउ पिण्डा, तत्व तत नाल लड़ाईआ। जगत जहान रहिण नहीं देणा खिण्डा, धाड़वी धड़
१५७५ २२ देणा बणाईआ। अन्तिम सब दीआं मूधीआं कर के टिंडां, टिंडां वाले सारे देणे मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप १५७५ २२
आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। मुहम्मद कहे मैं तकां उत्ते भूमी, भूमिका ध्यान
लगाईआ। ईसा कहे मैं खेल वेखणा रूमी, रोम विच अक्ख उठाईआ। मूसा कहे मैं शरअ दा बणां नजूमी, हिसाब इक्को
इक दृढ़ाईआ। जे कृष्न भिड़ाईआं सी अठाई कशूणी, खेल जगत वाला कराईआ। अगला भाणा प्रभ दा नामालूमी, गणती
गणित ना कोए गिणाईआ। जिस दा खेल सदा असूली, असल दा असल आपणे हथ्थ रखाईआ। सदी चौधवीं सब दे कोलों
करे वसूली, लेखा मंगे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा
पड़दा आप चुकाईआ। घड़ा कहे मैनूं बध्धे मौली तन्द, मुहम्मद तेरी आशा पूर कराईआ। तेरी शरअ नूं करना आपणे विच
बन्द, बन्धन अवर ना कोए बणाईआ। पिछली औध गई हंढ, अग्गे होर ना कोए वधाईआ। मैनूं चार गुरमुखां घुट्ट के
दिती गंढ, चारों कुण्ट लई अगंड़ाईआ। हुण सुण उस प्रभू दा छन्द, जो तूं मेरा मैं तेरा रिहा सुणाईआ। जिस दे पिच्छे
गोबिन्द छड्डया पुरी अनन्द, अनन्द जगत वाला तजाईआ। ओह अन्तिम दीन दुनी दी ढाहवे कंध, कन्ढी बैठा वेख वखाईआ।
सृष्टी दृष्टी करे खण्ड खण्ड, खण्डा खड़ग नाम खड़काईआ। जगत रूप दिसे दुहागण रंड, हरि कन्त सुहाग ना कोए

हंढाईआ। टुट्टी अन्त सके कोए ना गंढ, मुहम्मद वेखे नैण उठाईआ। मेरा निशाना मिटणा तारा चन्द, चन्द सितार संग ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं वेखणा खेल ज़रूरी, ज़र्रा ज़र्रा ध्यान लगाईआ। कलयुग तोड़ना गढ़ ग़रूरी, हउमे हंगता देणी मिटाईआ। प्रकाश वेखणा इक्को नूरी, दो जहानां नज़री आईआ। इक्को नाम दी करनी मशहूरी, जगत जहानां आप सुणाईआ। पन्ध मुका के नेड़ दूरी, दूर दुराडा वेख वखाईआ। कलयुग कल्पणा मेटणी कूड़ी, कूड़ कुटम्ब देणा मिटाईआ। चतुर सुघड़ बणाउंणे मूर्ख मूढ़ी, दुरमति मैल धुआईआ। पुरख अकाल दीन दयाल दी मस्तक ला के धूढ़ी, टिक्के सच देणे रमाईआ। इक्को इक दी सारे रहिण हज़ूरी, हज़रत इक्को दिसे बेपरवाहीआ। जिस दी अवतार पैग़म्बर गुरुआं कीती मशहूरी, सेवक हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। घड़ा कहे मेरी गर्दन नाल बध्धा कसीरा, कसम खा के दयां जणाईआ। एह निशाना लाया गोबिन्द नाल तीरा, मुखी इक्को वार छुहाईआ। खेल खेले पीरन पीरा, वड दाता बेपरवाहीआ। कलयुग अन्तिम तोड़े शरअ ज़ंजीरा, शरीअत डेरा ढाहीआ। सदी चौधवीं आवे अन्त अख़ीरा, आख़र आपणी कल प्रगटाईआ। मालक बण के गहर गम्भीरा, गहर गवर वेख वखाईआ। कुम्भ विच भर के पंज पंज नीरा, आब आब नाल वखाईआ। सृष्टी दृष्टी कर दिलगीरा, धीरज धीर दए गंवाईआ। खण्डा खड़ग वेख शमशीरा, शरअ शरअ नाल टकराईआ। किरपा करे गहर गम्भीरा, गवर आपणा हुक्म वरताईआ। उस वेले जन भगतां नूं बख़्शे पगड़ी बीबीआं सिर ते देवे लीड़ा, ओढण नाम वाला टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सच्ची सरनाईआ। घड़ा कहे मैनूं मौली बन्नृया तन्द, तन्दवा गज ध्यान लगाईआ। मैं वेख्या इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। मैं आपणे विच छुपाउणा तारा चन्द, जो पिट्ठ उत्ते सुहाईआ। फेर सुणाउणा धुर दा छन्द, ढोला अगम्म अथाहीआ। उम्मत दा वक्त गया लँघ, अग्गे अवर ना कोए वधाईआ। जिस परवरदिगार ने उलटा डाहया पलँघ, चारे पावे लए बदलाईआ। ओह खेल करे सूरा सरबंग, सूरबीर इक अख्वाईआ। शब्दी अस्व कसे तंग, ज़ीन पाखर नाम टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। घड़ा कहे मेरे अन्तर पाणी रखया, रक्षकां दयां जणाईआ। आपणी उम्मत वेखो नाल अक्खीआं, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। परम पुरख दीआं कहाणीआं सदा सच्चीआं, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। जेहड़ीआं पेशीनगोईआं तुसां रचीआं, भविक्ख्तां विच गए सुणाईआ। उहनां दीआं आशा रखीआं कृष्न दीआं सख़ीआँ, साख्यात नैण

उठाईआ। मुहम्मद दीआं वेखो लिखीआं पट्टीआं, पटने वाला फोल फुलाईआ। सदी चौधवीं किसे दीआं दाढ़ीआं नहीं रहिणीआं रत्तीआं, रत्न अमोलक हीरे गुरमुख लैणे अपणाईआ। मज़्हबां वालीआं रहिण नहीं देणीआं पत्तीआं, मानस हिस्से वंड ना कोए वंडाईआ। जो नानक अर्जन संदेशा दिता राग छत्तीआं, मुहम्मद तीस बतीसा नाल रलाईआ। सब दीआं आशा जाणीआं कटीआं, कटाक्ष नाम वाला लगाईआ। अन्तिम औधां जाणीआं टप्पीआं, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। सब दीआं पिछलीआं कीतीआं जाणीआं ठप्पीआं, अगला ठप्पा नाम मोहर लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दीआं कथा आदि जुगादि जुग चौकड़ी लोकमात जाण ना कथीआं, कथ कथ अन्त ना कोए जणाईआ।

✪ १६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ जफ़रनामा साहिब गुरदवारे विच ✪

गोबिन्द खुनिसते कुनांह कुल ज़मूआ ज़वीलेज़ां अज़हू ज़ज़हू ज़ू के जानिस्ते ज़मीबो मलीएअरे खुदा औरंगे नदस्त ज़ाऊबे अर्श महिबूबे फ़र्श अजीआने तरश, ज़हिलज़ी ज़ाउसतू माविक्ता नूरे अलाह गुरुए अज़ां नादे शवां रहमते अवां जुलमतो ज़हिग
१५७७ अज़मतो बसिग बैज़िजज़ी ज़कीउल ज़ाकिसता ज़ानूज़ो ज़ामीने आमीने सजदाए मुहम्मद, रुहूए हमद बेशाने ख़लक नूराने झलक १५७७
२२ उम्मते सलक आफ्ताबे तलूह, नूरे नज़ा हज़रते हज़ा कोमीज़ा ज़ाहिदा नानके तविदा गोबिन्दे सविदा शब्दे बिबबिदा बेज़ीनो २२
मसीह, हज़रते ज़वीह मुहम्मदे नवीह अताए आज़िस नूरे ज़विस खुदाए अमाम, अमले बेजाम, शीनो शिवाम शकले गुमनाम मानिज़ी महिबूब वाहिद अलाहीआ। गोशे तुयंग, तरकशे बियंग भथ्था अनयंग अस्वे सुरयंग नूरे अमाम, अज़िसते अज़ाम, ज़ेवा ज़हू ज़रीह बेपरवाहीआ। सम्मतो सुमत शहिनशाही लिज़त, नूराना चसत्त परकासिउ समरथ, गूने गवीह दवारा तवीह जफरनामा सिफ्त नहीं कवीह, काएनात हुक्म ना कोए जणाईआ। मुक्दसे मुकाम गोबिन्द लिख्या कलाम, शरीअत नेस्तो नज़ाम परगटिउ महिबूबे अमाम कदमे काज़िसती धरनी तदवाम, शरअ शनीसा शेर शेरो अबनीसा शब्दो ख़लीफ़ा, देवे हरीफा बेहरफ़ बेतरफ़ मुरशदे परवरदिगार खुद खुदाए अकाल अकल कलधारी बेमिसाल, मेरे लेख दा हल्ल करे सवाल, सदी चौधवीं उम्मत नबी रसूलां होए ज़वाल, ज़ाहर ज़हूर मुकामे मकीम आए अज़ीम, शब्दे नज़ीम नज़ीना नाहक मक्का मदीना एफक हुक्मे नज़ीउल यक, यकसां करे खलक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच लाविस्ती लवा आमिस्ती मज़ा मेहज़ हज़ूर इक अख्वाईआ। गोबिन्द अन्त कीता ध्यान, अक्खरां तों परे अक्ख उठाईआ। पुरख अकाल

कर परवान, परवाना तेरा हुक्म जणाईआ। खेल वेखणा विच मैदान, जगत शरअ शरअ नाल टकराईआ। तूं मालक दो जहानां हुक्मरान, दूजा नज़र कोए ना आईआ। धुर संदेशा दिता शाह पातशाह सचे सुल्तान, सति सतिवादी अगम्म दृढ़ाईआ। गोबिन्द सूरे नौजवान, मर्द मर्दाने तेरा लेखा पूर कराईआ। तेरा मेरा होणा इक मकान, साढे तिन्न हथ्थ सम्बल वज्जे वधाईआ। तेरा दवारा ज़रूर वेखे आण, सम्मत शहिनशाही सत्त दए गवाहीआ। अठ्ठां तत्तां दा लेखा आए चुकाण, अठ्ठ घंटे जोत शब्द दी धार विच समाईआ। दरगाह साची सचखण्ड तेरा परवाना होए परवान, परम पुरख वेखे चाँईं चाँईंआ। जन भगतां गुरमुखां गुरसिक्खां हरिजनां सूफ़ी सन्त फ़कीरां खुशीआं देवे महान, ग़मी विच गुरसिख रहिण कोए ना पाईआ। उन्नी कत्तक दिवस होए महान, हरिसंगत मिलणा चंगा दान, हरि हिरदे होए मुस्कान, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द आसा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी पुरख अबिनाशी घट निवासी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बेऐब परवरदिगार नूर अलाह आलमीन आपणा रंग रंगाईआ।

✪ जफ़रनामा गुरदवारे दे उपर मंजी साहिब विच ✪

सतिगुर गोबिन्द लेख लिख्या धुर दी कानी, काग़ज़ कलम शाही जगत ना कोए वखाईआ। संदेशा दिता दो जहानी, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल आप जणाईआ। मेरा शहिनशाह पुरख अकाल वड सुल्तानी, दीन दयाल बेपरवाहीआ। जिस ने लेखे लाई मेरी कुरबानी, पिता पूत माता उस दी भेंट चढ़ाईआ। गुरमुखां दी सदा धर्म दी बणा निशानी, निशाना जगत विच झुलाईआ। माछूवाड़े सथ्थर सेज हंढाई मर्द मर्दानी, आपणी खुशी बणाईआ। फेर पहुँचया विच बीआबानी, मारूथल देण गवाहीआ। जिथ्थे लेख लिख्या औरंगे दी बेईमानी, शरअ कूड़ दिती जणाईआ। अगम्म भेव विच संदेश दिता जिस नूं समझे ना कोए विद्वानी, अक्ल बुद्धी पर्दा ना कोए उठाईआ। इशारा कीता मुहम्मद दी उम्मत दिसे फ़ानी, अन्त रहिण कोए ना पाईआ। एह खेल वेखणा मेरे पुरख अकाल करके आपणी मेहरवानी, मेहरवान हो के आपणा वेस वटाईआ। उस वेले सतिगुर गोबिन्द शब्द दी होणी एह निशानी, निशाना शब्द गुरु वखाईआ। जेहड़ा लेखा लिख के धरनी विच कीता दफ़नानी, साढे नौ हथ्थ गहरा निशान लगाईआ। जिस मकबरयां वाले सारे करने फ़ानी, मंज़ल रुहानी नज़र कोए ना आईआ। झगड़ा मेटणा जिस्म जिस्मानी, ज़मीर ज़मीरां दए बदलाईआ। हुक्म संदेशा देवे कलमा बाहर कलामी, धुर संदेशा इक दृढ़ाईआ। इक रुपईआ गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द दे जफरनामे दी सफ़र विच रह जाए निशानी, कमरकसे लिखारीआं दे दए खुल्हाईआ।

अग्गे खेल वेखणा जगत मैदानी, नौ खण्ड पृथ्मी आपणी कार भुगताईआ। मालवे वाल्यो एह वेला नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग हथ्थ नहीं आउंदा जुग चौकड़ी अवतार पैग़म्बर गुर जिस दी गाउंदे बाणी, सो बाण अणयाला तीर चलाईआ। एह मार्ग भगतां दा दुक्खां वाला गोबिन्द दा बड़ा आसानी, मुश्किल गुरसिक्खां हल्ल कराईआ। जन भगतो तुहाडा मेला उस महिबूब नाल जेहड़ा अर्श फ़र्श दा माली, मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर गोबिन्द गोबिन्द सतिगुर शब्द अकथ कहाणी, महिमा वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग अन्त अन्त कलयुग लेखा जाणे लख चुरासी जीव जंत ब्रह्मण्ड खण्ड दो जहानी।

✪ गुरदवारे तों बाहर निकल के सड़क उत्ते शब्द चलया ✪

सतिगुर गोबिन्द एथे घड़ी सी कलम कानी, खण्डा तिक्खी धार छुहाईआ। नाले लेख लिख्या जगत जहान दी कट देणी गुलामी, बरदा रहिण कोए ना पाईआ। शरअ दी मेटणी बेईमानी, इस्लामी अन्त ना कोए रहाईआ। सदी चौधवीं उम्मत होणी फ़ानी, फ़ैसला हक हक सुणाईआ। कलयुग दी आयू पिच्छे बच्चयां दी दिती कुरबानी, छोटे नीहां हेठ दबाईआ। मेरा
१५७६ पुरख अकाल दीन दयाल वेखणहारा उपर ज़िमीं असमानी, जोती जाता अगम्म अथाहीआ। जिस ने हरिसंगत विच जितने १५७६
२२ दिन गोबिन्द चलया सी नन्गी पैरीं ओने दिन रखी परेशानी, आपणा भेव ना किसे जणाईआ। इहो सतिगुरु दी वड्डी मेहरवानी, २२
कोल बहि के भाणा सहि के सब विच रह के आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा लाहीआ। गोबिन्द ने पहलों मारीआं पंज लकीरां, कलम सज्जे खब्बे हथ्थ विच बदलाईआ। फेर किहा गुरसिखो तुहाडीआं बदल देणीआं तकदीरां, तदबीर धुर दा हुक्म जणाईआ। मैं खेल खिलाया बणके वड पीरन पीरा, पीर पैग़म्बर औलीए गौंस सारे लैणे निवाईआ। जिस वेले मैं बवन्जा लिखारीआं ते कवीआं दी धार पंजां नूं स्त्री मर्द दी धार विच बन्ना दिता चीरा, हरिजन गुरमुख सोहणा रूप दरसाईआ। दो जहान दा आपणे कंध उठावांगा बीड़ा, बीड़ी सिगरट पान खाण वाला रहिण कोए ना पाईआ। सदी चौधवीं मुहम्मद दी उम्मत उत्ते आवेगी भीड़ा, चौदां तबक रोवण मारन धाहीआ। अन्त अन्त अन्त खेल करे मेरा पुरख अकाला गुणी गहीरा, गहर गम्भीर बेपरवाहीआ। जिस ने दीन दुनी दी हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई दी बदल देणी ज़मीरा, ज़ाहर ज़हूर इक्को नूर करे रुशनाईआ। नाले हथ्थ रख के उत्ते शमशीरा, खण्डा खड़ग दिता खड़काईआ। नाले हथ्थ मारया उत्ते भथ्थे वेखी मुखी तीरा, तीर निशाना दो जहान चलाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गोबिन्द शब्द शब्द गोबिन्द आदि अन्त अन्त आदि सतिगुर सतिगुर इक्को नज़री आईआ।

✪ गुरदवारे तों लगभग तिन्न कू फ़रलांग दूर सड़क ते शब्द चलया ✪

गोबिन्द ने एथे लिखी सी तीजी सतर, तिन्नां गुणां तों बाहर रखाईआ। पुराणे चोले दी कट के कतर, अग्ग दिती लगाईआ। फेर छिड़क्या उत्ते अतर, महक नाल महकाईआ। फेर शब्द दा हिलाया छत्र, छत्रधारी देणे खपाईआ। फेर राग सुणाया मधुर, तूं मालक बेपरवाहीआ। मेरी ज़रूर पूरी करनी सध्धर, सध्धरां दे मालक दया कमाईआ। जिस वेले दुनी विच रिहा ना किसे दा कदर, कदीम दे मालक आउणा चाँईं चाँईंआ। जगत जहान करना पद्धर, नव सत्त करनी सफ़ाईआ। भगत सुहेले उपजाउणे रत्न, गुरमुख गोद उठाईआ। मेरे देस सुहाउणा पत्तन, ख़ाली हथ्थ मेरी दुहाईआ। सच तैनूं लग्गा दस्सण, संदेसा अगम्म अथाहीआ। कुछ अमानत लग्गा तेरे कोल रखण, हथ्थ दस्तार नाल छुहाईआ। फेर खुशीआं विच लग्गा हस्सण, अक्खां ज़िमीं असमान वल्ल टिकाईआ। फेर मिट्टी लग्गा चरणां नाल दब्बण, ज़ोर नाल दबाईआ। १५८० २२
फेर खुशी विच कीता बचन, सच सच सुणाईआ। प्रभू जिस वेले कलयुग कूड़ी क्रिया लग्गी मच्चण, अग्नी अग्ग तपाईआ। मिले किनारा ना किसे पत्तन, बेवतन होए लोकाईआ। उस वेले मेरे गुरसिक्खां आवीं पैज रखण, आपणयां भगतां लईं मिलाईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द तेरी दस्तार दा दस्तार होवे पत्तण, एह मेरा घाट सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। धरनी कहे मेरी एह पुकार, मैं सच दयां सुणाईआ। जिस वेले गोबिन्द लिखदा सी एथे तीजी कतार, गुरमुख बैठे अणजाणत ध्यान लगाईआ। फेर साहिबां ने खुशी नाल कीता इशार, उँगल माढ़ी वल्ल उठाईआ। जिस करके शुरू कीता दस्तार दा विवहार, पूरब लेखा पूर कराईआ। उन्नी कत्तक पिछला पूरा करना उधार, कर्ज़ा अवर ना कोए रखाईआ। हरिसंगत दा लंगर कमरकसे कस के लिखारी करनगे नाल त्यार, गुरमुख सिँघ सगला संग बणाईआ। साढे सत्त वरतेगा विच इक कतार, लाईन इक्को इक बणाईआ। सतिगुर जोत शब्द अधार, जोत शब्द रूप प्रगटाईआ। बैठेगा अधविचकार, विच गुरमुखां डेरा लाईआ। अगली रीती अपर अपार, सच स्वामी जगत चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ।

✪ गुरदवारे तों थोड़ी दूर फिर चलदे चलदे सड़क ते ही रुक के विहार होया ✪

कुम्भ कहे गोबिन्द गड्डुया मेरा निशाना, निशान दिता बणाईआ। मैनूं बख्श्या पंज पंज दाणा, रिज़क अतोट अतुट भराईआ। गुरमुखां पहना के जंगी बाणा, जगत जहान दए हिलाईआ। जन भगतां बख्श के दान महाना, ख़ाली भण्डारे आप भराईआ। एह लेखा बाहर दो जहाना, जगत अक्ल बुद्धी समझे कोए ना राईआ। चारे जुग खेल महाना, जुग जुग आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। दाणे कहिण असीं दईए हक ब्यान, सच सच सुणाईआ। लिखारी पहलों करन इश्नान, केस स्वासा जल मुख छुहाईआ। फेर कन्नां विच उँगला पाण, मिन्ट ढाई रखाईआ। फेर चरण कँवल करन ध्यान, नेत्र अक्ख ना कोए उठाईआ। फेर खुशी विच जैकारे लाण, पंज पंज पंज शनवाईआ। एह हुक्म धुर दा श्री भगवान, देवणहार अगम्म अथाहीआ। जिस नूं समझे ना कोए बुद्धी वाला इन्सान, अक्ल कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी धार आप बणाईआ।

✪ सड़क ते चलदे चलदे गुरदवारे तों थोड़ी ही दूर रुक के फिर शब्द चलया ✪

गोबिन्द खब्बे हथ्थ उत्ते एथे लेख लिखा, शाही लाल रंग रंगाईआ। माण दिता उन्हां गुरसिक्खां, जो सदी चौधवीं अन्त प्रभ नूं लैण ध्याईआ। चारों कुण्ट भवा के पिछा, कंड कंड लई बदलाईआ। फेर प्रेम दा कर के हिता, पुरख अकाल दिता सुणाईआ। सुण मेरे पुरख अकाल अबिनाशी अचुता, परवरदिगार अगम्म अथाहीआ। मेरा पैंडा अजे नहीं मुका, फेर आवां चाँईं चाँईंआ। नाल तेरा होवे खुशा, खुशी विच वज्जे वधाईआ। नाले ताअ चाढ़या मुच्छां, मुश्किल विच पाउणी सर्ब लोकाईआ। फेर आपणा फ़रकाया जुस्सा, ज़ोर नाल हिलाईआ। फेर निगह मारी मेरा निशाना जाए ना उका, तीर अणयाला इक वखाईआ। फेर हस्स के किहा मुखा, हँसमुख शब्द जणाईआ। लेखा पूरा करना धर्म धार गुरसिक्खां, जो सिख सिख्या विच समाईआ। पुरख अकाल नाल आउणा पिता, पतिपरमेश्वर मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, निरगुण हो के करे रिच्छा, रच्छक आपणी दया कमाईआ।

✪ १६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ नाज़र सिँघ दे गृह लंगर छकण समें विहार होया पिण्ड माढ़ी मुसतफ़ा ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

उन्नी कत्तक कहे मेरा लेख लिख्या इक नौ सम्मत विच उनीसा, बिक्रमी वीह दए गवाहीआ। जिस विच हज़रतां कीती हदीसा, पैग़म्बरां दिता जणाईआ। सदी चौधवीं अन्त ना रहे मुहम्मद ना रहे ईसा, मूसा मेला मेले सहिज सुभाईआ। दीन दुनी ख़ाली होवे ख़ीसा, माया ममता रोवे मारे धाहीआ। सति पुरख निरँजण जन भगतां चलाए साची रीता, मार्ग सतिजुग इक समझाईआ। लख चुरासी विच्चों परख के नीता, नीतीवान आपणा घर वखाईआ। निरगुण धार जोत बख्श प्रीता, सतिगुर शब्द मेल मिलाईआ। त्रैगुण तों कर अतीता, त्रैभवण धनी आपणा खेल खिलाईआ। झगड़ा मेट के मन्दिर मसीता, भगत दवारा इक वड्याईआ। जिथ्थे माण देवे हस्त कीटा, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। आपणा खेल करे अनडीठा, अनडिठड़ी कार भुगताईआ। पुरख अकाल दा भाणा मन्नणा कर के मीठा, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। जेहड़ा संदेश दिता सी राम सीता, बनखण्ड बिन रसन रसन सुणाईआ। जिस दा लेखा जणाया कृष्न विच गीता, राधा रंग रूप रंगाईआ। पैग़म्बरां दस्सी जिस असलीअता, असल असल आप प्रगटाईआ। गुरुआं दे हक नसीहता, जगत नसल दिती बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। उनीसा कहे मैं दस्सां इक नौ दी धार, सति सच जणाईआ। सतिजुग चले मार्ग अपार, अपरम्पर स्वामी आप चलाईआ। दीन मज़्ह़ब दा झगड़ा दए निवार, जात पात वंड ना कोए वंडाईआ। ग़रीब निमाणयां पावे सार, कोझयां कमल्यां गले लगाईआ। शाह सुल्तानां करे ख्वार, राज राजानां ख़ाक मिलाईआ। मानस मानुख मानव इक्को रंग रंगे करतार, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। सब दा सांझा होए प्यार, मुहब्बत मेहरवान इक समझाईआ। इक्को जेहा सब दा होए आहार, सूर गाँ दा डेरा ढाहीआ। किरपा करे आप निरँकार, निरवैर दया कमाईआ। भगत सुहेले कर त्यार, त्रैभवन धनी आपणी खेल खिलाईआ। उन्नी कत्तक दिवस विचार, सम्मत शहिनशाही सत्त नाल मिलाईआ। गोबिन्द दा लहिणा पूरा करे इकरार, पूरब खोज खुजाईआ। जिस गृह विच्चों हुक्म दिता सी सब दे सीस बन्न्ह्णी दस्तार, सिर सिर हथ्थ टिकाईआ। इक इक रुपईआ दक्षिणा देणी नाल, जन भगत परोहत लैणे बणाईआ। एह मंगण ना जाण किसे दवार, जगत मंगते इहनां दे दर आवण चाँईं चाँईंआ। अग्गे खेल करे सच्ची सरकार, हरि करता अगम्म अथाहीआ। लंगर दा अतुट त्यार कर भण्डार, भण्डारा खुशीआं नाल वरताईआ। शब्द लिखारी सेवादार, गुरमुख मेलां चाँईं चाँईंआ। अग्गे सतिजुग चले साची कार, हरिसंगत इक्को पंगत बहि के खाणा

खाईआ। नौ साल तों बाद एह पक्का हो जाए कौल इकरार, फेर तरमीम ना कोए वखाईआ। मुहम्मद दा कर्ज़ा देणा उतार, चौदां तबक लेखा रहे ना राईआ। जन भगतां दए अधार, घर घर रिज़क पहुंचाईआ। एथे उथे कदे ना आवे हार, हर हिरदे होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक दया कमाईआ। उन्नी कत्तक कहे अवतार पैग़म्बर गुर सारे आए मात, जोती धार सोभा पाईआ। विष्नूं वेखे सुहञ्जणी रात, भण्डारी अक्ख खुल्हाईआ। ब्रह्मा मारे झात, शंकर सीस निवाईआ। जे झगड़ा मेटणा काग़ज़ात, शरअ दा लेखा दए मुकाईआ। सब नूं सांझी बख्शे दात, नाम निधाना अगम्म अथाहीआ। हरिजन बणाए पारजात, रत्न रत्नां विच्चों प्रगटाईआ। धुर दा बण के सज्जण साक, सगला संग वखाईआ। वडयां छोटयां अमीरां ग़रीबां रंक राजानां इक्को बणा जमात, इक्को दर सुहाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाश, मेहर नज़र इक उठाईआ। सब दा लेखे लावे सास स्वास ग्रास, लंगर सब दे मुख विच पाईआ। नाल बैठ के खाए सर्ब गुणतास, गुणवन्ता आपणा पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक हो आईआ। सतिगुर धार देवे हुक्म अगम्म, अगम्म आप जणाईआ। जन भगत सुहेले सतिगुर धारों पए जम्म, नाता छुट्टया जम्मण वाली माईआ। गुरमुखो झगड़ा रख्यो ना काया माटी चम्म, ज़ात पात वंड ना कोए वंडाईआ। सारे इक्को रूप ब्रह्म, पारब्रह्म विच समाईआ। इक्को नूर दे चन्न, चन्द सितार दा लेखा देणा मुकाईआ। इक्को साहिब दे जन, जणेंदी अवर कोए ना माईआ। तुहाडा लेखे लग्गे सब दा तन, तत्व देवे माण वड्याईआ। हरख़ सोग़ मेट के ग़म, खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। भण्डारा कहे मैनूं गुरमुख खुशीआं नाल वरतावण, जाप अन्दरे अन्दर कराईआ। संदेशा मिले पवणी पवण, पवण पवणां हुक्म वरताईआ। देवत सुर भज्जे आवण खवाउण, दूर दुराडे सीस निवाईआ। धुर दे ढोले सारे गावण, फूलन बरखा अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा मार्ग आया लाउण, जगत रीती नीती धर्म दी धार दए प्रगटाईआ।

✪ १६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ नाज़र सिंघ, जगीर सिंघ, भाग सिंघ, कुलवन्त सिंघ, करतार कौर, गुरदयाल कौर, बसन्त कौर, समालसर, सुहावा सिँघ पंज ग्रांईआं, बिशन सिँघ पंज ग्रांईआ, खेम सिँघ कोटकपूरा, तारा सिँघ गाजीआणा, नरायण सिँघ निहाल सिँघ वाला, गुरनाम सिँघ गालब, रण सिँघ सरदारा सिँघ रोडे पिण्ड माढ़ी मुसतफ़ा ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

कुम्भ कहे मोहर लग्गी दाणा, आत्म परमात्म गुरमुख रूप दरसाईआ। मैनूं मिल गया लेफ तलाई सरहाणा, सोहणा सिंघासण दिता विछाईआ। मैं बेनन्ती करां अग्गे श्री भगवाना, निउँ निउँ सीस निवाईआ। मेरे मेहरवान जिन्हां मेरे विच कल्ल भरया सी जल अज्ज भरया दाणा, अन्न जल सब दा लेखे लाईआ। गुरमुख रहे ना कोए बेगाना, बन्धन नाम लैणा बंधाईआ। धुर दे शब्द दा दस्स तराना, तुरीआ तों बाहर पढ़ाईआ। सोहणा मन्दिर वखा मकाना, सचखण्ड दवार दृढ़ाईआ। नाम शब्द दे धुन्काना, जगष्त सरवण सुणन दी लोड़ रहे ना राईआ। दीआ दीपक जगा महाना, नूर नुराना कर रुशनाईआ। मैं तेरा तकां खेल महाना, महिमा अगम्म अथाहीआ। मैं संदेशा देवां दो जहाना, पुरी लोअ सुणाईआ। प्रगट होया नौजवाना, मर्द मर्दाना वेस वटाईआ। जिस वेख्या गोबिन्द वाला जफ़रनामा, ज़ाहर ज़हूर खेल खिलाईआ। पैग़म्बरां पूरा करे अहिदनामा, कौल इकरार खोज खुजाईआ। अग्गे देवे सच पैग़ामा, संदेसा इक इलाहीआ। लेखा पूरा करे कृष्ना रामा, बावन आशा पूर कराईआ। मालक बण के दो जहाना, दोहरी चोट डंक लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। कुम्भ कहे मैनूं बड़ा मिल्या आदर, मैं सच सच सुणाईआ। मैनूं माण दिता तेग़ बहादर, निगह मेरे विच टिकाईआ। मेरा कर्म होया उजागर, दुरमति मैल रही ना राईआ। सदी चौधवीं जन भगतो मैं बणां धर्म सौदागर, वणज करावां थांउँ थाँईआ। जिस वेले जल मिल्या ना किसे काया माटी गागर, बेआब रोवे लोकाईआ। उस वेले किरपा करे करीम कादर, मेरी सेवा इक रखाईआ। करे सच्चा आदल, इन्साफ़ दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। कुम्भ कहे मैं होणा सेवादार जग, जन भगतां सेव कमाईआ। जेहड़ी मिली माण वड्याई अज्ज, तिस दा लेखा पूर कराईआ। जिस वेले कलयुग अन्त लग्गी अग्ग, सदी चौधवीं ना कोए बुझाईआ। मैं जन भगतां कोल जावां भज्ज, जल आपणे विच टिकाईआ। गुरमुखो ठंडा पीवो रज्ज रज्ज, जगत तृष्ना रहे ना राईआ। मैं वड़ना नहीं मज़्हब दी हद्द, गोबिन्द दा कन्ना रिहा डराईआ। मैं वसणा जन भगतां दी नगरी अलग्ग, खेड़ा इक्को इक सुहाईआ। जिथ्थे पीवे ना कोई प्याला मदि, अमृत रस सर्ब चखाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। कुंभ कहे जिस वेले बावन गया बल दवार, आपणा वेस वटाईआ। उस कीता यग्ग आपार, अस्वमेध नाम धराईआ। जो पंडतां दिती धार, धर्म धार समझाईआ। ज़रा राजन कर विचार, शास्त्र रहे सुणाईआ। इक कुम्भ कर त्यार, उच्चे थाँ देणा टिकाईआ। विच अनाज पाउणा चार जुग दा प्यार, पंचम पंचम वंड वंडाईआ। फेर डण्डावत बन्दना करनी निमस्कार, पुरख अबिनाशी अन्न जल दे विच्चों नज़री आईआ। अखुट ना जाए भण्डार, अतोट अतुट वरताईआ। एह खेल वेखणा विच संसार, धरनी धरत धवल सोभा पाईआ। बल सब कुछ कीता त्यार, समग्री आसण उत्ते टिकाईआ। तेरां सौ सतासी रिषी करन पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। कुछ सानूं दे खवाल, भुक्ख्यां दे रजाईआ। असीं खाणा नहीं मंडा दाल, ब्रह्म भोज दे चाँई चाँईआ। बलि उठ के किहा विच दरबार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। एह सब कुछ मेरे साहिब दे अख्त्यार, दूजा मुखत्यार नज़र कोए ना आईआ। जिस नूं चाहे देवे बण वरतार, वरते थांउँ थाँईआ। एह खेल अगम्म अपार, समझ अपरम्पर इक समझाईआ। बलि ढहि प्या दवार, निव निव सीस झुकाईआ। बावन हस्स के किहा ढाई कर्मां कर दे दान, बहुती मंग ना कोए मंगाईआ। उस खुशी विच कीता परवान, निउँ के सीस झुकाईआ। बावन दो कर्मां कर तिन्न लोअ सब नूं कर

१५८५ दिता हैरान, हैरानी विच सारे वेख वखाईआ। बल आपणी पिट्ठ लग्गा मनाण, अद्धी कदम वंड वंडाईआ। फेर हस्स के १५८५

२२ किहा भगवान, बाहों फड़ गले लगाईआ। तेरा सब कुछ कर परवान, अग्गे आस ना कोए वधाईआ। दस्स की तेरा पकवान, २२

की अमृत रस चुआईआ। बल ने किहा बाकी सब कुछ कीता दान, ब्राह्मणां दिता खवाईआ। इधर मारो ध्यान, जल कुम्भ दयां वखाईआ। जिस दे विच पंज पंज दाणे कीते निशान, निशाना आत्म परमात्म रखाईआ। झट बावन ने फड़ के दो हत्थीं कीता परवान, खुशी विच सुणाईआ। बल तैनूं फेर जन्म देणा विच जहान, बलख तों मालवा देस सुहाईआ। फेर प्रभू खेले खेल वाली दो जहान, दोहरी आपणी कार कमाईआ। एह वस्त अगम्मी जन भगतां झोली भरे हो मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। उन्हां गृह खा पकवान, पक्का रिधा धुर दे लेखे लाईआ। अग्गे निखुट जाए ना विच जहान, भगतां देवे चाँई चाँईआ। बल निउँ के लग्गा सीस झुकाण, डण्डावत विच आपणा आप वखाईआ। झट नारद आ गया वाह राजन मेरे जजमान, की रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। नारद किहा सुण राजे बली, तैनूं दयां सुणाईआ। एह ब्राह्मण बावन छली, आपणा रूप बदलाईआ। तूं भगत दी धार इक इकल्ली, एह वफा अगम्म अथाहीआ। तैनूं ऐवें खड़का के सुणावे टल्ली, टल्लां रिहा हिलाईआ। औह

तक कलयुग अन्तिम भीड़ी गली, अग्गे लँघण कोए ना पाईआ। कुछ लेखा वेख मुहम्मद अली, चार यारां संग रखाईआ। धार तक गोबिन्द जिस सिख्या देणी सीस रखणा तली, दूजा संग ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद किहा ओ प्रभू छलीए बावना, क्यों भगतां नाल छल कराईआ। तूं बणना राम रामना, दहिसर देणा घाईआ। रूप प्रगटना घनईया शामना, कंस करें सफ़ाईआ। पैग़म्बरां पकड़ावणा दामना, पल्लू गंढ रखाईआ। गुरुआं देणा सतिनामना, फ़तिह डंक शनवाईआ। ओ प्रभू तेरी फेर वी पूरी होणी नहीं भावना, तृष्ना तेरी ना कोए बुझाईआ। तूं ज़रूर खेल करना कलयुग अंधेरी शामना, शमां नूर जोत कर रुशनाईआ। इक्को आपणा डंक वजावणा, दूजा रहिण कोए ना पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी हुक्मे विच भवावणा, दीप सत्त घुमाईआ। दीन मज़्ब दा खेल करावणा आहमो सामणा, सोहणी कार भुगताईआ। सदी चौधवीं आब पाणी हथ्थ किसे ना आवणा, प्यासी मरे लोकाईआ। तेरा ढोला किसे ना गावणा, अवतार पैग़म्बर गुरुआं सीस सर्ब निवाईआ। नारद किहा तैनूं ग्रन्थ बणावणा जामना, जामनी देणी भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सच तेरी सरनाईआ। नारद किहा ओ पंडत बुढ्ढे, बावन की खेल खिलाईआ। तेरी धार दिसदी बुद्धे, बुद्धी तों परे वेख वखाईआ। तेरा खेल तकणा अन्तिम कलयुगे, कलि कल्की नाम वखाईआ। जिस वेले पैग़म्बरां दे पैंडे मुके, अगला पन्ध ना कोए रखाईआ। सब दे अन्तर होणे भुक्खे, तृष्ना तृप्त ना कोए कराईआ। सजदे विच सीस किसे ना झुके, हंगता करे लड़ाईआ। उस वेले खेल करे पुरख अकाल असुते, निरगुण धार वड वड्याईआ। धर्म दी धार सुहाए रुते, सच दा रंग आप रंगाईआ। जन भगतां वात पुछे, घर घर वेखे थांउँ थाँईंआ। सदी चौधवीं अन्तिम आप प्याए जल प्याले घुटे, घुट्ट घुट्ट गले लगाईआ। जिस वेले अन्न पाणी दीन दुनी दा छुट्टे, जन भगतां दए रजाईआ। नारद फेर खुशीआं दे विच पुछे, बावन कुछ होर दे सुणाईआ। बावन किहा नारदा एह भेव रहिणे नहीं गुज्झे, पर्दा आप उठाईआ। जेहड़ी समझ तैनूं ना सुज्झे, ओह खेल देणी खिलाईआ। जेहड़ी वस्त बावन वास्ते बलि ने पाई विच माटी दे कुज्जे, ओह अन्त भगतां दी झोली देणी टिकाईआ। जेहड़े उगण आथण होण उग्घे, जगत जहान वज्जे वधाईआ। एह खेल करना निरगुण धार उत्ते बसुधे, धरनी धरत धवल धौल वेख वखाईआ। नव सत्त होणा युद्धे, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अदि जुगादि जुग चौकड़ी सब दीआं आशां बुज्झे, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ।

✪ २० कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ बूड़ सिंघ, सौदागर सिंघ, पूरन सिंघ, महिन्दर सिंघ, गुलज़ार सिंघ, प्रीतम सिंघ, इन्द्र सिंघ, जुगिन्दर सिंघ, बावा सिँघ रोडे, प्रीतम सिँघ नाथेवाल, जसवन्त सिँघ राजे आणा, बसन्त कौर पतो हीरा सिंघ, पिण्ड नाथेवाल ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

गोबिन्द कहे मैं वसया सम्बल खेड़ा, नगर अगम्म अथाह वड्याईआ। चौथे जुग देवां गेड़ा, कुण्ट चार चार भवाईआ। धरनी वेखां खुल्ा वेहड़ा, नव खण्ड पड़दा आप चुकाईआ। दीन मज़्ब दा कटां जेड़ा, तन्दव तन्द ना कोए बंधाईआ। गुरमुखां उत्ते करां मेहरा, मेहर नज़र उठाईआ। लख चुरासी पावां घेरा, बचया नज़र कोए ना आईआ। सूरबीर बण दलेरा, संदेशा देवां थांउँ थाँईंआ। कलयुग वेख आपणा अंधेरा, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। भेव रिहा ना सञ्झ सवेरा, रैण अंधेरी काली छाईआ। मुहम्मद इशारा देवां तेरा वक्त आ गया नेड़ा, अग्गे अवर ना कोए वधाईआ। उम्मती उम्मत डुब्बण वाला बेड़ा, बेड़ी नईया नौका ना कोए चढ़ाईआ। सब ने ख़ाकी ख़ाक होणा ढेरा, गोर बैठी मूँह खुल्ाईआ। चार कुण्ट
१५८७ होणा शोरा, शौहर बांका आप कराईआ। ख़ुशीआं वाला उडणा नहीं भौरा, सुगंधी नज़र कोए ना आईआ। ज़रा वेख की खेल होवे दोहरा, सरगुण निरगुण हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, १५८७
२२ सच दा हुक्म इक वरताईआ। मुहम्मद कहे वाह मेरे सुल्ताना, शहिनशाह वड्याईआ। मैं तेरा नूर नुराना, चशम नूर रुशनाईआ। २२
जल्वा तेरा ज़िमी असमानां, तकां धुर दरगाहीआ। कलमा सुणावां कलामा, कायनात जणाईआ। तूं मालक मेरा अमामा, अगोचर अगम्म अथाहीआ। मैं सजदयां विच करां असलामा, निउँ निउँ सीस निवाईआ। की गोबिन्द दा वज्जे दमामा चोट नगारे इक टिकाईआ। शरअ दा रहे ना कोए गुलामा, बन्धन ज़ंजीर दए कटाईआ। की खेल करे नौजवाना, मर्द मर्दाना हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी धार आप प्रगटाईआ। गोबिन्द शब्द कहे मैं वेख्या माटी भाण्डा, वरभण्ड दयां जणाईआ। किसे दा सीना रहे ना ठांडा, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। लहिणा पैग़म्बरां मुकदा जांदा, अग्गे अवर ना कोए वधाईआ। जिन्हां सूर गाँ खाधा ढांडा, खल्लां खल्ल लुहाईआ। उहनां सीर मिले ना माँ दा, अन्त रोवण मारन धाईआ। विछोड़ा होए प्रभू दे नाँ दा, जन्म लेखे कोए ना पाईआ। सहारा मिले किसे ना बांह दा, बाहों फड़ ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। घड़ा कहे मैं धुर दा हुक्म सुणावां, अणसुणत दयां जणाईआ। मुहम्मद ने जिस वेले पहले दिन सुणया तराना, कलमा नाम खुदाईआ। निगह मारी ज़िमीं उत्ते असमानां, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। फिर पैग़ाम

आया शाहाना, शहिनशाह दृढ़ाईआ। उठ रसूल नौजवाना, रसूलल्लाह रिहा सुणाईआ। लेखा पिछला मुक्कया कान्हा, बंसरी धुंन ना कोए वजाईआ। मेरा हुक्म तेरा इस्लामा, इस्म इक्को इक समाईआ। आपणा रूप दस्स के बाणा, तन वजूद दिता वखाईआ। लब लबां तांई कटाणा, लबरेज़ होए लोकाईआ। तेरा साढे तिन्न हथ्थ सरीर सुहाणा मकाना, धरनी धवल सुहाईआ। कोरा भाण्डा इक वखाणा, माटी काची दे वड्याईआ। एहदे विच रख चार काना, शरअ शरअ विच्चों दृढ़ाईआ। चार यार मेलण दा बणाया बहाना, हुक्म हुक्म विच्चों प्रगटाईआ। फेर दीपक जगा महाना, पंज तत तत कीती रुशनाईआ। फेर निगह कराई उपर असमानां, चिट्टी धार दिती प्रगटाईआ। पर्दा लाह मेहरवाना, मेहर मुहब्बत विच सुणाईआ। दिता नाम धन ख़ज़ाना, कलमा झोली पाईआ। फेर हस्स के किहा तेरा बदल जाणा ज़माना, ज़िमी असमानां खोज खुजाईआ। चौदां तबक मेरा तराना, तेरी तुरीआ राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। चार काने कहिण असीं वड़ गए विच मटके, मुहम्मद दिता टिकाईआ। असीं खेल वेखे नट्ठ के, भज्जे वाहो दाहीआ। निशाने तके सति दे, सति ज़िमीं असमानां प्रगटाईआ। भेव खुल्ले परमेश्वर पति दे, पर्दा आप उठाईआ। असीं खुशीआं दे विच हस्सदे, हस्ती तक नूर इलाहीआ। फेर मुहम्मद तांई दस्स दे, गुफ़त शनीद सुणाईआ।
१५८८ खेल होए निज नेत्र लोचन नैण अक्ख दे, बाहरों समझ कोए ना पाईआ। नूर तके रूप प्रतख दे, साख्यात सोभा पाईआ। १५८८
२२ चार यार तैनूं लभ्भदे, खुद खुदा रिहा दृढ़ाईआ। मेले होणे नाल सबब्ब दे, सज्जणा समझ कोए ना पाईआ। कुछ बचन सुण लै अज्ज दे, पहली गुफ़तार विच सुणाईआ। जो घड़े सो भज्जदे, अन्त रहिण कोए ना पाईआ। ओह वेख तेरे सदीआं सद लँघदे, आपणा पन्ध मुकाईआ। खेल वेख सूरे सरबंग दे, जो करता धुरदरगाहीआ। नज़ारे तक उलटे पलँघ दे, जो तेरा लेखा अन्त कराईआ। निशान रहिणे नहीं तारे चन्द दे, चन्द वेखे धुर दा माहीआ। असीं उस दा हुक्म मन्नदे, जिस दा कलमा अगम्म अथाहीआ। काने कहिण असीं वसेरा करदे नहीं बांस छप्परी छन्न दे, जगत दवार दा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। काने कहिण साडा कदीम दा सबूत, कुदरत दा मालक रिहा जणाईआ। जिस वेले मुहम्मद नाल चार यारी दा मिल्या कलबूत, तन वजूद नाल वड्याईआ। उस वेले नूरी अल्ला होया मौजूद, जोती जाता नूर चमकाईआ। आपणी मंज़ल दस्स मकसूद, हक हक दिता सुणाईआ। शरअ दी दस्स हदूद, बन्धन दिता बंधाईआ। इशारा कीता अर्श फ़र्श अरूज, आलीशान दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। काने कहिण जिस वेले चार यारी कीती त्यार,

मुहम्मद महिबूब दया कमाईआ। पंज दीपक बाले सी नाल प्यार, पंचम तत रंग रंगाईआ। उत्ते चिट्टी चादर ताणी सी समझ रूप दातार, धरनी धवल वज्जी वधाईआ। फेर सजदा कर निमस्कार, आजज़ हो के सीस निवाईआ। मैं तेरा बरखुरदार, खुद मालक तेरी सरनाईआ। फ़रमान कीता परवरदिगार, पारब्रह्म आप सुणाईआ। तेरा लेखा चार यार, मुहम्मद अहिमद संग बणाईआ। होर सुण अगली गुफ़तार, गुफ़त शनीद दयां दृढ़ाईआ। जिस वेले तेरी आई अन्तिम वार, वाहिदा पिछला वेख वखाईआ। प्रगट होणा विच संसार, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। सब दी पावां सार, वेखां चाँईं चाँईंआ। फेर लहिणा देणा देवां कर्ज़ उतार, पिछला लेख रहे ना राईआ। कलि कल्की लै अवतार, अमाम अमामां नाउ प्रगटाईआ। एसे घड़े कुम्भ नाल करां विहार, माटी मटका सोभा पाईआ। चारे काने विच खिलार, तेरी यारी आपणे विच छुपाईआ। एसे रसम नाल तेरी कसम नाल उत्ते चिट्टी चादर देवां ताण, दीपक पंज पंज रुशनाईआ। अगला लेखा फेर दस्सां महान, महिमा अकथ कथ दृढ़ाईआ। वीह कत्तक संदेशा दिता नौजवान, सम्मत शहिनशाही सत्त सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवणहारा साचा दान, सीस दस्तार रख भगवान, भगवन भगवन्त कन्त अन्त आपणे विच समाईआ।

१५८६ १५८६

२२ २२

२१ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ नाज़र सिंघ, साधू सिंघ, मलकीअत सिंघ, मंगल सिंघ, सरदारा सिंघ, कर्म सिंघ, भवगान कौर, सरवण सिँघ पक्खोवाल, भगत सिँघ लताला, बलवन्त सिँघ गुज़रवाल, हरजीत सिँघ लील, भाग सिंघ, बसराउ गुरदयाल कौर बोपाराए, धन्ना सिँघ ढहि पई, हरी सिँघ महिमा सिँघ वाला, बाबू सिँघ दद्दा हूर, नाहर सिँघ रकबा, गुरदयाल सिँघ नन्गल खुर्द, पलटू राम सुधार, चैंचल सिँघ सुधार, हरबंस सिँघ संगरूर, गुरनाम सिँघ बुढेल, दरबारा सिँघ बाठ, पाखर सिँघ मोही, गुरनाम सिँघ जनेतपुरा, बाबू सिँघ डेलों, अजमेर सिँघ ते जगीर सिँघ घुंगराणा, पिण्ड पक्खोवाल ज़िला लुध्याणा

सतिगुर शब्द कहे मैं दो जहानां चुक्कां पड़दा, ओहला दो जहान रहिण ना पाईआ। नव सत्त जगत जहान वेखां सड़दा, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। जन भगत सुहेला आत्म परमात्म मंज़ल वेखां चढ़दा, नव नव चार दा डेरा ढाहीआ।

ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ खेल वेखां अगम्मे घर दा, गृह गृह जो दरसाईआ। रूप वेखां तकां नरायण नर दा, जो निरवैर आपणा आप लए प्रगटाईआ। लेखा जाणां समुंद सागर सरोवर सर दा, तीर्थ तट्टां खोज खुजाईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर तकां दर दरवेश वरदा, ख़ादम ख़िदमतगार ध्यान लगाईआ। लेखा जाणां निरगुण सरगुण चोटी जड़ दा, चेतन भेव रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं मुहम्मद दिता इशारा, सैनत अगम्म लगाईआ। मूसा ईसा वेखो आपणा अन्त किनारा, नईया डोले थांउँ थाँईंआ। नूर छुपणा चन्द सितारा, सत्ता बुलंदी रहे कुरलाईआ। वरते खेल परवरदिगारा, बेपरवाह अगम्म अथाहीआ। जिस नूं झुकण तेई अवतारा, विष्न ब्रह्मा शिव सीस निवाईआ। सो शाहो भूप भूप बण सिक्दारा, हुक्म हुक्म इक दृढ़ाईआ। नव सत्त मेटणा धूंआँधारा, माया ममता मोह गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। मुहम्मद कहे मैं नेत्र अगम्म खोल्हया, नैण ल्या उठा। हक नाअरा इको बोलया, चौदां तबक सुणा। उम्मत उम्मती रहे ना अनभोलया, डौरु डंक वजा। सब दा लहिणा मुकणा हौलया, लेखा अवर रहे ना रा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा आपणा हुक्म वरता। मुहम्मद कहे मैं सदी चौधवीं मारां हाक, नाअरा हक सुणाईआ। कमलीए तेरा मेरा तुट्टण लग्गा साक, नाता अग्गे ना कोए जुड़ाईआ। उठ तक बन्दे माटी ख़ाक, ख़ाक सार होए लोकाईआ। मेरा पूरा होण लग्गा वाक, मदीना दए गवाहीआ। सदी चौधवीं चारों कुण्ट मारीं झाक, निरगुण धार लए अंगड़ाईआ। कुछ मेरा खेल वाच, पैग़म्बर सीस निवाईआ। केहड़ी कूटे लग्गणी आंच, अग्नी अग्ग जलाईआ। मुहम्मद वेख्या चारों कुण्ट अंधेरी रात, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। फेर संदेशा दिता साच, सच दिता समझाईआ। औह वेख खेल करे मेरा महिबूब कमलापात, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस दे सब कुछ हाथ, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। जिस नूं झुकदे त्रैलोकी नाथ, पैग़म्बर सजदयां विच सीस निवाईआ। ओह सब दी पूरी करन वाला अन्तिम वाट, अग्गे पन्ध ना कोए रखाईआ। अन्त किनारे पहुंचे घाट, पत्तन डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे हज़रत औह तक अष्टभुज दी धार, देव देवा दयां सुणाईआ। जेहड़ी होई सिँघ अस्वार, शस्त्रधारी रूप बदलाईआ। सुंभ निसुंभ दिते सिँघार, दैंता करी सफ़ाईआ। हुक्म मन्नया शाह पातशाह सच्ची सरकार, शहिनशाह आपणी कार भुगताईआ। जिस दे हुक्मे अन्दर जुग चौकड़ी चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग भज्जण वाहो दाहीआ। अन्तिम प्रगट हो कलि कल्की अवतार, अमाम अमामा वेस वटाईआ। जिस शस्त्रधारी

सिंघासण थल्ले दिती वाड़, उपर आपणा आसण लाईआ। छेती निगह उस वल्ल मार, बिन नैणां नैण उठाईआ। झट दुर्गा होई हुश्यार, संदेशा देवे चाँईं चाँईंआ। सदी चौधवीं हो जा ख़बरदार, बेख़बरे ख़बर इक दृढ़ाईआ। ओह वेख तेरा परवरदिगार, मेरा मालक अगम्म अथाहीआ। जिस मेरे नाल कीता प्यार, परम पुरख दिती वड्याईआ। ओह साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी सब दी पावे सार, महासार्थी आपणी खेल खिलाईआ। मैं चाहुंदी मैनूं सिंघासण थल्लयों कढ के उपर लए बठाल, देवे माण वड्याईआ। फेर सदी चौधवीं तैनूं करां बेहाल, बिहबल होए लोकाईआ। चार यारी वज्जे ताल, खण्डा चार कुण्ट खड़काईआ। तेरे कलमे दी दिसे कोए ना ढाल, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। सदी चौधवीं झट गुस्से विच अक्खां कर के लाल, भय रही वखाईआ। मेरा काला सूसा तक कमाल, अम्बर नीले रंग रंगाईआ। तूं मेरी झल ना सकें झाल, तैनूं सच दयां समझाईआ। मैं सारी खलकत करनी बेहाल, तोबा तोबा करे लोकाईआ। नी अष्टभुज तूं ते कालका कीता सी हल्ल सवाल, खप्परी जगत हथ्थ फड़ाईआ। नी मैं वी आपणी गोली दा मुख कर दिता लाल, खूनधारा धार वहाईआ। जिस नूं सके ना कोए संभाल, सम्बल बैठा हरि जू आपणी खेल खिलाईआ। दुर्गा कहे नी एह की कीता कमाल, की तेरी चतुराईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं हुक्म संदेशा देवे जिस दी अवल्लणी चाल, अनडिठड़ी कार कमाईआ।
१५६१ फल रहिण नहीं देणा किसे डाल, सिंमल रुक्ख जगत लहराईआ। उहदी झल्ले कोए ना झाल, सिर सके ना कोए उठाईआ। १५६१
२२ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे २२
दुर्गा मेरी गोली दे मुख विच लग्गा खून, खून खराबा दयां कराईआ। नी मैं पिछले चहुं जुगां दा बदल देणा मज़मून, कलम शाही कातब ना कोए लिखाईआ। मेरे परवरदिगार ने बदल देणा कानून, पिछला लाअ नज़र कोए ना आईआ। जेहड़ा मुहम्मद ने नुक्ता लाया विच नून, तिस दा लेखा पूर देणा कराईआ। मैं ताली मार के कहां सारे अवतार पैग़म्बर गुरुआं तों कर देणे महिरूम, महरम नज़र कोए ना आईआ। अगला खेल होणा नामालूम, बुद्धी विच ना कोए समझाईआ। मेरी इक्की कत्तक दी पहली रसम जिस ने वड्डी बणना रसूम, रिवाज जगत वाला बणाईआ। जिस प्रभू नूं सारे कहिंदे सूम, ओह जगत कहर लहर दे गफ्फे दए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ। दुर्गा कहे सदी चौधवीं कालका कोल सी काला खप्पर, जिस राकश लए खाईआ। मैं नौ सौ नड़िनवें योजन रोज करदी सां सफ़र, भज्जदी वाहो दाहीआ। किसे दे उत्ते आउण नहीं दिता सी कफ्न, मढ़ी गोर ना कोए जणाईआ। किसे दा पवित्र रहिण दिता नहीं सी बदन, शस्त्रां नाल धायल कराईआ। कूड़ा छुडा दिता वतन, बेवतन कीती लोकाईआ।

देवतिआं आई पैज रखण, दुष्टां डेरा ढाहीआ। एह तैनूं सुणावां बचन, संदेशा सहिज सुभाईआ। की खेल होणा अलख अलखण, अगोचर की कार कमाईआ। जिस वेले सदी चौधवीं लग्गी लँघण, मुहम्मद लेखा रहे ना राईआ। किसे नूं कोई ना लावे अंगण, गोदी गोद ना कोए टिकाईआ। निशान रहे ना तारा चन्दन, चन्द सितार रोवे मारे धाहीआ। मक्के काअबे मिले ना कोए अनन्दन, अनन्द अनन्द ना कोए रखाईआ। साची रहे कोए ना बन्दन, बन्दगी विच सीस ना कोए निवाईआ। फिरे दरोही विच वरभण्डन, ब्रह्मण्ड नेत्र नीर वहाईआ। झगड़ा मुकणा जेरज अंडन, उत्भुज सेत्ज लेख चुकाईआ। किरपा करे सूरा सरबंगण, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दे नाम नगारे वज्जण, गोबिन्द डोरू डंक वजाईआ। जिस दी ख़ातर तत्ती लोह ते बैठा गुर अर्जन, तेग़ बहादर आपणा सीस कटाईआ। गोबिन्द बच्चे नीहां हेठां लग्गा रखण, गढ़ी चमकौर दए गवाहीआ। माछूवाड़े माही आपणा लग्गा लभ्भण, सथ्थर यारड़ा सेज हंढाईआ। ओह खेल करे समरथण, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सब कुछ वेखे आपणी अक्खण, नेत्र जगत वाले खुल्हाईआ। दीन दुनी दे भाण्डे कर देवे सक्खण, जन भगतां देवे माण वड्याईआ। सदी चौधवीं सब नूं आवे परखण, कसवटी धुर दी नाल उठाईआ। कोटां विच्चों कोई गुरमुख साचे नाम दी सिल अलूणी आवे चट्टण, हीरा मुख नाल छुहाईआ। उस वेले ज़िमीं असमान फट्टण, पट्टी अवर ना कोए बंधाईआ। प्रभ दा खेल होणा बाज़ीगर नट्टण, स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। नी दुर्गा तेरी काली दी जीभ आया कटण, कटाक्ष आपणी धार मेरी गोली दे मुख विच लाईआ। जिस दा लेखा सके कोए ना रटण, संदेशा सके ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे जिस मेरी गोली दे मुख विच मारया तीर, निशाना जगत बणाईआ। नी मेरा साहिब पीरां दा पीर, अमाम अमामा नूर इलाहीआ। जिस शरअ दे कटणे ज़ंजीर, शरीअत देणी बदलाईआ। बदल देणी तकदीर, तदबीर आपणी इक समझाईआ। जिस नूं झुकणे पैग़म्बर गुर फ़कीर, फ़िकरा सुणावे थाउँ थाँईंआ। उहदी मंज़ल इक अख़ीर, आख़र रिहा दृढ़ाईआ। जिस दा होका दिता कबीर, कूक कूक सुणाईआ। जिस दी सिफ्त करे कुरान मजीद, तीस बतीस ढोले मुहम्मद गाईआ। उस दी अज्ज ख़ुशीआं वाली ईद, इक्की कत्तक ख़ुशी बणाईआ। जिस ने झगड़ा मेटणा छुरी शरअ वाली बकरीद, उस ने मेरी गोली जुगिन्दर दे मुख विच्चों धारां दितीआं वगाईआ। मेरी खुल्ह गई ग़फ़लत वाली नींद, आलस रिहा ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। अष्टभुज कहे नी मैं सुणया ओह परम पुरख प्रभ सांझा, निरवैर इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे ओह एसे कर के दीन मज़्हब नूं मारन आया मांजा,

जो सिंघासण कोल रखाईआ। औह वेख चार कुण्ट वगदा झांजा, झक्खड़ झुल्ले थाउँ थाँईंआ। दो जहान जिस दा ढोला गांदा, तूं मेरा मैं तेरा जंगजू बहादर तिन्ने चारे हथ्थ विच फड़ के देण वखाईआ। फेर मैनूं ना देवे कोए उलाम्भा, मैं सच सच दयां सुणाईआ। मैनूं सुण के आवे कांबा, कम्ब कम्ब गोली ने सृष्टी दिती हिलाईआ। नी दुर्गा तेरा काला खप्पर ते मेरा भाण्डा वेख लै तांबा, जिस दी उम्मत रीत दिती चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। तांबा कहे मेरी अनोखी धात, दरोही मेरी दुहाईआ। मुहम्मद ने नौ वार मेरे विच खाणा खाधा सी आप, आपणी हथ्थीं बणाईआ। अल्ला हू अन्ना हू करदा रिहा जाप, बिस्मिल कहि के खुशी मनाईआ। तन वजूद वखा पाक, रूह बुत कर सफ़ाईआ। झट खुदा ने खोल्या ताक, पर्दा रिहा ना राईआ। खुशी नाल सुणाई बात, बातन भेव चुकाईआ। ओह तक मुहम्मद सम्मत शहिनशाही सत्त इक्की कत्तक दी रात, रैण भिन्नड़ी दयां वखाईआ। जिस करना खेल तमाश, हुक्म हुक्म वरताईआ। तेरी उम्मत दी इक इक एहदे विच पाउणी लाश, गोरां रोवण मारन धाहींआ। शंकर भज्जा आवे उतों कैलाश, सँघारी आपणा पन्ध मुकाईआ। चारे फ़रिश्ते करन तलाश, ज़बराईल अज़राईल मेकाईल इसराफील भज्जण वाहो दाहीआ। अन्तिम किसे तों कम्म नहीं आउणा रास, रस्ता भुलाए बेपरवाहीआ। एह खेल बड़ा अफ़सोसनाक, चिन्ता चिखा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार भुगताईआ। झाड़ू कहे मैं धरनी करां साफ़, कूड़ा किरकट वेख वखाईआ। मैं जगत विच गुस्ताख़, मिट्टी ख़ाक उडाईआ। मैनूं इक दिन मुहम्मद गया आख, सहिज नाल समझाईआ। उठ के ज़रा झाक, सदी चौधवीं ध्यान रखाईआ। जिस वेले दीन दुनी विच रिहा ना साच, संजम सच ना कोए समझाईआ। चारों कुण्ट लग्गणी आंच, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। तेरा खेल होवे बहुभांत, पर्दा दयां उठाईआ। तूं पुरख अकाल परवरदिगार सांझे यार दा देणा साथ, सगला संग बणाईआ। जिस दा दो जहानां फिरना राथ, ब्रह्मण्ड खण्ड पन्ध मुकाईआ। तूं उस नूं मन्नणा कमलापात, पतिपरमेश्वर कहि के सीस निवाईआ। झट मांजे जोड़े हाथ, निउँ निउँ लागा पाईआ। मुहम्मदा कदों मुकेगी वाट, मैनूं दे दृढ़ाईआ। मुहम्मद खुशी विच दिता आख, सदी चौधवीं अक्ख उठाईआ। तेरी पति आपे लए राख, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। तूं सेवक बणना चाक, चाकर हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। तांबा कहे मेरी सब तों वक्खरी ताकत, सूरबीर दयां दृढ़ाईआ। किसे दी रहिण नहीं देणी रफ़ाकत, संगी संग ना कोए निभाईआ। दानशमंदां मेटणी ल्याकत, अक्ल बुद्धी ना कोए चतुराईआ। सब नूं लैणा आपणे विच हिरासत, बचया रहिण

१५६३
२२

कोए ना पाईआ। दीन मज़्हब दी रहिण नहीं देणी विरासत, आपणा पेट लैणा भराईआ। क्यों मेरे साहिब दी बड़ी याददाशत, जुगत दा लेखा भुल्ल कदे ना जाईआ। जेहड़ी दीन दुनी हो गई नास्तिक, नास करके दए वखाईआ। गुरमुख वेखे सन्त सुहेले अस्तिक, असल असल विच मिलाईआ। एह खेल प्रभू दा वास्तक, वसल यार दा दए गवाहीआ। चारों कुण्ट हुक्म दी होणी आफ्त, आफ्ताब नज़र कोए ना आईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं दा भविक्ख्त करे साबत, पेशीनगोईआं नाल मिलाईआ। कलयुग अन्तिम सब दा करे तुआकब, पिच्छे भज्जे वाहो दाहीआ। दो जहानां बणके राकब, हुक्म हुक्म वाला सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी आप कमाईआ। अष्टभुज कहे सदी चौधवीं मेरा नहीं कोई तकरार, झगड़ा जगत वखाईआ। मैं तां पिछली कथा दस्सण नूं आई सां बाहर, फिर सिंघासण थल्ले वड़के, आपणा आसण लाईआ। हुक्म नाल मैं वी कालका कीती सी त्यार, काला खप्पर हथ्थ फड़ाईआ। तैनूं गोली बख्शी परवरदिगार, रहमत सच वाली कमाईआ। जिस दे मूँह विच्चों चली लहू दी धार, धरनी लाल रंग रंगाईआ। एह खेल अगम्मी यार, हरि यारड़ा आप कराईआ। जिस दे सब कुछ अख्त्यार, मुखत्यारनामे सब दे लए छुडाईआ। मैं अन्त करां निमस्कार, निउँ निउँ लागां पाईंआ। तेरा खेल सच्ची सरकार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जिस दे जंगजू बहादर भगत सुहेले ख़बरदार, चारों कुण्ट लैण अंगड़ाईआ। तिस दे ढहि पवां दवार, निव निव लागां पाईंआ। जो करे करावे करनेहार, करनी करता इक अख्वाईआ। जिस दी शब्दी शब्द ललकार, दो जहान उठाईआ। उस दे चरणां दी धूढ़ी लावां छार, मस्तक ख़ाक रमाईआ। जो निरगुण निरवैर अमाम अमामा कलि कल्की लए अवतार, निहकलंका वेस धराईआ। शाह पातशाह शहिनशाह बण सच्ची सरकार, धुर दा हुक्म आप प्रगटाईआ। सब दा लहिणा देणा पूरब कर्ज़ा दए उतार, अवतार पैग़म्बर गुर लेखा रहे ना राईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाल परवरदिगार, सांझा यार होए सहाईआ। जन भगत सुहेले गुरु गुर चेले अन्त कन्त भगवन्त करे उज्यार, पर्दा कूड़ वाला चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जिस दा अन्त ना पारावार, बेअन्त बेअन्त कलयुग आपणा हुक्म आप वरताईआ।

✪ २२ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ नछत्र सिंघ, भाग सिंघ, गज्जण सिंघ, गुरनाम कौर दुराहा, काका सिँघ लिबड़ा,
बग्गा सिँघ नत, महिन्दर सिँघ झमट, गुरदेव सिँघ ललहेड़ी, श्री राम मकसूदड़ा, भजन सिँघ जीरख,
दर्शन सिंघ, जगदीश सिँघ अजनौध, गुरनाम सिँघ मुरिंडा, चैंचल सिंघ,
ईश्र कौर ते उजागर सिँघ महौण, बचन कौर ते मेजर सिँघ झमट बदोवाल, दुराहा शहर ज़िला लुध्याणा ✪

सतिगुर शब्द कहे मेरा खेल अगम्मा धरतन, धरनी धरत धवल धौल वेख वखाईआ। मैं हुक्म संदेशा सुणावां वाली अर्शन, अर्शी प्रीतम जो रिहा दृढ़ाईआ। की खेल होणा उत्ते फ़र्शन, चार कुण्ट अक्ख खुल्हाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सब नूं आवे परखण, पारखू आपणा वेस वटाईआ। जिस नूं ना कोई सोग़ ना कोई हरख़ण, चिन्ता ग़म ना कोए रखाईआ। जन भगतां देवे आपणे दर्शन, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे धड़कण, माया ममता मोह गंवाईआ। फेर लेखा जाणे शरकन गरबन, शमाल जनूब अक्ख उठाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं सुणे अर्ज़न, अर्ज़ी सब दी वेख वखाईआ। पूरब लेखा लाहवे कर्ज़ण, मकरूज आप चुकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी धार वेखे नौ बरतन, हिस्से आपणे वंड वंडाईआ। मुहम्मद दा लेखा पूरा करे नाल शर्तन, शरअ दा लेखा रहे ना राईआ। शाह सुल्तानां पुट्ठी होवे नरदन, सिर सके ना कोए उठाईआ। अमाम अमामा होवे मर्दन, मदद अवर ना कोए रखाईआ। ग़रीब निमाणयां वंडे दरदन, दुखियां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ। बरतन कहिण साडा रूप नव खण्ड, नव चार दए गवाहीआ। असीं उच्ची रौला पाउणा डण्ड, होका हक सुणाईआ। सृष्टी दृष्टी कर खण्ड खण्ड, सगला संग ना कोए निभाईआ। असीं सच दस्सीए जिस वेले निशान मुहम्मद बणाया सी तारा चन्द, नौ गृह समझ के सानूं कोल टिकाईआ। फेर हुक्म दा हो पाबन्द, सजदा सीस दिता निवाईआ। फेर कलमा गा के छन्द, ढोला गाया धुरदरगाहीआ। माणया अगम्म अनन्द, सुख सुख विच समाईआ। सुणया हुक्म सूरे सरबंग, हरि करता आप दृढ़ाईआ। मुहम्मद औह तक तेरी सदी चौधवीं रही लँघ, कदम कदम नाल बदलाईआ। तेरा महिबूब उलटा करे पलँघ, पावा चूल रहे कुरलाईआ। उस दा सीस ओढण होणा नंग, पड़दा सके कोए ना पाईआ। नौ बरतन कहिण गोबिन्द जिस वेले पहले दिन सी चढ़या जंग, जंगजू बहादर रूप बणाईआ। जिस वेले नीले दा कस्या तंग, थापी पिठ उत्ते टिकाईआ। सानूं सद्द के हुक्म दिता सूरे सरबंग, सहिज नाल सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नौ बरतन कहे गोबिन्द दिता आख, सहिज नाल सुणाईआ। वेखो मुहम्मद दी

अन्तिम शाख़, शाख़ रहिण कोए ना पाईआ। कर अगम्मी बात, बातन दिता दृढ़ाईआ। नाले मारया हाथ ते हाथ, हथेली हथेली नाल टकराईआ। फेर इशारा कीता मुहम्मद दी कबर विच एह नौ रखे सी साथ, किस्म वक्खरी वंड वंडाईआ। उस दी पुट्ठी करके लाश, पिट्ठ उत्ते टिकाईआ। एह संदेशा मुहम्मद दे के गया सी आप ख़ास, ख़ाहिश आपणी नाल प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ। नौ बरतन कहिण असीं बैठे रहे नाल सबर, सबूरी प्रभ ने दिती जणाईआ। वड़े रहे विच मुहम्मद दी कबर, मकबरयां डेरा लाईआ। तकदे रहे उपर अम्बर, असमानां परे अक्ख उठाईआ। किस वेले आवे साडे पैग़म्बरां दा पैग़म्बर, जल्वागर नूर इलाहीआ। सानूं फड़ के कढे विच्चों अंधेरी कन्दर, धरनी धरत उत्ते दए वड्याईआ। असीं निशान तक्कीए अन्तिम तारा चन्द्र, चन्द सितार वेख वखाईआ। जिन्हां रीती बदली मट्ठ मन्दिर, मस्जिदां रंग रंगाईआ। की खेल करे आपणी धार विच रंगण, रंगत रंग की बदलाईआ। साडी मंज़ूर होवे बन्दन, बन्दगी सीस झुकाईआ। परवरदिगार किहा जिस वेले सदी चौधवीं लग्गी लँघण, अन्त अख़ीर बेनज़ीर वेख वखाईआ। तुहानूं ल्यावे आपणे कोल पलँघण, पूरब विछोड़ा दए मुकाईआ। एह लेखा जाणे सूरबीर बहादर जंगण, ताकतवर नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। बरतन कहिण जिस वेले कबर विच लग्गा साडा डेरा, दर बैठे आसण लाईआ। अगला पन्ध तक्कीए नेड़ा, पिछला पन्ध चुकाईआ। कवण वक्त प्रभ देवे दीन दुनी नूं गेड़ा, भँवरी भव विच भवाईआ। जगत शरअ दा मेटे झेड़ा, झंजट अवर रहे ना राईआ। भाग लगाए काया खेड़ा, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे वधाईआ। मेहरवान करे आपणी मेहरा, मेहर नज़र उठाईआ। साडा लेखा पूरा करे केरां, जवां होर रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नौ बरतन कहिण असीं सुणया खुदा दा कलाम हक्की, मकबरे विच आसण लाईआ। साडी वासना रही ना शक्की, शिकवा दिता मिटाईआ। सानूं इयों जापया ज्यों मुहम्मद दी लाश हस्सी, हस्स के रही सुणाईआ। तुसां मेरे परवरदिगार दा खेल वेखणा अक्खीं, बिना अक्खां तों दए वखाईआ। जिस ने मेरी पति लैणी रखी, ओढण दए टिकाईआ। पर बरतनो याद करयो उस वेले सुक्का टांडा निशाना होवे मक्की, उत्ते गोबिन्द लेख लिखाईआ। सब ने डोरी उस उत्ते सट्टी, अवतार बैठे आस रखाईआ। अन्तिम जड़ सब दी जाणी पट्टी, पटने वाला लए अंगड़ाईआ। जोत धार होणी इक्ट्ठी, शब्दी डंक वजाईआ। ख़ाली भाण्डा दिसे मट्टी, मिट्टी ख़ाक नज़री आईआ। धर्म दी रहे कोई ना हट्टी, सच नाम ना कोए विकाईआ। लेखे लग्गे मुहम्मद दी मौली अट्टी, कसीरा रवीदास दए गवाहीआ।

उस वेले जन भगतां बन्नॄणी सोहँ मस्तक पट्टी, जंगजू बहादर चारे उठ के लैण अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। मक्की कहे मैं नहीं सुक्का टांडा, सब नूं दयां सुणाईआ। मैं लेखा मंगणा जिन्नॄां ने खाधा सूर गाँ ढांडा, पशूआं खल्ल लुहाईआ। पर याद रखयो उस वेले शब्द दी धार बलि दी गोली नाम लिखारी तृप्त दे सीस होवेगा लाल परांदा, सग्गी सगणां वाली नाल छुहाईआ। दो जहान भगत भगवान तूं मेरा मैं तेरा गीत होवेगा गांदा, गा गा खुशी मनाईआ। गुरमुख सूरबीरां ने खिच्चीआं होणगीआं लांगा, मालवे वाले देण गवाहीआ। उहनां चवॄां दे हथ्थ विच होणगीआं डांगां, सूरबीर लए उठाईआ। झगड़ा पाउणा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप आंढ गवांढां, वक्खरा घर ना कोए वखाईआ। कलयुग कूड़ लहर दीआं चढ़नीआं कांगां, कांगो वाले रोवण मारन धाहीआ। लेखा मुकणा रोज़े नमाज़ बांगां, अज़ां दा झगड़ा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी धार आप जणाईआ। कबर कहे मेरे अन्दर आई आवाज़, अज़ां दिती दृढ़ाईआ। जिस विच खोलॄया राज़, रहमत रहीम कमाईआ। पर्दा ओहला रहे ना आग़ाज़, लेखा लेख ना कोए जणाईआ। एह हुक्म देणा इक्को मालक वाहिद, दूजा नज़र कोए ना आईआ। पिछला कलमा रहे कोए ना शायद, शायद कहिण उत्ते प्रभ ने आपणा हुक्म आइद दिता कराईआ। तुसीं मेरे निक्के निक्के नाइब, संदेशे दिते थांउँ थाँईंआ। अगला हुक्म होणा जाइज़, नाजाइज़ ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। कबर कहे जिस वेले गुरमुख बहादर जगत बणे लड़ाके, शब्द डण्डे हथ्थ उठाईआ। उधरों खेल वेखणा परवरदिगार विच ढाके, बग़लगीर सब नूं दए बणाईआ। जिस दे कोल आदि अन्त दो जहान दे ख़ाके, मुसव्वर अवर ना कोए रखाईआ। लेखा मंगे पुरख अबिनाशे, अबिनाशी करता धुरदरगाहीआ। जिस ने अवतार पैग़म्बर गुरुआं पूरे करने इरादे, लेखा देवे चाँईं चाँईंआ। उस वेले कोटां विच्चों कोई भगत सुहेला जागे, जिस जागरत जोत करे रुशनाईआ। फेर हुक्म देवां आर पार कोल वाघे, वाहवा वज्जदी रहे वधाईआ। जो गोबिन्द दा लेख लिखाया विच दुआबे, ब्यास किनारा तट खुशीआं नाल सब नूं रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी खेल आप खिलाईआ। कबर कहे मैं वेखी (चौधवी) सदी, सदके सब नूं दयां सुणाईआ। मैनूं ऐं दिसया ज्यों धर्म लिखारीआं रूप बदल के सिर ते पा लई सग्गी, शगन जगत वाला मनाईआ। फेर चारों कुण्ट तकणी अग्ग लग्गी, लग मात्रा दा डेरा ढाहीआ। एह रसम उस तों कराउणी जिस दी गोत होवेगी जगी, जागरत जोत जगाईआ। इधर सूरबीरां ने पट्टी मस्तक बद्धी, आपणी लैण अंगड़ाईआ। अग्गे शरअ

दी किसे नूं लैण नहीं देणी वड्डी, नाम कलमा विचोला ना कोए रखाईआ। कलयुग दी रहिण नहीं देणी गद्दी, गदागर होवे लोकाईआ। इक्को नूर प्रगटाउणा रब्बी, जिस नूं रब्बे आलमीन कहि के सारे गाईआ। जिस दा अहिवाला दे देवां पोह छब्बी, छहिबर नाम वाली लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। हुक्म कहे आ गया नारद पांधा, नरदां पुट्ठीआं सिध्धीआं रिहा वखाईआ। आपणा गीत आपे गांदा, आपे रिहा जणाईआ। आपणी धूढ़ी आपे नहांदा, इश्नान आप समझाईआ। फेर बोल के हक सुणाउंदा, सुण वे मेरया गोबिन्द माहीआ। किथ्थों ल्यांदा सुक्का मकई दा टांडा, सुक्का हरया ना कोए कराईआ। मैनूं टिकाणा दस्स दे सचे थाँ दा, जिथ्थे प्रगट होवे धुर दा माहीआ। जेहड़ा सीर ना चुंघे माँ दा, पिता गोद ना कोए टिकाईआ। अग्गे रूप धरया होवे ना उहदे नाँ दा, जिस नूं अवतार पैग़म्बर गुर सारे सीस निवाईआ। ओह हिस्सा पावे ना सूर गाँ दा, मज़्हबां वंड ना कोए वंडाईआ। मालक ख़ालक होवे ते दो जहान जुम्मेवार न्याँ दा, हुक्म सच सच सुणाईआ। लेखा सब तों लए कीते गुनांह दा, बचया रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।
१५६८ २२ नारद कहे मुहम्मदा क्यों गूढ़ी नींद सुत्ता, सुत्तया लै अंगड़ाईआ। तेरा अन्तिम पैंडा मुका, मुकम्मल दयां सुणाईआ। तेरी उम्मत लेखा चुक्का, चुकन्ना दयां कराईआ। किसे दे गृह रहिणा नहीं हुक्का, हुक्म देवे धुरदरगाहीआ। जिस परवरदिगार पिच्छे कटाईआं मुच्छां, ओह मुश्किल रिहा वखाईआ। हुण झगड़ा पैणा कुशा, कुल उस दे नाल मिलाईआ। दोस्ता करीं मूल ना गुस्सा, गुस्से वाली गल्ल ना कोए सुणाईआ। जिस खुदा ने तेरे नूर नालों विछोड़या तेरा जुस्सा, कबरां विच दबाईआ। उस ने संदेशा दिता सुच्चा, सच दयां समझाईआ। तेरा नाता तेरी उम्मत नालों तुट्टा, तुट्टयां गंढ ना कोए पवाईआ। उस वेले गोबिन्द शब्द दा तीर निशान छुटा, अणयाला आप वखाईआ। तेरी लहिंदी ढहिंदी जाए गुड्डा, गोशा रोवे मारे धाहीआ। धरनी धरत पैज आप लुट्टा, लुटेरा बणया बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। टांडा कहे सुण नारद पंडता, ब्राह्मणा ब्रह्म दयां जणाईआ। जिस लेखा मुकाउणा कलयुग कूड़ क्रिया हंगता, हउमे डेरा देवे ढाहीआ। लेखा रहिण नहीं देणा भुक्ख नंग दा, भण्डारे अतुट दए वरताईआ। पहलों अवतार पैग़म्बर गुरुआं नूं नज़ारा वखाउणा उम्मत वाले जंग दा, मज़्हब मज़्हब नाल ठुकराईआ। लेखा पूरा होणा जो पेशीनगोईआं विच रिहा मंगदा, मुहम्मद आसा मनसा साहिब नाल मिलाईआ। जो गोबिन्द बचन कीता सी जिस वेले पहले दिन नीले दा तंग सी कसदा, तंगदस्त होवे लोकाईआ। मैं पुरख अकाल वणजारा नहीं पंजां दरयावां दे जंग दा, पंजाब विच इक इशारा

दिता कराईआ। मैं मालक हो के आवां खण्ड ब्रह्मण्ड दा, पुरीआं लोआं चरणां हेठ दबाईआ। मेरा नाम अणयाला तीर खेल करे चण्ड प्रचण्ड दा, तुरंग तुफंग इक्को नज़री आईआ। मैं किसे कोलों दान होवां ना मंगदा, मांगत हो ना झोली डाहीआ। इक्को नाता रखां तेरे संग दा, तेरे नाल मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सच तेरी सरनाईआ। टांडा कहे मेरे उत्ते लिख्या गोबिन्द, मिली मात वड्याईआ। मैं उहदा खेल वेखणा विच हिन्द, सम्बल निवासी ध्यान लगाईआ। भगत सुहेले तकणे अगम्मी बिन्द, बिन्दराबन दा ध्यान लगाईआ। लहिणा तकणा जीउ पिण्ड, ब्रह्मांड खोज खुजाईआ। जिस दी धार सागर सिन्ध, गहर गम्भीर नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरे महिबूबा, मेहरवान तेरी वड्याईआ। तूं हर घट सदा मौजूदा, दो जहानां सोभा पाईआ। तेरा हुक्म ना जाए बेहूदा, जुग चौकड़ी रीती चली आईआ। की सदी चौधवीं करना कर्म अजूबा, अजब निराले देवां दृढ़ाईआ। तेरा दर दवार सब तों ऊचा, उच्च अगम्म तेरी सरनाईआ। क्यों कुम्भ नूं मारया मूधा, मूधे तों सिध्धा फेर कराईआ। इस दा भेव दस्स दे इक ते दूजा, दूआ इक नाल मिला नेत्र रो के कहे बसुधा, धरनी रही जणाईआ। मेरे दीन दयाला मेरे सीने ते होणा युद्धा, युधिष्टर दा लेखा निक्का निक्का नज़री आईआ। उस वेले कृष्न ने आपणे रथ विच रथवाही बणके सवा सेर दा रखया सी ख़ाली कुज्जा, कुम्भ नूं हथ्थ मूल ना लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे सुणो हुक्म अलाह, आलीजाह सुणाईआ। मैं सब नूं दयां इतलाह, गुप्त शनीद आप दृढ़ाईआ। बाई कत्तक मेरा गवाह, शहादत शहिनशाहीआ। सब दे वायदे पूरे करे आप खुदा, खुद मालक नूर इलाहीआ। मुहम्मद दा लहिणा दए चुका, चुकन्ने चार यार कराईआ। जिस ने भगतां मस्तक पट्टीआं दितीआं बंधा, सोहँ अक्खर लेख लिखाईआ। हथ्थ डांगां रहे उठा, भय विच वेखण चाँईं चाँईंआ। लाल परांदा मारे धाह, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। सग्गी कहे सुहागण रहिणी कोई ना, दुहागण होए लोकाईआ। किसे दी पकड़े ना कोई बांह, सुक्का टांडा रिहा सुणाईआ। नौ बरतन हां विच करन हां, हमसाजण बणके संग बणाईआ। अन्त विछोड़ा होणा पुत्रां माँ, नार कन्त नज़र किसे ना आईआ। गुरु चेला देवे कोई ना ठंडी छाँ, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एथे उथे दो जहानां करे सच न्याँ, न्याँकार आदि अन्त जुगा जुगन्त इक्को इक अख्वाईआ।

✪ २३ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ सुरजन सिंघ, निरँजण सिंघ, महिन्दर सिंघ, गुरदेव सिंघ, मदन नाल, मग्घर सिंघ, भजन सिंघ, लाल सिंघ, हरनेक सिंघ, ज्ञान चन्द, हरबंस कौर, कुलदीप कौर, मलकीअत सिंघ, रवेल सिँघ लुध्याणा, सुखवन्त कौर, हरचरण सिँघ लुध्याणा, महिन्दर सिँघ दाखे, कर्म सिँघ गुड़े, सरदारा सिँघ चोलेवाल, मुखत्यार सिँघ मुंडीआं, बलवन्त सिँघ सन्त कलोनी पटयाला, भजन सिँघ चुपकी, हरबंस सिँघ शेरपुर, सरवण सिँघ जमाल पुर, जुगिन्दर सिँघ दाखे, शाम कौर मंडयाणी, जुगिन्दर सिँघ तलवाड़ा, फूला राणी लुध्याणा, लुध्याणा शहर ✪

मुहम्मद कहे उफ़ आह मेरया अल्ला, वली अल्ला हो के दयां जणाईआ। मेरे महिबूब तेरा नूर होया इकल्ला, अकल कलधारी दयां दृढ़ाईआ। यामबीन दरोही मेरे चौदां तबकां दा ख़ाली दिसे महल्ला, नूर ज़हूर नज़र कोए ना आईआ। हक ख़ुदाए चार यारी छुटदा पल्ला, पलक विच ख़ाली नज़रीं आईआ। मेरा कलमा कायनात होया झल्ला, झलक तेरी ना कोए वखाईआ। मेरी उम्मत लग्गण वाला सल्ला, सलल सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। तेरी क्यामत दा वक्त कदे ना टला, पैग़म्बर हो के दयां जणाईआ। तूं वसण वाला परवरदिगार निहचल धाम अटला, सचखण्ड साचे डेरा लाईआ। की खेल वरताउण लग्गा धरनी उत्ते थला, जल थल महीअल हुक्म वरताईआ। बौहड़ी चराग़ां विच किसे पाउणा नहीं तेल दा पला, दीवा बाती नज़र कोए ना आईआ। मेहरवान तेरे गोबिन्द दा इहो होणा हल्ला, हालत बदले कूड़ लोकाईआ। मैं तेरे दवारे दरवेश हो के खला, ख़लक दे मालक सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक दया कमाईआ। परवरदिगार कहे सुण मेरे मुहम्मद नबी, हज़रता दयां सुणाईआ। वेख लै लेखा आपणा चौधवीं सदी, सदके वारी आपणा घोल घुमाईआ। अग्गे कलमे दा बणीं मूल ना लबी, लालच अन्तष्करन ना कोए टिकाईआ। हुण खुशीआं नाल चुक्क लै उम्मत दी डग्गी, भार कंध्याँ उत्ते टिकाईआ। मैं मालक ख़ालक दो जहान कदी लैंदा नहीं वढ्ढी, रिशवत विच कदे ना आईआ। उम्मत दा नाता सदा लई छडीं, खुशीआं नाल मेरी झोली पाईआ। ज़रा वेख लै आपणी हदूद हद्दी, चारों कुण्ट अक्ख खुलाईआ। दहि दिशा अग्ग लग्गी, अग्गे हो ना कोए बुझाईआ। औह तक ईसा आउंदा पैर दब्बी, हौली हौली बिन कदमां कदम उठाईआ। मेरी रहिणी नहीं अन्तिम गद्दी, मालक मालक इक अख्वाईआ। जिस दा घड़याल बेमिसाल रिहा वज्जी, नौबत हक हक सुणाईआ। ओह खेल करे अलाही अल्ला रब्बी, गॉड गाईड आप अख्वाईआ। मूसा बांह चुक्क के सज्जी, कहे सज्जणो दयां जणाईआ। साडी सब दी डोरी उस नाल बद्धी, जिस नूं बन्दना

सजदे करके झट लँघाईआ। ओह शाह सुल्तान नौजवान मर्द मर्दान सूरा सरबगी, शहिनशाह शाह पातशाह आप अख्वाईआ। जिस ने दीन दुनिया चुरासी वेखणी रूप कग्गी, हँस गुरमुख खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। मुहम्मद कहे मेरी इक्को मुहब्बत वाली आह, अहिद आपणा वेख वखाईआ। तूं मालक बेपरवाह, बेअन्त तेरी वड्याईआ। मेरा वाहिद इक खुदा, बिना खुदी तक्ब्बर सीस निवाईआ। मेरी उम्मत होण लग्गी जुदा, तारा चन्द ना संग निभाईआ। अगला की संदेशा तेरा सद्दा, सुनेहड़ा दे दृढ़ाईआ। परवरदिगार किहा ज़रा नेत्र उठा सज्जा, सच दयां वखाईआ। ओह वेख शब्द गोबिन्द फिरदा भज्जा, दो जहानां वाहो दाहीआ। जिस ने चलणा मेरी विच रज़ा, सीस अग्गे ना कोए उठाईआ। उहदे चरण चुम्मदी फिरे लख चुरासी दी धार कज़ा, दूर दुराडी निउँ निउँ लागे पाईंआ। हुण सब ने आपणा करनी दा लैणा मज़ा, जो मज़ाक कर के आपणी खुशी मनाईआ। पैग़म्बरो आपणी उम्मत नूं तुसां आप दवाउणी मेरे कोलों सज़ा, लेखा सब दा अग्गे टिकाईआ। निगह मारो पवित्र रही कोई ना जगह, धरनी धवल ना कोए वड्याईआ। सच दी रखे कोए ना लज्जा, कूड़ कुकर्म दा डेरा ढाहीआ। मुहम्मद कहे दुहाई मेरया रब्बा, रहमत दे कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। परवरदिगार कहे मुहम्मद तूं इक नहीं एका, धुर कलमे नाल सुणाईआ। ओह तक तेई अवतार रखी बैठे टेका, टिक्के मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। दसां गुरुआं मेरे हथ्थ फड़ाया लेखा, लेख अवर रहे नाँ राईआ। जो गबिन्द दिता संदेसा, माछूवाड़ा सेज सुहाईआ। तूं पुरख अकाल इक नरेशा, नर नरायण तेरी वड्याईआ। मैं चाहुंदा मेरा तेरा इक्को होवे भेसा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जद वसीए ते वसीए सम्बल देसा, देस देसांतर दा डेरा ढाहीआ। झगड़ा मुकाईए मुल्लां शेख़ा, शख्सीअत इक्को इक समझाईआ। दीन दुनी दी बदल दईए रेखा, ऋषीआं मुनीआं तों दस्सीए बाहर पढ़ाईआ। जन भगतां करना हेता, हितकारी रूप बदलाईआ। पिछला चहुं जुगां दा रखणा चेता, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। मैं चाहुंदा तूं दो जहाना श्री भगवाना इक्को होवों नेता, दूजा शाह नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर करनी कार कमाईआ। तेई अवतार कहिण पैग़म्बरो बणाओ साथ, सगला संग बणाईआ। दस गुरु जणाओ गाथ, की गहर गम्भीर पढ़ाईआ। सारे बणीए इक जमात, दूजा नज़र कोए ना आईआ। धुर दी सुणीए हक हदाइत, संदेसा अगम्म अथाहीआ। की पुरख अकाला दीन दयाला करे अनाइत, रहमत बख्शिश झोली पाईआ। किस बिध खेल करे वाहिद, इक अकेला आपणी कार भुगताईआ। असीं सारे उस दे मुताहित, सिर सके ना कोए उठाईआ।

सारयां विच्चों चहुं जगां विच्चों केहड़ा बणया लायक, जो आपा प्रभ दे विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। मुहम्मद कहे मेरी आमीना, निव निव सीस झुकाईआ। जिस ने साडीआं कीतीआं तक्सीमां, हिस्से वंड वंडाईआ। ओह मालक आलीशान अज़ीमा, आलीजाह बेपरवाहीआ। जिस दा खेल आदि अन्त कदीमा, कुदरत दा करता आप अख्वाईआ। जिस ने सुहाया मेरा मक्का मदीना, मकबरयां दिती वड्याईआ। ठांडा कर के सीना, आबेहयात मुख चुआईआ। मैं उस दा कलमा कीता तस्लीमा, तसव्वर उस ने दिता कराईआ। ओह मेरा मालक कादर करीमा, कुदरत दा मालक नूर इलाहीआ। उस दा हुक्म सुण के मैनूं बिना बदन तों आउंदा पसीना, बिना तन रिहा कुरलाईआ। उस ने प्रगट होणा उत्ते ज़मीना, ज़िमीं ज़मां वेख वखाईआ। दुहाई सब दी कर देणी तरमीमा, तरफ़दारी ना कोए जणाईआ। मैं तकां उस दा नूर बड़ा हुसीना, जिस नूर विच हसन हुसैन गए समाईआ। उस तों बिना असीं अवतार पैग़म्बर गुरु सारे हो गए यतीमा, सिर हथ्थ ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। तेई अवतार कहिण हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद सब दी औध गई पुज्ज, पूजा जगत रहे ना राईआ। भेव खुल्हाए गुझ, पर्दा आप उठाईआ। जिस खेल कीता उत्ते बसुध, निरगुण आपणा हुक्म

१६०२ २२ वरताईआ। शब्दी धार कराउणा युद्ध, खण्डा खड़ग नाम खड़काईआ। उस नूं समझे कोए ना बुध, अक्ल चले ना कोए १६०२ २२

चतुराईआ। जिस ने बदल देणा युग, कलयुग कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। जगत जहान होणा उग्घ, उगण आथण करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद कहिण तेई अवतार मारो झाकी, बिन नैणां नैण उठाईआ। साडे नाल तुहाडा लेखा मुकणा बाकी, बकाया नज़र कोए ना आईआ। सच दवार दी खोल्ह के तक्को ताकी, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। जिथ्थे लेखा नहीं कलम दवाती, अक्खरां वंड ना कोए वंडाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु रसना बोले कोए ना साखी, जगत वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को नूर जोत प्रकाशी, नूर नुराना नज़री आईआ। साचे मण्डल पावे रासी, जोती जाता डगमगाईआ। जिस ने सब दी करनी बन्द खुलासी, बन्धन सारे देणे तुड़ाईआ। सचखण्ड दवार दा मालक होवे सचखण्ड निवासी, दर घर इक्को इक वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। अवतार पैग़म्बर कहिण गुरु दस दयो सलाह, मशवरा इक जणाईआ। कवण सांझा बणे मलाह, बेड़ा जगत जहान उठाईआ। केहड़ा रहिबर बण के दस्से राह, रहमत हक कमाईआ। केहड़ा सांझा कलमा दए पढ़ा, कायनात इक सुणाईआ। केहड़ा दीन

मज़ब दा लेखा दए चुका, आत्म परमात्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। केहड़ा धुर दी सिख्या दए दृढ़ा, पारब्रह्म ब्रह्म सगला संग बणाईआ। सारे कहिण इक्को मालक खालक प्रितपालक जिस नूं अल्ला राम वाहिगुरु कहिण खुदा, नूर नुराना नज़री आईआ। उस दे अग्गे करीए दुआ, बन्दना विच सीस झुकाईआ। पूरब लेखा सर्ब मुका, मुकम्मल आपणी कार भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर झट वेखण सारे, बिन नैणां तों नैण उठाईआ। वेखो खेल सच्ची सरकारे, की करता पुरख कार कमाईआ। जिस ने चार जुग सब नूं दिते लारे, संदेशयां विच सुणाईआ। ओह खेल करे अगम्म अपारे, अलख अगोचर वड वड्याईआ। जिस ने शब्दी हुक्म नाल एह बध्धे जुग चारे, सवाधान दए कराईआ। सतिजुग तेरे विच प्रगटया अठारां वारे, आपणी खेल खिलाईआ। त्रेता तेरा खेल विच संसारे, दोहरा आपणा वेस वटाईआ। जिस राम ने सीता पिच्छे पाए पवाड़े, दहिसर वरगे रावण घाईआ। द्वापर तेरे विच ला दिते अखाड़े, कान्हा कृष्ना वेद व्यासा रंग रंगाईआ। कौरव पांडव रथां उत्ते चाढ़े, आपणी खुशी बणाईआ। कलयुग तैनूं अन्त अन्त ललकारे, सच रिहा सुणाईआ। रूप अनूपा करे आप निरँकारे, पैग़म्बरां वेखे चाँईं चाँईंआ। बुद्धा दे के गया इशारे, सैनत नाल समझाईआ। नानक गोबिन्द खेल अपारे, जोती धार शब्द शनवाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निहकलंक लए अवतारे, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। सब दा लेखा वेख विचारे, विचरण दी लोड़ रहे ना राईआ। कलयुग अन्त खेल होणा विच संसारे, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव भज्जण वाहो दाहीआ। सो वेला वक्त पहुँचया अन्त किनारे, नईया नौका डोले थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे चारे जुगां हथ्थ बन्न्हे, बंधे दयो वखाईआ। जो खेल वखाया सी पुरख अकाल जट्ट धन्ने, पर्दा खोल्ह्या सहिज सुभाईआ। जिस दा निरगुण धार लेख लिख्या चौदां सौ तीह अंक पन्ने, अक्खर अक्खरी दए गवाहीआ। सो खेल करे जगत जहान आप भगवन्ने, भगवन आपणी दया कमाईआ। मुहम्मद दे पैंडे रहिण नहीं देणे लम्मे, सदी चौधवीं अन्त कराईआ। जेहड़ा इशारा कीता सी गोबिन्द दमदमे, मुखी तीर वाली उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप वरताईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं तेरा सुत दुलारा, सूरबीर नज़री आईआ। मैनूं होर जगत नूं दे लैण दे हुलारा, कूड़ी क्रिया नाल करां हल्काईआ। सब नूं भुला देवां तेरा दवारा, तेरे दर ते पुज्जण वाला रहिण कोए ना पाईआ। मेरी इक्को मिन्नत ते इक्को हाढ़ा, हाढ़ा कढ के दयां सुणाईआ। मैं चाहुंदा सृष्टी दे अन्दर ला देवां इक अखाड़ा, धरनी धरत धवल सोभा पाईआ। झगड़ा पावां मर्द

नारा, ज़नो मर्द दयां हिलाईआ। मेरा हुक्म मेरा लेख तेरी करनी पुरख अकाल परवरदिगार सांझे यार कोई छाप सके ना विच अख़बारा, अक्खरां नाल ना कोए दृढ़ाईआ। मैं तेरा इक्को इक लाउणा चाहुंदा नाअरा, नर नरायण दया देणी कमाईआ। जे तूं झगड़ा मेटणा चार यारा, यारी सब दी सब नालों देणी तुड़ाईआ। दीन मज़्हब दीआं क्यों मेरी झोली पाईआं खारा, ख़ालस रूप ना कोए जणाईआ। कलयुग कहे मेरे मालक मैं चाहुंदा मेरे पिच्छों सतिजुग त्रेता द्वापर मेरी करनी दीआं गाउंदे रहिण वारां, ऐसी करनी कर के दयां वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी अन्तरजामी अन्तष्करन सब दा वेखणा थांउँ थाँईंआ। पुरख अकाल कहे सुण दुलारे कलयुग, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। सब दी औध रही पुग, पूजा पाठ वेख वखाईआ। बच्चया तूं सब दी मलीन करदे बुध, बुद्धी वाला नज़र कोए ना आईआ। मेरे नाम कल्मयां वाले सारे जुट जाण विच युद्ध, यदी आपणा खेल खिलाईआ। किसे नूं सुझ सके ना कुझ, मूर्ख मुग्ध देणे वखाईआ। काया मन्दिर अन्दर वड़ के सब दे उपर पा लै आपणा रोब, भय विच लै डराईआ। किसे दा साबत रहे कोए ना जोग, जुगीशरां डेरा ढाहीआ। जगत वासना विच सृष्टी दी दृष्टी कल्पणा विच सारे करन भोग, भस्मड़ रूप ना कोए बणाईआ। नवां सालां विच मेरा सब नालों कर दे वियोग, विचला मेल ना कोए मिलाईआ। हर घट अन्दर भर दे हउमे रोग हंगता गढ़ सुहाईआ। गृह गृह दिसे सोग, चिन्ता चिखा जलाईआ। बिना भगतां तों मेरे नाम दी मिले किसे ना चोग, चुग़ली निंदिआ विच दिसे ख़लक खुदाईआ। फेर मैं तैनूं देवां दरस अमोघ, जोती जाता पुरख बिधाता हो के नज़री आईआ। हुण माण लई बथेरी मौज, मजलस मुहम्मद नाल बणाईआ। अग्गे करीं कोए ना लोभ, हिरस हवस ना कोए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित आपणी करे अगम्मी खोज, जगत खोज्जयां हथ्थ किसे ना आईआ।

१६०४
२२

✪ २४ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ माछूवाड़ा साहिब गुरदवारे विच विहार होया ✪

गुर गोबिन्दे मुहिज़ा असमाने ज़र्जी, नूरे अकाल, बेचशमे खुदा, शजीउल ज़मूज़े, अतीउल तिज़ा, खड़गे खड़गंग, प्रचण्डे प्रचण्ड, ब्रह्मण्डे ब्रह्मण्ड, गोबिन्दे अनंन, नाज़ीतो नवी, कज़ीमे आरू, अकाले दयाले, कृपाले, मजू शसतो, नज़ी फ़र्शी, ज़िमीं अर्शो, अवी आवले, इज़मलू, ज़नहिज़ा, शाइरो शबब, असमाने कबद, नूरे चशद, जिस्मों ज़वा, इस्मे खुदा धवले दुआ, अज़ां इक जणाईआ। गोबिन्दे अज़ीज़ अकाले नज़ीद खुदाए वज़ीद, यक वाहिदे अतीअद, आलमे अयश

शाहे शवश, शमा नूर, नज़ीउल नज़ा, बेनज़र इक बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर हुक्म इक सुणाईआ। गोबिन्द कहे मैं सथ्थर यार लथ्था, सुहञ्जणी सेज सुहाईआ। मेरी शब्द धार दी कथा, पुरख अकाल अकाल सुणाईआ। तेरा हुक्म यथार्थ यथा, यदी मन्न के सीस निवाईआ। मेरा मस्तक वेख मथ्था, धूढ़ी तेरी ख़ाक रमाईआ। मेरा सगल वसूरा लथ्था, बंस सरबंस तेरी झोली पाईआ। सच दवारे तेरे ढठ्ठा, खुशी नाल दृढ़ाईआ। मेरी पिठ ते तक तीर भथ्था, खण्डा हथ्थ विच चमकाईआ। मेरे मेहरवान मैं आया नठ्ठा, भज्जया वाहो दाहीआ। एह धाम निराला अच्छा, अच्छी तरह सुणाईआ। एथे राम मेरी आसा गया सी रखा, संदेशा दिता अगम्म अथाहीआ। एथे सप्तस ऋषीआं कीती तेरी कथा, बेअन्त बेअन्त तेरा खेल सुणाईआ। सब दा लहिणा देणा पूरा करना अग्गे रहे कोए ना रट्टा, रट्टा जगत वाला मुकाईआ। तेरे हुक्म अन्दर सब कुछ छड्डा, छड्डी कूड़ लोकाईआ। बिना दस्त हथ्थ बध्धा, विच बन्दना सीस झुकाईआ। कुछ अगला दे सद्दा, सदके वारी घोल घुमाईआ। फिर गोबिन्द खिड़ खिड़ा के हस्सा, हस्सती तक नूर इलाहीआ। कलयुग वेखां अंधेरी मस्सा, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। गोबिन्द किहा वेख हाल मुरीदां, तूं मुर्शद बेपरवाहीआ। अवतार
१६०५ पैग़म्बर हुक्म नामयां दीआं तक रसीदां, जो बिन अक्खरां दितीआं फड़ाईआ। मुहम्मद दीआं वेख उम्मीदां, चार यारी संग १६०५
२२ रखाईआ। जिस दे विच चौदां सदीआं भरीआं तौफ़ीकां, चौदां सद नाल वड्याईआ। उम्मत दीआं होणीआं तारीफ़ां, सिफ्तां २२
विच सालाहीआ। मैं सब नूं करन आया तस्दीका, शहादत बच्चयां वाली भुगताईआ। कलयुग दी जड़ उखेड़ां ठीका, ठीकर कूड़ा भन्न वखाईआ। जिस लेखे लाया सिंघ जुझार सिंघ अजीता, गढ़ी चमकौर गंढ पवाईआ। तेरीआं बेपरवाह तकणीआं रीतां, की अगली आपणी खेल वखाईआ। मैं चाहुंदा पुरख अकाल दीन दयाल धरनी उत्ते ना रहिण मन्दिर ना रहिण मसीतां, इक्को तेरा नूर नूर नुराने नज़री आईआ। सब दीआं बदल दईं वल्दीअतां, वलद वालदा इक अख्वाईआ। तेरे विच हक तौफ़ीकां, तूं मालक ख़ालक सचखण्ड निवासी धुरदरगाहीआ। नाले खण्डे नाल पंज कढ्ढीआं लीकां, नोक नोक नाल बदलाईआ। झट कलयुग दीआं निकलीआं चीकां, अग्गे आ के सीस निवाईआ। गोबिन्द कल्गीधर एह की कीता, की हुक्म रिहा सुणाईआ। गोबिन्द हस्स के किहा जिस वेले सदी चौधवीं वेला बीता, धरनी धवल पन्ध मुकाईआ। उस वेले कलयुग मेरीआं रखीं उडीकां, मैं आवां चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। कलयुग हस्स के किहा ऐ गोबिन्द धुर दे चन्द, चन्द सितारा तैनूं सीस निवाईआ। क्यों छड के पुरी अनन्द, जंगल बैठा

सेज विछाईआ। गुरमुख दिसे कोए ना संग, संगी नज़र कोए ना आईआ। किथे धौंसा तेरा मृदंग, रणजीत नगारा कवण खड़काईआ। किस बिध गढ़ी चमकौर आयों लँघ, आपणा खेल वरताईआ। गोबिन्द हस्स के किहा कलयुग आह मेरे साहिब दा सोहणा पलँघ, सथ्थर यारड़ा इक हंढाईआ। हुण मैं गढ़ी चमकौर दा ख़त्म कर के आया जंग, बेफ़िकर हो के फ़िकरा इक्को गावां धुर दे माहीआ। इक होर सुण अगम्मी छन्द, तैनूं दयां दृढ़ाईआ। मेरे साहिब दे कोल अनोखा ढंग, जुग जुग वखरी खेल खिलाईआ। जिस वेले सदी चौधवीं मुके पन्ध, नाल मुहम्मद चार यारी उम्मत तेरा संग बणाईआ। फेर ढाउणी शरअ दी कंध, दीन मज़्ब करे ना कोए लड़ाईआ। खेल होणा नाल सूरे सरबंग, जोती शब्दी वेस वटाईआ। सम्बल चाढ़ना नूर चन्द, साढे तिन्न हथ्थ रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता धुरदरगाहीआ। कलयुग झट झुकाया सीस, गोबिन्द चरण कँवल टिकाईआ। की खेल करें जगदीश, जगदीश्र कार कमाईआ। गोबिन्द किहा लेखा वेख बीस इकीस, दूआ एका जोड़ जुड़ाईआ। छत्र झुल्ले ना किसे सीस, राज राजान रहिण कोए ना पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सब ने गाउणा गीत, ढोला अगम्म अथाहीआ। पुरख अकाला दीन दयाला सृष्टी दृष्टी परखे नीत, नीतीवान दया कमाईआ। फेर खण्डे दी आपणे खब्बे हथ्थ ते खिच्ची लीक, लाईन ऐन दिती बणाईआ।

१६०६ २२ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गोबिन्द कहे यारड़े दा सथ्थर चंगा, सच सच विच समाईआ। मिल्या ओह अनन्दा, जिस दी आस अवतार पैग़म्बर गुर सारे गए रखाईआ। अग्गे चढ़ना नूरी चन्दा, अगम्म अथाह रुशनाईआ। मेरा फेर रूप नहीं होणा पंजां तत्तां वाला बन्दा, शब्दी सतिगुर गोबिन्द सदा सोभा पाईआ। कलयुग दा पैंडा रहे कोई ना लम्बा, मेरा ढईआ दए गवाहीआ। जेहड़ा मेरे सज्जे पट्ट दे उत्ते रखया खण्डा, एह ब्रह्मण्डां दए हिलाईआ। मैं सृष्टी विच रहिण नहीं देणीआं वंडां, इक्को इष्ट पुरख अकाल देणा बणाईआ। गुरमुखां गुरसिक्खां हरि भगतां मेरा होवे संगा, सगला संग जणाईआ। धुर दे नाम दा होए इक मृदंगा, जो पुरीआं लोआं खण्डां ब्रह्मण्डां उत्भुज सेतज करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गोबिन्द किहा कलयुग जा झुक, पुरख अकाल सीस निवाईआ। संदेसा दे दे मुहम्मदा तेरा पैंडा जाणा मुक, चार यारी ना संग निभाईआ। प्रभ दा भाणा ना जाए रुक, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। सदी चौधवीं लेखा रहिण नहीं देणा जिस लब कटाई मुच्छ, मुश्किल उम्मत देणी जणाईआ। जुग बदलणा प्रभ दी खेल तुछ, तुछ मात्रा दयां सुणाईआ। मैं पीर बणना उच्च, उच्च अगम्म अथाह मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे

१६०६ २२

खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। गोबिन्द कहे कलयुग दस्सां खेल अवल्ला, धुर दा हुक्म सुणाईआ। ओह वेख पैग़ाम देंदा नूरी अल्ला, आलमीन दृढ़ाईआ। उम्मत उम्मती छुडाउणा पल्ला, पल्लू गंढ ना कोए रखाईआ। धुर दा हुक्म कदे ना टला, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। इक्को नूरी जोत दीपक बला, गोबिन्द नूर करे रुशनाईआ। जिस शरअ दा मेटणा सल्ला, द्वैती डेरा ढाहीआ। माछूवाड़े मैनूं समझीं मूल ना कल्ला, अकल कलधारी मेरा सगला संग वखाईआ। ओह वेख मेरा शब्दी धार अगम्मी दला, जिस दी गणित ना कोए गिणाईआ। मैं कलयुग अन्त अख़ीर सतिगुर शब्द हो के मारना इक्को हल्ला, हिला देणी सृष्ट सबाईआ। जगत जहान करना झल्ला, मेरी झलक होवे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी कार आप कराईआ। गोबिन्द किहा एथे जंग दा कीता अन्त, पुरख अकाल नाल मिल के वज्जे वधाईआ। फेर खेल दस्सां बेअन्त, बेपरवाह नाल मिल के दयां समझाईआ। कलयुग तेरे मिटाउण दी सोहणी बणाउणी बणता, घड़न भन्नणहार आपणी कल वरताईआ। जिस दी महिमा सदा अगणत, अलख अगोचर अगम्म अथाह आप समझाईआ। जिस दा नाम फ़रमाना इक मंत, शब्दी शब्द करे शनवाईआ। उस तेरा तोड़ना गढ़ हँकारी हंगत, हउमे दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म फेर सुणाईआ। गोबिन्द पुरख अकाल अग्गे कीती अरदास, अरदासा इक्को वार सुधाईआ। मैं सदा वसां तेरे पास, विछोड़ा नज़र कोए ना आईआ। तूं मेरा साहिब अबिनाश, सचखण्ड निवासी नूर इलाहीआ। ओह तक अंधेरी रात, कलयुग साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। मुहम्मद दीआं चौदां सदीआं कर तलाश, लेखा देणा थांउँ थाँईंआ। नाले खुशी विच कीता वाक, सच दिता सुणाईआ। माछूवाड़े फेर दीन दुनी नूं देणी दात, कलयुग तेरी झोली नाल भराईआ। शरअ दा शरअ नाल कराउणा फ़साद, झगड़े विच जगत दुहाईआ। एह खेल कराउणा पुरख अकाल जिस दी रचना रची आदि, अन्त आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप चुकाईआ। कलयुग कहे गोबिन्द सदी चौधवीं तेरा की निशाना, साहिब सतिगुर दे समझाईआ। गोबिन्द किहा मेरा शब्दी शब्द तराना, नूरी नूर जोत रुशनाईआ। मेरा संग साथ होवे नाल श्री भगवाना, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दे हुक्म नाल मैं माछूवाड़े आया विच बीआबाना, जंगल डेरा लाईआ। आपणे तीर भथ्थे दा कर सरहाणा, सोहणी सेज सथ्थर यार वाली हंढाईआ। फेर लेखा चुकाउणा, दो जहाना, ज़िमीं असमानां वेख वखाईआ। योधा सूरबीर बण मर्द मर्दाना, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप धुर दा हुक्म इक वरताईआ। कूड़ी क्रिया विच कोई रहिण नहीं देवां ग़ुलामा, शरअ ज़ंजीर दए कटाईआ। जिस नूं मुहम्मद कहि के गया

१६०७
२२

प्रगट होवे मेरा अमामा, सो अमाम मेरा पुरख अकाल दा नूर इलाहीआ। जोती धार पहनणा बाणा, शब्दी शब्द डंक वजाईआ। माछूवाड़े फेर सुहाउणा अस्थाना, जिस दी वार थित ना कोए समझाईआ। चारों कुण्ट युद्ध होवे घमसाना, घुंमण घेरी विच लोकाईआ। एह खेल करना मेरे मेहरवान मेहरवाना, जो मेहरवान अख्वाईआ। जिस नूं ईसा मूसा मुहम्मद करन सलामा, सजदयां विच सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म सुणाईआ। गोबिन्द किहा मैं इक्को इक इक दा बेटा, दूजा संग ना कोए बणाईआ। इक्को इक इक दा खेवट खेटा, जगत मलाह इक अख्वाईआ। इक्को इक इक दा नेता, दो जहानां हुक्म सुणाईआ। कलयुग वेखीं माछूवाड़े दा भुल्लीं कदे ना चेता, चेतन तैनूं दयां कराईआ। जेहड़ा भथ्था मेरे प्यार विच लपेटा, वस्त्र पीला रंग रंगाईआ। ओह चौवी कत्तक सम्मत शहिनशाही सत्त माछूवाड़े फेर होवे मेरी भेंटा, पुरख अकाला दीन दयाला मेरी अमानत, मेरे कोल पहुंचाईआ। फेर मैं सारी दीन दुनी दा पुरख अकाल कोलों लै लैणा ठेका, बिना सतिगुर शब्द गोबिन्द तों सिर सके ना कोए उठाईआ। एह सब दा पूरा करना अन्तिम लेखा, लख चुरासी लहिणा देणा चुकाईआ। फेर कलयुग तेरी बदल देणी रेखा, सतिजुग सति सति वरताईआ। कलयुग निउँ के मथ्था टेका, एथे एसे तरह बहि के सीस निवाईआ। गोबिन्द तेरे बिना कूड़ी क्रिया भन्ने कोए ना कौड़ा रेठा, अंमित जाम ना कोए प्याईआ। झट पुरख अकाल शब्द संदेशा दिता सुण मेरे नूर अगम्मी बेटा, सुत दुलारे सति सच समझाईआ। तूं आदि अन्त जुगा जुगन्त मेरे नाल रहीं हमेशा, जम्मण मरन विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। गोबिन्द कहे मैं माछूवाड़े मिल्या साचे सईआ, पुरख अकाल मिल के वज्जी वधाईआ। फेर मैं गुरमुखां दा लेखा तक्कया धर्म राए दी उत्ते वहीआ, चित्रगुप्त नाल उठाईआ। मेरा गुरसिख कोई चढ़े ना कूड़ी नईया, जगत भँवर ना कोए भवाईआ। उस वेले गोबिन्द दी जेब विच अन्त अख़ीरी सी इक्को रुपईआ, जिस नूं फड़ के चरणां हेठ दबाईआ। फेर निगह मारी मेरा बीत जाणा ढईआ, ढौंके विच झट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वडा वड वड्याईआ। गोबिन्द इक रुपईए वल्ल तक्कया, धुर दा नैण उठाईआ। तूं कोई रहिण देणा नहीं भैण भाई सक्या, पिता पूत देणे लड़ाईआ। कलयुग झूठ चलाउणा हट्टया, सच दवारे रोवण मारन धाहीआ। तूं ढाउणा मदीना मक्कया, मुहम्मद संग चार यारी लहिणा देणा चुकाईआ। रुपईआ खुशीआं दे विच हस्सया, सतिगुर गोबिन्द सीस निवाईआ। मेरे साहिब मैं वी वेखदा अंधेरी मस्सया, कलयुग अन्तिम रिहा आईआ। मेरी तूंही करीं रच्छया, दूसर हथ्थ ना दईं फड़ाईआ। मैं तेरे चरणां ढट्ठया, तूं ही मालक मेरा हक खुदाईआ।

पटने वाल्या मैनूं लिख दे पटया, जिस पटे दा हरफ़ सके ना कोए मिटाईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम पैणा रट्टया, सदी चौधवीं आवे आपणा रूप बदलाईआ। झट गोबिन्द ने हथ्थ विच फड़ के दब्बया, आपणी खुशी वखाईआ। हुक्म दिता तेरा ममता वाला पैंडा लद्दया, तैनूं बख्शां इक सरनाईआ। ओह वेख कलयुग अन्त आउंदा भज्जया, भज्जे वाहो दाहीआ। जिस वेले किसे दी रखे कोई ना लज्जया, सिर हथ्थ ना सके टिकाईआ। उस वेले मैं आवां मेरे नाल होवे पुरख समरथया, दीन दयाला अगम्म अथाहीआ। तैनूं आपणे गुरमुखां दा बणावां सक्या, सज्जणा सज्जण दयां मिलाईआ। सीस दी धार उत्ते सरोपा देवां इहो लाहा रुपईए तूं खट्टया, गुरमुख मेला मेलां सहिज सुभाईआ। रुपईआ खुशीआं दे विच टप्पया, गोबिन्द चरण कँवल नौ वारी सीस झुकाईआ। फेर टेक्या मथ्थया, मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जिस वेले सृष्टी होणी ज़ीरो बटया, मिटे नाम निशान खुदाईआ। किसे दी कीमत रहे ना टक्या, शाह सुल्तान ख़ाक जाण समाईआ। माछूवाड़ा फेर धाम सुहञ्जणा होवे वड्याई देवे बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। गुरमुखां दी धार, भगतां दा प्यार, गुरसिक्खां दा उधार, गोबिन्द दे चरणां दी धूढ़ी छार, शहिनशाह शाही धार विच लेखे लाईआ। सम्मत शहिनशाही सत्त चौवी कत्तक दा विवहार, एह रुपईआ सतिगुर गोबिन्द गोबिन्द सतिगुर सतिगुर गोबिन्द दे दवार, दवारा गोबिन्द दा इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरब दा पूरा कर विवहार, धरनी धरत धवल धौल पाए सार, जिथ्थे मेल मिल्या गोबिन्द सूरे गोबिन्द सिँघ धुरदरगाही यार, यारड़ा सथ्थर बिन नीर वहाए अथ्थर, खुशीआं नाल खुशीआं दा मालक गया हंढाईआ।

सतिगुर गुर गोबिन्द गोबिन्द सिँघ धर्म धार दा बाणा, बाण अणयाला तीर चलाईआ। जिस नूं मंज़ूर करे कबूल करे धुर दा राणा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस ने आदि अन्त जुगा जुगन्त आपणा भाणा वरताणा, ना कोई मेटे ना मेट मिटाईआ। गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द सदा संग रखणा एथे उथे दो जहानां, विछड़े कदे ना जाईआ। पीला वस्त्र कहे मेरा परम पुरख सुल्ताना, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। गोबिन्द दे प्यारयां फिर सीस एह टिकाउणा, जो गोबिन्द नाल मिल के गोबिन्द रूप समाईआ। अग्गे वास्ते चुरासी विच्चों मुक जाए आणा जाणा, सचखण्ड विच प्रभ जोत विच मिल के प्रभ दा रूप नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दी दया लोकमात सतिगुर शब्द गोबिन्द हो के गुरसिक्खां उत्ते कमाईआ।

✪ २४ कत्तक शहिनशाही सम्मत ७ जगीर सिंघ, प्रीतम सिँघ ते सरजीतम सिँघ राजो माजरा, सरूप कौर गोसलां, बचन सिंघ ध्यानपुर, भजन सिँघ शेखूपुर, मेहर सिँघ शेखू पुर, प्यारा सिँघ लखनौर, नथ्था सिँघ बड़हेड़ी, अमर चन्द पंजकोहा, प्रिथी सिँघ चण्डीगढ़, सन्त सिँघ ते गुरदेव सिंघ माणक पुर, वीर सिँघ ते जेठा सिँघ बठलाणा, सुरजीत सिंघ ते गुरदेव सिँघ घड़ूंआ, प्यारा सिँघ राज पुरा, सुरजीत सिँघ ते गुरशरन सिँघ नन्गल टाउन, जुगिन्दर सिँघ लोटे कलोनी, गुरनाम सिँघ जनेतपुर, सेवा सिँघ खरड़, सुरिन्दर कौर पंजौर, सवरन सिँघ बरक्त पुर, हज़ारा सिँघ चूनी कलां, सुरजीत सिँघ जगत पुर, गुरदेव कौर बसी, हरबंस कौर मोरिंडा, रंगील पुर ज़िला रोपड़ ✪

सतिगुर शब्द कहे सुणो संदेशा तेई अवतार, पैग़म्बरां लैणां नाल मिलाईआ। तकणा खेल सच्ची सरकार, जो हरि करता आप कराईआ। पूरब पिछली पावे सार, महासार्थी आपणी कल प्रगटाईआ। जो संदेशा देंदा रिहा वारो वार, निरगुण सरगुण आप जणाईआ। सो खेले खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जाता पुरख बिधाता प्रगट हो विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी लए जगाईआ। जिस नूं कहि के आए निहकलंक लए अवतार, अमाम अमामा नूर अलाहीआ। सो मालक ख़ालक प्रितपालक अन्तरजामी सब दी पाए सार, लख चुरासी नौ दस यारां बीस तीस चार लख वेख वखाईआ। आपणा आपणा लहिणा देणा कर्ज़ वेखे उधार, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। अहिदनामे कौल इकरार तक्को जिस विच करे ना कोए तकरार, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म आप वरताईआ। तेई अवतार कहिण सतिगुर शब्द दस्सीए की कहाणी, कथनी कथ सके ना राईआ। असां भेव खुल्हाया शास्त्र सिमरत वेद पुराणी, गीता ज्ञान नाल मिलाईआ। पैग़म्बर कहिण पड़दा लाहया अञ्जील कुरानी, बाईबल तुरैत संग बणाईआ। की दस्सीए जिधर तक्कीए झगड़ा जिस्म जिस्मानी, ज़ाहर ज़हूर नज़र किसे ना आईआ। सब दी अन्तिम जूह दिसे बेग़ानी, मालक हक ना कोए बणाईआ। साडे अन्तर निरन्तर आई परेशानी, हैरानी विच दईए सुणाईआ। जिस नूं मन्नया शाह सुल्तानी, शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। ओह प्रगट होया योधा सूरबीर नौजवानी, मर्द मर्दाना वड वड्याईआ। जिस ने दीन मज़्हब दी बदल देणी कल्मयां वाली कलामी, कायनात इक पैग़ाम देवे चाँई चाँईआ। सदी चौधवीं सब दी लए अन्त सलामी, समरथ आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग मेटणी अंधेरी शामी, शम्हा नूर जोत कर रुशनाईआ। सब दा नाता जोड़ना बाहमी, आत्म परमात्म आपणा रंग रंगाईआ। झगड़ा रहिण नहीं देणा इस्लामी, इस्म इक्को इक वखाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अवतार पैग़म्बर सारे तकण लोकमात, जोती धार ध्यान लगाईआ। की खेल करे अबिनाश, अबिनाशी करता बेपरवाहीआ। जिस दी मण्डल मण्डप पावे रास, गोपी काहन खेल खिलाईआ। जिस दे कलमे दी दिती आवाज़, अज़ां इक जणाईआ। ओह की करे करनेहार वाहिद, वाइदे सब दे पूर कराईआ। अगला हुक्म करे राइज, राजा प्रजा इक्को रंग रंगाईआ। दीन मज़्हब दा रहिण ना देवे कोए मुहताज, नाम दी मुफ़लसी सारी दए मिटाईआ। नाम कल्पना विच रहे कोए ना अपाहज़, लंगड़ा लूल्हा रूप ना कोए दरसाईआ। जिस ने अवतारां पैग़म्बरां दा आपे रच के काज, लेखा सब दा झोली पाईआ। अग्गों दे ना सके कोए जवाब, जवाबतल्बी विच सारे सीस निवाईआ। बिना सईयदिउँ सारे करन आदाब, बिना कदमां धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर दस लाहो पड़दा, ओहला रहिण कोए ना पाईआ। वेखो खेल चोटी जड़ दा, चेतन सब नूं देणा कराईआ। रूप तक्को नरायण नर दा, नर हरि अगम्म अथाहीआ। जो भेव खुल्हाए साचे घर दा, पड़दा पड़दयां विच्चों उठाईआ। ना जन्मे ना कदे मरदा, गोर मढ़ी ना कदे दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अवतार पैग़म्बर गुर इक्को शब्द रहे दस्स, प्रभ नाम नाम वड्याईआ। इक्को नेत्र इक्को अक्ख, इक्को नैण जोत रुशनाईआ। इक्को रूप सदा प्रतख, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। इक्को सब दा सांझा हक, वक्खरा जुज़ ना कोए वंडाईआ। इक्को मार्ग लैणा तक, रहिबर इक्को नज़री आईआ। इक्को खेल पुरख समरथ, दूजा रूप ना कोए दरसाईआ। अवतार पैग़म्बर सारे पउ नट्ठ, भज्जो वाहो दाहीआ। मेल मिलावा होवे मालवे देश इक्ठ, पुरीआं लोआं चरणां हेठ दबाईआ। इक्को इक इक दा वेखणा हट्ट, वणजारा वणज दए कराईआ। जिस दा सच किनारा अगम्मी तट, नईया नौका नाम चलाईआ। जिस लहिणा देणा पूरा करना राम बेटे दसरथ, सीता सति धार नाल वखाईआ। धर्म दे साथी जिन्हां दे डांगा फड़ाईआ हथ्थ, मेल मिलाया थांउँ थाँईंआ। जिन्हां तिन्न वार राम दा रोक्या सी रथ, कैकई अग्गे वास्ता पाईआ। नौ वार जोड़े सी हथ्थ, मस्तक तिलक लगा के पाणी हथ्थां विच उठाईआ। नाले गाया प्रभू दा जस, सिफ्तां विच सालाहीआ। नौ कोस राम दे नाल गए सी नस्स, कदम कदम नाल बदलाईआ। फेर सीता बदल के अक्ख, मेहर निगह टिकाईआ। राम नूं किहा झट, हलूणे नाल हिलाईआ। एह की कहिंदे सच, दर तेरे सीस निवाईआ। झट राम उन्हां दे सीस हथ्थ दिता रख, नेत्र नैण बन्द कराईआ। औह कलयुग तक्को पुरख अकाल दा रूप तक्को प्रतख, जो राम

दा राम नज़री आईआ। तुहाडा लहिणा देणा गोबिन्द नाल पूरा करे झट, चार जुग दा मालक भुल्ल कदे ना जाईआ। वस्त धुर दी दे के वथ, राम राम नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे सीता दे धर्म दे साथी तिन्ने मोड़े, घरां वल्ल घलाईआ। उस वेले राम ने हथ्थ रखया सी काया दे भाण्डे माटी कोरे, घड़ा कुम्भ ख़ाक वाला नज़री आईआ। मिसरी दा कुज्जा रख के धुर दे राम अग्गे हथ्थ जोड़े, जन भगतां दा सगण तेरी झोली पाईआ। अग्गे साथ रहिण नहीं देणा रथ हाथी घोड़े, शाही लशकर ना संग निभाईआ। तेरा खाणा दिता भोरे भोरे, पहले दिन राम ने सवा सेर आटा गुंन्ह के सब नूं दिता खवाईआ। फेर हस्स के किहा कलयुग अन्तिम सब नूं पैणी लोड़े, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। जिस वेले सस्से उपर लग्गे होड़े, हाहे टिप्पी हँ रूप जणाईआ। कोटां विच्चों भगत सुहेले दिसणे थोड़े, गिणती गणित ना कोए गिणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। आटा कहे मेरी सवा सेर दी धार, सम्मत सोलह तों चली आईआ। हुण सृष्टी होणी ख्वार, नौ खण्ड पृथमी सार कोए ना पाईआ। चारों कुण्ट हाहाकार, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। किसे मिले ना कोए सहार, भुक्खी मरे खलक खुदाईआ। मैनूं प्रभ ने तुहाडे दर ते कीता त्यार, पाणी विच

१६१२

२२

मिला के दिती वड्याईआ। मैं होया ख़बरदार, सुत्ते लई अंगड़ाईआ। तक्कया खेल सच्ची सरकार, जो शाह पातशाह शहिनशाह खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक दया कमाईआ। सवा सेर कहे मैं भण्डारा वड्डा, वड्डयां निक्कयां दयां जणाईआ। जन भगतां संग कदे ना छड्डां, इक इक नूं मिलां चाँईं चाँईंआ। हुक्मे अन्दर फिरां बध्धा, जंगल जूह भज्जां वाहो दाहीआ। जिधरों मेरे साहिब दा आवे सद्दा, सुण के आपणी खुशी बणाईआ। जिस दी समझे कोए ना वजह, वजूहात ना कोए दृढ़ाईआ। सवा सेर कहे जिस वेले माछूवाड़े गोबिन्द ने पहले दिन खाधा, प्रशादा सवा सेर गुंन्ह के अतुट लंगर दिता बणाईआ। मेरा उसे दिन तों होया वाधा, वाइदे नाल दयां दृढ़ाईआ। बिना भगतां तों सच घर लए कोए ना फ़ायदा, नुकसान विच कूड़ लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी सेवा इक लगाईआ। घड़ा कहे मैं माटी दा भाण्डा कच्चा, जगत कच्चयां दयां जणाईआ। बिना पुरख अकाल तों होर कोई नहीं सच्चा, सतिगुर शब्द करे पढ़ाईआ। जिस दा आदि अन्त दा इक्को टप्पा, जगत टापूआं डेरा ढाहीआ। जिस दी जाणे कोए ना सत्ता, सतह बुलंदी वेखण कोए ना पाईआ। उस दा पड़दा लाहे कोए ना रता, रत्ती रत समझ किसे ना आईआ। ओह कलयुग अन्तिम खेल करे यथार्थ यथा, यदी आपणा हुक्म सुणाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। घड़ा कहे मेरा हाकम एकँकार, दूजा अवर ना कोए जणाईआ। मैं सेवा करनी विच संसार, भज्जां वाहो दाहीआ। भगतां नाल करां प्यार, नाता मुहब्बत वाला जुड़ाईआ। जिथ्थे आब ना मिले होवे हाहाकार, उथे गुरमुखां दयां रजाईआ। मैं ओस प्रभू दा बरखुरदार जिस दिती माण वड्याईआ। मेरी पुनह पुनह निमस्कार, निउँ निउँ लागा पाईआ। मैं यारां दिन वखरी वक्खरी करदा रिहा कार, जो करनी करता रिहा कराईआ। अन्तिम मालवे वाल्यो तुहानूं करां निमस्कार, जन भगतो निउँ निउँ लागां पाईआ। मेरे मेहरवान महिबूब जिन्नां दे सीस रखी गुरुआं दस्तार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं होणा ख़बरदार, हरि करता आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म आप मनाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा खेल अवल्ला, जगत शास्त्र कहिण कोए ना पाईआ। दूई द्वैती अन्त मेटणा सल्ला, सलल हो के वेखां चाँईं चाँईंआ। जन भगतां मेल मिलाउणा निहचल धाम अटला, सचखण्ड साचे जोड़ जुड़ाईआ। शब्द दी धार नाम फड़ा पल्ला, पलकां दे पिच्छे आपणी गंढ पवाईआ। सदी चौधवीं करां ना वल छला, अछल छल ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि,
१६१३ आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे इक इक दा पूरा होया १६१३
२२ वक्त, यारां दिवस वज्जी वधाईआ। हुण खेल वेखणा जगत, जागरत जोत कर रुशनाईआ। लेखे लाउणे धुर दे भगत, २२
भगवन आपणी दया कमाईआ। जो मालक ख़ालक वाली अर्श फ़र्श, लहिणे दए चुकाईआ। अमृत मेघ अगम्मा बरस, अग्नी तत तत बुझाईआ। निरगुण धार सरगुण कर के तरस, रहमत सच कमाईआ। जोती जाता हो के आया परत, पतिपरमेश्वर वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर हुक्म आप वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे जन भगतां सोहे सीस, सिर सर मिले वड्याईआ। किरपा करे इक जगदीश, जागरत जोत डगमगाईआ। भगत भगवान चलाई रीत, धर्म दी भेंटा भगतां अग्गे रखाईआ। झगड़ा मुका के मन्दिर मसीत, काया काअबे करी रुशनाईआ। जगत धारों कर अतीत, त्रैभवन धनी आपणा रंग रंगाईआ। गुरमुखां सदा बणी रहे प्रीत, प्रीतम मिल के वज्जे वधाईआ। मानस जन्म लैणा जग जीत, चुरासी फाँसी लेखा रहे ना राईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ सुहागी गाउणा गीत, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। पुरख अकाला वसे चीत, चितवित ठगौरी कोए ना पाईआ। सदी चौधवीं जाणा बीत, चार यार मुहम्मद होए सफ़ाईआ। ईसा लेखा रहे ना बीच, मूसा वंड ना कोए कराईआ। परवरदिगार सांझा यार साची दए कर तरतीब, तरह तरह आप दृढ़ाईआ। सब दा वक्त पहुँचया करीब, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। कलयुग अन्तिम खेल वरतणां अजीब, अजब

निराला आप वरताईआ। जिस लेखा मुकाउणा शाह ग़रीब, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई बचया रहिण कोए ना पाईआ। जन भगत सुहेले उधारने आपणे अज़ीज़, आजज़ां होए सुहाईआ। सब दी पूरी करे रीझ, मनसा मनसा नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दो जहानां करे इक ताकीद, ताईद शब्द गुरु जणाईआ।

१६१४
२२

✪ १ मग्घर शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल ज़िला अमृतसर रात नूं ✪

मुहम्मद कहे नी चौधवीं सदी, सदा देवां धुरदरगाहीआ। कमली आवीं पैर दब्बी, कदम आहट ना कोए सुणाईआ। शरअ दी मूल रहीं ना लबी, लालच मोह देणा तजाईआ। पल्लू छुडाउंदे जांदे नबी, रसूल रसम पूर कराईआ। ओह तक नूर नुराना जोत रब्बी, परवरदिगार बेपरवाहीआ। जेहड़ा प्रगट हुन्दा कदी कदी, कदीम दा मालक इक अख्वाईआ। जिस दा कलमा वहिण नूह नदी, वहिणां तों बाहर धार वहाईआ। सो संदेशा देवण वाला अभी, धुर फरमाणा आप जणाईआ। १६१४ २२
जगत जहान उम्मत लडाउणी नहीं लड्डी, मुहब्बत कूड़ ना कोए बणाईआ। मकबरयां विच तक रोवे सभदी पसली हड्डी, नाड़ी नाड़ी रही कुरलाईआ। जागरत जोत बिन वरन गोत इक्को जगी, नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मदा मेरे नाल हो जा सहिमत, सहिम रहे ना राईआ। परवरदिगार करे रहमत, रहीम वेख वखाईआ। मेरी काली धार वेखे तहिमत, तुहमत अवर ना कोए जणाईआ। मेरी लेखे लावे मेहनत, जो दर दर सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। मुहम्मद कहे सदी चौधवीं बिन नैणा मार झात, नैण अक्ख ना कोए उठाईआ। की खेल वखावे कायनात, दीन दुनी भेव चुकाईआ। शरअ दा शरअ नालों लेखा मुके मिले नजात, निज आपणी कार कमाईआ। उम्मत उम्मती होवे वफ़ात, वफ़ादार नज़र कोए ना आईआ। दरोही दरोही दरोही साडा लेखा लिख्या जांदा नाल कलम दवात, कागज़ धार दए गवाहीआ। चार यारी रहे ना साथ, सगला संग ना कोए निभाईआ। आह तक ओह तक नूर जोत प्रकाश, दो जहानां करे रुशनाईआ। मेरा ग़रूब होण वाला आफ्ताब, आफ्त आवे जगत लोकाईआ। जिस महिबूब ने बख्श्या ख़ताब, ख़तूत ख़त कलमे वाले लिखाईआ। दस्स महिबूब विच इक महिराब, पर्दा ओहला दिता उठाईआ।

सजदा दस्स रोज़ा नमाज़, बांग अज़ां दिती जणाईआ। ओह बदल के आपणा स्वांग, अमाम अमामा वेस वटाईआ। सोई सोई उठ उठ जाग, आलस निंद्रा रहे ना राईआ। जिस ने दीन दुनी दा बदल देणा समाज, समग्री धुर दी इक वरताईआ। सब नूं देणा पैणा पत्र त्याग, अग्गे सीस ना कोए उठाईआ। हुक्म संदेसा सुण लै जो दरगाह साची विच्चों आवे आज, आजज़ हो के सीस निवाईआ। उम्मत उम्मती हो जाणा मुहताज, सीस हथ्थ ना कोए रखाईआ। तेरे अन्त कन्त भगवन्त वेखणा धुर दा काज, करनी करता कार कमाईआ। छेती सुण की कहे नानक दी रबाब, जो तूंही तूंही राग सुणाईआ। अन्त लेखा मंगे जिन्हां भुंन खाधा कबाब, कबरां विच्चों मुरदे दए हिलाईआ। दुहाई उस अग्गे होणा पए लाजवाब, नेत्र नैण अक्ख शरमाईआ। सदी चौधवीं कहे हज़रता बिन अक्खरां वाली फोल किताब, जो बिना कुतबख़ान्यां टिकाईआ। जिस विच इक्को मित्र इक अहिबाब, सज्जण सैण इक हो आईआ। इक्को मिम्बर इक महिराब, महिबूब इक्को नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। सदी चौंधवीं कहे मुहम्मद पिछला लेखा वेख कदीम, कुदरत कादर आप जणाईआ। जिस दी करे ना कोए तरमीम, धारा सके ना कोए बदलाईआ। जिस दा मालक आलीशान अज़ीम, अर्श फ़र्श वेख वखाईआ। जिस ने अलिफ़ ये दी दिती तालीम, तुलबे पैग़म्बर लए पढ़ाईआ। मानव मानस मानुख कर तक्सीम, हिस्से जगत वाले वखाईआ। ओह खेल करे रहीम, रहमत हक कमाईआ। प्रगट हो के उत्ते ज़मीन, ज़िमीं जमां वेख वखाईआ। जिस दी धार सदा महीन, नेत्र नैण नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वडा वड वड्याईआ। मुहम्मद कहे सदी चौधवीं खोल्ह लै अक्खां, आख़र दयां दृढ़ाईआ। मित्र दिसे कोए ना सख़ा, सगला संग ना कोए निभाईआ। सूफ़ी नज़र ना आवे विच्चों कोई लखां, मुरीद मुर्शद मिलण कोए ना पाईआ। मैं हैरान हो गया मेरे महिबूब ने क्यों मैहन्दी लाई हथ्थां, रंग लाल गुलाल चढ़ाईआ। उस दे कदम कदमां ढट्ठां, कदमबोसी कर के ख़ुशी मनाईआ। चारों कुण्ट उठ उठ नट्ठां, भज्जां वाहो दाहीआ। नूर इलाही इक्को तकां, तकवा आपणा इक समझाईआ। दुहाई फिरनी विच मदीना मक्का, काअबे रहे कुरलाईआ। ओह वेख मूसा मारदा धक्का, ईसा इशारे रिहा जणाईआ। मेरा वायदा कौल इकरार होया पक्का, पाक दयां दृढ़ाईआ। सब दा लेखा मुकणा इक्ठा, जुज़ वंड ना कोए वंडाईआ। दीन दुनी दी उलटी गिढ़नी लट्ठा, चारों कुण्ट कुण्ट भवाईआ। किसे दा धीरज रहे ना हठा, सति विच ना कोए समाईआ। मेरा अन्तिम पूरा होया पटा, सदी चौधवीं दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद

मेरा तेरा पूरा होवे अरसा, अर्शी मालक रिहा जणाईआ। तेरा लेखा लिख्या सी गोबिन्द कन्ढे उत्ते सरसा, जिस दी सार कोए ना पाईआ। अन्त खेल होणा अर्शा फ़र्शा, दो जहानां वज्जे वधाईआ। शहिनशाही सम्मत होवे बरसा, सत्त सति नाल मिलाईआ। तेरा पूरब लौहणा कर्ज़ा, लेखा अवर ना कोए जणाईआ। पैग़म्बरां पूरीआं होणीआं ग़रज़ां, ग़रज़ सब दी वेख वखाईआ। लेखे लाउणीआं पिछलीआं कीतीआं अर्ज़ां, हरफ़ हरूफ़ वेख वखाईआ। ओहला रहिण देवे ना पर्दा, पर्दानशीं खेल खिलाईआ। तूं मालक रहिणा नहीं उम्मत वाले घर दा, गृह वंड ना कोए वंडाईआ। झगड़ा पैणा लहिंदा चढ़दा, मशरक मग़रब खेल खिलाईआ। ओह वेख हज़रत ईसा विच वड़दा, हुक्म आपणा रिहा जणाईआ। मूसा मूल रहे ना डरदा, निरगुण धार लए अंगड़ाईआ। झगड़ा छिड़ना चोटी जड़ दा, चेतन वेखे थांउँ थाँईंआ। दीन मज़्हब तकणा मरदा, मरजीवत रूप ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर मालक खेल खिलाईआ। सदी चधवीं कहे मुहम्मद मैनूं आउंदा हासा, हस्ती तकां बेपरवाहीआ। जिस दा अजब खेल तमाशा, तमाशबीन हो के वेखे चाँईं चाँईंआ। जो सब दीआं पूरीआं करे ख़ाहिशां, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। खेडां खेडे उपर पृथमी आकाशा, गगन गगनंतर वेख वखाईआ। बिना गोपी काहन तों पावे रासा, शब्दी जोती धार धार जणाईआ। जिहदीआं चार जुग दीनां मज़्बां वालीआं शाख़ां, शनाख़त आपणी दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद मेरे कोल काला कफ़न, कफ़नी वाल्या दयां जणाईआ। परवरदिगार सब नूं आवे मथण, जगत जहान वेख वखाईआ। दीन दुनी दिसदी ख़ाली हथ्थण, वस्त सच ना कोए उठाईआ। चारों कुण्ट दिसे रट्टण, रट्टा कूड़ ना कोए मुकाईआ। परवरदिगार सांझा यार सब दी जड़ आवे पट्टण, पटने वाला नाल मिलाईआ। ज़िमीं असमान लग्गे फट्टण, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जो वसे घट घटण, हरि करता नूर इलाहीआ। ओह सब दी नईया शौह दरया लग्गा सट्टण, नौका पार ना कोए कराईआ। जिस ने सब नूं कीता बेवतन, वतनां वाल्यां करे जुदाईआ। मेरा अन्तिम अन्त अख़ीरी पत्तन, घाट इक्को इक समझाईआ। मैनूं मुल्ला शेख़ मुसायक नबी रसूल मूल ना रखण, सगली गंढ ना कोए पवाईआ। मैं सच सुनेहड़ा आई दस्सण, हस्स के दयां सुणाईआ। किसे दा चलणा नहीं कोई यतन, यथार्थ परवरदिगार आपणा हुक्म वरताईआ। शरअ दी डोरी आया कटण, कटाक्ष आपणा नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। मुहम्मद कहे मेरे बेपरवाह, तेरी बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे नूरी हक ख़ुदा, ख़ुद तेरी वड वड्याईआ। क्यों करन लग्गा जुदा, जुज़ हिस्से वंड वंडाईआ। सब नूं

बदलण दी तेरी अदा, आदि जुगादि जुग चौकड़ी चली आईआ। अन्त इक वारी हो सहा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तारा चन्द बणे गवाह, शहादत इक्को इक भुगताईआ। सदी चौधवीं पैंडा ना मुका, मुकम्मल आपणी दया कमाईआ। तूं रब्बी नूर अलाह, आलमीन तेरी सरनाईआ। अन्त अख़ीर फड़ लै बांह, बाज़ू आपणे नाल बंधाईआ। निरगुण धार कर दे हां, हां हां विच मिलाईआ। मैं पैग़म्बरां दयां सुणा, संदेशा धुरदरगाहीआ। ईसा मूसा मुहम्मद सिर दयो झुका, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। रहमत विच मंगो दुआ, दोए दस्त ख़ाली आप वखाईआ। तेरी रहमत होवे बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर पर्दा आप चुकाईआ। परवरदिगार कहे सुण मुहम्मद रसूला, रसम दयां जणाईआ। सदी चौधवीं सब कुछ करना पए कबूला, कामल मुर्शद रिहा दृढ़ाईआ। मेरा बदले ना कदे असूला, असलीअत असल नाल मिलाईआ। चौदां सदीआं दोहां नूं दिता झूला, हुलारा जगत वाला जणाईआ। अग्गे हुक्म मिले माकूला, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। तुहाडा महिबूब इक्को इक दूल्हा, दो जहाना नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद सुण इक पैग़ाम, की पैग़म्बरां रिहा जणाईआ। तुहाडे कलमे दे हुंदयां क्यों होई अंधेरी शाम, शमा नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। क्यों ना मेल मिल्या धुर अमाम, अमाम अमामा वेख वखाईआ। भाग लग्गा ना किसे ग्राम, नगर खेड़े वज्जे ना कोए वधाईआ। की शरअ बणाई कट के चाम, चम्म दृष्टी ना कोए भवाईआ। हुण खेल वेखो विच मैदान, मकबरयां दा डेरा ढाहीआ। शरअ दे तक्को निशान, तारा चन्द नाल मिलाईआ। की हुक्म देवे रहमान, रहमत आप कमाईआ। सब दा लेखा होणा विच बीआबान, जंगल जूह वेख कुरलाईआ। जिस दे हुक्म विच लिख्या मजीद कुरान, कुरह काया ध्यान लगाईआ। ओह वेस वटाए हुक्मरान, धुर दा मालक रूप इलाहीआ। जिस ने कलमे दा चढ़ाउणा इक तुफ़ान, तोबा तोबा करे लोकाईआ। मेट देवे बेईमान, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। चल उस दी तक्कीए शान, जो शहिनशाह इक इलाहीआ। जिस दा हुक्म होणा परवान, परवाने बण के सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा मालक इक अख्वाईआ। मुहम्मद कहे मेरी इक्को सध्धर, सद सद सद दयां जणाईआ। सब दा लेखा होवे पध्धर, वड्डा छोटा ना कोए वड्याईआ। मेरी अन्त ख़ाहिश सदी चौधवीं तेरे अन्त ज़रूर होवे ग़दर, झगड़ा तकां थांउँ थाँईआ। मैं कलमा सुणां नाल धुन मधुर, शब्दी शब्द शब्द शनवाईआ। जगत जिज्ञासू धरनी धरत धवल उतों लद्दण, भार आपणा (आप) उठाईआ। मेरा महिबूब सब दी इक्को कर देवे बन्दन, बन्दगी बन्दयां बन्दयां वाली समझाईआ। आत्म धार दए अनन्दन,

अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। दीपक जोती जोत जगण, नूर नूर करे रुशनाईआ। बौहड़ी सब दी पिट्ठ अन्तिम होणी नग्न, पुश्त पनाह हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जिधर तकां ओधर दिसे अग्न, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। मेरे परवरदिगार सांझे यार शरअ वाले रहिण नहीं देणे बन्धन, तत तत्तां नाल टकराईआ। ज़रूर हज़ूर सब दा करे आपे वज़न, तोल तोले थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। धुर कलमा कहे ईसा मूसा मुहम्मद सारे करो आमीना, मिल के दयो जणाईआ। निगह मारो उत्ते ज़मीना, धरनी धरत धवल धौल खोज खुजाईआ। किसे दा हक जाए ना छीना, हकूक सब दे वेख वखाईआ। भरोसे विच करो इत्मिनान तक्को मग्घर महीना, जगत जुगत जणाईआ। लेखा रहे ना दीन दीना, दीन दुनी खोज खुजाईआ। झगड़ा पैणा रूसा चीना, रुस्सयां सके ना कोए मनाईआ। उम्मत उम्मती आवे पसीना, हवा पवण ठंडी ना कोए वखाईआ। नाता तुटणा नर मदीना, सगला संग ना कोए रखाईआ। दुलदुल ऐली तके आपणी ज़ीना, पाखर तंग अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। धुर दा हुक्म अगम्म अथाह, हरि करता आप सुणांयदा। संदेशा देवे बेपरवाह, परम पुरख आप प्रगटांयदा। अवतार पैग़म्बर कट्ठे होवो आ, आनन फ़ानन खेल खिलांयदा। संदेशा सुणो नाल चाअ, चाओ घनेरा इक वखांयदा। सच दस्सो किस दी फड़ोगे बांह, कवण पिठ हथ्थ रखांयदा। सारे बैठण सीस निवा, नेत्र नैण शरमांयदा। ज्यों भावे त्यों चलाउणा आपणी विच रज़ा, राज़क रिज़क रहीम तेरा अन्त कोए ना आंयदा। सब दा लेखा मुका दे जिन्हां ने खाधा सूर गां, ग़रीब निमाणयां वेख वखाईआ। जिन्हां भुल्लया तेरा नाँ, दोज़ख़ विच देणे सुटाईआ। धुर दे मालक डेर मूल ना ला, अग्गे पन्ध ना कोए वधाईआ। सब दा लेखा पूरा दे करा, जो भविक्ख्तां विच गए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सुणो हुक्म हुक्मरान, सो पुरख निरँजण आप दृढ़ाईआ। जिस नूं झुके दो जहान, हरि पुरख निरँजण रिहा सुणाईआ। जिस दा इक्को इक निशान, एकँकार नूर इलाहीआ। जिस दी करे ना कोए पहचान, आदि निरँजण डगमगाईआ। जो मालक ख़ालक दो जहान, अबिनाशी करता वड वड्याईआ। जिस दा खेल सदा महान, श्री भगवान इक अख्वाईआ। जिस नूं झुकदे ज़िमीं असमान, पारब्रह्म प्रभ आपणी कार भुगताईआ। सो लेखा जाणे जीव जहान, जागरत जोत करे रुशनाईआ। कलयुग देवे अन्तिम दान, दाता दानी दया कमाईआ। उठ वेख लै धुर दे राम, सीता राम नाल मिलाईआ। निगह मार अगम्मे काहन, काहन बंसरी कर शनवाईआ। पर्दा लाह धुर अमाम, पैग़म्बरां नूरे चशम कर रुशनाईआ। कलयुग वेख अंधेरी शाम,

सतिगुर सति रूप दरसाईआ। तेरे प्यार दा हकीकी पीए कोए ना जाम, आबेहयात कम्म किसे ना आईआ। कूड़ी (तृष्ना) होए ताम, तृष्ना जगत ना कोए बुझाईआ। मुश्किल होवे ना अन्त आसान, एहसान सिर ना कोए चढ़ाईआ। शरअ दे रहिण ना दईं गुलाम, गुरबत बाहर देणी कढ्ढाईआ। तेरा इष्ट मन्नण तमाम, तुख्म तासीर देणा बदलाईआ। तूं सूरबीर नौजवान, योधा इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। परवरदिगार कहे सुण सदी चौधवीं गोबिन्द वेख धुरदा चन्ना, चन्न दयां जणाईआ। फेर तक चौदां सौ तीह अंक अंक दा पन्ना, अक्खर अक्खरां खोज खुजाईआ। ओह निगह मार गोबिन्द वाला कन्ना, जो कायनात रिहा दृढ़ाईआ। दीन मज़्ब दी सब ने छडणी तमां, लालची रहिण कोए ना पाईआ। मकबरयां उत्ते जगदे रहिणे नहीं दानशमां, चराग़ गुल्ल दए कराईआ। ओह वेख चीक पुकारे बाबा आदम माई हव्वा, होशो हवास विच समझ किसे ना आईआ। परवरदिगार दा खेल होण लग्गा रवां, रवानगी सब दे हथ्थ फड़ाईआ। जो रोटी खांदा जगत विच जवां, जवानी सब दी दए बदलाईआ। नाता तुटणा यार चवां, चौथा जुग दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा मालक दया कमाईआ। पहली मग्घर कहे मेरी सुहञ्जणी रात, रुतड़ी हक महकाईआ। झट नारद कहे सुण मेरी इक बात, तैनूं दयां सुणाईआ। पहलों हो जा इक इकांत, अक्ल बुद्धी तों बाहर ध्यान लगाईआ। मेरा दर्शन करके हो शांत, अग्नी अग्ग रहे ना राईआ। शरअ वालीए भिन्नड़ीए रैणे परवरदिगार ने मज़्ब वाले रहिण नहीं देणे प्रांत, हिस्से जगत ना कोए वखाईआ। सब दे तुटणे नात, नाता बिधाता ना कोए जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। नारद कहे ओ मेरे प्रभू, प्रभ दयां जणाईआ। तैनूं केहड़ा लभ्भू, खोज्जयां हथ्थ किसे ना आईआ। मैनूं इयों जापदा तेरा प्रकाश होणा देस जम्बु, जिस दी चार जुग देण गवाहीआ। तेरा रूप होणा नेत्रहीण अंधू, जगत अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। सब दा बण के दीनां बंधू, बन्धन शरअ वाले तुड़ाईआ। सूरबीर बहादर हो के जंगू, जगत जुगत लए लड़ाईआ। लेखा जाणे जेरज अंडू, उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। पर्दा लाहे लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डू, ब्रह्मांड खोज खुजाईआ। तेरी मंज़ल कोटां विच्चों कोई लँघू, हद्द पार ना कोए वखाईआ। तेरा अमृत रस सागर सिन्ध संधू, बेअन्त बेपरवाहीआ। मैनूं इयों दिसदा तूं घर घर लाउणा लम्बू, लम्मां प्या मुहम्मद मकबरे विच रिहा जणाईआ। एह इशारा कीता सी जिस वेले अर्जन रेत सीस पवाई चन्दू, चन्द सितारा रो रो मारन धाहीआ माता गुजरी आख्या सी सहिज नाल गंगू, प्यार नाल दृढ़ाईआ। मेरे सीने पा दे ठंडू, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। याद कर लै बिना

१६१९ २२

गोबिन्द तों आत्म धार कोए ना गंढू, विछड़यां मेल ना कोए मिलाईआ। पुट्ठे हथ्थ मार के गुजरी किहा औह तक लै सदी चौधवीं अन्तिम हुन्दा जंगू, सीस धड़ रहे कुरलाईआ। दुहाई पैणी विच दरयावां पंजू, पंज प्यारे गोबिन्द दे देण गवाहीआ। सदी चौधवीं अग्गे मूल ना लँघू, कदम अवर ना कोए टिकाईआ। सर अमृत निशाना रहिणा पिप्पल लंडू, लुच्चा लंडा रहिण कोए ना पाईआ। सतिगुर शब्द पुरख अकाल की धारों जम्मू, जम्मण वाली दिसे कोए ना माईआ। जो झगड़ा मेटे काया माटी चम्मू, चम्म दृष्टी सब दी दए बदलाईआ। सूरबीर बहादर हो के कल्लू, कला सब दी दए बदलाईआ। राम रूप धर के अल्लाहू अल्लू, आलस वेखे ख़लक खुदाईआ। जगत जहान दुफाड़े दलू, दो धड़ करे लोकाईआ। साहिब दा भाणा कदे ना टलू, टाल मटोल विच सारे दए भुलाईआ। सदी चौधवीं हुक्म कोए ना ठल्लू, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। खेल तकणा घारा घलू, धायल होणा थांउँ थाँईंआ। सब दे वेंहदयां सब दे सामणे सब दा मालक हो के छलू, अछल छल आपणी कार कमाईआ। कोटां विच्चों विरले गुरमुख फड़ाउ आपणा पल्लू, पलकां दे पिच्छे बहि के आपणा दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक आपणी कार भुगताईआ। नारद कहे सदी चौधवीं वेख लै मेरे मस्तक तिलक, तिलकण बाज़ी दयां जणाईआ। तुहाडा महिबूब तुहाडे नाल करन वाला इल्लत, शरारती शरअ शरअ नाल टकराईआ। मुहम्मदा शान रहिण नहीं देणी जगत वाली खिल्लत, खताब नज़र कोए ना आईआ। पीरां दी रहे कोए ना हिम्मत, हौसले सारे देणे ढाहीआ। अगले साल नूं वेखणा की हालत हुन्दी लहिंदी सिम्मत, सिंमल रुक्ख वांग सारे ख़ाली नज़री आईआ। किसे ने मन्नणी नहीं दरगाह साची मिन्नत, सजदयां विच सीस नज़र कोए ना आईआ। हुण ग़मी काहदी रहे कोए ना चिन्नत, सोग वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे पंडता, वे मैनूं आउंदा हासा, हस्स के दयां जणाईआ। मैं वेखां पृथ्मी आकाशा, चौदां तबकां खोज खुजाईआ। केहड़ी कूटे नूर प्रकाशा, कवण गृह डगमगाईआ। किस बिध साडी पूरी करे आसा, निरासा नज़र कोए ना आईआ। मैनूं मुहम्मद दे के गया दिलासा, सच सच समझाईआ। परवरदिगार होवे सगला साथा, सगला संग निभाईआ। मेरा ज़रूर मन्ने आखा, आख़र आवे धुर दा माहीआ। जिस ने शरअ दा रहिण नहीं देणा कोए इलाका, मज़्ज़बां वंड ना कोए वखाईआ। इक्को धर्म दा खोलू के ताका, पर्दा जगत जहान उठाईआ। संदेशा हुक्म देवे साचा, सच सच जणाईआ। भन्न वखाए काया माटी काचा, तत्व तत ना कोए वड्याईआ। पिच्छों कथा कहाणीआं रह जाण बातां, कथनी नाल कथ के जगत जीव झट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद

आपणी कार भुगताईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं आ गई धुर दी ख़बर, बेख़बरां दयां जणाईआ। मेरा टुट्ट गया सबर, बेसबरी हो के मारां धाहीआ। की करनी करे करता जबर, जाबर इक अख्वाईआ। मैनूं कूकदी दिसे मुहम्मद दी कबर, पैग़ाम इक पहुंचाईआ। सुण कलमा विच धुन मधुर, मधुर धुन विच शनवाईआ। तेरी आसा पूरी होवे सध्धर, सद सद आपणा रंग रंगाईआ। मेरा तन वजूद दिसदा नहीं बदन, बन्दना वाल्यो दयां सुणाईआ। झगड़ा छेड़ना ज़रूर विच अदन, अदालत हक हक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे बीतदे जांदे बरस, दिवस रैण पन्ध मुकाईआ। मेरे मौला मेरे उत्ते कर तरस, रहमत हक कमाईआ। तृष्ना मेट हरस, हवस दे गंवाईआ। अगे पले ना रिहा ख़र्च, दाम हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। मैं मस्जिद विच्चों निकल के वड़ गई विच चर्च, गिरज्जयां फोल फुलाईआ। उथे होर तकी शर्त, शरअ शरअ विच्चों वेख वखाईआ। मूसा ने वखाई अगम्मी फ़रद, जो फ़ैसले रही सुणाईआ। बीस बीसा प्रगट होवे योधा मर्दाना मर्द, बेऐब नूर इलाहीआ। जो शरअ छुरी मेटे करद, कातिल मक्तूल दा डेरा ढाहीआ। पैग़म्बरां दी लेखे लावे अर्ज़, बेनन्ती अवतारां झोली पाईआ। आपणा खेल करे असचरज, अचरज लीला दए वरताईआ। कलयुग मेटे अंधेर गर्द, नूरी चन्द कर रुशनाईआ। इक नाल चुरासी नूं

दे के ज़रब, हासल जमां अन्त ना कोए बणाईआ। मिट्टी ख़ाक मिल जाण अरब खरब, असंख असंखां गणित ना कोए गिणाईआ। फिर वी परवरदिगार दा होणा नहीं कोए हर्ज, हर्जाने विच जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे उत्ते आउंदा जाए बुढापा, हथ्थ कमर उत्ते टिकाईआ। मैनूं कलमे दा चढ़या तापा, अग्नी रही जलाईआ। मेरे नाल गुस्से हो गया मेरा पापा, निगह पापीआं वल्ल उठाईआ। जिन्हे पैग़म्बरां सुत्तयां नूं मारया छापा, फड़ के लए उठाईआ। हाए इक होर मारना उस ने डाका, डकैत बणया धुरदरगाहीआ। जिस दीनां मज़्बां दीआं वंडीआं लाटां, इक्को वार मनसूख़ सब नूं दए कराईआ। जिस दे पिच्छे नाम कलमे दीआं भन्नदे रहे फाटां, फाटक सब दे बन्द कराईआ। पैग़म्बरां नूं इक्को वार कर के टाटा, टप्पा अगला दए सुणाईआ। मेरीआं मुक जाणीआं वाटां, वटणा मलण वाला नज़र कोए ना आईआ। ओह बौहड़ी दरोही गोबिन्द ने अमृत दा बणा ल्या इक्को बाटा, जो सब नूं रिहा प्याईआ। एसे कारन आउणा घाटा, वाधा नाल ना कोए वधाईआ। सदी चौधवीं कहे छब्बी पोह नूं मेरा खुल्हा होणा झाटा, नेत्र नीले रंग नाल रंगाईआ। पर इक गल्ल मैं अष्टभुज ज़रूर नाल तकणी वाली लाटा, दीपक हथ्थां विच रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा

पर्दा आप उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी उमर गई लँघ, वे उमरा तैनूं दयां जणाईआ। राती सुत्ती नूं आवे खंघ, दिने अग्न रही तपाईआ। मैनूं कोई ना लावे अंग, उम्मती भज्जण वाहो दाहीआ। मैं परवरदिगार तों मंगां मंग, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। मेरया मालका ख़ालका जे होर कुछ नहीं देणा मैनूं ओह बख्श दे जिस ने सूलां दा विछाया पलँघ, सथ्थर यारड़े वाला हंढाईआ। अग्गे उस नूं कहिंदे सी गुजरी चन्द, हुण नूर नुराना सोभा पाईआ। मैं फेर बण जावां जोबनवन्ती मेरा खुशी हो जाए बन्द बन्द, बन्दना करके आपणा झट लँघाईआ। मैं दन्दासा मलां उत्ते दन्द, रूप रूप विच्चों वटाईआ। पर इक डर लग्गदा जदों मैं उहदा खण्डा वेखदी चण्ड प्रचण्ड, दो जहानां नज़री आईआ। जद उस दा नूर तकां मेरे अन्तर पए ठंड, अग्नी उम्मत वाली लागे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे वे ऐली, सुण हुक्म हक खुदा। किथ्थे तेरे सज्जण बेली, मैनूं दे समझा। तुसीं सारे मैनूं छड चले अकेली, पल्लू रहे छुडा। याद कर लओ मैं सब नालों हो जाणा वेहली, उम्मत दा लेखा देणा मुका। मैं उस दी बणना सहेली, जिस नूं पैग़म्बर कहिण खुदा। मैं जोबनवन्ती अलबेली, नूर नूर नूर रुशना। जोती
जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप कराईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मदा
१६२२ आपणा आप इक वेरां फेर रती, रत्ती दाढ़ी वाले पंज मुल्लां लैणे बणाईआ। उहनां दे पिच्छे गुरमुख किरपाना वाले होणगे १६२२
२२ छत्ती, छत्ती राग जिन्हां दी देण गवाहीआ। छत्तीआं दे कोल होर फड़ी होवेगी मोमबत्ती, दिन दिहाढ़ करन रुशनाईआ। छत्तीआं २२
दे कोल फड़ी होवेगी साढे तिन्न हथ्थ दी रस्सी, रस्सी रस्सी नाल बंधाईआ। छत्तीआं दे पिच्छे छत्तीआं बीबीआं ने सिर ते चुक्की होवेगी लस्सी, आवण चाँईं चाँईंआ। छत्तीआं ने शकर घिउ विच होवे मस्सी, मुट्ठी आपणी विच टिकाईआ। छत्तीआं दी ज़ात होवे इक्ठी, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। छत्तीआं दी कौम होवे जट्टी, किरसाणे करके झट लँघाईआ। छत्तीआं दे गल विच होवेगी मौली दी अट्टी, तन्द नौ नौं वखाईआ। छत्तीआं दे कोल लिखी होवेगी पट्टी, पूरन गोबिन्द ते गोबिन्द पूरन माहीआ। छत्तीआं दे कोल लिखी होवेगी फट्टी, मिल्या मेल धुरदरगाहीआ। छत्ती गुरमुखां दी पंजाह साल तों आयू होवेगी टप्पी, मिल के आवण चाँईं चाँईंआ। छत्तीआं ने मुच्छ होवेगी वट्टी, संधूरी तिलक मस्तक विच छुहाईआ। छत्तीआं दी डोर प्रभू दे उत्ते होवे सट्टी, आसा इक्को इक बणाईआ। सदी चौधवीं कहे फेर मैं ख़ुशीआं दे विच फिरां नट्ठी, नौ बरसां दा पन्ध छेती छेती मुकाईआ। मेरे महिबूब ने मैनूं लेखा लिखणा खुशख़ती, हरफ़ बिना हरफ़ समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मदा मैं सुणाउण

वाली राग, राग रागणीआं तों बाहर जणाईआ। मैं वेखण वाली ओह कन्त सुहाग, जो लख चुरासी दा मालक सोभा पाईआ। मैं बोलां नाल वैराग, उफ़ हाए कर सुणाईआ। सब दे कोलों हुण फड़ लैणी वाग, वाग सब दी दए भुआईआ। अन्तिम गुल होणा चराग़, चराग़हां ना कोए रुशनाईआ। जन भगतां दा बणाउणा समाज, इक सौ इक भगत मस्तक विच लिख के भगत, भगती दा मूल देण वखाईआ। इक सौ इक दे कोल लिख्या होवे पुरख अकाला इक्को फ़कत, जो फ़िकरे नाम वाले जुग जुग दए बदलाईआ। उस दी वेखणी शक्त, जो शरअ दे ज़ंजीर दए कटाईआ। वेस वटा के उत्ते धरत, धरनी धवल धौल आपणा हुक्म वरताईआ। पैग़म्बरो तक्को ओह नूर नुराना शाह सुल्ताना नौजवाना मर्द मर्दाना आया परत, जिस नूं पतिपरमेश्वर कहि के सारे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं ख़ुशी विच जन भगतां देणा इज़ाज़, जो प्रभ नूं सीस निवाईआ। ख़ुशी नाल वंडणी न्याज़, इक सौ इक बीबीआं थालीआं विच टिकाईआ। छब्बी पोह ते खोलृणा राज़, पर्दा रहे ना राईआ। मैं ताड़ी मार के कहिणा ओह वेखो शब्द गुरु दा शब्दी उडदा बाज़, बाजांवाला जगत जिज्ञासूआं नज़र कोए ना आईआ। जिस दा दो जहानां राज, रईयत वेखे ख़लक ख़ुदाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मदा उस तों मंग लै इमदाद, उस दी आमद आपणी ख़ुशामंद करके ख़ाली झोलीआं लै भराईआ। मुहम्मद कहे सदी चौधवीं मैं उस दे अग्गे लाजवाब, जो मेरा लिख्या होया लेखा मैनूं रिहा वखाईआ। तेरा हुक्म नहीं रहिणा चौदां सद तों बाद, एसे करके अक्ख ना सकां उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं बुढ्ढी मैनूं पै गई खुरक, मल मल के मुहम्मदा दयां वखाईआ। कमलया ओह वेख झगड़ा पैणा विच तुरक, तुरकी वाले रोवण मारन धाहीआ। किसे नूं आउण नहीं देणी मेरे मालक ने सुरत, सुरतीआं सब दीआं दए बदलाईआ। क्यों ओह रूप अकाल मूर्त, मूर्ती विच ध्यान ना कोए जणाईआ। बिना भगतां तों उस दी लभ्भी नहीं किसे नूं सूरत, कोटन कोटि सूरतां वाले मिट्टी ख़ाक विच आपणा आप गए मिलाईआ। उस दा इक्को नाद ते इक्को तूरत, तुरीआ तों परे आपणा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। मुहम्मद कहे सदी चौधवीं केहड़ी बोली बोली, अनबोलत दे जणाईआ। सदी चौधवीं किहा सहिज नाल हौली, प्रेम नाल दृढ़ाईआ। हुण खेल होणा तौली तौली, छंभ वाले लैण अंगड़ाईआ। ओह वेख लहिंदे चढ़दे पैंदी रौली, रौणक वेख जगत लोकाईआ। पर इक गल्ल पड़दा देवां खोलृी, खोलृ के दयां सुणाईआ। छब्बी पोह नूं जिस वेले सोहणा लिबास पाया मेरी गोली, गोलकां सब दीआं दयां

खुहाईआ। शरअ दी रहिण ना देवां कोए टोली, टल्लीआं वजावण वाले वेखां चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा वजूद हो गया माढ़ा, हिम्मत रही ना राईआ। मैं तकणा अगम्मी लाड़ा, जो मालक धुरदरगाहीआ। जिस चौदां तबक लगाउणा अखाड़ा, चौदां लोक खोज खुजाईआ। धरती उत्ते रंग चाढ़ना गाड़ा, लहू मिझ नाल रंगाईआ। मज़्बां दा मिटाउणा साड़ा, सौकणां वाली करे ना कोए लड़ाईआ। प्रभ दे नाम दा किसे नूं लैण नहीं देणा भाड़ा, सच रीती देणी जणाईआ। जन भगतो तुसां हस्सणा की खेल होणा सतारां हाढ़ा, हाढ़ा कढ के दयां दृढ़ाईआ। मेरा बुढ्ढी दा हुण विंगा हो गया चबाड़ा, हड्डीआं चब्ब चब्ब के आपणा आप गंवाईआ। हुण मेरे मालक ने मारना धाड़ा, धाड़वी हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं बुढापे विच तुरदी, कदम मुश्किल नाल उठाईआ। मैं उम्मत वेखां मुड़दी, वे मुहम्मदा लै बचाईआ। मुहम्मद कहे मैं ख़बर सुणां धुर दी, धुर मालक की जणाईआ। जिस ने नगरी छड्डी अनन्द पुर दी, ओह मेरे अनन्द विच आपणा डेरा लाईआ। उहदे हुक्म अन्दर दीन दुनी जाए रुढ़दी, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। ओह आत्मा रहिणी जिस ने सार पाई सच्चे सतिगुर दी, दूजी रहिण
१६२४ कोए ना पाईआ। मैं एसे करके झुरदी, हौक्यां विच हाए हाए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, १६२४
२२ एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा देणा उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा पुराणा होया लबास, वस्त्र तन ना कोए वड्याईआ। २२
मैं भज्जी गई विच आकाश, आपणा पन्ध मुकाईआ। अग्गों हुक्म मिल्या सर्ब गुणतास, संदेशा दिता दृढ़ाईआ। जाह वेख विच मात, धरनी धरत धवल खोज खुजाईआ। ओह आ गया जिस नूं ईसा ने किहा बाप, खुद मालक नूर इलाहीआ। प्रगट करके आपा आप, आपणी कल रिहा वरताईआ। जिस दी पैग़म्बरां रखी ताक, झरोखयां विच दी बैठे अक्ख उठाईआ। ओह प्रगट हो के साख्यात, सही सलामत आपणा नूर करे रुशनाईआ। सूफ़ीआं नूं देवे आबेहयात, अमृत जाम रिहा प्याईआ। जिस ने शरअ शरीअत दा रहिण देणा नहीं कोए नवाब, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। जाह उस नूं कर आदाब, अदब नाल कदमबोसी करके आपणी खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो छत्ती बणिउ मुरशद, पटके हरे सीस टिकाईआ। दीन मज़्ब नालों करके फ़ुरसत, वेहले हो के आउणा चाँईं चाँईंआ। इक महिबूब दी करनी उल्फ़त, सिफ्त विच सालाहीआ। अग्गे रहे कोए ना मुश्किल, दरगाह साची सच टिकाईआ। सब ने आउणा बण के खुशदिल, ग़मी संग ना कोए रलाईआ। याद रख्यो

बणिउ कोए ना बुज़दिल, सूरबीर हो लैणी अंगड़ाईआ। फेर लेखा दस्सांगी उस दिन, जिस नूं छब्बी पोह कहि के सारे गाईआ। चौदां तबकां दस्सां मिण मिण, क्यों मुहम्मद वंड वंडाईआ। खुदा ने इशारा कीता जिन जिन, जिस्म ज़मीर तों बाहर दयां समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा होणा इक महिबूब, मुहब्बतां वाल्यो दयां जणाईआ। जेहड़ा सदा रहे मौजूद, विछोड़े विच कदे ना आईआ। जिस दा आलीशान अरूज, अर्श फ़र्श तों परे डेरा लाईआ। चौदां सौ साल मैनूं रखया महफूज़, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। हुण कर देणा उस ने नेस्तोनाबूद, जड़ उम्मत वाली उखड़ाईआ। मज़्हब दी रहिण नहीं देणी हदूद, हज़रतां दा पन्ध मुकाईआ। मैं ज़रूर छब्बी पोह ते दे के जावांगी सबूत, सबर नाल समझाईआ। मेरा रूप बणया होवेगा एह कलबूत, कलमा ओह (दस्सांगी) जिस नूं मुहम्मद कहि सके ना राईआ। फेर गठड़ी बन्ह के कर जावांगी कूच, जगत दा कूचा गली देणा तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखणा आपणा अन्त अख़ीरी, बिना अक्खरां दयां जणाईआ। मैं वेखणी आपणी शरअ ज़ंजीरी, जो अलिफ़ ये नाल दिती बंधाईआ। मैं तकणी कायनात ज़मीरी, अन्दर वड़ के खोज खुजाईआ। मैं तकणी अन्त फ़कीरी, फक्करां दे अन्दर वड़ के फोलां थांउँ थाँईंआ। पर इक दुःख मुहम्मद दी बदल जाणी पीढ़ी, मैं पीढ़ा डाह के सब नूं दयां वखाईआ। नाले वक्त चुक जाणा ना कोई सिगरट पीए ना बीड़ी, पान खाण वाला नज़र कोए ना आईआ। मैनूं इहो इक्को इक दिलगीरी, सूर गाँ खाण वाल्यां सब नूं मिले सज़ाईआ। क्यों अग्गे गली दिसे भीड़ी, बिना सतिगुर शब्द तों पार ना कोए कराईआ। एसे करके हरिगोबिन्द ने पहनी सी मीरी पीरी, दो जहानां बण के पिता माईआ। एसे करके गोबिन्द ने अमृत बख़्शया सी सीरी, शरअ दा डेरा ढाहीआ। एसे करके कृष्न ने अर्जन ज्ञान दिता सी तदबीरी, तरीका आपणे हथ्थ रखाईआ। एसे करके राम ने सीता नूं बख्शी फ़कीरी, जंगलां विच भवाईआ। जिस दी शहादत देवे भगतां दा भगत कबीरी, कबरां तों बाहर रिहा सुणाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं ने भविक्खत लिख्या तहरीरी, अक्खर अक्खरां जोड़ जुड़ाईआ। कलयुग अन्तिम शहिनशाह शाह पातशाह पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार झगड़ा मेटे शाह हकीरी, हकीर हकीरां आपणा खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे भगतो इक सौ इक ने ला के आउणी मैहन्दी, पुट्ठे हथ्थ रंगाईआ। मैं सब नूं वास्ता पा के कहिंदी, सजदे विच सीस झुकाईआ। मेरी उच्च अटारी जाए ढहिंदी, मंज़ल बामंज़ल डिग्गे वाहो दाहीआ। दुहाई पैणी दिशा लहिंदी, लहिंदा चढ़दा समझ कोए

ना आईआ। मैनूं ऐं दिसदा उम्मत मुहम्मद दी ईसा मूसा वाल्यां नाल खहिंदी, विच विचोला हो ना कोए बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे सीस ते लाइउ नौ फुल्ल, नौ खण्ड दा हाल सुणाईआ। किस बिध उम्मत दा दीवा होणा गुल, गुलशन महक ना कोए महकाईआ। मेरा अन्तिम होणा कोए ना पैणा मुल्ल, मुल्ल अमुल्ल रिहा दृढ़ाईआ। साचा रस गया डुल्ह्, आब हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। जगत अंधेर रिहा झुल्ल, चारों कुण्ट वाहो दाहीआ। खेल करे सुल्हकुल, कुल मालक अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो मेरी मिट्टी दी ल्याउणी कनाली, वड्डी छोटी ना वंड वंडाईआ। विच्चों होवे ख़ाली, आटा पाणी ना कोए रलाईआ। विच रखी होवे बेरी दी डाली, कंडयां वाली सोभा पाईआ। नाल लीर होवे काली, सवा हथ्थ लम्बाई चौड़ाईआ। उस दे उत्ते पहरा होवे बन्दूक दोनाली, दोहां धिरां दा लेखा दयां समझाईआ। गुरमुखां चढ़ी होवे मस्तक लाली, लाल गुलाला रंग बदलाईआ। इक सौ इक गुरसिख मारदे आवण ताली, ताल धुर दा आप जणाईआ। मैं खुशीआं नाल वेखां शाली, की शाला आपणा हुक्म वरताईआ। मैं सच दस्सां खुदा ने ओह नहीं बख्शणा जिन्हां ने झटका खाधा ते हलाली, हालत बुरी होवे लोकाईआ। बिना पुरख अकाल तों एस दुनिया दा रहिणा नहीं कोई माली, जो लख चुरासी बूटे पाले चाँईं चाँईंआ। हुण कोई मेरी उमर नहीं रह गई बाहली, थोड़ा समां बाकी नज़री आईआ। मैनूं इयों जापदा मेरे खुदा ने दुनिया नूं ऐं वाहुणा ज्यों किरसान हल्ल चलाउंदा राहली, सारी सृष्टी दीआं रहिलां चारे दए बणाईआ। कोए हुक्मरान रहिण नहीं देणा जाहली, जेहड़ा धोखा रईयत नाल कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं अजे तक बणी नहीं किसे दी साली, जीजा मेरा रूप ना कोए प्रगटाईआ। मैं आदि तों अन्त तक इक्को प्रभ दी जोत ते जोत अकाली, जो जुग जुग आपणा रूप बदलाईआ। जिस दे अग्गे मुहम्मद होया सवाली, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच फ़रमाना इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे प्रभू तेरा फ़रमाना कि फ़ुरना, ओह फ़ुरने वाल्या दे जणाईआ। सच दस्स तूं पहलों केहड़ी कूटे तुरना, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण चारे दे समझाईआ। फेर कदों वापस मुड़ना, सृष्टी दी दृष्टी अन्दर कर सफ़ाईआ। दस्स केहड़े वेले आत्म परमात्म मेल जुड़ना, जगत विछोड़ा रहे ना राईआ। किस बिध इक्को तेरा नाम पढ़ना, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। सच दस्स दे किस तरीके नाल तेरे पौड़े चढ़ना, दो जहानां सके ना कोए अटकाईआ। परवरदिगार मेहरवान महिबूब बेपरवाह नूर अलाह भेव खोल्ह् दे शब्द बोल दे तेरयां प्यारयां किस वेले तेरे घर वड़ना, जिन्हां नूं विष्न ब्रह्मा

१६२६
२२

शिव सारे सीस निवाईआ। उहनां दा मरन दे पिच्छों फेर ना होवे मरना, मर के जीवत रूप बदलाईआ। मैं चाहुंदी जिस ने इक वार सीस निवाया तेरयां चरणां, चुरासी विच कदे ना आईआ। तूं झगड़ा मेट दे वरना बरना, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। तेरे हथ्थ सब नूं भन्नणा ते घड़ना, घड़न भन्नणहार तेरी बेपरवाहीआ। इक्को नाम दस्स दे जिस नाल सारी सृष्टी ने तरना, तारनहार आपणी दया कमाईआ। ओह आपणे कलमे सांभ लै जिन्हां पिच्छे सृष्टी नूं पए लड़ना, नाम नाम नाल टकराईआ। ज़रा भेत खोल्ह दे आपणे घरना, गृह मन्दिर दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं अन्तिम अन्त निमाणी, निमाणी हो के सीस निवाईआ। मेहरवान कर मेहरवानी, मेहर नज़र उठाईआ। तूं दयावान दानी, दाता धुरदरगाहीआ। जोती जोत नूर नुरानी, नूर नुराना डगमगाईआ। क्यों झगड़ा पाया जिस्म जिस्मानी, तत ज़मीर दे बदलाईआ। तेरा कलमा होवे कलामी, कलमा कायनात कर शनवाईआ। मेरा दिल करदा मैं चुरासी लख दी तैनूं दयां इक्को वार सलामी, सब कुछ तेरी झोली पाईआ। मैं आपणे वक्त पिच्छों आपणी होण नहीं देणी बदनामी, बदनाम करन वाला नज़र कोए ना आईआ। मेरा वायदा कौल इकरार पूरा कर दे शरअ दी रहे ना किसे ग़ुलामी, ज़ंजीर देणा तुड़ाईआ। तेरा हुक्म इक अनामी, धुर फ़रमाना दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा धर्म आप समझाईआ। धुर दा धर्म दस्स दे इका, एकँकार दया कमाईआ। कलयुग कूड़ा मेट दे सिक्का, सिकम दे कोल पए दुहाईआ। रूसा चीना ताण दे हिक्कां, हिकमत आपणी नाल टकराईआ। पूजा हटा दे पथ्थर इट्टां, पाहन सीस ना कोए झुकाईआ। कलयुग अन्तिम कढदे सिट्टा, सिटे बाज़ी वेख ख़लक खुदाईआ। मैं दो हथ्थड़ मार के पिट्टां, बिन नैणां नीर वहाईआ। तेरा नूर किसे नज़र ना आए चिट्टा, कलयुग रैण अंधेरी छाईआ। तेरा भाणा मन्ने कोए ना मिट्ठा, दीन दुनी रही कुरलाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल मेहरवान मेरे नाल कर हिता, हितकारी हो के वेख वखाईआ। तूं आदि जुगादि इक्को पिता, पतिपरमेश्वर सीस निवाईआ। तेरा खेल नित नविता, जुग जुग आपणी कार भुगताईआ। मेरा निशाना इक्को टिका, टिकटिकी तेरे विच लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी अनादी शब्द मेरी पूरी कर दे इच्छा, निरइच्छत तेरे अग्गे झोली डाहीआ।

✪ २ मग्घर शहिनशाही सम्मत ७ हरचरण सिंघ धूता खुर्द हुश्यार पुर, रणजीत कौर बरदबान
सवेरे विहार होया हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

मग्घर कहे मेरा प्रविष्टा दूजा, दो जहान प्रभ दा खेल वखाईआ। जिस दा भेव आदि जुगादि गूझा, गुज्झी रमज़ इक रखाईआ। अन्तर निरन्तर भविक्ख्त सूझा, सच दयां दृढ़ाईआ। जिस रहिण नहीं देणी कोई पूजा, सिल पाहन रहे कुरलाईआ। माटी दा घड़ा मार के मूधा, मुद्दतां दा लेखा रिहा मुकाईआ। लहिणा पूरा करना कृष्ना यादव नाल ऊधा, उधो नैण नैण उठाईआ। निरासी रहे मूल ना बसुधा, कलयुग झोली दे भराईआ। युधिष्टर दी धार नालों परे होणा युद्धा, योधा उठया बेपरवाहीआ। जेहड़ी ममता रखी बुद्धा, बिना बुद्धी तों आस प्रगटाईआ। उस दा अन्तिम वेखणा मुद्दा, मुतालया करे ख़लक खुदाईआ। इक्को नूर करना उग्घा, उगण आथण करे रुशनाईआ। निशान रहिण नहीं देणा कलयुगा, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। मग्घर कहे मेरा दिवस दूजा चढ़या, चढ़दी कला तकां बेपरवाहीआ। जिस दीन दुनी दा लेखा अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दे सिर मड़या, लेखा मंगे थांउँ थाँईंआ। सदी चौधवीं बीसवीं आ के अड़या, अड़िक्का हुक्म वाला रखाईआ। जगत जहान जो
१६२८
२२
झेड़ा छिड़या, झगड़ा तके बेपरवाहीआ। दीन दुनी नाल लड़या, मज़्ब मज़्ब नाल टकराईआ। मैं जिधर तकां उधर दिसे खड़या, हाज़र हज़ूर नजरी आईआ। जिस ने चुरासी घाड़न घड़या, भन्नणहार रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। मग्घर कहे मेरा प्रविष्टा बड़ा ख़तरनाक, ख़तरा बेख़तरा दयां जणाईआ। मुहम्मद दा लेखा मुके नाल इत्फ़िाक, सदी सदीवी संग रलाईआ। अधूरा रहे मूल ना वाक, वाक्या वेखे चाँईं चाँईंआ। पुरख अकाल खोल्ह के ताक, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। सदी चौधवीं लहिणा करे बेबाक, पिछला लेखा रहे ना राईआ। जन भगतां बख़्श के आपणा साथ, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मेहरवान पुरख समराथ, नज़र मेहर नाल तराईआ। हरिजन बणा के धर्म दे सज्जण साक, सगला संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्णूं भगवान, गुरमुखां गुरसिक्खां सति सच दी देवे दात, दाता दानी कर मेहरवानी आपणी आप वरताईआ।

✪ २ मग्घर शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल ज़िला अमृतसर रात नूं ✪

दो मग्घर कहे घोड़ी चढ़या धुर दा लाड़ा, छैल छबीला बेपरवाहीआ। जिस दा गुरसिख लागी मंगण आए वाड़ा, ख़ाली झोलीआं अग्गे डाहीआ। सेहरे वाल्या सानूं दे दे धुर दा भाड़ा, पिछला पन्ध देणा मुकाईआ। साडा अग्गे कर्म रहे ना माढ़ा, कुकर्म दा लेखा देणा चुकाईआ। तेरा ख़ुशीआं वाला दिहाढ़ा, जुग चौकड़ी पिच्छों सोभा पाईआ। तेरीआं सख़ीआँ दा अखाड़ा, सोहणयां सोहणा रंग बणाईआ। नच्चण टप्पण जंगल जूह पहाड़ा, उजाड़ां वज्जे वधाईआ। बख़्शिश दा रंग चाढ़ दे गाढ़ा, रहमत दे मालक उतर कदे ना जाईआ। तैनूं वेखण ओह अगम्मी नारां, जिन्हां नूं नर नरायण सुहागण दिता बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी खेल आप खिलाईआ। घोड़ी चढ़या सच दा दूल्हा, दो जहानां वज्जी वधाईआ। जिस दे चरण मिले धूला, धूढ़ी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। सब दा पिछला चुकाए मूला, लेखा अवर रहे ना राईआ। इक इक दस्से असूला, असल आपणा आप समझाईआ। सच नाम दा दे के तुल्हा, बेड़ा बन्ने दए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।

१६२६ दो मग्घर कहे दूल्हे मारी इक पलाकी, आसण धर्म दा इक समझाईआ। जिस वेखणे बन्दे ख़ाकी, चारों कुण्ट अक्ख उठाईआ। १६२६

२२ झगड़ा मेटणा अंधेरी राती, साचा चन्द चमकाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं पूरा करना भविक्ख्त वाकी, लेखा सब दा वेख २२

वखाईआ। प्रगट हो के लोकमाती, परलोक आपणा हुक्म जणाईआ। खेल खेले बहु बिध भांती, अनक कलधारी आपणी कल वरताईआ। जिस दे संगी जन भगत होणे बराती, संग चलण चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। दूल्हा कहे मैं लाड़ा इक अपार, अपरम्पर हो के दयां जणाईआ। ना कोई मेरी माँ ते ना कोई मेरी माँ दा यार, यराने वाला नज़र कोए ना आईआ। भैण भ्रा दी नहीं कोए धार, चाचा ताया ना कोए वखाईआ। वाग गुंदे ना कोए विच संसार, सगन जगत ना कोए वखाईआ। मेरा खेल आपणी कार, करता पुरख हो के वेख वखाईआ। मेरा मेरी होवे नार, दूजा रूप ना कोए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। दूल्हा कहे मेरे हेठ अगम्मी घोड़ी, हिणक के रही वखाईआ। मेरे प्रभ ने जगत विच रहिण नहीं देणी कोटां वाली जोड़ी, कोई विरला गुरमुख जोड़ा नज़री आईआ। क्यों सब दी औध रह गई थोड़ी, सुहाग कन्त ना कोए हंढाईआ। दुक्खां विच सब ने करना बौहड़ी बौहड़ी, नेत्र रोवण मारन धाहीआ। मैं दो जहान दो हथ्थां दी मारी ताड़ी (दोहरी), ताल आपणा इक जणाईआ। किसे आब हथ्थ नहीं आउणा जौहड़ी, सरोवर

रस ना कोए चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। घोड़ी कहे एह लाड़ा बड़ा चंगा, जो मेरे उत्ते आसण लाईआ। जिस दे पिच्छे भज्जी फिरे जमना सुरस्ती गंगा, गोदावरी वाहो दाहीआ। लच्छमी मंगे मंगां, आपणी झोली डाहीआ। सुरस्ती मुख नैण करके नन्गा, नैण रही बदलाईआ। फड़ के सच सति सुरंगा, राग रागणीआं रही सुणाईआ। पार्बती छड के धन्दा, धुँदूकार तों परे वेख वखाईआ। देवत सुर सर्ब कम्बा, अपच्छरां भज्जण वाहो दाहीआ। बिहबल होणी जेहड़ी चौदां रत्नां विच्चों निकली अरंभा, मोहणी आपणी कल वरताईआ। फ़ातमा कहे पैंडा नहीं लम्बा, लम्मी पै के दयां सुणाईआ। नी एह ओह लाड़ा जिस दे कोल ना तहिमत धोती तम्बा, वस्त्र जगत ना कोए वखाईआ। जिस नूं मुहम्मद ने याद कीता सी विच यक शम्बा, यक ध्यान लगाईआ। ओह वेस कर अचंभा, परवरदिगार आया रूप बदलाईआ। जिस ने माण बख्श्या पंजा, पंज दिती वड्याईआ। मेटया ग़म रंजा, दुःख दर्द गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। लाड़ा कहे मैनूं सुरमा पाया नहीं कदी भाबी, पाणी सीस उत्ते छुहाईआ। जगत सुणी नहीं कदे आवाज़ी, रसना नाल दृढ़ाईआ। घोड़ी कहे एह लाड़ा आदि दा आदि पूरब दा माज़ी, हाल दा हाल नज़री आईआ। जेहड़ा सद खुशी विच
१६३० रहे राज़ी, राज़क रिज़क रहीम आप अख्वाईआ। ओह खेल खेले जगत समाजी, समग्री आपणी आप वरताईआ। जिस १६३०
२२ दी दोहरी धार होवे दोआबी, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। एसे कारन दोआबे वाल्यां तों सुणया गीत शताबी, रस रसना २२
नाल बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, समाज राज राज समाज आपणे नाम दी बख्शे आज़ादी, शरअ ज़ंजीर नज़र कोए ना आईआ।

✪ ३ मग्घर शहिनशाही सम्मत ७ राम सिँघ दे गृह ग्वाल टोली फ़िरोज़पुर छाउणी ✪

तेग़ बहादर ध्यान धरया विच्चों सीखां, चौक चांदनी अक्ख खुल्हाईआ। फेर पंजां उगलां नाल मारीआं लीकां, पंचम वेख वखाईआ। जिस साहिब दीआं करदे उडीकां, जुग चौकड़ी ध्यान रखाईआ। ओह जद आवे बदल देवे पिछलीआं सर्ब तवारीखां, तारीख आपणी इक दृढ़ाईआ। दीन दुनी बख्शे हदीसा, हज़रतां तों बाहर करे पढ़ाईआ। जन भगतां रहमत देवे बख्शीशां, मेहर नज़र उठाईआ। छत्र झुला इक्को सीसा, जगदीश्र आपणी कार भुगताईआ। लेखा वेख राग छतीसा, तीस बतीसा पर्दा आप फुलाईआ। दीन मज़्हब दा खाली करे ख़ीसा, जगत वणजारा नज़र कोए ना आईआ। ईसा दी आसा

पूरी करे बीस बीसा, बिस्मिल सब दी धार जणाईआ। मुहम्मद दी ख़ाहिश वेखे तबीअता, तबीब हो के ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। उस खेल तक्कया ना सञ्झ ना फ़जर, दोवें रूप गए बदलाईआ। चारों कुण्ट तकी अज़ल, भज्जे वाहो दाहीआ। मेरा सदी चौधवीं ज़माना रिहा बदल, बदली करे ख़लक खुदाईआ। मेरे सीस दी धार उम्मत उम्मती करे कत्ल, कत्लगाह बणे लोकाईआ। मेरा साहिब आवे आपणे पत्तन, गोबिन्द गढ़ इक सुहाईआ। सम्बल सुहा के धुर दा वतन, सचखण्ड निवासी रंग रंगाईआ। उस वेले किसे दा चले कोए ना यतन, यथार्थ आपणा हुक्म वरताईआ। भगत सुहेले वेख के रत्न, रत्न अमोलक लए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। तेग़ बहादर तके आपणी नैणी, नेत्र अक्ख उठाईआ। झट मुस्लिम कन्या लँघी जिस दा नाम सी हुसैनी, हुसन जोबन नाल हंढाईआ। उस दी आसा अन्दरों लग्गी कहिणी, कहि कहि दृढ़ाईआ। तूं मेरा साक सैणी, सतिगुर बेपरवाहीआ। मेरी आसा तेरे चरण ढहिणी, सजदा सीस निवाईआ। मैनूं इयों दिसदा उम्मत अन्त अन्त नहीं रहिणी, मुहम्मद बैठे पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि,
१६३१ आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। उहदे उत्ते सी वस्त्र काला, मुख गोरे रंग छुहाईआ। तेग़ बहादर वल्ल निगह उठाई अग्गे लग्गा सी ताला, दर्शन कर सकी ना राईआ। अन्दरे अन्दर आपणा आप संभाला, अनडिठयां सीस निवाईआ। सच्चे सतिगुर तूं मेरा होईं रखवाला, रक्षक हो के होणा सहाईआ। उम्मत दा वक्त रहिणा नहीं बाहला, समां भज्जे वाहो दाहीआ। नाले कन्नों लाह के इक बाला, दूरों सुट्ट के भेंट चढ़ाईआ। फेर अन्तर अन्तर आपणे मन दी फेरी माला, मनका मन ही मन भवाईआ। झट तेग़ बहादर निगह मारी उस दी वेखी करनी दी घाला, घाल आपणे लेखे पाईआ। शब्दी धार दस्सया राह सुखाला, सहिज नाल सुणाईआ। हुसैनी तेरे हुसन दा वसदा रहे हुसैनी वाला, हज़रत आपणा रंग रंगाईआ। पर याद रखीं तेरी निशानी उम्मत दी कनाली विच होवेगा बेरी दा डाला, जिस नूं टहिणी कहे लोकाईआ। तेरा लहिणा उस नाल जिन कृष्न नूं मारया तीर निशाना, निशान भगवान विंन्ह वखाईआ। फेर खेल वेखणा जिथ्थे वसदे होण ग्वाला, ग्वाले पिछला भेव खुल्हाईआ। बाकी लेखा छब्बी पोह ते बाहला, तिन्न मग्घर नूं इशारा दिता कराईआ। जिस ने दीन दुनी वाहुणी विच चौह राहला, पहली राहल दा हिस्सा देवे पाईआ। एसे कारन आया शब्द दा तिक्खा करके फाला, भज्जया वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा हल्ल करे सवाला, भिखारी ख़ाली रहिण कोए ना पाईआ। १६३१

✪ ५ मग्घर शहिनशाही सम्मत ७ अजीत सिँघ बटाला, सुरजीत सिंघ, हुक्म सिंघ, दलीप सिँघ ते जसवन्त सिँघ फ़ैज़पुर, काशी राम, जीत सिंघ, चरण सिँघ ते भजन कौर सुनय्यीआ, बंता सिँघ ते करतार कौर पंज गराईं, मोहण सिँघ तारा चक्क, विरसा सिँघ श्री हरि गोबिन्द पुरा, अवतार सिँघ माढ़ी पनूआ, जसबीर सिंघ, जगीर सिँघ ते सोहण सिँघ भोले के, चन्नन सिँघ ठीकरी, कश्मीर सिँघ मान खैरे, करतार सिँघ वहीला, अजीत कौर बरदबान, हरचरण सिँघ गुजरात, बटाला शहर ज़िला गुरदास पुर ✪

पंज मग्घर कहे दो जहानां सुणे जैकारे पंज, पंचम पंचम पंचम ध्यान लगाईआ। दीन मज़्ह़ब शरअ नूं होया रंज, रंजश विच वेखण नैण उठाईआ। केहड़ा जगत अवर मुहाणा वञ्झ, खेवट खेटा कवण अख्वाईआ। कवण लेखा जाणे सवेर सञ्झ, घड़ी पल खोज खुजाईआ। जां निगह मारी पुरख अकाला दीन दयाला धुर दा दूल्हा भगतन लै के जंञ, लख चुरासी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पंज मग्घर कहे हज़रतो वेखो ख़ावंद, ख़सम ख़समाना इक अख्वाईआ। जिस दे हुक्म कलमे दे होए पाबन्द, बन्धन शरअ वाले रखाईआ। ओह नूर नुराना चाढ़ू अगम्मी चन्द, गोबिन्द रूप धुरदरगाहीआ। जिस ने कलयुग मेटणा पन्ध, सदी चौधवीं लेखे लाईआ। आत्म परमात्म दरसणा छन्द, ढोला अगम्म अथाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया भन्नणी काची वंग, धरनी धरत धवल रहिण ना पाईआ। जन भगत सुहेले लाउणे अंग, अंगीकार इक अख्वाईआ। शाह पातशाह सूरा सरबंग, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जिस दी इक्को सेज इक पलँघ, सच सिंघासण सोभा पाईआ। उहदा नाम डंका वज्जे मृदंग, दो जहानां नौजवाना मर्द मर्दाना आप सुणाईआ। जिस ने सब दा देणा संग, साथी इक अख्वाईआ। दरोही सदी चौधवीं अन्तिम रही लँघ, आपणा पन्ध चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे मुहम्मद मीत, मित्रा दयां जणाईआ। ओह तक जिन्नां नाल चलाई रीत, सज्जण पिछले नज़री आईआ। बिना हुजरे तों वेख मसीत, बिना मुसल्ले ध्यान लगाईआ। निगह कर परे हस्त कीट, जगत वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दे नाल पुराणी प्रीत, कदीम दा लेखा फोल फुलाईआ। जे कोई सच दी कीती वसीअत, वेख बिन नैणां नैण उठाईआ। जे मिलदी होवे नाल तबीअत, खुशी खुशी लैणी बणाईआ। इक गल्ल याद कर जेहड़ी कीती हक नसीअत, नसर विच दृढ़ाईआ। उहदा लेखा पूरा कर लै कोलों सिँघ अजीत, बकाया अवर रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक अगम्म अथाहीआ। सदी चौधवीं कहे आपणा वेख इक अहिबाब, मित्र मित्रा ध्यान लगाईआ। जिस नूं हरफ़ दस्सया सी इक स्वाद, सबर नाल दृढ़ाईआ। फेर जणा आदाब, सिर सर झुकाईआ। फिर लै के कलमे वाली किताब, नैण अक्ख दरसाईआ। फेर बुल्ल्हां ते ला लवाब, लबरेज़ दिता बणाईआ। हुण उस दा उस तों लै जवाब, दर साचे मंग मंगाईआ। जिस दे मालक दा धुर दे ख़ालक दा सब तों वक्खरा दिसे समाज, समग्री अगम्म अथाह वरताईआ। शहिनशाह भूप बण नवाब, पातशाह इक अख्वाईआ। संदेशा देवे वाहिद, कलमा हक यक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर भेव आप खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे यार यार दा लै सदका, घोली घोल घुमाईआ। एह लहिणा पिछला कद दा, कदीम पड़दा दे उठाईआ। हुण मेला उस अलाही रब्ब दा, जो अमाम अमामा वेस वटाईआ। एह समां धुर सबब्ब दा, गया फेर हथ्थ ना आईआ। अग्गे लेखा होर नहीं वधदा, आयू उम्मत ना कोए जणाईआ। जो आया सो गया लद दा, थिर रहिण कोए ना पाईआ। मेरा अरसा चौदां सद हद्द दा, अग्गे गंढ ना कोए पवाईआ। फेर लेखा होणा अलग दा, धुर मेल ना कोए मिलाईआ। परवरदिगार दा इक्को डौरु डंका वज्जदा, वजह नाल रिहा खड़काईआ। शरअ ज़ंजीर सब दा वेख कटदा, कटाक्ष आपणा नाम रखाईआ। रूप तक पंज तत जट्ट दा, जोती जाता डगमगाईआ। ओह वणजारा बण गया इक्को हट्ट दा, सम्बल इक्को दर खुल्हाईआ। जिथ्थे झगड़ा नहीं माटी रत दा, रत्न अमोलक गुरमुख हीरे लए बणाईआ। रूप धर परमेश्वर पति दा, पारब्रह्म प्रभ आपणी कल वरताईआ। पिछला लेखा मुका दे नत दा, निरगुण निरगुण निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक इक अख्वाईआ। मुहम्मद कहे मेरे अहिबाब मित्र सलामी, इस्म वेख वखाईआ। तेरा मालक शरअ इनामी, शहिनशाह बेपरवाहीआ। जिस दे नाल मेरी जवानी, जोबन जगत हंढाईआ। कल्मयां दस्सी कलामी, कायनात सुणाईआ। खेल खेलया अवामी, भज्जया वाहो दाहीआ। अन्त मेरे अन्तर आई हैरानी, परेशानी विच सुणाईआ। सदी चौधवीं मेरी शरअ दी होई बदनामी, शरीअत संग ना कोए रखाईआ। मेरा मेहरवान महिबूब कटण आया गुलामी, ज़ंजीर बेनज़ीर तुड़ाईआ। यार यारां दी होण नहीं देंदा बदनामी, साथ देवे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा मालक इक अख्वाईआ। मुहम्मद कहे मेरे रफ़ीक, सिँघ अजीत जणाईआ। मालक विच हक तौफ़ीक, बेपरवाह वड वड्याईआ। मेरा लहिणा उस दे कोलों करा तस्दीक, शहादत भगतां वाली भुगताईआ। मेहरवान होवे लाशरीक, नज़र मेहर इक उठाईआ। मेरा पन्ध पहुँचया नज़दीक, अग्गे सफ़र ना

कोए वखाईआ। जिस ने नवीं देणी तरतीब, तरीका आपणा इक दृढ़ाईआ। जिस ने आशा पूरी करनी जगत ग़रीब, निमाणयां होए सहाईआ। पिछली कीती ते फेरनी लीक, लाईन अग्गे देणी वखाईआ। झगड़ा मेटणा ऊच नीच, वरन बरन दा पन्ध मुकाईआ। लेखा रहे ना मन्दिर मसीत, काया काअबा दए समझाईआ। इक्को कलमे दी सब नूं करे तबलीक, नाम निधाना सब नूं दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक बेपरवाहीआ। अजीत सिँघ कहे सुण यार यारा, सहिज नाल सुणाईआ। मेरा मेहरवान परवरदिगारा, नूर नुराना नूर इलाहीआ। जिस दा खेल सदा जुग चारा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जिस ने भगतां नाल लाई बहारा, रहमत आपणी आप कमाईआ। तूं इक्को इक सब दा कबूल कर जैकारा, जो ढोला अगम्म अथाहीआ। मज़्हब दी शरअ तों हो जा बाहरा, शरीअत दी लोड़ रहे ना राईआ। ओह तक की खेल हुन्दा विच काहरा, कहर वरते विच लोकाईआ। मित्रा मिल के दोवें करीए मुज़ाहरा, भगत सुहेले नाल मिलाईआ। मेरा मालक होया ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर डगमगाईआ। जिस दा शब्दी दो जहानां पाहरा, बाहर निकल कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। मुहम्मद कहे मैनूं कबूल, कदम कदम सीस झुकाईआ। मैं पिछला छडां असूल, असल असल विच समाईआ। कदमां दी

१६३४ लै के धूल, टिक्का ख़ाक रमाईआ। कलमा सुण माकूल, निव निव लागां पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी १६३४

२२ किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। हुक्म कहे मैं आदि जुगादी सच्चा, ना कोई मेटे मेट २२

मिटाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु गुरदेव मेरा बच्चा, जुग जुग मात प्रगटाईआ। भाग लगा के काया माटी भाण्डा कच्चा, कंचन गढ़ दयां वखाईआ। धुर संदेशा देवां अगम्मी पता, पतिपरमेश्वर भेव खुल्हाईआ। जिस विच फ़र्क रहे ना रता, दुतीआ वंड ना कोए वंडाईआ। मेल मिला पुरख समरथा, घर साचे रंग रंगाईआ। जिथ्थे इक्को शब्द दी शब्दी होवे कथा, अक्खरां वाली ना कोए पढ़ाईआ। जोती मेला यथार्थ यथा, दूसर संग ना कोए रखाईआ। झगड़ा मिट जाए मन्दिर मट्ठा, मसीतां लोड़ रहे ना राईआ। शरअ दा ना होवे रट्टा, कलमा वंड ना कोए वखाईआ। इक्को मेला होवे पुरख अकाल समरथा, पारब्रह्म ब्रह्म मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। हुक्म कहे वेख अगम्मी धार, सच सच सुणाईआ। सारे होवो ख़बरदार, अवतार पैग़म्बर आपणी लओ अंगड़ाईआ। पुरख अकाल बदलण वाला बहार, जगत रुत ना वेख वखाईआ। संदेशा देवे शाह पातशाह सच्ची सरकार, धुर फ़रमाना आप दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं आउणी हार, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। राज राजान शाह सुल्तान तख़्तों देवे उतार, उत्तर

पूरब पच्छम दक्खण सीस ताज ना कोए टिकाईआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी जन भगतां सीस रखणी दस्तार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। एह चार जुग वसदे रहिण घरबार, जो घराने गुरमुखां लए बणाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों लोकमात एह आउंदी वार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग हथ्थ किसे ना आईआ। जिस दा राह तकदे पैग़म्बर गुर अवतार, सूफ़ी सन्त फ़कीर ध्यान लगाईआ। ओह आदि जुगादी करे आपणी कार, हरि करता वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शाह पातशाह सच्ची सरकार, शहिनशाह इक्को इक अखवाईआ।

✪ ११ मग्घर शहिनशाही सम्मत ७ सैदपुर दे सन्त रसीला राम दे आउण ते पिण्ड विच पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

शब्द कदे ना होवे बुड्ढा, बाल जवानी वेस ना कोए वटाईआ। जिस दा खेल आदि जुगादि चौकड़ी जुगा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणी कल प्रगटाईआ। निरगुण सरगुण खेल करे उत्ते बसुधा, धरनी धरत धवल धौल आपणा रंग रंगाईआ। पंज तत तन वजूद माटी ख़ाक बणा के मुद्दा, जोती जाता आपणी कल रखाईआ। तेई अवतारां कर के उग्घा, लोकमात खेल खिलाईआ। हज़रत ईसा मूसा कलमा दे अगम्मा भेव खुल्हाया उच्चा, अगम्म अथाह बेपरवाह परवरदिगार आपणा पड़दा लाहीआ। नानक निरगुण जोती धार बख्श के लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां गगन गगनंतरां ज़िमीं असमानां दे के नाम भण्डारा सुच्चा, संजम इक्को इक समझाईआ। मन मनसा कूड़ क्रिया काम क्रोध लोभ मोह हँकार आसा तृष्ना जगत हँकार क्रोध रहे ना गुस्सा, कल्पना चण्डाल नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग इक्को रंग समाईआ। जिस दा अंगद मन्नया आखा, नानक जोती शब्द धार समझाईआ। अंगद दा अमरदास बणया दासा, बिरध अवस्था जल धारा सेव कमाईआ। अमरदास ने भेद खोल्हया आपा, रामदास दास बणा दिती वड्याईआ। रामदास गुर अर्जन शब्दी दस्सया बोध अगाधा, धुन अनादी नाद प्रगटाईआ। जिस दा छत्ती राग गा ना सकण पुन्न सवाबा, भेव अभेद ना कोए जणाईआ। एह खेल उस दा जिस नूं निरगुण धार कहे सब दा माई बापा, पिता पुरख अकाल बेपरवाहीआ। जिस दा कोटन कोटि सिफ्ती नाम रसना जेहवा जपदे जापा, साध सन्त सूफ़ी फ़कीर भगत जगत जिज्ञासू आपणी सेव कमाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगारा एकँकारा आपणे नाम दी जुग जुग आपे देवे दाता, मेहरवान महिबूब मुहब्बत विच

आप वरताईआ। जेहड़ा निरगुण निरगुण आत्म परमात्म परमात्म आत्म नाता, तत्तां तों बाहरा शब्दी शब्द मेला मेले सहिज सुभाईआ। जिस दे चार जुग दे शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान बाईबल तुरैत गुरु ग्रन्थ साहिब दी बाणी निक्कीआं निक्कीआं गावे गाथा, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। जिस ने अल्ला वाहिगुरु राम ओम तत सति दीआं वंडीआं लाटां, हिस्से जुग जुग आप रखाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी घटनिवासी पुरख अबिनाशी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर योद्धा सूरबीर नौजवान मर्द मर्दान इक्को राठा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सतिगुर शब्द कदे ना होवे बिरध अवस्था, लंगड़ा लूला रूप ना कोए जणाईआ। जिस दा नाम जुग चौकड़ी कदे ना होवे ससता, कौडीआं विच ना हट्ट विकाईआ। जद देवे सतिगुर शब्द हो के शब्दी धार दा रस्ता, बरास्ता अवतार पैग़म्बर गुरु नाल रलाईआ। ओह मालक ख़ालक सचखण्ड दवार दरगाह साची होवे वसदा, धाम अवल्लड़ा इक इकल्लड़ा आपणा इक जणाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त अन्दर फिरे नस्सदा, दिवस रैण वंड ना कोए वंडाईआ। जन भगतां साचे सन्तां भेव खोल्ह के निरगुण जोत निज नेत्र आपणी अक्ख दा, आख़र मेला लए मिलाईआ। जिस दा प्यार मुहब्बत दा नाता सदा सच दा, सच दा मालक सच नाल जुड़ाईआ। जो जुग जुग जन भगतां पैज रखदा, रखणहार वड वड्याईआ। ओह एथे ओथे दो जहानां पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां गगन गगनंतरां ज़िमीं असमानां फिरे नच्चदा, बिन निज नेत्र जगत अख़ीर दिसदा नज़र किसे ना आईआ। जो जागरत जोत बिन वरन गोत आपणा खेल दस्सदा, दहि दिशा मन मनुआ उठ कदे ना धाईआ। सतिगुर शब्द भण्डारा अन्तर देवे अमृत रस दा, निजर झिरना आप झिराईआ। ओह जगत कथनी कदे ना कथदा, सिफ्ती ढोले ना कदे वड्याईआ। उस कोल नाम भण्डारा अगम्म वथ दा, जो काया मन्दिर अन्दर डूँघी कन्दर दए टिकाईआ। जिस दा नाम आदि जुगादि पंजां तत्तां वाला सरीर साध सन्त मुनी मुनीश्र जगत तपीश्र औलीए पीर शेख़ मुल्लां मुसायक अवतार पैग़म्बर गुर विष्न ब्रह्मा शिव जपदा, बिना जपण तों मंज़ल पार ना कोए कराईआ। ओह सतिगुर शब्द बुढ्ढा होवे कदे ना खेल करे पुरख समरथ दा, समरथ आपणा वेस वटाईआ। की होया जे हुण भेस धर ल्या जट्ट दा, जटा जूट सारे लए निवाईआ। नौं खण्ड पृथमी सत्त दीप मार्ग वखाउणा इक्को धुर दे हट्ट दा, जिथ्थे परमात्म आत्म आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलाए हकीकत हक दा, विछोड़ा रहिण कोए ना पाईआ। लेखा पूरा करे ईश जीव रत्न रत दा, अमोलक आपणा नाम दरसाईआ। सतिगुर चरण दवारे झगड़ा नहीं मन्नत दा, मन का मणका दए भवाईआ। हुलारा देवे इक्को शब्द अनादी अनहद दा, धुन आत्मक राग उपजाईआ। ईड़ा पिंगल सुखमन गुरमुख प्यारा ऐवें टप्पदा, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। ओह सतिगुर शब्द शब्द

१६३६
२२

सतिगुर जिस तन वजूद विच वसदा, वास्ता पुरख अकाल नाल दए जुड़ाईआ। ओह आदि जुगादि ना थक्कदा ना अक्कदा, मरन जम्मण विच कदे ना आईआ। बिन किरपा तों जगत जहान किसे ना लभ्भदा, बनखण्ड उच्चे टिल्ले पर्बत जंगल जूह उजाड़ पहाड़ खोजण थांउँ थाँईंआ। सो साहिब सुल्ताना श्री भगवाना मर्द मर्दाना इक्को लेखा जाणे आपणे आप दा, आप आपणी दया कमाईआ। सतिगुर दे दरस नाल कोट जन्म दा पाप नस्सदा, अन्त दुरमति मैल रहे ना राईआ। मेला हो जाए रूह बुत बुतख़ाने विच्चों पाक दा, पतित पुनीत दए कराईआ। झगड़ा रहे ना तत्तां वाली ज़ात दा, आत्म ब्रह्म दए दृढ़ाईआ। एह खेल जुग जुग पुरख अबिनाश दा, अबिनाशी करता नित नवित आप कराईआ। धन्नभाग दिहाढ़ा आज दा, सुलक्खणी घड़ी वज्जे वधाईआ। सतिगुर शब्द बुढापे विच्चों सदा जागदा, जागण वाल्यां अक्ख दए खुल्हाईआ। अन्दर मंज़ल तक्को केहड़ा गृह जिथ्थे मनुआ मनसा त्याग दा, नौ दर नौ रस रहिण ना पाईआ। हँस रूप बणे काग दा, काग हँस रूप बदलाईआ। खेल दिसे एह वैराग दा, वैरी अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। सुणे शब्द अगम्मी राग दा, जगत सरवण दी लोड़ रहे ना राईआ। खेल वेखे जोत प्रकाश दा, निज नेत्र लोचण नैण रुशनाईआ। मेला होवे प्रभू कन्त सुहाग दा, दुहागण नज़र कोए ना आईआ। एह बुढ्ढा मालक अन्त लेखा जाणे जुगादि दा, जुग जुग आपणा रूप बदलाईआ। जिस खेल करना

कलयुग अन्त लेखा मुकाउणा दीन मज़्हब दे समाज दा, समग्री सच इक्को नाम वाली वरताईआ। गुलशन महकणा लख चुरासी बूटा परवरदिगार दे बाग़ दा, अकल कलधारी अकाल आपणी दया कमाईआ। झगड़ा मुकणा शरअ वाले चराग़ दा, गुलशन नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मालक ख़ालक प्रितपालक दो जहानां रसम रिवाज दा, अवतार पैग़म्बर गुरु सन्त भगत सूफ़ी फ़कीर जुग जुग नित नवित निरगुण सरगुण आपणे हुक्म विच चलाईआ।

✪ १२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल रात नूं ✪

सतिगुर शब्द कहे मेरी वक्खरी साखी, सख़ावत आपणी इक रखांयदा। जन भगतां गृह गृह करांगा राखी, दूर नेड़ा पन्ध ना कोए जणांयदा। पुश्त पनाह दयांगा थापी, थपक थपक के गोद टिकांयदा। नौ सौ नड़िंनवें गुरमुखां दरस होवेगा अज्ज दी राती, नौ दवार नव खण्ड दा पन्ध मुकाईआ। मेहरवान हो के वेखां लोकमाती, मता आपणा इक पकाईआ। दिवस

रैण मारां झाती, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। सदा सुहेला बण के साथी, सगला संग निभाईआ। सीना नाल लगावां छाती, छत्रधारी हो के वेख वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कोलों करां खुलासी, खुलासा आपणा आप समझाईआ। ममता रहे ना मूल प्यासी, तृष्ना तृखा मिटाईआ। भगतां दी बणके दासी, सेवक हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी कल आप वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं सच्चा देवां संग, सगला संग बणाईआ। प्यार दा चाढ़ां रंग, रंगत बेपरवाहीआ। जन भगतां लावां अंग, अंगीकार इक अख्वाईआ। योधा सूरा बण सरबंग, जोबनवन्ता बेपरवाहीआ। धर्म दा धर्म वजा मृदंग, धरनी धरत धवल सुहाईआ। ज़रूर जन भगतां दी रछयां करां एस विच जंग, जगह जगह आपणा फेरा पाईआ। छेड़ छिड़नी धाम पंज, पंजां दा खेल तकां हो के बेपरवाहीआ। दीन दुनी होणा रंज, रंजस विच लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा लालच नहीं जग, जगत तृष्ना ना कोए वखाईआ। मेरा खेल उपर शाह रग, नौ दवार दा डेरा ढाहीआ। नाद शब्द सुणा के सद, सोई सुरत उठाईआ। जगत विकारा (करके बध्ध), घर पड़दा दयां चुकाईआ। मैनूं कोई ना सके लभ्भ, खोज्जयां हथ्थ किसे ना आईआ। किरपा करां जुगो जुग झब्ब, जन भगतां होवां सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे भगतां रखां ना कदे उत्ते कराया, कीमत जगत वाली रखाईआ। मेरा लेखा नहीं कूड़ कुड़यारी माया, ममता धुर दी इक बणाईआ। जन्म जन्म दा लेखा आपणे हथ्थ रखाया, कर्म कम दा संग बणाईआ। एथे उथे देवां ठंडी छाया, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सतिगुर हो के सतिगुर शब्द ना कदे मुख भवाया, जुग जुग भगतां आपणे लेखे लाईआ। सचखण्ड निवासी सचखण्ड दवार सुहाया, दरगाह आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे आदि अन्त प्रभ दी मेहरवानी, मेहर नज़र उठाईआ। बणके आदि अन्त दा जान जानी, जुग जुग वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम जोत नूर नुरानी, नूर नुराना डगमगाईआ। जन भगतां धार समझे ना कदे बेगानी, बेगाना मन मनसा विच कुरलाईआ। जिन्हां दी मंज़ल इक रुहानी, रहिबर नाल मिल के वज्जे वधाईआ। उहनां सदी चौधवीं आउण नहीं देणी परेशानी, परे तों परे हो के वेखे चाँईं चाँईंआ। हुण कथा कथनी ना ज़बानी, अकथ आपणा हुक्म वरताईआ। जगत जहान सृष्टी दिसे फ़ानी, अन्त रहिण कोए ना पाईआ। इक निशाना रहे भगत भगवानी, भगवन आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल

साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे ज़िमीं असमानी, हर घट अन्तर आपणा हुक्म वरताईआ।

मुहम्मद दा मकबरा करे सजदा, चढ़दयो लहिंदे सीस निवाईआ। खेल तके अगम्म वजद दा, की वाजब आपणी कार कमाईआ। की लेखा नूर इलाही रब्ब दा, लहिणा सब दा झोली पाईआ। वेला वक्त सोहणा सबब्ब दा, रुतड़ी रुत नाल महकाईआ। जिस दा दीपक इक्को जगदा, प्रकाश करे थांउँ थाँईंआ। ओह लेखा पूर करे जगत हज्ज दा, हुजरा निउँ के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। मकबरा कहे मैं तक्कया नूरी मौला, जिस नूं मौलाना समझ कोए ना पाईआ। जिस ने वायदा पूरा कीता कौला, इकरार पिछला वेख वखाईआ। वेस वटा के उपर धौला, धरनी रंग रंगाईआ। सब दा भार करे हौला, गड्डड़ी सीस ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। मकबरा कहे मैं वेख्या मेहरवान, जो मेहरवान अख्वाईआ। मुहम्मद दी ख़ाहिश दा कर इश्नान, लेखा अन्त वाला समझाईआ। एह मंग मंगी सी महीने विच रमज़ान, शब्बेरोज़ वास्ता पाईआ। जिस वेले आए मेरे अमाम, निज़ाम दीन दुनी बदलाईआ। मेरी मुश्किल होए आसान, इन्सानीअत दा लहिणा देणा वखाईआ। कोई अंकड़यां वाली ला ना सके मीज़ान, गिणत गणित ना कोए गिणाईआ। सो वेला पहुँचया आण, घड़ी पल दए गवाहीआ। मुहम्मद दा मकबरा कहे मेरे महिबूब नूं कोई ना किहो पंजां तत्तां वाला इन्सान, जोती जाता नूर इलाहीआ। जूठ झूठ लोभ लालच कूड़ी क्रिया दा आदि जुगादि कदे ना देवे दान, सच नाम सच दा कलमा सच आप वरताईआ। जो लेखा चुकावे शरअ शैतान, छुरीआं वंड ना कोए वंडाईआ। मैं उस दी निगह नाल करां पहचान, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। ओह मालक रहीम रहमान, रहमत सच कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। मकबरा कहे मेरे विच वजूद दा क्याम, क्यामगाह इक अख्वाईआ। जिस विच छुप गए गौंस औलीए तमाम, मुल्ला नज़र कोए ना आईआ। मिट्टी ख़ाक होया चाम, तन हाडी नाल मिलाईआ। मैं वेख के होया हैरान, हैरानी विच सुणाईआ। की खेल करे अमाम, अमाम अमामां बेपरवाहीआ। जिस दी सब तों वक्खरी कलाम, कलमा कायनात पढ़ाईआ। सूफ़ीआं दए पैग़ाम, भगतां करे शनवाईआ। अंधेरा मेट शाम, शाुं नूर जोत करे रुशनाईआ। धुर दा मालक हो के मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। उस दी दो

चार साल दी नहीं गुज़रान, अनन्त जुग आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। मकबरा कहे मेरे विच लुक गए पैग़म्बर पीर, पीर पीरा खेल खिलाईआ। जिन्हां निशान दिता सदी चौधवीं अख़ीर, आख़र गया दृढ़ाईआ। जन भगतो तुसां होणा नहीं दिलगीर, चिन्ता ग़म ना कोए रखाईआ। जिस नूं लभ्भदे कोटन फ़कीर, फ़िकरे ढोले रहे सुणाईआ। ओह बणा आपणी तदबीर, तकदीर गुरमुखां रिहा बदलाईआ। लोकमात बालक सदा चुंघदा नहीं माता दा सीर, बिना परवरदिगार तों रिज़क ना कोए सबाईआ। कूक के कायनात किहा कबीर, कायदा इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। मकबरा कहे मेरा अन्त अन्त इक सजदा, सजदा सीस निवाईआ। जिस नूं रिहा लभ्भदा, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। उहदा मेला मेरा हो गया सबब दा, पर्दा दिता चुकाईआ। मालक बणया जग दा, जागरत जोत करे रुशनाईआ। ओह वणजारा नहीं मास नाड़ी हड्ड दा, आत्म आपणे रंग रंगाईआ। रूह बुत विच्चों कढदा, एह उहदी बेपरवाहीआ। बेशक जगत जहान प्यारा जग दा, मात पित नार कन्त जगत खुशी रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। मकबरा कहे मुहम्मद तक अक्खां, अक्खां वाल्या अक्ख उठाईआ। मुहम्मद कहे मेरे कोल कोट कि लखां, की दयां दृढ़ाईआ। मेरी माटी ख़ाक बण गई कक्खां, कीमत ना जगत जणाईआ। संदेशा देवां सच्चा, सच इक सुणाईआ। मेरा ढहिणा मदीना मक्का, दरोही नाम खुदाईआ। मेरी चार यारी हर चार साल (बाद) मैनूं इक वेरां देंदी सी धक्का, आपणा मन बदलाईआ। सानूं पाया केहड़े विच रट्टा, मात पिता छड के तेरी सेव कमाईआ। मैं सुणाउंदा सां कलमे दा इक टप्पा, हथ्थ मस्तक उत्ते छुहाईआ। चार यारी चार साल दा वट्टा, एह वटांदरा करे बेपरवाहीआ। जिस वेले तुहाडा तन शरीर चीथड़ होणा पुराणा फटा, जोबन नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। मुहम्मद कहे मैं सुणाउंदा रिहा कलामा, कलमा कलमे नाल जणाईआ। इक दिन हस्स के किहा चार यारां तैनूं फेर वी मिलदा रहिणा एह उलाहमा, चार जुग दे मालक आपणा खेल लैणा खिलाईआ। जिस दे भगत होणे ग़ुलामा, ग़ुलामी दीन दुनी दए तुड़ाईआ। संदेशा देवे इक्को इक पैग़ामा, पैग़म्बरां परे पढ़ाईआ। मुहम्मद हस्स के किहा ओह मेरा अमामा, नूर नुराना नूर इलाहीआ। जिस दी चौधवीं सदी मेरा लेखा पूर कराना, लहिणा देवे चाँईं चाँईंआ। पंज आब करे परवाना, बेआब होवे लोकाईआ। चौदां सौ कोस युद्ध होवे घमसाना, हदूद हद्द इक वखाईआ। नाम कलमा जिस जगत रहिण नहीं देणा करयाना, धुर दा

१६४० २२

हुक्म इक वरताईआ। एह खेल करना उस मेहरवाना, जिस दा आदि अन्त समां दरम्याना, समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। चार यारां किहा हज़रत की होवेगा बन्दा, बन्दगी की दृढ़ाईआ। मुहम्मद किहा मैं नेत्रहीण अन्धा, अन्त कहिण कुछ ना पाईआ। की दस्सां माढ़ा होवे कि चंगा, वड्डा छोटा वंड ना कोए वंडाईआ। मैनूं इयों जापदा जिस ने सारे अवतार पैग़म्बर गुर चुक्क के आपणे कंधा, कन्ढी घाट पत्तन इक्को देणे टिकाईआ। सब दा सीना कर के ठंडा, अग्नी तत बुझाईआ। जगत जहान इक्को दे के सच अनन्दा, अनन्दपुर वासी दा लेखा पूर कराईआ। पर याद रखयो इक वेरां उस नूं सब ने कहिणा गंदा, क्यों गंदगी दे कीड़े सारे देणे खपाईआ। चार यारो उहदयां यारां ने उहनूं कहिणा मुशटंडा, धोखेबाज़ अख्वाईआ। पर याद रखयो उस दीन दुनी नूं करना रंडा, सिर सके ना कोए उठाईआ। इक्को सति दा झुलाउणा झण्डा, सति धर्म दी धार प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। मुहम्मद कहे चार यारो दस्सां गल्ल इक हरफ़ी, इक्को वार जणाईआ। सम्मत शहिनशाही सत्त बारां मग्घर दिवस होवे शरफ़ी, शराफ़त सब दी वेख वखाईआ। तेरां मग्घर तों पंज दिन गल विच पावे चौदां तबकां वाली अल्फ़ी, आपणा हुक्म वरताईआ। जगत अन्न ना खावे शर्ती, एह उस दी बेपरवाहीआ। फेर खेल वेखणा उत्ते धरती, की लेखा जगत लोकाईआ। भगतां दी आशा चार जुग चार साल विच नहीं सड़दी, दुखी हो ना दुःख बणाईआ। आत्मा दी धार परमात्मा दे घर दी, जिस वेले चाहे उस वेले लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। तेरां मग्घर कहे पीरां दे पीर नूं दयो कोई ना रोटी, अग्गे अन्न ना कोए टिकाईआ। जिस ने सब दी लेखे लाउणी गोशत बोटी, कोना कोना खोज खुजाईआ। उस दी जगदी रहे जोती, जोती जाता नज़री आईआ। उस दी इक्को कला बहुती, अकल कल आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, अग्गे आयू दिसे किसे ना बहुती, बहु गुणा आपणा हुक्म वरताईआ।

१६४१
२२

✪ १४ मग्घर शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल रात नूं ज़िला अमृतसर ✪

मकबरा कहे जिस वेले मेरे अन्दर रखी लाश, मुहम्मद मूँह दे भार टिकाईआ। ओह खुद खुदा ने किहा शाबाश, मेहरवान मेहर निगह उठाईआ। तेरा लेखा पूरा होवे ख़ास, ख़ालस आपणा हुक्म वरताईआ। तूं पातालां विच करीं तलाश, बिन

नैणां नैण उठाईआ। मैं आवां उतों आकाश, बिन तन वजूद वेस वटाईआ। करां खेल तमाश, अगम्म अथाह बेपरवाहीआ। सच करीं विश्वास, विश्व दा भेव खुल्हाईआ। राह तके शंकर उत्ते कैलाश, ब्रह्मा अक्ख उठाईआ। विष्न पूरी होवे आस, आपणी कल प्रगटाईआ। सच दस्सां तेरी उम्मत दी अन्त रहिणी नहीं शाख़, शनाख़्त नज़र कोए ना आईआ। झट फ़रमाना दिता आख, वाहिद इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। मकबरा कहे मुहम्मद दे हथ्थ सी उपर छाती, पुश्त पनाह टिकाईआ। लेख लिख्या सी नाल कलम दवाती, हरफ़ समझ किसे ना आईआ। जगत ज़िंदगी जगत हयाती, जगत जीवण जगत वड्याईआ। जिस उम्मत दी करें राखी, राखा हो के वेख वखाईआ। तूं बण के मिट्टी ख़ाकी, मकबरयां विच डेरा लाईआ। औह तक खेल अबिनाशी, हरि करता की कार कमाईआ। जिस तेरी बणाई रासी, रस्ता दिता वखाईआ। उम्मत जणा दासी, सेवा सच समझाईआ। अन्त होणी विनासी, मिट्टी ख़ाक विच समाईआ। ख़ुशी विच आउंदी हासी, हस्स के रही सुणाईआ। सदी चौधवीं लेखा पूरा होवे बातन बाती, बेवतना लेख रहे ना राईआ। तेरे हथ्थां दी पाती, पत्रा दए गवाहीआ। चार यार शरअ दे रहिणे नहीं जमाती, संगी संग ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ।
मकबरा कहे मैं ख़ुदा दा सुणया कलाम, मुहम्मद पासा ना सक्या बदलाईआ। तैनूं शरअ दा बणाया ग़ुलाम, ज़ंजीर कलमे दा पाईआ। अक्खरां नाल इतलाह दिती आम, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। मोमन हो तमाम, काफ़र रहिण कोए ना पाईआ। बन्दा ख़ाकी इन्सान, ख़ाकी ख़ाक नाल वड्याईआ। मुहब्बत दे नौजवान, प्यार विच वड्याईआ। कलमा करे कल्याण, दरगाह सच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ।
मकबरा कहे खुद खुदा ने कीता मुख़ातब, मुखबर कलमा दिता बणाईआ। मैं अन्त सब दा करना तुआकब, पिच्छे लग्गा थांउँ थाँईंआ। मुहम्मद तेरी मक्के काअबे वाली जानब, गोशा कोना फोल फुलाईआ। उस वेले प्यार रहिणा नहीं मानस मानव, मानवता विच ना कोए वड्याईआ। नाम कलमे वाले राकश बणने दानव, दैंत कूड़ वाले अख्वाईआ। अवतार पैग़म्बरां हुक्म मूल ना मानण, मनसा मन नाल रलाईआ। मेरा ज़हूर नूर मूल ना जानण, जाणकारी ना कोए दरसाईआ। जूठ झूठ ख़ाक छानण, मुहम्मदा तेरे मकबरे दी मिट्टी ख़ाक दए गवाहीआ। फेर मेरा खेल होवे ज़िमी असमानण, चौदां तबकां हुक्म वरताईआ। चारों कुण्ट अंधेरी शामन, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। तेरी लाश ने किसे दा बणना नहीं ज़ामन, अग्गे हो ना कोए छुडाईआ। प्रभ लेखा पूरा करना जो लहिणा नाल बावन, शुकर पुरोहत वंड वंडाईआ। चारों कुण्ट होवे तृष्ना

तामन, सांतक सति ना कोए कराईआ। सुण मेरा अगम्मा पैग़ामन, फ़रमाना धुरदरगाहीआ। साबत रहिणा नहीं किसे ईमानण, अमल सच ना कोए कमाईआ। ब्रह्म विद्या वाला दिसे ना कोए ब्राह्मण, क्षत्री शूद्र वैश देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक इक अख्वाईआ। मकबरा कहे मुहम्मद दी छाती उत्ते दबाए पंजे, पंज वार हिलाईआ। मेरे परवरदिगार मैनूं नहीं कोई रंजे, रंजश विच कदे ना आईआ। मेरी लाश पई बिना मंजे, माटी ख़ाक डेरा लाईआ। तेरी बावन धार धार बवंजे, पंज दो नाल दरसाईआ। मेरे नेत्र मूल वहे ना हंझे, पाणी जल ना कोए वहाईआ। तेरे हुक्म सदा चंगे, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। मैनूं इयों जापदा तेरे हुक्म नाल सदी चौधवीं अन्त युद्ध छिड़ना धाम पंजे, पंज धार नाल मिलाईआ। मेरी उम्मत सारी वंञे, वञ्झ मुहाणा ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। मकबरा कहे मुहम्मद दी बिना स्वास तों इबादत, मकबरे विच सीस निवाईआ। सदी चौधवीं अन्त मेरी उम्मत दी होवे शहादत, शहादत जगत नाल रलाईआ। मूसा ईसा मेल होवे नाल रफ़ाकत, सदाकत समझ किसे ना आईआ। बुद्धी जाणे ना कोए ल्याकत, अक्ल चले ना कोए चतुराईआ। तेरी मेहर दी होवे हमाकत, हमसाजण तेरी वड्याईआ। पर इक खेल दिसदा सब नूं तेरे कलमे दी होणी लाअनत, बिना तेरी किरपा तों तेरी समझ कोए ना पाईआ। उम्मत दी उम्मत ने करनी मज़ाहमत, मसला दीन दुनी वखाईआ। चारों कुण्ट आउणी शामत, शमादान ना कोए रुशनाईआ। तेरा लोकमाती क्याम कायनात दी आवे क्यामत, करीम कादर तेरी बेपरवाहीआ। उस वेले मैनूं वी बख़्शीं न्यामत, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। मकबरा कहे कलमे दी धार लाया नुक्ता, पंज वंड वंडाईआ। जिथ्थे पंज पंजां दा पैंडा मुकदा, अग्गे पन्ध ना कोए रखाईआ। सत्त समुन्दरां वहिण रुकदा, लहर लहर नाल बदलाईआ। ज़िमीं असमान झुकदा, निउँ निउँ सीस निवाईआ। खेल वेख्या भयानक दुःख दा, दुखी हो के नैण दबाईआ। किसे नूं स्वास नहीं आउणा सुख दा, हौक्यां विच दुहाईआ। नाता रहिणा नहीं मात पुत दा, पिता गोद ना कोए सुहाईआ। कलमा कलमे तों फिरे लुकदा, नाम नाम कोलों मुख छुपाईआ। कलयुग घर घर फिरे बुक्कदा, भज्जे वाहो दाहीआ। सच दस्सो किस दे कोल जाप इक तुक दा, जो इक्को नूं रिहा ध्याईआ। फेर खेल होणा जगत जहान लुट्ट दा, शाह सुल्तान लुटेरा रहिण कोए ना पाईआ। माण रहिणा नहीं किसे टोपी टोप दा, सीस दस्तार ना कोए चतुराईआ। डंका वज्जणा इक्को चोट दा, चोटे सारे देणे खपाईआ। प्रकाश होणा अगम्मी जोत दा, निरगुण धार करे रुशनाईआ। ब्याह होणा लख चुरासी

१६४३
२२

नाल लाड़ी मौत दा, गाने घर घर शगन मनाईआ। मुहम्मद किहा मैं अन्तिम कलमा पढ़ना फ़ौत दा, फ़तवा ख़ुद ख़ुदा देणा लगाईआ। फेर हुक्म इक्को होणा बहुत दा, बहुती वंड ना कोए वंडाईआ। परवरदिगार दा वार नहीं कोई तोप दा, हुक्म नाल आपणा खेल खिलाईआ। जिस दा दरम्यान पंज थाँ बणना चौदां चौदां सौ कोस दा, जगत जहान बचया रहिण कोए ना पाईआ। शंकर ओह थाँ फिरे खोजदा, भज्जे वाहो दाहीआ। जिथ्थे दीन मज़्हब झगड़ा मुकाउणा रोज़ दा, रोज़ा नमाज़ दा लेखा रहे ना राईआ। अन्तिम अरदासा होणा इक्को भोग दा, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। फेर खेल तकणा प्रभू दी मौज दा, जो मौजूदा हो के आपणा हुक्म वरताईआ। घमसाना वेखणा नौ खण्ड पृथ्मी फ़ौज दा, फ़ौजदार धुर दा आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत जहान इच्छया विच कदे ना सोच दा, धुर दा हुक्म हुक्म नाल वरताईआ।

✪ १७ मग्घर शहिनशाही सम्मत ७ दलीप सिंघ, रत्न सिंघ, सुच्चा सिंघ, जरनैल सिंघ, भान सिंघ, सुलखण सिंघ, जगजीत सिंघ, प्रीतम सिँघ ते हरजीत सिंघ, दरबार दे खेतां विच कम्म करन वाल्या नवित हरि भगत दवार जेठूवाल रात नूं ज़िला अमृतसर ✪

१६४४
२२

पुरख अकाल कहे मेरी शब्द धार दी गाथा, जगत रसना ना कोए वड्याईआ। मेरा हुक्म हुक्म समराथा, आदि अन्त जुगा जुगन्त चलया आईआ। धर्म दी धार चलदा राथा, नित नवित आपणी सेव कमाईआ। जिस वेले विष्नूं नूं बख़्शीआं दातां, भण्डारा हक हक वरताईआ। चरण धूल दा दे के आटा, भण्डारा भरपूर दिता वखाईआ। दो जहान वखा के अहाता, लख चुरासी भेव खुल्हाईआ। मैं सब दा पिता माता, तूं वंडणहार रिज़क सबाईआ। मेरा अगम्म अथाह खाता, निखुट कदे ना जाईआ। तेरा निरगुण रूप जोती जाता, जागरत जोत इक रुशनाईआ। हुक्म देवे इक्को सर्ब कला समराथा, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। विष्नूं मेरी याद विच पंज दिन कटणा फ़ाका, फ़िकर अगला लैणा बणाईआ। इक्को लेखा ब्रह्मे नाल वरतणा बणके साका, साकार आपणी खेल खिलाईआ। शंकर पंज दिन कुछ नहीं आउणा हाथा, इक्को मेरा ध्यान लगाईआ। सूर्या चन्न रखण आसा, देवत सुर सीस झुकाईआ। मेरा हुक्म बहु बिध भांता, सिर सिर आप भुगताईआ। निरगुण सरगुण वेख खेल तमाशा, सद आपणी जोत प्रगटाईआ। मण्डल मण्डप पावां रासा, ब्रह्मण्डां खण्डां वेखां चाँईं चाँईंआ। फिरां पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतरां फोल फुलाईआ। पंजां तत्तां पूरी करां आसा, तृष्ना तृखा आप बुझाईआ। सरगुण रूप बणा शाहो

शाबाशा, जोती शब्द धार प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ। पुरख अकाल किरपा कीती अपार, अपरम्पर दया कमाईआ। जो सरगुण भेजदा रिहा अवतार, निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। पंज दिन हर इक वरत रखदा रिहा विच संसार, अन्न ना मुख छुहाईआ। जगत रीती दे अधार, सबर सबूरी नाल समझाईआ। एह खेल अगम्म निरँकार, निरवैर आपणे हथ्थ रखाईआ। पैग़म्बरां दे सहार, पुश्त पनाह होए सहाईआ। पंज दिन खाणा नहीं अहार, ईसा मूसा मुहम्मद हुक्म दृढ़ाईआ। सारे झुक के करन निमस्कार, सिर सके ना कोए उठाईआ। एह लेखा वरतदा रहे जुग चार, गुर दस नाल मिलाईआ। जिस वेले नानक ने मारी पहली उडार, पंज दिन अन्न ना मुख लगाईआ। गुर अर्जन ने तत्ती लोह ते बहिण तों पहलां पंज दिन कीता नहीं अहार, धुर ध्यान विच विच आप टिकाईआ। हरि गोबिन्द पहन मीरी पीरी कटार, पिच्छों पंज दिन पुरख अकाल विच ध्यान लगाईआ। तेग़ बहादर पुज्ज दिल्ली दरबार, दिवस पंज अन्न दाणा रसन ना कोए छुहाईआ। गोबिन्द जिस वेले माछूवाड़े सुत्ता पैर पसार, कीड़ी आपणा धन भेंट कराईआ। रो के कीती निमस्कार, बिन नैणां नीर वहाईआ। उठ खा मेरी सरकार, बिना पीहण पकाउण तों तेरे अग्गे टिकाईआ। गोबिन्द कर प्यार, सहिज नाल समझाईआ। ओह तक खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर की कार कमाईआ। जिस ने सब दा लहिणा देणा पूरब कर्ज़ देणा उतार, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण वेख वखाईआ। जिस वेले सदी चौधवीं आई हार, चौदां तबक चौदां लोक रोवण मारन धाहीआ। उस वेले कलि कल्की लए अवतार, पुरख अकाला दीन दयाला आवे वाहो दाहीआ। जन भगतां पैज देवे संवार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नाले लहिणा देणा पूरा करे जो राम दे साथी अयुध्या तों गए बाहर, नाल भज्जे वाहो दाहीआ। रो रो के करदे गिरयाज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। अयुध्या आओ मेरी सच्ची सरकार, सिर सब दे हथ्थ टिकाईआ। राम ने हस्स के किहा मित्रो तुसीं मेरे सज्जण यार, संदेशा देवां चाँई चाँईंआ। झट सीता बांह लई उलार, हथ्थ जोड़ के सीस निवाईआ। तुसीं वेखो आपणा घर बाहर, अग्गे पन्ध ना कोए वधाईआ। जिन्हां विच्चों नौ रो पए ज़ारो ज़ार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। असीं तेरे सेवक बरखुरदार, सेवा करके झट लँघाईआ। सानूं लोड़ नहीं राज दरबार, असीं किरसाणे किरसाणी कर के तेरे अग्गे टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। राम हस्स के किहा मेरा हुक्म करो परवाना, परवानगी नाल जणाईआ। मेरा राम राम मेहरवाना, मेहर नज़र उठाईआ। ओह तक्को त्रेता द्वापर बदल जाणा ज़माना, कलयुग अन्तिम आईआ। तुहाडा फेर जन्म होवे जगत विच इन्साना, चुरासी विच ना कोए भवाईआ। मिले मेल

श्री भगवाना, जो शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। तुहाडा लेखे लावे जन्म कर्म दा किरसाणा, किरसाणी कर के आपणी खुशी बणाईआ। तुहानूं माण देण दा मेरा बहाना, सहिज नाल सुणाईआ। झट सीता गाया खुशी विच गाणा, धुर दे राम तेरी बेपरवाहीआ। तेरा तैथों ना होए कदे बेगाना, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। इन्हां नौआं नूं ज़रूर करीं परवाना, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सो लेखा पूरा करे वाली दो जहानां, दोहरा आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे एह वक्त सुहञ्जणा सुहावा, सच सच जणाईआ। जिन्हां नौवां ने कीता दाअवा, प्रेम प्यार विच सीस झुकाईआ। दलीप सिंघ रत्न सिंघ प्रीतम सिंघ सुचा सिंघ नाल सांवा, जरनैल सिंघ ज़रा ज़रा जोड़ जुड़ाईआ। सुलखण सिंघ लेखे लग्गण दोवें बाहवां, भान सिंघ आपणा रंग रंगाईआ। जगजीत सिंघ नाल रलाया नावां, नाम नाम नाम समझाईआ। हरजीत होया नहीं विछोड़ा नाल भरावां, दर ठांडे मिल के वज्जे वधाईआ। जिन्हां दे अन्तर आत्म सतिगुर शब्द कहे मैं प्रेम दा हल्ल चलावां, कर्म धर्म बैल नाल मिलाईआ। जिन्हां आपणा छड्डया देस गरावां, सच घर बैठे आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे पंज दिन दिवस दा विहार, अवतार पैग़म्बर गुरु पूर कराईआ। एह खेल शाह पातशाह सच्ची सरकार, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दी आदि जुगादि अगम्म कार, धुर दी करनी कार कमाईआ। सो वेखे विगसे पावे सार, महासार्थी आपणा पड़दा आप उठाईआ। एथे ओथे देवे अधार, उदर दा लेखा दए चुकाईआ। जिस वेले अठारां मग्घर दा पहले मिन्ट दा चढ़े दिहाढ़, दिवस आपणा पन्ध मुकाईआ। नौ गुरमुख आटा लैणगे छाण, शांती नाल सीस झुकाईआ। प्रशादा करेगी तृप्त नाल ध्यान, चरणी पाणी आटे विच पाईआ। फुलका पकावेगी जुगिन्दर नौजवान, दविन्दर थल्ले लाहवे चाँईं चाँईंआ। गुरदर्शन उत्ते चिट्टी चादर देवेगी ताण, सुरजीत कौर मनजीत कौर अमीर चन्द गुलाटी मिल के शब्द गावण चाँईं चाँईंआ। वरयाम कौर पंज दाणे लै के धान, चुल्ह विच दए टिकाईआ। बलविन्दर बलजिन्दर गुरमीत तिन्ने कर इश्नान, चिट्टे वस्त्र पा के मस्तक काला टिक्का लैण लगाईआ। बाकी सारी संगत हथ्थ रख के उत्ते कान, बारां वजे भगत दवारे बैठण चाँईं चाँईंआ। प्रीतम सिंघ अमरजीत सिंघ खिच्च नन्गी किरपान, पहरेदार हो के धुर दी सेव कमाईआ। लिखारी होणे सवाधान, सवा सवा सेर आटा सिर दे उत्ते टिकाईआ। एह लेखा चार जुग दा गुर अवतार पैग़म्बरां दा होवे परवान, परवाने गुरमुखां हथ्थ फड़ाईआ। जगीर कौर जगीर कौर बलवन्त कौर ते प्यारो चारे जगा के शमादान, बिशन कौर दे कोल देण टिकाईआ। प्रभ ने बदल देणा विधान, विद्या दा लेखा

रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। धुर दा हुक्म हुक्म यथार्थ, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। हरजीत सिँघ हाज़र करे रात दे बारां वजे छत्ती पदार्थ, जेहड़े इशारे नाल अन्दर दिते समझाईआ। इस विच प्रभ दा नहीं कोए स्वार्थ, जन भगतां दी भुक्ख नंग दए कटाईआ। गुरमुखो तुहाडी आत्म परमात्म बण जाए परमारथ, परम पुरख धुर दा लेखा लए लगाईआ। ओह वेखो तुहाडे कोल आ गया नारद, कन्न खुरक के रिहा वखाईआ। जन भगतो क्यों प्रभ उत्ते लाउण लग्गे गारद, मैनूं दयो समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे मैं वेख्या तुहाडा साहिब भुक्खा, भुक्ख्यां भुक्ख गंवाईआ। जेहड़ा जवां दा टुक्कर खावे सुक्का, सुखमन टेडी बंक तुहाडी पार कराईआ। मैं निशान्यों कदे ना उका, जुग जुग भज्जां वाहो दाहीआ। हुण अवतार पैग़म्बर गुरुआं पैंडा मुका, मुकम्मल दयां जणाईआ। जिधर वेखां ओधर पैणीआं लुट्टां, लुटेरा बणया बेपरवाहीआ। जिस ने लेखे लाया गोबिन्द दे नीहां हेठ दुलारे सुत्ता, सति दा मालक खेल खिलाईआ। उहदीआं मौलण लग्गीआं रुतां, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। मैं ज़रूर बारां वजे तुहाडे कोल पुज्जां, आवां चाँईं चाँईंआ। पर याद रख्यो गुस्से ग़म विच किसे दा मूंह होवे ना सुज्जा, अधी रातीं खुशीआं विच खुशी दे ढोले गाईआ। जेहड़ा मालवे वाल्यां भेंटा कीता मिशरी दा कुज्जा, घर घर सेव कमाईआ। ओह रखणा भगत दवार हरि सिंघासण थल्ले उत्ते बसुधा, धरनी उत्ते टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा आदि अन्त किसे ना बुज्झा, भेव अभेदा समझ किसे ना पाईआ।

१८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल ज़िला अमृतसर रात बारां वजे दिन दे पहले मिन्ट ही समां ००,०१

अठारां मग्घर दे बीते दो पल, पहली घड़ी पूरन होण ते आईआ। एह पूरब लेखा पूरा कीता बलि, जो समग्री अशवमेध जग टिकाईआ। भुक्खा बण अछल अछल, बावन लहिणा दिता चुकाईआ। जिस दा लेखा जल थल, महीअल रिहा समाईआ। आपणा हुक्म रखे अटल, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सिध्धा हो के भगतां वल्ल, वलवले सारे दए कढ्ढाईआ। आत्म परमात्म धार रल, जोती जाता डगमगाईआ। जिस लेखा मेटणा कलयुग कल, कलकाती दए खपाईआ। जिस दी समझे कोए ना गल्ल, भेव अभेद ना कोए जणाईआ। ओह सब दा लेखे लावे प्रेम प्यार दा हल, हौला भार सर्ब वखाईआ। छत्ती पदार्थ

देवे फल, फलीभूत दए बणाईआ। जगत द्वैत मेट के सल, प्रेम प्रीती इक बंधाईआ। भाग लगा के काया माटी खल्ल, ख़लक तों बाहर करे रुशनाईआ। लहिणा पूरा करे डूंघी डल्ल, अंध अंधेर दए चुकाईआ। सतारां मग्घर दी रैण गई ढल, अठारां आपणी ल्ए अंगड़ाईआ। धुर दा हुक्म रिहा घल्ल, संदेसा अगम्म अथाहीआ। अठारां मग्घर कहे जो लेखा होया आज, अजब दयां जणाईआ। एह लहिणा पूरा होया बलि जिस सीस तों लाह के ताज, आप आपणा माण गंवाईआ। माण छड के तख्त राज, रईयत सेव कमाईआ। धर्म दी धार जाण के काज, सच्ची करनी कार कमाईआ। झगड़ा छड कूड़ समाज, समग्री सच टिकाईआ। जिस दा रसना नाल ना वेख्या स्वाद, जेहवा रस ना कोए चखाईआ। भोग लगाया रिषीआं वरताया बाद, परोस के दिता वखाईआ। सीस झुकाया तूं मालक इक आदि, अन्त तेरी वड्याईआ। तूं वसें जुग जुगादि, चौकड़ी सोभा पाईआ। मेरी रखणी लाज, दर ठांडे मंग मंगाईआ। जिस कारन ब्राह्मण बुढ्ढा बणया अपाहज, बावन वेख वखाईआ। शब्द सुणा के बोध अगाध, चार वेदां रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। छत्ती भोजन कहिण साडी सिफ्त गाई राग छत्ती, छत्ती जुग अंध गुबार जणाईआ। सानूं खांदे रहे दन्द बत्ती, बत्ती सपारे कूक कूक सुणाईआ। साडा तरस ना आया किसे रत्ती, अवतार पैग़म्बर गुर सिर
१६४८ हत्थ ना कोए टिकाईआ। असीं सड़दे रहे अग्नी तत्ती, सड़ सड़ आपणा आप बदलाईआ। हुक्म मन्नदे रहे कमलापाती, १६४८
२२ जो पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। तन वजूद करदे रहे सती, सति दे अग्गे भेंट चढ़ाईआ। साडी फेर होई ना गती, जुग २२
जुग आसा गए रखाईआ। सानूं बावन ने सहिज नाल इक गल्ल सी दस्सी, हौली हौली दृढ़ाईआ। जिस वेले सब दा मालक आया कमलापाती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। तुहाडा लहिणा देणा पूरा करे हथ्थो हथ्थी, हथेली उत्ते टिकाईआ। जिस दी कहाणी जाएना कथी, अगम्म अथाह वड्याईआ। तुहाडी पैज जाए रखी, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। भगत सुहेले बणा के सखी, सुखन मेरा पूर कराईआ। एह खेल वखाए अक्खीं, पर्दा अक्खीआं उतों उठाईआ। जिस वेले धन्न दौलत लुट्टी जाणी करोड़ी लखी, ग़रीबां मिले वड्याईआ। शाह सुल्ताना होवे कोए ना पक्खी, सगला संग ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पदार्थ कहिण हुक्म सुणया सच्ची सरकार, जो बावन दिता दृढ़ाईआ। निरगुण आवे आपणी धार, पुरख अकाला बेपरवाहीआ। जिस नूं कहिंदे सांझा यार, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। जिस भगतां करना उधार, कलयुग अन्त ल्ए तराईआ। छत्ती छत्ती बणा के भगत दवार, भगवन आपणे रंग रंगाईआ। सानूं कदे ना दए विसार, विसरयां गले लगाईआ। साडा गृह करे उज्यार, जग

देवे माण वड्याईआ। फेर सारे करीए निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। बेनन्ती सुणे आप करतार, हरि करता वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। छत्ती पदार्थ कहिण जन भगतो साडी फड़ लओ बांह, हथ्थ उपर दयो उठाईआ। सब दा इक्को पिता ते इक्को माँ, दूजी जम्मण वाली कोए ना माईआ। साडी हां विच करो हां, नांह सके ना कोए सुणाईआ। जिस तरह तुहाडा भगत दवारे दा थाँ, छत्ती छत्ती लम्बाई चौड़ाईआ। एसे तरह साडा लंगरखाना दयो बणा, जिस विच वसीए चाँईं चाँईंआ। फेर तुहानूं रज्ज के दईए खवा, भुक्ख नंग रहिण ना पाईआ। दीन मज़्ब दा वेरवा दईए मिटा, ज़ात पात ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। छत्ती पदार्थ कहिण साडा दवारा उच्चा होवे तेरां फुट्ट, बहुती मंग ना कोए मंगाईआ। इट्टां लाउणीआं घुट्ट घुट्ट, इक दूजी नाल छुहाईआ। फेर चारों कुण्ट पए लुट्ट, लुटेरा नज़र किसे ना आईआ। मांवां विछड़ने पुत्त, पिता गोद ना कोए सुहाईआ। जन भगतां मौलणी रुत, रुतड़ी प्रभ नाल महकाईआ। सेवा करनी सब ने हो के खुश, खुशीआं रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। छत्ती पदारथो मैं आ गया जुग जुग दा पांधा, नारद रिहा सुणाईआ।
१६४६
२२
मेरे बिना तुहानूं कोई ना खांदा, खावण वाला इक्को पंडत बोदी वाला सोभा पाईआ। क्यों मैं दुद्ध नहीं चुंघिआ किसे माँ दा, मम्मा सीर ना मुख चुआईआ। मैं मास नहीं खांदा सूर गाँ दा, मज़बां वंड ना कोए वंडाईआ। मैं वणजारा बणया नहीं किसे बदलण वाले नाँ दा, नाउँ निरँकारा इक्को गाईआ। मैं इशारा कीता नहीं वाहवा दा, वाहवा विच सिफ्त सालाहीआ। मैं बल तक्कया नहीं कदे किसे दी बांह दा, झगड़े विच कदे ना आईआ। मेरा अज्ज दिहाढ़ा सोहणा होया चाअ दा, चाओ घनेरा इक वखाईआ। मेरा समां होया लाह दा, लहिणेदार इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। जन भगतो तुसीं बड़े चलाक, चलाकी आपणी दिती वखाईआ। दुनिया सुत्ती अधी रात, सुत्तयां कोए ना लए अंगड़ाईआ। तुसां बणा के सोहणी भात, भांत भांत दे खाणे भगत दवारे लए टिकाईआ। मेरी किसे ना पुछी वात, सद्दा दे ना कोए मंगवाईआ। मैं छेती पहुँचया पन्ध मुकाया भाज, धरती कदम ना कोए टिकाईआ। मैं खेल तक्कया जिस वेले जलाई आग, अग्नी अग्ग अग्ग तपाईआ। मैं फिरदा रिहा जिस वेले आटा छाणया विच परात, हेठां वड़ के वेख वखाईआ। गुंनूण लग्गयां उतों दिती दाब, मेरी हड्डी पसली दिती दबाईआ। मैं फेर वजाया नाद, कुबेर दिता सुणाईआ। विष्नूं दिता आख, पर्दा ना रखया राईआ। कुछ मेरी गल्ल भाख, भाषा जगत

ना कोए जणाईआ। उठ वेख की खेल हुन्दा अधी रात, रैण भिन्नड़ी नाल रलाईआ। लेखा लिख्या जांदा नाल कलम दवात, लिखारी लिखण चाँईं चाँईंआ। जिन्हां सवा सेर दी गठड़ी चुक्की साथ, बल तेरा भण्डारा पिछला संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे एसे तरह बलि चार जुग दे जगाए सी चराग़, चराग़ाहां होई रुशनाईआ। कलयुग अन्त जन भगतां अंधेरा मेटे दाग़, दुरमति मैल धुआईआ। आपणे हथ्थ पकड़े वाग, दूसर डोरी ना कोए बंधाईआ। हरिजन सारे गए जाग, सोया रहिण कोए ना पाईआ। जिस दिन गोबिन्द पहली वार आपणी उँगल बिठाया बाज, दीपक चार कर रुशनाईआ। चौथे जुग बदल देणा समाज, समग्री सच वरताईआ। माता गुजरी दिता आख, सहिज नाल सुणाईआ। एह कदों पूरी होवे आस, पर्दा दे उठाईआ। गोबिन्द हस्स के किहा जिस वेले निरगुण नूर जोत होवे प्रकाश, पुरख अकाला बेपरवाहीआ। उस वेले सब दा लेखा लए वाच, वाचक हो के खोज खुजाईआ। तेरा लहिणा देणा होवे साथ, सगला संग बणाईआ। तेरे नूर विच्चों नूर होवे प्रकाश, पूरन पुरख बेपरवाहीआ। जो सब दी पुछे वात, बेवतनां लए मिलाईआ। एसे कारन चार दीपक बिशन कौर नूं दिते दात, दयावान दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। नारद कहे जन भगतो जिन्ह नेत्रहीण बणाया अन्नयां, अधी रात अन्न हथ्थ किसे ना आईआ। पिच्छे जोतां जगाउँदीआं सी कुँवारीआं कन्यां, लाटां वाली सीस निवाईआ। अग्गे सब दा ठीकर भन्नया, लेखा अवर रहे ना राईआ। एसे करके तिन्हां कराया इशनान्यां, शंकर दी मनसा पूर कराईआ। लेखा पूरा होया बारां सौ सतासी अंक नाल पन्नया, भेव अभेद रिहा ना राईआ। सच प्रकाश दीपक इक्को चन्नया, चन्द सितार सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे जन भगतो खाण लई रखया बहुत कुछ, कुछ मैनूं दयो ख्वाईआ। मैं वेखो ताज़ी कटा के आया दाढ़ी मुच्छ, मुश्किल मूँह दे नाल खाण लग्गयां रहे ना राईआ। क्यों सारे हो गए चुप्प, उच्ची कूक के दयो दृढ़ाईआ। सारे कहो पंडता चारों कुण्ट पैणी लुट्ट, तूं वी जा थांउँ थाँईंआ। नारद पुट्ठा कर के ठुट्ठ, ठूठा रिहा वखाईआ। मैं फिर के आया लहिंदी चढ़दी गुट्ठ, कोना कोना पन्ध मुकाईआ। इयों दिसदा किसे नूं पाणी नहीं मिलणा घुट, आब हथ्थ किसे नहीं आईआ। मैं राह विच आउंदे वेख्या तारा चन्द रिहा टुट्ट, टुटयां फेर ना कोए जुड़ाईआ। सदी चौधवीं नाता रिहा छुट्ट, मेला अग्गे ना कोए मिलाईआ। मैं जगत जहान तक्कया ख़ाली दिसे बुत, बुतखाने रोवण मारन धाहीआ। मैं होर वेख्या जन भगत चोरी करदे लुक, लुक लुक आपणी खुशी बणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाउंदे अगम्मी

तुक, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। बाहरों छत्ती पदार्थ लए चुक्क, भगत दवारे विच टिकाईआ। जिथ्थे बिना भगतां तों कोए ना सके पुज्ज, ख़ाली हथ्थ ना कोए उठाईआ। मैं आउंदा आउंदा विष्नूं नूं मार के आया हुज्झ, हलूणा दिता लगाईआ। ब्रह्मे नूं किहा मेरी बात बुज्झ, की एह खेल की लोकमात खेल खिलाईआ। शंकर नूं दस्स के आया ऐवें ना बहवीं रुट्ठ, रुस्सयां हथ्थ किछ ना आईआ। फेर सब दा बिना हथ्थां तों हथ्थ ल्या घुट्ट, ज़ोर नाल दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद मेहर नज़र उठाईआ। नारद कहे जन भगतो एह खुशीआं वाला सत्तवां बरस, मैं भगत दवारे विच खुशी बणाईआ। अर्श तों आया उत्ते फ़र्श, भज्जया वाहो दाहीआ। एह छत्ती पदार्थ तुहाडा ब्राह्मण हो के खावां वेख्यो तुसीं ना पयो तरस, मन विच ध्यान लगाईआ। तुसीं मेरी बोदी दा करो दरस, मैं तुहाडा पकवान खा के आपणा झट लँघाईआ। पर इक दुःख किसे दे कोल हथ्थ विच फड़न वाला नहीं परस, नहीं ते एह लेखा पैरिस विच देणा सी पहुंचाईआ। ओह वेखो अमरीका वाल्यां नूं एहदी ग़रज़, बरतानीआ अक्खां रिहा उठाईआ। रशीआ वाले करन अर्ज़, नमो नमो सीस झुकाईआ। ओह तड़फदे जिन्नां छुरी बणाई शरअ करद, कत्लगाह वेखण जगत लोकाईआ। पर तुसीं मेरा वंडिओ दर्द, दर्दी हो के लहिणा देवां चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। नारद कहे प्रभू तूं आदि जुगादि जोत रब्बी, नूर नुराना इक अख्वाईआ। हुण क्यों छत्ती पदारथां दा बण ग्यों लबी, लालच खाण पीण वाला रखाईआ। झट संदेशा मिल्या यदी, नारदा अक्खां लै उठाईआ। ओह वेख भुक्खी तयाई रोंदी चौधवीं सदी, सदा अज़ां सच ना कोए सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर जांदे लद्दी, पिछला पन्ध पन्ध मुकाईआ। हुण इक्को जोत अगम्मी जगी, जागरत जोत कर रुशनाईआ। जिस ने पिछली मेटी हद्दी, हदूद इक दिती वखाईआ। दो जहान दी सांभ के गद्दी, गदागर करे लोकाईआ। तूं वी एस दवारे तों रज्जी, जिथ्थे भगत जन रज्ज के आपणी खुशी बणाईआ। फेर चारों कुण्ट उठ के भज्जीं, बल भुजां वाला बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे भगतो पंज दिन मैं फिरदा रिहा भगत दवारे गिरद, नौ नौ कदम पिच्छे आसण लाईआ। वेखदा रिहा अन्तष्करन इरद, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। मेरे नाल सी सीता नूं हरन वाला मृग, जो आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे मैं दस्सां सब नूं साफ़, सच सच सुणाईआ। कुछ लेखा देवां आख, अक्खरां नाल वड्याईआ। सीता दा सुभाओ अट्ठ वार चौवी घंटयां विच हुन्दा सी गुस्ताख़, सोलह घंटे आपणा रंग रंगाईआ। मैं इक दिन उहनूं किहा साच, सच दिता

१६५१
२२

दृढ़ाईआ। उहदे कोल भन्न के कच्ची वांग, वंग दिती तुड़ाईआ। एथे कोटन जुग चौकड़ी गए लँघ, अग्गे हाथ किसे ना आईआ। की होया जे विस्तर छडे पलँघ, बनबासी हो के राम नाल जंगलां पन्ध मुकाईआ। ओह वेख धारा अगम्मी गंग, लहर लहर नाल बदलाईआ। जिस दे नाल होणा संग, सगला संग रखाईआ। बिना प्यार तों दए अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जिस निशाना मेटणा तारा चन्द, सदी चौधवीं खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। नारद कहे जन भगतो आपणी आपणी दस्सो वंड, प्रेम विच जणाईआ। मैं चाहुंदा छत्ती पदारथां दी धार ना होवे खण्ड खण्ड, हिस्सा हिस्सा ना कोए बणाईआ। मैं इक्को ब्राह्मण पंडत पंड, पूजणयोग अख्वाईआ। जे कहो मैं इकल्ला खा के होवां अनन्द, आपणे अनन्द दा रस तुहाडे वल्ल घलाईआ। तुसीं गाउंदे रहो प्रभू दे छन्द, मैं आपणा पेट भर के तुहानूं दयां वधाईआ। पर इक गल्ल मेरा अन्तर रिहा कम्ब, हलूणे दे दे रिहा हिलाईआ। ओह वेख जेहड़े बल दवारे दे रिषी वसे विच छंभ, छम्ब के सब नूं देण वखाईआ। किसे ने किसे नूं लाउणा नहीं अंग, बिना पुरख अकाल तों अंगीकार ना कोए बणाईआ। तूं पंडता जाह उत्ते गंग, गंगा माता तेरा राह तकाईआ। एह पकवान भगतां दा खुशी करे बन्द बन्द, हरिजन खा के प्रभ दे विच समाईआ। किसे दा हथ्थ ना होवे तंग, तंगदस्ती दए कटाईआ। जिस वेले दीन दुनी दा छिड़या जंग, चारों कुण्ट पए दुहाईआ। उस वेले जन भगतां दी पूरी होवे मंग, घर घर देवे रिज़क सबाईआ। पंजां दिनां विच पंजां तत्तां दा मुकाया पन्ध, गुरमुखां पैंडा रहे ना राईआ। झगड़ा मेटया जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज डेरा ढाहीआ। एह छत्ती भोजन भगवान भगतां देवे वंड, ब्राह्मणां लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे तारा चन्न, चन्द सितार हुक्मे विच भवाईआ।

✪ १६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ७ सोहण सिँघ दे गृह पिण्ड शाह बुक्कर ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सदी चौधवीं कहे मुहम्मद मैनूं दे मुबारक, खुशीआं नाल वज्जे वधाईआ। उम्मत उम्मती करे तुआरफ़, सन्मुख हो के दे समझाईआ। साडा लेखा समझे कोए ना आरफ़, आलम भेव ना कोए चुकाईआ। तूं मेरी करीं सफ़ारश, खुद मालक अग्गे सीस निवाईआ। मैं तेरी पूरी करां इबारत, जो अलिफ़ ये नाल लिखाईआ। दोवें खेल तक्कीए पाक भारत, पाकीज़ा हो के अक्ख उठाईआ। कलमे नाम दी किसे उत्ते रहे कोए ना गारद, हिफ़ाज़त नज़र कोए ना आईआ। अग्गे तक्कीए

केहड़ा बणे वारस, जुम्मेवार कवण अख्वाईआ। पिछला लहिणा सब दा होवे खारज, अग्गे गंढ ना कोए पवाईआ। जेहड़े पैग़म्बर खुदा दे बणे जारज, किंग जगत अख्वाईआ। सब दी पूरी होई आरज, आरज़ू नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। मुहम्मद कहे सदी चौधवीं मेरा खुश होया आका, मालक धुरदरगाहीआ। जिस ने चौदां तबकां उलीक्या ख़ाका, मिट्टी ख़ाक तों बाहर दृढ़ाईआ। ओह खोल्ह अगम्मा ताका, तकदीर सब दी वेख वखाईआ। तेरा अन्त मेरा लहिणा पूरा करे बाका, हिसाब अवर ना कोए जणाईआ। किते तैनूं ना आवे घाटा, सच देणा सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं ते अन्तिम खुल्हा कर के झाटा, मेंढी सीस देणी खुल्हाईआ। मंज़ल पूरी करनी वाटा, वटणा घर घर देणा लगाईआ। सुख मिले ना किसे सुहागण उत्ते खाटा, गूढ़ी नींद ना कोए सवाईआ। मैं परवरदिगार दा अगम्मी वेखणा वज्जदा छापा, जो छुपया नज़र किसे ना आईआ। जिस नूं पैग़म्बरां किहा पापा, पतित पुनीत नूर इलाहीआ। ओह सब दा बदलण आया जापा, जगजीवण दाता आपणा हुक्म सुणाईआ। तेरी पूरी करे आसा, निरासा रूप ना कोए दरसाईआ। मैनूं यकीन हक भरवासा, इतमाद विच दयां दृढ़ाईआ। जिस दा ख़ुशीआं वाला फ़ाका, फ़ाके मारे जगत लोकाईआ। नौ धार दा लेखा मुकणा विच ढाका, ढुकवां आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया

१६५३
२२

भन्न्हणा गाटा, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद हथ्थ रख लै उपर छाती, फ़िकर रहे ना राईआ। आपणी पत्रका लैणी वाची, जो भविक्ख्तां विच सुणाईआ। बिना परवरदिगार तों किसे दी करे कोए ना राखी, उम्मती उम्मत ना कोए वड्याईआ। सो लहिणा देणा वेखे साहिब अबिनाशी, अबिनाशी आपणी कल वरताईआ। किसे दी रहिण नहीं देणी अक्ल बुद्धी फ़ाहिशी, फ़ैसला हक सुणाईआ। सब दे अन्दर वड़ के करे तलाशी, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। उस ने सब नाल खेल करा देणी जगत वाली बदमाशी, बदला सब दे हथ्थ फड़ाईआ। अन्त लहिणा देणा मुरीदां मुशर्दां पूरा करे लाशी, लशकर तन ख़ाक मिलाईआ। शरअ रहिण नहीं देणी पुराणी छाछी, सति जोत जोत रुशनाईआ। जिस उम्मत दी चौदां सदीआं करदा रिहा आबपाशी, उस दी जड़ दए उखड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। मुहम्मद कहे सदी चौधवीं ओह मेरा हक अहिबाब, साहिब वड वड्याईआ। सब नूं देवे ख़िताब, मेहर नज़र उठाईआ। जिस दा लेखा कोए अदद नहीं आदाद, गणती गणित ना कोए गिणाईआ। उस ने दीन मज़्हब रहिण देणी नहीं किसे दी कोए जायदाद, हक सब दे दए मिटाईआ। इक्को कलमा दस्स के वाहिद, लाशरीक करे शनवाईआ।

मालक ख़ालक बण के साहिब, सब दा पर्दा दए चुकाईआ। इक्को हुक्म करके अहिद, अहिदनामे सब दे पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मदा निगह मारीए छेती छेती, चार कुण्ट ध्यान रखाईआ। किथ्थे बदी ते किथ्थे नेकी, धरनी धरत वेख वखाईआ। मुहम्मद किहा ओह वेख मेरे कोल उस दी लेखी, जिस दा लेख ना कोए लिखाईआ। जो अमाम अमामा आए वटा के वेसी, भेख अवल्लड़ा इक जणाईआ। सानूं कर देवे परदेसी, मातलोक विच देस रहिण कोए ना पाईआ। पिछली रेख देवे मेटी, अगली करनी कार कमाईआ। मैं उस साहिब दी बेटी, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। आदि जुगादि उस धार विच लपेटी, जिथ्थों बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। जगत जहान दी खेवट खेटी, जुग जुग खेल खिलाईआ। मैं साहिब तकां नेत नेती, जो नित नवित आपणी कार भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। मुहम्मद कहे सदी चौधवीं ओह वेख हुक्म नूरी, नुराना रिहा जणाईआ। सब दा लेखा मुकणा जिन्हां खाधी गाँ ते सूरी, सूरमा रहिण कोए ना पाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां होई मजबूरी, सिर सके ना कोए उठाईआ। असीं सारे चार जुग दे हज़ूरी, हज़ूर दी हज़ूरी खड़ के आपणा झट लँघाईआ। नाम कलमा वंडणा इक साडी मजदूरी, जुग

१६५४

२२

जुग सेव कमाईआ। हुण आसा होण लग्गी पूरी, पूरन पुरख दए वड्याईआ। उहदी मस्तक लाईए धूढ़ी, टिक्के ख़ाक रमाईआ। एसे खुशी विच सदी चौधवीं पहली पोह नूं ढाई पा न्याज़ दी बणाउणी चूरी, चूरमां जगत वाला समझाईआ। फेर लेखा दस्सां चौदां तबक नेड़े कि दूरी, पन्ध मात रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, साची बख्शे नाम सरूरी, सरूर धुर दा इक जणाईआ।

✪ २२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल ज़िला अमृतसर रात नूं ✪

हस्स के कहे लाड़ी मौत, सदी चौधवीं रही सुणाईआ। नी धुर दीए सवाणीए की कहे तेरा खौंत, ख़समाना की हुक्म वरताईआ। मैं तेरे प्यार विच पावां सीस फुल चौंक, चुकन्नी उम्मत देणी कराईआ। जिथ्थों तक मुहम्मद दी पहुंच, पौंचे फड़ के सब नूं देणा हिलाईआ। की संदेशा देवे धुर दा ग़ौंस, मालक धुरदरगाहीआ। मेरा जीअ करदा मैं नवीं चलावां रौंस, रस्ते पिछले दयां बदलाईआ। मैनूं चुरासी वरन दा बड़ा आया शौंक, शौकीन हो के दयां दृढ़ाईआ। प्रनावां चौदां तबक

तौंक, तबह सब दी आपणे नाल मिलाईआ। किते तेरा अन्त समां जाए ना औंत, औंतरी कहे ना मूल लोकाईआ। मैं इक दी मनाउँणी मनौत, मानव सारे लैणे खाईआ। क्यों आदि दा आदि अन्त दा अन्त इक्को बहुत, बहुती वंड ना कोए वंडाईआ। मैं चौदां सद रख के ओट, बैठी ध्यान लगाईआ। मैनूं सारे रहे टोक, गल्लां गल्लां नाल ठुकराईआ। पर मैं की करां मैनूं संदेशा देवे इक्को जिस दी निर्मल जोत, शब्दी धार शब्द शनवाईआ। तेरी मेरी रहे कोई ना सोच, सोचण दा पन्ध दिता मुकाईआ। मेरी इक्को आसा इक्को लोच, सो लोचा पूरी दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। लाड़ी मौत कहे सदी चौधवीं मेरी वेख जवानी, जोबनवन्ती हो के लवां अंगड़ाईआ। मेरा सरीर सिध्धा वांग सरू दी कानी, सरोवर नहा के पिछली मैल धुआईआ।इको पढ़ां धुर दी बाणी, जो बाण अणयाला तीर चलाईआ। मैं फिरना जंगल जूह पहाड़ जल थल पाणी, असमानां वाहो दाहीआ। बणी धुर दी सुघड़ सवाणी, सोहणा रूप वटाईआ। मेरा जीअ करदा मैं प्रनावां चारे खाणी, दूहला दुहलन आपणा रूप दरसाईआ। जगत जहान कोई रहिण ना देवां काणी, जेहड़ी प्रभ नूं गई भुलाईआ। सदी चौधवीं तेरे अन्त मेरा हिस्सा इक्को जीव प्राणी, प्राणअधारी दए वड्याईआ। जेहड़ा बणे वड्डा दानी, दाता हो के दया कमाईआ। मेहरवान हो के करे मेहरवानी, मेहर नज़र उठाईआ।
१६५५ २२ जगत जहान अन्तिम अन्त इक्को इक भगत दी रखे निशानी, निशाने सारे दए मुकाईआ। जिन्हां इक्को तुक गाणी, गा गा खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। १६५५ २२
लाड़ी मौत कहे सदी चौधवीं मेरे वेख सोहणे नैण, नेत्र अक्ख अक्ख बदलाईआ। मैं तैनूं आई कहिण, कहि के दयां सुणाईआ। मैनूं सारी दुनिया कहे लाड़ी मौत डैण, मेरा दिल करदा मैं डैण बण के दयां वखाईआ। नाता इक्वा रहिण ना देवां भाई भैण, नार कन्त विछोड़ा देवां थांउँ थाँईंआ। शाह सुल्तानां लैण ना देवां चैन, सुखआसण सौण कोए ना पाईआ। सब नूं इक दूजे नालों कर देवां तरफ़ैण, तरफ़दारी दी वंड ना कोए रखाईआ। नुक्ता वेखां उपर ग़ैन, ग़मां दी गठड़ी फोल फुलाईआ। जिधर वेखां ओधर उच्च मुनारे ढहिण, सूरबीर बहादर गाज़ी नज़र कोए ना आईआ। सब नूं प्रना के लवां चैन, चीना रूसा गंढ रखाईआ। सब दा लेखा पूरा करां ऐन दा ऐन, तूं अनुलहक दा नाअरा देणा लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। लाड़ी मौत कहे मेरे मुख वेख दन्दासा, सोहणा रंग रंगाईआ। मैं भराउणा इक्को आपणा कासा, कसम वाले कसम खा के आपणी खुशी बणाईआ। एह मेरा छोटा जेहा खुलासा, खुल्ही गल्ल दिती दृढ़ाईआ। मैं दीन दुनी अन्दर वेखणा तमाशा, चारों कुण्ट भज्जां वाहो दाहीआ। मैनूं

इशारा देवे शंकर उत्ते कैलाशा, कलाधारी हुक्म वरताईआ। मैं चारों कुण्ट हर थाँ करां वासा, विसर कदे ना जाईआ। पर तूं इक गल्ल याद रखीं आपणे अन्त सदी चौधवीं, मैनूं देवीं पाणी दा इक ग्लासा, चौदां वार वार के प्रभ दी भेंट कराईआ। फेर सब दी बदल जाणी भाषा, लफ़ज़ तलफ्फ़ज़ देणे बदलाईआ। मेरी पूरी होवे आशा, ऐश करन वाले सारे लैणे प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दी धार देवे भरवासा, सच दा हुक्म इक वरताईआ।

✪ २४ मग्घर शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल ज़िला अमृतसर रात नूं ✪

१६५६
२२
मुहम्मद कहे मेरे परवरदिगार, बेऐब नूर इलाहीआ। नाता तुटण लग्गा चार यार, साचा संग ना कोए निभाईआ। सदी चौधवीं आउण लग्गी हार, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। उम्मत रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मैं तेरा ख़िदमतगार, ख़ादम इक अख्वाईआ। मेरा आदाब तेरे दरबार, दरगाह साची सिर सर झुकाईआ। मेरी अर्ज़ आरज़ू तमन्ना अन्तिम वार, बेपरवाह दयां सुणाईआ। ओह तक चन्द सितारा करदे गिरयाज़ार, छहिबर आपणी धार लगाईआ। मेरे मौला अल्ला तूं सब दा सांझा यार, खुद खुदा इक अख्वाईआ। नूरी नज़र कर मेहरवान महिबान बख्श इक सहार, मेहर नज़र नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। परवरदिगार कहे मुहम्मद सुण मेरे रसूल, रसम तैनूं दयां जणाईआ। जिस मेरा कलमा कीता कबूल, कायनात दिता दृढ़ाईआ। अगला हुक्म इक माकूल, चौदां तबक ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। दीन दुनी दा जाणां अर्ज़ तूल, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण वेख वखाईआ। जुग जुग बदलणा मेरा रूल, जुग चौकड़ी खेल चली आईआ। मैं सब दा मालक ख़ालक प्रितपालक कन्त कन्तूहल, गुर अवतार पैग़म्बर सारे मेरा नूर इलाहीआ। तूं चौदां सद शरअ दा पंघूड़ा ल्या झूल, शरीअत जगत विच चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। मुहम्मद कहे मेरे महिबूब, आलीजाह तेरी सरनाईआ। तेरा आलीशान उच्च अरूज, शहिनशाह धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं मेरी उम्मत कर महफूज़, हिफ़ाज़त करनी थांउँ थाँईंआ। तूं मेरा मैं तेरा मकरूज, कर्ज़ा चुकाउणा नूर इलाहीआ। तेरा नूर मेरा वजूद, तन माटी ख़ाक सोभा पाईआ। मेरी मंज़ल हक मकसूद, रहिबर तेरा लेखा समझ कोए ना आईआ। तेरे हुक्मे अन्दर शरअ बणाई हदूद, कलमा कलाम वाला दृढ़ाईआ। हुण लेखा हुक्म नाल ना कर नेस्तोनाबूद, जड़ उम्मत वाली उखड़ाईआ। तूं मेहरवान हर जगह
१६५६
२२

मौजूद, चौदां तबक देण गवाहीआ। तेरी सिफ्त करे कुरान मजीद हज़ारा दरूद, तीस बतीस ढोले गाईआ। क्यों सदी चौधवीं करन लग्गा कूच, कूचा गली मक्का काअबा रिहा कुरलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा साहिब सुल्ताना मर्द मर्दाना ऊचो ऊच, बेऐब नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दरगाह साची दर तेरे अलख जगाईआ। मुहम्मद कहे सदी चौधवीं उठ वेख मार झाती, चारों कुण्ट नैण उठाईआ। दीन दुनी आई अंधेरी राती, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। रहमत बख्शिश देवे कोए ना दाती, हकीकत हक नजर कोए ना आईआ। नाता तुट्टया बाहमी इख़लाकी, इकतसादी कार ना कोए कमाईआ। तेरा मेरा खुदा कराउण लग्गा तलाकी, बेइत्फिाकी उम्मत विच रखाईआ। अलिफ़ ये तों परे तके बिन अक्खरां वाली पाती, जिस पत्रका दा मज़मून कातब लिख ना कोए समझाईआ। आपणा पूरा करन लग्गा पेशीनगोईआं वाला भविक्ख्त वाकी, चौदां सद लेखा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद मैं गई मदीना मक्का, निरगुण धार भज्जी वाहो दाहीआ। मैनूं मुल्ला शेख मुसायक पीर दस्तगीर मिल्या कोए ना सका, सखी सरवर नज़र कोए ना आईआ। पूरब पच्छम दरोही खुदा दी मैनूं प्या धक्का, नबी रसूल बैठे मुख छुपाईआ। मेरा वायदा परवरदिगार नाल पक्का, चौदां सद संग तेरा साथ निभाईआ। ओह तक नूर नुराना शाह सुल्ताना नौजवाना मर्द मर्दाना परवरदिगार हट्टा कुट्टा, कटाक्ष आपणा हुक्म लगाईआ। जिस ने नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चौदां लोक चौदां तबक पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डा पाया रट्टा, आकाश पाताल गगन गगनंतर आपणा खेल वरताईआ। दरोही साडी कीमत रही ना टका, जगत मिले ना माण वड्याईआ। धुर दा हुक्म होण लग्गा सच्चा, जो संदेशे दिते धुरदरगाहीआ। अन्तिम भाण्डा तुटणा काया कच्चा, कंचन गढ़ नज़र कोए ना आईआ। बेपरवाह परवरदिगार सांझे यार आपणा खेल रचा, रचना रच के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। सदी चौधवीं कहे चौदां दिन विच आउणी हानी, हाणीआं हाण ना कोए मिलाईआ। लेख लिखे ना कोए कातब कानी, कायनात समझ कोए ना पाईआ। शरअ दी शरअ ने करनी गुलामी, शरीअत शरीअत सीस झुकाईआ। कलमे दी होणी बदनामी, बदी दा डेरा कोए ना ढाहीआ। धुर दा हुक्म खेल आम अवामी, अमल हर थाँ दए कराईआ। नज़ारा तकणा इन्सान इन्सानी, इन्सानीअत दा पैंडा दए मुकाईआ। कुछ हलूणा देणा शाह ईरानी, तुरकी तुरत देणा उठाईआ। चारों कुण्ट होणी बेइंतज़ामी, इंतज़ाम वाला नज़र कोए ना आईआ। हज़रत मुहम्मद, सदी चौधवीं कहे होवे ना कोए परेशानी, परेशानी तों बाहर खेल वेखणा चाँई चाँईआ। उम्मती लेखा कत्लेआमी,

१६५७ २२

कातिल मक्तूल दोवें रूप बणाईआ। अंगड़ाई लए शाह अफ़ग़ानी, नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। पहली पोह नूं सदी चौधवीं कहे मेरे वास्ते ल्याउणी इक दवानी, मुहम्मद पंज पैसे नाल मिलाईआ। मैं लेखा दस्सांगी ज़बान विच खुरासानी, लबलानी बोली सहिज सुभाईआ। भेव खोल्हांगी की लेखा आलमे जाविदानी, दरगाह साची वंड वंडाईआ। सवा अट्ठ वक्त होवेगा शाहानी, शहिनशाह काले लबास रंग रंगाईआ। नाल चौदां ग्रन्थां दी लिख्त होवेगी पुराणी, चौदां तबकां पड़दा लाहीआ। लिखारीआं इक इक अक्ख ते पट्टी बन्न्ह के कीती होवेगी कानी, हरफ़ हरूफ़ नज़र कोए ना आईआ। उत्ते नीली चादर होवेगी ताणी, चन्द सितारा निशान देणा चमकाईआ। पहला लेख लिखणा नाल कलम कानी, शाही काली रंग रंगाईआ। हरिसंगत ने बिरती बणा के रखणी दानी, हथ्थ छाती उत्ते टिकाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं धुर दे खुदा दी दस्सांगी निशानी, की निशाना तीर चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा इक संदेश, खुशीआं नाल जणाईआ। मेरी गोली दे खुल्ल्हे होणगे केस, लिटां गल विच लटकाईआ। सिंघासण उत्ते खण्डा रखया होवेगा दशमेश, चढ़दी दिशा नोक धराईआ। अष्टभुज आपणी बदल के रेख, रेखा सब नूं दए वखाईआ। इक गुरमुख बणया होवेगा शेख़, गानी मणक्यां वाली गल लटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों कूकी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अवतार पैग़म्बर गुरुआं नाल अक्ख ना कदे मिलाईआ। छब्बी पोह नूं मेरे वास्ते ल्याउणी इक तूम्बी, जेहड़ी गोली नहीं वजाई, मैं वजा के दयां सुणाईआ। इक बेड़ी ल्याउणी नबी नूह दी, ख्वाजा आसा रिहा वखाईआ। इक तस्वीर तसव्वर करनी शब्द गुरु दी, गुरदेव देवा रूप बदलाईआ। इक धार दरसाउणी रूह दी, बुतां तों बाहर सोभा पाईआ। फेर खेल दस्सांगी सतिजुग दे शुरू दी, किस बिध धरनी धवल धौल वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मैं छब्बी पोह नूं उडीकां, चौदां सद दी ध्यान लगाईआ। मैं छडणीआं शरअ वालीआं मसीतां, मसल्ले मसल्यां दा पन्ध मुकाईआ। धर्म धार दीआं दस्सणीआं रीतां, अल्ला हू अन्ना हू इक्को रंग रंगाईआ। रहमान दीआं रहमत वालीआं दसणीआं प्रीतां, मुहब्बत विच महिबूब देणे मिलाईआ। मुहम्मद दी आसा दीआं करां तस्दीकां, शहादत देणी भुगताईआ। क्यों मेरे मालक विच हक तौफ़ीकां, धुरदरगाही आपणा हुक्म वरताईआ। जो चुरासी दीआं बदल देवे नीतां, मानव मानस मानुख आपणे रंग रंगाईआ। पर दुहाई आपणा अन्त वेख के मेरीआं निकलदीआं चीकां, चीक चिहाढ़ा चौदां लोक दयां सुणाईआ। क्यों अवतार पैग़म्बरां

चिट्टे उत्ते मारीआं कालीआं लीकां, शब्द नाद कलमे विच कीती शनवाईआ। सो वक्त वेला वेखे बीस बीसा, मूसा ईसा संग मिलाईआ। जिस ने बदल देणीआं वलदीअतां, वलद वालदा इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। मुहम्मद कहे सदी चौधवीं की असीं हो गए ज़ईफ़, आपणा आप बदलाईआ। की असीं कर नहीं सकदे तारीफ़, सिफ्तां वाले ढोले गाईआ। की मेरी भुल्ल गई हदीस, जो हज़रत हो के कीती पढ़ाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद साडा वक्त गया बीत, वायदा परवरदिगार पूर कराईआ। असीं उस दे अग्गे नाचीज़, कल्मयां दी चले ना कोए चतुराईआ। जिस ने सानूं आपणी दिती तमीज़, तरीके नाल दिता जणाईआ। बणा के बरखुरदार अज़ीज़, अज़मतो कसमतो अज़िबवा अतिलहे तालीम दिती पढ़ाईआ। सो सब दी पूरी करे रीझ, लहिणा देणा जुग चौकड़ी रिहा चुकाईआ। मैं फेर सौं जाणा गूढ़ी नींद, अक्ख सके ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी आसा मनसा पूरी करे उम्मीद, जुग चौकड़ी आमद सब दी लेखे लाईआ।

१६५६ २२

पहली पोह शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल रात नूं ज़िला अमृतसर

तानाईज़ीलेवज जमजे ज़हं नफरेज़िगी बन्देशी शेषब शोने नविस्तही नफ़रे जूहा, कम्मसने नव ज़नहू बानीज़ो आवीज़ो ताकीज़ो ज़नहो आमूजे मुजिसते, मुहम्मदे फ़रिश्ते फ़र्शे कोज़ा, नूरे अज़ा ज़गमो ज़ैदे, जोशे ज़वसे, मस्ते असते शाजंद अखता हूं लिबनाने मज़ुल अज़ीमे कशो परवरदिगारे बेयश ताज़ीफे ताहश ताहशे शाहकीने शनीरे मुहम्मदे पीरे नज़वे बेनज़ीरे नाजिसता लाइसता बाहिस्ता मनज़ू अज़हू कसतू शवीने शवा, महीज़े अब्बा, वहीदे खुदा मोज़ीबे रज़ा, कन्नोरे कवीने, कज़ीले जसते, महव मुहम्मदे, कलव कुराने, कज़ू मोज़ीदे रज़ू, तोहफ़ा तरीह, खुदाए नज़ी, रहमतो अज़ा, बख्शशे ज़मा, सीते सबू, हज़रते कज़ू, ज़हीवे शऊ, शहिनशाहे मामूव जिस्मे, तामू इस्मे, हाज़ूर पैग़म्बरे, बेकसूर खदूनो खदीले, शरीअत कबीले कमसम नाकोज़ू, रूहे रोज़ाना, शेरे निवाना, आलीशाने वज़ी, चौदां तबके तर्ज़ीह, तवनज़ी, अवनज़ी, चशमो नादीद, रहमते अज़ीद, उस किस मीसाना बेपरवाह नूर इलाहीआ। सदी चौधवीं कहे, वे मुहम्मदा चढ़ गया पोह, सम्मत शहिनशाही सत्त नाल मिलाईआ। उठ वेख मालक इक कि दो, दो दा एका ध्यान लगाईआ। केहड़ी दिशा होई लोअ, बिन नैण लोयण अक्ख उठाईआ। सुण नाअरा हक दा सो, सो पुरख निरँजण रिहा दृढ़ाईआ। वे कमलया जिस मैथों तैथों सब कुछ लैणा

खोह, रो के हंझ ना कोए वहाईआ। मैनूं इक दर्द मेरा जगत वाला मोह, तोड़न नूं दिल करे ना राईआ। जिस वेले मैं होका सुणदी हो, जो हौली हौली रिहा सुणाईआ। तेरा भुल्ल जांदा चार यारी दा गरोह, संगी संग ना कोए वखाईआ। मैं चाहुंदी ओह नीले अम्बर नूं किशन सिँघ दलीप सिँघ फड़न दो, नरायण सिँघ कुंदन सिँघ दो दूजे नाल मिलाईआ। सब दे हथ्थ छाती उत्ते जाण छोह, जन भगतो छोहर बांके बण के दयो वखाईआ। तुहानूं ढोआ दिता धुर दा ढोअ, लै के आया धुर दा माहीआ। मैं चौदां सौ साल दी अज्ज होण लग्गी निरमोह, नाता उम्मत नालों तुड़ाईआ। मैं कहिंदी नी गोलीए जगत दीए विचोलीए इक वारी ज़ोर दी उच्ची मेरे साहमणे रो, चीक चिहाढ़ा दे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे आ ओए मुहम्मद दिआ मलंगा, तेरी तसबी वेख वखाईआ। ओ तेरीआं भन्न देवां टग्गां, जिन्हां नाल भज्जें वाहो दाहीआ। नीं तूं पाईंआ किथ्थों वंगां, आपणा वेस वटाईआ। मैं सब दे कोलों अन्तिम झोली डाह के मंगां, वास्ता धुर दा नाम रखाईआ। मैं वेखे चढ़ के कोठे कंधां, उच्चे टिल्लयां ध्यान रखाईआ। मैं आपणा पैंडा मुकाया लम्मां, भज्जी वाहो दाहीआ। मेरा सिर हो गया नन्गा, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। मैनूं डर लग्गदा जिस वेले मैं आपणे महिबूब दा वेंहदी सत्त रंग दा डण्डा, जो डण्डावत सब दी रिहा बदलाईआ। मैनूं इक दुःख मैनूं गोली नहीं दस्सया ओह पारब्रह्म कि तत्तां वाला बन्दा, जो बिना बन्दगीउँ आपणा खेल खिलाईआ। बौहड़ी मैनूं मार दिता साड़ दिता आप हौली हौली खंघदा रिहा खंघा, खंघ खंघ के मेरा अन्दर दिता हिलाईआ। हुण मैं केहड़े देस वंञा, वञ्झ मुहाणा नज़र कोए ना आईआ। जन भगतो मैनूं आपणे सज्जे हथ्थ दा वखा दयो पंजा, पंजां दा मालक इक्को नज़री आईआ। मेरा रो प्या तारा चन्दा, बिन नैणां नीर वहाईआ। मैनूं डर लग्गदा आह वेखो चढ़दी दिशा गोबिन्द दा खण्डा, नोक तिक्खी रिहा वखाईआ। एह तेग़ बहादर मंग गया सी मंगा, जिस वेले ढाके चरण टिकाईआ। अज्ज उस दा लेखा पूरा कीता संदा, संधी वाला दिन पहली पोह दिता लिखाईआ। बिना गोबिन्द दे सिख तों मिले किसे ना सुख अनन्दा, अनन्द विच रहिण कोए ना पाईआ। ओ जन भगतो तुहाडा आत्मा कदे होण नहीं देणा रंडा, रंडीओ तुहानूं सुहागण देणा बणाईआ। सदा रखिओ आपणे आप नूं ठंडा, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। तुहाडे पिच्छे आपणे सीस ते रखां खण्डा, धार तिक्खी नाल चलाईआ। तुहाडे प्रेम नाल सदी चौधवीं दे हथ्थ रंगां, खून दी धारा उम्मत विच डुबाईआ। पर याद रखयो छब्बी पोह ते होर खेल चंगा, चंचल मति सब दी देणी गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे सुट्ट दयो तारा चन्द, धरनी दयो लिटाईआ।

ओ लिखारीओ तुसां क्यों कीती इक इक अक्ख बन्द, भेत दयो खुल्हाईआ। शरारतीओ तुसीं कलम नाल लिख के ते शरअ दा वेंहदे ओह जंग, जंगजू बहादर इक्को मन्न के सारी सृष्टी दिती तजाईआ। जिस अन्न नहीं खाधा दस डंग, डावांडोल करे लोकाईआ। धरती नहीं, ओह फिरना विच ब्रह्मण्ड, आउंदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। गुरमुखो तुहानूं इयों रखणा जिस तरह प्रभू दी चढ़े जंञ, लाड़े नाल मिल के इक्को घर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। नी गोलीए प्रभ दा किस नाल प्यार, सच दे समझाईआ। सदी चौधवीं उहदा रूप कि उहदी नार, पड़दा देणा उठाईआ। की ओह चंगा लग्गे पहन के सलवार, आपणा वेस वटाईआ। की कमलीए ओह फबे हथ्थ फड़ कटार, खण्डा नाम वाला खड़काईआ। सच दस्स ओह चुरासी विच्चों कीहदा यार, यराना किस नाल तोड़ निभाईआ। तुसीं वी आपणा करो विचार, तसबीआं जिस दे वास्ते रहे भवाईआ। ओह सूरबीर कि ग़द्दार, कि गदागर अख्वाईआ। जन भगतो सारे वेखो नैण उग्घाड़, इक पुरख जिस नूं गोबिन्द ने किहा अकाल, अकाल दा दयाल नज़री आईआ। जिस दे मुख विच गुरमुख सारे लाल, ओह लालां दी धारा नाल आपणा आप लए चिराईआ। ओ तुसीं वेख्या एस दा जमाल, जो जुमें वाल्यां दी करे सफ़ाईआ। क्यों इस सुणया मुरीदां हाल, जो यारड़ा सथ्थर हंढाईआ। उहदी
१६६१ झल्ले कोए ना झाल, झल्लयां नूं झलक दए वखाईआ। जन भगतो तुहानूं भगती विच्चों वी कीता बहाल, बिना भगतीउँ १६६१
२२ पार कराईआ। जिथ्थे होवोगे उथे करांगा संभाल, एह मेरी बेपरवाहीआ। तुहाडे पिच्छे होवांगा बेहाल, खुल्हड़े केस गल २२
लटकाईआ। तुहाडा हल्ल करांगा सवाल, जवाब इक्को वार सब दी झोली पाईआ। सतिगुर शब्द अग्गे किसे दी नहीं कोई मजाल, मज़्हबां दीआं मजलसां वाले सारे सीस निवाईआ। सदी चौधवीं कहे गोलीए नी तूं क्यों खोल्ह ल्या झाटा, लिटां गल विच लटकाईआ। ओ तैनूं नहीं लभ्भा गोबिन्द वाला बाटा, मुल्लां मुलाणयां आपणा मन बदलाईआ। एह पहली पोह दा लेखा गुर तेग़ बहादर लिख्या सी आपणे उपर माथा, धूढ़ी ख़ाक वाली रमाईआ। खुदा ने किहा शरअ दा लेखा पहलों चुक्कणा विच ढाका, चढ़दे वज्जे वधाईआ। मेरा महिबूब ज़रूर मन्नेगा मेरा आखा, आख़र आपणी कार भुगताईआ। गोबिन्द ने इहो भविक्ख्त पुड़े पै के माछूवाड़े लिख्या सी साका, साकी धुर दा जाम देणा प्याईआ। तेरा खेल होणा हिन्द ते पाका, पाक आपणा आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। सदी चौधवीं कहे गोलीए की हुण मजबूरी, सच दे सुणाईआ। की हुक्म सुणया ज़रूरी, ज़रूरत दस्स खुद खुदाईआ। जिस दी करदी रही मज़दूरी, चौदां सद सेव कमाईआ। मलदे रहे मस्तक ख़ाक धूढ़ी, टिक्के जगत रमाईआ।

तूं उस दी विच हज़ूरी, की हज़रत रिहा सुणाईआ। मैं पन्ध मार के आई दूरी, भज्जी वाहो दाहीआ। नी कमलीए मैनूं भुक्ख लग्गी जे कोई तेरे घर ते मैनूं खवा दे चूरी, मुहम्मद चूरमे खवाउण वाला नज़र कोए ना आईआ। जन भगतो एह ढाई पा मुहम्मद दे कोल सी जिस वेले मक्के विच्चों कढुया ते बग़ल विच दिती सी फूड़ी, हिजर कर के चलया वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा दे उठाईआ। चूरी कहे तूं प्रभू मैनूं क्यों खादा, भेव दे जणाईआ। मैं सच दस्सां मैं ओह सतिगुरु नहीं मन्नदी जेहड़ा भुक्ख्यां नूं नहीं रजांदा, भुक्ख्यां भुक्ख मिटाईआ। ओह सतिगुरु नहीं जेहड़ा प्यार ना करे प्यार देवे ना नालों वद्ध माँ दा, गोदी गोद ना सदा टिकाईआ। ओह सतिगुरु कदे नहीं मन्नणा जेहड़ा वेरवा रखे सूर गाँ दा, सूरमां जगत ना कदे अख्वाईआ। ओह सतिगुरु जेहड़ा मालक हर घर ते हर थाँ दा, ब्रह्मण्डां खण्डां आपणी कार भुगताईआ। ओह मालक होवे इक्को नाँ दा, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। ओह सहारा बण जाए ग़रीब निमाणयां दी बांह दा, फड़ बाहों पार कराईआ। ओह लेखा ना जाणे बग बपड़े काँ दा, जिधर वेखे मेहर नज़र नाल पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा

१६६२ हुक्म इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे गोलीए मैनूं इयों जापदा तूं बड़ी भुक्खी, भुक्ख नाल रही कुरलाईआ। तूं खून कढ १६६२

२२ के विच्चों आपणे मुखी, धरनी उत्ते खून दिता डुल्हाईआ। हलूणा दे दिता जगत वाली कुख्खी, सुख विच ना कोए समाईआ। २२

बिना भगतां तों झगड़ा मिटणा नहीं भाग लग्गणा नहीं दुलारे सुतीं, अपराधीआं पार ना कोए कराईआ। तूं जेहड़ा भार फिरदी चुक्की, चार यारी रही तरसाईआ। वेखीं किते आपणी ला ना लवीं रुची, खाण विच ना मन बदलाईआ। जिस वेले प्रभ दी मौले रुती, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। जन भगतां दी आत्मा रहिण ना देवीं सुत्ती, सुत्तयां लै उठाईआ। उम्मत दी धार वेखणी खुल्ही गुत्ती, मेंढी सुहाग नज़र कोए ना आईआ। भावें मैनूं मुशटंडी कहिंदे ते जोत अकालण बड़ी लुच्ची, जुग जुग दीन दुनी दा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे उत्ते नहीं कोई बुरका, बुरके सब दे देणे लुहाईआ। हुक्म मन्नणा इक्को शब्द सतिगुरु का, दूजा मन्नण कदे ना पाईआ। जन भगतो वेखो मैनूं डरदी नूं आ गया मुड़का, आपणीआं धारां रिहा वगाईआ। नी गोलीए तैनूं ओह वखाया गुट्टका, जिस दे अक्खर गणित ना कोए गिणाईआ। ओए मुलाणयां हुण वेला आउणा लुट्ट दा, लुटेरा बणे धुरदरगाहीआ। उम्मत दा बूटा जाणा सुक्कदा, सुक्कयां हरे ना कोए कराईआ। सब दा पैंडा वेखो मुकदा, अग्गे लेख ना कोए लिखाईआ। जिंना चिर जाप ना होया इक तुक दा, ओनां चिर मिले ना धुर दा माहीआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो नौ साल पिच्छों

आह तुहाडा दवार बण जाणा पुछ गिछ दा, दूर दुराडे सारे नैण उठाईआ। किसे नूं पता नहीं लग्गणा सूरज किथ्थों चढ़दा ते किथ्थे छुपदा, उगण आथण इक्को देणा कराईआ। कोई वणजारा रहिण नहीं देणा टुक्क दा, भुक्ख्यां भुक्ख देणी मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी खेल आप खिलाईआ। सदी चौधवीं कहे नी गोलीए मेरे नाल बहि के लाह मुकाणा, हाए उफ तेरी दुहाईआ। वे नानका तूं क्यों कहि के ग्यों हिन्दू अन्ना ते तुरकू काणा, ओह वेख काणे लिखारी सारे देण गवाहीआ। तेरे साहिब ने आपणा वक्त पछाणा, अभुल भुल्ल कदे ना जाईआ। जिस ने धुर दा हुक्म चलाणा, पिछला लेखा दए मुकाईआ। सब ने मिल के इक्को राग गाणा, गा गा झट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे नी गोलीए उठ पा लईए वैण, चारे नैण गंवाईआ। नाता छड दईए भाई भैण, साक सैण ना कोए अख्वाईआ। नी जेहड़ा कमलापति वहाउण आ गया वहिण, बुढे शेख़ सारे दए रुढ़ाईआ। फेर आप हो जाणा तरफ़ैण, तरफ़दारी विच कदे ना आईआ। नी ओन नुक्ता मेट देणा उतों ग़ैन, ग़मां दा डेरा ढाहीआ। सच दस्स उस ने किथे जा के लैणा चैन, कवण सिंघासण सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। गोली कहे सुण चौधवीं सदी मेरी राणी, राजा तेरा नूर नज़री आईआ। तूं उसे दी धार पुराणी, जिस नूं पुनह पुनह सारे सीस निवाईआ। ओह इहनूं याद करदे मढ़ीआं विच मसाणी, मकबरे मारन धाईआ। एहदी सिफ्त करे चारे बाणी, चारे खाणी ढोले गाईआ। मैं ते निक्की जेही नढ्ढी बाल अंञाणी, बुद्धहीण अख्वाईआ। मैनूं जगत समझे जीव पुराणी, मेरी आत्मा परमात्मा विच समाईआ। इक्को हुक्म धुर फ़रमानी, जिस नूं मन्न के झट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नी गोलीए कर लै मूँह मिट्ठा, चूरी चूरमे वाली खाईआ। ओह तैनूं पता नहीं तूं दस्सया नहीं मेरे साहिब ने पलँघ करके पुट्ठा, पुट्ठी उम्मत दिती कराईआ। मेहरवान हो के तुट्ठा, भगत निमाणे गले लगाईआ। जिन्नां दे हथ्थ पाया गुट्टा, दो जहानां ना कोए छुडाईआ। तारा चन्द कहे मैं नीले अम्बरों तुटा, तुट के भगत दवारे आपणा आसण लाईआ। हुण सब दा ख़ाली होणा ठूठा, ओ गोलीए अन्दर दीए पोलीए, दो ठूठीआं मेरे हथ्थ दे फड़ाईआ। इन्नां दोहां नूं गोबिन्द ने दिता सी झूटा, दो तों तीजा दिता वखाईआ। ओह भाण्डा इथे फुट्टा, फुटकल दा डेरा ढाहीआ। गुरमुख रहे कोए ना रुट्ठा, रुठयां लवां मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। मिट्टी कहे मैं पेड़े पई घुमयार, घुंमर घेरी विच घुमाईआ।

१६६३
२२

मैनूं माण नहीं दिता किसे पैग़म्बर गुर अवतार, कृष्न वरगे भन्न के आपणी ख़ुशी गए बणाईआ। सख़ीआँ नाल कर बहार, नच्च टप्प के आपणा झट लँघाईआ। मैं कोझी कमली सब नाल करां प्यार, प्यास्सयां दयां रजाईआ। नानक ने किहा मेरा रूप कुम्भ ते कुम्भ दा दिता अधार, शहादत जगत वाली रखाईआ। मैं वी चाहुंदी सां मेरा वी मिले परवरदिगार, मेरा मालक धुरदरगाहीआ। जो जुग जुग कोझयां कमल्यां नूं लावे छाती नाल, अग्नी तत बुझाईआ। मेरी टकयां वाली कीमत मैं करनी विच कंगाल, बहु मुल्ल ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। मिट्टी कहे मैं मिट्टी दा भाण्डा, प्रभ सिंघासण सीस निवाईआ। मेरा अन्तर उसे नूं गांदा, जो सब दा पिता माईआ। मैं जुग चौकड़ी राह तकांदा, बिन नैणां नैण उठाईआ। ओ भगतो आप प्यासा रिहा ते तुहानूं रिहा रजांदा, अट्ठे पहर तुहाडी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वडा वड वड्याईआ। ओह मिट्टी कहे गोली सिर ते लैणा चुक्क, दोवें हत्थ नाल टिकाईआ। साडा पैंडा जावे मुक, जे साहिब देवे माण वड्याईआ। साडा भाग ना जावे निखुट्ट, भगत दवार फिरीए चाँईं चाँईंआ। जगत जहान नूं हत्थ नहीं आउणा घुट, प्यासी मरे लोकाईआ। जन भगतो जित्थे पढ़ोगे सोहँ तुक, उथे जल दे वहिण दयां वहाईआ। हुण होणा अंधेरा घुप, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संदेशा रिहा सुणाईआ। ठीकर कहे मैं एथे वज्जा, सोहणा रंग रंगाईआ। ओह मैं इथे सजा, जित्थे मिले बेपरवाहीआ। मैं भगतां दे प्यार विच बज्झा, आपणी गंढ रखाईआ। पर भगतो तुहानूं प्रभ ने माण दिता केहड़ी वजह, पड़दा दयो खुल्हाईआ। मैं बड़ा फिरया दो जहानां जगह, सतिजुग त्रेता द्वापर आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं जगत जहान दीआं बुझाउंदा रिहा अग्गां, सांतक सति कराईआ। पर दुहाई मेरी मेरा यराना इक नाल नहीं लग्गा, यारी तोड़ ना कोए निभाईआ। मैनूं लद्दे रहे उत्ते गधा, घरो घर विकाईआ। पहलों मेरे विच पीण पाणी फेर बाहर सुट्ट के देण दग़ा, घर विच ना कोए टिकाईआ। मैं वी लभ्भदा सां कदे मैनूं वी मिलेगा कोई अड्डा, जित्थे अड्डीआं मारन विच सख़ी रूप ना कोए बदलाईआ। जिस दा इक्को निशाना होवेगा गड्डा, गॉड इक्को होवे बेपरवाहीआ। ओह जो कुछ करे ते करे बेवजह, जिस दी वजह समझ कदे ना आईआ। उन लेखा पूरा कर देणा जिन मुहम्मद दीआं कटाईआं लबां, लहिणा सब दा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। ओ मैनूं कहिंदे इक बबरी, ओ बबरो दयां जणाईआ। ओ मैं वड़ गया विच कबरीं, कब्रिस्तानां विच रख के मुरदयां कोल मेरा आसण लाईआ। मैं चौदां सौ साल कीती बड़ी सबरी, हुण

बेसबरी विच भज्जां वाहो दाहीआ। मैं भगत दवारे वड़या जबरी, मैनूं प्यार नाल चुक्क ना कोए लिआईआ। मेरी अक्ल शकल ना लम्मी ना मधरी, वडा छोटा रूप ना कोए बणाईआ। पर याद रखो मैं अज्ज दी गल्ल सुणावां सज्जरी, सज्जणो दयां सुणाईआ। गोबिन्द ने दोहां हथ्थां नूं दोहां हथ्थां विच कीता सी बदली, फेर घुट्ट के ल्या दबाईआ। नाले इशारा कीता जिस वेले आया अदली, इन्साफ़ हक कमाईआ। पिछली मुका देवेगा मज़ली, अगली मंज़ल दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप दरसाईआ। सदी चौधवीं कहे ओ प्रभू ओ मालका, ना मार ओए खंघूरा, क्यों खंघ के रिहा डराईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु तेरा मज़दूरा, मज़दूरी करके झट लँघाईआ। ओह मैनूं करके गए मशहूरा, मशवरे तेरे नाल रखाईआ। उन्हां दा लेखा तूं रहिण ना दईं अधूरा, भविक्खत सब दे पूर कराईआ। मैं चाहुंदी नहीं सां अज्जे कूणा, कूक कूक दयां दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी आपणी खेल खिलाईआ। प्रभू सुणया तेरा शहिनशाही सम्मत दा सत्तवां बरस, बरसी मनाउण वाले सारे रहे कुरलाईआ। कहिण साडे उत्ते कर कुझ तरस, दुखी हो के दईए दुहाईआ। जे तूं आ गया उत्ते फ़र्श, अर्शां दा मालक नूर इलाहीआ। तेरे कोल वडा ख़ज़ाना ते दो जहानां दा परस, बेअन्त बेपरवाहीआ। साडी सब दी मेट दे हरस,
१६६५ ... १६६५
२२ ... २२
हवस अगली रहे ना राईआ। पुरख अकाल कहे ओए अवतार पैग़म्बरो गुरुओ मैं कोई तुहाडा देणा नहीं कर्ज, तुसीं ख़ाली हथ्थ ल्ए अन्त ख़ाली हथ्थ सब दे इस दे विच रखाईआ। एह रीती नहीं मन्दिर मसीती शिवदुआले चर्च, चराग़ाहां रोवण मारन धाहीआ। मैनूं इयों दिसदा सदी चौधवीं तेरा मूल रह जाए इक दवानी जिस नाल पूरा होवे खर्च, रुपईआ हथ्थ किसे ना आईआ। क्यों रुपईए वाले प्रभू दे प्यार विच हो गए दरज, चार जुग नाम ना कोए मिटाईआ। पंजां पैस्सयां नाल लैण देण दा चलदा रहे खर्च, ख़ज़ाने भरपूर ना कोए वखाईआ। मेरा कुछ नहीं होणा हर्ज, हर्जाने विच दिसे लोकाईआ। सदी चौधवीं इक वार इक हुक्म सुणा दे नाल तर्ज़, तर्ज़ धुर दी राग अलाईआ। जिस नाल मुरीदां दी रहे कोए ना मरज़, दुखियां दुःख गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक वड वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मैं गीत सुहागी गावां, तेरा नाम वड वड्याईआ। प्रभू दे प्यार विच जन भगतो उठा लओ बाहवां, दोवें हथ्थ हथ्थ वखाईआ। भगत भगवान कंडा तराज़ू हो जावे सावां, ऊणता रहिण कोए ना पाईआ। सतिगुरु तेरे प्यार विच भुल्ल गईआं मावां, मात पित तूं ही नज़री आईआ। सचखण्ड नाल लै के जाईं चावां, दर तेरे मंग मंगाईआ। क्यों ओ तेरे नाल लै लईआं लावां, चौथे जुग दा डेरा ढाहीआ। असीं तकणा नहीं चुरासी वाले राहवां, खाणीआं वंड ना कोए वंडाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे कोल अन्त दवानी, जगत दिवान्यां दयां जणाईआ। परवरदिगार बिना किसे दा अन्त नहीं कोई बानी, धुर दा संग ना कोए रखाईआ। जेहड़े अवतार पैग़म्बर गुरु हो गए फ़ानी, तन वजूद ना सके रखाईआ। ओह मिल गए विच जोत जोत असमानी, इस्म विच जगत तजाईआ। तुसीं उहदे दवारे लोकमात खाण आए महिमानी, महिमानो नाम भण्डारा तुहानूं दए वरताईआ। अग्गे प्रभू दा नाम सुणदे सो कन्नां नाल ज़बानी, हुण अक्खां नाल वेख के अक्खीआं लओ रजाईआ। जिस दी आदि अन्त जुगा जुगन्त इक्को जेही जवानी, जोबनवन्ता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा लओ उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद उठ करीए सलाह, मशवरा इक बणाईआ। मुहम्मद कहे केहड़ा बणे गवाह, शहादत कवण भुगताईआ। सदी चौधवीं कहे चार यारी लै बुला, बुल्ले नूं नाल मिलाईआ। मुहम्मद कहे मेरे मालक दी इक अदा, आदत सब दी दए बदलाईआ। जदों चाहे मेल करे ते जदों चाहे करे जुदा, जुज़ आपणे वंड वंडाईआ। सदी चौधवीं रल मिल के उस नूं सजदे विच दईए सीस झुका, आपणा आप मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद आ जा झब्ब, छेती पन्ध मुकाईआ। आपणी उम्मत दी वेख यद्द, यदी अक्ख उठाईआ। मेरी अन्तिम होई हद्द, हदूद रहिण कोए ना पाईआ। धुर दा नूर केहड़े रूप विच रिहा फब्ब, की आपणा वेस वटाईआ। सच दस्स एस लबास विच तैनूं केहड़ा लऊगा लभ्भ, कमली कहि के सारे तालीआं लाईआ। क्यों एहदा वेस सब तों वक्खरा ते सब तों अड्ड, अड्डरी आपणी कार भुगताईआ। जिस ने चौदां तबकां तों बाहर हो के ज़ाहर इक्को निशाना देणा गड्ड, दूजा रहिण कोए ना पाईआ। ओह वेख तारा चन्द निशान सानूं रहे छड, अम्बरां तों उत्ते पल्लू रहे छुडाईआ। हुण किधर चल्लीए भज्ज, राह रस्ता दे वखाईआ। मुहम्मद कहे सदी चौधवीं मेरे मालक दे हुक्म नाल लग्गणी अग्ग, आगू इक्को नज़री आईआ। जिस शरअ दी धार करनी बध, बदला सब दा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। परस कहे नी सदी चौधवीं किथ्थे तेरा ख़ज़ाना, ख़सम नूं खाणीए दे जणाईआ। मुहम्मद नाल चौदां सौ साल कीता (बिसरामा), आपणा भेव ना दिता खुल्हाईआ। लारे लप्पे दा दे के बहाना, आपणा वक्त ल्या लँघाईआ। हुण आवाज़ां मारें आ मेरे परवरदिगार नौजवाना, बिना तेरे मैनूं अंग ना कोए लगाईआ। तूं शहिनशाह शाह सुल्ताना, दो जहानां इक अख्वाईआ। तेरे नाम दा इक दमामा, वज्जे थांउँ थाँईंआ। मैं सुणनी ओह कलामा, जिस नूं कलमे वाले गा सकण

१६६६
२२

ना राईआ। तूं मालक गुण निधाना, बेअन्त इक अख्वाईआ। मैं चाहुंदी शरअ दा लेखा मुके शैताना, छुरी करद बग़ल ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे अन्दर रख दयो दवानी, पंज पैसे नाल टिकाईआ। प्रभू ने घर बैठयां भगतां उत्ते कर देणी मेहरवानी, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जन भगतो तुहाडे प्यार विच वैराग विच खुल्ह्ड़े केस ते केसां दी निशानी, निशाना अगला दए बदलाईआ। तुहाडी होण नहीं देंदा बदनामी, बदला चुकणा थांउँ थाँईंआ। किसे दी करन नहीं देणी ग़ुलामी, शरअ ज़ंजीर देणे कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव इक खुल्ह्लाईआ। जन भगतो तुहाडा मालक शाह नवाब, घुटने बन्न्ह के आसण लाईआ। इस दी सब तों वक्खरी मज़ाज, आकड़ वाला रूप बदलाईआ। जिस दी नानक वजाई रबाब, तू ही तू ही राग अलाहीआ। इहो वेस कीता सी विच बग़दाद, हथ्थ कन्न उत्ते रखाईआ। इधरों सवाल ते ओधरों जवाब बिना मुख तों शब्द दिता सुणाईआ। इहो उन्हां मुल्लां नूं आया सी स्वाद, जिस नूं सुण के सीस झुकाईआ। बिना अक्खरां तों बग़ल विच मारी सी किताब, जिस दे हरफ़ पढ़न कोए ना आईआ।
१६६७ नाले हस्स के किहा नानक जिस वेले मुहम्मद दा मालक करन आया जहाद, जहादीओ तुहाडा लेखा दए मुकाईआ। उस १६६७
२२ ने शरअ तों सब नूं कर देणा आज़ाद, असल दा असल दए वखाईआ। किसे मज़्ह्ब दी किसे करनी नहीं इमदाद, लामज़्ह्ब २२
होवे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा महिबूब बन्न्ह के दोवें गोडे, आपणी खेल खिलाईआ। जिस वेले मुहम्मद ने रखे सी रोज़े, इसे तरह सवा पहर बहि के आपणा झट लँघाईआ। जिस वेले भीलणी नूं राम ने पाया सी गोदे, गोडे बन्न्ह के सिर छाती नाल लगाईआ। एसे रूप विच कृष्न ने तके सी चौदां लोके, चौदां लोक खोज खुजाईआ। उस साहिब दा हुक्म केहड़ा रोके, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जिस ने परखणे खरे खोटे, खोटे खरे वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे साडे मूधे हो जाणे वुज़ू वाले लोटे, सिध्धे फेर ना कोए कराईआ। मैं वक्त लँघाया गिण गिण हिसाब उत्ते पोटे, दिवस रैण आपणी गणित गिणाईआ। मैं वेंहदी रही चढ़ के चौदां तबक उत्ते कोठे, मुनारयां उत्ते अक्ख उठाईआ। कवण वेला मेरा महिबूब सब नूं इक्को लावे चोटे, नगारा नाम इक लगाईआ। इक्को प्रकाश करे जोते, अंध अंधेर मिटाईआ। जिस दी सोच कोई ना सोचे, बिना सोच समझ तों आपणा खेल खिलाईआ। मेरा अन्तर ओसे नूं लोचे, जिस दी जगत लोचणां वाला तस्वीर तसव्वर कर ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ।

सदी चौधवीं कहे मेरी गोली दीआं खुल्ल्ह गईआं लिटां, मेंढी सीस ना कोए गुंदाईआ। खुदा ने झगड़ा मुकाउणा पथ्थर इट्टां, पाहन पूजन कोए ना पाईआ। कलयुग अन्तिम निकलणा इक्को सिट्टा, सिट्टे बाज़ी मिटे लोकाईआ। सब दा मन होवे टिका, टिकटिकी इक्को इष्ट प्रगटाईआ। नाम रस मिले मिट्ठा, अनरस दए चखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं धुर फ़रमान दा मेहरवान नौजवान दा छब्बी पोह नूं लै के आवांगी चिट्ठा, जिस नूं चार जुग दे गुरु अवतार चिट्ठी रसैण ल्या के सक्या ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी पूरी करे इच्छा, निरइच्छत आपणा हुक्म वरताईआ।

प्रशाद कहे चौदां ग्रन्थां दा वेखो लेख, मैं सति सच सुणाईआ। जन भगतो तुसीं मैनूं पाउंदे गए तुहाडी बदलदी गई रेख, अक्खर अक्खर देण गवाहीआ। तुसीं पेट भरदे रहे अग्गे मिट जाणे मुल्ला शेख़, मुसायक रहिण कोए ना पाईआ। तुहाडा नाँ रहिणा हमेश, हमसाजण हो के दयां सुणाईआ। जिस नूं झुक्कदे विष्न ब्रह्मा शिव गणेश, सुरप्त सीस निवाईआ। ओह तुहानूं देवे आपणा अगम्म संदेश, शब्दी शब्द राग दृढ़ाईआ। तुहाडी सिफ्त करन वाले चौदां तबक तों बाहर तुहाडे होए पेश, भगत दवारे सोभा पाईआ। दोहां दा बणया रहे हेत, हितकारी प्रभू दए बणाईआ। शब्द दी धार बदल जाणी पहली चेत, चौदां तबक वेखण थाउँ थाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भेव खुल्ल्हाए की सहिंसर मुख गाए शेष, दो जेहवा की सिफ्त सालाहीआ।

✪ ७ पोह शहिनशाही सम्मत ७ प्रीतम सिँघ रत्न सिँघ दे नवित हरि भगत दवार जेठूवाल रात नूं ✪

तिन्न पोह कहे मेरी बन्दना, बन्दगी विच सीस निवाईआ। मैं धुर दा लेखा मंगणा, मांगत हो के झोली डाहीआ। जिस दे हुक्म विच जुग चौकड़ी वंञणा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। सो स्वामी लावे आपणे अंगणा, अंगीकार इक अख्वाईआ। धुर दा देवे सुख अनन्दना, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। तिन्न पोह कहे मैं दस्सां कथा पुराणी, पुनह पुनह सीस निवाईआ। मैं बोलां बिना ज़बानी, बिन बत्ती दन्द वड्याईआ। एह लेखा सीता राम राणी, मेरी राम राम दुहाईआ। जिस

नूं समझे ना कोए शास्त्र बाणी, ग्रन्थ कहिण कोए ना पाईआ। जिस दा हुक्म दो जहानी, वरते वरतावे धुरदरगाहीआ। राम फिरदा बीआबानी, अयुध्या छडी वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। तिन्न पोह कहे मेरा वक्त चंगा, चंगी तरह जणाईआ। जिस वेले सीता राम दा रथ लँघ, अयुध्या वासी परते थांउँ थाँईंआ। राम ने हस्स के किहा मेरा पैंडा लम्बा, सच प्रेमीओ घर जाणा चाँईं चाँईंआ। हरख़ सोग करयो कोए ना ग़मां, चिन्ता विच मन ना कोए तपाईआ। मेरा छेती बीत जाणा समां, साल बसाला पन्ध मुकाईआ। जिस वेले होण लग्गा रवां, नवां विच्चों दो बैठे सीस झुकाईआ। की तेरा लेखा होवे जुग चवाँ, कलयुग अन्तिम भेव चुकाईआ। किस बिध लहिणा देणा रखें जमां, हिसाब किताब किस दे हथ्थ फड़ाईआ। केहड़ी हद्द केहड़ा बन्नां, अन्त की बेपरवाहीआ। राम हस्स के किहा प्रेमीओ जिस वेले लेखा मुकाउणा तारा चन्ना, सदी चौधवीं पन्ध मुकाईआ। जगत जहान होणा अन्ना, नेत्र लोचण नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। गोबिन्द दा लेखा पूरा होणा इक कन्ना, चौदां सौ तीह पन्ना दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। दोहां किहा राम मेरे रघुबंस, रघुपति दे जणाईआ। साल बीतण कि सहँस, की सहँसर गणित गिणाईआ। राम हस्स के किहा मेरे तों बाद

१६६९ काहन लेखा मुकाउणा कंस, द्वापर दोहरी धार चलाईआ। फेर कलयुग होणा अन्त, अन्तिम आवे धुर दा राम दुहाईआ। १६६९

२२ जिस नूं सारे कहिंदे भगवन्त, भगवन नूर इलाहीआ। सीता हस्स के किहा ओह अवतार पैग़म्बर गुरु होवे कि धुर दा कन्त, २२

की कन्तूहल रूप वटाईआ। राम हस्स के किहा जिस राम दा आदि अन्त इक्को मंत, मन्त्र आपणा इक जणाईआ। इहनां दोहां दी बणावे फेर बणत, जन्म जन्म विच्चों बदलाईआ। जिस दा ढोला होवे सोहँ छंत, अक्खर अक्खर जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सीता हस्स के किहा मेरे रामा उस वेले दी की निशानी, सति दे समझाईआ। किस बिध राम करे मेहरवानी, राम राम दया कमाईआ। राम हस्स के किहा मेरा लेखा जाणे ना कोए पुराणी, शास्त्र कहिण कोए ना पाईआ। इहनां दोहां दी जगत वाली जवानी, जोबन धरनी धरत सुहाईआ। झट लाड़ी मौत कोल आ के किहा तूं बड़ा दानी, दर तेरे मंग मंगाईआ। मैं चाहुंदी इहनां नूं मारां उस वेले तीर कानी, आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप उठाईआ। लाड़ी मौत कहे मेरे राम मेरा यतन, दर तेरे मंग मंगाईआ। जिस वेले कलयुग दा अन्तिम आवे पतन, लेखा चुकाउणा चाँईं चाँईंआ। मैनूं ख़ाली ना मोड़ीं सक्खण, मेरी तेरे अग्गे दुहाईआ। राम ने हस्स के किहा

कमलीए मेरा राम आवे रखण, जो मालक धुरदरगाहीआ। जिस दा आदि अन्त दा इक्को पत्तन, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। सीता उठ के किहा मौत लाड़ीए नी एह दोवें प्रभू दा प्यार प्रीतम ते रत्न, रत्न अनमुले नज़री आईआ। एह सब कुझ तूं वेखीं आप अक्खण, तेरे वेंहदयां ल्ए बचाईआ। ओह वाल लग्गी पट्टण, रो के रही सुणाईआ। मैं तां आई सां लाहा खट्टण, सीता तूं की सुख़न दिता सुणाईआ। राम हस्स के किहा जा तेरे सीस विच पए घट्टण, ख़ाक जगत वाली उडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला ल्ए मिलाईआ। तिन्न पोह कहे मेरा अगम्म इक विचार, विचर के दयां सुणाईआ। इन्हां कोल इक निक्का जेहा बच्चा सी सुन्यार, बाल अवस्था सोभा पाईआ। ओन राम नूं कीती निमस्कार, सीता दे गोडयां उपर मस्तक छुहाईआ। झट राम ने निगह लई मार, अन्तर अन्तर वेख वखाईआ। एहदी ज़िंदगी दे दिन दो चार, दोहां नूं दिता सुणाईआ। तुहाडा नाता छुट्ट जाणा एहदे नालों उजाड़, अग्गे संग ना कोए रखाईआ। झट दोहां ने हथ्थ जोड़े कीती पुकार, राम अग्गे सीस निवाईआ। आपणी किरपा कर सच्ची सरकार, सिर इस दे हथ्थ टिकाईआ। राम हस्स के किहा हुण इहनूं ज़रूर छडणा पए संसार, नाता तन रहे ना राईआ। फेर जन्म दवावां दूजी वार, मेल मिलावां सहिज सुभाईआ। फेर मारी ज़िमीं उत्ते लकार, लाईन दिती वखाईआ। नाले हस्स के किहा फेर जन्मे थोड़े दिन रह के सोलह पोह नूं छड जाए संसार, लोकमात रहिण कोए ना पाईआ। झट सीता नैण ल्या उग्घाड़, राम वल वेख्या नेत्र ल्या बदलाईआ। केहड़ा वर दिता उजाड़, घर बार नज़र कोए ना आईआ। मेरे राम उस दा लेखा पाड़, कर्म कांड बदलाईआ। राम ने किहा एह मेरे राम दा विवहार, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। जिस वेले प्रगट होवे कलि कल्की अवतार, अवतर आपणा नूर करे रुशनाईआ। इस दा लहिणा देणा मेरा लेखा पूरा करे इकरार, कौल गुरमुखां तोड़ निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। तिन्न पोह कहे मैनूं याद पिछला वक्त, वक्त नाल जणाईआ। जेहड़ा राम किहा बचन सख़्त, सख़्ती नाल सुणाईआ। उसे बाले दा जन्म घर होया सिंघ तख़्त, धुर दी तख़्ती दा लेख ना कोए बणाईआ। जिस दी आयू ख़त्म होणी सी सौलां पोह विच जगत, अग्गे स्वास ना कोए चलाईआ। उस दी बेनन्ती रत्न सिंघ प्रीतम सिंघ दोवें उठ के करन भगत, फेर बख़्शिश करे बेपरवाहीआ। बलबीर दा नाँ लिखे कलम शाही नाल तृप्त, तिन्न तिन्न तिन्न वार जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। पन्द्रां पोह नूं लै के जाणा सवा गज़ दा लाल दुपट्टा, चारे कन्नीआं तृप्त गंढ पवाईआ। नाल रुमाल होवे खट्टा चिट्टा, आपणा संग वखाईआ। इक चूंढी रखया

होवे भगत दवार दा घट्टा, जो मस्तक देणा लाईआ। उस दे सीस उत्ते रखणा नौ टका, कीमत पिछली दए चुकाईआ। फेर वी बेनन्ती करनी पहलों महीने अठा, धुर दा लेख भुल्ल कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। तिन्न पोह कहे एह धुर दी बणाई बणत, प्रभ आपणी खेल खिलाईआ। जिस दी कोई गण ना सके गणत, लेखा लेख ना कोए चतुराईआ। ओह मालक बेपरवाह बेअन्त, जुग जुग सब दा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। रंग कहे मेरा सतिगुर रंगीला, परम पुरख बेपरवाहीआ। जो भगतां सदा वसीला, वेखणहारा थांउं थाँईंआ। जिस दा वड्डे छोटे सर्ब कबीला, किबलेअज़ इक अख्वाईआ। ओह सब दा ठांडा रखे सीना, अग्नी तत बुझाईआ। सतिगुर माया विच होवे ना कदे कमीना, जो जन्म दा मालक जन्म दए बदलाईआ। जिस दा भेव भेत किसे ना चीना, रसना कहिण कोए ना पाईआ। ओह मालक सब दा दाना बीना, देवणहार रिज़क सबाईआ। जिसदे हथ्थ मरना जीणा, ओह गुरमुखां होए सदा सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा जन्म कर्म करे तस्लीमा, मेहरवान आपणी दया कमाईआ।

१६७१ १६७१

२२ २२

✪ ८ पोह शहिनशाही सम्मत ७ चेला सिँघ दे गृह जम्मू शहर ✪

सदी चौधवीं कहे मुहम्मद मैनूं धरनी करे हासी, मिट्टी ख़ाक रही सुणाईआ। नी मैं नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दी प्यासी, मेरी तृखा ना कोए बुझाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु जगत दे बण के गए वासी, वास्ता प्रभ दे नाल रखाईआ। मेरी पूरी कीती किसे ना आसी, इशारयां विच सारे गए समझाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वी उस दी दासी, सेवक हो के सेव कमाईआ। जिस ने लख चुरासी करनी बन्द खुलासी, खुलासा आपणा दए खुल्हाईआ। चौदां तबकां करे तलाशी, चौदां लोकां ओहला रहे ना राईआ। जिस दा इक्को नूर जोत प्रकाशी, प्रकाशवान बेपरवाहीआ। सब दा लेखा पूरा करे स्वासी, साह साह खोज खुजाईआ। मण्डलां वेखे रासी, रस्ता ब्रह्मण्डां दए जणाईआ। पर्दा लाहवे उत्ते आकाशी, ज़िमीं ज़मां खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद मैनूं धरनी मारे ताअना, मेहणे रही सुणाईआ। क्यों नहीं घर घर बध्धा उम्मती अन्तिम गाना, शहादत शरअ वाली वखाईआ। नेत्र रोवे साढे तिन्न हथ्थ दा काना, जो चार जुग दे काहनी रहे दृढ़ाईआ। की लेखा होवे कलमे

वाला कलामा, कायनात की वड्याईआ। किस बिध तेरा प्रगट होवे अमामा, अमाम अमामा वेस वटाईआ। मेरी मेटे अंधेरी शामा, शमां नूर जोत करे रुशनाईआ। मैं झुक झुक उस नूं करां सलामां, निव निव ख़ाक रमाईआ। नूरी नूर तकां ज़िमीं असमाना, इस्म आज़म वेखां धुरदरगाहीआ। जिस ने चीथड़ सब दा लौहणा पुराणा, नवां रंग दए रंगाईआ। धरनी धवल लहू मिझ नाल रंग रंगाउणा, रंगत चाढ़े अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि दाता इक अख्वाईआ। मुहम्मद कहे सदी चौधवीं मैं दस्सां नाल शर्त, क्षत्रीया दयां जणाईआ। निरगुण धार आया परत, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जो प्यास बुझावे धरत, धरनी धवल तृखा रहे ना राईआ। ओह लेखा वेखे उपर अर्श, अर्शी प्रीतम वड वड्याईआ। आह तक औह तक उत्ते फ़र्श, दो जहानां डेरा ढाहीआ। जिस लेखा मेटणा मन्दिर मस्जिद शिवदुआले चर्च, चरागाहां खोज खुजाईआ। उस दा खुशीआं वाला सम्मत शहिनशाह बरस, सत्त दी सति कार कमाईआ। सब दी पूरी करे हरस, पिछली हवस दए मिटाईआ। अग्गे भगतां उत्ते करे तरस, रहमत आपणी सच जणाईआ। निज नेत्र दे के दरस, लोइन अक्ख दए खुल्लाईआ। आपणा पूरा करे फ़र्ज़, फ़ज़ल नाल तारे बेपरवाहीआ। साडी उसे अग्गे अर्ज़, आरज़ू विच सीस निवाईआ। जिस ने पूरा करना लहिणा देणा कर्ज़, लेखा मुकावे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत
१६७२ सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्लाईआ। मुहम्मद कहे सदी चौधवीं ओह १६७२
२२ वेख अगम्मी नूरा, जोत नूर करे रुशनाईआ। सुण अनादी तूरा, तुरीआ तों बाहर शनवाईआ। जिस दा हुक्म ना होए अधूरा, २२
ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। उस धरनी चाढ़ना रंग गूढ़ा, लाल गुलाला आप रंगाईआ। लेखे लाउणे मूर्ख मूढ़ा, मुग्धां पन्ध चुकाईआ। जिस दी वंड ना कोई चोटी जूड़ा, मूंड मुंडाया हिस्सा ना कोए रखाईआ। सो मालक बख्शणहारा धुर दी धूढ़ा, मस्तक टिक्का नाम रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्लाईआ। मुहम्मद कहे सदी चौधवीं मैनूं कर लैण दे पूरा इक चालीसा, शबे रोज़ ध्यान लगाईआ। फेर हुक्म मिले शरअ दे अबलीसा, संदेशा कलमा नूर इलाहीआ। दैंत तकणे ख़बीसा, खुशख़बरी विच समझाईआ। जिस साहिब दा राज पोशीदा, पर्दा सक्या ना कोए उठाईआ। ओह सब तों लेखा मंगे दानिस्ता दीदा, सन्मुख हो के वेख वखाईआ। जिस दी ज़िबह वाली इक्को ईदा, ईदुलफ़ितर सीस निवाईआ। जिस दी तस्दीक करे कुरान मजीदा, हजारा दरूद नाल वड्याईआ। सो सब दी ग़फ़लत लाहवे नींदा, सोया रहिण कोए ना पाईआ। बिना महिबूब तों तेरे अन्त तक रहे कोए ना जींदा, जगत जीवण कम्म किसे ना आईआ। लेखा पूरा करना कलयुग अन्तिम साढे तिन्न हथ्थ सींअ दा, धरनी धवल धरत देणी वड्याईआ।

आप मालक बणके जंत जीव का, खेल वेखे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुलाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद सुण संदेशा अल्ला, आलमीन जणाईआ। जिस ने खेल करना हो के इकल्ला, वाहिद आपणा हुक्म वरताईआ। सब तों छुडाउण लग्गा पल्ला, पल्लू गंढ ना कोए वखाईआ। जिस दरोही फेरनी जला थला, थल अस्गाह रोवण मारन धाहीआ। भेड़ भेड़ना जगत वाले दो दला, दलिदी रहिण कोए ना पाईआ। जिस दी याद विच चौदां सौ साल फिरदयां घस गया चम्मढ़ी दा तला, माटी चम्म रोवे मारे धाहीआ। ओह खेल करे अछल अछला, वल छल आपणी कार भुगताईआ। मैनूं इयों जापदा जिस ने अवतार पैग़म्बर गुरु घल्ला, संदेशे नाम वाले जणाईआ। उस दा इक होर होवण वाला हल्ला, हल्ला शेरी शब्द गुरु सुणाईआ। जिस ने जगत अक्ल बुद्धी नूं करना झल्ला, झलक आपणी इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सिंघासण इक्को मल्ला, जिथ्थे मलेछां करे सफ़ाईआ।

१६७३
२२

✪ ६ पोह शहिनशाही सम्मत ७ राम रखी कौर दे गृह जम्मू शहर विच ✪

धरनी कहे सदी चौधवीं किथ्थे धुर दा अब्बा, जो अम्मीजान इक अख्वाईआ। मैनूं चारों कुण्ट किते ना लभ्भा, लबां कटावण वाले रोवण मारन धाहीआ। जिस मेटणी मलेछां सभा, कूड़ कुड़यारां डेरा ढाहीआ। ओह मालक नूर अलाही रब्बा, जो रहमत हक कमाईआ। की संदेशा मुहम्मद देवे सद्दा, सुनेहड़ा की दृढ़ाईआ। तेरा वक्त जांदा लद्दा, मेरे उत्ते रहिण ना पाईआ। दो जहान जिस दे हुक्म बध्धा, बन्दना विच अवतार पैग़म्बर गुरु नज़री आईआ। उस दा नूर नुराना केहड़ी धार जगा, जागरत जोत करे रुशनाईआ। की खेल होणा अग्गा, की अगली कार भुगताईआ। मैनूं इयों दिसदा जिस ने सब कल्मयां नूं देणा दग़ा, फरेब वाला नाम रहिण ना पाईआ। मज़्बां दा नज़र ना आवे अड्डा, अड्डी चोटी सब दी दए हिलाईआ। शरअ दा रहिण देवे कोए ना खड्डा, डूँग्घी ग़ार ना कोए सुटाईआ। जन भगतां रखे लज्जा, भगत सुहेला बेपरवाहीआ। आत्म रस दा देवे मज़ा, मज़ाक तके ख़लक ख़ुदाईआ। जिस दे हुक्मे अन्दर आदि जुगादि सेवा करे कज़ा, जुग चौकड़ी भज्जे वाहो दाहीआ। सब ने मन्नणी उस दी रज़ा, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे मेरे दु:ख लग्गा सीने, सच सच दयां सुणाईआ। जिस खेल खेलणा लोक तीने, त्रैभवण धनी बेपरवाहीआ। लेखा जानणा रूसे चीने, चिन्ता जगत रहे ना राईआ।

१६७३
२२

एह धार बदलणी महीने तों बाद महीने, त्रै त्रै दी बदली आप कराईआ। मैनूं मिट्टी ख़ाक कहिंदे ज़मीने, धरनी धवल कहि सुणाईआ। पर याद रखीं सदी चौधवीं मैं आपणे उत्ते रहिण नहीं देणे कमीने, कूड़ कुटम्ब देवां खपाईआ। सब दे हक हकूक जाणे छीने, बिना परवरदिगार तों मेरा मालक ना कोए अख्वाईआ। मैं रहिणा नहीं किसे दे अधीने, अवतार पैग़म्बर गुरु वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दे हुक्म अन्दर मरने जीणे, चुरासी आपणी कार भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक अगम्म थाहीआ। धरनी कहे मेरा सीना वेख फटदा, मुहम्मद दे जणाईआ। लेखा रहिणा नहीं चौदां हट्ट दा, चौदां तबक मारन धाहीआ। खेल होणा लहू मिझ रत्त दा, रत्ती दाढ़ी वाले देण गवाहीआ। निशाना मिटणा कूड़ मति दा, मति मतांतर डेरा ढाहीआ। इक्को हुक्म वरतणा परमेश्वर पति दा, जो परवरदिगार नूर इलाहीआ। मेरा अखाड़ा होणा सथ्थर सथ दा, जिथ्थे यारड़ा सथ्थर गोबिन्द गया हंढाईआ। एह खेल अनोखा जिस माण गवाउणा कृष्न वाले रथ दा, रथवाही दो जहानां शब्द बलवाना इक अख्वाईआ। लहिणा मुकाउणा हथ्थो हथ्थ दा, अग्गे उधार ना कोए वखाईआ। हुक्म वरतणा पुरख समरथ दा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। बिन परवरदिगार कोई होवे किसे ना रखदा, रक्षक नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक

१६७४ नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धरनी कहे जो नवखण्ड हर घट अन्तर वसदा, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। १६७४

✪ ६ पोह शहिनशाही सम्मत ७ गुरदित सिंघ, फुम्मण सिंघ, भाग सिंघ, पूरन सिंघ, ज्ञान चन्द
पिण्ड छंभ ज़िला जम्मू ✪

धरनी कहे मेरे उत्ते कलयुग कीता अंधेरा, सदी चौधवीं तैनूं दयां सुणाईआ। चारों कुण्ट कूड़ कुड़यार पाया घेरा, सच दा साथी नज़र कोए ना आईआ। माया ममता लग्गा डेरा, जूठा झूठा मोह लए अंगड़ाईआ। कलयुग सुण के कहे मेरा नाँ लए केहड़ा, कवण मेरी करे वड्याईआ। धरनी थोड़ा होर कर जेरा, तैनूं जेरज अंड दा लेखा दयां वखाईआ। सदी चौधवीं दा वक्त आ गया नेड़ा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। मुहम्मद दा अमाम मालक आ गया मेरा, मेहरवान आपणी खेल खिलाईआ। जिस दा नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों पैंदा फेरा, चार जुग अक्ख ना किसे मिलाईआ। ओह तेरा खुल्हा करे वेहड़ा, कूड़ कुड़यारां डेरा ढाहीआ। फेर सति दा बन्न्हे बेड़ा, धर्म दी धार नाल चलाईआ। इक्को इक सुहाए खेड़ा, गृह इक्को वज्जे वधाईआ। हकीकत विच हक दा करे नबेड़ा, नहक्की खेल ना कोए खिलाईआ। जो हौली हौली शब्दी धार छेड़े

छेड़ा, छेकड़ आपणा हुक्म दए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक इक अख्वाईआ। कलयुग कहे धरनी किते ऐंवे ना जाईं झुक, भय विच सीस निवाईआ। डरदी ना जाईं लुक, आपणा आप छुपाईआ। तेरे उत्ते चुरासी नूं आउणा दुःख, दुखी रोवण मारन धाहीआ। शांत रहिणी नहीं कोई कुख्ख, जनणी जन मिले ना कोए वड्याईआ। लेखा मिटणा मानस देही उलटे रुक्ख, रुखसत दीन दुनी विच्चों दवाईआ। तूं आपणा फेर करीं मिट्ठा मुख, जिस वेले प्रभ सतिजुग दा रस चुआईआ। हुण कर जा चुप, बौहड़ी बौहड़ी कर ना कोए कुरलाईआ। जगत जहान बदल जाणा रुख, राह समझ कोए ना पाईआ। तेरे उत्ते कलयुग पाउणी लुट्ट, लुटेरा इक्को हुक्म सुणाईआ। जेहड़े जाप करदे बुल्ल्हां बुट्ट, रसना सिफ्ती ढोले गाईआ। उन्हां दे भाग जाणे निखुट्ट, खोटे खरे ना कोए बणाईआ। जो आत्म परमात्म गाउंदे तुक्क धुर दा ढोला सहिज सुभाईआ। उन्हां गोदी लए चुक्क, चुकन्ना हो के वेखे थांउँ थाँईंआ। साहिब दा भाणा जाए ना रुक, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। सदी चौधवीं पैंडा जाए मुक, मुहम्मद बैठे सीस झुकाईआ। कलयुग कहे प्रभ दा खेल ना मानस ना मानुक्ख, तत्व रंग ना कोए रंगाईआ। ओह मालक अगम्म अथाह उच्च, ऊचो ऊच नज़री आईआ। जिस ने जगत दी धार बदलणी संजम सुच, कूड़ी क्रिया पन्ध मुकाईआ। लेखा रहिण नहीं देणा किसे बुत, बुतां
१६७५ सीस ना कोए झुकाईआ। इक्को माण देणा शब्द गुरु गुर शब्द दुलारे सुत, सूत्रधारी वंड ना कोए वंडाईआ। तेरे उत्ते फेर १६७५
२२ मौलणी रुत, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक २२
नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे निशान्यों शब्दी धार ना जाए उक, उका सब दा लेखा दए मुकाईआ।

✪ ६ पोह शहिनशाही सम्मत ७ ईशर सिंघ, प्रताप सिँघ दे गृह पिण्ड दड़ ज़िला जम्मू ✪

कलयुग कहे मुहम्मद फड़ा तसबी, मणका मणके नाल मिलाईआ। फेर तक्कीए साडा खुदा बड़ा कसबी, जिस दीन मज़्ब दे कसबे देणे बदलाईआ। जिन सानूं बणाया मुतस्सबी, मुतल्ला कर के दईए दृढ़ाईआ। वंड वंडा के शरअ विच मज़्बी, मज़मून आपणा दिता समझाईआ। अल्ला दी ज़ात तैनूं आपणा नाम दस्सया विच अरबी, अरबां दा लेखा दिता दृढ़ाईआ। सूरत दस्स अगम्मी नर दी, मदीन दा झगड़ा दिता चुकाईआ। शरअ दात दिती ज़र दी, दौलत झोली पाईआ। जिस दी निशानी अन्त चढ़दी, चढ़दी दिशा वंड वंडाईआ। अग्गे खेल होणी चोटी जड़ दी, चेतन हो के वेख वखाईआ। शरअ शरअ नाल होणी लड़दी, टक्कर लवे थांउँ थाँईंआ। तेरी मेरी आशा होवे सड़दी, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। कलयुग

कहे मुहम्मद हुण गल्ल करीए अगले घर दी, पिछला झगड़ा रहे ना राईआ। तेरी आसा जेहड़ा कलमा रही पढ़दी, ओह विद्या आपणी झोली पाईआ। अग्गे पूजा नहीं रहिणी पिप्पल बड़ दी, पाहन सीस ना कोए निवाईआ। मुहम्मद कहे कलयुगा एह खेल अछल अछल दी, जिस दी समझ कोए ना आईआ। जिस पूजा कराई जल दी, फेर थलां दिती वड्याईआ। हुण सार नहीं घड़ी पल दी, की आपणा हुक्म वरताईआ। जिस आशा पूरी कीती बल दवारे बावन बल दी, रिषीआं गंढ पवाईआ। उहदी कला कुदरत नालों कदे ना टल्दी, टाल मटोल विच सब नूं दए भुलाईआ। हुण खेल वेखणी कलयुग कल दी, की कलकाती कार कमाईआ। उस खेल पूर कराउणी नानक वाली इक गल्ल दी, जिस गल्ल नूं समझ सक्या कोए ना राईआ। सब दी जवानी गई ढलदी, अन्त बुढेपा वेख वखाईआ। अग्गे खेल होणी शब्द अगम्मी दल दी, जो दलिदीआं डेरा ढाहीआ। एह धार अगम्मी अटल दी, अटल हो के वेख वखाईआ। सृष्टी खेल डूँग्घी डल दी, डूँग्घे वहिणां विच वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धार वरते आपणे हल्ल दी, दूसर संग ना कोए रखाईआ।

६ पोह शहिनशाही सम्मत ७ तेजभान दे गृह पिण्ड सई खुर्द ज़िला जम्मू

कलयुग कहे सुण नी धरती माता, जगत मंमीएं तैनूं दयां जणाईआ। की हुक्म देवे धुर दा दाता, दयावान दया कमाईआ। जिस ने मेरा वक्त पछाता, घड़ी पल भुल्ल कदे ना जाईआ। चारों कुण्ट करे अंधेरी राता, साचा नूर ना कोए रुशनाईआ। किसे दी पुछे कोई ना वाता, वातावरन बदले जगत लोकाईआ। धर्म राए दा इक्को वार पूरा करे खाता, चित्रगुप्त दा लेखा रहे ना राईआ। चारे खाणी बदल बदल के जोड़े नाता, अदल आपणा इक समझाईआ। बिना भगतां पुछे किसे ना वाता, वारस नज़र कोए ना आईआ। एह खेल तकणा अलखणा अलाखा, अलख अगोचर की आपणी कार भुगताईआ। मेरे अन्तर इक्को कलमा भाखा, कलयुग कहे खुशीआं नाल दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा मालक बेपरवाहीआ। कलयुग कहे नी धरती जगत दी मंमी, अम्मीजान दयां जणाईआ। तूं प्यार करीं किसे ना चम्मी, चम्म दृष्टी देणी तजाईआ। नेत्र नीर वहाईं ना छम छमी, वैरागण आपणा आप कराईआ। मेरे अन्त होवे कोए ना ग़मी, चिन्ता चिखा ना कोए सताईआ। तूं गूहड़ी नींद सवीं, बांह सरहाणे हेठ टिकाईआ। इक्को प्रभ दा गीत गवीं, तूं मेरा मालक धुरदरगाहीआ। जिस ने धार चलाउणी नवीं, नव नौ चार दा पन्ध मुकाईआ। जिस रूप प्रगटाउणा

अवतार चव्ही, चौबीसवां आपणा खेल खिलाईआ। मनसा पूरी करनी रविदास रवी, रवि ससि देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वडा वड वड्याईआ। कलयुग कहे नी जगत दीए अंमा, धरनी धवल दयां सुणाईआ। धुर दे मालक देणा समां, समझ बुद्धी अक्ल चले ना कोए चतुराईआ। झगड़ा मेटणा काया माटी चम्मा, शरअ दा लेख रहे ना राईआ। कलमा दस्सणा इक्को दमा, नाम निधाना इक दृढ़ाईआ। दीन दी रहिण नहीं देणी तमा, लालच कूड़ ना कोए बणाईआ। इक्को नूर चमकाउणा अगम्मी चन्ना, चन्द सितार जिस नूं सीस झुकाईआ। लेखे लाउणा गोबिन्द वाला कन्ना, पन्ना चौदां सौ तीह अंक अंक समझाईआ। अग्गे लेखा रहिण नहीं देणा लम्मा, लमह लमह वेखे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वर दाता बेपरवाहीआ। कलयुग कहे धरनी तैनूं कहिंदे सारे माँ, ममता विच जगत हल्काईआ। तेरे उत्ते वंड पै गई सूर ते गां, गऊ ग़रीब निमाणयां होए ना कोए सहाईआ। सच दस्स केहड़ा पवित्र तेरा थाँ, कवण मिट्टी ख़ाक मिले वड्याईआ। केहड़ा सोहणा नगर ग्रां, खेड़े किस वज्जे वधाईआ। किथे ख़ुशी ग़मी किथे होवे चाअ, चाओ घनेरा कवण जणाईआ। किथे सिफ्त सालाह होवे वाह वा, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। कमलीए जे तूं इक ते क्यों मज़्हबां वाले बणाए राह, डण्डीआं आपणे उत्ते रखाईआ। क्यों
१६७७ तेरे सपूत रूप बणे काँ, बग बपड़े नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा १६७७
२२ हरि, धुर दी करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। धरनी कहे सुण कलयुग चौथे जुग, जुगती तैनूं दयां जणाईआ। तेरी औध २२
रही पुग, पूजा मिटे कूड़ लोकाईआ। हीणी रहे किसे ना बुध, बुध बिबेक आप कराईआ। हुण चारों कुण्ट मेरे उत्ते ख़ुशीआं नाल वेख युद्ध, युधिष्टर दी आशा रहे ना राईआ। मैं दुष्ट दुराचार मुकाउणे चुग चुग, चुगली निंदिआ वाले सारे देणे खपाईआ। मेरे साहिब दी बुझारत सके कोए ना बुझ, भविक्खतां वाले इशारे नाल गए जणाईआ। मैं नौ सौ चौरानवे जुग चौकड़ी रही चुप, चुप वट्ट के आपणा झट लँघाईआ। हुण मेरा प्यार होया बिना तत्तां तों प्रभ दे शब्द दुलारे नाल सुत, पिता पूत वेख के वज्जे वधाईआ। जिस दी मेरे उत्ते मौलणी रुत, रुतड़ी इक्को रंग रंगाईआ। मज़्हब दा रहे कोए ना दु:ख, शरअ करे ना कोए लड़ाईआ। आत्म परमात्म सब नूं मिलणा सुख, पारब्रह्म ब्रह्म मिल के वज्जे वधाईआ। तूं मेरा मैं तेरा पढ़नी तुक, तुख्म ताअसीर सब दी देणी बदलाईआ। कलयुग तेरा मेटणा अंधेरा घुप, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। खुल्ही रहे किसे ना गुत्त, मेंढी सुहाग देणी गुंदाईआ। हुण मेरे तों मूर्खा आपणा विस्तरा चुक्क, अग्गे वक्त रहे ना राईआ। ओह वेख चन्द सितारा रहे टुट्ट, टुटयां गंढ ना कोए पवाईआ। सदी चौधवीं दस्त नालों दस्त मुहम्मद छुडावे गुट्ट, बाज़ू बन्धन ना कोए

पवाईआ। तेरा भाग रिहा निखुट, भण्डार अतुट ना कोए वरताईआ। इक्को वार मेरे साहिब ने दीन दुनी विच पाउणी फुट्ट, फुटकल करे ख़लक खुदाईआ। शब्द धार नाल करे दो टुक्क, हिस्से दोवें वंड वंडाईआ। दोवें धारां पैण जुट, अग्गे हो ना कोए छुडाईआ। कलयुगा तेरे नीले होणे बुट्ट, नीला अम्बर दए गवाहीआ। सब दा लेखा सब दे कोलों जाणा खुस, मालक रहिण कोए ना पाईआ। एह खेल खेलणी मालक उस, जिस दी उस्तत करके सारे झट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, परम पुरख अबिनाशी अचुत, चेतन सब नूं रिहा कराईआ।

१० पोह शहिनशाही सम्मत ७ भगत सिँघ दे नवित कीर पिण्ड ज़िला जम्मू

नारद कहे सतिगुर शब्द मेरा तेरे नाल इश्क, आशकां दे आशका माशूक बणके दे वखाईआ। तेरा सोहणा सति सरूप रिहा लिशक, बिन रंग रूप सोभा पाईआ। कोटन कोटि जुग तेरे उत्ते सारे लाउंदे रहे शिसत, निशाना अन्त ना कोए कराईआ। मैं एसे कारन तेरे प्यार विच भोगया नहीं कोए गृहस्त, तन वजूद ना खुशी बणाईआ। मैं फिर के आया जिस नूं अवतार पैग़म्बर गुरु कहिंदे स्वर्ग ते बहिशत, वेख्या चाँईं चाँईंआ। दोज़खां विच देखी दृष्ट, तेरा ध्यान रखाईआ। मैं समझ ना सक्या तेरा खेल टांक के जिस्त, कि बिना इक दो तों आपणा हुक्म वरताईआ। तेरा आकार तक्कया निराकार कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड तेरे पैमाने वाली इक ना पूरी होई बालिशत, पूरवा वंड ना कोए वंडाईआ। मेरी उच्ची निकल गई किलक, कूक के दयां सुणाईआ। बौहड़ी दरोही दुहाई तेरी मंज़ल तों बिना तेरी किरपा अवतार पैग़म्बर गुरु सारे गए खिसक, थिर नज़र कोए ना आईआ। हुण सदी चौधवीं तूं सब नूं ल्या झिड़क, भय विच रिहा डराईआ। तुहाडे दीन मज़्हब मैं देणे रिड़क, रेड़का पाउणा कूड़ लोकाईआ। मैं वी डरदा नारद कहे दूरों दूरों लैंदा बिड़क, कन्न दो जहानां वल्ल रखाईआ। निगह रखदा किते मेहर दा अमृत देवे छिड़क, जिस नूं कलसां विच ना कोए भराईआ। मेरी पूरबली मिटे हिरस, हवस रहे ना राईआ। तेरे नूरी नूर दा होवे दरस, सन्मुख हो के खुशी बणाईआ। विछोड़े विच किसे नूं दिवस महीने बीतदे बरस, मैं जुग जुग तेरा राह तकाईआ। धन्न भाग ओए धनाढा जे तूं आयों उत्ते फ़र्श, मिट्टी ख़ाक दएं वड्याईआ। मैं वी छड्डुया आसण अर्श, अर्शी प्रीतम भज्जया वाहो दाहीआ। महिबूब मेरी मन्न लै अर्ज़, आरज़ू तेरे अग्गे रखाईआ। मैनूं तेरे प्यार दी ग़रज़, दूसर अंग ना कदे छुहाईआ। मेरा इक्को ताल राग नाद ते इक्को तर्ज़, तरह तरह दा गाण कोए ना गाईआ।

मैनूं इयों दिसया तेरे बिना सच्चा नहीं कोई मर्द, अवतार पैग़म्बर गुरु नारी प्रभ दी नज़री आईआ। तेरे कोल आदि अन्त दी फ़रद, हक हकीक वेख चाँईं चाँईआ। मेरे साहिब सब दे कोलों खोह लै छुरी शरअ वाली करद, कत्लगाह रहिण ना पाईआ। मेरा दिल करदा मैं तेरा रूप तकां नपड़द, सति दा सति नज़री आईआ। किसे नाम कलमे दा विच ना होवे धड़त, हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। बिना अक्खरां तों मेरे नाल कर लिख्त पढ़त, धुर दी गंढ आप बंधाईआ। मेरी पूरी कर दे शर्त, शर्म हया दा लेखा दे मुकाईआ। तेरे बिना मेरी सिध्धी करे कोए ना नरद, नारद रो के रिहा सुणाईआ। मैं कोई लैणा नहीं कर्ज, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब तेरे हथ्थ वड्याईआ। नारद कहे सतिगुर शब्द मैं तैनूं चाहुंदा, चारे जुग हथ्थ उठाईआ। दिवस रैण तेरा राग अलाउंदा, ढोले प्रेम वाले गाईआ। असुणत तैनूं आपणी आशा सुणाउंदा, बिरहों विच वड्याईआ। तूं क्यों नहीं नैण उठाउंदा, नैणां वाल्या नैण मटकाईआ। माशूक हो के आशक इश्क दी क्यों नहीं गंढ पवाउंदा, प्रेम तन्द जुड़ाईआ। सच सिंघासण क्यों नहीं सोभा पाउंदा, सुखआसण डेरा लाईआ। फूलन सेज क्यों नहीं वडयाउंदा, अमृत मेघ बरसाईआ। तूं जुग चौकड़ी रिहों तरसाउंदा, बेतरसा तैनूं तरस ज़रा ना आईआ। हुण मैं उच्ची कूक जणाउंदा, दरोही तेरी बेपरवाहीआ। क्यों नहीं प्रेमीआ प्रेमीआं गले लगाउंदा, गलवकड़ी धुर दी पाईआ। ओह तक अवतार पैग़म्बर गुरु मेरे वल्ल उँगल सर्ब उठाउंदा, इशारे रिहा कराईआ। मैं वी ताड़ी अग्गों वजाउंदा, दो हथ्थां ताल बणाईआ। नाले धुर दा बचन जणाउंदा, जनणी नूं जम्मण वाल्यो तुहानूं दयां सुणाईआ। निगह धरती वल्ल रखाउंदा, चारों कुण्ट कुण्ट भवाईआ। ओह वेखो आह वेखो तुहाडा दीन मज़्ब कुरलाउंदा, करबले वाले बिना करबले तों रोवण मारन धाहीआ। तुहाडा कलमा केहड़ी वंड वंडाउंदा, सूर गाँ दे हिस्से पाईआ। तुहाडा प्यार मुहब्बत केहड़े नाउँ दा, जिस नाम नाल जीव जहानां रहे घाईआ। तुहाडा नाता केहड़े थांउँ दा, दोज़ख़ बहिशत दोवें रोवण मारन धाईआ। क्यों कलयुग रूप बणया काउं दा, हँस नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ।

✪ १० पोह शहिनशाही सम्मत ७ प्रकाश सिँघ पिण्ड दड़ ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे सतिगुर शब्द तूं किड्डा सोहणा सुनक्खा, सोहणयां तेरी की वड्याईआ। दुनिया जगत संसार ऐवें तत्तां नूं झलदी रही पक्खा, कलबूतां सेव कमाईआ। हड्डीआं नूं टेकदी रही मथ्था, चम्मढ़ीआं रंग रंगाईआ। मैं वी चार जुग फिरदा

रिहा नट्ठा, भज्जया वाहो दाहीआ। फिरया तीर्थ तट्टा, अट्ठ सट्ठ पन्ध मुकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं खुल्हीआं वेखीआं लटां, बैरागी रूप अन्तर ध्यान लगाईआ। जगत सख़ीआँ वेखीआं हथ्थ मारदीआं उत्ते पट्टां, पटने वाला दए गवाहीआ। जुग जुग गिड़दीआं वेखीआं उलटीआं लट्टां, वहिणां वहिण वहाईआ। नाम कलमे दा सुणदा रिहा टप्पा, अक्खरां नाल पढ़ाईआ। सतिगुरु शब्द तूं दस्स तेरा किहदे नाल यराना पक्का, जिस दे नालों ना सक्या तुड़ाईआ। जिस नूं कदे ना दिता धक्का, पिठ ना सक्या बदलाईआ। सब नूं आपणा भण्डारा दे के फक्का फक्का, जिस फक्के विच्चों फाके मरे सर्ब लोकाईआ। आपणा रूप नहीं दस्सया हट्टा कट्टा, योधा अगम्म अथाहीआ। सच दे थाँ सिफ्त दा दे के वट्टा, वटणे जगत वाले मलाईआ। उहनां अवतार पैग़म्बर गुरुआं नूं पा के उत्ते फट्टा, फिर घरां विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। सिर्फ़ इशारा दिता हुक्म विच दस्सया आपणा पता, पतिपरमेश्वर कहि के सारे गाईआ। फिर सब दे उत्ते पा के आपणी फत्ह, फ़ातिहा दा डंक दए वजाईआ। किसे दा बोदा किसे दा सीस उत्ते रखाया छत्ता, किसे नूं केसां नाल वड्याईआ। किसे नूं गोर सवाया किसे नूं टिकाया विच चिता, लेखा सब दा आपणे हथ्थ रखाईआ। ओए सतिगुर शब्द नाले तूं सब दा बणया रिहों पिता, क्यों पिता हो के आपणे पुत लए मराईआ। दस्स चहु जुगां विच्चों नारद नूं की दिता, ना रंन ना कन्न बिना बोदी तो होर चीज नज़र कोए ना आईआ। मैनूं अज्ज सारी रात नारद कहे नौ सौ नड़िनवे वार आईआं छिक्कां, मैं याद कर कर के तेरा राह तकाईआ। मेरा जीअ करे मैं केहड़े वेले तेरे प्यार विच विकां, आपणा आप तेरी झोली पाईआ। पर तूं वी मेरे अन्दर मार खिच्चा, खिच्च के आपणे नाल मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे ओए नारदा तैनूं भेत नहीं शब्द सार दा, भावें कोटन जुग बीत जाण तूं फेर वी निक्के दा निक्का, मेरी समझ फेर किसे ना आईआ। हुण छेती वेख लईं पिछला सारा बदल देणा सिक्का, सख़ीआँ वाले काहन बैठण सीस निवाईआ। छब्बी पोह नूं सदी चौधवीं दे कोल ढाई होणीआं इट्टां, इट्ट इट्ट नाल खड़काईआ। गोली दे वस्त्रां नाल मस्तक होणा टिक्का, जिस विच अल्लाह अल्लाह अल्लाह देणा लिखाईआ। फेर दस्सांगां तेरा किस बिध होवे हिता, प्यार प्यार नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। नारद कहे सतिगुर शब्द तेरा नैण बड़ा मटकीला, मटकां वाल्या नज़री आईआ। मेरा बणया कोई ना हीला, हिम्मत दिती ना कोए वड्याईआ। मैं बथेरा फिरया उत्ते अम्बर नीला, भज्जया वाहो दाहीआ। अवतार पैग़म्बर गुरु बणे ना कोए वसीला, जो विचोला बण के मेल मिलाईआ। मैं रूप धरया सूहा लाल पीला, काला रंग रंगाईआ। फिर वी रिहा ढीला, तेरा संग ना कोए बणाईआ। मैं फिरया जगत सरोवर झीला, नव खण्ड कन्ढी डेरा लाईआ। कितों महिबूब मिल

जाए छैल छबीला, सति सरूपी नज़री आईआ। मैं लख चुरासी तक्कया तेरा कबीला, चारे खाणी फोल फुलाईआ। मैनूं करे ना कोए तस्लीमा, तसबीआं माला वाले सारे मुख भवाईआ। तूं मालक इक करीमा, रहमत वाला बेपरवाहीआ। तूं आलीशान अज़ीमा, आलीजाह तेरी वड्याईआ। पर मैं इक्को तेरे वरगी मंगदा हुसीना, जिस दा हुसन हस्सण रोवण विच कदे ना आईआ। जिथ्थे होए ना कोए कदे ग़मगीना, चिन्ता चिखा दा डेरा ढाहीआ। मेल होवे उत्ते तेरा मेरा धरनी धवल ज़मीना, धौल वज्जे वधाईआ। मैं तैनूं किहा आमीना, आ मिल के खुशी बणाईआ। मेरी मनसा बड़ी पुराणी कदीमा, कुदरत दे मालक दया देणी कमाईआ। मैनूं इक्को भरोसा इक्को यकीना, इत्मिाद नाल जणाईआ। तेरा प्यार किसे कोलों ना जाए छीना, तेरा तेरा संग निभाईआ। हुण पता नहीं किस ने मरना किस ने जीणा, किस नूं देवे कवण वड्याईआ। फिरे दरोही लोक तीनां, त्रैगुण रही कुरलाईआ। मेरे प्यार दी शहादत नहीं जल मीना, चन्द चकोर ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद तेरे रहां अधीना, आहला अदना रूप ना कोए बणाईआ।

१६८१ ✪ १० पोह शहिनशाही सम्मत ७ शिव सिँघ दे गृह पिण्ड सई खुर्द ज़िला जम्मू ✪ १६८१

२२ २२

नारद कहे सतिगुर शब्द तूं छैल छबीला उच्चा, उच्च अगम्म अथाह नज़री आईआ। तूं सति सरूप सुच्चा, सच सति तेरी वड्याईआ। तूं इक इक दा पुत्ता, जिथ्थे बूंद रक्त दी लोड़ रहे ना राईआ। तूं उस गृह सुत्ता, जिथ्थे सोवत जागत वंड ना कोए वंडाईआ। तूं उस दवारे लुका, जिथ्थे दो जहान वेखण कोए ना पाईआ। तेरा रूप तेरे उत्ते तुठा, मेहर आपणी इक रखाईआ। तैनूं कोई फड़ ना सके गुट्टा, तत नज़र कोए ना आईआ। तेरा जाप नहीं कोई बुल्ल्हां बूट्टा, सिफ्ती सिफ्त ना ढोला गाईआ। तूं आपणी धारों आपे उठा, आपणी लई अंगड़ाईआ। लोकमात सब नूं फड़ाउंदा रिहों ठूठा, नाम भण्डारा विच टिकाईआ। जगत जहान लाउंदा रिहों बूटा, तत्व तत गंढ पवाईआ। हुलारा देंदा रिहों झूटा, पवण पवणां विच रखाईआ। अन्तिम मार के इक्को सूटा, सब दा लेखा दिता मुकाईआ। आपणा आप कर मज़बूता, शरअ विच कदे ना आईआ। हिस्सा कर के पंज भूता, पंचम पंचम रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ।

✪ १० पोह शहिनशाही सम्मत ७ राज सिँघ दे गृह विखे जम्मू शहर विच ✪

नारद कहे सतिगुर शब्द तेरा नूर नुरानी नूरत, नूरी नज़री आईआ। तेरी अनोखी वक्खरी सूरत, जिस दा सूर्या चन्द तेज झल्ले ना राईआ। तेरी आवाज़ अगम्मी तूरत, बिना रसना रस वखाईआ। तेरा प्यार सब दी आशा पूरत, पूर रिहा सर्ब ठाईंआ। तेरा लेखा ना नेड़े ना दूरत, दो जहानां वेख वखाईआ। तूं सदा हाज़र हज़ूरत, हज़रत कहि के गए सुणाईआ। मेरी आसा मनसा कर दे पूरत, तृष्ना तृखा दे मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक दया कमाईआ। सतिगुर शब्द तूं आदि अन्त दी राणी, रईयत तेरी समझ किसे ना आईआ। तेरी सिफ्त चार जुग दे शास्त्र बाणी, अक्खर अक्खर ढोले गाईआ। तेरा लेख जुग चौकड़ी पुराणी, पूरव समझ ना कोए समझाईआ। तैनूं मिलणा नहीं आसानी, मंज़ल समझ किसे ना आईआ। कोटन कोटि दे के गए कुरबानी, आपणा आप भेंट कराईआ। जगत जहान हो के गए दानी, दाते तेरा रूप सके ना कोए समझाईआ। कबीर जुलाहे वरगे उण के गए

ताणी, तन्द तन्द नाल बंधाईआ। तेरी समझ ना आई किसे जवानी, जोबनवन्ते की तेरी वड्याईआ। तूं सब नूं कीता फ़ानी, अन्त रहिण कोए ना पाईआ। झगड़े मुका दिते चारे खाणी, खाने आपणे विच टिकाईआ। तेरा लेख लिख्या गया नाल कलम कानी, नाम कलमे बैठे सीस निवाईआ। मेरे अन्तर आई हैरानी, हैरत विच सुणाईआ। मेरी इक बेनन्ती मानीं, मेहर नज़र इक उठाईआ। मैनूं आपणा बणा जानी, जानणहार तेरी सरनाईआ। तेरा नूर ज़हूर लासानी, ज़ाहर ज़हूर तेरी वड्याईआ। मेरी आसा मनसा अन्त ना होए वैरानी, मेल मिलावा करना सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दी धार वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द तेरी किड्डी सोहणी मटक, मतवाले आपणा रंग रंगाईआ। राह विच ना जावां अटक, औकड़ रहिण कोए ना पाईआ। तेरा दर मल्लां बेखटक, खटका जगत देणा गंवाईआ। तेरे प्यार दी मेरे अन्दर आवे शक्त, शक्तीवान तेरी सरनाईआ। किते आपणा सुभा ना करीं सख्त, करवट मेरे वल्लों बदलाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों तेरे नाल मिलण दा आया वक्त, जुग चौकड़ी गिण गिण झट लँघाईआ। मैं प्यार करां इक्को तैनूं फ़कत, दूजा फ़िकरा कोए ना गाईआ। मैं नाता जोड़ना नहीं नाल रक्त, बूंद कम्म किसे ना आईआ। मैं आदि दा आदि अन्त दा अन्त तेरा भगत, तेरी आस रखाईआ। नाता छोड़या दुनी जगत, जगजीवण दाते तेरा राह तकाईआ। तेरे प्यार दी आवे लज्जत, रस भोगण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका

देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा पूरा करना अर्श फ़र्श, फ़र्शी प्रीतम तेरी ओट तकाईआ।

✪ १० पोह शहिनशहाही सम्मत ७ केसरी देवी दे गृह राणी बाग ज़िला जम्मू ✪

सतिगुर शब्द तेरा रूप अगम्मा अच्छा, निरइच्छत आदि जुगादि नजरी आईआ। जुग चौकड़ी करदा आएं सब दी रच्छा, रच्छक हो के दो जहानां वेख वखाईआ। अवतार पैग़म्बरां पावें नाम कलमे दी भिच्छा, वस्त अमोलक अगम्म अथाह वरताईआ। जुग चौकड़ी तेरा सिफ्त सालाही नाम जावे लिखा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी तेरी सिफ्त सालाहीआ। बिन तेरे तों सृष्टी सारी दिसदी मिथा, सद रहिण कोए ना पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा
१६८३ भाणा सब ने मन्नया मिट्ठा, सिर सक्या ना कोए उठाईआ। कलयुग अन्तिम धुर शब्द कलमे दा देवे चिट्ठा, संदेशा धुरदरगाहीआ। अन्त इष्ट रहिणा इका, एकँकार आपणी कल वरताईआ। सदी चौधवीं मुहम्मद दी धार मेटणा सिक्का, उम्मत उम्मती डेरा ढाहीआ। कूड़ कुड़यारा पाउणा विच चिता, चिखा काम क्रोध लोभ मोह हँकार वाली तपाईआ। भगत भगवान बणाउणा साचा हिता, हितकारी हो के दया कमाईआ। तेरा खेल नित नविता, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। १६८३
२२ तूं आदि जुगादी इक्को पिता, पतिपरमेश्वर तेरा रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द तूं आदि जुगादी इक्को शाह, शहिनशाह अख्वाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरे गवाह, शहादत नाम वाली भुगताईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु दस्सण राह, शास्त्र सिमरत नाल मिलाईआ। अक्खरां वाला सिफ्ती तेरा नाँ, ढोले रागां नादां विच वड्याईआ। जुग चौकड़ी बीते अन्त रिहा ना कोए निशां, निशाने सारे मेट मिटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा खेल महा, महिमा कथ कथ वड्याईआ। भविक्ख्तां विच तेरे ढोले गए गा, पेशीनगोईआं विच सुणाईआ। अन्तिम आवे बेपरवाह, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नूर इलाहीआ। जिस नूं पैग़म्बरां किहा खुदा, हज़रत बैठे सीस निवाईआ। ओह वेस अवेसा अमाम अमामा आपणा रूप वटा, जोती जाता डगमगाईआ। शब्दी डंका दए सुणा, एथे ओथे दो जहान करे शनवाईआ। जिस नूं ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ ज़िमीं असमान गगन गगनंतर बैठे सीस निवा, सिर सके ना कोए उठाईआ। सो मालक ख़ालक प्रितपालक पारब्रह्म पतिपरमेश्वर लेखा जाणे थांउँ थाँ, थान थनंतर वेख वखाईआ। जिस दे दवारे झगड़ा नहीं सूर ते गां, दीन मज़्हब वंड ना कोए वंडाईआ। आत्म ब्रह्म पड़दा दए खुल्हा,

नूर नुराना नज़री आईआ। जिस दा इक्को शब्द इक्को कलमा इक्को नाँ, नाउँ निरँकारा इक्को अख्वाईआ। सो लहिणा देणा सब दा दए चुका, चुकन्नी चार यारी दए कराईआ। कूड़ कुड़यार मिट्टी ख़ाक दए दफ़ना, धुर दी दफ़ा आपणा हुक्म लगाईआ। जिस नूं अक्ल बुद्धी समझे कोए ना, जगत विद्या कम्म किसे ना आईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु गुरदेव स्वामी सारे करन दुआ, डण्डावत विच सीस झुकाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी सब दा लेखा दए मुका, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। सतिगुर शब्द शब्द सतिगुर दूसर कोए ना, आदि अन्त जुगा जुगन्त इक्को पिता इक्को माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा लहिणा देणा दो जहां, जहालत कलयुग कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ।

✪ १० पोह शहिनशाही सम्मत ७ सरदार सिँघ गुरनाम सिँघ दे गृह पिण्ड सीड़ ज़िला जम्मू ✪

सतिगुर शब्द कहे मैं आदि जुगादी एक, सो पुरख निरँजण दिती वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण साची टेक, एकँकार आपणा रंग रंगाईआ। आदि निरँजण करे हेत, श्री भगवान होए सहाईआ। अबिनाशी करता नेतन नेत, विष्न

१६८४ ब्रह्मा शिव करदे हेत, जुग जुग आपणा संग निभाईआ। निरगुण सरगुण प्रभ दा अगम्मा भेख, जो देवे धुर संदेश, नाम १६८४

२२ निधाना इक दृढ़ाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु रूप धरे हमेश, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा खेल खिलाईआ। जोती २२

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं आदि अन्त दा सूरबीर, बेअन्त दिती वड्याईआ। मेरा लेखा कोई जाण ना सके शाह हकीर, फ़कीर पड़दा ना कोए उठाईआ। मैं सब दी बदलण वाला तकदीर, तदबीर प्रभ दी नाल मिलाईआ। मैं नित नवित शरअ दे पाए ज़ंजीर, शरीअत संग रलाईआ। अन्तिम लहिणा देणा पूरा करना अख़ीर, आखर दयां सुणाईआ। जो आसा रख के गया कबीर, काअब्यां परे परे जणाईआ। जो संदेशा दिता निरगुण सरगुण नानक दीन दुनी बदल जावे ज़मीर, गोबिन्द मेला बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा मालक नज़री आईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा साहिब इक सुल्ताना, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जो जुग जुग खेले खेल महाना, रूप अनूप लए प्रगटाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर देवे नाम निधाना, आपणा रंग रंगाईआ। अमृत रस बख़्शे नौजवाना, निजर धारा आप झिराईआ। साचा दस्से कलमा धुर कलामा, कायनात पढ़ाईआ। जिस नूं पैग़म्बर करन सलामा, सजदयां विच सीस झुकाईआ। सो सति सरूप धुर दा रामा, कान्हा दा काहन

इक अख्वाईआ। जिस दा डंका इक दमामा, गोबिन्द सूरा रिहा वजाईआ। उस कलयुग मेटणी अंधेरी शामा, शमां नूर जोत करे रुशनाईआ। सदी चौधवीं देवे हक पैग़ामा, पैग़म्बरां तों परे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर करता बेपरवाहीआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा मालक हरि भगवन्त, हरि करता वड वड्याईआ। जिस नूं गाउंदे चार जुग दे सन्त, जीव जंत ध्यान लगाईआ। उस दा इक्को नाम ते इक्को मंत, मन्त्र इक्को दए दृढ़ाईआ। जिस कलयुग करना अन्त, अन्तष्करन वेखे ख़लक खुदाईआ। गढ़ तोड़ना हउमें हंगत, हँ ब्रह्म इक समझाईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, पंचम शब्द धुन करे शनवाईआ। लेखा मुका के दोज़ख़ बहिशत जन्नत, सचखण्ड दवारा इक समझाईआ। आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म मेला होवे नार कन्त, कन्तूहल आपणी खुशी बणाईआ। गुरमुखां चोली चाढ़े नाम अगम्मी रंगत, रंग रंगीला दया कमाईआ। चार वरन अठारां बरन बणाए इक्को संगत, दीन मज़्हब ज़ात पात वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा परम पुरख अबिनाशी, हरि करता बेपरवाहीआ। जो हर घट अन्दर रखे वासी, परमात्म आत्म रूप बणाईआ। गृह मन्दिर मण्डल पावे रासी, साची खुशीआं नाच नचाईआ। जन भगतां पड़दा खोल्ह के पृथ्मी आकाशी, गगन गगनंतर डेरा ढाहीआ। अन्तर मेट अंधेरी राती, निरगुण जोती जोत दए चमकाईआ। अट्ठे पहर रहे प्रभाती, सुबह शाम वंड ना कोए वंडाईआ। निजर अमृत रस देवे बूँद स्वांती, कूड़ी तृष्ना तृखा दए बुझाईआ। त्रैगुण अग्नी ना लावे चवाती, जगत विकारां डेरा ढाहीआ। देवे दरस बहु बिध भांती, श्री भगवन नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड निवासी आपणा भेव खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा प्रीतम आदि निरँजण, जोत निरँजण रंग रंगाईआ। पुरख अकाला दीन दर्द दुःख भय भञ्जण, भव सागर पार कराईआ। नेत्र देवे नाम निधाना अंजण, अंध अंधेरा दए मिटाईआ। धुर दी धूढ़ कराए मजन, दुरमति मैल धुआईआ। आत्म परमात्म बण के सज्जण, सगला संग वखाईआ। लोकमात सन्त सुहेले आवे लभ्भण, गुर चेले जोड़ जुड़ाईआ। प्रभू प्यार दी दे के रंगण, रंगत इक्को इक वखाईआ। लेखे लावे साढे तिन्न हथ्थ काया बदन, बदी दा झगड़ा रहे ना राईआ। गृह प्रकाश दीपक जोती जगण, निरगुण नूर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिगुर शब्द शब्द सतिगुर इक्को बूझ बुझाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा प्रीतम पारब्रह्म, ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। जिस दा आदि जुगादि इक्को धर्म, अधर्मी रूप ना कोए दरसाईआ। जिस दा जुग चौकड़ी साचा कर्म, निहकर्मी आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दी धारों शब्दी शब्द ने ल्या जरम, विष्न ब्रह्मा

१६८५
२२

शिव ल्या प्रगटाईआ। निरगुण धार बख्श के सरन, सरनगति इक दृढ़ाईआ। जिस दी महिमा चार जुग दे शास्त्र पढ़न, अवतार पैग़म्बर गुर धुर दे ढोले गीत गाईआ। जिस दा इक्को इक सच्चा नाता सच्चा लड़न, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। उस दी मंज़ल हरिजन हरि भगत सुहेले सूफ़ी चढ़न, दूसर हथ्थ किसे ना आईआ। जिथ्थे ना कोई जरम ना मरन, चुरासी गेड़ ना कोए भवाईआ। ओह मालक ख़ालक प्रितपालक हरि दाता तरनी तरन, तारनहार इक रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा मालक इक मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। जो धुर दा देवे दान, दाता दानी अगम्म अथाहीआ। जिस दी सिफ्त सारे गाण, ढोल्यां गीत सुणाईआ। ओह जुग चौकड़ी खेले खेल महान, सतिजुग त्रेता द्वापर आपणा वेस वटाईआ। कलयुग अन्तिम मेटे कूड़ निशान, क्रिया कूड़ रहे ना राईआ। योधा सूरबीर बली बलवान, बलधारी ल्ए अंगड़ाईआ। शरअ दा रहिण ना दए कोए शैतान, छुरी करद हथ्थ ना कोए उठाईआ। सृष्टी दी दृष्टी अन्दर देवे दान, मेहरवान महिबूब आपणी मुहब्बत हक वरताईआ। आत्म परमात्म बख्श ज्ञान, अंध अंधेरा दे चुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सारे गाण, निरगुण निरगुण मिल के वज्जे वधाईआ। जन भगत सन्त कन्त कर परवान, हरिजन गुरसिख आपणे रंग रंगाईआ। चुरासी विच्चों कर पहचान, जगत विछड़े मेल मिलाईआ। सदी चौधवीं होवे हैरान, हैरत विच दुहाईआ। जिस शरअ बणाई इस्लाम, इस्म आज़म इक वखाईआ। जिन तीस बतीसा हदीसा दस्सी कुरान, हैरत विच दुहाईआ। ओह सब दा लेखा अन्त लग्गा चुकाउण, बचया रहिण कोए ना पाईआ। जिस दा नाम खण्डा गोबिन्द सूरा उठाए नौजवान, दो जहानां आप वखाईआ। उस दा हुक्म तेई अवतारां करना पए परवान, ईसा मूसा मुहम्मद सजदयां विच सीस झुकाईआ। जिस दा धर्म झुल्ले निशान, इक दस वज्जे वधाईआ। सो लेखा जाणे जीव जहान, जागरत जोत डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा लेखा वाचण वाला नहीं कोई इन्सान, अक्ल बुद्धी विच सके ना कोए समझाईआ।

✪ ११ पोह शहिनशाही सम्मत ७ धर्म कौर दे गृह पिण्ड डिगयाणा ज़िला जम्मू ✪

सतिगुर शब्द शब्द सतिगुर मीता, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। जिस दी आदि जुगादी रीता, जुग जुग वेस वटाईआ। लख चुरासी परखे नीता, चारे खाणी पड़दा लाहीआ। वेस वटाए अगम्म अनडीठा, अगम्मढ़ी कार कमाईआ। जिस दे

हुक्मे अन्दर सतिजुग त्रेता द्वापर बीता, आपणा पन्ध मुकाईआ। सो कलयुग खेल करे जगजीता, जगजीवण दाता अगम्म अथाहीआ। जिस ने पिछलीआं मेटणीआं लीकां, मार्ग इक्को इक दरसाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं कोलों कराए तस्दीका, शहादत नाम कलमे वाली भुगताईआ। धरनी धरत धौल दीआं पूरीआं करे उम्मीदां, आसा कलयुग नाल रखाईआ। चार जुग दे शास्त्र वेखे रसीदां, जो अक्खरां दिती वड्याईआ। अगला भेव दस्से पोशीदा, पोशीदा समझ कोए ना पाईआ। जिस नूं देवे हक तरतीबा, तरकीब आपणी इक दृढ़ाईआ। दीनां मज़्बां रहिण ना देवे हदीसा, हज़रतां तों परे करे पढ़ाईआ। लेखा पूरा करे बीस बीसा, ईसा लहिणा झोली पाईआ। सदी चौधवीं ला के बैठी नीझा, नेत्र नैण नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ खेल होणा अनडीठा, शास्त्र कहिण कोए ना पाईआ। सब ने भाणा मन्नणा मीठा, सिर सके ना कोए उठाईआ। जिस दा लेखा आदि जुगादी चिट्ठा, काली धार ना कोए बणाईआ। ओह मालक सब दा पिता, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जो वेस वटाए नित नविता, कलयुग अन्तिम लए अंगड़ाईआ। नौ खण्ड पृथमी वेखे खित्ता, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। जिस ने दीन मज़्ब दा बदल देणा सिक्का, हुक्म धुर दा इक वरताईआ। चुरासी पूरी करे इच्छा, निरइच्छत आपणा हुक्म सुणाईआ।
१६८७ ... १६८७
२२ ... २२
जन भगतां पा के धर्म धार दी भिच्छा, भगतां झोली दए भराईआ। जिस दा इक्को मार्ग ते इक्को विशा, विशेष आपणा रंग रंगाईआ। जिस दा किसे नूं याद नहीं पिछा, अग्गे कहिण कोए ना पाईआ। दो जहानां वंडे कोई ना हिस्सा, लाशरीक दा शरीक नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, जिस दा सिफ्त सलाही लेख जुग चौकड़ी लिखा, आदि कहिण कोए ना पाईआ।

✪ ११ पोह शहिनशाही सम्मत ७ मनिसटर छज्जू राम दी बेनती ते विहार होया पिण्ड डिगयाणा ज़िला जम्मू ✪

परम पुरख परमात्म बेपरवाह, बेअन्त श्री भगवन्त वड वड्याईआ। जन भगतां देंदा रहे सच्ची सलाह, धर्म दी धार धर्म जणाईआ। आत्म परमात्म दस्सदा रहे राह पारब्रह्म ब्रह्म मिल के वज्जे वधाईआ। धुर संदेशा देवे अगम्मी नाँ, नाउँ निरँकारा आप दृढ़ाईआ। नाता तोड़ के पिता माँ, चरण प्रीती सच समझाईआ। चरण कँवल बख्श के थाँ, थनंतर इक्को इक दरसाईआ। लेखा मुका थल अस्गाह, टिल्ले पर्बत पन्ध चुकाईआ। निरगुण धार पकड़ के बांह, सरगुण मार्ग इक

वखाईआ। धुर दा हुक्म मन्नणा करना वाह वाह, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहर नज़र इक उठाईआ। पारब्रह्म प्रभ देवणहारा दात, जन भगतां दया कमाईआ। अमृत बख्श बूँद स्वांत, जगत तृष्ना तृप्त कराईआ। त्रैगुण माया मेट के आंच, अग्नी तत दए गंवाईआ। सच प्रीत बख्श के नात, दर घर देवे माण वड्याईआ। काया अन्दरों मेट अंधेरी रात, साचा चन्द इक चमकाईआ। संदेशा देवे शब्द बहु भांत, मन मनसा दूर कराईआ। घर स्वामी पुछे वात, गृह मन्दिर खोज खुजाईआ। निरगुण धार मार के झात, पड़दा अन्तर दए उठाईआ। सति धर्म दी वखा प्रभात, प्रभाती आपणा राग सुणाईआ। झगड़ा मेटे ज़ात पात, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। धर्म धार दी दस्से रास, गोपी काहन खेल खिलाईआ। सीता राम हो के वसे पास, बनखण्ड दा डेरा ढाहीआ। लेखे लावे पवण स्वास, जो साह साह समाईआ। साचे भगतां पूरी करे आस, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जिस दा सति सरूप कदे ना होवे नास, नास्तिक वेखे जगत लोकाईआ। ओह देवे माण पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर होए सहाईआ। जिस दा सब तों वडा डूँघा खात, लेखा गणित ना कोए गिणाईआ। ओह हर हिरदे अन्दर रिहा वाच, वाचक हो के वेख वखाईआ। जिन्हां नूं सच धर्म दी बख्शी जाच, जाचक आपणे लए बणाईआ। उन्हां दा जन्म कर्म लेखे विच लावे आप, आपणी दया कमाईआ। चुरासी विच्चों करे बन्द खुलास, बन्धन बंध ना कोए बंधाईआ। मंज़ल बामंज़ल पूरी करे आस, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। परम पुरख सब दा सज्जण मीता, मित्र प्यारा बेपरवाहीआ। जो भगतां सन्तां जिज्ञासूआं परखे नीता, सन्यासीआं वैरागीआं त्यागीआं वेख वखाईआ। लेखा जाणे चार जुग ग्रन्थ शास्त्र मन्दिर शिवदुआले मट्ठ मसीता, काअब्यां फोल फुलाईआ। ओह मालक ख़ालक प्रितपालक बणे जीव जीअ का, जंत आपणे लेखे लाईआ। जिस दीआं नाम कलमे करन तस्दीकां, शहादत अवतार पैग़म्बर गुरु गुरदेव भुगताईआ। सो साचे भगतां आसा मनसा पूरीआं करे उम्मीदां, जो प्रभ दे मार्ग चलण चाँईं चाँईंआ। उहनां दी इक्को मंज़ल इक्को साची सीधा, जगत विकार अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे ज़िंदगी विच पिच्छे औखा तिन्न वार आया समां, मन कल्पणा कल्पणा नाल मिलाईआ। फेर मिट गई जगत वाली ग़मी रिहा कोए ना ग़मा, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। कूड़ क्रिया दी अन्दरों छडी तमां, तृष्ना विकार ना कोए वधाईआ। प्रभू दा प्यार आदि जुगादि नित नवां, नवित आपणा रंग रंगाईआ। जो लेखे लावे पवण स्वास दमां, दामनगीर इक अखवाईआ।

१६८८ २२

जिस ने लेखा पूरा करना कलयुग अन्तिम चौथे जुग चवां, चारों कुण्ट फोल फुलाईआ। उस दा मार्ग होणा रवां, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। ज़िंदगी विच ज़िंदगी खेल अवल्ला, मन बुद्धी समझ सके ना राईआ। जिस उत्ते किरपा करे परमात्म आत्म फड़ाए आपणा पल्ला, नाम धुर दी गंढ पवाईआ। दो साल चार महीने बाद ज़िंदगी विच फेर पैणा इक छोटा जेहा हल्ला, ओह हल्ल लैणा कराईआ। तुहाडा अन्तर सब नालों होणा अकल्ला, जगत वासना वाले साथी संग ना कोए रखाईआ। एह वक्त रहिणा घड़ी पला, साढे सत्त सत्त समझाईआ। तुहाडा हिरदा फेर निहचल होवे अटला, अणडोलत रूप बणाईआ। पिछले जीवण दा इस ज़िंदगी दा प्रभू दे प्यार विच मिले फला, फलीभूत दए कराईआ। दूई द्वैती मेटे सल्ला, अन्तर निरन्तर इक्को वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। जगत जीवण दा धर्म धार निशाना, जुग जुग भगतां मिले चाँईं चाँईंआ। तूं मेरा मैं तेरा इक्को होवे गाणा, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। हउमे हंगता तुटे हँकार माणा, निरमाणता हलीमी विच आपणा आप समाईआ। परम पुरख दा सदा मन्ने सिर ते भाणा, भय विच आपणा झट लँघाईआ। तिस उत्ते किरपा करे पतिपरमेश्वर श्री भगवाना, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जो सीता सुरती दा रामा, राम रामा इक अख्वाईआ। जो आत्म धार राधा दा कान्हा, घनईया अगम्म अथाहीआ। जो निरगुण निरगुण पहरे बाणा, वेस अवल्लड़ा आप वटाईआ। सो जीवण विच्चों जीवण देवे सच महाना, ज़िंदगी ज़िंदगी विच्चों बदलाईआ। जन भगतां भगती कर परवाना, परम पुरख परमात्म आपणे लेखे लाईआ। उहनां चित्रगुप्त ना लेख वखाउणा, धर्म राए ना दए सज़ाईआ। लोकमात मानस जन्म ना आवे हाना, मनुख मनुखता साचा संग निभाईआ। ममता विच होए ना कदे दीवाना, मस्ती कूड़ ना कोए हल्काईआ। अट्ठे पहर दिवस रैण घड़ी पल जिन्हां दा प्रभ चरण ध्याना, सो भगत सन्त जगत मार्ग सहिजे पार कराईआ। उहनां दरगाह साची सचखण्ड दवार मिले महल्ल अटल मकाना, जिथ्थे सूर्या चन्द दी लोड़ रहे ना राईआ। इक्को जोत तेज प्रकाश परम पुरख सुल्ताना, सो पुरख निरँजण आपणा नूर ज़हूर दए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा मालक इक अख्वाईआ। जगत जीवण संसार दा संग, तन वजूद वज्जे वधाईआ। जगत विरासत जगत दा रंग, मन मनसा नाल मिलाईआ। आत्म अन्तर परमात्म दा अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों जणाईआ। जो जगत जिज्ञासू कूड़ क्रिया दी मंज़ल जाए लँघ, मार्ग धर्म वाला अपनाईआ। ओह अन्तर निरन्तर वेखे परम पुरख दा नूरी चन्द, जो जोती जाता हो के डगमगाईआ। जिथ्थे जगत वासना हउमे हंगता जगत विकार

विभचार होवे खण्ड खण्ड, कूड़ क्रिया अन्त रहिण कोए ना पाईआ। मनुआ दहि दिशा ना उठ पावे डण्ड, कल्पणा भज्जे ना वाहो दाहीआ। तिस उपर किरपा करे प्रभ आप सूरा सरबंग, शाह पातशाह शहिनशाह आपणी दया कमाईआ। भाग लगावे भगतां दी आत्म सेज पलँघ, सच सिंघासण सोभा पाईआ। उहनां दा जन्म मरन दा आवण जावण दा लेखा हो जाए बन्द, प्रभ जोत मिल के जोत विच समाईआ। क्यों उन्हां दे अन्तर प्रभ दे प्यार दी पै जांदी गंढ, जिस गंढु नूं जगत वासना सके ना कदे खुल्हाईआ। भगत भगवान भगवान भगत इक दूजे दे प्यार विच सदा पाबन्द, पाबन्दी विच मार्ग चलण चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग हरिजन साचे सदा सदा सदा आप रंगाईआ।

✪ ११ पोह शहिनशाही सम्मत ७ लक्ष्मण सिँघ दे गृह पिण्ड सई कलां ज़िला जम्मू ✪

जन भगतां पूरी होवे भावना, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। मन हँकारी मारे कंसा रावना, राम रामा धुरदरगाहीआ। जीवण ज़िंदगी दा बणे ज़ामना, ज़ामनी शब्द वाली भुगताईआ। आत्म परमात्म पकड़े दामना, दामनगीर इक अख्वाईआ।
१६६० कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे अंधेरी शामना, शमां नूर जोत करे रुशनाईआ। सच सति दा दे ज्ञानना, कूड़ कुटंभ दा पन्ध मुकाईआ। १६६०
२२ भाग लगा के काया नगर खेड़ा ग्रामना, साढे तिन्न हथ्थ वेख वखाईआ। अमृत रस प्याए निजर जामना, जगत तृष्ना २२
कूड़ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि सज्जण बेपरवाहीआ। हरि साजण दाता गहर गम्भीर, गवर इक अख्वाईआ। जो जुग चौकड़ी बदलण वाला तकदीर तदबीर आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस दे हुक्म दी हक अकसीर, वेखणहारा चाँईं चाँईंआ। जो शरअ दे कटणवाला ज़ंजीर, भगतां बन्धन दए तुड़ाईआ। झगड़ा मेटे ग़रीब अमीर, आहला अदना इक्को रंग वखाईआ। जिस दी आसा रखी कबीर, पुनह पुनह सीस निवाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला साची करनी करे तामीर, कलयुग कूड़ी क्रिया जड़ उखड़ाईआ। जगत जहान दी बदल देवे तस्वीर, तसव्वर इक्को इक समझाईआ। हउमे हंगता रहिण ना देवे ख़मीर, खुमारी नाम वाली चढ़ाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई बख्शणहारा धीर, धीरज धर्म धार दृढ़ाईआ। वेख वखाणे पीरन पीर, अमाम अमामा नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे लए मिलाईआ। हरिजन मेलणहारा आप, हरि करता धुरदरगाहीआ। जगत वासना मेट कूड़ संताप, माया ममता मोह मिटाईआ। अंधेरा रहे ना कूड़ी रात, धर्म दा सच चन्द चमकाईआ। सच

प्रीती बख्श के दात, प्रीतम आपणा रंग रंगाईआ। अमृत देवे बूँद स्वांत, झिरना निजर इक झिराईआ। नेत्र खोल्ह के निज नैण आंख, लोचण लोयण दए बदलाईआ। घर स्वामी ठाकर मीता दर्शन देवे साख्यात, सज्जण सुहेला पड़दा आप उठाईआ। जन भगतां पुछे वात, काया मन्दिर अन्दर लेखा जाणे चाँई चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी घट निवासी पुरख अबिनाशी परम पुरख प्रभ आपणा रंग रंगाईआ। आपणा रंग रंगाए चलूल, हरि करता दया कमाईआ। जन भगतां कदे ना जाए भूल, अभुल्ल आप अख्वाईआ। जिस दा सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बदले ना कदे असूल, असलीअत विच मलकीअत सब दी वेख वखाईआ। जो चरण प्रीती बख्शणहारा धुर दी धूल, धूढ़ी टिक्के मस्तक ख़ाक रमाईआ। ओह सब दा जाणे आदि अन्त दा मूल, जन्म कर्म वेखे चाँई चाँईंआ। कूड़ी क्रिया जगत चिन्ता चिखा नूं मारे शंकर वाली त्रिशूल, त्रैगुण दा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। सच दा रंग प्रभ सद रंगदा, रंगत नाम वाली चढ़ाईआ। जन भगतां बेड़ा बन्न्हदा, जुग जुग होए सहाईआ। विछोड़ा होण ना देवे तन दा, तन माटी वज्जे वधाईआ। लेखा पूरा करे हरिजन जन दा, बण जणेंदी माईआ। प्रकाश वेखे नूरी चन्द दा, चन्न चन्द करे रुशनाईआ। जन भगतां सदा वक्त सुहञ्जणा होवे धन्न धन्न दा, धन्न प्रभू तेरी बेपरवाहीआ। झगड़ा मेटे मनसा मन दा, ममता मोह दए गंवाईआ। हरि सन्त सुहेला जन भगत सूफ़ी फ़कीर वणजारा नहीं जगत छप्परी छन्न दा, सति विच सति सच विच सच सच आपणा आप मिलाईआ।

१६६१ २२

✪ ११ पोह शहिनशाही सम्मत ७ देवा सिँघ दे गृह सई कैंप वाले पिण्ड बाड़ीआं विखे ज़िला जम्मू ✪

रिषीआं लहिणा पूरा होवे पिछला तिन्न जुगा, जुग चौकड़ी हरि वेख वखाईआ। जिन्हां कारन कलयुग अन्तिम पैंडा मुका, भज्ज भज्ज आपणा पन्ध मुकाईआ। अग्गे सब दा नाम होवे उग्घा, उगण आथण मिले वड्याईआ। जन भगतां फेर उजड़े कदे ना झुग्गा, झुग्गीआं दा पन्ध चुकाईआ। कलयुग दा अन्तिम धार दिता भुग्गा, भौंए धरनी सीस निवाईआ। जिस दा शास्त्र समझ सकण ना मुद्दा, आदि अन्त कहिण कोए ना पाईआ। सो पुरख अकाला खेल करे उत्ते बसुधा, निरगुण आपणा हुक्म जणाईआ। सब दा लेखा पूरा करे गुज्झा, गोबिन्द मेला धुर दे माहीआ। सति धर्म दी सच चढ़ाए सुबह, कलयुग रैण अंधेर मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ।

हुक्म कहे मैं मिलदा कदी कदी, कदीम दा मालक दया कमाईआ। हुण सेवा लग्गी चौधवीं सदी, सदमा वेखणा थांउँ थाँईंआ। शरअ उम्मत दी मेटणी बदी, बदकारी रहिण कोए ना पाईआ। चारों कुण्ट कूड़ कुड़यारी अग्ग लग्गी, बिना प्रभू तों सके ना कोए बुझाईआ। किसे लेखा समझ ना आवे वदी सुदी, नछत्र गृह पड़दा ना कोए उठाईआ। दीन दुनी मन कल्पणा होई लबी, लोभ हँकार विच तड़फाईआ। किसे मेला होणा ना जोत रब्बी, नूर विच नूर ना कोए समाईआ। सृष्टी मन वासना फिरे भज्जी, भजन बन्दगी सच ना कोए कमाईआ। ममता मोह तृष्ना नच्ची, सांतक सति ना कोए कराईआ। दर्शन होवे ना किसे उपर शाह रगी, नौ दवारे डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। रिषीआं लेखा होया पूरा, तेरां सौ सतासी सीस निवाईआ। बावन धार तक्कया इक हाज़र हज़ूरा, बल दवार दा पन्ध चुकाईआ। जिस दा जोत अगम्मी नूरा, नूर नुराना डगमगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे कूड़ा, कूड़ कुटंभ दए गंवाईआ। जन भगतां बख्श के चरण कँवल दी धूढ़ा, टिक्के मस्तक ख़ाक रमाईआ। प्रेम प्रीती चाढ़ के रंग गूढ़ा, जगत जहान दए वड्याईआ। किरपा निधान बण के जोबनवन्ता सूरन सूरा, सूरबीर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच देवे माण वड्याईआ। जन रिषीआं वसणा जगत घराणा, घर घर वज्जे वधाईआ। मिलणा जीवण जुगत दा माणा, सिर सिर हथ्थ टिकाईआ। आत्म ब्रह्म दा साचा मिले खाणा, जिस नूं चारे खाणी सीस निवाईआ। इक्को वार सिहा प्रभ दा भाणा, दूजी लोड़ रही ना राईआ। लेखा टुट्टया कूड़ जहानां, जहालत जगत वाली चुकाईआ। सच दवार कर परवाना, परवाना नाम देवे बेपरवाहीआ। जन भगतां गृह वसदा रहे मकाना, मुकाण दीन दुनिया दी देवे लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा मालक होवे सहाईआ। तेरां सौ सतासी रिषीआं लेखा रिहा चुक्क, चार कुण्ट खोज खुजाईआ। जगत दुखड़ा रिहा मुक, दर्दी हो के दर्द वंडाईआ। सच दुलारे बणा के सुत, सुत दुलारे गोद उठाईआ। किरपा कर अबिनाशी अचुत, परम पुरख देवे वड्याईआ। सीने नाल लगाए घुट्ट, विछोड़ा जगत रहिण ना पाईआ। आवण जावण जाए छुट, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। प्रेम प्यार विच देवे सब कुछ, वस्त अगम्म नाम वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन हर घट हरि प्रभ तन माटी अन्दर जाए घुस, राहों घुस्सयां आपणे नाल मिलाईआ।

✪ ११ पोह शहिनशाह सम्मत ७ बिशन सिँघ दे गृह पिण्ड बाड़ीआ ज़िला जम्मू ✪

रिषीआं मिले नाम सन्तोख, धीरज धर्म धार दृढ़ाईआ। जन्म दी करनी जन्म दा मोख, मुक्ती चरणां हेठ दबाईआ। कूड़ी क्रिया मेट के सोच, संजम इक्को इक दृढ़ाईआ। प्रभ दर्शन नूं सभे लोचन लोच, निज नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। जिस नूं झुकदे चौदां लोक, चौदां तबक सीस निवाईआ। उस प्रभू दा आदि अन्त दा इक सलोक, निरगुण निरगुण वज्जे वधाईआ। करे प्रकाश निर्मल जोत, जोती जाता इक अख्वाईआ। जिस दी कोई ना वरन गोत, दीनां मज़्हबां ना वंड वंडाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं बख्शे आपणी ओट, ओड़क मालक इक अख्वाईआ। सो शब्द नगारे ला के चोट, चोटी चढ़ के गुरमुखां वेख वखाईआ कूड़ी क्रिया अन्दरों कढ के खोट, खोटे खरे ल्ए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा लेखा कदे ना जाए औंत, अवतर आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ ११ पोह शहिनशाही सम्मत ७ कृपाल सिँघ दे गृह पिण्ड बाड़ीआं ज़िला जम्मू ✪

१६६३
२२

जन भगत कदे ना विनसे, विनसे सर्ब लोकाईआ। प्रभ प्रगट होए किरपा जिनसे, जन वज्जदी रहे वधाईआ। लेखा धवल बणे तिन्हसे, तिन्न लोक खुशी बणाईआ। जिस पन्ध मुकाए मिण मिण के, मिन्नतां अवतार पैग़म्बर गुरुआं मन्नीआं चाँईं चाँईंआ। ओह लेखे पूरे करे रात दिन के, दिन दिहाढ़े आपणे खेल खिलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कोलों सब कुछ छिन्न के, छिन विच लहिणा दए झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। जन भगतां सदा सुख दिवस रैण, दुःख नेड़ कोए ना आईआ। जिन्हां दा मालक मात पित ते इक्को साक सैण, जगत तृष्ना नाता कूड़ गए तुड़ाईआ। उन्हां नाम पदार्थ देवे अगम्मी रसाइण, जो जगत निखुट कदे ना जाईआ। जन्म कर्म दा पूरा करे लहण देण, देवणहार वड वड्याईआ। एकँकार कदे ना बणे तरफ़ैण, तरफ़दारी दी वंड ना कोए वखाईआ। जिस दा सन्त सुहेला सच परिवार ते इक महैण, बंस सरबंस आप तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर संदेशा धुर दी धार धुर शब्द आया कहिण, हुक्म धुर इक मनाईआ।

✪ ११ पोह शहिनशाही सम्मत ७ जम्मू संगत दे नवित जम्मू तों गुरदास पुर दे रस्ते विच ज़िला जम्मू ✪

जन भगतो तुहाडा पिछला कटया कष्ट, कुष्ट अग्गे रहे ना राईआ। जगत कर्म दा लेखा कीता नष्ट, नशा इक्को नाम चढ़ाईआ। तुहानूं चुक्कां धुर दे दस्त, हथेली नाम वाली टिकाईआ। बख्शिश करां ओह वस्त, जेहड़ी लम्भयां हथ्थ ना आईआ। एह बावन दी बल दवारे खेल सी असचरज, जो बिरध हो के आपणी कार भुगताईआ। तुहानूं हस्सदयां हस्सदयां बख्शी सी कलयुग दी ग़रज़, ग़रज़ आपणी नाल मिलाईआ। हुण खेल एह असचरज, अचरज लीला रिहा वरताईआ। तुसीं सूरमे बहादर बणे मर्द, हस्स हस्स के दिता वखाईआ। तुहाडा चेहरा नहीं होया ज़रद, ग़मी चिन्ता ना कोए सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। जन भगतो तुहाडी टुट्टी गंढी, गंढ आपणे नाल पवाईआ। लेखा मुकाया बावन पखण्डी, जो भेखाधारी रूप बदलाईआ। आपणी पूरी कीती संधी, जो बिना अक्खरां दिती पाईआ। हुण पिछली घड़ी लँघी, औखी घाटी ना कोए चढ़ाईआ। तुसां गाया रसना दन्दी, सिफ्तां नाल शनवाईआ। पुरख अकाल छड सिंघासण जगत मंजी, डेरा भगतां चरणां विच रखाईआ। तुहानूं आरज़ू भोगणी पई लम्बी, लम्मा पै के तुहाडा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ।

बावन तक लै आपणी अक्खीं, बिन नैणां नैण उठाईआ। जन भगतां लाज रखी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। रुलणा पए ना इन्हां कक्खीं, कक्खां विच ना कोए सुटाईआ। जिन्हां दी कीमत नहीं कोई जगत जहान लखी, कोटन कोटि वंड ना कोए वंडाईआ। उन्हां दी धर्म दी धार वेख पट्टी, की लेख रही जणाईआ। जिन्हां दी अन्तर आशा फट्टी, तृष्ना रही कुरलाईआ। ओह बण के सूरे हठी, बल रहे वधाईआ। उन्हां दी कष्टणी कट इक्ट्ठी, एका दूजा नाल मिलाईआ। पैणा पए ना कलयुग भट्ठी, तत्ती वा ना लागे राईआ। तूं साहिब स्वामी कमलापती, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। हुण पिच्छा दे ना नस्सीं, करवट मात बदलाईआ। जेहड़े बज्झे तेरे हुक्म दी विच रस्सी, रस्ता उन्हां इक्को इक वखाईआ। उहनां दी उजड़ी फेर वसे बसी, साची बस्ती देणी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच देवणहार आप अख्वाईआ।

१६६४ २२

बावन कहे मैं भगतां दा पुजारी, धूढ़ी भगतां ख़ाक रमाईआ। मेरी कोटन कोटि वार निमस्कारी, निव निव आपणा आप झुकाईआ। जुग जुग जावां बलिहारी, बलिहार आपणा आप कराईआ। जिन्हां दी धर्म दी सच्ची यारी, नाता प्रेम वाला वधाईआ। सच खून दी प्रीती गाड़ी, गढ़ कूड़ा जगत तजाईआ। आप फिर के विच उजाड़ी, ढोले प्रभ दे रहे गाईआ। खुशी विच किसे नहीं किहा साडी किस्मत माढ़ी, हस्स हस्स आपणा आप झट लँघाईआ। इक्को जेहा माण पुरुष ते नारी, बालां बिरधां मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। बावन कहे मेरे लाल भरे मूल ना कलयुग चिक्कड़, कूड़ नज़र कोए ना आईआ। सब दा लेखा पूरा होवे जे लालो नानक धार खवाए खिच्चड़, मंडा हलवा ना कोए बणाईआ। नाल गंढे दे देवे सिकड़, बाहरली खल्ल लुहाईआ। कपड़े लाह के बणे मित्र, तन लांगढ़ इक सुहाईआ। सतिगुरु दा हथ्थ विच फड़ के छित्तर, सीस नौ वार झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। बावन कहे धुर दा खेल सुन्दर साँवल, साँवरीआ आपणी खेल खिलाईआ। जो आदि जुगादी बाबल, बाबल बेपरवाहीआ। जिस खेल खिलाउणा विच काबल, काबलीअत सब दी दए गंवाईआ। इन्साफ़ नाल करे आदल, अगली आपणी कार भुगताईआ। कलयुग अंधेरा वेखे बादल, नव सत्त खोज खुजाईआ। लालो दे गृह खावे मोठ ते चावल, दोहां सांझी गंढ पवाईआ। फेर हुक्म दस्से मुर्शद कामल, की आपणी कार भुगताईआ। आह वेखो हुक्म दा बध्धा प्या बावन, ब्राह्मण आपणा बल गंवाईआ। जिस पल्लू बन्नाया भगतां भगवन नाल दामन, दामनगीर इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। ओ ब्राह्मणा बावना जन भगतां दी धूढ़ी पा लै विच मुख, चरणां वाली दन्दां नाल घसाईआ। फेर उन्हां दे प्रेम दी गा तुक, नाता आपणे नाल जुड़ाईआ। भार खुशीआं नाल चुक्क, सिर सर टिकाईआ। जिन्हां दा दुःख कलेश दा पैंडा जाए मुक, अग्गे रोग ना कोए सताईआ। जगत तृष्ना मेट के भुक्ख, भुक्ख्यां दे रजाईआ। ना रहे अंधेरा घुप, सच कर रुशनाईआ। तूं भगतां दा बध्धा सकें ना छुट, प्रेम दी गंढु रहे बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। खिचड़ी कहे मैं वी बल दे दवारे दा पदारथ, जिस नूं बावन ग़ौर नाल तकाईआ। एसे नूं वड्याई दिती नानक यथार्थ, यथा योग सिफ्त सालाहीआ। जिस विच लालच दा नहीं किसे स्वारथ, लोभ मोह ना कोए हल्काईआ। एह ओह गुरमुख खांदे जेहड़े भगत बणदे पारस, भगवन विच समाईआ। एस नूं तड़फदे गए आरफ़, लम्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। जाण सक्या ना कोई विच मारफत,

माहर रोवन मारन धाहीआ। एह इक्को दात जन भगतां मिले वास्तक, जो वास्ता प्रभ दे नाल जुड़ाईआ। एह लच्छमी विष्नूं नूं देंदी सी उत्ते सेज बाशक, उँगलां नाल चटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इन्हां भगतां दी आपे कर सफ़ारश, जगत सफ़ारश तों बिना बाहर कढ्ढाईआ।

✪ ११ पोह शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

खिचड़ी कहे मैं सुणावां अगम्मी नादा, नाद धुरदरगाहीआ। बावन बल दवारे सिर्फ़ मैनूं सी खाधा, अस्वमेध जग दा हिस्सा मेरी झोली पाईआ। नाले इशारा कीता भगत भगवान दा मिल के होवे वाधा, जुग जुग वज्जदी रहे वधाईआ। सप्तस ऋषीआं मेरा अराधना अराधा, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। राम सीता पहले दिन बनबास विच मेरा ल्या स्वादा, रसना रस रस नाल चखाईआ। धर्म प्यार कीता मेरे नाल कृष्ना राधा, जिस वेले राधा कृष्न पहली वार इक दूजे नूं मिल के खुशी बणाईआ। मूसा मेरे प्यार विच जागा, मुहब्बत विच मुख आपणे ल्या लगाईआ। हज़रत ईसा नूं जिस दिन नूर इलाही लाधा, उस दिन मैनूं खा के खुशी बणाईआ। मुहम्मद चार यारी विच जिस वेले कीता वाधा, मैनूं रिंन के न्याज़ दिती वरताईआ। नानक ने लालो दवारे मैनूं मारी आवाज़ा, कोदरे नालों परे ध्यान लगाईआ। तेग़ बहादर ने दिल्ली जाण लग्गयां मैनूं खाधा, खा के खुशी मनाईआ। गोबिन्द ने मेरा साधन साधा, साधना दिती दृढ़ाईआ। जिस वेले पुरी अनन्द त्यागा, खिचड़ी रिंन के सब नूं दिती खवाईआ। मैं कूक के मारी आवाज़ा, ज़ोर ज़ोर सुणाईआ। अगला खेल दस्स वाले बाज़ा, बाज़ां वाले दे दृढ़ाईआ। गोबिन्द हस्स के किहा जिस वेले आवे शहिनशाह धुर दा राजा, पातशाह बेपरवाहीआ। दीन दुनी दा बदले समाजा, मज़्हबां डेरा ढाहीआ। लेखा देवे खिजर ख्वाजा, नीर दे पीर रंग रंगाईआ। धरनी धवल धौल उत्ते करे वाधा, वाहवा आपणा हुक्म वरताईआ। सब दा इष्ट करे सांझा, वखरी वंड ना कोए वंडाईआ। जन भगतां रखे लाजा, निरगुण धार होए सहाईआ। सब दीआं आपणे हथ्थ रखे वागां, नव सत्त डोरी आप उठाईआ। फेर तेरे खिचड़ीए वड वड होवण भागा, भागवान तैनूं दए बणाईआ। सन्त सुहेला सोया उठे जागा, जागरत जोत करे रुशनाईआ। वेस वटाए प्रगट हो के देस माझा, मेहरवान आपणा रंग रंगाईआ। लहिणा देणा पूरा करे लंगड़ा लूल्हा अपहाजा, भुक्ख्यां गोद उठाईआ। गुरमुखां सोयां मार आवाज़ा, सुत्तयां लए जगाईआ। उस वेले ज़रूर कलयुग दा झक्खड़ झुल्ले झांजा, जगत अंधेरा धूढ़ उडाईआ।

पुरख अकाला दीन दयाला सब दा इष्ट दृष्ट विच करे सांझा, सांझीवाल मानव मानुख मानस लए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ । खिचड़ी कहे मेरा पकवान, पक्की तरह दयां समझाईआ। जिस नूं भोग लगाए श्री भगवान, हरि करता धुरदरगाहीआ। सति धर्म दा बणाए विधान, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। जिस नूं अवतार पैग़म्बर गुरु करन परवान, सीस जगदीश इक झुकाईआ। जिस सब दा सांझा करना पीण खाण, सूर गाँ दी वंड ना कोए वंडाईआ। धर्म दी धार बख्शे दान, दाता दानी दया कमाईआ। खिचड़ी कहे मेरी सेवा मेरा साहिब करे परवान, परम पुरख प्रभ आपणे रंग रंगाईआ। जिस दा लालो दा लालो नाल निशान, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ। खिचड़ी कहे जन भगतो मैं सब नूं खिचदी, एका दूआ नज़र कोए ना आईआ। आपणी धार वेखो अन्दर विच दी, पड़दा पड़दयां विच्चों उठाईआ। तुहाडी आत्म रूप साचे सिख दी, जो सतिगुर सिख्या विच समाईआ। जिस दी महिमा चार जुग दी बाणी लिखदी, कलम शाही नाल वड्याईआ। तुसां सदा पूजा करनी इक दी, इष्ट इक्को दए मनाईआ। आसा तोड़नी पथ्थर इट्ट दी, पाहन पूजण कोए ना जाईआ। तुहाडी आसा पूरी हो जाए नित दी, अग्गे हवस रहे ना राईआ। धार मिलणा उस परमेश्वर पित दी, जो पारब्रह्म अख्वाईआ। एह वड्याई ग्यारां पोह वार थित दी, घड़ी पल नाल सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मुहब्बत देवे साचे हित दी, हितकारी हो के आपणे रंग रंगाईआ।

१६६७
२२

✪ २१ पोह शहिनशाही सम्मत ७ रत्न कौर फराला दे नवित हरि भगत दवार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

रतन कौर सीता दी दासी, सीना पिछला नाम सोभा पाईआ। नित करदी हुन्दी सी नाल हासी, खुशीआं नाल दिल परचाईआ। कटोरा भर के देंदी सी छाछी, निमक संग छुहाईआ। नित नित नित रखदी सी आसी, आसा अन्दर इक बणाईआ। इक दिन खुशीआं दी आई राती, रैण भिन्नड़ी वड वड्याईआ। प्रेम प्यार नाल कीती बाती, बचन कहि के दिता सुणाईआ। सीआ मेरा दिल करदा मैं लग्गां तेरी नाल छाती, गलवकड़ी एका पाईआ। झट सीता ने किहा आह लै मेरी पाती, पत्रका दयां वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। दासी हस्स के कीता मखौल, सीआ दिता दृढ़ाईआ। नी मैं पंडत बणां कि रौल, पांधा रूप बदलाईआ। निगह

मारां उपर धौल, धरनी खोज खुजाईआ। तेरी रुतड़ी जाए मौल, खुशीआं रंग रंगाईआ। जनक सपुत्री ना रहीं अनभोल, सति सच नाल लै अंगड़ाईआ। तेरा वर सारे रहे टटोल, भज्जण वाहो दाहीआ। मैं एसे करके आई तेरे कोल, कहि के दयां दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। दासी कहे मैनूं दे कुछ इनाम, मैं सच दिता जणाईआ। सीता हस्स के किहा मैनूं वरे ते वरे मेरा राम, दूजा नज़र कोए ना आईआ। प्रेम प्यार दा देवे जाम, खुशीआं रंग रंगाईआ। पल्लू नाल बन्न्हे दाम, गंढु इक रखाईआ। लेखे लावे माटी चाम, चम्म दृष्टी रहे ना राईआ। जिस फेर बणना घनईया शाम, शाम शामा बेपरवाहीआ। सूरबीर हो जवान, आपणी करनी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। दासी कहे सीता मेरी सच दस्स दास्तान, सच सच सुणाईआ। किस बिध नाता मिले नाल भगवान, भगवन मेला सहिज सुभाईआ। सीता अन्तर मारया ध्यान, निगह निगह विच्चों बदलाईआ। तूं हुण छड जाणा जहान, मेरे सुअम्बर दे नौ दिन पिच्छों जगत विच लँघाईआ। फेर द्वापर पिच्छों कलयुग होवे प्रधान, आपणा बल प्रगटाईआ। प्रगट होवे राम दा राम, रमईआ इक अख्वाईआ। तेरे तत दा तत बणाए निशान, पंचम जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। सीता कहे मेरे अन्तर आई विचार, सच दयां सुणाईआ। तेरा जन्म होणा दूजी वार, लोकमात वज्जे वधाईआ। कलि कल्की लए अवतार, निहकलंका अगम्म अथाहीआ। फेर छडणा पए संसार, नाता दुनी नालों तुड़ाईआ। दासी रो पई ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। उस वेले मेरा होवे कौण सहार, लोकमात संग बणाईआ। गल गलवकड़ी लई डार, घुट्ट के गले लगाईआ। सच दस्स मेरी सरकार, सति नाल समझाईआ। मेरा तेरे नाल प्यार, विछोड़ा अग्गे रहे ना राईआ। तूं मेरी मददगार, मैं तेरी सेव करके झट लँघाईआ। सीता हस्स के किहा कमलीए ओह खेल अपर अपार, अपरम्पर आप कराईआ। तेरा मेरे नालों वक्खरा होणा घर बाहर, धीआं पुत पती नाल सुहाईआ। तेरा बंस होवे परिवार, सरबंस रंग रंगाईआ। मैं इक दी होणा ख़िदमतगार, ख़ादम हो के निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पर तेरा भुल्ल ना जावां इकरार, कौल तेरे नाल रखाईआ। जिस वेले तेरा अन्तिम समां आवे विच संसार, सखा संग ना कोए निभाईआ। मात पित दए ना कोए अधार, पुत्र धीआं ना गंढु पवाईआ। गृह दिसे ना कोए दवार, घरबार बंक तजाईआ। मैं तेरा लहिणा ज़रूर पूरा करां पूरब कर्म विचार, विचरण दी लोड़ रहे ना राईआ। मेरे अन्तर सुरती देवे आप निरँकार, सूझ पिछली दए समझाईआ। मैं खुशी विच खुशी दी करां निमस्कार, हस्स हस्स के सीस निवाईआ। तेरे पती नूं लवां संग

उठार, साचा संग जणाईआ। प्रभू मोई नूं फेर जुआल, मरन दा लेखा रहे ना राईआ। एह मेरी कलयुग दी वखरी चाल, चल के दयां समझाईआ। मेरे साहिब दा हल्ल करे ना कोए सवाल, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। पर दासी मेरे वी गुस्से दी झल सके कोए ना झाल, झलक आपणी दयां जणाईआ। जितनां प्रेम मारे उछाल, उतना गुस्सा वी कुद्दे चाँईं चाँईंआ। मैं वी ज़रूर रखांगी तेरा ख्याल, भुल्ल विच कदे ना आईआ। उस दिन सीता ने आपणी दासी नूं आपणे घर ल्या सवाल, प्रेम प्यार विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सीता दी धार रत्नो दी रत, सतिगुर रत्त नाल रत्न निशान देणा लगाईआ। जिस दी लज्ज रखे कमलापति, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। तृप्त सज्जी उँगल विच्चों खून कढ लै नाल आपणे हथ्थ, नोक कलम नाल छुहाईआ। एह वेला फेर नहीं आउणा वत्त, बेवतना वतन वाला ना कोए बणाईआ। धर्म दी धार इक वार रसना नाल चट्ट, मुख पंज वार छुहाईआ। तेरे उधार पिच्छे रत्न कौर दे पंज तत लए रख, रक्ख्या कीती चाँईं चाँईंआ। अग्गे तुहाडे प्यार नूं होण नहीं देणा वक्ख, वक्खरी गंढ ना कोए बंधाईआ। एसे कारन तेरी धर्म दी कुटीआ विच दिता रख, पिछले जन्म दा लेखा पूर कराईआ। पिछले लहिणे तों केहड़ा जाए नठ, भज्जयां पल्लू ना कोए छुडाईआ। भगतां दा गुस्सा प्रभ दा प्रेम वाला पट्ट, रेशम रेशयां तों बाहर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस अन्दर वड़ के बेनन्ती करन दी दिती मति, ओह मति नूं गुरमति दए बणाईआ।

तरिप्त गुरमीत तेरा इक पैसा, पैसे दी मुहताजगी दए गंवाईआ। तेरा घर वसदा रहे ऐसे दा ऐसा, जैसा तरिपत ने दिता वसाईआ। लेखा चुक्कया जन्म जन्म संसा, सहस गुण अग्गे मिले वड्याईआ। जन भगतो तुसीं प्रभू दा बण गए ओह बंसा, जिस बंस दा नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। बेशक पुरख अकाल भुक्खा नन्गता, भगतां दे पैस्सयां नाल आपणा झट लँघाईआ। कुछ लेखा एस कापी तों कढ के मंगदा, हिसाब करके देणा समझाईआ। इस तों वद्ध जेहड़ा हिसाब सतिगुरु दा लँघदा, लेखा करके सतिगुरु ख़ज़ाने विच टिकाईआ। भगत भगवान लहिणा कदे ना होवे अड्ड दा, जिन्हां दा जन्म मरन मरन जन्म प्रभ दे विच समाईआ। सदा सदा सदा बच्चयो तुहाडे प्यार दा नग़ारा रहिणा वज्जदा, जिथ्थे दुनिया दी माया वाला पुज्ज सके ना राईआ। जन भगत प्रभू दा दीपक जगदा, जुगो जुग होए रुशनाईआ। सदा याद रखणा दिहाढ़ा अज्ज दा, इक्की पोह गंढ पवाईआ। तुहाडा इक पैसा प्रभू दे सीस उत्ते सजदा, जिस दे नाल खुल्ल्हे गफ्फे तुहानूं दए

१६९९
२२

वरताईआ। बच्चयो तुहानूं चार जुग फिरे लभ्भदा, सचखण्ड विच्चों ल्या के मातलोक आपणे नाल मिलाईआ। दो जहानां विच्चों अवाज़ा मार के सद्द दा, आओ रुसिओ तुहानूं लवां मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तुहाडा लेखा रखया सदा आपणी यद्द दा, राजा बल सचखण्ड दवार धर्म दी धार दए गवाहीआ।

✪ २४ पोह शहिनशाही सम्मत ७ साधू सिँघ बस्ती तेग़ा सिँघ वाले नवित हरि भगत दवार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

सदी चौधवीं कहे मुहम्मद सुण संग चार यार, यार यारां दयां जणाईआ। हुक्म सुण अगम्मी परवरदिगार, की ख़ालक रिहा सुणाईआ। लहिणा देणा जाणे जगत संसार, भेव अभेद रहे ना राईआ। हाज़र होणा धरनी उत्ते हरि भगत दवार, भज्जणा चाँईं चाँईंआ। निउँ के बिना सजदे करनी निमस्कार, सीस जगदीश झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। मुहम्मद कहे सदी चौधवीं मैं फिरा वांग फ़कीरां, फ़िकरा अल्ला अल्ला अल्ला गाईआ। मैं खेल वेखणा बेनज़ीरा, जो नज़रां तों ओहले बैठा डेरा लाईआ। उस दा हुक्म अनोखा जो साहिब पीरां दा पीरा, पीर बेपरवाहीआ। चार यारी तों परे पंजां प्यारयां मस्तक विच लगावे पंज पंज लकीरां, पंजां रंगां नाल वड्याईआ। पंजां दरबारीआं कोल होवण पूरन दीआं तस्वीरां, सिँघ पूरन हथ्थ उठाईआ। पंजां लिखारीआं कोल हथ्थकड़ीआं होण ज़ंजीरां, संगल शरअ वाले फड़ाईआ। दो गुरमुखां रूप धरया होवे अमीरां, दो फ़कीरां हाल दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद वेख छब्बी पोह दी राती, रातरी वेख वखाईआ। की खेल पुरख बिधाती, पारबर्हम वड वड्याईआ। इक संदेशा बेख़बरां दस्सां हुक्म धुर दे कमलापाती, जो बिन पत्रका रिहा दृढ़ाईआ। पंज गुरमुखां पूरन लिख्या होवे उपर छाती, पंजे मालवे वाले नज़री आईआ। मल सिँघ साधू सिँघ दा होवे साथी, राम सिँघ नाल मिलाईआ। हरबंस सिँघ जट्ट दी होवे ज़ाती, सौदागर सिँघ धुर दी गंढ पवाईआ। जिन्नां दे हथ्थ विच होवे इक इक लाठी, जो गोबिन्द अन्त मालवे गया टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा सजदा मालक अमीन, सीस जगदीश झुकाईआ। जिस दी पैग़बरां पढ़ी तालीम, तुलबे जगत अख्वाईआ। मज़्हबां कीती तक्सीम, जिस्मां वंड वंडाईआ।

ओह शहिनशाह अज़ीम, आलीजाह बेपरवाहीआ। जो आदि दा आदि कदीम, कुदरत दा मालक इक अख्वाईआ। किसे दे होया ना कदे अधीन, सदा सदा सद आपणा हुक्म वरताईआ। कोई समझे ना नर मदीन, मुद्दा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी खेल आप खिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं लावां मूल ना डेरी, डेरे वाल्यां दयां सुणाईआ। मेरे महिबूब ने पाई फेरी, आपणा रूप अनूप प्रगटाईआ। मिट्टी दी कनाली विच मेरी गोली धरेगी टाहणी बेरी, आपणे हथ्थां नाल रखाईआ। मुख लाल रुमाल लै के दुर्गा वल्ल तकेगी नाल दलेरी, नेत्र लाल लाल उठाईआ। फेर हथ्थ विच फड़ के नूह दी बेड़ी, मेरे अग्गे दए टिकाईआ। फेर पंज वार चार कुण्ट लए फेरी, ताली मार के दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा होवे इक चोबदार, नौजवान सोभा पाईआ। अमरजीत होवे ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर दृढ़ाईआ। वस्त्र तन करे श्रृंगार, सोहणा रंग चढ़ाईआ। पिट्ठ ते पुट्ठी होवे तलवार, नोक असमान वल्ल वखाईआ। रणजीत सिँघ माझे वाला हो हुश्यार, काली पगड़ी सीस टिकाईआ। करके निमस्कार, नौ कदम ते साहमणे बैठे चाँईं चाँईआ। मोता सिँघ आपणी पगड़ी पाड़, दो टुकड़े कर नाज़र सिँघ हथ्थ फड़ाईआ। एह खेल सच्ची सरकार, हरि करता आपणे हुक्म विच भुगताईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा खेल तक्कयो खुशी नाल प्यार, प्रेम प्रीती विच जणाईआ। मेरा रूप नहीं कोई जगत स्त्री नार, बीवी वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को नूर नूर उज्यार, जोत जोत डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दा हुक्म सति दा मालक आपणे हथ्थ रखाईआ।

१७०१ २२

✪ २५ पोह शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल रात नूं ज़िला अमृतसर ✪

पोह कहे मेरा दिवस दिहाढ़ा प्रविष्टा पंझी, दो पंज निरगुण सरगुण तत नाल वड्याईआ। जगत जहान नेत्र रोंदा वेखां अंझी, जलधारा आंसू वहिण वहाईआ। प्रकाश दिसे ना सवेर सञ्झी, अंधकूप कूड़ लोकाईआ। जगत जिज्ञासूआं अन्तर होवे रंजी, सांतक सति ना कोए वरताईआ। नेत्रहीण लोकाई दिसे अंधी, निज नेत्र लोचन अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। मन कल्पणा वासना दिसे गंदी, सुगंध महक ना कोए महकाईआ। कलयुग आयू रहे ना लम्बी, वड्डी वड ना कोए चतुराईआ।

धरनी धवल शरअ कोलों कम्बी, हिल हिल के रही वखाईआ। प्रभू झगड़ा मेट दे काया माटी चम्मी, चम्म दृष्टी देणी बदलाईआ। अग्गे धार दस्सणी नवीं, नव नौ चार दा पन्ध मुकाईआ। तूं निरवैर पुरख अवतार चवी, चौबीसा जगदीशा हरि अख्वाईआ। धुर शब्द संदेशा अगम्मा कवीं, जिस नूं शास्त्र सिमरत कहिण कोए ना पाईआ। जन भगतां अन्तर निरन्तर रवीं, काया मन्दिर अन्दर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, हरि वड्डे वड वड्याईआ। पोह कहे मेरा पंझी दिस दिहाढ़ा, खुशीआं नाल जणाईआ। खेल करे अगम्मी लाड़ा, हरि करता बेपरवाहीआ। जिस ने अवतार पैग़म्बर गुरुआं मन्नया हाढ़ा, रहमत रहीम रहमान कमाईआ। फिरे दरोही विच जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, उच्चे टिल्ले वेख वखाईआ। माण रहे ना जंगल झाड़ा, चोटीआं रोवण मारन धाहीआ। धरनी धवल धौल तके अखाड़ा, चारों कुण्ट खुशी बणाईआ। लग्गे अग्ग बहत्तर नाड़ा, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पंझी पोह कहे मैं तकां पोह छब्बी, शबेरोज़ ध्यान लगाईआ। नूर वेखां अगम्मां रब्बी, जोती जाता डगमगाईआ। जिस लहिणा मुकाउणा चौधवीं सदी, सदके वारी घोल घुमाईआ। जिस वेले दिहाढ़ी लँघी अद्धी, इक इक मिले वड्याईआ। पंजां लिखारीआं पग्ग सीस होवे बद्धी, हथ्थ कलम नाल सुहाईआ।
१७०२ गोली ने फिरना सज्जी चुक्क के अड्डी, पब्ब ज़िमीं नाल टकाईआ। कोल माचस रखणी डब्बी, तीलां नौ नौं सुहाईआ। हरिसंगत १७०२
२२ इक्ट्ठी होणी सभी, वक्त दिन दा ढाई वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा २२
हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। छब्बी पोह कहे मेरे प्रेम दी तकणी छहिबर, सति सच लगाईआ। इक्को मालक तकणा रहिबर, जो रहमत हक कमाईआ। जिस दा निशान होणा खैबर, दर्दी हो के दर्द वंडाईआ। जिस नूं याद कीता अली हैदर, नाअरा हक हक सुणाईआ। उस दा खेल होवे नन्गी पैरीं चले पैदल, पन्ध दीन दुनी मुकाईआ। जिसदे चरणां हेठ गोली ने लिख के रखणा अक्खर बैतुल, मुक्दस नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, धुर दी करनी धुर दा करता धुर हुक्म नाल आप वरताईआ।

✪ २६ पोह शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल दिन दे ढाई वजे अमृतसर ✪

सतिगुर शब्द कहे मेरे प्रभ दा खेल न्यारा, निराकार निरँकार आप चलाईआ। आदि पुरख बण के आपणी धारा, सो पुरख निरँजण आप चलाईआ। विष्नूं विश्व दे भण्डारा, अतोट अतुट आप रखाईआ। निरगुण सरगुण हो ज़ाहरा, परमात्म आत्म खेल खिलाईआ। चारे खाणी कर त्यारा, विष्न ब्रह्मा शिव सेव समझाईआ। रूप धर आप अवतारा, अवतर आपणा राह समझाईआ। धुर दा नाम कर उज्यारा, बिन उजरत मात प्रगटाईआ। लेखा जाण सच्ची सरकारा, सच सति दा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा साहिब इक अटल, हरि वडा वड वड्याईआ। जिस माण दवाया राजे बलि, बल आपणा विच रखाईआ। बावन हो के आया चल, भेखाधारी भेख वटाईआ। नेत्र नैण ना खोल्या पल, मूंद के बैठा आसण लाईआ। उहदे कोई ना तके वल, ग़रीब निमाणा हो के आसण लाईआ। किसे पुच्छया नहीं अन्न जल, अग्गे हो ना कोए उठाईआ। उस झट शब्दी धार मारया सल्ल, राज राजान दिता हिलाईआ। किसे लेखे नहीं लग्गणा चुरासी जून अन्न खवाया दल, दलिद्री सारे नज़री आईआ। तेरे नाल हुन्दा छल, छलधारी आपणी कार भुगताईआ। ओने चिर नूं झट बलि दा सुत लै के आ गया फल, बाल अवस्था नंन्ही सोभा पाईआ। हस्स के किहा एह बुढ्ढा ब्राह्मण बैठा दवारा मल्ल, करवट आपणी ना कोए बदलाईआ। मैनूं उस दे वल्ल घल्ल, हुक्मे अन्दर जावां चाँईं चाँईंआ। मेरा दिल करदा उसे दे नाल जावां रल, मिल के झट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। बल किहा सुण नन्हे बच्चे, सच दयां दृढ़ाईआ। तैनूं नहीं जगत जहान दे पते, की पतिपरमेश्वर आपणी खेल खिलाईआ। ओह वेख मेरे अस्वमेध जग दे भण्डारे पदार्थ सारे तते, रिषी मुनी खा के खुशी मनाईआ। चारों कुण्ट आउंदे नट्ठे, भज्जण वाहो दाहीआ। प्रेम विच गाउंदे सभे, आत्म धार सोभा सच सुणाईआ। छोटा बाला खिड़ खिड़ा के हस्से, ताली हथ्थां नाल वजाईआ। ऐ राजन जगत पिता, मैनूं इन्नां विच्चों मेरा साहिब मूल ना लभ्भे, नेत्र रो के दिता वखाईआ। तेरा किस बिध संपूरन होवे यग्गे, जिस नूं भोग लगाउण वाला नज़र कोए ना आईआ। जे प्रभू दे भगत, क्यों नहीं इन्नां दा साहिब इन्नां विच फबे, रल मिल के खुशी मनाईआ। मेरे अन्दर लग्गी अग्गे, मैं कूक कूक सुणाईआ। मैनूं दस्स सच दी वज़े, वजूहात दे समझाईआ। मैं तेरे अग्गे दोवें हथ्थ बध्धे, बाला रो के मारे धाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। छोटा बाला खिड़ खिड़ा के हस्सा, हस्स के दिता जणाईआ।

राजन कोलों ज़ोर दी नस्सा, भज्जया वाहो दाहीआ। जा के बावन नूं मारया जफ्फा, गलवकड़ी लई पाईआ। मेरे प्रभू मैनूं होईं ना ख़फ़ा, गुस्सा गिला ना कोए रखाईआ। मैनूं इयों दिसया बिना तेरी किरपा बलि नूं होणा नहीं कोई नफ़ा, खा पी के सारे जावण वाहो दाहीआ। ओसे वेले बावन ने उहदा हथ्थ पकड़या पक्का, घुट्ट के दिता वखाईआ। तेरा लेखा लिखां रता, रत्न अमोलक दयां बणाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त लेखा चुकाए कोए ना हथ्थो हथ्था, झोली सके ना कोए भराईआ। तूं बलि दे बेटे मेरी लिखणी फेर कथा, जिस नूं कथ सके कोए ना राईआ। सच प्रेम दा लैणा रसा, बिन रसना रस चखाईआ। उठ वेख लै खेल अक्खां, अक्खीआं तों परे दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। छोटे बाले किहा बाबा कदों बीतणे जुग त्रै, त्रेता द्वापर कलयुग अन्त नज़री आईआ। उनां चिर पता नहीं कौण रहे, जम्मण वाला नज़र कोए ना आईआ। पता नहीं खाण पीण नूं मिले कोई ना शै, वस्त हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। किस बिध शिंसटी होवे खै, त्रेता द्वापर कलयुग पन्ध मुकाईआ। झट बावन ने थपकी मारी बच्चू उस वेले इक्को प्रभू दी होणी जै, दूजा नज़र कोए ना आईआ। आह तक भज्जे जांदे जुग त्रै, तिन्नां दा लेखा छेती देणा मुकाईआ। भगतां अन्दर रहिण देणा नहीं किसे दा भय, डर अन्दरों देणा उठाईआ। जोती
१७०४ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। बावन किहा सुण लै अभी, १७०४
अभी दयां जणाईआ। जेहड़ी वस्त किसे नहीं लभ्भी, खोजण सारे थांउँ थाँईंआ। उस दा लेखा पूरा करना चौधवीं सदी, सदके वारी घोल घुमाईआ। जिस वेले जगत संसार ने अस्वमेध जग दी मर्यादा जाणी छडी, जग नज़र कोए ना आईआ। पंडतां ब्राह्मणां खाणी मच्छी डड्डी, हड्डीआं मुख चबाईआ। चार जुग दी पिछली रहिणी नहीं गद्दी, गदागर होवे लोकाईआ। इक्को वेखणा नूर रब्बी, नूर नुराना धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। बाले किहा मैनूं पता नहीं रहिणा ना रहिणी याद, समझ किछ ना आईआ। कवण भेव खोल्हे राज़, पड़दा अगम्म अथाहीआ। झट प्रेम दी दिती आवाज़, सहिज नाल सुणाईआ। तेरा परमात्म मेरा रूप खोल्हे जाग, जागरत जोत डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। बाले किहा किस तरह तिन्न जुग जाण लँघ, कवण याद कराईआ। बावन किहा मेरे रूप दा खेल होणा वरभण्ड, ब्रह्मण्ड हुक्म चलाईआ। उहदा जोती जामा ते शब्दी धार खेल सवेर सञ्झ, हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। पिछला लेखा याद कराउणा त्रेते दी धार वाला पहलों आपणा चुकाउणा पलँघ, जिस नूं दो सत्त दी वंड नाल वंडाईआ। फेर अगली मंज़ल जाणी लँघ, पुरी

घनक करे सफ़ाईआ। फेर खेल करे सूरा सरबंग, आपणा पड़दा आप उठाईआ। कलयुग अन्तिम करके नंग, आपणा घर बार सारा दए लुटाईआ। निशान वेखे तारा चन्द, चन्द सितार खोज खुजाईआ। झट बाले मंगी मंग, चरणीं ढहि के सीस निवाईआ। बख्शिश कर सूरे सरबंग, तेरे हथ्थ वड्याईआ। बावन हस्स के किहा एह सारा समां वेहदयां जाए लँघ, अन्तिम अन्त खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ। तीजी धार खेल अपारा, हरि करता आप कराईआ। बिना भगत दवार तों प्रभ दा सिंघासण रहे ना विच संसारा, गृह गृह अलख ना कोए जगाईआ। इहो खेल सच्ची सरकारा, हरि करता आप कराईआ। जिस कारन तीजी धार कल्सीआं पाया उजाड़ा, जगत निशान निशाने वाला गंवाईआ। अग्गे खेल करे निरँकारा, हरि करता बेपरवाहीआ। जन भगतां दा ख़ाली भरे भण्डारा, भुक्ख्यां भुक्ख दए गंवाईआ। सृष्टी दे लंगर दा इक बणे वरतारा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। कल्सीआं वाल्यां दे सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। रिषीआं दा उधारा, लेखा सब दी झोली पाईआ। जिस दा बलि कीता इशारा, नन्हे बाले दिता दृढ़ाईआ। जिस वेले आया कलि कल्की अवतारा, चौबीसा आपणा हुक्म वरताईआ। तेरा रूप होणा पुरख तों नारा, नारी नर नरायण प्रनाईआ। जोगिन्दर कौर रूप धरया सुत बलि दवारा, धर्म दी धार वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। करनी कहे मेरा करतार, हरि वडा वड वड्याईआ। जिसने पूरब लेखा करना पार, लहिणा रहिण कोए ना पाईआ। कलि कल्की लए अवतार, नूर नुराना डगमगाईआ। जिस भगतां दा बणाया भगत दवार, भगतां दा लंगर दए सुहाईआ। जिस दी छब्बी पोह नूं नींह रखणी विच संसार, कल्सीआं वाले सारे सीस निवाईआ। उस इट्ट दे थल्ले जोगिन्दर कौर ने अग्नी देणी बाल, तीलीआं नौ नौं लगाईआ। बालण इक्ट्ठा करनगे जम्मू वाले रिषी पंज लाल, पंचम पंचम रंग रंगाईआ। चेला सिंघ, शिव सिंघ, गुरनाम सिंघ, लक्ष्मण सिंघ, प्रताप सिँघ होवेगा नाल, नालश नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। छब्बी पोह कहे मेरे जुग चौकड़ी गए बीत, बीती की सुणाईआ। धन्नभाग जे पुरख अकाल चलाई आपणी रीत, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को मार्ग दस्स के हस्त कीट, ऊचां नीचां रंग रंगाईआ। जन भगतो भगतां दे लंगर कोल सब ने गाउणा सोहँ गीत, ख़ुशीआं नाल ख़ुशी बणाईआ। सब दी आसा मनसा पूरी कीती उम्मीद, तृष्ना तृखा गंवाईआ। हरिसंगत सारी इक्को वार निमस्कार करनी नाल प्रीत, सिर सर प्रभ दी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।

१७०५ २२

✪ २६ पोह शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल लंगर दी नींह रखण समें ज़िला अमृतसर ✪

विष्नूं कहे प्रभू तेरयां भगतां भरया रहे भण्डारा, भण्डारी हो के सेव कमाईआ। साहिब तूं वी बणया रहीं वरतारा, सद सद आपणी सेव कमाईआ। सब नूं बख्शणा सांझा इक प्यारा, द्वैत नज़र कोए ना आईआ। नौ खण्ड पृथमी करना उज्यारा, सत्त दीप होए रुशनाईआ। दीन मज़्हब सारे करन निमस्कारा, डण्डावत बन्दना सजदे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी सरनाईआ। लंगर कहे मैं प्रभू दवारयों मंगां, मांगत हो के झोली डाहीआ। मेरा पिछला वक्त पिच्छे लँघ, अग्गे झोली रिहा टिकाईआ। मैं चाहुंदा कलयुग कूड़ी क्रिया मेट दे दंगा, झगड़ा कूड़ ना रहे लोकाईआ। आत्म परमात्म सब नूं बख्श दे संगा, सगला संग बणाईआ। तेरा भगत सुहेला रहे कोए ना भुक्खा नन्गा, ख़ाली भण्डारे देणे भराईआ। लेखे लाउणा मंदा चंगा, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। अग्गे सफ़र रहे ना लम्बा, नेरन नेर देणा वखाईआ। जिस वेले दीन दुनी ते होवे जंगा, चारों कुण्ट कूक कूक दुहाईआ। तेरयां भगतां हाल होवे मूल ना मंदा, हर थाँ होणा आप सहाईआ। भावें किसे ने चोटी मुनाई भावें सीस रखाया कंघा, सब नूं देणी माण वड्याईआ। सीना गुरमुखां रखणा ठंडा, अग्नी तत ना लागे राईआ। विष्नूं कहे मैं वी प्रभू आपणे दवारे दा खोल्ह
१७०६ के जिंदा, साचे भगतां हथ्थ फड़ाईआ। किसे नूं रहिण ना देवीं चिन्दा, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। तूं साहिब सदा १७०६
बख्शिंदा, बख्शणहार तेरी वड्याईआ। बेशक सृष्टी तेरी करदी निन्दा, तूं दयावान दयावान बेपरवाहीआ। तेरा खेल विच भारत खण्ड हिन्दा, नव खण्ड राह तकाईआ। दीन दुनी दा मार्ग रहिण देवीं ना विंगा, रस्ता रहिबर देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच वर, सच तेरी सरनाईआ। लंगर कहे मेरी बलदी रहे अग्ग, पकवान पक्के चाँईं चाँईंआ। भगतां चोग ना निखुटे विच जग, जगजीवण दाता दए वड्याईआ। जोगिन्दर कौर तीली ला दे झब, माचस अग्नी रूप बदलाईआ। कल्सीआं वाले उत्ते इट्ट रखण तद, जिस वेले लाट आपणा रूप बदलाईआ। एह मेला नौ सौ चौरानवे जुग चौकड़ी पिच्छों हुन्दा नाल सबब, जुग जुग हथ्थ किसे ना आईआ। जन भगतो सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जैकारा गाओ गज्ज, सिफ्तां नाल सालाहीआ। सब नूं माण मिल्या अज्ज, छब्बी पोह सम्मत शहिनशाही सत्त वज्जी वधाईआ। एस समें नूं सारयां खोजणा भज्जणा लभ्भ लभ्भ, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। हुण जन भगतो जदों वेखोगे ते वेखोगे उपर आपणी शाह रग, नौ दवारे तों उपर दरस दिखाईआ। तुहाडी आत्मा नाल परमात्मा हो के जाणा बज्झ, अन्दरों नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। बथेरा चिर ठग्गी मारी ते तुसां किहा ठग्ग, ठगोरी वाला सब दे लेखे पूरे दए कराईआ।

अज्ज तों तुहाडा ते प्रभू दा हिस्सा हो गया अद्धो अध, वक्खरी वंड ना कोए वंडाईआ। तुहाडी सांझी हो गई यद्द, आत्मा परमात्मा बंस सरबंस इक्को नज़री आईआ। सच पुछो खुशीआं नाल चुरासी विच्चों तुहानूं ल्या कढ, फड़ बाहों आपणे नाल मिलाईआ। कदे वी तुहानूं पिच्छे नहीं जाणा छड, सिर सब दे हथ्थ टिकाईआ। तुहाडा धर्म दा निशाना जगत जहान दिता गड्ड, जिस दी मरियादा चार जुग दे शास्त्र सकण ना कोए समझाईआ। तुसीं हुण बपड़े नहीं रह गए बग, हँस सोहणे नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अग्नी कहे मैनूं इष्ट दे थल्ले दिता बाल, लाल रंग चढ़ाईआ। मैनूं याद मैं दस्सणा भगतो तुहाडा ओह हाल, जिस हालत विच प्रभ नूं रहे मनाईआ। तुसीं मैनूं गूढ़ी नींद रहे सवाल, धरनी दी गोद विच टिकाईआ। मैं वी प्रभ नूं कहिणा तेरयां भगतां दा कदे ना होवे ज़वाल, काल महाकाल दूरों सीस निवाईआ। जिथ्थे होवोगे उथे करे संभाल, सम्बल बैठा धुर दा माहीआ। इष्ट नूं गुरमुख सिँघ नींह विच रख देण दोवें पाल, खब्बा हथ्थ पलकां उत्ते टिकाईआ। बावन दा पूरा होया सवाल, लेखा अवर रिहा ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां लेखे पाए घाली घाल, घालणा जन्म कर्म दी रहिण कोए ना पाईआ।

१७०७ १७०७

२२ २२

✪ २६ पोह शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल रात नूं ज़िला अमृतसर ✪

नव नौ चार पिच्छों समां आया चिर दा, सम्मत शहिनशाही सत्त छब्बी पोह वज्जे वधाईआ। जिस नूं वेख के अवतार पैग़म्बर गुरूआं हिरदा घिरदा, घुंमण घेर तक्कण जगत लोकाईआ। की खेल होणा निरवैर निर दा, निराकार की आपणी कार भुगताईआ। जिस दा रूप अगम्मे पिर दा, पिता पुरख अकाल अगम्म अथाहीआ। जिस दा जगत जहान गुलशन खिड़दा, महक सच वाली महकाईआ। जुग चौकड़ी गेड़ा गिड़दा, चुरासी रिहा भवाईआ। सो खेल करे आपणे घर थिर दा, थिर घर वासी पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक अगम्म अथाहीआ। छब्बी पोह कहे मेरा आया दिवस सुहाउणा, धर्म दी धार वज्जे वधाईआ। खेल करे करे श्री भगवाना, हरि भगवन बेपरवाहीआ। जिस दी सिफ्त गाई शास्त्र सिमरत वेद पुराणा, खाणी बाणी ढोले गाईआ। सो पहर अगम्मी बाणा, जोती जाता करे रुशनाईआ। जिस दा अवतार पैग़म्बर गुरु गुरदेव करन ध्याना, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। सो शाहो भूप बण सुल्ताना, बेपरवाह आपणी कार भुगताईआ। दो जहानां बण के राज राजाना, भूपत भूप खेल खिलाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। छब्बी पोह कहे मैं वेख्या नूर अल्ला, जोती जाता नज़री आईआ। जिस ने सब नूं फड़ाया पल्ला, गंढ नाम वाली पवाईआ। वसया जला थला, महीअल रिहा समाईआ। भाग लगावे उच्च अटला, सच दवार सोभा पाईआ। हो के इक इकल्ला, अकल कलधारी आपणी खेल खिलाईआ। दीन दुनी दा मेटे सल्ला, द्वैती रहिण कोए ना पाईआ। बणके अछल अछला, वल छल आपणी कार भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। छब्बी पोह कहे मैनूं घड़ी सुहञ्जणी लभ्भी, खुशीआं विच जणाईआ। डोर प्रेम प्यार नाल बद्धी, मुहब्बत प्रभ दे नाल रखाईआ। जिस दी जागरत जोत जगी, नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। लेखा चुकावे पैग़म्बर नबी, रसूलां वेख वखाईआ। लेखा जाणे चौधवीं सदी, सदके वारी घोल घुमाईआ। जिस रहिण नहीं देणी किसे दी गद्दी, गदागर करे लोकाईआ। ओह निरगुण धार फिरे भज्जी, दो जहान पन्ध मुकाईआ। कलयुग अन्त भगत दवार सजी, साजण आपणा रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। छब्बी पोह कहे मेरा खुशी बन्द बन्द, बन्दना विच सीस निवाईआ। जिस खेल करना विच नव खण्ड, नव नव दा रंग रंगाईआ। प्रकाश करे आप ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड नूर रुशनाईआ। जिस ने खेल कराउणा तारा चन्द, चन्द सितार वेख वखाईआ। ओह लेखा जाणे आपणे अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जिस दी जवानी कदे ना जाए हंढ, कोटन कोटि जुग भज्जण वाहो दाहीआ। सो प्रगट हो सूरा सरबंग, अकल कलधारी आपणी कल वखाईआ। जिस दा शब्दी धार शब्द दा जंग, दो जहानां आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप रखाईआ। छब्बी पोह कहे मेरा साहिब साहिब सुल्ताना, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जिस दा जोती नूर महाना, नूर नुराना इक अख्वाईआ। जिस दा रूप ना मर्द ना ज़नाना, दोहां तों बाहर आपणी कार भुगताईआ। कलयुग वेखे कलि निशाना, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। जिस अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दिता दाना, दानशमंद, दिते बणाईआ। नाम कलमे दा दे तराना, तुरीआ तों परे दिता समझाईआ। अक्खरां वाला दस्स के गाणा, रसना जेहवा सिफ्त सालाहीआ। जिस लेखा लाया राम कृष्न कान्हा, त्रेता द्वापर पन्ध चुकाईआ। सो कलयुग अन्त करे ध्याना, दो जहानां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। छब्बी पोह कहे मैं साहिब नूं तकां पास, गृह साचे नज़री आईआ। जिस दा दो जहानां वास, घट घट रिहा समाईआ। निरगुण नूर जोत प्रकाश, तत्तां करे रुशनाईआ। उसदा वेख अनोखा लबास, हैरानी विच

दुहाईआ। जिस ने हुक्म करना ख़ास, ख़ालस आपणी कार भुगताईआ। मुहम्मद दी आशा करनी रास, रस्ता दीन दुनी जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। छब्बी पोह कहे मैं दस्सां बचन अख़ीरी, जो अक्खरां बाहर सुणाईआ। प्रभ खेल मीरी पीरी, पीर पीरा बेपरवाहीआ। जिस दी दो जहान मिलख जागीरी, जगह जगह होए सहाईआ। जिस दा नूर बेनज़ीरी, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। उहदा खेल होण लग्गा तकदीरी, तदबीर आपणे विच छुपाईआ। जिस दीन दुनी दी बदल देणी ज़मीरी, अन्तष्करन दा लेखा दए मुकाईआ। ओह मालक गहर गम्भीरी, गवर इक अख्वाईआ। जिस पंजां प्यारयां दे मस्तक लगाई पंज पंज लकीरी, पंजां तत्तां डेरा ढाहीआ। जिस पंजां दरबारीआं हथ्थ बख्शी पूरन तस्वीरी, तसव्वर आपणा आप कराईआ। लिखारीआं हथ्थ फड़ा ज़ंजीरी, हथ्थकड़ी जगत जहान लगाईआ। लाड़ी मौत फिरना ब्रह्मण्ड खण्ड गली भीड़ी, उठ के सब नूं दे वखाईआ। परवरदिगार सदी चौधवीं रूप बदल के बहि जाए उत्ते लाल पीढ़ी, पीढ़ा डाहुण वाली नज़र कोए ना आईआ। सब दा राह तके मढ़ी गोर ते सीढ़ी, चारों कुण्ट अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे नी तूं होणीए किथ्थों आ गई लाड़ी मौत, बेदरदे फेरा पाईआ। क्यों नारीआं दे विछोड़न लग्गी खौंत, सुंञी सेज कराईआ। कलयुग अन्तिम जाणा औंत, साचा संग ना कोए निभाईआ। तूं नौ खण्ड पृथ्मी जाणा पहुंच, भज्जणा वाहो दाहीआ। नी सुहागणे तैनूं सब नूं प्रनाउण दा बड़ा शौंक, शौकीनणे गुर अवतार पैग़म्बर तत्तां वाला नज़र कोए ना आईआ। हुण फिरना चौदां तबक ते चौदां तौंक, चौदां लोक वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। नी लाड़ी मौत तूं मलके आ गईउँ दन्दासा, सोहणा रूप बणाईआ। कलयुग जीवां वल्ल वेख के करें हासा, मस्ती विच लै अंगड़ाईआ। नी तेरा ख़ाली भर देणा कासा, कोटन कोटि जीव तेरे विच टिकाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों रहिण नहीं देणा घाटा, घाटा खाते विच ना कोए वखाईआ। तूं किथ्थों गुंद के आईउँ झाटा, आपणा रूप बदलाईआ। कलयुग दे जीवां दा दिसे कोए ना राखा, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। भाग निखुटया माथा, मस्तक रेख ना कोए चतुराईआ। बिना परवरदिगार तों दिसे कोए ना राखा, राखी करन वाला हथ्थ ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे नी लाड़ी मौत तूं बड़ी मोटी ताज़ी, ताजां वाले देणे खपाईआ। मेरा साहिब होवे राज़ी, जो राज़क रिज़क रहीम इक अख्वाईआ। कमलीए पहलों खावीं मुल्ला ते काज़ी, कज़ा दा रूप बणना

चाँईं चाँईंआ। लेखा मुकाउणा अन्तिम बाज़ी, बाजां वाला संदेशा रिहा सुणाईआ। किसे दा दुलदुल रहे ना ताजी, अस्व भज्जे ना कोए वाहो दाहीआ। कमलीए मेरी मुहम्मद दी उम्मत हो गई बाग़ी, कलमा हक कोए ना गाईआ। जिधर तकां तन वजूद दिसण दाग़ी, माटी ख़ाक ना कोए सफ़ाईआ। काअब्यां नज़र आए कोए ना हाजी, हुजरा हक ना कोए सुहाईआ। मैं हाल की दस्सां माज़ी, पिछला फोल फुलाईआ। जेहड़े जगत जहान बणे ग़ाज़ी, जहाद वाले देणे मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि साचा इक अख्वाईआ। लाड़ी मौत तूं वेख लै चारों कुण्ट कायनात, नैण इक्को वार उठाईआ। याद करके छब्बी पोह दी रात, सुहागणे भागणे तैनूं दयां जणाईआ। किसे दा राह रहिण नहीं देणा राज, रईयत संग ना कोए निभाईआ। सारी दुनिया लेखे लाउणी लंगड़े लूले अपहाज, सूरबीरां ख़ाक मिलाईआ। तेरे कोलों ज़रूर मंगणा जवाब, हुक्म सुणना चाँईं चाँईंआ। कोई छडणा नहीं सन्त साध, जेहड़े रसना नाल जप के आपणा झट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर हुक्म इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे लाड़ी मौत नी तेरा किहो जेहा इरादा, मैनूं दे सुणाईआ। पहलों तूं उन्हां नूं खावीं जिन्हां ने खाधा भुन्न कबाबा, गऊआं खल्ल लुहाईआ। फेर उन्हां नूं फड़ीं जिन्हां नूं भुल्ल गया कृष्न ते राधा, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। फेर उथे जावीं जिन्हां सीता राम नहीं अराधा, माया ममता विच हल्काईआ। कमलीए फेर ओह ना छडीं जिन्हां नूं भुल्ल गया नानक बाबा, जो बाबल धुर दे नाल मिलाईआ। फेर ओह ना रहिण देवीं जिन्हां नूं याद नहीं आया वाला बाजां, बाज़ी, सब दी देणी उलटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। लाड़ी मौत नी तूं सोहणी सुनक्खी लाड़ी, घूँगट आपणे मुख ते पाईआ। तूं फिरना जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, उच्चे टिल्ले पर्बत थांउँ थाँईंआ। तूं छडणा नहीं जिन्हां दा लेखा नाल चार यारी, चार चार नाल चतुराईआ। जो परवरदिगार नाल करन ग़द्दारी, लेखा सब दा देणा मुकाईआ। लहिंदी दिशा नूं कमलीए कर लै अज्ज तों त्यारी, त्रैगुण अतीता रिहा सुणाईआ। कुछ आपणा दस्स विचारी, विचरके दे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। लाड़ी मौत कहे मेरे अहिबाब, मेहरवान तेरी सरनाईआ। मैं सदा तैनूं करदी याद, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। तेरी किरपा नाल जो उपज्या मैं कीता बर्बाद, लोकमात रहिण कोए ना पाईआ। पर मैनूं रज्ज के अजे नहीं आया स्वाद, सतिजुग त्रेता द्वापर मेरी तृखा ना कोए मिटाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां कोलों सुणदी सां इक आवाज़, जो नाम शब्द कलमा तरान्यां विच गाईआ। अन्तिम कलि खेल होणा प्रगट होवे आप, आप आपणा फेरा पाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। लाड़ी मौत हथ्थ मार लै उपर पट्टां, पटने वाला रिहा सुणाईआ। तूं फिरना विच चौदां हट्टां, भज्जणा वाहो दाहीआ। आपणीआं खुल्हीआं वखा दे लटां, भुल्ल रहे ना राईआ। परवरदिगार नूं कहि दे मेरया मालका तेरे हुक्म विच समुंद सागर मैं सारे टप्पां, टापूआं तों परे फेरा पाईआ। मैं भन्नां काया मट्टां, जो तैनूं गए भुलाईआ। पर इक डर लग्गदा मैं वस पै गई जट्टां, जिथ्थे मेरी चले ना कोए चतुराईआ। नेत्र नीर वहा के सट्टां, हन्झूआं हार बणाईआ। नाले रोवां नाले हस्सां, दोवें खेल खिलाईआ। मैनूं वक्त आया मसां, नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग ध्यान रखाईआ। मैं इधर वेखां ओधर वेखां कोटां विच्चों मैनूं विरला भगत लभ्भदा जिस दा दर्शन करदीआं अक्खां, दूसर अक्ख ना कदे मिलाईआ। मैं एसे करके सारे भगतां नूं टेकण आई मथ्था, निउँ के सीस निवाईआ। जिन्हां दे मुख विच्चों निकली सोहँ महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान दी कथा, उन्हां तों भज्जां वाहो दाहीआ। सेवा करां यथार्थ यथा, निउँ निउँ लागां पाईआ। बाकी सृष्टी दा ज़रूर मेटांगी रट्टा, रट्टा रहिण कोए ना पाईआ। सब दे सीने फट्टां, फट्टड़ करां लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी सरनाईआ। लाड़ी मौत तेरी पूरी होवे आस, प्रभ खुशी नाल कराईआ। तूं पाणी दा वार दे ग्लास, हुक्म धुर दी सेव कमाईआ। जेहड़ा वसे उत्ते आकाश, ओह धरनी उत्ते डेरा लाईआ। भगतां दे सदा वसे पास, घर घर होए सहाईआ। ना वेखे ज़ात पात, मज़्हबां वंड ना कोए वंडाईआ। वड्डा छोटा ना हिस्सा पावे आप, आप आपणा रंग रंगाईआ। जन भगतां बण के माई बाप, धुर दी गोदी लए टिकाईआ। जिथ्थे ना दिवस ना रात, सूर्या चन्द ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। लाड़ी मौत कहे प्रभू तेरा रूप सदी चौधवीं धार, धरनी धवल वेख वखाईआ। मेरी सुणीं इक पुकार, पुनह पुनह पुनह सीस निवाईआ। राय धर्म नाल बहार, चित्रगुप्त खुशी वखाईआ। पर मैं इक गल्ल दस्सां चरण कँवल कर निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। मैं ज़रूर मारांगी मार, भज्जां वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। लाड़ी मौत कहे प्रभू तूं इक वार सुणा दे रबाबी, तार मेरे अन्तर हिलाईआ। मैं ओह ना छडां जिन्हां खाधा भुन्न कबाबी, काअब्यां ध्यान लगाईआ। छेती ख़त्म करां सब दी बाज़ी, बाज़ीगर स्वांग रचाईआ। तूं मेरी सेहत एसे तरह रखीं राज़ी, जोबनवन्ती लवां अंगड़ाईआ। कोई रहिण ना देवां धरतीए तेरे उत्ते लाउंदा बाजी, मिट्टी ख़ाक विच रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी वड्याईआ। लाड़ी मौत

कहे मैनूं अन्दर पैंदीआं चीसां, उफ़ मेरी दुहाईआ। मैनूं इशारा करे ईसा, मुहम्मद नाल रलाईआ। मूसा पढ़े हदीसा, सिफ्तां विच सुणाईआ। की तेरीआं मकबरयां विच उडीकां, कबरां अक्ख खुल्हाईआ। वेखीं किते सदी चौधवीं दे अन्त दीआं बदल ना जाण तरीकां, तवारीखां रोवण मारन धाहीआ। दीन मज़्हब दा झगड़ा कराउणा वांग शरीकां, लाशरीक आपणी कार भुगताईआ। जिस दे विच हक तौफ़ीकां, तोहफा सब नूं देवे थांउँ थाँईंआ। उस दे उत्ते इहो उम्मीदां, जो सद चले आपणी रज़ाईआ। मैं तकां ला के नीझां, बिन नैणां नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। लाड़ी मौत कहे मेरी डण्डावत बन्दना, सब नूं सीस निवाईआ। जन भगतो तुहाडा दर कदे नहीं लँघणा, सतिगुर शब्द आवे ते तुहानूं लै के जाए चाँईं चाँईंआ। मैं ते तुहाडे चरण धूढ़ दा करन आई मजना, आपणा सोहणा रूप बदलाईआ। जिन्हां नूं माही मिल गया धुर दा सज्जणा, महिबूब नूर इलाहीआ। उन्हां दा ठीकर कूड़ा तन ज़रूर भज्जणा, आत्म परमात्म विच समाईआ। जिन्हां नूं चढ़नी सच दी रंगणा, रंगत इक्को इक वखाईआ। जिस दा सच दा दीपक जगणा, दुर्गा अष्टभुज लाटां वाली करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी आपणी कार भुगताईआ। तूम्बी कहे मेरी वज्जण लग्गी सतार, सतह बुलंदी दयां जणाईआ। आजा मुहम्मद नाल लै के चार यार, यराना तोड़ निभाईआ। मजलस तक लै परवरदिगार, जो नूर अलाह अलाही नूर अख्वाईआ। जिस दे सारे ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। ओह सब दा लेखा देवे विच संसार, बचया रहिण कोए ना पाईआ। जिस ने सदी चौधवीं दी गोली दे तन दा कर शृंगार, तारा चन्द दिते चमकाईआ। गोली उठ के होवे ख़बरदार, धर्म दी धार लवे अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा आपणा हुक्म सुणाईआ। अष्टभुज आजा खब्बे, दीपक हथ्थां विच रखाईआ। गोली खब्बी हो जा सज्जे, पर्दा तन ना कोए रखाईआ। तेरा तारा चन्द सब नूं लभ्भे, ज़िमीं असमान देण दुहाईआ। पैग़म्बर फिरन भज्जे, भज्जण वाहो दाहीआ। दरोही मज़्बां दे रहिणे नहीं अड्डे, अड्डी चोटी दोवें देण गवाहीआ। इक्को परवरदिगार गज्जे, सूरबीर नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। अष्टभुज थल्ले रख दे चराग़, दीपक मात सुहाईआ। सुण अगम्मी आवाज़, शब्दी शब्द सुणाईआ। पिछला रहिणा नहीं समाज, इक्को नूर जोत रुशनाईआ। कलमा मन्नणा पैणा वाहिद, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे गोली आजा थल्ले, घुटना ज़िमीं नाल लगाईआ। आह वेख दीपक बले, बलि दा

लेखा पूर कराईआ। जेहड़ा लाड़ी मौत ने वारया जले, पाणी हथ्थ देणा फड़ाईआ। फिरी दरोही विच थले, थल रहे कुरलाईआ। सच खुदा हुक्म घल्ले, संदेशा इक इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। अष्टभुज कहे प्रभू तेरा नूर नुराना, सच सच सुणाईआ। सदी चौधवीं तेरा खेल महाना, महिमा कथ कथ वड्याईआ। धर्म दी गोली दा इक्को इक निशाना, तारा चन्द देण गवाहीआ। जिन्हां दा लेखा मुकणा विच जहाना, लोकमात रहिण ना पाईआ। उम्मत नूं मेटण दा तूं कीता इक बहाना, वेस जगत वाले कराईआ। एह संदेशा दिता सी कृष्ना शामा, भेव अभेद खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे हज़ूर, हज़ूर दयां सुणाईआ। तेरा इक्को चमके नूर, नूर नुराना सोभा पाईआ। शरअ दा पाए ना कोए फ़तूर, कलमा दए ना कोए दुहाईआ। सब दा तोड़ना माण ग़रूर, हँकार दा डेरा ढाहीआ। आदि अन्त तेरा दस्तूर, ज़र्रा ज़र्रा आपणा हुक्म वरताईआ। मेरी बेनन्ती कर मंज़ूर, दर ठांडे सीस झुकाईआ। ओह वेख मूसा तेरा नूर तके बिना कोहतूर, ईसा बिन नैणां नैण मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। अष्टभुज कहे मेरे मेहरवाना, मेहर नज़र उठाईआ। मेरा पिछला खेल महाना, खेल के दयां जणाईआ। सदी चौधवीं दी गोली दा इक निशाना, खून खून नाल देणा मिलाईआ। नदीआं वहिण वहे विच जहाना, जहालत मेटणी विच लोकाईआ। दूसर रहिण देणा नहीं कोए बेगाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे मालक ने दस्सणा राह अपारा, अपरम्पर हो के आपणा हुक्म सुणाईआ। ना रहे चन्द ते ना रहे सितारा, तारा चन्द दोवें देण गवाहीआ। ओह ना रहे अष्टभुज दा दीपक उज्यारा, लाटां वाली दी लाट आपणे विच मिलाईआ। सब दा सांझा इक्को होवे परवरदिगारा, परम पुरख अगम्म अथाहीआ। जिस दे नाल मौलणीआं सतिजुग दीआं बहारां, लोकमात महक महकाईआ। उन कट देणीआं शरअ वालीआं तारां, पंज मुलाणे उठ के दयो वखाईआ। ओह इन्हां दे पिच्छे खिच्च दयो छत्ती तलवारां, जन भगतो शरअ दे लेखे देणे कटाईआ। रस्सीआं वाल्यो गंढां बन्न्हो नाल प्यारा, प्रभ ने इक्को गंढ देणी जणाईआ। मोमबत्तीआं वाल्यो दिने करो उज्यारा, अंधेरा जगत रहिण ना पाईआ। बुढापे वाल्यो खुशीआं नाल मारनीआं टाहरा, जन्म मरन दा रोग रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। सदी चौधवीं कहे इक्को प्रभ दी होणी शक्त, शक्तीशाली इक अख्वाईआ। उहदी गवाही दे दयो इक सौ इक भगत, जो मस्तक नाल छुहाईआ। नीले पटकयां वाल्यो

१७१३ २२

रहिण नहीं देणा फ़र्क, सारे इक्को रंग रंगाईआ। जो मालक वाली अर्श, फ़र्श सोभा पाईआ। ओह धुरदरगाही आया परत, पतिपरमेश्वर नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं खेल वेखां समरथा, जो समरथ रिहा कराईआ। जिस दा रूप अलखणा अलखा, लख के सके ना कोए समझाईआ। जिस दीआं जगत जहान तों वक्खरीआं अक्खां, अक्खीआं वाल्यो अक्खीआं आप खुल्हाईआ। जिस ने फिरना नहीं वांग कृष्न उत्ते रथा, कौरव पांडव खेल खिलाईआ। उसने इक्को होड़ा ला के उपर सस्सा, हाहे टिप्पी नाल रलाईआ। छत्ती फुट्ट दा मंगा के रस्सा, सब नूं दिता बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी गोली खुशीआं नाल हस्सी, मुख आपणा आप खुल्हाईआ। लेखे लाउणा जिन्हां दे कोल चुक्की लस्सी, रिड़कणा जगत वाला पाईआ। जिन्हां ने शकर घिउ मसी, खुशीआं नाल खाईआ। जिन्हां ने न्याज़ तलीआं उत्ते रखी, मुहम्मद दी आशा पूर कराईआ। जिन्हां ने मस्तक बन्ही पट्टी, पूरन गोबिन्द गोबिन्द पूरन धुर दा माहीआ। उहनां दो जहानां खट्टी खट्टी, खटका अवर रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप

१७१४ हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। सदी चौधवीं कहे किथे मेरा चोबदार, १७१४

२२ होका हक दए सुणाईआ। सब नूं करे ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर दृढ़ाईआ। हो जावो हुश्यार, आलस निंद्रा रहे ना राईआ। २२

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी तूम्बी वज्जदी, धुर दी सतार हिलाईआ। अग्गे लोड़ रहिणी नहीं किसे हज दी, काअब्यां पन्ध मुकाईआ। इक्को मरियादा होणी जग दी, जगजीवण दाता सारे मन्नण थांउँ थाँईंआ। पूजा रहिणी नहीं अग्ग दी, जल सीस ना कोए निवाईआ। खेल मुक जाणी मन्दिर मसीतां मठ दी, गुरदवार वेखण चाँईं चाँईंआ। रीती बदलणी चार वरनां दे इक्ठ दी, मज़्बी वंड ना कोए वंडाईआ। प्रभ धार प्रगटाउणी घट घट दी, पर्दा ओहला आप चुकाईआ। खेल वेखणा जिन्हां रूप धरया इक ज़ात जट्ट दी, इक ज़ाती वालीआं इक्ठीआं हो के देण वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे जिन्हां मस्तक बद्धीआं पट्टीआं, मिल्या मेल धुरदरगाहीआ। लेखा मुकणा उहनां छत्तीआं, जो छत्ती प्रभ दी ओट तकाईआ। जिन्हां पुट्टयां हथ्थां दीआं उँगलां रत्तीआं, रंग धुर दे नाल रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखणे ओह जवान शौकीन, सोहणे बांके नज़री आईआ। जिन्हां नूं मार्ग मिल्या इक महीन, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ।

सुणी पढ़ी इक तालीम, धुर संदेशा राग अलाहीआ। गृह पाया आलीशान अज़ीम, दरगाह सच वज्जी वधाईआ। गुरमुख ग़रीबो अग्गे आवो दोवें ते सब दी कर देणी तरमीम, बदला होवे जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। गुरमुख कोए ना होवे ग़रीब माढ़ा, भुक्खा नन्गा ना कोए अख्वाईआ। जिन्हां नूं मिल गया धुर दा लाड़ा, सचखण्ड दा मालक नूर इलाहीआ। ओह दो जहानां पार करे किनारा, अधविचकार ना कोए लटकाईआ। जिथ्थे पहुंच सके ना कोए शाह दारा, मायाधारी नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे ग़रीबो वेखो दिशा लहिंदी, की आपणी कार भुगताईआ। जिन्हां दे नाल कूड़ कुड़यारी धार खहिंदी, टक्कर हउमे वाली रखाईआ। धुर दा हुक्म हुक्म सहिंदी, सिर सके ना कोए उठाईआ। मुहम्मद दी आशा जाए ढहिंदी, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी आपणी कार भुगताईआ। सदी चौधवीं कहे सुणो हुक्म हौली हौली, मेरा साहिब रिहा सुणाईआ। जिन्हां दे गल तन्द मौली, मौला मिल्या बेपरवाहीआ। छेती मूल ना करे तौली, जुग जुग आपणा खेल खिलाईआ। जन भगतो सम्मत शहिनशाही सत्त उम्मत दी कीती बहुणी, पहली कार भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। पीहड़ा कहे मैं बड़ा रंगला, चढ़या रंग लाल। मैनूं भगतां दा सोहणा लग्गा बंगला, जिथ्थे मिले हरि गोपाल। शरअ दे टुट्टण संगला, वेख्या खेल कमाल। चार वरनां लावे अंगणा, भेव खोल्ह बेमिसाल। दीन दयाल बण बख्शंदना, जन्म कर्म दी लेखे लावे घाल सच सुणा के इक्को छन्दना, लै जाए सचखण्ड सच्ची धर्मसाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे जिस दी पिट्ठ उत्ते पुट्ठी किरपान, वस्त्र जगत रंग रंगाईआ। ओह आवे विच मैदान, आपणी लए अंगड़ाईआ। उच्ची कहे प्रभू ने मेटणे शरअ वाले शैतान, उलटी सब दी मति कराईआ। किसे दा रहिणा नहीं हक ईमान, अमल कूड़ विच दुहाईआ। अवतार पैग़म्बर सारे अन्त तकाण, बिन नैणां नैण उठाईआ। सदी चौधवीं अन्त युद्ध होणा घमसान, घुम्मण घेरी विच जगत लोकाईआ। शाह कंगालां कोए ना रहे पहचान, वक्खरी वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। पीढ़ा कहे मैं आया बण के, आपणा पन्ध चुका। मेरे उत्ते ग्रन्थ शास्त्र अणगिणत गए धर के, अक्खरां वाला लेख लिखा। जिन्हां नूं जगत गुज़ारा रिहा करदा पढ़ के, इक दूजे सरवण जगत सुणा। मज़्हबां पिच्छे मर्दे रहे लड़ के, भाणा वरताउंदा

रिहा बेपरवाह। सच दी मंज़ल अवतार पैग़म्बर गुरु चढ़ के, फिर वी नाम कलमे दीआं वंडां गए पा। सदी चौधवीं कहे जिन्हां नूं वेख के मेरा सीना धड़के, ते मेरा अन्तिम बणे गवाह। प्रभ दी रीत कोई जाए अग्ग विच सड़ के, कोई माटी ख़ाक दिते दफ़ना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा सच हुक्म वरता। तलवार कहे मेरी पुट्ठी नोक, जगत धार समझाईआ। लेखा मुकणा चौदां लोक, परलोक रहे कुरलाईआ। प्रभ दा भाणा सके ना कोए रोक, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जिस दा प्रकाश इक्को निर्मल जोत, जोती जाता डगमगाईआ। उथे पहुंचे किसे ना सोच, बुद्धी कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी आपणी खेल खिलाईआ। सदी चौधवीं कहे खेल होणा प्रभू दा जगत, जगत जिज्ञासूआं दयां जणाईआ। जिन्हां मस्तक लेख लिख के लाया इक्को प्रभू फ़कत, फ़िकरा इक्को पढ़ाईआ। उहनां दा खुशीआं वाला बरस, सम्मत शहिनशाही नाल वड्याईआ। मेहरवान रहमत करे तरस, अमृत मेघ मेघ बरसाईआ। जो निरगुण धारों आया परत, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। दुर्गा दी पूरी करे शर्त, शरअ दा लेखा नाल चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

१७१६ करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। दीपक कहिण असीं जगदे रहे मात, जुग जुग सेव कमाईआ। सानूं १७१६

२२ बालदे रहे रात, दिवस रंग ना कोए रंगाईआ। असीं खड़्हे रहे इकांत, आपणा आप ना कोए बदलाईआ। वेखदे रहे किस २२

वेले आवे कमलापात, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। सानूं देवे सच सौग़ात, धुर दा नाम वड वड्याईआ। साडी पूरी होवे आस, तृष्ना रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। सदी चौधवीं कहे जेहड़ा खलोता उत्ते नौ कदम, कदमां विच सीस निवाईआ। सृष्टी दा चलणा नहीं कोए यतन, यथार्थ प्रभ आपणा हुक्म वरताईआ। अन्तिम पैंडा मुका अख़ीरी पत्तन, पाँधी रोवण मारन धाहीआ। पैग़म्बर अवतार राह तकण, गुरु गुरदेव अक्ख खुल्हाईआ। की खेल करे पुरख समरथण, हरि वडा वड वड्याईआ। किस बिध भगतां आवे पैज रखण, होवे मात सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे उम्मत दी दे दयो कुनाली, माटी काची सोभा पाईआ। विच रखणी बेरी दी डाली, गोली जोगिन्दर दए टिकाईआ। अग्गे आउणी रैण अंधेरी काली, काला सूसा दए गवाहीआ। जन भगतो उम्मत दी उमर रही नहीं बाहली, थोड़ा समां आपणा झट लँघाईआ। कोई जीऊँदा रिहा शाली, कोई शहिनशाह नाल मिल के आपणी खुशी बणाईआ। अन्तिम सब दा इक्को होणा पाली, पालणहार अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच

दा हुक्म इक वरताईआ। डाली कहे नी गोलीए मैं तेरे नाल लग्ग गई छापी, कंडा खार जगत नज़री आईआ। जिधर तकां भगतां नालों बहुते पापी, वेख के दयां दुहाईआ। मेरी आशा अन्दरों कांपी, हिल हिल के रही डराईआ। पता नहीं प्रभू क्यों नहीं मिल्या धुर दा साकी, जो सच दा जाम प्याईआ। ओह तक अवतार पैग़म्बर गुरु उतों वेखदे सचखण्ड दी खोल्ह के निक्की ताकी, बिना निगह तों निगह टिकाईआ। मेहरवान महिबूब चढ़या शब्द अस्व अगम्मे राकी, रकाबां विच चरण ना कोए टिकाईआ। उस दा हुक्म वरतणा शताबी, शरअ दा लेखा रहे ना राईआ। फिरे घर घर विच महिराबी, आपणी सितार वजाईआ। ओह माझे दा वासी ते लोक कहिंदे उहनूं पंजाबी, पंजां दा मालक शाह पातशाह शहिनशाहीआ। पर उहनूं वेस बदलण दी वादी, जुग जुग आपणी खेल खिलाईआ। हुण खेल वेख लओ, की स्वांग वरत्या ते बणया सब दा गाडी, गहर गम्भीर आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। कुनाली कहे मैं ख़ाली, वे मुहम्मदा मेरी दुहाईआ। चारों कुण्ट रैण काली, चन्द सितार नज़र कोए ना आईआ। मैं जिधर जावां मैनूं चम्बड़दी कंडयां वाली डाली, तेरी शरअ आपणा रूप गई बदलाईआ। कलमे दी रही ना हक

१७१७ हलाली, छुरी हलाल ज़िबह कर के जीवां रही तड़फाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल १७१७

२२ साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। कुनाली कहे मैं रहिणा नहीं मात, मेरे मालक मेरी दुहाईआ। मेरे थाँ बदल जाए २२

भगतां दी सौग़ात, नौ खण्ड विच नौ बरतण आपणा रूप लैण बदलाईआ। मेरी मिट्टी उडणी राख, ख़ाकी ख़ाक रोवे मारे धाहीआ। मेरा नाता रहिणा नहीं सज्जण साक, नबी रसूलां पल्लू लैणे छुडाईआ। मेरी अन्त डण्डावत बन्दना जोड़ के हाथ, सजदे विच सीस झुकाईआ। जिस ने शरअ दा लेखा बणाया लिख के काग़ज़ात, ओह लेख लिखा के काग़ज़ां उत्ते फेर मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे मेरा इक इशारा, सैनत नाल समझाईआ। जन भगतो वेखो साहिब दा खेल न्यारा, जो निरगुण हो के सरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा करदे आए इज़हारा, सिफ्तां विच सालाहीआ। ओह पीर बण के ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। प्रगट हो के चौवीआं अवतारा, चौबीसवां कलि कल्की नाउँ धराईआ। जिस दीआं नौ खण्ड पृथमी पुज जाणीआं शब्द वालीआं तारां, अक्खरां लेख ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे गोलीए ला दे पंज चक्र, चक्रवर्ती देणे हिलाईआ। धुरदरगाही बण गया आप फक्कर, फ़कीरां समझ कोए ना आईआ। पहिचाण करे कोए ना सुघड़ चतुर, अक्ल बुद्धी भेव कोए ना पाईआ।

किसे सीस रहिण देणा नहीं छत्र, छत्रधारी देणे गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं आई अगम्म दी आवाज़, भगतो दयां सुणाईआ। कुछ पिछला खोल्हां राज़, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। मैनूं उस साहिब ते नाज़, जो नज़ाकत विच आपणी कार भुगताईआ। जिस दी चार जुग दे शास्त्र समझ ना सके मज़ाज, अन्त कहिण कोए ना आईआ। उहनूं सारे झुक झुक करन आदाब, सजदयां विच सीस झुकाईआ। अन्त कहि के सतिगुरु महाराज, आपणा पल्लू लैण छुडाईआ। लेखे ला कलमे दी याद, दीन दुनी विच वरताईआ। अन्त सब तों मंगण आ गया जवाब, लाजवाब सब नूं दए कराईआ। सब ने उस दा होणा मुहताज, मंगण सारे थांउँ थाँईंआ। जो मालक अन्त दा आदि, मध आपणी कार भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा सच हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे नी वेख मेरे महिबूब दा रिवाज, सिर फुल्लां नाल सुहाईआ। जिस वेले मसीह नूं कंडयां दा सी पहनाया ताज, फाँसी जगत वाली लटकाईआ। उस ने उस वेले मंगी सी इमदाद, हथ्थ दोवें उपर उठाईआ। ऐ मेरे खुदा ते मेरे बाप, तेरी बेपरवाहीआ। मेरा कोई नहीं सज्जण साक, साथी संग ना कोए निभाईआ। सारे दे गए जवाब, पल्लू पल्लू ना कोए बंधाईआ। मैं चाहुंदा मेरे सीस दे ताज दा जे लेखा पूरा करावें आप, लोकमात फेरा पाईआ। मैं ज़रूर अर्शां तों तेरा वेखण आवांगा प्रताप, फ़र्शां उत्ते फेरा पाईआ। नौ खण्ड तेरे कलमे दी होवे इक्को दात, नौ फुल्ल देण गवाहीआ। तेरी पैग़म्बर वाली नहीं कोए करामात, जगत वंड ना कोए वंडाईआ। ऐ मेरे मालक ऐ मेरे खुदा तूं बड़ा उस्ताद, तेरी उस्तादी शगिर्दी समझ किसे ना आईआ। अवतारां नूं पैग़म्बरां नूं पढ़ा के निक्की जेही किताब, अक्खरां नाल परचाईआ। किसे नूं किहा तैनूं न्याज़ दिती किसे नूं किहा तैनूं खवाया प्रशाद, प्रशाद नूं किरपा कहि के सारे दिते परचाईआ। पर तेरी किरपा ने दीन मज़्हब बणा के पवा दिते फ़साद, झगड़ा सके ना कोए मिटाईआ। भावें मैं तैनूं कहिंदा गॉड, गाईड इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे ईसा ने अन्त वेख्या अगम्मा रंग, मेरे तों पहलों ध्यान लगाईआ। जिस दा इहो रूप सी बणया वांग मलंग, कपड़ा मोढे उत्ते सुटाईआ। तन तों होया फेर नंग, खुल्हड़े केस देण गवाहीआ। जिस दे सीस ते कंडयां दा ताज दिता टंग, पोशाक सूलां वाली पाईआ। उस वेले मंगी उस ने मंग, अन्तर अन्तर ध्यान रखाईआ। मैं तेरा चाहुंदा इक अनन्द, मेरा सज्जण बेपरवाहीआ। सदी वीहवीं जाए मूल ना लँघ, बीस बीसे तेरी आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि,

१७१८
२२

एका देणा साचा वर, सच तेरी वड्याईआ। कंडे कहिण एह सूलां फूल, तेरे अग्गे वास्ता पाईआ। जिस वेले तेरा मालक आवे कन्त कन्तूल, हरि करता धुरदरगाहीआ। ओह डण्डे खा के बणाए फूल, फूल फूलन रंग रंगाईआ। तेरा लहिणा चुकाए मूल, बाकी रहिण कोए ना पाईआ। खुशीआं विच खुशी लए झूल, झूल्यां दा डेरा ढाहीआ। जिस दा ना कोई अर्ज़ ते ना कोए तूल, लम्बाई चौड़ाई ना कोए समझाईआ। उस दा इक्को होवे असूल, असल दा मालक इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे इक दिन मुहम्मद नूं दस्सया नज़ारा, मेरे परवरदिगार दिता जणाईआ। उठ मेरया बरखुरदारा, पर्दा परदयां विच्चों हटाईआ। औह वेख मेरा नूर उज्यारा, नूर नुराना डगमगाईआ। जिस ने तेरा करना पार कनारा, नईया मेरे घाट पहुंचाईआ। मुहम्मद रो प्या ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। ओहनूं खुदा ने कीता इशारा, बिन सैनत दिता समझाईआ। जिस वेले आप आया अमाम अमामा बण सिक्दारा, सूरबीर वड वड्याईआ। तेरा लेखे लावे चन्द सितारा, धुर दी सितार नाल वजाईआ। उहदा इक्को नाम दा होवे मुज़ाहरा, चौदां तबक करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे
१७१९ खेल धुर दा हरि, धुर दा रंग आप रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरीआं अन्त निकलदीआं चांगा, चीक चिहाढ़ा देवां पाईआ। १७१९
मेरीआं अन्त अन्त दीआं तांघां, ख़ाहिश इक्को इक रखाईआ। पैग़म्बरां दीआं दस्सीआं होईआं भुल्ल जाणा बांगां, अज़ां इक्को
२२ वार ना कोए सुणाईआ। क्यों प्रभू ने आपणयां भगतां पंजां नूं फड़ा देणीआं हथ्थ विच डांगां, पूरन छाती छाती नाल रखाईआ। २२
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे परवरदिगार, तेरी इक सरनाईआ। तेरा लेखा विच संसार, साहिब तेरी वड वड्याईआ। तेरे नूर दा नूर उज्यार, नूर नुराना नज़री आईआ। तूं इक ते इक दा यार, इक इक नाल वड्याईआ। तेरा कलमा बेऐब परवरदिगार, बेऐब इक अख्वाईआ। मेरी कदमबोसी नाल निमस्कार, सजदे विच सीस झुकाईआ। अन्तिम मैनूं आई हार, रो के मारां धाहीआ। नाता तुटणा संग मुहम्मद चार यार, यारी तोड़ ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मार्ग इक प्रगटाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं लै लैण दयो साह, थक्की टुट्टी दयां सुणाईआ। मैं भुल्ल गई मक्के मदीने दा राह, औझड़ राह गई आईआ। एथे ख़ुदा नूं कहिण सचे पातशाह, की तेरी बेपरवाहीआ। मैं किस नालों होई जुदा, किस विच समाईआ। मैनूं छोटी जेही गल्ल सुणा, बिन अक्खरां देणी दृढ़ाईआ। मेरया मालका ख़लक दिआ ख़ालका किहनूं कहिंदे गुनाह, पाक कवण अख्वाईआ। मैं ते जिधर तक्कया जिधर वेख्या तेरे मुल्ला शेख़ मुसायक जीवां

करन ज़िबह, छुरी करद हथ्थ उठाईआ। मेरी गोली कहिंदी हाए मेरया रब्बा, चन्द सितारा कहे जिन्हां कटाईआं लबां, लेखा देणा मुकाईआ। शरीअत दीआं रहिण मूल ना हद्दां, इक्को तेरा नूर होवे रुशनाईआ। तूं सब दा पिता ते सब दा अब्बा, अम्मीजान इक अख्वाईआ। मेरी दुहाई ते मेरा सद्दा, आउणा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दी धार आप समझाईआ। परवरदिगार कहे सुण नी चौधवीं सदी छोटी, आयू निक्की वालीए दयां जणाईआ। औह वेख मेरे शब्द दी धार अगम्मी सोटी, जो दो जहानां रही डराईआ। जिन्हां खाधी गोष्ट बोटी, उहनां दी करां सफ़ाईआ। जगत उत्ते इक अहार रहिणा अन्न ते रोटी, दूजा रसना रस चक्खण कोए ना पाईआ। दीन दुनी वेख रोती, बिन नैणां नीर वहाईआ। बिना भगतां तों आत्मा सब दी सोती, सुत्ती लए ना कोए अंगड़ाईआ। सदी चौधवीं तेरी खुल्ही गुत्ती, मेंढी सीस ना कोए गुंदाईआ। डोरी चन्द सितारे दी टुट्टी, टुटयां गंढु ना कोए पवाईआ। नी तूं नौ बरसां विच जाणा लुट्टी, अग्गे होवे ना कोए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं की रही पढ़, अलिफ़ ये तों बाहर पढ़ाईआ। मैनूं इयों जापदा परवरदिगार ने सृष्टी करनी दो धड़, धर्म दी वंड वंडाईआ। फिर भरना अन्दर हँकार दा गढ़, हउमे नाल रलाईआ। फेर झगड़ा पाउणा चेतन ते जड़, चोटी बहि के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा रंग आप रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे अन्त खेल होणा अफ़सोसनाक, अफ़ज़ल दयां दृढ़ाईआ। बन्दे ख़ाकी रलणे विच ख़ाक, ख़ाक ख़ाक नाल उडाईआ। अगले साल नूं खुल्हणा ताक, खिड़की हुक्म वाली खुल्हाईआ। झगड़ा पैणा काग़ज़ात, अक्खरां नाल रलाईआ। दूजे साल होवे फ़साद, फ़ैसला विच हो ना कोए कराईआ। तीजे साल नूं लभ्भणी सब ने इमदाद, सिर हथ्थ ना कोए रखाईआ। चौथे साल घर घर पैणी भाज, भज्जण वाहो दाहीआ। पंजवे साल बविंजा देशां दा खुसणा राज, शाह नज़र कोए ना आईआ। अगली फेर दस्सणी अगम्म आवाज़, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मदा फेर पढ़नी नहीं किसे नमाज़, रोज़ा बांग ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा रंग इक रंगाईआ। छब्बी पोह कहे सदी चौधवीं की सुणया ई शब्द, कलमा की दृढ़ाईआ। क्यों हैरान हो गईउँ अजब, की लील्हा रिहा वरताईआ। क्यों डर गई जिस मेटणे मज़्हब, दीनां करे सफ़ाईआ। वेखीं होवीं मूल ना तुअजब, हैरानी विच ना आईआ। एहदा इक्को नूर ते इक्को वजद, वज़ाहत इक्को नाम सुणाईआ। ओसे दा सारे करदे अदब, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस निवाईआ। ओसे दे चुम्मणे

सब ने कदम, कदमबोसी करके खुशी बणाईआ। जिस दा तन वजूद नहीं बदन, नूर नुराना डगमगाईआ। ओह सूफ़ीआं सन्तां आया सद्दण, भगतां जोड़ जुड़ाईआ। जिस ने खेल वेखणा विच अदन, आहला अदना दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा फिर होणा ठांडा सीना, सीतल धार वहाईआ। जिस वेले रुख़ बदल दिता रूसा चीना, प्रभ आपणा हुक्म वरताईआ। ओह वक्त ज़रूर होवेगा जेठ महीना, भुल्ल रहे ना राईआ। फेर पता नहीं किस ने मरना किस ने जीणा, जीवण हथ्थ किसे ना आईआ। सब दा हक हकूक जाणा छीना, मालक मुल्क ना कोए अख्वाईआ। दीन दुनी दी बदलणी तालीमा, मज़्हबी रंग ना कोए रंगाईआ। एह खेल होणा उत्ते ज़मीना, धरनी धवल राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेल आप मिलाईआ। छब्बी पोह कहे जन भगतो तुहाडी जननी इक्को माँ, पिता पुरख अकाल अख्वाईआ। जिस ने अन्तर आत्म पकड़ी बांह, बाहरों नज़र कोए ना आईआ। सदा सुहेला देवे ठंडी छाँ, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। जिस झगड़ा मेटणा सूर ते गां, ढोरां शरअ ना कोए रखाईआ। हँस बुद्धी बणाए काँ, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। निथाव्याँ देवे धुर दा थाँ, दरगाह साची आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। भिन्नी रैण कहे मैं आई जग, मिली मात वड्याईआ। दर्शन कर सूरे सरबग, आपणी तृखा लई बुझाईआ। मैं संदेशा देवा झब, सुनेहड़ा इक पुचाईआ। दीन दयाला लैणा लभ्भ, जो सब दा पिता माईआ। अन्तिम सब ने जाणा लद, जग रहिण कोए ना पाईआ। चुरासी विच्चों मानस जन्म इक्को अख़ीरी हद्द, हरिजू मिलणा चाँईं चाँईंआ। साक सज्जण सैण जाणे छड, अन्त संग ना कोए निभाईआ। अन्त क्यों उस प्रभू तों होए अड्ड, जो आत्म परमात्म नज़री आईआ। जिस दा आदि अन्त इक्को नद, संदेशा इक्को इक सुणाईआ। जन भगतां उपजाए यद, यदी आपणा खेल खिलाईआ। जिस नूं मज़्हब दा नहीं कोए लब, दीनां हरस ना कोए रखाईआ। उस दा मेल हुन्दा नाल सबब, सब दा मालक होए सहाईआ। जिस दी सारे मंगदे मदद, मददगार इक अख्वाईआ। ओह इक्को नूर ते इक्को अदद, बहु वंड ना कोए रखाईआ। जिस ने कलयुग अन्त मेटणा तशदद्, कलयुग कूड़ कुटम्ब चुकाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को दरसाउणा मज़्हब, दूजी ज़ात ना कोए बणाईआ। जिस दा इक्को नाम कलमा होणा शब्द, शब्दी शब्द डंक शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा घर समझाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे मेरा वक्त सुहेला, सुहञ्जणा दयां जणाईआ। मेरे साहिब सुहाया वेला, घड़ी पल नाल वड्याईआ। जेहड़ा फिरदा इक अकेला, इक एकँकार नूर इलाहीआ।

लेखा पूरा करे गुरु गुर चेला, चेला गुर आप हो जाईआ। जन भगतां बणके सज्जण सुहेला, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सिर सब दे हथ्थ टिकाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे मेरा परम पुरख करतार, हरि वडा वड वड्याईआ। जिस कलयुग विच सतिजुग दिता उसार, नींह भगतां वाली रखाईआ। ग़रीब निमाणयां पावे सार, कोझयां कमल्यां लए तराईआ। मौता सिँघ पाड़ आपणी दस्तार, नाज़र सिँघ हथ्थ फड़ाईआ। नाज़र सिँघ सच सिंघासण थल्ले देवे वाड़, जगत ग़रीबी भगतां विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। सब दा खाण पीण दा चलदा रहे विहार, भुक्ख्यां भुक्ख दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। जगत पग्ग पाटी शताबी, जिस शरअ दिती गंवाईआ। उस दे बदले बन्नू लै रंग अनाबी, रंगत रंग विच्चों बदलाईआ। एह लेख नहीं कोई पिछला किताबी, पढ़यां हथ्थ किसे ना आईआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान साहिब सतिगुर होया राज़ी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिस शरअ मेटणी मुल्ला काज़ी, झगड़ा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद्द आपणा हुक्म वरताईआ। भिन्नड़ी रैण कहे मैं खेल वेखणी थल जल दी, जल्दी जल्दी ध्यान लगाईआ। जन भगतो भगत भण्डारे अग्ग बलदी, दो जहान करे रुशनाईआ। जिस दे वास्ते आ गए खण्ड घिउ ते हलदी,
१७२२ बरतन नौ रंग रंगाईआ। नौ रुपईए लेखा मुकावण जल्दी, माया कूड़ वाली चुकाईआ। नौ पैसे खेल दस्सण अटल दी, १७२२
२२ नव दवार दा डेरा ढाहीआ। मेखा धार जगत अछल दी, जड़ कूड़ वाली पुटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी २२
किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे गोलीए मुख विच लै लै लाल रुमाल, अक्खां लाल दुर्गा वल्ल उठाईआ। उठ के कहो सब दे सिर ते कूकदा काल, नगारा जगत वाला वजाईआ। जन भगतो वक्त लैणा संभाल, सम्बल बैठा धुर दा माहीआ। जिस ने इक्को रंग रंगाउणा शाह कंगाल, वड्डा छोटा नज़र कोए ना आईआ। कूड़ी क्रिया तोड़ जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जिथ्थे होवोगे उथे करेगा प्रितपाल, प्रितपालक हो के वेख वखाईआ। जिस सुणया मुरीदां हाल, मुर्शद अगम्म अथाहीआ। उस ने कंडयां वाली बेरी दा फड़ के डाल, कलयुग कंडे गुरमुखां नालों लाहीआ। मुहम्मद दी उम्मत दी मूधी कर कुनाल, कुनाली खाली दिती वखाईआ। तुहाडी लेखे पावे घाल, जो चल के आए आपणा पन्ध मुकाईआ। एह संदेसा गुर गोबिन्द दिता सी सर रवाल, सहिज सहिज नाल सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे जन भगतो गाउणा ढोला, बिन ढोलक छैणे ताल जणाईआ। तुहाडा सतिगुर शब्द बणया विचोला, विचला भेव रिहा ना राईआ। ना कोए पड़दा

ना कोए ओहला, सन्मुख हो के सोभा पाईआ। ना कोए मासा ना कोए तोला, वज़न विच वज़न ना कोए जणाईआ। तुसां खुशीआं विच रहिणा दीन दुनी दा वेखणा रौला, जिस नूं रौल पंडत सके ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मार्ग इक वखाईआ। लाड़ी मौत कहे प्रभू मैं सुती उठी, आपणी लई अंगड़ाईआ। मैं भज्जी आई पैरीं पुट्ठी, पुट्ठे पैरीं पन्ध चुकाईआ। जिधर वेख्या तेरी सृष्टी तेरे नाल रुट्ठी, साचा संग ना कोए जणाईआ। तैनूं लभ्भदे अन्दर वड़ के गुट्ठी, भज्जण वाहो दाहीआ। मेरे साहिब सच दी लग्गी किसे ना रुची, मनसा मन ना दूर कराईआ। अन्तर कल्पणा कूड़ कुद्दी, दिवस रैण होई हल्काईआ। मैं चारों कुण्ट तकां पंज तत बुती, बुतखान्यां ध्यान लगाईआ। दुनिया दा लालच तक्कया धीआं पुत्तीं, नार कन्त मिल के खुशी बणाईआ। मैं अन्त गल्ल करनी दो तुकी, सहिज नाल समझाईआ। जन भगतो जिन्हां ने वट चाढ़े सी मुच्छीं, संधूर मस्तक विच लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक दा दया कमाईआ। लाड़ी मौत कहे मेरे पापा, पतित पावन दयां जणाईआ। मैं चाहुंदी तेरे चरणां विच बहि के मैं ते दुर्गा सदी चौधवीं दी गोली तिन्ने करीए स्यापा, हाए हाए तिन्न वार सुणाईआ। नी दुर्गा तूं क्यों करें हाए, ऐवें रही कुरलाईआ। तूं ते सुंभ निसुंभ वरगे दैंत खपाए, अठाई पदम जो
१७२३ दल रखाईआ। तेरीआं अष्ट भुजां ते अट्ठ बाहें, अट्ठे शस्त्र नाल सुहाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तैनूं रहे ध्याए, देव देवा कहि १७२३
२२ के सीस निवाईआ। तेरा इक्को रूप जोत रुशनाए, तैनूं जम्मण वाली कोए ना माईआ। धरनी उत्ते नहीं कोए थाए, सिंघ २२
अस्वार देणा समझाईआ। तूं हँकारी बुरज सारे ढाहे, दैंता करी सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। नी दुर्गा तैनूं काहदा दुःख, क्यों रही कुरलाईआ। तेरी काली दी उतरी अजे ना भुक्ख, खप्पर हथ्थां विच उठाईआ। जिस ने कोटन कोटां दा खून पीता चुक्क, लाल रंग नाल रंगाईआ। तेरी आसा अजे गई ना मुक, फेर आई भज्जी वाहो दाहीआ। प्रभू दे सिंघासण थल्ले बैठीउँ लुक, सम्मत शहिनशाही दए गवाहीआ। जिस ने सिंघासण कीता पुट्ठ, पुट्ठी उम्मत दिती कराईआ। नी गोलीए तैनूं काहदी लुट्ट, क्यों हाए हाए कर कुरलाईआ। तूं मर्दे वेख उम्मती पुत्त, चार यारी नाल रलाईआ। प्रभ दा भाणा जाए ना रुक, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। तेरे मुख विच्चों खून निकल्यां थाँ थुक्क, खून दी धार दिती वहाईआ। छब्बी पोह नूं हो के चुप, क्यों बैठी मुख बदलाईआ। ओह तक लै उम्मत ने तरसणा इक इक टुक्कड़ा ते इक इक टुक्क, अन्न हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा मालक होए सहाईआ। लाड़ी मौत तूं क्यों ऐवें हाए हाए

करदी, चार जुग दे मानस गई खाईआ। तैथों तत्तां वाली धार सारी डरदी, नेत्र रोवण मारन धाहीआ। तूं होणीएं जिस घर विच वड़दी, उस घराने दी करे सफ़ाईआ। तेरी आसा कदे ना भरदी, तृष्ना पूर ना कोए कराईआ। तूं चौथे जुग दा राह तकदी, बैठी नैण उठाईआ। सोहणी शृंगार कर के फबदी, फुल्ल सग्गी रही सुहाईआ। तैनूं पता नहीं एह उम्मत उस रब्ब दी, जिस मुहम्मद दिती वड्याईआ। ओह वेख सदी चौधवीं भज्जदी, हाज़र हो के सीस निवाईआ। गोली ने चवाती लाई अग्ग दी, नौ खण्ड अग्नी देणी तपाईआ। धार रहिणी नहीं बगढ़े बप दी, सब दी करनी सफ़ाईआ। तूं वी उसे प्रभू नूं जपदी, जिस नूं जपे लोकाईआ। पर दुनिया नूं माया सप्पणी हो के डस्सदी, जिस तों आपणा आप सके ना कोए बचाईआ। तूं प्रभ दे हुक्म विच नस्सदी, राजयां राणयां लवीं खाईआ। सूरबीरां दीआं तारां कटदी, अग्गे बल ना कोए वखाईआ। हुण खेल करनी झट दी, झटके हलाली वाले सारे देणे मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। लाड़ी मौत इक वार वेख लै आपणे नैण, नैण मुँधारी रिहा जणाईआ। तैनूं फेर ना पए कहिण, कहिण दी लोड़ रहे ना राईआ। नी अन्त जगत जहान विच रूप धार लै डैण, भय विच सारे देणे डराईआ। नाता तोड़ना भाई भैण, ;सगला संग ना कोए रखाईआ। तेरे कोल इक्को इक हुक्म दी रसाइण,
१७२४ २२ जुग चौकड़ी निखुट कदे ना जाईआ। किसे नूं लैण ना देवीं चैन, मावां पुत्र करीं जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार भुगताईआ। लाड़ी मौत कहे मेरी नमस्ते, नमो नमो सरनाईआ। मैनूं कलयुग जीव लभ्भ गए बड़े सस्ते, कीमत दाम ना कोए चुकाईआ। क्यों एह जगत दी कूड़ क्रिया विच मस्ते, मध नाम दी पीवण वाला नज़र कोए ना आईआ। भुल्ल गए अवतार पैग़म्बर गुरुआं दे रस्ते, मंज़ल चढ़न कोए ना पाईआ। एह वणजारे रह गए आपणे जस दे, साध सन्त आपणी करन वड्याईआ। किसे नूं नज़ारे मिलदे नहीं निज नेत्र अक्ख दे, प्रतख मिले ना कोए गुसाँईआ। एह प्यासे हो गए लहू मिझ रत दे, माणस माणसां तांईं खाईआ। इन्हां नूं पते नहीं परमेश्वर पति दे, जो पारब्रह्म आपणा पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी तूंबी दी हिला दयो तार, तरह तरह जणाईआ। मेरे कुदरत दे कादर यार, कदीम दे मालक बेपरवाहीआ। सब दा कर्ज़ा दे उतार, लहिणा रहिण कोए ना पाईआ। आह तक मंगदे तेरा दवार, सारे बैठे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दी आसा इक जणाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा रंग दे इक्को कफ़न, कफ़नी वाले बेपरवाहीआ। कूड़े कलमे वाले कर दे दफ़न, दफ़ा

आपणा हुक्म सुणाईआ। मेरा किनारा आया पत्तण, पतिपरमेश्वर दयां जणाईआ। तुध बिन कोए ना आवे रखण, कलयुग अन्त ना कोए सहाईआ। तैनूं बुल्लां नाल सारे रटण, हिरदे सके ना कोए वसाईआ। कोटां विच्चों तेरे भगत सुहेले थोड़े रत्न, रत्न अमोलक नज़री आईआ। जेहड़े तूं मेरा मैं तेरा नाम जपण, आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को रूप इक्को सरूप समाईआ। तेरे शब्द दा सुण के बचन, बच्चे बुढ्ढे जवान खुशीआं विच टप्पण चाँईं चाँईंआ। सचखण्ड दवारे सदा वसण, जिथ्थे वसे धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग रंगाईआ। छब्बी पोह कहे मेरी सुहञ्जणी सुहावी राती, रात्री दए गवाहीआ। जन भगतो तुहाडे अन्दर प्रभू दी इक्को जेही प्रभाती, सुबह शाम वंड ना कोए वंडाईआ। तुहाडे अन्तर दा अन्तर नाती, निरन्तर दा मेला धुरदरगाहीआ। सति दा सच बण के साथी, सगला संग निभाईआ। अज्ज दा सुनेहड़ा धुर दा शब्द ते प्रभू दे प्रेम दी पाती, तुहाडे हिरदे अन्दर बिना अक्खरां दए लिखाईआ। एह चिट्ठी किसे तों ना जाए वाची, अक्खां नाल पढ़न कोए ना आईआ। तुहानूं साहिब ने आपणी किरपा नाल चाढ़या घाटी, मंज़ल इक्को दिती वखाईआ। तुसीं उहदे बणे जमाती, जो जुग जुग सब नूं रिहा पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दो जहानां दी निरगुण धार करे तलाशी, घट घट अन्तर वेखे थांउँ थाँईंआ।

२७ पोह शहिनशाही सम्मत ७ महिन्दर कौर भुलर हांस, मेहर सिँघ जगराउं, आसा सिँघ खांघ, पाल सिँघ लल्लीआं, सवरन सिँघ नंदापुर, हज़ारा सिँघ मन्याला, कुंदन सिँघ शाहपुर थेड़ी, सुंदर सिँघ रोसे, जोगिन्दर सिँघ महिरम पुरा, सुरिन्दर कौर कमोजहरा, सवरन कौर सैद पुर, गुरमीत कौर कराला, जोगिन्दर कौर गोलेवाल, माधो सिँघ चीमा, अर्जन सिँघ माणक पुरा, चन्दा सिँघ दिल्ली, जीतो बाबोवाल, रजवन्त अटारी, तारो छापा, राम सिँघ गुरभेज कौर कहोर, शिन्दरो मल्लूवाल, शांती अमृतसर, गुरबचन सिँघ अहिमदपुर, बलजीत सिँघ जेतेअली, दलीप सिँघ टांगरा, रमेश चन्द्र फ़िरोज़पुर, ईश्र सिँघ डडहेरी, बगीचा सिँघ मुंडी जमाल, हरि भगत दवार जेठूवाल सवेर दे वेले ज़िला अमृतसर

सतिगुर शब्द कहे मैं भगतां मीता, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। मेरी धर्म धार दी जुग जुग रीता, सतिजुग त्रेता द्वापर

कलयुग आपणी कार भुगताईआ। इक्को माण बख्शणा ऊचा नीचा, वड्डा छोटा ना कोए अख्वाईआ। जन भगतां सीना करां ठांडा सीता, अग्नी तत बुझाईआ। जिन्हां दा नाम सदा रहे जग जीता, जगजीवण दाता दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे आदि अन्त प्यार, प्यार मुहब्बत विच समाईआ। मैनूं जुग चौकड़ी अख्त्यार, प्रभ दा हुक्म दो जहान मनाईआ। जन भगतां पावां सार, चुरासी विच्चों आप उठाईआ। निरगुण सरगुण देंदा आवां अधार, नित नवित आपणी कार कमाईआ। अन्तिम लेखा पूरा करां विच संसार, संसा रोग जगत मिटाईआ। जन्म मरन दा गेड़ निवार, आवण जावण पन्ध मुकाईआ। धर्म दी धार सीस बन्न्ह दस्तार, सिर सर धुर दे लेखे पाईआ। उन्हां जन्म लैणा पए ना दूजी वार, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। मिले मेल सच्ची सरकार, दरगाह सच मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सतिजुग सच दी बन्न्हे धार, धरनी धरत धवल धौल धुर दा हुक्म इक वरताईआ।

✪ २७ पोह शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल रात वेले ज़िला अमृतसर ✪

१७२६
२२

सताई पोह कहे जन भगतो हत्थ जोड़ लओ पुट्ठे, पुट्ठे लटकण वाल्यो मैहन्दी लाल रंग रंगाईआ। तुहाडा साहिब तुहाडे उत्ते तुट्ठे, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। तुसां जगत जहान नहीं जाणा लुट्टे, ठग्गां चोरां कोलों लए बचाईआ। तुहाडी सुहञ्जणी होई इक्को रुते, रुतड़ी प्रभ दे नाल महकाईआ। लेखे लाए काया बुते, तन वजूद वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। सताई पोह कहे मेरी खुल्ह गई अक्ख, अक्खीआं वाल्यो दयां जणाईआ। मेरा महिबूब फिरे प्रतख, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जिस सब दा झोली पाउणा हक, हकीकत खोज खुजाईआ। उस दे उत्ते सब नूं पैणा शक, भरमे भुल्ले सर्ब लोकाईआ। जिस दे कोलों धरती ने आपणा सीना रंगणा नाल रत्त, रंग लाल चढ़ाईआ। शस्त्रधारी दुर्गा जोड़े हत्थ, दर ठांडे सीस निवाईआ। जिस दा नूर होया प्रगट, जगत परगनयां तों बाहर करे रुशनाईआ। ओह लेखा जाणे चौदां हट्ट, चौदां लोक चौदां तबक पन्ध मुकाईआ। जिस नूं सारे नाम कल्मयां विच रहे रट, सिफ्तां विच सालाहीआ। उहदा रूप अनोखा बणया जट्ट, जटा जूटधारी समझ कोए ना पाईआ। जिस दीन मज़्हब दी मेटणी वट्ट, शरअ हदूद दए गंवाईआ। सदी चौधवीं लेखा पूरा करे हक, हकूक सब

दी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप चढ़ाईआ। सताई पोह कहे मैं उठया सुत्ता, मात लई अंगड़ाईआ। नूर तक्कया अबिनाशी अचुता, जो चेतन सब नूं रिहा कराईआ। उहदा संग वेख्या शब्द दुलारे सुता, जो डंका इक करे शनवाईआ। जिस दे हुक्म नाल सब दा पैंडा मुका, पाँधी आपणा पन्ध मुकाईआ। दीन दुनी दा बदले रुखा, मार्ग इक्को इक सुणाईआ। लेखा दस्स के अगम्म अथाह उच्चा, ऊचो ऊच दए वड्याईआ। जन भगतां उज्जल करे मुखा, दुरमति मैल धुआईआ। अन्त निशाना मेटे नड़ी हुक्का, हुक्म धुर दा आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सताई पोह कहे पता नहीं एस दी किथ्थों लग्गी सूह, जगत जहान खोज खुजाईआ। बेड़ा लै के पुज्जया नबी नूह, निव निव सीस निवाईआ। मेरे कलमे ने दस्सया कलमे दा मालक कलमा गुरु, मुरीद मुर्शद रूप बणाईआ। अवतारां पैग़म्बरां दे नाम कलमे उन्हां दी अन्त चोटी ते तेरा मार्ग हुन्दा शुरू, शरअ दा लेख ना कोए बणाईआ। मेहरवान बिन तेरी किरपा उस मंज़ल ते केहड़ा तुरू, तुरन वाला नज़र कोए ना आईआ। बिन तेरी किरपा अन्तिम सब दा बेड़ा रुढ़ू, नईया नौका जगत ना कोए बचाईआ। तेरे हुक्म नाल हुक्म दा युद्ध छिड़ू, युधिष्टर बैठा सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी
१७२७ २२ किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। दर तेरे आ गया, छड्डया आपा आप। बिन लत्तां बाहवां भाज्या, पन्ध सक्या कोए ना नाप। मेरे शहिनशाह राजन राज्या, तेरे चरण रहे सच नात। मैनूं पता लग्गा तेरे शब्द कलमे दस्सया ओह प्रगट होया देस माज्झया, जिथ्थे ना कोए सवाल ना जवाब। सब दा पीर बण के साज्या, जगत मेटे कूड़ संताप। कलयुग कूड़ी क्रिया फेरे मांज्या, तन काया माटी भाण्डे करे साफ़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नबी कहे मेरा आ गया बेड़ा, बेपरवाह तेरी सरनाईआ। एस नूं चप्पू लावे केहड़ा, क्यों गुर अवतार पैग़म्बर चप्पा चप्पा ज़िमीं दे मालक तूं दिते बणाईआ। ओह तेरे नाम कलमे दीआं छेड़ के गए छेड़ां, छेकड़ तेरा अन्त कहिण कोए ना पाईआ। कहिंदे गए धरनी धरत धवल दा खुल्हा वेहड़ा, ओह धरनी जेहड़े तेरे चरणां दी धूढ़ बण के नौ खण्ड वंड वंडाईआ। ओ प्रभू तेरा किड्डा वडा जेरा, जेरज अंड विच वड़ के आपणा आप छुपाईआ। जिस नूं तूं भेज्या ओह सीने ते हथ्थ मार के कहिंदा गया सब कुछ मेरा, मुरीदो सिक्खो मैं ही तुहाडा पिता माईआ। ओह पिता ना मन्नणा जो गुरु अवतार पैग़म्बर अन्त हो गया ख़ाक दा ढेरा, तन वजूद वेख के सारे रोवण मारन धाहीआ। एसे कर के ओह प्रगटया सिँघ शेर दलेरा, जिस शेर दे भय विच सारी फिरे लोकाईआ। एस दा हुक्म ते इक्को उखेड़ा, जड़ १७२७ २२

सब दी दए उखड़ाईआ। प्यार मुहब्बत दा देवे गेड़ा, चुरासी चुराहिआं विच भवाईआ। सब दे कोलों छिड़ाउंदा रिहा छेड़ां, छेकड़ आपणी कार भुगताईआ। हुक्म संदेशा देंदा रिहा बथेरा, बहु गिणत विच गिणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। बेड़ी कहे मेरया मालका मैनूं केहड़ा लावे चप्पू, मेरी चारों कुण्ट दुहाईआ। अवतार पैग़म्बर तेरे निक्के बाले मातलोक दे पप्पू, तैनूं अब्बा पिता पुरख अकाल कहि के आपणा झट लँघाईआ। ओ दस्स दो जहानां केहड़ा टप्पू, जगत दे टापूआं विच रहिण वाले तेरा अन्त कोए ना पाईआ। तूं किसे नूं माण दिता मेरा राम कृष्न ते मेरा मुहम्मद कुद्दू नच्चू, नच्च नच्च के आपणा झट लँघाईआ। मूसा ईसा वडया के किहा तुहानूं आपणा नाम कलमा दस्सूं, बिन रसना जेहवा जणाईआ। नानक नूं किहा मैं तेरी पति रखूं, एह मेरी बेपरवाहीआ। गोबिन्द नूं बणा के आपणा बच्चू, बच्चे नीहां हेठ दबाईआ। फेर वी सब नूं किहा अंगीठयां विच रखूं, मकबरयां विच सवाईआ। ओह जगत किसे ना लभ्भू, लबां कटावण वाल्यो हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। मेरा जदों खेल होया ते भगतां दे विच फब्बूं, फ़ैसला धुर दा इक सुणाईआ। जिथ्थे होणगे उथे उहनां नूं लभ्भूं, अन्दर वड़ के लवां उठाईआ। मुहब्बत प्यार दा दे के लड्डू, लाडले आपणे दयां जणाईआ। सब तों अख़ीर भगतां दा भगत दवार निशाना गड्डूं, गॉड हो के दयां दृढ़ाईआ। शरअ दीआं ज़ंजीरीआं सारीआं वड्डूं, फ़ैसला आपणे हथ्थ रखाईआ। सब दे खाते वेखां डूँघी खड्डू, खण्डां ब्रह्मण्डां फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। ओह बेड़ी कहे मेरा केहड़ा वञ्झ मुहाणा, तेरी वञ्झी हाथ ना आईआ। जेहड़े गाउंदे गए तेरा गाणा, खुशीआं विच ढोले गाईआ। उहनां दा जुग जुग चीथड़ कर के पुराणा, तन वजूद दिता बदलाईआ। फेर दे के धुर फ़रमाना, कीती सच पढ़ाईआ। हुक्म संदेशा दिता तुसां मातलोक छड जाणा, भज्जणा वाहो दाहीआ। तुहानूं इक्को बेड़े उत्ते चढ़ाउणा, जिस बेड़े नूं जगत मलाह हथ्थ कोए ना लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। बेड़ा कहे मैं जाणा केहड़े डूँघे सागर, मेरे साहिब देणा समझाईआ। गुरुआं अवतारां पैग़म्बरां नूं तूं दस्सया मेरा ब्रह्मण्ड खण्ड विच काया गागर, पिण्ड ब्रह्मण्ड सब कुछ दिता समझाईआ। फेर क्यों आपणे आप नूं कीता सब तों बाहर उजागर, पर्दा दिता खुलाईआ। नाले करीम बणया रहीम बणया अख्वाया इक कादर, कुदरत दा मालक धुरदरगाहीआ। जे तूं अन्त करन आया आदल, अदल आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। ओह बेड़ी कहे मेरा नाम रखया जगत विच नौका, चढ़े जगत लोकाईआ। ओ मेरा निकले हौका,

१७२८
२२

हाए हाए कर सुणाईआ। तेरा प्यार भुल्लया सब नूं जगत नाता पिता मांओं का, भैण भईआ संग रलाईआ। तेरे दर पुजणा घनेरा खेल चाओ का, बिन भगतां नज़र कोए ना आईआ। प्रभ तेरा वी खेल सदा दाउ का, जुग जुग आपणा दाअ लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। बेड़ी कहे मैं आई उस दे कन्ढे, जो कंडा टाहणी वेख वखाईआ। जो मालक रहमत दात वंडे, रहमत सब दी झोली पाईआ। जिस ने हुक्म सुणाया दो जहान ल्याउणे इक हेठां झण्डे, झण्डा धर्म धार झुलाईआ। जेहड़े इक प्रभू दे सारे बन्दे, क्यों ना इके प्रभ नूं इक्को वार सीस निवाईआ। मज़्बां दे फट्टयां उत्ते रहिण नहीं देणे टंगे, पुट्ठे सारे देणे कराईआ। लेखे लाउणे माढ़े चंगे, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। जिस ने माण देणा तत पंजे, पंचम आपणा हुक्म वरताईआ। अग्गे पैंडे रहिण नहीं देणे लम्बे, सफ़रां विच ना कोए भवाईआ। धरनी धरत धवल हेठों कम्बे, थरथराहट विच कुरलाईआ। मेरे उत्ते कोटन जुग चौकड़ी लँघे, आपणा आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। बेड़ी कहे मैं नबी दी ओह नईया, जिस नूं नबी सीस निवाईआ। जिस दा नाता नहीं किसे नाल भैणां भईआ, आर पार किनारे चलणा आपणी खुशी बणाईआ। पर मैनूं याद आ गया गोबिन्द इक वेरां मेरे विच चढ़या ते मैनूं हौली जेही पैर मार के किहा कमलीए जिस वेले मेरा बीत्या ढईआ, ढौंका जगत वाला लगाईआ। फेर मालक आवेगा धुर दा सईआ, स्याणा तैनूं दए कराईआ। उहदे कोल इक्को होवेगा शब्द गुरु जो दो जहान दा गवईआ, दूजी सुर ताल सुणन कोए ना पाईआ। उहने किसे नूं नहीं कहिणा मेरी मईआ, अम्मीजान ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। बेड़ी कहे मैं वड़दी विच जलां, जलधारा आसण लाईआ। मैं पार किनारे खड़्दी विच पलां, भज्जां वाहो दाहीआ। पर मैं पैग़म्बरां तों सुणीआं गल्लां, उन्हां दे अन्दर ध्यान रखाईआ। नबी वी कहिंदे रहे बेपरवाह मेरया अल्ला, तेरी वड वड्याईआ। मेरे सहारे नाल पहलों उस दा फड़दे पल्ला, फेर मेरे विच कदम टिकाईआ। मैं चलदी विच लहरां ते छल्लां, झकोल्यां विच दुहाईआ। उपर नीचे रलां, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। बेड़ी कहे मैनूं जदों चलाउंदे मलाह, बदोबदी मल्लो मल्ली पाणी विच धकाईआ। मेरी किसे ने कदी नहीं लई सलाह, मशवरा करन कोए ना पाईआ। जगत माया कारन मैनूं धक्का देंदे ला, पिच्छों वंञ ज़ोर नाल दबाईआ। मैं भज्जां वाहो दाह, आपणा पन्ध मुकाईआ। पर मैनूं वी याद आ गया नबी दा ओह खुदा, जो खुद मालक अख्वाईआ। जिस ने आपणे हुक्म दे बेड़े

१७२६
२२

१७३०
२२

विच चढ़ा, लोकमात दिती पुचाईआ। जलां थलां विच रखा, फेर आपणे बेड़े नूं उस बेड़ा गरकणे ने आपणे अन्दर ल्या लुका, गुर अवतार सारे लभ्भदे गए हथ्थ किसे ना आईआ। इक दिन मुहम्मद नूं एसे विच हो गया शुदा, बौहड़ी मेरया अल्ला मेरी उम्मत नूं अन्त कौण बेड़े लवे चढ़ाईआ। नाले हथ्थ मारे आपणीआं उत्ते दोवें गल्लां, हथ्थ पेशानी उत्ते टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा दाता इक अख्वाईआ। बेड़ी कहे धुर दे बेड़े कोए ना चढ़दा, चड़दा लहिंदा वेख वखाईआ। भावें कोए रसना जेहवा कोटन कोटि कलमे पढ़दा, अक्खर सिफ्तां नाल सालाहीआ। जिंना चिर मेरा महिबूब मुहब्बत विच किसे भगत सूफ़ी नूं नहीं फड़दा, ओना चिर धर्म दे बेड़े विच कदम ना कोए रखाईआ। क्यों जगत मलाहां नूं पता नहीं ओस प्रभू दे घर दा, वहिणां विच वहिण वाले दरगाह साची ना कोए टिकाईआ। जन भगतो उस दा दवारा इक्को सरोवर सर दा, जिस सर विच्चों नहा के गुर अवतार पैग़म्बर आपणा रूप लैण बदलाईआ। ना कोए जम्मदा ना कोए मरदा, लख चुरासी दा गेड़ा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप वरताईआ। बेड़ी कहे मैं छड्डया जगत, ओ जिज्ञासूओ दयां दृढ़ाईआ। मैं आ गई दवारे भगत, भगतां नूं सीस निवाईआ। मेरे विच ओह बहिणा फ़कत, जो फ़िकरा ढोला सोहला गाईआ। हुण आ गया ओह वक्त, जिस दा सारे राह तकाईआ। जिस दे चरणां दे हेठ अष्टभुज लेटी आपणी लै के शक्त, शक्तीशाली आपणी कार भुगताईआ। जिन सदी चौधवीं हुक्म दिता सख्त, सख्ती नाल दृढ़ाईआ। गोली दे मुख विच्चों कढ के रक्त, धरनी लाल रंग रंगाईआ। सब दी पुड़ी करनी नरद, सार पाशा दरबारीआं दा दए गवाहीआ। शरअ छुरी रहिण नहीं देणी करद, कत्लगाह दा डेरा ढाहीआ। एसे कर के भगतो बेड़ी कहे तुहाडे साहमणे मेरी हुन्दी लिख्त पढ़त, बिना लेख तों जगत निशाना नज़र कोए ना आईआ। वायदा करना ते पूरी करनी शर्त, शरअ वाल्यां दयां सुणाईआ। मैनूं हथ्थ ना ला सके उत्ते कोए फ़र्श, फ़रिश्ते चारे रोवण मारन धाहीआ। मैं उस दी दासी जिस नूं कहिंदे वाली अर्श, अर्शां दा मालक बेपरवाहीआ। मैं आपणा पूरा करन आई फ़र्ज़, भज्जी वाहो दाहीआ। ओए जन भगतो, बेड़ी कहे, मेरी मन्न ल्यो अर्ज़, बेनन्ती कर के सीस निवाईआ। तुहानूं लोड़ नहीं रही जगत क्रिया दी, तुसां सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी इक्को गाउणी तर्ज़, तरीका प्रभ ने दिता समझाईआ। ओह तुहाडा आपे वंड के दर्द, बेदर्दी हो के आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। बेड़ी कहे मैं तक्कां मेरा केहड़ा किनारा, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। ओधरों मुहम्मद करे इशारा, सलाम पुड़े हथ्थ वखाईआ। नी तूं आजा

१७३०
२२

मेरे दवारा, हथ्थ सीने उत्ते छुहाईआ। मैं हस्स के किहा वे सद्द लै चार यारां, जो यारी तेरे नाल रखाईआ। फेर सदी चौधवीं नूं आवाज़ मारां, कूक कूक दृढ़ाईआ। ओह वेख उम्मत होई अवारा, कलमा बंध ना कोए बंधाईआ। अल्ला हू दा भुल्लया नाअरा, हक हक ना कोए सुणाईआ। पर इक गल्ल कि पैग़म्बर गुरु अवतार कोई प्रभ ने आउण नहीं दिता दुबारा, जो जा के फिर आ के आपणा नाम सुणाईआ। एसे कर के तरले करदे गए हाए ओह आए कल्की अवतार ते चवीआं अवतारा, अमाम अमामा वेस वटाईआ। जिस दा हक दा सच दा इक्को होए दरबारा, दरगाह साची इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। बेड़ी कहे जन भगतो मैनूं मूल ना जाणिओ बेड़ी, मैं बेड़े सब दे ग़रक कराईआ। जेहड़ी पिच्छे खेल कीती बथेरी, बहुती आपणी सेव कमाईआ। मैं अवतार पैग़म्बर गुरुआं नूं मज़्बां दे पहुंचा दिता उत्ते डेरीं, दूरों ल्या के हज़ूरों ल्या के धरती उत्ते टिकाईआ। फेर हस्स के किहा मैं बणना नहीं किसे दी चेरी, चरणां उत्ते सीस ना किसे निवाईआ। मैं ओह सतिगुरु नहीं मन्नणा जेहड़ा हो जाए ख़ाक दी ढेरी, अग्नी तत अग्नी नाल जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि,
१७३१ सच दा हुक्म इक वरताईआ। बेड़ी कहे मैं आ गई ओस घाट, जिथ्थे घाटा नज़र कोए ना आईआ। ओ मेरी मुक गई वाट, पन्ध दिता चुकाईआ। ओ मेरी पूरी हो गई ख़ाहिश, मैं खुशीआं विच दयां दुहाईआ। ओ भगतो उस नूं कितों ना करयो तलाश, ओह ख़ास तुहाडा मालक तुहाडे अग्गे आपणा आप रखाईआ। मैं अग्गे चुकदी सां अवतार पैग़म्बर गुरुआं दी लाश, तन वजूद आपणे विच टिकाईआ। मैं बड़ी होई अयाश, जगत विच आपणा खेल कराईआ। पर हाए उफ़ काश, मेरे माही ने मैनूं हुण आपणी रमज़ लगाईआ। ते नाले किहा शाबाश शाबाश शाबाश, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मैं सब दे कोलों कर लई आपणी बन्द खुलास, बन्धन दिते तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। ओह बेड़ी कहे सूफ़ीओ इक दिन नूह ने तकी ओह हस्ती, हस्स हस्स के वेख वखाईआ। ख़ुशी विच चढ़ गई मस्ती, मस्त दीवाना हो के पुट्ठा आपणा आप टिकाईआ। फेर किहा ओ बेड़ीए ओ छेती कर मैनूं लै जा उस दी बस्ती, जिथ्थे वसे बेपरवाहीआ। नी तूं रोज़ रोज़ नस्सदी, भज्जें वाहो दाहीआ। मैनूं वी क्यों नहीं रही दस्सदी, ओह मालक नूर खुदाईआ। उस ने मैनूं अन्दरों सैनत मारी आपणी अक्ख दी, ओ मेरीआं अक्खीआं दितीआं खुल्ह्हाईआ। मैनूं समझ नहीं ओस कमलापति दी, की आपणी कार भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। बेड़ी कहे नूह हो गया मस्ताना, वाह तेरी बेपरवाहीआ। ओ मैं

दीवान्यां दा दीवाना, दीवानख़ाने दिते तजाईआ। ओ तेरे शब्द दा तराना, तेरे कलमे दी शनवाईआ। ओ मेरे चरणां हेठ ज़िमीं असमाना, असमानां तों परे तेरा नूर रुशनाईआ। ओ मेरा लबरेज़ हो गया पैमाना, आबेहयात बिना मुख तों मुख देणा टपकाईआ। तूं मेरा सज्जण नौजवाना, ओ सज्जणा घुट्ट के गलवकड़ी लैणी पाईआ। मैं छड जाणा जीव जहाना, तेरी दरगाह नूं भज्जां चाँईं चाँईंआ। मैं सदा रहवां गुलामा, गुलाम बण के तेरी सेव कमाईआ। झट ख़ुदा ने किहा ऐ मेरे नबी ऐ मेरे नूह जिस वेले मैं बण के आया अमाम अमामा, अमलां तों रहित बेपरवाहीआ। फेर तेरा लेखा ज़रूर करां परवाना, परवानगी आपणे हथ्थ फड़ाईआ। उस वेले सब दा लेखा होणा बेगाना, शरअ दा मालक नज़र कोए ना आईआ। इक्को शहिनशाह जिस ने सब तों वसूल करना जुरमाना, जराइम मज़्हबां वाला समझाईआ। क्यों ओह बड़ा ख़सम धुर दा ख़समाना, ख़ावंद इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। मुहम्मद कहे मैं तेरा रसूल नबी, सच तेरी सरनाईआ। माण दिता चौधवीं सदी, सदके वारी घोल घुमाईआ। मेरी मुहब्बत तेरे नाल लग्गी, लग मात्रा दा डेरा ढाहीआ। मैं बहुता नहीं बणना लबी, लबां कटा के दिता वखाईआ। जिस वेले तेरे नूर दी जोत जगी, तेरा ज़हूर करे रुशनाईआ। सदी चौधवीं आवे भज्जी, तेरे दर ते सीस निवाईआ। प्रीत इक्को होवे लग्गी, दूजा रंग ना कोए रंगाईआ। उस दी गोली सोहणे लिबास विच होवे फबी, पोह छब्बी दी रुत सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा रंग आप रंगाईआ। बेड़ी कहे नबी नूह नूं चढ़ गई खुमारी, खाहमखाह आपणा आप बदलाईआ। ओ प्रभू ओ ख़ुदा ओ मैं हुण नहीं रही कुँवारी, तेरे नाल मिल के तेरा रूप समाईआ। तूं दस्स पुरख कि नारी, पर्दा ओहला दे चुकाईआ। मैं तैनूं सजदा करां करां निमस्कारी, निउँ निउँ लागां पाईंआ। परवरदिगार ने दिता इक इशारी, इशारे नाल दृढ़ाईआ। मेरा इक्को नूर ओह नूर मेरा अपारी, अपरम्पर हो के पड़दा दिता चुकाईआ। मेरी जदों लग्गे ते लग्गे भगतां नाल यारी, यराना धुर दा दिता वखाईआ। कलयुग अन्तिम आई मेरी वारी, वारता पिछली सब दी वेख वखाईआ। नबी ने किहा मेरे परवरदिगार तेरी की निशानी होवे ज़ाहरी, ज़ाहर ज़हूर देणा समझाईआ। ख़ुद ख़ुदा ने किहा मेरा कलमा मेरा नाम इक्को होवे जैकारी, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। शाह पातशाह बण सिक्दारी, आपणा हुक्म वरताईआ। भगत दवारे दी कर उसारी, दीन दुनी दा पिछला पन्ध मुकाईआ। फेर लंगर दी करां त्यारी, त्रैगुण अतीता हो के आपणा रूप जणाईआ। अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं नूं नबी नूह तेरे बेड़े ते ल्यावां चाढ़ी, पर तेरे कोलों खोह के आपणे हथ्थ विच रखाईआ। फेर दस्सां आओ वेखो किस तरह मेरे भगत सिर ते चुक्कदे तगारी, जगत जहान दी सांझी

सेव कमाईआ। जिन्हां नूं सारी सृष्टी ने कहिणा इन्हां दी किस्मत माड़ी, गुरुआं अवतारां नूं भुल्ल के उलटे राह आपणी मत्त गंवाईआ। पर मेरी मेहरवानी, जिस इक वार चरण छुहा लई दाढ़ी, लाड़ी मौत दाहड़ां हेठ ना कदे चबाईआ। इके वार सारयां भगतां दी पका देवां हाढ़ी, फेर हाढ़ा कढण दी लोड़ रहे ना राईआ। जन भगतो भगवन हो के रखां यारी, यराना सके ना कोए तुड़ाईआ। तुहाडी आत्मा जगत व्याही ते बिना प्रभू तों कुँवारी, बिना साहिब तों साची सेज ना कोए टिकाईआ। जिस वेले साहिब दी सेजे सुत्ते फेर सौणा पैर पसारी, दो जहान ना कोए उठाईआ। जदों तक्को ते तक्को नूर जोत उज्यारी, जोती जाता डगमगाईआ। पूरन पूरन परमेश्वर तक्को ते परमेश्वर पूरन रूप अपारी, अपरम्पर आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। बेड़ी कहे गोलीए मैनूं फेर कर त्यार, दूजी वार बणत बणाईआ। मैं ओनां चिर वेख के आवां संसार, सृष्टी दृष्टी अन्दर पाईआ। लभ्भां ओह आपणे यार, जेहड़े यराने धुर दे रहे लगाईआ। दे के आवां दीदार, मस्त मस्ताना आपणा रूप दरसाईआ। करां खेल विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी सारे सीस निवाईआ। इक सुहावां ते सुहावां भगत दवार, भगवन हो के फिरां चाँईं चाँईंआ। ओ अज्ज दी खुशीआं वाली बहार, सोहणा रंग चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल

१७३३ साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। बेड़ी कहे मेरे ते आ गया बुढापा, बुढ्ढी हो के दयां सुणाईआ। मैनूं सदी चौधवीं १७३३

२२ दा अन्त वेख के चढ़ गया तापा, हाए हाए कर कुरलाईआ। मेरा कम्ब गया पापा, पापीआं नूं वेख के मेरा नैण रिहा शरमाईआ। २२

मैनूं भय आउंदा किते मेरा महिबूब सब दा कढ ना ल्ए खाता, क्यों ख़ता वाले सारे नज़री आईआ। ओह वेखो लुक गया पैग़म्बर गुर अवतार जगत दा चाचा, चचा चचा चचा करन वाला नज़र कोए ना आईआ। जिन्हां दा भज्ज गया ठीकर काचा, काची गगरीआ रहिण कोए ना पाईआ। तन वजूद विच अक्खर वाचा, सिफ्तां ढोले गाईआ। मन्न के धुर दा आका, सजदयां विच सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। सच कहे बेड़ी फड़ा दे उठ के गोली, हथ्थ हथ्थ नाल मिलाईआ। पा लै ओस प्रभू दी बोली, जो अनबोलत राग सुणाईआ। जिस ने रंगणी भगतां चोली, चोहल कर के आपणी गोद टिकाईआ। हुण खेल करना उपर धौली, धर्म दी धार वखाईआ। जो सच दवार रिहा खोल्ही, आपणी कार भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। बेड़ी कहे मेरा बणया दूजा रूप, मैं दुतीए दिते तजाईआ। मन्न के इक्को भूप, बैठी सीस झुकाईआ। जां मैं निगह मारी सारे दिसदे इक्को पिता दे पूत, ते इक्को सब दी माईआ। जिन्हां दा इक्को ताणा

पेटा ते इक्को सूत, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। मैं हुण फिरना चारे कूट, भज्जणा वाहो दाहीआ। लेखा वेखणा जूठ झूठ, सति सच फोल फुलाईआ। तुहाडी शहादत ते तुहाडी गवाही ते एस लिख्त ने देणा सबूत, जो पंज लिखारी लिख के लेखा रहे बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। बेड़ी कहे नबी नूह ने इक गल्ल सी आखी, मेरे विच सजदा करके अन्दरे अन्दर जणाईआ। जगत वहिणां विच्चों मेरा परवरदिगार करे राखी, रक्षक हो के वेख वखाईआ। मैनूं वञ्झ लाउण लग्गयां किहा एह वी मेरी गुस्ताख़ी, क्यों आपणा बल प्रगटाईआ। फेर पऱां सुट्टया जे मेरा होवेगा ते मेरी बचा लवेगा हयाती, बिना चप्पू दिती चलाईआ। इक रख के ओट आसी, निगह निगह विच्चों बदलाईआ। मेरे मालक कुझ संदेशा दे बिना पाती, बिन अक्खरां लेख लिखाईआ। परवरदिगार खोल्ह के अन्दर दी ताकी, संदेशा दिता जणाईआ। ओह तक पुरख अबिनाशी, करता धुरदरगाहीआ। उस दा खेल होणा सतिजुग वाली प्रभाती, भाण्डा भरम भनाईआ। ओह लेखा मुकावे कलयुग अंधेरी राती, सदी चौधवीं अन्त झोली दए भराईआ। आप बण के पाक पाकी, पतित पावन इक अख्वाईआ। ऐ नूह तेरी हाज़र करेगा रूह लहिणा देवे हाथो हाथी, बाकी नज़र कोए ना आईआ। ना ओह आप होवेगा बन्दा ख़ाकी, सब दी करेगा राखी, रक्षक हो के आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। बेड़ी कहे मेरी अन्त भगतो प्रणाम, सब दे कदमां सीस निवाईआ। तुहानूं मेरी लोड़ नहीं ते तुहानूं लैण आवे आप भगवान, तुहाडा विचोला शब्द गुरु बणाईआ। तुहाडा सदा नाँ रहे विच जहान, जुग जुग वज्जदी रहे वधाईआ। मैं एसे करके तुहानूं संदेशा आई सां सुणाउण, भज्जी वाहो दाहीआ। तुसीं सुणया चंगी तरह नाल कान, घर जा के भुल्ल कोए ना जाईआ। मेरे परवरदिगार इक वार अग्गे इक्को सोहणा बणा देणा विधान, वायदे सब दे पूर कराईआ। ते सतिगुरु शब्द ने करा देणा इत्मिनान, भरोसा तसल्ली नाल कराईआ। मैं सब दे साहमणे दे के चली ब्यान, नबी नूह नाल मिलाईआ। सदी चौधवीं इक बड़ा चढ़न वाला तूफ़ान, जिस नूं अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। इक्को हुक्म ते इक होणा फ़रमान, फ़रमांबरदार गुर अवतार पैग़म्बर सारे कम्बण थाउँ थाँईआ। जन भगत ख़ुशी विच ख़ुशी दा झट लँघउण, जगत दुक्खां दा डेरा ढाहीआ। मैं दस्सण आई पीरां दा पीर पैग़म्बरां दा पैग़म्बर रसूलां दा रसूल इहो मुहम्मद दा अमाम, मालक धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिसंगत दर आई करे परवान, परवाना नाम वाला दे के ख़ुशी घर घर दए वखाईआ।

✪ २८ पोह शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल सवेरे शादीआं समें ज़िला अमृतसर ✪

सम्मत शहिनशाही सत्त कहे सतिजुग सति होवे वरतारा, सति दा सति हुक्म सुणाईआ। मानव ज़ाती इक्को होवे अधारा, दीन मज़्ह्ब वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को जेहा माण पुरख नारा, नर नरायण आप दवाईआ। लेखा इक्को रंग होवे जंगल जूह पहाड़ा, सागरां विच समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सम्मत सत्त कहे सतिजुग होया करनगे कारज अनन्द, शरअ मानव ज़ाती इक समझाईआ। निशान मिटणे तारा चन्द, जगत निशाने ना कोए वड्याईआ। शरीअत दे टुटणे फंद, मज़्ह्बी वंड ना कोए वंडाईआ। लेखा रहे ना पाणी वाले गंग, गोदावरी सर ना कोए चुतराईआ। अट्ठ सट्ठ होवे भंग, पिछला भरम मिटाईआ। मन्दिर मस्जिद करे कोए ना वंड, हिस्सा नज़र कोए ना आईआ। एह खेल सूरे सरबंग, हरि करता आप कराईआ। जिस नौ सौ चौरानवे चौकड़ी मेटया पन्ध, मुसाफ़र सफ़र ना कोए भवाईआ। दीन दुनी दी मंज़ल आपे लँघ, पड़दा सति दा सच उठाईआ। निरगुण धार हो के संग, सरगुण रूप आप समझाईआ। जो अवतार पैग़म्बरां गुरुआं मंगी मंग, निरगुण आसा इक रखाईआ। उन्हां दा खुशी करे बन्द बन्द, बन्दगी धुर दी आप प्रगटाईआ। जन भगत दीन दुनी मानव ज़ाती इक्को गाएगी छन्द, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै गाईआ। सम्मत सत्त कहे सति दी बन्न्हणी साची धारा, सति सच नाल मिलाईआ। खेल वरतणा विच संसारा, वरतावे बेपरवाहीआ। जो आदि अन्त दा करनेहारा, कुदरत दा मालक इक अख्वाईआ। उस दी मर्यादा ठीक चले सतारां हाढ़्हा, सम्मत अट्ठ अठ वड्याईआ। अनन्द कारज दे समें सारे भगत सिर्फ़ लाया करनगे पंज जैकारा, दूजी लिख्त ना कोए लिखाईआ। एह हुक्म मिलणा नहीं दोबारा, एका इक्को वार सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई बणाए इक विहारा, विवहारी आपणी कार भुगताईआ।

✪ २८ पोह शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल रात नूं ज़िला अमृतसर ✪

अठाई पोह कहे प्रभ भरने कुण्ड अठाई, धुर दा शब्द हुक्म वरताईआ। पिछले अठारां रोवण मारन धारी, कुम्भी नरक रहे कुरलाईआ। क्यों वाधा दस दिता वधाई, की तेरी बेपरवाहीआ। एथे अग्नी अग्गे बड़ी तपाई, सांतक सति नज़र कोए ना आईआ। सारे रोवण मारन धाहीं, नैणां नीर वहाईआ। जिन्हां भुल्लया प्रभ गुसाँई, राय धर्म दए सज़ाईआ। उन्हां गल विच पई फाही, फाँसी सके ना कोए कटाईआ। प्रभू तेरे नालों होई जुदाई, विछड़यां मेल ना कोए मिलाईआ। सच देवे ना कोए सरनाई, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। धुर दा शब्द कहे अठारां नरक हुण तुहाडा लेखा बणया अठाई, वाधा हुक्म नाल कराईआ। क्यों शरअ विच आ के बहुतिआं खाधा सूर गाईं, ओह खाण वाले सारे तुहाडे विच टिकाईआ। एह खेल बेपरवाही, हरि करता आप कराईआ। तुसां खुशी मनाउणी चाँईं चाँईं, चाउ घनेरा इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। अठारां कहिण प्रभ क्यों कीता वाधा दस, साहिब तेरी सरनाईआ। सतिगुर शब्द प्या हस्स, ताली धुर दी धार वजाईआ। कमलया सतिजुग त्रेता द्वापर गया नस्स, आपणा पन्ध मुकाईआ। कृष्न ने आसा रखी यक, जिस वेले अठारां कशूणीआं ग़रक कराईआ। चला के रथ, युद्ध बुध नाल कराईआ। फेर आपणी उग्घेड़ी निज अक्ख, नेत्र ल्या उठाईआ। मेरा लहिणा पूरा होया सच, सच प्रभ दी कार कमाईआ। फेर हुक्म सुणया समरथ, हरि करता आप दृढ़ाईआ। त्रेता द्वापर गया नट्ठ, कलयुग कलि लए अंगड़ाईआ। फेर उसने बीतणा झट, झटके हलाली दीआं वंडां दए कराईआ। पिछली डोरी देवे कट, कटाक्ष हुक्म वाला लगाईआ। धुर दा नाम मिलणा किसे नहीं हट्ट, हटवाणा नज़र कोए ना आईआ। जगत तृष्ना पैणी नट्ठ, कामना भज्जे वाहो दाहीआ। भाग लग्गे ना काया मट्ट, मठ शिवदुआले रोवण मारन धाहीआ। उस वेले होणा आप प्रगट, परम पुरख प्रभ आपणी दया कमाईआ। खेल खेलणा बाज़ीगर नट, स्वांगी आपणा स्वांग रचाईआ। धर्म दी धार कलयुग जीव जाण छड, सगला संग ना कोए वखाईआ। काया माटी ख़ाली होए हड्ड, पंचम तत वज्जे ना कोए वधाईआ। फेर खेल करे सूरा सरबग, हरि करता धुरदरगाहीआ। कलयुग जीव धर्म राए दा बणाए वग्ग, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। ओह फड़ के झोके अठारां दी बजाए अठाई कुण्डां दी अग्ग, वाधा कलयुग नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। हुक्म वरते प्रभ दा शर्ती, शरअ सके ना कोए मिटाईआ। मालक आउणा इक्को निधपरती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। नूर उज्यारा करना अर्शी, अर्शी प्रीतम हो के वेख वखाईआ। लहिणा देणा पूरा करना ज़िमीं ज़मां फ़र्शी, माटी

ख़ाक लेखे लाईआ। उस ने अवतार पैग़म्बर गुरुआं दी मंज़ूर करनी अर्ज़ी, जो आरज़ू आपणी अग्गे गए टिकाईआ। फेर उन्हां तों बाद वरताउणी आपणी मर्ज़ी, मशवरा करन कोए ना पाईआ। जन भगतां भगवान आप करे हमदर्दी, दुखियां दुःख आप गंवाईआ। एह खेल होणी नरायण नर दी, नर हरि आपणा हुक्म सुणाईआ। सृष्टी डूँग्घे वहिण होणी हढ़दी, चप्पू नाम ना कोए लगाईआ। किसे ख़बर नहीं देणी चोटी जड़ दी, चेतन सार कोए ना पाईआ। बिना भगतां तों आत्म परमात्म ढोला कोई नहीं होणी पढ़दी, पड़दयां अन्दर मिले मेल ना धुर दे माहीआ। पहलों अग्ग लग्गणी दिशा चढ़दी, फेर लहिंदी दए मचाईआ। माण ताण वेखे हँकार गढ़ दी, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ ने आपणी करनी करनी, करता पुरख हुक्म वरताईआ। कलयुग अन्त सृष्टी बथेरी मरनी, मर जीवत रूप ना कोए वटाईआ। अठाई कुण्डां खुशीआं नाल भरनी, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। राय धर्म कोलों ओह बचणे जिन्हां नूं आप लगावे आपणी चरणी, चरणोदक नाम वाला प्याईआ। खुशीआं नाल तुक अगम्मी पढ़नी, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस ने नवीं घाड़त घड़नी, घड़न भन्नणहार खेल खिलाईआ। उस दे अग्गे शरअ दी ताकत कोए ना अड़नी, शरीअत दे लेखे दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि,
१७३७ आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अठारां कुण्ड कहिण साडे नाल मिलणे दस १७३७
२२ होर, वाधा प्रभ ने दिता कराईआ। क्यों कलयुग दिसे अंधेरा घोर, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। जगत सन्त साध २२
होए चोर, ठग्गी प्रभ दे नाल कमाईआ। जगत वासना होए हरामखोर, काम कामनी नाल हल्काईआ। आत्म परमात्म बद्धी किसे ना डोर, डौरु कूड़ा डंक वजाईआ। जगत विद्या मचाउंदे शोर, अनुरागी राग ना कोए सुणाईआ। आपणे अन्दर दा कुण्डा सके कोए ना खोल्ह, बन्द किवाड़ी पर्दा ना कोए उठाईआ। नाद शब्द धुन दा सुणे कोए ना ढोल, धुन अगम्म ना कोए जणाईआ। मानस जन्म माया ममता विच ल्या वरोल, मोह हँकार नाल रखाईआ। बिन हरि किरपा कोए ना उतरे पूरे तोल, जगत तराज़ू कम्म किसे ना आईआ। धन्न वड्याई जिन्हां प्रभ मिल्या उपर धौल, धरनी सीस झुकाईआ। जन भगत भगती विच सदा अडोल, मनसा मन ना कोए कुरलाईआ। जिन्हां ने सुणया इक्को बोल, अगम्म अगम्मड़ा राग जणाईआ। सो मालक ख़ालक सद वसे भगतां कोल, कौल इकरार पूरा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दा हुक्म सच सति दा मालक आप वरताईआ।

✪ २६ पोह शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दुआर जेठूवाल रात दे समें ज़िला अमृतसर ✪

मोहि माई देवे लोहड़ी, लोड़ींदी आसा पूर कराईआ। भगत भगवान बणी रहे जोड़ी, विछोड़ा दो जहान ना कोए कराईआ। प्यार मुहब्बत दी चढ़े रहिण घोड़ी, हरिजन साचे आसण लाईआ। किसे दी आशा रहे ना थोड़ी, बहु गुण आपे दए कराईआ। सन्त सुहेले बणाए मोहरी, लोकमात दए वड्याईआ। रैण मेटे अंधेर घोरी, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। चरण ल्याए खिच्च ज़ोरी, ज़बरदस्ती आपणा रंग रंगाईआ। नाम निधान नाल बन्नू के डोरी, आत्म परमात्म रिहा जुड़ाईआ। जगत विकार रिहा होड़ी, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। हथ्थ रखे पुश्त पनाह मोरी, सीस जगदीश आप टिकाईआ। लोहड़ी कहे कुछ खेल वखाउणा शाह अफगान नाल पशौरी, पशावर पड़दा लाहीआ। खेल वेखणा दो धार दसौरी, दोहरी आपणी कार भुगताईआ। दीन दुनी तके बण के जौहरी, जौहर आपणा इक प्रगटाईआ। सृष्टी नाता तुटे खौंत शौहरी, शौहर नज़र किसे ना आईआ। दीन दुनी करे बौहड़ी बौहड़ी, दरोही तेरा नाम दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। लोहड़ी कहे मैं पाउण आई लोहड़ा, लोड़ अवतार पैग़म्बर गुरुआं पूर कराईआ। इक्को संदेस देवां गावां धुर दा दोहरा, दोहरी आपणी सेव कमाईआ। जिस प्रभू दा नाम खांदे रहे भोरा भोरा, मस्ती विच मस्ताने हो के खुशी बणाईआ। ओह साहिब खेल करे होर दा होरा, अवर अवरा आपणी कार भुगताईआ। जन भगतां करन आया भाग मथोरा, मिथ्या दस्से सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। लोहड़ी कहे मैं की दस्सां आप, सप्त ऋषी मेरी देण गवाहीआ। जिन्नां रुत बदलण ते कीता सी जाप, माघी तों पहलां पिछली रुत बदलाईआ। नाले रो के किहा प्रभू तोड़ जगत संताप, संसा पिछला रहे ना राईआ। आत्म ब्रह्म आपणा जोड़ नात, पारब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। लेखा रहे ना फेर मात, मात्रा वंड ना किहि वंडाईआ। धुर दे मालक बख्श दे दात, दयावान होणा सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। लोहड़ी कहे मैनूं सदा मंगदे गए भगत, प्रभ अग्गे आस रखाईआ। दुनी खाण पीण दा नशा जगत, कूड़ क्रिया विच हल्काईआ। सिर्फ़ सच दात लभ्भदे गुरमुख फ़कत, जो फ़िकरा इक्को गाईआ। इक्को सुहावणा समां सुहाउण वक्त, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। नाता तोड़ के बूँद रक्त, आत्म ब्रह्म वेख वखाईआ। निगह मार उपर धरत, धरनी धवल वेख वखाईआ। सच दात केहड़ा देवे उतों अर्श, अर्शी प्रीतम झोली पाईआ। खुशीआं वाला नवां साल चढ़े बरस, चरण धूढ़ पुरख अकाल नहावण नहाईआ। मिटे दो जहानां हरस, मजन माघ इक वड्याईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। लोहड़ी कहे इक दिन सीता ने मंग लई मंग, राम अग्गे झोली डाहीआ। मैनूं ओह लोहड़ी बख्श लोड़ींदे साजण तेरा सदा रहवे संग, सगला संग रखाईआ। भावें दुःख झल्लणे पैण होवां तंग, सोग जगत वाला जणाईआ। पर मेरे अन्तर तेरे प्यार दा निकले छन्द, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। बेशक मुख ना उग्घड़े बोलण ना बत्ती दन्द, अजपा जाप तेरा नाम ध्याईआ। मेरे अन्तर निरन्तर निज आत्म देणा अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। इक्को मंग रही मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। तूं दीन दयाल बख्शंद, रहमत सच देणी कमाईआ। तेरी याद विच खुशीआं वाला साल जाए लँघ, ग़मी नेड़ कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। लोहड़ी कहे इक दिन कृष्न तों मंगण चला गया सुदामा, जा के ढोला दिता सुणाईआ। मैनूं लोहड़ी दे दे ओए बंसरी वाल्या कान्हा, मुक्ट नैण वाले आपणा नैण बदलाईआ। छेती झोली पा दे आपणा दाना, दात धुर दी इक वरताईआ। झट कृष्न ने पकड़ के काना, उहदे हथ्थ दिता फड़ाईआ। सुदामे हस्स के किहा एहदा की निशाना, निशानी दे समझाईआ। कृष्न किहा जिस वेले कलयुग रिहा ना कोए स्याणा, बुध बिबेक ना कोए कराईआ। उस वेले प्रगट होवे कलि कल्की मेहरवाना, महिबूब धुरदरगाहीआ। जिस ने नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दा लेख लिखाणा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे चाँईं चाँईंआ। उहदे धर्म ग्रन्थां उत्ते इस काने दी कलम दा होए निशाना, पहला अक्खशर एसे काने दी कानी नाल बणाईआ। खुशी हो गया ब्राह्मण निव निव सीस झुकाणा, नमो नमो सुणाईआ। वाह मेरे त्रैलोकी नाथ भगवाना, तेरी बेपरवाहीआ। मैं ते भुक्खा मंगण आया सां कोई दे देवे अन्न दाणा, तूं भुक्खे दे हथ्थ विच सड़न वाला काना दिता फड़ाईआ। पर मैनूं फेर वी तेरे उत्ते माणा, भरोसा रख के सीस झुकाईआ। जे एस जुग नहीं ते अगले जुग ज़रूर देवेगा ख़ज़ाना, अतोट अतुट्ट वरताईआ। तेरे दर दी मंगी लोहड़ी मेरे अन्तर होई परवाना, परम पुरख मिली सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, पिछल्यां लेखयां दा लेखा पूर कर के जन भगतो तुहाडे नाल लगाया याराना, याराने दी यारी पिच्छे धुर दा प्यार लोड़ींदा सज्जण लोहड़ी वाले दिवस तुहाडी झोली पाईआ।

✪ पहली माघ शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल रात वेले ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर चरण धूढ़ सुख सागर, मजन बेपरवाहीआ। दुरमति रहे ना काया गागर, पंच विकार दए मिटाईआ। निर्मल कर्म होवे उजागर मिले माण वड्याईआ। सच दवारे इक्को आदर, आदि पुरख दए सरनाईआ। नाम वणजारे बणाए सौदागर, वस्त इक्को हट्ट विकाईआ। जन भगत सुहेला ख़रीदे बण बहादर, सूरबीर रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर चरण धूढ़ इश्नाना, आदि अन्त वड्याईआ। मिले मेल श्री भगवाना, जगत जहान डेरा ढाहीआ। दरगाह सच होवे परवाना, सचखण्ड मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोत नूर समाउणा, तत्व तत दा डेरा ढाहीआ। लेखा मुके आवण जाणा, चुरासी रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे रंग रंगाईआ। सतिगुर चरण अगम्मी धूढ़ी, पतित पुनीत बणाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ी, दर घर देवे माण वड्याईआ। शब्द नाद सुणा के तूरी, तुरीआ तों परे पढ़ाईआ। जोती दीप जगा के नूरी, अंध अंधेर दए मिटाईआ। दर्शन बख्शे हाज़र हज़ूरी, हरि हज़रत बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। सतिगुर चरण इश्नान जो जन करदा, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। पुरख अकाला दीन दयाला इक्को वरदा, दूसर ओट ना कोए रखाईआ। आत्म परमात्म मंज़ल चढ़दा, कूड़ी क्रिया पन्ध मुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला पढ़दा, सोहँ शब्द अगम्म अथाहीआ। नज़ारा तके निहचल धाम अटल दा, अटल मिले बेपरवाहीआ। झगड़ा मुक जाए जल थल दा, महीअल पन्ध मुकाईआ। लेखा रहे ना जन्म मरन दा, चुरासी वंड ना कोए वंडाईआ। इहो लहिणा सतिगुर सरन दा, जो संसार सागर विच्चों पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर सरन मजन एक, एकँकार वड वड्याईआ। आत्म ब्रह्म पारब्रह्म दी टेक, दूजी अवर ना कोए सरनाईआ। त्रैगुण माया लाए ना सेक, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। निज गृह खोल्हे आपणा भेत, पर्दा ओहला दए उठाईआ। हरि सज्जण सुहेला लए वेख, मित्र प्यारा मीत नज़री आईआ। जो जुग जुग बदलणहारा सब दे लेख, रेख कर्म कांड बदलाईआ। सो वसया साचे देस, सम्बल इक सुहाईआ। जोती धार अवल्लड़ा वेस, बिन रूप रंग करे रुशनाईआ। जिस दी आशा रखी गोबिन्द दस दशमेश, दहि दिशा ध्यान उठाईआ। ओह पुरख अकाला दीन दयाला खेल करे नेतन नेत, निरगुण आपणी कार भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। मजन कहे मैं हथ्थ किसे ना आवां, खोजे जगत लोकाईआ। मैनूं फड़े कोए

१७४०
२२

ना हथ्थां बाहवां, नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। मैं कदी फिरां ना अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ राहवां, तटां वंड वंडाईआ। मैं दो जहानां बणया रहां निथावां, गृह वंड ना कोए वंडाईआ। दिवस रैण इक्को ढोला गावां, परम पुरख तेरी सरनाईआ। जिस वेले प्रभू आवे मैं फिरां नाल चावां, भज्जां वाहो दाहीआ। तेरे भगतां दा धर्म दवारयों वेख के नावां, लेखा आपणे विच टिकाईआ। मैं उन्हां नूं तेरे चरण धूढ़ इश्नान करावां, जगत मजन दी लोड़ रहे ना राईआ। उन्हां नूं नहाउणा पए ना अठ्ठां सठ्ठां वाल्यां तालाबां, जलां विच ना सीस डुबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी सरनाईआ। सतिगुर कहे मेरा मजन अगम्म इश्नान, जलधारा नज़र किसे ना आईआ। अवतार पैग़म्बर गुर मेरे सरोवर विच्चों नहाउण, दूसर हथ्थ ना कदे फड़ाईआ। नहा के फिर धुर दा ढोला गाण, जो सुणावां चाँईं चाँईंआ। फिर खेल खिलावां ज़िमीं असमान, आपणी वंड वंडाईआ। दाता हो के मेहरवान, मेहर नज़र टिकाईआ। जुग चौकड़ी वेखां मार ध्यान, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। कलयुग अन्त करां परवान, परम पुरख हो के वेख वखाईआ। जन भगतां देवां धुर दा दान, वस्त आप वरताईआ। मेहर मुहब्बत दा इक्को अन्तर निरन्तर इश्नान, दुरमति मैल धुआईआ। आत्म परमात्म मिल के ढोला गाण, इक्को नाम शब्द शनवाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख हरिजन मेल मिलाया आण, आपणा जोड़ जुड़ाईआ। माघ
१७४१ २२ कहे जन भगतो तुहानूं देणा पए ना बलीदान, बलदी अग्न विच्चों शांत कराईआ। मेरी इहो आसा इहो मंग अग्गे श्री भगवान, १७४१ २२
भगवन अग्गे सीस निवाईआ। जेहड़े गुरमुख छड के दीन दुनी जहान, दर तेरे ओट तकाईआ। उन्हां नूं ज़रूर करीं परवान, आपणे गृह आपणे रंग रंगाईआ। पहली माघ कहे सब ने होणा चतुर सुजान, सुघड़ सुचज्जे रूप बणाईआ। जन भगतो तुहाडा इक्को घर होया इश्नान, दूजे दर नहावण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण ना, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगवन आपणा हुक्म वरताईआ।

७ माघ शहिनशाही सम्मत ७ राम सिँघ दे गृह ग्वाल टोली फ़िरोज़पुर छाउणी

सतिगुर शब्द कहे प्रभू मैं तेरा मंगता, मांगत हो के झोली डाहीआ। अवतार पैग़म्बर गुर इक्को बणा के संगता, विष्न ब्रह्मा शिव खुशी विच वेखण चाँईं चाँईंआ। चार जुग दी पिछली दीन मज़्हब दी मेट के हंगता, हँ ब्रह्म आत्म परमात्म पड़दा देणा चुकाईआ। नव खण्ड चार वरन अठारां बरन तेरी साची होवे संगता, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। तेरा नाम निधाना सब दा काया चोला होवे रंगदा, रंगत अनडीठी नाम मजीठी देणी चढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम जाए लँघदा,

दिवस रैण भज्जे वाहो दाहीआ। तेरे हुक्म दा खेल जगत जहान जंग दा, शरअ शरअ नाल टकराईआ। धरनी धरत धवल धौल सुख रहिणा नहीं अनन्द दा, अनन्द पुर वाला शब्द शब्दी हुक्म सुणाईआ। निशाना मिटणा तारा चन्द दा, सदी चौधवीं रोवे मारे धाहीआ। तेरा नाद वज्जणा इक्को ढोले छन्द दा, आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। झगड़ा मेटणा दीन मज़्हब बन्धन बंध दा, बन्दगी बन्दगी विच्चों बदलाईआ। ओहला रहिणा नहीं भरम भुलेखे कंध दा, कन्ढी बैठे सारे ध्यान लगाईआ। जन भगतां लेखा होवे ना भाग मंद दा, मंदभागी वडभागी देणे बणाईआ। तेरा खेल तकणा सूरे सरबंग दा, शाह पातशाह तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त लेखा मुकाउणा कूड़ी क्रिया पन्ध दा, मोह विकार पाँधी मुसाफ़िर जगत रहिण कोए ना पाईआ।

१७४२ ◉ १० माघ शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार धीरपुर दिली संगत दे नवित ◉ १७४२

२२ सतिगुर शब्द कहे धुर दा अगम्म पैग़ाम, पैग़म्बरां तों परे हुक्म सुणाईआ। फ़रमाना संदेशा चौदां तबक तमाम, नूर नुराना आप जणाईआ। हुक्म वरतणा इक अमाम, जिस दी आमद विच सारे राह तकाईआ। धुर संदेशा देवे कलाम, कलमा कायनात समझाईआ। दीन मज़्हब दा बदल देवे निज़ाम, नौबत इक्को हक वजाईआ। जगत अंधेरा मेटे शाम, शमां नूर जोत करे रुशनाईआ। शरअ दा रहिण ना देवे कोए गुलाम, ज़ंजीर बेनज़ीर आप तुड़ाईआ। लख चुरासी लेखे कर्म दी लावे मीज़ान, धुर दी गणित विच गिणाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं पूरा करे जो नाम कलमे विच दिता दान, भेव भविख जणाईआ। नूर नुराना हो मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। लहिणा देणा पूरा करे जगत जहान, जहालत मेटे कूड़ लोकाईआ। धरनी धरत धवल युद्ध तक घमसान, घुमण घेर विच लोकाईआ। कातिल मक्तूल रूप धरे इन्सान, इन्सानीअत नज़र कोए ना आईआ। जगत मद्दां होए हराम, काअबे रोवण मारन धाईआ। धुर दी समझे ना कोए कलाम, पर्दा सके ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धुर शब्द कहे धुर दा हुक्म अपार, धुर कलमा आप दृढ़ाईआ। वेखे खेल विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। जोती धार कर उज्यार, अवतार पैग़म्बर गुर अक्ख खुल्हाईआ। दीनां मज़्बां पावे सार, महासार्थी बेपरवाहीआ। चौदां तबकां दए हुलार, हलूणा इक्को इक लगाईआ। उम्मती उम्मत करां ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। वेला मुकाउणा चार यार,

मुहम्मद पड़दा रहे ना राईआ। नबी रसूलां होणां ख़बरदार, पैग़म्बर लैण अंगड़ाईआ। सदी चौधवीं होवे बेदार, ग़फ़लत नज़र कोए ना आईआ। लेखा जाणे आप शाहकार, निराकार आपणी कल वरताईआ। चार कुण्ट हाहाकार, सांतक सति ना कोए कराईआ। करे खेल आप करतार, कुदरत करता आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे धुर दा इक्को होवे बन्दोबस्त, बस्ती जगत जहान वेख वखाईआ। इक्को रंग कीट हस्त, हस्त कीट भेव चुकाईआ। लहिणा देणा देवे दस्त, बदस्त कार भुगताईआ। सूफ़ी फ़कीर करने मस्त, नाम फ़ुमारी इक चढ़ाईआ। खेले खेल उपर धरत, धरनी धवल आप चुकाईआ। निरगुण धार आया परत, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस दा खेल उपर अर्श, अर्शी प्रीतम वड वड्याईआ। सो सृष्टी वेखे उपर फ़र्श, दीन दुनी खोज खुजाईआ। लेखे लाए मन्दिर मस्जिद चर्च, चराग़ाहां खोज खुजाईआ। सब दा लहिणा अवतार पैग़म्बर गुरुआं करे दरज, दरजा आपणा इक समझाईआ। आशा मनसा पूरी करे अर्ज़, लेखा पिछला दए चुकाईआ। योधा सूरबीर मर्दाना बण के मर्द, मेहरवान लए अंगड़ाईआ। धुर दे हुक्म दी सब नूं ग़रज़, ग़रज़ सब दी फोल फुलाईआ। योधा सूरबीर मर्दाना बण के मर्द, मुद्दा आपणा दए दृढ़ाईआ। शरअ छुरी रहिण नहीं देणी करद, कत्लगाह ना कोए वखाईआ। ग़रीब
१७४३ निमाणयां वंडे दर्द, प्रीतम बण के बेपरवाहीआ। पुरख अकाला दीन दयाला सदी चौधवीं पूरा करे फ़र्ज़, फ़राइज़ सब दे १७४३
२२ लेखे लाईआ। मकरूज रहिण ना देवे कोए कर्ज़, लेखा सब दा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा २२
कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी पुट्ठी करे नरद, नदीआं वहिण आप वहाईआ।

✪ ११ माघ शहिनशाही सम्मत ७ सेवा सिँघ दे गृह विखे गुड़गाउं शहर ✪

सतिगुर शब्द कहे प्रभ तेरा खेल अपारा, अपरम्पर तेरी बेपरवाहीआ। आदि अन्त ना किसे विचारा, मध पड़दा ना कोए उठाईआ। समझ आई ना किसे पैग़म्बर गुर अवतारा, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। तेरे नाम कलमे दी गा के गए वारा, ढोले रागां नादां विच गाईआ। नूरी जोत दा तक के गए चमत्कारा, नूर नुराना वेख वखाईआ। डण्डावत बन्दना सजदयां विच करदे गए निमस्कारा, चरण धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। राह तकदे गए तेरा परवरदिगारा, पारब्रह्म प्रभ तेरी ओट तकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आउंदे रहे वारो वारा, तन वजूद माटी सोभा पाईआ। तेरे हुक्मे अन्दर दस्सदे गए

इशारा, सैनत नाम वाली लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सच तेरी सरनाईआ। सतिगुर शब्द कहे तूं बेअन्त बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। जुग चौकड़ी बदलदा आयों राह, रहिबर हो के खेल खिलाईआ। जोती जाता बणदा रिहों मलाह, आत्म परमात्म गेड़ा आप चलाईआ। सिफ्तां विच करदा रिहों वाह वाह, वाहवा वडी वड वड्याईआ। खेल खेलदा रिहों थल अस्गाह, पुरी लोआं सोभा पाईआ। जुग चौकड़ी आपणा बदलदा रिहों नाँ, नर नरायण आपणी कार भुगताईआ। भगवन हो के भगतां फड़दा रिहों बांह, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। देंदा रिहों ठंडी छाँ, सदा सुहेला आपणा रंग रंगाईआ। भाग लगाउंदा रिहों पंज तत आपणे ग्रां, हड्ड नाड़ी सोभा पाईआ। कलयुग अन्त धरनी धरत धवल वेख थाँ, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। नेत्र नैण रोवे जिस नूं जिज्ञासू कहिंदे माँ, नीर वहिणां वहिण वहाईआ। दरोही मानस बुद्धी होई काँ, काग वांग सर्ब कुरलाईआ। किसे ने सूर खाधा किसे ने खाधी गां, आत्म ब्रह्म समझ कोए ना पाईआ। तेरे मिलण दा रिहा किसे ना चाअ, चाउ घनेरा नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाले दीन दयाले गुर अवतार पैग़म्बर तेरा समझ ना सके दाअ, भेव अभेद ना कोए जणाईआ। तूं दीनां मज़्हबां हिस्से दिते पा, मानव मानस मानुख वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख
१७४४ १७४४
२२ २२
जगाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभू तूं आदि अन्त बेअन्त, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। तेरा समझे कोए ना मंत, मंतव हल ना कोए कराईआ। कोटन कोटि उपजा के सन्त, इशारे सति वाले समझाईआ। तन वजूद बणा के बणत, भाण्डे काया गढ़ वड्याईआ। आपणा खेल दस्स अनन्त, भेव अभेद छुपाईआ। चुरासी लख उपजा जंत, जीव आत्मा नाल वड्याईआ। स्वामी ठाकर बण के कन्त, कन्तूहल इक अख्वाईआ। बोध अगाधा हो के पंडत, निरअक्खर अक्खर धार समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब तेरे हथ्थ वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरी इक नमस्ते, नमो नमो सीस झुकाईआ। कोटन कोटि तेरे विच रस्ते, राह खहिड़ा अन्त नज़र किसे ना आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण बध्धे बस्ते, जगत ग्रन्थां वंड वंडाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां रहे दस्सदे, सिफ्त सालाही ढोले गाईआ। माण वड्याई रहे रखदे, मेहरवान तेरी दया कमाईआ। जिन्हां विच मार्ग वक्ख वक्ख दे, साची गंढ ना कोए पवाईआ। वणजारे बणे रहे मानस मानस रत्त दे, दीन मज़्हब वंड वंडाईआ। लेखे मुक गए ब्रह्म तत दे, पारब्रह्म रंग ना कोए रंगाईआ। अन्तिम झगड़े वेखे मनमति दे, धर्म दी धार ना कोए समझाईआ। प्रकाश तके नहीं किसे निज नेत्र अक्ख दे, लोयण जगत नज़र किसे ना आईआ। मेहरवान महिबूब कलयुग अन्तिम आया भगतां आपणी वथ दे, नाम अमोलक झोली पाईआ। पूरब लहिणा

हथ्थो हथ्थ दे, जगत जन्म उधार ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति दे मालक दया कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ तेरा लेखा अगम्म अथाह, नित नवित आपणा खेल खिलाईआ। कलयुग अन्तिम लहिणा देणा दे मुका, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतां पड़दा ओहला ना रहे लुका, अन्तर निरन्तर भेव देणा खुल्हाईआ। तैनूं सब ने वाहिद मन्नयां इक खुदा, ख़ालक ख़लक इक अख्वाईआ। शरअ बदलण दी तैनूं अदा, अदल इन्साफ़ आपणी आदत नाल रखाईआ। माया ममता मोह विकार मेट वबा, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। सदी चौधवीं सब नूं दे सज़ा, जो साज़िश विच तेरा नाम भुलाईआ। दीन दुनी चला आपणी विच रज़ा, राज़क रिज़क रहीम इक अख्वाईआ। तेरे हुक्म नाल सब दे सिर ते कूके कज़ा, काज़ी मुल्लां शेख़ मुसायकां डेरा देणा ढाहीआ। दो जहानां श्री भगवाना तेरा इक्को होवे नाँ, दूजा ढोला सोहला ना कोए गाईआ। तूं आदि अन्त सब दा पिता माँ, पुरख अकाल दीन दयाल इक अख्वाईआ। जन भगतां पकड़ अन्तिम बांह, बिना दस्त दस्त उठाईआ। तेरे चरण कँवलां बलि बलि जां, बलिहारी सीस निवाईआ। मेहरवान महिबूब देणी ठंडी छाँ, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां सचखण्ड बख्शणा इक्को थाँ, दूसर ओट ना कोए तकाईआ।

✪ १२ माघ शहिनशाही सम्मत ७ हरबंस सिँघ दे गृह गुड़गाउं शहर ✪

सतिगुर शब्द कहे प्रभ तेरा रूप अपारा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर समझ कोए ना आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण वसें बाहरा, अञ्जील कुरान खाणी बाणी कहिण कुछ ना पाईआ। तेरा नाम कलमा सिफ्तां वाली धारा, निरगुण सरगुण मिल के वज्जे वधाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरा खेल सदा जुग चारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणी वंड वंडाईआ। धुर संदेशा दे गुर अवतारा, पैग़म्बरां करी अगम्म पढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम होवे धुँदूकारा, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया गढ़ बणे हँकारा, हउमे हंगता नाल लड़ाईआ। साध सन्त करना विभचारा, सच विच ना कोए समाईआ। माया ममता होवे पसारा, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। झगड़ा दिसे पुरख नारा, कन्त सुहाग ना कोए हंढाईआ। आत्म परमात्म लाए ना कोए जैकारा, नाअरा हक ना कोए सुणाईआ। मानव मानस मानुख होवे दुख्यारा, दुखियां दर्द ना कोए मिटाईआ। सदी चौधवीं अग्नी तत तपे अग्यारा, मुहम्मद आशा नाल वखाईआ। धरनी धरत धवल रोवे ज़ारो ज़ारा, बिन नैणां नीर

वहाईआ। मेहरवान महिबूब किरपा कर विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी बैठे सीस निवाईआ। तुध बिन कोई ना पावे सारा, महासार्थी तेरी बेपरवाहीआ। तूं एका एक कलि कल्की अवतारा, चौबीसवां आप अख्वाईआ। नव सत्त मेट धूंआँधारा, अंध गुबार रहे ना राईआ। जन भगतां दे दीदारा, दरस अमोघ आप दरसाईआ। नाम शब्द बख्श धुन्कारा, अनहद नादी धुन उपजाईआ। दीपक जोत कर उज्यारा, नूर नुराना डगमगाईआ। तेरे चरण सरन निमस्कारा, निव निव लागां पाईंआ। सतिगुर शब्द कहे जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल आदि अन्त गुप्त ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर पड़दा देणा उठाईआ।

✪ १२ माघ शहिनशाही सम्मत ७ रत्न सिँघ दे गृह दिल्ली शहर ✪

सतिगुर शब्द कहे अवतार पैग़म्बर गुर रहे विचार, दरगाह साची सचखण्ड दवार निरगुण धार ध्यान लगाईआ। क्यों धरनी धरत धवल धौल होया धूंआँधार, चारों कुण्ट सच चन्द ना कोए रुशनाईआ। आत्म परमात्म करे ना कोए विचार, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। चार जुग दे शास्त्र कूक कूक करन पुकार, दरोही इक्को नाम ख़ुदाईआ। कलयुग जीवां अन्तिम आई हार, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी सरनाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु रहे तक, बिन नैणां नैण उठाईआ। चार वरन रिहा ना सति, सति धर्म विच ना कोए समाईआ। फिरी दुहाई मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ, गुरदवार गुर गुर भेव ना कोए चुकाईआ। नेत्र रोवण अट्ठ सट्ठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रही कुरलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप साचा दिसे ना कोए हट्ट, नाम भण्डारा ना कोए वरताईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द सिफ्त सालाही नाम कलमे रहे रट, अनहद नादी धुन शब्द ना कोए शनवाईआ। निज नेत्र लोचन खुल्ल्हे किसे ना अक्ख, साध सन्त बैठे धूंणीआँ ताईआ। मेहरवान महिबूब दरस देवे ना कोए प्रतख, सन्मुख सच स्वामी नज़र कोए ना आईआ। मन वासना जगत तृष्ना सृष्टी दृष्टी अन्दर रही नट्ठ, दिवस रैण भज्जे वाहो दाहीआ। तन वजूद काया माटी जोत जगे ना लट लट, अंध अंधेर ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि साहिब तेरी वड्याईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण कलयुग अन्तिम होया ग़ज़ब, चार कुण्ट रैण अंधेरा छाईआ। झगड़ा दिसे दीन मज़्हब, ज़ात पात रही कुरलाईआ। साडा रिहा ना कोई अदब, अक्खरां मिले ना कोए वड्याईआ। सदी चौधवीं सारे होए तअजुब, हैरानी विच आपणा आप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण असीं वेखीए उपर धरती, धरत धवल ध्यान लगाईआ। सदी चौधवीं सब दा लहिणा देणा लेखा पूरा होवे शर्ती, शरअ दा संगल देणा तुड़ाईआ। तूं मालक ख़ालक बेपरवाह अर्शी, प्रीतम तेरे हथ्थ वड्याईआ। सब दे उत्ते करना तरसी, रहमत आपणी हक वरताईआ। नाम कलमे दा मेघ बरसी, अग्नी तत देणा बुझाईआ। दीन दुनी उत्ते अगला भयंकर होणा बरसी, बरसी माया ममता रही मनाईआ। साधां सन्तां तेरा मिले किसे ना दरसी, रिख मुन बैठे तेरा राह तकाईआ। निरवैर निराकार निरँकार जोती जाता वेख निधपरती, पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर तेरे अग्गे करदे आए अर्ज़ी, अर्ज विच सीस निवाईआ। तेरा खेल तक्कीए असचरजी, अचरज लीला देणी वरताईआ। नर नरायण तेरा रूप प्रगट दिसे ना नारी ना मरदी, जोती जाता पुरख बिधाता सोभा पाईआ। सम्बल बैठ के वंड दर्दी, दीन दयाल दया कमाईआ। तेरे कोल सब दी भविक्ख्तां वाली फ़रदी, पेशीनगोईआं तेरे चरणां विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण साडे अन्तर आई हैरानी, हैरत विच दुहाईआ।
१७४७ पुरख अकाल परवरदिगार सांझे यार चारों कुण्ट शरअ शैतानी, शरीअत समझ कोए ना पाईआ। तेरी मुहब्बत पारब्रह्म पतिपरमेश्वर १७४७
२२ परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे करे ना कोए पढ़ाईआ। हकीकत हक ना रही इन्सानी, इन्सानीअत बैठी मुख २२
छुपाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया चारों कुण्ट करे वैरानी, माया ममता नाल मिलाईआ। साची मंज़ल चढ़े ना कोए रुहानी, अक्ल बुद्धी कम्म किसे ना आईआ। नेत्र रोवे चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज रही कुरलाईआ। पर्दा लाहे ना कोए आत्म ब्रह्म ज्ञानी, पारब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। शब्द अणयाला तीर मारे ना कोए कानी, कायनात सोई ना कोए उठाईआ। दीन दुनी दृष्टी विच होई निधानी, सोई सुरत ना कोए जगाईआ। शरअ दी कटे ना कोए ग़ुलामी, ज़ंजीर बन्धन ना कोए तुड़ाईआ। जिधर तक्कीए तेरे नाम दी होई बदनामी, बदी विच वेखी ख़लक खुदाईआ। साचा नाम जाणे ना कोए कलामी, काया काअबा तेरा दर्शन कोए ना पाईआ। सचे मन्दिर दिसे ना किसे निशानी, नर हरि तेरा नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। अमृत रस निजर झिरना बूँद स्वांती देवे कोए ना पाणी, जन्म मरन दी तृष्ना ना कोए बुझाईआ। किरपा कर पारब्रह्म शाह सुल्तानी, परम पुरख परमात्म तेरी ओट तकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण हउँ विटों सद सद तेरे चरण चरण कुरबानी, सरन इक्को इक रखाईआ। तेरा सचखण्ड दवार एकँकार दरगाह साची मुकामे हक कदे ना होवे फ़ानी, सद वज्जदी रहे इक वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल ज़िमीं असमानी, मण्डल मण्डप पाताल आकाश गगन गगनंतर रवि ससि विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर अवतार पैग़म्बर गुर सारे सीस निवाईआ।

✪ १२ माघ शहिनशाही सम्मत ७ पूरन सिँघ दे गृह दिल्ली शहर ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभू साडी अरज़ोई, बेनन्ती विच सीस निवाईआ। चारों कुण्ट रैण अंधेरी होई, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। सुरती सुत्ती ना उठे कोई, आलस निंद्रा ग़फ्लत विच लोकाईआ। माया ममता आत्म सब दी मोही, लोभ मोह हँकार विच कुरलाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा मिले ना ढोई, सच प्यार मुहब्बत नज़र कोए ना आईआ। पैग़म्बर कहिण साडी दरोही, तोबा तोबा सीस झुकाईआ। सुरत शब्द मिले ना कोई, साध सन्त रोवण मारन धाहीआ। पंच विकार ना मिटे गरोही, पंचम रंग ना कोए चढ़ाईआ। सच वस्त सब तों गई खोही, नाम निधाना झोली कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। अवतार पैग़म्बर कहिण चारों कुण्ट अंधेरा अंध, गुर ज्ञान ना कोए दृढ़ाईआ। आत्म परमात्म गाए कोई ना छन्द, तूं मेरा मैं तेरा राग ना कोए अल़ाईआ। भरमां ढाहे कोई ना कंध, हंगता गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। अन्तर मिले ना किसे अनन्द, परमानंद विच ना कोए समाईआ। सुरती सके कोए ना गंढ, शब्दी जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। तन वजूद पए किसे ना ठंड, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। आवण जावण लख चुरासी मुके किसे ना पन्ध, जम की फाँसी ना कोए कटाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मन मति बुध कीती खण्ड खण्ड, मन कल्पना नाल मिलाईआ। लेखा मुके ना जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज पार ना कोए कराईआ। कलयुग अन्त फिरी दरोही विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड रहे कुरलाईआ। किसे लाए कोई ना अंग, अंगीकार ना कोए अख्वाईआ। सदी चौधवीं असीं सारे होए दंग, हैरत विच समाईआ। परम पुरख परमात्म धुन आत्मक तेरा वज्जे ना कोए मृदंग, ढोलक छैणे सारे रहे खड़काईआ। नव दवार एकँकार पार सके कोए ना लँघ, रसना जेहवा बत्ती दन्द सिफ्ती ढोले रहे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग इक चढ़ाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण साडे नाम कल्मयां पाया रौला, हकीकत हथ्थ किसे ना आईआ। फिरी दरोही उपर धौला, धरनी धरत रही कुरलाईआ। साचे मार्ग कोई ना मौला, मौला तेरी बेपरवाहीआ। तूं नूर अलाही अव्वला, आलमीन अख्वाईआ। तूं साचा मालक सब दा पूरा करदे कौला, जो अवतार पैग़म्बर गुर तेरे नाल रखाईआ। सदी चौधवीं कलयुग अन्तिम कूड़ कुड़यार करदे रौला,

दुष्ट दुराचार नज़री आईआ। आत्म परमात्म तेरा सारे गावण ढोला, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। तेरा रूप आदि पुरख अपरम्पर स्वामी रामा कृष्ना साँवल सौला, ईसा मूसा मुहम्मद तेरा नूर नज़री आईआ। नानक गोबिन्द अमृत रस दिता पौहला, पारब्रह्म तेरी वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दवारे मंग मंगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभू इक्को दे दे नाम अधार, दीन मज़्ब वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को नूर तेरा उज्यार, नूर नुराना सोभा पाईआ। इक्को शब्द तेरा जैकार, नाअरा हक हक सुणाईआ। इक्को मन्दिर तेरा गुरदवार, काअबा इक्को देणा वखाईआ। इक्को तीर्थ तट किनार, सर सरोवर इक समझाईआ। इक्को मंज़ल चार वरन अठारां बरन बख़्शी सच्ची सरकार, सच तेरी सरनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेख अंध अंध्यार, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। चार लख बत्ती हज़ार कर परवान, बरस बरसी दे बदलाईआ। असीं सारे तेरे ताबयादार, हुक्म विच क्यों ना सीस निवाईआ। शरअ शरीअत रहे ना कोए संसार, मानव ज़ाती इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा अन्त ना पारावार, बेअन्त कन्त भगवन्त तेरी वड वड्याईआ।

✪ १२ माघ शहिनशाही सम्मत ७ सतिन्दर पाल सिँघ दे गृह दिल्ली छाउणी ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ कलयुग बड़ा चालाक, जिस चालाकी सब दी दिती मिटाईआ। साधां सन्तां अन्दरों खुल्ण ना देवे ताक, बन्द किवाड़ी पर्दा कोए ना लाहीआ। आत्म परमात्म बणन ना देवे साक, सुरत शब्द ना कोए समाईआ। जिधर तक्कीए होई अंधेरी रात, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। सति धर्म दा कीता घात, घाउ कूड़ कुड़यार लगाईआ। किसे कोल रहिण ना दिती नाम वस्त दात, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। जिधर तक्कीए उडदी ख़ाक, धुर दी धूढ़ ना कोए रमाईआ। रूह बुत रहिण नहीं दिते पाक, पतित होई लोकाईआ। साडी तेरे उत्ते इक्को आस, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। भविक्ख्तां विच आए आख, पेशीनगोईआं विच कीती शनवाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होवे आप, पारब्रह्म प्रभ आपणी कल प्रगटाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर बदले जाप, तूं मेरा मैं तेरा राग सुणाईआ। धरनी धरत धवल धौल उतों मेटे पाप, दुष्ट दुराचारां करे सफ़ाईआ। नाम कलमा सब नूं इक्को बख़्श दात, दाता दानी धुरदरगाहीआ। लख चुरासी जन्म कर्म दा लेखा लए वाच, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी फोल फुलाईआ। धुर दी करनी करे करता विच लोकमात,

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ कलयुग बड़ा बलवान, बलधारी इक अख्वाईआ। जिस ने सति धर्म दा रहिण नहीं दिता निशान, कूड़ी क्रिया जगत डंक वजाईआ। शरअ छुरी कीती शैतान, दिवस रैण ज़िबह करे लोकाईआ। अन्तर आत्म ना मिले किसे ज्ञान, जगत विद्या होई हल्काईआ। सति स्वामी तेरा दरस मूल ना पाण, चार वरन अठारां बरन रोवण मारन धाहीआ। काया मन्दिर अन्दर मिले ना किसे श्री भगवान, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले गुरदवार रहे कुरलाईआ। सुरती शब्द मिले मेल ना धुर दे काहन, बंसरी धुन ना कोए शनवाईआ। पैग़म्बरां देवे ना कोए पैग़ाम, धुर दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। गुरु गुरदेव सारे होए हैरान, हैरत विच सीस निवाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तेरा दरस मिले ना विच जहान, दीदा दानिस्ता नज़र किसे ना आईआ। सारे झुक झुक करन सलाम, पैग़म्बर नेत्र नैणां नीर वहाईआ। दरोही साडे कलमे होए बदनाम, बदी दा डेरा कोए ना ढाहीआ। जिधर तक्कीए होए हराम, सति विच ना कोए समाईआ। काया तत कीता गुलाम, बन्धन बंध ना कोए कटाईआ। चारों कुण्ट अंधेरा शाम, शमां नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण कलयुग पाउंदा शोर, चारों कुण्ट रिहा डराईआ।

१७५०
२२

दीन दुनी होया अंध घोर, सच चन्द ना कोए चमकाईआ। कलयुग अन्तिम तेरी लोड़, मेहरवान तेरी ओट तकाईआ। तैनूं किहा आवे ब्राह्मण गौड़, वेद व्यासा सिफ्त सालाहीआ। कलि कल्की हो के जाए बौहड़, अमाम अमामा नूर इलाहीआ। जो सदी चौधवीं अन्तिम करे ग़ौर, गहर गम्भीर हो के फोल फुलाईआ। अन्तिम तेरे उत्ते रखी सब ने डोर, डोरी तेरे नाल बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, पुरख अकाल तेरी बेपरवाहीआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ कलयुग बड़ा बली, बलधारी इक अख्वाईआ। जिस माण रहिण नहीं दिता पैग़म्बर वली, मुल्लां शेख़ मुसायक सारे रोवण मारन धाहीआ। जिस ने गोबिन्द दी धार सीस धरया तली, धर्म दी धार धार वखाईआ। ओह चौदां लोक चौदां तबक होका देंदा गलीओ गली, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण पुरख अकाला बड़ा छली, वल छल आपणी खेल खिलाईआ। जिस ने शरअ दस्सी मुहम्मद ऐली, हुक्म धुर दा इक सुणाईआ। ओह वसे निहचल धाम अटली, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिस दी खेल जली थली, महीअल आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण कलयुग बड़ा शैतान, शैतानी विच वड्याईआ। जिस ने मन्नी नहीं किसे दी आण, अवतार पैग़म्बर गुरु सीस ना किसे निवाईआ।

चारों कुण्ट होया हुक्मरान, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान रिहा भुलाईआ। अमृत रस देवे ना किसे पीण खाण, कूड़ क्रिया विच हल्काईआ। आत्म ब्रह्म होण ना देवे कोए ज्ञान, अंध अज्ञान विच रखे कूड़ लोकाईआ। किसे अन्तर वज्जे ना शब्द सच्ची धुन्कान, अनादी धुन ना कोए शनवाईआ। जिधर तक्कीए दीन मज़्हब ज़ात पात ऊँच नीच सारे होए हैरान, धीरज धीर ना कोए धराईआ। बिन तेरी किरपा किसे दी करे ना कोए कल्याण, कायनात सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। किरपा कर श्री भगवान, भगवन तेरी ओट रखाईआ। साचे भगतां कर परवान, गुरमुख आपणे रंग रंगाईआ। लेखा रहे ना बिरध बाल जवान, वड्डा छोटा नज़र कोए ना आईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक वाली दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड सारे तेरे चरण कँवल सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन गुरमुख सन्त सुहेले कर परवान, परम पुरख परमात्म गुरमुखां आत्म मेला देणा मिलाईआ।

✪ १३ माघ शहिनशाही सम्मत ७ सरमैल सिँघ दे गृह मेरठ छाउणी ✪

१७५१ जगत दुःख दूर कर प्रभ सागर, जन भगतां दया कमाईआ। निर्मल कर काया गागर, साढे तिन्न हथ्थ रंग रंगाईआ। १७५१

२२ निर्मल कर्म होए उजागर, दुरमति मैल देणी धुआईआ। दर आयां देणा आदर, अदल इन्साफ़ आपणा इक कमाईआ। तूं २२

मालक करीम कादर, करता इक अख्वाईआ। जोधे सूरबीर बहादर, सतिगुर शब्द तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। दुःख दलिद्र होवे दूर, तन वजूद माटी ख़ाक रहिण ना पाईआ। किरपा कर साहिब हाज़र हज़ूर, हज़रत मालक नूर इलाहीआ। नाता तोड़ के कूड़ो कूड़, सति सच नाल मिलाईआ। त्रैगुण माया रहे ना जूड़, जोड़ी आत्म परमात्म लै बणाईआ। धर्म प्रीती बख्श धूढ़, चरणी ख़ाक रमाईआ। मानस जन्म लेखे लाउणा ज़रूर, राय धर्म ना दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी वड्याईआ। जगत दुःख तन जाए लथ, वसूरा रहे ना राईआ। किरपा करे पुरख समरथ, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जगत विकारा पावे नथ्थ, नाम डोरी तन्द बंधाईआ। शब्द जणाए अकथना अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। झगड़ा मेटे तत अठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध भेव खुल्हाईआ। काया मन्दिर अन्दर खोल्ह के हट्ट, सच दवार इक समझाईआ। मनुआ लेखा रहे ना बाज़ीगर नट, स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। बहत्तर नाड़ी ना

उबले रत्त, तिन्न सौ सट्ठ हाडी रही कुरलाईआ। दीन दयाला जाणे मित गत, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। दुःख दलिद्र जाण नस्स, जो सतिगुर सरन रहे सरनाईआ। अमृत बरसे निजर रस, झिरना कँवल नाभ झिराईआ। जगत तृष्ना होवे वस, मनुआ उठ ना दहि दिश धाईआ। शब्द तीर अणयाला मारे कस, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्से जस, आत्म परमात्म ढोला सहिज सुभाईआ। ज्यों भावे त्यों लए रख, एह सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि करता इक अख्वाईआ। दुःख दलिद्र ना रहे तन, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। सतिगुर बेड़ा देवे बन्न्, शौह दरया ना कोए रुढ़ाईआ। धुर दा राग सुणावे कन्न, नाद अनादी आप जणाईआ। करे प्रकाश चाढ़ के चन्न, अंध अंधेरा दए गंवाईआ। हरख़ सोग़ मेट के ग़म, चिन्ता चिखा विच ना कोए रखाईआ। लेखे लावे पवण स्वासी दम, दामनगीर आप हो जाईआ। वेख वखाउणे काया माटी चम्म, चम्मदृष्टी फोल फुलाईआ। गुरसिख गुरमुख हरिजन सतिगुर घर पए जम्म, तिस तन दुःख ना लागे राईआ। सतिगुर भेव खोल्हे ब्रह्म, पारब्रह्म दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। रोग सोग जाण नट्ठ, तत्व तत रहिण ना पाईआ। जो एका नाम लए रट, रट्टा दीन दुनी चुकाईआ। सगल वसूरे जाण लथ्थ, ग़म संताप ना कोए सताईआ। लहिणा देणा हथ्थो हथ्थ, परम पुरख प्रभ झोली पाईआ। सच सरोवर चरण धूढ़ी अठ्ठ सठ्ठ, मजन इक्को वार वखाईआ। जगत जहान लेखा होवे भट्ठ, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। दुःख रोग सतिगुर सरन, निरुगण सरगुण दया कमाईआ। लेखा चुक्के मरन डरन, चुरासी विच ना कोए भवाईआ। हरिजन मंज़ल साची चढ़न, जिथ्थे कबीर जुलाहा आसण लाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला पढ़न, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। सच दवारे साचे घर खड़्हन, जिथ्थे मिले मेल धुरदरगाहीआ। झगड़ा मेटे चोटी जड़न, चेतन आपणे रंग समाईआ। आपे होए हार भन्न्ण घड़न, घड़न भन्न्णहार आप अख्वाईआ। गुरमुख दुःख हंगता विच कदे ना सड़न, अग्नी तत ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। गुरमुख दुःख रोग ना कोए व्यापे, संसा नज़र कोए ना आईआ। जिन्हां खुल्हे बन्द किवाड़ी ताके, बजर कपाटी डेरा ढाहीआ। शब्द सुणाए धुर दा नादे, नादी धुन शनवाईआ। उन्हां दा तन वजूद साधे, माटी ख़ाक सोभा पाईआ। निरगुण नूर जोत करे प्रकाशे, अंध अंधेरा दए चुकाईआ। मातलोक विच्चों करे बन्द खलासे, खलासा आपणा इक दृढ़ाईआ। अट्ठे पहर रखे भरवासे, दिवस रैण वंड ना कोए वंडाईआ।

आत्म परमात्म जोड़े नाते, साक सज्जण सैण इक अख्वाईआ। एथे ओथे दो जहानां सदा बख्शे साथे, आपणी गोद आप बिठाईआ। आत्म ब्रह्म लाडले काके, तन खुशीआं रंग रंगाईआ। जगत वासना रोग ना कोए संतापे, चिन्ता नज़र कोए ना आईआ। सतिगुर पूरा किलविख पाप जन्म जन्म दे काटे, कटाक्ष आपणा नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण गुरमुखां सद रखे दे कर हाथे मेहरवान महिबूब मेहर नज़र आपणी अगम्म उठाईआ।

★ २३ माघ शहिनशाही सम्मत ७ कर्म सिँघ दे गृह गुरबचन सिँघ दर्शन सिँघ नयाशाला, जोगिन्दर सिँघ डडवां, करतार सिँघ भूमली, प्रसिन्न कौर फ़तिह नन्गल, बीरो फ़तिह नन्गल, जगीर सिँघ सोहल, सरूप सिँघ गुरदासपुर, चरण सिँघ नवां पिण्ड जवंद सिँघ नवां पिण्ड, दुरगी नवां पिण्ड, गुरचरण कौर नयाशाला, पिण्ड नयाशाला ज़िला गुरदासपुर

१७५३ सतिगुर शब्द कहे वक्त सुहञ्जणा तेई माघ, मग्न भगतां दए कराईआ। गुरमुखां दीपक जोती जगे चराग़, चराग़ाहां १७५३
२२ होए रुशनाईआ। निरगुण धार आपणे हथ्थ पकड़े वाग, आत्म परमात्म डोरी आप उठाईआ। हरिजन हँस बणावे काग, सोहँ २२
माणक मोती चोग चुगाईआ। सन्त सुहेला जाए जाग, गुर चेला नैण उठाईआ। रावी कहे मेरे होणे वड वड भाग, भागवान हो के सीस निवाईआ। मेरा लेखा पूरा होणा आदि, आदि निरँजण दया कमाईआ। मैनूं आ गई अर्जन वाली याद, भेव देणा खुलाईआ। मुहम्मद दी फ़रयाद, पड़दा देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। रावी कहे मेरी आसा मनसा पूरी होई उम्मीद, सति सच जणाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी खुशीआं वाली ईद, ईदुलफितर नाल मिलाईआ। मुहम्मद कहे मेरे कलमे वाली ताकीद, फ़ैसला हक हक सुणाईआ। चार यारी कहे पूरी होवे साडी रीझ, मनसा पूरब वेख वखाईआ। जो नाम कलमे दा बीजया बीज, पत्त टहिणी नाल महकाईआ। सुणना हुक्म धुर हदीस, कलमा हक शनवाईआ। करे खेल जगत जगदीश, जगदीश्र बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी आसा अगम्मी डण्डा, डण्डावत दए बदलाईआ। जिस दा खेल विच ब्रह्मण्डा, ब्रह्मण्ड रिहा उठाईआ। उहदा हुक्म वरते विच वरभण्डा, कायनात सीस निवाईआ। पर्दा रहे ना कोए नव खण्डा, नव नव धार नाल जणाईआ। जिस झगड़ा मेटणा जेरज अंडा, उत्भुज

सेत्ज करे सफ़ाईआ। उस दा लेखा नाल नारद पंडा, नर नरायण हुक्म वरताईआ। जिस ने सुहाउणा कलयुग अन्तिम कन्ढा, कन्ढी घाट फोल फुलाईआ। अमृत जल सीस वहाउणा ठंडा, छब्बी माघ रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी इक्को इक मनसा, मनुषां तों बाहर दयां जणाईआ। जो आसा रख के गया अवतार चौदवां हँसा, चौधवीं सदी अक्ख उठाईआ। जिस ने दीन दुनी दा इक्को करना बंसा, बंसरी वाला नाल मिलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया तोड़े गढ़ हंगता, हँ ब्रह्म इक समझाईआ। हुक्म देवे नारद पंडता, मुन आप समझाईआ। जिस झगड़ा मेटणा काया माटी तन दा, तत्व तत इक समझाईआ। भेव खोलणा आत्म ब्रह्म दा, पड़दा रहे ना राईआ। झगड़ा मेटणा खुशी ग़म दा, ग़मखार आपणा हुक्म सुणाईआ। लहिणा रहे ना सरवन कन्न दा, धुन आत्मक राग उपजाईआ। छब्बी माघ निशान बणाउणा तारा चन्द दा, तृप्त दो हथ्थां नाल उठाईआ। एह लेखा बलि बावन वाले छल दा, अछल छल आपणी कार भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। रावी कहे मेरी पिछली पूरब प्रीत, परम पुरख बणाईआ। त्रैगुण तों कर अतीत, त्रैभवण धनी दिती वड्याईआ। धार बख्श के ठांडी सीत, अग्नी तत बुझाईआ। दस्स अगम्मा गीत, ढोला दिता सुणाईआ। मेरे उत्ते सतिगुर अर्जन होया शहीद, शहादत धर्म वाली भुगताईआ। मैं उस दी करनी दीद, दीदा दानिस्ता दर्शन पाईआ। सदी चौधवीं तेरे तन ना होवे कमीज, हुक्म बेपरवाहीआ। छब्बी माघ नूं गोली दे गल विच होवे ओह तवीत, जेहड़ा मेरे कन्ढे पार गल विच छुहाईआ। मैं उस दी रख के बैठी उडीक, साल बसाला ध्यान लगाईआ। उधरों मुहम्मद दी निकलणी चीक, चीक चिहाढ़ा देवे पाईआ। खुद खुदा ने करना तस्दीक, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। नौ सपारे ओह दस्सणे जेहड़े लिखे नहीं विच कुरान मजीद, नौ फुल्ल सदी चौधवीं वाले गोली सिर ते लए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। रावी कहे मैं नारद देणा इशारा, सैनत इक लगाईआ। आजा मेरे किनारा, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नाल मिलाईआ। खेल वेख लै दोबारा, दोहरी कल वरताईआ। जिस पहलां दिता हुलारा, मेरा तट दिता सुहाईआ। फेर खेल करे इसतिगफ़ारा, हरि करता नूर इलाहीआ। जिस दा नूर होवे उज्यारा, चन्द सितारा सीस झुकाईआ। मैं होर दस्सां नर निरँकारा, की आपणी कार भुगताईआ। इक्की गुरसिक्खां नन्गीआं कढीआं होण तलवारां, मुट्ठी असमान वल्ल उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे मैं सुणया हुक्म शहिनशाही, शाह सुल्ताना किस बिध रिहा

सुणाईआ। मैं बण जाणा अज्जो राही, पुरीआं लोआं पैंडा लैणा मुकाईआ। जिधर जावां पैंदी जाए दुहाई, बौहड़ी बौहड़ी कर कुरलाईआ। इक संदेशा देवां सुणाई, सच सच समझाईआ। चौवीं माघ नूं सिंघासण थल्ले नौ तिनके रखणे काही, गोबिन्द लिखणा नाल काली शाहीआ। फेर लेखा दस्सां धुर दे माही, की महिबूब हुक्म वरताईआ। मेरी सब तों वक्खरी पढ़ाई, विद्या जगत ना कोए जणाईआ। नाले दस्सांगा मेरी बोदी दी किन्नी लम्बाई, किस बिध जगत जहान लई वधाईआ। ओधरों सदी चौधवीं रही कुरलाई, कूक कूक सुणाईआ। रावी भज्जे वाहो दाही, आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं बल नूं पुछ के आउणा किथों तक बावन दीआं होईआं कर्मां ढाई, गोबिन्द दा ढईआ देवे की गवाहीआ। मेरीआं बद्धीआं होवण दोवें बाहीं, अग्गा पिछा ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे मैं आउणा दूर दुराडा, भज्जणा चाँईं चाँईंआ। प्रभू नाल लडाउणा लाडा, प्रेम प्रीती इक रखाईआ। जिस दा हुक्म वरतणा डाहढा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। फेर इशारा देणा की संदेशा देवे वाला बाजां, बाज़ी जगत वाली उलटाईआ। की खेल करे धुर दा राजा, हरि करता धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे एह खेल अगम्मी कार, हरि करता आप कराईआ। पंझी माघ

१७५५
२२

दिवस विचार, पंचम पंच दए वड्याईआ। खेल करे सच्ची सरकार, हरि करता धुरदरगाहीआ। सिरों नन्गे पंज गुरसिख सीस बद्धी ना होवे दस्तार, बैठण चाँईं चाँईंआ। धूढ़ी मस्तक लाई होवे छार, लाइनां तिन्न तिन्न खिचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं इक किनारा तकां, रावी तेरा लेखा रवीदास दयां जणाईआ। मेरा कौल इकरार पक्का, मुहम्मद संधी दिती लिखाईआ। सताई माघ नूं गुरमुख सिँघ भेंटा चढ़ाउणा इक टका, कीमत टकयां वाली पाईआ। किशन सिँघ ने कोरा सवा गज़ ल्याउणा लट्ठा, कन्नीआं चारे लैणीआं कतराईआ। जिथ्थे अवतार पैग़म्बर गुरु होणा इक्ट्ठा, भगत बैठण चाँईं चाँईंआ। नारद ने सब नूं मख़ौल करना ठठ्ठा, हासे वाली ख़ुशी बणाईआ। वेखो रब्ब दा वेस धरया विच जट्टां, जटा जूट समझ कोए ना आईआ। सन्ता सिँघ दो तलवारां बद्धीआं होवण दोवीं पट्टा, हथ्थ गर्दन उत्ते टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। रावी कहे तेई माघ दिहाढ़ा चंगा, सूर्या चन्द सीस निवाईआ। भगतां दा चरणोदक मंगे गंगा, गोदावरी जमना सुरस्ती सीस निवाईआ। जिन्हां दा प्रभ नाल प्यार सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आया लम्बा, जुग चौकड़ी गंढ पवाईआ। जिन्हां दा सदा तूं मेरा मैं तेरा रिहा छन्दा, सोहँ ढोला गीत अलाहीआ। ओह कूड़ी

क्रिया मेट के धन्दा, धर्म दी धार विच समाईआ। जिन्हां नूं साहिब लाए अंगा, अंगीकार इक अख्वाईआ। उन्हां दा सीस ना होवे नंगा, दस्तार आपणे दस्त बंधाईआ। उलटा कर पलँघा, दीन दुनी दए उलटाईआ। लेखा जाणे जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। सतिगुर शब्द शब्द सतिगुर माण दवाए माढ़ा चंगा, ग़रीब निमाणयां होए सहाईआ। हरिजन हरि भगत ना होवे अन्धा, अज्ञान अंधेरा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। सताई माघ कहे लिखारीआं अग्गे होण पंज पंज जोतां, जोती धार मिले वड्याईआ। सब दीआं सांझीआं करनीआं गोतां, वरन बरन दा डेरा ढाहीआ। कलयुग जीवां होणीआं मौतां, मलकुलमौत भज्जे वाहो दाहीआ। उत्तर पूरब पच्छम दक्खण फिरे नाल शौंका, शौकीन हो के आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। रावी कहे मैं आपणा सुणाउणा दुक्ख, पिछले चार जुग नाल रलाईआ। मैं आपणी दस्सणी भुक्ख, जो फ़ाके कट के वक्त लँघाईआ। मैं आपणा दस्सणा रुख़, किस बिध बदल के भज्जी वाहो दाहीआ। मैं आपणी दस्सणी कुख्ख, जीव जंतू कितने विच टिकाईआ। फेर अंगड़ाई लै के पैणा उठ, बलहीण बल प्रगटाईआ। फेर दस्सणा क्यों सोहँ मेरे उत्ते आ के पढ़ी तुक, चार जुग कवण प्रभ दे ढोले गाईआ। सदी चौधवीं दी गोली दी खुल्ही होवे गुत्त, पटका मस्तक उत्ते टिकाईआ। हरिसंगत साढे दस वजे रात दे खोह खोह दी पाउणी लुट्ट, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। एसे खेल नाल जगत जहान होणा दो टुक, टुकड़े धरनी धरत धवल वंड वंडाईआ। उस वेले सदी चौधवीं ते चौधवीं सदी दी गोली दोवें इक दूजे तों जाण रुठ्ठ, मूंह चढ़दे लहिंदे वल्ल रखाईआ। किशन सिँघ ने फड़ना गुट्ट, दलीप सिँघ नाल मिलाईआ। महिन्दर सिँघ पढ़नी तुक, तूं मेरा मैं तेरा राग सुणाईआ। फेर करना अंधेरा घुप्प, शमादान देणे बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप जणाईआ। सच कहे मैं ज़रूर सच्चा, प्रभ सच दिती वड्याईआ। जुग चौकड़ी मैं बणया रिहा प्रभू दा बच्चा, वड्डा छोटा ना रूप बदलाईआ। मैनूं अवतार गुरु मारदे रहे जफ्फा, गलवकड़ी लैण पाईआ। मैं परमात्मा नूं किहा इन्हां नूं थोड़ा थोड़ा देवीं गफ्फा, झोली खुशी नाल भराईआ। नाल वंड जगत उँगलां चप्पा, चप्पा चप्पा टुकड़ा सब दे हथ्थ फड़ाईआ। एसे विच्चों सब नूं होवे नफ़ा, नुकसान नज़र कोए ना आईआ। फेर मैं खिड़ खिड़ा के हस्सा, हस्स के दिता जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। तेई माघ कहे मेरे अन्तर आया धमाका, भय विच दयां जणाईआ। जगत टुट्टण लग्गा साका, सज्जण रहिण कोए ना पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल दा तक्कया

ख़ाका, बरी तरी फोल फुलाईआ। मालक बण के इक्को आका, अक्ल बुद्धी तों परे रिहा जणाईआ। जिस ने तेग़ बहादर दा लेखा पूरा कराया विच ढाका, आशा गोबिन्द माछूवाड़े पूर कराईआ। अगले साल बदल देणा साका, साखी नवीं दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। रावी कहे मैं खेल तकणा हज़ूर, हज़रतां तों परे दए जणाईआ। मैं चरण कँवलां होणा मशकूर, निउँ निउँ लागां पाईआ। अठाई माघ जिस ने थोड़ा चले जाणा दूर, आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं मस्तक लाउणी धूढ़, टिक्के ख़ाक रमाईआ। सेवक बणां मज़दूर, चाकर नाउँ धराईआ। सच दस्सांगा सदी चौधवीं अन्त किस दे विच कसूर, क्यों उम्मत कसर लग्गे थांउँ थाँईंआ। मेरे मालक दा इक्को नूर, नूर नुराना नूर इलाहीआ। जो पूरन सर्ब कला भरपूर, भरपूर आपणा हुक्म वरताईआ। नौवां सालां नौवां खण्डां दे नौ लथ्थणे पूर, नौ दवारे समझ किसे ना आईआ। दीन दुनी चतुर सुघड़ होए मूर्ख मूढ़, बुद्धी कम्म कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। मुहम्मद कहे मेरी आशा खरबां खरब, गिणती गणित ना कोए गिणाईआ। सदी चौधवीं दा फेर होणा अन्त जिस नूं देवे कोए ना ज़रब, हासल समझ किसे ना आईआ। मेरा महिबूब जिंना चिर कदम रखे ना विच अरब, अरेबीआ लेखा ना दए मुकाईआ।
१७५७ मेरी मंज़ूर होवे ना अर्ज़, जिंना चिर साहिब सुणे ना चाँईं चाँईंआ। मशरक विच्चों आए मग़रब, ग़रबन आपणा पन्ध मुकाईआ। १७५७

२२ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा पूरब खाता वेखे दरब, दाइनज़ा लू ज़ोमो इज़ू बेपरवाहीआ। २२

नारद कहे गुरमुखो एह गुरदास पुरा, गुरदे वाल्यो लओ अंगड़ाईआ। एथों बदलणा दीन दुनी दा धुरा, धुर दा लेखा ना कोए मिटाईआ। मैं दस्सण आया राम सिँघ ने चवी माघ नूं सतिगुर दी गर्दन ते रखणा छुरा, नौ मिन्ट टिकाईआ। कोई ना समझयो बुरा, मैं ब्राह्मण पंडत जुग जुग उलटी गल्ल समझाईआ। मैनूं सारे मारदे गए मेरा बेड़ा ना रुढ़ा, प्रभ दी नित नित सेव कमाईआ। ना मैं बाल बणया ते ना मैं होया बुढ़ा, जवानी मेरी लए अंगड़ाईआ। मेरी बोदी दा सदका मैनूं कोई नहीं थुड़ा, थुड़े थिड़क्यां सब नूं प्रभ नाल दयां मिलाईआ। मेरा जोड़ा आदि तों जुड़ा, जोड़ी सके ना कोए तुड़ाईआ। वेख्यो कलयुग अन्त रहिउ ना कोए निगुरा, बिना सतिगुर तों पार ना कोए लँघाईआ। ज़रूर कल्ल नूं मेरे वास्ते नारद कहे इक भेली ल्याउणी गुड़ा, फेर सगण भगतां दयां समझाईआ। जेहड़ी आशां रखी सी गोबिन्द अनन्दपुरा, उस दा भेव दयां खुल्हाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी आपणी कार कमाईआ। नारद कहे तेई माघ नूं मैं देवां पिछली वधाई, जिस दिन राम भीलणी दिती वड्याईआ। एसे दिन ब्राह्मण ने बलि तों कर्मां मंगीआं सी ढाई, ढाई सौ साल दी आशा गोबिन्द ने एसे दिन उपजाईआ। जिन्नां गुरमुखां दा विवहार होया एह गोबिन्द दे पिछले सिख ओह इन्नां दा सांई, लहिणा पूरब लेखे पाईआ। सतिगुर शब्द दा हुक्म कदे ना समझो अजाई, बिना विहार तों कार ना कोए भुगताईआ। जन भगतो जदों वेला लद गया दुनिया रोवेगी मार के धाही, ओ धाही मारन वाल्यो धवल ते बैठा माही नज़र किसे ना आईआ। अज्ज तुहाडा मालक भावें एहदे मस्तक ला दयो शाही, फेर वी तुहाडी सेव कमाईआ। तुहाडे पिच्छे बण के आया राही, दो जहानां पैंडा आया मुकाईआ। एहदा प्रेम ते मुहब्बत वाला नाता तुहाडे गल दी फाही, जिसने फाँसी जम दी दिती कटाईआ। इहने चार जुग नहीं नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिछली कीती किरसाणी ते वाही, जिस वाही विच्चों गुरमुख बूटे लए उगाईआ। एह धुर दी खेल खेल नहीं पराई, किसे अवतार पैग़म्बर गुरु दे हथ्थ ना कदे फड़ाईआ। जदों आवे ते आवे चुक्क के बाहीं, जन भगतां आपणीआं भुजां उत्ते टिकाईआ। इहो बाबल ते इहो माही, जेहड़ा महल्ल विच रह के अटल आपणा हुक्म वरताईआ। कर्मां दा बूटा ते कर्मां दा फल कर्म सिँघ रिहा खाई, जिसदे घर वज्ज रही वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप सदा लावारिस, वारिस भगतां दा आप अख्वाईआ।

✪ २४ माघ शहिनशाही सम्मत ७ गुरबचन सिँघ ते दर्शन सिँघ दे नवित पिण्ड नयाशाला ज़िला गुरदासपुर ✪

नारद कहे सुभागा चढ़या माघ चव्वी, चौबीसवां अवतार दया कमाईआ। जिस मनसा पूरी करनी रवीदास रवी, रावी दी आसा पूर कराईआ। जिस दा लेखा गाया बाल्मीक बणके कवी, कावय कर्म कांड तों बाहर जणाईआ। अर्जन ने आशा रखी बैठ के तत्ती तवी, तव प्रशाद कहि के सीस निवाईआ। कलयुग अन्तिम खेल करे प्रभ नवीं, नव नौ आपणा हुक्म वरताईआ। धुर दी कार कदे ना भवी, भव सागर वेखे जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। नारद कहे मेरी पूरी होवे सध्धर, सध्धरां विच खुशी मनाईआ। परम पुरख करे कदर, कुदरत दा कादर दया कमाईआ। मेहरवान मेहर दी करे नदर, नज़र आपणी इक उठाईआ। मेरा लेखा देवे बदल, बदली करे थांउँ थाँईआ। कूड़ी क्रिया करके कत्ल, कातिल आपणा हुक्म वरताईआ। जगत जहान वेखे

बेवतन, वतनां वाल्यां लए मिलाईआ। जिस सुहाउणा रावी दा कन्ढा पतण, पत्रका सीता राम वाली फोल फुलाईआ। जेहड़ी आशा रखी मुहम्मद जिस वेले कीता दफ़न, परवरदिगार सीस निवाईआ। मेरा काअब्यां तों बाहर होवे कफ़न, कोहकाफ़ तों परे तेरी रुशनाईआ। मेरी लाज आवीं रखण, सदी चौधवीं अक्ख उठाईआ। तूं मालक अलखणा अलखण, परवरदिगार नूर इलाहीआ। अवतार पैग़म्बर तेरी महिमा दस्सण, पैग़म्बर सिफ्तां नाल सालाहीआ। जिस वेले दीन दुनी लग्गे मच्चण, आंच अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। फेर नवीं रचणी रचन, रचणा आपणी देणी जणाईआ। भाग लगाउणा काया कंचन, साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाईआ। बिना रूह तों बुत लग्गा हस्सण, मकबरे विच ख़ुशी मनाईआ। मेरे परवरदिगार मेहरवान महिबूब जिस वेले आवें विच पच्छम, पिछला लेखा पूर देणा कराईआ। मैं वेखां खेल तेरी अगम्मी नूरी अक्खण, जगत नेत्र कम्म किसे ना आईआ। तूं वसें घट घटण, घट घट अन्तर रिहा समाईआ। नाल होवे गोबिन्द पाटल पटण, पटणे वाला संग मिलाईआ। जगत जहान मेटे रट्टण, रट्टा कूड़ रहे ना राईआ। तेरा सति सरूप धार जट्टण, सति सतिवादी नूर इलाहीआ। मैं दीन दुनी लग्गा छड्डण, तन वजूद नाता उम्मत नालों तुड़ाईआ। मेरा पुकारे मास हड्डण, नाड़ी नाड़ी कूक जणाईआ। तेरे नाल लग्गी रहे लग्न, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। झट मकबरे विच दीपक लग्गा जगण, प्रकाश

१७५६ २२ होया नूर इलाहीआ। मुहम्मदा मेरे लेखे लग्गा तेरा बदन, बदला सहिज दयां चुकाईआ। जिस वेले सदी चौधवीं लग्गी लँघण, १७५६ २२

आपणा पन्ध मुकाईआ। दीन दुनी लग्गे दगण, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। तेरा सवा पा न्याज़ होवे सगण, मकबरा तेरा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती इक्को वार लओ अंगड़ाई, अंगी तन नाल छुहाईआ। नेत्र कजला पाउणा चाँईं चाँईं, नैण अक्ख अक्ख बदलाईआ। राह तकणा धुर दे माही, भज्जणा वाहो दाहीआ। टपदयां जाणा बेले काही, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। आपणा लहिंगा लैणा उठाई, सज्जे बाज़ू उत्ते टिकाईआ। मेरा लेखा पिछला रिहा समझाई, पूरब रिहा जणाईआ। रावी कन्ढे इंज पहुंचणा जिवें सौहरयां घर जवाई, मेरी बोदी दए गवाहीआ। पर याद रखयो सब दे कोल प्यार दीआं मुड्डां होवण ढाई, ढईआ गोबिन्द वाला नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा इक सुणाईआ। नारद कहे मैनूं दिसे राह पद्धरा, जंगल जूह ना कोए वड्याईआ। तुसां संभालणा आपणा घग्गरा, घग्गर दे कन्ढे गोबिन्द निशाना गया लगाईआ। फेर लेखा दस्सां अगला, की करता हुक्म सुणाईआ। जगत जहान तकणा बग बपड़ा बग़ला, बग़लगीर नज़र कोए ना आईआ। तुहानूं राह विच ज़रूर मेरा पवेगा झपला, पलक विच

झलक दयां वखाईआ। मेरा रूप मुन कपला, कपल मुन मेरे वरगा जगत गुसाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो निरगुण धार निरगुण रूप विच रतला, दूसर रंग नज़र कोए ना आईआ।

२४ माघ शहिनशाही सम्मत ७ महिंगा सिंघ, कर्म सिंघ, जरनैल सिँघ देवां, गुरो राम कौर चतर कौर सद्दा, अजीत सिंघ, हमराज बंसो गज़नी पुर, सुलखणी गज़नी पुर, दारा सिँघ गज़नी पुर, छिन्दो मदीपुर, गुरमेज कौर कठिआली, करतारी दोरांगला, महिन्दर कौर काला नन्गल, पिण्ड सद्दा ज़िला गुरदास पुर

चौवी माघ कहे मेरी खुशीआं भरी रैण, भिन्नड़ी लोकमात वड्याईआ। सच संदेशा आई कहिण, बिन रसना जेहवा शब्द अगम्मी ढोला गाईआ। सब दा मालक इक्को नर नरायण, नर हरि इक अख्वाईआ। जो आत्म परमात्म साक सज्जण सैण, सखी सुल्तान इक अख्वाईआ। जिस दे हुक्म दा दो जहानां वगदा वहिण, नाम कलमा अगम्म दृढ़ाईआ। ओह सब दा लेखा लहिणा देणा आया देण, दो जहानां भरम रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि सच सच दृढ़ाईआ। माघ कहे मैं आया लोकमात भज्जा, भजन बन्दगी वाल्यां दयां जणाईआ। सच धर्म दी साची जगह, जिथ्थे जगे जोत नूर इलाहीआ। आत्म परमात्म धार मिले मज़ा, अमृत रस आबेहयात मुख चुआईआ। नेड़ ना आवे कूड़ कज़ा, कलयुग कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। धुर दा हुक्म चलावे मनावे आपणी इक रज़ा, राज़क रिज़क रहीम दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर वडा वड वड्याईआ। चौवी माघ कहे मेरी नमो नमो निमस्कार, पुरख अकाल सीस निवाईआ। दीनां बंधप मेरे दयाल, ठाकर स्वामी तेरी बेपरवाहीआ। उठ वेख मुरीदां हाल, मुर्शद आपणी लैण अंगड़ाईआ। सदी चौधवीं कर ख्याल, ख्यालात तक ख़लक खुदाईआ। चार कुण्ट होया बेहाल, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। नव सत्त सिर ते कूके काल, महाकाल भेव ना कोए खुल्हाईआ। त्रैगुण माया प्या जंजाल, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। फल नाम दिसे ना काया डाल, साढे तिन्न हथ्थ ख़ाली सिंमल रिहा लहराईआ। अमृत सुहाए कोए ना ताल, निजर झिरना ना कोए झिराईआ। चुरासी विच्चों होए ना कोए बहाल, फाँसी जम ना कोए तुड़ाईआ। मेहरवान महिबूब कर प्रितपाल, प्रितपालक तेरी ओट तकाईआ। सम्बल बहि के कर संभाल, गोबिन्द लेखा वेख

वखाईआ। तेरी होवे अगम्मढ़ी चाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस निवाईआ। चौवी माघ कहे मेरा इक्को इक सजदा, कदमबोसी विच वड्याईआ। नूर तक अगम्मी रब्ब दा, आलमीन भेव खुल्हाईआ। जिस नूं जगत जहान गया लभ्भदा, गुप्त ज़ाहर अक्ख उठाईआ। जगत जिज्ञासू गया सद्दा, भगत भगवन राह तकाईआ। उहदा खेल जगत जहान सबब्ब दा, सुबह शाम वंड ना कोए वंडाईआ। उस दा नगारा इक्को नद दा, अनहद नादी धुन शनवाईआ। दीपक दो जहानां जगदा, नूरी जोत डगमगाईआ। जो सन्त सुहेले जुग जुग लभ्भदा, हरिजन मेले चाँईं चाँईंआ। जो भेव खोल्हे आदि अन्त मध दा, पूरब पड़दा रहे ना राईआ। कलयुग रूप तके बगढ़े बप दा, नव सत्त खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। चौवी माघ कहे ओह आ गया नारद पंडा, ब्रह्मण्ड आपणा पन्ध मुकाईआ। हथ्थ फड़ के कलयुग वाला डण्डा, डण्डावत पुट्ठे हथ्थ कराईआ। बोदी दा वाल कर के लम्बा, साडे तिन्न हथ्थ रिहा वखाईआ। अग्गे खेल करे अचंभा, जिस नूं समझे कोए ना राईआ। कुझ लेखा दस्से गुर तेग़ बहादर जिस जहाज़ पार कराया ला के कंधा, कन्ढी आपणा भेव चुकाईआ। किस बिध जगत जहान आया लँघ, पाँधी बण के राहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल इक वखाईआ। नारद कहे प्रभू मेरी नमो नमस्ते, डण्डावत करवाउण वाल्या क्यों डण्डा रिहा वखाईआ। मैनूं विष्न ब्रह्मा शिव मिले विच रस्ते, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। मैं संदेशा दिता नस्सदे नस्सदे, सहिज सहिज नाल जणाईआ। आओ तक्को धरती उत्ते खेड़े रहिणे नहीं वसदे, बस्ती नज़र कोए ना आईआ। हुक्म वरतणे इक अलख दे, जिस नूं ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। वैअदे कौल इकरार पूरे होणे पक्क दे, जो पेशीनगोईआं अवतार पैग़म्बर गुरु आए जणाईआ। ओह वेखो चार कुण्ट अंग्यारे तपदे, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। माया रूप धर लए डस्सण वाले सप्प दे, शाह सुल्तान डंग चलाईआ। सदी चौधवीं बेड़े पूर भर गए पप्प दे, पतत्तां पुनीत ना कोए बणाईआ। नारद कहे मैं सच दस्सां जेहड़े प्रभू नूं नहीं जपदे, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। उन्हां दे लेखे अन्तिम होणे कक्ख दे, कीमत जगत ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। नारद कहे मैं देंदा आया होका, हुक्म धुर दा इक सुणाईआ। सुण लओ चौदां तबक ते चौदां लोका, चौदस चन्द ना कोए रुशनाईआ। प्रभ आपणे हथ्थ विच दीन दुनी दा रखे मौका, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। जेहड़ा संदेशा दिता सी गोबिन्द विच पौंटा, पटने वाला आपणी कार भुरताईआ। जिस ने नाम दी चलाई इक्को नौका, नईया जगत जहान गया

वखाईआ। उस दा लेखा पूरा करना पुरख अकाल नाल शौंका, शक शकूक रहिण कोए ना पाईआ। नाले नारद ने आह कर के भरया हौका, हाए उफ़ कर सुणाईआ। मेरे साहिब दा इक्को ढौंका, ढईए वाला पन्ध चुकाईआ। अग्गे समां नहीं रहिणा बहुता, सदी चौधवीं नेत्र रोवे मारे धाहींआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। नारद कहे मैं आया थक्का टुट्टा, पिछला पन्ध मुकाईआ। मेरे रूप नूं सतिगुर धार समझ के बन्नह् लओ दोवें गुट्टा, हथ्थकड़ी जगत वाली लगाईआ। मेरा रूप अगम्मी असमान तों परे टुट्टा, धरनी धरत धवल उत्ते सोभा पाईआ। मेरा वैराग मेरे अन्दरों फुट्टा, फुटकल दा झगड़ा रहे ना राईआ। खेल करे अबिनाशी अचुता, पारब्रह्म प्रभ आपणी कार भुगताईआ। मैं ज़रूर दस्सांगा सतिजुग विच इक्को शब्द ते इक्को तुका, तुख्मतासीर प्रभ ने सब दा देणा बदलाईआ। किसे दे मुख नहीं लग्गणा नड़ी हुक्का, हुक्म वरते शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहीआ। मेरा इके नूं सीस झुका, दूसर सिर ना कदे निवाईआ। मैं उस दर ते पुज्जा, जिस नूं दो जहान पूज के आपणा झट लँघाईआ। मैं भेव खुल्हाउणा गुज्झा, पर्दा अन्दरों देणा उठाईआ। इक्को आदि इक्को अन्त ते इक्को साहिब दा मुद्दा, जो मुद्दत दे विछड़यां लए मिलाईआ। ओह भाग लगावे धरनी उत्ते बसुधा, सुध सब दी दए भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा आपणा हुक्म वरताईआ। नारद कहे मैं तकां इक साहिब दी हस्ती, हस्त कीटां दयां जणाईआ। मेरे नाल गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती, भज्जीआं आईआं वाहो दाहीआ। बिना कदमां तों वड़ गईआं ओस प्रभू दी बस्ती, जिस बस्ते सब दे देणे बंधाईआ। नूर ज़हूर तक के चढ़ी मस्ती, मस्त खुमारी विच जगत कर्म दी बीमारी रहे ना राईआ। नाल मैं वी कीता दरसी, दरस करके आपणी बोदी दिती हिलाईआ। खुशीआं नाल रखां अग्गे इक अर्ज़ी, आरज़ू देणी दृढ़ाईआ। मेरे मालक ख़ालक प्रितपालक पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार तेरी केहड़ी मर्ज़ी, किस बिध आपणा हुक्म वरताईआ। मैं खेल तकणी नरायण नर दी, नर हरि पड़दा देणा चुकाईआ। मैं कोई अवतार पैग़म्बर गुरु लोकमात नहीं मन्नणा फ़र्ज़ी, बिना तेरे तों दूजा नज़र कोए ना आईआ। सच दस्स किस बिध ग़रीब निमाणयां बणें दर्दी, दुखियां दुःख आपणी झोली पाईआ। क्यों शरअ छुरी बणी करदी, दीन मज़्ब कातिल मक्तूल दोवें रोवण मारन धाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। नारद कहे गंगा गोदावरी नी सुरस्ती जमना, ज़ामन इक लओ बणाईआ। ओह तक्को जिस ने किसे नूं रहिण नहीं देणा नाल अमना, जिस दा लेखा ऐमनाबाद विच नानक गया लिखाईआ। ओह सब दे दो जहानां विच कढे संमणा, सम्मत शहिनशाही अट्ठ पहली चेत्र देवे गवाहीआ। जिस दा इक्को

गुलशन ते इक्को चमना, दो जहान वेखे थांउँ थाँईंआ। जिस ने रूप बदलाया गोबिन्द दुष्ट दमना, दोहरी आपणी कल वरताईआ। ओस दा हुक्म संदेश फ़रमान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश ने मन्नणा, सिर अग्गे ना कोए उठाईआ। जिस जगत जहान दा बेड़ा बन्नृणा, शब्द डोरी हथ्थ उठाईआ। सदी चौधवीं मेटणा पन्धना, मुहम्मद पाँधी दा लेखा रहे ना राईआ। जिस नूं वेख के ईसा मूसा कम्बणा, सदी बीसवीं लए अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा भेव आप खुल्हाईआ। नारद कहे मैं आया भज्जा नट्ठा, पिछला पन्ध मुकाईआ। मैनूं दो जहान करदे रहे ठट्ठा, हासी कर के ताड़ी लाईआ। वेखो जांदा प्रभू दा पट्ठा, भगत आपणा रूप बदलाईआ। मैनूं याद इक्को टप्पा, तूं मेरा मैं तेरा इक्को ढोला गाईआ। मैं सुण के हो गया हक्का बक्का, हैरानी विच आपणी करवट लई बदलाईआ। मैं फिर पैग़म्बरां नूं ताड़ी मार के किहा अगले साल मेरा मालक ज़रूर जाएगा विच मक्का, मुहम्मद दा मकबरा वेख वखाईआ। फेर ईसा मूसा नूं लग्गे धक्का, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। लहिणा देणा मिटणा बूरा कक्का, कालख टिक्के वेखे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। नारद कहे मेरी बौहड़ी बौहड़ी, दरोही दरोही कर सुणाईआ। इक हुक्म संदेशा जाणा सक्खर रोड़ी, हुक्म देवे नूर इलाहीआ। जिस
१७६३ दे हथ्थ चौदां तबक दी डोरी, चौदां सदीआं गंढ पवाईआ। उस दी खेल वरतणी थोड़ी थोड़ी, नव नव वंड वंडाईआ। १७६३
२२ जगत जहान करना जोड़ी जोड़ी, तीजा हिस्सा कोए ना पाईआ। बाजां वाला आवे वागां मोड़ी, नीले वाला नीली धार तों २२
परे आपणी करे जोत नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे मैं वेखणा खेल विच हिन्द, हिन्दी अरबी फ़ारसी समझ कोए ना पाईआ। जिस साहिब दी सारे करदे निन्द, निंदिआ विच जगत लोकाईआ। उस दा इक्को नूर ते इक्को बिन्द, जिस नूं बिन्दराबन वाले काहन बैठे सीस झुकाईआ। ओह मेरा दाता सूरबीर मरगिंद, बिना मृगशाला तों बैठा आसण लाईआ। जिस दा लेखा जीउ पिण्ड, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा हुक्म सागर सिन्ध, दो जहान ना कोए अटकाईआ। ओह दाता गम्भीर गहर गुणी गहिन्द, गवर नूर इलाहीआ। जिस ने सब दी मेटणी चिन्द, चिन्ता चिखा दए गंवाईआ। पूजा रहिण नहीं देणी किसे लिंग, एका इष्ट होवे नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। नारद कहे मैं वेखां गुड़ दी रोड़ी, जो राम राम भेंट चढ़ाईआ। राम दी राम नाल बणी रहे जोड़ी, विछोड़ा नज़र कोए ना आईआ। जुगां दी आयू बीते थोड़ी थोड़ी, कलयुग दी चार लख बत्ती हज़ार पूर ना कोए कराईआ।

सतिगुर शब्द शब्द सतिगुर सदा चढ़े अगम्मी घोड़ी, जिस दी ज़ीन पाखर वेखण कोए ना आईआ। उस दी खेल होवे दोहरी, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण निरगुण हो के आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतां दात देवे नाम भण्डारे दी जगत जहान नालों चोरी, रातीं सुत्तयां दिने जागदयां उन्हां दे काया मन्दिर अन्दर दए टिकाईआ। अमृत रस मिट्ठा निजर झिरना भोरा भोरा देवे भोरी, भरमां दा डेरा देवे ढाहीआ। जगत विकारां काया मन्दिर देवे होड़ी, होड़ा सस्से उत्ते लगाईआ। हँ ब्रह्म आत्म परमात्म खेल दस्से तोरी मोरी, मेहरवान आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। नारद कहे ओए चव्हीएं माघा, माघा मार के दे वखाईआ। क्यों तेरे होए वड भागा, लोकमात मिली वड्याईआ। माघ कहे मैं निगह मारी उत्ते ढाबा, कन्ढी बैठा वेख वखाईआ। जिथ्थे हुन्दी सी काही ते दाभा, काने आपणा रंग वखाईआ। मिलदा इक्को प्रेम दा आबा, आबेहयात रूप बदलाईआ। जिथ्थे गोबिन्द ने गुरसिक्खां दा कीता हिसाबा, लहिणा देणा जन्म कर्म दा फोल फुलाईआ। फिर इशारा कीता वल्ल काअबा, मुखी तीर वाली उठाईआ। फिर पुरख अकाल नूं कर के अदाबा, सीस जगदीश दिता झुकाईआ। फिर नूर तक्कया निरगुण नूर बाबा, जो सरगुण दसां जामयां विच समाईआ। फिर खुशी विच होया बागो बागा, बग़ीचा तक ख़लक ख़ुदाईआ। नाले इशारा कीता
१७६४ मेरा पुरख अकाल दीन दयाल जदों आवे ते आवे विच माझा, जिस विच गोबिन्द कदम ना गया टिकाईआ। नौ वार काही १७६४
२२ उत्ते गोबिन्द गोबिन्द लिख के आखा, काला अक्खर गया टिकाईआ। जिस वेले अवतार पैग़म्बर गुरुआं दीआं वध गईआं २२
शाख़ां, शनाख़त वाला नज़र कोए ना आईआ। उस वेले बिना पुरख अकाल तों होवे कोए ना राखा, नौ तिन्नके काही दे देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। नौ तिन्नके कहिण गोबिन्द दा नाउँ चलणा नौ खण्ड, गोबिन्द नवां रूप बदलाईआ। पिछली पिच्छे गई हंढ, अग्गे हुक्म वरते बेपरवाहीआ। जिस ने लेखा पूरा करना तारा चन्द, चन्द सितार बैठण सीस निवाईआ। चौदां तबकां मुहम्मद दी पूरी होवे मंग, सदी चौधवीं सीस झुकाईआ। एह खेल सूरा सरबंग, हरि करता आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक हो आईआ। नारद कहे मैं रावी दा तकां किनारा, दूर दुराडा ध्यान लगाईआ। मेरे नाल चार नूर दीआं मुटयारां, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती सोभा पाईआ। जिन्हां दीआं अन्तर निरन्तर खिच्चीआं तारां, सितार इक रिहा हिलाईआ। वहिणां दीआं तकां धारां, जल धार रूप दरसाईआ। जिन्हां दीआं जुग जुग लग्गीआं रहीआं बहारां, खुशीआं रंग रंगाईआ। उन्हां दे लिबास ना जगत साड़ीआं ते सलवारां, वस्त्र भूषन समझ

कोए ना पाईआ। इक्को पुरख अकाल अग्गे करन पुकारां, पुनह पुनह सीस निवाईआ। दरोही सदी चौधवीं वक्त चुका दे चार यारां, नाता जगत रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक दया कमाईआ। नारद कहे मेरा साहिब पुरख समरथ, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जिस दी कथा सारे गए कथ, कथनी रसना जेहवा रूप बणाईआ। जगत जहान चलदा रिहा रथ, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। जिस ने लहिणा पूरा कीता राम बेटा दसरथ, बन जंगलां विच भवाईआ। रावण लाह के सथ्थर सथ, पैंडा दिता मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा मार्ग इक दरसाईआ। नारद कहे मैं की करां ब्यान, कहिण किछ ना पाईआ। जिस ने कृष्न नूं मारया बाण, बधक रूप बदलाईआ। उस दा लेखा विच जहान, कलयुग नाता नाल जुड़ाईआ। जन्म दिता श्री भगवान, मानस देही मिली वड्याईआ। कलयुग दा लेखा अन्त पूरा होवे विच जहान, जहालत कूड़ रहे ना राईआ। ओह छुरा गर्दन उत्ते धरे आण, ख़ुशीआं नाल टिकाईआ। शरअ विच ज़िब्ह हो जाणे इन्सान, इन्सानीअत आपणा पन्ध मुकाईआ। कलमा करे ना कोए कल्याण, कायनात रोवे मारे धाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा आप चुकाईआ। छुरा कहे मेरा रूप तिक्खा, तिक्खी धार जणाईआ। जिस दा लेख परवरदिगार ने लिखा, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जेहड़ा धर्म दी धार विच पूरा दिसे ना सिखा, सिख सतिगुर विच ना कोए समाईआ। उस दा सदी चौधवीं अन्तिम निकले सिट्टा, सिट्टेबाजी वेखे ख़लक खुदाईआ। कीमत पैणी नहीं पथ्थर इट्टां, मढ़ी गोर रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी खेल आप खिलाईआ। छुरा कहे मैं शरअ शरीअत करनी ज़िबह, बेज़बान हो के दयां सुणाईआ। फ़रमान देवे मेरा अब्बा, जो मालक नूर खुदाईआ। एह सदी चौधवीं दा अन्तिम सद्दा, संदेशे विच सुणाईआ। कहर वरतणा नौ खण्ड पृथ्मी जग्गा जग्गा, ख़ाली नज़र कोए ना आईआ। उम्मत दा रहिणा नहीं अग्गा, अगली गंढ ना कोए पवाईआ। जिन्हा ने खाधा कट्टा वच्छा ढग्गा, ढोरां खल्ल लुहाईआ। अन्तिम सब ने चक्खणा मज़ा, जो मज़ाक प्रभ दा रहे उडाईआ। छुरा कहे मैं सच दस्सां सब दे सिर ते कूकदी कज़ा, मुल्ला शेख़ मुसायक पंडत पांधा ग्रन्थी पन्थी बचया रहिण कोए पाईआ। जिस कारन मुहम्मद ने कटाईआं लबां, गुर गोबिन्द मुच्छ दाढ़ी केस गया वधाईआ। एह सारीआं धुर दे मालक नूं इक्को रूप बणाउणी हद्दा, जगत हदूद नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। छुरा कहे मैं शरअ दा करना टुकड़ा, टुकड़े टुकड़े होए लोकाईआ। हुक्म मन्नणा

सच्चे सतिगुर दा, जो साहिब सतिगुर इक सुणाईआ। भाणा मन्नणा अगम्मा धुर दा, जो धुर दा मालक रिहा सुणाईआ। एह लेखा अनन्दपुर दा, पुरी अनन्द दा वासी गोबिन्द अन्त सरसे कन्ढे खेल खिलाईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम बेड़ा होया रुढ़दा, कूड़ी क्रिया वहिण वहाईआ। उस वेले जगत विच नाम भण्डारा होणा थुड़ दा, ख़ाली झोली ना कोए भराईआ। कलयुग रूप धरना कलयुग रैण अंधेर घोर दा, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। तेज वधणा ठग्ग चोर यार दा, भगत सन्त बैठण मुख छुपाईआ। उस वेले निरगुण नूर प्रगट होवे रूप निरँकार दा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जेहड़ा जुग जुग सतिजुग त्रेता द्वापर पार रिहा उतार दा, कलयुग अन्तिम लेखा दए चुकाईआ। खेल वरतणा निहकलंक कल्की अवतार दा, अमाम अमामा आपणा हुक्म सुणाईआ। जन भगतां विहार करना इक दस्तार दा, सीस जगदीश आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रूप अनूप बेपरवाह परवरदिगार दा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्को नूर करे रुशनाईआ।

✪ २५ माघ शहिनशाही सम्मत ७ चतर सिंघ, ज्ञान सिंघ, अतर सिंघ, लखा सिंघ, हरदीप सिंघ, तरलोक सिँघ ओगरा, चरण सिंघ, प्रीतम कौर अन्तोर, बचन सिंघ, चरण सिँघ सन्तोख सिँघ सोहण सिँघ ज्ञानो सिम्मल सकोर, उजागर सिँघ चेबे, गुरबख्श सिंघ रत्न कौर नुशहरा, बिशन सिँघ ओगरा, दीपो उच्चा पिण्ड, अवतार सिँघ सिम्मल सकोर, लाल सिंघ, महिन्दर सिँघ धीरा दईआ, लाल चन्द भीमपुर, प्रकाश कौर पुन्नी सालोवाल, संसार सिँघ हमराज पुर पिण्ड ओगरा ज़िला गुरदासपुर ✪

पंझी माघ कहे मेरा खेल विच संसारे, संसारी भण्डारी सँघारी सारे प्रभ नूं सीस निवाईआ। हुण संदेशा धुर दा सुणया नारद मुन अपारे, अपरम्पर स्वामी अन्तरजामी दिता दृढ़ाईआ। नारद कहे मैं झट होया हुश्यारे, होश प्रभ ने दिती कराईआ। झट पहुंचया सचखण्ड दवारे, प्रभ चरण कँवल सीस निवाईआ। नूर तक्कया तेई अवतारे, अवतर बैठे डगमगाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद नूर तक्कया उज्यारे, ज़हूर इक्को इक वखाईआ। नानक निरगुण नूर जोत तकी अगम्म अपारे, अलख अगोचर दिती वड्याईआ। मैं खुशीआं विच बुलाए जैकारे, ढोला सोहला इक्को दिता वड्याईआ। मेहरवानो मर्द मर्दानो नौजवानो जीव जंत तुहाडे सहारे, नव सत्त बैठे ध्यान लगाईआ। उठो तक्को की कलयुग करे कारे, करनी आपणी कार भुगताईआ। चारों कुण्ट होए विभचारे, शब्द नाद धुंन ना कोए शनवाईआ। मनुआ मन होया हँकारे, कूड़ क्रिया करे लड़ाईआ। जीव

जंत होए दुख्यारे, साध सन्त रोवण मारन धाहीआ। जो नाम कलमे दे वंडे भण्डारे, अक्खरां वाली सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। नारद कहे मैं अवतार पैग़म्बर गुरुआं कीता हासा, हस्स हस्स के सीस निवाईआ। आओ तक्को वेखो जगत तमाशा, की कलयुग कल वरताईआ। साचे मण्डल पावे कोई ना रासा, सुरती शब्दी गोपी काहन रंग ना कोए रंगाईआ। चेला गुरु उत्ते करे ना कोए भरवासा, मुरीद मुर्शद मिलण कोए ना पाईआ। सब दा ख़ाली दिसे काया कासा, हक भण्डारा ना कोए भराईआ। फिरी दरोही पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतर रहे कुरलाईआ। दरगाह साची सचखण्ड दा खोल्ो ताका, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी किसे दा दिसे कोए ना राखा, सीस हथ्थ ना कोए टिकाईआ। झगड़ा प्या ज़ाता पाता, दीन मज़्हब करे लड़ाईआ। सति सच दा टुट्टया नाता, कूड़ क्रिया वज्जे वधाईआ। जेहड़ी धरनी धरत धवल मातलोक दस्स के आए गाथा, सिफ्तां वाली सिफ्त सालाहीआ। उस दा लेखा लहिणा मंगे पुरख समराथा, पुरख अकाला धुरदरगाहीआ। क्यों तुहाडे हुंदयां कलयुग होई अंधेरी राता, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। निरगुण नूर ना कोए प्रकाशा, शब्दी धुन ना कोए शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे मैं अवतार

१७६७

२२

पैग़म्बर गुरुआं सीस झुका के दिता इशारा, नमो नमो कहि के ख़ुशी बणाईआ। वेखो खेल परवरदिगारा, नर निरँकारा की आपणी कार भुगताईआ। जिस दा खेल वेखदे रहे जुग चारा, चौकड़ी बिन नैणां नैण उठाईआ। सो रूप अनूप तक्को अगम्म अपारा, अलख अगोचर वेख वखाईआ। जिस लहिणा देणा पूरा करना सदी चौधवीं विच संसारा, बीस बीसा नाल मिलाईआ। आसा मनसा वेखे वेखणहारा, अगम्म अथाह पर्दा आप उठाईआ। जिस दी याद विच तत्ती लोह अर्जन सतिगुर रस माणया रावी किनारा, रवि ससि सीस निवाईआ। ओह नूर नुराना हो उज्यारा, जोती जाता डगमगाईआ। वेखे विगसे पावे सारा, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। सब दा कर्ज़ लाहे उधारा, मकरूज लेखा दए चुकाईआ। जिस दा पेशीनगोईआं विच देंदे आए इशारा, भविक्खतां विच दृढ़ाईआ। कलि कल्की लए अवतारा, अमाम अमामा खेल खिलाईआ। जिस मुहम्मद दा लौहणा भारा, उम्मत उम्मती लेखा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी आपणा हुक्म वरताईआ। नारद कहे गुर अवतार पैग़म्बर लोकमात वेखो जल्दी, बिन नैणां नैण उठाईआ। की खेल कलयुग कल दी, कलकाती की कार भुगताईआ। धार तक्को जगत विकारे दल दी, चार कुण्ट भज्जो वाहो दाहीआ। खेल वेखो कपट कूड़ छल दी, सति सच नज़र कोए ना आईआ। कीमत पाओ नानक वाली इक गल्ल दी, ""नानक लेखे इक

गल्ल"" जो नानक आया सुणाईआ। आसा तक्को राजे बलि दी, की बावन दिता दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे तेई अवतार मारो उठ के झाती, बिन नैणा नैण उठाईआ। पैग़म्बर खोल्ह के वेखो ताकी, पर्दा अवर रहे ना राईआ। गुरु गुरदेव सतिगुरु वेखो जगत तमाशी, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। मानव दिसे ना कोए शब्द स्वासी, पृथ्मी आकाशी पन्ध ना कोए मुकाईआ। साची मंज़ल चढ़े कोए ना घाटी, पैंडा पन्ध ना कोए मुकाईआ। कलयुग खेल बाज़ीगर नाटी, स्वांगी आपणा स्वांग रचाईआ। जोत जगे ना किसे ललाटी, नूर नूर ना कोए रुशनाईआ। अमृत रस मिले ना काया माटी, निजर झिरना ना कोए झिराईआ। नारद कहे सच पुछो कलयुग अन्तिम सब दी नेड़े आई वाटी, पिछला पन्ध ना कोए मुकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु पुरख अकाला दीन दयाला सब दा लेखा मंगे बाकी, बचया रहिण कोए ना पाईआ। पहली चेत्र सब ने लिख के देणा शब्दी धार किन्ने सिख मुरीद सचखण्ड दे साडे साथी, बाकी राय धर्म दे हथ्थ फड़ाईआ। सम्मत शहिनशाही अठ, शब्द गुरु ने शब्द अस्व उत्ते मारनी पलाकी, पलां विच ब्रह्मण्ड खण्ड आपणे चरणां हेठ दबाईआ। झट मुहम्मद कूक के किहा मेरा ना कोई लेखा ना कोए हिसाबी, गणती गणित ना कोए गिणाईआ। मेरा इक्को हुजरा ते इक्को महिराबी, महिबूब इक्को सीस निवाईआ।
१७६८ २२ इक्को कलमा ते इक्को अहलादी, असल वसल इक्को इक समझाईआ। इक्को हुक्म ते इक्को नमाज़ी, सजदा इक्को इक १७६८ २२
रखाईआ। मैं सच दस्सां मेरे परवरदिगार ने मेरा लेखा मुकाउणा शताबी, शरअ दा डेरा देणा ढाहीआ। मेरी उम्मत दा नाता तुटणा पंज आबी, पंचम पंचम रंग रंगाईआ। खेल वेखणा नर मादी, मदीना मक्का दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुरदा हरि, हरि करता कार कमाईआ। मुहम्मद कहे मोज़ाना इलल ज़ुअ जाखो विज़ी, नाजिसते उज़ीअ पेशाने नबी, नूरे नवे परवरदिगारे ज़ाहिक ज़ाहर ज़हूर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर पर्दा आप चुकाईआ। नारद कहे मैं सब नूं जोड़ां हथ्थ, बिन हथ्थां हथ्थ वखाईआ। वेखो खेल पुरख समरथ, जो करता धुरदरगाहीआ। जिस तुहाडा चलाया काया रथ, जोत शब्द नाल वड्याईआ। भण्डारा दिता सति, सच नाम अगम्म वरताईआ। जिस दी सिफ्त दे शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी आए रच, रचना जगत विच रचाईआ। अन्त आपणा भन्न के काया माटी कच्च, तन माटी ख़ाक मिलाईआ। हड्ड मास नाड़ी रही किसे ना रत, वजूद नज़र कोए ना पाईआ। मेल मिले कमलापति, पतिपरमेश्वर विच समाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर आए दस्स, शब्द संदेशा इक सुणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवान आवे वत, बेवतन वतन दोवें वेख वखाईआ।

जन भगतां रखे पत, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। मुहम्मद कहे मेरी इक्को इक आशा अख़ीर, बिन अक्खरां दयां दृढ़ाईआ। जिस मेरा महल्ल कीता तामीर, ज़मीर दिती बदलाईआ। दर्शन दे बेनज़ीर, नूर ज़हूर दिता चमकाईआ। बदल के तकदीर, तदबीर आपणी इक समझाईआ। शरअ दी शरअ नाल वखा के लकीर, लैन ऐन दिती समझाईआ। नाम कलमे दा पा के ज़ंजीर, बन्धन धुर दा दिता बंधाईआ। निरगुण नूर ला दस्स तस्वीर, तसव्वर आपणा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। नारद कहे मुहम्मद ज़रा वेख आपणी पुश्त, करवट लै बदलाईआ। मालक दा हुक्म सुण दरुस्त, जो दो जहानां रिहा दृढ़ाईआ। चार यारी कर चुस्त, उम्मत उम्मती नाल मिलाईआ। तेरा लहिणा देणा मुकणा अन्त मुफ्त, मुफ्ती सारे रोवण मारन धाहीआ। प्रकाश रहिणा नहीं कोई अंगुशत, नूर नज़र कोए ना आईआ। मक्का काअबा होवे ख़ुशक, ख़ुशहाली नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। मुहम्मद कहे मैं वेख्या बिना अक्खरां, अलिफ़ ये दी लोड़ रही ना राईआ। मेरे अन्तर ओह सतरां, जिस नूं कलम शाही काग़ज़ ना जाणे राईआ। ओह लेख अगम्मा अगम्मी पत्रा, बिना

१७६९
२२

मालक तों वाचण वाला नज़र कोए ना आईआ। मेरी धार विच जगत धार दा ख़तरा, ख़तरनाक दयां समझाईआ। सदी चौधवीं मेरे कलमे दा हक रहिणा नहीं कोई कदरा, कन्नी सब ने जाणी कतराईआ। ज़िबह जो हुन्दा रिहा भेडू बक्करा, शरअ छुरी नाल टकराईआ। एह सब दा लेखा पूरा होणा धरनी धरत धवल लथ्थणा सथ्थरा, यारड़े वाला सथ्थर दए गवाहीआ। मेरे परवरदिगार हुक्म किसे ना कथणा, कथनी कथ ना कोए सुणाईआ। सदी चौधवीं मेरा अन्त अख़ीर बुरज ढठ्ठणा, चार यारी संग ना कोए निभाईआ। इज़राईल ज़बराईल इसराफ़ील मेकाईल चारों उठ उठ भज्जणा, बरी तरी पन्ध मुकाईआ। मेरे मालक ख़ालक दा इक्को डोरू वज्जणा, डंका नाम करे शनवाईआ। मक्का मदीना पैणा तजणा, आफ्ताब नज़र कोए ना आईआ। महिबूब दा इक्को वार होवे हज्जणा, हाजत अवर रहे ना राईआ। जिस दा नूरी दीपक जगणा, दो जहानां करे रुशनाईआ। उस ने झगड़ा मेटणा आहला अदना, अदन वाले रोवण मारन धाहीआ। मूसा ईसा नाल दगणा, अग्नी तत तत तपाईआ। हुक्म अंधेर इक्को वगणा, जड़ सब दी दए उखड़ाईआ। सदी चौधवीं दा वेला अन्तिम मुश्किल लँघणा, लहिंगे सब दे दए बदलाईआ। निशान मिटणा तारा चन्दना, चन्द सितार नीर वहाईआ। अग्गे परवरदिगार दी इक्को होणी बन्दना, सजदे सब दे लेखे पाईआ। शरअ दा रहे कोए ना बन्धना, ज़ंजीर बेनज़ीर दए कटाईआ। जिस दा खेल तकणा उत्ते रावी

कन्धुणा, कन्धी बैठे नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। नारद कहे मैं हुक्म दस्सां चंगे, चंगी तरह जणाईआ। जिस वेले गोबिन्द ने माण दिता सी माधो बैरागी बन्दे, बन्दगी धुर दी इक समझाईआ। आत्म बख्श के परमानंदे, अनन्द अनन्द विच्चों वखाईआ। शस्त्र धार बख्श के खण्डे, खण्डा खड़ग दिता चमकाईआ। चाढ़ के आपणे डण्डे, डण्डावत पिछली दिती बदलाईआ। फेर हस्स के किहा इशारा दिता ओह तक जिस वेले मेरे पिच्छों ढाई सौ साल लँघे, साल बसाला पन्ध मुकाईआ। मैं मेल मिलाउणा जो सरसा धार लँघे, सिर सिर आपणे लेखे पाईआ। ओस वेले दीन दुनी दे भाग होणे मंदे, मंद भाग दिसे लोकाईआ। किसे समझ नहीं आउणी ज़ेरज अंडे, उत्भुज सेत्ज पर्दा ना कोए चुकाईआ। याद रखीं धुर दे शब्द दा खेल होणा रावी कन्धे, अर्जन दी धार नाल मिलाईआ। सतिगुर शब्द दी निशानी पंजां गुरमखां दे सीस होणे नन्गे, नन्गी होवे जगत लोकाईआ। अग्गे कलयुग दे पैंडे रहिण नहीं देणे लम्बे, पाँधी पन्ध ना कोए भवाईआ। पुरख अकाल दी धारों सतिगुर शब्द इक्को जम्मे, दूजी जम्मण वाली कोए ना माईआ। जिस लेखे पूरे करने चौदां सौ तीह अंक दे पन्ने, पनिशमैंट देवे सर्ब लोकाईआ। तोड़ने शरअ दे हद्द बन्ने, सब दा लेखा देणा चुकाईआ। गोबिन्द दा लहिणा पूरा होवे जो माण दवाया इक्को कन्ने, कन्ना गोबिन्द दिता प्रगटाईआ।

१७७० फेर निशान मेटणा तारा चन्ने, चन्द चांदना इक्को डगमगाईआ। एह खेल श्री भगवंने, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा मालक नूर इलाहीआ। धुर नूर कहे इक्को इक अलाह, आलमीन इक्को अखवांयदा। इक्को इक सतिगुर शब्द मलाह, जो जुग जुग बेड़ा मात चलांयदा। इक्को इक मालक हक खुदा, खुद मालक इक्को नज़री आंयदा। जिस सतिजुग त्रेता दुआपर कीता जुदा, कलयुग अन्तिम पन्ध मुकांयदा। सदी चौधवीं सब नूं अन्तिम करे विदा, दरगाह साची सच घर बहांयदा। आपणे हथ्थ रखे बिधा, विधी अवर ना कोए जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणांयदा। नारद कहे नी सदी चौधवीं जगत चौधराणी, आपणी अक्ख उठाईआ। ओह तक खेल नूर नुरानी, नर हरि की आपणा हुक्म वरताईआ। वेखीं अगले साल मुहम्मद दी उम्मत विच आवे परेशानी, परेशानी विच सारे देणे कराईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं ने तकणा खेल महानी, महायुद्ध दा लेखा देणा बणाईआ। जेहड़ा खण्डा आदि शक्ति ते रखया आदि भवानी, दुर्गा भवानी सिंघ शेर सवारी आपणा सीस निवाईआ। जगत भुल्ल जावे राम रावण दी कहाणी, कौरवां पांडवां की निशानी, कलयुग दा तीर ते गोबिन्द दी तिक्खी कानी, अणयाला इक्को इक वखाईआ। सब दी जूह हो जाणी बेगानी, मालक ख़ालक आपणा

हुक्म वरताईआ। क्यों कलयुग कहे मेरे मालक ज़रूर करीं मेहरवानी, मेहरवान दया कमाईआ। मैं चाहुंदा तेरे नाम कलमे दी पढ़े कोए ना बाणी, तेरे दर ते सीस ना कोए झुकाईआ। सब दे घर नाच नच्चे माया राणी, घुंगट आपणा लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। नारद कहे प्रभू चलाक बड़ा, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग अन्त सृष्टी नूं बणा देवे दो धड़ा, धड़ी सेर आपणे हथ्थ वंडाईआ। समुंद सागर होवे गढ़ा, डूंग्घी खाई दए वखाईआ। हुक्म देवे जेहड़ा ना किसे लिख्या ते ना किसे पढ़ा, चार जुग दे शास्त्र समझ कोए ना पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल ने वल छल विच सब नाल कर जाणा कड़ा, कड़ा गोबिन्द वाला दए गवाहीआ। मुहम्मद दा लेखे लग्गणा मकबरे वाला पाणी दा ओह घड़ा, किस नूं नानक कुम्भ कहि के गया सुणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वहिण वहिणा हड़ा, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल प्रकाश नूर जोत करे नरायण नरा, नर हरि आपणी कल वखाईआ , जिस दी भेव ना पाए मद्धम बैखरी पसन्ती परा, बाणी चारे सिफ्त सालाहीआ। उस ने खेल खिलाउणा जगत शरअ नाल शरअ, शरीअत सब दी वेख वखाईआ। उस दा फ़रमान दो जहान हुक्म वाला इक्को ज़रा, ज़र्रे ज़र्रे विच आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा

हुक्म इक सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण नारदा की दस्सया, पंडत पांधे दे जणाईआ। नारद खिड़ खिड़ा के हस्सया, आपणी बोदी रिहा हिलाईआ। मैं नौ खण्ड पृथ्मी नस्सया, भज्जया वाहो दाहीआ। जिधर वेखां ओधर अंधेरी मस्सया, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। मैं रसना जेहवा बत्ती दन्दां नाल ग्रन्थां शास्त्रां दा सुणया जस्सया, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। तुहाडा नाम कलमा विकदा विच टक्या, तुहाडे सिख मुरीद टकयां वाली कीमत पाईआ। फेर दस्सां तुहाडे नाम कल्मयां पाया रट्टया, रट्टा दीन दुनी वखाईआ। सच पुछो अवतार पैग़म्बर गुरु साहिबानो गुर गोबिन्द दा ढईआ टप्पया, टप्पा टप्पा सब ने देणा सुणाईआ। मुहम्मदा तेरी उम्मत दा बूटा पक्कया, फल अन्तिम वार तेरी झोली देणा रखाईआ। नाता टुट्ट जाणा चार यारी सक्या, सगला संग ना कोए रखाईआ। सदी चौधवीं तेरा अन्त अंगीठा तपया, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। पता नहीं परवरदिगार सांझा यार क्यों शब्दी धार सख्त करन लग्गा हट्टया, हालत समझ किसे ना आईआ। सच्चा नूर ज़हूर नहीं अगम्मा तक्कया, जिस दी दो जहान रुशनाईआ। ओस ने झगड़ा मेटणा मदीना मक्कया, काअब्यां पए दुहाईआ। ओह वेखो मूसा ईसा दा सीना फटया, पट्टी प्रेम ना कोए बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। पंझी माघ कहे मेरा दिवस सुहञ्जणा, प्रभ देवे माण वड्याईआ। प्रकाश

तकां आदि निरजणा, नर नरायण नूर इलाहीआ। जो ग़रीब निमाणयां दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराईआ। उस दे चरण धूढ़ी नहावां मजना, मस्तक टिक्के ख़ाक रमाईआ। जिस दा चरणोदक अमृत रस लै बिन पीत्यां रज्जणा, रजो तमो सतो तिन्नां गुणां दा डेरा ढाहीआ। जिस दा छब्बी माघ नूं दीपक जगणा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नाल निशंग सारीआं उठ के भज्जणा, रावी नूं इशारा कर के लैणा बुलाईआ। आह तक वेख खेल गोपाल मूर्त मदना, कँवल नैण की आपणी कार भुगताईआ। ज्यों सतिगुर अर्जन दा बणया सज्जणा, पुरख अकाला दीन दयाला तत्ती तवी सोभा पाईआ। उस ने ज़रूर कल्ल नूं सदी चौधवीं दा लेखा दस्सणा, किस बिध मुहम्मद दी होवे अन्त सफ़ाईआ। एह खेल सूरे सरबंगणा, करनहार करता जिस दी वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत खोजयां किसे ना लभ्भणा, दो नैणां नज़र किसे ना आईआ।

१७७२ ★ २६ माघ शहिनशाही सम्मत ७ दलीप सिंघ, प्यारी, दलीप सिंघ, दीदार सिंघ, सन्ता सिंघ, मेला सिँघ हज़ारा सिंघ, मणशा सिंघ, आसा सिंघ, बलाका सिंघ, प्यारा सिंघ, रवेल कौर, करतार कौर, मक्खण सिंघ, भाग सिंघ, दर्शन कौर, नंती गंडा सिंघ, हज़ारा सिंघबाबूपुर, बूड़ सिंघ, महिन्दर कौर वज़ीर पुर, वरखा सिँघ बाबूपुर, प्रीतो तलवंडी, अजीत सिँघ कतोवाल, सवरनी सेखवां, गुरचरण सिँघ कतोवाल, पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदास पुर ★ १७७२

२२ २२

नारद कहे मैं आ गया तुरदा तुरदा, तुरीआ तों परे वेखण वाल्यो ध्यान लगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर खेल वेखो सच्चे सतिगुर दा, जिस सतिगुर नूं सार शब्द कहि के सारे गाईआ। जिस दा खेल अगम्म अथाह धुर दा, सचखण्ड साचा खेल खिलाईआ। उस दा रूप अगम्मा अगम्मे नूर दा ना फिरदा ना तुरदा, तुरत आपणी खेल खिलाईआ। जिस मुहम्मद दा वजूद कीता मुर्दा, माटी ख़ाक नाल मिलाईआ। ओह रूप धर अगले हज़ूर दा, हज़रतां तों परे करे पढ़ाईआ। सब दा वेला वक्त आया मशकूर दा, शुक्रिए विच सीस निवाईआ। जिस दा खेल सदा भरपूर दा, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। पन्ध मेट के नेड़े दूर दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। नारद कहे वेखो खेल अगम्म अपारा, पैग़म्बरां दयां जणाईआ। मुहम्मदा लै हुलारा, महिबूब दयां वखाईआ।

तक लै रावी किनारा, कन्ढा घाट सोभा पाईआ। जो निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल करे दोबारा, दो जहानां वेख वखाईआ। लहिणा देणा लेखे लावे चार यारा, यारी यारां नाल मिलाईआ। सदी चौधवीं दीआं तक बहारां, खुशीआं नाल अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। नारद कहे मुहम्मद खेल वेख परवरदिगार, बेपरवाह रिहा जणाईआ। जिस दे बणे रहे ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। ओह रूप अगम्मा बैठा धार, सदी चौधवीं आपणी वंड वंडाईआ। पुरख दिसे ना नार, नर नरायण सोभा पाईआ। तन कमीज़ दिता उतार, पूरब पच्छम वेखे चाँईं चाँईंआ। उस दा कर दीदार, जिस दीद नूर दिता चमकाईआ। सुण अगम्म इज़हार, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। जेहड़े सपारे सक्या ना मूल उच्चार, रसना वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। मुहम्मद कहे ओए नारदा शैताना, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वेख वखाईआ। मेरा सब तों वक्खरा फ़रमाना, हुक्म हक दिता खुदाईआ। अलाही अलहाम वाला पैग़ामा, पैग़म्बर बण के दयां दृढ़ाईआ। डण्डावत दी जगह सजदे विच कर सलामा, निव निव सीस निवाईआ। झट नारद किहा मैं पैग़म्बर

१७७३ कोई ना मानां, वली अल्ला ना कोए वड्याईआ। मैं जद झुकां ते झुकां इक अमामा, जिस नूं पैग़म्बर सारे सीस निवाईआ। १७७३

२२ सुण अगम्म होर हुक्म फ़रमाना, की मेहरवान रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल २२

साचा हरि, सच दा भेव आप दृढ़ाईआ। मुहम्मद कहे पंडता मेरा बण अज़ीज़, प्यार नाल समझाईआ। दस्सां सच तमीज़, तृष्ना जगत गंवाईआ। पूरी कर रीझ, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। खुशीआं वाली वखावां ईद, दुःख रोग दा डेरा ढाहीआ। काअब्यां वाली तक मसीत, मसला इक्को इक समझाईआ। झट मुहम्मद ने बिसमिल्ला लिख के नारद नूं किहा आह गल विच पा लै मेरा तावीज़, पिछली रीती देणी तजाईआ। नाले धरनी उत्ते मारी लीक, लाईन दिती बणाईआ। टप्प के अग्गे आ जा ठीक, ठाकर पिछले देणे भुलाईआ। आपणे खुदा दी मैं खुद करां तस्दीक, शहादत इक्को इक भुगताईआ। पिछली गफ्लत रहिण ना देवां नींद, आलस दयां मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मार्ग इक समझाईआ। नारद कहे मुहम्मद मैनूं पुछ लैण दे कोलों आपणे भगवन्त, की हुक्म दृढ़ाईआ। केहड़ा चंगा मंत, किस दी करां पढ़ाईआ। किस ने रहिणा अन्त, जो जम्मण मरन विच ना आईआ। पैग़म्बर चंगा कि पंडत, प्रभ किस नूं देवे वड्याईआ। किस दी महिमा अगणत, गिणती गिणी ना जाईआ। किस दा प्यार नाल जीव जंत, जगत जहान वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, नारद निउँ के सीस निवाईआ।

नारद किहा ओ लुकण छुपण वाले प्रभू, प्रभा कुछ मैनूं दे जणाईआ। ओ तैनूं केहड़ा लभ्भू, लबां कटण वाला की मैनूं रिहा समझाईआ। मेरा किस नाल यराना लग्गू, कवण मेरा पीर गुसाँईंआ। कवण मैनूं मकबरयां विच दब्बू, कवण अग्नी तत जलाईआ। दस्स साडे दोहां विच्चों पहला केहड़ा लद्दू, जगत जहान जाए तजाईआ। किस दा दीपक जगू, दो जहान करे रुशनाईआ। किस दा प्रकाश मघू, मग़रब मशरक करे रुशनाईआ। केहड़ा तेरी बणे यद्दू, यदी देणा समझाईआ। केहड़ा वंडू हद्दू, हद्द देणी वखाईआ। केहड़ा मातलोक विच्चों वंञू, वञ्झ मुहाणा नजर कोए ना आईआ। क्यों मेरा लहाउंदा जञ्ञू, बोदी रिहा कटाईआ। की एहदा चंगा पंज तत तनू, सच दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव देणा खुल्हाईआ। पुरख अकाल किहा सुण नारद मेरे पांडे, जीउ पिण्ड दयां जणाईआ। मुहम्मद वरगे मेरे ढोले गांदे, गा गा खुशी मनाईआ। लोकमात आउंदे जांदे, भज्जण वाहो दाहीआ। हुक्मे अन्दर बांधे, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। एस दी उम्मत ने खाणे पशू ते ढांडे, ढोरां खल्ल लुहाईआ। सपूत रहिणे नहीं धरनी तेरी माँ दे, जननी कुख्ख ना कोए वड्याईआ। अन्त रूप बणने काँ दे, कागों हँस ना कोए वखाईआ। जिन्हां ने बच्चे ज़िबह करने गाँ दे, कृष्न ग्वाला अक्ख उठाईआ। झगड़े पाउंणे मेरे नाँ दे, नाम नाम नाल टकराईआ। जोती जोत सरूप हरि,
१७७४ आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म हुक्म विच जणाईआ। नारद कहे मुहम्मदा मैं सुणया धुर दा १७७४
२२ कहिणा, धुर मालक दिता सुणाईआ। तूं मातलोक नहीं रहिणा, तन नज़र कोए ना आईआ। तेरी उम्मत बैठ नहीं रहिणा, २२
कलमा संग ना कोए बणाईआ। आह तक औह तक चौदां तबक दा बुरज ढहिणा, महल्ल अटल ना कोए सुहाईआ। ओह वेख भज्जी फिरदी तेरी सदी चौधवीं जिस दा नीर नैणां चों वहिणा, वहिण जगत वाला बणाईआ। उस वेले परवरदिगार दा सब ने भाणा सहणा, जिस दे भाणे नूं मन्न के अर्जन रावी उत्ते आपणा आप जाए तजाईआ। उस साहिब ने चैन नहीं लैणा, लहिणा देणा सब दा दए तजाईआ। ओह वेखे खेल हो के तर्फ़ैणा, तरफ़दारी विच आपणी कार कमाईआ। नाता तुटणा भाई भैणा, साक सैणा नज़र कोए ना आईआ। पर याद रखीं नारद किहा इक वेरां मैनूं वी मेरे मालक ने चढ़ा देणा उत्ते बोहड़ दयां टहिणां, कूक कूक के देणा सुणाईआ। पर याद रख लईं जिस वेले सदी चौधवीं दी गोली ने पाया गल विच गहिणा, मेरे तावीज़ दा तवीत जगत वाला बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। नारद कहे मैनूं आवे पैग़ाम, धुर मालक रिहा जणाईआ। जिस दे बरदे तुसीं गुलाम, बैठे सीस निवाईआ। जिस शरअ दा इस्म दस्सया इस्लाम, आज़म नूर इलाहीआ। ओह वेस वटाए अमाम, नूर

नुराना बेपरवाहीआ। जिस ने तेरी शरअ दा झगड़ा मेटणा तमाम, तमन्ना अवर रहे ना राईआ। उस वेले याद रखीं रावी दे कन्ढे ते मेरे मेहरवान दे सिर उत्ते तारे चन्द दा उठणा निशान, तेरा निशाना प्रभ आपणे संग रखाईआ। एह बलि ने बावन कोलों मंग मंगी सी विच जहान, जिस वेले रावी दे कन्ढे बलख विच्चों आपणा फेरा पाईआ। एह तिन्न खोपरे उस वेले रावी दे कन्ढे करके गया सी दान, मिट्टी ख़ाक विच दबाईआ। एसे करके पहलों धुस्सी दे कन्ढे लाया सी निशान, लेखा बावन वाला जणाईआ। बल दी गोली दा सुरती वाला ज्ञान, शब्द शब्द धार भुगताईआ। तृप्त दा लेखा चुक्के आण, लहिणा अवर रहे ना राईआ। नारद किहा उस वेले बल दयां इक्कीआं योध्याँ पुट्ठी कीती सी किरपान, मुट्ठां असमान वल्ल टिकाईआ। जिस वेले प्रगट होवेगा कलयुग अन्त श्री भगवान, उलटी जगत रीत चलाईआ। उस वेले सिर झुकाउणगे अवतार पैग़म्बर गुरु सारे बलवान, निउँ निउँ सीस निवाईआ। फेर उस साहिब ने की करना ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां नूं रूप बख्श देणा काहन, गुलामा दी गुलामी दूर कराईआ। मुहम्मद दा लहिणा मुकाउणा कर ध्यान, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ।
सदी चौधवीं दा पूरा करना ब्यान, अक्खर अक्खरां नाल टकराईआ। गोली दे सीस दी वेखणी शान, नौ खण्ड फूलन बरखा इक वखाईआ। फेर इक रूप हो जाणा भगत ते भगवान, वडा छोटा रहिण कोए ना पाईआ। दीन दयाल अग्गे बदल देणा
१७७५ विधान, वायदे सब दे वेख वखाईआ। उस वेले मुहम्मदा तेरे ओह नौ सपारे दस्सणे जेहड़े लिखे नहीं गए विच कुरान, कुद्रत १७७५
२२ कुदरत दा वेख वखाईआ। पहला गुल्लेअज़ दूजा मवीवेज़ज तीजा नोखेज़ाबेवविज़ चौथा ज़वावावलहिसवमम पंजवां २२
नागमहिसविलइज़ू छेवां कोफेनजित कलीअलयत सत्तवां सोवलहहस्तहम अठवां नाकोवलज़वल नाज़ूलोजगी ना अर्शे फ़गी खानूसे अदा अदिलहिज़ा नौवां पानाहवदही ईसा सवदज़ी मुहम्मद अलहदवी खुदाए खुलो खनमे खिरे। नारद कहे ओए नौ खण्डो, सब नूं दयां जणाईआ। खुशीआं विच कुछ वंडो, वंडीआं पाउण वाल्यो तुहाडे हिस्से रिहा मिटाईआ। आपणी टुट्टी सारे गंढो, डोरी इक्को तन्द उठाईआ। बोलो धुर दा छन्दो, संसा रोग रहे ना राईआ। मंज़ल पिछली अग्गे लँघो, पैंडा पन्ध लैणा मुकाईआ। झगड़ा मुक्कया तारा चन्दो, चन्द सितारे सारे खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती सुणो ला के ध्यान, सच सच समझाईआ। कमलीओ रावी दा कन्ढा लओ पहचान, पर्दे अक्खां वाले उठाईआ। पिच्छे ते खेल तक्कया सख़ीआँ नाल काहन, जमना हस्स के देणा सुणाईआ। गंगा तूं वी सुणदी रहीउँ सन्तां दा ज्ञान, दान पंडतां दी झोली पाईआ। सुरस्ती तूं फिरदी रहीउँ दोहां दे दरम्यान, भज्जी वाहो दाहीआ। गोदावरी तूं गोबिन्द दा चरण छोहया आण, आपणा सीस निवाईआ। हुण

कलयुग अन्तिम खेल नौजवान, मर्द मर्दाना आपणी कार भुगताईआ। जिस छब्बी पोह सदी चौधवीं दा रूप धरया महान, सीस ताज नौ फुल्लां वाला टिकाईआ। ईसा दी आशा कर परवान, परम पुरख भगतां दे कलयुग दे कांटे दिते हटाईआ। ओहो सीस दा ताज ग़रीबां नूं बख़्श के दान, गोलीआं ग़ुलामां नूं दिती वड्याईआ। जन भगतो तुसीं प्रभू दे दर ते हो गए परवान, नौ फुल्ल देण गंवाईआ। इहो दरजा दोहां दा विच जहान, वड्डा छोटा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती कहे नारदा आह किहो जेहा लबास, लबां कटाउण वाले नूर दे वखाईआ। ओह उतर के वेख थल्ले आकाश, धरनी उत्ते ध्यान लगाईआ। ओए तेरी सदी चौधवीं दा चौदां तबकां वाल्या होण लग्गां नास, नास्तिक होई कूड़ लोकाईआ। इशारा देंदा भज्जा आवे शंकर उतों कैलाश, आपणा पन्ध मुकाईआ। परम पुरख दे घर पैंदी वेख रास, सुरत शब्द गोपी काहन नाच नचाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला जन भगतां दा होया दास, सेवक हो के साची सेव कमाईआ। आप ख़ाली हथ्थ भुक्खा नन्गा ते भगतां दे अन्दर रखया इक्को शब्द दा वास, जिस शब्द नाल अदब सारे रहे कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। नारद कहे प्रभू क्यों पुट्टीआं कीतीआं नोकां, तलवारां रुख़ दिते बदलाईआ। मेरा जी नहीं करदा तेरे हुक्म विच टोकां, फेर वी टुक्क खाण वाला बोलणो रह सके ना राईआ। मैनूं होर दस्स दे क्यों सामहणे जगाईआ जोतां, जोतां वाली नूं सिंघासण हेठ दबाईआ। की लेखा तेरा चौदां लोका, चौदां तबक की वड्याईआ। मैं फिर के आया पोटा पोटा, भज्जया वाहो दाहीआ। मैं चार जुग दे तेरे भगत तके भुक्खे नन्गे जिन्नां दे तेड़ इक लंगोटा, ओढण नज़र कोए ना आईआ। ठग्गां चोरां डाकूआं नूं देवें बहुता, धन कंजरां घरीं भराईआ। मैं हुण सारी दुनिया विच दे देणा होका, कूक कूक देणा जणाईआ। आओ भुक्खिओ नंगिओ दलिदीओ उस प्रभू दा दर्शन करो सदी चौधवीं दा अन्तिम मौका, जेहड़ा आप भुक्खा नन्गा हो के ताज भगतां सिर टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। नारद कहे गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती उठो लओ हुलारे, मटक जोबन वाली वखाईआ। तुसीं आईआं रावी दे किनारे, रवीदास दए गवाहीआ। वेखो भगत प्रभू दे प्यारे, आसण बैठे लाईआ। नी तुसीं वसदीआं रहीआं विच उच्चे चुबारे, महल्लां विच सोभा पाईआ। अज्ज तुहानूं कक्खां कान्यां काहीआं उत्ते ठारे, छब्बी माघ वंड वंडाईआ। पर इहो जेहे पिच्छे नौ सौ नड़िंनवे चौकड़ी जुग नहीं आए नज़ारे, ज़रा नज़र मार के पिछला लेखा वेख वखाईआ। तुहानूं फेर याद रखयो कोटन वार कढणे पैणे हाढ़े, पर इहो जहे सतिगुर दा

दरस कदे ना पाईआ। जिस ने लेखे लाए चंगे माढ़े, ग़रीबां निमाणयां कोझयां कमल्यां गले लगाईआ। उन्हां दे सीस ते बन्न्ह के जाए दस्तारे, जिस दस्तार नूं वेख के विष्न ब्रह्मा शिव सीस निवाईआ। खुश होण तेई अवतारे, बिन हथ्थां ताली देण वजाईआ। पैग़म्बर सजदयां विच झुकण सारे, निउँ निउँ वेखण थांउँ थाँईंआ। दस गुरु जाण बलिहारे, जो बलिहार आपणा आप पुरख अकाल तों गए कराईआ। जन भगतो इक्की किरपानां गोबिन्द ने चौवी माघ नूं इक्कीआं गुरसिक्खां दे हथ्थ फड़ाईआं सी विच संसारे, सतारां सौ सहु बिक्रमी दए गवाहीआ। जिस वेले मेरा पुरख अकाल आया ते मैं आवांगा नाल दुबारे, दोहरा आपणा रूप बदलाईआ। मेरे आउण दे निशाने ते इहो होणगे इशारे, खण्डे सिध्धे तों पुठ्ठे कर वखाईआ। क्यों रावी दे कन्ढे जिस वेले गुरु अर्जन ने स्वास कीते सी बाहरे, मूधे पै के पुठ्ठे पै के आपणा लेखा दिता चुकाईआ। नाले हस्स के किहा मेरे कन्ढे उत्ते मेरा साहिब गुरमुखां नूं तारे, चार जुग दे विछड़े फेर लए मिलाईआ। उन्हां नूं रखे आपणी प्रीत दे सहारे, जिस प्रीत दी शहादत बचन सिँघ दा तवीत गोली दे गल्ल विच दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। झट मुहम्मद मारीआं चीकां, कूक कूक सुणाईआ।
१७७७ मेरीआं नेड़े आउंदीआं तारीकां, बिनाहरफ़ हरूफ़ वेख वखाईआ। ना रहिणे मन्दिर ते ना रहिणीआं मसीतां, मेरे मसले पल्लू जाण छुडाईआ। क्यों मेरे महिबूब विच हक तौफ़ीकां, जो कुदरत दा मालक इक अख्वाईआ। मैं ओस नूं सदा उडीकां, बिन नैणां नैण उठाईआ। सजदा करां बरदा बणां जे मेरीआं पूरीआं होण उम्मीदां, उस दी आमद विच खुशामंद करके आपणा झट लँघाईआ। क्यों साडे अहिदनामे दीआं सानूं हुक्मी कट दितीआं रसीदां, बिना अक्खरां अक्खर दिते टिकाईआ। एह मसला बड़ा पेचीदा, अञ्जील कुरान समझ कुछ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। रावी कहे मैं भाली भोली, भुक्ल्यां भटकयां दयां जणाईआ। मैं इक्को शब्द दी समझां बोली, दूजी विद्या सुणन कदे ना आईआ। इक्को साहिब नूं रही टोली, टोले अवतार पैग़म्बर गुरुआं दे मैनूं गए समझाईआ। असीं सारे उस दे नाम कलमे दी पाउंदे रौली, उच्ची कूक कूक दृढ़ाईआ। जिस वेले उस साहिब दी आपणी रुत मौली, मौला हो के दो जहान वेख वखाईआ। ओह प्रगट होणा अमामां दा अमाम उपर धौली, कलि कल्की फेरा पाईआ। उस दी शकल ना सुन्दर ना सौली, काला पीला रूप ना कोए बदलाईआ। ओह आदि दा आदि अन्त दा अन्त अवल्ल दा औली, आलमीन इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। नौ फुल्ल कहिण असीं जाणा विच नव खण्डां, खण्डा खड़ग धार चमकाईआ। जिस साहिब ने वक्ख वक्ख १७७७
२२ २२

पाईआ वंडां, दीन दुनी गुलशन दिता महकाईआ। ओह खेल वेखण आया कोटन कोटि ब्रह्मण्डां, पुरीआं लोआं पर्दा रिहा उठाईआ। जिस दा शब्दी धार सत्त रंग दा डण्डा, डण्डावत सब दी रिहा बदलाईआ। चरण छुहा के रावी कन्ढा, कन्ढी घाट करे रुशनाईआ। सब दा पिछला वक्त लँघ, अग्गे हुक्म बेपरवाहीआ। जिस ने पुड़्ठा कर पलँघा, दीन दुनी दिती उलटाईआ। सत्त रंग झुलाए झण्डा, सत्त दीप दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नौ फुल्ल कहिण नौ खण्ड दी दस्सीए बात, बातन भेव खुल्हाईआ। जिस प्रभू ने हिस्सयां वाली दिती दात, दाता दानी हो के आप वरताईआ। ओह अन्त करन आया इन्साफ़, अदल आपणे हथ्थ वखाईआ। दीन मज़्हब दा लेखा करे साफ़, सफ़ा मलेछां दए उठाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करे नास, नास्तिक रहिण कोए ना पाईआ। सति जोत करे प्रकाश, नूर नुराना डगमगाईआ। जन भगतो नौ फुल्ल कहिण तुहाडी खुशबू दी नवां खण्डां विच ज़रूर आवेगी बास, वासना वेखे ख़लक ख़ुदाईआ। एह सुगंधी पुजणी उत्ते कैलाश, ब्रह्मा दे जाणी पास, विष्नूं दी पूरी करनी आस, आसा आसा नाल मिलाईआ। तुहानूं सब ने देणी शाबाश, अवतार पैग़म्बर गुर इक्ठे मिल के साथ,
१७७८ क्यों तुसां इक प्रभू दी गाई गाथ, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे १७७८
२२ खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। नारद कहे सदी चौधवीं गलों हो गई नन्गी, पुश्त हथ्थ ना कोए रखाईआ। २२
उम्मत नबी रसूलां आउणी तंगी, तंगदस्ती ना कोए कटाईआ। सब ने पैणा औझड़ डण्डी, मार्ग कदम ना कोए टिकाईआ। चारों कुण्ट पैणी भंडी, वरभण्ड दए दुहाईआ। सताई माघ नूं रणजीत सिँघ ने पुठ्ठी पाई होवे तम्बी, नाला पिच्छे गंढ रखाईआ। मोढे रखी होवे टाहणी जंडी, कंडयां नाल सुहाईआ। नाज़र सिँघ सीस विच वाहुणी कंघी, चीर सिध्धा लैणा कढ्ढाईआ। हथ्थ जोड़ के बैठणगे सिख पंझी, मुख दे साहमणे लैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, योद्धा सूरबीर बहादर इक्को नौजवाना जंगी, फरंगी लेखा वेख वखाईआ।

✪ २७ माघ शहिनशाही सम्मत ७ दीदार सिँघ दे घर दुपहर नूं पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदास पुर ✪

सतिगुर शब्द कहे बड़ा आया अनन्द, अनन्द सतिगुर सतिगुर विच्चों प्रगटाईआ। नारद कहे मैं वी सुणया छन्द, नीवां हो के सीस झुकाईआ। संदेशा देवां जन भगतो जिस वेले साहिब सतिगुर बैठे उत्ते पलँघ, सिंघासण उत्ते आसण लाईआ।

हरिसंगत मुख विच्चों बचन करे ना कोए बत्ती दन्द, रसना जेहवा जगत ना कोए हिलाईआ। भगत दवारे भगतां दे अन्दर मन दा होण नहीं देणा जंग, कल्पणा जगत ना कोए रखाईआ। जो बोले सेवादार उस नूं खड़ा कर देणगे इक टंग, बैठ के दरस मूल ना पाईआ। पिच्छे दी पिच्छे गई हंढ, अग्गे हुक्म वरते बेपरवाहीआ। एसे करके निशान वखाया तारा चन्द, भुल्ल रहे ना राईआ। जिस मुहम्मद नूं ज़िमीं असमानां दिता टंग, सो लेखा रिहा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं दस्सां खेल अपारा, अपरम्पर इक दृढ़ाईआ। चढ़दी कूटे बैठे आप निरँकारा, निरवैर नूर इलाहीआ। लहिंदी दिशा गुरमुख सिँघ सन्मुख बहे दुलारा, मुख सतिगुर वल्ल रखाईआ। दक्खण दिशा सदी चौधवीं दी गोली दा होवे इशारा, कौर जोगिन्दर सोभा पाईआ। पहाड़ वेखे नैण उग्घाड़ा, उच्ची चोटी कैलाश तों परे ध्यान लगाईआ। जिस ने हत्थ विच फड़या सी चन्द सितारा, सो तृप्त मेरी दिशा सोभा पाईआ। सतिगुर दा चरण जोड़ा सृष्टी दा हिस्सा अधविचकारा, सच सिंघासण नज़री आईआ। जिस दीआं चारों कुण्ट शब्दी धार वज्जणीआं लकारा, लाइनां ऐन देणीआं बणाईआ। जिस चरण नूं पूजे सर्ब संसारा, संसा दो जहान रहे ना राईआ। ओह बख्शिश करे बख्शणहारा, बख्शिश आपणी इक वरताईआ। जो निरगुण निरगुण लए अवतारा, सरगुण मेला
१७७६ मेले सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। १७७६
२२ नारद कहे मैं लवां उभे साह, हौक्यां विच सुणाईआ। चार कुण्ट दिसे कोई ना राह, गुर अवतार पैग़म्बर भज्जण वाहो दाहीआ। बिन नैणां नैण रहे उठा, बिन अक्खां अक्ख खुल्ाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला केहड़ी कूटे तुड्डा, मेहरवान आपणी दया कमाईआ। जिस ने जगत जहान पाउणीआं लुट्टां, लुटेरा आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतां सुहाउणीआं साचीआं रुतां, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती चरण भेंट करो प्यार दीआं ढाई ढाई मुट्ठां, जो लै के आईआं चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रहीआं झाक, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। की खेल कीता पुरख अबिनाश, अबिनाशी आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दे चारों कुण्ट भगत सुहेले बैठे पास, ख़ाली दिशा नज़र कोए ना आईआ। सब दी पूरी करे आस, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। किधर करीए तलाश, लभ्भीए केहड़ी थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। नारद कहे नी कमलीओ अग्गे गुर अवतार पैग़म्बरां दे घरां दे मालक हुन्दे पुजारी, पूजा खा के झट लँघाईआ। हुण पुरख अकाल दे शब्दी धार सोंहदे लिखारी, प्रभ नाल मिल के

चारे कूटां रंग रंगाईआ। जिथ्थे कोई निमस्कार कर ना सके जुआरी, ठग्ग चोर यार चरण छोहण कोए ना पाईआ। एस दर ते ओह पुज्जे जेहड़ा भगत जोत निरँकारी, दूजा नज़र कोए ना आईआ। नी समां आउणा प्रभ दे चरणां दी धूढ़ नहीं मिलणी छारी, टिक्के मस्तक ना कोए रमाईआ। सृष्टी ने तरसणा तड़फणा किते प्रभ दे चरणां दे जोड़े दे बणीए पुजारी, पुजारीआं वाला लेखा फेर वी देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। नारद कहे मुहम्मदा आह तक लै नज़ारा, सोहणयां आपणी अक्ख उठाईआ। वेख लै आपणे अमाम दा नूर ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। जिस दा सब तों वसीह दाइरा, हद्द हदूद नज़र कोए ना आईआ। जिस झगड़ा पाउणा विच काहरा, मिसर दी मिसल रिहा बणाईआ। चार यारी दा रहिणा नहीं पहरा, पारब्रह्म भय रिहा वखाईआ। अन्तिम किते हो ना जाणा बहिरा, अनसुणत रिहा सुणाईआ। जिस ने नाम कलमे दा करना मुशाहरा, बिना मशवरे सलाह बणाईआ। जिस दा खेल अगम्मा गहरा, समझ किसे ना आईआ। इक वार दीन दुनिया ने उस नूं कहिणा भैड़ा, की ज़ुल्म रिहा कमाईआ। पर उस ने पिछली रीती दा सब तों छुडा देणा खहिड़ा, खेड़ा अगला देणा वसाईआ। मज़्हबी रहिण
१७८० ना देवे झेड़ा, झगड़ा मेटे कूड़ लोकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं बन्नू के बेड़ा, नईया इक्को नाम वाली चढ़ाईआ। जो १७८०
२२ खेल अनोखी धार छेड़दा छेड़ा, छेकड़ आपणी कार भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे २२
खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं पिछली दस्सां धार, आदि दी आदि समझाईआ। जिस वेले सति सरूप आपणा प्रगट कीता सी निरँकार, निरगुण निरगुण निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जोत विच्चों शब्द दी धार कर त्यार, आशा आपणी आपणे नाल मिलाईआ। शब्द दी आशा विष्न ब्रह्मा शिव कर उज्यार, जोती जोत जोत रुशनाईआ। फेर लाया इक्ठ्ठा इक दरबार, विष्न ब्रह्मा शिव ऐसे तरह ल्या बहाईआ। ओनां नूं हुक्म दिता मेरा निरगुण धार चरण चरण धूढ़ दा जोड़ा अपर अपार, जिस नूं चार जुग ना कोए मिटाईआ। जिस दी पूजा रहे अपर अपार, अपरम्पर स्वामी दिता सुणाईआ। विष्नूं नूं कीता ख़बरदार, भय नाल डराईआ। ब्रह्मे नूं कीता हुश्यार, इशारा दिता लगाईआ। शंकर नूं दे हुलार, हलूणे नाल उठाईआ। तिन्ने इक्ठ्ठी करो निमस्कार, पुरख अकाल दिता दृढ़ाईआ। फेर निगह लओ उठाल, नैण नैण नाल मिलाईआ। तुसीं मेरे दीन मैं तुहाडा दयाल, दो जहान आपणा हुक्म वरताईआ। मैं पातशाह तुसीं कंगाल, शाह सुल्तान हो के तुहाडी झोली दयां भराईआ। मैं राजन राजा तुसीं मेरे जीअ प्राण, मेहरवान हो के दयां दृढ़ाईआ। आपणे चरण जोड़े दा कर ध्यान, दृष्टी दृष्ट नाल मिलाईआ। धूढ़ी दा इक इक कतरा सब नूं दिता दान, तिन्नां दी मनसा विच टिकाईआ।

विष्नूं नूं किहा तूं सब नूं देणा पीण खाण, भण्डारा मेरा बेपरवाहीआ। ब्रह्मे तूं उतपत करना जहान, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। शंकरा जो उपज्या तूं उस दा रहिण नहीं देणा निशान, अन्त लेखा देणा मुकाईआ। सब ने इक्को हुक्म करना परवान, सिर सके ना कोए उठाईआ। तिन्ने इक्ठे झुके आण, निव निव लागे पाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव रिहा खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द कहे आदि दा खेल विच सचखण्ड, हरि करता आप कराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव ने मंगी मंग, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। जे असीं सृष्टी रची कौण होवेगा संग, सगला संग बणाईआ। पुरख अकाल किहा मेरे नाम दा वज्जे मृदंग, शब्दी शब्द खेल खिलाईआ। तन वजूद सुहावां विच वरभण्ड, अवतार पैग़म्बर गुरु नाउँ प्रगटाईआ। पर याद रखयो जिस वेले नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग गए लँघ, फिर आप आवां चाँईं चाँईंआ। उस वेले जन भगतां दे बैठ सिंघासण उत्ते पलँघ, आसण एसे तरह सुहाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव उस वेले चरण भेंट होणगे तारा चन्द, सूरज सूर्या सीस निवाईआ। तुहानूं देवांगा ओह अनन्द, जो अनन्द मेरे विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ पिछला वक्त सुहाया, दिती माण वड्याईआ। सच दरबार लगाया, वज्जी हक वधाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव लेखा पूर कराया, गुरमुख आपणे रंग रंगाईआ। गुर चेले वाला पिछला भेव चुकाया, गोबिन्द दए गवाहीआ। हरिजन जन हरि आपणे रंग रंगाया, दिती माण वड्याईआ। सतिगुरु दे घर कोई नहीं पराया, भगतां बंस सरबंस इक्को इक वखाईआ। करे खेल बेपरवाहया, बेपरवाह आपणा हुक्म वरताईआ। जिस नूं कहिंदे दाई दाया, दाता हो के वेखण आईआ। भावें जन भगतो तुहाडी पंज तत दी काया, काया दा मालक इक्को इक नूर इलाहीआ। एसे करके अज्ज पहलों परसादि वरताया, फेर आपणा हुक्म वरताईआ। क्यों जिस वेले विष्न ब्रह्मा शिव नूं दिती सी दात उस वेले दूजा नज़र कोए ना आया, बिना चार तों चार कुण्ट रूप ना कोए दरसाईआ। सताई माघ दा दिवस वड्याआ, सद वज्जदी रहे वधाईआ। नवीं रीती दा हुक्म रिहा सुणाया, जन भगतां सुणना चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा खेल रचाया, रचणहार एकँकार इक्को इक अख्वाईआ।

✪ २७ माघ शहिनशाही सम्मत ७ मेला सिँघ दी बम्बी उत्ते पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदास पुर ✪

सुण हुक्म कंधारी वली, वलीअल्ला अल्लाह आप जणाईआ। सताई माघ रात नूं ल्याउणी तेल दी पली, मुहम्मद दे चराग़ रहे कुरलाईआ। राह तकदा शाह ऐली, हसन हुसैन अक्ख उठाईआ। लेखा पूरा करना करबले वाला जिन्हां दिती बली, बलधार वेख वखाईआ। इक ल्याउणी नाल लूण दी डली, उम्मत हाण्डी खोज खोजाईआ। होका मिलणा गलीओ गली, जगत जहान आप सुणाईआ। झगड़ा पैणा जली थली, थल अस्गाह रोवण मारन धाहीआ। मुहम्मद दी आशा कलपणी इकल्ली, चार यारी संग ना कोए निभाईआ। पंज दाणे नाल ल्याउणे मुंगफली, जिस नूं नानक भोग लगा के मर्दाने दिता खवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सिँघ मेला जगत कंधारी, हरि शब्द नाल समझाईआ। इक वाल प्रभ दी भेंट चढ़ाउणा विच्चों दाढ़ी, भुल्ल कोए ना जाईआ। किरपा करे आप निरँकारी, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जन भगतां दी सदा पक्की रहे साउणी हाढ़ी, ग़रीब निमाणयां रिहा सुणाईआ। जुग चौकड़ीआं पिच्छों आई तुहाडी वारी, वारिस हो के वेखे चाँईं चाँईंआ। जिस नाता तोड़या चार यारी, यराना भगतां नाल रखाईआ। तुहाडे प्यार दा प्रभू बणया वपारी, घर घर विच्चों खरीदे चाँईं चाँईंआ। इक्को माण देवे पुरख नारी, बिरध बालां होए सहाईआ। जेहड़ा टका भेंट करना उस ते लाईन होवे काली, आर पार देणी लगाईआ। उस नूं रखया होवे विच थाली, जेहड़ी थाली गुरमुख भेंट चढ़ाईआ। विच तिन्न तिनके होण पराली, जेहड़ी भगतां हेठ बिछ के आपणी सेव कमाईआ। इक दीपक जोत होवे बाली, मुख नौ सोभा पाईआ। फेर लिखारीआं बणना सवाली, निव निव के सीस झुकाईआ। प्रभू सतिगुर जन भगतां गुरमुखां दा नाता रवे ना जाहली, आत्म गंढ देणी पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां जन्म कर्म दी मेटे कंगाली, शाह कंगाल आपणे रंग रंगाईआ।

✪ २७ माघ शहिनशाही सम्मत ७ किशन सिंघ, प्रकाश कौर, वकील सिंघ, वसण सिंघ, आशा सिंघ, लाज कौर, हज़ारा सिंघ, सरूप सिंघ, सांझी राम गंडा सिंघ, ध्यानो चनो धन्नी पूरो, गुलज़ार सिंघ, बंती अल्लड़पिण्डी, दीपो दोस्तपुर, बावी दोस्तपुर, गुरमुख सिँघ सोहण, गुरदेव सिँघ सोहण, अमरो रडयाणा, दीपो छोड़, चरण कौर खुशीपुर पिण्ड अल्लड़पिण्डी ज़िला गुरदास पुर ✪

सताई माघ कहे शरअ दी कीमत पै गई टका, गुरमुख लेखा रिहा चुकाईआ। परवरदिगार ने खेल वेखणा मदीना

मक्का, काअब्यां अक्ख उठाईआ। चार यारी नाता तकणा सका, उम्मत उम्मती खोज खुजाईआ। जो इशारा दे के आया नानक तपा, बग़दाद विच दृढ़ाईआ। हुक्मी धार लिख्या पटा, शब्दी शब्द शब्द समझाईआ। सदी चौधवीं पैणा रट्टा, ना कोई मेटे जगत लोकाईआ। धरनी उत्ते उडणा घट्टा, धूंआँधार सोभा पाईआ। खेल करे पुरख समरथा, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जिस लेखे लाउणा लालो दा सवा गज दा लट्ठा, चारे कन्नीआं कट के चारों कुण्ट आपणा हुक्म वरताईआ। जिस ने हुक्म लिखाया यथार्थ यथा, यदी आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। सताई माघ कहे मेरीआं खुशीआं वालीआं बहारां, बहिशतां वाल्यो दयां जणाईआ। देवतयो वेखो नेत्रां नाल नज़ारा, अपच्छरां वाल्यो लओ अंगड़ाईआ। खेल तक्को तेई अवतारा, ईसा मूसा मुहंमद संग बणाईआ। गुर दस पाओ सारा, महासार्थी की आपणी कार कमाईआ। जिस दा दीपक होया उज्यारा, जोती जाता डगमगाईआ। कलयुग अन्तिम करना पार किनारा, लेखा मात रहिण ना पाईआ। प्रगट हो चवीआं अवतारा, चौबीसा आपणा खेल खिलाईआ। पूरब रहिण ना दए उधारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। सताई माघ कहे लालो दा सवा गज़ दा लट्ठा, जगत सिंघासण सोभा पाईआ। सतिगुर चरणां विच ढट्ठा, प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं वक्त टप्पा, टापूआं परे पए दुहाईआ। आपणा वेख पुराणा पटा, जो बिन अक्खरां दिता लिखाईआ। जिस दे उत्ते अगम्मी ठप्पा, ठाकर तेरा नाम नज़री आईआ। हुण मेट दे दीन दुनी दा रट्टा, लेखा अवर ना कोए बणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कर लै इक्ट्ठा, वखरी वंड ना कोए वंडाईआ। सब नूं कर दे ज़ीरो नाल बटा, हिन्दसा अंक ना कोए जणाईआ। तेरा नूर जगे लट लटा, दो जहानां सोभा पाईआ। तेरा किसे नूं लग्गा नहीं पता, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। मैं खेल वेखां अक्खां, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। तेरे दर्शन नूं तरसण करोड़ां ते लखां, कोटन कोटि ध्यान लगाईआ। पूजदे पथ्थर वट्टा, इट्टां सीस निवाईआ। ओह बुड्ढा ब्राह्मण जिस ने दो तलवारां बद्धीआं पट्टां, जो नामें नूं ठाकर हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी कार आप कमाईआ। सताई माघ कहे सिंघासण वेखो लट्ठा कोरा, मैं कोरी गल्ल सुणाईआ। प्रभू दे अग्गे नहीं किसे दा ज़ोरा, जिस ज़ोरावर फ़तिह सिँघ नीहां हेठां दिते दबाईआ। ओह बण के होर दा होरा, अवर अवरा रूप वटाईआ। भगत भगवान बणा के जोड़ा, सोहणी आपणी खेल खिलाईआ। अग्गे वक्त दस्स के थोड़ा, कलयुग कूड़ा पन्ध मुकाईआ। जिस सदी चौधवीं मोड़ना मोड़ा, पासा दीन दुनी उलटाईआ। दो जहान पकड़ के डोरा, डौरु डंका इक सुणाईआ। वक्त रहिणा नहीं ठग्गां चोरां, हउमे

हंगता गढ़ तुड़ाईआ। भेव खुल्हा के तोरा मोरा, एका ब्रह्म दए समझाईआ। जन भगतां होण ना दए विछोड़ा, विछड़यां जोड़ जुड़ाईआ। कलयुग मेटे अंध घोरा, नूरी चन्द कर रुशनाईआ। इक सुणाए धुर दा दोहरा, ढोला बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सताई माघ कहे मैं सब कुछ कीता सतिगुर शब्द हवाले, उसे नूं सीस निवाईआ। जिस लिखारीआं अग्गे पंज पंज दीपक बाले जोती जोत जोत रुशनाईआ। गुरमुखां दे इहो ठाकर मन्दिर शिवदुआले, काअबे धुर दे नज़री आईआ। अन्दर रहिण किसे ना काले, कालख टिक्के देणे मिटाईआ। फल लगाउणे साचे डाले, पति टहिणी आप महकाईआ। गुरमुख वेखे आपणे बाले, बाल अंञाणे गोद टिकाईआ। सर्ब जीआं दीआं हर घट जाणे, जानणहार आप हो जाईआ। चुरासी विच्चों पुणे छाणे, दाता दानी खोज खुजाईआ। फड़ चलाए आपणे भाणे, भावी नेड़ कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरे सब कुछ अख्त्यार, हुक्म धुरदरगाहीआ। मैं रहिण नहीं देणा कोई मुखत्यार, मुखत्यारे आम नज़र कोए ना आईआ। सब नूं सद्द सच्चे दरबार, संदेशा देणा चाँईं चाँईंआ। अग्गे हुक्म मन्नणा पए इक निरँकार, आपणी वंड ना कोए रखाईआ। इक्को इष्ट होवे सच्ची सरकार, शाह पातशाह इक अख्वाईआ। इक्को गृह होवे निमस्कार, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को दरस परवरदिगार, जोती जाता नज़री आईआ। पिछली रसम रहे ना विच संसार, कसम इक्को इक खवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरे भय विच दो जहान रहे कम्बी, थरथराहट विच दुहाईआ। ओधरों सदी चौधवीं जाए लँघी, आपणा पन्ध मुकाईआ। ओधरों डल्ले दे सिर विच वाही कंघी, सिध्धा चीर दिता कढ्ढाईआ। जिस दे सिर ते गोबिन्द ने खण्डे दी धार रखी सी नन्गी, सहिज सहिज फिराईआ। हुक्म दिता हुण जाणे फ़रंगी, आपणा पन्ध मुकाईआ। फेर वाट रहे ना लम्बी, पाँधी पन्ध ना कोए भवाईआ। सदी चौधवीं अन्तिम सृष्टी होणी अंधी, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। तेरयां केसां वांगर दुनिया दो धड़ जाणी वंडी, गोबिन्द हस्स के गया दृढ़ाईआ। पर एह गल्ल याद रखीं एह खेल करना मेरे साहिब सूरे सरबंगी, पुरख अकाल दया कमाईआ। उस वेले चढ़ना चन्द नहीं कोई नौचन्दी, चन्द सितारा दर ते सीस निवाईआ। खेल वेखणा विच वरभण्डी, ब्रह्मण्ड अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। खण्डा कहे जिस वेले डल्ले दे सिर ते दिता रख, तिक्खी धार रखाईआ। गोबिन्द प्या हस्स, खुशीआं विच सुणाईआ। गुरमुखो पंञी जोड़ो हथ्थ, मुख दे अग्गे टिकाईआ। सतिगुर

किहा उस वेले मेरे पुरख अकाल दी जोत जगे लट लट, दुर्गा लाटां वाली सिंघासण हेठ रखाईआ। जिस चण्डी नूं मैं कीता प्रगट, ओह चण्डी प्रभ दा शब्द रूप जाए बदलाईआ। एह खेल वेखणा नाल पुरख समरथ, समरथ आपणी कार भुगताईआ। जिस दो जहान चलाउणा रथ, रथवाही आपणा हुक्म वरताईआ। जगत जहान देवे मथ, नाम मधाणा इक उठाईआ। सृष्टी सारी लथ्थे सथ, सथ्थर यार ना कोए हंढाईआ। उलटी गिढ़े लद्दु, भँवर विच ख़लक खुदाईआ। झगड़ा मिटणा मन्दिर मद्दु, शिवदुआले देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। लद्दा कहे मैं लम्मा गज़ सवा, स्वार्थ आपणा ना कोए रखाईआ। मैं हुक्म संदेशा कहवां, कहि के दयां दृढ़ाईआ। प्रभ ने खेल खिलाउणा नवां, नव खण्ड वज्जे वधाईआ। मैं फिरना नाल चवां, चारों कुण्ट वाहो दाहीआ। चैन नाल किते ना बहवां, भज्जां वाहो दाहीआ। बिन भगतां प्यार किते ना सवां, आलस निंद्रा ना कोए रखाईआ। मैनूं कहे ना कोए निथावां, निथाव्याँ दयां सुणाईआ। आओ प्रभू प्यार करदा वद्ध नालों मावां, हरिजन आपणी गोद टिकाईआ। मैं बलिहार उसे दे चरणां तों जावां, जो जवां दी रोटी खा के गुरमुखां रिहा रजाईआ। ओसे दी चरण धूढ़ी नहावां, दुरमति मैल धुआईआ। उहो कन्त सुहागी इक्को रावां, जिस दी सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। लद्दा कहे मैं सवा गज़ चौड़ा, सच दयां सुणाईआ। मैनूं चरण छुहाया ब्राह्मण गौड़ा, ब्रह्म दा पड़दा दिता उठाईआ। जो मेहरवान हो के बौहड़ा, बौहड़ी बौहड़ी करदयां लए बचाईआ। जो मिट्ठा करे रीठा कौड़ा, अमृत रस चखाईआ। जिस ने झगड़ा मिटाया तलाबां जौहड़ा, अड्डां सड्डां डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सवा गज़ कहे मैं यसूह दी निशानी, मैनूं मसीह दिती वड्याईआ। जिस वेले जांदा सी विच जूह बेगानी, मैनूं गल विच लटकाईआ। हथ्थ फड़दा सी कानी, साढे तिन्न हथ्थ लम्बाईआ। जिस ने अन्त कीती कुरबानी, आपणा आप मिटाईआ। सवा गज़ सलीव उस दे गल विच अन्त बद्धी गानी, गाना सगन वाला जणाईआ। जिस नूं गल विच पा के उहनूं मिल गया जान जानी, हरि करता शाह पातशाह शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। सवा गज़ कहे क्यों मेरी कन्नी कतरी, कतरा कतरा दिता कराईआ। मैं सच दस्सां जिस वेले गोबिन्द ने इक्ठे कीते सी शूद्र वैश ब्राह्मण क्षत्री, छत्र इक्को नाम झुलाईआ। किसे पांडे तों फुलाई नहीं सी पत्री, गृह नछत्र ना कोए दृढ़ाईआ। फेर बणा के हथ्थां नाल मेरी दोहरी चौहरी पटड़ी, कमरकसे नाल टिकाईआ। फेर मैनूं तोलया बिना तकड़ी, वज़न बेवज़न

१७८५
२२

दिता दृढ़ाईआ। नाले हस्स के किहा जिस वेले दुनिया शरअ विच जाणी जकड़ी, ज़ंजीर सके ना कोए तुड़ाईआ। किसे ने गाँ खाणी किसे ने सूर खाणा किसे ने खाणी बक्करी, बकरीदां वाले रोवण मारन धाहींआ। उस वेले दुनिया दी भट्ठी तपणी, कलयुग भठियाले अग्नी देणी डाहीआ। सदी चौधवीं अन्तिम होणी टप्पणी, भज्जे वाहो दाहीआ। शरअ दी शरीअत छपणी, छप्पा मारे बेपरवाहीआ। प्यार रहिणा नहीं पति पत्नी, नार कन्त करे लड़ाईआ। चेल्यां गुरुआं धार छडणी, मुरीद मुर्शद जाण तजाईआ। मंज़ल मिले किसे ना भज्जणी, पूजा पार ना कोए कराईआ। प्रभू दी हाथ आवे ना वञ्झणी, जगत मुहाणा सार कोए ना पाईआ। चारों कुण्ट कलयुग अग्ग लग्गणी, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। झगड़ा पैणा मानस बदनीं, बदी दा डेरा कोए ना ढाहीआ। दुनिया रोवे आहला अदनी, शाह कंगालां धीर ना कोए धराईआ। प्रभू दी धार किसे ना लभ्भणी, खोज्जयां हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप उठाईआ। टका कहे मेरी कोई ना जाणे कीमत, कलयुग कुड़यार दिता तुलाईआ। प्रभ दा खेल समझणा ग़नीमत, जो ग़मां दा डेरा ढाहीआ। जिस ने जगत दी धार वेखणी त्रीमत, त्रीया त्रैगुण खोज खुजाईआ। साची शान वेखणी ज़ीनत, की ज़ेब नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी कार आप भुगताईआ।
सवा गज़ कहे मैनूं चार कुण्ट दिता कट, घेरा सोहणा दिता बणाईआ। मैं विक गया प्रभू दे हट्ट, जगत वणजारे दिते तजाईआ। कूड़ीआं हद्दां गया टप्प, भज्जया वाहो दाहीआ। प्रभ सिंघासण चढ़या झट, झटके हलाली वाला मैनूं हथ्थ कोए ना लाईआ। मैं वेखणा नूर इलाही सति, जो सति सति अख्वाईआ। जिस नूं कहिंदे कमलापति, पतिपरमेश्वर नूर इलाहीआ। आदि अन्त समरथ, समरथ कल वड्याईआ। नूर जोत अलख, अगोचर इक अख्वाईआ। जिस चलाउणा सतिजुग रथ, धुर दा हुक्म हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर भेव आप खुल्हाईआ।
नारद कहे जन भगतो गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रहीआं हस्सीआं, हस्स हस्स सीस निवाईआ। असीं दूरों दुराडिउँ आईआं नस्सीआं, पिछला पन्ध मुकाईआ। शरअ दीआं तकदीआं आईआं रस्सीआं, रस्ते वेखे थांउँ थाँईंआ। छुरीआं सब ने हथ्थां विच कसीआं, बाहू बल रहे प्रगटाईआ। नाल रलीआं मन मतीआं, गुरमति बैठी मुख छुपाईआ। रावी दे कन्ढे पहुंचीआं जिथ्थे अर्जन ने मौजां माणीआं लोहां तपीआं, तपीश्रां डेरा ढाहीआ। जिस दे उत्ते आशा रखी छे जतीआं, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। बाल्मीक कर के गया पक्कीआं, बजवाड़ा आप सुणाईआ। जिस वेले कलयुग माण रहिणा नहीं रागां छत्तीआं, दन्दां बत्तीआं ना कोए वड्याईआ। प्रभ दे नाम दीआं दीन दुनी विच होणीआं हिस्से पत्तीआं, गुर अवतार पैग़म्बर वंडां देण

वखाईआ। साहिब नज़र आउणा नहीं किसे दीआं अक्खीआं, सन्मुख दरस कोए ना पाईआ। जगत जिज्ञासूआं खाणीआं डड्डीआं मच्छीआं, पंछीआं खल्ल लुहाईआ। जगत धारां रहिणीआं नहीं अच्छीआं, अच्छी तरह सुणाईआ। अन्त सब नूं पैणीआं गशीआं, सिर सके ना कोए उठाईआ। सच दवारे पुकारन गऊआं वच्छीआं, बछड़े रोवण मारन धाहीआ। जेहड़ीआं कृष्न दी बंसरी उत्ते नच्चीआं, आपणी खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वर दाता इक अख्वाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रावी रहीआं दस्स, सहिज सहिज सुणाईआ। नी पहलों साडे नाल हस्स, मुस्कराहट विच वड्याईआ। फेर प्यार नाल नस्स, भज्जीए वाहो दाहीआ। साडा लथ्थे झक्क, ओहला रहे ना राईआ। साडा मिटे शक, भरम देणा चुकाईआ। की तेरे कन्ढे वसे पुरख समरथ, हरि दाता बेपरवाहीआ। रावी अंगड़ाई लई झट, नेत्र नैण उठाईआ। नी पता नहीं ओह परम पुरख कि जट्ट, तत्तां वाला कि नूर इलाहीआ। झट नारद हो प्रगट, ताली रिहा वजाईआ। नी तुसीं की जाणो तुहाडे उत्ते पिच्छे वी ऋषीआं पाई छट्ट, भार जगत दे कर्मां वाला चुकाईआ। तुहाडे विच्चों निकलया ना आपणा वट, लहर लहर नाल टकराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी खेल आप खिलाईआ। चारे कहिण तूं नारद की देवें धोखा, भरम रिहा भुलाईआ। नारद कहे नी

१७८७
२२

कमलीओ मैं तुहाडा जन्म कर्म दा पढ़न वाला पोथा, तुहाडी किस्मत आपणी बोदी विच लुकाईआ। नी तुहानूं खा गईआं मच्छीआं डड्डीआं ते जोकां, जल होड़े तुहानूं रहे सताईआ। मैं तुहाडे कन्ढे किनारे तट वेखे पोटा पोटा, अग्गा पिच्छा तक्कया चाँईं चाँईंआ। तुहाडे विच नहाउण लग्गयां साधां सन्तां दे तेड़ नहीं हुन्दा लंगोटा, धोती कम्म किसे ना आईआ। कमलीओ मैं प्रभू दा भगत बड़ा चोटा, चुटकी विच प्रभ नूं दयां मिलाईआ। तुसीं मेरे नाल चलो शौंका, शौकीनणो तुहानूं दयां सुणाईआ। तुसीं पिच्छे बैहंदीआं आईआं उत्ते कौंचां, तुहानूं कान्यां काहीआं विच देणा भवाईआ। ओह वेखो सदी चौधवीं दा मुहम्मद दी आशा कूड़ दा कूकर भौंका, भौंक के रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। नारद कहे नी मेरी सुणो बात, सच दयां सुणाईआ। अज्ज किड्डी सोहणी रात, भिन्नड़ी वज्जे वधाईआ। तुसीं मेरी गाओ गाथ, मैं तुहाडा बणां माहीआ। मेरे दर्शन नाल तुहाडी मुक जाए वाट, अग्गे दा पन्ध रहे ना राईआ। तुसीं पिच्छे सौंदीआं आईआं उत्ते खाट, अज्ज ठंडी रेता उत्ते देवां लिटाईआ। एह रावी दा कन्ढा ते रावी दा घाट, रवीदास दए गवाहीआ। मैं आदि जुगादि दा प्रभू दा भगत जेंटलमैन ते मेरे नाल उस प्रभू दी करो टाक, जो टक टक ईसा आपणी अवाज़ गया सुणाईआ। मैं किड्डा सोहणा पंडत ते प्रीती वाला नाथ, अनाथां होवां सहाईआ। गंगा

तूं मेरा कर लै साथ, इन्हां नूं दे तजाईआ। तेरी मेरी इक्को बण जाए ज़ात, दूजा नज़र कोए ना आईआ। झट जमना ने नारद दे मूँह ते मारी चांट, पंडता एह की दिता सुणाईआ। नारद ओअँ सोहँ रिहा आख, एह मेरे साहिब दी पढ़ाईआ। कमलीए भगतां कोल आ के कदी ना होईए गुस्ताख़, निउँ निउँ के सीस झुकाईआ। ज़रा मेरे वल्ल झाक, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। मेरी बोदी दा वेख प्रताप, जो लहिंदयों चढ़दे चढ़दयों लहिंदे भज्जे वाहो दाहीआ। नी तुहाडे विच ठग्गां चोरां ने लाह के सुट्टे पाप, नी पापणे तुहाडा तन वजूद पवित्र ना कोए कराईआ। झट सुरस्ती ने नारद दा पकड़ ल्या नाक, हलूणा दिता ज़ोर नाल हिलाईआ। जी करदा तेरे कन्न देवां काट, ब्राह्मणा तैनूं बदशकल दयां बणाईआ। नारद कहे नी तुहानूं पता नहीं मेरा पुरख अकाल किड्डा वडा बाप, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। तुसीं उहदी ते निक्की निक्की शाख़, बिना मेरे तों तुहाडी शनाख़त करन वाला दूजा नज़र कोए ना आईआ। तुसीं आपणे धन्नभाग कहो मैं तुहाडी पूरी करां आस, चार जुग दीओ कुँवारीओ तुहानूं लोकमात ना कोए प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। नारद कहे मैनूं ऐं जापदा तुहाडे नाल बड़ी चंगी सुरस्ती, सुरस्ती अग्गों अक्खां कढ्ढ के रही डराईआ। जाह पंडता मूर्खा वड़ कलयुग दी बस्ती, आपणा मुख भवाईआ। नारद कहे नी जे तेरी हकूमत मैनूं हुक्म दे दे दस्ती, कुछ लिख के हथ्थ फड़ाईआ। क्यों मैं आदि जुगादि दा गशती, जुग चौकड़ी भज्जां वाहो दाहीआ। नी कमलीए तैनूं नहीं पता सम्मत शहिनशाही सत्त ते भगतां दी बरसी, एह बरस नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग तक फेर कदे ना आईआ। उन्हां दा मेल होया नाल प्रीतम अर्शी, अर्शां दा वाली आपणा रंग रंगाईआ। उस ने सब दा लेखा पूरा करना शर्ती, क्षत्रीया आपणा हुक्म वरताईआ। पता नहीं ओह किस कारन रावी दे कन्ढे भगतां नूं करन आ गया भरती, भारत विच धरती माता जिस नूं सीस निवाईआ। मैं एसे कर के तुहाडा बणया दर्दी, दर्द रिहा वंडाईआ। जे तूं मालकण बण जाएं मेरे घर दी, सब कुछ तेरे उतों लुटाईआ। एह मेरी सूरत बण जाए नरायण नर दी, तैनूं परम पुरख दी लोड़ रहे ना राईआ। अग्गे ते सृष्टी तेरे कन्ढे किनारयां उत्ते जा के नाम पढ़दी, तूं सुण के झट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गोदावरी बोली ब्राह्मणा क्यों पाउंदा एं डण्ड, डण्डा हथ्थ विच रही उठाईआ। तेरा तोड़ देवां घमंड, आकड़ दयां गंवाईआ। तेरी भन्न देवां कंड, हड्डी पसली नज़र कोए ना आईआ। नारद कहे गोदावरी मेरे वास्ते तूं ओह चन्द, जिस चन्द दी सीतलता विच सारे ख़ुशी मनाईआ। मैं ते प्रभू तों इक्को तेरी मंगणी मंग, होर सब कुछ देणा तजाईआ। जे इक वार मेरे गृह आवें लँघ, कदम

कदम नाल बदलाईआ। तैनूं मिले ओह अनन्द, जिस अनन्द नूं सारे गए गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। जन भगतो तुहाडी कूड़ी क्रिया जाए खुस्स, खोहण वाला बेपरवाहीआ। जिस मुहम्मद दी कटाई मुच्छ, लबां दितीआं बणाईआ। ओह सदी चौधवीं नूं रिहा पुछ, की तेरा अन्त दए गवाहीआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मदा वे मेरी गोली गई रुस्स, रुस्सी नूं कौण मनाईआ। उहदी वेख खुल्ही गुत्त, वैरागण हो के मुख भवाईआ। उस ने सिर ते पटका बध्धा घुट्ट, जेहड़ा अन्त समें तेरे मस्तक ते दिता बंधाईआ। बहत्तर दिन पई फुट्ट, शरअ दी अन्दरे अन्दर चलदी रही लड़ाईआ। ओह छड गई खाणा पीणा ते टुक, भुक्खी झट लँघाईआ। झलदी रही दुःख, खुशीआं सीस निवाईआ। अज्ज पैंडा रिहा मुक, चौदां तबक रोवण मारन धाहीआ। लालो ने फड़ ल्या गुट्ट, घुट्टे चाँईं चाँईंआ। दलीप सिँघ नूं पुछ, की करता कार कमाईआ। जिस दे कोल सब कुछ, बेपरवाह नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे वे मुहम्मदा कुछ आख आपणे हज़ूर, सजदा सीस झुकाईआ। मैं हो गई मजबूर, मजबूरन दयां सुणाईआ। वेख तेरा भर गया अन्त दा पूर, बेड़ा नूह रिहा जणाईआ। मूसा तके उत्ते कोहतूर, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। ईसा कहे ज़रूर, कूक कूक

१७८६ सुणाईआ। हाए उफ़ सदी चौधवीं दा अन्तिम समां कलयुग ने बड़ा लाया दुःख, दुखी हो के दयां सुणाईआ। चारों कुण्ट १७८६

२२ प्यार रिहा नहीं किसे स्त्री मनुक्ख, घर घर पई दुहाईआ। पुत्तरां नूं प्यो ते पिउआं नूं मारन पुत्त, चार कुण्ट रहे कुरलाईआ। २२

सदी चौधवीं कहे भगतो मेरी गोली नूं मेरे नाल कर दयो खुश, खुशीआं हाल बणाईआ। ओह वेखो हो गया अंधेरा घुप, साचा चन्द ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जन भगत कहिण की दईए असीं सलाह, मशवरा नज़र कोए ना आईआ। तूं दाता बेपरवाह, बेअन्त तेरी वड्याईआ। तूं मालक इक खुदा, खुदी तक्बरी दा डेरा ढाहीआ। तैनूं झुकदे थल अस्गाह, दो जहान सीस निवाईआ। असीं ते तेरे हुक्म नाल पकड़ी तेरी बांह, बाहू बल ना कोए वखाईआ। तूं सब दा पिता माँ, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। गोली कहे सदी चौधवीं मैं नहीं मन्नदी, मैनूं कौण मनाईआ। मैनूं पता लग गया हुण धार रहिणी नहीं तारे चन्द दी, मुहम्मद दी चले ना कोए चतुराईआ। मैं अड्डीआं नाल कच्चे भाण्डे आई भन्नदी, भज्जी वाहो दाहीआ। मैं ओह गोली नहीं जेहड़ी कच्ची होवां कन्न दी, दुनिया दीआं गल्लां सुण के आपणा मन बदलाईआ। मैं बणी नहीं कोई पंजां तत्तां वाले चम्म दी, मेरा आत्मा मेरा नूर प्रभ दी सेव

कमाईआ। क्यों सदी चौधवीं तेरा अन्त वेला ते तेरी घड़ी ग़म दी, मैं ग़मी विच तेरा दुःख वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा उस गोली नाल गुस्सा, जिस दा गुस्सा नज़र किसे ना आईआ। जेहड़ी वसे विच पंजां तत्तां वाले जुस्सा, आत्मा दा नूर नूर नूर सोभा पाईआ। जिस दे नाल परवरदिगार दी सुहञ्जणी होणी रुता, रुतड़ी जगत वाली महकाईआ। भगतां ने पाई लुट्टा, खोह खोह करे लोकाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे विच ओह प्यार ओह धार जिस दा भेव सदा लुका, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। मैं आपणी गोली नूं भगतां दे रस दा जिस वेले प्याया घुटा, सांतक सति देणा कराईआ। जन भगतो फेर तुहाडे भाग लगावां सब दे पंज तत काया बुता, बुतख़ाने आपणी खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। गोली कहे मेरा अन्दरों बदल गया इरादा, सदी चौधवीं सीस निवाईआ। मेरा उहो पिता उहो दादा, उहो जम्मण वाली माईआ। जिस नूं सीस निवाउंदे कृष्न ते राधा, राम सीता धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जिस नूं भगतां ने आपणे अन्दरों लाधा, घर घर वज्जे वधाईआ। ओह मेरा मालक माधव माधा, मोहण नूर इलाहीआ। जिस दे नाल मिल के जगत जहान होणा वाधा, घाटा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। गोली कहे जन भगतो मेरे नाल सारे कर दयो सिर नीवें, हरिसंगत इक दूजे नाल गुस्सा रहे ना राईआ। ओह वेखो भगत दे थाल विच जगदे नौ चराग़ ते इक्को रूप बणया दीवे, घृत इक्को नज़री आईआ। मैं चाहुंदी जन भगत सदा सदा सद जग जीवे, दो जहान वज्जदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गोली कहे वेखो पली आ गई तेल, आपणा पन्ध मुकाईआ। प्रभ विछड़यां मिलाया मेल, पूरब गंढ पवाईआ। बण के सज्जण सुहेल, नाता गया जुड़ाईआ। नाल रख के निमक दा ढेल, निमकहराम होण तों सब नूं ल्या बचाईआ। एह जगत जहान नालों वक्खरी हाण्डी जिस ने मुहम्मद दी चार यारी करनी फ़ेल, अन्त लेखा दए मुकाईआ। सुक्के तिनके तुहाडे थल्ले रहे खेल, तिन्नां गुणां दा डेरा गए ढाहीआ। इक टका गुरमुख सिंघ इस थाली विच दए धकेल, दोहां हथ्थां नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। टका कहे मैं साहिब दे हथ्थ विच गया टिक, जन भगतां सीस निवाईआ। गुरमुख हथ्थ मारो उत्ते हिक्क, खुशी नाल लओ अंगड़ाईआ। प्रभ दा दर्शन होवे नित, घर बैठयां चाँईं चाँईंआ। मानस जन्म ल्या जित्त, चुरासी रही ना राईआ। तुसां सुलाह कराई हो के विच, सदी चौधवीं ते गोली दा मशरक मग़रब

वल्लों मुख दिते भवाईआ। जन भगतो तुहाडे अन्दर मारनी खिच्च, खिच्च के आपणे नाल मिलाईआ। तुहाडा मालक हो के पित, पतिपरमेश्वर हो के होवां सहाईआ। लिखारीओ प्रेम नाल दयो लिख, प्रभ दा लिख्या ना कोए मिटाईआ। अग्गे गोबिन्द ने बणाए सिख, हुण सिक्खां तों भगत दिते बणाईआ। ओह वेखो सारे गुरु अवतार पैग़म्बर रहे पिट्ट, बौहड़ी बौहड़ी रहे सुणाईआ। किसे नूं नाम कलमे दी हथ्थ नहीं फड़ाई चिट, अक्खरां वाली ना कोए पढ़ाईआ। साडे हुन्दयां खहिड़ा छुडा के पथ्थर इट्ट, इक्को सोहँ ढोला दिता जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। गोली कहे मैं बड़ी लड़ाकी, जगत लड़ाक्यां देणा लड़ाईआ। मैं लहिंदे नूं मुख कर के प्रभ तों खुल्हा दिती ताकी, ताकतवर सारे लैणे उठाईआ। एह चार जुग दी कथा याद रहेगी अज्ज दी राती, सताई माघ दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। टका कहे जन भगतो मेरे उत्ते काली लकीर, सब नूं नज़री आईआ। तुहाडा कटया गया शरअ दा ज़ंजीर, बन्धन बंध ना कोए रखाईआ। तुसीं ओस प्रभू दे फ़कीर, जो फ़िकरा इक्को रिहा पढ़ाईआ। तुहाडी सब दी बिना टकयां तों बदल गई तकदीर, तदबीर प्रभ ने दिती बणाईआ। वेखो डल्ले दे सिर विच कढुया चीर, नाज़र सिँघ सब नूं दए वखाईआ। एह ओसे दी

१७६१ मिलख ते ओसे दी जगीर, जो मालक दो जहान अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल १७६१

२२ साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे ओह प्रभू की वंडी जाए वंडां, वंडण वाल्या दे समझाईआ। पहलों २२

आपणा रस प्या के गोली नूं ठंडा, कतरा बचया रहिण कोए ना पाईआ। ओह वेख रणजीत सिँघ ने पिच्छे नाले दीआं दितीआं गंढां, आया वेस वटाईआ। मोढे ते रख के टाहणी जंडा, कंडयां वाली दए गवाहीआ। जन भगतो तुहाडे सिर तों लाह दितीआं कूड़ दीआं पंडां, पंडतां पांध्याँ नूं सीस ना कोए निवाईआ। जिस दा हुक्म चलणा विच नव खण्डां, ब्रह्मण्ड वज्जणी वधाईआ। जगत निशानी रहिणी पिपल लंडा, एह एसे दी बेपरवाहीआ। वक्त गया रोवोगे सिर मार के विच कंधा, कन्ढी बैठा नज़र किसे ना आईआ। फेर पुच्छोगे कोलों तारे चन्दा, ओए किते वेख्या ई साडा माहीआ। रणजीत सिँघ कहे ओए गुरमुखो वेखो जिस ने उलटा डाहया पलँघा, जगत रीती रिहा बदलाईआ। जिस दे चरणां नूं तरसण जमना सुरस्ती गोदावरी ते गंगा, रावी बैठी अक्ख उठाईआ। भज्जा फिरे नारद पंडा, अग्गे पिच्छे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आपणे हथ्थ रखाईआ। नाला कहे जन भगतो सुणो ला के कन्न, कन्नां वाल्यो दयां सुणाईआ। क्यों मैनूं पिच्छे दिता बन्न्, की प्रभ ने खेल रचाईआ। सच पुछो जिस वेले मुहम्मद निशान

बणाया सी तारा चन्न, उस वेले चार यारी दा एह रूप दिता समझाईआ। एह सच लैणा मन्न, मनसा जगत ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी धार आप प्रगटाईआ। क्यों हथ्थ उठाई कंडयां टाहणी, कंडा कंडा दए दुहाईआ। जिस वेले मुहम्मद नूं पहले दिन आई सी बाणी, धुर कलमा नग़मा हुक्म नूर इलाहीआ। उस वेले मुहम्मद नूं एह दस्सी सी निशानी, निशाना जगत वाला समझाईआ। तूं मेरा नूर ज़हूर अल्ला अलाह मेरी धार अल्ला राणी, राह जगत वाला जणाईआ। मेरा प्यार आबेहयात रस वाला पाणी, रस्ता तेरा दए खुल्हाईआ। पर याद रख जिस वेले तेरा अन्त होणा ते तेरी उम्मत दी होणी वैरानी, वैरी घर घर नज़री आईआ। उस वेले आपणे अमाम नूं अमाम कर के पछाणी, पश्चाताप दा डेरा ढाहीआ। एह खेल होणा विच जगत जहानी, दीन दुनी रिहा वखाईआ। भगतां उत्ते कर के मेहरवानी, तेरा लेखा तेरी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी कार आप भुगताईआ। नौ जोतां कहिण असीं जगीए इक दीप, दीप दीप रुशनाईआ। साडा मालक इक महीप, जो महीअल खेल खिलाईआ। जिस दी भगतां नाल प्रीत, प्रीतम बण के वेख वखाईआ। जिस ने लेखा पूरा कीता
१७६२ सिँघ बचन वाले तवीत, कौर जोगिन्दर गोली तन छुहाईआ। ओ गुरमुखो तुसीं रहे ना नीचां तों नीच, ऊचो ऊच दिती १७६२
वड्याईआ। प्रभू वसया तुहाडे बीच, विचला भेव दिता खुल्हाईआ। इक टके दी काली लीक, काला लेखा सब दा गई
२२ गंवाईआ। थोड़ा समां वट्ट लओ कसीस, पुरख अकाल नूं तुहाडी कसम, भस्म सब दी दए कराईआ। तुसीं वेखणा नूरी २२
अक्खां ते नाल चशम दीद, दीदा दानिस्ता दए दृढ़ाईआ। हुक्म वरतणा विच पच्छम , फेर दक्खण लए अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे मेरी किसे नहीं कीती तलाश, मैं चार दिन दा ध्यान लगाईआ। जे सतिगुर दे सरूप नूं मेरी समझणा नहीं लाश, फेर रणजीत सिँघ दीआं दोवें बाहवां लओ बंधाईआ। हरबंस कौर कल्सीआं वाली बन्न्हेगी एहदे हाथ, लीड़ा आपणे सिर तों लाहीआ। तृप्त कौर सिर विच पाएगी पाणी दा ठंडा ग्लास, नाता भैण भ्रा समझाईआ। एह वी राजे बल दा हुन्दा सी दास, सेवा करके खुशी बणाईआ। एसे तरह इक दिन सताई माघ दी सी रात, बल प्रभ विच आपणा आप टिकाईआ। उस वेले रणजीत दा नाँ सी गुलाब दास, नथ्थू पिता ते तरहिणी नाम माईआ। गरड़ पुराण इस दे जन्म दा लिख्या होया इतहास, सलोक अट्ठ सौ सतारवां दए गवाहीआ। नारद कहे एह मेरी ब्राह्मण दी निक्की जेही बात, पिछली याद चलया कराईआ। जन भगतो तुहाडा खेड़ा वसदा रहे तुसीं विच रहो आबाद, प्रभ नाल मिल के तुहाडी वज्जदी रहे वधाईआ। अज्ज सुलह दा

दिन सदी चौधवीं दी गोली नूं मिली दाद, टका रवीदास दा भगतां भुक्ख मिटाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सदा वसे तुहाडे पास, विछोड़ा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। नारद कहे लिखारीओ तुसीं बड़े लिखारी, लिख लिख रहे वखाईआ। दस्सो तुसां लाई कि तुहाडे नाल प्रभ ने लाई यारी, पहल किस कमाईआ। मेरा दिल करदा जे तुसीं चारे उठ के इक शब्द पढ़ो ज़ोरदारी, गाओ चाँईं चाँईंआ। फेर मैं सारयां भगतां तों जावां बलिहारी, बलि बलि आपणा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा डंक इक वजाईआ। नारद कहे गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती संग रावी सुणो नाल ग़ौर, ग़ौर नाल सुणाईआ। अठाई माघ सब ने पहुंचणा इक्ट्ठीआं हो के कलानौर, कला प्रभ दी दयां दृढ़ाईआ। अग्गे पिच्छे नहीं आउणा दौड़, इक्ट्ठीआं लैणा पन्ध मुकाईआ। खड़ीआं रहिणा जित्थे लग्गा होवे पौड़, पौष्ड़ी थल्ले आपणा झट लँघाईआ। जिस वेले आवाज़ मारे ब्राह्मण गौड़, हुक्म शब्द वाला सुणाईआ। उस वेले प्रभ दे सीस ते चार सिख करदे होणगे चौर, चवर प्रेम नाल झुलाईआ। तुसां पाउणा नहीं मूल शोर, उच्ची साह ना कोए कढ्ढाईआ। इक्को कहिणा प्रभू कलयुग तेरी अन्तिम लोड़, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। दर आईआं चरणां नाल जोड़, जोड़ी धुर दी आप बणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बेड़ा साडे विच रोड़्ह, साडे तों परे फेर शौह दरया डुबाईआ। साडा सब दा इक्को इक बोल, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। जे तूं प्रगट होया उपर धौल, धर्म दा राह देणा वखाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं पूरा करना कौल, वायदा पिछला वेख वखाईआ। पर साडी इक बेनन्ती अठाई माघ नूं सदी चौधवीं दी गोली आपणी हत्थीं रिंन्ह के खवाए तैनूं चौल, वज़न सवा पा सुहाईआ। कोल नारद पंडत होवे रौल, हिसाब आपणा दए लगाईआ। असीं आपा आप सब कुछ दईए घोल, घोली घोल घुमाईआ। नारद कहे जन भगतो जे रणजीत सिँघ दीआं बाहवां बद्धीआं ते बद्धीआं देवो खोल्ह, मेरी ख़ुलासी लैणी कराईआ। जगत अंधेर झुलणा तुसां मूल ना जाणा डोल, अडुल ल्ए बचाईआ। हुण चढ़दयों लहिंदे ते लहिंदिउँ चढ़दे प्रभ दा वज्जणा ढोल, ढोलकीआं छैणे वाले सारे मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच स्वामी सदा वसे कोल, कुल मालक आपणी दया कमाईआ।

✪ २८ माघ शहिनशाही सम्मत ७ धिरता सिंघ, सुखराज कौर, सरदारा सिंघ, मंगल सिँघ फतूपुर, जीतो सरजा चक, गुलज़ार सिंघ, समां सिँघ फतूपुर, रत्न सिँघ कलानौर, सुरिन्दर सिँघ डेढ गवाड़, गुरमीतो रसूलपुरा, जोगिन्दर कौर बलवन्त जटा, सुरजीत कौर शिकारमाशीआ, सविन्दर कौर, दयाल कौर बोहड़ वाला भुगटाणा, दयाल सिँघ डेढ गवाड़, दलीप सिंघ, बलवन्त कौर दालम नन्गल, पूरन कौर नवां पिण्ड, सुखराज सिँघ रहमगढ़, पिण्ड कलानौर ज़िला गुरदास पुर ✪

रावी कहे मैं मस्तक लावां चरण धूढ़ी, सतिगुर शब्द सच्ची सरनाईआ। मेरी आशा रहे मुग्ध ना मूढ़ी, तृष्ना मिले वड्याईआ। जगत जहान तकां धार कूड़ी, कूड़ कुटम्ब लोकाईआ। जो मैनूं संदेशा दे के गया सतिगुर अर्जन ज़रूरी, सहिज सहिज सुणाईआ। जिस वेले मेरा मालक आया हज़ूरी, हज़रतां तों परे अगम्म अथाहीआ। तूं वी पन्ध कटणा दूरी, भज्जणा वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। रावी कहे मेरे मस्तक लग्गी अगम्मी ख़ाक, ख़ालक ख़लक दिती वड्याईआ। मेरा अन्दरों खुल्ल्या ताक, पड़दा मूल रिहा ना
१७६४ राईआ। मैं चरण कँवल रगढ़ के नाक, निव निव सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी बख्श दे दात, दाते दानी दया कमाईआ। १७६४
२२ चारों कुण्ट वेख अंधेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। दीन दुनी होई गुस्ताख़, सांतक सति ना कोए वरताईआ। २२
मेरी पुराणी पिछली आस, आसावंद रही जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। रावी कहे मैं दस्सां शब्दी भेव, अगम्म अगम्म जणाईआ। मैं उस दी करी सेव, जो सेवा दीन दुनी कमाईआ। जेहड़ा वसया निहचल धाम निहकेव, निहकर्मी बेपरवाहीआ। जिस दी सिफ्त कर ना सके रसना जिह्व, बत्ती दन्द ना कोए चतुराईआ। ओह मैनूं दे के गया अगम्मा मेव, अनरस रस चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। रावी कहे गुर अर्जन मेरे उत्ते मारी हथेली, जल धारा ख़ुशी बणाईआ। नी तूं जुग चौकड़ी खेल खेली, भज्जी वाहो दाहीआ। तेरी दिसे ना कोए सहेली, सगला संग ना कोए बणाईआ। तूं फिरें जगत नवेली, भज्जें वाहो दाहीआ। औह तक सदी चौधवीं अन्त सब दा मालक आउणा बेली, जो बेल्यां जंगलां विच आपणी कार भुगताईआ। जिस लेखे लाउणी नानक दी टोपी सेली, सिल पाहन पथ्थर पूजण कोए ना पाईआ। जन भगतां धर्म राए दी कटणी जेली, चुरासी फाँसी दए कटाईआ। अचरज खेल उस आपणी आपे खेली, ख़ालक ख़लक नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप

रंगाईआ। रावी कहे मैनूं अर्जन ने दिता धक्का, सहिज नाल हिलाईआ। मै पिछला पैर चक्का, अड्डी चोटी ज़ोर लगाईआ। निगाह मारी दरोही फिरी मदीना मक्का, काअबे रहे कुरलाईआ। नाता तुट्टया बूरा कक्का, संगी संग ना कोए वखाईआ। किसे दी कीमत पए ना टका, लखों कक्ख रिहा वखाईआ। जोत जगदी लट लटा, नूर नुराना नज़री आईआ। जो वसे घट घटा, ओह गोबिन्द तक्कया माहीआ। जिस ने रूप बदलणा तत्तां बदले शब्दी धार वटा, वट्ट बन्ना रहिण कोए ना पाईआ। दो जहान फिरे नट्ठा, कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश चरणां हेठ दबाईआ। आपणा भेव दस्से किसे ना रता, रत्न अमोलक गुरमुख लए उपजाईआ। सच प्रीत जोड़ के नता, रंग इक्को इक रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। रावी कहे सतिगुर अर्जन मेरे नाल छुहाई छाती, सांतक सति रिहा कराईआ। इशारा कीता ओह तक कमलापाती, जो पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस दे लेखे लग्गी हयाती, जीवण ओसे दी झोली पाईआ। ओसे दा दीपक ओसे दी वेखे बाती, ओसे दा नूर डगमगाईआ। जिस कलयुग कल मेटणा काती, कल्की आपणा फेरा पाईआ। लख चुरासी पुछे वाती, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। चार जुग दी पिछली सब दी वेखे पाती, पत्रिका भविक्ख्तां वाली फोल फुलाईआ। झगड़ा मेटे ज़ात ज़ाती, आत्म ब्रह्म इक समझाईआ। खेल करे बहु बिध भांती, भेव आपणा आप छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। रावी कहे मेरे अन्दर आई आह, हौका भर के दिता सुणाईआ। किहो जेहा बेपरवाह, मैनूं दे वखाईआ। जिस दे पिच्छे आपणा तन चलया तजा, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। सतिगुर हस्स के किहा ओह जल्वागर खुदा, नूर नुराना डगमगाईआ। जिस ने कलयुग अन्तिम तेरा कन्ढा मेरा घाट हद्द देणी बणा, उम्मत उम्मती वंड वंडाईआ। सदी चौधवीं लेखा दए चुका, चुकन्नी करे लोकाईआ। मुहम्मद नूं देणा सुणा, कलमा नूर इलाहीआ। उस दा पन्ध देणा मुका, अग्गे आयू ना कोए वधाईआ। शरअ दा शरअ नाल होवे टकरा, शरीअत शरीअत नाल लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। रावी कहे मैं रखी इक्को आस, आसा दयां जणाईआ। जिस वेले आवे पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता धुरदरगाहीआ। निरगुण नूर जोत करे प्रकाश, जोती जाता डगमगाईआ। जन भगतां वसे पास, सगला संग बणाईआ। निज गृह रखे वास, वास्ता आत्म परमात्म आप जुड़ाईआ। शब्द संदेशा देवे आख, धुर दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। जोती जाता प्रगट हो के साख्यात, सन्मुख हो के सोभा पाईआ। चार जुग दे पिछले लेखे वेखे कागज़ात, पड़दा ओहला रहिण कोए ना पाईआ। मेरी मनसा पूरी

करे विच लोकमात, धरनी धरत धवल पूरी आस कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक अगम्म अथाहीआ। रावी कहे मैं दस्सां आवे इक हज़ूर, नूर नुराना बेपरवाहीआ। जिस ने सब दे तकणे कसूर, वेखणहारा थांउँ थाँईंआ। मेरी बेनन्ती करे मंज़ूर, निउँ निउँ लागां पाईंआ। प्रभू भेव खोलू ज़रूर, पर्दा दे चुकाईआ। मूसा दी वाट रहे ना दूर, ईसा लेखे लैणा लगाईआ। मुहम्मद दा तकणा आपणा नूर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। रावी कहे सतिगुर अर्जन मेरे उत्ते मारीआं पंज लीकां, उँगली उँगली नाल बदलाईआ। मेरीआं निकल गईआं चीकां, बौहड़ी बौहड़ी कर कुरलाईआ। उस हस्स के किहा कमलीए ओह तक सदी चौधवीं दीआं अन्त तरीकां, जो तवारीखां सब दीआं दए बदलाईआ। उस वेले मन्दिर मट्ठ कुरलावण शिवदुआले मसीतां, चर्च मारन धाहीआ। दीन दुनी दीआं बदल जाणीआं नीतां, नीतीवान नज़र कोए ना आईआ। कलमे दीआं भुल्लीआं होण सर्ब हदीसां, हज़रतां सीस ना कोए झुकाईआ। शास्त्रां कायम नहीं रहिणीआं: रीतां, ग्रन्थां रंग ना कोए रंगाईआ। सब दीआं नन्नीआं होणीआं पीठां, पुश्त पनाह हथ्थ ना कोए टिकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी तपणा अंगीठा, अमृत मेघ नाँ कोए बरसाईआ। कलयुग जीव होणा अन्तर कौड़ा रीठा, मिट्ठा रस ना कोए भराईआ। जोती जोत सरूप

१७६६ २२ हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। रावी कहे सतिगुर अर्जन अगम्म जणाउंदा ए। भेव अभेद आप खुलाउंदा ए। धुर दा शब्द चार वेद तों परे आप दृढ़ाउंदा ए। परम पुरख अछल अछेद, जिस दा अन्त कोए ना पाउंदा ए। कलयुग अन्तिम आपणा हुक्म देवे भेज, दूजी कार ना कोए कमाउंदा ए। जिस दा जोती नूर तेज, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खेल खिलाउंदा ए। जिस दी अन्तिम गोबिन्द माणणी सेज, सो गोबिन्द शब्दी वेस वटाउंदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणी खेल खिलाउंदा ए। प्रभ आपणी खेल खिलावेगा। दीन दयाल दया कमावेगा। सो पुरख निरँजण डगमगावेगा। हरि पुरख निरँजण नूर रुशनावेगा। आदि निरँजण जोत चमकावेगा। एकँकार वेख वखावेगा। अबिनाशी करता पड़दा लाहवेगा। श्री भगवान आपणी कार कमावेगा। पारब्रह्म धुर दा हुक्म वरतावेगा। शब्दी शब्द शब्द उठावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव आप हिलावेगा। अवतार पैग़म्बर गुर सवाधान करावेगा। जो लहिणा देणा लेखा गोबिन्द दस्सया अनन्दपुर, सो पुरीआं लोआं झोली आप भरावेगा। जिस दे अग्गे नहीं किसे दा ज़ोर, सो जोरू ज़र वेख वेखावेगा। कलयुग अन्तिम आवे वागां मोड़, जोती जाता फेरा पावेगा। जन भगत सुहेले विछड़े लए जोड़, जोड़ी आत्म परमात्म आप दरसावेगा। सृष्टी दृष्टी वेखे विच्चों अंधघोर, घोरी हो के फोल फुलावेगा। १७६६ २२

जिस दे हथ्थ पैग़म्बरां फड़ाई डोर, डौरु डंका इक वजावेगा। नौ खण्ड पृथ्मी तके कलयुग चोर, सत्तां दीपां पन्ध मुकावेगा। मन कल्पणा वेखो शोर, अन्दर वड़ वड़ पड़दे लाहवेगा। जो अर्जन सतिगुर रावी कन्ढे गया बोल, बचन पूरा आप करावेगा। पुरख अकाला हो के तोले तोल, तोलणहारा इक अख्वावेगा। जिस नूं झुकणे कृष्न काहन कला सोल, राम रामा धूढ़ी ख़ाक रमावेगा। जिस दा पैग़म्बरां वजाया ढोल, होका हक इक दृढ़ावेगा। रावी तेरा अन्तिम कन्ढा जावे मौल, मौला हो के आपणा फेरा पावेगा। भाग लगावे उपर धरनी धौल, धवल चरणां हेठ दबावेगा। पर याद रखीं सदी चौधवीं दी गोली कोलों खा के चौल, न्याज़ सब दी बन्द करावेगा। जिस दा भेव मुल्लां शेख़ पंडत पांधा जाणे कोए ना रौल, रौणक आपणी आप वखावेगा। सच दवारा इक्को खोल्ह, ख़ालक ख़लक नाम वरतावेगा। जन भगत सुहेले चुरासी विच्चों लए टटोल, फड़ बांहो गोद बिठावेगा। आप रहे सदा अडोल, दीन दुनी आप डुलावेगा। दीनां मज़्हबां कराए घोल, दो धड़ वंड वंडावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगावेगा। सच दा रंग आप रंगावेगा। दीन दयाल दया कमावेगा। परम पुरख वेस वटावेगा। जोती जाता डगमगाएगा। नर नरेश इक अख्वाएगा। देस परदेस फेरा पाएगा। कल कलेश जगत मिटाएगा। गुर दस दशमेश जोत जगाएगा। जिस दे भविक्ख्तां विच लिखे लेख, सो लेखा पूर कराएगा। जिस दे पिच्छे सीस विच तत्ती पवाई रेत, ओह थल मारू फोल फुलाएगा। उहदा अन्त पाए कोई ना भेत, भेव आपणे विच छुपाएगा। जिस नूं लभ्भदे साध सन्त अनेक, कोटन कोटी वेख वखाएगा। जन भगतां बख्श के आपणी टेक, मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाएगा। करके बुध बिबेक, नूरी जोत जोत चमकाएगा। त्रैगुण माया लाए ना सेक, काया विच मन्दिर अन्दर अग्नी तत बुझाएगा। कूड़ी क्रिया मेट के भेख, भाण्डा भरम भउ भनाएगा। लेखा मेटे मुल्लां शेख़, पीर गौंस औलीआ नज़र कोए ना आएगा। जो पुरख अकाला दीन दयाला सदा रहे हमेश, सो साजण आपणी कार भुगताएगा। रावी कहे मैं उस प्रभू नूं करां आदेस, जो कलयुग अन्तिम आपणा हुक्म वरताएगा। धरनी कहे मेरे उतों मेटे कलेश, कूड़ कल्पना; दूर कराएगा। धवल कहे मेरे उत्ते रहिण देवे ना कोए मलेछ, हरिजन साचे मात प्रगटाएगा। किसे दे अग्गे किसे दी चलणी नहीं कोई पेश, पेशवा सारे आपणे विच मिलाएगा। जिस दा इक्को कलमा नाम संदेश, सँध्या सरघी वंड ना कोए वंडाएगा। नव सत्त बख्श के टेक, ओट इक्को इक जणाएगा। जिस दे पिच्छे गोबिन्द बच्चे कीते भेंट, ओह भेंटा कूड़ी सर्ब चुकाएगा। मालक बण के खेवट खेट, बेड़ा इक्को नाम तराएगा। जन भगतां करे हेत, गुरमुख साचे मेल मिलाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाएगा।

सच दा पड़दा आपे लाहवेगा। पुरख अकाल भेव चुकावेगा। दुःख दर्द सर्ब मिटावेगा। गुर अवतार पैग़म्बरां अर्ज़ लेखे लावेगा। कलयुग अन्तिम पूरा फ़र्ज आप कमावेगा। भगतां पूरी करके ग़रज़, ग़रीब निमाणे गोद टिकावेगा। किसे दा होण ना देवे हर्ज, हरिजन हर्जाने विच कदे ना आवेगा। छुरी शरअ खोह के करद, ख़ाली हथ्थ सर्ब फिरावेगा। प्रगट हो के योद्धा सूरबीर मर्दाना मर्द, मुद्दा आपणा इक समझावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच घर इक वसावेगा। सच दा घर इक्को वसेगा। जिथ्थे दीपक जोती जगेगा। अनहद शब्द अनादी वज्जेगा। भगत सुहेले साचे लभ्भेगा। गुर चेले सन्त फ़कीर धुर दे सद्देगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवार एका फब्बेगा। रावी कहे मैं दस्सां सदी चौधवीं अन्त किहदी शरारत, शरअ शरअ नाल टकराईआ। जिस नूं समझे ना कोई इबारत, बुद्धी अक्ल चले ना कोए चतुराईआ। परम पुरख सब नूं लैणा विच हिरासत, सिर सके ना कोए उठाईआ। जिस ने नाम कलमे दी दिती विरासत, जुग जुग झोली पाईआ। करदा आया सदा हिफाजत, सिर सिर हथ्थ टिकाईआ। जिस दे कोलों लैंदे रहे इजाज़त, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। ओह सदी चौधवीं अन्त ख़ुद कराउण लग्गा बग़ावत, बग़लगीर रहिण कोए ना पाईआ। जिस कलयुग कूड़ी क्रिया कीती शख़ावत, माया ममता झोली नाल भराईआ। हउमे हंगता दिती न्यामत, घर घर जगत वरताईआ। सो खेल करे सही सलामत, पुरख पुरखोतम अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे अवतार पैग़म्बर गुर किसे दा नहीं कोई चारा, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। हुक्म वरते हरि निरँकारा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। वेस वटाए चवीआं अवतारा, जगत जगदीशा बेपरवाहीआ। जिस ने कलयुग अन्तिम करना पार किनारा, नईया अधविचकार ना कोए अटकाईआ। शाहो भूप बण सिक्दारा, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। रावी बख्श के चरण धूढ़ी छारा, टिक्का धर्म धार लगाईआ। नारद दा लहिणा अपर अपारा, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नाल मिलाईआ। भज्जीआं आईआं करके चारा, सीढ़ीआं हेठां आसण लाईआ। की हुक्म मिले सच्ची सरकारा, की संदेशा धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर मालक दया कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे नारद आ अग्गे, नर नरायण जणाईआ। नारद दोवें हथ्थ बध्धे, निव निव लागे पाईआ। प्रभू गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती लै सद्दे, हुक्म फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। इन्हां दा आउणा जाणा लेखे लग्गे, मेहर नज़र नाल तराईआ। तेरा इक्को दीपक जगे, दो जहान होवे रुशनाईआ। इन्हां विचारीआं ने साधू सन्त छड्डे, ऋषीआं पल्लू आईआं छुडाईआ। नाते तोड़े बुढे नढे, जवाना अक्ख ना कोए मिलाईआ।

क्यों तटां उत्ते ठग्गां चोरां यारां बणाए अड्डे, सति धर्म नज़र कोए ना आईआ। कूड़ निशाने बैठे गड्डे, छत्तरी ब्राह्मण शूद्र वैश धर्म विच ना कोए समाईआ। पार करदीआं आईआं डूंघे खड्डे, भज्जीआं आईआं वाहो दाहीआ। वेंहदीआं आईआं जिन्हां खाधे ढग्गे वच्छे कटे, ढोरां खल्ल लुहाईआ। ओह मानस मानव मानुख धर्म राए दा दिसे वग्गे, वागी पाली हो ना कोए बचाईआ। रावी कन्ढे तेरी पहुंचीआं हद्दे, हद्द इक्को वेख वखाईआ। अग्गे सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गए लद्दे, आपणा पन्ध मुकाईआ। कलयुग बिन तेरे नूर कोए ना लभ्भे, जोती जोत ना कोए रुशनाईआ। आह वेख सज्जे खब्बे, अग्गे पिच्छे अक्ख उठाईआ। सन्त मंज़ल चढ़े ना कोए शाह रगे, नौ दवारे पन्ध ना कोए मुकाईआ। जिधर तक्कीए हुन्दे दग़े, भेव सच ना कोए खुल्हाईआ। नेत्र रोवण बुढे नढे, जोबनवन्ते मारन धाहीआ। इन्हां विचारीआं ने पिछले साक सज्जण छड्डे, नाता आईआं तुड़ाईआ। तेरे नाम दे प्यार दे चाहुंदीआं मज़े, रस इक्को देणा वखाईआ। सदी चौधवीं कुछ विगड़या नहीं अजे, अज़ल सब दे सिर ते कूक कूक सुणाईआ। मेहरवान तेरा दर्शन पाईए यदे, यदी आपणा पड़दा देणा उठाईआ। सब दे निरगुण धार हथ्थ बध्धे, सरगुण नज़र कोए ना आईआ। तेरी सरन सरनाई लग्गे, लग मात्रा दा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक दया कमाईआ। पुरख अकाल कहे सुण

१७६६ २२

नारद मुनी, मुन सुन्न तों बाहर जणाईआ। मेरी शब्द धार दी धुनी, धुन आत्मक राग दृढ़ाईआ। धुर दा हुक्म वड गुण गुणी, गहर गम्भीर आप समझाईआ। जिस साहिब ने जन भगतां दी लेखे लाई पगड़ी चुन्नी, सिर सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। ओह लज्जया रखे विच दीन दुनी, दो जहानां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण सब दी पुकार रिहा सुणी, अणसुणत आपणी दया कमाईआ।

✪ २६ माघ शहिनशाही सम्मत ७ रणजीत सिँघ कल्सीआं, तरिप्त कौर दे प्रशाद कराउण ते हरि भगत दवार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

माघ कहे मेरा दिवस उनत्ती लँघदा, खुशीआं नाल रिहा जणाईआ। परम पुरख तों इक्को वस्त मंगदा, दर ठांडे झोली डाहीआ। प्रभ जन भगतां लेखा मुका दे भुक्ख नंग दा, तोट रहे ना राईआ। सुख दे दे आपणे अनन्द दा, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। तेरा खेल सूरे सरबंग दा, शाह पातशाह इक अख्वाईआ। निशान रहिणा नहीं तारे चन्न दा, भगत

निशाने देणे झुलाईआ। जे तेरा समां होणा कलयुग अन्तिम जंग दा, चार कुण्ट दुहाईआ। गुरमखां पैंडा मेटणा कूड़े पन्ध दा, पाँधी रूप ना कोए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक दया कमाईआ। उनत्ती माघ कहे मैं देंदा जावां असीस, प्रभ सच दया कमाईआ। जन भगतो तुहाडा मालक इक जगदीश, जिस नूं जगदीशर कहि के सारे सीस निवाईआ। जिस नूं झुकदे मुहम्मद मूस ईस, पैग़म्बर निउँ निउँ लागण पाईंआ। छत्र झुलणा उस दे सीस, छत्रधारी सारे सीस निवाईआ। जिस लेखा पूरा करना बीस इकीस, एकँकारा वड वड्याईआ। साचा कलमा दस्स हदीस, नाम निधान इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि साहिब इक अख्वाईआ। माघ कहे मेरी अन्त नमों नमों निमस्कार, डण्डावत विच सीस झुकाईआ। खेल वेखो परवरदिगार, की करता कार कमाईआ। जिस नूं झुकदे पैग़म्बर गुर अवतार, निरगुण सरगुण सीस झुकाईआ। सो शाह पातशाह सच्ची सरकार, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगत सुहेले देवे तार, तारनहार आप हो जाईआ। सब दा लहिणा देणा देवे कर्ज उतार, वस्त अमोलक अगम्म आप वरताईआ। जन भगतो जीवत रहो सदा जुग चार, चौकड़ी आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा आदि अन्त ना पारावार, बेअन्त बेपरवाह आपणा हुक्म वरताईआ।

१८००
२२

पहली फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल रात नूं ज़िला अमृतसर

नारद कहे ओए आ गया एं भरावा फग्गणा, फग्गू सीस उत्ते टिकाईआ। तैनूं केहड़ी चढ़ी रंगणा, रंग रतड़े देणा समझाईआ। दस्स खैर किस दे कोलों मंगणा, झोली किस दे अग्गे डाहीआ। केहड़ा लैणा सुख अनन्दना, अनन्द देणा समझाईआ। कि लेखा लैण आयों तारा चन्दना, चन्द सितार वेख वखाईआ। दस्स केहड़े प्रभू नूं केहड़ी बन्दना, बन्दगी विच सीस झुकाईआ। हुण किस दवारे लँघणा, खिड़की कुण्डा खुल्हाईआ। किधर लाउणी अग्गना, अग्नी तत बुझाईआ। सच दस्स तेरे मालक दा किथे दीपक जगणा, किधर किधर होवे रुशनाईआ। मेरे मित्र प्यारे सज्जणा, सच सच देणा सुणाईआ। की खेल वेखे आहला अदना, ऊचां नीचां भेव चुकाईआ। झगड़ा मेटे काया माटी बदना, बदी दा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। फल्गुण कहे नारद पहलों आपणी टिका सुरत, सुरती विच लै अंगड़ाईआ। फेर नेत्र खोल्ह तुरत, निज नेत्र लोचण अक्ख उठाईआ। आह वेख अकाल

मूर्त, अजूनी आपणा वेस वटाईआ। जिस दा नाम कलमा तूरत, तुरीआ तों बाहर समझाईआ। उस ने सम्मत शहिनशाही अट्ठ मक्के काअब्यां करना महूरत, मोहरी आपणी कार भुगताईआ। जिस दी सब नूं पैणी ज़रूरत, ज़रूर खोजण थांउँ थाँईंआ। ओह नूर नुराना नूरत, नूर नूर करे रुशनाईआ। झगड़ा मेटे कूड़ कूड़त, सच सच प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी वंडण वंड वंडाईआ। नारद कहे फग्गणा ऐंवें ना मार नाअरे, कूक कूक सुणाईआ। तूं नहीं जाणदा किड्डे वड्डे एस प्रभू दे लारे, लारयां विच जुग चौकड़ी दए लँघाईआ। सच पुछें मेरे वरगे वेख लै भगत कुँवारे, चार जुग सगण ना मुख लगाईआ। कई मैथों वी माढ़े एस ने तारे, तारनहार वड वड्याईआ। पर एहदे विच इक गुण जुग जुग ज़रूर धरती उत्ते लाउंदा अखाड़े, खण्डा खड़ग दए खड़काईआ। लाड़ी मौत नाल व्याहे जगत दे लाड़े, जिन्हां दीआं लाड़ीआं रोवण मारन धाहीआ। एह दिन दिहाढ़े मारे धाड़े, डाकू आपणी कार भुगताईआ। अग्ग लावे बहत्तर नाड़े, अग्नी तत तत तपाईआ। जिस ने अणगिणत अवतार पैग़म्बर गुरु आपणे विच वाड़े, वाड़ शब्द वाली कराईआ।

१८०१
२२

जदों दिल चाहे उहनां नूं लोकमात वाहे उत्ते भाड़े, नाम कलमे दी कीमत हथ्थ फड़ाईआ। ओह एसे विच मुच्छां नूं वट्ट गए चाढ़े, लबां कट के खुशी बणाईआ। पर पता नहीं लग्गण दिता सब नूं करदा रिहा दुफाड़े, हिस्से वंडां मज़्बां वालीआं पाईआ। जिस ने जुग जुग वसदे जगत उजाड़े, उजाड़ के फेर दए वसाईआ। ओह वेख अवतार पैग़म्बर गुरु कढदे हाढ़े, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। किरपा कर परवरदिगारे, मेहरवान तेरी सरनाईआ। साडी रुत मौली रहे विच संसारे, पत्त टहिणी नाल महकाईआ। पर फल्गुणा धुर दा हुक्म अन्त ज़रूर करे पत्त झाड़े, चार कुण्ट वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। फल्गुण कहे मैं की दस्सां, दस्सण दी लोड़ रही ना राईआ। मैं खुशीआं विच हस्सां, हस्ती तक बेपरवाहीआ। मैनूं वक्त मिल्या मसां, मसल मल के दयां जणाईआ। मैं उस दे दवारे वसां, जिथ्थे वसल मिले बेपरवाहीआ। जिसनूं लभ्भदे कोटन ते लक्खां, अणगिणत ध्यान लगाईआ। मेरीआं उस दे चरण लग्गीआं अक्खां, नेत्र नैण रहे बिघसाईआ। निरगुण धार टेकां मथ्था, मस्तक ख़ाक रमाईआ। सेवा करां बिन हथ्थां, भज्जां वाहो दाहीआ। उस दे सथ्थर लथ्था, जो यारड़ा इक अख्वाईआ। जिस लहिणा मुकाउणा तत्तां अट्ठां, नवां खण्डां खोज खुजाईआ। मैं उस ते डोरी सट्टां, जो सिट्टा जाणे ख़लक ख़ुदाईआ। झगड़ा मेटणा पथ्थर इट्टां, सिल पाहन पूजण पन्ध मुकाईआ। जिस दे नाम दीआं चार जुग दे शास्त्र चिटां, निशाने जगत विच झुलाईआ। उस दयां चरणां विच लिटां, जो मेरी महक रिहा महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच

दा रंग आप रंगाईआ। फल्गुण कहे मेरी रुत सुहावी, सुहञ्जणी नज़री आईआ। मेरा राह तके जगत दी भावी, दूर दुराडी अक्ख उठाईआ। जिस दी तुक अर्जन ने गावी, गा गा शुकर मनाईआ। ओह चरण छुहा के आया उत्ते रावी, राम रामा बेपरवाहीआ। उस ने दीन मज़्हब दी धार रहिण नहीं देणी लावीं, इक्को रंग देणा रंगाईआ। नारदा उस प्रभू दे दर ते जावीं, जा के सीस निवाईआ। जिस ने सारी सृष्टी करनी निथावीं, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। मेरा संदेशा इक सुणावीं, सहिज नाल समझाईआ। पुत्रां प्यार नहीं रहिणा मावीं, पिता पूत ना कोए वड्याईआ। जगत दा बल तकणा बाहवीं, बाहू बल इक प्रगटाईआ। जिस दे हुक्म नाल चिट्टे ते काली लग्ग गई शाही, शहिनशाह आपणी कार भुगताईआ। जिस चार जुग दे वेखणे राही, गुर अवतार पैग़म्बर आप उठाईआ। ओह बड़ा चलाक ते बड़ा दाई, दाइरा आपणा ना किसे समझाईआ। सब नूं कहिंदा रिहा अवतार पैग़म्बर गुरुओ मैनूं लओ ध्याई, चरण कँवल सीस निवाईआ। अणगिणत नाम भण्डारे विच्चों चहुं युगां दे अवतार पैग़म्बर गुरुआं नूं सिर्फ़ लाईनां दस्सीआं ढाई, जिन्हां ढाईआं विच्चों चार जुग दे शास्त्र दिते लिखाईआ। अन्त सब नूं रिहा रुवाई, रोहब आपणा रिहा जणाईआ। मैं हैरान ओस ने अवतार पैग़म्बरां गुरुआं नूं बणन नहीं दिता भाई भाई, वैरी वैरी कर के दिते टकराईआ। अक्खरां वाले नाम नाल कर दिते शुदाई, शौहर छोहर ने आपणे हिस्से दिते समझाईआ। जाओ लोकमात बणो रसत्यां दे चुराही, चारे जुग वंड वंडाईआ। इक दा हिन्दसा दस्स के इकाई, नाल ला दिती दहाई, जिस दहाई ने दुहाई निरगुण सरगुण दिती पाईआ। फिर ओह दहाई हुक्म नाल दिती मिटाई, फिर निरगुण दा निरगुण नज़री आईआ। निरगुण नूर जोत कर रुशनाई, दीपक इक्को डगमगाईआ। फग्गण कहे नारदा ओह मेरा मालक इक गुसाँई, गहर गम्भीर बेपरवाहीआ। नारद कहे फग्गणा ऐवें ना जा वड्याई, सिफ्तां विच सालाहीआ। मैनूं ते ऐं जापदा भोला भाला जट्ट ते करदा वाही, वहिदे पिछले पूर कराईआ। फल्गुण कहे नहीं ओए नारदा एह शब्द सतिगुर जिन्ह गोबिन्द तों इक्ठे कराए छींबे नाई, झीवर जट्टां गंढ पवाईआ। नारद कहे फग्गणा एह बड़ा कसाई, जुग जुग दीनां मज़्हबां वाली छुरी बणा के गुरुआं हथ्थ फड़ाईआ। हुण ऐवें सब नूं जांदा दबाई, दबदबे नाल डराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। नारद कहे फल्गुणा तेरा मालक बड़ा उस्ताद, उस्तादी विच वड्याईआ। जे मैनूं जावे लाध, मिल के ख़ुशी बणाईआ। मैं वी लवां अराध, वज्जे सच वधाईआ। पर मैं सुणयां नहीं कदे उसदा नाद, की धुन करे शनवाईआ। जुग चौकड़ी रिहा जाग, जगराते कट के आपणे झट लँघाईआ। दीन दुनी दा कीता त्याग, त्यारी हो के निउँ निउँ लागां पाईआ। बिना उस दी किरपा तों पूरन होए किसे ना भाग, भागहीण सर्ब अख्वाईआ। त्रैगुण बुझे

कदे ना आग, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। मैं निव निव निमस्कारां करां उस महाराज, जो शहिनशाह अख्वाईआ। जिस पिच्छे दीन दुनी तज्या जाए राज, शहिनशाही कम्म किसे ना आईआ। उस दा अनोखा वेख्या समाज, समग्री कम्म किसे ना आईआ। जिस भगतां दा खेड़ा कीता आबाद, हरिजन साचे विच टिकाईआ। देण आया आप इमदाद, बख्शिश रहमत सच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप रखाईआ। फल्गुण कहे नारदा मेरा साहिब सच्चा स्वामी, मेरी रुत सुहाईआ। जो हर घट अन्तरजामी, अन्तर निरन्तर वेख वखाईआ। मेरी होण ना देवे बदनामी, बदी दा डेरा ढाहीआ। मालक बण अगम्म अनामी, नाम नाम देवे चाँईं चाँईंआ। जिस दी सिफ्त वड्याई अक्खरां वाली बाणी, बोध अगाधा इक जणाईआ। अमृत रस बख्शे पाणी, बूँद स्वांती निजर झिरना इक झिराईआ। जिस ने रीती रहिण नहीं देणी पुराणी, मार्ग इक्को इक प्रगटाईआ। धर्म धार उपजाउणी निशानी, निशाना इक्को इक जणाईआ। जिथ्थे भगतां नूं देणी ना पए कुरबानी, सीस धड़ ना कोए वंड वंडाईआ। ओह शहिनशाह शाह सुल्तानी, पातशाह इक अख्वाईआ। उस दा हुक्म संदेशा नहीं जिंबानी, लिख लिख के दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। फल्गुण कहे मेरा साहिब सूरा सरबंग, मेहरवान अख्वाईआ। ओह

१८०३ २२ समुंद सागरां जाए पार लँघ, चरण कँवल आप टिकाईआ। जिस दे नाल निशान होवेगा तारा चन्द, अम्बर नीले नाल वड्याईआ। १८०३ २२

तीर कमान नाल लए टंग, भथ्था गोबिन्द वाला माहीआ। गॉड लिख्या होवे नाल प्रेम अनन्द, अक्खर सिफ्तां विच सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ। फल्गुण कहे सम्मत अट्ठ खेल महाना, साहिब मेरे वड्याईआ। प्रगट हो के नौजवाना, मर्द मर्दाना लए अंगड़ाईआ। जिस ने देस परदेस जाणा, साल बसाल साल तिन्न वंडाईआ। ज़रूर गुरमुखां हथ्थीं बध्धा होवेगा गाना, लाल तन्द रंग रंगाईआ। साढे तिन्न हथ्थ नाल रखया होवेगा काना, कसीरा रविदास नाल बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। फल्गुण कहे नारदा मैं हस्स के मारां ताली, तलीआं ज़मीन उत्ते घसाईआ। प्रभू दा खेल तकणा हाली, जो मेहर नज़र रिहा उठाईआ। जेहड़ा जुग चौकड़ी कदे नहीं करदा काहली, सहिज सहिज आपणा रंग रंगाईआ। सम्मत शहिनशाही नौ विच गुरमुख सिँघ दे सीस पग्ग होवेगी काली, परदेस प्रभ दे नाल जाणा थांउँ थाँईंआ। हरिसंगत प्रेम प्रीती करनी बाहली, प्यार मुहब्बत इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी वंड आप वंडाईआ। फल्गुण कहे मैनूं आउंदी जांदी धार, धुर दा हुक्म आप सुणाईआ। सम्मत दस विच खेल अपार,

अपरम्पर स्वामी देणा कराईआ। शहिनशाही सम्मत दस निउँ के करे सवाल, झोली अग्गे डाहीआ। बख्श दे धन माल, वस्त अगम्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी वंड आपणे हथ्थ रखाईआ। सम्मत दस कहे मेरी एह नीत, नीतीवान हो के दयां जणाईआ। मेरी साहिब नाल प्रीत, प्रभू प्रीतम देवे माण वड्याईआ। मेरे विच प्रभ दे नाल लिखारी होवेगा सिँघ सुरजीत, सिर सिर माण वड्याईआ। दविन्दर कौर नाल गाएगी नौ गीत, नवां देसां सोभा पाईआ। पंज गुरमुख होर नाल होणगे ठीक, जिन्हां नूं पुरख अकाल चरण प्रीत दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। फल्गुण कहे मैनूं कहिंदे फग्गण, दीन दुनी सुणाईआ। प्रभ दा दीपक लग्गा जगण, जगत जहान होए रुशनाईआ। जन भगतां दा डंका डौरु लग्गा वज्जण, निव निव करे शनवाईआ। जुग चौकड़ी विछड़यां लग्गा सद्दण, होका हक दृढ़ाईआ। आओ सब दा झगड़ा मिटया काया बदन, तन वजूद कलबूत करां सफ़ाईआ। पिछली क्रिया लग्गा दब्बण, कूड़ मलेछ मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी गंढ आप पवाईआ। फल्गुण कहे मैं दस्सां खेल गहर गम्भीरा, भेव अभेद जणाईआ। प्रभ प्रगट होवे पीरन पीरा, पतिपरमेश्वर नूर इलाहीआ। जिस दी सब तों वक्खरी तस्वीरा, तसव्वर कर ना कोए दृढ़ाईआ। जन भगतो पहली चेत्र खुशीआं नाल आउणा घत्त वहीरा, दर ठांडे वज्जे वधाईआ। सवा सेर दा वरतीरा, सम्मत सोलह लालो वाला नाल लिआईआ। भगतां दा भण्डारा इक होणा ग़रीबां अमीरां, अमरापद दए जणाईआ। सब ने सीस ते चिट्टा बन्नू के आउणा चीरा, बिन्दी लाल मस्तक विच छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। फल्गुण कहे प्रभू दा खेल जगत जग आबा, मत्तस कच्छप लेखा दए मुकाईआ। राह तके ख्वाजा खिज़र बाबा, दूरों बैठा सीस निवाईआ। खेल वेखणा नाल सबाबा, ख़ालक ख़लक की वरताईआ। की जन भगतां होवे लाभा, सच दर मिले सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप सुणाईआ। पहली चेत कहे मेरा दिवस सब ने याद रखणा, सम्मत शहिनशाही अठ्ठ नाल वड्याईआ। हरिसंगत सतिगुर चरण इक्की करनीआं प्रदखणा, सज्जे हथ्थ भवाईआ। गुरसिख निमस्कार करे ना कोए हथ्थ सक्खणा, सिर सर निउँ निउँ लागे पाईआ। जेहड़ा कौल इकरार कीता सी गोबिन्द नाल पटना, जन्म लैण समें शब्द जणाईआ। तैनूं इक्को रंग रंगणा, रंग अनमोल देणा वखाईआ। तैनूं लै के जाणा पार किनारे पतणा, घाट दिता समझाईआ। वेखणा जगत दा वतना, बेवतनां खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि,

१८०५ सच दा रंग आप रंगाईआ। फग्गण कहे मेरा प्रविष्टा पहला, परम पुरख मिली सरनाईआ। मैं कदे ना होवां अनगैहला, सवाधान हो के सीस निवाईआ। जन भगतां विच खुशीआं नाल टहलां, फिरां चाँईं चाँईंआ। नाले दस्सां गुरमुखो तुसां वड़ना विच सचखण्ड दे महलां, जिस दा मुहल्ला नज़र किसे ना आईआ। क्यों तुहाडे साहिब ने तुहाडा मार्ग कीता सहला, मेहर नज़र नाल तराईआ। जिथ्थे हुन्दीआं प्रेम दीआं पहल चहलां, खुशीआं वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। फग्गण कहे मेरी निमस्कार डण्डावत, निव निव लागां पाईंआ। प्रभू प्रेम दी कर सख़ावत, बख्शिश विच नाम वरताईआ। भगतां विच ना रहे अदावत, कूड़ी क्रिया देणी गंवाईआ। सति धर्म दी देणी न्यामत, वस्त अगम्म वरताईआ। मनुआ करे ना किसे बग़ावत, बग़लगीर लैणा बणाईआ। बच्चे तेरे अणजाणत, सिर तेरा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी सच नाल चतुराईआ। फल्गुण कहे जन भगतां फल फुल्ल मौले, फुलवाड़ी सोभा पाईआ। पूरा होए वायदा कौले, इकरार वेख वखाईआ। मिले वड्याई उपर धौले, धर्म दी वज्जे वधाईआ। पुरख अकाला सच दवारा इक्को खोले, ख़ालक ख़लक दए वखाईआ। निरगुण धार तोल तोले, सरगुण आपणे कंडे टिकाईआ। जन भगतो खुशीआं नाल गाउणे ढोले, तूं मेरा मैं तेरा चाँईं चाँईंआ। तुहाडा मालक हुण निकलण लग्गा विच्चों पड़दे ओहले, करवट आपणी रिहा बदलाईआ। जिस ने पहली वार भारत तों बाहर पंज रंग दे खड़ने चोले, चोली आपणी रिहा बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। फल्गुण कहे मैं दस्सां नाल प्यार, प्रेम विच जणाईआ। जो गुरमुख नाल जाणगे पार, संमुद सागरां पन्ध मुकाईआ। सीस ते पट्टीआं बन्नणगे सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै लिख के लिखार, साचा सगन मनाईआ। तिन्न रंग दे गल विच होणगे हार, सूहा पीला लाल नाल वड्याईआ। सोहँ छाती उत्ते लिख्या होवे कमाल, सज्जे खब्बे सोभा पाईआ। सज्जे गुट्ट ते होवे चिट्टा रुमाल, गंढ इक्को इक बंधाईआ। इक नाल रखणी तलवार ते ढाल, जो कृष्न अर्जन नाल आसा गया रखाईआ। इक भूरे रंग दी रखणी दुशाल, जो बावन बल दवारे रंग रंगाईआ। तेरां सौ सतासी रिषीआं करना ध्यान, नेत्र नैण अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सच सति सरनाईआ। फल्गुण कहे बावन दा इतहास, समझ किसे ना आईआ। बल दा निवास, चरण कँवल सरनाईआ। पिता पूत जमात, मिले माण वड्याईआ। पूरब लेखा खात, सब दा वेख वखाईआ। चरण प्रीती नात, जोड़ा रिहा जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। फल्गुण

कहे मैं वेखां पिछली किताब, पूरब खोज खुजाईआ। दर्शन सिँघ दे मुख ते होवेगी नकाब, काले वस्त्र नाल वड्याईआ। सदी चौधवीं दी नाल खड़नी पोशाक, भुल्ल रहे ना राईआ। गोली तारे चन्द वाला वस्त्र कर के साफ़, नाल लैणा बंधाईआ। अमरजीत सिँघ कोल नौ होणगे कार्ड, जिन्हां नूं काट कहे लोकाईआ। तृप्त ने आपणी कन्नी नूं दे के रखणी गांठ, चौदां दिन ना मात खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सच नाल वड्याईआ। फल्गुण कहे कपूर सिँघ दा कमीज़ होवेगा लाल, लाल रंग रंगाईआ। नाज़र सिँघ दे हथ्थ विच होवेगी ढाल, खब्बे हथ्थ टिकाईआ। खेल वेखे पुरख अकाल, गुणवन्त नूर इलाहीआ। जिस ने सब दा हल्ल करना सवाल, सवाली बचया रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। फल्गुण कहे मेरा साहिब सज्जण सुहेला, देवे माण वड्याईआ। जो गुरमुखां करदा मेला, मेले चाँईं चाँईंआ। तीजे साल प्रीतम सिँघ ते नाल त्यार रहे सिँघ चेला, चार कुण्ट वज्जे वधाईआ। तिन्न गुरमुख ओह दस्सांगा जिस वेले आया जाण दा वेला, भेव भेव विच्चों चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा मालक इक अख्वाईआ। फल्गुण कहे नारदा तक लै इक नज़ारा, नज़र नैण उठाईआ। वेख हरि निरँकारा, निरगुण नूर इलाहीआ। जिस ने सब दा लौहणा उधारा, बाकी रहिण कोए ना पाईआ। मैं उस नूं करां निमस्कारा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तेरा खेल तकणा कलि कल्की अवतारा, अमाम अमामा पड़दा देणा उठाईआ। जिस दीआं खुशीआं वालीआं बहारां, रंग रतड़ा बणे बेपरवाहीआ। जिस दीआं नौ खण्ड पृथ्मी सिफ्तां दीआं गाउणीआं वारां, कलमा नाम वाला जणाईआ। जिधर जावे हिलाउंदा जाए तारां, तार सितार आप हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा अन्त ना पारावारा, बेअन्त आपणा हुक्म वरताईआ।

१८०६
२२

✪ २ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ जोगिन्दर सिँघ डेढ गवाड़, मुणशा सिंघ बाबूपुर, परसिंन कौर वरपाल,
प्रीतम सिँघ मदी पुर, सुरजीत कौर धर्म कोट, संसार सिँघ जज़ाखुरद,
हरि भगत दवार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

फल्गुण कहे मेरी मौली रुत, रुतड़ी प्रभ आप महकाईआ। संग रलाए भगत सुहेले सुत , दुलारे धुर दे जोड़ जुड़ाईआ। किरपा करी अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। जिन्हां दा जन्म मरन दा मिटया दु:ख, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ।

१८०७
२२

आत्म परमात्म दए सुख, कल्पणा कूड़ दए मिटाईआ। उज्जल करे दो जहानां मुख, एथे ओथे होए सहाईआ। उलटा गर्भ ना होणा पए रुख़, राय धर्म ना दए सज़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्से के तुक, सोहँ ढोला दिता दृढ़ाईआ। शब्दी सतिगुर हो के गोदी लए चुक्क, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि साहिब वड वड्याईआ। फग्गण कहे मेरा भाग चंगेरा, मिली माण वड्याईआ। पुरख अबिनाशी कीती मेहरा, मेहर नज़र उठाईआ। रूप प्रगट अगम्मी शेरा, शहिनशाह आपणा रंग रंगाईआ। इक्को रंग रंगा के गुरु गुर चेरा, निरगुण निरगुण वज्जे वधाईआ। जन भगत सुहाए खेड़ा, काया मन्दिर सोभा पाईआ। सदी चौधवीं बन्ने बेड़ा, कलयुग अन्तिम आप तराईआ। दर्शन देवे नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। आवण जावण लेखा मुके अण्डज जेरा, उत्भुज सेत्ज रहे ना राईआ। नव नौ चार पिच्छों पाया फेरा, जोती जाता पुरख बिधाता आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक दया कमाईआ। फग्गण कहे मेरी आशा पुन्नी, पुनह पुनह सीस निवाईआ। सुणया नाद शब्द दी धुनी, अनहद नादी राग जणाईआ। किरपा करे मेहरवान प्रभ गुनी, गहर गम्भीर दया कमाईआ। जिस भगतां पुकार सुणी, सचखण्ड निवासी पड़दा दए उठाईआ। ग़रीब निमाणयां सीस दस्तार बख्श के चुन्नी, चारे कूटां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। दस्तार कहे मेरी निमस्कार, प्रभ साचे सीस निवाईआ। जन भगतां उतों मैनूं दिता वार, वारना करके सीस टिकाईआ। चरण कँवल जावां बलिहार, निव निव लागां पाईंआ। माण दिता विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी वेख वखाईआ। सचखण्ड बैठे तकण पैग़म्बर गुर अवतार, बिन नैणां नैण तकाईआ। की खेल परवरदिगार, की करता कार कमाईआ। जिस लख चुरासी विच्चों भगत सुहेले लए उभार, फड़ बाहों बाहर कढ्ढाईआ। अन्तिम उन्नां दी रुत मौले खुशी बसन्त होवे बहार, पवण ठंडी ठार चलाईआ। निज नेत्र सदा सद देंदा रहे दीदार, दिब्ब नेत्र आप खुल्हाईआ। फग्गण कहे मैं आपा जावां वार, धूढ़ी धूढ़ ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शाह पातशाह सच्ची सरकार, शहिनशाह इक्को घर आपणे दए वड्याईआ।

★ २ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ हरि भगत दवार जेठूवाल रात नूं ज़िला अमृतसर ★

हस्स के कहे अब्बू बक्कर, मुहम्मद सीस निवाईआ। जगत न्याज़ आउणी चावल शकर, शुकराने विच खुशी बणाईआ। ओह तोली होए नाल अगम्मी तकड़, सेर धड़ी वंड ना कोए वंडाईआ। जिस नूं ग़ौर नाल वेखणगे सवा लख फ़क्कर, फ़कीर फ़िकरा इक्को गाईआ। जिस दा लेख लिख्या नहीं किसे उत्ते पत्र, कलम शाही कागद ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि दाता धुरदरगाहीआ। हस्स के कहे ऐली अल्लाह, अली खुशी नाल जणाईआ। परवरदिगार बेपरवाह, बेऐब नूर अलाहीआ। वाली बण के धुरदरगाह, दो जहानां खोज खुजाईआ। चौदां तबकां पड़दा रिहा उठा, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। जिस दा सदी चौधवीं तके राह, जो रहिबर नूर इलाहीआ। जिस नूं हज़रत कहि के आए खुदा, खुद मालक वड वड्याईआ। ओह जोती नूर कर रुशना, नूर नुराना डगमगाईआ। मकबरे फोले थांउँ थाँ, मुकररा वक्त दए गवाहीआ। जिस दा भेव तीस बतीसा जाणे ना, कुरान कुरह ना खोज खुजाईआ। जो वसे थल अस्गाह, जल थल महीअल रिहा समाईआ। अमाम अमामा आए वेस वटा, नाम दमामा डंक वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। नारद कहे मैं शाह ऐली दस्सां, कलमे कलमा दा रूप बदलाईआ। खुशीआं विच नस्सां, भज्जां वाहो दाहीआ। तुहाडे प्यार दा वेखे रसा, रस्ता अन्दरों खोज खुजाईआ। जिस ने चौदां तबक कच्छा, पाधीआं पन्ध वेख वखाईआ। जिस नूं कहिंदे आए नूर इलाही अच्छा, परवरदिगार वड वड्याईआ। जिस दा कौल इकरार वायदा सच्चा, सदी चौधवीं पड़दा लाहीआ। उस दा लहिणा देणा होए मदीना मक्का, काअब्यां रंग रंगाईआ। फेर उम्मत उम्मती देणा धक्का, दर्दी दर्द ना कोए वंडाईआ। हलूणा मारे बूरा कक्का, मूसा ईसा नाल जुड़ाईआ। सदी चौधवीं पवेगा अन्तिम रट्टा, राईट रिटन लिख के दए वखाईआ। मुहम्मद दा बिन अक्खरां वेखे पटा, पटने वाला नाल मिलाईआ। यसूह दी याद दिलाए सलीव वाला फट्टा, सदी बीसवीं अक्ख उठाईआ। मूसा फिरे नट्ठा, भज्जे वाहो दाहीआ। किसे नूं समझ ना आवे रता, की करता कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। मुहम्मद कहे मेरी उडीके कबर, मकबरा ध्यान लगाईआ। जो करके बैठी रही सबर, सबूरी विच झट लँघाईआ। कवण वेला प्रभ आए शेर बब्बर, भबक आपणा नाम लगाईआ। दीन दुनी दा लेखा करे पद्धर, टिल्ले पर्बत खोज खुजाईआ। पैग़म्बरां पूरी करे सध्धर, तृष्ना नाल मिलाईआ। चार कुण्ट वखावे ग़दर, गदागर होए लोकाईआ। सूफ़ी सन्तां भगतां तारे नाल नदर, मेहर नज़र आप उठाईआ। दरगाह

१८०८
२२

साची दो जहानां करे अदल, इन्साफ़ आपणा आप प्रगटाईआ। झगड़ा मेटे मक्तूल कातिल (कत्ल), कत्लगाह नज़र कोए ना आईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर वखाए इक्को हुब्बेवतन, बेवतना आप जणाईआ। जन भगत सुहेले चुरासी विच्चों कढ के रत्न, अमोलक आपणे रंग रंगाईआ। कलयुग दा घाट कन्ढा वेखे पत्तन, तट किनारे फोल फुलाईआ। करे खेल सूरा समरथन, समरथ आपणा हुक्म वरताईआ। सब दा वायदा पूरा करे बचन, पारब्रह्म प्रभ आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। मुहम्मद आशा कहे मेरी तड़फदी लाश, मुर्दा मुरीद मुर्शद राह तकाईआ। चौदां सदीआं करदी रही तलाश, तबक तबकां परे ध्यान लगाईआ। पिंजर रह ना गया हड्ड नाड़ी मास, रत्ती रत ना कोए जणाईआ। मेरी अन्तर निरन्तर इक्को ख़ाहिश, ख़ालस तेरी ओट तकाईआ। मेहरवान महिबूब पूरी करनी आस, तृष्ना तृखा दूर कराईआ। सच दवारे देणा साथ, सगला संग बणाईआ। जो मैं अन्तिम आया आख, बिन कल्मयां बिन कलम हुक्म सुणाईआ। तूं मालक नूर बख्शणा साख्यात, ज़हूर तेरा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। मकबरा कहे मैं होया रिहा चुप्प, कलमा धुर ना कोए जणाईआ। मेरे मुहम्मद दा आफ्ताब गया छुप, नूर नूर विच समाईआ। मेरे अन्तर आउंदा रिहा दु:ख, दु:ख दु:ख विच टिकाईआ। पर मैं वी मंगदा रिहा सुक्ख, सद सद इक्को मंग मंगाईआ। मेरे मालका ख़ालका जदों आवें ते कदे जन्मीं ना किसे जननी दी विच्चों कुख्ख, नूर नुराने नूर लैणा प्रगटाईआ। मुहम्मद तेरा फ़र्ज़ंद तेरा दुलारा तेरा सुत , जो तेरी गोद विच सुत्ता नज़री आईआ। जिस नूं ज़िमीं अस्मानां तों बाहर रिहा चुक्क, चौदां तबक जो करदा रिहा रहिनुमाईआ। अन्तिम तेरी ओट, ओड़क बिन सयदे सीस निवाईआ। तेरा तकणा प्रकाश नूरी अलाह इक्को जोत, जोती जाते तेरी सरनाईआ। की हो गया जे मुहम्मद दे वजूद दा लेखा मुकाया तेरी मौत, मलकुलमौत सेव कमाईआ। तेरी उस दे नाल नहीं अदौत, झगड़ा नज़र कोए ना आईआ। ख़ाकी पुतला रोया फ़ौत, फ़ातिहा अन्तिम दिता पढ़ाईआ। पर तेरा नूर तेरे विच गया पहुंच, दरगाह साची तेरे सच विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप सुणाईआ। मकबरा कहे तेरा मुहम्मद अलजस, इज इलहा लैज़ूह नूर इलाहीआ। धुर दे मुर्शद बेन्याज़, नोज़ी अज़ी अज़मे ववस सख़ीनो ग़मी तज़ ज़िकेज़ा ज़ाहर ज़हूर तेरी रुशनाईआ। नूरी अलाह नवज़नो ख़ुदा, महिबूबे मुहबते दिल रुबा, ज़ानी अमू कविस्ते इज़लाह नूरे निज़ा निरगुण निरवैर तेरी इक सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा मालक दया कमाईआ। मकबरा कहे मेरे मेहरवान महिबान बीदो, बी खैर या अलाह

तेरी सरनाईआ। मेरी आसा मनसा पूरी कर उम्मीदो, आमद विच तेरा ध्यान लगाईआ। तेरा रूप अनूप सरूप अजीबो, नूर नुराने शाह सुल्ताने डगमगाईआ। मेरी ग़फ्लत विच्चों खोल्ह नींदो, आलस रहिण कोए ना पाईआ। सदी चौधवीं अन्त तेरी उडीको, पूरब पच्छम तेरा राह तकाईआ। वेखीं किते बदल ना देवीं तरीको, तारीख तवारीख आपणी नाल मिलाईआ। तेरे हुक्म दी नाम दी कलमे दी सुणनी इक तमहीदो, बिना तहरीर तकरीर बेनज़ीर आपणा हुक्म देणा सुणाईआ। पैग़म्बर तेरे सब अज़ीज़ो, आलीशान तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, परम पुरख परमात्म तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। मुहम्मद कहे मेरी जोती धार तमन्ना, तृष्ना तामस ना कोए जणाईआ। मेरा परवरदिगार आवे भन्ना, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। मेरा निशान नाल ल्यावे तारा चन्ना, चन्द सितार जिस दी निउँ निउँ लागण पाईआ। नाल इक साढे तिन्न इंच सुनिहरी गोबिन्द वाला बणाया होवे कन्ना, जिस दी पौणा इंच चौड़ाईआ। फेर ओस साहिब नूं मन्नां, जो मानव मानस मानुख सारे रिहा तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दी धार आप प्रगटाईआ। कन्ना कहे मैं गोबिन्द दा निशान, चौदां सौ तीह अंक देण गवाहीआ। मेरा सब तों परे ज्ञान, अलिफ़ ये समझ कोए ना पाईआ। जिंना चिर अवतार पैग़म्बर गुरु मैनूं सारे ना करन परवान, पुरख अकाल अग्गे सीस निवाईआ। ख़ाली झोली डाह के मंगण दान, परवरदिगार साडी झोली दे भराईआ। असीं शरअ दा झगड़ा मेटया तमाम, कलमा नाम ना करे कोए लड़ाईआ। तेरे बरदे होईए गुलाम, ग़ुरबत अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। इक्को वार साचे सजदे विच करीए सलाम, असलामा अलैकम कहि के सीस निवाईआ। तूं बणना मेहरवान, महिबूब आपणी दया कमाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला देवे फेर अगम्म फ़रमान, फ़ुरन्यां तों बाहर जणाईआ। जिंना चिर अवतार पैग़म्बरो गुरुओ सारे इक्ठे ना गाओ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ओना चिर पैग़म्बरो गोबिन्द वाला कन्ना हथ्थ किसे ना आईआ। झट मुहम्मद कहे मैनूं परवान, परम पुरख तेरी सरनाईआ। तूं साडा इक अमाम, अमाम अमामा नूर इलाहीआ। असीं ख़ादम तेरे तमाम, तमन्ना अवर ना कोए जणाईआ। साडा तेरे कदमां उत्ते ईमान, अमलां तों रहित तेरी सरनाईआ। किरपा कर कर मेहरवान, कर ख़ाली तेरे अग्गे डाहीआ। झट शब्द गुरु सतिगुरु दिता फ़रमान, फ़ुरन्यां बाहर सुणाईआ। मुहम्मदा जिस वेले गोबिन्द दा कन्ना आउणा तेरे मुकाम, मुकामे हक खोज खुजाईआ। फेर धरनी उत्ते युद्ध होणा घमसाण, घुंमण घेरी विच लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल करे वाली दो जहान, दोहरी आपणी कार भुगताईआ।

★ ३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ हीरा सिँघ दे गृह अमृतसर शहर ★

सतिगुर किरपा फ़ुरना होवे बन्द, बन्दगी धुर दे नाम विच समाईआ। रसना जेहवा बोल सके ना बत्ती दन्द, परा पसन्ती मद्धम बैखरी इक्को रूप दरसाईआ। घर प्रकाश करे नूर नुराना चन्द, जोती जाता पुरख बिधाता डगमगाईआ। धुन आत्मक सुणाए अगम्मी छन्द, जिस दी सार शब्द आपणी खेल खिलाईआ। निज घर निज गृह आत्म परमात्म आवे अनन्द, रस अनरस आप चखाईआ। जिन्हां बख्शे प्रभू परमानंद, परम पुरख देवे माण वड्याईआ। सो जगत जहान मंज़ल जाण लँघ, त्रैगुण माया अग्नी तत ना कोए तपाईआ। दरगाह साची सचखण्ड दवारे मिले साहिब सूरा सरबंग, पतिपरमेश्वर नूर इलाहीआ। आवण जावण लख चुरासी जम की फाँसी तुट्टे फंद, राय धर्म चित्रगुप्त लेखा रहे ना राईआ। जगत जहान निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण फ़ुरने दा मिटे पन्ध, जिस नूं फुरो मन्त्र प्रभ आपणा दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक दया कमाईआ। फ़ुरने अन्दर जगत जीव जहान, जीव जंत साध सन्त भज्जण वाहो दाहीआ। फ़ुरने अन्दर अवतार पैग़म्बर गुरु मिल्या अगम्मी दान, नाम भण्डारा कलमा हरि वरताईआ। फ़ुरने अन्दर शब्दी नाद धुन्कान, अनहद नादी नाद वजाईआ। फ़ुरने अन्दर विष्न ब्रह्मा शिव खेलण खेल महान, संसारी भण्डारी सँघारी आपणी कार कमाईआ। फ़ुरने अन्दर आदि जुगादि जुग चौकड़ी प्रभ प्रगट होवे विच जहान, जोती जाता पुरख बिधाता आपणी खेल खिलाईआ। धुर दा फ़ुरना कोई गा ना सके पंज तत इन्सान, अक्ल बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक इक अख्वाईआ। फ़ुरना बन्द होवे ना जग, जगजीवण दाता वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम चारों कुण्ट लग्गी अग्ग, नौ खण्ड सत्त दीप रहे कुरलाईआ। साची मंज़ल जगत दवार कोई सके ना लँघ, बजर कपाट पड़दा ना कोए खुल्हाईआ। सुखमन ईड़ा पिंगल सुणे कोए ना छन्द, बिन सरवण राग अनाद अख्वाईआ। अमृत झिरना देवे ना किसे अनन्द, बूँद स्वांती कँवल नाभी ना कोए टिकाईआ। निरगुण जोत चढ़े ना चन्द, अंध अंधेर ना कोए गंवाईआ। फिरी दरोही विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड रहे कुरलाईआ। सृष्टी दृष्टी नार दुहागण होए रंड, हरि कन्त कन्तूहल ना कोए हंढाईआ। आत्म धार परमात्म लाए कोए ना अंग, सुरत शब्द ना कोए मिलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाए कोए ना छन्द, भाण्डा भरम ना कोए भनाईआ। बिन सतिगुर किरपा फ़ुरना होए किसे ना बन्द, फ़ुरने विच जीव जंत चारे खाणी भज्जण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। फ़ुरने अन्दर खेल श्री भगवन्त, हरि करता आप कराईआ। फ़ुरने अन्दर साध

सन्त, सूफ़ी फ़कीर लए बणाईआ। फ़ुरने अन्दर दे के धुर दा मंत, अन्तर निरन्तर करे पढ़ाईआ। फ़ुरने अन्दर मालक हो के साचा कन्त, कन्तूहल इक अख्वाईआ। फ़ुरने अन्दर खेल खेले खुशीआं वाली रुत बसन्त, खिजां पतझड़ आप कराईआ। फ़ुरने अन्दर गढ़ तोड़े हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। बिन फ़ुरने कोई ना दिसे जीव जंत, गुर अवतार पैग़म्बर फ़ुरने अन्दर दीन मज़्हब नाम कलमे वंडां गए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। फ़ुरने अन्दर चौकड़ी जुग, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग भज्जण वाहो दाहीआ। फ़ुरने अन्दर अवतार पैग़म्बर गुरुआं कीता युद्ध, खण्डा खड़ग तीर कमान तरकश हथ्थ उठाईआ। फ़ुरने अन्दर जन भगतां बिबेक कीती बुद्ध, कूड़ क्रिया मन कल्पणा कर सफ़ाईआ। फ़ुरने अन्दर मन वासना होए शुध, मन का मणका दए भवाईआ। फ़ुरने अन्दर प्रभू दा भेव खुल्ल्हे गुज्झ, पारब्रह्म ब्रह्म पड़दा दए उठाईआ। फ़ुरने अन्दर सब दी औध जाए पुग्ग, अन्त पैंडा रहे ना राईआ। फ़ुरने अन्दर ओअँ तत सति जै सीता राम राधे कृष्न दी जणाई तुक, अल्ला वाहिगुरु नाम सति फ़ुरने विच दृढ़ाईआ। फ़ुरने अन्दर खेल अबिनाशी अचुत, बेअन्त बेपरवाह खेल खेले थांउँ थाँईंआ। नव नौ चार फ़ुरना कदे ना जाए मुक, मुक्ती वाले फ़ुरने विच फिर प्रभ जोत दरस तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। फ़ुरना पुरख अकाल अगम्म, चार जुग दे शास्त्र कहिण ना पाईआ। फ़ुरना परम पुरख दा सच धर्म, जिस विच आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। फ़ुरना परम पुरख दा निहकर्मी वाला कर्म, कर्म कांड दा लेखा रहे ना राईआ। फ़ुरने अन्दर अवतार पैग़म्बर गुरु पंज तत लैंदे जरम, जन्म जन्म विच्चों बदलाईआ। फ़ुरने अन्दर बण गए वरन बरन, छत्तीं ब्राह्मण शूद्र वैश वंड वंडाईआ। फ़ुरने अन्दर शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अंज़ील कुरान बाईबल तुरैत खाणी बाणी रह गए पढ़न, अक्खरां वाली सिफ्त पढ़ाईआ। फ़ुरने अन्दर जगत जिज्ञासू जगत धार मंज़ल चढ़न, दिवस रैण भज्जण वाहो दाहीआ। फ़ुरने अन्दर भगत जनां आउणा प्रभ दी सरन, भगवन भज्जे वाहो दाहीआ। फ़ुरने अन्दर सतिगुर मेटे मरन जन्म, जन्म मरन दा लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। फ़ुरना कहे मैं बड़ा चलाक, मेरी चार जुग वड्याईआ। जिस सतिजुग त्रेता द्वापर कीता ख़ाक, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। किसे दा रूह बुत रहिण ना देवां पाक, पुनीतां पतित बणाईआ। खुल्हण ना देवां अन्दरों ताक, पड़दा सके ना कोए उठाईआ। कूड़ चलावां हाट, वस्त झूठ वरताईआ। दीपक जोत जगे ना कोए ललाट, मस्तक नूर ना कोए रुशनाईआ। फ़ुरना कहे मैं सब दी जड़ देवां काट, जगत जहान बचया रहिण कोए

ना पाईआ। फ़ुरना कहे मेरी अन्त समझे कोए ना वाट, वटणा मलण वाल्यां सार कोए ना आईआ। फ़ुरने अन्दर खेल तमाश, हरि दो जहानां आप कराईआ। फ़ुरने अन्दर सीता राम ल्या बनबास, फ़ुरने अन्दर रावण दहिसर घाईआ। फ़ुरने अन्दर काहन घनईया नाथ त्रैलोकी पावे रास, मुकन्द मनोहर लखमी नरायण आपणी कार भुगताईआ। फ़ुरने अन्दर कौरव पांडो कीता घात, घाउ हुक्म वाला लगाईआ। फ़ुरने अन्दर पैग़म्बरां दे के दात, कलमा कायनात दिता सुणाईआ। फ़ुरने अन्दर नानक गोबिन्द गाई गाथ, धुर संदेशा अगम्म अथाहीआ। सतिगुर फ़ुरना जो सब दी पुछे वात, घट घट अन्तर वेख वखाईआ। जिस फ़ुरने अन्दर कलयुग अन्त कीता नास, मानव मानस मानुख फ़ुरना बन्द ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, तिस होए आप सहाईआ। साचा फ़ुरना सतिगुर हथ्थ, जुग चौकड़ी देवे वड्याईआ। जिन्हां बख्शे नाम अमोलक वथ, वास्तक आप वरताईआ। सगल वसूरे जाण लथ्थ, दुरमति मैल धुआईआ। जन्म कर्म दी मैल देवे कट, पापां करे सफ़ाईआ। लेखे लावे नाड़ बहत्तर रत, रत्न अमोलक हीरे लए बणाईआ। आत्म ब्रह्म बख्श के सति, सति सतिवादी वेख वखाईआ। नाम दस्स जैकारा अलख, अलख अगोचर दए दृढ़ाईआ। जन भगत सुहेले रखे दे कर हथ्थ, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कूड़ कुड़यारा फ़ुरना गुरमुखां कोलों जाए नस्स, सतिगुर शब्द खण्डा खड़ग इक वखाईआ। जो जन सच दवारे पुरख अकाल सरनाई जाए ढट्ठ, परम पुरख मेला मेले सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण जन भगतां देवे दरस हो प्रगट, साख्यात नूर नुराना नज़री आईआ।

✪ ५ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ तारा सिंघ दे गृह पच्ची बी० बी० ज़िला गंगा नगर ✪

फल्गुण कहे मेरा प्रविष्टा सुहावा पंज, पंचम पंच तत दयां वड्याईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप वेखो रंज, रंजश विच कूड़ लोकाईआ। किसे सहारा मिले ना नाम निधाना वञ्झ, वहिंदे वहिण पार ना कोए कराईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया हर घट अन्दर गई लँघ, नौ दवारे आपणा आसण लाईआ। सति सच कीता खण्ड खण्ड, धर्म दी धार दिती गंवाईआ। सुरत दुहागण होई रंड, शब्दी कन्त मेल ना कोए मिलाईआ। वड्याई रहिण दिती नहीं बत्ती दन्द, रसना जेहवा जगत हल्काईआ।

निशाना मिटदा जांदा तारा चन्द, सदी चौधवीं रोवे मारे धाहीआ। खुशी दिसे किसे ना बन्द बन्द, बन्दगी दीन दुनी गई भुलाईआ। भरमां ढाए कोई ना कंध, क्रिया कूड़ ना कोए मिटाईआ। झगड़ा प्या जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज रही कुरलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाए कोई ना छन्द, आत्म परमात्म विच ना कोए समाईआ। तन वजूद सांतक दिसे किसे ना ठंड, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। जन्म कर्म दी डोरी सके कोए ना गंढ, तन्दव तन्द नाम बंधाईआ। फिरी दरोही विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड वेख वखाईआ। धुर दा नाम बिन पुरख अकाल सके कोए ना वंड, एका वस्त झोली कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। पंज फग्गण कहे मैं तकां खेल सच्ची सरकार, की करता कार कमाईआ। सो पुरख निरँजण हो उज्यार, जोती जाता डगमगाईआ। हरि पुरख निरँजण पावे सार, वेखणहारा थांउँ थाँईंआ। एकँकारा खेल निराकार, निरवैर आपणी कार भुगताईआ। आदि निरंजन वेखे विगसे वेखणहार, बिन नैणां नैण उठाईआ। अबिनाशी करता योधा सूरबीर बलकार, बलधारी वड वड्याईआ। श्री भगवान शाह पातशाह शहिनशाह लेखा जाणे सर्ब संसार, संसारी भण्डारी सँघारी वेख वखाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म पावणहारा सार, लख चुरासी अन्तर निरन्तर फोल फुलाईआ। सतिगुर शब्द हुक्म देवे एका इक्को वार, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। सवाधान हो तेई
१८१४ २२ अवतार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नाल मिलाईआ। पैग़म्बर नूरी जोत कर उज्यार, नूर नुराना नूर इलाहीआ। गुरु १८१४ २२
गुरदेव खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर आप जणाईआ। सदी चौधवीं सृष्टी दृष्टी अन्दर करो विचार, नव सत्त ध्यान लगाईआ। क्यों दीन दुनी होया धूंआँधार, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। शब्दी शब्द ना कोए धुन्कार, अनहद नादी नाद ना कोए वजाईआ। काया मन्दिर अन्दर दीआ बाती होए ना कोए उज्यार, नूर नुराना नूर नज़र कोए ना आईआ। दीनां मज़्बां वेख वेखणहार, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। आपणा आपणा भविक्खत लओ विचार, पेशीनगोईआं नाल मिलाईआ। कवण वेला कलि कल्की लए अवतार, जोती जाता पुरख बिधाता डगमगाईआ। कवण वक्त अमाम अमामा पावे सार, परवरदिगार नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पंचम कहे मेरा इक्को इक सजदा, साहिब सुल्तान सीस निवाईआ। जिस दा जुग चौकड़ी तत्व तत सब बरदा, सिर सके ना कोए उठाईआ। ओह लेखा जाणे दो जहानां आपणे घर दा, गृह मन्दिर वेख वखाईआ। नूर धर नरायण नर दा, नर निरँकार करे रुशनाईआ। जेहड़ा अक्खरां वाली विद्या कदे ना पढ़दा, निरअक्खर धार सब नूं दए समझाईआ। ना जन्मे ना मरदा, जन्म मरन रूप ना कोए बदलाईआ। ओह लेखा जाणे कलयुग कल दा, कलि कल्की आपणा रंग रंगाईआ। निर्भय

हो कदे ना डरदा, भय विच रखे सर्ब लोकाईआ। गढ़ तोड़ हँकारी किले गढ़ दा, धर्म दी धार इक समझाईआ। लेखा मुकावे चोटी जड़ दा, चेतन आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मस्तक आप बणाईआ। पंज फग्गण कहे मेरी इक्को इक डण्डावत, परम पुरख सीस निवाईआ। जिस ने कूड़ी क्रिया मेटणी अदावत, अदल इन्साफ़ हक कमाईआ। शरअ छुरी तकणी बग़ावत, नव सत्त ध्यान लगाईआ। साचे नाम कलमे दी इक्को करनी सफ़ावत, मेहरवान महिबूब आप वरताईआ। जिस नूं चुरासी लख जाणे न्यामत, दो जहान रस खुशीआं नाल चखाईआ। कलयुग अन्त खेल वेखे कूड़ क्यामत, कत्लगाह दा डेरा ढाहीआ। परम पुरख परवरदिगार इक्को रहे सलामत, सांझा यार अगम्म अथाहीआ। जिस दा भेव जाणे कोए ना मानस, मानुख मानव समझ किसे ना आईआ। सदी चौधवीं सब दी लाहे निंद्रा आलस, दलिदीआं दलिद्र गंवाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी विच्चों हरिजन भगत सुहेले कढे ख़ालस, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। जिन्हां दी निरगुण धार सरगुण करे प्रितपालक, पारब्रह्म प्रभ सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नूर जणाए ख़लक ख़ालक, मख़लूक पड़दा आप उठाईआ। सन्त सुहेले बणा के तालब, संदेशा देवे अगम्म अथाहीआ। जिस दा लहिणा देणा लेखा दिसे लहिंदी जानब, दिशा मग़रब वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप
१८१५ आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर पर्दा आप चुकाईआ। पंज फग्गण कहे मैं हस्स के दस्सां, दो जहान सुणाईआ। १८१५
२२ सारे बिन नेत्र खोल्हो अक्खां, लोचण अन्दरे अन्दर खुल्हाईआ। जिस दा रूप अनूप सरूप कोटन लक्खां, गणती गणित २२
ना कोए गिणाईआ। उस साहिब दी सरन सरनाई ढट्ठां, जो कोझयां कमल्यां होए सहाईआ। फेर उत्तर पूरब पच्छम दक्खण नट्ठां, भज्जां वाहो दाहीआ। नौ खण्ड पृथ्मी इक्को गावां टप्पा, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। आत्म परमात्म नाता जोड़ां पक्का, पक्की गंढ ना कोए खुल्हाईआ। खुशीआं विच फिरां रत्ता, रत्न अमोलक हीरा रूप बदलाईआ। प्रभू दा खेल वेखणा जिस फड़ हलाउणा बूरा कक्का, काअब्यां परे करे रुशनाईआ। मूसा ईसा करे वट्टा, सदी बीसवीं दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। फल्गुण कहे मेरा मालक इक जगदीश, जगदीश्र हरि अख्वाईआ। जिस दे छत्र झुलणा सीस, सिर सर दोवें धुर दे लेखे पाईआ। लहिणा देणा पूरा करना बीस इकीस, बीस बीसा वड वड्याईआ। तृष्ना पूरी होणी मूसा ईस, मुहम्मद लेखा रहे ना राईआ। करे खेल त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी वड वड्याईआ। जिस झगड़ा मेटणा मन्दिर मसीत, काया काअबा हक जणाईआ। झगड़ा रहिण ना देवे ऊच नीच, दीनां मज़्हबां लेखे लाईआ। आत्म परमात्म दस्से सच प्रीत, बुद्धी तों परे बोध दए कराईआ। अवतार

पैग़म्बर गुरुआं आसा मनसा पूरी करे उम्मीद, जो आमद विच गए जणाईआ। सदी चौधवीं दीन दुनी दा झगड़ा होए शदीक, शिद्दत सके ना कोए मिटाईआ। जिस दी नानक गोबिन्द करे तस्दीक, ताकीद शब्द गुरु समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। फग्गण कहे मेरा खेल सुहञ्जणा, प्रभू देवे माण वड्याईआ। लेखा जाणे आदि निरँजणा, नर नरायण बेपरवाहीआ। जो मालक दीन दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराईआ। जिस दे कोलों दो जहानां दान मंगणा, निव निव लागण पाईआ। ओह साचे नाम दी चाढ़े रंगणा, रंगत इक्को इक वखाईआ। जिस दे हुक्म नाल कलयुग अन्तिम वंञणा, वञ्झ मुहाणा ना कोए अटकाईआ। दीन दुनी दी इक्को करनी बन्दना, बन्धन शरअ वाले कटाईआ। आत्म ब्रह्म दा देणा अनन्दना, निजानंद आप जणाईआ। निशान रहे ना तारा चन्दना, चन्द सितार नाता मुहम्मद नालों तुड़ाईआ। फिरे दरोही विच वरभण्डणा, चार कुण्ट हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सूरा सरबंगणा, सूरबीर वड गुणी गहीर, गहर गवर इक अख्वाईआ।

६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ रत्न सिंघ, सुखनिन्दर सिंघ, मांह सिंघ, तारा सिंघ, गुरदयाल सिँघ पच्ची बी बी, जगीर सिँघ रतेवाल, मलकीअत सिँघ बण वाली, सन्तोख सिँघ वीह जैड, अजमेर सिंघ, लाभ सिँघ सजावाल पुर, सुरजीत सिँघ बणवाली प्रकाश सिँघ पच्ची बी बी ज़िला गंगा नगर

पगड़ी कहे मैं गुरसिक्खां सीस चढ़ी, चढ़दा लहिंदा वेख वखाईआ। जिन्हां ने आत्म परमात्म तुक पढ़ी, सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ। उन्हां दा लहिणा देणा चमकौर गढ़ी, गढ़ हँकार वाला तुड़ाईआ। काया तत कलयुग अग्नी मूल ना सड़ी, अमृत मेघ इक बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। पगड़ी कहे मैनूं जगत जहान कहिंदा पग्ग, अक्खरां विच सिफ्त सालाहीआ। जन भगतां मेल मिलावा होवे होवे उपर शाह रग, नव नव दा डेरा ढाहीआ। त्रैगुण तत्व तत बुझे अग्ग, सांतक सति सति कराईआ। शब्द अनादी वज्जे नद, अनहद रागी राग सुणाईआ। नाम खुमारी प्याए मदि, मधुर धुन इक शनवाईआ। दीपक जोती जाए जग, अंध अंधेर कूड़ मिटाईआ। ममता मोह विकार हँकार दी मिटे हद्द, हदूद इक्को इक दरसाईआ। जिथ्थे साहिब स्वामी अन्तरजामी रिहा वस, जोती जाता पुरख

बिधाता डेरा लाईआ। निज नेत्र लोचण नैण खोल्ह के अक्ख, प्रतख आपणा दरस दए वखाईआ। आत्म परमात्म रहिण ना देवे वक्ख, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। मिले मेल साहिब प्रतख, अकल कलधारी आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। पगड़ी कहे मैं सोहवां जन भगतां सीस, सुहञ्जणी मिले वड्याईआ। किरपा करे जगत जगदीश, जगदीश्र दाता धुरदरगाहीआ। जिस दा इक्को नाम कलमा हदीस, हज़रतां तों परे करे पढ़ाईआ। लख चुरासी अन्तर निरन्तर परखे नीत, घट घट अन्दर फोल फुलाईआ। त्रैगुण तों हो अतीत, त्रैभवण धनी आपणी कार कमाईआ। जन भगतां काया करे ठंडी सीत, कलयुग अग्नी अग्ग बुझाईआ। साची बख्श के चरण प्रीत, प्रीतम मिले चाँईं चाँईंआ। झगड़ा मुकाए हस्त कीट, ऊचां नीचां डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। पगड़ी कहे मेरा वक्त होया सुहञ्जणा, प्रभ दिती माण वड्याईआ। ठाकर मिल्या दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराईआ। सरूप तक्कया अकाल मूर्त मोहण माधव मद मदना, नूर नुराना डगमगाईआ। जिस लेखे लाया आहला अदना, ग़रीब निमाणयां देवे ठंडी छाईंआ। झगड़ा मेटणा काया बदना, तन वजूद करे सफ़ाईआ। सृष्टी अन्दर इक्को दस्सणी बन्दना, इष्ट देव स्वामी इक्को नज़री आईआ। जिस नूं कहिंदे हार घड़न भन्न्हणा, समरथ पुरख वड वड्याईआ। उस दे चरण धूढ़ साचा मजना, दुरमति मैल रहे ना राईआ। मेहरवान महिबूब मुहब्बत विच रंगे रंगणा, रंगत इक्को इक वखाईआ। घर प्रकाश करे अगम्मी चन्दना, अंध अंधेर दए मिटाईआ। जिस दा खेल होवे विच ब्रह्मण्डना, वरभण्ड वज्जे वधाईआ। उस ने कलयुग अन्तिम दंडना, डण्डावत सब दी दए बदलाईआ। जिस दा इक्को शब्दी धार चमके खण्डना, खण्डा खड़ग इक दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा मालक बेपरवाहीआ। पगड़ी कहे मेरे प्रभ ठाकर, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। दीन दयाल गहर गम्भीर गुण सागर, शाह पातशाह तेरी बेपरवाहीआ। आदि जुगादी योधे सूरबीर बहादर, जोबनवन्ते नूर इलाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अंधेरा बादल, चार वरन अठारां बरन रहिण ना पाईआ। शरअ छुरी दीन मज़्ब बणे कोए ना कातिल, कातिल मक्तूल दा लेखा दे मुकाईआ। भेव अभेदा खोल्ह अन्दरों बातन, ज़ाहर ज़हूर कर रुशनाईआ। सच प्रीती तेरा नातन, नर नरायण इक अख्वाईआ। खेल तक पृथ्मी आकाशन, गगन गगनंतर फोल फुलाईआ। तेरा हर घट दिसे वासण, लख चुरासी रिहा समाईआ। भगत सुहेले तेरे दासी दासन, गुरमुख साचे हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। इक्को मंज़ल बख्श घाटन, दरगाह इक्को इक वड्याईआ। झगड़ा मुका दे कलयुग खेल बाज़ीगर

नाटण, माया ममता डेरा ढाहीआ। हो सहाई नाथ अनाथण, ग़रीब निमाणयां गोद टिकाईआ। साचे मण्डल तेरे पवे इक्को रासण, गोपी काहन सुरती शब्द मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक दया कमाईआ। पगड़ी कहे जन भगतो मेरी नमो नमो बन्दना, दस्त बदस्त सीस निवाईआ। परम पुरख परमात्म तुहाडी आत्म लाए अंगणा, अंगीकार इक अख्वाईआ। गुरमुखो दूजा दर कदे ना मंगणा, मांगत हो के झोली डाहीआ। निज घर निज गृह मानणा सच अनन्दना, अनन्द अनन्द विच्चों वखाईआ। नूरी प्रकाश जोत करे चन्दना, चन्द चांदना डगमगाईआ। झगड़ा मुक जाए तुहाडा जेरज अंडना, उत्भुज सेत्ज लेखा रहे ना राईआ। सचखण्ड दवारे खुशीआं नाल वंञणा, वञ्झ मुहाणयां लोड़ रही ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक दया कमाईआ। पगड़ी कहे जन भगतो मेरा इक संदेशा, सदके वारी घोली घोल घुमाईआ। सब ने मन्नणा इक्को नर नरेशा, जिस नूं नर नरायण कहि के सारे गाईआ। जो वसे सचखण्ड साचे देसा, दरगाह साची मुकामे हक डेरा लाईआ। भगत उधारना जुग जुग उस दा पेशा, पेशीनगोईआं अवतार पैग़म्बर गुरुआं वेख वखाईआ। सदी चौधवीं अन्तिम कलयुग पूरा करे लेखा, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। सो मालक ख़ालक इक्को नूर इलाही बणके नेता, निरगुण धार हरि निरँकार लहिणा देणा दए चुकाईआ। जुग चौकड़ी विछड़यां भुल्ले मूल ना चेता, चेतन सब नूं रिहा कराईआ। अन्तिम नाता तुटणा पीर पैग़म्बर मुसायक मुल्लां शेख़ा, शरअ ज़ंजीर रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। खेले खेल ख़लक दा ख़ालक, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। कलयुग अन्तिम निरगुण धार बण के सालस, वेखणहारा थांउँ थाँईंआ। सदी चौधवीं सब दी निंद्रा लाहे आलस, गफ्लत रहिण कोए ना पाईआ। सुत दुलारा गुरमुख वेखे बालक, चार वरन अठारां बरन फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। रंग कहे मेरा रंग अपारा, अपरम्पर आप रंगाईआ। मेरा खेल जगत संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव वेखण नैण उठाईआ। की खेल करे परवरदिगारा, ईसा मूसा मुहम्मद चार यार ध्यान लगाईआ। जिस चारों कुण्ट कीता धूंआँधारा, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण होए ना कोए रुशनाईआ। ओह सब दा लहिणा देणा पिछला कर्ज़ रिहा उतारा, मकरूज़ आपणा फ़र्ज़ पूर कराईआ। प्रगट हो कलि कल्की अवतारा, निहकलंका राउ रंकां इक्को डंक रिहा वजाईआ। जिस दा आदि अन्त ना पारावारा, बेअन्त कहि के सारे गए गाईआ। सो भगत सुहेला इक अकेला दीन दुनी दी पावे सारा, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश खोज खुजाईआ। जिस दा खेल दरगाह

साची सचखण्ड वसे धाम न्यारा, निराकार निरँकार निरवैर आपणी कल वरताईआ। कलयुग दा अन्त वेखे पार किनारा, नईया नौका डोले थांउँ थाँईंआ। संग मुहम्मद रोवे चार यारा, सदी चौधवीं चौदां तबक रहे कुरलाईआ। की खेल करे कुदरत दा कादर परवरदिगारा, नूरी अल्ला अलाह बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पगड़ी कहे जन भगतो सदी चौधवीं वेखो अन्त, अन्तष्करन पर्दा लैणा चुकाईआ। की खेल करे श्री भगवन्त, भगवन आपणा हुक्म सुणाईआ। किस बिध लहिणा देणा मुके जीव जंत, साध सन्त बचया रहिण कोए ना पाईआ। जिस ने इक्को नाम दृढ़ाउणा मंत, मंतव दीन दुनी हल्ल कराईआ। जिस दी महिमा सदा अगणत, पतिपरमेश्वर नूर इलाहीआ। ओह कलयुग तोड़न वाला गढ़ हंगत, हउमे डेरा ढाहीआ। लेखा मुकाए पंज पंकज, पंच भरम रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। पगड़ी कहे जन भगतो मेरा लेखा अन्त अख़ीरी, बिन अक्खरां दयां जणाईआ। जिस शरअ दी तोड़नी ज़ंजीरी, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। जगत जहान मेटणी दिलगीरी, दीन दुनी दा पन्ध मुकाईआ। सूफ़ीआं लेखे लाउणी फ़कीरी, फ़िकरा इक्को इक दृढ़ाईआ। कलयुग गली रहिण नहीं देणी भीड़ी, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ। साची धार दी इक्को चलणी पीढ़ी, आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। इक्को रंग रंगाउणा हस्त कीड़ी, ऊचां नीचां डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। पगड़ी कहे अष्टभुज रही ललकार, नेत्र नैण उठाईआ। हुन्दी सां सिँघ अस्वार, अष्टभुजां नाल वड्याईआ। सुंभ निसुंभ दिते सँघार, दैंता डेरा ढाहीआ। चार कुण्ट फिरी विच संसार, भज्जी वाहो दाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग हुन्दी रही निमस्कार, इष्ट देव जगत मनाईआ। अन्त खेल कीता आप निरँकार, निरवैर आपणी कल वरताईआ। शब्दी शब्द शब्द हो अस्वार, भज्जया वाहो दाहीआ। तेई अवतार लए उठाल, सोया रहिण कोए ना पाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद सुरत संभाल, सम्बल बहि के कार कमाईआ। गुरु गुरदेव दस उपजाए आपणी धार, धरनी धरत धवल धौल वज्जे वधाईआ। शाह पातशाह बण सच्ची सरकार, दो जहानां हुक्म सुणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करे ख्वार, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ। सदी चौधवीं मारे मार, मेहरवान आपणा हुक्म सुणाईआ। मुहम्मद लहिणा देणा झोली देवे डार, लेखा अवर रहे ना राईआ। अमाम अमामा शाह सुल्ताना कलि कल्की अवतार, निहकलंका इक अख्वाईआ। जिसने अष्टभुज कहे मैनूं सिंघासण थल्ले दिता वाड़, उत्ते आपणा आसण लाईआ। जन भगतां सीस बख्श दस्तार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच

स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी आपणा खेल खिलाईआ। अष्टभुज कहे मेरी नमो नमो धुर दे देवा, देव आत्मा सीस निवाईआ। मेरी चार जुग दी लेखे लाई सेवा, महासाथीं तेरी इक सरनाईआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाला अलख अभेवा, अगोचर तेरी वड वड्याईआ। तूं वसणहारा निहचल धाम निहकेवा, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। तेरी सिफ्त करे ना कोए रसना जेहवा, बत्ती दन्द ना कोए वड्याईआ। तेरे नाम दा रस अवतार पैग़म्बर गुरुआं खाधा मेवा, अनरस आपणा दिता चखाईआ। जन भगतां धूढ़ी कौस्तक मणीआ लावे थेवा, थान थनंतर तेरी वज्जदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। अष्टभुज कहे मैं वेखां तेरे नाम दा खड़ग खण्डा, तिक्खी धार बेपरवाहीआ। तेरा हुक्म चण्ड प्रचण्डा, दो जहानां भय वखाईआ। जिस निशान मेटणा तारा चन्दा, सूर्या निउँ निउँ लागे पाईंआ। कलयुग पैंडा रहिण नहीं देणा लम्मा, सदी चौधवीं डेरा ढाहीआ। मुहम्मद दा लेखे लाउणा यक शम्बा, दरगाह साची वेख वखाईआ। उम्मत उम्मती हाल होणा मंदा, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। आत्म परमात्म मिले ना किसे अनन्दा, अनन्द विच ना कोए समाईआ। कलयुग अन्तिम वेला लँघ, पाँधी आपणा पन्ध मुकाईआ। भुलेखे विच रहे कोई ना बन्दा, बन्दगी वाले देणे समझाईआ। जिस झगड़ा मेटणा जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज करे सफ़ाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला शब्दी धार वखाए सत्त रंग दा डण्डा, डण्डावत सब दी दए बदलाईआ। जन भगतां दा भगती धार खा के गंढा, गंढ जन्म जन्म दी दए पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म परमात्म परमात्म आत्म सुणा के छन्दा, बन्धन दीन दुनी कटाईआ।

✪ ७ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ रत्न सिँघ दे गृह पच्ची बी बी ज़िला गंगा नगर ✪

कलयुग कहे परम पुरख मेरी अरदास, सचखण्ड निवासी दर तेरे सीस निवाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाश, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी ओट तकाईआ। सति वस्त मैं रहिण ना देवां किसे पास, सच धर्म विच ना कोए समाईआ। जो भविक्खतां विच लिख्तां विच इष्टां विच दृष्टां विच अवतार पैग़म्बर गुरु गुर गए आख, अक्खरां नाल ढोले सोहले तेरे गीत सुणाईआ। सो समां सुहञ्जणा तकां अंधेरी रात, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप परम पुरख तेरी गाए कोई ना गाथ, रसना जेहवा बत्ती दन्द सिफ्ती सिफ्त ना कोए वड्याईआ। तूं मालक ख़ालक

प्रितपालक पतिपरमेश्वर दे दे दात, दाते दानी दया कमाईआ। मैं भज्जां नट्ठां विच पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर आपणा पन्ध मुकाईआ। मेरा दिल करदा किसे साध सन्त दा अन्दरों खुल्हण ना देवां ताक, बजर कपाटी पड़दा ना कोए खुल्हाईआ। दीन दुनी दे सिर विच पावां ख़ाक, ख़ालक ख़लक तेरा नूर नज़र किसे ना आईआ। रूह बुत रहिण ना देवां पाक, पुनीत पतित करां लोकाईआ। नाम भण्डारा विके किसे ना हाट, वस्त सच ना कोए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे सुण कलयुग कलकाती, कलि कल्की वेख वखाईआ। जिस जीवण ज़िंदगी दीन दुनी बदलणी हयाती, चारे खाणी फोल फुलाईआ। पैग़म्बरां नबीआं सुणे बाती, बातन पड़दा आप उठाईआ। ओह तक गोबिन्द वाली पाती, जो माछूवाड़े बिन अक्खरां दिती लिखाईआ। तेरा स्वांग कूड़ी क्रिया बाज़ीगर नाटी, नटुआ आपणी कार भुगताईआ। ओह तक सदी चौधवीं अन्तिम वाटी, पैंडा पन्ध रिहा ना राईआ। तेरा लेखा रहे ना ज़ात अज़ाती, कूड़ क्रिया कर्म कांड चले ना कोए चतुराईआ। इक्को तक निरगुण जोत कमलापाती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक बेपरवाहीआ। कलयुग कहे प्रभू मैं तेरा सुत दुलारा, दूल्हा इक्को नजरी आईआ। मैं नौ खण्डां दयां हुलारा, समुंद सागरां दयां हिलाईआ। तेरा नूर नज़र आए ना विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी बैठे मुख छुपाईआ। धुर दे शब्द दी सुणे ना कोए धुन्कारा, अनहद नाद नाद ना कोए शनवाईआ। दीआ बाती जोती जोत ना कोए उज्यारा, साढे तिन्न हथ्थ सरीर ना कोए रुशनाईआ। आत्म रस निजर झिरना बूँद स्वांती मिले ना ठंडा ठारा, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। दरगाह साची सच घर मिले ना किसे दवारा, दूर दुराडे सारे रोवण मारन धाहीआ। मेरी नमो नमो सतिगुर गुरदेव निमस्कारा, डण्डावत बन्दना सजदे विच सीस निवाईआ। तेरा अन्त ना पारावारा, बेअन्त तेरे हथ्थ वड्याईआ। चारों कुण्ट वेख धूंआँधारा, धरनी धरत धवल धौल रही कुरलाईआ। दीनां मज़्बां ज़ातां पातां लग्गा अखाड़ा, शरअ शरीअत खड़ग खण्डा रही खड़काईआ। पूरब लेखा पारब्रह्म तेरा ना किसे विचारा, विचर के सके ना कोए समझाईआ। तूं कलयुग कलि कल्की चव्हीआं अवतारा, अवतर आपणा भेव देणा खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे सुण कलयुग नौजवान, नव जोबन तेरी वड्याईआ। जगत दीन दुनी कर ध्यान, मानस मानव मानुख खोज खुजाईआ। चार जुग दे शास्त्र देवण की ज्ञान, अक्खरां वाली अक्खरां नाल पढ़ाईआ। आत्म ब्रह्म सके ना कोए पहचान, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। चार वरन अठारां बरन होए अणजाण, बुध बिबेक ना कोए कराईआ। सब दे हुन्दयां तूं हुण प्रधान, चार

कुण्ट भज्जया वाहो दाहीआ। तेरे नाल जगत शरअ शैतान, छुरी शरीअत वाली नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं तेरा इक्को सुत बाल, निधाना नज़री आईआ। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत, चेतन तेरे हथ्थ वड्याईआ। मेरा लेखा जगत नाल काया बुत, बुतख़ान्यां वेखां थांउँ थाँईंआ। सुहञ्जणी होण ना देवां रुत, रुतड़ी तेरे नाल ना कोए महकाईआ। पंच विकार भरया कुट्ट कुट्ट, गृह गृह दिता टिकाईआ। सुरती शब्द नालों सब दी गई छुट, छुटकी लिव ना कोए लगाईआ। आत्म परमात्म धार गई टुट्ट, टुटयां गंढु ना कोए पवाईआ। चार कुण्ट पाई लुट्ट, लुटेरा बण के भज्जां वाहो दाहीआ। दीन दुनी दे भाग गए निखुट, परम पुरख तेरा मेल ना कोए मिलाईआ। मेरे दीन दयाले पुरख अकाले मैनूं गोदी विच चुक्क, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। मैं पड़दा ओहला रहिण नहीं दिता लुक, कूक कूक रिहा जणाईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी हिरदिउँ तैनूं कोई ना जावे झुक, भगत भगवान तेरा संग ना कोए निभाईआ। आत्म परमात्म पढ़े कोई ना तुक, तुख्म तासीर सके ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे कलयुग वेख अंधेरा अंध, चन्द चांदना नज़र कोए ना आईआ। तेरा अन्तिम मुकणा पन्ध, पाँधी हो के भज्जणा वाहो दाहीआ। निशान रहिणा नहीं तारा चन्द, मुहम्मद रोवे मारे धाहीआ। झगड़ा पैणा जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज रही कुरलाईआ। फिरनी दरोही विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड होए ना कोए सहाईआ। पैग़म्बरां गुरुआं अवतारां दिती कंड, करवट सके ना कोए बदलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी पावे कोई ना ठंड, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। सदी चौधवीं रही लँघ, हुक्म वरते बेपरवाहीआ। प्रगट हो सूरा सरबंग, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। मैं हस्स के किहा अगले सम्मत विच नौवां देसां विच ज़रूर होवेगा जंग, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। एह परम पुरख दी वंड, वंडणहारा अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं कूक कूक के पावां रौला, हुक्म तेरा इक सुणाईआ। तूं मालक ख़ालक धुर दा मौला, मुल्लां शेख़ मुलाणे सारे रोवण मारन धाहीआ। सदी चौधवीं तेरा पूरा होणा कौला, इकरार तेरा मुहम्मद नाल दए गवाहीआ। झगड़ा पैणा उत्ते धौला, धरनी धीर ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। कलयुग कहे मैं प्रभू तेरा ख़ादम, ख़िदमतगार इक अख्वाईआ। मैं खूंखार बणां आदम, अदल इन्साफ़ तेरे हथ्थ फड़ाईआ। की होया जे कृष्न खेल कीता बण के यादव, अठारां कशूणीआं रंग रंगाईआ। मैं जगत जहान करना तसादम, तथा तेरा

१८२२
२२

हुक्म इक वरताईआ। जिस दा हल्ल होवे ना कोलों किसे साधन, सदी चौधवीं नाल मिलाईआ। जिस परवरदिगार नूं उम्मत उम्मती सारे अराधण, कलमे चार कुण्ट सुणाईआ। ओह नूर नुराना खेल करे बातन, ज़ाहर ज़हूर आपणी कल प्रगटाईआ। शमा नूर दिसे किसे ना रातन, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। धूंआँधार पृथ्मी आकाशण, गगन गगनंतर पड़दा ना कोए उठाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु तेरा भविक्खत सारे वाचण, पेशीनगोईआं आपणे हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। धुर दा शब्द कहे सुण के हुक्म अगम्म, कलि कलूआ इक जणाईआ। करे खेल श्री भगवन, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जिस दा हुक्म विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर रहे मन्न, करोड़ तेतीसा सीस निवाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु कहिण धन्न धन्न, धन्न तेरी बेपरवाहीआ। जिस निशान मेटणा तारा चन्न, चौदां तबक रोवण मारन धाहीआ। चौदां लोक संदेशा सुणन बिना कन्न, बिन सरवण बैठे राह तकाईआ। जिस ने जो घड़या सो देणा भन्न, घड़न भन्नणहार आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर दा कहिणा सब ने लैणा मन्न, मानव मानस मानुख सिर सके ना कोए उठाईआ। सदी चौधवीं सब नूं देणा डंन, डौरु डंका इक्को नाम सुणाईआ। जिस ने भेव खुलाउणा हँ ब्रह्म, आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को रंग रंगाईआ। सन्त सुहेले प्रगट करे धुर दे जन, आप बणे जणेंदी माईआ। जन भगतां बेड़ा देवे बन्न, सिर सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। भाग लगाए काया माटी तन, तत्व तत इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। नारद कहे कलयुग की रिहा बक, बिना मुख रिहा सुणाईआ। हकीकत वेख हक, हकूक फोल फुलाईआ। साहिब वल्ल तक, जो मालक नूर इलाहीआ। जिस दा इक्को हुक्म यक्क, यदी रिहा सुणाईआ। जिस दा आदि जुगादि चले रथ, रथवाही दो जहान अख्वाईआ। सो सगल सृष्टी देवे मथ, नाम मधाणा हथ्थ रखाईआ। कूड़ कुड़यारयां पावे नथ्थ, शब्द डोरी तन्द बंधाईआ। तेरे ख़ाली हथ्थ, वस्त मिले कोए ना थाँईंआ। ओह प्रभू सर्ब कला समरथ, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। जिस दी सरन सरनाई सारे रहे ढट्ठ, सिर सके ना कोए उठाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु कर इक्ट्ठ, नाम संदेशा रिहा जणाईआ। मातलोक धरनी उत्ते वेखो झट, झटके हलाली वाले फोल फुलाईआ। किस दे अन्दर नाम निधाना वज्जे सट्ट, सोई सुरत रिहा उठाईआ। कलयुग तेरा कन्ढा घाट अख़ीरी तट, किनारा इक्को नज़री आईआ। सब दा खेड़ा होणा भट्ठ, भठियाला हो के अग्नी देणी डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। कलयुग कहे मैं दस्सां तेई अवतारा, खुशीआं नाल जणाईआ। पैग़म्बरां सुणावां नाअरा, भेव अभेद खुलाईआ।

१८२३
२२

गुरुआं जणावां जैकारा, डंका बेपरवाहीआ। की वरते खेल विच संसारा, विष्न ब्रह्मा शिव नैण उठाईआ। चारों कुण्ट धूंआँधारा, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। प्रगट होवे इक अवतारा, कलि कल्की अगम्म अथाहीआ। जिस दी पावे कोए ना सारा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अन्त कहिण कोए ना पाईआ। सो लहिणा देणा कलयुग उतारे सारा, पूरब लेखा वेख वखाईआ। सतिजुग धरनी धरत धवल धौल उत्ते प्रगट करे आप दोबारा, दोहरी आपणी कल वरताईआ। निरगुण सरगुण पावे सारा, सरगुण निरगुण इक्को हुक्म देवे समझाईआ। पारब्रह्म प्रभ करनी करता करनेहारा, करता पुरख आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, एथे ओथे दो जहानां श्री भगवाना मर्द मर्दाना नौजवाना निरवैर निराकार निरँकार आपणा हुक्म इक वरताईआ।

✪ ८ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ सुलक्खण सिंघ दे गृह पिण्ड मूंगला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सतिगुर शब्द कहे मैं धर्म धार दा तक्कां गोला, गोलक तन वजूद कलयुग जीवां वेख वखाईआ। किस दे अन्दर आत्म परमात्म परमात्म आत्म साचा बोला, अनबोलत किस उपर दया कमाईआ। कवण गुरमुख जिस ने अन्तर निरन्तर आपणा पड़दा खोल्हा, ख़ालक मालक प्रितपालक वेखे चाँईं चाँईंआ। कवण काया माटी तन पाए रौला, मन मनसा नाल मिलाईआ। जां निगाह मारी सब दा मिटणा सदी चौधवीं कौल इकरार कौला, वायदा पूरब वेख वखाईआ। चार कुण्ट लेख मुकाउणा धरनी धौला, धवल पड़दा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं दस्सणा हुक्म हज़ूरी, हज़रतां तों बाहर जणाईआ। लेखा रहिण नहीं देणा बाकी कोहतूरी, तुरीआ तों बाहर देणा जणाईआ। जन भगतां पन्ध मुकाउणा नेड़ दूरी, दर दरवाज़ा इक खुल्हाईआ। जन्म कर्म दी सब दी लेखे पाउणी मज़दूरी, जो अन्तर निरन्तर प्रभ दी सेव कमाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप सब दी करनी मशहूरी, मशरक मग़रब वज्जे वधाईआ। खेल खेलणा लोकमात ज़रूरी, ज़रूरत धुर दी पूर कराईआ। इक्को प्रकाश बख्शणा नूरी, नूर नुराना नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं करना वक्त सुहावा, जन भगत दयां वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया रहिण नहीं देणा दावा, दावेदार ना कोए अख्वाईआ। चार जुग दा पिछला पूरा करना नावां, लहिणा देणा सब दी झोली देणा टिकाईआ।

१८२४ २२

सदी चौधवीं कलयुग रलाउणा नाल भरावां, सतिजुग त्रेता द्वापर बैठे राह तकाईआ। कूड़ी क्रिया गल फास ना रहे गलावां, डोरी तन्द देणा कटाईआ। सति धर्म दी साची खेल खिलावां, ख़ालक ख़लक नाल मिलाईआ। भाग लगावां गुरमुखां तन गरावां, गृह गृह अन्तर वेख वखाईआ। प्यार मुहब्बत नाल पर्चावां, पर्चानी दा डेरा ढाहीआ। धुर दा ढोला इक सुणावां, आत्म परमात्म राग अलाईआ। प्यार बख़्शां वद्ध मावां, पिता पूत गोद सुहाईआ। कूड़ी क्रिया नाता तोड़ां कावां, हँसां माणक मोती चोग चुगाईआ। चारों कुण्ट करावां वाहवा, वाह तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं भगतां देवां दात, धर्म दी धार इक वरताईआ। अगम्म अथाह बख़्श के दात, दयावान नाल मिलाईआ। कलयुग मिटे अंधेरी रात, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी बणा के इक जमात, एका रंग दयां रंगाईआ। धुर दी वस्त कर इनाइत, ख़ाली झोली मात भराईआ। इक दे सब ने होणा मताहित, दूजा नज़र कोए ना आईआ। नौ खण्ड पृथ्मी करके आवां हदाइत, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे जन भगत करां तामीरी, लोकमात मात वड्याईआ। खेल करां बेनज़ीरी, जगत नेत्र समझ किसे ना आईआ। शरअ दी तोड़ ज़ंजीरी, शरीअत इक्को इक समझाईआ। रंग रंगा के हस्त कीड़ी, कीटां देवां माण वड्याईआ। रहिण देणी नहीं किसे दी पीरी, पीर फ़कीरां करां सफ़ाईआ। धुर दा खेल वरते तकदीरी, तदबीर समझ कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे जन भगतां करां ज़ाहर, ज़ाहर ज़हूर नूर चमकाईआ। खेल करां भारत विच्चों बाहर, बैरूनी पड़दा आप चुकाईआ। बहत्तर ज़बानां दा बणके शाइर, शरअ तों परे हुक्म सुणाईआ। जिस नूं समझे कोई ना ऐर ग़ैर, मुहम्मद ईसा मूसा ध्यान लगाईआ। कलयुग कूड़ दी वेखणी दुपिहर, घड़ी पल खोज खुजाईआ। जिथ्थे मुहम्मद नूं दिता सी ज़हिर, सो जगह लेखे आपणे विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा लेखा शरकी ग़रबी, शहिनशाह दए वड्याईआ। फ़ारस आरस वेखां अरबी, अरबानीआं पड़दा लाहीआ। नबी रसूलां बण के दर्दी, दुआ सब दी फोल फुलाईआ। फिर करांगा आपणी मर्ज़ी, मज़ा सब नूं दयां चखाईआ। सदी चौधवीं सब दे मुख ते आउणी ज़रदी, ज़र्रा ज़र्रा दए दुहाईआ। भेव खोलांगां की मुहम्मद ने दिती अर्ज़ी, मदीने वाल्यां मुद्दा इक समझाईआ। की धार होणी चोटी जड़ दी, जड़ चेतन की चतुराईआ। किस कारन उम्मत उम्मत नाल लड़दी, शरअ शरअ नाल टकराईआ।

क्यों अग्नी हवस सड़दी, शम्मस तबरेज़ की गया जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जाता पुरख बिधाता आपणा पड़दा उतों लाहवे फ़र्ज़ी, सच दा सच हक दा हक नज़री आईआ।

✪ ६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड जंडयाला ज़िला जलन्धर ✪

मुहम्मद कहे मकबरे दा पर्दा जांदा खुल्हदा, मिट्टी ख़ाक ख़ाक सीस निवाईआ। मैं दर्शन करना मालक कुल दा, कुल मालक जिस नूं सीस निवाईआ। मेरा लहिणा होणा धुर दे मुल्ल दा, कीमत करता करीम आपे पाईआ। जिस स्वाद बदल देणा बुल्ल्ह दा, रसना जेहवा वंड ना कोए वंडाईआ। मेरा अन्तिम लेखा दीपक गुल दा, गुलशन आपणा इक महकाईआ। उम्मत बूटा सदी चौधवीं हुल्लदा, हालत बदले कूड़ लोकाईआ। आबेहयात हयातीआं विच्चों वेखे डुल्हदा, जीवण जगत ना कोए वड्याईआ। हुक्म वरतणा अगम्म अतल्ल दा, बेपरवाह आपणी कार भुगताईआ। अन्तिम लेखा होणा पत्त टहिणी फल फुल्ल दा, फुलवाड़ी दीन दुनी महके चाँईं चाँईंआ। जगत जहान वेखणा रुलदा, गोदी गोद ना कोए सुहाईआ। मैं उस दे कदमां घोल घुलदा, आप आपा घोल घुमाईआ। जो मालक ख़ालक प्रितपालक वेस वटाए सुल्हकुल दा, अमाम अमामा नूर इलाहीआ। जिस झगड़ा मुकाउणा शरअ अग्नी वाली चुल्ह दा, सांतक सति सति कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। मुहम्मद कहे मेरा मकबरा पाउंदा जाए शोर, शौहर बांके ध्यान लगाईआ। जिस भाग लगाउणा मेरी गोर, ग़ौर नाल ध्यान लगाईआ। जिस दे अग्गे चले कोई ना ज़ोर, ताकतवर ना कोए अख्वाईआ। सदी चौधवीं धुर दे कलमे हथ्थ फड़ के डोर, डोरी आपणे तन्द बंधाईआ। वेख वखाणे अंधेरा घोर, घोरी हो के नूर इलाहीआ। दर दवारे अन्तिम पए बौहड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। मकबरा कहे मैं बिन सजदयां करां सलाम, कदम बोसी कदीम दे मालक इक जणाईआ। मेरा साहिब आवे अमाम, अमलां तों रहित नूर इलाहीआ। जिस दे पैग़म्बर बणे ग़ुलाम, ख़ादम बण के झट लँघाईआ। ओह लेखा जाणे तमाम, दो जहानां वेख वखाईआ। दीन दुनी दी बदल देवे कलाम, कायनात करे पढ़ाईआ। जिस ने कूड़ क्रिया मेटणी हराम, शरअ शरीअत दए बदलाईआ। सति सच दा करे इंतजाम, बन्दोबस्त आपणे हथ्थ रखाईआ। इक्को हुक्म संदेशा देवे अवाम, आम आपणी कार भुगताईआ। मेहरवान बण रहमान, रहमत हक हक पढ़ाईआ। मेरा पिछला लेखा

लाए निशान, निशान तारा चन्द मेरे विच टिकाईआ। उस वेले उहनूं झुक जाण ज़िमी असमान, चौदां तबक सीस निवाईआ। फेर आयत बोले जेहड़ी लिखी गई नहीं विच कुरान, मजीद मसला ना कोए समझाईआ। धुर दे हुक्म दा करे ऐलान, ऐलानीआं आपणा हुक्म वरताईआ। फेर लेखा पूरा करे विच तहिरान, तरह तरह नाल जणाईआ। किसे भुल्ल ना रहे अन्जाण, अन्जाणत आपणा हुक्म जणाईआ। प्रगट हो के नौजवान, नव नव आपणी कार भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा खेल आप खिलाईआ। जिस वेले जाणा विच तहिरान, तारा चन्द सीस निवाईआ। नीले वस्त्र पहरे आप अमाम, आप आपणा वेस वखाईआ। ज़रूर संदेशा देवे खेल करे महान, महिमा अकथ कथ दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं जिस ने अन्त करनी परवान, परम पुरख आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। मकबरा कहे मेरी आशा इक अवल्ली, हाशम ध्यान लगाईआ। जिस नूं समझे ना कोई अल्लाह वली, वली अल्ला कहिण कोए ना पाईआ। मेरे दर पहुंचाउणी तेल दी पली, पल विच मेरा लेखा पूर कराईआ। जिस दे पिच्छे देंदा आया बली, बल आपणा आप मिटाईआ। उस ने चशम चराग़ वेखणा हज़रत अली, आलीज़ाह आपणा हुक्म वरताईआ। होका दे के आउणा गलीओ गली, गुलामों गलों ज़ंजीरां दयो कटाईआ। इक्को अल्ला इलाही नूर जिस दी जोत अगम्मी बली, चौदां तबकां तों बाहर करे रुशनाईआ। जिस ने लेखे ला के आउणी लूण दी डली, निमक हराम खुद मालक ना कोए अख्वाईआ। आप बण के वड्डा छली, छल सब दे नाल कमाईआ। फिरे दरोही विच थलीं, जल बैठण नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फिरे दो जहानां बिना दुलदल तों विच दलीं, दलां दा मालक इक्को नूर इलाहीआ।

१८२७
२२

✪ ११ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ सुरजीत सिँघ दे नवित हरि भगत दवार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

नारद कहे प्रभू अबिनाशी अचुत, परम पुरख तेरी सरनाईआ। मैं वेखण आया तेरी सुहञ्जणी रुत, रुतड़ी तेरी वेख वखाईआ। मैं तके भगत सुहेले तेरे सुत , हरिजन साचे सोभा पाईआ। जिन्हां दा प्यार तेरे नाल सदा वद्ध पुत्त, पिता पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। सदी चौधवीं मौली रुत, रुतड़ी आपणा रंग रंगाईआ। मेरा सीस रिहा झुक, कदमां विच टिकाईआ। तेरा निशाना निशान्यों जाए ना उक, तीर निराला अगम्म अथाहीआ। मैं हैरान हो गया जेहड़े गाउंदे सोहँ तुक,

आत्म परमात्म खुशी बणाईआ। इहो जेही कदे जगत जहान मिली नहीं लुट्ट, लुटेरयो क्यों आपणा नाम दिता लुटाईआ। भाग लगाउंदा जाए काया बुत, बुतख़ान्यां करे सफ़ाईआ। मेरे साहिब कुछ मैनूं वी पुछ, मैं खुशी नाल दयां दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। नारद कहे प्रभू तेरयां भगतां दा तकां जन्म, जन्म तेरे दर सोभा पाईआ। तूं मालक तरनी तरन, तारनहार इक अख्वाईआ। तेरे कोलों अवतार पैग़म्बर गुरु डरन, विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाईआ। भगत सुहेले तेरी मंज़ल चढ़न, पाँधी पिछला पन्ध मुकाईआ। मैं कुछ अगली सिख्या आया पढ़न, पड़दा अन्दरों देणा उठाईआ। की घाड़न लग्गा घड़न, घड़न भन्न्णहार की आपणी खेल खिलाईआ। मैं फड़ के तेरे चरण, धूढ़ी ख़ाक लवां रमाईआ। क्यों झगड़ा मेटण लग्गा वरन बरन, ज़ात पात पन्ध मुकाईआ। किस बिध भगतां खोल्ह के नेत्र हरन फरन, रातीं सुत्तयां दरस दएं दिखाईआ। मैं तेरे नाल आया लड़न, लड़ाका हो के दयां जणाईआ। तेरा खेल चोटी चेतन जड़न, जड़ चेतन की तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक दया कमाईआ। नारद कहे प्रभू तेरयां भगतां दा दिवस दिहाढ़ा, सदा वज्जदी रहे वधाईआ। पर मेरी इक्को बेनन्ती इक्को हाढ़ा, निव निव के सीस झुकाईआ। तूं जुग चौकड़ी क्यों धरनी उत्ते वेखें

१८२८

२२

अखाड़ा, खण्डे खड़ग जगत चमकाईआ। क्यों सदी चौधवीं अन्तिम मारन आ ग्यों धाड़ा, धाड़वी हो के आपणा बल प्रगटाईआ। तेरा शब्द अगम्मी दो जहान इशारा, सैनत इक्को नाम रखाईआ। कलयुग अन्तिम ना दिसे किनारा, नईया डोले थांउँ थाँईंआ। तूं मालक ख़ालक कन्त भतारा, ख़ाविन्द ख़सम इक अख्वाईआ। तेरे चरण कँवल निमस्कारा, निव निव लागां पाईआ। मैं हैरान हो गया जन भगतां अन्दर तेरे प्रेम दीआं बहारां, खुशीआं फल फुल्ल सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे प्रभू तूं त्रैभवण अतीत, त्रैगुण डेरा ढाहीआ। आदि जुगादी ठांडा सीत, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बदलणी रीत, रीतीवान आपणे हथ्थ रखाईआ। कलयुग अन्तिम समां रिहा बीत, बीती कहाणी कहिण कोए ना पाईआ। तूं मालक प्रितपालक एकँकार अतीत, त्रैभवण तेरी सरनाईआ। जन भगतां चलाई साची रीत, रीतीवान आपणा रंग रंगाईआ। तेरा भगत तेरी धर्म दी होवे नीत, नीतीवान तेरी वड्याईआ। झगड़ा रहे ना मन्दिर मसीत, काया काअबा इक दरसाईआ। लेखे लाउणा जन्म जन्म जन्म सिँघ सुरजीत, जुझार झूजण दा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। भगतां भगवन बख़्श अगम्म प्रीत, प्रीतम मेल मिलाउणा चाँईं चाँईंआ। तेरी सारे करदे गए उडीक, चार कुण्ट बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण धार सदा वसणा चीत, चित ठगौरी रहिण कोए ना पाईआ।

✪ १४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ रणजीत सिंघ, मौता सिँघ कल्सीआं नवित,
हरि भगत दवार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर शब्द कहे प्रभू क्यों मेरा रूप बणाया वांग ठग्गां, ठगौरी जगत नाल रखाईआ। सदी चौधवीं घर घर लाउंदा फिरें अग्गां, कलयुग कूड़ी क्रिया नाल मिलाईआ। जन भगतां सीस बन्ह्ना के पग्गां, पगडण्डीआं विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। दर्शन दे के उपर शाहरगा, रघुपति मेल मेलया चाँईं चाँईआ। कूड़ क्रिया दीआं मेट के हद्दां, हदूद इक्को दिती वखाईआ। मैं दो जहान देवां सद्दा, होका हक हक दृढ़ाईआ। पुरख अकाला दयाला बिना भगतां किसे ना लद्धा, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। प्यार मुहब्बत विच किसे ना बध्धा, डोरी नाम तन्द ना कोए वखाईआ। दीपक प्रकाश धरनी धरत धवल धौल उत्ते जगा, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जिस दी अक्ल बुद्धी विच कोई जाण ना सके वजह, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ।
१८२६ जिस नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप दी बदल देणी तबा, तबीअत दा तबीब इक्को नूर इलाहीआ। कूड़ी क्रिया सफ़ा मेटणी सभा, १८२६
२२ मलेछां डेरा ढाहीआ। पीर पैग़म्बरां इक्को तकणा अब्बा, अम्मीजान इक्को नूर इलाहीआ। सच नाम दी खुमारी बख़्शणी मधा, २२
मधुर धुंन इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभू की हाल वेखें मुरीदां, मुर्शद आपणी दया कमाईआ। तेरे प्यार विच मुहब्बत वालीआं ईदां, ईदुलफ़ितर वाले सारे सीस निवाईआ। जिन्हां नूं तेरे कलमे कीतीआं ताकीदां, ताईद विच धुर दा हुक्म जणाईआ। उन्हां दीआं मनसा आसा पूरीआं कर उम्मीदां, तृष्ना जगत वाली गंवाईआ। लेखे लावीं जगत कुरबानीआं पावीं सार शहीदां, शरअ दा लेखा देणा मुकाईआ। मैं चार कुण्ट तकां ला के नीझां, निज नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। मेरा अन्तर बिन तेरे चरण ना कदे पतीजा, पतिपरमेश्वर तुध बिन सीस ना कदे निवाईआ। मेरी आशा साचे भगतां दीआं पूरीआं कर रीझां, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लोचन नैण अक्ख प्रतख साहमणे रख दीदा, दानिस्ता दरस देणा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक होणा सहाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभू तेरे वेखे रंग अनोखे, अचरज तेरी वड वड्याईआ। चार कुण्ट चार वरन होए धोखे, धर्म दी धार ना कोए अपनाईआ। अक्खरां

वाले शास्त्र सिमरत पढ़े पोथे, वेद पुराणां अञ्जील कुरानां ध्यान लगाईआ। साची मंज़ल चढ़े कोए ना तेरे कोठे, किवाड़ी बन्द ना पड़दा कोए चुकाईआ। काया माटी ख़ाली दिसे लोथे, निरगुण नूर ना कोए रुशनाईआ। सदी चौधवीं जीव जंत हो गए थोथे, होछी मनसा मन बणाईआ। मुहब्बत हो गई दोहते पोते, परम पुरख तेरी सार किसे ना आईआ। कलयुग जीव जहान दिसदे रोते, रुस्सयां सके ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभू तेरा खेल आपणे घर दा, गृह मन्दिर वेख वखाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु फिरे डरदा, सिर सके ना कोए उठाईआ। पैग़म्बर होया तेरा बरदा, बन्धन प्रेम नाल रखाईआ। क्यों नहीं आपणी किरपा करदा, करनहार तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरा भगत सुहेला जगत जहान होवे तरदा, बेड़ा अधविचकार ना कोए अटकाईआ। लेखा पूरा करदे लहिंदा चढ़दा, चढ़दयों लहिंदे पए दुहाईआ। खेल तकणा चोटी जड़ दा, चेतन तेरे हथ्थ वड्याईआ। किला तोड़ दे हँकारी गढ़ दा, हउमे हंगता दे मिटाईआ। तेरा प्रेमी प्यारा भगत गुरमुख सन्त सूफ़ी त्रैगुण विच रहे ना सड़दा, अमृत मेघ देणा बरसाईआ। जिधर वेखां तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सोहँ ढोला मानस मानव मानुख होवे पढ़दा, ज़नो मर्द दर तेरे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर,
१८३० निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, तेरे भय विच दो जहान डरदा, भय भयानक होणा आप सहाईआ। १८३०

✪ १५ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ कल्ला हरिसंगत नवित पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

मुहम्मद कहे वाह मेरे अमाम, अमाम अमामा सजदा सीस झुकाईआ। तेरा सुणां अगम्म पैग़ाम, पैग़म्बरां तों परे तेरी पढ़ाईआ। शरअ दा रहिणा नहीं कोई ग़ुलाम, ज़ंजीर बेनज़ीर देणा तुड़वाईआ। सदी चौधवीं कूड़ी क्रिया मेटणी हराम, हरस हवस देणी गंवाईआ। कलमे नूं करे ना कोए बदनाम, कायनात पड़दा देणा चुकाईआ। अन्त शरअ शरीअत दा करना कत्लेआम, कातिल मक्तूल पन्ध मुकाईआ। तेरा खेल वेखणा मेहरवान, महिबूब तेरी सरनाईआ। मैं दस्त बदस्त मंगां दान, चरण झुक के सजदा सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दरगाह साची मंग मंगाईआ। मुहम्मद कहे मेरे परवरदिगार तेरी दरगाह साची, सच तेरी सरनाईआ। चारों कुण्ट अंधेरी राती, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। कलमा पढ़े ना कोए सफ़ाती, पर्दानशीं पर्दा सके ना कोए उठाईआ। ख़ालक मख़लूक सब दा बदलया

अखलाकी, ख़ालस नज़र कोए ना आईआ। मैं तेरा खेल तकणा इत्फिाकी, इत्फिाकीआं आपणा हुक्म वरताईआ। लहिणा देणा पूरा करा बाकी, बाकायदा झोली देणी भराईआ। तूं मालक ख़ालक चौदां तबकां साकी, साख्यात करनी अगम्म रुशनाईआ। नूर नुराने खोल्ह्णी ताकी, तकवा तेरे उत्ते रखाईआ। मेरा वजूद ना रिहा पंज तत ख़ाकी, ख़ाक ख़ाक नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। मुहम्मद कहे मेरे महिबूब, मेहरवान तेरी सरनाईआ। मैं तेरा तकां इक आरूज़, आलीजाह आलीशान तेरी वड्याईआ। सदी चौधवीं मेरी उम्मत कर महफ़ूज़, सिर सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। भेव रहे ना एका दूज, दुतीआ लेखा देणा चुकाईआ। इक्को दस्स मंज़ल हक मकसूद, दर दवारा इक दृढ़ाईआ। जिधर तकां चारों कुण्ट दिसें मौजूद, मौजूदा लेखा देणा चुकाईआ। मेरी शरअ दी शरीअत विच हदूद, चौदां तबक वंड वंडाईआ। सदी चौधवीं अन्तिम होणा कूच, कूचा गली रिहा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक होणा सहाईआ। परवरदिगार कहे सुण मुहम्मद रसूल, रसूललल्ला दयां जणाईआ। धुर पैग़ाम कर कबूल, मकबरयां बाहर दयां दृढ़ाईआ। किसे दा लेखा रहिण नहीं देणा
१८३१ अर्ज़ तूल, हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। पेशीनगोई ना जाणा भूल, अभुल्ल रिहा समझाईआ। जो मदीने विच कौल इकरार १८३१
कीता माकूल, मुकम्मल दिता समझाईआ। सदी चौधवीं धरनी उत्ते उडणी धूल, धूढ़ी ख़ाक नाल मिलाईआ। गुलशन विच
नहीं रहिणे फूल, फुलवाड़ी नबी ना कोए महकाईआ। हुक्म वरतणा इक्को कन्त कन्तूहल, दो जहान करे शनवाईआ। उम्मत उम्मती रहे ना कोए मशग़ूल, मशवरा जगत ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। परवरदिगार कहे सुण मेरे नबी, नबी नूह ध्यान लगाईआ। आपणा लेखा तक सभी, सभा मलेछां दे मिटाईआ। दो जहानां बण के तबी, तबीअत सब दी फोल फुलाईआ। प्रगट हो के नूर इलाही रब्बी, रहमत आपणी हक कमाईआ। शरअ दा मूल ना रहिणा लबी, लालच विच कदे ना आईआ। परम पुरख दा हुक्म मिलणा यदी, यथार्थ आपणा हुक्म सुणाईआ। जिस ने तेरी जड़ लोकमात गढ़ी, धरनी धरत धवल दिती वड्याईआ। ओह उम्मत अन्तिम जाणा छड्डी, नाता तोड़ कूड़ लोकाईआ। मकबरयां विच रोवे पसली हड्डी, नाड़ी नाड़ी दए दुहाईआ। कवण वेला बीते चौधवीं सदी, सदमे मिटे जगत लोकाईआ। लेखा रहे ना कूड़ कुड़यार बदी, मुहम्मद दा मोह ना कोए हल्काईआ। इक्को जोत दो जहान होवे जगी, नूर नुराना डगमगाईआ। जो शाह पातशाह सूरा सरबगी, शहिनशाह इक अख्वाईआ। जीव जगत वेखे अल्पगी, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। उस दा खेल होणा सबब्बी, भेव अभेद सके ना कोए खुल्हाईआ।

उस दी धुन होणी मधी, मधुर धुन करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक दया कमाईआ। परवरदिगार कहे सुण मुहम्मद मेरे बच्चे नन्हे, बिन नैणां दयां जणाईआ। सब ने मेरे हुक्म मन्ने, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। तेरा अन्त करना गोबिन्द वाले इक्को कन्ने, चौदां सौ तीह अंक सीस झुकाईआ। लेखा पूरा होवे जट्ट धन्ने, जट्ट जट्टां दए वड्याईआ। जिस चुरासी देणा डंने, चारे खाणी फोल फुलाईआ। उस दा वसेरा कदे ना छप्पर छन्ने, महल्ल अटल ना डेरा लाईआ। इक्को नूर प्रकाश अगम्मे चन्ने, चन्न सूर्या सारे सीस निवाईआ। उस दे गिण सक्या कोए ना लमहे, घड़ी पल वंड ना कोए वंडाईआ। जुग जुग बदलदा आया समें, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंड वंडाईआ। जिस नूं हरख़ सोग़ ना कोए ग़मे, चिन्ता चिखा ना कोए तपाईआ। ओह लख चुरासी लेखा जाणे दमे, स्वास स्वासां खोज खुजाईआ। जिस दे खेल होणे घने, गहर गम्भीर आपणा हुक्म वरताईआ। जो घड़या सो अन्तिम भन्ने, घड़न भन्नणहार बेपरवाहीआ। जिस ने सूफ़ी सन्त फ़कीर वेखणे पंज तत तने, तत काया खोज खुजाईआ। हरिजन नेत्रहीण रहिण नहीं देणे अन्ने, निज लोचन नैण करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। मुहम्मद कहे मेरे साहिब सुल्ताना, दर ठांडे सीस निवाईआ। की खेल तेरा विच जहाना, जागरत जोत देणा दृढ़ाईआ। किस बिध वरतें आपणा भाणा, हुक्मे अन्दर कार कमाईआ। की खेल तेरा होणा धुर दे कान्हा, राम रामा की चतुराईआ। कवण रूप होवे अमामा, अमलां तों रहित नूर इलाहीआ। तेरे कदमां मेरा सलामा, सजदा सीस झुकाईआ। तेरा नूर ज़हूर होवे बेपहचाना, पर्दा ओहला कवण उठाईआ। मैं दरवेश तेरा ग़ुलामा, दर ठांडे मंग मंगाईआ। तेरे केहड़े गृह होवे क्यामा, कवण काअबे करें रुशनाईआ। कवण नूरे चशम तेरा होवे नज़राना, वाहिद आपणा भेव देणा चुकाईआ। भेव खोल्ह मेरे मेहरवाना, मेहर तेरी ओट रखाईआ। मुहम्मद कहे मैं कदमबोसी करां शाह सुल्ताना, बिन सजदे सीस निवाईआ। तेरा भेव जाणे ना कोए आलम उल्माना, उल्मा समझ सके ना राईआ। तुरीआ तों परे तेरा तराना, अन्ना हू अल्ला हू तेरा भेव कोए ना पाईआ। किस बिध सदी चौधवीं अन्तिम पहरे बाना, वेस अवेसा आप वटाईआ। जगत अंधेरा मेटें शामां, शमां जोत नूर करे रुशनाईआ। तेरा गोबिन्द वाला वज्जे इक दमामा, डंका दो जहान सुणाईआ। तूं हर घट अन्तर होवें जाणी जाणा, जानणहार इक्को इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दरगाह साची दर ठांडे मंग मंगाईआ। मुहम्मद कहे मेरे परवरदिगार तेरे विच हक तौफ़ीका, तेरी तारीफ़ दी लोड़ रहे ना राईआ। तेरी आमद दीआं उम्मीदां, सारे बैठे नैण उठाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु करन तस्दीकां,

१८३२ २२

शहादत तेरे नाम वाली भुगताईआ। मेहरवाना नौजवाना मर्द मर्दाना आपणा भेव दस्स पोशीदा, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। पैग़म्बर रसूल तेरे अज़ीज़ा, तमीज़ इक्को इक देणी जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरे हथ्थ वड्याईआ। परवरदिगार कहे मुहम्मद सदी चौधवीं तक, तकवा इक रखाईआ। सब दा पूरा करां हक, हकीकत वेखां थांउँ थाँईंआ। शकूक रहे ना शिकवा शक, शिकवे सारे देणे गंवाईआ। निरगुण धार हो प्रगट, परगणे वेखां चाँईं चाँईंआ। जो नाम कलमे दीन दुनी रही रट, रसना जेहवा सिफ्त सालाहीआ। एह खेल पुरख समरथ, समरथ स्वामी रिहा कराईआ। जिस ने सब कुछ लैणा अग्गे आपणे हथ्थ, हुक्म धुर दा इक वरताईआ। कूड़ी क्रिया देवे मथ, नाम मधाणा इक हिलाईआ। झगड़ा मेट के तत अठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध करे सफ़ाईआ। नौ दवारे उबलण ना देवे रत्त, रत्ती रत्त ना कोए तपाईआ। सति सच दा बख्श के तत, तत्व तत दए समझाईआ। चरण प्रीत बख्श के नत, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। सब दी पूरी करे आस, तृष्ना जगत रहे ना राईआ। निरगुण नूर कर प्रकाश, जोती जाता डगमगाईआ। सम्बल करके आपणा वास, काअबा इक्को इक जणाईआ। जिथ्थे बिना प्रभू दी किरपा तों कर सके ना कोए तलाश, खोज्जयां हथ्थ किसे ना आईआ। जिस ने मुहम्मदा तेरी मिट्टी विच रुलाई लाश, वजूद कबरां विच दबाईआ। उस दा खेल अगम्म तमाश, चौदां तबकां तों परे हुक्म वरताईआ। ओह तक शंकर भज्जा फिरे उत्ते कैलाश, चारों कुण्ट वाहो दाहीआ। ब्रह्मा तके की खेल सर्ब गुणतास, की करता कार कमाईआ। विष्नूं कहे मेरा साहिब इक अबिनाश, अबिनाशी करता इक अख्वाईआ। जो कलयुग अन्तिम मेटे अंधेरी रात, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ। सृष्ट सबाई बणाए इक जमात, इक्को अक्खर नाम पढ़ाईआ। गुप्त ज़ाहर बातन करे बात, पर्दा ओहला रहे ना राईआ। जन भगतां दर्शन देवे साख्यात, सखी सुल्तान नूर इलाहीआ। झगड़ा मेट के ज़ात पात, कूड़ी क्रिया दए गंवाईआ। बन्द कवाड़ी खोल्ह के ताक, काया मन्दिर अन्दर करी रुशनाईआ। शब्दी अगम्म सुणाए नाद, अनादी धुन शनवाईआ। पर्दा लाह के ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड दा डेरा ढाहीआ। जिस नूं जुग जुग गाउंदे सन्त साध, सूफ़ी सिफ्तां विच सालाहीआ। ओह जन भगतां खोल्हे जाग, आलस निंद्रा विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। अन्तर प्रेम दा दे के वैराग, प्रीती इक्को इक समझाईआ। दीपक जोत जगा चराग़, चराग़ाहां करे रुशनाईआ। धरनी धरत धवल धौल उत्ते रखे लाज, गुरमुखां होए आप सहाईआ। राती सुत्तयां दिने जागदयां दर्शन देवे आप, आप आपणा हुक्म वरताईआ। जन्म जन्म दे मेट के पाप, पतित पुनीत दए बणाईआ। सब दी पुछे वात, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। जन भगतो तुहाडी सुहञ्जणी होवे पन्द्रां फग्गण दी रात, रैण भिन्नड़ी वज्जदी रहे वधाईआ।

मालक ख़ालक प्रितपालक परमात्म आत्म रहे साथ, सगला संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण सरगुण पूरी करे आस, निरासा रहिण कोए ना पाईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ गुरदयाल सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे खुशीआं वाली प्रभाती, प्रभ भरम रिहा मिटाईआ। किरपा करे कमलापाती, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जन भगतां बख्शे दाती, दयावान दया कमाईआ। गुरमुखां मिले अमृत बूँद स्वांती, सांतक सति सति कराईआ। मैनूं खुशी हुन्दी जिस वेले हरिजन चरण रखदे मेरी उपर छाती, छत्रधारी नज़र कोए ना आईआ। दीन दुनी दी बदलदी जांदी जाती, ज़ात पात दा डेरा ढाहीआ। हुक्म संदेशा सुणदी लोकमाती, चार कुण्ट बिन सरवणां होए शनवाईआ। करे खेल साहिब अबिनाशी,
१८३४ अबिनाशी करता वड वड्याईआ। जिस दी दो जहान खुशीआं वाली रहिरासी, रस्ता इक्को इक दरसाईआ। झगड़ा मेटे १८३४
मदिरा मासी, मधुर धुन इक सुणाईआ। माण गवा के पंडतां कासी, जन भगतां सोहँ तुक दिती पढ़ाईआ। जीवण विच्चों
२२ बदल गई हयाती, हर हिरदे विच टिकाईआ। जन्म कर्म दा लहिणा मुकाया खाती, लेखा अवर ना कोए जणाईआ। दर्शन २२
देवे हो के साख्याती, सन्मुख सोभा पाईआ। नौ खण्ड पृथमी पूरी करे आसी, दीप लोअ वेख वखाईआ। मैं खुशीआं विच करां हासी, धरनी धरत हस्स के रही सुणाईआ। शंकर दा लहिणा मुकाउणा उतों कैलाशी, ब्रह्मा ब्रह्म दा भेव चुकाईआ। विष्न रहे ना कोए उदासी, लेखा जाणे अगम्म अथाहीआ। जिस साहिब भगतां दी मुकाई वाटी, आवण जावण पन्ध मुकाईआ। धर्म दवारा खोल्ह के हाटी, नाम भण्डारा झोली पाईआ। दीन दुनी तके खेल बाज़ीगर नाटी, स्वांगी आपणा स्वांग रचाईआ। धरनी कहे जन भगतो मैं प्रभू दे चरण कँवल रही चाटी, बिन रसना रस आपणे विच रखाईआ। तुहाडी जोत जगे विच ललाटी, लाटां वाली जिस दे सिंघासण थल्ले बहि के आपणा झट लँघाईआ। सम्मत शहिनशाही सत्त दी मुकदी जांदी वाटी, अठवां आपणी ल्ए अगंड़ाईआ। लेखा पूरा करना जो संदेशा दिता गोबिन्द जिस वेले अमृत पाया सी विच बाटी, दृष्ट इष्ट वाली टिकाईआ। उस दिन सुत्ता नहीं सी उत्ते खाटी, सिंघासण धरती उत्ते लगाईआ। खुशीआं विच इक्को गल्ल आखी, आख के गया सुणाईआ। मेरा साहिब पुरख अकाल मेरे प्यार दी करेगा राखी, मुहब्बत हुक्म वाली जणाईआ। जिस दा

दिवस इक सत्त पंज छे दी विसाखी, वसाह के सब नूं गया सुणाईआ। सो लेखा पूरा करे अलखणा अलाखी, अलख अगोचर वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा आदि जुगादि दाती, दाता दानी दयावान इक अख्वाईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ कुंदन सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे गोबिन्द किहा जिस वेले मेरा साहिब, साबत आपणा सति सरूप प्रगटाईआ। मैं निरगुण धार उस दा होवां नाइब, सतिगुर शब्द रूप बदलाईआ। खेल करां अगम्म अजाइब, अगम्मढ़ी कार कमाईआ। सब दा पिछला पूरा करां अहिद, अहिदनामा आपणे हथ्थ रखाईआ। इक्को हुक्म वरतां वाहिद, लाशरीक हो के आपणी कार भुगताईआ। बिनाभगतां तों लभ्भ सके ना कोए शायद, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। दीनां मज़्बां नालों हो के अलाहिद, वक्खरी खेल खिलाईआ। धुर दा हुक्म कर के राइज, राज राजानां शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। नव नौ चार दा कढ नताइज, असल सब नूं दयां वखाईआ। धुर दा हुक्म देणा जाइज़, जाइज़ा लै के ख़लक खुदाईआ। आपणा पूरा करां फ़राइज़, फ़ैसला हक हक सुणाईआ। कलयुग अन्त आवां महिज़, महिव आपणी कार भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती धार निरगुण होया रहां ग़ायब, ग़ैबी आपणा हुक्म वरताईआ।

१८३५
२२

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ सुखदेव राज दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे गोबिन्द ने ढोला गाया दो तुकी, तूं मेरा मैं तेरा दिता जणाईआ। फेर प्यार विच मेरे सीने ते मारी मुक्की, मुकम्मल दिता दृढ़ाईआ। तूं कलयुग जीवां भार फिरीं चुक्की, चुकन्नी हो के आपणी सेव कमाईआ। आपणी मंज़ल तों ना रुकीं, भज्जी जाणा वाहो दाहीआ। घुप अंधेरे विच ना लुक्कीं, चारों कुण्ट अंधेरा छाईआ। इक्को साहिब सतिगुर झुकीं, जो पुरख अकाला बेपरवाहीआ। जिस ने खेल करनी दो टुक्की, टुकड़े दो करे लोकाईआ। कूड़ी क्रिया जाणी कटी, कटाक्ष आपणा नाम लगाईआ। फेर धर्म दी पोह जाणी फुट्टी, फुटकल दा लेखा रहे ना राईआ। जन भगतां आत्म परमात्म मेले टुट्टी, टुटयां गंढ पवाईआ। दीनां मज़्बां नूं दे के छुट्टी, शरअ ज़ंजीर दए कटाईआ। तूं धरनी उस वेले सुत्ती उठीं, उठ

के लै अंगड़ाईआ। प्रभ दे चरणां दी धूढ़ इक्को रखीं मुट्ठी, मुट्ठी आपणी गंढ बंधाईआ। जिस वेले दीन दुनी जाए लुट्टी, फेर लुटेरा वेखणा बेपरवाहीआ। उस वेले किसे साध सन्त दी मंजल होणी नहीं उत्ते त्रैकुटी, त्रैगुण दा डेरा कोए ना ढाहीआ। मेरे साहिब ने जगत जहान तों मंज़ल करनी उच्ची, उच्च अगम्म आपणा खेल खिलाईआ। जन भगतां प्यार विच तैनूं करे सुच्ची, संजम इक्को इक जणाईआ। जुग चौकड़ी दी तेरे लेखे लावे बुती, जो बुतख़ान्यां बैठी भार उठाईआ। आपणे नाल सुहाए रुती, रुतड़ी धर्म धार महकाईआ। सदी चौधवीं आपणा लहिणा देणा पुच्छी, पूरब पड़दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जणावे वक्त उसी, जिस दी उस्तत करके अवतार पैग़म्बर गुरु आपणा लेखा गए जणाईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

१८३६ धरनी कहे मैं निमाणी धरत, धवल धौल बणके मिले वड्याईआ। मेरे उत्ते गोबिन्द ने पासा ल्या परत, सति सच दी १८३६
२२ लै अंगड़ाईआ। वायदा कौल कीता शब्दी लाई शर्त, शरअ दिती समझाईआ। ओह वेख उत्ते अर्श, फ़र्शी वालीए आपणी २२
अक्ख उठाईआ। जिस ने सब दे उत्ते करना तरस, रहमतां दा मालक बेपरवाहीआ। मेघ अगम्मा देवे बरस, बूँद स्वांती अमृत जाम प्याईआ। जुग जन्म दी मेटे हरस, हरस कूड़ी दए गंवाईआ। जिस ने भगतां नूं देणा दरस, दर्शन भगतां आप पाईआ। उस दे सिर मेरा अहसान ते मेरा कर्ज़, मकरूज़ उस नूं रिहा बणाईआ। फेर करांगां अर्ज़, बेनन्ती विच सीस झुकाईआ। योधा सूरबीर मर्दाना बण मर्द, मदद देणी थांउँ थाँईंआ। ग़रीब निमाणयां वंडणी दर्द, दुखियां दुःख आपणी झोली पाईआ। शरअ छुरी रहिण ना देवीं करद, कसाई रूप नज़र कोए ना आईआ। कलयुग अन्तिम उस ज़रूर मेटणा अंधेर गर्द, गर्द गुबार तके ख़लक खुदाईआ। जिस दे कोल गुर अवतार पैग़म्बरां दी फ़रद, फ़ैसले हक हक सुणाईआ। उस दा रूप अनूप होणा असचरज, सति सरूप आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किसे दा होण ना देवे हर्ज, हर्जाने गुरमुखां पूर कराईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ गुरबख्श सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे मैनूं ख़बर सुणाई सज्जरी, गोबिन्द शब्द धार प्रगटाईआ। मेरा साहिब आवे सम्बल नगरी, नगरां वाल्यां नज़र कोए ना आईआ। निर्मल जोत करे उजगरी, जोती जाता डगमगाईआ। जिस ने सृष्टी दी दृष्टी करनी पद्धरी, ऊचां नीचां पन्ध मुकाईआ। जन भगतां पूरीआं करे सधरी, सधर वेखे थांउँ थाँईंआ। दीन दुनी झगड़ा तके ग़दरी, वरन बरन पए दुहाईआ। गुरमुखां मेहर करे नदरी, नदर निहाल आप अख्वाईआ। कलयुग दी सतिजुग नाल करे बदली, बदला चुकाए थांउँ थाँईंआ। इन्साफ़ करे धुर दा अदली, अदालत इक्को इक प्रगटाईआ। आत्म परमात्म नाता जोड़े पति पत्नी, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। सन्त सुहेले बणाए धुर दे वतनी, बेवतन लोकमात तजाईआ। नाम खुमारी देवे रत्नी, रत्न अमोलक हीरे लए प्रगटाईआ। सदी चौधवीं लेखा जाणां कन्ढ़ा पत्तनी, तट किनारे खोज खुजाईआ। प्रगट हो के अलख अलखणी, लेखा सब दा दए मुकाईआ। जिस ने पति तेरी रखणी, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। उस दी इक्को जोत पूरन धार विच जगणी, जोती जाता डगमगाईआ। दीन दुनी जले विच अग्नी, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। जन भगतां मेल मिलाए सोहँ मुख लगाए सगनी, सगला साथी आप अख्वाईआ। निशान मेटे तारा चन्दनी, चन्द सितार लेखा अन्त रहे ना राईआ। झगड़ा
१८३७ २२ मेटे काया बदनी, तन वजूद माटी ख़ाक ना कोए लड़ाईआ। इक्को बख्शे निरबाण पदनी, गृह इक्को इक सुहाईआ। जोती १८३७ २२
जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गोपाल मूर्त मोहण माधव मदनी, मधुर धुन इक सुणाईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ सरदारा सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे गोबिन्द मेरे वल्ल तक्कया, निगाह प्रेम वाली बदलाईआ। फिर खिड़ खिड़ा के हस्सया, हस्सती दस्सी बेपरवाहीआ। जेहड़ा इक्को धार विच रत्तया, रत्न अमोलक हीरे गुरमुख लए प्रगटाईआ। जिस दा इक्को आदि जुगादी मतया, मति मतांतर विच कदे ना आईआ। लख चुरासी आत्म परमात्म नाता रखे सक्या, सज्जण सुहेल इक अख्वाईआ। जिस सदी चौधवीं मुहम्मद दा फल वेखणा पक्कया, उम्मत उम्मती खोज खुजाईआ। लहिणा देणा पूरा करे मदीना मक्कया, काअब्यां आपणी कार भुगताईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मारे धक्कया, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। किसे दी कीमत रहिण नहीं देणी टकया, माया ममता ना कोए चतुराईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दा पूरा करना पटया, पटने वाला संग रखाईआ।

सृष्टी नूं ज़ीरो नाल कर के बटया, बटा सिफ़र नाल बदलाईआ। जगत जहान दा चीथड़ होणा फटया, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। चारों कुण्ट उडणा गुबार घट्टया, अंध अंधेरा जावे छाईआ। जिस वेले सम्मत शहिनशाही सत्त टप्पया, टापूआं तों परे प्रभ आपणा हुक्म वरताईआ। करे प्रकाश जोत लट लटया, नूर नुराना डगमगाईआ। जिधर जावे पैंदे जाण रट्टया, रट्टा सके ना कोए मिटाईआ। लहिणा देणा पूरा करे सब दा हथ्थो हथ्थया, पूरब उधार रहे ना राईआ। जगत जहान जाए मथ्थया, मथ्थण वाला इक्को बेपरवाहीआ। करे खेल पुरख समरथया, हरि आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो हर घट अन्दर वसया, वेखणहारा चाँईं चाँईंआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ सवरन सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे मैनूं गोबिन्द दिता संदेशा, सँध्या सरघी वंड ना कोए वंडाईआ। तेरा मेरा मालक इक नर नरेशा, नर नरायण धुरदरगाहीआ। जो आदि जुगादि रहे हमेशा, जुग चौकड़ी आपणा खेल खिलाईआ। जो लेखा जाणे देस परदेशा, दो जहानां वेख वखाईआ। ओह लज्जया रखे मुच्छ दाढ़ी केसा, केसगढ़ दा वक्त सुहाईआ। खुशी नाल किहा दस दशमेशा, दहि दिशा दा पन्ध मुकाईआ। जिस झगड़ा मेटणा मुल्लां शेख़ा, पैग़म्बरां लहिणा दए चुकाईआ। भगत उधारना उस दा पेशा, पेशीनगोई विच सुणाईआ। उस दा रूप अनूप दर दरवेशा, गृह गृह आपणी अलख जगाईआ। जिस दा कोई ना जाणे भेता, पड़दा सके ना कोए उठाईआ। जिस लहिणा पूरा करना जिस सीस पवाई रेता, गुर अर्जन रावी कन्ढ्ढा सुहाईआ। ग़रीब निमाणयां करना हेता, हितकारी हो के वेख वखाईआ। जिस नूं अवतार पैग़म्बर गुरुआं मन्नणा नेता, विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाईआ। उस ने दीनां मज़्बां पूरा करना ठेका, ठेकेदारी सब दी आपणे विच छुपाईआ। इक्को देणा धुर संदेशा, आत्म परमात्म नाम पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी एकँकार इक एका, इक इकल्ला आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे गोबिन्द ने अमृत दा बख्श्या सरूर, सुरत शब्द मेला मेलया सहिज सुभाईआ। पुरख अकाल दा दरसाया

१८३६ नूर, नूर नुराना डगमगाईआ। जो आदि जुगादि ज़ाहर ज़हूर, ज़र्रा ज़र्रा रिहा समझाईआ। शब्दी शब्द शब्द प्रगटाए तूर, तुरीआ तों परे आपणा गृह वखाईआ। जिथ्थे वसे सर्ब कला भरपूर, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जिस दी अवतार पैग़म्बर गुर बिना चरणां लाउंदे धूढ़, मस्तक ख़ाक रमाईआ। ओह कलयुग अन्तिम सदी चौधवीं मेटे कूड़, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, गुरमुख गुर गुर आपणे रंग रंगाईआ। प्रगट होवे योद्धा दाता सूर, महाबली इक अख्वाईआ। जो सृष्टी दृष्टी अन्दर तोड़े गढ़ ग़रूर, हँकार विकार दए मिटाईआ। इक्को नाम धुर दा कलमा नौ खण्ड पृथ्मी करे मशहूर, मशवरा नाल ना कोए रखाईआ। पन्ध मुका के नेड़ा दूर, आत्म परमात्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। जगत विकारां करके चूरो चूर, चरण चरणोदक जाम दए प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक रंगाईआ। धरनी कहे गोबिन्द दिता अगम्म इशारा, सैनत नाम वाली लगाईआ। उठ वेख नर निरँकारा, निरवैर अगम्म अथाहीआ। जिस नूं पैग़म्बरां किहा परवरदिगारा, वाहिद करता नूर इलाहीआ। सो खेल करे विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी जिस नूं सीस निवाईआ। प्रगट होवे चव्वीआं अवतारा, निहकलंका कलि कल्की वेस वटाईआ। अमाम अमामा होवे ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। सदी चौधवीं पावे सारा, बीसवीं लेखा रहे ना राईआ। मुहम्मद दा लहिणा देणा पूरा करे उधारा, चौदां तबकां खोज खुजाईआ। मूसा जणाए अन्त नज़ारा, कोहतूर दा डेरा ढाहीआ। ईसा पड़दा दए उतारा, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण वेख वखाईआ। जिस दा गोबिन्द बोलया फ़तिह जैकारा, दो जहान शब्द शनवाईआ। सो कलयुग अन्तिम कूड़ी क्रिया करे पार किनारा, नईया शौह दरया रुढ़ाईआ। सति धर्म दा सति सति करे वरतारा, सतिजुग सच सच समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण निरगुण जोती जाता इक अवतारा, पुरख बिधाता पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। १८३६

२२ २२

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ हरदीप सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे मेरे उत्ते लग्गा भाग, भगवन दिती माण वड्याईआ। दीपक जोत जगा अगम्मी चराग़, चराग़ाहां करे रुशनाईआ। मेरा धो के पिछला दाग़, कीती हक सफ़ाईआ। कलयुग अन्तिम रखी लाज, सिर स्वामी हथ्थ टिकाईआ। जिस दे अग्गे ना कोए सवाल ना कोए जवाब, जवाब तल्बी विच सारे सीस निवाईआ। ओह भगतां देवे खिताब, मेहरवान मेहर नज़र

उठाईआ। तन मन्दिर वजा रबाब, सितार अपार आप हिलाईआ। निरगुण धार दे इमदाद, सरगुण झोली दए भराईआ। हरिजन होए ना किसे मुहताज, लोड़ींदा सज्जण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो अन्तर निरन्तर रहे अराध, अराधना सब दी लेखे पाईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ कुंदन सिँघ दे गृह पिण्ड मालचक्क ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे मैं गोबिन्द दी तकी दृष्टी, जिस दा दृष्टांत जगत बुद्धी ना कोए समझाईआ। जिस दा आदि पुरख अपरम्पर स्वामी इक्को इष्टी, जोती जाता पुरख बिधाता इक्को नूर इलाहीआ। जो नित नवित निरगुण सरगुण खेले खेल विच सृष्टी, दीन दुनी लख चुरासी आपणा रंग रंगाईआ। जो आत्म परमात्म धार बणे गृहस्ती, बिन तन वजूद माटी ख़ाक आपणी कल वरताईआ। जिस दा भेव पाए कोए ना सुरती निरती, निरगुण निरवैर निराकार आपणा हुक्म वरताईआ। देवे माण वड्याई धौल पृथ्मी प्रिथी, पृथ्म आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दी आशा कदी ना जुग चौकड़ी जाए बिरथी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा खेल खिलाईआ। जिस नूं कोटन कोटि लभ्भदे काया मन्दिर अन्दर आपणी बिरती, बिरहो वैरागी हो के ध्यान लगाईआ। सार पाए ना कोए घर थिर दी, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी की आपणी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे मैनूं गोबिन्द दिता इशारा, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। वेख खेल परवरदिगारा, दो जहान बिन नैणां नैण अक्ख उठाईआ। जिस नूं झुकण पैग़म्बर अवतारा, सरगुण निउँ निउँ सीस निवाईआ। जिस दा नूर नुराना दो जहानां होए उज्यारा, जागरत जोत बिन वरन गोत एकँकार करे रुशनाईआ। जिस दा आदि अन्त जुगा जुगन्त कोए समझ ना सके दाइरा, बेअन्त कहि के सारे झट लँघाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी खेल खेले गुप्त ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर आपणा रंग रंगाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमी असमान पावे सारा, ब्रह्मण्ड खण्ड खोजे चाँईं चाँईंआ। जिस ने लहिणा देणा पूरा करना सदी चौधवीं अन्तिम वारा, चौदां तबक नेत्र रोवण मारन धाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आपणे हथ्थ रखाईआ। धरनी कहे मैनूं गोबिन्द पुश्त पनाह लाई थापी, प्रेम प्यार नाल जणाईआ। ओह तक कलयुग अंधेरी राती, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। धर्म दी धार बणे कोए

ना साथी, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। बेशक कुंदन सिँघ दे कुंदन सिँघ वरगे होणगे जमाती, जगत विद्या अक्खरां नाल समझाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म बणे ना कोए साथी, सगला संग ना कोए रखाईआ। जीवण विच्चों बदले ना किसे दी हयाती, तन वजूद माटी ख़ाक वज्जे ना हक वधाईआ। दिवस रैण अट्ठे पहर सुहञ्जणा वक्त ना होए प्रभाती, अनहद धुन अनादी वज्जदी रहे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। धरनी कहे मैनूं गोबिन्द संदेशा दिता अखीरी, बिन अक्खरां गया दृढ़ाईआ। ओह तक शहिनशाह बेनज़ीरी, जिस नूं जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। जिस दा हुक्म वरतणा तकदीरी, शास्त्र सिमरत वेद पुराण खाणी बाणी अन्त ना कोए दरसाईआ। उस लहिणा देणा चुकाउणा शाह हकीरी, शहिनशाह शाह पातशाह इक्को बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं सब दा लेखा अन्तिम मुहम्मद नूं दिसे गली भीड़ी, अग्गे पैंडा पन्ध नज़र कोए ना आईआ। जिस ने जगत जहान कलयुग अन्दर सतिजुग बदल देणी पीढ़ी, धर्म दी धार इक प्रगटाईआ। किसे दी रहिण नहीं देणी अमीरी वज़ीरी, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। अन्त शरअ दी तोड़े ज़ंजीरी, शरीअत दा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। धरनी कहे मैं हस्स के कीता प्रणाम, नमो नमो गोबिन्द सीस निवाईआ। मेरे साहिब

१८४१ २२ सतिगुर क्यों नानक मन्त्र चलाया सतिनाम, सति सति सति समझाईआ। क्यों वाहिगुरु फ़तिह डंक वजाया विच जहान, गोबिन्द सूरे देणा समझाईआ। चारों कुण्ट मैं वेखां मार ध्यान, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण खोज खुजाईआ। जिस परम पुरख नूं झुकदे ज़िमी असमान, गुरु अवतार पैग़म्बर बैठे ख़ाली झोलीआं ढाहीआ। ओह नाम कलमे दा देवणहारा दान, दाता दानी इक अख्वाईआ। जिस नूं सारे कहिंदे धुर दा राम, धुर दा काहन कहि के आपणा झट लँघाईआ। पैग़म्बर मन्नण इक अमाम, अमलां तों रहित नूर खुदाईआ। जिस नूं नानक निरगुण कीता परवान, परम पुरख वड वड्याईआ। जिस दा गोबिन्द धरे ध्यान, पुरख अकाला दीन दयाला एकँकारा इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। झट गोबिन्द खुशी दे विच हस्सया, हस्ती तक बेपरवाहीआ। धरनी जिस वेले तेरे उत्ते होई अंधेरी मस्सया कलयुग काला आपणा रंग रंगाईआ। सति धर्म सृष्टी दी दृष्टी अन्दरों नस्सया, काया काम क्रोध लोभ मोह हँकार होए लोकाईआ। प्रभ दा नाम हिरदे होए ना वसया, रसना जेहवा बत्ती दन्द ढोले सारे गाईआ। किसे दा धीरज रहे ना हट्टया, सति सन्तोख रूप ना कोए दरसाईआ। सदी चौधवीं उलटी गिढ़े लट्टया, शरअ शरअ नाल टकराईआ। सब दा पूरा कौल इकरार होवे जो लिख्या पटया, पटने वाला रिहा जणाईआ। उस वेले दीन दयाल साहिब स्वामी निरगुण

धार आवे नड्डया, जोती जाता पुरख बिधाता शब्दी शब्द खेल खिलाईआ। जो प्रकाश करे लट लटया, दो जहानां डगमगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करे मिथ्या, मथणहार इक अख्वाईआ। सति धर्म चलावे रथया, रथवाही इक्को नज़री आईआ। जिस दी चार जुग दे शास्त्र गाउंदे गथया, अक्खरां वाली सिफ्त सालाहीआ। ओह साहिब सतिगुरु आदि जुगादि पुरख समरथया, सर्ब घट वासी आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा नाम इक्को होवे जसया, जै जैकार करे लोकाईआ। जो सचखण्ड दवार दरगाह साची मुकामे हक वसया, बिन रंग रेख रूप दर आपणे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। धरनी कहे गोबिन्द मैं किस दी करां उडीक, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। मैनूं सच दस्स तारीख, जिस तवारीख देणी बदलाईआ। मैं उस दे कोलों मंगां भीख, भिक्खक हो के झोली डाहीआ। जिस दे छत्र झुलणा सीस, दो जहानां हुक्म मनाईआ। मेहरवान जगदीश, जगदीश्र वड वड्याईआ। जिस दा इक्को नाम कलमा होणी हदीस, हज़रतां तों बाहर करे पढ़ाईआ। जिस ने आत्म परमात्म चलाउणी रीत, मन्दिर मसीत पैंडा देणा मुकाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त बदलणी नीत, नीतीवान इक अख्वाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सब ने गाउणा गीत, गोबिन्द मेला मिलणा साचे माहीआ। पारब्रह्म ब्रह्म दस्सणी इक प्रीत, प्रीतम आपणा पड़दा देणा उठाईआ। झगड़ा रहे ना ऊच नीच ज़ात पात दा लेखा दए गंवाईआ। इक्को रंग रंगे हस्त कीट, अनडीठ आपणी खेल खिलाईआ। जन भगतां वसे काया मन्दिर बीच, पड़दा अन्दरों दए चुकाईआ। अमृत बख्शे निजर धार बूँद स्वांती कँवल नाभी ठांडा सीत, अग्नी तत बुझाईआ। शब्द अनाद धुन आत्मक सुणाए गीत, अनहद नादी नाद वजाईआ। सच प्रकाश करे अतीत, त्रैगुण दा डेरा ढाहीआ। सो साहिब स्वामी निरगुण धार बणे धुर दा मीत, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। जो दरगाह साची सचखण्ड दा वसनीक, छप्पर छन्ना छन्न ना कोए छुहाईआ। ओह आदि जुगादी लाशरीक, परवरदिगार नूर इलाहीआ। जिस दी अवतार पैग़म्बर गुरुआं कीती तस्दीक, शहादत ग्रन्थां वाली भुगताईआ। ओह सब दी आसा मनसा पूरी करे उम्मीद, तृष्ना तृखा दूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दे हुक्म विच नव नौ चार रहे बीत, जुग चौकड़ी आपणा पन्ध गए मुकाईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ मान सिंघ दे गृह पिण्ड कंग ज़िला अंमितसर ✪

धरनी कहे गोबिन्द ने गणी गणत, अणगिणत अंक जणाईआ। कलयुग किनारा दस्सया अन्त, अन्तष्करन वेख ख़लक खुदाईआ। धर्म दा रहिणा नहीं कोए सन्त, सज्जण सच विच ना कोए समाईआ। परमात्मा मिलणा नहीं किसे कन्त, कन्तूहल सेज ना कोए सुहाईआ। गढ़ बणना हउमे हंगत, हँ ब्रह्म भेव ना कोए चुकाईआ। मानव जाती प्रेम दी रहिणी नहीं संगत, गुर चेला करे लड़ाईआ। ब्रह्म दी धार दिसणा नहीं कोई पंडत, पारब्रह्म ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक बेपरवाहीआ। धरनी कहे गोबिन्द मैनूं मारया मुक्का, मुकम्मल दिता जणाईआ। मेरा शब्द निशाना कदे ना उका, तीर अणयाला दिता चलाईआ। जिस ने मैनूं बणाया सुता, परम पुरख वड वड्याईआ। ओह करे खेल अबिनाशी अचुता, चेतन सब नूं दए कराईआ। भगतां सुहाए रुता, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। भाग लगाए काया बुता, बुतख़ान्यां करे सफ़ाईआ। जो जन्म जन्म दा होवे घुथ्था, फड़ बाहों ल्ए मिलाईआ। अबिनाशी करता कदे ना रुस्सा, रोस मन दा दए मिटाईआ। जिस दा जगत जहान वाला नहीं जुस्सा, जिस्म ज़मीर दए बदलाईआ। उहदा भेव रहे ना लुका, पड़दा अन्तर निरन्तर उठाईआ। जिस दा सीस इक वार झुका, दो जहान दए वड्याईआ। जगत जहान जाए ना लुट्टा, लुटेरा कूड़ नेड़ ना आईआ। सतिगुर शब्द दा नाता कदे नहीं टुट्टा, आदि जुगादि जुग चौकड़ी बन्धन आपणा पाईआ। प्रभू दा प्यार नहीं कदे टुट्टा, अतोट अतुट आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेल आप कराईआ। धरनी कहे मैनूं गोबिन्द मारया धप्पा, थपकी दिती लगाईआ। ओह तक अगम्मी पप्पा, पतिपरमेश्वर नूर इलाहीआ। जिस नूं पुरख अकाल कहि के जपा, नाम निधाना ढोला गाईआ। उस दा अन्त अखीरी इक्को पता, सच संदेशा दयां दृढ़ाईआ। जिस विच फ़र्क रहे ना रता, भेव अभेद ना कोए छुपाईआ। जिस दा सतिगुर शब्दी धार बच्चा, पिता पुरख अकाल वड वड्याईआ। ओह साढे तिन्न हथ्थ भाण्डा वेखे कच्चा, कंचन गढ़ फोल फुलाईआ। जन भगतां लूं लूं अन्दर रचा, रचना आपणी दए वखाईआ। जिस ने मुहम्मद दा लहिणा देणा पूरा करना मदीना मक्का, काअब्यां होए सहाईआ। लेखे लाउणा बूरा कक्का, ईसा आसा पूरा कराईआ। उस दा प्यार होवे ना तता, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। ओह झगड़ा मेटे मन मता, मति मतांतर डेरा ढाहीआ। पड़दा लाहे चेतन सत्ता, सति सतिवादी रंग रंगाईआ। जिस दा गोबिन्द जैकारा लाया फ़तह, फ़तिह डंक इक शनवाईआ। ओह गुरमुखा जणाए मित गता, अन्तरजामी अगम्म अथाहीआ। बीज बीजे आपणे वत्ता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे

खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे मैनूं गोबिन्द दिता दान, चरण धूढ़ी मेरे उत्ते टिकाईआ। धवल कहे मैनूं बखशयां मान, मानव जाती रंग रंगाईआ। किरपा कीती महान, धवल कहे मेरे अन्दर वज्जी वधाईआ। साचे दर कीते परवान, धौल निउँ निउँ सीस झुकाईआ। खेल वेखणा श्री भगवान, जो करता अगम अथाहीआ। जिस कलयुग लेखा पूरा करना विच जहान, जहालत कूड़ दए मिटाईआ। नाम अणयाला मारना बाण, तीर तुरीआ तों बाहर लगाईआ। खेल खेले हो के धुर दा राम, काहन कान्हा वेस वटाईआ। प्रगट हो के इक अमाम, अमाम अमामा आपणा हुक्म जणाईआ। झगड़ा शरअ मेटे तमाम, तमन्ना सब दी खोज खुजाईआ। जिस दा दस गुर निशान, निशाने दीन दुनी बदलाईआ। इक्को कलमा दस्स कलाम, कायनात करे पढ़ाईआ। जन भगत सुहेले कर परवान, परम पुरख आपणा रंग रंगाईआ। जुग जन्म दे विछड़े मेले आण, विछोड़ा मात रहे ना राईआ। की होया जे गुरसिख भुल्ल जाए बाल अंञाण, बाली बुद्ध जगत वड्याईआ। सो पुरख निरँजण सदा मेहरवान, हरि पुरख निरजण आप अख्वाईआ। दर घर साचे कर परवान, परम पुरख देवे माण वड्याईआ। गढ़ तोड़ कूड़ अभिमान, हंगता करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी निरगुण हो के जाणी जाण, सरगुण
१८४४ लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। १८४४
२२ २२

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ करनैल सिँघ दे गृह पिण्ड नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे मैं गोबिन्द दा खेल तक्कया नैणां, निज नेत्र लोचण नैण नैण खुल्हाईआ। जिस ने पुरख अकाल दा मन्नया कहिणा, परम पुरख सीस झुकाईआ। मैनू हस्स के किहा कलयुग अन्तिम उस दा भाणा सहणा, भावी भय भउ जगत डराईआ। नौ खण्ड पृथ्मी कूड़ी क्रिया वहिण वहिणा, चार कुण्ट होए हल्काईआ। सदी चौधवीं अन्तिम बुरज हँकारी ढहिणा, मुहम्मद लेखा रहे ना राईआ। ईसा नूं लेखा देणा पैणा, मूसा भज्जे वाहो दाहीआ। पुरख अकाल बण तर्फ़ैणा, त्रैगुण अतीता आपणी कार कमाईआ। दीन मज़्ब लैण ना देवे चैणां, सांतक सति ना कोए कराईआ। कलमा नाम इक दूजे नाल खहिणा, परवरदिगार आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, करनहार इक अख्वाईआ। धरनी कहे मैनूं गोबिन्द सुणाया शब्द अगम्मा सच, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। दीन दुनी अग्नी जाए मच्च, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। मनुआ घर घर काया मन्दिर अन्दर पए नच्च, दहि दिशा उठ उठ धाईआ। भाग लग्गे ना काया कच्च,

कंचन गढ़ ना कोए सुहाईआ। नाड़ बहत्तर उबले रत्त, रत्ती रत्त कम्म किसे ना आईआ। किसे मेल नहीं होणा कमलापति, पतिपरमेश्वर दरस कोए ना पाईआ। जिस यारड़े दा मैं सथ्थर बैठा घत, सो पुरख अकाला आपणा हुक्म वरताईआ। जिस ने कलयुग अग्न दा मेटणा रथ, सतिजुग सति सति वरताईआ। प्रगट हो पुरख समरथ, दो जहानां मर्द मर्दाना वेख वखाईआ। दीन मज़्ब करे किसे ना पक्ख, मानव ज़ाती वेखे थांउँ थाँईंआ। सम्बल धार हो प्रगट, परगणा आपणा इक सुहाईआ। जोत प्रकाश करे लट लट, अंध अंधेरा दए गंवाईआ। शब्द नाद सुणाए अनहद, धुन आत्मक राग अलाईआ। जिस दे हुक्म अन्दर सतिजुग त्रेता द्वापर गए लद, कलयुग लेखा दए मुकाईआ। ज़ात पात दी रहिण ना देवे हद्द, शरअ शरीअत दा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म दस्से इक्को यद्द, पारब्रह्म ब्रह्म पड़दा आप उठाईआ। धरनी कहे मेरा गोबिन्द खोल्या ताका, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। सब दा मालक इक्को आका, अकल कलधारी नूर अलाहीआ। जिस दा सुत दुलारा मैं काका, कलू काल दा लेखा दयां मुकाईआ। सदी चौधवीं अन्तिम तकां वाटा, चार यारी पड़दा दयां उठाईआ। जेहड़ा अमृत प्याया इक्को बाटा, रस गुरमुखां मुख लगाईआ। उस दा अन्तिम पूरा करां घाटा, लहिणा देणा वेखां थांउँ थाँईंआ। झगड़ा मेट के ज़ाता पाता, दीन दुनी इक्को रंग रंगाईआ। भेव खुल्हा के कमलापाता, पतिपरमेश्वर दयां मिलाईआ। दरस करावां साख्याता, सन्मुख हो के सोभा पाईआ। कलयुग मेट अंधेरी राता, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ। ग़रीब निमाणयां पुछां वाता, कोझयां कमल्यां गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे मैं निव निव कीती डण्डावत, बन्दना सीस झुकाईआ। मेरे सतिगुर सही सलामत, तेरी बेपरवाहीआ। सच दस्स किस बिध मुहम्मद दी आवे अन्त कयामत, कयामगाह नज़र कोए ना आईआ। शरअ दी शरअ नाल होवे बग़ावत, बग़लगीर ना कोए अख्वाईआ। नाम कलमे दी होवे अदावत, अदल इन्साफ़ ना कोए जणाईआ। सच नाम दी किसे कोल रहे ना हक अमानत, अमल छडे कूड़ लोकाईआ। गुर पीर देवे ना कोए ज़मानत, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। क्यों सदी चौधवीं होवे रैण अंधेरी शामत, शमा जोत नूर ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा नाउँ निरँकारा एकँकारा अगम्म न्यामत, वस्त अमोलक बेपरवाह देणी वरताईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ मक्खण सिंघ दे गृह पिण्ड नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ✪

फल्गुण कहे मेरा प्रविष्टा सोलह, सोलह कलधारी प्रभ नूं सीस निवाईआ। जिस दा आदि जुगादि इक्को नाम शब्द दा बोला, अनबोलत आपणा राग सुणाईआ। निरगुण सरगुण लख चुरासी बणया रहे तोला, नाम कंडा आपणे हत्थ उठाईआ। कलयुग अन्तिम सदी चौधवीं पीर पीरा खेले होला, चार यारी संग मिलाईआ। चार कुण्ट पए रौला, पंडत पांधा रौल समझ सके किछ ना राईआ। खेल करे अगम्मी मौला, मालक हो के धुरदरगाहीआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं पूरा करे इकरार कौला, पेशीनगोईआं आपणे लेखे लाईआ। धरनी उत्ते भार करे हौला, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। फल्गुण कहे मेरा प्रविष्टा सोहणा सुहञ्जणा, लोकमात मिले वड्याईआ। किरपा करे प्रभ आदि निरँजणा, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जन भगतां बणे दर्द दु:ख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराईआ। चरण धूढ़ कराए मजना, दुरमति मैल धुआईआ। नेत्र नाम पावे अंजणा, अज्ञान अंधेर रहे ना राईआ। सतिगुर साचा बण के सज्जणा, जुग जन्म दे विछड़े मेल मिलाईआ। आत्म परमात्म दस्से बन्दना, सुरत शब्द नाल जुड़ाईआ।

१८४६ किरपा करे सूरा सरबंगणा, पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। जिस दा दीप इक्को दो जहान जगणा, जागरत जोत डगमगाईआ। १८४६

२२ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी अन्तरजामी घट घट वेखणहार आप हो जाईआ। सोलह फग्गण कहे मेरी सुहञ्जणी होई रुत, परम पुरख दिती वड्याईआ। मेरा बूटा ना जाए सुक्क, पत्त टैहणी नाल महकाईआ। मैं जन भगतां मंगां सुक्ख, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। इन्हां आवे कोई ना दु:ख, दुखियां दर्द लैणा वंडाईआ। फेर आउणा पए ना जननी कुख्ख, चुरासी विच ना कोए भवाईआ। दरगाह तेरी जाइण पुज्ज, सचखण्ड मिल के वज्जे वधाईआ। आपणा भेव खुल्हाउणा गुज्झ, बजर कपाटी पड़दा देणा चुकाईआ। कलयुग पंच विकार अग्नी जाए बुझ, दीपक जोत होए रुशनाईआ। तेरा दवारा जाए सुझ, साचा मन्दिर देणा वखाईआ। तेरा धाम अगम्म अथाह उच्च, ऊच अपार बेअन्त देणा दरसाईआ। तेरे कोल सब कुझ, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर दर तेरे मंग मंगाईआ। जिन्हां भगतां तूं मेरा मैं तेरा गाई तुक, तुख्म तासीर देणी बदलाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर बख़्शणी आपणी ओट, ओड़क होणा आप सहाईआ। तेरे दर्शन नूं लोचन कोटन कोट, बिन नैणां नैण उठाईआ। मेहरवान महिबूब तेरी मुहब्बत इक्को बहुत, दूजा राह कम्म किसे नाँ आईआ। पारब्रह्म ब्रह्म आत्म परमात्म तेरी इक्को जोत, दूजा नज़र कोए ना आईआ। तेरा नाम संदेसा धुर दा कलमा गायण चौदां लोक, चौदां तबक पढ़ पढ़ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे

खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल वेखण पुष्कर दीप करोच, लखण आपणा पड़दा देणा उठाईआ।

✪ १७ फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ हरजीत सिंघ दे नवित हरि भगत जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे मैनूं गोबिन्द बचन अगम्मा आख्या, बिन अक्खरां दिता सुणाईआ। करे खेल प्रभ अलखणा अलाख्या, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। प्रगट होवे साख्यात साख्या, सखी सरवर नूर इलाहीआ। जिस दी चार जुग दे शास्त्र करदे भाख्या, भविक्खतां लेखा पूर कराईआ। जन भगतां होवे राख्या, रक्षक हो के सेव कमाईआ। जिस दा अन्त ना जाए लाख्या, बेअन्त वड वड्याईआ। ओह खेल करे शाहो शाबास्या, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां पावे रास्या, पुरीआं लोआं नाच नचाईआ। लेखा जाणे पृथ्मी आकास्या, गगन गगनंतर फोल फुलाईआ। जन भगतां अन्दर करे वास्या, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। सेवक बणे अगम्मा दास्या, दासी नूर जोत अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। धरनी कहे मैं सुणया अगम्म गाउणा, गोबिन्द सहिज नाल सुणाईआ।
१८४७ मेरा पुरख अकाल आउणा, अकल कलधारी आपणा फेरा पाईआ। जिस ने कूड़ अंधेर मिटाउणा, सति सच करे रुशनाईआ। १८४७
२२ दीनां मज़्बां पन्ध मुकाउणा, अग्गे वाट रहे ना राईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां तख्तों लौहणा, तख्त निवासी आपणी २२
कार भुगताईआ। शब्दी शब्द दा डंक वजाउणा, दो जहान करे शनवाईआ। राउ रंकां इक कराउणा, ऊच नीच दा पन्ध मुकाईआ। दवार बंका इक सुहाउणा, साढे तिन्न हथ्थ सम्बल डेरा लाईआ। अमृत मेघ इक बरसाउणा, बूंद अगम्मी आप टपकाईआ। शब्द अनादी नाद वजाउणा, लेखा मेटे जणेंदी माईआ। दीपक जोती जोत जगाउणा, जागरत जोत इक रुशनाईआ। वरन बरन दा डेरा ढाउणा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। साचा रंग इक रंगाउणा, जिस दी रंगत ना कोए मुकाईआ। धुर दा संग इक वखाउणा, संगी साथी बणे शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। पड़दा ओहला आप चुकाउणा, भेव अभेद रहे ना राईआ। कौल इकरार पूर कराउणा, कँवल नैण आपणा रंग रंगाईआ। धरनी तेरा बंक दवार सुहाउणा, बख्शे चरण सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मार्ग इक लगाईआ। धरनी कहे मैनूं गोबिन्द दिता कहि, खुशी नाल जणाईआ। मेरा मालक आउणा तेरे गृह, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। साढे तिन्न हथ्थ अन्दर जाए बहि, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। जिस ने कायनात करनी लै, लहिणा देणा दए मुकाईआ।

जिस दी याद विच जुग बीते कै, आपणा पन्ध मुकाईआ। उस दा रूप ना दो ना त्रै, त्रैगुण अतीता आप खेल खिलाईआ। आप हो के सदा निर्भय, भउ सब नूं आप जणाईआ। जिस दे नाम दा इक्को वहिण वहै, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जो आदि अन्त सब दा मालक है, हर हिरदा वेखे चाँईं चाँईंआ। अन्त उस दी चार कुण्ट होणी जै, जै जै कार करे लोकाईआ। भगत भगवान इक्को आत्म परमात्म करके रैअ, रहमत हक वाली वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो आदि जुगादि जन भगतां सब कुछ दए, देवणहार इक अख्वाईआ।

✪ ३० फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ लीला वन्ती श्री नगर नवित हरि भगत दवार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

सम्मत शहिनशाही सत्त कहे मेरा पैंडा जांदा मुकदा, फल्गुण प्रविष्टा तीह सीस निवाईआ। परम पुरख परमात्म भेव

चुकाउणा मनुक्ख मनुक्ख दा, मानव मानस आपणा रंग रंगाईआ। प्यार दस्सणा आत्म परमात्म तुक दा, तूं मेरा मैं तेरा
१८४८ २२
नाद शनवाईआ। खेल करना अबिनाशी अचुत दा, पारब्रह्म प्रभ आपणी कार कमाईआ। जिधर जाए दया कमाए पीर पैग़म्बर औलीआ जाए झुकदा, सीस पोप ना कोए उठाईआ। पर्दा ओहला रहे कोए ना लुकदा, बेनज़ीर नज़र सब दी दए बदलाईआ। लेखा पूरा करना मसीह वाले पुत दा, यसूह यकसां रंग रंगाईआ। मुहम्मद लेखा जाणे दु:ख दा, सदी चौधवीं वंड वंडाईआ। अन्त फ़ैसला देवे दो टुक दा, अधविचकार ना कोए रखाईआ। वक्त सुहञ्जणा होणा परम पुरख दी रुत दा, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। जिस झगड़ा मेटणा पंज तत काया बुत दा, बुतख़ान्यां करे सफ़ाईआ। एह खेल साहिब उस दा, जिस दी उस्तत चार जुग दे शास्त्र रहे गाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी आपणे निशान्यों कदे ना उकदा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अवतार पैग़म्बर गुर हुक्म विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। फल्गुण कहे मेरी रुत अख़ीरी, बिन अक्खरां दयां जणाईआ। मेरा मालक शाह पातशाह पीर पीरी, पारब्रह्म प्रभ नूर इलाहीआ। जिस दा हुक्म वरतणा तकदीरी, तकदीर सब दी दए बदलाईआ। खेल खिलाउणा मौलाना शाह फ़कीरी, फ़िकरा फ़िकरां दे फ़िकर तों परे सुणाईआ। जगत जहान वेखे दिलगीरी, उम्मत उम्मती खोज खुजाईआ। नूर नूराना प्रभ हो बेनज़ीरी, नज़रीआ सब दा दए बदलाईआ। लेखा जाणे शहिनशाह हकीरी, राउ रंकां फोल फुलाईआ।

जिस दे हथ्थ लख चुरासी तदबीरी, पर्दा ओहला दए उठाईआ। जो दीन दुनी बदल देवे ज़मीरी, ज़ाहर ज़हूर आपणा आप कराईआ। झगड़ा वेखे हस्त कीड़ी, कीट हस्तां फोल फुलाईआ। जिस कलयुग विच सति धर्म दी बदल देणी पीढ़ी, मार्ग नाम कलमा इक समझाईआ। दीन दुनी सम्मत शहिनशाही अठ्ठ गली जगत जहान दिसे भीड़ी, जन भगतां औखी मंज़ल पन्ध ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। फल्गुण कहे मेरा अन्त रिहा बीत, परम पुरख सीस निवाईआ। अगला खेल त्रैगण अतीत, त्रैभवन धनी आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। आत्म परमात्म रहे मीत, सज्जण सुहेला शहिनशाहीआ। जन भगतां काया रखे ठांडी सीत, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। दीन दुनी विच्चों बदल देवे नीत, नीतीवान इक अख्वाईआ। पतत्तां करे पुनीत, पतित पावन आपणी दया कमाईआ। जन हरि हरिजन दर्शन देवे ठीक, ठाकर हो के सन्मुख सोभा पाईआ। सतिगुर शब्द शब्दी धार करे तस्दीक, शहादत अवर ना कोए भुगताईआ। दूर दुराडा वसे हो के नज़दीक, नेरन नेरा निज नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। किरपा करे लाशरीक, शिरक्त दीन मज़्हब ना कोए वखाईआ। जिस दे कोल हक तौफ़ीक, तोहफा नाम भगतां घर घर दए पहुंचाईआ। तीह फग्गण कहे जन भगतां साचे गुरमुखां पूरी मनसा आसा करे उम्मीद, लीला वन्ती लीला राम विच समाईआ। परम पुरख दी आत्म परमात्म इक प्रीत, शरमा शरअ तों बाहर कढ्ढाईआ। सब दा लेखा इक्को गृह इक्को दर इक्को मन्दिर सद वसनीक, वसणहारा वास्ता आपणे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण धार जोती जाता सदा वसे चीत, मनचित जगत ठगौरी रहिण कोए ना पाईआ।

मुहम्मद दिती इक दरख़ासत, परवरदिगार अग्गे सीस झुकाईआ। मेरा वजूद तेरा कलमा तेरा नूर अस्तिक, अल्ला अलाह आलमीन तेरी सरनाईआ। जल्वागर जल्वा प्रकाश्त, चौदां तबक तबक रुशनाईआ। उम्मत दी अमन वाली बख्शी रयासत, रईयत तत्तां वाली बणाईआ। वजूद तन दस्स के नास्तिक, नसर नज़म विच समझाईआ। बेपरवाह मैं तेरी तेरा हो के करां काश्त, बीज जगत वाला बिजाईआ। मैनूं इयों दिसदा मेरी अन्त रहिणी नहीं विरासत, मालक नजर कोए ना आईआ। मेरी इक अर्ज़ बेनन्ती जिस वेले मेरा लेखा धरनी उतों करन लग्गा बरख़ासत, बरख़ुरदार मैनूं आपणा लैणां बणाईआ। मेरा कलमा; कलाम अमाम टक्कर जाए नाल स्यासत, शरअ शरअ नाल ठुकराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। मुहम्मद कहे मेरे अलाविल लिज़हा सर कदमे नूर चशमे ज़ीना ज़गा असमाने निगह ज़ाहूरे वज़ी ज़ा इन वहित ो वज़हिक ज़बाने नस ज़हीने वजस, वसले महिबूब असले अरूज आलीशाने अलीअल आलीजाह तेरी सरनाईआ। मेरी बेनन्ती मेरी अरदास मेरी अर्ज़ आरज़ू अजिस अजाजे खुनिस मिज़ाजे सलिश शानूज़ू वज़ा, नूरे अल्लाह अमामे निज़ा ज़हूरो ज़हक हकीकते हक हकूक मख़लूक बारसूख रिसवेज़ू ज़िमी असमाने फ़लके चाकश सितारा चन्द अलश तख्ते नज़ी नूर नुराने दर तेरे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। मुहम्मद अर्ज़ पेशीनगोई, पुश्त दर पुश्त समझ किसे ना आईआ। नूर नुराह ख़लके खुदा तेरी दरोही, दो जहानां मर्द मर्दाना सिर सर सीस ना कोए उठाईआ। तुध बिन अन्त कन्त ना कोई, गहर गवर भँवर संसार पार ना कोए कराईआ। जिस वेले सदी चौधवीं अन्त होई, उम्मत उम्मती मिले ना ढोई, ढोआ नज़र कोए ना आईआ। उस वेले मेरी तमन्ना आशा ख़ाहिश उठावीं सोई, जो तेरे विच समाईआ। आपणी मुहब्बत विच नूर नूर नाल मोही, नाता दीन दुनी तुड़ाईआ। जिस दा भेव अभेव पर्दा पर्दानशीं उठा सके ना कोई, लेखा लेख ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त तेरी धार पैग़म्बर अवतार गुरु गुरदेव होई, सतिगुर सति अमाम अमामा तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ।

✪ ३० फग्गण शहिनशाही सम्मत ७ अमीर सिंघ, भान सिंघ, ईश्र सिंघ, वरयाम कौर, इन्द्र सिँघ सुलखण सिंघ, दलीप सिंघ, रत्न सिंघ, जरनैल सिंघ, हरजीत सिंघ, कश्मीर सिंघ, गुरचरण सिंघ, नाज़र सिंघ, नाज़र सिँघ जेठूवाल, अमरीक कौर बलोवाल, चरण कौर, तृप्त कौर, जुगिन्दर कौर, बन्नती, बलविन्दर कौर जेठूवाल, हरबंस कौर अल्लड़पिण्डी, सुरजीत कौर सैदपुर, बचनी बाउपुर हरि भगत दवार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

सम्मत शहिनशाही सत्त कहे मेरी अन्त अख़ीरी रैण, नव नौ चार दा खेल वखाईआ। धुर फ़रमाना सच संदेशा आया कहिण, अवतार पैग़म्बर गुर विष्न ब्रह्मा शिव वेख वखाईआ। परम पुरख परमात्म दा दर्शन तक्को नैण, नैण नैणां अक्ख खुल्हाईआ। जिस ने जुग चौकड़ी भगतां चुकाया लहण देण, पूरब लेखा पूर कराईआ। बाहर कढुया विच्चों कलयुग वहिंदे

वहिण, कूड़ी धार ना कोए वहाईआ। हरिसंगत नाता जोड़ के भाई भैण, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक्को रंग रंगाईआ। कूड़ कुड़यारी मति रहिण ना देवे नाम नरायण, नर हरि आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सम्मत सत्त कहे मैं जन भगतां सीस दस्तार धरया, धर्म दी धार धरनी दिती जणाईआ। पुरख अबिनाशी इक्को सब ने वरया, जो वारिस दो जहान अख्वाईआ। जिस दी सरन चुरासी लाहवे डरया, जूनी लख अलख ना कदे भवाईआ। सन्त सुहेला साजण तरया, तारनहार दया कमाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला पढ़या, निरअक्खर परमात्म आत्म दिता समझाईआ। मंज़ल हकीकी महिबूब दी चढ़या, चार कुण्ट दा पन्ध मुकाईआ। सच दवारे साचे खड़या, दरगाह साची सोभा पाईआ। निरगुण धार फड़ाया लड़या, पल्लू आपणी गंढ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सम्मत शहिनशाही सत्त कहे अष्टभुज ने माणी मौज, सिँघ सिंघासण हेठां डेरा लाईआ। जिस दी समझे कोए ना औध, आयू जगत ना कोए जणाईआ। जिस अठासी पदम सुंभ निसुंभ दी मारी फ़ौज, शस्त्र आपणे हथ्थ उठाईआ। उस दा पूरा होया जोग, जगत रीती नाल मिलाईआ। जेहड़ा बुद्धी तों परे कीता सी बोध, नाम संदेशे विच जणाईआ। उस दी रहिण ना दिती सोच, समझ तों परे वेख वखाईआ। जन भगतां गृह सिंघासण थल्ले रख के रोज़, रोज़ा बांग दा डेरा ढाहीआ। जिस प्रेम प्यार विच कीता चोज, चोजी प्रीतम दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। अष्टभुज कहे मेरा नूर नुराना तुठा, जोती जोत दिती वड्याईआ। जिस ने पलँघ डाहया पुट्ठा, जन भगतां घर घर डेरा लाईआ। जाप जणाया बिन बुल्ल्हां बुट्टां, हर हिरदे डेरा लाईआ। जिस अन्त जगत जहान पाउणीआं लुट्टां, लुटेरा बण के बेपरवाहीआ। माण देणा इक्को शब्द दुलारे सुत्ता, सिर सर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलयुग अन्त सुहाउणी रुता, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा रंग आप रंगाईआ। पलँघ कहे मैनूं याद चेत तिन्न दा दिहाढ़ा, जन भगत गृह वज्जी वधाईआ। खेल कीता अपर अपारा, अपरम्पर स्वामी होया सहाईआ। जन भगतां सीस बंधाया दस्तारा, रविदास चमारा गंढ पवाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दा लाहया भारा, पूरब लहिणा दिता वरताईआ। जिस निशान मेटणा चन्द सितारा, सतह बुलंदी वेख वखाईआ। जन भगतां देवे नाम अधारा, उदर दे अन्दर होए सहाईआ। चुरासी फाँसी पार किनारा मण्डल रासी पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। पलँघ कहे मेरे पुट्ठे कीते चार पावे, पारब्रह्म प्रभ आपणा आसण लाईआ। जिस नूं

ब्रह्मा चारे मुख गावे, चारे वेदां सिफ्त सालाहीआ। जिस दी जुग चौकड़ी माणदे छांवे, शहिनशाह सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिस दे अवतार पैग़म्बर गुरुआं कीते दाअवे, माण ताण नाल गए जणाईआ। कलयुग अन्तिम कलि कल्की निहकलंक आवे, अमाम अमामा नूर इलाहीआ। साचा मार्ग इक चलावे, चार जुग दा डेरा ढाहीआ। आत्म परमात्म भेव खुल्हावे पारब्रह्म ब्रह्म मेला लए मिलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला गावे, सोहँ शब्द अगम्म अथाहीआ। भगत सुहेले फड़ उठावे, चारों कुण्ट लए जगाईआ। पगड़ी सीस आप बन्न्हावे, जो सिर आपणे लेखे लाईआ। दरगाह साची साचा माण दवावे, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। नारी पुरुष इक्को रंग रंगावे, चुन्नी सीस उत्ते टिकाईआ। हरिजन रहिण ना देवे निथावें, दरगाह साची आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। दीपक कहिण जन भगतां जगदी रहे जोती, जोती जाता वेख वखाईआ। इक्को होवे गोती, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। सुरती रहे किसे ना सोती, शब्दी सतिगुर लए उठाईआ। दुरमति मैल जाए धोती, पापां करे सफ़ाईआ। नाम दस्से अगम्म सलोकी, सोहला इक्को इक जणाईआ। जिस दी आशा रख के गया नाथ त्रैलोकी, राम राम अक्ख खुल्हाईआ। जिस दे नाम दी चार जुग पढ़दे पोथी, अक्खर अक्खर नाल टकराईआ। ओह खेल करे लोक परलोकी, चौदां तबक सबक समझाईआ। जिस दा लेखे लावे लेखा रविदास चमारा मोची, गुरमुख गुर गुर गंढ पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। प्याज़ कहे मैं गुरमुखां पाईआं गंढां, गंढ आपणी दिती पवाईआ। चार जुग दीआं पिछलीआं मेटीआं वंडां, शरअ शरअ दा डेरा ढाहीआ। कलयुग अन्तिम जणाया कन्ढा, कन्ढी बहि के वेख वखाईआ। आप बण के सब तों माढ़ा गंदा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। मैं नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग सफ़र कीता लम्बा, गिणती गणित ना कोए गिणाईआ। मैं हैरान हो गया प्रभ ने खेल कीता अचंभा, अचरज लीला आप वरताईआ। मैनूं ला के आपणे दन्दा, मेरा दलिद दिता गंवाईआ। जिस ने निशान मेटणा तारा चन्दा, चन्द सितारे गुरमुख लैणे बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। पाणी जल कहे मैं सच प्रेम विच रत्ता, रत्न अमोलक हीरे गुरमुख वेख वखाईआ। याद रखणा एह खेल पुरख समरथा, समरथ आपणी कार भुगताईआ। जिस वेले गोबिन्द यारड़े सथ्थर लथ्था, सूलां सेज हंढाईआ। सरहाणे रख के भथ्था, धुर दी धार लए अंगड़ाईआ। फेर मीट के आपणीआं अक्खां, कलयुग अन्तिम तक्कया चाँईं चाँईआ। जिस वेले शरअ दीआं सब नूं पैणीआं नथ्थां, पासा सके ना कोए बदलाईआ। जगत जहान अमृत रस जल पाणी होणा तता, सांतक सति ना कोए कराईआ। एसे करके जल कहे

मैनूं पी के मेरा नाता जोड़या पक्का, पक्की गंढ पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। जौं कहिण प्रभ होया मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। साडा खुशीआं नाल कीता पकवान, परम पुरख दिती माण वड्याईआ। एह बलि दवारे बावन ने बलि नूं दिता सी दान, दाणा दाणा झोली विच टिकाईआ। बलि निउँ के सीस लग्गा झुकाउण, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। ना बोलया विच्चों ज़बान, अन्दरे अन्दर दिता सुणाईआ। तूं मेरे गृह दा कुछ खाधा नहीं अन्न दान, रसना रस ना कोए चखाईआ। बावन हस्स के किहा एह खेल श्री भगवान, भगवन आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। तेरा लहिणा देणा लेखा पूरा करे आण, आप आपणा पड़दा लाहीआ। जन भगतां गृह करे परवान, खा खा आपणी खुशी बणाईआ। तेरा लहिणा फेर करे सवाधान, सति सच नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। जौं कहिण साडा लेखा होया पूरा, प्रभ दिती माण वड्याईआ। प्रगट हो जोधन सूरा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पन्ध मुका के नेड़े दूरा, दूर दुराडा मिल्या माहीआ। गृह हो हाज़र हज़ूरा, घर मन्दिर वज्जी वधाईआ। आपणा कौल इकरार करे पूरा, परम पुरख आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दी करनी कार कमाईआ। सम्मत सत्त कहे मेरा अख़ीरी प्रविष्टा तीह, तीस बत्तीस सिफ्त वड्याईआ। लेखा पूरा होवे सदी वीह, बीसवीं आपणा रंग रंगाईआ। जन भगतां धर्म दी धार रखी नींह, मन्दिर सच दए सुहाईआ। सन्त सुहेले निर्मल करके जीअ, जीव जंत विच्चों दिती वड्याईआ। नाता बणा के पुत्र धी, पिता परम पुरख होए सहाईआ। झगड़ा मुका के साढे तिन्न हथ्थ सी, सिंघासण आपणे उपर रखाईआ। सति सच दी चला के लीह, रस्ता इक्को इक प्रगटाईआ। खुशीआं नाल दीपकां विच टप्पे घी, घृत आपणा हाल सुणाईआ। मैं सड़ के मूल ना कीता सी, सतिगुर तेरे चरण सीस निवाईआ। अगला लेखा दस्स की, करनहार तेरी की बेपरवाहीआ। जगत अग्ग बरसे कि मींह, कवण कवण रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। दीवा कहे मेरे विच हस्स पई वट्टी, मुख लाल लाल वखाईआ। मैं नव नौ चार की खट्टी खट्टी, खटका अग्गे रिहा ना राईआ। जन भगतां प्रभ दी जोत बिना ज़िंदगी ना जावे कटी, विछोड़ा कम्म किसे ना आईआ। वणज वपार करो साहिब दी हट्टी, ख़ाली झोलीआं मात भराईआ। सम्मत शहिनशाही सत्त दी हद्द टप्पी, सत्तवां आपणा पन्ध मुकाईआ। अग्गे अठवां आए नट्टी, अट्ठां तत्तां तके चाँईं चाँईंआ। जन भगतो सिर ते चुन्नी पग्ग सब ने रखणी इक्ट्ठी, दोहां हथ्थां नाल इके वार रखाईआ। सब दी आवण जावण चुरासी गई कटी, लेखा राय धर्म रिहा ना राईआ।

सच दवारे सब ने जाणा वसी, वसेरा इक्को घर रखाईआ। जन भगत आत्म भगवन दवारे हस्सी, हस्स हस्स प्रभ दे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां पति रिहा रखी, रक्षक हो के सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ।

✪ पहली चेत शहिनशाही सम्मत ८ हरि भगत दवार
पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर रात नूं ✪

सतिगुर शब्द कहे सम्मत शहिनशाही चढ़या अठ, पहली चेत चेतन दो जहान कराईआ। दरगाह साची साचे धाम हुक्म सुणो पुरख समरथ, सो पुरख निरँजण एका एक रिहा जणाईआ। निरगुण निराकार निज नेत्र खोल्हो नैण अक्ख, जगत लोचण राह ना कोए जणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु गुरदेव पओ नट्ठ, बिन कदमां कदम उठाईआ। वेखो खेल पुरख अकाला दीन दयाला अलखणा अलख, करनी दा करता की कार कमाईआ। जिस दा नाम संदेशा कलमा हकीकत हक, लाशरीक आपणी कार भुगताईआ। जो एथे ओथे दो जहानां सब दी रखे पत, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि,
१८५४ २२ आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे सुणो अगम्म फ़रमाना, १८५४ २२
फ़ुरन्यां तों बाहर जणाईआ। जोती नूर तक्को महाना, महिमा अकथ कथ समझाईआ। जिस दा खेल निरगुण धार श्री भगवाना, भगवन आपणी कार भुगताईआ। शाहो भूप बण के धुर दा राणा, रईयत दो जहान वेखे चाँई चाँईआ। जिस नूं झुकदे ज़िमीं असमाना, विष्न ब्रह्मा शिव निउँ निउँ लागण पाईंआ। सो प्रगट हो के साहिब सुल्ताना, मेहरवाना आपणी कार भुगताईआ। नीली धार पहर के बाणा, बाण अणयाला तीर चलाईआ। जो नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दा अन्तरयामा, अन्तरजामी इक अख्वाईआ। जिस ने अवतार पैग़म्बर गुरुआं दिता पैग़ामा, संदेशा कलमा नाम जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे वेखो पुरख अकाला, अकल कलधारी बेपरवाहीआ। जिस नूं कहिंदे दीन दयाला, दयानिध वड वड्याईआ। जो वसे सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, दरगाह साची सोभा पाईआ। सो रूप अनूप करे निराला, निरगुण आपणी कार कमाईआ। जिस ने अवतार पैग़म्बर गुरुआं वक्त संभाला, सम्बल बहि के हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे चढ़या चेत महीना, मानस मानव मानुख रिहा दृढ़ाईआ। प्रभ दा हुक्म त्रैलोक

१८५५ २२

परे तीना, त्रैभवन धनी आपणी खेल खिलाईआ। जिस दा लेखा समुंद सागर जल मीना, मच्छ कच्छ लहिणा पूर कराईआ। जिस दा नाम लिख्या तेई अवतारां दिती तालीमा, पैग़म्बरां कलमा कायनात सुणाईआ। गुरुआं ठांडा कर के सीना, नाम सति सति समझाईआ। सो साहिब लेखा जाणे नर मदीना, लख चुरासी खोज खुजाईआ। जिस दे हथ्थ दो जहानां मरना जीणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। चेत कहे मालक पुरख अगम्म, तेरी इक सरनाईआ। तूं मेरा बेड़ा बन्नृ, दर ठांडे सीस निवाईआ। मेरा ना कोई वजूद ना कोई तन, माटी ख़ाक ना गंढ पवाईआ। तेरे हुक्म विच तेरा पूरा करना कम्म, निहकर्मी तेरी इक सरनाईआ। मैं याद करां बिना पवण स्वासी दम, दामनगीर दामन तेरे नाल बंधाईआ। मैनूं ना कोई खुशी ना कोई ग़म, चिन्ता जगत ना कोए जणाईआ। मैं ते लेखा तकणा की धार तेरी मानस मनुष ब्रह्म, की आत्म खेल खिलाईआ। मेरा सुणनवाला सरवण नहीं कोई कन्न, कायनात तों बाहर देणा पढ़ाईआ। मैं आदि दा आदि अन्त दा अन्त तेरा जन, दर तेरे सीस निवाईआ। मेरे परवरदिगार सांझे यार इक बेनन्ती मेरी मन्न, आरज़ू तेरे अग्गे रखाईआ। सदी चौधवीं बेनज़ीर शाह हकीर कूड़ कुड़यारयां डंन, खण्डां नाम वाला उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप तेरा इक्को चमके नूरी चन्न, चन्द सितार मुहम्मद वाले सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। चेत कहे मेरे मालक मेरा जैकारा इक अलख, अगोचर दयां जणाईआ। शाह पातशाह शहिनशाह हो प्रतख, पारब्रह्म प्रभ आपणा पड़दा लाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया काया माटी विच्चों करदे वख, तन वजूद रहिण कोए ना पाईआ। जन भगतां निज नेत्र अन्तर खोलृ दे अक्ख, नैण नैण कर रुशनाईआ। अमृत झिरना निजर दे रस, बिन रसना रस चखाईआ। गुरमुख आपणे घर वस, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। ज्यों भावे त्यों रख, रक्षक हो के वेख वखाईआ। चार कुण्ट सृष्टी दी दृष्टी अन्दर भौंदे भक्ख, अग्नी तत तत तपाईआ। मन कल्पणा सारे रहे भज्ज, भजन बन्दगी विच ना कोए समाईआ। मेहरवान मेरे किरपा करदे अज्ज, आजज़ हो के सीस निवाईआ। धुर दा हुक्म दे दे इक्को गज्ज, गज दा लेखा रहे ना राईआ। मेरी आसा मनसा विच दीन दुनी जग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। तूं साहिब सूरा सरबग, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी तेरा संदेशा सतिगुर शब्द देवे गज्ज, चार कुण्ट शनवाईआ। सदी चौधवीं अन्त जो घड़या सो जाणा भज्ज, काया माटी कच्च ना कोए वड्याईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले आपणी वेख लै अन्तिम हद्द, हदूद धुर दी फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सच तेरी सरनाईआ। चेत कहे मेरे धुर

१८५५ २२

de मालक इक अमाम, अमलां तों रहित नूर इलाहीआ। मैं सुणना चाहुंदा तेरा इक कलाम, मुहम्मद दे कल्मयां तों बाहर करनी पढ़ाईआ। शरअ रहिण नहीं देणी इस्लाम, इस्म आज़म इक्को देणा वखाईआ। मज़्बां दा रहे ना कोए ग़ुलाम, ग़ुरबत अन्दरों देणी कढ्ढाईआ। सारी सृष्टी दा इक्को हथ्थ करना इंतजाम, दूजा बन्धन कोए ना पाईआ। कलयुग अंधेरी मेटणी शाम, शमां नूर कर रुशनाईआ। तूं मालक धुर दा इक्को नूरी अल्लाह अमाम, मेहरवान तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब तेरी बेपरवाहीआ। पहली चेत कहे मैं अजे नहीं भुल्लया चेता, तेई अवतार गवाह बणाईआ। लेखा पुछ लै कोलों मूसा, जो मूँह दे भार सुटाईआ। जिस ने अन्त अख़ीर बिन नैणां तेरा तक्कया इक्को सूसा, सूली चढ़दा ईसा गया समझाईआ। मुहम्मद ने दरोही दुहाई दिती सदी चौधवीं मेरा ख़ाली होणा ख़ीसा, कलमा संग ना कोए निभाईआ। गोबिन्द ने किहा बिना पुरख अकाल तों दूजी रहिणी कोई नहीं रीता, मन्दिर मसीतां डेरा ढाहीआ। तेरे विच बेपरवाह हक तौफ़ीका, परवरदिगार तेरी सरनाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग बीत गए सब तेरीआं करन उडीकां, चार जुग दे शास्त्र निउँ निउँ सीस निवाईआ। धुर दे मालका, जगत दे ख़ालका, हुण बदल दे पिछलीआं

१८५६
२२

रीतां, रीती आपणी इक समझाईआ। चेत कहे मेरीआं तेरे विछोड़े विच निकलदीआं चीकां, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। झगड़ा रहिण देवीं ना हस्त कीटां, ज़ात पात नज़र कोए ना आईआ। कूड़ क्रिया दीआं मेट देवीं लीकां, लाईन ऐन इक्को देणी वखाईआ। मैं चाहुंदा सदी चौधवीं अन्त सब दीआं बदल जाण तबीअतां, तबीब इक्को नज़री आईआ। जो गुर अवतार पैग़म्बर तेरे हुक्म दीआं करके गए वसीयता, सब दा लेखा पूरा देणा कराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव नूं नवीआं दे नसीहतां, हुक्म धुर दा इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक हो सहाईआ। चेत कहे प्रभू मैनूं चाढ़ दे रंग, रंगत बेपरवाहीआ। दर ठांडे मंगां मंग, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। तेरे नाम दा वज्जे इक मृदंग, मर्द मर्दाने कर शनवाईआ। कलयुग अन्तिम रिहा लँघ, भज्जे वाहो दाहीआ। सृष्टी दी दृष्टी होई नंग, पर्दा नाम कोए ना पाईआ। जगत आत्मा दुहागण नार होई रंड, कन्त सुहाग ना कोए हंढाईआ। फिरी दरोही विच नव खण्ड, सत्त दीप रहे कुरलाईआ। प्यार रिहा ना जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज नाता रही तुड़ाईआ। आत्म परमात्म तुध बिन लाए कोए ना अंग, अंगीकार ना कोए अख्वाईआ। नेत्र रोवे जमना सुरस्ती गोदावरी गंग, अड्ड सड्ड रोवण मारन धाहीआ। चार जुग दे शास्त्र तोड़ ना सके घमंड, हँकार विकार ना कोए मिटाईआ। अक्खरां नाल पवे किसे ना ठंड, सांतक सति ना कोए कराईआ। सदी चौधवीं निशान मेट के तारा चन्द, मुहम्मद दा लेखा झोली पाईआ। अग्गे दूर रहे ना पन्ध, पाँधी अवतार

पैग़म्बर गुरु ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे झोली डाहीआ। पुरख अकाल कहे ओए चेता चेत्रा तेरा, शब्दी धार दयां गवाहीआ। तेरे अन्तर होए चाओ घनेरा, बिना मन तों वज्जे वधाईआ। धर्म दी धार बन्ने प्रभ बेड़ा, बेड़ी नईया जगत वाली वखाईआ। सोहणया पहलां मैनूं वसा लैण दे सम्बल खेड़ा, जिस विच वसे गोबिन्द तेरा माहीआ। फेर वेखीं चार कुण्ट पाउंदा झेड़ा, झगड़े विच जगत लोकाईआ। किसे दा बणया रहिण नहीं देणा डेरा, धरनी धरत धवल ना कोए सुहाईआ। चार कुण्ट इक्को देणा गेड़ा, कलयुग उलटी लट्ठ भवाईआ। धुर दे हुक्म दा मारना उखेड़ा, पातालां जड़ ना रहे लगाईआ। नव सत्त होए अंधेरा, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। इक्को बुक्केगा सतिगुर शब्द शब्द शेरा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। शाह सुल्तानां करे भेड़ा, रूसा चीना लए अंगड़ाईआ। मुहम्मद दी उम्मत दा खुल्ला करे वेहड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। चेत कहे प्रभू मेरी नमों नमों डण्डावत, सचखण्ड निवासी सीस निवाईआ। तूं मालक इक्को सही सलामत, दूजा साबत नज़र कोए ना आईआ। चार जुग गुरु अवतार पैग़म्बरां तेरे नाम कलमे दी दिती ज़मानत, नाता जगत विच रखाईआ। अक्खरां दी रख के अमानत, झोली जगत वाली टिकाईआ। मेहरवान वेख तेरे नाम तों पई बग़ावत, दीन मज़्हब करन लड़ाईआ। तेरे शास्त्र ग्रन्थां दी दिसे अदावत, अदल इन्साफ़ ना कोए कमाईआ। मेरी इक्को मंग सब दे उत्ते आपणी कर सख़ावत, धुर दी वस्त इक वरताईआ। इक्को नाम दे न्यामत, निरगुण निरवैर आपणा रंग रंगाईआ। द्वैत दी रहे ना कोए अलामत, बिना इलम तों आलम देणी समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म देणा जणाईआ। पुरख अकाल कहे चेत वेखीं बणीं ना चतुर, जगत जुगत ना कोए वड्याईआ। ओह वेख गोबिन्द दा संदेसा पत्र, जो बिना अक्खरां पाती माछूवाड़े लिखाईआ। जिस दीआं अग्गे पिच्छे दो जहानां वास्ते ढाई सतर, अक्खरां गणित ना कोए गिणाईआ। जिस नूं अवतार पैग़म्बर सारे तकण, बिन नैणां नैण उठाईआ। जिस दा लेखा सम्मत शहिनशाही अट्ठ विच दस्सणा मदीने मक्कण, काअब्यां दए सुणाईआ। तुहाडा अमाम आया सदी चौधवीं अन्त उन्हां नूं रखण, जिन्हां दा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। अन्त सब दी जड़ आया पट्टण, पटनेवाला शब्द गोबिन्द संग मिलाईआ। जिसने झगड़ा मिटाउणा चौदां तबकां हट्टण, गृह इक्को इक खुल्हाईआ। ओह नाम अणयाले तीर नाल सब दे सीने आया फट्टण, फट्टड़ करे लोकाईआ। समुंद सागरां आया टप्पण, टापूआं परे डेरा लाईआ। जिस दा ईसा मूसा राह तकण, मुहम्मद बिन नैणां नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा पर्दा आप चुकाईआ।

चेत करे मेरे शब्द गुरु सुल्ताना, मैनूं तेरी इक सरनाईआ। तूं मेहरवान मेहरवाना, मेहर निगाह लैणी उठाईआ। पशीनगोईआं वल्ल मार ध्याना, भविक्ख्तां लेखा रहे ना राईआ। तेरा नाम कलमा जो जणाया नाल बत्ती दन्द ज़बाना, रसना जेहवा सिफ्त सालाहीआ। तेरा सुणया धुर पैग़ामा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों बाहर तेरी पढ़ाईआ। तेरा जल्वा नूर नुराना, नूरे नज़र इक अख्वाईआ। उठ खेल तक जगत जहाना, चारों कुण्ट पड़दा देणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं हाज़र हज़ूरा, हज़रतां: तों बाहर मेरी पढ़ाईआ। ओए चेत्रा मैं सदा सद सति बचन दा पूरा, पूरन ब्रह्म वेख वखाईआ। मैनूं याद जो लेखा दस्सया मूसा उत्ते कोहतूरा, कलमा कलमे विच्चों प्रगटाईआ। मूसे ने याद कीता ना नेड़ रिहा ना दूरा, पाँधी पन्ध ना कोए जणाईआ। जिस ने अन्त कूड़ी क्रिया मेटणा कूड़ा, कूड़ कुटम्ब गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे चेत, धुर दा हुक्म इक ख़ास, जिस दी ख़सूसीअत ना कोए जणाईआ। धुर दे मालक दा इक इजलास, बेपरवाह आपणा हुक्म वरताईआ। जिस ने अवतार पैग़म्बर गुरु इक्को धाम रखे ख़ास, ख़ालस इक्को नूर नज़री आईआ। जिस दी महिमा वाली पैंदी रही रास, गोपी काहन नाच नचाईआ। जिस दे कलमे दा करदे रहे खिताब, ख़ता मुखातब हो के निरगुण सरगुण कर पढ़ाईआ। जिस दे नाम नूं हुन्दा रिहा आदाब, सीस जगदीश झुकाईआ। जिस दा मुहब्बत वाला प्रेम वाला सीस ते टिकदा रिहा ताज, तख्त निवासी सोभा पाईआ। जिस ने दीन दुनी आपणी कीती मुहताज, लोड़वंद रखी खलक खुदाईआ। नाम दी कलमे दी दे के छोटी छोटी दात, दाता दानी आप अख्वाईआ। आपणी किरपा दी बख्शिश नूं दस्स के करामात, अवतार पैग़म्बर गुर दिते वड्याईआ। मज़्बां दी बणा के जमात, मानस मानस मानस वंड वंडाईआ। चार जुग दे शास्त्र ग्रन्थ लिखा के नाल कलम दवात, कागज़ां उत्ते रंग चढ़ाईआ। आप बैठा रिहा बण के वड्डा जनाब, शहिनशाह सचखण्ड डेरा लाईआ। किसे महिबूब किहा किसे किहा महाराज, दो जहानां मालक कहि के कोई आपणा झट लँघाईआ। ओह मेहरवान अन्त कलयुग सब तों लैण लग्गा हिसाब, अंकड़े चार जुग दे वेख वखाईआ। किसे दी किसे करनी नहीं इमदाद, अवतार पैग़म्बर गुरु लेखा दयो थांउँ थाँईंआ। जो संदेसा दे के आया नानक निरगुण सरगुण विच बग़दाद, ओह बग़लगीर हो के लेखा उस दा पूर कराईआ। किसे दी समझ नहीं आउणी की खेल होणा विच पाणी आब, समुंद सागर सारे बैठे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे ओए चेत वेख खेल पुरख समरथ, की करता

कार कमाईआ। ओ जिस दा सतिजुग त्रेता द्वापर चलदा आया रथ, कलयुग आपणा हुक्म वरताईआ। जिस ने सब दे अन्तर निरन्तर इक्को हुक्म दी पाउणी रख, डोरी नाम कलमे वाली जणाईआ। ओह आपणा खेल करे सच, सति सच दी कार कमाईआ। जिस वेखणे काया माटी भाण्डे कच्च, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश फोल फुलाईआ। उस दे हुक्म विच्चों कोई ना सके बच, बचया रहिण कोए ना पाईआ। बण के परमेश्वर पति, पारब्रह्म आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे अवतार पैग़म्बर गुर जोती धार, धार प्रभ दी नज़री आईआ। ओ निरगुण आओ विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलाईआ। सब दी इक्को होवे कतार, कतरा बूँद वक्ख ना कोए कराईआ। सब दा इक होवे जैकार, प्रभू तूं मेरा मैं तेरा दूजा ढोला कोए ना गाईआ। इक्को नूर होवे उज्यार, तन वजूद माटी ख़ाक हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड ना कोए वंडाईआ। तुहाडा सब दा मालक ख़ालक प्रितपालक इक्को नूरी अल्ला ते इक्को निरँकार, परवरदिगार इक अख्वाईआ। जिस दा तुसीं करके आए उधार, तुहाडे लहिणे तुहाडी झोली पाईआ। सब ने सति सरूप दी करनी विचार, सति सच दा पड़दा उठाईआ। सृष्टी विच आ के निगाह मारो नाल प्यार, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण चारों कुण्ट वेख वखाईआ। तुहाडे शिश
१८५६ सिख मुरीद अन्तर आत्म परमात्म नाल किस बिध करदे गुफ़तार, गुफ़त शनीद वेखणा चाँईं चाँईंआ। तुहाडे वेंहदयां वेंहदयां १८५६
२२ सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चलदा रिहा नाल आपणी रफ़तार, रफ़ता रफ़ता आपणा पन्ध मुकाईआ। तुहाडी छोटयां छोटयां २२
दीनां मज़्बां दी मेरे नाम कलमे दी हिस्सयां वाली सरकार, जगत जहान नज़री आईआ। कोटन कोटि नामां विच्चों कल्मयां विच्चों तुसां मेरी सिफ्त दे अक्खर दस्से दो चार, ओम, हरी ओम, तत सति, जै राधे, सीता राम, राधे कृष्न, अल्ला, वाहिगुरु, सतिनाम, कहि के आए गाईआ। तुहानूं पता नहीं इस तों परे की मेरा विहार, जिस नूं जाणे ना कोए विच संसार, रसना सके ना कोए उच्चार, अक्खरां विच लिखी ना जाए कोए कतार, सरगुण वंड ना कोए वंडाईआ। बिन नैणां तों नैण लओ उग्घाड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे चेत, पुरख अकाल बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। जिस दी मैं शहादत देवां ते इक्को धुर दा बणां गवाह, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। जिस ने अवतार पैग़म्बर गुरु निरगुण जोत सच दवारे लैणे बुला, बिना बुल्ल्हां ज़बानां तों आपणा हुक्म सुणाईआ। मालक बण के दरगाह साची दा इक खुदा, खुद आपणी कार भुगताईआ। तेरा लेखा होण ना देवे जुदा, वक्खरी वंड ना कोए रखाईआ। जिस नूं जुग बदलण दी सदा अदा, ओह कलयुग अन्तिम लेखा दए चुकाईआ।

उस दे इक्को नाम दी होणी सदा, इक्को नाअरा हक देणा सुणाईआ। उस ने ओह धुर दी रबाब देणी वजा, जिस रबाब ने अहिबाब नानक नूं नानक दा नानक दिता मिलाईआ। जिस दे अग्गे सारे होणे लाजवाब, सिर सके ना कोए उठाईआ। उस दा भेव जाण सके ना कोए किताब, चार जुग दे शास्त्र निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। चेत कहे सतिगुर शब्द मैं की दस्सां, दस्सण दी लोड़ रही ना राईआ। मैं खुशीआं दे विच हस्सां, हस्ती तकां बेपरवाहीआ। ओह मेरा समां आया मसां, मसां मसां वेखां कलयुग रैण अंधेरी काली शाहीआ। मैं ते दुनिया विच्चों दूर दुराडा हो के नस्सां, भज्जां वाहो दाहीआ। नाले दोहथ्थड़ मारां उत्ते पट्टां, पटने वाल्या इक तेरी ओट रखाईआ। हुण लेखा मुका दे तीर्थ तटां, जलां थलां दा झगड़ा देणा चुकाईआ। कोई पूजे ना पथ्थर इट्टां, बिना पुरख अकाल तों सीस ना कोए निवाईआ। इक्को डोरी उस दे उत्ते सिट्टां जो सिट्टा वेखे ख़लक खुदाईआ। इक्को साहिब दे चरणां विच लिटां, जिस लिटां वाले सारे देणे बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आपणे हथ्थ रखाईआ। सतिगुर शब्द कहे चेत तेरा केहड़ा वक्त, ओ धुर दे लाल देणा जणाईआ। चेत कहे ओ सतिगुरु मैं वेख्या उस प्रभू दा जगत, जो जुग चौकड़ी आपणी खेल खिलाईआ। जिस दा लेखा बूँद रक्त, तन वजूद दए वड्याईआ। जिस अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं नूं दस्सया मैं सदी चौधवीं अन्तिम आवांगा इक्को फ़कत, फ़िकरा धुर दा इक सुणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी विच्चों सन्त सुहेले मेलांगा भगत, सूफ़ीआं आपणे नाल जुड़ाईआ। मुहम्मद दी सदी चौधवीं दा अन्त करना एह मेरी सच्ची शर्त, शरअ दा लेखा देणा मुकाईआ। जोती नूर नुराना हो के आवां परत, पतिपरमेश्वर कहि के सारे लैण गाईआ। मालक हो के फ़र्श ते अर्श, अर्शी प्रीतम हो के आपणा रंग रंगाईआ। किसे दा बकाया रहिण नहीं देणा कर्ज़, मकरूज हो के लेखा दयां चुकाईआ। ग़रीबां निमाणयां वंडां दर्द, दुखियां दुःख आपणी झोली पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर के ग़रक, शौह दरयाए देणा रुढ़ाईआ। चार जुग दा लेखा कर के तरक, तुरत आपणा हुक्म वरताईआ। फेर फिरांगा उत्ते धरत, धरनी धवल खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा सच इक प्रगटाईआ। चेत कहे सतिगुर शब्द संदेशा दे दे परवरदिगार, बेपरवाह दे सुणाईआ। ओए आ सभनां दे सांझे यार, जो यराने सब दे वेख वखाईआ। तेरी दीन तेरी दुनी तेरे मानस तेरे मनुक्ख कायनात विच्चों तेरे नालों होए ग़द्दार, ओए गदागर हो के घर घर फेरा लै पाईआ। ग़फ़्लत विच्चों कढ दे बाहर, नेत्र नींद रहे ना राईआ। सदी चौधवीं दे दीदार, दीदा दानिस्ता आपणा आप प्रगटाईआ। बेख़बरां करदे ख़बरदार, धुर दा

१८६१
२२

हुक्म इक समझाईआ। द्वैत दा पड़दा दे पाड़, दूई दा लेखा रहे ना राईआ। उस धाम जाणा जिथ्थे मुहम्मद सुत्ता सी विच उजाड़, पुट्ठा पै के परवरदिगार नूं इक ध्याईआ। आशा रखी सी नाड़ नाड़, काया करबले तों बाहर वखाईआ। जिस वेले मेरे मालक ने लेखा मुकाउणा चन्द ते सितार, सतह बुलंदी दे उत्ते ध्यान लगाईआ। उस दा वेस होणा ना पुरख ते ना नार, तत्तां वाली वंड ना कोए वंडाईआ। धुर दे कलमे दी करेगा गुफ़तार, जिस दा अक्खर अलिफ़ ये अग्गे ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच इक समझाईआ। पुरख अकाल कहे शब्द सतिगुर चेत दोवें हो गए इक्कठे, सांझा मता पकाईआ। तेई अवतार आउण नट्ठे, भज्जण वाहो दाहीआ। ईसा मूसा मुहम्मद तबकां नूं आउण टप्पे, बिना कदमां तों कदम टिकाईआ। दस गुरुआं दी इक्को जोत जगे, दूजा नज़र कोए ना आईआ। मेल मिल्या शाह पातशाह शहिनशाह सूरे सरबगे, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। पुरख अकाल कहे परवरदिगार कहे सांझा यार कहे आओ चार जुग दे मेहरवानो नौजवानो धरती उत्ते चार कुण्ट वेख पैंदे धक्के, सांतक सति ना कोए कराईआ। तुहाडे लेखे मेरे हुक्म वाले किथे सांभ के रखे, परदयां विच्चों दयो कढ्ढाईआ। मुहम्मद कहे मेरे मेहरवान महिबूब मेरे हथ्थ बध्धे, दरोही तेरा नाम खुदाईआ। मैं पहलों चलां सब दे अग्गे, भज्जां वाहो दाहीआ। जेहड़े लेखे मेरे मकबरे विच दब्बे, उन्हां दा लहिणा पूरा देणा कराईआ। उम्मत मेरा करदी हज्जे, मैं हज्ज तेरे करके सीस निवाईआ। ओ सजदयां विच मालक मेरा नूरी अल्ला लभ्भे, बेपरवाह अलाह इक्को नज़री आईआ। एसे करके गुरमुखां दे सोहँ लिख्या छाती दे सज्जे ते खब्बे, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे ओए चेत उठ वड्डया बली, बलधारी लै अंगड़ाईआ। पुकार करदा मुहम्मद दे नाल हज़रत अली, कूक कूक सुणाईआ। नैण उठावे इक लख ते इक घट चुरासी हज़ार वली, वली अल्ला ध्यान लगाईआ। एसे करके नाल खड़नी इक तेल दी पली, पलक दे विछड़े सारे लैणे मिलाईआ। निमक हराम कोई होण नहीं देणा सब दे मुख लगाउणी नमक दी डली, डाली पत्त फोल फुलाईआ। एह खेल प्रभू दी सदी चौधवीं चली, चालीसा आपणी कार भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। चेत कहे मेरा दिहाढ़ा पहला होया शुरू, शरअ वाल्यां देणा जणाईआ। सब दा इक्को मालक इक्को होणा शब्द गुरु, दूजा इष्ट नज़र कोए ना आईआ। निरगुण धार निरवैर हो के सब दे अन्तर मन्त्र हो के फुरू, फ़ुरने मन दे बन्द कराईआ। उम्मत कहे उफ़ हाए दरोही मेरे खुदा सदी चौधवीं किस बिध नईया ते बेड़ा रुढ़ू, नौका पार ना कोए कराईआ। परवरदिगार कहे

मुहम्मद हमद विच इक्को नूर ते नूर अलाही जुड़ू, अल्ला हू अन्ना हू इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे मैनूं हुक्म आउंदा बिना लिखी होई कलाम, कातबां तों बाहर रिहा जणाईआ। वेख खेल अगम्म अमाम, जिस अमाम नूं सलाम सारे करके सीस निवाईआ। जिस नूं कहिंदे धुर दा राम, जन्म मरन विच वंड ना कोए वंडाईआ। जिस नूं कहिंदे धुर दा काहन, जनणी कुख्ख ना रंग रंगाईआ। जिस ने सब नूं दिता दान, दाता दानी बेपरवाहीआ। ओह खेल करे महान, महिमा अकथ कथ सुणाईआ। उस ने लेखा मुका देणा असल दा असल विच्चों इस्लाम, इस्म आज़म इक आपणा देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा पर्दा आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे अवतार पैग़म्बर गुर प्रभ दी खड़े हज़ूरी, हाज़र हज़ूर सोभा पाईआ। हुक्म सुणन इक ज़रूरी, जिस दी ज़रूरत चार जुग दे ग्रन्थ ना सकण समझाईआ। खेल तकणा इक्को नूरी, नूर नुराना डगमगाईआ। जिस ने शरअ शरीअत मेटणी कूड़ी, कूड़ कुड़यारा डेरा ढाहीआ। मन कल्पणा रहिण नहीं देणी मूढ़ी, ममता मोह ना कोए हल्काईआ। साचे प्यार दी बख्श के धूढ़ी, टिक्के नाम दे देणे रमाईआ। इक्को रंगत चाढ़नी गूढ़ी, रंग दो जहान कोए ना लाहीआ। सति सच दी दे के सरूरी, सुरत शब्द देणी मिलाईआ। पर इक सदी चौधवीं अन्त पैग़म्बरो सब नूं घड़ी वेखणी पैणी मज़बूरी, जिस दी मजबूरी सके ना कोए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। धुर दा कलमा कहे सुण यार प्यारे ईसा, मसीह अक्ख उठाईआ। आपणा वक्त वेख लै बीसा, बीसवीं सदी नाल मिलाईआ। ख़ाली सब दा होया खीसा, पाकट सब दी दए दुहाईआ। परवरदिगार नूं झुके कोए ना सीसा, सिर सर ना कोए निवाईआ। अन्तिम सब ने पाउणा आपणा कीता, कत्लगाह तक जगत लोकाईआ। तेरा प्यार वरतणा ठीका, जो प्रेम विच आसा गया बंधाईआ। दीन दुनी अन्दरों बदली नीता, नीतीवान नज़र कोए ना आईआ। हुण पैग़म्बरो तुहाडा समां बीता, अग्गे हो ना कोए वधाईआ। वेखो आपणे नाम कलमे दीआं लीकां, जो अक्खरां विच लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सच आपणे हथ्थ रखाईआ। धुर कलमा कहे मुहम्मदे वज़ी लाहिज़, नोज़ज वीज़िस, कोलाजे मोज़ू जलवे निज़ां, नूरे निहां शौहरे शबी, ख़ालके तबी माज़ूने माविज़, अर्शाने, ख़विज ख़ाके नज़ू अलीआने तलू ज़ेबो ज़िवहा नूरे खुदा, अर्शे वज़िग, फ़र्शे शौनिज़, दीने अख़दाम, मुकामे निज़ाम दरगे दुहिद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर रंग आप रंगाईआ। मुहम्मदे मिज़ां नूरे निज़ां अर्शे पिनां चशमे रुशना ख़ौने ज़वी

१८६२ २२

लाए ज़वी तालबे नदी सजदा अबी दस्ते बुलंद ख़ाकी फ़रजंद फ़ज़ल रहमत तेरी नज़री आईआ। ख़ुदाए ख़ुदीस लाहवी बेहवी तज़गरे तावीद, हरफ़े निशां नोशे कुशां कुराने मजीद मुज़माए हरूफ़ हरफ़ हरफ़ नाल वड्याईआ। अन्तिम इक हद्द ते इक मंज़ल इक मकसूद, दूजा मसला ना कोए रखाईआ। जिस दा पैग़म्बरो देणा पैणा सबूत, सबर सबूरी वाल्यो वेला वक्त नेड़े आईआ। जिधर तक्कोगे उधर नज़र आएगा मौजूद, मुफलसां दा मुफ़िलस ग़रीबां दा ग़रीब शहिनशाहां दा शहिनशाह पातशाह बेपरवाहीआ। जिस दा इक्को गृह ते इक्को अरूज, अर्श फ़र्श दा मालक नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप दरसाईआ। सम्मत अट्ठ कहे ओए चेता कमलया ऐवें ना पा रौला, दीन दुनी सुणाईआ। कुछ भेव दस्स की खेल करेगा मौला, की मलकुलमौत हुक्म सुणाईआ। मेरा लेखा हिस्सा किस बिध पूरा करेगा इकरार कौला, कलमे लेखे दए गिणाईआ। चेत कहे ओए सम्मता प्रगट हो के उपर धौला, धरनी धरत धवल आपणा नूर करे रुशनाईआ। जिस दा रंग ना कोई समझे काला गोरा सव्वला, नूर नुराना डगमगाईआ। उस नूं शरअ वाले कहिणगे कमला, ओह कमली पा के अल्फ़ी पा के अलिफ़ ये वाल्यां दी अन्त करे सफ़ाईआ। उस ने फिरना शरअ दीआं हद्दां विच बण के यमला, बिना अमलां तों आपणी कार कमाईआ। क्यों एह दीन एह दुनी उस दा बगीचा ते

१८६३ ... १८६३

२२ ... २२

बाग़ उसे दा चमना, एस चमन विच्चों जन भगत सुहेले गुल आपे लए तुड़ाईआ। उस ने खेल वेखणा त्रैभवणा, त्रैभवण धनी आपणा पड़दा आप चुकाईआ। पर सम्मता याद रख उस अमाम ने उस मेहरवान ने किसे दी कुख्खों नहीउँ जम्मणा, ते जम्मण वाली होए कोए ना माईआ। पर इक गल्ल उस ने अवतार पैग़म्बर गुरुआं दे कढणे संमणा, समें नाल सब नूं आपणे दर ते लए बुलाईआ। जिस दे हुक्म विच दो जहान कम्बणा, सिर सके ना कोए उठाईआ। जो घड़या सो उस ने भन्नणा, विष्न ब्रह्मा शिव चले ना कोए चतुराईआ। उस ने दीन दुनी दा वेखणा जंगणा, जंगजू बहादर हो के निरगुण धार निरगुण निरवैर निराकार निरँकार परवरदिगार सांझा यार हो के, नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप दीन मज़्हब ज़ात पात खेल तमाश, पुरख अबिनाश कर के घट घट वास, सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर लातस्वीर गुणी गहीर लोकमात आपणा हुक्म वरताईआ। ओह भज्जा आ जाए कबीर, बिन सरीर वेखे भगतां दी तकदीर, की प्रभ ने बणाई तदबीर, किस बिध कलयुग दा अन्त करे अख़ीर, पैग़म्बर नेत्र वहावण नीर, उफ हाए दरोही सब दे लौहण लग्गा चीर, चीरे वाला नज़र कोए ना आईआ। साडी मज़्हबां दी रहिणी नहीं मिलख जागीर, जागरत जोत बिन वरन गोत इक्को नूर करे रुशनाईआ। जिस दे हथ्थ नाम खण्डा ते शब्द दी शमशीर, शरअ दे झगड़े दए मुकाईआ। इहो आशा रखी सी गुर अर्जन ने जिस वेले चौदां

सौ तीह पन्ने दी बद्धी बीड़, बीड़ा प्रभ दे हथ्थ रखाईआ। मुहम्मद ने किहा जिस वेले सदी चौधवीं अन्त पई भीड़, भीड़ी गली पार ना कोए कराईआ। उस वेले झगड़ा पैणा ग़रीब अमीर, अमीर ग़रीब ग़रीब अमीर करन लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैनूं कस लैण दयो कमरकसा, कसम नाल दयां जणाईआ। किसे मनुष दे गल विच रहिण नहीं देणा रस्सा, मज़्बां वंड ना कोए वंडाईआ। ओह वेखो चारों कुण्ट पैंदीआं ग़शां, सुरती संभल के सम्बल वाले दा दरस कोए ना पाईआ। माया ममता कूड़ क्रिया दा चढ़या नशा, नशे विच भुल्ली जगत लोकाईआ। जिस ने आदि तों होड़ा लाया उपर सस्सा, सो पुरख निरंजन बेपरवाहीआ। हरि पुरख निरंजन हो के खेल करे पुरख समरथा, एकँकार आपणी वंड वंडाईआ। जो आदि निरंजन हो के जगा, जोती जाता नूर इलाहीआ। श्री भगवान हो के आपणा आप कर प्रगटा, आप आपणे विच्चों प्रगटाईआ। अबिनाशी करता हो के आपणे गृह वसा, दूजा मन्दिर ना कोए सुहाईआ। पारब्रह्म हो के आपणा रखे आपे पता, सिर आपणे हथ्थ रखाईआ। फेर आपणे विच्चों कढ के आपणा शब्दी बच्चा, हुक्म धुर दा दिता सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव प्रगट करके रता रता, इशारे हुक्म वाले दृढ़ाईआ। चार जुग खेल करदा रिहा निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण धार सता, अवतार पैग़म्बर गुरु मात वड्याईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर गोबिन्द नूं दस्सया बिना पुरख अकाल तों किसे दा वज्जणा नहीं डंका, फ़तिह डंक ना कोए वजाईआ। जिस ने इक्को जेहा माण देणा राउ रंका, दीन मज़्ब वंड ना कोए वखाईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगता, हाहे दे उत्ते टिप्पी हँ ब्रह्म देणा समझाईआ। बोध अगाधा बण के पंडता, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। रस देवां आत्म अनन्द दा, अनन्द अनन्द विच्चों जणाईआ। जिस निशान मेटणा तारे चन्द दा, चन्द सितार निउँ निउँ सीस झुकाईआ। ओह समुंद सागरां फिरे लँघदा, भज्जे वाहो दाहीआ। किसे नूं पता नहीं उस दे ढंग दा, किस बिध आपणा खेल खिलाईआ। शब्द दे नाल शब्द दीआं जो हद्दां आया वंडदा, सो शब्द दे नाल शब्द दी करे सफ़ाईआ। जो जुग जुग जन भगतां दीआं टुट्टीआं आया गंढदा, गंढणहार इक गुसाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच सच आप हुक्म सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे अवतार पैग़म्बर गुरु आपणी दस्सण राए, इक्को वार जणाईआ। की भविक्ख्तां विच आए कहि, रसना जेहवा ढोले गाईआ। किस बिध सोहणयों सृष्टी होणी लय, लायक हो के भेव देणा जणाईआ। धुर दे मालक दा केहड़ा हुक्म वहै, वहिण कूड़ दे देणे रुढ़ाईआ। किस नाम दी किस कलमे दी किस फ़रमान दी होवे जै, किस दा डंक करे शनवाईआ। सच दस्सो उस महिबूब दा केहड़ा मन्दिर केहड़ा काअबा केहड़ा गुरदवारा केहड़ा मट्ठ ते केहड़ा

गृह, किस आसण सिंघासण डेरा लाईआ। किस दवारे सति सरूप हो के बहे, जोती जाता डगमगाईआ। केहड़ी वस्त अगम्मी दए शै, शहिनशाह की वरताईआ। सच दस्सो तुसां उस नूं क्यों किहा निर्भय, ते भय विच सारे सीस निवाईआ। जे किसे नूं त्रैलोकी दिती ते उस किहा, मैं, त्रैलोकी दा नाथ हो के त्रैलोकी विच आपणा आप गया समाईआ। सब दे काया दे बुरज़ गए ढह, अवतार पैग़म्बर गुरु सहिबानों तुसीं आपणा सरीर जगत विच रखया ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं वेखां दिशा चढ़दी, की प्रभ दी चढ़दी कला नज़री आईआ। जिस खेल वेखणी चोटी जड़ दी, जड़ सब दी रिहा उखड़ाईआ। जिस दी धार इक्को नाम पढ़दी, जेहड़ा नाम लिखण पढ़न विच कदे ना आईआ। जेहड़ी आत्मा इक परमात्मा वरदी, कन्त कन्तूहल धुरदरगाहीआ। ओह ना कदे जम्मदी ना कदे मरदी, जम्मण मरन वेस ना कोए वखाईआ। इहो खेल उस दे घर दी, जिस घराने दा मालक बेपरवाहीआ। हाए उस दे कोलों सब दी आशा रही डरदी, सिर सक्या ना कोए उठाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां दी धार हो के जो खण्डे तीर तलवारां रही फड़दी, ते तरकशां भथ्थयां कंध्याँ नाल लटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। सतिगुर शब्द कहे मैं वेखां
१८६५ दिशा लहिंदी, मग़रब अक्ख उठाईआ। मुहम्मद दी आशा की कहिंदी, कहि कहि रही सुणाईआ। मेरी उम्मत दी मंज़ल १८६५
२२ जांदी ढहिंदी, ढहि ढैह आपणा आप गंवाईआ। शरअ शरअ दे नाल खहिंदी, शरीअत दा झगड़ा ना कोए चुकाईआ। होर २२
अग्गे तक्कां ईसा मूसा दी धार इक्ठी हो हो बैहंदी, मसला मसला मिल के रहे बणाईआ। पर इक गल्ल याद रखयो जिस वेले धुर दे अमाम ने सम्मत शहिनशाही अट्ठ विच समुंदर दे पार जा के हथ्थां नूं लाई मैहन्दी, मैहन्दी लाण वाले इक दूजे दे नाल देवे टकराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैनूं वेख लैण दयो दिशा पहाड़, पहाड़ां तों परे ध्यान लगाईआ। कुझ हलूणा दे देणा विच महीने हाढ़, हाढ़ा कढण थांउँ थाँईंआं। अग्ग लगा देणी नाड़ नाड़, नाड़ी नाड़ी देणी तपाईआ। इक दा इक नाल लाउणा अखाड़, खण्डा खड़ग देणा चमकाईआ। फेर सारयां ने पुछणा ओह किथ्थे कमली वाला यार, जेहड़ा यराने पैग़म्बरां नालों रिहा तुड़ाईआ। ओह सब नूं करन वाला बेदार, जिस ने बेदीआं सोढ़ीआं दिती वड्याईआ। उस दा नूर केहड़ी कूटे होया उज्यार, तन कुटीअ तों बाहर करे रुशनाईआ। ओह मालक दो जहानां ते सब दा सांझा यार, यराने पिछले वेख वखाईआ। जो मकबरयां विच पावे पैग़म्बरां दी सार, महासार्थी भज्जे वाहो दाहीआ। उस दा खेल अपर अपार, अपरम्पर स्वामी आपणी कार भुगताईआ।

१८६६ २२

जिस दा मूसा ईसा सिफ्तां विच कीता इज़हार, लफ़ज़ां विच तलफ़फ़ज़ां विच हरफ़ां विच हरूफ़ां विच ढोले गए गाईआ। ओह कुदरत दा कादर कल्मयां कलामां इस्लामां तों वसे बाहर, अमामां दा अमाम नूर इक खुदाईआ। उस दी कदमबोसी विच झुक जाए सारा संसार, निउँ निउँ माटी ख़ाक रमाईआ। असीं सारे, पैग़म्बर कहिण, उस दे तल्बगार, ताबया विच आपणा आप रखाईआ। जिस दा पहाड़ तों परे नूर उज्यार, कोहतूर तों परे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप कराईआ। सतिगुर शब्द कहे मैनूं वेख लैण दयो वल्ल दक्खण, दक्खण दिशा गोबिन्द दी दए गवाहीआ। केहड़ा ऐस वेले दीन दुनी दी मातलोक विच आया पैज रखण, रखया करे थांउँ थाँईंआ। कूड़ क्रिया नूं आया मथ्थण, नाम मधाणा हथ्थ उठाईआ। ओह भगतां दे अन्दर आया वसण, नूर नुराना हो के घर घर डेरा लाईआ। निज नेत्र खोल्ले अक्खण, सच लोचन करे रुशनाईआ। इक्को ल्या के आपणे पतण, घाट धुर दा दए वखाईआ। जगत शरअ दा मेट के रट्टण, रट्टयां विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। इक्को जोत जगाए लट लटण, नूर नुराना करे रुशनाईआ। सब नूं मार्ग इक्को आया दस्सण, दहि दिशा करे पढ़ाईआ। जिज्ञासूओ सचखण्ड विच अवतार पैग़म्बर गुरु इक्को घर विच वसण, दरगाह साची सोभा पाईआ। जेहड़ा आदि दा आदि अन्त दा अन्त तुहाडा वतन, बेवतनो आपणा मार्ग लैणा अपणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्मा परमात्मा इक्को करना यतन, यथार्थ तुहाडे जीवन दा लेखा दए मुकाईआ। तुहाडा राह निरगुण धार पैग़म्बर गुर अवतार तक्कण, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। सब ने किहा पुरख अकाला दीन दयाला साडा भविक्ख्तां दा पूरा करे बचन, अधूरा रहिण कोए ना पाईआ। बिना प्रभू दयां भगतां तों कोई सच्चा बणया नहीं रत्न, जगत रत्न हीरे कम्म किसे ना आईआ। तुहाडे प्यार विच संसार दीआं हुण हद्दां लग्गा जे टप्पण, टापूआं तों परे आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। सतिगुर शब्द कहे मैं चढ़दा लहिंदा दक्खण पहाड़ वेख्या हुण वेखणा विचकार, दो जहानां फोल फोलाईआ। किस दा जोत नूर उज्यार, नूर नुराना कवण डगमगाईआ। किस दा शब्द नाद धुन्कार, पुरीआं लोआं करे शनवाईआ। किस दा रूप पैग़म्बर गुर अवतार, पंज तत काया वज्जदी रही वधाईआ। किस दा नाम कलमा रसना जेहवा बत्ती दन्द गए उच्चार, अक्खरां नाल सिफ्त सालाहीआ। सो मालक ख़ालक क्यों जुग जुग आपणी बदलदा रिहा चाल, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा वेस वटाईआ। ओ की सच किहा, गुर गोबिन्द, ओह वेखणहारा मुरीदां हाल, मुर्शद बेपरवाहीआ। जिस नूं पोह ना सके काल, महाकाल सारे बैठे सीस निवाईआ। ओह खेल करे कमाल, कलकाती मेट मिटाईआ। फल रहिण ना देवे कलयुग कूड़ दा किसे डाल,

पत्त टहिणी दए हिलाईआ। सम्बल विच बहि के सब दी करे संभाल, सभा मलेछां दए चुकाईआ। त्रैगुण माया जो तोड़नहार जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। अवतारो पैग़म्बरो गुरु साहिबानो तुहाडा हल्ल करे सवाल, सवाली फ़िकरा बिना जवाब तों आपणे विच टिकाईआ। दीनां मज़्बां तों सब नूं कर देवे बहाल, बन्धन रहिण कोए ना पाईआ। इक आत्मा इक परमात्मा सारी सृष्टी दा इक्को वजेगा ताल, ताल तलवाड़ा शब्द गुरु जणाईआ। इक्को मन्दिर इक्को काअबा इक्को होवेगी धर्मसाल, धर्म दवारा इक्को इक वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे चेत ना भज्ज ना दौड़, कुण्ट चार वाहो दाहीआ। पुरख अकाल दी इक्को मंज़ल इक्को पौड़, दूजा डण्डा नज़र कोए ना आईआ। साहिब सतिगुर वेख नाल ग़ौर, गहर गम्भीर ध्यान लगाईआ। जिस दे सीस अगम्मी चौर, पवण उनन्जा रही झुलाईआ। जिस दा मन्त्र नाम इक्को फोर, फ़ुरने पिछले बन्द कराईआ। जिस दा रूप अवर का और, नूर नुराना डगमगाईआ। जोत खेल करे कलयुग अंध अंधेरे घोर, अंध अज्ञान मेट मिटाईआ। सदी चौधवीं आपणे हथ्थ विच पकड़ी डोर, तन्दी तन्द ना कोए छुडाईआ। जिस दी नवां सालां विच सब नूं पैणी लोड़, दूर
१८६७ दुराडे तक्कण नैण उठाईआ। उस ने दिने जागदयां राती सुत्तयां सब दे जाणा कोल, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। इक वार १८६७
२२ चरणां थल्ले रखणी धरनी धरत धवल धौल, धर्म दी धार रखाईआ। फेर सारी सृष्टी दी दृष्टी अन्दर जाणा मौल, मौला २२
हो के आपणा हुक्म वरताईआ। निजर झिरने दी अमृत बूंद स्वांती देणी पहुल, रस इक्को इक चखाईआ। आप बैठ के शब्द सिंघासण अडोल, सति सतिवादी आपणी कार देणी भुगताईआ। जिस दा भेव कोई ना जाणे पंडत पांधा रौल, नछत्र गृहां विच ना कोए जणाईआ। जिस दा अन्त पा सके ना कला सोल्ह, सोलह कलधारी जिस नूं सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं होका देवां हक, हकीकत वाल्यो दयां जणाईआ। इक दा नूर नूर लैणा तक, तकवा तकदीर वाला रखाईआ। जिस ने सब दे शकूक मेटणे शक, शिकवे देणे गंवाईआ। सो साहिब महिबूब होण लग्गा प्रतख, परम पुरख पर्दा आप चुकाईआ। जिस दी धार नालों जगत जहान होया वक्ख, मन मनसा संग रखाईआ। उस ने शाह सुल्तानां कीमत रहिण नहीं देणी कक्ख, कौडी कौडी हट्ट विकाईआ। सब नूं भुलेखा पाउणा सम्बल दा मालक ते नज़री आवे तत्तां वाला जट्ट, सरीर बेनज़ीर आपणी कार भुगताईआ। जिस ने सब दा इक्को खोल्हणा हट्ट, वणजारा जगत जहान लैणा बणाईआ। कूड़ कुड़यार दा लेखा करना ठप्प, ठप्पा इक्को नाम मोहर लगाईआ। जन भगतां मेल मिलाउणा परमेश्वर पति, पति पतिवन्ता इक्को नज़री

आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दी करनी कार कमाईआ। सम्मत शहिनशाही अठ्ठ कहे मेरा की इरादा, इक इकल्ला दयां जणाईआ। की संदेसा देवे गोबिन्द पिता ते पुरख अकाल दादा, दो जहानां रिहा जणाईआ। जिस दा इक्को नाम शब्द अगम्मी आवाज़ा, अनहद धुन करे शनवाईआ। बिना सुरती तों शब्द सरूपी जागा, जागरत जोत डगमगाईआ। जिस ने लख चुरासी कलयुग जीआं वेखणे भागा, घट घट अन्दर फोल फुलाईआ। क्यों पंजां तत्तां लग्गी आगा, मन मनसा रही जलाईआ। हँस बुद्धी होए कागा, काग वांग कुरलाईआ। किसे नूं समझ नहीं आई क्यों सतिगुर गोबिन्द ने उडाया बाज़ा, की बाजां वाला खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर पड़दा आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे गोबिन्द ने बाज़ तों लवाई उडारी, उगण आथण दिता समझाईआ। जिस वेले प्रभ दी आई जोत निरँकारी, निरवैर आपणा फेरा पाईआ। उस नूं समझे ना कोए संसारी, बुद्धी अक्ल चले ना कोए चतुराईआ। ओह दो जहानां पावे सारी, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डा जेरज अंडां वेख वखाईआ। उहदी खेल होवे दो धारी, सरगुण निरगुण निरगुण आपणी कार कमाईआ। उहदी कला वरतणी ज़ाहरी, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर

१८६८
२२

शब्द कहे पैग़म्बरो क्यों करदे सलाम, सजदे वाल्यो दयो जणाईआ। मुहम्मद कहे प्रगट होया मेरा अमाम, मेहरवान नूर इलाहीआ। मेरा विगड़ गया निज़ाम, नौबत हक ना कोए वजाईआ। शरअ शरअ नूं करे कत्लेआम, कातिल मक्तूल दा रूप बणाईआ। मेरे कलमे ते लग्गा इल्ज़ाम, सति रंग ना कोए रंगाईआ। मेरे हुन्दयां होई अंधेरी शाम, शमां नूर ना कोए रुशनाईआ। आपणे वक्त नाल मैं हो चलया बदनाम, बदी दा डेरा कोए ना ढाहीआ। जेहड़ा मेरे महिबूब ने मदीने विच मैनूं दिता पैग़ाम, धुर पैग़ाम इक दृढ़ाईआ। निगह मार सुरती तों बाहर कर ध्यान, जगत जुगत ना कोए वड्याईआ। जिस वेले आप आया तेरा अमाम, आमद विच आपणा पड़दा दए उठाईआ। उस वेले झगड़ा पैणा सृष्टी विच तमाम, तमा होवे कूड़ लोकाईआ। हकीकत दा हक आबेहयात दा मिले ना किसे जाम, रस सच ना कोए चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। सतिगुर शब्द कहे, तेरे अग्गे इक अर्ज़ोई, अर्ज़ी तेरे अग्गे टिकाईआ। जिस दा भेव जाणे ना कोई, अभेद सके ना कोए खुल्हाईआ। पैग़म्बर करदे दरोही दरोही, या मुबीन या अमीन दर ठांडे सीस झुकाईआ। उम्मत आसा रही रोई, बिन अक्खां नीर वहाईआ। सदी चौधवीं प्यार विच गई मोही, तेरी मुहब्बत ना कोए बणाईआ। सब दी पति गई खोही, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। दरगाह साची मिले ना कोई ढोई, तेरा दरस

कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। दर तेरे सवाली मंगता, भिक्खक इक भिखार। गढ़ तोड़ हउमे हंगता, किरपा कर परवरदिगार। जगत जहान दिसे भुक्खा नन्गता, ओढण सीस ना कोए सहार। झगड़ा प्या ममता मन दा, काम क्रोध नाल रलया हँकार। मेरा निशान मेटणा तारे चन्द दा, चन्द सितार करे इज़हार। तुध बिन बेड़ा कोए ना बन्न्हदा, सदी चौधवीं होए ना कोए सहार। परवरदिगार तूं वणजारा नहीं सरवण कन्न दा, अगम्मी तेरा कलमा करे ख़बरदार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अर्ज रिहा गुज़ार। मुहम्मद कहे मेरी गुज़ारिश, दस्त बन्न्ह के सीस निवाईआ। चार यार करन सफ़ारिश, सफ़ा सफ़े नाल उलटाईआ। दुहाई देवे मेरी ज़िआरत, कूक कूक जणाईआ। शहादत भुगते मेरी इबारत, लेखा लिख्त नाल मिलाईआ। मैं कलमे विच बिना कलम दे लिख्या दस्सया मेरा अमाम ज़रूर प्रगट होवे विच भारत, भरम दा डेरा ढाहीआ। फेर हुक्म दी करे शरारत, शरअ शरअ नाल टकराईआ। जिस ने अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं दी बदल देणी वज़ारत, वुज़रा रहिण कोए ना पाईआ। इक्को हुक्म देणा ख़ालस, धुर दा नाम इक जणाईआ। सतिगुर शब्द नूं सब दा करना सालस, दूजा नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया टिक्का मेटणा कालख, कलमा नाम इक जणाईआ। जिस

१८६६ ~~~~~ १८६६

२२ ~~~~~ २२

दा इक्को सतिगुरु शब्द सति सरूप होणा बालक, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। ना ओह बुढ्ढा ना ओह बाल ना ओह जवान सब दी करे प्रितपालक, पालणहार इक अख्वाईआ। ओह ख़लक दा ख़ालक मख़लूक दा मालक, नूर नुराना नज़री आईआ। जिस ने सब दे अन्दरों कढणी जहालत, कूड़ कुड़यारा देणा मिटाईआ। सच पुछो सच तख्त उत्ते दो जहानां दी करनी इक अदालत, अदल इन्साफ़ आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा इक्को इक मशवरा, मशकूर सब नूं दयां कराईआ। जिस दे उत्ते करे ना कोई तबसरा, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। कुछ लेखा दस्सणा जिस वेले जोती ते नूरी अल्ला गया विच बसरा, पर्दा अगला पिछला पिछला अगला ते विचला आप खुल्हाईआ। दस्स देणा मुहम्मदा तेरी उम्मत दा केहड़ा नम्बर ते केहड़ा ख़सरा, जिस खतोनी विच बैठा डेरा लाईआ। की अन्तिम होणा हशरा, ओ तुहाडा हाशम की आपणा हुक्म वरताईआ। ते की हुक्म वरतणा उत्तर पूरब पच्छमा, दक्खण की वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म हुक्म हुक्म आप वरताईआ। चेत कहे सतिगुर शब्द कोई खेल दस्स निक्की, सहिज नाल समझाईआ। सतिगुर शब्द कहे आह वेख चार जुग दी चिट्ठी, अवतार पैग़म्बर गुरु बिन अक्खरां गए लिखाईआ। जिस विच परम पुरख दी लिखी

सिक्खी, दीनां मज़्हबां वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दी गोबिन्द ने धार जणाई तिक्खी, खण्डा रंग ना कोए रंगाईआ। उन्हां दा लहिणा देणा ठांडे घर पहली चेत ते सम्मत शहिनशाही अट्ठ दी मिती, ओ मित्रा तैनूं दयां जणाईआ। जिस विच अन्दरों बदल जाणी नीती, नीतीवान आपणा रंग रंगाईआ। एह मैं दस्सी पिछली कहाणी बीती, पूरबला लेख दृढ़ाईआ। अग्गे परम पुरख दी मौलणी बग़ीची, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई इक्को रंग रंगाईआ। आत्म परमात्म लगणी प्रीती, प्रीतम हो के मेला मेले चाँईं चाँईंआ। जिस दी धार नीकण नीकी, निराकार निरँकार आपणी खेल खिलाईआ। काया करनी ठंडी सीती, अग्नी तत बुझाईआ। सार जाणनी जीव जीअ की, आत्म परमात्म वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। चेत कहे मैं जावां बलिहार, बलिहारी पुरख अकाल सीस निवाईआ। जिस दा खेल जुग चौकड़ी चार, निरगुण सरगुण आपणा वेस वटाईआ। नाम कलमे दए उच्चार, ढोले सिफ्तां वाले गाईआ। दीन दुनी पावे सार, लख चुरासी खोजे थांउँ थाँईंआ। भगतां दए अधार, आपणे रंग रंगाईआ। मेरी उस परम पुरख नूं निमस्कार, डण्डावत बन्दना सजदे विच सीस झुकाईआ। जिस कलयुग अन्तिम जोती नूर कीता उज्यार, उजाला करे थांउँ थाँईंआ। पूरब कर्ज़ा सब दा लाहे उधार, लेखा रहिण कोए ना पाईआ । आओ इक्ट्ठे हो जाओ पैग़म्बर गुर अवतार, दर ठांडे सोभा पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेज़ आओ रफ़तार, पिछला पन्ध मुकाईआ। देवत सुर दर ठांडे करो निमस्कार, धूढ़ी चरणां ख़ाक रमाईआ। गण गंधरव गाओ अगम्मी वार, बिन अक्खरां ढोले धुर दे नाम जणाईआ। भगत सन्त आपणी पैज लओ संवार, पंजां तत्तां रंग रंगाईआ। कलयुग जीवो हो जाओ हुश्यार, आलस निंद्रा दयो गंवाईआ। चार कुण्ट होई हाहाकार, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। सदी चौधवीं मुहम्मद दी मौलण लग्गी बहार, कूड़ी क्रिया आपणा रंग रंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा कमरकस्सा बिन वस्त्रां तों हो रिहा त्यार, मेरा शस्त्र लुहार तरखाण ना कोए घड़ाईआ। मेरे नाम खण्डे दी खेल अपार, अपरम्पर स्वामी दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। चेत कहे मेरा दिन बड़ा सुहावा, सब नूं दयां सुणाईआ। मैं प्रभू नूं गावां, जो रहिबर दो जहान अख्वाईआ। उसे दे गुण गावां, गा गा झट लँघाईआ। जिस ने जगत जहान सारा कर देणा निथावां, धरनी उत्ते राजयां राणयां ख़ाक मिलाईआ। किसे दा बल रहिण नहीं देणा विच बाहवां, बाहू बल सारे देणे मिटाईआ। मैं अज्ज ख़ुशीआं नाल, पहली चेत कहे, जन भगतो तुहानूं संदेशा सुणावां, धुर दा हुक्म दृढ़ाईआ। नाता जुड़या नहीं रहिणा पुत्रां मावां, भैणां भाई जाणे तजाईआ। साधां सन्तां किसे दे सिर ते नहीं देणीआं ठंडीआं छावां, सिर हथ्थ ना कोए रखाईआ। चेत कहे ओए, दुनिया वाल्यो, मैं

कूकां ते कुरलावां, कूक कूक सुणाईआ। इक्को परम पुरख परमात्म जिस दा तराज़ू सब दे वास्ते सांवां, झूठी वंड ना कोए वंडाईआ। मेरा दिल करदा ओ तुसीं दो इक दी धार, जन भगतो तुसीं सरगुण जोत सरूपी तुहाडा इक निरँकार, निरगुण निरवैर नज़री आईआ। जे उस दे नाल प्रेम नाल प्रेम दा करो प्यार, दूजा वणज ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा सच नाल लेखा पूर कराईआ। चेत कहे मेरी डण्डावत इक्को बन्दना, हरि सतिगुर बेपरवाह। जिस दा आदि अन्त इक अनन्दना, सुख सागर अगम्म अथाह। जो नूर नुराना दो जहाना चन्दना, जोती जाता नूर करे रुशना। सच स्वामी बणे सजणा, मालक ख़ालक इक अलाह। जिस दी धूढ़ करना मजना, दुरमति मैल दए गवा। उस दा दर्शन कर कर रज्जणा, निज नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हा। जिस झगड़ा मेटणा काया माटी बदना, तत्व तत दा डेरा ढाह। जिस दा इक्को दीपक जोती जगणा, अंध अंधेरा दए मिटा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वा। सच दा मालक इक अख्वाउंदा ए। दीन दयाला दया कमाउंदा ए। जुग जुग आपणा वेस वटाउंदा ए। जोती जाता आप अख्वाउंदा ए। शब्दी नाता जोड़ जड़ाउंदा ए। पुरख बिधाता आपणा हुक्म वरताउंदा ए। जिस दा सब ने मन्नया आखा, सिर अग्गे ना कोए उठाउंदा ए। ओह कलयुग मेटे अंधेरी राता, रुतड़ी आपणी इक महकाउंदा ए। झगड़े मेटे ज़ातां पातां, आत्म ब्रह्म इक समझाउंदा ए। साचे मण्डल पावे रासां, गोपी काहन सुरती शब्द नचाउंदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाउंदा ए। सच दा भेव आप चुकावेगा। दीन दयाल खेल खिलावेगा। सन्त सुहेले मेल मिलावेगा। बिन तेल बाती जोत जगावेगा। अमृत बूंद स्वांती, निजर झिरना आप झिरावेगा। शब्द धुंन सुणाए अनादी, अनहद नाद वजाएगा। अंधेरा मेट अन्दरों रैण राती, नूरी चन्द इक चमकावेगा। आत्म परमात्म बणा के साथी, सगला संग निभावेगा। लेखे ला के मानस जन्म लोकमाती, जन्म जन्म दा गेड़ मिटावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह आपणा इक वखावेगा । गृह आपणा इक सुहाएगा। निरगुण नूर जोत रुशनाएगा। सच दवार बंक वडयाएगा। परवरदिगार सोभा पाएगा। बरख़ुरदार सूफ़ी फ़कीर आप उठाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाएगा। चेत कहे जन भगतो मेरी इक अरदास, बिनै बेनन्ती दयां जणाईआ। तुहाडा मण्डल तुहाडी रास, तुहाडा काहन तुहाडा रूप गोपी सोभा पाईआ। तुहाडा खेल तुहाडा तमाश, तमाशबीन तुहाडा मालक धुरदरगाहीआ। तुहाडा नूर तुहाडी जोत प्रकाश, दीपक तुहाडा करे रुशनाईआ। ओह वेखो शंकर भज्जा आउंदा उतों कैलाश,

साथी संग ना कोए बणाईआ। ब्रह्मा पुज्ज गया बिना लाश, तन वजूद ना वंड वंडाईआ। विष्नूं तुहाडे खड़ा पास, चारों कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। संसारी भण्डारी सँघारी तिन्ने कहिण एह खेल करे प्रभ आप, आप आपणी दया कमाईआ। जिस ने आदि दा आदि तूं मेरा मैं तेरा दस्सया जाप, सो कलयुग दे अन्त निरगुण निरगुण मेला लए मिलाईआ। सच दवार दा खोल्ह के ताक, पड़दा कूड़ दा दिता उठाईआ। सब दा पूरा करे भविक्ख्त वाक, पेशीनगोईआं आपणे विच समाईआ। आप चढ़ के शब्द घोड़े अगम्मी राक, दो जहानां भज्जया वाहो दाहीआ। पहली चेत कहे गुरमुखो तुहाडे नाल मिलण दा हो गया इत्फिाक, इत्फिाकीआ मेला मेलया सहिज सुभाईआ। तुहाडा दीन मज़्ब दा रहे ना कोए निफ़ाक, झगड़ा अन्दरों देणा कढ्डाईआ। तुहाडा आत्मा सदा पाक, पतित रूप ना कोए जणाईआ। तुहाडा ओस परम पुरख नाल साक, जिस दा नाता ना कोए तुड़ाईआ। जिन्हां ने अज्ज दी रैण, पहली चेत कहे, मेरे साहिब दा सुणया वाक, जो शब्दी शब्द शब्द सतिगुर रिहा जणाईआ। उहनां दा जन्म मरन दा लहिणा देणा पिछला होया बेबाक, अग्गे राय धर्म ना दए सज़ाईआ। सब दा चुरासी दा गेड़ा होया साफ़, पिछला कुकर्म होया मुआफ़, जन्म दा झगड़ा रहे ना राईआ। तुहाडी आत्मा परमात्मा दी ज़ात, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई दरगाह साची वंड ना कोए वंडाईआ। मेरी इक्को पूरी करनी आस, आसावंद हो के पहली
१८७२ चेत सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक अख्वाईआ। १८७२
२२ जन भगतो की आसा रखी ब्रह्मा, आदि ब्रह्म ध्यान लगाईआ। बिना प्रभू तों सुख मिले ना अनन्द परमा, परमानंद विच २२
ना कोए समाईआ। चुरासी लेखे ना लग्गे जरमा, जन्म जन्म दा गेड़ ना कोए मिटाईआ। हस्स के चार मुख दा बकता कहे मैनूं उस दी सरना, सरनगति इक अख्वाईआ। जिस ने नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग खेल करना, अवतार पैग़म्बर गुरुआं देवे माण वड्याईआ। अन्तिम निरगुण धार आपणा रूप धरना, जोती जोत करे रुशनाईआ। भगत सुहेले चार जुग दे विछड़े वरना, वरन गोत दा डेरा ढाहीआ। सतिजुग दी रीती वास्ते इक्की उहनां तों कराउणीआं प्रकरमां, सज्जे हथ्थ भवाईआ। अग्गे मानस ज़ाती दा इक्को होणा धर्मा, दूजी शरअ ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी सच दी खेल आप खिलाईआ। पहली चेत कहे, जन भगतो, लओ प्रदक्खणा, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण ध्यान लगाईआ। किरपा करे अलख अलखणा, हरि वडा वड वड्याईआ। हरिजन रहे कोए ना सक्खणा, ख़ाली भण्डारे देणे भराईआ। धुर दे नाम विच रत्तणा, रंगण इक्को इक चढ़ाईआ। धर्म दी धार मार्ग दस्सणा, दहि दिशा आप समझाईआ। कलयुग मेटे अंधेरी मस्सणा, सतिजुग सच चन्द

चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे लेखा तकणा मुहम्मद अज़ीज़, आजज़ां ध्यान लगाईआ। काला चिट्टा पहन कमीज़, कलयुग सतिजुग वेस वटाईआ। सदी चौधवीं पूरी करनी रीझ, पूरब तृखा दए मिटाईआ। धर्म दी धार कर के ठांडी सीत, अग्नी तत बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आपणे हथ्थ रखाईआ। सतिगुर शब्द कहे नीली धार दा अन्तर पड़दा, बेपरवाह आप रखाईआ। लेखा जाण चोटी जड़ दा, जड़ चेतन पड़दा लाहीआ। लेखा रहे ना सीस धड़ दा, धड़ सीस ना वंड वंडाईआ। सदी चौधवीं आपणी मर्ज़ी करदा, मरीज़ वेखे ख़लक ख़ुदाईआ। जिस दा मुहम्मद बणया बरदा, बरखुरदार हो के सेव कमाईआ। ओह लेखा जाणे चौदां तबक घर दा, गृह मन्दिर कुण्डा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मेला लए मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरी एका ख़बर अजीब, अजब दयां जणाईआ। परम पुरख देण वाला तरतीब, तरीका आपणे हथ्थ रखाईआ। किरपा करे ग़रीब निवाज ग़रीब, ग़रीब निमाणयां होए सहाईआ। जिस दा वक्त पहुँचयां करीब, पिछला पिछला पन्ध मुकाईआ। साचा दस्से कलमा नाम हदीस, हज़रतां तों बाहर पढ़ाईआ। जिस जन भगतां आसा मनसा पूरी करनी रीझ, तमन्ना अवतार पैग़म्बर गुरुआं वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर रंग आप रंगाईआ। रंग कहे मैं जन भगतां मस्तक लग्गा, जोत नूर जणाईआ। सब दा संवारना अग्गा, अगली गंढ पवाईआ। वासना रहिण ना देवे कग्गा, हँस हँसा रंग चढ़ाईआ। देवे दरस उपर शाहरगा, शहिनशाह आपणा पड़दा लाहीआ। त्रैगुण कूड़ बुझाए अग्गा, अग्नी तत गंवाईआ। सच दवार बख्शे जगह, धाम इक्को इक वड्याईआ। जिन्हां भगतां प्रेम प्रभू नाल लग्गा, लग मात्रा रहिण कोए ना पाईआ। किरपा करे परम पुरख सिँघ शेर बग्गा, बग़लगीर आप हो जाईआ। जिस ने भगत जगत आण के लभ्भा, खोज्या थांउँ थाँईंआ। सब दी इक्को लगा के सभा, सुबह शाम दिती वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को हुक्म सुणाए धुर दी सदा, नाम कलमा कलमा नाम इक जणाईआ।

✪ २ चेत शहिनशाही सम्मत ८ हरि भगत दवार जेठूवाल ज़िला अमृतसर सवेरे ऊधम सिँघ जलालाबाद लाल सिँघ हेरां दे प्रशाद कराउण ते ✪

सचखण्ड कहे प्रभू मैं तेरा धाम सच्चा, आदि अन्त सति सच तेरी सरनाईआ। तेरा नूर जोत धार मेरा प्रेम रता, रंग अगम्म अथाह बेपरवाहीआ। जिस दा अवतार पैग़म्बर गुरुआं दिता पता, अक्खरां वाली कर कर सिफ्त सालाहीआ। मेहरवान महिबूब तेरा गृह इक्को यथार्थ यथा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिथ्थे सिफ्तां वाली नहीं कोई कथा, अक्खरां राग ना कोए सुणाईआ। साचे गृह तेरा इक्को इक शब्द दुलारा बच्चा, दूल्हा तेरा नज़री आईआ। जिस खेल खिलाया लख चुरासी काया भाण्डा कच्चा, पंज तत तत सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी सरनाईआ। सचखण्ड कहे प्रभू मैं तेरा इक दवारा, छप्पर छन्न ना कोए बणाईआ। ज़िमीं असमान ना कोए सहारा, मण्डलां वंड ना कोए वंडाईआ। सूर्या चन्द ना कोए सितारा, सतह बुलंदी ना कोए समझाईआ। अन्त पाए ना कोए गुर अवतारा, विष्न ब्रह्मा शिव कहिण किछ ना पाईआ। तेरा रूप इक अपारा, अपरम्पर तेरी वड वड्याईआ। तेरा नूर जोत उज्यारा, जोती जाते डगमगाईआ। तेरे हुक्म दा सुणदा रिहा इशारा, जो शहिनशाह अगम्म दृढ़ाईआ। लोकमात
१८७४ देंदा रिहा अधारा, उदर विच होए आप सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, १८७४
२२ साहिब सच तेरी सरनाईआ। सचखण्ड कहे मैं तेरा सद सच अस्थान, भूमिका नज़र कोए ना आईआ। जिथ्थे रास पाए २२
ना कोए गोपीआं वाला काहन, सीता राम वंड ना कोए वंडाईआ। कलमा दस्से ना कोए पैग़ाम, शरअ शरीअत ना कोए रखाईआ। फ़ुरना फुरे ना कोए सतिनाम, अक्खरां वाली ना कोए पढ़ाईआ। तन वजूद ना कोए निशान, गुरु गुरदेव ना कोए अख्वाईआ। ब्रह्मा करे ना कोए ध्यान, आत्म रंग ना कोए रंगाईआ। इक्को तेरा नूर महान, जोती जाते सोभा पाईआ। तेरा मन्दिर तेरा गृह तेरा घर श्री भगवान, भगवन इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरा इक्को भाईआ। सचखण्ड कहे प्रभू मैं तेरा घर सुहञ्जणा, गहर गम्भीर इक्को नज़री आईआ। इक्को धूढ़ी करां मजना, इश्नान इक्को सोभा पाईआ। मैं हैरान तूं निरगुण धार सरगुण लोकमात वंञणा, वञ्झ मुहाणा नज़र कोए ना आईआ। दाता बणे दर्द दु:ख भय भञ्जणा, परम पुरख आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। देवे नाम शब्द सच अनन्दना, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जो घल्लया सो उस नूं सद्दणा, सद्दा देवे बिन अक्खरां हुक्म दृढ़ाईआ। जुग जुग कोटां विच्चों भगत सुहेला तेरे चरण लग्गणा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस दा प्यार नगारा मेरे गृह वज्जणा, सद वज्जदी

रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी वड्याईआ। सचखण्ड कहे प्रभू तेरा हुक्म अगम्म अपारा, जुग जुग वेख वखाईआ। जन भगतां दए सहारा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती नूर करे उज्यारा, आत्म पंज तत टिकाईआ। शब्द नाद दे धुन्कारा, संदेशा इक दृढ़ाईआ। जिन्हां दे अन्तर निरन्तर तेरा हक दा होए जैकारा, तूं मेरा मैं तेरा राग अल्हाईआ। सो साहिब सुल्तान तेरा मात बणे दुलारा, दूल्हा हरिजन नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। सचखण्ड कहे प्रभू तेरे भगत आउंदे जांदे, जुग जुग खेल खिलाईआ। मानस विच्चों मानस देही पाउंदे, चुरासी विच ना कोए भवाईआ। तेरे चरण सरोवर नहांदे, दुरमति मैल रहे ना राईआ। इक्को तेरा गीत गाउंदे, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। साचा नाम पींदे खांदे, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। गृह मन्दिर बैठ के ठांडे, अग्नी तत गंवाईआ। जिन्हां दा लेखा जाण सकण ना पंडत पांधे, पर्दा भेव ना कोए जणाईआ। ओह दुलारे बणदे जनणीं उस माँ दे, जिन्हां सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड कहे मेरे लेखे पूरे करदे धुर दे थाँ दे, सच थनंतर वज्जे वधाईआ।

✪ २ चेत शहिनशाही सम्मत ८ हरि भगत दवार जेठूवाल ज़िला अमृतसर रात नूं ✪

सतिगुर शब्द कहे मैं तक्कया देश अनामी, जिथ्थे नाम कलमे दा नाम लैण वाला नज़र कोए ना आईआ। ना कोई धार बोले नाद शब्द धुन बाणी, अवाज़ राज़ ना कोए खुल्हाईआ। ना कोई अमृत रस हयाते आब दिसे पाणी, सांतक सति ना कोए वरताईआ। ना कोई चार जुग दी जोत अवतार पैग़म्बर गुरुआं दिसे नुरानी, आपणा आपणा दीपक ना कोए डगमगाईआ। ना कोई शहिनशाह ना कोई रईयत ना कोई हकूमत हुक्मरानी, हाकम ल्ए ना कोए अंगड़ाईआ। ना कोई दरवेश दर दरबानी, सेवक चाकर रूप ना कोए दरसाईआ। ओथे ओस ओस दी मेहरवानी, जिस दी उस्तत सिफ्तां नाल सालाहीआ। लेखा तके परे दो जहानी, हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। ना कोई ज़िमीं ना असमानी, मण्डल नूर ना कोए रुशनाईआ। ना कोई निरगुण सरगुण नाता जुड़या वेख्या बाहमी, साथी संगी संग ना कोए वखाईआ। ना कोई नगर खेड़ा दिसे ग्रामी, गृह वज्जे ना कोए वधाईआ। जिस घर इक्को शाह शहानी, शहिनशाह नूर रिहा रुशनाईआ। उस दा भेद लिख्या ना किसे कलम कानी, पर्दा सक्या ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच

दा दर इक सुहाईआ। सतिगुर शब्द कहे देश अनामी जिथ्थे मिले अगम्म अनाम, जगत दे सिफ्तां वाले नाम भेव कहिण किछ ना पाईआ। जिस दा खेल ख़लक तों बाहर तमाम, तमा दी धार वंड ना कोए वंडाईआ। ओथे तत्तां वाला दिसे कोई ना राम, गोपीआं वाला काहन वेस ना कोए वटाईआ। पैग़म्बर करे ना कोए सलाम, सजदयां विच सीस ना कोए निवाईआ। फ़ुरना मन्त्र नहीं कोई सतिनाम, डंका फ़तिह ना कोए सुणाईआ। निरगुण सरगुण दिसे ना कोए ग़ुलाम, शरअ ज़ंजीर ना कोए रखाईआ। इक्को खेल खेल मेहरवान, मेहरवान इक्को नज़री आईआ। जिस दी जोत विच आदि अन्त सारे मिल जाण, वक्खरी वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दा खेल विच जहान, दो जहानां परे आपणा हुक्म सुणाईआ। सो सच दवारे करे आप आराम, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सति देस दा जाणी जाण, जानणहार इक्को बेपरवाहीआ।

✪ १५ चेत शहिनशाही सम्मत ८ हरि भगत दवार धीर पुर दिल्ली ✪

सतिगुर शब्द कहे प्रभ दी धर्म धार दी चुटकी, चुटकला दो जहान दए वखाईआ। खेल तकणी अबिनाशी अचुत दी, चेत्र चेतन सब नूं रिहा कराईआ। फुल्ल फुलवाड़ी मौलणी साची रुत दी, रुतड़ी आपणे रंग रंगाईआ। रास वखाउणी निरगुण सरगुण शब्दी धार सुत दी, सुरती सोई सर्ब उठाईआ। जिस खेल मिटाउणी काया माटी बुत दी, बुतख़ान्यां खोज खुजाईआ। धार रहिण ना देवे पड़दे ओहले लुक दी, लुकमान दा लेखा वेख वखाईआ। जगत जहान चोग जाए निखुट्टदी, ख़ाली भाण्डे ना कोए भराईआ। जिस पूजा चुकाउणी रसना जेहवा बुट्ट दी, बुल्लां चले ना कोए चतुराईआ। आसा पूर कराउणी धरनी धरत धवल धुर दी, तुरत आपणी कार भुगताईआ। जिथ्थे जूठी सुट्ट के आउणी इक बुरकी, बुरके सब दे दए उठाईआ। खेल वरतणी पुरख अकाल धुर दी, धुर दा हुक्म ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ दा लेखा अगम्मा भारत, भारद्वाज सीस निवाईआ। जिस पूरी करनी गुरु अवतारां पैग़म्बरां इबारत, लेखा लेखनी नाल वड्याईआ। निरगुण सरगुण कराउणा तुआरफ़, दो तरफ़ी आपणा खेल वखाईआ। माण रहिण नहीं देणा किसे आरफ़, उल्मा चले ना कोए चतुराईआ। नाम कलमे दी करे ना कोए सिफ़ारश सफ़ारतखाने जगत जिज्ञासूआं खोज खुजाईआ। परम पुरख परमात्म धुर दे हुक्म दी बरखे इक्को बारश, मेघला मेघ अगम्म बरसाईआ। लहिणे देणे पूरे करने विच फ़ारस, फ़ैसला आपणा हक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ दा इक्को इक सुणना नग़मा, कलमा कायनात बाहर दृढ़ाईआ। जिस नूं मुहम्मद किहा मेरा इलाही अल्ला देवे तग़मा, तारीफ़ सिफ्त ना कोए वड्याईआ। जिस दी धार ईसा भरे मुजस्समा, तबस्सुम आपणा खेल खिलाईआ। ओह मालक पूरब तों आवे पच्छमा, पच्छम आपणा रंग रंगाईआ। जिस दा सब ने नाम जपणा, चार कुण्ट वज्जे वधाईआ। ओह लेखा जाणे दो जहान पतना, पतणां दा मालक नूर इलाहीआ। जिस ने अन्तिम पीर पैग़म्बर करना सक्खणा, सख़ावत नज़र कोए ना आईआ। फेर इशारा करना वल्ल दक्खणा, पहाड़ पर्बत अक्ख उठाईआ। जिस दे हुक्म विच अवतार पैग़म्बर गुरु नच्चणा, विष्न ब्रह्मा शिव भज्जण वाहो दाहीआ। इक्को दीपक अगम्मी जगणा, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सदी चौधवीं अन्त जिस नूं सब ने लभ्भणा, खोजण थांउँ थाँईंआ। जोश प्या पंज तत सरीर काया माटी बदना, तत्व तत आपणे रंग रंगाईआ। जिस लेखे लाउणा आहला अदना, अदल आपणा इक कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच
१८७७ दा हुक्म आप वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे खेल तकणा बेनज़ीर, जगत नज़रीआ नज़र किसे ना आईआ। शब्द दी धार मार के आए लकीर, लाईन आपणी आप बणाईआ। दर्शन देवे निरगुण धार नौ सौ नड़िनवें फ़कीर, ख्वाब ख्वाबां रंग रंगाईआ। १८७७
२२ तत दी धार जणा तस्वीर, तसव्वर आपणा आप कराईआ। जिन्हां साढे तिन्न साल रहिणा दिलगीर, दिवस रैण अन्तर निरन्तर भज्जण वाहो दाहीआ। शब्दी धार दसाउणा काली अल्फ़ी वाला पीर, कफ़नी कफ़नां दा डेरा ढाहीआ। जिस शरअ दा तोड़ना ज़ंजीर, शरीअत दा लेखा दए मुकाईआ। जगत जहान नवीं करनी तामीर, मानव इक्को गंढ पवाईआ। चौदां तबकां तों बाहर जिस दी जागीर, चौदां लोक सीस निवाईआ। जिस दा लेखा लहिणा देणा होणा विच कश्मीर, कच्छ मच्छ दी आशा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ दरस तड़पदी भूमी, भूमिका आपणा ध्यान लगाईआ। जिस दा लेखा ला सके ना कोए नजूमी, निगाह विच नज़र किसे ना आईआ। उस दा लहिणा देणा पूरा करे शाह पातशाह अंदरूनी, बातन बैतुल आपणा रंग रंगाईआ। जिथ्थे शरअ दी शर्त लिखणी कानूनी, कायदा कर्म कांड तों बाहर समझाईआ। ओह धाम जगत बुद्धी नामलूमी, इशारा दे ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे मेरे उत्ते धर्म दा दाइरा, नुक्ता नूंन तों बाहर जणाईआ। जिस दा इशारा देवे पैग़म्बर सुलेमान बाहर काहरा, निधाना कलमा नाम जणाईआ। जिथ्थे नूर अबतर होवे ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। जगत जहान होवे बहिरा, बहरहाल

समझ कोए ना पाईआ। जन भगतां लग्गे उत्ते पहरा, पहर सवा वंड वंडाईआ। जिथ्थे मुहम्मद दा बूटा उगया जिस दा बणया ज़हिरा, विख आपणा रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल करे गम्भीर गहरा, गहर गवर आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ १६ चेत शहिनशाही सम्मत ८ गुरमीत कौर रामदवाली नवित हरि भगत दवार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर शब्द कहे मैं आदि जुगादी अगम्मा दूत, दो जहानां धुर दी सेव कमाईआ। परम पुरख दा नाद अनादी सपूत, दूसर अवर ना कोए जणेंदी माईआ। मेरा नज़र ना आए रेख रंग रूप, तत्व तत ना कोए जणाईआ। मैं फिरां चारे कूट, दहि दिशा वाहो दाहीआ। जन भगतां काया वेखां पंज भूत, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश फोल फुलाईआ। नाता तुड़ा तन कलबूत, माटी ख़ाक ख़ाक मिलाईआ। आत्मा निरगुण धार कर महफ़ूज़, मेहरवान हो के वेख वखाईआ। दरगाह साची लै के जावां धुर अरूज, सचखण्ड साचे आप टिकाईआ। जिथ्थे स्त्री मर्द वंड नहीं कोई दूज, बिरध बाल नज़र कोए ना आईआ। इक्को मेल मिला के धुर महिबूब, नाता चुरासी वाला तुड़ाईआ। मंज़ल दे के हक मकसूद, धर्म दवारे आप बहाईआ। जिथ्थे साहिब स्वामी सदा मजज़ूद, अन्तरजामी नज़री आईआ। उथे जगत समझ ना सके बूझ, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। मैं मेहरवान हो के हरि सन्त सुहेले लवां बूझ, नौ खण्ड पृथ्मी वेख वखाईआ। कलयुग सागर तकां डूँग्घ, गहर गवर हो के वेख वखाईआ। आत्मा परमात्मा दी ओह निराली बूँद, जो अन्त भगवन्त विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी नैण मूंद, बिन नैणां दो जहानां श्री भगवाना वेख वखाईआ।

✪ २७ चेत शहिनशाही सम्मत ८ अजीत सिँघ बटाला नवित हरि भगत दवार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

मुहम्मद कहे मेरा रिहा ना कोए वजूद, बुतख़ाना नज़र कोए ना आईआ। धरनी धरत धवल ना दिसे हदूद, धौल वंड ना कोए वंडाईआ। कलमा दिसे ना कोए हज़ारा दरूद, इस्मे बसरी ना कोए वड्याईआ। इक्को मेरे मालक दा अर्श अरूज, आलीशान सोभा पाईआ। जेहड़ा हक दा हक महिबूब, मुहब्बत विच आपणा खेल खिलाईआ। दरोही मेरी उम्मत उस ने करनी नेस्तोनाबूद, चोटी जड़ रहिण कोए ना पाईआ। जिस दा कल्मयां कलामां विच दे के आया सबूत, सबर

सबूरी विच सजदासीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ। मुहम्मद कहे मैं देखी अगम्मी महिराब, महिखान्यां बाहर ध्यान लगाईआ। जिथ्थे परवरदिगार नज़री आए इक अहिबाब, अहिमद मुहम्मद दी चले ना कोए चतुराईआ। जो अवतार पैग़म्बर गुरुआं तों मंगे हिसाब, चार जुग दा लेखा तके थांउँ थाँईंआ। चार कुण्ट नौ खण्ड पृथ्मी किसे दी करे ना कोए इमदाद, सगला संग ना कोए निभाईआ। खेले खेल नूर इलाही वाहिद, वाहवा आपणा हुक्म वरताईआ। जिस कलयुग सदी चौधवीं अन्त कढणा नताइज, नतीजा आपणे हथ्थ रखाईआ। सति धर्म दा साचा जुग करे राइज, रईयत क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक्को रंग रंगाईआ। अगला हुक्म वरते जाइज़, जाइज़ा चौदां तबकां लए थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। मुहम्मद कहे मेरा आलमीन अलाह, मैं वली अल्ला हो के सीस निवाईआ। जो ज़र्रे ज़र्रे मलाह, सूफ़ीआं पैग़म्बरां बेड़ा रिहा चलाईआ। नूर नुराना हक खुदा, खुदी तक्बर विच कदे ना आईआ। मेरी उस दे अग्गे दुआ, बिन सजदयां सीस झुकाईआ। मेरे मालक दिलरुबा, मेहरवान तेरी सरनाईआ। मेरा मकबरा मारे धाह, मदीना नैणां नीर वहाईआ। मक्के दिसे ना कोए सहा, सिर सके ना कोए टिकाईआ। काअबे रहे कुरला, कूक कूक सुणाईआ। करबला नेत्र नैणां नीर
१८७६ रिहा वहा, हसन हुसैन मिट्टी ख़ाक विच समाईआ। अली दे अल्ला बेपरवाह, परवरदिगार तेरी वड्याईआ। हमद विच बेनन्ती १८७६
२२ रिहा सुणा, बिना अक्खरां अलिफ़ ये वंड ना कोए वंडाईआ। तुध बिन बख्शे ना कोए गुनाह, पाकीज़ा पाक ना कोए कराईआ। २२
तेरा लेखा समझे ना कोए बावा आदम हव्वा, नूरे चशम नज़र किसे ना आईआ। तूं आलमे ज़ाहरे ज़वा, नौज़ीने नूर इक इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग देणा वखाईआ। मुहम्मद कहे मेरे हज़ूर, अमाम बेपरवाहीआ। करबले तेरा दीद करां ज़रूर, बिन नैणां नैण उठाईआ। तुध बिन उम्मत दा बख्शे ना कोए कसूर, कसम खा के दयां जणाईआ। मैं सदी चौधवीं होया मजबूर, मजबूरी तेरे अग्गे टिकाईआ। पन्ध मुकाउणा नेड़े दूर, दूर दुराडे धुर दे माहीआ। तुध बिन गढ़ तोड़े ना कोए ग़रूर, हंगता हउमे ना कोए मिटाईआ। मैं तेरा सजदे विच मशकूर, मुश्किल मेरी हल्ल कराईआ। तेरी कदमबोसी पिच्छों शरअ दे फ़तवे दा पै जाए फ़तूर, फ़ातिहा अन्त करन वाला नज़र कोए ना आईआ। मैं तेरा बरदा बादस्तूर, गुलाम शरअ दा सीस निवाईआ। तेरे कदमा दी लावां धूढ़, टिक्का ख़ाक वाला रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। मुहम्मद कहे मेरे शाहो शाबासा, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। करबला पुकारे प्यासा, हुसैन हसन ध्यान लगाईआ।

ਫ਼ातमा पूरा करदे वायदा, ऐली दी अल्फ़ सीने वाली वेख वखाईआ। तूं आदि दा अन्त दा जुग जुगादि दा प्यो दादा, दास्तान तेरी सके ना कोए समझाईआ। मैं मम्बरां तों परे मुनारयां तों दूर मारां आवाज़ां, शरअ दे शहिनशाह आपणा दरस देणा चाँईं चाँईंआ। मेरीआं लेखे लाउणीआं कल्मयां वालीआं नमाज़ां, कलाम तेरे अग्गे रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन भेव खोल्हे कोए ना राज़ा, राज़क रिज़क रहीम तेरी वड वड्याईआ।

✪ पहली विसाख शहिनशाही सम्मत ८ हरि भगत दवार जेठूवाल सवेर दे समें ज़िला अमृतसर ✪

विसाख कहे मेरी पुराणी मंग, सम्मत शहिनशाही अट्ठ झोली डाहीआ। गोबिन्द विसाखी दे दो सौ बहत्तर साल गए लँघ, लेखा पूरब पटने वाला रिहा वखाईआ। धर्म सिक्खी दा चढ़या किसे ना रंग, गुरु चेले रहे सुणाईआ। अन्तर तृष्ना बाहर नंग, धीरज धीर ना कोए धराईआ। सतिगुर दिसे किसे ना संग, सगला संग ना कोए वखाईआ। मेरी इक बेनन्ती
१८८० सिँघ मनजीत दी समाध पिच्छे तेरा डट्ठा होवे पलँघ, मुख लहिंदी दिशा रखाईआ। भगत दवार दरवाज़े नाल टंगया होवे १८८०
तारा चन्द, पुट्ठा कर लटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस
२२ रखाईआ। विसाख कहे मैं आया फिरदा तुरदा, दर ठांडे सीस निवाईआ। तेरे चरणां हाजर होवे इक मुरगा, कल्गी सोहणी २२
सीस सुहाईआ। एह लहिणा अनन्द पुर दा, पुरीआं लोआं तों बाहर समझाईआ। हुक्म सुणना अगम्मे शौहर दा, की शौहर आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। विसाख कहे तेरा जल्वा तकणा नूर, नूर नुराने बेपरवाहीआ। इक बच्चा हाज़र करना सूर, मेरी आसा मंग मंगाईआ। वच्छा कट्टा नाल होवे ज़रूर, बाली बुध दुहाईआ। लेखा लिख्या होवे अंगद नाल खडूर, अंगीकार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक दया कमाईआ। विसाख कहे मैं वेखदा रिहा जगत शरीणी शकरा, रस रसना नाल वड्याईआ। मेरी आशा मेरे हज़ूर हाज़र होवे इक बक्करा, आयू वंड ना कोए वंडाईआ। पंजां गुरमुखां होवे पकड़ा, पगड़ी सीस ना कोए टिकाईआ। सूर तिन्नां लत्तां तों होवे जकड़ा, अगली ख़ाली इक रखाईआ। मुरगा गर्दन तों होवे पकड़ा, सज्जा हथ्थ सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक होणा सहाईआ। विसाख कहे तूं मुर्शद मलंग बणना बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। मुख ते लाउणी

काली शाह, सुआह जगत वाली रमाईआ। मस्तक त्रशूल लैणी बणा, शंकर लेखा रहे ना राईआ। ज़बान लाल लैणी करा, दुर्गा बैठी अक्ख उठाईआ। नेत्र संधूर लैणा छुहा, सीता राम सीस निवाईआ। बुल्ल्ह नीले लैणे बणा, राधे कृष्न वज्जे वधाईआ। काला लबास लैणा सुहा, मूसा ईसा मुहम्मद वेखण चाँईं चाँईंआ। गल सलीव लैणी लटका, साढे तिन्न हथ्थ लम्बाईआ। गोबिन्द दा खण्डा लैणा चमका, दमक दामनी वाली दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी सरनाईआ। विसाख कहे तेरा सिंघासण होवे दिशा लहिंदी, चढ़दी वंड ना कोए वंडाईआ। पैग़म्बरां आसा कहिंदी, कहि कहि रही सुणाईआ। तेरे पैरां होवे मैहन्दी, मैहन्दी अमाम तेरी वड्याईआ। सब दी कला जाए ढहिंदी, बलहीण दिसे लोकाईआ। तेरा भाणा दीन दुनी होवे सहिंदी, हुक्मे अन्दर आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी वड्याईआ। विसाखी कहे साहिब सतिगुर मेरी मन्न, मनसा तेरे अग्गे रखाईआ। सुणना बिना कन्न, सरवणां बाहर शनवाईआ। मैं कहिवां धन्न धन्न, धन्न तेरी वड्याईआ। मेरे साहिब सतिगुर अज्ज मेरे प्यार विच मुख ना लावीं अन्न, रसना रस ना कोए बणाईआ। ग़रीब निमाणयां बेड़ा देवीं बन्न्ह, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार देवीं डंन, डंका आपणा नाम शब्द वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। विसाख कहे प्रभू तेरा लेखा बिना छन्न छप्पर, मन्दिर जगत ना कोए वड्याईआ। तेरे कोल होवे इक खप्पर, काली रोवे मारे धाहीआ। सिंघासण हेठां धरया होवे पथ्थर, जिस नूं जगत ठाकर कहे लोकाईआ। लेख लिख्या होवे पत्र, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। हरिसंगत सारी कहे असीं सतिगुर नालों चतुर, सतिगुरु दी बुद्धी कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल खिलाईआ। विसाख कहे मेरे गुरु महाराज, दर तेरे सीस झुकाईआ। तेरे सीस ते होवे सूलां कंडयां वाला ताज, मुख काले नाल सोभा पाईआ। कच्चे दुध नूं लग्गी होवे जाग, सवा सेर संग रखाईआ। कुठाली विच तपदी होवे आग, माटी भाण्डे विच रखाईआ। लिख के रखया होवे काशी पराग, अयुध्या नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा सच रंग रंगाईआ। विसाखी कहे गोबिन्द ने ढाई पा पीता सी दुद्ध, अन्न मुख ना मूल लगाईआ। धर्म दे शस्त्र कीता युद्ध, लालन दा लाल रंग चढ़ाईआ। नाले इशारा कीता जिस वेले पुरख अकाल बदले युग, युगती आपणे हथ्थ रखाईआ। सब दी औध जाए पुग, पूजा पाहन रहे ना राईआ। सति धर्म दा दीपक जाए बुझ, जगत नूर ना कोए चमकाईआ। किसे किछ ना सके सुझ, सूझ समझ ना कोए वड्याईआ।

१८८१
२२

दीन मज़्ब माया ममता विच जाण रुझ, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। निर्मल होवे कोए ना बुध, बुद्धीवान रोवण मारन धाहींआ। कूड़ी क्रिया आकाशां जाए उड, धवल धरनी रंग रंगाईआ। फेर आशा करनी पूरी जो मनसा रखी काग भसुंड, काग वेख जगत लोकाईआ। लहिणा देणा झोली पाउणा गज दी जलधारा वाला सुंड, तन्दूआ तन्द नाल मिलाईआ। लेखा रहिण नहीं देणा किसे कुण्ड, तीर्थ तट वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत जहान जगत वासना वेखे झुंड, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ।

✪ पहली विसाख शहिनशाही सम्मत ८ हरि भगत दवार जेठूवाल रात नूं ज़िला अमृतसर ✪

सम्मत शहिनशाही अठ्ठ कहे विसाख कर लै बन्दना, चार जुग दे बन्दगी वाले आपणे नाल मिलाईआ। जिस साहिब दे कोलों आदि जुगादि सब कुछ मंगणा, जुग चौकड़ी ख़ाली झोलीआं डाहीआ। जिस दी एथे ओथे दो जहान अगम्मी रंगणा, जगत जहान जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। उस दे अंगीकार हो जा अंगणा, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। खेल तक सूरा सरबंगणा, हरि करता की हुक्म वरताईआ। जिस दे हुक्म नाल सब ने वंञणा, वञ्झ मुहाणा सके ना कोए अटकाईआ। ओह मालक ख़ालक दर्द दु:ख भय भञ्जणा, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जोती जाता हो के आदि निरँजणा, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। जिस ने कूड़ कुड़यारा दंडणा, डण्डावत सब दी दए बदलाईआ। प्रगट हो विच वरभण्डणा, ब्रह्मण्ड वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सम्मत शहिनशाही अठ्ठ कहे विसाख सज्जणा मार लै झाती, झाकी अन्तर निरन्तर पाईआ। कलयुग वेख लै अंधेरी राती, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। रब्ब दा खेल बहु बिध भांती, भरम भरांत विच रखी सृष्ट सबाईआ। आपणी खेल करे अलखणा अलाखी, अलख अगोचर वड वड्याईआ। जिस धार उत्ते गोबिन्द ने खेल कीती विसाखी, सो ख़ालक दए दृढ़ाईआ। जगत खण्डा कर सके मूल ना राखी, रक्षक दो जहान ना कोए बणाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर मनुआ हो गया आकी, भय भउ ना कोए रखाईआ। लहिणा मुके किसे ना बाकी, अन्त करन कोए ना पाईआ। धुर दे शब्द चढ़े कोए ना राकी, शाह सवारा भेव ना कोए चुकाईआ। आह तक लै बिना अक्खरां तों उस साहिब दी पाती, जो पतित पुनीत इक अख्वाईआ। जिस ने अवतार पैग़म्बर गुरु इक शब्द दे बणन नहीं दिते जमाती, अक्खरां विच सब दी वंड वंडाईआ। इक रमज़ अगम्मी गोबिन्द गोबिन्द

१८८२
२२

तांई आखी, गहर गम्भीर दिता दृढ़ाईआ। कलयुग अन्त अन्त दी घाटी, घाटा पूर ना कोए कराईआ। पन्ध मुके किसे ना वाटी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। सम्मत कहे विसाख सुण हुक्म अपारा, अपरम्पर रिहा जणाईआ। गोबिन्द दा तक इशारा, सैनत नाम लगाईआ। कलयुग दा वेख किनारा, गुर अवतार पैग़म्बर देण गवाहीआ। शास्त्र रोवण ज़ारो ज़ारा, बिन नैणां नीर वहाईआ। जिस दा सब ने दिता उदाहरा, अक्खरां नाल जोड़ जुड़ाईआ। ओह आवे निरगुण धार धार सरगुण विच्चों दुबारा, दुहरी आपणी खेल खिलाईआ। जिस नूं कहिणा चव्वीआं अवतारा, अवतर आपणा वेस वटाईआ। निहकलंक जोत निरँकारा, कलि कल्की बेपरवाहीआ। अमाम अमामा नूर उज्यारा, जोती जाता डगमगाईआ। उस दा खेल अन्तिम वारा, वारता पिछली वेख वखाईआ। जिस दा हुक्म सब तों न्यारा, शब्दी शब्द शब्द जणाईआ। कातब लिखे ना कोए लिखारा, कलम शाही चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ। विसाख कहे सम्मत मेरी अन्त इक डण्डावत, बिन सीस सीस निवाईआ। मेरा साहिब सही सलामत, जुग जुग इक्को रंग वखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर जिस दी अमानत, शब्द झोली विच टिकाईआ। सिफ्ती बख्श नाम न्यामत, कल्मयां करे पढ़ाईआ। बाले बच्चे रख अनजानत, अन्त आपणा आप ना किसे दृढ़ाईआ। जोती धारा दी दस्स स्याणप, चमक चमक नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा आपणा हुक्म वरताईआ। विसाख कहे सम्मता मेरे अन्दर आउंदा हासा, हस्स के दयां जणाईआ। खेल तक पुरख अबिनाशा, मेरे अन्तर वज्जी वधाईआ। जिस दा नूर जोत प्रकाशा, नूर नुराना डगमगाईआ। निरगुण सरगुण पावे रासा, दो जहान वेख वखाईआ। लेखा जाणे पृथमी आकाशा, गगन गगनंतरां फोल फुलाईआ। जां मैं निगह मारी सम्बल उस दा वासा, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे वधाईआ। जिस भेव खोल्ह्या खुलासा, पर्दा ओहला दिता मिटाईआ। शाहो भूप बण शाबाशा, शहिनशाह आपणी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप सुणाईआ। विसाख कहे सम्मत मेरी बेनन्ती अग्गे हज़ूर, हाज़र हो के सीस निवाईआ। मेरे साहिब करीं मंज़ूर, निव निव लागा पाईआ। तेरा आदि अन्त दा इक दस्तूर, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। मैं हो गया मजबूर मजबूरी विच दर ठांडे मंग मंगाईआ। सृष्टी दी दृष्टी तक मूढ़, मुग्ध आपणा आप गए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। विसाख कहे मेरे प्रभू मैं तेरे अगम्मी चरणी ढट्ठा, तत्तां सीस ना कोए निवाईआ। नूरी धार विच नट्ठा, दो जहानां पन्ध मुकाईआ।

मैं तेरा दुलारा सूरबीर हट्टा कट्टा, योद्धा इक अख्वाईआ। मेरा गोबिन्द नाल पटा, पटनेवाला रिहा जणाईआ। जिस वेले मेरा दो सत्त दा दूआ नाल टप्पा, अंक अंक नाल जुड़ाईआ। किसे दी कीमत रहिणी नहीं टका, कौडी ख़ाक विच मिलाईआ। चारों कुण्ट पैणा रट्टा, झगड़ा सके ना कोए चुकाईआ। मेरे रूप नूं सब ने करना ठट्ठा, मख़ौल जगत उडाईआ। फेर मेरा खेल होणां विच जट्टां, जटां जूटां करां सफ़ाईआ। इक्को वार पुरख अकाल आपणे नाल रखां, फेर रखण दी लोड़ रहे ना राईआ। शब्द संदेशा देवां सच्चा, सच दयां सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु करां इक्ठा, देवत सुर नाल मिलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव चरणां विच सुट्टां, सिर सके ना कोए उठाईआ। पिछलीआं रहिण ना देवां लुट्टां, चार जुग दा झगड़ा दयां गंवाईआ। निरगुण धार हो के उठां, जोती जाता लै अंगड़ाईआ। जगत निशानां करां पुट्ठा, पुट्ठी आपणी कल वरताईआ। नाता कूड़ क्रिया जावे तुटा, टुट्टी गंढ ना कोए पवाईआ। इक्को सुत दुलारा हो के लख चुरासी पुछां, दो जहानां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। विसाख कहे गोबिन्द ने नौ मारीआं लीकां, धरनी खण्डे धार छुहाईआ। सतिगुर शब्द कीतीआं तस्दीकां, शहादत इक भुगताईआ। पुरख अकाल दीआं उडीकां, रखणीआं चाँईं चाँईंआ। जिस बदल देणीआं तवारीखां, तारीख़ समझ कोए ना पाईआ। दीन दुनी बदलणीआं नीतां, नीतीवान धुरदरगाहीआ। इक्को चरण सरन दस्स प्रीतां, प्रीतम धुर दा देणा मिलाईआ। उस वेले सब दीआं निकलीआं चीकां, चीक चिहाढ़ा दिता पाईआ। लेखा जाणे जीव जीअ का, चारे खाणी खोज खुजाईआ। पिछला लेखा जाणे बीता, नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पड़दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा हुक्म सुणाईआ। धरनी कहे मैं गोबिन्द अग्गे कीती अरदास, सहिज नाल सीस निवाईआ। मेरे साहिब भेव खोल्ह दे ख़ास, पर्दा दे चुकाईआ। तेरी अग्गे केहड़ी आस, आसावंद दे जणाईआ। गोबिन्द हस्स के किहा शाबाश, सोहणी मंग मंगाईआ। मेरा साहिब वेखे खेल तमाश, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। जिस दे तन दा सब तों वक्खरा होए लबास, रूप रंग वंड ना कोए वंडाईआ। शंकर सीस निवावे उत्ते कैलाश, विष्न ब्रह्मा निव निव लागण पाईंआ। अवतार पैग़म्बर गुर होवण दास, दासी दास सेव कमाईआ। उस ने सब दा लहिणा देणा पूरा करना ख़ास, ख़ालस आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर पर्दा आप चुकाईआ। विसाख कहे गोबिन्द ने धरनी नूं दिता दान, चरण धूढ़ी झोली पाईआ। परम पुरख दे प्रेम विच रंग किरपान, लाल गुलाला रंग चढ़ाईआ। इक्को इक धर्म दा धर्म दस्स निशान, निशाना जगत वाला बदलाईआ। चार वरन कर एहसान, सिर सिर आपणा

हथ्थ रखाईआ। नाले हस्स के किहा बिना शत्तरू तों किसे नूं करे ना कोए कुरबान, भेंटा लैण वाला नज़र कोए ना आईआ। कूड़ क्रिया चल्ले ना कोए दुकान, शरअ वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। विसाख कहे मैं दस्सां बचन सच्चे सतिगुर दा, सतिगुर शब्दी शब्द जणाईआ। जिस दा हुक्म कोए ना मुड़दा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जिस दे नाल आत्म परमात्म जुड़दा, मेला मेले सहिज सुभाईआ। ओह लेखा जाणे अगम्मे अनन्द पुर दा, जिथ्थे पूरीआं लोआं वंड ना कोए वंडाईआ। उथे लेखा नहीं किसे देवत सुर दा, विष्न ब्रह्मा शिव सारे दूरों सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। विसाख कहे जिस वेले गोबिन्द वरत्या स्वांग, स्वांगी खेल कराईआ। उस वेले मुरगे ने दिती बांग, कल्गी हिला के कल्गीआं वाले सीस निवाईआ। अन्तर आशा रखी तांघ, मनसा मनसा नाल वधाईआ। जे गोबिन्द तूं निशान बदलण आयों तारा चांद, ज़िमीं असमान उलटा दएं कराईआ। मैनूं अंगण ला आग, अंगीकार आपणा लै बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच आपणा खेल खिलाईआ। गोबिन्द ने झट आपणे खण्डे दी सीने उत्ते रखी नोक, सहिज नाल दबाईआ। मेरे साहिब दा भाणा सके कोई ना रोक, जगत जहान ना

कोए अटकाईआ। जिस दे कोल सब दी चोग, राजक रिज़क रहीम बेपरवाहीआ। सोहणयां तुहाडा लेखे लावे जोग, जुगीशरां
१८८५
२२
तों परे दए वड्याईआ। आपणे दर दी बख्श के मौज, मजलस भगतां नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। विसाख कहे मुरगे ने मारी इक चीक, कूक कूक सुणाईआ। गोबिन्द दे कोल आया नज़दीक, आपणा पन्ध मुकाईआ। किहा मेरी तेरे नाल प्रीत, तूं प्रीतम बेपरवाहीआ। मेरी करनी ते मार दे लीक, जन्म जन्म दा लेखा रहे ना राईआ। तूं मालक लाशरीक, हिन्दू मुस्लिम वंड ना कोए वंडाईआ। मैनूं ज़िबह करदे शरअ वाले ठीक, छुरीआं खल्ल लुहाईआ। मेरी जगत दे पैग़म्बरां तों करा तस्दीक, शहादत आप भुगताईआ। गोबिन्द इशारा दिता उँगली बिचली बीच, खुशी नाल उठाईआ। पुरख अकाल दी रख उडीक, आवे धुर दा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। गोबिन्द किहा मुरगे सुण लै आपणी पिछली कहाणी, कहावत दयां जणाईआ। तेरी खेल जगत जुग पुराणी, पूरब पर्दा दयां उठाईआ। तेरा आपणा आप आप निशानी, बुद्धी समझ ना कोए समझाईआ। तूं भटक्या चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वाहो दाहीआ। तेरा लेखा लिख्या वेद पुराणी, साशतर देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा

हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। गोबिन्द किहा सुण आत्म दरसी, तेरी आत्मा दयां जणाईआ। जिस वेले अट्ठां तत्तां वाल्यां वास्ते मेरे साहिब दी आवे अठवीं बरसी, बरस बरसां पन्ध मुकाईआ। नूर उजाला होवे उत्ते फ़र्शी, ज़िमीं असमानां वज्जे वधाईआ। प्रगट होवे उत्ते धरती, धवल सोभा पाईआ। सार पावे आपणे घर दी, लख चुरासी वेख वखाईआ। जिन्हां दी ज़िंदगी देवतिआं अग्गे भेंटा रही चढ़दी, देवीआं फोल फुलाईआ। जिन्हां दे सीस उत्ते शरअ तकबीर रही पढ़दी, उन्हां तकदीर दए बदलाईआ। उस वेले खेल होणी चोटी जड़ दी, जड़ चेतन समझ किसे ना आईआ। जिस ने साढे तिन्न हथ्थ निशाने दी धार रखणी दिशा चढ़दी, चढ़दा आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गोबिन्द किहा मेरा साहिब सुल्ताना, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। जेहड़ा जुग जुग बदले ज़माना, दीन दुनी दए बदलाईआ। जिस दा रूप अनूप होवे महाना, महिमा अकथ कथन ना पाईआ। ओह आवे आपणा पहर के बाणा, जोती जाता डगमगाईआ। सम्बल होवे अगम्म टिकाणा, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जिस ने आपणा सरूप करना महाना, शंकर त्रशूल दए गवाहीआ। संधूर लेखा जाणे सीता रामा, राम सीता हाज़र हो के सीस निवाईआ। नीला रंग नील बसन बनवारी कान्हा, राधा राधके वंड वंडाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद काला सूसा इक निशाना,
१८८६ काली कम्बली वाला दए वखाईआ। गोबिन्द दा खण्डा खिच्च किरपाना, धार धार विच्चों जणाईआ। कलयुग दा वेस मुख १८८६
२२ काला इक रखाना, कलि कल्की वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, २२
सच दा हुक्म इक वरताईआ। विसाख कहे मैं वेख्या अगम्मी नूर, नूर नुराना नज़री आईआ। इहो वेस नानक ने अंगद नूं वखाया सी विच खडूर, जिस वेले खुद मालक दी दात झोली पाईआ। आप बण के अगम्म मज़दूर, सेवा चाकरी वाली कमाईआ। नाले हस्स के किहा कलयुग दा तपे तन्दूर, चारों कुण्ट अग्न तपाईआ। आत्म लए ना कोए सरूर, सति विच ना कोए समाईआ। जगत दा नाता क्रिया कूड़, बन्धन कूड़ ना कोए तुड़ाईआ। मनसा बुद्धी होई मूढ़, मन का मणका ना कोए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। विसाख कहे गोबिन्द ने कटया नहीं कोई बक्करा, निगह मेहर वाली टिकाईआ। सब नूं इक्को किनारा दस्स के पत्तना, घाट धुर दा दिता दृढ़ाईआ। मेरे दर ते जो आया सो बण गया हीरा रत्ना, अमोलक अमुल अख्वाईआ। सच प्रीती जुड़ गया नतना, नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। मेरा तन प्रगटया विच पटना, मेरा नूर घर घर करे रुशनाईआ। मैं लख चुरासी जीव जंत नूं तकणा, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। झट पुरख अकाल ने छाती उत्ते मारयां थप्पना, थपकी प्रेम वाली टिकाईआ।

जगत जहान वेख लैं सक्खणा, वस्त सच ना कोए रखाईआ। जिस वेले गोबिन्द तेरा ढईआ टप्पणा, चारों कुण्ट अंधेरा छाईआ। तेरयां सिक्खां इहो बक्करा छकणा, शुकर कर के तेरे अग्गे सीस निवाईआ। गोबिन्द किहा मैं उस वेले ज़रूर सचखण्ड विच्चों नट्ठणा, भज्जां वाहो दाहीआ। शरअ दा रहिण देणा नहीं कोई रट्टणा, रट्टा कूड़ देणा मिटाईआ। मैं चहुं जुगां दे अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं दा लेखा पूरा करां इक्को वार सच सरूप दा मल के वटणा, वट्टा सब दा दयां चुकाईआ। पिछला लेखा छपणा, अग्गे ठप्पा नाम मोहर लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द बच्चा, सुत दुलारे सीस हथ्थ रखाईआ। ओ वेखे तेरे हुन्दयां खाधा जाए कट्टा ते वच्छा, पंखेरू रोवण मारन धाहीआ। गोबिन्द सच पुछें मैं लूं लूं दे विच रचा, घट घट रिहा समाईआ। जिन्हां पंछीआं मेरा नाम जपा, ओह मेरा रूप नज़री आईआ। की इशारा दे के गया नानक तपा, तार सितार शब्द वाली हिलाईआ। मेरा तेरा वहिदा कौल इकरार पक्का, सति सच दयां सुणाईआ। इक वेरां मेरे कोल आवीं जगत दा करके अच्छा, डण्डावत सीस जगदीश झुकाईआ। अग्गे फेर रहिण देवां ना किसे दी हत्ता, हत्या करन वाला नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। बक्करा कहे गोबिन्द मैं तेरे हाज़र हज़ूर, हज़रतां दे हज़रत सीस निवाईआ। दस्स मेरा की कसूर, क्यों छुरी मेरे सीस रखाईआ। तेरा पुरख अकाल दा की दस्तूर, की हुक्म दिता दृढ़ाईआ। मैं वी उस प्रभू दा नूर, जो नूर नुराना अगम्म अथाहीआ। तेरे चरणां लावां धूढ़, टिक्का ख़ाक रमाईआ। मेरी मनसा कर पूर, पुरी अनन्द दे मालक तेरे अग्गे झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। गोबिन्द कहे मैं निगह नाल तक्कया दूर, दुराडा ध्यान लगाईआ। बराह दा बच्चा रोवे सूर, जिस बराह नूं सारे सीस निवाईआ। ओह बणया मूर्ख मूढ़, जगत चले ना कोए चतुराईआ। जिस नूं सतिजुग त्रेता द्वापर प्रभू दे प्रेम दा रिहा जूड़, तिन्नां टंगां बंध बंधाईआ। कलयुग अन्तिम होया चूरो चूर, चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। विसाख कहे मैं बड़ा सुणया झेड़ा, झगड़ा जगत लोकाईआ। मेरे साहिब बन्न्ह दे बेड़ा, बेड़ी नईया नौका आपणा नाम वखाईआ। तेरा वसे इक्को खेड़ा, दर साचे वज्जे वधाईआ। पता नहीं तूं जुग चौकड़ी किड्डा वड्डा कीता जेरा, हठ आपणा आप कमाईआ। तेरा रूप अगम्मा शहिनशाह शेरा, तूं पातशाह बेपरवाहीआ। कलयुग अन्त वेख लै चारों कुण्ट अंधेरा, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। नाता जुड़या ना तेरा मेरा, आत्म परमात्म मेल

१८८७
२२

ना कोए मिलाईआ। मेरे दीन दयाले पुरख अकाले कर दे मेहरा, मेहरवान तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब तेरे हथ्थ वड्याईआ। पुरख अकाल कहे सुणो शब्द शब्द स्वासी, सब नूं दयां जणाईआ। मेरा रूप अनूप अबिनाशी, जन्म मरन विच कदे ना आईआ। मेरी मण्डल मण्डप रासी, दो जहानां खेल खिलाईआ। मैं किसे हथ्थ ना आया अयुध्या प्राग काशी, खोजण थांउँ थाँईआ। मैं हर घट अन्तर वासी, गृह गृह सोभा पाईआ। पर याद कर लओ मेरा भेव कोए ना पासी, चार जुग दे अवतार पैग़म्बर गुरु सीस निवाईआ। कलयुग दी कला वास्ते ईसा नूं दिता सी फाँसी, सलीब साढे तिन्न हथ्थ गल लटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। गोबिन्द कहे जिस वेले ईसा नूं दिता फाह, फाँसी गल लटकाईआ। सीस कंडया दा ताज दिता सुहा, सोहणी वंड वंडाईआ। ईसा खुशी विच मारी धाह, कूक कूक सुणाईआ। मेरा तन ते मेरी लाश मेरा गवाह, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सदी बीसवीं मेरे मालका तेरा राह रिहा तका, तकवा इक्को इक वखाईआ। जो मेरा हक दा खुदा, खुद मालक नज़री आईआ। जेहड़े तैनूं भुल्ले उन्हां नूं सूलां दी सेज दई सुआ, मेरे सीस दा सीस

१८८८
आपणे लेखे लाईआ। वेखीं किते मेरी वसीअत ना देवीं गवा, दूसर हथ्थ फड़ाईआ। किते लेखा लिखीं ना नाल कलम शाह, काग़ज़ां चले ना कोए चतुराईआ। मेरी दरगाह साची सचखण्ड तेरे अग्गे दुआ, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। अग्गों खुशी विच धुर दा कलमा दिता सुणा, अणसुणत आप जणाईआ। मसीह वसीह हो के जावां आ, आमद दूसर ना किसे दृढ़ाईआ। तेरा लहिणा देणा देवां चुका, चारों कुण्ट अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। ईसा किहा मेरे नूरी मालका, नुराने दे जणाईआ। की मेरा लेखा याद रखेंगा साबका, पिछला भेव खुल्हाईआ। मेरा नाता कायम रखेंगा बाप दा, पिता पुरख अकाल दे दृढ़ाईआ। लहिणा झोली पाएंगा आपणे जाप दा, जो तेरा नाम ध्याईआ। की तेरा रूप होवेगा इलाही पाक दा, परवरदिगार दे समझाईआ। कि बुत होवेगा मिट्टी ख़ाक दा, पंजां तत्तां गंढ पवाईआ। मेरा लहिणा पूरा करीं भविक्ख्त वाक् दा, बीस बीसे सीस निवाईआ। तूं प्यारा होवेंगा केहड़ी जमात दा, की मज़्बां रंग रंगाईआ। तेरा धाम केहड़ा होवे निवास दा, सच देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दी धार इक वखाईआ। जिस वेले ईसा दा अन्त अख़ीरी स्वास, आकाश आकाशां ध्यान लगाईआ। ऐसे रूप विच निरगुण धार आया पास, खण्डा मुख विच टिकाईआ। याद रखीं मैं फेर आवांगा आप, आपणा फेरा पाईआ। सब दा सांझा बणांगा बाप, पुरख अकाल इक अख्वाईआ। ज़रूर हज़ूर

हो के करांगा टाक, शब्द शब्दी नाद सुणाईआ। पथ्थरां दा रहिण नहीं देणा कोई ठाकर ठाक, ठोकर इक्को दयां लगाईआ। औह वेख की कहिंदा भसुंड काग, मुख दो जहान उठाईआ। किस बिध अन्तिम मुके वाट, राह बिन नैणां नैण तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी धार इक वखाईआ। सम्मत अट्ठ कहे ईसा मूसा मुहम्मद सारे मारदे ताली, खुदा तआला सीस निवाईआ। जिस दा खेल तकणा हाली, जो हालत वेखे ख़लक खुदाईआ। जिस ने आपणा नाम कलमा रहिण नहीं देणा जाहली, जो सिफ्त करके सिफ्त सिफ्त वाल्यां नाल लड़ाईआ। कलयुग मेटे रैण अंधेरी काली, कला आपणी आप वरताईआ। क्यों चार जुग धुर दी ताकत बिना पुरख अकाल तों किसे कोलों ना जाए संभाली, एसे कर के गोबिन्द सम्बल दा लेखा गया समझाईआ। जो आदि अन्त सब दा माली, मालक ख़ालक नूर इलाहीआ। अन्त जगत दी मेटे दलाली, विचोला रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आपणे हथ्थ रखाईआ। विसाख कहे वाह प्रभू मेरे दाते, दयावान तेरी सरनाईआ। ओ पुरखां दे पुरख बिधाते, पतिपरमेश्वर नूर इलाहीआ। उठ वेख आपणी अंधेरी राते, चारों कुण्ट अंधेरा छाईआ। बेशक दीनां मज़्ब़ां वाले तैनूं अक्खरां विच गाते, गा गा आपणा झट लँघाईआ। ज़रा निगाह मार अन्तर आत्म तैनूं मूल ना पाते, पतिपरमेश्वर

१८८६ २२ तेरा मेल ना कोए मिलाईआ। तेरे लग्गे कोए ना आखे, तैनूं भुल्ली सर्ब लोकाईआ। नाम दा तिलक दिसे किसे ना माथे, १८८६ २२

मस्तक नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। जिधर तकां ओधर घाटे, ख़ाली भण्डारे ना कोए भराईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण अन्तिम आ गई तेरी वाटे, साडा पन्ध मुक्कया चाँईं चाँईंआ। दर तेरे सारे आए नाठे, भज्जे वाहो दाहीआ। तुध बिन जोत जगे ना किसे वाली लाटे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे सीस निवाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बर सारे तक्को इक दम, स्वास लैण कोए ना पाईआ। शब्दी धार विच कहो झगड़ा मेटया काया चम्म, चम्म दृष्टी रहिण कोए ना पाईआ। पुरख अकाल तेरी धारों पए जम्म, नूर तेरा नज़री आईआ। ना कोई हरख ना कोई ग़म, चिन्ता चिखा ना कोए सताईआ। तेरा नूर सृष्टी सारी ब्रह्म, पारब्रह्म तूंही बेपरवाहीआ। अन्तिम सब दा बेड़ा बन्नृ, बन्नृणहार इक अख्वाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बर सारे फड़ लओ आपणे कन्न, बिन हथ्थां हथ्थ लगाईआ। इक दे दुलारे बणो जन, माण चले ना कोए चतुराईआ। सारे रो पओ नेत्र छम्म छम्म, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बर आओ वेखो जगत जहान, जोबन वंतिओ दयां जणाईआ। भज्जो सीता राम, राम राम दुहाईआ।

उठ वेख गोपी काहन, बिन नैणां नैण उठाईआ। मुहम्मद ईसा सुणो पैग़ाम, मूसा नैण मिलाईआ। क्यों चारों कुण्ट होवे कत्लेआम, कत्लगाह ख़लक ख़ुदाईआ। क्यों पंखेरूआं पशूआं बणया तुआम, खल्लां रहे लुहाईआ। क्यों शरअ बणी ग़ुलाम, ज़ंजीर ना कोए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब तों लेखा मंगे तमाम, मज़्हब दी तमा वाल्यो भेव दयो चुकाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बर हो गए जमां, ज़ामनी नज़र कोए ना आईआ। ना कोई माटी ना कोई चम्मा, तन वजूद ना कोए वखाईआ। ना कोई नूर जोत ना कोई शमा, दीपक नज़र कोए ना आईआ। ना कोई अक्खर ना कोई इबारत ना कोई पन्ना, सिफ्तां सिफ्त ना कोए वड्याईआ। दुहाई देवे कहे तारा चन्ना, प्रभ ने उलटी करनी लोकाईआ। मज़्हब दा रहिण देणा नहीं कोई बन्ना, हद हदूद देणी गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा आपणा रंग वखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभ दा दरस पाया अनोखा, अनोखा नज़री आईआ। भगवन केहड़ा करन लग्गा धोखा, धोखा समझ कोए ना पाईआ। केहड़े वड़ गया विच कोठा, सच सिंघासण डेरा लाईआ। ना कोई हथ्थ विच कलस ते ना कोई लोटा, ना कोई वेस अवेस जणाईआ। सारे कहिण वेखो इक्को नूर ते इक्को जोता, दूजा नज़र कोए ना आईआ। उफ़ हाए किस दीआं करीए सोचां, सोच समझ रही ना राईआ। जिस दे प्यार विच माणीआं मौजां, मजलस नाम कलमे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी आपणी वंड वंडाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू सब दे हथ्थ बध्धे, बन्दना सीस निवाईआ। तेरा नूर कितों ना लभ्भे, बौहड़ी तेरा नाम दुहाईआ। असीं पिछले लेखे छड्डे, छडी कूड़ लोकाईआ। तेरे नाम निशाने गड्डे, दो जहान वड्याईआ। तेरा प्यार लडाईए लड्डे, दूजी गोद ना कोए वखाईआ। तेरे नाम रस दे सदा मधे, मधुर तेरी धुन करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच तेरे अग्गे मंग मंगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू तोल दे आपणी तकड़ी, तोलणहारे तेरे हथ्थ वड्याईआ। असीं इक्को नूर इक्को जोत इक्को पाई गलवकड़ी, दूजा रूप ना कोए बणाईआ। ना कोई ब्राह्मण ना कोई शूद्र ना कोई वैश ते ना कोई क्षत्री, छत्रधारी नज़र कोए ना आईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु कहिण साडा वास्ता कलयुग अन्त रहिण ना देवीं जिन्हां वच्छा कट्टा खाधा बक्करा बक्करी, सूरां वाल्यां सिर ना कोए कटाईआ। तेरा गोबिन्द साल चढ़ गया दो सौ बहत्तर तों तिहत्तरी, तिन्नां गुणां दा लेखा देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक बेपरवाहीआ। कट्टे वच्छे करन आए बेनन्ती, सूर मुरगे नाल मिलाईआ। प्रभू साडी इक्को लिख

१८६० २२

दे पंगती, पंजां तत्तां दा डेरा ढाहीआ। हुक्म सुणा दे दो जहान निरगुण धार संगती, तेरे संगी गुर अवतार पैग़म्बर सोभा पाईआ। जिन्हां दी ताकत सानूं नहीं जम्मदी, मारन वाला नज़र कोए ना आईआ। सब दी मनसा मेट दे मन दी, तृशा तृखा तृष्ना दे गंवाईआ। शहादत दे दे तारे चन्न दी, जिन्ह सदी चौधवीं देणी मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच आपणा खेल खिलाईआ। दुर्गा कहे मेरी गा गा प्रभू जीभा होई लाल, ओ धुर दे लाल दयां जणाईआ। मैं तेरा अगम्मा ओह बाल, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। अट्ठां तत्तां वाल्यो जिस ने अट्ठां शस्त्रां दी कीती संभाल, ओह सम्बल वाले दे अग्गे आपणा सीस निवाईआ। जिस नूं झुकदे काल महाकाल, राय धर्म चित्रगुप्त सिर सके ना कोए उठाईआ। उस दा ना कोई जवाब रिहा ते ना कोई सवाल, लेखा अग्गे ना कोए बणाईआ। इक्को मंग सूरे सरबंग मेरी पूरी पा लै कीती घाल, घोली घोल घोल घुमाईआ। तेरी वेख के अवल्लड़ी चाल, हैरानी मेरे अन्दर आईआ। मैं किहा नी कालका कमलीए आपणा खप्पर लै संभाल, जिस विच अठासी लख पदम सुंभ निसुंभ पी के आपणा झट लँघाईआ। नी उस दा हुण वेस कमाल, कमलीए तैनूं दयां दृढ़ाईआ। ना ओह बुड्ढा ते ना ओह बाल, जवानी वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। खप्पर कहे मैं कदे नहीं भरदा, भरमां वाल्यो दयां जणाईआ। मैं सब नूं चेता करावां पिछले साल पर दा, पूरब दयां जणाईआ। क्यों विसाखी दा दिन इक सी वधदा, वाधा समझ किसे ना आईआ। हुण भाण्डा भज्जणा जग दा, जगत वाल्यो पैणी दुहाईआ। ओह जेहड़ा किते नहीं लभ्भदा, प्रवेश इक्को नूर इलाहीआ। उस दा प्याला सच दी मदि दा, साचा रस दए चखाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग अग्गे याद रहिणा दिहाढ़ा अज्ज दा, चार जुग चरणां हेठ दबाईआ। जेहड़ा पुरख अकाल बिना लत्तां बाहवां तों भज्जदा, भजन बन्दगी वाले वेखे थांउँ थाँईंआ। जिस नूं नूर इलाही किहा रब्ब दा, आलमीन बेपरवाहीआ। भगतो तुहाडे भगत दवारे विच उस अंग्यारा लाया अग्ग दा, अग्नी जगत विच जलाईआ। जुग जन्म दे विछड़िओ तुहानूं प्रेम विच सद्द दा, संदेशा शब्द नाम शनवाईआ। तुहाडा रूप रहिण नहीं देणा बग़ले बपड़े बप दा, हँस देणे बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। ओ ईसा कहे आ जा मूसा, ओ मुसलसल हाल सुणाईआ। वेख प्रभू दा अगम्मी सूसा, साँवल सुन्दर की आपणी कार कमाईआ। जिस दा रूप समझ सके कोए ना दूजा, पड़दा पड़दा ना कोए उठाईआ। जिस ने सब दा दीन मज़्ब दा भाण्डा करना मूधा, मुद्दा सब दा वेख वखाईआ। हाए दुहाई पैणी उत्ते बसुधा, सुध रहे किसे ना राईआ। ओ जिसने बदल देणा जुगा, जुग चौकड़ी

रोवे मारे धाहीआ। उस दा निशाना कदे ना उका, उग्घण आथण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। मुहम्मद कहे मूसा वेख लै मुसाहिब, हज़रत ईसा नाल मिलाईआ। तिन्ने कहिण किधर हो गया ग़ायब, जग नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। जिस दा खेल वेखो अजाइब, अजब लीला रिहा वरताईआ। असीं सारे उस दे नाइब, हुक्म विच सारे बैठे सीस निवाईआ। जिस दा खेल होणा ज़ाइज़, ज़ाइज़ा लवे थांउँ थाँईंआ। मुहम्मद कहे मेरा अमाम इहो होवे शायद, शहिनशाह बेपरवाहीआ। जिस नूं किहा वाहिद वाहिद, नूरी अल्ला नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। ईसा कहे मेरीआं बड़ीआं पुराणीआं उडीकां, पैग़म्बरो दयां जणाईआ। मैं नौ सौ नड़िनवे वार कढीआं नक्क नाल लीकां, लाईन लाईन नाल मिलाईआ। मुहम्मद कहे मैं नौ सौ नड़िनवे वार रखीआं उम्मीदां, अन्तर आपणे ध्यान रखाईआ। मैनूं नौ सौ नड़िनवे हुक्म दीआं मिलीआं रसीदां, बिना अक्खरां हरफ़ां ख़ुदाईआ। मैं उन्हां नूं तकां ला के नीझां, नैण नैणां नाल मिलाईआ। कवण वेला मेरा अमाम मेरीआं पूरीआं करे रीझां, गृह मेरे फेरा पाईआ। सब नूं दे देवे तमीज़ां, कूड़ी मति दए मिटाईआ।
१८६२ जिस दीआं सिफ्तां गा ना सकदीआं जीभां, रसना ना कोए वड्याईआ। मेरी करे की कुरान मजीदा, जिस कुरान दा कुरह १८६२
२२ देणा बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रखाईआ। २२
ईसा मूसा मुहम्मद कहिण असां तिन्नां बणाउणी तिकोनी, तीर निशान सुहाईआ। जिस दी खेल गमसा अज़ूह गौनी, लवज्जे नज़ीज़ नज़र किसे ना आईआ। उस दी जोत धार ना किसे छपाउणी, बन्दा बन्द ना कोए कराईआ। सम्मत शहिनशाही अट्ठ उस ने सब दी कराउण आउणा बौहणी, बहुमत दा डेरा ढाहीआ। साडी उम्मत उस दी पराहुणी, बैठी आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा सच आप बणाईआ। विसाख कहे मैं किधरों चढ़या, अर्शां ते चढ़न वाल्यो दयो समझाईआ। मेरा किस ने घाड़न घड़या, घड़न वाले ब्रह्मे दे दृढ़ाईआ। मैं केहड़ी विद्या पढ़या, कवण नाम सिफ्त सालाहीआ। किस दवारे खड़्या, कवण दवारे वज्जे वधाईआ। किस मेहरवान महिबूब मैनूं वरया, कवण कन्त सुहाग सोभा पाईआ। केहड़ा रूप नरायण नरया, नर हरि दयो वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब वड वड्याईआ। विसाख कहे प्रभू बदल दे आपणा वरका, जगत वरक्यां दी लोड़ रहे ना राईआ। भेव खोल्ह दे आपणे घर का, घराना इक्को देणा वखाईआ। जिथ्थे रूप नज़र आवे तेरा नरायण नर दा, दूजा रंग ना कोए रंगाईआ। तुध बिन कलयुग अन्तिम काज मूल ना सरदा, सरोसर सारे सीस निवाईआ। लेखा

मुका दे काया माटी धड़ दा, धड़त मज़्हबां वाले आपणी झोली पाईआ। किला तोड़ दे हँकारी गढ़ दा, निवण सु अक्खर इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी खुशी आप बणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण आओ तक्कीए धुर दा मलंग, जो मलंग इक्को इक अख्वाईआ। जिस ने सब दे कारनामे कीते बैरंग, उत्ते मोहर ना कोए लगाईआ। सच दा रहिण नहीं दिता अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों खिचाईआ। नेत्र रोवे तारा चन्द, चन्द सितार रोवे मारे धाहीआ। बौहड़ी मुहम्मद दा अन्तिम मुक्कया पन्ध, पाँधी पन्ध ना कोए भवाईआ। जिस दी याद विच मुहम्मद ने नमाज़ां गुज़ारीआं पंज, पंजे उँगलां मुख कन्नां नाल छुहाईआ। उस ने जगत दवारे आउणे लँघ, पन्ध आपणा आप मुकाईआ। जिस दा सिंघासण लहिंदी दिशा डहि गया पलँघ, चढ़दयो लहिंदे जावे चाँईं चाँईंआ। सूफ़ीआं नूं पाउंदा जाए ठंड, बिन हरफ़ हरूफ़ करे पढ़ाईआ। जिज्ञासूआं जगत मन मनूए दा लग्गे जंग, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। मुहम्मद कहे मैं खोल्ह के बैठा बस्ता, बस्ती आपणी ध्यान लगाईआ। ईसा कहे मैं साफ़ कीता रस्ता, रुसतम आउणा बेपरवाहीआ। मूसा कहे मैं खुशी विच होया मस्ता, कोहतूर मेरी आसा पूर कराईआ। मेरा महिबूब आवे नस्सदा, भज्जे वाहो दाहीआ। जिस दा निशाना इक्को जगदा, जागरत जोत करे रुशनाईआ। ओह सब नूं आवे सद्द दा, होका देवे धुरदरगाहीआ। आओ दरस करो नूर इलाही रब्ब दा, जो यामबीन अख्वाईआ। आपणे लिबास विच शाह नवाब होवे फबदा, फ़ज़ल रहमत सब दे उत्ते इक कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। मुहम्मद कहे मेरे मकबरे विच सवा सेर दुद्ध कच्चा, कच्ची मिट्टी वाल्यो दयां जणाईआ। जिस ने नाम दा निशाना विच लाउणा पक्का, जिस नूं जाग कहे लोकाईआ। इशारे नाल किनारे ते आण के देणा धक्का, धकेले थांउँ थाँईंआ। उस दी वहिदत विच झुके मक्का, मदीना सीस निवाईआ। किसे नूं लग्गे मूल ना पता, लापते वाला लाशरीक आपणा खेल खिलाईआ। उस ने सब दा लेखा कर देणा रफ़ा, रफ़ाकत वाला नज़र कोए ना आईआ। फेर वी प्यारयां नूं दुलारयां नूं राह विच देंदे जाणा गफ्फा, ग़फ्लत वाले सुते लैणे उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा आपणा हुक्म वरताईआ। सिँघासण कहे भगतो तुहाडी केहड़ी विसाखी, आख के दयो सुणाईआ। तुहाडी केहड़ा करे राखी, उस राखे नूं दयो वधाईआ। लेखा मुकावे बाकी, लहिणा रहे ना राईआ। देसां परदेशां विच तुहाडी सुणावे साखी, साख्यात आपणा हुक्म वरताईआ। शाह सुल्ताना देंदा जाए पाती, पत्रिका जगत विच वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पुरख अकाल कहे लख चुरासी जीव जंत मेरे, मेरा नूर नज़री आईआ। कुक्कड़ सूर गाँ ते वच्छे कट्टे ल्याउ नेड़े, बक्करा अगला संग बणाईआ। सतिजुग विच शरअ दे रहिण मूल ना झेड़े, छुरी फड़े ना कोए कसाईआ। सारे चढ़ गए उस प्रभू दे बेड़े, जिस बेड़े विच्चों बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। ज़रूर पंखीआं पंछीआं चौपाया उत्ते करेगा मेहरे, मेहरवान दया कमाईआ। जन भगतो वेखो इन्हां दे किड्डे वडे जेरे, जुग जुग गुरुआं पैग़म्बरां दे तसीहे सहिंदे फेर वी प्रभू दी आस तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। ओह वेखो खंजीर पाउंदा रौला, खुदा खुदा तेरी दुहाईआ। बौहड़ जा मेरे मौला, मलकुलमौत तों लै छुडाईआ। असीं आ गए तेरे वेहड़ा, वेहड़े वड़दयां पार लै लँघाईआ। भगतां नाल मिल के बण गए तेरे चेरे, चिरी विछुन्नयां आपणा रंग रंगाईआ। तूं सिँघ शेर शेरे, शेर शब्द शब्द अख्वाईआ। ओ मालका ख़ालका हुण ते लँघ गए जुग बथेरे, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। साडे कट दे चुरासी गेड़े, गेड़े विच ना कोए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा खेल आप खिलाईआ। खंजीर कहे मुहम्मदा सुण पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। सदी चौधवीं अन्तिम घड़ी आई दुष्वार, दुश्मण सज्जण समझ कोए ना पाईआ। पर इक खुशी मेरे मालक जे सारी सृष्टी कर देणी हमवार, ऊचां नीचां डेरा ढाहीआ। सारी आत्मा दा बण जाणा मुख़तार, मुख्त्यारनामे दीनां मज़्हबां दे हथ्थो हथ्थ लैणे मंगाईआ। किसे नाल रहिण नहीं देणा उधार, उदर विच्चों जम्मे होए अवतार पैग़म्बर गुरु अन्त अन्त ना कोए अख्वाईआ। ओह हुक्म विच आए विच संसार, हुक्म अन्दर भज्जे वाहो दाहीआ। नाम कलमे गए उच्चार, सिफ्तां वाली सिफ्त सालाहीआ। अन्त कर के गए पुकार, कलयुग अन्तिम ध्यान लगाईआ। कलि कल्की आवे अवतार, अमाम अमामा धुरदरगाहीआ। जिस दा रूप वक्खरा विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी समझ सके ना राईआ। उस दा लहिणा उस दा देणा ओसे दी करनी कार, जो कुदरत दा करता इक अख्वाईआ। सारे डण्डावत विच बन्दना विच सजदयां विच करो निमस्कार, निउँ निउँ सीस निवाईआ। जिस विसाखी दा दिहाढ़ा गोबिन्द दा ल्या विचार, दो सौ बहत्तर साल पिच्छों लहिणा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत मलंग सच्ची सरकार, सिर सिर आपणा हुक्म मनाईआ।

✪ ८ विसाख शहिनशाही सम्मत ८ मालवा दुआबा संगत नवित पिण्ड लाडोवाल ज़िला लुध्याणा ✪

विसाख कहे मैं वेखी अगम्मी हस्ती, जो हस्त कीटां विच समाईआ। जिस दी भगत प्यार बस्ती, नगर खेड़ा आप सुहाईआ। आत्म धार उस दी वसदी, वसे चाँईं चाँईंआ। सतिगुर दरस नूं सदा नस्सदी, भज्जे वाहो दाहीआ। ओह मेलण निज नेत्र लोचण अक्ख दी, नैण कँवल नैण नाल मिलाईआ। प्रीआ प्रीतम प्यार विच हस्सदी, हँस मुख सोहँ हँसा रूप बणाईआ। धार लवे अमृत निजर रस दी, जगत रसना रस तजाईआ। खेल तके पुरख अलख दी, अलख अगोचर जो दृढ़ाईआ। प्रीती प्यार बंधाए नत दी, चरण कँवल कँवल सरनाईआ। तृष्ना पूरी करे पंज तत दी, सन्मुख सतिगुर दर्शन पाईआ। आशा रहे ना मनमति दी, गुरमति मेला सहिज सुभाईआ। एह खेल परमेश्वर पति दी, पारब्रह्म जो नूर इलाहीआ। जिस दी कला कलयुग धार अन्तिम जट्ट दी, किरसाणा आपणी किरस कमाईआ। उहदी जोत प्रकाश लट लट दी, नूर नुराना डगमगाईआ। उहदी वस्ती शब्दी धुर दे हट्ट दी, हटवाणा इक्को इक अख्वाईआ। जिस दे याद विच जन भगतां तृष्ना नट्ठदी, भज्जे वाहो दाहीआ। खुशी तके विसाख अट्ठ दी, अट्ठां तत्तां वज्जे वधाईआ। जन भगतो तुहाडी मिलणी प्रभू प्यार इक्ठ्ठ दी, इकठ्ठयां सब दा लेखा पूर कराईआ। जन्म जन्म दी मैल सतिगुर सेवा विच लथ्थदी, कर्म कम दा पन्ध मुकाईआ। कलयुग अन्तिम एह भगती रखी हक दी, कम्म काज करदयां पार कराईआ। तुहाडी लाज रखणी दो जहान नक्क दी, जगत निशाने नाल झुलाईआ। तुहाडी लेखे लाउणी इक इक बूँद रत्त दी, जो बिरध बाल जवान पसीना रहे वगाईआ। इस तों परे होर खेल नहीं कोई तप दी, जगत तपीशर हथ्थ कदे ना आईआ। जन भगतो तुहाडे कर्मां दी फ़सल पकदी, कुकर्मां दा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धार इक पुरख समरथ दी, समरथ आपणी दया कमाईआ।

✪ १५ विसाख हरि भगत दवार जेठूवाल गुरदास पुर दी संगत नवित ज़िला अमृतसर ✪

विसाख कहे मेरा समां बीत्या अद्धा, अधवाटे वेखां जगत लोकाईआ। कोटां विच्चों किसे विरले गुरमुख मिल्या सद्दा, शब्दी नाम शब्द शनवाईआ। जो परम पुरख सरनाई लग्गा, लग मात्रा दा डेरा ढाहीआ। उहदा जगत जहान वध्या अग्गा, आगमन विच अवतार पैग़म्बर गुरु राह तकाईआ। हँस रूप ना होया कग्गा, हँस गुरमुख सोभा पाईआ। सच दवार दी मिली जगह, घर साचे वज्जे वधाईआ। इक्को नाम खुमारी पीती मधा, मधुर धुन सुण के आपणा आप बदलाईआ। सच

मंज़ल दा साचा पता, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। जिस दा इक्को दीपक जोत प्रकाश जगा, दो जहान करे रुशनाईआ। जिस ने धर्म दी धार निशाना गड्डा, गाईड हो के वेख वखाईआ। जन भगतां लडाए आपणा लड्डा, गोदी धुर दी इक टिकाईआ। जिन्हां सेवा विच जगत विकार वढ्ढा, प्यार धुर दा नाल रखाईआ। उन्हां लेखा मुक्कया चुरासी खड्डा, मात गर्भ ना वंड वंडाईआ। जगत जहान होया वड्डा, अनमुल्ल मिली दात बेपरवाहीआ। कूड़ क्रिया नाता छडा, छुटकी जगत लोकाईआ। लेखे लग्गे बुढ्ढा नढ्ढा, नौजवाना वज्जे वधाईआ। झगड़ा रहे ना मास नाड़ी हड्डा, पंज तत आपणे तन रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। विसाख कहे मैं अद्धा बीता, बीती कहाणी दयां जणाईआ। मेरे दिन राम बचन दिता सीता, सीता सति हुक्म दृढ़ाईआ। औह वेख त्रैगुण अतीता, की आपणा खेल खिलाईआ। जो लख चुरासी परखे नीता, घट घट वेखे थांउँ थाँईंआ। जो आदि अन्त पतित पुनीता, पतित पावन इक अख्वाईआ। ओह कलयुग अन्तिम बदल रिहा रीता, रीतीवान आपणा हुक्म सुणाईआ। जिस लेखा मुकाउणा मन्दिर मसीता, शिवदुआले वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को दस्से सच चरण प्रीता, प्रीतम हो के धुर दा माहीआ। पिछलीआं बदल देवे तवारीखां, चार जुग दा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। विसाख कहे मैं अद्धा गया लँघ, भज्जया वाहो दाहीआ। मेरे दिवस गोबिन्द बचन दिता पुरी अनन्द, प्रभ अनन्द विच आपणा आप टिकाईआ। नाले हस्स के तूं मेरा मैं तेरा गाया छन्द, सोहँ ढोला धुरदरगाहीआ। फेर निशान वेख्या तारा चन्द, चन्द सितार वेख वखाईआ। फेर निगाह मारी मेरा शस्त्रां वाला जंग, जगत जगत नाल लड़ाईआ। गुरमुख विरले लाउणे अंग, अंगीकार इक अख्वाईआ। फेर वेखणा कलयुग अन्तिम पन्ध, पाँधी हो के फेरा पाईआ। शब्द बोलया उच्ची बत्ती दन्द, रसना जेहवा नाल मिलाईआ। जिस वेले आवे साहिब सूरा सरबंग, हरि करता धुरदरगाहीआ। उस वेले सृष्टी होवे दंग, हैरानी विच परेशानी नाल मिलाईआ। साचा चाढ़े कोए ना रंग, रंगत रंग ना कोए रंगाईआ। मेरी आशा मनसा पूरी करे उमंग, मेरा दाता धुरदरगाहीआ। आप बैठ के उपर पलँघ, हरिजन साचे लए तराईआ। जिन्हां दा लेखा पूरा करे खाधा पीता जगत डंग, डंका नाम वाला वजाईआ। जिस दे कोल भगत उधारन दा वक्खरा होवे ढंग, माला मणके ना कोए रखाईआ। कोझयां कमल्यां ग़रीब निमाणयां सचखण्ड देवे टंग, जिथ्थे टंगां वाला कोई पुज्ज सके ना राईआ। झगड़ा मेट देवे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज दा पन्ध मुकाईआ। चरण प्रीती खुशी नाल देवे वंड, खुशी बन्द बन्द रखाईआ। दर आयां सीने पावे ठंड, अग्नी तत तत गंवाईआ। पन्द्रां विसाख कहे गोबिन्द तिन्न दिन नीले उत्ते कसदा रिहा सी तंग,

तन शस्त्र नाल सुहाईआ। फेर वेखदा रिहा वल्ल पुरी अनन्द, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। फेर तकदा रिहा ब्रह्मण्ड, लोआं पुरीआं परे निगाह टिकाईआ। फेर चरण कँवल नाल कीती वंड, सज्जा खब्बे नाल बदलाईआ। जिस वेले मेरा साहिब आवे सूरा सरबंग, सतिगुर नूर इलाहीआ। जन भगतां अन्तर आत्म देवे परमानंद, परम पुरख वड वड्याईआ। उस वेले सम्मत शहिनशाही अट्ठ दा होवे चन्द, चन्द सितार सीस निवाईआ। मेरी आशा मनसा पूरी करे उमंग, हाज़र हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां भाग होण ना देवे मंद, मंदभागी सद आपणे रंग रंगाईआ।

१८६७ २२

✪ १८ विसाख शहिनशाही सम्मत ८ हरि भगत दवार जेठूवाल माझा संगत नवित ज़िला अमृतसर ✪

ध्रू कहे वेख प्रहलाद, परलो तों परे ध्यान लगाईआ। बल कहे अमरीक सुण नाद, दो जहानां बाहर शनवाईआ। जनक कहे हरीचन्द वेख स्वाद, बिन रसना रस चखाईआ। बिधर कहे सुदामे सुण आवाज़, की करता रिहा दृढ़ाईआ। जैदयो कहे बेणी खोल्ह राज़, राज़क रिज़क रहीम की कार कमाईआ। रवीदास कहे सारे सुणो धुर जवाब, धुर संदेशा अगम्म अथाहीआ। मेहरवान महिबूब हक जनाब, धुर करता इक अख्वाईआ। जो अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं पूरे करे ख्वाब पेशीनगोईआं आपणे रंग रंगाईआ। धुर दा मित्र प्यारा बण अहिबाब, मेहरवान आपणा रंग रंगाईआ। जिस नूं वाहिद ख़ालक ख़लक किहा नाल आदाब, सजदयां विच सीस झुकाईआ। जिन सूफ़ीआं इश्क हकीकी बदल्यां विच्चों मजाज, मजाजी आपणा भेव चुकाईआ। सो लहिणा देणा पूरा करे निरगुण धार सरगुण नानक बग़दाद, बग़लगीर बेपरवाहीआ। सो स्वामी अन्तरजामी जन भगतां करे इमदाद, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। कबीर कहे मैं तकां अगम्मी काअबा, किबल दिता दृढ़ाईआ। गनका पूतना सुणे आवाज़ा, शब्द धुन राग जणाईआ। खेल करे ग़रीब निवाजा, गहर गम्भीर आपणा पड़दा लाहीआ। जिस नूं चार जुग दे शास्त्र कहिण शहिनशाह महाराजा, पातशाह नूर इलाहीआ। ओह वेस अगम्मी कर सादा, साधना भगतां रिहा कराईआ। जिस नूं सिर झुकाउंदे कृष्न राधा, राम सीता निउँ निउँ लागां रहे पाईआ। जिस दीआं पैग़म्बरां पढ़ीआं नमाज़ां, धूढ़ी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। जिस नूं पिता पुरख अकाल कहि के गया गोबिन्द वाला बाजां, बाज़ी अन्तिम आपणे हथ्थ रखाईआ। दीन दुनी दा बदल के तख्त ताजा, धुर दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। मेहरवान हो के मोहण माधव माधा, मधुर धुन रिहा सुणाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। बधक कहे सुण अजामल, आजज़ हो के सीस निवाईआ। जिस प्रभ दा खेल घड़ी पल, पारब्रह्म की आपणा हुक्म वरताईआ। जो हर घट वसया जल थल, महीअल डेरा लाईआ। उस दा इक्को हुक्म अटल, अटल पदवी जन भगतां देवे चाँईं चाँईंआ। निरगुण धार हो के अन्तर गया रल, जोती जाता आपणा मेल मिलाईआ। जिस ने ग़रीब निमाणे गुरमुख तारे वाहुदे हल, किरस किरसाणा दी आपणे हथ्थ रखाईआ। लख चरासी विच्चों भगतां दी भगती वाला लभ्भ के दल, दलिदीआं विच्चों आपणे नाल मिलाईआ। सृष्टी नाल श्रेष्ट करके छल, अछल अछल आपणा भेव छुपाईआ , जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। भगत कहिण वेखो आपणे मणके माला, सूफ़ी तसबीआं हथ्थ उठाईआ। की जगत झलदे रहे जंजाला, किस बिध करनी कार कमाईआ। किस धार मिल्या पुरख अकाला, पुट्ठी खल्ल तन लुहाईआ। सब नूं घालणी पई घाला, जीवण जुगती दए दुहाईआ। बौहड़ी कलयुग अन्तिम मार्ग दस्स सुखाला, सिर सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। हरिजन गुरमुख आपणे बच्चे बणा के लाला, लालन आपणे रंग रंगाईआ। जिन्हां दे नेड़ ना आवे काल महाकाला, राय धर्म ना दए सज़ाईआ। उन्हां दी रीत अवल्लड़ी दस्स के अवल्लड़ी चाला, चाल धर्म दी इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। जन भगत कहिण साडे अन्तर अगम्म विचार, बुद्धी समझ कोए ना पाईआ। पिच्छे बीते जुग चार, कलयुग चौथा दए दुहाईआ। की भगतां खेल करदा रिहा करतार, कुदरत दा करता आपणी कार कमाईआ। जगत तसीहे दे विच संसार, मार्ग भगती वाला जणाईआ। कलयुग अन्तिम किरपा कर अपार, अपरम्पर आपणी दया कमाईआ। फड़ फड़ बाहों दए तार, तारनहार इक अख्वाईआ। साची भगती सतिगुर हुक्म दी कार, जगत माला दी लोड़ रहे ना राईआ। गुरमुख सूरबीर बणा हुश्यार, योद्धा आपणा मेला लए मिलाईआ। सन्त सुहेले बणा बरखुरदार, बरखुरदारी विच वेख वखाईआ। पूरब जन्म दा लहिणा दए उधार, कर्ज़ा मकरूज आप चुकाईआ। सेवा विच सेवा करन सेवादार, सेवा सतिगुर सतिगुर साचे भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। चार जुग दे भगत कहिण आओ खेल तक्कीए अज्ज दी राती, अठारां विसाख वज्जे वधाईआ। सारे हथ्थ मारो उपर आपणी छाती, छत्रधारी आपणा भेव चुकाईआ। तुहाडी बन्दगी वाली धर्म दी दाती, दातरी दातार नाल मिल के आपणा खेल वखाईआ। जेहड़ी चरण धूढ़ नाल तिन्न वार अज्ज नहाती, हर गुरसिख दे पिच्छे तिन्न वार फिर के आपणा खेल दिता खिलाईआ। जन भगतो तुहानूं छका के लंगर दा प्रशादा

१८६८
२२

प्रेम दी चपाती, चप्पा चप्पा मुश्किलां विच्चों तुहानूं दिता बाहर कढ्ढाईआ। तुहाडी मंज़ल अगली मुकी ते उस तों अग्गे सतिगुर घर दी बणी वाटी, जगत पन्ध रिहा ना राईआ। एह आशा सप्त ऋषी रखी जिस दी नेड़े आई वाटी, पिछला पन्ध मुकाईआ। सच पुछो गोबिन्द ने अठारां दिन इक्की बूंदां अमृत दीआं रखीआं सी विच बाटी, अठारां विसाख नूं धरती उत्ते सुटाईआ। फेर आपणा हथ्थ फेरया तन शरीर उत्ते माटी, सीस तों चरणां तक छुहाईआ। नाले राह तक्कया कमलापाती, पतिपरमेश्वर वेख वखाईआ। सच पुछो अठारां विसाख नूं गोबिन्द ने अद्धी रात सी रोटी खाधी, वद्ध घट्ट मिन्ट ना कोए रखाईआ। नाले हस्स के किहा मेरा पुरख अकाल सब दा गाडी, जिस नूं गॉड कहि के सारे सीस निवाईआ। उस ने मेहरवान हो के जन भगतां कोलों भगती दी धार कराउणी वाढी, वड्ढी देण वाला नज़र कोए ना आईआ। अज्ज एसे कर के गुरमुखो शाम नूं रोटी रसना नाल नहीं लागी, पूरब लेखा पूर दिता कराईआ। बेशक तुहाडी जीवण ज़िंदगी दुनिया नालों सादी, सतिगुर साधां तों परे तुहानूं दिती वड्याईआ। क्यों प्रभू दे घर सदा भगतां दी अबादी, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जन भगतां बणे अन्तर दा रागी, रागां विच्चों आपणा नाम जणाईआ।

१८६६ १८६६

२२ २२

✪ २२ विसाख शहिनशाही सम्मत ८ कुलवन्त कौर बस्ती खलील दे प्रशाद कराउण ते हरि भगत दवार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

महाकाल कहे काल वेख हिसाब, कलकाती ध्यान लगाईआ। बिन अक्खरां तक किताब, जो कुतबख़ान्यां बाहर सोभा पाईआ। जिस विच लख चुरासी मिलदा आज़ाब, चारे खाणी सिर ना कोए उठाईआ। लेखा हुन्दा पुन्न सवाब, स्वास स्वास भेव रहे ना राईआ। जो हुक्म मिल्या आदि दा आदि, अन्त ओसे दी चलणा रज़ाईआ। कोटां विच्चों भगतां सन्तां लाध, खोजे थांउँ थाँईंआ। सृष्टी दी दृष्टी तक विवाद, विख कूड़ भरी लोकाईआ। जिन्हां अन्तर वज्जे नाद, शब्द धुन शनवाईआ। ओन्हां लेखा तक विच ब्रह्माद, ब्रह्मांड खोज खुजाईआ। की संदेशा देवे मालक वाहिद, वाहवा आपणा हुक्म वरताईआ। जिस नूं सारे रहे अराध, रसना जेहवा ढोले गाईआ। सो मालक जन भगतां सदा रखे याद, विछोड़े विच विछड़ कदे ना जाईआ। किसे दी मंगे ना कदे इमदाद, निरगुण निरवैर आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। काल कहे महाकाल मेरी डण्डावत, बन्दना विच सीस निवाईआ। चार

कुण्ट कलयुग कूड़ी पाई बग़ावत, झगड़ा सके ना कोए मिटाईआ। नाम मिले ना किसे न्यामत, रसना रस ना कोए चखाईआ। दीन दुनी करे मज़ाहमत, मज़्ब मज़्ब रिहा टकराईआ। कलयुग रैण अंधेरा शामत, शमा नूर ना कोए रुशनाईआ। कोटां विच्चों जन भगत प्रभू दी अमानत, जिस नूं छोह सके कोए ना राईआ। उन्नां दा लेखा होवे ना अन्त नाल क्यामत, कर्म कांड दी वंड ना कोए वंडाईआ। रोग सोग दी शब्द देवे ज़मानत, सतिगुर शब्द गवाह भुगताईआ। जो आदि जुगादि सही सलामत, साहिब स्वामी इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला ल्ए मिलाईआ। महाकाल कहे काल वेख लै आपणी निराली नोट बुक, बिन हथ्थां हथ्थ उठाईआ। धर्म मार्ग सृष्टी गई रुक, अग्गे कदम ना कोए उठाईआ। सच दा पैंडा रिहा मुक, क्रिया कूड़ वज्जे वधाईआ। बिना भगतां तों तूं मेरा मैं तेरा गाए कोए ना तुक, तुख्म तासीर सके ना कोए बदलाईआ। जगत जगदीश सीस जाए किसे ना झुक, जागरत जोत बिन वरन गोत समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां प्रकाश देवे निर्मल जोत, जोती जाता पुरख बिधाता निरगुण इक्को रंग रंगाईआ।

१६०० १६००

२२ २२

✪ २५ विसाख शहिनशाही सम्मत ८ निरँजण सिँघ दे बचनां ते हरि भगत दवार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

दीन दुनी बुद्धी होई भृष्ट, सतिगुर मति रहिण ना पाईआ। एह संदेशा दे के गया सी राम गुरु वशिष्ट, विषयां तों बाहर समझाईआ। कलयुग अन्तिम धर्म धार दा रहिणा नहीं कोई इष्ट, इष्ट देव स्वामी गुरु गुर सीस ना कोए निवाईआ। कूड़ी क्रिया कलयुग वासना भोगे गृहस्त, काम क्रोध लोभ मोह हल्काईआ। किसे भेव खुल्ले ना स्वर्ग बहिशत, जगत पन्ध ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ। दीन दुनी बुद्धी ना होई बिबेक, एका रंग ना कोए रंगाईआ। साहिब सतिगुर दी सब ने छडी टेक, टिक्का मस्तक धूढ़ी ख़ाक ना कोए रमाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार सांझा यार नज़र ना आए एक, एकँकार अकल कलधारी सीस ना कोए निवाईआ। नौ खण्ड सत्त दीप त्रैगुण माया लाए सेक, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। निज नेत्र प्रभ दर्शन सके कोए ना पेख, जगत लोचण मिले ना कोए वड्याईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म करे कोए ना हेत, पारब्रह्म ब्रह्म भेव ना कोए खुल्लाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया चार कुण्ट दहि दिशा मानव जाती भेख, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। घर

विच घर आपणा दिसे किसे ना देस, साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर अन्दर वज्जे ना कोए वधाईआ। रुत बसन्ती नाम फुलवाड़ी मौले कोई ना चेत, चेतन सुरत ना कोए कराईआ। कलयुग जीवां कूड़ कुड़यारा बणया लेख, धर्म दी धार संग ना कोए बणाईआ। सतिगुरु दवारा सब नूं भुल्लया आपणा सच्चा देस, जगत यातरू भज्जण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ। दीन दुनी बुद्धी विच रिहा किसे ना सति, सति विच ना कोए समाईआ। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश पंजां तत्तां लग्गी अग्ग, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। दीपक जोती किसे गृह ना सके जग, काया मन्दिर नूर ना कोए रुशनाईआ। सतिगुर दरस पाए उपर ना कोए शाहरग, शहिनशाह मिलण कोए ना पाईआ। जगत विकारा रसन बणया मध, अमृत रस गोबिन्द मुख ना कोए चुआईआ। धर्म धार दी सच शरीअत पार कीती हद्द, नौ दवार जगत वासना होई हल्काईआ। धुन आत्मक राग सुणे कोए ना नद, अनाद नादी नाद ना कोए शनवाईआ। सतिगुर इष्ट जगत जिज्ञासू गए छड्ड, पुरख अकाल दीन दयाल सीस ना कोए निवाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारे घर घर आपणा निशाना दिता गड्ड, चार वरन अठारां बरन बचया रहिण कोए ना पाईआ। आत्म परमात्म लडाए कोए ना लड्ड, सुरत शब्द मिल के वज्जे ना कोए वधाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म सब नूं भुल्ली आपणी यद्द, यदी अन्तर निरन्तर पड़दा ना कोए उठाईआ। कूड़ी क्रिया माया ममता मोह विकार वहिण गया वग, नौ खण्ड पृथ्मी दीन दुनी रिहा रुढ़ाईआ। एह खेल हथ्थ सूरे सरबग, जो शाह पातशाह शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी अन्तरयामी इक अख्वाईआ। जगत सृष्टी साचा नाम गई भुल्ल, इष्ट देव ईश्वर नज़र किसे ना आईआ। माया ममता विच गई रुल, कूड़ी क्रिया होई हल्काईआ। सच दीपक होया गुल्ल, नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। मेल मिल्या ना सुल्हकुल, जो स्वामी सब दा पिता माईआ। आत्म धार भाग लग्गा ना परमात्म कुल्ल, कूड़ी क्रिया नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। साचा अमृत निजर रस कँवल नाभी विच्चों गया डुल्ह, बूंद स्वांती रस ना कोए चखाईआ। मानव ज़ाती प्रभ दा नाम जपदी नाल बुल्ल्ह, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। शब्द कंडे नाम तराज़ू सके कोए ना तुल, कीमत करता ना कोए रखाईआ। सदी चौधवीं दीन दुनी नव सत्त धरनी धरत धवल धौल मानव जाती बूटा गया हुल, मानस मानव मानुख अमृत फल ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा इक सुहाईआ। सृष्टी अन्दर कलयुग आपणा धरया बल, बलि बावन दए गवाहीआ। जो सब नूं रिहा छल, अछल छलधारी हो के वेख वखाईआ। जिस वरोले अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ जल, समुंद सागरां फोल फुलाईआ। उस

ने खेल रचाया कलयुग कल, कलि कल्की आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा भाणा सके कदी ना टल, सतिजुग त्रेता द्वापर दए गवाहीआ। सो साहिब सतिगुर वेखणहारा कूड़ कुड़यारा दल, जगत विकारा नाल मिलाईआ। तिस साहिब तों सद विटहो जाईए बलि बलि, सृष्टी दृष्टी अन्दरों साचा इष्ट दिता भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सिंघासण पुरख अबिनाशण निरगुण निरवैर निराकार गया मल्ल, सति दा मालक सति आपणा खेल खिलाईआ।

✪ २६ विसाख शहिनशाही सम्मत ८ जगजीत सिँघ दे नवित हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

बावन कहे पूरब पूरब पूरबली साखी, साख्यात दए प्रगटाईआ। बल दवार जिस ने मन्नी आखी, सीस सतिकार नाल झुकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल उस दी करे राखी, रक्षक हो के सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सम्मत शहिनशाही अट्ठ दी भागां भरी विसाखी, जिस नूं चार जुग वेख वखाईआ। लहिणा देणा पूरब मिले बाकी, अग्गा आपणे हथ्थ रखाईआ। सतिगुर पैज संवारे जाकी, जागरत जोत करे रुशनाईआ। चरण प्रीती जोड़े नाती, नर नरायण आपणा मेल मिलाईआ। एथे

ओथे पुछे वाती, दूर नेड़ा पन्ध ना कोए रखाईआ। सिर हथ्थ टिकाए लोकमाती, मेहरवान मेहर नज़र टिकाईआ। उत्तम कर भगतां ज़ाती, देवणहारा माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। बावन कहे धुर दी आदि जुगादि रीत, जुग चौकड़ी चली आईआ। जिस दे सिफ्तां वाले गीत, ढोले सृष्टी सदा गाईआ। सो मालक इक अतीत, त्रैगुण लेखा दए चुकाईआ। जन भगतां वसे सदा चीत, चेतन आपणा मेल मिलाईआ। जन्म कर्म दी परखणहारा नीत, नीतीवान धुरदरगाहीआ। गुरमुखां काया रखे ठांडी सीत, अग्नी तत ना कोए रखाईआ। कँवल चरण चरण कँवल बख्श इक प्रीत, प्रीतम हो के मेला मेले सहिज सुभाईआ। मानस जन्म जन्म लेखे लग्गे सिँघ जगजीत, जगत आपणा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। बावन कहे परम पुरख प्रभू मेहरवाना, मेहरवान अख्वाईआ। जुग जुग जन भगतां देवे दाना, दाता दानी धुरदरगाहीआ। गुरसिख उपजाए जगत निशाना, निशाना आपणा नाम दृढ़ाईआ। दए वड्याई विच दो जहानां, दोहरा आपणा खेल खिलाईआ। हरिजन कदे ना होवे बेगाना, दूर नेड़ा वंड ना कोए वंडाईआ। किरपा करे शाह सुल्ताना, सतिगुर दाता अगम्म अथाहीआ। चरण धूढ़ी देवे धर्म दा दाना, वस्त अमोलक आप वरताईआ। इक्की गुरमुख

जगजीत सिँघ नूं हथ्थीं बन्नृणगे गाना, रंग लाल नाल रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। बावन कहे पूरा भविक्ख्त होया वाक, वाक्या शब्द धार जणाईआ। सतिगुर चरण धूढ़ी नाल लै के जाणी ख़ाक, मस्तक मस्तक नाल छुहाईआ। जो दिवस रैण पुछे वात, घड़ी पल लेखे लाए थांउँ थाँईंआ। सति दा सच जोड़े नात, नाता बिधाता आप बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। बावन कहे हरिसंगत सति सच प्यार मुहब्बत नाम नाल वड्याईआ। जगत कूड़ क्रिया संसार सागर गहर गम्भीर, दो जहान पार कराईआ। जिस दी शरअ दी जगत दी नहीं कोई तस्वीर, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। ओह साहिब स्वामी गुरमुखां होण ना देवे दिलगीर, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। विछोड़े विच वहाए कोए ना नीर, नैणां छहिबर ना कोए जणाईआ। गुरसिख सदा सदा भैणां दा बणया रहे वीर, भरावां दा भाई नज़री आईआ। जाण लग्गया सीस ते चिट्टी पगड़ी बन्नृणी चीर, चीरा गोबिन्द वेख वखाईआ। मुख लगा के जाणी शकर खीर, मिट्ठा रस रस बणाईआ , बावन कहे मेरा लेखा पूरा होवे लहिणा चुक्के रिषीआं दी तस्वीर, तेरां सौ सतासी नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कूड़ क्रिया उत्ते मारे लकीर, लाईन आपणी इक जणाईआ।

१६०३
२२

✪ २८ विसाख शहिनशाही सम्मत ८ बीबी गुरदर्शन कौर पट्टी, मेहर अम्बाला शहर, दे नवित दिल्ली शहर ✪

सतिगुर शब्द भगतन मीता, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। लख चुरासी परखे नीता, चारे खाणी फोल फुलाईआ। गुरमुखां काया करे ठांडी सीता, अग्नी तत तत बुझाईआ। अन्तर निरन्तर वसे हिरदे चीता, मन ठगौरी दए गंवाईआ। सति सच बख्शे चरण प्रीता, प्रीतम हो के मिले धुर दा माहीआ। साचा नाम दे हदीसा, हज़रतां तों बाहर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। सतिगुर शब्द दयानिध, दीन दयाल अखवांयदा। जन भगतां कारज करे सिद्ध, जन्म कर्म दा लेख मिटांयदा। आत्म परमात्म दी दस्से बिध, सोहँ हँसा जाप जपांयदा। तन काया माटी जाए विध, मन मनुआ आप भवांयदा। दर्शन देवे घर निज, गृह मन्दिर सोभा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग अप रंगांयदा। सतिगुर शब्द गुर पूरा

देवा, देव स्वामी इक अखवांयदा। आदि जुगादी अलख अभेवा, अगोचर आपणी कार कमांयदा। गुरमुखां अमृत रस देवे मेवा, वस्त अमोलक झोली पांयदा। लेखे लावे रसना जेहवा, बत्ती दन्द सिफ्त सालाहइंदा। जन्म जन्म दी लेखे लावे सेवा, साहिब सतिगुर दया कमांयदा। बख्शे धाम निहचल निहकेवा, निहकर्मी आपणा कर्म कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, आदि जुगादि वड देवी देवा, आत्मा परमात्मा आपणा मेल मिलांयदा।

✪ ३१ विसाख शहिनशाही सम्मत ८ जसबीर कौर इटारसी, निवासी दे प्रशाद कराउण ते हरि भगत दवार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

विसाख कहे मेरा समां टप्पयां, टापूआं दा चप्पा चप्पा दए गवाहीआ। मैं खेल तकां इक्को पप्पया, पतिपरमेश्वर पूरन बेपरवाहीआ। जिस दे हुक्म नाल दो जहान अंगीठा तपया, चार कुण्ट अग्न ना कोए बुझाईआ। जिस शरअ दा बूटा कपया,
१६०४ कपल मुन दा लहिणा देणा झोली पाईआ। जगत विकार हँकार कूड़ा ठप्पिआ, ठप्पा ठाकर आपणा नाम लगाईआ। दीन १६०४
२२ दुनी दी वेखे हत्या, हत्यारा हो के खेल खिलाईआ। सति धर्म दी दिसे कोए ना सतया, सति सन्तोख विच ना कोए समाईआ। २२
चार कुण्ट लोभ मोह हँकार रतया, हउमे हंगता रंग चढ़ाईआ। मैं अन्त निगाह मार के तक्कया, तख्त निवासी वेख वखाईआ। जिस लेखा पूर कराउणा मदीना मक्कया, काअब्यां पड़दा लाहीआ। उस दा नूर ना रहे छपया, ओहला वंड ना कोए वंडाईआ। दीन दुनी जिस नाम मधाणे नाल मथिआ, मथण करे लोकाईआ। सो पुरख अकाल सर्ब समरथया, अकल कलधारी आपणी कल वरताईआ। जिस कलयुग विच्चों सतिजुग चलाउणा रथिआ, रथवाही बणे धुर दा माहीआ। मेरा दरस कर के सगल वसूरा लथिआ, अग्नी तत रिहा ना राईआ। विसाख कहे मैं खिड़ खिड़ा के हस्सया, हस्स हस्स के सीस निवाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले कल रहे ना अंधेरी मस्सया, नूरी चन्द देणा चमकाईआ। तेरा इक्को होड़ा बड़ा उपर सस्सया, हँ ब्रह्म आपणा मेल मिलाईआ। जिस दी खुशी विच फिरां नस्सया, भज्जां वाहो दाहीआ। जो खेल करे अलखणा अलख्या, अलख अगोचर अगम्म अथाहीआ। जिस दे हुक्म नाल जन भगतां सगल वसूरा लथिआ, चिन्ता रोग रहे ना राईआ। आत्म परमात्म गावे जस्या, तूं मेरा मैं तेरा सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे सीस निवाईआ। विसाख कहे मैं जगत जहान गया लँघ, आपणा पन्ध मुकाईआ। सीस निवावां सूरे सरबंग, निउँ

निउँ लागां पाईआ। सो सरन लगावे अंग, अंगीकार इक अख्वाईआ। नाम निधाना चाढ़े रंग, दो जहानां उतर ना जाईआ। लेखा वेखे तारा चन्द, सूर्या चन्द सीस निवाईआ। जो भगतां करे खुशी बन्द बन्द, बन्दगी आपणा नाम दृढ़ाईआ। नेत्रहीण रहिण ना देवे अंध, अज्ञान अन्दरों दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। विसाख कहे मेरा अन्त अख़ीरी प्रविष्टा, परम पुरख सीस निवाईआ। मेरे साहिब दा इक्को होवे इष्टा, इष्ट देव स्वामी धुर दा माहीआ। जिस मेरा पूरा कीता निसचा, निहचल धाम वेख के खुशी मनाईआ। ओह लहिणा देणा पूरा करे गुरमुख गुरसिख दा, हरिजन भेव रहे ना राईआ। जो ग़रीब निमाणयां लेखा लिखदा, कोझयां कमल्यां गंढ पवाईआ। ओह रूप आदि अन्त इक दा, एकँकारा नूर इलाहीआ। जिस दा खेल नित नवित दा, दो जहानां वंड वंडाईआ। ओह लेखा जाणे वार थित दा, घड़ी पल खोज खुजाईआ। झगड़ा मेटे कूड़ क्रिया नित दा, नवित आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां लेखा जाणे अन्दर अन्तर बाहर तन विच दा, विचला भेव आप खुलाईआ।

पहली जेठ शहिनशाही सम्मत ८ हरि भगत दवार जेठूवाल ज़िला अमृतसर रात नूं

जेठ कहे तेई अवतार मिलाओ हथ्थ, बिना हथेली हथ्थ छुहाईआ। किरपा करी पुरख समरथ, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। जिस दा निरगुण सरगुण रथ, आदि जुगादि चलाईआ। ओह देवे अगम्मी वथ, अमोलक हरि वरताईआ। जिस ने कलयुग कूड़ कुड़यारा देणा मथ, मथन नाम मधाणा पाईआ। जन भगतां देवे धुर दी वथ, वस्त अमोलक आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ। विसाख कहे पैग़म्बर मिलाओ दस्त, दस्तगीर हुक्म सुणाईआ। झगड़ा मुके कीट हस्त, ऊच नीच ना कोए वखाईआ। नाम खुमारी सब ने होणा मस्त, मस्त दीवाने रूप बणाईआ। निगाह मारो उत्ते फ़र्श, ज़िमीं ख़ाक ध्यान लगाईआ। खेल तक्को वाली अर्श, अर्शे आज़म जिस दा नूर रुशनाईआ। जो रहमत रहीम रिहा बरस, मेहरवान आपणी दया कमाईआ। सो सब दा लेखा पूरा करे शर्त, शरीअत शरअ खोज खुजाईआ। निरगुण निरवैर धार आया परत, अमाम अमामा नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जेठ कहे गुरु गुरदेव मिलाओ कर, करनी करता आप दृढ़ाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्तर निरन्तर वेखो घर, गृह मन्दिर फोल फुलाईआ। सच सरोवर वेखो सर, अमृत

रस पड़दा इक उठाईआ। की दीन दुनी दे के आए वर, वारस हो के शब्द जणाईआ। की खेल करे नरायण नर, वड वडा अगम्म अथाहीआ। जिस दा दे के आए भय भउ डर, हुक्म संदेशा नाम दृढ़ाईआ। ओह वेखणहारा किला कोट हँकारी गढ़, पर्दा पर्दे विच्चों चुकाईआ। जिस झगड़ा पाया चोटी जड़, चेतन आपणी कार कमाईआ। सो मेहरवान महिबूब लेखा जाणे सीस धड़, तत्व तत भेव रहे ना राईआ। जिस दी विद्या निरअक्खर धार आए पढ़, अक्खरां नाल सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक बेपरवाहीआ। जेठ कहे विष्न ब्रह्मा शिव मार लओ झाकी, पर्दा पर्दे विच्चों उठाईआ। जिस्म इस्म तक्को ख़ाकी, तन वजूद भेव रहे ना राईआ। लहिणा देणा वेखो बाकी, जुग चौकड़ी फोल फुलाईआ। की हुक्म संदेशा देवे कमलापाती, पतिपरमेश्वर नूर इलाहीआ। बिन अक्खरां वाली पढ़ो गाथी, बिन रसना जेहवा ढोला गाईआ। सवाधान हो जाओ अज्ज दी राती, रुतड़ी रुत रुत बदलाईआ। आदि दी आदि सति दी सति वेखो पाती, की पत्रिका रही समझाईआ। जिस दा लेखा अंक रिहा विष्न ब्रह्मा शिव शिव दी छाती, छत्रधारी समझ कोए ना आईआ। जिस दा खेल सदा बहु भांती, अनक कल आपणी कल वरताईआ। ओह लेखा जाणे लोकमाती, दो जहानां पड़दा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच

१६०६ दा पर्दा आप चुकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण सुण लै जेठा, शब्दी शब्द जणाईआ। असीं सारे इक प्रभू दी साया १६०६

२२ हेठा, दुतीआ भाउ ना कोए जणाईआ। तेरे विच कलयुग क्यों होया कौड़ा रीठा, अमृत रस ना कोए भराईआ। जेठ हस्स २२

के किहा मुहम्मदा तेरा सदी चौधवीं अन्तिम ठेका, ठाकर धुर दा रिहा दृढ़ाईआ। शब्दी गोबिन्द वेख लै बेटा, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। अवतार इक्को इक दी टेका, टिक्के मस्तक ना कोए रमाईआ। परम पुरख सब दा नेता, निज नेत्र करे रुशनाईआ। जिस दा आत्म परमात्म सदा हेता, पारब्रह्म ब्रह्म मिल के वज्जदी रहे वधाईआ। ओह जुग चौकड़ी कदे ना भुल्ले चेता, अभुल्ल मालक इक अख्वाईआ। सब दा घर घर जाणे लेखा, बचया नज़र कोए ना आईआ। पर्दा लाहे देस परदेशा, देस देसांतर खोज खुजाईआ। जो आदि अन्त रहे हमेशा, जन्म मरन ना रूप बदलाईआ। सो वेखणहारा दस दशमेशा, दहि दिशा भेव चुकाईआ। भगत उधारना जिस दा पेशा, पेशीनगोईआं आपणे लेखे लाईआ। अन्तिम झगड़ा मेटे मुल्लां शेख़ां, मुसायकां वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण जेठ मार लै झाती, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। नूर तक लै कमलापाती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जो खेल करे तेरे पहले दिवस दी राती, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ।

जगत जहान तोड़ के नाती, सगला संग ना कोए बणाईआ। की हुक्म संदेशा देवे लोकमाती, कायनात की दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक नूर इलाहीआ। जेठ कहे अवतार पैग़म्बर गुरु साहिबानो मैं इक्को नाम जपदा, जगजीवण दाते सीस निवाईआ। जेहड़ा प्यासा नहीं दीन मज़्ब दी रत्त दा, मानव वंड ना कोए वंडाईआ। जो प्यारा तत्व तत दा, खोजणहारा थांउँ थाँईआ। उहदा नज़ारा निरगुण सति दा, सति सरूप नूर इलाहीआ। उस दा खेल अकथना अकथ दा, कथनी कथ ना सके राईआ। जिस दे दर्शन सगल वसूरा लथ्थदा, अग्नी अग्ग ना कोए जलाईआ। ओह मालक दिसे घट घट दा, हर घट रिहा समाईआ। जिस झगड़ा मेटणा दीन मज़्ब दी वट्ट दा, शरअ दा लेखा रहे ना राईआ। ओह कलयुग कूड़ी क्रिया जड़ां कटदा, कटाक्ष आपणा नाम रखाईआ। जिस दा शहिनशाही सम्मत अट्ठ जावे टप्पदा, टापूआं दे परे वेख वखाईआ। उस झगड़ा मेटणा मन मति दा, सतिगुर मति इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। जेठ कहे अवतार पैग़म्बर गुरु वेखो आपणीआं तांघां, चार जुग दा ध्यान लगाईआ। प्रेम लहर दीआं वेखो कांगां, तन वजूद तों बाहर ध्यान लगाईआ। जिस ने आपणी खेल दा वरतणा स्वांगा, की स्वांगी आपणी कल वखाईआ। जिस नूं समझे कोई ना पांडा,
१६०७ बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। जिस झगड़ा मेटणा आपणे नाउँ दा, नाउँ निरँकारा इक समझाईआ। हिस्सा रहिण नहीं १६०७
२२ देणा सूर गाँ दा, पशूआं खल्ल ना कोए लुहाईआ। सब नूं सुत बणाउणा जोती धार माँ दा, पिता पुरख अकाल वड्याईआ। २२
कलयुग रूप रहिण नहीं देणा काँ दा, कागों हँस आप उडाईआ। झगड़ा मेटणा बाहू बल बांह दा, हंगता गढ़ दए तुड़ाईआ। माण रहिण देणा नहीं किसे थाँ दा, निथाव्याँ होए आप सहाईआ। इक्को गृह सुहाउणा सचखण्ड कलां दा, खुर्द दा डेरा देणा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। जेठ कहे मैं अवतार पैग़म्बर गुरुओ बड़ा तता, तपदयां शांत ना कोए कराईआ। सुणो धुर दा अगम्मी पता, पतिपरमेश्वर रिहा सुणाईआ। जिस विच फ़र्क होवे ना रता, रती वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को डंका वज्जणा फताह, जो प्रभ आपणे हथ्थ वखाईआ। कलयुग रहिण नहीं देणी बहु मता, मति मतांतर देणा मुकाईआ। जो इशारा दिता नानक तपा, बग़दाद विच सुणाईआ। तिस दा लेख लिखाउणा टप्पा टप्पा, नौ सौ नड़िनवे अक्खरां नाल वड्याईआ। एह खेल हथ्थ पुरख समरथा, जो अदि अन्त आपणी कार भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी कल आप वरताईआ। जेठ कहे मेरा तन वजूद वेखो सड़दा, अग्नी तत तपाईआ। जगत जहान तक्कयो लड़दा अग्गे हो

१६०८
२२

ना कोए अटकाईआ। पहलों हिस्सा वंडावे चड़दा, फेर लहिंदी दिशा पए दुहाईआ। पहाड़ दक्खण नाल मरदा, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। एह खेल प्रभू दे घर दा, धरनी उत्ते वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर पर्दा आप उठाईआ। जेठ कहे मैं निगाह मारी विच ब्रह्मण्डां, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। मेरे साहिब दीआं अगम्मी वंडां, जिस दी समझ ना कोए समझाईआ। जिस निशान मेटणा तारा चन्दा, सूर्या चन्द सीस निवाईआ। पैग़म्बरां पूरीआं करनीआं मंगां, मुहम्मद निउँ निउँ लागे पाईआ। जिस ने लेख मुकाउणा शरअ दीआं कंधां, कन्ढ़ी बैठा वेखे धुर दा माहीआ। जिस दी सिफ्तां गाउणीआं बत्ती दन्दां, रसना जेहवा नाल मिलाईआ। उस दा खेल होणा अचंभा, चम्म दृष्टी दए बदलाईआ। सदी चौधवीं अन्तिम मेटणा पन्धा, पाँधी चार यार रोवण मारन धाहीआ। सदी बीसवीं हज़रत ईसा समां लँघ, मसीह बिन नैणां नैण तकाईआ। मूसा वेखे आपणा रंगा, अड्ड सड्ड रहे कुरलाईआ। तेई अवतार कहिण साडा पन्ध मुक गया लम्बा, अग्गे अवर ना कोए वधाईआ। नानक गोबिन्द कहे प्रभू दा खेल सब तों चंगा, चार जुग दे शास्त्र देण गवाहीआ। जिस दे हुक्म नाल होवे दंगा, दंगल वेखे जगत लोकाईआ। शब्दी शब्द खड़कणा खण्डा, खण्डा खड़ग सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। जेठ कहे सुणो बचन अवल्ला, सब नूं दयां सुणाईआ। जिस नूं कहिंदे नूर इलाही अल्ला, आलमीन बेपरवाहीआ। जो वसया सचखण्ड सच महल्ला, दरगाह साची सोभा पाईआ। उहदा लेखा जला थला, महीअल आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा नूर नुराना अगम्मी दीपक बला, जोती जाता डगमगाईआ। ओह खेल करे इक इकल्ला, अकल कलधारी आपणी कल वरताईआ। जिस ने सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर धुर दे कलमे दा बोलणा हल्ला, अलिफ़ ये वंड ना कोए वंडाईआ। सो सच सिंघासण पुरख अबिनाशण इक्को मल्ला, तख्त निवासी नज़री आईआ। जिस दा निहचल धाम अटला, महल्ल अटल करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक इक अख्वाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण जेठ ना मार आपणा दाबा, गुस्से विच जणाईआ। ज़रा तक नूर अगम्मी महिराबा, महिबूब बेपरवाहीआ। जिस दा सारयां नाल वायदा, कौल इकरार तोड़ निभाईआ। जिस दा हुक्म सदा बाकायदा, बेकाइदगी विच कदे ना आईआ। ओह होवे ना कदे अलाहिदा, वक्खरी वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दे कोलों सारयां ल्या फ़ायदा, नाम कल्मयां दीआं झोलीआं मात भराईआ। ओह कलयुग अन्तिम लैण आए जाइज़ा, जाइज़ आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जेठ कहे अवतार पैग़म्बर गुरु साहिबानो मैं की

दस्सां, दस्सण दी लोड़ रही ना राईआ। मैं बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द हस्सां, हस्स हस्स के दयां वखाईआ। निरगुण धार वेखो बिना जगत नेत्र अक्खां, लोयणां वंड ना कोए वंडाईआ। जिस नूं कहिंदे पुरख समरथा, मालक ख़ालक नूर इलाहीआ। उस दे चरण कँवलां विच ढट्ठा, कदमां धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जिस दा सब दे नाल वअदा कौल इकरार बिना अक्खरां तों लिख्या पटा, पाटल हो के रिहा समझाईआ। जिस सृष्टी नूं ज़ीरो ज़ीरो नाल करना बटा, इक दा अंक हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। जिस दा शहिनशाही सम्मत अट्ठ जांदा नट्ठा, भज्जे वाहो दाहीआ। उस ने सृष्टी नूं दो धड़ विच करना इकट्ठा, इकट्ठा आपणा हुक्म सुणाईआ। शाह सुल्तानां सीस विच पाउणा घट्टा, तख्त ताज ना कोए हंढाईआ। ज़रूर चार कुण्ट पवेगा रट्टा, रुटीन विच लेखा दए लिखाईआ। कलयुग चीथड़ पुराणा फटा, अन्तिम रोवे मारे धाहीआ। मुहम्मद अहिमद फिरे नट्ठा, सदी चौधवीं ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर हुक्म इक वरताईआ। जेठ कहे मैं कोझा कमला, कामल मुर्शद रिहा जणाईआ। जिस दीन दुनी दे तकणा अमला, इलम आलमां वेखे थांउँ थाँईंआ। जिस नूं सब ने कहिणा जट्ट यमला, यादव कृष्न दए गवाहीआ। उस महिबूब ने किसे दी
१६०६ कुक्खों नहीं जम्मणा, जम्मण वाली कोए ना माईआ। गुलशन वेखणा दीन दुनी दा चमना, चम्म दृष्टी फोल फुलाईआ। १६०६
२२ जिस दे भय विच गुरु अवतार पैग़म्बर कम्बणा, विष्न ब्रह्मा शिव सीस ना कोए उठाईआ। उस दा हुक्म दो जहानां मन्नणा, २२
मन दी मनसा ना कोए वखाईआ। जिस जो घड़या सो भन्नणा, घड़न भन्नणहार बेपरवाहीआ। कूड़ कुड़यारा अन्तिम दंडणा, डण्डावत सब दी वेख वखाईआ। निशान मेट के तारा चन्दना, चन्द नूर करे रुशनाईआ। गोबिन्द लहिणा पूरा करना पूरब दुष्ट दमना, दामन पल्लू नाम फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा खेल आप खिलाईआ। जेठ कहे उफ़ हाए, दरोही हक खुदा। सच तारीफ़ रिहा सुणाए, मालक महिबूब बेपरवाह। सदी चौधवीं मिले सज़ाए, साहिब सुल्तान रिहा दृढ़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमा। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण जेठा कुछ होर दस्स, दस्त दस्त नाल मिलाईआ। खुशीआं नाल हस्स, हस्स हस्स के दे समझाईआ। तूं किस दे होइयों वस, वास्ता किस दे नाल जुड़ाईआ। जेठ कहे मैं खुशीआं विच रिहा नस्स, भज्जां वाहो दाहीआ। जिस साहिब दा तुसां चार जुग गाया जस, सिफ्तां विच सिफ्ती ढोले जगत सुणाईआ। मैं उस दे होया वस, वास्ता इक्को नाल रखाईआ। जिस कलयुग अंधेर मेटणा मस, चन्द गोबिन्द करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। पैग़म्बर कहिण आह

ला तनज़ीमो वलज़िसता मवीज़े नाचकुसता शहिज़ीने नूरो नज़हक, आलमीने बहिज़क, उलज़ी अवज़िद, नूरे नहिविद, परवीदे परवरदिगार, गोशे नूर नुराना चमत्कार, आहला अज़ी अली अल्ला इक अख्वाईआ। मुहम्मद कहे मोहजिस्ता, ज़वी इक अल्लाह, ख़त ख़तूत कोई ना लिखदा, कलमा अगम्म दए दृढ़ा। ओह वाहिद नूर इक दा, नूर नूराना इक रुशना। जो सब दा अन्तर निरन्तर विध दा, विद्या तों बाहर बेपरवाह। जिस खेल वेखणा लहू मिझ दा, मजलस शतरूआं वाली लगा। एह खेल अगम्मी बिध दा, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप लए उठा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर वडा वड वड्याईआ। जेठ कहे अवतार पैग़म्बर गुरु सुणो हुक्म अगम्म, धुर दा दयां सुणाईआ। झगड़ा छड दयो चम्म, चम्म दृष्टी लओ बदलाईआ। इक्को धार समझ लओ ब्रह्म, पारब्रह्म नूर इलाहीआ। ना कोई हरख सोग़ ग़म, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। सारे परम पुरख दी धारों पए जम्म, आत्मा जन्मे कोए ना माईआ। सुणो हुक्म बिना सरवण कन्न, कन्ना गोबिन्द वाला दए गवाहीआ। जिस उम्मत नबी रसूलां देणा डंन, डंका शब्द करे शनवाईआ। वेखो रोवे तारा चन्न, चार यारी रोवे मारे धाहीआ। बौहड़ी नेत्र नैणहीण होए अन्न्ह, नूर ज़हूर ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर पर्दा आप चुकाईआ। जेठ कहे पैग़म्बर आवो अग्गे,
१६१० आगमन विच ताड़ी दयां वजाईआ। आपणे वेखो घर घर दीपक जगे, चराग़ाहां की रुशनाईआ। उम्मत विच फिरो भज्जे, १६१०
२२ भज्जो वाहो दाहीआ। तुहाडे कलमे विच केहड़े मुरीद बज्झे, केहड़े मुरदे कबरां विच्चों बाहर कढुाईआ। इक्को ब्यान दयो २२
सभे, हज़रत ईसा मूसा ध्यान रखाईआ। मुहम्मद तेरी सदी चौधवीं वंञे, वञ्झ मुहाणा हथ्थ ना कोए रखाईआ। सच दस्स केहड़े माढ़े ते केहड़े चंगे, कलमे दी कलमा दए सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर पड़दा आप उठाईआ। मुहम्मद कहे मेरे मालक कुल वज़ीह, कदमबोसी सीस निवाईआ। तूं आलमे आलीशान तवज़ीह, तहिज़ीब तेरी नूर इलाहीआ। तेरा दाइरा इक वसीह, वसल दे यार बेपरवाहीआ। तूं मालक हक तबी, तबीअत सब दी दे बदलाईआ। तूं नूर इलाही रब्बी, रब्बे आलमीन मालक इक अख्वाईआ। मेरी लँघदी जांदी चौधवीं सदी, हाए सदमे विच दयां दुहाईआ। दस्त तेरे अग्गे खलोता बद्धी, सजदा बिना सीस सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नजर कोए ना आईआ। खुदा कहे खुद ख़ुदी कि ज़वी, जाऊला महव, ताविस्ते नवू, ज़ाने मजिद, शाकूके नज़ा, वलहिस्ता, मुनहिजी, ज़ूए वज़ज अर्शे अज़ज़, ख़ाके तज़िक नूरे ज़हिक, ख़ालके ख़लल, खुद मालक बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच

दा हुक्म आप वरताईआ। मुहम्मद कहे हज़रत ईसा, इस्म सीस निवाईआ। ईसा कहे सुण मूसा, जिस्म जिस्म जिस्म दए दुहाईआ। परवरदिगार दा नूर इलाही ते काला सूसा, काली कमली वाला वेख वखाईआ। जिस ने खेल खिलाउणा चीना रूसा, पातालां पर्दा दए उठाईआ। की हुक्म देवे शाह अबनूसा, हज़रते बेनज़ीर की आपणी कल वरताईआ। वाहिद कलमा कलमा कायनात दा दूता, नौ खण्ड पृथ्मी भज्जे वाहो दाहीआ। जिस दा सम्मत शहिनशाही अट्ठ विच मिले सबूता, साबत बाबत आपणी आप दए कराईआ। जिस नूं झुकणे जगत दे तन वजूद कलबूता, कल्मयां तों बाहर कायम मुकायम आपणा हुक्म दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। जेठ कहे गुर अवतार पैग़म्बरो होर वेखो धमाका, धर्म धर्म नाल जणाईआ। जिस नूं कहिंदे परवरदिगार पाकी पाका, पाकीज़ा की आपणा हुक्म वरताईआ। सच पुछो उस पंचम जेठ चढ़ना राका, राकब हो के धुर दा माहीआ। जिस नूं मुहम्मद ने किहा मेरा आका, अक्ल बुद्धी तों बाहर डेरा लाईआ। उस ने दीन दुनी दा बदल देणा साका, साख्यात आपणा नूर करे रुशनाईआ। छोटीआं छोटीआं रहिण नहीं देणीआं शाखां, शनाखत विच रफ़ाकत सब दी दए बणाईआ। नाम कलमे दीआं वक्खरीआं वक्खरीआं जो चलदीआं रहीआं कलासां, अक्खर अक्खरां नाल बदलाईआ। तिस साहिब ने वेखीआं गोपीआं काहनां वालीआं रासां, मण्डपां मण्डलां आपणा खेल खिलाईआ। मंज़ल बामंज़ल कटीआं वाटां, भज्जयां वाहो दाहीआ। अन्त लेखा वेख्या सब नूं प्या घाटा, अवतार पैग़म्बर गुरु सारे आपणा लेखा रहे जणाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर मिट जाणीआं ज़ातां पातां, जगत शरअ वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप वखाईआ। जेठ कहे सारे मैनूं दयो थापी, विष्न ब्रह्मा शिव खुशी बणाईआ। क्यों मेरे विच प्रभू दे हुक्म दी ओह होण लग्गी कापी, जिस नूं चार जुग दे शास्त्र ना सकण समझाईआ। कोई ग्रन्थ शास्त्र नहीं कहि सकदा मैं किन्ने तारे पापी, मैनूं पढ़न वाले कितने पार लँघाईआ। गुरु अवतार पैग़म्बर किसे सिख दी लिखी नहीं साखी, जो सचखण्ड बैठे डेरा लाईआ। सतिगुर शब्द तों बिना ते शब्द गोबिन्द तों बिना मन्नी किसे नहीं आखी, आख़र अक्खरां तों बाहर हुक्म दिता दृढ़ाईआ। एसे करके कलयुग दे अन्तिम सब ने औंखी दस्सी घाटी, बिना परम पुरख तों घाटा पूर ना कोए कराईआ। अन्तिम अन्तिम लँघदयां लँघदयां लँघदयां सब दी आ गई वाटी, पिछला पन्ध रिहा ना राईआ। सारे अवतार पैग़म्बर गुरु हथ्थ मारो आपणी छाती, बिना तन वजूद आपणा हथ्थ रखाईआ। कलयुग अन्तिम इक्को एकँकार कमलापाती, जिस नूं पतिपरमेश्वर कहि के सारे गाईआ। ओह सदा सदा अबिनाशी, जन्म मरन विच कदे ना आईआ। जां उहदा खेल तक्कया

हो गया घनकपुर दा वासी, जिस नूं घनईया राम शाम बैठे सीस निवाईआ। फेर वेख्या उस दी जोत जोत प्रकाशी, तन वजूद विच्चों करे रुशनाईआ। पहली जेठ कहे मेरी सब ने मन्नणी आखी, धुर दे अक्खरां नाल सुणाईआ। जन भगतो भगवन ने करनी तुहाडी राखी, सिर सब दे हत्थ रखाईआ। क्यों पंचम जेठ नूं उम्मत दी बदल जाणी हयाती, पिछला जीवण पिच्छे दिता लँघाईआ। हुण पूरन जोत ते पूरन प्रकाशी, ते पूरन हर घट नज़री आईआ। किसे दा लहिणा रहिण नहीं देणा बाकी, बाकायदा सब दा लेखा देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। जेठ कहे जाग ओ जेठा पंज्या, जिस दे उत्ते पंजा निशान ना कोए लगाईआ। आह वेख ते ओह वेख सब दा वेला वंञया, वञ्झ मुहाणा हत्थ ना किसे रखाईआ। सब दा लेखा बिना किलीआं तों सचखण्ड विच टंगया, जिस नूं फड़ के वेखण कोए ना पाईआ। क्यों एह वर अवतार पैग़म्बर गुरुआं मंग्गया, प्रभ दे अग्गे ख़ाली झोलीआं डाहीआ। तेरा खेल तकणा विच वरभंडया, लोक परलोक वेखणा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पंचम जेठ कहे जेठा मेरी निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तूं बड़ा मित्र प्यारा यार, जुग जुग दा नज़री आईआ। जिस ने सद्दे तेई अवतार, विष्न ब्रह्मा शिव जोड़ जुड़ाईआ। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद खिच्च ल्यांदा कर प्यार, मुहब्बत विच मुहब्बत लई अंगड़ाईआ। दस गुर गुर जोत कर उज्यार, जोती जाता डगमगाईआ। सृष्टी दी दृष्टी कर ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। ओ दुनिया वाल्यो तुहाडा सम्बल देस होया त्यार, जिस सम्बल नूं सारे गाईआ। पंचम जेठ ते दिन सी मंगलवार, घर घर वज्जी वधाईआ। शेर सिँघ दा शेर रूप अपार, शरअ तों बाहर शहिनशाह अख्वाईआ। पूरन विच्चों पूरन होया त्यार, सो पूर रिहा सर्ब ठाईंआ। जन्म दा जन्म ते जन्म दा उधार, उदर तों बाहर दा लेखा दिता दृढ़ाईआ। नवां जामा पहन के होवे आप उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। फेर जाए जगत सागरां तों पार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे करे रुशनाईआ। सब नूं जगाउंदा जाए हिलाउंदा जाए उठाउंदा जाए गफ्लत विच्चों कराउंदा जाए बेदार, वेदी सोढी दा लेखा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ। पंचम जेठ कहे मैं आवांगा। परम पुरख दा खेल समझावांगा। शब्दी धार डंक वजावांगा। राउ रंक आप उठावांगा। दवार बंक इक वडयावांगा। जिस खेल कीता पुरी घनक, तिस दा घर इक सुहावांगा। जिस दी आशा रख के गया भगत जनक, जनक सपुत्री सीता नाल मिलावांगा। अग्गे सच बणा के बणत, सोहणा राग अलावांगा। सब दा इक्को माही ते इक्को कन्त, ख़ावंद इक्को इक समझावांगा। गढ़ तोड़ के हउमे

१६१२
२२

हंगत, हँ ब्रह्म इक दृढ़ावांगा। बोध अगाधा बण के पंडत, धुर दी सिख्या इक समझावांगा। जन भगतो तुहाडा नाता तोड़ के स्वर्ग बहिशत जन्नत, सचखण्ड दवार वसावांगा। जिथ्थे ना कोई आदि ते ना कोई अन्त, मध दा लेखा परे हटावांगा। जिस दे दर्शन नूं लोचदे सन्त, सो शब्द तुहाडे अन्तर आप वसावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठावांगा। पंचम जेठ कहे मेरे साहिब दे कोल होवे सतरंगा, सति सतिवादी दया कमाईआ। मुहम्मद संभाल ना सके तम्बा, चार यारी भज्जे वाहो दाहीआ। ईसा फिरे पैरीं नन्गा, कदम कदम नाल बदलाईआ। मूसा हैरान होवे अचंभा, की कुदरत दा मालक खेल खिलाईआ। राम कहे सीता वेख लै कलयुग कन्ढा, राम दा राम लए अंगड़ाईआ। कृष्न कहे बिना रथवाही तों शब्दी धार कराए जंगा, जगत जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। नानक कहे साहिब सूरा सरबंगा, की आपणी कल वरताईआ। गोबिन्द कहे सतिगुर शब्द फिरे विच ब्रह्मण्डां, कोटन कोटि चरणां हेठ दबाईआ। जिस ने सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जीव जहान पाईआं वंडां, हिस्से अवतार पैग़म्बर गुरुआं हथ्थ फड़ाईआ। अन्त कन्त भगवन्त परवरदिगार सांझा यार सब दा सीना करे ठंडा, आत्म परमात्म आपणी गंढ पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। जेठ कहे प्रभु पड़दा चुक्क दे, चुक्के
१६१३ जगत अंधेर। पड़दे लाह दे ओहले लुक दे, करदे आपणी मेहर। भेव खुल्ह्रा दे धुर दी तुक दे, दुतीआं रहे ना तेर मेर। १६१३
२२ लेखे मुका दे जननी कुख्ख दे, चुरासी पए फेर ना गेड़। झगड़े मुका दे भुक्ख दुःख दे, नौ खण्ड पृथ्मी आपणा गेड़ा २२
गेड़। गुर अवतार पैग़म्बर सुक्खणा सुक्खदे, कलयुग अन्तिम ना ला देर। कूड़ी क्रिया जड़ पुट्ट दे, हउमे हंगता दे नबेड़। लेखे मुका दे काम क्रोध लुट्ट दे, माया ममता ना रहे अंधेर। कौल इकरार पूरे कर दे गोबिन्द सुत दे, कलि कल्की इक अवतार। तेरे वक्त निशाने ढुक दे, अमाम अमामा परवरदिगार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, शाह पातशाह सच्ची सरकार। जेठ कहे मेरी आसा इक लोड़ीदी, लोआं पुरीआं तों बाहर जणाईआ। कल्पना मेट दे कलयुग मन दी, मनसा मूढ़ रहे ना राईआ। जोत जगा दे काया तन दी, तन वजूद होवे रुशनाईआ। धार बदल दे जीव जगत जन दी, जागरत जोत डगमगाईआ। चुग़ली निंदिआ मिटा दे कन्न दी, सरवण सुणन कोए ना पाईआ। तृष्ना कूड़ रहे ना धन दी, नाम भण्डारा इक वरताईआ। वेख खेल गोबिन्द चन्न दी, जिस नूं चन्न सितारा सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, धुर दे मालक होणा सहाईआ। पहली जेठ कहे पंचम होणा सच दिहाढ़ा, धुर दी खुशी बणाईआ। सतिगुर हथ्थीं रंग लाउणा गाढ़ा, लाल गुलाला सोभा पाईआ। प्रगट

होवे धुर दा लाड़ा, पूरन सतिगुर धुर दा माहीआ। जिस ने फिरना करबले वालीआं विच उजाड़ां, जंगलां जूहां खोज खुजाईआ। जिस दे पिच्छे लग्गणीआं धाड़ां, धाड़वी हो के भज्जे वाहो दाहीआ। बिना नबी रसूलां तों जिस ने गाउणीआं वारां, सिफ्तां तों बाहर सिफ्त सालाहीआ। जिस दा तीर कमान खण्डा खड़ग खड़कणीआं तलवारां, तरकश नाल जुड़वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। पंचम जेठ कहे मेरा दिवस होवे सुहञ्जणा, सोभावन्त आप सुहाईआ। करे खेल पुरख निरँजणा, आदि निरँजण नूर इलाहीआ। उस नूं कहिंदे दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराईआ। उस ने दुनिया दे विच फेर जम्मणा, जन्म दिन पूरन लए मिलाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा जिस दी शब्दी धार कोलों कम्बणा, काअबे पए दुहाईआ। जिस दे हुक्म नाल सब दे कढणे संमणा, हुक्म धुर दा इक सुणाईआ। भाणा जगत जहान पैणा मन्नणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा मालक वड वड्याईआ। पंचम जेठ कहे मैं चढ़ के आउणा जग, जागरत जोत करां रुशनाईआ। कलयुग वेख बपड़ा बग, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। जन भगत तकां उपर शाहरग, नौ दर दा डेरा ढाहीआ। फेर ओह तकां जिन्हां दे सीस उत्ते बद्धी पग्ग, जो परगणे आपणे विच वसाईआ। पता नहीं किस तरह चार जुग दे विछड़े लए लभ्भ, खोजे थांउँ थाँईंआ। अमृत झिरना झिरा के विच कँवल नभ, बूंद स्वांती दिते टपकाईआ। जगत द्वैत विच्चों कढ, बन्दना आपणी दिती समझाईआ। जिस ने प्रेम प्यार विच बन्न्हणे सभ, सभा मलेछां देणी समझाईआ। ओसे नूर इलाही नूं आलमीन कहिण रब्ब, रब्बे आलमीन कहि के सीस निवाईआ। उहदा मिलण दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी आपणा सबब्ब आपणी करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी वंड आप वंडाईआ। पंचम जेठ कहे ईसा दा पूरा करना वाक, हज़रत हज़रत हकीर हो के सीस निवाईआ। उस दा वक्त बदल जाणा उत्ते कलाक, कलाक घड़ी दए गवाहीआ। क्यों निरगुण दी निरगुण नाल होणी टाक, हुक्म हुक्म नाल टकराईआ। कलमे अग्गे कलमा करे ना कोए वाक, भज्जे ना वाहो दाहीआ। सलीब पाउण लग्गया हज़रत गया सी आख, बिना अक्खरां आख सुणाईआ। मेरा मालक ते पिता आवे आप, जिस नूं बाप कहि के सीस निवाईआ। ओह मुरीदां मुशर्दां सब दा खोल्हे ताक, तकवा आपणा इक समझाईआ। उहदे कोल बिना हरफ़ां तों किताब, जेहड़ी कुतबख़ान्यां विच ना कदे टिकाईआ। जिस वेले आवे विच योरप उस दा पहला खोल्हे बाब, जिस बाब विच बाबल दा भेव दए चुकाईआ। उथे ना कोई सवाल ना कोई जवाब, जवाबतल्बी विच सारे सीस निवाईआ। बिना सीस तों होए अदाब, बिना कलमे तों कलमा

रिहा सुणाईआ। पैरस विच उस नूं दए एजाज़, जो अज़ीज़ बण के तमीज़ विच ईसा दी सेवा पिच्छे गया कमाईआ। नाले दस्त मिलावे ते अन्दरों बदल देवे मज़ाज़, एह आपणा खेल खिलाईआ। पहलों मुख ते रखे नकाब, फेर पर्दा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। जेठ कहे मैं करदा रिहा उडीकां, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। रखदा रिहा उम्मीदां, तृष्ना जगत वाली गंवाईआ। पैग़म्बरां दीआं तकदा रिहा ईदां, ईदलफितर खोज खुजाईआ। वेखदा रिहा की वसीहतां, की वसल विच असल गए समझाईआ। तकदा रिहा नसीहतां, तीस बतीसा हदीसा की पढ़ाईआ। लभ्भदा रिहा असलीअतां, भज्जया वाहो दाहीआ। जिस वेले सदी चौधवीं आई सब दीआं अन्दरों वेखीआं तबीअतां, तबा बदली कूड़ लोकाईआ। मैनूं रो के किहा कुरान मजीदा, दरोही तेरा नाम खुदाईआ। तेरा दरस होवे ना किसे दीदा, दीदा दानिस्ता दर्शन कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आपणे हथ्थ रखाईआ। हुक्म कहे मैं बड़ा वडा, सतिगुर शब्द हुक्म वड्याईआ। मेरा निशान पुरख अकाल गड्डा, गॉड गाईड हो के सानूं दए वखाईआ। मेरा पुरीआं लोआं विच नहीं कोई अड्डा, मातलोक वंड ना कोए वंडाईआ। मैं किसे दीन मज़्ब विच नहीं बध्धा, शरअ ज़ंजीर ना कोए रखाईआ। नूरी धार हो के निंरकार हो के वसा हर जग्हा, घट घट अन्दर आपणा डेरा लाईआ। सृष्टी दी दृष्टी वेखां मन वासना होई कग्गा, काग हँस ना कोए बणाईआ। धर्म दी दिसे कोए ना सभा, सभा मलेछां बैठी आसण लाईआ। पिता पूत करे दग़ा, गुर चेला करे लड़ाईआ। घर घर लग्गी अग्गा, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। मध विकार दा लैंदे मज़ा, आत्म रस ना कोए चखाईआ। कलयुग अन्तिम सब दे सिर ते कूकदी कज़ा, काज़ी मुला शेख़ मुसायक रोवण मारन धाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सच दी करनी कार कमावेगा। दीन दयाल दया कमावेगा। पुरख अकाल खेल खिलावेगा। सतिगुर गोबिन्द पड़दा लाहवेगा। जोती जाता डगमगावेगा। लोकमाती वेस वटावेगा। कलयुग वेख अंधेरी राती, नूरी नूर चन्द चमकावेगा। सब दा लहिणा देणा देवे बाकी, पिछला लेखा झोली पावेगा। अग्गे दस्स के साखी, साचा नाम इक दृढ़ावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रंग इक रंगावेगा। साचा रंग इक्को रंगेगा, रंगणहार गोपाला। पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां लँघेगा, खेले खेल दो जहानां। वस्त अमोलक नाम वंडेगा, परम पुरख कृपाला। कलयुग कूड़ कुड़यार दंडेगा, दीनां बंधप दीन दयाला। जन भगतां जन्म जन्म दीआं टुट्टीआं गंढेगा, घर घर होए आप रखवाला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर

दा हरि, धुर मालक दीन दयाला। दीन दयाल साहिब सुख सागर, हरि करता नूर अलाह। जन भगतां निर्मल कर्म करे उजागर, कोट जन्म दे पूरब बख्श गुनाह। सति सच बणाए सौदागर, वणज इक्को इक करा। भाग लगाए काया गागर, साढे तिन्न हथ्थ कर रुशना। दर आयां देवे आदर, सिर आपणा हथ्थ टिका। जो संदेशा दे के गया तेग़ बहादर, दिल्ली दवारे कर दुआ। पुरख अकाला गुरमुखां बणे चिट्टी चादर, कलयुग काला सूसा दए लुहा। मेहरवान होवे करता कादर, कुदरत कादर मेहरवां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरिजन बख्शे अगम्मा नां। हरि का नाउँ हरि निरँकार, नर नरायण दृढ़ाईआ। सो पुरख निरँजण पावे सार, हरि पुरख निरँजण होए सहाईआ। एकँकारा दए अधार, आदि निरँजण नूर रुशनाईआ। अबिनाशी करता करे प्यार, श्री भगवान गोद उठाईआ। पारब्रह्म लए संभाल, ब्रह्म आपणा जोड़ जुड़ाईआ। सचखण्ड सुहाए बंक दवार, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन निमस्कार, निउँ निउँ लागण पाईआ। देवत सुर धूढ़ी मंगण छार, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक वड्याईआ। चार जुग दे शास्त्र सिफ्त रहे उच्चार, महिमा अगम्म अथाहीआ। सो साहिब स्वामी अन्तरयामी जन भगतां लहिणा देणा दए उतार, पूरब कर्ज़ा रहे ना राईआ। सच प्यार दा बख्श भण्डार, अतोट अतुट आप वरताईआ। पहली जेठ कहे जन भगतो मेरी नमो नमो निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। मैं सब दा ख़िदमतगार, जो ख़ादम हो के प्रभ दे लागण पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा धर्म इक अख्वाईआ। पहली जेठ कहे मेरी डण्डावत सब नूं बन्दना, बन्दगी वाल्यो सीस निवाईआ। लख चुरासी विच्चों पार लँघणा, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज दा डेरा ढाहीआ। बिना पुरख अकाल तों किसे कोलों कुछ नहीं मंगणा, देवणहार इक अख्वाईआ। जो दिने जागदयां रातीं सुत्तयां चाढ़े रंगणा, सुपन सखोपत जागत तुरीआ आपणा रंग रंगाईआ। उथे पोह ना सके पंजणा, पंचम लेखा रहे ना राईआ। जगत सरीर जिज्ञासूआं वांग जगत विच जम्मणा, तत्तां नाल तत मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर पर्दा आप चुकाईआ। पहली जेठ कहे जन भगतो प्रभ दे नाल कर लओ रिश्ता, नाता इक्को इक जुड़ाईआ। संदेशा देवे जबराईल फ़रिश्ता, इजराईल मेकाईल इसराफ़ील निउँ निउँ सीस निवाईआ। जेहड़ा आदि जुगादी सब दे लेखे लिखदा, जन्म कर्म दा डेरा ढाहीआ। जिस ने इष्ट आपणा रखया इक दा, एकँकार वाहिद नूर इलाहीआ। तुसां रूप धरना साचे सिख दा, जो गोबिन्द सिख्या गया समझाईआ। बिना पुरख अकाल तों झगड़ा मिटदा नहीं नित दा, आवण जावण पन्ध ना कोए मुकाईआ। तुसां दर्शन करना जो प्यारा साचे हित दा, हितकारी हो के मेल मिलाईआ। बिन सतिगुर

शब्द मनुआ किसे ना टिकदा, मस्तक टिक्के कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल करे आदि जुगादी पित दा, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ।

ग्रन्थ कहे मेरा नम्बर अख़ीरी बाई, बाईबल दा बाईवां हिस्सा दए गवाहीआ। मुहम्मद दी कुरान दए दुहाई, हदीस इकीसवीं राह तकाईआ। राम बांह रिहा उठाई, पंचबटी आपणा आसण लाईआ। कृष्न वागां रिहा भवाई, दीन दुनी रथ ना संग रखाईआ। नानक कहि के गया चाँईं चाँईं, धुर संदेशा इक अलाहीआ। गोबिन्द ने बूटा पुटया काही, कायनात दिती हिलाईआ। सतिगुर शब्द ने किहा सब दी अन्त दुहाई, दो जहान सीस ना कोए उठाईआ। जिस वेले आवे मालक ख़ालक धुर दा माही, महिबूब नूर इलाहीआ। जन भगतां तों झल्ली ना जाए जुदाई, जुदा जुज़ वंड ना कोए वंडाईआ। जिस नूं पैग़म्बरां किहा ओह नूर नुराना नूर इलाही, अल्ला पाक रसूल आपणा खेल खिलाईआ। जिस दी सब ने हाज़र हो के देणी गवाही, गवाह शुद आपणा आप बणाईआ। सतिगुर दी धार ईसा दी कलाक बदल जाणी उत्ते कलाई, कला जगत विच वरताईआ। शरअ दी रहिणी नहीं शहिनशाही, शमां सब दी गुल्ल दए कराईआ। जो आशा रखी सी मुहम्मद
१६१७
२२
ने जिस वेले अली नूं बणाया जवाई, हथ्थ गर्दन पिच्छे टिकाईआ। पिच्छे कदम चलया सी ढाई, ढईआ गोबिन्द वाला वेख वखाईआ। फेर उम्मत तकी जेहड़ी बण गई रूप कसाई, कसम खा के किस्म आपणी गए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी वंड आप वंडाईआ। ग्रन्थ कहे असीं बाई सरसे दे विच डुब्बे, गोबिन्द दिता टिकाईआ। साह लैंदे सा उभे उभे, हौक्यां विच सुणाईआ। केहड़ी खुबड़ी दे विच खुब्बे, बाहर सके ना कोए कढ्ढाईआ। झट शब्द गोबिन्द ने हुक्म दिते गुज्झे, संदेसा अगम्म अथाहीआ। तुहानूं माण मिलणा कलयुग अन्तिम चौथे जुगे, जुगां दा मालक होए सहाईआ। साडे अन्तिम पैंडे मुके, अगला पन्ध रिहा ना राईआ। अग्गे वास्ते प्रभू दे नाम दे प्रभू ने लैण नहीं देणे भुग्गे, हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। हुण इक्को शब्द निशाना उडे, उगण आथण सोभा पाईआ। सतिगुर दे रूप कदी नहीं हुन्दे बुढ्ढे, सतिगुर शब्द सदा वज्जदी रहे वधाईआ। तनां वाले वजूदां वाले अन्तिम लग जांदे जगत वाली खुड्डे, चुरासी विच्चों बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दी रमज़ समझ विच्चों ना बुज्झे, अक्ल बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ।

१६१७
२२

✪ ५ जेठ शहिनशाही सम्मत ८ हरि भगत दवार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर शब्द पाया वास्ता, जोत जोत जोत सीस निवाईआ। तेरा निरगुण सरगुण रास्ता, रस्ता मार्ग अगम्म अथाहीआ। खेल वेखणा आहिस्ता आहिस्ता, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। किसे होण ना देवीं निरास्ता, सीस जगदीश हथ्थ टिकाईआ। खेल करना आपणे मण्डल रास दा, रहिबर हो के वेख वखाईआ। भेव चुकाउणा हड्ड मास नाड़ी पवण स्वास दा, साह साह पर्दा आप उठाईआ। साहिब स्वामी सच आखदा, सति तेरी वड्याईआ। तेरा खेल अलखणा अलाख दा, अलख अगोचर लख्या ना जाईआ। तूं नूर नुराना इक्को जापदा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। मैं सब दे लेखे वाचदा, सच मालक बेपरवाहीआ। मेरा लहिणा याद कर लै भविक्खत वाक् दा, वाकिफ़कार हो के दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा इक्को तरला, मिन्नत विच सीस निवाईआ। जुग चौकड़ी इक्को तैनूं वरना, दूजा संग ना कोए बणाईआ। मैं आदि जुगादि कदे नहीं मरना, जीवण मरन विच कदे ना आईआ। मैं अक्खरां वाला नाम कदे नहीं पढ़ना, निष्अक्खर देणा समझाईआ। मेरा भेव रहे ना चोटी जड़ना, जड़ चेतन संग ना कोए बणाईआ। जलधार वहिण नहीं हड़ना, समुंद सागर ना कोए डुबाईआ। मैनूं सच दस्स की खेल जुग जुग करना, करनी करते कार भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ मैं दस्सां साचा हित, हितकारी हो के सीस निवाईआ। तेरा खेल वेखां नित, नित नित तेरा संग बणाईआ। जिस कारन आएं लोकमात नवित, नर नरायण फेरा पाईआ। किस तन वजूद वसें चित, माटी ख़ाक सोभा पाईआ। मेरे साहिब परमेश्वर पित, पड़दा ओहला देणा उठाईआ। की लेखा दएं लिख, अक्खर अक्खरां नाल मिलाईआ। की सिख्या देवें सिख, साख्यात समझाईआ। कि मालक होवें इक, एकँकार अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। पुरख अकाल कहे सुण शब्दी सुत दुलार, दूले दयां जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बणना सेवादार, लख चुरासी संग बणाईआ। फेर खेल करां अपार, अपरम्पर हो के आप कराईआ। पंजां तत्तां दयां आधार, मानस ज़ाती खोज खुजाईआ। जोती नूर कर उज्यार, शब्दी शब्द डंक वजाईआ। रूप धरां विच संसार, आप आपणा वेस वटाईआ। तेई तत्तां वाले लै अवतार, आपणी कार भुगताईआ। संदेसा देवां धुर दी धार, धुर दा हुक्म इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। पुरख अकाल कहे पंजां तत्तां देवां माण, तन वजूद वड्याईआ। शब्दी शब्द दे धुंनकान,

अगम्म आवाज़ सुणाईआ। रस अमृत पीण खाण, बख्शिश करां चाँईं चाँईंआ। सुत दुलारे तेरा संग बणावां महान, सगला संग वखाईआ। अवतर रूप हो विच जहान, भज्जां वाहो दाहीआ। तरकश फड़ां कमान, रथां रथ भवाईआ। जुग जुग खेल महान, आपणे हथ्थ रखाईआ। तत्तां तत्व दयां दान, नूर नूर रुशनाईआ। पैग़म्बरां कर इलहाम, आलमीन पड़दा इक चुकाईआ। कलमा दस्स कलाम, कायनात सुणाईआ। सारे करन प्रणाम, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। पुरख अकाल खुशी नाल प्या हस्स, सतिगुर शब्द जणाईआ। फिर तन वजूद जामे धारां दस, गुर गुर लोकमात वड्याईआ। अमृत बख्शां रस, निजर इक झिराईआ। आपणे करां वस, सिर सिर हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। पुरख अकाल कहे जुग जुग अवतार पैग़म्बर रूप धरां, तत तत वड्याईआ। ना जन्मां ना मरां, चुरासी वंड ना कोए वंडाईआ। साची करनी कार करां, करके दयां वखाईआ। नर नरायण हो के वरां, आपणा मेल मिलाईआ। अगला भेव दस्सां ज़रा, ज़ाहर ज़हूर रुशनाईआ। तन वजूद जगत बणावां शरअ, शरीअत संग रखाईआ।
१६१६ इक्को हुक्म देवां खरा, ख़ालस आप दृढ़ाईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतार पैग़म्बर हो के तत्तां विच वड़ां, आपणा आसण १६१६
२२ लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति सच सच सुणाईआ। पुरख अकाल २२
कहे सतिगुर शब्द जिस वेले अवतार पैग़म्बर गुरुआं बीत्या समां, समाप्त पिछली खेल कराईआ। अगला हुक्म दस्सणा नवां, नर निरँकार हो के आप दृढ़ाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां फिरां विच चवां, दो जहानां भज्जां वाहो दाहीआ। सच दवारे साचे रहवां, सच सिंघासण डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरे अन्दर उपज्या इक तराना, तुरीआ तों बाहर जणाईआ। पुरख अकाल पहरे बाना, जुग जुग वेस वटाईआ। आह कलमा दस्से कलामा, कायनात पढ़ाईआ। रूप धरे अमामा, नूर नुराना नूर इलाहीआ। वेस वटाए धुर दा कान्हा, घनईया सीस झुकाईआ। जिस दा वज्जे इक दमामा, गोबिन्द रिहा सुणाईआ। ओह लेखा वेखो दो जहानां, चारों कुण्ट फोल फुलाईआ। कलयुग अन्तिम पहरे बाणा, बाण अणयाला तीर उठाईआ। शरीअत विच ना होए गुलामा, बन्धन बंध ना कोए बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर वडा वड वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभू तेरा खेल की अखीरी, आख़र दे जणाईआ। चार जुग दी चलणी पीढ़ी, भज्जणी वाहो दाहीआ। तूं मालक ख़ालक बेनज़ीरी, बेनजीर बेपरवाहीआ। कुछ लेखा दस्स तहरीरी, तहरीर विच समझाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। पुरख अकाल किहा सुण सतिगुर शब्द मेरे दूत, दुतीआ भेव चुकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं तों बाद पंज तत धरां कलबूत, काया इक वड्याईआ। दरोही फेर के चारे कूट, कुण्टां दयां हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। पुरख अकाल किहा मैं वजावां इक डंक, कलयुग अन्त अन्त सुणाईआ। किसे रहिण ना देवा शंक, संसा आप मिटाईआ। सतिगुर शब्द याद रखीं मेरा खेल होणा विच पुरी घनक, अनक कल आपणी कार भुगताईआ। पंचम जेठ रहे ना शंक, संसा दूर कराईआ। उन्नी सौ अठताली बिक्रमी होवे अंक, अंकड़यां नाल गवाहीआ। जगत बणाउणी बणत, बसन बनवारी आपणा भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर पर्दा आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द किहा की खेल करें विच शरीर, सति सच दे जणाईआ। तूं मालक पीरन पीर, बेपरवाह नूर इलाहीआ। किस बिध देवें धीर, धरनी धवल धीर धराईआ। किस बिध बदलें चीर, तन वजूद वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पुरख अकाल कहे सुण शब्द हुक्म अधारी, हुक्म दयां जणाईआ। जुग चौकड़ी खेल अपारी, निरगुण सरगुण तेरी धार चलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर खेल होवे न्यारी, अवतार पैग़म्बर गुरु तेरा संग बणाईआ। नाम कलमा तन जाण उच्चारी, सिफ्तां नाल वड्याईआ। फिर मंगण मंग बण भिखारी, दर ठांडे सीस झुकाईआ। किरपा कर सच्ची सरकारी, शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पुरख अकाल कहे सतिगुर शब्द जगत रहिणा नहीं कोई तन, गुर अवतार पैग़म्बर नज़र कोए ना आईआ। जो घड़या सो देवां भन्न, भन्नणहार आप अख्वाईआ। पंज जेठ घर ताबो चढ़ना चन्न, जवंद सिँघ रुशनाईआ। फेर खेल करना जिस नूं समझे कोए ना मन, बुद्धी भेव कोए ना पाईआ। एह माया त्रैगुण लेखा मुकाउणा माटी चम्म, चम्म दृष्टी दृष्ट बदलाईआ। तन वजूद भाण्डा देणा भन्न, लोकमात रहिण ना पाईआ। नूरी जोत जोत दा चन्न, चन्न चन्न करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभू जे तन माटी भाण्डा दिता फोड़, वजूद रिहा ना राईआ। फिर किधर जाएं दौड़, पड़दा देणा चुकाईआ। तैनूं तक्कीए नाल ग़ौर, गहर गवर वेख वखाईआ। पुरख अकाल किहा मेरा खेल अवर का और, अवर दयां जणाईआ। तन वजूद झुल्ले कोए ना चौर, चँवर ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप प्रगटाईआ।

सतिगुर शब्द कहे प्रभ जिस वेले रिहा ना भाण्डा कच्चा, तन नज़र कोए ना आईआ। कुछ अगला दस्स पता, अवतार पैग़म्बर गुर सारे बैठे राह तकाईआ। भेव खोल्ह दे रता, रत्न अमोलक हीरे आप उपजाईआ। साची सतिगुर वाली दे मता, कूड़ मति रहे ना राईआ। पुरख अकाल खिड़ खिड़ा के हस्सा, खुशीआं विच नचाईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम अंधेरी होई मस्सा, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। उस वेले खेल वेखीं बिना अक्खां, शब्दी शब्द शब्द समझाईआ। जिस दीआं अवतार पैग़म्बरां गुरुआं पाईआ दस्सां, ओह पड़दा दयां चुकाईआ। मैं सम्बल खेड़े वसां, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर हुक्म इक सुणाईआ। पुरख अकाल कहे मैं दस्सां खेल अपारा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों बाहर जणाईआ। तूं शब्दी सुत दुलारा, दूल्हा इक अख्वाईआ। मैं आपणे रंग रवां निरँकारा, जुग जुग आपणी कार भुगताईआ। सम्बल नगर महल्ल उसारां, सोहणी बणत बणाईआ। जिस दीआं जगत दिसण ना चार दीवारा, छप्पर छन्न ना कोए सुहाईआ। पथ्थर इट्ट ना लावां गारा, दूजी वंड ना कोए रखाईआ। साढे तिन्न हथ्थ करां त्यारा, त्रैभवण धनी हो के वेख वखाईआ। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश कर प्यारा, प्रीतम हो के दयां वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभू तेरा सम्बल केहड़ा देस, सुहञ्जणा कवण जणाईआ। पुरख अकाल किहा अगम्मा लेख, लिखण विच ना कोए समझाईआ। जिस वेले आवां जोती धर के भेस, अवल्लड़ा भेख वटाईआ। दीन दुनी लवां वेख, चारों कुण्ट पड़दा लाहीआ। आपणा धाम टिकाणा बणावां एक, एकँकार हो के सोभा पाईआ। जिस दी आशा रख के गया गुर तेग़ बहादर टेक, टिक्के मस्तक ख़ाक रमाईआ। उस दा लेखा पूरा करना हेत, हितकारी हो के मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। पुरख अकाल किहा मेरा खेल होणा अपार, सतिगुर शब्द दयां समझाईआ। जो आसा रख के गए तेई अवतार, दूआ तीआ नाल मिलाईआ। सो सम्बल गृह करां त्यार, आप आपणी वंड वंडाईआ। नवां महल्ल दयां उसार, घाड़त घड़न आप घड़ाईआ। जिस वेले तेई साल जोबन अवस्था होवे सिँघ शेर उज्यार, आपणा बल प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर आपणा रंग रंगाईआ। पुरख अकाल किहा मेरा खेल अगम्मा ख़ास, ख़ालस दयां जणाईआ। सतिगुर शब्द करना विश्वास, विशा अवर ना कोए दृढ़ाईआ। अन्त शेर सिँघ दा सरीर होणा नास, लोकमात रहिण ना पाईआ। मेरा नूर होवे प्रकाश, नूर नुराना डगमगाईआ। जिस नूं झुकणे पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर सीस झुकाईआ। उस दा भेत

१६२१
२२

खोल्हां ख़ास, ख़ालस आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप खुल्हाईआ। पुरख अकाल किहा सतिगुर शब्द कर लै ग़ौर, ध्यान विच ध्यान रखाईआ। मेरा खेल होणा अवर का और, औरत मर्द समझे कोए ना राईआ। जिस दीन दुनी दा बदलणा दौर, दोहरी आपणी कल प्रगटाईआ। शब्दी धार जोत दा मोड़, अगम्म आपणा रंग रंगाईआ। जिस नूं कहिंदे ब्राह्मण गौड़, अमाम अमामा सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। पुरख अकाल कहे सतिगुर शब्द ओह वेख लै आपणा पत्र, पतिरका दयां दृढ़ाईआ। ब्रिकमी तक लै उन्नी सौ इकत्तर, सत्त इक मेल मिलाईआ। पंचम जेठ होवे नछत्र, गृह मिले वड्याईआ। सच तन होवे अगम्मा रत्न, जिस दी कीमत ना कोए चुकाईआ। धरनी उत्ते चलाउणा रथन, रथवाही आप अख्वाईआ। जिस सब नूं करना मथन, मिथ्या दिसे लोकाईआ। झगड़ा मेटणा रटन, रट्टा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। पुरख अकाल कहे ब्रिकमी उन्नी सौ इकत्तर तक्क, उन्नी सौ चौदां, सच्ची वज्जी वधाईआ। तन वजूद सरीर आया गाउंदा, तूं मेरा मैं तेरा राग अल्हाईआ। जिस नाम वड्याआ आपणी माँ दा, बिशन कौर जणेंदी माईआ। पाल सिँघ दी गोद सुहाउंदा, सोहणा रंग रंगाईआ।
१६२२ हरि कौर दी यद नूं भाग लगाउंदा, सिँघ हीरा नाल तराईआ। आत्म सिँघ सुन्दर सिँघ नाल वडयाउंदा, जीवण सिँघ नाल १६२२
२२ तराईआ। बंतो तेजो नूर रुशनाउँदा, सोहणा खेल खिलाईआ। नौ वार अक्खां मीट के बन्द कराउंदा, नौ वार फेर खुल्हाईआ। २२
नौ वार रो के हाल सुणाउंदा, साहिब तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं तक्कया जगत शरीर, तन माटी वेख वखाईआ। जिस नूं डण्डावत कीती कबीर, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पैग़म्बरां किहा दस्तगीर, दस्त दस्त नाल रखाईआ। अवतार कहिण बेनज़ीर, तन वजूद दिता बणाईआ। गुरुआं किहा अमृत ठांडा सीर, झिरना अगम्म झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर वड्डा वड वड्याईआ। सतिगुर शब्द किहा जन्मया पूत पंज तत, घर वज्जी वधाईआ। झगड़ा मिटया मास रत, कूड़ कुड़यारा डेरा ढाहीआ। अन्तर उपजी धर्म मति, नाम सति जणाईआ। तेरा मालक परमेश्वर पति, परम पुरख अख्वाईआ। जिस अन्तर सद जाणा वस, गृह आपणा डेरा लाईआ। मैं खुशी मनाउणी हस्स हस्स, खुशी नाल हाल सुणाईआ। घर दयां पूरन तेरा नाम लैणा रख, पूरन जोत विच समाईआ। सतिगुर शब्द ना होवे वक्ख, सम्बल सोभा पाईआ। जिस दा इक्को होणा हट्ट, हटवाणा इक अख्वाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर आउण नट्ठ, भज्जण वाहो दाहीआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। पंचम जेठ कहे मैं तक्कया तक्कया जगत सुत , जिस नूं जगत दए वधाईआ। झट संदेसा दिता अबिनाशी अचुत, चेतन दिता कराईआ। ओह वेख तन सरीरां पैंडा रिहा मुक, तत्तां वाला सतिगुरु नज़र किते ना आईआ। शब्दी धार हो के जाणा उठ, नूर नुराना डगमगाईआ। साल उनत्ती रहिणा चुप्प, दो नौ दा लेखा देणा समझाईआ। जिस वेले कलयुग होए अंधेरा घुप, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। शेर सिंघ दा सरीर जाणा छुप, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। जोती नूर उजाला हो के जाणा उठ, नूर नूर करे रुशनाईआ। सम्बल जाणा तुट्ट, घर आपणे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दी करनी कार कमाईआ। पंचम जेठ कहे मैं तक्कया खेल महाना, प्रभ सहिज दिता वखाईआ। पूरन सिंघ जन्मया जिस दा पूरन ब्रह्म निशाना, पूरन वेखे थांउँ थाँईंआ। पाल सिंघ छट्टा दिता दाणा दाणा, चारों कुण्ट दिता वखाईआ। मंगलवार सी गाया गाणा, खुशीआं नाल सुणाईआ। नशा चढ़या जगत जहाना, जगत जगत विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप सुणाईआ।
१६२३ पंचम जेठ कहे मैं होया हक्का बक्का, हैरानी विच जणाईआ। मैनूं अवतारां संदेशा दिता पक्का, सहिज नाल सुणाईआ। १६२३
२२ पैग़म्बरां किहा हकीकत हका, हक हक दृढ़ाईआ। गुरुआं किहा फ़र्क ना रता, भेव अभेद दिता खुल्हाईआ। एह सम्बल देस सच्चा, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे वधाईआ। जिथ्थे पुरख अकाल आवे नस्सा, भज्जे वाहो दाहीआ। कलयुग रैण अंधेरी मेटे मस्सा, नूरी चन्द चन्द चमकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मारीआं कच्छां, नच्चे टप्पे कुद्दे चाँईं चाँईंआ। कलयुग कूड़े पै गईआं गशां, नेत्र रोवे मारे धाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ। पंचम जेठ कहे मैं तक्कया चोरी चोरी, चुराहिआं विच ध्यान लगाईआ। की खेल करे जो हर घट अन्दर घोरी, घोर अंधेरे वेख वखाईआ। जिस दी निरगुण धार डोरी, डोरी गंढ पवाईआ। ओह बण के बांका शौहरी, शहिनशाह आपणा खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ। पंचम जेठ कहे नन्हे बाल नूं आई सुरती, पूरन पूरन रूप समाईआ। जगत जिज्ञासूआं दिती गुढ़ती, आपणा सगन बणाईआ। जिस दी अन्तर लिव धुर दी, धुर सके ना कोए तुड़ाईआ। उन आसा पूरी कीती अनन्द पुर दी, पुरीआं लोआं तों बाहर डेरा लाईआ। जिथ्थे शब्द जोत जुड़दी, उस धाम दिती वड्याईआ। जिस पूरन दी लोहड़ी वंडी सी गुड़ दी, ओह गुरमुखां नूं मिठ्ठा रस खवाईआ। जिस दी डली कदे नहीं खुरदी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा

हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ बड़ा कानूनी, जिस दी समझ किसे ना पाईआ। उस ने पूरन सिँघ दा पाल सिँघ तों नाँ धराया नूनी, जिस नून नून विच निरगुण निरँकार डेरा लाईआ। जिस दी आयू इक दो दो तों दूणी, दोहरी खेल खिलाईआ। जिस ने दीन दुनी विच बदल दिती कूणी, काया कुरह वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा आपणा खेल वखाईआ। पंचम जेठ कहे मैं वेख्या साढे तिन्न हथ्थ दा मुनारा, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जिस नूं घड़या आप निरँकारा, बाडी अवर ना कोए वखाईआ। जगत जगत दा बणा मुनारा, तत तत नाल चमकाईआ। खेल दस्सदा रिहा अगम्म अपारा, अलख अगोचर आपणी कार भुगताईआ। जिस नूं कहिणा सब ने साचा मीत प्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर वडा वड वड्याईआ। पंचम जेठ कहे मैं की दस्सां हाल मुरीदां, सिफ्त ना कोए सालाहीआ। जिस वेले बाल दा तक्कया दीदा, नेत्र नैणा दर्शन पाईआ। मैं समझया खेल कोई पेचीदा, पहचान सके कोए ना राईआ। जिस पैग़म्बरां दीआं पूरीआं करनीआं ईदां, आदत इबादत वेखे थांउँ थाँईंआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं तकणीआं वलदीअतां, पड़दा उहदा आप उठाईआ। अग्गे सच देणीआं नसीहतां, हुक्म सच सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। जेठ कहे मैं रिहा ताक, आपणा ध्यान लगाईआ। मैनूं सब दे याद भविक्ख्त पिछले वाक, वाक्फ हो के दयां सुणाईआ। जिस वेले ईसा ने सति सति दा तक्कया कलाक, घड़ी घड़ी नाल मिलाईआ। झट संदेशा दिता आख, धुर दा हुक्म जणाईआ। वसले वज़ीह आउणा मेरा बाप, मेहरवान नूर इलाहीआ। दीन दुनी बदले हालात, हालत वेखे ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं वेख्या खेल संसारी, जगत ध्यान लगाईआ। पूरन काया लग्गे प्यारी, वड्डे छोटे वेख वखाईआ। संसार दी रीती जगत दी धारी, जगत नाल समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे जिस वेले बाला होया हुश्यार आपणी लई अंगड़ाईआ। कोई समझे ना जीव संसार, समझ किसे ना पाईआ। किस दा घर किस दा घर बार, मालक कवण अख्वाईआ। किस दा मन्दिर किस कीता त्यार, कवण दीप जोत करे रुशनाईआ। कवण सिंघासण आसण लाए सच्ची सरकार, सोभावन्त सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं सति सति सुणाउंदा, सच सच जणाईआ। पूरन सिँघ निक्का बाला माता पिता खिडाउणयां नाल वरचाउंदा, खिडौणे हथ्थां विच फड़ाईआ। कदी जगत

१६२४
२२

१६२४
२२

चूसणी मुख टिकाउंदा, रस जगत वाला चुसाईआ। कदी छणकणा हथ्थ छणकाउंदा, डंका दो जहान वजाईआ। कदे सच प्याला हथ्थ उठाउंदा, अमृत जाम भराईआ। कद डौरु इक वजाउंदा, जन भगतां सद्दा देवे थांउँ थाँईंआ। कदे जगत भम्बीरी वांग भुआउंदा, चारों कुण्ट हिलाईआ। कदे शब्दी गुरज हथ्थ उठाउंदा, विष्न ब्रह्मा शिव डराईआ। कदे धरती मुट्ठी विच दबाउंदा, आपणी कल वरताईआ। कदे देवी देवतिआं खुशी विच जणाउंदा, तूं ही तूं ही राग अलाहीआ। कदी मन के मणके सर्ब भुआउंदा, मणका मणके नाल ढुकराईआ। कदे जगत जहान लड़ाउंदा, सोहणीआं टक्करां दए टकराईआ। कदे दीन दुनी भुक्खी तड़फाउंदा, ख़ाली भण्डारे ना कोए भराईआ। कदे मध दे जाम प्याउंदा, प्याले असुरां हथ्थ फड़ाईआ। कदे जल पाणी बिना तड़फाउंदा, आब हथ्थ किसे ना आईआ। कदे जगत वहिण वहाउंदा, चाह काफ़ीआं नाल रुढ़ाईआ। कदे आपणा स्वांग वरताउंदा, निरगुण सरगुण आपणी अदला बदली विच रंग रंगाईआ। कदे इक तों दो दो तों इक आप आपणा विच छुपाउंदा, छुपया नज़र किसे ना आईआ। कदे मानव मानस मानुख मनमति विच तड़फाउंदा, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। पंचम जेठ कहे मैं तक्कया इक्को साथी, जो सच्चा नज़री आईआ। जिस लेखा पूरा करना ऐराप्त हाथी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सब दा लहिणा देणा पूरा करे बाकी, ख़ाली भण्डारे दए भराईआ। जिस दी वक्खरी चाल बांकी, निराली इक तकाईआ। सब नूं देवे थापी, थपक थपक सुआईआ। उस ने कोट कोट कोट जन्म दे उधारने पापी, जिस नूं नाम दा धक्का देवे लगाईआ। जिस ने सब दी पूरी करनी वाटी, विष्नूं रोवे मारे धाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। पंचम जेठ कहे मैं वेख्या छणकाट, सोहणा खेल खिलाईआ। जिस ने दीन दुनी दा तक्कया घाट, पत्तन बैठा धुर दा माहीआ। जिस ने शरअ दी तकी परात, पुरातन लेखा फोल फुलाईआ। उस ने सब दी मेटणी वाट, अगला पन्ध रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पंचम जेठ कहे मैं खेलदा वेख्या बाला, सोहणी खेल वखाईआ। नच्चे टप्पे कुद्दे मारे छालां, वलीआ छलीआ आपणा वेस वटाईआ। कदे हस्से ते कदे रोवे बाहला, जिद विच जिद आपणी पूर कराईआ। कदे माँ नूं कढे गाला, कोठे कंधां उत्ते भज्जे वाहो दाहीआ। कदे रोड़यां दीआं बणावे माला, पथ्थर गीटे हथ्थां विच रखाईआ। कदे हथ्थ मारे करीरां डाला, फल फुल्ल दए झड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं तों सुणया अख़ीर, सब ने दिता सुणाईआ।

जिस ने सम्बल दी कीती तामीर, सो सम्बल दा मालक इक अख्वाईआ। जिस अवतार पैग़म्बर गुरुआं दिती धीर, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। उस दा खेल होणा बेनज़ीर, नज़र वेखण कोए ना पाईआ। याद रखयो जिस वेले आपणी घड़ी दा उस ने बदल दिता ज़ंजीर, शरअ दीआं ज़ंजीरीआं दए तुड़ाईआ। जन भगतां दी नवीं बणाए तकदीर, पित्तल तों कंचन आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। पंचम जेठ कहे मेरा दिवस सुभागी चंगा, चंगी मिली वड्याईआ। लेखा पूरा पुरी अनन्दा, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। सुणया सुहागी छन्दा, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। घर घर वज्जया मृदंगा, नौबत नाम सुणाईआ। अग्गे दीन दुनी दीआं जिस ने नवीआं पाउणीआं वंडां, हिस्से हथ्थो हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे जिस दी धार नूं हो गए साल अठवंजा, पंज अट्ठ मिल के वज्जी वधाईआ। जिस लेखा पूरा करना साल साल बवन्जा, सिँघ शेर शेर जणाईआ। अगला हुक्म दा लाउणा पंजा, पंचम आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे भेंटा हो गया लाल चोला, लालन लाल रंग रंगाईआ। दीन दुनी दा वेखे होला,
१६२६ होली दा लेखा दए भुलाईआ। कलयुग कलयुग दा करना गोला, मालक रहिण कोए ना पाईआ। नेत्र रोवे धरनी धौला, १६२६
२२ धवल मारे धाहीआ। की खेल करे प्रभ मौला, हरि करता नूर इलाहीआ। वायदा पूरा करे कौला, इकरार वेखे चाँईं चाँईंआ। २२
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। धुर शब्द कहे दिवस दिवस विच्चों बदला, बदली हरि कराईआ। अग्गे होवे धर्म दा अदला, इन्साफ़ वंड वंडाईआ। शरअ शरअ नूं करे कत्ला, कातिल मक्तूल लेखा रहे ना राईआ। जन भगत सुहेले तके रत्ना, रत्न अमोलक खोज खुजाईआ। जिस सम्बल बणाया आपणा वतना, सो बेवतनां लए उठाईआ। वीह सौ उनत्ती बिक्रमी बण गया पत्तना, पंचम जेठ सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे पंचम जेठ सुहावा, रुतड़ी सच सुहाईआ। सब दा पूरा करे दाहवा, जो दाहवेदार अख्वाईआ। चार जुग दे तके राहवां, रहिबर हो के फोल फुलाईआ। कलयुग दा अन्तिम लेखा करे सावां, साँवल सुन्दर हो के खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। पंचम जेठ कहे मेरी इक वधाई, वध के दयां सुणाईआ। एह तन उपज्या विच सताई, दो सत्त सोभा पाईआ। जिस दी अवतार पैग़म्बर देण गवाही, शहादत गुर भुगताईआ।

एह नूर अगम्म इलाही, नूर नुराना नज़री आईआ। जिस ने कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणी शाही, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतां सिर रखे ठंडीआं छाईं, अग्नी तत ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला आप मिलाईआ। पंचम जेठ कहे जन भगतो तुहाडीआं जुग जन्म दीआं उडीकां, तारीख़ तवारीख़ दए गवाहीआ। जो मंगदे रहे भीखां, भिक्खक हो के झोलीआं डाहीआ। पढ़दे रहे हदीसां, कलमा नाम अल्हाईआ। झुकाउंदे रहे सीसां, डण्डावत बन्दना सजदयां विच समाईआ। प्रेम प्यार विच पीसण पीसा, चक्की धर्म धार चलाईआ। सब दा लहिणा देणा पूरा करे हरि जगदीशा, हरि करता वड वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तक्कण ला के नीझां, बिना अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। जिन्हां बाले दीआं भेंटा कीतीआं कमीजां, वस्त्रां नाल सुहाईआ। खिलाउणयां वालीआं चीज़ां, वेखे ख़लक ख़ुदाईआ। जिस सब दीआं पूरीआं करनीआं रीझां, मेहर नज़र उठाईआ। त्रैगुण दीआं उम्मीदां, तिन्न हार देण गवाहीआ। अकवंजा अक्खरां नानक मारीआं लीकां, बवंजवां शब्द शब्द शनवाईआ। साहिब साहिब प्रीता, प्रीतम नाल वड्याईआ। आदि जुगादी इक्को मीता, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। जो सब दा सीना करे ठांडा सीता, अग्नी तत ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। जेठ कहे मेरी सब दे अग्गे बन्दना, बन्दीख़ाना लैणा तुड़ाईआ। वेखणा इक अनन्दना, अनन्द अनन्द विच्चों खोज खुजाईआ। ओसे दी धूढ़ी मस्तक लाउणा चन्दना, जो चन्द सितारयां करे रुशनाईआ। जिस ने ब्रह्मण्डां खण्डां पार लँघणा, अध विच ना कोए लटकाईआ। जेठ कहे मैं उस दी किरपा नाल भगतो तुहाथों मंगणा, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। जिस दे हथ्थ नूं चढ़ गईआं रंगणां, ओह लाल रंगीले तुहानूं दए बणाईआ। जिस ने चारों कुण्ट वंञणा, वञ्झ मुहाणयां लोड़ ना कोए रखाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों पूरन सिँघ दा सरीर फेर जम्मणा, जिस नूं सम्बल कहि के अवतार पैग़म्बर गुर गए गाईआ। उथे खेल करे सूरा सरबंगणा, शाह पातशाह शहिनशाह नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस ने नाम निधाना जन भगतां साचा वंडणा, अतोट अतुट आप वरताईआ।

✪ १३ जेठ शहिनशाही सम्मत ८ दरबार निवासी दलीप सिंघ, रत्न सिंघ, प्रीतम सिंघ, जरनैल सिंघ, सुलक्खण सिंघ, कश्मीर सिंघ, कश्मीर सिंघ, सतवन्त सिँघ कल्सीआं, गुरचरण सिंघ, भान सिंघ, हरभजन सिँघ हरि भगत दवार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

साचे नाम दा साचा फक्का, रत्न सिँघ दलीप सिँघ जरनैल सिँघ झोली आप भराईआ। गुरचरण सिँघ सतवन्त सिँघ नाता नाल पक्का, भान सिँघ सुलखण सिँघ जोड़ जुड़ाईआ। हरभजन सिँघ फ़र्क रिहा ना रत्ता, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। आत्म धार बख्श के सत्ता, चेतन सब नूं रिहा कराईआ। कश्मीर सिँघ सिंघ कश्मीर नाल रता, रत्न अमोलक दए वड्याईआ। बीज बीजे आपणे वत्ता, सच क्यारी तन सुहाईआ। मार्ग धुर दा अगम्म दस्सा, दहि दिशा कर पढ़ाईआ। दीन दयाल खुशीआं विच हस्सा, हस्ती आपणी नाल मिलाईआ। निजर धार दा देवे रसा, रस अगम्म अथाह हट्ट विकाईआ। हिरदे अन्दर वसा, वास्ते आपणे नाल रखाईआ। कलयुग मेटे रैण अंधेरी मस्सा, नूर चन्द करे रुशनाईआ। शब्द तीर निशाना एका कसा, दो जहानां रिहा चलाईआ। चार जुग दा लेखा वेखे चूंकि चुनांचि अलबत्ता, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। पुरख अकाल सर्ब कला समरथा, सतिगुर दाता धुरदरगाहीआ। जिस जगत जहान वेखणा रट्टा, नव सत्त रिहा उठाईआ। ज़ीरो ज़ीरो नाल करे बटा, सिफ़र सिफ़र नाल उडाईआ। गुरमुखो तुहाडी कमाई विच्चों हरिसंगत नूं देणा इक इक टका, हाढ़ सतारां वंड वंडाईआ। छत्ती गुरमुखां रूप धरया होवे वांग नटां, नटुआ आपणा स्वांग वखाईआ। छत्तीआं गुरजां बद्धीआं होण उत्ते पट्टां, पटने वाला लिख के छाती नाल लगाईआ। छत्तीआं सज्जे हथ्थ विच फड़या होवे इक इक वट्टा, वटणा खब्बे हथ्थ रखाईआ। छत्ती बीबीआं गल विच होवे पटा, पारब्रह्म लिखणा चाँई चाँईआ। छत्तीआं सीस गुंदाउणा इक्ट्ठा, मेढीआं नौ नौ गुंदाईआ। छत्तीआं चुन्नीआं नूं देणीआं गट्टां, इक दूजी नाल बंधाईआ। छत्तीआं हथ्थ विच फड़या होवे मट्ठा, शगन सतिगुर घर मनाईआ। छत्तीआं कोल ढाई ढाई गिरहा कोरा होवे लट्ठा, पट्टी मस्तक उत्ते बंधाईआ। माझे दा गुरमुख इक फिरे नट्ठा, मुक्ट सीस उत्ते टिकाईआ। छत्ती मध पींदे होण धर्म प्याले गट गटा, बोतलां हथ्थां विच उठाईआ। छत्तीआं खुल्हीआं होण लिटां, खुल्हड़े केस गल लटकाईआ। छत्तीआं कोल होणीआं चिटां, पूरन पूरन धुर दा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सतारां हाढ़ कहे मेरे पूरे होए निसचे, निसचे नाल जणाईआ। जम्मू वाले चार बणे होण फ़रिश्ते, जबराईल मेकाईल इजराईल इसराफील रूप बणाईआ। भयानक रूप होण दिसदे, शकल डराउणी सोभा पाईआ। सब ने इष्ट रखणे इक दे, एकँकार सीस निवाईआ। दुलारे बणने

छत्ती गुरमुख परम पुरख पित दे, पगड़ी कंचन रंग रंगाईआ। छत्तीआं बोलणा झगड़े मिट गए नित दे, चुरासी गेड़ रिहा ना राईआ। पंज लिखारी होण लिखदे, पग्गां पुठीआं सीस टिकाईआ। पंजां प्यारयां काले निशान लाउंणे उत्ते हिक ते, इंच चार चार लम्बाई चौड़ाईआ। छत्ती फुल्ल गुलाब आउण सिट दे, पत्ती पत्ती नाल बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सतारां हाढ़ कहे मेरा बदल जाणा रिवाज, रवादार नज़र कोए ना आईआ। छत्ती बीबीआं दुद्ध नूं ला के जाग, भाण्डे सीस उत्ते टिकाईआ। छत्तीआं कोल होण चराग़, चराग़ाहां करे रुशनाईआ। छत्तीआं सतिगुर दे घोड़े दी गुंदणी वाग, मौली छत्ती तन्द बंधाईआ। छत्तीआं दे सिर ते सुभ्भर होवे बाग, नीती पिछली नाल मिलाईआ। छत्तीआं गुरमुखां हथ्थ विच फड़े होण काग, छत्ती जुग दा पन्ध मुकाईआ। छत्तीआं गाउणा खुशी दा राग, ढोला अगम्म अथाहीआ। छत्तीआं नेत्र नीर वहाउणा वैराग, विछोड़ा होए ना गोबिन्द माहीआ। छत्तीआं काली चिट्टी बद्धी होवे पाग, कलयुग सतिजुग दोवें रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। सतारां हाढ़ कहे मैं आवां भज्जा, भाजड़ तकणी जगत लोकाईआ। छत्ती गुरमुखां प्यार इक दूजे नाल होवे बज्झा, बाज़ू बाज़ू नाल मिलाईआ। छत्तीआं नीला करना गिट्टा सज्जा, सतिजुग साचा सगन मनाईआ। छत्तीआं नेत्र नैण

१६२६ रखणी लज्जा, शर्म सार सोभा पाईआ। छत्तीआं मस्तक लिख के लाउणा सब दे उत्ते कूकदी कज़ा, क्यामत समझ किसे १६२६

२२ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी वंड आप वंडाईआ। हाढ़ २२

कहे मेरी इक सत्त दी यारी, यराना दयां जणाईआ। सतिगुर दी भेंटा भेंट करनगे पंज दरबारी, मुन्दरा गोरख वाला सोभा पाईआ। छत्ती गुरमुखां रूप धरया होवे कलयुग नारी, सोहणा हार श्रृंगार बणाईआ। छत्तीआं सिर ते चुक्की होवे तगारी, भज्जण वाहो दाहीआ। छत्ती बीबीआं मुख ते लाई होवे दाढ़ी, रूप अनूप वखाईआ। दुआबे वाल्यां इक गुरमुख बणाउणा मौत लाड़ी, परांदे नौ नौं सीस गुंदाईआ। छत्ती गुरमुखां बणना धर्म खिलाड़ी, मालवे वाले सोभा पाईआ। नौवां गुरमुखां कोल होवे कुलहाढ़ी, नौ खण्ड परस राम दा लेखा चुक्के चाँईं चाँईंआ। चारमुखी बणाई होवे माढ़ी, मण्डप सोहणा रूप दरसाईआ। इक रूप होवे पहाड़ी, ढोले मिगी तिगी सुणाईआ। छत्ती बीबीआं सिर ते चुकी होवे खारी, ख़ालक लिख के लाउणा चाँईं चाँईंआ। इक गुरमुख बणया होवे मदारी, होका हक ऐली मदद लगाईआ। इक गुरमुख आपणे मुख ते चपेड़ मारे करारी, इकरार मुहम्मद पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा वेख वखाईआ। सतारां हाढ़ कहे मेरा बदल रिहा ज़माना, ज़र्रा ज़र्रा खेल खिलाईआ। नौवां गुरमुखां रूप धरया

होवे पहलवानां, पले इक इक टका गंढ बन्हाईआ। नौवां खिच्चीआं होण किरपानां, कृपानिध सीस निवाईआ। नौवां लिख्या होवे ब्याना, तेरा तेरी झोली पाईआ। इक गुरमुख हथ्थ फड़या होवे मजीद कुराना, मज़ीद मुज़ाहिद रूप दरसाईआ। इक बणया होवे उल्माना, इलम इलमबरदार वड्याईआ। इक शरअ दी गाए कलामा, शकल उम्मत नाल मिलाईआ। चार बणे होण गुलामा, ज़ंजीर हथ्थां नाल बंधाईआ। चार करदे आउण सलामां, सजदयां विच सीस झुकाईआ। सतारां हाढ़ कहे मेरे साहिब दा रूप होवे धुर अमामा, अमाम मैहन्दी आप धुर दी कार भुगताईआ। प्रगट होवे विच मैदाना, दो जहानां वेख वखाईआ। जगत शरअ दा तके शाम्याना, शब्बे रोज़ वेख वखाईआ। जिस दा लेखा विच कुरासाना, कुरह कायनात वेख वखाईआ। जिस नूं झुकण ज़िमी असमाना, इस्म आज़म इक प्रगटाईआ। जिस दे कोल हक पैमाना, पैमाइश करे थांउँ थाँईंआ। ओह रहीम रहमत रहमाना, रहिबर नूर इलाहीआ। जिसदा खेल जगत जिस्माना, जिस्म इस्म आपणा इक समझाईआ। ओह ख़ालक ख़लक ख़समाना, जिस दी खसलत समझ किसे ना आईआ। ओह लेखा अवर का और बणाए कलामा, कुदरत दा कादर दया कमाईआ। जिस दा झुल्लणा इक निशाना, जगत जहान दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सतारां हाढ़ कहे मेरी खुशीआं वाली , लोकमात वज्जी वधाईआ। मेरा साहिब मिले कमलापाती, पतिपरमेश्वर नूर इलाहीआ। जो देवणहारा धुर दी दाती, दयावान दया कमाईआ। उस दा खेल पृथ्मी आकाशी, गगन गगनंतर वेख वखाईआ। ओह पूरन जोत प्रकाशी, पूरन पूर रिहा सर्ब ठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। जेठ कहे मेरा प्रविष्टा तेरां, तेरां तेरां तेरां धार वड्याईआ। जन भगतां उत्ते प्रभू करे मेहरा, मेहर नज़र नैण उठाईआ। जिन्हां कारन पाया फेरा, निरगुण सरगुण रूप बदलाईआ। नाँ धरा के शब्दी शेरा, भबक लगाए अगम्म अथाहीआ। झगड़ा मिटाए अण्डज जेरा, उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। दूर दुराडा आ गया नेरा, नेरन नेरा वेख वखाईआ। जन भगतो तुहाडा बन्न्हे बेड़ा, बेड़ी आपणे कंध उठाईआ। चुरासी फाँसी रहे ना गेड़ा, राय धर्म ना दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हुक्म दा हुक्मी देवे गेड़ा, हुक्म हुक्म विच भवाईआ।

✪ १५ जेठ शहिनशाही सम्मत ८ दरबार निवासी जुगिन्दर कौर दे नवित हरि भगत दवार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

निष्अक्खर कहे मेरा संदेशा पत्र, निष्अक्खर धार दृढ़ाईआ। जिस नूं सतिगुर शब्द करे इकत्तर, निरगुण सरगुण मेला सहिज सुभाईआ। धार बणा के उपर पत्र, पत्रिका रंग रंगाईआ। जिस दी समझे कोए ना सतर, नव सत्तर निरगुण धार दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। निरअक्खर कहे मेरा रूप निराकार, साकार समझ किसे ना पाईआ। मेरी विष्न ब्रह्मा शिव करन विचार, बुद्धी तों परे ध्यान लगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर पावण सार, महासांरथी जगत अख्वाईआ। पुरख अकाल अग्गे कर निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। किरपा कर हरि दातार, दाते दानी दया कमाईआ। वस्त अगम्मी झोली डार, अमोलक आप वरताईआ। किरपा कर सच्ची सरकार, बख्शिश रहमत झोली पाईआ। संदेशा दे के आपणी धार, निष्अक्खर अक्खर रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। निष्अक्खर कहे मेरा रूप धार बावन, बवन्जा अक्खर वड वड्याईआ। किरपा कीती पतित पावन, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। जिस दी महिमा सारे गावण, अवतार पैग़म्बर गुर सिफ्त सालाहीआ। जिस दी सिफ्ती बणत बणावण, ग्रन्थ शास्त्र रंग रंगाईआ। निरगुण सरगुण पकड़े दामन, दामनगीर इक अख्वाईआ। जो संदेशा देवे धुर दा रावण, राम रामा बेपरवाहीआ। जिस नूं सजदे सीस सर्ब झुकावण, सिर सके ना कोए उठाईआ। ओह लेखा जाणे लख चुरासी विच्चों जीव मानव, मानस मानुख भेव रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। निष्अक्खर कहे अवतार पैग़म्बर गुरुआं गाई मेरी गाथा, अक्खर अक्खरां नाल बदलाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अन्जील कुरान दिता साथा, खाणी बाणी रंग रंगाईआ। सब ने मन्नया धुर दा आखा, अक्खरां नाल वणज कमाईआ। करे खेल अलखणा आलाखा, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। जो संदेशा अवतार पैग़म्बरां आखा, गुरुआं नाल मिलाईआ। कलि कल्की प्रगट होवे पुरख अबिनाशा, पारब्रह्म प्रभ नूर इलाहीआ। ओह दीन दुनी वेखे जगत तमाशा, चार कुण्ट दहि दिशा फोल फुलाईआ। सब दी पूरी करे आसा, तृष्ना कूड़ दए जलाईआ। जोती नूर कर प्रकाशा, शब्दी धार डंक वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, ...। निष्अक्खर कहे मेरे साहिब दा खेल अजीब, मैं सच दयां जणाईआ। जो जुग चौकड़ी दए तरतीब, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा

हुक्म वरताईआ। जिस निरगण शब्द जणाया ग़रीब, नानक ढोले गया गाईआ। मुहम्मद लिख कुरान मजीद, सजदा सीस जगदीश झुकाईआ। जिस दे हुक्म अन्दर जुग चौकड़ी गए बीत, पूरब लेखा रिहा ना राईआ। सो मालक इक अतीत, त्रैगुण तों परे सोभा पाईआ। जिस झगड़ा मेटणा मन्दिर मसीत, काअब्यां करे रुशनाईआ। त्रैगुण तों हो अतीत, त्रैभवण धनी पिछला पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक वरताईआ। निरअक्खर कहे प्रभ दा खेल खेल दोबारा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण कार कमाईआ। जिस दी मौली अगम्मी बहारा, ख़िज़ां बैठी मुख छुपाईआ। ओह निरगुण नूर हो के ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। जिस ने सरसा गोबिन्द दे ग्रन्थां उत्ते दिता पहरा, पाहरू हो के वेख वखाईआ। दो जहानां तके दाइरा, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। जिस दा खेल अगम्मी गहरा, गहर गम्भीर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। निरअक्खर कहे अवतार पैग़म्बर गुर करन अक्खरां गौर, गौरव हो के वेख वखाईआ। की खेल प्रभू करे अवर का और, औरत मर्द समझ कोए ना पाईआ। की आपणा दस्से ज़ोर, वलीआ छलीआ आपणा बल प्रगटाईआ। ओह लेखा पूरा करे जो घनईया मक्खण खांदा रिहा चोर, चवर सीस उत्ते झुलाईआ। जिस दे हुक्म दा सतिजुग त्रेता द्वापर
१६३२ कलयुग चलया दौर, शास्त्र सिमरत वेद पुराण भज्जण वाहो दाहीआ। सो साहिब स्वामी सब दी आपणे हथ्थ रखे डोर, बन्धन १६३२
धुर दा आप बंधाईआ। सब दी पिछली पूरी करे दौड़, पाँधी पन्ध रहे ना राईआ। निरअक्खर कहे मेरा मालक मेरा साहिब गया बौहड़, बौहड़ी बौहड़ी सीस निवाईआ। जिस ने लेखा पूरा करना अट्ठ सट्ठ जौहड़, गुरदर मन्दिर मस्जिद वेख वखाईआ। कलयुग रस वेखे मिट्ठा कौड़, चुरासी पर्दा रहे ना राईआ। जन भगतां गया बौहड़, बौहड़ी बौहड़ी करे जगत लोकाईआ। दूहरी धार निरअक्खर कहे मेरयां अक्खरां दिता तोर, तुरीआ तों परे हुक्म सुणाईआ। सरगुण दी सरगुण धार निरगुण दा निरगुण रूप अपार जिस दा जाणे कोए ना ज़ौहर, ज़ाहर ज़हूर खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा वेख वखाईआ। निरअक्खर कहे अकशर वेखण विष्न ब्रह्मा इन्द्र, इन्द्रासण खोज खुजाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर वेखण फुनिन्दर, मुनिन्दर नैण उठाईआ। सब दी गफ्लत लथ्थी निन्दर, आलस रिहा ना राईआ। पुरख अकाल दीन दयाल जन भगतां अन्तर खोल्ह्या जिन्दर, कुंजी नाम आप लगाईआ। जिस नूं झुकदे सूर्या चन्द्र, मण्डल मण्डप सीस निवाईआ। उस साहिब दा निरअक्खर कहे अक्खरां दी धार शब्द दा प्यार लेखा लिखे कौर जुगिन्दर, जुग जुग दा लहिणा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि,

निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी आदि निरजंण, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार दया कमाईआ।

✪ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ८ गुरदेव सिँघ घड़ूआ दे नवित हरि भगत दवार जेठूवाल ✪

गुर मन्त्र नाम शब्द सच देवा, देव आत्मा नमो नमो सीस झुकाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अलख अभेवा, अगोचर अगम्म अथाह इक अख्वाईआ। जिस दा खेल निहचल धाम सदा निहकेवा, निरवैर निराकार निरँकार आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दी सिफ्त कर सके कोए ना जेहवा, महिमा अक्खर धार कहिण किछ ना पाईआ। सो मालक ख़ालक प्रितपालक जन भगतां अमृत रस देवे मेवा, वस्त अमोलक आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। शब्द गुर मन्त्र कहे किरपा गुरदेव, गुरदेव नाल मिलाईआ। पूरब जन्म ते पूरब सेव, गोबिन्द गुर दए गवाहीआ। जन्म करन कर्म जन्म समझे कोए ना भेव, भेद सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। सतिगुर शब्द शब्द मेहरवाना, मेहरवान अख्वाईआ। जन्म जन्म दा लहिणा देवे दाना, दाता दानी दया कमाईआ। आदि जुगादि लेखा जाणे दो जहानां, निरगुण सरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। बख्शिश करे रहमत रहीम रहमाना, महिबूब नूर इलाहीआ। भगतां भगत बणाए निशाना, भगवन आपणा रंग रंगाईआ। गुरमीत सिँघ दा बणा के विच बहाना, गुरदेव सिँघ नाल गुरदेव दिता मिलाईआ। एह लेखा पिछला पुराणा, जिस नूं पुराण शास्त्र कोई कहि सके ना राईआ। एह कौल गोबिन्द कीता सी विच बीआबाना, जूह पुरी अनन्द वड्याईआ। नौ सौ चौरानवे जन्म दा लेखा जम फाँसी वाला कटाणा, पुरख अकाल आपणा रंग रंगाईआ। पूरब दा पूरब लेखा पूरबला वरत्या भाणा, भावी सतिगुर हुक्म सीस निवाईआ। अग्गे वड्याई मिले विच जहाना, चरण कँवल कँवल चरण बख्शे इक सरनाईआ। पिछला वायदा कौल पूर कराउणा, पूरन ब्रह्म पारब्रह्म प्रभ सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां लेखे लाए दर दवारे आणा, आण विच जगत दी काण दए चुकाईआ।

नू सुणन वास्ते सवाधान करो कन्न, कन्ना गोबिन्द रिहा जणाईआ। जिस दे नाल अन्तष्करन बज्झे मनुआ मन, मनसा कूड़ रहे ना राईआ। मोह विकारा चुक्के तत्व तन, काया मन्दिर अन्दर वज्जे वधाईआ। होए प्रकाश अगम्मी नूरी चन्न, अंध अंधेर रहे ना राईआ। गुरमुख सन्त सुहेले बणो जन, जणेंदी मिले माण वड्याईआ। नाम भण्डारा लओ धन्न, माया ममता मोह गंवाईआ। कूड़ी क्रिया करो खंन खंन, खण्डा खड़ग नाम हथ्थ उठाईआ। पंच विकार ना लाए संन्, ठग्ग चोर यार नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। सुणन वास्ते सवाधान करो सुरती, सुत गोबिन्द दुलारा रिहा जणाईआ। खेल वेखो अकाल मूर्ती, अकल कलधारी आपणी कल वरताईआ। आवाज़ सुणो शब्द तूर दी, जो तुरीआ तों बाहर करे शनवाईआ। खेल तक्को ज़ाहर ज़हूर दी, शाह पातशाह की आपणी कल वरताईआ। हाज़री वेखो हाज़र हज़ूर दी, जो हज़रतां परे दए वड्याईआ। मूसा आसा तक्को कोहतूर दी, जो मूंह दे भार रोवे मारे धाहीआ। ईसा सलीव तक्को जाहतूर दी, ज़र्रा ज़र्रा खोज खुजाईआ। मुहम्मद आशा तक्को शाह कलज यूर दी, चौदां तबकां बाहर ध्यान लगाईआ। तृष्ना वेखो ख़ाहिश मनसूर दी, अनुलहक हक सुणाईआ।
१६३४ २२ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सुणन वास्ते धरो १६३४ २२
ध्यान, धरनी धरत धवल धौल तों बाहर वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द शब्द दा सुणो ज्ञान, जिस नूं चार जुग दे शास्त्र सीस निवाईआ। सति सति आत्म तत दा वेखो ईमान, अमलां तों बाहर दस्से नूर इलाहीआ। धुर दा कलमा सुणो कलाम, नाम निधाना पड़दा दए उठाईआ। मालक तक्को अगम्म अमाम, नूर नुराना नज़री आईआ। जिस नूं झुकदे राधा शाम, सीता राम सीस निवाईआ। पैग़म्बर करन सलाम, सजदयां विच सीस झुकाईआ। दस गुरु करन प्रणाम, पुनह पुनह कहि के धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। सो साहिब सतिगुर मेहरवान, पतिपरमेश्वर वड वड्याईआ। जन भगतां अन्तर निरन्तर सुणन दा देवे दान, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। जगत सरवण सुण सुण थक्के कान, सतिगुर शब्द हिरदे सक्या ना कोए वसाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त होया आप मेहरवान, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख गुरसिख कर परवान, परम पुरख परमात्म नाम संदेशा दए सुणाईआ। हरिजन सुण के ख़ुशी मनाउण, मन मनसा कूड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा इक जणाईआ। सुणन वास्ते अंगड़ाई लए बुध, मति मन नाल मिलाईआ। जगत विकार नाल करे युद्ध, शस्त्र नाम हथ्थ उठाईआ। हुक्म धुर दा लए बुज्झ, भाण्डा भरम भाउ

भनाईआ। अन्तर भेव खोल्ह गुझ, पर्दा ओहला दए चुकाईआ। सतिगुर पूरा जन भगतां माण देवे जुग, जुग जुग नाल मिलाईआ। कलयुग अन्तिम सब दा पैंडा रिहा पुज, पूजस पूजा विच दुहाईआ। सतिगुर नाम सुण के सुरती नाम विच जाए रुझ, रुझेवां जगत वाला तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग जुग िनरगुण सरगुण सरगुण निरगुण जन भगतां निरअक्खर धार विच्चों आपणा नाम समझाईआ।

✪ २५ जेठ शहिनशाही सम्मत ८ गुरदेव सिँघ दे घर नवां पिण्ड ज़िला जलन्धर ✪

सतिगुर शब्द कहे मेरे शहिनशाह पातशाह जोत निरँकारी, निराकार निरवैर दर तेरे सीस निवाईआ। आदि अन्त जुगा जुगन्त तेरा खेल अगम्म अपारी, अलख अगोचर बेअन्त बेपरवाह तेरी वड्याईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण तेरा खेल वड संसारी, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव सीस निवाईआ। तेरा नाम कलमा जगत संदेशा वारो वारी, चार जुग दे शास्त्र देण गवाहीआ। अवतार पैग़म्बर गुर तेरे चरण कँवल गए बलिहारी, आप आपा तेरी भेंट कराईआ। तूं भविक्खतां
१६३५ विच लिख्तां विच तेरा हुक्म दस्सया सरकारी, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी तेरा हुक्म जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर १६३५
२२ कलयुग लेखा वेख जीव अधारी, लख चुरासी जून अजूनी वेख वखाईआ। रवि ससि सूर्या चन्न मण्डल मण्डप करन निमस्कारी, २२
ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल सीस निवाईआ। नेत्र रोवे कागज़ शाही कलम बिचारी, कायनात दे मालक पर्दा दे चुकाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों तेरी आई वारी, नव नौ चार दा भेव रहे ना राईआ। शब्दी धार भविख लेखा लिख्या बण लिखारी, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द तेरी सेव कमाईआ। दरगाह साची मुकामे हक तेरा नूर उज्यारी, ज़ाहर ज़हूर आपणा भेव देणा खुल्हाईआ। तेई अवतार तेरी चरण धूढ़ लावण छारी, मस्तक ख़ाकी ख़ाक रमाईआ। पैग़म्बर सजदयां विच करन दारी, दीदा दानिस्ता तेरे अग्गे सीस निवाईआ। गुर दस चरण कवण जाण बलिहारी, बलि बलि तेरे हथ्थ वड्याईआ। पुरख अकाले दीन दयाले परवरदिगार तेरी सांझी यारी, वरन बरन ज़ात पात दीन मज़्ब वंड ना कोए वंडाईआ। चौथे जुग निरगुण नूर जोत कर उज्यारी, अंध अंधेरा वेख थांउँ थाँईआ। तुध बिन मालक ख़ालक ख़लक पैज ना जाए संवारी, स्वार्थ यथार्थ अन्दर समझ किसे ना राईआ। ओह वेख धरनी धरत धवल धौल बिन नैणां रोवे ज़ारो ज़ारी, जल थल महीअल समुंद सागर आपणा वहिण वहाईआ। पृथ्मी आकाश तक्कण चन्द सितारी, मण्डल मण्डप अक्ख उठाईआ। सदी चौधवीं उच्ची

कूक कूक पुकारी, दरोही मेरे परवरदिगार यामबीन तेरी सरनाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप सति धर्म चार कुण्ट हारी, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। माया ममता मोह विकार हँकार सब नूं करे ख्वारी, सांतक सति ना कोए कराईआ। कूड़ कल्पणा जगत करे ग़द्दारी, साक सज्जण सैण सगला संग ना कोए बणाईआ। बुध मति सब दी हारी, मन मनसा होई हल्काईआ। सृष्टी दृष्टी होई दुख्यारी, दुखियां दर्द ना कोए वंडाईआ। तेरी खेल आदि जुगादि सदा न्यारी, जुग चौकड़ी समझ किसे ना आईआ । किरपा निधान ठाकर स्वामी तुध बिन पैज ना जाए संवारी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त आत्म होवे सति सरूपी तेरी नारी, नर नरायण नर हरि होणा आप सहाईआ। तूं शाह शहाना अकल कलधारी, अकल कला कलवन्ता इक अख्वाईआ। तेरी खेल विष्न ब्रह्मा शिव ना किसे विचारी, अवतार पैग़म्बर गुर विचरके दस्से ना कोए समझाईआ। बेअन्त बेअन्त बेअन्त कहि के सब ने चरण छुहाई तेरे दाढ़ी, दाहवेदार नज़र कोए ना आईआ। साहिब सतिगुर अन्त अख़ीर बेनज़ीर तेरी वीह सौ अठ्ठ दी आवे हाढ़ी, हाए उफ़ कहि के दयां सुणाईआ। शाह सुल्ताना नौजवाना मर्द मर्दाना बल आपणा धारी, धुर दा हुक्म इक मनाईआ। सतिगुर शब्द कहे हुक्म देणा एकँकार इक्को वारी, दूसर लोड़ रहे ना राईआ। मैं सब दी लोकमात करां गिरफ्तारी, बचया रहिण कोए ना पाईआ। सतारां हाढ़ मस्तक टिक्के लाउण पंज लिखारी, पंजां पंजां उँगलां नाल वड्याईआ। पंज प्यारे पंच प्यार दे बणन खिलाड़ी, खेड धर्म धार समझाईआ। दो दो तलवारां पहनण पंज दरबारी, सज्जा खब्बा वंड वंडाईआ। पुरख अकाले तेरा रूप होवे ना पुरख ना नारी, वेस अवल्ला इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस निवाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरे साहिब मेरा तेरे अग्गे हल्फ़, निउँ निउँ सीस निवाईआ। मैं लेखा दस्सणा सतारां हाढ़ नूं इक्को अलिफ़, जो इलम आलमां दए बदलाईआ। शरअ दी पूरी करनी शर्त, शरीअत पन्ध मुकाईआ। तेरा खेल वेखणा परत, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। तेरा राह तकणा उत्ते धरत, धरनी धवल वेख वखाईआ। जिस नूं झुकणे असमान अर्श, आलीजाह तेरी वड्याईआ। मेरी मंज़ूर करनी अर्ज़, आजज़ हो के सीस निवाईआ। हक संदेशा देणा गरज, चौदां तबक सुणाईआ। आपणा पूरा करना फ़र्ज़, फ़रद जुरम सब ते देणा लगाईआ। मकरूज किसे दा रहिण नहीं देणा कर्ज़, कज़ा कज़ाक सब दे नाल मिलाईआ। तेरा खेल तकणा असचरज, जिस नूं चार जुग दे शास्त्र ना सकण समझाईआ। तूं योधा सूरबीर मर्दाना मर्द, बेपरवाह इक अख्वाईआ। कलयुग मेटणा अंधेर गर्द, कूड़ी क्रिया रहे ना राईआ। शरअ छुरी रहे ना करद, कातिल मक्तूल दा लेखा देणा मुकाईआ। ग़रीब निमाणया वंडणा दर्द, कोझयां कमल्यां गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरे महिबूबा, महिव दर तेरे सीस निवाईआ। तूं आदि अन्त हर जग्गा मौजूदा, ख़ाली नज़र कोए ना आईआ। मैं हैरान होया क्यों शरअ दीआं वंडीआं हदूदां, नाम कलमे हिस्से जगत पाईआ। तेरी मंज़ल इक्को हक मकसूदा, सचखण्ड दवारा नज़री आईआ। तुध बिन अवर ना कोई दूजा, जिस नूं दीन दुनी सृष्टी दृष्टी अन्दर गाईआ। तेरा भेव किसे ना बूझा, अवतार पैग़म्बर गुर शस्त्रां नाल करके गए लड़ाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर कलयुग कूड़ी क्रिया ढूठा मार के मूधा, मुद्दतां दे मालक मुद्दा सब दा दे बदलाईआ। गुरमुख सन्त सुहेला तेरे विछोड़े विच रहे कोए ना रूठा, लख चुरासी विच्चों मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। तुध बिन आदि अन्त जुगा जुगन्त निरगुण धार सरगुण उत्ते कोए ना तुट्ठा, पंज तत माटी ख़ाक दए ना कोए वड्याईआ। मैं तेरा इक्को दुलारा सतिगुर शब्द सुता, पिता पूत तेरे अग्गे सीस निवाईआ। मैं चाहुंदा कलयुग विच सतिजुग बदल दे रुता, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। भाग लगा दे पंज तत काया माटी बुता, बुतख़ान्यां कर सफ़ाईआ। तेरा नाम भण्डारा जगत जहान ना जाए लुट्टा, गृह गृह अन्दर देणा टिकाईआ। आत्म परमात्म नाता जोड़ दे टुट्टा, टुटयां गंढ पवाईआ। भाग लगा दे काया माटी बुता, जिस्म ज़मीर दे बदलाईआ। गुरमुखां दे अन्दरों कूड़ी क्रिया कढ दे ग़ुस्सा, माया ममता मोह ना होए हल्काईआ।

१६३७
२२

घर सुहञ्जणी गृह होवे रुता, मन्दिर बांके वज्जे वधाईआ। तूं मेहरवान अबिनाशी अचुता, चेतन सुरती सब दी दे कराईआ। उज्जल कर गुरमुखां मात मुखा, जो मुख तेरा नाम सिफ्त सालाहीआ। जन्म कर्म विच रोग रहे ना दुखा, दर्द दुःख भय भञ्जण होणा आप सहाईआ। सफ़ल कराउणी मात कुक्खा, लेखे लाउणी जणेंदी माईआ। सतिगुर शब्द कहे परम पुरख परमात्म अन्तिम तेरा वक्त ढुका, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। तेरा खेल तकां चारे कूटा, उत्तर पूरब पच्छम दक्खण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा भेव रहे ना लुका, अलोकिक आपणा पर्दा देणा चुकाईआ।

✪ २६ जेठ शहिनशाही सम्मत ८ जगीर सिँघ भड़ी नवित हरि भगत दवार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

जेठ कहे मेरा दिवस दिहाड़ा छब्बी, प्रविष्टा परम पुरख जणाईआ। लेखा आदि जुगादि जुग चौकड़ी रब्बी, परम पुरख प्रभ आपणे हथ्थ रखाईआ। वेखणहारा सदा सदीवी सदी, घड़ी पल ध्यान लगाईआ। जिस दे हुक्मे अन्दर सृष्टी बद्धी, बन्दना करके गुर अवतार पैग़म्बर सीस निवाईआ। ओह लेखा जाणे जगत धार दी गद्दी, गुरु गुरदेव स्वामी पड़दा आप

उठाईआ। जिस दे कोल किरपा विच इक्को रंग होवे नेकी बदी, मेहर नज़र नाल तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुकम इक वरताईआ। छब्बी जेठ कहे मेरे साहमणे ओह तस्वीर, जिस दी गोबिन्द दए गवाहीआ। जिस दा लेखा बेनज़ीर, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जिस विच दीन दुनी दी तकदीर, तदबीर सके ना कोए बणाईआ। ओह लेखा जाणे आदि अन्त अख़ीर, अक्खरां तों बाहर जिस दी पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। छब्बी जेठ कहे मेरे अग्गे ओह नकशा, जिस नूं नकश के सके ना कोए समझाईआ। मेरे कोल ओह रस्ता, जिस उत्ते गुर अवतार पैग़म्बर भज्जण वाहो दाहीआ। मेरे कोल ओह बस्ता, जिस विच चार जुग दे भविक्खत बन्द कराईआ। छब्बी जेठ कहे मैं सदा सदा सद नस्सदा, जुग जुग भज्जां वाहो दाहीआ। मेरा प्रविष्टा मेरी कथा कहाणी दस्सदा, दस दशमेश आपणे नाल रखाईआ। जिस दा शब्द इशारा प्रतख दा, पारब्रह्म प्रभ आपणी कल वरताईआ। ओह खेल करे नूर इलाही यक दा, वाहिद आपणी वंड वंडाईआ। जिस नूं कलयुग समां तकदा, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जिस लहिणा देणा पूरा करना हक दा, कौल इकरार पिछला वेख वखाईआ। उस दा लेख कोए ना कटदा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। एह खेल उस वणजारे हट्ट दा, जिथ्थों जुग चौकड़ी (झोली) सर्ब भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। छब्बी जेठ कहे मेरे आया विच ध्यान, सहिज सहिज सहिज नाल जणाईआ। मेरे अन्दर प्रगटया इक ज्ञान, बिन अक्खरां मिली वड्याईआ। संदेसा सुणया बिना कान, सरवण लोड़ रही ना राईआ। ओह तक ओह पठाण, जिस गोबिन्द उत्ते छुरा दिता चलाईआ। गोबिन्द सूरा होया मेहरवान, मेहर नज़र नाल तकाईआ। उस गुस्से विच बोली मारी निशान, बोल करारा दिता लगाईआ। गोबिन्द हस्स के किहा तूं बड़ा सूरबीर बलवान, जिस सेवादार हो के शस्त्र दिता चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। गोबिन्द किहा ऐ मेरे सिख श्रद्धालू, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। मेरा परम पुरख बड़ा कृपालू, किरपा निध वड वड्याईआ। जिस ने कौल इकरार नानक तों कराया सी नाल लालू, लेखा कुकड़ वाला मिलाईआ। ओह तेरी सुरत संभालू, सम्बल बहि के वेख वखाईआ। निरगुण धार अवल्लड़ी चलू चालू, चार वरन तों बाहर समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मुग़ल किहा गोबिन्द मैं तेरे मारया खंजर, लहिणा हरि गोबिन्द वाला चुकाईआ। मेरे नेत्र ना आया हंझन, नीर नीर ना कोए वगाईआ। पर मैं इक सौ नौ वारा तेरे चरण दी धूढ़ी लाई मजन, ख़ाक मस्तक उत्ते छुहाईआ।

मेरा कम्बण लग्गा बदन, शरीर थरथराईआ। गोबिन्द हस्स के किहा तां छुरा मेरा प्रेम वाला सगन, तेरी झोली पाईआ। मुहम्मद लेखा वेख जिस वेले शरअ होई नग्न, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। दीपक जोत मूल ना जगन, घर घर अंधेरा छाईआ। पुरख अकाला सब दा करे वज़न, लेखा देवे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी साची कार कमाईआ। छब्बी जेठ कहे गोबिन्द ने खंजर फड़या हथ्थ, थापी पुश्त पनाह लगाईआ। फेर तिन्न (वार) आपे पेट विच दिता रख, सहिज सहिज नाल दबाईआ। नाले इशारा कीता नाल अक्ख, ओह तक जल्वा नूर इलाहीआ। जिस दा रूप अनूप होणा प्रतक्ख, अमाम अमामा वेस वटाईआ। तेरा लहिणा देणा पूरा करे झट, झटके हलाली वाले दोवें दए लड़ाईआ। फेर शरअ ने शरअ नूं देणा कट, कटाक्ष लागे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। मुग़ल किहा तेरा बचन सिध्धा सादा, सुण के खुशी बणाईआ। दस्स धुर मालक दा की इरादा, की करनी कार भुगताईआ। की शब्द वजाए नादा, अनरागी राग सुणाईआ। गोबिन्द किहा ओह बेपरवाह साहिब सांझा, निरगुण धार इक अख्वाईआ। जिस ने उम्मत उम्मती सदी चौधवीं फेरना मांजा, मजलस कूड़ी दए गंवाईआ। निशान रहे ना तारा चांदा, ख़लक फ़लक वेख वखाईआ। कूड़ कुकर्म वगे

१६३६ झांजा, झक्खड़ झुले थाउँ थाँईंआ। कलयुग अन्तिम होवे जांदा, भज्जे वाहो दाहीआ। उस ने खेल करना आपणे नाँ दा, १६३६

२२ नाउँ निरँकारा इक वड्याईआ। झगड़ा मेटणा सूर गाँ दा, शरअ शरीअत लेखा रहे ना राईआ। आपणा वक्त सुहञ्जणा २२

करना चाअ दा, चाओ घनेरा इक दरसाईआ। बाहू बल रहिण नहीं देणा किसे बांह दा, बलहीण करे लोकाईआ। उस वेले मानस रूप होवे काँ दा, काग वांग कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। गोबिन्द किहा सुण मेरे पहरेदार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों बाहर जणाईआ। जिस वेले मेरा आवे परवरदिगार, नूरी अलाह अल्ला नूर इलाहीआ। उस दे कोल शब्द दी होवे धार, कलमा कायनात दृढ़ाईआ। शस्त्र तीर कमान भथ्था रखे ना कोए कटार, खड़ग संग ना कोए निभाईआ। साचा दिवस लए विचार, छब्बी जेठ वीह सौ अठ्ठ बिक्रमी अठ्ठां तत्तां नाल मिलाईआ। तेरा लहिणा देणा पूरा करे उधार, पिछला लेखा रहे ना राईआ। जन्म दवाए तैनूं विच संसार, हरिजन आपणा लए बणाईआ। एसे करके जगीर सिँघ कीता त्यार, तन वजूद दिती वड्याईआ। साचे वक्त खिच्च के चरण दवार, लेखा पिछला पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रंग आप रंगाईआ। छब्बी जेठ कहे मेरे अन्तर आई खुशहाली, खुशीआं विच जणाईआ। किरपा करी

जोत अकाली, अकल कलधारी दिती वड्याईआ। जिस ने सब दी सुरत संभाली, सम्बल बैठा सोभा पाईआ। जिस दी समझे कोए ना चाली, की अवल्लड़ी चाल चलाईआ। ओह खेल करे बेमिसाली, जिस दी मिसल सके ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। छब्बी जेठ कहे मेरा साहिब साहिब मेहरवान, मेहरवान इक अख्वाईआ। जो वेखणहारा मार ध्यान, पर्दा पूरब आप चुकाईआ। लहिणा देणा चुकाए आण, पूरब लेखा रहे ना राईआ। हाज़र करके जन्म बदल के तत्तां वाला पठान, जागीर सिँघ जगत विच समझाईआ। पूरब लेखा कर परवान, परम पुरख आपणी कार भुगताईआ। तिन्न वार गोबिन्द दी धार पेट उत्ते लाए तिन्न निशान, छुरी शरअ वाली कटाईआ। जिस दे पिच्छों जगत अग्गे खेल होणा महान, भेव सके ना कोए दृढ़ाईआ। जगत दा युद्ध होवे घमसान, घुंमण घेरी विच लोकाईआ। एह लेखा लिख्या सतारवें सलोक विच भविख पुराण, गरड़ दा चौधवां कांड दए गवाहीआ। जन भगतो पूरब दा लहिणा उम्मत दा ठीक कीता भुगतान, भुगत जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। इस दा अगला हिस्सा दस्सांगा जा के विच ईरान, आनन फ़ानन आपणा हुक्म वरताईआ। ओथे जुगिन्दर दे हथ्थां विच खुल्ही होवेगी कुरान, सफ़ा सतासी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ।
१६४० जेठ कहे मैं पुच्छया अगम्मी नाद, धुनां तों बाहर शनवाईआ। आई अगम्मी अवाज़, अज़ां बांग नाल ना कोए रलाईआ। १६४०
२२ जिस मेरे अन्तर खोल्या राज़, पर्दा दिता उठाईआ। मैं सोया गया जाग, हैरानी विच दुहाईआ। दूर दुराडा आया भाग, भज्जया वाहो दाहीआ। वेखे जगत वाले चराग़, चराग़ाहां खोज खुजाईआ। मित्र तक्कया ऐहबाब, मालक नूर इलाहीआ। जिस दा हुक्म इक अहिलाद, इलम आलमां बाहर करे शनवाईआ। जिस ने झगड़ा मेटया इश्क हकीकी ते मिजाज़, दोहां दे परे आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। छुरी कहे मैं खंजर बण के करदी रही इंतज़ार, सदी सदीवी ध्यान लगाईआ। कवण वेला मेरा आवे निरँकार, निर्भय बेपरवाहीआ। मेरी पैज देवे संवार, गोबिन्द दा लेखा पूर कराईआ। आपणे पेट ते फेरे नाल प्यार, प्यार गुस्सा समझ किसे ना आईआ। नाल हकीकत दी करे गुफ़तार, गुफ़त शनीद आपणा हुक्म वरताईआ। कुछ लहिणा देणा लेखा विच बग़दाद, बसरी इलम नाल वड्याईआ। जिथ्थे खेल नानक दे नौ सौ नड़िनवें अक्खरां दी तअदाद, दूर दुराडी बैठी अक्ख खुल्हाईआ। जिथ्थे शरअ दी सुणी आवाज़, शरीअत संग निभाईआ। ओथे एह छुरी खड़नी साथ, मौली सत्त रंग तन्द बंधाईआ। जिस ने जगत शरअ दा पाउणा फसाद, फ़ैसला हक हक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी २२

किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। छुरी कहे मैं सच्चा सुनेहड़ा दस्सां, दस्स गोबिन्द नाल मिलाईआ। प्रेम मुहब्बत विच हस्सां, हस्स के दयां दृढ़ाईआ। मेरे साहिब ने गुरमुख तारे विच्चों कोटां लखां, आप आपणे रंग रंगाईआ। जिन्हां दा दर्शन मैं वी करां मसां, मस्सया रैण अंधेरी कलयुग वेख वखाईआ। जन भगतो मैनूं रोंदी नूं पैंदीआं गशां, हौकयां सिसकीआं विच आपणा साह बदलाईआ। दरोही बुरा हाल होणा जिन्हां ने खाधा कट्टा वच्छा, कटाखश हुक्म वाला लगाईआ। पर याद रखणा सतिगुर दे नाल जाण वाल्यां मेरे नाल खून कढ के लाउणा साहिब दयां हथ्थां, हथ्थां आपणयां विच्चों कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। छुरी कहे मैं वेखां नाड़ नाड़, नाड़ी नाड़ी फोल फुलाईआ। मैं फिरनां विच जंगल उजाड़, टिल्ले पहाड़ां वाहो दाहीआ। मैं किसे दी लैणी नहीं आड़, ओट अन्त ना कोए तकाईआ। मैं वसदे घर देणे उजाड़, उजाड़े वाली आपणी कार भुगताईआ। पर याद रखणा जन भगतो मेरा लेखा कुछ होणा अठारां हाढ़, हाढ़ा कढ के सीस निवाईआ। तुसां ताड़ी वजाउणी ताड़ ताड़, हथ्थ हथ्थां नाल टकराईआ। शब्द गाउणा गोबिन्द सतिगुर घोड़ी दिता चाढ़, वाग धुर दी धार उठाईआ।
१६४१ जावे समुंद सागरां पार, पारब्रह्म आपणा संग बणाईआ। पैग़म्बरां दा लहिणा देणा उतरे उधार, ईसा मूसा मुहम्मद नाल १६४१
२२ मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी आपणी कार भुगताईआ। छुरी २२
कहे मेरा लेखा सी अज्ज दी रात, छब्बी जेठ नाल मिलाईआ। अगला लहिणा उत्ते दरया दजला ते फ़रात, जिस दा पड़दा ना कोए खुल्हाईआ। ओथे सब नूं देणी न्याज़, मिजाज आपणा आप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। छब्बी जेठ कहे जन भगतो साहिब दा खेल सदा अनोखा, अकल कल आपणी आप वरताईआ। जिस दा भेव जाणे कोई ना पोथा, पुस्तक बैठे सीस निवाईआ। बुद्धी विच आवे किसे ना सोचा, सोच सोच थक्की जगत लोकाईआ। आपणी आसा आपे जाणे लोचा, लोचण नैण आपणा आप खुल्हाईआ। छुरी कहे मैं वेखणा चाहुंदी शरअ वालीआं मौता, मलकुलमौत नाल मिलाईआ। अग्गे वक्त रिहा ना बहुता, लेखा देणा थांउ थाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां माण देवे पिता मांओं दा, पुरख अकाल दीन दयाल आपणी दया कमाईआ।